पवित्र शास्त्र

का

नयी दुनिया अनुवाद

यह बाइबल ____ की है

पवित्र शास्त्र
का
नयी दुनिया अनुवाद

इस बाइबल का अनुवाद अँग्रेज़ी की *नयी दुनिया अनुवाद* (2013 का संस्करण) बाइबल से किया गया है। अनुवाद के दौरान मूल भाषाओं के शब्दों पर भी गौर किया गया।

“सारे जहान का मालिक यहोवा [יהוה, *य-ह-व-ह*]
कहता है, ‘. . . देखो! मैं नए आकाश और नयी पृथ्वी की
सृष्टि कर रहा हूँ, फिर पुरानी बातें याद न आएँगी,
न ही उनका खयाल कभी तुम्हारे दिल में आएगा।’”

—यशायाह 65:13, 17; 2 पतरस 3:13 भी देखिए।

200 Watchtower Drive
Patterson, NY 12563-9204
U.S.A.

पवित्र शास्त्र का नयी दुनिया अनुवाद

पब्लिशर्स्

WATCHTOWER BIBLE AND TRACT SOCIETY OF NEW YORK, INC.

Wallkill, New York, U.S.A.

नयी दुनिया अनुवाद की पूरी बाइबल या उसके कुछ हिस्से 170 से भी ज़्यादा भाषाओं में हैं। सभी भाषाओं के नाम जानने के लिए www.jw.org देखें।

नयी दुनिया अनुवाद के सभी संस्करणों का कुल उत्पादन:

22,70,00,066

2019 में छापी गयी

यह किताब बिक्री के लिए नहीं है। यहोवा के साक्षी दुनिया-भर में बाइबल सिखाने का जो काम कर रहे हैं, उसके तहत यह उपलब्ध करायी जा रही है।

New World Translation of the Holy Scriptures

Hindi (*nwt*-HI)

Made in the United States of America

संयुक्त राज्य अमरीका में निर्मित

900 Red Mills Road
Wallkill, NY 12589-5200
U.S.A.

nwt-HI
190730

परमेश्वर के वचन को जानिए

बाइबल में हमारे लिए परमेश्वर का संदेश दिया गया है। यह बताती है कि हम ज़िंदगी में कामयाब कैसे हो सकते हैं और परमेश्वर की मंज़ूरी कैसे पा सकते हैं। बाइबल इन सवालों के जवाब भी देती है:

1. परमेश्वर कौन है?
2. आप परमेश्वर के बारे में कैसे सीख सकते हैं?
3. बाइबल कैसे लिखवायी गयी?
4. क्या बाइबल में दी गयी बातें विज्ञान के मुताबिक सही हैं?
5. बाइबल का संदेश क्या है?
6. बाइबल में मसीहा के बारे में पहले से क्या बताया गया था?
7. बाइबल में हमारे दिनों के बारे में क्या बताया गया है?
8. क्या इंसान के दुखों के लिए परमेश्वर कसूरवार है?
9. इंसान पर दुख-तकलीफें क्यों आती हैं?
10. भविष्य के बारे में बाइबल क्या वादा करती है?
11. मरने पर क्या होता है?
12. मरे हुओं के बारे में हम क्या आशा रख सकते हैं?
13. काम के बारे में बाइबल क्या कहती है?
14. आप अपने साधनों का सही इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं?
15. आप खुशी कैसे पा सकते हैं?
16. आप चिंताओं का सामना कैसे कर सकते हैं?
17. बाइबल आपके परिवार की कैसे मदद कर सकती है?
18. आप परमेश्वर के दोस्त कैसे बन सकते हैं?
19. बाइबल की किताबों में क्या जानकारी दी गयी है?
20. आप बाइबल पढ़कर उससे पूरा फायदा कैसे पा सकते हैं?

बाइबल में आयतें कैसे ढूँढ़ें

बाइबल कुल 66 छोटी-छोटी किताबों से मिलकर बनी है। इसे दो भागों में बाँटा गया है: इब्रानी-अरामी शास्त्र ("पुराना नियम") और यूनानी शास्त्र ("नया नियम")। बाइबल की हर किताब को अध्यायों और आयतों में बाँटा गया है। जब बाइबल की आयतों का ज़िक्र किया जाता है तो पहले किताब का नाम, फिर अध्याय की संख्या और फिर आयतों की संख्या दी होती है। मिसाल के लिए, उत्पत्ति 1:1 का मतलब है, उत्पत्ति की किताब का पहला अध्याय और उसकी पहली आयत।

सवाल 1

परमेश्वर कौन है?

“लोग जानें कि सिर्फ तू जिसका नाम यहोवा है, सारी धरती के ऊपर परम-प्रधान है।”

भजन 83:18 [पेज 1006]

“जान लो कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हमें बनाया है और हम उसके हैं।”

भजन 100:3 [पेज 1022]

“मैं यहोवा हूँ, यही मेरा नाम है। मैं अपनी महिमा किसी और को न दूँगा, न अपनी तारीफ खुदी हुई मूरतों को दूँगा।”

यशायाह 42:8 [पेज 1224]

“जो कोई यहोवा का नाम पुकारता है वह उद्धार पाएगा।”

रोमियों 10:13 [पेज 1873]

“बेशक, हर घर का कोई-न-कोई बनानेवाला होता है मगर जिसने सबकुछ बनाया वह परमेश्वर है।”

इब्रानियों 3:4 [पेज 1982]

“ज़रा अपनी आँखें उठाकर आसमान को देखो, किसने इन तारों को बनाया? उसी ने जो गिन-गिनकर उनकी सेना को बुलाता है, एक-एक का नाम लेकर उसे पुकारता है। उसकी ज़बरदस्त ताकत और विस्मयकारी शक्ति की वजह से, उनमें से एक भी उसके सामने गैर-हाज़िर नहीं रहता।”

यशायाह 40:26 [पेज 1220]



सवाल 2

आप परमेश्वर के बारे में कैसे सीख सकते हैं?

"कानून की इस किताब को अपने मुँह से दूर न करना, दिन-रात इसे धीमी आवाज़ में पढ़ना ताकि तू इसकी एक-एक बात का पालन कर सके। तब तू कामयाब होगा और बुद्धिमानी से चल पाएगा।"

यहोशू 1:8 [पेज 396]

"लेवी सच्चे परमेश्वर के कानून की किताब पढ़कर सुनाते रहे। वे उसमें लिखी बातें खुलकर समझाने और उनका मतलब बताने लगे। इस तरह, पढ़ी जानेवाली बातों को समझने में उन्होंने लोगों की मदद की।"

नहेमायाह 8:8 [पेज 826]

"सुखी है वह इंसान जो दुष्टों की सलाह पर नहीं चलता . . . मगर वह यहोवा के कानून से खुशी पाता है, दिन-रात उसका कानून धीमी आवाज़ में पढ़ता है। . . . वह आदमी अपने हर काम में कामयाब होगा।"

भजन 1:1-3 [पेज 922]

"फिलिप्पुस उस रथ के साथ-साथ दौड़ने लगा और उसने खोजे को भविष्यवक्ता यशायाह की किताब पढ़ते सुना और उससे पूछा, 'तू जो पढ़ रहा है, क्या उसे समझता भी है?' उसने कहा, 'जब तक कोई मुझे न समझाए, मैं भला कैसे समझ सकता हूँ?' "

प्रेषितों 8:30, 31 [पेज 1816]

“उसके अनदेखे गुण दुनिया की रचना के वक्त से साफ दिखायी देते हैं यानी यह कि उसके पास अनंत शक्ति है और सचमुच वही परमेश्वर है। ये गुण उसकी बनायी चीज़ों को देखकर अच्छी तरह समझे जा सकते हैं, इसलिए उनके पास परमेश्वर पर विश्वास न करने का कोई बहाना नहीं बचता।”

रोमियों 1:20 [पेज 1859]

“इन बातों के बारे में गहराई से सोचता रह और इन्हीं में लगा रह ताकि तेरी तरक्की सब लोगों को साफ दिखायी दे।”

1 तीमुथियुस 4:15 [पेज 1966]

“आओ हम एक-दूसरे में गहरी दिलचस्पी लें ताकि एक-दूसरे को प्यार और भले काम करने का बढ़ावा दे सकें और एक-दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें।”

इब्रानियों 10:24, 25 [पेज 1991]

“अगर तुममें से किसी को बुद्धि की कमी हो तो वह परमेश्वर से माँगता रहे और वह उसे दी जाएगी, क्योंकि परमेश्वर सबको उदारता से और बिना डाँटे-फटकारे देता है।”

याकूब 1:5 [पेज 1999]

सवाल 3

बाइबल कैसे लिखवायी गयी?

“मूसा ने वे सारी बातें लिख डालीं जो यहोवा ने उससे कही थीं।”

निर्गमन 24:4 [पेज 171]

“दानियेल ने बिस्तर पर लेटे एक सपना और कुछ दर्शन देखे। फिर उसने लिखा कि उसने क्या सपना देखा था। उसने जो-जो देखा, उसका पूरा ब्यौरा लिखा।”

दानियेल 7:1 [पेज 1499]

“जब तुमने परमेश्वर का वचन हमसे सुना तो इसे इंसानों का नहीं बल्कि परमेश्वर का वचन समझकर स्वीकार किया, जैसा कि यह सचमुच है।”

1 थिस्सलुनीकियों 2:13 [पेज 1955]

‘पूरा शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है और सिखाने के लिए फायदेमंद है।’

2 तीमुथियुस 3:16 [पेज 1972]

“कोई भी भविष्यवाणी इंसान की मरज़ी से कभी नहीं हुई, बल्कि इंसान पवित्र शक्ति से उभारे जाकर परमेश्वर की तरफ से बोलते थे।”

2 पतरस 1:21 [पेज 2014]

सवाल 4

क्या बाइबल में दी गयी बातें विज्ञान के मुताबिक सही हैं?

"वह उत्तरी आकाश को खाली जगह पर ताने हुए है, पृथ्वी को बिना किसी सहारे के लटकाए हुए है।"

अय्यूब 26:7 [पेज 888]

"सारी नदियाँ सागर में जा मिलती हैं, फिर भी सागर नहीं भरता, नदियाँ वापस अपनी जगह लौट जाती हैं और फिर से बहने लगती हैं।"

सभोपदेशक 1:7 [पेज 1128]

"परमेश्‍वर पृथ्वी के घेरे के ऊपर विराजमान है।"

यशायाह 40:22 [पेज 1220]



सवाल 5

बाइबल का संदेश क्या है?

"मैं तेरे और औरत के बीच और तेरे वंश और उसके वंश के बीच दुश्मनी पैदा करूँगा। वह तेरा सिर कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को घायल करेगा।"

उत्पत्ति 3:15 [पेज 47]

"तेरे वंश के ज़रिए धरती की सभी जातियाँ आशीष पाएँगी, क्योंकि तूने मेरी आज्ञा मानी है।"

उत्पत्ति 22:18 [पेज 73]

"तेरा राज आए। तेरी मरज़ी जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे धरती पर भी पूरी हो।"

मत्ती 6:10 [पेज 1614]

"शांति देनेवाला परमेश्वर बहुत जल्द शैतान को तुम्हारे पैरों तले कुचल देगा।"

रोमियों 16:20 [पेज 1882]

"जब सबकुछ बेटे के अधीन कर दिया जाएगा, तब बेटा भी अपने आपको परमेश्वर के अधीन कर देगा जिसने सबकुछ उसके अधीन किया था ताकि परमेश्वर ही सबके लिए सबकुछ हो।"

1 कुरिंथियों 15:28 [पेज 1904]

“अब जो वादे थे वे अब्राहम और उसके वंश से किए गए थे . . . जो मसीह है। और अगर तुम मसीह के हो, तो तुम वाकई अब्राहम का वंश हो।”

गलातियों 3:16, 29 [पेज 1927, 1928]

“दुनिया का राज अब हमारे मालिक और उसके मसीह का हो गया है और वह हमेशा-हमेशा तक राजा बनकर राज करेगा।”

प्रकाशितवाक्य 11:15 [पेज 2042]

“इसलिए वह बड़ा भयानक अजगर, वही पुराना साँप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है और जो सारे जगत को गुमराह करता है, वह नीचे धरती पर फेंक दिया गया और उसके दुष्ट स्वर्गदूत भी उसके साथ फेंक दिए गए।”

प्रकाशितवाक्य 12:9 [पेज 2043]

“उसने उस अजगर को, उस पुराने साँप को जो इबलीस और शैतान है पकड़ लिया और 1,000 साल के लिए उसे बाँध दिया।”

प्रकाशितवाक्य 20:2 [पेज 2053]

सवाल 6

बाइबल में मसीहा के बारे में पहले से क्या बताया गया था?

भविष्यवाणी	**कैसे पूरी हुई**
“हे बेतलेहेम एप्राता, . . . तुझमें से एक ऐसा शख्स आएगा जिसे मैं इसराएल का शासक ठहराऊँगा।” मीका 5:2 [पेज 1559]	“यीशु का जन्म यहूदिया के बेतलेहेम में हो चुका था। उन दिनों हेरोदेस यहूदिया का राजा था। यीशु के जन्म के कुछ समय बाद, देखो! पूरब से कुछ ज्योतिषी यरूशलेम आए।” मत्ती 2:1 [पेज 1608]
“वे मेरी पोशाक आपस में बाँटते हैं, मेरे कपड़े के लिए चिट्ठियाँ डालते हैं।” भजन 22:18 [पेज 940]	“जब सैनिकों ने यीशु को काठ पर ठोंक दिया, तो उन्होंने उसका ओढ़ना लिया और उसके चार टुकड़े करके आपस में बाँट लिए . . . मगर कुरते में कोई जोड़ नहीं था बल्कि यह ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था। इसलिए उन्होंने एक-दूसरे से कहा, ‘हम इसे नहीं फाड़ेंगे बल्कि चिट्ठियाँ डालकर तय करेंगे कि यह किसका होगा।’ ” यूहन्ना 19:23, 24 [पेज 1794]

भविष्यवाणी	कैसे पूरी हुई
“वह उसकी सारी हड्डियों की हिफाज़त करता है, उसकी एक भी हड्डी नहीं तोड़ी गयी।” भजन 34:20 [पेज 952]	“जब वे यीशु के पास आए तो उन्होंने देखा कि वह मर चुका है इसलिए उन्होंने उसकी टाँगें नहीं तोड़ीं।” यूहन्ना 19:33 [पेज 1794]
“हमारे अपराधों के लिए उसे भेदा गया।” यशायाह 53:5 [पेज 1246]	“सैनिकों में से एक ने अपना भाला उसकी पसलियों में भोंका और फौरन खून और पानी बह निकला।” यूहन्ना 19:34 [पेज 1795]
‘उन्होंने मुझे मज़दूरी में चाँदी के 30 टुकड़े दिए।’ जकरयाह 11:12, 13 [पेज 1594]	“फिर उन बारहों में से एक, जो यहूदा इस्करियोती कहलाता था, प्रधान याजकों के पास गया और उसने उनसे कहा, ‘अगर मैं उसे तुम्हारे हाथों पकड़वा दूँ, तो तुम मुझे क्या दोगे?’ उन्होंने कहा कि वे उसे चाँदी के 30 सिक्के देंगे।” मत्ती 26:14, 15; 27:5 [पेज 1652, 1656]

सवाल 7

बाइबल में हमारे दिनों के बारे में क्या बताया गया है?

"एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर और एक राज्य दूसरे राज्य पर हमला करेगा। . . . ये सारी बातें प्रसव-पीड़ा की तरह मुसीबतों की सिर्फ शुरूआत होंगी।"

मत्ती 24:7, 8 [पेज 1648]

"कई झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे और बहुतों को गुमराह करेंगे। और दुष्टता के बढ़ने से कई लोगों का प्यार ठंडा हो जाएगा।"

मत्ती 24:11, 12 [पेज 1648]

"जब तुम युद्धों का शोरगुल और युद्धों की खबरें सुनो, तो घबरा न जाना। इन सबका होना ज़रूरी है मगर तभी अंत न होगा।"

मरकुस 13:7 [पेज 1686]

"बड़े-बड़े भूकंप आएँगे और एक-के-बाद-एक कई जगह अकाल पड़ेंगे और महामारियाँ फैलेंगी। खौफनाक नज़ारे दिखायी देंगे और आकाश में बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखायी देंगी।"

लूका 21:11 [पेज 1745]

“आखिरी दिनों में संकटों से भरा ऐसा वक्त आएगा जिसका सामना करना मुश्किल होगा। इसलिए कि लोग सिर्फ खुद से प्यार करनेवाले, पैसे से प्यार करनेवाले, डींगें मारनेवाले, मगरूर, निंदा करनेवाले, माता-पिता की न माननेवाले, एहसान न माननेवाले, विश्वासघाती, लगाव न रखनेवाले, किसी भी बात पर राज़ी न होनेवाले, बदनाम करनेवाले, संयम न रखनेवाले, खूँखार, भलाई से प्यार न करनेवाले, धोखेबाज़, ढीठ, घमंड से फूले हुए, परमेश्वर के बजाय मौज-मस्ती से प्यार करनेवाले होंगे, वे भक्ति का दिखावा तो करेंगे मगर उसके मुताबिक जीएँगे नहीं।”

2 तीमुथियुस 3:1-5 [पेज 1972]



सवाल 8

क्या इंसान के दुखों के लिए परमेश्वर कसूरवार है?

“ऐसा हो ही नहीं सकता कि सच्चा परमेश्वर दुष्ट काम करे, यह मुमकिन नहीं कि सर्वशक्तिमान बुरे काम करे।”

अय्यूब 34:10 [पेज 900]

“जब किसी की परीक्षा हो रही हो तो वह यह न कहे, ‘परमेश्वर मेरी परीक्षा ले रहा है।’ क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा ली जा सकती है, न ही वह खुद बुरी बातों से किसी की परीक्षा लेता है।”

याकूब 1:13 [पेज 1999]

“तुम अपनी सारी चिंताओं का बोझ उसी पर डाल दो क्योंकि उसे तुम्हारी परवाह है।”

1 पतरस 5:7 [पेज 2012]

“यहोवा अपना वादा पूरा करने में देरी नहीं कर रहा, जैसा कुछ लोग समझते हैं मगर वह तुम्हारे साथ सब्र से पेश आ रहा है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई भी नाश हो बल्कि यह कि सबको पश्चाताप करने का मौका मिले।”

2 पतरस 3:9 [पेज 2016]

सवाल 9

इंसान पर दुख-तकलीफें क्यों आती हैं?

“न तो सबसे तेज़ दौड़नेवाला दौड़ में हमेशा जीतता है, न वीर योद्धा लड़ाई में हमेशा जीतता है, न बुद्धिमान के पास हमेशा खाने को होता है, न अक्लमंद के पास हमेशा दौलत होती है और न ही ज्ञानी हमेशा कामयाब होता है। क्योंकि मुसीबत की घड़ी किसी पर भी आ सकती है और हादसा किसी के साथ भी हो सकता है।”

सभोपदेशक 9:11 [पेज 1138]

“एक आदमी से पाप दुनिया में आया और पाप से मौत आयी और इस तरह मौत सब इंसानों में फैल गयी क्योंकि सबने पाप किया।”

रोमियों 5:12 [पेज 1865]

“परमेश्‍वर के बेटे को इस मकसद से ज़ाहिर किया गया कि वह शैतान के कामों को नष्ट कर दे।”

1 यूहन्‍ना 3:8 [पेज 2020]

“सारी दुनिया शैतान के कब्ज़े में पड़ी हुई है।”

1 यूहन्‍ना 5:19 [पेज 2024]

सवाल 10

भविष्य के बारे में बाइबल क्या वादा करती है?

“नेक लोग धरती के वारिस होंगे और उस पर हमेशा की ज़िंदगी जीएँगे।”

भजन 37:29 [पेज 957]

“पृथ्वी हमेशा कायम रहती है।”

सभोपदेशक 1:4 [पेज 1128]

“वह मौत को हमेशा के लिए निगल जाएगा, सारे जहान का मालिक यहोवा हर इंसान के आँसू पोंछ देगा।”

यशायाह 25:8 [पेज 1193]

“उस वक्त अंधों की आँखें खोली जाएँगी और बहरों के कान खोले जाएँगे, लँगड़े, हिरन की तरह छलाँग भरेंगे और गूँगों की ज़बान खुशी के मारे जयजयकार करेगी। वीराने में पानी की धाराएँ फूट निकलेंगी और बंजर ज़मीन में नदियाँ उमड़ पड़ेंगी।”

यशायाह 35:5, 6 [पेज 1211]

“वह उनकी आँखों से हर आँसू पोंछ देगा और न मौत रहेगी, न मातम, न रोना-बिलखना, न ही दर्द रहेगा। पिछली बातें खत्म हो चुकी हैं।”

प्रकाशितवाक्य 21:4 [पेज 2055]

“वे घर बनाकर उसमें बसेंगे, अंगूरों के बाग लगाएँगे और उनका फल खाएँगे। ऐसा नहीं होगा कि वे घर बनाएँ और कोई दूसरा उसमें रहे, वे बाग लगाएँ और कोई दूसरा उसका फल खाए, क्योंकि मेरे लोगों की उम्र, पेड़ों के समान होगी, मेरे चुने हुए अपनी मेहनत के फल का पूरा-पूरा मज़ा लेंगे।”

यशायाह 65:21, 22 [पेज 1265]



सवाल 11

मरने पर क्या होता है?

“उसकी भी साँस निकल जाती है और वह मिट्टी में मिल जाता है,
उसी दिन उसके सारे विचार मिट जाते हैं।”

भजन 146:4 [पेज 1070]

‘जो ज़िंदा हैं वे जानते हैं कि वे मरेंगे, लेकिन मरे हुए कुछ नहीं जानते।
तू जो भी करे उसे जी-जान से कर क्योंकि कब्र में जहाँ तू जानेवाला है
वहाँ न कोई काम है, न सोच-विचार, न ज्ञान, न ही बुद्धि।’

सभोपदेशक 9:5, 10 [पेज 1138]

‘यीशु ने कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है, लेकिन मैं उसे जगाने
वहाँ जा रहा हूँ।” दरअसल यीशु कह रहा था कि लाज़र मर गया है,
मगर चेलों ने समझा कि यीशु सचमुच की नींद की बात कर रहा है।
इसलिए यीशु ने उन्हें साफ-साफ बताया, “लाज़र मर चुका है।”’

यूहन्ना 11:11, 13, 14 [पेज 1779]

सवाल 12

मरे हुओं के बारे में हम क्या आशा रख सकते हैं?

“इस बात पर हैरान मत हो क्योंकि वह वक्त आ रहा है जब वे सभी, जो स्मारक कब्रों में हैं उसकी आवाज़ सुनेंगे और बाहर निकल आएँगे।”

यूहन्ना 5:28, 29 [पेज 1766]

“अच्छे और बुरे, दोनों तरह के लोगों को मरे हुओं में से ज़िंदा किया जाएगा।”

प्रेषितों 24:15 [पेज 1848]

“मैंने मरे हुओं को यानी छोटे-बड़े सबको राजगद्दी के सामने खड़े देखा और किताबें खोली गयीं। फिर एक और किताब खोली गयी जो जीवन की किताब है। उन किताबों में लिखी बातों के मुताबिक, मरे हुओं का उनके कामों के हिसाब से न्याय किया गया। और समुंदर ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे, दे दिया और मौत और कब्र ने उन मरे हुओं को जो उनमें थे, दे दिया और उनमें से हरेक का उसके कामों के हिसाब से न्याय किया गया।”

प्रकाशितवाक्य 20:12, 13 [पेज 2054]

सवाल 13

काम के बारे में बाइबल क्या कहती है?

“क्या तूने ऐसे आदमी को देखा है जो अपने काम में माहिर है? वह किसी मामूली इंसान के सामने नहीं, राजा-महाराजाओं के सामने खड़ा होगा।”

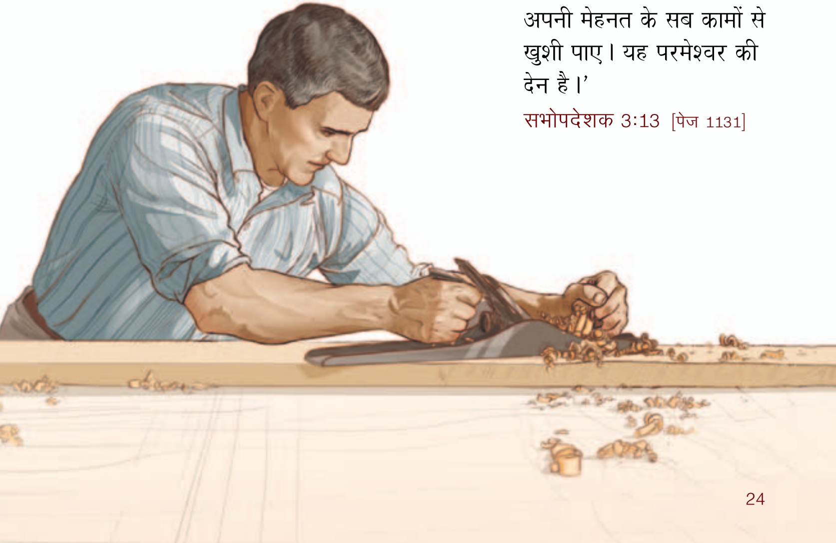
नीतिवचन 22:29 [पेज 1111]

“जो चोरी करता है वह अब से चोरी न करे। इसके बजाय, वह कड़ी मेहनत करे और अपने हाथों से ईमानदारी का काम करे ताकि किसी ज़रूरतमंद को देने के लिए उसके पास कुछ हो।”

इफिसियों 4:28 [पेज 1937]

‘इंसान खाए-पीए और अपनी मेहनत के सब कामों से खुशी पाए। यह परमेश्वर की देन है।’

सभोपदेशक 3:13 [पेज 1131]



सवाल 14

आप अपने साधनों का सही इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं?

"जिसे मौज-मस्ती से प्यार है, वह कंगाल हो जाएगा, जिसे तेल और दाख-मदिरा से प्यार है, वह अमीर नहीं होगा।"

नीतिवचन 21:17 [पेज 1109]

"उधार लेनेवाला, उधार देनेवाले का गुलाम होता है।"

नीतिवचन 22:7 [पेज 1110]

"तुममें ऐसा कौन है जो एक मीनार बनाना चाहता हो और बैठकर पहले इसमें लगनेवाले खर्च का हिसाब न लगाए ताकि देखे कि उसे पूरा करने के लिए उसके पास काफी पैसा है या नहीं? नहीं तो ऐसा होगा कि वह उसकी नींव तो डालेगा, मगर मीनार बनाने का काम पूरा नहीं कर पाएगा। और सब देखनेवाले उसका मज़ाक उड़ाएँगे और कहेंगे, 'यह आदमी बनाने तो चला, मगर पूरा नहीं कर पाया।' "

लूका 14:28-30 [पेज 1733]

"जब उन्होंने भरपेट खा लिया, तो उसने चेलों से कहा, 'बचे हुए टुकड़े इकट्ठा कर लो ताकि कुछ भी बेकार न हो।' "

यूहन्ना 6:12 [पेज 1767]

सवाल 15

आप खुशी कैसे पा सकते हैं?

“जिस घर में नफरत हो वहाँ दावत उड़ाने से अच्छा है, उस घर में सादा खाना खाना जहाँ प्यार हो।”

नीतिवचन 15:17 [पेज 1099]

“मैं ही तेरा परमेश्‍वर यहोवा हूँ, जो तुझे तेरे भले के लिए सिखाता हूँ और जिस राह पर तुझे चलना चाहिए उसी पर तुझे ले चलता हूँ।”

यशायाह 48:17 [पेज 1237]

“सुखी हैं वे जिनमें परमेश्‍वर से मार्गदर्शन पाने की भूख है क्योंकि स्वर्ग का राज उन्हीं का है।”

मत्ती 5:3 [पेज 1611]

“तुम अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार करना जैसे तुम खुद से करते हो।”

मत्ती 22:39 [पेज 1645]

“ठीक जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।”

लूका 6:31 [पेज 1711]

“सुखी हैं वे जो परमेश्‍वर का वचन सुनते हैं और उस पर चलते हैं!”

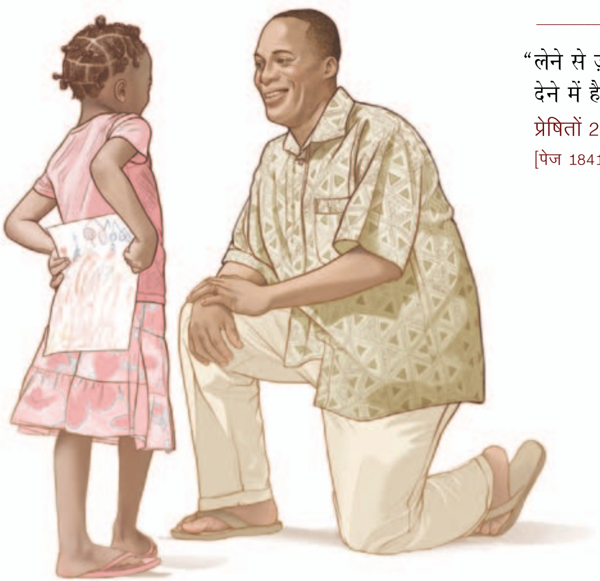
लूका 11:28 [पेज 1725]

“चाहे इंसान के पास बहुत कुछ हो, तो भी उसकी दौलत उसे ज़िंदगी नहीं दे सकती।”

लूका 12:15 [पेज 1727]

“इसलिए अगर हमारे पास खाने और पहनने को है, तो हमें उसी में संतोष करना चाहिए।”

1 तीमुथियुस 6:8 [पेज 1968]



“लेने से ज़्यादा खुशी देने में है।”

प्रेषितों 20:35 [पेज 1841]

सवाल 16

आप चिंताओं का सामना कैसे कर सकते हैं?

“अपना सारा बोझ यहोवा पर डाल दे, वह तुझे सँभालेगा। वह नेक जन को कभी गिरने नहीं देगा।”

भजन 55:22 [पेज 975]

“मेहनती की योजनाएँ ज़रूर सफल होंगी, लेकिन जल्दबाज़ी करनेवाले पर गरीबी छा जाएगी।”

नीतिवचन 21:5 [पेज 1108]

“डर मत क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, घबरा मत क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ। मैं तेरी हिम्मत बँधाऊँगा, तेरी मदद करूँगा, नेकी के दाएँ हाथ से तुझे सँभाले रहूँगा।”

यशायाह 41:10 [पेज 1221]

“तुममें ऐसा कौन है जो चिंता करके एक पल के लिए भी अपनी ज़िंदगी बढ़ा सके?”

मत्ती 6:27 [पेज 1615]

“इसलिए अगले दिन की चिंता कभी न करना क्योंकि अगले दिन की अपनी ही चिंताएँ होंगी। आज के लिए आज की परेशानियाँ काफी हैं।”

मत्ती 6:34 [पेज 1616]

‘पहचानो कि ज़्यादा अहमियत रखनेवाली बातें क्या हैं।’
फिलिप्पियों 1:10 [पेज 1942]

“किसी भी बात को लेकर चिंता मत करो, मगर हर बात के बारे में प्रार्थना और मिन्‍नतों और धन्यवाद के साथ परमेश्‍वर से बिनतियाँ करो। तब परमेश्‍वर की वह शांति जो समझ से परे है, मसीह यीशु के ज़रिए तुम्हारे दिल की और तुम्हारे दिमाग के सोचने की ताकत की हिफाज़त करेगी।”
फिलिप्पियों 4:6, 7 [पेज 1946]



सवाल 17

बाइबल आपके परिवार की कैसे मदद कर सकती है?

पति/पिता

"इसी तरह पतियों को चाहिए कि वे अपनी-अपनी पत्नी से ऐसे प्यार करें जैसे अपने शरीर से। जो अपनी पत्नी से प्यार करता है, वह खुद से प्यार करता है। इसलिए कि कोई भी आदमी अपने शरीर से कभी नफरत नहीं करता, बल्कि वह उसे खिलाता-पिलाता है और अनमोल समझता है . . . तुममें से हरेक अपनी पत्नी से वैसा ही प्यार करे जैसा वह अपने आप से करता है।"

इफिसियों 5:28, 29, 33 [पेज 1939]

"हे पिताओ, अपने बच्चों को चिढ़ मत दिलाओ बल्कि यहोवा की मरज़ी के मुताबिक उन्हें सिखाते और समझाते हुए उनकी परवरिश करो।"

इफिसियों 6:4 [पेज 1939]

पत्नी

'पत्नी अपने पति का गहरा आदर करे।'

इफिसियों 5:33 [पेज 1939]

"हे पत्नियो, अपने-अपने पति के अधीन रहो, जैसा प्रभु के चेलों को शोभा देता है।"

कुलुस्सियों 3:18 [पेज 1951]

बच्चे

“बच्चो, प्रभु में अपने माता-पिता का कहना माननेवाले बनो क्योंकि यह परमेश्वर की नज़र में सही है। ‘अपने पिता और अपनी माँ का आदर करना,’ यह पहली आज्ञा है जिसके साथ यह वादा भी किया गया है: ‘ताकि तेरा भला हो और तू धरती पर लंबी उम्र जीए।’ ”

इफिसियों 6:1-3 [पेज 1939]

“बच्चो, हर बात में अपने माता-पिता का कहना माननेवाले बनो क्योंकि प्रभु इससे खुश होता है।”

कुलुस्सियों 3:20 [पेज 1951]

सवाल 18

आप परमेश्वर के दोस्त कैसे बन सकते हैं?

"हे प्रार्थना के सुननेवाले, सब किस्म के लोग तेरे पास आएँगे।"

भजन 65:2 [पेज 982]

"तू अपनी समझ का सहारा न लेना, बल्कि पूरे दिल से यहोवा पर भरोसा रखना, उसी को ध्यान में रखकर सब काम करना, तब वह तुझे सही राह दिखाएगा।"

नीतिवचन 3:5, 6 [पेज 1079]

"हमेशा की ज़िंदगी पाने के लिए ज़रूरी है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को जिसे तूने भेजा है, जानें।"

यूहन्ना 17:3 [पेज 1789]

'सच तो यह है कि परमेश्वर हममें से किसी से भी दूर नहीं है।'

प्रेषितों 17:27 [पेज 1835]

"मैं यही प्रार्थना करता रहता हूँ कि सही ज्ञान और पैनी समझ के साथ तुम्हारा प्यार और भी बढ़ता जाए।"

फिलिप्पियों 1:9 [पेज 1941]

“अगर तुममें से किसी को बुद्धि की कमी हो तो वह परमेश्वर से माँगता रहे और वह उसे दी जाएगी, क्योंकि परमेश्वर सबको उदारता से और बिना डाँटे-फटकारे देता है।”

याकूब 1:5 [पेज 1999]

“परमेश्वर के करीब आओ और वह तुम्हारे करीब आएगा। अरे पापियो, अपने हाथ धोओ, अरे शक करनेवालो, अपने दिलों को शुद्ध करो।”

याकूब 4:8 [पेज 2003]

“परमेश्वर से प्यार करने का मतलब यही है कि हम उसकी आज्ञाओं पर चलें और उसकी आज्ञाएँ हम पर बोझ नहीं हैं।”

1 यूहन्ना 5:3 [पेज 2023]

बाइबल की किताबों में क्या जानकारी दी गयी है?

इब्रानी शास्त्र ("पुराना नियम")

पहली 5 किताबें:

उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण
सृष्टि से लेकर प्राचीन इसराएल राष्ट्र की शुरूआत तक का ब्यौरा

इतिहास की किताबें (12 किताबें):

यहोशू, न्यायियों, रूत
वादा किए गए देश में इसराएलियों के जाने के समय की और उसके बाद की घटनाएँ

1 और 2 शमूएल, 1 और 2 राजा, 1 और 2 इतिहास
यरूशलेम के नाश तक इसराएल राष्ट्र का इतिहास

एज्रा, नहेमायाह, एस्तेर
बैबिलोन की बँधुआई से लौटने के बाद, यहूदियों का इतिहास

कविता के रूप में लिखी किताबें (5 किताबें):

अय्यूब, भजन, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत
बुद्धि-भरी बातों और गीतों की किताबें

भविष्यवाणियों की किताबें (17 किताबें):

यशायाह, यिर्मयाह, विलापगीत, यहेजकेल, दानियेल, होशे, योएल, आमोस, ओबद्याह, योना, मीका, नहूम, हबक्कूक, सपन्याह, हाग्गै, जकरयाह, मलाकी
पहले से बताया गया था कि परमेश्वर के लोगों के साथ भविष्य में क्या होगा

मसीही यूनानी शास्त्र (“नया नियम”)

खुशखबरी की चार किताबें (4 किताबें):

मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना
यीशु की ज़िंदगी और सेवा का ब्यौरा

प्रेषितों के काम (1 किताब):

मसीही मंडली की शुरूआत और मिशनरी सेवा का इतिहास

चिट्ठियाँ (21 किताबें):

रोमियों, 1 और 2 कुरिंथियों, गलातियों, इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, 1 और 2 थिस्सलुनीकियों
अलग-अलग जगह की मसीही मंडलियों के नाम चिट्ठियाँ

1 और 2 तीमुथियुस, तीतुस, फिलेमोन
इन मसीहियों के नाम लिखी चिट्ठियाँ

इब्रानियों, याकूब, 1 और 2 पतरस, 1, 2 और 3 यूहन्ना, यहूदा
सभी मसीहियों को लिखी चिट्ठियाँ

प्रकाशितवाक्य (1 किताब):

प्रेषित यूहन्ना को दर्शन में दी गयी भविष्यवाणियाँ

सवाल 20

आप बाइबल पढ़कर उससे पूरा फायदा कैसे पा सकते हैं?

बाइबल पढ़ते वक्त इन सवालों पर सोचिए:

ये आयतें मुझे यहोवा परमेश्वर के बारे में क्या बताती हैं?

बाइबल के संदेश से इनका क्या ताल्लुक है?

मैं इन्हें अपनी ज़िंदगी में कैसे लागू कर सकता हूँ?

मैं इन आयतों से दूसरों की मदद कैसे कर सकता हूँ?

"तेरा वचन मेरे पाँव के लिए एक दीपक है, मेरी राह के लिए रौशनी है।"

भजन 119:105 [पेज 1050]



परिचय

बाइबल, परमेश्‍वर की लिखवायी एक पवित्र किताब है और इसके ज़रिए वह हम सबसे बात करता है। परमेश्‍वर को जानने के लिए बाइबल का अध्ययन करना ज़रूरी है। (यूहन्‍ना 17:3; 2 तीमुथियुस 3:16) बाइबल में परमेश्‍वर ने बताया है कि इंसान और धरती के लिए उसका क्या मकसद है।—उत्पत्ति 3:15; प्रकाशितवाक्य 21:3, 4.

बाइबल के जैसी और कोई किताब नहीं जो लोगों की ज़िंदगी पर गहरा असर करती हो। यह हमें बढ़ावा देती है कि हम यहोवा की तरह प्यार, करुणा और दया दिखाएँ। यह लोगों में उम्मीद जगाती है और उन्हें बड़ी-से-बड़ी मुश्‍किल को सहने की ताकत देती है। यह दुनिया की उन बातों का परदाफाश करती है जो परमेश्‍वर की मरज़ी के खिलाफ हैं।—भजन 119:105; इब्रानियों 4:12; 1 यूहन्‍ना 2:15-17.

बाइबल इब्रानी, अरामी और यूनानी भाषा में लिखी गयी थी। पूरी बाइबल का या उसके कुछ हिस्सों का करीब 3,000 भाषाओं में अनुवाद किया गया है। इतनी ज़्यादा भाषाओं में अब तक किसी भी किताब का अनुवाद नहीं हुआ है। इतना ही नहीं, बाइ-बल अब तक की सबसे ज़्यादा बाँटी गयी किताब है। बाइबल के बारे में यह उम्मीद करना सही भी है, क्योंकि इसमें भविष्यवाणी की गयी थी: “राज [जो बाइबल का खास संदेश है] की इस खुशखबरी का सारे जगत में प्रचार किया जाएगा ताकि सब राष्ट्रों को गवाही दी जाए और इसके बाद अंत आ जाएगा।”—मत्ती 24:14.

हम इस बात को समझते हैं कि बाइबल का संदेश बहुत खास है। इसलिए हमने ऐसा अनुवाद तैयार करने की कोशिश की है जो न सिर्फ मूल पाठ के मुताबिक हो, बल्कि पढ़ने में आसान हो और साफ समझ आए। इस अनुवाद में कुछ अतिरिक्‍त लेख भी हैं, “बाइबल के अनुवाद के सिद्धांत,” “इस संस्करण की खासियतें” और “बाइबल हम तक कैसे पहुँची।” इनमें समझाया गया है कि यह अनुवाद किन सिद्धांतों के आधार पर तैयार किया गया है और इसकी कुछ खासियतें क्या हैं।

जो लोग यहोवा परमेश्‍वर से प्यार करते हैं और उसकी उपासना करते हैं, वे उसके वचन का ऐसा अनुवाद पढ़ना चाहेंगे जो बिलकुल सही हो और समझने में आसान हो। (1 तीमुथियुस 2:4) इसलिए हमारी कोशिश है कि *नयी दुनिया अनुवाद* ज़्यादा-से-ज़्यादा भाषाओं में निकाला जाए और यही वजह है कि हमने हिंदी में यह अनुवाद तैयार किया है। प्यारे पाठक, हम उम्मीद करते हैं और हमारी प्रार्थना है कि ‘परमेश्‍वर को ढूँढ़ने और उसे पाने’ में पवित्र शास्त्र का यह अनुवाद ज़रूर आपकी मदद करेगा।—प्रेषितों 17:27.

नयी दुनिया बाइबल अनुवाद समिति

किताबों के नाम और उनका क्रम

इब्रानी-अरामी शास्त्र

मसीही यूनानी शास्त्र

उत्पत्ति

सारांश

1 आकाश और पृथ्वी की सृष्टि (1, 2)
छः दिन में पृथ्वी तैयार (3-31)
पहला दिनः उजाला; दिन-रात (3-5)
दूसरा दिनः खुली जगह (6-8)
तीसरा दिनः ज़मीन; पेड़-पौधे (9-13)
चौथा दिनः आसमान में ज्योतियाँ (14-19)
पाँचवाँ दिनः मछलियाँ और पक्षी (20-23)
छठा दिनः जानवर और इंसान (24-31)

2 परमेश्वर सातवें दिन विश्राम करता है (1-3)
यहोवा ने आकाश और पृथ्वी बनायी (4)
अदन के बाग में आदमी और औरत (5-25)
आदमी मिट्टी से रचा गया (7)
ज्ञान के पेड़ से खाने की मनाही (15-17)
औरत की सृष्टि (18-25)

3 इंसान के पाप की शुरूआत (1-13)
पहला झूठ (4, 5)
यहोवा बागियों को सज़ा सुनाता है (14-24)
औरत के वंश के बारे में भविष्यवाणी (15)
अदन से निकाला गया (23, 24)

4 कैन और हाबिल (1-16)
कैन के वंशज (17-24)
शेत और उसका बेटा एनोश (25, 26)

5 आदम से नूह तक की वंशावली (1-32)
आदम के बेटे-बेटियाँ हुए (4)
हनोक परमेश्वर के साथ चला (21-24)

6 स्वर्गदूतों ने औरतों से शादी की (1-3)
नफिलीम पैदा हुए (4)
इंसान की बुराई से यहोवा दुखी (5-8)
नूह को जहाज़ बनाने का काम मिला (9-16)
जलप्रलय का ऐलान (17-22)

7 जहाज़ के अंदर जाना (1-10)
सारी धरती पर जलप्रलय (11-24)

8 जलप्रलय का पानी घटा (1-14)
फाख्ता बाहर भेजी गयी (8-12)
जहाज़ से बाहर निकलना (15-19)
धरती के बारे में परमेश्वर का वादा (20-22)

9 सभी इंसानों के लिए निर्देश (1-7)
खून के बारे में कानून (4-6)
मेघ-धनुष का करार (8-17)
नूह के वंशजों के बारे में भविष्यवाणियाँ (18-29)

10 जातियों की सूची (1-32)
येपेत के वंशज (2-5)
हाम के वंशज (6-20)
यहोवा का विरोधी निमरोद (8-12)
शेम के वंशज (21-31)

11 बाबेल की मीनार (1-4)
यहोवा ने भाषा में गड़बड़ी की (5-9)
शेम से अब्राम तक की वंशावली (10-32)
तिरह का परिवार (27)
अब्राम ने ऊर छोड़ा (31)

12 अब्राम हारान से कनान गया (1-9)
अब्राम से परमेश्वर का वादा (7)
अब्राम और सारै, मिस्र में (10-20)

13 अब्राम कनान लौटा (1-4)
वह और लूत अलग हुए (5-13)
उससे दोबारा वादा किया गया (14-18)

14 अब्राम ने लूत को छुड़ाया (1-16)
मेल्कीसेदेक ने अब्राम को आशीर्वाद दिया (17-24)

15 अब्राम के साथ परमेश्वर का करार (1-21)
400 साल के ज़ुल्म की भविष्यवाणी (13)
अब्राम से दोबारा वादा किया गया (18-21)

16 हाजिरा और इश्माएल (1-16)

17 अब्राहम जातियों का पिता बनेगा (1-8)
अब्राम को अब्राहम नाम दिया गया (5)
खतने का करार (9-14)
सारै को सारा नाम दिया गया (15-17)
बेटे इसहाक के जन्म का वादा (18-27)

18 अब्राहम के पास 3 स्वर्गदूत आए (1-8)
सारा से बेटे का वादा; वह हँसी (9-15)
सदोम के लिए अब्राहम की फरियाद (16-33)

19 लूत के पास स्वर्गदूत आए (1-11)
शहर छोड़ने के लिए कहा गया (12-22)
सदोम और अमोरा का नाश (23-29)
लूत की पत्नी नमक का खंभा बनी (26)
लूत और उसकी बेटियाँ (30-38)
मोआब और अम्मोन की शुरूआत (37, 38)

20 सारा को अबीमेलेक से छुड़ाया गया (1-18)

21 इसहाक का जन्म (1-7)
इश्माएल ने उसकी खिल्ली उड़ायी (8, 9)
हाजिरा और इश्माएल भेज दिए गए (10-21)
अबीमेलेक के साथ अब्राहम का करार (22-34)

22 इसहाक की बलि करने के लिए कहा गया (1-19)
अब्राहम के वंश के ज़रिए आशीष (15-18)
रिबका का परिवार (20-24)

23 सारा की मौत और उसकी कब्र (1-20)

24 इसहाक के लिए पत्नी ढूँढ़ना (1-58)
रिबका, इसहाक से मिलने गयी (59-67)

25 अब्राहम की दूसरी शादी (1-6)
अब्राहम की मौत (7-11)
इश्माएल के बेटे (12-18)
याकूब और एसाव का जन्म (19-26)
एसाव ने अपना अधिकार बेचा (27-34)

26 इसहाक और रिबका गरार में (1-11)
परमेश्वर ने इसहाक से वादा पक्का किया (3-5)
कुओं को लेकर झगड़ा (12-25)
अबीमेलेक के साथ इसहाक का करार (26-33)
एसाव की दो हित्ती पत्नियाँ (34, 35)

27 याकूब को मिला आशीर्वाद (1-29)
एसाव ने पश्चाताप नहीं किया (30-40)
याकूब से एसाव की दुश्मनी (41-46)

28 याकूब को पद्दन-अराम भेजा गया (1-9)
बेतेल में याकूब का सपना (10-22)
परमेश्वर ने याकूब से वादा पक्का किया (13-15)

29 याकूब, राहेल से मिला (1-14)
उसे राहेल से प्यार हो गया (15-20)
लिआ और राहेल से शादी की (21-29)
लिआ से चार बेटे हुए: रूबेन, शिमोन, लेवी और यहूदा (30-35)

30 बिल्हा से दान और नप्ताली (1-8)
जिल्पा से गाद और आशेर (9-13)
लिआ से इस्साकार और जबूलून (14-21)
राहेल से यूसुफ (22-24)
याकूब के जानवर बढ़ गए (25-43)

31 याकूब कनान के लिए निकला (1-18)
लाबान, याकूब के पास पहुँचा (19-35)
लाबान के साथ याकूब का करार (36-55)

32 स्वर्गदूत, याकूब से मिले (1, 2)
एसाव से मिलने की तैयारी (3-23)
याकूब स्वर्गदूत से कुश्ती लड़ा (24-32)
याकूब को इसराएल नाम दिया गया (28)

33 याकूब, एसाव से मिला (1-16)
याकूब शेकेम गया (17-20)

34 दीना का बलात्कार (1-12)
याकूब के बेटों की चाल (13-31)

35 याकूब ने मूर्तियाँ फेंकीं (1-4)
याकूब बेतेल लौटा (5-15)
बिन्यामीन का जन्म; राहेल की मौत (16-20)
इसराएल के 12 बेटे (21-26)
इसहाक की मौत (27-29)

36 एसाव के वंशज (1-30)
एदोम के राजा और शेख (31-43)

37 यूसुफ के सपने (1-11)
यूसुफ से जलनेवाले भाई (12-24)
यूसुफ को बेच दिया गया (25-36)

38 यहूदा और तामार (1-30)

39 यूसुफ, पोतीफर के घर में (1-6)
पोतीफर की पत्नी का विरोध किया (7-20)
यूसुफ जेल में (21-23)

40 कैदियों के सपनों का मतलब (1-19)
“सपनों का मतलब सिर्फ परमेश्‍वर समझा सकता है” (8)
फिरौन के जन्मदिन की दावत (20-23)

41 फिरौन के सपनों का मतलब (1-36)
यूसुफ को ऊँचा उठाया गया (37-46क)
अनाज बाँटने की ज़िम्मेदारी मिली (46ख-57)

42 यूसुफ के भाई मिस्र गए (1-4)
यूसुफ उनसे मिला; उन्हें परखा (5-25)
उसके भाई याकूब के पास लौटे (26-38)

43 यूसुफ के भाई दोबारा मिस्र गए (1-14)
यूसुफ उनसे दोबारा मिला (15-23)
उनके साथ दावत की (24-34)

44 यूसुफ का चाँदी का प्याला (1-17)
बिन्यामीन के लिए मिन्‍नत (18-34)

45 यूसुफ ने अपनी पहचान बतायी (1-15)
उसके भाई याकूब को लाने लौटे (16-28)

46 याकूब का घराना मिस्र में बसा (1-7)
मिस्र में बसनेवालों के नाम (8-27)
यूसुफ, याकूब से गोशेन में मिला (28-34)

47 याकूब, फिरौन से मिला (1-12)
यूसुफ ने बुद्धिमानी से प्रशासन चलाया (13-26)
इसराएल, गोशेन में बस गया (27-31)

48 यूसुफ के दो बेटों को आशीर्वाद (1-12)
एप्रैम को ज़्यादा आशीर्वाद मिला (13-22)

49 याकूब की भविष्यवाणी (1-28)
शीलो, यहूदा से निकलेगा (10)
अपने दफनाए जाने के बारे में निर्देश (29-32)
याकूब की मौत (33)

50 यूसुफ ने उसे कनान में दफनाया (1-14)
यूसुफ ने उन्हें माफ करने का भरोसा दिलाया (15-21)
उसके आखिरी दिन; उसकी मौत (22-26)
अपनी हड्डियों के बारे में आज्ञा (25)

---

1 शुरूआत में परमेश्‍वर ने आकाश*
और पृथ्वी की सृष्टि की।[1]
2 पृथ्वी बेडौल और सूनी* थी। गहरे
पानी# की सतह[2] पर अँधेरा था और
परमेश्‍वर की ज़ोरदार शक्ति△[3] पानी की
सतह[4] के ऊपर यहाँ से वहाँ घूमती हुई
काम कर रही थी।
3 परमेश्‍वर ने कहा, “उजाला हो
जाए” और उजाला हो गया।[5] 4 इसके
बाद परमेश्‍वर ने देखा कि उजाला अच्छा
है और परमेश्‍वर उजाले को अँधेरे
से अलग करने लगा। 5 परमेश्‍वर ने
उजाले को दिन कहा और अँधेरे को
रात।[1] फिर शाम हुई और सुबह हुई। इस
तरह पहला दिन पूरा हुआ।
6 फिर परमेश्‍वर ने कहा, “पानी
ऊपर और नीचे की तरफ, दो हिस्सों में
बँट जाए और बीच में खुली जगह*
बन जाए[2] जो ऊपर के हिस्से को नीचे
के हिस्से से अलग करे।”[3] 7 फिर पर-
मेश्‍वर ने पानी को ऊपर और नीचे की
तरफ दो हिस्सों में बाँट दिया और बीच
में खुली जगह बनायी।[4] और वैसा ही हो
गया। 8 परमेश्‍वर ने उस खुली जगह
को आसमान कहा। फिर शाम हुई और
सुबह हुई। इस तरह दूसरा दिन पूरा
हुआ।
9 फिर परमेश्‍वर ने कहा, “आकाश
के नीचे का सारा पानी एक जगह

अध्य. 1
1 भज 102:25; यश 42:5; यश 45:18; रोम 1:20; इब्र 1:10; प्रक 4:11; प्रक 10:6
2 नीत 8:27, 28
3 भज 33:6; यश 40:26
4 भज 104:5, 6
5 यश 45:7; 2कुर 4:6

दूसरा कॉल.
1 उत 8:22
2 उत 1:20
3 2पत 3:5
4 उत 7:11; नीत 8:27, 28

1:1 *यानी विश्‍व-मंडल जिसमें तारे, ग्रह, आकाश-गंगाएँ वगैरह शामिल हैं। **1:2** *या “खाली।” #या “उफनते पानी।” △या “परमेश्‍वर की पवित्र शक्ति।”

1:6 *यानी वायुमंडल।

इकट्ठा हो जाए और सूखी ज़मीन दिखायी
दे।"[1] और वैसा ही हो गया। **10** पर-
मेश्वर ने सूखी ज़मीन को धरती कहा,[2]
मगर जो पानी इकट्ठा हुआ था उसे समुं-
दर* कहा।[3] और परमेश्वर ने देखा कि
यह अच्छा है।[4] **11** फिर परमेश्वर ने
कहा, "धरती पर घास, बीजवाले पौधे
और ऐसे फलदार पेड़ जिनके फलों में
बीज भी हों, अपनी-अपनी जाति के मुता-
बिक उगें।" और वैसा ही हो गया।
12 धरती से घास, बीजवाले पौधे[5] और
फलदार पेड़, जिनके फलों में बीज होते
हैं अपनी-अपनी जाति के मुताबिक उगने
लगे। तब परमेश्वर ने देखा कि यह
अच्छा है। **13** फिर शाम हुई और सुबह
हुई। इस तरह तीसरा दिन पूरा हुआ।

14 फिर परमेश्वर ने कहा, "आस-
मान में रौशनी देनेवाली ज्योतियाँ[6] चमकें
जो दिन को रात से अलग करें।[7]
इन ज्योतियों की मदद से दिन, साल
और मौसम का पता लगाया जाएगा।[8]
15 ये ज्योतियाँ खुले आसमान में रौशनी
देने का काम करेंगी जिससे धरती को
रौशनी मिलेगी।" और वैसा ही हो गया।
16 परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ
बनायीं। जो ज्योति ज़्यादा बड़ी थी, उसे
दिन पर अधिकार दिया[9] और छोटी
ज्योति को रात पर अधिकार दिया। पर-
मेश्वर ने तारे भी बनाए।[10] **17** इस
तरह परमेश्वर ने उन्हें खुले आसमान
में तैनात किया ताकि धरती को रौशनी
मिले, **18** दिन और रात पर इनका
अधिकार हो और उजाले को अँधेरे से
अलग करें।[11] तब परमेश्वर ने देखा कि
यह अच्छा है। **19** फिर शाम हुई और
सुबह हुई। इस तरह चौथा दिन पूरा
हुआ।

20 फिर परमेश्वर ने कहा, "पानी
जीव-जंतुओं* के झुंडों से भर जाए और
उड़नेवाले जीव धरती के ऊपर फैले
आसमान में उड़ें।"[1] **21** और परमेश्वर
ने समुंदर में रहनेवाले बड़े-बड़े जंतुओं
और तैरनेवाले दूसरे जंतुओं को उनकी
अपनी-अपनी जाति के मुताबिक सिरजा
जो पानी में झुंड बनाकर रहते हैं।
उसने पंछियों और कीट-पतंगों को उनकी
अपनी-अपनी जाति के मुताबिक सिरजा।
और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।
22 परमेश्वर ने उन्हें यह आशीष दी,
"फूलो-फलो, गिनती में बढ़ जाओ और
समुंदर को भर दो[2] और उड़नेवाले जीवों
की गिनती पृथ्वी पर बहुत बढ़ जाए।"
23 फिर शाम हुई और सुबह हुई। इस
तरह पाँचवाँ दिन पूरा हुआ।

24 फिर परमेश्वर ने कहा, "ज़मीन
पर अपनी-अपनी जाति के मुताबिक
जीव-जंतु हों, पालतू जानवर, रेंगने-
वाले जंतु* और जंगली जानवर हों।"[3]
और वैसा ही हो गया। **25** परमेश्वर ने
धरती के जंगली जानवरों, पालतू जान-
वरों और ज़मीन पर रेंगनेवाले सब
जंतुओं को उनकी अपनी-अपनी जाति के
मुताबिक बनाया। और परमेश्वर ने देखा
कि यह अच्छा है।

26 फिर परमेश्वर ने कहा, "आओ
हम[4] इंसान को अपनी छवि में,[5]
अपने जैसा बनाएँ।[6] और वे समुंदर की
मछलियों, आसमान के पंछियों, पालतू
जानवरों और ज़मीन पर रेंगनेवाले सभी

अध्य. 1
1 अय 38:8, 11; भज 104:6-9; भज 136:6
2 भज 95:5
3 नीत 8:29
4 व्य 32:4
5 भज 104:14
6 व्य 4:19
7 भज 104:19
8 उत 8:22
9 भज 136:7, 8
10 भज 8:3; यिर्म 31:35
11 भज 74:16

दूसरा कॉल.
1 उत 2:19
2 नहे 9:6; भज 104:25
3 उत 2:19
4 नीत 8:30; यूह 1:3; कुल 1:16
5 1कुर 11:7
6 उत 5:1; याकू 3:9

1:10 *यहाँ समुंदर का मतलब महासागरों के अलावा नदी-नाले, झील वगैरह भी हो सकता है।

1:20 *शब्दावली में "जीवन" देखें। **1:24** *ज़ाहिर है कि इनमें साँप, छिपकली जैसे जंतु और ऐसे जंतु भी शामिल हैं जो आयत में बताए बाकी जानवरों से अलग हैं।

जंतुओं पर और सारी धरती पर अधि-
कार रखें।”[1] 27 परमेश्वर ने अपनी
छवि में इंसान की सृष्टि की, हाँ, उसने
अपनी ही छवि में इंसान की सृष्टि की।
उसने उन्हें नर और नारी बनाया।[2]
28 फिर परमेश्वर ने उन्हें आशीष
दी और उनसे कहा, “फूलो-फलो और
गिनती में बढ़ जाओ, धरती को आबाद
करो[3] और इस पर अधिकार रखो।[4]
समुंदर की मछलियों, आसमान में उड़ने-
वाले जीवों और ज़मीन पर चलने-फिरने-
वाले सब जीव-जंतुओं पर अधिकार
रखो।”[5]

29 फिर परमेश्वर ने उनसे कहा,
“देखो, मैं तुम्हें धरती के सभी बीजवाले
पौधे और ऐसे सभी पेड़ देता हूँ, जिन पर
बीजवाले फल लगते हैं। ये तुम्हारे खाने
के लिए हों।[6] 30 और मैं धरती के
सभी जंगली जानवरों, आसमान में उड़ने-
वाले सभी जीवों और बाकी सभी जीव-
जंतुओं को, जिनमें जीवन है, खाने के
लिए हरी घास और पेड़-पौधे देता हूँ।”[7]
और वैसा ही हो गया।

31 इसके बाद परमेश्वर ने वह सब
देखा जो उसने बनाया था। वाह! सबकुछ
बहुत बढ़िया था।[8] फिर शाम हुई और
सुबह हुई। इस तरह छठा दिन पूरा हुआ।

2 इस तरह आकाश और पृथ्वी और
जो कुछ उनमें है, उन सबको*
बनाने का काम पूरा हुआ।[9] 2 पर-
मेश्वर जो काम कर रहा था,* उसे सातवें
दिन से पहले उसने पूरा कर दिया।
सारा काम पूरा करने के बाद सातवें
दिन उसने विश्राम करना शुरू किया।[10]
3 परमेश्वर ने सातवें दिन पर आशीष
दी और ऐलान किया कि यह दिन पवित्र
है, क्योंकि इस दिन से परमेश्वर सृष्टि के
सारे कामों से विश्राम ले रहा है। परमेश्वर
ने अपने मकसद के मुताबिक जो-जो
बनाना चाहा था उसकी सृष्टि कर ली थी।

4 यह उस वक्त का ब्यौरा है जब
आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की गयी
थी, वह दिन जब यहोवा* परमेश्वर ने
पृथ्वी और आकाश को बनाया था।[1]

5 मैदान में अब तक झाड़ियाँ और
पौधे नहीं उगे थे, क्योंकि यहोवा परमेश्वर
ने धरती पर पानी नहीं बरसाया था और
ज़मीन जोतने के लिए कोई इंसान नहीं
था। 6 मगर धरती से कोहरा उठता
और सारी ज़मीन को सींचता था।

7 यहोवा परमेश्वर ने ज़मीन की मिट्टी
से आदमी को रचा[2] और उसके नथनों में
जीवन की साँस फूँकी।[3] तब वह जीता-
जागता इंसान* बन गया।[4] 8 यहोवा
परमेश्वर ने पूरब की तरफ, अदन नाम
के इलाके में एक बाग लगाया[5] और
वहाँ उसने आदमी को बसाया जिसे उसने
रचा था।[6] 9 यहोवा परमेश्वर ने
ज़मीन से हर तरह के पेड़ उगाए जो
दिखने में सुंदर और खाने के लिए अच्छे
थे। उसने बाग के बीच में जीवन का
पेड़[7] और अच्छे-बुरे के ज्ञान का पेड़[8] भी
लगाया।

10 अदन से एक नदी बहती थी जो
बाग को सींचती थी और वह आगे जाकर
चार नदियों में बँट गयी। 11 पहली
नदी का नाम है पीशोन। यह वही नदी है
जो हवीला देश के चारों तरफ बहती है
जहाँ सोना पाया जाता है। 12 उस देश

अध्य. 1
1 उत 9:2
2 भज 139:14, मत 19:4, मर 10:6, 1कुर 11:7, 9
3 उत 9:1
4 उत 2:15
5 भज 8:4, 6
6 उत 9:3, भज 104:14, प्रेष 14:17
7 भज 147:9, मत 6:26
8 व्य 32:4, भज 104:24, 1ती 4:4

अध्य. 2
9 नहे 9:6, भज 146:6
10 निर्ग 31:17, इब्र 4:4

दूसरा कॉल.
1 यश 45:18
2 उत 3:19, भज 103:14, सभ 3:20
3 उत 7:22, यश 42:5, प्रेष 17:25
4 1कुर 15:45, 47
5 उत 2:15, उत 3:23
6 उत 1:26
7 उत 3:22, 24, प्रक 2:7
8 उत 2:17

2:1 *शा., “और उनकी सारी सेना को।”
2:2 *या “जो बना रहा था।”

2:4 *परमेश्वर का यह बेजोड़ नाम יהוה (*य-ह-व-ह*) पहली बार इस आयत में आता है। अति. क4 देखें। 2:7 *शब्दावली में “जीवन” देखें।

का सोना बढ़िया होता है। वहाँ गुग्गुल
पौधे का गोंद और सुलेमानी पत्थर भी
पाया जाता है। **13** दूसरी नदी का नाम
गीहोन है। यह वही नदी है जो कूश देश
के चारों तरफ बहती है। **14** तीसरी
नदी का नाम हिद्देकेल* है।[1] यही नदी
अश्शूर देश[2] के पूरब में बहती है। और
चौथी नदी फरात है।[3]

15 यहोवा परमेश्वर ने आदमी को
लेकर अदन के बाग में बसाया ताकि
वह उसमें काम करे और उसकी देखभाल
करे।[4] **16** यहोवा परमेश्वर ने आदमी
को यह आज्ञा भी दी, "तू बाग के
हरेक पेड़ से जी-भरकर खा सकता है।[5]
17 मगर अच्छे-बुरे के ज्ञान का जो पेड़ है
उसका फल तू हरगिज़ न खाना, क्योंकि
जिस दिन तू उसका फल खाएगा उस दिन
ज़रूर मर जाएगा।"[6]

18 फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा,
"आदमी के लिए यह अच्छा नहीं कि वह
अकेला ही रहे। मैं उसके लिए एक मदद-
गार बनाऊँगा, ऐसा साथी जो उससे मेल
खाए।"[7] **19** यहोवा परमेश्वर ज़मीन
की मिट्टी से मैदान के सब जंगली जान-
वर और आसमान में उड़नेवाले सारे
जीव बनाता जा रहा था। वह उन्हें
आदमी के पास लाने लगा ताकि देखे
कि आदमी हरेक को क्या नाम देता है।
आदमी ने उन जीव-जंतुओं को जिस-
जिस नाम से पुकारा वही उनका नाम हो
गया।[8] **20** इस तरह आदमी ने सभी
पालतू जानवरों, आसमान में उड़नेवाले
जीवों और मैदान के सभी जंगली जान-
वरों के नाम रखे। मगर जहाँ तक आदमी
की बात थी, उसके लिए कोई साथी और
मददगार नहीं था जो उससे मेल खाता।
21 इसलिए यहोवा परमेश्वर ने आदमी
को गहरी नींद सुला दिया और जब वह
सो रहा था, तो उसकी एक पसली
निकाली और फिर चीरा बंद कर दिया।
22 और यहोवा परमेश्वर ने आदमी से
जो पसली निकाली थी, उससे एक औरत
बनायी और उसे आदमी के पास ले
आया।[1]

23 तब आदमी ने कहा,

"आखिरकार यह वह है
जिसकी हड्डियाँ मेरी हड्डियों से
रची गयी हैं,
जिसका माँस मेरे माँस से बनाया
गया है।
यह नर में से निकाली गयी है,
इसलिए यह नारी कहलाएगी।"[2]

24 इस वजह से आदमी अपने माता-
पिता को छोड़ देगा और अपनी पत्नी
से जुड़ा रहेगा* और वे दोनों एक तन
होंगे।[3] **25** आदमी और उसकी पत्नी
दोनों नंगे थे,[4] फिर भी वे शर्म महसूस
नहीं करते थे।

3 यहोवा परमेश्वर ने जितने भी जंगली
जानवर बनाए थे, उन सबमें साँप[5]
सबसे सतर्क रहनेवाला* जीव था। साँप
ने औरत से कहा, "क्या यह सच है
कि परमेश्वर ने तुमसे कहा है कि तुम
इस बाग के किसी भी पेड़ का फल मत
खाना?"[6] **2** औरत ने साँप से कहा,
"हम बाग के सब पेड़ों के फल खा सकते
हैं।[7] **3** मगर जो पेड़ बाग के बीच में है[8]
उसके फल के बारे में परमेश्वर ने हमसे
कहा है, 'तुम उसका फल मत खाना,
उसे छूना तक नहीं, वरना मर जाओगे।'"
4 तब साँप ने औरत से कहा, "तुम हर-
गिज़ नहीं मरोगे।[9] **5** परमेश्वर जानता

2:14 *या "टिग्रिस।"

2:24 *या "के साथ ही रहेगा।" **3:1** *या "सबसे चालाक; सबसे धूर्त।"

अध्य. 2
1 दान 10:4
2 उत 10:8, 11
3 उत 15:18; व्य 11:24
4 उत 1:28; उत 2:8; भज 115:16
5 उत 2:8, 9; उत 3:2
6 उत 3:19; भज 146:4; सभ 9:5, 10; यहे 18:4; रोम 5:12; 1कुर 15:22
7 1कुर 11:8, 9; 1ती 2:13
8 उत 1:26

दूसरा कॉल.
1 मर 10:9; 1ती 2:13
2 1कुर 11:8
3 मला 2:16; मत 19:5; मर 10:7, 8; रोम 7:2; 1कुर 6:16; इफ 5:31; इब्र 13:4
4 उत 3:7

अध्य. 3
5 2कुर 11:3; प्रक 12:9; प्रक 20:2
6 उत 2:17
7 उत 2:16
8 उत 2:8, 9
9 यूह 8:44; 1यूह 3:8

है कि जिस दिन तुम उस पेड़ का फल
खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल
जाएँगी, तुम परमेश्वर के जैसे हो जाओगे
और खुद जान लोगे कि अच्छा क्या है
और बुरा क्या।"[1]

6 इसलिए जब औरत ने पेड़ पर नज़र
डाली तो उसे लगा कि उसका फल खाने
के लिए अच्छा है और वह पेड़ उसकी
आँखों को भाने लगा। हाँ, वह दिखने में
बड़ा लुभावना लग रहा था। इसलिए वह
उसका फल तोड़कर खाने लगी।[2] बाद में
जब उसका पति उसके साथ था, तो
उसने उसे भी फल दिया और वह भी
खाने लगा।[3] 7 फिर उन दोनों की
आँखें खुल गयीं और उन्हें एहसास हुआ
कि वे नंगे हैं। इसलिए उन्होंने अंजीर के
पत्ते जोड़कर अपने लिए लंगोट जैसे बना
लिए।[4]

8 फिर शाम के वक्त जब हवा चल
रही थी, आदमी और उसकी पत्नी
ने यहोवा परमेश्वर की आवाज़ सुनी
जो बाग में चला आ रहा था। तब वे दोनों
यहोवा परमेश्वर से छिपने के लिए पेड़ों
के झुरमुट में चले गए। 9 और यहोवा
परमेश्वर आदमी को पुकारता रहा,
"तू कहाँ है?" 10 आखिरकार आदमी
ने कहा, "मैंने बाग में तेरी आवाज़ सुनी
थी, मगर मैं तेरे सामने आने से डर
गया क्योंकि मैं नंगा था। इसलिए मैं
छिप गया।" 11 तब परमेश्वर ने कहा,
"तुझसे किसने कहा कि तू नंगा है?[5]
क्या तूने उस पेड़ का फल खाया है
जिसके बारे में मैंने आज्ञा दी थी कि तू उसे
न खाना?"[6] 12 आदमी ने कहा, "तूने
यह जो औरत मुझे दी है, इसी ने मुझे
उस पेड़ का फल दिया और मैंने खाया।"
13 तब यहोवा परमेश्वर ने औरत से
कहा, "यह तूने क्या किया?" औरत ने
जवाब दिया, "साँप ने मुझे बहका दिया
इसीलिए मैंने खाया।"[1]

14 फिर यहोवा परमेश्वर ने साँप[2] से
कहा, "तूने यह जो किया है इस वजह
से सब पालतू और जंगली जानवरों में
से तू शापित ठहरेगा। तू अपने पेट
के बल रेंगा करेगा और सारी ज़िंदगी धूल
चाटेगा। 15 और मैं तेरे[3] और औरत[4]
के बीच और तेरे वंश[5] और उसके
वंश*[6] के बीच दुश्मनी पैदा करूँगा।[7]
वह तेरा सिर कुचल डालेगा#[8] और तू
उसकी एड़ी को घायल करेगा।"△[9]

16 परमेश्वर ने औरत से कहा, "मैं
तेरे गर्भ के दिनों का दर्द बहुत बढ़ा दूँगा।
तू दर्द से तड़पती हुई बच्चे पैदा करेगी। तू
अपने पति का साथ पाने के लिए तरसती
रहेगी और वह तुझ पर हुक्म चलाएगा।"
17 और परमेश्वर ने आदम* से
कहा, "तूने अपनी पत्नी की बात मानकर
उस पेड़ का फल खा लिया जिसके बारे में
मैंने आज्ञा दी थी कि तू मत खाना।[10] इस-
लिए तेरी वजह से ज़मीन शापित है।[11] तू
सारी ज़िंदगी दुख-दर्द के साथ इसकी
उपज खाया करेगा।[12] 18 ज़मीन पर
काँटे और कँटीली झाड़ियाँ उगेंगी और तू
खेत की उपज खाया करेगा। 19 सारी
ज़िंदगी तुझे रोटी* के लिए पसीना बहाना
होगा और आखिर में तू मिट्टी में मिल
जाएगा क्योंकि तू उसी से बनाया गया
है।[13] तू मिट्टी ही है और वापस मिट्टी
में मिल जाएगा।"[14]

20 इसके बाद, आदम ने अपनी पत्नी
का नाम हव्वा* रखा क्योंकि वह दुनिया

अध्य. 3
1 उत 3:22
2 2कुर 11:3; 1ती 2:14; याकू 1:14, 15
3 रोम 5:12
4 उत 3:21
5 उत 2:25
6 उत 2:17

दूसरा कॉल.
1 2कुर 11:3; 1ती 2:14
2 उत 3:1
3 प्रक 12:9
4 प्रक 12:1
5 यूह 8:44; 1यूह 3:10
6 उत 22:18; उत 49:10; गल 3:16, 29
7 प्रक 12:7, 17
8 प्रक 20:2, 10
9 मत 27:50; प्रेष 3:15
10 उत 2:17
11 उत 5:29
12 रोम 8:20
13 उत 2:7
14 भज 104:29; सभ 3:20; सभ 12:7

3:15 *शा., "बीज।" #या "ज़ख्मी करेगा; घायल करेगा।" △या "ज़ख्मी करेगा; कुच-लेगा।" **3:17** *मतलब "धरती का इंसान; मानवजाति।" **3:19** *या "खाना।" **3:20** *मतलब "जीवित जन।"

में जीनेवाले सभी इंसानों की माँ बनती।[1]
21 और यहोवा परमेश्वर ने आदम और
उसकी पत्नी के लिए चमड़े की लंबी-लंबी
पोशाकें बनायीं।[2] 22 फिर यहोवा पर-
मेश्वर ने कहा, “अब इंसान इस मायने
में हमारे बराबर हो गया है कि वह खुद
जानने लगा है* कि अच्छा क्या है और
बुरा क्या।[3] अब कहीं ऐसा न हो कि
वह हाथ बढ़ाकर जीवन के पेड़[4] का
फल भी तोड़कर खा ले और हमेशा तक
जीता रहे,—” 23 तब यहोवा पर-
मेश्वर ने उसे अदन के बाग से बाहर
निकाल दिया[5] ताकि वह उस ज़मीन को
जोते जिसकी मिट्टी से उसे बनाया गया
था।[6] 24 उसने इंसान को बाहर खदेड़
दिया और जीवन के पेड़ तक जानेवाले
रास्ते का पहरा देने के लिए अदन
के बाग के पूरब में करूब[7] तैनात किए
और लगातार घूमनेवाली एक तलवार
भी रखी जिससे आग की लपटें निकल
रही थीं।

4 आदम ने अपनी पत्नी हव्वा के साथ
संबंध रखे और वह गर्भवती हुई।[8]
जब हव्वा ने कैन[9] को जन्म दिया तो उसने
कहा, “मैंने यहोवा की मदद से एक बेटे
को जन्म दिया है।” 2 बाद में उसने कैन
के भाई हाबिल[10] को जन्म दिया।

बड़ा होकर हाबिल चरवाहा बना और
कैन किसान। 3 एक दिन कैन ने ज़मीन
की उपज में से कुछ चीज़ें लाकर यहोवा
को अर्पित कीं। 4 मगर हाबिल ने
अपनी भेड़ों में से कुछ पहलौठे मेम्ने और
उनकी चरबी बलिदान में चढ़ायी।[11]
यहोवा ने हाबिल और उसके बलिदान को
तो मंज़ूर किया,[12] 5 मगर कैन और
उसके चढ़ावे को मंज़ूर नहीं किया। यह
देखकर कैन गुस्से से भर गया और उसका
मुँह उतर गया। 6 तब यहोवा ने कैन से
कहा, “तू क्यों इतने गुस्से में है? तेरा मुँह
क्यों उतरा हुआ है? 7 अगर तू अच्छे
काम करने लगे तो क्या मैं तुझे मंज़ूर
नहीं करूँगा? लेकिन अगर तू अच्छाई
की तरफ न फिरे, तो जान ले कि पाप
तुझे धर-दबोचने के लिए दरवाज़े पर घात
लगाए बैठा है। इसलिए तू पाप करने की
इच्छा को काबू में कर ले।”

8 इसके बाद कैन ने अपने भाई
हाबिल से कहा, “आओ, हम मैदान में
चलें।” जब वे मैदान में थे तब कैन ने
अपने भाई हाबिल पर हमला किया और
उसे मार डाला।[1] 9 बाद में यहोवा ने
कैन से कहा, “तेरा भाई हाबिल कहाँ
है?” उसने कहा, “मुझे क्या पता? मैं
क्या अपने भाई का रखवाला हूँ?”
10 तब परमेश्वर ने कहा, “यह तूने क्या
कर डाला? सुन! तेरे भाई का खून ज़मीन
से चीख-चीखकर मुझे न्याय की दुहाई दे
रहा है।[2] 11 इसलिए अब मैं तुझे शाप
देता हूँ कि तू इस जगह से खदेड़
दिया जाएगा, जिसने अपना मुँह खोल-
कर तेरे हाथों तेरे भाई का खून पीया है।[3]
12 जब तू ज़मीन जोतेगा तो वह तुझे
अच्छी उपज* नहीं देगी। तू एक भगोड़े
की ज़िंदगी जीएगा और धरती पर मारा-
मारा फिरेगा।” 13 तब कैन ने यहोवा
से कहा, “तूने मेरी गलती की इतनी बड़ी
सज़ा दी है, मैं इसे कैसे सह पाऊँगा?
14 आज तू मुझे इस जगह से भगा रहा है
और अपनी नज़रों से दूर कर रहा है। तूने
मुझे भगोड़ा बनने और धरती पर मारा-
मारा फिरने के लिए छोड़ दिया है। अगर
मैं किसी के हाथ पड़ गया तो वह मुझे
ज़रूर मार डालेगा।” 15 तब यहोवा ने
उससे कहा, “नहीं, ऐसा नहीं होगा।

अध्य. 3
1 प्रेष 17:26
2 उत 3:7
3 उत 3:5
4 उत 2:9
5 उत 2:8
6 उत 3:19
7 भज 80:1; यश 37:16; यहे 10:4

अध्य. 4
8 उत 1:28
9 1यूह 3:10-12; यहू 11
10 मत 23:35
11 निर्ग 13:12
12 इब्र 11:4

दूसरा कॉल.
1 मत 23:35; 1यूह 3:10-12; यहू 11
2 इब्र 12:24
3 उत 9:5

3:22 *या “खुद तय करने लगा है।”

4:12 *शा., “शक्ति।”

अगर किसी ने कैन का खून किया, तो बदले में उसे सात गुना ज़्यादा कड़ी सज़ा दी जाएगी।”

फिर यहोवा ने कैन के लिए एक निशानी ठहरायी ताकि कोई उसे पाने पर मार न डाले। **16** फिर कैन यहोवा के सामने से चला गया और अदन के पूरब में[1] भगोड़ों के देश* में जा बसा।

17 बाद में कैन ने अपनी पत्नी[2] के साथ संबंध रखे और वह गर्भवती हुई और उसने हनोक को जन्म दिया। फिर कैन ने एक शहर बनाया और अपने बेटे के नाम पर शहर का नाम हनोक रखा। **18** बाद में हनोक से ईराद पैदा हुआ। ईराद से महूयाएल पैदा हुआ, महूयाएल से मतूशाएल और मतूशाएल से लेमेक पैदा हुआ।

19 लेमेक ने दो औरतों से शादी की। पहली का नाम आदा था और दूसरी का सिल्ला। **20** आदा ने याबाल को जन्म दिया। याबाल ने ही तंबुओं में रहने और मवेशी पालने के काम की शुरूआत की थी। **21** उसके भाई का नाम यूबाल था। उसने सुरमंडल और बाँसुरी बजाने की शुरूआत की थी। **22** सिल्ला ने तूबल-कैन को जन्म दिया। तूबल-कैन ताँबे और लोहे के हर तरह के औज़ार बनाता था। उसकी बहन थी नामा। **23** फिर लेमेक ने आदा और सिल्ला के लिए, जो उसकी पत्नियाँ थीं, यह कविता रची:

“लेमेक की पत्नियो, मेरी आवाज़
सुनो,
मेरी बात पर कान लगाओ:
मैंने एक आदमी को मार डाला
जिसने मुझे ज़ख्मी किया,
हाँ, एक जवान आदमी को, जिसने
मुझ पर वार किया।
24 अगर कैन के कातिल को 7 गुना
ज़्यादा कड़ी सज़ा दी जाएगी,[1]
तो लेमेक के कातिल को 77 गुना
ज़्यादा कड़ी सज़ा दी जाए।”

25 आदम ने फिर से अपनी पत्नी के साथ संबंध रखे और उसने एक बेटे को जन्म दिया। हव्वा ने उसका नाम शेत*[2] रखा क्योंकि उसने कहा, “परमेश्वर ने हाबिल की जगह मुझे एक और वंश दिया है, क्योंकि कैन ने हाबिल को मार डाला।”[3] **26** शेत का भी एक बेटा हुआ और शेत ने उसका नाम एनोश[4] रखा। उन दिनों लोगों ने यहोवा का नाम पुकारना शुरू किया।

5 यह है आदम के बारे में ब्यौरा।* जब परमेश्वर ने आदम की सृष्टि की तो उसे अपने जैसा बनाया था।[5] **2** उसने इंसान को नर और नारी बनाया।[6] जिस दिन परमेश्वर ने उनकी सृष्टि की,[7] उस दिन उन्हें आशीष दी और उन्हें इंसान* कहा।

3 जब आदम 130 साल का हुआ तो उसका एक बेटा हुआ जो उसके ही जैसा और उसकी छवि था। आदम ने उसका नाम शेत[8] रखा। **4** शेत के पैदा होने के बाद आदम 800 साल और जीया। उसके और भी बेटे-बेटियाँ हुए। **5** आदम कुल मिलाकर 930 साल जीया और फिर मर गया।[9]

6 जब शेत 105 साल का हुआ तो उसका एक बेटा हुआ जिसका नाम एनोश[10] था। **7** एनोश के पैदा होने के

अध्य. 4
1 उत 2:8
2 उत 5:4

दूसरा कॉल.
1 उत 4:15
2 उत 5:3, 1इत 1:1
3 उत 4:8, मत 23:35, इब्र 11:4
4 उत 5:6, लूक 3:23, 38

अध्य. 5
5 उत 1:26, याकू 3:9
6 उत 1:27, मर 10:6
7 उत 2:23, यश 45:12, मत 19:4
8 उत 4:25
9 उत 2:17, उत 3:19, रोम 6:23, 1कुर 15:22
10 उत 4:26, लूक 3:23, 38

4:16 *या “नोद देश।”

4:25 *मतलब “ठहराया गया; रखा गया; बिठाया गया।” **5:1** *शा., “की पीढ़ियों के बारे में किताब।” **5:2** *या “आदम; मानव-जाति।”

बाद शेत 807 साल और जीया। उसके
और भी बेटे-बेटियाँ हुए। **8** शेत कुल
मिलाकर 912 साल जीया और फिर मर
गया।

9 जब एनोश 90 साल का हुआ तो
उसका एक बेटा हुआ जिसका नाम केनान
था। **10** केनान के पैदा होने के बाद
एनोश 815 साल और जीया। उसके
और भी बेटे-बेटियाँ हुए। **11** एनोश
कुल मिलाकर 905 साल जीया और
फिर मर गया।

12 जब केनान 70 साल का हुआ तो
उसका एक बेटा हुआ जिसका नाम महल-
लेल[1] था। **13** महल-लेल के पैदा होने
के बाद केनान 840 साल और
जीया। उसके और भी बेटे-बेटियाँ हुए।
14 केनान कुल मिलाकर 910 साल
जीया और फिर मर गया।

15 जब महल-लेल 65 साल का
हुआ तो उसका एक बेटा हुआ जिसका
नाम येरेद[2] था। **16** येरेद के पैदा होने
के बाद महल-लेल 830 साल और
जीया। उसके और भी बेटे-बेटियाँ हुए।
17 महल-लेल कुल मिलाकर 895 साल
जीया और फिर मर गया।

18 जब येरेद 162 साल का हुआ
तो उसका एक बेटा हुआ जिसका नाम
हनोक[3] था। **19** हनोक के पैदा होने के
बाद येरेद 800 साल और जीया। उसके
और भी बेटे-बेटियाँ हुए। **20** येरेद
कुल मिलाकर 962 साल जीया और
फिर मर गया।

21 जब हनोक 65 साल का हुआ तो
उसका एक बेटा हुआ जिसका नाम
मतूशेलह[4] था। **22** मतूशेलह के पैदा
होने के बाद हनोक 300 साल और
जीया और वह सच्चे परमेश्वर* के साथ-

5:22 *शब्दावली देखें।

अध्य. 5
1 लूक 3:23, 37
2 लूक 3:23, 37
3 यहू 14
4 लूक 3:23, 37

दूसरा कॉल.
1 उत 6:9
व्य 8:6
व्य 13:4
3यूह 4
यहू 14, 15
2 यूह 3:13
इब्र 11:5
3 लूक 3:23, 36
4 उत 7:1
यहे 14:14
मत 24:37
इब्र 11:7
1पत 3:20
2पत 2:5
5 उत 3:17
6 उत 10:21
उत 11:10
लूक 3:23, 36
7 उत 6:10
उत 10:6
8 उत 10:2

अध्य. 6
9 अय 1:6
अय 38:7
2पत 2:4
यहू 6

साथ चलता रहा। उसके और भी बेटे-
बेटियाँ हुए। **23** हनोक कुल मिलाकर
365 साल जीया। **24** हनोक सच्चे
परमेश्वर के साथ-साथ चलता रहा।[1]
इसके बाद वह नहीं रहा क्योंकि परमेश्वर
ने उसे ले लिया।[2]

25 जब मतूशेलह 187 साल का
हुआ तो उसका एक बेटा हुआ जिसका
नाम लेमेक[3] था। **26** लेमेक के पैदा
होने के बाद मतूशेलह 782 साल और
जीया। उसके और भी बेटे-बेटियाँ हुए।
27 मतूशेलह कुल मिलाकर 969 साल
जीया और फिर मर गया।

28 जब लेमेक 182 साल का हुआ
तो उसका एक बेटा हुआ। **29** उसने
यह कहकर उसका नाम नूह*[4] रखा
कि यह लड़का बड़ा होकर हमारी
ज़िंदगी को चैन# दिलाएगा। ज़मीन पर
यहोवा के शाप की वजह से हमें जो
कड़ी मेहनत करनी पड़ती है और खून-
पसीना बहाना पड़ता है,[5] उन सारी तक-
लीफों से यह लड़का हमें राहत दिलाए-
गा। **30** नूह के पैदा होने के बाद लेमेक
595 साल और जीया। उसके और भी
बेटे-बेटियाँ हुए। **31** लेमेक कुल मिला-
कर 777 साल जीया और फिर मर
गया।

32 जब नूह 500 साल का हुआ तो
उसके तीन बेटे हुए: शेम,[6] हाम[7] और
येपेत।[8]

6 धरती पर इंसानों की गिनती
बढ़ने लगी और उनकी लड़कियाँ भी
पैदा हुईं। **2** फिर सच्चे परमेश्वर के
बेटे*[9] धरती की औरतों पर ध्यान देने

5:29 *मुमकिन है कि इसका मतलब
"आराम; दिलासा" है। #या "राहत।" **6:2**
*परमेश्वर के स्वर्गदूतों के लिए इस्तेमाल
होनेवाला इब्रानी मुहावरा।

लगे कि वे कितनी खूबसूरत हैं। इसलिए उन्हें जो-जो अच्छी लगीं उन सबको अपनी पत्नी बना लिया। **3** तब यहोवा ने कहा, “मैं इंसान को हमेशा तक बरदाश्त नहीं करूँगा,[1] क्योंकि वह पापी है।* इसलिए उसके दिन 120 साल के होंगे।”[2]

4 उन दिनों और उसके बाद भी धरती पर नफिलीम* हुआ करते थे। उस दौरान सच्चे परमेश्वर के बेटे औरतों के साथ संबंध रखते थे और इन औरतों से उनके बेटे पैदा हुए। यही बेटे नफिलीम कहलाए जो बड़े ताकतवर थे और उस ज़माने के लोगों में उनका बहुत नाम था।

5 यहोवा ने देखा कि धरती पर इंसान की दुष्टता बहुत बढ़ गयी है और उसके मन का झुकाव हर वक्त बुराई की तरफ होता है।[3] **6** यहोवा को इस बात का बहुत दुख* हुआ कि उसने धरती पर इंसान को बनाया और उसका मन बहुत उदास हुआ।#[4] **7** इसलिए यहोवा ने कहा, “मैं धरती से इंसान को मिटा दूँगा जिसे मैंने सिरजा था। मुझे दुख है कि मैंने उसे बनाया। मैं इंसान के साथ-साथ पालतू जानवरों, रेंगनेवाले जंतुओं, पंछियों और कीट-पतंगों को भी नाश कर दूँगा।” **8** मगर नूह एक ऐसा इंसान था जिसने यहोवा को खुश किया।

9 ये हैं नूह के दिनों में हुई घटनाएँ।

नूह एक नेक इंसान था।[5] वह अपने ज़माने के लोगों से अलग था। उसका चालचलन बिलकुल बेदाग था।* नूह सच्चे परमेश्वर के साथ-साथ चलता रहा।[1] **10** बाद में उसके तीन बेटे हुए: शेम, हाम और येपेत।[2] **11** उस वक्त की दुनिया सच्चे परमेश्वर की नज़र में बिलकुल बिगड़ चुकी थी और हर तरफ खून-खराबा हो रहा था। **12** हाँ, परमेश्वर ने दुनिया पर नज़र डाली और देखा कि यह बिलकुल बिगड़ चुकी है[3] और सब लोग बुरे काम कर रहे हैं।[4]

13 इसके बाद परमेश्वर ने नूह से कहा, “मैंने फैसला किया है कि मैं धरती से सब इंसानों को मिटा दूँगा, क्योंकि उन्होंने हर तरफ मार-काट मचा रखी है। इंसान के साथ-साथ मैं धरती को भी तबाह कर दूँगा।[5] **14** इसलिए तू अपने लिए एक जहाज़* बना।[6] उसे बनाने के लिए तू रालदार पेड़ की लकड़ी लेना और जहाज़ में अलग-अलग खाने बनाना। जहाज़ पर हर तरफ, अंदर-बाहर तारकोल#[7] लगाना। **15** जहाज़ इस तरह बनाना: उसकी लंबाई 300 हाथ, चौड़ाई 50 हाथ और ऊँचाई 30 हाथ हो।* **16** जहाज़ की छत से एक हाथ नीचे एक खिड़की* बनाना जिससे जहाज़ के अंदर रौशनी आ सके। जहाज़ के एक तरफ दरवाज़ा बनाना[8]

6:3 *या शायद, “क्योंकि वह अपने शरीर की इच्छाओं के मुताबिक काम करता है।” **6:4** *शायद इसका मतलब है, “गिरानेवाले,” यानी वे जो दूसरों को गिराते हैं। शब्दावली देखें। **6:6** *या “पछतावा।” #या “उसके दिल को ठेस पहुँची।”

6:9 *या “वह निर्दोष था।” **6:14** *शा., “बक्सा।” यह एक बड़े आयताकार बक्से जैसा जलपोत था। माना जाता है कि इस जलपोत के कोने चौकोर थे और निचला हिस्सा सपाट था। #या “डामर।” **6:15** *यानी करीब 438 फुट लंबा, 73 फुट चौड़ा और 44 फुट ऊँचा। **6:16** *इब्रानी में *सोहर।* कुछ लोगों का मानना है कि *सोहर* रौशनी के लिए बनायी गयी खिड़की या खुला भाग नहीं बल्कि एक छत थी जिसमें एक हाथ लंबी ढलान थी।

अध्य. 6

1 उत 7:4 1पत 3:20
2 2पत 3:9
3 उत 8:21 यिर्म 17:9 मत 15:19
4 भज 78:40, 41
5 उत 7:1 यहे 14:14 इब्र 11:7

दूसरा कॉल.

1 2पत 2:5
2 उत 5:32
3 प्रक 11:18
4 मत 24:37-39 2पत 2:5
5 उत 7:4
6 इब्र 11:7
7 उत 14:10 निर्ग 2:3
8 उत 7:16

और उसमें तीन तल बनाना, निचला तल, बीच का तल और ऊपरी तल।

17 मैं पूरी धरती पर एक जलप्रलय लानेवाला हूँ[1] और उसमें सभी इंसान और जीव-जंतु नाश हो जाएँगे जिनमें जीवन की साँस* है। धरती पर जो कुछ है वह सब मिट जाएगा।[2] **18** मगर मैं तेरे साथ एक करार करता हूँ कि मैं तुझे बचाऊँगा। तू जहाज़ के अंदर जाना, तेरे साथ तेरी पत्नी, तेरे बेटे और तेरी बहुएँ भी जाएँ।[3] **19** तू सभी किस्म के जीव-जंतुओं में से नर-मादा[4] का एक-एक जोड़ा जहाज़ में ले जाना[5] ताकि तेरे साथ-साथ वे भी ज़िंदा बचें। **20** अलग-अलग जाति के पंछियों और कीट-पतंगों, अलग-अलग जाति के पालतू जानवरों और ज़मीन पर रेंगनेवाले अलग-अलग जाति के जीव-जंतुओं में से एक-एक जोड़ा तेरे पास जहाज़ में आएगा ताकि वे ज़िंदा बचें।[6] **21** तू अपने लिए और जानवरों के लिए हर तरह की खाने की चीज़ इकट्ठा करके जहाज़ के अंदर ले जाना।"[7]

22 नूह ने हर काम वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी। उसे जैसा बताया गया था, उसने ठीक वैसा ही किया।[8]

7 इसके बाद यहोवा ने नूह से कहा, "तू अपने पूरे परिवार को लेकर जहाज़ के अंदर चला जा, क्योंकि इस ज़माने के सब लोगों में मैंने सिर्फ तुझी को नेक इंसान पाया है।[9] **2** तू अपने साथ शुद्ध जानवरों की हर जाति में से सात-सात जानवर* ले जाना[10] जिनमें नर और मादा दोनों हों। और सभी अशुद्ध जानवरों में से नर-मादा का सिर्फ एक-एक जोड़ा ले जाना। **3** आसमान में उड़नेवाले पंछियों और कीट-पतंगों में से भी सात-सात* ले जाना, जिनमें नर और मादा दोनों हों ताकि इनकी नसल सारी धरती पर कायम रहे।[1] **4** अब सिर्फ सात दिन बचे हैं, मैं 40 दिन और 40 रात[2] तक धरती पर पानी बरसाऊँगा।[3] मैंने धरती पर जितने भी इंसान और जीव-जंतु बनाए हैं, उन सबको मिटा दूँगा।"[4] **5** यहोवा ने नूह को जो-जो काम करने की आज्ञा दी थी, वह सब उसने किया।

6 जब पृथ्वी पर जलप्रलय आया तब नूह 600 साल का था।[5] **7** जलप्रलय के शुरू होने से पहले नूह अपनी पत्नी, अपने बेटों और अपनी बहुओं के साथ जहाज़ के अंदर चला गया।[6] **8** और शुद्ध और अशुद्ध जानवरों, उड़नेवाले जीवों और ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले सब जीव-जंतुओं[7] में से **9** नर-मादा के जोड़े जहाज़ में नूह के पास गए, ठीक जैसे परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी थी। **10** फिर सात दिन बाद पृथ्वी पर जलप्रलय आ गया।

11 नूह की ज़िंदगी के 600 साल के दूसरे महीने के 17वें दिन धरती पर जलप्रलय आया। उस दिन आकाश में पानी के सभी सोते फूट पड़े और पानी के फाटक खुल गए।[8] **12** और धरती पर 40 दिन और 40 रात लगातार मूसलाधार बारिश होती रही। **13** उसी दिन नूह जहाज़ के अंदर गया था और उसके साथ उसकी पत्नी, उसके बेटे शेम, हाम और येपेत[9] और उनकी पत्नियाँ भी गयीं।[10] **14** और हर जाति के जंगली

6:17 *या "जीवन-शक्ति।" शब्दावली में "रूआख; नफ्मा" देखें। **7:2** *या शायद, "हर शुद्ध जानवर के सात जोड़े।"

7:3 *या शायद, "आसमान में उड़नेवाले पंछियों और कीट-पतंगों के सात जोड़े।"

अध्य. 6

1 उत 1:7
उत 7:6, 11

2 उत 7:21
भज 104:29
मत 24:39
2पत 2:5

3 उत 7:13

4 उत 7:2

5 उत 8:17

6 उत 7:14, 15

7 उत 1:29, 30

8 निर्ग 40:16
इब्र 11:7

अध्य. 7

9 उत 6:9
इब्र 10:38
इब्र 11:7
1पत 3:12
2पत 2:5, 9

10 उत 8:20

दूसरा कॉल.

1 उत 7:23
उत 8:19

2 उत 7:11, 12

3 उत 2:5

4 उत 6:7, 17

5 उत 8:13

6 लूक 17:27
इब्र 11:7

7 उत 6:19, 20

8 उत 1:7
उत 8:2

9 उत 9:18
1इत 1:4

10 उत 6:18
1पत 3:20
2पत 2:5

जानवर, हर जाति के पालतू जानवर, ज़मीन पर रेंगनेवाले हर जाति के जीव-जंतु और हर जाति के उड़नेवाले पंछी और कीट-पतंगे भी अंदर गए। **15** हर किस्म के जीव-जंतुओं के जोड़े, जिनमें जीवन की साँस* है, जहाज़ में नूह के पास गए। **16** इस तरह ठीक जैसे परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी थी, हर किस्म के जीव-जंतुओं में से नर-मादा के जोड़े जहाज़ में गए। इसके बाद यहोवा ने जहाज़ का दरवाज़ा बंद कर दिया।

17 धरती पर 40 दिन लगातार बारिश होती रही, पानी बढ़ता गया और जहाज़ ज़मीन की सतह से बहुत ऊपर उठ गया और पानी पर तैरने लगा। **18** पानी बढ़ते-बढ़ते पूरी पृथ्वी पर फैल गया, फिर भी जहाज़ पानी की सतह पर तैरता रहा। **19** पानी इतना बढ़ गया कि पूरी धरती पर जितने भी ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे सब डूब गए।[1] **20** पानी पहाड़ों से 15 हाथ* ऊँचाई तक बढ़ गया था।

21 इस तरह धरती पर चलने-फिरनेवाले सभी जीव-जंतु और इंसान मिट गए।[2] उड़नेवाले जीव, पालतू जानवर, जंगली जानवर, झुंड में रहनेवाले छोटे-छोटे जीव-जंतु, इंसान सब-के-सब खत्म हो गए।[3] **22** ज़मीन पर रहनेवाले सभी जीव, जिनके नथनों में जीवन की साँस* चलती थी, मर गए।[4] **23** इस तरह परमेश्वर ने धरती से सभी जीवों का सफाया कर दिया। इंसान, जानवर, रेंगनेवाले जीव-जंतु, आसमान में उड़नेवाले जीव, सब-के-सब धरती से मिट गए।[5] सिर्फ नूह और जो उसके साथ जहाज़ में थे वे ही ज़िंदा बचे।[1] **24** और पूरी धरती जलप्रलय के पानी में 150 दिन तक डूबी रही।[2]

8 मगर परमेश्वर ने नूह पर और उसके साथ जहाज़ में जितने जंगली और पालतू जानवर थे,[3] उन सब पर ध्यान दिया* और उनकी खातिर पूरी धरती पर हवा चलायी जिससे जलप्रलय का पानी कम होने लगा। **2** अब तक धरती पर पानी बरसना रुक गया था* क्योंकि आकाश में पानी के सोते और पानी के फाटक बंद कर दिए गए थे।[4] **3** फिर धरती पर पानी का स्तर लगातार घटने लगा और 150 दिन के बीतने पर पानी काफी कम हो गया। **4** सातवें महीने के 17वें दिन, जहाज़ अरारात के पहाड़ों पर जा ठहरा। **5** और पानी दसवें महीने तक लगातार घटता गया। दसवें महीने के पहले दिन पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आने लगीं।[5]

6 फिर 40 दिन बाद नूह ने वह खिड़की[6] खोली जो उसने जहाज़ में बनायी थी **7** और एक कौवे को बाहर छोड़ा। वह बाहर उड़ता और वापस जहाज़ में लौट आता था। कौवा तब तक ऐसा करता रहा जब तक कि धरती पर पानी सूख न गया।

8 बाद में नूह ने एक फाख्ता बाहर छोड़ी ताकि देखे कि ज़मीन पर पानी कम हुआ है या नहीं। **9** मगर धरती पर अब भी चारों तरफ पानी था[7] और फाख्ते को कहीं पंजा टेकने की* भी जगह नहीं मिली। वह वापस नूह के पास लौट आयी और नूह ने हाथ बढ़ाकर उसे जहाज़ के अंदर ले लिया। **10** नूह ने

अध्य. 7
1 2पत 3:5, 6
2 उत 6:7, 17
3 लूक 17:27
4 उत 2:7, उत 7:15, सभ 3:19, यश 42:5
5 उत 6:7, 2पत 3:5, 6

दूसरा कॉल.
1 मत 24:37-39, 1पत 3:20, 2पत 2:5, 9
2 उत 8:3

अध्य. 8
3 उत 6:19, 20, इब्र 11:7
4 उत 7:11, 12
5 उत 7:20
6 उत 6:16
7 उत 7:19

7:15, 22 *या "जीवन-शक्ति।" **7:20** *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

8:1 *शा., "सबको याद किया।" **8:2** *या "रोक दिया गया था।" **8:9** *या "अपने पैर के तले टेकने के लिए कोई।"

सात दिन और इंतज़ार किया और एक बार फिर फाख्ते को जहाज़ के बाहर छोड़ा। **11** शाम को फाख्ता लौट आयी और नूह ने देखा कि उसकी चोंच में जैतून की एक कोमल पत्ती है! इससे नूह जान गया कि धरती पर पानी कम हो गया है।[1] **12** उसने सात दिन और इंतज़ार किया। इसके बाद उसने फाख्ते को फिर से बाहर छोड़ा। मगर इस बार वह नूह के पास लौटकर नहीं आयी।

13 नूह की ज़िंदगी के 601 साल[2] के पहले महीने के पहले दिन तक, धरती पर पानी लगभग सूख गया था। जब नूह ने जहाज़ की छत खोली तो उसने देखा कि ज़मीन सूखने लगी है। **14** दूसरे महीने के 27वें दिन तक धरती पूरी तरह सूख गयी थी।

15 अब परमेश्वर ने नूह से कहा, **16** "तू अपनी पत्नी, अपने बेटों और अपनी बहुओं को लेकर जहाज़ से बाहर निकल आ।[3] **17** जहाज़ में तेरे साथ जितने भी जीव-जंतु हैं,[4] हर तरह के जानवर, उड़नेवाले जीव और धरती पर रेंगनेवाले जंतु, सबको बाहर ले आ ताकि वे फूलें-फलें और धरती पर उनकी गिनती बढ़ जाए।"[5]

18 तब नूह अपनी पत्नी, बेटों[6] और बहुओं को लेकर जहाज़ से बाहर निकल आया। **19** और जहाज़ में जितने भी जीव-जंतु थे, उड़नेवाले जीव, रेंगनेवाले जंतु और दूसरे जानवर, सब अपने-अपने झुंड के साथ बाहर आ गए।[7] **20** फिर नूह ने यहोवा के लिए एक वेदी बनायी[8] और उस पर कुछ शुद्ध जानवरों और कुछ शुद्ध पंछियों[9] की होम-बलि चढ़ायी।[10] **21** यहोवा इन बलिदानों की सुगंध पाकर खुश हुआ। इसलिए यहोवा ने अपने मन में कहा, "अब मैं फिर कभी इंसान की वजह से ज़मीन को शाप नहीं दूँगा,[1] क्योंकि बचपन से इंसान के मन का झुकाव बुराई की तरफ होता है।[2] और मैं फिर कभी धरती पर रहनेवाले सभी जीवों का नाश नहीं करूँगा, जैसा मैंने अभी किया है।[3] **22** अब से धरती पर दिन और रात, ठंड और गरमी, बोआई और कटाई, सर्दियों और गरमियों का सिलसिला चलता रहेगा, कभी बंद नहीं होगा।"[4]

9 परमेश्वर ने नूह और उसके बेटों को आशीष दी और उनसे कहा, "फूलो-फलो, गिनती में बढ़ जाओ और धरती को आबाद करो।[5] **2** तुम्हारा डर धरती के सभी जानवरों में बना रहेगा। ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले सभी जीव-जंतुओं, आसमान में उड़नेवाले सभी पंछियों और समुंदर की सभी मछलियों में तुम्हारा खौफ बना रहेगा। मैं इन सबको तुम्हारे हाथ में सौंपता हूँ।*[6] **3** तुम हर चलते-फिरते जानवर को जो ज़िंदा है, मारकर खा सकते हो।[7] मैं ये सब तुम्हें खाने के लिए देता हूँ, ठीक जैसे मैंने तुम्हें साग-पात दिया था।[8] **4** लेकिन तुम माँस के साथ खून मत खाना[9] क्योंकि खून जीवन* है।[10] **5** और अगर कोई तुम्हारा खून बहाए, जो कि तुम्हारा जीवन* है, तो मैं उससे तुम्हारे खून का हिसाब माँगूँगा। अगर कोई जानवर तुम्हारी जान ले तो उसे मार डाला जाएगा। और अगर कोई इंसान ऐसा करे, तो मैं उससे तुम्हारी जान का हिसाब लूँगा। उसे अपनी जान गँवानी होगी क्योंकि उसने अपने भाई की जान ली है।[11] **6** जो किसी इंसान का खून बहाएगा उसका खून भी इंसान के

9:2 *या "तुम्हारे अधिकार में करता हूँ।"
9:4, 5 *शब्दावली देखें।

अध्य. 8
1 उत 7:20, उत 8:3
2 उत 7:6, 11
3 उत 7:7, 1पत 3:20, 2पत 2:5
4 उत 6:19, 20, उत 7:14, 15
5 उत 1:22
6 उत 6:10
7 उत 7:13, 14
8 उत 12:7
9 उत 7:2, लैव 20:25
10 व्य 27:6

दूसरा कॉल.
1 उत 3:17, उत 5:29
2 उत 6:5, सभ 7:20, मत 15:19
3 उत 6:7, 17, उत 9:11, यश 54:9
4 उत 1:14, भज 74:17, सभ 1:4

अध्य. 9
5 उत 1:28
6 उत 1:26, याकू 3:7
7 1ती 4:3
8 उत 1:29
9 लैव 3:17, लैव 7:26, लैव 17:10, 13, व्य 12:16, 23, प्रेष 15:20, 29, प्रेष 21:25
10 लैव 17:11, 14
11 उत 4:8, 10, निर्ग 21:12

हाथों बहाया जाएगा,[1] क्योंकि परमेश्‍वर
ने इंसान को अपनी छवि में बनाया है।[2]
7 और तुम फूलो-फलो, गिनती में बढ़ते
जाओ और धरती को अपनी संतान से
आबाद करो।"[3]

8 फिर परमेश्‍वर ने नूह और उसके
बेटों से कहा, 9 "अब मैं तुम्हारे साथ
और तुम्हारी आनेवाली संतानों के साथ
एक करार करता हूँ।[4] 10 यह करार
मैं उन सब जीव-जंतुओं के साथ करता हूँ
जो तुम्हारे साथ हैं, पंछियों, जानवरों और
धरती के सब जीवित प्राणियों के साथ
जो जहाज़ से बाहर निकल आए हैं और
तुम्हारे साथ हैं। मैं धरती के हर जीवित
प्राणी[5] के साथ यह करार करता हूँ।
11 हाँ, मैं तुम्हारे साथ यह करार करता
हूँ कि मैं फिर कभी जलप्रलय लाकर सभी
इंसानों और जानवरों* का नाश नहीं
करूँगा और न ही कभी पूरी धरती को
पानी से तबाह करूँगा।"[6]

12 परमेश्‍वर ने यह भी कहा, "जो
करार मैं तुम्हारे साथ और सभी इंसानों
और जीव-जंतुओं के साथ कर रहा हूँ,
वह पीढ़ी-पीढ़ी तक बना रहेगा। उसकी
एक निशानी मैं तुम्हें दे रहा हूँ। 13 मैं
बादलों में अपना मेघ-धनुष दिखाऊँगा।
यह इस करार की निशानी ठहरेगा जो मैंने
धरती के साथ किया है। 14 जब भी मैं
धरती के ऊपर बादल लाऊँगा, तो
बादलों में मेघ-धनुष ज़रूर दिखायी देगा।
15 और मैं अपना यह करार ज़रूर याद
करूँगा जो मैंने तुम्हारे और सभी इंसानों
और हर जाति के जीव-जंतु के साथ किया
है कि मैं फिर कभी जलप्रलय लाकर
सभी इंसानों और जानवरों का नाश नहीं
करूँगा।[7] 16 और जब भी बादलों में
मेघ-धनुष दिखायी देगा, तो मैं उसे देख-
कर ज़रूर याद करूँगा कि मैंने धरती के
सब इंसानों और हर जाति के जीव-जंतु के
साथ सदा का करार किया है।"

17 परमेश्‍वर ने एक बार फिर नूह
से कहा, "मेघ-धनुष मेरे उस करार की
निशानी है जो मैंने धरती के सब इंसानों
और जानवरों के साथ किया है।"[1]

18 नूह के साथ उसके बेटे शेम, हाम
और येपेत[2] जहाज़ से बाहर निकले। बाद
में हाम का एक बेटा हुआ जिसका नाम
कनान था।[3] 19 ये तीनों नूह के बेटे
थे और इन्हीं से पूरी धरती पर आबादी
फैली।[4]

20 नूह ने ज़मीन जोतने का काम शुरू
किया और अंगूरों का एक बाग लगाया।
21 एक दिन उसने अंगूरों से बनी मदिरा
पी और उसे इतना नशा हो गया कि वह
अपने तंबू में कपड़े उतारकर नंगा पड़ा
रहा। 22 जब हाम ने, जो कनान का
पिता था, अपने पिता नूह को नंगा देखा,
तो उसने बाहर जाकर अपने दोनों भाइयों
को बताया। 23 तब शेम और येपेत
ने अपने कंधों पर एक बड़ा कपड़ा रखा
और वे नूह की तरफ पीठ किए हुए उसके
पास गए और दूसरी तरफ मुँह किए हुए
उसे कपड़ा ओढ़ा दिया। उन्होंने अपने
पिता का नंगापन नहीं देखा।

24 जब नूह का नशा उतरा, वह नींद
से जागा और उसे पता चला कि उसके
छोटे बेटे ने उसके साथ क्या किया
25 तो उसने कहा,

"कनान[5] पर शाप पड़े।
वह अपने भाइयों के दासों का दास
बने।"[6]

26 उसने यह भी कहा:

"शेम के परमेश्‍वर यहोवा की
तारीफ हो

9:11 * या "सभी जीवित प्राणियों।"

अध्य. 9
1 निर्ग 20:13, गि 35:30, मत 26:52
2 उत 1:27
3 उत 1:28, उत 10:32
4 उत 9:15, यश 54:9
5 उत 8:17
6 उत 8:21
7 उत 8:21

दूसरा कॉल.
1 उत 9:12, 13
2 उत 5:32, उत 7:7, उत 10:1
3 उत 10:6
4 उत 10:32
5 व्य 7:1
6 यह 17:13

और कनान शेम का दास बने।[1]
27 परमेश्वर येपेत को एक बड़ा
इलाका दे,
येपेत का निवास शेम के तंबुओं
में हो।
कनान येपेत का भी दास बने।”
28 जलप्रलय के बाद नूह 350 साल
और जीया।[2] 29 इस तरह नूह कुल
मिलाकर 950 साल जीया। इसके बाद
वह मर गया।

10 यह है नूह के बेटे शेम,[3] हाम और
येपेत का ब्यौरा।
जलप्रलय के बाद इन तीनों के बेटे
पैदा हुए।[4] 2 येपेत के बेटे थे गोमेर,[5]
मागोग,[6] मादई, यावान, तूबल,[7] मेशेक[8]
और तीरास।[9]
3 गोमेर के बेटे थे अशकनज,[10] रीपत
और तोगरमा।[11]
4 यावान के बेटे थे एलीशाह,[12] तर-
शीश,[13] कित्तीम[14] और दोदानी।
5 इन्हीं से वे लोग निकले जो द्वीपों में बस
गए थे। बाद में वे अपनी-अपनी भाषा,
कुल और जाति के मुताबिक अलग-
अलग इलाकों में जा बसे।
6 हाम के बेटे थे कूश, मिसरैम,[15]
पुट[16] और कनान।[17]
7 कूश के बेटे थे सबा,[18] हवीला,
सबता, रामा[19] और सब-तका।
रामा के बेटे थे शीबा और ददान।
8 कूश का एक और बेटा था,
निमरोद। निमरोद दुनिया का पहला
ऐसा आदमी था जिसने बहुत ताकत
हासिल की थी। 9 वह यहोवा के
खिलाफ काम करनेवाला एक ताकत-
वर शिकारी बना। इसलिए कुछ लोगों की
तुलना निमरोद से की जाती है और
कहा जाता है, “यह बिलकुल निमरोद जैसा
है जो यहोवा के खिलाफ काम करनेवाला
ताकतवर शिकारी था।” 10 उसके
राज के शुरूआती शहर थे बाबेल,*[1]
एरेख,[2] अक्कद और कलने जो शिनार
के इलाके[3] में थे। 11 फिर शिनार से
वह अश्शूर[4] गया और वहाँ उसने
नीनवे,[5] रहोबोत-ईर, कालह 12 और
रेसेन नाम के शहर बसाए। रेसेन, नीनवे
और कालह के बीच पड़ता है। यही बड़ा
शहर है।*
13 मिसरैम के बेटे थे लूदी,[6] अनामी,
लहाबी, नपतूही,[7] 14 पत्रूसी,[8] कस-
लूही (इससे पलिश्ती जाति[9] निकली)
और कप्तोरी।*[10]
15 कनान के बेटे थे उसका पहलौठा
सीदोन,[11] फिर हित्त,[12] 16 यबूसी,[13]
एमोरी,[14] गिरगाशी, 17 हिव्वी,[15]
अरकी, सीनी, 18 अरवादी,[16] समारी
और हमाती।[17] बाद में कनानियों के
कुल अलग-अलग जगहों में जा बसे।
19 कनानियों की सरहद सीदोन से लेकर
दूर गाज़ा[18] के पास गरार[19] तक और
लाशा के पास सदोम, अमोरा,[20] अदमा
और सबोयीम[21] तक फैली थी। 20 ये
हाम के बेटे थे जिनके कुलों से अलग-
अलग जातियाँ निकलीं। ये जातियाँ
अपनी-अपनी भाषा के मुताबिक अलग-
अलग इलाकों में जा बसीं।
21 शेम के भी बच्चे हुए, जिसका
सबसे बड़ा भाई येपेत था।* शेम एबेर[22]
के सभी बेटों का पुरखा था। 22 शेम के

10:10 *यानी बैबिलोन। **10:12** *ज़ाहिर है, नीनवे, रहोबोत-ईर, कालह और रेसेन को मिलाकर बड़ा शहर माना जाता था। **10:14** *शायद ये उन जातियों के नाम हैं जो मिसरैम से निकलीं। **10:21** *या शायद, “जो येपेत का बड़ा भाई था।”

अध्य. 9
1 न्या 1:28
2 उत 7:6

अध्य. 10
3 लूक 3:23, 36
4 उत 9:18, 19
5 यहे 38:6
6 यहे 38:2
7 यश 66:19
यहे 27:13
8 यहे 32:26
9 1इत 1:5-7
10 यिर्म 51:27
11 यहे 27:14
यहे 38:6
12 यहे 27:7
13 यो 1:3
14 यश 23:1
15 उत 50:11
16 यिर्म 46:9
नहू 3:9
17 गि 34:2
1इत 1:8-10
18 भज 72:10
19 यहे 27:22

दूसरा कॉल.
1 उत 11:9
2 एज 4:9
3 दान 1:2
4 मी 5:6
5 यो 3:3
मत 12:41
6 यिर्म 46:9
7 1इत 1:11, 12
8 यहे 29:14
9 यह 13:2, 3
यिर्म 47:4
10 व्य 2:23
11 यह 13:6
मर 7:24
12 उत 25:10
उत 27:46
1इत 1:13-16
13 न्या 1:21
14 उत 15:16
व्य 3:8
15 यह 11:3
16 यहे 27:11
17 1रा 8:65
18 यह 15:20, 47
19 उत 20:1
20 उत 13:10
उत 19:24
यहू 7
21 व्य 29:23
22 उत 11:17

बेटे थे एलाम,[1] अस्सूर,[2] अरपक्षद,[3] लूद
और अराम।[4]

23 अराम के बेटे थे ऊज़, हूल, गेतेर
और मश।

24 अरपक्षद का बेटा शेलह[5] था और
शेलह का बेटा एबेर था।

25 एबेर के दो बेटे थे। एक का
नाम पेलेग*[6] था क्योंकि उसके दिनों में
धरती# का बँटवारा हुआ था। उसके भाई
का नाम योकतान[7] था।

26 योकतान के बेटे थे अल्मोदाद,
शेलेप, हसरमावेत, येरह,[8] **27** हदो-
राम, ऊजाल, दिक्ला, **28** ओबाल,
अबीमाएल, शीबा, **29** ओपीर,[9] हवीला
और योबाब। ये सब योकतान के बेटे थे।
30 इन लोगों के रहने का इलाका
मेशा से लेकर दूर पूरब में सपारा के
पहाड़ी प्रदेश तक फैला था।

31 ये शेम के बेटे थे जिनके कुलों
से अलग-अलग जातियाँ निकलीं। ये
जातियाँ अपनी-अपनी भाषा के मुताबिक
अलग-अलग इलाकों में जा बसीं।[10]

32 ये सभी नूह के बेटों के खान-
दान और उनसे निकले कुल हैं। इन्हीं से
अलग-अलग जातियाँ बनीं जो जलप्रलय
के बाद पूरी धरती पर जा बसीं।[11]

11 उन दिनों पृथ्वी पर रहनेवाले सब
लोगों की एक ही भाषा थी और
वे सब एक ही तरह के शब्दों का इस्ते-
माल करते थे। **2** फिर ऐसा हुआ कि
वे सफर करते-करते पूरब की तरफ
गए और जब उन्होंने शिनार[12] में घाटी
का एक मैदान देखा तो वे वहाँ
रहने लगे। **3** फिर उन्होंने एक-दूसरे से
कहा, "आओ हम ईंटें बनाकर उन्हें आग
में पकाएँ।" इसलिए उन्होंने पत्थरों के
बदले ईंटों का इस्तेमाल किया और तार-
कोल का इस्तेमाल गारे की तरह किया।
4 और उन्होंने कहा, "आओ हम अपने
लिए एक शहर बनाएँ और इतनी ऊँची
एक मीनार बनाएँ कि उसकी चोटी आस-
मान से बातें करे। इससे हमारा बहुत नाम
होगा और हमें पूरी धरती पर बिखरना भी
नहीं पड़ेगा।"[1]

5 तब यहोवा ने उस शहर और मीनार
पर ध्यान दिया* जिसे लोग बना रहे थे।
6 यहोवा ने कहा, "देखो! ये सभी एक-
जुट हैं और इनकी भाषा एक है।[2] अब
तो वे जो भी करने की सोचेंगे उसे
करना उनके लिए नामुमकिन नहीं होगा।
7 इसलिए आओ, हम[3] नीचे जाकर
इनकी भाषा में गड़बड़ी पैदा कर दें ताकि
वे एक-दूसरे की बात समझ न सकें।"
8 इसलिए यहोवा ने उन्हें वहाँ से पूरी
धरती पर तितर-बितर कर दिया[4] और
उन्होंने धीरे-धीरे शहर बनाने का काम
छोड़ दिया। **9** इसी वजह से उस शहर
का नाम बाबेल*[5] पड़ा क्योंकि यहोवा ने
वहीं पर सब लोगों की भाषा में गड़बड़ी
डाली थी। और यहोवा ने उन्हें वहाँ से पूरी
धरती पर तितर-बितर कर दिया।

10 यह शेम[6] के बारे में ब्यौरा है।

जलप्रलय के दो साल बाद शेम का
एक बेटा हुआ जिसका नाम अरपक्षद
था।[7] उस वक्त शेम 100 साल का था।
11 अरपक्षद के पैदा होने के बाद शेम
500 साल और जीया। उसके और भी
बेटे-बेटियाँ हुए।[8]

12 जब अरपक्षद 35 साल का हुआ
तो उसका बेटा शेलह[9] पैदा हुआ।

10:25 *मतलब "बँटवारा।" #या "धरती
की आबादी।"

11:5 *शा., "को देखने के लिए नीचे
उतरा।" **11:9** *मतलब "गड़बड़ी।"

अध्य. 10

1 एज 4:9; प्रेष 2:8, 9
2 यहे 27:23
3 उत 11:10
4 1इत 1:17
5 उत 11:12; लूक 3:23, 35
6 उत 11:16
7 1इत 1:19
8 1इत 1:20-23
9 1रा 9:28; 1रा 10:11
10 उत 10:5
11 उत 9:7; उत 9:19; प्रेष 17:26

अध्य. 11

12 उत 10:9, 10; दान 1:2

दूसरा कॉल.

1 उत 9:1
2 उत 11:1
3 उत 1:26
4 व्य 32:8
5 यिर्म 50:1
6 उत 6:10; लूक 3:23, 36
7 उत 10:22; 1इत 1:17
8 उत 10:21
9 उत 10:24; 1इत 1:18; लूक 3:23, 35

13 शेलह के पैदा होने के बाद अरपक्षद
403 साल और जीया। उसके और भी
बेटे-बेटियाँ हुए।

14 जब शेलह 30 साल का हुआ तो
उसका बेटा एबेर[1] पैदा हुआ। **15** एबेर
के पैदा होने के बाद शेलह 403 साल
और जीया। उसके और भी बेटे-
बेटियाँ हुए।

16 जब एबेर 34 साल का हुआ
तो उसका बेटा पेलेग पैदा हुआ।[2]
17 पेलेग के पैदा होने के बाद एबेर
430 साल और जीया। उसके और भी
बेटे-बेटियाँ हुए।

18 जब पेलेग 30 साल का हुआ तो
उसका बेटा रऊ[3] पैदा हुआ। **19** रऊ के
पैदा होने के बाद पेलेग 209 साल
और जीया। उसके और भी बेटे-
बेटियाँ हुए।

20 जब रऊ 32 साल का हुआ तो
उसका बेटा सरूग पैदा हुआ। **21** सरूग
के पैदा होने के बाद रऊ 207 साल और
जीया। उसके और भी बेटे-बेटियाँ हुए।

22 जब सरूग 30 साल का हुआ
तो उसका बेटा नाहोर पैदा हुआ।
23 नाहोर के पैदा होने के बाद सरूग
200 साल और जीया। उसके और भी
बेटे-बेटियाँ हुए।

24 जब नाहोर 29 साल का हुआ
तो उसका बेटा तिरह[4] पैदा हुआ।
25 तिरह के पैदा होने के बाद नाहोर
119 साल और जीया। उसके और भी
बेटे-बेटियाँ हुए।

26 जब तिरह 70 साल का हुआ तो
उसके बाद उसके बेटे अब्राम,[5] नाहोर[6]
और हारान पैदा हुए।

27 यह है तिरह के बारे में ब्यौरा।

तिरह के बेटे थे अब्राम, नाहोर और
हारान। हारान का बेटा था लूत।[7]
28 हारान का जन्म कसदी लोगों[1] के
ऊर शहर[2] में हुआ था और उसकी
मौत भी वहीं पर हुई थी। हारान की
मौत के वक्त उसका पिता तिरह ज़िंदा
था। **29** अब्राम और उसके भाई नाहोर
ने शादी की। अब्राम की पत्नी का नाम
सारै[3] था और नाहोर की पत्नी का नाम
मिलका[4] था जो हारान की बेटी थी।
हारान की एक और बेटी थी, यिस्का।
30 सारै का कोई बच्चा नहीं था, वह
बाँझ थी।[5]

31 बाद में तिरह ने कसदियों का ऊर
शहर छोड़ दिया और वह अपने परिवार
को लेकर कनान देश[6] के लिए निकल
पड़ा। उसके साथ उसका बेटा अब्राम,
उसकी बहू सारै और उसका पोता लूत भी
था[7] जो हारान का बेटा था। कुछ समय
बाद वे हारान नाम की जगह[8] पहुँचे और
वहाँ रहने लगे। **32** तिरह कुल मिला-
कर 205 साल जीया और हारान में
उसकी मौत हो गयी।

12 यहोवा ने अब्राम से कहा, "तू
अपने पिता के घराने और
नाते-रिश्तेदारों को और अपने देश
को छोड़कर एक ऐसे देश में जा जो
मैं तुझे दिखाऊँगा।[9] **2** मैं तुझसे एक
बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा और तुझे आशीष
दूँगा और तेरा नाम महान करूँगा और
तू दूसरों के लिए एक आशीष ठह-
रेगा।[10] **3** जो तुझे आशीर्वाद देंगे उन्हें
मैं आशीष दूँगा और जो तुझे शाप
देंगे उन्हें मैं शाप दूँगा[11] और तेरे
ज़रिए धरती के सभी कुल ज़रूर आशीष
पाएँगे।"*[12]

अध्य. 11

1 उत 10:21, 1इत 1:18
2 उत 10:25, 1इत 1:19
3 लूक 3:23, 35
4 उत 11:32, लूक 3:23, 34
5 उत 12:7, उत 15:1, 6, उत 17:5, याकू 2:23
6 यह 24:2
7 उत 12:4, उत 19:1, 2पत 2:7

दूसरा कॉल.

1 प्रेष 7:4
2 उत 15:7, नहे 9:7
3 उत 12:11, उत 17:15, उत 20:12, 13, 1पत 3:6
4 उत 22:20, उत 24:15
5 उत 16:1, 2, रोम 4:19, इब्र 11:11
6 उत 10:19
7 उत 11:27, 28
8 उत 12:4, उत 27:42, 43, प्रेष 7:2, 4

अध्य. 12

9 यह 24:3, प्रेष 7:3, 4
10 उत 13:14, 16, उत 15:1, 5, उत 17:5, उत 22:17, 18, व्य 26:5
11 उत 27:29, 30
12 प्रेष 3:25, गल 3:8

12:3 *इसका यह मतलब हो सकता है कि आशीष पाने के लिए उन्हें भी कुछ कदम उठाने होंगे।

4 अब्राम ने वैसा ही किया जैसा
यहोवा ने उससे कहा था। वह हारान
से निकल पड़ा और उसके साथ लूत भी
गया। उस वक्त अब्राम 75 साल का
था।[1] **5** अब्राम अपनी पत्नी सारै[2]
और अपने भतीजे लूत[3] को साथ
ले गया। हारान में उन्होंने जितने भी
दास-दासियाँ और जितनी भी धन-
संपत्ति हासिल की थी,[4] वह सब अपने
साथ लेकर वे कनान देश के लिए
रवाना हो गए।[5] जब वे कनान पहुँचे,
6 तो वहाँ अब्राम सफर करते-करते दूर
शेकेम नाम की जगह[6] तक गया जहाँ
पास में मोरे के बड़े-बड़े पेड़ थे।[7] उन
दिनों उस देश में कनानी लोग रहते थे।
7 फिर यहोवा ने अब्राम के सामने प्रकट
होकर कहा, "मैं यह देश तेरे वंश*[8] को
दूँगा।"[9] इसलिए अब्राम ने वहाँ यहोवा
के लिए एक वेदी बनायी जो उसके
सामने प्रकट हुआ था। **8** बाद में अब्राम
वहाँ से बेतेल[10] के पूरब की तरफ पहाड़ी
प्रदेश में गया और वहाँ अपना तंबू गाड़ा।
वहाँ से बेतेल पश्चिम की तरफ था और
पूरब की तरफ ऐ नाम की जगह[11] थी।
उस पहाड़ी इलाके में उसने यहोवा के लिए
एक वेदी बनायी[12] और वह यहोवा का
नाम पुकारने लगा।[13] **9** बाद में अब्राम
ने अपना पड़ाव उठाया और वह जगह-
जगह डेरा डालते हुए नेगेब[14] की तरफ
बढ़ा।

10 उन दिनों कनान देश में अकाल
पड़ा और खाने के इतने लाले पड़ गए[15]
कि अब्राम, कनान से नीचे मिस्र के लिए
निकल पड़ा ताकि वहाँ कुछ समय तक
रहे।*[16] **11** जब अब्राम मिस्र पहुँचने-
वाला था तो उसने अपनी पत्नी सारै से
कहा, "मुझे तुझसे एक बात कहनी है।
जब हम मिस्र में कदम रखेंगे तो वहाँ
के लोगों की नज़र ज़रूर तुझ पर पड़ेगी,
क्योंकि तू इतनी खूबसूरत जो है।[1]
12 और जब वे तुझे मेरे साथ देखेंगे तो
कहेंगे, 'यह उसकी बीवी होगी।' फिर
वे मुझे मार डालेंगे और तुझे अपने पास
रख लेंगे। **13** इसलिए तुझसे मेरी एक
बिनती है, तू वहाँ के लोगों से कहना कि तू
मेरी बहन है। इस तरह तेरी बदौलत मेरी
जान सलामत रहेगी और मुझे कोई खतरा
नहीं होगा।"[2]

14 जैसे ही अब्राम और सारै मिस्र
पहुँचे, वहाँ के लोगों की नज़र सारै
पर पड़ी और उन्होंने देखा कि वह बहुत
खूबसूरत है। **15** फिरौन के हाकिमों ने
भी उसे देखा और वे फिरौन से उसकी
खूबसूरती की तारीफ करने लगे। इस-
लिए सारै को फिरौन के भवन में लाया
गया। **16** सारै की वजह से फिरौन ने
अब्राम के साथ अच्छा व्यवहार किया।
उसने अब्राम को भेड़ें, गाय-बैल, गधे-
गधियाँ, ऊँट और दास-दासियाँ दिए।[3]
17 तब यहोवा अब्राम की पत्नी सारै[4]
की वजह से फिरौन और उसके
घराने पर बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ ले आया।
18 इसलिए फिरौन ने अब्राम को बुला-
कर कहा, "यह तूने मेरे साथ क्या
किया? तूने मुझे क्यों नहीं बताया कि
यह तेरी पत्नी है? **19** तूने मुझसे कहा
था कि यह तेरी बहन है[5] इसलिए
मैं इसे अपनी पत्नी बनानेवाला था। यह
रही तेरी पत्नी। इसे लेकर यहाँ से चला
जा!" **20** तब फिरौन ने अपने आद-
मियों को उसके बारे में हुक्म दिया और
उन्होंने अब्राम और उसकी पत्नी को
उनके पास जो कुछ था, उसके साथ विदा
किया।[6]

12:7 *शा., "बीज।" **12:10** *या "वहाँ परदेसी बनकर रहे।"

अध्य. 12
1 इब्र 11:8
2 उत 11:29
3 उत 11:31
4 उत 13:5, 6
5 उत 26:3
6 प्रेष 7:15, 16
7 उत 35:4; व्य 11:29, 30
8 उत 3:15; उत 21:12; उत 28:13, 14; रोम 9:7; गल 3:16
9 उत 13:14, 15; उत 15:1, 7; उत 17:1, 8; व्य 34:4
10 उत 28:16-19; उत 31:13
11 उत 13:1, 3; यह 7:2
12 उत 8:20; उत 35:2, 3
13 उत 26:25
14 उत 20:1; उत 24:62
15 उत 26:1, 2
16 भज 105:13

दूसरा कॉल.
1 उत 26:7
2 उत 20:11, 12
3 उत 20:14; उत 24:34, 35
4 उत 11:29; उत 17:15; उत 23:2, 19
5 उत 20:11, 12
6 भज 105:14

13 तब अब्राम मिस्र से निकल पड़ा।
वह अपनी पत्नी और लूत को,
साथ ही उसके पास जो कुछ था, सब
लेकर नेगेब चला गया।[1] **2** अब्राम के
पास बहुत-से मवेशी थे और ढेर सारा
सोना-चाँदी था।[2] **3** फिर वह नेगेब से
रवाना हुआ और जगह-जगह डेरा डालते
हुए बेतेल की तरफ गया। वह उस जगह
पहुँचा जो बेतेल और ऐ के बीच थी।[3] यह
वही जगह थी जहाँ उसने पहले भी एक
बार अपना तंबू गाड़ा था **4** और एक
वेदी बनायी थी। वहाँ अब्राम ने यहोवा का
नाम पुकारा।

5 लूत के पास भी, जो अब्राम के
साथ सफर कर रहा था, भेड़ें, गाय-बैल
और तंबू थे। **6** वहाँ अब्राम और लूत
के लिए जगह कम पड़ने लगी और उनका
साथ रहना मुश्किल हो गया, क्योंकि
उन दोनों के पास बहुत संपत्ति हो गयी
थी। **7** इस वजह से अब्राम के चरवाहों
और लूत के चरवाहों के बीच झगड़ा हो
गया। (उन दिनों उस देश में कनानी और
परिज्जी लोग रहते थे।)[4] **8** तब अब्राम
ने लूत[5] से कहा, "देख, हम दोनों भाई-
भाई हैं। इसलिए यह ठीक नहीं कि हम
दोनों के बीच और हमारे चरवाहों के बीच
झगड़ा हो। **9** क्यों न हम एक-दूसरे से
अलग हो जाएँ? देख, तेरे सामने यह
सारा देश पड़ा है। अगर तू बायीं तरफ
जाएगा, तो मैं दायीं तरफ चला जाऊँगा।
और अगर तू दायीं तरफ जाएगा तो
मैं बायीं तरफ चला जाऊँगा।" **10** तब
लूत ने चारों तरफ नज़र दौड़ायी और यर-
दन का पूरा इलाका देखा[6] जो दूर
सोआर[7] तक फैला था। उसने देखा कि
पूरा इलाका यहोवा के बाग*[8] जैसा और
मिस्र जैसा है और वहाँ भरपूर पानी है
(तब तक यहोवा ने सदोम और अमोरा
का नाश नहीं किया था)। **11** इसलिए
लूत ने अपने लिए यरदन का पूरा इलाका
चुना। उसने अपना डेरा उठाया और पूरब
की तरफ चला गया। इस तरह अब्राम
और लूत एक-दूसरे से अलग हो गए।
12 अब्राम कनान देश में ही रहा जबकि
लूत यरदन के इलाके के शहरों के पास
रहने लगा।[1] आखिर में उसने सदोम
के पास अपना तंबू गाड़ा। **13** सदोम
के लोग बहुत दुष्ट थे और यहोवा के
खिलाफ घोर पाप करते थे।[2]

14 अब्राम से लूत के अलग होने के
बाद यहोवा ने अब्राम से कहा, "ज़रा
अपनी आँखें उठाकर चारों तरफ देख।
जहाँ तू है वहाँ से उत्तर-दक्षिण, पूरब-
पश्चिम चारों दिशाओं में अपनी नज़र
दौड़ा, **15** क्योंकि यह सारा देश जो तू
देख रहा है, यह मैं तुझे और तेरे वंश*
को हमेशा के लिए दे दूँगा। यह तुम्हारी
जागीर होगा।[3] **16** मैं तेरे वंश को
इतना बढ़ाऊँगा कि उनकी गिनती धूल
के कणों की तरह अनगिनत हो जाएगी।
जैसे कोई धूल के कणों को नहीं गिन
सकता, वैसे ही तेरे वंश को भी कोई
नहीं गिन पाएगा।[4] **17** अब जा, पूरे
देश का दौरा कर* क्योंकि यह देश मैं
तुझे दूँगा।" **18** इसलिए अब्राम जगह-
जगह तंबुओं में ही रहा। बाद में वह
हेब्रोन[5] में ममरे गया और वहाँ उसने बड़े-
बड़े पेड़ों के बीच डेरा डाला[6] और यहोवा
के लिए एक वेदी बनायी।[7]

14 उन दिनों शिनार[8] का राजा
अमरापेल था, एल्लासार का
राजा अरयोक, एलाम[9] का राजा कदोर-
लाओमेर[10] और गोयीम का राजा तिदाल

अध्य. 13
1 उत 12:9; उत 20:1
2 उत 24:34, 35
3 उत 12:8, 9; यह 7:2
4 उत 10:19
5 उत 11:27
6 उत 19:28
7 उत 19:20-22
8 उत 2:8, 9

दूसरा कॉल.
1 उत 19:28, 29
2 उत 18:20; उत 19:5; 2पत 2:6-8; यहू 7
3 उत 12:7; उत 15:18; उत 24:7; निर्ग 33:1
4 उत 12:2; उत 15:1, 5; निर्ग 1:7; इब्र 11:12
5 उत 23:2
6 उत 18:1; उत 23:19; उत 25:9, 10; उत 35:27
7 उत 12:7

अध्य. 14
8 उत 10:9, 10
9 उत 10:22
10 उत 14:17

13:10 *यानी अदन का बाग।

13:15 *शा., "बीज।" **13:17** *शा., "देश की लंबाई और चौड़ाई में चल फिर।"

था। **2** इन राजाओं ने मिलकर सदोम[1] के राजा बेरा, अमोरा[2] के राजा बिरशा, अदमा के राजा शिनाब, सबोयीम[3] के राजा शेमेबेर और बेला यानी सोआर के राजा से युद्ध किया। **3** ये सभी राजा* सिद्दीम घाटी में अपनी-अपनी सेना के साथ इकट्ठा हुए।[4] यह घाटी लवण सागर# है।[5]

4 वे* 12 साल तक राजा कदोर-लाओमेर के अधीन रहे, मगर 13वें साल उन्होंने उससे बगावत की। **5** इस-लिए 14वें साल में कदोर-लाओमेर और उसके साथी राजाओं ने आकर उन पर हमला कर दिया। उन्होंने अश्तरोत-कर-नैम में रपाई लोगों को, हाम में जूजी लोगों को और शावे-किरयातैम में एमी लोगों[6] को हराया **6** और सेईर के पहाड़ी प्रदेश[7] में रहनेवाले होरी लोगों[8] से नीचे एल-पारन तक लड़ते रहे, जो वीराने के किनारे है। **7** फिर वहाँ से लौटकर वे एन-मिशपात यानी कादेश[9] आए और उन्होंने अमालेकियों[10] का पूरा इलाका जीत लिया। साथ ही, उन्होंने हसासोन-तामार[11] में रहनेवाले एमोरी लोगों[12] को भी हरा दिया।

8 तब सदोम, अमोरा, अदमा, सबो-यीम और बेला यानी सोआर के राजा एक-जुट होकर उनसे लड़ने निकल पड़े। इन पाँच राजाओं ने उनका सामना करने के लिए सिद्दीम घाटी में मोरचा बाँधा। **9** वहाँ उन्होंने एलाम के राजा कदोर-लाओमेर, गोयीम के राजा तिदाल, शिनार के राजा अमरापेल और एल्लासार के राजा अरयोक[13] पर हमला किया। इस तरह, चार राजाओं का पाँच राजाओं से युद्ध होने लगा। **10** अंजाम यह हुआ कि सदोम और अमोरा के राजा अपनी जान बचाकर भागे। लेकिन सिद्दीम घाटी में जगह-जगह तारकोल के गड्ढे थे, इस-लिए वे उन गड्ढों में गिर पड़े और जो बच गए वे पहाड़ी प्रदेश भाग गए। **11** युद्ध में जीतनेवालों ने सदोम और अमोरा का सारा माल और खाने की चीज़ें ले लीं और अपनी राह चल दिए।[1] **12** उन्होंने अब्राम के भतीजे लूत को भी बंदी बना लिया जो सदोम में रहता था।[2] वे उसका सारा सामान भी लूटकर ले गए।

13 तब एक आदमी ने, जो बच-कर भाग निकला था, आकर इस बारे में अब्राम को (जो एक इब्री था) खबर दी। उस वक्त अब्राम ममरे नाम के एक एमोरी आदमी के यहाँ बड़े-बड़े पेड़ों के बीच पड़ाव डालकर रहता था।[3] ममरे के दो भाई थे, एशकोल और आनेर।[4] इन तीनों भाइयों और अब्राम के बीच संधि हुई थी। **14** जब अब्राम को पता चला कि उसका रिश्तेदार* लूत[5] बंदी बना लिया गया है, तो उसने अपने घराने में पैदा हुए 318 दासों को इकट्ठा किया जिन्होंने युद्ध की तालीम पायी थी। वह उन्हें लेकर हमलावरों का पीछा करते-करते दान[6] तक गया। **15** रात के वक्त अब्राम ने अपने सैनिकों को अलग-अलग दलों में बाँट दिया। फिर उसने और उसके दासों ने मिलकर दुश्मनों पर हमला किया और उन्हें हरा दिया और दमिश्क के उत्तर में होबा तक उन्हें खदेड़ा। **16** अब्राम ने दुश्मनों से सारा माल छुड़ा लिया। उसने अपने रिश्तेदार लूत को और उसका सारा सामान और उन औरतों और लोगों को भी छुड़ा लिया जिन्हें दुश्मन उठा ले गए थे।

14:3 *यहाँ "ये सभी राजा" का मतलब आय. 1 में बताए राजा हो सकते हैं। #यानी मृत सागर। **14:4** *यहाँ "वे" का मतलब आय. 2 में बताए राजा हो सकते हैं।

14:14 *शा., "भाई।"

अध्य. 14
1 उत 10:19, उत 13:12
2 उत 13:10, 12
3 व्य 29:23
4 उत 14:10
5 गि 34:2, 12
6 व्य 2:10, 11
7 उत 36:8
8 व्य 2:12
9 गि 20:1
10 उत 36:12, 1शम 15:2
11 2इत 20:2
12 उत 10:15, 16
13 उत 14:1, 2

दूसरा कॉल.
1 उत 14:16
2 उत 19:1
3 उत 13:18
4 उत 14:24
5 उत 11:27
6 न्या 18:29

17 जब अब्राम, कदोर-लाओमेर और
उसके साथी राजाओं को हराकर
वापस लौट रहा था, तो सदोम का
राजा उससे शावे घाटी में मिलने आया
जो ‘राजा की घाटी’[1] भी कहलाती
है। 18 और शालेम का राजा मेल्की-
सेदेक[2] रोटी और दाख-मदिरा लेकर
अब्राम से मिलने आया। मेल्कीसेदेक
परम-प्रधान परमेश्वर का याजक था।[3]
19 उसने अब्राम को आशीर्वाद दिया
और कहा,

“अब्राम पर परम-प्रधान परमेश्वर
की आशीष बनी रहे,
जो आकाश और धरती का बनाने-
वाला है।
20 और परम-प्रधान परमेश्वर की
तारीफ हो,
जिसने तुझे सतानेवालों को तेरे हाथ
में कर दिया!”

तब अब्राम ने दुश्मनों से छुड़ायी सब
चीज़ों का दसवाँ हिस्सा मेल्कीसेदेक को
दिया।[4]
21 इसके बाद सदोम के राजा ने
अब्राम से कहा, “तू सारा माल रख ले,
सिर्फ ये लोग मुझे दे दे।” 22 मगर
अब्राम ने सदोम के राजा से कहा, “मैं हाथ
ऊपर उठाकर आकाश और धरती के
बनानेवाले परम-प्रधान परमेश्वर यहोवा
की शपथ खाता हूँ 23 कि मैं तेरी एक
भी चीज़ नहीं लूँगा। एक धागा या जूते का
फीता तक नहीं लूँगा ताकि तू कल को यह
न कहे, ‘मेरी बदौलत ही अब्राम माला-
माल हुआ है।’ 24 इन जवानों ने जो
खाया है, उसे छोड़ मैं और कुछ नहीं
लूँगा। मगर जहाँ तक आनेर, एशकोल
और ममरे[5] की बात है, जो मेरे साथ
युद्ध में गए थे, इन आदमियों को अपना-
अपना हिस्सा लेने दे।”

अध्य. 14
1 2शम 18:18
2 भज 110:4, इब्र 6:20, इब्र 7:1, 2
3 भज 83:18, इब्र 5:5, 10
4 इब्र 7:4
5 उत 14:13

दूसरा कॉल.

अध्य. 15
1 भज 27:1, यश 41:10, रोम 8:31, इब्र 13:6
2 व्य 33:29, नीत 30:5
3 उत 17:5, 6
4 उत 24:2, 3
5 उत 12:7, प्रेष 7:5
6 उत 17:15, 16, उत 21:12
7 उत 22:17, व्य 1:10, रोम 4:18, इब्र 11:12
8 इब्र 11:8
9 रोम 4:13, 22, गल 3:6, याकू 2:23
10 उत 11:31, नहे 9:7

15 इसके बाद अब्राम को एक दर्शन
में यहोवा का यह संदेश मिला:
“अब्राम, तुझे किसी बात से डरने की
ज़रूरत नहीं।[1] मैं तेरे लिए एक ढाल
हूँ।[2] मैं तुझे बहुत बड़ा इनाम दूँगा।”[3]
2 अब्राम ने कहा, “हे सारे जहान के
मालिक यहोवा, मैं तो बेऔलाद हूँ।
इसलिए तू मुझे जो भी इनाम देगा,
उससे मुझे क्या फायदा? मेरे घर का
वारिस एलीएज़ेर होगा जो दमिश्क से
है।”[4] 3 अब्राम ने यह भी कहा, “तूने
मुझे कोई वंश नहीं दिया[5] और मेरे
घराने का एक आदमी* मेरा वारिस
बननेवाला है।” 4 मगर जवाब में उसे
यहोवा से यह संदेश मिला: “यह आदमी
तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना
बेटा* तेरा वारिस बनेगा।”[6]
5 फिर परमेश्वर ने अब्राम को बाहर
लाकर उससे कहा, “ज़रा अपनी नज़रें
उठाकर आसमान की तरफ देख। अगर
तू तारों को गिन सके तो गिन।” फिर पर-
मेश्वर ने उससे कहा, “तेरे वंश* की
गिनती भी इसी तरह बेशुमार होगी।”[7]
6 अब्राम ने यहोवा पर विश्वास किया[8]
और इस वजह से परमेश्वर ने उसे
नेक समझा।[9] 7 परमेश्वर ने यह भी
कहा, “मैं यहोवा हूँ, मैं ही तुझे कस-
दियों के शहर ऊर से यहाँ ले आया
था ताकि तुझे यह देश दूँ और यह तेरी
जागीर हो।”[10] 8 तब अब्राम ने कहा,
“हे सारे जहान के मालिक यहोवा, मैं
कैसे यकीन करूँ कि यह देश मेरी जागीर
होगा?” 9 परमेश्वर ने अब्राम से कहा,
“मेरे लिए तीन साल की एक गाय,*
तीन साल की एक बकरी, तीन साल

15:3 *शा., “बेटा।” **15:4** *शा., “जो तेरे अंदरूनी अंगों से निकलेगा वह।” **15:5** *शा., “बीज।” **15:9** *या “कलोर।”

का एक मेढ़ा, एक फाख्ता और कबूतर का एक बच्चा ले आ।" 10 अब्राम यह सब ले आया और उसने उन सबके दो-दो टुकड़े किए और उन टुकड़ों को आमने-सामने रखा।* मगर उसने पंछियों को नहीं काटा। 11 तब शिकारी पक्षी उन टुकड़ों पर झपटने लगे और अब्राम उन्हें भगाता रहा।

12 जब सूरज डूबने पर था, तो अब्राम गहरी नींद सो गया और उसने देखा कि उसके चारों तरफ घोर, भयानक अँधेरा छाया हुआ है। 13 तब परमेश्वर ने अब्राम से कहा, "तू एक बात पक्के तौर पर जान ले कि तेरा वंश* पराए देश में परदेसी बनकर रहेगा और वहाँ के लोग उससे गुलामी करवाएँगे और 400 साल तक उसे सताते रहेंगे।[1] 14 मगर जिस देश की वे गुलामी करेंगे उसे मैं सज़ा दूँगा।[2] इसके बाद वे खूब सारी दौलत लेकर वहाँ से निकल जाएँगे।[3] 15 जहाँ तक तेरी बात है, तू एक लंबी और खुशहाल ज़िंदगी जीएगा और आखिर में शांति से मरेगा और तेरे पुरखों की तरह तुझे भी दफना दिया जाएगा।[4] 16 तेरे वंश की चौथी पीढ़ी यहाँ वापस लौटेगी,[5] क्योंकि तब तक एमोरी लोग पाप करने में हद कर चुके होंगे।"[6]

17 जब सूरज ढल गया और घोर अँधेरा छा गया तो एक भट्ठी, जिसमें से धुआँ उठ रहा था और एक जलती मशाल दिखायी दीं, जो जानवरों के टुकड़ों के बीच से होती हुई आगे निकल गयीं। 18 उस दिन यहोवा ने अब्राम के साथ एक करार किया[7] और उससे कहा, "मैं तेरे वंश* को यह देश दूँगा,[1] जो मिस्र की नदी से लेकर महानदी फरात तक फैला है,[2] 19 जहाँ आज केनी,[3] कनिज्जी, कदमोनी, 20 हित्ती,[4] परिज्जी,[5] रपाई,[6] 21 एमोरी, कनानी, गिरगाशी और यबूसी लोग रहते हैं।"[7]

16 अब्राम की पत्नी सारै के अब तक कोई बच्चा नहीं हुआ था।[8] सारै की एक मिस्री दासी थी जिसका नाम हाजिरा[9] था। 2 सारै ने अब्राम से कहा, "देख, यहोवा ने मेरी कोख बंद कर रखी है। इसलिए मेरी बिनती है कि तू मेरी दासी ले ले। हो सकता है उसके बच्चा होने से मेरी सूनी गोद भर जाए।"[10] अब्राम ने सारै की बात मान ली। 3 अब तक अब्राम को कनान देश में रहते दस साल हो गए थे। सारै ने उसे अपनी मिस्री दासी हाजिरा दी ताकि वह उसकी पत्नी बने। 4 तब अब्राम ने हाजिरा के साथ संबंध रखे और वह गर्भवती हुई। जब हाजिरा को पता चला कि वह पेट से है, तो वह अपनी मालकिन को नीचा दिखाने लगी।

5 इस पर सारै ने अब्राम से कहा, "मेरे साथ जो बुरा सलूक किया जा रहा है, उसके लिए तू ज़िम्मेदार है। मैंने ही अपनी दासी तुझे दी थी। मगर जब से उसे पता चला कि वह गर्भवती है, वह मुझे नीचा दिखाने लगी है। अब यहोवा ही मेरे और तेरे बीच न्याय करे।" 6 अब्राम ने सारै से कहा, "देख, तू उसकी मालकिन है। तुझे उसके साथ जो सही लगे वही कर।" तब सारै अपनी दासी को नीचा दिखाने लगी और वह दासी उसके यहाँ से भाग गयी।

7 बाद में यहोवा के स्वर्गदूत ने वीराने में, शूर[11] जानेवाले रास्ते पर एक सोते के पास हाजिरा को पाया।

15:10 *या "हर जानवर का आधा टुकड़ा एक तरफ और दूसरा टुकड़ा दूसरी तरफ रखा।" **15:13, 18** *शा., "बीज।"

अध्य. 15
1 उत 21:9; निर्ग 1:13, 14; निर्ग 3:7; प्रेष 7:6, 7
2 निर्ग 7:4; गि 33:4
3 निर्ग 3:22; भज 105:37
4 उत 25:8
5 यह 14:1; प्रेष 7:7
6 1रा 21:26; 2रा 21:11
7 उत 17:19; उत 22:17

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 3:8
2 1रा 4:21
3 1शम 15:6
4 यह 1:4
5 निर्ग 3:17
6 यह 17:15
7 व्य 7:1

अध्य. 16
8 उत 15:2, 3
9 गल 4:25
10 उत 30:1, 3
11 उत 25:17, 18; निर्ग 15:22

8 स्वर्गदूत ने उससे पूछा, “सारै की दासी
हाजिरा, तू कहाँ से आयी है और कहाँ
जा रही है?” हाजिरा ने कहा, “मैं अपनी
मालकिन सारै के यहाँ से भाग आयी
हूँ।” 9 यहोवा के स्वर्गदूत ने उससे
कहा, “तू अपनी मालकिन के पास लौट
जा और नम्र होकर उसके अधीन रह।”
10 यहोवा के स्वर्गदूत ने उससे यह
भी कहा, “मैं तेरे वंश* को इतना
बढ़ाऊँगा कि कोई उसकी गिनती नहीं
कर पाएगा।”[1] 11 यहोवा के स्वर्गदूत
ने उससे यह भी कहा, “तू जो गर्भवती
है, तू एक बेटे को जन्म देगी। तू उसका
नाम इश्माएल* रखना क्योंकि यहोवा ने
तेरी दर्द-भरी पुकार सुनी है। 12 जब
वह बड़ा होगा तो उसकी फितरत जंगली
गधे* जैसी होगी। उसका हाथ सबके
खिलाफ उठेगा और सबका हाथ उसके
खिलाफ। और वह अपने सब भाइयों के
सामने बसेरा करेगा।”#

13 फिर हाजिरा ने यहोवा का नाम
पुकारा, जो उससे बात कर रहा था और
कहा, “तू ऐसा परमेश्वर है जो सबकुछ
देखता है,”*[2] क्योंकि उसने कहा, “यहाँ
मैंने सचमुच उसे देखा है जिसकी नज़र
मुझ पर है।” 14 इसीलिए उस कुएँ
का नाम बेर-लहै-रोई* पड़ा। (यह कुआँ
कादेश और बेरेद के बीच है।)
15 हाजिरा ने अब्राम के बेटे को जन्म
दिया और अब्राम ने उसका नाम इश्माएल
रखा।[1] 16 जब हाजिरा से इश्माएल
पैदा हुआ तब अब्राम 86 साल का था।

17 जब अब्राम 99 साल का था,
तब यहोवा ने उसके सामने
प्रकट होकर कहा, “मैं सर्वशक्तिमान
परमेश्वर हूँ। तू मेरे सामने सही राह
पर चलता रह और अपना चालचलन
निर्दोष बनाए रख। 2 मैंने तेरे साथ जो
करार किया था उसे पक्का करूँगा[2] और
तेरे वंशजों की गिनती बहुत-बहुत
बढ़ाऊँगा।”[3]

3 इस पर अब्राम मुँह के बल गिरा
और परमेश्वर ने उससे यह भी कहा,
4 “देख, मैंने तेरे साथ एक करार किया
है,[4] इसलिए तू बेशक बहुत-सी जातियों
का पिता बनेगा।[5] 5 अब से तेरा नाम
अब्राम* नहीं बल्कि अब्राहम# होगा,
क्योंकि मैं तुझे बहुत-सी जातियों का
पिता बनाऊँगा। 6 मैं तेरे वंशजों की
गिनती इतनी बढ़ाऊँगा कि उनसे कई
जातियाँ बनेंगी और तेरे वंश से राजा पैदा
होंगे।[6]

7 मैं अपना यह करार निभाऊँगा जो
मैंने तुझसे और तेरे बाद पीढ़ी-पीढ़ी तक
तेरे वंश* से किया है।[7] यह सदा का
करार है कि मैं तेरा और तेरे बाद तेरे
वंश* का परमेश्वर होऊँगा। 8 आज
तू इस कनान देश में एक परदेसी की
तरह रह रहा है, मगर एक दिन मैं यह
सारा देश तुझे और तेरे बाद तेरे वंश* को
हमेशा के लिए दे दूँगा[8] ताकि यह उनकी
जागीर हो। और मैं उनका परमेश्वर
होऊँगा।”[9]

16:10; 17:7, 8 *शा., “बीज।” **16:11** *मतलब “परमेश्वर सुनता है।” **16:12** *या “एक गोरखर,” जो एक किस्म का जंगली गधा है। मगर कुछ लोगों का मानना है कि यहाँ ज़ेब्रा की बात की गयी है। शायद यह जानवर मनमानी करने के रवैए को दर्शाता है। #या शायद, “अपने सब भाइयों से दुश्मनी करेगा।” **16:13** *या “जो मुझे देखता है” या “जो प्रकट होता है।” **16:14** *मतलब “उसका कुआँ जो जीवित है और मुझे देखता है।”

17:5 *मतलब “पिता महान (या ऊँचा किया गया) है।” #मतलब “भीड़ का पिता; बहुतों का पिता।”

अध्य. 16
1 उत 17:20; उत 25:13-16; 1इत 1:29-31
2 नीत 15:3

दूसरा कॉल.
1 उत 21:9; गल 4:22, 24

अध्य. 17
2 उत 15:18; भज 105:8-11
3 उत 22:17; व्य 1:10; इब्र 11:11, 12
4 भज 105:9-11
5 उत 13:16; रोम 4:17
6 उत 35:10, 11
7 लूक 1:72, 73
8 निर्ग 6:4; इब्र 11:8, 9
9 व्य 14:2

9 परमेश्वर ने अब्राहम से यह भी
कहा, “तुझे और तेरे बाद तेरे वंश को
पीढ़ी-पीढ़ी तक मेरा करार मानना होगा।
10 यह करार तुझे और तेरे बाद तेरे
वंश* को इस तरह मानना होगा: तुममें से
हर आदमी और लड़के का खतना किया
जाए।[1] 11 तुम्हें अपना खतना कर-
वाना होगा, क्योंकि खतना मेरे और
तुम्हारे बीच हुए करार की निशानी ठह-
रेगा।[2] 12 तुम्हारे घराने में पैदा होने-
वाले हर लड़के का खतना जन्म के आठवें
दिन किया जाए।[3] और उन आदमियों
और लड़कों का भी खतना किया जाए
जो तुम्हारे वंश* के नहीं हैं, मगर किसी
परदेसी से खरीदे गए हैं। खतने का यह
नियम तुम्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी मानना होगा।
13 तुम्हारे यहाँ पैदा हुए हर आदमी का
और उन सभी आदमियों का भी, जिन्हें
तुमने खरीदा हो, खतना किया जाए।[4]
तुम्हारे शरीर पर यह निशानी इस बात
का सबूत होगी कि मैंने तुम्हारे साथ सदा
तक कायम रहनेवाला करार किया है।
14 जो लड़का या आदमी खतना नहीं
करवाता वह मेरा करार तोड़ता है। उसे
उसके लोगों के बीच से काट डाला
जाए।”*

15 फिर परमेश्वर ने अब्राहम से
कहा, “तू अपनी पत्नी को सारै*[5] न
बुलाना क्योंकि अब से उसका नाम सारा#
होगा। 16 मैं उसे आशीष दूँगा और
उससे तुझे एक बेटा होगा।[6] मेरी आशीष
सारा पर होगी और उससे बहुत-सी
जातियाँ निकलेंगी और देशों के राजा पैदा
होंगे।” 17 तब अब्राहम ने मुँह के बल

17:10, 12, 19 *शा., “बीज।” **17:14** *या “मार डाला जाए।” **17:15** *शायद इसका मतलब है, “झगड़ालू।” #मतलब “राज-घराने की औरत।”

अध्य. 17
1 उत 21:4; रोम 2:29
2 प्रेष 7:8; रोम 4:11
3 लूक 2:21
4 निर्ग 12:44
5 उत 11:29
6 उत 18:10

दूसरा कॉल.
1 उत 18:12
2 रोम 4:19; इब्र 11:11
3 उत 16:11
4 मत 1:2
5 उत 26:24
6 उत 16:10; उत 21:13, 18; उत 25:13-16; 1इत 1:29-31
7 उत 26:3; इब्र 11:8, 9
8 उत 18:10, 14; उत 21:1
9 उत 17:13
10 प्रेष 7:8; रोम 4:11
11 उत 16:16

गिरकर परमेश्वर को दंडवत किया और
वह मन-ही-मन यह कहकर हँसने लगा,[1]
“क्या यह मुमकिन है कि 100 साल के
इस बूढ़े का बच्चा होगा और सारा 90 की
होकर भी माँ बनेगी!”[2]

18 इसलिए अब्राहम ने सच्चे पर-
मेश्वर से कहा, “मैं तुझसे बिनती करता
हूँ कि इश्माएल पर तेरी आशीष हो!”[3]
19 तब परमेश्वर ने उससे कहा, “तेरी
पत्नी सारा बेशक तुझे एक बेटा देगी
और तू उसका नाम इसहाक#[4] रखना।
मैं उसके साथ और उसके बाद उसके
वंश* के साथ सदा का करार करूँगा।[5]
20 रही बात इश्माएल की, उसके बारे
में मैंने तेरी बिनती सुनी है। मैं उसे
आशीष दूँगा। वह बहुत फूलेगा-फलेगा
और उसकी बहुत-सी संतान होंगी। उससे
12 प्रधान निकलेंगे और मैं उसे एक
बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा।[6] 21 लेकिन मैं
अपना करार सिर्फ इसहाक के साथ
करूँगा,[7] जिसे सारा अगले साल इसी
समय जन्म देगी।”[8]

22 यह कहने के बाद परमेश्वर अब्रा-
हम के पास से चला गया। 23 फिर
अब्राहम ने उसी दिन अपने बेटे इश्माएल
का और अपने घराने में पैदा हुए सभी
आदमियों और खरीदे गए सभी दासों
का खतना किया। उसने अपने घराने के
सभी लड़कों और आदमियों का खतना
किया, ठीक जैसे परमेश्वर ने उससे
कहा था।[9] 24 जब अब्राहम का खतना
हुआ[10] तब वह 99 साल का था।
25 उसका बेटा इश्माएल अपने खतने
के वक्त 13 साल का था।[11] 26 उसी
दिन अब्राहम का खतना किया गया था
और उसके बेटे इश्माएल का भी खतना
किया गया। 27 अब्राहम के साथ-साथ

17:19 #मतलब “हँसी।”

उसके घराने के उन सभी लड़कों और
आदमियों का खतना किया गया जो उसके
घर में पैदा हुए थे या किसी परदेसी से
खरीदे गए थे।

18 बाद में यहोवा[1] अब्राहम के
सामने प्रकट हुआ। भरी दोपहरी
का वक्त था और कड़ी धूप थी। अब्रा-
हम, ममरे में बड़े-बड़े पेड़ों के बीच[2] अपने
तंबू के द्वार पर बैठा था। 2 जब उसने
आँख उठाकर देखा तो उसे तीन आदमी
नज़र आए जो उसके तंबू से कुछ दूरी पर
खड़े थे।[3] जैसे ही अब्राहम ने उन्हें देखा,
वह उनसे मिलने के लिए तंबू के द्वार से
दौड़कर गया और उसने ज़मीन पर गिर-
कर प्रणाम किया। 3 फिर उसने कहा,
"हे यहोवा, अगर तेरी कृपा मुझ पर हो
तो अपने दास के तंबू में आए बगैर
यहाँ से मत जाना। 4 मैं थोड़ा पानी
लाता हूँ ताकि तुम्हारे पैर धोए जाएँ।[4]
फिर इस पेड़ के नीचे कुछ देर आराम कर
लेना। 5 देखो, तुम अपने दास के यहाँ
मेहमान हो, मैं तुम्हें खाना खाए बगैर नहीं
जाने दूँगा। मैं जाकर तुम्हारे लिए थोड़ी
रोटियाँ लाता हूँ ताकि तुम खाकर तरो-
ताज़ा हो जाओ।"* उन्होंने कहा, "ठीक
है, जैसी तेरी मरज़ी।"

6 तब अब्राहम भागकर तंबू में सारा
के पास गया और उससे कहा, "जल्दी से
तीन पैमाना* मैदा ले और उसे गूँधकर
रोटियाँ बना।" 7 इसके बाद, अब्राहम
दौड़कर अपने गाय-बैल के झुंड के पास
गया और उसने एक अच्छा-सा मुलायम
बछड़ा लाकर अपने सेवक को दिया। वह
फौरन उसे पकाने में लग गया। 8 फिर
अब्राहम ने मक्खन, दूध और गोश्त लिया
और अपने मेहमानों के सामने खाना
परोसा। जब वे पेड़ के नीचे बैठे खा रहे
थे, तो अब्राहम उनके पास ही खड़ा
रहा।[1]

9 उन्होंने अब्राहम से पूछा, "तेरी
पत्नी सारा[2] कहाँ है?" उसने कहा, "यहीं
तंबू में है।" 10 तब उनमें से एक ने
कहा, "मैं अगले साल इसी समय तेरे पास
फिर आऊँगा और देख, तेरी पत्नी सारा
के एक बेटा होगा!"[3] सारा उस आदमी के
पीछे तंबू के द्वार पर खड़ी सब सुन रही
थी। 11 अब्राहम और सारा, दोनों की
उम्र ढल चुकी थी[4] और सारा की बच्चे
पैदा करने की उम्र बीत चुकी थी।*[5]
12 इसलिए सारा मन-ही-मन हँस पड़ी
और कहने लगी, "मैं तो बूढ़ी हो गयी
हूँ, मेरा मालिक भी बूढ़ा हो गया है। क्या
इस उम्र में वाकई मुझे औलाद का सुख
मिलेगा?"[6] 13 तब यहोवा ने अब्राहम
से कहा, "सारा क्यों हँसी? उसने यह
क्यों कहा, 'मैं तो इतनी बूढ़ी हूँ, मेरे
बच्चा कैसे हो सकता है?' 14 क्या
यहोवा के लिए कुछ भी नामुमकिन है?[7]
मैं अगले साल इसी समय तेरे पास फिर
आऊँगा और सारा के एक बेटा होगा।"
15 मगर सारा डर के मारे बोली, "नहीं,
मैं नहीं हँसी!" परमेश्वर ने कहा, "नहीं,
तू हँसी थी।"

16 फिर वे आदमी जाने के लिए उठे
और उन्होंने नीचे सदोम की तरफ देखा।[8]
अब्राहम उन्हें विदा करने के लिए उनके
साथ-साथ गया। 17 यहोवा ने कहा,
"मैं जो करने जा रहा हूँ वह अब्रा-
हम को न बताऊँ, यह नहीं हो सकता।[9]
18 क्योंकि अब्राहम एक बड़ी और
शक्तिशाली जाति का पिता बनेगा और

18:5 *शा., "तुम्हारा दिल मज़बूत हो जाए।" **18:6** *शा., "सआ माप।" एक सआ 7.33 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

18:11 *या "माहवारी बंद हो चुकी थी।"

अध्य. 18
1 उत 16:7
न्या 13:21
2 उत 13:18
उत 14:13
3 उत 19:1
4 उत 19:2
उत 24:32

दूसरा कॉल.
1 इब्र 13:2
2 उत 17:15
3 उत 17:21
उत 21:2
रोम 9:9
4 उत 17:17
5 रोम 4:19
6 इब्र 11:11
1पत 3:6
7 यश 40:29
मत 19:26
लूक 1:36, 37
8 उत 13:12
9 भज 25:14
आम 3:7

धरती की सभी जातियाँ उसके ज़रिए आशीष पाएँगी।*[1] **19** मैं अब्राहम को अच्छी तरह जानता हूँ। मुझे पूरा यकीन है कि वह अपने बेटों और वंशजों को आज्ञा देगा कि वे वही करें जो सही और न्याय के मुताबिक है और इस तरह यहोवा की राह पर चलते रहें।[2] तब मैं यहोवा, अब्राहम के बारे में किया अपना वादा पूरा करूँगा।”

20 फिर यहोवा ने कहा, “सदोम और अमोरा का पाप हद से गुज़र गया है,[3] उनके बारे में शिकायत बढ़ती जा रही है।[4] **21** मैं नीचे जाकर उन शहरों का मुआयना करूँगा और देखूँगा कि मैंने जो सुना है क्या वह सही है, क्या सचमुच वहाँ की हालत इतनी खराब है। मैं इस बारे में ज़रूर जानना चाहूँगा।”[5]

22 इसके बाद वे आदमी वहाँ से सदोम की तरफ चले गए। मगर यहोवा[6] अब्राहम के संग रह गया। **23** तब अब्राहम ने परमेश्वर के पास जाकर उससे पूछा, “क्या तू दुष्टों के साथ-साथ नेक लोगों को भी मिटा देगा?[7] **24** मान लो उस शहर में 50 नेक लोग हैं। क्या तब भी तू उसका नाश कर देगा? क्या तू उन 50 की खातिर उस जगह को नहीं बख्शेगा? **25** तू दुष्ट के साथ-साथ नेक जन को मार डालने की कभी सोच भी नहीं सकता।[8] तू दोनों को एक ही सिला दे, यह कभी नहीं हो सकता।[9] क्या सारी दुनिया का न्याय करनेवाला कभी अन्याय कर सकता है?”[10] **26** तब यहोवा ने कहा, “अगर मुझे सदोम में 50 लोग भी नेक मिले, तो मैं उनकी खातिर पूरे शहर को छोड़ दूँगा।” **27** मगर अब्राहम ने फिर कहा, “मैं तो बस मिट्टी और राख हूँ, फिर भी मैं यहोवा से एक और बार बोलने की गुस्ताखी कर रहा हूँ। **28** मान लो शहर में 50 नहीं, 45 नेक लोग हैं, तो क्या तू पाँच के कम होने से पूरा शहर नाश कर देगा?” परमेश्वर ने कहा, “नहीं। अगर मुझे 45 लोग भी नेक मिले, तो मैं उसे नाश नहीं करूँगा।”[1]

29 मगर अब्राहम ने एक बार फिर कहा, “मान लो वहाँ 40 लोग मिलते हैं।” परमेश्वर ने कहा, “मैं उन 40 की खातिर उस जगह का नाश नहीं करूँगा।” **30** अब्राहम ने फिर कहा, “हे यहोवा, तू मुझ पर भड़क न जाना।[2] मैं फिर से पूछना चाहूँगा, मान लो वहाँ बस 30 लोग मिलते हैं।” तब परमेश्वर ने कहा, “अगर मुझे 30 भी मिले तो मैं नाश नहीं करूँगा।” **31** अब्राहम ने फिर कहा, “गुस्ताखी माफ हो यहोवा, अगर वहाँ सिर्फ 20 लोग मिलते हैं।” परमेश्वर ने कहा, “मैं उन 20 की खातिर उसका नाश नहीं करूँगा।” **32** अब्राहम ने कहा, “हे यहोवा, तू मुझ पर भड़क न जाना। बस एक आखिरी बार मुझे पूछने दे, अगर वहाँ सिर्फ दस लोग मिलते हैं।” परमेश्वर ने कहा, “मैं उन दस की खातिर भी उसका नाश नहीं करूँगा।” **33** यहोवा अब्राहम से बातचीत करने के बाद वहाँ से चला गया[3] और अब्राहम अपने यहाँ लौट गया।

19 वे दोनों स्वर्गदूत जब सदोम पहुँचे तो तब तक शाम हो चुकी थी। लूत सदोम के फाटक पर बैठा हुआ था। जब उसने स्वर्गदूतों को देखा, तो वह उठकर उनसे मिलने गया और उसने ज़मीन पर गिरकर उन्हें प्रणाम किया।[4] **2** लूत ने उनसे कहा, “साहिबो, मेहरबानी करके

18:18 *इसका यह मतलब हो सकता है कि आशीष पाने के लिए उन्हें भी कुछ कदम उठाने होंगे।

अध्या. 18
1 उत 12:1-3 गल 3:14
2 व्य 4:9
3 उत 13:13 यहू 7
4 2पत 2:7, 8
5 उत 11:5 निर्ग 3:7, 8 भज 14:2
6 उत 31:11 उत 32:30
7 गि 16:22
8 भज 37:10, 11 नीत 29:16 मला 3:18 मत 13:49
9 व्य 32:4
10 अय 34:12 यश 33:22

दूसरा कॉल.
1 गि 14:18 भज 86:15
2 निर्ग 34:6
3 उत 18:2, 22

अध्या. 19
4 उत 18:2, 22

अपने दास के घर आओ और हमें तुम्हारे
पैर धोने का मौका दो। आज रात मेरे यहाँ
रुक जाओ और चाहो तो सुबह होते ही
चले जाना।” मगर उन्होंने कहा, “नहीं,
हम शहर के चौक में ही रात बिता लेंगे।”
3 लेकिन लूत उन्हें इतना मनाने लगा कि
वे उसके साथ उसके घर चल दिए। लूत
ने उनके लिए एक दावत तैयार की।
उसने बिन-खमीर की रोटियाँ बनायीं और
उन्होंने लूत के घर खाना खाया।

4 इससे पहले कि वे सोते, सदोम
शहर के सारे आदमी, लड़कों से लेकर
बूढ़ों तक सब लूत के घर आ धमके
और उन्होंने चारों तरफ से उसका घर घेर
लिया। **5** वे चिल्ला-चिल्लाकर लूत से
कहने लगे, “कहाँ हैं वे आदमी जो आज
रात तेरे घर आए थे? बाहर ला उन्हें। हमें
उनके साथ संभोग करना है।”[1]

6 तब लूत घर से बाहर आया और
उसने अपने पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया।
7 उसने उनसे कहा, “मेरे भाइयो, मैं
तुमसे बिनती करता हूँ, ऐसा दुष्ट काम
मत करो। **8** देखो, मेरी दो कुँवारी
बेटियाँ हैं। कहो तो मैं उन्हें तुम्हारे सामने
लाता हूँ, तुम उनके साथ जो चाहो कर
लो। मगर उन आदमियों को छोड़ दो
क्योंकि वे मेरी छत तले* आए हैं।”[2]
9 तब वे चिल्लाए, “चल हट यहाँ से!”
और कहने लगे, “इसकी मजाल तो देखो!
यह परदेसी बनकर हमारे यहाँ रहने आया
था और अब हमारा न्यायी बन बैठा है।
अब तेरी खैर नहीं, हम तेरा उनसे भी बुरा
हाल करेंगे।” फिर उन्होंने लूत को
धर-दबोचा और वे उसके घर का दर-
वाज़ा तोड़ने आगे बढ़े। **10** मगर तभी
लूत के घर आए आदमियों ने अपना
हाथ बढ़ाकर लूत को अंदर खींच लिया
और दरवाज़ा बंद कर दिया। **11** और
उन्होंने घर के बाहर इकट्ठा सभी आद-
मियों को अंधा कर दिया। छोटे-बड़े, सब-
के-सब अंधे हो गए और वे दरवाज़ा
टटोलते-टटोलते थक गए।

12 फिर लूत के मेहमानों ने उससे
कहा, “क्या यहाँ तेरा कोई और भी है?
तेरे बेटे-बेटियाँ, दामाद जो भी हैं, सबको
साथ लेकर इस इलाके से निकल जा!
13 हम इस इलाके को नाश करनेवाले हैं,
क्योंकि यहोवा के सामने यहाँ के लोगों के
बारे में शिकायतें इतनी बढ़ गयी हैं[1] कि
यहोवा ने हमें इस शहर का नाश करने
भेजा है।” **14** तब लूत अपने दामादों
के पास गया जो उसकी बेटियों से शादी
करनेवाले थे और उन्हें समझाने लगा,
“चलो-चलो, जल्दी करो! हमें फौरन यहाँ
से भाग निकलना है। यहोवा इस शहर का
नाश करनेवाला है!” मगर उसके दामादों
को लगा कि वह मज़ाक कर रहा है।[2]

15 जब भोर होने लगी तो स्वर्गदूतों
ने लूत से फुर्ती करायी और वे कहने
लगे, “जल्दी कर! अपनी पत्नी और
दोनों बेटियों को लेकर फौरन यहाँ से
निकल जा, वरना तुम भी नाश हो जाओ-
गे! इस शहर को जल्द ही इसके पापों की
सज़ा मिलनेवाली है।”[3] **16** मगर जब
लूत देर करने लगा तो यहोवा ने उस पर
दया की[4] और वे आदमी उसका और
उसकी पत्नी और दोनों बेटियों का हाथ
पकड़कर शहर के बाहर ले गए।[5]
17 वहाँ पहुँचते ही उन आदमियों में से
एक ने कहा, “अपनी जान बचाकर भागो
यहाँ से! तुम लोग पीछे मुड़कर मत
देखना[6] और इस पूरे इलाके[7] में कहीं भी
मत रुकना! भागकर उस पहाड़ी प्रदेश में
चले जाओ, वरना तुम भी नाश हो
जाओगे!”

19:8 *या “हिफाज़त में।”

अध्य. 19
1 यहू 7
2 न्या 19:23, 24

दूसरा कॉल.
1 उत 13:13
उत 18:20
2 लूक 17:28
3 लूक 17:29-31
4 निर्ग 33:19
5 2पत 2:7-9
6 लूक 9:62
7 उत 13:10

18 तब लूत ने उनसे कहा, "हे
यहोवा, मैं तुझसे बिनती करता हूँ,
मुझे वहाँ जाने के लिए न कह! 19 तूने
अपने सेवक पर मेहरबानी की है।
तूने मुझ पर महा-कृपा* करके मेरी
जान बचायी है।[1] मगर मैं उस पहाड़ी
प्रदेश में नहीं भाग सकता क्योंकि मुझे
डर है कि कहीं मेरे साथ कुछ बुरा न
हो जाए और मैं अपनी जान गँवा बैठूँ।[2]
20 देख, यह नगर कितना पास है और
छोटा भी है। मैं वहाँ भागकर अपनी जान
बचा सकता हूँ। अगर तू कहे तो क्या मैं
वहाँ चला जाऊँ? वह बस एक छोटी-सी
जगह है।" 21 तब उसने लूत से कहा,
"ठीक है, मैं इस बात में भी तेरा
लिहाज़ करता हूँ।[3] जिस नगर के बारे में
तूने कहा है, मैं उसे नाश नहीं करूँगा।[4]
22 तू जल्दी से वहाँ भाग जा! क्योंकि
जब तक तू वहाँ न पहुँचे, मैं कुछ नहीं कर
सकता।"[5] इसीलिए उस नगर का नाम
सोआर*[6] पड़ा।

23 जब लूत सोआर पहुँचा तब तक
दिन चढ़ आया था। 24 तब यहोवा ने
सदोम और अमोरा पर आग और गंधक
बरसाना शुरू किया। हाँ, उन शहरों पर
यहोवा की तरफ से आसमान से आग
और गंधक बरसी।[7] 25 इस तरह पर-
मेश्वर ने उन शहरों को और उस पूरे
इलाके को खाक में मिला दिया। वहाँ के
सभी इंसान और पेड़-पौधे नाश हो गए।[8]
26 लूत की पत्नी, जो उसके पीछे-पीछे
चल रही थी, मुड़कर देखने लगी इसलिए
वह नमक का खंभा बन गयी।[9]

27 अब्राहम सुबह-सुबह उठकर उस
जगह गया, जहाँ पहले उसने यहोवा के
सामने खड़े होकर उससे बात की थी।[10]
28 वहाँ से उसने नीचे सदोम, अमोरा
और आस-पास का पूरा इलाका देखा।
क्या ही भयानक मंज़र था! धुएँ के
ऐसे घने बादल उठ रहे थे मानो धधक-
ते भट्ठे से धुआँ उठ रहा हो![1] 29 इस
तरह, जब परमेश्वर ने वहाँ के शहरों का
नाश किया तो उसने अब्राहम की बिनती
का ध्यान रखते हुए लूत को उस जगह
से दूर भेज दिया, जहाँ वह पहले
रहता था।[2]

30 बाद में लूत ने सोआर छोड़
दिया क्योंकि वह उस नगर में रहने से
डरने लगा।[3] वह अपनी दोनों बेटियों के
साथ पहाड़ी प्रदेश चला गया।[4] वहाँ वे
तीनों एक गुफा में रहने लगे। 31 लूत
की बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, "हमारा
पिता बूढ़ा हो गया है। और इस इलाके
में ऐसा कोई आदमी नहीं जिससे हम
दुनिया की रीत के मुताबिक शादी करें।
32 इसलिए आओ हम अपने पिता को
दाख-मदिरा पिलाएँ ताकि उसके साथ
सोएँ और उसी से उसका वंश बनाए
रखें।"

33 उस रात उन्होंने अपने पिता को
खूब दाख-मदिरा पिलायी। फिर बड़ी
लड़की अपने पिता के पास गयी और
उसके साथ सोयी। मगर उसके पिता
को पता नहीं चला कि वह कब उसके
साथ सोयी और कब उठकर चली गयी।
34 अगले दिन बड़ी ने छोटी से कहा,
"आज रात भी हम अपने पिता को दाख-
मदिरा पिलाते हैं। फिर तू जाकर उसके
साथ सोना, जैसे कल रात मैं सोयी
थी। इस तरह हम अपने पिता से उसका
वंश बनाए रखेंगे।" 35 उस रात भी
उन्होंने अपने पिता को खूब दाख-मदिरा
पिलायी। फिर छोटी लड़की उसके पास
गयी और उसके साथ सोयी। लूत को

अध्य. 19
1 भज 143:11
2 भज 6:4
3 भज 34:15
4 उत 19:30
भज 68:20
5 2पत 3:9
6 उत 14:2
7 व्य 29:23
लूक 17:29
2पत 2:6
8 उत 13:10
9 लूक 17:32
इब्र 10:38
10 उत 18:2, 22

दूसरा कॉल.
1 यहू 7
2 2पत 2:7, 8
3 उत 19:20, 22
4 उत 19:17

19:19 *या "अटल प्यार।" **19:22** *मत-
लब "छोटा।"

पता नहीं चला कि वह कब उसके
साथ सोयी और कब उठकर चली गयी।
36 इस तरह लूत की दोनों बेटियाँ अपने
पिता से गर्भवती हुईं। 37 बड़ी लड़की
ने एक बेटे को जन्म दिया और उसका
नाम मोआब[1] रखा। मोआब से वे लोग
निकले जो आज मोआबी कहलाते हैं।[2]
38 छोटी लड़की ने भी एक बेटे को जन्म
दिया और उसका नाम बेन-अम्मी रखा।
बेन-अम्मी से वे लोग निकले जो आज
अम्मोनी[3] कहलाते हैं।

20 अब अब्राहम अपना[4] पड़ाव
उठाकर नेगेब की तरफ गया
और कादेश[5] और शूर[6] के बीच रहने
लगा। कुछ समय के लिए वह गरार[7]
में भी रहा।* 2 यहाँ भी अब्राहम
अपनी पत्नी सारा के बारे में कहता था,
"यह मेरी बहन है।"[8] इसलिए गरार के
राजा अबीमेलेक ने सारा को बुलवाकर
अपने पास रख लिया।[9] 3 बाद में रात
को अबीमेलेक के सपने में परमेश्वर ने
उससे कहा, "अब तेरी मौत तय है,
क्योंकि तूने जिस औरत को अपने पास
रख लिया,[10] वह शादीशुदा है और किसी
दूसरे आदमी की है।"[11] 4 मगर अबी-
मेलेक ने सारा को छुआ तक नहीं था।*
इसलिए उसने कहा, "हे यहोवा, क्या तू
एक ऐसी जाति को मिटा देगा जो सचमुच
बेकसूर# है? 5 क्या अब्राहम ने मुझसे
नहीं कहा था कि यह मेरी बहन है? और
क्या सारा ने भी नहीं कहा था कि यह मेरा
भाई है? इसलिए मैंने जो भी किया साफ
मन से किया, मेरा कोई गलत इरादा नहीं
था।" 6 तब सच्चे परमेश्वर ने सपने में
उससे कहा, "मैं जानता हूँ कि तूने जो भी
किया साफ मन से किया। इसलिए मैंने
तुझे रोक लिया कि तू मेरे खिलाफ कोई
पाप न करे। और तुझे सारा को छूने
तक नहीं दिया। 7 अब उस आदमी की
पत्नी उसे लौटा दे क्योंकि वह एक
भविष्यवक्ता है,[1] वह तेरे लिए मिन्नत
करेगा,[2] तभी तू जीवित रहेगा। लेकिन
अगर तू उसे न लौटाए, तो जान ले कि तू
ज़रूर मर जाएगा और तेरे साथ-साथ तेरे
सब लोग मर जाएँगे।"

8 अबीमेलेक तड़के सुबह उठा और
अपने सभी दासों को बुलवाकर उन्हें सारा
हाल कह सुनाया। यह सुनकर वे थर-थर
काँपने लगे। 9 फिर अबीमेलेक ने अब्रा-
हम को बुलवाकर उससे कहा, "यह तूने
हमारे साथ क्या किया? मैंने तेरे खिलाफ
क्या गुनाह किया कि तू मुझे और मेरे राज्य
को इतने बड़े पाप का दोषी बनानेवाला
था? तूने मेरे साथ ठीक नहीं किया।"
10 अबीमेलेक ने अब्राहम से फिर कहा,
"आखिर तूने ऐसा क्यों किया?"[3]
11 अब्राहम ने कहा, "मैंने सोचा कि यहाँ
के लोगों में तो परमेश्वर का डर नहीं है,
इसलिए वे मेरी पत्नी को हासिल करने
के लिए मुझे मार डालेंगे।[4] 12 और
वैसे भी, सारा वाकई मेरी बहन है
क्योंकि हम दोनों का पिता एक है, हमारी
माँएँ अलग-अलग हैं। मैंने उससे शादी
की।[5] 13 इसलिए परमेश्वर के कहने
पर जब मैंने अपने पिता का घर छोड़ा और
मैं जगह-जगह सफर करने लगा,[6] तो मैंने
सारा से कहा कि हम जहाँ भी जाएँ, तू
लोगों से कहना कि मैं तेरा भाई हूँ[7] और
इस तरह मेरे लिए अपने अटल प्यार का
सबूत देना।"

14 तब अबीमेलेक ने अब्राहम को
उसकी पत्नी सारा लौटा दी और उसे भेड़ें,
गाय-बैल और दास-दासियाँ भी दिए।

20:1 *या "परदेसी की तरह रहा।" **20:4** *यानी उसने सारा के साथ यौन-संबंध नहीं रखे थे। #या "नेक।"

अध्या. 19
1 व्य 2:9
2 1इत 18:2
3 व्य 2:19
न्या 11:4
नहे 13:1
सप 2:9

अध्या. 20
4 उत 13:18
5 गि 13:26
6 उत 25:17, 18
7 उत 10:19
उत 26:6
8 उत 12:11-13
उत 20:11, 12
9 उत 12:15
10 उत 12:17
भज 105:14
11 व्य 22:22

दूसरा कॉल.
1 भज 105:14, 15
2 अय 42:8
3 उत 12:18, 19
उत 26:9, 10
4 उत 12:11, 12
उत 26:7
5 उत 11:29
6 उत 12:1
7 उत 12:13

15 फिर अबीमेलेक ने अब्राहम से कहा,
“देख, मेरा सारा इलाका तेरे सामने है,
तू जहाँ चाहे वहाँ रह।” **16** और सारा
से उसने कहा, “मैं तेरे भाई[1] को चाँदी के
1,000 टुकड़े दे रहा हूँ। यह तेरे
लोगों के सामने और बाकी सबके सामने
इस बात का सबूत है* कि तेरी इज़्ज़त
पर कोई आँच नहीं आयी है, तू बेदाग
है।” **17** तब अब्राहम सच्चे परमेश्वर
से मिन्नत करने लगा और परमेश्वर
ने अबीमेलेक और उसकी पत्नी और
दासियों को चंगा कर दिया और उनकी
फिर से संतान होने लगी। **18** यहोवा ने
अब्राहम की पत्नी सारा की वजह से
अबीमेलेक के घराने की सभी औरतों की
कोख बंद कर दी थी।[2]

21 यहोवा ने सारा पर ध्यान दिया,
ठीक जैसे उसने कहा था और
यहोवा ने सारा की खातिर वही किया
जिसका उसने वादा किया था।[3] **2** इस-
लिए सारा गर्भवती हुई[4] और उसने ठह-
राए समय पर अब्राहम के बुढ़ापे में
उसे एक बेटा दिया, ठीक जैसे पर-
मेश्वर ने वादा किया था।[5] **3** अब्राहम
ने अपने इस बेटे का नाम इसहाक रखा
जिसे सारा ने जन्म दिया।[6] **4** इसहाक
जब आठ दिन का हुआ तो अब्राहम ने
उसका खतना किया, ठीक जैसे परमेश्वर
ने उसे आज्ञा दी थी।[7] **5** इसहाक के
जन्म के वक्त अब्राहम 100 साल का
था। **6** सारा ने कहा, “परमेश्वर ने
मुझे हँसते-मुस्कुराते जीने की वजह दी
है। अब मेरे बारे में जो कोई सुनेगा,
उसके चेहरे पर भी हँसी खिल उठेगी।”*
7 उसने यह भी कहा, “किसी ने कभी
अब्राहम से नहीं कहा होगा कि एक दिन
सारा ज़रूर बच्चे खिलाएगी! मगर देखो,
आज मैंने अब्राहम को उसके बुढ़ापे में एक
बेटा दिया है।”

8 बच्चा बड़ा होने लगा। जब उसका
दूध छुड़ाने का दिन आया तो अब्राहम
ने एक बड़ी दावत रखी। **9** सारा गौर
करती रही कि उसकी मिस्री दासी हाजिरा
का लड़का,[1] जो उसे अब्राहम से हुआ
था, इसहाक की खिल्ली उड़ा रहा था।[2]
10 इसलिए उसने अब्राहम से कहा, “इस
दासी और इसके लड़के को घर से निकाल
दे क्योंकि इसका लड़का मेरे बेटे इस-
हाक के साथ वारिस कभी नहीं बनेगा!”[3]
11 मगर सारा की यह बात अब्राहम को
बहुत बुरी लगी क्योंकि वह भी उसका
बेटा था।[4] **12** तब परमेश्वर ने अब्रा-
हम से कहा, “सारा तेरी दासी और
उस लड़के के बारे में जो कह रही है,
उससे तुझे बुरा नहीं लगना चाहिए।
सारा की बात मान, क्योंकि तुझसे जिस
वंश* का वादा किया गया है वह इस-
हाक से आएगा।[5] **13** और जहाँ तक
तेरी दासी के लड़के[6] की बात है, उससे भी
मैं एक जाति बनाऊँगा[7] क्योंकि वह तेरा
बेटा है।”

14 इसलिए अब्राहम सुबह-सुबह उठा
और उसने रोटी और पानी से भरी
एक मशक ली। उसने ये चीज़ें हाजिरा
के कंधे पर रखकर उसे और लड़के को
घर से भेज दिया।[8] हाजिरा अपने लड़के
को लेकर निकल पड़ी और बेरशेबा[9] के
पास वीराने में भटकती फिरी। **15** कुछ
समय बाद जब मशक का सारा पानी
खत्म हो गया, तो हाजिरा ने अपने
लड़के को एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया।
16 फिर वह कुछ दूर, तीर के टप्पे-भर

20:16 *शा., “देख, यह तेरे लिए आँखों का परदा है।” **21:6** *या शायद, “वह मुझ पर हँसेगा।”

21:12 *शा., “बीज।”

अध्य. 20
1 उत 20:2, 12
2 उत 12:17

अध्य. 21
3 उत 18:10
4 इब्र 11:11
5 उत 17:21, उत 18:10, 14, रोम 9:9
6 उत 17:19, यह 24:3, रोम 9:7
7 उत 17:12, लैव 12:3, प्रेष 7:8

दूसरा कॉल.
1 उत 16:4, 15
2 उत 15:13, गल 4:22, 29
3 उत 15:2, 4, गल 4:30
4 उत 17:18
5 उत 17:19, रोम 9:7, इब्र 11:18
6 गल 4:22
7 उत 16:9, 10, उत 17:20, उत 25:12, 16
8 उत 25:5, 6
9 उत 22:19

की दूरी पर जाकर बैठ गयी क्योंकि उसने
कहा, “मैं अपने बेटे को मरते हुए नहीं
देख सकती।” वह वहीं बैठी फूट-फूटकर
रोने लगी।

17 तब परमेश्वर ने उसके लड़के की
पुकार सुनी[1] और स्वर्ग से परमेश्वर के
एक स्वर्गदूत ने हाजिरा को आवाज़ देकर
कहा,[2] “क्या हुआ हाजिरा, तू क्यों रो रही
है? मत डर। तेरा बेटा जो वहाँ है उसकी
पुकार परमेश्वर ने सुनी है। 18 अब
उठ, जाकर अपने लड़के को उठा और
उसे सहारा दे क्योंकि मैं उससे एक बड़ी
जाति बनाऊँगा।”[3] 19 तब परमेश्वर
ने हाजिरा को एक कुआँ दिखाया और वह
जाकर अपनी मशक में पानी भर लायी
और उसने लड़के को पिलाया। 20 उस
लड़के[4] पर परमेश्वर का साया बना रहा।
वह बड़ा होकर तीरंदाज़ बना और उसने
अपनी ज़िंदगी वीराने में बितायी।
21 वह पारान वीराने[5] में रहता था।
उसकी माँ ने एक मिस्री लड़की से उसकी
शादी करवायी।

22 उन्हीं दिनों अबीमेलेक अपने
सेनापति पीकोल के साथ अब्राहम से
मिला और उससे कहा, “हमने देखा है कि
परमेश्वर हर काम में तेरा साथ देता है।[6]
23 अब तू यहाँ मेरे सामने परमेश्वर की
शपथ खाकर कह कि जैसे आज तक मैं
तेरे साथ कृपा* से पेश आया हूँ वैसे तू भी
मेरे साथ और मेरे देश के लोगों के साथ
कृपा से पेश आएगा जिनके बीच तू रहता
है।[7] वादा कर कि तू यह शपथ कभी नहीं
तोड़ेगा और मेरे साथ या मेरे बच्चों और
मेरी आनेवाली पीढ़ियों के साथ छल नहीं
करेगा।” 24 अब्राहम ने कहा, “हाँ, मैं
शपथ खाता हूँ।”

25 फिर अब्राहम ने अपने कुएँ के
बारे में अबीमेलेक से शिकायत की जिस
पर अबीमेलेक के दासों ने ज़बरदस्ती
कब्ज़ा कर लिया था।[1] 26 अबीमेलेक
ने उससे कहा, “सच कहता हूँ, मुझे तो
पता ही नहीं यह सब किसने किया। आज
तक मुझे किसी ने नहीं बताया, तूने भी
नहीं।” 27 तब अब्राहम ने अबीमेलेक
को कुछ भेड़ें और गाय-बैल दिए और
उन दोनों ने आपस में एक करार किया।
28 अब्राहम ने झुंड में से सात मादा मेम्नों
को अलग किया। 29 तब अबीमेलेक
ने अब्राहम से पूछा, “तूने ये सात मेम्ने
अलग क्यों किए?” 30 अब्राहम ने
कहा, “तू ये सात मेम्ने मेरे हाथ से कबूल
कर ताकि ये इस बात का सबूत ठहरें कि
यह कुआँ मैंने खुदवाया है।” 31 अब्रा-
हम ने उस जगह का नाम बेरशेबा*
रखा[2] क्योंकि वहाँ उन दोनों ने शपथ
खायी थी। 32 इस तरह उन्होंने बेर-
शेबा में एक करार किया।[3] इसके बाद
अबीमेलेक और उसका सेनापति पीकोल,
दोनों पलिश्तियों के देश[4] लौट गए।
33 फिर अब्राहम ने बेरशेबा में एक झाऊ
का पेड़ लगाया और वहाँ यहोवा का
नाम पुकारा[5] जो युग-युग का परमेश्वर
है।[6] 34 अब्राहम एक लंबे समय* तक
पलिश्तियों के देश में रहा।#[7]

22 इसके बाद सच्चे परमेश्वर ने
अब्राहम को परखा।[8] उसने
अब्राहम को पुकारा, “अब्राहम!” अब्रा-
हम ने जवाब दिया, “हाँ, प्रभु।”
2 परमेश्वर ने कहा, “क्या तू मेरी एक
बात मानेगा? अपने इकलौते बेटे इस-
हाक[9] को ले जिससे तू बेहद प्यार करता
है[10] और सफर करके मोरिया देश[11] जा।

अध्य. 21
1 उत 16:11
2 उत 16:7, 8
3 1इत 1:29-31
4 उत 16:16
5 गि 10:12
6 उत 20:17, 18; उत 26:26, 28
7 उत 20:14, 15

दूसरा कॉल.
1 उत 26:15, 20
2 उत 26:32, 33
3 उत 26:26, 28
4 उत 10:13, 14; उत 26:1
5 उत 12:8, 9; उत 26:25
6 भज 90:2; यश 40:28; 1ती 1:17
7 इब्र 11:8, 9

अध्य. 22
8 इब्र 11:17
9 उत 17:19; यह 24:3; रोम 9:7
10 यूह 3:16
11 2इत 3:1

21:23 * या “अटल प्यार।”

21:31 * मतलब “शपथ का कुआँ; सात का कुआँ।” **21:34** * शा., “कई दिनों।” # या “परदेसी की तरह रहा।”

वहाँ एक पहाड़ पर, जो मैं तुझे बताऊँगा,
इसहाक की होम-बलि चढ़ा।”

3 अब्राहम सुबह-सुबह उठा और
उसने अपने गधे पर काठी कसी। उसने
अपने बेटे इसहाक के साथ-साथ दो
सेवकों को लिया। अब्राहम ने होम-
बलि के लिए लकड़ियाँ चीरीं और फिर
वे सब उस जगह के लिए निकल पड़े
जो सच्चे परमेश्वर ने उसे बतायी थी।
4 सफर के तीसरे दिन अब्राहम को दूर
से वह जगह दिखने लगी जहाँ उसे जाना
था। 5 तब उसने अपने सेवकों से कहा,
“तुम दोनों यहीं गधे के पास रुको, मैं और
लड़का वहाँ जाकर परमेश्वर की उपासना
करके आते हैं।”

6 अब्राहम ने होम-बलि की लक-
ड़ियाँ लीं और अपने बेटे इसहाक के
कंधे पर रखीं। फिर अब्राहम ने आग
और छुरा लिया और वे दोनों साथ चलते
गए। 7 रास्ते में इसहाक ने अपने पिता
से कहा, “हे मेरे पिता!” अब्राहम बोला,
“हाँ, बेटा!” इसहाक ने कहा, “आग और
लकड़ी तो हम ले आए हैं, मगर होम-
बलि के लिए भेड़ कहाँ है?” 8 अब्राहम
ने कहा, “बेटे, होम-बलि के लिए भेड़[1]
का इंतज़ाम परमेश्वर खुद करेगा।” और
वे दोनों साथ चलते गए।

9 चलते-चलते वे उस जगह पहुँचे जो
सच्चे परमेश्वर ने अब्राहम को बतायी
थी। वहाँ अब्राहम ने एक वेदी बनायी
और उस पर लकड़ियाँ बिछायीं। फिर
उसने अपने बेटे इसहाक के हाथ-पैर
बाँध दिए और उसे लकड़ियों पर लिटा
दिया।[2] 10 फिर अब्राहम ने अपने बेटे
को मारने के लिए हाथ बढ़ाकर
छुरा उठाया।[3] 11 मगर तभी स्वर्ग से
यहोवा के स्वर्गदूत ने उसे आवाज़ दी,
“अब्राहम, अब्राहम!” तब अब्राहम बोला,

अध्य. 22
1 यूह 1:29
1पत 1:18, 19
2 यूह 10:17, 18
3 इब्र 11:17

दूसरा कॉल.
1 इब्र 11:17-19
याकू 2:21
2 उत 22:2
2इत 3:1
3 यूह 3:16
रोम 8:32
इब्र 11:17
4 इब्र 6:13, 14
5 उत 13:14, 16
उत 15:1, 5
प्रेष 3:25
6 भज 2:8
दान 2:44
7 उत 3:15
रोम 9:7
गल 3:16
8 गल 3:8
9 उत 21:31

“हाँ, प्रभु!” 12 स्वर्गदूत ने उससे कहा,
“लड़के को मत मार, उसे कुछ मत
कर। अब मैं जान गया हूँ कि तू सच-
मुच परमेश्वर का डर माननेवाला इंसान
है, क्योंकि तू अपने इकलौते बेटे तक
को मुझे देने से पीछे नहीं हटा।”[1]
13 फिर अब्राहम ने देखा कि कुछ ही
दूरी पर एक मेढ़ा है, जिसके सींग घनी
झाड़ियों में फँसे हुए हैं। अब्राहम उस
मेढ़े को पकड़ लाया और उसने अपने
बेटे की जगह उसकी होम-बलि चढ़ायी।
14 अब्राहम ने उस जगह का नाम
यहोवा-यिरे* रखा। इसलिए आज भी
यह कहा जाता है: “यहोवा के पहाड़ पर
इंतज़ाम हो जाएगा।”[2]

15 यहोवा के स्वर्गदूत ने दूसरी बार
स्वर्ग से अब्राहम को आवाज़ दी
16 और कहा, “यहोवा कहता है, ‘तू
अपने बेटे को, अपने इकलौते बेटे को भी
देने से पीछे नहीं हटा।[3] तेरे इस काम की
वजह से मैं अपनी शपथ खाकर कहता हूँ[4]
17 कि मैं तुझे ज़रूर आशीष दूँगा और
तेरे वंश* को इतना बढ़ाऊँगा कि वह
आसमान के तारों और समुंदर किनारे की
बालू के किनकों जैसा अनगिनत हो
जाएगा।[5] और तेरा वंश* अपने दुश्मनों
के शहरों# को अपने अधिकार में कर
लेगा।[6] 18 और तेरे वंश*[7] के ज़रिए
धरती की सभी जातियाँ आशीष पाएँगी,#
क्योंकि तूने मेरी आज्ञा मानी है।’”[8]

19 इसके बाद अब्राहम अपने सेवकों
के पास आया और फिर वे सब बेरशेबा[9]

22:14 *मतलब “यहोवा इंतज़ाम करेगा; यहोवा इस बात का ध्यान रखेगा।” **22:17, 18** *शा., “बीज।” **22:17** #शा., “फाटक।” **22:18** #इसका यह मतलब हो सकता है कि आशीष पाने के लिए उन्हें भी कुछ कदम उठाने होंगे।

लौट गए। और अब्राहम बेरशेबा में ही रहा।

20 कुछ समय बाद अब्राहम को यह खबर मिली: “तेरे भाई नाहोर को भी उसकी पत्नी मिलका से बेटे हुए हैं।[1] 21 पहलौठा ऊज़ है, फिर उसका भाई बूज, उसके बाद कमूएल जिसका बेटा अराम है, 22 फिर केसेद, हज़ो, पिलदाश, यिदलाप और बतूएल।”[2] 23 बतूएल ही रिबका[3] का पिता था। ये आठ लड़के अब्राहम के भाई नाहोर को उसकी पत्नी मिलका से हुए। 24 नाहोर को उसकी उप-पत्नी रूमाह से भी बेटे हुए। वे थे तेबह, गहम, तहश और माका।

23 सारा की कुल उम्र 127 साल थी।[4] 2 उसकी मौत कनान देश[5] के किरयत-अरबा[6] यानी हेब्रोन[7] में हुई और अब्राहम मातम मनाने लगा, वह बहुत रोया। 3 फिर वह अपनी पत्नी की लाश के पास से उठा और उसने हित्त[8] के बेटों के पास जाकर कहा, 4 “मैं तो एक परदेसी हूँ, दूसरे देश से यहाँ रहने आया हूँ।[9] क्या तुम मुझे अपनी पत्नी को दफनाने के लिए थोड़ी जगह दोगे?” 5 हित्त के बेटों ने अब्राहम से कहा, 6 “देख मालिक, तू परमेश्वर का चुना हुआ प्रधान* है।[10] तू चाहे तो हमारी कब्रों में से सबसे बढ़िया कब्र ले सकता है। हममें से कोई तुझे अपनी कब्र देने से मना नहीं करेगा। तू जहाँ चाहे वहाँ अपनी पत्नी को दफना ले।”

7 उनके ऐसा कहने पर अब्राहम उठकर हित्त[11] के बेटों के आगे झुका, जो वहाँ के निवासी थे। 8 अब्राहम ने उनसे कहा, “अगर तुम्हें मंज़ूर है कि मैं अपनी पत्नी को तुम्हारे यहाँ दफनाऊँ, तो तुमसे मेरी एक गुज़ारिश है। मेरी तरफ से सोहर के बेटे एप्रोन से बिनती करो 9 कि वह मुझे अपनी मकपेला की गुफा बेच दे जो उसकी ज़मीन के कोने पर है। मैं तुम सबके सामने उससे वह गुफा खरीदना चाहता हूँ। मैं उसकी पूरी कीमत देने के लिए तैयार हूँ, जितनी भी चाँदी लगेगी मैं दूँगा[1] ताकि मेरे पास अपनी ज़मीन हो जिसमें मैं अपनी पत्नी को दफना सकूँ।”[2]

10 एप्रोन हित्त के बेटों के बीच बैठा था। इसलिए हित्ती एप्रोन ने उन बेटों के सामने और उन सबके सामने, जो शहर के फाटक पर मौजूद थे,[3] अब्राहम से कहा, 11 “मालिक, मैं कुछ कहना चाहता हूँ। तू मुझसे गुफा ही नहीं, पूरी ज़मीन ले ले। मैं अपने लोगों के सामने तुझे देता हूँ। तू अपनी पत्नी को वहाँ दफना ले।” 12 तब अब्राहम ने वहाँ के उन निवासियों के आगे सिर झुकाया 13 और सबके सामने एप्रोन से कहा, “ठीक है, मैं तुझसे पूरी ज़मीन ले लूँगा, मगर उसकी कीमत देकर। जितनी भी चाँदी लगेगी, तुझे मुझसे लेनी होगी। तभी मैं वहाँ अपनी पत्नी को दफनाऊँगा।”

14 तब एप्रोन ने अब्राहम से कहा, 15 “वैसे देखा जाए तो मालिक, इस ज़मीन की कीमत 400 शेकेल* चाँदी है। मगर पैसे कहाँ भागे जा रहे हैं? तू जा, अपनी पत्नी को दफना ले।” 16 अब्राहम उतनी कीमत देने को राज़ी हो गया, जितनी एप्रोन ने हित्तियों के सामने बतायी थी। और उन दिनों व्यापारियों में जो तौल चलती थी उसके मुताबिक अब्राहम ने उसे 400 शेकेल* चाँदी तौलकर दे दी।[4] 17 इस तरह

अध्य. 22
1 उत 11:26, 29
2 उत 25:20
3 उत 24:15; रोम 9:10

अध्य. 23
4 उत 17:17
5 उत 12:5
6 यह 14:15
7 उत 35:27; गि 13:22
8 उत 10:15
9 उत 17:1, 8; इब्र 11:9, 13
10 उत 21:22
11 1इत 1:13

दूसरा कॉल.
1 उत 23:15
2 उत 25:9, 10; उत 49:29-33; उत 50:13, 14
3 रूत 4:1
4 प्रेष 7:15, 16

23:6 *या शायद, “एक महान प्रधान।”

23:15, 16 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

यह तय हुआ कि एप्रोन की वह ज़मीन,
जो मकपेला में ममरे के पास थी और उस
ज़मीन में जो गुफा थी और जितने पेड़ थे,
वह सब **18** अब्राहम के होंगे। यह लेन-
देन हित्त के बेटों और उन सबके सामने
हुआ जो शहर के फाटक पर मौजूद थे।
19 इसके बाद अब्राहम ने अपनी पत्नी
सारा को मकपेला की गुफा में दफना
दिया, जो कनान देश के ममरे यानी
हेब्रोन के पास थी। **20** इस तरह हित्त
के बेटों ने वह ज़मीन और गुफा अब्राहम
के नाम कर दी ताकि वह अपनी पत्नी को
वहाँ दफना सके।[1]

24 अब्राहम बूढ़ा हो गया था, उसकी
उम्र काफी ढल चुकी थी और
यहोवा ने उसे सब बातों में आशीष
दी थी।[2] **2** एक दिन अब्राहम ने अपने
सबसे पुराने सेवक से, जो उसके घराने के
सब कामों की देखरेख करता था,[3] यह
गुज़ारिश की: "तू अपना हाथ मेरी जाँघ
के नीचे रख **3** और स्वर्ग और पृथ्वी के
परमेश्वर यहोवा की शपथ खा कि तू मेरे
बेटे के लिए कनानियों की कोई लड़की
नहीं लाएगा जिनके देश में मैं रहता हूँ।[4]
4 इसके बजाय, तुझे मेरे देश जाना होगा
और इसहाक के लिए मेरे रिश्तेदारों[5] में
से एक लड़की लानी होगी।"

5 सेवक ने अब्राहम से कहा, "लेकिन
अगर लड़की मेरे साथ इस देश में आने
को तैयार नहीं हुई तो क्या मैं तेरे बेटे
को उस देश में ले जाऊँ, जहाँ से तू आया
है?"[6] **6** इस पर अब्राहम ने कहा,
"नहीं, मेरे बेटे को वहाँ हरगिज़ मत ले
जाना।[7] **7** स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा,
जो मुझे मेरे पिता के घर से और मेरे
रिश्तेदारों के देश से यहाँ लाया है[8]
और जिसने मुझसे बात की और शपथ
खाकर कहा,[9] 'मैं यह देश तेरे वंश[10] को
दूँगा,'[1] वह अपने स्वर्गदूत को तेरे आगे-
आगे भेजेगा[2] और तू मेरे बेटे के लिए
वहाँ[3] से लड़की ढूँढ़ने में ज़रूर कामयाब
होगा। **8** लेकिन अगर लड़की तेरे साथ
आने को राज़ी न हुई, तो तू इस
शपथ से छूट जाएगा। मगर तू मेरे बेटे
को वहाँ हरगिज़ नहीं ले जाएगा।"
9 तब सेवक ने अपना हाथ अपने
मालिक अब्राहम की जाँघ के नीचे रखा
और शपथ खायी कि वह उसके कहे मुता-
बिक ही करेगा।[4]

10 फिर सेवक ने अपने मालिक के
ऊँटों में से दस ऊँट और उसकी दी हुई हर
तरह की बढ़िया-बढ़िया चीज़ें अपने साथ
लीं और सफर के लिए रवाना हो गया।
वह मेसोपोटामिया में नाहोर के शहर की
तरफ चल पड़ा। **11** जब वह शहर के
नज़दीक पहुँचा, तो वहाँ उसने एक कुएँ
के पास ऊँटों को बिठा दिया। शाम का
समय हो रहा था जब औरतें वहाँ कुएँ पर
पानी भरने आया करती थीं। **12** अब्रा-
हम के सेवक ने प्रार्थना की, "हे यहोवा,
मेरे मालिक अब्राहम के परमेश्वर, आज
मैं जिस काम के लिए यहाँ आया हूँ उसे
सफल कर दे और इस तरह मेरे मालिक
के लिए अपने अटल प्यार का सबूत
दे। **13** देख, मैं यहाँ पानी के सोते के
पास खड़ा हूँ और शहर की औरतें पानी
भरने आ रही हैं। **14** ऐसा हो कि मैं
जिस लड़की से कहूँ, 'क्या मुझे अपने घड़े
से थोड़ा पानी पिलाएगी?' और वह मुझसे
कहे, 'ज़रूर, और मैं तेरे ऊँटों को भी
पिलाऊँगी,' वह वही लड़की हो जिसे तूने
अपने सेवक इसहाक के लिए चुना है। तेरे
ऐसा करने से मैं जान लूँगा कि मेरे मालिक
के लिए तेरा प्यार अटल है।"

15 अब्राहम का सेवक अभी यह कह
ही रहा था कि रिबका अपने कंधे पर घड़ा

अध्य. 23
1 उत 25:9, 10; उत 49:29-33; उत 50:13, 14

अध्य. 24
2 उत 13:2
3 उत 15:2, 3
4 उत 28:1; व्य 7:1, 3; 2कुर 6:14
5 उत 22:20-23
6 उत 11:27, 28; उत 15:7
7 इब्र 11:15
8 उत 12:1; इब्र 11:8
9 मी 7:20; लूक 1:72, 73; इब्र 6:13, 14
10 इब्र 11:18

दूसरा कॉल.
1 उत 13:14, 15; उत 26:3, 4; व्य 34:4; प्रेष 7:4, 5
2 इब्र 1:7, 14
3 उत 12:5
4 उत 24:2, 3

लिए शहर से बाहर उस जगह आयी।
रिबका, बतूएल की बेटी थी[1] और बतू-
एल, अब्राहम के भाई नाहोर[2] और
उसकी पत्नी मिलका[3] का बेटा था।
16 रिबका एक कुँवारी लड़की थी, उसने
किसी भी आदमी के साथ यौन-संबंध नहीं
रखे थे। वह दिखने में बड़ी सुंदर थी। वह
पानी भरने के लिए नीचे उतरकर पानी के
सोते के पास गयी और अपना घड़ा भर-
कर ऊपर आयी। **17** तभी सेवक दौड़-
कर उसके पास गया और उससे कहा,
"क्या मुझे पीने के लिए थोड़ा पानी
मिलेगा?" **18** लड़की ने कहा, "हाँ
मालिक, ज़रूर।" उसने फौरन अपने
कंधे से घड़ा उतारा और उसे पानी
पिलाया। **19** सेवक को पानी देने के
बाद वह बोली, "मैं तेरे ऊँटों को भी
पानी पिलाऊँगी। वे जितना पीएँगे, मैं
भर लाऊँगी।" **20** उसने फौरन घड़े का
बचा हुआ पानी हौद में डाल दिया और
कुएँ से पानी लाकर हौद में भरने लगी।
वह तब तक भाग-भागकर पानी लाती
रही, जब तक कि सारे ऊँट पी न चुके।
21 इस दौरान अब्राहम का सेवक वहाँ
खड़ा बड़ी हैरत से उस लड़की को
देखता रहा और मन-ही-मन सोचता रहा
कि वह जिस काम के लिए यहाँ आया है
क्या उसे यहोवा ने वाकई सफल कर
दिया है।

22 जब सारे ऊँट पानी पी चुके तो
सेवक ने उस लड़की के लिए सोने की
एक नथ और दो कंगन निकाले। नथ
का वज़न आधा शेकेल* था और कंगन
का दस शेकेल।* **23** उसने लड़की
से पूछा, "क्या मैं जान सकता हूँ, तू
किसकी बेटी है? क्या तेरे पिता के घर
हमें रात-भर के लिए जगह मिलेगी?"
24 लड़की ने कहा, "मैं बतूएल की बेटी
हूँ[1] और मेरे दादा-दादी का नाम नाहोर
और मिलका है।"[2] **25** उसने यह भी
कहा, "हमारे यहाँ ठहरने के लिए काफी
जगह है और जानवरों के लिए भरपूर
चारा और पुआल भी है।" **26** तब
सेवक ने मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर
यहोवा को दंडवत किया **27** और कहा,
"मेरे मालिक अब्राहम के परमेश्वर यहोवा
की तारीफ हो क्योंकि उसने मेरे मालिक
से प्यार* करना नहीं छोड़ा और उसका
विश्वासयोग्य बना रहा। यहोवा ही है जो
मुझे राह दिखाता हुआ मेरे मालिक के
भाइयों के घर तक लाया।"

28 तब रिबका दौड़कर अपने घर
गयी और उसने अपनी माँ को और घर के
बाकी लोगों को सारा हाल कह
सुनाया। **29** रिबका का एक भाई था,
लाबान।[3] लाबान दौड़कर उस आदमी से
मिलने गया। **30** वह आदमी अब भी
पानी के सोते के पास अपने ऊँटों के
साथ खड़ा था। लाबान इसलिए दौड़कर
गया क्योंकि उसने रिबका की नथ और
कंगन देखे थे और रिबका की बातें सुनी
थीं कि उस आदमी ने मुझसे ये-ये कहा।
31 लाबान ने वहाँ पहुँचते ही उस आदमी
से कहा, "हे यहोवा के सेवक, तुझ पर
वाकई उसकी आशीष है। तू यहाँ क्यों
खड़ा है? मेरे घर चल, मैंने तेरे ठहरने का
सारा इंतज़ाम कर दिया है। तेरे ऊँटों के
लिए भी जगह तैयार है।" **32** तब वह
सेवक लाबान के घर गया। और उसने*
ऊँटों को खोला और उनके आगे चारा
और पुआल डाला। फिर उसने सेवक
और उसके साथ आए आदमियों को पैर

24:22 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

24:27 *या "अटल प्यार।" **24:32** *मुमकिन है कि यह लाबान था।

अध्य. 24
1 उत 22:23
2 उत 11:26
3 उत 11:29

दूसरा कॉल.
1 उत 22:23
2 उत 11:29
3 उत 25:20
उत 29:10

धोने के लिए पानी दिया। **33** इसके
बाद खाना परोसा गया, मगर सेवक ने
कहा, “पहले मैं बताना चाहूँगा कि मैं
यहाँ क्यों आया हूँ, उसके बाद ही खाना
खाऊँगा।” लाबान ने कहा, “हाँ-हाँ,
ज़रूर बता।”

34 उसने कहा, “मैं अब्राहम का
सेवक हूँ।[1] **35** यहोवा ने मेरे मालिक
को बहुत आशीष दी है। उसकी बदौलत
मेरा मालिक हर तरह से मालामाल है,
सोना-चाँदी, दास-दासियाँ, भेड़-बकरी,
गाय-बैल, ऊँट, गधे सबकुछ है उसके
पास।[2] **36** इतना ही नहीं, मालिक की
पत्नी सारा ने अपने बुढ़ापे में उसे एक
बेटा दिया।[3] और मालिक अपना सबकुछ
अपने बेटे को दे देगा।[4] **37** मालिक ने
मुझे शपथ दिलाकर कहा है, ‘तू मेरे बेटे
के लिए कनानियों की कोई लड़की
नहीं लाएगा, जिनके देश में मैं रहता
हूँ।[5] **38** इसके बजाय, तू मेरे पिता
के घराने और रिश्तेदारों के यहाँ जाएगा[6]
और वहाँ से मेरे बेटे के लिए
लड़की लाएगा।’[7] **39** तब मैंने मालिक
से कहा, ‘अगर वह लड़की मेरे साथ आने
को तैयार न हुई तो?’[8] **40** मालिक ने
मुझसे कहा, ‘यहोवा परमेश्वर, जिसके
सामने मैं सही राह पर चलता आया हूँ,[9]
अपना स्वर्गदूत तेरे साथ भेजेगा[10] और
तुझे इस काम में ज़रूर कामयाबी देगा।
तुझे मेरे बेटे के लिए मेरे पिता के
घराने से, मेरे रिश्तेदारों[11] के यहाँ से
लड़की लानी होगी। **41** लेकिन अगर
मेरे रिश्तेदार जिनके पास तू जा रहा है,
तुझे अपनी लड़की न दें तो तू अपनी
शपथ से छूट जाएगा।’[12]

42 फिर आज जब मैं पानी के सोते
के पास पहुँचा तो मैंने परमेश्वर से प्रार्थना
की, ‘हे यहोवा, मेरे मालिक अब्राहम के
परमेश्वर, अगर तू चाहता है कि मैं जिस
काम से यहाँ आया हूँ उसमें कामयाब
होऊँ तो मेरी यह दुआ सुन ले। **43** मैं
यहाँ पानी के सोते के पास खड़ा हूँ और
ऐसा हो कि यहाँ पानी भरने के लिए
आनेवाली जिस लड़की[1] से मैं कहूँ, “क्या
अपने घड़े से मुझे थोड़ा पानी पिलाएगी?”
44 और वह कहे, “ज़रूर और मैं तेरे
ऊँटों के लिए भी पानी भर लाऊँगी,” वह
वही लड़की हो जिसे यहोवा ने मेरे मालिक
के बेटे के लिए चुना है।’[2]

45 मैं मन में यह कह ही रहा था कि
मैंने देखा, रिबका अपने कंधे पर घड़ा
लिए चली आ रही है। वह नीचे उतर-
कर पानी के सोते के पास गयी
और पानी भरने लगी। फिर मैंने उससे
कहा, ‘क्या मुझे थोड़ा पानी पिलाए-
गी?’[3] **46** उसने फौरन कंधे से घड़ा
उतारा और कहा, ‘ज़रूर[4] और मैं तेरे
ऊँटों को भी पिलाऊँगी।’ तब रिबका ने
मुझे पानी पिलाया और इसके बाद मेरे
ऊँटों को भी पानी दिया। **47** फिर मैंने
उससे पूछा, ‘तू किसकी बेटी है?’ उसने
कहा, ‘मैं बतूएल की बेटी हूँ और मेरे
दादा-दादी का नाम नाहोर और मिलका
है।’ जब मैंने यह सुना तो मैंने उसे नथ
और कंगन पहनाए।[5] **48** फिर मैंने मुँह
के बल ज़मीन पर गिरकर अपने मालिक
अब्राहम के परमेश्वर यहोवा को दंडवत
किया और यहोवा की तारीफ की[6]
जिसने मुझे सही राह दिखायी और मुझे
अपने मालिक के भाई के घर पहुँचाया
ताकि मैं उसकी बेटी को अपने मालिक
के बेटे के लिए ले जाऊँ। **49** अब
फैसला तुम पर है, तुम चाहो तो अपनी
बेटी देकर मेरे मालिक के लिए अपने
अटल प्यार का और विश्वासयोग्य होने
का सबूत दे सकते हो। अगर नहीं, तो

अध्य. 24
1 उत 15:2, 3
2 उत 12:15, 16; उत 13:2; उत 24:1
3 उत 21:1, 2; रोम 4:19; इब्र 11:11
4 उत 25:5
5 उत 24:2, 3; उत 28:1
6 उत 22:20-23
7 उत 24:4
8 उत 24:5
9 उत 48:15
10 इब्र 1:7, 14
11 उत 11:25
12 उत 24:9

दूसरा कॉल.
1 उत 24:16
2 उत 24:14
3 उत 24:15, 17
4 उत 24:18
5 उत 24:22, 23
6 उत 24:27

बता दो ताकि मैं सोचूँ कि मुझे आगे क्या
करना है।”*[1]
50 तब लाबान और बतूएल ने कहा,
“यह सब यहोवा की तरफ से हुआ है।
अब हम कौन होते हैं हाँ या न कहने-
वाले?* 51 देख, रिबका तेरे सामने
है। इसे तू ले जा सकता है ताकि यह तेरे
मालिक के बेटे की पत्नी बने, ठीक जैसे
यहोवा ने कहा है।” 52 यह सुनते ही
अब्राहम के सेवक ने मुँह के बल ज़मीन
पर गिरकर यहोवा को दंडवत किया।
53 फिर उसने सोने-चाँदी के गहने और
कपड़े निकाले और रिबका को दिए।
उसने रिबका के भाई और उसकी माँ
को भी कई कीमती चीज़ें दीं। 54 इसके
बाद सेवक और उसके साथ आए आद-
मियों ने खाया-पीया और उस रात वे वहीं
ठहरे।
सुबह होने पर सेवक ने कहा, “अब
मुझे जाने की इजाज़त दो।” 55 तब
रिबका के भाई और माँ ने उससे कहा,
“लड़की को हमारे साथ कुछ दिन रहने
दे, कम-से-कम दस दिन। इसके बाद उसे
ले जाना।” 56 मगर सेवक ने कहा,
“नहीं, अब मैं और नहीं रुक सकता।
यहोवा की मदद से वह काम पूरा हो गया
है जिसके लिए मैं आया था। अब मुझे
इजाज़त दो कि मैं अपने मालिक के पास
लौट जाऊँ।” 57 तब उन्होंने कहा,
“क्यों न हम लड़की को बुलाकर उसी
से पूछ लें कि वह क्या चाहती है?”
58 उन्होंने रिबका को बुलाकर उससे
पूछा, “क्या तू इस आदमी के साथ जाना
चाहेगी?” उसने कहा, “हाँ, मैं जाऊँगी।”
59 तब उन्होंने अपनी बहन रिबका[2]
और उसकी धाई*[1] को, साथ ही अब्रा-
हम के सेवक और उसके आदमियों को
विदा किया। 60 उन्होंने यह कहकर
रिबका को आशीर्वाद दिया, “प्यारी
बहना, हमारी यह दुआ लेती जाना।
तेरा वंश इतना बढ़े कि तू हज़ारों-लाखों
की माँ कहलाए। तेरा वंश उन
लोगों के शहरों* को अपने अधिकार में
कर ले, जो उससे नफरत करते हैं।”[2]
61 इसके बाद रिबका और उसकी
दासियाँ ऊँटों पर सवार होकर उस
आदमी के पीछे-पीछे निकल पड़ीं। इस
तरह वह सेवक रिबका को साथ लेकर
अपने रास्ते चल दिया।
62 इधर इसहाक, जो नेगेब में रहता
था,[3] बेर-लहै-रोई[4] से आ रहा था।
63 शाम के झुटपुटे का समय था और
वह मनन करता हुआ[5] मैदान में टहल
रहा था। जब उसने नज़रें उठायीं तो देखा
कि सामने से ऊँटों का कारवाँ चला आ
रहा है! 64 और जब रिबका ने इस-
हाक को देखा तो वह फौरन ऊँट
से नीचे उतरी। 65 उसने सेवक से
पूछा, “वह जो आदमी हमसे मिलने आ
रहा है, कौन है?” सेवक ने कहा, “वह
मेरा मालिक है।” तब रिबका ने ओढ़नी
से अपना सिर ढक लिया। 66 फिर
सेवक ने इसहाक को अपने सफर की
पूरी कहानी सुनायी, उसे बताया कि
उसने क्या-क्या किया। 67 इसके बाद
इसहाक, रिबका को अपनी माँ सारा के
तंबू में लाया।[6] इस तरह उसने रिबका
को अपनी पत्नी बनाया और उसे रिबका
से प्यार हो गया[7] और वह अपनी माँ की
मौत के गम से उबर पाया।[8]

अध्य. 24
1 उत 24:8
2 उत 28:5

दूसरा कॉल.
1 उत 35:8
2 उत 22:15, 17
3 उत 12:9; उत 20:1; गि 13:22; न्या 1:9
4 उत 16:14; उत 25:11
5 भज 77:12; भज 143:5
6 इब्र 11:9
7 उत 26:8
8 उत 23:2, 19

24:49 *शा., “दाएँ या बाएँ मुड़ जाऊँ।”
24:50 *या “हम तुझसे न भला कह सकते हैं न बुरा।”

24:59 *यानी उसकी वह धाई जो अब उसकी सेविका थी। **24:60** *शा., “फाटक।”

25 अब्राहम ने दोबारा शादी की। उसने कतूरा नाम की एक औरत को अपनी पत्नी बनाया। **2** कतूरा से अब्राहम के ये बेटे हुए: जिमरान, योक्षान, मदान, मिद्यान,[1] यिशबाक और शूह।[2]

3 योक्षान के बेटे थे शीबा और ददान।
ददान के बेटे थे असूरी, लतूशी और लुम्मी।

4 मिद्यान के बेटे थे एपा, एपेर, हानोक, अबीदा और एलदा।
ये सब कतूरा के बेटे थे।

5 आगे चलकर अब्राहम ने अपना सबकुछ इसहाक को दे दिया।[3] **6** मगर अपनी उप-पत्नियों से हुए बेटों को उसने तोहफे दिए और जीते-जी उन्हें इसहाक से बहुत दूर, पूरब देश में भेज दिया।[4] **7** अब्राहम कुल मिलाकर 175 साल जीया। **8** वह अपनी ज़िंदगी से पूरी तरह खुश था। एक लंबी और खुशहाल ज़िंदगी जीने के बाद उसकी मौत हो गयी और उसे दफनाया गया।* **9** अब्राहम को उसके बेटे इसहाक और इश्माएल ने मकपेला की गुफा में दफनाया, जो ममरे के पास हित्ती सोहर के बेटे एप्रोन की ज़मीन में थी।[5] **10** वह ज़मीन अब्राहम ने हित्तियों से खरीदी थी। वहाँ सारा को दफनाया गया था[6] और अब्राहम को भी वहीं दफनाया गया। **11** अब्राहम की मौत के बाद भी परमेश्वर उसके बेटे इसहाक को आशीष देता रहा।[7] इसहाक बेर-लहै-रोई[8] के पास रहता था।

12 यह इश्माएल[9] के बारे में ब्यौरा है। इश्माएल अब्राहम का वह बेटा था जो सारा की मिस्री दासी हाजिरा[10] से पैदा हुआ था।

25:8, 17 *शा., "वह अपने लोगों में जा मिला।"

13 ये थे इश्माएल के बेटे जिनके नाम से उनके अपने-अपने कुल चलेः इश्माएल का पहलौठा नबायोत,[1] फिर केदार,[2] अदबेल, मिबसाम,[3] **14** मिशमा, दूमा, मस्सा, **15** हदद, तेमा, यतूर, नापीश और केदमा। **16** ये थे इश्माएल के 12 बेटे जो अपने-अपने कुल के प्रधान थे।[4] हर कुल की अपनी एक अलग बस्ती और छावनी* थी जो अपने प्रधान के नाम से जानी जाती थी। **17** इश्माएल कुल मिलाकर 137 साल जीया। इसके बाद उसकी मौत हो गयी और उसे दफनाया गया।* **18** इश्माएल के वंशज हवीला[5] से लेकर दूर अश्शूर तक के इलाके में रहा करते थे। हवीला शूर[6] के पास है और शूर, मिस्र के पास है। इश्माएल के वंशज अपने सब भाइयों के आस-पास रहते थे।*[7]

19 ये हैं अब्राहम के बेटे इसहाक[8] के परिवार में हुई घटनाएँ।

इसहाक अब्राहम का बेटा था। **20** जब इसहाक 40 साल का था तब उसने रिबका से शादी की। रिबका बतूएल की बेटी[9] और लाबान की बहन थी जो पद्दन-अराम के रहनेवाले अरामी लोग थे। **21** रिबका बाँझ थी इसलिए इसहाक उसके लिए यहोवा से मिन्नतें करता रहता था। यहोवा ने उसकी सुनी और उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई। **22** रिबका की कोख में पल रहे लड़के एक-दूसरे से लड़ने लगे।[10] इसलिए उसने कहा, "इस तरह दुख झेलने से तो अच्छा है कि मैं मर जाऊँ।" फिर उसने यहोवा से इसकी वजह पूछी। **23** यहोवा ने उससे कहा, "तेरी कोख में

25:16 *या "दीवारों से घिरी छावनी।"
25:18 *या शायद, "उन्होंने अपने सब भाइयों से दुश्मनी की।"

अध्य. 25
1 उत 37:28, निर्ग 2:15, गि 31:2, न्या 6:2
2 1इत 1:32, 33
3 उत 24:36
4 उत 21:14
5 उत 23:8, 9; उत 49:29, 30
6 उत 23:2, 19
7 उत 17:19; उत 26:12-14
8 उत 16:14
9 उत 16:10, 11
10 गल 4:24

दूसरा कॉल.
1 उत 36:2, 3; यश 60:7
2 भज 120:5; यिर्म 49:28; यहे 27:21
3 1इत 1:29-31
4 उत 17:20
5 1शम 15:7
6 उत 16:7, 8
7 उत 16:11, 12
8 उत 22:2; मत 1:1, 2
9 उत 22:23
10 रोम 9:10

दो लड़के* पल रहे हैं,[1] उनसे दो राष्ट्र
निकलेंगे और उन दोनों के रास्ते अलग-
अलग होंगे।[2] एक राष्ट्र दूसरे से ज़्यादा
ताकतवर होगा[3] और बड़ा छोटे की सेवा
करेगा।”[4]

24 जब रिबका के दिन पूरे हुए तो
उसके जुड़वाँ लड़के हुए, ठीक जैसे उससे
कहा गया था! **25** गर्भ से जो पहला
लड़का निकला वह एकदम लाल था।
उसके शरीर पर इतने बाल थे मानो
उसने रोएँदार कपड़ा पहना हो।[5] इस-
लिए उन्होंने उसका नाम एसाव*[6] रखा।
26 फिर उसका भाई पैदा हुआ जो उसकी
एड़ी पकड़े हुए बाहर निकला।[7] इसलिए
उसका नाम याकूब* रखा गया।[8] जब
रिबका ने इन लड़कों को जन्म दिया, तब
इसहाक 60 साल का था।

27 एसाव बड़ा होकर एक कुशल
शिकारी बना।[9] वह जंगल में रहा
करता था, जबकि याकूब एक सीधा-
सादा* इंसान था और तंबुओं में रहा
करता था।[10] **28** इसहाक एसाव से
प्यार करता था, क्योंकि वह उसके लिए
शिकार जो मारकर लाता था। मगर
रिबका याकूब से प्यार करती थी।[11]
29 एक दिन याकूब मसूर की दाल पका
रहा था और उसी वक्त एसाव थका-
हारा जंगल से लौटा। **30** उसने याकूब
से कहा, “तू जो लाल-लाल चीज़ पका
रहा है, थोड़ी-सी मुझे दे। जल्दी कर!
मैं भूख से मरा जा रहा हूँ!”* इसी-
लिए एसाव का नाम एदोम# भी पड़ा।[12]

25:23 *शा., “राष्ट्र।” **25:25** *मतलब “रोएँदार।” **25:26** *मतलब “एड़ी पकड़नेवाला; दूसरे की जगह लेनेवाला।” **25:27** *या “निर्दोष।” **25:30** *या “मैं थककर चूर हो गया हूँ।” #मतलब “लाल।”

अध्य. 25
1 भज 139:15
2 उत 36:31; गि 20:14
3 उत 27:29, 30; व्य 2:4
4 2शम 8:14; मला 1:2, 3; रोम 9:10-13
5 उत 27:11
6 उत 27:32; उत 36:9; मला 1:3
7 हो 12:3
8 उत 27:36
9 उत 27:3, 5
10 इब्र 11:9
11 उत 27:6, 7, 46
12 उत 36:1

दूसरा कॉल.
1 व्य 21:16, 17
2 इब्र 12:16

अध्य. 26
3 उत 12:10
4 उत 20:1; इब्र 11:8, 9
5 उत 12:7; उत 15:18
6 उत 22:16-18; भज 105:9-11; इब्र 6:13, 14
7 उत 15:1, 5; इब्र 11:12
8 व्य 34:4
9 उत 12:1-3; प्रेष 3:25; गल 3:8

31 तब याकूब ने कहा, “पहले तू मुझे
अपना पहलौठे का अधिकार बेच।”[1]
32 एसाव ने कहा, “जब मेरी जान ही
निकली जा रही है, तो मैं पहलौठे
का अधिकार रखकर क्या करूँगा?”
33 याकूब ने कहा, “नहीं, पहले तू शपथ
खा!” तब एसाव ने शपथ खायी और
अपना पहलौठे का अधिकार याकूब को
बेच दिया।[2] **34** इसके बाद याकूब ने
एसाव को दाल और रोटी दी और वह
खा-पीकर अपनी राह चलता बना। इस
तरह एसाव ने अपने पहलौठे के अधि-
कार को तुच्छ जाना।

26
अब देश में अकाल पड़ा। ऐसा
ही अकाल पहली बार अब्राहम
के दिनों में पड़ा था।[3] इसलिए इसहाक
गरार में पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक
के पास गया। **2** वहाँ यहोवा ने इसहाक
के सामने प्रकट होकर उससे कहा, “तू
नीचे मिस्र मत जाना। इसके बजाय उस
देश में जाकर रहना जो मैं तुझे बताऊँ-
गा। **3** तू इस देश में परदेसी बनकर
रह।[4] मैं हमेशा तेरे साथ रहूँगा और तुझे
आशीष दूँगा, क्योंकि मैं तुझे और तेरे
वंश* को ये सभी इलाके दूँगा।[5] और मैं
अपना यह वादा पूरा करूँगा जो मैंने
तेरे पिता अब्राहम से शपथ खाकर किया
था:[6] **4** ‘मैं तेरे वंश* को इतना बढ़ाऊँ-
गा कि वह आसमान के तारों जैसा अन-
गिनत हो जाएगा[7] और मैं तेरे वंश*
को ये सभी इलाके दूँगा।[8] तेरे वंश* के
ज़रिए धरती की सभी जातियाँ आशीष
पाएँगी।’#[9] **5** मैं अपना यह वादा इस-
लिए पूरा करूँगा, क्योंकि अब्राहम ने मेरी
आज्ञा मानी और हमेशा वही किया जो

26:3, 4 *शा., “बीज।” **26:4** #इसका यह मतलब हो सकता है कि आशीष पाने के लिए उन्हें भी कुछ कदम उठाने होंगे।

मैंने उससे चाहा था, वह मेरा हुक्म, मेरी
विधियाँ और मेरे कानून मानता रहा।”[1]
6 इसलिए इसहाक गरार में ही रहा।[2]
7 वहाँ के आदमी इसहाक से उसकी
पत्नी के बारे में बार-बार पूछते थे कि यह
कौन है और वह कहता था, “यह मेरी
बहन है।”[3] वह उन्हें यह बताने से
डरता था कि रिबका उसकी पत्नी है।
रिबका बहुत सुंदर थी[4] इसलिए इसहाक
ने सोचा, “अगर मैं बताऊँगा कि रिबका
मेरी पत्नी है तो हो सकता है यहाँ के
आदमी रिबका को हासिल करने के
लिए मुझे मार डालें।” 8 इसहाक और
रिबका को वहाँ रहते कुछ समय बीत
गया था। एक दिन जब पलिश्तियों का
राजा अबीमेलेक अपनी खिड़की से बाहर
देख रहा था तो उसने देखा कि इस-
हाक रिबका को प्यार कर रहा है।*[5]
9 उसने फौरन इसहाक को बुलवाकर
उससे कहा, “वह औरत तो तेरी पत्नी है!
फिर तूने यह क्यों कहा कि वह तेरी बहन
है?” इसहाक ने कहा, “मुझे डर था कि
कहीं उसकी वजह से लोग मुझे मार न
डालें।”[6] 10 अबीमेलेक ने कहा, “यह
तूने हमारे साथ क्या किया?[7] मेरे लोगों
में से कोई तेरी पत्नी के साथ गलत काम
कर सकता था। हम तेरी वजह से कितने
बड़े पाप के दोषी बन जाते!”[8] 11 फिर
अबीमेलेक ने सब लोगों को आज्ञा दी:
“अगर किसी ने इस आदमी या इसकी
पत्नी को हाथ भी लगाया, तो उसे मार
डाला जाएगा!”

12 फिर इसहाक वहाँ की ज़मीन में
बीज बोने लगा। उस साल उसने जितना
बोया उसका 100 गुना पाया, क्योंकि
यहोवा की आशीष उस पर थी।[9]
13 इसहाक दिनों-दिन अमीर होता गया
और एक वक्त ऐसा आया कि वह बे-
शुमार दौलत का मालिक बन गया।
14 उसके पास भेड़ों और गाय-बैलों के
झुंड-के-झुंड हो गए और बहुत सारे
दास-दासियाँ भी।[1] मगर यह देखकर
पलिश्तियों को जलन होने लगी।

15 इसलिए पलिश्तियों ने उन सारे
कुओं को मिट्टी से भर दिया जो उसके
पिता अब्राहम ने अपने सेवकों से खुद-
वाए थे।[2] 16 फिर अबीमेलेक ने इस-
हाक से कहा, “तू हमारे इलाके से चला
जा, क्योंकि तू हमसे कहीं ज़्यादा ताकत-
वर हो गया है।” 17 तब इसहाक वह
जगह छोड़कर गरार[3] की घाटी में चला
गया और वहाँ डेरा डालकर रहने लगा।
18 वहाँ बहुत पहले अब्राहम ने कुछ कुएँ
खुदवाए थे मगर उसकी मौत के बाद
पलिश्तियों ने उन्हें बंद कर दिया था।[4]
अब इसहाक ने उन्हीं कुओं को फिर से
खुदवाया और उनके वही नाम रखे जो
उसके पिता ने रखे थे।[5]

19 जब इसहाक के दास पानी की
तलाश में घाटी में खुदाई कर रहे थे, तो
उन्हें साफ पानी का एक कुआँ मिला।
20 मगर गरार में रहनेवाले चरवाहे इस-
हाक के चरवाहों से यह कहकर झगड़ने
लगे: “यह कुआँ हमारा है!” तब इसहाक
ने उस कुएँ का नाम एसेक * रखा, क्योंकि
उन्होंने उसके साथ झगड़ा किया था।
21 फिर इसहाक के दास दूसरा कुआँ
खोदने लगे, मगर गरार के चरवाहों ने
उस पर भी झगड़ा किया। इसलिए इस-
हाक ने उस कुएँ का नाम सित्ना* रखा।
22 बाद में इसहाक वहाँ से दूसरी जगह
गया और उसने वहाँ भी एक कुआँ

अध्य. 26
1 उत 17:10, 23; उत 22:3, 12; इब्र 11:8; याकू 2:21
2 उत 26:17
3 उत 12:11-13
4 उत 24:16
5 उत 24:67
6 उत 20:11
7 उत 12:18
8 उत 20:9
9 उत 24:34, 35

दूसरा कॉल.
1 उत 12:16
2 उत 21:27, 30
3 उत 10:19; उत 20:1
4 उत 21:25
5 उत 21:31

26:8 *या “गले लगा रहा है।”

26:20 *मतलब “झगड़ा।” 26:21 *मत-
लब “इलज़ाम।”

खोदा। मगर इस बार गरार के चरवाहों ने उससे झगड़ा नहीं किया। इसलिए उसने उस कुएँ का नाम रहोबोत* रखा और कहा, "यहोवा ने हमें बहुत बड़ी जगह दी है ताकि हम फलते-फूलते जाएँ।"[1]

23 इसके बाद इसहाक वहाँ से बेर-शेबा[2] गया। **24** उस रात यहोवा उसके सामने प्रकट हुआ और उससे कहा, "मैं तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूँ।[3] तुझे किसी बात से डरने की ज़रूरत नहीं[4] क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं अपने सेवक अब्राहम की खातिर तुझे आशीष दूँगा और तेरे वंश को कई गुना बढ़ाऊँगा।"[5] **25** तब इसहाक ने वहाँ एक वेदी बनायी और यहोवा का नाम पुकारा।[6] वहाँ उसने अपना तंबू गाड़ा[7] और उसके सेवकों ने एक कुआँ खोदा।

26 बाद में अबीमेलेक गरार से इस-हाक के पास आया। उसके साथ उसका निजी सलाहकार अहुज्जत और सेना-पति पीकोल भी था।[8] **27** इसहाक ने उन लोगों से कहा, "तुम लोगों ने मुझसे नफरत की और मुझे अपने यहाँ से निकाल दिया था। अब क्यों आए हो मेरे पास?" **28** जवाब में उन्होंने कहा, "हमने साफ देखा है कि यहोवा हमेशा से तेरे साथ रहा है।[9] इसलिए हमने तेरे सामने यह बात रखने का फैसला किया है कि अगर तुझे एतराज़ न हो, तो हम एक-दूसरे के साथ शांति का रिश्ता बनाए रखने की शपथ खाएँ और आपस में करार करें[10] **29** कि तू हमारे साथ कुछ बुरा नहीं करेगा, जैसे हमने भी तेरा कुछ बुरा नहीं किया। क्योंकि जब हमने तुझे अपने यहाँ से भेजा तो तुझे शांति से विदा किया और इस तरह तेरे साथ भलाई की। तुझ पर वाकई यहोवा की आशीष है।" **30** फिर इसहाक ने उन लोगों के लिए दावत रखी और उन्होंने खाया-पीया। **31** सुबह वे जल्दी उठे और इसहाक और अबीमेलेक ने एक-दूसरे से शपथ खायी।[1] इसके बाद इसहाक ने उन्हें शांति से विदा किया और वे वहाँ से चले गए।

32 उसी दिन इसहाक के दासों ने आकर उस कुएँ के बारे में उसे खबर दी जो उन्होंने खोदा था।[2] उन्होंने कहा, "हमें पानी मिल गया!" **33** इसलिए इसहाक ने उस कुएँ का नाम शिबा रखा। और वहाँ जो शहर है वह आज तक बेरशेबा[3] नाम से ही जाना जाता है।

34 जब एसाव 40 साल का था, तो उसने यहूदीत और बाशमत नाम की दो हित्ती लड़कियों से शादी की। यहूदीत का पिता बएरी था और बाशमत का पिता एलोन था।[4] **35** उन हित्ती लड़कियों की वजह से इसहाक और रिबका का जीवन बहुत दुखी हो गया।[5]

27 इसहाक बूढ़ा हो गया था और उसकी आँखें इतनी कमज़ोर हो गयीं कि उसे कुछ दिखायी नहीं देता था। एक दिन उसने अपने बड़े बेटे एसाव को अपने पास बुलाकर कहा,[6] "मेरे बेटे।" एसाव ने कहा, "हाँ, मेरे पिता।" **2** इसहाक ने कहा, "देख, मैं तो बूढ़ा हो गया हूँ। क्या पता, कब मौत आ जाए। **3** इसलिए तू अपने हथियार, अपना तीर-कमान और तरकश लेकर जंगल में जा और मेरे लिए शिकार मारकर ला।[7] **4** और वह लज़ीज़ गोश्त पका जो मुझे बहुत पसंद है ताकि मैं खाऊँ और मरने से पहले तुझे आशीर्वाद दूँ।"

5 जब इसहाक एसाव से यह सब कह रहा था तो रिबका ने उसकी बातें सुन लीं। एसाव शिकार मारकर लाने के लिए

अध्य. 26
1 उत 17:5, 6; उत 28:1, 3
2 उत 21:31
3 उत 17:1; उत 28:13
4 उत 15:1
5 उत 17:19; भज 105:9-11
6 उत 12:8, 9
7 इब्र 11:9
8 उत 21:32
9 उत 21:22
10 उत 21:27

दूसरा कॉल.
1 उत 21:22-24
2 उत 26:18
3 न्या 20:1
4 उत 36:2, 3
5 उत 27:46; उत 28:8

अध्य. 27
6 उत 25:28
7 उत 25:27

26:22 * मतलब "बड़ी-बड़ी जगह।"

जंगल चला गया।[1] 6 इधर रिबका ने
अपने बेटे याकूब से कहा,[2] "मैंने अभी-
अभी तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से
यह कहते सुना, 7 'मेरे लिए शिकार
मारकर ला और लज़ीज़ गोश्त पका
ताकि मैं खाऊँ और मरने से पहले यहोवा
को गवाह मानकर तुझे आशीर्वाद दूँ।'[3]
8 इसलिए बेटा याकूब, मेरी बात ध्यान
से सुन और मैं जो-जो कहूँ, वह कर।[4]
9 तू पहले जा और बकरियों के झुंड से
दो बढ़िया बच्चे चुनकर ले आ। मैं तेरे
पिता के लिए बिलकुल वैसा ही लज़ीज़
गोश्त बनाऊँगी जैसा उसे पसंद है।
10 फिर तू उसे ले जाकर अपने पिता को
देना ताकि वह खाए और अपनी मौत से
पहले तुझे आशीर्वाद दे।"

11 याकूब ने अपनी माँ रिबका से
कहा, "मगर एसाव के शरीर पर तो
बाल-ही-बाल हैं,[5] जबकि मेरे शरीर पर
न के बराबर हैं। 12 अगर मेरे पिता ने
मुझे छूकर पहचान लिया तो?[6] वह यही
सोचेगा कि मैं उसका मज़ाक बना रहा हूँ।
फिर मैं आशीर्वाद पाने के बदले खुद पर
शाप ले आऊँगा।" 13 तब उसकी माँ
ने कहा, "ऐसा मत कह बेटा। तेरा शाप
मुझे लग जाए। अभी तू इस बात की
चिंता मत कर। तू बस वही कर जो मैं
कह रही हूँ। अब जा और बकरी के बच्चे
ले आ।"[7] 14 तब याकूब ने बकरी के
दो बच्चे लाकर अपनी माँ को दिए और
उसकी माँ ने वैसा ही लज़ीज़ गोश्त तैयार
किया जैसा उसके पिता को पसंद था।
15 इसके बाद रिबका ने अपने बड़े बेटे
एसाव के सबसे बढ़िया कपड़े लिए, जो
रिबका के पास घर में थे और अपने छोटे
बेटे याकूब को पहना दिए।[8] 16 उसने
याकूब के हाथों पर और गरदन के उस
हिस्से पर जहाँ बाल नहीं थे, बकरी के
बच्चों की खाल लपेट दी।[1] 17 फिर
उसने याकूब के हाथ में वह लज़ीज़ गोश्त
और रोटी दी जो उसने पकायी थी।[2]

18 याकूब अपने पिता इसहाक के
पास गया और उससे कहा, "मेरे पिता!"
इसहाक ने कहा, "तू कौन है बेटा?"
19 याकूब ने कहा, "मैं एसाव हूँ, तेरा
पहलौठा।[3] तूने जैसा कहा था मैंने वैसा
ही किया। मैं तेरे लिए शिकार का गोश्त
पकाकर लाया हूँ। अब ज़रा उठ और
इसे खा। फिर मुझे आशीर्वाद देना।"[4]
20 इसहाक ने अपने बेटे से कहा,
"बेटा, तुझे इतनी जल्दी शिकार कैसे
मिल गया?" याकूब ने कहा, "तेरा पर-
मेश्वर यहोवा उसे मेरे सामने ले आया।"
21 तब इसहाक ने उससे कहा, "बेटा,
ज़रा नज़दीक आ। मैं तुझे छूकर देख लूँ
कि तू मेरा एसाव ही है या कोई और
है।"[5] 22 याकूब अपने पिता के पास
गया और इसहाक ने उसे छूकर देखा।
इसहाक ने कहा, "आवाज़ तो याकूब की
लग रही है, मगर हाथ एसाव के हैं।"[6]
23 याकूब के हाथों पर एसाव की
तरह बाल थे, इसलिए इसहाक उसे पह-
चान नहीं पाया और उसे एसाव समझकर
आशीर्वाद दिया।[7]

24 इसके बाद इसहाक ने पूछा, "तू
सचमुच मेरा एसाव ही है न?" उसने कहा,
"हाँ।" 25 इसहाक ने कहा, "तूने जो
शिकार का गोश्त बनाया है, ला मुझे दे
ताकि मैं खाऊँ और तुझे आशीर्वाद दूँ।"
तब उसने अपने पिता को गोश्त दिया
और उसने खाया। उसने उसे दाख-मदिरा
भी दी और उसने पी। 26 फिर इसहाक
ने उससे कहा, "बेटा, मेरे पास आ और
मुझे चूम।"[8] 27 तब वह इसहाक के
पास आया और उसे चूमा और इसहाक
को एसाव के कपड़ों की महक आयी।[9]

अध्य. 27
1 उत 27:30
2 उत 25:28
3 उत 27:30, 31
4 उत 27:13, 43
5 उत 25:25
उत 27:23
6 उत 27:21
7 उत 27:8, 43
8 उत 25:23, 26

दूसरा कॉल.
1 उत 25:25
उत 27:11
2 उत 27:9
3 उत 25:31-33
रोम 9:10-12
4 उत 27:4
5 उत 27:11, 12
6 उत 27:16
7 इब्र 11:20
8 उत 48:10
9 उत 25:27
उत 27:15

तब इसहाक ने उसे आशीर्वाद दिया और
कहा,

"देख, मेरे बेटे की महक उस मैदान की
महक की तरह है जिसे यहोवा ने आशीष
दी है। **28** सच्चे परमेश्वर से मेरी यही
दुआ है कि वह तुझे आकाश की ओस,[1]
धरती की उपजाऊ ज़मीन[2] और बहु-
तायत में अनाज और नयी-नयी दाख-
मदिरा दे।[3] **29** देश-देश के लोग तेरी
सेवा करें और सभी राष्ट्र तेरे सामने
अपना सिर झुकाएँ। तू अपने भाइयों
का मालिक हो और तेरे भाई तेरे सामने
सिर झुकाएँ।[4] जो कोई तुझे शाप दे वह
शापित ठहरे और जो कोई तुझे आशीर्वाद
दे उसे आशीर्वाद मिले।"[5]

30 जैसे ही इसहाक ने याकूब को
आशीर्वाद देना खत्म किया और याकूब
उसके पास से निकला, एसाव शिकार
से लौट आया।[6] **31** एसाव ने भी
लज़ीज़ गोश्त बनाया और उसे लेकर
अपने पिता के पास आया। उसने अपने
पिता से कहा, "हे मेरे पिता, उठ और
अपने बेटे के शिकार का गोश्त खा और
फिर मुझे आशीर्वाद दे।" **32** तब इस-
हाक ने कहा, "तू कौन है?" उसने
कहा, "मैं एसाव हूँ, तेरा बेटा, तेरा पह-
लौठा।"[7] **33** यह सुनकर इसहाक बुरी
तरह काँपने लगा और उसने कहा, "फिर
वह कौन था जो तुझसे पहले मेरे लिए
शिकार मारकर लाया था? उसने मुझे
गोश्त पकाकर दिया और मैंने खाकर
उसे आशीर्वाद भी दे दिया। अब तो
आशीर्वाद उसी का हो गया!"

34 जैसे ही एसाव ने यह सुना वह
दुख के मारे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा।
उसने अपने पिता से कहा, "हे मेरे
पिता, मुझे भी आशीर्वाद दे, मुझे भी!"[8]
35 मगर इसहाक ने कहा, "तेरे भाई
ने आकर मुझसे छल किया और वह
आशीर्वाद ले गया जो तुझे मिलना था।"
36 एसाव ने कहा, "कैसा धोखेबाज़ है
वह! पहले तो मेरा पहलौठे का अधिकार
छीन लिया[1] और अब मेरा आशीर्वाद भी
ले गया![2] दो-दो बार मेरी जगह ले
ली।[3] उससे और उम्मीद भी क्या की
जा सकती है? नाम भी तो याकूब* है,
दूसरों की चीज़ें हड़पनेवाला!" फिर वह
अपने पिता से कहने लगा, "क्या तेरे पास
मेरे लिए कोई भी आशीर्वाद नहीं बचा?"
37 इसहाक ने जवाब दिया, "देख, मैंने
उसे तेरा मालिक ठहराया है[4] और उसके
सभी भाइयों को उसका सेवक। मैंने उसे
आशीर्वाद दिया है कि उसके पास खाने-
पीने के लिए हमेशा अनाज और नयी
दाख-मदिरा हो।[5] अब तुझे देने के लिए
मेरे पास बचा ही क्या मेरे बेटे?"

38 एसाव ने अपने पिता से कहा,
"क्या तेरे पास सिर्फ यही एक आशीर्वाद
था? नहीं मेरे पिता, मुझे भी आशीर्वाद
दे, मुझे भी!" यह कहकर एसाव फूट-
फूटकर रोने लगा।[6] **39** उसके पिता
इसहाक ने कहा,

"देख, तेरा बसेरा धरती की उपजाऊ
ज़मीन से कोसों दूर होगा और वहाँ
आकाश की ओस नहीं पड़ेगी।[7] **40** तू
अपनी तलवार के दम पर जीएगा[8] और
अपने भाई की गुलामी करेगा।[9] लेकिन
जब तुझसे गुलामी का यह जुआ उठाना
और बरदाश्त नहीं होगा, तब तू अपनी
गरदन से यह जुआ तोड़ फेंकेगा।"[10]

41 इसके बाद से एसाव अपने मन
में याकूब के लिए नफरत पालने लगा,
क्योंकि याकूब ने पिता से आशीर्वाद

अध्य. 27
1 व्य 11:11
2 गि 13:26, 27
3 उत 27:37
व्य 7:13
4 उत 25:23
5 उत 12:1, 3
उत 28:1, 3
उत 31:42
यहे 25:12, 13
6 उत 27:3
7 उत 25:25, 31
इब्र 12:16
8 इब्र 12:16, 17

दूसरा कॉल.
1 उत 25:32-34
2 उत 27:28
3 उत 25:26
उत 32:28
हो 12:3
4 उत 25:23
उत 27:29
रोम 9:10, 12
5 व्य 33:28
6 इब्र 12:16, 17
7 यह 24:4
इब्र 11:20
8 उत 32:6
गि 20:18
9 उत 25:23
2शम 8:14
मला 1:2, 3
10 2रा 8:20
2इत 28:17

27:36 *मतलब "एड़ी पकड़नेवाला; दूसरे
की जगह लेनेवाला।"

ले लिया था।[1] एसाव खुद से कहता
था, “बस कुछ ही समय की बात है,
मेरे पिता की मौत हो जाएगी,*[2] फिर
मैं अपने भाई याकूब को जान से मार
डालूँगा।” 42 जब एसाव की यह बात
रिबका को बतायी गयी, तो उसने फौरन
अपने छोटे बेटे याकूब को बुलवाया और
कहा, “देख, तेरा भाई तुझसे बदला लेने
के लिए तुझे मार डालने की सोच रहा
है!* 43 इसलिए बेटा, जैसा मैं कहती
हूँ वैसा कर। तू यहाँ से हारान भाग
जा, मेरे भाई लाबान के घर।[3] 44 और
कुछ दिन वहीं रह जब तक कि तेरे भाई
का गुस्सा शांत नहीं हो जाता। 45 जब
उसका गुस्सा ठंडा हो जाएगा और वह
भूल जाएगा कि तूने उसके साथ क्या
किया, तब मैं तुझे वहाँ से बुलवा लूँगी।
लेकिन अगर तू यहीं रहा, तो हो सकता है
मैं तुम दोनों को एक-साथ खो बैठूँ!”

46 इसके बाद रिबका इसहाक से
बार-बार कहती रही, “इन हित्ती लड़-
कियों की वजह से मुझे ज़िंदगी से नफरत
हो गयी है।[4] अब अगर याकूब भी इस
देश की हित्ती लड़कियों में से किसी को ले
आया तो मुझसे बरदाश्त नहीं होगा,
मेरा मर जाना ही बेहतर होगा।”[5]

28 इसलिए इसहाक ने याकूब को
बुलाकर उसे आशीर्वाद दिया
और उसे यह आज्ञा दीः “तू कनान देश
की किसी लड़की से शादी मत करना।[6]
2 इसके बजाय, तू अपने नाना बतूएल
के घर पद्दन-अराम जा और अपने
मामा लाबान की किसी बेटी[7] से शादी
कर। 3 सर्वशक्तिमान परमेश्‍वर तुझे
आशीष देगा जिससे तू फूलेगा-फलेगा
और तेरी बहुत-सी संतान होंगी। और तेरे
वंशजों से कई गोत्रों की एक बहुत बड़ी
मंडली बनेगी।[1] 4 और जो आशीष
उसने अब्राहम को दी थी[2] वही आशीष
तुझे और तेरे वंश को देगा और तू इस
देश पर अधिकार करेगा जहाँ तू परदेसी
बनकर रह रहा है और जो उसने अब्राहम
को दिया था।”[3]

5 फिर इसहाक ने याकूब को
विदा किया और याकूब लाबान के
घर पद्दन-अराम के लिए निकल पड़ा।
लाबान, अरामी बतूएल का बेटा[4] और
याकूब और एसाव की माँ रिबका का
भाई था।[5]

6 एसाव ने देखा कि इसहाक ने
याकूब को आशीर्वाद दिया और पद्दन-
अराम भेजा ताकि वह वहाँ की किसी
लड़की से शादी करे। एसाव ने गौर किया
कि इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देते
वक्‍त उसे यह आज्ञा दीः “तू कनान देश
की किसी लड़की से शादी मत करना”[6]
7 और याकूब अपने माँ-बाप की आज्ञा
मानकर पद्दन-अराम के लिए रवाना हो
गया।[7] 8 यह सब देखकर एसाव को
एहसास हुआ कि उसके पिता इसहाक
को कनान की लड़कियों से कितनी घृणा
है।[8] 9 इसलिए वह अब्राहम के बेटे
इश्‍माएल के यहाँ गया और उसने इश्‍मा-
एल की बेटी महलत से शादी की जो नबा-
योत की बहन थी। इस तरह एसाव ने
अपनी दो पत्नियों के अलावा एक और
शादी की।[9]

10 याकूब बेरशेबा से निकला और
हारान की तरफ बढ़ता गया।[10]
11 सफर करते-करते वह एक जगह
पहुँचा और उसने वहीं रात बिताने की
सोची क्योंकि सूरज ढल गया था। उसने

अध्य. 27
1 आम 1:11
2 उत 35:28, 29
3 उत 28:5
4 उत 26:34, 35; उत 28:8
5 उत 24:2, 3

अध्य. 28
6 उत 24:34, 37; निर्ग 34:15, 16; 1रा 11:1-3; 2कुर 6:14
7 उत 29:16

दूसरा कॉल.
1 उत 17:5; उत 46:15, 19; 1इत 2:1, 2
2 उत 12:2, 3
3 उत 12:7; उत 15:13; उत 17:1, 8; इब्र 11:9
4 उत 25:20
5 उत 24:29
6 उत 28:1; 2कुर 6:14
7 उत 27:43
8 उत 27:46
9 उत 36:2, 3
10 उत 11:31; उत 27:43

27:41 *शा., “पिता के लिए मातम मनाने के दिन करीब हैं।” 27:42 *या “तुझे मार डालने के बारे में सोचकर खुद को दिलासा दे रहा है।”

वहाँ से एक पत्थर लिया और उस पर सिर रखकर वहीं लेट गया।[1] 12 फिर उसे एक सपना आया और उसने देखा कि धरती पर एक सीढ़ी थी जो इतनी लंबी थी कि वह ऊपर स्वर्ग तक पहुँच रही थी और परमेश्‍वर के स्वर्गदूत सीढ़ी पर चढ़ और उतर रहे थे।[2] 13 फिर उसने देखा कि सीढ़ी के बिलकुल ऊपर यहोवा था। उसने याकूब से कहा,

"मैं तेरे दादा अब्राहम का और तेरे पिता इसहाक का परमेश्‍वर यहोवा हूँ।[3] यह देश, जिसकी ज़मीन पर तू लेटा हुआ है, मैं तुझे और तेरे वंश* को दूँगा।[4] 14 तेरा वंश* धूल के कणों की तरह अनगिनत हो जाएगा।[5] तू उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्‍चिम, चारों दिशाओं में फैल जाएगा। तेरे और तेरे वंश* के ज़रिए धरती के सारे कुल ज़रूर आशीष पाएँगे।#[6] 15 मैं तेरे साथ हूँ और जहाँ-जहाँ तू जाएगा मैं तेरी हिफाज़त करूँगा और एक दिन तुझे वापस इस देश में ले आऊँगा।[7] मैं तेरा साथ कभी नहीं छोड़ूँगा और तुझसे जो वादा किया था उसे पूरा करूँगा।"[8]

16 तब याकूब नींद से जाग उठा और उसने कहा, "वाकई, इस जगह पर यहोवा मौजूद है और मैं यह बात नहीं जानता था।" 17 याकूब पर डर छा गया और उसने कहा, "यह कोई मामूली जगह नहीं है! यह पवित्र जगह है। यह परमेश्‍वर का घर ही हो सकता है।[9] यही स्वर्ग का द्वार है।"[10] 18 फिर याकूब सुबह जल्दी उठा और उसने वह पत्थर लिया जिस पर वह सिर रखकर सोया था। उसने उस पत्थर को एक यादगार के तौर पर खड़ा किया और उस पर तेल उँडेला।[1] 19 उसने उस जगह का नाम बेतेल* रखा। लेकिन पहले उस शहर का नाम लूज था।[2]

20 फिर याकूब ने परमेश्‍वर से यह मन्‍नत मानी: "अगर तू हर कदम पर मेरा साथ दे, सफर में मेरी हिफाज़त करता रहे, मुझे खाने के लिए रोटी और पहनने के लिए कपड़े देता रहे 21 और अगर मैं सही-सलामत अपने पिता के घर लौट आया, तो हे यहोवा, मैं जान जाऊँगा कि तूने खुद को मेरा परमेश्‍वर साबित किया है। 22 और यह पत्थर जिसे मैंने याद-गार के तौर पर खड़ा किया है, परमेश्‍वर का घर ठहरेगा।[3] और मैं वादा करता हूँ कि तेरी दी हुई हर चीज़ का दसवाँ हिस्सा तुझे ज़रूर अर्पित करूँगा।"

29

इसके बाद याकूब वहाँ से आगे बढ़ा और सफर करते-करते पूरब के देश में पहुँचा। 2 वहाँ उसने मैदान में एक कुआँ देखा जिसके आस-पास भेड़ों के तीन झुंड बैठे थे। इस कुएँ से चरवाहे अकसर अपनी भेड़ों को पानी पिलाया करते थे। कुएँ के मुँह पर एक बड़ा-सा पत्थर रखा हुआ था। 3 जब भेड़ों के सारे झुंड वहाँ इकट्ठा हो जाते, तो चरवाहे कुएँ के मुँह से पत्थर हटाकर उन्हें पानी पिलाते थे। इसके बाद वे फिर से कुएँ का मुँह पत्थर से ढक देते थे।

4 याकूब ने वहाँ जो चरवाहे थे उनसे पूछा, "भाइयो, तुम कहाँ के रहनेवाले हो?" उन्होंने कहा, "हम हारान से हैं।"[4] 5 फिर उसने पूछा, "क्या तुम नाहोर[5] के पोते लाबान[6] को जानते हो?" उन्होंने कहा, "हाँ, हम जानते हैं।" 6 उसने कहा, "उसके क्या हाल-चाल हैं?" उन्होंने

28:13, 14 *शा., "बीज।" 28:14 #इसका यह मतलब हो सकता है कि आशीष पाने के लिए उन्हें भी कुछ कदम उठाने होंगे।

28:19 *मतलब "परमेश्‍वर का घर।"

अध्य. 28
1 उत 28:18, 19
2 यूह 1:51; इब्र 1:7, 14
3 उत 26:24, 25
4 उत 12:7; उत 28:4; भज 105:9-11
5 उत 13:14, 16; 1रा 4:20
6 उत 18:18; उत 22:15, 18
7 उत 35:6
8 उत 31:3; गि 23:19; यह 23:14; इब्र 6:18
9 भज 47:2
10 उत 35:1

दूसरा कॉल.
1 उत 31:13
2 उत 35:6; यह 16:1, 2
3 उत 35:1

अध्य. 29
4 उत 27:42, 43; प्रेष 7:2
5 उत 24:24; उत 31:53
6 उत 24:29

कहा, “वह बिलकुल ठीक है। वह देख, उसकी बेटी राहेल![1] अपनी भेड़ें लेकर यहीं आ रही है।” **7** फिर याकूब ने उनसे कहा, “तुम अपनी भेड़ों को इतनी जल्दी बाड़े में क्यों ले जा रहे हो? अभी तो दोपहर ही हुई है। तुम इन्हें पानी पिलाकर थोड़ी देर और क्यों नहीं चरा लेते?” **8** चरवाहों ने उससे कहा, “जब तक सारे झुंड नहीं आ जाते तब तक हमें कुएँ से पत्थर हटाकर अपनी भेड़ों को पानी पिलाने की इजाज़त नहीं है। सबके आने के बाद ही पत्थर हटाया जाएगा और हम भेड़ों को पानी दे सकेंगे।”

9 याकूब उन चरवाहों से बात कर ही रहा था कि तभी राहेल अपने पिता की भेड़ें लेकर वहाँ आयी। राहेल भेड़ें चराया करती थी। **10** जब याकूब ने देखा कि उसके मामा लाबान की बेटी राहेल भेड़ें लेकर वहाँ आयी है, तो वह फौरन कुएँ के पास गया। उसने कुएँ के मुँह से पत्थर हटाया और अपने मामा की भेड़ों को पानी पिलाया। **11** फिर याकूब ने राहेल को चूमा और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। **12** उसने राहेल को बताया कि वह उसके पिता का रिश्तेदार* और रिबका का बेटा है। तब राहेल दौड़कर अपने पिता के पास गयी और उसे यह खबर दी।

13 जैसे ही लाबान[2] ने अपने भाँजे याकूब के आने की खबर सुनी, वह दौड़कर उससे मिलने गया। लाबान ने याकूब को गले लगाया और उसे चूमा। फिर वह याकूब को अपने घर ले आया। और याकूब ने लाबान को अपना सारा हाल कह सुनाया। **14** तब लाबान ने उससे कहा, “तू मेरा अपना खून है।”* इस-

29:12, 15 *शा., “भाई।” **29:14** *शा., “तू मेरा हाड़-माँस है।”

अध्य. 29
1 उत 46:19 रूत 4:11
2 उत 24:29

दूसरा कॉल.
1 उत 28:5
2 उत 30:27, 28 उत 31:7
3 रूत 4:11
4 उत 31:41
5 उत 30:26 हो 12:12
6 उत 16:1, 2 उत 30:9 उत 46:18

लिए याकूब उसके साथ पूरा एक महीना रहा।

15 फिर लाबान ने याकूब से कहा, “भले ही तू मेरा रिश्तेदार* है,[1] फिर भी मैं तुझसे मुफ्त में काम नहीं लेना चाहता। बोल, तू क्या मज़दूरी लेना चाहेगा?”[2] **16** लाबान की दो बेटियाँ थीं। बड़ी का नाम लिआ था और छोटी का राहेल।[3] **17** लिआ की आँखों में कोई खास आकर्षण नहीं था, जबकि राहेल इतनी खूबसूरत थी कि उसका रंग-रूप देखते ही बनता था। **18** याकूब को राहेल से प्यार हो गया था, इसलिए उसने लाबान से कहा, “मैं तुझसे तेरी छोटी बेटी राहेल का हाथ माँगता हूँ। मैं उसके लिए तेरे यहाँ सात साल काम करने को तैयार हूँ।”[4] **19** लाबान ने कहा, “मुझे मंज़ूर है। अपनी बेटी का हाथ किसी गैर को देने से अच्छा है कि मैं तुझे दूँ। तू मेरे साथ ही रह।” **20** याकूब ने राहेल के लिए सात साल काम किया।[5] मगर ये सात साल उसके लिए ऐसे बीत गए मानो सात दिन हों क्योंकि वह राहेल से बहुत प्यार करता था।

21 सात साल बीतने पर याकूब ने लाबान से कहा, “मेरी मज़दूरी के दिन पूरे हो गए हैं, अब लड़की मुझे दे दे ताकि मैं उसे अपनी पत्नी बनाऊँ।”* **22** तब लाबान ने शादी की दावत रखी और अपने यहाँ के सभी लोगों को बुलाया। **23** लेकिन उस शाम लाबान अपनी छोटी बेटी राहेल के बजाय बड़ी बेटी लिआ को याकूब के पास ले आया ताकि वह उसे अपनी पत्नी बना ले। **24** लाबान ने अपनी बेटी लिआ की सेवा के लिए उसे अपनी दासी जिल्पा भी दी।[6] **25** जब

29:21 *या “ताकि मैं उसके साथ संबंध रखूँ।”

सुबह हुई तो याकूब ने देखा कि यह तो
लिआ है! उसने जाकर लाबान से कहा,
"यह तूने मेरे साथ क्या किया? क्या मैंने
तेरे यहाँ राहेल के लिए काम नहीं किया
था? फिर तूने मुझे क्यों धोखा दिया?"[1]
26 लाबान ने कहा, "हमारे यहाँ ऐसा
दस्तूर नहीं कि बड़ी से पहले छोटी की
शादी करा दें। **27** तू यह हफ्ता इस
लड़की के साथ खुशियाँ मना ले। फिर मैं
तुझे दूसरी लड़की भी दे दूँगा, मगर
उसके लिए तुझे सात साल और काम
करना होगा।"[2] **28** याकूब ने उसकी
बात मान ली और एक हफ्ता लिआ के
साथ खुशियाँ मनायीं। बाद में लाबान ने
उसे अपनी छोटी बेटी राहेल भी दे दी।
29 लाबान ने राहेल की सेवा के लिए उसे
अपनी दासी बिल्हा[3] भी दी।

30 याकूब ने राहेल के साथ भी संबंध
रखे। वह लिआ से ज़्यादा राहेल से प्यार
करता था और उसने लाबान के यहाँ
सात साल और काम किया।[4] **31** जब
यहोवा ने देखा कि लिआ को उतना प्यार
नहीं मिल रहा है जितना राहेल को,* तो
उसने लिआ की कोख खोल दी[5] जबकि
राहेल बाँझ रही।[6] **32** लिआ गर्भवती
हुई और उसने एक बेटे को जन्म दिया।
उसने यह कहकर उसका नाम रूबेन*[7]
रखा कि "यहोवा ने मेरे मन की तड़प
देखी है,[8] अब मेरा पति ज़रूर मुझसे प्यार
करने लगेगा।" **33** लिआ दोबारा गर्भ-
वती हुई और उसका एक बेटा हुआ।
उसने कहा, "यहोवा ने मेरी फरियाद सुन
ली कि मुझे अपने पति का प्यार नहीं
मिल रहा इसलिए उसने मुझे एक और
बेटा दिया।" लिआ ने इस लड़के का नाम
शिमोन*[1] रखा। **34** लिआ एक बार
फिर गर्भवती हुई और उसने एक बेटे को
जन्म दिया। उसने कहा, "अब मेरे पति
को ज़रूर मुझसे लगाव हो जाएगा क्योंकि
मैंने उसे तीन-तीन बेटे दिए हैं।" इस-
लिए उसने तीसरे बेटे का नाम लेवी*[2]
रखा। **35** लिआ का फिर से गर्भ ठहरा
और उसका एक और लड़का हुआ। उसने
कहा, "इस बार मैं यहोवा की तारीफ
करूँगी।" उसने अपने चौथे बेटे का नाम
यहूदा*[3] रखा। इसके बाद लिआ के बच्चे
होने बंद हो गए।

30 जब राहेल ने देखा कि अब तक
उसका एक भी बच्चा नहीं हुआ,
तो वह अपनी बहन से जलने लगी। वह
याकूब से कहने लगी, "मुझे भी बच्चे दे,
वरना मैं मर जाऊँगी।" **2** यह सुनकर
याकूब राहेल पर भड़क उठा और उसने
कहा, "जब परमेश्वर ने तेरी कोख बंद
कर रखी है* तो तू मुझे क्यों दोष दे
रही है? क्या मैं परमेश्वर हूँ?" **3** तब
राहेल ने कहा, "मैं तुझे अपनी दासी
बिल्हा[4] देती हूँ, तू उसके साथ सो ताकि
वह मेरे लिए बच्चे जने* और मैं भी माँ
कहलाऊँ।" **4** तब राहेल ने याकूब को
अपनी दासी बिल्हा दी ताकि वह उसकी
पत्नी बने। फिर याकूब ने उसके साथ
संबंध रखे।[5] **5** बिल्हा गर्भवती हुई
और कुछ समय बाद उसने याकूब को एक
बेटा दिया। **6** तब राहेल ने कहा, "पर-
मेश्वर ने न्यायी बनकर मेरा इंसाफ किया
है। उसने मेरी दुआ सुन ली और मुझे एक
बेटा दिया।" इसलिए उसने उस लड़के का

अध्य. 29
1 उत 31:7, 42
2 उत 31:41
3 उत 30:1, 3; उत 35:22
4 हो 12:12
5 उत 46:15; रूत 4:11
6 उत 30:22
7 उत 35:22; उत 37:22; उत 49:3, 4; निर्ग 6:14; 1इत 5:1
8 उत 30:20; 1शम 1:5, 6; लूक 1:24, 25

दूसरा कॉल.
1 उत 34:25; उत 49:5; 1इत 4:24
2 उत 34:25; उत 49:5; निर्ग 6:16; गि 3:12; 1इत 6:1
3 उत 35:23; उत 37:26; उत 44:18; उत 49:8; 1इत 2:3; प्रक 5:5

अध्य. 30
4 उत 29:29
5 उत 35:22

29:31 *शा., "लिआ से नफरत की जा रही है।" **29:32** *मतलब "देख, एक बेटा!" **29:33** *मतलब "सुनना।" **29:34** *मतलब "लगाव; जुड़े रहना।" **29:35** *मतलब "तारीफ हुई; जिसकी तारीफ होती है।" **30:2** *या "तुझे गर्भ के फल से दूर रखा है।" **30:3** *शा., "मेरे घुटनों पर जनेगी।"

नाम दान*[1] रखा। 7 राहेल की दासी
बिल्हा एक बार फिर गर्भवती हुई और
उसने याकूब को एक और बेटा दिया।
8 तब राहेल ने कहा, "मैंने अपनी बहन
से कुश्ती लड़ने में एड़ी-चोटी का ज़ोर
लगा दिया और आखिरकार मैं जीत
गयी!" इसलिए उसने इस बच्चे का नाम
नप्ताली*[2] रखा।

9 जब लिआ ने देखा कि उसके बच्चे
होने बंद हो गए हैं, तो उसने भी
याकूब को अपनी दासी जिल्पा दी ताकि
वह उसकी पत्नी बने।[3] 10 और लिआ
की दासी जिल्पा ने याकूब को एक बेटा
दिया। 11 इस पर लिआ ने कहा, "यह
तो कमाल हो गया!" उसने इस लड़के
का नाम गाद*[4] रखा। 12 इसके बाद
लिआ की दासी जिल्पा ने याकूब को
एक और बेटा दिया। 13 तब लिआ ने
कहा, "आज मेरी खुशी की सीमा नहीं!
अब से ज़रूर औरतें मुझे सुखी कहा
करेंगी।"[5] इसलिए उसने इस लड़के का
नाम आशेर*[6] रखा।

14 गेहूँ की कटाई का मौसम था। एक
दिन रूबेन[7] जब मैदान में चल रहा था तो
उसे कुछ दूदाफल* मिले। उसने ये फल
लाकर अपनी माँ लिआ को दिए। फिर
राहेल ने लिआ से कहा, "क्या तू मुझे
अपने बेटे के लाए कुछ दूदाफल देगी?"
15 लिआ ने कहा, "तू मेरे पति को पहले
ही ले चुकी है,[8] क्या यह कम है जो अब
तेरी नज़र मेरे बेटे के लाए दूदाफलों पर
है?" जवाब में राहेल ने कहा, "अच्छा तो
ऐसा कर, आज की रात तू मेरे पति के
साथ सो जा, बस बदले में अपने बेटे के
लाए कुछ दूदाफल मुझे दे दे।"

16 शाम को जब याकूब खेत से लौट
रहा था, तो लिआ उससे मिलने गयी और
कहने लगी, "आज तू मेरे साथ सोएगा,
क्योंकि मैंने तुझे अपने बेटे के दूदाफल
के बदले किराए पर लिया है। हाँ,
मैंने तेरे लिए किराए का दाम चुकाया
है।" इसलिए उस रात याकूब, लिआ के
साथ सोया। 17 परमेश्वर ने लिआ की
प्रार्थना सुनकर उसका जवाब दिया और
वह गर्भवती हुई और उसने याकूब को
पाँचवाँ बेटा दिया। 18 लिआ ने कहा,
"मैंने अपने पति को दासी दी थी,
इसलिए परमेश्वर ने मुझे मेरी मज़-
दूरी* दी है।" इसलिए लिआ ने अपने
इस बेटे का नाम इस्साकार#[1] रखा।
19 लिआ एक बार फिर गर्भवती हुई
और उसने याकूब को छठा बेटा दिया।[2]
20 लिआ ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे
बढ़िया तोहफा दिया है, अब तो मेरा
पति मुझे नज़रअंदाज़ नहीं करेगा। मैंने
उसे छः-छः बेटे दिए हैं,[3] इसलिए वह
मुझे ज़रूर बरदाश्त करेगा।"[4] उसने
इस लड़के का नाम जबूलून*[5] रखा।
21 बाद में लिआ की एक बेटी भी हुई
जिसका नाम उसने दीना[6] रखा।

22 आखिरकार परमेश्वर ने राहेल
की हालत पर ध्यान दिया। उसने राहेल
की दुआ सुन ली और उसकी कोख
खोल दी।[7] 23 वह गर्भवती हुई और
उसका एक बेटा हुआ। तब उसने कहा,
"देखो, परमेश्वर ने मेरी बदनामी

30:6 *मतलब "न्यायी।" **30:8** *मतलब "मेरी कुश्ती।" **30:11** *मतलब "कमाल होना।" **30:13** *मतलब "सुखी; खुशी।" **30:14** *यह आलू की जाति की एक जड़ी-बूटी है। माना जाता था कि इसका फल खाने से स्त्रियों में गर्भधारण की क्षमता बढ़ती है।

30:18 *या "एक मज़दूर की मज़दूरी।" #मतलब "वह मज़दूरी है।" **30:20** *मतलब "बरदाश्त।"

अध्य. 30
1 उत 35:25, उत 46:23, उत 49:16
2 उत 35:25, उत 46:24, उत 49:21, व्य 33:23
3 उत 35:26
4 उत 49:19, गि 32:33
5 लूक 1:46, 48
6 उत 35:26, उत 46:17, उत 49:20, व्य 33:24
7 उत 29:32
8 उत 29:30

दूसरा कॉल.
1 उत 35:23, उत 46:13, उत 49:14, व्य 33:18
2 रूत 4:11
3 उत 35:23, उत 46:15, भज 127:3
4 उत 29:32
5 उत 46:14, उत 49:13, व्य 33:18
6 उत 34:1
7 उत 29:31

दूर कर दी!"[1] 24 इसलिए राहेल ने
अपने बेटे का नाम यूसुफ*[2] रखा और
कहा, "यहोवा ने मुझे एक और बेटा
दिया है।"

25 जब राहेल ने यूसुफ को जन्म
दिया तो उसके कुछ ही समय बाद याकूब
ने लाबान से कहा, "अब मैं तुझसे विदा
लेना चाहता हूँ ताकि मैं अपने घर और
अपने देश लौट जाऊँ।[3] 26 मुझे मेरी
पत्नियाँ और मेरे बच्चे दे दे जिनके लिए
मैंने तेरे यहाँ काम किया। तू अच्छी तरह
जानता है कि मैंने तेरी कैसी सेवा
की।"[4] 27 तब लाबान ने उससे कहा,
"मैं तुझसे बिनती करता हूँ, तू मत जा,
मेरे साथ ही रह। मैंने शकुन विचार-
कर* जाना है कि तेरी वजह से ही
यहोवा मुझे इतनी आशीषें दे रहा है।"
28 उसने याकूब से यह भी कहा, "तू
मज़दूरी में जो भी माँगेगा, मैं देने को
तैयार हूँ।"[5] 29 याकूब ने उससे कहा,
"तू जानता है कि तेरे यहाँ सेवा करने में
मैंने कोई कसर नहीं छोड़ी। और मैंने तेरी
भेड़-बकरियों की कितनी अच्छी देखभाल
की।[6] 30 मेरे आने से पहले तेरे पास
बहुत कम जानवर थे, मगर जब से मैं
आया यहोवा ने तुझे कितनी आशीषें दीं,
तेरी भेड़-बकरियों की गिनती दिन-ब-दिन
बढ़ती गयी। अब अगर सारी ज़िंदगी मैं
तेरी सेवा करता रहा तो अपने परिवार के
बारे में कब सोचूँगा?"[7]

31 तब लाबान ने उससे कहा, "बता
मैं तुझे क्या दूँ?" याकूब ने कहा, "मैं
तुझसे कुछ नहीं चाहता! बस तू मेरी एक
बात मान ले, तो मैं तेरी भेड़-बकरियों
को चराने और उनकी हिफाज़त करने

30:24 *यह योसिप्याह नाम का छोटा रूप
है जिसका मतलब है, "याह जोड़ दे (या
बढ़ाए)।" 30:27 *या "सबूतों से।"

अध्य. 30
1 लूक 1:24, 25
2 उत 35:24
उत 45:4
व्य 33:13
प्रेष 7:9
3 उत 28:15
उत 31:13
4 उत 31:41
हो 12:12
5 उत 31:7
6 उत 31:38
7 उत 32:9, 10

का काम करता रहूँगा।[1] 32 आज हम
दोनों जाकर तेरे पूरे झुंड का मुआयना
करते हैं। फिर तू अपने झुंड में से धब्बे-
दार और चितकबरी भेड़ों को, गहरे भूरे
रंग के मेढ़ों को और धब्बेदार और चित-
कबरी बकरियों को अलग कर लेना।
और आगे चलकर जो भी धब्बेदार, चित-
कबरे और गहरे भूरे रंग के बच्चे पैदा
होंगे, सिर्फ उन्हीं को मैं मज़दूरी में लूँगा।[2]
33 अगर किसी दिन तू मेरी मज़दूरी
की भेड़-बकरियाँ देखने आया तो तू मेरी
नेकी* का सबूत साफ देख सकेगा। मेरे
उन जानवरों में तुझे चितकबरी या धब्बे-
दार बकरियों और गहरे भूरे रंग के मेढ़ों
के अलावा कोई और भेड़-बकरी नहीं
मिलेगी। अगर मिली तो वह चोरी की
समझी जाएगी।"

34 तब लाबान ने कहा, "ठीक है!
तूने जैसा कहा हम वैसा ही करते हैं।"[3]
35 फिर उसी दिन लाबान ने अपने झुंड
में से सभी चितकबरे और धारीदार बकरे,
चितकबरी और धब्बेदार बकरियाँ, यहाँ
तक कि वे भी जिन पर ज़रा-सा सफेद
दाग था और गहरे भूरे रंग के मेढ़े, सब
अलग करके अपने बेटों को दिए कि वे
उनकी देखभाल करें। 36 अब लाबान
के पास जो भेड़-बकरियाँ बच गयी थीं
वे उसने याकूब को दीं और याकूब इनकी
देखरेख का काम करने लगा। लाबान ने
अपने झुंड और याकूब के झुंड के बीच
तीन दिन के सफर की दूरी रखी।

37 फिर याकूब ने सिलाजीत, बादाम
और चिनार पेड़ की हरी डालियाँ लीं और
उन्हें कहीं-कहीं इस तरह छीला कि उनके
अंदर की सफेदी, धब्बों के रूप में दिखायी
देने लगी। 38 इसके बाद उसने ये
छिली हुई छड़ियाँ पानी की हौदियों में

30:33 *या "ईमानदारी।"

दूसरा कॉल.
1 हो 12:12
2 उत 31:7
3 उत 31:8

खड़ी कर दीं ताकि जब भेड़-बकरियाँ वहाँ
पानी पीने आएँ तो इनके सामने सह-
वास करें।
39 फिर ऐसा हुआ कि भेड़-बकरियाँ
उन छड़ियों के सामने सहवास करतीं। वे
गाभिन होतीं और उनसे धारीदार, धब्बे-
दार और चितकबरे बच्चे पैदा होते।
40 याक़ूब ने इन बच्चों को झुंड की
उन बाकी भेड़-बकरियों से अलग किया
जो लाबान के हिस्से की थीं। और उसने
लाबान की भेड़-बकरियों का मुँह धारी-
दार और गहरे भूरे रंग के जानवरों की
तरफ मोड़ा। फिर उसने अपनी भेड़-बक-
रियों को अलग किया ताकि वे उन
भेड़-बकरियों में न मिलें जो लाबान की
थीं। 41 जब भी मोटी-ताज़ी भेड़-बक-
रियों के सहवास का समय आता तो
याक़ूब पानी की हौदियों में छड़ियाँ खड़ी
कर देता था ताकि उन छड़ियों के सामने वे
सहवास करें। 42 लेकिन जो भेड़-बक-
रियाँ कमज़ोर थीं उनके सामने वह छड़ियाँ
नहीं रखता था। इसलिए लाबान के
हिस्से में कमज़ोर भेड़-बकरियाँ ही आतीं
जबकि याक़ूब की भेड़-बकरियाँ मोटी-
ताज़ी होतीं।[1]

43 इस तरह याक़ूब बहुत अमीर हो
गया और उसके पास बहुत-से दास-
दासियाँ, भेड़-बकरियाँ, ऊँट और गधे
हो गए।[2]

31 कुछ समय बाद याक़ूब ने सुना
कि लाबान के बेटे उसके बारे में
कह रहे हैं, "याक़ूब ने हमारे पिता का
सबकुछ हड़प लिया है। हमारे पिता की
जायदाद से ही उसने इतनी दौलत बटोरी
है।"[3] 2 और याक़ूब ने लाबान के चेहरे
से भाँप लिया कि वह अब पहले जैसा
नहीं रहा, वह उसके साथ रूखा व्यव-
हार कर रहा है।[4] 3 आखिरकार, एक
दिन यहोवा ने याक़ूब से कहा, "तू अपने
पुरखों और रिश्तेदारों के देश लौट जा[1]
और मैं आगे भी तेरे साथ रहूँगा।"
4 फिर याक़ूब ने राहेल और लिआ को
खबर भेजकर उन्हें उस मैदान में बुल-
वाया जहाँ वह अपनी भेड़-बकरियों की
देखरेख कर रहा था। 5 फिर उसने उन
दोनों से कहा,

"मैं देख रहा हूँ कि आजकल तुम्हारा
पिता मुझसे रूखा व्यवहार कर रहा है।[2]
मगर मेरे पिता के परमेश्वर ने हमेशा
मेरा साथ दिया है।[3] 6 तुम दोनों अच्छी
तरह जानती हो कि मैंने कैसे खून-पसीना
एक करके तुम्हारे पिता की सेवा की।[4]
7 फिर भी तुम्हारे पिता ने मेरे साथ
धोखा करने की कोशिश की। उसने एक
बार नहीं, दस बार मेरी मज़दूरी बदली।
मगर परमेश्वर ने उसे मेरा कुछ भी नुक-
सान नहीं करने दिया। 8 जब तुम्हारा
पिता मुझसे कहता, 'तेरी मज़दूरी धब्बे-
दार भेड़-बकरियाँ होंगी,' तो पूरा झुंड
धब्बेदार बच्चे पैदा करता। और जब वह
कहता, 'अब से तेरी मज़दूरी धारीदार
भेड़-बकरियाँ हुआ करेंगी,' तो पूरा झुंड
धारीदार बच्चे पैदा करता।[5] 9 मेरी
इस कामयाबी में परमेश्वर का हाथ है,
वह मानो तुम्हारे पिता के झुंड से भेड़-
बकरियाँ लेकर मेरे झुंड में मिलाता रहा।
10 और हाल ही में जब भेड़-बकरियों के
सहवास का समय आया तो मैंने सपने में
देखा कि मेरे झुंड के जो बकरे बकरियों से
सहवास कर रहे थे वे धारीदार, चितकबरे
और धब्बेदार थे।[6] 11 तब सच्चे पर-
मेश्वर के स्वर्गदूत ने सपने में मुझे पुकारा,
'याक़ूब!' और मैंने जवाब दिया, 'हाँ,
प्रभु।' 12 उसने कहा, 'ज़रा अपनी
आँखें उठाकर देख कि जितने भी बकरे
बकरियों से सहवास कर रहे हैं वे सभी

अध्य. 30
1 उत 31:9
2 उत 32:5; उत 36:6, 7

अध्य. 31
3 उत 30:33
4 उत 30:27

दूसरा कॉल.
1 उत 28:15; उत 32:9; उत 35:27
2 उत 30:27
3 उत 48:15
4 उत 30:29, 30
5 उत 30:32
6 उत 30:39

धारीदार, चितकबरे और धब्बेदार हैं। मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि लाबान तेरे साथ जो सलूक कर रहा है, वह सब मैंने देखा है।[1] **13** मैं सच्चा परमेश्वर हूँ जो बेतेल[2] में तेरे सामने प्रकट हुआ था, जहाँ तूने यादगार के लिए एक पत्थर खड़ा करके उसका अभिषेक किया था और मुझसे एक मन्नत मानी थी।[3] अब उठ और यह देश छोड़कर अपने देश लौट जा जहाँ तू पैदा हुआ था।'"[4]

14 याकूब की बातें सुनकर राहेल और लिआ ने जवाब में उससे कहा, "हमें नहीं लगता कि हमारा पिता हमें विरासत का कुछ हिस्सा देगा। **15** देखा नहीं, उसने हमारे साथ कैसे गैरों जैसा व्यवहार किया? अपने ही हाथों हमें बेच दिया और हमारे लिए दी गयी रकम भी खा रहा है।[5] **16** इसलिए वह सारी दौलत जो परमेश्वर ने हमारे पिता से लेकर तुझे दी है, उस पर हमारा और हमारे बच्चों का ही हक बनता है।[6] अब तू वही कर जो परमेश्वर ने तुझसे कहा है।"[7]

17 तब याकूब वहाँ से निकलने की तैयारी करने लगा। उसने अपने बच्चों और पत्नियों को ऊँटों पर चढ़ाया[8] **18** और अपना सबकुछ समेटा जो उसने पद्दन-अराम में रहते हासिल किया था,[9] अपने जानवरों का झुंड और अपना सारा सामान। यह सब लेकर वह अपने पिता इसहाक के पास कनान देश के लिए निकल पड़ा।[10]

19 उस समय लाबान अपनी भेड़ों का ऊन कतरने गया हुआ था और इसी बीच राहेल ने कुल देवताओं की मूरतें[11] चुरा ली थीं जो उसके पिता की थीं।[12] **20** और याकूब ने होशियारी से काम लिया और अरामी लाबान को बिना कुछ बताए वहाँ से निकल गया। **21** वह अपना सबकुछ लेकर वहाँ से भाग निकला और महानदी* के पार चला गया।[1] वहाँ से वह गिलाद के पहाड़ी प्रदेश की तरफ जाने लगा।[2] **22** याकूब के निकलने के तीसरे दिन इधर लाबान को बताया गया कि याकूब भाग गया है। **23** यह सुनते ही लाबान अपने भाई-बंधुओं को साथ लेकर याकूब का पीछा करने निकल पड़ा। सात दिन बाद आखिरकार लाबान गिलाद के पहाड़ी प्रदेश में उस जगह पहुँच गया जहाँ याकूब था। **24** फिर परमेश्वर ने अरामी लाबान[3] से रात को सपने में[4] कहा, "खबरदार जो तूने याकूब को कुछ भला-बुरा कहा।"[5]

25 याकूब अपना तंबू गिलाद के पहाड़ी प्रदेश में गाड़े हुए था और जब लाबान अपने भाई-बंधुओं के साथ वहाँ पहुँचा तो उसने भी उसी इलाके में डेरा डाला। उसने याकूब के पास जाकर **26** उससे कहा, "यह तूने मेरे साथ क्या किया? तूने मेरे साथ यह चाल क्यों चली? मुझे धोखा देकर मेरी बेटियों को ऐसे उठा लाया जैसे कोई तलवार के दम पर बंदियों को उठा ले जाता है। **27** तू मुझे चकमा देकर ऐसे चुपचाप क्यों भाग आया? अगर तू बताता तो मैं तुझे धूम-धाम से विदा करता, डफली और सुरमंडल बजवाता और नाच-गाने के साथ तुझे खुशी-खुशी रवाना करता। **28** मगर तूने मुझे अपनी बेटियों और नाती-नातिनों* को चूमकर विदा करने का मौका नहीं दिया। तूने यह कैसी मूर्खता की! **29** मेरे पास इतनी ताकत है कि मैं तुम लोगों का कुछ भी कर सकता हूँ, मगर कल रात तुम्हारे पिता

अध्य. 31

1 उत 29:25, उत 31:39
2 उत 12:8, 9, उत 35:15
3 उत 28:18, 22
4 उत 35:14, उत 37:1
5 उत 31:41, हो 12:12
6 उत 31:1
7 उत 31:3
8 उत 33:13
9 उत 30:42, 43
10 उत 35:27
11 उत 35:2, यह 24:2
12 उत 31:14

दूसरा कॉल.

1 उत 15:18
2 गि 32:1
3 उत 25:20, हो 12:12
4 उत 20:3
5 भज 105:15

31:21 *यानी फरात नदी। **31:28** *शा., "बेटों।"

के परमेश्‍वर ने मुझसे सपने में कहा, ‘खबरदार जो तूने याकूब को कुछ भला-बुरा कहा।’[1] 30 मैं मानता हूँ कि तू शायद इसलिए चला आया क्योंकि तू अपने पिता के घर लौटने के लिए बेताब है, लेकिन यह बता कि जाते-जाते तूने मेरे देवताओं की चोरी क्यों की?”[2]

31 याकूब ने जवाब में लाबान से कहा, “मैं तुझे बताए बगैर इसलिए निकल आया क्योंकि मुझे डर था कि तू अपनी बेटियों को मुझसे ज़बरदस्ती छीन लेगा। 32 और जहाँ तक तेरे देवताओं की बात है, अगर वे हममें से किसी के पास पाए गए तो उसे अपनी जान की कीमत चुकानी पड़ेगी। तू हमारे भाइयों के सामने मेरे पूरे सामान की तलाशी ले ले, अगर तुझे तेरी चीज़ मिल जाए तो ले लेना।” याकूब नहीं जानता था कि राहेल देवताओं की वे मूरतें चुरा लायी थी। 33 तब लाबान ने याकूब के तंबू, लिआ के तंबू और दोनों दासियों[3] के तंबू में जाकर तलाशी ली, मगर उसे मूरतें नहीं मिलीं। फिर वह लिआ के तंबू से निकलकर राहेल के तंबू में गया। 34 इस दौरान राहेल ने वे मूरतें लीं और ऊँट की काठी पर रखी जानेवाली औरतों की टोकरी में छिपा दीं और खुद टोकरी पर बैठ गयी। लाबान ने राहेल का पूरा तंबू छान मारा, मगर उसे मूरतों का कहीं पता न चला। 35 तब राहेल ने अपने पिता से कहा, “मालिक, मुझ पर भड़क मत जाना, मैं उठ नहीं सकती। मुझे वह हुआ है जो हर महीने औरतों को होता है।”[4] लाबान ने वहाँ बहुत ढूँढ़ा, मगर उसे कुल देवताओं की मूरतें नहीं मिलीं।[5]

36 तब याकूब को लाबान पर बहुत गुस्सा आया और वह लाबान को झिड़कने लगा। उसने लाबान से कहा, “आखिर मेरा कसूर क्या है? मैंने ऐसा क्या पाप किया है जो तू हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ा है? 37 तूने मेरे सारे सामान की तलाशी ली, बता क्या तुझे एक भी ऐसी चीज़ मिली जो तेरी हो? अगर मिली तो यहाँ मेरे भाई-बंधुओं और अपने भाई-बंधुओं के सामने लाकर रख। फिर ये ही हम दोनों का फैसला करेंगे। 38 मैंने तेरे यहाँ पिछले 20 साल काम किया और इस दौरान न तेरी किसी भेड़ या बकरी का गर्भ गिरा[1] और न ही मैंने कभी तेरे मेढ़ों को मारकर खाया। 39 अगर कोई जंगली जानवर तेरी किसी भेड़ या बकरी को फाड़ डालता[2] तो मैं कभी उसका सबूत तेरे पास लाकर यह नहीं कहता था कि इस नुकसान के लिए मैं ज़िम्मेदार नहीं हूँ। इसके बजाय मैं खुद उसका नुकसान उठाता था। और अगर दिन या रात को किसी जानवर की चोरी हो जाती तो तू मुझसे उसकी भरपाई की माँग करता था। 40 मैंने तेरे झुंड की देखभाल करने में क्या-क्या नहीं सहा, दिन की चिलचिलाती धूप, रात की कड़ाके की ठंड और कभी-कभी तो मैं सारी रात जागता रहा।[3] 41 इसी तरह तेरी सेवा में मेरे 20 साल गुज़र गए, 14 साल तेरी बेटियों के लिए, 6 साल तेरे इन जानवरों के लिए। और इस सबके बदले तूने मुझे क्या दिया? सिवा इसके कि तूने दस बार मेरी मज़दूरी बदली।[4] 42 मगर शुक्र है उस परमेश्‍वर का जो मेरे दादा अब्राहम का परमेश्‍वर है[5] और जिसका डर मेरा पिता इसहाक भी मानता है।[6] उसने हमेशा मेरा साथ दिया। अगर वह न होता तो तू मुझे अपने घर से खाली हाथ ही भेज देता। परमेश्‍वर ने देखा है कि मैंने क्या-क्या दुख झेले और किस तरह अपने हाथों से कड़ी

अध्य. 31
1 उत 31:24
2 उत 31:19; उत 35:2
3 उत 46:18, 25
4 लैव 15:19
5 उत 31:19

दूसरा कॉल.
1 उत 30:27
2 1शम 17:34
3 उत 47:9
4 उत 31:7
5 उत 28:13; उत 31:29
6 उत 31:53

मेहनत की। इसीलिए उसने कल रात तुझे फटकारा।”[1]

43 तब लाबान ने याकूब से कहा, “ये लड़कियाँ मेरी बेटियाँ हैं और ये बच्चे मेरे बच्चे हैं। और भेड़-बकरियों का यह पूरा झुंड और यहाँ जो कुछ तेरे सामने है वह सब मेरा और मेरी बेटियों का ही तो है। मैं क्यों अपने ही हाथों अपनी बेटियों और उनके बच्चों का नुक-सान करूँगा?
44 इसलिए अब आ, हम दोनों शांति का करार करें। यह करार हम दोनों के बीच गवाह ठहरेगा।”
45 फिर याकूब ने एक पत्थर लिया और उसे खड़ा किया कि वह उस करार की निशानी हो।[2]
46 इसके बाद याकूब ने अपने भाई-बंधुओं से कहा, “यहाँ कुछ पत्थर इकट्ठा करो।” उन्होंने पत्थर जमा किए और उनका एक ढेर लगाया। फिर उन सबने पत्थरों के उस ढेर पर खाना खाया।
47 लाबान ने उस ढेर का नाम यगर-साहदूता* रखा, जबकि याकूब ने उसे गलएद# नाम दिया।

48 लाबान ने कहा, “पत्थरों का यह ढेर हम दोनों के बीच एक साक्षी है।” इसलिए उस ढेर का नाम गलएद[3] और
49 पहरा मीनार रखा गया क्योंकि लाबान ने याकूब से कहा, “जब हम एक-दूसरे से दूर रहेंगे तब यहोवा हम दोनों पर नज़र रखे कि हम इस करार को निभाते हैं या नहीं।
50 अगर तूने मेरी बेटियों के साथ बुरा सलूक किया और उनके अलावा और भी पत्नियाँ ले आया, तो तुझे कोई इंसान देखे या न देखे मगर याद रख, परमेश्वर ज़रूर देखेगा जो हम दोनों के बीच गवाह है।”
51 लाबान ने याकूब से यह भी कहा, “पत्थरों के इस ढेर और इस पत्थर को देख जिसे मैंने इसलिए खड़ा किया कि यह हम दोनों के बीच हुए करार की निशानी हो।
52 यह पत्थर और पत्थरों का यह ढेर इस बात के गवाह हैं[1] कि न मैं कभी इनकी सीमा लाँघकर तेरे खिलाफ आऊँगा और न तू कभी इनकी सीमा लाँघकर मेरे खिलाफ आएगा।
53 हम दोनों के बीच वह परमेश्वर न्यायी हो जो अब्राहम, नाहोर और उनके पिता का पर-मेश्वर है।”[2] फिर याकूब ने उस पर-मेश्वर की शपथ खायी जिसका डर उसका पिता इसहाक मानता था।[3]

54 इसके बाद याकूब ने उस पहाड़ पर एक बलिदान चढ़ाया और उसने अपने सभी रिश्तेदारों को खाने पर बुलाया। फिर सबने खाना खाया और पहाड़ पर रात बितायी।
55 अगली सुबह लाबान जल्दी उठा और उसने अपनी बेटियों और नाती-नातिनों* को चूमा[4] और उन्हें आशीर्वाद दिया।[5] फिर लाबान वहाँ से अपने घर के लिए निकल पड़ा।[6]

32 याकूब अपने सफर में आगे बढ़ता गया और रास्ते में उसे परमेश्वर के स्वर्गदूत मिले।
2 जैसे ही याकूब ने उन्हें देखा, उसने कहा, “यह परमेश्वर की छावनी है!” इसलिए उसने उस जगह का नाम महनैम* रखा।

3 फिर याकूब ने अपने आगे कुछ दूतों को अपने भाई एसाव के पास भेजा, जो सेईर यानी एदोम[7] के इलाके में रहता था।[8]
4 उसने अपने आदमियों

31:47 *यह अरामी भाषा का शब्द है जिसका मतलब है, “साक्षी का ढेर।” #यह इब्रानी शब्द है जिसका मतलब है, “साक्षी का ढेर।”

31:55 *शा., “बेटों।” 32:2 *मतलब “दो छावनियाँ।”

अध्य. 31
1 उत 31:24
2 उत 28:18
3 उत 31:22, 23

दूसरा कॉल.
1 उत 31:44, 45
2 उत 17:1, 7
3 उत 31:42
4 उत 31:28
5 उत 24:59, 60
6 उत 27:43; उत 28:2

अध्य. 32
7 उत 25:30
8 उत 27:39; उत 36:8; व्य 2:5; यह 24:4

को यह आज्ञा दीः “तुम मेरे मालिक
एसाव से कहना, ‘तेरे दास याकूब ने तुझे
यह संदेश भेजा है, “मैं एक लंबे समय
तक लाबान के यहाँ था*[1] **5** और वहाँ
रहते वक्त मैंने बहुत धन-दौलत कमायी,
मेरे पास बहुत-से दास-दासियाँ, बैल, गधे
और भेड़ें हैं।[2] मेरे मालिक, मैं तुझसे
मिलने आ रहा हूँ और यह खबर तुझे
इसलिए दे रहा हूँ ताकि तू मुझ पर
कृपा करे।”’”

6 कुछ समय बाद याकूब के आदमियों
ने लौटकर उससे कहा, “हम तेरे भाई
एसाव से मिल आए हैं। वह भी तुझसे
मिलने आ रहा है। उसके साथ उसके
400 आदमी भी हैं।”[3] **7** जब याकूब
ने यह सुना तो वह बहुत डर गया और
चिंता करने लगा कि अब क्या होगा![4]
इसलिए उसने अपने लोगों और भेड़-
बकरियों, गाय-बैलों और ऊँटों को दो
दलों में बाँट दिया। **8** याकूब ने कहा,
“अगर एसाव एक दल पर हमला करे
तो कम-से-कम दूसरा दल बचकर भाग
सकता है।”

9 इसके बाद याकूब ने परमेश्वर से
प्रार्थना कीः “हे यहोवा, मेरे दादा अब्रा-
हम और मेरे पिता इसहाक के परमेश्वर,
तू जो मुझसे कहता है कि अपने रिश्तेदारों
के पास अपने देश लौट जा और मैं हमेशा
तेरा भला करूँगा,[5] **10** तूने अपने दास
को अपने अटल प्यार और वफ़ादारी
का सबूत दिया है,[6] जबकि मैं इसके
काबिल नहीं था। जब मैं इस यरदन नदी
के पार गया था तब मेरे पास सिर्फ एक
लाठी थी, मगर आज मेरे पास इतना कुछ
है कि इसके दो दल हैं।[7] **11** अब मैं
तुझसे बिनती करता हूँ कि मुझे मेरे भाई
एसाव से बचा ले[1] क्योंकि मुझे डर है कि
वह आकर मुझ पर हमला कर देगा[2] और
इन माँओं और इनके बच्चों को भी नहीं
बख्शेगा। **12** तूने मुझसे कहा था, ‘मैं
ज़रूर तेरा भला करूँगा और तेरे वंश को
इतना बढ़ाऊँगा कि वह समुंदर किनारे की
बालू के किनकों जैसा अनगिनत हो
जाएगा।’”[3]

13 याकूब रात को उसी जगह ठहरा।
फिर उसने अपने झुंड में से कुछ जान-
वर अलग किए ताकि उन्हें अपने भाई
एसाव को तोहफे में दे सके।[4] **14** उसने
200 बकरियाँ, 20 बकरे, 200 भेड़ें,
20 मेढ़े, **15** 30 ऊँटनियाँ और उनके
बच्चे, 40 गायें, 10 बैल, 20 गधियाँ
और 10 गधे अलग किए।[5]

16 उसने इन जानवरों के झुंड एक-
एक करके अपने दासों को सौंपे और
उनसे कहा, “तुम सब मुझसे पहले नदी
के उस पार चले जाओ और एक झुंड से
दूसरे झुंड के बीच कुछ फासला रखो।”
17 उसने पहले झुंड को ले जानेवाले दास
को यह आज्ञा भी दीः “अगर तुझे रास्ते
में मेरा भाई एसाव मिले और तुझसे पूछे,
‘तेरा मालिक कौन है, तू कहाँ जा रहा
है और तेरे आगे-आगे ये जानवर किसके
हैं?’ **18** तो तू उससे कहना, ‘मैं तेरे
दास याकूब के यहाँ काम करता हूँ। उसने
ये जानवर मेरे मालिक एसाव के लिए
तोहफे में भेजे हैं[6] और वह खुद भी हमारे
पीछे आ रहा है।’” **19** याकूब ने दूसरे,
तीसरे और बाकी सभी झुंडों को ले जाने-
वाले दासों को आज्ञा दी, “जब एसाव
तुमसे मिलेगा तो तुम भी उससे ऐसा ही
कहना। **20** तुम उससे यह भी कहना,
‘तेरा दास याकूब हमारे पीछे आ रहा
है।’” याकूब ने ऐसा इसलिए किया
क्योंकि उसने सोचा, ‘अगर मैं एसाव को

अध्य. 32
1 उत 31:41
2 उत 30:43
उत 33:11
3 उत 33:1, 2
4 उत 27:41
उत 32:11
5 उत 31:3, 13
6 उत 28:15
भज 100:5
7 उत 28:10
उत 30:43
उत 32:7

दूसरा कॉल.
1 भज 34:4
2 उत 27:41
3 उत 28:14
उत 46:2, 3
निर्ग 1:7
निर्ग 32:13
प्रेष 7:17
4 उत 33:10
5 उत 30:43
6 उत 33:8

32:4 *या “परदेसी की तरह रहा।”

पहले तोहफे भेजकर उसे खुश करूँ[1] तो बाद में जब मैं उससे मिलूँगा तो शायद वह मेरे साथ प्यार से पेश आए।’ **21** फिर याकूब के दास उसके दिए तोहफे लेकर उससे पहले नदी के पार निकल गए जबकि याकूब रात को वहीं डेरे में रहा।

22 रात को कुछ देर बाद याकूब उठा और अपनी दोनों पत्नियों,[2] दोनों दासियों[3] और अपने 11 बेटों को यब्बोक नदी के उथले हिस्से से पार ले गया।[4] **23** उन सबको पार कराने के बाद, वह अपना बाकी सारा सामान भी नदी के पार ले गया।

24 जब याकूब अकेला था तो एक आदमी आकर उससे कुश्ती लड़ने लगा और पौ फटने तक लड़ता रहा।[5] **25** जब उस आदमी ने देखा कि वह याकूब को हरा नहीं पा रहा तो उसने याकूब की जाँघ का जोड़ छुआ। इस-लिए कुश्ती करते वक्त याकूब का जोड़ खिसक गया।[6] **26** इसके बाद उस आदमी ने याकूब से कहा, “अब मुझे जाने दे, सुबह होनेवाली है।” मगर याकूब ने कहा, “मैं तुझे तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक तू मुझे आशीर्वाद नहीं देगा।”[7] **27** फिर उस आदमी ने उससे पूछा, “तेरा नाम क्या है?” उसने कहा, “याकूब।” **28** तब उस आदमी ने कहा, “अब से तेरा नाम याकूब नहीं इसराएल* होगा,[8] क्योंकि तू परमेश्वर से और इंसानों से लड़ा[9] और आखिरकार जीत गया।” **29** फिर याकूब ने उससे पूछा, “क्या मैं तेरा नाम जान सकता हूँ?” मगर उस आदमी ने कहा, “तू क्यों मेरा नाम जानना चाहता है?”[10]

32:28 *मतलब “परमेश्वर से लड़नेवाला (या हार न माननेवाला)” या “परमेश्वर लड़ता है।”

फिर उसने याकूब को आशीर्वाद दिया। **30** याकूब ने उस जगह का नाम पनी-एल*[1] रखा क्योंकि उसने कहा, “मैंने परमेश्वर को आमने-सामने देखा, फिर भी मेरी जान बख्श दी गयी।”[2]

31 जब याकूब पनूएल* से आगे बढ़ा तो सूरज उगने लगा था। याकूब लँगड़ा रहा था क्योंकि उसकी जाँघ का जोड़ खिसक गया था।[3] **32** इसीलिए आज तक इसराएली लोग जानवर की जाँघ के जोड़ की नस नहीं खाते क्योंकि उस आदमी ने याकूब की जाँघ के जोड़ का वह हिस्सा छुआ था जहाँ नस होती है।

33 जब याकूब ने नज़रें उठायीं तो देखा कि एसाव चला आ रहा है और उसके साथ 400 आदमी भी हैं।[4] तब याकूब ने लिआ, राहेल और दोनों दासियों से कहा कि वे अपने-अपने बच्चों को अपने साथ रखें।[5] **2** फिर उसने कहा कि दोनों दासियाँ अपने बच्चों को लेकर सबसे आगे आ जाएँ,[6] उनके पीछे लिआ और उसके बच्चे आएँ[7] और सबसे आखिर में राहेल[8] और यूसुफ। **3** फिर वह खुद उन सबके आगे-आगे चलने लगा। जैसे-जैसे वह अपने भाई के नज़दीक आता गया उसने सात बार ज़मीन पर गिरकर प्रणाम किया।

4 तब एसाव दौड़कर उसके पास गया और उसे गले लगाकर चूमने लगा और वे दोनों फूट-फूटकर रोने लगे। **5** जब एसाव ने याकूब के साथ औरतों और बच्चों को देखा तो उसने पूछा, “ये सब कौन हैं?” याकूब ने कहा, “ये तेरे इस दास के ही बच्चे हैं। सब परमेश्वर की कृपा है!”[9] **6** तब दोनों दासियाँ अपने

32:30 *मतलब “परमेश्वर का चेहरा।”
32:31 *या “पनीएल।”

अध्य. 32
1 उत 43:11, 1शम 25:18
2 उत 29:30, रूत 4:11
3 उत 30:3, 9
4 व्य 3:16, यह 12:2, न्या 11:13
5 हो 12:3
6 उत 32:31, 32
7 हो 12:4
8 उत 35:10
9 हो 12:3
10 न्या 13:17, 18

दूसरा कॉल.
1 1रा 12:25
2 उत 16:7, 13, न्या 6:22, यूह 1:18
3 उत 32:25

अध्य. 33
4 उत 32:6
5 उत 32:22
6 उत 30:7, 12
7 उत 30:19
8 उत 30:22-24
9 उत 32:22, भज 127:3

बच्चों को लेकर आगे आयीं और उन सबने एसाव को प्रणाम किया। 7 फिर लिआ अपने बच्चों को लेकर आगे आयी और उन्होंने एसाव को प्रणाम किया। आखिर में यूसुफ और राहेल आगे आए और उन्होंने भी प्रणाम किया।[1]

8 एसाव ने याकूब से पूछा, “तूने मेरे पास जो लोग और जानवरों के झुंड भेजे थे, वह सब किस लिए?”[2] याकूब ने कहा, “बस तेरी कृपा चाहता हूँ मालिक।”[3] 9 एसाव ने कहा, “मेरे भाई, मेरे पास बहुत धन-संपत्ति है,[4] इसलिए जो तूने भेजा था वह तू ही रख ले।” 10 मगर याकूब ने कहा, “नहीं मेरे मालिक, तुझे मेरा तोहफा लेना ही होगा, वरना मैं यही समझूँगा कि तू अब भी मुझसे नाराज़ है। मैंने वह तोहफा इसलिए भेजा था ताकि मैं तुझसे मिल सकूँ। और आज जब तूने मुझे खुशी-खुशी कबूल किया, तो मुझे ऐसा लगा मानो मैंने परमेश्वर को देख लिया है।[5] 11 परमेश्वर की कृपा से आज मेरे पास किसी चीज़ की कमी नहीं है।[6] मेरी दुआ है कि तेरा भी हमेशा भला हो और यह तोहफा इसी बात की निशानी है।[7] इसलिए मेहरबानी करके इसे कबूल कर ले।” याकूब के बार-बार कहने पर एसाव ने उसका तोहफा कबूल कर लिया।

12 कुछ देर बाद एसाव ने याकूब से कहा, “अब हम सब यहाँ से चलते हैं। मैं तेरे आगे-आगे चलकर तुम्हें रास्ता दिखाऊँगा।” 13 मगर याकूब ने कहा, “मालिक, तू देख सकता है कि मेरे बच्चे बहुत छोटे हैं।[8] और मेरे जानवरों के झुंड में ऐसी भेड़ें और गायें भी हैं जिनके दूध-पीते मेम्ने और बछड़े हैं। अगर एक दिन भी मैं उन्हें भगा-भगाकर ले जाऊँ तो पूरा झुंड मर जाएगा। 14 इसलिए मालिक, मैं तुझसे बिनती करता हूँ कि तू आगे निकल जा, तेरा यह सेवक अपने बाल-बच्चों और झुंड के साथ धीरे-धीरे चलता हुआ बाद में आएगा। और मैं तुझे सेईर में आकर मिलूँगा।”[1] 15 एसाव ने कहा, “ठीक है, तो मैं ऐसा करता हूँ, तेरी मदद के लिए अपने कुछ आदमियों को यहाँ छोड़ जाता हूँ।” इस पर याकूब ने कहा, “इसकी क्या ज़रूरत है? बस मालिक, तेरी कृपा मुझ पर बनी रहे, यही मेरे लिए काफी है।” 16 तब एसाव उसी दिन सेईर वापस जाने के लिए निकल पड़ा।

17 और याकूब अपने सफर में आगे बढ़ता हुआ सुक्कोत[2] पहुँचा। वहाँ उसने अपने लिए एक घर बनाया और अपने जानवरों के लिए छप्पर डाले। इसलिए उसने उस जगह का नाम सुक्कोत* रखा।

18 याकूब पद्दन-अराम[3] से सफर करता हुआ सही-सलामत कनान देश के शेकेम शहर[4] पहुँचा। उसने शहर के पास ही अपना डेरा डाला। 19 फिर उसने ज़मीन का वह टुकड़ा खरीद लिया जहाँ उसने डेरा डाला था। उसने यह ज़मीन चाँदी के 100 टुकड़े देकर हमोर के बेटों से खरीदी थी। हमोर के एक बेटे का नाम शेकेम था।[5] 20 याकूब ने वहाँ परमेश्वर के लिए एक वेदी बनायी और उसका यह नाम रखा, ‘परमेश्वर, इसराएल का परमेश्वर है।’[6]

34 याकूब की बेटी दीना, जो लिआ से पैदा हुई थी,[7] कनान देश की जवान लड़कियों[8] के साथ वक्त बिताने* के लिए उनके यहाँ जाया करती थी।

अध्य. 33
1 उत 33:2
2 उत 32:16
3 उत 32:4, 5
4 उत 36:6, 7
5 उत 32:11, 20
6 उत 30:43
7 उत 32:13-15
8 उत 31:17

दूसरा कॉल.
1 उत 32:3
2 यह 13:24, 27; 1रा 7:46
3 उत 25:20; उत 28:6
4 उत 10:19; उत 12:6; यह 24:1
5 यह 24:32; प्रेष 7:15, 16
6 उत 35:1, 7

अध्य. 34
7 उत 30:19, 21; उत 46:15
8 उत 26:34, 35; उत 27:46

33:17 *मतलब “छप्पर।” **34:1** *या “को देखने।”

2 वहाँ शेकेम की नज़र उस पर पड़ी, जो हिव्वी लोगों[1] के एक प्रधान हमोर का बेटा था। एक दिन ऐसा हुआ कि शेकेम ने दीना को पकड़ लिया और उसका बलात्कार करके उसे भ्रष्ट कर डाला। 3 इसके बाद, उसे याकूब की इस जवान बेटी से प्यार हो गया, वह उसे अपने दिलो-दिमाग से निकाल नहीं पा रहा था। उसने दीना से मीठी-मीठी बातें करके उसका दिल जीतने की कोशिश की।* 4 आखिरकार उसने अपने पिता हमोर[2] से कहा, "तू किसी तरह इस लड़की से मेरी शादी करा दे।"

5 इस बीच याकूब को पता चला कि शेकेम ने उसकी बेटी दीना को भ्रष्ट कर दिया है। मगर उसने इस बारे में किसी से कुछ नहीं कहा। वह अपने बेटों के आने का इंतज़ार करने लगा जो उसकी भेड़-बकरियाँ लेकर मैदान गए हुए थे। 6 बाद में शेकेम का पिता हमोर याकूब से बात करने उसके पास आया। 7 उधर जब याकूब के बेटों को दीना के बारे में खबर मिली, तो वे फौरन मैदान से घर आए। उन्हें यह बात बहुत बुरी लगी और वे क्रोध से भर गए, क्योंकि शेकेम ने याकूब की बेटी का बलात्कार करके बहुत दुष्ट काम किया था[3] और इसराएल का घोर अपमान किया था।[4]

8 जब हमोर याकूब के यहाँ आया तो उसने याकूब और उसके बेटों से कहा, "मेरा बेटा शेकेम तुम्हारी बेटी दीना को बहुत चाहता है। इसलिए मैं तुम लोगों से बिनती करता हूँ कि अपनी बेटी की शादी मेरे बेटे से करा दो 9 और हमारी जाति से रिश्तेदारी कर लो। तुम लोग अपनी बेटियाँ हमें देना और हम अपनी बेटियाँ तुम्हें देंगे।[1] 10 तुम हमारे यहाँ रह सकते हो, हमारा पूरा इलाका तुम्हारे सामने पड़ा है। तुम जहाँ चाहो बस जाओ, व्यापार करो और अपनी धन-संपत्ति बढ़ाओ।" 11 शेकेम ने दीना के पिता और उसके भाइयों से कहा, "तुम जो माँगोगे मैं देने को तैयार हूँ। बस मेहरबानी करके हाँ कह दो। 12 तुम महर की रकम जितनी चाहे बढ़ा दो, तोहफे में जो चाहे माँग लो।[2] सिर्फ अपनी लड़की की शादी मुझसे करा दो।"

13 तब याकूब के बेटों ने शेकेम और उसके पिता हमोर के साथ एक चाल चलने की सोची, क्योंकि शेकेम ने उनकी बहन दीना को भ्रष्ट कर दिया था। 14 उन्होंने शेकेम और उसके पिता हमोर से कहा, "हम अपनी बहन की शादी ऐसे आदमी से नहीं करा सकते जिसका खतना न हुआ हो।[3] यह हमारे लिए बड़े अपमान की बात होगी। 15 हम सिर्फ इस शर्त पर तुम्हें अपनी बहन दे सकते हैं, तुम्हें और तुम्हारे सभी आदमियों को हमारी तरह अपना खतना करवाना होगा।[4] 16 तभी हम अपनी बेटियाँ तुम्हें देंगे और तुम्हारी बेटियाँ लेंगे और तुम्हारे यहाँ आकर बस जाएँगे। फिर हम और तुम एक ही जाति के हो जाएँगे। 17 लेकिन अगर तुम हमारी बात नहीं मानोगे और खतना नहीं करवाओगे, तो हम अपनी बहन को लेकर यहाँ से चले जाएँगे।"

18 याकूब के बेटों की यह शर्त हमोर[5] और उसके बेटे शेकेम[6] को ठीक लगी। 19 और उस जवान ने बिना देर किए उनके कहे मुताबिक किया[7] क्योंकि वह याकूब की बेटी को बहुत चाहता था। शेकेम अपने पिता के पूरे घराने का सबसे इज़्ज़तदार आदमी माना जाता था।

34:3 *शा., "उस लड़की के दिल से बात की।"

अध्य. 34
1 व्य 7:1
1इत 1:13-15
2 उत 33:18, 19
3 इब्र 13:4
4 2शम 13:22

दूसरा कॉल.
1 उत 24:2, 3
2 उत 24:53
हो 3:2
3 उत 17:9, 12
4 उत 17:10
5 उत 33:18, 19
6 उत 34:2
7 उत 34:15

20 हमोर और शेकेम शहर के फाटक पर गए और उन्होंने अपने शहर के आदमियों से कहा,[1] 21 “उन आदमियों ने कहा है कि वे हमारे साथ शांति बनाए रखना चाहते हैं। इसलिए क्यों न हम उन्हें अपने इलाके में आकर बसने दें और व्यापार करने दें? वैसे भी हमारा इलाका बहुत बड़ा है, जगह की कोई कमी नहीं होगी। हम उनकी बेटियाँ ब्याह सकते हैं और वे हमारी।[2] 22 उन्होंने कहा है कि उन्हें हमारे यहाँ बस जाना मंज़ूर है और वे हमारे साथ मिलकर एक ही जाति के हो जाने के लिए तैयार हैं। बस उन्होंने एक शर्त रखी है, हमारे सभी आदमियों को उनकी तरह खतना करवाना होगा।[3] 23 ज़रा सोचो, इससे हमें कितना फायदा होगा। उनकी जायदाद, दौलत, भेड़-बकरियाँ सबकुछ हमारा हो जाएगा। तो आओ हम उनकी शर्त मान लें ताकि वे हमारे यहाँ बस जाएँ।” 24 तब शहर के फाटक पर इकट्ठा सभी आदमियों ने हमोर और उसके बेटे शेकेम की बात मान ली और शहर के सभी आदमियों ने अपना खतना करवा लिया।

25 मगर खतना करवाने के तीसरे दिन जब उन आदमियों का दर्द से बुरा हाल था, याकूब के दो बेटे शिमोन और लेवी, जो दीना के भाई थे,[4] तलवारें लेकर शहर के अंदर आए। वे इस तरह आए कि किसी को उन पर शक नहीं हुआ। और उन्होंने शहर के सभी आदमियों का कत्ल कर दिया।[5] 26 उन्होंने हमोर और उसके बेटे शेकेम को भी तलवार से मार डाला और शेकेम के घर से दीना को लेकर निकल गए। 27 फिर याकूब के बाकी बेटे भी शहर में आए, जहाँ सभी आदमी मरे पड़े थे और उन्होंने शहर को लूट लिया, क्योंकि उनकी बहन को भ्रष्ट किया गया था।[1] 28 वे उनकी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे सब ले गए और शहर के अंदर और बाहर मैदान में जो कुछ था, सब लूटकर ले गए। 29 वे उनके घरों में घुसकर सारा माल उठा ले गए, उन्होंने एक भी चीज़ नहीं छोड़ी। वे उनकी औरतों और छोटे बच्चों को भी पकड़कर ले गए।

30 तब याकूब ने शिमोन और लेवी[2] से कहा, “तुमने मुझे कितनी बड़ी मुसीबत में डाल दिया!* अब यहाँ के कनानी और परिज्जी लोग मुझसे नफरत करने लगेंगे। वे सब एकजुट होकर मुझ पर हमला कर देंगे और मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा, उनके सामने हमारी गिनती ही क्या है? वे मुझे और मेरे घराने को खाक में मिला देंगे।” 31 मगर उन दोनों ने कहा, “कोई हमारी बहन के साथ वेश्याओं जैसा बरताव करे और हम चुप बैठे रहें?”

35 इसके बाद परमेश्वर ने याकूब से कहा, “अब तू यह जगह छोड़कर बेतेल[3] जा और वहाँ रह। वहाँ सच्चे परमेश्वर के लिए एक वेदी बना, जिसने तुझे उस वक्त दर्शन दिया था जब तू अपने भाई एसाव से जान बचाकर भाग रहा था।”[4]

2 तब याकूब ने अपने घराने से और जितने भी लोग उसके साथ रहते थे उन सबसे कहा, “तुम्हारे पास झूठे देवताओं की जितनी भी मूर्तियाँ हैं, उन्हें निकालो[5] और खुद को शुद्ध करो और अपने कपड़े बदलो, 3 क्योंकि अब हम यह जगह छोड़कर बेतेल जाएँगे। वहाँ मैं सच्चे परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाऊँगा जिसने मुसीबत की घड़ी में मेरी दुहाई सुनी

34:30 * या “तुम्हारी वजह से मुझे बिरादरी से निकाल दिया जाएगा।”

अध्य. 34
1 जक 8:16
2 उत 34:8, 9
3 उत 17:11
4 उत 46:15
5 उत 49:5-7

दूसरा कॉल.
1 उत 34:2
2 उत 49:5

अध्य. 35
3 उत 28:19
उत 31:13
4 उत 27:42-44
5 उत 31:19
व्य 5:7
यह 23:7
1कुर 10:14

और मैं जहाँ-जहाँ* गया, वह मेरे साथ
रहा।"[1] **4** तब उन्होंने वह सब मूर्तियाँ,
जो उनके पास थीं, निकालीं और अपने
कानों की बालियाँ भी उतारीं और याकूब
को दे दीं। याकूब ने यह सब ले जाकर
शेकेम शहर के पासवाले बड़े पेड़ के नीचे
गाड़* दिया।

5 उन्होंने अपना पड़ाव उठाया और
वहाँ से निकल पड़े। वहाँ के आस-पास
के शहरों के लोगों ने याकूब के बेटों का
पीछा नहीं किया, क्योंकि उनमें परमेश्वर
का खौफ समा गया था। **6** याकूब
अपने लोगों के साथ सफर करते-करते
कनान देश के लूज[2] यानी बेतेल पहुँचा।
7 यहाँ उसने एक वेदी खड़ी की और इस
जगह का नाम एल-बेतेल* रखा, क्योंकि
जब वह अपने भाई से भाग रहा था
तो सच्चे परमेश्वर ने यहीं पर उसे दर्शन
दिया था।[3] **8** कुछ समय बाद, रिबका
की धाई दबोरा[4] की मौत हो गयी और
उसे बेतेल के पास एक बाँज पेड़ के नीचे
दफनाया गया। याकूब ने उस जगह का
नाम अल्लोन-बक्कूत* रखा।

9 जब याकूब पद्दन-अराम से लौट
रहा था तो परमेश्वर ने एक बार फिर
उसके सामने प्रकट होकर उसे आशीष
दी। **10** परमेश्वर ने उससे कहा, "तेरा
नाम याकूब है[5] मगर अब से तेरा नाम
याकूब नहीं, इसराएल होगा।" और पर-
मेश्वर उसे इसराएल बुलाने लगा।[6]
11 परमेश्वर ने उससे यह भी कहा,
"मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ।[7] मैं तुझे
आशीष देता हूँ कि तू फूले-फले और
गिनती में बढ़ जाए। तुझसे जातियाँ
निकलेंगी, हाँ, कई जातियाँ निकलेंगी[8]
और तेरे खानदान से राजा पैदा होंगे।[1]
12 और जो देश मैंने अब्राहम और
इसहाक को दिया था, वही देश मैं
तुझे और तेरे बाद तेरे वंश को दूँगा।"[2]
13 याकूब से यह सब कहने के बाद पर-
मेश्वर वहाँ से चला गया।

14 इसके बाद याकूब ने उस जगह
पर, जहाँ परमेश्वर ने उससे बात की
थी, यादगार के तौर पर एक पत्थर
खड़ा किया। फिर उस पत्थर पर अर्घ
चढ़ाया और तेल उँडेला।[3] **15** और
याकूब ने दोबारा उस जगह को बेतेल
कहा[4] जहाँ परमेश्वर ने उससे बात
की थी।

16 फिर वे बेतेल से अपना पड़ाव
उठाकर आगे बढ़े। वे एप्रात से कुछ
दूरी पर थे कि तभी राहेल की प्रसव-पीड़ा
शुरू हो गयी। बच्चा जनने में उसे
बहुत तकलीफ हो रही थी। **17** जब
वह दर्द से तड़प रही थी, तो उसकी धाई
ने उससे कहा, "हिम्मत रख, तुझे एक
और बेटा होगा।"[5] **18** फिर राहेल
ने एक लड़के को जन्म दिया। बच्चा
जनते-जनते उसकी मौत हो गयी। मगर
जब उसकी जान निकल रही थी तो
उसने अपने बेटे का नाम बेन-ओनी*
रखा। लेकिन याकूब ने उसे बिन्यामीन#[6]
नाम दिया। **19** इस तरह एप्रात (यानी
बेतलेहेम) जानेवाले रास्ते में राहेल की
मौत हो गयी और उसे वहीं दफनाया
गया।[7] **20** याकूब ने राहेल की कब्र
पर निशानी के तौर पर एक बड़ा-सा
पत्थर खड़ा किया। यह पत्थर आज तक
उसकी कब्र पर रखा हुआ है।

21 इसके बाद इसराएल अपना

अध्य. 35
1 उत 28:13, 15 उत 31:42
2 उत 28:19
3 उत 28:20-22
4 उत 24:59
5 उत 25:26 उत 27:36
6 उत 32:28
7 उत 17:1 निर्ग 6:3 प्रक 15:3
8 उत 48:3, 4

दूसरा कॉल.
1 उत 17:5, 6 यूह 12:13
2 उत 15:18 व्य 34:4
3 उत 28:18
4 उत 28:19
5 उत 30:22-24
6 उत 46:21 उत 49:27 व्य 33:12
7 उत 48:7 मी 5:2 मत 2:6

35:3 *या "जिस रास्ते।" **35:4** *या "छिपा।" **35:7** *मतलब "बेतेल का परमेश्वर।" **35:8** *मतलब "रोने का बाँज।"

35:18 *मतलब "मेरे मातम का बेटा।" #मतलब "दाएँ हाथ का बेटा," यानी मेरा चहेता बेटा।

पड़ाव उठाकर आगे बढ़ा। उसने एदेर
मीनार से आगे जाकर अपना तंबू गाड़ा।
22 जब इसराएल वहाँ रह रहा था तो
एक दिन रूबेन ने अपने पिता की उप-
पत्नी बिल्हा के साथ संबंध रखे और यह
बात इसराएल को पता चली।[1]

याकूब के 12 बेटे थे। **23** लिआ
से याकूब के ये बेटे हुए: पहलौठा
रूबेन,[2] उसके बाद शिमोन, लेवी, यहूदा,
इस्साकार और जबूलून। **24** राहेल से
यूसुफ और बिन्यामीन पैदा हुए।
25 राहेल की दासी बिल्हा से दान
और नप्ताली **26** और लिआ की दासी
जिल्पा से गाद और आशेर पैदा हुए। ये
सभी याकूब के बेटे थे जो पद्दन-अराम में
पैदा हुए थे।

27 आखिरकार याकूब अपने पिता
इसहाक के पास ममरे पहुँचा[3] जो
किरयत-अरबा यानी हेब्रोन के इलाके
में है। यहीं पर अब्राहम और इसहाक
ने परदेसियों की ज़िंदगी गुज़ारी थी।[4]
28 इसहाक कुल मिलाकर 180 साल
जीया।[5] **29** एक लंबी और खुशहाल
ज़िंदगी जीने के बाद* उसकी मौत हो
गयी और उसे दफनाया गया।# इसहाक
को उसके बेटे एसाव और याकूब ने दफ-
नाया।[6]

36 यह है एसाव की वंशावली जो
एदोम भी कहलाता है।[7]

2 एसाव ने इन कनानी लड़कियों से
शादी की थी: आदा[8] जो हित्ती एलोन की
बेटी थी[9] और ओहोलीबामा[10] जो अना
की बेटी और हिव्वी जाति के सिबोन की
पोती थी। **3** एसाव की एक और पत्नी
थी बाशमत,[1] जो इश्माएल की बेटी और
नबायोत की बहन थी।[2]

4 एसाव की पत्नी आदा से एलीपज
पैदा हुआ, बाशमत से रूएल

5 और ओहोलीबामा से यूश, यालाम
और कोरह।[3]

एसाव के ये सभी बेटे कनान देश में
पैदा हुए। **6** बाद में एसाव ने कनान
छोड़ दिया और याकूब से दूर एक
अलग देश में जा बसा।[4] वह अपनी
पत्नियों, बेटे-बेटियों और घराने के बाकी
सब लोगों को लेकर वहाँ चला
गया। वह अपने साथ अपने सभी जान-
वर और अपनी पूरी दौलत ले गया
जो उसने कनान में हासिल की थी।[5]
7 उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि
दोनों भाइयों के पास इतना साजो-सामान
और इतने जानवर थे कि अब उनका
एक जगह रहना* मुश्किल हो रहा था।
8 इसलिए एसाव सेईर के पहाड़ी प्रदेश
में जा बसा।[6] एसाव का दूसरा नाम
एदोम है।[7]

9 यह एसाव के बारे में ब्यौरा है जो
सेईर के पहाड़ी प्रदेश में रहनेवाले एदोमी
लोगों का पुरखा था।[8]

10 एसाव के बेटों के नाम हैं: एली-
पज, जो एसाव की पत्नी आदा से पैदा
हुआ था और रूएल, जो एसाव की पत्नी
बाशमत से पैदा हुआ था।[9]

11 एलीपज के बेटे थे तेमान,[10]
ओमार, सपो, गाताम और कनज।[11]
12 एसाव के बेटे एलीपज की एक उप-
पत्नी थी तिम्ना। तिम्ना से एलीपज का
बेटा अमालेक[12] पैदा हुआ। ये सभी एसाव
की पत्नी आदा के पोते हैं।

13 रूएल के बेटे हैं नहत, जेरह,

35:29 *शा., "बूढ़ा और पूरी उम्र का होकर।" #शा., "वह अपने लोगों में जा मिला।"

36:7 *या "परदेसियों की तरह रहना।"

अध्य. 35

1 उत 49:3, 4; 1इत 5:1
2 उत 49:3
3 उत 31:17, 18
4 उत 15:13; इब्र 11:9
5 उत 25:20, 26
6 उत 49:30, 31

अध्य. 36

7 उत 25:30; यहे 25:12, 13; रोम 9:13
8 उत 36:10
9 उत 26:34
10 उत 36:18

दूसरा कॉल.

1 उत 36:17
2 उत 25:13; उत 28:9
3 1इत 1:35
4 उत 27:39; उत 32:3
5 उत 33:9
6 उत 14:6; व्य 2:5
7 उत 25:30
8 व्य 2:12
9 1इत 1:35
10 उत 36:34
11 उत 36:40, 42; 1इत 1:36
12 निर्ग 17:8; गि 13:29; गि 24:20; व्य 25:19; 1शम 15:8; 1शम 30:1

शम्माह और मिज्जा। ये सभी एसाव की
पत्नी बाशमत[1] के पोते थे।
14 ओहोलीबामा जो अना की बेटी
और सिबोन की पोती थी, उससे एसाव के
ये बेटे पैदा हुए: यूश, यालाम और कोरह।
15 एसाव के बेटों से जो शेख*
निकले वे ये हैं:[2] एसाव के पहलौठे एली-
पज से शेख तेमान, शेख ओमार, शेख
सपो, शेख कनज,[3] 16 शेख कोरह,
शेख गाताम और शेख अमालेक। ये
एलीपज के बेटे हैं जो एदोम देश में शेख
हैं।[4] ये आदा के पोते हैं।
17 एसाव के बेटे रूएल से शेख नहत,
शेख जेरह, शेख शम्माह और शेख मिज्जा
निकले। ये रूएल के बेटे हैं जो एदोम
देश[5] में शेख हैं। ये एसाव की पत्नी बाश-
मत के पोते हैं।
18 आखिर में, एसाव की पत्नी
ओहोलीबामा से निकले शेख ये हैं: शेख
यूश, शेख यालाम और शेख कोरह। ये
एसाव की पत्नी ओहोलीबामा के बेटे हैं।
ओहोलीबामा अना की बेटी थी।
19 तो ये हैं एसाव के बेटे और
उनसे निकले शेख। एसाव का दूसरा नाम
एदोम है।[6]
20 एदोम के इलाके के मूल निवासी
होरी जाति के लोग थे। सेईर होरी
जाति का था[7] और उसके बेटों के
नाम हैं: लोतान, शोबाल, सिबोन, अना,[8]
21 दीशोन, एजेर और दीशान।[9] सेईर
के ये बेटे होरी जाति के शेख हैं, जो एदोम
के इलाके में रहते हैं।
22 लोतान के बेटे थे होरी और
हेमाम। लोतान की बहन तिम्ना थी।[10]
23 शोबाल के बेटे हैं आल्वान, मान-
हत, एबाल, शपो और ओनाम।

36:15 * शेख, गोत्र का प्रधान था।

24 सिबोन[1] के बेटे हैं अय्या और
अना। यह वही अना है जिसे वीराने में
अपने पिता सिबोन के गधों को चराते
वक्त गरम पानी का सोता मिला था।
25 अना का बेटा दीशोन है और बेटी
ओहोलीबामा है।
26 दीशोन के बेटे हैं हेमदान, एश-
बान, यित्रान और करान।[2]
27 एजेर के बेटे हैं बिलहान, जावान
और अकान।
28 दीशान के बेटे हैं ऊज़ और
अरान।[3]
29 होरी जाति के शेख ये हैं: शेख
लोतान, शेख शोबाल, शेख सिबोन, शेख
अना, 30 शेख दीशोन, शेख एजेर
और शेख दीशान।[4] तो ये हैं होरी जाति
के शेख जो सेईर के इलाके में रहते हैं।
31 इसराएलियों* में राजाओं का
दौर शुरू होने से पहले एदोम के इलाके
में जो राजा हुआ करते थे,[5] वे ये हैं:[6]
32 बओर के बेटे बेला ने एदोम पर राज
किया और उसका शहर दिनहाबा था।
33 बेला की मौत के बाद योबाब ने राज
किया। योबाब, बोसरा के रहनेवाले जेरह
का बेटा था। 34 योबाब की मौत के
बाद हूशाम ने राज किया जो तेमानी लोगों
के इलाके से था। 35 हूशाम की मौत के
बाद बदद के बेटे हदद ने राज किया। यह
वही हदद था जिसने मोआब के इलाके में
मिद्यानियों[7] को हराया था। उसका शहर
अवीत था। 36 हदद की मौत के बाद
समला ने राज किया जो मसरेका से था।
37 समला की मौत के बाद शौल ने राज
किया, जो नदी के पासवाले रहोबोत शहर
से था। 38 शौल की मौत के बाद अक-
बोर के बेटे बाल-हानान ने राज किया।

36:31 * शा., "इसराएल के बेटों।"

अध्य. 36
1 उत 26:34
2 निर्ग 15:15
3 1इत 1:53, 54
4 1इत 1:36
5 गि 20:23; 1रा 9:26
6 उत 25:30; उत 32:3
7 उत 14:6; व्य 2:12, 22
8 1इत 1:40
9 1इत 1:38
10 1इत 1:39

दूसरा कॉल.
1 उत 36:2
2 1इत 1:41
3 1इत 1:42
4 1इत 1:38
5 गि 20:14
6 व्य 17:14, 15; 1शम 10:19; 1इत 1:43-50
7 उत 25:1, 2; निर्ग 2:15; गि 31:2

39 अकबोर के बेटे बाल-हानान की मौत
के बाद हदर ने राज किया जिसका शहर
पाऊ था। उसकी पत्नी का नाम महेतबेल
था जो मत्रेद की बेटी थी। और मत्रेद,
मेज़ाहाब की बेटी थी।

40 और जो शेख एसाव के वंश से
आए थे, उनके कुल और उनके इलाके भी
उन्हीं के नाम से जाने जाते थे। इन शेखों
के नाम हैं: शेख तिम्ना, शेख अलवा, शेख
यतेत,[1] 41 शेख ओहोलीबामा, शेख
एलाह, शेख पीनोन, 42 शेख कनज,
शेख तेमान, शेख मिबसार, 43 शेख
मगदीएल और शेख ईराम। ये एदोम
से निकले शेख हैं जिनके नामों की
सूची उनके देश में उनकी अपनी-अपनी
बस्तियों के मुताबिक दी गयी है।[2] एदोमी
लोग एसाव के वंशज हैं।[3]

37 याकूब कनान देश में ही रहा,
जहाँ उसके पिता ने परदेसियों
की ज़िंदगी गुज़ारी थी।[4]

2 ये हैं याकूब के परिवार में हुई कुछ
घटनाएँ।

जब याकूब का बेटा यूसुफ[5] 17 साल
का जवान था, तब वह अपने भाइयों
के साथ भेड़-बकरियाँ चराने जाता था।[6]
उसके ये भाई याकूब की पत्नी
बिल्हा और जिल्पा के बेटे थे।[7] एक
बार यूसुफ ने आकर अपने पिता को
बताया कि उसके भाई कैसे बुरे-बुरे
काम करते हैं। 3 यूसुफ इसराएल के
बुढ़ापे में पैदा हुआ था, इसलिए इस-
राएल अपने सभी बेटों से ज़्यादा यूसुफ से
प्यार करता था।[8] उसने यूसुफ के लिए
एक खास चोगा* बनवाया था। 4 जब
उसके भाइयों ने देखा कि उनका पिता उन
सबसे ज़्यादा यूसुफ से प्यार करता है,
तो वे यूसुफ से नफरत करने लगे। वे
उससे ठीक से बात भी नहीं करते थे।

5 कुछ समय बाद, यूसुफ ने एक
सपना देखा और अपने भाइयों को
बताया।[1] तब वे उससे और भी नफरत
करने लगे। 6 यूसुफ ने अपने भाइयों
से कहा, “मेहरबानी करके सुनो कि
मैंने क्या सपना देखा। 7 मैंने देखा कि
हम सब खेत के बीचों-बीच पूले बाँध रहे
हैं। फिर अचानक मेरा पूला सीधा खड़ा
हो गया और तुम सबके पूलों ने मेरे पूले
को घेर लिया और उसके आगे झुकने
लगे।”[2] 8 उसके भाइयों ने उससे कहा,
“आखिर तू कहना क्या चाहता है, तू क्या
राजा बनकर हम पर हुक्म चलाएगा?”[3]
इस तरह जब यूसुफ के भाइयों ने उसका
सपना और उसकी बातें सुनीं तो वे उससे
और ज़्यादा नफरत करने लगे।

9 इसके बाद यूसुफ ने एक और सपना
देखा और अपने भाइयों को बताया:
“मैंने एक और सपना देखा। इस बार
मैंने देखा कि सूरज, चाँद और 11 तारे
मेरे आगे झुक रहे हैं।”[4] 10 जब उसने
अपने पिता और भाइयों को यह सपना
बताया, तो उसके पिता ने उसे डाँटा, “यह
कैसा सपना है? क्या मैं और तेरी माँ और
तेरे भाई तेरे आगे ज़मीन पर गिरकर तुझे
प्रणाम करेंगे?” 11 यूसुफ की बातें सुन-
कर उसके भाई उससे जलने लगे,[5] मगर
याकूब ने ये बातें ध्यान में रखीं।

12 एक बार यूसुफ के भाई अपने
पिता की भेड़-बकरियों को चराने शेकेम
शहर[6] के पास गए हुए थे। 13 कुछ
समय बाद, इसराएल ने यूसुफ से कहा,
“बेटा तू तो जानता है कि तेरे भाई भेड़-
बकरियाँ लेकर शेकेम के पास गए हुए
हैं। क्या तू जाकर उन्हें देख आएगा?”
यूसुफ ने कहा, “हाँ, मैं ज़रूर जाऊँगा।”

अध्य. 36
1 1इत 1:51-54
2 व्य 2:5
3 उत 25:30
उत 36:8

अध्य. 37
4 उत 23:3, 4
उत 28:1, 4
इब्र 11:8, 9
5 उत 30:25
उत 46:19
6 उत 47:3
7 उत 35:25
उत 35:26
8 1इत 2:1, 2

दूसरा कॉल.
1 उत 37:19
2 उत 42:6, 9
3 उत 45:8
उत 49:26
4 उत 44:14
उत 45:9
5 प्रेष 7:9
6 उत 33:18

37:3 *या “एक लंबा, सुंदर चोगा।”

14 उसके पिता ने कहा, "जा बेटा,
जाकर देख आ कि वे खैरियत से हैं
या नहीं, और भेड़-बकरियों को भी
देख आ। फिर आकर मुझे उनका हाल-
चाल बताना।" इसलिए यूसुफ हेब्रोन[1] की
घाटी से, जहाँ वे रहते थे, शेकेम की तरफ
चल दिया। **15** जब वह एक मैदान में
यहाँ-वहाँ भटक रहा था तो एक आदमी ने
उससे पूछा, "तू क्या ढूँढ़ रहा है?"
16 उसने कहा, "मैं अपने भाइयों को
ढूँढ़ रहा हूँ। वे यहाँ भेड़-बकरियाँ चराने
आए थे। क्या तू जानता है वे कहाँ हैं?"
17 उस आदमी ने कहा, "वे यहाँ से चले
गए। मैंने उन्हें यह कहते सुना था, 'चलो
अब हम दोतान चलते हैं।'" फिर यूसुफ
अपने भाइयों की तलाश में दोतान गया
और वहाँ वे मिल गए।

18 यूसुफ के भाइयों ने दूर से देखा
कि वह आ रहा है। इससे पहले कि वह
उनके पास पहुँचता, वे उसे मार डालने
की साज़िश करने लगे। **19** वे एक-
दूसरे से कहने लगे, "वह देखो! आ
रहा है सपने देखनेवाला![2] **20** चलो हम
उसका काम तमाम कर देते हैं और उसकी
लाश यहीं किसी पानी के गड्ढे में फेंक
देते हैं। कह देंगे किसी जंगली जानवर
ने उसे फाड़ खाया। फिर देखते हैं उसके
सपनों का क्या होता है।" **21** जब
रूबेन[3] ने यह सुना तो उसने यूसुफ को
बचाने की कोशिश की। उसने उनसे कहा,
"नहीं, हम उसकी जान नहीं लेंगे।"[4]
22 उसने यह भी कहा, "उसका खून मत
बहाओ।[5] चाहो तो उसे यहीं वीराने में इस
गड्ढे में फेंक दो। मगर उसे जान से मत
मारो।"*[6] रूबेन उसे अपने भाइयों के
हाथों से बचाकर अपने पिता के पास
वापस ले जाना चाहता था।

23 जैसे ही यूसुफ अपने भाइयों के
पास पहुँचा, उन्होंने उसे पकड़ लिया और
उसका खास चोगा उतार लिया जो वह
पहने हुए था।[1] **24** फिर उन्होंने उसे
पानी के गड्ढे में धकेल दिया। उस वक्त
वह गड्ढा सूखा था, उसमें ज़रा भी पानी
नहीं था।

25 इसके बाद वे खाना खाने बैठे।
फिर उन्होंने देखा कि इश्माएलियों[2] का
एक कारवाँ चला आ रहा है। ये इश्माए-
ली गिलाद से आ रहे थे और अपने
ऊँटों पर सुगंधित गोंद, बलसाँ और राल-
दार छाल[3] लादे हुए मिस्र जा रहे थे।
26 तब यहूदा ने अपने भाइयों से कहा,
"अगर हम अपने भाई को मार डालें
और यह बात छिपा भी लें, तो हमें क्या
मिलेगा? **27** इससे अच्छा है कि हम
उसे इन इश्माएलियों के हाथ बेच दें[4] और
उसकी जान न लें। आखिर वह हमारा
भाई ही तो है, उसके साथ हमारा खून का
रिश्ता है।" उन्होंने अपने भाई यहूदा की
बात मान ली। **28** फिर जब मिद्यानी[5]
व्यापारी वहाँ से गुज़र रहे थे तो यूसुफ
के भाइयों ने उसे गड्ढे से बाहर निकाला
और उसे चाँदी के 20 टुकड़ों में इश्माए-
लियों के हाथ बेच दिया।[6] ये आदमी
यूसुफ को मिस्र ले गए।

29 बाद में जब रूबेन गड्ढे के पास
लौटा और देखा कि यूसुफ वहाँ नहीं है,
तो उसने मारे दुख के अपने कपड़े फाड़े।
30 फिर वह अपने भाइयों के पास गया
और चीख-चीखकर कहने लगा, "लड़का
वहाँ नहीं है! अब क्या होगा? अब मैं क्या
करूँ?"

31 तब उन्होंने यूसुफ का खास चोगा
लिया और एक बकरे को मारकर उसके
खून में चोगा डुबोया। **32** फिर उन्होंने
वह चोगा अपने पिता के पास पहुँचाया

37:22 * या "हाथ न लगाना।"

अध्य. 37
1 उत 23:19; उत 35:27
2 उत 37:5
3 उत 49:3
4 उत 9:5; निर्ग 20:13
5 उत 4:8, 10; उत 42:22
6 उत 42:21

दूसरा कॉल.
1 उत 37:3
2 उत 25:12
3 उत 43:11
4 प्रेष 7:9
5 उत 25:1, 2
6 उत 40:15; उत 45:4; भज 105:17

और उसे यह संदेश भी भेजा: “हमें यह
कपड़ा मिला है। ज़रा देख, कहीं यह
तेरे बेटे का चोगा तो नहीं।”[1] **33** जब
याक़ूब ने उसे ध्यान से देखा तो वह
चिल्ला उठा, “यह मेरे बेटे का ही
चोगा है! ज़रूर किसी जंगली जानवर ने
यूसुफ को मार डाला होगा, उसके टुकड़े-
टुकड़े कर दिए होंगे!” **34** याक़ूब ने
मारे दुख के अपने कपड़े फाड़े और
अपनी कमर पर टाट बाँधे वह कई
दिनों तक अपने बेटे के लिए मातम
मनाता रहा। **35** उसके सब बेटे-बेटियाँ
उसे दिलासा देते रहे, मगर उसका दुख
बिलकुल कम न हुआ। वह कहता,
“मैं कब्र*[2] में जाने तक अपने बेटे के
लिए मातम मनाता रहूँगा।” इस तरह
यूसुफ का पिता उसके लिए रोता रहा।

36 उधर मिद्यानी जब यूसुफ को
लेकर मिस्र पहुँचे, तो उन्होंने उसे पोतीफर
नाम के एक आदमी के हाथ बेच दिया।
पोतीफर, फिरौन का एक दरबारी[3] और
पहरेदारों का सरदार था।[4]

38 इन्हीं दिनों यहूदा अपने भाइयों
से अलग हो गया। उसने अपना
तंबू हीरा नाम के एक आदमी के यहाँ
गाड़ा जो अदुल्लाम का रहनेवाला था।
2 यहूदा ने वहाँ शूआ नाम के एक
कनानी आदमी की बेटी को देखा।[5]
यहूदा ने उसे अपनी पत्नी बनाया और
उसके साथ संबंध रखे। **3** वह गर्भवती
हुई और उसने एक बेटे को जन्म दिया।
यहूदा ने अपने बेटे का नाम एर[6] रखा।
4 उसकी पत्नी एक बार फिर गर्भवती
हुई और उसने एक और बेटे को जन्म
दिया और उसका नाम ओनान रखा।
5 बाद में उसकी पत्नी ने एक और बेटे
को जन्म दिया और उसका नाम शेलह
रखा। शेलह के जन्म के वक्त वह* अक-
जीब[1] में था।

6 कुछ समय बाद, यहूदा ने अपने
पहलौठे बेटे एर की शादी तामार[2] नाम
की लड़की से करायी। **7** मगर यहूदा
का पहलौठा एर यहोवा की नज़र में दुष्ट
था, इसलिए यहोवा ने उसे मार डाला।
8 तब यहूदा ने अपने दूसरे बेटे ओनान
से कहा, “तू देवर-भाभी विवाह के
रिवाज़ के मुताबिक अपने भाई की
विधवा से शादी कर और अपने भाई का
वंश चला।”[3] **9** मगर ओनान जानता
था कि उसके भाई की विधवा से उसका
जो बच्चा होगा वह उसका अपना नहीं
कहलाएगा।[4] इसलिए अपने भाई की
विधवा से संबंध रखते वक्त उसने अपना
वीर्य धरती पर गिरा दिया, क्योंकि वह
अपने भाई के लिए कोई संतान नहीं पैदा
करना चाहता था।[5] **10** उसका यह
काम यहोवा की नज़र में बुरा था इस-
लिए उसने ओनान को भी मार डाला।[6]
11 फिर यहूदा ने सोचा कि अगर मैं
तामार को अपना बेटा शेलह दूँगा तो कहीं
ऐसा न हो कि वह भी अपने भाइयों की
तरह मर जाए।[7] इसलिए उसने अपनी
बहू तामार से कहा, “जब तक मेरा बेटा
शेलह बड़ा नहीं हो जाता, तू जाकर अपने
पिता के घर विधवा बनकर रह।” यहूदा
के कहने पर तामार अपने पिता के घर
चली गयी और वहीं रहने लगी।

12 कुछ समय बाद यहूदा की पत्नी,
जो शूआ की बेटी थी,[8] मर गयी।
यहूदा ने उसके लिए मातम मनाया और
मातम के दिन पूरे होने के बाद वह
अदुल्लाम के अपने साथी हीरा[9] को लेकर
तिमना[10] गया, जहाँ उसकी भेड़ों के

37:35 *या “शीओल।” शब्दावली देखें।

38:5 *यानी यहूदा।

अध्य. 37
1 उत 37:3
2 उत 42:38, उत 44:29, भज 89:48, सभ 9:10, हो 13:14, प्रेष 2:27, प्रक 20:13
3 उत 39:1
4 उत 40:2, 3

अध्य. 38
5 उत 24:2, 3, उत 28:1
6 गि 26:19

दूसरा कॉल.
1 यह 19:29, 31
2 मत 1:3
3 व्य 25:5, 6, मत 22:24
4 रूत 4:6
5 व्य 25:7, 9
6 1इत 2:3
7 गि 26:19
8 उत 38:2
9 उत 38:1
10 यह 15:10, 12, न्या 14:1

ऊन कतरनेवाले लोग थे। 13 तामार को बताया गयाः "तेरा ससुर अपनी भेड़ों का ऊन कतरवाने तिमना जा रहा है।" 14 तब तामार ने अपने विधवा के कपड़े बदले और एक ओढ़ना ओढ़ा और अपना चेहरा घूँघट में छिपा लिया। फिर वह एनैम के फाटक के पास जा बैठी जो तिमना के रास्ते में है। तामार ने ऐसा इस-लिए किया क्योंकि उसे शेलह की पत्नी नहीं बनाया गया था, जबकि अब वह बड़ा हो गया था।[1]

15 जैसे ही यहूदा ने उसे देखा उसने सोचा कि वह कोई वेश्या है, क्योंकि उसने अपना चेहरा छिपा रखा था। 16 वह सड़क किनारे उसके पास गया और बोला, "क्या तू मुझे अपने साथ संबंध रखने देगी?" वह नहीं जानता था कि वह औरत उसकी बहू है।[2] तब वह बोली, "बदले में तू मुझे क्या देगा?" 17 उसने कहा, "मैं अपने झुंड में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेजूँगा।" मगर वह बोली, "जब तक तू बकरी का बच्चा नहीं भेजता, तब तक के लिए तू बंधक में क्या रखेगा?" 18 उसने कहा, "तू ही बता, मैं बंधक में तुझे क्या दूँ?" वह बोली, "अपनी मुहरवाली अँगूठी,[3] उसकी डोरी और वह छड़ी जो तेरे हाथ में है।" तब उसने वे सारी चीज़ें उसे दे दीं और उसके साथ संबंध रखे और उस औरत के गर्भ ठहर गया। 19 इसके बाद वह उठकर वहाँ से चली गयी। उसने अपना ओढ़ना उतारा और दोबारा अपने विधवा के कपड़े पहन लिए।

20 बाद में यहूदा ने अदुल्लाम के अपने साथी[4] के हाथ बकरी का एक बच्चा भेजा कि वह उस औरत से बंधक की चीज़ें छुड़ा लाए। मगर जब उसका साथी वहाँ गया तो उसे वह औरत कहीं नहीं मिली। 21 उसने वहाँ के आद-मियों से पूछताछ कीः "मंदिर की वह वेश्या कहाँ है, जो एनैम में सड़क किनारे बैठा करती थी?" उन्होंने कहा, "इस इलाके में कभी कोई वेश्या नहीं रही।" 22 जब उसे वह औरत नहीं मिली, तो वह यहूदा के पास लौट आया और उससे कहा, "मुझे वह वेश्या नहीं मिली। और वहाँ के आदमियों ने भी बताया, 'इस इलाके में कभी कोई वेश्या नहीं रही।'" 23 तब यहूदा ने कहा, "कोई बात नहीं, उसे मेरी चीज़ें रख लेने दो। अगर हम उसके बारे में ज़्यादा पूछताछ करेंगे तो हमारी बदनामी होगी। और मैंने तो बकरी का बच्चा भेजकर अपना वचन निभाया, मगर वह औरत नहीं मिली तो हम क्या कर सकते हैं।"

24 लेकिन करीब तीन महीने बाद यहूदा को यह बताया गयाः "तेरी बहू तामार वेश्या बन गयी है और अपनी बद-चलनी से वह गर्भवती भी हो गयी है।" तब यहूदा ने कहा, "उसे बाहर सबके सामने लाकर मार डालो और जला दो।"[1] 25 जब तामार को बाहर लाया जा रहा था, तो उसने अपने ससुर को यह संदेश भेजाः "ये चीज़ें जिस आदमी की हैं, उसी से मैं गर्भवती हुई हूँ।" उसने यह भी कहलवाया, "मेहरबानी करके ध्यान से देख, यह मुहरवाली अँगूठी, डोरी और यह छड़ी किसकी है।"[2] 26 जब यहूदा ने वे चीज़ें ध्यान से देखीं तो उसने कहा, "दोषी वह नहीं, मैं हूँ क्योंकि मैंने उसे अपने बेटे शेलह की पत्नी नहीं बनाया।"[3] इसके बाद यहूदा ने फिर कभी तामार के साथ संबंध नहीं रखे।

27 फिर तामार के बच्चा जनने का वक्त आया। उसकी कोख में जुड़वाँ लड़के थे। 28 प्रसव के वक्त सबसे

अध्य. 38
1 व्य 25:5
2 उत 38:11
3 उत 41:42 1रा 21:8
4 उत 38:1

दूसरा कॉल.
1 लैव 21:9
2 उत 38:16, 18
3 उत 38:11 व्य 25:5

पहले एक बच्चे का हाथ बाहर आया।
धाई ने फौरन एक सुर्ख लाल रंग का
धागा लिया और पहचान के लिए उसके
हाथ पर बाँधकर कहा, “यह पहला बच्चा
है।” 29 मगर फिर उस बच्चे ने अपना
हाथ अंदर खींच लिया और जैसे ही उसने
ऐसा किया, उसका भाई बाहर आया। यह
देखकर धाई चौंक गयी और बोली, “तू
तो खुद ही दरार बनाकर निकल आया!”
इसलिए उस लड़के का नाम पेरेस*[1]
रखा गया। 30 उसके बाद उसका भाई
बाहर निकला, जिसके हाथ पर सुर्ख लाल
धागा बँधा था। उसका नाम जेरह[2] रखा
गया।

39 जब यूसुफ को इश्माएली[3] मिस्र
ले गए[4] तो वहाँ पोतीफर नाम के
एक मिस्री[5] ने उसे खरीद लिया, जो
फिरौन का एक दरबारी और पहरेदारों
का सरदार था। 2 मगर यहोवा यूसुफ
के साथ था[6] इसलिए वह हर काम में
कामयाब होता गया और उसे अपने
मिस्री मालिक के घर में कुछ ज़िम्मेदारियाँ
दी गयीं। 3 उसके मालिक ने भी गौर
किया कि यहोवा यूसुफ के साथ है और
यहोवा हर काम में उसे कामयाबी दे
रहा है।

4 यूसुफ का मालिक पोतीफर उससे
खुश था और वह पोतीफर का
खास सेवक बन गया। पोतीफर ने उसे
अपने घर का अधिकारी बनाया और
अपना सबकुछ उसके ज़िम्मे सौंप दिया।
5 जब से यूसुफ को उस मिस्री के घर
का अधिकारी बनाया गया, तब से यहोवा
यूसुफ की वजह से उसके घर पर आशीषें
देने लगा। इसलिए चाहे घर में हो या
बाहर, जो कुछ पोतीफर का था, उस पर
यहोवा की आशीष बनी रही।[1] 6 एक
वक्त ऐसा आया कि पोतीफर ने अपना
सबकुछ यूसुफ के ज़िम्मे सौंप दिया।
उसे किसी चीज़ की चिंता नहीं थी, वह
बस इतना जानता था कि उसके सामने
खाने में क्या परोसा जा रहा है। यही नहीं,
यूसुफ अब दिखने में भी बड़ा सजीला
और मज़बूत कद-काठी का हो गया था।

7 कुछ समय बाद ऐसा हुआ कि
पोतीफर की पत्नी यूसुफ पर नज़र
डालने लगी। वह यूसुफ से कहती,
“मेरे साथ सो।” 8 मगर यूसुफ इनकार
कर देता और उससे कहता, “देख, मेरे
मालिक ने मुझ पर इतना भरोसा किया
कि उसने अपना सबकुछ मेरे ज़िम्मे सौंप
दिया है और वह मुझसे कभी किसी
चीज़ का हिसाब नहीं माँगता। 9 इस
घर में मुझसे बड़ा कोई नहीं और मालिक
ने अपना सबकुछ मेरे हाथ में कर
दिया है, सिवा तेरे क्योंकि तू उसकी
पत्नी है। तो भला मैं इतना बड़ा दुष्ट काम
करके परमेश्वर के खिलाफ पाप कैसे कर
सकता हूँ?”[2]

10 पोतीफर की पत्नी हर दिन यूसुफ
से कहती थी कि वह उसके साथ सोए
या अकेले में वक्त बिताए, मगर यूसुफ
ने हर बार उसे साफ मना कर दिया।
11 लेकिन एक दिन ऐसा हुआ कि यूसुफ
अपना काम करने घर के अंदर गया और
उस वक्त घर में एक भी नौकर नहीं था।
12 तब पोतीफर की पत्नी ने झट-से
उसका कपड़ा पकड़ लिया और कहा,
“आ, मेरे साथ सो!” मगर यूसुफ वहाँ से
फौरन भाग गया और घर से बाहर चला
गया। उसने अपना कपड़ा उस औरत के
हाथ में ही छोड़ दिया। 13 जब उसने
देखा कि यूसुफ भाग गया है और उसका

अध्य. 38

1 उत 46:12, रूत 4:12, 1इत 2:4, लूक 3:23, 33

2 मत 1:3

अध्य. 39

3 उत 17:20, उत 37:25

4 भज 105:17, प्रेष 7:9

5 उत 37:36

6 रोम 8:31, इब्र 13:6

दूसरा कॉल.

1 उत 30:27

2 उत 2:24, उत 20:3, 6, भज 51:उप, 4, मर 10:7, 8, इब्र 13:4

38:29 *मतलब “फटना,” मुमकिन है कि यहाँ मूलाधार के फटने की बात की गयी है।

कपड़ा उसके हाथ में रह गया है, 14 तो
वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी और उसने
अपने घर के आदमियों को बुलाकर कहा,
“देखो! उस इब्री आदमी ने क्या किया,
जिसे मेरा पति इस घर में लाया था।
उसने हमारा मज़ाक बनाया है। उसने मेरे
साथ ज़बरदस्ती करने की कोशिश की,
मगर मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी।
15 मुझे चिल्लाते देख वह अपना कपड़ा
मेरे पास छोड़कर भाग गया।” 16 फिर
वह औरत यूसुफ के मालिक पोतीफर के
लौटने तक यूसुफ का कपड़ा अपने पास
रखे रही।

17 जब पोतीफर घर आया तो वह
उसे भी वही बातें सुनाने लगी: “जिस इब्री
दास को तू हमारे घर लाया था उसने
मेरा मज़ाक बनाने की कोशिश की।
मगर जब वह मेरे पास आया 18 तो
मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी। यह
देखते ही वह अपना कपड़ा मेरे पास
छोड़कर भाग गया।” 19 जैसे ही उस
औरत ने अपने पति को बताया, “तेरे
दास ने मेरे साथ ऐसा-ऐसा किया,” यूसुफ
का मालिक गुस्से से आग-बबूला हो उठा।
20 उसने यूसुफ को पकड़ लिया और
उस जेल में डाल दिया जहाँ राजा अपने
कैदियों को रखता था। और यूसुफ जेल में
ही पड़ा रहा।[1]

21 मगर यहोवा ने यूसुफ का साथ
नहीं छोड़ा और उस पर कृपा* करता
रहा। उसकी आशीष से यूसुफ ने जेल
के दारोगा की नज़रों में मंज़ूरी पायी।[2]
22 इसलिए दारोगा ने यूसुफ को जेल के
सारे कैदियों का अधिकारी ठहराया और
वे उसी के हुक्म पर सारा काम करते थे।[3]
23 यूसुफ की निगरानी में जो कुछ होता
था, उस बारे में दारोगा को ज़रा भी
चिंता नहीं करनी पड़ती थी क्योंकि यहोवा
यूसुफ के साथ था और यहोवा हर काम में
उसे कामयाबी दे रहा था।[1]

40 कुछ समय बाद मिस्र के राजा
के प्रधान साकी[2] और प्रधान
रसोइए ने अपने मालिक, राजा के
खिलाफ कोई अपराध किया। 2 इस-
लिए फिरौन अपने उन दोनों अधि-
कारियों यानी प्रधान साकी और प्रधान
रसोइए पर भड़क उठा।[3] 3 उसने उन्हें
जेल में डाल दिया, उसी जेल में जो पहरे-
दारों के सरदार[4] के अधिकार में थी और
जहाँ यूसुफ भी कैद था।[5] 4 पहरेदारों
के सरदार ने यूसुफ को उन अधिकारियों
के पास रहने और उनकी सेवा करने का
काम दिया।[6] वे दोनों कुछ समय* तक
जेल में रहे।

5 जब मिस्र के राजा के साकी और
रसोइया जेल में थे, तब दोनों ने एक ही
रात में एक-एक सपना देखा। दोनों के
सपनों का मतलब अलग था। 6 सुबह
होने पर जब यूसुफ उनके पास आया, तो
उसने देखा कि उनका चेहरा उतरा हुआ
है। 7 उसने फिरौन के उन अधिकारियों
से, जो उसके मालिक के घर में उसके
साथ कैद थे, पूछा, “क्या बात है,
आज तुम इतने उदास क्यों लग रहे
हो?” 8 उन्होंने कहा, “हम दोनों ने एक
सपना देखा है मगर यहाँ उनका मतलब
समझानेवाला कोई नहीं है।” यूसुफ ने
उनसे कहा, “सपनों का मतलब सिर्फ पर-
मेश्वर समझा सकता है।[7] क्या मैं जान
सकता हूँ, तुमने क्या सपना देखा?”

9 तब प्रधान साकी ने यूसुफ को
अपना सपना बताया, “मैंने सपने में
देखा कि मेरे सामने अंगूर की एक बेल
है। 10 उस बेल पर तीन टहनियाँ थीं

अध्य. 39
1 भज 105:17, 18
2 उत 40:2, 3 भज 105:19 प्रेष 7:9
3 उत 39:6

दूसरा कॉल.
1 उत 49:22, 25 प्रेष 7:9, 10

अध्य. 40
2 उत 40:11
3 उत 40:20-22
4 उत 37:36
5 उत 39:20 भज 105:17, 18
6 उत 39:22
7 उत 41:15, 16 दान 2:28, 45

39:21 * या “अटल प्यार।”

40:4 * शा., “दिनों।”

और उन पर नयी-नयी पत्तियाँ निकलती दिखायी दीं। फिर उनमें फूल आए और उन पर गुच्छे लगे और वे पककर अंगूर बन गए। **11** मेरे हाथ में फिरौन का प्याला था और मैंने अंगूर तोड़े और उनका रस प्याले में निचोड़ा। फिर वह प्याला मैंने फिरौन के हाथ में दे दिया।" **12** तब यूसुफ ने उससे कहा, "अब सुन तेरे सपने का क्या मतलब है। तूने जो तीन टहनियाँ देखीं उनका मतलब है तीन दिन। **13** आज से तीन दिन बाद फिरौन तुझे रिहा करेगा* और तुझे तेरा पद वापस दे देगा।[1] तू पहले की तरह फिरौन का साकी बन जाएगा और उसे प्याला पिलाएगा।[2] **14** जब तेरे अच्छे दिन लौट आएँ तो मुझे ज़रूर याद करना। मुझ पर कृपा* करना और मेरे बारे में फिरौन से ज़रूर ज़िक्र करना ताकि वह मुझे यहाँ से आज़ाद कर दे। **15** मुझे असल में इब्रियों के देश से अगवा करके यहाँ लाया गया था[3] और यहाँ भी मैंने कोई अपराध नहीं किया, फिर भी मुझे जेल* में डाल दिया गया।"[4]

16 जब प्रधान रसोइए ने देखा कि यूसुफ ने साकी के सपने का जो मतलब बताया वह बहुत अच्छा है, तो उसने भी यूसुफ को अपना सपना बताया, "मैंने भी सपने में खुद को देखा। मेरे सिर पर तीन टोकरियाँ थीं और उनमें सफेद रोटियाँ भरी थीं। **17** सबसे ऊपरवाली टोकरी में फिरौन के लिए सेंककर बनायी गयी तरह-तरह की चीज़ें थीं। फिर मैंने देखा कि कुछ चिड़ियाँ मेरे सिर पर रखी टोकरी में से चीज़ें खा रही हैं।" **18** तब यूसुफ ने उससे कहा, "अब सुन तेरे सपने का क्या मतलब है। तूने जो तीन टोकरियाँ देखीं उनका मतलब है तीन दिन। **19** आज से तीन दिन बाद फिरौन तेरा सिर कटवाकर* तुझे काठ पर लटका देगा और पक्षी तेरा माँस खा जाएँगे।"[1]

20 तीसरे दिन फिरौन का जन्मदिन था।[2] उसने एक बड़ी दावत रखी और अपने सभी दरबारियों को बुलाया। उसने प्रधान साकी और प्रधान रसोइए को जेल से निकलवाया* और उन्हें दरबारियों के सामने लाया। **21** फिर उसने प्रधान साकी को उसका पद वापस दे दिया और वह पहले की तरह फिरौन को प्याला देने का काम करने लगा। **22** मगर प्रधान रसोइए को उसने काठ पर लटका दिया। उन दोनों के साथ वही हुआ जो यूसुफ ने सपनों का मतलब बताते हुए कहा था।[3] **23** लेकिन प्रधान साकी ने जेल से छूटने के बाद यूसुफ को याद नहीं किया, वह उसे भूल गया।[4]

41 फिर दो साल बाद एक रात फिरौन को सपना आया।[5] उसने देखा कि वह नील नदी के किनारे खड़ा है। **2** और नदी में से सात मोटी-ताज़ी, सुंदर गायें निकलीं और नदी किनारे घास चरने लगीं।[6] **3** उनके बाद नदी में से सात और गायें निकलीं जो दुबली-पतली और दिखने में भद्दी थीं। वे नील नदी के किनारे उन मोटी गायों के पास खड़ी हो गयीं। **4** फिर ये दुबली-पतली, भद्दी गायें उन सात मोटी-ताज़ी, सुंदर गायों को खाने लगीं। इतने में फिरौन की नींद खुल गयी।

5 थोड़ी देर बाद वह फिर सो गया

40:13 *शा., "तेरा सिर उठाएगा।" **40:14** *या "अटल प्यार।" **40:15** *शा., "कुंड; गड्ढा।" **40:19** *शा., "तेरा सिर तुझ पर से उठाकर।" **40:20** *शा., "के सिर उठाए।"

अध्य. 40
1 उत 41:12, 13
2 उत 40:20, 21
3 उत 37:28
4 उत 39:7, 8

दूसरा कॉल.
1 उत 40:20, 22
2 मर 6:21
3 उत 40:8
4 उत 40:14

अध्य. 41
5 दान 2:1
6 उत 41:18-21

और उसे एक और सपना आया। उसने सपने में देखा कि एक डंठल पर अनाज की सात मोटी-मोटी, भरी हुई बालें निकल रही हैं।[1] **6** इसके बाद अनाज की सात पतली-पतली बालें फूट निकलीं जो पूरब से चलनेवाली गरम हवा की वजह से झुलसी हुई थीं। **7** फिर अनाज की ये पतली बालें उन सात मोटी-मोटी, भरी हुई बालों को निगलने लगीं। तब फिरौन की आँख खुल गयी और उसे एहसास हुआ कि वह सपना था।

8 जब सुबह हुई तो फिरौन का मन बेचैन होने लगा। उसने मिस्र के सभी जादू-टोना करनेवाले पुजारियों और बड़े-बड़े ज्ञानियों को बुलवाया और उन्हें अपने सपनों के बारे में बताया। मगर उनमें से कोई भी उन सपनों का मतलब नहीं बता पाया।

9 तब फिरौन के प्रधान साकी ने उससे कहा, "आज मैं फिरौन के सामने अपने पाप कबूल करता हूँ। **10** कुछ समय पहले फिरौन मुझ पर और प्रधान रसोइए पर भड़क उठा था और हम दोनों सेवकों को उस जेल में डाल दिया गया जो पहरेदारों के सरदार के अधिकार में है।[2] **11** वहाँ हमने एक ही रात में एक-एक सपना देखा। हमारे सपनों का मतलब अलग-अलग था।[3] **12** जेल में हमारे साथ एक इब्री जवान भी था, जो पहरेदारों के सरदार का दास है।[4] जब हमने उसे अपने सपनों के बारे में बताया[5] तो उसने उनका मतलब समझाया। **13** उसने जैसा कहा, ठीक वैसा ही हुआ। मुझे मेरा पद वापस दे दिया गया और प्रधान रसोइए को काठ पर लटका दिया गया।"[6]

14 यह सुनकर फिरौन ने यूसुफ के पास अपने आदमी भेजे[7] कि वे जल्द-से-जल्द उसे जेल* से ले आएँ।[1] तब यूसुफ ने अपनी हजामत बनायी,# अपने कपड़े बदले और फिरौन के सामने आया। **15** फिरौन ने यूसुफ से कहा, "मैंने एक सपना देखा है, मगर उसका मतलब समझानेवाला कोई नहीं है। मैंने सुना है कि जब कोई तुझे अपना सपना बताता है तो तू उसका मतलब बता सकता है।"[2] **16** यूसुफ ने फिरौन से कहा, "मैं तो कुछ भी नहीं! परमेश्वर ही है जो फिरौन के लिए कोई अच्छी खबर सुनाएगा।"[3]

17 तब फिरौन ने यूसुफ को बताया, "मैंने सपने में देखा कि मैं नील नदी के किनारे खड़ा हूँ। **18** और नदी में से सात मोटी-ताज़ी, सुंदर गायें निकलीं और नदी किनारे घास चरने लगीं।[4] **19** उनके बाद, नदी में से सात और गायें निकलीं जो दुबली-पतली और मरियल-सी थीं और दिखने में भद्दी थीं। मैंने पूरे मिस्र में ऐसी भद्दी गायें कहीं नहीं देखीं। **20** फिर ये दुबली-पतली गायें उन सात मोटी-ताज़ी गायों को खाने लगीं। **21** मगर उन गायों को खाने के बाद भी वे ऐसी लग रही थीं जैसे उन्होंने कुछ खाया ही न हो, क्योंकि वे पहले की तरह दुबली-पतली ही थीं। इतने में मेरी नींद खुल गयी।

22 फिर मुझे एक और सपना आया। मैंने देखा कि एक डंठल पर अनाज की सात मोटी-मोटी, भरी हुई बालें निकल रही हैं।[5] **23** इसके बाद अनाज की सात पतली-पतली, मुरझायी हुई बालें निकलीं जो पूरब की गरम हवा से झुलसी हुई थीं। **24** फिर अनाज की ये पतली बालें उन सात मोटी बालों को निगलने

अध्य. 41
1 उत 41:22-24
2 उत 40:2, 3
3 उत 40:5
4 उत 39:1
5 उत 40:8
6 उत 40:21, 22
7 भज 105:20

दूसरा कॉल.
1 उत 40:15
2 दान 5:12; प्रेष 7:9, 10
3 उत 40:8; दान 2:23, 28
4 उत 41:2-4
5 उत 41:5-7

41:14 *शा., "कुंड; गड्ढा।" #यहाँ इस्तेमाल हुए इब्रानी शब्द का मतलब दाढ़ी के साथ-साथ सिर मुँड़ाना भी हो सकता है।

लगीं। मैंने इन सपनों के बारे में जादू-टोना
करनेवाले पुजारियों[1] को बताया, मगर
उनमें से कोई भी मेरे सपनों का मतलब
नहीं बता सका।"[2]

25 तब यूसुफ ने फिरौन से कहा,
"फिरौन के दोनों सपनों का एक ही मत-
लब है। सच्चे परमेश्वर ने फिरौन को
बताया है कि वह क्या करनेवाला है।[3]
26 सात अच्छी गायों का मतलब सात
साल है। उसी तरह सात अच्छी बालों
का मतलब भी सात साल है। दोनों
सपनों का एक ही मतलब है। **27** बाद
में आनेवाली सात दुबली-पतली, भद्दी
गायों का मतलब सात साल है। और सात
सूखी और हवा से झुलसी बालों का मत-
लब यह है कि सात साल तक अकाल
पड़ेगा। **28** जैसे मैंने पहले कहा था,
सच्चे परमेश्वर ने फिरौन को दिखाया है
कि वह क्या करनेवाला है।

29 देख, ऐसे सात साल आनेवाले हैं
जब पूरे मिस्र में भरपूर पैदावार होगी।
30 लेकिन उसके बाद सात साल तक
ऐसा भारी अकाल पड़ेगा कि बीते सात
सालों की भरपूर पैदावार किसी को याद
तक नहीं रहेगी। यह अकाल पूरे देश
को खा जाएगा।[4] **31** अकाल की मार
इतनी ज़बरदस्त होगी कि लोग बीते दिनों
की खुशहाली भूल जाएँगे। **32** फिरौन
को दो-दो बार सपने यह बताने के लिए
दिखाए गए कि सच्चे परमेश्वर ने जो
ठाना है उसे वह ज़रूर करेगा और वह भी
बहुत जल्द।

33 इसलिए अच्छा होगा कि फिरौन
एक ऐसे आदमी को चुने जो सूझ-बूझ
से काम लेनेवाला और बुद्धिमान हो
और उसे पूरे मिस्र देश का अधिकारी
ठहराए। **34** और देश-भर में निगरानी
करनेवालों को ठहराए कि वे सात
सालों के दौरान होनेवाली भरपूर पैदा-
वार का पाँचवाँ हिस्सा इकट्ठा करते रहें।[1]
35 और वे आनेवाले अच्छे सालों के
दौरान जो अनाज इकट्ठा करेंगे उसे अलग-
अलग शहरों में फिरौन के गोदामों में भरते
जाएँ और सँभालकर रखें।[2] **36** फिर
जब मिस्र में सात साल का अकाल पड़ेगा
तो यह अनाज देश-भर में मुहैया कराया
जाए ताकि देश अकाल की मार से मिट न
जाए।"[3]

37 यूसुफ का यह सुझाव फिरौन और
उसके सभी दरबारियों को अच्छा लगा।
38 फिरौन ने अपने दरबारियों से
कहा, "इस आदमी पर वाकई ईश्वर
की शक्ति काम करती है, इसलिए
इस ज़िम्मेदारी के लिए इससे बेहतर
और कौन हो सकता है?" **39** इसके
बाद फिरौन ने यूसुफ से कहा, "ईश्वर
ने तुझ पर ये सारी बातें ज़ाहिर की
हैं, इसलिए तुझ जैसा बुद्धिमान और सूझ-
बूझ से काम लेनेवाला और कोई नहीं।
40 अब से तू मेरे दरबार का सबसे
बड़ा अधिकारी होगा और मेरी सारी
प्रजा वही करेगी जो तू कहेगा।[4] मैं
सिर्फ एक राजा की हैसियत से* तुझसे
बड़ा होऊँगा।" **41** फिरौन ने यूसुफ से
यह भी कहा, "देख, आज मैं तुझे पूरे
मिस्र देश का अधिकारी बनाता हूँ।"[5]
42 यह कहकर फिरौन ने अपने हाथ
से मुहरवाली अँगूठी निकाली और यूसुफ
को पहना दी। और उसे बढ़िया मल-
मल की पोशाक पहनायी और गले में
सोने का हार पहनाया। **43** इतना ही
नहीं, फिरौन ने यूसुफ को अपने दूसरे
शाही रथ पर सवार कराया। और लोग
उसके आगे-आगे चलते हुए *"अवरेक!*

41:40 * या "सिर्फ राजगद्दी के मामले में।"

अध्य. 41
1 उत 41:8; दान 2:2
2 दान 2:27; दान 4:7
3 दान 2:28; आम 3:7
4 प्रेष 7:11

दूसरा कॉल.
1 उत 41:26, 47
2 उत 41:48, 49; प्रेष 7:12
3 उत 45:9, 11; उत 47:13, 19
4 उत 39:6; भज 105:21; प्रेष 7:9, 10
5 दान 5:7

*अवरेक!”** कहने लगे। इस तरह फिरौन
ने यूसुफ को पूरे मिस्र देश का अधिकारी
ठहराया।

44 फिरौन ने यूसुफ से यह भी कहा,
“मैं फिरौन हूँ, फिर भी तेरी इजाज़त
के बगैर इस देश का कोई भी आदमी
कुछ नहीं कर सकेगा।”*[1] 45 इसके
बाद फिरौन ने यूसुफ को सापनत-पानेह
नाम दिया और ओन* शहर के पुजारी
पोतीफेरा की बेटी आसनत[2] से उसकी
शादी करायी। और यूसुफ पूरे मिस्र देश
की निगरानी का काम# करने लगा।[3]
46 जब यूसुफ मिस्र के राजा फिरौन के
सामने खड़ा हुआ* तब वह 30 साल
का था।[4]

यूसुफ, फिरौन के पास से चला गया
और उसने पूरे मिस्र का दौरा किया।
47 फिर मिस्र में सात अच्छे साल शुरू
हुए। इस दौरान देश भरपूर* पैदा-
वार देने लगा। 48 यूसुफ पूरे मिस्र में
अनाज इकट्ठा करवाने लगा और अलग-
अलग शहर के गोदामों में जमा करवाने
लगा। उसने हर शहर में उसके आस-
पास के खेतों की फसल इकट्ठी करवायी।
49 वह इतना सारा अनाज इकट्ठा कर-
वाता गया कि उसकी तादाद समुंदर की
बालू की तरह हो गयी। और एक वक्त
ऐसा आया कि उसे तौलकर हिसाब रखना
मुश्किल हो गया, इसलिए उन्होंने हिसाब
रखना ही छोड़ दिया।

50 अकाल के साल शुरू होने से पहले
यूसुफ को उसकी पत्नी आसनत से, जो
ओन* के पुजारी पोतीफेरा की बेटी थी,
दो लड़के हुए।[1] 51 यूसुफ ने अपने
पहलौठे का नाम मनश्शे*[2] रखा क्योंकि
उसने कहा, “परमेश्वर की दया से मैंने
अपने सारे गम और अपने पिता के घर
की सभी यादें भुला दी हैं।” 52 यूसुफ
ने अपने दूसरे बेटे का नाम एप्रैम*[3] रखा
क्योंकि उसने कहा, “जिस देश में मैंने
तकलीफें झेलीं, उसी देश में परमेश्वर ने
मुझे फलने-फूलने की आशीष दी है।”[4]

53 मिस्र देश में भरपूर पैदावार के
सात साल खत्म हो गए।[5] 54 इसके
बाद अकाल के सात साल शुरू हो गए,
ठीक जैसे यूसुफ ने कहा था।[6] दुनिया
के सभी देश इस अकाल की चपेट
में आ गए, मगर मिस्र में अनाज* था।[7]
55 जब मिस्र में भी अकाल पड़ा तो लोग
खाने के लिए फिरौन से फरियाद करने
लगे।[8] फिरौन ने सभी मिस्रियों से कहा,
“यूसुफ के पास जाओ। वह तुमसे जो
कहे, वही करो।”[9] 56 सारी दुनिया में
अकाल का कहर बढ़ता जा रहा था।[10]
अब यूसुफ ने मिस्र के सारे गोदाम
खोलने शुरू कर दिए और वह मिस्रियों
को अनाज बेचने लगा[11] क्योंकि मिस्र
में अकाल की ज़बरदस्त मार पड़ी थी।
57 दुनिया के अलग-अलग देशों से भी
लोग मिस्र आने लगे और यूसुफ से
अनाज खरीदने लगे, क्योंकि पूरी धरती
इस भयंकर अकाल की चपेट में आ
गयी थी।[12]

42 जब याकूब को पता चला कि
मिस्र में अनाज मिल रहा है,[13]
तो उसने अपने बेटों से कहा, “तुम लोग

41:43 *ज़ाहिर है कि इस शब्द से किसी को आदर-सम्मान देने की पुकार लगायी जाती थी। **41:44** *शा., “अपना हाथ या पैर नहीं उठा सकेगा।” **41:45, 50** *यानी हीलिओ-पोलिस। **41:45** #या “का दौरा।” **41:46** *या “की सेवा करने लगा।” **41:47** *शा., “मुट्ठी भर-भरकर।”

41:51 *मतलब “वह जो भुलवा देता है।”
41:52 *मतलब “दुगना फलना-फूलना।”
41:54 *या “खाना।”

अध्य. 41
1 उत 44:18; उत 45:8; प्रेष 7:9, 10
2 उत 46:20
3 भज 105:21
4 गि 4:3; 2शम 5:4; लूक 3:23

दूसरा कॉल.
1 उत 48:5
2 उत 50:23; गि 1:34, 35
3 उत 48:17; गि 1:32, 33; व्य 33:17; यह 14:4
4 भज 105:17, 18; प्रेष 7:9, 10
5 उत 41:26
6 उत 41:30; प्रेष 7:11
7 उत 45:9, 11; उत 47:17
8 उत 47:13
9 भज 105:21
10 उत 43:1
11 उत 41:48, 49; उत 47:16
12 उत 47:4

अध्य. 42
13 उत 41:48, 49

कुछ करते क्यों नहीं?” **2** उसने यह भी कहा, “मैंने सुना है कि मिस्र में अनाज मिल रहा है। जाओ, वहाँ से हमारे लिए अनाज खरीद लाओ ताकि हम भूखे न मर जाएँ।”[1] **3** तब यूसुफ के दस भाई[2] अपने पिता के कहने पर अनाज खरीदने मिस्र गए। **4** याकूब ने उनके साथ बिन्यामीन को नहीं भेजा[3] जो यूसुफ का सगा भाई था, क्योंकि याकूब ने कहा, “कहीं उसके साथ कोई हादसा न हो जाए।”[4]

5 इसराएल के बेटे कनान के दूसरे लोगों के साथ अनाज खरीदने मिस्र आए, क्योंकि कनान में भी अकाल पड़ा था।[5] **6** पूरे मिस्र देश पर यूसुफ का अधिकार था[6] और वही अलग-अलग देश से आनेवाले लोगों को अनाज बेचता था।[7] इसलिए यूसुफ के भाई उसके पास आए और उन्होंने मुँह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया।[8] **7** यूसुफ ने उन्हें देखते ही पहचान लिया, मगर उसने अनजान बनने का ढोंग किया[9] और उनसे कड़ककर पूछा, “कहाँ से आए हो तुम लोग?” उन्होंने कहा, “हम कनान देश से आए हैं और अनाज खरीदना चाहते हैं।”[10]

8 इस तरह यूसुफ ने तो अपने भाइयों को पहचान लिया, मगर उन्होंने उसे नहीं पहचाना। **9** फिर तभी यूसुफ को वे सपने याद आए जो उसने अपने भाइयों के बारे में देखे थे।[11] उसने उनसे कहा, “तुम लोग जासूस हो! तुम हमारे देश की कमज़ोरियों का पता लगाने आए हो!” **10** उन्होंने कहा, “नहीं मालिक, हम तो तेरे दास हैं, तुझसे अनाज खरीदने आए हैं। **11** हम सब भाई हैं, एक ही पिता के बेटे हैं। हम सीधे-सच्चे लोग हैं। हम कोई जासूसी करने नहीं आए।” **12** मगर यूसुफ ने कहा, “तुम झूठ बोल रहे हो! तुम हमारे देश की कमज़ोरियों का पता लगाने आए हो!” **13** उन्होंने कहा, “हम सच कह रहे हैं मालिक। हम 12 भाई हैं[1] और हम एक ही आदमी के बेटे हैं,[2] हमारा पिता कनान का रहनेवाला है। हमारा सबसे छोटा भाई पिता के साथ घर पर है[3] और एक भाई अब नहीं रहा।”[4]

14 लेकिन यूसुफ ने उनसे कहा, “नहीं, नहीं, तुम जासूस हो! **15** सच-झूठ का पता लगाने का एक तरीका है: फिरौन के जीवन की शपथ, जब तक तुम्हारा वह छोटा भाई यहाँ नहीं आता, तब तक तुम यहाँ से हरगिज़ नहीं जा सकते।[5] **16** तुम्हें यहाँ हिरासत में रहना होगा। तुममें से एक जाकर अपने भाई को यहाँ ले आए, तब पता चल जाएगा कि तुम कितना सच बोल रहे हो। अगर तुम झूठे निकले तो यह साबित हो जाएगा कि तुम सब जासूस हो।” **17** यह कहकर उसने उन सबको तीन दिन के लिए हिरासत में रखा।

18 तीसरे दिन यूसुफ ने उनसे कहा, “देखो, मैं सच्चे परमेश्वर का डर माननेवाला इंसान हूँ। इसलिए मैं जो कहता हूँ वह करो तो तुम्हारी जान सलामत रहेगी। **19** अगर तुम वाकई सीधे-सच्चे हो तो एक काम करो। अपने एक भाई को यहीं हिरासत में रहने दो और बाकी लोग अनाज लेकर अपने घर जाएँ ताकि तुम्हारे बाल-बच्चे भूख से न मर जाएँ।[6] **20** फिर अपने सबसे छोटे भाई को यहाँ ले आओ। तभी मुझे यकीन होगा कि तुम सच बोल रहे हो और तुम नहीं मार डाले जाओगे।” यूसुफ के भाइयों ने उसकी बात मान ली।

21 फिर वे एक-दूसरे से कहने लगे, “हमने अपने भाई के साथ जो किया था,

अध्य. 42
1 प्रेष 7:12
2 1इत 2:1, 2
3 उत 35:18, 19; उत 42:38; उत 44:20
4 उत 43:14
5 उत 41:57; प्रेष 7:11
6 उत 41:44; उत 45:8; भज 105:21; प्रेष 7:9, 10
7 उत 47:14
8 उत 37:7, 9
9 उत 42:23
10 उत 37:1; प्रेष 7:11, 12
11 उत 37:7-9

दूसरा कॉल.
1 1इत 2:1, 2
2 निर्ग 1:1-4
3 उत 35:18, 19; उत 42:38; उत 43:7
4 उत 37:27, 35; उत 44:20
5 उत 42:34; उत 43:29
6 उत 45:21, 23

आज हमें उसी की सज़ा मिल रही है।[1] याद है वह कैसे हमसे रहम की भीख माँग रहा था, उसका मन कैसे तड़प रहा था, फिर भी हमने उस पर तरस नहीं खाया इसीलिए आज हम पर यह मुसीबत टूट पड़ी है।” 22 तब रूबेन बोला, “मैंने कहा था न तुमसे, लड़के को कुछ मत करना, मगर तुमने मेरी कहाँ सुनी।[2] अब देखो, उसके खून का बदला हमसे लिया जा रहा है।”[3] 23 यूसुफ उनकी ये सारी बातें समझ रहा था मगर वे यह बात नहीं जानते थे, क्योंकि यूसुफ एक अनुवादक के ज़रिए उनसे बात कर रहा था। 24 उनकी बातें सुनकर यूसुफ उनसे दूर एक अलग जगह जाकर रोने लगा।[4] फिर वह वापस उनके पास आया और उसने दोबारा उनसे बात की। तब उसने उनके बीच से शिमोन को अलग किया[5] और उनकी आँखों के सामने उसे बंदी बना लिया।[6] 25 इसके बाद, यूसुफ ने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वे उनकी बोरियों में अनाज भर दें और हरेक की बोरी में उसका दिया पैसा वापस रख दें। साथ ही, उनके सफर के लिए खाने की चीज़ें बाँध दें। उसके आदमियों ने वैसा ही किया।

26 फिर यूसुफ के भाइयों ने अपने गधों पर अनाज की बोरियाँ लादीं और वहाँ से चल दिए। 27 रास्ते में जब वे एक मुसाफिरखाने में ठहरे और उनमें से एक ने अपने गधे को चारा देने के लिए अपनी बोरी खोली, तो वह यह देखकर दंग रह गया कि उसका दिया पैसा बोरी में ऊपर रखा हुआ है। 28 उसने अपने भाइयों से कहा, “यह देखो, उन्होंने मेरा पैसा वापस दे दिया, यह मेरी बोरी में है!” यह देखकर उन सबका दिल बैठ गया और वे थर-थर काँपने लगे। वे एक-दूसरे से कहने लगे, “परमेश्वर ने हमारे साथ ऐसा क्यों किया?”

29 जब वे कनान देश में अपने पिता के पास पहुँचे, तो उन्होंने उसे बताया कि उनके साथ क्या-क्या हुआ। 30 उन्होंने कहा, “उस देश के सबसे बड़े अधिकारी ने हमारे साथ बड़ी रुखाई से बात की[1] और हम पर इलज़ाम लगाया कि हम वहाँ जासूसी करने आए हैं। 31 मगर हमने कहा, ‘हम सीधे-सच्चे लोग हैं, हम कोई जासूस नहीं हैं।[2] 32 हम 12 भाई हैं,[3] एक ही पिता के बेटे। एक भाई अब नहीं रहा[4] और सबसे छोटा भाई कनान में हमारे पिता के साथ घर पर है।’[5] 33 मगर उस अधिकारी ने हमसे कहा, ‘मैं देखना चाहता हूँ कि तुम वाकई सीधे-सच्चे हो या नहीं। एक काम करो। तुम अपने एक भाई को यहाँ छोड़ दो[6] और बाकी लोग अनाज लेकर अपने घर जाएँ ताकि तुम्हारे बाल-बच्चे भूख से न मर जाएँ।[7] 34 इसके बाद तुम अपने छोटे भाई को लेकर यहाँ आना, तभी मैं यकीन करूँगा कि तुम सीधे-सच्चे लोग हो, कोई जासूस नहीं हो। फिर मैं तुम्हें तुम्हारा यह भाई लौटा दूँगा और तुम आगे भी हमारे देश से अनाज खरीद सकोगे।’”

35 बाद में जब वे अपनी-अपनी बोरी खाली करने लगे तो हरेक की बोरी में उसके पैसों की थैली रखी हुई थी। यह सब देखकर याकूब और उसके बेटे डर गए। 36 उनका पिता याकूब आहें भरकर उनसे कहने लगा, “तुम क्यों मेरे बच्चों को मुझसे छीन लेना चाहते हो?[8] यूसुफ तो पहले ही नहीं रहा,[9] मैंने शिमोन को भी खो दिया[10] और अब तुम बिन्यामीन को भी मुझसे दूर ले जाना चाहते हो। हाय! मेरे साथ ही यह सब क्यों हो रहा

अध्य. 42
1 उत 37:18, 28 उत 50:17 प्रेष 7:9
2 उत 37:21
3 उत 9:5
4 उत 43:30
5 उत 42:19
6 उत 43:23

दूसरा कॉल.
1 उत 42:7, 9
2 उत 42:11
3 उत 42:13
4 उत 37:28, 35
5 उत 35:18, 19 उत 42:4
6 उत 42:19
7 उत 42:2
8 उत 43:14
9 उत 37:28, 35
10 उत 42:24

है?” **37** तब रूबेन ने अपने पिता से
कहा, “बिन्यामीन का ज़िम्मा मैं लेता हूँ।
मैं उसे सही-सलामत वापस ले आऊँगा,
नहीं तो तू मेरे दोनों बेटों को मार
डालना।[1] मैं वादा करता हूँ कि मैं
खुद बिन्यामीन को वापस ले आऊँगा।”[2]
38 मगर याकूब ने कहा, “नहीं, मैं अपने
बेटे को तुम्हारे साथ नहीं भेजूँगा। उसका
भाई पहले ही मर चुका है और वह
अकेला रह गया है।[3] अगर सफर में
उसके साथ कोई हादसा हो गया तो
तुम्हारी वजह से यह बूढ़ा शोक में डूबा
कब्र[4] चला जाएगा।”[5]

43 कनान देश में अकाल ज़ोरों पर
था।[6] **2** याकूब के घर में जब
मिस्र से लाया सारा अनाज खत्म हो
गया,[7] तो उसने अपने बेटों से कहा,
“जाओ, फिर से मिस्र जाओ और हमारे
लिए अनाज खरीद लाओ।” **3** तब
यहूदा ने उससे कहा, “उस आदमी ने
हमसे साफ-साफ कहा है, ‘जब तक
तुम अपने भाई को साथ नहीं लाते, मुझे
अपना मुँह मत दिखाना।’[8] **4** इसलिए
अगर तू हमारे भाई को साथ भेजेगा, तो
हम मिस्र जाकर अनाज खरीद लाएँगे।
5 लेकिन अगर तू उसे नहीं भेजेगा तो
हम नहीं जाएँगे, क्योंकि उस आदमी ने
हमसे कहा है, ‘जब तक तुम अपने भाई
को साथ नहीं लाते, मुझे अपना मुँह मत
दिखाना।’”[9] **6** इसराएल[10] ने पूछा,
“क्या ज़रूरत थी उसे बताने की कि
तुम्हारा एक और भाई भी है? तुमने क्यों
मुझे संकट में डाल दिया है?” **7** उन्होंने
कहा, “उस आदमी ने हमसे सीधे-सीधे
पूछा कि हमारे घर में और कौन-कौन है।
उसने पूछा, ‘क्या तुम्हारा पिता है? क्या
तुम्हारा कोई और भाई है?’ और हमने
उसे सबकुछ सच-सच बताया।[11] हमें क्या
मालूम था वह कहेगा, ‘तुम अपने भाई को
यहाँ ले आओ।’”[1]

8 फिर यहूदा ने यह कहकर अपने
पिता इसराएल को मनाया, “मेरी बात
मान और लड़के को मेरे साथ भेज दे[2]
ताकि हम जाएँ, वरना तू और हम
और हमारे ये बाल-बच्चे,[3] सब भूखे
मर जाएँगे।[4] **9** मैं यकीन दिलाता हूँ
कि लड़के को सही-सलामत वापस ले
आऊँगा।*[5] उसकी हिफाज़त की ज़िम्मे-
दारी मैं लेता हूँ। अगर मैं उसे तेरे पास
वापस न ला सका, तो मैं ज़िंदगी-भर
तेरा गुनहगार रहूँगा। **10** वैसे भी हमने
मिस्र जाने में बहुत देर कर दी है, अब तक
तो हम दो बार जाकर लौट आते।”

11 तब उनके पिता इसराएल ने उनसे
कहा, “अगर ऐसी बात है, तो जाओ।
साथ में उस आदमी के लिए कुछ तोहफे
ले जाओ।[6] इस देश की बढ़िया-बढ़िया
चीज़ें अपनी बोरियों में ले लोः थोड़ा
बलसाँ,[7] थोड़ा शहद, सुगंधित गोंद,
रालदार छाल,[8] पिस्ता और बादाम।
12 इस बार अनाज के लिए पहले से
दुगना पैसा ले जाओ। और वह पैसा
भी ले जाओ, जो शायद गलती से
तुम्हारी बोरियों में डाल दिया गया था।[9]
13 अब सफर के लिए निकलो और
अपने भाई को लेकर उस आदमी के पास
जाओ। **14** सर्वशक्तिमान परमेश्वर से
मेरी दुआ है कि वह आदमी तुम पर दया
करे और तुम्हारे भाई को रिहा कर दे और
बिन्यामीन को भी तुम्हारे साथ वापस भेज
दे। लेकिन अगर ऐसा नहीं हुआ और
मुझे अपने बच्चों को खोना पड़ा, तो यह
दुख सहने के अलावा मेरे पास कोई चारा
नहीं!”[10]

43:9 *या “मैं उसका ज़ामिन बनूँगा।”

अध्य. 42
1 उत 37:22; उत 46:9
2 उत 43:8, 9; उत 44:32
3 उत 37:31-34; उत 44:20
4 भज 89:48; सभ 9:10; हो 13:14; प्रेष 2:27; प्रक 20:13
5 उत 37:34, 35; उत 44:29

अध्य. 43
6 उत 41:30; प्रेष 7:11
7 उत 42:1, 2
8 उत 42:15
9 उत 42:15
10 उत 32:28
11 उत 42:13

दूसरा कॉल.
1 उत 42:16
2 उत 37:26; उत 42:38
3 प्रेष 7:14
4 उत 42:1, 2
5 उत 44:32
6 उत 32:20
7 यिर्म 8:22; यहे 27:17
8 उत 37:25
9 उत 42:25, 35
10 उत 42:36

15 तब उन्होंने तोहफे में देने के लिए
वह सारी चीज़ें लीं और दुगना पैसा लिया
और बिन्यामीन को साथ लेकर मिस्र के
लिए निकल पड़े। वहाँ पहुँचने पर वे एक
बार फिर यूसुफ के सामने हाज़िर हुए।[1]
16 यूसुफ ने जैसे ही उनके साथ बिन्या-
मीन को देखा, उसने अपने घर के अधि-
कारी से कहा, “इन आदमियों को मेरे घर
ले जा। वे दोपहर का खाना मेरे साथ
खाएँगे। जानवर हलाल कर और बढ़िया-
सी दावत तैयार कर।” 17 यूसुफ ने
जैसा कहा उस आदमी ने फौरन वैसा ही
किया।[2] वह उन सबको यूसुफ के घर
ले गया। 18 जब उन्हें यूसुफ के घर ले
जाया गया, तो वे बहुत डर गए और एक-
दूसरे से कहने लगे, “पिछली बार हमारी
बोरियों में जो पैसा रख दिया गया था,
ज़रूर उसी की वजह से हमें यहाँ लाया
गया है। अब देखना, वे हमें पकड़कर
गुलाम बना लेंगे और हमारे गधे भी ले
लेंगे!”[3]

19 इसलिए वे यूसुफ के घर के
द्वार पर उसके अधिकारी के पास गए
और उन्होंने उससे बात की। 20 उन्होंने
कहा, “माफ करना मालिक, हम कुछ
कहना चाहते हैं। हम पहले भी एक
बार यहाँ अनाज खरीदने आए थे।[4]
21 मगर यहाँ से लौटते वक्त जब
हमने मुसाफिरखाने में अपनी बोरियाँ
खोलीं, तो देखा कि हरेक की बोरी
में उसका पूरा पैसा रखा हुआ है।[5] हम
यह पैसा वापस करना चाहते हैं।
22 इस बार अनाज खरीदने के लिए
हम ज़्यादा पैसा लाए हैं। पिछली बार
वह पैसा हमारी बोरियों में कैसे आ
गया, हम नहीं जानते।”[6] 23 तब उस
अधिकारी ने कहा, “डरने की कोई बात
नहीं। तुमने अनाज के लिए जो रकम दी
थी वह मुझे मिली थी। जो पैसा तुम्हारी
बोरियों में मिला वह तुम्हारे और तुम्हारे
पिता के परमेश्वर ने तुम्हें दिया है।”
इसके बाद वह शिमोन को बाहर उनके
पास लाया।[1]

24 तब वह अधिकारी उन्हें यूसुफ के
घर के अंदर ले गया और उन्हें पैर धोने
के लिए पानी दिया और उनके गधों के
लिए चारा दिया। 25 उन्होंने सुना कि
यूसुफ दोपहर को घर आएगा और उनके
साथ खाना खाएगा,[2] इसलिए उन्होंने
यूसुफ के लिए वह तोहफा तैयार किया
जो वे अपने साथ लाए थे।[3] 26 दोपहर
को जब यूसुफ घर आया, तो उन्होंने वह
तोहफा उसके सामने पेश किया और फिर
ज़मीन पर गिरकर उसे प्रणाम किया।[4]
27 इसके बाद उसने उनकी खैरियत पूछी
और उनसे कहा, “तुम्हारा पिता कैसा
है जिसके बारे में तुमने मुझे बताया
था? तुमने कहा था कि वह बहुत बूढ़ा
हो चुका है, उसके क्या हाल-चाल हैं?”[5]
28 उन्होंने कहा, “तेरा दास खैरियत से
है।” फिर उन्होंने ज़मीन पर गिरकर उसे
प्रणाम किया।[6]

29 जब यूसुफ ने नज़र उठाकर
अपने सगे भाई बिन्यामीन[7] को देखा
तो उसने कहा, “क्या यही तुम्हारा सबसे
छोटा भाई है, जिसके बारे में तुमने
मुझे बताया था?”[8] फिर उसने बिन्या-
मीन से कहा, “परमेश्वर की कृपा तुझ पर
बनी रहे मेरे बेटे।” 30 अपने भाई को
देखकर उसका दिल भर आया और
वह खुद को रोक नहीं पाया। वह
हड़बड़ाकर वहाँ से निकल गया और
अकेले एक कमरे में जाकर बहुत रोया।[9]
31 इसके बाद उसने अपना मुँह धोया
और कमरे से बाहर आया। उसने अपने
आपको सँभाला और फिर अपने

अध्य. 43
1 उत 37:7, 9
2 उत 41:39, 40
3 उत 42:25, 35
4 उत 42:3
5 उत 42:27
6 उत 43:12

दूसरा कॉल.
1 उत 42:23, 24
2 उत 43:16
3 उत 43:11
4 उत 37:7, 9
उत 42:6
5 उत 43:7
6 उत 37:7, 9
7 उत 35:24
8 उत 42:13
9 उत 42:23, 24

आदमियों से कहा, “हम सबके लिए खाना लगाओ।” 32 उन्होंने यूसुफ के लिए एक अलग मेज़ लगायी और उसके भाइयों के लिए एक अलग मेज़। और उसके घर में जो मिस्री थे उन्होंने भी अलग खाना खाया, क्योंकि मिस्री लोग इब्री लोगों के साथ बैठकर खाना घिनौनी बात समझते हैं।[1]

33 उसके भाइयों को उसके सामने ही बिठाया गया। सबसे बड़े से लेकर, जिसे पहलौठे का हक था,[2] सबसे छोटे तक सबको उनकी उम्र के हिसाब से बिठाया गया। उसके भाई बड़ी हैरानी से एक-दूसरे को देखते रहे। 34 और वह अपनी मेज़ से उनके पास खाना भिजवाता रहा और उसने बिन्यामीन को बाकियों से पाँच गुना ज़्यादा खाना दिया।[3] इस तरह उन्होंने उसके साथ जी-भरकर खाया-पीया।

44 बाद में यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी को हुक्म दिया, “इन आदमियों की बोरियों में उतना अनाज भर दे जितना वे ले जा सकते हैं। और हरेक का दिया पैसा भी उसकी बोरी में रख दे।[4] 2 और सबसे छोटे भाई की बोरी में पैसे के साथ-साथ मेरा चाँदी का प्याला भी रख दे।” यूसुफ ने जैसा कहा उस आदमी ने वैसा ही किया।

3 अगले दिन जब सुबह हुई, तो उन आदमियों को विदा कर दिया गया और वे अपने गधों को लेकर निकल पड़े। 4 मगर वे शहर से कुछ ही दूर पहुँचे थे कि यहाँ यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा, “तू जल्दी से जा, उन आदमियों का पीछा करके उन्हें रोक ले! और उनसे कह, ‘तुमने मेरे मालिक की भलाई का बदला बुराई से क्यों दिया? 5 क्यों तुमने उसका वह प्याला चुरा लिया जिससे वह पीता है और शकुन विचारता है? तुम लोगों ने कैसा दुष्ट काम किया है!’”

6 तब वह अधिकारी गया और उसने जाकर उन सबको रोक लिया और यूसुफ ने उसे जो बताया था वही उन सबसे कहा। 7 मगर उन्होंने उस आदमी से कहा, “मालिक, यह तू क्या कह रहा है? तेरे ये दास ऐसा काम करने की सोच भी नहीं सकते। 8 पिछली बार हमें बोरियों में जो पैसा मिला था, वह हम तुझे लौटाने के लिए कनान से वापस ले आए थे।[1] जब हमने वह पैसा अपने पास नहीं रखा, तो हम तेरे मालिक के घर से सोना-चाँदी कैसे चुरा सकते हैं? 9 अगर तेरे दासों में से किसी के पास वह प्याला मिला, तो वह जान से मार डाला जाए और बाकी हम सब मालिक के गुलाम बन जाएँगे।” 10 उस आदमी ने कहा, “ठीक है, जैसा तुम कहते हो वैसा ही करते हैं। मगर तुममें से सिर्फ वही मेरा गुलाम बनेगा जिसके पास वह प्याला मिलेगा और बाकी सब बेकसूर ठहरोगे।” 11 तब उन सबने फटाफट अपनी बोरियाँ ज़मीन पर उतारीं और उन्हें खोला। 12 उस आदमी ने सबकी बोरियों की तलाशी ली। उसने बड़े भाई से शुरू करते हुए एक-एक करके सबकी बोरियाँ ध्यान से देखीं। आखिर में जब उसने सबसे छोटे भाई बिन्यामीन की बोरी की तलाशी ली, तो प्याला उसकी बोरी में मिला।[2]

13 जब उन भाइयों ने यह देखा तो उन्होंने मारे दुख के अपने कपड़े फाड़े। फिर उन्होंने अपने-अपने गधे पर बोरियाँ लादीं और वापस शहर गए। 14 तब यहूदा[3] और उसके भाई यूसुफ के घर गए। यूसुफ अब भी वहीं था। वे सब उसके सामने ज़मीन पर गिर पड़े।[4] 15 यूसुफ ने उनसे कहा, “यह तुमने क्या

अध्य. 43
1 उत 46:33, 34; निर्ग 8:26
2 उत 49:3; व्य 21:17
3 उत 45:22

अध्य. 44
4 उत 42:25

दूसरा कॉल.
1 उत 43:12
2 उत 44:2
3 उत 43:8; उत 44:32
4 उत 37:7, 9

किया? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि मुझ
जैसा इंसान शकुन विचारकर सबकुछ
पता लगा सकता है?"[1] **16** तब यहूदा
ने कहा, "अब हम क्या कहें मालिक?
हम अपनी बेगुनाही कैसे साबित करें?
हमने बरसों पहले जो गुनाह किया था,
आज सच्चा परमेश्‍वर हमसे उसी का
लेखा ले रहा है।[2] अब हम तेरे गुलाम
हैं मालिक! जिसके पास वह प्याला मिला
वह और हम सब तेरे गुलाम हैं।"
17 मगर उसने कहा, "नहीं, मैं ऐसा
करने की सोच भी नहीं सकता! सिर्फ वही
मेरा गुलाम बनेगा जिसके पास वह प्याला
मिला है।[3] बाकी तुम सब अपने पिता के
पास कुशल से वापस जा सकते हो।"

18 तब यहूदा उसके पास गया और
उससे मिन्‍नत करने लगा, "मालिक, मैं
कुछ कहना चाहता हूँ, मुझ पर भड़क मत
जाना। मैं जानता हूँ, तेरी हस्ती फिरौन के
समान है।[4] **19** मालिक ने अपने दासों
से पूछा था, 'क्या तुम्हारा पिता है?
क्या तुम्हारा कोई और भाई भी है?'
20 हमने कहा, 'हाँ, हमारा पिता है, वह
बूढ़ा हो गया है और एक भाई भी है,
सबसे छोटा।[5] वह हमारे पिता के बुढ़ापे
में पैदा हुआ था। उसका एक सगा भाई था
जो मर गया है,[6] इसलिए वह अब अपनी
माँ का अकेला रह गया है।[7] उसका पिता
उससे बेहद प्यार करता है।' **21** तब
तूने अपने दासों से कहा, 'अपने उस भाई
को मेरे पास लाओ ताकि मैं उसे देखूँ।'[8]
22 मगर हमने मालिक से कहा, 'लड़का
अपने पिता को छोड़कर नहीं आ सकता।
अगर वह आया तो उसका पिता मर
जाएगा।'[9] **23** तब तूने अपने दासों से
कहा, 'जब तक तुम अपने छोटे भाई
को नहीं लाते, मुझे अपना मुँह मत
दिखाना।'[10]

24 घर लौटने पर हमने तेरे दास,
अपने पिता को मालिक की सारी बातें
बतायीं। **25** बाद में जब हमारे पिता ने
कहा, 'जाओ, हमारे लिए फिर से अनाज
खरीद लाओ,'[1] **26** तो हमने कहा,
'हम ऐसे नहीं जा सकते। अगर हमारा
सबसे छोटा भाई हमारे साथ चले तो ही
हम जाएँगे। वरना हम उस आदमी
को अपना मुँह नहीं दिखा सकते।'[2]
27 तब हमारे पिता ने हमसे कहा, 'तुम
अच्छी तरह जानते हो कि मेरी पत्नी ने
मुझे दो बेटे दिए थे।[3] **28** एक को तो
मैंने खो दिया और अब तक उसकी कोई
खबर नहीं है, जैसे मैंने कहा था, "सच-
मुच किसी जंगली जानवर ने उसके टुकड़े-
टुकड़े कर दिए होंगे।"[4] **29** अब अगर
तुम इस लड़के को भी मुझसे दूर ले
जाओगे और उसके साथ कोई हादसा हो
गया तो तुम्हारी वजह से यह बूढ़ा शोक में
डूबा कब्र[5] चला जाएगा।'[6]

30 इसलिए मैं इस लड़के के बगैर
वापस नहीं जा सकता, क्योंकि इस
लड़के में उसके पिता की जान बसी है।
31 अगर हम इसके बगैर गए, तो जैसे
ही हमारा पिता देखेगा कि लड़का हमारे
साथ नहीं है, वह मर जाएगा, शोक में
डूबा कब्र चला जाएगा। और तेरे ये दास
अपने बूढ़े पिता की मौत के दोषी ठहरेंगे।
32 इस लड़के को मैं अपनी ज़िम्मेदारी
पर यहाँ लाया था और मैंने अपने पिता से
कहा था, 'अगर मैंने तेरा बेटा तुझे नहीं
लौटाया, तो मैं ज़िंदगी-भर तेरा गुनह-
गार रहूँगा।'[7] **33** इसलिए मालिक, मैं
तुझसे बिनती करता हूँ, इस लड़के के
बदले मुझे अपना गुलाम बना ले और इसे
छोड़ दे ताकि यह अपने भाइयों के साथ
लौट जाए। **34** मैं इस लड़के के बगैर
अपने पिता के पास नहीं जा सकता। मैं

अध्य. 44
1 उत 44:5
2 उत 37:18, 28 उत 42:21, 22
3 उत 44:9
4 उत 41:44 उत 45:8
5 उत 42:13 उत 43:7
6 उत 37:31-34
7 उत 35:18, 19
8 उत 42:15 उत 43:29
9 उत 42:38
10 उत 42:20

दूसरा कॉल.
1 उत 43:2
2 उत 43:5
3 उत 29:18 उत 30:22-24 उत 35:18, 19 उत 46:19
4 उत 37:33
5 भज 16:10 सभ 9:10 हो 13:14 प्रेष 2:27 प्रक 20:13
6 उत 37:34, 35 उत 42:38 भज 88:3
7 उत 43:9

अपनी आँखों से अपने पिता को तड़पते हुए नहीं देख सकता!”

45 यूसुफ से अब और रहा नहीं गया।[1] उसने अपने सेवकों को हुक्म दिया, “सबसे कहो कि वे बाहर चले जाएँ!” अब जब यूसुफ के साथ सिर्फ उसके भाई रह गए तो उसने उन्हें बताया कि वह असल में कौन है।[2]

2 यूसुफ ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा और उसके रोने की आवाज़ आस-पास के मिस्रियों ने भी सुनी और इसकी खबर फिरौन के दरबार तक पहुँच गयी। **3** कुछ देर बाद यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ हूँ। मेरा पिता कैसा है? वह ठीक तो है न?” मगर उसके भाई हक्के-बक्के रह गए, उनके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल पा रहा था। **4** तब यूसुफ ने उनसे कहा, “आओ, मेरे पास आओ।” तब वे सब उसके पास गए।

फिर उसने कहा, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूँ जिसे तुमने मिस्रियों को बेच दिया था।[3] **5** मगर अब तुम दुखी मत हो, न ही एक-दूसरे पर दोष लगाओ कि तुमने मुझे बेच दिया। परमेश्वर ने तुम सबकी जान बचाने के लिए मुझे तुमसे पहले यहाँ भेजा है।[4] **6** अकाल का यह दूसरा साल चल रहा है,[5] अभी और पाँच साल तक यही हाल रहेगा, तब तक न कहीं हल चलेगा, न ही फसल उगेगी। **7** इसीलिए परमेश्वर ने मुझे तुमसे पहले यहाँ भेजा ताकि तुम्हें लाजवाब तरीके से बचाए और धरती* से तुम्हारा परिवार न मिटे।[6] **8** इसलिए तुमने नहीं बल्कि सच्चे परमेश्वर ने मुझे यहाँ भेजा है कि वह मुझे फिरौन का प्रधान सलाहकार* और उसके दरबार का सबसे बड़ा अधिकारी और पूरे मिस्र का शासक ठहराए।[1]

9 अब जल्दी से मेरे पिता के पास जाओ और उससे कहो, ‘तेरे बेटे यूसुफ ने कहा है, “परमेश्वर ने मुझे पूरे मिस्र का अधिकारी ठहराया है।[2] तू मेरे पास आ जा, देर न कर।[3] **10** तू यहाँ मेरे पास ही गोशेन नाम के इलाके में रहेगा,[4] तू, तेरे बेटे, पोते, साथ ही तेरे गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और तेरा सबकुछ, यहीं मेरे पास रहेगा। **11** यहाँ मैं तेरे लिए अनाज मुहैया करवाता रहूँगा ताकि तू और तेरा घराना और तेरा जो भी है, तंगी से मिट न जाए क्योंकि यह अकाल अभी और पाँच साल तक चलेगा।”’[5] **12** तुम सब खुद अपनी आँखों से देख रहे हो, और मेरा भाई बिन्यामीन भी देख रहा है कि मैं जो तुमसे बात कर रहा हूँ, यूसुफ ही हूँ।[6] **13** इसलिए तुम जाकर मेरे पिता को बताना कि मिस्र में मेरी कितनी शोहरत है और तुमने यहाँ जो कुछ देखा वह सब उसे बताना। और बिना देर किए मेरे पिता को यहाँ ले आना।”

14 इसके बाद यूसुफ अपने भाई बिन्यामीन को गले लगाकर रोने लगा और बिन्यामीन भी उससे लिपटकर रोया।[7] **15** फिर उसने अपने बाकी सभी भाइयों को चूमा और उनसे गले मिलकर रोया। इसके बाद उसके भाइयों ने उससे बात की।

16 फिरौन के दरबार में यह खबर दी गयी, “यूसुफ के भाई आए हैं!” यह सुनकर फिरौन और उसके दरबारी खुश हुए। **17** फिरौन ने यूसुफ से कहा, “अपने भाइयों से कहना, ‘तुम अपने जानवरों पर अनाज लादकर कनान जाओ **18** और अपने पिता और अपने परिवारों को साथ लेकर

45:7 *या “देश।” 45:8 *शा., “पिता-सा।”

अध्य. 45
1 उत 43:30
2 प्रेष 7:13
3 उत 37:28; प्रेष 7:9
4 उत 47:23, 25; उत 50:20; भज 105:17
5 उत 41:30; उत 47:18
6 उत 46:26

दूसरा कॉल.
1 भज 105:21; प्रेष 7:9, 10
2 उत 45:26
3 प्रेष 7:14
4 उत 46:33, 34; उत 47:1; निर्ग 8:22; निर्ग 9:26
5 उत 47:12
6 उत 42:23
7 उत 46:29

यहाँ मेरे पास चले आओ। मैं तुम्हें
मिस्र की बेहतरीन चीज़ें दूँगा और तुम
इस देश की बढ़िया-से-बढ़िया उपज*
में से खाओगे।'[1] 19 तू उनसे यह भी
कहना,[2] 'तुम मिस्र से कुछ बैल-गाड़ियाँ
ले जाओ[3] ताकि तुम्हारे छोटे बच्चे और
तुम्हारी पत्नियाँ उन पर बैठकर यहाँ आ
सकें और एक गाड़ी में तुम अपने
पिता को बिठाकर ले आना।[4] 20 तुम
अपनी जायदाद की चिंता मत करना,[5]
क्योंकि मिस्र की अच्छी-से-अच्छी चीज़ें
तुम्हें दी जाएँगी।'"

21 इसराएल के बेटों ने ऐसा ही
किया। यूसुफ ने फिरौन के हुक्म पर
उन्हें बैल-गाड़ियाँ दीं। उसने सफर के
लिए उन्हें खाने-पीने की चीज़ें भी दीं।
22 और उसने हरेक को एक-एक जोड़ा
नया कपड़ा दिया, मगर बिन्यामीन को
पाँच जोड़े नए कपड़े[6] और चाँदी के
300 टुकड़े दिए। 23 और अपने पिता
याक़ूब के लिए उसने दस गधों पर मिस्र
की अच्छी-अच्छी चीज़ें और उसके सफर
के लिए दस गधियों पर अनाज, रोटियाँ
और खाने की दूसरी चीज़ें भिजवायीं।
24 इस तरह उसने अपने भाइयों को
विदा किया। जब वे जाने लगे तो उसने
उनसे कहा, "देखो, तुम रास्ते में एक-
दूसरे पर गुस्सा मत करना।"[7]

25 फिर वे मिस्र से रवाना हुए और
कनान देश में अपने पिता याक़ूब के
पास पहुँचे। 26 उन्होंने उसे यह खबर
सुनायी, "यूसुफ ज़िंदा है! और वही
पूरे मिस्र का शासक है!"[8] मगर यह सुन-
कर याक़ूब का दिल धक से रह गया
क्योंकि उसने उनका यकीन नहीं किया।[9]
27 लेकिन जब उन्होंने याक़ूब को वे
सारी बातें बतायीं जो यूसुफ ने कही थीं
और जब उसने खुद वे गाड़ियाँ देखीं जो
यूसुफ ने उसके लिए भिजवायी थीं, तो
उसके अंदर मानो नयी जान आ गयी।
28 इसराएल ने कहा, "अब मुझे यकीन
हो गया है कि मेरा बेटा यूसुफ ज़िंदा है! मैं
उसके पास जाऊँगा, ज़रूर जाऊँगा ताकि
मरने से पहले उसे एक बार देख लूँ।"[1]

46 फिर इसराएल अपना सबकुछ*
लेकर मिस्र के लिए निकल
पड़ा। जब वह बेरशेबा[2] पहुँचा तो वहाँ
उसने अपने पिता इसहाक के परमेश्वर[3]
को बलिदान चढ़ाए। 2 वहाँ रात को
परमेश्वर ने एक दर्शन में इसराएल
से बात की। परमेश्वर ने उसे पुकारा,
"याक़ूब, याक़ूब!" उसने कहा, "हाँ,
प्रभु!" 3 परमेश्वर ने उससे कहा, "मैं
सच्चा परमेश्वर हूँ, तेरे पिता का पर-
मेश्वर।[4] तू मिस्र जाने से मत डर
क्योंकि वहाँ मैं तुझसे एक बड़ा राष्ट्र
बनाऊँगा।[5] 4 मैं मिस्र तक तेरे साथ-
साथ चलूँगा और एक दिन मैं तुझे ज़रूर
वहाँ से निकालकर यहाँ ले आऊँगा।[6]
और जब तेरी मौत हो जाएगी तो यूसुफ
अपने हाथ से तेरी आँखें बंद करेगा।"[7]

5 इसके बाद याक़ूब बेरशेबा से आगे
बढ़ा। उसके बेटों ने फिरौन की भेजी
बैल-गाड़ियों पर अपने पिता और अपनी
पत्नियों और बच्चों को बिठाया। 6 वे
अपने साथ अपने सभी जानवर और
अपना सामान ले गए जो उन्होंने कनान
में रहते वक्त हासिल किया था। सफर
करते-करते याक़ूब और उसका पूरा
परिवार आखिरकार मिस्र पहुँच गया।
7 इस तरह याक़ूब अपने सभी बेटे-
बेटियों और नाती-पोतों को यानी अपने
पूरे परिवार को लेकर मिस्र आ गया।

अध्य. 45
1 उत 47:6
2 उत 41:39, 40
3 उत 45:27; उत 46:5
4 उत 47:9
5 उत 46:6
6 उत 43:34
7 उत 42:21, 22
8 भज 105:21
9 उत 42:38; उत 44:27, 28

दूसरा कॉल.
1 उत 46:30

अध्य. 46
2 उत 21:31
3 उत 31:42; निर्ग 3:6
4 उत 28:13
5 उत 12:1, 2; निर्ग 1:7; व्य 26:5
6 उत 15:16; उत 28:15; उत 47:29, 30; उत 50:13
7 उत 50:1

45:18 * या "चरबी।"

46:1 * या "अपने सब लोगों को।"

8 इसराएल यानी याकूब के बेटे जो
मिस्र आए थे,[1] उनके नाम ये हैं: याकूब
का पहलौठा था रूबेन।[2]
9 रूबेन के बेटे थे हानोक, पल्लू,
हेसरोन और करमी।[3]
10 शिमोन[4] के बेटे थे यमूएल,
यामीन, ओहद, याकीन, सोहर और
शौल[5] जो एक कनानी औरत से पैदा
हुआ था।
11 लेवी[6] के बेटे थे गेरशोन, कहात
और मरारी।[7]
12 यहूदा[8] के बेटे थे एर, ओनान,
शेलह,[9] पेरेस[10] और जेरह।[11] मगर
एर और ओनान कनान देश में ही मर
गए थे।[12]
पेरेस के बेटे थे हेसरोन और हामूल।[13]
13 इस्साकार के बेटे थे तोला, पुव्वा,
योब और शिमरोन।[14]
14 जबूलून[15] के बेटे थे सेरेद, एलोन
और यहलेल।[16]
15 याकूब के ये बेटे लिआ से पैदा
हुए थे। उसके ये बेटे और उसकी
बेटी दीना[17] पद्दन-अराम में पैदा हुए थे।
याकूब के इन बेटे-बेटियों की कुल गिनती
33 थी।
16 गाद[18] के बेटे थे सफोन, हाग्गी,
शूनी, एसबोन, एरी, अरोदी और
अरेली।[19]
17 आशेर[20] के बेटे थे यिम्नाह,
यिश्वा, यिश्वी और बरीआ। और उनकी
बहन थी सेरह।
बरीआ के बेटे थे हेबेर और मल-
कीएल।[21]
18 याकूब के ये बेटे उसी जिल्पा[22] से
पैदा हुए जो लाबान ने अपनी बेटी लिआ
को दी थी। जिल्पा से याकूब के जो वंशज
हुए उनकी गिनती कुल मिलाकर 16 थी।

अध्य. 46

1 निर्ग 1:1-4
2 उत 35:23 1इत 5:1
3 गि 26:5, 6
4 उत 29:33
5 गि 26:12, 13 1इत 4:24
6 उत 29:34
7 1इत 6:16
8 उत 29:35 प्रक 5:5
9 उत 38:2-5
10 लूक 3:23, 33
11 उत 38:30
12 उत 38:7, 9, 10
13 गि 26:21 1इत 2:5
14 गि 26:23, 24 1इत 7:1
15 उत 30:20
16 गि 26:26
17 उत 30:21
18 उत 30:11
19 गि 26:15-17
20 उत 30:13
21 गि 26:44, 45
22 उत 29:24

दूसरा कॉल.

1 उत 30:24
2 उत 35:18
3 उत 41:51
4 उत 41:52
5 उत 41:50
6 1इत 7:6
7 1इत 8:1, 3
8 1इत 7:12
9 गि 26:38-40
10 उत 30:6
11 गि 26:42
12 उत 30:8
13 गि 26:48, 49
14 उत 35:10, 11
15 निर्ग 1:5 व्य 10:22 प्रेष 7:14
16 उत 43:8 उत 44:18
17 उत 45:10 उत 47:1

19 याकूब की पत्नी राहेल के बेटे
यूसुफ[1] और बिन्यामीन[2] थे।
20 यूसुफ के बेटे थे मनश्शे[3] और
एप्रैम।[4] ये उसे मिस्र में उसकी पत्नी आस-
नत[5] से पैदा हुए थे, जो ओन* के पुजारी
पोतीफेरा की बेटी थी।
21 बिन्यामीन[6] के बेटे थे बेला, बेकेर,
अशबेल, गेरा,[7] नामान, एही, रोश,
मुप्पीम, हुप्पीम[8] और अर्द।[9]
22 याकूब के ये बेटे उसे राहेल से
हुए थे और उनकी गिनती कुल मिलाकर
14 थी।
23 दान[10] का बेटा* था हूशीम।[11]
24 नप्ताली[12] के बेटे थे यहसेल,
गूनी, येसेर और शिल्लेम।[13]
25 याकूब के ये बेटे उसी बिल्हा से
पैदा हुए जो लाबान ने अपनी बेटी
राहेल को दी थी। बिल्हा से याकूब के जो
वंशज हुए वे कुल मिलाकर सात थे।
26 याकूब के सभी वंशज जो उसके
साथ मिस्र आए उनकी गिनती 66 थी।[14]
इसमें याकूब की बहुओं की गिनती
शामिल नहीं है। 27 यूसुफ को मिस्र में
दो बेटे हुए थे। इस तरह मिस्र में
याकूब के घराने के लोगों की कुल गिनती
70 थी।[15]
28 याकूब ने यहूदा[16] को आगे भेजा
कि वह जाकर यूसुफ को खबर दे
कि याकूब गोशेन पहुँचनेवाला है। जब
याकूब और उसका पूरा घराना गोशेन[17]
पहुँचा, 29 तो यूसुफ ने अपना रथ
तैयार करवाया और अपने पिता इस-
राएल से मिलने गोशेन गया। जब वह
अपने पिता के सामने आया, तो उसने
फौरन पिता को गले लगाया और
कुछ समय तक रोता रहा। 30 फिर

46:20 *यानी हीलिओ-पोलिस। **46:23** *शा., "बेटे।"

इसराएल ने यूसुफ से कहा, “आज मेरी
इन आँखों ने तुझे देख लिया। और मेरे
लिए यही काफी है कि तू ज़िंदा है। अब मैं
इत्मीनान से मर सकता हूँ।”

31 फिर यूसुफ ने अपने भाइयों से
और अपने पिता के पूरे घराने से कहा,
“मैं जाकर फिरौन को खबर देता हूँ[1]
कि कनान से मेरे भाई और मेरे पिता
के घराने के लोग यहाँ मेरे पास आ
गए हैं।[2] 32 वे लोग चरवाहे हैं,[3]
भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पालने का
काम करते हैं।[4] वे अपने साथ अपने
जानवर और अपना सबकुछ ले आए
हैं।[5] 33 और जब फिरौन तुम्हें बुला-
कर तुमसे पूछे, ‘तुम लोग क्या काम
करते हो?’ 34 तो तुम कहना, ‘तेरे ये
दास बचपन से भेड़-बकरियाँ और गाय-
बैल पालने का काम करते आए हैं। हमारे
बाप-दादे भी यही काम करते थे।’[6] तब
वह तुम्हें रहने के लिए गोशेन नाम का
इलाका देगा,[7] क्योंकि मिस्रियों में भेड़-
बकरियाँ पालनेवालों को नीचा समझा
जाता है।”[8]

47 फिर यूसुफ ने फिरौन के पास
आकर उसे यह खबर दी:[9]
“कनान से मेरा पिता और मेरे भाई आ
चुके हैं। वे अपने साथ अपनी भेड़-बक-
रियाँ, गाय-बैल और उनके पास जो कुछ
है, सब लेकर आए हैं। अभी वे गोशेन में
हैं।”[10] 2 और यूसुफ अपने भाइयों में
से पाँच को फिरौन के पास लाया।[11]

3 फिरौन ने उसके भाइयों से पूछा,
“तुम लोग क्या काम करते हो?” उन्होंने
कहा, “तेरे दास भेड़ चराने का काम करते
हैं। हमारे बाप-दादे भी यही काम करते
थे।”[12] 4 फिर उन्होंने फिरौन से कहा,
“हम इस देश में परदेसी बनकर रहना
चाहते हैं,[13] क्योंकि कनान में अकाल
बहुत ज़ोरों पर है[1] और वहाँ हमारे
जानवरों के लिए चारा-पानी नहीं रहा।
इसलिए तुझसे बिनती है कि हमें गोशेन
में रहने की इजाज़त दे।”[2] 5 तब
फिरौन ने यूसुफ से कहा, “तेरा पिता और
तेरे भाई, जो यहाँ तेरे पास आए हुए हैं,
6 तू उनके रहने के लिए इस देश का
बढ़िया-से-बढ़िया इलाका दे सकता है,[3]
पूरा मिस्र तेरे सामने पड़ा है। उन्हें
गोशेन का इलाका दे दे। और तेरे भाई-
बंधुओं में से जो-जो आदमी तेरी नज़र में
काबिल हैं, उन्हें तू मेरे मवेशियों की देख-
भाल का ज़िम्मा सौंप दे।”

7 फिर यूसुफ अपने पिता याकूब
को फिरौन के सामने लाया। याकूब ने
फिरौन को आशीर्वाद दिया। 8 फिरौन
ने याकूब से पूछा, “तेरी उम्र क्या होगी?”
9 याकूब ने फिरौन से कहा, “मैं 130
साल का हूँ, मगर मेरे पुरखों के मुकाब-
ले मेरी ज़िंदगी के ये दिन बहुत कम हैं[4]
जो मैंने दुख झेलकर बिताए हैं।[5] मैंने
सारी ज़िंदगी जगह-जगह परदेसी बन-
कर गुज़ारी है, जैसे मेरे पुरखे जगह-जगह
परदेसी बनकर रहे थे।” 10 इसके
बाद याकूब फिरौन को आशीर्वाद देकर
वहाँ से चला गया।

11 यूसुफ ने रामसेस में, जो मिस्र का
सबसे बढ़िया इलाका था, एक ज़मीन
अपने पिता और भाइयों के नाम कर
दी,[6] ठीक जैसे फिरौन ने हुक्म दिया था।
इस तरह यूसुफ ने उन्हें मिस्र में बसाया।
12 और यूसुफ अपने पिता और भाइयों
और अपने पिता के पूरे घराने को खाना
मुहैया कराता रहा। उनके हर परिवार में
जितने बाल-बच्चे थे, उस हिसाब से वह
उन्हें खाना देता था।

13 अकाल अब भयानक रूप ले चुका
था और पूरे मिस्र और कनान देश में कहीं

अध्य. 46
1 उत 41:39, 40
2 उत 45:19; प्रेष 7:13
3 उत 31:17, 18; उत 47:3
4 उत 31:38
5 उत 46:6
6 उत 30:35, 36
7 उत 45:17, 18; उत 47:27
8 उत 43:32

अध्य. 47
9 उत 46:31
10 उत 45:10; निर्ग 8:22
11 प्रेष 7:13
12 उत 12:16; उत 26:12, 14; उत 31:17, 18; उत 46:33, 34
13 उत 15:13; व्य 26:5; भज 105:23; प्रेष 7:6

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 7:11
2 उत 45:10
3 उत 45:17, 18
4 उत 25:7; उत 35:28
5 अय 14:1, 2
6 उत 45:10; निर्ग 1:8, 11; निर्ग 12:37; गि 33:3

भी खाना नहीं था। अकाल की वजह से
इन देशों की हालत बहुत खराब थी।[1]
14 मिस्र और कनान के लोग यूसुफ को
पैसा देकर उससे अनाज खरीदते थे[2] और
यूसुफ सारा पैसा लाकर फिरौन के खज़ाने
में जमा कर देता था। **15** मगर कुछ
वक्त बाद मिस्र और कनान के लोगों का
सारा पैसा खत्म हो गया। इसलिए सारे
मिस्री यूसुफ के पास आकर कहने लगे,
"हमारे पास एक भी पैसा नहीं है, अब तू
ही हमें खाना दे! कहीं ऐसा न हो कि तेरे
होते हुए हम भूखे मर जाएँ!" **16** तब
यूसुफ ने कहा, "अगर तुम्हारे पास पैसा
नहीं है तो अपने जानवर दे दो। मैं बदले
में तुम्हें खाना दूँगा।" **17** फिर वे यूसुफ
के पास अपने घोड़े, भेड़-बकरी, गाय-बैल
और गधे लाने लगे और यूसुफ इन जान-
वरों के बदले उस साल उन्हें खाना देता
रहा।

18 जब वह साल बीत गया तो अगले
साल लोग यूसुफ के पास आकर कहने
लगे, "मालिक, अब हम तुझसे अपनी
हालत क्या छिपाएँ। हमारे पास न तो पैसा
है न ही जानवर, यह सब हमने मालिक को
पहले ही दे दिया है। अब अपनी
ज़मीन और खुद को तेरे हवाले करने के
सिवा हमारे पास कुछ नहीं है। **19** कहीं
ऐसा न हो कि तेरे होते हुए हम भूखे मर
जाएँ और हमारी ज़मीन बंजर हो जाए।
इसलिए अनाज के बदले तू हमें और
हमारी ज़मीन खरीद ले कि हम फिरौन के
दास बन जाएँ और हमारी ज़मीन उसकी
हो जाए। हमें बीज दे ताकि हम ज़िंदा रहें
और भूखे न मर जाएँ और हमारी ज़मीन
बंजर न हो जाए।" **20** तब यूसुफ ने
मिस्रियों से सारी ज़मीन फिरौन के लिए
खरीद ली, क्योंकि अकाल की मार इतनी
भयानक थी कि हरेक मिस्री ने अपनी
ज़मीन बेच दी। इस तरह मिस्र की सारी
ज़मीन फिरौन की हो गयी।

21 इसके बाद यूसुफ ने मिस्र के
अलग-अलग इलाके में रहनेवालों को
आज्ञा दी कि वे अपने-अपने नज़-
दीकी शहर में जाकर रहें।[1] **22** उसने
सिर्फ पुजारियों की ज़मीन नहीं खरीदी,[2]
क्योंकि उन्हें फिरौन की तरफ से खाने की
चीज़ें मिलती थीं। इन्हीं से उनका गुज़ारा
होता था, इसलिए उन्होंने अपनी ज़मीन
नहीं बेची। **23** फिर यूसुफ ने लोगों से
कहा, "देखो, आज मैंने तुम्हें और तुम्हारी
ज़मीन फिरौन के लिए खरीद ली है। अब
यह बीज ले जाओ, इसे खेतों में बोओ।
24 जब फसल होगी तो पैदावार का
पाँचवाँ हिस्सा तुम्हें फिरौन को देना
होगा,[3] बाकी चार हिस्से तुम अपने
लिए रख सकते हो। यह तुम्हारे और
तुम्हारे बाल-बच्चों और तुम्हारे घर के
सब लोगों के लिए होगा और इसी में से
तुम खेत बो सकोगे।" **25** फिर उन्होंने
कहा, "मालिक, तूने हमारी जान बचायी
है।[4] अब हम पर एक और मेहरबानी
कर, हमें फिरौन के दास बना दे।"[5]
26 तब यूसुफ ने एक फरमान जारी
किया जो आज तक पूरे मिस्र में लागू है
कि मिस्र में होनेवाली पैदावार का पाँचवाँ
हिस्सा फिरौन का होगा। सिर्फ पुजारियों
की ज़मीन फिरौन की नहीं हुई।[6]

27 इसराएल का घराना मिस्र के
गोशेन में ही रहा[7] और वहीं बस
गया। घराने के लोग फलते-फूलते गए
और उनकी गिनती बहुत बढ़ गयी।[8]
28 और याकूब मिस्र में 17 साल रहा।
याकूब कुल मिलाकर 147 साल
जीया।[9]

29 जब इसराएल को लगा कि अब
वह ज़्यादा दिन नहीं जीएगा[10] तो उसने

अध्य. 47
1 उत 41:30, 31
2 उत 41:56
उत 44:25

दूसरा कॉल.
1 उत 41:48, 49
2 उत 41:45
3 उत 41:34
4 उत 45:5
प्रेष 7:11
5 उत 47:19
6 उत 47:22
7 उत 47:4
8 निर्ग 1:7
व्य 10:22
भज 105:24
प्रेष 7:17
9 उत 47:9
10 उत 49:33

अपने बेटे यूसुफ को पास बुलाया और उससे कहा, “बेटा, तू मुझ पर एक मेहरबानी कर। मेरी जाँघ के नीचे अपना हाथ रखकर शपथ खा कि तू मुझे मिस्र में नहीं दफनाएगा।[1] देख, मेरा भरोसा मत तोड़ना और मेरे साथ वफादारी* निभाना। **30** मेरी मौत होने पर* तू मुझे मिस्र से ले जाना और उस कब्र# में दफनाना जहाँ मेरे पुरखों को दफनाया गया था।”[2] यूसुफ ने कहा, “तूने जैसा कहा है मैं वैसा ही करूँगा।” **31** फिर याकूब ने कहा, “तू मुझसे शपथ खा” और यूसुफ ने शपथ खायी।[3] तब इसराएल ने अपने पलंग के सिरहाने पर सिर झुकाकर प्रार्थना की।[4]

48 कुछ समय बाद यूसुफ को यह खबर दी गयी: “आजकल तेरे पिता की तबियत कुछ ठीक नहीं रहती।” जब यूसुफ ने यह सुना तो वह अपने दोनों बेटों, यानी मनश्शे और एप्रैम को लेकर याकूब के पास गया।[5] **2** फिर याकूब को बताया गया, “तेरा बेटा यूसुफ आया है।” तब इसराएल ने किसी तरह ताकत जुटायी और पलंग पर उठकर बैठा। **3** याकूब ने यूसुफ से कहा:

“सर्वशक्तिमान परमेश्वर कनान के लूज में मेरे सामने प्रकट हुआ था और उसने मुझे आशीष दी।[6] **4** उसने मुझसे कहा, ‘मैं तुझे बहुत-सी संतान देकर आबाद करूँगा और तेरे वंशजों की गिनती बहुत बढ़ाऊँगा। मैं तेरे वंशजों से कई गोत्रों की एक बहुत बड़ी मंडली बनाऊँगा।[7] मैं यह देश तेरे बाद तेरे वंश को दूँगा ताकि यह हमेशा के लिए उनकी जागीर बन जाए।’[8] **5** अब देख, तेरे दोनों बेटे, जो यहाँ मिस्र में मेरे आने से पहले पैदा हुए थे, अब से मेरे हैं।[1] जैसे रूबेन और शिमोन मेरे बेटे हैं,[2] वैसे ही एप्रैम और मनश्शे मेरे बेटे हैं। **6** लेकिन इनके बाद तेरे जो बेटे होंगे वे तेरे ही कहलाएँगे। उन्हें एप्रैम और मनश्शे की विरासत की ज़मीन से हिस्सा मिलेगा।[3] **7** और जब मैं पद्दन से लौट रहा था तो कनान देश में एप्रात[4] से कुछ दूरी पर मेरे सामने राहेल की मौत हो गयी।[5] इसलिए मैंने उसे एप्रात जानेवाले रास्ते में, हाँ बेतलेहेम[6] के रास्ते में दफना दिया।”

8 फिर इसराएल ने यूसुफ के बेटों को देखकर पूछा, “क्या ये तेरे बच्चे हैं?” **9** यूसुफ ने अपने पिता से कहा, “हाँ, ये मेरे बेटे हैं जो परमेश्वर ने मुझे इस देश में दिए हैं।”[7] इसराएल ने कहा, “इन्हें ज़रा मेरे पास ला, मैं इन्हें आशीर्वाद देना चाहता हूँ।”[8] **10** बुढ़ापे की वजह से इसराएल की नज़र बहुत कमज़ोर हो गयी थी, उसे ठीक से दिखायी नहीं देता था। इसलिए यूसुफ अपने बेटों को इसराएल के नज़दीक लाया और इसराएल ने उन्हें चूमा और गले लगाया। **11** तब उसने यूसुफ से कहा, “मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं जीते-जी तेरा मुँह देख पाऊँगा।[9] मगर देख, परमेश्वर ने मुझे न सिर्फ तुझे बल्कि तेरे वंश को भी देखने का मौका दिया है।” **12** इसके बाद यूसुफ अपने बेटों को इसराएल के घुटनों के पास से अलग ले गया। फिर यूसुफ ने मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर दंडवत किया।

13 इसके बाद यूसुफ, एप्रैम[10] और मनश्शे[11] को इसराएल के करीब लाया। उसने अपने दाएँ हाथ से एप्रैम को पकड़कर इसराएल के बायीं तरफ किया और

अध्य. 47
1 उत 46:4; उत 50:13; प्रेष 7:15, 16
2 उत 25:9, 10; उत 49:29, 30
3 उत 50:5
4 इब्र 11:21

अध्य. 48
5 उत 41:50; यह 14:4
6 उत 28:13, 19; हो 12:4
7 उत 35:10, 11
8 उत 28:13, 14

दूसरा कॉल.
1 यह 14:4; 1इत 5:1
2 उत 35:23
3 यह 13:29; यह 16:5
4 मी 5:2
5 उत 35:19
6 1शम 17:12; मत 2:6
7 उत 41:50
8 इब्र 11:21
9 उत 37:34, 35; उत 42:36; उत 46:30
10 उत 41:52
11 उत 41:51

47:29 *या “अटल प्यार।” **47:30** *शा., “जब मैं अपने पुरखों के साथ सो जाऊँगा तब।” #शब्दावली देखें।

अपने बाएँ हाथ से मनश्शे को पकड़-
कर उसके दायीं तरफ किया। **14** मगर
इसराएल ने अपना दायाँ हाथ एप्रैम
के सिर पर रखा, इसके बावजूद कि
वह छोटा बेटा था और अपना बायाँ
हाथ पहलौठे बेटे मनश्शे के सिर पर
रखा।[1] इसराएल ने जानबूझकर ऐसा
किया। **15** फिर उसने यूसुफ को यह
आशीर्वाद दिया,[2]

“सच्चा परमेश्वर, जिसके सामने
मेरे दादा अब्राहम और पिता इस-
हाक सही राह पर चलते रहे[3]
और जो मेरा चरवाहा बनकर मेरे
जन्म से लेकर आज तक मेरी
देखभाल करता आया है, वह
सच्चा परमेश्वर[4]
16 जो अपने स्वर्गदूत के ज़रिए मुझे
हर मुसीबत से बचाता आया है,[5]
इन लड़कों को आशीष दे।[6]
वे मेरे नाम से, मेरे दादा अब्राहम
और पिता इसहाक के नाम से
जाने जाएँ,
धरती पर इनके वंशजों की गिनती
कई गुना बढ़ती जाए।”[7]

17 जब यूसुफ ने देखा कि उसके पिता
ने अपना दायाँ हाथ एप्रैम के सिर पर
रखा है, तो उसे बुरा लगा। इसलिए उसने
उसका दायाँ हाथ एप्रैम के सिर से हटा-
कर मनश्शे के सिर पर रखने की कोशिश
की। **18** उसने अपने पिता से कहा,
“नहीं, नहीं, मेरे पिता, पहलौठा वह
नहीं यह है।[8] इस पर अपना दायाँ हाथ
रख।” **19** मगर यूसुफ का पिता उसकी
बात मानने से इनकार करता रहा। उसने
कहा, “मैं जानता हूँ बेटे, मैं जानता हूँ।
इससे भी एक बड़ी और महान जाति
बनेगी। मगर इसका यह छोटा भाई इससे
भी महान होगा[9] और इसके वंश के लोग
इतने बेशुमार होंगे कि वे कई जातियों के
बराबर होंगे।”[1] **20** उस दिन इसराएल
ने उन दोनों लड़कों को यह आशीर्वाद भी
दिया:[2]

“इसराएल के लोग तेरा नाम लेकर
एक-दूसरे को यह आशीर्वाद
दिया करें,
‘परमेश्वर तुझे एप्रैम और मनश्शे
के जैसा बनाए।’”

इस तरह इसराएल ने यूसुफ के बेटों को
आशीर्वाद देते वक्त मनश्शे के बजाय
एप्रैम को पहला दर्जा दिया।

21 फिर इसराएल ने यूसुफ से कहा,
“देख, अब मैं ज़्यादा दिन नहीं जीने-
वाला।[3] मगर तुम लोग एक बात का
यकीन रखना, परमेश्वर हमेशा तुम्हारे
साथ रहेगा और तुम्हें तुम्हारे पुरखों के
देश में वापस ले जाएगा।[4] **22** मैं तुझे
तेरे भाइयों से उस ज़मीन का एक हिस्सा*
ज़्यादा देता हूँ, जो मैंने तीर-कमान और
तलवार के दम पर एमोरियों से हासिल
की थी।”

49 याकूब ने अपने सभी बेटों को
बुलाया और कहा, “तुम सब मेरे
पास इकट्ठा हो जाओ, मैं तुम्हें बताना
चाहता हूँ कि आगे चलकर तुम्हारे साथ
क्या-क्या होगा। **2** याकूब के बेटो, तुम
सब एक-साथ जमा हो जाओ और मेरी
बात सुनो, अपने पिता इसराएल की बात
सुनो।

3 रूबेन,[5] तू मेरा पहलौठा है,[6]
मेरा दमखम, मेरी शक्ति* की पहली
निशानी। तू सबसे बढ़कर गौरवशाली
और ताकतवर है। **4** मगर तू औरों से
आगे नहीं बढ़ पाएगा, क्योंकि तू उफनती

अध्य. 48
1 उत 41:51; उत 46:20
2 1इत 5:2
3 उत 17:1; उत 24:40
4 उत 28:13; भज 23:1
5 उत 28:15; उत 31:11; भज 34:7
6 उत 32:26
7 निर्ग 1:7; गि 26:34, 37
8 उत 41:51
9 गि 2:18-21

दूसरा कॉल.
1 गि 1:32, 33
2 इब्र 11:21
3 उत 50:24
4 उत 15:14; उत 26:3; व्य 31:8

अध्य. 49
5 व्य 33:6
6 उत 29:32; निर्ग 6:14; 1इत 5:1

48:22 *या “ज़मीन की एक ढलान।”
49:3 *या “संतान पैदा करने की शक्ति।”

लहरों की तरह बेकाबू हो जाता है और तू
अपने पिता की सेज पर चढ़ गया।[1] हाँ,
तूने मेरी सेज दूषित कर दी थी।* वाकई,
उसने कैसा काम किया!

5 शिमोन और लेवी भाई-भाई हैं।[2] वे
अपने हथियार से मार-काट मचाते हैं।[3]
6 हे मेरे मन, उनके दल में शामिल
मत हो। हे मेरे आदर,* उनकी टोली में
मत मिल, क्योंकि उन्होंने गुस्से से भर-
कर आदमियों का कत्ल कर डाला[4] और
तमाशे के लिए बैलों की घुटनस काट
दी। 7 धिक्कार है उनके गुस्से पर जो
रहम से खाली है। धिक्कार है उनके क्रोध
पर जो बहुत खूँखार है।[5] मैं उन दोनों
को याकूब के देश में बिखरा दूँगा, इस-
राएल में तितर-बितर कर दूँगा।[6]

8 हे यहूदा,[7] तेरे भाई तेरी तारीफ
करेंगे।[8] तेरा हाथ तेरे दुश्मनों की गर-
दन पर होगा।[9] तेरे पिता के बेटे तेरे
आगे सिर झुकाएँगे।[10] 9 यहूदा शेर
का बच्चा है।[11] मेरे बेटे, तू अपने
शिकार को मारकर ही लौटेगा। यहूदा
एक शेर की तरह ज़मीन पर पैर फैलाए
लेटा है। किसकी मजाल कि उसे छेड़े?
10 जब तक शीलो* न आए,[12] तब
तक यहूदा के हाथ से राजदंड नहीं
छूटेगा,[13] न ही उसके पैरों के बीच से
हाकिम की लाठी दूर होगी। देश-देश के
लोग उसकी आज्ञा मानेंगे।[14] 11 यहूदा
अपने गधे को अंगूर की बेल से और
अपनी गधी के बच्चे को बढ़िया अंगूर की
बेल से बाँधेगा। वह अपने कपड़े दाख-
मदिरा में और अपना बागा अंगूर के
रस में धोएगा। 12 उसकी आँखें दाख-
मदिरा पीने से लाल हैं और उसके दाँत
दूध पीने से सफेद हैं।

13 जबूलून[1] समुंदर किनारे बसेगा,
हाँ, तट के पास जहाँ जहाज़ों का लंगर
डाला जाता है[2] और उसकी सरहद
सीदोन तक फैली होगी।[3]

14 इस्साकार[4] एक बलवान गधे की
तरह है, जो ज़ीन में दोनों तरफ भारी
बोझ लादे हुए भी आराम कर सकता है।
15 इस्साकार देखेगा कि उसके रहने की
जगह बढ़िया है, उसके हिस्से की ज़मीन
अच्छी है। वह बोझ उठाने के लिए अपना
कंधा झुकाएगा और कड़ी मज़दूरी करने
से पीछे नहीं हटेगा।

16 दान[5] इसराएल का एक गोत्र
होकर अपने जाति भाइयों का
न्याय करेगा।[6] 17 दान सड़क किनारे
का साँप होगा, रास्ते का सींगवाला साँप
जो घोड़े की एड़ी को ऐसा डसता है
कि सवार पछाड़ खाकर गिर पड़ता है।[7]
18 हे यहोवा, मैं उद्धार के लिए तेरी ही
राह देखूँगा।

19 गाद[8] पर लुटेरा-दल हमला
करेगा, मगर वह उनका डटकर मुकाबला
करेगा और उन्हें भगा-भगाकर मारेगा।[9]

20 आशेर[10] के पास रोटी* की भर-
मार होगी और वह राजाओं के
लायक बढ़िया-से-बढ़िया खाना मुहैया
कराएगा।[11]

21 नप्ताली[12] हिरनी जैसा फुर्तीला
है। उसके बोल मनभावने हैं।[13]

22 यूसुफ[14] एक फलदार पेड़ की
टहनी है, उस फलदार पेड़ की जो एक
सोते के किनारे लगा है और जिसकी
लंबी-लंबी डालियाँ दीवार लाँघ जाती हैं।
23 मगर तीरंदाज़ यूसुफ को सताते रहे,
उस पर तीर चलाते रहे और मन में उसके

49:4 *या "का अपमान किया था।" **49:6** *या शायद, "मन का रुझान।" **49:10** *मतलब "वह जिसका यह है; वह जो इसका हकदार है।"

49:20 *या "खाने।"

अध्य. 49

1 उत 35:22
2 उत 29:33, 34; उत 35:23
3 उत 34:25
4 उत 34:7
5 उत 34:25
6 यह 19:1; यह 21:41
7 उत 29:35; व्य 33:7
8 उत 43:8, 9; उत 46:28; 1इत 5:2
9 न्या 1:2
10 गि 10:14; 2शम 5:3
11 प्रक 5:5
12 यश 9:6; यहे 21:27; लूक 1:32; इब्र 7:14
13 गि 24:17; 2शम 2:4; 2शम 7:16, 17
14 भज 2:8; यश 11:10; मत 2:6

दूसरा कॉल.

1 व्य 33:18, 19
2 मत 4:13
3 यह 19:10
4 व्य 33:18; 1इत 7:5
5 व्य 33:22
6 न्या 13:2, 24; न्या 15:20
7 न्या 14:19; न्या 15:15
8 व्य 33:20
9 यह 13:8
10 व्य 33:24
11 1रा 4:7, 16
12 व्य 33:23
13 मत 4:13, 15
14 व्य 33:13-17

खिलाफ दुश्मनी पालते रहे।[1] **24** फिर
भी उसकी कमान नहीं डगमगायी,[2] उसके
हाथ मज़बूत बने रहे और फुर्ती से चलते
रहे।[3] इसके पीछे याकूब के शक्तिमान
का हाथ था, उस चरवाहे का हाथ था
जो इसराएल का पत्थर है। **25** वह*
अपने पिता के परमेश्वर का दिया एक
तोहफा है। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर
के साथ है। परमेश्वर उसकी मदद
करेगा। वह उस पर आशीषों की बौछार
करेगा, ऊपर आकाश की और नीचे
गहरे सागर की आशीषें देगा।[4] उसकी
आशीष से उसकी बहुत-सी संतान होंगी
और उसके जानवरों की बढ़ती होगी।
26 उसके पिता की ये आशीषें, युग-युग
तक खड़े रहनेवाले पहाड़ों की उम्दा चीज़ों
से बढ़कर होंगी और सदा कायम रहने-
वाली पहाड़ियों की खूबसूरती से कहीं
निराली होंगी।[5] यूसुफ जो अपने भाइयों
में से अलग किया गया है, उस पर ये
आशीषें सदा बनी रहेंगी।[6]

27 बिन्यामीन[7] एक भेड़िए की तरह
अपने शिकार को फाड़ खाता रहेगा।[8]
सुबह वह अपना शिकार खाएगा और
शाम को लूट का माल बाँटेगा।"[9]

28 ये सभी इसराएल के 12 गोत्र हैं
और उनके पिता ने उन्हें आशीर्वाद
देते वक्त यही सब कहा था। उसने हरेक
को वैसा आशीर्वाद दिया जिसके वह
योग्य था।[10]

29 इसके बाद याकूब ने अपने बेटों
को ये आज्ञाएँ दीं: "देखो, अब मेरे
मरने की घड़ी आ गयी है।*[11] तुम
मुझे उस गुफा में दफना देना जिसमें
मेरे पुरखों को दफनाया गया था, उस
गुफा में जो हित्ती एप्रोन की ज़मीन में है,[12]
30 कनान देश में ममरे के पास मक-
पेला की ज़मीन में। यह ज़मीन अब्राहम ने
हित्ती एप्रोन से खरीदी थी ताकि कब्र के
लिए उसकी अपनी ज़मीन हो। **31** वहाँ
अब्राहम और उसकी पत्नी सारा को और
इसहाक और उसकी पत्नी रिबका को
दफनाया गया था[1] और वहीं मैंने लिआ
को दफनाया था। **32** वह ज़मीन और
उसमें जो गुफा है, उसे हित्ती लोगों से
खरीदा गया था।"[2]

33 इस तरह याकूब ने अपने बेटों को
ये हिदायतें दीं। इसके बाद वह अपने
पलंग पर लेट गया और उसने आखिरी
साँस ली और वह मर गया।*[3]

50 तब यूसुफ अपने पिता की
लाश पर गिर गया[4] और उससे
लिपटकर बहुत रोया और उसे चूमा।
2 इसके बाद यूसुफ ने वैद्यों को, जो
उसके सेवक थे, हुक्म दिया कि वे उसके
पिता का शवलेपन करें।[5] तब वैद्यों ने
इसराएल का शवलेपन किया। **3** इसमें
उन्हें पूरे 40 दिन लगे क्योंकि शव-
लेपन में इतने दिन लगते हैं। और मिस्री
लोग 70 दिन तक इसराएल के लिए
आँसू बहाते रहे।

4 जब मातम के दिन पूरे हुए तो
यूसुफ ने फिरौन के दरबारियों* से कहा,
"मुझ पर एक मेहरबानी करो, मेरा यह
संदेश फिरौन तक पहुँचा दो: **5** 'मेरे
पिता ने मुझे शपथ दिलाकर कहा था,[6]
"देख, अब मेरे मरने की घड़ी आ गयी
है।[7] तू मुझे कनान देश में उस कब्र में
दफनाना जो मैंने अपने लिए तैयार कर-
वायी थी।"[8] इसलिए मुझे इजाज़त दे कि
मैं कनान जाकर अपने पिता को दफना
आऊँ।'" **6** फिरौन ने कहा, "ठीक है,

अध्य. 49
1 उत 37:5, 8 उत 40:15
2 उत 50:20
3 यह 1:1, 6 न्या 11:32
4 व्य 33:13
5 यह 17:14
6 व्य 33:16
7 व्य 33:12
8 न्या 20:15, 16 1शम 9:16
9 एस 2:5 एस 8:7
10 इब्र 11:21
11 उत 35:29 उत 49:33
12 उत 23:17, 18

दूसरा कॉल.
1 उत 23:2, 19 उत 25:9, 10 उत 35:29
2 उत 23:17, 18
3 प्रेष 7:15

अध्य. 50
4 उत 46:4
5 उत 50:26
6 उत 47:29-31
7 उत 48:21
8 उत 23:17, 18 उत 46:4 उत 47:29 उत 49:29, 30

49:25 *यानी यूसुफ। **49:29** *शा., "मैं अपने लोगों से मिलने पर हूँ।"
49:33 *शा., "अपने लोगों में जा मिला।"
50:4 *या "घराने।"

जा और अपने पिता को दफना दे, जैसे
उसने तुझे शपथ खिलायी थी।"[1]
7 तब यूसुफ अपने पिता को दफनाने
निकल पड़ा। उसके साथ फिरौन के सभी
सेवक, दरबार के बड़े-बड़े लोग*[2] और
मिस्र के सभी मुखिया गए। 8 यूसुफ
के घराने के सब लोग, उसके भाई
और उसके पिता का घराना[3] उसके
साथ गया। सिर्फ उनके छोटे-छोटे बच्चे,
उनकी भेड़-बकरियाँ और उनके गाय-
बैल गोशेन में रह गए। 9 यूसुफ के
साथ बहुत-से रथ[4] और घुड़सवार भी
गए। इस तरह मिस्र से लोगों का एक
बहुत बड़ा दल कनान के लिए निकला।
10 जब वे यरदन के इलाके में आताद
के खलिहान में पहुँचे, तो उन्होंने वहाँ
रुककर इसराएल के लिए बहुत बड़ा
मातम किया। यूसुफ ने अपने पिता
के लिए सात दिन तक शोक मनाया।
11 जब वहाँ रहनेवाले कनानियों ने
आताद के खलिहान में उनका यह मातम
देखा तो वे कहने लगे, "मिस्री लोगों का
यह कैसा दर्दनाक मातम है!" इसलिए
उस जगह का नाम आबेल-मिसरैम* पड़ा
जो यरदन के इलाके में है।
12 याकूब के बेटों ने ठीक वैसा ही
किया जैसी उसने उन्हें हिदायत दी थी।[5]
13 वे उसकी लाश कनान ले गए और
उस गुफा में दफना दी जो ममरे के पास
मकपेला की ज़मीन में थी। यह ज़मीन
अब्राहम ने हित्ती एप्रोन से खरीदी थी
ताकि कब्र के लिए उसकी अपनी ज़मीन
हो।[6] 14 यूसुफ अपने पिता को दफ-
नाने के बाद अपने भाइयों के साथ मिस्र
लौट आया। और वे लोग भी लौट आए
जो उसके साथ गए थे।

15 अब जब उनका पिता नहीं रहा,
तो यूसुफ के भाई एक-दूसरे से कहने
लगे, "क्या पता यूसुफ मन-ही-मन हमसे
नफरत करता हो। हमने उसके साथ जो-
जो ज़्यादती की थी, हो सकता है अब वह
हमसे उसका बदला ले।"[1] 16 इसलिए
उन्होंने यूसुफ के पास यह संदेश भेजाः
"तेरे पिता ने अपनी मौत से पहले यह
आज्ञा दी थी, 17 'तुम यूसुफ से मेरी
यह बात कहना, "मैं तुझसे बिनती करता
हूँ कि तेरे भाइयों ने तुझ पर ज़ुल्म करके
जो अपराध और पाप किया था, उसे माफ
कर दे।"' अब तेरे पिता के परमेश्वर के
ये दास भी तुझसे रहम की भीख माँगते हैं,
हमारा अपराध माफ कर दे।" जब यूसुफ
ने सुना कि उसके भाइयों ने ऐसा कहा है,
तो वह रो पड़ा। 18 इसके बाद उसके
भाई खुद उसके पास आए और उसके
सामने ज़मीन पर गिरकर उससे कहने
लगे, "तू हमारे साथ जो चाहे कर, हम
तो बस तेरे गुलाम हैं!"[2] 19 तब यूसुफ
ने उनसे कहा, "डरो मत। भला मैं क्यों
तुम्हारा न्याय करूँगा? क्या मैं परमेश्वर
हूँ? 20 हालाँकि तुमने मेरा बुरा करने
की सोची,[3] मगर जो भी हुआ उसे पर-
मेश्वर ने अच्छे के लिए बदल दिया ताकि
बहुतों की जान बच सके, जैसा कि आज
तुम खुद देख रहे हो।[4] 21 इसलिए अब
डरो नहीं। मैं तुम्हें और तुम्हारे बाल-बच्चों
के लिए खाना मुहैया कराता रहूँगा।"[5]
इस तरह यूसुफ ने अपने भाइयों का डर
दूर किया और उन्हें भरोसा दिलाया।
22 यूसुफ मिस्र में ही रहा और उसके
साथ उसके पिता का घराना भी वहीं रहा।
वह कुल मिलाकर 110 साल जीया।
23 वह जीते-जी अपने बेटे एप्रैम के पोतों
को भी देख पाया।[6] उसने मनश्शे के बेटे
माकीर के बेटों को भी देखा।[7] ये बच्चे

50:7 *या "उसके घराने के बुज़ुर्ग।"
50:11 *मतलब "मिस्रियों का मातम।"

अध्य. 50
1 उत 47:31
2 भज 105:21, 22
3 उत 46:27
4 उत 41:43
उत 46:29
5 उत 47:29
6 उत 23:17, 18
उत 25:9, 10
उत 35:27
उत 49:29, 30

दूसरा कॉल.
1 उत 37:18, 28
उत 42:21
भज 105:17
2 उत 37:7, 9
3 उत 37:18
4 उत 45:5
भज 105:17
5 उत 47:12
6 1इत 7:20
7 यह 17:1
1इत 7:14

यूसुफ के लिए अपने बच्चों जैसे थे।*
24 आखिर में यूसुफ ने अपने भाइयों से
कहा, "देखो, अब मेरी मौत की घड़ी आ
गयी है। मगर तुम इस बात का यकीन
रखना कि परमेश्वर तुम पर ध्यान देगा,[1]
वह तुम्हें इस देश से निकालकर उस देश
में ले जाएगा जिसके बारे में उसने अब्रा-
हम, इसहाक और याकूब से शपथ खाकर
कहा था।"[1] 25 इसलिए यूसुफ ने इस-
राएल के बेटों को शपथ दिलाकर उनसे
कहा, "परमेश्वर ज़रूर तुम लोगों पर
ध्यान देगा, इसलिए यहाँ से जाते वक्त
तुम मेरी हड्डियाँ अपने साथ ले जाना।"[2]
26 इसके बाद यूसुफ 110 साल की
उम्र में मर गया। उसका शवलेपन किया
गया[3] और उसे मिस्र में एक शव-पेटी में
रखा गया।

50:23 *शा., "वे यूसुफ के घुटनों पर पैदा हुए थे।" यानी उसने उन्हें अपने बेटे माना और उन पर खास मेहरबान हुआ।

अध्य. 50
1 निर्ग 4:31

दूसरा कॉल.
1 उत 12:7, उत 17:8, उत 26:3, उत 28:13
2 निर्ग 13:19, यह 24:32, इब्र 11:22
3 उत 50:2

निर्गमन

सारांश

1 मिस्र में इसराएली गिनती में बढ़े (1-7)
इसराएलियों पर फिरौन का ज़ुल्म (8-14)
परमेश्वर का डर माननेवाली धाइयों ने ज़िंदगी बचायी (15-22)

2 मूसा का जन्म (1-4)
फिरौन की बेटी ने उसे गोद लिया (5-10)
मूसा, मिद्यान भाग गया; सिप्पोरा से शादी की (11-22)
परमेश्वर ने इसराएलियों का कराहना सुना (23-25)

3 मूसा और जलती झाड़ी (1-12)
यहोवा ने अपने नाम के मायने समझाए (13-15)
यहोवा ने मूसा को हिदायत दी (16-22)

4 मूसा को 3 चमत्कार करने के लिए कहा गया (1-9)
मूसा ने नाकाबिल महसूस किया (10-17)
मूसा मिस्र लौटा (18-26)
मूसा, हारून से दोबारा मिला (27-31)

5 मूसा और हारून, फिरौन के सामने (1-5)
ज़ुल्म बढ़ता गया (6-18)
इसराएल ने दोनों को दोषी ठहराया (19-23)

6 छुटकारे का वादा दोहराया गया (1-13)
यहोवा के नाम के मायने पूरी तरह ज़ाहिर नहीं थे (2, 3)
मूसा और हारून की वंशावली (14-27)
मूसा को दोबारा फिरौन के सामने जाने के लिए कहा गया (28-30)

7 यहोवा ने मूसा की हिम्मत बँधायी (1-7)
हारून की छड़ी बड़ा साँप बनी (8-13)
पहला कहर: पानी खून में बदला (14-25)

8 दूसरा कहर: मेंढक (1-15)
तीसरा कहर: मच्छर (16-19)
चौथा कहर: खून चूसनेवाली मक्खियाँ (20-32)
गोशेन पर कहर का असर नहीं (22, 23)

9 पाँचवाँ कहर: मवेशी मर गए (1-7)
छठा कहर: इंसान और जानवर के शरीर पर फोड़े (8-12)
सातवाँ कहर: ओले (13-35)

फिरौन से कहा गया कि परमेश्‍वर की ताकत दिखायी जाएगी (16)
यहोवा के नाम का ऐलान (16)

10 आठवाँ कहरः टिड्डियाँ (1-20)
नौवाँ कहरः अँधेरा (21-29)

11 दसवें कहर का ऐलान (1-10)
इसराएलियों से कहा गया कि वे तोहफे माँगें (2)

12 फसह की शुरूआत (1-28)
दरवाज़े के बाज़ुओं पर खून छिड़का जाए (7)
दसवाँ कहरः पहलौठा मारा गया (29-32)
मिस्र से इसराएलियों का निकलना शुरू (33-42)
430 साल खत्म हुए (40, 41)
फसह में हिस्सा लेने के बारे में हिदायतें (43-51)

13 हर पहलौठा यहोवा का है (1, 2)
बिन-खमीर की रोटी का त्योहार (3-10)
हर पहलौठा यहोवा को अर्पित किया गया (11-16)
इसराएल को लाल सागर की तरफ जाने के लिए कहा गया (17-20)
बादल और आग का खंभा (21, 22)

14 इसराएल सागर के पास (1-4)
फिरौन ने इसराएल का पीछा किया (5-14)
इसराएल ने लाल सागर पार किया (15-25)
मिस्री, सागर में डूबे (26-28)
यहोवा पर इसराएल का विश्‍वास (29-31)

15 मूसा और इसराएल का विजय गीत (1-19)
जवाब में मिरयम ने गीत गाया (20, 21)
कड़वा पानी मीठे में बदला (22-27)

16 लोग खाने के बारे में कुड़कुड़ाए (1-3)
यहोवा ने उनका कुड़कुड़ाना सुना (4-12)
बटेर और मन्‍ना दिया गया (13-21)
सब्त के दिन मन्‍ना नहीं मिलता (22-30)
मन्‍ना यादगार के तौर पर रखा गया (31-36)

17 होरेब में पानी की शिकायत (1-4)
चट्टान से पानी निकाला (5-7)
अमालेकियों का हमला; उनकी हार (8-16)

18 यित्रो और सिप्पोरा आए (1-12)
यित्रो ने न्यायी ठहराने की सलाह दी (13-27)

19 सीनै पहाड़ के पास (1-25)
इसराएल, याजकों से बना राज बनेगा (5, 6)
लोगों को परमेश्‍वर से मिलने के लिए शुद्ध किया गया (14, 15)

20 दस आज्ञाएँ (1-17)
अद्‌भुत घटनाएँ देखकर इसराएल डरा (18-21)
उपासना के बारे में हिदायतें (22-26)

21 इसराएल के लिए न्याय-सिद्धांत (1-36)
इब्री दासों के बारे में (2-11)
संगी-साथी के साथ हुई मार-पीट के बारे में (12-27)
जानवरों के बारे में (28-36)

22 इसराएल के लिए न्याय-सिद्धांत (1-31)
चोरी के बारे में (1-4)
फसलों को किए गए नुकसान के बारे में (5, 6)
मुआवज़ा और किसी चीज़ के असली मालिक का पता लगाने के बारे में (7-15)
फुसलाकर रखे गए लैंगिक संबंध के बारे में (16, 17)
उपासना और समाज में न्याय के बारे में (18-31)

23 इसराएल के लिए न्याय-सिद्धांत (1-19)
ईमानदारी और न्याय से पेश आने के बारे में (1-9)
सब्त और त्योहारों के बारे में (10-19)
इसराएल को स्वर्गदूत राह दिखाएगा (20-26)
देश कैसे मिलेगा; उसकी सरहदें (27-33)

24 लोगों ने करार मानने की हामी भरी (1-11)
मूसा सीनै पहाड़ पर (12-18)

25 पवित्र डेरे के लिए दान (1-9)
संदूक (10-22)
मेज़ (23-30)
दीवट (31-40)

26 पवित्र डेरा (1-37)
डेरा ढकने के लिए कपड़े (1-14)
चौखटें और चूलें (15-30)
परदा और द्वार का परदा (31-37)

27 होम-बलि की वेदी (1-8)
आँगन (9-19)
दीवट के लिए तेल (20, 21)

28 याजक की पोशाक (1-5)
एपोद (6-14)
सीनाबंद (15-30)
ऊरीम और तुम्मीम (30)
बिन-आस्तीन का बागा (31-35)
पगड़ी और उस पर सोने की पट्टी (36-39)
याजकों की दूसरी पोशाक (40-43)

29 याजकपद सौंपना (1-37)
हर दिन का चढ़ावा (38-46)

30 धूप की वेदी (1-10)
लोगों की गिनती; फिरौती की कीमत (11-16)
हाथ-पैर धोने के लिए ताँबे का हौद (17-21)
अभिषेक के तेल का खास मिश्रण (22-33)
पवित्र धूप का मिश्रण (34-38)

31 कारीगर पवित्र शक्ति से भरे जाएँगे (1-11)
सब्त, परमेश्वर और इसराएल के बीच निशानी (12-17)
पत्थर की दो पटियाएँ (18)

32 सोने के बछड़े की मूरत की पूजा (1-35)
मूसा को अलग तरह का गाना सुनायी दिया (17, 18)
उसने कानून की पटियाएँ चूर कर दीं (19)
लेवी यहोवा के वफादार रहे (26-29)

33 परमेश्वर ने डाँटने के लिए संदेश दिया (1-6)
छावनी के बाहर भेंट का तंबू (7-11)
मूसा ने यहोवा की महिमा देखने की गुज़ारिश की (12-23)

34 पत्थर की नयी पटियाएँ (1-4)
मूसा ने यहोवा की महिमा देखी (5-9)
करार की बातें दोहरायी गयीं (10-28)
मूसा के चेहरे से तेज निकल रहा था (29-35)

35 सब्त के बारे में हिदायतें (1-3)
पवित्र डेरे के लिए दान (4-29)
बसलेल और ओहोलीआब पवित्र शक्ति से भर गए (30-35)

36 ज़रूरत से ज़्यादा दान (1-7)
पवित्र डेरा बनाया गया (8-38)

37 संदूक बनाया गया (1-9)
मेज़ (10-16)
दीवट (17-24)
धूप की वेदी (25-29)

38 होम-बलि की वेदी (1-7)
ताँबे का हौद (8)
आँगन (9-20)
पवित्र डेरा बनाने में इस्तेमाल हुई चीज़ों की सूची (21-31)

39 याजक की पोशाक बनायी गयी (1)
एपोद (2-7)
सीनाबंद (8-21)
बिन-आस्तीन का बागा (22-26)
याजकों की दूसरी पोशाक (27-29)
सोने की पट्टी (30, 31)
पवित्र डेरे का मुआयना (32-43)

40 पवित्र डेरा खड़ा किया गया (1-33)
यहोवा की महिमा से भर गया (34-38)

1 इसराएल यानी याकूब के जो बेटे
उसके साथ अपने-अपने परिवार को
लेकर मिस्र आए, वे ये हैं:[1] 2 रूबेन,
शिमोन, लेवी और यहूदा,[2] 3 इस्सा-
कार, जबूलून और बिन्यामीन, 4 दान
और नप्ताली, गाद और आशेर।[3]
5 यूसुफ पहले से मिस्र में था। याकूब के
घराने में जितने लोग पैदा हुए थे* उनकी
गिनती 70 थी।[4] 6 कुछ वक्त बाद
यूसुफ की मौत हो गयी[5] और उसके सभी
भाई और उसकी पीढ़ी के सब लोग मर
गए। 7 इसराएलियों* की कई संतानें
हुईं और उनकी गिनती बहुत बढ़ने लगी।
वे दिनों-दिन ताकतवर होते गए और
उनकी आबादी इतनी तेज़ी से बढ़ने लगी
कि वे पूरे मिस्र में भर गए।[6]

8 कुछ समय बाद मिस्र में एक नया
राजा गद्दी पर बैठा जो यूसुफ को नहीं
जानता था। 9 उस राजा ने अपने लोगों
से कहा, "देखो, इन इसराएलियों की
गिनती हमसे ज़्यादा हो गयी है और
ये हमसे ज़्यादा ताकतवर हो गए हैं![7]
10 इसलिए आओ हम इनकी आबादी
रोकने की कोई तरकीब सोचें, वरना
इनकी तादाद इसी तरह बढ़ती जाएगी।
और अगर हमारे दुश्मनों ने हमारे
खिलाफ जंग छेड़ी तो ये इसराएली उनके
साथ मिल जाएँगे और हमसे लड़ेंगे और
यह देश छोड़कर भाग जाएँगे।"

11 इसलिए मिस्रियों ने इसराएलियों
को सताने के लिए उन पर ऐसे अधि-
कारी* ठहराए जो उनसे कड़ी मज़दूरी
करवाते थे।[8] इसराएलियों ने इसी तरह
मज़दूरी करके फिरौन के लिए पितोम
और रामसेस[9] नाम के गोदामवाले शहर

1:5 *शा., "याकूब की जाँघ से निकले थे।" 1:7 *शा., "इसराएल के बेटों।" 1:11 *या "जल्लाद।"

अध्य. 1
1 उत 46:8
2 1इत 2:3, 4
3 उत 46:17
4 उत 46:26 व्य 10:22 प्रेष 7:14
5 उत 50:26
6 उत 46:3 व्य 26:5 प्रेष 7:17-19
7 भज 105:24, 25
8 उत 15:13 निर्ग 3:7 गि 20:15 व्य 26:6
9 उत 47:11

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 1:7 भज 105:24, 25
2 निर्ग 2:23 प्रेष 7:6
3 लैव 26:13
4 यहे 16:4
5 उत 9:5, 6

बनाए। 12 मिस्रियों ने इसराएलियों
को बहुत सताया, फिर भी इसराए-
लियों की तादाद बढ़ती गयी और वे
मिस्र में दूर-दूर तक फैलते गए। इससे
मिस्रियों के दिल में इसराएलियों का खौफ
बैठ गया और वे उनसे नफरत करने
लगे।[1] 13 अब मिस्री इसराएलियों
से और भी कड़ी गुलामी करवाने लगे।[2]
14 उन्होंने उनका जीना मुश्किल कर
दिया। उन्होंने उनसे मिट्टी का गारा और
ईंट बनाने का काम करवाया और मैदानों
में भी उनसे हर तरह की गुलामी कर-
वायी। इस तरह मिस्रियों ने उनसे बुरे-
से-बुरे हालात में कड़ी मज़दूरी करायी।[3]

15 बाद में मिस्र के राजा ने शिपरा
और पूआ नाम की दो इब्री धाइयों
से कहा, 16 "जब तुम इब्री औरतों का
प्रसव कराओ[4] तो एक काम करना।
अगर लड़का पैदा हुआ तो उसे मार
डालना, लड़की हुई तो छोड़ देना।"
17 लेकिन उन धाइयों ने वैसा नहीं
किया जैसा राजा ने उनसे कहा था,
क्योंकि वे सच्चे परमेश्वर का डर मानती
थीं। वे लड़कों को ज़िंदा छोड़ देती थीं।[5]
18 कुछ वक्त बाद मिस्र के राजा ने
उन धाइयों को बुलाकर उनसे पूछा, "तुम
लड़कों को ज़िंदा क्यों छोड़ देती हो?"
19 धाइयों ने फिरौन से कहा, "इब्री
औरतें मिस्री औरतों की तरह नहीं हैं। वे
बड़ी फुर्तीली हैं, धाई के आने से पहले ही
बच्चा जन लेती हैं।"

20 उन धाइयों ने जो किया, उसकी
वजह से परमेश्वर ने उनके साथ भलाई
की। इसराएलियों की गिनती बढ़ती गयी,
वे बहुत ताकतवर होते गए। 21 उन
धाइयों ने सच्चे परमेश्वर का डर माना
था, इसलिए आगे चलकर परमेश्वर
ने उन्हें औलाद का सुख दिया। 22 अब

फिरौन ने अपने सभी लोगों को आज्ञा दी, “इब्रियों के घर जो भी लड़का होगा उसे तुम नील नदी में फेंक देना। अगर लड़की हुई तो उसे ज़िंदा छोड़ देना।”[1]

2 उन्हीं दिनों लेवी गोत्र के एक आदमी ने अपने गोत्र की एक लड़की से शादी की।[2] **2** फिर उस आदमी की पत्नी गर्भवती हुई और उसने एक बेटे को जन्म दिया। जब उस औरत ने देखा कि उसका बच्चा बहुत सुंदर है तो उसने तीन महीने तक उसे छिपाए रखा।[3] **3** मगर इसके बाद वह बच्चे को और छिपा न सकी,[4] इसलिए उसने सरकंडे से बनी एक टोकरी* ली और उस पर डामर लगाया। फिर उसने बच्चे को टोकरी में रखा और टोकरी नील नदी के किनारे, नरकटों के बीच रख दी। **4** बच्चे की बहन[5] यह देखने के लिए दूर खड़ी रही कि उसके साथ क्या होगा।

5 फिरौन की बेटी नील नदी में नहाने आयी और उसके साथ उसकी सेविकाएँ भी आयीं और नदी किनारे टहलने लगीं। अचानक फिरौन की बेटी की नज़र उस टोकरी पर पड़ी जो नरकटों के बीच रखी हुई थी। उसने फौरन अपनी दासी से कहा कि वह जाकर टोकरी ले आए।[6] **6** जब फिरौन की बेटी ने टोकरी खोली तो देखा कि उसमें एक बच्चा है जो रो रहा है। उसे लड़के पर तरस आया मगर फिर उसने कहा, “यह तो किसी इब्री का बच्चा है।” **7** तब बच्चे की बहन ने आकर फिरौन की बेटी से कहा, “क्या मैं जाकर तेरे लिए किसी इब्री औरत को बुला लाऊँ ताकि वह बच्चे को दूध पिलाए और उसकी देखभाल करे?” **8** फिरौन की बेटी ने कहा, “जा, ले आ।” लड़की तुरंत गयी और बच्चे की माँ को बुला लायी।[1] **9** फिरौन की बेटी ने उस औरत से कहा, “तू यह बच्चा अपने पास रख और इसे दूध पिलाकर इसकी देखभाल कर। मैं तुझे इसकी मज़दूरी दूँगी।” वह औरत बच्चे को ले गयी और दूध पिलाकर उसकी देखभाल करने लगी। **10** जब बच्चा थोड़ा बड़ा हुआ तो वह उसे फिरौन की बेटी के पास लायी। फिरौन की बेटी ने उसे गोद लिया[2] और यह कहकर उसका नाम मूसा* रखा, “मैं इसे पानी में से निकाल लायी थी।”[3]

11 जब मूसा बड़ा हुआ* तो एक दिन वह अपने इब्री भाइयों को देखने गया कि उन्हें कैसी कड़ी मज़दूरी करनी पड़ रही है।[4] तभी उसने देखा कि उसके एक इब्री भाई को एक मिस्री आदमी बहुत मार रहा है। **12** फिर मूसा ने इधर-उधर देखा और जब उसे कोई नज़र नहीं आया तो उसने उस मिस्री को मार डाला और उसकी लाश रेत में छिपा दी।[5]

13 मूसा अगले दिन भी बाहर गया, मगर उस दिन उसने देखा कि दो इब्री आदमी आपस में लड़ रहे हैं। तब उनमें से जो गुनहगार था, उससे मूसा ने कहा, “तू अपने भाई को क्यों मार रहा है?”[6] **14** उस आदमी ने कहा, “तुझे किसने हमारा अधिकारी और न्यायी ठहराया है? क्या तू मुझे भी मार डालेगा, जैसे उस मिस्री को मार डाला था?”[7] यह सुनकर मूसा डर गया और मन-ही-मन कहने लगा, “ज़रूर यह बात सबको पता चल गयी है!”

15 फिरौन को भी इसका पता चल गया और वह मूसा को मार डालने की

2:3 *या “संदूक; पेटी।”

2:10 *मतलब “निकाला गया,” यानी पानी में से बचाया गया। **2:11** *या “ताकतवर हो रहा था।”

अध्य. 1
1 प्रेष 7:18, 19

अध्य. 2
2 निर्ग 6:20, गि 26:59
3 प्रेष 7:20, इब्र 11:23
4 प्रेष 7:18, 19
5 निर्ग 15:20, 1इत 6:3, मी 6:4
6 प्रेष 7:21

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 6:20
2 इब्र 11:24, 25
3 प्रेष 7:21
4 निर्ग 1:11, निर्ग 3:7, प्रेष 7:23
5 प्रेष 7:24
6 प्रेष 7:26
7 प्रेष 7:27, 28

कोशिश करने लगा। मगर मूसा फिरौन के यहाँ से भाग गया और मिद्यान[1] देश में रहने चला गया। जब वह वहाँ पहुँचा तो एक कुएँ के पास बैठ गया। **16** मिद्यान में एक याजक था[2] जिसकी सात बेटियाँ थीं। वे अपने पिता की भेड़-बकरियों को पानी पिलाने कुएँ के पास आयीं। वे अपने जानवरों के लिए पानी खींचकर हौदियों में भरना चाहती थीं। **17** मगर कुछ चरवाहे वहाँ आए और उन्होंने हमेशा की तरह उन्हें भगा दिया। जब मूसा ने यह देखा तो उसने जाकर लड़कियों की मदद की* और उनके जानवरों को पानी पिलाया। **18** फिर जब लड़कियाँ घर लौटीं तो उनके पिता रूएल*[3] ने बड़ी हैरत से पूछा, "आज तुम इतनी जल्दी कैसे आ गयीं?" **19** उन्होंने कहा, "एक मिस्री आदमी[4] ने हमें चरवाहों से बचाया, यहाँ तक कि उसने पानी निकालकर हमारे जानवरों को पिलाया।" **20** उनके पिता ने उनसे कहा, "कहाँ है वह आदमी? तुम उसे अपने साथ घर क्यों नहीं लायीं? जाओ जाकर उसे बुला लाओ ताकि वह हमारे साथ खाना खाए।" **21** इसके बाद मूसा उस आदमी के कहने पर उसके साथ रहने के लिए राज़ी हो गया। और उस आदमी ने अपनी बेटी सिप्पोरा[5] से उसकी शादी करायी। **22** बाद में सिप्पोरा से मूसा के एक बेटा हुआ जिसका नाम उसने गेरशोम*[6] रखा क्योंकि उसने कहा, "मैं परदेस में रहनेवाला परदेसी बन गया हूँ।"[7]

23 कई सालों* बाद मिस्र का राजा मर गया,[1] मगर इसराएली अब भी गुलाम थे और उन पर इतने ज़ुल्म ढाए जाते थे कि वे आहें भर-भरकर जीते थे। वे मदद के लिए दिन-रात सच्चे परमेश्वर से फरियाद करते और उसकी दुहाई देते थे।[2] **24** वक्त आने पर परमेश्वर ने उनका कराहना सुना[3] और अपना वह करार याद किया जो उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ किया था।[4] **25** परमेश्वर ने इसराएलियों की हालत देखी और उन पर ध्यान दिया।

3 मूसा एक चरवाहा बना और अपने ससुर, मिद्यान के याजक यित्रो[5] की भेड़-बकरियाँ चराने लगा। एक दिन वह जानवरों के झुंड को वीराने के पश्चिम की तरफ ले जा रहा था और चलते-चलते वह सच्चे परमेश्वर के पहाड़ होरेब[6] के पास पहुँचा। **2** वहाँ एक जलती हुई कँटीली झाड़ी में लपटों के बीच यहोवा का एक स्वर्गदूत उसके सामने प्रकट हुआ।[7] जब मूसा ने देखा कि कँटीली झाड़ी में आग लगी है फिर भी झाड़ी जल नहीं रही **3** तो उसने कहा, "यह कैसी अजब बात है! मैं पास जाकर देखता हूँ कि झाड़ी क्यों जल नहीं रही।" **4** जब यहोवा ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने के लिए पास आ रहा है तो उसने झाड़ी में से उसे पुकारा, "मूसा! मूसा!" तब उसने कहा, "हाँ, प्रभु!" **5** परमेश्वर ने कहा, "अब और नज़दीक मत आ। तू अपने पाँवों की जूतियाँ उतार दे क्योंकि जिस ज़मीन पर तू खड़ा है वह पवित्र है।"

6 फिर उसने कहा, "मैं तेरे पुरखों का परमेश्वर हूँ, अब्राहम का परमेश्वर,[8] इसहाक का परमेश्वर[9] और याकूब का परमेश्वर।"[10] तब मूसा ने अपना चेहरा छिपा लिया क्योंकि वह सच्चे परमेश्वर को देखने से डर रहा था। **7** फिर

2:17 *या "का बचाव किया।" **2:18** *यानी यित्रो। **2:22** *मतलब "वहाँ रहनेवाला एक परदेसी।" **2:23** *शा., "बहुत दिनों।"

अध्य. 2
1 उत 25:1, 2; निर्ग 3:1; निर्ग 4:19
2 निर्ग 18:12
3 निर्ग 4:18; निर्ग 18:1; गि 10:29
4 प्रेष 7:22
5 निर्ग 18:2-4; गि 12:1
6 1इत 23:15
7 प्रेष 7:29

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 7:7; प्रेष 7:30
2 निर्ग 3:7; 1रा 8:51
3 प्रेष 7:34
4 उत 15:13, 14; निर्ग 6:5; गि 20:15, 16

अध्य. 3
5 निर्ग 2:16; निर्ग 18:1
6 निर्ग 24:12, 13; 1रा 19:8, 9
7 प्रेष 7:30-34
8 उत 17:1, 7
9 उत 26:24
10 उत 28:13; उत 32:9; मत 22:32; प्रेष 7:32

यहोवा ने उससे कहा, “मैंने बेशक देखा है कि मिस्र में मेरे लोग कितनी दुख-तकलीफें झेल रहे हैं। मैंने उनका रोना-बिलखना सुना है क्योंकि मिस्र में उनसे जबरन मज़दूरी करवायी जा रही है। मैं अपने लोगों का दुख अच्छी तरह समझ सकता हूँ।[1] **8** इसलिए मैं नीचे जाकर उन्हें मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊँगा[2] और उन्हें एक अच्छे और बड़े देश में ले जाऊँगा, जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं[3] और जहाँ आज कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोग रहते हैं।[4] **9** देख! इसराएलियों की फरियाद मुझ तक पहुँची है और मैंने देखा है कि मिस्री उन्हें कितनी बेरहमी से सता रहे हैं।[5] **10** इसलिए मैं तुझे फिरौन के पास भेज रहा हूँ और तू मेरे इसराएली लोगों को मिस्र से बाहर निकाल लाएगा।”[6]

11 मगर मूसा ने सच्चे परमेश्वर से कहा, “मैं कौन हूँ जो फिरौन के सामने जाऊँ और इसराएलियों को मिस्र से छुड़ा लाऊँ?” **12** तब परमेश्वर ने उससे कहा, “मैं तेरे साथ रहूँगा।[7] मैं तुझसे एक वादा* करता हूँ जिसके पूरे होने पर तुझे यकीन हो जाएगा कि मैंने ही तुझे भेजा है। मेरा वादा है कि तू इसराएल को मिस्र से निकाल लाने में ज़रूर कामयाब होगा और वहाँ से निकलने के बाद तुम लोग इसी पहाड़ पर मुझ सच्चे परमेश्वर की सेवा# करोगे।”[8]

13 लेकिन मूसा ने सच्चे परमेश्वर से कहा, “अगर मैं इसराएलियों के पास जाकर उनसे कहूँ, ‘तुम्हारे पुरखों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है’ और वे मुझसे पूछें, ‘उस परमेश्वर का नाम क्या है?’[1] तो मैं उनसे क्या कहूँ?” **14** परमेश्वर ने मूसा से कहा, “मैं वह बन जाऊँगा जो मैं बनना चाहता हूँ।”*[2] उसने यह भी कहा, “तू इसराएलियों से कहना, ‘“मैं वह बन जाऊँगा” ने मुझे भेजा है।’”[3] **15** इसके बाद परमेश्वर ने एक बार फिर मूसा से कहा,

“तू इसराएलियों से कहना, ‘यहोवा जो तुम्हारे पुरखों का परमेश्वर है, अब्राहम का परमेश्वर,[4] इसहाक का परमेश्वर[5] और याकूब का परमेश्वर है,[6] उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’ सदा तक मेरा नाम यही रहेगा[7] और पीढ़ी-पीढ़ी तक मुझे इसी नाम से याद किया जाएगा। **16** अब तू जा और इसराएल के मुखियाओं को इकट्ठा करके उनसे कह, ‘यहोवा जो तुम्हारे पुरखों का परमेश्वर है, अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर है, वह मेरे सामने प्रकट हुआ और उसने मुझसे कहा है, “मैंने बेशक तुम लोगों की हालत पर गौर किया है,[8] मैंने देखा है कि मिस्र में तुम्हारे साथ कैसा सलूक किया जा रहा है। **17** इसलिए मैं तुमसे वादा करता हूँ कि मैं तुम्हें मिस्रियों के अत्याचार से छुड़ाऊँगा[9] और एक ऐसे देश में ले जाऊँगा जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं[10] और जहाँ आज कनानी, हित्ती, एमोरी,[11] परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोग रहते हैं।”’[12]

18 वे ज़रूर तेरी बात मानेंगे।[13] फिर तू इसराएल के मुखियाओं के साथ मिलकर मिस्र के राजा के पास जाना और उससे कहना, ‘इब्रियों[14] के परमेश्वर यहोवा ने हमसे बात की है। इसलिए हम

अध्य. 3

1 निर्ग 1:11, यश 63:9, प्रेष 7:34
2 निर्ग 12:51
3 गि 13:26, 27, व्य 27:3
4 उत 10:15-17, निर्ग 33:1, 2, व्य 7:1, यह 3:10, नहे 9:7, 8
5 निर्ग 1:11
6 भज 105:26, 38, प्रेष 7:34
7 व्य 31:23, यह 1:5, यश 41:10, रोम 8:31, फिल 4:13
8 निर्ग 19:2, व्य 4:11, 12

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 15:3, भज 96:8, भज 135:13, हो 12:5, यूह 17:26, रोम 10:13
2 अय 23:13, यश 14:27, यूह 12:28
3 निर्ग 6:3, 7, रोम 9:17
4 उत 17:1, 7
5 उत 26:24
6 उत 28:13, मत 22:32
7 भज 135:13
8 उत 50:24, निर्ग 13:19
9 उत 15:13, 14, लैव 26:13
10 गि 13:27, व्य 8:7-9
11 उत 15:16
12 निर्ग 23:23
13 निर्ग 4:31
14 उत 14:13

3:12 *शा., “निशानी।” #या “उपासना।”

3:14 *या “बनने का चुनाव करता हूँ।” या “मैं जो साबित होऊँगा वह साबित होऊँगा।” अति. क4 देखें।

तुझसे इजाज़त माँगते हैं कि हमें तीन दिन
का सफर तय करके वीराने में जाने दे
ताकि हम अपने परमेश्‍वर यहोवा के
लिए बलिदान चढ़ा सकें।’[1] 19 मगर
मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मिस्र का
राजा तुम्हें तब तक जाने की इजाज़त
नहीं देगा जब तक कि मेरा शक्‍तिशाली
हाथ उसे मजबूर न करे।[2] 20 इसलिए
मुझे मिस्र के खिलाफ अपना हाथ बढ़ा-
कर कहर ढाना होगा और तरह-तरह के
अजूबे करने होंगे, तब वह तुम्हें देश से
भेज देगा।[3] 21 जब तुम लोग मिस्र से
निकलोगे तो खाली हाथ नहीं जाओगे।
मैं मिस्रियों को तुम पर मेहरबान कर
दूँगा।[4] 22 हर औरत को चाहिए कि
वह अपनी पड़ोसिन से और अपने घर में
रहनेवाली औरत से सोने-चाँदी की चीज़ें
और कपड़े माँगे। ये सब तुम अपने बेटे-
बेटियों को पहनाओगे। तुम मिस्रियों को
लूट लोगे।”[5]

4 तब मूसा ने कहा, “लेकिन अगर वे
मेरा यकीन न करें और यह कह-
कर मेरी बात मानने से इनकार कर दें[6]
कि यहोवा तेरे सामने प्रकट नहीं हुआ,
तो मैं क्या करूँ?” 2 यहोवा ने उससे
कहा, “वह तेरे हाथ में क्या है?” उसने
कहा, “छड़ी है।” 3 परमेश्‍वर ने कहा,
“उसे नीचे ज़मीन पर फेंक।” मूसा ने
छड़ी ज़मीन पर फेंकी और वह साँप
बन गयी।[7] तब मूसा वहाँ से दूर भागा।
4 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “अपना
हाथ बढ़ाकर उसे पूँछ से पकड़।” मूसा
ने हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया और
वह उसके हाथ में फिर से छड़ी बन गया।
5 तब परमेश्‍वर ने कहा, “तू लोगों
के सामने ऐसा ही करना ताकि वे यकीन
करें कि यहोवा वाकई तेरे सामने प्रकट
हुआ,[8] जो उनके पुरखों का परमेश्‍वर है,
अब्राहम, इसहाक और याकूब का पर-
मेश्‍वर है।”[1]

6 यहोवा ने उससे यह भी कहा, “अब
ज़रा अपना हाथ अपने बागे की ऊपरी
तह के अंदर रख।” मूसा ने अपना हाथ
बागे की ऊपरी तह के अंदर रखा। जब
उसने हाथ बाहर निकाला, तो यह देखकर
चौंक गया कि उसका हाथ कोढ़ से भर
गया है और बर्फ जैसा सफेद हो गया है![2]
7 फिर परमेश्‍वर ने कहा, “अब अपना
हाथ वापस बागे की ऊपरी तह के अंदर
रख।” मूसा ने ऐसा ही किया। जब उसने
बागे में से अपना हाथ बाहर निकाला,
तो देखा कि उसका हाथ पहले की तरह
अच्छा हो गया है! 8 तब परमेश्‍वर ने
कहा, “अगर वे तेरा यकीन न करें और
पहले चमत्कार पर ध्यान न दें तो वे दूसरा
चमत्कार देखकर ज़रूर यकीन करेंगे।[3]
9 और अगर ये दोनों चमत्कार देखकर
भी वे यकीन न करें और तेरी बात मानने
से इनकार कर दें, तो तू नील नदी में
से थोड़ा पानी लेना और सूखी ज़मीन पर
उँडेलना। तब वह पानी जिसे तू ज़मीन पर
उँडेलेगा खून में बदल जाएगा।”[4]

10 मूसा ने यहोवा से कहा, “माफ
करना यहोवा, मैं बोलने में निपुण नहीं
हूँ, मैं साफ-साफ बोल नहीं पाता। न तो
मैं पहले कभी बोलने में कुशल था और
न ही जब से तूने मुझसे बात की तब से
कुशल बना हूँ।”[5] 11 यहोवा ने उससे
कहा, “अच्छा, तू यह बता कि इंसान
को बोलने के लिए मुँह किसने दिया,
देखने के लिए आँखें किसने दीं और
वह कौन है जो उसे गूँगा, बहरा या
अंधा बनाता है?* क्या वह मैं यहोवा
नहीं? 12 इसलिए अब तू जा और मेरे

अध्य. 3
1 निर्ग 5:3; निर्ग 10:25, 26
2 निर्ग 5:2; निर्ग 14:8; रोम 9:17
3 निर्ग 7:3; निर्ग 12:33; व्य 6:22
4 निर्ग 11:2; निर्ग 12:35, 36
5 उत 15:13, 14; निर्ग 12:36

अध्य. 4
6 निर्ग 2:13, 14
7 निर्ग 7:9
8 निर्ग 3:16; निर्ग 4:31

दूसरा कॉल.
1 लूक 20:37
2 गि 12:10
3 प्रेष 7:36
4 निर्ग 4:30
5 निर्ग 6:12; गि 12:3; यिर्म 1:6; प्रेष 7:22

4:11 *या “होने देता है?”

लोगों से बात कर, मैं तेरी मदद
करूँगा* और तुझे सिखाता रहूँगा कि
तुझे क्या कहना है।"[1] 13 मगर फिर
भी मूसा ने कहा, "माफ करना यहोवा,
तू इस काम के लिए किसी और को चुन-
कर भेज।" 14 तब यहोवा का गुस्सा
मूसा पर भड़क उठा। फिर उसने कहा,
"देख, लेवी गोत्र का हारून जो तेरा भाई
है,[2] वह तुझसे मिलने आ रहा है। जब
वह तुझसे मिलेगा तो खुशी से फूला नहीं
समाएगा।[3] मैं जानता हूँ कि वह अच्छी
तरह बात कर सकता है। 15 इसलिए
मैंने तुझसे जो-जो बातें कही हैं, वे सब
उसे बताना।[4] जब तू बात करेगा, तो मैं
तुम दोनों के साथ रहूँगा[5] और तुम्हें
सिखाऊँगा कि तुम्हें क्या-क्या करना है।
16 हारून तेरी तरफ से लोगों से बात
करेगा, वह तेरी ज़बान बन जाएगा
और तू उसके लिए परमेश्वर जैसा
होगा।*[6] 17 और तेरे हाथ में जो छड़ी
है, उसे तू अपने साथ ले जाएगा और
उससे चमत्कार करेगा।"[7]

18 फिर मूसा अपने ससुर यित्रो[8] के
पास गया और उससे कहा, "मैं मिस्र जाने
की इजाज़त चाहता हूँ ताकि जाकर देखूँ
कि मेरे भाई खैरियत से हैं या नहीं।"
यित्रो ने मूसा से कहा, "ठीक है, कुशल
से जा।" 19 इसके बाद यहोवा ने मूसा
से, जो मिद्यान में था, कहा, "तू अब
मिस्र लौट जा क्योंकि जितने आदमी
तेरी जान के पीछे पड़े थे, वे सब मर
चुके हैं।"[9]

20 तब मूसा ने अपनी पत्नी और
अपने बेटों को एक गधे पर बिठाया और
मिस्र लौटने के लिए निकल पड़ा। मूसा ने
अपने हाथ में सच्चे परमेश्वर की छड़ी भी
ली। 21 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
"मैंने तुझे जितने भी चमत्कार करने की
शक्ति दी है, तू मिस्र लौटने पर फिरौन के
सामने वे सारे चमत्कार ज़रूर करना।[1]
फिर भी फिरौन मेरे लोगों को जाने नहीं
देगा,[2] क्योंकि मैं उसके दिल को कठोर
होने दूँगा।[3] 22 तू फिरौन से कहना,
'यहोवा कहता है, "इसराएल मेरा बेटा है,
मेरा पहलौठा।[4] 23 मैं तुझसे कहता हूँ,
मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह मेरी सेवा
करे। अगर तूने उसे भेजने से इनकार कर
दिया तो मैं तेरे बेटे को, तेरे पहलौठे को
मार डालूँगा।"'"[5]

24 फिर हुआ यह कि रास्ते में एक
मुसाफिरखाने पर यहोवा[6] उससे मिला
और उसे मार डालने की कोशिश करने
लगा।[7] 25 तब सिप्पोरा[8] ने एक तेज़
चकमक पत्थर लिया* और अपने बेटे
का खतना किया और फिर उसकी खलड़ी
से उसका पैर छुआ और कहा, "यह इस-
लिए है क्योंकि तू मेरे लिए खून का दूल्हा
है।" 26 इसलिए परमेश्वर ने उसे जाने
दिया। उस वक्त सिप्पोरा ने खतने की
वजह से "खून का दूल्हा" कहा।

27 फिर यहोवा ने हारून से कहा, "तू
वीराने में जा और मूसा से मिल।"[9] हारून
गया और सच्चे परमेश्वर के पहाड़[10]
के पास मूसा से मिला। उससे मिलने पर
हारून ने उसे चूमा। 28 फिर मूसा ने
हारून को बताया कि यहोवा ने उसे
क्या-क्या बताकर भेजा है[11] और क्या-
क्या चमत्कार करने की आज्ञा दी है।[12]
29 इसके बाद मूसा और हारून ने
जाकर इसराएलियों के सभी मुखियाओं
को इकट्ठा किया।[13] 30 हारून ने उन्हें

4:12 *शा., "तेरे मुँह के साथ रहूँगा।"
4:16 *या "तू उसके लिए परमेश्वर का भेजा हुआ ठहरेगा।"
4:25 *या "चकमक की छुरी ली।"

अध्य. 4
1 यश 50:4, मर 13:11
2 गि 26:59
3 निर्ग 4:27
4 निर्ग 4:28
5 यिर्म 1:9
6 निर्ग 7:1, 2
7 निर्ग 8:5, निर्ग 17:5, 6, गि 20:11
8 निर्ग 2:18, 21, निर्ग 18:1, गि 10:29
9 निर्ग 2:15

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 7:9
2 निर्ग 7:22
3 निर्ग 7:3, निर्ग 8:15, निर्ग 9:12, निर्ग 11:10, रोम 9:17, 18
4 व्य 7:6, व्य 14:2, हो 11:1, रोम 9:4
5 निर्ग 12:29
6 गि 22:22, 1इत 21:16
7 उत 17:14
8 निर्ग 2:16, 21
9 निर्ग 4:14
10 निर्ग 3:1, निर्ग 20:18, निर्ग 24:16
11 निर्ग 4:15
12 निर्ग 4:8
13 निर्ग 3:16, निर्ग 24:1

वे सारी बातें बतायीं जो यहोवा ने मूसा से कही थीं और मूसा ने लोगों के सामने चमत्कार किए।[1] 31 यह देखकर लोगों ने मूसा का यकीन किया।[2] और जब उन्होंने सुना कि यहोवा ने इसराएलियों की हालत पर ध्यान दिया है[3] और उनकी दुख-तकलीफों पर गौर किया है,[4] तो उन्होंने मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर दंडवत किया।

5 इसके बाद मूसा और हारून फिरौन के सामने गए और उन्होंने कहा, "इसराएल का परमेश्वर यहोवा तुझसे कहता है, 'मेरे लोगों को वीराने में जाने दे ताकि वे मेरे लिए एक त्योहार मनाएँ।'" 2 मगर फिरौन ने कहा, "यह यहोवा कौन है[5] कि मैं उसकी बात मानकर इसराएल को जाने दूँ?[6] मैं किसी यहोवा को नहीं जानता और मैं इसराएल को हरगिज़ नहीं जाने दूँगा।"[7] 3 फिर भी उन्होंने कहा, "इब्रियों के परमेश्वर ने हमसे बात की है। इसलिए हम तुझसे इजाज़त माँगते हैं कि हमें तीन दिन का सफर तय करके वीराने में जाने दे ताकि हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए बलिदान चढ़ा सकें,[8] वरना परमेश्वर हमें बीमारी या तलवार से नाश कर देगा।" 4 मिस्र के राजा ने कहा, "हे मूसा और हारून, तुम क्यों लोगों को उनके काम से दूर ले जाना चाहते हो? सब लोग अपने-अपने काम पर लौट जाएँ और चुपचाप मज़दूरी करें!"[9] 5 फिरौन ने यह भी कहा, "देखो, इस देश में तुम्हारे कितने लोग हैं जो मज़दूरी करते हैं। और तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी बात मानकर इन सबको छुट्टी दे दूँ?"

6 उसी दिन फिरौन ने इसराएलियों पर ठहराए गए जल्लादों और उनके सहायक अधिकारियों* को यह हुक्म दिया: 7 "तुम अब से लोगों को ईंटें बनाने के लिए पुआल मत देना।[1] उनसे कहो कि वे खुद जाकर पुआल इकट्ठा करें। 8 मगर उनसे हर दिन उतनी ही ईंटें बनवाना जितनी वे अब तक बनाते आए हैं। उसमें कोई कटौती मत करना। वे कामचोर हो गए हैं!* इसीलिए कह रहे हैं, 'हम अपने परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाना चाहते हैं, हमें जाने दे!' 9 उनसे और भी ज़्यादा मज़दूरी कराओ, काम में इतना उलझा दो कि झूठी बातों पर ध्यान न दे सकें।"

10 तब वे जल्लाद[2] और उनके सहायक अधिकारी लोगों के पास गए और उनसे कहने लगे, "सुनो, फिरौन का यह आदेश है, 'अब से मैं तुम लोगों को पुआल नहीं दूँगा। 11 तुम जाओ, जहाँ कहीं तुम्हें पुआल मिले खुद इकट्ठा करो। मगर तुम्हारे काम में कोई कटौती नहीं होगी।'" 12 तब लोग पूरे मिस्र में यहाँ-वहाँ जाकर पुआल के लिए घास-फूस इकट्ठा करने लगे। 13 और जल्लाद यह कहकर उनके पीछे पड़ जाते थे, "तुम्हें हर दिन उतनी ही ईंटें बनानी हैं जितनी तुम उस वक्त बनाते थे जब तुम्हें पुआल दिया जाता था।" 14 फिरौन के जल्लादों ने उन इसराएली आदमियों को भी पीटा जिन्हें उन्होंने सहायक अधिकारी ठहराया था[3] और उनसे पूछा, "तुमने उतनी ईंटें क्यों नहीं बनायीं जितनी तुम पहले बनाते थे? कल भी नहीं बनायी थीं, आज भी नहीं बनायीं।"

15 तब इसराएलियों के सहायक अधिकारी फिरौन के पास गए और उससे शिकायत करने लगे, "तू अपने दासों के

अध्य. 4
1 निर्ग 4:3, 6, 9
2 निर्ग 3:18
3 उत 50:25
4 निर्ग 1:14, निर्ग 3:7, व्य 26:6

अध्य. 5
5 निर्ग 7:5, निर्ग 9:15, 16
6 2रा 18:28, 35
7 निर्ग 3:19
8 निर्ग 3:18
9 निर्ग 1:11

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 1:14
2 निर्ग 1:11
3 निर्ग 2:11

5:6 *ये अधिकारी, इसराएलियों में से ही चुने गए थे। **5:8** *या "आराम कर रहे हैं।"

साथ ऐसा सलूक क्यों कर रहा है?
16 तेरे लोग हमें बिलकुल पुआल नहीं
दे रहे, फिर भी हमसे माँग करते हैं,
‘ईंटें बनाओ! ईंटें बनाओ!’ गलती तेरे
लोगों की है और पीटा हमें जा रहा है।”
17 मगर फिरौन ने उनसे कहा, “तुम
लोग कामचोर हो, कामचोर!*[1] इसी-
लिए कहते हो, ‘हम यहोवा के लिए बलि-
दान चढ़ाना चाहते हैं, हमें जाने दे!’[2]
18 हाँ-हाँ, जाओ ज़रूर जाओ, मगर
सीधे अपने काम पर! तुम्हें कोई पुआल
नहीं दिया जाएगा, फिर भी तुम्हें पहले
जितनी ईंटें ही बनानी होंगी।”

19 अधिकारियों ने देखा कि फिरौन के
इस आदेश की वजह से कि उन्हें हर
दिन पहले जितनी ईंटें ही बनानी होंगी,
उनकी तकलीफ अब और बढ़ गयी है।
20 जब वे फिरौन के दरबार से बाहर
आए तो उन्होंने देखा कि मूसा और हारून
उनसे मिलने के लिए वहाँ इंतज़ार कर रहे
हैं। **21** उन्हें देखते ही अधिकारियों ने
कहा, “तुम दोनों की वजह से फिरौन और
उसके सेवक हमसे नफरत करने लगे हैं,
तुमने तो उनके हाथ में तलवार दे दी है कि
वे हमें मार डालें। यहोवा तुम्हें देखे और
तुम्हारा न्याय करे।”[3] **22** तब मूसा ने
यहोवा से फरियाद की, “हे यहोवा, तू क्यों
इन लोगों को इतने दुख देता है? तूने क्यों
मुझे यहाँ भेजा? **23** जब से मैं फिरौन के
सामने गया और मैंने तेरे नाम से बात
की,[4] तब से वह इन लोगों पर और भी
ज़ुल्म ढा रहा है[5] और तू अपने लोगों को
छुड़ाने के लिए कुछ भी नहीं कर रहा।”[6]

6 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “अब तू
देखना मैं फिरौन का क्या करता हूँ।[7]
मेरा शक्तिशाली हाथ उसे ऐसा मजबूर
करेगा कि वह मेरे लोगों को भेज देगा,
यहाँ तक कि उन्हें अपने देश से भगा
देगा।”[1]

2 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा, “मैं
यहोवा हूँ। **3** मैं अब्राहम, इसहाक और
याकूब के सामने प्रकट होता था और मैंने
उन पर ज़ाहिर किया कि मैं सर्वशक्तिमान
परमेश्वर हूँ।[2] मगर अपने नाम यहोवा[3]
से मैंने खुद को उन पर ज़ाहिर नहीं
किया था।[4] **4** और मैंने उनके साथ यह
करार भी किया था कि मैं उन्हें कनान देश
दूँगा, जहाँ उन्होंने परदेसियों की ज़िंदगी
गुज़ारी थी।[5] **5** मुझे वह करार याद है[6]
और मैंने इसराएलियों का रोना-बिलख-
ना सुना है जिनसे मिस्री गुलामी करवा
रहे हैं।

6 इसलिए तू इसराएलियों से मेरी यह
बात कहना, ‘मैं यहोवा हूँ, मैं तुम लोगों
को मिस्रियों के बोझ से छुटकारा दिलाऊँ-
गा, उनकी गुलामी से आज़ाद कर दूँगा।[7]
मैं अपना हाथ बढ़ाकर* तुम्हें छुड़ा
लूँगा और उसे कड़ी-से-कड़ी सज़ा दूँगा।[8]
7 मैं तुम्हें अपना लूँगा जिससे कि तुम मेरे
अपने लोग बन जाओगे और मैं तुम्हारा
परमेश्वर होऊँगा।[9] और तुम बेशक जान
लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ
जो तुम्हें मिस्र के बोझ से छुड़ाकर
बाहर ला रहा है। **8** मैं तुम्हें उस देश
में ले जाऊँगा, जिसके बारे में मैंने अब्रा-
हम, इसहाक और याकूब से शपथ खाकर
वादा किया था* कि मैं यह देश उन्हें
दूँगा। और वह देश तुम्हारी जागीर
होगा।[10] मैं यहोवा हूँ।’”[11]

9 बाद में मूसा ने परमेश्वर का
यह संदेश इसराएलियों को दिया। मगर
उन्होंने मूसा की बात मानने से इनकार

5:17 * या “आराम कर रहे हो, आराम!”

6:6 * या “अपने शक्तिशाली हाथ से।”
6:8 * शा., “मैंने हाथ उठाकर अब्राहम, इसहाक और याकूब से कहा था।”

अध्य. 5
1 निर्ग 5:7, 8
2 निर्ग 5:3
3 निर्ग 6:9
4 निर्ग 5:1
5 निर्ग 5:6, 9
6 निर्ग 3:8

अध्य. 6
7 निर्ग 14:13

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 9:3, निर्ग 11:1, निर्ग 12:29, 31
2 उत 17:1, उत 35:10, 11
3 भज 83:18, लूक 11:2, यूह 12:28, प्रेष 15:14, प्रक 15:3
4 उत 12:8, उत 28:16, यिर्म 32:20
5 उत 15:18, उत 28:4
6 उत 17:1, 7, निर्ग 2:24
7 व्य 4:20
8 व्य 26:8, 1इत 17:21, प्रेष 13:17
9 निर्ग 29:45, व्य 7:6, 2शम 7:24, भज 33:12
10 उत 15:18, उत 26:3, उत 35:12, निर्ग 32:13
11 निर्ग 20:2, यश 42:8

कर दिया, क्योंकि वे निराश हो गए थे और उनसे सख्ती से गुलामी करायी जा रही थी।[1]

10 इसके बाद यहोवा ने मूसा से कहा, **11** “तू मिस्र के राजा फिरौन के पास जा और उससे कह कि वह इसराएलियों को मिस्र से भेज दे।” **12** मगर मूसा ने यहोवा से कहा, “जब इसराएलियों ने मेरी बात नहीं सुनी[2] तो फिरौन कहाँ सुनेगा? मैं तो ठीक से बोल भी नहीं सकता।”[3] **13** मगर यहोवा ने एक बार फिर मूसा और हारून से कहा कि वे इसराएलियों को और मिस्र के राजा फिरौन को उसकी आज्ञाएँ सुनाएँ ताकि इसराएलियों को मिस्र से बाहर निकाल लाएँ।

14 अलग-अलग गोत्रों के घरानों के मुखियाओं के नाम ये हैं: इसराएल के पहलौठे[4] रूबेन के बेटे हानोक, पल्लू, हेसरोन और करमी।[5] इन्हीं से रूबेन के वंशजों के कुल चले।

15 शिमोन के बेटे थे यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर और शौल जो एक कनानी औरत से पैदा हुआ था।[6] इन्हीं से शिमोन के वंशजों के कुल चले।

16 लेवी[7] के बेटों के नाम हैं गेरशोन, कहात और मरारी,[8] जिनसे उनके अपने-अपने कुल निकले। लेवी 137 साल जीया था।

17 गेरशोन के बेटे थे लिबनी और शिमी जिनसे उनके अपने-अपने कुल निकले।[9]

18 कहात के बेटे थे अमराम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल।[10] कहात 133 साल जीया था।

19 मरारी के बेटे थे महली और मूशी।

ये सभी लेवी के वंशज थे जिनसे उनके अपने-अपने कुल चले।[11]

20 अमराम ने अपने पिता की बहन योकेबेद से शादी की थी।[1] योकेबेद से उसे हारून और मूसा पैदा हुए।[2] अमराम 137 साल जीया था।

21 यिसहार के बेटे थे कोरह,[3] नेपेग और जिक्री।

22 उज्जीएल के बेटे थे मीशाएल, एलसापान[4] और सित्री।

23 हारून ने अम्मीनादाब की बेटी एलीशेबा से शादी की जो नहशोन[5] की बहन थी। एलीशेबा से हारून के ये बेटे हुए: नादाब, अबीहू, एलिआज़र और ईतामार।[6]

24 कोरह के बेटे थे अस्सीर, एलकाना और अबीआसाप।[7] इनसे कोरह के वंशजों के कुल चले।[8]

25 हारून के बेटे एलिआज़र[9] ने पूतीएल की एक बेटी से शादी की, जिससे उसका बेटा फिनेहास[10] पैदा हुआ।

ये सभी लेवियों के अलग-अलग कुलों के घरानों के मुखिया हैं।[11]

26 हारून और मूसा की वंशावली यही है। यहोवा ने उन दोनों से कहा, “इसराएलियों के अलग-अलग दल बनाकर* उन्हें मिस्र देश से बाहर ले आओ।”[12] **27** उन दोनों ने ही जाकर मिस्र के राजा फिरौन से बात की ताकि वे इसराएलियों को मिस्र से बाहर ले जा सकें।[13]

28 यहोवा ने जिस दिन मिस्र देश में मूसा से बात की, **29** उस दिन यहोवा ने मूसा से कहा, “मैं यहोवा हूँ। मैं तुझे जो-जो बता रहा हूँ वह सब तू मिस्र के राजा फिरौन से कहना।” **30** तब मूसा ने यहोवा से कहा, “फिरौन मुझ जैसे आदमी

6:26 *शा., “को उनके सेना-दलों के मुताबिक।”

अध्य. 6
1 निर्ग 5:21
2 निर्ग 5:21, निर्ग 6:9
3 निर्ग 4:10, प्रेष 7:22
4 उत 49:3
5 उत 46:9
6 1इत 4:24
7 उत 29:34
8 उत 46:11, गि 26:57
9 गि 3:18
10 गि 3:19
11 गि 3:20

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 2:1, गि 26:59
2 1इत 23:13
3 गि 16:1, 32, गि 26:10
4 लैव 10:4, गि 3:30
5 रूत 4:19-21, मत 1:4
6 गि 3:2
7 गि 26:10, 11
8 गि 26:58, 1इत 9:19
9 गि 3:32
10 गि 25:7, गि 31:6, यह 22:31, न्या 20:28
11 निर्ग 6:19
12 निर्ग 7:2, 4, निर्ग 12:41, प्रेष 7:35
13 भज 77:20

की बात कहाँ मानेगा? मैं तो ठीक से बोल
भी नहीं सकता।”[1]

7 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “देख,
मैं तुझे फिरौन के लिए पर-
मेश्‍वर जैसा बनाता हूँ। और तेरा अपना
भाई हारून तेरा भविष्यवक्‍ता ठहरेगा।[2]
2 तू अपने भाई हारून को वे सारी
बातें बताना जिनकी मैं तुझे आज्ञा दूँगा
और हारून फिरौन से बात करेगा।
और फिरौन इसराएलियों को अपने देश
से भेज देगा। **3** मैं फिरौन के दिल
को कठोर होने दूँगा[3] और मिस्र में
बहुत सारे चिन्ह और चमत्कार दिखाऊँ-
गा।[4] **4** फिर भी फिरौन तुम्हारी बात
नहीं मानेगा, इसलिए मैं अपना हाथ
मिस्र पर उठाऊँगा और उसे कड़ी-से-
कड़ी सज़ा दूँगा और अपनी बड़ी भीड़*
को, अपने लोगों, इसराएलियों को मिस्र
से बाहर निकाल लाऊँगा।[5] **5** जब मैं
मिस्र के खिलाफ अपना हाथ बढ़ाऊँ-
गा और उनके बीच से इसराएलियों को
निकाल लाऊँगा तो मिस्री लोग हर हाल
में जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”[6] **6** तब
मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा के
मुताबिक काम किया। उन्होंने ठीक वैसा
ही किया। **7** मूसा 80 साल का था
और हारून 83 साल का जब वे दोनों
फिरौन के सामने गए।[7]

8 इसके बाद यहोवा ने मूसा और
हारून से कहा, **9** “अगर फिरौन तुमसे
कहे, ‘मुझे कोई चमत्कार करके दिखाओ’
तो तू हारून से कहना, ‘अपनी छड़ी
फिरौन के सामने ज़मीन पर फेंक।’ तब
वह छड़ी एक बड़ा साँप बन जाएगी।”[8]
10 तब मूसा और हारून फिरौन के
सामने गए और उन्होंने ठीक वैसा ही
किया जैसा यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी
थी। हारून ने अपनी छड़ी फिरौन और
उसके सेवकों के सामने ज़मीन पर फेंकी
और वह छड़ी एक बड़ा साँप बन गयी।
11 तब फिरौन ने मिस्र के ज्ञानियों और
टोना-टोटका करनेवालों को बुलवाया
और उन जादू-टोना करनेवाले पुजारियों[1]
ने भी अपनी जादूगरी* से वैसा ही
चमत्कार कर दिखाया।[2] **12** उन सबने
अपनी-अपनी छड़ी ज़मीन पर फेंकी और
उनकी छड़ियाँ बड़े-बड़े साँप बन गयीं।
मगर हारून की छड़ी ने उनकी छड़ियों को
निगल लिया। **13** यह देखने के बाद
भी फिरौन का दिल कठोर बना रहा।[3]
उसने मूसा और हारून की बात नहीं
मानी, ठीक जैसे यहोवा ने कहा था।

14 तब यहोवा ने मूसा से कहा,
“फिरौन के दिल पर कोई असर नहीं हुआ
है।[4] उसने मेरे लोगों को छोड़ने से इनकार
कर दिया है। **15** इसलिए तू एक काम
कर, कल सुबह फिरौन के पास जा। वह
नील नदी के किनारे आएगा और तू उससे
मिलने के लिए पहले से वहाँ खड़ा रह।
तू अपने हाथ में वह छड़ी ले जा जो साँप
बन गयी थी।[5] **16** तू फिरौन से कहना,
‘इब्रियों के परमेश्‍वर यहोवा ने मुझे तेरे
पास भेजा[6] और तुझसे कहा था, “मेरे
लोगों को जाने दे ताकि वे वीराने में जाकर
मेरी सेवा करें,” मगर तूने अभी तक
उसकी बात नहीं मानी। **17** इसलिए
अब यहोवा तुझसे कहता है, “मैं एक ऐसा
काम करनेवाला हूँ जिससे तू जान जाएगा
कि मैं यहोवा हूँ।[7] मेरे हाथ में जो छड़ी है,
उससे मैं नील नदी को मारूँगा और उसका
पानी खून में बदल जाएगा। **18** नील
नदी की सारी मछलियाँ मर जाएँगी और
नदी से बदबू आने लगेगी और मिस्री लोग
नदी का पानी नहीं पी सकेंगे।”’”

7:4 *शा., “अपनी सेनाओं।”

7:11 *या “जादुई कला।”

अध्य. 6
1 निर्ग 4:10, निर्ग 6:12

अध्य. 7
2 निर्ग 4:14-16, निर्ग 4:30
3 निर्ग 4:21, निर्ग 7:13, 22, निर्ग 8:15, 19, निर्ग 9:12, 35, निर्ग 10:20, 27, निर्ग 11:10, निर्ग 14:8, रोम 9:17, 18
4 निर्ग 3:19, 20, भज 105:26, 27, प्रेष 7:36
5 निर्ग 12:12, 51
6 निर्ग 7:17, निर्ग 8:9, 10, निर्ग 8:22, निर्ग 9:29, निर्ग 14:4
7 व्य 34:7, प्रेष 7:22, 23
8 निर्ग 4:2, 3

दूसरा कॉल.
1 उत 41:8, 2ती 3:8
2 निर्ग 7:20, 22, निर्ग 8:7, 18, निर्ग 9:11
3 निर्ग 7:3
4 निर्ग 10:1
5 निर्ग 4:2, 3
6 निर्ग 3:18
7 निर्ग 7:5, निर्ग 8:9, 10, निर्ग 8:22, निर्ग 9:29, निर्ग 14:4

19 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “हारून से कहना, ‘तू अपनी छड़ी ले और मिस्र के नदी-नालों, नहरों,* झीलों, दल-दलों[1] और सभी तालाबों पर अपना हाथ बढ़ा[2] ताकि उनका सारा पानी खून में बदल जाए।’ पूरे मिस्र में हर कहीं पानी की जगह खून नज़र आएगा, यहाँ तक कि लकड़ी और पत्थर के बरतनों में भी।” 20 तब मूसा और हारून ने बिना देर किए यहोवा की आज्ञा के मुताबिक काम किया। हारून ने नील नदी के पास फिरौन और उसके सेवकों के देखते अपनी छड़ी उठायी और पानी पर मारी। तब नदी का सारा पानी खून में बदल गया।[3] 21 नदी की सारी मछलियाँ मर गयीं[4] और नदी से बदबू आने लगी। अब मिस्रियों के लिए नील नदी का पानी पीना नामुमकिन हो गया।[5] पूरे मिस्र में पानी की जगह खून-ही-खून था।

22 मिस्र के जादू-टोना करनेवाले पुजारियों ने भी अपनी जादुई कला से वैसा ही चमत्कार किया।[6] इसलिए फिरौन का दिल कठोर ही बना रहा। उसने मूसा और हारून की बात नहीं मानी, ठीक जैसे यहोवा ने कहा था।[7] 23 इसके बाद फिरौन अपने घर लौट गया। इस कहर का भी उसके दिल पर कुछ असर नहीं हुआ। 24 अब मिस्र के सब लोग पानी की तलाश में नील नदी के आस-पास खुदाई करने लगे, क्योंकि वे उस नदी का पानी नहीं पी सकते थे। 25 यहोवा ने जब नील नदी को मारा तो उसके बाद पूरे सात दिन तक यही हाल रहा।

8 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जा और उससे कह, ‘यहोवा तुझसे कहता है, “मेरे लोगों को जाने दे ताकि वे मेरी सेवा करें।[8] 2 अगर तू इसी तरह इनकार करता रहा, तो मैं तेरे देश के पूरे इलाके पर मेंढकों का कहर ढा दूँगा।[1] 3 नील नदी मेंढकों से भर जाएगी और वे नदी से निकलकर तेरे घर में घुस आएँगे। तेरे सोने के कमरे में, तेरे बिस्तर पर और तेरे सेवकों के घरों में, तेरे लोगों पर, तेरे तंदूरों में और आटा गूँधने के बरतनों* में, जहाँ देखो वहाँ मेंढक-ही-मेंढक होंगे।[2] 4 वे तुझ पर, तेरे लोगों पर और तेरे सभी सेवकों पर चढ़ आएँगे।”’”

5 बाद में यहोवा ने मूसा से कहा, “हारून से कह, ‘तू अपनी छड़ी ले और मिस्र की नदियों, नील नदी की नहरों और दलदलों पर अपना हाथ बढ़ा और मिस्र देश में मेंढक ले आ।’” 6 तब हारून ने मिस्र के नदी-नालों पर अपना हाथ बढ़ाया। पानी में से मेंढक निकलने लगे और देखते-ही-देखते पूरे मिस्र में फैल गए। 7 फिर मिस्र के जादू-टोना करनेवाले पुजारियों ने भी अपनी जादुई कला से ऐसा चमत्कार किया, वे मिस्र देश में मेंढक ले आए।[3] 8 तब फिरौन ने मूसा और हारून को बुलवाया और उनसे कहा, “यहोवा से फरियाद करो कि वह मेंढकों को मेरे और मेरे लोगों के बीच से दूर कर दे।[4] मैं तुम्हारे लोगों को भेजने के लिए तैयार हूँ ताकि वे यहोवा के लिए बलिदान चढ़ा सकें।” 9 मूसा ने फिरौन से कहा, “ठीक है, तू ही बता, मैं कब यह फरियाद करूँ कि मेंढक तुझसे, तेरे सेवकों और लोगों से और तेरे घरों से दूर कर दिए जाएँ। सिर्फ नील नदी में मेंढक रह जाएँगे।” 10 फिरौन ने कहा, “तू कल फरियाद करना।” मूसा ने कहा, “तूने जैसा कहा है वैसा ही होगा ताकि तू जान

अध्य. 7
1 निर्ग 8:5
2 निर्ग 9:22; निर्ग 10:12; निर्ग 14:21
3 भज 78:44
4 भज 105:29
5 निर्ग 7:18, 24
6 निर्ग 7:11, 12; निर्ग 8:7, 18; निर्ग 9:11; 2ती 3:8
7 निर्ग 3:19

अध्य. 8
8 निर्ग 3:12

दूसरा कॉल.
1 भज 78:45
2 भज 105:30
3 निर्ग 7:11, 12; निर्ग 7:20, 22; निर्ग 8:17, 18; निर्ग 9:11; 2ती 3:8
4 निर्ग 10:16-19

7:19 *यानी नील नदी से निकली नहरें।

8:3 *या “कटोरों।”

ले कि हमारे परमेश्‍वर यहोवा जैसा कोई परमेश्‍वर नहीं।[1] **11** जितने भी मेंढक हैं, वे तुझसे, तेरे घरों और तेरे सेवकों और लोगों से दूर कर दिए जाएँगे। सिर्फ नील नदी में मेंढक रह जाएँगे।"[2]

12 तब मूसा और हारून फिरौन के सामने से चले गए। फिर मूसा ने यहोवा से फरियाद की कि वह मेंढकों का कहर फिरौन से दूर कर दे।[3] **13** यहोवा ने मूसा की यह फरियाद सुनी, इसलिए लोगों के घरों, आँगनों और मैदानों में जहाँ-जहाँ मेंढक थे वे सब मरने लगे। **14** लोगों ने मरे हुए मेंढकों को इकट्ठा किया जिससे जगह-जगह मेंढकों का ढेर लग गया और पूरे देश में बदबू फैल गयी। **15** अब जैसे ही फिरौन ने देखा कि मुसीबत टल गयी है, उसने अपना दिल कठोर कर लिया।[4] उसने मूसा और हारून की बात मानने से इनकार कर दिया, ठीक जैसे यहोवा ने कहा था।

16 इसलिए यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून से कह, 'अपना हाथ बढ़ाकर छड़ी ज़मीन की धूल पर मार, तब धूल मच्छरों* में बदल जाएगी और पूरा मिस्र मच्छरों से भर जाएगा।'" **17** मूसा और हारून ने ऐसा ही किया। हारून ने अपनी छड़ी हाथ में ली और हाथ बढ़ाकर ज़मीन की धूल पर मारी। तब मिस्र की ज़मीन की सारी धूल मच्छरों में बदल गयी[5] और वे इंसानों और जानवरों को काटने लगे। **18** जादू-टोना करनेवाले पुजारियों ने भी अपनी जादुई कला से मच्छर लाने की कोशिश की[6] मगर वे नाकाम रहे। इंसानों और जानवरों पर मच्छरों का कहर बना रहा। **19** तब जादू-टोना करनेवाले पुजारियों ने फिरौन से कहा, "यह ज़रूर परमेश्‍वर की शक्‍ति* से हुआ है!"[1] मगर फिरौन का दिल कठोर ही बना रहा। उसने मूसा और हारून की बात मानने से इनकार कर दिया, ठीक जैसे यहोवा ने कहा था।

20 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "तू कल सुबह तड़के उठकर फिरौन के सामने जा। वह नदी के पास आनेवाला है। तू उससे कहना, 'यहोवा तुझसे कहता है, "मेरे लोगों को भेज दे ताकि वे मेरी सेवा करें। **21** अगर तू नहीं भेजेगा तो मैं तुझ पर, तेरे सेवकों और लोगों पर और तेरे घरों में खून चूसनेवाली मक्खियाँ भेजूँगा। और मिस्रियों के घरों में, यहाँ तक कि उस ज़मीन पर भी, जहाँ वे* कदम रखेंगे, मक्खियाँ छा जाएँगी। **22** मगर उस दिन मैं गोशेन को पूरे मिस्र देश में अलग दिखाऊँगा, जहाँ मेरे लोग रहते हैं। वहाँ एक भी खून चूसनेवाली मक्खी नहीं होगी।[2] तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा इस देश में हूँ।[3] **23** मैं अपने लोगों और तेरे लोगों के बीच फर्क साफ दिखाऊँगा। यह चमत्कार कल होगा।"'"

24 और यहोवा ने ऐसा ही किया। मिस्र पर खून चूसनेवाली मक्खियों का हमला शुरू हो गया। फिरौन और उसके सेवकों के घरों में, यहाँ तक कि पूरे मिस्र में मक्खियों के झुंड-के-झुंड टूट पड़े।[4] मक्खियों ने पूरे देश में हाहाकार मचा दिया।[5] **25** आखिरकार फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाकर कहा, "तुम इसी देश में कहीं जाकर अपने परमेश्‍वर के लिए बलिदान चढ़ा सकते हो।" **26** मगर मूसा ने कहा, "हम ऐसा नहीं

8:16 *या "कुटकियों।" ये मच्छर जैसे कीड़े हैं जो इंसानों और जानवरों को काटते हैं।

8:19 *शा., "उँगली।" **8:21** *यानी मिस्री।

अध्य. 8
1 निर्ग 9:14, निर्ग 15:11, भज 83:18, भज 86:8, यश 46:9, यिर्म 10:6, 7, रोम 9:17
2 निर्ग 8:3
3 निर्ग 8:30, 31, निर्ग 9:33
4 निर्ग 4:21, निर्ग 7:3
5 भज 105:31
6 निर्ग 7:11, 12, निर्ग 7:20, 22, निर्ग 8:7, निर्ग 9:11

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 31:18, लूक 11:20
2 निर्ग 9:4, 26, निर्ग 10:23, निर्ग 12:13
3 1शम 17:46, 1रा 20:28, 2रा 19:17, 19
4 निर्ग 8:3
5 भज 78:45, भज 105:31

कर सकते क्योंकि जब मिस्री देखेंगे कि
हम अपने परमेश्‍वर यहोवा को बलिदान
में क्या चढ़ा रहे हैं तो वे भड़क जाएँगे।[1]
अगर हम उनके देखते ऐसे बलिदान
चढ़ाएँगे तो क्या वे पत्थरों से हमें मार नहीं
डालेंगे? 27 इसलिए हम तीन दिन का
सफर तय करके वीराने में जाना चाहते हैं
और जैसे हमारे परमेश्‍वर यहोवा ने हमसे
कहा है, हम वहाँ उसके लिए बलिदान
चढ़ाएँगे।"[2]

28 अब फिरौन ने कहा, "अगर तुम
लोग वीराने में ही जाकर अपने परमेश्‍वर
यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाना चाहते
हो तो ठीक है, मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ।
बस तुम ज़्यादा दूर मत जाना और मेरी
खातिर फरियाद करना कि यह कहर
टल जाए।"[3] 29 मूसा ने कहा, "मैं
यहोवा से ज़रूर फरियाद करूँगा। अब
मैं जा रहा हूँ। कल फिरौन और उसके
सेवकों और लोगों को मक्खियों से राहत
मिल जाएगी। मगर मुझे फिरौन से बस
इतना कहना है कि वह हमसे और
धोखा* न करे और हमारे लोगों को भेज
दे ताकि वे यहोवा के लिए बलिदान चढ़ा
सकें।"[4] 30 तब मूसा फिरौन के पास
से चला गया और उसने यहोवा से फरि-
याद की।[5] 31 यहोवा ने मूसा की फरि-
याद सुनी। तब फिरौन और उसके सेवकों
और लोगों के पास से खून चूसनेवाली
मक्खियाँ दूर हो गयीं। एक भी मक्खी
नहीं रही। 32 मगर फिरौन ने एक बार
फिर अपना दिल कठोर कर लिया और
इसराएलियों को नहीं भेजा।

9 इसलिए यहोवा ने मूसा से कहा,
"फिरौन के पास जा और उससे कह,
'इब्रियों का परमेश्‍वर यहोवा तुझसे कहता
है, "मेरे लोगों को जाने दे ताकि वे मेरी
सेवा करें।[1] 2 अगर तू उन्हें भेजने से
इनकार कर देगा और उन्हें रोके रहेगा,
3 तो देख! मुझ यहोवा का हाथ[2] तेरे
सभी जानवरों के खिलाफ उठेगा। मैं तेरे
घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय-बैलों और भेड़-
बकरियों को एक महामारी से मारूँगा।[3]
4 मैं यहोवा इसराएलियों के जानवरों
और मिस्रियों के जानवरों के बीच फर्क
साफ दिखाऊँगा। इसराएलियों का एक
भी जानवर नहीं मरेगा।"'"[4] 5 यहोवा
ने यह महामारी लाने का एक समय भी
तय किया और कहा, "मैं यहोवा कल के
दिन मिस्र पर यह कहर लाऊँगा।"

6 यहोवा ने अगले दिन ऐसा ही
किया। मिस्र के हर तरह के जानवर
मरने लगे।[5] मगर इसराएल का एक
भी जानवर नहीं मरा। 7 जब फिरौन
ने इस बारे में जाँच-पड़ताल करवायी
तो पता चला कि इसराएलियों का एक
भी जानवर नहीं मरा! फिर भी उसके
दिल पर कोई असर नहीं हुआ और उसने
इसराएलियों को नहीं जाने दिया।[6]

8 तब यहोवा ने मूसा और हारून से
कहा, "तुम एक भट्ठे से राख लेना और
अपनी दोनों मुट्ठियाँ भर लेना। फिर मूसा
फिरौन के देखते वह राख ऊपर हवा में
उड़ाए। 9 तब वह राख बारीक धूल में
बदलकर पूरे मिस्र में फैल जाएगी और
इससे मिस्र के सभी इंसानों और जानवरों
के शरीर पर फोड़े निकल आएँगे और
उनसे मवाद बहने लगेगा।"

10 तब मूसा और हारून ने एक भट्ठे
से राख ली और वे फिरौन के सामने
गए। फिर मूसा ने राख हवा में उड़ायी।
इससे इंसानों और जानवरों के शरीर
पर फोड़े निकल आए और उनसे मवाद
बहने लगा। 11 सभी मिस्रियों पर, यहाँ
तक कि जादू-टोना करनेवाले पुजारियों

अध्य. 8
1 उत 46:33, 34; निर्ग 10:25, 26
2 निर्ग 3:18
3 निर्ग 8:8; निर्ग 9:28
4 निर्ग 8:15
5 निर्ग 9:33

दूसरा कॉल.

अध्य. 9
1 निर्ग 5:1; निर्ग 8:1
2 निर्ग 7:4
3 निर्ग 9:15
4 निर्ग 8:22; निर्ग 10:23; निर्ग 11:7; निर्ग 12:13
5 भज 78:48
6 निर्ग 4:21

8:29 * या "खिलवाड़।"

के शरीर पर भी फोड़े निकल आए, इस-
लिए वे पुजारी मूसा के सामने खड़े न
हो सके।[1] **12** मगर इस कहर के बाव-
जूद फिरौन का दिल कठोर बना रहा और
यहोवा ने उसे कठोर ही रहने दिया।
फिरौन ने मूसा और हारून की बात
नहीं मानी, ठीक जैसे यहोवा ने मूसा से
कहा था।[2]

13 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "तू
कल सुबह तड़के उठकर फिरौन के सामने
जा और उससे कह, 'इब्रियों का पर-
मेश्वर यहोवा तुझसे कहता है, "मेरे
लोगों को भेज दे ताकि वे मेरी सेवा
करें। **14** अगर तू ऐसा नहीं करेगा,
तो मैं सारे कहर लाकर तुझ पर और तेरे
सेवकों और लोगों पर ऐसा वार करूँगा
कि तू जान जाएगा कि पूरे जहान में
मेरे जैसा परमेश्वर कोई नहीं।[3] **15** मैं
चाहता तो अपना हाथ बढ़ाकर तुझ पर
और तेरे लोगों पर कोई महामारी लाता
और अब तक धरती से तेरा नामो-
निशान मिटा चुका होता। **16** मगर मैंने
तुझे इसलिए ज़िंदा रहने दिया है ताकि
तुझे अपनी शक्ति दिखा सकूँ और पूरी
धरती पर अपने नाम का ऐलान करा
सकूँ।[4] **17** क्या तू अब भी मगरूर बना
हुआ है और मेरे लोगों को न छोड़ने की
ज़िद पर अड़ा है? **18** अब देखना मैं
क्या करता हूँ। मैं कल इसी समय मिस्र
पर ऐसे भारी-भारी ओले बरसाऊँगा,
जैसे आज तक इस देश में कभी नहीं
बरसे। **19** इसलिए अब तू अपने आद-
मियों से बोल कि वे जाकर तेरे सभी जान-
वरों को और तेरा जो कुछ बाहर है वह
सब अंदर ले आएँ। हर वह इंसान और
जानवर जो घर के बाहर होगा और अंदर
नहीं लाया जाएगा, वह ओलों के गिरने से
मर जाएगा।"'"

अध्य. 9
1 निर्ग 7:11, 12
निर्ग 7:20, 22
निर्ग 8:7, 18
2ती 3:8
2 निर्ग 4:21
निर्ग 8:31, 32
निर्ग 14:17
3 निर्ग 8:9, 10
2शम 7:22
भज 83:18
4 निर्ग 14:17
यह 2:9, 10
1इत 16:24
नीत 16:4
यश 63:12
रोम 9:17

दूसरा कॉल.
1 भज 78:47
भज 105:32
2 निर्ग 10:4, 5
3 निर्ग 9:18
4 भज 105:33
5 निर्ग 8:22
निर्ग 9:3, 4
निर्ग 10:23
निर्ग 11:7
निर्ग 12:13

20 फिरौन के सेवकों में से जिस-
जिसने यहोवा की बात सुनी और उसका
डर माना, वे फटाफट जाकर अपने दासों
और जानवरों को घरों के अंदर ले आए।
21 मगर जिन्होंने यहोवा की बात नहीं
मानी, उन्होंने अपने दासों और जानवरों
को बाहर ही रहने दिया।

22 अब यहोवा ने मूसा से कहा,
"अपना हाथ आसमान की तरफ उठा
ताकि पूरे मिस्र पर ओले बरसें,[1] मिस्र
के सभी इंसानों, जानवरों और पेड़-
पौधों पर ओले गिरें।"[2] **23** तब मूसा
ने अपनी छड़ी ऊपर आसमान की तरफ
उठायी और यहोवा ने बादल के तेज़ गर-
जन के साथ ज़मीन पर ओले और
आग* बरसायी। यहोवा मिस्र पर लगा-
तार ओले बरसाता रहा। **24** ओलों की
जमकर बारिश हुई और उनके साथ-साथ
आग भी गिरती रही। जब से मिस्र देश
बसा था, तब से मिस्र में ओलों की ऐसी
बारिश नहीं हुई थी।[3] **25** ओलों ने पूरे
मिस्र में तबाही मचा दी। जितने भी इंसान
और जानवर बाहर थे सब मारे गए, पेड़
टूटकर गिर गए और सारे पौधे नष्ट हो
गए।[4] **26** सिर्फ गोशेन में, जहाँ इस-
राएली रहते थे, ओले नहीं पड़े।[5]

27 इसलिए फिरौन ने मूसा और
हारून को अपने पास बुलवाया और
उनसे कहा, "अब मैं मानता हूँ कि मैंने
पाप किया है। यहोवा ने जो किया वह
सही है क्योंकि मैं और मेरे लोग दोषी
हैं। **28** अब यहोवा से फरियाद करो
कि वह ओलों का गिरना और बादलों
का गरजना बंद कर दे। तब मैं तुम
लोगों को यहाँ से जाने दूँगा, तुम्हें और
नहीं रोकूँगा।" **29** मूसा ने कहा, "ठीक

9:23 *शायद यहाँ तेज़ बिजली की बात की
गयी है।

है, मैं जैसे ही शहर से बाहर कदम रखूँगा, यहोवा के सामने हाथ फैलाकर दुआ करूँगा। तब यह गरजन और ये ओले बंद हो जाएँगे ताकि तू जान ले कि सारी धरती का मालिक यहोवा है।[1] 30 मगर मुझे मालूम है कि इसके बाद भी तू और तेरे सेवक यहोवा परमेश्वर का डर नहीं माननेवाले।”

31 ओलों की वजह से मिस्र में अलसी और जौ की फसल बरबाद हो गयी क्योंकि जौ की फसल करीब-करीब पक चुकी थी और अलसी के पौधों में कलियाँ लग चुकी थीं। 32 मगर गेहूँ और कठिया गेहूँ की फसल को नुकसान नहीं हुआ क्योंकि इनकी फसल तैयार होने में अभी देर थी।* 33 मूसा फिरौन के पास से चला गया और शहर से बाहर आने के बाद उसने हाथ फैलाकर यहोवा से दुआ की। तब ओलों का गिरना, गरजन और बारिश सब बंद हो गया।[2] 34 जब फिरौन ने देखा कि बारिश, ओले और गरजन बंद हो गए हैं, तो उसने और उसके सेवकों ने फिर से पाप किया, उन्होंने अपना दिल कठोर बना लिया।[3] 35 फिरौन का दिल कठोर ही बना रहा और उसने इसराएलियों को जाने नहीं दिया। यह बिलकुल वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने मूसा से कहलवाया था।[4]

10 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तू फिरौन के सामने जा। देख, फिरौन और उसके अधिकारियों के दिल पर कोई असर नहीं हुआ है, वे अब भी ढीठ बने हुए हैं।[5] और मैंने उन्हें ढीठ ही रहने दिया है ताकि मैं फिरौन के सामने अपने चिन्ह दिखा सकूँ,[6] 2 और तुम अपने बेटों और पोतों को यह दास्तान

9:32 *या “यह देर से पकनेवाली फसल थी।”

अध्या. 9
1 निर्ग 7:5, 17
निर्ग 8:9, 10
निर्ग 8:22
निर्ग 14:4
व्य 10:14
भज 24:1
2 निर्ग 10:17-19
3 निर्ग 4:21
निर्ग 8:13, 15
4 निर्ग 7:4

अध्या. 10
5 निर्ग 4:21
निर्ग 9:34
6 निर्ग 9:15, 16
भज 78:12
रोम 9:17

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 13:3, 8
व्य 4:9
व्य 6:20-22
भज 44:1
2 निर्ग 9:17
3 निर्ग 9:31, 32
4 निर्ग 9:24

सुना सको कि मैं मिस्र पर कैसी-कैसी मुसीबतें लाया और मैंने क्या-क्या चिन्ह दिखाए।[1] इससे तुम बेशक जान जाओगे कि मैं यहोवा हूँ।”

3 इसलिए मूसा और हारून फिरौन के पास गए और उससे कहने लगे, “इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझसे कहता है, ‘तू और कब तक मेरे आगे झुकने से इनकार करता रहेगा?[2] मेरे लोगों को जाने दे ताकि वे मेरी सेवा करें। 4 अगर तू मेरे लोगों को भेजने से इनकार करता रहेगा तो मैं कल तेरे देश के सभी इलाकों में टिड्डियों का कहर लाऊँगा। 5 उनकी तादाद इतनी होगी कि ज़मीन पूरी तरह ढक जाएगी, एक चप्पा भी कहीं नज़र नहीं आएगा। और ओलों की मार से जो कुछ बच गया है उसे टिड्डियाँ खा जाएँगी। मैदान में जितने भी पेड़ हैं, उनका एक-एक पत्ता साफ कर जाएँगी।[3] 6 तेरे और तेरे सभी अधिकारियों के घर, और सभी मिस्रियों के घर टिड्डियों से भर जाएँगे। तेरे देश पर टिड्डियों का इतना बड़ा दल टूट पड़ेगा जितना तेरे पुरखों के ज़माने से लेकर आज तक किसी ने कभी न देखा होगा।’”[4] इतना कहने के बाद मूसा फिरौन के पास से चला गया।

7 तब फिरौन के अधिकारियों ने उससे कहा, “यह आदमी और कब तक हम पर मुसीबतें लाता रहेगा?* इन लोगों को जाने दे ताकि वे अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करें। क्या तू देख नहीं रहा, पूरा-का-पूरा मिस्र बरबाद हो गया है?” 8 तब मूसा और हारून को फिरौन के पास वापस लाया गया। फिरौन ने उनसे कहा, “तुम लोग जाओ अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करने। मगर यह बताओ तुममें से कौन-कौन

10:7 *शा., “हमारे लिए फंदा बना रहेगा?”

जाएगा?” 9 मूसा ने कहा, “हम यहोवा
के लिए एक त्योहार मनाने जा रहे
हैं।[1] इसलिए हमारे सभी लोग जाएँगे,
हमारे बेटे-बेटियाँ, जवान, बुज़ुर्ग, छोटे-
बड़े सब लोग। और हम अपनी भेड़ों
और गाय-बैलों को भी साथ ले जाएँगे।”[2]
10 फिरौन ने उनसे कहा, “अगर मैंने
तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को यहाँ से जाने
दिया तो इसका मतलब होगा कि यहोवा
तुम्हारे साथ है।[3] लेकिन ऐसा कुछ नहीं
होनेवाला। मैं जानता हूँ कि तुम लोगों के
इरादे सही नहीं हैं। 11 नहीं, मैं सबको
नहीं जाने दूँगा। सिर्फ तुम्हारे आदमी जा
सकते हैं, वे ही जाकर यहोवा की सेवा
करें, आखिर तुमने इसी के लिए तो इजा-
ज़त माँगी थी।” इसके बाद मूसा और
हारून को फिरौन के यहाँ से भगा दिया
गया।

12 अब यहोवा ने मूसा से कहा, “तू
अपना हाथ मिस्र पर बढ़ा ताकि पूरे देश
पर टिड्डियाँ छा जाएँ और उन सभी पेड़-
पौधों और फसलों को खा जाएँ जो ओलों
की मार से बच गयी हैं।” 13 मूसा ने
फौरन अपनी छड़ी मिस्र पर बढ़ायी और
यहोवा ने पूरब से एक हवा चलायी जो
पूरे दिन और पूरी रात उस देश में चलती
रही। सुबह होने पर पूरब की हवा के साथ
टिड्डियाँ आने लगीं। 14 उनके झुंड-के-
झुंड पूरे मिस्र पर मँडराने लगे और कोने-
कोने में छा गए।[4] टिड्डियों का यह कहर
बड़ा ही दुखदायी था।[5] टिड्डियों का इतना
बड़ा दल मिस्र में न इससे पहले कभी
देखा गया था, न ही इसके बाद कभी
देखा जाएगा। 15 देश का चप्पा-चप्पा
टिड्डियों के दल से इतना भर गया कि
चारों तरफ अँधेरा-सा छा गया। टिड्डियाँ
उन सभी पेड़-पौधों और फलों को चट
कर गयीं जो ओलों की मार से बच गए
थे। टिड्डियों ने कहीं एक पत्ता या घास का
एक तिनका तक नहीं छोड़ा।

16 यह देखकर फिरौन ने मूसा और
हारून को जल्द अपने पास बुलवाया और
उनसे कहा, “मैंने तुम्हारे और तुम्हारे पर-
मेश्वर यहोवा के खिलाफ पाप किया है।
17 बस इस बार मेरा पाप माफ कर दो
और अपने परमेश्वर यहोवा से मेरे लिए
फरियाद करो कि यह कहर मुझसे दूर
कर दे।” 18 तब वह* फिरौन के पास
से चला गया और उसने यहोवा से फरि-
याद की।[1] 19 फिर यहोवा ने हवा का
रुख बदल दिया और वह हवा पश्चिम से
बहनेवाली तेज़ हवा बनकर सारी टिड्डियों
को उड़ा ले गयी और उन्हें लाल सागर
में डुबो दिया। पूरे मिस्र में एक भी टिड्डी
नहीं बची। 20 मगर इस कहर के बाद
भी फिरौन का दिल कठोर बना रहा और
यहोवा ने उसे कठोर ही रहने दिया।[2]
फिरौन ने इसराएलियों को नहीं जाने
दिया।

21 अब यहोवा ने मूसा से कहा,
“अपना हाथ आसमान की तरफ बढ़ा
ताकि मिस्र देश पर अँधेरा छा जाए,
ऐसा घनघोर अँधेरा कि लोग उसे मह-
सूस कर सकें।” 22 मूसा ने फौरन
अपना हाथ आसमान की तरफ बढ़ाया
और तीन दिन तक पूरे मिस्र पर घुप
अँधेरा छाया रहा।[3] 23 तीन दिन तक
लोग न तो एक-दूसरे को देख पाए, न
ही कोई घर से बाहर कदम रख सका।
मगर जहाँ इसराएली रहते थे वहाँ उजाला
था।[4] 24 इसके बाद फिरौन ने मूसा को
बुलाया और उससे कहा, “तुम यहोवा की
सेवा करने जा सकते हो,[5] अपने बच्चों
को भी साथ ले जा सकते हो। मगर

10:18 *ज़ाहिर है कि यह मूसा है।

अध्य. 10

1 निर्ग 3:18; निर्ग 5:1
2 निर्ग 10:25, 26
3 निर्ग 12:31, 32
4 भज 78:46
5 निर्ग 10:5; भज 105:34, 35

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 8:30, 31
2 निर्ग 7:3; निर्ग 11:10; रोम 9:17, 18
3 भज 105:28
4 निर्ग 8:21, 22; निर्ग 9:3, 6; निर्ग 9:26; निर्ग 11:7; निर्ग 12:13
5 निर्ग 8:28; निर्ग 9:28

तुम अपनी भेड़ों और गाय-बैलों को नहीं
ले जाओगे।" 25 लेकिन मूसा ने कहा,
"तू खुद हमें बलिदानों और होम-बलियों
के लिए जानवर देगा* और हम उन्हें
अपने परमेश्वर यहोवा के लिए चढ़ाएँ-
गे।[1] 26 हम अपने जानवरों को भी
साथ ले जाएँगे, एक को* भी नहीं छोड़
सकते क्योंकि हमें अपने परमेश्वर यहोवा
की उपासना में इनमें से कुछ जानवरों की
बलि चढ़ानी है। मगर यहोवा को ठीक
कौन-से जानवर चढ़ाने हैं, यह हमें तभी
पता चलेगा जब हम वहाँ पहुँचेंगे।"
27 तब फिरौन का दिल और कठोर हो
गया और यहोवा ने उसे कठोर ही रहने
दिया। फिरौन इसराएलियों को भेजने के
लिए राज़ी नहीं हुआ।[2] 28 उसने मूसा
से कहा, "दूर हो जा मेरी नज़रों से! और
खबरदार जो तूने फिर कभी मेरे सामने
आने की जुर्रत की। जिस दिन तू मेरे
सामने आएगा, उसी दिन मर जाएगा।"
29 मूसा ने कहा, "ठीक है, मैं फिर कभी
तेरे सामने नहीं आऊँगा।"

11 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं
फिरौन और मिस्र पर एक और
कहर लानेवाला हूँ। उसके बाद वह तुम्हें
अपने देश से ज़रूर भेज देगा,[3] यहाँ तक
कि वह तुम्हें भगा देगा।[4] 2 अब तू
जाकर इसराएलियों से कह कि सभी
आदमी-औरतें अपने मिस्री पड़ोसियों से
सोने-चाँदी की चीज़ें माँगें।"[5] 3 यहोवा
ने मिस्रियों को इसराएलियों पर मेहर-
बान कर दिया। यही नहीं, फिरौन के
अधिकारी और मिस्री लोग मूसा का बहुत
सम्मान करने लगे।

4 फिर मूसा ने कहा, "यहोवा ने कहा
है, 'आज आधी रात को मैं मिस्र आने-
वाला हूँ।[1] 5 मिस्र देश का हर पहलौठा
मर जाएगा।[2] राजगद्दी पर बैठे फिरौन
के पहलौठे से लेकर चक्की* पीसने-
वाली दासी के पहलौठे तक, सब मर
जाएँगे और सब जानवरों के पहलौठे भी
मर जाएँगे।[3] 6 देश-भर में ऐसा रोना-
बिलखना होगा जैसा न पहले कभी हुआ
था, न फिर कभी होगा।[4] 7 मगर इस-
राएली और उनके जानवर सब सला-
मत रहेंगे, उन पर एक कुत्ता भी नहीं
भौंकेगा। तब तुम जान जाओगे कि
यहोवा इसराएलियों और मिस्रियों में कैसे
फर्क कर सकता है।'[5] 8 जब परमेश्वर
यह कहर लाएगा, तब तेरे सभी अधि-
कारी मेरे पास आएँगे और मेरे सामने
गिरकर मुझसे बिनती करेंगे, 'तू और
तेरे सब लोग यह देश छोड़कर चले
जाएँ।'[6] और तब मैं इस देश से निकल
जाऊँगा।" इतना कहकर मूसा तमतमाता
हुआ फिरौन के पास से चला गया।

9 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
"फिरौन तुम्हारी बात नहीं मानेगा[7]
क्योंकि मिस्र में मुझे और भी चमत्कार जो
दिखाने हैं।"[8] 10 मूसा और हारून ने
फिरौन के देखते ये सारे चमत्कार किए,[9]
मगर फिरौन का दिल कठोर बना रहा
और यहोवा ने उसे कठोर ही रहने दिया।
फिरौन ने इसराएलियों को अपने देश से
नहीं जाने दिया।[10]

12 मूसा और हारून जब मिस्र में
थे तब यहोवा ने उनसे कहा,
2 "यह महीना तुम्हारे लिए पहला महीना
होगा। तुम इसे साल का पहला महीना
मानना।[11] 3 इसराएल की पूरी मंडली
से कहना, 'इस महीने के दसवें दिन, इस-
राएल के सब घराने अपने लिए एक-
एक मेम्ना[12] लें, हर परिवार के लिए एक

अध्य. 10
1 निर्ग 3:18; निर्ग 5:3
2 निर्ग 4:21; निर्ग 14:4

अध्य. 11
3 व्य 4:34
4 निर्ग 12:31, 32
5 निर्ग 3:21, 22; निर्ग 12:35, 36; भज 105:37

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 12:29
2 निर्ग 4:22, 23; भज 78:51; भज 105:36; भज 136:10; इब्र 11:28
3 निर्ग 12:12
4 निर्ग 12:30
5 निर्ग 8:22; निर्ग 9:3, 4; निर्ग 10:23; निर्ग 12:13
6 निर्ग 12:33
7 निर्ग 3:19; निर्ग 7:4; रोम 9:17, 18
8 निर्ग 7:3
9 भज 135:9
10 निर्ग 4:21; निर्ग 9:15, 16; निर्ग 10:20

अध्य. 12
11 निर्ग 13:4; निर्ग 23:15; गि 28:16; व्य 16:1
12 यूह 1:29; 1कुर 5:7; प्रक 5:6

10:25 *या "ले जाने देगा।" **10:26** *शा., "एक खुर।"

11:5 *शा., "हाथ की चक्की।"

मेम्ना। **4** लेकिन अगर एक घराने में पूरे मेम्ने को खाने के लिए लोग कम हों, तो वह देखे कि मेम्ने को और कितने लोग खा सकते हैं और उस हिसाब से पड़ोस के किसी परिवार के साथ अपने घर में मिल-बाँटकर खाए। और मेम्ने को खाने के लिए कितने लोग होंगे उसके हिसाब से यह भी तय करे कि हर कोई मेम्ने का कितना गोश्त खाएगा। **5** तुम ऐसा मेम्ना चुनना जिसमें कोई दोष न हो।[1] वह नर हो और एक साल का हो। तुम या तो भेड़ का बच्चा ले सकते हो या बकरी का। **6** तुम इस महीने के 14वें दिन तक उसकी देखभाल करना।[2] और उसी दिन शाम के झुटपुटे के समय*[3] इसराएलियों की मंडली का हर परिवार अपना मेम्ना हलाल करे, **7** और मेम्ने का थोड़ा-सा खून ले और जिस घर में वह परिवार मेम्ने को खाएगा, उसके दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं और चौखट के ऊपरी हिस्से पर उसका खून छिड़के।[4]

8 लोग मेम्ने का माँस 14वें दिन की रात को ही खाएँ।[5] मेम्ना हलाल करने के बाद उसे आग में भून दिया जाए और उसे बिन-खमीर की रोटी[6] और कड़वे साग के साथ खाया जाए।[7] **9** जानवर को कच्चा या पानी में उबालकर मत खाना बल्कि पूरे जानवर को उसके सिर, पायों और अंदरूनी अंगों समेत आग में भूनकर खाना। **10** अगली सुबह के लिए कुछ बचाकर मत रखना, अगर कुछ बच गया तो उसे आग में जला देना।[8] **11** तुम लोग कमरबंद बाँधकर,* पैरों में जूतियाँ पहनकर और हाथ में लाठी लिए पूरी तरह तैयार होकर यह खाना खाना। और तुम जल्दी-जल्दी खाना। यह यहोवा के लिए मनाया जानेवाला फसह है। **12** उसी रात मैं मिस्र देश आऊँगा और मिस्र के हर पहलौठे को मार डालूँगा, चाहे वह इंसान का हो या जानवर का।[1] मैं मिस्र के सब देवी-देवताओं को सज़ा दूँगा।[2] मैं यहोवा हूँ। **13** जिन घरों में तुम रहोगे, उन पर लगा खून तुम्हारे लिए निशानी होगा। वह खून देखकर मैं तुम्हें छोड़ दूँगा और आगे बढ़ जाऊँगा। और मैं मिस्र देश को मारने के लिए जो कहर लानेवाला हूँ उससे तुम बच जाओगे।[3]

14 यह दिन तुम्हारे लिए यादगार बन जाएगा। तुम पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस दिन यहोवा के लिए त्योहार मनाया करना। यह नियम तुम्हें हमेशा के लिए दिया जा रहा है। **15** तुम्हें सात दिन तक बिन-खमीर की रोटी खानी होगी।[4] इस त्योहार के पहले दिन ही तुम अपने घरों से खमीरा आटा* निकाल फेंकना क्योंकि इन सात दिनों में अगर तुममें से कोई ऐसी चीज़ खाएगा जिसमें खमीर मिला हो, तो उसे इसराएल में से हमेशा के लिए नाश कर दिया जाए। **16** पहले दिन तुम एक पवित्र सभा रखना और सातवें दिन फिर से एक पवित्र सभा रखना। इन दिनों में कोई भी काम न किया जाए।[5] सिर्फ हरेक की ज़रूरत के मुताबिक खाना तैयार किया जा सकता है, इसके अलावा कोई और काम नहीं किया जा सकता।

17 तुम बिन-खमीर की रोटी का त्योहार ज़रूर मनाया करना,[6] क्योंकि इसी दिन मैं तुम लोगों की बड़ी भीड़* को

12:6 *शा., "दो शामों के बीच।" ज़ाहिर है, सूरज ढलने और अँधेरा होने के बीच का वक्त। **12:11** *शा., "अपनी कमर कसकर।"

12:15 *पुराने आटे की बची हुई लोई जो खमीरी होती है। नया आटा गूँधते वक्त उसे खमीरा बनाने के लिए ऐसी लोई मिलायी जाती थी। **12:17** *शा., "सेनाओं।"

अध्य. 12

1 लैव 22:18-20; व्य 17:1; 1पत 1:19
2 गि 28:16
3 निर्ग 12:18; लैव 23:5; व्य 16:6
4 1कुर 5:7; इब्र 11:28
5 व्य 16:6, 7
6 निर्ग 13:3; निर्ग 34:25; व्य 16:3; 1कुर 5:8
7 गि 9:11
8 लैव 7:15; लैव 22:29, 30; व्य 16:4

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 11:4, 5; निर्ग 12:29
2 गि 33:4
3 निर्ग 8:22; निर्ग 9:4, 26; निर्ग 10:23; निर्ग 11:7
4 निर्ग 23:15; लैव 23:6
5 लैव 23:8
6 लैव 23:6; लूक 22:1; 1कुर 5:8

मिस्र से निकालकर बाहर ले जानेवाला हूँ। तुम पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह दिन मनाया करना। यह नियम तुम्हें हमेशा के लिए दिया जा रहा है। **18** साल के पहले महीने के 14वें दिन की शाम से लेकर उस महीने के 21वें दिन की शाम तक तुम्हें बिन-खमीर की रोटी खानी होगी।[1] **19** इन सात दिनों के दौरान तुम्हारे घरों में खमीरा आटा बिलकुल भी न पाया जाए क्योंकि कोई भी इंसान, चाहे वह पैदाइशी इसराएली हो या परदेसी,[2] अगर ऐसी कोई चीज़ खाएगा जिसमें खमीर मिला हो, तो उसे इसराएल की मंडली में से नाश कर दिया जाएगा।[3] **20** तुम्हें ऐसी कोई भी चीज़ नहीं खानी चाहिए जिसमें खमीर मिला हो। तुम सबको अपने घरों में सिर्फ बिन-खमीर की रोटी खानी होगी।'"

21 मूसा ने फौरन इसराएल के सभी मुखियाओं को बुलाया[4] और उनसे कहा, "तुम सब जाकर अपने-अपने परिवार के लिए मेम्ने* ले आओ और उन्हें फसह की बलि के लिए हलाल करो। **22** फिर मेम्ने का खून एक बड़े कटोरे में लो और मरुए का गुच्छा उसमें डुबोकर उससे चौखट के ऊपरी हिस्से और दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं पर खून लगाओ। अगली सुबह तक तुममें से कोई भी अपने घर के दरवाज़े से बाहर कदम न रखे। **23** फिर जब यहोवा मिस्रियों पर कहर ढाने के लिए आएगा और तुम्हारे घरों की चौखट के ऊपरी हिस्से और दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं पर खून देखेगा, तो यहोवा तुम्हारे दरवाज़े को छोड़कर आगे बढ़ जाएगा और मौत के कहर* को तुम्हारे घरों में नहीं घुसने देगा।[5]

24 तुम लोग इस घटना की यादगार ज़रूर मनाया करना। यह नियम तुम्हें और तुम्हारे बेटों को हमेशा के लिए दिया जा रहा है।[1] **25** जब तुम उस देश में दाखिल होगे जो यहोवा अपने कहे मुताबिक तुम्हें देगा, तो वहाँ तुम यह त्योहार मनाया करना।[2] **26** अगर कभी तुम्हारे बेटे तुमसे पूछें, 'हम यह त्योहार क्यों मनाते हैं?'[3] **27** तो तुम उन्हें बताना, 'जब इसराएली मिस्र में थे, तब परमेश्वर ने मिस्रियों पर कहर ढाया था। मगर वह इसराएलियों के घरों को छोड़कर आगे बढ़ गया और इस तरह उसने हमारे घरों को बख्श दिया। इसीलिए हम फसह की यह बलि यहोवा के लिए चढ़ाते हैं।'"

तब इसराएलियों ने मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर दंडवत किया। **28** इसराएलियों ने जाकर वही किया जो यहोवा ने मूसा और हारून को आज्ञा दी थी।[4] उन्होंने ठीक वैसा ही किया।

29 फिर उसी दिन आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश के सभी पहलौठों को मार डाला।[5] राजगद्दी पर बैठनेवाले फिरौन के पहलौठे से लेकर जेल* में पड़े कैदी तक के पहलौठे को और सब जानवरों के पहलौठों को मार डाला।[6] **30** रात में फिरौन और उसके सभी अधिकारी और मिस्री लोग जाग उठे। मिस्रियों के यहाँ बड़ा हाहाकार मच गया क्योंकि एक भी घर ऐसा नहीं था जहाँ मौत न हुई हो।[7] **31** फिरौन ने रात में ही मूसा और हारून को बुलवाया[8] और उनसे कहा, "चले जाओ तुम यहाँ से। अपने सब इसराएलियों को लेकर निकल जाओ मेरे लोगों के बीच से। तुमने कहा था न, तुम यहोवा की सेवा

अध्य. 12
1 लैव 23:5, 6
2 गि 9:14
3 व्य 16:3; 1कुर 5:7
4 निर्ग 3:16; गि 11:16
5 इब्र 11:28

दूसरा कॉल.
1 व्य 16:3
2 यह 5:10
3 निर्ग 13:3, 8; व्य 6:6, 7
4 इब्र 11:28
5 गि 33:4; भज 78:51; भज 105:36
6 उत 15:14; निर्ग 11:4, 5; गि 3:13; भज 135:8
7 निर्ग 11:6
8 निर्ग 10:28, 29

12:21 *यानी भेड़ या बकरी के बच्चे।
12:23 *शा., "नाश।"
12:29 *शा., "कुंड-घर।"

करना चाहते हो, तो जाओ यहाँ से।[1] 32 और जैसा तुमने कहा था, अपनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल सब साथ लेते जाओ।[2] मगर जाते-जाते मुझे दुआएँ देना मत भूलो।”

33 फिर मिस्री लोग इसराएलियों से हड़बड़ी कराने लगे कि वे जल्द-से-जल्द[3] उनके देश से निकल जाएँ। मिस्री कहने लगे, “कहीं ऐसा न हो कि हम सब मर जाएँ।”[4] 34 इसलिए इसराएलियों ने गुँधा हुआ आटा लिया और उसमें खमीर मिलाए बगैर ही उसे आटा गूँधने के बरतनों* में डालकर कपड़ों में लपेटा और अपने कंधों पर रख लिया। 35 और जैसे मूसा ने उन्हें बताया था, उन्होंने मिस्रियों से सोने-चाँदी की चीज़ें और कपड़े माँगे।[5] 36 यहोवा ने मिस्रियों को इसराएलियों पर ऐसा मेहरबान किया कि उन्होंने इसराएलियों को मुँह माँगी चीज़ें दे दीं। इसराएलियों ने एक तरह से मिस्रियों को लूट लिया।[6]

37 इसके बाद इसराएली रामसेस[7] से सुक्कोत[8] के लिए निकल पड़े। उनमें आदमियों की गिनती करीब 6,00,000 थी जो पैदल चलकर गए और उनके अलावा बच्चे भी थे।[9] 38 उनके साथ लोगों की एक मिली-जुली भीड़*[10] भी निकली। वे सब अपने साथ भेड़-बकरियों और गाय-बैलों का एक बड़ा झुंड भी ले गए। 39 रास्ते में उन्होंने उस गुँधे हुए आटे से, जो वे मिस्र से लाए थे, बिन-खमीर की गोल-गोल रोटियाँ बनायीं। आटे में खमीर नहीं मिलाया गया था, क्योंकि उन्हें इतनी जल्दी मिस्र छोड़ना पड़ा था कि वे खाने की चीज़ें तैयार नहीं कर पाए।[1]

40 इसराएलियों ने, जो मिस्र में रह रहे थे,[2] 430 साल[3] परदेसियों की ज़िंदगी गुज़ारी थी। 41 जिस दिन 430 साल खत्म हुए उसी दिन यहोवा के लोगों की बड़ी भीड़* मिस्र देश से बाहर निकली। 42 हर साल इस रात वे इस बात की खुशियाँ मनाएँगे कि यहोवा उन्हें मिस्र से निकाल लाया था। सभी इसराएलियों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी यहोवा के सम्मान में इस रात की यादगार मनानी है।[4]

43 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, “फसह के त्योहार के नियम ये हैं: कोई भी परदेसी फसह का खाना नहीं खा सकता।[5] 44 लेकिन अगर किसी इसराएली के पास दाम देकर खरीदा हुआ दास हो तो उसका खतना किया जाना चाहिए,[6] तभी वह फसह का खाना खा सकता है। 45 कोई भी प्रवासी या दिहाड़ी पर काम करने-वाला फसह का खाना नहीं खा सकता। 46 फसह का मेम्ना एक ही घर के अंदर खाया जाए। उसका माँस तुम घर के बाहर मत ले जाना और उसकी एक भी हड्डी न तोड़ना।[7] 47 इसराएल की पूरी मंडली को यह त्योहार मनाना चाहिए। 48 तुम्हारे बीच रहनेवाला कोई पर-देसी अगर यहोवा के लिए फसह मनाना चाहता है, तो उसे अपने घराने के सभी लड़कों और आदमियों का खतना कराना होगा। ऐसा करने पर वह पैदाइशी इस-राएलियों के बराबर समझा जाएगा और तभी वह फसह का त्योहार मना सकेगा। मगर कोई भी खतनारहित आदमी फसह का खाना नहीं खा सकता।[8] 49 पैदाइ-शी इसराएलियों और तुम्हारे बीच

12:34 *या “कटोरों।” **12:38** *यानी गैर-इसराएलियों की एक मिली-जुली भीड़ जिसमें मिस्री भी थे।

12:41 *शा., “सेनाएँ।”

अध्य. 12

1 निर्ग 3:19, 20; निर्ग 6:1; निर्ग 10:8-11; भज 105:38
2 निर्ग 10:26
3 निर्ग 12:11
4 निर्ग 10:7
5 उत 15:14; निर्ग 3:21; निर्ग 11:2; भज 105:37
6 निर्ग 3:22
7 उत 47:11; निर्ग 1:11
8 गि 33:5
9 उत 12:1, 2; उत 15:1, 5; उत 46:2, 3; निर्ग 1:7; गि 2:32
10 गि 11:4

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 12:31
2 उत 46:2, 3; उत 47:27; प्रेष 13:17
3 गल 3:17
4 व्य 16:1
5 लैव 22:10
6 उत 17:12, 23
7 गि 9:12; भज 34:19, 20; यूह 19:33, 36
8 गि 9:14

रहनेवाले परदेसियों, दोनों पर एक ही कानून लागू होगा।”[1]

50 सब इसराएलियों ने वही किया जो यहोवा ने मूसा और हारून को आज्ञा दी थी। उन्होंने ठीक वैसा ही किया। 51 इसी दिन यहोवा इसराएलियों की पूरी भीड़* को मिस्र से बाहर निकाल लाया।

13 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, 2 “इसराएलियों के हर पहलौठे को मेरे लिए अलग ठहराना।* इंसानों के सभी पहलौठे लड़के और जानवरों के सभी नर पहलौठे मेरे हैं।”[2]

3 तब मूसा ने लोगों से कहा, “यह दिन तुम याद रखना, क्योंकि आज के दिन तुम गुलामी के घर मिस्र से बाहर निकल आए हो[3] और यहोवा ने अपने शक्तिशाली हाथ से तुम्हें वहाँ से आज़ाद किया है।[4] इसलिए तुम ऐसी कोई भी चीज़ न खाना जिसमें खमीर मिला हो। 4 इस आबीब* महीने में आज के दिन तुम यहाँ से जा रहे हो।[5] 5 यहोवा ने जैसे तुम्हारे पुरखों से शपथ खाकर कहा था,[6] वह तुम्हें कनानी, हित्ती, एमोरी, हिव्वी और यबूसी[7] लोगों के देश में ले जाएगा जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं।[8] वहाँ तुम इस महीने यह त्योहार मनाया करनाः 6 सात दिन तुम्हें बिन-खमीर की रोटी खानी है[9] और सातवें दिन यहोवा के लिए एक त्योहार होगा। 7 इन सात दिनों तक तुम्हें बिन-खमीर की रोटी खानी होगी[10] और इस दौरान तुम्हारे पास ऐसी कोई भी चीज़ न पायी जाए जिसमें खमीर मिला हो।[11] तुम्हारे पूरे इलाके में कहीं भी खमीरा आटा न पाया जाए। 8 उस दिन तुम अपने-अपने बेटे को बताना, ‘जब मैं मिस्र से निकला था, तब यहोवा ने मेरी खातिर जो किया उसी की याद में यह त्योहार मनाया जाता है।’[1] 9 इस त्योहार से तुम्हारे दिलो-दिमाग में उस छुटकारे की याद ताज़ा बनी रहेगी, मानो उसके बारे में तुम्हारे हाथ और माथे पर* लिखा हो।[2] और तुम यहोवा के कानून के बारे में चर्चा करोगे, क्योंकि यहोवा ने अपने शक्तिशाली हाथ से तुम्हें मिस्र से बाहर निकाला। 10 तुम यह नियम हर साल तय वक्त पर ज़रूर माना करना।[3]

11 जब यहोवा तुम्हें कनानियों के देश में ले जाएगा जिसके बारे में उसने तुमसे और तुम्हारे पुरखों से शपथ खाकर कहा था कि वह यह देश तुम्हें देगा,[4] 12 तब तुममें से हर परिवार को चाहिए कि वह अपना पहलौठा यहोवा को देने के लिए अलग ठहराए। और अपने झुंड के हर जानवर का नर पहलौठा भी परमेश्वर को देने के लिए अलग ठहराए। इंसान और जानवर, सबके पहलौठे यहोवा के हैं।[5] 13 तुम गधों में से हर पहलौठे को छुड़ाने के लिए एक भेड़ देना। अगर तुम गधे के पहलौठे को नहीं छुड़ाते तो उसका गला काटकर उसे मार डालना। और तुम्हें अपने सभी पहलौठे बेटों को छुड़ाना होगा।[6]

14 अगर भविष्य में कभी तुम्हारे बेटे तुमसे पूछें, ‘हम ऐसा क्यों करते हैं?’ तो तुम उनसे कहना, ‘यहोवा ने अपने शक्तिशाली हाथ से हमें गुलामी के घर, मिस्र से बाहर निकाला था।[7] 15 वहाँ का फिरौन बहुत ढीठ था, उसने हमें छोड़ने से साफ इनकार कर दिया था।[8] इसलिए यहोवा ने मिस्रियों के सभी

12:51 *शा., “सेनाओं।” 13:2 *या “पवित्र मानना।” 13:4 *अति. ख15 देखें।

13:9 *शा., “तुम्हारी आँखों के बीच।”

अध्य. 12
1 लैव 24:22
गि 15:16

अध्य. 13
2 गि 3:13
गि 18:15
व्य 15:19
लूक 2:22, 23
3 निर्ग 12:42
व्य 16:3
4 व्य 4:34
नहे 9:10
5 व्य 16:1
6 उत 15:18
निर्ग 6:5, 8
7 निर्ग 3:8
निर्ग 34:11
8 निर्ग 3:17
व्य 8:7-9
9 निर्ग 12:15
निर्ग 34:18
10 निर्ग 23:15
11 व्य 16:3

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 12:26, 27
2 निर्ग 12:14
व्य 11:18
3 निर्ग 12:24, 25
4 उत 15:18
5 निर्ग 22:29
निर्ग 34:19, 20
लैव 27:26
गि 3:13
लूक 2:22, 23
6 गि 18:15
7 व्य 7:7, 8
8 निर्ग 5:2

पहलौठों को, इंसानों के पहलौठों से
लेकर जानवरों के पहलौठों तक को मार
डाला।[1] यही वजह है कि हम अपने सभी
जानवरों के नर पहलौठों को यहोवा के
लिए बलि चढ़ाते हैं और अपने सभी पह-
लौठे बेटों को दाम देकर छुड़ाते हैं।'
16 यह त्योहार तुम्हारे लिए हाथ पर
लगाए चिन्ह और माथे पर* पट्टी जैसा
हो,[2] क्योंकि यहोवा ने अपने शक्तिशाली
हाथ से हमें मिस्र से बाहर निकाला है।"

17 जब फिरौन ने इसराएलियों को
जाने दिया, तो परमेश्वर उन्हें उस रास्ते
से नहीं ले गया जो पलिश्तियों के
देश से होकर गुज़रता है, इसके बावजूद
कि वह रास्ता छोटा पड़ता। परमेश्वर ने
कहा, "अगर लोग उस रास्ते जाएँगे,
तो उन्हें वहाँ के लोगों से लड़ना पड़ेगा।
तब हो सकता है कि वे पछताने लगें
और मिस्र लौटने का फैसला कर लें।"
18 इसलिए परमेश्वर उन्हें उस लंबे रास्ते
से ले गया जो लाल सागर के पासवाले
वीराने से होकर जाता है।[3] और जब इस-
राएली मिस्र से निकले तो वे सेना-दलों की
तरह एक अच्छे इंतज़ाम के मुताबिक
निकले। **19** मूसा ने अपने साथ यूसुफ
की हड्डियाँ भी लीं क्योंकि यूसुफ ने इस-
राएल के बेटों को शपथ दिलाकर उनसे
कहा था: "परमेश्वर ज़रूर तुम लोगों पर
ध्यान देगा, इसलिए यहाँ से जाते वक्त
तुम मेरी हड्डियाँ अपने साथ ले जाना।"[4]
20 फिर इसराएली सुक्कोत से रवाना
हुए और उन्होंने वीराने के छोर पर इताम
नाम की जगह डेरा डाला।

21 यहोवा उनके आगे-आगे चलकर
उन्हें रास्ता दिखाता रहा। वह दिन के
वक्त बादल के खंभे से उन्हें रास्ता
दिखाता[5] और रात के वक्त आग के खंभे
से उन्हें उजाला देता था, इसलिए वे दिन
और रात दोनों समय सफर कर सके।[1]
22 दिन के वक्त बादल का खंभा और
रात के वक्त आग का खंभा लोगों के
साथ-साथ रहा, उनसे कभी दूर नहीं
गया।[2]

14 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
2 "इसराएलियों से कहना कि वे
पीछे मुड़ जाएँ और जाकर पीहाहीरोत में
डेरा डालें, जो मिगदोल और सागर के
बीच है। वहाँ तुम लोग सागर के पास
बाल-सिपोन के सामने डेरा डालना।[3]
3 तब फिरौन इसराएलियों के बारे में
कहेगा, 'वे देश में इधर-उधर भटक रहे
हैं, वीराने में फँस गए हैं।' **4** और मैं
फिरौन के दिल को कठोर होने दूँगा।[4]
और जब वह इसराएलियों का पीछा
करते हुए आएगा तो मैं उसे और उसकी
सारी सेना को बुरी तरह हरा दूँगा ताकि
मेरी महिमा हो।[5] और मिस्री लोग हर
हाल में जान जाएँगे कि मैं यहोवा हूँ।"[6]
इसराएलियों ने ठीक वैसा ही किया जैसा
उन्हें बताया गया था।

5 बाद में मिस्र के राजा फिरौन को
बताया गया कि इसराएली भाग गए हैं।
यह सुनते ही फिरौन और उसके अधि-
कारी पछताने लगे[7] और कहने लगे,
"यह हमने क्या किया! इसराएलियों को,
अपने गुलामों को जाने दिया!" **6** तब
फिरौन ने अपने युद्ध-रथ तैयार किए और
अपने योद्धाओं को लेकर चल पड़ा।[8]
7 उसने मिस्र के 600 बेहतरीन रथ
और बाकी सब रथ लिए। हर रथ पर
योद्धा सवार थे। **8** इस तरह यहोवा
ने मिस्र के राजा फिरौन का दिल कठोर
होने दिया और फिरौन ने इसराएलियों का
पीछा किया जो बिना किसी डर के* चले

अध्य. 13
1 निर्ग 12:29; भज 78:51
2 व्य 11:18
3 निर्ग 14:2, 3; गि 33:5
4 उत 50:24, 25; यह 24:32; इब्र 11:22
5 निर्ग 14:19

दूसरा कॉल.
1 गि 9:15; भज 78:14
2 भज 105:39; 1कुर 10:1

अध्य. 14
3 निर्ग 13:17, 18
4 निर्ग 7:13; रोम 9:17, 18
5 निर्ग 9:15, 16; निर्ग 15:11; निर्ग 18:10, 11; यह 2:9, 10
6 निर्ग 7:5; निर्ग 8:22
7 निर्ग 12:33
8 निर्ग 14:23

13:16 * शा., "तुम्हारी आँखों के बीच।"

14:8 * शा., "ऊँचे हाथ के साथ।"

जा रहे थे।[1] **9** फिरौन की सारी सेना, उसके रथ और घुड़सवार इसराएलियों को पकड़ने के लिए उनकी तरफ तेज़ी से बढ़ते गए,[2] जो सागर के पास पीहा-हीरोत में बाल-सिपोन के सामने डेरा डाले हुए थे।

10 जब फिरौन इसराएलियों के करीब आ पहुँचा तो उन्होंने नज़र उठाकर देखा कि मिस्री उनका पीछा करते हुए चले आ रहे हैं। इसराएली डर के मारे थर-थर काँपने लगे और बचाव के लिए यहोवा को पुकारने लगे।[3] **11** वे मूसा से कहने लगे, "तू क्यों हमें यहाँ वीराने में ले आया? क्या मिस्र में कब्रें कम पड़ गयी थीं जो तू हमें यहाँ मरने के लिए ले आया?[4] **12** क्या हमने मिस्र में तुझसे नहीं कहा था, 'हमें अपने हाल पर छोड़ दे, हमें मिस्रियों की गुलामी करने दे'? यहाँ वीराने में आकर मरने से तो अच्छा होता कि हम मिस्रियों की गुलामी करते।"[5] **13** तब मूसा ने लोगों से कहा, "डरो मत।[6] मज़बूत खड़े रहो और देखो कि आज यहोवा तुम्हें किस तरह उद्धार दिलाता है।[7] ये जो मिस्री तुम्हारे सामने हैं ये आज के बाद फिर कभी नज़र नहीं आएँगे।[8] **14** यहोवा खुद तुम्हारी तरफ से लड़ेगा[9] और तुम चुपचाप खड़े देखोगे।"

15 यहोवा ने अब मूसा से कहा, "तू क्यों मेरी दुहाई दे रहा है? इसराएलियों से बोल कि वे अपना पड़ाव उठाकर आगे बढ़ें। **16** और तू अपनी छड़ी सागर की तरफ बढ़ा और उसे दो हिस्सों में बाँट दे ताकि बीच में सूखी ज़मीन बन जाए और इसराएली उस पर चलकर सागर पार कर सकें। **17** देख, मैंने मिस्रियों के दिल को कठोर होने दिया है ताकि वे इसराएलियों के पीछे-पीछे सागर के बीच आ जाएँ। तब मैं फिरौन और उसकी पूरी सेना को, उसके युद्ध-रथों और घुड़सवारों को बुरी तरह हरा दूँगा जिससे मेरी महिमा हो।[1] **18** इस तरह जब मैं फिरौन और उसके युद्ध-रथों और घुड़सवारों को हराकर अपनी महिमा करूँगा तो मिस्री बेशक जान जाएँगे कि मैं यहोवा हूँ।"[2]

19 तब सच्चे परमेश्वर का स्वर्गदूत,[3] जो इसराएलियों के आगे-आगे चल रहा था, वहाँ से हटकर उनके पीछे आ गया। और उनके आगे जो बादल का खंभा था, वह आगे से हटकर उनके पीछे चला गया[4] **20** और मिस्रियों और इसराएलियों के बीच खड़ा हो गया।[5] बादल ने एक तरफ अँधेरा कर दिया, मगर दूसरी तरफ इतनी रौशनी फैलायी कि रात-भर उजाला रहा।[6] बादल की वजह से मिस्री पूरी रात इसराएलियों के पास नहीं आ सके।

21 मूसा ने अब अपना हाथ सागर पर बढ़ाया[7] और यहोवा ने सारी रात पूरब से तेज़ हवा चलायी जिससे सागर का पानी दो हिस्सों में बँट गया[8] और बीच में सूखी ज़मीन दिखायी देने लगी।[9] **22** फिर इसराएली सूखी ज़मीन पर उतरे और सागर पार करने लगे।[10] इस पूरे समय के दौरान उनके दायीं और बायीं तरफ सागर का पानी ऊँची दीवार की तरह खड़ा रहा।[11] **23** फिर मिस्री भी उनके पीछे-पीछे गए। फिरौन के घोड़े, युद्ध-रथ और घुड़सवार इसराएलियों का पीछा करते हुए सागर के बीच सूखी ज़मीन पर उतर पड़े।[12] **24** सुबह के पहर* के दौरान, यहोवा ने आग और बादल के खंभे में से देखा[13] कि मिस्री सेना उसके लोगों की तरफ चली आ रही है और

अध्य. 14
1 गि 33:3
2 निर्ग 15:9
3 यह 24:6, 7; नहे 9:9
4 निर्ग 16:3; निर्ग 17:3; गि 14:2-4; भज 106:7
5 निर्ग 5:21; निर्ग 6:6, 9
6 गि 14:9; व्य 20:3; 2इत 20:15, 17; भज 27:1; भज 46:1; यश 41:10
7 2इत 20:17
8 निर्ग 14:30; निर्ग 15:5; भज 136:15
9 व्य 1:30; व्य 20:4; 2इत 20:29

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 9:15, 16
2 निर्ग 14:4; रोम 9:17, 18
3 उत 48:16; निर्ग 32:34; गि 20:16; यहू 9
4 निर्ग 13:21
5 यह 24:6, 7
6 भज 105:39
7 निर्ग 14:16; प्रेष 7:36
8 नहे 9:10, 11; भज 78:13; भज 136:13; यश 63:12
9 यह 2:9, 10; भज 66:6; भज 106:9; भज 114:3
10 1कुर 10:1; इब्र 11:29
11 निर्ग 15:8
12 निर्ग 14:17
13 निर्ग 13:21

14:24 *यानी सुबह करीब 2 से 6 बजे तक।

उसने मिस्रियों के बीच खलबली मचा दी।
25 परमेश्वर ने उनके रथों के पहिए
निकाल दिए जिससे उनका आगे बढ़ना
मुश्किल हो गया। मिस्री एक-दूसरे से
कहने लगे, "भागो यहाँ से, इसराएलियों
से दूर भागो। यहोवा उनकी तरफ से लड़
रहा है, वह हम मिस्रियों का नाश कर
देगा।"[1]

26 इसके बाद यहोवा ने मूसा से कहा,
"अपना हाथ सागर पर बढ़ा ताकि पानी
वापस मिल जाए और मिस्रियों और उनके
युद्ध-रथों और घुड़सवारों पर गिर पड़े।"
27 मूसा ने फौरन अपना हाथ सागर पर
बढ़ाया और सुबह होते-होते सागर का
सारा पानी पहले की तरह मिल गया।
सागर के पानी को मिलता देख मिस्रियों
ने भागने की कोशिश की, मगर यहोवा
ने उन्हें सागर के बीच ही झटक दिया।[2]
28 फिरौन की पूरी सेना पर, उसके युद्ध-
रथों और घुड़सवारों पर, जो इसराए-
लियों का पीछा करते हुए सागर के बीच
घुसे थे, पानी पलटकर आ गिरा और वे
सब-के-सब डूब मरे।[3] एक भी ज़िंदा नहीं
बचा।[4]

29 मगर इसराएली सागर के बीच
सूखी ज़मीन पर चलते हुए पार निकल
गए[5] और पानी उनके दायीं और बायीं
तरफ ऊँची दीवार की तरह खड़ा रहा।[6]
30 इस तरह यहोवा ने उस दिन इस-
राएलियों को मिस्रियों के हाथ में पड़ने
से बचाया।[7] इसराएलियों ने मिस्रियों
की लाशें सागर किनारे पड़ी देखीं।
31 उन्होंने देखा कि यहोवा ने कैसे
अपनी महाशक्ति से मिस्रियों को कड़ी
सज़ा दी। और लोग यहोवा का डर मानने
लगे और उन्होंने यहोवा और उसके सेवक
मूसा पर विश्वास किया।[8]

अध्य. 14
1 निर्ग 14:4
2 निर्ग 15:1, 4
3 निर्ग 15:5, 10; व्य 11:3, 4; यह 24:6, 7; नहे 9:10, 11; भज 78:53; इब्र 11:29
4 निर्ग 14:13; भज 106:11; भज 136:15
5 भज 77:19
6 निर्ग 15:8
7 व्य 4:20; भज 106:8-11
8 निर्ग 4:31; निर्ग 19:9; भज 106:12

दूसरा कॉल.

अध्य. 15
1 न्या 5:1; 2शम 22:1; प्रक 15:3
2 निर्ग 9:16; निर्ग 18:10, 11; भज 106:11, 12
3 निर्ग 15:21; भज 136:15
4 यश 12:2
5 2शम 22:47; यश 25:1
6 निर्ग 3:15
7 भज 83:18; भज 148:13
8 भज 24:8
9 निर्ग 6:3; यश 42:8
10 निर्ग 14:27
11 निर्ग 14:6, 7
12 नहे 9:10, 11
13 भज 60:5; भज 89:13
14 यश 37:23

15

फिर मूसा और इसराएलियों ने
यहोवा के लिए यह गीत गायाः[1]

"मैं यहोवा के लिए गीत गाऊँगा
क्योंकि उसने शानदार जीत
हासिल की है।[2]
घोड़े के साथ घुड़सवार
को उसने गहरे समुंदर में फेंक
दिया है।[3]
2 याह* मेरी ताकत है, मेरा बल
है क्योंकि वह मेरा उद्धार
करता है।[4]
वही मेरा परमेश्वर है, मैं उसकी
तारीफ करूँगा,[5] वह मेरे पिता
का परमेश्वर है,[6] मैं उसकी
बड़ाई करूँगा।[7]
3 यहोवा एक शक्तिशाली योद्धा है।[8]
यहोवा उसका नाम है।[9]
4 फिरौन के रथों और उसकी फौज
को उसने समुंदर में झटक
दिया,[10]
उसके बड़े-बड़े सूरमा लाल सागर में
डूब गए।[11]
5 उफनती लहरों ने उन्हें ढाँप लिया,
वे गहराई में ऐसे डूब गए मानो
पत्थर हों।[12]
6 हे यहोवा, तेरे दाएँ हाथ में असीम
ताकत है,[13]
हे यहोवा, तेरा दायाँ हाथ दुश्मन को
चकनाचूर कर सकता है।
7 महानता में तेरा कोई सानी नहीं,
तेरे खिलाफ उठनेवालों को तू
उठाकर पटक सकता है।[14]
तू अपने क्रोध की आग बरसाता है
और वे घास-फूस की तरह भस्म
हो जाते हैं।

15:2 *"याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है।

8 तेरे नथनों की एक साँस से पानी
इकट्ठा हो गया,
तेज़ धाराएँ थमकर रह गयीं,
सागर के बीचों-बीच उफनती लहरें
जम गयीं।
9 दुश्मन ने कहा, 'मैं उनका पीछा
करूँगा! उन्हें पकड़ लूँगा!
मैं लूट का माल बाँट लूँगा जब तक
कि मेरा जी न भर जाए!
मैं अपनी तलवार खींचूँगा! अपने
हाथ से उन्हें अधीन करूँगा!'[1]
10 तूने एक फूँक मारी और समुंदर ने
उन्हें ढाँप लिया,[2]
महासागर में वे ऐसे डूब गए जैसे
सीसा हों।
11 हे यहोवा, देवताओं में कौन है जो
तेरी बराबरी कर सके?[3]
कौन है जो तुझ जैसा परम-
पवित्र हो?[4]
तू ऐसा परमेश्वर है जिसका डर
माना जाए, जिसकी तारीफ में
गीत गाए जाएँ, तू ही बड़े-बड़े
अजूबे करता है।[5]
12 तूने अपना दायाँ हाथ बढ़ाया और
धरती उन सबको निगल गयी।[6]
13 अपने अटल प्यार की वजह से तूने
अपने छुड़ाए हुए लोगों को राह
दिखायी है,[7]
तू अपनी शक्ति से उन्हें अपने
पवित्र निवास तक ले चलेगा।
14 देशों के लोग यह खबर सुनेंगे[8] और
थरथराएँगे,
पलिश्त के रहनेवालों को डर और
चिंता जकड़ लेगी।
15 उस वक्त एदोम के शेख* डर
जाएँगे,
मोआब के ताकतवर शासक*
थर-थर काँपेंगे।[1]
कनान के सभी निवासियों का दिल
बैठ जाएगा।[2]
16 उन सब पर डर और खौफ छा
जाएगा।[3]
तेरे बाज़ुओं की ताकत देखकर वे
पत्थर की तरह सुन्न रह जाएँगे,
जब तक कि हे यहोवा, तेरे लोग
पार न निकल जाएँ,
वे लोग, जिन्हें तू वजूद में लाया
है,[4] पार न निकल जाएँ।[5]
17 तू उन्हें लाकर अपनी विरासत के
पहाड़ पर लगाएगा,[6]
हे यहोवा, उस जगह पर जो
तूने अपने निवास के लिए तैयार
की है,
हे यहोवा, उस पवित्र-स्थान
पर जिसे तूने अपने हाथों से
बनाया है।
18 यहोवा राजा है, वह युग-युग तक
राज करता रहेगा।[7]
19 जब फिरौन के घोड़े, युद्ध-रथ और
घुड़सवार समुंदर में उतरे,[8]
तो यहोवा ने समुंदर का पानी उन
पर पलट दिया,[9]
मगर इसराएली समुंदर के बीच
सूखी ज़मीन पर चलकर पार हो
गए।"[10]

20 फिर हारून की बहन मिरयम, जो
एक भविष्यवक्तिन थी, हाथ में डफली
लिए सामने आयी। और बाकी सभी
औरतें डफली बजाती और नाचती
हुई मिरयम के पीछे निकल पड़ीं।
21 आदमियों के गाने के जवाब में मिर-
यम यह गाती थीः

15:15 *शेख, गोत्र का प्रधान था।

15:15 *या "तानाशाह।"

अध्य. 15
1 निर्ग 14:5, 9
2 निर्ग 14:21, 28
3 व्य 3:24; 2शम 7:22
4 यश 6:3
5 निर्ग 11:9
6 भज 78:53; इब्र 11:29
7 भज 106:10
8 गि 14:13, 14

दूसरा कॉल.
1 गि 22:1, 3
2 यह 2:9-11; यह 5:1
3 व्य 11:25
4 2शम 7:23; यश 43:1
5 गि 20:14, 17; गि 21:21, 22
6 भज 80:8
7 भज 10:16
8 निर्ग 14:23
9 निर्ग 14:28
10 निर्ग 14:22

“यहोवा के लिए गीत गाओ
क्योंकि उसने शानदार जीत
हासिल की है।[1]
घोड़े के साथ घुड़सवार को उसने
गहरे समुंदर में फेंक दिया है।”[2]

22 बाद में मूसा इसराएलियों को लाल सागर से आगे ले गया। वे शूर वीराने में पहुँचे और वहाँ तीन दिन तक चलते रहे। अब तक उन्हें कहीं भी पानी नहीं मिला था। **23** जब वे मारा* नाम की जगह पहुँचे[3] तो वहाँ उन्हें पानी मिला, मगर पानी इतना कड़वा था कि वे पी न सके। इसीलिए उसने उस जगह का नाम मारा रखा। **24** तब लोग मूसा के खिलाफ यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे,[4] “अब हम क्या पीएँगे?” **25** फिर मूसा ने यहोवा को पुकारा[5] और यहोवा ने उसे एक छोटा पेड़ दिखाया। मूसा ने जब वह पेड़ उठाकर पानी में फेंका तो पानी मीठा हो गया।

वहाँ परमेश्वर ने लोगों को एक नियम और न्याय-सिद्धांत दिया और उन्हें परखा।[6] **26** उसने कहा, “तुम अपने परमेश्वर यहोवा की बात सख्ती से मानना और वही करना जो उसकी नज़रों में सही है, उसकी आज्ञाओं पर ध्यान देना और उसके सभी नियमों का पालन करना।[7] अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम पर ऐसी कोई बीमारी नहीं लाऊँगा जो मैं मिस्रियों पर लाया था।[8] मैं यहोवा तुम्हें स्वस्थ करता हूँ।”[9]

27 इसके बाद वे एलीम आए जहाँ पानी के 12 सोते और 70 खजूर के पेड़ थे। उन्होंने वहीं पानी के पास डेरा डाला।

16 इसराएलियों की पूरी मंडली एलीम से निकलने के बाद चलते-चलते सीन वीराने में पहुँची,[10] जो एलीम और सीनै के बीच है। मिस्र छोड़ने के दूसरे महीने के 15वें दिन वे इस जगह पहुँचे।

2 वहाँ वीराने में इसराएलियों की पूरी मंडली मूसा और हारून के खिलाफ कुड़कुड़ाने लगी।[1] **3** वे बार-बार उनसे कहते रहे, “तुम हमें वीराने में इसलिए लाए हो कि हमारी पूरी मंडली भूखी मर जाए।[2] इससे तो अच्छा था कि हम यहोवा के हाथों मिस्र में ही मारे जाते, जहाँ हमें भरपेट रोटी मिलती थी और हम गोश्त की हाँडियों के पास बैठकर खाया करते थे।”[3]

4 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “देख, मैं आकाश से तुम लोगों के लिए खाना बरसाऊँगा।[4] तुममें से हरेक जन रोज़ बाहर जाए और दिन-भर की ज़रूरत के हिसाब से खाना इकट्ठा करे।[5] इस इंतज़ाम से मैं लोगों को परखूँगा कि वे मेरे कानून पर चलेंगे या नहीं।[6] **5** छठे दिन[7] उन्हें बाकी दिनों से दुगना खाना इकट्ठा करना है और उसे पहले से तैयार करके रखना है।”[8]

6 तब मूसा और हारून ने सभी इसराएलियों से कहा, “आज की शाम तुम सब बेशक जान जाओगे कि वह यहोवा ही है जो तुम्हें मिस्र से बाहर निकाल लाया है।[9] **7** कल सुबह तुम यहोवा की महिमा देखोगे क्योंकि तुमने यहोवा के खिलाफ कुड़कुड़ाते हुए जो-जो कहा, वह सब उसने सुना है। हम कौन हैं जो तुम हमारे खिलाफ कुड़कुड़ाते हो?” **8** मूसा ने यह भी कहा, “आज शाम यहोवा तुम्हें खाने को गोश्त देगा और कल सुबह रोटी देगा ताकि तुम जी-भरकर खा सको। तब तुम जान लोगे कि तुमने यहोवा के खिलाफ कुड़कुड़ाते हुए जो भी कहा वह उसने सुना है। मगर हम

अध्या. 15
1 निर्ग 9:16; निर्ग 18:11
2 निर्ग 14:27, 28; भज 106:11, 12
3 गि 33:8
4 निर्ग 16:2, 3; निर्ग 17:3; 1कुर 10:6, 10
5 निर्ग 17:4
6 निर्ग 16:4; व्य 8:2
7 व्य 28:1
8 व्य 7:12, 15
9 निर्ग 23:25; भज 103:3

अध्या. 16
10 गि 33:10, 11

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 15:24; 1कुर 10:6, 10
2 निर्ग 17:3; गि 16:13
3 गि 11:4; गि 14:2, 3
4 भज 78:24, 25; भज 105:40; यूह 6:31, 32; यूह 6:58; 1कुर 10:1, 3
5 मत 6:11
6 व्य 8:2
7 निर्ग 35:2
8 निर्ग 16:22
9 निर्ग 6:7; गि 16:28, 29

15:23 * मतलब “कड़वाहट।”

कौन हैं जो तुम हमारे खिलाफ कुड़कुड़ाते
हो? तुम असल में हमारे खिलाफ नहीं,
यहोवा के खिलाफ कुड़कुड़ा रहे हो।"[1]
9 इसके बाद मूसा ने हारून से कहा,
"इसराएलियों की पूरी मंडली से कहना,
'तुम सब यहोवा के पास आओ क्योंकि
उसने तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुना है।'"[2]
10 फिर हारून ने जाकर इसराएलियों
की पूरी मंडली से वह बात कही। तब उन
सबने फौरन मुड़कर वीराने की तरफ मुँह
किया और देखा कि यहोवा की महिमा का
तेज बादल में प्रकट हुआ है![3]
11 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
12 "मैंने इसराएलियों का कुड़कुड़ाना
सुना है।[4] उनसे कह, 'आज शाम झुट-
पुटे के समय* तुम्हें खाने को गोश्त
मिलेगा और कल सुबह तुम भरपेट रोटी
खाओगे।[5] तब तुम बेशक जान जाओगे
कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।'"[6]
13 फिर उस शाम बटेरों का एक बड़ा
झुंड उड़ता हुआ आया और पूरी छावनी
को ढक लिया।[7] और सुबह हुई तो
छावनी के चारों तरफ ज़मीन पर ओस
पड़ी हुई थी। 14 फिर ओस सूख गयी
और वीराने की ज़मीन पर पपड़ीदार
चीज़ रह गयी[8] जो पाले की तरह महीन
थी। 15 जब इसराएलियों ने उसे देखा
तो वे एक-दूसरे से कहने लगे, "यह
क्या है?" क्योंकि वे नहीं जानते थे कि
वह क्या था। मूसा ने उन्हें बताया,
"यह तुम्हारे लिए खाना है, यहोवा ने
दिया है।[9] 16 यहोवा की यह आज्ञा है:
'तुममें से हर कोई उतना खाना उठाए
जितना वह खा सकता है। तुम्हारे तंबू
में जितने लोग हैं उनमें से हरेक के लिए
एक ओमेर*[10] के हिसाब से तुम खाना
लेना।'" 17 इसराएलियों ने ऐसा ही
किया। वे जाकर खाना इकट्ठा करने लगे,
किसी ने कम तो किसी ने ज़्यादा उठाया।
18 फिर उन्होंने उसे ओमेर से नापा।
जिस किसी ने ज़्यादा उठाया था उसके
पास ज़रूरत से ज़्यादा नहीं रहा और जिस
किसी ने कम उठाया था उसके लिए कम
नहीं पड़ा।[1] हर किसी को उतना ही मिला
था जितना वह खा सकता था।
19 फिर मूसा ने लोगों से कहा, "तुममें
से कोई भी यह खाना अगली सुबह तक
बचाकर न रखे।"[2] 20 मगर उन्होंने
मूसा की बात नहीं मानी। कुछ लोगों ने
थोड़ा खाना सुबह के लिए बचाकर रखा,
लेकिन उसमें कीड़े पड़ गए और बदबू
आने लगी। तब मूसा उन पर भड़क उठा।
21 रोज़ सुबह हर कोई उतना खाना
इकट्ठा करता था जितना वह खा सकता
था। जब धूप तेज़ हो जाती तो ज़मीन पर
बचा खाना पिघल जाता था।
22 छठे दिन लोगों ने दुगना खाना
इकट्ठा किया,[3] यानी हरेक के लिए दो
ओमेर के हिसाब से। फिर इसराएलियों
के सभी प्रधान मूसा के पास गए और
उन्होंने उसे यह बात बतायी। 23 मूसा
ने उनसे कहा, "यहोवा ने कहा है, 'कल
का दिन पूरे विश्राम का दिन होगा,*
यहोवा को समर्पित पवित्र सब्त का
दिन।[4] इसलिए तुम्हें जो भी खाना सेंकना
हो या उबालना हो, आज ही कर लो[5]
और बचा हुआ खाना कल सुबह के लिए
रख लो।'" 24 तब लोगों ने सुबह के
लिए खाना बचाकर रखा, ठीक जैसे
मूसा ने आज्ञा दी थी। अगले दिन
उन्होंने देखा कि खाने में न तो कीड़े पड़े
थे, न ही उससे बदबू आयी। 25 तब

16:12 *शा., "दो शामों के बीच।" **16:16** *करीब 2.2 ली. अति. ख14 देखें।

16:23 *या "सब्त मनाया जाएगा।"

अध्य. 16
1 गि 21:7
1शम 8:7
2 निर्ग 16:2
गि 11:1
3 निर्ग 13:21
गि 16:19
मत 17:5
4 गि 14:27
5 भज 105:40
6 निर्ग 4:5
निर्ग 6:7
7 गि 11:31, 34
भज 78:27-29
8 गि 11:7
व्य 8:3
नहे 9:15
9 गि 21:5
व्य 8:14, 16
यह 5:11, 12
यूह 6:31, 32
यूह 6:58
1कुर 10:1, 3
10 निर्ग 16:36

दूसरा कॉल.
1 2कुर 8:15
2 मत 6:11, 34
3 निर्ग 16:5
4 निर्ग 20:8
निर्ग 31:15
निर्ग 35:2
लैव 23:3
5 गि 11:7, 8

मूसा ने लोगों से कहा, “तुम्हारे पास जो खाना है, उसे तुम आज खा लेना। आज तुम्हें ज़मीन पर कोई खाना नहीं मिलेगा। क्योंकि आज का दिन यहोवा के लिए सब्त है। **26** तुम छः दिन खाना इकट्ठा करोगे, मगर सातवें दिन ज़मीन पर कोई खाना नहीं मिलेगा क्योंकि वह सब्त का दिन होगा।”[1] **27** फिर भी कुछ लोग सातवें दिन खाना इकट्ठा करने बाहर गए, मगर उन्हें कुछ नहीं मिला।

28 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तुम लोग कब तक मेरी आज्ञाओं और मेरे कायदे-कानूनों को मानने से इनकार करते रहोगे?[2] **29** इस बात का ध्यान रखो कि यहोवा ने तुम्हारे लिए सब्त का दिन ठहराया है।[3] इसीलिए छठे दिन वह तुम्हें दो दिन का खाना दे रहा है। सातवें दिन हर कोई अपने इलाके में ही रहे, कोई बाहर न जाए।” **30** और सातवें दिन लोगों ने सब्त मनाया।*[4]

31 इसराएलियों ने उस खाने का नाम “मन्ना”* रखा। वह दिखने में धनिए के बीज जैसा सफेद था और उसका स्वाद शहद से बने पुए जैसा था।[5] **32** मूसा ने कहा, “यहोवा की यह आज्ञा है: ‘एक ओमेर-भर खाना अलग रखना ताकि यह पीढ़ी-पीढ़ी तक रहे और तुम्हारे वंशज देख सकें[6] कि मैंने तुम्हें मिस्र से छुड़ा लाने के बाद वीराने में कैसा खाना दिया था।’” **33** तब मूसा ने हारून से कहा, “तू एक मर्तबान ले और उसमें ओमेर-भर मन्ना डाल और उसे यहोवा के सामने रख ताकि वह पीढ़ी-पीढ़ी तक रहे।”[7] **34** हारून ने ठीक वैसा ही किया जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। उसने एक मर्तबान में मन्ना भरकर उसे एक खास संदूक*[1] के सामने रखा ताकि वह सही-सलामत रहे। **35** इसराएलियों ने जब तक उस देश में कदम नहीं रखा[2] जहाँ दूसरे लोग रहते थे, तब तक उन्होंने मन्ना ही खाया।[3] कनान की सरहद पर पहुँचने तक 40 साल उन्होंने मन्ना खाया।[4] **36** एक ओमेर, एपा* का दसवाँ भाग है।

17 इसराएलियों की पूरी मंडली यहोवा के आदेश के मुताबिक सीन वीराने से आगे बढ़ी।[5] वे जगह-जगह से होते हुए रपीदीम[6] पहुँचे और वहाँ उन्होंने डेरा डाला।[7] मगर लोगों के पीने के लिए कहीं पानी नहीं था।

2 इसलिए लोग मूसा से झगड़ने लगे[8] और कहने लगे, “हमें पीने के लिए पानी दे।” मूसा ने उनसे कहा, “तुम लोग क्यों मुझसे झगड़ रहे हो? क्यों बार-बार यहोवा की परीक्षा लेते हो?”[9] **3** फिर भी वे मूसा के खिलाफ कुड़कुड़ाते रहे क्योंकि उन्हें बहुत प्यास लगी थी।[10] वे मूसा से कहते रहे, “तू क्यों हमें मिस्र से यहाँ ले आया? क्यों हमें और हमारे बच्चों और जानवरों को प्यासा मार रहा है?” **4** आखिरकार मूसा ने यहोवा को पुकारा, “मैं इन लोगों का क्या करूँ? कुछ ही देर में ये लोग मुझे पत्थरों से मार डालेंगे!”

5 यहोवा ने मूसा से कहा, “तू अपने हाथ में वह छड़ी ले, जिसे तूने नील नदी पर मारा था[11] और इसराएल के कुछ मुखियाओं को लेकर लोगों के आगे-आगे चल **6** और होरेब जा। देख! मैं वहाँ होरेब में चट्टान के पास तेरे सामने खड़ा

16:30 *या “विश्राम किया।” **16:31** *मुमकिन है कि यह शब्द इन इब्रानी शब्दों से निकला था, “यह क्या है?”

16:34 *शा., “गवाही।” ज़ाहिर है कि यह एक संदूक था जिसमें ज़रूरी दस्तावेज़ सँभालकर रखे जाते थे। **16:36** *एक एपा 22 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 16
1 निर्ग 20:9, 10; निर्ग 31:13; व्य 5:15
2 गि 14:11; भज 78:10; भज 106:13
3 निर्ग 31:13
4 लैव 23:3; व्य 5:13, 14
5 निर्ग 16:15; गि 11:7
6 भज 105:5, 40
7 इब्र 9:4

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 27:21
2 गि 33:48; व्य 34:1
3 यह 5:11, 12
4 व्य 8:2; नहे 9:21; भज 78:24

अध्य. 17
5 गि 33:12
6 गि 33:14
7 गि 33:2
8 निर्ग 5:19, 21; गि 14:2, 3; गि 20:3
9 गि 14:22; भज 78:18, 22; भज 106:14
10 निर्ग 16:2, 3
11 निर्ग 7:20

रहूँगा। तुझे उस चट्टान पर छड़ी मारनी होगी, तब उसमें से पानी निकलेगा और लोग पीएँगे।"[1] मूसा ने इसराएल के मुखियाओं के देखते ऐसा ही किया। **7** उसने उस जगह का नाम मस्सा*[2] और मरीबा#[3] रखा, क्योंकि वहीं पर इसराएलियों ने उससे झगड़ा किया था और यह कहते हुए यहोवा की परीक्षा ली थी,[4] "यहोवा हमारे बीच है भी या नहीं?"

8 जब इसराएली रपीदीम में थे, तब अमालेकी[5] लोगों ने आकर उन पर हमला बोल दिया।[6] **9** इस पर मूसा ने यहोशू[7] से कहा, "तू हमारे कुछ आदमियों को चुन और उन्हें साथ लेकर कल अमालेकियों से लड़ने जा। मैं अपने हाथ में सच्चे परमेश्वर की छड़ी लिए पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूँगा।" **10** यहोशू ने ठीक वैसा ही किया जैसा मूसा ने उसे बताया था।[8] उसने जाकर अमालेकियों से लड़ाई की। मूसा, हारून और हूर[9] पहाड़ी की चोटी पर गए।

11 इस लड़ाई के दौरान जब मूसा अपने हाथ ऊपर उठाए रहता तो इसराएली जीतने लगते, मगर जैसे ही वह अपने हाथ नीचे करता अमालेकी जीतने लगते। **12** कुछ समय बाद जब मूसा के हाथ थकने लगे तो वे उसके बैठने के लिए एक पत्थर ले आए और मूसा उस पर बैठ गया। फिर हारून और हूर ने मूसा के हाथों को सहारा दिया, एक ने बायीं तरफ से और दूसरे ने दायीं तरफ से। इसलिए सूरज ढलने तक मूसा अपने हाथ ऊपर उठाए रहा। **13** इस तरह यहोशू ने अपनी तलवार से अमालेकियों और उनके साथियों को हरा दिया।[10]

14 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं अमालेकियों को धरती* से इस तरह मिटा दूँगा कि कोई उन्हें याद तक नहीं करेगा। मेरी यह बात किताब में लिखकर रख ताकि यह कभी भुलायी न जाए# और यहोशू को भी सुना।"[1] **15** इसके बाद मूसा ने एक वेदी बनायी और उसका नाम यहोवा-निस्सी* रखा। **16** उसने कहा, "अमालेक ने याह की राजगद्दी के खिलाफ हाथ उठाया है,[2] इसलिए यहोवा पीढ़ी-पीढ़ी तक उससे युद्ध करता रहेगा।"[3]

18 मूसा के ससुर यित्रो ने, जो मिद्यान का याजक था,[4] सुना कि यहोवा ने मूसा और अपने इसराएली लोगों की खातिर क्या-क्या किया और कैसे उन सबको मिस्र से निकालकर बाहर ले आया।[5] **2** मूसा के ससुर यित्रो ने मूसा की पत्नी सिप्पोरा को अपने घर रखा था जिसे मूसा ने वहाँ रहने भेजा था। **3** मूसा ने सिप्पोरा के साथ अपने दोनों बेटों[6] को भी भेजा था। उनमें से एक का नाम गेरशोम*[7] था क्योंकि मूसा ने कहा, "मैं परदेस में रहनेवाला परदेसी बन गया हूँ।" **4** दूसरे बेटे का नाम एलीएज़ेर* था क्योंकि मूसा ने कहा, "मेरे पिता का परमेश्वर मेरा मददगार है, जिसने मुझे फिरौन की तलवार से बचाया है।"[8]

5 अब यित्रो मूसा की पत्नी और उसके दोनों बेटों को लेकर वीराने में मूसा के पास आया, जो सच्चे परमेश्वर के पहाड़ के पास डेरा डाले हुए था।[9] **6** उसने मूसा को खबर भेजी: "मैं तेरा

17:7 *मतलब "परीक्षा लेना; आज़माइश।" #मतलब "झगड़ा करना।"

17:14 *शा., "आकाश के नीचे।" #या "यादगार बन जाए।" **17:15** *मतलब "यहोवा मेरी निशानी का खंभा है।" **18:3** *मतलब "वहाँ रहनेवाला एक परदेसी।" **18:4** *मतलब "मेरा परमेश्वर मददगार है।"

अध्य. 17
1 गि 20:8; व्य 8:14, 15; नहे 9:15; भज 78:15; भज 105:41; 1कुर 10:1, 4
2 व्य 9:22
3 भज 81:7
4 व्य 6:16; भज 95:8, 9; इब्र 3:8, 9
5 उत 36:12
6 व्य 25:17; 1शम 15:2
7 गि 11:28
8 यह 11:15
9 निर्ग 24:13, 14
10 यह 11:12

दूसरा कॉल.
1 गि 24:20; व्य 25:19; 1इत 4:42, 43
2 प्रक 19:1
3 1शम 15:20; एस 9:24

अध्य. 18
4 निर्ग 2:16, 21; निर्ग 3:1
5 यह 2:9, 10; यह 9:3, 9
6 प्रेष 7:29
7 निर्ग 2:22
8 निर्ग 2:15
9 निर्ग 19:2; 1रा 19:8, 9

ससुर यित्रो[1] तेरे यहाँ आ रहा हूँ। मैं तेरी पत्नी और तेरे दोनों बेटों को साथ ला रहा हूँ।" **7** यह खबर सुनते ही मूसा अपने ससुर से मिलने गया और उससे मिलने पर झुककर उसे प्रणाम किया और चूमा। फिर उन्होंने एक-दूसरे की खैरियत पूछी और वे तंबू के अंदर गए।

8 मूसा ने अपने ससुर को बताया कि यहोवा ने इसराएल की खातिर फिरौन और मिस्र के साथ क्या-क्या किया,[2] सफर के दौरान इसराएलियों पर क्या-क्या मुसीबतें आयीं[3] और यहोवा ने कैसे उन सारी मुसीबतों से उन्हें छुड़ाया। **9** जब यित्रो ने सुना कि यहोवा ने इसराएलियों को मिस्र से छुड़ाकर उनके साथ कैसी भलाई की तो उसे बड़ी खुशी हुई। **10** उसने कहा, "यहोवा की तारीफ हो जिसने फिरौन के हाथ से और मिस्र से तुम लोगों को छुड़ाया है, जिसने मिस्र के चंगुल से तुम्हें छुड़ाया है। **11** अब मैं जान गया हूँ कि यहोवा दुनिया के सभी देवताओं से कहीं महान है,[4] क्योंकि उसने उन लोगों का बुरा हाल कर दिया जिन्होंने घमंड से भरकर उसकी प्रजा को बहुत सताया था।" **12** फिर मूसा का ससुर यित्रो, परमेश्वर के लिए एक होम-बलि और बलिदान चढ़ाने के लिए कुछ जानवर ले आया। और हारून और इसराएल के सभी मुखिया सच्चे परमेश्वर के सामने यित्रो के साथ खाना खाने आए।

13 अगले दिन मूसा हर रोज़ की तरह लोगों के मामलों का न्याय करने बैठा। सुबह से शाम तक लोगों की भीड़ लगी रहती थी। **14** जब मूसा के ससुर ने वह सब देखा जो मूसा लोगों की खातिर कर रहा था, तो उसने पूछा, "यह तू लोगों के लिए क्या कर रहा है? तू क्यों यहाँ अकेला बैठा रहता है और क्यों सुबह से शाम तक तेरे सामने लोगों की भीड़ लगी रहती है?" **15** मूसा ने अपने ससुर से कहा, "लोग परमेश्वर की मरज़ी जानने मेरे पास आते हैं। **16** जब दो लोगों के बीच कोई मसला उठता है तो वे उसे मेरे पास लाते हैं और मुझे उन दोनों के बीच न्याय करना होता है। मैं उन्हें सच्चे परमेश्वर के फैसले और कायदे-कानून बताता हूँ।"[1]

17 मूसा के ससुर ने उससे कहा, "तू जिस तरह यह काम कर रहा है वह ठीक नहीं है। **18** ऐसा ही चलता रहा तो तू और तेरे पास आनेवाले सब पस्त हो जाएँगे क्योंकि यह काम बहुत भारी है। तू अकेले इसे नहीं कर पाएगा। **19** मेरी सुन, मैं तुझे एक सलाह देता हूँ। और परमेश्वर तेरे साथ रहेगा।[2] तू सच्चे परमेश्वर के सामने लोगों की तरफ से सेवा कर[3] और उनके मामले उसके सामने पेश कर।[4] **20** लोगों को परमेश्वर के नियम और कायदे-कानून सिखा,[5] उन्हें बता कि उन्हें किस राह पर चलना चाहिए और उन्हें क्या-क्या फर्ज़ निभाना चाहिए। **21** लेकिन तू ऐसे कुछ काबिल आदमियों को चुन[6] जो परमेश्वर का डर मानते हों, भरोसेमंद हों और बेईमानी की कमाई से नफरत करते हों।[7] उन आदमियों को दस-दस, पचास-पचास, सौ-सौ और हज़ार-हज़ार लोगों का प्रधान ठहरा।[8] **22** ये प्रधान हर समय लोगों के मामलों का न्याय करेंगे। छोटे-छोटे मामलों का वे खुद फैसला करें, लेकिन अगर कोई मामला पेचीदा हो तो वे उसे तेरे पास लाएँ।[9] इस तरह उनके साथ काम बाँटने से तेरा बोझ हलका हो जाएगा।[10] **23** अगर तू ऐसा करे और परमेश्वर भी तुझे यही करने की आज्ञा दे, तो

अध्य. 18
1 निर्ग 4:18; गि 10:29
2 निर्ग 7:3; निर्ग 14:27, 28; व्य 4:34
3 निर्ग 15:22; निर्ग 16:3
4 निर्ग 15:11; भज 95:3; भज 97:9

दूसरा कॉल.
1 व्य 4:5; व्य 5:1
2 यह 1:5, 17
3 निर्ग 20:19
4 गि 27:1-5
5 व्य 7:11
6 गि 11:16, 17; व्य 1:13; प्रेष 6:3
7 निर्ग 23:8; 1ती 3:2, 3; तीत 1:7; 1पत 5:2
8 व्य 1:15; प्रेष 14:23
9 लैव 24:10, 11; गि 15:32, 33; व्य 1:17
10 गि 11:17

तुझे ज़्यादा तनाव नहीं होगा और न्याय
के लिए आनेवाला हर कोई संतुष्ट होकर
लौटेगा।"

24 मूसा ने फौरन अपने ससुर की
सलाह मानी और उसने जो-जो बताया वह
सब किया। 25 मूसा ने पूरे इसराएल में
से काबिल आदमियों को चुना और उन्हें
लोगों का अधिकारी ठहराया। उन्हें दस-
दस, पचास-पचास, सौ-सौ और हज़ार-
हज़ार लोगों का प्रधान ठहराया।
26 और ये प्रधान लोगों के मामलों का
फैसला करने लगे। छोटे-छोटे मामले वे
खुद निपटाते थे, मगर पेचीदा मामले
मूसा के पास लाते थे।[1] 27 इसके बाद
मूसा ने अपने ससुर को विदा किया[2] और
वह अपने देश लौट गया।

19 मिस्र से निकलने के तीसरे महीने
में इसराएली सीनै वीराने पहुँचे।
2 उसी दिन उन्होंने रपीदीम[3] से अपना
पड़ाव उठाया और सीनै वीराने में आकर
अपना पड़ाव डाला। इसराएल ने वहाँ
पहाड़ के सामने डेरा डाला।[4]

3 फिर मूसा ऊपर पहाड़ पर सच्चे
परमेश्वर के पास गया।[5] पहाड़ पर से
यहोवा ने मूसा से कहा, "तू याकूब
के घराने से, इसराएलियों से कहना:
4 'तुमने खुद अपनी आँखों से देखा है कि
मैंने मिस्रियों के साथ क्या किया[6] ताकि
तुम्हें अपने पास ले आऊँ, जैसे उकाब
अपने चूज़ों को पंखों पर चढ़ाकर ले जाता
है।[7] 5 अब अगर तुम सख्ती से मेरी
आज्ञा का पालन करोगे और मेरा करार
मानोगे, तो सब देशों में से तुम मेरी खास
जागीर* बन जाओगे,[8] क्योंकि मैं ही पूरी
धरती का मालिक हूँ।[9] 6 तुम मेरे लिए
याजकों से बना राज और एक पवित्र
राष्ट्र बन जाओगे।'[1] तू जाकर इसराए-
लियों से ये सारी बातें कहना।"

7 मूसा ने जाकर लोगों के मुखियाओं
को बुलाया और उन्हें वे सारी बातें बतायीं
जिनकी आज्ञा यहोवा ने उसे दी थी।[2]
8 इसके बाद सारे लोगों ने एकमत होकर
जवाब दिया, "यहोवा ने जो-जो कहा है,
वह सब करना हमें मंज़ूर है।"[3] मूसा ने
फौरन जाकर लोगों की यह बात यहोवा
को बतायी। 9 यहोवा ने मूसा से कहा,
"देख! मैं एक काले बादल में तेरे पास
आऊँगा ताकि जब मैं तुझसे बात करूँ
तो लोग सुन सकें और सदा तुझ पर भी
विश्वास करें।" फिर मूसा ने यहोवा को
बताया कि लोगों ने क्या कहा।

10 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "तू
लोगों के पास जा और उन्हें आज और
कल के दिन पवित्र ठहरा और वे अपने
कपड़े ज़रूर धोएँ। 11 वे तीसरे दिन के
लिए तैयार रहें क्योंकि उस दिन यहोवा
सब लोगों के सामने सीनै पहाड़ पर उत-
रेगा। 12 तुझे पहाड़ के चारों तरफ
लोगों के लिए हद तय करनी होगी और
उन्हें यह बताना होगा, 'ध्यान रखो, तुममें
से कोई भी पहाड़ के ऊपर न जाए, न ही
उस पर कदम रखे। अगर किसी ने पहाड़
पर कदम रखा तो उसे ज़रूर मार डाला
जाएगा। 13 उस गुनहगार को कोई भी
हाथ से न छुए बल्कि उसे पत्थरों से या
भेदकर* मार डाला जाए। चाहे वह
इंसान हो या जानवर, उसे ज़िंदा नहीं
छोड़ा जाएगा।'[4] मगर जब नरसिंगे की
आवाज़ सुनायी पड़ेगी[5] तब लोग पहाड़
के पास आ सकते हैं।"

14 फिर मूसा पहाड़ से उतरकर लोगों
के पास गया। वह उन्हें पवित्र ठहराने
लगा और उन्होंने अपने कपड़े धोए।[6]

19:5 * या "अनमोल जायदाद।"

19:13 * शायद तीर से भेदकर।

अध्य. 18
1 प्रेष 15:2
2 गि 10:29

अध्य. 19
3 निर्ग 17:1
4 निर्ग 3:1, 12
5 प्रेष 7:38
6 व्य 4:34
7 व्य 32:11, 12; यश 63:9
8 1रा 8:53; भज 135:4
9 व्य 10:14

दूसरा कॉल.
1 लैव 11:44; व्य 7:6; 1पत 2:9; प्रक 5:9, 10
2 निर्ग 24:3
3 निर्ग 24:7; यह 24:24
4 इब्र 12:20
5 निर्ग 20:18
6 निर्ग 19:10

15 मूसा ने लोगों से कहा, “तुम सब
तीसरे दिन के लिए तैयार हो जाओ।
तुममें से कोई भी यौन-संबंध न रखे।”*
16 तीसरे दिन सुबह तेज़ गरजन होने
लगा और बिजली चमकने लगी। पहाड़
पर एक घना बादल[1] दिखायी दिया
और नरसिंगे की ज़ोरदार आवाज़ सुनायी
दी। छावनी में सब लोग डर के मारे थर-
थराने लगे।[2] **17** फिर मूसा लोगों को
सच्चे परमेश्वर से मिलाने के लिए छावनी
से बाहर ले आया और वे सब पहाड़ के
नीचे खड़े हुए। **18** सीनै पहाड़ धुएँ से
ढक गया क्योंकि यहोवा आग में उस पर
उतरा था।[3] ऐसा धुआँ उठ रहा था जैसे
भट्ठे में से उठता है और पूरा पहाड़ बुरी
तरह काँपने लगा।[4] **19** नरसिंगे की
आवाज़ तेज़ होती गयी और मूसा ने सच्चे
परमेश्वर से बात की और परमेश्वर की
आवाज़ ने उसे जवाब दिया।
20 इस तरह यहोवा सीनै पहाड़ की
चोटी पर उतरा। फिर यहोवा ने मूसा को
पहाड़ की चोटी पर आने के लिए कहा
और मूसा वहाँ गया।[5] **21** तब यहोवा
ने मूसा से कहा, “तू नीचे जा और
लोगों को खबरदार कर कि वे यहोवा
को देखने के लिए, तय की गयी हद पार
करने की कोशिश न करें, वरना बहुत-से
लोग नाश हो जाएँगे। **22** और याजक
भी, जो यहोवा के पास आया करते हैं,
खुद को पवित्र ठहराएँ ताकि यहोवा
उन्हें मार न डाले।”*[6] **23** मूसा ने
यहोवा से कहा, “लोग सीनै पहाड़ पर
नहीं आएँगे क्योंकि तूने पहले ही हमें
मना किया था और मुझसे कहा था,
‘पहाड़ के चारों तरफ हद तय करना
और उसे पवित्र ठहराना।’”[1] **24** फिर
भी यहोवा ने उससे कहा, “तू नीचे जा
और अपने साथ हारून को लेकर वापस
ऊपर आ। मगर याजकों और लोगों से
कहना कि वे तय की गयी हद पार
करके यहोवा के पास आने की कोशिश
न करें ताकि ऐसा न हो कि वह उन्हें मार
डाले।”[2] **25** फिर मूसा पहाड़ से उतर-
कर लोगों के पास गया और उन्हें यह सब
बताया।

20 फिर परमेश्वर ने ये सारी
आज्ञाएँ बतायीं:[3]
2 “मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो
तुम्हें गुलामी के घर, मिस्र से बाहर
निकाल लाया।[4] **3** मेरे सिवा तुम्हारा
कोई और ईश्वर न हो।*[5]
4 तुम अपने लिए कोई मूरत न
तराशना। ऊपर आसमान में, नीचे
ज़मीन पर और पानी में जो कुछ है,
उनमें से किसी के भी आकार की कोई
चीज़ न बनाना।[6] **5** तुम उनके आगे
दंडवत न करना और न ही उनकी पूजा
करने के लिए बहक जाना,[7] क्योंकि मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा माँग करता हूँ
कि सिर्फ मेरी भक्ति की जाए, मुझे छोड़
किसी और की नहीं।[8] जो मुझसे नफरत
करते हैं उनके गुनाह की सज़ा मैं उनके
बेटों, पोतों और परपोतों को भी देता हूँ।
6 मगर जो मुझसे प्यार करते हैं और मेरी
आज्ञाएँ मानते हैं, उनकी हज़ारों पीढ़ियों
से मैं प्यार* करता हूँ।[9]
7 तुम अपने परमेश्वर यहोवा के नाम
का गलत इस्तेमाल न करना,[10] क्योंकि
जो उसके नाम का गलत इस्तेमाल करता

19:15 *शा., “किसी औरत के पास न जाए।” **19:22** *शा., “उन पर टूट न पड़े।”

20:3 *या “तुम मेरे खिलाफ जाकर किसी और ईश्वर को न मानना।” **20:6** *या “अटल प्यार।”

अध्या. 19
1 व्य 4:11, 1रा 8:12, भज 97:2
2 इब्र 12:18-21
3 निर्ग 24:17, व्य 4:11, 12, 2इत 7:1-3
4 भज 68:8
5 निर्ग 24:12
6 लैव 10:1, 2, 1इत 13:10

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 19:12
2 गि 16:19, 35

अध्या. 20
3 व्य 5:22, प्रेष 7:38
4 व्य 5:6, हो 13:4
5 व्य 5:7-10
6 लैव 26:1, व्य 4:15, 16, यश 40:25, प्रेष 17:29
7 निर्ग 23:24, 1कुर 10:20, 1यूह 5:21
8 निर्ग 34:14, मत 4:10, लूक 10:27
9 सभ 12:13
10 लैव 19:12

है उसे यहोवा सज़ा दिए बिना नहीं छोड़ेगा।[1]

8 सब्त का दिन याद से मनाया करना और इसे पवित्र मानना।[2] **9** घर-बाहर का जो भी काम या मज़दूरी हो, तुम छः दिन तक करना।[3] **10** मगर सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए अलग ठहराया गया सब्त है। इस दिन न तुम, न तुम्हारे बेटे-बेटियाँ, न तुम्हारे दास-दासियाँ और न ही तुम्हारी बस्तियों में* रहनेवाले परदेसी कोई काम करें। तुम अपने जानवरों से भी कोई काम न कराना।[4] **11** यहोवा ने आकाश, धरती, समुंदर और जो कुछ उनमें है, सबको छः दिनों में बनाया और सातवें दिन से वह विश्राम करने लगा।[5] इसीलिए यहोवा ने सब्त के दिन पर आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया।

12 अपने पिता और अपनी माँ का आदर करना,[6] तब तुम उस देश में लंबी ज़िंदगी जीओगे जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देनेवाला है।[7]

13 तुम खून न करना।[8]

14 तुम व्यभिचार* न करना।[9]

15 तुम चोरी न करना।[10]

16 जब तुम्हें अपने संगी-साथी के खिलाफ गवाही देनी हो तो तुम झूठी गवाही न देना।[11]

17 तुम अपने संगी-साथी के घर का लालच न करना। तुम उसकी पत्नी या उसके दास-दासी या उसके बैल या गधे या उसकी किसी भी चीज़ का लालच न करना।"[12]

18 इस दौरान वहाँ जो तेज़ गरजन हुआ, बिजली चमकी, नरसिंगे की आवाज़ आयी और पहाड़ से धुआँ उठता रहा, उसे लोग देख और सुन रहे थे। वे डर से काँपने लगे और पहाड़ से दूर ही खड़े रहे।[1] **19** उन्होंने मूसा से कहा, "तू ही हमसे बात कर, हम तुझसे सुन लेंगे। परमेश्वर से कहना कि वह हमसे बात न करे क्योंकि हमें डर है कि कहीं हम मर न जाएँ।"[2] **20** मूसा ने उनसे कहा, "घबराओ मत, क्योंकि सच्चा परमेश्वर तुम्हें परखने के लिए आया है[3] ताकि तुम हमेशा उसका डर मानो और पाप न करो।"[4] **21** लोग दूर ही खड़े रहे, मगर मूसा उस काले बादल के पास गया जहाँ सच्चा परमेश्वर मौजूद था।[5]

22 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "तू जाकर इसराएलियों से कहना, 'तुम लोगों ने खुद अपनी आँखों से देखा है कि कैसे मैंने स्वर्ग से तुमसे बात की।[6] **23** मेरे सिवा तुम्हारा कोई और ईश्वर न हो और तुम सोने-चाँदी से देवताओं की कोई मूरत न बनाना।[7] **24** तुम मेरे लिए मिट्टी की एक वेदी बनाना जिस पर अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की होम-बलि और शांति-बलि चढ़ाना। मैं जो भी जगह चुनूँगा कि वहाँ मेरा नाम याद किया जाए,[8] वहाँ मैं तुम्हारे पास आऊँगा और तुम्हें आशीष दूँगा। **25** अगर तुम मेरे लिए पत्थरों की वेदी बनाते हो, तो औज़ारों से काटे हुए पत्थर* इस्तेमाल न करना,[9] क्योंकि अगर तुम पत्थरों पर छेनी चलाओगे तो वेदी अपवित्र हो जाएगी। **26** तुम मेरी वेदी पर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ न बनाना ताकि ऐसा न हो कि उस पर चढ़ते वक्त तुम्हारा नंगापन* दिखायी दे।'"

20:10 *शा., "तुम्हारे फाटकों के अंदर।" **20:14** *शब्दावली देखें।

20:25 *या "गढ़े हुए पत्थर।" **20:26** *या "तुम्हारे गुप्त अंग।"

अध्य. 20

1 लैव 24:15, 16; व्य 5:11
2 निर्ग 16:23; निर्ग 31:13, 14; व्य 5:12-14
3 निर्ग 23:12
4 निर्ग 16:29; निर्ग 34:21
5 उत 2:2
6 निर्ग 21:15; लैव 19:3; नीत 1:8
7 व्य 5:16; मत 15:4; इफ 6:2, 3
8 उत 9:6; व्य 5:17; याकू 2:11; 1यूह 3:15; प्रक 21:8
9 उत 39:7-9; व्य 5:18; नीत 6:32; मत 5:27, 28; रोम 13:9; 1कुर 6:18; इब्र 13:4
10 लैव 19:11; व्य 5:19; मर 10:19; 1कुर 6:9, 10; इफ 4:28
11 लैव 19:16; व्य 5:20; व्य 19:16-19
12 व्य 5:21; मत 5:28; रोम 7:7

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 19:16; इब्र 12:18, 19
2 प्रेष 7:38; गल 3:19
3 व्य 8:2
4 यह 24:14; अय 28:28; नीत 1:7
5 व्य 5:5; भज 97:2
6 व्य 4:36; नहे 9:13
7 प्रेष 17:29
8 व्य 12:5, 6; 2इत 6:6
9 व्य 27:5; यह 8:30, 31

21 “ये मेरे न्याय-सिद्धांत हैं जो तुझे
लोगों को बताने हैं:[1]

2 अगर तुम किसी इब्री दास को
खरीदते हो[2] तो वह छः साल तक तुम्हारी
सेवा करेगा। मगर सातवें साल वह कोई
कीमत चुकाए बगैर आज़ाद हो जाएगा।[3]
3 अगर वह अकेला आया है तो अकेला
आज़ाद किया जाएगा। लेकिन अगर वह
शादीशुदा है तो उसके आज़ाद होने
पर उसकी पत्नी भी उसके साथ जाए।
4 अगर एक मालिक अपने दास की
शादी करवाता है और उस दास के बेटे-
बेटियाँ होते हैं, तो आज़ाद होने पर
वह दास अकेला ही छूटेगा। उसकी
पत्नी और बच्चे मालिक के हो जाएँगे।[4]
5 लेकिन अगर दास जाने से इनकार कर
दे और कहे, ‘मैं अपने मालिक से और
अपने बीवी-बच्चों से बहुत प्यार करता हूँ
इसलिए मैं आज़ाद नहीं होना चाहता,’[5]
6 तो मालिक को चाहिए कि वह दास को
दरवाज़े या चौखट के पास ले जाए और
एक सुए से उसका कान छेद दे। सच्चा
परमेश्वर इसका गवाह होगा* और वह
दास ज़िंदगी-भर के लिए अपने मालिक
का हो जाएगा।

7 अगर कोई आदमी अपनी बेटी को
दासी होने के लिए बेच देता है, तो वह
दासी उस तरह आज़ाद नहीं की जाएगी,
जिस तरह एक दास आज़ाद किया जाता
है। **8** अगर दासी का मालिक उससे
खुश नहीं है और उसे अपनी उप-पत्नी
नहीं बनाता तो वह उसे किसी और को
बेच सकता है। मगर मालिक को उसे
किसी परदेसी के हाथ बेचने का हक नहीं
है, क्योंकि उसने दासी के साथ अन्याय
किया है। **9** अगर एक मालिक अपनी
दासी की शादी अपने बेटे से कराता
है, तो उसे चाहिए कि दासी को वह
सारे हक दे जो एक बेटी को दिए जाते हैं।
10 अगर वह दूसरी शादी करता है, तो
उसे चाहिए कि वह अपनी पहली पत्नी
के खाने-पहनने की ज़रूरतें पूरी करे और
उसका पत्नी होने का हक*[1] न मारे।
11 अगर वह उसकी ये तीनों ज़रूरतें पूरी
नहीं करता, तो वह औरत कोई कीमत
चुकाए बगैर आज़ाद होकर चली जाए।

12 अगर कोई किसी आदमी पर ऐसा
वार करता है कि वह मर जाता है, तो
उस गुनहगार को मौत की सज़ा दी जानी
चाहिए।[2] **13** लेकिन अगर उससे यह
अनजाने में हुआ है और सच्चे परमेश्वर
ने इसे होने दिया है, तो मैं उसके लिए
ऐसी जगह ठहराऊँगा जहाँ वह भागकर
जा सकता है।[3] **14** अगर एक आदमी
अपने संगी-साथी से बहुत गुस्सा हो जाता
है और जानबूझकर उसका कत्ल कर देता
है,[4] तो वह कातिल मार डाला जाए।
चाहे वह बचाव के लिए मेरी वेदी के पास
आए, तो भी तुम उसे वहाँ से दूर ले जाकर
मार डालना।[5] **15** जो कोई अपने पिता
या अपनी माँ पर हाथ उठाता है, उसे मौत
की सज़ा दी जाए।[6]

16 अगर कोई किसी आदमी को
अगवा करके[7] उसे बेच देता है या
अगवा किया गया आदमी उसके कब्ज़े
में पाया जाता है,[8] तो वह गुनहगार मार
डाला जाए।[9]

17 जो अपने पिता या अपनी माँ को
शाप देता है उसे मार डाला जाए।[10]

18 अगर दो आदमी आपस में झगड़-
ते हैं और एक आदमी पत्थर से दूसरे

अध्य. 21
1 निर्ग 24:3
व्य 4:14
2 लैव 25:39, 40
3 व्य 15:12
4 व्य 15:12
5 व्य 15:16, 17

दूसरा कॉल.
1 1कुर 7:3
2 उत 9:6
गि 35:30
मत 5:21
3 गि 35:11
गि 35:22-25
व्य 4:42
व्य 19:3-5
यह 20:7-9
4 गि 15:30
5 व्य 19:11, 12
1रा 1:50
1रा 2:29
1यूह 3:15
6 निर्ग 20:12
7 उत 40:15
8 उत 37:28
9 व्य 24:7
10 लैव 20:9
नीत 20:20
नीत 30:11, 17
मत 15:4

21:6 *या “मालिक उसे सच्चे परमेश्वर के पास लाएगा।”

21:10 *यहाँ यौन-संबंध की बात की गयी है।

पर वार करता है या उसे घूँसा* मारता है
और दूसरे आदमी की जान तो बच जाती
है मगर वह घायल होकर बिस्तर पकड़
लेता है, तो ऐसे मामले में यह किया जाना
चाहिए: 19 अगर कुछ वक्त बाद वह
बिस्तर से उठकर लाठी के सहारे घर के
बाहर चल-फिर सकता है, तो जिसने उसे
मारा था वह सज़ा से बच जाएगा, उसे
सिर्फ मुआवज़ा देना होगा। घायल आदमी
को काम पर न जाने की वजह से जितने
दिन का नुकसान होता है उतने दिनों का
उसे मुआवज़ा देना होगा। उसे तब तक
ऐसा करना होगा जब तक कि घायल
आदमी पूरी तरह ठीक नहीं हो जाता।

20 अगर एक आदमी छड़ी से अपने
दास या दासी को मारे और वह उसके
हाथों मर जाए तो मालिक से उसकी जान
का बदला लिया जाए।[1] 21 लेकिन
अगर वह एक-दो दिन तक ज़िंदा रहे
तो मालिक से उसकी जान का बदला
न लिया जाए, क्योंकि वह मालिक की
खरीदी हुई संपत्ति है।

22 अगर दो आदमियों के बीच हाथा-
पाई हो जाती है और वे लड़ते-लड़ते
किसी गर्भवती औरत को घायल कर
देते हैं और समय से पहले उसका बच्चा
हो जाता है,[2] मगर माँ और बच्चे की जान
बच जाती है,* तो गुनहगार को नुक-
सान की भरपाई करनी होगी। उस औरत
का पति माँग करेगा कि कितनी भर-
पाई की जाए और फिर न्यायी जो फैसला
करेंगे, उसके मुताबिक गुनहगार को भर-
पाई करनी होगी।[3] 23 लेकिन अगर
माँ या बच्चे की मौत हो जाती है, तो
उसकी जान के बदले गुनहगार की जान
ली जाए।[4] 24 या अगर गहरी चोट
लगती है तो उसके लिए भी गुनहगार से
बराबर का बदला लिया जाए, आँख के
बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ
के बदले हाथ, पैर के बदले पैर,[1]
25 जलाने के बदले जलाना, घाव के
बदले घाव और मार के बदले मार।

26 अगर एक आदमी अपने दास या
दासी की आँख पर ऐसा मारता है कि
उसकी आँख फूट जाती है, तो उसे
मुआवज़े के तौर पर अपने दास या दासी
को आज़ाद करना होगा।[2] 27 अगर
वह अपने दास या दासी का दाँत तोड़ देता
है, तो उसे मुआवज़े के तौर पर अपने
दास या दासी को आज़ाद करना होगा।

28 अगर एक बैल किसी आदमी या
औरत को सींग मारता है जिससे वह मर
जाता है, तो उस बैल को पत्थरों से मार
डाला जाए।[3] ऐसे बैल का माँस खाना
मना है। बैल के मालिक को कोई सज़ा
न दी जाए। 29 लेकिन अगर एक बैल
पहले से सींग मारता रहा है और उसके
मालिक को आगाह करने पर भी उसने
उसे बाँधकर नहीं रखा और उस बैल के
सींग मारने से किसी आदमी या औरत की
मौत हो जाती है, तो उस बैल को पत्थरों
से मार डाला जाए और उसके मालिक को
भी मौत की सज़ा दी जाए। 30 अगर
मालिक से फिरौती* की माँग की जाए,
तो उसे अपनी जान छुड़ाने के लिए उतनी
रकम अदा करनी होगी जितनी उससे
माँग की जाती है। 31 अगर एक बैल
किसी के बेटे या बेटी को सींग मारता है,
तो इसी न्याय-सिद्धांत के मुताबिक बैल के
मालिक का फैसला किया जाना चाहिए।
32 अगर एक बैल किसी दास या दासी
को सींग मारता है तो बैल का मालिक उस

21:18 *या शायद, "किसी औज़ार से।"
21:22 *या "बुरी तरह घायल नहीं होते।"
21:30 *या "नुकसान की भरपाई।"

अध्य. 21
1 उत 9:5, 6
लैव 24:17
2 भज 139:16
यिर्म 1:5
3 निर्ग 18:25, 26
व्य 16:18
व्य 17:8
4 उत 9:6
लैव 24:17
गि 35:31
प्रक 21:8

दूसरा कॉल.
1 लैव 24:20
मत 5:38
2 इफ 6:9
कुल 4:1
3 उत 9:5
गि 35:33

दास या दासी के मालिक को 30 शेकेल* देगा। और बैल को पत्थरों से मार डाला जाएगा।

33 अगर एक आदमी कोई गड्ढा खोलकर छोड़ देता है या फिर गड्ढा खोदकर उसे ढकता नहीं और उसमें किसी का बैल या गधा गिर जाता है **34** और मर जाता है, तो उस आदमी को नुकसान की भरपाई करनी होगी।[1] उसे जानवर के मालिक को उसकी कीमत अदा करनी होगी और मरा हुआ जान-वर उसका हो जाएगा। **35** अगर एक आदमी का बैल किसी दूसरे आदमी के बैल को मारता है और वह बैल मर जाता है, तो उन्हें ज़िंदा बैल को बेच देना चाहिए और मिलनेवाली रकम आपस में बाँट लेनी चाहिए। और मरे हुए जान-वर को भी आपस में बाँट लेना चाहिए। **36** लेकिन अगर यह बात सबको पता थी कि उसका बैल सींग मारता है, फिर भी मालिक ने उसे बाँधकर नहीं रखा और उसका बैल दूसरे के बैल को मार डालता है, तो उसे मुआवज़े में बैल के बदले बैल देना होगा और मरा हुआ बैल उसका हो जाएगा।”

22 “अगर एक आदमी किसी का बैल या भेड़ चुराकर हलाल कर दे या बेच दे, तो उसे मुआवज़े में एक बैल के बदले पाँच बैल और एक भेड़ के बदले चार भेड़ें देनी होंगी।[2]

2 (अगर एक चोर[3] सेंध लगाते हुए पकड़ा जाता है और उस पर ऐसा वार किया जाता है कि वह मर जाता है, तो उसे मारनेवाला खून का दोषी नहीं होगा। **3** लेकिन अगर चोर दिन में चोरी करते वक्त मारा जाए तो उसे मारनेवाला खून का दोषी होगा।)

एक चोर को चोरी किए हुए माल का मुआवज़ा देना होगा। अगर उसके पास देने के लिए कुछ नहीं है, तो उसे बेच दिया जाना चाहिए ताकि वह मुआवज़ा दे सके। **4** अगर उसके पास चुराया हुआ जानवर ज़िंदा पाया जाता है, फिर चाहे वह बैल हो या गधा या भेड़, तो उसे दुगना मुआवज़ा देना होगा।

5 अगर कोई आदमी अपने जानवरों को मैदान या अंगूरों के बाग में चराता है और उन्हें किसी और के खेत में चरने देता है, तो उसे उस खेत के मालिक को मुआव-ज़ा देना होगा, उसे अपने खेत या अंगूरों के बाग की सबसे बढ़िया पैदावार देनी होगी।

6 अगर कोई आग जलाता है और आग कँटीली झाड़ियों में लगकर ऐसी फैलती है कि पूलों का ढेर या खड़ी फसल या पूरा खेत जलकर भस्म हो जाता है, तो आग जलानेवाले को पूरे नुकसान की भरपाई करनी होगी।

7 अगर एक आदमी अपना पैसा या कोई चीज़ अपने संगी-साथी को देता है कि वह उसे सँभालकर रखे, मगर वह उसके घर से चोरी हो जाती है और चोर पकड़ा जाता है, तो चोर को दुगना मुआवज़ा देना होगा।[1] **8** लेकिन अगर चोर पकड़ा नहीं जाता तो घर के मालिक को सच्चे परमेश्वर के सामने पेश किया जाना चाहिए[2] ताकि यह पता लगाया जाए कि कहीं उसी ने तो हाथ साफ नहीं कर दिया। **9** अगर किसी चीज़ को लेकर दो आदमियों के बीच झगड़ा होता है क्योंकि उनमें से एक दावा करता है, ‘यह मेरी है!’ तो ऐसे हर मामले को निप-टाने का तरीका यह होगाः दोनों आदमी

अध्य. 21
1 निर्ग 22:6, निर्ग 22:14, व्य 22:8

अध्य. 22
2 2शम 12:6, लूक 19:8
3 निर्ग 20:15

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 22:4
2 व्य 16:18, व्य 19:17

21:32 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

अपना मामला सच्चे परमेश्वर के सामने
पेश करें,[1] फिर चाहे झगड़ा एक बैल,
गधे, भेड़ या कपड़े या खोयी हुई किसी भी
चीज़ को लेकर हो। फिर परमेश्वर उन
दोनों में से जिसे दोषी बताएगा उसे अपने
संगी-साथी को दुगना मुआवज़ा देना
होगा।[2]

10 अगर एक आदमी अपने संगी-
साथी के पास कुछ समय के लिए
अपना गधा, बैल, भेड़ या कोई और
पालतू जानवर छोड़ता है, मगर उस
दौरान वह जानवर मर जाता है या चोट
खाकर लँगड़ा हो जाता है या उसे कोई
उठा ले जाता है और इसका कोई
गवाह नहीं, **11** तो जिसके हवाले जान-
वर छोड़ा गया था उसे यहोवा के सामने
शपथ खाकर कहना होगा, 'इस नुक-
सान के लिए मैं ज़िम्मेदार नहीं हूँ'
और जानवर के मालिक को उसकी
बात मान लेनी चाहिए। और जिसे जान-
वर सौंपा गया था उसे मुआवज़ा देने
की ज़रूरत नहीं है।[3] **12** लेकिन अगर
उसके यहाँ से जानवर की चोरी हो जाती
है तो उसे जानवर के मालिक को मुआव-
ज़ा देना होगा। **13** अगर किसी जंगली
जानवर ने उस जानवर को फाड़ डाला
है तो उस आदमी को इसका सबूत पेश
करना होगा। जंगली जानवर से हुए नुक-
सान के लिए उसे मुआवज़ा नहीं देना
पड़ेगा।

14 अगर कोई अपने संगी-साथी से
कुछ वक्त के लिए उसका जानवर माँग-
कर ले जाता है और जानवर के मालिक
के न रहते जानवर चोट खाकर लँगड़ा हो
जाता है या मर जाता है तो जिसने जान-
वर लिया था उसे नुकसान का मुआव-
ज़ा देना होगा। **15** लेकिन अगर नुक-
सान मालिक के सामने हुआ है, तो
माँगनेवाले को इसकी भरपाई नहीं करनी
होगी। अगर जानवर किराए पर लिया
गया था, तो उसके लिए दिया गया
किराया ही मुआवज़ा होगा।

16 अगर एक आदमी किसी कुँवारी
लड़की को, जिसकी अब तक सगाई नहीं
हुई है, फुसलाकर उसके साथ सोता है तो
उस आदमी को महर की रकम देकर उसे
अपनी पत्नी बनाना होगा।[1] **17** अगर
लड़की का पिता उसे अपनी बेटी देने से
साफ इनकार कर देता है तो भी उस
आदमी को महर की उतनी रकम देनी
होगी जितनी एक कुँवारी लड़की के लिए
देनी होती है।

18 तुम किसी टोना-टोटका करने-
वाली औरत को ज़िंदा न छोड़ना।[2]

19 जो किसी जानवर के साथ यौन-
संबंध रखता है उसे हर हाल में मौत की
सज़ा दी जानी चाहिए।[3]

20 जो कोई यहोवा को छोड़ किसी
और देवता को बलि चढ़ाता है, उसे नाश
किया जाए।[4]

21 तुम अपने यहाँ रहनेवाले किसी
परदेसी के साथ बदसलूकी मत करना
और न ही उस पर ज़ुल्म करना,[5] क्योंकि
तुम भी कभी मिस्र में परदेसी हुआ
करते थे।[6]

22 तुम किसी विधवा या अनाथ*
को मत सताना।[7] **23** अगर तू उन्हें
सताएगा और वे मेरी दुहाई देंगे तो मैं
ज़रूर उनकी सुनूँगा[8] **24** और तुम पर
मेरा क्रोध भड़क उठेगा। मैं तुम्हें तल-
वार से मार डालूँगा और तुम्हारी पत्नियाँ
विधवा हो जाएँगी और तुम्हारे बच्चे
अनाथ हो जाएँगे।

अध्य. 22
1 व्य 16:18; व्य 25:1
2 निर्ग 22:4
3 लैव 6:2-5

दूसरा कॉल.
1 व्य 22:28, 29
2 लैव 19:26; लैव 20:6; व्य 18:10-12; 1शम 28:3; गल 5:20; प्रक 22:15
3 लैव 18:23; लैव 20:15; व्य 27:21
4 गि 25:3; 1रा 18:40; 1कुर 10:20
5 लैव 25:35
6 लैव 19:33, 34; व्य 10:19
7 व्य 27:19; याकू 1:27
8 भज 10:18; याकू 5:4

22:22 *या "जिसके पिता की मौत हो गयी है।"

25 अगर तुम मेरे लोगों में से किसी गरीब* को, जो तुम्हारे बीच रहता है, पैसे उधार देते हो तो उसके साथ लेनदारों# जैसा सलूक मत करना, उससे ब्याज की माँग मत करना।[1]

26 अगर किसी संगी-साथी को उधार देते वक्त तुम उसका कपड़ा गिरवी* रखवाते हो[2] तो सूरज ढलने से पहले उसका कपड़ा उसे लौटा देना, 27 क्योंकि उसके पास तन ढकने के लिए यही एक कपड़ा है। बिना इसके वह कैसे सोएगा?[3] अगर वह मेरी दुहाई देगा तो मैं ज़रूर उसकी सुनूँगा क्योंकि मैं करुणा करनेवाला* परमेश्वर हूँ।[4]

28 तुम परमेश्वर की निंदा मत करना[5] और न ही अपने लोगों के किसी प्रधान* की निंदा करना।[6]

29 तुम्हारे यहाँ जब अनाज की भरपूर पैदावार होती है और तेल और दाख-मदिरा के हौद उमड़ने लगते हैं, तो अपनी उपज में से कुछ मुझे चढ़ाने से मत झिझकना।[7] तुम अपने बेटों में से पहलौठा मुझे देना।[8] 30 अपना पहलौठा बछड़ा और पहलौठा मेढ़ा भी मुझे देना।[9] पैदा होने के सात दिन तक उसे अपनी माँ के साथ रहने देना और आठवें दिन मुझे अर्पित करना।[10]

31 तुम मेरे पवित्र लोग होने का सबूत देना।[11] तुम मैदान में पड़े किसी ऐसे जानवर का गोश्त मत खाना जिसे जंगली जानवर ने फाड़ डाला हो।[12] तुम्हें उसे कुत्तों के सामने फेंक देना चाहिए।

23 तुम ऐसी कोई खबर न फैलाना जो सच नहीं है।[1] जब कोई दुष्ट किसी का बुरा करने के इरादे से तुम्हें उसके खिलाफ गवाही देने को कहता है, तो तुम उसका साथ मत देना।[2] 2 तुम भीड़ के पीछे जाकर कोई बुरा काम मत करना। तुम किसी मामले में गवाही देते वक्त भीड़ के साथ मत हो लेना* क्योंकि इससे अन्याय हो सकता है। 3 तुम किसी गरीब के झगड़े में पक्षपात न करना।[3]

4 अगर तुम अपने दुश्मन के खोए हुए बैल या गधे को कहीं भटकता हुआ देखो तो उसे लाकर उसके मालिक को सौंप देना।[4] 5 अगर तुम देखते हो कि तुमसे नफरत करनेवाले किसी आदमी का गधा बोझ तले दबा हुआ है, तो तुम आँखें फेरकर वहाँ से चले मत जाना। तुम उस आदमी की मदद करना ताकि वह अपने जानवर को बोझ से छुड़ा सके।[5]

6 तुम अपने बीच रहनेवाले किसी गरीब के मुकदमे की सुनवाई करते वक्त गलत फैसला सुनाकर अन्याय मत करना।[6]

7 तुम झूठे इलज़ाम से दूर रहना। किसी बेगुनाह और नेक इंसान को मार न डालना क्योंकि ऐसा दुष्ट काम करनेवाले को मैं हरगिज़ निर्दोष नहीं ठहराऊँगा।*[7]

8 तुम रिश्वत न लेना क्योंकि रिश्वत समझ-बूझवाले इंसानों को भी अंधा कर देती है और नेक लोगों से भी झूठ बुलवाती है।[8]

9 तुम अपने यहाँ रहनेवाले किसी परदेसी पर ज़ुल्म न ढाना। तुम जानते हो

22:25 *या "मुसीबत के मारे।" #या "सूदखोर।" **22:26** *या "बंधक।" **22:27** *या "दयालु।" **22:28** *या "शासक।"

23:2 *या "सब जो बयान देते हैं वह मत देना।" **23:7** *या "इलज़ाम से बरी नहीं करूँगा।"

अध्य. 22

1 लैव 25:35, 36; व्य 23:19; लूक 6:34, 35
2 व्य 24:6
3 व्य 24:13
4 व्य 10:18; भज 34:6
5 लैव 24:11, 14
6 सभ 10:20; प्रेष 23:5; यहू 8
7 नीत 3:9; 2कुर 9:7
8 निर्ग 13:2
9 व्य 15:19
10 लैव 22:27
11 लैव 19:2; गि 15:40; 1पत 1:15
12 लैव 22:3, 8

दूसरा कॉल.

अध्य. 23

1 लैव 19:16; नीत 6:16, 19
2 व्य 19:18, 19; नीत 19:5
3 लैव 19:15
4 नीत 25:21; 1थि 5:15
5 व्य 22:4; लूक 6:27; रोम 12:21
6 व्य 16:19; 2इत 19:7
7 नीत 17:15; रोम 1:18; रोम 2:6
8 सभ 7:7

कि एक परदेसी की ज़िंदगी क्या होती है क्योंकि एक वक्त पर तुम भी मिस्र में परदेसी हुआ करते थे।[1]

10 तुम अपनी ज़मीन पर छः साल खेती करना और उसकी फसल काटना।[2] 11 मगर सातवें साल ज़मीन पर कोई जुताई-बोआई न करना, उसे परती छोड़ देना। तब उसमें जो भी उगेगा उसे तुम्हारे बीच रहनेवाले गरीब खाएँगे और उसके बाद जो बचेगा उसे मैदान के जंगली जानवर खाएँगे। तुम अपने अंगूरों के बाग और जैतून के बाग के साथ भी यही करना।

12 तुम छः दिन अपना काम-काज करना, मगर सातवें दिन विश्राम करना ताकि तुम्हारे बैल और गधे को आराम मिले और तुम्हारी दासी का बेटा और तुम्हारे बीच रहनेवाला परदेसी विश्राम करके तरो-ताज़ा हो जाए।[3]

13 मैंने तुम्हें जो-जो बताया है, वह सब तुम बिना चूके करना।[4] तुम दूसरे देवताओं का नाम मत पुकारना, उनका नाम तुम्हारी ज़बान* पर कभी न आए।[5]

14 साल में तीन बार तुम मेरे लिए एक त्योहार मनाना।[6] 15 तुम बिन-खमीर की रोटी का त्योहार मनाना।[7] तुम सात दिन तक बिन-खमीर की रोटी खाना, जैसे मैंने तुम्हें आज्ञा दी थी। तुम यह त्योहार आबीब* महीने में तय वक्त पर मनाना,[8] क्योंकि उसी वक्त तुम मिस्र से बाहर आए थे। कोई भी मेरे सामने खाली हाथ न आए।[9] 16 इसके अलावा, तुम्हें कटाई का त्योहार* मनाना है, जब तुम्हें अपनी मेहनत से उगायी फसल का पहला फल मिलेगा।[10] और साल के आखिर में बटोरने का त्योहार* मनाना, जब तुम खेतों से अपनी मेहनत का फल बटोरकर इकट्ठा करोगे।[1] 17 साल में तीन बार सभी आदमी सच्चे प्रभु यहोवा के सामने हाज़िर हों।[2]

18 तुम मेरे बलि-पशु के खून के साथ कोई खमीरी चीज़ मत चढ़ाना। मेरे त्योहारों में चरबी की जो बलि चढ़ायी जाती है, उसे अगली सुबह तक न रहने दिया जाए।

19 तुम अपनी ज़मीन की पहली उपज में से सबसे बढ़िया फल अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में लाकर देना।[3]

तुम बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में मत उबालना।[4]

20 मैं एक स्वर्गदूत को तुम्हारे आगे-आगे भेजूँगा[5] ताकि रास्ते में वह तुम्हारी हिफाज़त करे और तुम्हें उस जगह पहुँचाए जो मैंने तुम्हारे लिए तैयार की है।[6] 21 तुम उसकी बात ध्यान से सुनना और उसकी आज्ञा मानना। वह मेरे नाम से तुम्हारे पास आता है इसलिए उसके खिलाफ कभी बगावत मत करना। वह तुम्हारे अपराध माफ नहीं करेगा।[7] 22 लेकिन अगर तुम उसकी बात सख्ती से मानोगे और वह सब करोगे जो मैं तुमसे कहता हूँ, तो मैं तुम्हारे दुश्मनों का सामना करूँगा और जो तुम्हारा विरोध करते हैं उनका विरोध करूँगा। 23 मेरा स्वर्गदूत तुम्हारे आगे-आगे जाएगा और तुम्हें उस देश में पहुँचाएगा जहाँ एमोरी, हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिव्वी और यबूसी लोग रहते हैं। मैं उन सबको मिटा दूँगा।[8] 24 तुम उनके देवताओं के आगे झुककर उन्हें दंडवत मत करना और उनकी पूजा करने के लिए बहक मत जाना। तुम

अध्य. 23
1 लैव 19:34
2 लैव 25:3, 4
3 निर्ग 20:9, 10; व्य 5:14
4 व्य 4:9
5 व्य 12:3; यह 23:6, 7
6 व्य 16:16
7 लैव 23:6; लूक 22:7
8 निर्ग 12:18
9 व्य 16:17
10 गि 28:26; व्य 16:9, 10; प्रेष 2:1

दूसरा कॉल.
1 व्य 16:13; नहे 8:14; यूह 7:2
2 व्य 12:5, 6
3 गि 18:8, 12; 1कुर 15:20
4 व्य 14:21; नीत 12:10
5 निर्ग 14:19
6 गि 20:16
7 गि 14:35; यह 24:19
8 निर्ग 34:11; यह 5:13, 14; यह 24:8

23:13 *शा., “मुँह।” **23:15** *अति. ख15 देखें। **23:16** *यह पिन्तेकुस्त भी कहलाता है।

23:16 *यह छप्परों (या डेरों) का त्योहार भी कहलाता है।

वहाँ के लोगों के तौर-तरीके मत अपनाना।[1] इसके बजाय, तुम उनकी मूरतें ढा देना और उनके पूजा-स्तंभ चूर-चूर कर देना।[2] **25** तुम अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करना[3] और वह तुम्हें आशीष देगा जिससे तुम्हें रोटी और पानी की कोई कमी नहीं होगी।[4] मैं तुम्हारे बीच से बीमारियाँ दूर कर दूँगा।[5] **26** तुम्हारे देश की औरतों का गर्भ नहीं गिरेगा और न ही वे बाँझ होंगी।[6] मैं तुम्हें एक लंबी ज़िंदगी दूँगा।*

27 तुम्हारे वहाँ पहुँचने से पहले, मैं वहाँ के लोगों में अपना डर फैला दूँगा।[7] जिन लोगों से तुम्हारा सामना होगा उनके बीच मैं खलबली मचा दूँगा और तुम्हारे सभी दुश्मनों को ऐसा हरा दूँगा कि वे तुम्हारे सामने से भाग खड़े होंगे।*[8] **28** तुम्हारे वहाँ पहुँचने से पहले ही मैं वहाँ के हिव्वी, कनानी और हित्ती लोगों का हौसला तोड़ दूँगा*[9] और वे तुम्हारे सामने से भाग जाएँगे।[10] **29** मैं उन सबको एक ही साल के अंदर नहीं भगाऊँगा ताकि देश जंगल और वीरान न हो जाए और जंगली जानवरों से न भर जाए जिससे तुम्हें खतरा हो सकता है।[11] **30** मैं उन्हें तब तक थोड़ा-थोड़ा करके भगाता रहूँगा जब तक कि तुम्हारी गिनती बढ़ न जाए और पूरे देश को तुम अपने कब्ज़े में न कर लो।[12]

31 मैं लाल सागर से पलिश्तियों के सागर तक और वीराने से महानदी* तक तुम्हारे लिए सरहद ठहराऊँगा।[13] मैं उस देश के निवासियों को तुम्हारे हाथ में कर दूँगा और तुम उन्हें अपने सामने से खदेड़ दोगे।[1] **32** तुम न तो उनके साथ और न उनके देवताओं के साथ कोई करार करना।[2] **33** तुम उन्हें अपने देश में कहीं रहने न देना ताकि वे तुमसे मेरे खिलाफ कोई पाप न करवाएँ। अगर तुम उनके देवताओं की पूजा करोगे तो यह ज़रूर तुम्हारे लिए एक फंदा बन जाएगा।"[3]

24 फिर उसने मूसा से कहा, "तू अपने साथ हारून, नादाब और अबीहू[4] और इसराएल के मुखियाओं में से 70 आदमियों को लेकर पहाड़ पर जा और तुम लोग कुछ दूर खड़े रहकर यहोवा को दंडवत करना। **2** फिर मूसा अकेला ही यहोवा के पास जाए, मगर वे आदमी न जाएँ। और बाकी लोग भी मूसा के साथ न जाएँ।"[5]

3 इसके बाद मूसा ने आकर लोगों को वे सारी बातें बतायीं जो यहोवा ने कही थीं और सारे न्याय-सिद्धांत सुनाए।[6] तब सब लोगों ने एकमत होकर कहा, "यहोवा ने जो-जो कहा है, वह सब करना हमें मंज़ूर है।"[7] **4** फिर मूसा ने वे सारी बातें लिख डालीं जो यहोवा ने उससे कही थीं।[8] फिर वह सुबह तड़के उठा और उसने पहाड़ के नीचे एक वेदी बनायी और इसराएल के 12 गोत्रों के लिए यादगार के तौर पर 12 पत्थर खड़े किए। **5** इसके बाद उसने कुछ जवान इसराएली आदमियों को भेजा और उन्होंने यहोवा के लिए होम-बलियाँ चढ़ायीं और बैलों की शांति-बलि अर्पित की।[9] **6** फिर मूसा ने उन जानवरों के खून में से आधा खून लेकर कटोरों में डाला और आधा खून वेदी पर छिड़क दिया। **7** तब मूसा ने करार की किताब ली और उसे लोगों के सामने पढ़कर

23:26 *या "पूरी उम्र जीने दूँगा।" **23:27** *या "तुम्हारे सभी दुश्मनों को पीठ दिखाकर भागने पर मजबूर करूँगा।" **23:28** *या शायद, "में डर; आतंक फैला दूँगा।" **23:31** *यानी फरात नदी।

अध्य. 23
1 निर्ग 20:5, लैव 18:3, व्य 12:30, 2इत 33:2
2 निर्ग 20:3, गि 33:52
3 व्य 6:13, व्य 10:12, यह 22:5, मत 4:10
4 व्य 7:13
5 व्य 7:15
6 व्य 7:14, व्य 28:4
7 व्य 2:25, यह 2:9
8 व्य 7:23, 24
9 व्य 7:20, यह 2:11
10 यह 24:11
11 व्य 7:22
12 व्य 9:4
13 उत 15:18, व्य 1:7, यह 1:4, 1रा 4:21

दूसरा कॉल.
1 न्या 1:4, न्या 11:21
2 निर्ग 34:12, गि 25:1, 2, व्य 7:2, 2कुर 6:14
3 यह 23:12, 13, न्या 1:28, भज 106:36

अध्य. 24
4 लैव 10:1
5 निर्ग 20:21, गि 12:8
6 निर्ग 21:1, व्य 4:1
7 व्य 5:27, यह 24:22
8 निर्ग 34:27, व्य 31:9
9 लैव 3:1, लैव 7:11

सुनाया।[1] उन्होंने कहा, "यहोवा ने जो-जो
कहा है, वह सब हम करेंगे और उसकी
हर आज्ञा मानेंगे।"[2] **8** तब मूसा ने वह
खून लेकर लोगों पर छिड़का[3] और कहा,
"तुमने इस किताब में लिखी बातों को
मानने की हामी भरी है इसलिए देखो,
यहोवा ने तुम्हारे साथ जो करार किया है
उसे यह खून पक्का करता है।"[4]

9 फिर मूसा और हारून, नादाब और
अबीहू और इसराएल के मुखियाओं में
से 70 आदमी पहाड़ पर गए। **10** वहाँ
उन्होंने इसराएल के परमेश्वर को देखा।[5]
उसके पैरों के नीचे नीलम के फर्श जैसा
कुछ दिखायी दिया, जो स्वर्ग-सा शुद्ध
और निर्मल था।[6] **11** परमेश्वर ने उन
खास आदमियों को कुछ नहीं किया[7] और
उन्होंने सच्चे परमेश्वर का एक दर्शन
देखा और खाया-पीया।

12 यहोवा ने अब मूसा से कहा, "तू
यहाँ पहाड़ के ऊपर मेरे पास आ और
यहीं रह। मैं तुझे पत्थर की पटि-
याएँ दूँगा जिन पर मैं अपना कानून और
अपनी आज्ञाएँ लिखूँगा ताकि ये लोगों को
सिखायी जाएँ।"[8] **13** तब मूसा अपने
सेवक यहोशू के साथ गया[9] और मूसा
सच्चे परमेश्वर के पहाड़ के ऊपर
चढ़ा।[10] **14** मूसा ने इसराएल के मुखि-
याओं से कहा था, "जब तक हम दोनों
लौटकर नहीं आते, तुम सब यहीं हमारा
इंतज़ार करना।[11] हारून और हूर[12]
तुम्हारे साथ रहेंगे। अगर किसी का
कोई मुकदमा हो तो वह उन दोनों के
पास जाए।"[13] **15** फिर मूसा पहाड़ के
ऊपर चढ़ा जिसकी चोटी बादल से ढकी
हुई थी।[14]

16 यहोवा की महिमा का तेज[15] सीनै
पहाड़[16] पर बना रहा और छः दिन तक
पहाड़ बादल से ढका रहा। फिर सातवें
दिन परमेश्वर ने बादल में से मूसा को
पुकारा। **17** पहाड़ के नीचे जो इस-
राएली देख रहे थे, उन्हें यहोवा की
महिमा का तेज ऐसा दिखायी दे रहा था
मानो पहाड़ की चोटी पर आग धधक रही
हो। **18** फिर मूसा बादल के अंदर गया
और पहाड़ पर चढ़ा।[1] वह 40 दिन और
40 रात वहीं पहाड़ पर रहा।[2]

25 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
2 "इसराएल के लोगों से कहना
कि वे मेरे लिए दान लेकर आएँ।
ऐसे हर इंसान से, जिसका दिल
उसे देने के लिए उभारता है, तुम मेरे
लिए दान इकट्ठा करना।[3] **3** लोगों से
तुम दान में ये चीज़ें लेनाः सोना,[4]
चाँदी,[5] ताँबा,[6] **4** नीला धागा, बैंजनी
ऊन,* सुर्ख लाल धागा,# बढ़िया मल-
मल, बकरी के बाल, **5** लाल रंग से
रंगी हुई मेढ़े की खाल, सील मछली की
खाल, बबूल की लकड़ी,[7] **6** दीयों के
लिए तेल,[8] अभिषेक के तेल[9] और सुगं-
धित धूप[10] के लिए बलसाँ, **7** एपोद[11]
और सीनेबंद[12] में जड़ने के लिए सुले-
मानी पत्थर और दूसरे रत्न। **8** वे
मेरे लिए एक पवित्र-स्थान बनाएँ और
मैं उनके बीच निवास* करूँगा।[13] **9** मैं
तुझे एक नमूना दिखाऊँगा और तुम लोग
ठीक उसी के मुताबिक मेरे लिए एक
पवित्र डेरा और उसके सारे साजो-सामान
बनाना।[14]

10 वे बबूल की लकड़ी से एक
संदूक* बनाएँ जिसकी लंबाई ढाई
हाथ,# चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊँचाई डेढ़

25:4 *या "लाल-बैंजनी रंग से रंगा ऊन।" #या "किरमिज़ी लाल रंग का धागा।" **25:8** *या "डेरा।" **25:10** *या "पेटी।" #एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 24
1 व्य 31:11 प्रेष 13:15
2 निर्ग 19:8
3 इब्र 12:24
4 इब्र 9:18-20
5 यूह 1:18
6 यहे 1:26 प्रक 4:3
7 निर्ग 24:1
8 व्य 5:22
9 गि 11:28
10 निर्ग 24:2
11 निर्ग 32:1
12 निर्ग 17:10
13 निर्ग 18:25, 26
14 निर्ग 19:9
15 निर्ग 16:10 लैव 9:23 गि 16:42
16 निर्ग 19:11

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 19:20
2 निर्ग 34:28 व्य 9:9

अध्य. 25
3 निर्ग 35:4-9 1इत 29:9 2कुर 9:7
4 निर्ग 38:24
5 निर्ग 38:25
6 निर्ग 38:3 निर्ग 38:29
7 निर्ग 36:20
8 निर्ग 27:20
9 निर्ग 30:23-25
10 निर्ग 30:34, 35
11 निर्ग 28:6
12 निर्ग 28:15
13 निर्ग 29:45 1रा 6:13 इब्र 9:11
14 1इत 28:12 प्रेष 7:44 इब्र 8:5 इब्र 9:9

हाथ हो।[1] **11** फिर तू शुद्ध सोने से संदूक को मढ़ना।[2] तू अंदर और बाहर से उस पर सोना मढ़ना और उसके चारों तरफ सोने का एक नक्काशीदार किनारा बनाना।[3] **12** और तू सोने के चार कड़े ढालकर बनाना और उन्हें संदूक के चारों पायों के ऊपर लगाना, संदूक के एक तरफ दो कड़े हों और दूसरी तरफ दो कड़े। **13** और बबूल की लकड़ी से लंबे-लंबे डंडे बनाना और उन पर सोना मढ़ना।[4] **14** फिर तू ये डंडे संदूक के दोनों तरफ लगे कड़ों में डालना ताकि उनके सहारे संदूक उठाया जा सके। **15** ये डंडे हमेशा संदूक के कड़ों के अंदर ही रहें, उन्हें कभी कड़ों से बाहर न निकाला जाए।[5] **16** तू संदूक के अंदर गवाही की वे पटियाएँ रखना जो मैं तुझे दूँगा।[6]

17 तू संदूक के लिए एक ढकना तैयार करना जो शुद्ध सोने का बना हो। इसकी लंबाई ढाई हाथ हो और चौड़ाई डेढ़ हाथ।[7] **18** संदूक के ढकने के दोनों किनारों पर सोने के दो करूब बनाना। सोने को हथौड़े से पीटकर ये करूब बनाना।[8] **19** ढकने के दोनों किनारों पर करूब बनाना, एक किनारे पर एक करूब होगा और दूसरे किनारे पर दूसरा करूब। **20** करूबों के दोनों पंख ऊपर की तरफ फैले हुए हों और संदूक के ढकने को ढके हुए हों।[9] दोनों करूब आमने-सामने हों और उनके मुँह ढकने की तरफ नीचे झुके हुए हों। **21** तू ढकने को संदूक के ऊपर रखना[10] और संदूक के अंदर गवाही की वे पटियाएँ रखना जो मैं तुझे दूँगा। **22** मैं संदूक के ढकने के ऊपर तुझ पर प्रकट होऊँगा और वहीं से तुझसे बात किया करूँगा।[11] मैं गवाही के संदूक के ऊपर दोनों करूबों के बीच से तुझे वह सारी आज्ञाएँ दूँगा जिन पर इसराएलियों को चलना है।

23 तू बबूल की लकड़ी से एक मेज़ भी बनाना।[1] उसकी लंबाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ हो।[2] **24** मेज़ को शुद्ध सोने से मढ़ना और उसके चारों तरफ सोने का एक नक्काशीदार किनारा बनाना। **25** फिर उस किनारे के साथ-साथ मेज़ के चारों तरफ एक पट्टी भी बनाना। उस पट्टी की चौड़ाई चार अंगुल* हो। पट्टी के नीचे सोने का एक नक्काशीदार किनारा बनाना। **26** मेज़ के लिए सोने के चार कड़े बनाना और उन्हें मेज़ के चारों कोनों पर उस जगह लगाना जहाँ उसके चार पाए जुड़े हों। **27** ये कड़े मेज़ की पट्टी के बिलकुल पास हों ताकि उनके अंदर वे डंडे डाले जाएँ जिनके सहारे मेज़ उठायी जाएगी। **28** तू ये डंडे बबूल की लकड़ी से बनाना और उन पर सोना मढ़ना। इन डंडों के सहारे ही मेज़ उठायी जाएगी।

29 तू मेज़ के लिए थालियाँ और प्याले बनाना और अर्घ चढ़ाने के लिए सुराहियाँ और कटोरे बनाना। तू ये सारे बरतन शुद्ध सोने के बनाना।[3] **30** तू मेज़ पर मेरे सामने नज़राने की रोटी नियमित तौर पर रखना।[4]

31 तू शुद्ध सोने की एक दीवट बनाना।[5] सोने को हथौड़े से पीटकर यह दीवट बनाना। दीवट का पाया, उसकी डंडी, डालियाँ, फूल, कलियाँ और पंखुड़ियाँ, ये सब सोने के एक ही टुकड़े के बने हों।[6] **32** दीवट की डंडी के दोनों तरफ से छः डालियाँ निकलेंगी, एक तरफ से तीन और दूसरी तरफ से

25:25 *करीब 7.4 सें.मी. (2.9 इंच)। अति. ख14 देखें।

अध्य. 25
1 निर्ग 37:1-5
2 इब्र 9:4
3 निर्ग 30:1, 3
4 निर्ग 30:1, 5; 1इत 15:15
5 1रा 8:8
6 निर्ग 31:18; निर्ग 40:20; 1रा 8:9; इब्र 9:4
7 निर्ग 37:6-9
8 1शम 4:4; इब्र 9:5
9 1रा 8:7; 1इत 28:18
10 निर्ग 40:20; इब्र 9:4, 5
11 निर्ग 30:6; लैव 16:2; गि 7:89; न्या 20:27; भज 80:1

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 40:22; लैव 24:6; गि 3:30, 31; इब्र 9:2
2 निर्ग 37:10-15
3 निर्ग 37:16; गि 4:7; 1रा 7:48, 50
4 लैव 24:5, 6; 1शम 21:6; 1इत 9:32; 2इत 13:11; मत 12:4
5 निर्ग 40:24; 1रा 7:48, 49; इब्र 9:2
6 निर्ग 37:17-24

तीन। **33** हर डाली पर बादाम के फूल
जैसे तीन फूलों की बनावट होनी चाहिए।
और इन फूलों के बीच एक कली और
एक पंखुड़ी की रचना होनी चाहिए।
इस तरह की रचनाएँ दीवट की डंडी
से निकलनेवाली छः की छः डालियों पर
होनी चाहिए। **34** दीवट की डंडी पर
बादाम के फूल जैसे चार फूलों की बना-
वट होनी चाहिए और फूलों के बीच
एक कली और एक पंखुड़ी होनी चाहिए।
35 दीवट की डंडी के जिस हिस्से से
डालियों का पहला जोड़ा निकलता है
उसके नीचे एक कली जैसी रचना होनी
चाहिए। इसी तरह जहाँ से डालियों का
दूसरा और तीसरा जोड़ा निकलता है,
उसके नीचे भी एक-एक कली जैसी
रचना होनी चाहिए। कली जैसी रचनाएँ
सभी छः डालियों के नीचे होनी चाहिए।
36 शुद्ध सोने के एक ही टुकड़े को हथौड़े
से पीटकर कलियाँ, डालियाँ और पूरी
दीवट बनाना।[1] **37** दीवट पर रखने के
लिए सात दीए बनाना जिनके जलने से
सामने की पूरी जगह रौशन हो जाएगी।[2]
38 दीवट के चिमटे और आग उठाने
के करछे शुद्ध सोने से बनाए जाएँ।[3]
39 दीवट और ये सारी चीज़ें एक तोड़े*
शुद्ध सोने से बनायी जाएँ। **40** ध्यान
रखना कि ये सारी चीज़ें ठीक उसी नमूने
के मुताबिक बनायी जाएँ जो तुझे इस
पहाड़ पर दिखाया गया है।[4]

26 तू पवित्र डेरे[5] को ढकने
के लिए दस कपड़े बनाना।
ये कपड़े बटे हुए बढ़िया मलमल, नीले
धागे, बैंजनी ऊन और सुर्ख लाल
धागे से बनाना। और उन पर कढ़ाई
करके करूब[6] बनाना।[7] **2** हर कपड़ा
28 हाथ* लंबा और 4 हाथ चौड़ा हो। ये
दसों कपड़े एक ही नाप के होने चाहिए।[1]
3 इनमें से पाँच कपड़ों को एक-दूसरे से
जोड़ देना और बाकी पाँच को भी एक-
दूसरे से जोड़ देना। **4** पाँच कपड़ों के
एक भाग के उस छोर पर तू नीले धागे के
फंदे बनाना जहाँ दूसरा भाग उससे जोड़ा
जाएगा। दूसरे भाग के उस छोर पर भी
फंदे बनाना जहाँ वह पहले भाग से जोड़ा
जाएगा। **5** दोनों भागों के छोर पर
पचास-पचास फंदे बनाना। ये फंदे एक-
दूसरे के आमने-सामने हों ताकि दोनों
भागों को जोड़ा जा सके। **6** और सोने
की 50 चिमटियाँ बनाना और उनसे दोनों
भागों को जोड़ देना ताकि उनसे एक
बड़ा कपड़ा तैयार हो जाए।[2]

7 तू पवित्र डेरे को ढकने के लिए
बकरी के बालों से भी बुनकर कपड़े
बनाना।[3] तू इस तरह के 11 कपड़े
बनाना।[4] **8** हर कपड़ा 30 हाथ लंबा
और 4 हाथ चौड़ा हो। ये 11 कपड़े
एक ही नाप के होने चाहिए। **9** इनमें
से पाँच कपड़ों को एक-दूसरे से जोड़
देना और बाकी छः को भी एक-दूसरे से
जोड़ देना। इस कपड़े को डेरे के ऊपर
इस तरह डालना कि छः कपड़ोंवाला भाग
सामने की तरफ हो। फिर सामने की
तरफ लटके हुए छठे कपड़े को मोड़ देना।
10 पाँच कपड़ों से बने भाग के छोर पर
तू 50 फंदे बनाना। उसी तरह छः कपड़ों
से बने भाग के उस छोर पर भी 50
फंदे बनाना जहाँ वह पहले भाग से जोड़ा
जाएगा। **11** तू ताँबे की 50 चिमटियाँ
बनाना और उन्हें फंदों में फँसाना ताकि
उनसे दोनों भागों को जोड़कर एक बड़ा
कपड़ा तैयार हो जाए। **12** इस बड़े

अध्य. 25
1 गि 8:4
2 निर्ग 30:8, लैव 24:2, 3, गि 8:2, 2इत 13:11
3 गि 4:9
4 निर्ग 39:42, गि 8:4, प्रेष 7:44, इब्र 8:5

अध्य. 26
5 इब्र 8:5, इब्र 9:9, 11
6 उत 3:24, भज 99:1
7 निर्ग 36:8-13

दूसरा कॉल.
1 गि 4:25
2 निर्ग 39:33, 34
3 निर्ग 35:26
4 निर्ग 36:14-18

25:39 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

26:2 *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

कपड़े को डेरे के ऊपर डालने से उसका
जो हिस्सा लटका हुआ होगा उसे लटका
ही रहने देना। पाँच कपड़ोंवाला जो भाग
डेरे पर डाला जाएगा उसके आधे कपड़े
को पीछे की तरफ लटका ही रहने देना।
13 बकरी के बालों से बुना यह कपड़ा
डेरे के दोनों तरफ पहले कपड़े से एक-
एक हाथ लंबा होना चाहिए ताकि डेरा
अच्छी तरह ढक जाए।

14 तू डेरे को ढकने के लिए एक और
चादर बनाना जो लाल रंग से रंगी हुई
मेढ़े की खाल की हो। उसके ऊपर डालने
के लिए एक और चादर बनाना जो सील
मछली की खाल की हो।[1]

15 तू डेरे के लिए बबूल की लकड़ी से
ऐसी चौखटें बनाना[2] जो सीधी खड़ी की
जा सकें।[3] **16** हर चौखट की ऊँचाई
दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ हो।
17 हर चौखट के नीचे दो चूलें* बनाना
जो एक सीध में हों। तुम डेरे की
सभी चौखटें इसी तरह बनाना। **18** तू
डेरे के दक्षिणी हिस्से के लिए 20 चौखटें
बनाना। यह हिस्सा दक्षिण की तरफ
होगा।

19 इन 20 चौखटों को खड़ा करने
के लिए चाँदी की 40 खाँचेदार
चौकियाँ[4] बनाना जिनमें चूलों को बिठाया
जाएगा। हर चौखट की दो चूलों
के लिए दो चौकियाँ होंगी।[5] **20** डेरे
के दूसरी तरफ यानी उत्तरी हिस्से के
लिए 20 चौखटें बनाना **21** और उन्हें
खड़ा करने के लिए चाँदी की 40 खाँचे-
दार चौकियाँ बनाना। हर चौखट के लिए
दो चौकियाँ होंगी। **22** डेरे के पीछे के
हिस्से यानी पश्चिमी हिस्से के लिए
छः चौखटें बनाना।[6] **23** और तिकोने
आकार में दो चौखटें बनाना जो डेरे के
लिए कोने के खंभों का काम करेंगी।
24 कोने की हर चौखट के दोनों भाग
नीचे से जाकर ऊपरी सिरे पर एक-दूसरे
से मिल जाएँ और वहाँ पहले कड़े पर जुड़
जाएँ। दोनों कोनों के लिए ऐसी ही चौखटें
बनाना जो कोने के खंभों का काम करेंगी।
25 इस तरह पीछे के हिस्से के लिए
कुल आठ चौखटें होंगी और उन्हें खड़ा
करने के लिए चाँदी की 16 खाँचेदार
चौकियाँ होंगी, यानी हर चौखट के नीचे
दो चौकियाँ।

26 तू डेरे की चौखटों को जोड़ने के
लिए बबूल की लकड़ी के डंडे बनाना।
डेरे के एक तरफ की चौखटों को जोड़ने
के लिए पाँच डंडे,[1] **27** दूसरी तरफ की
चौखटों को जोड़ने के लिए पाँच डंडे और
पीछे यानी पश्चिमी हिस्से की चौखटों
को जोड़ने के लिए पाँच डंडे बनाना।
28 बीच में एक लंबा डंडा होना चाहिए
जो एक कोने से दूसरे कोने तक चौखटों
को जोड़ेगा।

29 तू चौखटों को और उन्हें जोड़ने-
वाले डंडों को सोने से मढ़ना।[2] तू सोने के
कड़े बनाना ताकि उनके अंदर डंडे डाल-
कर चौखटों को जोड़ा जा सके। **30** तू
पवित्र डेरे को उसी नमूने के मुताबिक
खड़ा करना जो तुझे पहाड़ पर दिखाया
गया है।[3]

31 तू नीले धागे, बैंजनी ऊन, सुर्ख
लाल धागे और बटे हुए बढ़िया मलमल
से एक परदा[4] बनाना और उस पर कढ़ाई
करके करूब बनाना। **32** इस परदे को
चार खंभों पर लटकाना। ये खंभे बबूल
की लकड़ी के बने हों और उन पर
सोना मढ़ा हो और उन्हें चाँदी की चार
खाँचेदार चौकियों पर बिठाना। इन खंभों
पर सोने के अंकड़े लगाना। **33** परदे

26:17 * या "चौखट में दो सीधे खड़े खंभे।"

अध्य. 26
1 निर्ग 36:19
2 गि 4:29, 31
3 निर्ग 36:20-23
4 गि 3:36
5 निर्ग 36:24-26
6 निर्ग 36:27-30

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 36:31-33
2 निर्ग 12:35, 36
निर्ग 36:34
3 निर्ग 19:3
निर्ग 25:9
प्रेष 7:44
इब्र 8:5
4 निर्ग 36:35, 36
लूक 23:45
इब्र 6:19
इब्र 9:3
इब्र 10:19, 20

को चिमटियों के नीचे लटकाना। यह
परदा पवित्र भाग[1] और परम-पवित्र
भाग[2] के बीच एक दीवार का काम
करेगा। फिर गवाही का संदूक[3] लाकर
परदे के उस तरफ रखना। 34 गवाही
के संदूक को ढकने से ढक देना और उसे
परम-पवित्र भाग के अंदर रखना।

35 परदे के इस तरफ उत्तर दिशा में
मेज़ रखना। मेज़ के सामने यानी दक्षिण
की तरफ दीवट रखना।[4] 36 तू डेरे के
द्वार के लिए भी एक परदा बनाना। यह
परदा नीले धागे, बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल
धागे और बटे हुए बढ़िया मलमल से बुन-
कर तैयार करना।[5] 37 डेरे के द्वार पर
परदा लटकाने के लिए बबूल की लकड़ी
के पाँच खंभे बनाना और उन्हें सोने से
मढ़ना। उन खंभों पर लगाए जाने-
वाले अंकड़े सोने के होने चाहिए और
तू उन खंभों को खड़ा करने के लिए
ताँबे की पाँच खाँचेदार चौकियाँ ढालकर
बनाना।

27 तू बबूल की लकड़ी की एक वेदी
बनाना।[6] उसकी लंबाई पाँच
हाथ* और चौड़ाई पाँच हाथ हो। वेदी
चौकोर हो और उसकी ऊँचाई तीन हाथ
हो।[7] 2 वेदी के चारों कोनों पर सींग[8]
बनाना। ये सींग वेदी का ही हिस्सा होने
चाहिए। तू पूरी वेदी को ताँबे से मढ़ना।[9]
3 तू वेदी की राख* उठाकर ले जाने के
लिए बाल्टियाँ बनाना। साथ ही बेलचे,
कटोरे, काँटे और आग उठाने के करछे
बनाना। वेदी की सारी चीज़ें तू ताँबे से
बनाना।[10] 4 तू वेदी के लिए ताँबे की
एक जाली बनाना और चारों कोनों पर
ताँबे के चार कड़े बनाना। 5 इस जाली
को वेदी के अंदर लगाना। यह वेदी के
किनारे से थोड़ा नीचे यानी वेदी के बीच
में लगी होनी चाहिए। 6 वेदी के लिए
बबूल की लकड़ी से डंडे बनाना और उन
पर ताँबा मढ़ना। 7 ये डंडे वेदी के दोनों
तरफ के कड़ों के अंदर डाले जाएँगे ताकि
उनके सहारे वेदी उठायी जाए।[1] 8 तू
तख्तों को जोड़कर एक पेटी के आकार
में यह वेदी बनाना। यह ऊपर और नीचे,
दोनों तरफ खुली होनी चाहिए। वेदी ठीक
उसी तरह बनायी जाए जैसे तुझे पहाड़ पर
इसका नमूना दिखाया गया है।[2]

9 तू पवित्र डेरे के लिए एक आँगन
बनाना।[3] आँगन के चारों तरफ बटे
हुए बढ़िया मलमल की कनातों से एक
घेरा बनाना। दक्षिण में कनातों की कुल
लंबाई 100 हाथ होगी।[4] 10 कनातों
को लगाने के लिए 20 खंभे होने
चाहिए। ये खंभे ताँबे की 20 खाँचेदार
चौकियों पर बिठाए जाएँगे। इन खंभों
के अंकड़े और उनके छल्ले चाँदी के
होने चाहिए। 11 उत्तर की कनातों की
कुल लंबाई भी 100 हाथ होगी। उन्हें
लगाने के लिए 20 खंभे होंगे जिन्हें
ताँबे की 20 खाँचेदार चौकियों पर
बिठाया जाएगा। इन खंभों के अंकड़े
और उनके छल्ले भी चाँदी के होने
चाहिए। 12 पश्चिम की तरफ आँगन
की चौड़ाई के लिए कनातों की कुल लंबाई
50 हाथ होनी चाहिए। कनातों को लगाने
के लिए दस खंभे होने चाहिए और ये
खंभे दस खाँचेदार चौकियों पर बिठाए
जाएँगे। 13 पूरब की तरफ, जहाँ सूरज
उगता है, आँगन की चौड़ाई 50 हाथ हो।
14 वहाँ आँगन के द्वार के दायीं तरफ की
कनातें 15 हाथ लंबी होंगी। उनके लिए
तीन खंभे और तीन खाँचेदार चौकियाँ

27:1 *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें। **27:3** *यानी बलिदान में जलाए गए जानवरों की पिघली चरबी से भीगी राख।

अध्य. 26
1 निर्ग 40:22, 26
2 निर्ग 40:21; लैव 16:2; 1रा 8:6; इब्र 9:2-4; इब्र 9:12, 24
3 1रा 8:6
4 लैव 24:2, 3; 1रा 7:48, 49
5 निर्ग 36:37, 38

अध्य. 27
6 निर्ग 40:29; 2इत 4:1; इब्र 13:10
7 निर्ग 38:1-7
8 लैव 4:25
9 1रा 8:64
10 1रा 7:45

दूसरा कॉल.
1 गि 4:14, 15
2 निर्ग 25:40; 1इत 28:12; प्रेष 7:44; इब्र 8:5
3 निर्ग 40:8; 1रा 6:36
4 निर्ग 38:9-15

होंगी।[1] 15 आँगन के द्वार के बायीं
तरफ की कनातें भी 15 हाथ लंबी होंगी।
उनके लिए तीन खंभे और तीन खाँचेदार
चौकियाँ होंगी।

16 आँगन के द्वार पर 20 हाथ लंबा
एक परदा होना चाहिए। इस परदे को
नीले धागे, बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागे
और बटे हुए बढ़िया मलमल से बुनकर
तैयार करना।[2] यह परदा लगाने के लिए
वहाँ चार खंभे होने चाहिए और इन्हें चार
खाँचेदार चौकियों पर बिठाना चाहिए।[3]
17 आँगन के चारों तरफ सभी खंभों में
चाँदी के जोड़ और चाँदी के अंकड़े होने
चाहिए, मगर उनकी खाँचेदार चौकियाँ
ताँबे की होनी चाहिए।[4] 18 आँगन की
लंबाई 100 हाथ,[5] चौड़ाई 50 हाथ
और चारों तरफ कनातों की ऊँचाई
5 हाथ होनी चाहिए। इन कनातों को
बटे हुए बढ़िया मलमल से बनाना।
आँगन की खाँचेदार चौकियाँ ताँबे की
होनी चाहिए। 19 पवित्र डेरे में सेवा
के लिए इस्तेमाल होनेवाले सभी बरतन
और चीज़ें, साथ ही डेरे की खूँटियाँ और
आँगन की सारी खूँटियाँ ताँबे की होनी
चाहिए।[6]

20 इसराएलियों को आज्ञा देना कि
पवित्र डेरे में दीयों को हमेशा जलाए रखने
के लिए वे शुद्ध जैतून का तेल लाकर
तुझे दिया करें, जो कूटकर निकाला गया
हो।[7] 21 इन दीयों को, जो भेंट के तंबू
में गवाही के संदूक के पासवाले परदे के
इस तरफ होंगे,[8] हारून और उसके बेटे
यहोवा के सामने शाम से सुबह तक
जलाए रखने का इंतज़ाम करेंगे।[9] इस-
राएलियों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस नियम
का पालन करना है, जो उन्हें सदा के लिए
दिया जा रहा है।[10]

28 तू इसराएलियों में से अपने भाई
हारून[1] को और उसके बेटे[2]
नादाब, अबीहू,[3] एलिआज़र और ईता-
मार[4] को मेरे सामने हाज़िर होने का
आदेश देना ताकि वे याजकों के नाते मेरी
सेवा करें।[5] 2 तू अपने भाई हारून के
लिए ऐसी पवित्र पोशाक बनाना जो उसे
गरिमा दे और उसकी शोभा बढ़ाए।[6]
3 यह पोशाक तैयार करने के लिए तू
उन सब कुशल कारीगरों* से बात करना
जिन्हें मैंने भरपूर बुद्धि दी है।[7] वे हारून
के लिए ऐसी पोशाक बनाएँगे जिससे पह-
चान हो कि उसे याजक के नाते मेरी सेवा
करने के लिए पवित्र ठहराया गया है।

4 कारीगर ये सब बनाएँगे: एक
सीनाबंद,[8] एक एपोद,[9] बिन आस्तीन
का एक बागा,[10] एक चारखानेदार
कुरता, एक पगड़ी[11] और एक कमर-
पट्टी।[12] वे तेरे भाई हारून और उसके
वंशजों के लिए यह पवित्र पोशाक बनाएँ
ताकि वे याजकों के नाते मेरी सेवा करें।
5 कुशल कारीगर इसे सोने, नीले धागे,
बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागे और बढ़िया
मलमल से बनाएँगे।

6 वे एपोद को सोने, नीले धागे,
बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागे और बटे हुए
बढ़िया मलमल से बनाएँ। उस पर कढ़ाई
का काम होना चाहिए।[13] 7 एपोद के
कंधे के दोनों हिस्सों को ऊपर इस तरह
जोड़ना चाहिए कि उनके ऊपरी सिरे
आपस में जुड़े रहें। 8 एपोद में एक
बुना हुआ कमरबंद[14] लगा होना चाहिए
ताकि एपोद को कसकर बाँधा जा सके।
कमरबंद भी इन चीज़ों से बनाया जाए:
सोना, नीला धागा, बैंजनी ऊन, सुर्ख
लाल धागा और बटा हुआ बढ़िया
मलमल।

अध्य. 27
1 निर्ग 39:33, 40
2 निर्ग 35:25
3 निर्ग 38:18, 19
4 निर्ग 38:17
5 निर्ग 27:9
6 निर्ग 38:20; गि 3:36, 37
7 निर्ग 39:33, 37; लैव 24:1-3
8 निर्ग 26:33; निर्ग 40:3; इब्र 9:2, 3
9 निर्ग 30:8
10 गि 18:23

दूसरा कॉल.

अध्य. 28
1 इब्र 5:4
2 निर्ग 6:23; 1इत 6:3
3 लैव 10:1; गि 26:61
4 निर्ग 38:21; लैव 10:16; 1इत 24:2
5 लैव 8:2; इब्र 5:1
6 निर्ग 29:5; लैव 8:7
7 निर्ग 31:6; निर्ग 36:1
8 निर्ग 39:8, 15; लैव 8:8
9 निर्ग 39:2
10 निर्ग 39:22
11 निर्ग 39:27, 28; निर्ग 39:30, 31; लैव 8:9
12 निर्ग 39:27, 29; लैव 8:7
13 निर्ग 39:2-5
14 निर्ग 29:5

28:3 *शा., "दिल से बुद्धिमान लोगों।"

9 तू दो सुलेमानी पत्थर[1] लेना और उन पर इसराएल के बेटों के नाम खोदना।[2] 10 उनकी उम्र के मुताबिक क्रम से एक पत्थर पर छः के नाम और दूसरे पर बाकी छः के नाम खोदना। 11 पत्थरों पर खुदाई करनेवाला कारीगर दोनों पत्थरों पर इसराएल के बेटों के नाम इस तरह खोदकर लिखेगा जैसे मुहर पर खुदाई की जाती है।[3] फिर उन पत्थरों को सोने के खाँचों में जड़ना। 12 तू दोनों पत्थरों को एपोद के कंधे के हिस्सों पर लगाना ताकि ये इसराएल के बेटों के लिए यादगार के पत्थर बन जाएँ।[4] ये नाम जो यादगार के लिए लिखे गए हैं, इन्हें हारून अपने दोनों कंधों पर धारण किए यहोवा के सामने हाज़िर हुआ करेगा। 13 तू सोने के खाँचे बनाना 14 और शुद्ध सोने की दो ज़ंजीरें बनाना जो एक डोरी की तरह बटी हों।[5] इन ज़ंजीरों को खाँचों से जोड़ देना।[6]

15 तू कढ़ाई का काम करनेवाले से न्याय का सीनाबंद[7] बनवाना। इसे भी एपोद की तरह इन चीज़ों से बनवाना: सोना, नीला धागा, बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागा और बटा हुआ बढ़िया मलमल।[8] 16 सीनाबंद ऐसा हो कि बीच से मोड़ने पर चौकोर हो जाए, एक बित्ता* लंबा और एक बित्ता चौड़ा। 17 इसमें चार कतारों में रत्न लगाना जो खाँचों में बिठाए गए हों। पहली कतार में माणिक, पुखराज और पन्ना हों। 18 दूसरी कतार में फिरोज़ा, नीलम और यशब। 19 तीसरी कतार में *लशम,* * हकीक और कटैला। 20 चौथी कतार में करकेटक, सुलेमानी और मरगज। इन रत्नों को सोने के खाँचों में बिठाना। 21 इन 12 रत्नों पर इसराएल के 12 बेटों के नाम होने चाहिए। ये नाम ऐसे खुदवाना जैसे मुहर पर खुदाई की जाती है। हर रत्न पर एक बेटे का नाम होगा जो एक गोत्र को दर्शाएगा।

22 तू सीनेबंद के लिए शुद्ध सोने की बटी हुई ज़ंजीरें बनाना जो दिखने में डोरियों जैसी लगें।[1] 23 तू सीनेबंद के लिए सोने के दो छल्ले बनाना और उन्हें सीनेबंद के दो कोनों पर लगाना। 24 सोने की दोनों डोरियों को सीनेबंद के कोनों पर लगे छल्लों में डालना। 25 दो डोरियों के दो छोर दो खाँचों के अंदर से निकालकर उन्हें एपोद के कंधे के हिस्सों पर, सामने की तरफ लगाना। 26 तू सोने के दो छल्ले बनाना और उन्हें सीनेबंद के निचले दो कोनों पर अंदर की तरफ लगाना, यानी सीनेबंद के उस हिस्से में जो एपोद की तरफ है।[2] 27 तू सोने के दो और छल्ले बनाना और उन्हें एपोद के सामने की तरफ, कंधे के हिस्सों के नीचे, जहाँ वह जुड़ता है यानी बुने हुए कमरबंद[3] के ठीक ऊपर लगाना। 28 फिर एक नीली डोरी से सीनेबंद के छल्लों को एपोद के छल्लों से जोड़ देना। इससे सीनाबंद एपोद में कमरबंद के ऊपर अपनी जगह पर बना रहेगा।

29 हारून जब भी डेरे के पवित्र भाग में जाएगा तो उसे अपनी छाती पर न्याय का सीनाबंद पहने और उस पर हमेशा की यादगार के लिए दर्ज़ इसराएल के बेटों के नाम धारण किए हुए यहोवा के सामने हाज़िर होना चाहिए। 30 तू न्याय के सीनेबंद में ऊरीम और

अध्या. 28
1 निर्ग 35:5, 9; निर्ग 35:27
2 निर्ग 1:1-4
3 निर्ग 39:6, 14
4 निर्ग 39:7
5 निर्ग 39:15
6 निर्ग 39:18
7 निर्ग 28:30; लैव 8:8; गि 27:21
8 निर्ग 39:8-14

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 39:15-18
2 निर्ग 39:19-21
3 निर्ग 28:8; लैव 8:7

28:16 *करीब 22.2 सें.मी. (8.75 इंच)। अति. ख14 देखें। **28:19** *इस रत्न के बारे में कोई सही जानकारी नहीं है। यह कहरुवा, धूम्रकांत, उपल या तुरमली हो सकता है।

तुम्मीम*[1] रखना और जब भी हारून यहोवा के सामने आए तो ये उसके दिल पर हों। हारून जब भी इसराएलियों की खातिर यहोवा के फैसले जानने के लिए उसके सामने हाज़िर होगा तो उसके दिल पर परमेश्‍वर के फैसले जानने का यह ज़रिया हो।

31 एपोद के नीचे पहनने के लिए एक बिन आस्तीन का बागा बनाना। यह बागा सिर्फ नीले धागे से बनाना।[2] **32** बागे में ऊपर गला* बनाना और उसके चारों तरफ एक जुलाहे से किनारा बनवाना। यह किनारा बख्तर के गले के किनारे जैसा मज़बूत होना चाहिए ताकि फट न जाए। **33** बागे के नीचे के घेरे में अनार के आकार में फुँदने बनाना। इन्हें नीले धागे, बैंजनी ऊन और सुर्ख लाल धागे से बनाना। अनारों के बीच-बीच में सोने की घंटियाँ लगाना। **34** सोने की एक घंटी के बाद एक अनार, फिर एक घंटी फिर एक अनार। इस तरह बिन आस्तीन के बागे के पूरे घेरे में अनार और घंटियाँ लगाना। **35** हारून को यह बागा पहनकर ही सेवा करनी चाहिए ताकि जब भी वह पवित्र-स्थान में यहोवा के सामने जाए और वहाँ से बाहर निकले तो घंटियों की आवाज़ सुनायी दे, वरना वह मर जाएगा।[3]

36 तू शुद्ध सोने की एक चमचमाती पट्टी बनाना और उस पर ये शब्द खुदवाना, 'यहोवा पवित्र है।' ये उसी तरह खुदवाना जैसे मुहर पर खुदाई की जाती है।[4] **37** इस पट्टी को एक नीली डोरी से पगड़ी पर बाँधना।[5] यह पट्टी हमेशा पगड़ी पर सामने की तरफ लगी होनी चाहिए। **38** यह हारून के माथे पर नज़र आएगी। जब कोई उन पवित्र चीज़ों के खिलाफ पाप करता है जिन्हें इसराएली पवित्र भेंट के तौर पर अलग करके अर्पित करते हैं, तो इसके लिए हारून ज़िम्मेदार होगा।[1] यह पट्टी हारून के माथे पर हमेशा होनी चाहिए ताकि लोग यहोवा की मंज़ूरी पा सकें।

39 तू बढ़िया मलमल से चारखाने का एक कुरता बुनना और उसे बाँधने के लिए एक बुनी हुई कमर-पट्टी बनाना। और बढ़िया मलमल की एक पगड़ी भी बनाना।[2]

40 तू हारून के बेटों के लिए भी कुरते, कमर-पट्टियाँ और साफा बनाना[3] जो उनकी गरिमा और शोभा बढ़ाए।[4] **41** तू अपने भाई हारून और उसके बेटों को ये पोशाकें पहनाकर उनका अभिषेक करना,[5] उन्हें याजकपद सौंपना*[6] और इस सेवा के लिए अलग ठहराना। फिर वे याजकों के नाते मेरी सेवा करेंगे। **42** तू उनके लिए मलमल के जाँघिये भी बनाना ताकि उनका नंगापन* ढका रहे।[7] ये जाँघिये कमर से जाँघ तक लंबे होने चाहिए। **43** हारून और उसके बेटे जब भी भेंट के तंबू में या पवित्र-स्थान की वेदी पर सेवा करने आएँगे तो वे ये जाँघिये पहने हुए हों ताकि ऐसा न हो कि वे दोषी पाए जाएँ और मार डाले जाएँ। यह हारून और उसके वंशजों के लिए सदा का नियम है।

29 तू उन्हें याजकों के नाते मेरी सेवा करने के लिए इस तरीके से पवित्र ठहराना: तू यह सब लेना, एक बैल, दो मेढ़े जिनमें कोई दोष न हो,[8] **2** बिन-खमीर की रोटियाँ, छल्ले जैसी बिन-खमीर की रोटियाँ जो तेल से

अध्य. 28

1 लैव 8:8; गि 27:21; व्य 33:8; 1शम 28:6; एज 2:62, 63
2 निर्ग 39:22-26; लैव 8:7
3 लैव 16:2; गि 18:7
4 निर्ग 39:30, 31; लैव 8:9; 1इत 16:29; भज 93:5; 1पत 1:16
5 निर्ग 29:6

दूसरा कॉल.

1 लैव 22:9; गि 18:1
2 निर्ग 28:4; निर्ग 39:27-29
3 लैव 8:13
4 निर्ग 28:2
5 निर्ग 29:4, 7; निर्ग 30:30; प्रेष 10:38; 2कुर 1:21
6 निर्ग 29:8, 9; लैव 8:33; गि 3:2, 3
7 लैव 6:10

अध्य. 29

8 लैव 8:2; व्य 17:1

28:30 *शब्दावली देखें। **28:32** *या "सिर डालने के लिए छेद।"

28:41 *शा., "उनके हाथ भर देना।" **28:42** *या "उनके गुप्त अंग।"

गूँधकर बनायी गयी हों और तेल चुपड़ी बिन-खमीर की पापड़ी।[1] ये रोटियाँ और पापड़ी मैदे से बनाना **3** और इन्हें एक टोकरी में रखना।[2] फिर बैल और दोनों मेढ़ों के साथ ये रोटियाँ और पापड़ी अर्पित करना।

4 तू हारून और उसके बेटों को भेंट के तंबू के द्वार[3] पर लाना और उन्हें नहाने की आज्ञा देना।[4] **5** फिर तू हारून के लिए बनाया गया कुरता, बिन आस्तीन का बागा, एपोद और सीनाबंद लेना और उसे पहनाना। एपोद का बुना हुआ कमर-बंद उसकी कमर पर कसकर बाँधना।[5] **6** तू उसके सिर पर पगड़ी रखना और पगड़ी पर समर्पण की पवित्र निशानी बाँधना।*[6] **7** तू अभिषेक का तेल[7] लेकर हारून के सिर पर उँडेलना और उसका अभिषेक करना।[8]

8 इसके बाद हारून के बेटों को सामने लाना और उन्हें कुरते पहनाना।[9] **9** और हारून और उसके बेटों की कमर पर कमर-पट्टी बाँधना और उनके सिर पर साफा बाँधना। अब से याजकपद उनका होगा और यह नियम सदा के लिए है।[10] इस तरह तू हारून और उसके बेटों को याजकपद सौंपना।*[11]

10 फिर तू भेंट के तंबू के सामने बैल को लाना और हारून और उसके बेटे बैल के सिर पर अपने हाथ रखेंगे।[12] **11** तू तंबू के द्वार पर यहोवा के सामने बैल हलाल करना।[13] **12** उसका थोड़ा-सा खून अपनी उँगली पर लेना और वेदी के सींगों पर लगाना।[14] बाकी सारा खून वेदी के नीचे उँडेल देना।[15] **13** फिर बैल की वह सारी चरबी[16] लेना जो अंतड़ियों को ढके रहती है और कलेजे के आस-पास होती है, साथ ही दोनों गुरदे और उनके ऊपर की चरबी भी लेना और यह सब वेदी पर रखकर जलाना ताकि उनका धुआँ उठे।[1] **14** मगर बैल का माँस, उसकी खाल और उसका गोबर छावनी के बाहर ले जाकर जला देना। यह पाप-बलि है।

15 इसके बाद तू दो मेढ़ों में से एक मेढ़ा लेना और हारून और उसके बेटे मेढ़े के सिर पर अपने हाथ रखें।[2] **16** फिर वह मेढ़ा हलाल करना और उसका खून ले जाकर वेदी के चारों तरफ छिड़कना।[3] **17** मेढ़े के टुकड़े-टुकड़े करना, उसकी अंतड़ियाँ और पाए साफ करना।[4] उन टुकड़ों को और सिर को तरतीब से रखना। **18** तू पूरे मेढ़े को वेदी पर रखकर जलाना ताकि उसका धुआँ उठे। यह यहोवा के लिए होम-बलि है जिसकी सुगंध पाकर वह खुश होता है।[5] यह आग में जलाकर यहोवा को दिया जाने-वाला चढ़ावा है।

19 इसके बाद तू दूसरा मेढ़ा लेना और उसके सिर पर हारून और उसके बेटे अपने हाथ रखें।[6] **20** तू मेढ़ा हलाल करना और उसका थोड़ा-सा खून लेकर हारून और उसके बेटों के दाएँ कान के निचले सिरे पर और उनके दाएँ हाथ के अँगूठे पर और दाएँ पैर के अँगूठे पर लगाना। बाकी सारा खून वेदी के चारों तरफ छिड़कना। **21** फिर वेदी से थोड़ा खून लेना और थोड़ा-सा अभिषेक का तेल[7] भी लेना और इन्हें हारून और उसकी पोशाक पर, साथ ही उसके बेटों और उनकी पोशाकों पर छिड़कना। इससे हारून और उसके बेटे और उन सबकी पोशाकें पवित्र ठहरेंगी।[8]

22 फिर मेढ़े की चरबी, उसकी चरबीवाली मोटी पूँछ और वह चरबी जो

29:6 *या "का पवित्र ताज रखना।" **29:9** *शा., "के हाथ भर देना।"

अध्य. 29
1 लैव 6:20
2 लैव 8:26
3 निर्ग 26:36; निर्ग 40:28; लैव 8:2, 3
4 लैव 8:6; इब्र 10:22
5 निर्ग 28:4; निर्ग 28:8; लैव 8:7; लैव 16:4
6 निर्ग 28:36; निर्ग 39:30; लैव 8:9
7 निर्ग 30:23-25
8 लैव 8:12; भज 133:2; यश 61:1; प्रेष 10:38
9 निर्ग 28:40; लैव 8:13
10 निर्ग 28:1-3; निर्ग 28:40, 43; निर्ग 40:15
11 निर्ग 28:41
12 लैव 8:14-17
13 लैव 4:3
14 निर्ग 27:2
15 लैव 4:7
16 लैव 3:17

दूसरा कॉल.
1 लैव 4:8-10
2 लैव 1:4; लैव 8:18-21
3 इब्र 9:22
4 लैव 1:13
5 उत 8:21
6 लैव 8:22-24
7 निर्ग 30:23-25
8 लैव 8:30

अंतड़ियों को ढके रहती है और कलेजे के आस-पास होती है, दोनों गुरदे और उनके ऊपर की चरबी[1] और दायाँ पैर अलग रखना क्योंकि यह मेढ़ा याजकपद सौंपने के मौके पर चढ़ाया जानेवाला मेढ़ा है।[2] **23** साथ ही ये चीज़ें भी लेनाः यहोवा के सामने रखी गयी बिन-खमीर की रोटियों की टोकरी में से एक गोल रोटी, एक पापड़ी और तेल से गूँधकर बनायी गयी छल्ले जैसी रोटी। **24** ये सारी चीज़ें तू हारून और उसके बेटों के हाथ पर रखना और इन चीज़ों को आगे-पीछे हिलाना। यह यहोवा के सामने हिलाया जानेवाला चढ़ावा है। **25** इसके बाद तू उनके हाथ से ये चीज़ें लेना और वेदी पर होम-बलि के ऊपर रखकर जलाना, जिससे उठनेवाली सुगंध से यहोवा खुश होगा। यह आग में जलाकर यहोवा को दिया जानेवाला चढ़ावा है।

26 इसके बाद तू उस मेढ़े का सीना लेना, जिसे हारून को याजकपद सौंपने के मौके पर[3] उसकी खातिर बलि किया जाएगा। तू सीने को आगे-पीछे हिलाना। यह यहोवा के सामने हिलाया जानेवाला चढ़ावा है। मेढ़े का यह हिस्सा तुझे दिया जाएगा। **27** तू हारून और उसके बेटों को याजकपद सौंपने के मौके पर बलि करनेवाले मेढ़े के ये हिस्से पवित्र ठहरानाः मेढ़े का सीना जो हिलाया जानेवाला चढ़ावा है और पवित्र चढ़ावे में से मेढ़े का पैर जो हिलाया गया था और लिया गया था।[4] **28** यह हिस्सा हारून और उसके बेटों को दिया जाए क्योंकि यह पवित्र हिस्सा है। इसराएलियों को हमेशा के लिए यह नियम दिया जाता है कि यह हिस्सा उन्हें दिया करें।[5] जब भी शांति-बलि चढ़ायी जाएगी तो यहोवा को देनेवाले पवित्र चढ़ावे में से यह हिस्सा हारून और उसके बेटों को दिया जाएगा।[1]

29 जो पवित्र पोशाक[2] हारून की है, वह उसके बाद उसके बेटों को दी जाएगी।[3] जब उनका अभिषेक किया जाएगा और उन्हें याजकपद सौंपा जाएगा, तब वे यह पोशाक पहनेंगे। **30** उसके बेटों में से जो उसकी जगह याजक चुना जाएगा और भेंट के तंबू में पवित्र जगह पर सेवा करने आएगा, वह सात दिन तक यह पोशाक पहनेगा।[4]

31 तू उस मेढ़े का गोश्त लेना जो याजकपद सौंपने के मौके पर चढ़ाया जाता है और उसे एक पवित्र जगह पर उबालना।[5] **32** हारून और उसके बेटे भेंट के तंबू के द्वार पर मेढ़े का गोश्त और टोकरी में रखी रोटियाँ खाएँगे।[6] **33** उन्हें वे चीज़ें खानी हैं जो उनके प्रायश्चित के लिए इसलिए चढ़ायी जाती हैं कि उन्हें याजकपद सौंपा जाए* और इस सेवा के लिए पवित्र ठहराया जाए। उनके सिवा किसी और# को ये चीज़ें खाने का अधिकार नहीं है क्योंकि ये पवित्र चीज़ें हैं।[7] **34** याजकपद सौंपने के मौके पर दी गयी बलि के गोश्त और रोटियों में से अगर कुछ सुबह तक बच जाए, तो उसे आग में जला देना।[8] उसे खाना मना है क्योंकि वह पवित्र है।

35 मैंने तुझे जो-जो आज्ञा दी है, उसी के मुताबिक तू हारून और उसके बेटों को याजक ठहराना। तू याजकपद सौंपने* की यह विधि सात दिन तक मानना।[9] **36** तू उनके प्रायश्चित के लिए हर दिन पाप-बलि का बैल चढ़ाना और वेदी के लिए प्रायश्चित करके उसके पाप दूर

अध्य. 29
1 लैव 3:9, 10
2 लैव 8:22; लैव 8:25-28
3 लैव 8:29; भज 99:6
4 निर्ग 29:22
5 लैव 7:34; लैव 10:14

दूसरा कॉल.
1 लैव 7:11, 14
2 निर्ग 28:4
3 गि 20:26
4 लैव 8:35
5 लैव 8:31
6 1कुर 9:13
7 लैव 22:10; गि 3:10
8 लैव 8:32
9 लैव 8:4, 33

29:33 *शा., "उनका हाथ भरा जाए।" #शा., "पराए," यानी जो हारून-वंशी न हो।
29:35 *शा., "उनका हाथ भरने।"

करना और उसे शुद्ध करना और उसे
पवित्र ठहराने के लिए उसका अभि-
षेक करना।[1] **37** तू वेदी के लिए
सात दिन तक प्रायश्‍चित करना और उसे
पवित्र ठहराना ताकि वह ऐसी वेदी बन
जाए जो बहुत पवित्र है।[2] वेदी के
पास सेवा करनेवाले हर किसी को पवित्र
होना चाहिए।

38 तू हर दिन बिना नागा वेदी पर ये
चीज़ें चढ़ाया करना:[3] एक-एक साल के
दो मेढ़े, **39** जिनमें से एक मेढ़ा सुबह
चढ़ाना और दूसरा शाम के झुटपुटे के
समय।*[4] **40** पहले मेढ़े के साथ एपा*
का दसवाँ भाग मैदा जिसमें एक-चौथाई
हीन# शुद्ध तेल मिला हो और अर्घ चढ़ावे
में एक-चौथाई हीन दाख-मदिरा चढ़ाना।
41 शाम के झुटपुटे के समय* दूसरे मेढ़े
के साथ भी वही अनाज का चढ़ावा
और अर्घ चढ़ाना जो तू सुबह चढ़ाए-
गा। तू यहोवा के लिए आग में जलाकर
इसे चढ़ाना जिसकी सुगंध पाकर वह खुश
होगा। **42** तुम्हारे वंशजों को पीढ़ी-
पीढ़ी तक भेंट के तंबू के द्वार पर यहोवा
के सामने नियमित तौर पर यह होम-बलि
सुबह-शाम चढ़ानी होगी। मैं उस द्वार पर
तुम्हारे सामने प्रकट होऊँगा और तुझसे
बात करूँगा।[5]

43 मैं उस द्वार पर इसराएलियों के
सामने प्रकट होऊँगा और वह जगह मेरी
महिमा से भरकर पवित्र हो जाएगी।[6]
44 मैं भेंट के तंबू और वेदी को पवित्र
ठहराऊँगा और हारून और उसके बेटों
को पवित्र ठहराऊँगा[7] ताकि वे याजकों
के नाते मेरी सेवा करें। **45** मैं इस-
राएलियों के बीच निवास* करूँगा
और उनका परमेश्‍वर होऊँगा।[1] **46** वे
बेशक जान जाएँगे कि मैं उनका परमेश्‍वर
यहोवा हूँ जो उन्हें मिस्र देश से निकाल
लाया था ताकि उनके बीच निवास करूँ।[2]
मैं उनका परमेश्‍वर यहोवा हूँ।

30 तू धूप जलाने के लिए एक वेदी
बनाना।[3] इसे बबूल की लकड़ी
से तैयार करना।[4] **2** वेदी चौकोर होनी
चाहिए, लंबाई एक हाथ,* चौड़ाई एक
हाथ और ऊँचाई दो हाथ होनी चाहिए।
वेदी के कोनों को उभरा हुआ बनाकर
सींग का आकार देना।[5] **3** पूरी वेदी को
यानी उसके ऊपरी हिस्से, उसके बाज़ुओं
और सींगों को शुद्ध सोने से मढ़ना।
और वेदी पर चारों तरफ सोने का एक
नक्काशीदार किनारा बनाना। **4** वेदी
पर आमने-सामने दोनों बाज़ुओं में,
नक्काशीदार किनारे के नीचे सोने के दो-
दो कड़े लगवाना। इन कड़ों में वे डंडे डाले
जाएँगे जिनके सहारे वेदी उठायी जाएगी।
5 ये डंडे बबूल की लकड़ी से बनाना
और उन पर सोना मढ़ना। **6** तू वेदी
को गवाही के संदूक के पासवाले परदे के
पहले,[6] हाँ, उस संदूक के ढकने के
आगे रखना। वहीं मैं तेरे सामने प्रकट
होऊँगा।[7]

7 हारून[8] जब हर दिन सुबह
दीए ठीक करेगा,[9] तो वेदी पर सुगं-
धित धूप जलाएगा[10] ताकि वेदी से
धुआँ उठे।[11] **8** जब वह शाम के झुट-
पुटे के समय* दीए जलाएगा तब भी वेदी
पर धूप जलाएगा। यह यहोवा के सामने
नियमित तौर पर चढ़ाया जानेवाला धूप
का चढ़ावा है और यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी

29:39, 41; 30:8 *शा., "दो शामों के बीच।" **29:40** *एक एपा 22 ली. के बरा-बर था। अति. ख14 देखें। #एक हीन 3.67 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

29:45 *या "डेरा।" **30:2** *करीब 44.5 सें.मी. (17.5 इंच)। अति. ख14 देखें।

अध्य. 29
1 निर्ग 30:26, 28; लैव 8:11; गि 7:1
2 निर्ग 40:10
3 2इत 2:4; इब्र 7:27; इब्र 10:11
4 गि 28:4-6
5 निर्ग 25:22; लैव 1:1; गि 17:4
6 निर्ग 40:34; गि 12:5; 1रा 8:11
7 लैव 22:9

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 25:8; लैव 26:12; जक 2:11; 2कुर 6:16
2 निर्ग 20:2

अध्य. 30
3 निर्ग 40:5
4 निर्ग 37:25-28
5 निर्ग 27:1, 2; लैव 4:7
6 निर्ग 26:33; इब्र 9:3
7 निर्ग 25:22
8 1इत 23:13
9 निर्ग 27:20
10 निर्ग 30:34, 35
11 गि 16:39, 40; 1शम 2:27, 28; लूक 1:9

चढ़ाया जाएगा। **9** तुम इस वेदी पर
ऐसा धूप न चढ़ाना जो नियम के खिलाफ
हो,[1] न ही इस पर होम-बलि करना या
अनाज का चढ़ावा चढ़ाना। तू इस वेदी
पर कोई अर्घ भी न चढ़ाना। **10** हारून
को चाहिए कि वह साल में एक बार
वेदी को शुद्ध करे।[2] वह प्रायश्‍चित के
लिए दिए गए पाप-बलि के जानवर का
थोड़ा-सा खून लेकर वेदी के सींगों पर
लगाएगा।[3] इस तरह वह साल में एक
बार वेदी के लिए प्रायश्‍चित करके उसे
शुद्ध करेगा। ऐसा पीढ़ी-दर-पीढ़ी किया
जाएगा। यह वेदी यहोवा की नज़र में
बहुत पवित्र है।”

11 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
12 “तू जब भी इसराएलियों की गिनती
लेगा,[4] तो हरेक को अपनी जान के
बदले यहोवा को फिरौती देनी होगी।
उन्हें यह इसलिए करना होगा ताकि
नाम-लिखाई के वक्‍त उन पर कोई कहर
न ढाया जाए। **13** जिन-जिनका नाम
लिखा जाता है, उन्हें अपनी फिरौती के
लिए आधा शेकेल* अदा करना होगा।
यह रकम पवित्र-स्थान के शेकेल# के
मुताबिक होनी चाहिए।[5] एक शेकेल 20
गेरा△ के बराबर है। उन्हें यहोवा के
लिए दान में आधा शेकेल देना होगा।[6]
14 जितनों की उम्र 20 साल या उससे
ऊपर है, उनका नाम लिखा जाए और वे
यह रकम यहोवा के लिए दान में दें।[7]
15 तुम सब अपनी जान की फिरौती के
लिए यहोवा को दान में आधा शेकेल*
ही दोगे। न अमीर लोग इससे ज़्यादा दें
और न गरीब इससे कम। **16** तू इस-
राएलियों से उनकी फिरौती के लिए
चाँदी के पैसे लेना और भेंट के तंबू
में की जानेवाली सेवा के लिए देना। यह
पैसा इसराएलियों की खातिर यहोवा के
सामने यादगार बन जाएगा और तुम्हारी
जान की फिरौती होगा।”

17 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
18 “तू ताँबे का एक हौद बनाना और
उसे रखने के लिए एक टेक बनाना।[1]
इस हौद को भेंट के तंबू और वेदी
के बीच रखना और उसमें पानी भरना।[2]
19 हारून और उसके बेटे उस हौद
के पानी से अपने हाथ-पैर धोएँगे।[3]
20 जब वे भेंट के तंबू के अंदर जाएँगे
या वेदी के पास सेवा करने और यहोवा
के लिए आग में बलि चढ़ाने जाएँगे, तो वे
हौद के पानी से खुद को शुद्ध करेंगे ताकि
वे मार न डाले जाएँ। **21** उन्हें अपने
हाथ-पैर ज़रूर धोने चाहिए ताकि वे
मर न जाएँ। यह नियम हारून और उसके
वंशजों पर पीढ़ी-पीढ़ी तक सदा के लिए
लागू रहेगा।”[4]

22 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
23 “इसके बाद तू ये सारी बढ़िया-
बढ़िया खुशबूदार चीज़ें लेना: 500
शेकेल गंधरस जो ठोस बन गया हो,
उसका आधा माप यानी 250 शेकेल
खुशबूदार दालचीनी, 250 शेकेल
खुशबूदार वच **24** और 500 शेकेल
तज। ये सब पवित्र-स्थान के शेकेल# के
मुताबिक होने चाहिए।[5] साथ ही एक
हीन* जैतून का तेल भी लेना। **25** इन
मसालों के मिश्रण से अभिषेक का पवित्र
तेल तैयार करना। यह मिश्रण बहुत ही

30:13, 15 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। **30:13, 24** #या “पवित्र शेकेल।” **30:13** △एक गेरा 0.57 ग्रा. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

30:24 *एक हीन 3.67 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 30
1 लैव 10:1; 2इत 26:18; यहे 8:11, 12
2 लैव 23:27; इब्र 9:7
3 लैव 16:5, 6; लैव 16:18, 19
4 निर्ग 38:25; गि 1:2; 2शम 24:10, 15
5 लैव 27:25
6 2इत 24:9; मत 17:24
7 निर्ग 38:26; गि 1:3; गि 26:1, 2

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 38:8; लैव 8:11; 1रा 7:38
2 निर्ग 40:7
3 निर्ग 40:30, 31; इब्र 10:22
4 2इत 4:6
5 गि 3:47

उम्दा तरीके से बनाया जाए।*[1] यह तेल
अभिषेक का पवित्र तेल होगा।

26 तू इस तेल से भेंट के तंबू और
गवाही के संदूक का अभिषेक करना।[2]
27 साथ ही इन चीज़ों का भी अभि-
षेक करनाः तंबू में रखी मेज़ और उसकी
सारी चीज़ें, दीवट और उसके साथ इस्ते-
माल होनेवाली सारी चीज़ें, धूप की वेदी,
28 होम-बलि की वेदी और उसके साथ
इस्तेमाल होनेवाली सारी चीज़ें, हौद और
उसकी टेक। 29 तू इन सारी चीज़ों को
पवित्र ठहराना ताकि ये बहुत पवित्र हो
जाएँ।[3] जो भी इन चीज़ों को छूता है
उसे पवित्र होना चाहिए।[4] 30 तू हारून
और उसके बेटों का अभिषेक करना[5]
और उन्हें याजकों के नाते मेरी सेवा करने
के लिए पवित्र ठहराना।[6]

31 तू इसराएलियों से कहना, 'यह
पीढ़ी-पीढ़ी तक मेरा अभिषेक का पवित्र
तेल होगा।[7] 32 इसे किसी इंसान के
शरीर पर नहीं लगाना चाहिए। तुम इस
तरह का मिश्रण किसी और इस्तेमाल के
लिए मत तैयार करना। यह पवित्र तेल
है। तुम इसे सदा तक पवित्र मानना।
33 अगर कोई इस मिश्रण से तेल बनाता
है और किसी ऐसे इंसान पर लगाता है
जिस पर लगाने की इजाज़त नहीं है,* तो
उसे मौत की सज़ा दी जाए।'"[8]

34 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "तू
बराबर माप में ये सारे इत्र लेनाः[9] नखी,
बोल, गंधाबिरोजा और शुद्ध लोबान।
35 इन्हें मिलाकर धूप तैयार करना।[10]
मसालों का यह मिश्रण बहुत ही उम्दा
तरीके से बना हो,* इसमें नमक मिला
हो[1] और यह शुद्ध और पवित्र हो।
36 तू इसमें से थोड़ा धूप अलग निकाल-
कर महीन पीसना। फिर इस महीन धूप
में से थोड़ा-सा धूप लेकर भेंट के तंबू में
गवाही के संदूक के सामने डालना,
जहाँ मैं तेरे सामने प्रकट होऊँगा। इस
धूप को तुम लोग बहुत पवित्र मानना।
37 जिस मिश्रण से तुम यह धूप बनाओ-
गे उसका धूप तुम अपने इस्तेमाल के लिए
मत बनाना।[2] यह यहोवा की नज़र में
पवित्र धूप है और तुम इसे पवित्र मानना।
38 अगर कोई इसकी खुशबू का आनंद
लेने के लिए इस मिश्रण का धूप बनाएगा
तो उसे मौत की सज़ा दी जाए।"

31 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 "देख, मैंने यहूदा गोत्र के
बसलेल को चुना है*[3] जो ऊरी का बेटा
और हूर का पोता है।[4] 3 मैं उसे अपनी
पवित्र शक्ति से भर दूँगा और हर तरह
की कारीगरी में कुशल होने के लिए बुद्धि,
समझ और ज्ञान दूँगा 4 ताकि वह बेह-
तरीन नमूने तैयार करने में, सोने, चाँदी
और ताँबे के काम में, 5 कीमती रत्नों
को तराशने और जड़ने में[5] और लकड़ी
की हर तरह की चीज़ें तैयार करने में
माहिर हो जाए।[6] 6 और बसलेल की
मदद के लिए मैंने दान गोत्र के ओहो-
लीआब[7] को ठहराया है जो अहीसामाक
का बेटा है। मैं सभी कुशल कारीगरों*
का हुनर और भी निखार दूँगा ताकि वे ये
सारी चीज़ें बनाएँ जिनके बारे में मैंने तुझे
आज्ञा दी हैः[8] 7 भेंट का तंबू,[9] गवाही
का संदूक[10] और उसका ढकना,[11] तंबू

30:25 *या "वैसे ही बनाया जाए जैसे कोई इत्र बनानेवाला बनाता है।" 30:33 *शा., "जो पराया हो," यानी जो हारून-वंशी न हो।

30:35 *या "वैसे ही बना हो जैसे कोई इत्र बनानेवाला बनाता है।" 31:2 *शा., "नाम लेकर बुलाया है।" 31:6 *शा., "मैं दिल से बुद्धिमान सभी लोगों।"

अध्य. 30
1 निर्ग 37:29
2 निर्ग 40:9; गि 7:1
3 लैव 8:10
4 निर्ग 29:37
5 लैव 8:12; गि 3:2, 3
6 निर्ग 40:15
7 निर्ग 37:29; 1रा 1:39; भज 89:20
8 निर्ग 30:37, 38
9 निर्ग 25:3, 6
10 निर्ग 37:29; भज 141:2; प्रक 5:8

दूसरा कॉल.
1 लैव 2:13
2 निर्ग 30:31, 32

अध्य. 31
3 निर्ग 37:1
4 निर्ग 35:30-34; 1इत 2:20
5 निर्ग 28:9-11
6 2इत 2:13, 14
7 निर्ग 38:23
8 निर्ग 36:1
9 निर्ग 36:8
10 निर्ग 37:1
11 निर्ग 37:6

का सारा सामान, 8 मेज़[1] और उसकी
चीज़ें, शुद्ध सोने की दीवट और उसके
साथ इस्तेमाल होनेवाली सारी चीज़ें,[2]
धूप की वेदी,[3] 9 होम-बलि की वेदी[4]
और उसके साथ इस्तेमाल होनेवाली
सारी चीज़ें, हौद और उसकी टेक,[5]
10 बढ़िया तरीके से बुनी हुई पोशाकें,
हारून याजक के लिए पवित्र पोशाक
और उसके बेटों के लिए पोशाकें जिन्हें
पहनकर वे याजक का काम करेंगे,[6]
11 अभिषेक का तेल और पवित्र-
स्थान के लिए सुगंधित धूप।[7] कारी-
गर हर वह काम करेंगे जिसकी मैंने तुझे
आज्ञा दी है।”

12 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
13 “तू इसराएलियों को यह बताना,
‘तुम लोग मेरे सब्तों को मानने का खास
ध्यान रखना,[8] क्योंकि सब्त उस करार
की निशानी है जो मैंने तुम्हारे साथ किया
है। यह निशानी तुम्हें पीढ़ी-पीढ़ी तक
इस बात की याद दिलाती रहेगी कि
मुझ यहोवा ने तुम लोगों को पवित्र ठह-
राया है। 14 तुम सब्त का नियम ज़रूर
मानना क्योंकि सब्त तुम्हारे लिए पवित्र
है।[9] अगर कोई उसे अपवित्र करता है,
तो उसे मौत की सज़ा दी जाए। अगर
कोई सब्त के दिन काम करता है तो
उसे मौत की सज़ा देकर अपने लोगों में
से हमेशा के लिए मिटा दिया जाए।[10]
15 तुम छः दिन अपना काम-काज कर
सकते हो, मगर सातवाँ दिन सब्त होगा,
पूरे विश्राम का दिन।[11] यह यहोवा के
लिए पवित्र दिन है। अगर कोई सब्त
के दिन काम करे, तो उसे मार डालना
चाहिए। 16 इसराएलियों को हर हाल
में सब्त का नियम मानना होगा, उन्हें
पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस नियम का पालन
करना होगा। यह सदा तक कायम रहने-
वाला करार है। 17 मेरे और इसराए-
लियों के बीच सब्त हमेशा के लिए एक
निशानी बना रहेगा,[1] क्योंकि यहोवा ने
छः दिनों में आकाश और पृथ्वी को
बनाया और काम पूरा करने के बाद उसने
सातवें दिन विश्राम किया।’”[2]

18 परमेश्वर ने सीनै पहाड़ पर मूसा
से ये सारी बातें कहने के फौरन बाद
उसे गवाही की दो पटियाएँ दीं।[3] ये पत्थर
की पटियाएँ थीं जिन पर परमेश्वर ने
अपनी उँगली से लिखा था।[4]

32 इस बीच जब लोगों ने देखा कि
मूसा पहाड़ से नीचे आने में देर
लगा रहा है,[5] तो वे सब हारून के
पास जमा हो गए और उससे कहने
लगे, “पता नहीं उस मूसा का क्या
हुआ, जो हमें मिस्र से निकालकर यहाँ ले
आया था। इसलिए अब हमारी अगुवाई
के लिए तू एक देवता बना दे।”[6]
2 इस पर हारून ने उनसे कहा, “तुम
सब अपनी पत्नियों और बेटे-बेटियों की
सोने की बालियाँ[7] निकालकर मेरे पास
ले आओ।” 3 फिर उन सबने जाकर
अपने बीवी-बच्चों की सोने की बालियाँ
निकालीं और लाकर हारून को दे दीं।
4 हारून ने वह सोना लिया और
नक्काशी करनेवाले औज़ार से एक बछड़े
की मूरत* तैयार की।[8] फिर लोग
कहने लगे, “हे इसराएल, यही तेरा पर-
मेश्वर है जो तुझे मिस्र देश से बाहर ले
आया है।”[9]

5 जब हारून ने यह देखा तो उसने
बछड़े के सामने एक वेदी बनायी। फिर
उसने ऐलान किया: “कल यहोवा के
लिए एक त्योहार होगा।” 6 अगले
दिन लोग सुबह तड़के उठे और होम-
बलियाँ चढ़ाने और शांति-बलियाँ अर्पित

32:4 *या “ढली हुई मूरत।”

अध्य. 31
1 निर्ग 37:10
2 निर्ग 37:17, 24
3 निर्ग 37:25
4 निर्ग 38:1; निर्ग 40:6
5 निर्ग 30:18; निर्ग 38:8
6 निर्ग 28:2, 15; निर्ग 39:1, 27; लैव 8:7
7 निर्ग 30:25, 35; निर्ग 37:29
8 निर्ग 20:8; लैव 19:30; कुल 2:16, 17
9 व्य 5:12
10 निर्ग 35:2; गि 15:32, 35
11 निर्ग 16:23; निर्ग 20:10

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 31:13
2 उत 2:2
3 निर्ग 24:12; निर्ग 32:15; व्य 4:13; व्य 9:15
4 मत 12:28; लूक 11:20; 2कुर 3:3

अध्य. 32
5 निर्ग 24:18; व्य 9:9
6 प्रेष 7:40
7 निर्ग 12:35, 36
8 व्य 9:16; यश 46:6; प्रेष 7:41
9 निर्ग 20:4; नहे 9:18; भज 106:19, 20

करने लगे। इसके बाद लोगों ने बैठकर
खाया-पीया। फिर वे उठकर मौज-मस्ती
करने लगे।[1]
7 अब यहोवा ने मूसा से कहा, “तू
नीचे जा क्योंकि तेरे लोगों ने, जिन्हें तू
मिस्र से निकाल लाया है, खुद को भ्रष्ट
कर लिया है।[2] 8 मैंने उन्हें जिस राह
पर चलने की आज्ञा दी थी, वे उससे
कितनी जल्दी भटककर दूर चले गए
हैं।[3] उन्होंने अपने लिए बछड़े की मूरत*
बना ली है और वे उसके आगे दंडवत
कर रहे हैं और बलियाँ चढ़ाकर कह रहे
हैं, ‘हे इसराएल, यही तेरा परमेश्वर है
जो तुझे मिस्र से बाहर निकाल लाया है।’”
9 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, “मैं देख
सकता हूँ कि ये लोग कितने ढीठ हैं।[4]
10 इसलिए अब तू मुझे मत रोक। मेरे
क्रोध की ज्वाला उन्हें भस्म करके ही
रहेगी। और मैं उनके बदले तुझसे एक
बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा।”[5]
11 तब मूसा ने अपने परमेश्वर
यहोवा से फरियाद की,[6] “हे यहोवा,
तू क्यों अपने लोगों पर इतना भड़क
रहा है? तू कितने बड़े-बड़े अजूबे करके
अपने शक्तिशाली हाथ से उन्हें मिस्र
से निकालकर लाया है। अब तू क्यों
उन्हें मिटा देना चाहता है?[7] 12 क्यों
मिस्रियों को यह कहने का मौका मिले,
‘वह उनका बुरा करने के इरादे से ही
उन्हें यहाँ से ले गया। वह उन्हें इसलिए ले
गया कि उन्हें पहाड़ों पर ले जाकर मार
डाले और धरती से उनका नामो-निशान
मिटा दे।’[8] इसलिए तू शांत हो जा और
अपने लोगों पर कहर लाने के फैसले
पर दोबारा गौर कर।* 13 ज़रा अपने
सेवक अब्राहम, इसहाक और इसराएल
को याद कर। तूने अपनी शपथ खाकर
उनसे कहा था, ‘मैं तुम्हारे वंश को इतना
बढ़ाऊँगा कि वह आसमान के तारों जैसा
अनगिनत हो जाएगा।[1] और यह सारा
देश मैं तुम्हारे वंश को दूँगा जो मैंने उसके
लिए तय किया है ताकि यह देश हमेशा के
लिए उसकी जागीर हो जाए।’”[2]
14 तब यहोवा ने अपने लोगों पर
कहर लाने की बात पर दोबारा गौर
किया।*[3]
15 तब मूसा वहाँ से मुड़ा और अपने
हाथ में गवाही की दोनों पटियाएँ लिए
पहाड़ से नीचे उतरा।[4] इन पटियाओं पर
आगे-पीछे, दोनों तरफ लिखा हुआ था।
16 ये पटियाएँ खुद परमेश्वर ने बनायी
थीं और उसी ने उन पर खुदाई करके
लिखा था।[5] 17 जब यहोशू ने लोगों
का शोरगुल सुना तो उसने मूसा से कहा,
“छावनी से युद्ध का शोर सुनायी दे रहा
है।” 18 मगर मूसा ने कहा,

“यह गाने की आवाज़ न किसी
जीत के जश्न की है,*
न ही हार के गम का हाहाकार है,
मुझे तो एक अलग किस्म का गाना-
बजाना सुनायी दे रहा है।”

19 छावनी के पास पहुँचते ही जब
मूसा ने देखा कि वहाँ एक बछड़े की
मूरत है[6] और लोग नाच-गा रहे हैं,
तो वह आग-बबूला हो गया। उसने मारे
गुस्से के दोनों पटियाएँ ज़मीन पर पटक
दीं और वे पटियाएँ पहाड़ के नीचे चूर-
चूर हो गयीं।[7] 20 उसने उनका बनाया
बछड़ा लिया और उसे आग में जला दिया
और चूर-चूर कर डाला।[8] फिर उसने
वह चूरा पानी पर बिखरा दिया और

32:8 *या “ढली हुई मूरत।” 32:12 *या “पछतावा महसूस कर।”

32:14 *या “पछतावा महसूस किया।”
32:18 *या “महान काम की खुशी में है।”

अध्य. 32
1 1कुर 10:7
2 व्य 4:15-18
3 निर्ग 18:20, निर्ग 20:3
4 निर्ग 34:9, व्य 9:6, प्रेष 7:51
5 गि 14:12, व्य 9:14
6 भज 106:23
7 व्य 9:18, 19
8 व्य 9:28

दूसरा कॉल.
1 उत 22:15-17, उत 35:10, 11, इब्र 6:13, 14
2 उत 13:14, 15, उत 26:3, 4
3 भज 106:45
4 निर्ग 40:20, व्य 5:22, व्य 9:15
5 निर्ग 31:18, व्य 9:10
6 नहे 9:18, भज 106:19, 20, प्रेष 7:41
7 व्य 9:16, 17
8 व्य 7:25

वह पानी इसराएलियों को पिला दिया।[1]
21 मूसा ने हारून से कहा, “आखिर
लोगों ने तेरे साथ ऐसा क्या किया कि
तूने उनको इतने बड़े पाप में फँसाया?”
22 हारून ने कहा, “मालिक, मुझ पर
भड़क न जाना। तू तो अच्छी तरह जानता
है कि इन लोगों का मन हमेशा बुराई की
तरफ झुका रहता है।[2] **23** वे मेरे पास
आकर कहने लगे, ‘पता नहीं उस मूसा
का क्या हुआ, जो हमें मिस्र से निकालकर
यहाँ ले आया था। इसलिए अब हमारी
अगुवाई के लिए तू एक देवता बना
दे।’[3] **24** तब मैंने उनसे कहा, ‘तुममें
से जिस-जिसके पास सोना है, वह लाकर
मुझे दे दे।’ फिर जब मैंने वह सोना आग
में डाला, तो उससे एक बछड़ा तैयार हो
गया।”

25 मूसा ने देखा कि लोगों ने हद कर
दी है क्योंकि हारून ने उन्हें ऐसा करने की
छूट दे दी थी और इस वजह से वे अपने
दुश्मनों के सामने शर्मिंदा हो गए हैं।
26 मूसा छावनी के द्वार पर अपनी जगह
खड़ा हो गया और उसने कहा, “तुममें से
कौन-कौन यहोवा की तरफ है? वह मेरे
पास आ जाए!”[4] तब सभी लेवी मूसा के
पास आकर जमा हो गए। **27** मूसा ने
उनसे कहा, “इसराएल के परमेश्वर
यहोवा ने कहा है, ‘तुममें से हर कोई
अपनी तलवार बाँध ले और पूरी छावनी
में घूमकर हरेक द्वार पर जाए और अपने
भाई, पड़ोसी और करीबी दोस्त को मार
डाले।’”[5] **28** तब लेवियों ने ठीक वही
किया जो मूसा ने उनसे कहा था। उस
दिन करीब 3,000 आदमी मारे गए।
29 फिर मूसा ने उन लेवियों से कहा,
“आज के दिन तुम सब यहोवा की सेवा
के लिए खुद को अलग करो।* तुम अपने
बेटों और भाइयों के खिलाफ जाने के लिए
तैयार हो गए,[1] इसलिए आज परमेश्वर
तुम्हें आशीष देगा।”[2]

30 फिर अगले ही दिन मूसा ने लोगों
से कहा, “तुम लोगों ने बहुत बड़ा पाप
किया है। अब मैं जाकर यहोवा को मनाने
की कोशिश करूँगा। हो सकता है वह
तुम्हारे पाप माफ कर दे।”[3] **31** तब
मूसा यहोवा के पास दोबारा आया और
उससे कहने लगा, “लोगों ने अपने लिए
सोने का देवता बनाकर वाकई बहुत बड़ा
पाप किया है![4] **32** फिर भी हो सके तो
उनका पाप माफ कर दे।[5] अगर नहीं,
तो मेरी बिनती है कि तू अपनी किताब से
मेरा नाम मिटा दे।”[6] **33** मगर यहोवा
ने मूसा से कहा, “जिस किसी ने मेरे
खिलाफ पाप किया है, मैं उसका नाम
अपनी किताब से मिटा दूँगा। **34** अब
तू जा और लोगों की अगुवाई करके उन्हें
उस जगह ले जा जिसके बारे में मैंने
तुझे बताया है। देख, मेरा स्वर्गदूत तेरे
आगे-आगे जाएगा।[7] और जिस दिन मैं
लोगों से उनके पाप का हिसाब लूँगा
उस दिन मैं उन्हें सज़ा दूँगा।” **35** फिर
यहोवा लोगों पर कहर ढाने लगा क्योंकि
उन्होंने हारून से बछड़े की मूरत बन-
वायी थी।

33 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
“तू उन लोगों को लेकर यहाँ से
आगे बढ़, जिन्हें तू मिस्र से निकाल
लाया है। तुम सब उस देश के लिए
रवाना हो जाओ जिसके बारे में मैंने
अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ
खाकर कहा था, ‘मैं यह देश तुम्हारे
वंश को दूँगा।’[8] **2** मैं तुम्हारे आगे-
आगे एक स्वर्गदूत भेजूँगा[9] और मैं कना-
नियों, एमोरियों, हित्तियों, परिज्जियों,
हिव्वियों और यबूसियों को खदेड़ दूँगा।[10]

32:29 *शा., “अपने हाथ भर लो।”

अध्य. 32
1 व्य 9:21
2 निर्ग 15:24, निर्ग 16:2, निर्ग 17:2, व्य 9:7, व्य 31:27
3 निर्ग 32:1, प्रेष 7:40
4 यह 24:15, 2रा 10:15
5 गि 25:5

दूसरा कॉल.
1 गि 25:11, व्य 13:6-9
2 व्य 33:8, 9
3 गि 16:47, गि 21:7, व्य 9:18
4 निर्ग 20:23
5 गि 14:19
6 फिल 4:3, प्रक 3:5
7 निर्ग 23:20, निर्ग 33:2

अध्य. 33
8 उत 12:7, उत 26:3
9 निर्ग 23:20, निर्ग 32:34
10 व्य 7:1, 22, यह 24:11

3 तुम उस देश को जाओ जहाँ दूध
और शहद की धाराएँ बहती हैं।[1] मगर
मैं तुम्हारे बीच रहकर तुम्हारे साथ नहीं
चलूँगा, क्योंकि तुम बड़े ढीठ किस्म के
लोग हो।[2] कहीं ऐसा न हो कि मैं रास्ते में
तुम्हें मिटा दूँ।"[3]

4 जब लोगों ने परमेश्वर के ये कड़े
शब्द सुने, तो वे बहुत दुखी हुए और शोक
मनाने लगे। उनमें से किसी ने भी अपने
ज़ेवर नहीं पहने। 5 यहोवा ने मूसा से
कहा, "इसराएलियों से कहना, 'तुम बड़े
ढीठ किस्म के लोग हो।[4] अगर मैं चाहूँ
तो तुम्हारे बीच से होकर तुम सबको एक
ही पल में मिटा सकता हूँ।[5] मगर जब
तक मैं सोचूँ कि तुम्हारे साथ क्या करूँ,
तुम गहने मत पहनना।'" 6 इसलिए
इसराएलियों ने होरेब पहाड़ के बाद फिर
कभी गहने नहीं पहने।*

7 फिर मूसा ने अपना तंबू उठाया
और इसराएलियों की छावनी से बाहर
कुछ दूर ले जाकर खड़ा किया। उसने
अपने तंबू का नाम भेंट का तंबू रखा।
जब भी कोई यहोवा की मरज़ी जानना
चाहता[6] तो वह छावनी के बाहर उस भेंट
के तंबू के पास जाता था। 8 जैसे ही
मूसा उस तंबू के पास जाता सब लोग उठ-
कर अपने-अपने तंबू के द्वार पर खड़े हो
जाते। और वे तब तक मूसा को देखते
रहते जब तक कि वह तंबू के अंदर
नहीं चला जाता। 9 जैसे ही मूसा तंबू
के अंदर जाता, बादल का खंभा[7] तंबू के
द्वार पर उतर आता और अंदर जब पर-
मेश्वर मूसा से बात कर रहा होता तो
यह खंभा वहीं द्वार के पास ठहरा
रहता।[8] 10 जब लोग तंबू के द्वार पर
बादल का खंभा देखते, तो वे सब अपने-
अपने तंबू के द्वार पर सिर झुकाकर दंड-
वत करते। 11 यहोवा मूसा से आमने-
सामने बात करता था,[1] जैसे एक आदमी
दूसरे आदमी से बात करता है। जब
मूसा परमेश्वर से बात करने के बाद
तंबू से निकलकर इसराएलियों की छावनी
में जाता तो यहोशू[2] तंबू के द्वार पर खड़ा
होता और वहाँ से नहीं हटता। यहोशू,
नून का बेटा और मूसा का सेवक और
मददगार था।[3]

12 अब मूसा ने यहोवा से कहा,
"देख, तूने मुझसे कहा, 'इन लोगों की
अगुवाई कर,' मगर तूने मुझे यह नहीं
बताया कि तू मेरे साथ किसे भेजेगा।
तूने मुझसे यह भी कहा, 'मैं तुझे तेरे
नाम से जानता हूँ* और मैं तुझसे खुश
हूँ।' 13 अगर तू वाकई मुझसे खुश है
तो मेहरबानी करके मुझे अपनी राहों के
बारे में सिखा[4] ताकि मैं तुझे जान सकूँ
और तेरी कृपा पाता रहूँ। और इस राष्ट्र
के बारे में यह मत भूल जाना कि ये तेरे
अपने लोग हैं।"[5] 14 तब परमेश्वर ने
उससे कहा, "मैं खुद तेरे साथ जाऊँगा[6]
और तुझे चैन दूँगा।"[7] 15 फिर मूसा
ने कहा, "अगर तू हमारे साथ नहीं
चलेगा तो हमें यहाँ से आगे मत ले चल।
16 अगर तू हमारे साथ नहीं चलेगा तो
यह कैसे पता चलेगा कि तू मुझसे और
अपने लोगों से खुश है?[8] यह कैसे पता
चलेगा कि मैं और तेरे लोग दुनिया के
सभी लोगों में से तेरे लिए खास हैं?"[9]

17 यहोवा ने मूसा से कहा, "ठीक है,
मैं तेरी यह गुज़ारिश भी पूरी करूँगा
क्योंकि तूने मुझे खुश किया है और
मैं तुझे तेरे नाम से जानता हूँ।" 18 तब
मूसा ने परमेश्वर से यह बिनती की: "क्या

33:6 * शा., "अपने गहने उतार दिए।"

33:12 * या "मैंने तुझे चुना है।"

अध्य. 33

1 निर्ग 3:8, व्य 8:7-9
2 निर्ग 32:9, व्य 9:6, प्रेष 7:51
3 निर्ग 32:10, गि 16:21
4 निर्ग 34:9, व्य 9:6, प्रेष 7:51
5 गि 16:45
6 निर्ग 18:25, 26, गि 27:1-5
7 निर्ग 13:21, भज 99:7
8 गि 11:16, 17, गि 12:5

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 33:22, 23, गि 12:8, व्य 34:10, यूह 1:18, यूह 6:46, प्रेष 7:38
2 गि 11:28, व्य 1:38, यह 1:1
3 निर्ग 17:9, निर्ग 24:13
4 भज 25:4, भज 27:11, भज 86:11, भज 119:33, यश 30:21
5 व्य 9:26
6 निर्ग 13:21, निर्ग 40:34, यह 1:5, 17, यश 63:9
7 यह 21:44, यह 23:1
8 गि 14:13, 14
9 व्य 4:34, 2शम 7:23, भज 147:20

तू मुझे अपनी महिमा देखने का एक मौका देगा?" 19 परमेश्वर ने कहा, "मैं तेरे सामने से गुज़रूँगा और तू देख पाएगा कि मैं कितना भला हूँ। मैं तेरे सामने अपने नाम यहोवा का ऐलान करूँगा।[1] मैं जिनसे खुश होता हूँ उन पर मेहर-बानी करूँगा और जिन पर दया दिखाना चाहता हूँ, उन पर दया दिखाऊँगा।"[2] 20 मगर उसने यह भी कहा, "तू मेरा चेहरा नहीं देख सकेगा, क्योंकि कोई भी इंसान मुझे देखकर ज़िंदा नहीं रह सकता।"

21 यहोवा ने यह भी कहा, "यहाँ मेरे नज़दीक एक चट्टान है, तू आकर इस पर खड़ा हो जा। 22 जब मेरी महिमा का तेज तेरे सामने से गुज़रेगा तो मैं तुझे इस चट्टान की एक बड़ी दरार में रखूँगा और जब तक मैं तेरे सामने से निकल न जाऊँ तब तक अपने हाथ से तुझे ढाँपे रहूँगा। 23 इसके बाद मैं अपना हाथ हटा लूँगा और तू मेरी पीठ देखेगा। मगर मेरा चेहरा तू नहीं देख सकेगा।"[3]

34 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "तू पत्थर काटकर अपने लिए दो पटियाएँ बनाना जो पहली पटियाओं जैसी हों।[4] उन पर मैं वे शब्द लिखूँगा जो मैंने पहली पटियाओं पर लिखे थे,[5] जिन्हें तूने चूर-चूर कर डाला था।[6] 2 तू कल सुबह के लिए तैयार हो जाना क्योंकि तू कल सुबह सीनै पहाड़ पर आएगा और पहाड़ की चोटी पर मेरे सामने हाज़िर होगा।[7] 3 मगर तेरे साथ कोई और नहीं आएगा, पहाड़ पर कहीं भी तेरे सिवा कोई और नज़र न आए। यहाँ तक कि पहाड़ के सामने भेड़-बकरी या गाय-बैल भी चरते हुए दिखायी न दें।"[8]

4 मूसा ने पत्थर काटकर पहली पटि-याओं जैसी दो पटियाएँ तैयार कीं। और जैसे यहोवा ने आज्ञा दी थी, वह सुबह जल्दी उठा और अपने हाथ में पत्थर की दोनों पटियाएँ लिए सीनै पहाड़ पर गया। 5 फिर यहोवा बादल में उतरा[1] और आकर पहाड़ पर मूसा के साथ खड़ा हो गया और यहोवा के नाम का ऐलान किया।[2] 6 यहोवा ने मूसा के सामने से गुज़रते हुए यह ऐलान किया, "यहोवा, यहोवा परमेश्वर दयालु[3] और करुणा से भरा है,[4] क्रोध करने में धीमा[5] और अटल प्यार[6] और सच्चाई[7] से भर-पूर है,* 7 हज़ारों पीढ़ियों से प्यार* करता है,[8] वह गुनाहों, अपराधों और पापों को माफ करता है।[9] मगर जो दोषी है उसे सज़ा दिए बगैर हरगिज़ नहीं छोड़ेगा[10] और पिता के अपराध की सज़ा उसके बेटों, पोतों और परपोतों तक को देता है।"[11]

8 मूसा ने फौरन घुटनों के बल ज़मीन पर गिरकर परमेश्वर को दंडवत किया। 9 फिर उसने कहा, "हे यहोवा, अगर तेरी कृपा मुझ पर है, तो हमारे साथ चल और हमारे बीच रह।[12] हम ढीठ किस्म के लोग हैं,[13] फिर भी हे यहोवा, हमारे गुनाह और पाप माफ कर दे[14] और हमें अपनी जागीर मानकर अपना ले।" 10 तब परमेश्वर ने उससे कहा, "देखो, मैं तुम लोगों के साथ यह करार करता हूँ: मैं तुम सबके सामने ऐसे आश्चर्य के काम करूँगा, जैसे आज तक न पूरी धरती पर और न ही किसी राष्ट्र में किए गए हैं।*[15] तुम जहाँ रहोगे वहाँ आस-पास की सभी जातियाँ यहोवा के काम देखेंगी क्योंकि मैं तुम्हारी खातिर विस्मयकारी काम करनेवाला हूँ।[16]

अध्य. 33
1 निर्ग 3:13, निर्ग 6:3, निर्ग 34:6
2 रोम 9:15
3 यूह 1:18

अध्य. 34
4 व्य 10:1
5 व्य 9:10
6 निर्ग 32:19, व्य 9:17
7 निर्ग 19:20, निर्ग 24:12
8 निर्ग 19:12, 13

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 7:38
2 निर्ग 6:3, निर्ग 33:19
3 लूक 6:36
4 निर्ग 22:27, 2इत 30:9, नहे 9:17, भज 86:15, योए 2:13
5 गि 14:18, 2पत 3:9
6 यिर्म 31:3, विल 3:22, मी 7:18
7 भज 31:5, रोम 2:2
8 दान 9:4
9 भज 103:12, यश 55:7, इफ 4:32, 1यूह 1:9
10 व्य 32:35, यह 24:19, रोम 2:5, 2पत 2:4, यहू 14, 15
11 निर्ग 20:5, व्य 30:19, 1शम 15:2
12 निर्ग 33:14
13 निर्ग 32:9, निर्ग 33:3
14 गि 14:19
15 2शम 7:23, भज 147:19, 20
16 निर्ग 33:16, व्य 10:21

34:6 *या "पूरी तरह विश्वासयोग्य है।" **34:7** *या "अटल प्यार।" **34:10** *या "सिरजे गए हैं।"

11 मैं आज तुम लोगों को जो आज्ञाएँ
दे रहा हूँ उन पर ध्यान दो।[1] मैं तुम्हारे
सामने से एमोरियों, कनानियों, हित्तियों,
परिज्जियों, हिव्वियों और यबूसियों को
खदेड़नेवाला हूँ।[2] **12** तुम इस बात का
ध्यान रखना कि तुम जिस देश में जा
रहे हो, वहाँ के निवासियों के साथ कोई
भी करार नहीं करोगे,[3] वरना यह तुम्हारे
लिए एक फंदा साबित होगा।[4] **13** तुम
उनकी वेदियाँ ढा देना, उनके पूजा-स्तंभ
चूर-चूर कर देना और उनकी पूजा-लाठें*
काट डालना।[5] **14** तुम किसी और
देवता के आगे झुककर उसे दंडवत मत
करना,[6] क्योंकि यहोवा यह माँग करने के
लिए जाना जाता है* कि सिर्फ उसी की
भक्ति की जाए।# हाँ, वह ऐसा परमेश्वर
है जो माँग करता है कि सिर्फ उसी की
भक्ति की जाए, किसी और की नहीं।[7]
15 तुम इस बात का ध्यान रखना कि
तुम उस देश के निवासियों के साथ कोई
करार नहीं करोगे, क्योंकि जब वे अपने
देवताओं को पूजते हैं* और उनके आगे
बलिदान चढ़ाते हैं[8] तो उनमें से कोई
तुम्हें ज़रूर बुलाएगा और तुम जाकर
उसके बलिदान में से खाने लगोगे।[9]
16 फिर तुम ज़रूर अपने बेटों का
रिश्ता उनकी बेटियों से कराओगे[10] और
उनकी बेटियाँ अपने देवताओं को पूजेंगी
और तुम्हारे बेटों से भी उनकी पूजा
करवाएँगी।[11]

17 तुम धातु ढालकर देवताओं की
मूरतें न बनाना।[12]

18 तुम बिन-खमीर की रोटी का
त्योहार मनाना।[1] तुम सात दिन तक
बिन-खमीर की रोटी खाना, जैसे मैंने तुम्हें
आज्ञा दी है। तुम यह त्योहार आबीब*
महीने में तय वक्त पर मनाना[2] क्योंकि
तुम आबीब महीने में ही मिस्र से बाहर
आए थे।

19 तुम्हारा हरेक पहलौठा मेरा है,[3]
यहाँ तक कि तुम्हारे जानवरों के सभी
पहलौठे भी, फिर चाहे वह पहलौठा बैल
हो या मेढ़ा।[4] **20** तुम्हें अपने गधों में से
हर पहलौठे को छुड़ाने के लिए एक भेड़
देनी होगी। अगर तुम गधे के पहलौठे को
नहीं छुड़ाते तो उसका गला काटकर उसे
मार डालना। तुम्हें अपने सभी पहलौठे
बेटों को छुड़ाना होगा।[5] तुममें से कोई भी
मेरे सामने खाली हाथ न आए।

21 तुम छः दिन तक अपना काम-
काज करना, मगर सातवें दिन विश्राम
करना।*[6] यहाँ तक कि जुताई और
कटाई के मौसम में भी तुम सातवें दिन
विश्राम करना।

22 तुम गेहूँ की कटाई के वक्त कटाई
का त्योहार मनाओगे और फसल से
मिलनेवाले पहले अनाज का चढ़ावा
चढ़ाओगे। और साल के आखिर में
बटोरने का त्योहार* मनाओगे।[7]

23 साल में तीन बार सभी आदमी
इसराएल के परमेश्वर और सच्चे प्रभु
यहोवा के सामने हाज़िर हों।[8] **24** साल
में ये तीनों बार जब तुम अपने पर-
मेश्वर यहोवा के सामने जाओगे तो कोई
भी तुम्हारी ज़मीन का लालच नहीं करेगा,
क्योंकि मैं दूसरी जातियों को तुम्हारे यहाँ
से खदेड़ दूँगा[9] और तुम्हारी सरहदें बढ़ा
दूँगा।

34:13 *शब्दावली देखें। **34:14** *शा., "यहोवा, उसका नाम है।" #या "वह उसका मुकाबला करनेवालों को बरदाश्त नहीं करता।" **34:15** *या "के साथ वेश्याओं जैसी बदचलनी करते हैं।"

34:18 *अति. ख15 देखें। **34:21** *या "सब्त मनाना।" **34:22** *यह छप्परों (या डेरों) का त्योहार भी कहलाता है।

अध्य. 34
1 निर्ग 19:5, 6; व्य 12:28
2 निर्ग 3:8; निर्ग 33:2; व्य 7:1
3 व्य 7:2
4 निर्ग 23:32, 33
5 निर्ग 23:24; व्य 12:3
6 निर्ग 20:3; 1कुर 10:14; 1यूह 5:21
7 यह 24:19
8 1कुर 10:20
9 गि 25:2; 2कुर 6:14
10 एज 9:2
11 व्य 7:4; व्य 31:16; न्या 2:17; न्या 8:33; 1रा 11:2; नहे 13:26; भज 106:28
12 निर्ग 32:8; लैव 19:4

दूसरा कॉल.
1 लैव 23:6
2 निर्ग 23:15
3 निर्ग 13:2; लूक 2:23
4 निर्ग 22:30
5 निर्ग 13:15; गि 18:15, 16
6 व्य 5:12
7 निर्ग 23:16; लैव 23:34
8 व्य 16:16
9 निर्ग 34:11

25 तुम मेरे बलि-पशु के खून के साथ कोई खमीरी चीज़ मत चढ़ाना।[1] फसह के त्योहार में बलि किए जानेवाले जानवर का गोश्‍त अगली सुबह तक मत रखना।[2]

26 तुम अपनी ज़मीन की पहली उपज में से सबसे बढ़िया फल अपने परमेश्‍वर यहोवा के भवन में लाकर देना।[3]

तुम बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में मत उबालना।"[4]

27 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, "तू ये सारी आज्ञाएँ लिख लेना,[5] क्योंकि इन्हीं के मुताबिक मैं तेरे साथ और इसराएल के साथ एक करार कर रहा हूँ।"[6] **28** मूसा 40 दिन और 40 रात वहीं पहाड़ पर यहोवा के पास रहा। इतने दिन तक उसने न रोटी खायी और न पानी पीया।[7] परमेश्‍वर ने दोनों पटियाओं पर अपने करार की बातें यानी दस आज्ञाएँ* लिखकर उसे दीं।[8]

29 फिर मूसा सीनै पहाड़ से नीचे उतरा और उसके हाथ में गवाही की दोनों पटियाएँ थीं।[9] जब वह पहाड़ से उतरा तो उसके चेहरे से तेज चमक रहा था क्योंकि इतने दिन उसने परमेश्‍वर से बात की थी। मगर वह नहीं जानता था कि उसके चेहरे से तेज निकल रहा है। **30** जब हारून और सभी इसराएलियों ने मूसा को देखा तो उन्होंने गौर किया कि उसके चेहरे से तेज निकल रहा है और वे उसके नज़दीक जाने से डरने लगे।[10]

31 मगर मूसा ने उन्हें अपने पास बुलाया। तब हारून और मंडली के सभी प्रधान उसके पास आए और उसने उनसे बात की। **32** इसके बाद सभी इसराएली मूसा के पास आए। मूसा ने उन्हें वे सारी आज्ञाएँ सुनायीं जो यहोवा ने उसे सीनै पहाड़ पर दी थीं।[1] **33** जब भी मूसा उनसे बात करता तो अपनी बात पूरी करने के बाद अपना चेहरा परदे से ढक लेता था।[2] **34** लेकिन जब वह यहोवा से बात करने के लिए तंबू के अंदर जाता, तो चेहरे से परदा हटा लेता[3] और फिर तंबू से बाहर आकर परमेश्‍वर की बतायी सारी आज्ञाएँ इसराएलियों को सुनाता।[4] **35** जब मूसा इसराएलियों को आज्ञाएँ सुना रहा होता, तो वे देख सकते थे कि उसके चेहरे से कैसा तेज चमक रहा है। इसके बाद मूसा फिर से अपना चेहरा परदे से ढक लेता और तब तक ढके रहता जब तक कि वह परमेश्‍वर से* बात करने के लिए तंबू के अंदर नहीं जाता।[5]

35 बाद में मूसा ने इसराएलियों की पूरी मंडली को इकट्ठा किया और उनसे कहा, "यहोवा ने हमें ये सारी आज्ञाएँ दी हैं जिनका हमें पालन करना है:[6] **2** तुम छः दिन तक अपना काम-काज कर सकते हो, मगर सातवें दिन को तुम पवित्र मानना। यह यहोवा को समर्पित सब्त का दिन होगा, पूरे विश्राम का दिन।[7] अगर कोई सब्त के दिन काम करे, तो उसे मार डाला जाए।[8] **3** सब्त के दिन तुम अपने रहने की जगह पर आग तक मत जलाना।"

4 फिर मूसा ने इसराएलियों की पूरी मंडली से कहा, "यहोवा ने यह आज्ञा दी है, **5** 'यहोवा के लिए लोगों से दान इकट्ठा करना।[9] हर कोई जो दिल से देना चाहता है[10] वह यहोवा के लिए दान में ये चीज़ें लाकर दे: सोना, चाँदी, ताँबा, **6** नीला धागा, बैंजनी ऊन, सुर्ख

34:28 * शा., "दस वचन।"

34:35 * शा., "उससे।"

अध्य. 34
1 निर्ग 23:18
2 निर्ग 12:10, गि 9:12
3 गि 18:8, 12, व्य 26:2, नीत 3:9
4 निर्ग 23:19, व्य 14:21
5 निर्ग 24:4, व्य 31:9, 11
6 निर्ग 24:8, व्य 4:13
7 व्य 9:18
8 निर्ग 31:18, व्य 10:2
9 निर्ग 32:15
10 2कुर 3:7

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 24:3, व्य 1:3
2 2कुर 3:13
3 2कुर 3:16
4 व्य 27:10
5 2कुर 3:7, 13

अध्य. 35
6 निर्ग 34:32
7 निर्ग 20:9, 10, लैव 23:3
8 निर्ग 31:14, 15, गि 15:32, 35
9 निर्ग 25:2-7, निर्ग 35:29
10 2कुर 8:12, 2कुर 9:7

लाल धागा, बढ़िया मलमल, बकरी के
बाल,[1] **7** लाल रंग से रंगी हुई मेढ़े
की खाल, सील मछली की खाल,
बबूल की लकड़ी, **8** दीयों के लिए तेल,
अभिषेक के तेल और सुगंधित धूप के
लिए बलसाँ,[2] **9** एपोद और सीनेबंद में
जड़ने के लिए सुलेमानी पत्थर और
दूसरे रत्न।[3]

10 तुम्हारे बीच जितने भी कुशल
कारीगर हैं,*[4] वे सब आएँ और यहोवा
ने जो-जो चीज़ें बनाने की आज्ञा दी है,
वह सब बनाएँ, **11** यानी पवित्र डेरा,
उसका सारा सामान, उसे ढकने के
लिए कपड़े, उसकी चिमटियाँ और
चौखटें, चौखटों के डंडे, तंबू के खंभे
और खाँचेदार चौकियाँ, **12** संदूक,[5]
उसका ढकना[6] और उसके डंडे,[7] संदूक
के सामने लगाया जानेवाला परदा,[8]
13 मेज़,[9] उसके डंडे, उसकी सारी चीज़ें
और नज़राने की रोटी,[10] **14** रौशनी
के लिए दीवट,[11] उसके साथ इस्तेमाल
होनेवाली सारी चीज़ें, उसके दीए और
उन्हें जलाने के लिए तेल,[12] **15** धूप
की वेदी[13] और उसके डंडे, अभिषेक
का तेल और सुगंधित धूप,[14] डेरे के
द्वार के लिए परदा, **16** होम-बलि की
वेदी,[15] उसके लिए ताँबे की जाली, वेदी
के डंडे और वेदी के साथ इस्तेमाल होने-
वाली सारी चीज़ें, हौद और उसकी
टेक,[16] **17** आँगन के घेरे के लिए
कनातें,[17] आँगन के लिए खंभे, खाँचे-
दार चौकियाँ और आँगन के द्वार के
लिए परदा, **18** पवित्र डेरे के लिए
खूँटियाँ और आँगन के लिए खूँटियाँ
और रस्सियाँ,[18] **19** पवित्र-स्थान में
सेवा करनेवालों के लिए बढ़िया तरीके
से बुनी हुई पोशाकें,[1] हारून याजक के
लिए पवित्र पोशाक[2] और उसके बेटों के
लिए पोशाकें जिन्हें पहनकर वे याजक का
काम करेंगे।'"

20 फिर इसराएलियों की पूरी मंडली
मूसा के सामने से लौट गयी। **21** फिर
जिस-जिसके दिल ने उसे उभारा,[3] जिसके
मन* ने उसे उभारा, वह यहोवा के लिए
दान ले आया। लोगों ने वे सारी चीज़ें दान
कीं जो भेंट का तंबू बनाने, पवित्र पोशाकें
तैयार करने और तंबू की सेवा में इस्ते-
माल होतीं। **22** दान देनेवालों का ताँता
लग गया, आदमी-औरत सब खुशी-खुशी
अपनी चीज़ें लाकर देते रहे। उन्होंने
अपने जड़ाऊ पिन, कान की बालियाँ,
छल्ले, दूसरे गहने और सोने की तरह-
तरह की चीज़ें लाकर दीं। उन सबने
अपने सोने के चढ़ावे* यहोवा को अर्पित
किए।[4] **23** जिनके पास नीला धागा,
बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागा, बढ़िया
मलमल, बकरी के बाल, लाल रंग से रंगी
हुई मेढ़े की खाल और सील मछली की
खाल थी, उन सबने ये चीज़ें लाकर दीं।
24 जितनों के पास चाँदी और ताँबा था
उन सबने वह लाकर यहोवा के लिए दान
में दिया और जितनों के पास बबूल की
लकड़ी थी उन्होंने भी लाकर पवित्र डेरे के
लिए दे दी।

25 और जिन औरतों के हाथ में
हुनर था,[5] वे सब सूत कातकर नीला
धागा, बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागा और
बढ़िया मलमल तैयार करके ले आयीं।
26 और जिन हुनरमंद औरतों के दिल
ने उन्हें उभारा, वे सब बकरी के बालों से
धागे बनाकर ले आयीं।

अध्य. 35
1 निर्ग 26:7, निर्ग 36:8
2 निर्ग 25:3, 6
3 निर्ग 28:9, निर्ग 28:15, निर्ग 39:14
4 निर्ग 31:6, निर्ग 36:1
5 निर्ग 25:10
6 निर्ग 25:17
7 निर्ग 25:13
8 निर्ग 26:31
9 निर्ग 25:23
10 निर्ग 25:30, लैव 24:5, 6
11 निर्ग 25:31
12 निर्ग 27:20
13 निर्ग 30:1, निर्ग 37:25, निर्ग 40:5
14 निर्ग 30:34, 35
15 निर्ग 27:1
16 निर्ग 30:18, निर्ग 38:8
17 निर्ग 27:9
18 निर्ग 27:19

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 31:6, 10, निर्ग 39:33, 41
2 निर्ग 39:1
3 निर्ग 25:2, निर्ग 36:2, 2कुर 8:12, 2कुर 9:7
4 निर्ग 38:24
5 निर्ग 28:3, निर्ग 31:6, निर्ग 36:8

35:10 *शा., "जो दिल से बुद्धिमान हैं।"

35:21 *शब्दावली में "रुआख; नफ्मा" देखें। **35:22** *या "अपने हिलाकर दिए जानेवाले चढ़ावे।"

27 इसराएलियों के प्रधान, एपोद
और सीनेबंद में जड़ने के लिए सुले-
मानी पत्थर और दूसरे रत्न ले आए[1]
28 और बलसाँ और तेल भी ले आए,
जो दीए जलाने और अभिषेक का तेल[2]
और सुगंधित धूप तैयार करने में इस्ते-
माल होते।[3] 29 सभी आदमी-औरत
जिनके दिल ने उन्हें उभारा, उस काम के
लिए कुछ-न-कुछ ले आए जिसे करने की
आज्ञा यहोवा ने मूसा के ज़रिए दी थी।
इसराएलियों ने अपनी खुशी से ये सारी
चीज़ें लाकर यहोवा के लिए अर्पित कीं।[4]
30 फिर मूसा ने इसराएलियों से कहा,
“सुनो, यहोवा ने यहूदा गोत्र के बसलेल
को चुना है, जो ऊरी का बेटा और हूर का
पोता है।[5] 31 परमेश्वर ने बसलेल को
अपनी पवित्र शक्ति से भर दिया है और
उसे हर तरह की कारीगरी में कुशल
होने के लिए बुद्धि, समझ और ज्ञान
दिया है 32 ताकि वह बेहतरीन नमूने
तैयार करने में, सोने, चाँदी और ताँबे के
काम में, 33 कीमती रत्नों को तराशने
और जड़ने में और लकड़ी की हर तरह
की खूबसूरत चीज़ें तैयार करने में माहिर
हो जाए। 34 और परमेश्वर ने बस-
लेल को और दान गोत्र के ओहोलीआब
को,[6] जो अहीसामाक का बेटा है, दूसरों
को काम सिखाने की भी काबिलीयत दी
है। 35 परमेश्वर ने इन दोनों आदमियों
को ऐसी काबिलीयत दी है*[7] ताकि वे
हर तरह की कारीगरी में, कढ़ाई के
काम में, नीले धागे, बैंजनी ऊन और सुर्ख
लाल धागे और बढ़िया मलमल से बुनाई
करने में और जुलाहे के काम में कुशल
बन जाएँ। ये आदमी परमेश्वर का बताया
हर तरह का नमूना तैयार करेंगे और हर
तरह का काम करेंगे।”

36 “बसलेल, ओहोलीआब और
उन सभी कुशल कारीगरों* के
साथ मिलकर काम करेगा जिन्हें यहोवा
ने बुद्धि और समझ दी है ताकि वे पवित्र
जगह के सभी काम ठीक उसी तरह करें,
जैसे यहोवा ने आज्ञा दी है।”[1]
2 फिर मूसा ने बसलेल, ओहोलीआब
और सभी हुनरमंद आदमियों को बुलाया
जिन्हें यहोवा ने इस काम के लिए बुद्धि
दी थी।[2] उनमें से हरेक के दिल ने उसे
उभारा कि वह आगे बढ़कर इस काम में
हाथ बँटाए।[3] 3 फिर उन्होंने मूसा के
पास आकर वह सारी चीज़ें लीं जो इस-
राएलियों ने पवित्र जगह के काम के लिए
दान में दी थीं।[4] इसके बाद भी लोग
हर सुबह अपनी खुशी से चीज़ें ला-लाकर
दान करते रहे।
4 फिर सभी हुनरमंद कारीगरों ने
पवित्र काम शुरू कर दिया। और वे एक-
एक करके मूसा के पास आने लगे और
5 उससे कहने लगे, “लोग दान में चीज़ें
लाते ही जा रहे हैं। यहोवा ने जिस काम
की आज्ञा दी है, उसके लिए अब ज़रू-
रत से ज़्यादा सामान इकट्ठा हो गया है।”
6 तब मूसा ने आज्ञा दी कि पूरी छावनी
में ऐलान किया जाए कि अब से कोई भी
आदमी या औरत पवित्र डेरे के लिए और
दान न लाए। इस तरह लोगों को और
चीज़ें लाने से मना किया गया। 7 पवित्र
डेरे से जुड़े सभी कामों के लिए काफी
सामान इकट्ठा हो गया, यहाँ तक कि ज़रू-
रत से ज़्यादा हो गया था।
8 सब हुनरमंद कारीगरों[5] ने बटे हुए

35:35 *शा., “का दिल बुद्धि से भर दिया है।”

36:1 *शा., “दिल से बुद्धिमान सभी लोगों।”

अध्य. 35
1 निर्ग 28:15, 28
निर्ग 39:15, 21
2 निर्ग 30:23-25
3 निर्ग 30:34, 35
4 निर्ग 36:5
2कुर 9:7
5 निर्ग 31:2-6
6 निर्ग 36:1
7 निर्ग 31:3

दूसरा कॉल.

अध्य. 36
1 निर्ग 25:9
निर्ग 31:6
2 निर्ग 28:3
निर्ग 35:10
3 निर्ग 35:21, 26
4 निर्ग 35:5-9
नीत 3:9
2कुर 9:7
5 निर्ग 31:6

बढ़िया मलमल, नीले धागे, बैंजनी ऊन
और सुर्ख लाल धागे से डेरे[1] के लिए
दस कपड़े बनाए। उसने* इन कपड़ों
पर कढ़ाई करके करूब बनाए।[2] **9** हर
कपड़ा 28 हाथ* लंबा और 4 हाथ चौड़ा
था। दसों कपड़े एक ही नाप के थे।
10 फिर उसने इनमें से पाँच कपड़ों को
एक-दूसरे से जोड़ दिया और बाकी
पाँच को भी एक-दूसरे से जोड़ दिया।
11 इसके बाद उसने पाँच कपड़ों के एक
भाग के उस छोर पर नीले धागे के
फंदे बनाए, जहाँ दूसरा भाग उससे जोड़ा
जाता। उसने दूसरे भाग के उस छोर
पर भी फंदे बनाए, जहाँ वह पहले भाग
से जोड़ा जाता। **12** उसने दोनों भागों
के छोर पर पचास-पचास फंदे बनाए
ताकि ये फंदे एक-दूसरे के आमने-सामने
हों और दोनों भागों को जोड़ सकें।
13 आखिर में उसने सोने की 50 चिम-
टियाँ बनायीं और उनसे दोनों भागों को
जोड़ दिया। इस तरह एक बड़ा कपड़ा
तैयार हो गया।

14 फिर उसने पवित्र डेरे को ढकने
के लिए बकरी के बालों से बुनकर कपड़े
बनाए। उसने इस तरह के 11 कपड़े
बनाए।[3] **15** हर कपड़ा 30 हाथ लंबा
और 4 हाथ चौड़ा था। ये 11 कपड़े एक
ही नाप के थे। **16** उसने इनमें से पाँच
कपड़ों को एक-दूसरे से जोड़ दिया और
बाकी छः को भी एक-दूसरे से जोड़ दिया।
17 उसने पाँच कपड़ों से बने भाग के
छोर पर 50 फंदे बनाए और उसी तरह
छः कपड़ों से बने भाग के छोर पर भी
50 फंदे बनाए ताकि दोनों भाग एक-
दूसरे से जुड़ जाएँ। **18** उसने ताँबे की
50 चिमटियाँ बनायीं ताकि उनसे दोनों
भागों को जोड़कर एक बड़ा कपड़ा तैयार
हो जाए।

19 उसने डेरे को ढकने के लिए लाल
रंग से रंगी हुई मेढ़े की खाल से एक
चादर बनायी और उसके ऊपर डालने के
लिए दूसरी चादर सील मछली की खाल
से बनायी।[1]

20 फिर उसने बबूल की लकड़ी[2] से
डेरे के लिए ऐसी चौखटें बनायीं जो
सीधी खड़ी की जा सकती थीं।[3] **21** हर
चौखट की ऊँचाई दस हाथ और चौड़ाई
डेढ़ हाथ थी। **22** हर चौखट के नीचे
दो चूलें बनायी गयीं* जो एक सीध में
थीं। उसने डेरे की सभी चौखटें इसी तरह
बनायीं। **23** उसने डेरे के दक्षिणी हिस्से
के लिए 20 चौखटें बनायीं। यह हिस्सा
दक्षिण की तरफ था। **24** फिर उसने
इन 20 चौखटों को खड़ा करने के लिए
चाँदी की 40 खाँचेदार चौकियाँ बनायीं
जिनमें चूलों को बिठाया जाना था। हर
चौखट की दो चूलों के लिए दो चौकियाँ।[4]
25 डेरे के दूसरी तरफ यानी उत्तरी हिस्से
के लिए उसने 20 चौखटें बनायीं
26 और उन्हें खड़ा करने के लिए चाँदी
की 40 खाँचेदार चौकियाँ बनायीं। हर
चौखट के नीचे दो चौकियाँ।

27 डेरे के पीछे के हिस्से यानी
पश्चिमी हिस्से के लिए उसने छः चौखटें
बनायीं।[5] **28** उसी हिस्से में उसने
तिकोने आकार में दो चौखटें बनायीं जो
डेरे के लिए कोने के खंभों का काम
करतीं। **29** कोने की हर चौखट के

36:8 *ज़ाहिर है कि यहाँ बसलेल की बात की गयी है। **36:9** *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

36:22 *या "में दो सीधे खड़े खंभे बनाए गए।"

अध्य. 36
1 निर्ग 25:9
निर्ग 39:32
इब्र 9:9
2 निर्ग 26:1-6
3 निर्ग 26:7-11

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 26:14
2 निर्ग 25:10, 23
निर्ग 27:1
निर्ग 30:5
निर्ग 36:36
3 निर्ग 26:15-18
4 निर्ग 26:19-21
5 निर्ग 26:22-25

दोनों भाग नीचे से जाकर ऊपरी सिरे पर एक-दूसरे से मिल गए और वहाँ पहले कड़े पर जुड़ गए। उसने दोनों कोनों के लिए ऐसी ही चौखटें बनायीं। **30** इस तरह कुल आठ चौखटें और उन्हें खड़ा करने के लिए चाँदी की 16 खाँचेदार चौकियाँ बनायीं। हर चौखट के नीचे दो चौकियाँ।

31 फिर उसने डेरे की चौखटों को जोड़ने के लिए बबूल की लकड़ी के डंडे बनाए। डेरे के एक तरफ की चौखटों को जोड़ने के लिए पाँच डंडे,[1] **32** दूसरी तरफ की चौखटों को जोड़ने के लिए पाँच डंडे और पीछे यानी पश्‍चिमी हिस्से की चौखटों को जोड़ने के लिए पाँच डंडे। **33** उसने बीचवाला डंडा इतना लंबा बनाया कि वह चौखटों के बीच में से होकर उन्हें एक कोने से दूसरे कोने तक जोड़े। **34** उसने चौखटों को और उन्हें जोड़नेवाले डंडों को सोने से मढ़ा। फिर उसने सोने के कड़े बनाए ताकि उनके अंदर डंडे डालकर चौखटों को जोड़ा जाए।[2]

35 फिर उसने नीले धागे, बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागे और बटे हुए बढ़िया मलमल से एक परदा[3] बनाया और उस पर कढ़ाई करके करूब बनाए।[4] **36** फिर उसने यह परदा लटकाने के लिए बबूल की लकड़ी से चार खंभे बनाए और उन पर सोना मढ़ा। उसने खंभों के लिए सोने के अंकड़े और चाँदी की चार खाँचेदार चौकियाँ ढाल-कर बनायीं। **37** फिर उसने तंबू के द्वार के लिए भी एक परदा बनाया। यह परदा उसने नीले धागे, बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागे और बटे हुए बढ़िया मलमल से बुनकर तैयार किया।[5] **38** उसने तंबू के द्वार के लिए पाँच खंभे और उनके अंकड़े बनाए। उसने खंभों के ऊपरी सिरों और उनके छल्लों पर सोना मढ़ा, मगर उनकी पाँच खाँचेदार चौकियाँ ताँबे की बनायीं।

37 फिर बसलेल[1] ने बबूल की लकड़ी से एक संदूक[2] बनाया। उसकी लंबाई ढाई हाथ,* चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ थी।[3] **2** उसने संदूक पर अंदर और बाहर से शुद्ध सोना मढ़ा और चारों तरफ सोने का एक नक्काशीदार किनारा बनाया।[4] **3** फिर उसने सोने के चार कड़े ढालकर बनाए और उन्हें संदूक के चारों पायों के ऊपर लगाया। संदूक के एक तरफ दो कड़े और दूसरी तरफ दो कड़े। **4** इसके बाद उसने बबूल की लकड़ी से डंडे बनाए और उन पर सोना मढ़ा।[5] **5** उसने ये डंडे संदूक के दोनों तरफ लगे कड़ों में डाले ताकि उनके सहारे संदूक उठाया जा सके।[6]

6 उसने संदूक के लिए शुद्ध सोने से एक ढकना तैयार किया।[7] उसकी लंबाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ थी।[8] **7** फिर उसने हथौड़े से सोना पीटकर उससे दो करूब[9] बनाए और उन्हें संदूक के ढकने के दोनों किनारों पर लगाया।[10] **8** एक किनारे पर एक करूब और दूसरे किनारे पर दूसरा करूब था। इस तरह उसने ढकने के दोनों किनारों पर करूब बनाए। **9** करूबों के दोनों पंख ऊपर की तरफ फैले हुए थे और संदूक के ढकने को ढके हुए थे।[11] दोनों करूब आमने-सामने थे और उनके मुँह ढकने की तरफ नीचे झुके हुए थे।[12]

10 फिर उसने बबूल की लकड़ी से एक मेज़ बनायी।[13] उसकी लंबाई दो

37:1 *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 36
1 निर्ग 26:26-28
2 निर्ग 26:29
3 निर्ग 40:21; इब्र 10:19, 20
4 उत 3:24; निर्ग 26:31, 32
5 निर्ग 26:36, 37

दूसरा कॉल.

अध्य. 37
1 निर्ग 31:2-5; निर्ग 38:22
2 निर्ग 40:3; गि 10:33
3 निर्ग 25:10-15
4 इब्र 9:4
5 2इत 5:9
6 यह 3:8
7 लैव 16:2, 14; 1इत 28:11
8 निर्ग 25:17-20
9 उत 3:24
10 निर्ग 40:20
11 इब्र 9:5
12 1शम 4:4; भज 80:1
13 निर्ग 40:4

हाथ, चौड़ाई एक हाथ और ऊँचाई डेढ़
हाथ थी।[1] **11** उसने मेज़ को शुद्ध सोने
से मढ़ा और उसके चारों तरफ सोने का
एक नक्काशीदार किनारा बनाया।
12 फिर उस किनारे के साथ-साथ मेज़
के चारों तरफ एक पट्टी भी बनायी।
उस पट्टी की चौड़ाई चार अंगुल* थी।
पट्टी के नीचे सोने का एक नक्काशीदार
किनारा बनाया। **13** मेज़ के लिए उसने
सोने के चार कड़े ढालकर बनाए और
उन्हें मेज़ के चारों कोनों पर उस जगह
लगाया जहाँ उसके चार पाए जुड़े हुए
थे। **14** ये कड़े मेज़ की पट्टी के बिल-
कुल पास लगाए गए ताकि उनके अंदर
वे डंडे डाले जाएँ जिनके सहारे मेज़
उठायी जाती। **15** फिर उसने बबूल की
लकड़ी से वे डंडे बनाए जिनके सहारे
मेज़ उठायी जाती और उन पर सोना
मढ़ा। **16** इसके बाद उसने मेज़ के लिए
शुद्ध सोने से ये बरतन बनाए: थालियाँ,
प्याले, अर्घ चढ़ाने के कटोरे और सुरा-
हियाँ।[2]

17 फिर उसने शुद्ध सोने की एक
दीवट बनायी।[3] उसने सोने के एक ही
टुकड़े को पीटकर पूरी दीवट यानी उसका
पाया, उसकी डंडी, फूल, कलियाँ और
पंखुड़ियाँ बनायीं।[4] **18** दीवट की डंडी
पर छः डालियाँ थीं, डंडी के एक तरफ
तीन और दूसरी तरफ तीन। **19** हर
डाली पर बादाम के फूल जैसे तीन
फूलों की बनावट थी। फूलों के बीच
एक कली और एक पंखुड़ी की रचना
थी। इस तरह की रचनाएँ दीवट की डंडी
से निकलनेवाली छः की छः डालियों पर
थीं। **20** दीवट की डंडी पर बादाम के
फूल जैसे चार फूलों की बनावट थी
और फूलों के बीच एक कली और
एक पंखुड़ी थी। **21** दीवट की डंडी
के जिस हिस्से से डालियों का पहला
जोड़ा निकला उसके नीचे एक कली जैसी
रचना थी। इसी तरह, जहाँ से डालियों
का दूसरा और तीसरा जोड़ा निकला,
उसके नीचे भी एक-एक कली जैसी
रचना थी। दीवट की डंडी से निकलने-
वाली छः डालियों के नीचे ये रचनाएँ थीं।
22 शुद्ध सोने के एक ही टुकड़े को हथौड़े
से पीटकर कलियाँ, डालियाँ और पूरी
दीवट बनायी गयी। **23** उसने दीवट के
लिए शुद्ध सोने से सात दीए,[1] चिमटे और
आग उठाने के करछे बनाए। **24** उसने
दीवट और उसके साथ इस्तेमाल होने-
वाली सारी चीज़ें एक तोड़े* शुद्ध सोने से
बनायीं।

25 फिर उसने बबूल की लकड़ी से
धूप की वेदी[2] बनायी। यह वेदी चौकोर
थी, लंबाई एक हाथ और चौड़ाई एक
हाथ। इसकी ऊँचाई दो हाथ थी। वेदी
के कोनों को उभरा हुआ बनाकर सींग
का आकार दिया गया।[3] **26** उसने पूरी
वेदी को यानी उसके ऊपरी हिस्से, उसके
बाज़ुओं और सींगों को शुद्ध सोने से
मढ़ा। और वेदी के चारों तरफ सोने
का एक नक्काशीदार किनारा बनाया।
27 उसने वेदी पर आमने-सामने दोनों
बाज़ुओं में, नक्काशीदार किनारे के नीचे
सोने के दो-दो कड़े लगाए ताकि उनमें वे
डंडे डाले जाएँ जिनके सहारे वेदी उठायी
जाती। **28** फिर उसने बबूल की लकड़ी
से डंडे बनाए और उन पर सोना मढ़ा।
29 उसने अभिषेक का पवित्र तेल[4] और

37:12 *करीब 7.4 सें.मी. (2.9 इंच)। अति. ख14 देखें।

37:24 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 37
1 निर्ग 25:23-28
2 निर्ग 25:29
3 निर्ग 40:24, लैव 24:4, 2इत 13:11
4 निर्ग 25:31-39

दूसरा कॉल.
1 गि 8:2
2 निर्ग 30:7, निर्ग 40:5, भज 141:2, प्रक 8:3
3 निर्ग 30:1-5
4 निर्ग 30:25, 33, निर्ग 40:9

शुद्ध, सुगंधित धूप भी तैयार किया,[1]
जिन्हें मसालों के उम्दा मिश्रण से बनाया
गया था।*

38 उसने बबूल की लकड़ी से
होम-बलि की वेदी बनायी।
यह वेदी चौकोर थी, लंबाई पाँच
हाथ* और चौड़ाई पाँच हाथ। उसकी
ऊँचाई तीन हाथ थी।[2] 2 उसने वेदी
के चारों कोनों पर सींग बनाए। उसने
वेदी के चारों कोनों को उभरा हुआ बना-
कर सींगों का आकार दिया। फिर उसने
वेदी पर ताँबा मढ़ा।[3] 3 उसने वेदी के
साथ इस्तेमाल होनेवाली ये सारी चीज़ें
बनायीं: बाल्टियाँ, बेलचे, कटोरे, काँटे
और आग उठाने के करछे। उसने ये सारी
चीज़ें ताँबे से बनायीं। 4 उसने वेदी के
लिए ताँबे की एक जाली भी बनायी और
उसे अंदर लगाया। इसे वेदी के किनारे से
थोड़ा नीचे यानी वेदी के बीच में लगाया।
5 उसने चार कड़े ढालकर बनाए और
उन्हें वेदी के चारों कोनों पर, जाली के
पास लगाया ताकि उनके अंदर वे डंडे
डाले जाएँ जिनके सहारे वेदी उठायी
जाती। 6 इसके बाद उसने बबूल की
लकड़ी से डंडे बनाए और उन पर ताँबा
मढ़ा। 7 उसने डंडों को वेदी के दोनों
तरफ के कड़ों के अंदर डाला ताकि उनके
सहारे वेदी उठायी जाए। उसने यह वेदी
तख्तों को जोड़कर एक पेटी के आकार
में बनायी और उसे ऊपर और नीचे खुला
बनाया।

8 फिर उसने ताँबे का हौद[4] और
उसके लिए ताँबे की टेक बनायी। इन्हें
बनाने के लिए उसने उन औरतों के
आईने* इस्तेमाल किए जो भेंट के तंबू के
द्वार पर ठहराए गए इंतज़ाम के मुताबिक
सेवा करती थीं।

9 फिर उसने पवित्र डेरे के लिए एक
आँगन बनाया।[1] उसने आँगन के चारों
तरफ घेरा बनाने के लिए बटे हुए बढ़िया
मलमल से कनातें तैयार कीं। दक्षिण में
कनातों की कुल लंबाई 100 हाथ थी।[2]
10 कनातों को लगाने के लिए 20 खंभे
और ताँबे की 20 खाँचेदार चौकियाँ थीं।
इन खंभों के अंकड़े और उनके छल्ले
चाँदी के थे। 11 उत्तर की कनातों की
कुल लंबाई भी 100 हाथ थी। उन्हें
लगाने के लिए 20 खंभे और ताँबे की
20 खाँचेदार चौकियाँ थीं। इन खंभों के
अंकड़े और उनके छल्ले चाँदी के थे।
12 मगर पश्चिम की कनातों की कुल
लंबाई 50 हाथ थी। इन कनातों को
लगाने के लिए दस खंभे और दस
खाँचेदार चौकियाँ थीं। इन खंभों के
अंकड़े और उनके छल्ले चाँदी के थे।
13 पूरब यानी जहाँ सूरज उगता है,
वहाँ की चौड़ाई 50 हाथ थी। 14 वहाँ
आँगन के द्वार के दायीं तरफ की
कनातें 15 हाथ लंबी थीं। उनके लिए
तीन खंभे और तीन खाँचेदार चौकियाँ
थीं। 15 आँगन के द्वार के बायीं तरफ
की कनातें भी 15 हाथ लंबी थीं।
उनके लिए तीन खंभे और तीन खाँचे-
दार चौकियाँ थीं। 16 आँगन के घेरे के
लिए सारी कनातें बटे हुए बढ़िया मलमल
से तैयार की गयी थीं। 17 इन खंभों की
खाँचेदार चौकियाँ ताँबे की थीं, खंभों के
अंकड़े और छल्ले चाँदी के थे। इन खंभों

37:29 *या "ठीक वैसे ही जैसे कोई इत्र बनानेवाला बनाता है।" **38:1** *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

38:8 *यानी धातु को खूब चमकाकर तैयार किए गए आईने।

अध्य. 37
1 निर्ग 30:34, 35
भज 141:2

अध्य. 38
2 निर्ग 27:1-8
निर्ग 40:10
3 2इत 1:5
4 निर्ग 30:18
लैव 8:11
1रा 7:23

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 40:8
2 निर्ग 27:9-15

के ऊपरी सिरों पर चाँदी मढ़ी गयी और
सभी खंभों के जोड़ चाँदी के बनाए गए।[1]
18 आँगन के द्वार का परदा नीले
धागे, बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागे और
बटे हुए बढ़िया मलमल से बुनकर तैयार
किया गया। इस परदे की लंबाई 20 हाथ
थी और ऊँचाई आँगन के घेरे की कनातों
की तरह 5 हाथ थी।[2] **19** इसके लिए
ताँबे के चार खंभे और चार खाँचेदार
चौकियाँ थीं। इन खंभों के अंकड़े और
छल्ले चाँदी के थे और खंभों के ऊपरी
सिरे चाँदी से मढ़े हुए थे। **20** डेरे की
सारी खूँटियाँ और पूरे आँगन की खूँटियाँ
ताँबे की थीं।[3]

21 मूसा की आज्ञा के मुताबिक उन
सारी चीज़ों की सूची तैयार की गयी जो
पवित्र डेरा यानी गवाही के संदूक का
डेरा[4] बनाने में इस्तेमाल हुई थीं। यह
ज़िम्मेदारी लेवियों को दी गयी[5] और
उन्होंने हारून याजक के बेटे ईतामार के
निर्देशन में यह सूची तैयार की जो आगे दी
गयी है।[6] **22** यहूदा गोत्र के बसलेल[7]
ने, जो ऊरी का बेटा और हूर का पोता
था, वह सारा काम किया जिसकी आज्ञा
यहोवा ने मूसा को दी थी। **23** और
उसके साथ दान गोत्र का ओहोलीआब[8]
था जो अहीसामाक का बेटा था। ओहो-
लीआब हाथ की कारीगरी और कढ़ाई
के काम में काफी हुनरमंद था और नीले
धागे, बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागे और
बढ़िया मलमल से बुनाई करने में भी
कुशल था।

24 पवित्र-स्थान के काम में 29
तोड़े* और 730 शेकेल# सोना इस्ते-
माल हुआ था। यह माप पवित्र-स्थान
के शेकेल* के मुताबिक था। यह सारा
सोना उस सोने के बराबर था जो हिलाए
जानेवाले चढ़ावे के तौर पर अर्पित
किया गया था।[1] **25** और जितने इस-
राएली आदमियों के नाम लिखे गए थे
उनकी दी हुई कुल चाँदी, पवित्र-स्थान के
शेकेल* के मुताबिक 100 तोड़े और
1,775 शेकेल थी। **26** हर आदमी ने
पवित्र-स्थान के शेकेल* के मुताबिक
आधा शेकेल चाँदी लाकर दी थी। कुल
मिलाकर 6,03,550 आदमियों के नाम
लिखे गए थे जिनकी उम्र 20 या उससे
ज़्यादा थी।[2]

27 पवित्र-स्थान और परदे के खंभों
के लिए जो खाँचेदार चौकियाँ ढालकर
बनायी गयी थीं उनके लिए 100 तोड़े
चाँदी इस्तेमाल हुई। 100 खाँचेदार
चौकियों के लिए 100 तोड़े चाँदी, यानी
एक चौकी के लिए एक तोड़ा चाँदी।[3]
28 उसने 1,775 शेकेल चाँदी खंभों के
अंकड़े बनाने, खंभों के ऊपरी सिरों को
मढ़ने और खंभों के लिए जोड़ तैयार
करने में इस्तेमाल की।

29 जो ताँबा चढ़ावे* में दिया गया था
वह 70 तोड़े और 2,400 शेकेल ताँबा
था। **30** इस ताँबे से उसने ये सारी चीज़ें
बनायीं: भेंट के तंबू के द्वार के लिए
खाँचेदार चौकियाँ, ताँबे की वेदी, उसकी
जाली और वेदी के साथ इस्तेमाल होने-
वाली सारी चीज़ें, **31** पूरे आँगन के
लिए खाँचेदार चौकियाँ, आँगन के द्वार
के लिए खाँचेदार चौकियाँ, डेरे की
सारी खूँटियाँ और आँगन की सारी
खूँटियाँ।[4]

38:24 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बरा-
बर था। अति. ख14 देखें। #एक शेकेल का
वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

38:24-26 *या “पवित्र शेकेल।” **38:29**
*या “हिलाकर दिए जानेवाले चढ़ावे।”

अध्य. 38
1 निर्ग 27:17
2 निर्ग 27:16
3 निर्ग 27:19
4 निर्ग 25:16; निर्ग 31:18; गि 17:7
5 गि 3:6; गि 4:46, 47
6 निर्ग 6:23; गि 4:28; 1इत 6:3
7 निर्ग 31:2-5; निर्ग 35:30; निर्ग 36:1; निर्ग 37:1; 2इत 1:5
8 निर्ग 31:6; निर्ग 35:34; निर्ग 36:2

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 35:22
2 निर्ग 12:37; निर्ग 30:15; गि 1:45, 46
3 निर्ग 26:19-21; निर्ग 26:25, 32
4 निर्ग 27:19

39 फिर उन्होंने पवित्र-स्थान में सेवा करनेवालों के लिए नीले धागे, बैंजनी ऊन और सुर्ख लाल धागे[1] से बढ़िया बुनाई करके पोशाकें तैयार कीं। उन्होंने हारून के लिए पवित्र पोशाक तैयार की,[2] ठीक जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

2 उसने सोने, नीले धागे, बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागे और बटे हुए बढ़िया मल-मल से एपोद तैयार किया।[3] **3** उन्होंने सोने के पत्तरों को पीटकर उनकी पतली-पतली पत्तियाँ बनायीं। फिर उनके बारीक तार काटे ताकि ये तार नीले धागे, बैंजनी ऊन और सुर्ख लाल धागे के साथ इस्तेमाल किए जा सकें। उन्होंने इनसे बढ़िया मलमल पर कढ़ाई की। **4** उन्होंने एपोद के कंधे के दोनों हिस्से जोड़ दिए और वे एक-दूसरे से जुड़े रहे। **5** एपोद को कसकर बाँधने के लिए उस पर एक बुना हुआ कमरबंद लगाया गया।[4] कमरबंद भी इन चीज़ों से बनाया गयाः सोना, नीला धागा, बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागा और बटा हुआ बढ़िया मलमल। यह सब ठीक वैसा ही बनाया गया, जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

6 फिर उन्होंने सुलेमानी पत्थर लिए और उन पर इसराएल के बेटों के नाम इस तरह खोदकर लिखे जैसे मुहर पर खुदाई की जाती है। और उन पत्थरों को उन्होंने सोने के खाँचों में जड़ दिया।[5] **7** उसने उन्हें एपोद के कंधे के हिस्सों पर लगाया ताकि ये इसराएल के बेटों के लिए यादगार के पत्थर बन जाएँ,[6] ठीक जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। **8** फिर उसने कढ़ाई का काम करवाकर सीनाबंद तैयार किया।[7] एपोद की तरह सीनाबंद भी इन चीज़ों से तैयार किया गयाः सोना, नीला धागा, बैंजनी ऊन, सुर्ख लाल धागा और बटा हुआ बढ़िया मलमल।[1] **9** उन्होंने सीनाबंद इस तरह बनाया कि बीच से मोड़ने पर वह चौकोर हो जाता, एक बित्ता* लंबा और एक बित्ता चौड़ा। **10** उन्होंने सीनेबंद में चार कतारों में रत्न जड़े। पहली कतार में माणिक, पुखराज और पन्ना। **11** दूसरी कतार में फिरोज़ा, नीलम और यशब। **12** तीसरी कतार में *लशम,** हकीक और कटैला। **13** चौथी कतार में करकेटक, सुलेमानी और मरगज। ये रत्न सोने के खाँचों में बिठाए गए। **14** इन 12 रत्नों पर इस-राएल के 12 बेटों के नाम ऐसे खोदकर लिखे गए जैसे मुहर पर खुदाई की जाती है। हर रत्न पर एक बेटे का नाम था जो एक गोत्र को दर्शाता था।

15 इसके बाद उन्होंने सीनेबंद के लिए शुद्ध सोने की बटी हुई ज़ंजीरें बनायीं जो दिखने में डोरियों जैसी थीं।[2] **16** फिर उन्होंने सोने के दो खाँचे और सोने के दो छल्ले बनाए और दोनों छल्लों को सीने-बंद के दो कोनों पर लगाया। **17** फिर उन्होंने सोने की दोनों डोरियों को सीने-बंद के कोनों पर लगे छल्लों में डाला। **18** फिर उन्होंने दो डोरियों के दो छोर को दो खाँचों के अंदर से निकालकर उन्हें एपोद के कंधे के हिस्सों पर, सामने की तरफ लगाया। **19** इसके बाद उन्होंने सोने के दो छल्ले बनाए और उन्हें सीनेबंद के निचले दो कोनों पर अंदर की तरफ

अध्य. 39
1 निर्ग 35:23
2 निर्ग 28:4, 5; निर्ग 29:5; निर्ग 35:10, 19
3 निर्ग 28:6-8; लैव 8:7
4 निर्ग 29:5
5 निर्ग 28:9, 10
6 निर्ग 28:12
7 लैव 8:8

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 28:15-21
2 निर्ग 28:22-25

39:9 *करीब 22.2 सें.मी. (8.75 इंच)। अति. ख14 देखें। **39:12** *इस रत्न के बारे में कोई सही जानकारी नहीं है। यह कहरुवा, धूम्रकांत, उपल या तुरमली हो सकता है।

लगाया, यानी सीनेबंद के उस हिस्से में जो
एपोद की तरफ था।[1] **20** उन्होंने सोने
के दो और छल्ले बनाए और उन्हें
एपोद के सामने की तरफ, कंधे के
हिस्सों के नीचे, जहाँ वह जुड़ता है यानी
बुने हुए कमरबंद के ठीक ऊपर लगाया।
21 आखिर में उन्होंने एक नीली डोरी
से सीनेबंद के छल्लों को एपोद के
छल्लों से जोड़ दिया जिससे सीनाबंद
एपोद में कमरबंद के ऊपर अपनी जगह
पर बना रहे। यह सब उन्होंने ठीक वैसा
ही बनाया, जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा
दी थी।

22 फिर उसने एपोद के नीचे पहन-
ने के लिए एक जुलाहे से बिन आस्तीन
का बागा बुनवाया। यह बागा सिर्फ नीले
धागे से बनाया गया।[2] **23** बागे में एक
गला बनाया गया, ठीक जैसे बख्तर में
होता है। गले के चारों तरफ एक किनारा
बनाया गया ताकि यह फट न जाए।
24 फिर उन्होंने बागे के नीचे के घेरे में
अनार के आकार में फुँदने बनाए। उन्होंने
ये फुँदने नीले धागे, बैंजनी ऊन और
सुर्ख लाल धागे से बनाए जो आपस में बटे
हुए थे। **25** फिर उन्होंने शुद्ध सोने से
घंटियाँ बनायीं और उन्हें बागे के पूरे
घेरे में अनारों के बीच-बीच में लगाया।
26 उन्होंने बिन आस्तीन के इस बागे के
पूरे घेरे में एक घंटी के बाद एक अनार,
फिर एक घंटी फिर एक अनार लगाया।
इस तरह याजक के नाते सेवा करनेवाले
के लिए यह बागा ठीक वैसा ही बनाया
गया, जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा
दी थी।

27 उन्होंने हारून और उसके बेटों के
लिए जुलाहे के बुने हुए बढ़िया मलमल
से कुरते बनाए[3] **28** और उनके लिए
बढ़िया मलमल की पगड़ी,[4] बढ़िया मल-
मल के खूबसूरत, शानदार साफे[1] और
बटे हुए बढ़िया मलमल के जाँघिये बनाए[2]
29 और बटे हुए बढ़िया मलमल से,
जिस पर नीला धागा, बैंजनी ऊन और
सुर्ख लाल धागा बुना हुआ था, एक
कमर-पट्टी बनायी। यह सब ठीक वैसा
ही बनाया गया, जैसे यहोवा ने मूसा को
आज्ञा दी थी।

30 आखिर में उन्होंने शुद्ध सोने की
एक चमचमाती पट्टी बनायी जो समर्पण
की पवित्र निशानी है* और उस पर ये
शब्द खोदकर लिखे: "यहोवा पवित्र है।"
ये शब्द उन्होंने उसी तरह खुदवाए जैसे
मुहर पर खुदाई की जाती है।[3] **31** उस
पट्टी पर उन्होंने एक डोरी लगायी जो नीले
धागे से बनी थी ताकि वह पट्टी पगड़ी
पर बाँधी जा सके। यह सब ठीक वैसा ही
किया गया, जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा
दी थी।

32 इस तरह पवित्र डेरे का सारा काम
पूरा हो गया। इसराएलियों ने भेंट के
तंबू के लिए हर वह चीज़ बनायी जिसके
बारे में यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।[4]
उन्होंने सबकुछ वैसा ही बनाया जैसा उन्हें
बताया गया था।

33 फिर वे पवित्र डेरे के सभी हिस्से
और उसकी सारी चीज़ें मूसा के पास
ले आए:[5] तंबू की चिमटियाँ,[6] उसकी
चौखटें,[7] डंडे,[8] खंभे, खाँचेदार चौकियाँ,[9]
34 तंबू को ढकने के लिए लाल रंग से
रंगी मेढ़े की खाल की चादर[10] और
सील मछली की खाल से बनी चादर,
संदूक के सामने का परदा,[11] **35** गवाही
का संदूक, उसके डंडे[12] और उसका
ढकना,[13] **36** मेज़ और उसकी सारी
चीज़ें,[14] नज़राने की रोटी, **37** शुद्ध

अध्य. 39
1 निर्ग 28:26-28
2 निर्ग 28:31-35
3 निर्ग 28:39, 40
4 निर्ग 28:4

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 29:8, 9
2 निर्ग 28:42
3 निर्ग 28:36, 37; लैव 8:9
4 निर्ग 25:40; इब्र 8:5
5 निर्ग 36:8
6 निर्ग 36:14
7 निर्ग 36:18
8 निर्ग 36:20
9 निर्ग 36:31
10 निर्ग 36:19
11 निर्ग 36:35
12 निर्ग 37:1, 4
13 निर्ग 37:6
14 निर्ग 37:10, 16

39:30 * या "जो पवित्र ताज है।"

सोने की दीवट, उस पर कतार में लगाने के लिए दीए,[1] दीवट के साथ इस्तेमाल होनेवाली सारी चीज़ें[2] और दीए जलाने के लिए तेल,[3] **38** सोने की वेदी,[4] अभिषेक का तेल,[5] सुगंधित धूप,[6] तंबू के द्वार का परदा,[7] **39** ताँबे की वेदी,[8] उसकी ताँबे की जाली, उसके डंडे,[9] उसके साथ इस्तेमाल होनेवाली सारी चीज़ें,[10] हौद और उसकी टेक,[11] **40** आँगन की कनातें, उसके खंभे और उनकी खाँचेदार चौकियाँ,[12] आँगन के द्वार का परदा,[13] कनातें लगाने के लिए रस्सियाँ और खूँटियाँ,[14] पवित्र डेरे यानी भेंट के तंबू में सेवा के लिए इस्तेमाल होनेवाली सारी चीज़ें, **41** पवित्र-स्थान में सेवा करनेवालों के लिए बढ़िया तरीके से बुनी हुई पोशाकें, हारून याजक के लिए पवित्र पोशाक[15] और उसके बेटों के लिए पोशाकें जिन्हें पहनकर वे याजकों का काम करते।

42 यहोवा ने मूसा को जो-जो आज्ञा दी थी, ठीक उसी के मुताबिक इसराएलियों ने सारा काम किया।[16] **43** जब मूसा ने उनके सारे काम का मुआयना किया तो उसने देखा कि उन्होंने हर काम ठीक वैसा ही किया था जैसा यहोवा ने आज्ञा दी थी। और मूसा ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

40 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, **2** "तू पवित्र डेरे को, जो भेंट का तंबू है, पहले महीने के पहले दिन खड़ा करना।[17] **3** उसके अंदर गवाही का संदूक रखना[18] और सामने परदा लगाना ताकि संदूक दिखायी न दे।[19] **4** फिर मेज़ लाकर डेरे के अंदर रखना[20] और उस पर जो चीज़ें होनी चाहिए, उन्हें तरतीब से रखना। और दीवट लाकर रखना[1] और उसके दीए जलाना।[2] **5** इसके बाद धूप जलाने के लिए बनायी गयी सोने की वेदी लाना[3] और उसे गवाही के संदूक के सामने रखना और डेरे के द्वार पर परदा लगाना।[4]

6 तू होम-बलि की वेदी[5] को डेरे यानी भेंट के तंबू के द्वार के सामने रखना **7** और हौद को भेंट के तंबू और वेदी के बीच रखना और उसमें पानी भरना।[6] **8** फिर तंबू के चारों तरफ कनातों से आँगन तैयार करना[7] और आँगन के द्वार पर परदा[8] लगाना। **9** इसके बाद तू अभिषेक का तेल[9] लेना और डेरे और उसके अंदर रखी सारी चीज़ों का अभिषेक करना[10] और उन्हें सेवा में इस्तेमाल के लिए अलग ठहराना ताकि इससे डेरा पवित्र हो जाए। **10** तू होम-बलि की वेदी और उसके साथ इस्तेमाल होनेवाली सारी चीज़ों का भी अभिषेक करके उन्हें पवित्र ठहराना ताकि इससे वेदी बहुत पवित्र हो जाए।[11] **11** तू हौद और उसकी टेक का अभिषेक करके उन्हें पवित्र ठहराना।

12 फिर हारून और उसके बेटों को भेंट के तंबू के द्वार के पास लाना और उन्हें नहाने की आज्ञा देना।[12] **13** तू हारून को पवित्र पोशाक पहनाना[13] और उसका अभिषेक करके[14] उसे पवित्र ठहराना ताकि वह याजक के नाते मेरी सेवा करे। **14** इसके बाद तू उसके बेटों को सामने लाना और उन्हें कुरते पहनाना।[15] **15** तू उनका भी अभिषेक करना जैसे तू उनके पिता का अभिषेक करेगा।[16] और वे याजकों के नाते मेरी सेवा करेंगे। उनका अभिषेक होने के बाद से याजकपद पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमेशा के लिए उन्हीं का रहेगा।"[17]

अध्य. 39

1 निर्ग 37:17, 23
2 निर्ग 25:38
3 निर्ग 35:27, 28
4 निर्ग 37:25
5 निर्ग 37:29
6 निर्ग 30:34, 35
7 निर्ग 36:37
8 निर्ग 38:1, 4
9 निर्ग 38:6
10 निर्ग 38:30
11 निर्ग 30:18; निर्ग 38:8
12 निर्ग 38:9-11
13 निर्ग 38:18
14 निर्ग 38:20
15 निर्ग 28:3
16 निर्ग 35:10; निर्ग 36:1

अध्य. 40

17 गि 7:1
18 निर्ग 25:21
19 गि 4:5; इब्र 9:3
20 निर्ग 26:35

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 25:31; इब्र 9:2
2 निर्ग 25:37
3 निर्ग 30:1
4 निर्ग 26:36
5 निर्ग 38:1
6 निर्ग 30:18
7 निर्ग 27:9
8 निर्ग 27:16; निर्ग 38:18
9 निर्ग 30:23-25
10 लैव 8:10; गि 7:1
11 निर्ग 29:36, 37; लैव 8:11
12 लैव 8:6
13 निर्ग 29:5; लैव 8:7
14 लैव 8:12; भज 133:2
15 लैव 8:13
16 लैव 8:30
17 इब्र 7:11

16 मूसा ने यह सारा काम ठीक वैसा
ही किया जैसे यहोवा ने उसे आज्ञा दी
थी।[1] उसने ठीक वैसा ही किया।

17 दूसरे साल के पहले महीने के
पहले दिन पवित्र डेरा खड़ा किया गया।[2]
18 मूसा ने डेरा इस तरह खड़ा किया:
उसने ज़मीन पर खाँचेदार चौकियाँ रखीं,[3]
उन पर चौखटें खड़ी कीं,[4] चौखटों में
डंडे[5] लगाए और खंभों को खड़ा किया।
19 उसने डेरे को कपड़े से ढका[6] और
उस पर चादरें डालीं,[7] ठीक जैसे यहोवा ने
उसे आज्ञा दी थी।

20 इसके बाद उसने गवाही की पटि-
याएँ लीं[8] और उन्हें संदूक के अंदर
रखा,[9] संदूक में उसके डंडे लगाए[10]
और उसके ऊपर ढकना[11] रख दिया।[12]
21 वह गवाही के संदूक को डेरे के अंदर
ले गया और उसने सामने परदा लगाया[13]
ताकि संदूक दिखायी न दे,[14] ठीक जैसे
यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।

22 इसके बाद उसने भेंट के तंबू में,
परदे के इस पार उत्तर की तरफ मेज़
रखी[15] 23 और मेज़ पर यहोवा के
सामने रोटियों का ढेर तरतीब से रखा,[16]
ठीक जैसे यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।

24 मूसा ने तंबू के अंदर मेज़ के
सामने यानी दक्षिण की तरफ दीवट[17]
रखा 25 और उसके दीए यहोवा के
सामने जलाए,[18] ठीक जैसे यहोवा ने उसे
आज्ञा दी थी।

26 इसके बाद उसने भेंट के तंबू में
परदे के सामने सोने की वेदी रखी[19]
27 ताकि उस पर सुगंधित धूप[20] जलाया
जाए और उससे धुआँ उठे,[21] ठीक जैसे
यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।

28 फिर उसने डेरे के द्वार पर परदा
लगाया।[22]

29 उसने डेरे यानी भेंट के तंबू के द्वार
पर होम-बलि की वेदी रखी[1] ताकि उस
पर होम-बलि[2] और अनाज का चढ़ावा
चढ़ाए, ठीक जैसे यहोवा ने उसे आज्ञा
दी थी।

30 फिर उसने भेंट के तंबू और वेदी
के बीच हौद रखा और हाथ-पैर धोने
के लिए उसमें पानी भरा।[3] 31 मूसा,
हारून और उसके बेटों ने हौद के पानी
से वहाँ अपने हाथ-पैर धोए। 32 जब
भी वे भेंट के तंबू के अंदर या वेदी के
पास जाते तो पहले अपने हाथ-पैर धोते,[4]
ठीक जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा
दी थी।

33 आखिर में उसने डेरे और वेदी के
चारों तरफ का आँगन तैयार किया[5] और
आँगन के द्वार पर परदा लगाया।[6]

इस तरह मूसा ने सारा काम
पूरा किया। 34 इसके बाद बादल भेंट
के तंबू पर छाने लगा और पवित्र
डेरा यहोवा की महिमा से भर गया।[7]
35 मूसा भेंट के तंबू के अंदर नहीं जा
पाया क्योंकि बादल उस पर छाया रहा
और पवित्र डेरा यहोवा की महिमा से भर
गया।[8]

36 इसराएलियों के पूरे सफर में जब-
जब बादल डेरे से ऊपर उठता तो वे
अपना पड़ाव उठाकर आगे बढ़ते थे।[9]
37 लेकिन जब बादल डेरे के ऊपर
छाया रहता तो वे अपना पड़ाव डाले
रहते। वे तब तक आगे नहीं बढ़ते जब
तक कि बादल नहीं उठता।[10] 38 दिन
के वक्त यहोवा का बादल डेरे के ऊपर
छाया रहता और रात को उसके ऊपर
आग रहती थी। यह नज़ारा इसराएल के
सारे घराने को पूरे सफर के दौरान
दिखायी देता रहा।[11]

अध्य. 40
1 निर्ग 39:43, व्य 4:2
2 गि 7:1, गि 9:15
3 निर्ग 36:24
4 निर्ग 26:15
5 निर्ग 36:31
6 निर्ग 26:7
7 निर्ग 26:14
8 निर्ग 31:18
9 निर्ग 25:22, निर्ग 37:1
10 निर्ग 37:4, 1रा 8:8
11 निर्ग 37:6, 1इत 28:11
12 लैव 16:2
13 निर्ग 36:35, इब्र 10:19, 20
14 इब्र 9:3
15 निर्ग 37:10, इब्र 9:2
16 निर्ग 25:30, मत 12:4
17 निर्ग 37:17
18 निर्ग 25:37, निर्ग 37:23
19 निर्ग 30:1, निर्ग 37:25
20 निर्ग 30:34, 35
21 निर्ग 30:7
22 निर्ग 26:36, निर्ग 36:37

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 38:1
2 निर्ग 29:38
3 निर्ग 30:18
4 निर्ग 30:18, 19
5 निर्ग 27:9, निर्ग 38:9
6 निर्ग 38:18
7 गि 9:15, प्रक 15:8
8 2इत 5:14
9 गि 10:11, नहे 9:19
10 गि 9:17, 22
11 निर्ग 13:21, गि 9:16, भज 78:14

लैव्यव्यवस्था

सारांश

ऐसे जानवरों का बलिदान स्वीकार होगा जिनमें दोष न हो (17-33)

23 पवित्र दिन और त्योहार (1-44)
सब्त का दिन (3)
फसह (4, 5)
बिन-खमीर की रोटी का त्योहार (6-8)
फसल का पहला फल चढ़ाना (9-14)
कटाई का त्योहार (15-21)
कटाई का सही तरीका (22)
तुरही फूँकने का त्योहार (23-25)
प्रायश्चित का दिन (26-32)
छप्परों का त्योहार (33-43)

24 पवित्र डेरे के दीयों के लिए तेल (1-4)
नज़राने की रोटी (5-9)
परमेश्वर के नाम की निंदा करनेवाले को पत्थरों से मार डाला गया (10-23)

25 सब्त का साल (1-7)
छुटकारे का साल (8-22)
जायदाद वापस पाना (23-34)
गरीबों के साथ कैसा सलूक (35-38)
दासों के बारे में नियम (39-55)

26 मूर्तिपूजा से दूर रहो (1, 2)
आज्ञा मानने से मिलनेवाली आशीषें (3-13)
आज्ञा न मानने से मिलनेवाली सज़ा (14-46)

27 मन्नत मानी हुई चीज़ें छुड़ाना (1-27)
लोग (1-8)
जानवर (9-13)
घर (14, 15)
खेत (16-25)
जानवर का पहलौठा (26, 27)
बिना शर्त के यहोवा को समर्पित चीज़ें (28, 29)
दसवाँ हिस्सा छुड़ाना (30-34)

---

1 और यहोवा ने मूसा को बुलाया और
भेंट के तंबू में से उससे बात की।[1]
उसने मूसा से कहा, **2** “इसराएलियों*
से कहना, ‘अगर तुममें से कोई यहोवा के
लिए किसी पालतू जानवर की बलि
चढ़ाना चाहता है, तो उसे गाय-बैलों या
भेड़-बकरियों के झुंड में से कोई जानवर
चढ़ाना चाहिए।[2]
3 अगर वह होम-बलि के लिए गाय-
बैलों के झुंड में से कोई जानवर देना चाहता
है, तो उसे एक ऐसा बैल चुनना चाहिए
जिसमें कोई दोष न हो।[3] उसे बैल को भेंट
के तंबू के द्वार के पास लाना चाहिए
और यहोवा के सामने अपनी इच्छा से
उसे पेश करना चाहिए।[4] **4** उसे अपना
हाथ होम-बलि के जानवर के सिर पर
रखना चाहिए और वह जानवर उसकी
तरफ से प्रायश्चित के लिए स्वीकार किया
जाएगा।
5 इसके बाद बैल यहोवा के सामने
हलाल किया जाए। हारून के बेटे यानी
याजक[1] बैल का खून पास लाएँगे और
उसे वेदी के चारों तरफ छिड़केंगे,[2] जो
भेंट के तंबू के द्वार के पास है। **6** होम-
बलि के इस जानवर की खाल निकाल दी
जाए और फिर जानवर के टुकड़े-टुकड़े
किए जाएँ।[3] **7** इसके बाद हारून के
बेटे यानी याजक वेदी पर आग जलाएँ[4]
और लकड़ियाँ तरतीब से रखें। **8** फिर
वे जानवर के टुकड़े, उसका सिर और
उसकी चरबी* वेदी की जलती लक-
ड़ियों पर तरतीब से रखें।[5] **9** अंतड़ियों
और पायों को पानी से धोया जाएगा।
फिर याजक इन सारी चीज़ों को होम-बलि

1:2 *शा., “इसराएल के बेटों।”

1:8 *या “गुरदों के आस-पास की चरबी।”

अध्य. 1
1 निर्ग 40:34
2 लैव 22:18-20
3 व्य 15:19, 21; मला 1:14
4 2कुर 9:7

दूसरा कॉल.
1 इब्र 10:11
2 इब्र 9:13, 14
3 लैव 7:8
4 लैव 6:12
5 1रा 18:23

के तौर पर वेदी पर जलाए ताकि इनका धुआँ उठे। यह आग में जलाकर यहोवा को दिया जानेवाला चढ़ावा है, जिसकी सुगंध पाकर वह खुश होता है।[1]

10 अगर कोई होम-बलि के लिए भेड़-बकरियों के झुंड में से जानवर देना चाहता है,[2] तो उसे ऐसा नर मेम्ना या बकरा चुनना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो।[3] **11** यह मेम्ना यहोवा के सामने वेदी के उत्तर की तरफ हलाल किया जाए। फिर हारून के बेटे यानी याजक मेम्ने का खून वेदी के चारों तरफ छिड़केंगे।[4] **12** वह मेम्ने के टुकड़े-टुकड़े करेगा। फिर याजक ये टुकड़े, साथ ही उसका सिर और उसकी चरबी* वेदी की जलती लकड़ियों पर तरतीब से रखेगा। **13** वह अंतड़ियों और पायों को पानी से धोएगा और याजक इन सारी चीज़ों को वेदी पर रखकर जलाएगा ताकि इनका धुआँ उठे। यह होम-बलि है, आग में जलाकर यहोवा को दिया जानेवाला चढ़ावा, जिसकी सुगंध पाकर वह खुश होता है।

14 लेकिन अगर कोई यहोवा के लिए चिड़िया की होम-बलि चढ़ाना चाहता है, तो उसे एक फाख्ता या कबूतर का एक बच्चा चढ़ाना चाहिए।[5] **15** याजक उसे वेदी के पास ले जाए और उसका गला नोचे और उसे वेदी पर जलाए ताकि उसका धुआँ उठे, मगर उसका खून वेदी के एक तरफ बहा दिया जाए। **16** उसे चिड़िया के गले की थैली और उसके पर निकाल देने चाहिए और वेदी के पास पूरब की तरफ उस जगह फेंक देना चाहिए जहाँ राख* जमा की जाती है।[6] **17** फिर उसे चाहिए कि वह चिड़िया को पंखों के पास से चीरे, मगर उसके दो टुकड़े न करे। इसके बाद याजक उसे वेदी की जलती लकड़ियों पर रखकर जलाए ताकि उसका धुआँ उठे। यह होम-बलि है, आग में जलाकर यहोवा को दिया जानेवाला चढ़ावा, जिसकी सुगंध पाकर वह खुश होता है।

2 अगर कोई यहोवा के लिए अनाज का चढ़ावा अर्पित करना चाहता है,[1] तो उसका चढ़ावा मैदे का होना चाहिए। वह मैदे पर तेल डाले और उसके ऊपर लोबान रखे।[2] **2** फिर वह अपना चढ़ावा लाकर हारून के बेटों यानी याजकों को देगा। याजक उस चढ़ावे में से मुट्ठी-भर मैदा, तेल और सारा लोबान लेगा और उसे प्रतीक* के तौर पर वेदी पर जलाएगा ताकि उसका धुआँ उठे।[3] यह आग में जलाकर यहोवा को दिया जानेवाला चढ़ावा है, जिसकी सुगंध पाकर वह खुश होता है। **3** अनाज के चढ़ावे का बचा हुआ हिस्सा हारून और उसके बेटों का होगा।[4] यह आग में जलाकर यहोवा को दिए गए चढ़ावे में से है और बहुत पवित्र है।[5]

4 अगर तुम तंदूर में पके हुए अनाज का चढ़ावा देना चाहते हो, तो वह चढ़ावा मैदे का होना चाहिए। तुम मैदे को तेल से गूँधकर उससे छल्ले जैसी बिन-खमीर की रोटियाँ बनाकर देना या मैदे से बिन-खमीर की पापड़ियाँ बनाना और उन पर तेल चुपड़कर देना।[6]

5 अगर तुम तवे पर सेंके हुए अनाज का चढ़ावा देना चाहते हो,[7] तो वह चढ़ावा तेल से गुँधे हुए बिन-खमीर के मैदे का बना हो। **6** तुम उसके टुकड़े-टुकड़े

1:12 *या “गुरदों के आस-पास की चरबी।” **1:16** *यानी बलिदान में जलाए गए जानवरों की पिघली चरबी से भीगी राख।

2:2 *या “यादगार।”

अध्य. 1

1 उत 8:20, 21; गि 15:2, 3
2 उत 4:4
3 लैव 12:6; लैव 22:18-20
4 निर्ग 29:16-18; लैव 8:18-21; लैव 9:12-14
5 लैव 5:7; लैव 12:8; लूक 2:24
6 निर्ग 27:3; लैव 4:11, 12; लैव 6:10

दूसरा कॉल.

अध्य. 2

1 लैव 9:17; गि 15:2-4
2 निर्ग 29:1-3; लैव 6:14, 15; गि 7:13
3 गि 5:25, 26
4 लैव 7:9, 10
5 लैव 10:12; गि 18:9
6 लैव 8:26, 28; गि 6:13, 19
7 लैव 6:20, 21

करना और फिर उस पर तेल डालना।[1]
यह अनाज का चढ़ावा है।

7 अगर तुम कड़ाही में तले हुए
अनाज का चढ़ावा देना चाहते हो, तो वह
चढ़ावा मैदे और तेल का होना चाहिए।
8 इन चीज़ों से बना अनाज का चढ़ावा
तुम यहोवा के पास लाना। यह याजक
को दिया जाएगा और याजक इसे वेदी के
पास लाएगा। 9 याजक उसमें से थोड़ा
चढ़ावा लेगा और उसे प्रतीक* के तौर
पर वेदी पर जलाएगा ताकि उसका
धुआँ उठे।[2] यह आग में जलाकर यहोवा
को दिया जानेवाला चढ़ावा है, जिसकी
सुगंध पाकर वह खुश होता है।[3]
10 अनाज के चढ़ावे का बचा हुआ
हिस्सा हारून और उसके बेटों का होगा।
यह आग में जलाकर यहोवा को दिए गए
चढ़ावे में से है और बहुत पवित्र है।[4]

11 तुम यहोवा के लिए अनाज का जो
भी चढ़ावा चढ़ाते हो उसमें कोई खमीरी
चीज़ मत मिलाना,[5] क्योंकि खमीरे आटे
या शहद को आग में जलाकर यहोवा के
लिए चढ़ावा चढ़ाना मना है।

12 तुम खमीरे आटे और शहद को
पहले फल के चढ़ावे के तौर पर यहोवा के
लिए चढ़ा सकते हो।[6] मगर ये चीज़ें वेदी
पर जलाने के लिए मत लाना, जैसे सुगंध
देनेवाला चढ़ावा लाया जाता है।

13 तुम अनाज के हर चढ़ावे में नमक
मिलाना। तुम अनाज का चढ़ावा नमक
मिलाए बगैर मत चढ़ाना क्योंकि नमक
तुम्हें अपने परमेश्वर के करार की याद
दिलाता है। तुम अपने हर चढ़ावे के साथ
नमक ज़रूर अर्पित करना।[7]

14 अगर तुम यहोवा के लिए पकी
हुई पहली फसल में से अनाज का
चढ़ावा देना चाहते हो तो अनाज के नए
दाने* लाकर देना। उन दानों को तुम
आग में भूनना और दरदरा कूटकर उनका
चढ़ावा चढ़ाना। यह पकी हुई पहली
फसल में से अनाज का चढ़ावा है।[1]
15 तुम उस चढ़ावे पर तेल डालना और
उसके ऊपर लोबान रखना। यह अनाज
का चढ़ावा है। 16 याजक उस चढ़ावे में
से कूटे हुए कुछ दाने और तेल और सारा
लोबान लेगा और उसे प्रतीक* के तौर पर
जलाएगा ताकि उसका धुआँ उठे।[2] यह
आग में जलाकर यहोवा को दिया जाने-
वाला चढ़ावा है।

3 अगर कोई शांति-बलि अर्पित करना
चाहता है[3] और वह मवेशियों में से
कोई जानवर देना चाहता है, तो वह चाहे
गाय दे या बैल, उसे यहोवा के सामने ऐसा
जानवर लाना चाहिए जिसमें कोई दोष
न हो। 2 उसे बलि के जानवर के सिर
पर अपना हाथ रखना चाहिए। फिर वह
जानवर भेंट के तंबू के द्वार पर हलाल
किया जाएगा। हारून के बेटे यानी याजक
उसका खून वेदी के चारों तरफ छिड़केंगे।
3 वह शांति-बलि के ये हिस्से आग में
जलाकर यहोवा को अर्पित करेगा:[4] वह
चरबी[5] जो अंतड़ियों को ढके रहती है,
वह सारी चरबी जो अंतड़ियों के आस-
पास होती है, 4 दोनों गुरदे और उनके
ऊपर की चरबी यानी कमर के पास की
चरबी। वह गुरदों के साथ-साथ कलेजे के
आस-पास की चरबी भी निकालकर
अलग रखेगा।[6] 5 हारून के बेटे इन
सारी चीज़ों को वेदी की जलती लकड़ियों
पर, होम-बलि के ऊपर रखकर जलाएँ-
गे ताकि इनका धुआँ उठे।[7] यह आग में
जलाकर यहोवा को दिया जानेवाला
चढ़ावा है जिसकी सुगंध पाकर वह खुश
होता है।[8]

2:9, 16 * या "यादगार।"

2:14 * या "की हरी बालें।"

अध्य. 2
1 गि 28:9
2 लैव 2:2; लैव 5:11, 12
3 निर्ग 29:38-41; गि 28:4-6
4 गि 18:9
5 लैव 6:14, 17
6 निर्ग 23:19; गि 15:20; 2इत 31:5; नीत 3:9
7 यहे 43:23, 24

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 23:16; निर्ग 34:22; गि 28:26
2 लैव 5:11, 12; लैव 6:14, 15

अध्य. 3
3 लैव 22:21; गि 6:13, 14
4 लैव 7:29-31
5 निर्ग 29:13; लैव 7:23-25; 1रा 8:64
6 लैव 7:1-4
7 लैव 6:12
8 लैव 4:29, 31

6 अगर वह यहोवा के लिए भेड़-बकरियों में से किसी जानवर की शांति-बलि चढ़ाना चाहता है, तो उसे ऐसा नर या मादा जानवर अर्पित करना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो।[1] **7** अगर वह एक मेम्ना देना चाहता है, तो उसे अपने मेम्ने को यहोवा के सामने लाना चाहिए। **8** उसे अपने जानवर के सिर पर हाथ रखना चाहिए। फिर वह जानवर भेंट के तंबू के सामने हलाल किया जाएगा। हारून के बेटे उसका खून वेदी के चारों तरफ छिड़केंगे। **9** वह शांति-बलि के जानवर की चरबी आग में जलाकर यहोवा को अर्पित करेगा।[2] वह मेम्ने के ये सारे हिस्से अलग करेगा: रीढ़ की हड्डी के पास से उसकी चरबीवाली मोटी पूँछ, वह चरबी जो अंतड़ियों को ढके रहती है, वह सारी चरबी जो अंतड़ियों के आस-पास होती है, **10** दोनों गुरदे और उनके ऊपर की चरबी यानी कमर के पास की चरबी। वह गुरदों के साथ-साथ कलेजे के आस-पास की चरबी भी निकालकर अलग रखेगा।[3] **11** फिर याजक इन सारी चीज़ों को वेदी पर जलाएगा जिससे इनका धुआँ उठे। यह यहोवा के लिए भोजन* है जो आग में जलाकर उसे अर्पित किया जाता है।[4]

12 अगर वह बकरी देना चाहता है, तो उसे अपना जानवर यहोवा के सामने लाना चाहिए। **13** वह बकरी के सिर पर अपना हाथ रखेगा और फिर भेंट के तंबू के सामने जानवर हलाल किया जाएगा। हारून के बेटे उसका खून वेदी के चारों तरफ छिड़केंगे। **14** वह जानवर के ये हिस्से आग में जलाकर यहोवा को अर्पित करेगा: वह चरबी जो अंतड़ियों को ढके रहती है, वह सारी चरबी जो अंतड़ियों के आस-पास होती है,[1] **15** दोनों गुरदे और उनके ऊपर की चरबी यानी कमर के पास की चरबी। वह गुरदों के साथ-साथ कलेजे के आस-पास की चरबी भी निकालकर अलग रखेगा। **16** फिर याजक इन सारी चीज़ों को वेदी पर जलाएगा ताकि इनका धुआँ उठे। यह आग में जलाकर अर्पित किया जानेवाला भोजन* है जिसकी सुगंध पाकर परमेश्वर खुश होता है। सारी चरबी का हकदार यहोवा है।[2]

17 तुम चरबी या खून कभी न खाना।[3] तुम जहाँ भी रहो यह नियम तुम पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमेशा तक लागू रहेगा।'”

4 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, **2** “इसराएलियों से कहना, ‘अगर तुममें से कोई अनजाने में ऐसा काम करता है जिसे न करने की आज्ञा यहोवा ने दी है,[4] तो उस पाप के प्रायश्चित के लिए उसे यह करना होगा:

3 अगर अभिषिक्त याजक[5] कोई पाप करता है[6] जिससे इसराएल के सभी लोग दोषी हो जाते हैं, तो उसे चाहिए कि वह प्रायश्चित के लिए ऐसे बैल की पाप-बलि यहोवा को अर्पित करे जिसमें कोई दोष न हो।[7] **4** वह बैल को भेंट के तंबू के द्वार पर यहोवा के सामने लाएगा[8] और उसके सिर पर अपना हाथ रखेगा। फिर वह बैल को यहोवा के सामने हलाल करेगा।[9] **5** इसके बाद अभिषिक्त याजक[10] बैल के खून में से थोड़ा खून लेगा और उसे भेंट के तंबू के अंदर ले जाएगा। **6** फिर वह खून में अपनी उँगली डुबोएगा[11] और तंबू के पवित्र भाग में परदे के पास यहोवा के सामने सात बार छिड़केगा।[12] **7** वह थोड़ा-सा

अध्य. 3
1 गि 6:13, 14
2 निर्ग 29:22; लैव 9:18-20; 2इत 7:7
3 लैव 4:8, 9; लैव 9:10
4 लैव 4:31

दूसरा कॉल.
1 लैव 4:24, 26
2 लैव 7:23; 1शम 2:15-17
3 उत 9:4; लैव 17:10, 13; व्य 12:23; प्रेष 15:20, 29

अध्य. 4
4 लैव 5:17; गि 15:27, 28
5 लैव 8:12; लैव 21:10
6 गि 12:1, 11
7 इब्र 5:1-3; इब्र 7:27
8 लैव 6:25
9 निर्ग 29:10, 11
10 निर्ग 30:30
11 लैव 8:15, 16
12 लैव 16:14, 19

3:11, 16 *शा., “रोटी,” यानी शांति-बलि में से परमेश्वर का हिस्सा।

खून सुगंधित धूप की वेदी के सींगों पर भी लगाएगा,[1] जो भेंट के तंबू में यहोवा के सामने रखी है। और बैल का बाकी खून होम-बलि की वेदी के नीचे उँडेल देगा[2] जो भेंट के तंबू के द्वार पर है।

8 इसके बाद वह पाप-बलि के बैल की सारी चरबी निकालकर अलग रखेगा, वह चरबी जो अंतड़ियों को ढके रहती है और जो अंतड़ियों के आस-पास होती है, **9** दोनों गुरदे और उनके ऊपर की चरबी यानी कमर के पास की चरबी। वह गुरदों के साथ-साथ कलेजे के आस-पास की चरबी भी निकालकर अलग रखेगा।[3] **10** वह बैल की यह सारी चरबी वैसे ही अलग करेगा, जैसे शांति-बलि के बैल की चरबी अलग की जाती है।[4] फिर याजक ये सारी चीज़ें होम-बलि की वेदी पर जलाएगा ताकि इनका धुआँ उठे।

11 मगर बैल की खाल, उसका पूरा गोश्त, सिर, पाए, अंतड़ियाँ और गोबर,[5] **12** यह सब छावनी के बाहर एक साफ जगह पर ले जाना चाहिए जहाँ राख* फेंकी जाती है। वहाँ पर वह इन सारी चीज़ों को जलती लकड़ियों पर रख-कर जला देगा।[6] यह सब राख फेंकने की जगह पर ही जला देना चाहिए।

13 अगर इसराएल के सभी लोग अनजाने में कोई पाप करके दोषी बन जाते हैं,[7] मगर मंडली को नहीं मालूम कि उन्होंने ऐसा काम किया है जिसे न करने की आज्ञा यहोवा ने दी थी,[8] **14** तो जब उनका पाप सामने आ जाता है तब मंडली को चाहिए कि वह पाप-बलि के लिए एक बैल को भेंट के तंबू के सामने लाए। **15** मंडली के मुखिया यहोवा के सामने बैल के सिर पर अपने हाथ रखेंगे और उसे यहोवा के सामने हलाल किया जाएगा।

16 इसके बाद अभिषिक्त याजक बैल का थोड़ा खून लेकर भेंट के तंबू के अंदर जाएगा। **17** फिर वह खून में अपनी उँगली डुबोएगा और परदे के पास यहोवा के सामने उसे सात बार छिड़केगा।[1] **18** इसके बाद याजक थोड़ा-सा खून उस वेदी[2] के सींगों पर लगाएगा, जो भेंट के तंबू में यहोवा के सामने रखी है। और बैल का बाकी खून होम-बलि की वेदी के नीचे उँडेल देगा जो भेंट के तंबू के द्वार पर है।[3] **19** वह बैल की सारी चरबी अलग निकालकर वेदी पर जलाएगा ताकि उसका धुआँ उठे।[4] **20** याजक को इस बैल के साथ ठीक वही करना है जो वह पाप-बलि के पहले बैल के साथ करता है। इस तरह वह लोगों के पाप के लिए प्रायश्चित करेगा[5] और उन्हें माफ किया जाएगा। **21** बैल को छावनी के बाहर ले जाना चाहिए। फिर वह उसे वहाँ पहले बैल की तरह जला देगा।[6] यह मंडली के लिए दी जानेवाली पाप-बलि है।[7]

22 अगर कोई प्रधान[8] अनजाने में ऐसा काम करता है जिसे न करने की आज्ञा उसके परमेश्वर यहोवा ने दी है और इस तरह पाप का दोषी बनता है, **23** या अगर उसे पता चलता है कि उसने परमेश्वर की आज्ञा के खिलाफ कोई पाप किया है, तो उसे पाप-बलि के लिए बकरी का ऐसा बच्चा लाना होगा जो नर हो और जिसमें कोई दोष न हो। **24** वह बकरी के बच्चे के सिर पर अपना हाथ रखेगा और उसे यहोवा के सामने उस जगह हलाल करेगा जहाँ होम-बलि का जानवर हलाल किया जाता है।[9] यह पाप-बलि है। **25** फिर याजक अपनी उँगली से पाप-बलि के बकरे का थोड़ा-सा खून लेगा

4:12 *यानी बलिदान में जलाए गए जानवरों की पिघली चरबी से भीगी राख।

अध्य. 4
1 निर्ग 30:10
2 लैव 5:9
3 लैव 9:8, 10
4 लैव 3:3, 4
5 निर्ग 29:14
6 लैव 8:14, 17; इब्र 13:11
7 यह 7:11
8 गि 15:22-24

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 26:31; निर्ग 40:21; इब्र 10:19, 20
2 निर्ग 30:1, 6
3 निर्ग 27:1; निर्ग 40:6
4 लैव 3:16
5 निर्ग 32:30; लैव 16:17; गि 15:25; इफ 1:7; इब्र 2:17
6 लैव 4:11, 12
7 लैव 16:15; 1यूह 2:1, 2
8 निर्ग 18:21
9 लैव 1:10, 11; लैव 6:25; लैव 7:2

और उसे होम-बलि की वेदी के सींगों पर
लगाएगा।[1] और बाकी खून होम-बलि
की वेदी के नीचे उँडेल देगा।[2] **26** फिर
वह बकरे की सारी चरबी वेदी पर
जलाएगा ताकि उसका धुआँ उठे, ठीक
जैसे शांति-बलि की चरबी जलायी जाती
है।[3] और याजक, प्रधान के पाप के लिए
प्रायश्चित करेगा और उसे माफ कर दिया
जाएगा।

27 अगर आम लोगों में से कोई अन-
जाने में ऐसा काम करता है जिसे न करने
की आज्ञा यहोवा ने दी है और इस तरह
पाप का दोषी बनता है,[4] **28** या अगर
उसे पता चलता है कि उसने एक पाप
किया है, तो उसे पाप-बलि के लिए बकरी
का एक बच्चा लाना होगा, जो मादा हो
और जिसमें कोई दोष न हो। **29** वह
पाप-बलि के जानवर के सिर पर अपना
हाथ रखेगा और उसे उस जगह हलाल
करेगा जहाँ होम-बलि का जानवर हलाल
किया जाता है।[5] **30** याजक अपनी
उँगली से बकरी का थोड़ा खून लेगा
और उसे होम-बलि की वेदी के सींगों पर
लगाएगा और बाकी खून वेदी के नीचे
उँडेल देगा।[6] **31** फिर वह जानवर की
सारी चरबी अलग करेगा,[7] ठीक जैसे
शांति-बलि के जानवर की चरबी अलग
की जाती है।[8] और याजक उस चरबी
को वेदी पर जलाएगा ताकि उसका धुआँ
उठे और उसकी सुगंध पाकर यहोवा खुश
हो। और याजक उस आदमी के लिए
प्रायश्चित करेगा और उसे माफ किया
जाएगा।

32 लेकिन अगर वह आदमी पाप-
बलि के लिए मेम्ना देना चाहता है, तो उसे
ऐसा मेम्ना देना चाहिए जो मादा हो और
जिसमें कोई दोष न हो। **33** वह अपना
हाथ पाप-बलि के मेम्ने के सिर पर रखेगा
और उसे उस जगह हलाल करेगा जहाँ
होम-बलि का जानवर हलाल किया जाता
है।[1] **34** फिर याजक अपनी उँगली
से पाप-बलि के मेम्ने का थोड़ा खून लेगा
और उसे होम-बलि की वेदी के सींगों पर
लगाएगा[2] और बाकी खून वेदी के नीचे
उँडेल देगा। **35** फिर वह मेम्ने की सारी
चरबी अलग करेगा, ठीक जैसे शांति-
बलि के मेम्ने की चरबी अलग की जाती
है। और याजक वेदी पर यहोवा के लिए
अर्पित बलि के ऊपर यह सारी चरबी
रखकर जलाएगा ताकि इसका धुआँ
उठे।[3] और याजक उस आदमी के पाप
के लिए प्रायश्चित करेगा और उसे माफ
किया जाएगा।[4]

5 जो इंसान कोई अपराध होते देखता
है या उस अपराध के बारे में कुछ
जानता है, वह उस अपराध का गवाह बन
जाता है। अगर वह सरेआम किया जाने-
वाला ऐलान सुनता है कि उस अपराध के
बारे में गवाही दी जाए,* मगर फिर भी
आगे आकर उस बारे में नहीं बताता तो
यह पाप है।[5] उसे अपने पाप का लेखा
देना होगा।

2 या अगर एक इंसान कोई अशुद्ध
चीज़ छूता है, फिर चाहे वह अशुद्ध जंगली
जानवर की लाश हो या अशुद्ध पालतू
जानवर की लाश या झुंड में घूमनेवाले
किसी अशुद्ध जीव* की लाश,[6] तो

5:1 *शा., "वह एक शाप (या शपथ) की आवाज़ सुनता है।" मुमकिन है कि यह किसी अपराध के बारे में ऐसा ऐलान था जिसमें अपराधी को या फिर उस गवाह को शाप सुनाया जाता था जो सामने आकर गवाही नहीं देता। **5:2** *ज़ाहिर है कि यहाँ इस्तेमाल हुए इब्रानी शब्द का मतलब है, झुंड में घूमनेवाले छोटे-छोटे जीव-जंतु जो हवा या पानी में या ज़मीन पर होते हैं।

अध्य. 4
1 लैव 9:8, 9; लैव 16:18; इब्र 9:22
2 लैव 8:15
3 लैव 3:3-5
4 गि 15:27-29
5 लैव 1:10, 11; लैव 6:25
6 लैव 4:25; लैव 8:15; लैव 9:8, 9; इब्र 9:22
7 लैव 3:16
8 लैव 3:3, 4

दूसरा कॉल.
1 लैव 1:10, 11
2 लैव 4:25; लैव 16:18
3 निर्ग 29:13, 14; लैव 3:3, 4; लैव 6:12; लैव 9:8, 10
4 गि 15:28; 1यूह 1:7; 1यूह 2:1, 2

अध्य. 5
5 नीत 29:24
6 लैव 11:21-24; लैव 17:15; व्य 14:8

वह अशुद्ध हो जाएगा। चाहे उसने अनजाने में छुआ हो फिर भी वह दोषी होगा। **3** अगर कोई अनजाने में किसी अशुद्ध चीज़ को छूता है[1] जिससे वह अशुद्ध हो सकता है और उसे इस बात का पता चलता है तो वह दोषी होगा।

4 या अगर कोई जल्दबाज़ी में और बिना सोचे-समझे कसम खाता है, फिर चाहे कुछ अच्छा करने की शपथ हो या बुरा करने की, और बाद में जब उसे अपनी गलती का एहसास होता है कि उसने जल्दबाज़ी में कसम खायी थी तो वह दोषी होगा।*[2]

5 अगर एक आदमी इनमें से कोई भी पाप करके दोषी हो जाता है, तो उसे कबूल करके बताना होगा[3] कि उसने क्या पाप किया है। **6** साथ ही, वह अपने पाप के लिए दोष-बलि का जानवर यहोवा के पास लाएगा।[4] वह भेड़ या बकरी का मादा बच्चा लाएगा ताकि उसकी पाप-बलि चढ़ायी जाए। फिर याजक उस आदमी के पाप के लिए प्रायश्चित करेगा।

7 लेकिन अगर अपने पाप के लिए मेम्ने की दोष-बलि देने की उसकी हैसियत नहीं है, तो उसे दो फाख्ते या कबूतर के दो बच्चे यहोवा के सामने लाने चाहिए।[5] एक पाप-बलि के लिए और दूसरा होम-बलि के लिए।[6] **8** उसे ये दोनों चिड़ियाँ याजक के पास लानी होंगी। याजक पाप-बलि की चिड़िया को पहले अर्पित करेगा। वह उसका गला सामने से नोचेगा मगर सिर धड़ से अलग नहीं करेगा। **9** वह पाप-बलि की चिड़िया का थोड़ा-सा खून वेदी के एक तरफ छिड़केगा और बाकी खून वेदी के नीचे बहा देगा।[7] यह पाप-बलि है। **10** इसके बाद वह दूसरी चिड़िया की होम-बलि चढ़ाएगा। वह उसी तरीके से होम-बलि चढ़ाएगा जैसे नियमित तौर पर होम-बलियाँ चढ़ायी जाती हैं।[1] और याजक उस आदमी के पाप के लिए प्रायश्चित करेगा और उसका पाप माफ किया जाएगा।[2]

11 अगर उस आदमी के पास दो फाख्ते या कबूतर के दो बच्चे देने की भी हैसियत नहीं है, तो उसे पाप-बलि के लिए एपा का दसवाँ भाग* मैदा लाना होगा।[3] उसे मैदे में न तो तेल मिलाना चाहिए और न ही उसके ऊपर लोबान रखना चाहिए, क्योंकि यह पाप-बलि है। **12** वह याजक के पास यह मैदा लाएगा और याजक उसमें से मुट्ठी-भर मैदा प्रतीक* के तौर पर निकालेगा। फिर वह उस मुट्ठी-भर मैदे को वेदी पर यहोवा के लिए अर्पित बलि के ऊपर रखकर जलाएगा ताकि उसका धुआँ उठे। यह पाप-बलि है। **13** उस आदमी ने ऊपर बताए पापों में से चाहे जो भी पाप किया हो, उसके लिए याजक प्रायश्चित करेगा और उस आदमी को माफ किया जाएगा।[4] अनाज के चढ़ावे की तरह इस चढ़ावे का बचा हुआ मैदा याजक का होगा।'"[5]

14 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, **15** "अगर कोई यहोवा की पवित्र चीज़ों के मामले में अनजाने में कोई पाप करता है और विश्वासयोग्य होने से चूक जाता है,[6] तो उसे यहोवा के पास ऐसा मेढ़ा लाना होगा जिसमें कोई दोष न हो। उसे मेढ़े की दोष-बलि चढ़ानी होगी।[7] याजक बताएगा कि मेढ़ा पवित्र-स्थान

5:4 *इसका मतलब हो सकता है कि वह अपनी मन्नत पूरी नहीं करता।

5:11 *एपा का दसवाँ भाग 2.2 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। **5:12** *या "यादगार।"

अध्य. 5
1 लैव 12:2; लैव 13:3; लैव 15:3; गि 19:11
2 मत 5:33
3 गि 5:7; भज 32:5; नीत 28:13; 1यूह 1:9
4 लैव 7:1; लैव 14:2, 12; लैव 19:20, 21; गि 6:12
5 लूक 2:24
6 लैव 12:7, 8; लैव 14:21, 22; लैव 15:13-15
7 लैव 1:4, 5; लैव 7:2; इब्र 9:22

दूसरा कॉल.
1 लैव 1:15-17
2 लैव 6:7
3 निर्ग 16:36
4 लैव 4:26
5 लैव 2:10; लैव 6:14-16; लैव 7:1, 6; 1कुर 9:13
6 लैव 10:17, 18
7 लैव 6:6

के शेकेल* के मुताबिक कितने शेकेल#
चाँदी का होना चाहिए।[1] 16 साथ ही,
उसने जिन पवित्र चीज़ों के मामले में पाप
किया है, उनका मुआवज़ा भी उसे भरना
होगा। उसे मुआवज़े में उन चीज़ों की
कीमत और उस कीमत का पाँचवाँ हिस्सा
जोड़कर अदा करना होगा।[2] वह याजक
को यह सब देगा ताकि वह मेढ़े की
दोष-बलि चढ़ाकर उसके लिए प्रायश्चित
करे।[3] और उसका पाप माफ किया
जाएगा।[4]

17 अगर कोई आदमी ऐसा काम
करता है जिसे न करने की आज्ञा यहोवा
ने दी है, तो चाहे उसने यह पाप अनजाने
में किया हो, फिर भी वह पाप का दोषी
होगा और उसे इसका लेखा देना होगा।[5]
18 उसे पाप-बलि के लिए याजक को
ऐसा मेढ़ा लाकर देना होगा जिसमें कोई
दोष न हो। यह मेढ़ा बतायी गयी कीमत
का होना चाहिए।[6] फिर याजक उस
आदमी के अनजाने में किए पाप के लिए
प्रायश्चित करेगा और उसे माफ किया
जाएगा। 19 यह दोष-बलि है क्योंकि
वह बेशक यहोवा के खिलाफ पाप करके
दोषी ठहरा था।”

6 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 “अगर किसी ने अपने पड़ोसी की
अमानत या उसकी दी हुई चीज़ के साथ
हेरा-फेरी की है[7] या उसका कोई सामान
लूटा है या उसे ठगा है तो यह पाप है।
वह यहोवा का विश्वासयोग्य नहीं रहा।[8]
3 उसी तरह, अगर वह किसी की खोयी
हुई चीज़ मिलने पर उसके बारे में झूठ
बोलता है तो यह पाप है। और अगर
वह इनमें से कोई भी पाप करता है और
झूठी कसम खाकर कहता है कि मैंने
ऐसा नहीं किया,[1] 4 तो भी वह पर-
मेश्वर के सामने पाप का दोषी होगा।
उसे अपने पड़ोसी की चीज़ लौटा देनी
होगी, फिर चाहे उसने वह चीज़ चुरायी
हो या ज़बरदस्ती वसूली हो, छल करके
ली हो या वह चीज़ अमानत के तौर
पर उसे रखने के लिए दी गयी हो या
खो जाने पर उसे मिली हो 5 या उसने
झूठी शपथ खाकर रख ली हो। उसने चाहे
किसी भी तरह से पड़ोसी की चीज़ ली
हो, उसे पूरी भरपाई करनी होगी।[2] साथ
ही, उसकी कीमत का पाँचवाँ हिस्सा भी
देना होगा। उसे चाहिए कि जिस दिन
उसका दोष साबित हो जाता है, उसी दिन
वह चीज़ उसके मालिक को लौटा दे।
6 फिर वह एक दोष-बलि का जानवर
याजक के पास लाएगा ताकि उसे यहोवा
को अर्पित किया जाए। उसे झुंड में से
ऐसा मेढ़ा चुनना होगा जिसमें कोई दोष न
हो और जो बतायी हुई कीमत का हो।[3]
7 याजक उस आदमी के लिए यहोवा के
सामने प्रायश्चित करेगा और वह चाहे
किसी भी पाप का दोषी हो उसे माफ किया
जाएगा।”[4]

8 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
9 “हारून और उसके बेटों को यह आज्ञा
देना: ‘यह होम-बलि का नियम है:[5] होम-
बलि के जानवर को वेदी की आग पर
पूरी रात यानी सुबह तक जलने दिया
जाए। वेदी पर आग लगातार जलती
रहे। 10 सुबह होने पर याजक मलमल
से बनी, याजक की पोशाक[6] और मल-
मल का जाँघिया पहनकर तैयार होगा।[7]
फिर वह वेदी के पास आकर होम-बलि
की राख* उठाएगा[8] और उसे वेदी के
एक तरफ रखेगा। 11 इसके बाद यह

5:15 *या “पवित्र शेकेल।” #एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

6:10 *यानी बलिदान में जलाए गए जानवरों की पिघली चरबी से भीगी राख।

अध्य. 5
1 निर्ग 30:13, लैव 27:25
2 लैव 6:4, 5, लैव 22:14, गि 5:6, 7
3 निर्ग 32:30
4 लैव 6:7, लैव 19:22
5 लैव 5:2
6 लैव 6:6

अध्य. 6
7 निर्ग 22:7, लैव 19:11
8 गि 5:6

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 22:10, 11, लैव 19:12, इफ 4:25, कुल 3:9
2 लैव 5:15, 16, गि 5:6, 7
3 लैव 5:15, लैव 7:1, यश 53:10
4 लैव 5:18
5 निर्ग 29:38-42, गि 28:3, इब्र 10:11
6 निर्ग 28:39, लैव 16:32, यहे 44:17
7 निर्ग 28:42, निर्ग 39:27, 28
8 निर्ग 27:3, लैव 1:16

पोशाक उतारकर[1] वह दूसरे कपड़े पह-
नेगा और राख उठाकर छावनी के बाहर
एक साफ जगह ले जाएगा।[2] 12 वेदी
पर आग हमेशा जलाए रखनी चाहिए।
यह आग कभी नहीं बुझनी चाहिए।
याजक को चाहिए कि वह हर सुबह वेदी
पर लकड़ियाँ जलाए[3] और उसके ऊपर
होम-बलि के जानवर के टुकड़े तर-
तीब से रखे। वह उसके ऊपर शांति-बलि
के जानवरों की चरबी रखकर जलाएगा
ताकि उसका धुआँ उठे।[4] 13 वेदी पर
आग लगातार जलाए रखनी चाहिए। यह
आग कभी नहीं बुझनी चाहिए।

14 यह अनाज के चढ़ावे का नियम
है:[5] हारून के बेटो, तुम्हें यह चढ़ावा
यहोवा के सामने वेदी के पास लाना
चाहिए। 15 फिर तुममें से एक याजक
अनाज के चढ़ावे में से मुट्ठी-भर मैदा,
थोड़ा-सा तेल और चढ़ावे के ऊपर रखा
सारा लोबान लेगा और उसे वेदी पर
यहोवा के लिए प्रतीक* के तौर पर
जलाएगा ताकि उसका धुआँ उठे और
उसकी सुगंध पाकर वह खुश हो।[6]
16 उसका बचा हुआ हिस्सा हारून
और उसके बेटे खाएँगे।[7] वे इससे बिन-
खमीर की रोटियाँ बनाकर पवित्र जगह
पर खाएँगे। वे इन्हें भेंट के तंबू के
आँगन में खाएँगे।[8] 17 रोटियाँ बनाते
वक्त उनमें ज़रा भी खमीर नहीं
मिलाना चाहिए।[9] मुझे जो चढ़ावा आग
में जलाकर दिया जाता है, उसमें से यह
हिस्सा मैं उन्हें देता हूँ।[10] उनका यह
हिस्सा पाप-बलि और दोष-बलि की तरह
बहुत पवित्र है।[11] 18 हारून के बेटों
में से हर आदमी ये रोटियाँ खाएगा।[12]
यहोवा के लिए आग में जलाकर चढ़ायी
जानेवाली बलि में से यह हारून के परि-

6:15 *या "यादगार।"

अध्य. 6
1 लैव 16:23; यहे 44:19
2 लैव 4:3, 12
3 लैव 1:7; नहे 13:30, 31
4 लैव 3:5, 16
5 लैव 2:1; गि 15:3, 4
6 लैव 2:2, 9; लैव 5:11, 12
7 लैव 2:3; लैव 5:13; यहे 44:29; 1कुर 9:13
8 लैव 10:12
9 लैव 2:11
10 गि 18:9
11 लैव 2:3, 10
12 गि 18:10

दूसरा कॉल.
1 लैव 24:8, 9
2 निर्ग 30:30; इब्र 5:1
3 निर्ग 16:36
4 निर्ग 29:1, 2; निर्ग 29:40, 41; लैव 2:1; लैव 9:17; गि 28:4, 5
5 लैव 2:5; लैव 7:9; 1इत 23:29
6 व्य 10:6
7 लैव 4:3
8 लैव 1:3, 11

वार को दिया जानेवाला हिस्सा है।
उन्हें यह हिस्सा पीढ़ी-दर-पीढ़ी सदा दिया
जाएगा।[1] हर वह चीज़ जो उनसे* छू
जाए पवित्र हो जाएगी।'"

19 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
20 "जिस दिन हारून का अभिषेक
किया जाएगा,[2] उस दिन हारून और
उसके बेटे यहोवा के लिए एपा का दसवाँ
भाग*[3] मैदा चढ़ाएँगे, आधा मैदा सुबह
और आधा शाम को। आगे जब भी हारून
के किसी बेटे का अभिषेक किया जाएगा
तब यही चढ़ावा चढ़ाया जाएगा।[4]
21 अनाज का यह चढ़ावा तैयार करने
के लिए मैदा तेल से गूँधा जाए और तवे
पर सेंककर पकाया जाए।[5] फिर उसके
टुकड़े-टुकड़े किए जाएँ और उनमें अच्छी
तरह तेल मिलाकर यहोवा के सामने
लाया जाए ताकि उसकी सुगंध पाकर
वह खुश हो। 22 हारून के बाद उसके
बेटों में से जो उसकी जगह याजक
बनेगा[6] और जिसका अभिषेक किया
जाएगा उसे यह चढ़ावा चढ़ाना होगा। यह
नियम तुम्हें हमेशा के लिए दिया जाता है
कि अनाज का यह चढ़ावा पूरा-का-
पूरा यहोवा के लिए जलाया जाए ताकि
इसका धुआँ उठे। 23 याजक जब भी
अनाज का चढ़ावा देगा तो उसे पूरा-का-
पूरा चढ़ावा जला देना चाहिए। इस चढ़ावे
को खाना मना है।"

24 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
25 "हारून और उसके बेटों से कहना,
'यह पाप-बलि का नियम है:[7] पाप-बलि
का जानवर यहोवा के सामने उसी जगह
हलाल किया जाए जहाँ होम-बलि का
जानवर हलाल किया जाता है।[8] यह बलि

6:18 *या "चढ़ावों से।" **6:20** *एपा का दसवाँ भाग 2.2 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

बहुत पवित्र है। **26** जो याजक पाप के
प्रायश्‍चित के लिए यह बलि चढ़ाता है वह
इसे खाएगा।[1] वह इसे पवित्र जगह पर
यानी भेंट के तंबू के आँगन में खाएगा।[2]

27 हर वह चीज़ जो बलि के जानवर
के गोश्‍त को छू जाए पवित्र हो जाएगी।
अगर किसी की पोशाक पर इस जानवर
के खून के छींटे पड़ जाते हैं तो उसे
पवित्र जगह में ही अपनी पोशाक धोकर
साफ करनी चाहिए। **28** अगर इसका
गोश्‍त मिट्टी के बरतन में उबाला गया हो,
तो वह बरतन बाद में चूर-चूर कर दिया
जाए। लेकिन अगर यह ताँबे के बरतन
में उबाला जाता है तो उसे रगड़-रगड़कर
साफ करना चाहिए और पानी से अच्छी
तरह धोना चाहिए।

29 इस बलि का गोश्‍त सिर्फ याजक
खा सकते हैं।[3] यह बहुत पवित्र है।[4]
30 लेकिन जिस पाप-बलि के जानवर
का थोड़ा-सा खून भेंट के तंबू के अंदर ले
जाया जाता है ताकि पवित्र-स्थान में प्राय-
श्‍चित किया जाए, उसका गोश्‍त हरगिज़
नहीं खाना चाहिए।[5] उसे आग में जला-
कर भस्म कर देना चाहिए।

7 तुम दोष-बलि के बारे में इस नियम
का पालन करना:[6] यह बलि बहुत
पवित्र है। **2** वे दोष-बलि का जानवर
उसी जगह हलाल करेंगे जहाँ होम-
बलि के जानवर हलाल करते हैं। इस
बलि के जानवर का खून[7] वेदी के चारों
तरफ छिड़का जाए।[8] **3** वह जानवर
की सारी चरबी अर्पित करेगा,[9] उसकी
चरबीवाली मोटी पूँछ, वह चरबी जो अंत-
ड़ियों को ढके रहती है, **4** दोनों गुरदे
और उनकी चरबी यानी कमर के पास की
चरबी। वह गुरदों के साथ-साथ कलेजे के
आस-पास की चरबी भी निकालकर
अलग रखेगा।[10] **5** फिर याजक इन
सारी चीज़ों को वेदी पर रखकर जलाए-
गा ताकि इनका धुआँ उठे। यह आग
में जलाकर यहोवा को दिया जानेवाला
चढ़ावा है।[1] यह दोष-बलि है। **6** इस
बलि में से सिर्फ याजक खा सकते हैं।[2]
इसे पवित्र जगह में खाना चाहिए। यह
बहुत पवित्र है।[3] **7** दोष-बलि पर भी
वही नियम लागू होगा जो पाप-बलि के
लिए दिया गया है। बलि के गोश्‍त पर उस
याजक का हक है जो प्रायश्‍चित के लिए
यह बलि चढ़ाता है।[4]

8 जब एक याजक किसी के लिए
होम-बलि का जानवर अर्पित करता है तो
उस जानवर की खाल[5] उस याजक की
होगी।

9 अनाज का जो भी चढ़ावा तंदूर या
कड़ाही में या तवे पर पकाकर चढ़ाया
जाता है,[6] उसे खाने का हक उसी याजक
को है जो यह चढ़ावा चढ़ाता है। यह
उसी का होगा।[7] **10** मगर अनाज का
ऐसा हर चढ़ावा जो पकाया न गया हो,
हारून के सभी बेटों का होगा, फिर चाहे
उसमें तेल मिला हो[8] या वह सूखा हो।[9]
उन सबको इसका बराबर हिस्सा मिलेगा।

11 यहोवा को दी जानेवाली शांति-
बलि के बारे में तुम इस नियम का
पालन करना:[10] **12** अगर कोई पर-
मेश्‍वर को धन्यवाद देने के लिए शांति-
बलि चढ़ाता है,[11] तो उसे धन्यवाद-बलि
के जानवर के साथ ये चीज़ें भी लाकर
देनी होंगी: छल्ले जैसी बिन-खमीर की
रोटियाँ जो तेल से गूँधकर बनायी गयी
हों, तेल चुपड़ी बिन-खमीर की पापड़ियाँ
और तेल से सने मैदे की बनी छल्ले जैसी
रोटियाँ जो तेल से तर हों। **13** इसके
अलावा, धन्यवाद देने के लिए दी जाने-
वाली शांति-बलि के साथ वह छल्ले जैसी
खमीरी रोटियाँ भी देगा। **14** वह इनमें

अध्य. 6
1 लैव 10:17; गि 18:9; यहे 44:29
2 निर्ग 27:9; लैव 6:14, 16; यहे 42:13
3 लैव 6:14, 18; लैव 21:21, 22; गि 18:10
4 लैव 6:25
5 लैव 4:5; लैव 10:18; लैव 16:27; इब्र 13:11

अध्य. 7
6 लैव 5:6; लैव 6:6; लैव 14:2, 12; लैव 19:20, 21; गि 6:12
7 इब्र 9:22
8 लैव 3:1, 2; लैव 5:9
9 निर्ग 29:13, 14; लैव 3:9, 17; लैव 4:8, 9; लैव 8:18, 20
10 लैव 3:3, 4

दूसरा कॉल.
1 लैव 3:14-16
2 लैव 5:13; लैव 6:14, 16; गि 18:9
3 लैव 2:3
4 लैव 6:25, 26; लैव 14:13
5 निर्ग 29:14; लैव 1:6
6 लैव 6:20, 21; 1इत 23:29
7 लैव 2:3-7; गि 18:9; 1कुर 9:13
8 लैव 14:21
9 लैव 5:11; गि 5:15
10 लैव 3:1; लैव 7:20; लैव 22:21; 1कुर 10:16
11 लैव 22:29; 2इत 29:31

से हर तरह की एक-एक रोटी अलग
निकालकर यहोवा को अर्पित करेगा।
यह इस चढ़ावे का पवित्र हिस्सा है। इस
पर उस याजक का हक होगा जो शांति-
बलि के जानवरों का खून वेदी पर छिड़क-
ता है।[1] **15** धन्यवाद के लिए दी जाने-
वाली शांति-बलि का गोश्त उसी दिन
खाया जाए जिस दिन यह बलि दी जाती
है। अगली सुबह तक यह गोश्त बचाकर
न रखा जाए।[2]

16 अगर किसी की शांति-बलि
उसकी मन्नत-बलि[3] या स्वेच्छा-बलि है,[4]
तो बलि के जानवर का गोश्त उस दिन
खाया जाए जिस दिन बलि चढ़ायी जाती
है। इस बलि का जो गोश्त बच जाता है
वह अगले दिन भी खाया जा सकता है।
17 लेकिन अगर तीसरे दिन तक भी
कुछ बच जाता है तो उसे आग में जला
देना चाहिए।[5] **18** अगर शांति-बलि
का गोश्त तीसरे दिन खाया जाता है, तो
जिसने यह बलि दी है वह परमेश्वर की
मंज़ूरी नहीं पाएगा। उसकी बलि बेमाने
हो जाएगी और घिनौनी चीज़ साबित
होगी। जो तीसरे दिन वह गोश्त खाता है
उसे अपने गुनाह का लेखा देना होगा।[6]
19 अगर बलि का गोश्त किसी अशुद्ध
चीज़ से छू जाए तो उस गोश्त को खाना
मना है। उसे आग में जला देना चाहिए।
हर कोई जो शुद्ध है वह शुद्ध गोश्त खा
सकता है।

20 अगर कोई अशुद्ध हालत में होते
हुए भी यहोवा के लिए दी गयी शांति-
बलि का गोश्त खाता है, तो उसे मौत की
सज़ा दी जाए।[7] **21** अगर कोई किसी
अशुद्ध इंसान[8] या अशुद्ध जानवर[9] या
किसी अशुद्ध घिनौनी चीज़[10] को छूता है
और ऐसी अशुद्ध हालत में वह यहोवा
के लिए चढ़ायी गयी शांति-बलि के गोश्त
में से खाता है तो उसे मौत की सज़ा दी
जाए।'"

22 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
23 "इसराएलियों से कहना, 'तुम बैल
या मेम्ने या बकरी की चरबी हर-
गिज़ मत खाना।[1] **24** तुम ऐसे जान-
वर की चरबी भी मत खाना, जो मरा
हुआ पाया जाता है या जिसे किसी दूसरे
जानवर ने मार डाला है। उसकी चरबी
किसी और काम के लिए इस्तेमाल की
जा सकती है।[2] **25** जो कोई ऐसे जान-
वर की चरबी खाता है, जिसे वह आग में
जलाकर यहोवा को देने के लिए लाता है,
उसे मौत की सज़ा दी जाए।

26 तुम जहाँ भी रहते हो, तुम किसी
भी जीव का खून मत खाना,[3] फिर चाहे
वह चिड़ियों का खून हो या जानवरों का।
27 अगर कोई किसी भी जीव का खून
खाता है, तो उसे मौत की सज़ा दी
जाए।'"[4]

28 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
29 "इसराएलियों से कहना, 'जो कोई
यहोवा के लिए शांति-बलि चढ़ाता है, उसे
बलि का कुछ हिस्सा यहोवा को अर्पित
करने के लिए लाना चाहिए।[5] **30** यह
हिस्सा बलि के जानवर का सीना और
चरबी है, जिन्हें वह अपने हाथों पर रख-
कर लाएगा[6] ताकि उसे आग में जला-
कर यहोवा को अर्पित किया जाए। वह
उसे यहोवा के सामने आगे-पीछे हिलाए-
गा। यह हिलाया जानेवाला चढ़ावा है।[7]
31 याजक यह चरबी वेदी पर रखकर
जलाएगा ताकि इसका धुआँ उठे,[8] मगर
सीना, हारून और उसके बेटों को दिया
जाएगा।[9]

32 तुम अपनी शांति-बलियों के जान-
वर का दायाँ पैर, जो पवित्र हिस्सा
है, याजक को देना।[10] **33** यह हिस्सा

अध्य. 7

1 लैव 6:25, 26; लैव 10:14; गि 18:8
2 लैव 22:29, 30
3 लैव 22:21
4 लैव 22:23; व्य 12:5, 6
5 लैव 19:5, 6
6 लैव 19:7, 8
7 गि 19:20
8 लैव 12:2, 4
9 लैव 11:21-24; व्य 14:7
10 लैव 11:10; व्य 14:10

दूसरा कॉल.

1 लैव 3:16, 17; लैव 4:8-10; 1शम 2:16, 17
2 निर्ग 22:31; लैव 17:15
3 उत 9:4; लैव 3:17; लैव 17:10; व्य 12:16; 1शम 14:33; प्रेष 15:20, 29
4 लैव 17:14
5 लैव 3:1
6 लैव 3:3
7 निर्ग 29:24; लैव 8:25-27; लैव 9:21
8 लैव 3:3-5
9 लैव 8:29
10 निर्ग 29:27, 28; लैव 10:14; गि 6:20

यानी दायाँ पैर हारून के उस बेटे
का होगा जो शांति-बलि के जानवर
का खून और चरबी अर्पित करेगा।[1]
34 इसराएली अपनी शांति-बलियों में से
जो चढ़ावा हिलाकर देते हैं उसमें से
सीना और पवित्र हिस्सा यानी पैर अलग
निकालकर मैं हारून याजक और उसके
बेटों को देता हूँ। इसराएलियों को यह
नियम हमेशा के लिए दिया जाता है।[2]

35 यहोवा के लिए आग में जलाकर
जो चढ़ावा दिया जाता है, उसमें से यह
हिस्सा याजकों के लिए यानी हारून और
उसके बेटों के लिए अलग रखा जाए।
यह आज्ञा उसी दिन दी गयी थी जिस
दिन उन्हें याजकों के नाते यहोवा की सेवा
करने के लिए हाज़िर किया गया था।[3]
36 जिस दिन यहोवा ने उनका अभिषेक
किया था,[4] उसी दिन उसने यह आज्ञा दी
थी कि इसराएलियों की दी हुई बलि में
से यह हिस्सा उन्हें दिया जाए। यह नियम
पीढ़ी-दर-पीढ़ी सदा के लिए उन पर लागू
रहेगा।'"

37 ये सारे नियम होम-बलि,[5] अनाज
के चढ़ावे,[6] पाप-बलि,[7] दोष-बलि,[8]
याजकपद सौंपने के मौके पर दी जाने-
वाली बलि[9] और शांति-बलि[10] के बारे में
दिए गए। 38 यहोवा ने ये सारे नियम
सीनै पहाड़ पर मूसा को दिए थे।[11]
उसने मूसा को ये नियम उस दिन दिए
जिस दिन उसने इसराएलियों को आज्ञा
दी थी कि वे सीनै वीराने में यहोवा के लिए
बलियाँ अर्पित करें।[12]

8 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 "तू हारून और उसके बेटों को
ले आना[13] और उनके लिए बनायी
गयी पोशाकें[14] और अभिषेक का तेल,[15]
पाप-बलि का बैल, दो मेढ़े और बिन-
खमीर की रोटियों से भरी टोकरी भी साथ
लेना।[1] 3 और लोगों की पूरी मंडली
को भेंट के तंबू के द्वार पर इकट्ठा
करना।"

4 मूसा ने ठीक वैसे ही किया जैसे
यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी। और
पूरी मंडली भेंट के तंबू के द्वार पर इकट्ठा
हो गयी। 5 मूसा ने मंडली से कहा,
"यहोवा ने हमें ये-ये करने की आज्ञा दी
है।" 6 इसके बाद मूसा ने हारून और
उसके बेटों को पास लाकर उन्हें नहाने
की आज्ञा दी।[2] 7 फिर मूसा ने हारून
को उसका कुरता पहनाया[3] और उस पर
कमर-पट्टी बाँधी।[4] इसके बाद उसे बिन
आस्तीन का बागा[5] और उसके ऊपर
एपोद पहनाया[6] और एपोद को बुने
हुए कमरबंद से कसकर बाँध दिया।[7]
8 फिर उसने हारून पर सीनाबंद बाँधा[8]
और उसके अंदर ऊरीम और तुम्मीम
रखे।[9] 9 इसके बाद उसने हारून के
सिर पर पगड़ी रखी[10] और पगड़ी के
सामने सोने की चमचमाती पट्टी बाँधी जो
समर्पण की पवित्र निशानी है।* [11] मूसा ने
यह सब ठीक वैसे ही किया जैसे यहोवा ने
उसे आज्ञा दी थी।

10 फिर मूसा ने अभिषेक का तेल
लिया और पवित्र डेरे और उसके सारे
साजो-सामान का अभिषेक करके[12] उन्हें
पवित्र ठहराया। 11 फिर उसने अभि-
षेक का थोड़ा-सा तेल लेकर वेदी पर सात
बार छिड़का और वेदी और उसके साथ
इस्तेमाल होनेवाली सारी चीज़ों का और
हौद और उसकी टेक का अभिषेक करके
उन्हें पवित्र ठहराया। 12 आखिर में
उसने अभिषेक का थोड़ा-सा तेल लिया
और हारून के सिर पर उँडेलकर उसका
अभिषेक किया ताकि उसे पवित्र ठह-
राए।[13]

अध्य. 7
1 व्य 18:3
2 लैव 10:14
3 निर्ग 28:1; निर्ग 29:4, 7; निर्ग 40:13
4 निर्ग 40:15; लैव 8:12
5 लैव 6:9
6 लैव 2:1; लैव 6:14
7 लैव 6:25
8 लैव 5:6; लैव 7:1
9 निर्ग 29:1; लैव 6:20
10 लैव 3:1
11 निर्ग 34:27
12 लैव 1:2

अध्य. 8
13 निर्ग 28:1
14 निर्ग 28:4; निर्ग 39:33, 41
15 निर्ग 30:23-25; निर्ग 40:15

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 29:1, 2
2 निर्ग 29:4; निर्ग 40:12
3 निर्ग 28:39
4 निर्ग 39:27, 29
5 निर्ग 39:22
6 निर्ग 28:6; निर्ग 39:2
7 निर्ग 28:8; निर्ग 29:5; निर्ग 39:20
8 निर्ग 28:15; निर्ग 39:9
9 निर्ग 28:30
10 निर्ग 29:6; निर्ग 39:27, 28
11 निर्ग 28:36; निर्ग 39:30
12 निर्ग 30:26-28
13 निर्ग 29:4, 7; निर्ग 30:30; निर्ग 40:13; लैव 21:10; भज 133:2

8:9 * या "जो पवित्र ताज है।"

13 इसके बाद मूसा हारून के बेटों को पास ले आया और उन्हें कुरते पहनाए और कमर-पट्टी बाँधी और सिर पर साफा बाँधा,[1] ठीक जैसे यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।

14 फिर वह पाप-बलि का बैल ले आया। हारून और उसके बेटों ने पाप-बलि के बैल के सिर पर अपने हाथ रखे।[2] **15** मूसा ने बैल हलाल किया और अपनी उँगली से उसका खून लिया[3] और उसे वेदी के सींगों पर लगाया। इस तरह उसने वेदी से पाप दूर करके उसे शुद्ध किया और बैल का बाकी खून वेदी के नीचे उँडेल दिया। इस तरह उसने वेदी के लिए प्रायश्चित किया और उसे पवित्र ठहराया। **16** इसके बाद उसने बैल की वह सारी चरबी ली जो अंतड़ियों को ढके रहती है और जो कलेजे के आस-पास होती है, साथ ही दोनों गुरदे और उनकी चरबी भी ली। मूसा ने वे सारी चीज़ें वेदी पर रखकर जलायीं जिससे उनका धुआँ उठा।[4] **17** बैल के बाकी हिस्से, उसकी खाल, उसका गोश्त और गोबर, यह सब छावनी के बाहर ले जाकर जला दिया गया।[5] सबकुछ ठीक वैसे ही किया गया जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

18 इसके बाद वह होम-बलि का मेढ़ा पास ले आया। हारून और उसके बेटों ने मेढ़े के सिर पर अपने हाथ रखे।[6] **19** फिर मूसा ने वह मेढ़ा हलाल किया और उसका खून वेदी के चारों तरफ छिड़का। **20** उसने मेढ़े को काट-कर उसके टुकड़े-टुकड़े किए और मेढ़े का सिर, उसके टुकड़े और उसकी चरबी* जलायी जिससे उनका धुआँ उठा। **21** उसने मेढ़े की अंतड़ियों और पायों को पानी से धोकर साफ किया और पूरे मेढ़े को वेदी पर रखकर जलाया जिससे उसका धुआँ उठा। यह होम-बलि थी जिसकी सुगंध पाकर परमेश्वर खुश हुआ। यह आग में जलाकर यहोवा को दिया गया चढ़ावा था, ठीक जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

22 इसके बाद वह दूसरे मेढ़े को लाया जो याजकपद सौंपने के मौके पर दिया जानेवाला मेढ़ा था।[1] हारून और उसके बेटों ने मेढ़े के सिर पर अपने हाथ रखे।[2] **23** मूसा ने मेढ़ा हलाल किया और उसका थोड़ा-सा खून लेकर हारून के दाएँ कान के निचले सिरे पर, दाएँ हाथ के अँगूठे पर और दाएँ पैर के अँगूठे पर लगाया। **24** फिर वह हारून के बेटों को सामने लाया और मेढ़े का थोड़ा-सा खून उनके दाएँ कान के निचले सिरे पर, दाएँ हाथ के अँगूठे पर और दाएँ पैर के अँगूठे पर लगाया। मूसा ने बाकी खून वेदी के चारों तरफ छिड़का।[3]

25 फिर उसने मेढ़े की चरबी, उसकी चरबीवाली मोटी पूँछ और वह सारी चरबी ली जो अंतड़ियों को ढके रहती है और जो कलेजे के आस-पास होती है और दोनों गुरदे और उनकी चरबी और दायाँ पैर भी लिया।[4] **26** साथ ही, उसने यहोवा के सामने रखी बिन-खमीर की रोटियों की टोकरी में से बिन-खमीर की छल्ले जैसी एक रोटी,[5] तेल से गूँध-कर बनायी गयी छल्ले जैसी एक रोटी[6] और एक पापड़ी ली। उसने ये रोटियाँ मेढ़े की चरबी और उसके दाएँ पैर के ऊपर रखीं। **27** इसके बाद उसने ये सारी चीज़ें हारून और उसके बेटों की हथे-लियों पर रखीं और ये चीज़ें यहोवा के सामने आगे-पीछे हिलायीं। यह हिलाकर दिया गया चढ़ावा था। **28** फिर मूसा ने

8:20 *या "गुरदों के आस-पास की चरबी।"

अध्य. 8
1 निर्ग 28:40; निर्ग 29:8, 9
2 निर्ग 29:10-14; लैव 4:3, 4; लैव 16:6
3 इब्र 9:21, 22
4 लैव 4:8, 9
5 लैव 4:11, 12; लैव 16:27
6 निर्ग 29:15-18; लैव 1:4

दूसरा कॉल.
1 लैव 8:33
2 निर्ग 29:19, 20
3 निर्ग 24:6
4 निर्ग 29:22-25
5 लैव 2:4
6 निर्ग 29:1, 2

उनके हाथ से ये सारी चीज़ें लीं और वेदी पर होम-बलि के ऊपर रखकर जलायीं जिससे इनका धुआँ उठा। यह याजक-पद सौंपने के मौके पर दी गयी बलि थी जिसकी सुगंध पाकर परमेश्वर खुश हुआ। यह आग में जलाकर यहोवा को दिया गया चढ़ावा था।

29 फिर मूसा ने मेढ़े का सीना लिया और उसे यहोवा के सामने आगे-पीछे हिलाया। यह हिलाकर दिया गया चढ़ावा था।[1] याजकपद सौंपने के मौके पर बलि किए गए मेढ़े का यह हिस्सा मूसा को दिया गया, ठीक जैसे यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।[2]

30 मूसा ने थोड़ा-सा अभिषेक का तेल[3] और वेदी से थोड़ा खून लिया और उसे हारून और उसकी पोशाक पर और उसके बेटों और उनकी पोशाकों पर छिड़का। इस तरह उसने हारून और उसके बेटों को और उनकी पोशाकों को पवित्र ठहराया।[4]

31 फिर मूसा ने हारून और उसके बेटों से कहा, “तुम मेढ़े का गोश्त भेंट के तंबू के द्वार पर उबालना।[5] फिर तुम सब वहीं द्वार पर वह गोश्त और वे रोटियाँ खाना जो याजकपद सौंपने के मौके के लिए रखी टोकरी में हैं। मुझे आज्ञा दी गयी है कि हारून और उसके बेटे यह सब खाएँगे।[6] 32 जो गोश्त और रोटियाँ बच जाती हैं उन्हें तुम आग में जला देना।[7] 33 तुम सात दिन तक भेंट के तंबू के द्वार से बाहर मत जाना, जब तक कि तुम्हें याजकपद सौंपने के दिन पूरे नहीं हो जाते क्योंकि तुम्हें याजकपद सौंपने* में पूरे सात दिन लगेंगे।[8] 34 आज हमने जो-जो किया वह सब करने की आज्ञा यहोवा ने दी थी ताकि तुम सबका प्रायश्चित किया जाए।[1] 35 सात दिन तक तुम सब रात-दिन भेंट के तंबू के द्वार पर ही रहना[2] और यहोवा ने जो-जो हिदायत दी है उसका पालन करके अपना फ़र्ज़ निभाना,[3] वरना तुम मार डाले जाओगे। परमेश्वर ने मुझे यही आज्ञा दी है।”

36 हारून और उसके बेटों ने वह सब किया जो यहोवा ने मूसा के ज़रिए आज्ञा दी थी।

9 आठवें दिन[4] मूसा ने हारून और उसके बेटों और इसराएल के मुखियाओं को बुलाया। 2 उसने हारून से कहा, “तू अपनी पाप-बलि के लिए एक बछड़ा[5] और होम-बलि के लिए एक मेढ़ा ले और उन्हें यहोवा को अर्पित कर। ये ऐसे जानवर होने चाहिए जिनमें कोई दोष न हो। 3 मगर तू इसराएलियों से कहना, ‘तुम पाप-बलि के लिए एक बकरा, होम-बलि के लिए एक साल का बछड़ा और एक साल का नर मेम्ना लाना, जिनमें कोई दोष न हो 4 और शांति-बलि के लिए एक बैल और एक मेढ़ा लाना[6] और तेल मिला हुआ अनाज का चढ़ावा भी लाना।[7] यहोवा के सामने इन सारे जानवरों की बलि देना और तेल मिला हुआ अनाज का चढ़ावा चढ़ाना क्योंकि आज के दिन यहोवा तुम्हारे सामने प्रकट होगा।’”[8]

5 फिर वे भेंट के तंबू के सामने वह सब ले आए जिसकी आज्ञा मूसा ने उन्हें दी थी। फिर इसराएलियों की पूरी मंडली आगे आयी और यहोवा के सामने खड़ी हुई। 6 मूसा ने उनसे कहा, “यहोवा ने यह करने की आज्ञा दी है ताकि यहोवा की महिमा तुम लोगों को दिखायी दे।”[9] 7 फिर मूसा ने हारून से कहा, “तू वेदी के पास जा और अपनी पाप-बलि[10] और

8:33 *शा., “तुम्हारे हाथ भरने।”

अध्य. 8
1 लैव 7:29, 30
2 निर्ग 29:26, 27; लैव 7:34, 35
3 निर्ग 30:30
4 निर्ग 29:21; गि 3:2, 3
5 लैव 6:28
6 निर्ग 29:31, 32; 1कुर 9:13
7 निर्ग 29:34
8 निर्ग 29:30, 35; गि 3:2, 3

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 29:36; लैव 17:11
2 निर्ग 29:37
3 गि 1:53

अध्य. 9
4 लैव 8:35
5 लैव 4:3
6 लैव 3:1
7 लैव 2:4; लैव 6:14
8 निर्ग 29:43
9 निर्ग 16:10; निर्ग 24:16; निर्ग 40:34
10 लैव 4:3

होम-बलि चढ़ा और अपने और अपने
घराने के लिए प्रायश्चित कर।[1] और
लोगों की दी हुई बलि भी चढ़ा[2] और
उनके लिए प्रायश्चित कर,[3] ठीक जैसे
यहोवा ने आज्ञा दी है।”

8 हारून फौरन वेदी के पास गया
और उसने पाप-बलि का वह बछड़ा
हलाल किया जो उसके पाप के प्राय-
श्चित के लिए था।[4] **9** फिर हारून के
बेटों ने बछड़े का खून उसे दिया[5] और
उसने खून में अपनी उँगली डुबोयी और
उसे वेदी के सींगों पर लगाया और बाकी
खून उसने वेदी के नीचे उँडेल दिया।[6]
10 उसने पाप-बलि के बछड़े की चरबी,
गुरदे और कलेजे के आस-पास की चरबी
वेदी पर रखकर जलायी जिससे उसका
धुआँ उठा। उसने यह ठीक वैसे ही किया
जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।[7]
11 उसने बछड़े का गोश्त और उसकी
खाल छावनी के बाहर ले जाकर आग में
जला दी।[8]

12 इसके बाद उसने होम-बलि का
जानवर हलाल किया। फिर हारून के
बेटों ने जानवर का खून उसे दिया और
उसने वह खून वेदी के चारों तरफ
छिड़का।[9] **13** फिर उन्होंने उसे होम-
बलि के जानवर का सिर और उसके
टुकड़े दिए और उसने ये चीज़ें वेदी
पर रखकर जलायीं जिससे धुआँ उठा।
14 इसके बाद उसने अंतड़ियों और पायों
को धोकर साफ किया और उन्हें वेदी
पर होम-बलि के ऊपर रखकर जलाया
जिससे धुआँ उठा।

15 इसके बाद उसने लोगों का दिया
चढ़ावा अर्पित किया। उसने पाप-बलि का
वह बकरा लिया जो लोगों के पापों के
लिए था। उसने बकरा हलाल किया और
पहले जानवर की तरह उसकी पाप-बलि
चढ़ायी। **16** इसके बाद उसने होम-
बलि उसी तरह अर्पित की जैसे निय-
मित तौर पर होम-बलियाँ अर्पित की
जाती हैं।[1]

17 फिर उसने अनाज का चढ़ावा
अर्पित किया।[2] उसने इस चढ़ावे में से
मुट्ठी-भर चीज़ें लीं और उन्हें वेदी पर रख-
कर जलाया जिससे धुआँ उठा। यह
सुबह की होम-बलि के अलावा दिया गया
चढ़ावा था।[3]

18 इसके बाद उसने शांति-बलि का
वह बैल और मेढ़ा हलाल किया जो लोगों
के लिए था। फिर हारून के बेटों ने उन
जानवरों का खून उसे दिया और उसने वह
खून वेदी के चारों तरफ छिड़का।[4]
19 फिर उन्होंने बैल की चरबी,[5] मेढ़े की
चरबीवाली मोटी पूँछ, गुरदे, कलेजे की
चरबी और वह चरबी ली जो अंद-
रूनी अंगों को ढके रहती है[6] **20** और
यह सारी चरबी उन्होंने बैल और मेढ़े
के सीने पर रखी। इसके बाद उसने
वह सारी चरबी ली और वेदी पर रख-
कर जलायी जिससे उसका धुआँ उठा।[7]
21 फिर हारून ने बलि के दोनों जानवरों
का सीना और दायाँ पैर लेकर यहोवा के
सामने आगे-पीछे हिलाया, ठीक जैसे मूसा
ने आज्ञा दी थी। यह हिलाकर दिया जाने-
वाला चढ़ावा था।[8]

22 फिर हारून ने लोगों की तरफ
अपने हाथ उठाए और उन्हें आशीर्वाद
दिया।[9] और वह पाप-बलि, होम-बलि
और शांति-बलियाँ अर्पित करने के बाद
नीचे उतरा। **23** आखिर में मूसा और
हारून, भेंट के तंबू के अंदर गए और
फिर बाहर आने के बाद उन्होंने लोगों को
आशीर्वाद दिया।[10]

अब यहोवा की महिमा सब लोगों
को दिखायी दी।[11] **24** फिर यहोवा की

अध्य. 9
1 इब्र 7:27
2 इब्र 5:1-3
3 लैव 16:33
4 लैव 4:3, 4
5 इब्र 9:22
6 लैव 4:7; लैव 8:14, 15
7 लैव 4:8-10
8 लैव 4:11, 12; इब्र 13:11
9 लैव 1:5

दूसरा कॉल.
1 लैव 1:3; लैव 6:9
2 लैव 2:1, 11, 13
3 निर्ग 29:39
4 लैव 3:1, 2
5 लैव 3:3, 4
6 लैव 3:9, 10
7 लैव 7:29-31
8 निर्ग 29:27, 28
9 गि 6:23-27; व्य 10:8; व्य 21:5; 1इत 23:13
10 2शम 6:18; 2इत 6:3
11 लैव 9:6

तरफ से वेदी पर आग बरसी[1] और
उस पर रखी होम-बलि और चरबी को
भस्म करने लगी। जब सब लोगों ने यह
देखा तो वे खुशी से जयजयकार करने
लगे और उन्होंने मुँह के बल ज़मीन पर
गिरकर दंडवत किया।[2]

10 बाद में हारून के बेटों, नादाब
और अबीहू[3] ने अपना-अपना
धूपदान लिया और उनमें आग भरी और
धूप डाला।[4] फिर वे यहोवा के सामने
ऐसी आग चढ़ाने लगे जो नियम के
खिलाफ थी,[5] जिसकी आज्ञा परमेश्वर
ने उन्हें नहीं दी थी। **2** मगर उसी पल
यहोवा की तरफ से उन दोनों पर आग
बरसी[6] और वे यहोवा के सामने मर
गए।[7] **3** तब मूसा ने हारून से कहा,
"यहोवा ने कहा है, 'मैं उन लोगों के बीच
पवित्र ठहरूँगा जो मेरे पास आते हैं[8] और
सब लोगों के सामने मेरी महिमा होगी।'"
हारून खामोश रहा।

4 फिर मूसा ने हारून के चाचा उज्जी-
एल[9] के बेटे, मीशाएल और एलसापान
को बुलाया और उनसे कहा, "तुम दोनों
यहाँ आओ और अपने भाइयों की लाशें
पवित्र-स्थान के सामने से उठाकर छावनी
के बाहर ले जाओ।" **5** तब वे दोनों
मूसा के कहे मुताबिक आगे आए और
नादाब और अबीहू को उनके कुरतों समेत
उठाकर छावनी के बाहर ले गए।

6 फिर मूसा ने हारून और उसके
दूसरे बेटों, एलिआज़र और ईतामार से
कहा, "तुम दुख के मारे अपने बाल बिखरे
हुए मत रहने देना, न ही अपने कपड़े
फाड़ना,[10] वरना तुम मार डाले जाओगे
और परमेश्वर का क्रोध पूरी मंडली पर
भड़क उठेगा। यहोवा ने जिन्हें आग से
मार डाला है, उनके लिए तुम्हारे भाई
यानी इसराएल का पूरा घराना मातम
मनाएगा। **7** मगर तुम भेंट के तंबू के
द्वार से बाहर मत जाना, वरना तुम मर
जाओगे क्योंकि यहोवा के पवित्र तेल से
तुम्हारा अभिषेक हुआ है।"[1] हारून और
उसके बेटों ने मूसा के कहे मुताबिक
किया।

8 फिर यहोवा ने हारून से कहा,
9 "तू और तेरे बेटे कभी-भी दाख-मदिरा
या किसी और तरह की शराब पीकर भेंट
के तंबू में न आएँ,[2] वरना तुम मार डाले
जाओगे। यह नियम पीढ़ी-दर-पीढ़ी सदा
के लिए तुम पर लागू रहेगा। **10** यह
नियम तुम्हें इसलिए दिया जा रहा है ताकि
तुम शुद्ध और अशुद्ध चीज़ों के बीच और
जो चीज़ें पवित्र हैं और जो पवित्र नहीं हैं,
उनके बीच फर्क कर सको[3] **11** और
इसराएलियों को वे सारे कायदे-कानून
सिखा सको जो यहोवा ने मूसा के ज़रिए
बताए हैं।"[4]

12 फिर मूसा ने हारून और उसके
बचे हुए दोनों बेटों, एलिआज़र और ईता-
मार से कहा, "यहोवा के लिए जो अनाज
का चढ़ावा आग में जलाकर दिया गया
था, उसका बचा हुआ हिस्सा लो और
उसमें खमीर मिलाए बिना रोटियाँ बनाओ
और वेदी के पास खाओ[5] क्योंकि वह
बहुत पवित्र है।[6] **13** उसे पवित्र जगह
में ही खाना[7] क्योंकि यहोवा के लिए आग
में जलाकर दिए गए चढ़ावे में से वह
तुम्हारा और तुम्हारे बेटों का हिस्सा है।
मुझे आज्ञा दी गयी है कि तुम्हें ऐसा
करना है। **14** और हिलाकर दिए गए
चढ़ावे में से सीना और पवित्र हिस्से में
से पैर[8] भी तुम और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ
शुद्ध जगह में खाएँगे।[9] इसराएलियों की
शांति-बलियों में से ये चीज़ें तुम्हें और
तुम्हारे बेटों को दी जाती हैं। **15** इस-
राएली आग में अर्पित की जानेवाली

अध्य. 9

1 न्या 6:21; 1इत 21:26
2 1रा 18:38, 39; 2इत 7:1, 3

अध्य. 10

3 निर्ग 6:23; 1इत 24:2
4 निर्ग 30:34, 35; लैव 16:12
5 निर्ग 30:9; लैव 10:9; लैव 16:1, 2
6 गि 16:35
7 गि 26:61
8 निर्ग 19:22
9 निर्ग 6:18
10 लैव 21:10

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 28:41; लैव 8:12; लैव 21:11, 12
2 यहे 44:21
3 यहे 44:23
4 व्य 33:10; 2इत 17:8, 9; नहे 8:7, 8; मला 2:7
5 लैव 6:14, 16
6 लैव 21:22
7 लैव 6:26; गि 18:10
8 निर्ग 29:26-28; लैव 7:31, 34; लैव 9:21
9 लैव 22:13; गि 18:11

चरबी के साथ-साथ पवित्र हिस्से में
से पैर और हिलाकर दिए जानेवाले
चढ़ावे में से सीना लाएँगे ताकि वे इन्हें
यहोवा के सामने आगे-पीछे हिलाएँ। इस
तरह वे हिलाकर दिया जानेवाला चढ़ावा
अर्पित करेंगे। इसके बाद सीना और पैर
तुम्हें और तुम्हारे बेटों को दिया जाएगा।
इन पर हमेशा के लिए तुम्हारा हक
रहेगा[1] ठीक जैसे यहोवा ने आज्ञा दी है।"

16 जब मूसा ने पाप-बलि के लिए
अर्पित बकरे को बहुत ध्यान से ढूँढ़ा[2]
तो उसने पाया कि उसे जला दिया गया
है। तब वह हारून के बचे हुए बेटों
यानी एलिआज़र और ईतामार पर भड़क
उठा। उसने उनसे कहा, **17** "तुमने
पवित्र जगह पर पाप-बलि का गोश्त
क्यों नहीं खाया?[3] वह बहुत पवित्र चीज़
है और तुम्हें खाने के लिए दिया गया है
ताकि तुम मंडली के पाप का लेखा दे
सको और यहोवा के सामने उनके लिए
प्रायश्चित कर सको। **18** इस बलि के
जानवर का खून पवित्र-स्थान के अंदर
नहीं लाया गया था।[4] तुम्हें पवित्र जगह
में उसे ज़रूर खाना चाहिए था क्योंकि
मुझे आज्ञा दी गयी है कि तुम्हें ऐसा
करना है।" **19** हारून ने मूसा से कहा,
"आज लोगों ने यहोवा के सामने जो पाप-
बलि और होम-बलि चढ़ायी है,[5] मैं उनका
गोश्त नहीं खा सका। तू अच्छी तरह
जानता है कि आज मुझ पर क्या बीती
है। ऐसे में अगर मैं पाप-बलि का गोश्त
खाता तो क्या यहोवा मुझसे खुश होता?"
20 मूसा को हारून की यह बात सही
लगी।

11 फिर यहोवा ने मूसा और हारून
से कहा, **2** "इसराएलियों से
कहना, 'तुम ज़मीन पर रहनेवाले ये जीव-
जंतु खा सकते हो:[6] **3** ऐसा हर जानवर
जिसके खुर दो भागों में बँटे होते हैं और
जो जुगाली भी करता है।

4 मगर तुम ये जानवर नहीं खा सकते
जो या तो जुगाली करते हैं या जिनके खुर
दो भागों में बँटे होते हैं: ऊँट, जो
जुगाली तो करता है मगर उसके खुर दो
भागों में नहीं बँटे होते। वह तुम्हारे
लिए अशुद्ध है।[1] **5** चट्टानी बिज्जू,[2]
जो जुगाली तो करता है मगर उसके
खुर दो भागों में नहीं बँटे होते। वह
तुम्हारे लिए अशुद्ध है। **6** खरगोश, जो
जुगाली तो करता है मगर उसके खुर दो
भागों में नहीं बँटे होते। वह तुम्हारे लिए
अशुद्ध है। **7** और सूअर,[3] जिसके खुर
तो दो भागों में बँटे होते हैं मगर वह
जुगाली नहीं करता। वह तुम्हारे लिए
अशुद्ध है। **8** तुम इनमें से किसी भी
जानवर का गोश्त न खाना और न ही
इसकी लाश छूना। ये सभी जानवर
तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।[4]

9 तुम पानी में रहनेवाले ये जीव-जंतु
खा सकते हो: नदी या समुंदर का
ऐसा हर जीव जिसके पंख और छिलके
होते हैं।[5] **10** लेकिन नदी या समुंदर
के ऐसे जीवों को खाना मना है जिनके
पंख और छिलके नहीं होते, फिर चाहे
वे झुंड में रहनेवाले जीव हों या दूसरे
किस्म के जीव। वे तुम्हारे लिए घिनौने हैं।
11 हाँ, तुम्हारी नज़र में वे सभी घिनौने
हों। तुम ऐसे किसी भी जीव को न
खाना।[6] अगर तुम्हें ऐसा मरा हुआ जीव
मिले तो उससे घिन करना। **12** पानी
के अंदर रहनेवाला ऐसा हर जीव तुम्हारे
लिए घिनौना है जिसके पंख और छिलके
नहीं होते।

13 आकाश में उड़नेवाले ये सभी जीव
तुम्हारे लिए घिनौने हैं और इन्हें तुम
मत खाना क्योंकि ये घिनौने हैं: उकाब,[7]

अध्य. 10
1 1कुर 9:13
2 लैव 9:3, 15
3 लैव 6:25, 26; यहे 44:29
4 लैव 6:29, 30
5 लैव 9:8, 12

अध्य. 11
6 व्य 14:4-6; यहे 4:14

दूसरा कॉल.
1 व्य 14:7, 8
2 नीत 30:26
3 यश 65:4; यश 66:3, 17
4 प्रेष 10:14
5 व्य 14:9, 10
6 व्य 14:3
7 व्य 14:12-19; अय 39:27, 30

समुद्री बाज़, काला गिद्ध, **14** लाल चील और हर किस्म की काली चील, **15** हर किस्म का कौवा, **16** शुतुरमुर्ग, उल्लू, धोमरा, हर किस्म का बाज़, **17** छोटा उल्लू, पन-कौवा, लंबे कानोंवाला उल्लू, **18** हंस, हवासिल, गिद्ध, **19** लगलग, हर किस्म का बगुला, हुदहुद और चमगादड़। **20** पंखवाला ऐसा हर कीट-पतंगा तुम्हारे लिए घिनौना है जो झुंड में उड़ता है और चार पैरों के बल चलता है।

21 जो पंखवाले कीट-पतंगे झुंड में उड़ते हैं और चार पैरों के बल चलते हैं, उनमें से सिर्फ ऐसे कीट-पतंगे तुम खा सकते हो जिनके कूदने-फाँदने के पैर भी होते हैं। **22** इस किस्म के कीट-पतंगों में से तुम इन्हें खा सकते होः उड़नेवाली तरह-तरह की टिड्डियाँ, आम टिड्डी,[1] झींगुर और टिड्डा। **23** मगर पंखवाले बाकी सभी कीट-पतंगे जो झुंड में उड़ते हैं और जिनके चार पैर होते हैं, वे तुम्हारे लिए घिनौने हों। **24** उन्हें खाने से तुम अशुद्ध हो जाओगे। जो कोई ऐसे मरे हुए कीट-पतंगों को छूता है वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।[2] **25** जो कोई ऐसे मरे हुए कीट-पतंगों को उठाता है, उसे अपने कपड़े धोने चाहिए।[3] वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।

26 ऐसा हर जानवर तुम्हारे लिए अशुद्ध है जिसके खुर फटे तो होते हैं, मगर दो भागों में नहीं बँटे होते, साथ ही वह जुगाली भी नहीं करता। जो कोई उसे छुएगा वह अशुद्ध हो जाएगा।[4] **27** चार पैरोंवाले जो जीव-जंतु पंजों के सहारे चलते हैं वे सब तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं। जो कोई उनकी लाश छुएगा वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। **28** जो कोई उनकी लाश उठाता है, उसे अपने कपड़े धोने चाहिए।[1] वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।[2] ऐसे जीव-जंतु तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।

29 ज़मीन पर जो जीव झुंड में रहते हैं, उनमें से ये तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं: छछूँदर, चूहा,[3] हर किस्म की छिपकली, **30** घरेलू छिपकली, गोह, सरटिका, सांडा और गिरगिट। **31** झुंड में रहनेवाले ये सभी जीव तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।[4] जो कोई उनकी लाश छुएगा वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।[5]

32 अगर इनमें से कोई मरा हुआ जीव किसी चीज़ पर गिरता है, चाहे लकड़ी के बरतन पर या कपड़े या खाल या टाट पर, तो वह चीज़ अशुद्ध हो जाएगी। रोज़ाना के काम में इस्तेमाल होनेवाला जो बरतन अशुद्ध हो जाता है उसे पानी में डुबोकर रखना चाहिए। वह बरतन शाम तक अशुद्ध रहेगा और उसके बाद वह शुद्ध होगा। **33** अगर मरा हुआ जीव किसी मिट्टी के बरतन में गिरता है तो तुम उस बरतन को चूर-चूर कर देना और उसके अंदर जो भी था वह अशुद्ध हो जाएगा।[6] **34** अगर ऐसे अशुद्ध बरतन में रखा पानी किसी खाने की चीज़ पर पड़े तो वह चीज़ अशुद्ध हो जाएगी। ऐसे बरतन में पीने के लिए जो भी रखा हो, वह अशुद्ध हो जाएगा। **35** ये मरे हुए जीव चाहे किसी भी चीज़ पर गिरें वह चीज़ अशुद्ध हो जाएगी। अगर तंदूर या चूल्हे पर ये जीव गिरते हैं तो उसे चूर-चूर कर देना चाहिए। वह अशुद्ध है और तुम्हारे लिए अशुद्ध बना रहेगा। **36** लेकिन अगर पानी के सोते या कुंड में ऐसा मरा हुआ जीव गिर जाए तो वह सोता या कुंड शुद्ध रहेगा। मगर जो कोई उस मरे हुए जीव को पानी से निकालता है वह अशुद्ध हो जाएगा। **37** अगर मरा हुआ जीव किसी ऐसे बीज पर गिरता है जो बोने के

अध्य. 11

1 मत 3:4, मर 1:6
2 लैव 14:46, 47; लैव 15:8; लैव 17:15; लैव 22:4-6
3 लैव 14:2, 8; लैव 15:2, 5; गि 19:10
4 व्य 14:7, 8

दूसरा कॉल.

1 लैव 17:15, 16
2 लैव 5:2
3 यश 66:17
4 व्य 14:19
5 लैव 11:24; लैव 22:4, 5
6 लैव 15:12

लिए रखा हुआ है तो वह बीज शुद्ध ही
रहेगा। 38 लेकिन अगर मरे हुए जीव
का कोई हिस्सा भिगोए हुए बीज पर
गिरता है तो वह बीज तुम्हारे लिए अशुद्ध
हो जाएगा।

39 अगर ऐसा कोई जानवर जिसे
खाने की तुम्हें इजाज़त है, मरा हुआ पाया
जाए तो जो उसकी लाश छुएगा वह शाम
तक अशुद्ध रहेगा।[1] 40 अगर किसी
ने ऐसे मरे हुए जानवर का गोश्त खा
लिया तो उसे अपने कपड़े धोने चाहिए।
वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।[2] जो कोई
ऐसे जानवर की लाश उठाता है उसे
अपने कपड़े धोने चाहिए। वह शाम तक
अशुद्ध रहेगा। 41 धरती के वे सभी
जीव घिनौने हैं जो झुंड में रहते हैं।[3] इन्हें
खाना मना है। 42 तुम ऐसा कोई भी
जीव मत खाना जो पेट के बल रेंगता है,
चार पैरों के सहारे चलता है या जो झुंड
में रहता है और जिसके बहुत-से पैर होते
हैं, क्योंकि ये घिनौने हैं।[4] 43 तुम झुंड
में रहनेवाले किसी भी जीव की वजह से
घिनौने मत बनना। तुम उनकी वजह से
दूषित और अशुद्ध मत हो जाना।[5]
44 मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।[6]
तुम्हें शुद्ध और पवित्र बने रहना है[7]
क्योंकि मैं पवित्र हूँ।[8] तुम धरती के ऐसे
किसी भी जीव की वजह से खुद को
अशुद्ध मत करना जो झुंड में रहता है।
45 मैं यहोवा हूँ और तुम्हें इसलिए मिस्र
देश से निकालकर ले जा रहा हूँ ताकि
यह साबित करूँ कि मैं तुम्हारा परमेश्वर
हूँ।[9] तुम्हें पवित्र बने रहना है[10] क्योंकि मैं
पवित्र हूँ।[11]

46 ये सभी नियम जानवरों, उड़ने-
वाले जीवों, पानी के जीव-जंतुओं और
झुंड में रहनेवाले धरती के जीवों के बारे
में हैं। 47 ये नियम इसलिए दिए गए हैं
ताकि तुम शुद्ध और अशुद्ध चीज़ के बीच
और जो जीव खाए जा सकते हैं और जो
नहीं खाए जा सकते, उनके बीच फर्क कर
सको।'"[1]

12 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 "इसराएलियों से कहना,
'अगर एक औरत गर्भवती होती है और
लड़के को जन्म देती है, तो वह सात दिन
तक अशुद्ध रहेगी, जैसे वह माहवारी के
दिनों में अशुद्ध रहती है।[2] 3 लड़के के
जन्म के आठवें दिन उसका खतना किया
जाना चाहिए।[3] 4 उस औरत को खून
बहने की वजह से हुई अशुद्ध हालत से
निकलकर शुद्ध होने में 33 दिन और
लगेंगे। जब तक उसके शुद्ध होने के दिन
पूरे नहीं होते, तब तक उसे कोई भी पवित्र
चीज़ नहीं छूनी चाहिए और पवित्र-स्थान
में नहीं आना चाहिए।

5 अगर एक औरत लड़की को जन्म
देती है तो वह 14 दिन तक अशुद्ध
रहेगी, जैसे वह माहवारी के दिनों में
अशुद्ध रहती है। उसे खून बहने की
वजह से हुई अशुद्ध हालत से निकल-
कर शुद्ध होने में 66 दिन और लगेंगे।
6 जब एक औरत के शुद्ध होने के
दिन पूरे हो जाते हैं, फिर चाहे यह
बेटे के जन्म के बाद हो या बेटी के,
तो उसे होम-बलि के लिए एक साल का
नर मेम्ना[4] और पाप-बलि के लिए कबू-
तर का एक बच्चा या एक फाख्ता लेकर
भेंट के तंबू के द्वार पर जाना चाहिए
और याजक को देना चाहिए। 7 याजक
यहोवा के सामने उन्हें अर्पित करेगा और
उस औरत के लिए प्रायश्चित करेगा।
तब वह औरत खून बहने की वजह
से हुई अशुद्ध हालत से छूटकर शुद्ध हो
जाएगी। यह नियम उस औरत के लिए
है जिसका बच्चा होता है, चाहे लड़का

अध्य. 11

1 लैव 11:23, 24; गि 19:11, 16
2 लैव 17:15; लैव 22:3, 8; व्य 14:21; यहे 4:14; यहे 44:31
3 लैव 11:21
4 व्य 14:3
5 लैव 20:25
6 निर्ग 20:2
7 निर्ग 19:6; लैव 19:2; व्य 14:2; 1थि 4:7
8 1पत 1:15, 16; प्रक 4:8
9 निर्ग 6:7; निर्ग 29:46; हो 11:1
10 निर्ग 22:31; गि 15:40; व्य 7:6
11 लैव 20:7, 26; यह 24:19; 1शम 2:2

दूसरा कॉल.

1 लैव 20:25; यहे 44:23

अध्य. 12

2 लैव 15:19
3 उत 17:12; उत 21:4; लूक 1:59; लूक 2:21, 22; यूह 7:22
4 लैव 1:10

हो या लड़की। 8 लेकिन अगर वह
बलि के लिए मेढ़ा नहीं दे सकती तो उसे
दो फाख्ते या कबूतर के दो बच्चे लाकर
देने चाहिए,[1] एक होम-बलि के लिए
और एक पाप-बलि के लिए। याजक उस
औरत के लिए प्रायश्चित करेगा और वह
शुद्ध हो जाएगी।'"

13 यहोवा ने मूसा और हारून से
यह भी कहा, 2 "अगर किसी
आदमी की त्वचा पर सूजन या पपड़ी या
दाग दिखायी देता है और उसके कोढ़*[2]
में बदलने का खतरा है, तो यह ज़रूरी है
कि उस आदमी को हारून याजक के पास
या उसके बेटों में से किसी याजक के पास
लाया जाए।[3] 3 याजक उस आदमी
की त्वचा पर हुए संक्रमण की जाँच
करेगा। अगर त्वचा के संक्रमित हिस्से के
रोएँ सफेद हो गए हैं और संक्रमण
त्वचा के अंदर तक दिखायी देता है,
तो यह कोढ़ की बीमारी है। याजक उसे
जाँचने के बाद ऐलान करेगा कि वह
आदमी अशुद्ध है। 4 अगर दाग सफेद
है, मगर संक्रमण त्वचा के अंदर तक नहीं
दिखायी देता और उस हिस्से के रोएँ भी
सफेद नहीं हुए, तो याजक उस संक्रमित
आदमी को सात दिन के लिए दूसरों से
अलग रखेगा।[4] 5 सातवें दिन याजक
दोबारा उसकी जाँच करेगा। अगर दाग
दिखने में वैसे का वैसा ही है और त्वचा
पर और नहीं फैला है, तो याजक उस
आदमी को सात दिन और अलग रखेगा।
6 सातवें दिन याजक फिर से उसकी
जाँच करेगा। अगर संक्रमण का दाग

13:2 *जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद "कोढ़" किया गया है उसके कई मतलब हैं। उसमें तरह-तरह के चर्मरोग और कुछ ऐसे संक्रमण भी शामिल हैं जो कपड़ों और घरों में पाए जाते हैं।

अध्य. 12
1 लैव 1:14; लैव 5:7; लैव 14:21, 22; लूक 2:24

अध्य. 13
2 गि 12:10, 12; 2इत 26:19; मत 8:3
3 व्य 24:8; यहे 44:23; मला 2:7; लूक 17:14
4 लैव 13:50; लैव 14:38; गि 12:15

दूसरा कॉल.
1 मत 8:4; मर 1:44; लूक 5:14; लूक 17:14
2 लैव 13:15, 25, 30, 42; गि 12:10, 12
3 लैव 13:3
4 लैव 13:24, 25
5 लैव 13:4

काफी हलका हो गया है और त्वचा पर
नहीं फैला है, तो याजक ऐलान करेगा
कि वह आदमी शुद्ध है।[1] वह बस एक
मामूली घाव था। फिर वह आदमी अपने
कपड़े धोएगा और शुद्ध हो जाएगा।
7 लेकिन अगर शुद्ध ठहरने के लिए
याजक से जाँच करवाने के बाद यह
साफ दिखायी देता है कि संक्रमण त्वचा
पर फैल गया है तो उसे एक बार
फिर* याजक के पास जाना चाहिए।
8 याजक उसकी जाँच करेगा। जब वह
देखेगा कि त्वचा पर पपड़ी फैल गयी
है, तो वह ऐलान करेगा कि वह आदमी
अशुद्ध है। उसे कोढ़ है।[2]
9 अगर किसी आदमी के शरीर पर
कोढ़ बढ़ने लगता है तो उसे याजक
के पास लाया जाए। 10 याजक उसकी
जाँच करेगा।[3] अगर त्वचा पर सूजन
है और वह सफेद है, वहाँ के रोएँ सफेद
हो गए हैं और सूजन में खुला घाव
है,[4] 11 तो यह पुराना कोढ़ है। याजक
ऐलान करेगा कि वह आदमी अशुद्ध
है। याजक को उसे दोबारा जाँचने के
लिए अलग नहीं रखना चाहिए[5] क्योंकि
वह अशुद्ध है। 12 लेकिन अगर किसी
आदमी के पूरे शरीर पर कोढ़ फैल
गया है और याजक देख सकता है कि
सिर से पाँव तक कोढ़ भरा हुआ है
13 और वह उसे जाँचने पर पाता है
कि कोढ़ पूरी त्वचा पर फैल गया
है, तो वह ऐलान करेगा कि उसका
कोढ़ दूसरों को लगनेवाला कोढ़ नहीं
है।* उसकी पूरी त्वचा सफेद हो गयी
है और वह शुद्ध है। 14 लेकिन अगर
कभी उसकी त्वचा में खुला घाव दिखायी
देने लगता है तो वह आदमी अशुद्ध

13:7 *या "दूसरी बार।" 13:13 *या "वह आदमी शुद्ध है।"

हो जाएगा। **15** जब याजक उसका
खुला घाव देखेगा तो उस घाव की वजह
से वह ऐलान करेगा कि वह आदमी
अशुद्ध है।[1] उसे कोढ़ की बीमारी है।[2]
16 अगर उस आदमी का खुला घाव
दोबारा सफेद हो जाता है तो वह याजक
के पास आएगा। **17** याजक उसकी
जाँच करेगा।[3] अगर उसका संक्रमण
सफेद हो गया है तो याजक ऐलान करेगा
कि संक्रमित आदमी शुद्ध है।

18 अगर किसी के शरीर पर फोड़ा
निकल आता है और वह ठीक हो जाता
है, **19** लेकिन जहाँ फोड़ा निकला था
वहाँ की त्वचा सूजकर सफेद हो जाती
है या वहाँ लाल-सफेद दाग बन जाता
है, तो उसे जाँच के लिए याजक के पास
जाना चाहिए। **20** याजक उसकी जाँच
करेगा।[4] अगर दाग त्वचा के अंदर तक
दिखायी देता है और वहाँ के रोएँ सफेद
हो गए हैं, तो याजक ऐलान करेगा कि
वह आदमी अशुद्ध है। यह कोढ़ की
बीमारी है, जो फोड़े की जगह पर निकल
आयी है। **21** लेकिन अगर याजक उसे
जाँचने पर पाता है कि वहाँ के रोएँ
सफेद नहीं हुए हैं और दाग त्वचा के
अंदर तक नहीं है और दाग हलका हो
गया है, तो याजक उसे सात दिन के
लिए अलग रखेगा।[5] **22** और अगर
यह साफ दिखायी देता है कि दाग
त्वचा पर फैल गया है तो याजक ऐलान
करेगा कि वह अशुद्ध है। उसे कोढ़ है।
23 लेकिन अगर दाग वैसे का वैसा ही
है और फैला नहीं है तो इसका मत-
लब है कि उसकी सूजन फोड़े की वजह से
थी। याजक ऐलान करेगा कि वह आदमी
शुद्ध है।[6]

24 अगर जलने की वजह से किसी
की त्वचा पर घाव बन जाता है और वह

अध्य. 13
1 व्य 24:8
2 लैव 13:8
3 लूक 5:14
लूक 17:14
4 यहे 44:23
5 लैव 13:4, 50
लैव 14:38
गि 12:15
6 मत 8:4
मर 1:44
लूक 5:14
लूक 17:14

दूसरा कॉल.
1 लैव 13:4, 50
लैव 14:38
गि 12:15
2 व्य 24:8
मला 2:7

कच्चा घाव सफेद या लाल-सफेद रंग के
दाग में बदल जाता है, **25** तो याजक
उसकी जाँच करेगा। अगर उस दाग के
रोएँ सफेद हो गए हैं और दाग त्वचा
के अंदर तक दिखायी देता है तो यह कोढ़
है जो उस घाव में निकल आया है। याजक
ऐलान करेगा कि वह आदमी अशुद्ध है।
उसे कोढ़ की बीमारी है। **26** लेकिन
अगर याजक उसे जाँचने पर पाता है
कि उस दाग का एक भी रोयाँ सफेद
नहीं हुआ और दाग त्वचा के अंदर तक
दिखायी नहीं देता और सफेदी कम हो
गयी है तो वह उस आदमी को सात दिन
के लिए अलग रखेगा।[1] **27** सातवें
दिन याजक उसकी दोबारा जाँच करेगा।
तब अगर यह साफ दिखायी देता है कि
दाग त्वचा पर फैल गया है तो याजक
ऐलान करेगा कि वह आदमी अशुद्ध है।
उसे कोढ़ की बीमारी है। **28** लेकिन
अगर दाग वैसे का वैसा ही है और त्वचा
पर फैला नहीं है और उसकी सफेदी कम
हो गयी है, तो इसका मतलब है कि वह
सूजन सिर्फ घाव की वजह से थी। याजक
ऐलान करेगा कि वह आदमी शुद्ध है
क्योंकि यह घाव की सूजन है।

29 अगर किसी आदमी या औरत के
सिर या ठोढ़ी पर संक्रमण हो जाता
है, **30** तो याजक उस संक्रमण की
जाँच करेगा।[2] अगर संक्रमण त्वचा
के अंदर तक दिखायी देता है और
उस हिस्से के बाल पतले और पीले पड़
गए हैं तो याजक ऐलान करेगा कि
वह इंसान अशुद्ध है। यह सिर की
खाल या दाढ़ी में होनेवाला संक्रमण है।
यह सिर या ठोढ़ी में होनेवाला कोढ़ है।
31 लेकिन अगर याजक देखता है कि
संक्रमण त्वचा के अंदर तक नहीं दिखायी
देता और वहाँ एक भी काला बाल नहीं

है, तो याजक को चाहिए कि वह संक्रमित
इंसान को सात दिन के लिए अलग रखे।[1]
32 सातवें दिन याजक उस संक्रमण की
जाँच करेगा। अगर संक्रमण फैला नहीं है
और न ही वहाँ के बाल पीले हुए हैं और
संक्रमण त्वचा के अंदर तक नहीं दिखायी
पड़ता, 33 तो उस इंसान को चाहिए
कि वह अपने सिर या ठोढ़ी के बाल
मुँड़वा ले, मगर संक्रमित हिस्से के बाल न
मुँड़वाए। फिर याजक उस संक्रमित इंसान
को सात दिन और अलग रखेगा।

34 सातवें दिन याजक फिर से संक्र-
मित हिस्से की जाँच करेगा। अगर सिर
की खाल या दाढ़ी का संक्रमण त्वचा पर
नहीं फैला है और त्वचा के अंदर तक नहीं
दिखायी देता, तो याजक को ऐलान करना
चाहिए कि वह शुद्ध है। उस आदमी को
अपने कपड़े धोकर शुद्ध होना चाहिए।
35 लेकिन अगर शुद्ध ठहराए जाने के
बाद यह साफ दिखायी देता है कि संक्र-
मण फैल गया है, 36 तो याजक उसकी
जाँच करेगा। अगर संक्रमण त्वचा पर
फैल गया है तो वह आदमी अशुद्ध है।
याजक को यह देखने की ज़रूरत नहीं कि
उसके संक्रमित हिस्से के बाल पीले हुए हैं
या नहीं। 37 लेकिन अगर जाँच से
पता चलता है कि संक्रमण फैला नहीं है
और वहाँ काले बाल उग आए हैं तो
इसका मतलब है कि उसका संक्रमण दूर
हो गया है। वह शुद्ध है। याजक ऐलान
करेगा कि वह शुद्ध है।[2]

38 अगर एक आदमी या औरत की
त्वचा पर दाग दिखायी देते हैं और वे दाग
सफेद हैं, 39 तो याजक उनकी जाँच
करेगा।[3] अगर दाग हलके सफेद हैं,
तो यह त्वचा पर होनेवाला ददोरा है।
इससे कोई खतरा नहीं है। वह आदमी या
औरत शुद्ध है।

40 अगर एक आदमी के सिर के बाल
झड़ जाते हैं और वह गंजा हो जाता है,
तो वह अशुद्ध नहीं शुद्ध है। 41 अगर
उसके सिर पर सामने के बाल झड़ जाते हैं
और उस हिस्से में वह गंजा हो जाता है,
तो वह अशुद्ध नहीं शुद्ध है। 42 लेकिन
अगर सिर के सामने के गंजे हिस्से पर या
माथे पर लाल-सफेद घाव बन जाता है,
तो यह कोढ़ है जो सिर की खाल या माथे
पर निकल आया है। 43 याजक उसकी
जाँच करेगा। अगर उसके गंजे हिस्से में
या माथे पर संक्रमण की वजह से हुई
सूजन लाल-सफेद है और त्वचा पर होने-
वाले कोढ़ जैसी दिखती है, 44 तो वह
आदमी कोढ़ी है। वह अशुद्ध है। उसके
सिर पर हुई बीमारी की वजह से याजक
को ऐलान करना चाहिए कि वह आदमी
अशुद्ध है। 45 जिसे कोढ़ की बीमारी
है वह फटे हुए कपड़े पहने, बाल बिखरे
हुए रखे, अपनी मूँछें ढाँप ले और चिल्ला-
चिल्लाकर कहे, 'मैं अशुद्ध हूँ, अशुद्ध!'
46 जितने समय तक उसे बीमारी रहेगी
वह अशुद्ध रहेगा। इस अशुद्ध हालत की
वजह से उसे लोगों की बस्ती से दूर अलग
रहना चाहिए। उसका बसेरा छावनी के
बाहर होगा।[1]

47 अगर कोढ़ की बीमारी किसी
पोशाक पर हो जाए, चाहे वह ऊनी हो या
मलमल की, 48 या कोढ़ उस पोशाक
के ताने या बाने में, या किसी चमड़े पर
या चमड़े की बनी किसी चीज़ पर
हो जाए 49 और उस पोशाक, चमड़े,
ताने, बाने या चमड़े की चीज़ पर पीले-हरे
या लाल रंग का दाग दिखायी दे, तो यह
कोढ़ की निशानी है। वह चीज़ ले जाकर
याजक को दिखायी जाए। 50 याजक
उस कोढ़ की जाँच करेगा और उस दाग-
दार चीज़ को सात दिन तक अलग

अध्य. 13

1 लैव 13:4, 50
लैव 14:38
गि 12:15

2 मत 8:4
मर 1:44
लूक 5:14
लूक 17:14

3 लैव 13:2

दूसरा कॉल.

1 गि 5:2
गि 12:14
2रा 7:3
2इत 26:20, 21

रखेगा।[1] 51 सातवें दिन याजक उस
पोशाक या उसके ताने या बाने पर या
चमड़े (चाहे यह चमड़ा किसी भी चीज़ के
लिए इस्तेमाल होता हो) पर हुए कोढ़ को
जाँचेगा। अगर वह पाता है कि दाग उस
चीज़ पर फैल गया है, तो जान लो कि
यह फैलनेवाला कोढ़ है। वह चीज़ अशुद्ध
है।[2] 52 उसे चाहिए कि जिस ऊनी या
मलमल की पोशाक पर या जिसके ताने
या बाने या चमड़े की चीज़ पर कोढ़
हुआ है उसे जला दे, क्योंकि यह फैलने-
वाला कोढ़ है। वह चीज़ आग में जला दी
जाए।

53 लेकिन अगर याजक उस पोशाक
या उसके ताने या बाने या चमड़े की चीज़
को जाँचने पर पाता है कि दाग बाकी
हिस्सों पर नहीं फैला है, 54 तो वह
आदेश देगा कि उस संक्रमित चीज़ को
अच्छी तरह धोकर साफ किया जाए।
इसके बाद वह और सात दिन के लिए
उसे अलग रखेगा। 55 उसकी धुलाई
के बाद याजक उसकी जाँच करेगा। अगर
दाग वैसे का वैसा ही है तो चाहे वह दूसरे
हिस्सों में न फैला हो, फिर भी वह चीज़
अशुद्ध है। तुम्हें उस चीज़ को आग में
जला देना होगा क्योंकि कोढ़ ने उसे अंदर
या बाहर से खा लिया है।

56 अगर याजक उसे जाँचने पर पाता
है कि अच्छी धुलाई के बाद दाग हलका
हो गया है तो वह उस पोशाक या चमड़े,
ताने या बाने से दागवाला हिस्सा फाड़-
कर निकाल देगा। 57 लेकिन अगर
दाग उस पोशाक या चमड़े, ताने या बाने
के किसी और हिस्से पर नज़र आता है
तो इसका मतलब है कि दाग फैल रहा
है। उस संक्रमित चीज़ को तुम आग में
जला देना।[3] 58 लेकिन अगर पोशाक
या ताने या बाने या चमड़े की चीज़ की
धुलाई के बाद दाग गायब हो जाता है, तो
तुम उस चीज़ को दोबारा धोना। वह चीज़
शुद्ध हो जाएगी।

59 ये नियम कोढ़ की बीमारी के बारे
में हैं, फिर चाहे यह ऊन या मलमल से
बुनी पोशाक पर या उसके ताने या बाने
पर या चमड़े की किसी चीज़ पर हो जाए।
उसे शुद्ध या अशुद्ध ठहराने के लिए ये
नियम दिए गए हैं।”

14 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 “जब एक आदमी का कोढ़
ठीक हो जाता है, तो यह ज़रूरी है कि
उसे शुद्ध ठहराने के लिए याजक के पास
लाया जाए। जिस दिन उसे लाया जाता
है उस दिन उसे शुद्ध ठहराने के लिए इस
नियम का पालन किया जाना चाहिए।[1]
3 याजक छावनी के बाहर उस आदमी
के पास जाएगा और उसकी जाँच करेगा।
अगर वह देखता है कि उस आदमी का
कोढ़ ठीक हो गया है, 4 तो वह उसे
आज्ञा देगा कि वह दो शुद्ध चिड़ियाँ,
देवदार की लकड़ी, सुर्ख लाल कपड़ा
और मरुआ लाए ताकि उसे शुद्ध किया
जाए।[2] 5 फिर याजक आज्ञा देगा कि
एक चिड़िया को लिया जाए और उसे
ताज़े पानी से भरे मिट्टी के बरतन के
ऊपर हलाल किया जाए। 6 फिर वह
ज़िंदा चिड़िया लेगा और उसके साथ देव-
दार की लकड़ी, सुर्ख लाल कपड़ा और
मरुआ भी लेगा और इन सबको एक-
साथ पहली चिड़िया के खून में डुबोएगा
जिसे ताज़े पानी के ऊपर हलाल किया
गया था। 7 फिर वह बरतन से खून
लेगा और उस आदमी पर सात बार
छिड़केगा, जो कोढ़ से शुद्ध होने के लिए
आया है, और ऐलान करेगा कि वह
आदमी शुद्ध है। वह ज़िंदा चिड़िया को
खुले मैदान में छोड़ देगा।[3]

अध्य. 13
1 लैव 13:4, लैव 14:38, गि 12:15
2 लैव 14:44, 45
3 लैव 13:52

दूसरा कॉल.

अध्य. 14
1 लैव 13:2, मत 8:4, मर 1:44, लूक 5:14, लूक 17:14
2 लैव 14:49-53, गि 19:6, 9, भज 51:7
3 लैव 16:22

8 जिस आदमी को शुद्ध किया जा रहा
है उसे चाहिए कि वह अपने कपड़े धोए,
अपने सब बाल मूँड़े और नहाए। वह
शुद्ध हो जाएगा। इसके बाद वह छावनी
में आ सकता है, मगर उसे सात दिन
तक अपने तंबू के बाहर रहना होगा।
9 सातवें दिन उसे अपने सिर, ठोढ़ी और
भौंहों के सारे बाल मूँड़ने चाहिए। फिर
उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना
चाहिए। वह शुद्ध हो जाएगा।

10 आठवें दिन वह याजक के पास
ये सारी चीज़ें लेकर जाएगाः ऐसे दो
नर मेम्ने जिनमें कोई दोष न हो, एक
साल की मादा मेम्ना जिसमें कोई दोष
न हो,[1] अनाज के चढ़ावे के लिए
एपा का तीन-दहाई भाग* मैदा जिसमें
तेल मिला हो[2] और लोज-भर# तेल।[3]
11 जो याजक ऐलान करता है कि
वह आदमी शुद्ध है, वह उस आदमी
को उसके चढ़ावे के साथ भेंट के तंबू
के द्वार पर यहोवा के सामने ले जाएगा।
12 फिर याजक दोष-बलि के लिए एक
नर मेम्ना[4] और लोज-भर तेल लेगा और
उन्हें यहोवा के सामने आगे-पीछे हिलाए-
गा। यह हिलाकर दिया जानेवाला चढ़ावा
है।[5] 13 फिर वह मेम्ने को पवित्र जगह
में हलाल करेगा, जहाँ आम तौर पर पाप-
बलि और होम-बलि का जानवर हलाल
किया जाता है,[6] क्योंकि पाप-बलि की
तरह दोष-बलि के गोश्त पर याजक का
हक है।[7] यह बहुत पवित्र है।[8]

14 फिर याजक दोष-बलि के मेम्ने का
थोड़ा-सा खून लेगा और शुद्ध होने-
वाले आदमी के दाएँ कान के निचले
सिरे पर, दाएँ हाथ के अँगूठे पर और दाएँ
पैर के अँगूठे पर लगाएगा। 15 फिर
याजक लोज-भर तेल में से थोड़ा तेल
लेकर[1] अपनी बायीं हथेली पर डालेगा।
16 फिर अपने दाएँ हाथ की उँगली उस
तेल में डुबोएगा और यहोवा के सामने
सात बार अपनी उँगली से उसे छिड़केगा।
17 इसके बाद याजक हथेली पर बचे
तेल में से थोड़ा तेल लेगा और शुद्ध होने-
वाले आदमी के दाएँ कान के निचले सिरे
पर, दाएँ हाथ के अँगूठे पर और दाएँ पैर
के अँगूठे पर लगाएगा, जिन पर पहले से
दोष-बलि के जानवर का खून लगा होगा।
18 याजक की हथेली में जो तेल बच
जाता है, उसे वह शुद्ध होनेवाले आदमी
के सिर पर डालेगा। और याजक यहोवा
के सामने उस आदमी के लिए प्रायश्चित
करेगा।[2]

19 इसके बाद याजक पाप-बलि
चढ़ाएगा[3] और उस आदमी के लिए प्राय-
श्चित करेगा जो अशुद्ध हालत से शुद्ध
किया जा रहा है। फिर वह होम-बलि
का जानवर हलाल करेगा। 20 याजक
वेदी पर होम-बलि और अनाज का
चढ़ावा अर्पित करेगा[4] और उस आदमी
के लिए प्रायश्चित करेगा[5] और वह
आदमी शुद्ध हो जाएगा।[6]

21 अगर वह आदमी गरीब है
और उसकी इतनी हैसियत नहीं कि इन
चीज़ों की बलि दे सके तो अपने प्राय-
श्चित के लिए वह एक नर मेम्ने की
दोष-बलि देगा जिसे आगे-पीछे हिलाकर
चढ़ाया जाएगा। साथ ही, वह अनाज के
चढ़ावे के लिए एपा का दसवाँ भाग*
मैदा जिसमें तेल मिला हो, लोज-भर तेल
22 और अपनी हैसियत के मुताबिक दो

अध्य. 14
1 लैव 4:32
2 लैव 2:1
3 मर 1:44
4 लैव 6:6
5 लैव 14:21, 24
6 लैव 1:10, 11; लैव 4:3, 4
7 लैव 2:3; लैव 7:7; 1कुर 9:13; 1कुर 10:18
8 लैव 6:25

दूसरा कॉल.
1 लैव 14:10
2 लैव 6:7; 1यूह 1:7; 1यूह 2:1, 2
3 लैव 5:6
4 लैव 2:1; लैव 14:10; गि 15:4
5 मत 8:4
6 लैव 14:9; मर 1:44; लूक 5:14; लूक 17:14

14:10 *एपा का तीन-दहाई भाग 6.6 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। #एक लोज 0.31 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

14:21 *एपा का दसवाँ भाग 2.2 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

फाख्ते या कबूतर के दो बच्चे देगा। एक
चिड़िया पाप-बलि के लिए और दूसरी
होम-बलि के लिए होगी।[1] 23 वह
आठवें दिन[2] यह सब लेकर भेंट के तंबू
के द्वार पर यहोवा के सामने जाएगा और
याजक को देगा ताकि उसे शुद्ध ठहराया
जाए।[3]

24 याजक दोष-बलि का मेम्ना[4] और
लोज-भर तेल लेगा और उन्हें यहोवा
के सामने आगे-पीछे हिलाएगा। यह
हिलाकर दिया जानेवाला चढ़ावा है।[5]
25 फिर वह दोष-बलि का मेम्ना हलाल
करेगा। याजक उस दोष-बलि का थोड़ा-
सा खून लेगा और शुद्ध होनेवाले आदमी
के दाएँ कान के निचले सिरे पर, दाएँ
हाथ के अँगूठे पर और दाएँ पैर के
अँगूठे पर लगाएगा।[6] 26 फिर याजक
थोड़ा तेल लेकर अपनी बायीं हथेली पर
डालेगा[7] 27 और अपने दाएँ हाथ की
उँगली से उस हथेली का थोड़ा तेल
लेगा और यहोवा के सामने सात बार
छिड़केगा। 28 इसके बाद याजक उस
तेल में से थोड़ा तेल लेकर शुद्ध होने-
वाले आदमी के दाएँ कान के निचले
सिरे पर, दाएँ हाथ के अँगूठे पर और
दाएँ पैर के अँगूठे पर लगाएगा, जहाँ
पहले उसने दोष-बलि के जानवर का खून
लगाया था। 29 याजक की हथेली में
जो तेल बच जाता है, उसे वह शुद्ध होने-
वाले आदमी के सिर पर डालेगा ताकि
यहोवा के सामने उस आदमी के लिए
प्रायश्चित कर सके।

30 वह आदमी अपनी हैसियत के
मुताबिक जो फाख्ते या कबूतर के बच्चे
देगा,[8] उनमें से एक की 31 पाप-बलि
और दूसरे की होम-बलि चढ़ायी जाए-
गी।[9] साथ ही, अनाज का चढ़ावा भी
चढ़ाया जाएगा। और याजक शुद्ध होने-
वाले उस आदमी के लिए यहोवा के सामने
प्रायश्चित करेगा।[1]

32 यह नियम ऐसे आदमी के लिए
है जिसका कोढ़ ठीक हो गया है, मगर
उसकी इतनी हैसियत नहीं कि वह उन
चीज़ों की बलि दे सके जो उसे शुद्ध ठह-
राने के लिए ज़रूरी हैं।"

33 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से
कहा, 34 "जब तुम लोग कनान देश में
बस जाओगे[2] जिसका मैं तुम्हें अधि-
कारी बनाऊँगा,[3] तब अगर मैं किसी घर
पर कोढ़ लगने दूँ,[4] 35 तो उस घर
के मालिक को चाहिए कि वह याजक
के पास जाए और उससे कहे, 'मेरे घर
की दीवार पर एक दाग दिखायी दे रहा
है और वह कोढ़ जैसा लग रहा है।'
36 तब याजक उसे आज्ञा देगा कि इससे
पहले कि वह घर की जाँच करने आए घर
खाली कर दिया जाए। वरना उस घर में
जो भी है उसे याजक अशुद्ध ठहरा देगा।
जब घर खाली कर दिया जाएगा, तब
याजक घर के अंदर जाकर उसका
मुआयना करेगा। 37 वह दीवार के
उस हिस्से की जाँच करेगा जहाँ बीमारी
के लक्षण नज़र आते हैं। अगर दीवार पर
पीले-हरे या लाल रंग के गड्ढे हैं और ये
दीवार की सतह के अंदर तक नज़र आते
हैं, 38 तो याजक घर से बाहर द्वार पर
जाएगा और सात दिन के लिए उसे बंद
कर देगा।[5]

39 फिर सातवें दिन याजक वापस
उस घर पर आएगा और उसका मुआयना
करेगा। अगर दीवारों के बाकी हिस्सों
में भी दाग फैल गए हैं, 40 तो याजक
आज्ञा देगा कि दीवार से वे पत्थर निकाल
दिए जाएँ जिनमें दाग हैं और ये पत्थर
शहर के बाहर किसी अशुद्ध जगह ले
जाकर फेंक दिए जाएँ। 41 इसके बाद

अध्य. 14
1 लैव 1:14, लैव 5:7, लैव 12:8
2 लैव 15:13, 14
3 लैव 14:10, 11
4 लैव 6:6
5 लैव 14:12
6 लैव 14:14
7 लैव 14:15-18
8 लैव 12:8, लैव 14:22
9 लैव 5:7

दूसरा कॉल.
1 लैव 14:20
2 गि 35:10
3 उत 17:8
4 व्य 7:12, 15
5 लैव 13:4, 50, गि 12:15

वह आज्ञा देगा कि घर का पूरा अंदरूनी हिस्सा अच्छी तरह खुरच दिया जाए और उसका पलस्तर और गारा निकालकर शहर के बाहर किसी अशुद्ध जगह ले जाकर फेंक दिया जाए। **42** फिर दीवार से निकाले गए पत्थरों की जगह दूसरे पत्थर लगाए जाएँ और पूरे घर पर नया गारा और पलस्तर लगाया जाए।

43 लेकिन अगर दीवारों से पत्थर निकालने, पूरे घर को खुरचने और नया पलस्तर लगाने के बाद फिर से दाग निकल आते हैं, **44** तो याजक उस घर के अंदर जाएगा और उसका मुआयना करेगा। अगर उस घर में बीमारी फैल गयी है तो यह खतरनाक कोढ़ है।[1] वह घर अशुद्ध है। **45** याजक आज्ञा देगा कि घर ढा दिया जाए और उसके पत्थर, उसकी बल्लियाँ, उस पर लगा सारा पलस्तर और गारा, सब ले जाकर शहर के बाहर किसी अशुद्ध जगह पर फेंक दिया जाए।[2] **46** जितने दिन तक वह घर बंद रखा गया था[3] उस दौरान अगर कोई उसके अंदर गया हो तो वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।[4] **47** अगर उस दौरान कोई उस घर में सोया हो, तो उसे अपने कपड़े धोने चाहिए। उसी तरह, अगर उस दौरान कोई उस घर के अंदर कुछ खाता है, तो उसे अपने कपड़े धोने चाहिए।

48 लेकिन अगर घर पर नया पलस्तर लगने के बाद, याजक आकर देखता है कि बीमारी घर की दीवारों पर नहीं फैली है, तो वह ऐलान करेगा कि घर शुद्ध है क्योंकि बीमारी दूर हो गयी है। **49** घर की अशुद्धता दूर करने के लिए वह दो चिड़ियाँ, देव-दार की लकड़ी, सुर्ख लाल कपड़ा और मरुआ लेगा।[5] **50** फिर वह उनमें से एक चिड़िया लेगा और ताज़े पानी से भरे मिट्टी के बरतन के ऊपर उसे हलाल करेगा। **51** इसके बाद वह देवदार की लकड़ी, मरुआ, सुर्ख लाल कपड़ा और ज़िंदा चिड़िया लेगा और उन सबको पहली चिड़िया के खून में डुबोएगा, जिसे ताज़े पानी के ऊपर हलाल किया गया था। फिर वह बरतन में से खून लेगा और घर की तरफ सात बार छिड़केगा।[1] **52** इस तरह वह चिड़िया के खून, ताज़े पानी, ज़िंदा चिड़िया, देवदार की लकड़ी, मरुए और सुर्ख लाल कपड़े से घर की अशुद्धता दूर करके उसे शुद्ध करेगा। **53** फिर वह ज़िंदा चिड़िया को शहर से बाहर खुले मैदान में छोड़ देगा और घर के लिए प्रायश्‍चित करेगा। वह घर शुद्ध हो जाएगा।

54 ये सारे नियम तरह-तरह के कोढ़, सिर की खाल या दाढ़ी के संक्रमण,[2] **55** पोशाक या घर पर होनेवाले कोढ़[3] **56** और त्वचा की सूजन, पपड़ी और दाग के बारे में हैं[4] **57** ताकि यह तय किया जा सके कि एक चीज़ कब अशुद्ध हो जाती है और कब शुद्ध।[5] ये सारे नियम कोढ़ के बारे में हैं।"[6]

15 यहोवा ने मूसा और हारून से यह भी कहा, **2** "इसराएलियों से कहना, 'अगर एक आदमी के जननांगों से रिसाव होता है, तो वह उस रिसाव की वजह से अशुद्ध है।[7] **3** चाहे उसके जननांगों से लगातार रिसाव होता हो या रिसाव की वजह से जननांगों में रुकावट पैदा हो, फिर भी वह अशुद्ध है।

4 अगर एक आदमी का रिसाव होता है तो वह जिस बिस्तर पर लेटता है या जिस चीज़ पर बैठता है, वह बिस्तर या चीज़ अशुद्ध हो जाएगी। **5** जो कोई उसका बिस्तर छूता है,

अध्य. 14

1 लैव 13:51
2 लैव 14:41
3 लैव 14:38
4 लैव 11:23-25, लैव 15:8, लैव 17:15, लैव 22:4-6
5 लैव 14:3, 4, गि 19:6, 7

दूसरा कॉल.

1 लैव 14:6, 7
2 लैव 13:30
3 लैव 13:47, लैव 14:34
4 लैव 13:2
5 लैव 10:10, यहे 44:23
6 व्य 24:8

अध्य. 15

7 लैव 22:4, गि 5:2

उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए। वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।[1] **6** जो कोई ऐसी चीज़ पर बैठता है जिस पर वह आदमी बैठा था, उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए। वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। **7** जो कोई उस आदमी को छूता है जिसका रिसाव होता है, उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए। वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। **8** जिसका रिसाव होता है वह अगर किसी शुद्ध आदमी पर थूक दे, तो जिस पर उसने थूका है उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए। वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। **9** जिसका रिसाव होता है वह अगर ज़ीन पर बैठकर सवारी करता है, तो वह ज़ीन अशुद्ध हो जाएगी। **10** जो कोई ऐसी चीज़ छूता है जिस पर वह आदमी बैठा था, वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। जो कोई ऐसी अशुद्ध चीज़ें उठाता है उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए। वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। **11** जिसका रिसाव होता है[2] वह अगर अपने हाथ धोए बगैर किसी को छू ले, तो जिसे उसने छुआ है उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए। वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। **12** जिसका रिसाव होता है वह अगर किसी मिट्टी के बरतन को छूता है, तो वह बरतन चूर-चूर कर दिया जाए। अगर वह किसी लकड़ी के बरतन को छूता है तो वह बरतन पानी से धोया जाए।[3]

13 जब उस आदमी का रिसाव बंद हो जाता है और उसकी अशुद्धता दूर हो जाती है, तो उसे शुद्ध ठहरने के लिए सात दिन गिनने चाहिए और फिर अपने कपड़े धोने चाहिए और ताज़े पानी से नहाना चाहिए और वह शुद्ध हो जाएगा।[1] **14** आठवें दिन उसे दो फाख्ते या कबूतर के दो बच्चे लेकर[2] भेंट के तंबू के द्वार पर यहोवा के सामने आना चाहिए और याजक को देना चाहिए। **15** याजक उन चिड़ियों की बलि चढ़ाएगा, एक की पाप-बलि और दूसरी की होम-बलि। और याजक उस आदमी के लिए यहोवा के सामने प्रायश्चित करेगा जो रिसाव की वजह से अशुद्ध हो गया था।

16 अगर किसी आदमी का वीर्य निकल जाए, तो उसे अच्छी तरह नहाना चाहिए। वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।[3] **17** उसे ऐसे किसी भी कपड़े या चमड़े की चीज़ को धोना चाहिए जिस पर वीर्य गिरा हो। वह चीज़ शाम तक अशुद्ध रहेगी।

18 जब एक आदमी एक औरत के साथ सोता है और उसका वीर्य निकल जाता है, तो उन्हें नहाना चाहिए। वे दोनों शाम तक अशुद्ध रहेंगे।[4]

19 अगर एक औरत के शरीर से खून बहता है, तो वह सात दिन तक माहवारी की वजह से अशुद्ध रहेगी।[5] जो कोई ऐसी औरत को छुएगा वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।[6] **20** जब वह माहवारी की वजह से अशुद्ध हालत में होती है, तो वह जिस बिस्तर पर लेटती है या जिस चीज़ पर बैठती है वह बिस्तर या चीज़ अशुद्ध हो जाएगी।[7] **21** जो कोई उसका बिस्तर छूता है, उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए। वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। **22** वह जिस चीज़ पर बैठती है, उसे अगर कोई छूता है तो उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए। वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। **23** अगर कोई उस बिस्तर या चीज़ को छू लेता है जिस पर वह बैठी थी, तो वह शाम तक

अध्य. 15
1 लैव 11:24, 25; लैव 14:46, 47; लैव 17:15; लैव 22:6
2 लैव 15:2
3 लैव 11:32, 33

दूसरा कॉल.
1 लैव 14:8
2 लैव 1:14
3 लैव 22:4; व्य 23:10, 11
4 निर्ग 19:15; 1शम 21:5
5 लैव 12:2, 5
6 लैव 20:18
7 लैव 15:4-6

अशुद्ध रहेगा।[1] 24 अगर कोई आदमी उसके साथ सोता है और उस औरत का माहवारी का खून उस आदमी को लग जाता है,[2] तो वह आदमी सात दिन तक अशुद्ध रहेगा। वह जिस बिस्तर पर लेटेगा वह अशुद्ध हो जाएगा।

25 अगर एक औरत का खून तब बहता है जब उसकी माहवारी का समय नहीं है और बहुत दिनों तक बहता रहता है[3] या माहवारी के दिन बीतने के बाद भी उसका खून बहना जारी रहता है,[4] तो जितने दिनों तक उसका खून बहता है उतने दिन वह अशुद्ध रहेगी, जैसे वह आम तौर पर माहवारी के दिनों में अशुद्ध रहती है। 26 खून बहने के दिनों में वह जिस बिस्तर पर लेटती है या जिस चीज़ पर बैठती है वह बिस्तर या चीज़ अशुद्ध हो जाएगी, जैसे माहवारी के दिनों में उसके लेटने या बैठने से अशुद्ध होती है।[5] 27 जो कोई उन चीज़ों को छूता है वह अशुद्ध हो जाएगा। उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए। वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।[6]

28 लेकिन जब उसका खून बहना बंद हो जाता है, तो उसे सात दिन गिनने चाहिए और उसके बाद वह शुद्ध होगी।[7] 29 आठवें दिन उसे दो फाख्ते या कबूतर के दो बच्चे लेकर[8] भेंट के तंबू के द्वार पर आना चाहिए और याजक को देना चाहिए।[9] 30 याजक एक चिड़िया की पाप-बलि और दूसरी की होम-बलि चढ़ाएगा। और वह यहोवा के सामने उस औरत के लिए प्रायश्चित करेगा जो खून बहने की वजह से अशुद्ध हो गयी थी।[10]

31 इस तरह तुम इसराएलियों को अशुद्ध होने से बचाए रखना ताकि ऐसा न हो कि वे अपनी अशुद्धता से मेरे पवित्र डेरे को, जो उनके बीच है, दूषित कर दें और मौत की सज़ा पाएँ।[1]

32 ये नियम इन सभी के बारे में हैं: ऐसा आदमी जिसका रिसाव होता है, जो वीर्य निकलने से अशुद्ध है,[2] 33 ऐसी औरत जो माहवारी के दौरान अशुद्ध है,[3] ऐसा आदमी जिसके शरीर से रिसाव होता है, ऐसी औरत जिसे उस वक्त माहवारी होती है जब उसका समय नहीं है[4] और ऐसा आदमी जो किसी अशुद्ध औरत के साथ सोता है।'"

16 यहोवा ने हारून के दो बेटों की मौत के बाद मूसा से बात की। हारून के ये बेटे यहोवा के सामने जाने की वजह से मर गए थे।[5] 2 यहोवा ने मूसा से कहा, "अपने भाई हारून से कहना कि वह परम-पवित्र जगह में परदे के अंदर,[6] संदूक के ढकने के सामने यूँ ही किसी भी वक्त नहीं आ सकता।[7] वरना वह मर जाएगा[8] क्योंकि मैं उस ढकने के ऊपर बादल[9] में प्रकट होऊँगा।[10]

3 हारून को परम-पवित्र जगह में आने से पहले पाप-बलि के लिए एक बैल[11] और होम-बलि के लिए एक मेढ़े की बलि चढ़ानी होगी।[12] 4 उसे चाहिए कि वह परम-पवित्र जगह में आने से पहले नहाए,[13] फिर मलमल का पवित्र कुरता[14] और मलमल का जाँघिया[15] पहने, कुरते के ऊपर मलमल की कमर-पट्टी[16] बाँधे और सिर पर मलमल की पगड़ी[17] पहने। यह पवित्र पोशाक[18] है।

5 उसे इसराएलियों की मंडली से पाप-बलि के लिए बकरी के दो नर बच्चे और होम-बलि के लिए एक मेढ़ा लेना चाहिए।[19]

6 फिर हारून को पाप-बलि का बैल सामने लाना चाहिए, जो उसके अपने पापों के लिए होगा। वह अपने और

अध्य. 15
1 लैव 15:10
2 लैव 18:19; लैव 20:18
3 मत 9:20; लूक 8:43
4 लैव 15:19
5 लैव 15:21
6 लैव 15:22
7 लैव 15:13
8 लैव 1:14
9 लैव 15:14, 15
10 लैव 12:7

दूसरा कॉल.
1 लैव 19:30; गि 5:3; गि 19:20
2 लैव 15:16
3 लैव 15:19
4 लैव 15:2, 25

अध्य. 16
5 लैव 10:1, 2
6 निर्ग 40:21; इब्र 6:19; इब्र 9:3, 7
7 लैव 23:27
8 गि 4:19, 20
9 निर्ग 40:34
10 निर्ग 25:22
11 लैव 4:3
12 लैव 1:3
13 निर्ग 30:20; इब्र 10:22
14 निर्ग 28:39
15 निर्ग 28:42
16 निर्ग 39:27, 29
17 निर्ग 28:4
18 निर्ग 28:2
19 इब्र 7:27

अपने घराने के पापों के लिए प्रायश्चित करेगा।[1]

7 इसके बाद हारून बकरी के दोनों बच्चों को लेगा और उन्हें भेंट के तंबू के द्वार पर यहोवा के सामने खड़ा करेगा।
8 फिर वह दोनों के लिए चिट्ठियाँ डालेगा जिससे तय होगा कि कौन-सा बकरा यहोवा को अर्पित किया जाएगा और कौन-सा अजाजेल* के लिए होगा।
9 जिस बकरे पर यहोवा के नाम की चिट्ठी निकलती है[2] उसकी वह पाप-बलि
चढ़ाएगा। 10 और जिस बकरे पर अजाजेल के लिए चिट्ठी निकलती है उसे यहोवा के सामने ज़िंदा खड़ा किया जाए ताकि पापों का प्रायश्चित हो और उसे अजाजेल के लिए वीराने में ले जाकर छोड़ दिया जाए।[3]

11 हारून पाप-बलि का बैल सामने लाएगा जो उसके अपने पापों के लिए होगा। वह अपने और अपने घराने के पापों के लिए प्रायश्चित करेगा। इसके बाद वह पाप-बलि का बैल हलाल करेगा।[4]

12 इसके बाद वह आग उठाने का करछा लेगा[5] जिसमें यहोवा के सामने रखी वेदी का जलता हुआ कोयला भरा होगा,[6] साथ ही दो मुट्ठी बढ़िया सुगंधित धूप लेगा[7] और यह सब लेकर परदे
के अंदर जाएगा।[8] 13 फिर वह यहोवा के सामने आग के ऊपर धूप डालेगा[9] जिससे धूप का धुआँ गवाही के संदूक[10] के ढकने पर छा जाएगा।[11] ऐसा वह इसलिए करेगा ताकि वह मर न जाए।

14 वह बैल का थोड़ा खून लेगा[12] और अपनी उँगली से संदूक के ढकने के सामने, पूरब की तरफ छिड़केगा। वह ढकने के सामने सात बार खून छिड़केगा।[1]

15 फिर वह पाप-बलि का बकरा हलाल करेगा जो लोगों के लिए होगा।[2] वह बकरे का खून[3] लेकर परदे के अंदर जाएगा[4] और उसे ठीक उसी तरह छिड़केगा जैसे वह बैल का खून छिड़कता है। उसे यह खून ढकने के सामने छिड़कना चाहिए।

16 हारून परम-पवित्र जगह के लिए प्रायश्चित करेगा ताकि वह इसराएलियों के अशुद्ध कामों, अपराधों और पापों की वजह से दूषित न हो जाए।[5] उसे भेंट के तंबू के लिए भी प्रायश्चित करना होगा क्योंकि यह तंबू ऐसे लोगों के बीच है जो अशुद्ध काम करते हैं।

17 जब भी हारून प्रायश्चित करने के लिए परम-पवित्र जगह में जाएगा, तो उसके बाहर आने तक भेंट के तंबू में कोई और आदमी नज़र न आए। हारून अपने और अपने घराने[6] के लिए और इसराएल की पूरी मंडली[7] के लिए प्रायश्चित करेगा।

18 फिर वह बाहर उस वेदी के पास जाएगा[8] जो यहोवा के सामने है और उस वेदी के लिए प्रायश्चित करेगा। वह बैल और बकरे का थोड़ा खून लेकर वेदी के सींगों पर लगाएगा। 19 साथ
ही, अपनी उँगली से थोड़ा खून वेदी पर सात बार छिड़केगा और वेदी को इसराएलियों के अशुद्ध कामों से शुद्ध करेगा और पवित्र ठहराएगा।

20 जब वह परम-पवित्र जगह, भेंट के तंबू और वेदी के लिए प्रायश्चित कर लेगा[9] तो इसके बाद वह ज़िंदा बकरे को
सामने लाएगा।[10] 21 हारून बकरे के सिर पर अपने दोनों हाथ रखेगा और इसराएलियों के सभी गुनाह, उनके सभी

16:8 *शायद इसका मतलब है, "वह बकरा जो गायब हो जाता है।"

अध्य. 16

1 इब्र 5:1-3
2 नीत 16:33
3 लैव 14:7, 53; लैव 16:21, 22; यश 53:4; रोम 15:3
4 लैव 16:6
5 इब्र 9:4
6 निर्ग 40:29; लैव 6:13; गि 16:46
7 निर्ग 30:34-36; प्रक 5:8; प्रक 8:3-5
8 लैव 16:2; इब्र 6:19; इब्र 10:19, 20
9 निर्ग 25:22; 2रा 19:15
10 निर्ग 34:29
11 निर्ग 25:18, 21; 1इत 28:11
12 इब्र 9:22

दूसरा कॉल.

1 रोम 3:25; इब्र 9:12; इब्र 9:24, 25; इब्र 10:4, 12
2 लैव 16:5; इब्र 2:17; इब्र 5:1-3; इब्र 9:26; 1यूह 2:1, 2
3 लैव 17:11
4 इब्र 6:19; इब्र 9:3, 7; इब्र 10:19, 20
5 सभ 7:20
6 लैव 16:6
7 मर 10:45; इब्र 2:9; इब्र 7:27; इब्र 9:7, 12; प्रक 1:5
8 निर्ग 38:1
9 लैव 16:16; इब्र 9:23
10 लैव 16:8, 10

अपराध और पाप कबूल करेगा और यह सब बकरे के सिर पर डाल देगा।[1] फिर वह बकरे को उस आदमी के हाथ वीराने में भेज देगा जो इस काम के लिए चुना जाता है।*
22 इस तरह हारून बकरे को वीराने में भेज देगा[2] और वह बकरा लोगों के सारे पाप[3] दूर वीराने में ले जाएगा।[4]

23 फिर हारून भेंट के तंबू में जाएगा और अपनी मलमल की पोशाक उतार देगा जिसे पहनकर वह परम-पवित्र जगह में गया था। वह पोशाक उतारकर नीचे रखेगा।
24 फिर वह तंबू के आँगन में नहाएगा[5] और अपनी दूसरी पोशाक पहनेगा।[6] फिर वह अपनी होम-बलि[7] और लोगों की होम-बलि चढ़ाएगा[8] और अपने और लोगों के पापों का प्रायश्चित करेगा।[9]
25 वह वेदी पर पाप-बलि की चरबी जलाएगा ताकि उसका धुआँ उठे।

26 जो आदमी अजाजेल के लिए बकरे को छोड़कर आएगा[10] उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए। इसके बाद वह छावनी में आ सकता है।

27 पाप-बलि के उस बैल और बकरे को, जिनका खून प्रायश्चित के लिए परम-पवित्र जगह में ले जाया गया था, छावनी के बाहर ले जाया जाएगा और उनकी खाल, उनका गोश्त और गोबर आग में जला दिया जाएगा।[11]
28 जो ये चीज़ें जलाता है, उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए। इसके बाद वह छावनी में आ सकता है।

29 तुम लोगों को यह नियम हमेशा के लिए दिया जाता है: साल के सातवें महीने के दसवें दिन तुम सबको अपने पापों के लिए दुख ज़ाहिर करना होगा।* इस दिन तुममें से किसी को भी कोई काम नहीं करना चाहिए,[1] न किसी इसराएली को और न ही तुम्हारे बीच रहनेवाले किसी परदेसी को।
30 यह वह दिन होगा जब तुम्हारे लिए प्रायश्चित किया जाएगा[2] ताकि तुम शुद्ध ठहराए जाओ। तुम यहोवा के सामने अपने सब पापों से शुद्ध हो जाओगे।[3]
31 यह तुम्हारे लिए सब्त का दिन होगा, पूरे विश्राम का दिन। इस दिन तुम्हें अपने पापों के लिए दुख ज़ाहिर करना होगा।[4] यह नियम हमेशा के लिए लागू रहेगा।

32 प्रायश्चित करने का काम वही याजक करेगा जिसका अभिषेक किया जाता है[5] और जिसे अपने पिता की जगह[6] याजकपद सौंपा जाता है।*[7] वह पवित्र पोशाक[8] यानी मलमल की पोशाक पहनेगा।[9]
33 वह परम-पवित्र जगह,[10] भेंट के तंबू[11] और वेदी[12] के लिए प्रायश्चित करेगा। वह याजकों और मंडली के सब लोगों के लिए भी प्रायश्चित करेगा।[13]
34 यह नियम तुम्हें हमेशा के लिए दिया जा रहा है[14] कि तुम साल में एक बार इसराएलियों के पापों के लिए प्रायश्चित करो।"[15]

उसने ठीक वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

17 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 "तू हारून और उसके बेटों से और सभी इसराएलियों से कहना, 'यहोवा ने यह आज्ञा दी है:

3 "अगर कोई इसराएली छावनी के

16:21 *या "जो तैयार खड़ा रहता है।"

16:29 *'दुख ज़ाहिर करने' का आम तौर पर यह मतलब समझा जाता है, खुद को कई चीज़ों से दूर रखना और इसमें उपवास करना शामिल है। 16:32 *शा., "जिसका हाथ भरा जाता है।"

अध्य. 16
1 यश 53:5, 6; 2कुर 5:21
2 लैव 16:10
3 यश 53:12; इफ 1:7; इब्र 9:28; 1पत 2:24; 1यूह 3:5
4 भज 103:12; इब्र 13:12
5 निर्ग 30:20
6 निर्ग 28:4; लैव 8:7
7 लैव 16:3
8 लैव 16:5
9 इफ 1:7
10 लैव 16:8, 21
11 लैव 4:11, 12; इब्र 13:11, 12

दूसरा कॉल.
1 लैव 23:27, 28; गि 29:7
2 यूह 3:16; रोम 8:32; तीत 2:13, 14; 1यूह 1:7; 1यूह 3:16
3 यिर्म 33:8; इब्र 9:13, 14; इब्र 10:2
4 लैव 23:32
5 निर्ग 29:4, 7; लैव 8:12
6 गि 20:26
7 लैव 8:33
8 निर्ग 28:2; निर्ग 29:29; लैव 16:4
9 निर्ग 28:39; निर्ग 39:27, 28
10 लैव 16:16
11 लैव 16:20
12 लैव 16:18
13 लैव 16:24; 1यूह 2:1, 2
14 लैव 23:31; गि 29:7
15 निर्ग 30:10; इब्र 9:7

अंदर या छावनी के बाहर बैल, मेढ़ा या
बकरी हलाल करता है, **4** बजाय इसके
कि उसे यहोवा को देने के लिए भेंट
के तंबू के द्वार पर लाए और यहोवा
के इस पवित्र डेरे के सामने अर्पित करे,
तो वह आदमी खून का दोषी होगा।
उसने खून बहाने का पाप किया है इस-
लिए उसे मौत की सज़ा दी जाए। **5** यह
नियम इसलिए दिया जा रहा है ताकि
अब से इसराएली खुले मैदान में जानवरों
की बलि न चढ़ाएँ बल्कि अपने जानवर
भेंट के तंबू के द्वार पर यहोवा के पास
लाएँ और याजक को दें। उन्हें यहोवा के
लिए इन जानवरों की शांति-बलि चढ़ानी
चाहिए।[1] **6** याजक बलि के जानवर
का खून लेकर भेंट के तंबू के द्वार पर
यहोवा की वेदी पर छिड़केगा और उसकी
चरबी जलाएगा ताकि उसका धुआँ उठे
और उसकी सुगंध पाकर यहोवा खुश
हो।[2] **7** अब से वे दुष्ट स्वर्गदूतों* के
लिए बलि न चढ़ाएँ[3] जिनकी वे पूजा#
करते हैं।[4] यह नियम तुम्हें और तुम्हारी
आनेवाली पीढ़ियों को हमेशा के लिए
दिया जाता है।"'

8 तू उनसे कहना, 'अगर कोई इस-
राएली या तुम्हारे बीच रहनेवाला पर-
देसी होम-बलि या किसी और तरह की
बलि चढ़ाता है **9** और बलि का जानवर
यहोवा को देने के लिए भेंट के तंबू के द्वार
पर नहीं लाता, तो उसे मौत की सज़ा दी
जाए।[5]

10 अगर कोई इसराएली या तुम्हारे
बीच रहनेवाला परदेसी किसी भी जीव
का खून खाता है,[6] तो मैं उसे बेशक
ठुकरा दूँगा और उसे मौत की सज़ा
दूँगा। **11** क्योंकि हरेक जीवित प्राणी
की जान* उसके खून में है।[1] और मैंने
खुद यह इंतज़ाम ठहराया है कि खून
वेदी पर उँडेला जाए[2] ताकि तुम्हारी
जान के लिए प्रायश्चित हो, क्योंकि
खून में ही जान है और खून से ही
पापों का प्रायश्चित किया जा सकता है।[3]
12 इसीलिए मैंने इसराएलियों से कहा,
"किसी भी इसराएली या तुम्हारे बीच
रहनेवाले परदेसी[4] को खून नहीं खाना
चाहिए।"[5]

13 अगर कोई इसराएली या तुम्हारे
बीच रहनेवाला परदेसी शिकार करता है
और ऐसा जंगली जानवर या चिड़िया
पकड़ता है, जिसे खाने की तुम्हें इजाज़त
है, तो उसे उस जानवर या चिड़िया का
खून ज़मीन पर बहा देना चाहिए[6] और
मिट्टी से ढाँप देना चाहिए। **14** हरेक
जीवित प्राणी का खून ही उसका जीवन है
क्योंकि खून में उसकी जान है। इसीलिए
मैंने इसराएलियों से कहा, "तुम किसी
भी जीवित प्राणी का खून न खाना,
क्योंकि हर जीवित प्राणी का खून उसका
जीवन है। जो भी खून खाएगा उसे मौत
की सज़ा दी जाएगी।"[7] **15** अगर कोई
इसराएली या तुम्हारे बीच रहनेवाला पर-
देसी ऐसे जानवर का गोश्त खाता है, जो
उसे मरा हुआ मिला था या जिसे जंगली
जानवर ने फाड़ डाला था,[8] तो उसे अपने
कपड़े धोने चाहिए और नहाना चाहिए।
वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।[9] उसके बाद
वह शुद्ध होगा। **16** अगर वह अपने
कपड़े नहीं धोता और नहाता नहीं, तो उसे
अपने गुनाह का लेखा देना होगा।'"[10]

18 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 "इसराएलियों से कहना, 'मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।[11] **3** तुम
ऐसे काम न करना जैसे मिस्र के लोग

17:7 *शा., "बकरों।" #या "जिनके साथ वे वेश्याओं जैसी बदचलनी।"

17:11 *शब्दावली में "जीवन" देखें।

अध्य. 17
1 लैव 3:1, 2; लैव 7:11
2 लैव 3:3-5; लैव 7:29-31
3 व्य 32:17; यह 24:14
4 निर्ग 34:15; व्य 31:16
5 लैव 1:3; व्य 12:5, 6; व्य 12:13, 14
6 उत 9:4; लैव 3:17; लैव 7:26; लैव 19:26; 1शम 14:33; प्रेष 15:20, 29

दूसरा कॉल.
1 लैव 17:14; व्य 12:23
2 लैव 8:15; लैव 16:18
3 मत 26:28; रोम 3:25; रोम 5:9; इफ 1:7; इब्र 9:22; इब्र 13:12; 1पत 1:2; 1यूह 1:7; प्रक 1:5
4 निर्ग 12:49
5 व्य 12:23
6 व्य 12:16; व्य 15:23
7 लैव 17:10, 11
8 निर्ग 22:31; व्य 14:21
9 लैव 11:40
10 गि 19:20

अध्य. 18
11 उत 17:7; निर्ग 6:7

करते हैं, जहाँ तुम पहले रहते थे और न ही तुम कनान के लोगों के जैसे काम करना, जहाँ मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ।[1] तुम उनकी विधियों पर मत चलना। **4** तुम मेरे न्याय-सिद्धांतों को मानना, मेरी विधियों का पालन किया करना और उन पर चलना।[2] मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। **5** तुम मेरी विधियों और मेरे न्याय-सिद्धांतों का ज़रूर पालन किया करना। हर कोई जो ऐसा करता है वह ज़िंदा रहेगा।[3] मैं यहोवा हूँ।

6 तुममें से कोई भी आदमी अपने किसी भी नज़दीकी रिश्तेदार के साथ यौन-संबंध रखने* के लिए उसके करीब न जाए।[4] मैं यहोवा हूँ। **7** तुम अपने पिता या अपनी माँ के साथ यौन-संबंध न रखना। वह तुम्हारी माँ है, तुम्हें उसके साथ यौन-संबंध नहीं रखना चाहिए।

8 तुम अपने पिता की पत्नी के साथ यौन-संबंध न रखना।[5] ऐसा करना अपने पिता का अपमान करना है।*

9 तुम अपनी बहन के साथ यौन-संबंध न रखना, फिर चाहे वह तुम्हारे पिता की बेटी हो या माँ की बेटी, चाहे वह तुम्हारे ही घराने में पैदा हुई हो या किसी और घराने में।[6]

10 तुम न तो अपनी पोती के साथ और न ही अपनी नातिन के साथ यौन-संबंध रखना क्योंकि ऐसा करके तुम खुद का ही अपमान कर रहे होगे।

11 तुम अपने पिता की पत्नी की बेटी के साथ यौन-संबंध न रखना। वह तुम्हारे ही पिता की संतान है, तुम्हारी बहन है।

12 तुम अपनी बुआ के साथ यौन-संबंध न रखना। उसका तुम्हारे पिता के साथ खून का रिश्ता है।[1]

13 तुम अपनी मौसी के साथ यौन-संबंध न रखना। उसका तुम्हारी माँ के साथ खून का रिश्ता है।

14 तुम अपने पिता के भाई की पत्नी के साथ यौन-संबंध न रखना। वह तुम्हारी चाची* है। उसके साथ संबंध रखना अपने पिता के भाई का अपमान करना है।#[2]

15 तुम अपनी बहू के साथ यौन-संबंध न रखना।[3] वह तुम्हारे बेटे की पत्नी है। तुम्हें उसके साथ यौन-संबंध नहीं रखना चाहिए।

16 तुम अपने भाई की पत्नी के साथ यौन-संबंध न रखना[4] क्योंकि ऐसा करना अपने भाई का अपमान करना है।*

17 अगर तुम किसी औरत से शादी करते हो तो उसकी बेटी के साथ यौन-संबंध न रखना।[5] तुम उस औरत की पोती और नातिन के साथ यौन-संबंध न रखना। वे उस औरत की नज़दीकी रिश्तेदार हैं। उनके साथ यौन-संबंध रखना अश्लील काम* है।

18 तुम अपनी पत्नी के जीते-जी उसकी बहन से शादी करके उसकी सौतन मत लाना[6] और उसकी बहन के साथ यौन-संबंध न रखना।

19 तुम किसी ऐसी औरत के साथ यौन-संबंध रखने के लिए उसके करीब न जाना जो माहवारी की वजह से अशुद्ध हालत में है।[7]

20 तुम अपने किसी संगी-साथी* की

अध्य. 18
1 निर्ग 23:24; लैव 20:23
2 लैव 20:22; व्य 4:1
3 लूक 10:27, 28; रोम 10:5; गल 3:12
4 लैव 20:17
5 उत 35:22; उत 49:4; लैव 20:11; व्य 27:20; 2शम 16:21; 1कुर 5:1
6 लैव 20:17; व्य 27:22; 2शम 13:10-12

दूसरा कॉल.
1 लैव 20:19
2 लैव 20:20
3 लैव 20:12
4 लैव 20:21; व्य 25:5; मर 6:17, 18
5 लैव 20:14; व्य 27:23
6 उत 30:15
7 लैव 15:19, 24; लैव 20:18

18:6 *शा., "का तन उघाड़ने।" यहाँ और आगे की आयतों में। **18:8** *शा., "यह तुम्हारे पिता का नंगापन है।"

18:14 *या "ताई।" #शा., "का तन उघाड़ना है।" **18:16** *शा., "यह तुम्हारे भाई का नंगापन है।" **18:17** *या "शर्मनाक काम; कामुकता।" **18:20** *या "पड़ोसी।"

पत्नी के साथ यौन-संबंध न रखना। ऐसा करने से तुम अशुद्ध हो जाओगे।[1]

21 तुम अपने किसी भी बच्चे को मोलेक देवता को अर्पित* करने के लिए मत देना।[2] मोलेक के लिए अपना बच्चा देकर अपने परमेश्वर के नाम का अपमान न करना।[3] मैं यहोवा हूँ।

22 तुममें से कोई भी आदमी दूसरे आदमी के साथ यौन-संबंध न रखे, जैसे तुम औरत के साथ संबंध रखते हो।[4] यह एक घिनौना काम है।

23 कोई भी आदमी जानवर के साथ यौन-संबंध न रखे। इससे वह आदमी अशुद्ध हो जाएगा। उसी तरह कोई भी औरत जानवर के साथ यौन-संबंध रखने के इरादे से उसके सामने न जाए।[5] यह अस्वाभाविक है।

24 तुम इनमें से कोई भी काम करके अशुद्ध मत हो जाना, क्योंकि मैं जिन जातियों को तुम्हारे सामने से खदेड़ रहा हूँ, वे ऐसे ही कामों से अशुद्ध हो गयी हैं।[6] 25 इसी वजह से वह देश अशुद्ध है और मैं उसमें रहनेवालों को उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा। उन्हें उस देश से खदेड़ दिया जाएगा।*[7] 26 मगर तुममें से हर कोई, चाहे वह इसराएली हो या तुम्हारे बीच रहनेवाला परदेसी,[8] मेरी विधियों और न्याय-सिद्धांतों का पालन किया करे[9] और इस तरह का कोई भी घिनौना काम न करे, 27 क्योंकि तुमसे पहले जो लोग उस देश में रहते थे वे ऐसे ही घिनौने काम करते थे[10] और उनकी वजह से देश अशुद्ध है। 28 अगर तुम उनके जैसे काम करके देश को दूषित नहीं करोगे तो तुम्हें वहाँ से नहीं खदेड़ा जाएगा* जैसे तुमसे पहले रहनेवाली जातियों को खदेड़ा# जाएगा। 29 अगर कोई इनमें से एक भी घिनौना काम करता है, तो उसे मौत की सज़ा दी जाए। 30 तुम ऐसा कोई भी घिनौना रीति-रिवाज़ न मानना जो वहाँ के लोग मानते थे[1] और इस तरह तुम अशुद्ध न होना। इन कामों से दूर रहकर तुम अपना फर्ज़ निभाना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।'"

19 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, 2 "इसराएलियों की पूरी मंडली से कहना, 'तुम पवित्र बने रहो क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ।[2]

3 तुममें से हर कोई अपनी माँ और अपने पिता का आदर करे।*[3] तुम मेरे सब्तों को मानना।[4] मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 4 तुम निकम्मे देवताओं की तरफ न फिरना[5] और न ही अपने लिए देवताओं की मूरतें ढालकर बनाना।[6] मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

5 जब भी तुम यहोवा को शांति-बलि अर्पित करते हो,[7] तो बलि इस तरह अर्पित करना कि तुम परमेश्वर की मंज़ूरी पा सको।[8] 6 जिस दिन तुम बलि देते हो, उस दिन और उसके अगले दिन तुम्हें उसका गोश्त खाना चाहिए। अगर तीसरे दिन तक कुछ बच जाता है तो उसे आग में जला देना चाहिए।[9] 7 अगर तीसरे दिन बलि में से कुछ खाया जाता है, तो यह घिनौना काम है जिसे परमेश्वर मंज़ूर नहीं करेगा। 8 जो उसे खाता है उसे अपने गुनाह का हिसाब देना होगा क्योंकि उसने यहोवा की पवित्र चीज़ को तुच्छ जाना है। ऐसे इंसान को मौत की सज़ा दी जाए।

18:21 *या "बलि।" **18:25** *शा., "वह देश उन्हें उगल देगा।" **18:28** *शा., "वह देश तुम्हें नहीं उगल देगा।" #शा., "उगल दिया।" **19:3** *शा., "से डरे।"

अध्य. 18
1 निर्ग 20:14, लैव 20:10, व्य 22:22, नीत 6:29, मत 5:27, 28, 1कुर 6:9, 10, इब्र 13:4
2 लैव 20:2, व्य 18:10, 1रा 11:7, 2रा 23:10
3 लैव 20:3
4 उत 19:5, लैव 20:13, न्या 19:22, रोम 1:26, 27, 1कुर 6:9, 10, यहू 7
5 निर्ग 22:19, लैव 20:15, 16
6 लैव 20:23, व्य 18:12
7 उत 15:16
8 निर्ग 12:49
9 लैव 20:22, व्य 4:1, 40
10 व्य 20:17, 18, 2रा 16:2, 3, 2रा 21:1, 2

दूसरा कॉल.
1 लैव 18:3, लैव 20:23, व्य 18:9

अध्य. 19
2 लैव 11:44, यश 6:3, 1पत 1:15, 16, प्रक 4:8
3 निर्ग 20:12, इफ 6:2, इब्र 12:9
4 निर्ग 20:8, 11, निर्ग 31:13, लूक 6:5
5 लैव 26:1, भज 96:5, हब 2:18, 1कुर 10:14
6 निर्ग 20:4, 23, व्य 27:15
7 लैव 3:1
8 लैव 7:11, 12
9 लैव 7:17, 18

9 जब तुम अपने खेत की फसल काटोगे तो उसका कोना-कोना साफ मत कर देना और कटाई के वक्त जो बालें रह जाती हैं उन्हें मत बीनना।[1] **10** उसी तरह, जब तुम अपने अंगूरों के बाग से फल इकट्ठा करते हो तो बेलों पर छूटे हुए अंगूर मत तोड़ना और न ही बाग में बिखरे अंगूर उठाना। यह सब तुम गरीबों* और अपने बीच रहनेवाले पर-देसियों के लिए छोड़ देना।[2] मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

11 तुम चोरी न करना,[3] किसी के साथ धोखा न करना[4] और एक-दूसरे के साथ बेईमानी न करना। **12** तुम मेरे नाम से झूठी शपथ न खाना[5] और इस तरह अपने परमेश्वर के नाम का अप-मान न करना। मैं यहोवा हूँ। **13** तुम अपने संगी-साथी को न ठगना[6] और उसे न लूटना।[7] तुम दिहाड़ी के मज़दूर की मज़दूरी रात-भर, अगली सुबह तक अपने पास मत रखना।[8]

14 तुम किसी बधिर को बददुआ मत देना और न ही किसी अंधे के रास्ते में रोड़ा अटकाना।[9] तुम अपने परमेश्वर का डर मानना।[10] मैं यहोवा हूँ।

15 तुम मुकदमे में अन्याय न करना। न किसी गरीब की तरफदारी करना और न ही किसी अमीर का पक्ष लेना।[11] तुम अपने संगी-साथी का न्याय सच्चाई से करना।

16 तुम किसी के बारे में झूठी बातें फैलाकर उसे अपने लोगों के बीच बद-नाम न करना।[12] तुम अपने संगी-साथी की जान* के दुश्मन न बनना।#[13] मैं यहोवा हूँ।

17 तुम मन-ही-मन अपने भाई से नफरत न करना।[1] अगर तुम्हारे संगी-साथी ने कोई पाप किया है, तो उसे सुधारने के लिए ज़रूर फटकारना[2] ताकि तुम उसके पाप में साझेदार न बनो।

18 तुम अपने किसी जाति भाई से बदला न लेना,[3] न ही उसके खिलाफ दुश्मनी पालना। तुम अपने संगी-साथी से वैसे ही प्यार करना जैसे तुम खुद से करते हो।[4] मैं यहोवा हूँ।

19 तुम मेरी इन विधियों का पालन किया करना: तुम दो अलग-अलग तरह के पालतू जानवरों का आपस में सहवास कराकर दोगले जानवर न पैदा कराना। तुम अपने खेत में दो अलग-अलग तरह के बीज न बोना।[5] तुम ऐसी पोशाक न पहनना जो दो अलग-अलग किस्म के धागों से बुनकर तैयार की गयी हो।[6]

20 अगर एक आदमी ऐसी दासी के साथ यौन-संबंध रखता है जिसकी किसी और आदमी से शादी तय हुई है, मगर अभी तक वह आज़ाद नहीं हुई है या रकम देकर छुड़ायी नहीं गयी है, तो उन दोनों को सज़ा दी जाए। मगर उन्हें मौत की सज़ा न दी जाए क्योंकि वह दासी अभी तक आज़ाद नहीं हुई थी। **21** उस आदमी को दोष-बलि के लिए एक मेढ़ा लेकर भेंट के तंबू के द्वार पर यहोवा के पास जाना चाहिए।[7] **22** याजक उस आदमी की दोष-बलि का मेढ़ा यहोवा के सामने अर्पित करेगा और उसके पाप के लिए प्रायश्चित करेगा। और उसका पाप माफ कर दिया जाएगा।

23 जब तुम उस देश में जाकर बस जाओगे जो मैं तुम्हें देनेवाला हूँ और वहाँ कोई पेड़ लगाओगे तो उस पर शुरू में लगनेवाले फलों को अशुद्ध

19:10 *या "मुसीबत के मारों।" **19:16** *शा., "खून।" #या शायद, "अपने संगी-साथी की जान खतरे में देखकर यूँ ही खड़े मत रहना।"

अध्य. 19
1 लैव 23:22; व्य 24:19
2 व्य 15:7
3 निर्ग 20:15; इफ 4:28
4 लैव 6:2; नीत 12:22; इफ 4:25
5 निर्ग 20:7; मत 5:33, 37; याकू 5:12
6 नीत 22:16; मर 10:19
7 नीत 22:22
8 व्य 24:15; यिर्म 22:13; याकू 5:4
9 व्य 27:18
10 लैव 25:17; नहे 5:15; नीत 1:7; नीत 8:13; 1पत 2:17
11 निर्ग 23:3; व्य 1:16, 17; व्य 16:19; 2इत 19:6; रोम 2:11; याकू 2:9
12 भज 15:1, 3
13 निर्ग 20:16; 1रा 21:13

दूसरा कॉल.
1 नीत 10:18; 1यूह 2:9; 1यूह 3:15
2 भज 141:5; नीत 9:8; मत 18:15
3 नीत 20:22; रोम 12:19
4 मत 5:43, 44; मत 22:39; रोम 13:9; गल 5:14; याकू 2:8
5 व्य 22:9
6 व्य 22:11
7 लैव 6:6, 7

मानना और उन्हें मत खाना।* तीन साल
तक तुम्हारे लिए उसका फल खाना मना
है।# **24** मगर चौथे साल उसके सभी
फल शुद्ध होंगे और तुम खुशी मनाते हुए
उसके फल यहोवा को अर्पित करोगे।[1]
25 फिर पाँचवें साल तुम उसका फल
खाओगे और बढ़िया पैदावार पाओगे। मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

26 तुम ऐसी कोई भी चीज़ न खाना
जिसमें खून मिला हो।[2]

तुम शकुन न विचारना और न ही
जादू-टोना करना।[3]

27 तुम अपनी कलमें न मुँड़वाना
और अपनी दाढ़ी के किनारे काटकर
उसका आकार न बिगाड़ना।[4]

28 तुम अपने शरीर पर कोई निशान
न गुदवाना और न ही किसी की मौत का
मातम मनाने के लिए अपने शरीर पर
घाव करना।[5] मैं यहोवा हूँ।

29 तुम अपनी बेटी को वेश्या बना-
कर उसका अपमान मत करना[6] ताकि
वेश्याओं के काम न हों और देश बद-
चलनी से न भर जाए।[7]

30 तुम मेरे सब्तों को मानना[8] और
मेरे पवित्र-स्थान का गहरा आदर
करना।* मैं यहोवा हूँ।

31 तुम उनके पास न जाना जो मरे
हुओं से संपर्क करने का दावा करते हैं[9]
और न ही भविष्य बतानेवालों से पूछ-
ताछ करना[10] ताकि तुम उनकी वजह से
अशुद्ध न हो जाओ। मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हूँ।

32 तुम पके बालवालों के सामने उठ
खड़े होना[11] और बुज़ुर्गों का आदर
करना।[1] इस तरह तुम अपने परमेश्वर
का डर मानना।[2] मैं यहोवा हूँ।

33 अगर तुम्हारे यहाँ कोई परदेसी
रहता है तो उसके साथ बदसलूकी न
करना।[3] **34** तुम अपने बीच रहनेवाले
परदेसी के साथ वैसा ही सलूक करना
जैसा तुम अपने इसराएली भाई के
साथ करते हो।[4] तुम उससे वैसा ही
प्यार करना जैसा तुम खुद से करते हो,
क्योंकि एक वक्त तुम भी मिस्र में पर-
देसी हुआ करते थे।[5] मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हूँ।

35 तुम नापने या तौलने के लिए
गलत माप इस्तेमाल न करना।[6]
36 तुम सिर्फ ऐसा तराज़ू, बाट-पत्थर
और पैमाना इस्तेमाल करना जो बिलकुल
सही हो।*[7] मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
हूँ, मैं ही तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ।
37 इसलिए तुम मेरी सभी विधियों और
मेरे सभी न्याय-सिद्धांतों का पालन किया
करना और उन पर चलना।[8] मैं
यहोवा हूँ।'"

20 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 "तू इसराएलियों से कहना,
'अगर कोई इसराएली आदमी या
इसराएल में रहनेवाला कोई परदेसी
अपने किसी बच्चे को मोलेक के लिए
अर्पित करता है, तो उसे हर हाल में
मार डाला जाए।[9] देश के लोगों को
उसे पत्थरों से मार डालना चाहिए।
3 मैं ऐसे आदमी को ठुकरा दूँगा और
उसे मौत की सज़ा दूँगा क्योंकि उसने
अपना बच्चा मोलेक को अर्पित करके मेरे
पवित्र-स्थान को दूषित किया है[10] और
मेरे पवित्र नाम का अपमान किया है।

19:23 *शा., "उसकी खलड़ी मानना।" #शा., "खतनारहित ठहरे।" **19:30** *शा., "डर मानना।"

19:36 *शा., "सच्चा एपा और सच्चा हीन इस्तेमाल करना।" अति. ख14 देखें।

अध्य. 19

1 व्य 26:1, 2; नीत 3:9
2 लैव 3:17; लैव 17:13; व्य 12:23; प्रेष 15:20, 29
3 निर्ग 8:7; व्य 18:10-12; गल 5:19, 20; प्रक 21:8
4 लैव 21:1, 5
5 व्य 14:1
6 व्य 23:17
7 इब्र 13:4; 1पत 4:3
8 निर्ग 20:10; निर्ग 31:13
9 लैव 20:6; व्य 18:10-12; 1इत 10:13; यश 8:19
10 लैव 20:27; प्रेष 16:16
11 नीत 16:31; नीत 20:29

दूसरा कॉल.

1 अय 32:6; नीत 23:22; 1ती 5:1
2 अय 28:28; नीत 1:7; नीत 8:13; 1पत 2:17
3 निर्ग 23:9
4 निर्ग 12:49
5 निर्ग 22:21
6 व्य 25:13, 15; नीत 20:10
7 नीत 11:1
8 लैव 18:5; व्य 4:6

अध्य. 20

9 लैव 18:21; व्य 18:10
10 यहे 5:11

4 अगर देश के लोग यह जानते हुए भी कि उसने अपना बच्चा मोलेक को अर्पित किया है, उसका अपराध अनदेखा कर देते हैं और उसे मौत की सज़ा नहीं देते,[1] 5 तो मैं बेशक उस आदमी और उसके परिवार को ठुकरा दूँगा।[2] मैं उस आदमी को और उसके साथ मिलकर मोलेक को पूजनेवालों को मौत की सज़ा दूँगा।

6 अगर कोई ऐसे इंसान के पास जाता है जो मरे हुओं से संपर्क करने का दावा करता है[3] या भविष्य बताता है,[4] तो वह मेरे साथ विश्वासघात* करता है। मैं बेशक उसके खिलाफ हो जाऊँगा और उसे मौत की सज़ा दूँगा।[5]

7 तुम खुद को शुद्ध और पवित्र बनाए रखना[6] क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 8 तुम मेरी विधियों का पालन किया करना और उनके मुताबिक चलना।[7] मैं यहोवा हूँ, मैं तुम्हें पवित्र ठहरा रहा हूँ।[8]

9 अगर कोई अपने पिता या अपनी माँ को शाप देता है तो उसे हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए।[9] उसने अपने पिता या अपनी माँ को शाप दिया है, इसलिए उसका खून उसी के सिर पर पड़ेगा।

10 अगर कोई अपने संगी-साथी की पत्नी के साथ व्यभिचार करता है तो उसे मौत की सज़ा दी जाए। व्यभिचार करनेवाले उस आदमी और औरत, दोनों को हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए।[10] 11 जो आदमी अपने पिता की पत्नी के साथ सोता है वह अपने पिता का अपमान करता है।*[11] उस आदमी और औरत को हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए। उन दोनों का खून उन्हीं के सिर पड़ेगा। 12 अगर एक आदमी अपनी बहू के साथ सोता है तो उन दोनों को हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए। उन्होंने जो स्वाभाविक है उसके खिलाफ काम किया है। उनका खून उन्हीं के सिर पड़ेगा।[1]

13 अगर एक आदमी किसी आदमी के साथ सोता है जैसे आदमी-औरत साथ सोते हैं, तो वे दोनों घिनौना काम करते हैं।[2] उन दोनों आदमियों को हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए। उनका खून उन्हीं के सिर पड़ेगा।

14 अगर एक आदमी किसी औरत से शादी करता है और उसकी माँ के साथ यौन-संबंध रखता है तो यह अश्लील काम* है।[3] उस आदमी और उन दोनों औरतों को मौत की सज़ा दी जाए और फिर आग में जला दिया जाए[4] ताकि तुम्हारे बीच ऐसे अश्लील काम आगे न होते रहें।

15 अगर एक आदमी किसी जानवर के साथ यौन-संबंध रखता है तो उसे हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए और उस जानवर को मार डाला जाए।[5] 16 अगर एक औरत किसी जानवर के साथ यौन-संबंध रखने के इरादे से उसके करीब जाती है,[6] तो तुम उस औरत और जानवर दोनों को मार डालना। जानवर के साथ यौन-संबंध रखनेवाले आदमी और औरत को हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए। उनका खून उन्हीं के सिर पड़ेगा।

17 अगर एक आदमी अपनी बहन के साथ यौन-संबंध रखता है, फिर चाहे वह उसके पिता की बेटी हो या माँ की बेटी और वे एक-दूसरे का नंगापन देखते हैं तो यह एक शर्मनाक बात है।[7] उन्हें उनके

20:6 *या "वह वेश्याओं जैसी बदचलनी।"
20:11 *शा., "का तन उघाड़ता है।"
20:14 *या "शर्मनाक काम; कामुकता।"

अध्य. 20
1 व्य 13:6-9
2 निर्ग 20:5
3 लैव 19:31, व्य 18:10-12, गल 5:19, 20, प्रक 21:8
4 लैव 20:27, प्रेष 16:16
5 1इत 10:13
6 लैव 11:44, 1पत 1:15, 16
7 लैव 18:4, सभ 12:13
8 निर्ग 31:13, लैव 21:8, 1थि 5:23, 2थि 2:13
9 निर्ग 21:17, व्य 27:16, नीत 20:20, मत 15:4
10 व्य 5:18, व्य 22:22, रोम 7:3, 1कुर 6:9, 10
11 लैव 18:8, व्य 27:20

दूसरा कॉल.
1 लैव 18:15, 29
2 उत 19:5, लैव 18:22, न्या 19:22, रोम 1:26, 27, 1कुर 6:9, 10, यहू 7
3 लैव 18:17, व्य 27:23
4 लैव 21:9
5 निर्ग 22:19, व्य 27:21
6 लैव 18:23
7 लैव 18:9, व्य 27:22

लोगों के देखते मौत की सज़ा दी जाए। उस आदमी ने अपनी बहन का अपमान किया है।* उसे अपने गुनाह का लेखा देना होगा।

18 अगर एक आदमी किसी औरत की माहवारी के दिनों में उसके साथ सोता है और यौन-संबंध रखता है तो वे दोनों खून को अपवित्र समझते हैं।[1] उन दोनों को मौत की सज़ा दी जाए।

19 तुम अपनी मौसी या बुआ के साथ यौन-संबंध न रखना क्योंकि ऐसा करना अपने सगे रिश्तेदार का अपमान करना है।[2] ऐसा करनेवाले आदमी और औरत दोनों को अपने गुनाह का लेखा देना होगा। **20** जो आदमी अपनी चाची या मामी के साथ सोता है वह अपने चाचा या मामा का अपमान करता है।*[3] ऐसा करनेवाले आदमी और औरत दोनों को अपने पाप का लेखा देना होगा। उन्हें मार डाला जाए ताकि उनकी कोई औलाद न हो। **21** अगर कोई अपने भाई की पत्नी के साथ संबंध रखता है तो यह एक घिनौना काम है।[4] वह अपने भाई का अपमान करता है।* ऐसा करनेवाले आदमी और औरत दोनों को मार डाला जाए ताकि उनकी कोई औलाद न हो।

22 तुम मेरी सभी विधियों और मेरे सभी न्याय-सिद्धांतों का पालन करना[5] और उनके मुताबिक चलना[6] ताकि मैं तुम्हें जिस देश में ले जा रहा हूँ वहाँ से तुम्हें खदेड़ न दिया जाए।*[7] **23** तुम उन जातियों की विधियों पर मत चलना जिन्हें मैं तुम्हारे सामने से खदेड़ रहा हूँ,[8] क्योंकि वे ऐसे नीच काम करते हैं और मैं उन जातियों से घिन करता हूँ।[9] **24** इसीलिए मैंने तुमसे कहा है, “तुम उस देश को अपने अधिकार में कर लोगे और मैं उस देश को तुम्हारी जागीर बना दूँगा, जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं।[1] मैं यहोवा हूँ, तुम्हारा परमेश्वर जिसने तुम्हें दूसरी जातियों से अलग किया है।”[2] **25** तुम शुद्ध और अशुद्ध जानवरों के बीच और शुद्ध और अशुद्ध चिड़ियों के बीच फर्क करना।[3] मैंने जिन जानवरों, चिड़ियों और ज़मीन पर रेंगने-वाले जीवों के बारे में तुम्हें आज्ञा दी है कि तुम उन्हें अशुद्ध मानना, उनमें से किसी की वजह से तुम घिनौने मत बनना।[4] **26** तुम मेरे पवित्र लोग बने रहना क्योंकि मैं यहोवा पवित्र हूँ।[5] मैं तुम्हें दूसरे देशों के लोगों से अलग कर रहा हूँ ताकि तुम मेरे अपने लोग बने रहो।[6]

27 अगर कोई आदमी या औरत मरे हुओं से संपर्क करने का दावा करे या भविष्य बताने का काम करे,* तो उसे हर हाल में मार डाला जाए।[7] लोगों को उसे पत्थरों से मार डालना चाहिए। उसका खून उसी के सिर पड़ेगा।’”

21 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, “तू याजकों से यानी हारून के बेटों से कहना, ‘एक याजक को अपने लोगों में से किसी की मौत पर खुद को दूषित नहीं करना चाहिए।[8] **2** लेकिन वह अपने नज़दीकी रिश्तेदारों की मौत पर खुद को दूषित कर सकता है, अपनी माँ, अपने पिता, बेटे, बेटी या भाई की मौत पर। **3** उसी तरह, वह अपने पास रहनेवाली कुँवारी बहन की मौत पर, जिसकी शादी नहीं हुई थी, खुद को दूषित कर सकता है। **4** मगर वह किसी ऐसी औरत के लिए खुद को दूषित

20:17 *शा., “का तन उघाड़ा है।”
20:20, 21 *शा., “का तन उघाड़ता है।”
20:22 *शा., “वह देश तुम्हें उगल न दे।”

20:27 *या “उसमें भविष्य बतानेवाला दुष्ट स्वर्गदूत समाया हो।”

अध्य. 20
1 लैव 18:19
2 लैव 18:12, 13
3 लैव 18:14
4 लैव 18:16; व्य 25:5
5 निर्ग 21:1; व्य 5:1
6 सभ 12:13
7 लैव 18:26, 28
8 लैव 18:3, 24; व्य 12:30
9 लैव 18:27; व्य 9:5

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 3:17; निर्ग 6:8; व्य 8:7-9; यहे 20:6
2 निर्ग 19:5; निर्ग 33:16; 1रा 8:53; 1पत 2:9
3 लैव 11:46, 47; व्य 14:4-20
4 लैव 11:43
5 लैव 19:2; भज 99:5; 1पत 1:15, 16; प्रक 4:8
6 व्य 7:6
7 निर्ग 22:18; लैव 19:31; लैव 20:6; व्य 18:10-12; प्रक 21:8

अध्य. 21
8 गि 19:14

और अपवित्र नहीं कर सकता, जो उसके लोगों में से किसी आदमी की पत्नी थी। **5** याजकों को किसी की मौत पर अपना सिर नहीं मुँड़वाना चाहिए[1] और न ही अपनी कलमें कटवानी चाहिए या अपने तन पर घाव करना चाहिए।[2] **6** उन्हें अपने परमेश्वर के लिए पवित्र बने रहना चाहिए[3] और अपने परमेश्वर के नाम का अपमान नहीं करना चाहिए,[4] क्योंकि वे यहोवा के लिए आग में बलियाँ यानी अपने परमेश्वर के लिए भोजन अर्पित करने का काम करते हैं। इसलिए उन्हें पवित्र बने रहना है।[5] **7** एक याजक को किसी वेश्या[6] से या ऐसी औरत से शादी नहीं करनी चाहिए जो किसी और से भ्रष्ट हो गयी है या जिसके पति ने उसे तलाक दे दिया है,[7] क्योंकि याजक अपने परमेश्वर के लिए पवित्र होता है। **8** तुम लोग एक याजक को पवित्र मानना,[8] क्योंकि वही तुम्हारे परमेश्वर के लिए भोजन अर्पित करने का काम करता है। तुम्हें एक याजक को इसलिए पवित्र मानना चाहिए क्योंकि मैं यहोवा पवित्र हूँ और मैं ही तुम लोगों को पवित्र ठहरा रहा हूँ।[9]

9 अगर किसी याजक की बेटी वेश्या बनकर भ्रष्ट हो जाती है, तो वह अपने पिता का अपमान करती है, इसलिए उसे मौत की सज़ा दी जानी चाहिए और फिर आग में जला देना चाहिए।[10]

10 जो याजक अपने भाइयों में से महायाजक चुना जाता है, उसे किसी की भी मौत पर अपने बाल बिखरे हुए नहीं रखने चाहिए और न ही अपनी पोशाक फाड़नी चाहिए,[11] क्योंकि उसके सिर पर अभिषेक का तेल उँडेला गया है[12] और उसे याजकपद सौंपा गया है* ताकि वह याजक की पोशाक[1] पहने। **11** महा-याजक को किसी भी इंसान की लाश के पास नहीं जाना चाहिए,[2] यहाँ तक कि अपने पिता या अपनी माँ की मौत पर भी उसे खुद को दूषित नहीं करना चाहिए। **12** उसे पवित्र-स्थान से बाहर कदम नहीं रखना चाहिए और अपने परमेश्वर के पवित्र-स्थान को दूषित नहीं करना चाहिए,[3] क्योंकि परमेश्वर के पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया गया है जो उसके समर्पण की निशानी है।[4] मैं यहोवा हूँ।

13 उसे सिर्फ ऐसी औरत से शादी करनी चाहिए जो कुँवारी है।[5] **14** उसे किसी विधवा या तलाकशुदा औरत या वेश्या या ऐसी औरत से शादी नहीं करनी चाहिए जो भ्रष्ट हो चुकी है। इसके बजाय, उसे अपने लोगों में से किसी कुँवारी से ही शादी करनी चाहिए। **15** उसे अपने लोगों के बीच अपनी संतान का अपमान नहीं करना चाहिए,[6] क्योंकि मैं यहोवा हूँ, मैं उसे पवित्र ठहरा रहा हूँ।'"

16 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, **17** "हारून से कहना, 'तेरे वंशजों में से ऐसा कोई भी आदमी, जिसके शरीर में कोई दोष है, अपने परमेश्वर को भोजन अर्पित करने के लिए पवित्र-स्थान के पास नहीं जा सकता। यह नियम तुम पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी लागू रहेगा। **18** तुम्हारे वंशजों में से ऐसा कोई भी आदमी पवित्र-स्थान के पास नहीं जा सकता जिसके शरीर में इनमें से एक भी दोष है: वह अंधा या लँगड़ा है या उसके चेहरे का रूप बिगड़ा है* या उसका एक हाथ या पैर ज़्यादा लंबा है **19** या उसके हाथ या

21:10 *शा., "उसका हाथ भरा गया है।"

21:18 *शा., "या उसकी नाक में दरार है।"

अध्य. 21
1 व्य 14:1
2 लैव 19:27, 28
3 निर्ग 29:44
4 लैव 18:21; लैव 19:12; लैव 22:32
5 यश 52:11; 1पत 1:15, 16
6 लैव 19:29
7 व्य 24:1; यहे 44:22
8 निर्ग 28:41
9 निर्ग 28:36; लैव 11:45; लैव 20:7, 8
10 लैव 20:14
11 उत 37:34; लैव 10:6
12 लैव 8:12

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 28:2; निर्ग 29:29; लैव 16:32
2 गि 6:7; गि 19:11, 14
3 लैव 10:7
4 लैव 8:12
5 यहे 44:22
6 एज 9:2

पैर की हड्डी टूटी है **20** या उसकी पीठ पर कूबड़ है या वह बौना है* या उसकी आँखों में कोई दोष है या उसे दाद या खाज है या उसके अंड कुचले हुए हैं।[1] **21** हारून याजक के वंशजों में से किसी आदमी के शरीर में अगर ऐसा एक भी दोष है, तो वह यहोवा के लिए आग में बलि जलाकर अर्पित नहीं कर सकता। उसके शरीर में दोष है, इसलिए वह अपने परमेश्वर को भोजन अर्पित करने वेदी के पास न जाए। **22** उसे अपने परमेश्वर के भोजन में से वे चीज़ें खाने की इजाज़त है जो पवित्र हैं[2] और वे भी जो बहुत पवित्र हैं।[3] **23** मगर वह न परदे के पास[4] और न ही वेदी के पास जा सकता है,[5] क्योंकि उसके शरीर में दोष है। उसे मेरा पवित्र-स्थान दूषित नहीं करना चाहिए[6] क्योंकि मैं यहोवा हूँ, मैं उन्हें पवित्र ठहरा रहा हूँ।'"[7]

24 मूसा ने हारून और उसके बेटों को और सभी इसराएलियों को ये सारी बातें बतायीं।

22 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, **2** "हारून और उसके बेटों से कहना कि वे इसराएलियों की दी हुई पवित्र चीज़ों के मामले में एहतियात बरतें* और लोग जो चीज़ें मेरे लिए पवित्र ठहराते हैं[8] उनके मामले में मेरे पवित्र नाम का अपमान न करें।[9] मैं यहोवा हूँ। **3** उनसे कहना, 'अगर तुम्हारा कोई वंशज अशुद्ध हालत में होते हुए भी उन पवित्र चीज़ों के पास आता है जिन्हें इसराएली यहोवा के लिए पवित्र ठहराते हैं, तो उसे मेरे सामने मौत की सज़ा दी जाए। यह नियम तुम पर पीढ़ी-

---

21:20 *या शायद, "वह सूखकर काँटा हो गया है।" **22:2** *शा., "से खुद को अलग रखें।"

अध्य. 21

1 व्य 23:1

2 लैव 2:10, लैव 6:14, 16, लैव 24:8, 9, गि 18:9

3 लैव 22:10, गि 18:19

4 निर्ग 30:6

5 निर्ग 38:1

6 निर्ग 25:8

7 निर्ग 28:41

अध्य. 22

8 निर्ग 28:38, गि 18:32

9 लैव 21:6

दूसरा कॉल.

1 लैव 7:20

2 लैव 14:2, लैव 15:13

3 लैव 13:2

4 लैव 15:2

5 लैव 15:16

6 लैव 21:1, गि 19:11, 22

7 लैव 11:24, 43

8 लैव 15:7, 19

9 गि 19:6, 7

10 गि 18:11

11 निर्ग 22:31, लैव 17:15, व्य 14:21

12 निर्ग 29:33

दर-पीढ़ी लागू रहेगा।[1] मैं यहोवा हूँ। **4** हारून के वंशजों में से अगर कोई आदमी अशुद्ध हो जाता है तो वह तब तक पवित्र चीज़ों में से नहीं खा सकता जब तक कि वह दोबारा शुद्ध नहीं हो जाता।[2] जैसे वह आदमी जिसे कोढ़ है,[3] जो रिसाव से पीड़ित है,[4] वीर्य निकलने से अशुद्ध है,[5] जिसने किसी ऐसे आदमी को छुआ है जो किसी की लाश छूने की वजह से अशुद्ध है,[6] **5** जिसने झुंड में रहनेवाले किसी अशुद्ध जीव को छुआ है[7] या जिसने ऐसे इंसान को छुआ है जो किसी वजह से अशुद्ध हालत में है।[8] **6** जो इनमें से किसी को भी छूता है वह शाम तक अशुद्ध रहेगा और तब तक वह पवित्र चीज़ों में से कुछ भी नहीं खा सकता। उसे शुद्ध होने के लिए नहाना चाहिए[9] **7** और सूरज ढलने तक इंतज़ार करना चाहिए। इसके बाद वह शुद्ध हो जाएगा। फिर वह पवित्र चीज़ों में से खा सकता है क्योंकि उसे मिलनेवाला भोजन यही है।[10] **8** साथ ही, एक याजक को ऐसे जानवर का गोश्त नहीं खाना चाहिए जो मरा हुआ पाया जाता है या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ डाला है। ऐसा गोश्त खाने से वह अशुद्ध हो जाएगा।[11] मैं यहोवा हूँ।

9 उन्हें मेरे नियमों का पालन करना चाहिए ताकि वे इनके खिलाफ जाकर पवित्र चीज़ों को दूषित करने का पाप न करें और मार न डाले जाएँ। मैं यहोवा हूँ, मैं उन्हें पवित्र ठहरा रहा हूँ।

10 ऐसा कोई भी इंसान पवित्र चीज़ें नहीं खा सकता जिसे ये चीज़ें खाने का अधिकार नहीं है।*[12] याजक के घर ठहरा कोई परदेसी मेहमान या याजक के

22:10 *शा., "जो पराया हो," यानी जो हारून-वंशी न हो।

लिए काम करनेवाला कोई दिहाड़ी का
मज़दूर पवित्र चीज़ें नहीं खा सकता।
11 लेकिन अगर एक याजक ने पैसा
देकर कोई दास खरीदा है तो वह दास
पवित्र चीज़ों में से खा सकता है। याजक
के घराने में पैदा होनेवाले दास भी उसके
हिस्से में से खा सकते हैं।[1] **12** अगर
एक याजक की बेटी ऐसे आदमी से शादी
करती है जो याजक नहीं है,* तो वह दान
में दी गयी पवित्र चीज़ों में से नहीं खा
सकती। **13** लेकिन अगर एक याजक
की बेटी विधवा हो जाती है या उसका
तलाक हो जाता है और वह बेऔलाद
है और अपने पिता के घर आकर रहने
लगती है जैसे वह बचपन में रहती थी, तो
वह अपने पिता के हिस्से में से खा सकती
है।[2] मगर ऐसा कोई भी इंसान पवित्र
चीज़ें नहीं खा सकता जिसे खाने का अधि-
कार नहीं है।*

14 अगर एक आदमी गलती से कोई
पवित्र चीज़ खा लेता है तो उसे उस चीज़
का पूरा मुआवज़ा और उसके साथ उसका
पाँचवाँ हिस्सा जोड़कर पवित्र चढ़ावा
याजक को देना होगा।[3] **15** याजक
उन पवित्र चीज़ों को दूषित न करें जो इस-
राएली यहोवा के लिए दान में देते हैं।[4]
16 अगर याजक लोगों को पवित्र चीज़ें
खाने देंगे तो वे लोगों को पाप के दोषी
बनाएँगे जिससे लोग सज़ा पाएँगे। मैं
यहोवा हूँ, मैं उन्हें पवित्र ठहरा रहा हूँ।'"

17 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
18 "तू हारून और उसके बेटों से और
सब इसराएलियों से कहना, 'अगर कोई
इसराएली या इसराएल में कोई पर-
देसी अपनी मन्नत पूरी करने के लिए या
स्वेच्छा-बलि के लिए होम-बलि का जान-
वर यहोवा को देना चाहता है,[1] **19** तो
उसे ऐसा बैल या मेम्ना या बकरा देना
चाहिए जिसमें कोई दोष न हो,[2] तभी
वह मंज़ूर किया जाएगा। **20** तुम्हें ऐसा
कोई भी जानवर अर्पित नहीं करना
चाहिए जिसमें कोई दोष है,[3] क्योंकि ऐसी
बलि चढ़ाने से तुम मंज़ूरी नहीं पाओगे।

21 अगर एक आदमी अपनी मन्नत
पूरी करने के लिए या स्वेच्छा-बलि के
लिए यहोवा को शांति-बलि देना चाहता
है,[4] तो उसे गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में
से ऐसा जानवर देना चाहिए जिसमें कोई
दोष न हो, तभी वह मंज़ूर किया जाएगा।
बलि के जानवर में कोई भी दोष नहीं
होना चाहिए। **22** तुम ऐसा कोई भी
जानवर अर्पित न करना जो अंधा है या
जिसकी हड्डी टूटी है या जिसके शरीर पर
घाव, मस्सा, दाद या खाज है। तुम यहोवा
के लिए ऐसा कोई भी जानवर अर्पित
न करना, न ही यहोवा की वेदी पर ऐसे
जानवर की बलि चढ़ाना। **23** अगर
किसी बैल या भेड़ का एक पैर बाकी से
लंबा या छोटा है, तो तुम उसे स्वेच्छा-बलि
के लिए दे सकते हो। मगर ऐसा जानवर
मन्नत-बलि के लिए स्वीकार नहीं किया
जाएगा। **24** तुम ऐसा जानवर यहोवा
के लिए अर्पित न करना जिसके अंड नष्ट
हो गए हों या कुचले हों या निकाल दिए
गए हों या काट दिए गए हों। तुम अपने
देश में ऐसे जानवर की बलि न चढ़ाना।
25 तुम किसी परदेसी के हाथ से ऐसे
जानवर की बलि लेकर अपने परमेश्वर
के लिए भोजन मत अर्पित करना, क्योंकि
ऐसे जानवरों में दोष और विकार है।
उनकी बलि स्वीकार नहीं की जाएगी।'"

26 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
27 "जब भी कोई बछड़ा, मेम्ना या

अध्य. 22
1 गि 18:11
2 लैव 10:14; गि 18:19
3 लैव 5:15, 16
4 गि 18:32

दूसरा कॉल.
1 लैव 7:16; गि 15:3; गि 15:14, 16; व्य 12:5, 6
2 लैव 1:3; लैव 22:22
3 व्य 15:19, 21; व्य 17:1; मला 1:8; इब्र 9:14; 1पत 1:19
4 लैव 3:1

22:12 *या "किसी पराए से शादी करती है।" **22:13** *शा., "जो पराया हो," यानी जो हारून-वंशी न हो।

बकरी का बच्चा पैदा होता है तो उसे सात
दिन तक अपनी माँ के साथ रहने
देना।[1] आठवें दिन या उसके बाद तुम
उसे यहोवा के लिए आग में जलाकर
अर्पित कर सकते हो। तब उसे स्वीकार
किया जाएगा। 28 तुम किसी गाय के
साथ उसका बछड़ा या भेड़ के साथ उसका
मेम्ना एक ही दिन हलाल मत करना।[2]

29 जब भी तुम यहोवा के लिए
धन्यवाद-बलि चढ़ाते हो[3] तो बलिदान
इस तरह अर्पित करना कि तुम मंज़ूरी
पा सको। 30 जिस दिन तुम यह बलि
चढ़ाते हो उसी दिन यह गोश्त खाया जाए।
तुम्हें अगली सुबह तक कुछ भी बचाकर
नहीं रखना चाहिए।[4] मैं यहोवा हूँ।

31 तुम मेरी आज्ञाओं का पालन
किया करना और उनके मुताबिक चल-
ना।[5] मैं यहोवा हूँ। 32 तुम मेरे पवित्र
नाम का अपमान न करना।[6] इसके
बजाय मुझे इसराएलियों में पवित्र माना
जाए।[7] मैं यहोवा हूँ, मैं तुम्हें पवित्र
ठहरा रहा हूँ[8] 33 और मैं तुम्हें मिस्र से
निकालकर इसलिए ला रहा हूँ ताकि खुद
को तुम्हारा परमेश्वर साबित करूँ।[9] मैं
यहोवा हूँ।"

23 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 "इसराएलियों से कहना,
'यहोवा तुम्हें साल के अलग-अलग
वक्त पर जो त्योहार मनाने के लिए
कहता है,[10] वे पवित्र सभाएँ हैं। तुम्हें उन
त्योहारों का ऐलान करना होगा।[11] तुम
साल के अलग-अलग वक्त पर मेरे लिए
ये त्योहार मनाना:

3 तुम छः दिन काम कर सकते
हो, मगर सातवाँ दिन सब्त होगा, पूरे
विश्राम[12] और पवित्र सभा का दिन
होगा। इस दिन तुम्हें किसी भी तरह का
काम नहीं करना चाहिए। तुम जहाँ भी

अध्य. 22
1 निर्ग 22:30
2 निर्ग 23:19, व्य 22:6
3 लैव 7:12
4 लैव 7:15
5 लैव 19:37, गि 15:40, व्य 4:40
6 लैव 18:21, लैव 19:12
7 लैव 10:3
8 निर्ग 19:5, लैव 20:8, लैव 21:8
9 निर्ग 6:7, लैव 11:45

अध्य. 23
10 निर्ग 23:14, लैव 23:37
11 गि 10:10
12 निर्ग 16:30, निर्ग 20:10, प्रेष 15:21

दूसरा कॉल.
1 नहे 13:22
2 गि 9:2, 3, गि 28:16
3 निर्ग 12:3, 6, व्य 16:1, 1कुर 5:7
4 गि 28:17, 1कुर 5:8
5 निर्ग 12:15, निर्ग 13:6, निर्ग 34:18
6 निर्ग 12:16
7 1कुर 15:20, 23
8 गि 18:8, 12, नीत 3:9, यहे 44:30

रहते हो, वहाँ सातवाँ दिन यहोवा के लिए
सब्त होगा।[1]

4 यहोवा ने तुम्हें साल के अलग-
अलग वक्त पर जो त्योहार मनाने और
पवित्र सभाएँ रखने के बारे में बताया है
और जिनका तुम्हें तय वक्त पर ऐलान
करना है, वे ये हैं: 5 साल के पहले
महीने के 14वें दिन,[2] शाम के झुटपुटे
के समय* यहोवा के लिए फसह मनाया
जाएगा।[3]

6 इसी महीने के 15वें दिन यहोवा
के लिए बिन-खमीर की रोटी का त्योहार
होगा।[4] तुम्हें सात दिन तक बिन-खमीर
की रोटी खानी होगी।[5] 7 पहले दिन
तुम एक पवित्र सभा रखोगे।[6] इस दिन
तुम्हें मेहनत का कोई भी काम नहीं
करना चाहिए। 8 त्योहार के सातों दिन
तुम यहोवा के लिए चढ़ावा आग में
जलाकर अर्पित करोगे। सातवें दिन
एक पवित्र सभा होगी। इस दिन तुम्हें
मेहनत का कोई भी काम नहीं करना
चाहिए।'"

9 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
10 "इसराएलियों से कहना, 'जब तुम
उस देश में बस जाओगे जो मैं तुम्हें देने-
वाला हूँ और तुम अपनी फसल काटोगे,
तो पहले फल का एक पूला[7] ले जाकर
याजक को देना।[8] 11 याजक वह पूला
यहोवा के सामने आगे-पीछे हिलाएगा
ताकि तुम्हारे लिए मंज़ूरी पा सके। याजक
ऐसा सब्त के बादवाले दिन करेगा।
12 जिस दिन तुम्हारी फसल का पूला
आगे-पीछे हिलाकर चढ़ाया जाएगा, उसी
दिन तुम्हें एक साल का ऐसा नर मेम्ना
ले जाकर अर्पित करना होगा जिसमें
कोई दोष न हो। यह यहोवा के लिए

23:5 *शा., "दो शामों के बीच।"

होम-बलि है। **13** साथ ही, तुम अनाज
का चढ़ावा भी चढ़ाना। इस चढ़ावे में तुम
एपा के दो-दहाई भाग* मैदे में तेल मिला-
कर देना। इसे आग में जलाकर यहोवा के
लिए अर्पित किया जाएगा ताकि इसकी
सुगंध पाकर वह खुश हो। और एक-
चौथाई हीन# दाख-मदिरा का अर्घ देना।
14 तुम्हें उस दिन तक नया अनाज या
भुना हुआ अनाज नहीं खाना चाहिए,
न ही नए अनाज से रोटी बनाकर
खानी चाहिए जब तक कि तुम यह
चढ़ावा अपने परमेश्वर को अर्पित नहीं
करते। तुम जहाँ भी रहो, यह नियम तुम
पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमेशा के लिए लागू
रहेगा।

15 सब्त के बादवाले दिन जब तुम
अनाज का पूला लाकर देते हो और
उसे हिलाकर चढ़ाया जाता है, तो उस
दिन से तुम सात सब्त गिनना।[1] ये पूरे
सात हफ्ते होने चाहिए। **16** इस तरह
जब सातवें सब्त के अगले दिन 50 दिन
पूरे होंगे,[2] तो उस दिन तुम यहोवा को
नए अनाज का चढ़ावा अर्पित करना।[3]
17 इस चढ़ावे के लिए तुम अपने घरों
से दो-दो रोटियाँ लाना ताकि उन्हें हिला-
कर चढ़ाया जा सके। ये रोटियाँ एपा के
दो-दहाई भाग* मैदे की बनी हों। मैदे में
खमीर मिलाना और उससे रोटियाँ बना-
कर तंदूर में सेंकना।[4] यह पकी फसल
का पहला फल है जो तुम यहोवा के लिए
अर्पित करोगे।[5] **18** रोटियों के साथ
तुम ये जानवर भी अर्पित करनाः एक-
एक साल के सात मेढ़े जिनमें कोई दोष
न हो, एक बैल और दो मेढ़े।[6] तुम
यहोवा के लिए इन जानवरों की होम-
बलि चढ़ाना और इस बलि के साथ
दिया जानेवाला अनाज का चढ़ावा और
अर्घ भी देना। इन सबको आग में जला-
कर यहोवा को अर्पित करना ताकि इनकी
सुगंध पाकर वह खुश हो। **19** इसके
अलावा, तुम बकरी के एक बच्चे की
पाप-बलि[1] और एक-एक साल के दो
मेढ़ों की शांति-बलि अर्पित करना।[2]
20 याजक इन दोनों मेढ़ों को, पकी
फसल के पहले फलों यानी रोटियों के
साथ यहोवा के सामने आगे-पीछे हिला-
कर चढ़ाएगा। यह यहोवा के लिए
हिलाकर दिया जानेवाला पवित्र चढ़ावा
है जिस पर याजक का हक होगा।[3]
21 इस दिन तुम ऐलान करना[4] कि आज
एक पवित्र सभा है। इस दिन तुम मेह-
नत का कोई काम न करना। तुम जहाँ भी
रहो, यह नियम तुम पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी
हमेशा के लिए लागू रहेगा।

22 जब तुम अपने खेत की फसल
काटोगे तो उसका कोना-कोना साफ मत
कर देना और कटाई के वक्त जो
बालें गिर जाती हैं उन्हें मत उठाना।[5]
यह सब तुम गरीबों*[6] और तुम्हारे बीच
रहनेवाले परदेसियों[7] के लिए छोड़ देना।
मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।'"

23 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
24 "इसराएलियों से कहना, 'सातवें
महीने का पहला दिन, पूरे विश्राम का
दिन होगा। इस दिन पवित्र सभा होगी।
यह यादगार का दिन होगा जिसके बारे
में तुरही फूँककर ऐलान किया जाएगा।[8]
25 तुम इस दिन मेहनत का कोई काम
न करना। और तुम यहोवा के लिए
एक चढ़ावा आग में जलाकर अर्पित
करना।'"

23:13, 17 *एपा का दो-दहाई भाग 4.4 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।
23:13 #एक हीन 3.67 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

23:22 *या "मुसीबत के मारों।"

अध्य. 23
1 निर्ग 34:22, व्य 16:9, 10
2 प्रेष 2:1
3 गि 28:26-31, व्य 16:16
4 लैव 7:11, 13
5 निर्ग 23:16, निर्ग 34:22
6 गि 28:26, 27

दूसरा कॉल.
1 लैव 4:23
2 लैव 3:1
3 लैव 7:34, लैव 10:14, गि 18:9, व्य 18:4, 1कुर 9:13
4 गि 10:10
5 लैव 19:9, व्य 24:19, रूत 2:2, 3
6 यश 58:7
7 लैव 19:33
8 गि 10:10, गि 29:1

26 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
27 “मगर सातवें महीने का दसवाँ दिन
प्रायश्‍चित का दिन होगा।[1] इस दिन
तुम एक पवित्र सभा रखना और अपने
पापों के लिए दुख ज़ाहिर करना*[2] और
यहोवा के लिए एक चढ़ावा आग में जला-
कर अर्पित करना। 28 इस दिन तुम
किसी भी तरह का काम नहीं करोगे,
क्योंकि यह प्रायश्‍चित का दिन होगा[3] जब
तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा के सामने तुम्हारे
लिए प्रायश्‍चित किया जाएगा। 29 जो
इस दिन अपने पापों के लिए दुख
ज़ाहिर नहीं करेगा,* उसे मौत की सज़ा
दी जाएगी।[4] 30 जो इस दिन किसी
भी तरह का काम करेगा, उसे मैं उसके
लोगों में से नाश कर दूँगा। 31 तुम्हें
इस दिन किसी भी तरह का काम नहीं
करना चाहिए। तुम जहाँ भी रहो, यह
नियम तुम पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमेशा के
लिए लागू रहेगा। 32 यह तुम्हारे लिए
सब्त का दिन, पूरे विश्राम का दिन होगा।
सातवें महीने के नौवें दिन की शाम से
तुम अपने पापों के लिए दुख ज़ाहिर
करना शुरू करोगे।[5] तुम उस दिन की
शाम से अगले दिन की शाम तक सब्त
मनाना।”

33 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
34 “इसराएलियों से कहना, ‘सातवें
महीने के 15वें दिन छप्परों का त्योहार
होगा। यह त्योहार यहोवा के लिए सात
दिन मनाया जाएगा।[6] 35 पहले दिन
तुम एक पवित्र सभा रखना और उस
दिन मेहनत का कोई भी काम न करना।
36 सात दिनों तक तुम यहोवा के लिए
एक चढ़ावा आग में जलाकर अर्पित
करना। आठवें दिन तुम एक पवित्र सभा
रखना[1] और यहोवा के लिए एक चढ़ावा
आग में जलाकर अर्पित करना। यह पर-
मेश्‍वर की उपासना के लिए खास सभा
होगी। इस दिन तुम्हें मेहनत का कोई भी
काम नहीं करना चाहिए।

37 ये साल के अलग-अलग वक्‍त पर
यहोवा के लिए मनाए जानेवाले त्योहार
हैं,[2] जिनके बारे में तुम्हें ऐलान करना है
कि ये पवित्र सभाएँ हैं।[3] इन त्योहारों में
तुम यहोवा के लिए यह सब चढ़ावा आग
में जलाकर अर्पित करोगे: होम-बलि,[4]
अनाज का चढ़ावा[5] और अर्घ।[6] यह सब
ठीक उसी तरह चढ़ाना जैसे त्योहार के
दौरान हर मौके के लिए तय किया गया
है। 38 तुम यहोवा के सब्त के मौकों
पर जो चढ़ावा देते हो[7] और उसके लिए
जो भेंट,[8] मन्‍नत-बलि[9] और स्वेच्छा-
बलि[10] दिया करते हो, उन सबके अलावा
तुम त्योहार के मौकों पर यहोवा के लिए
बताया गया चढ़ावा देना। 39 सातवें
महीने के 15वें दिन यानी अपने खेत
की फसल बटोरने के बाद, तुम सात दिन
तक यहोवा के लिए त्योहार मनाना।[11]
पहला और आठवाँ दिन पूरे विश्राम
का दिन होगा।[12] 40 पहले दिन तुम
बढ़िया पेड़ों के फल और खजूर, घने
पत्तोंवाले पेड़ों[13] और घाटी के पीपल की
डालियाँ लेना और सात दिन[14] तक
अपने परमेश्‍वर यहोवा के सामने खुशियाँ
मनाना।[15] 41 साल के ये सात दिन
तुम यहोवा के लिए त्योहार मनाना।[16]
तुम यह त्योहार सातवें महीने में मनाना।
यह नियम तुम पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमेशा
के लिए लागू रहेगा। 42 इस त्योहार
के सातों दिन तुम्हें छप्परों में रहना

23:27 *‘दुख ज़ाहिर करने’ का आम तौर पर यह मतलब समझा जाता है, खुद को कई चीज़ों से दूर रखना और इसमें उपवास करना शामिल है। **23:29** *या शायद, “उपवास नहीं करेगा।”

अध्य. 23
1 निर्ग 30:10; लैव 25:9
2 लैव 16:29, 30; गि 29:7
3 लैव 16:34; इब्र 9:12, 24-26; इब्र 10:10; 1यूह 2:1, 2
4 गि 9:13; गि 15:30
5 लैव 16:29-31; लैव 23:27; गि 29:7
6 निर्ग 23:16; गि 29:12; व्य 16:13; एज 3:4; नहे 8:14-18; यूह 7:2

दूसरा कॉल.
1 नहे 8:18
2 निर्ग 23:14; व्य 16:16
3 गि 28:26; गि 29:7
4 लैव 1:3
5 लैव 2:1, 11
6 गि 15:5; गि 28:6, 7
7 निर्ग 16:23; निर्ग 20:8; निर्ग 31:13
8 निर्ग 28:38; गि 18:29
9 व्य 12:11
10 गि 29:39; व्य 12:6; 1इत 29:9; 2इत 35:8; एज 2:68
11 व्य 16:13
12 गि 29:12
13 नहे 8:15; प्रक 7:9
14 व्य 16:15
15 नहे 8:10
16 गि 29:12

होगा।[1] इसराएल के सब लोगों को
छप्परों में ही रहना होगा, **43** ताकि
आनेवाली पीढ़ियाँ जानें[2] कि जब मैं इस-
राएलियों को मिस्र से बाहर निकालकर
ला रहा था तो मैंने उनके लिए छप्परों में
ही रहने का इंतज़ाम किया था।[3] मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।'"

44 मूसा ने इसराएलियों को यहोवा के
उन त्योहारों के बारे में बताया, जो साल
के अलग-अलग वक्त पर मनाए जाते।

24 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
2 "इसराएलियों को आज्ञा दे
कि वे भेंट के तंबू के दीयों को हमेशा
जलाए रखने के लिए शुद्ध जैतून का
तेल लाकर तुझे दें, जो कूटकर निकाला
गया हो।[4] **3** हारून को चाहिए कि वह
इन दीयों को, जो तंबू में गवाही के
संदूक के पासवाले परदे की इस तरफ हैं,
यहोवा के सामने शाम से सुबह तक लगा-
तार जलाए रखने का इंतज़ाम करे। यह
नियम पीढ़ी-दर-पीढ़ी सदा के लिए तुम
पर लागू रहेगा। **4** हारून को यहोवा के
सामने शुद्ध सोने की दीवट[5] पर ये दीए
हमेशा तरतीब से रखने चाहिए।

5 तुम मैदा लेकर उससे छल्ले जैसी
12 रोटियाँ तंदूर में सेंककर बनाना।
हर रोटी एपा के दो-दहाई भाग* मैदे की
बनायी जाए। **6** तुम छः-छः रोटियों के
दो ढेर[6] शुद्ध सोने की मेज़ पर यहोवा
के सामने रखना।[7] **7** तुम हरेक ढेर के
ऊपर शुद्ध लोबान रखना। यह लोबान
रोटी का प्रतीक* होगा[8] जिसे आग
में जलाकर यहोवा को अर्पित किया
जाएगा। **8** उसे बिना नागा हर सब्त के
दिन यहोवा के सामने ये रोटियाँ तर-

24:5 *एपा का दो-दहाई भाग 4.4 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। **24:7** *या "की यादगार।"

अध्य. 23
1 व्य 31:10, 11
2 व्य 31:13
भज 78:6
3 निर्ग 12:37, 38
गि 24:5

अध्य. 24
4 निर्ग 27:20, 21
गि 8:2
5 निर्ग 25:31
निर्ग 39:33, 37
इब्र 9:2
6 निर्ग 40:22, 23
1शम 21:4
मर 2:25, 26
7 निर्ग 25:23, 24
1रा 7:48
8 लैव 2:2
लैव 6:15

दूसरा कॉल.
1 गि 4:7
1इत 9:32
2इत 2:4
2 लैव 21:22
लैव 22:10
1शम 21:4, 6
मत 12:3, 4
लूक 6:3, 4
3 लैव 6:14, 16
4 निर्ग 12:38
गि 11:4
5 निर्ग 20:7
निर्ग 22:28
लैव 19:12
6 निर्ग 18:22
7 निर्ग 18:15, 16
गि 15:32, 34
8 गि 15:32, 35
व्य 17:7
9 व्य 5:11

तीब से रखनी चाहिए।[1] यह इसराए-
लियों के साथ किया गया सदा का करार
है। **9** ये रोटियाँ हारून और उसके बेटों
को दी जाएँगी[2] और वे इन्हें पवित्र जगह
में खाएँगे,[3] क्योंकि ये रोटियाँ याजक के
लिए बहुत पवित्र हैं और उस चढ़ावे में
से हैं जो यहोवा के लिए आग में जलाकर
अर्पित किया जाता है। यह नियम तुम्हें
हमेशा के लिए दिया जाता है।"

10 इसराएलियों में एक ऐसा आदमी
था जिसकी माँ इसराएली थी मगर पिता
मिस्री था।[4] एक दिन छावनी में
इस आदमी की एक इसराएली आदमी
से लड़ाई हो गयी। **11** वह आदमी
जिसकी माँ इसराएली थी, परमेश्वर के
नाम* की निंदा करने लगा और उसके
बारे में अपमान की बातें कहने लगा।[5]
इसलिए लोग उसे मूसा के पास ले आए।[6]
उस आदमी की माँ का नाम शलोमीत
था। वह दान गोत्र के दिबरी की बेटी थी।
12 लोगों ने उस आदमी को तब तक के
लिए हिरासत में रखा जब तक कि उन्हें
उसके बारे में यहोवा का फैसला पता नहीं
चला।[7]

13 यहोवा ने मूसा से कहा, **14** "तू
उस आदमी को छावनी के बाहर ले जा
जिसने अपमान की बातें कही हैं। फिर
जितने लोगों ने उसकी बातें सुनी थीं वे
सब उसके सिर पर अपने हाथ रखें और
लोगों की पूरी मंडली उसे पत्थरों से मार
डाले।[8] **15** तू इसराएलियों से कहना,
'अगर कोई अपने परमेश्वर के बारे में
अपमान की बातें कहता है तो उसे अपने
पाप का लेखा देना होगा। **16** यहोवा
के नाम की निंदा करनेवाले को हर
हाल में मौत की सज़ा दी जाए।[9] लोगों की

24:11 *यानी नाम यहोवा, जैसा आय. 15 और 16 से पता चलता है।

पूरी मंडली उसे पत्थरों से मार डाले। जो भी परमेश्‍वर के नाम की निंदा करता है उसे मौत की सज़ा दी जाए, फिर चाहे वह इसराएली हो या तुम्हारे बीच रहनेवाला परदेसी।

17 अगर कोई आदमी किसी इंसान की जान लेता है, तो उसे हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए।[1] 18 लेकिन अगर एक आदमी किसी के पालतू जानवर को मार डालता है, तो उसे मुआवज़ा भरना होगा। उसे जानवर के बदले जानवर देना होगा। 19 अगर एक आदमी किसी आदमी पर हमला करके उसे घायल कर देता है, तो उसके साथ भी वही किया जाए जो उसने दूसरे के साथ किया है।[2] 20 अगर उसने दूसरे की हड्डी तोड़ी है तो उसकी भी हड्डी तोड़ी जाए, उसी तरह आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत या उसने जो भी चोट पहुँचायी है, वही चोट उसे दी जाए।[3] 21 अगर एक आदमी किसी जानवर को मार डालता है तो उसे मुआवज़ा भरना होगा।[4] लेकिन अगर एक आदमी किसी इंसान की जान लेता है तो उसे मौत की सज़ा दी जाए।[5]

22 तुम सब पर एक ही न्याय-सिद्धांत लागू होगा, फिर चाहे तुम इसराएली हो या इसराएलियों के बीच रहनेवाले परदेसी,[6] क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा हूँ।'"

23 मूसा ने ये सारी बातें इसराएलियों को बतायीं। फिर वे उस आदमी को छावनी के बाहर ले आए जिसने परमेश्‍वर के बारे में अपमान की बातें कही थीं। और उन्होंने उसे पत्थरों से मार डाला।[7] इस तरह इसराएलियों ने ठीक वही किया जो यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

25 फिर यहोवा ने सीनै पहाड़ पर मूसा से कहा, 2 "इसराएलियों से कहना, 'कुछ समय बाद जब तुम उस देश में बस जाओगे जो मैं तुम्हें देनेवाला हूँ,[1] तो पूरे देश की ज़मीन को यहोवा के लिए सब्त का विश्राम मिला करेगा।[2] 3 छः साल तुम खेत में बीज बोना और छः साल अपने अंगूरों के बाग की छँटाई करना और ज़मीन की उपज इकट्ठा किया करना।[3] 4 मगर सातवाँ साल देश की ज़मीन के लिए पूरे विश्राम का साल यानी यहोवा के लिए सब्त होगा। उस साल तुम न खेत में बीज बोना और न ही अंगूरों के बाग की छँटाई करना। 5 पिछली फसल की कटाई के बाद खेत में जो दाने रह जाते हैं, उनसे अपने आप उगनेवाले अनाज की कटाई मत करना। उसी तरह अंगूरों के बाग से, जिसकी छँटाई नहीं की जाती, वे अंगूर मत बटोरना जो अपने आप उग आते हैं। सातवाँ साल देश की ज़मीन के लिए पूरे विश्राम का साल होगा। 6 लेकिन सब्त के साल के दौरान ज़मीन पर जो कुछ अपने आप उगता है उसे तुम, तुम्हारे दास-दासियाँ, दिहाड़ी के मज़दूर और तुम्हारे साथ रहनेवाले परदेसी खा सकते हैं। 7 साथ ही, तुम्हारे पालतू जानवर और तुम्हारे इलाके के जंगली जानवर खा सकते हैं। तुम ज़मीन से मिलनेवाली सारी उपज खा सकते हो।

8 तुम सात सब्त के साल गिनना, यानी सात गुना सात साल। इस तरह जब कुल मिलाकर 49 साल पूरे होंगे, 9 तो उस 49वें साल के सातवें महीने के दसवें दिन यानी प्रायश्‍चित के दिन,[4] तुम अपने देश में ज़ोर-ज़ोर से नरसिंगा फूँकना। देश का कोना-कोना नरसिंगे की आवाज़ से गूँज उठे। 10 तुम 50वें

अध्य. 24

1 उत 9:6; निर्ग 21:12; गि 35:31; व्य 19:11-13
2 निर्ग 21:23, 24
3 व्य 19:21; मत 5:38
4 निर्ग 22:1
5 उत 9:6; निर्ग 21:12
6 निर्ग 12:49; लैव 17:10; लैव 19:34; गि 9:14; गि 15:16
7 गि 15:33, 36; व्य 17:7

दूसरा कॉल.

अध्य. 25

1 उत 15:16
2 लैव 26:34; 2इत 36:20, 21
3 निर्ग 23:10, 11
4 लैव 16:30; लैव 23:27, 28

साल को पवित्र मानना और देश के सभी
निवासियों के लिए छुटकारे का ऐलान
करना।[1] तुम सबके लिए 50वाँ साल
छुटकारे का साल होगा। उस साल तुममें
से हर किसी को उसकी बेची हुई जायदाद
लौटा दी जाएगी। हर कोई अपने परिवार
के पास लौट जाए।[2] **11** तुम्हारे लिए
50वाँ साल छुटकारे का साल होगा। उस
साल तुम ज़मीन पर न बीज बोना
और न ही पिछली फसल की कटाई के
बचे दानों से उगनेवाले अनाज की कटाई
करना। और अंगूरों के बाग से, जिसकी
छँटाई नहीं की जाती, अंगूर मत बटोर-
ना[3] **12** क्योंकि 50वाँ साल छुटकारे
का साल है। तुम उसे पवित्र साल मानना।
उस साल तुम सिर्फ वे चीज़ें खा सकते हो
जो ज़मीन पर अपने आप उगती हैं।[4]

13 इस छुटकारे के साल के दौरान
तुममें से हर किसी को अपनी बेची हुई
जायदाद लौटा दी जाएगी।[5] **14** जब
तुम अपने संगी-साथी को कुछ बेचते
हो या उससे कुछ खरीदते हो, तो उसके
साथ बेईमानी करके उसका फायदा न
उठाना।[6] **15** जब तुम अपने संगी-
साथी से ज़मीन खरीदते हो तो तुम यह
गिनना कि छुटकारे के साल को बीते
अब कितने साल हो गए हैं। और
बेचनेवाले को देखना चाहिए कि छुट-
कारे का साल आने में अब कितने साल
बाकी हैं जिनके दौरान फसल की पैदावार
होगी। फिर उतने सालों की पैदावार के
हिसाब से उसे कीमत लगाकर तुम्हें बेचना
चाहिए।[7] **16** अगर छुटकारे का साल
आने में बहुत साल बाकी हैं तो बेचनेवाला
कीमत बढ़ा सकता है, लेकिन अगर थोड़े
ही साल बाकी हैं तो उसे कम कीमत में
बेचना चाहिए, क्योंकि दरअसल वह तुम्हें
वह फसल बेच रहा है जो बचे हुए सालों
के दौरान उगेगी। **17** तुममें से कोई भी
अपने संगी-साथी के साथ बेईमानी करके
उसका फायदा न उठाए।[1] तुम अपने पर-
मेश्वर का डर मानना[2] क्योंकि मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूँ।[3] **18** अगर तुम
मेरी विधियाँ मानोगे और मेरे न्याय-
सिद्धांतों का पालन किया करोगे तो तुम
देश में महफूज़ बसे रहोगे।[4] **19** ज़मीन
से तुम्हें अच्छी पैदावार मिलेगी,[5] तुम्हें
खाने की कोई कमी नहीं होगी और तुम
महफूज़ बसे रहोगे।[6]

20 लेकिन शायद तुम कहो, "अगर
हम सातवें साल बीज नहीं बोएँगे और
फसल नहीं काटेंगे तो खाएँगे क्या?"[7]
21 मैं छठे साल ज़मीन पर आशीषों
की बौछार करूँगा, इसलिए उस साल
इतनी ज़्यादा पैदावार होगी कि यह तीन
साल तक तुम्हारे पास भरपूर होगी।[8]
22 आठवें साल तुम बीज बोओगे और
नौवें साल तक पुरानी फसल का अनाज
खाओगे। नयी फसल की उपज मिलने
तक तुम पुरानी फसल का ही अनाज
खाओगे।

23 देश की कोई भी ज़मीन हमेशा के
लिए किसी और को न बेची जाए[9] क्योंकि
देश की सारी ज़मीन मेरी है।[10] और तुम
मेरी नज़र में इस देश में परदेसी और
प्रवासी हो।[11] **24** पूरे देश में हर किसी
को यह हक दिया जाए कि अगर वह
कभी अपनी ज़मीन बेच देता है तो उसे
दोबारा खरीदकर वापस पा सकता है।

25 अगर तुम्हारा कोई इसराएली
भाई गरीबी में पड़ जाए और मज-
बूरी में उसे अपनी कुछ ज़मीन बेचनी
पड़े, तो उसके किसी नज़दीकी रिश्तेदार
को उसका छुड़ानेवाला बनना होगा और
उसकी बिकी हुई ज़मीन वापस खरीद-
नी होगी।[12] **26** अगर एक आदमी का

अध्य. 25

1 यश 61:1, 2; लूक 4:18, 19; रोम 8:20, 21
2 लैव 27:24; गि 36:4; व्य 15:1
3 लैव 25:5
4 निर्ग 23:11; लैव 25:6
5 लैव 25:29, 30; लैव 27:24
6 1शम 12:3; नीत 14:31
7 लैव 27:18

दूसरा कॉल.

1 लैव 19:13; नीत 22:22
2 लैव 25:43; नीत 1:7; नीत 8:13
3 यश 33:22
4 व्य 12:10; भज 4:8; नीत 1:33
5 भज 67:6
6 लैव 26:3-5
7 लैव 25:4, 5; मत 6:25
8 उत 26:12; व्य 28:8; मला 3:10
9 1रा 21:3
10 भज 24:1
11 1इत 29:15
12 रूत 2:20; रूत 4:4-6

कोई छुड़ानेवाला नहीं है, मगर उसने
इतनी दौलत कमा ली है कि वह खुद
अपनी ज़मीन वापस खरीद सकता है,
27 तो उसे कीमत देकर अपनी ज़मीन
वापस खरीदनी चाहिए। उसे गिनना
चाहिए कि उसकी ज़मीन की बिक्री के
बाद अब तक कितने साल बीते हैं और
इन सालों की पैदावार की कीमत उस
कीमत से घटा देनी चाहिए जो उसे ज़मीन
बेचने पर मिली थी। फिर बची हुई रकम
देकर उसे अपनी ज़मीन वापस खरीद
लेनी चाहिए।[1]

28 लेकिन अगर एक आदमी के पास
अपनी ज़मीन वापस पाने का कोई रास्ता
नहीं है, तो छुटकारे के साल तक ज़मीन
उस आदमी की रहेगी जिसने खरीद ली
है।[2] फिर छुटकारे के साल, ज़मीन उसके
असली मालिक को यानी उस आदमी को
लौटा दी जाएगी जिसने बेची थी।[3]

29 अगर एक आदमी का घर शहर-
पनाहवाले नगर में है और वह उसे
बेचता है तो बेचने के बाद वह एक
साल के अंदर उसे वापस खरीद सकता
है। पूरे एक साल तक उसके पास अपना
घर वापस खरीदने का हक रहेगा।[4]
30 लेकिन अगर पूरे साल के बीतने
तक वह शहरपनाहवाले नगर में अपना
घर वापस नहीं खरीदता तो घर पीढ़ी-
दर-पीढ़ी हमेशा के लिए उस आदमी का
हो जाएगा जिसने खरीदा है। छुटकारे के
साल वह घर उस आदमी को वापस न
दिया जाए जिसने बेचा था। **31** लेकिन
अगर एक आदमी का घर शहरपनाह-
वाले नगर में नहीं, बल्कि एक खुली बस्ती
में है तो उसका घर खेत का हिस्सा माना
जाएगा। अगर वह अपना घर बेचता है
तो उसके पास उसे वापस खरीदने का हक
रहेगा। और अगर वह नहीं खरीद पाता
तो छुटकारे के साल उसे वापस दे दिया
जाए।

32 जहाँ तक लेवियों के घरों की बात
है जो उनके शहरों में हैं,[1] वे उन्हें बेचने के
बाद कभी-भी वापस खरीद सकते हैं। यह
हक उनके पास हमेशा के लिए रहेगा।
33 अगर एक लेवी शहर में अपना बेचा
हुआ घर वापस नहीं खरीदता, तो छुट-
कारे के साल उसे वह घर वापस दे
दिया जाएगा[2] क्योंकि इसराएलियों के
बीच लेवियों के शहरों में जितने भी मकान
हैं, वे लेवियों की अपनी जायदाद हैं।[3]
34 मगर किसी लेवी को अपने शहरों के
आस-पास के चरागाह की कोई भी ज़मीन
नहीं बेचनी चाहिए,[4] क्योंकि यह लेवियों
की हमेशा की जागीर है।

35 अगर तुम्हारे आस-पास रहने-
वाला कोई इसराएली भाई गरीबी में पड़
जाता है और अपना गुज़ारा नहीं कर
पाता, तो तुम उसकी मदद करना[5] जैसे
तुम अपने बीच रहनेवाले परदेसी और
प्रवासी[6] की मदद करते ताकि वह तुम्हारे
बीच ही रहकर अपना गुज़र-बसर कर
सके। **36** तुम ऐसे गरीब भाई से ब्याज
मत लेना या उसका फायदा उठाकर
मुनाफा मत कमाना।[7] तुम अपने पर-
मेश्वर का डर मानना[8] ताकि तुम्हारा भाई
तुम्हारे बीच ही रहकर अपना गुज़र-बसर
कर सके। **37** जब तुम उसे पैसा उधार
देते हो तो ब्याज न लेना[9] या तुम उसे जो
खाना देते हो उससे मुनाफा मत कमाना।
38 मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं
तुम्हें मिस्र से निकालकर कनान ले जा
रहा हूँ[10] ताकि यह साबित करूँ कि मैं
तुम्हारा परमेश्वर हूँ।[11]

39 अगर तुम्हारे आस-पास रहने-
वाला कोई इसराएली भाई गरीबी में पड़
जाता है और मजबूर होकर खुद को

अध्य. 25
1 लैव 25:50
2 लैव 27:24
3 लैव 25:10, 13
4 लैव 25:25-27

दूसरा कॉल.
1 गि 35:2, 8
2 लैव 25:28
3 गि 18:20
गि 35:2, 4
व्य 18:1
4 गि 35:7
यह 14:4
5 व्य 15:7
भज 41:1
भज 112:5
नीत 3:27
नीत 19:17
मर 14:7
प्रेष 11:29
1ती 6:18
1यूह 3:17
6 निर्ग 22:21
निर्ग 23:9
लैव 19:34
व्य 10:18
7 निर्ग 22:25
व्य 23:19
भज 15:5
नीत 28:8
8 नीत 8:13
9 व्य 23:20
लूक 6:34, 35
10 निर्ग 20:2
1रा 8:51
11 निर्ग 6:7

तुम्हारे हाथ बेच देता है,[1] तो तुम उससे
वैसे काम न करवाना जैसे तुम एक
दास से करवाते हो।[2] **40** तुम उससे
उतना ही काम लेना जितना तुम दिहाड़ी
के मज़दूर से या एक प्रवासी से लेते हो।[3]
वह छुटकारे के साल तक तुम्हारे यहाँ
काम करेगा। **41** उसके बाद वह अपने
बाल-बच्चों* को लेकर तुम्हारे यहाँ से
अपने रिश्तेदारों के पास लौट जाएगा।
उसे अपने पुरखों की ज़मीन पर रहने के
लिए लौट जाना चाहिए।[4] **42** क्योंकि
इसराएली दरअसल मेरे दास हैं जिन्हें मैं
मिस्र से बाहर निकाल लाया हूँ।[5] उन्हें
खुद को किसी के हाथ बेचकर उसका दास
नहीं बनना चाहिए। **43** तुम उस इस-
राएली भाई के साथ बेरहमी से मत
पेश आना[6] और अपने परमेश्वर का डर
मानना।[7] **44** तुम्हारे यहाँ जो भी दास-
दासियाँ होंगे वे आस-पास की दूसरी
जातियों से होने चाहिए। तुम उन जातियों
के लोगों से दास-दासियाँ खरीद सकते
हो। **45** उसी तरह, जो परदेसी तुम्हारे
यहाँ बस जाते हैं, उनसे और उनकी
संतान के परिवारों से तुम दास खरीद
सकते हो।[8] वे तुम्हारी जागीर हो जाएँगे।
46 तुम ये दास विरासत में अपने बेटों
को दे सकते हो ताकि वे तुम्हारे बाद
तुम्हारी संतान की हमेशा की जागीर हो
जाएँ। तुम इन लोगों से दासों की तरह
काम ले सकते हो, मगर अपने इसराएली
भाइयों पर अत्याचार मत करना।[9]

47 अगर तुम्हारे बीच रहनेवाला कोई
परदेसी या प्रवासी बहुत दौलतमंद हो
जाता है और तुम्हारा कोई इसराएली भाई
गरीबी की वजह से खुद को उस प्रवासी
या परदेसी या उसके किसी रिश्तेदार के
हाथ बेच देता है, **48** तो उस इस-
राएली के पास वापस खरीदे जाने और
छुड़ाए जाने का हक होगा। उसका कोई
सगा भाई उसे वापस खरीदकर छुड़ा
सकता है,[1] **49** या उसका चाचा या
चचेरा भाई या उसके घराने का कोई नज़-
दीकी रिश्तेदार* उसे वापस खरीदकर
छुड़ा सकता है।

या अगर वह इसराएली खुद दौलत-
मंद हो जाता है तो वह अपनी कीमत अदा
करके छूट सकता है।[2] **50** इसराएली
को उस खरीदार के साथ मिलकर हिसाब
लगाना चाहिए कि जिस साल उसने खुद
को बेचा था तब से छुटकारे के साल तक
कितने साल होंगे।[3] और उतने सालों के
लिए उसे जो मज़दूरी मिलती वही उसकी
बिक्री की कीमत होगी।[4] उसकी मज़-
दूरी दिहाड़ी के मज़दूर को दी जाने-
वाली मज़दूरी के हिसाब से तय होगी।[5]
51 अगर छुटकारे के साल के लिए बहुत
ज़्यादा साल बचे हैं तो उसे उन बचे हुए
सालों के हिसाब से कीमत देकर खुद को
छुड़ाना चाहिए। **52** उसी तरह, अगर
छुटकारे के साल के लिए बहुत कम साल
बचे हैं तो उसे उन बचे हुए सालों के हिसाब
से कीमत देकर खुद को छुड़ाना चाहिए।
53 उसे साल-दर-साल एक दिहाड़ी के
मज़दूर की तरह खरीदार के यहाँ काम
करना होगा। और तुम ध्यान रखना कि
उसका खरीदार उसके साथ बेरहमी से पेश
न आए।[6] **54** लेकिन अगर एक इस-
राएली इन शर्तों के मुताबिक कीमत अदा
करके खुद को छुड़ा नहीं सकता, तो छुट-
कारे के साल[7] वह और उसके बच्चे* छूट
जाएँगे।

55 इसराएली मेरे दास हैं। हाँ, ये मेरे
दास हैं जिन्हें मैं मिस्र से बाहर

अध्य. 25
1 निर्ग 21:2; व्य 15:12
2 1रा 9:22
3 लैव 25:53
4 निर्ग 21:3; लैव 25:10
5 निर्ग 1:13, 14; निर्ग 19:5; लैव 25:55
6 निर्ग 3:7; इफ 6:9; कुल 4:1
7 लैव 25:17; सभ 12:13
8 निर्ग 12:38; यह 9:21
9 लैव 25:39, 43

दूसरा कॉल.
1 लैव 25:25
2 लैव 25:26, 27
3 लैव 25:10
4 लैव 25:15, 16
5 व्य 15:18
6 लैव 25:40, 43; कुल 4:1
7 निर्ग 21:3

25:41 *शा., "बेटों।"

25:49 *या "जिसके साथ उसका खून का रिश्ता हो।" **25:54** *शा., "बेटे।"

निकाल लाया हूँ।[1] मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

26 तुम अपने लिए निकम्मे देवता न बनाना,[2] न ही पूजा के लिए मूरत तराशना[3] या पूजा-स्तंभ खड़े करना। और अपने देश में कोई नक्काशीदार पत्थर[4] खड़ा करके उसके आगे दंडवत न करना,[5] क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 2 तुम मेरे सब्तों को मानना और मेरे पवित्र-स्थान का गहरा आदर करना।* मैं यहोवा हूँ।

3 अगर तुम मेरी विधियों पर चलते रहोगे, मेरी आज्ञाओं का पालन करते रहोगे और उनके मुताबिक चलोगे,[6] 4 तो मैं तुम्हारे लिए वक्त पर बारिश कराऊँगा[7] और देश की ज़मीन पैदावार देगी[8] और मैदान के पेड़ फल दिया करेंगे। 5 तुम्हें इतनी भरपूर फसल मिलेगी कि अनाज का दाँवना अंगूरों की कटाई के मौसम तक चलता रहेगा। और अंगूरों की इतनी पैदावार होगी कि उनकी कटाई खेतों में बीज बोने के मौसम तक चलती रहेगी। तुम्हें रोटी की कोई कमी नहीं होगी और तुम अपने देश में महफ़ूज़ बसे रहोगे।[9] 6 मैं इस देश को शांति दूँगा[10] और तुम चैन की नींद सो पाओगे, कोई तुम्हें नहीं डराएगा।[11] मैं देश से खूँखार जंगली जानवरों को दूर कर दूँगा और कोई भी तलवार लेकर तुम्हारे देश पर हमला नहीं करेगा। 7 तुम बेशक अपने दुश्मनों को खदेड़ दोगे और वे तलवार से मारे जाएँगे। 8 चाहे दुश्मन 100 हों, उन्हें मार भगाने के लिए तुम्हारे पाँच आदमी काफी होंगे। चाहे दुश्मन 10,000 हों, उन्हें मार भगाने के लिए तुम्हारे 100 आदमी काफी होंगे। तुम्हारे दुश्मन तलवार से मारे जाएँगे।[1]

9 मैं तुम्हें आशीष दूँगा जिससे तुम फलोगे-फूलोगे और तुम्हारी गिनती कई गुना बढ़ जाएगी।[2] मैं अपना वह करार निभाऊँगा जो मैंने तुम्हारे साथ किया है।[3] 10 तुम पिछली फसल का अनाज खाकर खत्म नहीं कर पाओगे कि तुम्हें नयी फसल का अनाज रखने के लिए पुराना अनाज खाली करना पड़ेगा। 11 मैं तुम्हारे बीच अपना पवित्र डेरा खड़ा करूँगा[4] और मैं तुम्हें नहीं ठुकराऊँगा। 12 मैं तुम्हारे बीच चलूँगा-फिरूँगा और तुम्हारा परमेश्वर बना रहूँगा[5] और तुम भी मेरे लोग बने रहोगे।[6] 13 मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुम्हें मिस्र से बाहर निकाल लाया ताकि तुम मिस्रियों की और गुलामी न करो। मैंने तुम्हारी गुलामी का जुआ तोड़ डाला ताकि तुम सिर उठाकर जी सको।*

14 लेकिन अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगे, इन सारी आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे,[7] 15 मेरी विधियों को ठुकरा दोगे[8] और मेरे न्याय-सिद्धांतों से घिन करके मेरी आज्ञाओं के खिलाफ जाओगे और मेरा करार तोड़ दोगे,[9] 16 तो मैं तुम्हें ज़रूर इसकी सज़ा दूँगा। मैं तुम पर मुसीबतों का कहर ढा दूँगा और तुम्हें तपेदिक और तेज़ बुखार से पीड़ित करूँगा जिससे तुम आँखों की रौशनी खो बैठोगे और घुल-घुलकर मर जाओगे। तुम खेत में बीज तो बोओगे, मगर उसकी उपज नहीं खा सकोगे क्योंकि दुश्मन आकर तुम्हारी उपज चट कर जाएँगे।[10] 17 मैं तुम्हें ठुकरा दूँगा, इसलिए तुम अपने दुश्मनों से हार जाओगे।[11]

26:2 *शा., "डर मानना।"

26:13 *शा., "और तुम्हें सीधा खड़ा करके चलाया।"

अध्य. 25
1 निर्ग 20:2
लैव 25:42

अध्य. 26
2 निर्ग 20:4
लैव 19:4
प्रेष 17:29
1कुर 8:4
3 व्य 5:8
4 गि 33:52
5 दान 3:18
1कुर 10:14
6 व्य 11:13-15
सभ 12:13
7 व्य 28:12
यश 30:23
यहे 34:26
योए 2:23
8 भज 67:6
भज 85:12
9 लैव 25:18
10 1इत 22:9
भज 29:11
हाग 2:9
11 मी 4:4

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:7
यह 23:10
न्या 7:15, 16
न्या 15:15, 16
1इत 11:20
2 व्य 28:4
3 निर्ग 6:4
4 निर्ग 25:8
यहे 37:26
प्रक 21:3
5 व्य 23:14
6 निर्ग 6:7
2कुर 6:16
7 व्य 28:15
8 2रा 17:15
9 निर्ग 24:7
व्य 31:16
इब्र 8:9
10 व्य 28:22, 33
न्या 6:3
11 व्य 28:15, 25
न्या 2:14
1शम 4:10

तुम्हारे विरोधी आकर तुम्हें पैरों तले रौंद डालेंगे।[1] चाहे तुम्हारा पीछा करनेवाला कोई न हो, फिर भी तुम भागोगे।[2]

18 अगर इतना कुछ भुगतने के बाद भी तुम मेरी बात नहीं मानोगे, तो मुझे तुम्हारे पापों के लिए तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा देनी पड़ेगी। 19 मैं तुम्हारी ढिठाई और घमंड चूर-चूर कर दूँगा और तुम्हारे ऊपर के आसमान को लोहे जैसा[3] और तुम्हारे देश की धरती को ताँबे जैसी बना दूँगा। 20 तुम खेती-बाड़ी और बागबानी में चाहे मेहनत करते-करते पस्त हो जाओ, फिर भी तुम्हारी ज़मीन उपज नहीं देगी,[4] न खेतों से कुछ पैदावार होगी और न ही तुम्हारे पेड़ों पर कोई फल लगेगा।

21 अगर तुम मेरे खिलाफ काम करते रहोगे और मेरी बात मानने से इनकार कर दोगे, तो मुझे तुम्हारे पापों के हिसाब से तुम पर सात गुना ज़्यादा कहर ढाना होगा। 22 मैं तुम्हारे बीच जंगली जानवर छोड़ दूँगा[5] जो तुम्हारे बच्चों को तुमसे हमेशा के लिए छीन लेंगे[6] और तुम्हारे पालतू जानवरों को फाड़ खाएँगे। तुम्हारी गिनती कम हो जाएगी और सड़कें सुनसान हो जाएँगी।[7]

23 इतना कुछ होने के बाद भी अगर तुम नहीं सुधरोगे[8] और मेरे खिलाफ काम करने की ज़िद पर अड़े रहोगे, 24 तो मैं भी तुम्हारे खिलाफ हो जाऊँगा और तुम्हारे पापों के लिए तुम पर सात बार कहर ढाऊँगा। 25 तुम जब मेरा करार तोड़ोगे,[9] तो उसका बदला चुकाने के लिए मैं तुम पर तलवार चलवाऊँगा। अगर तुम लोग अपनी जान बचाकर शहरों में भाग जाओगे तो मैं वहाँ तुम्हारे बीच बीमारी फैला दूँगा[10] और तुम्हें किसी दुश्मन के हाथ कर दूँगा।[11] 26 मैं तुम्हारे यहाँ खाने की ऐसी तंगी फैला दूँगा*[1] कि दस औरतों के रोटी सेंकने के लिए एक तंदूर काफी होगा और तुम्हें रोटी तौल-तौलकर बाँटी जाएगी।[2] तुम रोटी खाओगे तो सही, मगर तुम्हारी भूख नहीं मिटेगी।[3]

27 इतना कुछ होने के बाद भी अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगे और मेरे खिलाफ काम करने की ज़िद पर अड़े रहोगे, 28 तो मैं तुम्हारा और भी कड़ा विरोध करूँगा।[4] और मुझे तुम्हारे पापों के लिए तुम्हें सात बार सज़ा देनी पड़ेगी। 29 तुम पर ऐसी नौबत आएगी कि तुम अपने ही बेटे-बेटियों का माँस खाओगे।[5] 30 तुमने पूजा के लिए जितनी भी ऊँची जगह बनायी होंगी वे सब मैं ढा दूँगा[6] और तुम्हारे धूप-स्तंभों को तोड़ डालूँगा। मैं तुम्हारी बेजान घिनौनी मूरतों* के ढेर पर तुम्हारी लाशों का ढेर लगा दूँगा।[7] मुझे तुमसे इतनी घिन हो जाएगी कि मैं तुमसे अपना मुँह फेर लूँगा।[8] 31 मैं तुम्हारे शहरों को तलवार के हवाले कर दूँगा[9] और तुम्हारे पवित्र-स्थान उजाड़ दूँगा। मैं तुम्हारे बलिदानों की सुगंध नहीं लूँगा। 32 मैं तुम्हारे देश को ऐसा वीरान कर दूँगा[10] कि जब तुम्हारे दुश्मन आकर वहाँ बसेंगे तो देश की हालत देखकर दंग रह जाएँगे।[11] 33 मैं तुम्हें दूसरे राष्ट्रों में बिखरा दूँगा[12] और म्यान से अपनी तलवार निकाले तुम्हारा पीछा करूँगा।[13] तुम्हारा देश वीरान कर दिया

अध्य. 26
1 भज 106:41, विल 1:5
2 लैव 26:36
3 व्य 11:17, 1रा 17:1
4 यिर्म 12:13, हाग 1:6, 10
5 व्य 32:24, यिर्म 15:3
6 यहे 5:17
7 न्या 5:6, यश 33:8, जक 7:14
8 यश 1:16, यिर्म 2:30, यिर्म 5:3
9 निर्ग 24:7
10 व्य 28:21, यिर्म 24:10, आम 4:10
11 न्या 2:14, 1शम 4:10

दूसरा कॉल.
1 यहे 5:16
2 यहे 4:16
3 यश 9:20, मी 6:14, हाग 1:6
4 यिर्म 21:5
5 व्य 28:53, 2रा 6:29, यिर्म 19:9, विल 4:10, यहे 5:10
6 2इत 34:3, यश 27:9
7 1रा 13:2, 2रा 23:8, 20, यहे 6:5
8 भज 78:58, 59
9 2रा 25:9, 10, 2इत 36:17, नहे 2:3, यश 1:7, यिर्म 4:7
10 यिर्म 9:11
11 व्य 28:37, व्य 29:22-24, यिर्म 18:16, विल 2:15, यहे 5:15
12 भज 44:11
13 यिर्म 9:16, यहे 12:14

26:26 *शा., "तुम्हारी रोटी के छड़ तोड़ दूँगा।" शायद यहाँ रोटी लटकानेवाले छड़ों की बात की गयी है। **26:30** *इनका इब्रानी शब्द शायद "मल" के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

जाएगा[1] और सारे शहर तबाह कर दिए जाएँगे।

34 जितने समय तक तुम दुश्मनों के देश में रहोगे और तुम्हारा देश सुनसान पड़ा रहेगा, उतने समय तक देश उन सारे सब्तों का कर्ज़ चुकाएगा जो उसने तब तक नहीं मनाए होंगे। उस दौरान देश को विश्राम मिलेगा* क्योंकि उसे वे सारे सब्त मनाने होंगे जो उसने तब तक नहीं मनाए।[2] **35** जितने समय तक देश उजाड़ पड़ा रहेगा उतने समय तक उसे विश्राम मिलेगा क्योंकि तुमने वहाँ रहते वक्त सब्त नहीं मनाए जिसकी वजह से उसे विश्राम नहीं मिला था।

36 तुममें से जो लोग ज़िंदा बचेंगे[3] और दुश्मनों के देश में रहेंगे, उनके दिलों में मैं डर पैदा कर दूँगा। वे पत्ते की ज़रा-सी खड़खड़ाहट पर भी डर जाएँगे और ऐसे भागेंगे मानो कोई तलवार लिए उनका पीछा कर रहा हो। भले ही कोई उनका पीछा न कर रहा हो, फिर भी वे भागते-भागते गिर पड़ेंगे।[4] **37** वे ठोकर खाकर एक-दूसरे पर गिर पड़ेंगे मानो कोई तलवार लिए उनका पीछा कर रहा हो, जबकि असल में उनका पीछा करनेवाला कोई न होगा। तुम अपने दुश्मनों का मुकाबला नहीं कर पाओगे।[5] **38** तुम दूसरे राष्ट्रों के बीच रहते हुए नाश हो जाओगे[6] और तुम्हारे दुश्मनों का देश तुम्हें निगल जाएगा। **39** तुममें से जो ज़िंदा बचेंगे उन्हें मैं उनके गुनाहों की वजह से दुश्मनों के देश में सड़ने के लिए छोड़ दूँगा।[7] हाँ, वे अपने पुरखों के गुनाहों की वजह से[8] सड़-गल जाएँगे। **40** तब वे कबूल करेंगे कि उन्होंने और उनके पुरखों ने पाप किया है[9] और मेरे खिलाफ जाकर मेरे साथ विश्वासघात किया है।[1] **41** इस वजह से मैं भी उनके खिलाफ हो गया[2] और मैंने उन्हें दुश्मनों के देश में भेज दिया।[3]

मैंने ऐसा इसलिए किया ताकि उनका ढीठ* मन नम्र हो जाए[4] और वे अपने गुनाहों का कर्ज़ चुकाएँ। **42** तब मैं अपना वह करार याद करूँगा जो मैंने याकूब,[5] इसहाक[6] और अब्राहम[7] से किया था। और मैं देश की हालत पर ध्यान दूँगा। **43** जितने समय तक लोग देश में नहीं होंगे और देश वीरान रहेगा, उतने समय तक देश सब्तों का कर्ज़ चुकाएगा[8] और वे अपने गुनाहों की सज़ा भुगतेंगे क्योंकि उन्होंने मेरे न्याय-सिद्धांत ठुकरा दिए और मेरी विधियों से घिन की।[9] **44** मगर जब वे दुश्मनों के देश में होंगे तब मैं उन्हें पूरी तरह नहीं ठुकराऊँगा,[10] न ही उनसे ऐसी घिन करूँगा कि उनका सर्वनाश कर डालूँ क्योंकि ऐसा करने से मैं खुद अपना करार तोड़नेवाला ठहरूँगा[11] जो मैंने उनके साथ किया था। मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ। **45** मैं उनकी खातिर वह करार याद रखूँगा जो मैंने उनके पुरखों से किया था,[12] जिन्हें मैं दूसरी जातियों के देखते मिस्र से बाहर ले आया था[13] ताकि मैं खुद को उनका परमेश्वर साबित करूँ। मैं यहोवा हूँ।'"

46 यहोवा ने सीनै पहाड़ पर मूसा के ज़रिए इसराएलियों को ये सारे नियम, न्याय-सिद्धांत और कानून दिए।[14]

27 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, **2** "इसराएलियों से कहना, 'अगर एक आदमी किसी इंसान के लिए तय कीमत यहोवा को देने की खास मन्नत मानता है[15] तो ऐसे मामलों में यह रकम

अध्य. 26
1 जक 7:14
2 2इत 36:20, 21
3 यश 24:6
4 लैव 26:17; यश 30:17
5 यह 7:12; न्या 2:14; यिर्म 37:10
6 व्य 4:27; व्य 28:48; यिर्म 42:17
7 व्य 28:65
8 निर्ग 20:5; गि 14:18
9 1रा 8:33; नहे 9:2; यहे 6:9; दान 9:5

दूसरा कॉल.
1 यहे 36:31
2 लैव 26:24
3 1रा 8:47; 2इत 36:20
4 व्य 30:6; यिर्म 4:4; प्रेष 7:51
5 उत 28:13
6 उत 26:3
7 उत 12:7; व्य 4:31; भज 106:45
8 लैव 26:34; 2इत 36:20, 21
9 2रा 17:15
10 व्य 4:31; 2रा 13:23; नहे 9:31
11 व्य 4:13; यिर्म 14:21
12 निर्ग 24:3, 8; व्य 9:9
13 यहे 20:9
14 लैव 27:34; व्य 6:1

अध्य. 27
15 व्य 23:21; न्या 11:30, 31; 1शम 1:11

26:34 * या "सब्त मनाएगा।"

26:41 * शा., "खतनारहित।"

दी जानी चाहिए: **3** 20 से 60 साल के
आदमियों की तय कीमत पवित्र-स्थान के
शेकेल* के मुताबिक 50 शेकेल# चाँदी
होगी। **4** मगर इस उम्र की औरतों की
तय कीमत 30 शेकेल होगी। **5** 5 से
20 साल की उम्र के लड़कों की तय
कीमत 20 शेकेल और लड़कियों की
कीमत 10 शेकेल होगी। **6** एक महीने
से लेकर पाँच साल के लड़कों की तय
कीमत पाँच शेकेल चाँदी और लड़कियों
की कीमत तीन शेकेल चाँदी होगी।

7 जिन आदमियों की उम्र 60 साल
या उससे ज़्यादा है उनकी तय कीमत
15 शेकेल और इस उम्र की औरतों
की कीमत 10 शेकेल होगी। **8** अगर
मन्नत माननेवाला गरीब होने की वजह
से तय कीमत नहीं दे सकता[1] तो वह उस
इंसान को याजक के सामने खड़ा कर-
वाएगा जिसे देने की उसने मन्नत मानी
है और याजक उस इंसान की कीमत तय
करेगा। याजक मन्नत माननेवाले आदमी
की हैसियत के हिसाब से कीमत आँकेगा
और उसे बताएगा कि वह कितनी कीमत
दे सकता है।[2]

9 अगर एक आदमी ऐसा कोई जान-
वर देने की मन्नत मानता है जो यहोवा को
अर्पित किया जाता है, तो वह चाहे जो भी
जानवर यहोवा को दे वह पवित्र ठहरेगा।
10 एक बार मन्नत मानने के बाद वह
उस जानवर के बदले ऐसा जानवर नहीं दे
सकता, जो उससे बेहतर है या उसके
जितना अच्छा नहीं है। लेकिन अगर वह
पहलेवाले के बदले दूसरा जानवर देता
है तो उसके दोनों जानवर पवित्र ठहरेंगे।
11 अगर एक आदमी ऐसा अशुद्ध जान-
वर[3] देने की मन्नत मानता है जो यहोवा
को अर्पित नहीं किया जाता, तो वह
अपना जानवर लाकर याजक के सामने
खड़ा करेगा। **12** याजक यह देखकर
कि जानवर अच्छा है या नहीं, उसकी
कीमत तय करेगा। याजक जो कीमत
तय करेगा, वही जानवर की कीमत
होगी। **13** लेकिन अगर वह आदमी
कभी अपना जानवर वापस खरीदना
चाहता है तो उसे जानवर की तय कीमत
के साथ उसका पाँचवाँ हिस्सा जोड़कर
देना होगा।[1]

14 अगर एक आदमी अपना घर
यहोवा को देने के लिए अलग करता है
और उसे पवित्र ठहराता है, तो याजक
यह देखकर कि घर अच्छा है या नहीं,
उसकी कीमत तय करेगा। याजक जो
कीमत तय करेगा, वही घर की कीमत
होगी।[2] **15** लेकिन अगर वह आदमी
कभी अपना घर वापस खरीदना चाहता है
तो उसे घर की तय कीमत के साथ उसका
पाँचवाँ हिस्सा जोड़कर देना होगा। तभी
वह अपना घर वापस पा सकेगा।

16 अगर एक आदमी अपने खेत
की ज़मीन का कोई टुकड़ा यहोवा को
देने के लिए अलग ठहराता है, तो उसकी
कीमत इस हिसाब से आँकी जाएगी कि
उसमें कितना बीज बोया जाता है। एक
होमेर* जौ के बीज के लिए 50 शेकेल
चाँदी देनी होगी। **17** अगर वह छुट-
कारे के साल[3] अपना खेत अलग ठह-
राता है तो उसे तय कीमत ही अदा
करनी होगी। **18** लेकिन अगर एक
आदमी छुटकारे के साल के बाद कभी
अपना खेत अलग ठहराता है, तो याजक
गिनेगा कि अगला छुटकारे का साल
आने में और कितने साल बाकी हैं

अध्य. 27
1 लैव 5:7, 11
लैव 12:8
लैव 14:21
2 लूक 21:2-4
2कुर 8:12
3 लैव 20:25
व्य 14:7, 8

दूसरा कॉल.
1 लैव 27:19
2 लैव 27:11, 12
3 लैव 25:10

27:3 *या "पवित्र शेकेल।" #एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

27:16 *एक होमेर 220 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

और उसके मुताबिक तय कीमत घटाए-
गा।[1] 19 लेकिन अगर वह आदमी
अपना खेत अलग ठहराकर देने के बाद,
कभी उसे वापस खरीदना चाहता है तो
उसे खेत की कीमत के साथ उसका पाँचवाँ
हिस्सा जोड़कर देना होगा। तभी वह खेत
उसका होगा। 20 लेकिन अगर वह
खेत वापस नहीं खरीदता और खेत किसी
और को बेच दिया जाता है, तो बाद में वह
फिर कभी उसे वापस नहीं खरीद सकेगा।
21 छुटकारे के साल वह खेत यहोवा का
हो जाएगा और पवित्र ठहरेगा और उसके
लिए समर्पित चीज़ हो जाएगा। और खेत
की वह ज़मीन याजकों की जायदाद हो
जाएगी।[2]

22 अगर एक आदमी ऐसा खेत
अलग ठहराकर यहोवा को देता है जो
उसकी विरासत की ज़मीन का हिस्सा नहीं
है बल्कि उसने किसी और से खरीदा
है,[3] 23 तो याजक गिनेगा कि छुट-
कारे का साल आने में कितने साल
बाकी हैं, फिर उसके हिसाब से उसकी
कीमत तय करेगा। उस आदमी को यह
रकम उसी दिन देनी होगी जिस दिन
कीमत तय की जाती है।[4] वह रकम
यहोवा के लिए पवित्र चीज़ मानी जाएगी।
24 फिर छुटकारे के साल वह खेत उसके
असली मालिक को यानी उस आदमी
को लौटा दिया जाएगा जिससे खेत खरीदा
गया था।[5]

25 जो भी कीमत तय की जाती है वह
पवित्र-स्थान के शेकेल के मुताबिक होनी
चाहिए। और यह शेकेल 20 गेरा* का
होना चाहिए।

26 मगर किसी को भी जानवरों के
पहलौठों को अलग नहीं ठहराना चाहिए,
क्योंकि वे पहलौठे होने के नाते जन्म से ही
यहोवा के हैं।[1] चाहे वह पहलौठा बैल हो
या भेड़, वह पहले से ही यहोवा का है।[2]
27 अगर एक आदमी अपने अशुद्ध
जानवर के पहलौठे को तय कीमत देकर
छुड़ाना चाहता है तो उसे तय कीमत के
साथ उसका पाँचवाँ हिस्सा भी जोड़कर
देना होगा।[3] लेकिन अगर वह कीमत
देकर अपना जानवर वापस नहीं खरीदता
तो वह जानवर तय कीमत में किसी और
को बेच दिया जाएगा।

28 लेकिन अगर एक आदमी अपना
जानवर, खेत या किसी इंसान को
बिना किसी शर्त के यहोवा के लिए
समर्पित कर देता है* तो उसे वापस नहीं
खरीदा जा सकता, न ही किसी और को
बेचा जा सकता है। जो कुछ यहोवा को
समर्पित किया जाता है वह उसके लिए
बहुत पवित्र है।[4] 29 और ऐसा कोई
इंसान भी नहीं छुड़ाया जा सकता जिसे
मौत की सज़ा सुनायी गयी है और नाश के
लिए अलग ठहराया गया है।[5] ऐसे इंसान
को हर हाल में मार डाला जाए।[6]

30 देश की ज़मीन की उपज का
दसवाँ हिस्सा[7] यहोवा का है, फिर चाहे
यह खेत की पैदावार का दसवाँ हिस्सा
हो या पेड़ों पर लगनेवाले फलों का। यह
यहोवा के लिए पवित्र है। 31 अगर
एक आदमी अपनी उपज का दसवाँ
हिस्सा देने के बाद उसे वापस खरीदना
चाहता है तो उसे उसकी कीमत के साथ
उसका पाँचवाँ हिस्सा जोड़कर देना होगा।
32 तुम गाय-बैलों या भेड़-बकरियों के
हर दस जानवरों में से एक जानवर यहोवा
को देना। चरवाहे की लाठी के नीचे से
जानेवाले जानवरों को गिनते वक्त हर

अध्य. 27
1 लैव 25:15, 16
2 गि 18:8, 14
3 लैव 25:25
4 लैव 27:11, 12; लैव 27:18
5 लैव 25:10, 28

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 13:2; गि 18:17
2 निर्ग 22:30; व्य 15:19
3 लैव 27:11-13
4 गि 18:8, 14
5 गि 21:2
6 यह 6:17; 1शम 15:3, 18
7 उत 14:20; उत 28:22; गि 18:21, 26; व्य 14:22; 2इत 31:5; नहे 13:12; मला 3:10; लूक 11:42; इब्र 7:5

27:25 *एक गेरा 0.57 ग्रा. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

27:28 *या "नाश के लिए समर्पित किया जाता है।"

दसवें जानवर को अलग रखना। झुंड का
यह दसवाँ हिस्सा परमेश्वर के लिए पवित्र
है। **33** एक आदमी को यह नहीं देखना
चाहिए कि उसके दसवें हिस्से के जानवर
अच्छे हैं या नहीं, और न ही उनके बदले
दूसरे जानवर देने चाहिए। अगर वह
कभी एक जानवर के बदले दूसरा जान-
वर देता है तो उसका पहला और दूसरा
जानवर दोनों परमेश्वर के हो जाएँगे और
पवित्र ठहरेंगे।[1] उन्हें वापस नहीं खरीदा
जा सकता।'"

34 यहोवा ने ये सारे नियम इसराए-
लियों के लिए दिए। उसने सीनै पहाड़ पर
मूसा को ये नियम बताए।[2]

दूसरा कॉल.

अध्य. 27

1 लैव 27:9, 10

2 निर्ग 3:1
गि 1:1

गिनती

सारांश

1 सेना के लिए नाम-लिखाई (1-46)
लेवियों को सेना से छूट (47-51)
छावनी डालने का कायदा (52-54)

2 तीन-तीन गोत्रों के दल (1-34)
यहूदा का दल पूरब की तरफ (3-9)
रूबेन का दल दक्षिण की तरफ (10-16)
लेवी की छावनी बीच में (17)
एप्रैम का दल पश्चिम की तरफ (18-24)
दान का दल उत्तर की तरफ (25-31)
आदमियों की कुल गिनती (32-34)

3 हारून के बेटे (1-4)
लेवी सेवा के लिए चुने गए (5-39)
पहलौठों को छुड़ाना (40-51)

4 कहातियों की सेवा (1-20)
गेरशोनियों की सेवा (21-28)
मरारियों की सेवा (29-33)
नाम-लिखाई का निचोड़ (34-49)

5 अशुद्ध लोग छावनी से बाहर (1-4)
पाप कबूल करना और मुआवज़ा (5-10)
व्यभिचार के शक पर पानी से परखना (11-31)

6 नाज़ीर बनने की मन्‍नत (1-21)
याजकों का आशीर्वाद (22-27)

7 पवित्र डेरे के उद्‌घाटन पर चढ़ावे (1-89)

8 हारून ने सात दीए जलाए (1-4)
लेवी शुद्ध किए गए; उनकी सेवा शुरू (5-22)
लेवियों की सेवा के लिए तय उम्र (23-26)

9 देर से फसह मनाने का इंतज़ाम (1-14)
डेरे के ऊपर बादल और आग (15-23)

10 चाँदी की तुरहियाँ (1-10)
सीनै से रवाना हुए (11-13)
पड़ाव उठाने का कायदा (14-28)
होबाब से रास्ता दिखाने की गुज़ारिश (29-34)
पड़ाव उठाते समय मूसा की प्रार्थना (35, 36)

11 शिकायतों की वजह से आग बरसी (1-3)
लोग गोश्‍त के लिए रोए (4-9)
मूसा ने नाकाबिल महसूस किया (10-15)
70 मुखियाओं को पवित्र शक्‍ति मिली (16-25)
एलदाद और मेदाद; यहोशू को मूसा के लिए जलन (26-30)
बटेर भेजे गए; लालच की सज़ा (31-35)

12 मिरयम और हारून ने विरोध किया (1-3)
मूसा, सबसे दीन स्वभाव का (3)
यहोवा ने मूसा की पैरवी की (4-8)
मिरयम को कोढ़ (9-16)

13 12 जासूस कनान भेजे गए (1-24)
10 जासूसों ने गलत खबर दी (25-33)

14 लोगों ने मिस्र लौटना चाहा (1-10)
यहोशू और कालेब ने अच्छी खबर दी (6-9)
यहोवा भड़का; मूसा ने बीच-बचाव किया (11-19)
सज़ा: 40 साल वीराने में (20-38)
इसराएल को अमालेकियों ने हराया (39-45)

15 चढ़ावे के बारे में कानून (1-21)
इसराएलियों और परदेसियों के लिए एक ही कानून (15, 16)
अनजाने में किए पापों के लिए चढ़ावे (22-29)
जानबूझकर किए पापों की सज़ा (30, 31)
सब्त का नियम तोड़नेवाले को मार डाला गया (32-36)
पोशाक के नीचे के घेरे में झालर (37-41)

16 कोरह, दातान और अबीराम की बगावत (1-19)
बागियों को सज़ा दी गयी (20-50)

17 हारून की छड़ी में कलियाँ (1-13)

18 याजकों और लेवियों की ज़िम्मेदारियाँ (1-7)
याजकों को मिलनेवाला हिस्सा (8-19)
नमक का करार (19)
लेवी दसवाँ हिस्सा पाएँगे और देंगे (20-32)

19 लाल गाय; शुद्ध करनेवाला पानी (1-22)

20 कादेश में मिरयम की मौत (1)
मूसा का पाप (2-13)
एदोम ने अपने यहाँ से इसराएल को नहीं जाने दिया (14-21)
हारून की मौत (22-29)

21 अराद के राजा की हार (1-3)
ताँबे का साँप (4-9)
इसराएल ने मोआब के किनारे-किनारे सफर किया (10-20)
एमोरी राजा सीहोन की हार (21-30)
एमोरी राजा ओग की हार (31-35)

22 बिलाम किराए पर बुलाया गया (1-21)
बिलाम की गधी बोली (22-41)

23 बिलाम का पहला संदेश (1-12)
बिलाम का दूसरा संदेश (13-30)

24 बिलाम का तीसरा संदेश (1-11)
बिलाम का चौथा संदेश (12-25)

25 मोआबी औरतों के साथ पाप (1-5)
फिनेहास ने कदम उठाया (6-18)

26 इसराएल के गोत्रों की दूसरी बार गिनती (1-65)

27 सलोफाद की बेटियाँ (1-11)
यहोशू, मूसा के बाद अगुवा ठहराया गया (12-23)

28 चढ़ावे अर्पित करने के तरीके (1-31)
रोज़ के चढ़ावे (1-8)
सब्त के चढ़ावे (9, 10)
हर महीने के चढ़ावे (11-15)
फसह के चढ़ावे (16-25)
कटाई के त्योहार के चढ़ावे (26-31)

29 चढ़ावे अर्पित करने के तरीके (1-40)
तुरही फूँकने के दिन के चढ़ावे (1-6)
प्रायश्चित के दिन के चढ़ावे (7-11)
छप्परों के त्योहार के चढ़ावे (12-38)

30 आदमियों की मन्नतें (1, 2)
औरतों और बेटियों की मन्नतें (3-16)

31 मिद्यान से बदला लिया गया (1-12)
बिलाम मार डाला गया (8)
युद्ध से मिली लूट (13-54)

32 यरदन के पूरब में बस्तियाँ (1-42)

33 वीराने में इसराएल के पड़ाव (1-49)
कनान जीतने के बारे में हिदायतें (50-56)

34 कनान की सरहदें (1-15)
ज़मीन बाँटने के लिए आदमी ठहराए गए (16-29)

35 लेवियों के लिए शहर (1-8)
शरण नगर (9-34)

36 जो लड़कियाँ वारिस बनती हैं उनकी शादी के बारे में नियम (1-13)

1 और इसराएलियों के मिस्र से निकल-
ने के दूसरे साल के दूसरे महीने के
पहले दिन,[1] यहोवा ने सीनै वीराने में
मूसा से बात की।[2] उसने भेंट के तंबू
में मूसा से कहा,[3] **2** “तू हारून को
साथ लेकर इसराएलियों* की पूरी मंडली
की गिनती लेना[4] और हरेक आदमी का
नाम उसके घराने और उसके पिता के
कुल के मुताबिक लिखना। **3** तुम उन
सभी आदमियों का नाम लिखना जिनकी
उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा है[5] और
जो इसराएल की सेना में काम करने के
योग्य हैं। तुम उनके नाम उनके अपने-
अपने दल के मुताबिक लिखना।

4 तू अपने साथ हर गोत्र में से एक
आदमी को लेना, जो अपने पिता के
कुल का मुखिया हो।[6] **5** वे तेरी मदद
करेंगे। उनके नाम ये हैं: रूबेन गोत्र से
एलीसूर[7] जो शदेऊर का बेटा है,
6 शिमोन गोत्र से शलूमीएल[8] जो सूरी-
शद्दै का बेटा है, **7** यहूदा गोत्र से नह-
शोन[9] जो अम्मीनादाब का बेटा है,
8 इस्साकार गोत्र से नतनेल[10] जो ज़ुआर
का बेटा है, **9** जबूलून गोत्र से एली-
आब[11] जो हेलोन का बेटा है,
10 यूसुफ के बेटे एप्रैम के गोत्र से[12]
एलीशामा जो अम्मीहूद का बेटा है और
यूसुफ के दूसरे बेटे मनश्शे के गोत्र
से गमलीएल जो पदासूर का बेटा है,
11 बिन्यामीन गोत्र से अबीदान[13] जो
गिदोनी का बेटा है, **12** दान गोत्र से
अहीएजेर[14] जो अम्मीशद्दै का बेटा है,
13 आशेर गोत्र से पगीएल[15] जो ओक-
रान का बेटा है, **14** गाद गोत्र से एल्या-
साप[16] जो दूएल का बेटा है **15** और
नप्ताली गोत्र से अहीरा[17] जो एनान का
बेटा है। **16** इसराएल की मंडली में से
इन सभी आदमियों को चुना गया है।
ये अपने-अपने पिता के गोत्र के प्रधान[1]
और हज़ारों इसराएलियों से बने अलग-
अलग दल के मुखिया हैं।”[2]

17 तब मूसा और हारून ने उन आद-
मियों को अपने साथ लिया जिन्हें नाम
लेकर चुना गया था। **18** उन्होंने दूसरे
महीने के पहले दिन, इसराएल की
पूरी मंडली को इकट्ठा किया ताकि उसका
हर आदमी, जिसकी उम्र 20 साल
या उससे ज़्यादा है, अपने घराने और
अपने पिता के कुल के मुताबिक अपना
नाम लिखवा सके,[3] **19** ठीक जैसे
यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। इस तरह
मूसा ने सीनै वीराने में उन सबका नाम
लिखा।[4]

20 इसराएल के पहलौठे रूबेन के
बेटों[5] के नाम उनके अपने-अपने घराने
और पिता के कुल के मुताबिक
लिखे गए। जितने आदमियों की उम्र
20 साल या उससे ज़्यादा थी और जो
सेना में काम करने के योग्य थे, उन
सबकी एक-एक करके गिनती ली गयी।
21 रूबेन गोत्र से जिनके नाम लिखे गए,
उनकी गिनती 46,500 थी।

22 शिमोन के वंशजों[6] के नाम उनके
अपने-अपने घराने और पिता के कुल
के मुताबिक लिखे गए। जितने आद-
मियों की उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा
थी और जो सेना में काम करने के योग्य
थे, उन सबकी एक-एक करके गिनती ली
गयी। **23** शिमोन गोत्र से जिनके नाम
लिखे गए, उनकी गिनती 59,300 थी।

24 गाद के वंशजों[7] के नाम उनके
अपने-अपने घराने और पिता के कुल के
मुताबिक लिखे गए। जितने आदमियों की
उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा थी और
जो सेना में काम करने के योग्य थे, उन

1:2 * शा., “इसराएल के बेटों।”

अध्य. 1
1 निर्ग 40:17
2 निर्ग 19:1; प्रेष 7:38
3 निर्ग 25:22
4 निर्ग 30:12
5 निर्ग 30:14
6 निर्ग 18:25; गि 1:16; यह 22:13, 14; यह 23:2; 1इत 27:1
7 गि 2:10
8 गि 7:11, 36
9 रूत 4:20; लूक 3:23, 32
10 गि 10:15
11 गि 7:11, 24
12 उत 48:20
13 गि 2:22
14 गि 7:11, 66
15 गि 7:11, 72
16 गि 2:14; गि 7:11, 42; गि 10:20
17 गि 2:29; गि 10:27

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 18:21; गि 7:2
2 व्य 1:15
3 निर्ग 30:14
4 गि 26:1, 2
5 उत 29:32; गि 2:10, 11
6 उत 29:33; उत 46:10; गि 2:12, 13
7 उत 30:10, 11; उत 46:16; गि 2:14, 15

सबकी गिनती ली गयी। 25 गाद गोत्र
से जिनके नाम लिखे गए, उनकी गिनती
45,650 थी।

26 यहूदा के वंशजों[1] के नाम उनके
अपने-अपने घराने और पिता के कुल के
मुताबिक लिखे गए। जितने आदमियों की
उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा थी और
जो सेना में काम करने के योग्य थे,
उन सबकी गिनती ली गयी। 27 यहूदा
गोत्र से जिनके नाम लिखे गए, उनकी
गिनती 74,600 थी।

28 इस्साकार के वंशजों[2] के नाम
उनके अपने-अपने घराने और पिता के
कुल के मुताबिक लिखे गए। जितने आद-
मियों की उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा
थी और जो सेना में काम करने के
योग्य थे, उन सबकी गिनती ली गयी।
29 इस्साकार गोत्र से जिनके नाम लिखे
गए, उनकी गिनती 54,400 थी।

30 जबूलून के वंशजों[3] के नाम उनके
अपने-अपने घराने और पिता के कुल के
मुताबिक लिखे गए। जितने आदमियों की
उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा थी और
जो सेना में काम करने के योग्य थे,
उन सबकी गिनती ली गयी। 31 जबू-
लून गोत्र से जिनके नाम लिखे गए, उनकी
गिनती 57,400 थी।

32 यूसुफ के जो वंशज एप्रैम से
निकले,[4] उनके नाम उनके अपने-अपने
घराने और पिता के कुल के मुता-
बिक लिखे गए। जितने आदमियों की
उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा थी और
जो सेना में काम करने के योग्य थे, उन
सबकी गिनती ली गयी। 33 एप्रैम गोत्र
से जिनके नाम लिखे गए, उनकी गिनती
40,500 थी।

34 मनश्शे के वंशजों[5] के नाम उनके
अपने-अपने घराने और पिता के कुल के
मुताबिक लिखे गए। जितने आदमियों की
उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा थी और
जो सेना में काम करने के योग्य थे, उन
सबकी गिनती ली गयी। 35 मनश्शे
गोत्र से जिनके नाम लिखे गए, उनकी
गिनती 32,200 थी।

36 बिन्यामीन के वंशजों[1] के नाम
उनके अपने-अपने घराने और पिता के
कुल के मुताबिक लिखे गए। जितने आद-
मियों की उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा
थी और जो सेना में काम करने
के योग्य थे, उन सबकी गिनती ली गयी।
37 बिन्यामीन गोत्र से जिनके नाम लिखे
गए, उनकी गिनती 35,400 थी।

38 दान के वंशजों[2] के नाम उनके
अपने-अपने घराने और पिता के कुल के
मुताबिक लिखे गए। जितने आदमियों की
उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा थी और
जो सेना में काम करने के योग्य थे, उन
सबकी गिनती ली गयी। 39 दान गोत्र
से जिनके नाम लिखे गए, उनकी गिनती
62,700 थी।

40 आशेर के वंशजों[3] के नाम उनके
अपने-अपने घराने और पिता के कुल के
मुताबिक लिखे गए। जितने आदमियों की
उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा थी और
जो सेना में काम करने के योग्य थे, उन
सबकी गिनती ली गयी। 41 आशेर
गोत्र से जिनके नाम लिखे गए, उनकी
गिनती 41,500 थी।

42 नप्ताली के वंशजों[4] के नाम उनके
अपने-अपने घराने और पिता के कुल के
मुताबिक लिखे गए। जितने आदमियों की
उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा थी और
जो सेना में काम करने के योग्य थे, उन
सबकी गिनती ली गयी। 43 नप्ताली
गोत्र से जिनके नाम लिखे गए, उनकी
गिनती 53,400 थी।

अध्य. 1

1 उत 29:35
उत 46:12
गि 2:3, 4
1इत 5:2
मत 1:2
इब्र 7:14

2 उत 30:17, 18
उत 46:13
गि 2:5, 6

3 उत 30:20
गि 2:7, 8

4 उत 41:51, 52
उत 46:20
उत 48:17-19
गि 2:18, 19

5 गि 2:20, 21

दूसरा कॉल.

1 उत 43:29
उत 46:21
गि 2:22, 23

2 उत 30:4-6
उत 46:23
गि 2:25, 26
गि 10:25

3 उत 35:26
गि 2:27, 28

4 उत 30:7, 8
उत 46:24
गि 2:29, 30
गि 26:48

44 मूसा ने हारून और इसराएल के 12 प्रधानों के साथ मिलकर, जो अपने-अपने पिता के कुल के प्रधान थे, इन सभी आदमियों के नाम लिखे। **45** जितने इसराएली आदमियों की उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा थी और जो इसराएल की सेना में काम करने के योग्य थे, उन सबके नाम उनके अपने-अपने पिता के कुल के मुताबिक लिखे गए। **46** जितने आदमियों के नाम लिखे गए उनकी कुल गिनती 6,03,550 थी।[1]

47 मगर लेवियों[2] के नाम उनके अपने-अपने पिता के कुल के मुताबिक नहीं लिखे गए।[3] **48** यहोवा ने मूसा से कहा था, **49** "सिर्फ लेवी गोत्र के आदमियों के नाम न लिखना और न ही उनकी गिनती बाकी इसराएलियों की गिनती में शामिल करना।[4] **50** तू लेवियों को पवित्र डेरे की, जिसमें गवाही का संदूक रखा है[5] और उसकी सारी चीज़ों की ज़िम्मेदारी सौंपना।[6] वे पवित्र डेरे और उसकी सारी चीज़ों को उठाया करेंगे।[7] वे डेरे में सेवा करेंगे[8] और डेरे के चारों तरफ अपने तंबू लगाएँगे।[9] **51** जब भी पवित्र डेरे को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना होगा, तो लेवी उसके अलग-अलग हिस्से खोलेंगे[10] और जब डेरा खड़ा करना होगा, तो वे ही उन्हें दोबारा जोड़कर उसे खड़ा करेंगे। लेवियों के अलावा अगर कोई ऐसा इंसान डेरे के पास आता है, जिसे अधिकार नहीं* तो उसे मार डाला जाए।[11]

52 इसराएलियों के तीन-तीन गोत्रों से बने हर दल के लिए जो जगह ठहरायी गयी है,*[12] ठीक उसी के मुताबिक हर आदमी को अपने दल में अपना तंबू डालना चाहिए। **53** और लेवियों को अपना तंबू पवित्र डेरे के चारों तरफ डालना चाहिए जिसमें गवाही का संदूक रखा है, ताकि इसराएलियों की मंडली पर मेरा क्रोध भड़क न उठे।[1] मेरे पवित्र डेरे की, जिसमें गवाही का संदूक रखा है, देखभाल करने की* ज़िम्मेदारी लेवियों की है।"[2]

54 इसराएल के लोगों ने इन सारी आज्ञाओं का पालन किया जो यहोवा ने मूसा को दी थीं। उन्होंने ठीक वैसा ही किया।

2 फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, **2** "इसराएलियों में से हर आदमी को अपना तंबू उस जगह लगाना चाहिए जो तीन गोत्रों से बने उसके दल के लिए ठहरायी गयी है।[3] उसे अपने पिता के कुल के झंडे* के पास तंबू लगाना चाहिए। इसराएलियों के सभी तंबू भेंट के तंबू के चारों तरफ होने चाहिए और हर तंबू का द्वार भेंट के तंबू की तरफ होना चाहिए।

3 भेंट के तंबू के पूरब की तरफ, जहाँ सूरज उगता है, तीन गोत्रों से बना वह दल छावनी डालेगा जिसके दल का अगुवा यहूदा गोत्र है। यहूदा के बेटों का प्रधान अम्मीनादाब का बेटा नहशोन है।[4] **4** उसकी सेना में 74,600 आदमियों के नाम लिखे गए।[5] **5** यहूदा गोत्र के एक तरफ इस्साकार गोत्र छावनी डालेगा। इस्साकार के बेटों का प्रधान ज़ुआर का बेटा नतनेल है।[6] **6** उसकी सेना में 54,400 आदमियों के नाम लिखे गए।[7] **7** यहूदा गोत्र के दूसरी तरफ जबूलून गोत्र छावनी डालेगा। जबूलून के

1:51 *शा., "जो पराया हो," यानी जो लेवी न हो। **1:52** *या "अपने-अपने झंडे के पास।"

1:53 *या "रक्षा करने की; में सेवा करने की।" **2:2** *या "निशान।"

अध्य. 1
1 उत 13:16, उत 22:17, उत 46:3, निर्ग 38:26, गि 2:32
2 उत 29:34, उत 46:11, गि 3:12
3 गि 2:33, गि 26:63, 64
4 गि 26:62, 63
5 निर्ग 31:18
6 निर्ग 38:21, गि 3:6, 8
7 गि 4:15, गि 4:24-26, गि 4:31-33
8 गि 3:30, 31, गि 4:12
9 गि 2:17, गि 3:23, 29, गि 3:35, 38
10 गि 10:17, 21
11 गि 3:10, गि 18:22
12 गि 2:2, 34

दूसरा कॉल.
1 गि 8:19, गि 18:5
2 गि 8:24, गि 18:2, 3, 1इत 23:32

अध्य. 2
3 गि 1:52
4 गि 7:12, गि 10:14, रूत 4:20, मत 1:4
5 गि 1:27
6 गि 7:11, 18, गि 10:15
7 गि 1:29

बेटों का प्रधान हेलोन का बेटा एलीआब है।[1] **8** उसकी सेना में 57,400 आदमियों के नाम लिखे गए।[2]

9 यहूदा की छावनी में से जितने आदमियों के नाम सेना में लिखे गए उनकी गिनती 1,86,400 है। ये लोग सबसे पहले अपना पड़ाव उठाएँगे।[3]

10 दक्षिण की तरफ तीन गोत्रों से बना वह दल छावनी डालेगा जिसका अगुवा रूबेन गोत्र है।[4] रूबेन के बेटों का प्रधान शदेऊर का बेटा एलीसूर है।[5] **11** उसकी सेना में 46,500 आदमियों के नाम लिखे गए।[6] **12** रूबेन गोत्र के एक तरफ शिमोन गोत्र छावनी डालेगा। शिमोन के बेटों का प्रधान सूरीशद्दै का बेटा शलूमीएल है।[7] **13** उसकी सेना में 59,300 आदमियों के नाम लिखे गए।[8] **14** रूबेन गोत्र के दूसरी तरफ गाद गोत्र छावनी डालेगा। गाद के बेटों का प्रधान रूएल का बेटा एल्यासाप है।[9] **15** उसकी सेना में 45,650 आदमियों के नाम लिखे गए।[10]

16 रूबेन की छावनी में से जितने आदमियों के नाम सेना में लिखे गए उनकी गिनती 1,51,450 है। यह दल पड़ाव उठानेवाला दूसरा दल होगा।[11]

17 जब भेंट का तंबू एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जाएगा,[12] तो लेवियों के दल को बाकी दलों के बीच रहकर चलना होगा।

सब इसराएलियों को उसी कायदे से सफर करना चाहिए जिस कायदे से वे पड़ाव डालते हैं।[13] हरेक को अपनी ठहरायी जगह पर बने रहना चाहिए और तीन गोत्रों के अपने-अपने दल में रहकर ही चलना चाहिए।

18 पश्चिम की तरफ तीन गोत्रों से बना वह दल छावनी डालेगा जिसका अगुवा एप्रैम गोत्र है। एप्रैम के बेटों का प्रधान अम्मीहूद का बेटा एलीशामा है।[1] **19** उसकी सेना में 40,500 आदमियों के नाम लिखे गए।[2] **20** एप्रैम गोत्र के एक तरफ मनश्शे गोत्र[3] छावनी डालेगा। मनश्शे के बेटों का प्रधान पदासूर का बेटा गमलीएल है।[4] **21** उसकी सेना में 32,200 आदमियों के नाम लिखे गए।[5] **22** एप्रैम गोत्र के दूसरी तरफ बिन्यामीन गोत्र छावनी डालेगा। बिन्यामीन के बेटों का प्रधान गिदोनी का बेटा अबीदान है।[6] **23** उसकी सेना में 35,400 आदमियों के नाम लिखे गए।[7]

24 एप्रैम की छावनी में से जिन आदमियों के नाम सेना में लिखे गए उनकी गिनती 1,08,100 है। यह दल पड़ाव उठानेवाला तीसरा दल होगा।[8]

25 उत्तर की तरफ तीन गोत्रों से बना वह दल छावनी डालेगा जिसका अगुवा दान गोत्र है। दान के बेटों का प्रधान अम्मीशद्दै का बेटा अहीएजेर है।[9] **26** उसकी सेना में 62,700 आदमियों के नाम लिखे गए।[10] **27** दान गोत्र के एक तरफ आशेर गोत्र छावनी डालेगा। आशेर के बेटों का प्रधान ओकरान का बेटा पगीएल है।[11] **28** उसकी सेना में 41,500 आदमियों के नाम लिखे गए।[12] **29** दान गोत्र के दूसरी तरफ नप्ताली गोत्र छावनी डालेगा। नप्ताली के बेटों का प्रधान एनान का बेटा अहीरा है।[13] **30** उसकी सेना में 53,400 आदमियों के नाम लिखे गए।[14]

31 दान की छावनी में से जिन आदमियों के नाम लिखे गए उनकी गिनती 1,57,600 है। इसराएल के तीन-तीन गोत्रों से बने दलों में से यह दल सबसे आखिर में अपना पड़ाव उठाएगा।"[15]

अध्य. 2

1 गि 7:11, 24 गि 10:16
2 गि 1:31
3 गि 10:14
4 गि 1:20
5 गि 7:11, 30 गि 10:18
6 गि 1:21
7 गि 7:11, 36 गि 10:19
8 गि 1:23
9 गि 7:11, 42 गि 10:20
10 गि 1:25
11 गि 10:18
12 गि 1:51
13 1कुर 14:33, 40

दूसरा कॉल.

1 गि 7:11, 48 गि 10:22
2 गि 1:33
3 उत 48:20
4 गि 7:11, 54 गि 10:23
5 गि 1:35
6 गि 7:11, 60 गि 10:24
7 गि 1:37
8 गि 10:22
9 गि 7:11, 66 गि 10:25
10 गि 1:39
11 गि 7:11, 72 गि 10:26
12 गि 1:41
13 गि 7:11, 78 गि 10:27
14 गि 1:43
15 गि 10:25

32 इन सभी इसराएलियों के नाम अपने-अपने पिता के कुल के मुताबिक लिखे गए। सभी छावनियों में से जितने आदमियों के नाम सेना में लिखे गए उनकी कुल गिनती 6,03,550 थी।[1] 33 मगर इन इसराएलियों के साथ लेवियों के नाम नहीं लिखे गए,[2] ठीक जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। 34 इसराएलियों ने सबकुछ वैसा ही किया जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। इस तरह सभी इसराएली तीन-तीन गोत्रों के अपने दल और अपने पिता के कुल और अपने घराने के मुताबिक तंबू डालते[3] और उठाते थे।[4]

3 हारून और मूसा के खानदान की जानकारी यह है। यह जानकारी उस समय की है जब यहोवा ने सीनै पहाड़ पर मूसा से बात की थी।[5] 2 हारून के बेटे ये थेः पहलौठा नादाब, फिर अबीहू,[6] एलिआज़र[7] और ईतामार।[8] 3 हारून के इन बेटों का अभिषेक किया गया और याजकों के नाते सेवा करने के लिए उन्हें याजकपद सौंपा गया।*[9] 4 मगर नादाब और अबीहू की यहोवा के सामने उस वक्त मौत हो गयी, जब वे सीनै वीराने में यहोवा के सामने नियम के खिलाफ आग चढ़ा रहे थे।[10] उन दोनों के कोई बेटे नहीं थे। लेकिन एलिआज़र[11] और ईतामार[12] अपने पिता हारून के साथ याजकों के नाते सेवा करते रहे।

5 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 6 "लेवी गोत्रवालों को आगे लाना[13] और उन्हें हारून याजक के सामने खड़ा करना। वे उसके सेवक होंगे।[14] 7 वे पवित्र डेरे से जुड़े काम करेंगे और इस तरह भेंट के तंबू में सेवा करके उसकी और पूरी मंडली की तरफ अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाएँगे। 8 वे भेंट के तंबू की सारी चीज़ों की देखरेख करेंगे[1] और पवित्र डेरे से जुड़ी सारी सेवाएँ करके इसराएलियों की तरफ अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाएँगे।[2] 9 तू लेवियों को हारून और उसके बेटों के अधिकार में सौंपना। वे हारून की सेवा के लिए दिए गए हैं। इसराएलियों में से लेवियों को सेवा के लिए दिया गया है।[3] 10 तू हारून और उसके बेटों को याजक ठहराना। उन्हें याजकों के नाते अपनी ज़िम्मेदारी निभानी है।[4] उनके अलावा अगर कोई ऐसा इंसान पवित्र-स्थान के पास आता है जिसे अधिकार नहीं,* तो उसे मार डाला जाए।"[5]

11 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, 12 "देख, इसराएलियों के सभी पहलौठों की जगह मैं लेवियों को लेता हूँ[6] और सभी लेवी मेरे हो जाएँगे। 13 हरेक पहलौठा मेरा है।[7] जिस दिन मैंने मिस्र देश में सभी पहलौठों को मार डाला था,[8] उसी दिन मैंने इसराएल के हर पहलौठे को अपने लिए अलग ठहराया था, चाहे इंसान के पहलौठे हों या जानवर के।[9] सभी पहलौठे मेरे होंगे। मैं यहोवा हूँ।"

14 फिर यहोवा ने सीनै वीराने[10] में मूसा से कहा, 15 "तू लेवी के बेटों के नाम उनके अपने-अपने घराने और पिता के कुल के मुताबिक लिखना। तुझे सभी आदमियों के नाम और एक महीने या उससे ज़्यादा उम्र के सभी लड़कों के नाम लिखने हैं।"[11] 16 मूसा ने यहोवा के आदेश पर उन सभी के नाम लिखे। उसने वैसा ही किया जैसे उसे आज्ञा दी गयी थी। 17 लेवी के बेटों के नाम ये थेः गेरशोन, कहात और मरारी।[12]

3:3 *शा., "उनके हाथ भरे गए।"

3:10 *शा., "जो पराया हो," यानी जो हारून-वंशी न हो।

अध्य. 2
1 उत 15:5, निर्ग 38:26, गि 1:46, गि 14:29, गि 26:51, 64
2 गि 1:47, गि 3:15, गि 26:62, 63
3 गि 2:2
4 गि 10:28

अध्य. 3
5 निर्ग 19:2
6 लैव 10:1, 1इत 24:2
7 निर्ग 6:25, व्य 10:6
8 निर्ग 6:23, निर्ग 38:21, 1इत 6:3
9 निर्ग 28:1, लैव 8:2, 3
10 लैव 10:1, 2
11 गि 3:32, गि 20:26
12 गि 4:28, गि 7:8
13 गि 8:6, गि 18:2
14 गि 1:50, गि 8:11

दूसरा कॉल.
1 गि 4:12
2 गि 1:51
3 गि 8:15, 16, गि 18:6
4 निर्ग 40:15, गि 18:7
5 गि 16:39, 40, 1शम 6:19, 2इत 26:16, 18
6 गि 3:41, 45
7 निर्ग 13:2, निर्ग 34:19, गि 18:15, लूक 2:23
8 निर्ग 13:15
9 लैव 27:26
10 निर्ग 19:1
11 गि 3:39
12 निर्ग 6:16, गि 26:57, 1इत 23:6

18 गेरशोन के बेटे थे लिबनी और
शिमी। उन्हीं के नाम पर उनके घरानों के
नाम पड़े।[1]

19 कहात के बेटे थे अमराम, यिस-
हार, हेब्रोन और उज्जीएल।[2] उन्हीं के
नाम पर उनके घरानों के नाम पड़े।

20 मरारी के बेटे थे महली[3] और
मूशी। उन्हीं के नाम पर उनके घरानों के
नाम पड़े।[4]

ये थे लेवियों के घराने जो उनके अपने-
अपने पिता के कुल के मुताबिक थे।

21 गेरशोन से लिबनियों का घराना[5]
और शिमियों का घराना निकला। ये गेर-
शोनियों के घराने थे। 22 उनमें से
जितने आदमियों और एक महीने या
उससे ज़्यादा उम्र के लड़कों के नाम
लिखे गए उनकी गिनती 7,500 थी।[6]
23 गेरशोनियों के घरानों की छावनी
पवित्र डेरे के पीछे की तरफ[7] यानी
पश्‍चिम में थी। 24 गेरशोनियों के
घरानों का प्रधान लाएल का बेटा एल्या-
साप था। 25 गेरशोन के बेटों को भेंट
के तंबू में इन चीज़ों की देखरेख की
ज़िम्मेदारी दी गयी थी:[8] पवित्र डेरा
और उसे ढकने की अलग-अलग चादरें,[9]
डेरे के द्वार का परदा,[10] 26 आँगन की
कनातें,[11] वेदी और डेरे के चारों तरफ
के आँगन के द्वार का परदा[12] और तंबू
की रस्सियाँ। उन्हें इन चीज़ों से जुड़ी सारी
सेवाओं की ज़िम्मेदारी सौंपी गयी।

27 कहात से अमरामियों का घराना,
यिसहारियों का घराना, हेब्रोनियों का
घराना और उज्जीएलियों का घराना
निकला। ये कहातियों के घराने थे।[13]
28 उनमें से जितने आदमियों और एक
महीने या उससे ज़्यादा उम्र के लड़कों के
नाम लिखे गए, उनकी गिनती 8,600
थी। उन्हें पवित्र जगह की देखरेख की
ज़िम्मेदारी दी गयी थी।[1] 29 कहातियों
के घरानों की छावनी पवित्र डेरे के
दक्षिण में थी।[2] 30 कहातियों के
घरानों का प्रधान उज्जीएल का बेटा एली-
सापान था।[3] 31 उनकी ज़िम्मेदारी थी
इन चीज़ों की देखरेख करना: करार का
संदूक,[4] मेज़,[5] दीवट,[6] वेदियाँ,[7] पवित्र
जगह में इस्तेमाल होनेवाली सारी चीज़ें[8]
और परदा।[9] उन्हें इन चीज़ों से जुड़ी
सेवा की ज़िम्मेदारी सौंपी गयी।[10]

32 लेवियों का मुख्य प्रधान हारून
याजक का बेटा एलिआज़र था।[11] वह
उन सभी आदमियों की निगरानी करने-
वाला था जो पवित्र जगह से जुड़ी अलग-
अलग ज़िम्मेदारियाँ सँभालते थे।

33 मरारी से महलियों का घराना और
मूशियों का घराना निकला। ये मरारियों के
घराने थे।[12] 34 उनमें से जितने आद-
मियों और एक महीने या उससे ज़्यादा
उम्र के लड़कों के नाम लिखे गए, उनकी
गिनती 6,200 थी।[13] 35 मरारियों के
घरानों का प्रधान अबीहैल का बेटा सूरी-
एल था। उनकी छावनी पवित्र डेरे के
उत्तर की तरफ थी।[14] 36 मरारी के
बेटों को पवित्र डेरे की चौखटें,[15] डंडे,[16]
खंभे,[17] खाँचेदार चौकियाँ और उसकी
सारी चीज़ों[18] की देखरेख करने और
उनसे जुड़ी सारी सेवाओं की ज़िम्मे-
दारी सौंपी गयी थी।[19] 37 उन्हें आँगन
के चारों तरफ के खंभों, उनकी खाँचेदार
चौकियों,[20] तंबू की खूँटियों और तंबू की
रस्सियों की भी देखरेख करनी थी।

38 पवित्र डेरे के सामने यानी भेंट के
तंबू के पूरब की तरफ, जहाँ सूरज
उगता है, मूसा, हारून और उसके बेटों
की छावनी थी। उन्हें पवित्र-स्थान की
देखरेख की ज़िम्मेदारी सौंपी गयी थी।
इसराएलियों की तरफ से यह ज़िम्मेदारी

अध्य. 3
1 निर्ग 6:17
2 निर्ग 6:18
3 1इत 6:29
4 निर्ग 6:19
5 1इत 6:20
6 गि 4:38-40
7 गि 1:53
8 गि 4:24-26
9 निर्ग 26:7 निर्ग 26:14
10 निर्ग 26:36
11 निर्ग 27:9
12 निर्ग 27:16
13 गि 3:19

दूसरा कॉल.
1 गि 4:34-36
2 गि 1:53
3 निर्ग 6:22 1इत 6:18
4 निर्ग 25:10
5 निर्ग 25:23
6 निर्ग 25:31
7 निर्ग 27:1, 2 निर्ग 30:1-3
8 निर्ग 38:3
9 निर्ग 26:31
10 गि 4:15
11 गि 4:16 गि 20:28
12 गि 3:20 गि 26:58
13 गि 4:42-44
14 गि 1:53
15 निर्ग 36:20
16 निर्ग 36:31
17 निर्ग 26:32, 37 निर्ग 36:37, 38
18 निर्ग 27:19
19 गि 4:31, 32
20 निर्ग 27:10, 11

निभाना उनका फ़र्ज़ था। अगर कोई ऐसा इंसान पवित्र-स्थान के पास आएगा जिसे अधिकार नहीं,* तो उसे मार डाला जाएगा।[1]

39 मूसा और हारून ने यहोवा के आदेश पर जितने लेवी आदमियों और एक महीने या उससे ज़्यादा उम्र के लड़कों के नाम उनके घराने के मुताबिक लिखे, उनकी कुल गिनती 22,000 थी।

40 इसके बाद यहोवा ने मूसा से कहा, "तू इसराएलियों में से उन सभी पहलौठे बेटों की गिनती लेना जिनकी उम्र एक महीना या उससे ज़्यादा है[2] और उन सबके नामों की सूची बनाना। **41** इसराएलियों के इन सभी पहलौठों की जगह लेवियों को और इसराएलियों के पालतू जानवरों के पहलौठों की जगह लेवियों के पालतू जानवरों को मेरे लिए लेना।[3] मैं यहोवा हूँ।" **42** फिर मूसा ने इसराएलियों के सभी पहलौठों के नाम लिखे, ठीक जैसे यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी। **43** एक महीने या उससे ज़्यादा उम्र के जितने भी पहलौठे बेटों के नाम लिखे गए थे उनकी कुल गिनती 22,273 थी।

44 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, **45** "इसराएलियों के सभी पहलौठों की जगह लेवियों को और इसराएलियों के पालतू जानवरों के पहलौठों की जगह लेवियों के पालतू जानवरों को लेना। लेवी मेरे होंगे। मैं यहोवा हूँ। **46** लेवियों की गिनती से इसराएलियों के जो 273 पहलौठे ज़्यादा हैं,[4] उन्हें छुड़ाने के लिए तू फिरौती की कीमत लेना।[5] **47** तू हर पहलौठे के लिए पवित्र-स्थान के शेकेल*

3:38 *शा., "जो पराया हो," यानी जो लेवी न हो। **3:47** *या "पवित्र शेकेल।"

अध्य. 3
1 गि 3:10
2 गि 3:15
3 निर्ग 13:2; गि 3:12; गि 18:15
4 गि 3:39, 43
5 गि 18:15

दूसरा कॉल.
1 गि 18:15, 16
2 लैव 27:25

अध्य. 4
3 गि 3:19, 27
4 1इत 23:3; लूक 3:23
5 गि 8:25, 26
6 गि 4:30; 1इत 6:48
7 गि 3:30, 31; गि 4:15
8 निर्ग 26:31; निर्ग 40:3; लैव 16:2
9 निर्ग 25:10
10 निर्ग 25:13

के मुताबिक पाँच शेकेल* लेना।[1] एक शेकेल 20 गेरा# के बराबर है।[2] **48** तू फिरौती की यह रकम उन अतिरिक्त पहलौठों की तरफ से हारून और उसके बेटों को देना।" **49** तब मूसा ने उन अतिरिक्त पहलौठों को छुड़ाने के लिए फिरौती की कीमत ली। **50** उसने इसराएल के इन पहलौठों को छुड़ाने के लिए कुल मिलाकर 1,365 शेकेल लिए, जो पवित्र-स्थान के शेकेल के मुताबिक थे। **51** फिर मूसा ने यहोवा के कहे मुताबिक फिरौती की रकम हारून और उसके बेटों को दी। मूसा ने ठीक वैसे ही किया जैसे यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।

4 यहोवा ने अब मूसा और हारून से कहा, **2** "लेवी के बेटों में से कहात के बेटों[3] की गिनती उनके घरानों और पिता के कुलों के मुताबिक लेना। **3** तुम उन सबकी गिनती लेना जिनकी उम्र 30[4] से 50[5] के बीच है और जो भेंट के तंबू में सेवा के लिए ठहराए गए दल के लोग हैं।[6]

4 कहात के बेटों को भेंट के तंबू में यह सेवा करनी है।[7] उनकी सेवा ऐसी चीज़ों से जुड़ी है जो बहुत पवित्र हैं। **5** जब भी इसराएली दूसरी जगह के लिए रवाना होंगे, तो हारून और उसके बेटे तंबू में आकर गवाही के संदूक के पासवाला परदा[8] उतारेंगे और उससे संदूक[9] ढक देंगे। **6** वे उस पर सील मछली की खाल से बनी चादर डालेंगे और उसके ऊपर एक मज़बूत नीला कपड़ा डालेंगे और संदूक में वे डंडे[10] डालेंगे जिनके सहारे वह उठाया जाएगा।

3:47 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। #एक गेरा 0.57 ग्रा. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

7 वे नज़राने की रोटी की मेज़[1] पर
भी एक नीला कपड़ा बिछाएँगे और उस
पर थालियाँ, प्याले, कटोरे और वे सुरा-
हियाँ रखेंगे जिनसे अर्घ चढ़ाया जाता
है।[2] नियमित तौर पर चढ़ायी जाने-
वाली रोटी[3] मेज़ पर ही रहने दी जाए।
8 उन सबके ऊपर वे एक सुर्ख लाल
कपड़ा डालेंगे और फिर उसे सील मछली
की खाल से बनी चादर से ढक देंगे और
मेज़ में वे डंडे[4] डालेंगे जिनके सहारे वह
उठायी जाएगी। **9** इसके बाद वे एक
नीला कपड़ा लेंगे और उससे रौशनी के
लिए जलायी जानेवाली दीवट,[5] उसके
दीए,[6] चिमटे, आग उठाने के करछे[7]
और दीवट के लिए तेल रखनेवाले
सारे बरतन ढक देंगे। **10** वे दीवट
और उसके साथ इस्तेमाल होनेवाली सारी
चीज़ें सील मछली की खाल से बनी एक
चादर में लपेटेंगे और उन्हें एक डंडे पर
रख देंगे ताकि उन्हें ढोकर ले जा सकें।
11 वे सोने की वेदी[8] के ऊपर एक नीला
कपड़ा डालेंगे और फिर उसे सील मछली
की खाल से बनी एक चादर से ढक देंगे
और वेदी में वे डंडे[9] डालेंगे जिनके सहारे
उसे उठाया जाएगा। **12** फिर वे पवित्र
जगह की सेवा में हमेशा इस्तेमाल होने-
वाली सारी चीज़ें लेंगे[10] और उन्हें एक
नीले कपड़े में लपेटेंगे। फिर वे उन्हें सील
मछली की खाल से बनी एक चादर से
ढककर एक डंडे पर रख देंगे ताकि उन्हें
ढोकर ले जा सकें।

13 उन्हें वेदी से सारी राख* हटानी
चाहिए[11] और फिर वेदी पर बैंजनी ऊन
का एक कपड़ा डालना चाहिए। **14** वे
उस पर वेदी के साथ इस्तेमाल होनेवाली
सारी चीज़ें रखेंगे, जैसे आग उठाने के
करछे, काँटे, बेलचे और कटोरे।[1] फिर वे
उन्हें सील मछली की खाल से बनी चादर
से ढक देंगे। वे वेदी में डंडे[2] डालेंगे जिनके
सहारे वह उठायी जाएगी।

15 जब भी इसराएली दूसरी जगह
के लिए रवाना होते हैं, तो हारून और
उसके बेटों को चाहिए कि वे पवित्र जगह
की सारी चीज़ें ढक दें।[3] फिर कहात के
बेटे आकर वे चीज़ें उठाएँगे।[4] मगर उन्हें
पवित्र जगह की चीज़ें हरगिज़ नहीं छूनी
चाहिए, वरना वे मर जाएँगे।[5] भेंट के तंबू
की इन चीज़ों की ज़िम्मेदारी* कहात के
बेटों की है।

16 हारून याजक का बेटा एलि-
आज़र[6] इन चीज़ों की देखरेख की निग-
रानी करेगाः दीए जलाने के लिए तेल,[7]
सुगंधित धूप,[8] नियमित तौर पर चढ़ाया
जानेवाला अनाज का चढ़ावा और अभि-
षेक का तेल।[9] पूरे पवित्र डेरे और
उसके अंदर के सारे सामान की, यानी
तंबू और उसकी सब चीज़ों की देख-
रेख की निगरानी करना एलिआज़र की
ज़िम्मेदारी है।"

17 यहोवा ने मूसा और हारून से यह
भी कहा, **18** "तुम इस बात का ध्यान
रखना कि लेवियों में से कहाती कुल के
घराने[10] कभी नाश न हों। **19** उनकी
खातिर यह काम करना ताकि वे ज़िंदा
रहें और उन चीज़ों के पास आने की
वजह से मर न जाएँ जो बहुत पवित्र
हैं।[11] हारून और उसके बेटे तंबू के
अंदर जाकर हरेक कहाती को बताएँगे
कि उसे क्या सेवा करनी है और कौन-
सा सामान उठाना है। **20** कहातियों को
अंदर आकर उसमें रखी पवित्र चीज़ें एक
पल के लिए भी नहीं देखनी चाहिए, वरना
वे मर जाएँगे।"[12]

अध्य. 4
1 निर्ग 25:23, 24
2 निर्ग 25:29
3 लैव 24:5, 6
4 निर्ग 25:28
5 निर्ग 25:31
6 निर्ग 25:37
7 निर्ग 25:38
8 निर्ग 30:1 निर्ग 37:25, 26
9 निर्ग 30:5
10 गि 3:30, 31
11 लैव 6:12

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 27:3
2 निर्ग 27:6
3 गि 4:5
4 गि 7:6-9 1इत 15:2
5 2शम 6:6, 7
6 गि 3:32
7 निर्ग 27:20
8 निर्ग 30:34, 35
9 निर्ग 30:23-25
10 गि 3:27
11 गि 4:4
12 निर्ग 19:21 1शम 6:19

4:13 *यानी बलिदान में जलाए गए जानवरों की पिघली चरबी से भीगी राख।

4:15 *शा., "भार।"

21 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
22 “गेरशोन के बेटों[1] की गिनती उनके
घरानों और पिता के कुलों के मुताबिक
लेना। 23 तू उन सबके नाम लिखना
जिनकी उम्र 30 से 50 के बीच है
और जो भेंट के तंबू में सेवा के लिए
ठहराए गए दल के लोग हैं। 24 गेर-
शोनियों के घरानों को इन चीज़ों की देख-
रेख करने और उठाने का काम सौंपा
जाता है:[2] 25 पवित्र डेरे के कपड़े,[3]
भेंट का तंबू ढकने की चादर, उसके
ऊपर डाली जानेवाली चादर और सील
मछली की खाल से बनी चादर,[4] भेंट के
तंबू के द्वार का परदा,[5] 26 आँगन की
कनातें,[6] वेदी और डेरे के चारों तरफ के
आँगन के द्वार का परदा,[7] तंबू की
रस्सियाँ और उनके साथ इस्तेमाल होने-
वाली सारी चीज़ें और औज़ार। यही
उनकी ज़िम्मेदारी है। 27 गेरशोनी[8] जो
भी सेवा करेंगे और जो भी भार उठाएँगे,
वह सब हारून और उसके बेटों की
निगरानी में होना चाहिए। तुम गेरशो-
नियों को यह सारा भार उठाने का काम
सौंपना। 28 भेंट के तंबू में गेरशोनियों
के घरानों को यही सेवा करनी है।[9] उन्हें
अपनी ज़िम्मेदारी हारून याजक के बेटे
ईतामार के निर्देशों के मुताबिक निभानी
होगी।[10]

29 तू मरारी के बेटों[11] के नाम उनके
घरानों और पिता के कुल के मुताबिक
लिखना। 30 तू उन सबके नाम लिखना
जिनकी उम्र 30 से 50 के बीच है और
जो भेंट के तंबू में सेवा के लिए ठह-
राए गए दल के लोग हैं। 31 भेंट के
तंबू से जुड़ी उनकी सेवा है, ये सारी चीज़ें
उठाना:[12] पवित्र डेरे की चौखटें,[13] डंडे,[14]
खंभे,[15] खाँचेदार चौकियाँ,[16] 32 चारों
तरफ के आँगन के खंभे,[17] उनकी खाँचे-
दार चौकियाँ,[1] खूँटियाँ,[2] तंबू की रस्सियाँ
और इन सबसे जुड़ा सारा सामान। उन्हें
इन चीज़ों से जुड़ी सभी सेवाएँ करनी
हैं। तू उनमें से हरेक को बताना कि
कौन-सा सामान उठाना उसकी ज़िम्मेदारी
है। 33 मरारी के बेटों के घरानों[3] को
भेंट के तंबू में यही सेवा करनी है। वे
हारून याजक के बेटे ईतामार के निर्देशों
के मुताबिक काम करेंगे।”[4]

34 तब मूसा, हारून और मंडली के
प्रधानों[5] ने कहातियों के उन सभी बेटों[6]
का नाम उनके घरानों और पिता के
कुल के मुताबिक लिखा, 35 जिनकी
उम्र 30 से 50 के बीच थी और जो भेंट
के तंबू में सेवा के लिए ठहराए गए दल
के थे।[7] 36 जिन लोगों के नाम उनके
घरानों के मुताबिक लिखे गए उनकी कुल
गिनती 2,750 थी।[8] 37 कहातियों
के घरानों में से उन सबके नाम लिखे गए
और वे सब भेंट के तंबू में सेवा करते थे।
मूसा और हारून ने उन सबके नाम लिखे,
ठीक जैसे यहोवा ने मूसा के ज़रिए आदेश
दिया था।[9]

38 गेरशोन के उन बेटों[10] के नाम
उनके घरानों और पिता के कुल के मुता-
बिक लिखे गए, 39 जिनकी उम्र 30
से 50 के बीच थी और जो भेंट के तंबू
में सेवा के लिए ठहराए गए दल के थे।
40 जिन लोगों के नाम उनके घरानों
और पिता के कुल के मुताबिक लिखे
गए उनकी कुल गिनती 2,630 थी।[11]
41 गेरशोन के बेटों के घरानों से उन
सबके नाम लिखे गए और वे सब भेंट के
तंबू में सेवा करते थे। मूसा और हारून ने
यहोवा के आदेश पर उनके नाम लिखे।[12]

42 मरारी के उन बेटों के नाम उनके
घरानों और पिता के कुल के मुताबिक
लिखे गए, 43 जिनकी उम्र 30 से 50

अध्य. 4
1 गि 3:21
2 गि 3:25, 26
3 निर्ग 26:1
4 निर्ग 26:7, 14
5 निर्ग 26:36
6 निर्ग 27:9
7 निर्ग 27:16
8 गि 3:21, 23
9 गि 3:25, 26
10 निर्ग 6:23; गि 4:33; गि 7:8
11 निर्ग 6:19; गि 3:33
12 गि 3:36, 37
13 निर्ग 26:15
14 निर्ग 26:26
15 निर्ग 26:37; निर्ग 36:38
16 निर्ग 26:19; निर्ग 38:27
17 निर्ग 27:10

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 27:11
2 निर्ग 27:19
3 गि 3:33
4 गि 4:28
5 गि 1:16
6 गि 3:19, 27
7 गि 4:47; गि 8:25, 26
8 गि 3:27, 28
9 गि 3:15
10 गि 3:21
11 गि 3:21, 22
12 गि 4:22, 23

के बीच थी और जो भेंट के तंबू में सेवा के
लिए ठहराए गए दल के थे।[1] 44 जिन
लोगों के नाम उनके घरानों के मुताबिक
लिखे गए उनकी कुल गिनती 3,200
थी।[2] 45 मरारी के बेटों के घरानों से
उन सबके नाम लिखे गए। मूसा और
हारून ने उनके नाम लिखे, ठीक जैसे
यहोवा ने मूसा के ज़रिए आदेश
दिया था।[3]

46 मूसा, हारून और इसराएल के
प्रधानों ने उन सभी लेवियों के नाम उनके
अपने-अपने घराने और पिता के कुल
के मुताबिक लिखे। 47 उन लेवियों की
उम्र 30 से 50 के बीच थी और उन
सबको भेंट के तंबू में सेवा करने और
तंबू का सामान उठाने के लिए ठहराया
गया था।[4] 48 जितने लेवियों के नाम
लिखे गए उनकी कुल गिनती 8,580
थी।[5] 49 यहोवा ने मूसा के ज़रिए जो
आदेश दिया था, उसी के मुताबिक उनके
नाम लिखे गए। हरेक को सेवा की जो
ज़िम्मेदारी दी गयी थी और जो सामान
उठाने का काम सौंपा गया था, उसी के
मुताबिक उसका नाम लिखा गया, ठीक
जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

5 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 "इसराएलियों को आज्ञा दे कि वे
अपनी छावनी में से ऐसे हर इंसान
को बाहर भेज दें, जिसे कोढ़ है[6] या
जिसे रिसाव होता है[7] या जो किसी की
लाश को छूने की वजह से अशुद्ध हो गया
है।[8] 3 चाहे आदमी हो या औरत, ऐसे
इंसान को तुम ज़रूर छावनी से बाहर भेज
देना। तुम्हें ऐसा इसलिए करना चाहिए
ताकि उसकी वजह से छावनी के बाकी
लोग दूषित न हो जाएँ,[9] जिनके बीच मैं
निवास* करता हूँ।"[10] 4 तब इसराए-
लियों ने ऐसा ही किया। उन्होंने ऐसे लोगों
को छावनी से बाहर भेज दिया, ठीक जैसे
यहोवा ने मूसा को बताया था।

5 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
6 "इसराएलियों से कहना, 'अगर कोई
आदमी या औरत ऐसा पाप करे जो आम
तौर पर इंसान करते हैं और इस तरह
यहोवा का विश्वासयोग्य रहने से चूक
जाए, तो वह दोषी ठहरेगा।[1] 7 उसे
अपना पाप कबूल करना होगा[2] और वह
जिस नुकसान के लिए दोषी है उसकी पूरी
भरपाई करनी होगी। और उसकी कीमत
का पाँचवाँ हिस्सा जोड़कर देना होगा।[3]
उसे यह सब उस इंसान को देना चाहिए
जिसके खिलाफ उसने पाप किया है।
8 लेकिन अगर वह इंसान मर गया है
और उसका कोई करीबी रिश्तेदार भी
नहीं है जिसे मुआवज़ा दिया जा सके, तो
दोषी को यह मुआवज़ा यहोवा को देना
चाहिए। उस रकम पर याजक का हक
होगा। साथ ही, वह प्रायश्चित के लिए
जो मेढ़ा अर्पित करेगा, उस पर भी याजक
का हक होगा।[4]

9 इसराएली जो भी पवित्र चीज़ें दान
करते हैं[5] और लाकर याजक को देते हैं वे
याजक की हो जाएँगी।[6] 10 हर इंसान
की दी हुई पवित्र चीज़ें याजक की होंगी।
जो कुछ याजक को दिया जाता है उस पर
याजक का ही हक होगा।'"

11 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
12 "इसराएलियों से कहना, 'अगर एक
आदमी की पत्नी सही राह से भटक
जाती है और अपने पति से बेवफाई
करती है, तो ऐसे मामले को निपटाने का
तरीका यह है। 13 हो सकता है किसी
दूसरे आदमी ने उस औरत के साथ यौन-
संबंध रखा हो,[7] मगर यह बात पति को
नहीं मालूम और यह बात छिपी रहती है।

5:3 *या "डेरा।"

अध्य. 4
1 गि 8:25, 26
2 गि 3:33, 34
3 गि 4:29
4 गि 4:15; गि 4:24-26; गि 4:31-33
5 गि 3:39

अध्य. 5
6 लैव 13:45, 46
7 लैव 15:2
8 लैव 22:4; गि 19:11
9 गि 19:22
10 निर्ग 25:8; लैव 26:11

दूसरा कॉल.
1 लैव 5:1, 17
2 लैव 5:5; यह 7:19; याकू 5:16
3 लैव 6:4, 5
4 लैव 5:16; लैव 6:6, 7; लैव 7:7
5 लैव 6:14, 17; लैव 7:1, 6; लैव 10:12, 13
6 निर्ग 29:27, 28; गि 18:8; व्य 18:3; यहे 44:29; 1कुर 9:13
7 लैव 18:20; व्य 5:18

वह औरत वाकई खुद को भ्रष्ट कर चुकी है, मगर पकड़ी नहीं गयी है और उसके अपराध का कोई गवाह भी नहीं है।
14 मान लो ऐसी औरत के पति के मन में जलन पैदा होती है और उसे अपनी पत्नी की वफादारी पर शक होता है। या हो सकता है एक औरत ने खुद को भ्रष्ट नहीं किया है, फिर भी उसके पति के मन में जलन पैदा होती है और उसे अपनी पत्नी की वफादारी पर शक होता है।
15 इन दोनों हालात में पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी को याजक के पास ले आए। साथ ही, वह एपा के दसवें भाग* जौ का आटा भी लाए। यह उसकी पत्नी का चढ़ावा होगा। उस आदमी को चढ़ावे पर तेल नहीं डालना चाहिए, न ही उस पर लोबान रखना चाहिए, क्योंकि यह जलन के मामले में दिया जानेवाला अनाज का चढ़ावा है। यह इसलिए दिया जाता है ताकि अगर औरत दोषी है तो उसके पाप पर ध्यान दिया जाए।

16 याजक उस औरत को आगे लाएगा और यहोवा के सामने खड़ा करेगा।[1]
17 याजक मिट्टी के एक बरतन में ताज़ा पानी* लेगा और पवित्र डेरे की ज़मीन से थोड़ी मिट्टी लेकर उस पानी में डालेगा।
18 याजक जब उस औरत को यहोवा के सामने खड़ा करेगा, तो उसके बाल खुलवा देगा और उसकी हथेलियों पर यादगार का चढ़ावा यानी जलन के मामले में दिया जानेवाला अनाज का चढ़ावा रखेगा।[2] याजक के हाथ में वह कड़वा पानी होगा जो शाप लाता है।[3]

19 फिर याजक उस औरत से यह कहकर शपथ खिलाएगा: "अगर तू, जिस पर तेरे पति का अधिकार है,[1] सही राह से नहीं भटकी और तूने खुद को भ्रष्ट नहीं किया है और किसी पराए आदमी ने तेरे साथ यौन-संबंध नहीं रखा है तो तू शाप लानेवाले इस कड़वे पानी के असर से बच जाए।
20 लेकिन अगर तूने, जिस पर तेरे पति का अधिकार है, सही राह से भटककर खुद को भ्रष्ट किया है और किसी दूसरे आदमी के साथ यौन-संबंध रखा है—"[2]
21 फिर याजक उस औरत को शपथ दिलाएगा कि अगर उसने यह पाप किया है तो उस पर शाप पड़े। याजक उससे कहेगा, "यहोवा तेरी जाँघ* सड़ा दे# और तेरा पेट फुला दे। यहोवा ऐसा करे कि लोग शपथ लेते वक्त और शाप देते वक्त तेरी मिसाल दें।
22 और यह पानी जो शाप लाता है, तेरी अंतड़ियों में जाएगा जिससे तेरा पेट फूल जाएगा और तेरी जाँघ* सड़ जाएगी।"# तब औरत को कहना चाहिए: "आमीन! आमीन!"△

23 फिर याजक को चाहिए कि वह शाप के ये शब्द किताब में लिखे और कड़वे पानी से धो डाले।
24 फिर याजक औरत को यह कड़वा पानी पिलाएगा जो शाप लाता है और पानी उसके अंदर जाएगा और उसका अंजाम बहुत कड़वा होगा।
25 इसके बाद याजक औरत के हाथ से जलन के मामले में दिया गया अनाज का चढ़ावा[3] लेगा और उसे यहोवा के सामने आगे-पीछे हिलाकर वेदी के पास लाएगा।
26 फिर याजक अनाज के चढ़ावे में से मुट्ठी-भर आटा प्रतीक के तौर पर लेगा

5:15 *एपा का दसवाँ भाग 2.2 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। **5:17** *शा., "पवित्र जल।"

5:21, 22 *ज़ाहिर है कि यहाँ प्रजनक अंगों की बात की गयी है। **5:21, 22** #इसका मतलब शायद बच्चे पैदा करने की शक्ति खो बैठना है। **5:22** △या "ऐसा ही हो! ऐसा ही हो!"

अध्य. 5
1 यिर्म 17:10; इब्र 13:4
2 गि 5:15, 25
3 गि 5:22, 24

दूसरा कॉल.
1 रोम 7:2
2 लैव 18:20; 1कुर 6:9, 10
3 गि 5:15

और उसे वेदी पर जलाएगा ताकि उसका
धुआँ उठे।[1] इसके बाद वह औरत को
पानी पिलाएगा। 27 अगर उस औरत
ने वाकई खुद को भ्रष्ट कर लिया है और
अपने पति के साथ बेवफाई की है, तो जब
याजक उस औरत को शाप लानेवाला
पानी पिलाएगा तब वह पानी उसके अंदर
जाकर कड़वाहट पैदा करेगा, उसका पेट
फूल जाएगा और उसकी जाँघ[*] सड़
जाएगी।[#] और लोग शाप देते वक्त
उस औरत की मिसाल देंगे। 28 लेकिन
अगर उस औरत ने खुद को भ्रष्ट नहीं
किया और वह बेदाग है, तो उसे यह सज़ा
नहीं मिलेगी। वह गर्भवती होकर संतान
पैदा कर पाएगी।

29 यह जलन के बारे में नियम है[2]
जो ऐसे मामलों में लागू होता है जब एक
औरत, जिस पर उसके पति का अधि-
कार है, सही राह से भटक जाती है
और खुद को भ्रष्ट कर लेती है, 30 या
अगर एक आदमी को जलन होती है और
उसे अपनी पत्नी की वफादारी पर शक
होता है। ऐसे मामलों में पति को चाहिए
कि वह अपनी पत्नी को यहोवा के सामने
लाकर खड़ा करे और याजक उस औरत
पर इस नियम में लिखी बातें लागू करे।
31 ऐसे मामलों में पति निर्दोष होगा,
लेकिन अगर पत्नी दोषी साबित होती है
तो उसे सज़ा भुगतनी होगी।'"

6 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 "इसराएलियों से कहना, 'अगर
कोई आदमी या औरत यहोवा के लिए
नाज़ीर[*][3] बनकर सेवा करने की खास
मन्नत माने, 3 तो उसे दाख-मदिरा या
किसी भी किस्म की शराब नहीं पीनी
चाहिए। उसे दाख-मदिरा या किसी भी
तरह की शराब से बना सिरका नहीं पीना
चाहिए।[1] न अंगूरों से बना कोई रस पीना
चाहिए, न ही ताज़े अंगूर या किशमिश
खानी चाहिए। 4 वह जितने दिनों के
लिए नाज़ीर की मन्नत मानता है उतने
दिन उसे अंगूर की बेल की उपज से बनी
कोई भी चीज़ नहीं खानी चाहिए, कच्चे
अंगूर से लेकर छिलके तक से बनी कोई
भी चीज़।

5 वह जितने दिनों के लिए नाज़ीर की
मन्नत मानता है, उतने दिनों तक उसके
सिर पर उस्तरा नहीं चलना चाहिए।[2] उसे
चाहिए कि वह अपने सिर के बाल बढ़ने
दे और इस तरह खुद को पवित्र बनाए
रखना चाहिए। उसे तब तक ऐसे रहना
चाहिए जब तक कि यहोवा के लिए
अलग ठहराए जाने के उसके दिन पूरे
नहीं हो जाते। 6 वह जितने दिनों तक
यहोवा की सेवा के लिए अलग ठहराया
जाता है, उतने दिनों तक वह किसी की
भी लाश[*] के करीब न जाए। 7 यहाँ
तक कि अगर उसके पिता, उसकी माँ,
उसके भाई या उसकी बहन की मौत हो
जाए, तब भी उसे उनकी लाश छूकर
दूषित नहीं होना चाहिए,[3] क्योंकि उसके
लंबे बाल इस बात की निशानी हैं कि
उसने नाज़ीर बनकर परमेश्वर की सेवा
करने की मन्नत मानी है।

8 वह जितने दिनों के लिए मन्नत
मानता है उतने दिन वह यहोवा के लिए
पवित्र रहता है। 9 लेकिन अगर उसके
पास अचानक किसी की मौत हो जाए[4] तो
उसके सिर के बाल दूषित हो जाएँगे जो
इस बात की निशानी हैं कि वह परमेश्वर

अध्य. 5
1 लैव 2:9
2 गि 5:14, 15

अध्य. 6
3 न्या 13:5

दूसरा कॉल.
1 लैव 10:9
आम 2:11, 12
लूक 1:15
2 न्या 13:5
न्या 16:17
1शम 1:11
3 लैव 21:1, 11
4 गि 19:14

5:27 [*]ज़ाहिर है कि यहाँ प्रजनक अंगों की बात की गयी है। [#]इसका मतलब शायद बच्चे पैदा करने की शक्ति खो बैठना है।
6:2 [*]इब्रानी में *नाज़ीर* का मतलब है, "चुना गया; समर्पित किया गया; अलग किया गया।"
6:6 [*]शब्दावली में "जीवन" देखें।

के लिए अलग ठहराया गया है।* उसे
उस दिन अपना सिर मुँड़वाना चाहिए[1]
जिस दिन उसे शुद्ध ठहराया जाएगा। उसे
सातवें दिन अपना सिर मुँड़वाना चाहिए।
10 फिर आठवें दिन उसे दो फाख्ते या
कबूतर के दो बच्चे लाकर भेंट के
तंबू के द्वार पर याजक को देने चाहिए।
11 याजक एक चिड़िया की पाप-बलि
और दूसरी की होम-बलि चढ़ाएगा और
उसके पाप का प्रायश्चित करेगा[2] क्योंकि
वह लाश छूने की वजह से दोषी हो गया
है। उसे चाहिए कि वह उसी दिन अपने
सिर को पवित्र ठहराए। **12** उसे दोष-
बलि के लिए एक साल का नर मेम्ना
लाना चाहिए और यहोवा के लिए नाज़ीर
बनकर सेवा करने के खास मन्नत के दिन
दोबारा शुरू करने चाहिए, क्योंकि दूषित
हो जाने की वजह से उसके मन्नत के
गुज़रे हुए दिन नहीं गिने जाएँगे।

13 एक नाज़ीर के लिए यह नियम है:
जिस दिन उसकी मन्नत पूरी होती है,[3]
उस दिन उसे भेंट के तंबू के द्वार
पर लाया जाए। **14** वहाँ उसे यहोवा के
लिए यह सब अर्पित करना चाहिए:
होम-बलि के लिए एक साल का नर
मेम्ना जिसमें कोई दोष न हो,[4] पाप-बलि
के लिए एक साल की मादा मेम्ना
जिसमें कोई दोष न हो,[5] शांति-बलि के
लिए एक मेढ़ा जिसमें कोई दोष न
हो,[6] **15** टोकरी-भर छल्ले जैसी बिन-
खमीर की रोटियाँ जो तेल से गुँधे हुए मैदे
से बनी हों और तेल चुपड़ी बिन-खमीर
की पापड़ियाँ। उसे इस चढ़ावे के साथ
अनाज का चढ़ावा[7] और अर्घ भी लाना
चाहिए।[8] **16** याजक यह सब यहोवा
के सामने ले जाएगा और मन्नत मानने-
वाले की पाप-बलि और होम-बलि चढ़ाए-
गा। **17** वह यहोवा को बिन-खमीर की
रोटियों से भरी टोकरी के साथ शांति-
बलि का मेढ़ा अर्पित करेगा। याजक मेढ़े
के साथ अनाज का चढ़ावा[1] और अर्घ भी
चढ़ाएगा।

18 फिर नाज़ीर को भेंट के तंबू के
द्वार पर अपने सिर के लंबे बाल मुँड़वाने
चाहिए,*[2] जो उसने मन्नत के दिन बढ़ाए
थे। वह अपने कटे हुए बाल उस आग में
डालेगा जिसके ऊपर शांति-बलि का
जानवर जल रहा होगा। **19** इसके बाद
याजक मेढ़े का एक कंधा लेगा जो उबाला
गया है[3] और टोकरी से बिन-खमीर की
छल्ले जैसी एक रोटी और बिन-खमीर की
एक पापड़ी लेगा। वह यह सब नाज़ीर की
हथेलियों पर रखेगा जिसने अपनी मन्नत
की निशानी यानी सिर के बाल मुँड़वाए
हैं। **20** तब याजक यहोवा के सामने
वे चीज़ें आगे-पीछे हिलाएगा। यह हिला-
कर दिया जानेवाला चढ़ावा है।[4] ये चीज़ें,
साथ ही हिलाकर दिए जानेवाले चढ़ावे के
जानवर का सीना और पवित्र हिस्से का
पैर,[5] याजक के लिए पवित्र हैं। इस तरह
नाज़ीर बनकर सेवा करने की अपनी
मन्नत पूरी करने के बाद वह आदमी
दाख-मदिरा पी सकता है।

21 अगर एक नाज़ीर, कानून में माँग
की गयी इन चीज़ों के अलावा कुछ और
चीज़ें यहोवा को देने की हैसियत रखता है
और वह देने का वादा करता है, तो उस
पर यह नियम लागू होगा[6] कि वह हर
हाल में अपना वादा पूरा करे और उन
चीज़ों का चढ़ावा चढ़ाए।'"

22 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
23 "हारून और उसके बेटों से कहना,

6:9 *या "सिर दूषित करेगा जो उसकी नाज़ीर की मन्नत की निशानी है।"

6:18 *या "सिर मुँड़वाना चाहिए जो नाज़ीर की मन्नत की निशानी है।"

अध्य. 6

1 गि 6:13, 18
2 लैव 5:8, 10
3 गि 30:2; सभ 5:4
4 लैव 1:10
5 लैव 4:32
6 लैव 3:1
7 लैव 2:1; लैव 6:14
8 गि 15:8, 10

दूसरा कॉल.

1 लैव 2:9
2 गि 6:5
3 लैव 8:31
4 निर्ग 29:23, 24
5 लैव 7:34
6 न्या 13:5

‘तुम्हें इसराएल के लोगों को इस
तरह आशीर्वाद देना चाहिए।[1] तुम उनसे
कहनाः

24 “यहोवा तुम्हें आशीष दे[2] और
तुम्हारी हिफाज़त करे।
25 यहोवा अपने मुख का प्रकाश
तुम पर चमकाए[3] और तुम पर
कृपा करे।
26 यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे
और तुम्हें शांति दे।”’[4]

27 याजक मेरा नाम लेकर[5] इसराएल के
लोगों को आशीर्वाद दिया करें ताकि मैं
उन्हें आशीष दूँ।”[6]

7 जिस दिन मूसा ने पवित्र डेरा खड़ा
करने का काम पूरा किया,[7] उसी
दिन उसने डेरे का अभिषेक किया[8] और
उसे पवित्र ठहराया। साथ ही, उसने डेरे
के सारे साजो-सामान का और वेदी
और उसके साथ इस्तेमाल होनेवाली सारी
चीज़ों का अभिषेक किया और उन्हें पवित्र
ठहराया।[9] 2 इसके बाद इसराएल के
प्रधान,[10] जो अपने-अपने पिता के कुल
के मुखिया थे, अपनी भेंट ले आए। इस-
राएल के गोत्रों के ये प्रधान, जिनकी
निगरानी में नाम-लिखाई हुई थी, 3 भेंट
में यहोवा के सामने छतवाली छः बैल-
गाड़ियाँ और 12 बैल ले आए। हर दो
प्रधानों की तरफ से एक बैल-गाड़ी और
हर प्रधान की तरफ से एक बैल था। ये
सब वे पवित्र डेरे के सामने लाए।
4 यहोवा ने मूसा से कहा, 5 “प्रधानों
से ये चीज़ें स्वीकार कर क्योंकि ये भेंट के
तंबू की सेवा में इस्तेमाल की जाएँगी। तू
ये सारी चीज़ें लेवियों को देना, हरेक
को उसके काम की ज़रूरत के हिसाब से
देना।”

6 तब मूसा ने प्रधानों से बैल-
गाड़ियाँ और बैल लेकर लेवियों को दिए।
7 उसने गेरशोन के बेटों को उनके काम[1]
की ज़रूरत के हिसाब से दो बैल-गाड़ियाँ
और चार बैल दिए 8 और मरारी के
बेटों को उनके काम की ज़रूरत के हिसाब
से चार बैल-गाड़ियाँ और आठ बैल दिए।
मूसा ने उन्हें ये सारी चीज़ें हारून याजक
के बेटे ईतामार की निगरानी में सौंपीं।[2]
9 मगर उसने कहात के बेटों को कुछ
नहीं दिया, क्योंकि उन्हें पवित्र जगह में
इस्तेमाल होनेवाली चीज़ें उठाने का काम
दिया गया था[3] और ये पवित्र चीज़ें वे
अपने कंधों पर उठाते थे।[4]

10 जिस दिन वेदी का अभिषेक किया
गया तब उसका उद्घाटन* किया गया[5]
और उस मौके पर प्रधान अपना-
अपना चढ़ावा ले आए। जब प्रधान
अपना चढ़ावा वेदी के सामने ले आए,
11 तो यहोवा ने मूसा से कहा, “वेदी
के उद्घाटन के लिए हर दिन एक प्रधान
अपना चढ़ावा लाकर देगा।”

12 पहले दिन यहूदा गोत्र के
प्रधान नहशोन[6] ने अपना चढ़ावा लाकर
दिया जो अम्मीनादाब का बेटा था।
13 उसका चढ़ावा यह थाः चाँदी की एक
थाली जिसका वज़न 130 शेकेल* था
और चाँदी का एक कटोरा जिसका वज़न
70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-स्थान के
शेकेल# के मुताबिक थे।[7] इन दोनों बर-
तनों में अनाज के चढ़ावे के लिए तेल
मिला मैदा भरा था।[8] 14 सोने का एक
प्याला* जिसका वज़न 10 शेकेल था।
यह धूप से भरा था। 15 होम-बलि के
लिए एक बैल,[9] एक मेढ़ा और एक साल
का एक नर मेम्ना, 16 पाप-बलि के

7:10 *या “समर्पण।” **7:13** *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। #या “पवित्र शेकेल।” **7:14** *या “कटोरी।”

अध्य. 6
1 लैव 9:22, व्य 10:8
2 रूत 2:4, भज 134:3
3 भज 31:16, भज 67:1
4 भज 29:11, लूक 2:14
5 व्य 28:10, यश 43:7, 10
6 भज 5:12, भज 67:7

अध्य. 7
7 निर्ग 40:17
8 निर्ग 30:26
9 निर्ग 40:10, लैव 8:10
10 निर्ग 18:21, गि 1:4, 16

दूसरा कॉल.
1 गि 3:25, 26, गि 4:24-26
2 गि 3:36, 37, गि 4:31-33
3 गि 3:30, 31, गि 4:15
4 2शम 6:13, 1इत 15:15
5 1रा 8:63, 2इत 7:5
6 गि 1:4, 7, गि 2:3, रूत 4:20, मत 1:4
7 लैव 27:25
8 लैव 2:1
9 लैव 1:3

लिए बकरी का एक बच्चा[1] 17 और
शांति-बलि[2] के लिए दो बैल, पाँच मेढ़े,
पाँच बकरे और एक-एक साल के पाँच
नर मेम्ने। अम्मीनादाब के बेटे नहशोन[3]
का यही चढ़ावा था।

18 दूसरे दिन इस्साकार गोत्र के
प्रधान नतनेल[4] ने चढ़ावा लाकर दिया,
जो ज़ुआर का बेटा था। 19 उसका
चढ़ावा यह था: चाँदी की एक थाली
जिसका वज़न 130 शेकेल था और
चाँदी का एक कटोरा जिसका वज़न
70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-स्थान
के शेकेल के मुताबिक थे।[5] इन दोनों बर-
तनों में अनाज के चढ़ावे के लिए तेल
मिला मैदा भरा था।[6] 20 सोने का एक
प्याला जिसका वज़न 10 शेकेल था।
यह धूप से भरा था। 21 होम-बलि के
लिए एक बैल,[7] एक मेढ़ा और एक साल
का एक नर मेम्ना, 22 पाप-बलि के
लिए बकरी का एक बच्चा[8] 23 और
शांति-बलि[9] के लिए दो बैल, पाँच मेढ़े,
पाँच बकरे और एक-एक साल के पाँच
मेम्ने। ज़ुआर के बेटे नतनेल का यही
चढ़ावा था।

24 तीसरे दिन जबूलून के बेटों के
प्रधान एलीआब[10] ने, जो हेलोन का बेटा
था, 25 यह चढ़ावा दिया: चाँदी की
एक थाली जिसका वज़न 130 शेकेल था
और चाँदी का एक कटोरा जिसका वज़न
70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-स्थान के
शेकेल के मुताबिक थे।[11] इन दोनों बर-
तनों में अनाज के चढ़ावे के लिए तेल
मिला मैदा भरा था।[12] 26 सोने का
एक प्याला जिसका वज़न 10 शेकेल
था। यह धूप से भरा था। 27 होम-
बलि के लिए एक बैल,[13] एक मेढ़ा और
एक साल का एक नर मेम्ना, 28 पाप-
बलि के लिए बकरी का एक बच्चा[14]
29 और शांति-बलि[1] के लिए दो बैल,
पाँच मेढ़े, पाँच बकरे और एक-एक साल
के पाँच नर मेम्ने। हेलोन के बेटे एली-
आब[2] का यही चढ़ावा था।

30 चौथे दिन रूबेन के बेटों के प्रधान
एलीसूर[3] ने, जो शदेऊर का बेटा था,
31 यह चढ़ावा दिया: चाँदी की एक
थाली जिसका वज़न 130 शेकेल था
और चाँदी का एक कटोरा जिसका वज़न
70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-स्थान के
शेकेल के मुताबिक थे।[4] इन दोनों बर-
तनों में अनाज के चढ़ावे के लिए तेल
मिला मैदा भरा था।[5] 32 सोने का एक
प्याला जिसका वज़न 10 शेकेल था। यह
धूप से भरा था। 33 होम-बलि के लिए
एक बैल,[6] एक मेढ़ा और एक साल का
एक नर मेम्ना, 34 पाप-बलि के लिए
बकरी का एक बच्चा[7] 35 और शांति-
बलि[8] के लिए दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच
बकरे और एक-एक साल के पाँच नर
मेम्ने। शदेऊर के बेटे एलीसूर[9] का यही
चढ़ावा था।

36 पाँचवें दिन शिमोन के बेटों के
प्रधान शलूमीएल[10] ने, जो सूरीशद्दै का
बेटा था, 37 यह चढ़ावा दिया: चाँदी
की एक थाली जिसका वज़न 130 शेकेल
था और चाँदी का एक कटोरा जिसका
वज़न 70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-
स्थान के शेकेल के मुताबिक थे।[11] इन
दोनों बरतनों में अनाज के चढ़ावे के लिए
तेल मिला मैदा भरा था।[12] 38 सोने
का एक प्याला जिसका वज़न 10 शेकेल
था। यह धूप से भरा था। 39 होम-
बलि के लिए एक बैल,[13] एक मेढ़ा और
एक साल का एक नर मेम्ना, 40 पाप-
बलि के लिए बकरी का एक बच्चा[14]
41 और शांति-बलि[15] के लिए दो बैल,
पाँच मेढ़े, पाँच बकरे और एक-एक साल

अध्य. 7
1 लैव 4:22, 23
2 लैव 3:1
3 निर्ग 6:23; लूक 3:23, 33
4 गि 1:4, 8; गि 2:5; गि 10:15
5 लैव 27:25
6 लैव 2:1
7 लैव 1:3
8 लैव 4:22, 23
9 लैव 3:1
10 गि 2:7; गि 10:16
11 लैव 27:25
12 लैव 2:1
13 लैव 1:3
14 लैव 4:22, 23

दूसरा कॉल.
1 लैव 3:1
2 गि 1:4, 9
3 गि 2:10; गि 10:18
4 लैव 27:25
5 लैव 2:1
6 लैव 1:3
7 लैव 4:22, 23
8 लैव 3:1
9 गि 1:4, 5
10 गि 2:12
11 लैव 27:25
12 लैव 2:1
13 लैव 1:3
14 लैव 4:22, 23
15 लैव 3:1

के पाँच नर मेम्ने। सूरीशद्दै के बेटे शलूमी-
एल[1] का यही चढ़ावा था।
42 छठे दिन गाद के बेटों के प्रधान
एल्यासाप[2] ने, जो दूएल का बेटा था,
43 यह चढ़ावा दियाः चाँदी की एक
थाली जिसका वज़न 130 शेकेल था
और चाँदी का एक कटोरा जिसका वज़न
70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-स्थान के
शेकेल के मुताबिक थे।[3] इन दोनों बर-
तनों में अनाज के चढ़ावे के लिए तेल
मिला मैदा भरा था।[4] 44 सोने का एक
प्याला जिसका वज़न 10 शेकेल था। यह
धूप से भरा था। 45 होम-बलि के लिए
एक बैल,[5] एक मेढ़ा और एक साल का
एक नर मेम्ना, 46 पाप-बलि के लिए
बकरी का एक बच्चा[6] 47 और शांति-
बलि[7] के लिए दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच
बकरे और एक-एक साल के पाँच नर
मेम्ने। दूएल के बेटे एल्यासाप[8] का यही
चढ़ावा था।
48 सातवें दिन एप्रैम के बेटों के प्रधान
एलीशामा[9] ने, जो अम्मीहूद का बेटा
था, 49 यह चढ़ावा दियाः चाँदी की
एक थाली जिसका वज़न 130 शेकेल था
और चाँदी का एक कटोरा जिसका वज़न
70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-स्थान के
शेकेल के मुताबिक थे।[10] इन दोनों बर-
तनों में अनाज के चढ़ावे के लिए तेल
मिला मैदा भरा था।[11] 50 सोने का
एक प्याला जिसका वज़न 10 शेकेल
था। यह धूप से भरा था। 51 होम-
बलि के लिए एक बैल,[12] एक मेढ़ा और
एक साल का एक नर मेम्ना, 52 पाप-
बलि के लिए बकरी का एक बच्चा[13]
53 और शांति-बलि[14] के लिए दो बैल,
पाँच मेढ़े, पाँच बकरे और एक-एक साल
के पाँच नर मेम्ने। अम्मीहूद के बेटे एली-
शामा[15] का यही चढ़ावा था।

अध्य. 7
1 गि 1:4, 6
2 गि 2:14; गि 10:20
3 लैव 27:25
4 लैव 2:1
5 लैव 1:3
6 लैव 4:22, 23
7 लैव 3:1
8 गि 1:4, 14
9 गि 2:18; गि 10:22
10 लैव 27:25
11 लैव 2:1
12 लैव 1:3
13 लैव 4:22, 23
14 लैव 3:1
15 गि 1:4, 10

दूसरा कॉल.
1 गि 2:20; गि 10:23
2 लैव 27:25
3 लैव 2:1
4 लैव 1:3
5 लैव 4:22, 23
6 लैव 3:1
7 गि 1:4, 10
8 गि 1:16
9 गि 2:22; गि 10:24
10 लैव 27:25
11 लैव 2:1
12 लैव 1:3
13 लैव 4:22, 23
14 लैव 3:1
15 गि 1:4, 11
16 गि 2:25; गि 10:25

54 आठवें दिन मनश्शे के बेटों के
प्रधान गमलीएल[1] ने, जो पदासूर का बेटा
था, 55 यह चढ़ावा दियाः चाँदी की
एक थाली जिसका वज़न 130 शेकेल था
और चाँदी का एक कटोरा जिसका वज़न
70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-स्थान के
शेकेल के मुताबिक थे।[2] इन दोनों बर-
तनों में अनाज के चढ़ावे के लिए तेल
मिला मैदा भरा था।[3] 56 सोने का एक
प्याला जिसका वज़न 10 शेकेल था। यह
धूप से भरा था। 57 होम-बलि के लिए
एक बैल,[4] एक मेढ़ा और एक साल का
एक नर मेम्ना, 58 पाप-बलि के लिए
बकरी का एक बच्चा[5] 59 और शांति-
बलि[6] के लिए दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच
बकरे और एक-एक साल के पाँच नर
मेम्ने। पदासूर के बेटे गमलीएल[7] का यही
चढ़ावा था।
60 नौवें दिन बिन्यामीन के बेटों के
प्रधान[8] अबीदान[9] ने, जो गिदोनी का बेटा
था, 61 यह चढ़ावा दियाः चाँदी की
एक थाली जिसका वज़न 130 शेकेल था
और चाँदी का एक कटोरा जिसका वज़न
70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-स्थान के
शेकेल के मुताबिक थे।[10] इन दोनों बर-
तनों में अनाज के चढ़ावे के लिए तेल
मिला मैदा भरा था।[11] 62 सोने का
एक प्याला जिसका वज़न 10 शेकेल
था। यह धूप से भरा था। 63 होम-
बलि के लिए एक बैल,[12] एक मेढ़ा और
एक साल का एक नर मेम्ना, 64 पाप-
बलि के लिए बकरी का एक बच्चा[13]
65 और शांति-बलि[14] के लिए दो बैल,
पाँच मेढ़े, पाँच बकरे और एक-एक साल
के पाँच नर मेम्ने। गिदोनी के बेटे अबी-
दान[15] का यही चढ़ावा था।
66 दसवें दिन दान के बेटों के प्रधान
अहीएजेर[16] ने, जो अम्मीशद्दै का बेटा

था, 67 यह चढ़ावा दियाः चाँदी की
एक थाली जिसका वज़न 130 शेकेल था
और चाँदी का एक कटोरा जिसका वज़न
70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-स्थान के
शेकेल के मुताबिक थे।[1] इन दोनों बर-
तनों में अनाज के चढ़ावे के लिए तेल
मिला मैदा भरा था।[2] 68 सोने का एक
प्याला जिसका वज़न 10 शेकेल था। यह
धूप से भरा था। 69 होम-बलि के लिए
एक बैल,[3] एक मेढ़ा और एक साल का
एक नर मेम्ना, 70 पाप-बलि के लिए
बकरी का एक बच्चा[4] 71 और शांति-
बलि[5] के लिए दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच
बकरे और एक-एक साल के पाँच नर
मेम्ने। अम्मीशद्दै के बेटे अहीएजेर[6] का
यही चढ़ावा था।

72 11वें दिन आशेर के बेटों के
प्रधान पगीएल[7] ने, जो ओकरान का बेटा
था, 73 यह चढ़ावा दियाः चाँदी की
एक थाली जिसका वज़न 130 शेकेल था
और चाँदी का एक कटोरा जिसका वज़न
70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-स्थान के
शेकेल के मुताबिक थे।[8] इन दोनों बर-
तनों में अनाज के चढ़ावे के लिए तेल
मिला मैदा भरा था।[9] 74 सोने का एक
प्याला जिसका वज़न 10 शेकेल था। यह
धूप से भरा था। 75 होम-बलि के लिए
एक बैल,[10] एक मेढ़ा और एक साल का
एक नर मेम्ना, 76 पाप-बलि के लिए
बकरी का एक बच्चा[11] 77 और शांति-
बलि[12] के लिए दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच
बकरे और एक-एक साल के पाँच नर
मेम्ने। ओकरान के बेटे पगीएल[13] का
यही चढ़ावा था।

78 12वें दिन नप्ताली के बेटों के
प्रधान अहीरा[14] ने, जो एनान का बेटा
था, 79 यह चढ़ावा दियाः चाँदी की
एक थाली जिसका वज़न 130 शेकेल था
और चाँदी का एक कटोरा जिसका वज़न
70 शेकेल था। ये शेकेल पवित्र-स्थान के
शेकेल के मुताबिक थे।[1] इन दोनों बर-
तनों में अनाज के चढ़ावे के लिए तेल
मिला मैदा भरा था।[2] 80 सोने का एक
प्याला जिसका वज़न 10 शेकेल था। यह
धूप से भरा था। 81 होम-बलि के लिए
एक बैल,[3] एक मेढ़ा और एक साल का
एक नर मेम्ना, 82 पाप-बलि के लिए
बकरी का एक बच्चा[4] 83 और शांति-
बलि[5] के लिए दो बैल, पाँच मेढ़े, पाँच
बकरे और एक-एक साल के पाँच नर
मेम्ने। एनान के बेटे अहीरा[6] का यही
चढ़ावा था।

84 जब वेदी का अभिषेक किया
गया तब उसका उद्घाटन किया गया
और उस मौके के लिए इसराएल के
प्रधानों ने यह चढ़ावा दियाः[7] चाँदी की
12 थालियाँ, चाँदी के 12 कटोरे और
सोने के 12 प्याले।[8] 85 चाँदी की हर
थाली का वज़न 130 शेकेल और चाँदी
के हर कटोरे का वज़न 70 शेकेल था।
इस हिसाब से चाँदी के बरतनों का कुल
वज़न पवित्र-स्थान के शेकेल के मुता-
बिक[9] 2,400 शेकेल था। 86 धूप से
भरे सोने के हर प्याले का वज़न पवित्र-
स्थान के शेकेल के मुताबिक 10 शेकेल
था। इस हिसाब से सोने के 12 प्यालों का
कुल वज़न 120 शेकेल था। 87 होम-
बलि के लिए कुल जानवर थे 12 बैल,
12 मेढ़े और एक-एक साल के 12 नर
मेम्ने। और इनके साथ अनाज का चढ़ावा
भी दिया गया था। पाप-बलि के लिए
कुल 12 बकरी के बच्चे थे। 88 शांति-
बलि के लिए कुल जानवर थे 24 बैल,
60 मेढ़े, 60 बकरे और एक-एक साल के
60 नर मेम्ने। वेदी का अभिषेक करने[10]
के बाद जब उसका उद्घाटन किया गया,

अध्य. 7
1 लैव 27:25
2 लैव 2:1
3 लैव 1:3
4 लैव 4:22, 23
5 लैव 3:1
6 गि 1:4, 12
7 गि 2:27; गि 10:26
8 लैव 27:25
9 लैव 2:1
10 लैव 1:3
11 लैव 4:22, 23
12 लैव 3:1
13 गि 1:4, 13
14 गि 2:29; गि 10:27

दूसरा कॉल.
1 लैव 27:25
2 लैव 2:1
3 लैव 1:3
4 लैव 4:22, 23
5 लैव 3:1
6 गि 1:4, 15
7 गि 7:10; एज 2:68
8 गि 7:13-17
9 लैव 27:25
10 गि 7:1

तो उस मौके के लिए यह सब चढ़ावा दिया गया।[1]

89 मूसा जब भी परमेश्‍वर से बात करने के लिए भेंट के तंबू के अंदर जाता,[2] उसे गवाही के संदूक के ढकने के ऊपर से परमेश्‍वर की आवाज़ सुनायी देती थी।[3] ढकने के ऊपरवाले दो करूबों के बीच[4] से परमेश्‍वर, मूसा से बात करता था।

8 यहोवा ने मूसा से कहा, 2 "हारून से कहना, 'जब तू दीए जलाए तो सातों दीए इस तरह रखना कि दीवट के सामने की जगह में उजाला हो जाए।'"[5] 3 हारून ने ठीक वैसे ही किया जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। उसने दीए जलाकर उन्हें इस तरह रखा कि दीवट[6] के सामने की पूरी जगह रौशनी से जगमगा उठी। 4 पूरी दीवट सोने को हथौड़े से पीटकर बनायी गयी थी। डंडी से लेकर फूलों तक, सबकुछ हथौड़े से पीट-कर बनाया गया था।[7] दीवट की बनावट बिलकुल उस नमूने जैसी थी जो यहोवा ने मूसा को दर्शन[8] में दिखाया था।

5 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, 6 "इसराएलियों में से लेवियों को लेना और उन्हें शुद्ध करना।[9] 7 तू उन्हें इस तरह शुद्ध करना: तू उनके ऊपर पाप से शुद्ध करनेवाला पानी छिड़कना। और वे उस्तरे से अपने पूरे शरीर के बाल मुँड़वाएँ, अपने कपड़े धोएँ और नहा-धोकर खुद को शुद्ध करें।[10] 8 फिर वे एक बैल[11] और उसके साथ अनाज के चढ़ावे[12] के लिए तेल मिला मैदा लेंगे। इसके अलावा तू भी एक बैल लेगा जो पाप-बलि के लिए होगा।[13] 9 इसके बाद तू लेवियों को भेंट के तंबू के सामने लाना और इसराएलियों की पूरी मंडली को इकट्ठा करना।[14] 10 जब तू लेवियों को यहोवा के सामने लाएगा तो इसराए-लियों को उनके ऊपर अपने हाथ रखने चाहिए।[1] 11 फिर हारून लेवियों को यहोवा के सामने अर्पित करेगा। यह इसराएलियों की तरफ से हिलाकर दिया जानेवाला चढ़ावा होगा।[2] तब लेवी यहोवा की सेवा करेंगे।[3]

12 फिर लेवी अपने हाथ बैलों के सिर पर रखेंगे।[4] इसके बाद बैल यहोवा को अर्पित किए जाएँगे। एक पाप-बलि के लिए और दूसरा होम-बलि के लिए ताकि लेवियों की तरफ से प्रायश्‍चित किया जा सके।[5] 13 तू लेवियों को हारून और उसके बेटों के सामने खड़ा करेगा और उन्हें हिलाकर दिए जानेवाले चढ़ावे के तौर पर यहोवा को अर्पित करेगा। 14 तू इसराएलियों में से लेवियों को अलग करना। वे मेरे हो जाएँगे।[6] 15 उसके बाद लेवी भेंट के तंबू में सेवा करने के लिए आएँगे। इस तरह तू उन्हें शुद्ध करना और हिलाकर दिए जाने-वाले चढ़ावे के तौर पर अर्पित करना। 16 वे दिए गए लोग हैं। इसराएलियों में से उन्हें मेरे लिए अर्पित किया गया है। इसराएलियों के सभी पहलौठे बेटों की जगह मैं लेवियों को अपने लिए लूँगा।[7] 17 इसराएलियों का हर पहलौठा मेरा है, फिर चाहे वह इंसान का हो या जानवर का।[8] जिस दिन मैंने मिस्र में सभी पह-लौठों को मार डाला था, उसी दिन मैंने इसराएल के सब पहलौठों को पवित्र ठहरा दिया था कि वे मुझे दिए जाएँ।[9] 18 मैं इसराएलियों के सब पहलौठे बेटों की जगह लेवियों को लूँगा। 19 मैं इस-राएलियों में से लेवियों को चुनता हूँ और हारून और उसके बेटों को देता हूँ ताकि वे भेंट के तंबू में इसराएलियों की तरफ से सेवा करें[10] और उनके लिए प्रायश्‍चित करने के काम में मदद दें। यह इसलिए

अध्य. 7

1 गि 7:10
2 निर्ग 33:9; गि 11:17; गि 12:8
3 निर्ग 25:22; निर्ग 37:6
4 निर्ग 25:18; 1शम 4:4; भज 80:1

अध्य. 8

5 निर्ग 25:37; निर्ग 40:24, 25; लैव 24:2
6 इब्र 9:2
7 निर्ग 37:17
8 निर्ग 25:9, 40; 1इत 28:12, 19
9 निर्ग 29:4; यश 52:11
10 निर्ग 30:18, 19; लैव 16:28; गि 19:7
11 लैव 1:3
12 लैव 2:1
13 लैव 4:3
14 लैव 8:2, 3

दूसरा कॉल.

1 गि 3:9, 41
2 लैव 7:30; गि 8:21
3 गि 1:50; गि 3:6; 2इत 31:2
4 निर्ग 29:10
5 लैव 1:4
6 गि 3:45; गि 16:9
7 गि 3:12
8 निर्ग 13:2, 12; लैव 27:26
9 निर्ग 12:29; निर्ग 13:15
10 गि 3:9; गि 18:6; 1इत 23:32; यहे 44:11

है कि इसराएली पवित्र जगह के पास न आएँ और उन पर कोई कहर न टूट पड़े।"[1]

20 मूसा, हारून और इसराएलियों की पूरी मंडली ने लेवियों के साथ ऐसा ही किया। यहोवा ने मूसा को लेवियों के साथ जो-जो करने की आज्ञा दी, वह सब इसराएलियों ने किया। **21** लेवियों ने खुद को शुद्ध किया और अपने कपड़े धोए।[2] फिर हारून ने उन्हें यहोवा के सामने हिलाकर दिए जानेवाले चढ़ावे के तौर पर अर्पित किया।[3] फिर हारून ने उन्हें शुद्ध करने के लिए उनकी तरफ से प्रायश्चित किया।[4] **22** इसके बाद, लेवी भेंट के तंबू में जाकर हारून और उसके बेटों की निगरानी में सेवा करने लगे। यहोवा ने मूसा को लेवियों के बारे में जो आज्ञा दी थी, इसराएलियों ने उनके साथ ठीक वैसा ही किया।

23 यहोवा ने अब मूसा से कहा, **24** "लेवियों के लिए यह नियम है: जिस लेवी की उम्र 25 साल या उससे ज़्यादा है, वह भेंट के तंबू में काम करनेवाले सेवा-दल में शामिल होगा। **25** मगर जब वह 50 का हो जाता है तो वह सेवा-दल से निकल जाएगा। इसके बाद उसे तंबू में सेवा नहीं करनी चाहिए। **26** वह चाहे तो अपने उन भाइयों की मदद कर सकता है जो भेंट के तंबू में ज़िम्मेदारियाँ सँभालते हैं। मगर उसे तंबू में सेवा नहीं करनी चाहिए। तू लेवियों और उनकी ज़िम्मेदारियों के बारे में इस नियम का पालन करना।"[5]

9 इसराएलियों के मिस्र से निकलने के दूसरे साल के पहले महीने में यहोवा ने सीनै वीराने में मूसा से कहा,[6] **2** "इसराएलियों को चाहिए कि फसह के लिए जो वक्त तय किया गया है,[7] उस वक्त पर वे फसह का बलिदान तैयार करें।[1] **3** इस महीने के 14वें दिन, शाम के झुटपुटे के समय* तुम तय वक्त पर यह बलिदान तैयार करना। फसह के बारे में जो-जो विधियाँ और तरीके बताए गए हैं, तुम ठीक उसी तरह तैयारी करना।"[2]

4 तब मूसा ने इसराएलियों से फसह का बलिदान तैयार करने के लिए कहा। **5** उन्होंने पहले महीने के 14वें दिन, शाम के झुटपुटे के समय* सीनै वीराने में फसह का बलिदान तैयार किया। यहोवा ने मूसा को जो-जो आज्ञा दी थी, इसराएलियों ने वह सब किया।

6 मगर कुछ आदमी उस दिन फसह का बलिदान नहीं तैयार कर पाए क्योंकि वे एक लाश छूने की वजह से अशुद्ध हो गए थे।[3] इसलिए वे मूसा और हारून के पास गए[4] **7** और उन्होंने उससे कहा, "हम लोग एक लाश छूने की वजह से अशुद्ध हो गए हैं। फिर भी हम सब इसराएलियों के साथ तय वक्त पर यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाना चाहते हैं। इसलिए हम तुझसे बिनती करते हैं कि हमें बता, हम क्या करें?"[5] **8** मूसा ने उनसे कहा, "ठीक है, मैं यहोवा से पूछकर आता हूँ कि इस बारे में उसकी क्या आज्ञा है।[6] तुम लोग यहीं मेरा इंतज़ार करो।"

9 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, **10** "इसराएलियों से कहना, 'अगर तुममें से कोई आदमी या तुम्हारी आनेवाली पीढ़ियों में से कोई आदमी किसी लाश को छूने की वजह से अशुद्ध हो जाए[7] या अगर वह कहीं दूर सफर पर हो, तो भी उसे यहोवा के लिए फसह का बलिदान तैयार करना चाहिए। **11** उसे दूसरे महीने के 14वें दिन शाम के झुटपुटे

9:3, 5 *शा., "दो शामों के बीच।"

अध्य. 8
1 गि 1:53, गि 18:5, 1शम 6:19
2 गि 8:7
3 गि 8:11
4 गि 8:12
5 गि 1:53, गि 3:32, गि 18:4

अध्य. 9
6 निर्ग 40:2, गि 1:1
7 निर्ग 12:3, 6, लैव 23:5, व्य 16:1, 1कुर 5:7

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 12:27
2 निर्ग 12:8
3 गि 5:2, गि 19:14, 16
4 निर्ग 18:15, गि 15:33, गि 27:1, 2
5 लैव 7:21, व्य 16:2
6 निर्ग 25:22, लैव 16:2, भज 99:6
7 गि 5:2

के समय* यह तैयारी करनी चाहिए।[1]
उसे फसह के जानवर का गोश्त, बिन-
खमीर की रोटी और कड़वे साग के साथ
खाना चाहिए।[2] **12** उसे अगली सुबह
तक गोश्त बचाकर नहीं रखना चाहिए[3]
और उसकी एक भी हड्डी नहीं तोड़नी
चाहिए।[4] उसे सारी विधियों के मुताबिक
ही तैयारी करनी चाहिए। **13** लेकिन
अगर कोई आदमी शुद्ध है या दूर सफर
पर नहीं है, फिर भी वह लापरवाह होकर
फसह का बलिदान नहीं तैयार करता, तो
उसे मौत की सज़ा दी जाए[5] क्योंकि उसने
तय वक्त पर यहोवा को बलिदान नहीं
चढ़ाया है। उसे अपने पाप का लेखा देना
होगा।

14 अगर तुम्हारे बीच कोई परदेसी
रहता है, तो उसे भी यहोवा के लिए फसह
का बलिदान तैयार करना चाहिए।[6]
फसह के बारे में जो-जो विधियाँ और
तरीके बताए गए हैं, ठीक उसी तरह उसे
यह तैयारी करनी चाहिए।[7] तुम सबके
लिए एक ही विधि होगी, फिर चाहे तुम
पैदाइशी इसराएली हो या परदेसी।'"[8]

15 जिस दिन पवित्र डेरा यानी गवाही
के संदूक का तंबू खड़ा किया गया था,[9]
उस दिन उसके ऊपर बादल आकर छा
गया। मगर शाम को वह डेरे के ऊपर
आग-सा दिखायी देने लगा और सुबह
तक वैसा ही रहा।[10] **16** ऐसा हर
दिन होता रहा: दिन में पवित्र डेरे के
ऊपर बादल होता और रात को वह
आग-सा दिखायी देता।[11] **17** जब भी
तंबू के ऊपर से बादल हटता तो इस-
राएली फौरन अपना पड़ाव उठाकर आगे
बढ़ने लगते।[12] और जहाँ बादल रुक
जाता, वहीं वे अपनी छावनी डालते।[13]
18 यहोवा के आदेश पर इसराएली
रवाना होते और यहोवा के आदेश पर
ही वे अपनी छावनी डालते।[1] जब तक
बादल पवित्र डेरे के ऊपर ठहरा रहता
तब तक वे अपनी छावनी डाले रहते।
19 अगर बादल बहुत दिनों तक डेरे के
ऊपर ठहरा रहता, तो इसराएली यहोवा
की आज्ञा मानकर उतने दिनों तक अपना
पड़ाव नहीं उठाते।[2] **20** लेकिन कभी-
कभी बादल कुछ ही दिनों के लिए डेरे
के ऊपर ठहरता। यहोवा के आदेश पर
इसराएली अपनी छावनी डाले रहते और
यहोवा के आदेश पर ही वे रवाना होते।
21 कभी-कभी तो बादल सिर्फ शाम से
सुबह तक ही ठहरता था। सुबह जब
बादल डेरे पर से उठता तो वे रवाना
हो जाते। चाहे दिन हो या रात, जब भी
बादल डेरे के ऊपर से उठता, इस-
राएली अपना पड़ाव उठाकर चल देते।[3]
22 और बादल डेरे के ऊपर चाहे दो दिन
या एक महीना या उससे भी ज़्यादा समय
तक रुकता, इसराएली उतने समय तक
अपनी छावनी डाले रहते और पड़ाव नहीं
उठाते। लेकिन जब बादल उठता तब वे
भी अपना पड़ाव उठाकर चल देते।
23 यहोवा के आदेश पर वे अपना पड़ाव
डालते और यहोवा के आदेश पर ही वे
रवाना होते। वे यहोवा की हर आज्ञा
मानते थे। यहोवा उनसे मूसा के ज़रिए
जो कहता वे वही करते थे।

10
इसके बाद यहोवा ने मूसा से
कहा, **2** "तू दो तुरहियाँ बन-
वाना।[4] चाँदी को हथौड़े से पीटकर ये
तुरहियाँ बनायी जाएँ। जब भी मंडली के
लोगों को बताना हो कि वे सब एक जगह
इकट्ठा हो जाएँ या सभी अपने पड़ाव उठा-
कर आगे बढ़ें, तो ये तुरहियाँ फूँक-
कर इसका ऐलान करना। **3** जब दोनों
तुरहियाँ फूँकी जाएँगी तो पूरी मंडली

9:11 *शा., "दो शामों के बीच।"

अध्य. 9
1 2इत 30:2, 15
2 निर्ग 12:8
3 निर्ग 12:10
4 निर्ग 12:46; भज 34:20; यूह 19:36
5 निर्ग 12:15
6 निर्ग 12:19, 48
7 निर्ग 12:8
8 लैव 24:22; व्य 31:12
9 निर्ग 40:2, 17
10 निर्ग 40:34, 38
11 निर्ग 13:22; नहे 9:19
12 गि 10:11, 34
13 निर्ग 40:36, 37

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 17:1; गि 10:11-13
2 निर्ग 40:37
3 निर्ग 40:36; भज 78:14

अध्य. 10
4 लैव 23:24

को भेंट के तंबू के द्वार पर तेरे पास इकट्ठा होना चाहिए।[1] 4 लेकिन जब एक ही तुरही फूँकी जाएगी तो सिर्फ प्रधानों को, जो हज़ारों इसराएलियों से बने अलग-अलग दल के मुखिया हैं, तेरे पास आना चाहिए।[2]

5 जब तुरहियाँ चढ़ते-उतरते स्वर में फूँकी जाएँगी, तो पूरब की तरफ की छावनी[3] अपना पड़ाव उठाए। 6 जब तुरहियाँ चढ़ते-उतरते स्वर में दूसरी बार फूँकी जाएँगी, तो दक्षिण की छावनी[4] अपना पड़ाव उठाए। हर छावनी को अपना पड़ाव उठाने का आदेश देने के लिए इसी तरह तुरहियाँ फूँककर ऐलान किया जाए।

7 जब पूरी मंडली को एक-साथ बुलाना हो तो तुरहियाँ फूँकी जानी चाहिए,[5] मगर चढ़ते-उतरते स्वर में नहीं। 8 तुरहियाँ फूँकने का काम हारून के बेटों यानी याजकों को करना चाहिए।[6] तुरहियों के इस्तेमाल के बारे में यह नियम तुम पर और तुम्हारी आनेवाली पीढ़ियों पर सदा के लिए लागू रहेगा।

9 अगर तुम्हें कभी अपने देश में ऐसे किसी विरोधी से युद्ध करना पड़े जो तुम पर अत्याचार करता है, तो तुम तुरहियाँ फूँककर युद्ध का ऐलान करना।[7] तब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम पर ध्यान देगा और तुम्हें दुश्मनों से बचाएगा।

10 इसके अलावा, तुम खुशी के मौकों पर[8] भी तुरहियाँ फूँकना। त्योहारों में[9] और हर महीने की शुरूआत में जब तुम होम-बलियाँ और शांति-बलियाँ चढ़ाओगे[10] तो तुरहियाँ फूँकना। इससे तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें याद करेगा। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”[11]

11 जब दूसरे साल के दूसरे महीने का 20वाँ दिन[1] आया तो वह बादल, जो गवाही के संदूक के पवित्र डेरे के ऊपर ठहरा हुआ था, उठने लगा।[2] 12 तब इसराएलियों ने सीनै वीराने से अपना पड़ाव उठाया और वे आगे के लिए रवाना हुए। वे उसी कायदे से निकले जो उन्हें बताया गया था।[3] और वे तब तक सफर करते रहे जब तक बादल पारान वीराने में आकर नहीं ठहर गया।[4] 13 इस तरह इसराएली पहली बार उस कायदे से अपना पड़ाव उठाकर रवाना हुए जो यहोवा ने मूसा के ज़रिए उन्हें बताया था।[5]

14 सबसे पहले यहूदा का तीन गोत्रोंवाला दल अपने दल के साथ निकला। इस दल का अधिकारी अम्मीनादाब का बेटा नहशोन था।[6] 15 इस्साकार गोत्र का अधिकारी ज़ुआर का बेटा नतनेल था।[7] 16 जबूलून गोत्र का अधिकारी हेलोन का बेटा एलीआब था।[8]

17 फिर पवित्र डेरा खोला गया[9] और गेरशोन के बेटे[10] और मरारी के बेटे[11] डेरे के अलग-अलग हिस्से उठाकर रवाना हुए।

18 इसके बाद रूबेन का तीन गोत्रोंवाला दल अपने दल के साथ निकला। इस दल का अधिकारी शदेऊर का बेटा एलीसूर था।[12] 19 शिमोन गोत्र का अधिकारी सूरीशद्दै का बेटा शलूमीएल था।[13] 20 गाद गोत्र का अधिकारी दूएल का बेटा एल्यासाप था।[14]

21 इन सबके बाद कहाती पवित्र-स्थान की चीज़ें उठाकर निकले[15] ताकि जब तक वे नयी जगह पहुँचें तब तक डेरा खड़ा हो चुका हो।

22 फिर एप्रैम का तीन गोत्रोंवाला दल अपने दल के साथ निकला। इस

अध्य. 10

1 गि 1:18; व्य 29:10, 11
2 निर्ग 18:21; गि 1:16; गि 7:2; व्य 1:15; व्य 5:23
3 गि 2:3
4 गि 2:10
5 गि 10:3
6 गि 31:6; 1इत 15:24; 1इत 16:6; 2इत 29:26; नहे 12:35, 41
7 2इत 13:12
8 1इत 15:28; 2इत 5:12; 2इत 7:6; एज 3:10
9 लैव 23:24; गि 29:1
10 लैव 3:1; गि 28:11
11 निर्ग 6:7; लैव 11:45

दूसरा कॉल.

1 गि 1:1
2 गि 9:17; भज 78:14
3 निर्ग 40:36; गि 2:9, 16, 17, 24, 31
4 गि 12:16; गि 13:26; व्य 1:1, 2
5 गि 2:34; गि 9:23
6 गि 1:4, 7; गि 2:3
7 गि 1:4, 8; गि 2:5
8 गि 2:7
9 गि 1:51
10 गि 3:25, 26
11 गि 3:36, 37
12 गि 1:4, 5; गि 2:10
13 गि 1:5, 6; गि 2:12
14 गि 1:4, 14; गि 2:14
15 गि 3:30, 31; गि 4:15; गि 7:9

दल का अधिकारी अम्मीहूद का बेटा एली-
शामा था।[1] 23 मनश्शे गोत्र का अधि-
कारी पदासूर का बेटा गमलीएल था।[2]
24 बिन्यामीन गोत्र का अधिकारी गिदोनी
का बेटा अबीदान था।[3]

25 इसके बाद दान का तीन गोत्रों-
वाला दल अपने दल के साथ निकला।
यह दल सब गोत्रों की हिफाज़त करने
के लिए सबसे पीछे चलता था। इस दल
का अधिकारी अम्मीशद्दै का बेटा अही-
एजेर था।[4] 26 आशेर गोत्र का अधि-
कारी ओकरान का बेटा पगीएल था।[5]
27 नप्ताली गोत्र का अधिकारी एनान
का बेटा अहीरा था।[6] 28 जब भी इस-
राएली अपने दलों के साथ पड़ाव उठाकर
एक जगह से दूसरी जगह जाते, तो वे इसी
कायदे से रवाना होते थे।[7]

29 फिर मूसा ने अपने ससुर मिद्यानी
रूएल*[8] के बेटे होबाब से कहा, “हम
लोग उस देश को जा रहे हैं जिसके बारे
में यहोवा ने हमसे कहा है, ‘यह देश मैं
तुम्हें दूँगा।’[9] हम चाहते हैं कि तू भी हमारे
साथ चले,[10] हम तेरे साथ भलाई करेंगे
क्योंकि यहोवा ने इसराएल को अच्छी-
अच्छी चीज़ें देने का वादा किया है।”[11]
30 मगर होबाब ने उससे कहा, “नहीं, मैं
तुम्हारे साथ नहीं आऊँगा। मैं अपने देश,
अपने रिश्तेदारों के यहाँ लौट जाऊँगा।”
31 तब मूसा ने उससे बिनती की, “हमें
छोड़कर मत जा क्योंकि तू ही जानता है
कि वीराने में हम किस-किस जगह पर
पड़ाव डाल सकते हैं। तू हमारे आगे-आगे
चलकर हमें रास्ता दिखा।* 32 और
अगर तू हमारे साथ चलेगा,[12] तो यहोवा
हमें जो आशीषें देनेवाला है उनमें से हम
तुझे भी हिस्सा देंगे।”

10:29 *यानी यित्रो। **10:31** *या “हमारे लिए आँखों का काम दे।”

अध्य. 10

1 गि 1:4, 10; गि 2:18, 24
2 गि 1:4, 10; गि 2:20
3 गि 1:4, 11; गि 2:22
4 गि 1:4, 12; गि 2:25, 31
5 गि 1:4, 13; गि 2:27
6 गि 1:4, 15; गि 2:29
7 गि 2:34
8 निर्ग 2:16, 18; निर्ग 3:1; निर्ग 18:1, 5
9 उत 12:7; उत 13:14, 15; उत 15:18
10 न्या 1:16; न्या 4:11; 1शम 15:6
11 निर्ग 3:8; निर्ग 6:7
12 न्या 1:16; न्या 4:11

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 3:1; निर्ग 19:3; निर्ग 24:16; व्य 5:2
2 निर्ग 25:10, 17
3 व्य 1:32, 33; यह 3:3, 4
4 निर्ग 13:21; नहे 9:12; भज 78:14
5 भज 132:8
6 व्य 1:10

अध्य. 11

7 निर्ग 32:11; व्य 9:19; भज 106:23; याकू 5:16
8 व्य 9:22
9 निर्ग 12:37, 38; लैव 24:10
10 1कुर 10:6, 10

33 तब इसराएली यहोवा के पहाड़[1]
के सामने से रवाना हुए और तीन
दिन तक सफर करते रहे। इस तीन
दिन के सफर के दौरान इसराएलियों के
लिए आराम करने की जगह तलाशी गयी
और पूरे सफर में यहोवा के करार का
संदूक[2] उनके आगे रहा।[3] 34 जब वे
अपना पड़ाव उठाकर चलते थे, तो दिन
के वक्त यहोवा का बादल[4] उनके ऊपर
छाया रहता था।

35 जब भी करार का संदूक उठा-
कर ले जाया जाता तो मूसा कहता,
“हे यहोवा, उठ![5] तेरे दुश्मन तेरे सामने
से तितर-बितर हो जाएँ। तुझसे नफ-
रत करनेवाले तेरे सामने से भाग जाएँ।”
36 और जब करार का संदूक नीचे रखा
जाता तो मूसा कहता, “हे यहोवा, लौट
आ! अपने हज़ारों-हज़ार इसराएलियों के
पास लौट आ!”[6]

11 अब लोग यहोवा के सामने बुरी
तरह शिकायत करने लगे। जब
यहोवा ने उनकी शिकायतें सुनीं तो वह
गुस्से से भड़क उठा। यहोवा ने आग बर-
सायी और वह छावनी के किनारे से लोगों
को भस्म करने लगा। 2 जब लोग मदद
के लिए मूसा को पुकारने लगे, तो मूसा
ने यहोवा से मिन्नत की[7] और आग बुझ
गयी। 3 उस जगह का नाम तबेरा*
पड़ा क्योंकि वहाँ यहोवा ने लोगों पर
आग बरसायी थी।[8]

4 इसके बाद इसराएलियों के बीच
लोगों की जो मिली-जुली भीड़* थी,[9] वह
खाने की चीज़ों की बड़ी लालसा करने
लगी[10] और इसराएली भी रोने लगे,
“काश, हमें इस वीराने में गोश्त मिल

11:3 *मतलब “जलन,” यानी शोला; ज्वाला। **11:4** *ज़ाहिर है कि वे उनके बीच रहनेवाले गैर-इसराएली थे।

जाता![1] 5 वे दिन हम कैसे भुला सकते
हैं जब हम मिस्र में मछलियाँ मुफ्त खाया
करते थे! और खीरा, तरबूज़, लहसुन,
प्याज़, क्या नहीं मिलता था वहाँ![2]
6 मगर अब देखो, हम सूखते जा रहे
हैं! सिवा इस मन्ना के यहाँ कुछ नहीं
मिलता!”[3]

7 मन्ना[4] धनिए के बीज जैसा था।[5]
वह दिखने में गुग्गुल पौधे के गोंद की
तरह था। 8 लोग इधर-उधर जाकर
ज़मीन से उसे बटोरते थे और फिर
हाथ की चक्की में पीसते या ओखली में
कूटते थे। इसके बाद वे उसे या तो
हाँडी में उबालकर खाते या उससे गोल-
गोल रोटियाँ बनाकर खाते थे।[6] उसका
स्वाद पुए जैसा था। 9 रात के वक्त
जब छावनी में ओस पड़ती तो उसके साथ
मन्ना गिरता था।[7]

10 मूसा ने देखा कि पूरी छावनी
में कोहराम मचा हुआ है। हर परि-
वार और हर इंसान अपने तंबू के द्वार
पर बैठा अपना रोना रो रहा है। यह
देखकर यहोवा का क्रोध भड़क उठा[8]
और मूसा को भी गुस्सा आया।
11 उसने यहोवा से कहा, “तू क्यों अपने
इस दास को सता रहा है? आखिर मैंने
ऐसा क्या किया जो तू मुझसे नाराज़ है?
तूने क्यों इन सारे लोगों का बोझ मुझ
पर लाद दिया?[9] 12 क्या मैं इन सबका
पिता हूँ? क्या मैंने इन्हें जन्म दिया है?
फिर तू मुझसे क्यों कहता है कि जैसे
एक धाई दूध-पीते बच्चे को गोद में लिए
फिरती है, वैसे ही तू इनकी देखभाल कर
और उस देश में ले जा जिसे देने के बारे में
मैंने उनके पुरखों से शपथ खायी थी?[10]
13 ये लोग मुझसे रो-रोकर कहते हैं,
‘हमें खाने को गोश्त दे!’ अब तू ही बता,
इन सबके लिए गोश्त मैं कहाँ से लाऊँ?
14 मैं अकेला इन सबको सँभालते-
सँभालते थक गया हूँ। अब मुझसे और
नहीं होगा।[1] 15 अगर तू मुझसे यह
बोझ दूर नहीं करना चाहता तो अभी-के-
अभी मुझे मार डाल।[2] लेकिन अगर तेरी
कृपा मुझ पर है, तो मुझ पर और मुसीबतें
न आने दे।”

16 यहोवा ने मूसा से कहा, “इस-
राएल के मुखियाओं में से 70 आदमी
चुन, ऐसे आदमी जिन्हें तू जानता है*
कि वे लोगों के मुखिया और अधि-
कारी हैं।[3] तू उन्हें भेंट के तंबू के पास ले
जा और अपने साथ खड़ा कर। 17 मैं
आकर वहाँ तुझसे बात करूँगा[4] और
तुझ पर मेरी जो पवित्र शक्ति[5] है
उसमें से थोड़ी लेकर उन्हें दूँगा। और वे
लोगों को सँभालने की ज़िम्मेदारी निभाने
में तेरी मदद करेंगे ताकि यह सारा बोझ
तुझे अकेले न उठाना पड़े।[6] 18 और
तू लोगों से कहना, ‘कल के लिए तैयार
हो जाओ।[7] कल तुम्हें ज़रूर खाने को
गोश्त मिलेगा, क्योंकि तुम जो रोना रोते
हो, “यहाँ हमें खाने के लिए गोश्त कौन
देगा? हम मिस्र में ही अच्छे थे,”[8] यह
सब यहोवा ने सुना है।[9] यहोवा तुम्हें
ज़रूर गोश्त देगा और तुम खाओगे।[10]
19 तुम एक या 2 दिन नहीं, 5 या
10 या 20 दिन नहीं, 20 बल्कि पूरे
महीने खाते रहोगे, इतना कि वह तुम्हारे
नथनों से निकलने लगेगा और तुम्हें उससे
घिन हो जाएगी,[11] क्योंकि तुमने यहोवा
को ठुकरा दिया है जो तुम्हारे बीच है
और तुमने उसके सामने रो-रोकर कहा है,
“हम मिस्र छोड़कर क्यों आए?”’”[12]

21 तब मूसा ने कहा, “यहाँ तो पैदल
सैनिकों की गिनती ही 6,00,000 है।[13]
और तू कहता है कि मैं सबको गोश्त दूँगा,

11:16 *या “जिन्हें तू पहचानता है।”

अध्य. 11

1 भज 78:18, 22; भज 106:14
2 निर्ग 16:3
3 निर्ग 16:35; गि 21:5
4 निर्ग 16:14; नहे 9:20; यूह 6:31
5 निर्ग 16:31
6 निर्ग 16:16, 23
7 भज 78:24
8 गि 11:1
9 निर्ग 17:4; व्य 1:12
10 उत 13:14, 15; उत 26:3

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 18:17, 18; व्य 1:9
2 1रा 19:2, 4; अय 6:8, 9
3 व्य 16:18
4 निर्ग 19:11; निर्ग 25:22; निर्ग 34:5; गि 11:25; गि 12:5; गि 12:8
5 1शम 10:6; 2रा 2:15; नहे 9:20; प्रेष 2:17
6 निर्ग 18:21, 22
7 निर्ग 19:10
8 गि 11:4, 5
9 निर्ग 16:7
10 निर्ग 16:8
11 भज 78:29
12 गि 21:5
13 निर्ग 12:37; निर्ग 38:26; गि 1:45, 46

उन्हें महीने-भर गोश्त खिलाऊँगा! यह कैसे हो सकता है? **22** भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के झुंड-के-झुंड भी हलाल कर दिए जाएँ तो भी क्या इतने सारे लोगों के लिए काफी होगा? या अगर समुंदर की सारी मछलियाँ पकड़ ली जाएँ, फिर भी क्या उनके खाने के लिए काफी होगा?”

23 यहोवा ने मूसा से कहा, “क्या यहोवा का हाथ इतना छोटा है[1] कि वह लोगों को खिला न सके? अब तू देखेगा कि मैंने तुझसे जो कहा है वह होता है या नहीं।”

24 तब मूसा बाहर आया और उसने लोगों को बताया कि यहोवा ने उससे क्या कहा है। मूसा ने लोगों के मुखियाओं में से 70 आदमी चुने और उनसे कहा कि वे तंबू के चारों तरफ खड़े हो जाएँ।[2] **25** फिर यहोवा एक बादल में उतरा[3] और उसने मूसा से बात की।[4] मूसा पर उसकी जो पवित्र शक्ति थी, उसमें से थोड़ी लेकर[5] उसने उन 70 मुखियाओं में से हरेक को दी। जैसे ही उन सब पर पवित्र शक्ति आयी, वे भविष्यवक्ताओं जैसा व्यवहार करने लगे।*[6] मगर इसके बाद उन्होंने फिर कभी ऐसा व्यवहार नहीं किया।

26 एलदाद और मेदाद नाम के दो मुखिया तंबू के पास नहीं गए बल्कि छावनी में ही रहे। वे उन आदमियों में से थे जिनके नाम लिखे गए थे। इसलिए उन दोनों पर भी पवित्र शक्ति आयी, इसके बावजूद कि वे तंबू के पास नहीं गए। और वे दोनों छावनी में भविष्यवक्ताओं जैसा व्यवहार करने लगे। **27** यह देखकर एक जवान ने दौड़कर मूसा को यह खबर दी: “एलदाद और मेदाद छावनी में भविष्यवक्ताओं जैसा व्यवहार कर रहे हैं!” **28** तब नून के बेटे यहोशू[1] ने, जो जवानी की उम्र से मूसा का सेवक था, मूसा से कहा, “मालिक, उन्हें रोक!”[2] **29** मगर मूसा ने उससे कहा, “क्या तुझे मेरे लिए जलन हो रही है? मैं तो यही चाहूँगा कि यहोवा के सब लोग भविष्य-वक्ता बन जाएँ और यहोवा उन्हें अपनी पवित्र शक्ति दे।” **30** इसके बाद मूसा इसराएल के मुखियाओं के साथ छावनी में लौट गया।

31 फिर यहोवा ने ऐसी तेज़ हवा चलायी जो समुंदर के ऊपर उड़नेवाली बटेरों को अपने साथ बहाकर ले आयी और उन्हें छावनी के आस-पास गिरा दिया।[3] वे इतनी भारी तादाद में थीं कि छावनी के दोनों तरफ एक दिन के सफर की दूरी तक फैल गयीं। वे छावनी के चारों तरफ ज़मीन से करीब दो हाथ* की ऊँचाई तक छा गयीं। **32** अब लोग सारा दिन और सारी रात जागकर बटेर इकट्ठा करते रहे। फिर वे अगले दिन भी जा-जाकर बटेर जमा करते रहे। किसी ने भी दस होमेर* से कम नहीं बटोरा। और वे छावनी के चारों तरफ अपने लिए बटेरों का गोश्त फैलाते गए। **33** मगर लोगों ने बटेरों का गोश्त खाने के लिए दाँतों से काटा ही था और उसे चबा भी न पाए थे कि यहोवा का क्रोध उन पर भड़क उठा। यहोवा ने उन पर ऐसा कहर ढाया कि बड़ी तादाद में लोग मारे गए।[4]

34 लोगों ने उस जगह का नाम किब-रोत-हत्तावा* रखा[5] क्योंकि वहाँ उन्होंने उन लोगों को दफनाया जिन्होंने खाने के

अध्य. 11
1 उत 18:14, यश 59:1, मर 10:27, लूक 1:37
2 गि 11:16
3 निर्ग 33:9, गि 12:5, व्य 31:15
4 भज 99:7
5 गि 11:17, 2रा 2:9, 15
6 1शम 10:6, 1शम 19:20

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 17:9, निर्ग 24:13, निर्ग 33:11, गि 27:18-20, व्य 31:3
2 मर 9:38
3 निर्ग 16:13, भज 78:26, 27
4 भज 78:30,31, 1कुर 10:10
5 गि 33:16, व्य 9:22

11:25 *या “वे भविष्यवाणी करने लगे।”

11:31 *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें। **11:32** *एक होमेर 220 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। **11:34** *मतलब “लालच की कब्रें।”

लिए लालच किया था।[1] **35** फिर लोग किबरोत-हत्तावा से हसेरोत के लिए रवाना हुए और वहाँ ठहरे।[2]

12 अब मिरयम और हारून ने मूसा के खिलाफ कुड़कुड़ाना शुरू किया क्योंकि मूसा की पत्नी एक कूशी औरत थी।[3] **2** वे कहने लगे, "क्या यहोवा ने सिर्फ मूसा के ज़रिए ही बात की है? क्या उसने हमारे ज़रिए बात नहीं की है?"[4] यहोवा सबकुछ सुन रहा था।[5] **3** मूसा धरती के सब इंसानों में से सबसे दीन स्वभाव का था।*[6]

4 यहोवा ने फौरन मूसा, हारून और मिरयम से कहा, "तुम तीनों भेंट के तंबू के पास जाओ।" तब वे तीनों तंबू के पास गए। **5** यहोवा बादल के खंभे में उतरा[7] और तंबू के द्वार पर खड़ा हुआ। फिर उसने हारून और मिरयम को आगे आने के लिए कहा और वे दोनों आगे गए। **6** परमेश्वर ने उनसे कहा, "तुम दोनों मेरी बात ध्यान से सुनो। अगर तुम लोगों के बीच यहोवा का कोई भविष्यवक्ता होता, तो मैं उस पर दर्शन के ज़रिए खुद को प्रकट करता[8] और उससे सपने में बात करता।[9] **7** मगर मेरे सेवक मूसा की बात अलग है। मैंने उसे अपने पूरे घराने पर अधिकार सौंपा है।*[10] **8** मैं उससे आमने-सामने बात करता हूँ[11] और उसे पहेलियों में नहीं बल्कि साफ-साफ अपनी बात बताता हूँ। और खुद यहोवा उसके सामने प्रकट होता है। फिर तुम दोनों ने मेरे सेवक मूसा के खिलाफ बात करने की जुर्रत कैसे की?"

9 यहोवा उन दोनों पर बहुत गुस्सा हुआ और उनके पास से चला गया। **10** बादल तंबू के ऊपर से दूर हट गया और तभी अचानक मिरयम को कोढ़ हो गया और उसका पूरा शरीर बर्फ जैसा सफेद हो गया।[1] जब हारून ने मुड़कर मिरयम पर नज़र डाली तो उसने देखा कि उसे कोढ़ हो गया है।[2] **11** हारून ने फौरन मूसा से बिनती की, "हे मालिक, हम पर रहम कर! हमारे पाप की इतनी बड़ी सज़ा मत दे। हमने सचमुच बेवकूफी की है। **12** मिरयम को ऐसे मरे हुए बच्चे की तरह मत रहने दे जो अपनी माँ के गर्भ से अधगला निकलता है।" **13** तब मूसा ने गिड़गिड़ाकर यहोवा से बिनती की, "हे परमेश्वर, दया करके मिरयम को ठीक कर दे! उस पर रहम कर!"[3]

14 यहोवा ने मूसा से कहा, "अगर उसका पिता उसके मुँह पर थूकता तो क्या वह सात दिन तक अपमान नहीं सहती? उसे सात दिन तक छावनी के बाहर अकेले रहने दे।[4] उसके बाद उसे वापस छावनी में लाया जा सकता है।" **15** इसलिए मिरयम को सात दिन तक छावनी से बाहर अकेले रहने दिया गया।[5] और जब तक उसे वापस छावनी में नहीं लाया गया तब तक लोगों ने वहाँ से अपना पड़ाव नहीं उठाया। **16** फिर लोग हसेरोत से पड़ाव उठाकर[6] आगे बढ़े और उन्होंने पारान वीराने में छावनी डाली।[7]

13 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, **2** "मैं इसराएलियों को जो कनान देश देनेवाला हूँ, उसकी जासूसी करने तू कुछ आदमियों को वहाँ भेज। इसके लिए तू हर गोत्र में से एक ऐसे आदमी को चुन जो लोगों का प्रधान है।"[8]

12:3 * या "बहुत नम्र था (या कोमल स्वभाव का था), उसके जितना नम्र इंसान कोई नहीं था।" **12:7** * शा., "मेरे पूरे घराने में वह खुद को विश्वासयोग्य साबित कर रहा है।"

अध्य. 11
1 1कुर 10:6
2 गि 33:17

अध्य. 12
3 निर्ग 2:16, 21
4 निर्ग 4:14-16, निर्ग 4:30, निर्ग 15:20, निर्ग 28:30, मी 6:4
5 गि 11:1
6 मत 11:29
7 निर्ग 34:5, गि 11:25
8 उत 15:1, उत 46:2, निर्ग 24:9-11
9 उत 31:10, 11
10 इब्र 3:2, 5
11 निर्ग 33:11, व्य 34:10

दूसरा कॉल.
1 व्य 24:9
2 2इत 26:19
3 निर्ग 32:11, याकू 5:16
4 लैव 13:45, 46, गि 5:2
5 व्य 24:9
6 गि 11:35, गि 33:18
7 गि 10:12

अध्य. 13
8 निर्ग 18:25, व्य 1:15, व्य 1:22, 23

3 मूसा ने यहोवा का आदेश मान-
कर पारान वीराने[1] से कुछ आदमियों को
कनान भेजा। ये सभी आदमी इसराए-
लियों के प्रधान थे। 4 उनके नाम ये
हैं: रूबेन गोत्र से जक्कूर का बेटा शम्मू,
5 शिमोन गोत्र से होरी का बेटा शापात,
6 यहूदा गोत्र से यपुन्ने का बेटा कालेब,[2]
7 इस्साकार गोत्र से यूसुफ का बेटा
यिगाल, 8 एप्रैम गोत्र से नून का बेटा
होशेआ,[3] 9 बिन्यामीन गोत्र से रापू का
बेटा पलती, 10 जबूलून गोत्र से सोदी
का बेटा गद्दीएल, 11 यूसुफ के बेटे[4]
मनश्शे के गोत्र[5] से सूसी का बेटा गद्दी,
12 दान गोत्र से गमल्ली का बेटा अम्मी-
एल, 13 आशेर गोत्र से मीकाएल का
बेटा सतूर, 14 नप्ताली गोत्र से वोप्सी
का बेटा नहबी 15 और गाद गोत्र से
माकी का बेटा गूएल। 16 ये उन आद-
मियों के नाम हैं जिन्हें मूसा ने देश की
जासूसी करने भेजा था। मूसा ने नून के
बेटे होशेआ का नाम यहोशू* रखा।[6]

17 जब मूसा ने उन आदमियों को
कनान देश की जासूसी करने भेजा तो
उनसे कहा: "तुम लोग इस रास्ते से
नेगेब जाना और उसके बाद पहाड़ी
प्रदेश में जाना।[7] 18 तुम देख आना कि
देश कैसा है,[8] वहाँ किस तरह के लोग
रहते हैं, बहुत ताकतवर हैं या मामूली
लोग, वहाँ की आबादी कितनी होगी,
19 देश की हालत कैसी है, अच्छी है
या बुरी, वहाँ किलेबंद शहर हैं या खुली
बस्तियाँ। 20 तुम यह भी देख आना
कि वहाँ की ज़मीन कैसी है, उपजाऊ है
या बंजर,[9] वहाँ पेड़ हैं या नहीं। तुम लोग
हिम्मत जुटाकर[10] वहाँ से कुछ फल भी
लेते आना।" उस समय पके अंगूरों की
पहली फसल का मौसम चल रहा था।[1]

21 तब वे आदमी रवाना हुए। उन्होंने
सिन नाम के वीराने[2] से लेकर लेबो-
हमात*[3] के पास रहोब[4] तक पूरे देश
की जासूसी की। 22 जब वे ऊपर
नेगेब पहुँचे तो वे हेब्रोन[5] गए जहाँ अही-
मन, शेशै और तल्मै[6] नाम के अनाकी
लोग[7] रहते थे। हेब्रोन, मिस्र के सोअन
शहर से सात साल पहले बसाया गया
था। 23 जब वे एशकोल घाटी[8] पहुँचे,
तो वहाँ उन्होंने अंगूर की एक डाली काटी
जिसमें अंगूरों का एक बड़ा गुच्छा था।
इसे दो आदमियों को एक लंबे डंडे
पर उठाकर ले जाना पड़ा। वहाँ से
उन्होंने कुछ अनार और अंजीर भी
लिए।[9] 24 उन्होंने उस जगह का नाम
एशकोल* घाटी[10] रखा, क्योंकि वे इस-
राएली आदमी वहीं से अंगूरों का गुच्छा
काटकर लाए थे।

25 फिर वे आदमी देश की जासूसी
करके 40 दिन[11] बाद वापस आ गए।
26 वे मूसा, हारून और इसराएलियों की
पूरी मंडली के पास लौट आए जो पारान
वीराने के कादेश[12] में ठहरे हुए थे।
उन्होंने लोगों की पूरी मंडली को देश के
बारे में खबर दी और वहाँ से लाए हुए
फल दिखाए। 27 उन्होंने मूसा को यह
खबर दी: "तूने हमें जिस देश की जासूसी
करने भेजा था, वहाँ सचमुच दूध और
शहद की धाराएँ बहती हैं।[13] ये देखो
वहाँ के फल।[14] 28 मगर वहाँ के लोग
बहुत ताकतवर हैं। उनके बड़े-बड़े शहर
हैं जिनके चारों तरफ मज़बूत किलाबंदी
है। हमने वहाँ अनाकी लोगों को भी
देखा।[15] 29 और नेगेब[16] में अमालेकी

13:16 *या "यहोशुआ" जिसका मतलब है, "यहोवा उद्धार है।"

13:21 *या "हमात के प्रवेश।" **13:24** *मतलब "अंगूरों का गुच्छा।"

अध्य. 13
1 गि 12:16; व्य 1:19
2 गि 13:30; गि 14:30, 38; गि 34:18, 19; 1इत 4:15
3 गि 11:28; गि 13:16; गि 14:30; गि 34:17
4 उत 48:5
5 उत 48:17, 19
6 निर्ग 17:9
7 व्य 1:7
8 निर्ग 3:8; व्य 8:7
9 नहे 9:25; यहे 20:6
10 व्य 31:6; यह 1:6, 9

दूसरा कॉल.
1 गि 13:23
2 गि 34:2, 3; यह 15:1
3 गि 34:8
4 2शम 10:6, 8
5 उत 13:18; यह 15:13; यह 21:11, 12
6 न्या 1:10
7 व्य 9:1, 2; यह 11:21
8 गि 32:9
9 व्य 1:25; व्य 8:7-9
10 व्य 1:24
11 गि 14:33, 34
12 व्य 1:19
13 निर्ग 3:8; लैव 20:24
14 व्य 1:25
15 गि 13:22, 33; व्य 1:27, 28
16 गि 13:17

लोग[1] रहते हैं और पहाड़ी प्रदेश में हित्ती,
यबूसी[2] और एमोरी[3] बसे हुए हैं और
समुंदर किनारे[4] और यरदन नदी के पास-
वाले इलाकों में कनानी रहते हैं।”[5]
30 फिर कालेब ने उन लोगों को शांत
करने की कोशिश की जो मूसा के
सामने खड़े थे। कालेब ने उनसे कहा,
“हम ज़रूर उस देश पर कब्ज़ा कर
लेंगे, हम ज़रूर उसे जीत लेंगे। चलो हम
फौरन जाकर उस पर हमला करते
हैं।”[6] 31 मगर जो आदमी कालेब के
साथ जासूसी करने गए थे वे कहने लगे,
“नहीं, हम वहाँ के लोगों से नहीं लड़
सकते। वे हमसे कहीं ज़्यादा ताकतवर
हैं।”[7] 32 इस तरह ये आदमी उस देश
के बारे में लोगों को बुरी-बुरी बातें सुनाते
रहे[8] और यह कहते रहे, “हम जिस देश
की जासूसी करके आए हैं, वह अपने ही
लोगों को निगल लेता है और हमने वहाँ
जितने लोगों को देखा वे सब बहुत ही
लंबे-चौड़े हैं।[9] 33 हमने वहाँ नफिलीम
को भी देखा, हाँ, अनाकियों[10] को जो
नफिलीम के वंशज हैं। उनके सामने तो
हम टिड्डियाँ लग रहे थे और वे भी ज़रूर
हमें टिड्डी ही समझते होंगे।”

14 तब मंडली के सब लोग ये बातें
सुनकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने
लगे और सारी रात रोते रहे।[11] 2 सभी
इसराएली मूसा और हारून के खिलाफ
कुड़कुड़ाने लगे।[12] उनकी पूरी मंडली
कहने लगी, “काश, हम मिस्र में ही
मर जाते या इस वीराने में ही मर जाते!
3 यहोवा क्यों हमें उस देश में ले जा रहा
है?[13] बस इसलिए कि दुश्मन आकर हमें
तलवार से मार डालें और हमारे बीवी-
बच्चों को बंदी बनाकर ले जाएँ?[14] इससे
तो अच्छा है कि हम मिस्र लौट जाएँ।”[15]
4 यहाँ तक कि वे एक-दूसरे से कहने
लगे, “आओ हम अपने लिए एक अगुवा
चुन लेते हैं और मिस्र लौट जाते हैं!”[1]
5 तब मूसा और हारून, इसराएलियों
की पूरी मंडली के देखते मुँह के बल
ज़मीन पर गिरे। 6 और नून के बेटे
यहोशू[2] और यपुन्ने के बेटे कालेब[3] ने,
जो देश की जासूसी करनेवालों में से थे,
मारे दुख के अपने कपड़े फाड़े 7 और
उन्होंने इसराएलियों की पूरी मंडली को
समझाया, “हम जिस देश की जासूसी
करके आए हैं वह बहुत ही बढ़िया देश
है।[4] 8 अगर यहोवा की मंज़ूरी हम पर
बनी रही, तो वह ज़रूर हमें उस देश में
ले जाएगा जहाँ दूध और शहद की धाराएँ
बहती हैं[5] और हमें वह देश दे देगा।
9 मगर तुम लोग यहोवा के खिलाफ
बगावत मत करो और उस देश के
लोगों से मत डरो[6] क्योंकि हम उन्हें
आसानी से हरा सकते हैं।* उनकी हिफा-
ज़त करनेवाला कोई नहीं है जबकि हमारे
साथ यहोवा है।[7] इसलिए तुम उनसे मत
डरना।”
10 मगर लोगों की पूरी मंडली कहने
लगी कि हम इन दोनों को पत्थरों से मार
डालते हैं।[8] लेकिन यहोवा की महिमा भेंट
के तंबू पर इसराएल के सभी लोगों के
सामने प्रकट हुई।[9]
11 यहोवा ने मूसा से कहा, “ये लोग
और कब तक मेरी बेइज़्ज़ती करते
रहेंगे?[10] मैंने इनके बीच कितने चिन्ह
दिखाए हैं, मगर वह सब देखने के बाद भी
ये लोग कब तक मुझ पर विश्वास करने
से इनकार करते रहेंगे?[11] 12 अब मैं
इन पर महामारी ले आऊँगा और इनका
नामो-निशान मिटा दूँगा। और इनके
बदले तुझसे एक बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा जो

14:9 *शा., “वे हमारे लिए रोटी हैं।”

अध्य. 13
1 उत 36:12, निर्ग 17:8, 1शम 15:3
2 न्या 1:21, 2शम 5:6, 7
3 उत 10:15, 16
4 उत 10:19
5 निर्ग 23:23, व्य 7:1, व्य 20:17
6 यह 14:7, 8
7 गि 32:9
8 गि 14:36
9 आम 2:9
10 व्य 1:28, व्य 9:1, 2

अध्य. 14
11 व्य 1:32, 33
12 व्य 1:27, भज 106:25
13 भज 78:40
14 गि 14:31, व्य 1:39
15 गि 11:5

दूसरा कॉल.
1 नहे 9:17
2 गि 13:8, 16
3 गि 13:6, 16, गि 14:30
4 गि 13:26, 27, व्य 1:25, व्य 8:7, 8
5 निर्ग 3:8
6 व्य 7:17, 18, व्य 20:3
7 निर्ग 33:16, व्य 20:1
8 निर्ग 17:4
9 निर्ग 16:10
10 निर्ग 16:28, गि 14:22, 23
11 व्य 9:23, इब्र 3:19

इनसे कहीं ज़्यादा महान और ताकतवर
होगा।”[1]

13 मगर मूसा ने यहोवा से कहा,
“अगर तूने ऐसा किया तो यह खबर
मिस्रियों तक पहुँच जाएगी जिनके बीच
तू अपनी शक्ति से इन लोगों को यहाँ
ले आया है।[2] 14 और वे ज़रूर यह
बात इस देश के लोगों को बताएँगे, जो
पहले से जानते हैं कि तू यहोवा इन लोगों
के साथ है[3] और तू इनके सामने साफ़-
साफ़ प्रकट होता है।[4] उन्होंने सुना है
कि तू यहोवा है और तेरा बादल तेरे लोगों
के ऊपर खड़ा रहता है और तू दिन के
वक्त बादल के खंभे में और रात के वक्त
आग के खंभे में होकर उनके आगे-आगे
चलता है।[5] 15 अब अगर तू इन लोगों
को एक ही बार में मार डाले तो ये सारी
जातियाँ, जिन्होंने तेरे प्रताप के बारे में
सुना है, तेरे बारे में क्या कहेंगी? वे
यही कहेंगी, 16 ‘यहोवा ने उन लोगों से
शपथ खाकर कहा तो था कि वह उन्हें यह
देश दे देगा, मगर वह उन्हें उस देश में ले
जाने में नाकाम हो गया। इसलिए उसने
उन सबको वीराने में ही मार डाला।’[6]
17 इसलिए हे यहोवा, मेहरबानी करके
तू अपनी महाशक्ति दिखा, ठीक जैसे तूने
उस वक्त वादा किया था जब तूने कहा
था, 18 ‘यहोवा क्रोध करने में धीमा
और अटल प्यार से भरपूर है।[7] वह
गुनाहों और अपराधों को माफ करता है,
मगर जो दोषी है उसे सज़ा दिए बगैर हर-
गिज़ नहीं छोड़ेगा और पिता के गुनाह की
सज़ा उसके बेटों, पोतों और परपोतों तक
को देता है।’[8] 19 इसलिए दया करके
इन लोगों का गुनाह माफ कर दे, जैसे
तू इन्हें मिस्र से निकाल लाने के समय
से लेकर अब तक माफ करता आया है।
ऐसा करके दिखा कि तेरा अटल प्यार
कितना महान है।”[9]

20 तब यहोवा ने उससे कहा, “ठीक
है, जैसे तूने कहा है मैं उन्हें माफ
कर देता हूँ।[1] 21 मगर मेरे जीवन की
शपथ, पूरी धरती यहोवा की महिमा से
भर जाएगी।[2] 22 जिन लोगों ने मिस्र
में और इस वीराने में अपनी आँखों से मेरी
महिमा और मेरे चिन्ह देखे हैं[3] और फिर
भी बार-बार* मेरी परीक्षा लेते रहे[4] और
मेरी बात मानने से इनकार करते रहे,[5]
23 वे उस देश को कभी नहीं देख पाएँगे
जिसे देने के बारे में मैंने उनके पुरखों से
शपथ खायी थी। हाँ, जितने लोग मेरी
बेइज़्ज़ती करते हैं उनमें से कोई भी वह
देश नहीं देख पाएगा।[6] 24 मगर मैं
अपने सेवक कालेब[7] को ज़रूर उस देश
में ले जाऊँगा जहाँ वह जाकर आया है,
क्योंकि उसके मन का स्वभाव बाकी लोगों
से अलग है और वह पूरे दिल से मेरी
बतायी राह पर चलता आया है। उसकी
संतान उस देश को अपने अधिकार में
कर पाएगी।[8] 25 कल तुम लोग यहाँ
से वापस मुड़ जाओ और लाल सागर के
रास्ते से वीराने में जाओ,[9] क्योंकि यहाँ
घाटी के पास अमालेकी और कनानी लोग
रहते हैं।”[10]

26 फिर यहोवा ने मूसा और हारून
से कहा, 27 “दुष्टों की यह मंडली
और कब तक मेरे खिलाफ कुड़कुड़ाती
रहेगी?[11] इसराएली मेरे खिलाफ कुड़-
कुड़ाते हुए जो बातें कह रहे हैं, वह सब
मैंने सुनी हैं।[12] 28 तुम उनसे कहना
कि यहोवा ने ऐलान किया है, ‘मेरे
जीवन की शपथ, मैं तुम्हारे साथ ठीक
वही करूँगा जो मैंने तुम्हारे मुँह से सुना
है![13] 29 तुम सब इसी वीराने में ढेर
हो जाओगे।[14] तुममें से जितनों की उम्र
20 साल या उससे ज़्यादा है और जिनके

अध्य. 14
1 निर्ग 32:10
2 निर्ग 32:12, यहे 20:9
3 निर्ग 15:13, 14, यह 2:10, यह 5:1
4 व्य 4:12, व्य 5:4
5 निर्ग 13:21, भज 78:14
6 व्य 9:28
7 भज 103:8, मी 7:18
8 निर्ग 34:6, 7
9 निर्ग 34:9, भज 78:38

दूसरा कॉल.
1 याकू 5:16
2 भज 72:19, हब 2:14
3 नहे 9:17
4 निर्ग 17:2, भज 95:9, भज 106:14, इब्र 3:16
5 भज 81:11
6 गि 26:63, 64, गि 32:11, व्य 1:35, भज 95:11, भज 106:26, इब्र 3:18, इब्र 4:3
7 गि 13:30, गि 26:65
8 यह 14:9, 14
9 व्य 1:40
10 गि 13:29
11 निर्ग 16:28, गि 14:11
12 1कुर 10:6, 10
13 गि 14:2, गि 26:64, गि 32:11, व्य 1:35
14 भज 106:26, 1कुर 10:5, इब्र 3:17

14:22 *शा., “ये दसों बार।”

नाम लिखे गए हैं वे सब लोग, हाँ, जितनों ने मेरे खिलाफ कुड़कुड़ाया है वे सब-के-सब मारे जाएँगे।[1] **30** यपुन्ने के बेटे कालेब और नून के बेटे यहोशू को छोड़, तुममें से कोई भी उस देश में कदम नहीं रख पाएगा[2] जिसके बारे में मैंने शपथ खाकर कहा* था कि मैं तुम्हें वहाँ बसाऊँगा।[3]

31 मैं तुम्हारे बच्चों को, जिनके बारे में तुमने कहा था कि वे बंदी बना लिए जाएँगे,[4] उस देश में ले जाऊँगा और वे उस देश को देख पाएँगे जिसे तुमने ठुकरा दिया है।[5] **32** मगर तुम इसी वीराने में ढेर हो जाओगे। **33** और तुम्हारे बेटे 40 साल तक इसी वीराने में भेड़-बकरियों की चरवाही करेंगे[6] और तुम्हारे विश्वासघात* का लेखा उन्हें देना पड़ेगा। उन्हें तब तक यह सज़ा भुगतनी होगी जब तक कि तुममें से हर कोई इस वीराने में नहीं मर जाता।[7] **34** तुमने जितने दिन उस देश की जासूसी की थी उनमें से हर दिन के लिए एक साल के हिसाब से, यानी 40 दिन[8] के लिए 40 साल तक तुम्हें अपने गुनाहों का लेखा देना होगा।[9] तब तुम जान लोगे कि मेरे खिलाफ काम करने का* अंजाम क्या होता है।

35 यह मेरा वचन है, यहोवा का वचन। इन दुष्टों की मंडली ने एकजुट होकर मेरे खिलाफ बगावत की है इसलिए मैं इनका यही हश्र करूँगा: इस वीराने में इन सबका नाश हो जाएगा और ये लोग यहीं मर जाएँगे।[10] **36** और वे आदमी जिन्हें मूसा ने देश की जासूसी करने भेजा था और जिन्होंने देश के बारे में बुरी खबरें फैलाकर[1] लोगों की पूरी मंडली को मूसा के खिलाफ कुड़कुड़ाने के लिए उकसाया था, **37** हाँ, वे आदमी जिन्होंने उस देश के बारे में बुरी खबर दी, वे सज़ा पाएँगे और यहोवा के सामने मर जाएँगे।[2] **38** मगर जासूसों में से सिर्फ नून का बेटा यहोशू और यपुन्ने का बेटा कालेब ज़िंदा रहेंगे।'"[3]

39 जब मूसा ने ये बातें सभी इसराएलियों को सुनायीं तो उन्होंने बहुत शोक मनाया। **40** इतना ही नहीं, वे अगले दिन सुबह जल्दी उठे और पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे। उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "हमने पाप किया है। मगर अब हम उस देश में जाने के लिए तैयार हैं जिसके बारे में यहोवा ने हमें बताया है।"[4] **41** मगर मूसा ने उनसे कहा, "तुम यहोवा की आज्ञा के खिलाफ होकर वहाँ क्यों जा रहे हो? तुम इसमें कामयाब नहीं हो पाओगे। **42** तुम दुश्मनों से लड़ने के लिए पहाड़ पर मत जाओ, क्योंकि यहोवा तुम्हारे साथ नहीं है। तुम हार जाओगे।[5] **43** वहाँ तुम्हारा सामना अमालेकी और कनानी लोगों से होगा,[6] वे तुम्हें तलवार से मार डालेंगे। तुमने यहोवा के पीछे चलना छोड़ दिया है, इसलिए यहोवा तुम्हारा साथ नहीं देगा।"[7]

44 लेकिन लोग इतने गुस्ताख थे कि उन्होंने मूसा की एक न मानी और सीधे पहाड़ पर चढ़ने लगे।[8] मगर यहोवा के करार का संदूक छावनी के बीच ही रहा और मूसा भी वहीं ठहरा रहा।[9] **45** जब इसराएली पहाड़ पर जाने लगे तो वहाँ रहनेवाले अमालेकी और कनानी नीचे उतर आए और उन्होंने इसराएलियों को मार भगाया और उन्हें दूर होरमा तक खदेड़ दिया।[10]

14:30 *शा., "मैंने अपना हाथ उठाया।" **14:33** *शा., "वेश्या के कामों।" **14:34** *या "मुझसे दुश्मनी मोल लेने का।"

अध्य. 14

1 गि 1:45, 46; यहू 5
2 गि 26:65; गि 32:11, 12; व्य 1:34-38
3 निर्ग 6:8
4 गि 14:3; व्य 1:39
5 भज 106:24
6 गि 32:13; यह 14:10
7 व्य 1:3; व्य 2:14
8 गि 13:25
9 भज 95:10; प्रेष 7:36; प्रेष 13:18
10 गि 14:29; इब्र 3:17

दूसरा कॉल.

1 गि 13:32
2 1कुर 10:6, 10; यहू 5
3 गि 14:30; गि 26:65; गि 32:11, 12; व्य 1:35, 36; यह 14:6
4 व्य 1:41
5 लैव 26:14, 17; व्य 1:42
6 गि 13:29
7 2इत 15:2
8 व्य 1:43
9 गि 10:33
10 गि 21:1, 3; व्य 1:44

15 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
2 “तू इसराएलियों से कहना,
‘जब तुम आखिरकार उस देश में बस
जाओगे जो मैं तुम्हें देनेवाला हूँ[1] 3 और
तुम गाय-बैलों या भेड़-बकरियों के झुंड
में से किसी जानवर को आग में जला-
कर यहोवा के लिए उसकी बलि चढ़ाओ-
गे ताकि उसकी सुगंध पाकर यहोवा
खुश हो,[2] फिर चाहे वह होम-बलि के
लिए हो[3] या कोई खास मन्नत पूरी
करने की बलि के लिए या फिर साल
के अलग-अलग वक्त पर त्योहारों के
मौके[4] पर हो या स्वेच्छा-बलि के लिए
हो,[5] 4 तुम्हें जानवर की बलि के साथ
अनाज का चढ़ावा भी यहोवा के लिए
चढ़ाना चाहिए। इस चढ़ावे में एपा
का दसवाँ भाग* मैदा होना चाहिए[6]
जिसमें एक-चौथाई हीन# तेल मिला
हो। 5 जब भी तुम होम-बलि चढ़ाते
हो या एक नर मेम्ने की बलि चढ़ाते हो,
तो उसके साथ एक-चौथाई हीन दाख-
मदिरा का अर्घ भी चढ़ाना।[7] 6 या जब
तुम एक मेढ़ा चढ़ाते हो तो उसके साथ
अनाज के चढ़ावे में एपा का दो-दहाई
भाग मैदा भी देना जिसमें एक-तिहाई
हीन तेल मिला हो। 7 उसके साथ तुम
एक-तिहाई हीन दाख-मदिरा का अर्घ भी
चढ़ाना ताकि उसकी सुगंध पाकर यहोवा
खुश हो।

8 लेकिन अगर तुम होम-बलि के
लिए या अपनी खास मन्नत पूरी करने
की बलि के लिए[8] या शांति-बलि के लिए
यहोवा को एक बैल अर्पित करते हो,[9]
9 तो बैल के साथ अनाज के चढ़ावे[10] में
एपा का तीन-दहाई भाग मैदा देना जिसमें
आधा हीन तेल मिला हो। 10 साथ ही,
तुम आधा हीन दाख-मदिरा का अर्घ भी
चढ़ाना।[1] इसे आग में जलाकर यहोवा
के लिए अर्पित करना ताकि उसकी सुगंध
पाकर वह खुश हो। 11 जब भी तुम
एक बैल या मेढ़े या नर मेम्ने या बकरे की
बलि चढ़ाते हो तो उसके साथ-साथ तुम
ये चढ़ावे भी देना। 12 चाहे तुम कितने
भी जानवर चढ़ाओ, तुम्हें हर जानवर के
साथ ये चढ़ावे भी देने चाहिए। 13 हर
पैदाइशी इसराएली को चाहिए कि वह
इसी तरह जानवर को आग में जलाकर
यहोवा के लिए अर्पित करे ताकि उसकी
सुगंध पाकर वह खुश हो।

14 अगर कोई परदेसी, जो तुम्हारे
बीच रहता है या जिसका परिवार पुरखों
के ज़माने से तुम्हारे देश में बस गया है,
अपना बलिदान आग में जलाकर यहोवा
के लिए अर्पित करता है ताकि उसकी
सुगंध पाकर वह खुश हो, तो उसे भी बलि
उसी तरीके से चढ़ानी होगी जैसे तुम इस-
राएली चढ़ाते हो।[2] 15 तुम जो इस-
राएल की मंडली के हो, तुम्हारे लिए और
तुम्हारे बीच रहनेवाले परदेसियों के लिए
एक ही विधि रहेगी। यह विधि तुम पर
और तुम्हारी आनेवाली पीढ़ियों पर सदा
लागू रहेगी। यहोवा के सामने परदेसी भी
तुम्हारे बराबर हैं।[3] 16 तुम्हारे लिए
और तुम्हारे बीच रहनेवाले परदेसियों के
लिए एक ही कानून और एक ही न्याय-
सिद्धांत होगा।’”

17 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
18 “तू इसराएलियों से कहना, ‘जब तुम
उस देश में बस जाओगे जो मैं तुम्हें देने-
वाला हूँ 19 और वहाँ की उपज*
खाओगे,[4] तो तुम उस उपज में से कुछ

अध्य. 15
1 उत 15:18
2 लैव 1:9
3 लैव 1:2, 3
4 लैव 23:4, गि 28:16, गि 29:1, व्य 16:13, 16
5 लैव 7:16, लैव 22:18, 19, लैव 22:21
6 निर्ग 29:40, लैव 2:1, 11
7 गि 28:6, 7, गि 28:11, 14
8 लैव 7:16
9 लैव 1:3, लैव 3:1, 3, लैव 7:11
10 लैव 6:14, गि 28:11, 12, गि 29:6

दूसरा कॉल.
1 गि 28:11, 14
2 निर्ग 12:49, लैव 24:22, गि 9:14
3 लैव 19:34
4 यह 5:11, 12

15:4 *एपा का दसवाँ भाग 2.2 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। #एक हीन 3.67 ली. के बराबर होता था। अति. ख14 देखें।

15:19 *शा., “रोटी।”

लेकर यहोवा के लिए दान करना। **20** तुम पहले फल में से कुछ अनाज दरदरा कूटना और उससे छल्ले जैसी रोटियाँ बनाकर दान करना।[1] यह तुम उसी तरीके से दान करना जैसे तुम खलिहान से लाया हुआ अनाज दान करोगे। **21** इस तरह पहले फल में से कुछ अनाज को दरदरा कूटकर तैयार की गयी रोटियाँ तुम पीढ़ी-दर-पीढ़ी यहोवा के लिए दान में दिया करना।

22 अगर तुम लोगों से कोई गलती हो जाती है और तुम इन सारी आज्ञाओं को मानने से चूक जाते हो जो यहोवा ने मूसा को दी हैं, **23** यानी यहोवा की वे सारी आज्ञाएँ जो उस दिन से लागू हैं जिस दिन यहोवा ने मूसा के ज़रिए दी थीं और जो तुम पर और तुम्हारी आनेवाली पीढ़ियों पर सदा के लिए लागू रहेंगी, तो तुम्हें यह करना होगा: **24** अगर मंडली को नहीं मालूम कि उससे यह गलती हुई है, तो बाद में जब उसे पता चलता है तब पूरी मंडली को एक बैल की होम-बलि चढ़ानी चाहिए ताकि उसकी सुगंध पाकर यहोवा खुश हो। इस होम-बलि के साथ अनाज का चढ़ावा और अर्घ भी चढ़ाना चाहिए। यह सब उसी तरीके से चढ़ाना चाहिए जैसे नियमित तौर पर चढ़ाया जाता है।[2] इसके अलावा, मंडली को बकरी के एक बच्चे की पाप-बलि भी चढ़ानी चाहिए।[3] **25** तब याजक इसराएलियों की पूरी मंडली के लिए प्रायश्चित करेगा। उनकी गलती माफ कर दी जाएगी,[4] क्योंकि उन्होंने यह अनजाने में की थी और उन्होंने अपना बलिदान आग में जलाकर यहोवा को अर्पित किया है और अपनी गलती के लिए यहोवा के सामने पाप-बलि भी चढ़ायी है। **26** इसराएलियों की पूरी मंडली और उनके बीच रहनेवाले परदेसियों की गलती माफ कर दी जाएगी, क्योंकि यह उनसे अनजाने में हो गयी थी।

27 अगर किसी इंसान से अनजाने में पाप हो जाता है, तो उसे पाप-बलि के लिए एक साल की बकरी लाकर देनी होगी।[1] **28** तब याजक उस इंसान के लिए, जिसने अनजाने में पाप किया है, यहोवा के सामने प्रायश्चित करेगा और उसका पाप माफ कर दिया जाएगा।[2] **29** अनजाने में पाप करनेवाला चाहे पैदाइशी इसराएली हो या उनके बीच रहनेवाला कोई परदेसी, इस मामले में दोनों पर एक ही कानून लागू होगा।[3]

30 लेकिन अगर एक इंसान जान-बूझकर पाप करता है,[4] फिर चाहे वह पैदाइशी इसराएली हो या उनके बीच रहनेवाला कोई परदेसी, तो वह यहोवा की निंदा करता है। उसे मौत की सज़ा दी जाए। **31** उसने यहोवा के वचन को तुच्छ जाना है और उसकी आज्ञा तोड़ी है, इसलिए उसे हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए।[5] उसका गुनाह उसी के सिर पड़ेगा।'"[6]

32 जब इसराएली वीराने में थे, तो उन्होंने सब्त के दिन एक आदमी को लकड़ियाँ बीनते देखा।[7] **33** वे उसे पकड़कर मूसा, हारून और पूरी मंडली के पास ले आए। **34** फिर उस आदमी को हिरासत में रखा गया,[8] क्योंकि कानून में यह साफ-साफ नहीं बताया गया था कि ऐसे आदमी के साथ क्या किया जाना चाहिए।

35 यहोवा ने मूसा से कहा, "उस आदमी को हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए।[9] पूरी मंडली उसे छावनी के बाहर पत्थरों से मार डाले।"[10] **36** तब मंडली के सब लोगों ने ठीक वैसे ही किया

अध्य. 15

1 निर्ग 23:19; लैव 2:14; गि 18:8, 12; व्य 26:1, 2; नीत 3:9

2 गि 15:8-10

3 गि 28:15

4 लैव 4:20; इब्र 2:17; 1यूह 2:1, 2

दूसरा कॉल.

1 लैव 4:27, 28

2 लैव 4:32, 35

3 निर्ग 12:49; लैव 24:22; गि 9:14; गि 15:15

4 निर्ग 21:14; व्य 17:12; इब्र 10:26, 27

5 इब्र 10:28

6 यहे 18:20

7 निर्ग 20:9, 10; निर्ग 35:2; व्य 5:13, 14

8 लैव 24:11, 12

9 निर्ग 31:14

10 लैव 24:14

जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। वे उसे छावनी के बाहर ले गए और उसे पत्थरों से मार डाला।

37 यहोवा ने मूसा से कहा, 38 “इसराएलियों से कहना कि वे अपनी पोशाक के नीचे के घेरे में झालर लगाएँ और उस झालर के ऊपर एक नीला फीता लगाएँ।[1] सभी इसराएलियों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस नियम का पालन करना है। 39 ‘तुम्हें यह झालर और फीता इसलिए लगाना चाहिए ताकि उन्हें देखने से तुम्हें यहोवा की सभी आज्ञाएँ याद रहें और तुम उनका पालन कर सको।[2] तुम अपने दिल या अपनी आँखों के बहकावे में आकर कोई काम न करना, क्योंकि यह तुम्हें मेरे साथ विश्वासघात करने* के लिए बहका सकती हैं।[3] 40 इस नियम से तुम्हें मेरी सभी आज्ञाएँ याद रहेंगी और तुम उनका पालन करोगे और अपने परमेश्वर के लिए पवित्र बने रहोगे।[4] 41 मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं ही तुम्हें मिस्र से निकालकर बाहर ले आया था ताकि मैं खुद को तुम्हारा परमेश्वर साबित करूँ।[5] मैं यहोवा हूँ, तुम्हारा परमेश्वर।’”[6]

16 इसके बाद कोरह[7] और दातान, अबीराम और ओन साथ इकट्ठा हुए। कोरह यिसहार का बेटा था,[8] यिसहार कहात का[9] और कहात लेवी का बेटा था।[10] दातान और अबीराम, रूबेन के बेटे एलिआब के बेटे थे[11] और ओन, रूबेन[12] के बेटे पीलेत का बेटा था। 2 कोरह, दातान, अबीराम और ओन मिलकर मूसा के खिलाफ उठ खड़े हुए। इसराएलियों में से 250 और आदमी उनके साथ हो लिए। ये मंडली के खास-खास आदमी थे जो प्रधान और चुने हुए अधिकारी थे। 3 वे सब एक टोली बनाकर मूसा और हारून के खिलाफ खड़े हुए[1] और उनसे कहने लगे, “बहुत हो चुकी तुम्हारी नेतागिरी! तुम क्या समझते हो, तुम ही अकेले पवित्र हो? इस मंडली का हर इंसान पवित्र है[2] और यहोवा उनके बीच है।[3] फिर तुम क्यों यहोवा की मंडली से खुद को ऊँचा उठा रहे हो? तुम क्यों उसके अधिकारी बन बैठे हो?”

4 जब मूसा ने यह सुना तो वह फौरन मुँह के बल गिरा। 5 फिर उसने कोरह और उसका साथ देनेवाले सब लोगों से कहा, “कल सुबह यहोवा यह साफ ज़ाहिर कर देगा कि कौन उसका अपना है[4] और कौन पवित्र है और किसे उसके पास जाने का अधिकार है।[5] परमेश्वर जिस किसी को चुनेगा[6] वही उसके पास जाएगा। 6 कोरह और उसके साथियो,[7] तुम सब आग के करछे ले आना[8] और 7 कल सुबह यहोवा के सामने उन करछों में कोयला रखना और उसके ऊपर धूप डालना। तब यहोवा जिस आदमी को चुनेगा[9] वही पवित्र ठहरेगा। लेवी के बेटो,[10] तुमने हद कर दी है!”

8 फिर मूसा ने कोरह से कहा, “लेवी के बेटो, मेहरबानी करके मेरी बात सुनो। 9 इसराएल के परमेश्वर ने तुम्हें जो सम्मान दिया है, क्या तुम उसे मामूली समझने लगे हो? यहोवा ने इसराएल की मंडली में से तुम लोगों को अलग किया है[11] और तुम्हें अपने पास आने की इजाज़त दी है ताकि तुम उसके डेरे में काम करो और पूरी मंडली के सामने खड़े होकर उसकी सेवा करो।[12] 10 उसने तुझे और तेरे सभी भाइयों को, लेवी के बेटों को अपने करीब आने दिया है। क्या यह काफी नहीं जो अब तुम याजकपद

अध्य. 15
1 व्य 22:12; मत 23:5
2 व्य 11:18
3 निर्ग 34:15
4 लैव 11:44; रोम 12:1; 1पत 1:15
5 उत 17:8; निर्ग 29:45; लैव 25:38
6 निर्ग 3:15; निर्ग 6:2, 3

अध्य. 16
7 यहू 11
8 निर्ग 6:21
9 निर्ग 6:18
10 निर्ग 6:16
11 गि 26:7-9
12 उत 46:8

दूसरा कॉल.
1 गि 12:1, 2; गि 14:2; भज 106:16
2 निर्ग 19:6
3 निर्ग 29:45
4 2ती 2:19
5 निर्ग 28:43; लैव 21:6
6 निर्ग 28:1; गि 17:5; भज 105:26
7 गि 16:2
8 लैव 10:1
9 गि 3:10
10 गि 16:1
11 गि 3:9, 41
12 गि 1:53; गि 3:6; गि 4:4; व्य 10:8

15:39 *या “तुम्हें वेश्याओं जैसी बदचलनी करने।”

भी हथियाना चाहते हो?[1] **11** तू और तेरे सभी साथी जो आज एकजुट हो गए हैं, तुम सबने दरअसल यहोवा के खिलाफ अपना सिर उठाया है। और हारून क्या है जो तुम उसके खिलाफ कुड़-कुड़ा रहे हो?"[2]

12 बाद में मूसा ने एलीआब के बेटे दातान और अबीराम[3] के पास संदेश भेजा कि वे उसके पास आएँ। मगर उन्होंने कहा, "नहीं, हम नहीं आएँगे! **13** तूने अब तक हम पर जो ज़ुल्म किए हैं क्या वे कम हैं? तू हमें उस देश से, जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं, इसलिए निकाल लाया कि हमें वीराने में मार डाले।[4] और अब क्या तू हम सब पर अकेला राज करना चाहता है?* **14** कहाँ है वह देश जिसके बारे में तू कहता है कि वहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं[5] और जहाँ तू हमें विरासत में खेत और अंगूरों का बाग देगा? क्या तू चाहता है कि लोग आँख मूँदकर तेरे पीछे-पीछे चलते रहें?* हम तेरे पास हरगिज़ नहीं आएँगे!"

15 तब मूसा को बहुत गुस्सा आया और उसने यहोवा से कहा, "तू उनका दिया हुआ अनाज का चढ़ावा बिलकुल स्वीकार न करना। मैंने कभी उनसे कुछ नहीं लिया, एक जानवर तक नहीं और न ही उनमें से किसी का कुछ बुरा किया है।"[6]

16 फिर मूसा ने कोरह से कहा, "कल तू और तेरा साथ देनेवाले सब आदमी यहोवा के सामने हाज़िर हो जाएँ। और हारून भी वहाँ आएगा। **17** तुममें से हर कोई अपना-अपना आग का करछा ले और उसमें धूप डाले। और 250 करछे तुम यहोवा के सामने रखना। इसके अलावा, तेरा और हारून का भी एक-एक करछा होगा।" **18** तब उनमें से हर कोई अपना-अपना आग का करछा लेकर आया और उन्होंने उसमें जलता कोयला और धूप डाला। फिर वे सब जाकर मूसा और हारून के साथ भेंट के तंबू के द्वार पर खड़े हुए। **19** जब कोरह अपने साथियों[1] को इकट्ठा करके मूसा और हारून के खिलाफ भेंट के तंबू के द्वार पर खड़ा हुआ, तो यहोवा की महिमा पूरी मंडली पर प्रकट हुई।[2]

20 अब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, **21** "तुम दोनों इन लोगों की टोली से हटकर दूर चले जाओ। मैं इन सबको एक ही पल में नाश करने जा रहा हूँ।"[3] **22** यह सुनते ही मूसा और हारून ने मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर परमेश्वर से बिनती की, "हे परमेश्वर, तू जो हर किसी को जीवन देता है,[4] क्या तू एक आदमी के पाप की वजह से पूरी मंडली पर भड़क उठेगा?"[5]

23 तब यहोवा ने मूसा से कहा, **24** "ठीक है, तू लोगों की मंडली से कहना, 'तुम लोग कोरह, दातान और अबीराम[6] के तंबुओं से दूर चले जाओ!'"

25 फिर मूसा उठा और दातान और अबीराम के पास गया। उसके साथ इसराएल के मुखिया[7] भी गए। **26** उसने लोगों की मंडली से बिनती की, "तुम सब इन दुष्टों के तंबुओं से दूर चले जाओ, इनकी किसी भी चीज़ को हाथ मत लगाना। कहीं ऐसा न हो कि उनके पाप की वजह से तुम्हें भी मिटा दिया जाए।" **27** तब वे सभी लोग, जो कोरह, दातान और अबीराम के तंबुओं के आस-पास थे, वहाँ से फौरन भागकर दूर चले गए। फिर

अध्य. 16

1 फिल 2:3
2 निर्ग 16:8; भज 106:16
3 गि 16:1
4 निर्ग 16:3; गि 14:28, 29
5 निर्ग 3:8; लैव 20:24
6 1शम 12:1, 3; प्रेष 20:33; 2कुर 7:2

दूसरा कॉल.

1 गि 16:2
2 गि 12:5; गि 14:10
3 गि 3:10, 38; गि 16:45
4 अय 12:10; सभ 3:19; सभ 12:7
5 उत 18:23
6 गि 16:1, 2
7 गि 11:16

16:13 *या "हम पर अधिकार जताना चाहता है?" **16:14** *शा., "क्या तू इन लोगों की आँखें फोड़ डालेगा?"

दातान और अबीराम अपने-अपने तंबू से
बाहर निकले और अपनी पत्नियों, बेटों
और छोटे-छोटे बच्चों के साथ द्वार पर
खड़े हुए।

28 तब मूसा ने कहा, "आज तुम सब
पर यह साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि यह
सब मैं अपनी मरज़ी से नहीं कर रहा
बल्कि यहोवा ने ही मुझे ऐसा करने के
लिए भेजा है। यह तुम इस तरह जान
सकोगे: **29** अगर इन सब पर वैसी ही
मौत आए जैसी सब इंसानों पर आती
है या उनका वैसा ही अंत हो जैसा
सब इंसानों का होता है, तो समझ
लेना कि यहोवा ने मुझे नहीं भेजा है।[1]
30 लेकिन अगर यहोवा इन्हें ऐसी सज़ा
देता है जो आज तक किसी ने नहीं सुनी
है, अगर ज़मीन मुँह खोले और इन्हें और
जो कुछ इनका है वह सब निगल जाए
और ये सभी ज़िंदा कब्र में समा जाएँ, तो
तुम बेशक जान जाओगे कि इन लोगों ने
यहोवा की बेइज़्ज़ती की है।"

31 जैसे ही मूसा ने अपनी यह बात
पूरी की, उन लोगों के पैरों के नीचे की
ज़मीन फट गयी[2] **32** और ज़मीन ने
मुँह खोलकर उन्हें और उनके घरानों को,
साथ ही कोरह के घराने के सभी लोगों[3]
और उनकी सभी चीज़ों को निगल लिया।
33 वे और उनके घराने के सब लोग
ज़िंदा कब्र में समा गए और फिर ज़मीन
का मुँह बंद हो गया। इस तरह मंडली में
से उन सब लोगों का नामो-निशान मिट
गया।[4] **34** उनका चीखना-चिल्लाना
सुनकर आस-पास खड़े सभी इसराएली
दूर भागने लगे। वे कहने लगे, "कहीं
यह ज़मीन हमें भी न निगल जाए!"
35 इसके बाद यहोवा की तरफ से आग
बरसी[5] और उन 250 आदमियों को
भस्म कर गयी जो धूप चढ़ा रहे थे।[6]

36 अब यहोवा ने मूसा से कहा,
37 "हारून याजक के बेटे एलिआज़र
से कहना कि वह आग में से करछे
उठाए,[1] क्योंकि ये पवित्र हैं और फिर
आग दूर तक इधर-उधर फैला दे।
38 जो आदमी पाप करके अपनी जान
गँवा बैठे हैं, उनके आग के करछों को
पीटकर उनसे पत्तर बनाए जाएँ और
उनसे वेदी[2] मढ़ दी जाए। उन्होंने ये
करछे यहोवा के सामने पेश किए थे, इस-
लिए ये करछे पवित्र हैं। और ये इसराए-
लियों के लिए एक निशानी ठहरेंगे।"[3]
39 तब एलिआज़र याजक ने उन आद-
मियों के लाए हुए ताँबे के करछे लिए जो
भस्म हो गए थे और उन करछों को पीट-
कर उनसे वेदी मढ़ दी, **40** ठीक जैसे
यहोवा ने मूसा के ज़रिए उसे बताया था।
यह इसराएलियों के लिए एक यादगार था
कि धूप जलाने का अधिकार सिर्फ हारून
के वंशजों को है और ऐसा कोई भी
इंसान जिसे अधिकार नहीं है,* यहोवा
के सामने धूप जलाने की जुर्रत न करे[4]
और कोरह और उसके साथियों की तरह
न बने।[5]

41 इस घटना के अगले ही दिन इस-
राएलियों की पूरी मंडली मूसा और
हारून के खिलाफ यह कहकर कुड़कुड़ाने
लगी,[6] "तुम दोनों ने यहोवा के लोगों
को मार डाला है।" **42** जब लोगों की
मंडली मूसा और हारून के खिलाफ इकट्ठा
हुई, तो वे सब भेंट के तंबू की तरफ मुड़े।
और देखो! बादल तंबू पर छा गया और
यहोवा की महिमा प्रकट होने लगी।[7]

43 मूसा और हारून भेंट के तंबू के
सामने गए[8] **44** और यहोवा ने मूसा से
कहा, **45** "तुम दोनों इस मंडली के

16:40 *शा., "और कोई भी पराया इंसान।"

अध्य. 16

1 व्य 18:21, 22
2 गि 26:10, व्य 11:6, भज 106:17
3 निर्ग 6:24, गि 26:11, 1इत 6:31, 37
4 यहू 11
5 लैव 10:1, 2, गि 11:1
6 गि 16:17, गि 26:10, भज 106:18

दूसरा कॉल.

1 गि 16:6, 7
2 निर्ग 38:1
3 गि 16:5, गि 17:10
4 गि 3:10, गि 18:7, 2इत 26:16-18
5 भज 106:17, यहू 11
6 गि 14:2
7 निर्ग 16:7, गि 14:10, गि 16:19
8 गि 20:2, 6

बीच से हटकर दूर चले जाओ। मैं इन
सबको एक ही पल में नाश करने जा रहा
हूँ।”[1] तब वे दोनों मुँह के बल ज़मीन पर
गिरे।[2] 46 फिर मूसा ने हारून से कहा,
“तू आग का करछा ले और वेदी में से
जलता हुआ कोयला लेकर[3] उसमें डाल
और फिर उसमें धूप रख और फौरन
मंडली के पास जा और उनके लिए
प्रायश्‍चित कर,[4] क्योंकि यहोवा का क्रोध
उन पर भड़क उठा है। लोगों पर कहर
बरसना शुरू हो चुका है!” 47 तब
हारून ने मूसा के कहे मुताबिक फौरन
आग और धूप लिया और भागकर
मंडली के बीच गया और देखो! तब तक
लोगों पर कहर बरसना शुरू हो चुका
था। इसलिए उसने आग के करछे में
धूप डाला और वह लोगों के लिए प्राय-
श्‍चित करने लगा। 48 हारून लोगों के
बीच ही खड़ा रहा। उसके एक तरफ
ज़िंदा लोग थे और दूसरी तरफ मरे हुए।
फिर कुछ समय बाद कहर थम गया।
49 कोरह की वजह से पहले जो मारे गए
थे, उनके अलावा इस कहर से 14,700
लोग मर गए। 50 कहर थम जाने के
बाद हारून वापस मूसा के पास भेंट के
तंबू के द्वार पर गया।

17 यहोवा ने अब मूसा से कहा,
2 “इसराएलियों से कहना कि
हर गोत्र की तरफ से एक छड़ी लायी
जाए। तू हर गोत्र के प्रधान[5] से एक छड़ी
लेना जिससे कुल मिलाकर 12 छड़ियाँ
होंगी। और हर प्रधान का नाम उसकी
छड़ी पर लिखना। 3 लेवी गोत्र की
छड़ी पर हारून का नाम लिखना। हर
गोत्र के मुखिया के लिए एक छड़ी होनी
चाहिए। 4 ये सारी छड़ियाँ भेंट के तंबू
में गवाही के संदूक[6] के सामने रखना
जहाँ मैं अकसर तुम लोगों पर प्रकट होता
हूँ।[1] 5 मैं जिस आदमी को चुनूँगा[2]
उसकी छड़ी पर कलियाँ फूट निकलेंगी।
इस तरह मैं इसराएलियों का कुड़कुड़ाना
बंद कर दूँगा[3] ताकि वे फिर कभी न मेरे
खिलाफ और न ही तुम्हारे खिलाफ कुड़-
कुड़ाएँ।”[4]

6 तब मूसा ने जाकर इसराएलियों को
यह बात बतायी। फिर सभी प्रधानों ने उसे
अपनी-अपनी छड़ी लाकर दी। हर गोत्र
के प्रधान के लिए एक छड़ी थी। इस तरह
कुल मिलाकर 12 छड़ियाँ थीं। उनमें से
एक छड़ी हारून की थी। 7 मूसा उन
छड़ियों को लेकर उस तंबू में गया जहाँ
गवाही का संदूक था और उन्हें यहोवा के
सामने रख दिया।

8 अगले दिन जब मूसा तंबू में गया
तो उसने देखा कि हारून की छड़ी में
कलियाँ फूट निकली हैं! उसकी छड़ी में,
जो लेवी गोत्र की तरफ से रखी गयी थी,
कलियाँ और फूल खिले हुए थे और पके
बादाम भी लगे हुए थे। 9 फिर मूसा
यहोवा के सामने रखी वे सारी छड़ियाँ
लेकर बाहर इसराएल के सब लोगों के
सामने आया। उन सबने वे छड़ियाँ देखीं
और फिर हर आदमी ने अपनी छड़ी
वापस ले ली।

10 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
“हारून की छड़ी[5] वापस गवाही के संदूक
के सामने रख दे। यह छड़ी बगावत करने-
वालों[6] के लिए चेतावनी होगी[7] कि वे मेरे
खिलाफ कुड़कुड़ाना बंद कर दें ताकि वे
मर न जाएँ।” 11 मूसा ने फौरन जाकर
वैसे ही किया जैसे यहोवा ने आज्ञा दी थी।
उसने ठीक वैसा ही किया।

12 इसके बाद इसराएली मूसा से
कहने लगे, “अब तो लगता है कि हममें से
कोई मौत से नहीं बच सकता। हम ज़रूर
नाश हो जाएँगे, सब-के-सब नाश हो

अध्य. 16
1 निर्ग 23:20,21; 1कुर 10:6, 10
2 गि 16:21, 22
3 लैव 6:12
4 निर्ग 34:9; गि 8:19

अध्य. 17
5 गि 1:4, 16
6 निर्ग 34:29

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 25:22; निर्ग 30:36; लैव 16:2
2 गि 16:5
3 गि 11:1; गि 14:27; गि 16:11; 1कुर 10:6, 10
4 गि 14:2; गि 16:13, 41
5 इब्र 9:4
6 व्य 9:7; व्य 31:27
7 गि 16:38

जाएँगे! 13 अगर कोई यहोवा के पवित्र
डेरे के पास भी जाएगा, तो वह मर
जाएगा![1] क्या इसी तरह हम सबका अंत
हो जाएगा?”[2]

18 फिर यहोवा ने हारून से कहा,
“अगर पवित्र-स्थान के बारे में
दिया कोई नियम तोड़ा जाता है तो उस
गुनाह के लिए तू, तेरे बेटे और तेरे पिता
का कुल जवाबदेह होगा।[3] उसी तरह
अगर तुम्हारे याजकपद के बारे में दिया
कोई नियम तोड़ा जाता है, तो उस गुनाह
के लिए तू और तेरे बेटे जवाबदेह होंगे।[4]
2 तू अपने पिता के गोत्र यानी लेवी गोत्र
के अपने भाइयों को उस तंबू के पास ला
जिसमें गवाही का संदूक रखा है[5] ताकि वे
तंबू के सामने तेरे साथ रहकर तेरी और
तेरे बेटों की सेवा करें।[6] 3 तू उन्हें तंबू
से जुड़ा जो भी काम सौंपेगा उसे वे पूरा
करेंगे। साथ ही, वे तंबू से जुड़ी सभी
सेवाएँ करेंगे।[7] मगर उन्हें पवित्र जगह
के साथ इस्तेमाल होनेवाली चीज़ों और
वेदी के पास हरगिज़ नहीं आना चाहिए
ताकि वे और उनके साथ-साथ तू भी
मर न जाए।[8] 4 वे तेरे साथ रहकर
भेंट के तंबू से जुड़ी अपनी ज़िम्मेदारियाँ
निभाएँगे और हर तरह की सेवा करेंगे।
उनके अलावा, किसी और इंसान* को
तुम्हारे पास आने का अधिकार नहीं है।[9]
5 पवित्र जगह और वेदी की तरफ
तुम्हारी जो भी ज़िम्मेदारी बनती है,[10] उसे
तुम ज़रूर पूरा करना[11] ताकि इसराएल
के लोगों पर मेरा क्रोध फिर से भड़क
न उठे।[12] 6 मैंने खुद इसराएलियों में से
तुम्हारे लेवी भाइयों को चुनकर तुम्हें
तोहफे में दिया है।[13] वे भेंट के तंबू के
पास सेवा करने के लिए यहोवा को दिए
गए हैं।[1] 7 मगर तुझे और तेरे बेटों को
याजकों के नाते काम करने की ज़िम्मे-
दारी दी गयी है। तुम वेदी से और
परदे के अंदर रखी चीज़ों से जुड़े सभी
काम करोगे।[2] यही तुम्हारी सेवा है।[3] मैंने
सिर्फ तुम्हीं को याजकों के नाते सेवा करने
का सम्मान दिया है। यह तोहफा तुम्हें
दिया गया है, तुम्हारे अलावा अगर कोई
ऐसा इंसान वहाँ आता है जिसे अधिकार
नहीं है* तो उसे मार डाला जाए।”[4]

8 यहोवा ने हारून से यह भी कहा,
“मैंने खुद तुझे उन सारी चीज़ों का अधि-
कारी ठहराया है जो मुझे दान में दी जाती
हैं।[5] इसराएली जो पवित्र चीज़ें दान में
देंगे उनका एक हिस्सा मैं तुझे और तेरे
बेटों को हमेशा के लिए देता हूँ।[6] 9 ये
सभी चढ़ावे बहुत पवित्र हैं और आग में
जलाकर दिए जाते हैं और उनमें से एक
हिस्सा तुझे दिया जाएगा। ये चढ़ावे हैं:
ऐसा हर चढ़ावा जो लोग मेरे पास लाते
हैं, साथ ही उनके अनाज के चढ़ावे,[7]
पाप-बलियाँ[8] और दोष-बलियाँ।[9] यह
हिस्सा तेरे और तेरे बेटों के लिए बहुत
पवित्र है। 10 तू इसे ऐसी जगह पर
खाना जो बहुत पवित्र है।[10] तेरे घराने का
हर लड़का और हर आदमी इसे खा
सकता है। यह तेरे लिए पवित्र है।[11]
11 इसके अलावा, इसराएली हिलाकर
दिए जानेवाले चढ़ावे[12] के साथ जो भेंट
लाते हैं,[13] उस पर भी तेरा हक होगा।
मैंने तय किया है कि वह हिस्सा मैं तुझे
और तेरे बेटे-बेटियों को हमेशा दिया
करूँगा।[14] तेरे घराने का हर इंसान जो
शुद्ध है, उसे खा सकता है।[15]

12 लोग अपने पहले फल में से जो

अध्य. 17
1 गि 1:51; गि 18:4, 7
2 गि 16:49

अध्य. 18
3 निर्ग 25:8; लैव 21:10-12
4 निर्ग 28:38; लैव 22:9; गि 18:23
5 गि 1:53
6 गि 3:6; गि 8:22; गि 16:9
7 गि 3:25, 26; गि 3:30, 31; गि 3:36, 37
8 गि 4:15, 20; गि 16:39, 40
9 गि 1:51; गि 3:10
10 निर्ग 30:7
11 लैव 24:2, 3; गि 3:32
12 गि 16:46
13 गि 3:9, 12; गि 8:15, 16

दूसरा कॉल.
1 गि 8:19
2 लैव 16:2, 12; इब्र 9:3, 7
3 1शम 2:28; इब्र 5:4
4 गि 3:10; गि 16:39, 40
5 निर्ग 23:19; लैव 27:28, 30; गि 18:11, 26
6 लैव 7:34; गि 5:9
7 लैव 2:3
8 लैव 5:11, 12; लैव 6:25, 26
9 लैव 7:1, 7
10 निर्ग 29:32; लैव 6:14, 16; लैव 10:12, 13
11 लैव 6:18; लैव 7:1, 6; लैव 14:13; लैव 21:22
12 निर्ग 29:27; लैव 7:34
13 गि 15:20; यहे 44:30
14 लैव 10:14; व्य 18:3
15 लैव 22:4-6

18:4 *शा., “पराए,” यानी जो हारून-वंशी न हो।

18:7 *शा., “जो पराया हो,” यानी जो हारून-वंशी न हो।

कुछ लाकर यहोवा को देते हैं, यानी जो बढ़िया-से-बढ़िया तेल, नयी दाख-मदिरा और अनाज देते हैं[1] वह सब मैं तुझे देता हूँ।[2] 13 वे अपनी ज़मीन की पहली उपज में से जो पके हुए फल लाकर यहोवा को देते हैं, वे तेरे होंगे।[3] तेरे घराने का हर इंसान जो शुद्ध है, उसे खा सकता है।

14 इसराएल में हर चीज़ जो परमेश्वर को समर्पित की जाती है,* उस पर तेरा अधिकार होगा।[4]

15 इंसानों और जानवरों का हर पहलौठा[5] जिसे वे लाकर यहोवा को अर्पित करेंगे, तेरा होगा। लेकिन तू इंसानों में से हर पहलौठे को ज़रूर छुड़ाना।[6] तुझे अशुद्ध जानवरों के पहलौठों को भी छुड़ाना होगा।[7] 16 तू पहलौठे बेटे को तब छुड़ाना जब वह एक महीने का या उससे ज़्यादा समय का होता है। उसे छुड़ाने के लिए तू तय की गयी कीमत यानी पाँच शेकेल* चाँदी देना।[8] ये शेकेल पवित्र-स्थान के शेकेल# के मुताबिक होने चाहिए। एक शेकेल 20 गेरा△ के बराबर है। 17 सिर्फ पहलौठे बैल या पहलौठे नर मेम्ने या पहलौठे बकरे को तुझे नहीं छुड़ाना चाहिए।[9] इन जानवरों को पवित्र माना जाए। तू इनका खून वेदी पर छिड़कना[10] और इनकी चरबी आग में जलाकर यहोवा को अर्पित करना ताकि इसका धुआँ उठे और इसकी सुगंध पाकर वह खुश हो।[1] 18 और इनके गोश्त पर तेरा अधिकार होगा, ठीक जैसे हिलाकर दिए जानेवाले चढ़ावे में से सीने और बलि के जानवर के दाएँ पैर पर तेरा अधिकार है।[2] 19 इसराएली यहोवा के लिए जितनी भी पवित्र चीज़ें दान में देते हैं,[3] वे सब मैं तुझे और तेरे बेटे-बेटियों को हमेशा के लिए देता हूँ।[4] यह नमक का अटल करार* है जो यहोवा ने तेरे और तेरी संतान के साथ किया है।"

20 फिर यहोवा ने हारून से कहा, "इसराएलियों के देश में तुझे विरासत की कोई ज़मीन नहीं दी जाएगी। वहाँ ज़मीन का कोई भी भाग तुझे नहीं दिया जाएगा।[5] इसराएलियों के बीच मैं ही तेरा भाग और तेरी विरासत हूँ।[6]

21 लेवी के बेटे भेंट के तंबू में जो सेवा करते हैं, उसके बदले मैंने उन्हें इसराएल देश की हर चीज़ का दसवाँ हिस्सा[7] विरासत में दिया है। 22 बाकी इसराएलियों को कभी भेंट के तंबू के पास नहीं आना चाहिए, वरना वे खुद को पाप के दोषी बनाएँगे और मौत की सज़ा पाएँगे। 23 भेंट के तंबू में सिर्फ लेवियों को सेवा करनी चाहिए और अगर लोग पवित्र जगह के खिलाफ कोई गुनाह करें तो उसके लिए लेवी ही जवाबदेह होंगे।[8] यह नियम तुम पर और तुम्हारी आनेवाली पीढ़ियों पर सदा तक लागू रहेगा कि लेवियों को इसराएलियों के बीच विरासत की कोई ज़मीन हासिल नहीं करनी चाहिए,[9] 24 क्योंकि इसराएली अपनी चीज़ों का जो दसवाँ हिस्सा लाकर यहोवा के लिए दान में देते हैं, वह मैंने लेवियों को विरासत में दिया है। इसलिए मैंने उनसे

अध्य. 18

1 नीत 3:9
2 लैव 2:14; व्य 18:4
3 निर्ग 23:19
4 लैव 27:21, 28
5 निर्ग 13:2; लैव 27:26; गि 3:13
6 निर्ग 13:13
7 निर्ग 34:20; लैव 27:27
8 लैव 27:6
9 निर्ग 22:30; व्य 15:19
10 लैव 17:11

दूसरा कॉल.

1 लैव 3:16
2 निर्ग 29:26; लैव 7:31, 34
3 निर्ग 23:19; गि 15:18, 19; गि 18:11, 26; गि 31:28, 29
4 2इत 31:4
5 गि 26:62, 63; व्य 10:9; व्य 14:27; यह 14:3
6 व्य 18:1, 2; यह 18:7; यहे 44:28
7 लैव 27:30; नहे 10:37; नहे 12:44; इब्र 7:5
8 गि 3:6, 7; गि 18:1
9 यह 13:33

18:14 *यानी हर चीज़ जो परमेश्वर को इस तरह दे दी जाती थी कि वह वापस नहीं ली जा सकती और छुड़ायी नहीं जा सकती थी। इस तरह वह चीज़ परमेश्वर के लिए पवित्र ठहरायी जाती थी। **18:16** *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। #या "पवित्र शेकेल।" △एक गेरा 0.57 ग्रा. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

18:19 *यानी यह करार सदा के लिए है और कभी नहीं बदलेगा।

कहा है, ‘उन्हें इसराएलियों के बीच विरासत की कोई ज़मीन हासिल नहीं करनी चाहिए।’”[1]

25 इसके बाद यहोवा ने मूसा से कहा, 26 “लेवियों से कहना, ‘इसराएली अपनी चीज़ों का जो दसवाँ हिस्सा लाकर देते हैं, वह मैं तुम्हें विरासत में देता हूँ।[2] और उस दसवें हिस्से का दसवाँ हिस्सा तुम यहोवा के लिए दान में देना।[3] 27 यह तुम्हारा खुद का दान माना जाएगा, मानो तुमने खुद अपने खलिहान से अनाज लाकर दिया हो[4] या अपने लबालब भरे हौद में से दाख-मदिरा या तेल लाकर दिया हो। 28 इस तरह तुम भी इसराएलियों से मिलनेवाले सभी दसवें हिस्से में से यहोवा के लिए दान कर सकोगे। और यहोवा के लिए दिया जानेवाला यह दान तुम हारून याजक को देना। 29 तुम्हें जो सबसे बढ़िया भेंट दी जाती हैं, उनमें से हर तरह की चीज़ तुम यहोवा के लिए दान में देना[5] कि वह उसके लिए पवित्र हो।’

30 और तू उनसे कहना, ‘जब तुम लेवी उन चीज़ों में से सबसे बढ़िया चीज़ें दान करोगे, तो बचा हुआ हिस्सा तुम्हारा होगा मानो वह तुम्हारे अपने खलिहान का अनाज हो या तुम्हारे ही हौद की दाख-मदिरा या तेल हो। 31 तुम और तुम्हारे घराने के लोग यह बचा हुआ हिस्सा किसी भी जगह पर खा सकते हैं क्योंकि यह भेंट के तंबू में तुम्हारी सेवा के लिए दी जानेवाली मज़दूरी है।[6] 32 तुम्हें जो चीज़ें दी जाती हैं उनमें से बढ़िया चीज़ें तुम ज़रूर दान में देना, तब तुम पाप के दोषी नहीं बनोगे। तुम इसराएलियों की दी हुई पवित्र चीज़ों को दूषित न करना, वरना तुम मर जाओगे।’”[7]

अध्य. 18
1 व्य 10:9
2 गि 18:21; व्य 12:19
3 नहे 10:38
4 गि 15:20
5 गि 18:8, 12
6 1कुर 9:13
7 लैव 22:2, 15

दूसरा कॉल.

अध्य. 19
1 लैव 22:20; मला 1:14
2 इब्र 9:13, 14
3 लैव 4:11, 12
4 भज 51:7
5 इब्र 9:13, 14
6 गि 19:13, 21

19 यहोवा ने एक बार फिर मूसा और हारून से बात की और उनसे कहा, 2 “यहोवा की आज्ञा है कि इस नियम का पालन किया जाए, ‘इसराएलियों से कहना कि वे लाल रंग की एक ऐसी गाय लाकर तुम्हें दें जिसमें कोई दोष न हो[1] और जिसे अब तक जुए में न जोता गया हो। 3 तुम उसे एलिआज़र याजक को देना। वह उसे छावनी के बाहर ले जाएगा और वहाँ वह गाय उसके सामने हलाल की जाएगी। 4 फिर एलिआज़र याजक अपनी उँगली से उसका थोड़ा खून लेगा और सीधे भेंट के तंबू के द्वार की तरफ उसे सात बार छिड़केगा।[2] 5 इसके बाद गाय उसकी आँखों के सामने जला दी जाएगी। उसकी खाल, उसका माँस, खून और गोबर, सबकुछ एक साथ जला दिया जाएगा।[3] 6 फिर याजक देवदार की लकड़ी, मरुआ[4] और सुर्ख लाल कपड़ा लेगा और वह सब उस आग में फेंकेगा जिसमें गाय जलायी जा रही है। 7 फिर याजक अपने कपड़े धोएगा और नहाएगा। इसके बाद वह छावनी में आ सकता है। फिर भी वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।

8 जो आदमी गाय को आग में जलाता है, वह अपने कपड़े धोएगा और नहाएगा। फिर भी वह शाम तक अशुद्ध रहेगा।

9 फिर एक शुद्ध आदमी गाय की राख[5] बटोरेगा और उसे छावनी के बाहर ले जाकर एक साफ जगह में रखेगा। इसराएलियों की मंडली को यह राख रखनी चाहिए ताकि उससे वह पानी तैयार किया जाए जो शुद्ध करने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा।[6] जो गाय जलायी जाती है वह एक पाप-बलि है। 10 जो आदमी उस गाय की राख इकट्ठी करता है वह

अपने कपड़े धोएगा। फिर भी वह शाम
तक अशुद्ध रहेगा।
इसराएलियों और उनके बीच रहने-
वाले परदेसियों के लिए मैं यह नियम
देता हूँ जो उन पर हमेशा लागू रहेगा:[1]
11 अगर कोई लाश छूता है तो वह
सात दिन तक अशुद्ध रहेगा।[2] 12 ऐसे
इंसान को चाहिए कि वह तीसरे दिन शुद्ध
करनेवाले पानी से खुद को शुद्ध करवाए।
फिर वह सातवें दिन शुद्ध हो जाएगा।
लेकिन अगर वह तीसरे दिन खुद को शुद्ध
नहीं करवाता, तो सातवें दिन वह शुद्ध
नहीं होगा। 13 जो कोई लाश छूता है
और खुद को शुद्ध नहीं करवाता, वह
यहोवा के पवित्र डेरे को दूषित करता
है।[3] ऐसे इंसान को मौत की सज़ा दी
जाए।[4] वह अशुद्ध ही रहेगा क्योंकि शुद्ध
करनेवाला पानी[5] उस पर नहीं छिड़का
गया है। उसकी अशुद्धता दूर नहीं होगी।

14 अगर एक आदमी की मौत किसी
तंबू में हो जाती है, तो ऐसे मामले में यह
नियम लागू होगा: उस तंबू में जो लोग
पहले से मौजूद हैं और जो उसके अंदर
जाते हैं, वे सब सात दिन तक अशुद्ध
रहेंगे। 15 तंबू के अंदर रखा हुआ हर
वह बरतन अशुद्ध होगा जिस पर ढक्कन
नहीं लगा है।[6] 16 अगर कोई बाहर
मैदान में तलवार से मारे हुए किसी
इंसान को छूता है या किसी लाश को या
किसी मरे हुए की हड्डी या कब्र को छूता
है, तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगा।[7]
17 ऐसे अशुद्ध आदमी के लिए पाप-बलि
के जानवर की थोड़ी-सी राख एक बर-
तन में ली जाए और उस पर ताज़ा पानी
डाला जाए। 18 इसके बाद एक शुद्ध
आदमी[8] मरुआ[9] लेगा और पानी में डुबा-
कर उस तंबू पर छिड़केगा जिसमें आदमी
की मौत हुई है, साथ ही तंबू में मौजूद
सभी लोगों पर और उसमें रखे सभी बर-
तनों पर छिड़केगा। उसी तरह, जो
आदमी तलवार से मारे हुए को या किसी
लाश या हड्डी या कब्र को छूने से अशुद्ध
हुआ है, उस पर शुद्ध आदमी पानी छिड़-
केगा। 19 वह शुद्ध आदमी तीसरे और
सातवें दिन उस अशुद्ध आदमी पर पानी
छिड़केगा और सातवें दिन उस अशुद्ध
आदमी के पाप दूर करके उसे शुद्ध कर
देगा।[1] तब जिस आदमी को शुद्ध किया
जाता है, उसे अपने कपड़े धोने चाहिए
और नहाना चाहिए। वह शाम को शुद्ध
हो जाएगा।

20 लेकिन अगर एक इंसान अशुद्ध
होने पर खुद को शुद्ध नहीं करवाता, तो
उसे मौत की सज़ा दी जाए,[2] क्योंकि उसने
यहोवा के पवित्र-स्थान को दूषित किया
है। उस पर शुद्ध करनेवाला पानी नहीं
छिड़का गया इसलिए वह अशुद्ध है।

21 यह नियम उन पर सदा के लिए
लागू रहेगा: जो आदमी शुद्ध करनेवाला
पानी छिड़कता है[3] उसे अपने कपड़े धोने
चाहिए और जो इंसान उस पानी को छूता
है वह शाम तक अशुद्ध रहेगा। 22 वह
अशुद्ध आदमी जो भी चीज़ छुएगा वह
अशुद्ध हो जाएगी और जो कोई उस
अशुद्ध चीज़ को छुएगा वह भी शाम
तक अशुद्ध रहेगा।'"[4]

20 पहले महीने में इसराएलियों की
पूरी मंडली सिन वीराने में पहुँची
और वहाँ लोग कादेश में रहने लगे।[5]
वहीं पर मिरयम[6] की मौत हो गयी और
उसे दफनाया गया।

2 कादेश में लोगों के लिए पानी नहीं
था[7] और वे सब मूसा और हारून के
खिलाफ उठ खड़े हुए। 3 वे मूसा से
झगड़ने लगे[8] और कहने लगे, "काश,
हम भी अपने भाइयों के साथ यहोवा के

अध्य. 19
1 निर्ग 12:49; लैव 24:22; गि 15:15
2 लैव 21:1, 11; गि 5:2; गि 6:9; गि 9:6; गि 31:19
3 लैव 15:31
4 लैव 22:3; इब्र 10:28
5 गि 19:9
6 लैव 11:31, 32
7 गि 19:11; गि 31:19
8 गि 19:9
9 भज 51:7

दूसरा कॉल.
1 लैव 14:9; गि 19:12; गि 31:19
2 गि 19:13
3 गि 19:18; इब्र 9:9, 10; इब्र 9:13, 14
4 लैव 15:4, 5

अध्य. 20
5 गि 13:26; गि 20:22; गि 33:36; व्य 2:14
6 निर्ग 15:20; गि 26:59; मी 6:4
7 निर्ग 17:1
8 निर्ग 17:2

सामने मर गए होते! 4 तुम यहोवा की
मंडली को क्यों इस वीराने में ले आए हो?
बस इसलिए कि हम और हमारे जानवर
यहाँ मर जाएँ?[1] 5 तुम क्यों हमें मिस्र
से निकालकर ऐसी बेकार और घटिया
जगह ले आए हो?[2] यहाँ न तो बीज बोया
जा सकता है और न ही यहाँ अंगूरों के
बाग या अंजीर या अनार हैं, पीने के लिए
पानी तक नहीं है।"[3] 6 तब मूसा और
हारून मंडली के सामने से निकलकर भेंट
के तंबू के द्वार पर गए और मुँह के बल
ज़मीन पर गिरे। फिर यहोवा की महिमा
उन पर प्रकट होने लगी।[4]

7 यहोवा ने मूसा से कहा, 8 "अपनी
छड़ी हाथ में ले और अपने भाई हारून
को साथ लेकर पूरी मंडली को उस चट्टान
के सामने इकट्ठा कर। उनकी आँखों के
सामने चट्टान से बोल कि वह पानी दे। इस
तरह तू उस चट्टान से पानी निकालेगा और
लोगों की मंडली और उनके जानवर उसमें
से पीएँगे।"[5]

9 तब मूसा ने यहोवा के सामने
अपनी छड़ी ली,[6] ठीक जैसे परमेश्वर ने
उसे आज्ञा दी थी। 10 फिर मूसा और
हारून ने पूरी मंडली को चट्टान के सामने
इकट्ठा किया और मूसा ने उनसे कहा,
"हे बागियो, सुनो! क्या हमें इस चट्टान
से तुम्हारे लिए पानी निकालना होगा?"[7]
11 फिर मूसा ने अपना हाथ ऊपर
उठाया और छड़ी से दो बार चट्टान को
मारा और चट्टान से पानी उमड़ने लगा।
तब मंडली के लोग और उनके जानवर
उसमें से पीने लगे।[8]

12 बाद में यहोवा ने मूसा और हारून
से कहा, "तुम दोनों ने मुझ पर विश्वास
नहीं किया और इसराएल के लोगों के
सामने मुझे पवित्र नहीं ठहराया। इस-
लिए तुम इस मंडली को उस देश में
नहीं ले जाओगे जो मैं इसे देनेवाला हूँ।"[1]
13 यह मरीबा* का सोता है[2] और यहीं
पर इसराएलियों ने यहोवा से झगड़ा
किया था और वह उनके बीच पवित्र ठह-
राया गया।

14 फिर मूसा ने कादेश से एदोम के
राजा के पास अपने दूत भेजकर यह
कहलवाया,[3] "तेरे भाई इसराएल[4] ने यह
संदेश भेजा है: 'तू अच्छी तरह जानता है
कि हम कैसी-कैसी मुसीबतों से गुज़रे हैं।
15 हमारे पुरखे मिस्र गए[5] और हम
कई सालों* तक वहीं रहे थे।[6] मिस्रियों
ने हमारे पुरखों के साथ और हमारे साथ
बहुत बुरा सलूक किया।[7] 16 आखिर-
कार हमने यहोवा की दुहाई दी[8] और
उसने हमारी सुनी। एक स्वर्गदूत भेज-
कर[9] वह हमें मिस्र से बाहर ले आया।
अब हम कादेश शहर में हैं जो तेरे इलाके
की सरहद पर है। 17 इसलिए मेहर-
बानी करके हमें अपने देश से होकर जाने
दे। हम तेरे किसी खेत या अंगूरों के बाग
से होकर नहीं जाएँगे और न ही तेरे किसी
कुएँ से पानी पीएँगे। हम बस "राजा की
सड़क" पर सीधे चलते हुए आगे बढ़ेंगे
और जब तक तेरे इलाके से नहीं निकल
जाते, हम न दाएँ मुड़ेंगे न बाएँ।'"[10]

18 मगर एदोम ने मूसा से कहा, "तुम
लोग हमारे इलाके से नहीं जा सकते।
अगर तुमने जाने की कोशिश की तो मुझे
तुम्हारे खिलाफ तलवार उठानी पड़ेगी।"
19 तब इसराएलियों ने एदोम से कहा,
"देख, हम बस राजमार्ग से जाएँगे। अगर
हमने और हमारे जानवरों ने तेरा पानी
पीया तो उसकी कीमत चुका देंगे।[11] हम
सिर्फ तेरे रास्ते से पैदल चलकर जाने
की इजाज़त माँगते हैं।"[12] 20 फिर भी

20:13 *मतलब "झगड़ा करना।" 20:15 *शा., "दिनों।"

अध्य. 20
1 निर्ग 14:11, निर्ग 17:3, गि 16:13, 14, गि 21:5
2 व्य 8:14, 15
3 व्य 8:7, 8
4 निर्ग 16:10, गि 14:10
5 निर्ग 17:5, 6, भज 78:15, भज 105:41, भज 114:8, यश 48:21
6 निर्ग 7:12, 19, गि 17:10
7 भज 106:32, 33
8 1कुर 10:1, 4

दूसरा कॉल.
1 गि 27:12-14, व्य 1:37, व्य 3:26, व्य 32:51, 52, व्य 34:4, यह 1:2
2 भज 106:32, 33
3 न्या 11:17
4 उत 36:8, व्य 2:4, व्य 23:7
5 उत 46:6
6 उत 15:13, निर्ग 12:40
7 निर्ग 1:11, 14
8 निर्ग 2:23, निर्ग 3:7
9 निर्ग 14:19, निर्ग 23:20, निर्ग 33:2
10 गि 21:21, 22, व्य 2:26, 27
11 व्य 2:5, 6
12 व्य 2:26, 28

एदोम नहीं माना। उसने साफ कह दिया, “तुम हमारे इलाके से हरगिज़ नहीं जा सकते।”[1] इसके बाद एदोम एक बड़ी और ताकतवर सेना* लेकर इसराएलियों को रोकने के लिए आया। **21** इस तरह एदोम ने इसराएल को अपने इलाके से जाने की इजाज़त नहीं दी। इसलिए इसराएल वहाँ से मुड़कर दूसरे रास्ते चल दिया।[2]

22 इसराएल की मंडली के सभी लोग कादेश से निकले और होर पहाड़[3] के पास आए, **23** जो एदोम देश की सरहद के पास है। तब यहोवा ने होर पहाड़ पर मूसा और हारून से कहा, **24** “हारून की मौत हो जाएगी।*[4] वह उस देश में नहीं जाएगा जो मैं इसराएलियों को देनेवाला हूँ, क्योंकि तुम दोनों ने मरीबा के सोते के बारे में मेरी आज्ञा के खिलाफ जाकर बगावत की।[5] **25** तू हारून और उसके बेटे एलिआज़र को लेकर होर पहाड़ के ऊपर आ। **26** वहाँ तू हारून की याजक की पोशाक[6] उतारना और उसके बेटे एलिआज़र[7] को पहनाना। उसी पहाड़ पर हारून की मौत होगी।”*

27 तब मूसा ने वैसे ही किया जैसे यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी। पूरी मंडली के देखते वे तीनों होर पहाड़ पर चढ़कर गए। **28** तब मूसा ने हारून की पोशाक उतारी और उसके बेटे एलिआज़र को पहनायी। इसके बाद, उसी पहाड़ की चोटी पर हारून की मौत हो गयी।[8] फिर मूसा और एलिआज़र पहाड़ से नीचे उतर आए। **29** जब मंडली के सब लोगों को पता चला कि हारून की मौत हो गयी है, तो इसराएल के सभी घराने 30 दिन तक हारून के लिए रोते रहे।[1]

21 जब इसराएली अतारीम के रास्ते से जा रहे थे, तो इसकी खबर अराद के कनानी राजा[2] को मिली जो नेगेब में रहता था। उसने इसराएलियों पर हमला किया और उनमें से कुछ लोगों को बंदी बनाकर ले गया। **2** तब इसराएलियों ने यहोवा से यह कहकर मन्‍नत मानीः “अगर तू इन लोगों को हमारे हाथ में कर देगा, तो हम ज़रूर उनके शहरों को नाश कर देंगे।” **3** यहोवा ने इसराएलियों की बिनती सुनी और उन कनानियों को उनके हाथ में कर दिया। इसराएलियों ने उन्हें और उनके शहरों को नाश कर दिया। और इसी वजह से इसराएलियों ने उस जगह का नाम होरमा*[3] रखा।

4 जब इसराएली होर पहाड़ से आगे सफर में बढ़े[4] तो उन्होंने लाल सागर का रास्ता लिया ताकि वे एदोम के इलाके से न गुज़रें बल्कि उसके किनारे-किनारे चलते जाएँ।[5] अब तक सफर करते-करते लोग थक गए थे। **5** और वे परमेश्वर और मूसा के खिलाफ बातें करने लगे,[6] “तुम क्यों हमें मिस्र से निकालकर इस वीराने में ले आए हो? बस इसलिए कि हम यहाँ मर जाएँ? यहाँ न खाने के लिए रोटी है, न पीने के लिए पानी।[7] हमें इस घटिया रोटी से नफरत* हो गयी है।”[8] **6** तब यहोवा ने लोगों के बीच ज़हरीले* साँप भेजे और उन साँपों के डसने से बहुत-से इसराएली मर गए।[9]

7 लोग मूसा के पास आए और कहने

20:20 *शा., “हाथ।” **20:24** *शा., “हारून अपने लोगों में जा मिलेगा।” **20:26** *शा., “अपने लोगों में जा मिलेगा और मर जाएगा।”

21:3 *मतलब “नाश के लिए ठहराना।” **21:5** *या “घिन।” **21:6** *या “जलते।”

अध्य. 20
1 न्या 11:17
2 व्य 2:8, न्या 11:18
3 गि 21:4, गि 33:37
4 गि 33:38, व्य 32:50
5 गि 20:12, व्य 32:51, 52
6 निर्ग 28:2, निर्ग 29:29
7 निर्ग 6:23, गि 4:16
8 गि 33:39, व्य 10:6, व्य 32:50

दूसरा कॉल.
1 व्य 34:8

अध्य. 21
2 गि 33:40, यह 12:7, 14
3 गि 14:45
4 गि 33:41
5 गि 20:21, व्य 2:8, न्या 11:18
6 निर्ग 14:11, निर्ग 15:24, गि 16:13
7 गि 20:5
8 निर्ग 16:15, गि 11:6, भज 78:24, 25
9 1कुर 10:6, 9

लगे, “हमने यहोवा के खिलाफ़ और तेरे
खिलाफ बात करके पाप किया है।[1] अब
तू हमारी तरफ से यहोवा से माफी की
भीख माँग ताकि वह इन साँपों को हमारे
बीच से दूर कर दे।” तब मूसा ने लोगों
की तरफ से परमेश्‍वर से माफी माँगी।[2]
8 यहोवा ने मूसा से कहा, “तू एक
ज़हरीले* साँप के आकार का साँप बना
और उसे एक खंभे पर लगा। इसके बाद
अगर किसी को कोई साँप डसे तो उसे
खंभे पर लगे साँप को देखना होगा तभी
वह ज़िंदा बचेगा।” 9 मूसा ने फौरन
ताँबे का एक साँप बनाया[3] और उसे एक
खंभे पर लगाया।[4] फिर जब भी किसी
को साँप डसता तो वह ताँबे के उस साँप
को देखता और ज़िंदा बच जाता।[5]

10 इसके बाद इसराएली वहाँ से
निकले और उन्होंने ओबोत में डेरा
डाला।[6] 11 फिर वे ओबोत से रवाना
हुए और उन्होंने इय्ये-अबारीम में डेरा
डाला[7] जो पूरब में मोआब के सामने है।
12 इसके बाद उन्होंने वहाँ से आगे
बढ़कर जेरेद घाटी में डेरा डाला।[8]
13 फिर वहाँ से रवाना होकर उन्होंने
अरनोन के इलाके[9] में डेरा डाला। यह
इलाका उस वीराने में है जो एमोरियों
के देश की सरहद से शुरू होता है। अर-
नोन, मोआब और एमोरियों के देश के
बीच है और वही मोआब की सरहद
है। 14 इसीलिए यहोवा के युद्धों की
किताब में इन जगहों का ज़िक्र मिलता है:
“सूपा में वाहेब और अरनोन की घाटियाँ
15 और इन घाटियों की ढलान, जो आर
की बस्ती तक फैली है और मोआब की
सरहद छूती है।”

16 इसके बाद वे आगे बढ़े और बेर
पहुँचे। यह वही कुआँ है जिसके बारे में
यहोवा ने मूसा से कहा था, “लोगों को
इकट्ठा कर। मैं उन्हें पानी दूँगा।”

17 उस वक्‍त इसराएलियों ने यह गीत
गाया:

“हे कुएँ, तुझसे पानी उमड़ आए।
आओ लोगो, कुएँ के लिए गीत
गाओ!
18 यह वह कुआँ है जिसे हाकिमों ने,
हाँ, रुतबेदार लोगों ने खोदा है,
उन्होंने एक हाकिम की लाठी
से और अपनी लाठियों से
खोदा है।”

इसके बाद इसराएली वीराने से
मत्ताना गए। 19 और मत्ताना से नहली-
एल और नहलीएल से बामोत[1] गए।
20 फिर वे बामोत से आगे बढ़कर उस
घाटी में गए जो मोआब के इलाके*[2] में
है, पिसगा की उस चोटी[3] तक गए जहाँ से
यशीमोन# दिखायी देता है।[4]

21 इसके बाद इसराएलियों ने अपने
दूतों के हाथ एमोरियों के राजा सीहोन
के पास यह संदेश भेजा:[5] 22 “हमें तेरे
देश के इलाके से होकर जाने दे। हम तेरे
किसी खेत या अंगूरों के बाग में कदम
नहीं रखेंगे। और न ही तेरे किसी
कुएँ से पानी पीएँगे। हम ‘राजा की
सड़क’ पर चलते हुए तेरे इलाके से
निकल जाएँगे।”[6] 23 मगर सीहोन ने
इसराएलियों को अपने इलाके से होकर
जाने की इजाज़त नहीं दी। इसके बजाय
वह अपने सभी आदमियों को लेकर
वीराने में इसराएल पर हमला करने
निकल पड़ा। वह यहस आकर इसराए-
लियों से युद्ध करने लगा।[7] 24 मगर
इसराएलियों ने उसका मुकाबला किया
और अपनी तलवार से उसे हरा दिया।[8]

21:8 *या “जलते।”

21:20 *शा., “मैदान।” #या शायद, “रेगिस्तान; वीराना।”

अध्य. 21
1 भज 78:34
2 निर्ग 32:11
3 2रा 18:1, 4
4 यूह 3:14, 15
5 यूह 6:40
6 गि 33:43
7 गि 33:44
8 व्य 2:13
9 गि 22:36
न्या 11:18

दूसरा कॉल.
1 यह 13:15, 17
2 गि 33:49
3 व्य 3:27
व्य 34:1
4 गि 23:28
5 व्य 2:26-28
6 गि 20:14, 17
7 व्य 2:30-35
व्य 29:7
न्या 11:19, 20
8 भज 135:10, 11

और इसराएलियों ने अरनोन घाटी से
लेकर[1] यब्बोक घाटी तक,[2] जो अम्मो-
नियों के देश के पास है, सीहोन के पूरे
इलाके पर कब्ज़ा कर लिया।[3] मगर वे
याजेर[4] के आगे नहीं गए क्योंकि याजेर
के बाद अम्मोनियों का इलाका शुरू
होता है।[5]

25 इस तरह इसराएलियों ने एमो-
रियों[6] के इन सारे शहरों पर कब्ज़ा कर
लिया और वे इन शहरों में, हेशबोन और
उसके आस-पास के नगरों में रहने लगे।
26 हेशबोन एमोरियों के राजा सीहोन
का शहर था जिसने मोआब के राजा से
लड़ाई करके अरनोन घाटी तक उसका
पूरा इलाका अपने कब्ज़े में कर लिया था।
27 इसी घटना से यह कहावत निकली
जो ताना कसने के लिए बोली जाती है:

“हेशबोन चलो हेशबोन,
सीहोन का यह शहर बसाया जाए
और मज़बूत किया जाए।
28 हेशबोन से आग निकली, सीहोन के
नगर से लपटें उठीं।
और ‘मोआब के आर’ को, हाँ,
अरनोन की ऊँची-ऊँची जगहों के
हाकिमों को भस्म कर दिया।
29 हे मोआब, तेरा कितना बुरा होगा!
हे कमोश[7] के लोगो, तुम्हारा
नाश हो जाएगा!
वह अपने बेटों को भगोड़े और
बेटियों को एमोरियों के राजा
सीहोन की दासियाँ बना देता है।
30 चलो हम उन पर हमला बोलें,
दूर दीबोन तक हेशबोन नाश हो
जाएगा,[8]
चलो हम दूर नोपह तक उसे
उजाड़ दें,
दूर मेदबा तक आग फैल
जाएगी।”[9]

अध्य. 21

1 गि 21:13, व्य 3:16
2 न्या 11:21, 22
3 गि 32:33, नहे 9:22
4 गि 32:1, 1इत 6:77, 81
5 यह 12:1, 2
6 उत 10:15, 16, उत 15:16, निर्ग 3:8, व्य 7:1
7 न्या 11:23, 24, 1रा 11:7, 2रा 23:13
8 यह 13:15, 17
9 यह 13:8, 9

दूसरा कॉल.

1 गि 32:1
2 व्य 3:11, व्य 4:47, यह 13:8, 12
3 व्य 3:1, व्य 3:8, 10
4 व्य 20:3
5 निर्ग 23:27, व्य 7:24
6 व्य 3:2, भज 135:10, 11
7 व्य 3:3
8 यह 12:4-6

अध्य. 22

9 गि 33:48
10 यह 24:9, न्या 11:25
11 निर्ग 15:15, व्य 2:25
12 गि 31:7, 8, यह 13:15, 21

31 इस तरह इसराएली एमोरियों के
देश में रहने लगे। 32 फिर मूसा
ने कुछ आदमियों को याजेर की जासूसी
करने भेजा।[1] उन्होंने याजेर के आस-
पास के नगरों पर कब्ज़ा कर लिया और
वहाँ रहनेवाले एमोरियों को भगा दिया।
33 इसके बाद वे मुड़कर “बाशान सड़क”
से गए। तब बाशान का राजा ओग[2] अपने
सब आदमियों को लेकर एदरेई में इसराए-
लियों से युद्ध करने आया।[3] 34 यहोवा
ने मूसा से कहा, “तू उससे मत डर[4]
क्योंकि मैं उसे और उसके सब लोगों को
और उसके देश को तेरे हाथ में कर
दूँगा।[5] तू उसका वही हश्र करेगा जो तूने
हेशबोन में रहनेवाले एमोरियों के राजा
सीहोन का किया था।”[6] 35 इसराएली
उस राजा और उसके बेटों और उसके सब
लोगों को तब तक मारते गए जब तक कि
एक भी ज़िंदा न बचा।[7] फिर उन्होंने उस
राजा के इलाके पर कब्ज़ा कर लिया।[8]

22 इसके बाद इसराएली वहाँ से
रवाना हुए और उन्होंने मोआब
के वीरानों में पड़ाव डाला, जहाँ पास
में यरदन नदी है और उस पार
ठीक सामने यरीहो शहर है।[9] 2 इधर
सिप्पोर के बेटे बालाक[10] ने वह सब देखा
था जो इसराएल ने एमोरियों के साथ
किया था। 3 मोआब इसराएलियों से
बहुत डर गया क्योंकि इसराएलियों की
तादाद बहुत ज़्यादा थी। मोआब इस-
राएल से इस कदर खौफ खाने लगा[11] कि
4 मोआब ने मिद्यान के मुखियाओं[12] से
कहा, “अब देखना, लोगों की यह मंडली
हमारे सभी इलाकों को ऐसे साफ कर देगी
जैसे एक बैल मैदान की घास चट कर
जाता है।”

उन दिनों सिप्पोर का बेटा बालाक
मोआब का राजा था। 5 बालाक ने

बओर के बेटे बिलाम के पास अपने दूत
भेजे और उसे बुलवाया। बिलाम अपने
देश में पतोर नाम की जगह में रहता
था[1] जो महानदी* के पास है। बालाक
ने अपने दूतों के हाथ बिलाम को यह
संदेश भेजा: "मिस्र से एक राष्ट्र निकल-
कर यहाँ आया है। उसके लोगों की तादाद
इतनी है कि वे पूरी धरती# पर छा गए
हैं।[2] वे यहाँ सीधे मेरे सामने डेरा डाले
हुए हैं। **6** ये लोग मुझसे ज़्यादा ताकत-
वर हैं, इसलिए मेहरबानी करके मेरे
पास आ और मेरी तरफ से इन लोगों को
शाप दे।[3] तब मैं शायद उन्हें हराकर इस
इलाके से दूर भगा सकूँगा। मैं अच्छी तरह
जानता हूँ कि तू जिस किसी को आशीर्वाद
देता है उसे आशीष मिलती है और जिस
किसी को शाप देता है उस पर कहर टूट
पड़ता है।"

7 तब मोआब के मुखिया और मिद्यान
के मुखिया भविष्य बताने की कीमत लेकर
बिलाम[4] के पास गए और उसे बालाक का
संदेश सुनाया। **8** बिलाम ने उनसे कहा,
"तुम लोग आज रात यहीं ठहरो। यहोवा
मुझसे जो भी कहेगा वह मैं आकर तुम्हें
बताऊँगा।" इसलिए मोआब के अधिकारी
बिलाम के यहाँ ठहर गए।

9 फिर परमेश्वर बिलाम के पास
आया और उससे कहा,[5] "ये जो आदमी
तेरे यहाँ हैं, ये कौन हैं?" **10** बिलाम ने
सच्चे परमेश्वर से कहा, "सिप्पोर के बेटे
बालाक ने, जो मोआब का राजा है, मेरे
पास यह संदेश भेजा है: **11** 'मिस्र से
लोगों की एक बड़ी भीड़ आयी है जो पूरी
धरती# पर फैल गयी है। इसलिए मेरे
पास आ और मेरी तरफ से उन्हें शाप
दे।[1] तब शायद मैं उनसे लड़कर उन्हें यहाँ
से भगा सकूँगा।'" **12** मगर परमेश्वर
ने बिलाम से कहा, "तू इन आदमियों के
साथ नहीं जाएगा। और तू उन लोगों को
शाप नहीं देगा क्योंकि वे आशीष पाए हुए
लोग हैं।"[2]

13 अगली सुबह बिलाम उठा और
उसने बालाक के अधिकारियों से कहा,
"तुम लोग अपने देश लौट जाओ, क्योंकि
यहोवा ने मुझे तुम्हारे साथ जाने से
मना कर दिया है।" **14** तब मोआब
के अधिकारी वहाँ से निकल गए और
बालाक के पास लौट आए और उससे
कहा, "बिलाम ने हमारे साथ आने से इन-
कार कर दिया है।"

15 मगर बालाक ने एक बार फिर
बिलाम के पास अपने अधिकारियों को
भेजा, जो पहले भेजे हुए अधि-
कारियों से भी बड़े नामी-गिरामी थे और
गिनती में भी ज़्यादा थे। **16** उन्होंने
जाकर बिलाम से कहा, "सिप्पोर के बेटे
बालाक ने यह संदेश भेजा है: 'मेहर-
बानी करके मेरे पास आ। चाहे कुछ
भी हो जाए, तू रुकना मत, ज़रूर
आना। **17** मैं तेरा बढ़-चढ़कर सम्मान
करूँगा। जो कुछ तू मुझसे कहेगा, मैं
करूँगा। बस मुझ पर इतना एहसान कर,
तू यहाँ आकर इन लोगों को शाप दे
दे।'" **18** मगर बिलाम ने बालाक के
सेवकों से कहा, "नहीं, मैं अपने पर-
मेश्वर यहोवा के आदेश के खिलाफ न तो
कुछ घटाकर न बढ़ाकर कुछ कर सकता।
बालाक चाहे अपने महल का सारा सोना-
चाँदी मुझे दे दे, तो भी मुझे मंज़ूर
नहीं।[3] **19** फिर भी, तुम लोग मेहर-
बानी करके आज की रात यहीं ठहरो। मैं
जान जाऊँगा कि यहोवा मुझसे और क्या
कहना चाहता है।"[4]

अध्य. 22
1 व्य 23:3, 4; यह 13:22; 2पत 2:15
2 उत 13:14, 16
3 गि 23:7; यह 24:9; नहे 13:1, 2
4 2पत 2:15; यहू 11
5 गि 22:20

दूसरा कॉल.
1 गि 22:5, 6; गि 23:7, 11; गि 24:10
2 उत 12:1-3; उत 22:15, 17; व्य 33:29
3 गि 24:13
4 गि 22:8

22:5 *ज़ाहिर है, फरात नदी। **22:5, 11** #या "पूरे देश।"

20 तब परमेश्‍वर रात को बिलाम के
पास आया और उससे कहा, “अगर ये
आदमी तुझे बुलाने आए हैं, तो तू
उनके साथ जा। मगर ध्यान रहे कि तू
सिर्फ वही कहेगा जो मैं तुझे बताऊँगा।”[1]
21 अगले दिन बिलाम सुबह उठा और
उसने अपनी गधी पर काठी कसी और
उस पर सवार होकर मोआब के अधि-
कारियों के साथ चल पड़ा।[2]

22 मगर परमेश्‍वर का क्रोध बिलाम
पर भड़क उठा क्योंकि वह उन अधि-
कारियों के साथ जा रहा था। इसलिए
यहोवा का एक स्वर्गदूत उसे रोकने के
लिए रास्ते में खड़ा हो गया। बिलाम
अपनी गधी पर सवार था और उसके
साथ उसके दो सेवक भी थे। 23 जब
गधी ने यहोवा के स्वर्गदूत को तलवार
खींचे रास्ते में खड़ा देखा, तो वह रास्ते से
हटकर खेत की तरफ जाने की कोशिश
करने लगी। मगर बिलाम गधी को मारने
लगा ताकि वह रास्ते पर आ जाए।
24 फिर यहोवा का स्वर्गदूत जाकर एक
तंग रास्ते में खड़ा हो गया जो अंगूरों के दो
बागों के बीच से होकर गुज़रता था। उस
रास्ते के दोनों तरफ पत्थर की दीवारें थीं।
25 जब गधी ने वहाँ यहोवा के स्वर्गदूत
को देखा तो वह दीवार से ऐसे सट गयी
कि बिलाम का पैर दीवार से दबने लगा।
बिलाम गधी को फिर से मारने लगा।

26 यहोवा का स्वर्गदूत फिर से आगे
गया और ऐसे तंग रास्ते पर खड़ा हो
गया, जहाँ न दाएँ मुड़ने की जगह थी न
बाएँ। 27 जब गधी ने यहोवा के स्वर्ग-
दूत को देखा तो वह बिलाम को अपनी
पीठ पर लिए ज़मीन पर बैठ गयी।
बिलाम गधी पर आग-बबूला हो उठा
और अपनी लाठी से उसे पीटने लगा।
28 अब यहोवा ने ऐसा किया कि गधी
बात करने लगी।*[1] गधी ने बिलाम से
कहा, “मैंने ऐसी क्या गलती की है जो
तूने तीन बार मुझे मारा?”[2] 29 बिलाम
ने गधी से कहा, “तूने मेरा मज़ाक
बनाया है। अगर मेरे पास तलवार होती
तो मैं तुझे मार ही डालता!” 30 तब
गधी ने बिलाम से कहा, “मैं सारी ज़िंदगी
तुझे अपनी पीठ पर लिए ढोती रही। क्या
इससे पहले कभी मैंने ऐसा बरताव किया
है?” बिलाम ने कहा, “नहीं!” 31 तब
यहोवा ने बिलाम की आँखें खोल दीं[3]
और उसने यहोवा के स्वर्गदूत को तलवार
खींचे रास्ते पर खड़ा देखा। स्वर्गदूत को
देखते ही बिलाम ने मुँह के बल ज़मीन पर
गिरकर दंडवत किया।

32 तब यहोवा के स्वर्गदूत ने बिलाम
से कहा, “तूने अपनी गधी को तीन बार
क्यों मारा? देख! तुझे रोकने के लिए मैं
खुद आया था क्योंकि तू ऐसा काम करने
जा रहा है जो मेरी मरज़ी के बिलकुल
खिलाफ है।[4] 33 मैं तुझे रोकने के लिए
तीन बार आया था और इन तीनों बार
तेरी गधी ने मुझे देखा और मुझसे दूर
जाने की कोशिश की।[5] अगर वह ऐसा न
करती तो सोच तेरा क्या होता! अब तक
मैंने तुझे मार डाला होता और उसे
ज़िंदा छोड़ दिया होता।” 34 बिलाम
ने यहोवा के स्वर्गदूत से कहा, “मैंने
पाप किया है। मैं नहीं जानता था कि
तू मुझसे मिलने के लिए रास्ते में खड़ा
है। मैं जिस काम के लिए निकला हूँ, वह
अगर तेरी नज़र में गलत है तो मैं वापस
लौट जाता हूँ।” 35 मगर यहोवा के
स्वर्गदूत ने बिलाम से कहा, “तू इन आद-
मियों के साथ जा। मगर ध्यान रहे कि तू
सिर्फ वही कहेगा जो मैं तुझे बताऊँगा।”

22:28 *शा., “गधी का मुँह खोल दिया।”

अध्य. 22
1 गि 22:35
गि 23:11, 12
2 2पत 2:15
यहू 11

दूसरा कॉल.
1 2पत 2:15, 16
2 गि 22:32
3 2रा 6:17
4 गि 22:12
2पत 2:15, 16
5 गि 22:23
गि 22:25
गि 22:27

इसलिए बिलाम बालाक के अधिकारियों
के साथ आगे चल पड़ा।
36 जब बालाक ने सुना कि बिलाम
आ गया है, तो वह उससे मिलने फौरन
मोआब के उस शहर गया जो इलाके की
सरहद पर अरनोन घाटी के किनारे था।
37 बालाक ने बिलाम से कहा, “मैंने जब
पहले तुझे बुलवाया था, तो तू क्यों नहीं
आया? क्या तूने यह सोचा कि मैं तेरा
बढ़-चढ़कर सम्मान नहीं कर सकता?”[1]
38 बिलाम ने बालाक से कहा, “मैं तेरे
पास आ तो गया हूँ, मगर मुझे अपनी
मरज़ी से कुछ कहने की इजाज़त नहीं है।
मैं सिर्फ वही बात कह सकता हूँ जो पर-
मेश्वर मुझसे कहेगा।”[2]
39 इसके बाद बिलाम बालाक के
साथ गया और वे किरयत-हूसोत पहुँचे।
40 वहाँ बालाक ने बैलों और भेड़ों
की बलि चढ़ायी और उनका कुछ गोश्त
बिलाम और उसके साथ आए अधि-
कारियों के लिए भेजा। 41 अगली
सुबह बालाक बिलाम को बामोत-बाल के
ऊपर ले गया। वहाँ से वह सभी इसराए-
लियों को देख सकता था।[3]

23 तब बिलाम ने बालाक से कहा,
“इस जगह पर तू मेरे लिए सात
वेदियाँ खड़ी कर[4] और सात बैल और
सात मेढ़े तैयार रख।” 2 बालाक ने
फौरन वैसा किया जैसा बिलाम ने कहा
था। बालाक और बिलाम ने हर वेदी पर
एक-एक बैल और एक-एक मेढ़े की बलि
चढ़ायी।[5] 3 फिर बिलाम ने बालाक से
कहा, “तू यहाँ अपनी होम-बलि के
पास ही रह, मैं अभी आता हूँ। शायद
यहोवा मुझसे बात करने के लिए प्रकट
हो। वह मुझसे जो भी कहेगा, मैं आकर
तुझे बताऊँगा।” इसके बाद बिलाम एक
सूनी पहाड़ी पर गया।
4 फिर परमेश्वर बिलाम के सामने
प्रकट हुआ[1] और बिलाम ने उससे कहा,
“मैंने सात वेदियाँ कतार में खड़ी की हैं
और हर वेदी पर एक-एक बैल और एक-
एक मेढ़े की बलि चढ़ायी है।” 5 यहोवा
ने बिलाम से कहा,[2] “तू बालाक के
पास लौट जा और उसके सामने मेरा
यह संदेश दोहरा।” 6 तब बिलाम लौट
गया। उसने देखा कि बालाक और मोआब
के सभी अधिकारी होम-बलि के पास खड़े
हैं। 7 फिर बिलाम ने उन्हें यह संदेश
सुनायाः[3]

“मोआब का राजा बालाक मुझे
अराम से लाया,[4]
मुझे यह कहकर पूरब के पहाड़ों से
लायाः
‘तू मेरी तरफ से याकूब को शाप
देने आ,
हाँ, इसराएल को धिक्कारने आ।’[5]
8 मगर मैं भला ऐसे लोगों को शाप
कैसे दे सकता हूँ जिन्हें परमेश्वर
ने शाप नहीं दिया है?
मैं उन्हें कैसे धिक्कार सकता
हूँ जिन्हें यहोवा ने नहीं
धिक्कारा है?[6]
9 चट्टानों के ऊपर से मैं उन्हें देख
रहा हूँ,
पहाड़ियों से मैं उन्हें देख रहा हूँ।
यह एक ऐसी जाति है जो दूसरों से
दूर अकेली रहती है,[7]
खुद को दूसरी जातियों से अलग
मानती है।[8]
10 याकूब के धूल के कणों को कौन
गिन सकता है?[9]
क्या कोई इसराएल के एक-चौथाई
हिस्से को भी गिन सकता है?
मुझे सीधे-सच्चे लोगों की मौत मिले
और मेरा अंत उन्हीं की तरह हो।”

अध्य. 22
1 गि 22:16, 17
गि 24:10, 11
2 गि 23:26
गि 24:13
3 गि 23:13, 14

अध्य. 23
4 गि 22:41
5 गि 23:13, 14
गि 23:28-30

दूसरा कॉल.
1 गि 22:20
2 गि 22:35
3 गि 23:18
गि 24:3
4 उत 10:22
गि 22:5
व्य 23:3, 4
5 गि 22:6
6 गि 22:12
7 1रा 8:53
8 निर्ग 33:16
9 उत 13:14, 16
उत 22:17
निर्ग 1:7

11 तब बालाक ने बिलाम से कहा,
“यह तूने मेरे साथ क्या किया? मैं तुझे
यहाँ दुश्मनों को शाप देने के लिए लाया
था, मगर तूने तो उन्हें आशीर्वाद दे
दिया!”[1] 12 जवाब में बिलाम ने कहा,
“क्या मुझे वही बात नहीं कहनी चाहिए
जो यहोवा मुझे बताता है?”[2]
13 बालाक ने बिलाम से कहा,
“मेहरबानी करके मेरे साथ एक और
जगह चल जहाँ से तू उन्हें देख सकेगा। तू
उन सबको नहीं बल्कि उनमें से सिर्फ
कुछ ही लोगों को देख पाएगा। वहाँ से
तू उन्हें शाप देना।”[3] 14 बालाक उसे
पिसगा की चोटी[4] पर सोपीम के मैदान
में ले गया। वहाँ उसने सात वेदियाँ खड़ी
कीं और हर वेदी पर एक-एक बैल
और एक-एक मेढ़े की बलि चढ़ायी।[5]
15 बिलाम ने बालाक से कहा, “तू
यहाँ अपनी होम-बलि के पास ही रह,
मैं वहाँ जाकर परमेश्वर से बात करके
आता हूँ।” 16 यहोवा ने बिलाम के
सामने प्रकट होकर उसे एक संदेश दिया
और उससे कहा,[6] “तू बालाक के पास
लौट जा और उसके सामने मेरा यह
संदेश दोहरा।” 17 बिलाम, बालाक के
पास लौट आया और उसने देखा कि
बालाक अपनी होम-बलि के पास खड़ा
इंतज़ार कर रहा है और उसके साथ
मोआब के अधिकारी भी थे। बालाक
ने बिलाम से पूछा, “यहोवा ने क्या कहा
है?” 18 बिलाम ने यह संदेश सुनाया:[7]

“हे बालाक, उठ, मेरी बात सुन।
सिप्पोर के बेटे, ध्यान दे।
19 परमेश्वर कोई अदना इंसान नहीं
कि वह झूठ बोले,[8]
वह कोई इंसान नहीं कि अपनी
सोच बदले।*[9]
जब वह कहता है कि वह कुछ
करेगा, तो क्या वह नहीं करेगा?
जब वह कोई वचन देता है, तो क्या
उसे पूरा नहीं करेगा?[1]
20 देख! मुझे यहाँ आशीर्वाद देने के
लिए भेजा गया है,
जब परमेश्वर ने आशीर्वाद दे
दिया है,[2] तो मैं उसे नहीं बदल
सकता।[3]
21 उसे यह बरदाश्त नहीं होता कि
याकूब पर कोई जादू-टोना करे,
और वह इसराएल पर कोई मुसी-
बत नहीं आने देता।
उसका परमेश्वर यहोवा उनके
साथ है,[4]
वे परमेश्वर को अपना राजा मान-
कर उसकी जयजयकार करते हैं।
22 परमेश्वर उन्हें मिस्र से बाहर ला
रहा है,[5]
वह उनके लिए जंगली साँड़ के
सींगों जैसा है।[6]
23 याकूब को तबाह करनेवाला कोई
शकुन नहीं है,[7]
इसराएल पर ज्योतिष-विद्या का
कोई असर नहीं हो सकता।[8]
अब याकूब और इसराएल के बारे
में यही कहा जाएगा:
‘देखो, परमेश्वर ने उनकी खातिर
क्या-क्या किया है!’
24 ये ऐसी जाति है जो शेर की तरह
उठती है
और शेर की तरह खड़ी होती है।[9]
वह तब तक नहीं लेटेगी जब तक
कि शिकार को खा न ले
और मारे हुओं का खून पी न ले।”

25 तब बालाक ने बिलाम से कहा,
“अगर तू उन लोगों को शाप नहीं दे

23:19 *या “पछतावा महसूस करे।”

अध्य. 23

1 गि 24:10, यह 24:10, नहे 13:1, 2
2 गि 22:38, गि 24:13
3 गि 22:11
4 व्य 34:1
5 गि 22:41, गि 23:1, गि 23:28, 29
6 गि 22:35, गि 23:5
7 गि 23:7, गि 24:3
8 भज 89:35, तीत 1:2
9 1शम 15:29

दूसरा कॉल.

1 यश 14:24, यश 46:10, मी 7:20
2 उत 12:1, 2, उत 22:15, 17, गि 22:12
3 गि 22:18
4 निर्ग 13:21, निर्ग 23:20, निर्ग 29:45, यश 8:10
5 निर्ग 20:2
6 गि 24:8
7 उत 12:1, 3
8 गि 22:7
9 गि 24:9

सकता तो मत दे, मगर कम-से-कम
उन्हें आशीर्वाद तो न दे।" 26 बिलाम
ने बालाक से कहा, "क्या मैंने तुझसे नहीं
कहा था, 'मैं वह सब करूँगा जो यहोवा
मुझसे कहेगा'?"[1]

27 बालाक ने बिलाम से कहा,
"मेहरबानी करके मेरे साथ आ। मैं तुझे
एक और जगह ले जाता हूँ। शायद
सच्चे परमेश्वर को यह सही लगे कि
तू वहाँ मेरी तरफ से लोगों को शाप
दे।"[2] 28 इसलिए बालाक बिलाम को
पोर की चोटी पर ले गया, जहाँ
से सामने यशीमोन* नज़र आता है।[3]
29 तब बिलाम ने बालाक से कहा, "इस
जगह पर तू मेरे लिए सात वेदियाँ खड़ी
कर और सात बैल और सात मेढ़े तैयार
रख।"[4] 30 बालाक ने ठीक वैसा ही
किया और उसने हर वेदी पर एक-एक
बैल और एक-एक मेढ़े की बलि चढ़ायी।

24 बिलाम ने देखा कि यहोवा यही
चाहता है* कि वह इसराएल
को आशीर्वाद दे। इसलिए वह इस-
राएल को तबाह करने के लिए शकुन
विचारने किसी और जगह नहीं गया।[5]
इसके बजाय, वह वीराने की तरफ मुड़ा
2 और उसने देखा कि इसराएली अपने-
अपने गोत्र के मुताबिक छावनी डाले हुए
हैं।[6] फिर परमेश्वर की पवित्र शक्ति
उस पर आयी।[7] 3 तब बिलाम ने यह
संदेश सुनाया:[8]

"बओर के बेटे बिलाम का संदेश
यह है,
ऐसे आदमी का संदेश जिसकी आँखें
खोली गयी हैं,
4 जिसने परमेश्वर का वचन सुना है,

23:28 *या शायद, "रेगिस्तान; वीराना।"
24:1 *शा., "की नज़रों में यह अच्छा है।"

जिसने दंडवत करते हुए खुली
आँखों से
सर्वशक्तिमान परमेश्वर का दर्शन
देखा है:[1]
5 हे याकूब, तेरे तंबू क्या ही
खूबसूरत हैं!
हे इसराएल, तेरे डेरे कितने
सुंदर हैं![2]
6 वे दूर-दूर तक ऐसे फैले हुए हैं[3]
जैसे वादियाँ हों,
जैसे नदी किनारे लगे बाग हों,
जैसे यहोवा के लगाए हुए अगर के
पौधे हों,
जैसे पानी के पास लगे देवदार हों।
7 उसके चमड़े के दोनों पात्रों से पानी
बहता रहता है,
उसका बीज* ऐसे खेतों में बोया
गया है जहाँ भरपूर पानी है।[4]
उसका राजा[5] अगाग से भी महान
होगा,[6]
उसका राज ऊँचा किया जाएगा।[7]
8 परमेश्वर उसे मिस्र से बाहर
लाता है,
वह उनके लिए जंगली साँड़ के
सींगों जैसा है।
वह दूसरी जातियों को, हाँ, उसे
सतानेवालों को खा जाएगा,[8]
उनकी हड्डियाँ चबा डालेगा और
अपने तीरों से उन्हें नाश कर
देगा।
9 वह दुबका बैठा है, एक शेर की
तरह लेटा हुआ है,
किसकी मजाल कि उसे छेड़े?
तुझे आशीर्वाद देनेवालों को आशीष
मिलती है,

24:7 *या "उसकी संतान।"

अध्य. 23
1 गि 22:38
गि 23:12
2 गि 23:13
3 गि 21:20
4 गि 22:41
गि 23:1, 14

अध्य. 24
5 गि 23:3, 15
गि 23:23
6 गि 2:2
गि 23:9
7 1शम 19:20
8 गि 23:7, 18

दूसरा कॉल.
1 गि 24:16
2 गि 1:52
गि 2:2
3 गि 22:11
4 व्य 8:7
5 उत 49:10
भज 2:6
यूह 1:49
6 गि 24:20
7 1इत 14:2
दान 2:44
प्रक 11:15
8 निर्ग 23:27
व्य 9:5

तुझे शाप देनेवालों पर शाप
पड़ता है।"[1]

10 तब बालाक बिलाम पर आग-
बबूला हो उठा। बालाक ने हाथ-पर-हाथ
मारते हुए बिलाम पर यह ताना कसा,
"मैंने तुझे अपने दुश्मनों को शाप देने के
लिए बुलाया था,[2] मगर तूने तीनों बार
उन्हें आशीर्वाद दे डाला। 11 तू फौरन
यहाँ से अपने घर लौट जा। मैंने सोचा
था, मैं तेरा बढ़-चढ़कर सम्मान करूँगा,[3]
मगर देख! यहोवा तुझे यह सम्मान पाने से
रोक रहा है।"

12 तब बिलाम ने बालाक से कहा,
"मैंने तेरे दूतों को पहले ही बता दिया था,
13 'बालाक चाहे अपने महल का सारा
सोना-चाँदी मुझे दे दे, तो भी मैं यहोवा के
आदेश के खिलाफ जाकर अपनी मरज़ी
से* कुछ नहीं कर सकता, फिर चाहे मैं
अच्छा करना चाहूँ या बुरा। यहोवा मुझे
जो संदेश देगा मैं वही सुनाऊँगा।'[4]
14 अब मैं जा रहा हूँ अपने लोगों के
पास। मगर जाने से पहले तुझे बता दूँ कि
ये लोग भविष्य* में तेरे लोगों के साथ
क्या-क्या करेंगे।" 15 फिर बिलाम ने
यह संदेश सुनाया:[5]

"बओर के बेटे बिलाम का यह
संदेश है,
ऐसे आदमी का संदेश जिसकी
आँखें खोली गयी हैं,[6]
16 जिसने परमेश्वर का वचन सुना है,
जिसके पास वह ज्ञान है जो परम-
प्रधान परमेश्वर देता है,
उसने दंडवत करते हुए खुली
आँखों से
सर्वशक्तिमान परमेश्वर का दर्शन
देखा है:
17 मैं उसे देखूँगा मगर अभी नहीं,
मैं उस पर नज़र करूँगा मगर जल्दी
नहीं।
याकूब में से एक तारा[1] निकलेगा
और इसराएल में से एक राजदंड[2]
निकलेगा।[3]
वह ज़रूर मोआब के माथे के दो
टुकड़े कर देगा[4]
और हुल्लड़ मचानेवालों की खोपड़ी
चूर-चूर कर देगा।
18 जब इसराएल अपनी दिलेरी
दिखाएगा,
तब एदोम उसकी जागीर बन
जाएगा,[5]
हाँ, सेईर[6] अपने दुश्मन की जागीर
बन जाएगा।[7]
19 याकूब से वह निकलेगा जो दुश्मनों
को परास्त करता जाएगा,[8]
वह शहर से बचकर भागनेवाले हर
किसी को नाश कर देगा।"

20 जब बिलाम ने अमालेक को देखा
तो उसने अपने संदेश में यह भी कहा:

"अमालेक सब जातियों में
पहला था,[9]
मगर अंत में वह मिट जाएगा।"[10]

21 जब बिलाम ने केनी लोगों[11] को
देखा तो उसने अपने संदेश में यह भी
कहा:

"तेरा बसेरा चट्टान पर मज़बूत बना
है, हर खतरे से महफ़ूज़ है।
22 मगर कोई है जो केन को जलाकर
भस्म कर देगा।
वह दिन दूर नहीं जब अश्शूर तुझे
बंदी बनाकर ले जाएगा।"

23 बिलाम ने अपने संदेश में यह भी
कहा:

24:13 *शा., "अपने दिल से।" 24:14 *या "आखिरी दिनों।"

अध्य. 24
1 उत 12:1-3; उत 27:29
2 गि 22:10, 11; गि 23:11; नहे 13:1, 2
3 गि 22:16, 17
4 गि 22:18, 38
5 गि 23:7
6 गि 24:3, 4

दूसरा कॉल.
1 प्रक 22:16
2 भज 110:2; इब्र 1:8
3 2शम 7:16, 17; यश 9:7
4 2शम 8:2; 1इत 18:2; भज 108:9
5 उत 27:37; 2शम 8:14; आम 9:11, 12
6 उत 36:8; यह 24:4
7 1इत 4:42, 43; यहे 25:14
8 उत 49:10; भज 2:9; भज 72:11; प्रक 6:2; प्रक 19:15
9 निर्ग 17:8, 14
10 व्य 25:19; 1शम 15:3; 1इत 4:43
11 उत 15:18, 19; न्या 1:16

“हाय! जब परमेश्वर ऐसा करेगा
तो कौन बच पाएगा?
24 कित्तीम के तट[1] से जहाज़ों का
लशकर आएगा,
वह अश्शूर पर ज़ुल्म ढाएगा,[2]
वह एबेर पर ज़ुल्म ढाएगा।
मगर वह भी पूरी तरह नाश हो
जाएगा।”

25 फिर बिलाम[3] अपनी जगह लौट
गया। बालाक भी अपने रास्ते चल दिया।

25 जब इसराएली शित्तीम में रह रहे
थे,[4] तो वे मोआबी औरतों के
साथ नाजायज़ यौन-संबंध रखने लगे।[5]
2 मोआबी औरतों ने उन्हें न्यौता दिया
कि वे उनके देवताओं के लिए बलिदान
चढ़ाने के मौके पर उनके यहाँ आएँ।[6]
तब वे उनके यहाँ गए और उन देव-
ताओं के आगे दंडवत करने लगे[7] और
उनको चढ़ाया गया भोजन खाने लगे।
3 इस तरह इसराएली पोर के बाल देवता
की पूजा करने में हिस्सा लेने लगे।*[8]
तब इसराएल पर यहोवा का क्रोध भड़क
उठा। 4 यहोवा ने मूसा से कहा, “तू इन
लोगों के सभी अगुवों को पकड़कर मार
डाल और यहोवा के सामने भरी दोपहरी
में लटका दे, तभी इसराएल से यहोवा की
जलजलाहट दूर होगी।” 5 फिर मूसा
ने इसराएल के न्यायियों[9] से कहा, “तुममें
से हर कोई अपने उन आदमियों को मार
डाले जिन्होंने पोर के बाल की पूजा करने
में हिस्सा लिया है।”*[10]

6 इसराएल की पूरी मंडली दुख के
मारे भेंट के तंबू के द्वार पर विलाप कर ही
रही थी कि तभी एक इसराएली आदमी,
मूसा और इसराएलियों की पूरी मंडली के
देखते एक मिद्यानी औरत को लेकर खुले-
आम उनके बीच आया।[1] 7 जब हारून
याजक के पोते यानी एलिआज़र के बेटे
फिनेहास[2] ने यह देखा तो वह मंडली के
बीच से फौरन उठ खड़ा हुआ और हाथ में
एक भाला* लेकर निकल पड़ा। 8 वह
उस आदमी के पीछे-पीछे उसके तंबू में
गया और उसने उस आदमी और औरत
के पेट में भाला आर-पार भोंक दिया।
तब इसराएल पर जो कहर टूट पड़ा था
वह थम गया।[3] 9 इस कहर से मरने-
वालों की गिनती 24,000 थी।[4]

10 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
11 “हारून याजक के पोते यानी एलि-
आज़र के बेटे फिनेहास[5] ने इसराएल से
मेरा क्रोध दूर किया है, क्योंकि उसे यह
हरगिज़ बरदाश्त नहीं हुआ कि लोग मेरे
सिवा किसी और की उपासना करें।[6]
अगर वह ऐसा नहीं करता तो मैं इस-
राएलियों को मिटा देता, क्योंकि मेरी यह
माँग है कि सिर्फ मेरी भक्ति की जाए।[7]
12 इसलिए फिनेहास से कहना कि मैं
उसके साथ एक शांति का करार करता
हूँ। 13 मैं उससे यह करार करता हूँ
कि याजकपद हमेशा के लिए उसका और
उसके बाद उसकी संतान का रहेगा,[8]
क्योंकि उसे यह हरगिज़ बरदाश्त नहीं
हुआ कि उसके परमेश्वर को छोड़ किसी
और की उपासना की जाए[9] और उसने
इसराएल के लोगों के लिए प्रायश्चित
किया है।”

14 जिस इसराएली आदमी को
मिद्यानी औरत के साथ मार डाला गया था
उसका नाम जिमरी था। वह सालू का बेटा
था और शिमोनियों के एक कुल का एक
प्रधान था। 15 और जो मिद्यानी औरत
मारी गयी उसका नाम कोजबी था। वह

25:3 *या “देवता से जुड़ गए।” **25:5** *या “बाल से जुड़ गए हैं।”

25:7 *या “बरछी।”

अध्य. 24
1 उत 10:2, 4; यहे 27:6
2 नहू 3:18
3 गि 31:7, 8

अध्य. 25
4 यह 2:1; मी 6:5
5 गि 31:16; 1कुर 10:8; प्रक 2:14
6 निर्ग 34:15; 1कुर 10:20
7 निर्ग 20:5
8 व्य 4:3; यह 22:17; भज 106:28, 29; हो 9:10
9 निर्ग 18:21
10 निर्ग 22:20; निर्ग 32:25, 27; व्य 13:6-9

दूसरा कॉल.
1 गि 25:14, 15
2 निर्ग 6:25; यह 22:30
3 भज 106:30
4 गि 25:4; व्य 4:3; 1कुर 10:8
5 गि 25:7
6 भज 106:30, 31
7 निर्ग 20:5; निर्ग 34:14; व्य 4:24
8 1इत 6:4; एज 7:1, 5; एज 8:1, 2
9 1रा 19:10

मिद्यानियों के एक कुल[1] के एक प्रधान सूर[2] की बेटी थी।

16 बाद में यहोवा ने मूसा से कहा, **17** "मिद्यानियों पर हमला करके उन्हें मार डालो,[3] **18** क्योंकि उन्होंने पोर के मामले में चालाकी से तुम्हें पाप में फँसाया और तुम पर विपत्ति ले आए।[4] उन्होंने एक मिद्यानी प्रधान की बेटी कोज़बी का इस्तेमाल करके तुमसे पाप करवाया, जिसे उस दिन मार डाला गया था[5] जब पोर के मामले में तुम पर कहर ढाया गया था।"[6]

26 उस कहर के बाद[7] यहोवा ने मूसा और हारून याजक के बेटे एलिआज़र से कहा, **2** "इसराएल की मंडली के उन सभी आदमियों की गिनती लेना जिनकी उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा है और जो इसराएल की सेना में काम करने के योग्य हैं। हरेक का नाम उसके पिता के कुल के मुताबिक लिखना।"[8] **3** इस वक्त इसराएली मोआब के वीरानों[9] में डेरा डाले हुए थे, जो यरीहो[10] के सामने और यरदन के पास थे। वहाँ मूसा और एलिआज़र[11] याजक ने लोगों से कहा, **4** "तुम उन सभी आदमियों की गिनती लेना जिनकी उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा है, ठीक जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी है।"[12]

ये थे वे इसराएली जो मिस्र से बाहर निकल आए थे: **5** इसराएल के पहलौठे रूबेन[13] के बेटे[14] ये थे: हानोक से हानोकियों का घराना, पल्लू से पल्लुओं का घराना, **6** हेसरोन से हेसरोनियों का घराना और करमी से करमियों का घराना निकला। **7** ये सभी रूबेनियों के घराने थे। उनमें से जितनों के नाम लिखे गए उनकी गिनती 43,730 थी।[15]

8 पल्लू का बेटा एलीआब था। **9** और एलीआब के बेटे थे नमूएल, दातान और अबीराम। ये वही दातान और अबीराम थे जो मंडली में चुने हुए अधिकारी थे और कोरह और उसकी टोली[1] के साथ मिलकर मूसा और हारून के खिलाफ खड़े हुए थे।[2] उन्होंने यहोवा से लड़ाई की थी।[3]

10 तब ज़मीन ने मुँह खोला और उन्हें निगल गयी। जहाँ तक कोरह की बात है, उसे उन 250 आदमियों के साथ आग से भस्म कर दिया गया जिन्होंने उसका साथ दिया था।[4] वे सब ऐसी मिसाल बन गए जिससे दूसरे सबक सीख सकें।[5] **11** मगर कोरह के साथ उसके बेटे नहीं मारे गए।[6]

12 ये थे शिमोन के बेटे[7] जिनके नाम पर उनके अपने-अपने घराने निकले: नमूएल से नमूएलियों का घराना, यामीन से यामीनियों का घराना, याकीन से याकीनियों का घराना, **13** जेरह से जेरहियों का घराना और शौल से शौलियों का घराना। **14** ये सभी शिमोनियों के घराने थे। उनमें से जितनों के नाम लिखे गए उनकी गिनती 22,200 थी।[8]

15 ये थे गाद के बेटे[9] जिनके नाम पर उनके अपने-अपने घराने निकले: सपोन से सपोनियों का घराना, हाग्गी से हाग्गियों का घराना, शूनी से शूनियों का घराना, **16** ओजनी से ओजनियों का घराना, एरी से एरियों का घराना, **17** अरोद से अरोदियों का घराना और अरेली से अरेलियों का घराना। **18** ये सभी गाद के बेटों के घराने थे। उनमें से जितनों के नाम लिखे गए उनकी गिनती 40,500 थी।[10]

19 यहूदा के बेटे[11] थे एर और ओनान।[12] मगर एर और ओनान कनान

अध्य. 25
1 1इत 1:32, 33
2 गि 31:7, 8; यह 13:21
3 गि 31:1, 2
4 गि 25:3; गि 31:16
5 गि 25:8, 15
6 गि 25:9

अध्य. 26
7 गि 25:7, 8
8 निर्ग 30:12; निर्ग 38:26; गि 1:2
9 गि 22:1; गि 33:48
10 यह 6:1
11 गि 20:26
12 गि 1:3
13 उत 29:32
14 उत 46:8, 9; निर्ग 6:14
15 गि 1:21

दूसरा कॉल.
1 गि 16:1
2 गि 16:12
3 गि 16:5, 19; व्य 11:6; भज 106:17
4 गि 16:32, 35; भज 106:18
5 गि 16:38; 1कुर 10:10, 11
6 निर्ग 6:24; गि 26:58; भज 42:उप
7 उत 35:23; उत 46:10; निर्ग 6:15; 1इत 4:24
8 गि 1:23
9 उत 35:26; उत 46:16
10 गि 1:25
11 उत 29:35; उत 46:12
12 उत 38:2-4

देश में ही मर गए।[1] 20 ये थे
यहूदा के बेटे जिनके नाम पर उनके
अपने-अपने घराने निकलेः शेलह[2] से
शेलहियों का घराना, पेरेस[3] से पेरेसियों
का घराना और जेरह[4] से जेरहियों का
घराना। 21 पेरेस के बेटे ये थेः हेस-
रोन[5] से हेसरोनियों का घराना और
हामूल[6] से हामूलियों का घराना निकला।
22 ये सभी यहूदा के घराने थे। उनमें से
जितनों के नाम लिखे गए उनकी गिनती
76,500 थी।[7]

23 ये थे इस्साकार[8] के बेटे जिनके
नाम पर उनके अपने-अपने घराने
निकलेः तोला[9] से तोलियों का घराना,
पुव्वा से पुव्वियों का घराना, 24 याशूब
से याशूबियों का घराना और शिमरोन
से शिमरोनियों का घराना। 25 ये सभी
इस्साकार के घराने थे। उनमें से
जितनों के नाम लिखे गए उनकी गिनती
64,300 थी।[10]

26 ये थे जबूलून[11] के बेटे जिनके
नाम पर उनके अपने-अपने घराने निकलेः
सेरेद से सेरेदियों का घराना, एलोन
से एलोनियों का घराना और यहलेल
से यहलेलियों का घराना। 27 ये सभी
जबूलूनियों के घराने थे। उनमें से जितनों
के नाम लिखे गए उनकी गिनती
60,500 थी।[12]

28 यूसुफ[13] के बेटे मनश्शे और
एप्रैम[14] गोत्र से निकले। 29 मनश्शे[15]
के बेटे ये थेः माकीर[16] से माकीरियों का
घराना निकला। माकीर का बेटा गिलाद
था और गिलाद[17] से गिलादियों का
घराना निकला। 30 गिलाद के बेटे ये
थेः ईएजेर से ईएजेरियों का घराना, हेलेक
से हेलेकियों का घराना, 31 असरीएल
से असरीएलियों का घराना, शेकेम से
शेकेमियों का घराना, 32 शमीदा से
शमीदियों का घराना और हेपेर से हेपे-
रियों का घराना निकला। 33 हेपेर का
बेटा सलोफाद था। सलोफाद के कोई
बेटा नहीं था। उसकी सिर्फ बेटियाँ
थीं[1] जिनके नाम थे महला, नोआ,
होग्ला, मिलका और तिरसा।[2] 34 ये
सभी मनश्शे के घराने थे। उनमें से
जितनों के नाम लिखे गए उनकी गिनती
52,700 थी।[3]

35 ये थे एप्रैम[4] के बेटे जिनके नाम
पर उनके अपने-अपने घराने निकलेः
शूतेलह[5] से शूतेलहियों का घराना, बेकेर
से बेकेरियों का घराना और तहन से
तहनियों का घराना। 36 शूतेलह के
बेटे ये थेः एरान से एरानियों का घराना
निकला। 37 ये सभी एप्रैम के बेटों के
घराने थे। उनमें से जितनों के नाम लिखे
गए उनकी गिनती 32,500 थी।[6] ये
सभी यूसुफ के बेटे थे जिनके नाम पर
उनके अपने-अपने घराने निकले।

38 ये थे बिन्यामीन[7] के बेटे जिनके
नाम पर उनके अपने-अपने घराने निकलेः
बेला[8] से बेलियों का घराना, अशबेल
से अशबेलियों का घराना, अहीराम
से अहीरामियों का घराना, 39 शपू-
पाम से शपूपामियों का घराना और
हूपाम से हूपामियों का घराना। 40 बेला
के बेटे थे अर्द और नामान।[9] अर्द से
अर्दियों का घराना और नामान से नामा-
नियों का घराना निकला। 41 ये सभी
बिन्यामीन के बेटे थे जिनके नाम पर
उनके अपने-अपने घराने निकले। उनमें से
जितनों के नाम लिखे गए उनकी गिनती
45,600 थी।[10]

42 ये थे दान[11] के बेटे जिनके नाम
पर उनके अपने-अपने घराने निकलेः
शूहाम से शूहामियों का घराना। ये
सभी दान के वंशजों के घराने थे।

अध्य. 26
1 उत 38:7-10
2 उत 38:2, 5; उत 38:26; 1इत 4:21
3 उत 38:29; रूत 4:18; मत 1:3
4 उत 38:30; 1इत 2:4
5 रूत 4:19
6 1इत 2:5
7 गि 1:27
8 उत 30:18; उत 35:23; उत 46:13; 1इत 7:1
9 1इत 7:2
10 गि 1:29
11 उत 30:20; उत 46:14
12 गि 1:31
13 उत 30:24; उत 35:24; उत 46:20
14 उत 41:52
15 उत 41:51
16 उत 50:23; व्य 3:15; 1इत 7:14
17 यह 17:1

दूसरा कॉल.
1 गि 27:7; 1इत 7:15
2 गि 36:11
3 गि 1:35
4 उत 41:52
5 1इत 7:20
6 गि 1:33; यह 17:17
7 उत 35:24; उत 46:21; 1इत 8:1
8 1इत 7:6
9 1इत 8:3, 4
10 गि 1:37
11 उत 30:6

43 शूहामियों के घराने में से जितनों के नाम लिखे गए उनकी गिनती 64,-400 थी।[1]

44 ये थे आशेर[2] के बेटे जिनके नाम पर उनके अपने-अपने घराने निकले: यिम्नाह से यिम्नाहियों का घराना, यिश्‍वी से यिश्‍वियों का घराना और बरीआ से बरीआइयों का घराना। 45 बरीआ के बेटे ये थे: हेबेर से हेबेरियों का घराना और मलकीएल से मलकीएलियों का घराना निकला। 46 आशेर की बेटी का नाम सेरह था। 47 ये सभी आशेर के बेटों के घराने थे। उनमें से जितनों के नाम लिखे गए उनकी गिनती 53,400 थी।[3]

48 ये थे नप्ताली[4] के बेटे जिनके नाम पर उनके अपने-अपने घराने निकले: यहसेल से यहसेलियों का घराना, गूनी से गूनियों का घराना, 49 येसेर से येसेरियों का घराना और शिल्लेम से शिल्लेमियों का घराना। 50 अपने कुलों के मुताबिक नप्ताली के कुल ये थे। उनमें से जितनों के नाम लिखे गए उनकी गिनती 45,400 थी।[5]

51 इसराएलियों में से जितनों के नाम लिखे गए उनकी कुल गिनती 6,01,-730 थी।[6]

52 इसके बाद यहोवा ने मूसा से कहा, 53 "इन नामों की सूची के मुताबिक हर गोत्र में जितने लोग हैं,* उस हिसाब से देश की ज़मीन विरासत के तौर पर सभी गोत्रों में बाँट दे।[7] 54 बड़े समूह को बड़ा हिस्सा और छोटे समूह को छोटा हिस्सा दिया जाए।[8] एक समूह में जितने लोगों के नाम लिखे हैं, उस हिसाब से उसे ज़मीन का टुकड़ा विरासत में दिया जाए। 55 मगर ज़मीन का बँटवारा चिट्ठियाँ डालकर किया जाए।[1] हर परिवार को विरासत में उसी ज़मीन में से एक टुकड़ा दिया जाए जो उसके गोत्र के लिए तय की जाती है। 56 विरासत की ज़मीन का बँटवारा चिट्ठियाँ डालकर किया जाए। एक समूह कितना बड़ा है या कितना छोटा, उस हिसाब से उसे ज़मीन का टुकड़ा दिया जाए।"

57 लेवियों[2] के घरानों में से जिनके नाम लिखे गए वे ये थे: गेरशोन से गेरशोनियों का घराना, कहात[3] से कहातियों का घराना और मरारी से मरारियों का घराना निकला। 58 ये सभी लेवियों के घराने थे: लिबनियों का घराना,[4] हेब्रोनियों का घराना,[5] महलियों का घराना,[6] मूशियों का घराना[7] और कोरहियों का घराना।[8]

कहात का बेटा अमराम था।[9] 59 अमराम की पत्नी का नाम योकेबेद था[10] जो लेवी की बेटी थी। वह मिस्र में पैदा हुई थी। योकेबेद से अमराम के बेटे हारून और मूसा और उनकी बहन मिरयम पैदा हुए।[11] 60 और हारून से नादाब, अबीहू, एलिआज़र और ईतामार पैदा हुए।[12] 61 मगर नादाब और अबीहू मर गए क्योंकि उन्होंने यहोवा के सामने नियम के खिलाफ आग चढ़ायी थी।[13]

62 लेवियों में से जितने आदमियों और एक महीने या उससे ज़्यादा उम्र के लड़कों के नाम लिखे गए, उनकी कुल गिनती 23,000 थी।[14] इनका नाम बाकी इसराएलियों के साथ नहीं लिखा गया[15] क्योंकि इन्हें इसराएल देश में विरासत की कोई ज़मीन नहीं दी जाती।[16]

63 यही वे लोग थे जिनकी नामलिखाई मूसा और एलिआज़र याजक ने उस वक्‍त की थी जब उन्होंने सभी

26:53 *या "सूची में जितने नाम दिए गए हैं।"

अध्य. 26
1 गि 1:39
2 उत 30:13, उत 35:26, उत 46:17, 1इत 7:30
3 गि 1:41
4 उत 30:8, उत 35:25, उत 46:24, 1इत 7:13
5 गि 1:43
6 निर्ग 38:26, गि 1:46, 49, गि 14:29
7 यह 11:23, यह 14:1
8 गि 33:54

दूसरा कॉल.
1 गि 34:13, यह 14:2, यह 17:4, यह 18:6, नीत 16:33
2 उत 46:11, निर्ग 6:16
3 गि 3:19
4 निर्ग 6:17, गि 3:18
5 गि 3:27
6 निर्ग 6:19, गि 3:33
7 गि 3:20, 1इत 23:23
8 निर्ग 6:24
9 निर्ग 6:18, गि 3:19
10 निर्ग 2:1, निर्ग 6:20
11 निर्ग 15:20, मी 6:4
12 निर्ग 6:23, निर्ग 24:9
13 लैव 10:1, 2, गि 3:2, 4, 1इत 24:2
14 गि 3:39
15 गि 1:49
16 गि 18:24, व्य 10:9, व्य 14:27, यह 14:3

इसराएलियों के नाम लिखे थे। उस वक्त वे मोआब के वीरानों में पड़ाव डाले हुए थे जो यरीहो के सामने और यरदन के पास थे। **64** इन लोगों में ऐसा एक भी आदमी नहीं था जिसका नाम मूसा और हारून याजक ने इससे पहले सीनै वीराने में इसराएलियों की गिनती लेते वक्त लिखा था,[1] **65** क्योंकि यहोवा ने उन लोगों के बारे में कहा था, “ये लोग वीराने में ही मर जाएँगे।”[2] इसलिए इस वक्त तक उन आदमियों में से यपुन्ने के बेटे कालेब और नून के बेटे यहोशू को छोड़ कोई भी ज़िंदा नहीं बचा।[3]

27 तब सलोफाद की बेटियाँ[4] महला, नोआ, होग्ला, मिलका और तिरसा मूसा के पास आयीं। सलोफाद का घराना यूसुफ के बेटे मनश्शे के घरानों में से था। सलोफाद हेपेर का बेटा था, हेपेर गिलाद का, गिलाद माकीर का और माकीर मनश्शे का बेटा था। **2** सलोफाद की बेटियाँ भेंट के तंबू के द्वार पर गयीं और मूसा, एलिआज़र याजक, प्रधानों[5] और पूरी मंडली के सामने खड़ी हुईं और कहने लगीं, **3** “हमारे पिता की मौत वीराने में हुई थी, मगर वह उन लोगों की टोली में नहीं था जिन्होंने कोरह के साथ मिलकर यहोवा से बगावत की थी।[6] हमारे पिता की मौत उसके अपने ही पाप की वजह से हुई थी और उसके कोई बेटा नहीं था। **4** क्या हमारे पिता का नाम उसके घराने से इसलिए मिट जाएगा क्योंकि उसके कोई बेटा नहीं था? इसलिए हमारी यह गुज़ारिश है कि हमारे पिता के भाइयों के साथ हमें भी विरासत की ज़मीन दी जाए।” **5** तब मूसा ने उनका मामला यहोवा के सामने रखा।[7]

6 यहोवा ने मूसा से कहा, **7** “सलोफाद की बेटियाँ ठीक कह रही हैं। तू उनके पिता के भाइयों के साथ उन्हें भी विरासत की ज़मीन ज़रूर देना। हाँ, सलोफाद की विरासत की ज़मीन उसकी बेटियों के नाम कर देना।[1] **8** और इसराएलियों से कहना, ‘अगर एक आदमी की मौत हो जाती है और उसके कोई बेटा नहीं है, तो उसकी विरासत उसकी बेटी को देना। **9** अगर उसकी कोई बेटी नहीं है तो तू उसकी विरासत उसके भाइयों को देगा। **10** अगर उसका कोई भाई नहीं है तो उसकी विरासत उसके पिता के भाइयों को देना। **11** और अगर उसके पिता का कोई भाई नहीं है, तो तू विरासत उसके घराने में से किसी ऐसे को देगा जिसके साथ उसका खून का रिश्ता है और वह ज़मीन उसकी जागीर हो जाएगी। यह न्याय-सिद्धांत इसराएलियों के लिए एक नियम ठहरेगा, ठीक जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी है।’”

12 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “तू इस अबारीम पहाड़ के ऊपर जा[2] और वहाँ से उस देश को देख जो मैं इसराएलियों को देनेवाला हूँ।[3] **13** जब तू उसे देख लेगा तो उसके बाद तेरे भाई हारून की तरह तेरी भी मौत हो जाएगी।*[4] **14** क्योंकि सिन वीराने में जब लोगों की मंडली ने मुझसे झगड़ा किया था, तब तुम दोनों ने पानी के सोते के मामले में मेरे आदेश के खिलाफ जाकर बगावत की और लोगों के सामने मुझे पवित्र नहीं ठहराया था।[5] (यह मरीबा का सोता है[6] जो सिन वीराने[7] में कादेश[8] में है।)”

15 मूसा ने यहोवा से कहा, **16** “हे यहोवा, तू जो सब लोगों को जीवन

27:13 *शा., “तू भी अपने लोगों में जा मिलेगा।”

अध्य. 26
1 गि 1:2
व्य 2:14
1कुर 10:5
2 इब्र 3:17
3 गि 14:29, 30
यह 14:14
यह 19:49

अध्य. 27
4 गि 26:33
5 निर्ग 18:25, 26
6 गि 14:35
गि 16:1, 2
गि 16:19, 35
7 निर्ग 18:15, 16
निर्ग 33:11
लैव 24:11, 12

दूसरा कॉल.
1 गि 36:2
यह 17:3, 4
2 गि 33:47
व्य 32:48, 49
3 उत 13:14, 15
व्य 3:27
व्य 32:52
व्य 34:1
4 गि 20:24, 28
गि 31:2
गि 33:38
व्य 10:6
व्य 32:50
व्य 34:7
5 गि 20:10, 12
व्य 1:37
6 भज 106:32, 33
7 यह 15:1
8 व्य 1:2

देनेवाला परमेश्वर है, तुझसे बिनती है कि
लोगों की मंडली पर एक ऐसा आदमी
ठहरा 17 जो हर मामले में उनकी अगु-
वाई करे और जिसकी दिखायी राह पर
लोग चलें। ऐसा न हो कि यहोवा की
मंडली उन भेड़ों की तरह हो जाए जिनका
कोई चरवाहा नहीं है।” 18 फिर
यहोवा ने मूसा से कहा, “नून के बेटे
यहोशू पर अपना हाथ रखकर उसे चुन
क्योंकि उसके मन का स्वभाव बिलकुल
निराला है।[1] 19 फिर उसे एलिआज़र
याजक और पूरी मंडली के सामने खड़ा
कर और उन सबके देखते उसे अगुवा
ठहरा।[2] 20 तू अपना कुछ अधिकार*
उसे सौंप[3] ताकि इसराएलियों की पूरी
मंडली उसकी बात माने।[4] 21 जब
यहोशू को किसी मामले पर परमेश्वर
का फैसला जानना हो तो वह एलिआज़र
याजक के पास जाएगा। और एलिआज़र
उसकी तरफ से यहोवा के सामने जाएगा
और ऊरीम के ज़रिए उसका फैसला
मालूम करेगा।[5] और जो भी आदेश दिया
जाएगा उसका सब लोग पालन करेंगे।
यहोशू और पूरी मंडली और सभी इस-
राएली उस आदेश को मानेंगे।”

22 मूसा ने ठीक वैसा ही किया जैसा
यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी। वह यहोशू
को लेकर गया और उसे एलिआज़र
याजक और पूरी मंडली के सामने खड़ा
किया। 23 फिर मूसा ने अपना हाथ
यहोशू पर रखकर उसे अगुवा ठहराया,[6]
ठीक जैसे यहोवा ने उसे बताया था।[7]

28 इसके बाद यहोवा ने मूसा से
कहा, 2 “इसराएलियों को यह
आज्ञा देना, ‘तुम लोग इस बात का ध्यान
रखना कि तुम तय वक्त पर मेरे लिए
सभी चढ़ावे दिया करोगे जो मुझे दिया

अध्य. 27
1 व्य 34:9; प्रेष 6:5, 6
2 व्य 31:7
3 व्य 1:38; व्य 31:3; व्य 34:10
4 यह 1:17
5 निर्ग 28:30; 1शम 23:9; 1शम 28:6; नहे 7:65
6 गि 27:18
7 व्य 3:28; व्य 31:14, 23

दूसरा कॉल.

अध्य. 28
1 2इत 8:13; नहे 10:32, 33
2 निर्ग 29:38; लैव 6:9; यहे 46:15
3 निर्ग 29:39
4 निर्ग 29:40; गि 15:4
5 निर्ग 29:38, 42; 2इत 2:4; एज 3:3
6 निर्ग 29:39, 40
7 निर्ग 29:41
8 निर्ग 16:29; निर्ग 20:10; यहे 20:12

जानेवाला भोजन है।[1] तुम ये चढ़ावे आग
में जलाकर अर्पित करना ताकि उनकी
सुगंध मुझे खुश करे।’

3 तू उनसे कहना, ‘तुम यहोवा के
लिए जो चढ़ावे आग में जलाकर अर्पित
करोगे वे ये हैं: हर दिन एक-एक साल
के ऐसे दो नर मेम्ने चढ़ाना जिनमें कोई
दोष न हो। यह नियमित होम-बलि है।[2]
4 एक मेम्ना सुबह चढ़ाना और दूसरा
शाम के झुटपुटे के समय* चढ़ाना।[3]
5 हर मेम्ने के साथ अनाज का चढ़ावा भी
चढ़ाना। यह चढ़ावा एपा के दसवें भाग*
मैदे का होना चाहिए जिसमें एक-चौथाई
हीन# शुद्ध तेल मिला हो।[4] 6 यह
नियमित होम-बलि है।[5] इस बलि के बारे
में नियम तुम्हें सीनै पहाड़ के पास दिया
गया था। यह आग में जलाकर अर्पित की
जानी चाहिए ताकि इसकी सुगंध पाकर
यहोवा खुश हो। 7 हरेक नर मेम्ने के
साथ एक-चौथाई हीन मदिरा का अर्घ भी
चढ़ाना।[6] यह अर्घ तुम यहोवा के लिए
पवित्र जगह में उँडेलना। 8 दूसरे नर
मेम्ने को तुम शाम के झुटपुटे के समय*
बलि करना। इस बलि के साथ भी वही
अनाज का चढ़ावा और अर्घ चढ़ाना जो
तुम सुबह चढ़ाते हो। तुम इसे यहोवा
के लिए आग में जलाकर अर्पित करना
ताकि उसकी सुगंध पाकर वह खुश हो।[7]

9 तुम सब्त के दिन[8] एक-एक साल
के दो नर मेम्ने अर्पित करना जिनमें कोई
दोष न हो। इन मेम्नों के साथ तुम अनाज
का यह चढ़ावा भी देना: एपा का दो-दहाई
भाग मैदा जिसमें तेल मिला हो। उसके
साथ अर्घ भी चढ़ाना। 10 यह सब्त की

27:20 *या “गरिमा।”

28:4, 8 *शा., “दो शामों के बीच।”
28:5 *एपा का दसवाँ भाग 2.2 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। #एक हीन 3.67 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

होम-बलि है। सब्त के दिन तुम नियमित होम-बलि और अर्घ के अलावा, सब्त की यह होम-बलि भी अर्पित करना।[1]

11 हर महीने* की शुरूआत में तुम यहोवा के लिए इन सारे जानवरों की होम-बलि चढ़ानाः दो बैल, एक मेढ़ा और एक-एक साल के ऐसे सात नर मेम्ने जिनमें कोई दोष न हो।[2] **12** हर जानवर के साथ अनाज का चढ़ावा[3] भी चढ़ानाः हर बैल के साथ एपा का तीन-दहाई भाग मैदा जिसमें तेल मिला हो, मेढ़े[4] के साथ एपा का दो-दहाई भाग मैदा जिसमें तेल मिला हो **13** और हरेक नर मेम्ने के साथ एपा का दसवाँ भाग मैदा जिसमें तेल मिला हो। यह होम-बलि है और तुम इसे आग में जलाकर यहोवा के लिए अर्पित करना ताकि उसकी सुगंध पाकर वह खुश हो।[5] **14** हर जानवर के साथ अर्घ भी चढ़ानाः हर बैल के साथ आधा हीन दाख-मदिरा,[6] मेढ़े के साथ एक-तिहाई हीन दाख-मदिरा[7] और नर मेम्ने के साथ एक-चौथाई हीन दाख-मदिरा।[8] यह मासिक होम-बलि है जो तुम साल के हर महीने के पहले दिन चढ़ाया करना। **15** इस दिन तुम नियमित होम-बलि और अर्घ के अलावा, यहोवा के लिए बकरी के एक बच्चे की पाप-बलि भी चढ़ाना।

16 पहले महीने के 14वें दिन यहोवा के लिए मनाया जानेवाला फसह होगा।[9] **17** और उसी महीने के 15वें दिन एक त्योहार होगा। तुम त्योहार के सातों दिन बिन-खमीर की रोटी खाना।[10] **18** त्योहार के पहले दिन एक पवित्र सभा होगी। इस दिन तुम मेहनत का कोई भी काम मत करना। **19** तुम इन जानवरों को आग में जलाकर यहोवा के लिए होम-बलि चढ़ानाः दो बैल, एक मेढ़ा और एक-एक साल के सात नर मेम्ने। तुम्हें ऐसे जानवरों की बलि चढ़ानी है जिनमें कोई दोष न हो।[1] **20** हर जानवर की बलि के साथ अनाज का चढ़ावा भी चढ़ाना। यह चढ़ावा तेल मिले मैदे का होना चाहिए।[2] हर बैल के साथ तीन-दहाई भाग मैदा और मेढ़े के साथ दो-दहाई भाग मैदा अर्पित करना। **21** तुम सात नर मेम्नों में से हर मेम्ने के साथ एक-दहाई भाग मैदा चढ़ाना। **22** साथ ही, एक बकरे की पाप-बलि भी चढ़ाना ताकि तुम्हारा प्रायश्चित हो। **23** हर सुबह की नियमित होम-बलि के अलावा तुम ये सब अर्पित करना। **24** इसी तरह, त्योहार के सातों दिन तुम इन सारी चीज़ों का चढ़ावा दोगे। यह चढ़ावा आग में जलाकर यहोवा के लिए अर्पित किया जाने-वाला भोजन* है जिसकी सुगंध पाकर वह खुश होता है। यह चढ़ावा तुम नियमित होम-बलि और अर्घ के अलावा चढ़ाना। **25** सातवें दिन तुम एक पवित्र सभा रखना।[3] उस दिन तुम मेहनत का कोई भी काम मत करना।[4]

26 जब तुम पकी हुई पहली फसल के दिन[5] यानी कटाई के त्योहार[6] के दिन यहोवा के लिए नए अनाज का चढ़ावा चढ़ाते हो,[7] तो उस दिन एक पवित्र सभा रखना। उस दिन तुम मेहनत का कोई भी काम मत करना।[8] **27** तुम यहोवा के लिए दो बैलों, एक मेढ़े और एक-एक साल के सात नर मेम्नों की होम-बलियाँ चढ़ाना ताकि उनकी सुगंध पाकर वह खुश हो।[9] **28** और उनके साथ अनाज का चढ़ावा भी चढ़ाना। यह चढ़ावा तेल मिले मैदे का होना चाहिए। हर बैल के साथ तीन-दहाई भाग मैदा, मेढ़े के साथ दो-दहाई भाग मैदा

अध्य. 28
1 गि 28:3, 7
2 गि 10:10; 1इत 23:31; 2इत 2:4; नहे 10:32, 33
3 लैव 2:11
4 लैव 1:10
5 लैव 1:10, 13
6 गि 15:8, 10
7 गि 15:6, 7
8 गि 15:5
9 निर्ग 12:14; लैव 23:5; व्य 16:1; यहे 45:21; 1कुर 5:7
10 निर्ग 12:15; लैव 23:6; 1कुर 5:8

दूसरा कॉल.
1 लैव 22:20, 22; व्य 15:21
2 लैव 2:1
3 निर्ग 13:6
4 निर्ग 12:16; लैव 23:8; व्य 16:8
5 निर्ग 23:16
6 निर्ग 34:22; व्य 16:10; प्रेष 2:1
7 लैव 23:15, 16
8 लैव 23:16, 21
9 लैव 23:16, 18

28:11 *शा., "अपने महीनों।"

28:24 *शा., "रोटी।"

29 और सात नर मेम्नों में से हर मेम्ने के
साथ एक-दहाई भाग मैदा अर्पित करना।
30 और अपने प्रायश्चित के लिए बकरी
के एक बच्चे की बलि भी चढ़ाना।[1]
31 तुम नियमित होम-बलि और अनाज
के चढ़ावे के अलावा इन सारे जानवरों की
बलि चढ़ाओगे। इन जानवरों में कोई दोष
नहीं होना चाहिए[2] और तुम इनके साथ
अर्घ भी चढ़ाना।'"

29 "'सातवें महीने के पहले दिन
तुम एक पवित्र सभा रखना। इस
दिन तुम मेहनत का कोई भी काम मत
करना।[3] यह वह दिन है जब तुम्हें तुरही
फूँकनी चाहिए।[4] 2 तुम यहोवा के लिए
इन सभी जानवरों की होम-बलि चढ़ाओ-
गे ताकि उनकी सुगंध पाकर वह खुश हो:
एक बैल, एक मेढ़ा और एक-एक साल के
सात नर मेम्ने। इन सभी जानवरों में कोई
दोष नहीं होना चाहिए। 3 इनके साथ
अनाज का चढ़ावा भी देना जो तेल मिले
मैदे का हो। बैल के साथ एपा का तीन-
दहाई भाग मैदा, मेढ़े के साथ दो-दहाई
भाग मैदा 4 और हरेक नर मेम्ने के साथ
एक-दहाई भाग मैदा। 5 और अपने
प्रायश्चित के लिए बकरी के एक नर
बच्चे की पाप-बलि भी चढ़ाना। 6 तुम
जो मासिक होम-बलि और उसके साथ
अनाज का चढ़ावा[5] और अर्घ देते हो और
जो नियमित होम-बलि और उसके साथ
अनाज का चढ़ावा[6] और अर्घ देते हो,[7]
उनके अलावा इन जानवरों की होम-बलि
और अनाज का चढ़ावा देना। यह सब तुम
उसी तरीके से चढ़ाना जैसे नियमित तौर
पर चढ़ाया जाता है। तुम इन्हें आग में
जलाकर यहोवा के लिए अर्पित करना
ताकि इनकी सुगंध पाकर वह खुश हो।

7 सातवें महीने के ही दसवें दिन तुम
एक पवित्र सभा रखना[8] और तुम्हें अपने
पापों के लिए दुख ज़ाहिर करना होगा।*
उस दिन तुम कोई भी काम मत करना।[1]
8 तुम यहोवा के लिए इन सभी जानवरों
की होम-बलि चढ़ाना ताकि उनकी सुगंध
पाकर वह खुश हो: एक बैल, एक मेढ़ा
और एक-एक साल के सात नर मेम्ने।
इन सभी जानवरों में कोई दोष नहीं होना
चाहिए।[2] 9 इनके साथ अनाज का
चढ़ावा भी देना जो तेल मिले मैदे का हो।
बैल के साथ तीन-दहाई भाग मैदा, मेढ़े के
साथ दो-दहाई भाग मैदा 10 और सात
नर मेम्नों में से हर मेम्ने के साथ एक-
दहाई भाग मैदा। 11 और बकरी के
एक बच्चे की पाप-बलि भी चढ़ाना। तुम
प्रायश्चित के लिए जो पाप-बलि[3] और
अर्घ देते हो और जो नियमित होम-
बलि और उसके साथ अनाज का चढ़ावा
और अर्घ देते हो, उनके अलावा यह सब
चढ़ाना।

12 सातवें महीने के 15वें दिन तुम
एक पवित्र सभा रखना। उस दिन तुम
मेहनत का कोई भी काम मत करना
और सात दिन तक यहोवा के लिए एक
त्योहार मनाना।[4] 13 तुम 13 बैलों,
2 मेढ़ों और एक-एक साल के 14 नर
मेम्नों की होम-बलि चढ़ाओगे।[5] इन सभी
जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए।[6]
तुम इन्हें आग में जलाकर यहोवा के लिए
अर्पित करना ताकि उनकी सुगंध पाकर
वह खुश हो। 14 इनके साथ अनाज
का चढ़ावा भी देना जो तेल मिले मैदे
का हो। हर बैल के लिए तीन-दहाई भाग
मैदा, हर मेढ़े के लिए दो-दहाई भाग
मैदा 15 और हरेक नर मेम्ने के लिए

29:7 *'दुख ज़ाहिर करने' का आम तौर पर यह मतलब समझा जाता है, खुद को कई चीज़ों से दूर रखना और इसमें उपवास करना शामिल है।

अध्य. 28
1 लैव 23:16, 19
2 लैव 1:3

अध्य. 29
3 लैव 23:24, 25
4 गि 10:2; भज 81:3
5 गि 28:11-13
6 गि 28:3, 5
7 गि 28:6, 7
8 लैव 16:29

दूसरा कॉल.
1 लैव 23:27-31
2 लैव 1:3; लैव 22:22; व्य 15:21; व्य 17:1
3 लैव 16:3
4 निर्ग 23:16; लैव 23:34-36; व्य 16:13-15; नहे 8:14-18
5 एज 3:4
6 लैव 22:22; व्य 17:1

एक-दहाई भाग मैदा। **16** और बकरी
के एक बच्चे की पाप-बलि भी चढ़ाना।
तुम जो नियमित होम-बलि और उसके
साथ अनाज का चढ़ावा और अर्घ देते हो,
उनके अलावा यह सब चढ़ाना।[1]

17 त्योहार के दूसरे दिन तुम 12
बैलों, 2 मेढ़ों और एक-एक साल के 14
नर मेम्नों की बलि चढ़ाना। इन
सभी जानवरों में कोई दोष नहीं होना
चाहिए।[2] **18** जितने बैल, मेढ़े और नर
मेम्ने तुम अर्पित करते हो, उनके हिसाब
से उनके साथ अनाज का चढ़ावा और
अर्घ भी चढ़ाना। यह सब तुम उसी
तरीके से चढ़ाना जैसे नियमित तौर पर
चढ़ाया जाता है। **19** और बकरी के
एक बच्चे की पाप-बलि भी चढ़ाना। तुम
जो नियमित होम-बलि और उसके साथ
अनाज का चढ़ावा और अर्घ देते हो,
उनके अलावा यह सब चढ़ाना।[3]

20 तीसरे दिन तुम 11 बैलों, 2 मेढ़ों
और एक-एक साल के 14 नर मेम्नों की
बलि चढ़ाना। इन सभी जानवरों में कोई
दोष नहीं होना चाहिए।[4] **21** जितने
बैल, मेढ़े और नर मेम्ने तुम अर्पित करते
हो उनके हिसाब से उनके साथ अनाज
का चढ़ावा और अर्घ भी चढ़ाना। यह
सब तुम उसी तरीके से चढ़ाना जैसे निय-
मित तौर पर चढ़ाया जाता है। **22** और
एक बकरे की पाप-बलि भी चढ़ाना। तुम
जो नियमित होम-बलि और उसके साथ
अनाज का चढ़ावा और अर्घ देते हो,
उनके अलावा यह सब चढ़ाना।[5]

23 चौथे दिन तुम 10 बैलों, 2 मेढ़ों
और एक-एक साल के 14 नर मेम्नों की
बलि चढ़ाना। इन सभी जानवरों में कोई
दोष नहीं होना चाहिए।[6] **24** जितने
बैल, मेढ़े और नर मेम्ने तुम अर्पित करते
हो उनके हिसाब से उनके साथ अनाज
का चढ़ावा और अर्घ भी चढ़ाना। यह
सब तुम उसी तरीके से चढ़ाना जैसे निय-
मित तौर पर चढ़ाया जाता है। **25** और
बकरी के एक बच्चे की पाप-बलि भी
चढ़ाना। तुम जो नियमित होम-बलि
और उसके साथ अनाज का चढ़ावा और
अर्घ देते हो, उनके अलावा यह सब
चढ़ाना।[1]

26 पाँचवें दिन तुम 9 बैलों, 2 मेढ़ों
और एक-एक साल के 14 नर मेम्नों की
बलि चढ़ाना। इन सभी जानवरों में कोई
दोष नहीं होना चाहिए।[2] **27** जितने
बैल, मेढ़े और नर मेम्ने तुम अर्पित करते
हो उनके हिसाब से उनके साथ अनाज
का चढ़ावा और अर्घ भी चढ़ाना। यह
सब तुम उसी तरीके से चढ़ाना जैसे निय-
मित तौर पर चढ़ाया जाता है। **28** और
एक बकरे की पाप-बलि भी चढ़ाना। तुम
जो नियमित होम-बलि और उसके साथ
अनाज का चढ़ावा और अर्घ देते हो,
उनके अलावा यह सब चढ़ाना।[3]

29 छठे दिन तुम 8 बैलों, 2 मेढ़ों
और एक-एक साल के 14 नर मेम्नों की
बलि चढ़ाना। इन सभी जानवरों में कोई
दोष नहीं होना चाहिए।[4] **30** जितने
बैल, मेढ़े और नर मेम्ने तुम अर्पित करते
हो उनके हिसाब से उनके साथ अनाज
का चढ़ावा और अर्घ भी चढ़ाना। यह
सब तुम उसी तरीके से चढ़ाना जैसे निय-
मित तौर पर चढ़ाया जाता है। **31** और
एक बकरे की पाप-बलि भी चढ़ाना। तुम
जो नियमित होम-बलि और उसके साथ
अनाज का चढ़ावा और अर्घ देते हो,
उनके अलावा यह सब चढ़ाना।[5]

32 सातवें दिन तुम 7 बैलों, 2 मेढ़ों
और एक-एक साल के 14 नर मेम्नों की
बलि चढ़ाना। इन सभी जानवरों में कोई
दोष नहीं होना चाहिए।[6] **33** जितने

अध्य. 29
1 गि 28:3-8
2 लैव 22:22 व्य 17:1
3 गि 28:3-8
4 लैव 22:22 व्य 17:1
5 गि 28:3-8
6 लैव 22:22 व्य 17:1

दूसरा कॉल.
1 गि 28:3-8
2 व्य 15:21 व्य 17:1
3 गि 28:3-8
4 लैव 22:22 व्य 17:1
5 गि 28:3-8
6 लैव 22:22 व्य 17:1

बैल, मेढ़े और नर मेम्ने तुम अर्पित करते हो उनके हिसाब से उनके साथ अनाज का चढ़ावा और अर्घ भी चढ़ाना। यह सब तुम उसी तरीके से चढ़ाना जैसे नियमित तौर पर चढ़ाया जाता है। 34 और एक बकरे की पाप-बलि भी चढ़ाना। तुम जो नियमित होम-बलि और उसके साथ अनाज का चढ़ावा और अर्घ देते हो, उनके अलावा यह सब चढ़ाना।[1]

35 आठवें दिन तुम एक पवित्र सभा रखना। उस दिन तुम मेहनत का कोई भी काम मत करना।[2] 36 तुम एक बैल, एक मेढ़े और एक-एक साल के सात नर मेम्नों की होम-बलि चढ़ाना। इन सभी जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए।[3] तुम इन्हें आग में जलाकर यहोवा के लिए अर्पित करना ताकि उनकी सुगंध पाकर वह खुश हो। 37 तुम जो बैल, मेढ़ा और जितने नर मेम्ने अर्पित करते हो उनके हिसाब से उनके साथ अनाज का चढ़ावा और अर्घ भी चढ़ाना। यह सब तुम उसी तरीके से चढ़ाना जैसे नियमित तौर पर चढ़ाया जाता है। 38 और एक बकरे की पाप-बलि भी चढ़ाना। तुम जो नियमित होम-बलि और उसके साथ अनाज का चढ़ावा और अर्घ देते हो, उनके अलावा यह सब चढ़ाना।[4]

39 तुम साल के अलग-अलग वक्त पर जब त्योहार मनाते हो,[5] तो उन मौकों पर यहोवा के लिए ये सारी बलियाँ अर्पित करना। तुम मन्नत-बलियों[6] और स्वेच्छा-बलियों[7] के रूप में जो होम-बलियाँ,[8] अनाज के चढ़ावे,[9] अर्घ[10] और शांति-बलियाँ[11] देते हो, उन सबके अलावा ये सारी बलियाँ अर्पित करना।'" 40 फिर मूसा ने इसराएलियों को ये सारी बातें बतायीं जिनकी यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।

30 फिर मूसा ने इसराएल के गोत्रों के मुखियाओं[1] से कहा, "यहोवा ने यह आज्ञा दी है, 2 अगर कोई आदमी यहोवा के लिए एक मन्नत मानता है[2] या शपथ खाकर[3] किसी चीज़ का त्याग करने की मन्नत मानता है और इस तरह खुद पर बंदिश लगाता है, तो उसे अपने वचन से नहीं मुकरना चाहिए।[4] उसने जो भी मन्नत मानी है उसे पूरा करना होगा।[5]

3 अगर एक जवान लड़की अपने पिता के घर में रहते यहोवा के लिए कोई मन्नत मानती है या किसी चीज़ का त्याग करने की मन्नत मानकर खुद पर बंदिश लगाती है 4 और उसका पिता उसकी मन्नत या त्याग की मन्नत के बारे में सुनता है और एतराज़ नहीं करता, तो उस लड़की को हर हाल में अपनी मन्नत पूरी करनी होगी। या उसने जो त्याग करने की मन्नत मानकर खुद पर बंदिश लगायी है उसे हर हाल में मानना होगा। 5 लेकिन अगर पिता अपनी बेटी को मना कर देता है कि उसने जो मन्नत मानी है या मन्नत मानकर खुद पर जो बंदिश लगायी है, उसे वह न माने तो लड़की को अपनी मन्नत पूरी करने की ज़रूरत नहीं। यहोवा उसे माफ कर देगा क्योंकि उसके पिता ने उसे मन्नत पूरी करने से मना किया है।[6]

6 लेकिन अगर एक लड़की ने मन्नत मानी है या जल्दबाज़ी में कोई वादा करके खुद पर बंदिश लगायी है और बाद में उसकी शादी हो जाती है 7 और अगर उसका पति उसकी मन्नत के बारे में जानने पर कोई एतराज़ नहीं करता, तो उस औरत को हर हाल में अपनी मन्नत पूरी करनी होगी। 8 लेकिन अगर पति उसकी मन्नत या जल्दबाज़ी में

अध्य. 29
1 गि 28:3-8
2 लैव 23:36, 39
3 लैव 22:22, व्य 17:1
4 गि 28:3-8
5 लैव 23:2, व्य 16:16
6 व्य 12:5, 6
7 लैव 7:16, लैव 22:21
8 लैव 1:3
9 लैव 2:1
10 गि 15:5
11 लैव 3:1

दूसरा कॉल.

अध्य. 30
1 निर्ग 18:25
2 उत 28:20-22, न्या 11:30, 31
3 भज 132:1-5
4 व्य 23:21, भज 116:14, भज 119:106, सभ 5:4, मत 5:33
5 भज 50:14, भज 66:13
6 निर्ग 20:12

किए वादे के बारे में सुनता है और उसे यह मंज़ूर नहीं है, तो वह उसकी मन्नत या वादे को रद्द कर सकता है।[1] यहोवा उस औरत को माफ कर देगा।

9 लेकिन अगर एक विधवा या तलाकशुदा औरत एक मन्नत मानती है, तो उसने खुद पर जो भी बंदिश लगायी है उसे हर हाल में मानना होगा।

10 लेकिन अगर एक शादीशुदा औरत कोई मन्नत मानती है या किसी चीज़ का त्याग करने की मन्नत मानकर खुद पर बंदिश लगाती है **11** और उसका पति उसकी मन्नत के बारे में सुनने पर एतराज़ या नामंज़ूर नहीं करता, तो उस औरत को हर हाल में अपनी मन्नत पूरी करनी होगी। **12** लेकिन अगर पति जिस दिन उसकी मन्नत के बारे में सुनता है उसी दिन उसे पूरी तरह रद्द कर देता है तो उसे मन्नत पूरी करने की ज़रूरत नहीं, फिर चाहे उसने जो भी मन्नत मानी हो या खुद पर जो भी बंदिश लगायी हो।[2] यहोवा उसे माफ कर देगा क्योंकि उसके पति ने उसकी मन्नत रद्द कर दी है। **13** एक औरत चाहे जो भी मन्नत माने या शपथ खाकर किसी भी चीज़ से दूर रहने की मन्नत माने, वह उसे पूरा करेगी या नहीं इसका फैसला उसके पति को करना होगा। **14** अगर पति उसकी मन्नत के बारे में जानने के बाद कई दिनों तक एतराज़ नहीं करता, तो इसका मतलब है कि वह उसे मन्नत पूरी करने की इजाज़त देता है, फिर चाहे उसकी पत्नी ने जो भी मन्नत मानी हो या किसी भी चीज़ का त्याग करने का वादा किया हो। उसका पति उसे मन्नत पूरी करने की इजाज़त देता है क्योंकि जिस दिन वह उसे मन्नत मानते हुए सुनता है उस दिन वह कोई एतराज़ नहीं करता। **15** लेकिन पति जिस दिन पत्नी की मन्नत के बारे में सुनता है, उस दिन के बाद अगर कभी वह उसकी मन्नत रद्द कर देता है तो पत्नी के दोष का अंजाम पति को भुगतना पड़ेगा।[1]

16 यहोवा ने मूसा को ये सारे नियम दिए, जो इस बारे में हैं कि अगर एक शादीशुदा औरत मन्नत मानती है तो उसे और उसके पति को क्या करना चाहिए और अगर एक जवान लड़की अपने पिता के घर में रहते मन्नत मानती है तो उसे और उसके पिता को क्या करना चाहिए।”

31

इसके बाद यहोवा ने मूसा से कहा, **2** “मिद्यानियों ने इसराएलियों के साथ जो किया उसका उनसे बदला ले।[2] इसके बाद तेरी मौत हो जाएगी।”*[3]

3 तब मूसा ने लोगों से कहा, “तुम अपने बीच से कुछ आदमियों को तैयार करो ताकि वे मिद्यान से लड़ें और यहोवा की तरफ से उससे बदला लें। **4** तुम इसराएल के हर गोत्र में से 1,000 आदमी चुनना और उन्हें युद्ध के लिए भेजना।” **5** इसराएली लाखों की तादाद में थे[4] और हर गोत्र में से सेना के लिए हज़ार-हज़ार आदमी चुने गए। युद्ध के लिए तैयार सैनिकों की कुल गिनती 12,000 हो गयी।

6 फिर मूसा ने हर गोत्र से चुने गए उन हज़ार-हज़ार आदमियों की सेना को युद्ध के लिए रवाना किया और उसके साथ एलिआज़र के बेटे फिनेहास[5] को भी भेजा जो इस सेना का याजक था। फिनेहास के हाथ में पवित्र बरतन और युद्ध

31:2 *शा., “तू अपने लोगों में जा मिलेगा।”

अध्य. 30
1 रोम 7:2; 1कुर 11:3; इफ 5:22
2 1कुर 11:3; 1पत 3:1

दूसरा कॉल.
1 व्य 23:21

अध्य. 31
2 गि 22:7; गि 25:1-3; गि 25:17, 18; भज 94:1; यश 1:24; नहू 1:2; 1कुर 10:8; प्रक 2:14
3 गि 27:12, 13; व्य 32:48-50
4 गि 26:51
5 गि 25:7, 8

की पुकार के लिए तुरहियाँ थीं।[1] 7 इन आदमियों ने जाकर मिद्यानियों से युद्ध किया, ठीक जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी और उन्होंने हर मिद्यानी आदमी को मार डाला। 8 उन्होंने मिद्यान के पाँच राजाओं को भी मार डाला जिनके नाम थे एवी, रेकेम, सूर, हूर और रेबा। उन्होंने बओर के बेटे बिलाम[2] को भी तलवार से मार डाला। 9 मगर उन्होंने मिद्यानी औरतों और बच्चों को बंदी बना लिया। और उन्होंने मिद्यानियों के सभी पालतू जानवरों और सभी मवेशियों को और उनका सारा माल लूट लिया। 10 उन्होंने मिद्यानियों की सभी छावनियों* और उन सभी शहरों को जलाकर राख कर दिया जहाँ वे बसे हुए थे। 11 और वे लूट का सारा माल और जानवरों और सभी बंदियों को लेकर निकल पड़े। 12 यह सब लेकर वे मूसा, एलिआज़र याजक और इसराएलियों की मंडली के पास आए जो यरीहो के सामने यरदन के पास, मोआब के वीरानों में डेरा डाले हुए थे।[3]

13 फिर मूसा, एलिआज़र याजक और मंडली के सभी प्रधान सेना से मिलने छावनी के बाहर गए। 14 मूसा युद्ध से लौटे उन अधिकारियों पर बहुत गुस्सा हुआ जो हज़ारों और सैकड़ों की टुकड़ियों के प्रधान चुने गए थे। 15 मूसा ने उनसे कहा, “तुमने सभी औरतों को क्यों ज़िंदा छोड़ दिया? 16 उन्होंने ही तो बिलाम के कहने पर इसराएली आदमियों को अपने जाल में फँसाया था और पोर के मामले में[4] यहोवा से विश्वासघात करवाया था[5] और इस वजह से यहोवा की मंडली पर कहर टूट पड़ा था।[6] 17 इसलिए अब तुम ऐसी हर मिद्यानी औरत को मार डालो जिसने किसी आदमी के साथ यौन-संबंध रखा हो और उनके बच्चों में से सभी लड़कों को भी मार डालो। 18 सिर्फ उनकी लड़कियों को ज़िंदा छोड़ दो जिन्होंने कभी किसी आदमी के साथ यौन-संबंध नहीं रखा।[1] 19 और तुम सब छावनी के बाहर सात दिन तक डेरा डाले रहना। तुममें से जिस-जिसने किसी को मार डाला है या किसी लाश को छुआ है,[2] उसे तीसरे और सातवें दिन खुद को शुद्ध करना होगा।[3] तुम और वे सभी जिन्हें तुम बंदी बनाकर लाए हो, खुद को शुद्ध करें। 20 और तुम हर कपड़े, चमड़े की हर चीज़, बकरी के बाल की बनी हर चीज़ और लकड़ी की हर चीज़ को शुद्ध करना।”

21 इसके बाद एलिआज़र याजक ने युद्ध से लौटे सैनिकों से कहा, “यहोवा ने मूसा को जो कानून दिया था उसमें यह नियम है: 22 ‘सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, टीन, सीसा 23 और ऐसी हर चीज़ जो आग से शुद्ध की जा सकती है, सिर्फ उसी को तुम आग में डालकर शुद्ध करना और वह शुद्ध हो जाएगी। इसके बाद तुम उन्हें पानी से भी शुद्ध करना।[4] लेकिन जो चीज़ें आग से शुद्ध नहीं की जा सकतीं, उन्हें तुम पानी से धोना। 24 और तुम सातवें दिन अपने कपड़े धोना। तब तुम शुद्ध हो जाओगे और छावनी में आ सकते हो।’”[5]

25 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 26 “तू एलिआज़र याजक और मंडली के कुलों के मुखियाओं के साथ मिलकर लूट के सारे माल की गिनती लेना। इंसानों और जानवरों दोनों की गिनती लेना। 27 सारा माल दो हिस्सों में बाँटना, एक हिस्सा उन सभी सैनिकों को देना जो युद्ध में गए थे और दूसरा

31:10 *या “दीवारों से घिरी छावनियों।”

अध्य. 31
1 गि 10:2, 9
2 गि 22:12; 2पत 2:15; प्रक 2:14
3 गि 22:1
4 गि 25:17, 18; व्य 4:3; यह 22:17
5 गि 25:1, 2; प्रक 2:14
6 गि 25:9; 1कुर 10:8

दूसरा कॉल.
1 गि 31:35
2 गि 5:2; गि 19:11, 16
3 गि 19:20
4 गि 19:9
5 गि 19:19, 20

हिस्सा मंडली के बाकी लोगों को देना।[1] **28** और जो सैनिक युद्ध में गए थे उनसे यहोवा के लिए कर लेना। उनको दिए गए हर 500 बंदियों, 500 गाय-बैलों, 500 गधों और 500 भेड़-बकरियों में से एक-एक लेकर परमेश्‍वर को देना। **29** सैनिकों को मिलनेवाले आधे हिस्से में से यह कर लेकर तुम यहोवा के लिए जो दान दोगे उसे तुम एलिआज़र याजक को देना।[2] **30** और इसराएलियों को दिए आधे हिस्से में जितने बँधुए, गाय-बैल, गधे, भेड़-बकरियाँ और हर तरह के पालतू जानवर हैं, उनमें से हर 50 में से एक अलग निकालना और लेवियों को देना[3] जो यहोवा के पवित्र डेरे से जुड़ी ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं।"[4]

31 मूसा और एलिआज़र याजक ने ठीक वैसे ही किया जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। **32** युद्ध में गए सैनिकों ने लूट के माल में से जो कुछ खा लिया था, उसके बाद जो माल बचा उसकी गिनती यह थीः भेड़-बकरियाँ 6,75,000 थीं, **33** गाय-बैल 72,000 थे **34** और गधे 61,000 थे। **35** जिन लड़कियों ने किसी आदमी के साथ यौन-संबंध नहीं रखा था,[5] उनकी गिनती 32,000 थी। **36** युद्ध में गए सैनिकों को जो आधा हिस्सा दिया गया उसमें भेड़-बकरियों की गिनती 3,37,500 थी। **37** इनमें से 675 भेड़-बकरियाँ यहोवा के लिए कर में दी गयीं। **38** गाय-बैलों की गिनती 36,000 थी। इनमें से 72 गाय-बैल यहोवा के लिए कर में दिए गए। **39** और गधों की गिनती 30,500 थी। इनमें से 61 यहोवा के लिए कर में दिए गए। **40** और इंसानों की गिनती 16,000 थी। इनमें से 32 लोग यहोवा के लिए कर में दिए गए। **41** फिर मूसा ने यह सारा कर लिया जो यहोवा के लिए दान में दिया गया था और उसे एलिआज़र याजक को दिया,[1] ठीक जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

42 मूसा ने युद्ध में गए सैनिकों को लूट का हिस्सा देने के बाद जो आधा हिस्सा इसराएलियों को दिया वह यह थाः **43** भेड़-बकरियाँ 3,37,500 थीं, **44** गाय-बैल 36,000 थे, **45** गधे 30,500 थे **46** और इंसान 16,000 थे। **47** मूसा ने इसराएलियों के इस हिस्से में से कुछ इंसानों और जानवरों को अलग निकाला। उसने हर 50 इंसानों और जानवरों में से एक अलग निकाला और लेवियों को दिया[2] जो यहोवा के पवित्र डेरे से जुड़ी ज़िम्मेदारियाँ सँभालते थे।[3] मूसा ने ठीक वैसे ही किया जैसे यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।

48 इसके बाद मूसा के पास वे सभी अधिकारी आए, जो हज़ारों[4] और सैकड़ों की टुकड़ियों के प्रधान चुने गए थे। **49** उन्होंने मूसा से कहा, "मालिक, हमने उन सभी सैनिकों की गिनती ली है जो हमारी कमान के नीचे हैं। उनकी गिनती पूरी है, एक भी सैनिक कम नहीं है।[5] **50** इसलिए अब हममें से हर कोई यहोवा को कुछ भेंट देना चाहता है। हमें लूट में जो कुछ मिला है उसमें से हम सोने की ये सारी चीज़ें देना चाहते हैंः पायल, कंगन, मुहरवाली अँगूठियाँ, कान की बालियाँ और दूसरे ज़ेवर ताकि यहोवा के सामने हमारा प्रायश्‍चित हो।"

51 तब मूसा और एलिआज़र याजक ने उन अधिकारियों से सोने के सारे ज़ेवर स्वीकार किए। **52** हज़ारों और सैकड़ों की टुकड़ियों के प्रधानों ने जो सोना यहोवा को दान में दिया था उसका वज़न

अध्य. 31
1 यह 22:7, 8; 1शम 30:24
2 गि 18:20, 29
3 व्य 12:19
4 गि 3:6, 7; गि 18:2, 3; 1इत 23:32
5 गि 31:18

दूसरा कॉल.
1 गि 18:8, 19
2 व्य 12:19
3 गि 3:6, 7; गि 18:2, 3; 1इत 23:32
4 गि 31:4
5 निर्ग 23:27; लैव 26:7, 8

16,750 शेकेल[*] था। **53** सेना में से हर आदमी को लूट के माल में से हिस्सा मिला था। **54** मूसा और एलिआज़र याजक ने हज़ारों और सैकड़ों की टुकड़ियों के प्रधानों से सोना स्वीकार किया। उन्होंने यह सारा सोना लाकर भेंट के तंबू में रखा ताकि वह यहोवा के सामने इसराएलियों के लिए यादगार बना रहे।

32 रूबेन और गाद के बेटों[1] के पास भेड़-बकरियों के बहुत बड़े-बड़े झुंड थे और उन्होंने देखा कि याजेर[2] और गिलाद का इलाका भेड़-बकरियाँ पालने के लिए बहुत बढ़िया है। **2** इसलिए गाद और रूबेन के बेटे मूसा, एलिआज़र याजक और मंडली के प्रधानों के पास गए और कहने लगे, **3** "अतारोत, दीबोन, याजेर, निमराह, हेशबोन,[3] एलाले, सबाम, नबो[4] और बोन[5] का **4** पूरा इलाका, जिसे यहोवा ने इसराएल की मंडली के देखते जीता है,[6] भेड़-बकरियाँ पालने के लिए बहुत बढ़िया है और तुम्हारे इन सेवकों के पास भेड़-बकरियों के बड़े-बड़े झुंड हैं।"[7] **5** उन्होंने यह भी कहा, "इसलिए अगर तुम्हारी कृपा अपने इन सेवकों पर है, तो यह सारा इलाका हमें दे दो। तुम हमें यरदन के उस पार मत ले जाना।"

6 तब मूसा ने गाद और रूबेन के बेटों से कहा, "तो क्या जब तुम्हारे भाई युद्ध करने जाएँगे तब तुम यहीं बैठे रहोगे? **7** तुम क्यों सबका हौसला तोड़ना चाहते हो? तुम्हारी वजह से सभी इसराएली निराश हो जाएँगे और उस देश में जाने से इनकार कर देंगे जो यहोवा उन्हें देनेवाला है। **8** तुम्हारे पुरखों ने भी ऐसा ही किया था जब मैंने उन्हें कादेश-बरने से यह देश देखने के लिए भेजा था।[1] **9** जब वे एशकोल घाटी से देश का दौरा करके[2] लौटे तो उन्होंने इसराएली लोगों को इस कदर निराश कर दिया कि वे उस देश में जाने से इनकार करने लगे जो यहोवा उन्हें देनेवाला था।[3] **10** जिस दिन उन्होंने ऐसा किया उसी दिन यहोवा का क्रोध उन पर भड़क उठा और उसने शपथ खाकर कहा,[4] **11** 'मिस्र से निकल आए लोगों में से जितनों की उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा है, उनमें से कोई भी वह देश नहीं देख पाएगा[5] क्योंकि ये लोग पूरे दिल से मेरे पीछे नहीं चले। ये उस देश में नहीं जा पाएँगे जिसे देने के बारे में मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ खायी थी।[6] **12** सिर्फ कनिज्जी यपुन्ने का बेटा कालेब[7] और नून का बेटा यहोशू[8] उस देश को देख पाएँगे क्योंकि वे पूरे दिल से यहोवा के पीछे चले हैं।'[9] **13** इस तरह यहोवा का गुस्सा इसराएलियों पर भड़क उठा और उसने उन्हें 40 साल तक वीराने में भटकने के लिए छोड़ दिया,[10] जब तक कि उस पीढ़ी के सब लोग मिट नहीं गए जो यहोवा की नज़र में बुरे काम कर रहे थे।[11] **14** अब तुम भी अपने पुरखों के नक्शे-कदम पर चलकर उनकी गलती दोहरा रहे हो और पाप करके इसराएल पर यहोवा का क्रोध और भी भड़का रहे हो। **15** अगर तुम परमेश्वर के पीछे चलना छोड़ दोगे तो वह ज़रूर इन लोगों को वापस वीराने में ले जाकर छोड़ देगा और इन सबकी तबाही के लिए तुम ज़िम्मेदार होगे।"

16 बाद में रूबेन और गाद के बेटों ने मूसा के पास जाकर उससे कहा, "हमें अपने बच्चों के लिए शहर और भेड़-बकरियों के लिए पत्थरों के बाड़े बनाने की

अध्य. 32
1 गि 26:7; गि 26:18
2 गि 21:32
3 गि 21:26
4 गि 33:47
5 गि 32:37, 38
6 गि 21:23, 24; व्य 2:24
7 व्य 2:35

दूसरा कॉल.
1 गि 13:31; यह 14:7, 8
2 गि 13:23; व्य 1:24
3 गि 13:32; व्य 1:26-28
4 भज 95:11; यहे 20:15; इब्र 3:18
5 गि 14:29, 30; व्य 2:14
6 उत 13:14, 15; उत 26:3; उत 28:13
7 गि 13:30
8 यह 19:49
9 गि 14:24; व्य 1:34-38; यह 14:8
10 गि 14:33; व्य 29:5; यह 5:6; भज 95:10; प्रेष 13:18
11 गि 26:63, 64; व्य 2:14; 1कुर 10:5; इब्र 3:17

31:52 [*]एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

इजाज़त दे 17 ताकि हमारे बच्चे किलेबंद शहरों में रहें और उन्हें इस देश के लोगों से कोई खतरा न हो। मगर हमारे आदमी हथियार बाँधकर बाकी इसराएलियों के साथ युद्ध के लिए आगे बढ़ेंगे[1] और उनके साथ मिलकर तब तक युद्ध करते रहेंगे जब तक कि हम इसराएलियों को उनकी जगह तक नहीं पहुँचा देते। 18 हम तब तक अपने घर नहीं लौटेंगे जब तक कि हर इसराएली को विरासत की ज़मीन नहीं मिल जाती।[2] 19 हमें यरदन के उस पार विरासत की कोई ज़मीन नहीं मिलेगी क्योंकि हमें यरदन के पूरब में विरासत मिल गयी है।"[3]

20 मूसा ने उनसे कहा, "तुम हथियार लेकर यहोवा के सामने युद्ध करने जाओ।[4] 21 तुममें से हर कोई हथियार बाँधकर यहोवा के सामने यरदन पार जाए और उसके दुश्मनों से तब तक लड़े जब तक कि वह उन्हें भगा नहीं देता[5] 22 और पूरा देश यहोवा के सामने इसराएलियों के अधिकार में नहीं आ जाता।[6] इसके बाद तुम यहाँ लौट सकते हो[7] और तब तुम यहोवा और इसराएलियों के सामने दोषी नहीं ठहरोगे। और तब यहोवा के सामने यह इलाका तुम्हारे अधिकार में हो जाएगा।[8] 23 लेकिन अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो याद रखना, तुम यहोवा के खिलाफ पाप करनेवाले ठहरोगे और तुम्हें अपने पाप की सज़ा भुगतनी होगी। 24 इसलिए तुम्हें इजाज़त है, तुम अपने बच्चों के लिए शहर और भेड़-बकरियों के लिए बाड़े बना सकते हो।[9] मगर तुमने जो वादा किया है उसे ज़रूर पूरा करना।"

25 गाद और रूबेन के बेटों ने मूसा से कहा, "मालिक, तूने जो आज्ञा दी है हम वैसा ही करेंगे। 26 हमारे बीवी-बच्चे और हमारी भेड़-बकरियाँ और सभी पालतू जानवर गिलाद के शहरों में रहेंगे।[1] 27 मगर तेरे ये सेवक नदी के उस पार जाएँगे। हम सब हथियार बाँधकर यहोवा के सामने युद्ध करने जाएँगे,[2] ठीक जैसे तूने आज्ञा दी है।"

28 तब मूसा ने उनके बारे में एलिआज़र याजक, नून के बेटे यहोशू और इसराएल के गोत्रों के कुलों के मुखियाओं को यह आज्ञा दी: 29 "अगर गाद और रूबेन के बेटे तुम्हारे साथ मिलकर यरदन के उस पार जाते हैं और उनमें से हर कोई हथियार बाँधकर यहोवा के सामने युद्ध करता है और तुम सब उस देश पर कब्ज़ा कर लेते हो, तो तुम गिलाद का इलाका उनके अधिकार में कर देना।[3] 30 लेकिन अगर वे हथियार बाँधकर तुम्हारे साथ उस पार नहीं जाते, तो तुम उन्हें कनान देश में अपने ही बीच बसाना।"

31 इस पर गाद और रूबेन के बेटों ने कहा, "यहोवा ने तेरे इन सेवकों को जो आज्ञा दी है हम वही करेंगे। 32 हम हथियार बाँधकर यहोवा के सामने यरदन के उस पार कनान देश ज़रूर जाएँगे,[4] मगर हमें विरासत की ज़मीन इस पार ही दी जाए।" 33 इसलिए मूसा ने गाद और रूबेन के बेटों[5] को और यूसुफ के बेटे मनश्शे के आधे गोत्र[6] को वे सभी इलाके दिए जहाँ एमोरियों का राजा सीहोन और बाशान का राजा ओग राज करते थे।[7] मूसा ने इन राजाओं के इलाकों के शहर और उनकी ज़मीन और चारों तरफ के इलाके के शहर उनके हवाले कर दिए।

34 फिर गाद के बेटों ने दीबोन,[8] अतारोत,[9] अरोएर,[10] 35 अतरोत-

अध्य. 32
1 व्य 3:18; यह 4:12
2 यह 22:1, 4
3 गि 32:33; यह 12:1; यह 13:8
4 यह 4:13
5 भज 78:55
6 यह 11:23; यह 18:1; भज 44:2
7 यह 22:4, 9
8 व्य 3:19, 20; यह 1:14, 15; यह 13:8
9 गि 32:16; गि 32:34-38

दूसरा कॉल.
1 यह 1:12-14
2 यह 4:12
3 यह 13:15, 24
4 यह 4:13
5 व्य 3:12
6 यह 22:7
7 गि 21:23, 24; व्य 2:31; व्य 3:4
8 गि 33:45; यह 13:15, 17
9 गि 32:3, 4
10 व्य 2:36; यह 12:1, 2

शोपान, याजेर,[1] योगबहा,[2] 36 बेत-
निमराह[3] और बेत-हारान[4] नाम के
किलेबंद शहर बनाए* और अपनी भेड़-
बकरियों के लिए पत्थरों के बाड़े बनाए।
37 और रूबेन के बेटों ने हेशबोन,[5]
एलाले,[6] किरयातैम,[7] 38 नबो[8] और
बालमोन[9] (इन दोनों शहरों का नाम
बदल गया है) और सिबमा को
दोबारा बनाया। उन्होंने जितने भी शहर
दोबारा बनाए उन सबको वे नए नाम देने
लगे।

39 फिर मनश्शे के बेटे माकीर के
बेटों[10] ने गिलाद पर हमला किया।
उन्होंने गिलाद को अपने कब्ज़े में कर
लिया और एमोरियों को वहाँ से भगा
दिया। 40 इसलिए मूसा ने गिलाद का
इलाका मनश्शे के बेटे माकीर के बेटों
को दे दिया और वे वहाँ रहने लगे।[11]
41 मनश्शे गोत्र के याईर ने एमोरियों पर
हमला किया और उनके कसबों को जीत
लिया और उन कसबों को हव्वोत-याईर*
नाम दिया।[12] 42 और नोबह ने कनात
पर धावा बोला और उसे और उसके
आस-पास के नगरों को जीत लिया और
कनात का नाम बदलकर अपने नाम पर
नोबह रखा।

33 जब इसराएली मूसा और
हारून के निर्देशन में[13] अलग-
अलग दल बनाकर[14] मिस्र से
निकले[15] तो उन्होंने इन सारी जगहों
पर पड़ाव डालते हुए सफर तय किया।
2 यहोवा के आदेश पर मूसा लिखता
गया कि इसराएलियों ने अपने सफर
में किस-किस जगह पड़ाव डाला और
वे कहाँ-कहाँ से रवाना हुए।[16] ये थीं
वे जगहः 3 पहले महीने[17] के 15वें
दिन इसराएली रामसेस से रवाना हुए।[1]
जिस दिन इसराएलियों ने मिस्र में फसह
मनाया[2] उसी दिन वे फसह के बाद, सभी
मिस्रियों के देखते बेखौफ* निकल पड़े।
4 उस वक्त मिस्री लोग अपने-अपने पह-
लौठे को दफना रहे थे जिन्हें यहोवा ने
मार डाला था।[3] यहोवा ने उनके देवताओं
को सज़ा दी थी।[4]

5 इसराएलियों ने रामसेस से रवाना
होने के बाद सुक्कोत में पड़ाव डाला।[5]
6 फिर वे सुक्कोत से रवाना हुए और
उन्होंने इताम में पड़ाव डाला[6] जो वीराने
के छोर पर है। 7 इसके बाद वे इताम
से रवाना हुए और पीछे मुड़कर पीहा-
हीरोत गए जो बाल-सिपोन के सामने है।[7]
वहाँ उन्होंने मिगदोल के पास पड़ाव
डाला।[8] 8 इसके बाद वे पीहाहीरोत से
रवाना हुए और समुंदर के बीच से गुज़र-
कर[9] वीराने की तरफ गए।[10] उन्होंने
इताम नाम के वीराने[11] में तीन दिन तक
सफर किया और मारा में पड़ाव डाला।[12]

9 फिर वे मारा से रवाना होकर
एलीम गए। एलीम में पानी के
12 सोते और खजूर के 70 पेड़ थे इस-
लिए उन्होंने वहीं अपना पड़ाव डाला।[13]
10 फिर वे एलीम से रवाना हुए
और उन्होंने लाल सागर के पास
पड़ाव डाला। 11 इसके बाद वे लाल
सागर के पास से रवाना हुए और उन्होंने
सीन वीराने में पड़ाव डाला।[14] 12 फिर
वे सीन वीराने से रवाना हुए और
उन्होंने दोपका में पड़ाव डाला। 13 बाद
में वे दोपका से रवाना हुए और उन्होंने
आलूश में पड़ाव डाला। 14 फिर वे
आलूश से रवाना हुए और उन्होंने रपी-
दीम में पड़ाव डाला।[15] वहाँ लोगों के पीने
के लिए पानी नहीं था। 15 इसके बाद

अध्य. 32
1 गि 21:32
2 न्या 8:11
3 गि 32:3, 4
4 यह 13:27, 28
5 गि 21:26
6 गि 32:3, 4
7 यह 13:15, 19
8 गि 32:3, 4
9 यह 13:15, 17
10 गि 26:29
11 व्य 3:13; यह 13:31; यह 17:1
12 व्य 3:14; यह 13:29, 30

अध्य. 33
13 यह 24:5; 1शम 12:8
14 निर्ग 13:18
15 निर्ग 12:51
16 गि 9:17
17 निर्ग 12:2; निर्ग 13:4

दूसरा कॉल.
1 उत 47:11; निर्ग 12:37
2 निर्ग 12:3, 6; व्य 16:1
3 निर्ग 12:29; भज 78:51
4 निर्ग 12:12; निर्ग 18:11
5 निर्ग 12:37
6 निर्ग 13:20
7 निर्ग 14:9
8 निर्ग 14:2
9 निर्ग 14:22
10 निर्ग 15:22
11 निर्ग 13:20
12 निर्ग 15:23
13 निर्ग 15:27
14 निर्ग 16:1
15 निर्ग 17:1, 8

32:36 *या "दोबारा बनाए।" **32:41** *मतलब "याईर के कसबे।"

33:3 *शा., "ऊँचे हाथ के साथ।"

वे रपीदीम से रवाना हुए और उन्होंने सीनै
वीराने में पड़ाव डाला।[1]

16 वे सीनै वीराने से रवाना हुए और
उन्होंने किबरोत-हत्तावा में पड़ाव डाला।[2]
17 फिर वे किबरोत-हत्तावा से रवाना
हुए और उन्होंने हसेरोत में पड़ाव
डाला।[3] 18 हसेरोत से रवाना होने के
बाद उन्होंने रितमा में पड़ाव डाला।
19 इसके बाद वे रितमा से रवाना
हुए और उन्होंने रिम्मोन-पेरेस में पड़ाव
डाला। 20 रिम्मोन-पेरेस से रवाना होने
के बाद उन्होंने लिब्ना में पड़ाव डाला।
21 वे लिब्ना से रवाना हुए और उन्होंने
रिस्सा में पड़ाव डाला। 22 फिर वे
रिस्सा से रवाना हुए और उन्होंने कहेला-
ताह में पड़ाव डाला। 23 इसके बाद
वे कहेलाताह से रवाना हुए और उन्होंने
शेपेर पहाड़ के पास पड़ाव डाला।

24 बाद में वे शेपेर पहाड़ से रवाना
हुए और उन्होंने हरादा में पड़ाव
डाला। 25 फिर वे हरादा से रवाना
हुए और उन्होंने मखेलोत में पड़ाव डाला।
26 मखेलोत से रवाना होने के
बाद[4] उन्होंने ताहत में पड़ाव डाला।
27 इसके बाद वे ताहत से रवाना हुए
और उन्होंने तिरह में पड़ाव डाला।
28 तिरह से रवाना होने के बाद
उन्होंने मितका में पड़ाव डाला।
29 बाद में वे मितका से रवाना हुए
और उन्होंने हशमोना में पड़ाव डाला।
30 फिर वे हशमोना से रवाना हुए
और उन्होंने मोसेरोत में पड़ाव डाला।
31 फिर वे मोसेरोत से रवाना हुए और
उन्होंने बने-याकान में पड़ाव डाला।[5]
32 बने-याकान से रवाना होने के बाद
उन्होंने होर-हग्गिदगाद में पड़ाव डाला।
33 इसके बाद वे होर-हग्गिदगाद से
रवाना हुए और उन्होंने योतबाता में
पड़ाव डाला।[1] 34 बाद में वे योत-
बाता से रवाना हुए और उन्होंने अबरोना
में पड़ाव डाला। 35 फिर वे अबरोना से
रवाना हुए और उन्होंने एस्योन-गेबेर
में पड़ाव डाला।[2] 36 इसके बाद वे
एस्योन-गेबेर से रवाना हुए और उन्होंने
सिन वीराने में यानी कादेश में पड़ाव
डाला।[3]

37 बाद में वे कादेश से रवाना हुए
और उन्होंने होर पहाड़ के पास,
एदोम देश की सरहद पर पड़ाव डाला।[4]
38 वहाँ यहोवा के आदेश पर हारून
याजक होर पहाड़ के ऊपर गया और वहीं
उसकी मौत हो गयी। यह मिस्र से इसराए-
लियों के निकलने के 40वें साल के पाँचवें
महीने का पहला दिन था।[5] 39 होर
पहाड़ पर जब हारून की मौत हुई तब वह
123 साल का था।

40 इसी दौरान अराद के कनानी
राजा[6] ने सुना कि इसराएली कनान की
तरफ आ रहे हैं। वह राजा कनान के
नेगेब में रहता था।

41 कुछ वक्त बाद इसराएली होर
पहाड़ के पास से रवाना हुए[7] और उन्होंने
सलमोना में पड़ाव डाला। 42 इसके
बाद वे सलमोना से रवाना हुए और
उन्होंने पूनोन में पड़ाव डाला। 43 फिर
वे पूनोन से रवाना हुए और उन्होंने
ओबोत में पड़ाव डाला।[8] 44 इसके
बाद वे ओबोत से रवाना हुए और उन्होंने
मोआब की सरहद पर इय्ये-अबारीम में
पड़ाव डाला।[9] 45 बाद में वे इयीम*
से रवाना हुए और उन्होंने दीबोन-गाद[10]
में पड़ाव डाला। 46 फिर वे दीबोन-
गाद से रवाना हुए और उन्होंने अलमोन-
दिबलातैम में पड़ाव डाला। 47 इसके

33:45 *ज़ाहिर है कि यह इय्ये-अबारीम का छोटा रूप है।

अध्य. 33
1 निर्ग 18:5; निर्ग 19:1, 2; गि 1:1; गि 3:4; गि 9:1
2 गि 11:34; व्य 9:22
3 गि 11:35; गि 12:16
4 गि 9:17
5 व्य 10:6

दूसरा कॉल.
1 व्य 10:7
2 व्य 2:8; 1रा 9:26
3 गि 20:1; गि 27:14; व्य 32:51; यह 15:1
4 गि 20:22
5 व्य 10:6
6 गि 21:1
7 गि 21:4
8 गि 21:10
9 उत 19:36, 37; गि 21:11, 13
10 गि 32:34

बाद वे अलमोन-दिबलातैम से रवाना हुए
और उन्होंने नबो[1] के सामने अबारीम
पहाड़ों[2] में पड़ाव डाला। **48** आखिर में
वे अबारीम पहाड़ों से रवाना हुए और
उन्होंने मोआब के वीरानों में पड़ाव डाला
जो यरदन के पास यरीहो के सामने थे।[3]
49 वे मोआब के वीरानों में, यरदन के
किनारे बेत-यशिमोत से लेकर दूर
आबेल-शित्तीम[4] तक डेरा डाले हुए थे।

50 जब इसराएली यरीहो के सामने
यरदन के पास मोआब के वीरानों में थे
तो यहोवा ने मूसा से कहा, **51** "इस-
राएलियों से कहना, 'अब तुम यरदन पार
करके कनान देश में कदम रखनेवाले
हो।[5] **52** तुम अपने सामने से उन सभी
लोगों को भगा देना जो वहाँ बसे हुए हैं।
तुम उनकी सभी मूरतें चूर-चूर कर देना,
फिर चाहे वे पत्थर की नक्काशीदार मूरतें
हों[6] या धातु की मूरतें*[7] और उनकी
पूजा की सभी ऊँची जगह ढा देना।[8]
53 तुम उस देश को अपने अधिकार में
कर लोगे और वहाँ बस जाओगे क्योंकि
मैं बेशक वह देश तुम्हारे अधिकार में
कर दूँगा।[9] **54** तुम चिट्ठियाँ डालकर
देश की ज़मीन अपने सभी घरानों में बाँट
देना।[10] जो समूह बड़ा है उसे विरासत में
ज़्यादा ज़मीन देना और जो समूह छोटा
है उसे कम देना।[11] चिट्ठियाँ डालकर तय
किया जाए कि देश में किसे कहाँ पर
विरासत की ज़मीन मिलेगी। तुम्हें अपने-
अपने पिता के गोत्र के हिसाब से विरासत
की ज़मीन दी जाएगी।[12]

55 लेकिन अगर तुम उस देश के
लोगों को वहाँ से नहीं भगाओगे[13] और
उन्हें अपने बीच रहने दोगे, तो वे
तुम्हारी आँखों की किरकिरी बन जाएँगे
और काँटा बनकर तुम्हें चुभते रहेंगे और
तुम पर ज़ुल्म करते रहेंगे।[1] **56** और
मैं तुम्हारा वही हश्र करूँगा जो मैंने उनके
लिए सोचा था।'"[2]

34 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
2 "इसराएलियों को ये हिदायतें
देना: 'कनान देश का इलाका,[3] जो तुम्हें
विरासत में दिया जाएगा, उसकी सर-
हदें ये हैं:[4]

3 दक्षिण में तुम्हारे देश की सरहद
एदोम के पास सिन वीराने से शुरू होगी।
और दक्षिण-पूर्व में यह सरहद लवण
सागर* के छोर से शुरू होगी।[5] **4** फिर
यह सरहद अकराबीम की चढ़ाई[6] की
दक्षिण की ओर पहुँचकर मुड़ेगी और सिन
तक जाएगी और वहाँ से कादेश-बरने[7]
के दक्षिणी हिस्से तक जाएगी। और
हसर-अद्दार[8] तक बढ़कर असमोन तक
जाएगी। **5** फिर असमोन से यह सर-
हद मिस्र घाटी* की तरफ मुड़ेगी और दूर
महासागर# तक जाकर खत्म होगी।[9]

6 पश्चिम में तुम्हारे देश की सरहद
महासागर# का तट होगी। यही तुम्हारे
देश की पश्चिमी सरहद होगी।[10]

7 उत्तर में तुम्हारे देश की सरहद यह
होगी: तुम महासागर से लेकर होर पहाड़
तक अपनी सरहद बाँधना। **8** फिर
होर पहाड़ से लेबो-हमात* तक सरहद
बाँधना।[11] यह सरहद आगे दूर सदाद
तक जाएगी।[12] **9** फिर वहाँ से आगे
जिप्रोन तक जाएगी और हसर-एनान में
जाकर खत्म होगी।[13] यही तुम्हारे देश की
उत्तरी सरहद होगी।

10 इसके बाद तुम पूरब की सर-
हद हसर-एनान से शपाम तक बाँधना।
11 यह सरहद शपाम से रिबला तक

अध्य. 33
1 व्य 34:1
2 गि 27:12
व्य 32:48, 49
3 गि 22:1
4 गि 25:1
यह 2:1
5 यह 3:17
6 लैव 26:1
7 लैव 19:4
व्य 27:15
8 निर्ग 23:24
निर्ग 34:13, 17
व्य 7:5
व्य 12:3
9 व्य 32:8
10 नीत 16:33
11 गि 26:53, 54
12 यह 15:1
यह 16:1
यह 18:11
13 न्या 1:21
भज 106:34

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 23:31-33
व्य 7:3, 4
यह 23:12, 13
न्या 2:2, 3
2 लैव 18:28
यह 23:15

अध्य. 34
3 उत 15:18
उत 17:8
4 उत 10:19
व्य 4:38
यह 1:4
यह 14:1
यिर्म 3:19
प्रेष 17:26
5 यह 15:1, 2
6 न्या 1:36
7 गि 13:26
गि 32:8
8 यह 15:1, 3
9 निर्ग 23:31
यह 15:1, 4
10 यह 1:4
यह 15:12
11 गि 13:21
2रा 14:25
12 यहे 47:15
13 यहे 47:17

33:52 *या "ढली हुई मूरतें।"

34:3 *यानी मृत सागर। **34:5** *शब्दावली देखें। **34:5, 6** #यानी भूमध्य सागर। **34:8** *या "हमात के प्रवेश।"

जाएगी जो ऐन के पूरब में है। फिर
यह सरहद नीचे जाएगी और किन्‍नेरेत
झील*[1] की पूर्वी ढलान से होकर गुज़-
रेगी। 12 यह सरहद यरदन की तरफ
जाएगी और फिर लवण सागर तक
जाकर खत्म होगी।[2] यही तुम्हारे देश का
इलाका[3] और उसके चारों तरफ की सर-
हदें हैं।'"

13 तब मूसा ने इसराएलियों को यह
हिदायत दी, "यह तुम्हारे देश का इलाका
है और जैसे यहोवा ने आज्ञा दी है,
तुम चिट्ठियाँ डालकर इसकी ज़मीन साढ़े
नौ गोत्रों में बाँट देना,[4] 14 क्योंकि
रूबेन के वंशजों और गाद के वंशजों के
गोत्रों ने अपने पिता के कुल के मुता-
बिक और मनश्शे के आधे गोत्र ने
अपनी विरासत की ज़मीन पहले ही ले
ली है।[5] 15 इन ढाई गोत्रों ने यरीहो के
सामने यरदन के पूरब में यानी जहाँ सूरज
उगता है, वहाँ के इलाके में अपनी-अपनी
विरासत की ज़मीन पहले ही ले ली है।"[6]

16 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
17 "एलिआज़र[7] याजक और नून का
बेटा यहोशू[8] देश की ज़मीन का बँटवारा
करके तुम लोगों के अधिकार में कर देंगे।
18 इसके अलावा, तुम हर गोत्र से एक
प्रधान लेना जो ज़मीन का बँटवारा करने
में तुम्हारी मदद करेंगे।[9] 19 इन प्रधानों
के नाम ये हैं: यहूदा गोत्र[10] से
यपुन्‍ने का बेटा कालेब,[11] 20 शिमोन के
बेटों के गोत्र[12] से अम्मीहूद का बेटा शिमू-
एल, 21 बिन्यामीन गोत्र[13] से किसलोन
का बेटा एलीदाद, 22 दान के बेटों के
गोत्र[14] से योग्ली का बेटा प्रधान बुक्की,
23 यूसुफ के बेटे[15] मनश्शे के बेटों के
गोत्र[16] से एपोद का बेटा प्रधान हन्‍नीएल,
24 एप्रैम के बेटों के गोत्र[1] से शिप्तान
का बेटा प्रधान कमूएल, 25 जबूलून के
बेटों के गोत्र[2] से परनाक का बेटा प्रधान
एलीसापान, 26 इस्साकार के बेटों के
गोत्र[3] से अज्जान का बेटा प्रधान पलती-
एल, 27 आशेर के बेटों के गोत्र[4] से
शलोमी का बेटा प्रधान अहीहूद और
28 नप्ताली के बेटों के गोत्र[5] से अम्मीहूद
का बेटा प्रधान पदहेल।" 29 यहोवा ने
इन्हीं आदमियों को आज्ञा दी कि वे कनान
देश की ज़मीन इसराएलियों में बाँट दें।[6]

35 यहोवा ने मूसा को और भी कुछ
आज्ञाएँ दीं। इस वक्‍त इसराएली
यरीहो के सामने यरदन के पास मोआब
के वीरानों में थे।[7] परमेश्‍वर ने मूसा से
कहा, 2 "इसराएलियों को हिदायत दे
कि जो देश उन्हें विरासत में मिलनेवाला
है, उसमें से कुछ शहर वे लेवियों को दें
ताकि लेवी उनमें रह सकें।[8] साथ ही, उन
शहरों के आस-पास के चरागाह भी उन्हें
दें।[9] 3 लेवी उन शहरों में रहेंगे और
उनके चरागाह की ज़मीन उनके मवेशियों
और दूसरे जानवरों के लिए और उनकी
देखभाल की ज़रूरी चीज़ों के लिए होगी।
4 चरागाह की यह ज़मीन जो तुम लेवियों
को दोगे, शहर के चारों तरफ दीवार से
एक-एक हज़ार हाथ* की हो। 5 तुम
शहर के बाहर पूरब की तरफ 2,000
हाथ, दक्षिण की तरफ 2,000 हाथ,
पश्‍चिम की तरफ 2,000 हाथ और
उत्तर की तरफ 2,000 हाथ नापना और
शहर बीच में होगा। ये उनके शहरों के
चरागाह होंगे।

6 तुम लेवियों को जो शहर दोगे उनमें
से 6 शरण नगर होंगे।[10] अगर कोई
किसी का खून कर देता है, तो वह

34:11 *यानी गन्‍नेसरत झील या गलील झील।

35:4 *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 34
1 व्य 3:16, 17; यह 11:1, 2; लूक 5:1; यूह 6:1
2 यह 15:1, 2
3 व्य 8:7-9
4 गि 26:55; गि 33:54; यह 14:2; यह 18:6; नीत 16:33
5 गि 32:33; व्य 3:12, 13; यह 13:8
6 गि 32:5, 32
7 गि 3:32; गि 20:26; यह 14:1
8 गि 14:38; गि 27:18; यह 19:51
9 गि 1:4, 16
10 यह 15:1
11 गि 14:30; गि 26:65
12 यह 19:1
13 यह 18:11
14 यह 19:40
15 उत 46:20; उत 48:5; यह 16:1
16 यह 17:1

दूसरा कॉल.
1 यह 16:5
2 यह 19:10
3 यह 19:17
4 यह 19:24
5 यह 19:32
6 गि 34:18; व्य 32:8; यह 19:51; प्रेष 17:26

अध्य. 35
7 गि 22:1; गि 36:13
8 उत 49:7; व्य 18:1; यह 14:4
9 लैव 25:32-34; यह 21:3; 2इत 11:14
10 यह 20:2, 3, 7, 8; यह 21:13, 21, 27, 32, 36, 38

भागकर उनमें से किसी शरण नगर में जा
सकता है।[1] इनके अलावा, तुम लेवियों
को 42 और शहर दोगे। **7** तुम उन्हें
कुल मिलाकर 48 शहर और उनके
आस-पास के चरागाह देना।[2] **8** ये
शहर तुम अपनी विरासत की ज़मीन में
से देना।[3] इसराएलियों में से जो समूह
बड़ा है वह ज़्यादा शहर दे और जो समूह
छोटा है वह कम शहर दे।[4] एक समूह
को विरासत में कितनी बड़ी या कितनी
छोटी ज़मीन मिलती है, उस हिसाब से वह
अपने कुछ शहर लेवियों को देगा।”

9 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा,
10 “इसराएलियों से कहना, ‘तुम यर-
दन पार करके कनान देश जानेवाले हो।[5]
11 तुम ऐसे शहरों को शरण नगर चुनना
जहाँ अनजाने में खून करनेवाले के लिए
भागकर जाना आसान हो।[6] **12** ये
शहर तुम्हें खून का बदला लेनेवाले से
बचाने के लिए होंगे[7] ताकि अगर कोई
किसी का खून कर दे तो वह मंडली के
सामने मुकदमे के लिए पेश होने से पहले
मार न डाला जाए।[8] **13** जो छः शरण
नगर तुम दोगे वे इसी मकसद के लिए
होंगे। **14** इनमें से तीन शरण नगर
यरदन के इस पार[9] और तीन उस पार
कनान देश में होने चाहिए।[10] **15** ये छः
शहर इसराएलियों, उनके बीच रहनेवाले
परदेसियों और प्रवासियों को शरण देने
के लिए होंगे[11] ताकि अगर उनमें से कोई
अनजाने में किसी का खून कर देता है तो
वह वहाँ भाग सके।[12]

16 लेकिन अगर कोई किसी आदमी
को लोहे की किसी चीज़ से मारता है
जिससे वह मर जाता है, तो मारनेवाला
खूनी है। उस खूनी को हर हाल में मौत की
सज़ा दी जाए।[13] **17** अगर कोई ऐसा
पत्थर हाथ में लेता है जिससे मारने पर
कोई मर सकता है और वह उस पत्थर से
किसी आदमी को मारता है जिससे वह मर
जाता है तो मारनेवाला खूनी है। उस खूनी
को हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए।
18 अगर कोई लकड़ी की ऐसी चीज़ हाथ
में लेता है जिससे मारने पर कोई मर
सकता है और वह उस चीज़ से किसी
आदमी को मारता है जिससे वह मर जाता
है, तो मारनेवाला खूनी है। उस खूनी को
हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए।

19 एक खूनी को मौत की सज़ा देने
की ज़िम्मेदारी खून का बदला लेनेवाले की
है। जब उसका सामना खूनी से होगा तो
वह खुद उसे मार डालेगा। **20** अगर
कोई किसी से नफरत करने की वजह से
उसे धकेल देता है जिससे वह मर जाता
है या उसकी जान लेने के इरादे से* उस
पर कुछ फेंकता है जिससे वह मर
जाता है,[1] **21** या नफरत की वजह से
उसे घूँसा मारता है जिससे वह मर जाता
है तो मारनेवाला खूनी है। उस खूनी को
हर हाल में मौत की सज़ा दी जाएगी।
जब खून का बदला लेनेवाले का सामना
उस खूनी से होगा तो उसे खूनी को मार
डालना चाहिए।

22 ऐसा भी हो सकता है कि एक
इंसान नफरत की वजह से नहीं बल्कि
गलती से किसी को धकेल देता है जिससे
वह मर जाता है। या वह उस पर कोई
ऐसी चीज़ फेंकता है जिसके लगने से वह
मर जाता है, जबकि उसकी जान लेने का
उसका कोई इरादा नहीं था।*[2] **23** या
यह भी हो सकता है कि उसने दूसरे
आदमी को देखा नहीं और वह गलती से
उस पर पत्थर गिरा देता है जिससे वह
मर जाता है। अगर ऐसा होता है और उस

अध्य. 35
1 व्य 4:42
2 यह 21:3
3 उत 49:7
4 गि 26:54; गि 33:54
5 निर्ग 3:8; निर्ग 23:23; गि 34:2
6 निर्ग 21:12, 13; व्य 4:42; व्य 19:4, 5
7 गि 35:19; व्य 19:6
8 व्य 19:11, 12; यह 20:5, 9
9 व्य 4:41-43
10 व्य 19:8, 9; यह 20:7
11 निर्ग 12:49; लैव 19:34; गि 15:16
12 यह 20:2, 3
13 उत 9:5; निर्ग 21:12; लैव 24:17; व्य 19:11, 12

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 21:14; व्य 19:11, 12
2 निर्ग 21:12, 13; व्य 19:4, 5; यह 20:2, 3

35:20 *शा., “घात लगाकर।” **35:22** *शा., “उसने घात नहीं लगायी थी।”

इंसान की उस आदमी से कोई दुश्मनी नहीं थी जो मर गया है और न ही उसे चोट पहुँचाने का कोई इरादा था, **24** मंडली को इन नियमों के मुताबिक, मारनेवाले और खून का बदला लेनेवाले के मुकदमे का फैसला करना चाहिए।[1] **25** इसके बाद मंडली को चाहिए कि वह उस आदमी को, जिसने अनजाने में खून किया है, खून का बदला लेनेवाले से बचाए और उसे वापस उस शरण नगर में भेज दे जहाँ वह भाग गया था। उसे तब तक शरण नगर में रहना चाहिए जब तक कि महायाजक की मौत नहीं हो जाती, जिसका पवित्र तेल से अभिषेक किया गया है।[2]

26 अगर वह आदमी, जिसने अनजाने में खून किया है, कभी शरण नगर की सीमा लाँघकर बाहर जाता है **27** और वहाँ खून का बदला लेनेवाला उसे देख लेता है और उसे मार डालता है तो बदला लेनेवाला खून का दोषी नहीं ठहरेगा। **28** जो अनजाने में खून कर देता है उसे महायाजक की मौत तक अपने शरण नगर के अंदर ही रहना है। मगर वह महायाजक की मौत के बाद अपनी ज़मीन पर लौट सकता है।[3] **29** तुम जहाँ कहीं भी रहते हो, तुम और तुम्हारी आनेवाली पीढ़ियाँ इन नियमों के मुताबिक ऐसे मामलों का न्याय करें।

30 अगर कोई किसी को मार डालता है, तो उसे गवाहों के बयान पर[4] ही कातिल ठहराकर मौत की सज़ा दी जाए।[5] लेकिन किसी को भी सिर्फ एक गवाह के बयान पर मौत की सज़ा न दी जाए। **31** जो खूनी मौत की सज़ा के लायक है उसके लिए तुम कोई फिरौती की कीमत लेकर उसे ज़िंदा मत छोड़ना। उसे हर हाल में मौत की सज़ा दी जाए।[6] **32** तुम ऐसे इंसान के लिए भी फिरौती की कीमत न लेना जो भागकर अपने शरण नगर में आया है और इस तरह उसे महायाजक की मौत से पहले अपनी ज़मीन पर लौटने की इजाज़त मत देना।

33 तुम जिस देश में रहते हो उसकी ज़मीन दूषित मत करना, क्योंकि जब खून बहाया जाता है तो देश दूषित हो जाता है।[1] और देश में जो खून बहाया जाता है उसके लिए कोई प्रायश्‍चित नहीं, सिवा इसके कि जिसने खून बहाया है उसका खून बहाया जाए।[2] **34** तुम जिस देश में रहते हो उसे दूषित मत करना क्योंकि मैं वहाँ निवास करता हूँ। मैं यहोवा, इसराएल के लोगों के बीच निवास करता हूँ।'"[3]

36 गिलाद के वंशजों के परिवारों के मुखिया, मूसा और इसराएलियों के प्रधानों के पास आए। गिलाद माकीर का बेटा था[4] और माकीर मनश्‍शे का बेटा था और मनश्‍शे यूसुफ के बेटों के घरानों में से था। **2** उन्होंने मूसा और प्रधानों से कहा, "मालिक, यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है कि चिट्ठियाँ डालकर देश की ज़मीन का बँटवारा करना[5] और सभी इसराएलियों को उनकी विरासत की ज़मीन देना। और मालिक, यहोवा ने तुझे यह भी आज्ञा दी कि हमारे भाई सलोफाद की विरासत की ज़मीन उसकी बेटियों को दी जाए।[6] **3** अब अगर उसकी बेटियाँ इसराएल के किसी दूसरे गोत्र के आदमियों से शादी करती हैं, तो हमारे पुरखों की विरासत की ज़मीन से हम उन लड़कियों का हिस्सा खो देंगे क्योंकि उनकी ज़मीन उस गोत्र की हो जाएगी जिसके आदमियों से वे शादी करती हैं। इस तरह हमारे गोत्र की विरासत की ज़मीन कम हो जाएगी जो चिट्ठियाँ डालकर हमें दी गयी है। **4** फिर जब

अध्य. 35
1 गि 35:12; यह 20:4, 5
2 निर्ग 29:4, 7
3 यह 20:6
4 व्य 17:6; व्य 19:15; इब्र 10:28
5 उत 9:6; निर्ग 20:13
6 उत 9:5; निर्ग 21:14; व्य 19:13

दूसरा कॉल.
1 उत 4:8, 10; भज 106:38; लूक 11:50
2 उत 9:6
3 निर्ग 25:8; लैव 26:12

अध्य. 36
4 गि 26:29
5 गि 26:55; गि 33:54
6 गि 27:1-7

इसराएलियों के लिए छुटकारे का साल[1]
आएगा, तो उन लड़कियों की विरासत
की ज़मीन हमेशा के लिए उस गोत्र की
हो जाएगी जहाँ उनकी शादी होती है।
इस तरह हमारे पुरखों के गोत्र को दी
गयी विरासत में से हम उनका हिस्सा खो
देंगे।”

5 तब मूसा ने यहोवा के आदेश पर
इसराएलियों को यह आज्ञा दी, “यूसुफ के
बेटों का गोत्र बिलकुल सही कह रहा है।
6 इसलिए यहोवा ने सलोफाद की बेटियों
के लिए यह आज्ञा दी है: ‘वे अपनी
पसंद के आदमियों से शादी कर सकती
हैं, बशर्ते वे आदमी उनके पिता के गोत्र
के किसी परिवार के हों। 7 इसराएल
के किसी भी गोत्र की विरासत की ज़मीन
दूसरे गोत्र में नहीं जानी चाहिए, क्योंकि
सभी इसराएलियों को अपने-अपने पुरखों
के गोत्र की विरासत पर अधिकार बनाए
रखना चाहिए। 8 और अगर इसराएल
के किसी गोत्र में एक लड़की को अपने
पिता की विरासत की ज़मीन मिलती है,
तो उसे अपने पिता के गोत्र के ही
किसी आदमी से शादी करनी चाहिए।[1]
ऐसा इसलिए किया जाए ताकि सभी
इसराएली अपने-अपने पुरखों की विरा-
सत पर अधिकार बनाए रखें। 9 विरा-
सत की कोई भी ज़मीन एक गोत्र से
दूसरे गोत्र में नहीं जानी चाहिए, क्योंकि
इसराएल के सभी गोत्रों को अपनी-
अपनी विरासत पर अधिकार बनाए
रखना चाहिए।’”

10 सलोफाद की बेटियों ने ठीक वैसे
ही किया जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा
दी।[2] 11 महला, तिरसा, होग्ला,
मिलका और नोआ ने अपने चचेरे भाइयों
से शादी की। 12 उन्होंने यूसुफ के बेटे
मनश्शे के गोत्र के ही आदमियों से शादी
की ताकि उनकी विरासत की ज़मीन
उनके पिता के गोत्र में ही बनी रहे।

13 यहोवा ने ये सारी आज्ञाएँ और
न्याय-सिद्धांत मूसा के ज़रिए इसराएलियों
को तब दिए जब वे यरीहो के सामने यर-
दन के पास मोआब के वीरानों में थे।[3]

अध्य. 36

1 लैव 25:10

दूसरा कॉल.

1 1इत 23:22

2 गि 36:6

3 गि 26:3
गि 33:50
गि 35:1

व्यवस्थाविवरण

सारांश

1 होरेब पहाड़ के पास से निकलना (1-8)
- प्रधान और न्यायी ठहराए गए (9-18)
- कादेश-बरने में इसराएल ने आज्ञा नहीं मानी (19-46)
  - देश में जाने से इनकार किया (26-33)
  - कनान को जीतने में नाकाम (41-46)

2 वीराने में 38 साल भटकना (1-23)
- हेशबोन के राजा सीहोन पर जीत (24-37)

3 बाशान के राजा ओग पर जीत (1-7)
- यरदन के पूरब की ज़मीन का बँटवारा (8-20)
- यहोशू से कहा गया कि वह न डरे (21, 22)
- मूसा उस देश में नहीं जाएगा (23-29)

4 आज्ञा मानने का बढ़ावा (1-14)
  - परमेश्वर के काम न भूलना (9)
- यहोवा माँग करता है कि सिर्फ उसी की भक्ति की जाए (15-31)
- यहोवा के सिवा कोई परमेश्वर नहीं (32-40)

यरदन के पूरब में शरण नगर (41-43)
कानून देने के बारे में जानकारी (44-49)

5 होरेब में यहोवा का करार (1-5)
दस आज्ञाएँ दोहरायी गयीं (6-22)
सीनै पहाड़ के पास लोग डर गए (23-33)

6 पूरे दिल से यहोवा से प्यार करो (1-9)
"हे इसराएल सुन" (4)
माता-पिता बच्चों को सिखाएँ (6, 7)
यहोवा को भूल मत जाना (10-15)
यहोवा की परीक्षा न लेना (16-19)
अगली पीढ़ी को बताना (20-25)

7 सात जातियाँ नाश की जाएँगी (1-6)
इसराएल क्यों चुना गया (7-11)
आज्ञा मानने से कामयाबी मिलती है (12-26)

8 यहोवा से मिलनेवाली आशीषें दोहरायी गयीं (1-9)
"इंसान सिर्फ रोटी से नहीं ज़िंदा रहता" (3)
यहोवा को भूल मत जाना (10-20)

9 इसराएल को क्यों देश दिया गया (1-6)
इसराएल ने चार बार यहोवा को गुस्सा दिलाया (7-29)
सोने का बछड़ा (7-14)
मूसा ने बीच-बचाव किया (15-21, 25-29)
तीन बार और क्रोध भड़काया (22)

10 दोनों पटियाएँ दोबारा बनायी गयीं (1-11)
यहोवा क्या चाहता है (12-22)
यहोवा का डर मानो; उससे प्यार करो (12)

11 तुमने यहोवा की महानता देखी है (1-7)
वादा किया गया देश (8-12)
आज्ञा मानने से मिलनेवाले इनाम (13-17)
आज्ञाएँ दिल में उतार लेना (18-25)
'आशीष या शाप' (26-32)

12 उसी जगह उपासना करना जो परमेश्वर चुनता है (1-14)
गोश्त खा सकते हो, खून नहीं (15-28)
दूसरे देवताओं के फंदे में न फँसना (29-32)

13 बागियों के साथ कैसा सलूक करें (1-18)

14 मातम मनाने के गलत तरीके (1, 2)
शुद्ध और अशुद्ध खाना (3-21)
यहोवा के लिए दसवाँ हिस्सा (22-29)

15 हर सातवें साल कर्ज़ माफ (1-6)
गरीबों की मदद करना (7-11)
हर सातवें साल दासों को आज़ाद करना (12-18)
एक सुए से दास का कान छेदना (16, 17)
पहलौठे जानवर अलग ठहराना (19-23)

16 फसह; बिन-खमीर की रोटी का त्योहार (1-8)
कटाई का त्योहार (9-12)
छप्परों का त्योहार (13-17)
न्यायी ठहराना (18-20)
उपासना में किन चीज़ों का इस्तेमाल करना मना है (21, 22)

17 बलि-पशुओं में कोई दोष न हो (1)
परमेश्वर से बगावत करनेवालों के मामले निपटाना (2-7)
पेचीदा मामलों का फैसला (8-13)
भविष्य में आनेवाले राजा के लिए हिदायतें (14-20)
कानून की किताब की नकल तैयार करे (18)

18 याजकों और लेवियों का हिस्सा (1-8)
जादू-टोने की मनाही (9-14)
मूसा जैसा एक भविष्यवक्ता (15-19)
झूठे भविष्यवक्ताओं की पहचान (20-22)

19 खून का दोष और शरण नगर (1-13)
सीमा-चिन्ह न सरकाना (14)
अदालत में गवाह (15-21)
दो या तीन गवाह ज़रूरी (15)

20 युद्ध के नियम (1-20)
किन लोगों को युद्ध से छूट (5-9)

21 कत्ल का अनसुलझा मामला (1-9)
बंदी बनायी गयी औरतों से शादी (10-14)
पहलौठे का हक (15-17)
एक ढीठ बेटा (18-21)
काठ पर लटकाया इंसान शापित (22, 23)

22 पड़ोसियों के जानवरों का लिहाज़ (1-4)
आदमी-औरत एक-दूसरे के कपड़े न पहने (5)
जानवरों पर दया करना (6, 7)
छत के लिए मुँडेर (8)
गलत तरह का मिश्रण (9-11)
कपड़े पर फुँदने (12)
नाजायज़ यौन-संबंधों पर कानून (13-30)

23 कौन परमेश्‍वर की मंडली का हिस्सा नहीं बन सकता (1-8)
छावनी की शुद्धता (9-14)
अगर दास भाग जाए (15, 16)
वेश्‍या के काम की मनाही (17, 18)
ब्याज और मन्‍नतें (19-23)
बाग या खेत से गुज़रनेवाले क्या खा सकते हैं (24, 25)

24 शादी और तलाक (1-5)
जीवन के लिए आदर (6-9)
गरीबों का लिहाज़ (10-18)
बीनने के बारे में नियम (19-22)

25 कोड़े लगाने के बारे में नियम (1-3)
दँवरी करते बैल का मुँह न बाँधना (4)
देवर-भाभी विवाह (5-10)
हाथा-पाई में गलत जगह पकड़ना (11, 12)
सही नाप-तौल (13-16)
अमालेकी नाश किए जाएँ (17-19)

26 पहले फल अर्पित करना (1-11)
दूसरा दसवाँ हिस्सा (12-15)
इसराएल, यहोवा की खास जागीर (16-19)

27 कानून पत्थरों पर लिखा जाए (1-10)
एबाल और गरिज्जीम पहाड़ पर (11-14)
शाप दोहराए गए (15-26)

28 आज्ञा मानने से मिलनेवाली आशीषें (1-14)
आज्ञा न मानने से मिलनेवाले शाप (15-68)

29 मोआब में इसराएल के साथ करार (1-13)
आज्ञा न तोड़ने की चेतावनी (14-29)
जो बातें गुप्त हैं, जो ज़ाहिर हैं (29)

30 यहोवा के पास लौटना (1-10)
यहोवा की आज्ञा मानना ज़्यादा मुश्‍किल नहीं (11-14)
ज़िंदगी या मौत चुनना (15-20)

31 मूसा की मौत करीब (1-8)
कानून पढ़कर सुनाना (9-13)
यहोशू ठहराया गया (14, 15)
इसराएल की बगावत की भविष्यवाणी (16-30)
इसराएल को एक गीत सिखाना (19, 22, 30)

32 मूसा का गीत (1-47)
यहोवा चट्टान है (4)
इसराएल अपनी चट्टान को भूल जाता है (18)
'बदला लेना मेरा काम है' (35)
"राष्ट्रो, परमेश्‍वर की प्रजा के साथ खुशियाँ मनाओ" (43)
मूसा की मौत नबो पहाड़ पर होगी (48-52)

33 मूसा ने गोत्रों को आशीर्वाद दिया (1-29)
यहोवा की "बाँहें तुझे सदा थामे रहेंगी" (27)

34 यहोवा ने मूसा को देश दिखाया (1-4)
मूसा की मौत (5-12)

---

1 जब इसराएली यरदन के पासवाले
वीराने में थे, तब मूसा ने उन सबसे
बात की। यह वही वीराना है जो सूफ के
सामने और पारान, तोपेल, लाबान,
हसेरोत और दीजाहाब के बीच है।
2 (सेईर के पहाड़ी इलाके के रास्ते होरेब
से कादेश-बरने[1] जाने में 11 दिन लगते
हैं।) **3** मिस्र से इसराएलियों के निकल-
ने के 40वें साल[2] के 11वें महीने के
पहले दिन, मूसा ने इसराएलियों* को
वह सारी बातें बतायीं जो यहोवा ने उसे

दूसरा कॉल.

अध्या. 1

1 व्य 9:23

2 गि 32:13
गि 33:38

1:3 * शा., "इसराएल के बेटों।"

बताने की हिदायत दी थी। **4** यह उन
दिनों की बात है जब मूसा ने हेशबोन में
रहनेवाले एमोरियों के राजा सीहोन[1] को
और अश्तारोत में रहनेवाले बाशान के
राजा ओग[2] को एदरेई में हराया था।[3]
5 जब वे मोआब देश में यरदन के इलाके
में थे, तब मूसा ने उन्हें परमेश्वर के कानून
के बारे में यह समझाया:[4]

6 “जब हम होरेब में थे तब हमारे पर-
मेश्वर यहोवा ने हमसे कहा था, ‘तुम्हें
इस पहाड़ी प्रदेश में रहते बहुत समय
बीत चुका है।[5] **7** अब तुम यहाँ से
आगे बढ़ो और एमोरियों[6] के पहाड़ी
प्रदेश में जाओ। इसके बाद, तुम उसके
पड़ोस में कनानियों के इन सभी इलाकों में
जाना: अराबा,[7] पहाड़ी प्रदेश, शफे-
लाह, नेगेब और समुंदर किनारे का
इलाका।[8] और तुम दूर लबानोन*[9] और
महानदी फरात[10] तक जाओ। **8** देखो,
यह सारा देश तुम्हारे सामने है। तुम
जाओ और इस देश को अपने अधिकार
में कर लो जिसके बारे में यहोवा ने शपथ
खाकर तुम्हारे पुरखों से कहा था। हाँ,
उसने अब्राहम, इसहाक[11] और याकूब[12]
से कहा था कि वह उन्हें और उनके बाद
उनके वंश को यह देश देगा।’[13]

9 उस समय मैंने तुम लोगों से कहा
था, ‘मैं तुम सबको ले जाने का बोझ
अकेले नहीं ढो सकता।[14] **10** तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें गिनती में
इतना बढ़ाया है कि आज तुम आस-
मान के तारों की तरह अनगिनत हो
गए हो।[15] **11** और मैं दुआ करता हूँ
कि तुम्हारे पुरखों का परमेश्वर यहोवा
तुम्हें और भी हज़ारों गुना बढ़ाए[16] और
तुम्हें आशीष दे, ठीक जैसे उसने तुमसे
वादा किया है।[17] **12** लेकिन मैं अकेले
इतनी बड़ी भीड़ का बोझ नहीं ढो सकता,
सबकी समस्याएँ नहीं सुलझा सकता और
तुम्हारे झगड़े नहीं सह सकता।[1]
13 इसलिए अपने-अपने गोत्र से ऐसे
आदमी चुनो जो बुद्धिमान और सूझ-बूझ
से काम लेनेवाले और तजुरबेकार हों।
मैं उन्हें तुम्हारा अधिकारी ठहराऊँगा।’[2]
14 और तुमने कहा था, ‘हाँ, यह ठीक
रहेगा।’ **15** तब मैंने तुम्हारे गोत्रों के
उन मुखियाओं को लिया, जो बुद्धिमान
और तजुरबेकार थे और उन्हें तुम पर
प्रधान ठहराया। मैंने उन्हें हज़ारों, सैकड़ों,
पचास-पचास और दस-दस की टोली पर
प्रधान ठहराया और तुम्हारे गोत्रों के लिए
अधिकारी बनाया।[3]

16 और उस समय मैंने तुम्हारे
न्यायियों को यह हिदायत दी, ‘जब तुम्हारे
सामने कोई मुकदमा पेश किया जाता है,
तो तुम सच्चाई से न्याय करना,[4] फिर
चाहे मामला दो इसराएलियों के बीच
का हो या एक इसराएली और तुम्हारे
यहाँ रहनेवाले परदेसी के बीच का।[5]
17 तुम न्याय करते वक्त किसी की
तरफदारी न करना।[6] जैसे तुम एक
बड़े आदमी का मामला सुनते हो, उसी
तरह तुम एक दीन आदमी का मामला
भी सुनना।[7] तुम इंसान से मत डरना[8]
क्योंकि तुम परमेश्वर की तरफ से न्याय
करते हो।[9] अगर कोई मामला तुम्हें
बहुत पेचीदा लगे तो उसे मेरे पास लाना,
उसकी सुनवाई मैं करूँगा।’[10] **18** और
तुम्हें जो-जो करना चाहिए वह सब मैंने
उसी वक्त तुम्हें समझा दिया था।

19 इसके बाद, जैसे यहोवा ने हमें
आज्ञा दी, हम होरेब से रवाना हुए और
वहाँ से एमोरियों के पहाड़ी प्रदेश में[11]
जाने के लिए हमने वह बड़ा और भयानक
वीराना पार किया[12] जिसे तुमने भी देखा

1:7 *ज़ाहिर है, लबानोन पर्वतमाला।

अध्य. 1
1 गि 21:23, 24; यह 12:1, 2
2 गि 21:33-35
3 यह 13:8, 12
4 व्य 4:8; व्य 17:18; नहे 8:7
5 निर्ग 19:1; गि 10:11, 12
6 उत 15:16
7 यह 12:2, 3
8 यह 9:1, 2
9 यह 13:1, 5; 1रा 9:19
10 उत 15:18
11 उत 26:3
12 उत 28:13
13 उत 12:7; उत 13:14, 15; उत 17:1, 7
14 निर्ग 18:17, 18
15 उत 15:1, 5; निर्ग 32:13; गि 26:51; व्य 10:22
16 1रा 3:8
17 उत 12:1-3; उत 22:15, 17; उत 26:3, 4; निर्ग 23:25

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 18:17, 18; गि 11:11; गि 20:3
2 निर्ग 18:21
3 निर्ग 18:25
4 निर्ग 23:8; व्य 16:18; यूह 7:24
5 निर्ग 22:21; लैव 19:34; लैव 24:22
6 लैव 19:15; रोम 2:11
7 निर्ग 23:3
8 नीत 29:25
9 2इत 19:6
10 निर्ग 18:25, 26
11 गि 13:29
12 गि 10:12; व्य 8:14, 15; यिर्म 2:6

था। और हम सफर करते-करते कादेश-बरने पहुँचे।[1] **20** वहाँ पहुँचने पर मैंने तुमसे कहा, ‘तुम लोग एमोरियों के पहाड़ी प्रदेश में आ गए हो, जो हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देने जा रहा है। **21** देखो, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने यह देश तुम्हारे हाथ में कर दिया है। अब तुम जाओ और इसे अपने अधिकार में कर लो, ठीक जैसे तुम्हारे पुरखों के परमेश्वर यहोवा ने तुमसे कहा है।[2] तुम किसी से मत डरना और न किसी से खौफ खाना।’

22 तब तुम सब मेरे पास आकर कहने लगे, ‘क्यों न हम उस देश में जाने से पहले अपने कुछ आदमियों को वहाँ भेजें ताकि वे उस देश का मुआयना करें और लौटकर हमें बताएँ कि हमें कौन-सा रास्ता लेना चाहिए और किन-किन शहरों से हमारा सामना होगा?’[3] **23** मुझे तुम्हारा यह सुझाव अच्छा लगा इसलिए मैंने तुम्हारे बीच से 12 आदमी चुने, हर गोत्र से एक आदमी।[4] **24** वे आदमी वहाँ से पहाड़ी प्रदेश की तरफ गए[5] और एशकोल घाटी पहुँचकर उन्होंने देश की जासूसी की। **25** उन्होंने उस देश के कुछ फल भी लिए और हमारे पास लौट आए। उस देश के बारे में उन्होंने हमें यह खबर दी, ‘हमारा परमेश्वर यहोवा हमें जो देश देनेवाला है वह बहुत बढ़िया है।’[6] **26** मगर तुम लोगों ने उस देश में जाने से इनकार कर दिया और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के आदेश के खिलाफ जाकर बगावत करने लगे।[7] **27** तुम अपने-अपने तंबू में कुड़कुड़ाते रहे और कहते रहे, ‘यहोवा हमसे नफरत करता है, इसीलिए वह हमें मिस्र से निकालकर यहाँ ले आया ताकि हमें एमोरियों के हवाले कर दे और वे हमें नाश कर दें। **28** हाय! हम कैसे देश में जा रहे हैं? हमारे भाई जो उस देश को देख आए हैं वे कहते हैं, “उस देश के लोग हमसे कहीं ज़्यादा ताकतवर हैं, बहुत लंबे-चौड़े हैं। उनके शहर बहुत बड़े-बड़े हैं और शहरपनाह इतनी ऊँची हैं कि आसमान से बातें करती हैं।[1] हमने वहाँ अनाकी लोगों[2] को देखा है।” यह सब सुनकर हमारी हिम्मत टूट गयी है।’[3]

29 तब मैंने तुमसे कहा, ‘उस देश के लोगों से मत डरो, न ही उनसे खौफ खाओ।[4] **30** तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे आगे-आगे जाएगा और वह तुम्हारी तरफ से लड़ेगा,[5] ठीक जैसे वह मिस्र में तुम्हारे देखते तुम्हारी तरफ से लड़ा था।[6] **31** और वीराने में भी तुमने देखा कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने कैसे तुम्हारी देखभाल की। पूरे सफर के दौरान तुम जहाँ-जहाँ गए, परमेश्वर तुम्हें ऐसे उठाए रहा जैसे एक पिता अपने बेटे को गोद में उठाए चलता है और तुम्हें यहाँ तक पहुँचाया।’ **32** मगर फिर भी तुमने अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास नहीं किया,[7] **33** जो तुम्हारे आगे-आगे चलता था और तुम्हारे लिए पड़ाव डालने की जगह ढूँढ़ता था। वह रात को आग से और दिन में बादल से तुम्हें दिखाता था कि तुम्हें किस रास्ते जाना है।[8]

34 उस दौरान तुम जो-जो बातें कर रहे थे वह सब यहोवा सुन रहा था। उसका क्रोध भड़क उठा और उसने शपथ खाकर कहा,[9] **35** ‘इस दुष्ट पीढ़ी का एक भी आदमी उस बढ़िया देश को नहीं देख पाएगा जिसे देने के बारे में मैंने तुम्हारे पुरखों से शपथ खाकर कहा था।[10] **36** सिर्फ यपुन्ने का बेटा कालेब उस देश में जा पाएगा जिसे वह देख आया है। मैं उसे और उसकी संतान को वहाँ की ज़मीन में से एक हिस्सा दूँगा, क्योंकि वह पूरे

अध्य. 1

1 गि 13:26
2 निर्ग 23:27; व्य 1:8
3 गि 13:1, 2
4 गि 13:3
5 गि 13:17
6 गि 13:23-27
7 गि 14:1-4

दूसरा कॉल.

1 गि 13:28, 33
2 गि 13:22; यह 11:21
3 गि 32:9; यह 14:7, 8
4 गि 14:9
5 निर्ग 14:14; यह 10:42
6 गि 14:22
7 भज 78:22; भज 106:24; इब्र 3:16, 19; यहू 5
8 निर्ग 13:21; निर्ग 40:36; गि 10:33, 34; भज 78:14
9 गि 14:28, 35; गि 32:10-12; व्य 2:14; भज 95:11; इब्र 3:11
10 गि 14:29, 35; 1कुर 10:1, 5; इब्र 3:17

दिल से* यहोवा के पीछे चला है।[1]
37 (तुम्हारी वजह से यहोवा मुझ पर भी
भड़क उठा और उसने मुझसे कहा, “तू भी
उस देश में नहीं जाएगा।[2] **38** नून का
बेटा यहोशू, जो तेरा सेवक है,[3] उस देश
में कदम रख पाएगा।[4] तू उसकी हिम्मत
बँधा*[5] क्योंकि वही इसराएलियों की
अगुवाई करके उस देश को उनके अधि-
कार में कर देगा।”) **39** इसके अलावा
तुम्हारे बच्चे, जिनके बारे में तुमने कहा कि
वे बंदी बना लिए जाएँगे[6] और तुम्हारे ये
बेटे जिन्हें आज सही-गलत की समझ
नहीं है, ये सब उस देश में जाएँगे। मैं वह
देश इन सबके अधिकार में कर दूँगा।[7]
40 अब तुम लोग पीछे मुड़ जाओ और
लाल सागर की तरफ जानेवाले रास्ते से
वीराने के लिए रवाना हो जाओ।’[8]

41 तब तुम लोगों ने मुझसे कहा,
‘हमने यहोवा के खिलाफ पाप किया है।
अब हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा
मानेंगे और जाकर दुश्मनों से लड़ेंगे!’ फिर
तुम सबने युद्ध के लिए अपने-अपने हथि-
यार बाँध लिए। तुमने सोचा कि पहाड़ पर
चढ़कर दुश्मनों से लड़ना बहुत आसान
है।[9] **42** मगर यहोवा ने मुझसे कहा,
‘उनसे कहना, “तुम लोग उनसे लड़ने मत
जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे साथ नहीं
रहूँगा।[10] अगर तुम जाओगे तो दुश्मनों से
हार जाओगे।”’ **43** मैंने परमेश्वर की
यह बात तुम्हें बतायी मगर तुमने मेरी एक
न सुनी। तुम यहोवा के आदेश के
खिलाफ गए और तुमने पहाड़ पर चढ़ने
की गुस्ताखी की। **44** तब उस पहाड़
पर रहनेवाले एमोरी लोगों ने आकर
तुम्हारा सामना किया। वे मधुमक्खियों की
तरह तुम पर टूट पड़े और उन्होंने तुम्हें
सेईर के इलाके में दूर होरमा तक भगाया।
45 तब तुम लौट आए और यहोवा के
सामने रोने लगे। मगर यहोवा ने तुम्हारा
रोना नहीं सुना और तुम पर कोई ध्यान
नहीं दिया। **46** इसलिए तुम बहुत समय
तक कादेश में ही रहे।

2 फिर हम पीछे मुड़ गए और लाल
सागर की तरफ जानेवाले रास्ते से
वीराने के लिए रवाना हुए, ठीक
जैसे यहोवा ने मुझे बताया था।[1]
हम कई दिनों तक सेईर के पहाड़ी
इलाके के किनारे-किनारे सफर करते रहे।
2 इसके बाद यहोवा ने मुझसे कहा,
3 ‘तुम्हें इस पहाड़ी इलाके के पास सफर
करते काफी समय हो गया है। अब उत्तर
की तरफ मुड़ो। **4** तू लोगों को यह
आज्ञा देना: “तुम सेईर[2] के किनारे-किनारे
से जाना जो तुम्हारे भाइयों का, एसाव के
वंशजों का देश है।[3] जब तुम उनके इलाके
के पास से जाओगे तो वे तुमसे बहुत
डरेंगे।[4] मगर तुम इस बात का ध्यान
रखना **5** कि तुम उन्हें किसी भी तरह
नहीं भड़काओगे क्योंकि मैं उनके देश का
कोई भी इलाका तुम्हें नहीं दूँगा, उनकी
ज़मीन में से पाँव धरने भर की भी
जगह नहीं दूँगा। मैंने सेईर का पहाड़ी
इलाका एसाव के अधिकार में कर दिया
है।[5] **6** तुम कीमत देकर उनसे खाना
और पानी खरीदना।[6] **7** तुम्हारे पर-
मेश्वर यहोवा ने तुम्हारे हर काम पर
आशीष दी है। तुमने इस बड़े वीराने में जो
सफर तय किया है, वह परमेश्वर अच्छी
तरह जानता है। इन 40 सालों के दौरान
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ रहा,
इसलिए तुम्हें कभी किसी चीज़ की कमी
नहीं हुई।”’[7] **8** तब जैसे परमेश्वर ने
हमें आज्ञा दी, हम सेईर के किनारे-किनारे

1:36 *शा., “पूरी तरह।” **1:38** *या
शायद, “परमेश्वर ने उसकी हिम्मत
बँधायी है।”

अध्य. 1
1 गि 14:24; यह 14:9
2 गि 20:12; गि 27:13, 14; व्य 3:26; भज 106:32
3 निर्ग 33:11; गि 11:28
4 गि 14:38
5 गि 27:18; व्य 31:7; यह 1:6, 9
6 गि 14:3
7 गि 14:30, 31
8 गि 14:25
9 गि 14:39-45
10 लैव 26:14, 17

दूसरा कॉल.

अध्य. 2
1 गि 14:25
2 उत 27:39, 40; उत 36:8, 9
3 गि 20:14; व्य 23:7
4 निर्ग 15:15; निर्ग 23:27
5 व्य 32:8; यह 24:4; प्रेष 17:26
6 गि 20:18, 19
7 व्य 29:5; नहे 9:21; भज 23:1; भज 34:9, 10

निकल गए जो हमारे भाइयों का, एसाव के
वंशजों का इलाका है।[1] हमने अराबा का
रास्ता नहीं लिया और एलत और एस्योन-
गेबेर[2] से दूर रहे।

इसके बाद हम मुड़कर मोआब के
वीराने के रास्ते से गए।[3] **9** तब यहोवा
ने मुझसे कहा, ‘तुम मोआबियों को किसी
भी तरह नहीं भड़काओगे और न ही उनसे
युद्ध करोगे, क्योंकि मैं उनके देश का कोई
भी इलाका तुम्हें नहीं दूँगा। मैंने आर का
इलाका लूत के इन वंशजों के अधिकार में
कर दिया है।[4] **10** (पहले आर में एमी
लोग[5] रहते थे, जो अनाकियों की तरह
बहुत लंबे-चौड़े और ताकतवर थे और
तादाद में बहुत ज़्यादा थे। **11** माना
जाता था कि रपाई लोग[6] भी अना-
कियों[7] की तरह थे और मोआबी उन्हें
एमी लोग कहते थे। **12** सेईर में पहले
होरी लोग[8] रहते थे, मगर बाद में एसाव
के वंशजों ने उनका नाश कर दिया और
उनके इलाके पर कब्ज़ा करके वहाँ बस
गए।[9] उसी तरह इसराएल भी उस देश
को अपने कब्ज़े में करेगा जिस पर उसका
अधिकार है क्योंकि यहोवा उन्हें ज़रूर
वह देश दे देगा।) **13** अब तुम लोग
जाकर जेरेद घाटी पार करो।’ तब हमने
जेरेद घाटी पार की।[10] **14** कादेश-बरने
से पैदल सफर शुरू करने से लेकर जेरेद
घाटी पार करने तक हमें 38 साल लगे।
उस वक्त तक इसराएलियों में से सैनिकों
की पूरी पीढ़ी मिट चुकी थी, ठीक जैसे
यहोवा ने शपथ खाकर उनसे कहा था।[11]
15 यहोवा का हाथ उनके खिलाफ तब
तक उठा रहा जब तक कि वे सभी छावनी
में से मिट न गए।[12]

16 जब सैनिकों की पूरी पीढ़ी
मिट गयी[13] तो उसके फौरन बाद,
17 यहोवा ने मुझसे दोबारा बात की और
मुझसे कहा, **18** ‘आज तुम्हें मोआब के
इलाके में आर के पास से गुज़रना
है। **19** जब तुम अम्मोनियों के इलाके
के पास पहुँचोगे तो उन्हें न तो सताना, न
ही भड़काना क्योंकि उनके देश का
कोई भी इलाका मैं तुम्हें नहीं दूँगा। मैंने
वह इलाका लूत के उन वंशजों के अधि-
कार में कर दिया है।[1] **20** वह भी
पहले रपाई लोगों का इलाका माना
जाता था।[2] (पहले वहाँ रपाई लोग रहते
थे जिन्हें अम्मोनी, जमजुम्मी लोग कहते
थे। **21** रपाई लोग अनाकियों की तरह
लंबे-चौड़े और ताकतवर थे और तादाद
में बहुत ज़्यादा थे।[3] मगर यहोवा ने उन्हें
अम्मोनियों के सामने से नाश कर दिया
और अम्मोनियों ने उन्हें वहाँ से भगा
दिया और वे उनके इलाके में बस गए।
22 परमेश्वर ने एसाव के वंशजों की
खातिर भी ऐसा ही किया जो अब
सेईर में रह रहे हैं।[4] उसने होरी लोगों को
एसाव के वंशजों के सामने से नाश कर
दिया[5] ताकि वे होरी लोगों के इलाके
पर कब्ज़ा कर लें और वहाँ बस जाएँ
और आज तक वे वहीं बसे हुए हैं।
23 और अव्वी लोग दूर गाज़ा तक
बस्तियों में रहते थे।[6] जब कप्तोर* से
कप्तोरी लोग[7] आए तो उन्होंने अव्वी
लोगों को नाश कर दिया और उनकी
जगह खुद बस गए।)

24 अब तुम जाओ और अरनोन
घाटी पार करो।[8] देखो, मैंने हेशबोन के
एमोरी राजा सीहोन[9] को तुम्हारे हाथ में
कर दिया है। इसलिए उसके देश को
अपने कब्ज़े में लेते जाओ और उससे
युद्ध करो। **25** आज ही से मैं धरती पर
रहनेवाले* सब लोगों में ऐसा डर फैला

2:23 *यानी क्रेते। **2:25** *शा., “आकाश के नीचे से।”

अध्य. 2

1 गि 20:20, 21
2 2इत 8:17
3 गि 21:13; न्या 11:17, 18; 2इत 20:10
4 उत 19:36, 37
5 उत 14:5
6 व्य 3:11; 1इत 20:6
7 गि 13:22, 33
8 उत 14:6; उत 36:20
9 उत 27:39, 40
10 गि 21:12
11 गि 14:33; गि 32:11; व्य 1:35; भज 95:11; इब्र 3:18; यहू 5
12 1कुर 10:1, 5
13 गि 26:63, 64

दूसरा कॉल.

1 उत 19:36, 38; व्य 2:9; न्या 11:15; 2इत 20:10; प्रेष 17:26
2 उत 15:18-20; व्य 3:11
3 गि 13:33; व्य 9:1, 2
4 उत 36:8
5 उत 14:6; व्य 2:12
6 उत 10:19
7 उत 10:13, 14
8 गि 21:13
9 गि 21:23

दूँगा कि तुम्हारे बारे में सुनते ही उनका
दिल दहल जाएगा। तुम्हारी वजह से
उनके बीच खलबली मच जाएगी और वे
थर-थर काँप उठेंगे।'*[1]

26 फिर मैंने कदेमोत वीराने[2] से
अपने दूतों को हेशबोन के राजा सीहोन के
पास भेजा। मैंने उसे शांति का यह संदेश
भेजा:[3] 27 'मुझे अपने देश के इलाके
से गुज़रने दे। मैं "राजा की सड़क" पर
ही चलूँगा, उससे न दाएँ मुड़ूँगा न
बाएँ।[4] 28 मैं तुझसे जो खाना और
पानी लूँगा, उसका दाम चुका दूँगा। बस
मुझे अपने इलाके से पैदल जाने की
इजाज़त दे। 29 सेईर में एसाव के
वंशजों ने और आर में मोआबियों ने मेरे
साथ ऐसा ही किया था। मुझे अपने इलाके
से होकर जाने दे जब तक कि मैं यरदन
पार करके उस देश में न पहुँचूँ जो हमारा
परमेश्वर यहोवा हमें देने जा रहा है।'
30 मगर हेशबोन के राजा सीहोन ने हमें
अपने इलाके से जाने की इजाज़त नहीं
दी। उसका दिल कठोर हो गया और वह
अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। तुम्हारे पर-
मेश्वर यहोवा ने उसे ढीठ ही रहने दिया[5]
ताकि वह उस राजा को तुम्हारे हाथ में कर
दे, जैसा कि अभी हुआ है।[6]

31 फिर यहोवा ने मुझसे कहा, 'देख,
मैंने सीहोन और उसके देश को तेरे
हवाले कर दिया है। उसके देश पर कब्ज़ा
करना शुरू कर दे।'[7] 32 जब सीहोन
अपने सब लोगों को लेकर यहस में हमसे
लड़ने आया,[8] 33 तो हमारे परमेश्वर
यहोवा ने उसे हमारे हाथ में कर दिया।
हमने उसे, उसके बेटों और उसके सभी
लोगों को हरा दिया। 34 हमने उसके
सभी शहरों पर कब्ज़ा कर लिया और
हरेक शहर को नाश कर दिया। हमने
वहाँ के सभी आदमियों, औरतों और
बच्चों को मार डाला, एक को भी
ज़िंदा नहीं छोड़ा।[1] 35 जब हमने उन
शहरों पर कब्ज़ा किया तो हमने सिर्फ
वहाँ के जानवर और वहाँ का माल लूट
में लिया। 36 अरनोन घाटी के किनारे
अरोएर शहर[2] (साथ ही वह शहर जो
घाटी में है) से लेकर दूर गिलाद तक
ऐसा कोई भी शहर नहीं था जिसे हम
हरा न सके। हमारे परमेश्वर यहोवा ने
उन सारे शहरों को हमारे हाथ में कर दिया
था।[3] 37 मगर तुम यब्बोक घाटी[4] के
किनारे के इलाके में नहीं गए जो अम्मो-
नियों का इलाका है,[5] न ही पहाड़ी प्रदेश
के शहरों में या किसी ऐसी जगह गए
जहाँ जाने से हमारे परमेश्वर यहोवा ने
हमें मना किया था।

3 फिर हम मुड़कर "बाशान सड़क"
से गए। तब बाशान का राजा ओग
अपने सब आदमियों को लेकर एदरेई में
हमसे युद्ध करने आया।[6] 2 उस वक्त
यहोवा ने मुझसे कहा, 'तू उससे मत डर
क्योंकि मैं उसे और उसके सब लोगों को
और उसके देश को तेरे हाथ में कर
दूँगा। तू उसका वही हश्र करेगा जो तूने
हेशबोन में रहनेवाले एमोरियों के राजा
सीहोन का किया था।' 3 हमारे पर-
मेश्वर यहोवा ने बाशान के राजा ओग
और उसके सब लोगों को भी हमारे हाथ
में कर दिया। हम उन्हें तब तक मारते
गए जब तक कि एक भी ज़िंदा न बचा।
4 फिर हमने ओग के राज्य बाशान में
अरगोब का पूरा इलाका जीत लिया और
उसके सभी शहरों पर कब्ज़ा कर लिया।
हमने कुल मिलाकर 60 शहरों को अपने
अधिकार में कर लिया। वहाँ एक भी
शहर ऐसा नहीं था जिस पर हमने

अध्य. 2
1 निर्ग 15:14, निर्ग 23:27, व्य 11:25, यह 2:9, 10
2 यह 13:15, 18, यह 21:8, 37
3 व्य 20:10
4 गि 21:21, 22
5 रोम 9:18
6 गि 21:25
7 गि 32:33, भज 135:10-12
8 गि 21:23, 24, न्या 11:20

दूसरा कॉल.
1 व्य 20:16, 17
2 व्य 3:12, व्य 4:47, 48, यह 13:8, 9
3 भज 44:3
4 गि 21:23, 24
5 व्य 3:16, न्या 11:15

अध्य. 3
6 गि 21:33-35

2:25 *या "उन्हें बच्चा जनने जैसा दर्द होगा।"

कब्ज़ा न किया हो।[1] **5** ये सब-के-सब किलेबंद शहर थे जिनकी ऊँची-ऊँची शहरपनाह, फाटक और बेड़े थे। इनके अलावा, वहाँ बिन शहरपनाहवाले बहुत-से नगर भी थे। **6** मगर हमने इन सभी शहरों और नगरों को नाश कर दिया।[2] हमने हरेक शहर को खाक में मिला दिया और वहाँ के सभी आदमियों, औरतों और बच्चों को मार डाला,[3] ठीक जैसे हमने हेशबोन के राजा सीहोन के साथ किया था। **7** और उन शहरों में जितने भी जानवर और जितना भी माल था वह सब हमने लूट लिया।

8 इस तरह हमने यरदन प्रांत में दोनों एमोरी राजाओं के देश पर कब्ज़ा कर लिया,[4] जिनकी सरहद अरनोन घाटी से लेकर दूर हेरमोन पहाड़ तक फैली थी।[5] **9** (इस पहाड़ को सीदोनी लोग सिरयोन और एमोरी लोग सनीर कहते थे।) **10** हमने उनके पठारी इलाके के सभी शहर, पूरा गिलाद और दूर सलका और एदरेई तक बाशान का पूरा इलाका ले लिया। सलका और एदरेई,[6] राजा ओग के राज्य बाशान के शहर थे। **11** बाशान का राजा ओग रपाई लोगों में से आखिरी आदमी था जो मारा गया। उसकी अर्थी* लोहे# की बनी थी और मानक नाप के मुताबिक अर्थी की लंबाई नौ हाथ△ और चौड़ाई चार हाथ थी। वह अर्थी आज भी अम्मोनियों के शहर रब्बाह में पायी जाती है। **12** उस समय हमने इस इलाके पर कब्ज़ा कर लिया। इसकी सरहद अरनोन घाटी के पास अरोएर[7] से शुरू होती है और उसमें गिलाद के पहाड़ी प्रदेश का आधा भाग भी आता है। मैंने वहाँ के शहर रूबेनियों और गादियों को दिए।[1] **13** और गिलाद का बाकी हिस्सा और बाशान का वह इलाका जो राजा ओग के राज्य में आता है, मैंने मनश्शे के आधे गोत्र को दिया।[2] अरगोब का पूरा इलाका जो बाशान में था, रपाई लोगों का देश कहलाता था।

14 मनश्शे के बेटे याईर[3] ने अरगोब का पूरा इलाका[4] लिया जो दूर गशूरियों और माकातियों[5] के इलाके की सरहद तक फैला था। याईर ने बाशान के कसबों का नाम बदलकर अपने नाम पर हव्वोत-याईर*[6] रखा। आज तक उन गाँवों का यही नाम है। **15** मैंने गिलाद का इलाका माकीर[7] को दिया। **16** और रूबेनियों और गादियों[8] को मैंने जो इलाका दिया, वह गिलाद से लेकर अरनोन घाटी तक (घाटी का बीच का हिस्सा इसकी सरहद है) और दूर यब्बोक घाटी तक (यह घाटी अम्मोनियों के देश की सरहद है) **17** और अराबा और यरदन और उसके किनारे तक, यानी किन्नेरेत से अराबा के सागर तक फैला है। अराबा का सागर या लवण सागर* पूरब की तरफ पिसगा की ढलानों के नीचे है।[9]

18 इसके बाद मैंने तुम लोगों को यह आज्ञा दी, 'तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने यह देश तुम्हें दे दिया है ताकि तुम इसे अपने अधिकार में कर लो। तुम्हारे बीच जितने भी योद्धा हैं, सब हथियार बाँधकर अपने बाकी इसराएली भाइयों के आगे-आगे नदी के उस पार जाएँ।[10] **19** सिर्फ तुम्हारे बीवी-बच्चे और तुम्हारे जानवर (मैं जानता हूँ कि तुम्हारे पास

अध्य. 3
1 गि 32:33; व्य 29:7, 8; यह 13:29, 30
2 लैव 27:29
3 लैव 18:25
4 गि 32:33
5 यह 12:1, 2
6 गि 21:33
7 गि 32:34

दूसरा कॉल.
1 गि 32:33
2 गि 32:39; यह 13:29-31; 1इत 5:23
3 1इत 2:22
4 व्य 3:4
5 यह 13:13
6 गि 32:40, 41
7 गि 32:39; यह 17:1
8 गि 32:33; यह 22:9
9 गि 34:11, 12
10 गि 32:20-22

3:11 *या "शव-पेटी; ताबूत।" #या शायद, "असिताश्म पत्थर।" △एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

3:14 *मतलब "याईर के कसबे।" **3:17** *यानी मृत सागर।

जानवरों के बहुत बड़े-बड़े झुंड हैं) उन शहरों में रह जाएँ जो मैंने तुम्हें दिए हैं, 20 जब तक कि यहोवा तुम्हारे भाइयों को चैन नहीं देता जैसे तुम्हें दिया है और वे भी यरदन के पार वह इलाका अपने अधिकार में न कर लें जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें देनेवाला है। फिर तुममें से हरेक अपनी-अपनी ज़मीन में लौट सकता है जो मैंने तुम्हें दी है।'[1]

21 उसी दौरान मैंने यहोशू को यह आज्ञा दी:[2] 'तूने खुद अपनी आँखों से देखा है कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने इन दोनों राजाओं का क्या हश्र किया। यहोवा नदी के पार उन सभी राज्यों के साथ भी ऐसा ही करेगा जहाँ तू जानेवाला है।[3] 22 तुम लोग उनसे बिलकुल मत डरना क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी तरफ से लड़ता है।'[4]

23 तब मैंने यहोवा से बिनती की, 24 'हे सारे जहान के मालिक यहोवा, तू अपने सेवक को अपनी महानता और अपना शक्तिशाली हाथ दिखाने लगा है।[5] आसमान में या धरती पर क्या तुझ जैसा कोई ईश्वर है जो ऐसे शक्तिशाली काम कर सके?[6] 25 अब दया करके मुझे यरदन पार जाने दे और उस बढ़िया देश को देखने दे। उस खूबसूरत पहाड़ी प्रदेश और लबानोन को एक नज़र देखने का मौका दे।'[7] 26 मगर तुम लोगों की वजह से यहोवा तब भी मुझसे भड़का हुआ था।[8] इसलिए उसने मेरी बिनती नहीं सुनी। इसके बजाय यहोवा ने मुझसे कहा, 'बस, बहुत हो गया! आइंदा कभी मुझसे इस बारे में बात मत करना। 27 तू पिसगा की चोटी पर जा[9] और वहाँ से उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम, चारों तरफ नज़र दौड़ाकर उस पूरे देश को देख क्योंकि तू इस यरदन को पार नहीं करेगा।[1] 28 और तू यहोशू को अगुवा ठहरा[2] और उसकी हिम्मत बँधा और उसे मज़बूत कर क्योंकि वही इन लोगों के आगे-आगे चलकर यरदन पार करेगा[3] और उस देश को उनके अधिकार में कर देगा जो तू देखनेवाला है।' 29 यह सब उन दिनों की घटनाएँ हैं जब हम बेत-पोर के सामनेवाली घाटी में डेरा डाले हुए थे।[4]

4 अब हे इसराएल, मैं तुम्हें जो कायदे-कानून और न्याय-सिद्धांत सिखाता हूँ उन्हें तुम ध्यान से सुनना और उनका पालन करना ताकि तुम जीते रहो[5] और उस देश में जाकर उसे अपने अधिकार में कर लो जो तुम्हारे पुरखों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें देने जा रहा है। 2 मैं तुम्हें जो आज्ञाएँ सुनाता हूँ, उनमें न तो तुम कुछ जोड़ना और न ही उनसे कुछ निकालना[6] ताकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की सभी आज्ञाओं का पालन करते रहो।

3 तुमने खुद अपनी आँखों से देखा है कि यहोवा ने पोर के बाल देवता के मामले में क्या किया था। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे बीच से ऐसे हर आदमी को मिटा दिया जिसने पोर के बाल की पूजा की थी।[7] 4 मगर तुम सब आज इसलिए ज़िंदा हो क्योंकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को मज़बूती से थामे हुए हो। 5 देखो, जैसे मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे आज्ञा दी है, मैंने तुम्हें उसके सारे कायदे-कानून और न्याय-सिद्धांत सिखाए हैं[8] ताकि तुम उस देश में उनका पालन करो जिसे तुम अपने अधिकार में करनेवाले हो। 6 तुम इन सभी कायदे-कानूनों को सख्ती से मानना[9] क्योंकि ऐसा करने से सभी राष्ट्रों के सामने तुम्हारी बुद्धि[10] और समझ[11]

अध्य. 3

1 यह 1:14, 15; यह 22:4, 8
2 गि 11:28; गि 14:30; गि 27:18
3 यह 10:25
4 निर्ग 14:14; निर्ग 15:3; व्य 1:30; व्य 20:4; यह 10:42
5 निर्ग 15:16; व्य 11:2
6 निर्ग 15:11; 2शम 7:22; 1रा 8:23; भज 86:8; यिर्म 10:6, 7
7 निर्ग 3:8; व्य 1:7; व्य 11:11, 12
8 गि 20:12; गि 27:13, 14; व्य 4:21; भज 106:32
9 गि 27:12

दूसरा कॉल.

1 व्य 34:1, 4
2 गि 27:18-20; व्य 1:38; व्य 31:7
3 यह 1:1, 2
4 व्य 4:45, 46; व्य 34:5, 6

अध्य. 4

5 लैव 18:5
6 व्य 12:32; नीत 30:5, 6; प्रक 22:18, 19
7 गि 25:5, 9; भज 106:28; हो 9:10; 1कुर 10:7, 8
8 लैव 26:46; गि 30:16; गि 36:13; व्य 6:1
9 1रा 2:3
10 भज 111:10
11 भज 119:98, 100

ज़ाहिर होगी। और वे इन कायदे-कानूनों के बारे में सुनकर कहेंगे, 'इस बड़े राष्ट्र के लोग वाकई बुद्धिमान और समझ-दार हैं।'[1] 7 ऐसा कौन-सा बड़ा राष्ट्र है जिसके देवता उसके इतने करीब रहते हैं जितना हमारा परमेश्वर यहोवा हमारे करीब रहता है? हम जब भी उसकी दुहाई देते हैं, वह फौरन हमारी सुनता है।[2] 8 ऐसा कौन-सा बड़ा राष्ट्र है जिसके कायदे-कानून और न्याय-सिद्धांत इतने सच्चे हैं जितना कि यह पूरा कानून है जो आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ?[3]

9 सावधान रहो और खुद पर कड़ी नज़र रखो ताकि जो कुछ तुमने अपनी आँखों से देखा है, उसे कभी भूल न जाओ और यह जीते-जी तुम्हारे दिल से उतरने न पाए। तुम ये सारी बातें अपने बेटों और पोतों को भी बताना।[4] 10 जिस दिन तुम होरेब में अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खड़े हुए उस दिन यहोवा ने मुझसे कहा था, 'सब लोगों को मेरे सामने इकट्ठा कर ताकि मैं उन्हें अपनी आज्ञाएँ सुनाऊँ[5] जिससे वे सारी ज़िंदगी मेरा डर मानना सीखें[6] और अपने बेटों को भी सिखाएँ।'[7]

11 तब तुम सब पहाड़ के पास आए और उसके नीचे खड़े हुए। वह पहाड़ आग से धधकने लगा और उसकी ज्वाला आसमान तक उठने लगी। चारों तरफ घोर अँधेरा और काले घने बादल छा गए।[8] 12 फिर यहोवा ने आग में से तुमसे बात करनी शुरू की।[9] तुमने सिर्फ उसकी बातें सुनीं, मगर कोई रूप नहीं देखा।[10] वहाँ सिर्फ एक आवाज़ सुनायी दे रही थी।[11] 13 परमेश्वर ने तुम्हें अपना करार[12] यानी दस आज्ञाएँ*[13] सुनायीं और तुम्हें आदेश दिया कि तुम उनका पालन करना। इसके बाद उसने पत्थर की दो पटियाओं पर वे आज्ञाएँ लिखकर दीं।[1] 14 उस वक्त यहोवा ने मुझे आज्ञा दी कि मैं तुम्हें उसके कायदे-कानून और न्याय-सिद्धांत सिखाऊँ ताकि तुम उस देश में उनका पालन करो जिसे तुम अपने अधिकार में करने-वाले हो।

15 होरेब में जब यहोवा ने तुमसे आग के बीच से बात की, तो उस वक्त तुमने उसका कोई रूप नहीं देखा था। इसलिए तुम खुद पर कड़ी नज़र रखो 16 कि तुम पूजा के लिए कोई मूरत बना-कर भ्रष्ट न हो जाओ। तुम किसी के भी रूप की मूरत नहीं बनाओगे, न आदमी की न औरत की,[2] 17 न धरती के किसी जानवर की, न आसमान में उड़ने-वाले किसी पंछी की,[3] 18 न ज़मीन पर रेंगनेवाले किसी जीव की और न ही धरती के पानी में रहनेवाली किसी मछली की।[4] 19 जब तुम आँखें उठा-कर आसमान की तरफ देखोगे और तुम्हें सूरज, चाँद और तारे नज़र आएँगे, तो तुम आकाश की सारी सेना के आगे दंड-वत करने के लिए, उसकी पूजा करने के लिए बहक मत जाना।[5] तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने यह सब आकाश के नीचे रहने-वाले सभी लोगों के लिए दिया है। 20 तुम ही वे लोग हो जिन्हें यहोवा ने लोहा पिघलानेवाले भट्ठे से, मिस्र से बाहर निकाला है ताकि तुम उसकी जागीर* बनो,[6] जैसा कि आज तुम हो।

21 तुम लोगों की वजह से यहोवा मुझ पर भड़क गया[7] और उसने शपथ खाकर कहा कि वह मुझे यरदन पार करने नहीं देगा और उस बढ़िया देश में नहीं जाने देगा जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें

अध्य. 4
1 1रा 4:34, 1रा 10:4-7, दान 1:19, 20
2 निर्ग 25:8, लैव 26:12, व्य 5:26, 2शम 7:23
3 भज 147:19, 20
4 उत 18:19, व्य 6:6, 7
5 निर्ग 19:9
6 निर्ग 20:20, व्य 5:29
7 नीत 22:6, इफ 6:4
8 निर्ग 19:18, इब्र 12:18, 19
9 व्य 9:10
10 यश 40:18, यूह 1:18, यूह 4:24
11 निर्ग 20:22
12 निर्ग 19:5, व्य 5:2, व्य 9:9, इब्र 9:19, 20
13 निर्ग 20:1, निर्ग 34:28, व्य 10:4

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 24:12, निर्ग 31:18, निर्ग 32:19, निर्ग 34:1
2 निर्ग 20:4, व्य 27:15, यश 40:18, प्रेष 17:29, 1कुर 10:14
3 व्य 5:8, रोम 1:22, 23
4 1शम 5:4
5 व्य 17:2, 3, 2रा 17:16, यहे 8:16
6 निर्ग 19:5
7 भज 106:32

4:13 *शा., "दस वचन।"

4:20 *या "विरासत।"

विरासत में देनेवाला है।[1] **22** अब इसी
देश में मेरी मौत हो जाएगी। मैं यरदन
पार नहीं करूँगा,[2] मगर तुम लोग यर-
दन पार करोगे और उस बढ़िया देश को
अपने अधिकार में कर लोगे। **23** तुम
इस बात का पूरा ध्यान रखना कि
तुम उस करार को कभी नहीं भूलोगे जो
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे साथ
किया है[3] और पूजा के लिए कोई भी
मूरत नहीं तराशोगे, किसी के भी रूप
की प्रतिमा नहीं बनाओगे जैसा कि तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें मना किया है।[4]
24 क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा भस्म
करनेवाली आग है।[5] वह ऐसा परमेश्वर
है जो माँग करता है कि सिर्फ उसी की
भक्ति की जाए।[6]

25 जब तुम्हारे बच्चे और नाती-पोते
होंगे और तुम्हें उस देश में रहते बहुत
समय बीत जाएगा, तब अगर तुम दुष्ट
काम करोगे और किसी तरह की मूरत
तराशोगे[7] और इस तरह अपने परमेश्वर
यहोवा की नज़र में बुरा काम करके
उसका गुस्सा भड़काओगे,[8] **26** तो यह
तय है कि तुम उस देश से फौरन मिट
जाओगे जिसे तुम यरदन पार करके
अपने अधिकार में करनेवाले हो। आज मैं
आकाश और धरती को गवाह ठहराकर
तुमसे यह बात कह रहा हूँ। तुम उस देश
में ज़्यादा दिन नहीं रह पाओगे बल्कि पूरी
तरह तबाह हो जाओगे।[9] **27** यहोवा
तुम्हें दूसरे देशों में बिखरा देगा।[10] जिन
राष्ट्रों में यहोवा तुम्हें भगाएगा वहाँ तुममें
से मुट्ठी-भर लोग ही ज़िंदा बचेंगे।[11]
28 वहाँ तुम्हें इंसान के हाथ के बनाए
लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा
करनी होगी,[12] जो न देख सकते हैं, न
सुन सकते हैं, न खा सकते हैं और न ही
सूँघ सकते हैं।

29 अगर तुम वहाँ रहते अपने पर-
मेश्वर यहोवा की खोज करोगे और पूरे
दिल और पूरी जान से उसे ढूँढ़ोगे[1] तो
उसे ज़रूर पाओगे।[2] **30** भविष्य में जब
तुम पर ये सारी मुसीबतें टूट पड़ेंगी और
तुम बड़े संकट में होगे, तब तुम अपने पर-
मेश्वर यहोवा के पास लौट आओगे और
उसकी बात मानोगे।[3] **31** तुम्हारा पर-
मेश्वर यहोवा एक दयालु परमेश्वर है।[4]
वह तुम्हें कभी नहीं त्यागेगा, न ही तुम्हें
मिटने देगा। उसने शपथ खाकर तुम्हारे
पुरखों के साथ जो करार किया था, उसे
वह हरगिज़ नहीं भूलेगा।[5]

32 अब ज़रा गुज़रा ज़माना याद
करो। जिस दिन परमेश्वर ने धरती पर
इंसान की सृष्टि की थी तब से लेकर
तुम्हारे वजूद में आने से पहले का समय
याद करो। आसमान के एक छोर से दूसरे
छोर तक पता लगाओ। क्या पहले कभी
ऐसी महान घटना हुई या किसी ने ऐसी
घटना के बारे में सुना है?[6] **33** क्या
किसी और राष्ट्र के लोगों ने कभी आग में
से परमेश्वर को बोलते हुए सुना फिर भी
ज़िंदा बचे, जैसे तुम उसकी आवाज़ सुन-
कर भी ज़िंदा हो?[7] **34** तुमने खुद
अपनी आँखों से देखा कि तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा ने तुम्हें मिस्र से निकालकर अपनी
प्रजा बनाने के लिए क्या-क्या किया।
उसने मिस्र पर एक-के-बाद-एक कहर
ढाए, वहाँ चिन्ह और चमत्कार किए,[8]
युद्ध किया,[9] दिल दहलानेवाले काम
किए[10] और अपना शक्तिशाली हाथ[11]
बढ़ाकर तुम्हें वहाँ से बाहर निकाला।
क्या उसने इससे पहले कभी किसी राष्ट्र
में से दूसरे राष्ट्र को निकालने के लिए
ऐसा किया? **35** यह सब तुम्हें इस-
लिए दिखाया गया ताकि तुम जान लो
कि यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है।[12]

अध्य. 4
1 गि 20:12
व्य 31:1, 2
2 व्य 3:27
3 निर्ग 24:3
4 निर्ग 20:4
5 निर्ग 24:17
व्य 9:3
इब्र 12:29
6 निर्ग 20:5
निर्ग 34:14
गि 25:11
लूक 10:27
7 न्या 18:30
2रा 21:1, 7
8 2रा 17:16, 17
9 लैव 18:24, 28
लैव 26:27, 32
10 व्य 28:64
नहे 1:8
11 व्य 28:62
12 व्य 28:15, 36
यिर्म 16:13
यहे 20:39

दूसरा कॉल.
1 व्य 30:1-3
व्य 30:8-10
1रा 8:48, 49
यिर्म 29:13
योए 2:12
2 2इत 15:4, 15
3 2इत 33:13
नहे 1:9
4 निर्ग 34:6
व्य 30:3
2इत 30:9
नहे 9:31
यश 54:7
यश 55:7
5 लैव 26:42
6 भज 44:1
7 व्य 5:26
8 निर्ग 7:3
9 निर्ग 15:3
10 व्य 26:8
भज 78:43-51
11 निर्ग 13:3
12 निर्ग 6:7

उसके सिवा और कोई परमेश्‍वर नहीं।[1]
36 उसने तुम्हें सुधारने के लिए स्वर्ग से
तुमसे बात की। और धरती पर तुम्हें
अपनी बड़ी आग दिखायी और तुमने उसे
आग में से बात करते सुना।[2]

37 परमेश्‍वर तुम्हारे पुरखों से बहुत
प्यार करता था और उसने उनके
बाद उनके वंश को चुना।[3] इसीलिए
उसने तुम्हारे साथ रहकर अपनी महा-
शक्‍ति से तुम्हें मिस्र से बाहर निकाला।
38 उसने तुम्हारे सामने से ऐसे राष्ट्रों को
खदेड़ा जो तुमसे कहीं ज़्यादा बड़े और
ताकतवर थे ताकि तुम्हें उनके देश में ले
जाए और उनकी ज़मीन तुम्हें विरासत में
दे, जैसा कि आज हो रहा है।[4] 39 इस-
लिए आज यह बात जान लो और
अपने दिल में बिठा लो कि ऊपर आस-
मान में और नीचे धरती पर सिर्फ यहोवा
ही सच्चा परमेश्‍वर है।[5] उसके सिवा और
कोई परमेश्‍वर नहीं।[6] 40 और आज
मैं तुम्हें जो कायदे-कानून और आज्ञाएँ
देता हूँ उनका तुम ज़रूर पालन किया
करना ताकि तुम्हारा और तुम्हारे बाद
तुम्हारे बच्चों का भला हो और तुम उस
देश में लंबी ज़िंदगी जीओ जो तुम्हारा पर-
मेश्‍वर यहोवा तुम्हें देनेवाला है।"[7]

41 उस वक्‍त मूसा ने यरदन के
पूरब में तीन शहर अलग ठहराए।[8]
42 अगर कोई आदमी अनजाने में, न
कि नफरत की वजह से, किसी का खून
कर देता है[9] तो उसे इनमें से किसी शहर
में भाग जाना चाहिए और वहीं रहना
चाहिए।[10] 43 ये तीन शहर हैं, पठारी
इलाके के वीराने का बेसेर,[11] जो रूबे-
नियों के लिए है, गिलाद का रामोत[12]
जो गादियों के लिए है और बाशान
का गोलान[13] जो मनश्‍शे के वंशजों के
लिए है।[14]

44 यह वह कानून है[1] जो मूसा ने
इसराएल के लोगों को दिया। 45 जब
इसराएली मिस्र से निकले तो उसके बाद
मूसा ने उन्हें ये कायदे-कानून, न्याय-
सिद्धांत और याद दिलाने के लिए हिदाय-
तें दीं।[2] 46 मूसा ने लोगों को यह सब
उस वक्‍त बताया जब वे यरदन के
पास बेतपोर के सामनेवाली घाटी में
थे।[3] बेतपोर, हेशबोन में रहनेवाले एमो-
रियों के राजा सीहोन के देश में है।[4]
मूसा और इसराएलियों ने मिस्र से निकल-
ने के बाद इस राजा को हराया था।[5]
47 उन्होंने उसका देश और बाशान के
राजा ओग का देश अपने कब्ज़े में कर
लिया।[6] ये दोनों एमोरी राजा यरदन के
पूरब के प्रांत में रहते थे। 48 इसराए-
लियों ने अरनोन घाटी के पास अरोएर[7]
से लेकर सीओन यानी हेरमोन पहाड़ तक
का पूरा इलाका[8] और 49 यरदन के
पूरब में पूरा अराबा और दूर पिसगा की
ढलानों के नीचे अराबा के सागर* तक
का इलाका ले लिया।[9]

5 मूसा ने सभी इसराएलियों को बुलाया
और उनसे कहा, "इसराएलियो,
आज मैं तुम्हें जो कायदे-कानून और
न्याय-सिद्धांत सुनाता हूँ उन्हें तुम ध्यान
से सुनना। तुम उनके बारे में सीखना
और सख्ती से उनका पालन करना।
2 हमारे परमेश्‍वर यहोवा ने होरेब में
हमारे साथ एक करार किया था।[10]
3 यहोवा ने यह करार हमारे पुरखों के
साथ नहीं बल्कि हम सबके साथ किया जो
आज ज़िंदा हैं। 4 यहोवा ने उस पहाड़
पर आग में से तुमसे आमने-सामने बात
की थी।[11] 5 उस वक्‍त मैं यहोवा और
तुम्हारे बीच खड़ा था[12] ताकि यहोवा का

4:49 *यानी लवण सागर या मृत सागर।

अध्य. 4
1 निर्ग 15:11; व्य 32:39; 1शम 2:2; यश 45:18; मर 12:32
2 निर्ग 19:18; निर्ग 20:22
3 व्य 10:15; भज 105:6
4 निर्ग 23:28; व्य 7:1; व्य 9:1; यह 3:10
5 2इत 20:6
6 यश 44:6
7 उत 48:3, 4
8 गि 35:14
9 गि 35:22-24
10 गि 35:11, 25; व्य 19:4, 5
11 यह 21:8, 36
12 यह 21:8, 38
13 यह 21:27
14 यह 20:8, 9

दूसरा कॉल.
1 व्य 17:18; व्य 27:2, 3; गल 3:24
2 लैव 26:46; व्य 4:1
3 व्य 1:5; व्य 3:29
4 गि 21:26
5 गि 21:23, 24
6 गि 21:33; व्य 3:4
7 व्य 2:36; व्य 3:12
8 व्य 3:8, 9
9 व्य 3:16, 17; व्य 34:1

अध्य. 5
10 निर्ग 19:5; इब्र 9:19, 20
11 निर्ग 19:9, 18; प्रेष 7:38
12 निर्ग 20:19; गल 3:19

संदेश तुम तक पहुँचा सकूँ क्योंकि तुम पहाड़ पर आग देखकर डर गए थे और पहाड़ के ऊपर नहीं गए।[1] तब परमेश्वर ने कहा था,

6 ‘मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम्हें गुलामी के घर, मिस्र से बाहर निकाल लाया।[2] **7** मेरे सिवा तुम्हारा कोई और ईश्वर न हो।*[3]

8 तुम अपने लिए कोई मूरत न तराशना।[4] ऊपर आसमान में, नीचे ज़मीन पर और पानी में जो कुछ है, उनमें से किसी के भी आकार की कोई चीज़ न बनाना। **9** तुम उनके आगे दंडवत न करना और न ही बहकावे में आकर उनकी पूजा करना,[5] क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा माँग करता हूँ कि सिर्फ मेरी भक्ति की जाए, मुझे छोड़ किसी और की नहीं।[6] जो मुझसे नफरत करते हैं उनके गुनाह की सज़ा मैं उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी देता हूँ।[7] **10** मगर जो मुझसे प्यार करते हैं और मेरी आज्ञाएँ मानते हैं, उनकी हज़ारों पीढ़ियों से मैं प्यार* करता हूँ।

11 तुम अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का गलत इस्तेमाल न करना[8] क्योंकि जो उसके नाम का गलत इस्तेमाल करता है उसे यहोवा सज़ा दिए बिना नहीं छोड़ेगा।[9]

12 तुम सब्त का दिन मनाया करना और इसे पवित्र मानना, ठीक जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आज्ञा दी है।[10] **13** घर-बाहर का जो भी काम या मज़दूरी हो, तुम छः दिन तक करना।[11] **14** मगर सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए अलग ठहराया गया सब्त है।[1] इस दिन न तुम, न तुम्हारे बेटे-बेटियाँ और न ही तुम्हारे शहरों में* रहनेवाले परदेसी कोई काम करें। तुम अपने बैल, गधे और दूसरे पालतू जानवरों से भी कोई काम न लेना।[2] तुम अपने दास-दासियों से भी कोई काम न करवाना ताकि इस दिन वे भी तुम्हारी तरह विश्राम कर सकें।[3] **15** मत भूलना कि मिस्र में तुम भी गुलाम थे और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने अपना शक्तिशाली हाथ बढ़ाकर तुम्हें वहाँ से बाहर निकाला।[4] इसीलिए तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें सब्त का दिन मानने की आज्ञा दी है।

16 अपने पिता और अपनी माँ का आदर करना,[5] ठीक जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आज्ञा दी है। तब तुम उस देश में लंबी ज़िंदगी जीओगे और खुशहाल रहोगे* जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देनेवाला है।[6]

17 तुम खून न करना।[7]

18 तुम व्यभिचार* न करना।[8]

19 तुम चोरी न करना।[9]

20 तुम अपने संगी-साथी के खिलाफ झूठी गवाही न देना।[10]

21 तुम अपने संगी-साथी की पत्नी का लालच न करना।[11] तुम उसके घर या खेत या दास-दासी या उसके बैल या गधे या उसकी किसी भी चीज़ का लालच न करना।’[12]

22 यहोवा ने तुम लोगों की पूरी मंडली को ये आज्ञाएँ* उस वक्त सुनायी थीं जब उसने पहाड़ पर आग में से

5:7 *या “तुम मेरे खिलाफ जाकर किसी और ईश्वर को न मानना।” **5:10** *या “अटल प्यार।” **5:14** *शा., “फाटकों के अंदर।” **5:16** *या “और तुम्हारा भला होगा।” **5:18** *शब्दावली देखें। **5:22** *शा., “वचन।”

अध्य. 5
1 निर्ग 19:16
2 निर्ग 20:2
3 निर्ग 20:3-6
2रा 17:35
4 लैव 26:1
व्य 4:15, 16
व्य 27:15
प्रेष 17:29
5 निर्ग 23:24
1कुर 10:14
6 निर्ग 34:14
व्य 4:24
यश 42:8
मत 4:10
7 निर्ग 34:6, 7
8 निर्ग 22:28
लैव 19:12
9 निर्ग 20:7
लैव 24:16
10 निर्ग 16:23
निर्ग 20:8-10
निर्ग 31:13
11 निर्ग 34:21

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 16:29
2 निर्ग 23:12
नहे 13:15
3 व्य 10:17
इफ 6:9
4 निर्ग 6:6
व्य 4:34
5 निर्ग 21:15
व्य 27:16
नीत 1:8
मर 7:10
6 निर्ग 20:12
इफ 6:2, 3
7 उत 9:6
निर्ग 20:13
गि 35:20, 21
मत 5:21
रोम 13:9
8 निर्ग 20:14
1कुर 6:18
इब्र 13:4
9 निर्ग 20:15
लैव 19:11
नीत 30:8, 9
1कुर 6:10
इफ 4:28
10 निर्ग 20:16
निर्ग 23:1
लैव 19:16
व्य 19:16-19
नीत 6:16, 19
11 मत 5:28
12 निर्ग 20:17
लूक 12:15
रोम 7:7

बात की थी। उस वक्त वहाँ बादल और घोर अंधकार छा गया[1] और उसने बुलंद आवाज़ में तुमसे बात की। इन आज्ञाओं के साथ उसने कुछ और नहीं जोड़ा। फिर उसने ये आज्ञाएँ पत्थर की दो पटियाओं पर लिखकर मुझे दीं।[2]

23 जब वह पहाड़ आग से धधक रहा था तब जैसे ही घोर अंधकार में से तुम्हें आवाज़ सुनायी पड़ी,[3] तुम्हारे गोत्रों के प्रधान और मुखिया फौरन मेरे पास आए। 24 फिर तुमने मुझसे कहा, 'आज हमारे परमेश्वर यहोवा ने अपनी महिमा और महानता हम पर प्रकट की है और हमने आग में से उसकी आवाज़ सुनी है।[4] आज हम जान गए कि परमेश्वर इंसान से बात कर सकता है और इंसान उसकी आवाज़ सुनने के बाद भी ज़िंदा रह सकता है।[5] 25 लेकिन हमें डर है कि यह आग हमें भस्म न कर दे और हम मर न जाएँ। अगर हमने यहोवा की आवाज़ और सुनी तो ज़रूर मर जाएँगे। 26 भला आज तक ऐसा हुआ है कि किसी इंसान ने हमारी तरह जीवित परमेश्वर को आग में से बात करते सुना हो और फिर भी ज़िंदा बचा हो? 27 इसलिए हमारा परमेश्वर यहोवा जो कहता है उसे सुनने के लिए अब तू ही उसके पास जा। फिर तू आकर हमें बताना कि हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुझे क्या-क्या बताया है। हम तुझसे सुन लेंगे और उसके मुताबिक करेंगे।'[6]

28 जब तुम मुझसे यह बात कह रहे थे तो यहोवा ने यह सब सुना। यहोवा ने मुझसे कहा, 'इन सब लोगों ने तुझसे जो कहा है वह मैंने सुना है। ये लोग ठीक कह रहे हैं।[7] 29 अगर वे अपने दिल में हमेशा मेरे लिए डर बनाए रखेंगे[8] और मेरी सभी आज्ञाओं का पालन किया करेंगे,[1] तो ही उनका और उनकी संतान का सदा भला होगा।[2] 30 अब तू जा और उनसे कह, "तुम सब अपने-अपने तंबू में लौट जाओ।" 31 मगर तू यहाँ मेरे पास ही रह। मैं तुझे अपनी सभी आज्ञाएँ, कायदे-कानून और न्याय-सिद्धांत बताऊँगा। इसके बाद तू जाकर यह सब उन्हें सिखाना ताकि वे उस देश में इनका पालन करें जो मैं उनके अधिकार में करनेवाला हूँ।' 32 तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें जो-जो आज्ञा दी है, उसका तुम सख्ती से पालन करना।[3] तुम न दाएँ मुड़ना न बाएँ।[4] 33 तुम उसी राह पर चलना जिस पर चलने की आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी है।[5] तब तुम उस देश में लंबी और खुशहाल ज़िंदगी जीओगे जिसे तुम अपने अधिकार में करनेवाले हो।[6]

6 तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मुझे ये आज्ञाएँ, कायदे-कानून और न्याय-सिद्धांत तुम्हें सिखाने के लिए दिए हैं ताकि तुम यरदन पार करके जिस देश को अपने अधिकार में करोगे, वहाँ तुम इनका पालन करो 2 और सारी ज़िंदगी अपने परमेश्वर यहोवा का डर मानो और उसकी सभी विधियों और आज्ञाओं का पालन करो, जो मैं तुम्हारे लिए और तुम्हारे बेटों और पोतों के लिए दे रहा हूँ[7] जिससे कि तुम एक लंबी ज़िंदगी जी सको।[8] 3 हे इसराएल, तू इन आज्ञाओं को ध्यान से सुनना और सख्ती से इनका पालन करना। फिर तू उस देश में, जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं, खुशहाल रहेगा और गिनती में बढ़ जाएगा, ठीक जैसे तेरे पुरखों के परमेश्वर यहोवा ने तुझसे वादा किया है।

4 हे इसराएल सुन, हमारा परमेश्वर यहोवा एक ही यहोवा है।[9]

अध्य. 5

1 निर्ग 19:9, 18
2 निर्ग 24:12, निर्ग 31:18, व्य 4:12, 13
3 निर्ग 20:18, इब्र 12:18, 19
4 निर्ग 24:17
5 व्य 4:33, 36
6 निर्ग 20:19, इब्र 12:18, 19
7 व्य 18:16, 17
8 व्य 10:12, अय 28:28, नीत 1:7, मत 10:28, 1पत 2:17

दूसरा कॉल.

1 नीत 4:4, नीत 7:2, सभ 12:13, यश 48:18, 1यूह 5:3
2 भज 19:8, 11, याकू 1:25
3 व्य 6:3, 25, व्य 8:1
4 व्य 12:32, यह 1:7, 8
5 व्य 10:12
6 व्य 4:40, व्य 12:28, रोम 10:5

अध्य. 6

7 उत 18:19, व्य 4:9
8 नीत 3:1, 2
9 व्य 5:7, यश 42:8, जक 14:9, मर 12:29, 32, 1कुर 8:6

5 तू अपने परमेश्‍वर यहोवा से पूरे दिल, पूरी जान*[1] और पूरी ताकत# से प्यार करना।[2] 6 आज मैं तुझे जो आज्ञाएँ दे रहा हूँ, वे तेरे दिल में बनी रहें। 7 और तू इन्हें अपने बेटों के मन में बिठाना*[3] और अपने घर में बैठे, सड़क पर चलते, लेटते, उठते इनके बारे में उनसे चर्चा करना।[4] 8 तू इन आज्ञाओं को याद-गार के लिए अपने हाथ पर बाँध लेना और माथे की पट्टी की तरह सिर पर* लगाए रखना।[5] 9 तू इन्हें अपने घर के दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं पर और शहर के फाटकों पर लिखना।

10 जब तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हें उस देश में ले जाएगा जिसे देने के बारे में उसने तुम्हारे पुरखों से, अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ खायी थी,[6] तो वह तुम्हें वहाँ बड़े-बड़े खूबसूरत शहर देगा जिन्हें तुमने नहीं बनाया[7] 11 और ऐसे घर देगा जो हर तरह की बढ़िया चीज़ों से भरे होंगे जिनके लिए तुमने कोई मेह-नत नहीं की, ज़मीन में खुदे हुए हौद देगा जिन्हें तुमने नहीं खोदा, अंगूरों के बाग और जैतून के पेड़ देगा जिन्हें तुमने नहीं लगाया। जब तुम खाओगे और संतुष्ट हो जाओगे,[8] 12 तो सावधान रहना कि कहीं तुम यहोवा को भूल न जाओ[9] जो तुम्हें गुलामी के घर, मिस्र से बाहर निकाल लाया है। 13 तुम अपने पर-मेश्‍वर यहोवा का डर मानना[10] और उसी की सेवा करना[11] और उसके नाम से शपथ लेना।[12] 14 तुम दूसरे देव-ताओं के पीछे न जाना, अपने आस-पास की जातियों के किसी भी देवता के पीछे न जाना[1] 15 क्योंकि तुम्हारा पर-मेश्‍वर यहोवा, जो तुम्हारे बीच मौजूद है, माँग करता है कि सिर्फ उसी की भक्‍ति की जाए।[2] अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा के क्रोध की ज्वाला तुम पर भड़क उठेगी[3] और वह धरती से तुम्हारा नामो-निशान मिटा देगा।[4]

16 तुम अपने परमेश्‍वर यहोवा की परीक्षा न लेना[5] जैसे तुमने मस्सा में उसकी परीक्षा ली थी।[6] 17 तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा ने तुम्हें जो आज्ञाएँ और कायदे-कानून दिए हैं और जो हिदाय-तें याद दिलायी हैं, उन्हें तुम पूरी लगन से मानना। 18 तुम वही करना जो यहोवा की नज़र में सही और भला है ताकि तुम खुशहाल रहो और उस बढ़िया देश में जाकर उसे अपने अधिकार में कर लो जिसे देने के बारे में यहोवा ने तुम्हारे पुरखों से शपथ खायी थी।[7] 19 तुम अपने सामने से अपने सभी दुश्‍मनों को खदेड़ दोगे, ठीक जैसे यहोवा ने वादा किया है।[8]

20 भविष्य में जब तुम्हारे बेटे तुमसे पूछेंगे, 'हमारे परमेश्‍वर यहोवा ने तुम्हें ये कायदे-कानून और न्याय-सिद्धांत और याद दिलाने के लिए हिदायतें क्यों दी हैं?' 21 तो तुम उनसे कहना, 'हम मिस्र में फिरौन के गुलाम थे, मगर यहोवा अपने शक्‍तिशाली हाथ से हमें मिस्र से निकाल लाया। 22 यहोवा ने हमारी आँखों के सामने मिस्र में बड़े-बड़े चिन्ह और चमत्कार किए,[9] जिससे पूरा मिस्र और फिरौन और उसका पूरा घराना तबाह हो गया।[10] 23 फिर वह हमें वहाँ से निकालकर यहाँ ले आया ताकि हमें यह देश दे जिसके बारे में

अध्य. 6
1 व्य 10:12, व्य 11:13, व्य 30:6, मत 22:37
2 मर 12:30, 33, लूक 10:27
3 उत 18:19, व्य 4:9, नीत 22:6, इफ 6:4
4 व्य 11:19
5 व्य 11:18
6 उत 15:18
7 यह 24:13, भज 105:44
8 व्य 8:10
9 न्या 3:7
10 व्य 10:12, व्य 13:4
11 लूक 4:8
12 यिर्म 12:16

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 34:14
2 निर्ग 20:5, व्य 4:24
3 निर्ग 32:9, 10, गि 25:3, व्य 11:16, 17, न्या 2:14
4 2रा 17:18
5 मत 4:7, लूक 4:12, 1कुर 10:9
6 निर्ग 17:2, 7, भज 95:8, 9, इब्र 3:8, 9
7 उत 15:18
8 निर्ग 23:30
9 निर्ग 7:3
10 व्य 4:34

6:5 *शब्दावली में "जीवन" देखें। #या "तुझमें जो दमखम है; तेरे पास जो कुछ है।" **6:7** *या "के सामने दोहराना; मन पर छापना।" **6:8** *शा., "अपनी आँखों के बीच।"

उसने हमारे पुरखों से शपथ खायी थी।[1]
24 फिर यहोवा ने हमें आज्ञा दी कि हम
इन सभी कायदे-कानूनों का पालन करें
और अपने परमेश्‍वर यहोवा का डर मानें
जिससे हमेशा हमारा भला हो[2] और हम
जीते रहें,[3] जैसे कि आज हम जीवित हैं।
25 अगर हम अपने परमेश्‍वर यहोवा की
आज्ञा के मुताबिक* इन सारे नियमों को
सख्ती से मानेंगे तो हम उसकी नज़र में
नेक ठहरेंगे।'[4]

7 जब तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हें
उस देश में पहुँचा देगा जिसे तुम
बहुत जल्द अपने अधिकार में करने
जा रहे हो,[5] तो वह तुम्हारे सामने से
इन सात बड़ी-बड़ी जातियों को, हित्तियों,
गिरगाशियों, एमोरियों,[6] कनानियों, परि-
ज्जियों, हिव्वियों और यबूसियों[7] को हटा
देगा[8] जिनकी आबादी तुमसे ज़्यादा है
और जो तुमसे ज़्यादा ताकतवर हैं।[9]
2 तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा उन्हें तुम्हारे
हाथ में कर देगा और तुम उन्हें हरा
दोगे।[10] तुम उन्हें हर हाल में नाश कर
देना।[11] तुम उनके साथ कोई भी करार
न करना, न ही उन पर तरस खाना।[12]
3 तुम उनके साथ शादी के ज़रिए रिश्‍ते-
दारी न करना। न अपनी बेटियाँ उनके
बेटों के लिए देना और न उनकी बेटियाँ
अपने बेटों के लिए लेना,[13] 4 क्योंकि
वे तुम्हारे बच्चों को बहका देंगे और
तुम्हारे बच्चे मुझसे मुँह मोड़ लेंगे और
दूसरे देवताओं की सेवा करने लगेंगे।[14]
तब यहोवा के क्रोध की ज्वाला तुम पर
भड़क उठेगी और वह पल-भर में तुम्हें
मिटा देगा।[15]

5 तुम उन जातियों के साथ यह
करना: उनकी वेदियाँ ढा देना, उनके
पूजा-स्तंभ चूर-चूर कर देना,[1] उनकी
पूजा-लाठें* काट डालना[2] और उनकी
खुदी हुई मूरतें जला देना,[3] 6 क्योंकि
तुम अपने परमेश्‍वर यहोवा के लिए
पवित्र राष्ट्र हो और तुम्हारे परमेश्‍वर
यहोवा ने धरती के सब देशों में से तुम्हें
चुना है ताकि वह तुम्हें अपने लोग और
अपनी खास जागीर* बनाए।[4]

7 यहोवा ने तुम्हें जो अपनापन
दिखाया और तुम्हें चुना, वह इसलिए नहीं
था कि तुम बाकी देशों से तादाद में ज़्यादा
थे।[5] दरअसल तुम तो सब राष्ट्रों से छोटे
थे।[6] 8 यहोवा ने अपने शक्‍तिशाली
हाथ से तुम्हें गुलामी के घर, मिस्र और
राजा फिरौन के हाथ से इसलिए छुड़ाया[7]
क्योंकि यहोवा तुमसे बहुत प्यार करता है
और उसने तुम्हारे पुरखों से शपथ खाकर
जो वादा किया था उसे निभाया है।[8]
9 तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम्हारा
परमेश्‍वर यहोवा सच्चा परमेश्‍वर है और
वह एक विश्‍वासयोग्य परमेश्‍वर है। जो
उससे प्यार करते और उसकी आज्ञाएँ
मानते हैं, वह उनके साथ और उनकी
हज़ार पीढ़ियों के साथ अपना करार
निभाता है और उनसे प्यार* करता है।[9]
10 मगर जो उससे नफरत करते हैं,
उन्हें वह सीधे-सीधे इसका बदला चुकाए-
गा और उन्हें नाश कर देगा।[10] वह उनसे
निपटने में बिलकुल भी देर नहीं करेगा।
वह सीधे-सीधे उनका बदला चुकाएगा।
11 इसलिए तुम इस बात का ध्यान
रखना कि तुम उन आज्ञाओं, कायदे-
कानूनों और न्याय-सिद्धांतों का हमेशा
पालन करोगे जो आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ।

12 अगर तुम इन न्याय-सिद्धांतों पर
हमेशा ध्यान दोगे, इनका पालन करोगे

अध्य. 6
1 निर्ग 13:5, व्य 1:8
2 भज 111:10, नीत 14:27
3 लैव 18:5, व्य 4:1, गल 3:12
4 सभ 12:13, रोम 10:5

अध्य. 7
5 व्य 31:3
6 उत 15:16
7 उत 10:15-17
8 निर्ग 33:2, यह 3:10
9 व्य 20:1
10 गि 33:52
11 लैव 27:29, यह 6:17, यह 10:28
12 निर्ग 23:32, निर्ग 34:15, व्य 20:16, 17
13 यह 23:12, 13, 1रा 11:1, 2, एज 9:2
14 निर्ग 34:16, 1रा 11:4
15 व्य 6:14, 15

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 23:24, निर्ग 34:13
2 व्य 16:21, 22
3 व्य 7:25, व्य 12:2, 3
4 निर्ग 19:5, 6, व्य 14:2, आम 3:2
5 व्य 10:15
6 व्य 10:22
7 निर्ग 6:6, निर्ग 13:3, 14
8 उत 22:16, 17
9 निर्ग 34:6, 7
10 नीत 2:22, 2पत 3:7

6:25 *शा., "यहोवा के सामने।"

7:5 *शब्दावली देखें। 7:6 *या "अनमोल जायदाद।" 7:9 *या "अटल प्यार।"

और इनके मुताबिक काम करोगे, तो
तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा अपना करार
निभाएगा और तुमसे प्यार* करेगा, ठीक
जैसे उसने तुम्हारे पुरखों से शपथ खायी
थी। **13** वह तुमसे प्यार करेगा, तुम्हें
आशीष देगा और तुम्हारी गिनती बढ़ाए-
गा। परमेश्‍वर ने तुम्हें जो देश देने
की शपथ तुम्हारे पुरखों से खायी थी,[1]
उस देश में वह तुम पर आशीषों की
बौछार करेगा, तुम्हारे बहुत-से बच्चे
होंगे,*[2] तुम्हारी ज़मीन से भरपूर उपज
होगी, तुम्हारे पास अनाज, नयी दाख-
मदिरा और तेल की भरमार होगी[3]
और तुम्हारी भेड़-बकरियाँ और गायें खूब
बच्चे देंगी। **14** दुनिया के सभी देशों में
से तुम सबसे सुखी होगे।[4] तुम्हारे बीच
कोई भी औरत या आदमी बेऔलाद
नहीं होगा। तुम्हारा कोई भी पालतू
जानवर ऐसा न होगा जो बच्चे न दे।[5]
15 यहोवा तुम्हारे बीच से हर तरह की
बीमारी दूर कर देगा। वह तुम पर
ऐसी खतरनाक बीमारियाँ नहीं लाएगा जो
तुमने मिस्र में देखी थीं।[6] इसके बजाय,
वह उन लोगों पर ये बीमारियाँ ले आएगा
जो तुमसे नफरत करते हैं। **16** तुम उन
सभी जातियों को नाश कर देना जिन्हें
तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हारे हाथ में
कर देगा।[7] तुम* उन पर बिलकुल दया
मत करना।[8] और तुम उनके देवताओं
की सेवा न करना,[9] क्योंकि यह तुम्हारे
लिए फंदा बन जाएगा।[10]

17 हो सकता है तुम्हारे मन में यह
सवाल उठे, 'इन जातियों की आबादी
हमसे ज़्यादा है, हम इन्हें कैसे भगा
सकते हैं?'[11] **18** मगर तुम उनसे बिल-
कुल मत डरना।[1] तुम हमेशा याद रखना,
तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा ने फिरौन और
पूरे मिस्र का क्या किया था।[2] **19** तुमने
खुद अपनी आँखों से देखा कि तुम्हारे पर-
मेश्‍वर यहोवा ने कैसे मिस्र को कड़ी-से-
कड़ी सज़ा दी, वहाँ चिन्ह और चमत्कार
किए[3] और अपना शक्‍तिशाली हाथ
बढ़ाकर तुम्हें वहाँ से बाहर निकाला।[4]
इन सब जातियों के साथ भी तुम्हारा पर-
मेश्‍वर यहोवा ऐसा ही करेगा जिनसे
तुम डरते हो।[5] **20** तुम्हारा परमेश्‍वर
यहोवा उनका हौसला तोड़ देगा* और
वह ऐसा तब तक करेगा जब तक कि उन
सबका नाश नहीं हो जाता जो बच जाते
हैं[6] और खुद को छिपा लेते हैं। **21** तुम
उनसे मत डरना क्योंकि तुम्हारा परमेश्‍वर
यहोवा तुम्हारे साथ है।[7] वह महान और
विस्मयकारी परमेश्‍वर है।[8]

22 तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा उन सभी
जातियों को थोड़ा-थोड़ा करके तुम्हारे
सामने से भगा देगा।[9] तुम्हें उन सबको
एक ही बार में मिटाने की इजाज़त नहीं दी
जाएगी ताकि देश बंजर न हो जाए
और जंगली जानवरों की गिनती न बढ़
जाए जिससे तुम्हें खतरा हो सकता है।
23 तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा उन जातियों
को तुम्हारे हाथ में कर देगा और तुम तब
तक उन्हें हराते रहोगे जब तक कि वे मिट
न जाएँ।[10] **24** वह उनके राजाओं को
तुम्हारे हाथ में दे देगा[11] और तुम धरती
से* उनका नाम मिटा दोगे।[12] उनमें से
कोई भी तुम्हारे खिलाफ नहीं उठेगा[13]
और तुम उन सबका नाश कर दोगे।[14]
25 तुम उनके देवताओं की खुदी हुई
मूरतें जला देना।[15] उन मूरतों पर जो
सोना-चाँदी है उसका तुम लालच न करना

7:12 *या "अटल प्यार।" **7:13** *शा., "तुम्हारे गर्भ के फल पर आशीष देगा।" **7:16** *शा., "तुम्हारी आँखें।"

7:20 *या शायद, "उनमें डर; आतंक फैला देगा।" **7:24** *शा., "आकाश के नीचे से।"

अध्य. 7
1 उत 13:14, 15
2 लैव 26:9
3 लैव 26:4
4 व्य 33:29
भज 147:20
5 निर्ग 23:26
व्य 28:11
भज 127:3
6 व्य 28:15, 27
7 व्य 7:1, 2
व्य 20:16
यह 10:28
8 उत 15:16
लैव 18:25
व्य 9:5
9 निर्ग 20:3
10 निर्ग 23:33
व्य 12:30
न्या 2:2, 3
भज 106:36
11 गि 13:31

दूसरा कॉल.
1 व्य 1:29
व्य 31:6
भज 27:1
यश 41:10
2 निर्ग 14:13
3 नहे 9:10, 11
यिर्म 32:20
4 व्य 4:34
5 निर्ग 23:28
यह 3:10
6 निर्ग 23:29
व्य 2:25
यह 2:9
यह 24:12
7 गि 14:9
8 व्य 10:17
1शम 4:7, 8
9 निर्ग 23:30
10 व्य 9:3
11 यह 10:24
यह 12:1
12 निर्ग 17:14
भज 9:5
13 व्य 11:25
यह 1:5
रोम 8:31
14 यह 11:14
15 व्य 12:3
1इत 14:12

और अपने लिए मत लेना[1] ताकि तुम उसकी वजह से फंदे में न फँस जाओ क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की नज़र में घिनौना है।[2] **26** तुम कोई भी घिनौनी चीज़ अपने घर के अंदर मत लाना क्योंकि ऐसा करने से तुम भी उन घिनौनी चीज़ों की तरह नाश के लायक ठहरोगे। ऐसी चीज़ों से तुम सख्त नफरत करना, उनसे घिन करना क्योंकि वे नाश के लायक हैं।

8 आज मैं तुम्हें जो आज्ञाएँ दे रहा हूँ उनमें से हर आज्ञा का तुम सख्ती से पालन करना। तब तुम जीते रहोगे,[3] तुम्हारी गिनती बढ़ती जाएगी और तुम उस देश में जाकर उसे अपने अधिकार में कर लोगे जिसे देने के बारे में यहोवा ने तुम्हारे पुरखों से शपथ खायी थी।[4] **2** तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने 40 साल तक तुम्हें वीराने के जिस लंबे रास्ते से पैदल चलवाया वह सफर तुम कभी मत भूलना।[5] परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि वह तुम्हें नम्र बनना सिखाए और तुम्हें परखे[6] कि तुम्हारे दिल के इरादे क्या हैं,[7] तुम उसकी आज्ञाओं को मानते रहोगे या नहीं। **3** उसने तुम्हें नम्र किया और तुम्हें भूखा रहने दिया[8] और फिर तुम्हें मन्ना खिलाया,[9] जिसके बारे में न तुम और न तुम्हारे बाप-दादे जानते थे। परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि तुम जान लो कि इंसान सिर्फ रोटी से नहीं ज़िंदा रहता बल्कि यहोवा के मुँह से निकलनेवाले हर वचन से ज़िंदा रहता है।[10] **4** इन 40 सालों के दौरान न कभी तुम्हारे कपड़े पुराने होकर फटे और न तुम्हारे पैर सूजे।[11] **5** तुम्हारा दिल अच्छी तरह जानता है कि जैसे एक पिता अपने बेटे को सुधारता है, वैसे ही तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें सुधारता रहा।[12]

अध्य. 7
1 यश 30:22
2 व्य 27:15

अध्य. 8
3 नीत 3:1, 2
4 उत 15:18
5 व्य 2:7
6 निर्ग 16:4; निर्ग 20:20
7 व्य 13:3; नीत 17:3
8 निर्ग 16:3
9 निर्ग 16:31; भज 78:24
10 मत 4:4
11 व्य 29:5; नहे 9:21
12 नीत 3:12; 1कुर 11:32; इब्र 12:5-7; प्रक 3:19

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 3:8; लैव 26:4; व्य 11:11, 12
2 गि 13:23
3 यहे 20:6
4 व्य 6:10-12
5 हो 13:6
6 व्य 9:4; व्य 32:15
7 भज 106:21
8 व्य 1:19; यिर्म 2:6

6 तुम अपने परमेश्वर यहोवा की राहों पर चलकर और उसका डर मानकर उसकी आज्ञाओं का पालन किया करना, **7** क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें एक बढ़िया देश में ले जा रहा है,[1] जो नदी-नालों* का देश है, जहाँ की घाटियों और पहाड़ी प्रदेश में सोते और फव्वारे# फूट निकलते हैं, **8** जो गेहूँ, जौ, अंगूर की बेलों, अंजीर के पेड़ों, अनारों[2] और जैतून के तेल और शहद का देश है,[3] **9** ऐसा देश जहाँ कभी खाने के लाले नहीं पड़ेंगे और तुम्हें किसी भी चीज़ की कमी नहीं होगी, जहाँ के पत्थरों में लोहा है और जहाँ के पहाड़ों से तुम ताँबा खोद निकालोगे।

10 जब तुम खा-पीकर संतुष्ट होगे, तो तुम अपने परमेश्वर यहोवा की तारीफ करना कि उसने तुम्हें ऐसा बढ़िया देश दिया है।[4] **11** तुम सावधान रहना कि तुम उसकी आज्ञाओं, न्याय-सिद्धांतों और विधियों को मानने से न चूको जो आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ और इस तरह अपने परमेश्वर यहोवा को कभी नहीं भूलोगे। **12** जब तुम उस देश में खा-पीकर संतुष्ट होगे और बढ़िया-बढ़िया घर बना-कर रहने लगोगे,[5] **13** तुम्हारी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की बढ़ती होगी, तुम्हारे पास बहुत सारा सोना-चाँदी होगा और सबकुछ बहुतायत में होगा, **14** तो सावधान रहना कि तुम्हारा मन घमंड से फूल न जाए[6] जिससे तुम अपने पर-मेश्वर यहोवा को भूल सकते हो। तुम उस परमेश्वर को भूल सकते हो जो तुम्हें गुलामी के घर, मिस्र से बाहर ले आया[7] और **15** जिसने तुम्हें उस बड़े और भयानक वीराने से चलवाया,[8] जहाँ

8:7 * या "पानी की घाटियों।" # या "गहरे पानी के सोते।"

ज़हरीले साँप और बिच्छू घूमते हैं और जहाँ की सूखी ज़मीन पानी के लिए तरसती है। परमेश्‍वर ने वहाँ चकमक चट्टान से पानी निकाला[1] **16** और तुम्हें मन्‍ना खिलाया[2] जिसे तुम्हारे बाप-दादे नहीं जानते थे। परमेश्‍वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि वह तुम्हें नम्र बनना सिखाए[3] और तुम्हें परखे जिससे आगे चलकर तुम्हारा भला हो।[4] **17** अगर कभी तुम यह सोचने लगो कि आज मेरे पास जो बेशुमार दौलत है, यह सब मैंने अपनी काबिलीयत और अपनी ताकत से हासिल की है,[5] **18** तो उस वक्‍त तुम याद करना कि तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा ने ही तुम्हें इस काबिल बनाया कि तुम दौलत कमा सको।[6] परमेश्‍वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि वह उस करार को निभा सके जो उसने तुम्हारे पुरखों से शपथ खाकर किया था, जैसा कि आज ज़ाहिर है।[7]

19 अगर तुम कभी अपने परमेश्‍वर यहोवा को भूल जाओ और दूसरे देवताओं के पीछे चलने और उनकी सेवा करने लगो और उनके आगे दंडवत करो, तो आज मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि तुम ज़रूर नाश हो जाओगे।[8] **20** अगर तुम अपने परमेश्‍वर यहोवा की बात नहीं सुनोगे, तो तुम भी उन जातियों की तरह नाश हो जाओगे जिन्हें यहोवा तुम्हारे सामने नाश कर रहा है।[9]

9 हे इसराएल सुन, आज तू यरदन पार करके[10] उस देश में जानेवाला है और वहाँ से ऐसी जातियों को हटानेवाला है जो तुझसे ज़्यादा बड़ी और ताकतवर हैं,[11] जिनके शहर बहुत बड़े-बड़े हैं और जिनकी शहरपनाह आसमान छूती है,[12] **2** जहाँ के अनाकी लोग[13] लंबे-चौड़े और ताकतवर हैं और उनके बारे में तू जानता है और तूने यह सुना है, 'कौन अनाकियों से टक्कर ले सकता है?' **3** इसलिए आज तू यह जान ले कि तेरे आगे-आगे तेरा परमेश्‍वर यहोवा उस पार जाएगा।[1] तेरा परमेश्‍वर भस्म करनेवाली आग है[2] और वह उन्हें नाश कर देगा। वह उन्हें तेरी आँखों के सामने हरा देगा और तू उन्हें देखते-ही-देखते खदेड़कर* नाश कर देगा, ठीक जैसे यहोवा ने तुझसे वादा किया है।[3]

4 जब तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा उन जातियों को तुम्हारे सामने से खदेड़ देगा तो उसके बाद तुम अपने दिल में यह मत कहना, 'हम नेक लोग हैं इसीलिए यहोवा हमें इस देश में ले आया कि हम इसे अपने अधिकार में कर लें।'[4] असल बात यह है कि यहोवा उन जातियों को तुम्हारे सामने से इसलिए भगा रहा है क्योंकि वे बहुत दुष्ट हैं।[5] **5** तुम जो उनके देश पर कब्ज़ा करने जा रहे हो, इसकी वजह यह नहीं कि तुम बड़े नेक हो या मन के सीधे-सच्चे हो। तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा उन्हें तुम्हारे सामने से इसलिए भगा रहा है क्योंकि वे बहुत दुष्ट हैं[6] और यहोवा ने शपथ खाकर तुम्हारे पुरखों को, अब्राहम,[7] इसहाक[8] और याकूब[9] को जो वचन दिया था उसे वह पूरा कर रहा है। **6** इसलिए जान लो कि तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हें इस बढ़िया देश का जो अधिकारी बना रहा है, उसकी वजह यह नहीं कि तुम नेक हो। तुम तो दरअसल बहुत ढीठ किस्म के लोग हो।[10]

7 यह बात हमेशा याद रखना और कभी मत भूलना कि तुमने वीराने में अपने परमेश्‍वर यहोवा को कैसे गुस्सा दिलाया था।[11] जिस दिन तुमने मिस्र छोड़ा था, उस दिन से लेकर

अध्या. 8
1 गि 20:11
2 निर्ग 16:35
3 व्य 8:2
4 इब्र 12:11
5 हो 12:8
6 भज 127:1; हो 2:8
7 व्य 7:12
8 व्य 4:25, 26; व्य 30:17, 18; यह 23:12, 13
9 दान 9:11, 12

अध्या. 9
10 यह 4:19
11 व्य 7:1
12 गि 13:28
13 गि 13:33

दूसरा कॉल.
1 व्य 1:30; व्य 20:4; व्य 31:3
2 व्य 4:24; इब्र 12:29
3 निर्ग 23:31; व्य 7:23, 24
4 व्य 7:7, 8; यहे 36:22
5 उत 15:16; व्य 12:31; व्य 18:9, 12
6 लैव 18:25
7 उत 13:14, 15; उत 17:1, 8
8 उत 26:3
9 उत 28:13
10 निर्ग 34:9; भज 78:8
11 व्य 9:22; भज 78:40; इब्र 3:16

9:3 * या "बेदखल करके।"

यहाँ इस जगह पहुँचने तक तुमने न जाने
कितनी बार यहोवा से बगावत की।[1]
8 तुमने होरेब में भी यहोवा को गुस्सा
दिलाया जिस वजह से यहोवा का क्रोध
ऐसा भड़क उठा कि वह तुम्हें नाश करने-
वाला था।[2] **9** उस वक्त मैं पत्थर की
पटियाएँ लेने पहाड़ पर गया हुआ था।[3]
यहोवा ने तुम्हारे साथ जो करार किया था
उस करार की पटियाएँ[4] लेने मैं गया था
और 40 दिन और 40 रात वहीं पहाड़
पर रहा।[5] इतने दिन तक न मैंने खाना
खाया न पानी पीया। **10** फिर यहोवा
ने मुझे पत्थर की वे दोनों पटियाएँ दीं।
उन पटियाओं पर यहोवा ने अपने हाथ से
वे सारी आज्ञाएँ लिखीं जो उसने तुम्हारी
पूरी मंडली को पहाड़ पर आग में से बात
करते वक्त दी थीं।[6] **11** फिर 40 दिन
और 40 रात के आखिर में यहोवा ने मुझे
करार की दोनों पटियाएँ दीं। **12** इसके
बाद यहोवा ने मुझसे कहा, 'अब तू उठ
और जल्दी से नीचे जा क्योंकि तेरे लोगों
ने, जिन्हें तू मिस्र से निकाल लाया है, दुष्ट
काम किया है।[7] कितनी जल्दी वे उस राह
से फिर गए हैं जिस पर चलने की आज्ञा
मैंने दी थी। उन्होंने पूजा के लिए धातु
की एक मूरत* बनायी है।'[8] **13** फिर
यहोवा ने मुझसे कहा, 'मैं देख सकता हूँ
कि ये लोग कितने ढीठ हैं![9] **14** इस-
लिए अब मुझे मत रोक, मैं इनका नाश
कर दूँगा और धरती से* इनका नाम
मिटा दूँगा। और मैं तुझसे एक ऐसा राष्ट्र
बनाऊँगा जो इनसे ज़्यादा ताकतवर और
गिनती में बड़ा होगा।'[10]

15 तब मैं अपने हाथ में करार की
दोनों पटियाएँ लिए पहाड़ से नीचे उतर
आया।[11] पहाड़ आग से जल रहा था।[12]
16 जब मैं तुम्हारे पास आया तो मैंने देखा
कि तुमने धातु से बछड़े की एक मूरत
बना ली है।* अपने परमेश्वर यहोवा के
खिलाफ तुमने कितना बड़ा पाप किया
था! कितनी जल्दी तुम उस रास्ते से
फिर गए जिस पर चलने की आज्ञा यहोवा
ने तुम्हें दी थी।[1] **17** तब मैंने तुम्हारी
आँखों के सामने दोनों पटियाएँ नीचे पटक
दीं और वे चूर-चूर हो गयीं।[2] **18** फिर
मैं पहले की तरह यहोवा के सामने मुँह
के बल ज़मीन पर गिरा और 40 दिन,
40 रात ऐसा करता रहा। मैंने न खाना
खाया, न पानी पीया[3] क्योंकि तुमने
यहोवा की नज़र में बुरे काम करके पाप
किया था और उसे क्रोध दिलाया था।
19 यहोवा का क्रोध देखकर मैं डर गया
था क्योंकि वह तुम पर इतना भड़का हुआ
था[4] कि तुम सबको नाश करनेवाला था।
मगर यहोवा ने इस बार भी मेरी फरियाद
सुनी।[5]

20 यहोवा हारून से इतना गुस्सा
हुआ कि वह उसे मार डालनेवाला था,[6]
मगर तब मैंने उसके लिए भी मिन्नतें
कीं। **21** फिर मैंने तुम्हारे उस पाप को,
उस बछड़े[7] को आग में जला दिया। मैंने
उसे ऐसा चूर-चूर कर दिया कि वह महीन
धूल की तरह हो गया और मैंने वह
धूल पहाड़ से नीचे बहनेवाली पानी की
धारा में फेंक दी।[8]

22 इसके बाद तुमने तबेरा,[9] मस्सा[10]
और किबरोत-हत्तावा[11] में भी यहोवा का
क्रोध भड़काया। **23** फिर जब यहोवा
ने कादेश-बरने[12] में तुम्हें आदेश दिया,
'जाओ, उस देश को अपने अधिकार में
कर लो जो मैं तुम्हें ज़रूर दूँगा!' तो तुमने
अपने परमेश्वर यहोवा की बात नहीं

अध्य. 9
1 निर्ग 17:2; गि 11:4; गि 16:1, 2; गि 25:2, 3; व्य 31:27
2 निर्ग 32:4, 10
3 निर्ग 24:12; निर्ग 31:18; निर्ग 32:16
4 निर्ग 24:7
5 निर्ग 24:18
6 निर्ग 19:19; व्य 4:10-13
7 निर्ग 32:7
8 निर्ग 32:4
9 निर्ग 32:9
10 निर्ग 32:10
11 निर्ग 32:15
12 निर्ग 19:18

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:3, 4
2 निर्ग 32:19
3 निर्ग 34:28
4 निर्ग 32:10
5 निर्ग 32:11, 14; भज 106:23
6 निर्ग 32:2, 21
7 निर्ग 32:4
8 निर्ग 32:20
9 गि 11:3
10 निर्ग 17:7
11 गि 11:4, 34
12 गि 13:26

9:12 *या "ढली हुई मूरत।" **9:14** *शा., "आकाश के नीचे से।"

9:16 *या "अपने लिए एक बछड़ा ढालकर बना लिया है।"

मानी और उससे एक बार फिर बगावत
की।[1] तुमने उस पर विश्वास नहीं किया[2]
और उसकी आज्ञा नहीं मानी। **24** जब
से मैं तुम्हें जानता हूँ तब से तुम बार-बार
यहोवा से बगावत करते आए हो।

25 जब यहोवा ने कह दिया कि वह
तुम सबको नाश कर देगा, तो मैं 40
दिन और 40 रात यहोवा के सामने मुँह
के बल ज़मीन पर गिरकर[3] **26** यहोवा
से फरियाद करता रहा, 'हे सारे जहान के
मालिक यहोवा, तू अपने लोगों को
नाश मत कर। वे तेरी अपनी जागीर*
हैं[4] जिन्हें तूने अपनी ताकत# से और
अपने शक्तिशाली हाथ से मिस्र से बाहर
निकाला है।[5] **27** अपने सेवकों को,
अब्राहम, इसहाक और याकूब को याद
कर।[6] और इन लोगों की ढिठाई, इनकी
दुष्टता और इनके पाप की तरफ ध्यान
मत दे।[7] **28** वरना तू हमें जिस देश से
निकालकर लाया है वहाँ के लोग कहेंगे,
"यहोवा उन्हें उस देश में ले जाने में
नाकाम हो गया जिसके बारे में उसने वादा
किया था। वह तो उनसे नफरत करता था
इसलिए उसने उन्हें वीराने में ले जाकर
मार डाला।"[8] **29** ये तेरे लोग हैं, तेरी
अपनी जागीर* हैं[9] जिन्हें तू अपना
हाथ बढ़ाकर अपनी महाशक्ति से बाहर
निकाल लाया है।'[10]

10 उस वक्त यहोवा ने मुझसे कहा,
'तू पत्थर काटकर अपने लिए
दो पटियाएँ बनाना जो पहली पटि-
याओं जैसी हों[11] और लकड़ी का एक
संदूक* भी बनाना। फिर तू पहाड़ पर
मेरे पास आना। **2** उन पटियाओं पर मैं
वे शब्द लिखूँगा जो मैंने पहली पटियाओं
पर लिखे थे, जिन्हें तूने चूर-चूर कर डाला
था। फिर उन पटियाओं को तू संदूक में
रखना।' **3** तब मैंने बबूल की लकड़ी
का एक संदूक बनाया और पत्थर काट-
कर पहले जैसी दो पटियाएँ बनायीं और
उन दोनों पटियाओं को हाथ में लिए पहाड़
पर गया।[1] **4** तब यहोवा ने उन पटि-
याओं पर वे दस आज्ञाएँ*[2] लिखीं जो
उसने पहली पटियाओं पर लिखी थीं[3]
और मुझे दे दीं। ये वही आज्ञाएँ थीं जो
यहोवा ने तुम्हारी पूरी मंडली को[4] पहाड़
पर आग में से बात करते वक्त दी थीं।[5]
5 फिर मैं पहाड़ से नीचे उतर आया[6]
और मैंने वे पटियाएँ उस संदूक में रख दीं
जैसे यहोवा ने मुझे आज्ञा दी थी। और वे
पटियाएँ उसी संदूक में रखी रहीं।

6 इसके बाद इसराएली बएरोत-बने-
याकान से रवाना हुए और मोसेरा पहुँचे।
वहाँ हारून की मौत हो गयी और उसे
दफनाया गया।[7] उसकी जगह उसका
बेटा एलिआज़र याजक के नाते सेवा
करने लगा।[8] **7** इसके बाद इसराएली
मोसेरा से रवाना होकर गुदगोदा आए
और गुदगोदा से योतबाता[9] गए जहाँ
बहुत-सी नदियाँ* थीं।

8 उसी दौरान यहोवा ने लेवी गोत्र को
अलग किया[10] कि वे यहोवा के करार का
संदूक उठाएँ,[11] यहोवा के सामने हाज़िर
रहकर उसकी सेवा करें और उसके नाम
से लोगों को आशीर्वाद दिया करें,[12] जैसा
कि वे आज तक कर रहे हैं। **9** इसी-
लिए लेवियों को अपने बाकी इसराएली
भाइयों की तरह देश में ज़मीन का कोई
हिस्सा या विरासत नहीं दी गयी। यहोवा
ही उनकी विरासत है, जैसे तुम्हारे पर-
मेश्वर यहोवा ने उन्हें बताया था।[13]
10 मैं एक बार फिर पहाड़ पर गया

अध्य. 9
1 गि 14:3, 4
2 व्य 1:32; भज 106:24, 25; इब्र 3:19
3 निर्ग 34:28
4 निर्ग 19:5; भज 135:4
5 निर्ग 32:11
6 निर्ग 3:6; निर्ग 6:8; व्य 9:5
7 निर्ग 32:31, 32
8 निर्ग 32:12; गि 14:15, 16
9 1रा 8:51; नहे 1:10
10 निर्ग 6:6; व्य 4:20, 34

अध्य. 10
11 निर्ग 34:1

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 34:4
2 निर्ग 20:1; निर्ग 34:28; व्य 4:13
3 निर्ग 32:15
4 निर्ग 19:17; व्य 5:22
5 व्य 4:36; व्य 5:4
6 निर्ग 34:29
7 गि 20:23, 24; गि 33:31, 38
8 गि 20:28
9 गि 33:33
10 गि 1:50; गि 3:6; गि 8:14
11 गि 3:30, 31
12 गि 6:23-27; व्य 21:5; 2इत 30:27
13 गि 18:20, 24; व्य 18:1

9:26, 29 *या "विरासत।" **9:26** #या "महानता।" **10:1** *या "पेटी।"

10:4 *शा., "दस वचन।" **10:7** *या "पानी की घाटियाँ।"

और पहले की तरह 40 दिन, 40 रात
वहीं रहा[1] और यहोवा ने इस बार भी
मेरी बिनती सुनी।[2] इसीलिए यहोवा ने
तुम्हें नाश न करने का फैसला किया।
11 फिर यहोवा ने मुझसे कहा, 'अब तू
लोगों की अगुवाई कर और सफर में
आगे बढ़ने के लिए उन्हें तैयार कर ताकि
वे जाकर उस देश को अपने अधिकार
में कर लें जिसे देने के बारे में मैंने उनके
पुरखों से शपथ खायी थी।'[3]

12 अब हे इसराएलियो, तुम्हारा पर-
मेश्वर यहोवा तुमसे क्या चाहता है?[4]
बस यही कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा
का डर मानो,[5] हर बात में उसकी
बतायी राह पर चलो,[6] उससे प्यार करो,
पूरे दिल और पूरी जान से अपने पर-
मेश्वर यहोवा की सेवा करो[7] **13** और
यहोवा की उन आज्ञाओं और विधियों
का पालन किया करो जो आज मैं
तुम्हें दे रहा हूँ। ऐसा करने से तुम्हारा
ही भला होगा।[8] **14** देखो, तुम्हारा पर-
मेश्वर यहोवा आकाश का मालिक है,
ऊँचे-से-ऊँचा आकाश और धरती और
जो कुछ उसमें है सब उसी का है।[9]
15 मगर यहोवा सिर्फ तुम्हारे पुरखों के
करीब आया और उनसे प्यार किया
और उनके बच्चों को, हाँ, सब राष्ट्रों
में से तुम लोगों को चुना[10] जैसा कि
आज ज़ाहिर है। **16** अब तुम लोग
अपने दिलों को शुद्ध करो*[11] और ढीठ
बनना छोड़ दो[12] **17** क्योंकि तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा सब ईश्वरों से महान
ईश्वर है[13] और सब प्रभुओं से महान
प्रभु है, वह महाप्रतापी, शक्तिशाली और
विस्मयकारी परमेश्वर है जो किसी के
साथ भेदभाव नहीं करता,[14] न ही रिश्वत
लेता है। **18** वह अनाथों* और विध-
वाओं को न्याय दिलाता है।[1] वह तुम्हारे
बीच रहनेवाले परदेसियों से प्यार करता
है[2] और उनके खाने-पहनने की ज़रूरतें
पूरी करता है। **19** तुम भी परदेसियों से
प्यार करना क्योंकि एक वक्त तुम खुद
मिस्र में परदेसी हुआ करते थे।[3]

20 तुम अपने परमेश्वर यहोवा का
डर मानना, उसी की सेवा करना,[4] उससे
लिपटे रहना और उसके नाम से शपथ
लेना। **21** तुम सिर्फ उसी की बड़ाई
करना।[5] वह तुम्हारा परमेश्वर है जिसने
तुम्हारी खातिर महान और विस्मयकारी
काम किए हैं, जैसे तुमने खुद अपनी
आँखों से देखा है।[6] **22** जब तुम्हारे
बाप-दादे मिस्र गए थे तब वे सिर्फ 70
लोग थे[7] और अब देखो, तुम्हारे पर-
मेश्वर यहोवा ने तुम्हें इतना बढ़ाया है
कि आज तुम आसमान के तारों की तरह
अनगिनत हो गए हो।[8]

11 तुम अपने परमेश्वर यहोवा से
प्यार करना[9] और उसकी तरफ
तुम्हारा जो फर्ज़ बनता है उसे हमेशा
पूरा करना और उसकी विधियों, न्याय-
सिद्धांतों और आज्ञाओं का सदा पालन
करना। **2** तुम जानते हो कि आज मैं
तुमसे बात कर रहा हूँ, तुम्हारे बच्चों से
नहीं क्योंकि उन्होंने तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा से मिलनेवाली तालीम,[10] उसकी
महानता[11] और उसके बढ़ाए शक्ति-
शाली हाथ[12] के कारनामे नहीं देखे हैं
और न ही कभी उनका तजुरबा किया
है। **3** तुम्हारे बच्चों ने वे सारे चिन्ह और
चमत्कार नहीं देखे जो परमेश्वर ने मिस्र
में किए थे, न ही उन्होंने देखा कि उसने
राजा फिरौन और उसके पूरे देश का

अध्य. 10
1 निर्ग 24:18, निर्ग 34:28
2 निर्ग 32:14
3 उत 15:18
4 मी 6:8
5 व्य 5:29
6 व्य 5:33, यह 22:5
7 व्य 6:5, लूक 10:27
8 व्य 6:24
9 1इत 29:11, भज 24:1, भज 115:16
10 व्य 4:37
11 व्य 30:6
12 निर्ग 34:9, व्य 9:6, व्य 31:27
13 निर्ग 18:11, 2इत 2:5, भज 97:9
14 प्रेष 10:34, रोम 2:11

दूसरा कॉल.
1 भज 68:5, याकू 1:27
2 लैव 19:10, व्य 24:14, भज 146:9
3 निर्ग 22:21, लैव 19:34
4 लूक 4:8
5 निर्ग 15:2, प्रक 19:6
6 2शम 7:23
7 उत 46:27, निर्ग 1:5, प्रेष 7:14
8 उत 15:1, 5

अध्य. 11
9 व्य 6:5, व्य 10:12, मर 12:30
10 व्य 8:5, इब्र 12:6
11 व्य 5:24, व्य 9:26
12 निर्ग 13:3

10:16 *या "का खतना करो।"

10:18 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।"

क्या किया था[1] 4 और उसने मिस्र की
सेनाओं का, फिरौन के घोड़ों और युद्ध-
रथों का क्या हश्र किया था जो तुम्हारा
पीछा करते हुए आए थे, कैसे यहोवा ने
उन्हें लाल सागर में डुबाकर हमेशा के
लिए मिटा दिया था।*[2] 5 तुम्हारे बच्चों
ने यह भी नहीं देखा कि जब तुम वीराने
में थे, तब से लेकर इस जगह पहुँचने तक
परमेश्वर ने तुम्हारे लिए* क्या-क्या किया
6 और उसने दातान और अबीराम का
क्या किया जो रूबेन गोत्र के एलीआब के
बेटे थे, कैसे सभी इसराएलियों के देखते
धरती फट गयी और उन दोनों को और
उनके घरानों और तंबुओं को और उनका
सबकुछ निगल गयी।[3] 7 यहोवा के ये
सारे महान काम तुमने खुद अपनी आँखों
से देखे हैं।

8 तुम उन सभी आज्ञाओं का पालन
करना जो आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ। तब तुम
ताकतवर होगे और यरदन पार करके
उस देश में जा सकोगे और उसे अपने
अधिकार में कर पाओगे। 9 और तुम
उस देश में एक लंबी ज़िंदगी जीओगे[4]
जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं,[5]
जिसके बारे में यहोवा ने शपथ खाकर
तुम्हारे पुरखों से कहा था कि वह उन्हें
और उनके वंश को यह देश देगा।[6]

10 तुम जिस देश पर कब्ज़ा करने जा
रहे हो, वह मिस्र जैसा नहीं है जहाँ
से तुम निकल आए हो। मिस्र में तुम्हें
खेतों में बीज बोने के बाद कड़ी मेह-
नत से सिंचाई करनी पड़ती थी,* जैसे
सब्ज़ियों के बाग की सिंचाई की जाती है।
11 मगर तुम उस पार जिस देश में जाने-
वाले हो, वह पहाड़ों और घाटियों से भरा
देश है[1] और वहाँ की ज़मीन आकाश से
गिरनेवाली बारिश के पानी से सींची जाती
है।[2] 12 वहाँ की ज़मीन की देखभाल
करनेवाला खुद तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
है। साल के शुरू से लेकर आखिर तक,
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की नज़रें हमेशा
उस पर बनी रहती हैं।

13 अगर तुम लोग पूरी लगन से मेरी
आज्ञाओं को मानोगे जो आज मैं तुम्हें सुना
रहा हूँ और अपने परमेश्वर यहोवा से
प्यार करोगे और पूरे दिल और पूरी जान
से उसकी सेवा करोगे,[3] 14 तो पर-
मेश्वर तुम्हारे देश की ज़मीन के लिए
वक्त पर बारिश देगा। पतझड़ और वसंत
की बारिश वक्त पर होगी जिससे
तुम्हें अनाज, नयी दाख-मदिरा और तेल
मिलता रहेगा।[4] 15 वह तुम्हारे मवे-
शियों के लिए मैदानों में भरपूर चरागाह
देगा। इस तरह तुम्हें खाने की कमी नहीं
होगी और तुम संतुष्ट रहोगे।[5] 16 मगर
तुम सावधान रहना कि तुम्हारा मन बहक
न जाए जिससे तुम दूसरे देवताओं की
पूजा करने लगो और उनके आगे दंडवत
करने लगो।[6] 17 अगर तुम ऐसा करोगे
तो यहोवा का क्रोध तुम पर भड़क उठेगा
और वह आकाश के झरोखे बंद कर
देगा जिससे बारिश नहीं होगी।[7] तुम्हारी
ज़मीन उपज नहीं देगी और तुम देखते-ही-
देखते उस बढ़िया देश में से मिट जाओगे
जो यहोवा तुम्हें देने जा रहा है।[8]

18 आज मैं तुम्हें जो आज्ञाएँ
दे रहा हूँ उन्हें तुम अपने दिलों में
उतार लेना और अपने अंदर बसा लेना
और यादगार के लिए अपने हाथ पर
बाँध लेना और माथे की पट्टी की तरह

11:4 *या "नाश कर दिया कि आज तक उनका पता नहीं।" **11:5** *या "तुम्हारे साथ।" **11:10** *या "तुम अपने पैरों से सिंचाई करते थे।" वे पैरों से पन-चक्की चलाकर या नालियाँ बनाकर सिंचाई करते थे।

अध्य. 11
1 व्य 4:34
2 निर्ग 14:23, 28; इब्र 11:29
3 गि 16:1, 32
4 व्य 4:40; नीत 3:1, 2
5 निर्ग 3:8; यहे 20:6
6 उत 13:14, 15; उत 26:3; उत 28:13

दूसरा कॉल.
1 व्य 1:7
2 व्य 8:7
3 व्य 4:29; व्य 6:5; व्य 10:12; मत 22:37
4 लैव 26:4; व्य 8:7-9; व्य 28:12; यिर्म 14:22
5 व्य 8:10
6 व्य 8:19; व्य 29:18; इब्र 3:12
7 व्य 28:15, 23; 1रा 8:35, 36; 2इत 7:13, 14
8 व्य 8:19

सिर पर* लगाए रखना।[1] 19 और
तुम इन्हें अपने बच्चों को सिखाना, इनके
बारे में उनसे घर में बैठे, सड़क पर
चलते, लेटते, उठते चर्चा किया करना।[2]
20 तुम इन्हें अपने घर के दरवाज़े के
दोनों बाज़ुओं पर और शहर के फाटकों
पर लिखना 21 ताकि तुम और तुम्हारे
बच्चे उस देश में एक लंबी ज़िंदगी जीएँ,[3]
जिसके बारे में यहोवा ने शपथ खाकर
तुम्हारे पुरखों से कहा था कि वह उन्हें
देगा[4] और तुम और तुम्हारे बच्चे उस देश
में तब तक बने रहें जब तक धरती के
ऊपर आकाश बना रहेगा।

22 आज मैंने तुम्हें आज्ञा दी है कि तुम
अपने परमेश्वर यहोवा से प्यार करना,[5]
उसकी बतायी सब राहों पर चलना
और उससे लिपटे रहना।[6] अगर तुम
इसका सख्ती से पालन करोगे और इसके
मुताबिक चलोगे, 23 तो यहोवा तुम्हारे
सामने से सभी जातियों को भगा देगा[7]
और तुम उस देश से उन सभी जातियों
को निकाल दोगे जो तुमसे कहीं ज़्यादा
ताकतवर और तादाद में बड़ी हैं।[8]
24 तुम जिस किसी जगह पर कदम
रखोगे वह तुम्हारी हो जाएगी।[9] तुम्हारी
सरहद वीराने से लेकर लबानोन तक,
महानदी फरात से लेकर पश्चिमी
सागर* तक फैली होगी।[10] 25 कोई
भी तुम्हारे खिलाफ खड़ा होने की जुर्रत
नहीं करेगा।[11] तुम उस देश में जहाँ-जहाँ
कदम रखोगे, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
वहाँ के लोगों में ऐसा खौफ फैला देगा कि
वे तुमसे डरेंगे,[12] ठीक जैसे उसने तुमसे
वादा किया है।

26 देखो, आज मैं तुम्हें यह चुनने
का मौका देता हूँ कि तुम आशीष चाहते
हो या शाप।[1] 27 अगर तुम अपने पर-
मेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ मानोगे जो
आज मैं तुम्हें सुना रहा हूँ तो तुम्हें
आशीषें मिलेंगी।[2] 28 लेकिन अगर
तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ
नहीं मानोगे और उस रास्ते से फिर
जाओगे जिस पर चलने की आज्ञा आज मैं
तुम्हें दे रहा हूँ और उन देवताओं के पीछे
चलने लगोगे जिन्हें तुम पहले नहीं जानते
थे, तो तुम पर शाप पड़ेगा।[3]

29 जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
तुम्हें उस देश में ले जाएगा जिसे तुम
अपने अधिकार में करनेवाले हो,
तो तुम गरिज्जीम पहाड़ के पास आशीषों
का और एबाल पहाड़[4] के पास शाप का
ऐलान करना।* 30 जैसा तुम जानते
हो, ये दोनों पहाड़ यरदन के उस पार
पश्चिम* में, अराबा में रहनेवाले कना-
नियों के देश में गिलगाल के सामने, मोरे
के बड़े-बड़े पेड़ों के पास हैं।[5] 31 अब
तुम यरदन पार करोगे और उस देश को
अपने अधिकार में कर लोगे जो तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा तुम्हें देनेवाला है।[6]
जब तुम उस पर अधिकार कर लोगे और
वहाँ रहने लगोगे, 32 तो इस बात का
ध्यान रखना कि तुम उन सभी कायदे-
कानूनों और न्याय-सिद्धांतों का पालन
करोगे जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।[7]

12 तुम्हारे पुरखों का परमेश्वर
यहोवा जिस देश को तुम्हारे
अधिकार में करनेवाला है, वहाँ तुम सारी
ज़िंदगी इन कायदे-कानूनों और न्याय-
सिद्धांतों का सख्ती से पालन करना।
2 उस देश में रहनेवाली जातियाँ, जिन्हें
तुम निकालनेवाले हो, जिस-जिस जगह
पर अपने देवताओं को पूजती हैं उन

11:18 *शा., "तुम्हारी आँखों के बीच।"
11:24 *यानी महासागर, भूमध्य सागर।
11:29 *या "शाप देना।" **11:30** *या "सूरज डूबने की दिशा।"

अध्य. 11
1 नीत 7:1-3
2 व्य 6:6-9; नीत 22:6; इफ 6:4
3 व्य 4:40; नीत 4:10
4 उत 13:14, 15
5 व्य 6:5; लूक 10:27
6 व्य 10:20; व्य 13:4; यह 22:5
7 निर्ग 23:28; यह 3:10
8 व्य 7:1; व्य 9:1, 5
9 यह 14:9
10 उत 15:18; निर्ग 23:31
11 व्य 7:24; यह 1:5
12 निर्ग 23:27; यह 2:9, 10; यह 5:1

दूसरा कॉल.
1 व्य 30:15
2 व्य 28:1, 2; भज 19:8, 11
3 लैव 26:15, 16; यश 1:20
4 व्य 27:12, 13; यह 8:33, 34
5 उत 12:6
6 यह 1:11
7 व्य 5:32; व्य 12:32

सभी जगहों को पूरी तरह नष्ट कर देना,[1]
फिर चाहे वे जगह ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर
या पहाड़ियों पर या घने पेड़ों के नीचे
बनी हों। **3** तुम उनकी वेदियाँ ढा देना,
उनके पूजा-स्तंभ चूर-चूर कर देना,[2]
उनकी पूजा-लाठें* आग में जला देना
और उनके देवताओं की खुदी हुई मूरतें
तोड़ डालना।[3] इस तरह उस पूरे देश से
उन देवताओं का नाम तक मिटा देना।[4]

4 तुम अपने परमेश्वर यहोवा की
उपासना उस तरीके से मत करना जैसे
दूसरी जातियाँ अपने देवताओं को पूजती
हैं।[5] **5** इसके बजाय तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों को दिए इलाके
में से, अपने नाम की महिमा के लिए जो
जगह चुनता है और उसे अपना निवास-
स्थान ठहराता है, तुम वहीं जाना।[6]
6 और अपनी होम-बलियाँ[7] और दूसरे
बलिदान, अपनी संपत्ति का दसवाँ
हिस्सा,[8] अपने दान,[9] अपनी मन्नत-
बलियाँ, स्वेच्छा-बलियाँ[10] और गाय-बैलों
और भेड़-बकरियों के पहलौठे, सब वहीं
पर अर्पित करना।[11] **7** वहीं पर तुम
अपने घरानों के साथ अपने परमेश्वर
यहोवा के सामने भोजन करना[12] और
अपने सब कामों पर खुशियाँ मनाना,[13]
क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें
आशीष देता है।

8 तुम अपनी मन-मरज़ी न करना
जैसे तुम यहाँ करते हो। यहाँ तुममें से
हर कोई वही करता है जो उसकी
नज़र में सही है,* **9** क्योंकि तुम अभी
तक उस विश्राम की जगह[14] और
विरासत की ज़मीन में नहीं पहुँचे हो,
जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देने-
वाला है। **10** जब तुम यरदन पार
करके[1] उस देश में बस जाओगे जिसे
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे अधि-
कार में करनेवाला है, तो वह तुम्हें
आस-पास के सभी दुश्मनों से ज़रूर
राहत दिलाएगा और तुम वहाँ महफ़ूज़
बसे रहोगे।[2] **11** उस देश में तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा अपने नाम की महिमा
के लिए जो जगह चुनता है,[3] तुम वहीं
पर अपनी होम-बलियाँ, दूसरे बलिदान,
अपनी संपत्ति का दसवाँ हिस्सा,[4] अपने
दान और यहोवा के लिए अपनी सारी
मन्नत-बलियाँ अर्पित करना, जिनकी मैंने
तुम्हें आज्ञा दी है। **12** तुम अपने बेटे-
बेटियों और दास-दासियों के साथ और
अपने शहरों में* रहनेवाले लेवियों के
साथ, जिन्हें अलग से ज़मीन का कोई
भाग या विरासत नहीं दी गयी है,[5]
अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खुशियाँ
मनाना।[6] **13** तुम ध्यान रखना कि तुम
जहाँ चाहो वहाँ अपनी होम-बलियाँ
नहीं चढ़ाओगे।[7] **14** तुम अपनी होम-
बलियाँ सिर्फ उस जगह अर्पित करोगे जो
यहोवा तुम्हारे किसी गोत्र के इलाके में
चुनता है और वहाँ तुम वह सब करना
जिसकी मैं तुम्हें आज्ञा दे रहा हूँ।[8]

15 मगर जब भी तुम्हारा गोश्त खाने
का मन करे, तो तुम अपने शहरों में*
जानवर हलाल करके खा सकते हो।[9]
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की आशीष से
तुम्हारे पास जो जानवर हैं, उनमें से
तुम जितना चाहे खा सकते हो। सब
लोग यह गोश्त खा सकते हैं, फिर
चाहे वे शुद्ध हों या अशुद्ध, ठीक जैसे
चिकारे या हिरन का गोश्त तुम सब
खाते हो। **16** मगर तुम खून हरगिज़
मत खाना[10] बल्कि उसे पानी की तरह
ज़मीन पर उँडेल देना।[11] **17** और कुछ

12:3 *शब्दावली देखें। **12:8** *या "जो उसे सही लगता है।"

12:12, 15 *शा., "फाटकों के अंदर।"

अध्य. 12
1 निर्ग 34:13
2 निर्ग 23:24
3 व्य 7:25
4 निर्ग 23:13; यह 23:7
5 लैव 18:3; व्य 12:31
6 2इत 7:12
7 लैव 1:3
8 व्य 14:22
9 गि 18:19; व्य 12:11
10 1इत 29:9; एज 2:68
11 व्य 12:17; व्य 15:19
12 व्य 15:19, 20
13 लैव 23:40; व्य 12:12, 18; व्य 14:23, 26; भज 32:11; भज 100:2; फिल 4:4
14 1रा 8:56; 1इत 23:25

दूसरा कॉल.
1 यह 3:17
2 व्य 33:28; 1रा 4:25
3 व्य 16:2; व्य 26:2
4 व्य 14:22, 23
5 गि 18:20, 24; व्य 10:9; व्य 14:28, 29; यह 13:14
6 व्य 14:26; 1रा 8:66; नहे 8:10
7 लैव 17:3, 4; 1रा 12:28
8 2इत 7:12
9 व्य 12:21
10 उत 9:4; लैव 7:26; लैव 17:10; प्रेष 15:20, 29
11 लैव 17:13; व्य 15:23

ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें अपने शहरों में*
खाने या पीने की तुम्हें इजाज़त नहीं है।
ये हैं: अनाज, नयी दाख-मदिरा और तेल
का दसवाँ हिस्सा, गाय-बैलों और भेड़-
बकरियों के पहलौठे जानवर,[1] कोई भी
मन्नत-बलि, स्वेच्छा-बलियाँ और दान की
गयी चीज़ें। **18** इन्हें तुम अपने पर-
मेश्वर यहोवा के सामने ही खाना। ये
सब तुम अपने बेटे-बेटियों, दास-दासियों
और अपने शहरों में* रहनेवाले लेवियों
के साथ उस जगह खाना जो तुम्हारा पर-
मेश्वर यहोवा चुनेगा।[2] तुम अपने पर-
मेश्वर यहोवा के सामने अपने सब
कामों पर खुशियाँ मनाना। **19** और
सावधान रहना कि तुम अपने देश में
जीते-जी कभी लेवियों को नज़रअंदाज़
नहीं करोगे।[3]

20 जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
अपने वादे के मुताबिक[4] तुम्हारे देश की
सरहद बढ़ाएगा[5] और अगर कभी गोश्त
खाने का तुम्हारा मन करे और तुम कहो,
'आज मैं गोश्त खाना चाहता हूँ,' तो तुम
खा सकते हो।[6] **21** तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा अपने नाम की महिमा के लिए जो
जगह चुनता है[7] वह अगर तुम्हारे घर से
बहुत दूर है, तो तुम मेरी आज्ञा के मुता-
बिक यहोवा के दिए गाय-बैलों या भेड़-
बकरियों में से जानवर हलाल करना।
जब भी तुम्हें गोश्त खाने का मन करे तो
तुम अपने शहरों में* खाना। **22** सब
लोग यह गोश्त खा सकते हैं, फिर चाहे
वे शुद्ध हों या अशुद्ध, ठीक जैसे चिकारे
या हिरन का गोश्त तुम सब खाते हो।[8]
23 मगर तुम इतना ज़रूर ठान लेना कि
तुम खून हरगिज़ नहीं खाओगे[9] क्योंकि
खून जीवन है।[10] तुम गोश्त के साथ
जीवन न खाना। **24** तुम खून हरगिज़
मत खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन
पर उँडेल देना।[1] **25** तुम उसे हरगिज़
न खाना। इससे तुम्हारा और तुम्हारे बाद
तुम्हारे बच्चों का भला होगा, क्योंकि तुम
यहोवा की नज़र में सही काम कर रहे
होगे। **26** जब तुम यहोवा की चुनी हुई
जगह जाओगे तो अपने साथ सिर्फ
अपनी पवित्र भेंट और अपनी मन्नत-
बलियाँ ले जाना। **27** वहाँ तुम अपनी
होम-बलि के जानवरों का गोश्त और
खून अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर
अर्पित करना।[2] बलि के जानवरों का
खून तुम अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी
पर उँडेल देना,[3] मगर उसका गोश्त तुम
खा सकते हो।

28 मैं तुम्हें जो आज्ञाएँ दे रहा हूँ,
उनमें से हर आज्ञा का तुम सख्ती से
पालन करना। अगर तुम ऐसा करोगे तो
तुम्हारा और तुम्हारे बाद तुम्हारे बच्चों का
हमेशा भला होगा, क्योंकि तुम वही कर
रहे होगे जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की
नज़र में सही और भला है।

29 जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन
जातियों को नाश कर देगा जिन्हें तुम
वहाँ से निकाल दोगे[4] और तुम उनके
देश में बस जाओगे, **30** तो सावधान
रहना कि उनके मिटने के बाद तुम वहाँ
किसी फंदे में न फँस जाओ। तुम उनके
देवताओं के बारे में जानने के लिए
यह मत कहना, 'ये जातियाँ अपने देव-
ताओं की पूजा कैसे करती थीं? ज़रा मैं
भी उनके तौर-तरीके अपनाकर देखूँ।'[5]
31 तुम अपने परमेश्वर यहोवा की
उपासना उनके तरीके से मत करना,
क्योंकि वे अपने देवताओं के लिए हर वह
घिनौना काम करते हैं जिससे यहोवा नफ-
रत करता है। यहाँ तक कि वे अपने बेटे-
बेटियों को अपने देवताओं के लिए आग

अध्य. 12
1 व्य 14:22, 23
2 व्य 12:11; व्य 14:26
3 गि 18:21; व्य 14:27; 2इत 31:4; नहे 10:38, 39; मला 3:8
4 उत 15:18; निर्ग 34:24; व्य 11:24
5 1रा 4:21
6 लैव 11:2-4
7 व्य 14:23; 2इत 7:12
8 व्य 14:4, 5
9 लैव 3:17; व्य 12:16
10 उत 9:4; लैव 17:11, 14

दूसरा कॉल.
1 लैव 17:13; व्य 15:23
2 लैव 17:11
3 लैव 4:29, 30
4 निर्ग 23:23; भज 44:2; भज 78:55
5 व्य 7:16; भज 106:36; यहे 20:28

12:17, 18, 21 * शा., "फाटकों के अंदर।"

में होम कर देते हैं।[1] 32 तुम इस बात का ध्यान रखना कि मैं तुम्हें जो आज्ञाएँ देता हूँ उनमें से हरेक का तुम सख्ती से पालन करोगे।[2] तुम इन आज्ञाओं में न तो कुछ जोड़ना और न ही इनसे कुछ निकालना।[3]

13 अगर तुम्हारे बीच कोई भविष्यवक्ता या सपने देखकर भविष्य बतानेवाला खड़ा होता है और कोई चिन्ह देता है या भविष्य के बारे में कुछ बताता है 2 और कहता है, 'आओ हम दूसरे देवताओं के पीछे जाएँ और उनकी सेवा करें जिन्हें तुम नहीं जानते' और उसने जो चिन्ह दिया है या भविष्य के बारे में जो बताया है वह सच निकलता है, 3 तो तुम उस भविष्यवक्ता या सपनों के ज़रिए भविष्य बतानेवाले की बात न सुनना,[4] क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा यह जानने के लिए तुम्हें परख रहा है[5] कि तुम पूरे दिल और पूरी जान से अपने परमेश्वर यहोवा से प्यार करते हो या नहीं।[6] 4 तुम सिर्फ अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना, उसी का डर मानना, उसकी आज्ञाओं का पालन करना, उसकी बात मानना, उसी की सेवा करना और उसी को मज़बूती से थामे रहना।[7] 5 मगर उस भविष्यवक्ता या सपनों के ज़रिए भविष्य बतानेवाले को मौत की सज़ा दी जाए,[8] क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से बगावत करने के लिए लोगों को भड़काता है जो तुम्हें गुलामी के घर, मिस्र से छुड़ाकर लाया है। उस भविष्यवक्ता या सपनों के ज़रिए भविष्य बतानेवाले को मार डालना क्योंकि वह उस रास्ते से फिर जाने के लिए लोगों को भड़काता है, जिस पर चलने की आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी है। तुम अपने बीच से बुराई मिटा देना।[9]

6 अगर तेरा सगा भाई या तेरा बेटा या बेटी या तेरी पत्नी, जिसे तू बहुत प्यार करता है या तेरा जिगरी दोस्त तुझे चुपके से बहकाने की कोशिश करे और कहे, 'चलो, हम दूसरे देवताओं की सेवा करते हैं,'[1] ऐसे देवताओं की जिन्हें न तू जानता है और न तेरे बाप-दादे जानते थे, 7 चाहे ये तुम्हारे आस-पास की जातियों के देवता हों या दूर की जातियों के, या देश के किसी भी कोने के देवता हों, 8 तो तू उसकी बातों में मत आना, न ही उसकी सुनना।[2] तू उस पर दया न करना, न ही उस पर तरस खाना या उसे बचाने की कोशिश करना। 9 इसके बजाय तू उसे हर हाल में मार डालना।[3] उसे मार डालने के लिए सबसे पहले तेरा हाथ उठे, उसके बाद बाकी सब लोगों का।[4] 10 तू उसे पत्थरों से मार डालना[5] क्योंकि उसने तुझे तेरे परमेश्वर यहोवा से दूर ले जाने की कोशिश की है, जो तुझे गुलामी के घर, मिस्र से निकाल लाया है। 11 तब पूरा इसराएल उसके बारे में सुनकर डर जाएगा और फिर कभी कोई तुम्हारे बीच ऐसा बुरा काम नहीं करेगा।[6]

12 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें जिन शहरों में बसाएगा, उनमें से किसी शहर से अगर तुम्हें यह खबर मिलती है 13 कि वहाँ कुछ ऐसे निकम्मे आदमी निकल आए हैं जो यह कहकर अपने शहर के लोगों को गुमराह कर रहे हैं, 'चलो, हम दूसरे देवताओं की सेवा करते हैं,' ऐसे देवताओं की जिन्हें तुम नहीं जानते, 14 तो तुम उस मामले की तहकीकात करना, उसकी अच्छी तरह छानबीन करना और पूछताछ करना।[7] अगर तुम पाते हो कि खबर सच है और तुम्हारे बीच वाकई ऐसा घिनौना काम हो रहा है, 15 तो तुम उस

अध्य. 12

1 लैव 18:3, 21; लैव 20:2; व्य 18:10-12; यिर्म 32:35
2 यह 22:5
3 व्य 4:2; यह 1:7

अध्य. 13

4 यश 8:19; यिर्म 27:9
5 व्य 8:2
6 व्य 6:5; व्य 10:12; मत 22:37
7 व्य 10:20
8 व्य 18:20
9 व्य 17:2, 3, 7; 1कुर 5:13

दूसरा कॉल.

1 1रा 11:4; 2पत 2:1
2 गल 1:8
3 निर्ग 22:20; निर्ग 32:27; गि 25:5
4 व्य 17:2, 3, 7
5 लैव 20:2, 27
6 व्य 17:13; 1ती 5:20
7 व्य 19:15; 1ती 5:19

शहर के लोगों को हर हाल में तलवार से
मार डालना।[1] उस पूरे शहर को नाश कर
देना और वहाँ की एक-एक चीज़ मिटा
देना, यहाँ तक कि जानवरों को भी तुम
तलवार से नाश कर देना।[2] **16** फिर
तुम उस शहर की पूरी लूट चौराहे पर
लाकर इकट्ठा करना और शहर को जला
देना। लूट का वह सारा माल तुम्हारे पर-
मेश्वर यहोवा के लिए दी जानेवाली होम-
बलि जैसा होगा। वह शहर हमेशा के
लिए मलबे का ढेर बन जाएगा। उसे
कभी दोबारा न बसाया जाए। **17** जो
कुछ नाश के लिए अलग ठहराया जाता
है* उसमें से तुम अपने लिए कुछ भी
मत लेना[3] ताकि यहोवा का गुस्सा तुम
पर न भड़के और वह तुम पर दया और
करुणा करे और तुम्हें गिनती में कई गुना
बढ़ाए, ठीक जैसे उसने तुम्हारे पुरखों से
शपथ खायी थी।[4] **18** तुम अपने पर-
मेश्वर यहोवा की बात मानना* और उन
सभी आज्ञाओं का पालन करना जो आज
मैं तुम्हें सुना रहा हूँ। इस तरह तुम वही
करना जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की
नज़र में सही है।[5]

14

तुम अपने परमेश्वर यहोवा के
बेटे हो। तुम किसी की मौत का
मातम मनाने के लिए अपने शरीर पर घाव
न करना,[6] न ही अपने सिर के सामने के
बाल मुँड़वाना,*[7] **2** क्योंकि तुम अपने
परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र राष्ट्र
हो[8] और यहोवा ने धरती के सब देशों में
से तुम्हें चुना है ताकि वह तुम्हें अपने लोग
और अपनी खास जागीर* बनाए।[9]

3 तुम कोई भी घिनौनी चीज़ मत
खाना।[1] **4** तुम ये जानवर खा सकते
हो:[2] बैल, भेड़, बकरी, **5** हिरन,
चिकारा, छोटा हिरन, जंगली बकरी,
नीलगाय, जंगली भेड़ और पहाड़ी भेड़।
6 तुम ऐसे किसी भी जानवर को खा
सकते हो जिसके खुर दो भागों में बँटे
होते हैं और जो जुगाली भी करता है।
7 मगर तुम वे जानवर मत खाना जो या
तो जुगाली करते हैं या जिनके खुर दो
भागों में बँटे होते हैं: ऊँट, खरगोश और
चट्टानी बिज्जू। ये जानवर जुगाली तो
करते हैं मगर इनके खुर दो भागों में नहीं
बँटे होते। ये तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।[3]
8 तुम सूअर को भी मत खाना क्योंकि
उसके खुर तो दो भागों में बँटे होते हैं मगर
वह जुगाली नहीं करता। वह तुम्हारे लिए
अशुद्ध है। तुम ऐसे जानवरों का गोश्त न
खाना, न ही उनकी लाश छूना।

9 पानी में रहनेवाले जीव-जंतुओं में से
तुम ऐसे हर जीव को खा सकते हो जिसके
पंख और छिलके होते हैं।[4] **10** लेकिन
तुम ऐसे जीवों को मत खाना जिनके पंख
और छिलके नहीं होते। वे तुम्हारे लिए
अशुद्ध हैं।

11 तुम ऐसे किसी भी पक्षी को खा
सकते हो जो शुद्ध है। **12** मगर तुम
इनमें से किसी को मत खाना: उकाब,
समुद्री बाज़, काला गिद्ध,[5] **13** लाल
चील, काली चील, हर किस्म की चील,
14 हर किस्म का कौवा, **15** शुतुर-
मुर्ग, उल्लू, धोमरा, हर किस्म का बाज़,
16 छोटा उल्लू, लंबे कानोंवाला उल्लू,
हंस, **17** हवासिल, गिद्ध, पन-कौवा,
18 लगलग, हर किस्म का बगुला, हुद-
हुद और चमगादड़। **19** पंखोंवाला
ऐसा हर कीट-पतंगा भी तुम्हारे लिए
अशुद्ध है जो झुंड में उड़ता है। इन्हें खाना

अध्य. 13
1 व्य 17:4, 5; 2इत 28:6
2 निर्ग 22:20
3 यह 6:18
4 उत 22:15, 17; उत 26:3, 4
5 व्य 6:18

अध्य. 14
6 लैव 19:28
7 लैव 21:1, 5
8 लैव 19:2; लैव 20:26; व्य 28:9; 1पत 1:15
9 निर्ग 19:5, 6; व्य 7:6

दूसरा कॉल.
1 लैव 11:43; लैव 20:25; प्रेष 10:14
2 लैव 11:2, 3
3 लैव 11:4-8
4 लैव 11:9, 10
5 लैव 11:13-20

13:17 *या “जिसे पाबंदी लगाकर पवित्र ठहराया जाता है।” **13:18** *या “आवाज़ सुनना।” **14:1** *शा., “अपनी आँखों के बीच गंजापन न करना।” **14:2** *या “अन-मोल जायदाद।”

मना है। 20 तुम उड़नेवाले ऐसे किसी भी जीव को खा सकते हो जो शुद्ध है।

21 तुम ऐसे किसी भी जानवर का गोश्त मत खाना जो मरा हुआ पाया जाता है।[1] तुम उसे अपने शहरों में* रहनेवाले किसी परदेसी को दे सकते हो। वह उसका गोश्त खा सकता है। या मरा हुआ जानवर किसी परदेसी को बेचा जा सकता है। मगर तुम लोग उसे मत खाना क्योंकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र राष्ट्र हो।

तुम बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में मत उबालना।[2]

22 तुम साल-दर-साल अपने खेत की हर फसल का दसवाँ हिस्सा ज़रूर दिया करना।[3] 23 तुम्हारा परमेश्वर अपने नाम की महिमा के लिए जो जगह चुनेगा वहाँ तुम अपने अनाज, अपनी नयी दाखमदिरा और तेल का दसवाँ हिस्सा और अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहलौठे जानवरों का गोश्त अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खाया करना।[4] ऐसा करने से तुम अपने परमेश्वर यहोवा का हमेशा डर मानना सीखोगे।[5]

24 लेकिन अगर तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम की महिमा के लिए जो जगह चुनता है[6] वह तुम्हारे घर से बहुत दूर है और तुम्हारे पास यहोवा की आशीष से जो संपत्ति है उसका दसवाँ हिस्सा उतनी दूर ले जाना तुम्हारे लिए मुश्किल है, 25 तो तुम अपना दसवाँ हिस्सा बेच सकते हो। फिर वह पैसा हाथ में लेकर तुम उस जगह के लिए सफर करना जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा चुनेगा। 26 वहाँ पहुँचने के बाद तुम उस पैसे से जो चाहे खरीद सकते हो, गाय-बैल, भेड़-बकरी, दाख-मदिरा, कोई दूसरी शराब या कोई भी मन-पसंद चीज़। और तुम अपने घराने के साथ अपने परमेश्वर यहोवा के सामने भोजन करना और खुशियाँ मनाना।[1] 27 तुम अपने शहरों में रहनेवाले लेवियों को नज़रअंदाज़ न करना[2] क्योंकि उन्हें तुम्हारे साथ ज़मीन का कोई भाग या विरासत नहीं दी गयी है।[3]

28 हर तीन साल के आखिर में तुम तीसरे साल की उपज का पूरा-का-पूरा दसवाँ हिस्सा अपने शहरों में ही जमा करना।[4] 29 तब तुम्हारे शहरों में रहनेवाले लेवी, जिन्हें तुम्हारे साथ ज़मीन का कोई भाग या विरासत नहीं दी गयी है, साथ ही तुम्हारे बीच रहनेवाले परदेसी, अनाथ* और विधवाएँ आकर उस भंडार में से लेंगे और जी-भरकर खाएँगे[5] और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हर काम पर आशीष देगा।[6]

15 हर सातवें साल के आखिर में तुम रिहाई का ऐलान करना।[7] 2 इस रिहाई में यह शामिल है: अगर एक आदमी से उसके किसी पड़ोसी ने कर्ज़ लिया है तो लेनदार को चाहिए कि वह इस साल अपने पड़ोसी को, अपने भाई को रिहाई दे और कर्ज़ चुकाने की माँग न करे क्योंकि इस साल यहोवा के सम्मान में रिहाई का ऐलान किया जाएगा।[8] 3 तुम परदेसी से कर्ज़ चुकाने की माँग कर सकते हो,[9] मगर अपने भाई से कर्ज़ चुकाने की माँग न करना। 4 तुम्हारे बीच कोई गरीब नहीं होना चाहिए क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें जो देश विरासत में देनेवाला है वहाँ यहोवा तुम्हें ज़रूर आशीष देगा,[10] 5 बशर्ते तुम सख्ती से अपने परमेश्वर यहोवा की बात

14:21 *शा., "फाटकों के अंदर।"

14:29 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।"

अध्य. 14
1 निर्ग 22:31, लैव 17:15
2 निर्ग 23:19, निर्ग 34:26
3 व्य 12:11, व्य 26:12
4 व्य 12:5, 17, व्य 15:19, 20
5 भज 111:10
6 व्य 12:5, 6

दूसरा कॉल.
1 व्य 12:7, व्य 26:11, भज 100:2
2 गि 18:21, 2इत 31:4, 1कुर 9:13
3 गि 18:20, व्य 10:9
4 व्य 26:12
5 निर्ग 22:21, व्य 10:18, याकू 1:27
6 व्य 15:10, भज 41:1, नीत 11:24, नीत 19:17, मला 3:10, लूक 6:35

अध्य. 15
7 लैव 25:2
8 व्य 31:10
9 निर्ग 12:43, व्य 14:21, व्य 23:20
10 व्य 28:8

मानो और इन सभी आज्ञाओं का पालन
करो जो आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ।[1]
6 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें आशीष
देगा, जैसे उसने तुमसे वादा किया है और
तुम्हारे पास इतना होगा कि तुम बहुत-
सी जातियों को उधार* दे सकोगे। तुम्हें
कभी उनसे उधार नहीं लेना पड़ेगा।[2] तुम
बहुत-सी जातियों पर हुक्म चलाओगे,
मगर वे तुम पर हुक्म नहीं चलाएँगी।[3]

7 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें जो
देश देगा, वहाँ अगर तुम्हारे शहर में
कोई इसराएली भाई कंगाल हो जाता है
तो तुम उसकी मदद करने से अपना हाथ
मत खींच लेना और दिल कठोर न कर
लेना।[4] 8 इसके बजाय तू खुले हाथ
उसे उधार* देना।[5] वह अपनी ज़रूरत के
हिसाब से तुझसे जितना भी उधार माँगे
उसे ज़रूर देना। 9 सावधान रहना कि
तू अपने दिल में यह बुरा खयाल न
पनपने दे: 'अब तो सातवाँ साल, रिहाई
का साल नज़दीक है'[6] और इस वजह से
अपने गरीब भाई की मदद करने से पीछे
हट जाए और उसे कुछ न दे। तब अगर
वह तेरे खिलाफ यहोवा की दुहाई दे तो तू
पापी ठहरेगा।[7] 10 जब वह तुझसे
माँगे तो उसे दिल खोलकर देना[8] और मन
में कुड़कुड़ाना मत। तभी तेरा परमेश्वर
यहोवा तेरी मेहनत पर आशीष देगा और
तू जो भी काम हाथ में लेगा उसमें तुझे
कामयाबी देगा।[9] 11 तुम्हारे देश में
गरीब हमेशा रहेंगे[10] इसीलिए मैं तुम्हें यह
आज्ञा देता हूँ, 'तुम अपने देश में मुसीबत
के मारों को और अपने गरीब भाइयों को
उदारता से और खुले हाथ से देना।'[11]

12 अगर तेरे इब्री भाइयों में से कोई,
चाहे वह आदमी हो या औरत, तेरे हाथ
बेच दिया जाए और वह तेरे यहाँ दास
बनकर छः साल काम करे तो सातवें साल
तू उसे आज़ाद कर देना।[1] 13 और
जब तू उसे आज़ाद करे तो उसे खाली हाथ
मत भेजना। 14 तू अपने भेड़-बकरियों
के झुंड में से जानवर, अपने खलिहान से
अनाज और अपने हौद से तेल और दाख-
मदिरा उसे देना। तेरे परमेश्वर यहोवा ने
तुझे जितनी आशीष दी होगी, उसके
मुताबिक तू उसे देना। 15 मत भूलना
कि मिस्र में तुम भी गुलाम थे और तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा तुम्हें वहाँ से छुड़ा लाया
है। इसीलिए मैं आज तुम्हें ऐसा करने की
आज्ञा दे रहा हूँ।

16 लेकिन अगर तेरा दास तुझसे
और तेरे घराने से बहुत प्यार करता है
और वह तेरे यहाँ रहते वक्त बहुत खुश
था इसलिए वह तुझसे कहता है कि
मैं तुझे छोड़कर नहीं जाऊँगा![2] 17 तो
तू उस दास को दरवाज़े के पास ले जाना
और एक सुए से उसका कान छेद देना।
फिर वह ज़िंदगी-भर के लिए तेरा दास
हो जाएगा। अगर तेरी दासी तुझे छोड़-
कर नहीं जाना चाहती तो उसके साथ भी
तू ऐसा ही करना। 18 अगर तू अपने
दास को आज़ाद करता है और वह तुझे
छोड़कर चला जाता है तो तू यह मत
सोचना कि इससे तुझे तकलीफ होगी,
क्योंकि उसने छः साल तेरे यहाँ इतना
काम किया है जितना दिहाड़ी पर काम
करनेवाला दो गुना मज़दूरी करता है और
तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे हर काम पर
आशीष दी है।

19 तुम अपने गाय-बैलों और भेड़-
बकरियों में से हर पहलौठे को अपने पर-
मेश्वर यहोवा के लिए अलग ठहराना।[3]
तुम अपने पहलौठे बैल से कोई काम
न करवाना, न ही भेड़-बकरियों के

15:6, 8 *या "गिरवी की चीज़ लेकर उधार।"

अध्य. 15
1 यह 1:7, 8; यश 1:19
2 व्य 28:12
3 व्य 28:13; 1रा 4:24, 25
4 नीत 21:13; याकू 2:15, 16; 1यूह 3:17
5 लैव 25:35; नीत 19:17; मत 5:42; लूक 6:34, 35; गल 2:10
6 व्य 15:1
7 निर्ग 22:22, 23; व्य 24:14, 15; नीत 21:13
8 प्रेष 20:35; 2कुर 9:7; 1ती 6:18; इब्र 13:16
9 व्य 24:19; भज 41:1
10 मत 26:11
11 नीत 3:27; मत 5:42; लूक 12:33

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 21:2; लैव 25:39
2 निर्ग 21:5, 6
3 निर्ग 13:2; निर्ग 22:30; गि 3:13; गि 18:15, 17

पहलौठे का ऊन कतरना। 20 तुम साल-दर-साल अपने घराने के साथ, इन पहलौठे जानवरों का गोश्त अपने परमेश्वर यहोवा के सामने उस जगह खाना जो यहोवा चुनेगा।[1] 21 लेकिन अगर तुम्हारा पहलौठा जानवर लँगड़ा या अंधा है या उसमें किसी और तरह का बड़ा दोष है, तो तुम उसे अपने परमेश्वर यहोवा के लिए बलि मत करना।[2] 22 तुम उसे अपने ही शहरों में* खाना। सब लोग यह गोश्त खा सकते हैं, फिर चाहे वे शुद्ध हों या अशुद्ध, ठीक जैसे चिकारे या हिरन का गोश्त तुम सब खाते हो।[3] 23 मगर तुम उसका खून मत खाना[4] बल्कि उसे पानी की तरह ज़मीन पर उँडेल देना।[5]

16 तुम आबीब* महीने को हमेशा याद रखना और उस महीने अपने परमेश्वर यहोवा के लिए फसह मनाया करना[6] क्योंकि आबीब महीने में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें रात के वक्त मिस्र से बाहर ले आया था।[7] 2 तुम अपने भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के झुंड से[8] अपने परमेश्वर यहोवा के लिए फसह का बलिदान चढ़ाना[9] और यह बलिदान तुम उस जगह चढ़ाना जो यहोवा अपने नाम की महिमा के लिए चुनेगा।[10] 3 तुम बलि के गोश्त के साथ कोई भी खमीरी चीज़ मत खाना।[11] तुम सात दिन तक दुख की रोटी यानी बिन-खमीर की रोटी खाना, ठीक जैसे तुमने उस दिन खायी थी जब तुमने हड़बड़ी में मिस्र देश छोड़ा था।[12] तुम ऐसा इसलिए करना ताकि तुम्हें सारी ज़िंदगी वह दिन याद रहे जब तुम मिस्र से बाहर आए थे।[13] 4 सात दिन तक तुम्हारे इलाके में कहीं भी खमीरा आटा न पाया जाए।[1] और पहले दिन की शाम को तुम जो जानवर बलि करोगे उसका कुछ भी गोश्त रात-भर, अगली सुबह तक मत बचाकर रखना।[2] 5 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें जो देश देनेवाला है, वहाँ तुम्हें अपनी मरज़ी से किसी भी शहर में फसह की बलि चढ़ाने की इजाज़त नहीं है। 6 इसके बजाय, तुम यह बलि उसी जगह पर चढ़ाना जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम की महिमा के लिए चुनेगा। तुम फसह का जानवर शाम को सूरज ढलते ही बलि करना,[3] जैसे तुमने मिस्र छोड़ते वक्त तय समय पर बलि किया था। 7 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो जगह चुनेगा[4] वहीं पर तुम इसका गोश्त पकाना और खाना।[5] फिर सुबह तुम अपने-अपने तंबू में लौट सकते हो। 8 तुम छः दिन बिन-खमीर की रोटियाँ खाना और सातवें दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए एक पवित्र सभा होगी। उस दिन तुम कोई काम मत करना।[6]

9 जिस दिन तुम अपने खेत में खड़ी फसल पर पहली बार हँसिया चलाओगे, उस दिन से तुम सात हफ्ते गिनना।[7] 10 सात हफ्ते बीतने पर तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए कटाई का त्योहार मनाना।[8] तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें जितनी आशीष दी होगी उसके हिसाब से तुम स्वेच्छा-बलि लाकर अर्पित करना।[9] 11 तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने अपने बेटे-बेटियों, दास-दासियों, अपने शहरों के* लेवियों, तुम्हारे बीच रहनेवाले परदेसियों, अनाथों# और विधवाओं के साथ उस जगह खुशियाँ

15:22; 16:11 *शा., "फाटकों के अंदर।"
16:1 *अति. ख15 देखें।

16:11 #या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।"

अध्य. 15
1 व्य 12:5, 6; व्य 14:23; व्य 16:11
2 लैव 22:20; व्य 17:1; मला 1:8; इब्र 9:14
3 व्य 12:15; व्य 14:4, 5
4 उत 9:4; लैव 7:26; प्रेष 15:20, 29
5 लैव 17:10, 13; व्य 12:16

अध्य. 16
6 निर्ग 12:14; लैव 23:5; गि 9:2; गि 28:16; 1कुर 5:7
7 निर्ग 34:18
8 निर्ग 12:5, 6; 2इत 35:7
9 मत 26:17
10 1रा 8:29
11 निर्ग 13:3; लैव 23:6; गि 28:17; 1कुर 5:8
12 निर्ग 12:33
13 निर्ग 12:14; निर्ग 13:8, 9

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 12:15; निर्ग 13:7
2 निर्ग 12:10; निर्ग 34:25
3 निर्ग 12:3, 6; गि 9:2, 3; मत 26:19, 20
4 यूह 2:13; यूह 11:55
5 निर्ग 12:8; 2इत 35:13
6 निर्ग 12:16; लैव 23:8
7 निर्ग 23:16; निर्ग 34:22; लैव 23:15
8 गि 28:26
9 व्य 16:17; 1कुर 16:2; 2कुर 8:12

मनाना जो तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा अपने नाम की महिमा के लिए चुनेगा।[1] **12** मत भूलना कि मिस्र में तुम भी गुलाम थे[2] और तुम इन सभी कायदे-कानूनों को मानना और इनके मुताबिक चलना।

13 जब तुम अपने खलिहान से अनाज इकट्ठा करोगे और अपने हौद से तेल और दाख-मदिरा जमा करोगे तब तुम सात दिन के लिए छप्परों का त्योहार मनाना।[3] **14** इस त्योहार के दौरान तुम खुशियाँ मनाना।[4] तुम अपने बेटे-बेटियों, दास-दासियों और उन लेवियों, परदेसियों, अनाथों और विधवाओं के साथ खुशियाँ मनाना जो तुम्हारे शहरों में रहते हैं। **15** तुम सात दिन तक अपने परमेश्‍वर यहोवा के लिए उस जगह त्योहार मनाना[5] जो यहोवा चुनता है क्योंकि तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हारी फसलों पर और तुम्हारे सभी कामों पर आशीष देगा[6] जिससे तुम ज़रूर खुशियाँ मनाओगे।[7]

16 साल में तीन बार सभी आदमी अपने परमेश्‍वर यहोवा के सामने हाज़िर हुआ करें। बिन-खमीर की रोटी के त्योहार,[8] कटाई के त्योहार[9] और छप्परों के त्योहार[10] के लिए उन्हें उस जगह हाज़िर होना है जो परमेश्‍वर चुनेगा। कोई भी आदमी यहोवा के सामने खाली हाथ न आए। **17** तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा ने तुममें से हरेक को जितनी आशीष दी होगी उस हिसाब से वह परमेश्‍वर के लिए भेंट लेकर आए।[11]

18 तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हें जो देश देनेवाला है वहाँ के सभी शहरों में* तुम हर गोत्र के लिए न्यायी[12] और अधिकारी ठहराना। उन्हें लोगों के मामलों का न्याय सच्चाई से करना चाहिए। **19** तुम गलत फैसला सुनाकर अन्याय न करना,[1] न किसी का पक्ष लेना[2] और न ही किसी से रिश्‍वत लेना, क्योंकि रिश्‍वत एक बुद्धिमान इंसान को भी अंधा कर सकती है[3] और एक नेक इंसान से भी झूठ बुलवा सकती है। **20** तुम सिर्फ और सिर्फ न्याय करना[4] ताकि तुम जीते रहो और उस देश को अपने अधिकार में कर लो जो तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हें देनेवाला है।

21 तुम अपने परमेश्‍वर यहोवा के लिए जो वेदी बनाओगे उसके पास कोई पेड़ लगाकर उसे पूजा-लाठ* की तरह मत पूजना।[5]

22 तुम अपने लिए कोई पूजा-स्तंभ भी न खड़ा करना[6] क्योंकि ऐसी चीज़ से तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा नफरत करता है।

17 तुम अपने परमेश्‍वर यहोवा को ऐसे बैल या भेड़ की बलि न चढ़ाना जिसमें किसी भी तरह का दोष हो, क्योंकि ऐसी बलि तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा की नज़र में घिनौनी है।[7]

2 तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हें जो देश देनेवाला है, वहाँ के किसी शहर में मान लो तुम्हारे आदमी-औरतों में से कोई तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा की नज़र में बुरा काम करता है और तुम्हारे परमेश्‍वर का करार तोड़ता है[8] **3** और सही राह पर चलना छोड़कर दूसरे देवताओं को पूजता है, उनके सामने दंडवत करता है या सूरज, चाँद या आसमान के तारों के आगे दंडवत करता है,[9] जिसकी मैंने आज्ञा नहीं दी है।[10] **4** जब तुम्हें इसकी खबर दी जाती है या तुम इस बारे में सुनते हो, तो तुम मामले की अच्छी छानबीन

16:18 *शा., "फाटकों के अंदर।"

16:21 *शब्दावली देखें।

अध्य. 16

1 व्य 12:5-7
2 निर्ग 3:7; व्य 5:15
3 निर्ग 23:16; लैव 23:34; गि 29:12; व्य 31:10, 11; यूह 7:2
4 व्य 12:12; नहे 8:10, 17; सभ 5:18
5 लैव 23:36, 40; नहे 8:18
6 व्य 7:13; व्य 28:8; व्य 30:16
7 फिल 4:4; 1थि 5:16
8 निर्ग 23:14, 15
9 व्य 16:10
10 व्य 16:13
11 2कुर 8:12
12 निर्ग 18:25, 26; व्य 1:16; 2इत 19:4, 5

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 23:2; लैव 19:15
2 व्य 1:17
3 निर्ग 23:8; 1शम 12:3; सभ 7:7
4 मी 6:8
5 निर्ग 34:13
6 निर्ग 23:24; लैव 26:1; व्य 12:3

अध्य. 17

7 लैव 22:20; व्य 15:21; मला 1:8
8 व्य 4:23; व्य 13:6-9
9 व्य 4:19
10 व्य 13:12-15

करना। अगर तुम पाते हो कि खबर सच है[1] और इसराएल में वाकई ऐसा घिनौना काम किया गया है,
5 तो जिस आदमी या औरत ने यह दुष्ट काम किया है, उसे तुम शहर के फाटक के पास ले जाना और पत्थरों से मार डालना।[2]
6 उसे दो या तीन गवाहों के बयान पर[3] ही मौत की सज़ा दी जानी चाहिए। एक ही गवाह के बयान पर उसे न मार डाला जाए।[4]
7 उसे पत्थरों से मार डालने के लिए सबसे पहले उनका हाथ उठे जो उसके खिलाफ गवाही देते हैं। इसके बाद बाकी लोग उसे पत्थरों से मार डालें। इस तरह तुम अपने बीच से बुराई मिटा देना।[5]

8 अगर कभी तुम्हारे शहर में ऐसा मामला तुम्हारे सामने पेश किया जाता है, जिसे निपटाना तुम्हें बहुत मुश्किल लगता है, चाहे वह कत्ल का मामला हो[6] या कानूनी दावे का या मारपीट का या आपसी झगड़े का, तो तुम वह मामला उस जगह ले जाकर पेश करना जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा चुनता है।[7]
9 तुम वह मामला लेवी याजकों और अपने दिनों के न्यायियों[8] के सामने पेश करना और वे उस मुकदमे का फैसला सुनाएँगे।[9]
10 यहोवा की चुनी हुई जगह से तुम्हें जो फैसला बताया जाता है, तुम उसी के मुताबिक कार्रवाई करना। वे तुम्हें जो भी हिदायत देते हैं, तुम उसका सख्ती से पालन करना।
11 वे तुम्हें जो कानून दिखाते हैं और जो फैसला सुनाते हैं, तुम उसी के मुताबिक कदम उठाना।[10] तुम उनके फैसले से न दाएँ मुड़ना न बाएँ।[11]
12 अगर एक आदमी न्यायी की बात नहीं सुनता या तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की सेवा करनेवाले याजक का फैसला नहीं मानता, तो उस गुस्ताख को तुम मार डालना।[12] इस तरह तुम इसराएल से बुराई मिटा देना।[1]
13 तब इसराएल के सब लोग इस बारे में सुनकर डर जाएँगे और इसके बाद फिर कभी कोई ऐसी गुस्ताखी नहीं करेगा।[2]

14 जब तुम उस देश में दाखिल होगे जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देनेवाला है और उसे अपने कब्ज़े में करके वहाँ रहने लगोगे और कहोगे, 'चलो, हम भी आस-पास की सब जातियों की तरह अपने लिए एक राजा ठहराते हैं,'[3]
15 तो तुम ऐसे आदमी को ही राजा ठहराना जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा चुनेगा।[4] तुम अपने इसराएली भाइयों में से किसी को राजा चुनना। तुम्हें किसी परदेसी को, जो तुम्हारा इसराएली भाई नहीं है, अपना राजा बनाने की इजाज़त नहीं है।
16 और जो आदमी राजा ठहराया जाता है उसे अपने लिए बहुत सारे घोड़े नहीं हासिल करने चाहिए,[5] न ही ज़्यादा घोड़े लाने के लिए अपने लोगों को मिस्र भेजना चाहिए[6] क्योंकि यहोवा ने तुम लोगों से कहा है, 'तुम कभी मिस्र वापस मत जाना।'
17 और एक राजा को बहुत-सी शादियाँ भी नहीं करनी चाहिए ताकि उसका मन सही राह से भटक न जाए।[7] और उसे अपने लिए ढेर सारा सोना-चाँदी नहीं जमा करना चाहिए।[8]
18 जब वह राजगद्दी पर बैठकर राज करना शुरू करेगा, तो उसे चाहिए कि वह लेवी याजकों के पास रखी कानून की किताब ले और उसमें लिखी सारी बातें हू-ब-हू अपने लिए एक किताब* में लिख ले।[9]

19 उसे अपनी यह किताब अपने पास रखनी चाहिए और सारी ज़िंदगी, हर दिन उसे पढ़ना चाहिए[10] ताकि वह अपने परमेश्वर यहोवा का डर मानना सीखे और

17:18 * या "खर्रे।"

अध्य. 17
1 यूह 7:51
2 व्य 13:6, 10
3 मत 18:16; यूह 8:17; 1ती 5:19; इब्र 10:28
4 गि 35:30; व्य 19:15
5 व्य 13:5; 1कुर 5:13
6 गि 35:11
7 व्य 12:5; 1रा 3:16, 28; भज 122:2, 5
8 1शम 7:15, 16
9 व्य 19:17; व्य 21:5
10 मला 2:7
11 व्य 5:32; व्य 12:32
12 नीत 11:2; इब्र 10:28

दूसरा कॉल.
1 व्य 13:5; 1कुर 5:13
2 व्य 13:11; व्य 19:20
3 1शम 8:5, 20; 1शम 10:19
4 1शम 9:17; 1शम 10:24; 1शम 16:12, 13
5 व्य 20:1; 2शम 8:4; भज 20:7; नीत 21:31
6 यश 31:1
7 1रा 11:1-3; नहे 13:26
8 अय 31:24, 28; 1ती 6:9
9 व्य 31:9, 26; 2रा 22:8
10 2इत 34:18

उसमें दिए सभी नियमों का पालन करे
और कायदे-कानूनों के मुताबिक चले।[1]
20 तब उसका मन घमंड से नहीं फूलेगा
और वह खुद को अपने भाइयों से बड़ा
नहीं समझेगा। वह परमेश्‍वर की आज्ञाओं
से न दाएँ मुड़ेगा न बाएँ और इसराएल पर
उसका और उसके वंशजों का राज अरसों
तक बना रहेगा।

18 लेवी याजकों को, यहाँ तक कि
पूरे लेवी गोत्र को इसराएलियों
के साथ देश में ज़मीन का कोई भाग
या विरासत नहीं दी जाएगी। वे उन
चढ़ावों में से खाएँगे जो यहोवा के लिए
आग में अर्पित किए जाते हैं यानी वे
उसके भाग में से खाएँगे।[2] **2** इसलिए
लेवियों को अपने इसराएली भाइयों के
बीच कोई विरासत नहीं मिलेगी। यहोवा
ही उनकी विरासत है, ठीक जैसे उसने
उन्हें बताया था।

3 जब भी लोग जानवरों की बलि
चढ़ाते हैं, चाहे बैल की हो या भेड़
की, तो जानवर का कंधा, उसके जबड़े
और उसका पेट याजक को दिया जाए।
इन हिस्सों पर याजकों का हक होगा।
4 तुम अपने पहले फल में से अनाज,
नयी दाख-मदिरा, तेल और अपनी भेड़ों
का कतरा हुआ पहला ऊन उन्हें देना।[3]
5 तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा ने तुम्हारे सब
गोत्रों में से लेवियों को चुना है कि वे
और उनके बेटे हमेशा यहोवा के नाम से
सेवा करें।[4]

6 अगर एक लेवी इसराएल देश में
अपना शहर छोड़कर[5] यहोवा की चुनी
हुई जगह* जाना चाहता है,[6] **7** तो
वह जा सकता है और वहाँ अपने पर-
मेश्‍वर यहोवा के नाम से सेवा कर सकता
है, जैसे उसके दूसरे लेवी भाई यहोवा
के सामने हाज़िर रहकर सेवा करते हैं।[1]
8 उसे अपनी पुश्‍तैनी जायदाद बेचने से
जो रकम मिलती है, उसके अलावा अपने
बाकी लेवी भाइयों के साथ खाने-पीने की
चीज़ों का बराबर हिस्सा मिलेगा।[2]

9 जब तुम उस देश में दाखिल होगे
जो तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हें देने-
वाला है, तो तुम वहाँ रहनेवाली जातियों
की तरह घिनौने काम न करना।[3]
10 तुममें ऐसा कोई न हो जो अपने बेटे
या बेटी को आग में होम करता है,[4]
ज्योतिषी का काम करता है,[5] जादू
करता है,[6] शकुन विचारता है,[7] टोना-
टोटका करता है,[8] **11** मंत्र फूँककर
किसी को काबू में करता है, भविष्य
बतानेवाले से पूछताछ करता है,[9] मरे
हुओं से संपर्क करने का दावा करता
है[10] या ऐसा दावा करनेवाले से पूछ-
ताछ करता है।[11] **12** जो कोई ऐसे
काम करता है वह यहोवा की नज़र में
घिनौना है और इन्हीं घिनौने कामों की
वजह से तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा उन
जातियों को तुम्हारे सामने से भगा रहा है।
13 तुम अपने परमेश्‍वर यहोवा की नज़र
में निर्दोष बने रहना।[12]

14 तुम जिन जातियों को उस देश से
निकाल रहे हो वे जादू-टोना करनेवालों[13]
और ज्योतिषियों[14] की सुनती हैं, मगर
तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा ने तुम्हें इस तरह
का कोई भी काम करने की इजाज़त नहीं
दी है। **15** तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा
तुम्हारे भाइयों के बीच में से तुम्हारे लिए
मेरे जैसा एक भविष्यवक्‍ता खड़ा करेगा।
तुम उसकी बात सुनना।[15] **16** तुम्हारा
परमेश्‍वर यहोवा ऐसा इसलिए करेगा
क्योंकि होरेब में जब तुम लोगों की पूरी
मंडली इकट्ठा हुई थी[16] तब तुमने बिनती
की थी, 'हम अपने परमेश्‍वर यहोवा की

18:6 *यानी उपासना की खास जगह जो यहोवा चुनता है।

अध्य. 17
1 भज 1:2
भज 119:97

अध्य. 18
2 गि 18:20, 24
व्य 10:9
यह 13:14, 33
1कुर 9:13
3 निर्ग 23:19
गि 18:8, 12
2इत 31:4
नहे 12:44
4 निर्ग 28:1
गि 3:10
व्य 10:8
5 गि 35:2
6 व्य 12:5, 6
व्य 16:2
भज 26:8

दूसरा कॉल.
1 2इत 31:2
2 लैव 7:10
3 लैव 18:26
व्य 12:30
4 व्य 12:31
2रा 16:1, 3
2इत 28:1, 3
भज 106:35-37
यिर्म 32:35
5 2रा 17:17
प्रेष 16:16
6 लैव 19:26
प्रेष 19:19
7 यहे 21:21
8 निर्ग 22:18
9 लैव 19:31
10 लैव 20:27
1इत 10:13
11 1शम 28:7-11
यश 8:19
गल 5:19, 20
12 मत 5:48
2पत 3:14
13 लैव 19:26
2रा 21:1, 2, 6
14 यह 13:22
15 उत 49:10
गि 24:17
लूक 7:16
यूह 1:45
यूह 6:14
प्रेष 3:22
प्रेष 7:37
16 निर्ग 19:17

आवाज़ अब और नहीं सुन सकते, न ही इस बड़ी आग को देख सकते हैं, कहीं ऐसा न हो कि हम मर जाएँ।’[1] 17 तब यहोवा ने मुझसे कहा था, ‘ये लोग ठीक कह रहे हैं। 18 मैं उनके लिए उन्हीं के बीच से तेरे जैसा एक भविष्यवक्ता खड़ा करूँगा[2] और उसे अपनी आज्ञाएँ बताया करूँगा।[3] वह जाकर उन्हें वह सारी बातें बताएगा जिसकी मैं उसे आज्ञा दूँगा।[4] 19 अगर एक इंसान उस भविष्यवक्ता की बात नहीं सुनेगा जो मेरे नाम से बताएगा तो उस इंसान से मैं लेखा लूँगा।[5]

20 अगर एक भविष्यवक्ता मेरे नाम से ऐसी बात कहने की गुस्ताखी करता है जिसकी मैंने उसे आज्ञा नहीं दी या दूसरे देवताओं के नाम से संदेश देता है, तो वह मार डाला जाए।[6] 21 मगर शायद तुम्हारे मन में यह सवाल उठे: “हम कैसे जान सकेंगे कि वह भविष्यवक्ता जो बात कह रहा है वह यहोवा की तरफ से नहीं है?” 22 जब कोई भविष्यवक्ता यहोवा के नाम से भविष्यवाणी करता है, मगर वह पूरी नहीं होती या झूठी साबित होती है, तो इसका मतलब है कि उसका संदेश यहोवा की तरफ से नहीं था। उस भविष्य-वक्ता ने अपनी तरफ से बोलने की गुस्ताखी की है। तुम उससे मत डरना।’

19 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें वह देश दे देगा जहाँ दूसरी जातियाँ रहती हैं। यहोवा उन जातियों का नाश कर देगा और तुम उनके शहरों और घरों में बस जाओगे।[7] 2 जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वह देश तुम्हारे अधि-कार में कर देगा, तो तुम उस देश के बीच में तीन शहर अलग ठहराना।[8] 3 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जिस देश को तुम्हारे अधिकार में कर देगा, उसका इलाका तुम तीन प्रांतों में बाँटना और उन शहरों तक जाने के लिए सड़कें तैयार करना ताकि एक खूनी उनमें से किसी शहर में भाग सके।

4 मगर उन शहरों में सिर्फ ऐसे खूनी को रहने दिया जाए जिसने अनजाने में किसी का खून किया है न कि नफरत की वजह से।[1] 5 जैसे, एक आदमी अपने साथी के साथ जंगल में लकड़ी काटने जाता है और जब पेड़ काटने के लिए कुल्हाड़ी ऊपर उठाता है तो कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर उसके साथी को लग जाती है और वह मर जाता है। तब उस खूनी को उनमें से किसी एक शहर में भाग जाना चाहिए और वहीं रहना चाहिए।[2] 6 अगर शहर बहुत दूर होगा तो जब खून का बदला लेनेवाला[3] गुस्से की आग में जलता हुआ खूनी का पीछा करेगा तब रास्ते में ही उसे पकड़कर मार डालेगा, जबकि उसे मार डालना सही नहीं होगा क्योंकि वह उस आदमी से नफरत नहीं करता था जिसे उसने मार डाला था।[4] 7 इसीलिए मैं तुम्हें आज्ञा दे रहा हूँ, ‘तुम तीन शहर अलग ठहराना।’

8 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी सरहद बढ़ाएगा और तुम्हें देश का सारा इलाका दे देगा जैसे उसने तुम्हारे पुरखों से शपथ खाकर वादा किया था,[5] 9 बशर्ते तुम इस आज्ञा का हमेशा पालन करो, जो आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा से प्यार करना और हमेशा उसकी राहों पर चलना।[6] जब परमेश्वर तुम्हारी सरहद बढ़ाएगा तो तुम इन तीन शहरों के अलावा तीन और शहर अलग ठहराना।[7] 10 तब उस देश में, जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विरासत में देनेवाला है, किसी बेगुनाह का खून नहीं बहाया जाएगा[8] और तुम पर खून का दोष नहीं लगेगा।[9]

अध्य. 18

1 निर्ग 20:19
2 निर्ग 34:28; गि 12:3; मत 4:1, 2; मत 11:29; यूह 5:46
3 यूह 17:8
4 यूह 12:49; इब्र 1:2
5 प्रेष 3:23
6 व्य 13:1-5; यिर्म 28:11-17

अध्य. 19

7 व्य 7:1; व्य 9:1
8 गि 35:14; यह 20:7, 9

दूसरा कॉल.

1 गि 35:15; व्य 4:42
2 गि 35:25
3 गि 35:12, 19
4 यह 20:4, 5
5 उत 15:18; उत 28:14; निर्ग 23:31; व्य 11:24
6 व्य 11:22, 23
7 यह 20:7, 8
8 नीत 6:16, 17
9 व्य 21:6-9

11 लेकिन अगर एक आदमी अपने साथी से नफरत करता है[1] और घात लगाकर उस पर जानलेवा हमला करता है जिससे उसका साथी मर जाता है और इसके बाद वह खूनी इनमें से किसी शहर में भाग जाता है, **12** तो वह खूनी जिस शहर का है, वहाँ के मुखियाओं को उसे वापस बुलवाना चाहिए और उसे खून का बदला लेनेवाले के हाथ में सौंप देना चाहिए। और वह खूनी मार डाला जाए।[2] **13** तुम* उस पर बिलकुल तरस न खाना और इसराएल से बेगुनाह के खून का दोष मिटा देना[3] जिससे तुम्हारा भला हो।

14 तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा जो देश तुम्हारे अधिकार में करनेवाला है, वहाँ जब तुम सबको अपनी-अपनी विरासत की ज़मीन मिलेगी, तो तुम अपने पड़ोसी की ज़मीन का सीमा-चिन्ह मत सरकाना[4] जो पुरखों ने लगाया है।

15 अगर एक आदमी पर किसी गुनाह या पाप का इलज़ाम लगाया गया है, तो सिर्फ एक गवाह उसे दोषी नहीं ठहरा सकता।*[5] दो या तीन गवाहों के बयान पर ही मामले की सच्चाई साबित की जानी चाहिए।[6] **16** अगर एक आदमी दूसरे आदमी को नुकसान पहुँचाने के इरादे से उसके खिलाफ झूठी गवाही देता है और उस पर किसी अप-राध का इलज़ाम लगाता है,[7] **17** तो उन दोनों आदमियों को, जिनके बीच मुकदमा है, यहोवा और याजकों और अपने दिनों के न्यायियों के सामने हाज़िर होना चाहिए।[8] **18** न्यायी मामले की अच्छी छानबीन करेंगे[9] और अगर यह साबित हो जाए कि गवाही देनेवाला झूठा है और उसने अपने साथी पर झूठा इल-ज़ाम लगाया है, **19** तो उस झूठे गवाह को वही सज़ा देना, जो उसने अपने भाई को दिलाने की साज़िश की थी।[1] इस तरह तुम अपने बीच से बुराई मिटा देना।[2] **20** फिर जब दूसरे लोग इस मामले के बारे में सुनेंगे तो वे डर जाएँगे और तुम्हारे बीच फिर कभी कोई ऐसा बुरा काम नहीं करेगा।[3] **21** ऐसा बुरा काम करनेवाले पर तुम* बिलकुल तरस न खाना।[4] उससे तुम बराबर का बदला लेना, जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ और पैर के बदले पैर।[5]

20 जब तुम अपने दुश्‍मनों से युद्ध करने जाओगे और देखोगे कि उनके पास घोड़े और रथ हैं और उनके सैनिक तुमसे ज़्यादा हैं, तो तुम उनसे डर मत जाना क्योंकि तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हारे साथ है, जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाया है।[6] **2** जब तुम्हारी सेना युद्ध के लिए तैयार खड़ी हो, तब याजक को सेना के सामने आकर उससे बात करनी चाहिए।[7] **3** उसे सैनिकों से यह कहना चाहिए, 'हे इसराएलियो, सुनो। तुम जो अपने दुश्‍मनों से युद्ध करने जा रहे हो, तुम अपना दिल कमज़ोर न होने देना। तुम दुश्‍मनों से बिलकुल न डरना, न ही उनसे खौफ खाना या उनसे थर-थर काँपना **4** क्योंकि तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा तुम्हारे साथ-साथ चल रहा है और वह तुम्हारी तरफ से दुश्‍मनों से लड़ेगा और तुम्हें बचाएगा।'[8]

5 और सेना-अधिकारी भी सैनिकों से कहें, 'क्या तुममें ऐसा कोई आदमी है जिसने नया घर बनाया और उसमें रहना शुरू नहीं किया? अगर है तो वह अपने घर लौट जाए। कहीं ऐसा न हो कि

19:13, 21 *शा., "तुम्हारी आँखें।"
19:15 *शा., "उसके खिलाफ नहीं उठ सकता।"

अध्य. 19
1 1यूह 3:15
2 उत 9:6, निर्ग 21:12, गि 35:16, व्य 27:24
3 लैव 24:17, 21, गि 35:33, 2शम 21:1
4 व्य 27:17
5 गि 35:30, व्य 17:6
6 मत 18:16, यूह 8:17, 2कुर 13:1, 1ती 5:19
7 निर्ग 23:1, 1रा 21:13, मर 14:56
8 व्य 17:8, 9
9 व्य 13:14, व्य 17:4, 2इत 19:6

दूसरा कॉल.
1 नीत 19:5
2 व्य 21:20, 21, व्य 24:7, 1कुर 5:13
3 व्य 13:11, व्य 17:13, 1ती 5:20
4 व्य 19:13
5 निर्ग 21:23-25, लैव 24:20, मत 5:38

अध्य. 20
6 व्य 3:22, व्य 31:6, भज 20:7, नीत 21:31
7 गि 31:6
8 निर्ग 14:14, यह 23:10

वह लड़ाई में मारा जाए और कोई
दूसरा आदमी जाकर उसके घर में रहने
लगे। **6** क्या तुममें ऐसा कोई है जिसने
अंगूरों का बाग लगाया और अब तक
उसका फल नहीं खाया? अगर है तो
वह अपने घर लौट जाए। कहीं ऐसा न
हो कि वह लड़ाई में मारा जाए और कोई
दूसरा आदमी उसके बाग के फल खाए।
7 क्या तुममें ऐसा कोई आदमी है जिसकी
सगाई हो चुकी है मगर अब तक शादी
नहीं हुई? अगर है तो वह अपने घर लौट
जाए।[1] कहीं ऐसा न हो कि वह लड़ाई में
मारा जाए और कोई दूसरा आदमी उसकी
मँगेतर से शादी कर ले।’ **8** सेना-अधि-
कारी सैनिकों से यह भी पूछें, ‘क्या तुममें
कोई डरपोक और बुज़दिल है?[2] अगर है
तो वह अपने घर लौट जाए। कहीं ऐसा न
हो कि वह अपने दूसरे भाइयों का भी मन
कच्चा कर दे।’[3] **9** यह सब कहने के
बाद सेना-अधिकारियों को सेना की अगु-
वाई के लिए सेनापति ठहराने चाहिए।

10 जब तुम किसी शहर से युद्ध करने
उसके पास जाते हो, तो पहले उसके
सामने शांति का प्रस्ताव रखना और
उसे अपनी सुलह की शर्तें बताना।[4]
11 अगर वह शहर तुम्हारी शर्तें मान-
कर तुमसे सुलह के लिए राज़ी हो जाता है
और तुम्हारे लिए अपने फाटक खोल देता
है, तो उस शहर के सभी लोग तुम्हारे लिए
जबरन मज़दूरी करनेवाले बन जाएँगे
और तुम्हारी सेवा करेंगे।[5] **12** लेकिन
अगर वह शहर तुम्हारे साथ सुलह करने
से इनकार कर देता है और तुमसे युद्ध
करने निकल पड़ता है तो तुम उस शहर
को घेर लेना। **13** तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा ज़रूर उस शहर को तुम्हारे हाथ
में कर देगा और तुम वहाँ के हर आदमी
को तलवार से मार डालना। **14** मगर

अध्य. 20
1 व्य 24:5
2 न्या 7:3
3 गि 13:33
गि 14:1-3
गि 32:9
व्य 1:28
4 यह 11:19
5 लैव 25:44, 46
यह 9:22, 27

दूसरा कॉल.
1 2इत 14:13
2 यह 22:8
3 यह 6:17
यह 10:28
यह 11:11
4 व्य 7:1
5 निर्ग 34:15
व्य 7:4
यह 23:12, 13
यश 2:6
1कुर 5:6
1कुर 15:33
6 नहे 9:25

औरतों, बच्चों और मवेशियों को और
शहर की हर चीज़ तुम लूट में ले लेना।[1]
तुम अपने दुश्मनों का लूट का माल अपने
लिए ले लेना क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा ने तुम्हें यह सब दे दिया है।[2]

15 ऐसा तुम उन सभी शहरों के साथ
करना जो तुमसे बहुत दूर हैं, जो यहाँ
की आस-पास की जातियों के नहीं हैं।
16 मगर जो शहर तुम्हारे आस-पास की
जातियों के हैं और तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा तुम्हें विरासत में दे रहा है, वहाँ
तुम किसी को भी ज़िंदा मत छोड़ना।[3]
17 तुम वहाँ रहनेवाले हित्तियों, एमो-
रियों, कनानियों, परिज्जियों, हिव्वियों
और यबूसियों को पूरी तरह नाश कर
देना,[4] ठीक जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा
ने तुम्हें आज्ञा दी है **18** ताकि ये
जातियाँ तुम्हें ऐसे घिनौने काम न सिखाएँ
जो वे अपने देवताओं के लिए करती हैं
और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के खिलाफ
तुमसे पाप न करवाएँ।[5]

19 जब तुम किसी शहर पर घेराबंदी
करते हो और कई दिनों तक उससे युद्ध
करते हो तो वहाँ के पेड़ों पर कुल्हाड़ी
चलाकर उन्हें नाश मत करना। तुम उन
पेड़ों के फल खा सकते हो, मगर उन्हें
काटना मत।[6] क्या मैदान के पेड़ इंसान हैं
कि तुम उन पर हमला करके उन्हें नाश
कर दो? **20** तुम सिर्फ ऐसे पेड़ों को
काट सकते हो जिनके बारे में तुम जानते
हो कि वे फलदार पेड़ नहीं हैं। तुम उन्हें
काटकर शहर की घेराबंदी के लिए इस्ते-
माल कर सकते हो, जब तक कि तुम
शहर पर कब्ज़ा नहीं कर लेते।

21 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो देश
तुम्हारे अधिकार में करनेवाला
है, वहाँ अगर कहीं मैदान में किसी आदमी
की लाश मिलती है और कोई नहीं जानता

कि उसका खून किसने किया है, 2 तो
तुम्हारे मुखिया और न्यायी[1] उस जगह
जाएँ और वहाँ से आस-पास के शहरों की
दूरी नापें। 3 फिर जो शहर सबसे नज़-
दीक पड़ता है वहाँ के मुखियाओं को एक
ऐसी गाय लेनी चाहिए जिससे अब तक
काम नहीं लिया गया है और जो जुए में
नहीं जोती गयी है। 4 मुखिया उस गाय
को एक ऐसी घाटी में ले जाएँ जहाँ
पानी की धारा बहती हो और जहाँ कभी
जुताई-बोआई न की गयी हो। और वे
वहीं घाटी में उस गाय का गला काटकर
उसे मार डालें।[2]

5 तब लेवी याजक वहाँ आएँगे
क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उन्हें
इसलिए चुना है कि वे उसकी सेवा
करें[3] और यहोवा के नाम से लोगों को
आशीर्वाद देंगे।[4] वे बताएँगे कि खून-
खराबे का हर मामला कैसे निपटाया
जाए।[5] 6 फिर उस नज़दीकी शहर के
सभी मुखिया उस गाय के ऊपर अपने
हाथ धोएँ,[6] जिसे घाटी में गला काट-
कर मार डाला गया है 7 और कहें, 'न
हमारे हाथों ने यह खून बहाया है और न
ही हमारी आँखों ने यह खून होते देखा है।
8 इसलिए हे यहोवा, तू अपने लोगों
को, इसराएलियों को इसके लिए ज़िम्मे-
दार मत ठहरा जिन्हें तू छुड़ाकर लाया है[7]
और उस बेगुनाह के खून का दोष अपने
इसराएली लोगों से मिटा दे।'[8] तब उस
इंसान के खून का दोष तुम पर नहीं
आएगा। 9 इस तरह तुम उस बेगुनाह
के खून का दोष अपने बीच से मिटा दोगे
क्योंकि तुमने वही किया होगा जो यहोवा
की नज़र में सही है।

10 जब तू कभी अपने दुश्मनों से युद्ध
करने जाए और तेरा परमेश्वर यहोवा
तेरी तरफ से लड़कर उन्हें हरा दे और
तू उन्हें बंदी बना ले[1] 11 तब अगर
तू उन बंदियों में से किसी खूबसूरत औरत
को देखता है और वह तुझे बहुत पसंद
आती है और तू उसे अपनी पत्नी
बनाना चाहता है, 12 तो तू उसे अपने
घर ला सकता है। उस औरत को अपना
सिर मुँड़ाना चाहिए, अपने नाखून काटने
चाहिए 13 और अपनी वह पोशाक
बदल लेनी चाहिए जिसे पहने वह बँधु-
आई में आयी थी। वह तेरे घर में रहेगी
और पूरे एक महीने तक अपने माँ-बाप के
लिए मातम मनाएगी।[2] इसके बाद तू उसे
अपनी पत्नी बना सकता है और उसके
साथ संबंध रख सकता है। 14 लेकिन
बाद में अगर तू उससे खुश न हो तो तुझे
चाहिए कि तू उस औरत को भेज दे,[3] वह
जहाँ जाना चाहे वहाँ उसे जाने दे। मगर
तुझे उस औरत को पैसे के लिए नहीं
बेचना चाहिए और न ही उसके साथ बद-
सलूकी करनी चाहिए, क्योंकि तूने उसे
ज़बरदस्ती पत्नी बनाया था।

15 मान लो किसी आदमी की दो
पत्नियाँ हैं और वह एक को दूसरे से
ज़्यादा प्यार करता है।* दोनों पत्नि-
यों से उसके बेटे होते हैं, मगर पह-
लौठा उस पत्नी का है जिससे वह कम
प्यार करता है।[4] 16 जब अपने बेटों में
जायदाद बाँटने का दिन आएगा तो उसे
यह इजाज़त नहीं कि वह अपने पहलौठे
का यानी जिस पत्नी से वह कम प्यार
करता है उसके बेटे का हक छीन ले और
अपनी चहेती पत्नी के बेटे को पहलौठे
का दर्जा दे दे। 17 उस आदमी को उसी
पत्नी के बेटे को अपना पहलौठा मानना
होगा जिससे वह कम प्यार करता है और
उसी बेटे को अपनी हर चीज़ का दुगना

21:15 *शा., "दो पत्नियाँ हैं, एक से वह प्यार करता है और दूसरी से नफरत।"

अध्य. 21
1 व्य 16:18
2 गि 35:33
3 निर्ग 28:1
4 गि 6:23-27; 1इत 23:13
5 व्य 17:8, 9
6 भज 26:6; मत 27:24
7 2शम 7:23
8 यश 26:21; यिर्म 26:15

दूसरा कॉल.
1 गि 31:9; व्य 20:13, 14
2 गि 20:29; व्य 34:8
3 व्य 24:1
4 उत 29:30, 33

हिस्सा देना होगा, क्योंकि वही बेटा उसकी शक्ति* की पहली निशानी है। पहलौठे के नाते उस बेटे का जो हक है वह उसी का रहेगा।[1]

18 अगर किसी आदमी का बेटा ढीठ और बागी है और अपने माँ-बाप का कहना नहीं मानता[2] और उसके माँ-बाप उसे सुधारने की बहुत कोशिश करते हैं, पर वह उनकी एक नहीं सुनता[3] 19 तो उसके माँ-बाप को उसे पकड़कर अपने शहर के फाटक पर मुखियाओं के पास लाना चाहिए 20 और मुखियाओं को यह बताना चाहिए, 'हमारा यह बेटा ढीठ और बागी है, यह हमारा कहना बिलकुल नहीं मानता। यह पेटू[4] और पियक्कड़ है।'[5] 21 तब शहर के सारे आदमी उसे पत्थरों से मार डालें। इस तरह तुम अपने बीच से बुराई मिटा देना। जब इसराएल के सभी लोग इस बारे में सुनेंगे तो वे डरेंगे।[6]

22 अगर किसी आदमी ने ऐसा पाप किया है जिसकी सज़ा मौत है और तुम उसे मार डालने के बाद[7] काठ पर लटका देते हो,[8] 23 तो उसकी लाश पूरी रात काठ पर न लटकी रहे।[9] इसके बजाय, जिस दिन तुम उस आदमी को मौत की सज़ा देते हो उसी दिन उसकी लाश दफना देना, क्योंकि हर वह इंसान जो काठ पर लटकाया जाता है वह परमेश्वर की तरफ से शापित ठहरता है।[10] तुम अपने देश को दूषित मत करना जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विरासत में देनेवाला है।[11]

22 अगर तू अपने किसी इसराएली भाई के बैल या उसकी भेड़ को कहीं भटकता हुआ देखे, तो जानबूझकर उसे नज़रअंदाज़ मत करना।[12] तू ज़रूर उसे ले जाकर अपने भाई के हाथ सौंप देना। 2 लेकिन अगर वह इसराएली भाई बहुत दूर रहता है या तू नहीं जानता कि जानवर किसका है, तो तू जानवर को अपने घर ले जाना। उसे तब तक अपने यहाँ रखना जब तक कि तेरा भाई उसे ढूँढ़ते हुए तेरे पास नहीं आता। जब वह आएगा तो उसे जानवर लौटा देना।[1] 3 तुझे अपने भाई की जो भी खोयी हुई चीज़ मिलती है उसे ज़रूर लौटा देना, फिर चाहे वह उसका गधा हो या कपड़ा या कोई और चीज़। तू उसे देखकर भी अनदेखा मत करना।

4 अगर कभी तू देखे कि एक इसराएली भाई का गधा या बैल रास्ते में गिरा पड़ा है तो तू जानबूझकर उसे नज़रअंदाज़ मत करना। तू ज़रूर अपने भाई के पास जाना और जानवर को उठाने में उसकी मदद करना।[2]

5 एक औरत को आदमी के कपड़े नहीं पहनने चाहिए और न ही एक आदमी को औरत के कपड़े पहनने चाहिए। जो कोई ऐसा करता है वह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की नज़र में घिनौना है।

6 अगर तू कभी रास्ते में चलते हुए देखे कि ज़मीन पर या किसी पेड़ पर एक घोंसला है और उसमें एक चिड़िया अपने बच्चों या अंडों पर बैठी है, तो तू घोंसले में से बच्चों के साथ-साथ चिड़िया को मत ले लेना।[3] 7 तू चाहे तो बच्चों को ले सकता है मगर चिड़िया को ज़रूर उड़ा देना। ऐसा करने से तेरा भला होगा और तू लंबी उम्र जीएगा।

8 अगर तू एक नया घर बनाता है, तो छत पर मुँडेर ज़रूर बनाना[4] ताकि ऐसा न हो कि कोई तेरे घर की छत से गिर जाए और उसके खून का दोष तेरे परिवार पर आए।

21:17 * या "संतान पैदा करने की शक्ति।"

अध्य. 21

1 उत 25:31, 2इत 21:3
2 निर्ग 20:12, व्य 27:16, नीत 1:8, इफ 6:1
3 व्य 8:5, नीत 13:24, नीत 19:18, नीत 23:13, इब्र 12:9
4 नीत 28:7
5 रोम 13:13, 1कुर 6:10, इफ 5:18
6 व्य 13:10, 11
7 गि 25:5
8 यह 10:26, प्रेष 10:39
9 यह 8:29, यूह 19:31
10 गल 3:13
11 गि 35:34

अध्य. 22

12 निर्ग 23:4

दूसरा कॉल.

1 मत 7:12
2 निर्ग 23:5, लैव 19:18, लूक 10:27, गल 6:10
3 लैव 22:28, भज 145:9, नीत 12:10, मत 10:29
4 2शम 11:2, प्रेष 10:9

9 तू अपने अंगूरों के बाग में अंगूरों
के साथ कोई और बीज मत बोना,[1]
वरना तेरे बाग से मिलनेवाले अंगूर और
दूसरे बीज की उपज, दोनों ज़ब्त कर लिए
जाएँगे और पवित्र-स्थान के लिए दे दिए
जाएँगे।

10 तू बैल और गधे को एक जुए में
जोतकर हल न चलाना।[2]

11 तू ऐसी पोशाक न पहनना जो ऊन
और मलमल के धागे को मिलाकर बुनी
गयी हो।[3]

12 तू अपने कपड़े के चारों कोनों पर
फुँदने लगाना।[4]

13 अगर एक आदमी शादी करता है
और अपनी पत्नी के साथ संबंध रखता
है, मगर बाद में वह उससे नफरत करने
लगता है* **14** और उस पर बदचलनी
का इलज़ाम लगाता है और यह कहकर
उसे बदनाम करता है: 'मैंने इस औरत
से शादी की थी, मगर इसके साथ संबंध
रखने पर मैंने इसमें कुँवारी होने का
सबूत नहीं पाया,' **15** तो लड़की के माँ-
बाप को शहर के फाटक पर मुखि-
याओं के पास जाना चाहिए और उनके
सामने अपनी बेटी के कुँवारी होने का
सबूत पेश करना चाहिए। **16** लड़की
के पिता को मुखियाओं से कहना चाहिए,
'मैंने अपनी बेटी की शादी इस आदमी
से करायी थी, मगर अब यह आदमी मेरी
बेटी से नफरत करता है* **17** और
उस पर बदचलन होने का इलज़ाम लगा-
कर कहता है, "मैंने पाया है कि तेरी
बेटी में कुँवारी होने का सबूत नहीं है।"
मगर यह रहा मेरी बेटी के कुँवारेपन का
सबूत।' यह कहने के बाद लड़की के माँ-
बाप को शहर के मुखियाओं के सामने
कपड़ा बिछाना चाहिए। **18** तब शहर
के मुखिया[1] उस आदमी को सज़ा देंगे[2]
19 और उस पर 100 शेकेल* चाँदी
का जुरमाना लगाएँगे क्योंकि उसने इस-
राएल की एक कुँवारी लड़की को बदनाम
किया है।[3] मुखिया उस आदमी का दिया
पैसा लड़की के पिता को देंगे। वह लड़की
उस आदमी की पत्नी बनी रहेगी और उस
आदमी को जीते-जी उसे तलाक देने की
इजाज़त नहीं है।

20 लेकिन अगर वह इलज़ाम सच है
और लड़की के कुँवारी होने का कोई
सबूत नहीं है, **21** तो वे लड़की को
उसके पिता के घर के द्वार पर ले जाएँ
और शहर के आदमी लड़की को पत्थरों
से मार डालें, क्योंकि वह अपने पिता
के घर में रहते नाजायज़ यौन-संबंध रख-
कर*[4] इसराएल पर कलंक ले आयी
है।[5] इस तरह तुम अपने बीच से बुराई
मिटा देना।[6]

22 अगर कोई आदमी किसी दूसरे
आदमी की पत्नी के साथ यौन-संबंध
रखता है और वे पकड़े जाते हैं, तो तुम
उस आदमी और औरत दोनों को एक-
साथ मार डालना।[7] इस तरह तुम इस-
राएल से बुराई मिटा देना।

23 अगर एक कुँवारी लड़की की
सगाई हो चुकी है और कोई दूसरा आदमी
उससे शहर में मिलता है और उसके साथ
संबंध रखता है, **24** तो तुम उन दोनों
को उस शहर के फाटक पर ले जाना और
पत्थरों से मार डालना। लड़की को इस-
लिए मार डालना क्योंकि वह शहर में होते
हुए भी नहीं चिल्लायी और आदमी को
इसलिए क्योंकि उसने अपने संगी-साथी

अध्य. 22
1 लैव 19:19
2 नीत 12:10
3 लैव 19:19
4 गि 15:38; मत 23:2, 5

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 18:21; व्य 1:13; व्य 16:18
2 व्य 25:2; नीत 10:13; नीत 19:29
3 मला 2:16
4 लैव 21:9
5 इब्र 13:4
6 लैव 11:45; 1कुर 5:13
7 उत 20:3; निर्ग 20:14; लैव 20:10; 1कुर 6:9, 10; 1कुर 6:18

22:13 *या "उसे ठुकरा देता है।" **22:16** *या "को ठुकरा दिया है।"

22:19 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। **22:21** *या "वेश्या के काम करके।"

की पत्नी को भ्रष्ट किया है।[1] इस तरह तुम अपने बीच से बुराई मिटा देना।

25 लेकिन अगर एक आदमी खेत या मैदान में एक ऐसी लड़की से मिलता है जिसकी सगाई हो चुकी है और उसके साथ ज़बरदस्ती संबंध रखता है, तो तुम सिर्फ उस आदमी को मौत की सज़ा देना। **26** मगर लड़की को कुछ मत करना क्योंकि उसने ऐसा पाप नहीं किया जिसके लिए उसे मौत की सज़ा दी जाए। यह मामला बिलकुल वैसा है जैसे कोई किसी बेगुनाह पर हमला करके उसका खून कर देता है।[2] **27** लड़की को इसलिए छोड़ देना क्योंकि उस आदमी ने उसे खेत में पाकर उसे भ्रष्ट किया था और वह लड़की चिल्लायी थी, मगर उसे बचानेवाला कोई न था।

28 अगर एक आदमी किसी कुँवारी लड़की से मिलता है जिसकी अब तक सगाई नहीं हुई है और वह उसे पकड़कर उसके साथ संबंध रखता है और इस बात का खुलासा हो जाता है,[3] **29** तो उस आदमी को 50 शेकेल चाँदी लड़की के पिता को देनी होगी और उस लड़की को अपनी पत्नी बनाना होगा।[4] और उसे जीते-जी उस लड़की को तलाक देने की इजाज़त नहीं है क्योंकि उसने लड़की को भ्रष्ट किया है।

30 कोई भी आदमी अपने पिता की पत्नी के साथ यौन-संबंध न रखे क्योंकि ऐसा करना अपने पिता का अपमान करना है।*[5]

23 ऐसा कोई भी आदमी यहोवा की मंडली का हिस्सा नहीं बन सकता जिसने अपने अंड कुचलवाए हों या अपना लिंग कटवा दिया हो।[6]

2 ऐसा कोई भी आदमी जो नाजायज़ औलाद है, यहोवा की मंडली का हिस्सा नहीं बन सकता।[1] दसवीं पीढ़ी तक उसके वंशजों में से कोई भी यहोवा की मंडली का हिस्सा नहीं बन सकता।

3 कोई भी अम्मोनी या मोआबी यहोवा की मंडली का हिस्सा नहीं बन सकता।[2] दसवीं पीढ़ी तक उनके वंशजों में से कोई भी यहोवा की मंडली का हिस्सा नहीं बन सकता **4** क्योंकि जब तुम मिस्र से निकलने के बाद सफर कर रहे थे तो उन्होंने तुम्हें खाना-पानी देकर तुम्हारी मदद नहीं की[3] और तुम्हें शाप देने के लिए मेसोपोटामिया के पतोर से बओर के बेटे बिलाम को पैसा देकर बुलाया था।[4] **5** मगर तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने बिलाम की बात नहीं मानी[5] और यहोवा ने उसके शाप को तुम्हारे लिए आशीष में बदल दिया,[6] क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुमसे प्यार करता है।[7] **6** तुम जीते-जी कभी-भी उनकी शांति और खुशहाली के लिए कुछ मत करना।[8]

7 तुम किसी एदोमी से नफरत मत करना क्योंकि एदोमी लोग तुम्हारे भाई हैं।[9]

तुम किसी मिस्री से नफरत मत करना क्योंकि तुम उनके देश में परदेसी हुआ करते थे।[10] **8** उनकी तीसरी पीढ़ी के लोग यहोवा की मंडली का हिस्सा बन सकते हैं।

9 अगर तुम दुश्मनों से युद्ध करने के लिए कहीं छावनी डालते हो, तो उस दौरान तुम ध्यान रखना कि तुम किसी भी तरह से दूषित न हो जाओ।[11] **10** अगर एक आदमी रात को वीर्य निकलने की वजह से अशुद्ध हो जाता है,[12] तो उसे छावनी से बाहर चले

22:30 *शा., “का घेरा उघाड़ना है।”

अध्य. 22
1 लैव 20:10; व्य 5:18; 1थि 4:3, 6; इब्र 13:4
2 उत 4:8; गि 35:20, 21; याकू 2:11
3 उत 34:2, 5
4 उत 34:11, 12; निर्ग 22:16
5 लैव 18:8; लैव 20:11; व्य 27:20; 1कुर 5:1

अध्य. 23
6 लैव 21:18, 20; यश 56:4, 5

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:14; लैव 20:10
2 नहे 13:1, 2
3 न्या 11:18
4 गि 22:6; यह 24:9
5 गि 22:35
6 गि 23:11, 25; गि 24:10
7 व्य 7:7, 8
8 2शम 8:2; 2शम 12:31
9 उत 25:25, 26; उत 36:1; गि 20:14
10 उत 46:6; लैव 19:34; भज 105:23
11 1शम 21:5; 2शम 11:11
12 लैव 15:16

जाना चाहिए और वहीं रहना चाहिए।
11 शाम को सूरज ढलने के बाद उसे
नहाना चाहिए और उसके बाद वह
छावनी में आ सकता है।[1] 12 तुम
छावनी के बाहर शौच के लिए एक अलग
जगह तय करना और जब भी ज़रू-
रत हो वहीं जाना। 13 तुम अपने साथ
जो औज़ार रखते हो उनमें खुरपी भी होनी
चाहिए। जब तुम छावनी के बाहर शौच
के लिए जाते हो तो तुम खुरपी से एक
गड्ढा खोदना और उसमें मल-त्याग करने
के बाद मिट्टी से ढाँप देना। 14 तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा तुम्हें दुश्मनों से छुड़ाने
और उन्हें तुम्हारे हाथ में करने के लिए
छावनी में तुम्हारे बीच चला-फिरा करता
है।[2] इसलिए तुम्हारी छावनी हमेशा
शुद्ध रहे[3] ताकि ऐसा न हो कि पर-
मेश्वर तुम्हारे बीच कुछ घिनौना देखे और
तुम्हारा साथ छोड़कर चला जाए।

15 अगर कोई दास अपने मालिक के
यहाँ से भाग जाता है और तुम्हारे पास
आता है, तो तुम उसे वापस ले जाकर
उसके मालिक के हाथ मत सौंप देना।
16 वह तुम्हारे ही किसी शहर में तुम्हारे
बीच जहाँ चाहे वहाँ रह सकता है। तुम
उसके साथ बदसलूकी मत करना।[4]

17 इसराएलियों की कोई भी लड़की
मंदिर की वेश्या न बने,[5] न ही कोई
इसराएली लड़का मंदिर में आदमियों के
साथ संभोग करनेवाला बने।[6] 18 ऐसा
आदमी* या औरत मन्नत पूरी करने के
लिए अपनी बदचलनी की कमाई तेरे पर-
मेश्वर यहोवा के भवन में नहीं ला सकता,
क्योंकि वे दोनों तुम्हारे परमेश्वर यहोवा
की नज़र में घिनौने हैं।

19 जब तुम अपने एक इसराएली
भाई को कुछ उधार देते हो तो उससे
ब्याज मत लेना,[1] फिर चाहे वह पैसा हो
या खाने की चीज़ें या ऐसी कोई और चीज़
हो जिस पर ब्याज लगाया जा सकता है।
20 तुम एक परदेसी से ब्याज ले सकते
हो,[2] मगर अपने भाई से ब्याज की
माँग मत करना[3] ताकि तुम जिस देश
को अपने अधिकार में करनेवाले हो वहाँ
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हर काम
पर आशीष दे।[4]

21 अगर तुम अपने परमेश्वर यहोवा
के लिए कोई मन्नत मानते हो[5] तो उसे पूरा
करने में देर मत करना।[6] तुम्हारा पर-
मेश्वर यहोवा तुमसे ज़रूर इसकी माँग
करेगा। अगर तुम उसे पूरा नहीं करते तो
तुम पापी ठहरोगे।[7] 22 लेकिन अगर
तुम कोई मन्नत नहीं मानते तो तुम पाप
के दोषी नहीं हो।[8] 23 तुमने जो
वादा किया है उसे ज़रूर पूरा करना।[9]
तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए जो
मन्नत मानते हो वह उसके लिए स्वेच्छा-
बलि है। तुम उसे ज़रूर पूरा करना।[10]

24 तुम अपने पड़ोसी के अंगूरों के
बाग में से जी-भरकर अंगूर खा सकते हो,
मगर अपने बरतन में एक भी अंगूर डाल-
कर मत ले जाना।[11]

25 अगर तुम अपने पड़ोसी के खेत
में जाते हो तो तुम उसकी खड़ी फसल
में से पकी बालें तोड़कर खा सकते हो,
मगर तुम उसकी फसल पर हँसिया मत
चलाना।[12]

24 अगर एक आदमी किसी औरत
से शादी करता है, मगर बाद में
वह उससे खुश नहीं है क्योंकि वह उसमें
कुछ बुराई पाता है, तो उसे तलाक-
नामा लिखकर[13] उस औरत के हाथ में
देना चाहिए और उसे अपने घर से निकाल
देना चाहिए।[14] 2 वह औरत उसका घर
छोड़ने के बाद किसी और आदमी से शादी

23:18 *शा., "कुत्ता।"

अध्य. 23
1 लैव 15:31
2 लैव 26:12
3 1पत 1:16
4 निर्ग 22:21
5 लैव 19:29; लैव 21:9
6 1रा 14:24; 2रा 23:7

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 22:25; लैव 25:36, 37; नहे 5:10; भज 15:5
2 व्य 15:6
3 नीत 28:8
4 व्य 15:4; व्य 15:7, 10; नीत 19:17; लूक 6:34, 35
5 न्या 11:30, 31; 1शम 1:11
6 यो 2:9
7 सभ 5:4, 6
8 सभ 5:5
9 गि 30:2; भज 15:4; नीत 20:25
10 न्या 11:35; 1शम 14:24; मत 5:33
11 मत 6:11; रोम 13:10
12 मत 12:1; लूक 6:1

अध्य. 24
13 मत 5:31, 32; मर 10:4, 11
14 मला 2:16; मत 1:19; मत 19:3-8

कर सकती है।[1] **3** अगर दूसरा आदमी भी उससे नफरत करता है* और तलाक-नामा लिखकर उसके हाथ में देता है और उसे अपने घर से निकाल देता है या अगर इस दूसरे आदमी की मौत हो जाती है, **4** तो उस औरत का पहला पति, जिसने उसे अपने घर से निकाला था, उससे दोबारा शादी नहीं कर सकता क्योंकि वह औरत दूषित हो चुकी है। अगर वह ऐसा करता है तो यह यहोवा की नज़र में घिनौना काम होगा। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें जो देश विरासत में देनेवाला है उसमें तुम पाप मत ले आना।

5 अगर एक आदमी की नयी-नयी शादी हुई है तो वह सेना में काम न करे, न ही उसे कोई और ज़िम्मेदारी दी जाए। उसे एक साल तक छूट दी जाए ताकि वह घर पर ही रहे और अपनी पत्नी को खुशियाँ दे।[2]

6 जब कोई किसी को उधार देता है तो वह गिरवी* के रूप में उसके हाथ की चक्की या चक्की का ऊपरी पाट ज़ब्त न करे[3] क्योंकि ऐसा करना उसकी रोज़ी-रोटी छीन लेना# है।

7 अगर कोई अपने किसी इसराएली भाई को अगवा कर लेता है और उसके साथ बुरा सलूक करता है और उसे बेच देता है,[4] तो अगवा करनेवाले को मार डाला जाए।[5] तुम अपने बीच से बुराई मिटा देना।[6]

8 अगर तुम्हारे यहाँ कोढ़* निकल आता है तो कोढ़ के बारे में लेवी याजकों की सारी हिदायतों का तुम सख्ती से पालन करना।[1] तुम ठीक वैसा ही करना जैसा मैंने याजकों को आज्ञा दी है। **9** याद रखना कि जब तुम मिस्र से निकलने के बाद सफर कर रहे थे, तब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मिरयम के साथ क्या किया था।[2]

10 अगर तू अपने पड़ोसी को कुछ उधार देता है[3] तो उसने जो चीज़ गिरवी रखने का वादा किया है, उसे ज़ब्त करने के लिए तू उसके घर के अंदर मत घुस जाना। **11** तुझे कर्ज़दार के घर के बाहर ही खड़े रहना है और वह अपनी गिरवी की चीज़ बाहर लाकर तुझे देगा। **12** अगर तेरा कर्ज़दार तंगी में है तो उसकी गिरवी की चीज़ अपने पास रात-भर मत रखना।[4] **13** सूरज ढलते ही उसका गिरवी का कपड़ा उसे हर हाल में लौटा देना ताकि वह उसे ओढ़कर सो सके।[5] तब वह तुझे दुआ देगा और तेरा यह काम तेरे परमेश्वर यहोवा की नज़र में नेकी माना जाएगा।

14 तू किसी भी दिहाड़ी के मज़-दूर के साथ बेईमानी न करना, फिर चाहे वह तेरा इसराएली भाई हो या तेरे शहरों में* रहनेवाला कोई परदेसी। तू ऐसे ज़रूरतमंद और गरीब को ठगना मत।[6] **15** तू हर दिन की मज़दूरी उसे सूरज ढलने से पहले उसी दिन दे देना[7] क्योंकि वह ज़रूरतमंद है और उसकी मज़दूरी से ही उसका गुज़ारा होता है। अगर तू उसकी मज़दूरी नहीं देगा तो वह तेरे खिलाफ यहोवा की दुहाई देगा और तू पाप का दोषी ठहरेगा।[8]

16 बच्चों के पाप के लिए पिताओं को

24:3 *या "उसे ठुकरा देता है।" **24:6** *या "बंधक।" #या "उसकी जान लेना।" **24:8** *जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद "कोढ़" किया गया है उसके कई मतलब हैं। उसमें तरह-तरह के चर्मरोग और कुछ ऐसे संक्रमण भी शामिल हैं जो कपड़ों और घरों में पाए जाते हैं।

24:14 *शा., "फाटकों के अंदर।"

अध्य. 24

1 लैव 21:7
2 व्य 20:7; नीत 5:18; सभ 9:9
3 निर्ग 22:26, 27
4 उत 37:28; उत 40:15
5 निर्ग 21:16
6 व्य 19:18, 19; व्य 21:20, 21

दूसरा कॉल.

1 लैव 13:2, 15; मर 1:44; लूक 17:14
2 गि 12:10, 15
3 व्य 15:7, 8; नीत 3:27
4 अय 24:9, 10
5 निर्ग 22:26, 27
6 लैव 25:39, 43; नीत 14:31
7 लैव 19:13; यिर्म 22:13; मत 20:8
8 नीत 22:22, 23; याकू 5:4

न मार डाला जाए और न ही पिताओं के पाप के लिए बच्चों को मार डाला जाए।[1] जो पाप करता है उसी को मौत की सज़ा दी जाए।[2]

17 तुम अपने यहाँ रहनेवाले किसी परदेसी या अनाथ[*] के साथ अन्याय मत करना।[3] और जब तुम किसी विधवा को उधार देते हो तो उसका कपड़ा ज़ब्त करके गिरवी[#] मत रखना।[4] 18 मत भूलना कि मिस्र में तुम भी गुलाम थे और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें वहाँ से छुड़ा लाया है।[5] इसीलिए मैं तुम्हें ऐसा करने की आज्ञा दे रहा हूँ।

19 जब तुम अपने खेत में कटाई करते हो और फसल इकट्ठी करते हो, तब अगर भूल से एक पूला छूट जाए तो उसे लेने के लिए तुम खेत में वापस मत जाना। तुम उसे अपने यहाँ रहनेवाले परदेसियों, अनाथों और विधवाओं[6] के लिए छोड़ देना ताकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हर काम पर आशीष दे।[7]

20 जब तुम अपने जैतून की डालियों को मारकर उनके फल इकट्ठे कर लेते हो, तो डालियों को दोबारा मत झाड़ना। जो फल रह जाते हैं उन्हें तुम अपने यहाँ रहनेवाले परदेसियों, अनाथों और विधवाओं के लिए छोड़ देना।[8]

21 जब तुम अपने अंगूरों के बाग से अंगूर इकट्ठा कर लेते हो, तो बचे हुए अंगूर इकट्ठा करने के लिए वापस मत जाना। उन्हें तुम अपने यहाँ रहनेवाले परदेसियों, अनाथों और विधवाओं के लिए छोड़ देना। 22 मत भूलना कि मिस्र में तुम भी गुलाम थे। इसीलिए मैं तुम्हें ऐसा करने की आज्ञा दे रहा हूँ।

अध्य. 24
1 2इत 25:3, 4
2 यहे 18:20
3 निर्ग 22:21, 22
4 निर्ग 22:26, 27
5 व्य 5:15
6 लैव 19:9
लैव 23:22
रूत 2:16
भज 41:1
7 व्य 15:7, 10
नीत 11:24
नीत 19:17
लूक 6:38
2कुर 9:6
1यूह 3:17
8 लैव 19:10
व्य 26:13

दूसरा कॉल.

अध्य. 25
1 व्य 16:18
व्य 17:8, 9
व्य 19:16, 17
2 निर्ग 23:6
2इत 19:6
नीत 17:15
नीत 31:9
3 नीत 10:13
नीत 20:30
नीत 26:3
लूक 12:48
इब्र 2:2
4 2कुर 11:24
5 नीत 12:10
1कुर 9:9
1ती 5:18
6 उत 38:7, 8
रूत 4:5
मर 12:19
7 उत 38:9
रूत 4:10, 17
8 गि 27:1, 4

25 अगर दो आदमियों के बीच झगड़ा हो जाए तो वे अपना मामला न्यायियों के सामने पेश कर सकते हैं।[1] फिर न्यायी उनका फैसला करेंगे और उनमें से जो नेक है उसे निर्दोष ठहराएँगे और जो दुष्ट है उसे दोषी ठहराएँगे।[2] 2 अगर उस गुनहगार ने मार खाने लायक[3] कोई अपराध किया है, तो न्यायी उसे अपने सामने औंधे मुँह लिटाकर पिटवाएगा। उसके अपराध के हिसाब से तय किया जाएगा कि उसे कितनी बार पीटा जाए। 3 उसे 40 बार तक पीटा जा सकता है,[4] उससे ज़्यादा नहीं। ऐसा न हो कि इससे ज़्यादा बार पीटने से सबके सामने तुम्हारे उस भाई की बेइज़्ज़ती हो।

4 तुम अनाज की दँवरी करते बैल का मुँह न बाँधना।[5]

5 अगर कई भाई पास-पास रहते हैं और उनमें से एक की मौत हो जाती है और उसके कोई बेटा नहीं है, तो उसकी विधवा को परिवार से बाहर किसी आदमी से शादी नहीं करनी चाहिए। उसके पति के भाई को देवर-भाभी विवाह के रिवाज़ के मुताबिक उससे शादी करनी चाहिए।[6] 6 उस आदमी से उस औरत का जो पहलौठा बेटा पैदा होगा वह मरे हुए भाई का वंश आगे बढ़ाएगा[7] ताकि इसराएल से उसका नाम मिट न जाए।[8]

7 अगर एक आदमी अपने भाई की विधवा से शादी करने से इनकार कर देता है, तो उस विधवा को शहर के फाटक पर मुखियाओं के पास जाना चाहिए और उन्हें बताना चाहिए, 'मेरे पति के भाई ने उसका नाम इसराएल में बनाए रखने से इनकार कर दिया है। वह देवर-भाभी विवाह के रिवाज़ के मुताबिक मुझसे शादी नहीं करना चाहता।' 8 तब शहर के

24:17 [*] या "जिसके पिता की मौत हो गयी है।" [#] या "बंधक।"

मुखिया उस आदमी को बुलवाएँगे और उसे समझाएँगे। इसके बाद भी अगर वह अपने फैसले पर अड़ा रहता है और कहता है, 'मैं उससे शादी नहीं करूँगा,'
9 तो उस विधवा को मुखियाओं के सामने उस आदमी के पास जाना चाहिए और उसके पैर से जूती उतार देनी चाहिए[1] और उसके मुँह पर थूकना चाहिए और यह कहना चाहिए, 'जो कोई अपने भाई का वंश चलाने से इनकार कर देता है, उसके साथ यही सलूक किया जाए।'
10 इसके बाद से इसराएल में उस आदमी के परिवार का नाम* यह होगा, 'उसका घराना जिसकी जूती उतार दी गयी है।'

11 अगर दो आदमियों के बीच हाथा-पाई हो जाती है और उनमें से एक की पत्नी अपने पति को बचाने के लिए अपना हाथ बढ़ाकर मारनेवाले के गुप्त अंग पकड़ लेती है,
12 तो तुम उस औरत का हाथ काट देना। तुम* उस पर तरस मत खाना।

13 तुम अपनी थैली में एक तौल के लिए दो अलग-अलग बाट-पत्थर मत रखना,[2] एक छोटा और एक बड़ा।
14 तुम अपने घर में एक नाप के लिए दो अलग-अलग बरतन* मत रखना,[3] एक छोटा और एक बड़ा।
15 तुम अपने साथ सिर्फ ऐसे बाट-पत्थर और नापने के बरतन रखना जो पूरे-पूरे और सही हों ताकि तुम उस देश में लंबी ज़िंदगी जीओ जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देनेवाला है।[4]
16 जो कोई बेईमानी करता है वह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की नज़र में घिनौना है।[5]

17 याद रखना कि जब तुम मिस्र से बाहर निकलने के बाद सफर कर रहे थे, तो अमालेकियों ने तुम्हारे साथ क्या किया था।[1]
18 जब तुम सफर से थककर चूर हो गए थे, तब अमालेकियों ने आकर तुम्हारे उन सभी लोगों पर हमला किया जो कमज़ोर थे और सफर में पीछे रह गए थे। अमालेकियों ने परमेश्वर का डर नहीं माना।
19 इसलिए जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें वह देश विरासत में देगा और यहोवा तुम्हें आस-पास के सभी दुश्मनों से राहत दिलाएगा,[2] तब तुम धरती से* अमालेकियों की याद हमेशा के लिए मिटा देना।[3] तुम यह काम हरगिज़ मत भूलना।

26 जब तुम उस देश में कदम रखोगे जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विरासत में देनेवाला है और उसे अपने अधिकार में कर लोगे और उसमें बस जाओगे,
2 तब उस देश में जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देगा, अपनी ज़मीन की हर उपज में से कुछ पहले फल लेना। उन्हें एक टोकरी में रख-कर उस जगह ले जाना जो तुम्हारा पर-मेश्वर यहोवा अपने नाम की महिमा के लिए चुनता है।[4]
3 वहाँ तुम अपने दिनों के याजक के पास जाना और उससे कहना, 'आज मैं ऐलान करता हूँ कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने जो वादा किया था उसे पूरा किया है। इसीलिए मैं आज इस देश में हूँ जिसे देने के बारे में यहोवा ने हमारे पुरखों से शपथ खायी थी।'[5]

4 तब याजक तेरे हाथ से टोकरी लेगा और तेरे परमेश्वर यहोवा की वेदी के आगे उसे रखेगा।
5 फिर तू अपने पर-मेश्वर यहोवा के सामने यह ऐलान

अध्य. 25
1 रूत 4:7
2 नीत 11:1; नीत 20:10; मी 6:11
3 लैव 19:36
4 व्य 4:40
5 लैव 19:35

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 17:8; गि 24:20
2 यह 22:4
3 निर्ग 17:14; 1शम 14:47, 48; 1शम 15:1-3; 1इत 4:42, 43

अध्य. 26
4 निर्ग 23:19; लैव 23:10; गि 18:8, 12; 2इत 6:6; 2इत 31:5; नीत 3:9
5 उत 17:1, 8; उत 26:3

25:10 *या "उसके घराने का नाम।" शा., "उसका नाम।" 25:12 *शा., "तुम्हारी आँखें।" 25:14 *शा., "अपने घर में एक एपा और एक एपा।" अति. ख14 देखें।

25:19 *शा., "आकाश के नीचे से।"

करना, ‘मेरा पिता अरामी[1] था और
जगह-जगह परदेसी बनकर रहा था।*
वह अपने घराने के साथ मिस्र गया[2]
और वहाँ परदेसी बनकर रहा। उस वक्त
उसके घराने में बहुत कम लोग थे।[3]
मगर आगे चलकर वहाँ उसके वंशजों
की गिनती बढ़कर बेशुमार हो गयी और
उनसे एक महान और ताकतवर राष्ट्र
बना।[4] **6** फिर मिस्रियों ने हमारे साथ
बुरा सलूक किया और हमें बहुत सताया,
हमसे कड़ी गुलामी करवायी।[5] **7** तब
हमने अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा
की दुहाई दी और यहोवा ने हमारी
बिनती सुन ली। उसने हमारी हालत
पर ध्यान दिया कि हम कितनी दुख-
तकलीफें, मुसीबतें और ज़ुल्म सह रहे
थे।[6] **8** आखिरकार यहोवा ने अपना
शक्तिशाली हाथ बढ़ाया[7] और दिल
दहलानेवाले बड़े-बड़े काम, चिन्ह और
चमत्कार किए और हमें मिस्र से निकाल-
कर बाहर ले आया।[8] **9** फिर वह हमें
यहाँ ले आया और हमें यह देश दिया जहाँ
दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं।[9]
10 यहोवा ने मुझे जो ज़मीन दी है उसकी
उपज के पहले फल मैं लाया हूँ।’[10]

तुम अपने पहले फल अपने परमेश्वर
यहोवा के सामने रखना और अपने पर-
मेश्वर यहोवा के सामने दंडवत करना।
11 फिर तुम उन सारी अच्छी चीज़ों के
कारण खुशियाँ मनाना जो तुम्हारे पर-
मेश्वर यहोवा ने तुम्हें और तुम्हारे घराने
को दी हैं। तुम अपने बीच रहनेवाले
लेवियों और परदेसियों के साथ खुशियाँ
मनाना।[11]

12 जब तीसरा साल यानी दसवाँ
हिस्सा देने का साल आता है तब तुम
अपनी उपज का दसवाँ हिस्सा अलग
करोगे[1] और उसे ले जाकर अपने शहरों*
के लेवियों, परदेसियों, अनाथों# और
विधवाओं को दोगे ताकि वे उसमें से
जी-भरकर खाएँ।[2] **13** इसके बाद तुम
अपने परमेश्वर यहोवा के सामने कहना,
‘मैंने अपने घर से अपनी उपज का
पवित्र हिस्सा ले जाकर लेवियों, पर-
देसियों, अनाथों और विधवाओं को दिया
है,[3] ठीक जैसे तूने मुझे आज्ञा दी
थी। मैंने तेरी आज्ञाएँ नहीं तोड़ीं, न ही
उन्हें मानने में लापरवाही की। **14** मैंने
मातम मनाते समय पवित्र हिस्से में से कुछ
नहीं खाया, न अशुद्ध हालत में उसे छुआ
और न ही मरे हुओं के लिए उसमें से कुछ
निकालकर दिया। मैंने अपने परमेश्वर
यहोवा की बात मानी है और तेरी सभी
आज्ञाओं का पालन किया है। **15** इस-
लिए अब तू स्वर्ग से, अपने पवित्र निवास
से अपने इसराएली लोगों पर नज़र कर
और जैसे तूने हमारे पुरखों से शपथ
खायी थी,[4] हम पर और हमारे इस देश
पर आशीष दे[5] जहाँ दूध और शहद की
धाराएँ बहती हैं।’[6]

16 आज के दिन तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा तुम्हें आज्ञा दे रहा है कि तुम इन
सभी कायदे-कानूनों और न्याय-सिद्धांतों
का पालन करना। तुम पूरे दिल और पूरी
जान से उनको मानना और उनके मुता-
बिक चलना।[7] **17** आज के दिन तुम
लोगों ने यहोवा का यह ऐलान सुना है कि
अगर तुम उसकी राहों पर चलोगे, उसके
कायदे-कानूनों,[8] आज्ञाओं[9] और न्याय-
सिद्धांतों[10] को मानोगे और उसकी बात
सुनोगे तो वह तुम्हारा परमेश्वर होगा।
18 और आज तुमने यहोवा के सामने

अध्य. 26
1 उत 28:5; हो 12:12
2 उत 46:3; प्रेष 7:15
3 उत 46:27
4 निर्ग 1:7; व्य 10:22; भज 105:24
5 निर्ग 1:11
6 निर्ग 3:9; निर्ग 4:31; प्रेष 7:34
7 निर्ग 6:6
8 निर्ग 7:3; व्य 4:33, 34
9 निर्ग 3:8; व्य 8:7, 8; यहे 20:6
10 व्य 26:2
11 व्य 12:7; व्य 16:14

दूसरा कॉल.
1 व्य 12:5, 6; व्य 14:22
2 व्य 14:28, 29; नीत 14:21; 1यूह 3:17
3 याकू 1:27
4 उत 15:18; उत 26:3
5 निर्ग 23:25
6 व्य 8:7, 8
7 व्य 6:6; व्य 11:1; भज 119:34; 1यूह 5:3
8 लैव 26:46
9 सभ 12:13
10 लैव 19:37

26:5 *या शायद, “और नाश होने पर था।”

26:12 *शा., “फाटकों के अंदर।” #या “जिनके पिता की मौत हो गयी है।”

ऐलान किया है कि तुम उसके अपने लोग और उसकी खास जागीर* बनोगे,[1] ठीक जैसे उसने तुमसे वादा किया था और तुम उसकी सारी आज्ञाएँ मानोगे। **19** और अगर तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र लोग बने रहोगे तो जैसे उसने वादा किया है, वह तुम्हें उन सभी राष्ट्रों से ऊँचा उठाएगा जिन्हें उसने बनाया है[2] ताकि तुम्हें सबसे बढ़कर तारीफ, शोहरत और सम्मान हासिल हो।”[3]

27 फिर मूसा और इसराएल के मुखिया लोगों के सामने खड़े हुए और मूसा ने लोगों से कहा, “आज मैं तुम लोगों को जो आज्ञाएँ दे रहा हूँ उन सबका तुम पालन करना। **2** जब तुम यरदन पार करके उस देश में जाओगे जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देनेवाला है, तो वहाँ तुम बड़े-बड़े पत्थर खड़े करना और उन पर पुताई करना।*[4] **3** फिर उन पत्थरों पर इस कानून के सारे नियम लिखना। जब तुम यरदन पार कर लोगे और जैसे तुम्हारे पुरखों के परमेश्वर यहोवा ने तुमसे वादा किया है, तुम उस देश में दाखिल हो जाओगे जो यहोवा तुम्हें देनेवाला है, जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं, तब तुम उन पत्थरों पर कानून के सारे नियम लिखना।[5] **4** यरदन पार करने के बाद तुम एबाल पहाड़[6] पर पत्थर खड़े करना और उन पर पुताई करना,* ठीक जैसे आज मैं तुम्हें आज्ञा दे रहा हूँ। **5** वहाँ तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए पत्थरों से एक वेदी भी तैयार करना। मगर तुम उन पत्थरों को लोहे के किसी औज़ार से तराशना मत।[7] **6** तुम अनगढ़े पत्थरों से ही अपने परमेश्वर यहोवा के लिए वेदी बनाना और उस पर यहोवा के लिए होमबलियाँ अर्पित करना। **7** तुम वहाँ पर शांति-बलियाँ अर्पित करना[1] और उन्हें वहीं खाना[2] और अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खुशियाँ मनाना।[3] **8** तुम इस कानून के सारे नियम उन पत्थरों पर साफ-साफ लिखना।”[4]

9 इसके बाद मूसा और लेवी याजकों ने सभी इसराएलियों से कहा, “इसराएलियो, शांत रहकर ध्यान से सुनो। आज के दिन तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लोग बन गए हो।[5] **10** तुम अपने परमेश्वर यहोवा की बात सुनना और उसकी आज्ञाओं और कायदे-कानूनों का पालन किया करना[6] जो आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ।”

11 उस दिन मूसा ने लोगों को यह आज्ञा दी: **12** “जब तुम यरदन पार कर लोगे तो लोगों को आशीर्वाद देने के लिए ये सारे गोत्र गरिज्जीम पहाड़[7] पर खड़े होंगे: शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, यूसुफ और बिन्यामीन। **13** और शाप का ऐलान करने के लिए ये सारे गोत्र एबाल पहाड़[8] पर खड़े होंगे: रूबेन, गाद, आशेर, जबूलून, दान और नप्ताली। **14** और लेवी सभी इसराएलियों के सामने ऊँची आवाज़ में यह कहेंगे:[9]

15 ‘शापित है वह इंसान जो मूरत तराशता है[10] या धातु की मूरत* बनाता है[11] और उसे छिपाकर रखता है, क्योंकि कारीगर# के हाथ की ऐसी रचना यहोवा की नज़र में घिनौनी है।’[12] (तब जवाब में सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’△)

16 ‘शापित है वह इंसान जो अपने पिता या अपनी माँ को नीचा

अध्य. 26
1 व्य 14:2; व्य 29:10-13
2 व्य 4:8
3 व्य 7:6; व्य 28:1, 9

अध्य. 27
4 यह 8:30-32
5 गि 13:26, 27
6 व्य 11:29
7 निर्ग 20:25

दूसरा कॉल.
1 लैव 3:1
2 लैव 7:15
3 व्य 12:7
4 निर्ग 24:12
5 निर्ग 19:5; व्य 26:18
6 1रा 2:3; मत 19:17; 1यूह 5:3
7 व्य 11:29
8 यह 8:33
9 व्य 33:10
10 निर्ग 20:4; व्य 4:15, 16; यश 44:9
11 निर्ग 34:17; लैव 19:4
12 व्य 7:25; व्य 29:17

26:18 *या “अनमोल जायदाद।” **27:2, 4** *या “चूना पोतना।”

27:15 *या “ढली हुई मूरत।” #या “लकड़ी और धातु का काम करनेवाले।” △या “ऐसा ही हो!”

दिखाता है।’[1] (तब सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’)

17 ‘शापित है वह इंसान जो अपने पड़ोसी की ज़मीन का सीमा-चिन्ह खिसका देता है।’[2] (तब सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’)

18 ‘शापित है वह इंसान जो किसी अंधे को रास्ते से भटका देता है।’[3] (तब सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’)

19 ‘शापित है वह इंसान जो तुम्हारे बीच रहनेवाले किसी परदेसी, अनाथ* या विधवा के मामले में गलत फैसला सुनाकर अन्याय करता है।’[4] (तब सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’)

20 ‘शापित है वह इंसान जो अपने पिता की पत्नी के साथ यौन-संबंध रखता है, क्योंकि वह अपने पिता का अपमान करता है।’*[5] (तब सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’)

21 ‘शापित है वह इंसान जो किसी जानवर के साथ यौन-संबंध रखता है।’[6] (तब सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’)

22 ‘शापित है वह इंसान जो अपनी बहन के साथ यौन-संबंध रखता है, फिर चाहे वह उसके पिता की बेटी हो या उसकी माँ की बेटी।’[7] (तब सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’)

23 ‘शापित है वह इंसान जो अपनी सास के साथ यौन-संबंध रखता है।’[8] (तब सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’)

24 ‘शापित है वह इंसान जो घात लगाकर अपने पड़ोसी को मार डालता है।’[9] (तब सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’)

25 ‘शापित है वह इंसान जो किसी बेगुनाह को मार डालने के लिए घूस लेता है।’[10] (तब सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’)

27:19 * या “जिसके पिता की मौत हो गयी है।” **27:20** * शा., “का घेरा उघाड़ता है।”

अध्य. 27
1 निर्ग 20:12, व्य 21:18-21, नीत 20:20, नीत 30:17, मत 15:4
2 व्य 19:14, नीत 23:10
3 लैव 19:14
4 निर्ग 22:21, 22, व्य 10:17, 18, व्य 16:20, नीत 17:23, मी 3:11, मला 3:5, याकू 1:27
5 लैव 18:8, 1कुर 5:1
6 निर्ग 22:19, लैव 18:23, लैव 20:15
7 लैव 18:9, लैव 20:17
8 लैव 18:17, लैव 20:14
9 निर्ग 20:13, निर्ग 21:12, गि 35:31
10 मत 27:3, 4

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:15, गल 3:10

अध्य. 28
2 व्य 26:18, 19
3 लैव 26:3, 4, नीत 10:22, यश 1:19
4 व्य 11:14
5 लैव 26:9, व्य 7:13, भज 127:3, भज 128:3
6 व्य 26:2
7 निर्ग 23:25
8 व्य 32:30, यह 10:11
9 व्य 7:23, 2इत 14:13
10 लैव 26:10, नीत 3:9, 10, मला 3:10

26 ‘शापित है वह इंसान जो इस कानून के नियमों को नहीं मानता।’[1] (तब सब लोग कहेंगे, ‘आमीन!’)

28 अगर तुम अपने परमेश्वर यहोवा की सभी आज्ञाओं को सख्ती से मानोगे जो मैं तुम्हें आज सुना रहा हूँ और इस तरह उसकी बात सुनोगे तो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दुनिया के सभी राष्ट्रों से ऊँचा उठाएगा।[2]
2 अगर तुम अपने परमेश्वर यहोवा की बात हमेशा सुनोगे तो ये सारी आशीषें तुम्हें आ घेरेंगी:[3]

3 चाहे तुम शहर में रहो या देहात में, परमेश्वर की आशीष तुम पर बनी रहेगी।[4]

4 तुम्हारे बच्चों* पर, तुम्हारी ज़मीन की उपज पर और तुम्हारे बछड़ों और मेम्नों पर परमेश्वर की आशीष बनी रहेगी।[5]

5 तुम्हारी टोकरी[6] और आटा गूँधने के बरतन[7] पर परमेश्वर की आशीष बनी रहेगी।

6 तुम जो भी काम हाथ में लोगे, तुम पर आशीष बनी रहेगी।

7 जब तुम्हारे दुश्मन तुम्हारे खिलाफ उठेंगे तो यहोवा ऐसा करेगा कि वे तुमसे हार जाएँगे।[8] वे एक दिशा से आकर तुम पर हमला करेंगे, मगर तुमसे हारकर सात दिशाओं में भाग जाएँगे।[9]
8 तुम्हारे अनाज के भंडारों पर और तुम जो भी काम हाथ में लेते हो उस पर यहोवा आशीष का हुक्म देगा,[10] हाँ, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें जो देश दे रहा है वहाँ तुम्हें ज़रूर आशीषें देगा। 9 अगर
तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ मानते रहोगे और उसकी राहों पर चलते

28:4 * शा., “तुम्हारे गर्भ के फल।”

रहोगे, तो यहोवा तुम्हें अपने पवित्र लोग बनाएगा,[1] ठीक जैसे उसने शपथ खाकर तुमसे कहा था।[2] **10** तब धरती के सब लोग साफ देख पाएँगे कि तुम यहोवा के नाम से पुकारे जाते हो[3] और वे तुमसे डरेंगे।[4]

11 यहोवा ने तुम्हारे पुरखों से जिस देश का वादा किया था[5] वहाँ यहोवा तुम्हें बहुत-सी संतानें देगा, तुम्हारे मवेशियों की बढ़ोतरी करेगा और तुम्हारी ज़मीन से भरपूर उपज देगा।[6] **12** यहोवा तुम्हारे लिए आकाश का भंडार खोलकर तुम्हारे देश को वक्त पर बारिश देगा[7] और तुम्हारे सभी कामों पर आशीष देगा। तुम्हारे पास इतना होगा कि तुम बहुत-से राष्ट्रों को उधार दे सकोगे जबकि तुम्हें कभी उनसे उधार नहीं लेना पड़ेगा।[8] **13** यहोवा तुम्हें दूसरे राष्ट्रों से आगे रखेगा, पीछे नहीं, तुम हमेशा ऊँचे रहोगे,[9] नीचे नहीं, बशर्ते तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ मानते रहो जो आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ। **14** आज मैं तुम्हें जो-जो आज्ञाएँ दे रहा हूँ, उनसे तुम न तो कभी दाएँ मुड़ना और न बाएँ[10] और दूसरे देवताओं के पीछे चलकर उनकी सेवा मत करना।[11]

15 लेकिन अगर तुम अपने परमेश्वर यहोवा की सभी आज्ञाओं और विधियों को सख्ती से नहीं मानोगे जो आज मैं तुम्हें सुना रहा हूँ और इस तरह उसकी बात नहीं सुनोगे, तो ये सारे शाप तुम पर आ पड़ेंगे:[12]

16 चाहे तुम शहर में रहो या देहात में, तुम शापित होगे।[13]

17 तुम्हारी टोकरी और आटा गूँधने का बरतन शापित होगा।[14]

18 तुम्हारे बच्चे,* तुम्हारी ज़मीन की उपज, तुम्हारे बछड़े और मेम्ने शापित होंगे।[1]

19 तुम जो भी काम हाथ में लोगे, तुम शापित होगे।

20 अगर तुम बुरे कामों में लगे रहोगे और यहोवा को छोड़ दोगे, तो तुम जो भी काम हाथ में लोगे उस पर वह शाप देगा, उसमें गड़बड़ी पैदा कर देगा और उसे नाकाम कर देगा और तुम देखते-ही-देखते नाश हो जाओगे।[2] **21** यहोवा तुम पर बीमारी भेजेगा जो तुम्हें तब तक अपनी चपेट में लिए रहेगी जब तक कि उस देश से तुम्हारी हस्ती न मिट जाए जिसे तुम अपने अधिकार में करनेवाले हो।[3] **22** यहोवा तुम्हें तपेदिक, तेज़ बुखार,[4] ज़बरदस्त तपिश, हरारत और तलवार से मारेगा[5] और तुम्हारी फसलों को झुलसन और बीमारी से नाश कर देगा।[6] ये मुसीबतें तब तक तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेंगी जब तक कि तुम मिट नहीं जाते। **23** तुम्हारे ऊपर का आसमान ताँबे की तरह बन जाएगा और तुम्हारे नीचे की ज़मीन लोहे जैसी हो जाएगी।[7] **24** यहोवा आकाश से तुम्हारे देश पर तब तक धूल-मिट्टी बरसाता रहेगा जब तक कि तुम मिट नहीं जाते। **25** यहोवा ऐसा करेगा कि तुम अपने दुश्मनों से हार जाओगे।[8] तुम एक दिशा से जाकर उन पर हमला करोगे, मगर तुम हारकर सात दिशाओं में भाग निकलोगे। तुम्हारा ऐसा हश्र होगा कि धरती के सब राज्य देखकर दहल जाएँगे।[9] **26** तुम्हारी लाशें आकाश के पक्षियों और धरती के जानवरों का निवाला बन जाएँगी और उन्हें डराकर भगानेवाला कोई न होगा।[10]

27 यहोवा तुम्हें ऐसे फोड़ों से पीड़ित करेगा जो मिस्र में आम हैं और तुम्हें

अध्य. 28

1 व्य 7:6
2 निर्ग 19:6
3 यश 43:10, दान 9:19, प्रेष 15:17
4 गि 22:3, व्य 11:25, यह 5:1
5 उत 15:18
6 व्य 30:9, भज 65:9
7 लैव 26:4, व्य 11:14
8 व्य 15:6
9 1रा 4:21
10 व्य 5:32, यह 1:7, यश 30:21
11 लैव 19:4
12 लैव 26:16, 17, दान 9:11
13 1रा 17:1
14 लैव 26:26, व्य 26:2

दूसरा कॉल.

1 लैव 26:20, 22, विल 2:11, 19, विल 4:10
2 यह 23:16
3 लैव 26:25, यिर्म 24:10
4 लैव 26:16
5 लैव 26:33
6 आम 4:9
7 लैव 26:19, व्य 11:17, 1रा 17:1
8 लैव 26:14, 17, 1शम 4:10
9 यिर्म 29:18, लूक 21:24
10 यिर्म 7:33

28:18 *शा., "तुम्हारे गर्भ के फल।"

बवासीर, खाज और त्वचा पर होनेवाले घावों से मारेगा और तुम कभी ठीक नहीं हो पाओगे। **28** यहोवा तुम्हें पागलपन से पीड़ित करेगा, तुम्हें अंधा कर देगा[1] और उलझन में डाल देगा।* **29** तुम भरी दोपहरी में भी रास्ता टटोलते रह जाओगे जैसे कोई अंधा अपनी अँधेरी दुनिया में टटोलता फिरता है।[2] तुम किसी भी काम में कामयाब नहीं होगे। तुम कदम-कदम पर ठगे और लूटे जाओगे और तुम्हें बचानेवाला कोई न होगा।[3] **30** तुम्हारी सगाई तो होगी, मगर कोई दूसरा आदमी आकर तुम्हारी मँगेतर का बलात्कार कर देगा। तुम घर तो बनाओगे मगर उसमें रह नहीं पाओगे।[4] तुम अंगूरों का बाग लगाओगे मगर उसके अंगूर नहीं खा पाओगे।[5] **31** तुम्हारा बैल तुम्हारी आँखों के सामने हलाल किया जाएगा, मगर तुम उसका गोश्त नहीं खा सकोगे। तुम्हारा गधा तुम्हारे सामने ही चुरा लिया जाएगा और तुम्हें कभी लौटाया नहीं जाएगा। तुम्हारी भेड़ों को तुम्हारे दुश्मन आकर उठा ले जाएँगे और उन्हें छुड़ानेवाला कोई न होगा। **32** तुम्हारे बेटे-बेटियों को पराए लोग आकर ले जाएँगे[6] और तुम देखते रह जाओगे। तुम सारी ज़िंदगी उनके लौटने की राह देखोगे, मगर कुछ नहीं कर पाओगे। **33** तुम्हारी ज़मीन की सारी उपज और खाने-पीने की सारी चीज़ें दूसरे लोग आकर खा जाएँगे, जिन्हें तुम जानते तक नहीं।[7] तुम हमेशा ठगे और कुचले जाओगे। **34** तुम अपनी आँखों से ऐसी बरबादी देखोगे कि पागल हो जाओगे।

35 यहोवा तुम्हारे दोनों पैरों और घुटनों को दर्दनाक फोड़ों से पीड़ित करेगा, जो तुम्हारे पैरों के तलवे से लेकर सिर की चाँद तक फैल जाएँगे और उनका कोई इलाज न होगा। **36** यहोवा तुम्हें और तुम्हारे चुने हुए राजा को ऐसे देश में भगाएगा जिसे न तुम जानते हो और न तुम्हारे बाप-दादे जानते थे।[1] वहाँ तुम दूसरे देवताओं की, लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा करोगे।[2] **37** यहोवा तुम्हें भगाकर जिन देशों में भेजेगा वहाँ के सब लोग तुम्हारा हश्र देखकर दहल जाएँगे, तुम मज़ाक* बनकर रह जाओगे, तुम्हारी बरबादी देखकर सब हँसेंगे।[3]

38 तुम अपने खेत में बहुत बीज बोओगे, मगर उपज कम बटोरोगे[4] क्योंकि टिड्डियाँ आकर उसे खा जाएँगी। **39** तुम अंगूरों के बाग लगाओगे और उनकी देखभाल में बहुत मेहनत करोगे, मगर तुम्हें न पीने के लिए दाख-मदिरा मिलेगी, न ही खाने के लिए अंगूर मिलेंगे[5] क्योंकि कीड़े तुम्हारे अंगूर खा जाएँगे। **40** तुम्हारे देश-भर में जैतून के पेड़ होंगे, मगर तुम उनका तेल शरीर पर नहीं मल पाओगे क्योंकि तुम्हारे जैतून के फल झड़ जाएँगे। **41** तुम बेटे-बेटियों को जन्म दोगे, मगर वे तुम्हारे नहीं रहेंगे क्योंकि वे बंदी बना लिए जाएँगे।[6] **42** तुम्हारे सब पेड़ों और फसलों पर कीड़ों के झुंड-के-झुंड* हमला करेंगे। **43** तुम्हारे बीच रहनेवाला परदेसी तुमसे बढ़ता जाएगा और तुम घटते जाओगे। **44** वह तुम्हें उधार देगा मगर तुम उसे उधार नहीं दे सकोगे।[7] वह तुमसे आगे निकल जाएगा और तुम पीछे रह जाओगे।[8]

45 अगर तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं और विधियों को नहीं

28:28 *या "मन में घबराहट पैदा करेगा।"

28:37 *शा., "कहावत।" **28:42** *या "भिनभिनाते कीड़े।"

अध्य. 28

1 निर्ग 4:11
2 यश 59:10
3 न्या 3:14, न्या 6:1-5, नहे 9:27
4 यश 5:9, विल 5:2
5 आम 5:11, मी 6:15
6 2इत 29:9
7 नहे 9:37, यश 1:7

दूसरा कॉल.

1 2रा 17:6, 2रा 25:7, 2इत 33:11, 2इत 36:5, 6
2 यिर्म 16:13
3 1रा 9:8, 2इत 7:20, यिर्म 24:9, यिर्म 25:9
4 यश 5:10, हाग 1:6
5 सप 1:13
6 2रा 24:14, यिर्म 52:15, 30
7 नीत 22:7
8 एज 9:7

मानोगे और इस तरह उसकी बात नहीं
सुनोगे, तो ये सारे शाप तुम पर ज़रूर आ
पड़ेंगे[1] और तब तक तुम्हारा पीछा
नहीं छोड़ेंगे जब तक कि तुम मिट
नहीं जाते।[2] **46** ये शाप तुम पर और
तुम्हारे वंशजों पर आ पड़ेंगे और हमेशा
के लिए एक चेतावनी और निशानी बन
जाएँगे[3] **47** क्योंकि सबकुछ बहुतायत
में होते हुए भी तुमने आनंद और दिली
खुशी से अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा
नहीं की होगी।[4] **48** यहोवा तुम्हारे
खिलाफ दुश्मनों को भेजेगा और तुम
भूखे-प्यासे,[5] फटे-पुराने कपड़ों में और
घोर तंगी झेलते हुए उनकी सेवा करोगे।[6]
परमेश्वर तब तक तुम्हारी गरदन पर
लोहे का जुआ रखा रहेगा जब तक कि
तुम्हें मिटा नहीं देता।

49 यहोवा दूर से, धरती के छोर से
एक राष्ट्र को तुम्हारे खिलाफ भेजेगा,[7]
जो उकाब की तरह तुम पर अचानक
झपट पड़ेगा।[8] वह ऐसा राष्ट्र होगा
जिसकी भाषा तुम नहीं समझते,[9]
50 वह खूँखार होगा, न किसी बूढ़े
का लिहाज़ करेगा, न किसी बच्चे
पर तरस खाएगा।[10] **51** उस राष्ट्र के
लोग आकर तुम्हारे झुंड के बछड़े
और मेम्ने और तुम्हारी ज़मीन की सारी
उपज खा जाएँगे और ऐसा तब तक करते
रहेंगे जब तक कि तुम मिट नहीं जाते। वे
तुम्हारे लिए ज़रा भी अनाज, नयी दाख-
मदिरा या तेल या एक भी बछड़ा या मेम्ना
तक नहीं छोड़ेंगे और तुम्हें तबाह करके
ही रहेंगे।[11] **52** वे तुम्हारे सभी शहरों
को घेर लेंगे और तुम अपने ही शहरों में*
कैद हो जाओगे और वे तब तक घेराबंदी
किए रहेंगे जब तक कि तुम्हारी ऊँची-
ऊँची, मज़बूत शहरपनाह गिर नहीं जाती
जिस पर तुमने भरोसा रखा होगा।
हाँ, वे तुम्हारे उस देश के सभी शहरों
की घेराबंदी करेंगे जो तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा तुम्हें देनेवाला है।[1] **53** तुम्हारे
शहरों की घेराबंदी इतनी सख्त होगी और
दुश्मन तुम्हारा इतना बुरा हाल करेंगे कि
तुम्हें अपने ही बच्चों* को खाना पड़ेगा।
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें जो बेटे-
बेटियाँ दिए हैं, तुम उन्हीं का माँस
खाओगे।[2]

54 तुम्हारे बीच जो आदमी सबसे
नरम-दिल है और ठाट-बाट से जीने का
आदी है, वह भी अपने भाई पर रहम नहीं
करेगा। वह न अपनी प्यारी पत्नी पर,
न ही अपने बचे हुए बेटों पर दया
करेगा। **55** वह अकेला ही अपने बेटों
का माँस खा जाएगा और उनमें से
किसी को भी नहीं देगा, क्योंकि घेरा-
बंदी इतनी सख्त होगी और दुश्मन तुम्हारे
शहरों को इस तरह तबाह कर देंगे कि
उसके पास खाने के लिए कुछ और
नहीं होगा।[3] **56** और तुम्हारे बीच जो
औरत सबसे नरम-दिल है और इतनी
नाज़ुक है कि अपने पाँव ज़मीन पर रखने
की कभी सोच भी नहीं सकती,[4] वह भी न
अपने पति पर रहम करेगी, न ही अपने
बेटे या बेटी पर तरस खाएगी। **57** वह
अपने नए जन्मे बच्चे पर या बच्चा जनते
वक्त उसके गर्भ से जो कुछ निकल-
ता है उस पर भी तरस नहीं खाएगी। वह
चोरी-छिपे यह सब खाएगी क्योंकि घेरा-
बंदी बहुत सख्त होगी और दुश्मन तुम्हारे
शहरों को तबाह कर देंगे।

58 अगर तुम कानून की इस किताब[5]
में लिखी सभी आज्ञाओं को सख्ती से नहीं
मानोगे और अपने परमेश्वर यहोवा[6] के
शानदार और विस्मयकारी नाम से नहीं

अध्य. 28

1 व्य 28:15, व्य 29:27
2 व्य 11:26-28, 2रा 17:20, यिर्म 24:10
3 1कुर 10:11
4 व्य 12:7, नहे 9:35
5 यिर्म 44:27
6 2इत 12:8, 9, यिर्म 5:19
7 यिर्म 6:22, हब 1:6
8 यिर्म 4:13, हो 8:1
9 यिर्म 5:15
10 2इत 36:17, यश 47:6, लूक 19:44
11 लैव 26:26, यिर्म 15:13

दूसरा कॉल.

1 2रा 17:5, 2रा 25:1, लूक 19:43
2 2रा 6:28, विल 4:10, यहे 5:10
3 यिर्म 52:6
4 विल 4:5
5 निर्ग 24:7, व्य 31:26
6 निर्ग 3:15, निर्ग 6:3, निर्ग 20:2, भज 83:18, भज 113:3, यश 42:8

28:52 *शा., "फाटकों के अंदर।"

28:53 *शा., "अपने गर्भ के फल।"

डरोगे,[1] **59** तो यहोवा तुम पर और
तुम्हारे बच्चों पर भयानक-से-भयानक
कहर ढाएगा। वह तुम पर ऐसे बड़े-बड़े
कहर[2] और दर्दनाक बीमारियाँ ले आएगा
कि तुम उन्हें सालों-साल झेलते रहोगे।
60 परमेश्वर तुम पर मिस्र देश की
सारी बीमारियाँ ले आएगा जिनसे तुम
बहुत डरते थे और वे बीमारियाँ तुम्हें
लगी रहेंगी। **61** इतना ही नहीं, यहोवा
तुम पर ऐसी हर बीमारी और कहर
लाएगा जिसका ज़िक्र कानून की इस
किताब में नहीं है और वह ऐसा तब तक
करता रहेगा जब तक कि तुम मिट नहीं
जाते। **62** भले ही आज तुम्हारी गिनती
आसमान के तारों जैसी अनगिनत है,[3]
लेकिन अपने परमेश्वर यहोवा की बात न
मानने की वजह से तुममें से सिर्फ मुट्ठी-भर
लोग ही रह जाएँगे।[4]

63 जिस तरह एक वक्त पर यहोवा
ने खुशी-खुशी तुम्हें गिनती में बढ़ाया और
तुम्हें खुशहाली दी, उसी तरह तुम्हें नाश
करने और मिटाने में यहोवा को खुशी
मिलेगी और तुम उस देश से उखाड़
दिए जाओगे जिसे तुम अपने अधिकार में
करनेवाले हो।

64 यहोवा तुम्हें धरती के एक छोर से
दूसरे छोर तक सब राष्ट्रों में तितर-बितर
कर देगा[5] और वहाँ तुम्हें लकड़ी और
पत्थर के ऐसे देवताओं की सेवा करनी
पड़ेगी जिन्हें न तुम जानते हो, न ही
तुम्हारे बाप-दादे जानते थे।[6] **65** उन
राष्ट्रों में रहते तुम्हें शांति नहीं मिलेगी[7]
और न ही तुम्हें किसी एक जगह रहने का
ठिकाना मिलेगा। यहोवा ऐसा करेगा कि
तुम्हारा मन हमेशा चिंताओं से घिरा
रहेगा,[8] छुटकारे की राह तकते-तकते
तुम्हारी आँखें थक जाएँगी और तुम पूरी
तरह टूट जाओगे।[9] **66** तुम्हारी जान
जोखिम में होगी, तुम रात-दिन खौफ के
साए में जीओगे और तुम पर यह
चिंता हावी रहेगी कि कल का दिन मैं
देख पाऊँगा भी या नहीं। **67** तुम्हारे
दिल में ऐसा डर बैठ जाएगा और
तुम्हारी आँखों के सामने ऐसे हालात होंगे
कि सुबह होने पर तुम कहोगे, 'शाम
कब होगी?' और शाम होने पर कहोगे,
'सुबह कब होगी?' **68** और यहोवा
तुम्हें जहाज़ से उसी रास्ते वापस मिस्र
ले जाएगा जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा
था, 'तुम इस रास्ते से फिर कभी नहीं
जाओगे।' मिस्र में तुम लाचार होकर खुद
को अपने दुश्मनों के हाथ बेचना चाहोगे
और उनके दास-दासी बनना चाहोगे मगर
तुम्हें खरीदनेवाला कोई न होगा।"

29 जब इसराएली मोआब देश में थे
तब यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी
कि वह उनके साथ एक करार करे। इससे
पहले परमेश्वर ने होरेब में उनके साथ
एक करार किया था।[1] मोआब में किए
करार की बातें ये हैं।

2 मूसा ने सभी इसराएलियों को
बुलाया और उनसे कहा, "तुमने खुद
अपनी आँखों से देखा है कि यहोवा ने
मिस्र में फिरौन और उसके सब अधि-
कारियों और उसके पूरे देश का क्या
हश्र किया था।[2] **3** तुमने देखा कि
उसने कैसे उन्हें कड़ी-से-कड़ी सज़ा दी
और बड़े-बड़े चिन्ह और चमत्कार
किए।[3] **4** फिर भी यहोवा ने तुम्हें
आज तक समझने के लिए मन, देखने
के लिए आँखें और सुनने के लिए
कान नहीं दिए।[4] **5** उसने तुमसे कहा,
'मैं 40 साल तक वीराने में तुम्हारे साथ
रहकर तुम्हें राह दिखाता रहा[5] और उस
दौरान न तुम्हारे कपड़े पुराने होकर फटे,

अध्य. 28
1 व्य 10:17
भज 99:3
2 लैव 26:21
दान 9:12
3 व्य 10:22
4 व्य 4:27
5 लैव 26:33
नहे 1:8
लूक 21:24
6 व्य 4:27, 28
7 आम 9:4
8 यहे 12:19
9 लैव 26:16, 36

दूसरा कॉल.

अध्य. 29
1 निर्ग 24:8
2 निर्ग 19:4
यह 24:5
3 व्य 4:34
नहे 9:10
4 रोम 11:8
5 व्य 1:3
व्य 8:2

न ही तुम्हारे पैरों की जूतियाँ घिसीं।[1]
6 तुम्हारे पास खाने के लिए रोटी या पीने
के लिए दाख-मदिरा या कोई और शराब
नहीं थी, फिर भी मैंने तुम्हारी देखभाल
की ताकि तुम जान लो कि मैं तुम्हारा पर-
मेश्वर यहोवा हूँ।' 7 तुम सफर करते-
करते जब इस जगह पहुँचे तो हेश-
बोन का राजा सीहोन[2] और बाशान
का राजा ओग[3] हमसे युद्ध करने आए,
मगर हमने उन्हें हरा दिया।[4] 8 फिर
हमने उनका इलाका ले लिया और रूबे-
नियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र
को दे दिया ताकि यह उनकी विरासत की
ज़मीन हो।[5] 9 इसलिए तुम इस करार
के नियमों और आज्ञाओं का पालन
करना। तब तुम अपने हर काम में काम-
याब होगे।[6]

10 आज तुम सब अपने परमेश्वर
यहोवा के सामने हाज़िर हो, सभी गोत्रों
के प्रधान, मुखिया, अधिकारी, इसराएल
के सभी आदमी, 11 औरतें,[7] बच्चे,
तुम्हारी छावनी में रहनेवाले परदेसी,[8]
यहाँ तक कि तुम्हारे लिए लकड़ी बीनने-
वाले और पानी भरनेवाले, सब-के-सब।
12 तुम यहाँ इसलिए हो कि तुम अपने
परमेश्वर यहोवा के साथ एक करार
में बँध सको। आज तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा शपथ खाकर तुम्हारे साथ यह
करार कर रहा है[9] 13 जिससे कि वह
आज तुम्हें अपने लोग बना सके[10] और
वह तुम्हारा परमेश्वर ठहरे,[11] ठीक जैसे
उसने तुमसे और तुम्हारे पुरखों से, अब्रा-
हम,[12] इसहाक[13] और याकूब[14] से शपथ
खाकर वादा किया था।

14 मैं शपथ खाकर यह करार न
सिर्फ तुम लोगों के साथ कर रहा हूँ
15 जो आज हमारे परमेश्वर यहोवा
के सामने हाज़िर हैं बल्कि आनेवाली
पीढ़ी के* साथ भी कर रहा हूँ।
16 (तुम लोग अच्छी तरह जानते हो कि
हमने मिस्र में कैसी ज़िंदगी बितायी
थी और अपने सफर में हम किन-किन
जातियों के बीच से गुज़रे थे।[1] 17 तुम
उन जातियों की घिनौनी चीज़ें देखते थे:
लकड़ी, पत्थर और सोने-चाँदी से बनी
घिनौनी मूरतें।*)[2] 18 सावधान रहना
कि तुम्हारे बीच ऐसा कोई आदमी,
औरत, परिवार या गोत्र न हो जिसका
मन आज हमारे परमेश्वर यहोवा से फिर
जाए और वह उन जातियों के देवताओं
की सेवा करने लगे।[3] वह ऐसे पौधे की
जड़ जैसा होगा जो ज़हरीले फल और
नागदौना पैदा करता है।[4]

19 लेकिन अगर कोई यह शपथ
सुनने के बाद भी घमंड से फूलकर अपने
मन में सोचता है, 'मैं तो अपनी मन-
मरज़ी करूँगा, मेरा कुछ बुरा नहीं होगा,'
जिससे वह अपने रास्ते में आनेवाली
हर चीज़* को नाश करता है, 20 तो
यहोवा उसे हरगिज़ माफ नहीं करेगा।[5]
यहोवा के क्रोध की ज्वाला उस पर भड़क
उठेगी और इस किताब में जितने भी
शाप लिखे हैं वे सब उस पर आ पड़ेंगे[6]
और यहोवा धरती से* उसका नाम मिटा
देगा। 21 यहोवा उसे इसराएल के सब
गोत्रों में से अलग करेगा और कानून की
इस किताब में जो भी शाप बताए गए हैं
सब उस पर लाएगा और उसे तबाह कर
देगा।

अध्य. 29
1 व्य 8:4, नहे 9:21, मत 6:31
2 गि 21:26
3 गि 21:33
4 भज 135:10, 11
5 गि 32:33, व्य 3:12, 13
6 व्य 4:6, व्य 8:18, यह 1:7, 8, 1रा 2:3, भज 103:17, 18, लूक 11:28
7 नहे 8:2
8 निर्ग 12:38
9 व्य 1:3, व्य 29:1
10 निर्ग 19:5, व्य 7:6, व्य 28:9
11 निर्ग 6:7, निर्ग 29:45
12 उत 17:1, 7, उत 22:16, 17
13 उत 26:3
14 उत 28:13

दूसरा कॉल.
1 व्य 2:4
2 गि 25:1, 2
3 व्य 11:16, इब्र 3:12
4 इब्र 12:15
5 यह 24:19
6 व्य 27:26, व्य 28:15

29:15 *शा., "जो आज हमारे साथ नहीं हैं उनके।" **29:17** *इनका इब्रानी शब्द शायद "मल" के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है। **29:19** *शा., "सूखे के साथ-साथ सिंचे हुए।" **29:20** *शा., "आकाश के नीचे से।"

22 तुम्हारी आनेवाली पीढ़ी और दूर देश से आनेवाले परदेसी देखेंगे कि तुम्हारे देश पर कैसी मुसीबतें आयी हैं। वे देखेंगे कि यहोवा ने तुम्हारे देश पर क्या-क्या कहर ढाए, 23 नमक, आग और गंधक बरसाकर पूरे देश को नाश कर दिया और उसे जुताई-बोआई के लायक न छोड़ा और उसकी यह हालत कर दी कि वहाँ घास तक नहीं उगती और पूरा देश सदोम, अमोरा,[1] अदमा और सबोयीम[2] जैसा हो गया है जिन्हें यहोवा ने गुस्से और क्रोध में आकर नाश कर दिया था। 24 जब तुम्हारे वंशज, परदेसी और सब राष्ट्रों के लोग यह देखेंगे तो कहेंगे, 'आखिर यहोवा ने इस देश का यह हाल क्यों किया?[3] क्यों वह गुस्से से इतना भड़क उठा?' 25 फिर वे कहेंगे, 'यह इसलिए हुआ क्योंकि इन लोगों ने अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा का करार तोड़ दिया।[4] उसने मिस्र से उन्हें निकालने के बाद उनके साथ जो करार किया था उसे मानना छोड़कर[5] 26 वे दूसरे देवताओं की सेवा करने लगे और उनके आगे दंडवत करने लगे जिन्हें वे नहीं जानते थे और जिनकी पूजा करने से परमेश्वर ने उन्हें मना किया था।*[6] 27 तब यहोवा के क्रोध की ज्वाला उस देश पर भड़क उठी और वह उस पर वे सारे शाप ले आया जो इस किताब में लिखे हैं।[7] 28 यही वजह है कि यहोवा ने गुस्से, क्रोध और जलजलाहट में आकर उन्हें उनके देश से उखाड़ दिया[8] और एक पराए देश में भेज दिया जहाँ वे आज हैं।'[9]

29 जो बातें गुप्त हैं वे हमारे परमेश्वर यहोवा के अधिकार में हैं,[10] मगर जो बातें ज़ाहिर की गयी हैं वे हमें और हमारे वंशजों को सदा के लिए दी गयी हैं ताकि हम इस कानून की सारी बातों पर अमल कर सकें।[1]

30 मैंने तुमसे आशीष और शाप की जो-जो बातें कही हैं वे सब तुम पर पूरी होंगी।[2] तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दूसरे राष्ट्रों में तितर-बितर कर देगा[3] और वहाँ तुम ये सब बातें याद करोगे।*[4] 2 फिर तुम और तुम्हारे बच्चे पूरे दिल और पूरी जान से अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आएँगे[5] और उसकी बात मानेंगे[6] जिसकी आज मैं तुम्हें आज्ञा दे रहा हूँ। 3 तब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें बँधुआई से वापस ले आएगा।[7] तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम पर दया करेगा[8] और उसने जिन-जिन देशों में तुम्हें तितर-बितर किया था, वहाँ से इकट्ठा करके तुम्हें दोबारा अपने देश में ले आएगा।[9] 4 चाहे तुम धरती के छोर तक तितर-बितर कर दिए जाओ, फिर भी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें वहाँ से इकट्ठा करके वापस ले आएगा।[10] 5 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें वापस उस देश में ले आएगा जिसे तुम्हारे पुरखों ने अपने अधिकार में किया था और वापस आकर तुम भी उसे अपने अधिकार में कर लोगे। वहाँ परमेश्वर तुम्हें खुशहाली देगा और तुम्हें गिनती में तुम्हारे पुरखों से भी ज़्यादा बढ़ाएगा।[11] 6 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के दिलों को शुद्ध* करेगा।[12] तब तुम पूरे दिल और पूरी जान से अपने परमेश्वर यहोवा से प्यार करोगे और जीते रहोगे।[13]

अध्य. 29
1 उत 19:24 यहू 7
2 उत 10:19 उत 14:2
3 1रा 9:8, 9 2इत 7:21, 22 यिर्म 22:8, 9
4 1रा 19:10
5 यिर्म 31:32
6 न्या 2:12
7 लैव 26:16 व्य 27:26
8 व्य 28:45, 63 1रा 14:15 2रा 17:18 लूक 21:24
9 एज 9:7 दान 9:7
10 रोम 11:33

दूसरा कॉल.
1 भज 78:5 सभ 12:13

अध्य. 30
2 व्य 11:26-28 व्य 28:2, 15
3 2रा 17:6 2इत 36:20
4 1रा 8:47 नहे 1:9 यहे 18:28 योए 2:13
5 यश 55:7 1यूह 1:9
6 व्य 4:29
7 यिर्म 29:14
8 विल 3:22
9 एज 1:2, 3 भज 147:2 यिर्म 32:37 यहे 34:13
10 व्य 28:64 सप 3:20
11 नहे 1:9
12 यिर्म 32:37, 39
13 व्य 6:5

29:26 *शा., "परमेश्वर ने उनके हिस्से में नहीं दिया था।"

30:1 *शा., "वापस अपने दिल में लाओगे।" **30:6** *शा., "का खतना।"

7 और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ये सारे
शाप तुम्हारे दुश्मनों पर ले आएगा
जो तुमसे नफरत करते थे और तुम्हें
सताते थे।[1]

8 तुम यहोवा के पास लौट आओगे
और उसकी बात सुनोगे और उसकी सारी
आज्ञाएँ मानोगे जो आज मैं तुम्हें सुना रहा
हूँ। 9 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे
हाथ की मेहनत पर आशीष देगा[2] जिससे
तुम खूब फूलोगे-फलोगे, वह तुम्हें बहुत-
सी संतानें देगा, तुम्हारे मवेशियों की
गिनती बढ़ाएगा और तुम्हारी ज़मीन से
भरपूर उपज देगा। यहोवा एक बार
फिर तुम्हें खुशी-खुशी बढ़ाएगा, ठीक
जैसे उसने तुम्हारे पुरखों को खुशी-खुशी
बढ़ाया था[3] 10 क्योंकि तुम अपने पर-
मेश्वर यहोवा की बात सुनोगे और कानून
की इस किताब में लिखी आज्ञाओं और
विधियों का हमेशा पालन करोगे और पूरे
दिल और पूरी जान से अपने परमेश्वर
यहोवा के पास लौट आओगे।[4]

11 आज मैं तुम्हें जो आज्ञाएँ सुना रहा
हूँ उन्हें समझना या उन पर चलना तुम्हारे
लिए ज़्यादा मुश्किल नहीं है।*[5] 12 ये
आज्ञाएँ स्वर्ग में नहीं हैं कि तुम कहो,
'हमारे लिए कौन स्वर्ग जाकर वे आज्ञाएँ
ले आएगा ताकि हम उन्हें सुनें और
मानें?'[6] 13 न ही ये आज्ञाएँ समुंदर के
उस पार हैं कि तुम कहो, 'हमारे लिए
कौन समुंदर पार जाकर वे आज्ञाएँ ले
आएगा ताकि हम उन्हें सुनें और मानें?'
14 इसके बजाय, कानून का यह संदेश
तुम्हारे पास, तुम्हारे ही मुँह में और दिल में
है[7] ताकि तुम इसके मुताबिक चलो।[8]

15 देखो, मैं आज तुम्हारे सामने एक
चुनाव रखता हूँ। तुम चाहो तो ज़िंदगी
और खुशहाली चुन सकते हो या फिर
मौत और बदहाली।[1] 16 अगर तुम
अपने परमेश्वर यहोवा से प्यार करोगे,[2]
उसकी राहों पर चलोगे और उसकी
आज्ञाओं, विधियों और न्याय-सिद्धांतों
का पालन करते रहोगे और इस
तरह अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ
मानोगे जो आज मैं तुम्हें सुना रहा हूँ, तो
तुम जीते रहोगे[3] और तुम्हारी गिनती कई
गुना बढ़ जाएगी और तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा तुम्हें उस देश में आशीष देगा जिसे
तुम अपने अधिकार में करनेवाले हो।[4]

17 लेकिन अगर तुम्हारा मन पर-
मेश्वर से फिर जाएगा[5] और तुम उसकी
नहीं सुनोगे और दूसरे देवताओं के आगे
दंडवत करने और उनकी सेवा करने के
लिए बहक जाओगे,[6] 18 तो आज मैं
तुम्हें बता देता हूँ कि तुम ज़रूर नाश हो
जाओगे।[7] तुम उस देश में ज़्यादा दिन
तक नहीं जी पाओगे जिसे तुम यरदन पार
जाकर अपने अधिकार में करनेवाले हो।
19 आज मैं धरती और आकाश को
गवाह ठहराकर तुम्हारे सामने यह चुनाव
रखता हूँ कि तुम या तो ज़िंदगी चुन
लो या मौत, आशीष या शाप।[8] तुम और
तुम्हारे वंशज[9] ज़िंदगी ही चुनें ताकि तुम
सब जीते रहो।[10] 20 इसके लिए तुम
अपने परमेश्वर यहोवा से प्यार करना,[11]
उसकी बात सुनना और उससे लिपटे
रहना[12] क्योंकि तुम्हें जीवन देनेवाला वही
है और वही तुम्हें उस देश में लंबी ज़िंदगी
दे सकता है जिसे देने के बारे में यहोवा ने
तुम्हारे पुरखों से, अब्राहम, इसहाक और
याकूब से शपथ खायी थी।"[13]

31 फिर मूसा इसराएल के सभी
लोगों के पास गया और उसने ये
बातें उनसे कहीं: 2 "अब मैं 120 साल
का हो गया हूँ।[14] मैं और तुम्हारी अगुवाई

30:11 *शा., "वे तुमसे बहुत दूर नहीं हैं।"

अध्य. 30
1 उत 12:2, 3 यिर्म 25:12 विल 3:64 रोम 12:19
2 यश 65:21, 22 मला 3:10
3 यिर्म 32:37, 41
4 नहे 1:9 प्रेष 3:19
5 यश 45:19
6 रोम 10:6
7 रोम 10:8
8 मत 7:21 याकू 1:25

दूसरा कॉल.
1 व्य 11:26
2 व्य 6:5
3 लैव 18:5
4 लैव 25:18 व्य 30:5
5 व्य 29:18 इब्र 3:12
6 व्य 4:19
7 व्य 8:19 यह 23:15 1शम 12:25
8 व्य 11:26 व्य 27:26 व्य 28:2, 15
9 यह 24:15
10 व्य 32:47
11 व्य 10:12
12 व्य 4:4
13 उत 12:7 उत 15:18

अध्य. 31
14 निर्ग 7:7 व्य 34:7 प्रेष 7:23

नहीं कर सकता क्योंकि यहोवा ने मुझसे
कहा है, ‘तू इस यरदन को पार नहीं
करेगा।’[1] **3** तुम्हारा परमेश्‍वर यहोवा
तुम्हारे आगे-आगे जाएगा और यरदन
पार करेगा और वही तुम्हारे सामने से
इन सब जातियों को नाश करेगा और
तुम उन्हें खदेड़ दोगे।[2] और जैसे
यहोवा ने बताया है, यहोशू तुम्हारी अगु-
वाई करके तुम्हें उस पार ले जाएगा।[3]
4 यहोवा इन जातियों को नाश कर देगा
जैसे उसने एमोरियों के राजा, सीहोन[4]
और ओग[5] और उनके देश के साथ
किया था।[6] **5** यहोवा तुम्हारी तरफ
से लड़ेगा और उन्हें हरा देगा। तुम उनके
साथ वह सब करना जिसकी मैंने तुम्हें
आज्ञा दी है।[7] **6** तुम हिम्मत से काम
लेना और हौसला रखना।[8] उन जातियों
से बिलकुल न डरना और न ही उनसे
खौफ खाना[9] क्योंकि तुम्हारा परमेश्‍वर
यहोवा तुम्हारे साथ चलेगा। वह तुम्हारा
साथ कभी नहीं छोड़ेगा और न ही तुम्हें
त्यागेगा।”[10]

7 फिर मूसा ने यहोशू को बुलाया और
सभी इसराएलियों के सामने उससे कहा,
“तू हिम्मत से काम लेना और हौसला
रखना,[11] क्योंकि तू ही इन लोगों को उस
देश में ले जाएगा जिसे देने के बारे में
यहोवा ने इनके पुरखों से शपथ खायी थी
और तू ही इन लोगों को वह देश विरा-
सत में देगा।[12] **8** यहोवा खुद तेरे आगे
चलेगा और तेरे साथ-साथ रहेगा।[13] वह
तेरा साथ कभी नहीं छोड़ेगा और न ही
तुझे त्यागेगा। इसलिए तू डरना मत और
न ही खौफ खाना।”[14]

9 फिर मूसा ने यह कानून लिख-
कर[15] लेवी याजकों को, जो यहोवा
के करार का संदूक ढोया करते थे और
इसराएल के सभी मुखियाओं को दिया।
10 मूसा ने उन्हें यह आज्ञा दी: “हर
सातवें साल के आखिर में यानी रिहाई
के साल[1] में जब तय वक्‍त पर छप्परों
का त्योहार मनाया जाएगा[2] **11** और
सभी इसराएली तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा
के सामने उसकी चुनी हुई जगह पर
हाज़िर होंगे,[3] तब तुम उन्हें यह कानून
पढ़कर सुनाना।[4] **12** उस मौके पर
तुम सब लोगों को इकट्ठा करना,[5] आद-
मियों, औरतों, बच्चों* और तुम्हारे
शहरों में# रहनेवाले परदेसियों, सबको
इकट्ठा करना ताकि वे सब तुम्हारे पर-
मेश्‍वर यहोवा के बारे में सुनें और
सीखें और उसका डर मानें और इस
कानून में लिखी सारी बातों को सख्ती
से मानें। **13** फिर जब तुम यरदन पार
करके उस देश को अपने अधिकार में
कर लोगे तो वहाँ उनके बच्चे भी इस
कानून के बारे में जान सकेंगे जो इसे
नहीं जानते। तुम जितने समय तक
उस देश में बसे रहोगे, उतने समय तक वे
इस कानून के बारे में सुना करेंगे[6] और
हमेशा तुम्हारे परमेश्‍वर यहोवा का डर
मानना सीखेंगे।”[7]

14 फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
“देख, अब वह समय आ गया है जब तेरी
मौत हो जाएगी।[8] इसलिए यहोशू को
बुला और तुम दोनों भेंट के तंबू के आगे
हाज़िर होना।* फिर मैं उसे अगुवा ठह-
राऊँगा।”[9] तब मूसा और यहोशू जाकर
भेंट के तंबू के सामने हाज़िर हुए।
15 और यहोवा बादल के खंभे में उनके
सामने प्रकट हुआ और वह खंभा तंबू के
द्वार पर ठहर गया।[10]

16 यहोवा ने मूसा से कहा, “देख,

31:12 *शा., “नन्हे-मुन्नों।” #शा., “फाटकों के अंदर।” **31:14** *या “अपनी-अपनी जगह लेना।”

अध्य. 31

1 गि 20:12, व्य 3:27
2 व्य 9:3
3 गि 27:18, व्य 3:28, यह 1:2
4 गि 21:23, 24
5 गि 21:33, 35
6 निर्ग 23:23
7 गि 33:52, व्य 7:2, 24, व्य 20:16
8 यह 1:6, भज 27:14, भज 118:6
9 गि 14:9, व्य 7:18
10 व्य 4:31, यह 1:5, इब्र 13:5
11 यह 10:25
12 व्य 1:38
13 निर्ग 33:14
14 यह 1:9
15 निर्ग 34:27

दूसरा कॉल.

1 व्य 15:1
2 लैव 23:34
3 व्य 16:16
4 नहे 8:7
5 व्य 4:10, इब्र 10:25
6 व्य 6:6, 7, इफ 6:4
7 व्य 30:16
8 गि 27:13
9 व्य 3:28
10 निर्ग 33:9, निर्ग 40:38

अब बहुत जल्द तेरी मौत हो जाएगी*
और ये लोग जब उस देश में जाकर बस
जाएँगे तो वे अपने आस-पास की जातियों
के देवी-देवताओं को पूजने लगेंगे।#[1]
वे मुझे छोड़ देंगे[2] और उस करार को
तोड़ देंगे जो मैंने उनके साथ किया
है।[3] **17** तब उन पर मेरा क्रोध भड़क
उठेगा।[4] मैं उन्हें छोड़ दूँगा[5] और तब तक
उनसे अपना मुँह फेरे रहूँगा[6] जब तक कि
वे तबाह नहीं हो जाते। उन पर बहुत-सी
दुख-तकलीफें और मुसीबतें टूट पड़ेंगी।[7]
तब वे कहेंगे, 'ये सब मुसीबतें हम पर
इसलिए आयी हैं क्योंकि हमारा पर-
मेश्वर हमारे बीच नहीं है।'[8] **18** मगर
उन्होंने दूसरे देवताओं के पीछे जाने की
जो दुष्टता की होगी उस वजह से मैं उनसे
अपना मुँह फेरे रहूँगा।[9]

19 अब तू यह गीत लिख[10] और इसे
इसराएलियों को सिखा।[11] उनसे कहना
कि वे इसे ज़बानी याद कर लें ताकि
यह गीत उन्हें याद दिलाए कि परमेश्वर
की आज्ञा न मानने का क्या अंजाम होता
है।[12] **20** जब मैं उन्हें उस देश में ले
जाऊँगा जहाँ दूध और शहद की धाराएँ
बहती हैं,[13] ठीक जैसे मैंने उनके पुरखों
से शपथ खायी थी[14] और वहाँ जब
उनके पास खाने-पीने की कोई कमी
नहीं होगी और वे फूलेंगे-फलेंगे*[15] तो
वे दूसरे देवताओं की तरफ फिरकर
उनकी सेवा करेंगे। वे मेरा अनादर करेंगे
और मेरा करार तोड़ देंगे।[16] **21** फिर
जब उन पर बहुत-सी दुख-तकलीफें और
मुसीबतें टूट पड़ेंगी[17] तो यह गीत (जो

31:16 *शा., "तू अपने पुरखों के साथ सो जाएगा।" #या "के साथ वेश्याओं जैसी बदचलनी करने लगेंगे।" **31:20** *शा., "मोटे हो जाएँगे।"

अध्य. 31
1 न्या 2:17 भज 106: 37-39
2 1रा 11:33
3 न्या 2:12, 20
4 व्य 29:20
5 1इत 28:9 2इत 15:2 2इत 24:20
6 व्य 32:20 भज 104:29 यहे 39:23
7 नहे 9:27
8 न्या 6:13
9 यश 59:2
10 व्य 31:30 व्य 32:44
11 व्य 4:9 व्य 11:19
12 व्य 31:21
13 निर्ग 3:8 गि 13:26, 27
14 उत 15:18
15 नहे 9:25
16 निर्ग 24:7 व्य 8:12-14 व्य 29:1 नहे 9:26
17 व्य 28:59

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 16:4
2 गि 27:18 व्य 31:14
3 यह 1:6, 9
4 व्य 1:38 व्य 3:28
5 निर्ग 34:27
6 व्य 17:18 2इत 34:14
7 1रा 8:9
8 निर्ग 32:9 व्य 9:24 नहे 9:26 भज 78:8
9 व्य 30:19
10 न्या 2:19

उनके वंशजों को नहीं भूलना चाहिए)
उन्हें याद दिलाएगा कि परमेश्वर की
आज्ञा न मानने का क्या अंजाम होता है।
मैं अभी से देख सकता हूँ कि जिस देश के
बारे में मैंने शपथ खायी थी उसमें कदम
रखने से पहले ही उनमें कैसी फितरत पैदा
हो गयी है।"[1]

22 तब मूसा ने यह गीत लिखा और
इसराएलियों को सिखाया।

23 फिर उसने* नून के बेटे यहोशू
को अगुवा ठहराया[2] और उससे कहा,
"तू हिम्मत से काम लेना और हौसला
रखना,[3] क्योंकि तू ही इसराएलियों को
उस देश में ले जाएगा जिसके बारे
में मैंने उनसे शपथ खायी थी।[4] और मैं
हमेशा तेरे साथ रहूँगा।"

24 मूसा ने जब कानून की सारी बातें
किताब में लिख लीं[5] तो उसके फौरन
बाद **25** उसने लेवियों को, जो यहोवा
के करार का संदूक ढोया करते थे, यह
आज्ञा दी: **26** "तुम कानून की यह
किताब[6] लेना और इसे अपने परमेश्वर
यहोवा के करार के संदूक[7] के पास रखना
और यह तुम्हारे खिलाफ गवाह ठहरेगी।
27 मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम ढीठ
और बगावती लोग हो।[8] आज जब मैं
ज़िंदा हूँ तब तुम यहोवा के खिलाफ इस
कदर बगावत कर रहे हो, तो मेरी मौत के
बाद और कितनी ज़्यादा बगावत करोगे!
28 तुम अपने गोत्रों के सभी मुखियाओं
और अधिकारियों को मेरे सामने इकट्ठा
करना। मैं उनसे ये बातें कहूँगा और
आकाश और धरती को उनके खिलाफ
गवाह ठहराऊँगा।[9] **29** मैं अच्छी तरह
जानता हूँ कि मेरे मरने के बाद तुम ज़रूर
दुष्ट काम करोगे[10] और मैंने तुम्हें जिस

31:23 *ज़ाहिर है, परमेश्वर ने।

राह पर चलने की आज्ञा दी है, उससे हट-
कर दूर चले जाओगे। और भविष्य में
तुम पर ज़रूर मुसीबतें टूट पड़ेंगी[1] क्योंकि
तुम ऐसे काम करोगे जो यहोवा की नज़र
में बुरे हैं और अपने हाथ के कामों से उसे
गुस्सा दिलाओगे।”

30 इसके बाद मूसा ने इसराएल की
पूरी मंडली के सामने इस गीत के सारे
बोल शुरू से आखिर तक कह सुनाए:[2]

32 “हे आकाश, मैं जो कह रहा हूँ
उस पर कान लगा,
हे धरती, मेरी बातें सुन।
2 मेरी हिदायतें बारिश की तरह बर-
सेंगी,
मेरी बातें ओस की बूँदों की तरह
टपकेंगी,
जैसे हरी घास पर फुहार
और पौधों पर बौछार होती है।
3 मैं यहोवा के नाम का ऐलान
करूँगा।[3]
हमारे परमेश्वर की महानता का
बखान करूँगा![4]
4 वह चट्टान है, उसका काम
खरा* है,[5]
क्योंकि वह जो कुछ करता है न्याय
के मुताबिक करता है।[6]
वह विश्वासयोग्य परमेश्वर है[7] जो
कभी अन्याय नहीं करता,[8]
वह नेक और सीधा-सच्चा है।[9]
5 मगर उन्हीं लोगों ने दुष्ट काम
किए।[10]
वे परमेश्वर के बच्चे नहीं हैं, खोट
उन्हीं में है।[11]
वे टेढ़ी और भ्रष्ट पीढ़ी के
लोग हैं![12]
6 हे मूर्खो, बेअक्ल लोगो,[13]
क्या यहोवा के एहसानों का तुम यह
सिला दोगे?[1]
क्या वह तुम्हारा पिता नहीं जो तुम्हें
वजूद में लाया था,[2]
क्या उसी ने तुम्हें नहीं बनाया और
मज़बूती से कायम किया?
7 ज़रा बीते दिन याद करो,
गुज़रे ज़माने के बारे में सोचो;
अपने पिता से पूछो, वह तुम्हें
बताएगा,[3]
अपने मुखियाओं से पूछो, वे तुम्हें
सुनाएँगे।
8 जब परम-प्रधान ने सब जातियों को
उनकी विरासत दी,[4]
जब उसने आदम की संतानों* को
एक-दूसरे से अलग किया,[5]
तब उसने इसराएलियों की तादाद
को ध्यान में रखते हुए
सब जातियों की सरहदें तय कीं।[6]
9 यहोवा के लोग उसकी अपनी
जागीर हैं,[7]
याकूब उसकी विरासत है।[8]
10 उसने याकूब को एक वीरान देश में
पाया,[9]
एक सुनसान रेगिस्तान में, जहाँ
हुआँ-हुआँ करते जानवरों की
आवाज़ें गूँजती थीं।[10]
वह उसके इर्द-गिर्द घूमकर उसकी
हिफाज़त करता रहा, उसकी
देखभाल करता रहा,[11]
अपनी आँख की पुतली की तरह
उसने उसकी रक्षा की।[12]
11 जैसे एक उकाब घोंसले को
हिला-हिलाकर अपने बच्चों को
गिराता है
और उनके ऊपर मँडराता है,

32:4 *या “परिपूर्ण।”

32:8 *या शायद, “मानवजाति।”

अध्य. 31
1 व्य 28:15
2 व्य 32:44

अध्य. 32
3 यूह 17:26
4 1इत 29:11
भज 145:3
5 2शम 22:31
भज 18:2
भज 19:7
याकू 1:17
6 भज 33:5
7 व्य 7:9
1पत 4:19
8 व्य 25:16
9 उत 18:25
10 व्य 31:27
न्या 2:19
भज 14:1
11 यश 1:4
12 भज 78:8
लूक 9:41
13 यिर्म 4:22

दूसरा कॉल.
1 यश 1:2
2 निर्ग 4:22
व्य 32:18
यश 63:16
3 निर्ग 13:14
भज 44:1
4 उत 10:5
भज 115:16
5 उत 11:9
6 उत 15:18
निर्ग 23:31
व्य 2:5, 19
प्रेष 17:26
7 निर्ग 19:5
व्य 7:6
8 भज 78:71
9 व्य 8:14, 15
10 यिर्म 2:6
11 नहे 9:19, 20
12 जक 2:8

अपने पंख फैलाकर उन्हें ले
लेता है,
अपने डैनों से उन्हें उठा लेता है,[1]
12 उसी तरह यहोवा अकेला उसकी*
अगुवाई करता रहा,[2]
कोई पराया देवता उसके साथ
नहीं था।[3]
13 परमेश्वर ने उसे धरती की ऊँची-
ऊँची जगहों पर कब्ज़ा दिलाया,[4]
जिस वजह से उसने खेत की उपज
खायी।[5]
परमेश्वर ने उसे चट्टान का शहद
खिलाया
और चकमक चट्टान का तेल
पिलाया।
14 वह उसे गायों का मक्खन,
भेड़-बकरियों का दूध,
मोटी-ताज़ी भेड़ों, बाशान के मेढ़ों
और बकरों का गोश्त
और सबसे बढ़िया किस्म का गेहूँ
खाने को देता रहा।[6]
और तुमने रसीले अंगूरों* से बनी
दाख-मदिरा भी पी।
15 जब यशूरून* मोटा हो गया, तो
वह बागी बन गया और लात
मारने लगा।
तुझ पर चरबी चढ़ गयी है, तू मोटा
हो गया है, फैल गया है।[7]
इसीलिए उसने परमेश्वर को छोड़
दिया जिसने उसे बनाया था,[8]
उसने अपने उद्धार की चट्टान को
तुच्छ जाना।
16 उन्होंने पराए देवताओं की पूजा
करके उसका क्रोध भड़काया,[9]
वे अपनी घिनौनी चीज़ों से उसे
गुस्सा दिलाते रहे।[1]
17 वे परमेश्वर के लिए नहीं,
दुष्ट स्वर्गदूतों के लिए बलि
चढ़ाते थे,[2]
ऐसे देवताओं के लिए जिन्हें वे नहीं
जानते थे,
नए-नए देवताओं के लिए जो
अभी-अभी प्रकट हुए हैं,
जिन्हें तुम्हारे बाप-दादे नहीं
जानते थे।
18 तुम उस चट्टान को भूल गए,[3]
अपने पिता को जिसने तुम्हें पैदा
किया था,
तुमने उस परमेश्वर को याद नहीं
रखा जिसने तुम्हें जन्म दिया।[4]
19 जब यहोवा ने यह देखा तो उसने
उन्हें ठुकरा दिया,[5]
क्योंकि उसके बेटे-बेटियों ने उसे
गुस्सा दिलाया।
20 इसलिए उसने कहा, 'मैं उनसे
अपना मुँह फेर लूँगा,[6]
मैं देखता हूँ कि उनका क्या
होता है।
इस पीढ़ी के लोग टेढ़े हैं,[7]
ऐसे बेटे हैं जो कभी विश्वासयोग्य
नहीं रहते।[8]
21 जो ईश्वर है ही नहीं उसे मानकर
उन्होंने मेरा क्रोध भड़काया,[9]
अपनी निकम्मी मूरतों को पूजकर
मुझे गुस्सा दिलाया।[10]
इसलिए मैं भी ऐसे लोगों के ज़रिए
उन्हें जलन दिलाऊँगा जिन्हें कुछ
नहीं समझा जाता,[11]
एक मूर्ख जाति के ज़रिए उन्हें गुस्सा
दिलाऊँगा।[12]
22 मेरे क्रोध ने आग की चिंगारी
भड़कायी है,[13]

32:12 *यानी याकूब की। 32:14 *शा., "अंगूरों के खून।" 32:15 *मतलब "सीधा-सच्चा जन," इसराएल को दी गयी सम्मान की उपाधि।

अध्य. 32
1 निर्ग 19:4
2 व्य 1:31
3 यश 43:12
4 व्य 33:29
5 व्य 8:7, 8
6 भज 147:14
7 व्य 31:20; नहे 9:25
8 यश 1:4; हो 13:6
9 न्या 2:12; 1रा 14:22; 1कुर 10:21, 22

दूसरा कॉल.
1 2रा 23:13; यहे 8:17
2 लैव 17:7; भज 106:37; 1कुर 10:20
3 भज 106:21; यश 17:10; यिर्म 2:32
4 व्य 4:34
5 न्या 2:14; भज 78:59
6 व्य 31:17
7 व्य 32:5; यश 65:2; मत 17:17
8 यश 1:2
9 भज 96:5; 1कुर 10:21, 22
10 1शम 12:10, 21
11 हो 2:23; रोम 9:25; रोम 11:11; 1पत 2:10
12 रोम 10:19
13 विल 4:11

जो कब्र की गहराई तक जलती
रहेगी,[1]
धरती और उसकी उपज भस्म कर
देगी,
पहाड़ों की नींव में आग लगा देगी।
23 मैं उनकी मुसीबतें बढ़ा दूँगा,
अपने तीर उन पर चला दूँगा।
24 वे भूख से बेहाल हो जाएँगे,[2]
तेज़ बुखार और भयानक विनाश से
मिट जाएँगे।[3]
मैं उनके पीछे खूँखार शिकारी
जानवर
और ज़मीन पर रेंगनेवाले ज़हरीले
साँप छोड़ दूँगा।[4]
25 बाहर तलवार उनके बच्चों को
उनसे छीन लेगी,[5]
तो अंदर वे डर से मर जाएँगे,[6]
चाहे लड़के हों या लड़कियाँ,
दूध-पीते बच्चे हों या पके बालवाले,
सबका यही हाल होगा।[7]
26 मैं उनसे यह ज़रूर कहता, "मैं उन्हें
तितर-बितर कर दूँगा,
लोगों के बीच से उनकी याद मिटा
दूँगा,"
27 अगर मुझे इस बात की चिंता न
होती कि दुश्मन क्या कहेंगे,[8]
क्योंकि मेरे बैरी इसका गलत
मतलब निकाल बैठेंगे।[9]
वे शायद कहेंगे, "हमने अपनी
ताकत से जीता है,[10]
इसमें यहोवा का कोई हाथ नहीं।"
28 इसराएल ऐसी जाति है जिसमें
अक्ल नाम की चीज़ है ही नहीं,*
उनमें बिलकुल समझ नहीं है।[11]

32:28 *या शायद, "जो सलाह पर ध्यान नहीं देता।"

अध्य. 32
1 आम 9:2
2 व्य 28:53
3 व्य 28:21, 22
4 लैव 26:22
5 विल 1:20
6 यहे 7:15
7 2इत 36:17
विल 2:21
8 1शम 12:22
यहे 20:14
9 निर्ग 32:12
गि 14:15, 16
10 भज 115:2
11 मत 13:15

दूसरा कॉल.
1 भज 81:13
2 हो 14:9
3 यिर्म 2:19
4 2इत 24:24
5 न्या 2:14
1शम 12:9
6 1शम 2:2
7 निर्ग 14:25
1शम 4:8
एज 1:2, 3
8 यहू 7
9 यश 5:4
यिर्म 2:21
10 रोम 2:5
11 नहू 1:2
रोम 12:19
इब्र 10:30
12 भज 73:12,
18

29 काश! उनमें बुद्धि होती।[1] तब वे
इस बारे में गहराई से सोचते।[2]
वे अपने अंजाम पर गौर करते।[3]
30 भला एक अकेला 1,000
लोगों का पीछा कैसे
कर सकता है?
और दो जन 10,000 लोगों को
कैसे भगा सकते हैं?[4]
यह इसलिए हो पाया क्योंकि
इसराएल की चट्टान ने उन्हें
बेच दिया,[5]
यहोवा ने उन्हें दुश्मनों के हवाले
कर दिया।
31 दुश्मनों की चट्टान हमारी चट्टान
जैसी नहीं है,[6]
हमारे दुश्मन भी यह जान गए हैं।[7]
32 उनकी अंगूर की बेल सदोम की
अंगूर की बेल से
और अमोरा के बाग से
निकली है।[8]
उनके अंगूर ज़हरीले हैं,
उनके गुच्छे कड़वे हैं।[9]
33 उनकी दाख-मदिरा साँपों का
ज़हर है,
नागों का खतरनाक ज़हर।
34 मैंने उनकी सारी करतूतें जमा कर
रखी हैं,
उन्हें अपने भंडार-घर में मुहरबंद
कर रखा है।[10]
35 बदला लेना और सज़ा देना मेरा
काम है,[11]
वक्त आने पर दुष्टों के पैर
फिसलेंगे,[12]
क्योंकि उनकी तबाही का दिन पास
आ गया है,
जो अंजाम उनके लिए तय है वह
उन पर जल्द आनेवाला है।'

36 यहोवा अपने लोगों का न्याय
करेगा,[1]
अपने सेवकों पर तरस खाएगा,*[2]
जब वह देखेगा कि उनकी ताकत
कम हो गयी है,
सिर्फ लाचार और कमज़ोर लोग रह
गए हैं।
37 फिर वह कहेगा, 'कहाँ गए उनके
देवता,[3]
वह चट्टान जिसकी उन्होंने पनाह
ली थी,
38 जो उनके बलिदानों की चरबी*
खाया करते थे,
उनके अर्घ की दाख-मदिरा
पीते थे?[4]
वे आकर तुम्हारी मदद करें।
वे तुम्हारी पनाह बनें।
39 अब तो जान लो, मैं ही
परमेश्वर हूँ,[5]
मेरे सिवा कोई और देवता
नहीं है।[6]
मैं ही मौत देता हूँ और मैं ही ज़िंदा
करता हूँ।[7]
मैं ही घाव देता हूँ[8] और मैं ही ठीक
करता हूँ,[9]
मेरे हाथ से कोई नहीं छुड़ा
सकता।[10]
40 मैं स्वर्ग की तरफ हाथ उठाकर
कहता हूँ,
"मैं जो सदा तक जीवित रहता
हूँ, अपने जीवन की शपथ
खाता हूँ,"[11]
41 जब मैं अपनी चमचमाती तलवार
तेज़ करूँगा,
सज़ा देने के लिए अपना हाथ
उठाऊँगा,[1]
तो अपने दुश्मनों को उनका बदला
चुकाऊँगा,[2]
मुझसे नफरत करनेवालों को उनके
किए की सज़ा दूँगा।
42 मैं घात किए हुए लोगों और बंदियों
के खून से
अपने तीरों को मदहोश कर दूँगा,
दुश्मन के सरदारों के सिर काटकर
उन्हें अपनी तलवार का कौर बना
दूँगा।'
43 राष्ट्रो, परमेश्वर की प्रजा के साथ
खुशियाँ मनाओ,[3]
क्योंकि वह अपने सेवकों के खून
का बदला लेगा,[4]
अपने दुश्मनों को उनके किए की
सज़ा देगा[5]
और अपने लोगों के देश के लिए
प्रायश्चित* करेगा।"

44 इस तरह मूसा ने इस गीत के
सारे बोल लोगों को कह सुनाए।[6] उसने
और नून के बेटे होशेआ*[7] ने लोगों को
यह गीत सुनाया। 45 जब मूसा सभी
इसराएलियों को ये बातें सुना चुका,
46 तो उसने उनसे कहा, "मैंने आज तुम्हें
जो-जो चेतावनियाँ दी हैं उन्हें तुम अपने
दिल में बिठा लेना[8] ताकि तुम अपने बेटों
को इस कानून की सारी बातें सख्ती से
मानने की आज्ञा दे सको।[9] 47 ये कोई
खोखली बातें नहीं हैं, इन्हीं पर तुम्हारी
ज़िंदगी टिकी है।[10] अगर तुम इन पर
चलोगे तो उस देश में लंबी ज़िंदगी

32:36 *या "के लिए पछतावा महसूस करेगा।" 32:38 *या "उनके बढ़िया-से-बढ़िया बलिदान।"

32:43 *या "को शुद्ध।" 32:44 *यह यहोशू का असल नाम था। होशेआ, होशायाह नाम का छोटा रूप है जिसका मतलब है, "याह के ज़रिए बचाया गया; याह ने बचाया।"

अध्य. 32
1 इब्र 10:30
2 न्या 2:18, भज 90:13, भज 106:45, भज 135:14
3 न्या 10:14
4 हो 2:8, 1कुर 10:20, 21
5 यश 41:4, यश 48:12
6 व्य 4:35
7 1शम 2:6, भज 68:20
8 2इत 21:16, 18
9 गि 12:13, यिर्म 17:14
10 यश 43:13
11 1ती 1:17, प्रक 10:5, 6

दूसरा कॉल.
1 नहू 1:3
2 यश 1:24, यश 59:18
3 उत 12:2, 3, 1रा 8:43, रोम 3:29, रोम 15:10
4 2रा 9:7, प्रक 6:10
5 मी 5:15
6 प्रक 15:3
7 गि 11:28, व्य 31:22, 23
8 व्य 11:18
9 व्य 6:6, 7
10 लैव 18:5, व्य 30:19, रोम 10:5

जीओगे, जिसे तुम यरदन पार जाकर
अपने अधिकार में करनेवाले हो।”
48 उसी दिन यहोवा ने मूसा से कहा,
49 “तू इस अबारीम पहाड़ पर जा[1] जो
मोआब देश में यरीहो के सामने है और
नबो की चोटी पर चढ़।[2] वहाँ से तू कनान
देश को देख जिसे मैं इसराएलियों के
अधिकार में करनेवाला हूँ।[3] 50 फिर
उसी पहाड़ पर तेरी मौत हो जाएगी और
तुझे दफनाया जाएगा,* ठीक जैसे होर
पहाड़ पर तेरे भाई हारून की मौत के बाद
उसे भी दफनाया गया था[4] 51 क्योंकि
तुम दोनों सिन वीराने में कादेश के मरीबा
के सोते के पास इसराएलियों के बीच
मेरे विश्वासयोग्य नहीं रहे[5] और तुमने
उनके सामने मुझे पवित्र नहीं ठहराया।[6]
52 जो देश मैं इसराएलियों को देनेवाला
हूँ उसे तू दूर से देखेगा, मगर उसमें कदम
नहीं रख पाएगा।”[7]

33 सच्चे परमेश्‍वर के सेवक मूसा
ने अपनी मौत से पहले इस-
राएलियों को यह आशीर्वाद दिया।[8]
2 उसने कहा,

“यहोवा सीनै से आया,[9]
सेईर से उन पर अपना प्रकाश
चमकाया।
उसने पारान के पहाड़ी प्रदेश
से अपनी महिमा का तेज
चमकाया,[10]
उसके साथ लाखों पवित्र
स्वर्गदूत थे,[11]
दायीं तरफ उसके योद्धा थे।[12]
3 उसे अपने लोगों से प्यार था,[13]
उनके सभी पवित्र लोग तेरे हाथ
में हैं।[14]
वे तेरे पैरों के पास बैठते थे,[15]
वे तेरा उपदेश सुनने लगे।[1]
4 (मूसा ने हमें एक आज्ञा दी, एक
कानून दिया,[2]
जो याकूब की मंडली की
जागीर है।)[3]
5 जब लोगों के मुखिया[4] और इस-
राएल के सब गोत्र साथ
इकट्ठा हुए,[5]
तब परमेश्‍वर यशूरून*[6] में
राजा बना।
6 रूबेन हमेशा जीता रहे, उसे कभी
मौत न आए,[7]
उसके आदमियों की गिनती कभी
कम न हो।”[8]

7 मूसा ने यहूदा को यह आशीर्वाद
दिया:[9]

“हे यहोवा, यहूदा की बिनती
सुन,[10]
तू उसे उसके लोगों के पास वापस
लाए।
जो उसका है उसकी हिफाज़त उसने
अपने हाथों से की,*
तू दुश्‍मनों से लड़ने में उसकी मदद
करे।”[11]

8 लेवी के बारे में उसने कहा,[12]

“तेरा* तुम्मीम और ऊरीम[13] तेरे
वफादार जन का है,[14]
जिसे तूने मस्सा में परखा था।[15]
तू मरीबा के सोते के पास उससे
झगड़ने लगा।[16]
9 उसने अपने माँ-बाप के बारे

32:50 *शा., “तू अपने लोगों में जा मिलेगा।”

33:5 *मतलब “सीधा-सच्चा जन,” इस-राएल को दी गयी सम्मान की उपाधि। 33:7 *या “उसके लिए वह अपने हाथों से लड़ा।” 33:8 *इस आयत में “तेरा,” “तूने” और “तू” परमेश्‍वर के लिए इस्तेमाल किए गए हैं।

अध्य. 32
1 गि 27:12
2 व्य 34:1
3 उत 10:19
उत 15:18
यह 1:3
4 गि 20:28
गि 33:38
5 गि 20:12, 13
6 लैव 22:32
यश 8:13
7 गि 27:13, 14
व्य 3:27
व्य 34:4, 5

अध्य. 33
8 उत 49:28
9 निर्ग 19:18
10 हब 3:3
11 दान 7:10
यहू 14
12 भज 68:17
13 व्य 7:8
हो 11:1
14 निर्ग 19:6
15 निर्ग 19:23

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:19
2 निर्ग 24:8
3 व्य 4:8
प्रेष 7:53
4 निर्ग 18:25
निर्ग 19:7
5 गि 1:44, 46
6 यश 44:2
7 उत 49:3
8 गि 26:7
यह 13:15
9 उत 49:8
1इत 5:2
10 भज 78:68
11 न्या 1:2
2शम 7:8, 9
12 उत 49:5
गि 3:12
13 निर्ग 28:30
लैव 8:6, 8
14 निर्ग 32:26
15 निर्ग 17:7
16 गि 20:13

में कहा, 'मैंने उनकी परवाह
नहीं की।'
उसने अपने भाइयों को नज़रअंदाज़
कर दिया
और अपने बेटों का भी साथ नहीं
दिया।[1]
क्योंकि उन्होंने तेरी बात मानी,
और तेरा करार माना।[2]
10 वे याकूब को तेरे न्याय-सिद्धांत[3]
और इसराएल को तेरा कानून
सिखाएँ।[4]
वे तेरे लिए धूप चढ़ाएँ जिसकी
सुगंध पाकर तू खुश होता है[5]
और तेरी वेदी पर पूरा-का-पूरा
चढ़ावा अर्पित करें।[6]
11 हे यहोवा, उसकी ताकत पर
आशीष दे,
उसके हाथ के कामों से खुश हो।
उसके खिलाफ उठनेवालों के पैर*
कुचल दे
ताकि उससे नफरत करनेवाले फिर
कभी उसके खिलाफ न उठें।"
12 बिन्यामीन के बारे में उसने कहा,[7]
"यहोवा का यह प्यारा उसके पास
महफूज़ बसा रहे,
परमेश्वर सारा दिन उसे पनाह दिए
रहेगा
और वह उसके कंधों के बीच रहा
करेगा।"
13 यूसुफ के बारे में उसने कहा,[8]
"यहोवा उसकी ज़मीन पर
आशीष दे,[9]
आकाश की अच्छी-अच्छी चीज़ें बर-
साए,
ओस की बूँदें और नीचे से सोतों का
पानी,[10]
14 सूरज की बदौलत उगनेवाली
अच्छी-अच्छी चीज़ें,
हर महीने मिलनेवाली बेहतरीन
उपज,[1]
15 ज़माने से खड़े पहाड़ों* की उम्दा
चीज़ें,[2]
सदा कायम रहनेवाली पहाड़ियों की
अच्छी-अच्छी चीज़ें,
16 धरती और उसके भंडार की अच्छी-
अच्छी चीज़ें दे[3]
और उसे परमेश्वर की मंज़ूरी
मिले जो कँटीली झाड़ी में प्रकट
हुआ था।[4]
यूसुफ के सिर पर इन आशीषों की
बौछार हो,
उसके सिर पर, जिसे अपने भाइयों
में से चुना गया।[5]
17 उसकी शान पहलौठे बैल जैसी है,
उसके सींग जंगली साँड़ के सींग
जैसे हैं।
वह अपने सींगों से देश-देश के
लोगों को
धरती के छोर तक धकेलेगा।*
उसके सींग एप्रैम के लाखों लोग[6]
और मनश्शे के हज़ारों लोग हैं।"
18 जबूलून के बारे में उसने कहा,[7]
"हे जबूलून, तू बाहर जाते समय
खुशियाँ मना
और हे इस्साकार, तू अंदर अपने
तंबुओं में खुश रहे।[8]
19 वे समुंदर के खज़ाने से
और बालू में छिपे गोदामों से भरपूर
दौलत हासिल करेंगे,
इसलिए वे देश-देश के लोगों को
पहाड़ों पर बुलाएँगे

33:11 *या "की कमर।"

33:15 *या शायद, "पूरब के पहाड़ों।"
33:17 *या "सींग मारेगा।"

अध्य. 33
1 निर्ग 32:27, लैव 10:6, 7
2 मला 2:4, 5
3 व्य 17:9
4 2इत 17:8, 9, मला 2:7
5 निर्ग 30:7, गि 16:40
6 लैव 1:9
7 उत 49:27
8 उत 49:22
9 यह 16:1
10 उत 49:25

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:5, भज 65:9
2 यह 17:17, 18
3 व्य 8:7, 8
4 निर्ग 3:4, प्रेष 7:30
5 उत 37:7, उत 49:26, 1इत 5:1, 2
6 उत 48:19, 20
7 उत 49:13
8 उत 49:14

और नेकी के बलिदान चढ़ाएँगे।”
20 गाद के बारे में उसने कहा,[1]
“गाद की सरहदें बढ़ानेवाला
सुखी रहे।[2]
गाद वहाँ शेर की तरह घात लगाए
बैठा है,
वह अपने शिकार का हाथ, यहाँ
तक कि उसका सिर फाड़ खाने
को तैयार है।
21 वह अपने लिए पहला हिस्सा
चुनेगा[3]
क्योंकि कानून देनेवाले ने वहीं
उसका हिस्सा तय किया है।[4]
लोगों के मुखिया एक-साथ इकट्ठा
होंगे।
गाद यहोवा की ओर से न्याय
करेगा
उसके न्याय-सिद्धांत इसराएल के
मामले में लागू करेगा।”
22 दान के बारे में उसने कहा,[5]
“दान शेर का बच्चा है।[6]
वह बाशान से छलाँग लगाएगा।”[7]
23 नप्ताली के बारे में उसने कहा,[8]
“नप्ताली यहोवा की मंज़ूरी पाकर
संतुष्ट है,
उसे परमेश्वर की भरपूर आशीषें
मिली हैं।
तू पश्चिम और दक्षिण को अपने
कब्ज़े में कर ले।”
24 आशेर के बारे में उसने कहा,[9]
“आशेर को बहुत-सी संतानों का
सुख मिला है।
उस पर उसके भाई मेहरबान हों,
और वह अपना पाँव तेल में
डुबोए।*

33:24 *या “से धोए।”

अध्य. 33
1 उत 49:19
2 यह 13:24-28
3 गि 32:1-5
4 यह 22:1, 4
5 उत 49:16
6 न्या 13:2, 24
न्या 15:8, 20
न्या 16:30
7 यह 19:47
8 उत 49:21
9 उत 49:20

दूसरा कॉल.
1 व्य 8:7, 9
2 यश 44:2
3 निर्ग 15:11
4 भज 68:32-34
5 भज 46:11
भज 91:2
6 यश 40:11
7 व्य 9:3
8 व्य 31:3, 4
9 व्य 8:7, 8
10 व्य 11:11
11 भज 33:12
भज 144:15
भज 146:5
12 व्य 4:7
2शम 7:23
भज 147:20
13 भज 27:1
यश 12:2
14 भज 115:9
15 भज 66:3

अध्य. 34
16 व्य 32:49
17 गि 36:13

25 तेरे दरवाज़े के कुंडे लोहे और
ताँबे के हैं,[1]
तू सारी ज़िंदगी महफ़ूज़ रहेगा।”*
26 “यशूरून[2] के सच्चे परमेश्वर[3] जैसा
कोई नहीं,
जो तेरी मदद करने आकाश से
होकर आता है,
जो पूरे वैभव के साथ बादलों पर
सवार होकर आता है।[4]
27 परमेश्वर मुद्दतों से तेरी पनाह
रहा है,[5]
उसकी बाँहें तुझे सदा थामे रहेंगी।[6]
वह दुश्मन को तेरे सामने से खदेड़
देगा[7]
और कहेगा, ‘मिटा दे इन सबको!’[8]
28 इसराएल उस देश में महफ़ूज़ बसा
रहेगा,
याकूब का सोता अलग रहेगा,
जो अनाज और नयी दाख-मदिरा
का देश है,[9]
जिसके ऊपर आसमान से ओस
टपकती है।[10]
29 हे इसराएल, तू कितना सुखी है![11]
तेरे जैसा और कोई नहीं,[12]
यहोवा तेरा उद्धार करता है,[13]
वह तेरी हिफाज़त करनेवाली
ढाल है,[14]
वह तेरी विजयी तलवार है।
दुश्मन तेरे आगे डर से दुबक
जाएँगे[15]
और तू उनकी पीठ* रौंद
डालेगा।”

34 इसके बाद मूसा मोआब के
वीरानों से नबो पहाड़ पर
गया,[16] जो यरीहो के सामने है[17] और

33:25 *शा., “जैसे तेरे दिन हैं वैसी तेरी ताकत होगी।” 33:29 *या शायद, “ऊँची जगह।”

पिसगा की चोटी पर चढ़ा।[1] वहाँ यहोवा ने उसे पूरा देश दिखाया, गिलाद से दान[2] तक 2 और नप्ताली का पूरा इलाका और एप्रैम और मनश्शे का इलाका, दूर पश्चिम के सागर* तक यहूदा का पूरा इलाका,[3] 3 नेगेब[4] का इलाका और वह ज़िला,[5] जिसमें खजूर के पेड़ों के शहर यरीहो घाटी का मैदान आता है जो दूर सोआर[6] तक फैला है।

4 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "यही है वह देश जिसके बारे में मैंने शपथ खाकर अब्राहम, इसहाक और याकूब से यह कहा था, 'यह देश मैं तेरे वंश को दूँगा।'[7] मैंने तुझे यह देश देखने का मौका दिया है और तूने खुद अपनी आँखों से इसे देखा है, मगर तू उस पार नहीं जाएगा।"[8]

5 इसके बाद वहीं मोआब देश में यहोवा के सेवक मूसा की मौत हो गयी, ठीक जैसे यहोवा ने कहा था।[9] 6 उसने मूसा को मोआब देश की घाटी में बेत-पोर के सामने दफना दिया। आज तक कोई नहीं जानता कि मूसा की कब्र कहाँ है।[10] 7 जब मूसा की मौत हुई तब वह 120 साल का था।[1] इस उम्र में भी उसकी नज़र धुँधली नहीं पड़ी थी और अभी-भी उसमें दमखम था। 8 इसराएल के लोग मोआब के वीरानों में 30 दिन तक मूसा के लिए रोते रहे।[2] फिर मूसा के लिए रोने और मातम मनाने के दिन खत्म हुए।

9 यहोशू जो नून का बेटा था, बुद्धि* से भरपूर था क्योंकि मूसा ने उस पर अपना हाथ रखा था।[3] इसके बाद से इसराएली यहोशू की बात मानने लगे और उन्होंने ठीक वैसे ही किया जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।[4] 10 आज तक इसराएल में मूसा के जैसा भविष्यवक्ता कभी नहीं हुआ[5] जिसे यहोवा करीब से जानता* था।[6] 11 यहोवा ने उसे मिस्र देश में फिरौन और उसके सभी अधिकारियों के सामने और उसके पूरे देश में जो-जो चिन्ह और चमत्कार करने के लिए भेजा था, वह सब उसने किए थे।[7] 12 मूसा ने पूरे इसराएल के सामने भी बड़े-बड़े शक्तिशाली और आश्चर्य के काम किए थे।[8]

34:2 *यानी महासागर, भूमध्य सागर।

34:9 *या "परमेश्वर की शक्ति से मिली बुद्धि।" 34:10 *शा., "रू-ब-रू।"

अध्य. 34
1 व्य 3:27
2 न्या 18:29
3 निर्ग 23:31; गि 34:2, 6; व्य 11:24
4 यह 15:1
5 उत 13:10
6 उत 19:22, 23
7 उत 12:7; उत 26:3; उत 28:13
8 गि 20:12
9 व्य 32:50; यह 1:2
10 यहू 9

दूसरा कॉल.
1 व्य 31:1, 2; प्रेष 7:23; प्रेष 7:30, 36
2 गि 20:29
3 व्य 31:14; 1ती 4:14
4 गि 27:18, 21; यह 1:16
5 व्य 18:15; प्रेष 3:22; प्रेष 7:37
6 निर्ग 33:11; गि 12:8
7 व्य 4:34
8 व्य 26:8; लूक 24:19

यहोशू

सारांश

1 यहोवा ने यहोशू की हिम्मत बाँधी (1-9)
- कानून धीमी आवाज़ में पढ़ना (8)
- यरदन पार करने की तैयारियाँ (10-18)

2 यहोशू ने दो जासूस यरीहो भेजे (1-3)
- राहाब ने जासूसों को छिपाया (4-7)
- राहाब से किया वादा (8-21क)
  - लाल रस्सी एक निशानी (18)
- जासूस, यहोशू के पास लौट आए (21ख-24)

3 इसराएल ने यरदन पार की (1-17)

4 ये पत्थर याद दिलाएँगे (1-24)

5 गिलगाल में खतना (1-9)
फसह मनाया गया; मन्ना मिलना बंद (10-12)
यहोवा की सेना का प्रधान (13-15)

6 यरीहो की शहरपनाह का गिरना (1-21)
राहाब और उसका परिवार बख्शा गया (22-27)

7 ऐ में इसराएल की हार (1-5)
यहोशू की प्रार्थना (6-9)
पाप की वजह से हार हुई (10-15)
आकान का परदाफाश; मार डाला गया (16-26)

8 यहोशू, ऐ के खिलाफ घात बिठाता है (1-13)
ऐ पर कब्ज़ा (14-29)
एबाल पहाड़ पर कानून पढ़ा गया (30-35)

9 होशियार गिबोनियों ने शांति चाही (1-15)
उनकी चाल का परदाफाश (16-21)
वे लकड़ियाँ बीनेंगे और पानी भरेंगे (22-27)

10 इसराएल ने गिबोन की रक्षा की (1-7)
यहोवा इसराएल की तरफ से लड़ा (8-15)
भागते दुश्मनों पर ओले बरसे (11)
सूरज थम गया (12-14)
हमला करनेवाले पाँच राजा मारे गए (16-28)
दक्षिणी शहरों पर कब्ज़ा (29-43)

11 उत्तरी शहरों पर कब्ज़ा (1-15)
यहोशू ने इलाके जीते (16-23)

12 यरदन के पूरब में राजाओं की हार (1-6)
यरदन के पश्चिम में राजाओं की हार (7-24)

13 देश पर कब्ज़ा करना अब भी बाकी (1-7)
यरदन के पूर्वी इलाके का बँटवारा (8-14)
रूबेन की विरासत (15-23)
गाद की विरासत (24-28)
पूरब में मनश्शे की विरासत (29-32)
यहोवा लेवियों की विरासत (33)

14 यरदन के पश्चिमी इलाके का बँटवारा (1-5)
कालेब को हेब्रोन मिला (6-15)

15 यहूदा की विरासत (1-12)
कालेब की बेटी को इलाका मिला (13-19)
यहूदा के शहर (20-63)

16 यूसुफ के वंशजों की विरासत (1-4)
एप्रैम की विरासत (5-10)

17 पश्चिम में मनश्शे की विरासत (1-13)
यूसुफ के वंशजों को और ज़मीन मिली (14-18)

18 बाकी ज़मीन का बँटवारा शीलो में (1-10)
बिन्यामीन की विरासत (11-28)

19 शिमोन की विरासत (1-9)
जबूलून की विरासत (10-16)
इस्साकार की विरासत (17-23)
आशेर की विरासत (24-31)
नप्ताली की विरासत (32-39)
दान की विरासत (40-48)
यहोशू की विरासत (49-51)

20 शरण नगर (1-9)

21 लेवियों को दिए शहर (1-42)
हारून के वंशजों को (9-19)
बाकी कहातियों को (20-26)
गेरशोनियों को (27-33)
मरारियों को (34-40)
यहोवा के वादे पूरे हुए (43-45)

22 पूरब से आए गोत्र घर लौटे (1-8)
यरदन के पास वेदी बनी (9-12)
वेदी का मकसद समझाया गया (13-29)
झगड़ा निपटाया गया (30-34)

23 अगुवों को यहोशू के आखिरी शब्द (1-16)
यहोवा का एक भी वादा बिना पूरा हुए नहीं रहा (14)

24 यहोशू ने इसराएल का इतिहास दोहराया (1-13)
यहोवा की सेवा करने का बढ़ावा दिया (14-24)
“मैंने और मेरे घराने ने ठान लिया है कि हम यहोवा की सेवा करेंगे” (15)
इसराएल के साथ यहोशू का करार (25-28)
यहोशू की मौत और उसे दफनाना (29-31)
यूसुफ की हड्डियाँ शेकेम में दफनायीं (32)
एलिआज़र की मौत और उसे दफनाना (33)

1 यहोवा के सेवक मूसा की मौत के बाद
यहोवा ने मूसा के सेवक, नून के बेटे
यहोशू*[1] से कहा, 2 “मेरा सेवक मूसा
मर चुका है।[2] अब तू इसराएल के लोगों
को लेकर यरदन के पार जा और उन्हें उस
देश में ले जा जो मैं उन्हें देनेवाला हूँ।[3]
3 जहाँ भी तुम्हारे कदम पड़ेंगे वह जगह
तुम्हारी हो जाएगी, जैसा मैंने मूसा से वादा
किया था।[4] 4 तुम्हारा इलाका इस
वीराने से लेकर लबानोन और महानदी
फरात तक (जो हित्तियों का सारा इलाका
है)[5] और पश्चिम में महासागर* तक
फैला होगा।[6] 5 तेरे जीवन-भर कोई
तुझे हरा नहीं पाएगा।[7] जैसे मैं मूसा
के साथ था वैसे ही तेरे साथ रहूँगा।[8]
मैं तेरा साथ कभी नहीं छोड़ूँगा और न
ही तुझे त्यागूँगा।[9] 6 तू हिम्मत से काम
लेना और हौसला रखना[10] क्योंकि तू ही
इन लोगों को उस देश का वारिस बनाए-
गा जिसे देने की शपथ मैंने उनके पुरखों से
खायी थी।[11]

7 तू हिम्मत से काम लेना और हौसला
रखना और मेरे सेवक मूसा ने जिस कानून
को मानने की आज्ञा दी थी, उसका तू
सख्ती से पालन करना। तू न तो दाएँ
मुड़ना न बाएँ[12] ताकि तू हर काम बुद्धि-
मानी से कर सके।[13] 8 कानून की इस
किताब को अपने मुँह से दूर न करना,[14]
दिन-रात इसे धीमी आवाज़ में पढ़ना*
ताकि तू इसकी एक-एक बात का पालन
कर सके।[15] तब तू कामयाब होगा और
बुद्धिमानी से चल पाएगा।[16] 9 मैं एक
बार फिर तुझसे कहता हूँ, हिम्मत से
काम लेना और हौसला रखना। तू न
डरना, न खौफ खाना क्योंकि तू जहाँ-जहाँ
जाएगा तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे साथ
रहेगा।”[1]

10 इसके बाद यहोशू ने लोगों के
अधिकारियों से कहा, 11 “पूरी छावनी
में जाकर लोगों को यह आज्ञा दो, ‘अपने
लिए खाने-पीने की चीज़ें बाँध लो क्योंकि
तीन दिन के अंदर तुम यरदन पार जाने-
वाले हो और उस देश को अपने अधिकार
में करनेवाले हो जिसे तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा तुम्हारे अधीन कर देगा।’”[2]

12 फिर यहोशू ने रूबेन और गाद
के वंशजों और मनश्शे के आधे गोत्र
से कहा, 13 “यहोवा के सेवक मूसा ने
तुम्हें जो आज्ञा दी थी उसे याद करो,[3]
‘तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें चैन
दिया है और यह देश भी तुम्हें दे दिया
है। 14 तुम्हारे बीवी-बच्चे और तुम्हारे
जानवर यरदन के इस पार* के इलाके में
ही रहें, जो मूसा ने तुम्हें दिया है।[4]
लेकिन तुम सब वीर योद्धा[5] अलग-अलग
दल बाँधकर अपने भाइयों से पहले नदी
के उस पार जाना।[6] तुम तब तक उनकी
मदद करना 15 जब तक कि यहोवा
उन्हें चैन नहीं देता जैसे तुम्हें दिया है और
जब तक वे उस देश पर अधिकार नहीं
कर लेते जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें
देनेवाला है। इसके बाद तुम वापस आकर
अपने इलाके में बस जाना जो यहोवा के
सेवक मूसा ने तुम्हें यरदन के इस पार
पूरब में दिया है।’”[7]

16 तब उन्होंने यहोशू से कहा, “तूने
हमसे जो-जो कहा है हम वह सब करेंगे।
तू हमें जहाँ भी भेजेगा हम जाएँगे।[8]
17 जिस तरह हमने मूसा की हर बात
मानी थी हम तेरी बात भी मानेंगे। तेरा
परमेश्वर यहोवा हमेशा तेरे साथ रहे,

1:1 *या “यहोशुआ” जिसका मतलब है, “यहोवा उद्धार है।” 1:4 *यानी भूमध्य सागर। 1:8 *या “इस पर मनन करना।”

1:14 *यानी पूरब में।

अध्य. 1
1 निर्ग 24:13, गि 11:28, व्य 31:14
2 व्य 34:5
3 व्य 3:28
4 व्य 11:24
5 गि 13:29
6 उत 15:18, निर्ग 23:31, गि 34:2, 3, व्य 1:7, यह 15:1, 4
7 व्य 7:24, व्य 11:25
8 निर्ग 3:12, यह 3:7
9 व्य 31:6
10 व्य 31:23
11 उत 12:7, उत 15:18, उत 26:3
12 व्य 5:32
13 व्य 29:9, 1रा 2:3
14 व्य 6:6, व्य 30:14
15 व्य 17:18, 19, भज 1:1, 2, 1ती 4:15, याकू 1:25
16 1इत 22:13

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 23:27, व्य 31:7, 8
2 व्य 9:1, यह 3:2, 3
3 गि 32:20-22, यह 22:1-4
4 व्य 3:19, 20, व्य 29:8, यह 13:8
5 गि 1:3, गि 26:2
6 व्य 3:18
7 गि 32:33, यह 22:4, 9
8 गि 32:17, 25

जैसे वह मूसा के साथ था।[1] 18 जो
कोई तेरे हुक्म के खिलाफ जाए और तेरी
आज्ञा न माने वह मार डाला जाए।[2] तू
बस हिम्मत से काम लेना और हौसला
रखना।"[3]

2 फिर नून के बेटे यहोशू ने शित्तीम
से[4] दो आदमियों को चुपके से
जासूसी करने भेजा और उनसे कहा,
"जाओ जाकर उस देश की, खासकर
यरीहो की खोज-खबर लेकर आओ।" वे
दोनों जासूस निकल पड़े और राहाब नाम
की एक वेश्या के घर आकर ठहरे।[5]
2 यरीहो के राजा को किसी ने खबर
दी, "हमारे देश की जासूसी करने आज
रात कुछ इसराएली आदमी आए हैं।"
3 इस पर यरीहो के राजा ने राहाब के
पास यह संदेश भिजवाया, "जो आदमी
तेरे घर रुके हैं, उन्हें बाहर ला क्योंकि वे
पूरे देश की जासूसी करने आए हैं।"

4 राहाब ने उन दोनों जासूसों को
छिपा रखा था लेकिन उसने राजा के
आदमियों से कहा, "कुछ आदमी यहाँ
आए तो थे मगर मुझे नहीं पता कि वे कहाँ
से थे। 5 और रात को शहर का फाटक
बंद होने से पहले वे शहर से निकल गए।
पता नहीं वे कहाँ गए, लेकिन अगर तुम
फौरन उनके पीछे जाओ तो उन्हें पकड़
लोगे।" 6 (दरअसल राहाब ने जासूसों
को छत पर बिछे अलसी के डंठलों के
बीच छिपा दिया था।) 7 इस पर राजा
के आदमी उनका पीछा करने के लिए
यरदन के घाट की तरफ भागे[6] और जैसे
ही वे शहर से निकले, शहर का फाटक
बंद कर दिया गया।

8 इससे पहले कि उन दो जासूसों की
आँख लग जाती, राहाब उनके पास छत
पर आयी। 9 उसने उनसे कहा, "मैं
जानती हूँ कि यहोवा तुम्हें यह देश ज़रूर
देगा।[1] तुम लोगों का डर हममें समा गया
है[2] और तुम्हारी वजह से सब निवासियों
के हौसले पस्त हो गए हैं।[3] 10 क्योंकि
हमने सुना है कि जब तुम मिस्र से निकले
तो यहोवा ने तुम्हारे सामने लाल सागर
का पानी सुखा दिया।[4] हमने यह भी सुना
है कि तुमने यरदन के उस पार* एमोरियों
के दोनों राजाओं सीहोन और ओग का
क्या हाल किया[5] और कैसे उन्हें पूरी तरह
नाश कर दिया। 11 यह सुनकर हमारे
जी में जी न रहा। तुम्हारी वजह से हमारी
हिम्मत टूट गयी क्योंकि हम जान गए कि
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा स्वर्ग और पृथ्वी
का परमेश्वर है।[6] 12 इसलिए अब
यहोवा की शपथ खाओ कि जैसे मैंने तुम
पर कृपा* की है, वैसे ही तुम मेरे पिता के
घराने पर कृपा* करोगे। मुझे कोई ऐसी
निशानी दो जिससे मुझे यकीन हो कि तुम
अपना वादा पूरा करोगे।# 13 तुम मेरे
माता-पिता, मेरे भाई-बहन और उनके
घराने के सब लोगों की जान बख्शना और
हमें मौत के मुँह से बचाना।"[7]

14 इस पर उन आदमियों ने राहाब
से कहा, "अगर हम अपना वादा पूरा न
करें, तो तुम्हारी जगह हमारी जान चली
जाए! बस तू किसी से यह मत कहना कि
हम क्यों आए थे। फिर जब यहोवा
हमें यह देश देगा, तो हम तेरे साथ
कृपा* और सच्चाई से पेश आएँगे।"
15 इसके बाद राहाब ने एक रस्सी के
सहारे उन्हें खिड़की से नीचे उतार दिया
क्योंकि उसका घर शहरपनाह की दीवार
से सटा हुआ था। दरअसल उसका घर
दीवार के ऊपर ही बना हुआ था।[8]

2:10 *यानी पूरब में। **2:12, 14** *या "अटल प्यार।" **2:12** #या "कोई भरोसेमंद निशानी दो।"

अध्य. 1
1 गि 27:18, 20; व्य 34:9
2 व्य 17:12
3 व्य 31:7; यह 1:6, 9

अध्य. 2
4 गि 25:1; गि 33:49
5 यह 6:17; मत 1:5; इब्र 11:31; याकू 2:25
6 न्या 3:28; न्या 12:5

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 3:8
2 निर्ग 23:27; व्य 2:25; व्य 11:25
3 निर्ग 15:15; यह 5:1
4 निर्ग 14:21; निर्ग 15:13, 14
5 गि 21:21-24; गि 21:33, 34; व्य 3:3; यह 9:9, 10
6 व्य 4:39; 2इत 20:6; दान 4:35
7 यह 6:23
8 इब्र 11:31

16 राहाब ने उनसे कहा, “तुम पहाड़ी इलाके में चले जाओ और तीन दिन तक वहीं छिपे रहो ताकि तुम्हारा पीछा करनेवाले तुम्हें ढूँढ़ न सकें। जब वे शहर लौट आएँ, तब तुम अपने रास्ते चले जाना।”

17 जासूसों ने राहाब से कहा, “तूने हमसे जो शपथ ली है, हम उससे बँधे हैं।[1] 18 मगर उसके लिए तुझे यह करना होगाः जब हम वापस इस देश में आएँगे तो तू यह चमकीली लाल रस्सी इस खिड़की पर बाँधना जिससे तूने हमें नीचे उतारा है। और तू अपने माता-पिता, भाइयों और अपने पिता के घराने के सब लोगों को अपने साथ इस घर में इकट्ठा कर लेना।[2] 19 अगर तेरे घर से कोई बाहर निकला और मारा गया, तो उसके खून का दोष उसी के सिर आएगा और हम निर्दोष ठहरेंगे। लेकिन अगर कोई घर में होते हुए मारा गया, तो उसके खून का दोष हमारे सिर आएगा। 20 और हाँ, अगर तूने किसी को बताया कि हम यहाँ क्यों आए थे[3] तो हम अपनी शपथ से छूट जाएँगे।” 21 राहाब ने कहा, “जैसा तुमने कहा है वैसा ही हो।”

फिर उसने उन्हें रवाना किया और वे अपने रास्ते चले गए। इसके बाद, राहाब ने खिड़की पर चमकीली लाल रस्सी बाँध दी। 22 वे दोनों जासूस राहाब के घर से निकलकर पहाड़ी इलाके में चले गए और तीन दिन तक वहीं रहे जब तक कि उनका पीछा करनेवाले वापस शहर नहीं लौट गए। उन आदमियों ने हर सड़क पर जासूसों को ढूँढ़ा लेकिन वे कहीं नहीं मिले। 23 इसके बाद, वे दोनों जासूस पहाड़ी इलाके से नीचे उतरे और नदी पार करके नून के बेटे यहोशू के पास आए और जो-जो घटा था वह सब कह सुनाया। 24 उन्होंने यहोशू से कहा, “यहोवा ने वह देश हमारे हाथ कर दिया है।[1] हमारी वजह से उस देश के सारे निवासियों के हौसले पस्त हो गए हैं।”[2]

3 फिर यहोशू सुबह-सुबह उठा और सब इसराएलियों को लेकर शित्तीम से रवाना हुआ[3] और यरदन के पास पहुँचा। नदी पार करने से पहले उन्होंने वहीं रात गुज़ारी।

2 तीन दिन बाद उनके अधिकारियों[4] ने पूरी छावनी में जाकर 3 लोगों को आज्ञा दी, “जैसे ही तुम देखो कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के करार का संदूक लेवी गोत्र के याजकों ने उठा लिया है,[5] तो तुम अपनी-अपनी जगह से निकल पड़ना और संदूक के पीछे-पीछे जाना 4 ताकि तुम्हें पता हो कि तुम्हें किस रास्ते जाना है क्योंकि यह रास्ता तुम्हारे लिए नया है। तुम संदूक से करीब 2,000 हाथ* की दूरी रखना, उससे नज़दीक न जाना।”

5 यहोशू ने लोगों से कहा, “तैयार हो जाओ*[6] क्योंकि कल यहोवा तुम्हारे सामने अद्‌भुत काम करेगा।”[7]

6 फिर यहोशू ने याजकों से कहा, “करार का संदूक उठाओ[8] और लोगों के आगे-आगे चलो।” उन्होंने करार का संदूक उठाया और लोगों के आगे-आगे चलने लगे।

7 यहोवा ने यहोशू से कहा, “आज से मैं तुझे सब इसराएलियों की नज़रों में ऊँचा उठाऊँगा[9] ताकि वे जान लें कि मैं तेरे साथ हूँ,[10] ठीक जैसे मैं मूसा के साथ था।[11] 8 तू करार का संदूक उठानेवाले याजकों को यह आज्ञा दे, ‘जब

अध्य. 2
1 गि 30:2
2 यह 6:23
3 यह 2:14

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 23:31, यह 6:2, यह 21:44
2 निर्ग 15:14-16, यह 2:9-11, यह 5:1

अध्य. 3
3 गि 25:1, यह 2:1
4 व्य 1:15, यह 1:10, 11
5 गि 4:15, 1इत 15:2
6 निर्ग 19:10, लैव 20:7
7 निर्ग 34:10
8 निर्ग 25:10, गि 4:15
9 यह 4:14
10 यह 1:5, 17
11 निर्ग 3:12, निर्ग 14:31

3:4 *करीब 890 मी. (2,920 फुट)। अति. ख14 देखें। **3:5** *या “खुद को पवित्र करो।”

तुम यरदन किनारे पहुँचो तब उसमें पैर
रखना और वहीं खड़े रहना।’”[1]
9 यहोशू ने इसराएलियों से कहा,
“आओ और सुनो कि तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा ने क्या कहा है।” 10 फिर उसने
कहा, “इससे तुम जान जाओगे कि
जीवित परमेश्वर तुम्हारे बीच है[2] और
वह तुम्हारे सामने से कनानियों, हित्तियों,
हिव्वियों, परिज्जियों, गिरगाशियों, एमो-
रियों और यबूसियों को ज़रूर खदेड़
देगा।[3] 11 देखो! पूरी धरती के
मालिक के करार का संदूक तुम्हारे आगे-
आगे यरदन में जा रहा है। 12 अब
इसराएल के गोत्रों में से 12 आदमियों
को चुनो, हर गोत्र में से एक आदमी।[4]
13 पूरी धरती के मालिक यहोवा का
संदूक उठानेवाले याजक जैसे ही यरदन
में पैर रखेंगे, तो जो पानी बहकर नीचे
आ रहा है, वह वहीं रुक जाएगा और
दीवार* की तरह खड़ा हो जाएगा।”[5]
14 इसलिए जब लोगों ने यरदन पार
करने के लिए अपना तंबू उठाया, तो
करार का संदूक उठानेवाले याजक[6] लोगों
के आगे-आगे गए। 15 जैसे ही संदूक
उठानेवाले याजक यरदन के किनारे पहुँचे
और उनके पैर पानी में पड़े (कटनी के
इस समय यरदन में इतना पानी भर जाता
था कि वह तट के ऊपर बहने लगता
था)[7] 16 तो जो पानी बहकर नीचे आ
रहा था, वह वहीं रुक गया। यह पानी दूर
आदम नाम के शहर में (जो सारतान के
पास था) दीवार* की तरह खड़ा हो
गया, जबकि उससे आगे का पानी अराबा
के सागर या लवण सागर# में बह गया।
इस तरह नदी का बहना बंद हो गया और
लोग नदी पार करके यरीहो के पास पहुँच

3:13, 16 *या “बाँध।” **3:16** #यानी मृत सागर।

अध्य. 3
1 यह 3:17
2 व्य 7:21
3 निर्ग 3:8; व्य 7:1; भज 44:2
4 यह 4:2, 3
5 भज 114:1, 3
6 निर्ग 25:10; यह 3:6; प्रेष 7:44, 45
7 यह 4:18; 1इत 12:15

दूसरा कॉल.
1 यह 4:3
2 भज 66:6

अध्य. 4
3 यह 3:12, 13
4 यह 3:17
5 यह 4:19, 20
6 निर्ग 13:14; व्य 6:20, 21; भज 78:3, 4
7 यह 3:13, 16
8 व्य 4:9

गए। 17 जब सारे इसराएली नदी पार
कर रहे थे, तब यहोवा के करार का संदूक
उठानेवाले याजक नदी के बीचों-बीच सूखी
ज़मीन पर खड़े थे।[1] और वे तब तक खड़े
रहे जब तक कि पूरे राष्ट्र ने यरदन को
पार न कर लिया।[2]

4 जैसे ही पूरे राष्ट्र ने यरदन को पार
किया, यहोवा ने यहोशू से कहा,
2 “लोगों में से 12 आदमियों को बुला,
हर गोत्र में से एक आदमी।[3] 3 और
उन्हें यह आज्ञा दे, ‘यरदन के बीचों-बीच
जहाँ याजक खड़े हैं,[4] वहाँ से 12 बड़े
पत्थर उठाओ और उन्हें नदी के पार उस
जगह ले जाकर खड़ा करो जहाँ आज तुम
रात बिताओगे।’”[5]
4 तब यहोशू ने 12 आदमियों को
बुलाया जिन्हें उसने इसराएलियों में से
चुना था, हर गोत्र से एक आदमी।
5 उसने उनसे कहा, “तुम अपने पर-
मेश्वर यहोवा के संदूक के आगे यरदन
के बीच में जाओ। और इसराएल के हर
गोत्र की गिनती के हिसाब से एक पत्थर
अपने कंधे पर उठाकर ले जाओ। 6 ये
पत्थर तुम्हें याद दिलाएँगे कि परमेश्वर ने
तुम्हारे लिए क्या किया था। आगे चलकर
जब तुम्हारे बेटे तुमसे पूछें, ‘ये पत्थर यहाँ
क्यों हैं?’[6] 7 तो उनसे कहना, ‘जब
यहोवा के करार का संदूक यरदन के पार
ले जाया गया, तो उसके आगे यरदन का
पानी बहना बंद हो गया था।’[7] ये पत्थर
यहाँ इसलिए खड़े किए गए हैं कि इस-
राएल के लोगों को हमेशा इस घटना की
याद दिलाएँ।’”[8]
8 यहोशू ने जैसा कहा इसराएलियों
ने वैसा ही किया। उन आदमियों ने इस-
राएल के हर गोत्र की गिनती के हिसाब
से यरदन के बीच में से 12 पत्थर
उठाए। वे उन्हें उस जगह ले आए जहाँ वे

रात बितानेवाले थे और वहीं उन्हें खड़ा
कर दिया, ठीक जैसे यहोवा ने यहोशू को
हिदायत दी थी।

9 यहोशू ने यरदन के बीचों-बीच भी
12 पत्थर खड़े किए, जहाँ याजक करार
का संदूक उठाए हुए थे।[1] ये पत्थर आज
तक वहीं पर हैं।

10 संदूक उठानेवाले याजक तब तक
खड़े रहे जब तक लोगों ने वह सबकुछ
नहीं कर लिया, जिसकी आज्ञा यहोवा
ने यहोशू को दी थी और जिसके बारे
में मूसा ने यहोशू से कहा था। इस
दौरान लोग फुर्ती से नदी पार करते रहे।
11 जब सारे लोग नदी पार कर चुके,
तो उनके देखते-देखते याजक भी यहोवा
का संदूक उठाए यरदन के पार आ गए।[2]
12 रूबेन और गाद के वंशज और
मनश्शे के आधे गोत्र भी सैनिकों की तरह
अलग-अलग दल बाँधकर बाकी इसराए-
लियों से पहले नदी के उस पार गए,[3]
ठीक जैसे मूसा ने उन्हें हिदायत दी थी।[4]
13 युद्ध के लिए तैयार करीब 40,000
सैनिक यहोवा के सामने नदी पार कर
यरीहो के वीराने में आए।

14 उस दिन यहोवा ने यहोशू को सभी
इसराएलियों की नज़र में ऊँचा उठाया[5]
और उन्होंने यहोशू के जीवन-भर उसे
गहरा आदर दिया,* जैसे उन्होंने मूसा को
दिया था।[6]

15 फिर यहोवा ने यहोशू से कहा,
16 “गवाही का संदूक[7] उठानेवाले
याजकों को आज्ञा दे कि वे यरदन से
निकलकर इस पार आ जाएँ।” **17** तब
यहोशू ने याजकों को आज्ञा दी, “यर-
दन से निकलकर इस पार आ जाओ।”
18 यहोवा के करार का संदूक उठानेवाले
याजक[8] यरदन के बीच से किनारे आए।
जैसे ही उन्होंने बाहर सूखी ज़मीन पर
कदम रखा, यरदन का पानी फिर से
उमड़ने लगा और तट के ऊपर बहने
लगा।[1]

19 इस तरह पहले महीने के दसवें
दिन लोगों ने यरदन को पार किया और
यरीहो की पूर्वी सरहद के पास गिलगाल
में अपना पड़ाव डाला।[2]

20 जो 12 पत्थर उन्होंने यरदन में से
लिए थे, उन्हें यहोशू ने गिलगाल में खड़ा
किया।[3] **21** फिर उसने इसराएलियों से
कहा, “भविष्य में जब कभी तुम्हारे
बच्चे तुमसे पूछें, ‘ये पत्थर क्यों खड़े
किए गए हैं?’[4] **22** तो तुम उन्हें सम-
झाना, ‘इसराएलियों ने यरदन की सूखी
ज़मीन पर चलकर उसे पार किया था।[5]
23 तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे
सामने उसका पानी सुखा दिया था ताकि
हम उसे पार कर सकें, ठीक जैसे तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने हमारे सामने लाल
सागर का पानी सुखा दिया था और
सारे इसराएलियों ने उसे पार किया था।[6]
24 उसने यह इसलिए किया ताकि धरती
के सब लोग जान जाएँ कि यहोवा का
हाथ कितना शक्तिशाली है[7] और तुम
भी हमेशा अपने परमेश्वर यहोवा का डर
मानो।’”

5 इस तरह यहोवा ने इसराएलियों के
सामने यरदन का पानी सुखा दिया
ताकि वे उसे पार कर सकें। जब पश्चिम
में रहनेवाले एमोरियों[8] के सभी राजाओं
और समुंदर किनारे रहनेवाले कना-
नियों[9] के सभी राजाओं ने यह सुना,
तो इसराएलियों की वजह से उनके जी
में जी न रहा[10] और उनकी हिम्मत टूट
गयी।[11]

2 तब यहोवा ने यहोशू से कहा,
“चकमक पत्थर की तेज़ छुरियाँ बना

अध्य. 4
1 यह 3:17
2 यह 3:8, 17
3 यह 1:12, 14
4 गि 32:20-22; गि 32:25-29
5 यह 3:7
6 निर्ग 14:31
7 निर्ग 25:22
8 गि 4:15

दूसरा कॉल.
1 यह 3:13, 15
2 यह 4:3; यह 5:8, 9; यह 10:6
3 यह 4:8
4 भज 44:1
5 यह 3:17; भज 66:6
6 निर्ग 14:21; यश 63:12; इब्र 11:29
7 निर्ग 9:16; निर्ग 15:6; व्य 28:10; 1शम 17:46; 2रा 19:19; भज 106:8

अध्य. 5
8 उत 10:15, 16
9 गि 13:29
10 निर्ग 15:15; यह 2:24
11 यह 2:9-11

4:14 *शा., “उसका डर मानते रहे।”

और इसराएली आदमियों का खतना करवा।”*[1] 3 यहोशू ने ऐसा ही किया। उसने चकमक पत्थर की तेज़ छुरियाँ बनायीं और गिबात-हाअरालोत* में इसराएली आदमियों का खतना करवाया।[2] 4 यहोशू ने उनका खतना इस वजह से करवाया: मिस्र से निकले जितने भी आदमी युद्ध में लड़ने के काबिल थे,* सब-के-सब मिस्र से निकलने के बाद वीराने में सफर के दौरान ही मर गए।[3] 5 मिस्र छोड़नेवाले सभी आदमियों का खतना हुआ था मगर वहाँ से निकलने के बाद जितने वीराने में पैदा हुए थे, उनमें से किसी का खतना नहीं हुआ था। 6 इसराएली 40 साल तक वीराने में भटकते फिरे[4] और इस दौरान पूरा राष्ट्र यानी युद्ध में लड़ने के काबिल सभी आदमी, जो मिस्र से निकले थे और जिन्होंने यहोवा की बात नहीं मानी, मर गए।[5] क्योंकि यहोवा ने शपथ खायी थी कि ये लोग वह देश कभी नहीं देख पाएँगे,[6] जिसका वादा यहोवा ने उनके पुरखों से किया था[7] कि वह अपने लोगों को* ऐसा देश देगा जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं।[8] 7 उनकी जगह परमेश्वर उनके बेटों को उस देश में लाया।[9] यहोशू ने इन्हीं लोगों का खतना करवाया क्योंकि वीराने में इनका खतना नहीं हुआ था।

8 इसराएल राष्ट्र के सब आदमियों ने खतना होने के बाद, छावनी में ही आराम किया जब तक कि वे ठीक न हो गए।

9 इसके बाद यहोवा ने यहोशू से कहा, “आज मैंने वह बदनामी दूर कर दी है जो मिस्र ने तुम्हारी की थी।” इसलिए उस जगह का नाम गिलगाल* पड़ा[1] जो आज तक इसी नाम से जानी जाती है।

10 इसराएली गिलगाल में ही पड़ाव डाले रहे। वहाँ उन्होंने यरीहो के वीराने में, महीने के 14वें दिन शाम के वक्त फसह का त्योहार मनाया।[2] 11 फसह के अगले दिन से वे ज़मीन की उपज खाने लगे। उस दिन उन्होंने बिन-खमीर की रोटी[3] और भुना हुआ अनाज खाया। 12 जिस दिन इसराएलियों ने ज़मीन की उपज खायी, उसी दिन से उन्हें मन्ना मिलना बंद हो गया। इसके बाद उन्हें फिर कभी मन्ना नहीं मिला[4] और वे उस साल से कनान देश की पैदावार खाने लगे।[5]

13 जब यहोशू यरीहो के पास था तो उसने नज़र उठाकर देखा कि सामने एक आदमी खड़ा है[6] और उसके हाथ में एक तलवार है।[7] यहोशू ने उसके पास जाकर उससे पूछा, “तू किसकी तरफ है, हमारी तरफ या दुश्मनों की?” 14 उसने यहोशू से कहा, “जैसा तू समझ रहा है वैसा नहीं है। मैं यहोवा की सेना का प्रधान* हूँ।”[8] यह सुनते ही यहोशू ने मुँह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया और उससे कहा, “अपने इस सेवक के लिए मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है?” 15 यहोवा की सेना के प्रधान ने उससे कहा, “तू अपनी जूतियाँ उतार दे क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है वह पवित्र है।” यहोशू ने तुरंत अपनी जूतियाँ उतार दीं।[9]

6 इसराएलियों की वजह से यरीहो के फाटक कसकर बंद कर दिए गए। न तो कोई शहर से बाहर जा सकता था न ही अंदर आ सकता था।[10]

2 तब यहोवा ने यहोशू से कहा, “देख! मैंने यरीहो को, उसके राजा और

अध्य. 5
1 उत 17:9-11
2 यह 5:8, 9
3 गि 14:29; गि 26:65; व्य 2:14
4 गि 14:33; व्य 1:3
5 गि 14:22, 23
6 व्य 1:35
7 उत 13:14, 15; निर्ग 33:1
8 निर्ग 3:8; गि 13:26, 27; यहे 20:6
9 गि 14:31

दूसरा कॉल.
1 यह 4:19; यह 5:3
2 निर्ग 12:24, 25; गि 9:5
3 निर्ग 12:18
4 निर्ग 16:35
5 व्य 6:10-12; व्य 8:10
6 उत 18:2; न्या 13:6; प्रेष 1:10
7 निर्ग 23:23; गि 22:23; 1इत 21:16
8 निर्ग 23:20; 1रा 22:19; दान 10:13
9 निर्ग 3:4, 5

अध्य. 6
10 यह 2:9

5:2 *शा., “दूसरी बार खतना करवा।” **5:3** *मतलब “खलड़ियों का टीला।” **5:4** *या “जिनकी उम्र सैनिक-सेवा की थी।” **5:6** *शा., “हमें।”

5:9 *मतलब “लुढ़कना; लुढ़काकर दूर कर देना।” **5:14** *या “हाकिम।”

उसके बड़े-बड़े योद्धाओं को तेरे हाथ कर
दिया है।[1] 3 तू अपने सभी सैनिकों के
साथ शहर के चारों ओर चक्कर काटना।
हर दिन शहर का एक चक्कर लगाना
और ऐसा छः दिन तक करना। 4 सात
याजकों से कहना कि वे हाथ में एक-एक
नरसिंगा लिए संदूक के आगे-आगे चलें।
मगर सातवें दिन शहर के सात चक्कर
लगाना और याजक नरसिंगे फूँकें।[2]
5 सातवाँ चक्कर पूरा होने पर जैसे ही
नरसिंगे की आवाज़ सुनायी दे,* तू सभी
लोगों के साथ ज़ोरदार आवाज़ में युद्ध का
ऐलान करना। तब यरीहो की शहरपनाह
गिर जाएगी[3] और तुम सीधे शहर में घुस-
कर धावा बोल देना।"

6 तब नून के बेटे यहोशू ने याजकों
को बुलाकर कहा, "तुम्हें करार का संदूक
उठाना है और सात याजकों को हाथ में
एक-एक नरसिंगा लिए यहोवा के संदूक
के आगे-आगे चलना है।"[4] 7 यहोशू ने
लोगों से कहा, "तुम्हें आगे बढ़कर शहर
के चारों ओर चक्कर लगाना है। हथि-
यारबंद सैनिकों[5] को यहोवा के संदूक के
आगे रहना है।" 8 यहोशू ने जैसा कहा
उन्होंने वैसा ही किया। सात याजक
हाथ में एक-एक नरसिंगा लिए यहोवा
के आगे-आगे चले और नरसिंगे फूँकने
लगे। यहोवा के करार का संदूक उनके
पीछे-पीछे आ रहा था। 9 हथियारबंद
सैनिक, नरसिंगे फूँकनेवाले याजकों के
आगे गए और संदूक के पीछे-पीछे
सैनिकों का एक और दल हिफाज़त के
लिए चला। इस बीच याजक नरसिंगे
फूँकते रहे।

10 यहोशू ने लोगों को आज्ञा दी, "तुम
चिल्लाना मत, तुम्हारे मुँह से कोई आवाज़
न निकले। जब तक मैं न कहूँ, खामोश
रहना। जिस दिन मैं कहूँ 'चिल्लाओ!'
उस दिन ज़ोर से चिल्लाना।" 11 यहोशू
के कहने पर यहोवा का संदूक लेकर
शहर के चारों ओर चक्कर लगाया गया।
शहर का एक चक्कर काटने के बाद लोग
वापस छावनी में आ गए और रात-भर
वहीं रहे।

12 अगले दिन यहोशू सुबह-सुबह
उठा और याजकों ने यहोवा का संदूक
लिया[1] 13 और सात याजक अपने-
अपने नरसिंगे फूँकते हुए यहोवा के संदूक
के आगे-आगे चलने लगे। उनके आगे
हथियारबंद सैनिक चल रहे थे जबकि
यहोवा के संदूक के पीछे-पीछे, सैनिकों का
एक और दल हिफाज़त के लिए चल रहा
था। इस दौरान याजक नरसिंगे फूँकते जा
रहे थे। 14 दूसरे दिन भी उन्होंने शहर
का एक चक्कर काटा और वापस छावनी
में आ गए। छः दिन तक उन्होंने ऐसा ही
किया।[2]

15 सातवें दिन उजाला होते ही वे उठे
और उन्होंने हर दिन की तरह शहर के
चारों ओर चक्कर लगाया। मगर इस दिन
उन्होंने शहर के सात चक्कर लगाए।[3]
16 सातवाँ चक्कर पूरा होते ही याजकों
ने नरसिंगे फूँके और यहोशू ने लोगों से
कहा, "ज़ोर से चिल्लाओ![4] यहोवा ने यह
शहर तुम्हें दे दिया है। 17 यह शहर
और इसमें जो कुछ है उस पर यहोवा
का अधिकार है और उसने इन्हें नाश के
लायक ठहराया है।[5] सिर्फ राहाब[6] वेश्या
और उसके साथ उसके घर में जो कोई
है, उन्हें ज़िंदा छोड़ देना क्योंकि राहाब
ने हमारे जासूसों को छिपाया था।[7]
18 मगर नाश के लायक ठहरायी चीज़ों
से तुम दूर रहना।[8] कहीं ऐसा न हो कि
तुम उनका लालच करने लगो और

6:5 * या "देर तक बजते सुनायी दे।"

अध्य. 6
1 गि 14:9, व्य 7:24, नहे 9:24
2 न्या 7:22
3 इब्र 11:30
4 गि 4:15
5 गि 10:14, 18, 22, यह 1:12, 14

दूसरा कॉल.
1 1इत 15:2
2 यह 6:3
3 यह 6:4
4 यह 6:5, 10
5 लैव 27:29, व्य 7:2, व्य 20:16
6 यह 2:1, मत 1:5, इब्र 11:31
7 उत 12:3, यह 2:4, 6, याकू 2:25
8 व्य 7:26

उनमें से कुछ ले लो।[1] अगर तुमने ऐसा किया तो इसराएल की छावनी नाश के लायक ठहरेगी और हम पर आफत आ पड़ेगी।*[2] **19** लेकिन सोना-चाँदी और ताँबे और लोहे की चीज़ें यहोवा के खज़ाने में दे देना।[3] ये चीज़ें यहोवा की नज़र में पवित्र हैं।”[4]

20 जब नरसिंगे फूँके गए तब लोग ज़ोर से चिल्लाए।[5] नरसिंगों की आवाज़ सुनकर उन्होंने ज़ोरदार आवाज़ में युद्ध का ऐलान किया और उसी वक्त यरीहो की शहरपनाह गिर गयी।[6] वे सीधे शहर में घुस गए और उस पर कब्ज़ा कर लिया। **21** उन्होंने बूढ़े-जवान, आदमी-औरत, बैल, भेड़ और गधे, सबको तलवार से मार डाला।[7]

22 अब यहोशू ने उन दो आदमियों से, जो देश की जासूसी करने गए थे कहा, “उस वेश्या के घर जाओ और उसे और उसके घराने के सब लोगों को सही-सलामत बाहर ले आओ, जैसा तुमने उससे शपथ खायी थी।”[8] **23** इस पर दोनों जवान आदमी राहाब के घर गए और वे राहाब, उसके माता-पिता, उसके भाइयों और जो कोई उसके साथ था, हाँ, उसके पूरे परिवार को ले आए।[9] वे उन्हें सही-सलामत इसराएल की छावनी के बाहर एक महफूज़ जगह ले गए।

24 फिर उन्होंने यरीहो शहर और उसकी सारी चीज़ें जला डालीं। लेकिन सोना-चाँदी, ताँबे और लोहे की चीज़ें उन्होंने यहोवा के खज़ाने में दे दीं।[10] **25** और यहोशू ने राहाब वेश्या, उसके पिता के घराने और जो कोई राहाब के साथ था, उन्हें ज़िंदा छोड़ दिया।[11] राहाब आज भी इसराएल में रहती है[12] क्योंकि उसने उन आदमियों को छिपाया था जिन्हें यहोशू ने यरीहो में जासूसी करने भेजा था।[1]

26 उस वक्त यहोशू ने यह शपथ खायी,* “जो आदमी यरीहो शहर को दोबारा खड़ा करने की कोशिश करेगा, उस पर यहोवा का शाप पड़ेगा। उसे इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। अगर उसने इसकी नींव डाली तो उसका पहलौठा बेटा मर जाएगा। और अगर उसने इसके फाटक लगाए तो उसका सबसे छोटा बेटा मर जाएगा।”[2]

27 इस तरह यहोवा यहोशू के साथ रहा[3] और धरती के कोने-कोने तक उसका नाम फैल गया।[4]

7 इसराएलियों ने नाश के लिए ठहरायी चीज़ों के बारे में परमेश्वर की आज्ञा तोड़कर विश्वासघात किया। आकान[5] ने उन चीज़ों में से कुछ चीज़ें ले ली थीं।[6] इसलिए यहोवा का क्रोध इसराएलियों पर भड़क उठा।[7] आकान यहूदा गोत्र से था, वह करमी का बेटा था, करमी जब्दी का और जब्दी जेरह का।

2 यहोशू ने यरीहो से कुछ आदमियों को ऐ नाम की जगह[8] भेजा, जो बेतेल[9] के पूरब में बेत-आवेन के पास थी। उसने उनसे कहा, “जाओ, जाकर उस जगह की जासूसी करो।” तब उन्होंने जाकर ऐ शहर की जासूसी की। **3** वापस आने पर उन्होंने यहोशू से कहा, “ऐ पर हमला बोलने के लिए हमारी पूरी सेना को जाने की ज़रूरत नहीं। उस इलाके में बहुत कम लोग रहते हैं, उन्हें हराने के लिए हमारे दो-तीन हज़ार सैनिक काफी होंगे। अच्छा होगा कि हम अपने सभी सैनिकों को वहाँ ले जाकर न थकाएँ।”

6:18 *या “घोर संकट आ पड़ेगा।”

6:26 *या शायद, “लोगों से यह शपथ खिलवायी।”

अध्य. 6
1 व्य 13:17; यह 7:11, 21
2 यह 7:25
3 यह 6:24; 1रा 7:51; 1इत 18:11
4 गि 31:22, 23
5 यह 6:4, 16
6 यह 6:5; इब्र 11:30
7 व्य 7:2; व्य 20:16
8 यह 2:14; इब्र 11:31
9 यह 2:12, 13; यह 2:17-19
10 यह 6:19
11 यह 2:14; यह 6:17, 22
12 मत 1:5

दूसरा कॉल.
1 इब्र 6:10; याकू 2:25
2 1रा 16:34
3 व्य 31:6; यह 1:5
4 यह 9:1, 2; यह 9:9, 10

अध्य. 7
5 यह 22:20; 1इत 2:7
6 व्य 7:26
7 यह 6:17, 18
8 उत 12:8
9 उत 28:19

4 इसलिए करीब 3,000 इसराएली सैनिक वहाँ गए, लेकिन उन्हें ऐ के लोगों से हारकर भागना पड़ा।[1] 5 ऐ के आदमियों ने शहर के फाटक से उनका पीछा करते हुए, उन्हें पहाड़ी के नीचे शबारीम* तक खदेड़ा। उन्होंने रास्ते में 36 इसराएली सैनिकों को मार गिराया। इससे इसराएलियों का दिल काँप उठा और उनकी हिम्मत टूट गयी।#

6 जब यहोशू ने इस बारे में सुना तो मारे दुख के उसने अपने कपड़े फाड़े और वह यहोवा के संदूक के सामने ज़मीन पर मुँह के बल गिर गया। यहोशू और इसराएल के मुखिया शाम तक इसी तरह शोक मनाते रहे और अपने सिर पर धूल डालते रहे। 7 यहोशू ने परमेश्वर से कहा, "हे सारे जहान के मालिक यहोवा, तू क्यों हमें इतनी दूर यरदन के पार लाया? क्या सिर्फ इसलिए कि तू हमें एमोरियों के हवाले कर दे और वे हमें मार डालें? इससे तो अच्छा होता कि हम यरदन के उस पार* ही रह जाते! 8 माफ करना यहोवा, मगर जिस तरह इसराएलियों को अपने दुश्मनों के सामने से* भागना पड़ा, उसे देखकर मैं और क्या कहूँ? 9 जब कनानियों और देश के बाकी निवासियों को यह पता चलेगा, तो वे हम पर टूट पड़ेंगे और धरती से हमारा नामो-निशान मिटा डालेंगे। इससे तेरे महान नाम पर कितना बड़ा कलंक लगेगा!"[2]

10 यहोवा ने यहोशू से कहा, "उठ! तू क्यों इस तरह ज़मीन पर पड़ा शोक मना रहा है? 11 इसराएल ने पाप किया है। उन्होंने नाश के लायक ठहरायी चीज़ों[1] में से कुछ चीज़ें चुरायी हैं[2] और अपने सामान में छिपा ली हैं।[3] उन्होंने मेरा करार तोड़ दिया[4] जिसे मानने की मैंने आज्ञा दी थी। 12 इसलिए इसराएली अपने दुश्मनों के आगे टिक नहीं पाएँगे। वे उन्हें पीठ दिखाकर भाग जाएँगे क्योंकि अब वे नाश के लायक ठहराए गए हैं। मैं तब तक तुम्हारा साथ नहीं दूँगा, जब तक तुम अपने बीच में से उसे नहीं मिटा देते जो नाश के लायक ठहराया गया है।[5] 13 अब उठ और लोगों को तैयार* कर।[6] उनसे कहना, 'कल के लिए तैयार हो जाओ क्योंकि इसराएल के परमेश्वर यहोवा ने कहा है, "हे इसराएल के लोगो, तुम्हारे बीच कोई है जो नाश के लायक ठहराया गया है। जब तक तुम उसे अपने बीच से मिटा नहीं देते, तब तक तुम अपने दुश्मनों के आगे टिक नहीं पाओगे। 14 कल सुबह तुम सब अपने-अपने गोत्र के हिसाब से इकट्ठा होना। उन गोत्रों में से यहोवा जिस गोत्र को अलग करेगा वह आगे आए।[7] फिर उस गोत्र में से यहोवा जिस घराने को अलग करेगा वह आगे आए। उस घराने में से जिस परिवार को यहोवा अलग करेगा वह आगे आए। और उस परिवार के सभी आदमी एक-एक करके आगे आएँ। 15 उनमें से जो आदमी नाश के लायक ठहरायी चीज़ लेने का दोषी पाया जाएगा, उसे और जो कुछ उसका है, सब खत्म कर दिया जाएगा और जला दिया जाएगा।[8] क्योंकि उस आदमी ने यहोवा का करार तोड़ा है[9] और इसराएल में शर्मनाक काम किया है।"'"

16 अगले दिन यहोशू सुबह-सुबह

7:5 *मतलब "खदानें।" #शा., "का दिल पिघलकर पानी जैसा हो गया।" 7:7 *यानी पूरब में। 7:8 *या "को पीठ दिखाकर।"

7:13 *या "पवित्र।"

अध्य. 7
1 लैव 26:14, 17; व्य 28:15, 25; व्य 32:30
2 व्य 32:26, 27; भज 106:8; भज 143:11; यहे 20:9

दूसरा कॉल.
1 यह 6:17
2 निर्ग 20:15
3 यह 7:21
4 निर्ग 24:7
5 व्य 7:26; यह 6:18; यश 59:2
6 निर्ग 19:10
7 नीत 16:33
8 यह 1:18; यह 7:25
9 निर्ग 24:7

उठा और उसने सभी इसराएलियों को
उनके गोत्रों के हिसाब से इकट्ठा किया।
तब सब गोत्रों में से यहूदा गोत्र अलग
किया गया। **17** यहोशू ने यहूदा के
सभी घरानों को आगे आने के लिए
कहा और उनमें से जेरह का घराना[1]
अलग किया गया। फिर उसने जेरह
के घराने के सभी आदमियों को एक-
एक करके आगे आने के लिए कहा और
उनमें से जब्दी को अलग किया गया।
18 आखिर में उसने जब्दी के परिवार
के सभी आदमियों को एक-एक करके
आगे आने के लिए कहा। और आकान
को अलग किया गया।[2] यहूदा गोत्र का
आकान करमी का बेटा था, करमी जब्दी
का और जब्दी जेरह का। **19** तब
यहोशू ने आकान से कहा, "मेरे बेटे, इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा के सामने
अपना पाप कबूल कर और उसका आदर
कर। सच-सच बता कि तूने क्या किया
है। मुझसे कुछ मत छिपा।"

20 आकान ने यहोशू से कहा, "हाँ,
मैं ही वह आदमी हूँ जिसने इसराएल के
परमेश्वर यहोवा के खिलाफ पाप किया
है। **21** जब मैं लूट का माल इकट्ठा कर
रहा था, तब मेरी नज़र शिनार[3] की एक
सुंदर और महँगी पोशाक पर पड़ी। मैंने
200 शेकेल* चाँदी और सोने की एक
ईंट भी देखी जिसका वज़न 50 शेकेल
था। मेरा मन ललचाने लगा और मैं उन्हें
अपने तंबू में ले आया। तुझे वे चीज़ें मेरे
तंबू में ज़मीन में गड़ी मिलेंगी और सोना-
चाँदी सबसे नीचे रखा होगा।"

22 तब यहोशू ने फौरन अपने आद-
मियों को भेजा और वे भागकर आकान
के तंबू में गए। पोशाक ज़मीन में गड़ी हुई
मिली और सोना-चाँदी सबसे नीचे रखा
हुआ था। **23** उन्होंने वे चीज़ें तंबू से
लीं और उन्हें यहोशू और सारे इसराए-
लियों के पास ले आए और यहोवा के
सामने रखा। **24** यहोशू और सारे इस-
राएली, जेरह के बेटे आकान[1] को और
उसकी चुरायी चाँदी, महँगी पोशाक, सोने
की ईंट,[2] साथ ही उसके बेटे-बेटियों,
बैल, गधों और भेड़-बकरियों और
उसके तंबू को और जो कुछ उसका था,
सबकुछ लेकर आकोर घाटी[3] में आए।
25 यहोशू ने आकान से कहा, "तू क्यों
हम पर यह आफत* लाया?[4] अब देख
यहोवा तुझ पर आफत लाएगा।" इसके
बाद सारे इसराएलियों ने उन्हें पत्थरों से
मार डाला[5] और आग में जला दिया।[6]
इस तरह उन्होंने पत्थरों से उन्हें मौत के
घाट उतार दिया। **26** उन्होंने उस पर
पत्थरों का एक बड़ा ढेर लगा दिया जो
आज भी वहाँ है। तब यहोवा का क्रोध
शांत हो गया।[7] इस घटना की वजह से
आज तक वह जगह आकोर* घाटी के
नाम से जानी जाती है।

8 इसके बाद यहोवा ने यहोशू से कहा,
"तू डरना मत और न ही खौफ
खाना।[8] अपने सभी सैनिकों को साथ
लेकर ऐ पर चढ़ाई कर। देख, मैंने ऐ
के राजा, उसके लोगों, उसके शहर और
उसके सारे इलाके को तेरे हाथ में कर
दिया है।[9] **2** तू ऐ और उसके राजा का
नाश कर देना, ठीक जैसे तूने यरीहो और
उसके राजा का किया था।[10] मगर वहाँ
से मिलनेवाला लूट का माल और मवेशी
अपने लिए रख लेना। ऐ पर हमला करने
के लिए अपने सैनिकों को शहर के पीछे
की तरफ घात में बिठाना।"

अध्य. 7
1 उत 38:30, गि 26:20, 1इत 2:4, 6
2 नीत 16:33, प्रेष 5:3
3 उत 10:10

दूसरा कॉल.
1 यह 22:20
2 यह 6:19
3 यह 15:7, 12, यश 65:10, हो 2:15
4 यह 6:18, 1इत 2:7
5 लैव 24:14, यह 1:18
6 यह 7:15
7 व्य 13:17

अध्य. 8
8 व्य 7:18, व्य 31:8, यह 1:9, यश 12:2, रोम 8:31
9 भज 44:3
10 यह 6:2, 21

7:21 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

7:25 *या "घोर संकट।" **7:26** *मतलब "आफत; घोर संकट।"

3 इस पर यहोशू और उसके सभी सैनिकों ने ऐ पर हमला करने की तैयारी की। यहोशू ने 30,000 वीर योद्धाओं को चुना और उन्हें रात को रवाना कर दिया। 4 उसने उन्हें आज्ञा दी, "तुम्हें शहर के पीछे की तरफ घात लगाकर बैठना है। शहर से ज़्यादा दूर मत जाना और हमला करने के लिए सब-के-सब तैयार रहना। 5 मैं अपने सब साथियों को लेकर सामने से शहर की तरफ बढ़ूँगा। जब शहर के लोग पिछली बार की तरह हमसे मुकाबला करने आएँगे,[1] तो हम उन्हें पीठ दिखाकर भागने लगेंगे। 6 वे यह सोचकर हमारा पीछा करेंगे कि हम पिछली बार की तरह उनसे डरकर भाग रहे हैं।[2] हम तब तक भागते रहेंगे जब तक कि हम उन्हें शहर से बहुत दूर न ले जाएँ। 7 तब तुम लोग जो घात लगाए बैठे होगे, उठकर शहर पर कब्ज़ा कर लेना। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उसे तुम्हारे हाथ में कर देगा। 8 शहर पर कब्ज़ा करते ही तुम उसमें आग लगा देना।[3] यहोवा ने जैसा कहा है तुम वैसा ही करना। यह तुम्हारे लिए मेरा आदेश है।"

9 फिर यहोशू ने उन्हें उस जगह भेजा जहाँ उन्हें घात लगाए बैठना था। वे ऐ शहर के पश्चिम में यानी ऐ और बेतेल के बीच घात लगाकर बैठ गए। जबकि यहोशू सारी रात सैनिकों के साथ रहा।

10 यहोशू सुबह-सुबह उठा और उसने अपने सैनिकों को इकट्ठा किया। फिर यहोशू और इसराएल के मुखिया उनकी अगुवाई करते हुए उन्हें ऐ तक ले गए। 11 यहोशू के साथ जितने भी सैनिक थे,[4] उनका पूरा दल शहर की तरफ गया और उन्होंने शहर के उत्तर में पड़ाव डाला। उनके और ऐ शहर के बीच सिर्फ एक घाटी थी। 12 इस बीच यहोशू ने 5,000 आदमियों को घात लगाने के लिए भेज दिया था।[1] वे ऐ शहर के पश्चिम में यानी ऐ और बेतेल[2] के बीच घात लगाकर बैठे थे। 13 इस तरह सैनिकों का बड़ा दल शहर के उत्तर में तैनात था[3] जबकि घात में बैठे सैनिक शहर के पीछे की तरफ पश्चिम में थे।[4] और यहोशू उस रात घाटी के बीच गया।

14 जब ऐ के राजा ने इसराएली सेना को देखा, तो वह सुबह-सुबह अपने आदमियों को लेकर उनसे लड़ने निकल पड़ा। वे उस जगह आए जहाँ सामने की तरफ वीराना था। मगर ऐ का राजा नहीं जानता था कि इसराएली सैनिक शहर के पीछे की तरफ भी घात लगाए बैठे हैं। 15 जब ऐ के आदमियों ने हमला बोला तो यहोशू और उसके सैनिक ऐसे भागने लगे मानो उनसे हारकर भाग रहे हों। वे वीराने की तरफ जानेवाले रास्ते पर भागने लगे।[5] 16 उनका पीछा करने के लिए ऐ के सभी आदमियों को बुलाया गया। वे यहोशू और उसकी सेना का पीछा करते-करते शहर से दूर निकल गए। 17 ऐ और बेतेल में एक भी आदमी नहीं बचा, सब-के-सब इसराएलियों का पीछा करने चले गए। वे शहर को खुला छोड़ गए, उसकी रक्षा करने के लिए कोई नहीं रहा।

18 फिर यहोवा ने यहोशू से कहा, "तेरे पास जो बरछी है उसे ऐ की तरफ दिखा।[6] मैं ऐ को तेरे हाथ में कर दूँगा।"[7] तब यहोशू ने हाथ उठाकर वह बरछी शहर की तरफ दिखायी। 19 जैसे ही उसने अपना हाथ उठाया, घात में बैठे सैनिक उठ खड़े हुए और भागकर शहर

अध्य. 8
1 यह 7:5
2 यह 8:16
3 यह 8:19, 28
4 यह 8:1, 3

दूसरा कॉल.
1 यह 8:2
2 उत 28:19
3 यह 8:5
4 यह 8:4
5 यह 8:6
6 निर्ग 17:11; यह 8:26
7 व्य 7:24

में गए और उस पर कब्ज़ा कर लिया। उन्होंने फौरन शहर में आग लगा दी।[1]

20 जब ऐ के आदमियों ने पीछे मुड़कर देखा तो उन्हें शहर से धुआँ उठता दिखायी दिया, जो आसमान तक पहुँच रहा था। तब वे किसी भी तरफ भाग न सके। जो इसराएली सैनिक वीराने की तरफ भाग रहे थे, वे पलटकर उन पर टूट पड़े। **21** इस तरह जब यहोशू और उसके साथवाले सैनिकों ने देखा कि घात लगानेवाले सैनिकों ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया है और शहर से धुआँ उठ रहा है, तो उन्होंने पलटकर ऐ के आदमियों पर हमला बोल दिया। **22** उन्हें मारने के लिए दूसरे सैनिक भी शहर से बाहर आ गए। अब ऐ के आदमी बुरी तरह फँस गए, कुछ इसराएली सैनिक इस तरफ थे तो कुछ उस तरफ। उन्होंने ऐ के सभी आदमियों को मार डाला, एक को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा और न ही भागने दिया।[2] **23** लेकिन वे ऐ के राजा को ज़िंदा पकड़कर यहोशू के पास ले आए।[3]

24 जब इसराएलियों ने ऐ के सभी लोगों को, जो वीराने में उनका पीछा कर रहे थे, तलवार से मार डाला और उनमें से एक को भी न छोड़ा, तब वे सब ऐ शहर की तरफ मुड़े। वे शहर में गए और वहाँ जितने लोग थे, उन्हें तलवार से मार डाला। **25** उस दिन ऐ के जितने आदमी-औरत मारे गए उनकी गिनती 12,000 थी। **26** यहोशू अपनी बरछी तब तक उठाए रहा[4] जब तक कि ऐ के सभी लोगों का नाश नहीं कर दिया गया।[5] **27** इसराएलियों ने लूट का सारा माल और सारे मवेशी अपने लिए ले लिए, ठीक जैसे यहोवा ने यहोशू को हिदायत दी थी।[6]

अध्य. 8
1 यह 8:8, 28
2 लैव 27:29; व्य 7:2
3 यह 8:29; यह 12:7, 9
4 निर्ग 17:11; यह 8:18
5 लैव 27:29
6 यह 8:2

28 फिर यहोशू ने ऐ को जलाकर राख कर दिया और वह शहर हमेशा के लिए मलबे का ढेर बन गया[1] और आज तक वह ऐसा ही है। **29** उसने ऐ के राजा को मारकर काठ* पर लटका दिया और उसे शाम तक वहीं रहने दिया। जब सूरज डूबनेवाला था तो यहोशू ने आज्ञा दी कि उसकी लाश काठ से उतार दी जाए।[2] उन्होंने लाश शहर के फाटक के सामने फेंक दी और उस पर पत्थरों का एक बड़ा ढेर लगा दिया, जो आज तक वहाँ है।

30 इसके बाद यहोशू ने इसराएल के परमेश्वर यहोवा के लिए एबाल पहाड़ पर एक वेदी बनायी,[3] **31** ठीक जैसे यहोवा के सेवक मूसा ने इसराएलियों को आज्ञा दी थी और मूसा के कानून की किताब[4] में भी लिखा था, "तुम ऐसे पत्थरों से एक वेदी बनाना, जिन पर लोहे का औज़ार न चलाया गया हो।"[5] उस वेदी पर इसराएलियों ने यहोवा के लिए होम-बलियाँ और शांति-बलियाँ चढ़ायीं।[6]

32 फिर यहोशू ने वहाँ पत्थरों पर उस कानून को लिख दिया[7] जो मूसा ने इसराएलियों के सामने लिखा था।[8] **33** सभी इसराएली, उनके मुखिया, उनके अधिकारी और न्यायी दो समूहों में बँटकर लेवी याजकों की तरफ मुँह करके खड़े हुए जो यहोवा के करार का संदूक लिए हुए थे। उस भीड़ में पैदाइशी इसराएलियों के साथ परदेसी भी थे।[9] एक समूह गरिज्जीम पहाड़ के सामने खड़ा था और दूसरा एबाल पहाड़ के सामने,[10] (ठीक जैसे यहोवा के सेवक मूसा ने आज्ञा दी थी)[11] ताकि इसराएल के लोगों

दूसरा कॉल.
1 यह 8:8
2 व्य 21:22, 23
3 व्य 11:29; व्य 27:4, 5
4 व्य 31:9; यह 1:8
5 निर्ग 20:25
6 व्य 27:6, 7
7 व्य 27:2, 3
8 निर्ग 24:4; निर्ग 34:27
9 लैव 24:22; गि 15:16
10 व्य 27:12, 13
11 व्य 11:29

8:29 *या "पेड़।"

को आशीर्वाद दिया जाए। **34** इसके बाद यहोशू ने कानून की किताब में बतायी सारी आशीष[1] और शाप[2] पढ़कर सुनाए।[3] **35** यहोशू ने वे सारी बातें इसराएल की पूरी मंडली के सामने पढ़कर सुनायीं, ठीक जैसे मूसा ने उसे आज्ञा दी थी।[4] एक भी ऐसी बात नहीं थी जो उसने न सुनायी हो। इसराएलियों की उस मंडली में औरतें, बच्चे और उनके बीच रहनेवाले परदेसी भी थे।[5]

9 यह खबर हित्तियों, एमोरियों, कनानियों, परिज्जियों, हिव्वियों और यबूसियों[6] के राजाओं ने सुनी, जो यरदन के पश्चिम के पहाड़ी प्रदेशों पर,[7] शफेलाह और महासागर*[8] के सारे तटवर्ती इलाकों पर और लबानोन के सामनेवाले इलाकों पर राज करते थे। **2** तब उन सबने यहोशू और इसराएलियों से लड़ने के लिए आपस में संधि की।[9]

3 गिबोन के लोगों[10] ने भी सुना कि यहोशू ने यरीहो और ऐ का क्या हाल किया है।[11] **4** तब गिबोनियों ने होशियारी से काम लिया। उन्होंने फटी-पुरानी बोरियों में खाने की कुछ चीज़ें डालीं और बोरियों को अपने गधों पर लाद दिया। उन्होंने कुछ पुरानी, मरम्मत की हुई मशकें लीं, **5** घिसी हुई जूतियाँ पहनीं जिन पर पैवंद लगे हुए थे और फटे-पुराने कपड़े पहने। उन्होंने जितनी भी रोटियाँ लीं, वे सब सूखी और भुरभुरी थीं। **6** फिर वे गिलगाल आए जहाँ इसराएली छावनी डाले हुए थे[12] और यहोशू और इसराएली आदमियों से कहने लगे, "हम दूर देश से आए हैं। हम चाहते हैं कि तुम लोग हमारे साथ शांति का करार करो।" **7** मगर इसराएलियों ने उन हिव्वी लोगों[1] से कहा, "हम तुम्हारे साथ करार कैसे कर लें?[2] क्या पता तुम यहीं आस-पास से आए हो!" **8** उन्होंने यहोशू से कहा, "तू हमें अपना दास बना ले।"

यहोशू ने उनसे पूछा, "तुम लोग कौन हो और कहाँ से आए हो?" **9** उन्होंने कहा, "तेरे ये दास एक दूर देश के रहनेवाले हैं।[3] हम इसलिए आए हैं क्योंकि हमने तेरे परमेश्वर यहोवा के नाम के बारे में सुना है। हमने यह भी सुना है कि वह कितना महान है और उसने मिस्र में कैसे बड़े-बड़े काम किए।[4] **10** और यरदन के उस पार* एमोरियों के दोनों राजाओं का क्या हाल किया, कैसे उसने हेशबोन के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग का नाश किया,[5] जो अश्तारोत में रहता था। **11** इसलिए हमारे मुखियाओं और देश के सभी लोगों ने हमसे कहा, 'तुम सफर के लिए खाने का सामान बाँधो और जाकर इसराएलियों से मिलो। तुम उनसे कहना, "हम तुम्हारे दास बनने को तैयार हैं।[6] मेहरबानी करके हमारे साथ शांति का करार करो।"'[7] **12** देख, ये रोटियाँ हमने घर से निकलते वक्त ली थीं। तब ये गरम और ताज़ी थीं मगर अब सूखकर भुरभुरी हो गयी हैं।[8] **13** ये मशकें नयी थीं जब हमने इन्हें भरा था, लेकिन अब ये फट गयी हैं।[9] हमारे कपड़े और जूतियाँ भी फट गयी हैं क्योंकि हम बहुत लंबा सफर करके आए हैं।"

14 तब इसराएली आदमियों ने उनकी खाने-पीने की चीज़ों को गौर से देखा। मगर इस बारे में उन्होंने यहोवा से कुछ नहीं पूछा।[10] **15** यहोशू ने उनके साथ

9:1 *यानी भूमध्य सागर।

9:10 *यानी पूरब में।

अध्य. 8
1 व्य 28:2
2 व्य 27:15; व्य 28:15
3 व्य 31:9; नहे 8:3
4 व्य 4:2; व्य 12:32
5 लैव 24:22; गि 15:16; व्य 29:10, 11; व्य 31:12; नहे 8:2

अध्य. 9
6 उत 15:18-21; निर्ग 3:17; निर्ग 23:23; व्य 7:1
7 यह 12:7, 8
8 गि 34:2, 6
9 यह 24:11
10 यह 10:2; यह 11:19
11 यह 6:20; यह 8:24
12 यह 5:10; यह 10:43

दूसरा कॉल.
1 उत 10:15, 17; उत 34:2; निर्ग 3:8
2 निर्ग 34:12; व्य 7:2; व्य 20:16-18
3 व्य 20:10, 15
4 निर्ग 9:16; निर्ग 15:13, 14; यह 2:9, 10
5 गि 21:21-24; गि 21:33-35; व्य 2:32-34; व्य 3:3
6 व्य 20:10, 11
7 यह 9:6
8 यह 9:5
9 यह 9:4
10 गि 27:18, 21; 1शम 30:7, 8

शांति का करार किया[1] और उनसे वादा
किया कि वह उनका नाश नहीं करेगा।
इसराएल की मंडली के प्रधानों ने भी यही
शपथ खायी।[2]

16 तीन दिन बाद इसराएलियों को
पता चला कि वे किसी दूर देश से नहीं
बल्कि पास के इलाके से हैं। **17** तब
इसराएली उनके शहर गिबोन,[3] कपीरा,
बएरोत और किरयत-यारीम[4] के लिए
रवाना हुए और तीसरे दिन वहाँ पहुँचे।
18 मगर इसराएलियों ने उन पर हमला
नहीं किया क्योंकि उनकी मंडली के
प्रधानों ने इसराएल के परमेश्वर यहोवा
की शपथ खाकर उनसे वादा किया
था[5] कि वे उनका नाश नहीं करेंगे।
तब पूरी मंडली अपने प्रधानों पर कुड़-
कुड़ाने लगी। **19** इस पर प्रधानों ने
इसराएलियों की मंडली से कहा, "हमने
इसराएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ
खायी है इसलिए हम उनका नाश नहीं कर
सकते। **20** हम उन्हें छोड़ देंगे। अगर
हमने अपनी शपथ तोड़ दी, तो पर-
मेश्वर का क्रोध हम पर भड़क उठेगा।"[6]
21 और जैसा प्रधानों ने गिबोनियों से
वादा किया था, उन्होंने यह भी कहा, "हम
उन्हें ज़िंदा छोड़ देंगे, मगर अब से वे
पूरी मंडली के लिए लकड़ियाँ बीनेंगे और
पानी भरेंगे।"

22 यहोशू ने गिबोनियों को बुलाया
और उनसे कहा, "तुमने हमारे साथ यह
चाल क्यों चली? तुमने क्यों कहा कि
हम दूर देश से आए हैं जबकि तुम
यहीं पास में रहते हो?[7] **23** अब से तुम
शापित हो[8] और तुम हमेशा के लिए
दास बने रहोगे और मेरे परमेश्वर के
भवन के लिए लकड़ियाँ बीनोगे और
पानी भरोगे।" **24** गिबोनियों ने यहोशू
से कहा, "मालिक, हमने सुना था कि तेरे

अध्य. 9

1 यह 11:19
2 2शम 21:2
3 यह 10:2
4 यह 18:11, 14; 1शम 7:1; 1इत 13:5
5 गि 30:2; व्य 6:13
6 2शम 21:1; भज 15:4; सभ 5:4, 6
7 यह 9:6, 16
8 उत 9:25, 26

दूसरा कॉल.

1 व्य 7:1; व्य 20:16
2 व्य 2:25; व्य 11:25; यह 5:1
3 इब्र 11:31
4 1रा 8:29; 2इत 6:6
5 यह 9:21
6 1इत 9:2; एज 7:24; एज 8:17; नहे 3:26; नहे 7:60

अध्य. 10

7 यह 8:24, 29
8 यह 6:2, 21
9 यह 9:9, 15; यह 11:19
10 व्य 2:25; व्य 11:25; यह 2:10, 11; यह 5:1
11 यह 8:25
12 उत 23:2; गि 13:22
13 यह 12:7, 10-12

परमेश्वर यहोवा ने अपने सेवक मूसा को
आज्ञा दी थी कि वह यहाँ के सभी
निवासियों को मिटाकर पूरा इलाका तुम
लोगों को दे दे।[1] हमें मालूम था कि तुम
हमें भी जान से मार दोगे। हम बहुत डर
गए थे[2] इसीलिए हमने यह सब किया।[3]
25 अब हम तेरे रहमो-करम पर हैं।
तुझे जो सही लगे वह कर।" **26** यहोशू
ने वैसा ही किया। उसने उन्हें इसराए-
लियों के हाथ से छुड़ाया और इसराए-
लियों ने उन्हें नहीं मारा। **27** लेकिन
उस दिन यहोशू ने उनसे कहा कि अब से
वे इसराएलियों की मंडली के लिए और
यहोवा की ठहरायी जगह[4] पर उसकी
वेदी के लिए लकड़ियाँ बीनेंगे और पानी
भरेंगे।[5] आज तक वे लोग यही काम
करते हैं।[6]

10 यरूशलेम के राजा अदोनी-सेदेक
ने सुना कि यहोशू ने ऐ पर
कब्ज़ा करके उसका नाश कर दिया
है। और ऐ और उसके राजा का वही
हश्र किया है[7] जो उसने यरीहो और
उसके राजा का किया था।[8] उसने यह भी
सुना कि गिबोन के लोगों ने इसराएलियों
के साथ शांति का करार किया है[9] और
उनके बीच रहने लगे हैं। **2** यह सब
सुनकर अदोनी-सेदेक की रातों की नींद
उड़ गयी[10] क्योंकि गिबोन भी उन शहरों
जितना बड़ा और शक्तिशाली था, जिन
पर राजा राज करते थे। गिबोन शहर, ऐ
से भी ज़्यादा ताकतवर था[11] और उसके
सभी आदमी वीर योद्धा थे। **3** इस-
लिए यरूशलेम के राजा अदोनी-सेदेक ने
हेब्रोन[12] के राजा होहाम, यरमूत के
राजा पिराम, लाकीश के राजा यापी और
एगलोन के राजा[13] दबीर को यह संदेश
भेजा, **4** "मुझे तुम्हारी मदद चाहिए।
गिबोनियों ने यहोशू और इसराएलियों के

साथ शांति का करार कर लिया है,[1] इस-
लिए आओ हम उन पर हमला बोल
दें।” **5** तब यरूशलेम, हेब्रोन, यरमूत,
लाकीश और एगलोन के राजा अपनी-
अपनी सेनाओं के साथ इकट्ठा हुए। पाँचों
एमोरी[2] राजा निकल पड़े और उन्होंने
गिबोन से लड़ने के लिए छावनी डाली।

6 तब गिबोन के आदमियों ने यहोशू
को, जो गिलगाल में डेरा डाले हुए था,[3]
यह संदेश भेजा, “हमें बचा ले! पहाड़ी
प्रदेश के सभी एमोरी राजा हमसे युद्ध
करने के लिए इकट्ठा हो गए हैं। जल्दी
आकर हमारी रक्षा कर, अपने दासों को
बेसहारा मत छोड़।”*[4] **7** तब यहोशू
अपने सभी सैनिकों और वीर योद्धाओं को
साथ लेकर गिलगाल से रवाना हो गया।[5]

8 यहोवा ने यहोशू से कहा, “उनसे
मत डर[6] क्योंकि मैंने उनको तेरे हाथ कर
दिया है।[7] उनमें से कोई भी तेरे सामने
नहीं टिक पाएगा।”[8] **9** यहोशू ने गिल-
गाल से रात-भर का सफर तय किया और
अचानक दुश्मनों पर हमला बोल दिया।
10 यहोवा ने इसराएलियों के सामने
उनके बीच खलबली मचा दी[9] और इस-
राएलियों ने गिबोन में भारी तादाद में
दुश्मनों को मार डाला। वे ऊपर बेत-
होरोन की चढ़ाई पर उनका पीछा करते
गए और उन्हें अजेका और मक्केदा तक
मारते गए। **11** जब एमोरी, इसराए-
लियों से जान बचाकर बेत-होरोन से नीचे
की तरफ भागने लगे, तो यहोवा ने आस-
मान से उन पर बड़े-बड़े ओले बरसाए।
बेत-होरोन से अजेका तक उन पर ओले
बरसते गए और वे मर गए। इसराएलियों
ने तलवार से जितनों को मारा था उससे
कहीं ज़्यादा लोग ओलों से मारे गए।

12 जिस दिन यहोवा ने इसराएलियों
के सामने एमोरियों को हराया, उस दिन
यहोशू ने यहोवा से कहा और इसराए-
लियों के सामने पुकारा,

“हे सूरज, गिबोन पर थम जा,[1]
हे चाँद, अय्यालोन घाटी पर
ठहर जा।”

13 इसलिए सूरज और चाँद थम गए
और तब तक ठहरे रहे जब तक कि इस-
राएलियों ने अपने दुश्मनों को हरा न
दिया। क्या यह बात याशार की किताब[2]
में नहीं लिखी है कि सूरज आसमान के
बीचों-बीच थम गया था और पूरे एक दिन
तक नहीं डूबा? **14** न तो इससे पहले,
न ही इसके बाद ऐसा कोई दिन आया,
जब यहोवा ने एक इंसान की बात सुन-
कर ऐसा किया हो।[3] क्योंकि यहोवा, इस-
राएल की तरफ से लड़ रहा था।[4]

15 फिर यहोशू सभी इसराएलियों के
साथ गिलगाल में अपनी छावनी में लौट
आया।[5]

16 इस बीच एमोरियों के पाँचों राजा
भाग गए और जाकर मक्केदा[6] में एक
गुफा में छिप गए। **17** यहोशू को खबर
दी गयी कि वे पाँचों राजा मक्केदा[7]
की एक गुफा में छिपे हुए हैं। **18** तब
यहोशू ने कहा, “गुफा का मुँह बड़े-बड़े
पत्थरों से बंद कर दो और कुछ आद-
मियों को पहरे पर बिठाओ। **19** बाकी
सैनिक दुश्मनों का पीछा करें और पीछे
से उन पर हमला करके उन्हें मार डालें।[8]
उन्हें अपने शहरों में घुसने का मौका
मत दो। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उन्हें
तुम्हारे हाथ में कर दिया है।”

20 यहोशू और इसराएलियों ने इतनी
भारी तादाद में एमोरी सैनिकों को मारा
कि उनकी सेना लगभग मिट गयी। बस
चंद आदमी ज़िंदा बचे और वे मज़बूत

10:6 *शा., “पर से अपना हाथ मत हटा।”

अध्य. 10
1 यह 9:9, 15; यह 11:19
2 उत 15:16
3 यह 5:10
4 यह 9:25, 27
5 यह 8:3
6 व्य 3:2; व्य 20:1
7 व्य 7:24; यह 11:6
8 यह 1:3-5
9 भज 44:3

दूसरा कॉल.
1 2रा 20:10; भज 135:6; यश 28:21; यश 38:8
2 2शम 1:17, 18
3 व्य 9:18, 19; 1रा 17:22; याकू 5:16
4 व्य 1:30; यह 23:3
5 यह 5:10; यह 9:6
6 यह 10:10
7 यह 10:28
8 व्य 28:7

गढ़वाले शहरों में भाग गए। 21 इसके
बाद सभी इसराएली सही-सलामत यहोशू
के पास मक्केदा की छावनी में लौट
आए। किसी ने भी इसराएलियों के
खिलाफ कुछ बोलने की जुर्रत नहीं की।*
22 फिर यहोशू ने आज्ञा दी, "गुफा के
मुँह से पत्थर हटाओ और उन पाँचों
राजाओं को बाहर मेरे पास लाओ।"
23 उन्होंने ऐसा ही किया। वे यरू-
शलेम, हेब्रोन, यरमूत, लाकीश और
एगलोन के राजा[1] को गुफा से निकाल-
कर यहोशू के पास ले आए। 24 जब ये
राजा यहोशू के पास लाए गए, तो उसने
इसराएल के सभी आदमियों को बुल-
वाया और उन सेनापतियों से जो उसके
साथ युद्ध में गए थे कहा, "तुम सब आगे
बढ़ो और इन राजाओं की गरदन पर
अपना पाँव रखो।" वे आगे आए और
उन्होंने राजाओं की गरदन पर अपने पाँव
रखे।[2] 25 फिर यहोशू ने उनसे कहा,
"तुम डरना मत और न ही खौफ खाना।[3]
हिम्मत से काम लेना और हौसला रखना।
क्योंकि यहोवा तुम्हारे सभी दुश्मनों को
जिनसे तुम युद्ध करोगे, इसी तरह तुम्हारे
अधीन कर देगा।"[4]

26 इसके बाद यहोशू ने उन राजाओं
को मार डाला और उन्हें पाँच काठों* पर
लटका दिया। उन सबकी लाशें शाम तक
काठों पर ही रहीं। 27 सूरज डूबने पर
यहोशू ने आदेश दिया कि उनकी लाशें
काठों से उतार दो[5] और उसी गुफा में
फेंक दो जहाँ वे छिपे हुए थे। उनकी लाशें
गुफा में फेंक दी गयीं और उसका मुँह
बड़े-बड़े पत्थरों से बंद कर दिया गया। ये
पत्थर आज भी वहीं हैं।

28 उसी दिन यहोशू ने मक्केदा पर
भी कब्ज़ा कर लिया[1] और तलवार से
उसके राजा और उसके सभी लोगों को
पूरी तरह खत्म कर दिया, किसी को भी
ज़िंदा नहीं छोड़ा।[2] उसने मक्केदा के राजा
का वही हश्र किया[3] जो उसने यरीहो के
राजा का किया था।

29 फिर यहोशू सब इसराएलियों के
साथ मक्केदा से लिब्ना की तरफ बढ़ा
और उन्होंने लिब्ना से युद्ध किया।[4]
30 यहोवा ने लिब्ना और उसके राजा[5]
को भी उनके हाथ कर दिया। उन्होंने
लिब्ना के सभी लोगों को तलवार से मार
डाला, किसी को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा।
उन्होंने लिब्ना के राजा का वही हश्र
किया जो उन्होंने यरीहो के राजा का
किया था।[6]

31 लिब्ना के बाद यहोशू सब इस-
राएलियों को लेकर लाकीश[7] की तरफ
बढ़ा और उन्होंने वहाँ छावनी डाली और
लाकीश से युद्ध किया। 32 यहोवा ने
लाकीश को इसराएल के हाथ कर दिया
और अगले दिन उन्होंने उस पर कब्ज़ा
कर लिया। उन्होंने लाकीश के सभी
लोगों को तलवार से मार डाला,[8] ठीक
जैसे उन्होंने लिब्ना के लोगों को मार
डाला था।

33 गेजेर का राजा[9] होराम, लाकीश
की मदद करने आया था मगर यहोशू ने
होराम और उसके लोगों को मार डाला,
किसी को भी नहीं छोड़ा।

34 फिर यहोशू सब इसराएलियों के
साथ लाकीश से एगलोन[10] की तरफ
बढ़ा। उन्होंने वहाँ छावनी डाली और
एगलोन से युद्ध किया। 35 उस दिन
उन्होंने एगलोन पर कब्ज़ा कर लिया और
उसके सब लोगों को तलवार से खत्म कर
दिया, ठीक जैसे उन्होंने लाकीश के लोगों
को खत्म किया था।[11]

10:21 *या "जीभ तक न हिलायी।"
10:26 *या "पेड़ों।"

अध्य. 10

1 यह 10:3-5; यह 12:7, 10-12
2 निर्ग 23:27
3 व्य 31:6; यह 1:9
4 व्य 3:21; व्य 7:18, 19
5 व्य 21:22, 23; यह 8:29

दूसरा कॉल.

1 यह 10:10; यह 15:20, 41
2 व्य 20:16
3 यह 12:7, 16
4 यह 15:20, 42; यह 21:13
5 यह 12:7, 15
6 यह 6:2, 21
7 यह 10:3, 4; यह 12:7, 11; यह 15:20, 39
8 व्य 20:16
9 यह 12:7, 12; यह 16:10; यह 21:20, 21; 1रा 9:16
10 यह 10:3, 4; यह 12:7, 12; यह 15:20, 39
11 व्य 20:16; यह 10:32

36 फिर यहोशू सब इसराएलियों के
साथ एगलोन से हेब्रोन[1] की तरफ बढ़ा
और उन्होंने हेब्रोन से युद्ध किया।
37 उन्होंने हेब्रोन पर कब्ज़ा कर लिया
और उस शहर के राजा को, वहाँ के सभी
लोगों और उसके आस-पास के नगरों के
लोगों को तलवार से मार डाला, किसी
को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा। यहोशू ने हेब्रोन
और उसके सभी लोगों को पूरी तरह
मिटा दिया, ठीक जैसे उसने एगलोन को
मिटाया था।

38 आखिर में यहोशू सब इसराए-
लियों के साथ दबीर[2] की तरफ बढ़ा और
उन्होंने दबीर से युद्ध किया। 39 यहोशू
ने दबीर पर कब्ज़ा कर लिया और वहाँ
के राजा, उसके लोगों और आस-पास के
नगरों के लोगों को तलवार से पूरी तरह
खत्म कर दिया,[3] किसी को भी ज़िंदा
नहीं छोड़ा।[4] उसने दबीर और उसके
राजा का वही हश्र किया जो उसने हेब्रोन
और लिब्ना का और उनके राजाओं का
किया था।

40 इस तरह यहोशू ने पूरे देश को
यानी पहाड़ी प्रदेश, नेगेब, शफेलाह[5]
और ढलानों को और उनके राजाओं
को जीत लिया और वहाँ किसी को भी
ज़िंदा नहीं छोड़ा। उसने एक-एक को मार
डाला,[6] ठीक जैसा इसराएल के परमेश्वर
यहोवा ने आज्ञा दी थी।[7] 41 यहोशू ने
कादेश-बरने[8] से लेकर गाज़ा[9] तक का
इलाका, गोशेन[10] का पूरा इलाका और
गिबोन[11] तक का इलाका अपने कब्ज़े में
कर लिया। 42 यहोशू ने वहाँ के सभी
राजाओं को एक-एक करके हरा दिया
और उनका देश ले लिया क्योंकि इस-
राएल का परमेश्वर यहोवा उनकी तरफ
से लड़ रहा था।[12] 43 फिर यहोशू
सभी इसराएलियों के साथ गिलगाल में
अपनी छावनी में लौट आया।[1]

11 जब हासोर के राजा याबीन ने
यह खबर सुनी तो उसने फौरन
मादोन के राजा[2] योबाब को, शिमरोन
और अक्षाप के राजाओं[3] को 2 और
जो-जो राजा उत्तर के पहाड़ी प्रदेश में,
किन्नेरेत के दक्षिणी मैदानी इलाकों* में,
शफेलाह और पश्चिम में दोर[4] की पहा-
ड़ियों पर रहते थे, उन सबको संदेश
भेजा। 3 उसने पूरब-पश्चिम दोनों
तरफ के कनानियों[5] को, पहाड़ों में रहने-
वाले एमोरियों,[6] हित्तियों, परिज्जियों,
यबूसियों को और मिसपा में हेरमोन
पहाड़[7] के नीचे रहनेवाले हिव्वियों[8] को
भी संदेश भेजा। 4 तब वे सब अपनी-
अपनी सेना लेकर निकल पड़े। उनकी
गिनती इतनी थी कि वे समुंदर किनारे
की बालू के किनकों जितने लग रहे
थे। वे अपने साथ बेहिसाब घोड़े और
युद्ध-रथ लाए। 5 इन सभी राजाओं ने
साथ मिलकर इसराएल से युद्ध करने का
फैसला किया और उन्होंने मेरोम के सोते
के पास छावनी डाली।

6 तब यहोवा ने यहोशू से कहा, "तू
उनसे मत डरना[9] क्योंकि कल इस समय
तक मैं उन सबको इसराएल के हाथ कर
दूँगा और तुम उनको मार डालोगे। तुम
उनके घोड़ों की घुटनस काट देना[10] और
उनके रथों को आग में जला देना।"
7 फिर यहोशू अपने सभी सैनिकों को
साथ लेकर गया और उसने मेरोम के
सोते के पास दुश्मनों पर अचानक हमला
बोल दिया। 8 यहोवा ने उन्हें इस-
राएल के हाथ कर दिया[11] और इस-
राएलियों ने उन्हें हरा दिया। वे महानगर

अध्य. 10
1 उत 13:18; उत 23:19; गि 13:22; यह 10:3, 4; यह 15:13; यह 21:13
2 यह 12:7, 13; यह 15:15
3 व्य 7:2
4 यह 11:14
5 यह 9:1, 2; न्या 1:9
6 लैव 27:29; व्य 20:16; यह 11:14
7 व्य 7:2; व्य 9:5
8 गि 34:2, 4; व्य 9:23
9 व्य 2:23
10 यह 15:20, 51
11 यह 11:16, 19
12 निर्ग 14:14; व्य 1:30

दूसरा कॉल.
1 यह 4:19

अध्य. 11
2 यह 12:7, 19
3 यह 12:7, 20
4 यह 17:11; न्या 1:27
5 गि 13:29
6 उत 15:16
7 व्य 4:48
8 व्य 7:1; व्य 20:17
9 यह 10:8
10 व्य 17:16; नीत 21:31
11 यह 21:44

11:2 * या "अराबा।"

सीदोन[1] और मिस्रपोत-मैम[2] तक और
पूरब में मिसपे घाटी तक उन्हें मारते
गए और एक को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा।[3]
9 यहोशू ने वही किया जो यहोवा ने उसे
बताया था, उसने दुश्मनों के घोड़ों की
घुटनस काट दी और रथों को आग में
जला दिया।[4]

10 इतना ही नहीं, यहोशू ने हासोर
जाकर उस पर कब्ज़ा कर लिया और
वहाँ के राजा को तलवार से मार डाला[5]
क्योंकि अब तक हासोर वहाँ के सभी
राज्यों का मुख्य शहर था। **11** इसराए-
लियों ने हासोर के सभी लोगों को तल-
वार से मारकर उनका पूरी तरह नाश कर
दिया,[6] एक को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा।[7]
इसके बाद, यहोशू ने हासोर को जला
डाला। **12** यहोशू ने उन सभी राजाओं
के शहरों पर कब्ज़ा कर लिया और उन्हें
हराकर तलवार से मार डाला।[8] उसने
उन सबका नाश कर दिया,[9] ठीक जैसे
यहोवा के सेवक मूसा ने आज्ञा दी थी।
13 मगर इसराएलियों ने उन शहरों को
नहीं जलाया जो टीलों पर बसे थे।
सिर्फ हासोर ही ऐसा शहर था जिसे यहोशू
ने जला दिया था। **14** इसराएली उन
शहरों से लूट का सारा माल और सारे
मवेशी अपने लिए ले गए।[10] मगर वहाँ
के सभी इंसानों को उन्होंने तलवार से मार
डाला,[11] एक को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा।[12]
15 यहोवा ने अपने सेवक मूसा को जो-
जो आज्ञा दी थी वह सब मूसा ने यहोशू
को बतायी थी[13] और यहोशू ने ठीक
वैसा ही किया। उसने ऐसा कोई भी काम
अधूरा नहीं छोड़ा जिसकी आज्ञा यहोवा ने
मूसा को दी थी।[14]

16 यहोशू ने ये सारे इलाके जीत
लिए: यहूदा का पहाड़ी प्रदेश, पूरा
नेगेब,[15] पूरा गोशेन प्रदेश, शफेलाह,[16]
अराबा,[1] इसराएल का पहाड़ी प्रदेश और
उसका निचला हिस्सा। **17** उसने सेईर
के पास हालाक पहाड़ से लेकर ऊपर तक
का वह सारा इलाका जीत लिया, जो दूर
हेरमोन पहाड़[2] के नीचे लबानोन घाटी में
बालगाद[3] तक फैला है। उसने वहाँ के
सभी राजाओं को हरा दिया और उन्हें
मार डाला। **18** उन सभी राजाओं से
युद्ध करते-करते यहोशू को काफी समय
लगा। **19** गिबोन शहर के हिव्वियों को
छोड़ किसी और शहर के लोगों ने इस-
राएलियों के साथ शांति का करार नहीं
किया।[4] उन शहरों को इसराएलियों ने
युद्ध करके जीत लिया।[5] **20** यहोवा ने
उन लोगों का दिल कठोर होने दिया,[6]
जिस वजह से उन्होंने इसराएल से युद्ध
किया और परमेश्वर ने उन सबका पूरी
तरह नाश कर दिया, उन पर कोई
रहम नहीं किया।[7] जैसा यहोवा ने मूसा
को आज्ञा दी थी, उन सबका नाश किया
जाना था।[8]

21 उस समय यहोशू ने पहाड़ी प्रदेश,
हेब्रोन, दबीर, अनाब और यहूदा और
इसराएल के पहाड़ी प्रदेशों से अनाकियों
का सफाया कर दिया।[9] यहोशू ने उन्हें
और उनके शहरों को पूरी तरह नाश कर
दिया।[10] **22** इसके बाद इसराएलियों
के देश में एक भी अनाकी नहीं बचा।
सिर्फ गाज़ा,[11] गत[12] और अशदोद[13] में
कुछ अनाकी रह गए।[14] **23** इस तरह
यहोशू ने यह सारा देश अपने कब्ज़े
में कर लिया, ठीक जैसे यहोवा ने मूसा
से वादा किया था।[15] फिर यहोशू ने
यह देश इसराएलियों को दिया ताकि
सभी गोत्रों को अपना-अपना हिस्सा मिले
और यह उनकी विरासत ठहरे।[16] इसके
बाद युद्ध खत्म हो गया और देश में शांति
बनी रही।[17]

अध्य. 11
1 उत 10:19
यह 19:28, 31
2 यह 13:1, 6
3 व्य 20:16
4 यह 11:6
5 यह 12:7, 19
6 लैव 27:29
7 व्य 20:16
यह 11:14
8 व्य 9:5
9 व्य 7:2, 16
10 यह 8:2, 27
11 व्य 7:2
12 व्य 20:16
13 व्य 3:28
व्य 7:1
व्य 31:7
14 व्य 4:2, 5
15 गि 13:17
व्य 1:7
16 यह 10:40, 41

दूसरा कॉल.
1 यह 12:7, 8
2 व्य 4:48
यह 13:8, 11
3 यह 13:1, 5
4 यह 9:7, 15
5 व्य 20:17
6 व्य 2:30
7 निर्ग 34:12
व्य 7:2
8 व्य 20:16
9 गि 13:22
व्य 1:28
यह 15:13, 14
10 लैव 27:29
यह 11:12
यह 24:11
11 न्या 1:18
12 1शम 17:4
13 2इत 26:1, 6
14 निर्ग 23:28-30
15 निर्ग 23:27
व्य 11:23
16 गि 26:53, 54
यह 14:1
17 यह 14:15
यह 21:44
यह 23:1

12 इसराएलियों ने यरदन के
पूरब में अरनोन घाटी[1] से लेकर
ऊपर हेरमोन पहाड़[2] तक और पूरब
में फैले पूरे अराबा को अपने अधिकार
में कर लिया। उन्होंने उस देश के जिन
राजाओं को हराया उनमें से एक था,[3]
2 एमोरियों का राजा सीहोन[4] जो हेश-
बोन में रहता था। वह अरोएर[5] से राज
करता था जो अरनोन घाटी[6] के किनारे
बसा था। अरनोन घाटी के बीच से लेकर
यब्बोक घाटी तक का पूरा इलाका और
गिलाद का आधा भाग उसके राज में
आता था। यब्बोक घाटी अम्मोनियों के
इलाके की भी सरहद थी। 3 वह पूरब
में अराबा के इलाके पर भी राज करता
था, जो किन्नेरेत झील*[7] से लेकर
अराबा के सागर यानी लवण सागर#
तक फैला था और पूरब में बेत-यशिमोत
और दक्षिण में पिसगा की ढलानों के नीचे
तक था।[8]

4 इसराएलियों ने जिस दूसरे राजा
के इलाके पर अधिकार किया, वह था
बाशान का राजा ओग।[9] वह बचे हुए
रपाई लोगों में से था[10] और अश्तारोत
और एदरेई में रहता था। 5 उसका राज
हेरमोन पहाड़ के इलाके, सलका और पूरे
बाशान[11] तक फैला था, जहाँ से गशू-
रियों और माकातियों[12] का इलाका शुरू
होता था। वह हेशबोन के राजा सीहोन[13]
के इलाके की सीमा तक, गिलाद के आधे
भाग पर भी राज करता था।

6 इन राजाओं को यहोवा के सेवक
मूसा और इसराएलियों ने हराया था,[14]
जिसके बाद यहोवा के सेवक मूसा ने
उनका इलाका रूबेनियों और गादियों को
और मनश्शे के आधे गोत्र को दे दिया।[15]

अध्य. 12
1 व्य 2:24
2 व्य 3:8
3 व्य 4:47-49
4 गि 21:23, 24
5 व्य 3:12
6 गि 21:13
7 यूह 6:1
8 व्य 3:27
9 गि 21:33-35
10 व्य 3:11
11 व्य 29:7
12 यह 13:13
13 गि 21:26
14 गि 21:23, 24; गि 21:33-35
15 गि 32:33; व्य 3:12, 13

दूसरा कॉल.
1 यह 11:23
2 यह 1:4
3 यह 13:1, 5
4 व्य 2:12
5 यह 11:16, 17
6 यह 10:40; यह 11:16
7 उत 15:16
8 निर्ग 3:8; निर्ग 23:23; व्य 7:1
9 यह 6:2
10 यह 8:29
11 यह 10:23, 26
12 यह 10:33
13 यह 10:38
14 यह 10:29
15 यह 10:28
16 न्या 1:22
17 यह 11:1, 10

7 यहोशू और इसराएलियों ने यर-
दन के पश्चिम में रहनेवाले राजाओं को
हराया और इसके बाद यहोशू ने उनका
पूरा इलाका इसराएल के गोत्रों में बाँट
दिया, हर गोत्र को अपना-अपना हिस्सा
दिया गया।[1] यह इलाका लबानोन[2] घाटी
में बालगाद[3] से लेकर सेईर[4] के पास
हालाक पहाड़[5] तक फैला था। 8 इसमें
पहाड़ी प्रदेश, शफेलाह, अराबा, ढलानें,
वीराना और नेगेब आता था,[6] जिनमें
हित्ती, एमोरी,[7] कनानी, परिज्जी, हिव्वी
और यबूसी रहते थे।[8] जिन राजाओं को
हराया गया वे थे:

9 यरीहो का राजा;[9]
बेतेल के पास ऐ का राजा;[10]
10 यरूशलेम का राजा;
हेब्रोन का राजा;[11]
11 यरमूत का राजा;
लाकीश का राजा;
12 एगलोन का राजा;
गेजेर का राजा;[12]
13 दबीर[13] का राजा;
गदेर का राजा;
14 होरमा का राजा;
अराद का राजा;
15 लिब्ना[14] का राजा;
अदुल्लाम का राजा;
16 मक्केदा का राजा;[15]
बेतेल[16] का राजा;
17 तप्पूह का राजा;
हेपेर का राजा;
18 अपेक का राजा;
लश्शारोन का राजा;
19 मादोन का राजा;
हासोर का राजा;[17]
20 शिमरोन-मरोन का राजा;
अक्षाप का राजा;

12:3 *यानी गन्नेसरत झील या गलील झील। #यानी मृत सागर।

21 तानाक का राजा;
मगिद्दो का राजा;
22 केदेश का राजा;
करमेल में योकनाम[1] का राजा;
23 दोर की पहाड़ियों पर दोर का
राजा;[2]
गिलगाल में गोयीम का राजा
24 और तिरसा का राजा। कुल
मिलाकर 31 राजा।

13 अब यहोशू बहुत बूढ़ा हो गया
था, उसकी उम्र ढल चुकी थी।[3]
यहोवा ने उससे कहा, "तू बूढ़ा हो गया है
और तेरी उम्र ढल चुकी है। लेकिन अब
भी इस देश के कई इलाकों पर कब्ज़ा
करना* बाकी है। 2 जो इलाके रह गए
हैं, वे ये हैं:[4] पलिश्तियों और गशू-
रियों[5] का सारा इलाका 3 (जो मिस्र के
पूरब में* नील नदी की धारा# से
लेकर उत्तर में एक्रोन की सीमा तक
फैला है। इसे कनानी इलाका माना
जाता था)।[6] इसमें गाज़ा, अशदोद,[7]
अश्कलोन,[8] गत[9] और एक्रोन[10] में
रहनेवालों के इलाके भी आते हैं, जिन पर
पलिश्तियों के पाँच सरदारों[11] का राज
है। अव्वी लोगों[12] का इलाका 4 जो
दक्षिण में पड़ता है, कनानियों का सारा
इलाका, और माराह जो सीदोनियों[13] के
इलाके में आता है और दूर अपेक तक का
इलाका जो एमोरियों की सरहद के पास
है, 5 गबाली लोगों[14] का इलाका और
पूरब की तरफ लबानोन का सारा इलाका
जो हेरमोन पहाड़ के नीचे बालगाद से
लेकर लेबो-हमात[15] तक है 6 और
लबानोन[16] से लेकर मिस्रपोत-मैम[17] में
रहनेवाले पहाड़ी प्रदेश के लोगों का और
सीदोनियों[18] का सारा इलाका। मैं यहाँ
रहनेवाले सब लोगों को इसराएलियों
के सामने से खदेड़ दूँगा।[1] तू बस इस
देश को इसराएलियों में बाँट देना, जैसा
मैंने तुझे आज्ञा दी थी ताकि यह उनकी
विरासत ठहरे।[2] 7 इसलिए अब तू नौ
गोत्रों और मनश्शे के आधे गोत्र को उनके
हिस्से की ज़मीन बाँट दे।"[3]

8 बाकी आधे गोत्र ने और रूबेनियों
और गादियों ने विरासत की वह ज़मीन
ली जो मूसा ने उन्हें यरदन के पूरब
में दी थी। यहोवा के सेवक मूसा ने उन्हें
ये इलाके दिए थे:[4] 9 अरनोन घाटी[5]
के किनारे अरोएर[6] और घाटी के बीच के
शहर से लेकर दीबोन तक फैला मेदबा
का पठारी इलाका 10 और अम्मोनियों
की सीमा तक वे सारे शहर जो हेशबोन
में रहनेवाले एमोरियों के राजा सीहोन के
इलाके में आते थे।[7] 11 इसके अलावा
गिलाद, गशूरी और माकाती लोगों का
इलाका,[8] हेरमोन पहाड़ और सलका
तक[9] पूरे बाशान का इलाका।[10]
12 और बाशान के राजा ओग का सारा
इलाका, जो अश्तारोत और एदरेई में
राज करता था। (वह बचे हुए रपाई
लोगों में से था।)[11] मूसा ने उन राजाओं
को हराया और उन्हें उनके इलाकों से
खदेड़ दिया।[12] 13 मगर इसराएलियों
ने गशूरी और माकाती लोगों को नहीं
खदेड़ा।[13] और वे आज तक इसराएलियों
के बीच रहते हैं।

14 उसने सिर्फ लेवी गोत्र को विरा-
सत की कोई ज़मीन नहीं दी।[14] क्योंकि
उसने वादा किया था कि जो चढ़ावा इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा को आग में
अर्पित किया जाता है, वही उनकी विरा-
सत होगा।[15]

15 मूसा ने रूबेन गोत्र के सारे घरानों
को उनके हिस्से की ज़मीन दी ताकि

13:1 * या "को जीतना।" **13:3** * शा., "के सामने।" # या "शीहोर।"

अध्य. 12
1 यह 21:34
2 यह 11:1, 2

अध्य. 13
3 यह 23:1
यह 24:29
4 निर्ग 23:29, 30
5 1शम 27:8
6 उत 10:19
7 यह 15:20, 46
8 न्या 14:19
9 2शम 21:19
10 1शम 5:10
11 न्या 3:1, 3
1शम 6:4
12 व्य 2:23
13 न्या 1:31
14 1रा 5:18
15 गि 34:2, 8
16 व्य 3:25
17 यह 11:8
18 न्या 3:1-3

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 23:30
2 गि 34:17
यह 14:1
3 गि 33:54
4 गि 32:33
यह 22:4
5 गि 21:13
6 व्य 3:12
7 गि 21:23, 24
8 व्य 3:14
9 1इत 5:11
10 यह 17:1
11 व्य 3:11
12 गि 21:23, 24
गि 21:33-35
13 गि 33:55
यह 23:12, 13
14 गि 18:20
व्य 10:9
व्य 12:12
15 लैव 7:33-35
गि 18:24
व्य 18:1

यह उनकी विरासत ठहरे। **16** उन्हें ये
इलाके मिलेः अरनोन घाटी के किनारे
अरोएर शहर, साथ ही वह शहर
जो घाटी के बीच में है, मेदबा का
सारा पठारी इलाका, **17** हेशबोन और
पठारी इलाके में आनेवाले सारे
नगर,[1] दीबोन, बामोत-बाल, बेत-बाल-
मोन,[2] **18** यहस,[3] कदेमोत,[4] मेपात,[5]
19 किरयातैम, सिबमा,[6] सेरेथ-शहर जो
घाटी के पास पहाड़ पर है, **20** बेत-
पोर, पिसगा की ढलानें,[7] बेत-यशिमोत,[8]
21 साथ ही पठारी इलाके के सारे शहर
और वह सारा इलाका* जो हेशबोन[9] से
राज करनेवाले एमोरियों के राजा सीहोन
के राज में आता था। मूसा ने सीहोन
को और मिद्यानी प्रधान एवी, रेकेम, सूर,
हूर और रेबा को हराया,[10] जो सीहोन
के अधीन राज करते थे और उसी
इलाके में रहते थे। **22** इसराएलियों ने
ज्योतिषी बिलाम[11] को जो बओर का बेटा
था, बाकी लोगों के साथ तलवार से मार
डाला। **23** रूबेनियों का इलाका यरदन
तक था और यह इलाका और इसके सभी
शहर और बस्तियाँ रूबेन गोत्र के सारे
घरानों की विरासत थी।

24 मूसा ने गाद गोत्र के सारे घरानों
को भी उनके हिस्से की ज़मीन दी ताकि
यह उनकी विरासत ठहरे। **25** उन्हें ये
इलाके मिलेः याजेर[12] और गिलाद के
सारे शहर और अरोएर तक अम्मो-
नियों का आधा इलाका,[13] जो रब्बाह[14]
के सामने पड़ता था। **26** और हेश-
बोन[15] से लेकर रामत-मिस्पे और बतो-
नीम तक, महनैम[16] से लेकर दबीर की
सीमा तक **27** और घाटी में बेत-हारम,
बेत-निमराह,[1] सुक्कोत[2] और सापोन का
इलाका और हेशबोन के राजा सीहोन[3] के
राज्य का बचा हुआ इलाका। यह इलाका
किन्नेरेत झील*[4] के दक्षिणी हिस्से तक
यरदन के पूरब में था जिसकी सीमा यर-
दन थी। **28** इस इलाके के सभी शहर
और बस्तियाँ गाद गोत्र के सारे घरानों की
विरासत थी।

29 फिर मूसा ने मनश्शे के आधे
गोत्र के घरानों को उनके हिस्से की ज़मीन
दी ताकि यह उनकी विरासत ठहरे।[5]
30 उनका इलाका महनैम[6] से लेकर पूरे
बाशान यानी बाशान के राजा ओग के
पूरे इलाके तक फैला था। उन्हें बाशान
में याईर के सब कसबे,[7] 60 नगर दिए
गए। **31** गिलाद का आधा इलाका
और बाशान के राजा ओग के शहर
अश्तारोत और एदरेई,[8] यह सब मनश्शे
के बेटे माकीर के बेटों[9] को यानी माकीर
के आधे घराने को दिए गए।

32 यह वह ज़मीन है जो मूसा ने इस-
राएलियों को दी थी ताकि यह उनकी
विरासत ठहरे। उसने ये इलाके उन्हें
तब दिए थे, जब वे यरीहो के पूरब
में यरदन के उस पार मोआब के बंजर
इलाके में थे।[10]

33 मगर मूसा ने लेवी गोत्र को विरा-
सत की कोई ज़मीन नहीं दी।[11] क्योंकि
इसराएल का परमेश्वर यहोवा उनकी
विरासत है जैसा परमेश्वर ने उनसे वादा
किया था।[12]

14 अब याजक एलिआज़र, नून के
बेटे यहोशू और इसराएल गोत्र
के कुलों के मुखियाओं ने इसराएलियों
को कनान देश में उनके हिस्से की

अध्य. 13
1 गि 21:25, 26
2 गि 32:37, 38
3 गि 21:23
4 व्य 2:26
5 यह 21:8, 37
6 गि 32:37, 38
7 व्य 3:16, 17
8 गि 33:48, 49
9 गि 21:25
10 गि 31:7, 8; व्य 2:30
11 गि 22:5; गि 22:7; 2पत 2:15
12 गि 32:34, 35
13 यह 12:2; न्या 11:13
14 2शम 11:1
15 गि 21:26
16 उत 32:2; यह 21:8, 38

दूसरा कॉल.
1 गि 32:34, 36
2 उत 33:17
3 गि 21:26
4 गि 34:2, 11; व्य 3:16, 17; यूह 6:1
5 व्य 3:13
6 1इत 6:77, 80
7 गि 32:40, 41; व्य 3:14
8 गि 21:33
9 गि 32:39
10 गि 32:33
11 व्य 10:9; यह 18:7
12 गि 18:24; गि 26:62, 63; व्य 18:1

13:21 *यहाँ शायद सीहोन के राज के उस हिस्से की बात की गयी है जिसमें आय. 15-20 में बताए इलाके आते हैं। आय. 27 देखें।

13:27 *यानी गन्नेसरत झील या गलील झील।

ज़मीन दी ताकि यह उनकी विरासत बन जाए।[1] 2 यह ज़मीन चिट्ठियाँ डालकर साढ़े नौ गोत्रों में बाँट दी गयी,[2] ठीक जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।[3] 3 मूसा ने बाकी ढाई गोत्रों को यरदन के उस पार* उनके हिस्से की ज़मीन दे दी थी,[4] मगर उसने लेवियों को गोत्रों के बीच विरासत की कोई ज़मीन नहीं दी।[5] 4 यूसुफ के वंशजों को दो गोत्र माना जाता था,[6] एक मनश्शे और दूसरा एप्रैम।[7] लेवियों को ज़मीन का कोई हिस्सा नहीं दिया गया, सिर्फ रहने के लिए शहर दिए गए[8] और उनके मवेशियों के लिए चरागाह दिए गए।[9] 5 इस तरह इसराएलियों ने ज़मीन को अलग-अलग हिस्सों में बाँटा जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

6 फिर यहूदा के आदमी गिलगाल में यहोशू के पास आए[10] और कनिज्जी यपुन्ने के बेटे कालेब[11] ने यहोशू से कहा, "तू अच्छी तरह जानता है कि यहोवा ने कादेश-बरने[12] में सच्चे परमेश्वर के सेवक मूसा[13] से तेरे और मेरे बारे में क्या कहा था।[14] 7 मैं 40 साल का था जब यहोवा के सेवक मूसा ने मुझे कादेश-बरने से इस देश की जासूसी करने भेजा[15] और मैंने लौटकर देश के बारे में सही-सही खबर दी।[16] 8 हालाँकि मेरे साथ गए भाइयों ने अपनी खबर से लोगों के दिलों में खौफ बिठा दिया और उनके हौसले पस्त कर दिए, मगर मैंने पूरे दिल से अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानी।[17] 9 उस वक्त मूसा ने मुझसे शपथ खाकर कहा था, 'जिस ज़मीन पर तूने कदम रखा है, वह तेरे और तेरे बेटों के लिए हमेशा की विरासत बन जाएगी क्योंकि तूने पूरे दिल से मेरे परमेश्वर यहोवा की बात मानी।'[1] 10 जब इसराएली वीराने में भटक रहे थे[2] तब से लेकर आज तक, इन 45 सालों में यहोवा ने मुझे सँभाले रखा,[3] ठीक जैसे यहोवा ने मेरे बारे में मूसा से वादा किया था।[4] देख, अब मैं 85 साल का हो चला हूँ। 11 आज भी मुझमें वही दमखम है जो उस वक्त था जब मूसा ने मुझे भेजा था। अब भी मुझमें इतनी ताकत है कि मैं युद्ध कर सकता हूँ और कई दूसरे काम कर सकता हूँ। 12 इसलिए मुझे वह पहाड़ी प्रदेश दे दे जिसे देने का वादा यहोवा ने मुझसे उस दिन किया था। हालाँकि उस दिन तूने सुना था कि अनाकी लोग वहाँ किलेबंद शहरों में रहते हैं,[5] मगर यहोवा मेरे साथ है[6] और मैं उन्हें खदेड़ दूँगा, जैसा यहोवा ने वादा किया था।"[7]

13 तब यहोशू ने यपुन्ने के बेटे कालेब को आशीर्वाद दिया और उसे हेब्रोन दिया ताकि यह उसकी विरासत ठहरे।[8] 14 इसलिए हेब्रोन आज तक कनिज्जी यपुन्ने के बेटे कालेब की विरासत है क्योंकि उसने पूरे दिल से इसराएल के परमेश्वर यहोवा की बात मानी।[9] 15 हेब्रोन का नाम पहले किरयत-अरबा था[10] (अरबा, अनाकी लोगों में बहुत बड़ा आदमी था)। इसके बाद युद्ध खत्म हो गया और देश में शांति बनी रही।[11]

15 यहूदा गोत्र के घरानों को चिट्ठियाँ डालकर जो ज़मीन दी गयी थी[12] वह एदोम[13] की सरहद, सिन वीराने और नेगेब के दक्षिणी कोने तक फैली हुई थी। 2 दक्षिण में उनकी सरहद लवण सागर* के छोर से यानी इसकी दक्षिणी खाड़ी से शुरू होती थी।[14] 3 और आगे दक्षिण में अकराबीम की चढ़ाई[15] से होकर सिन तक जाती थी। फिर

अध्य. 14
1 गि 34:17; यह 19:51
2 गि 26:55; गि 33:54; नीत 16:33; प्रेष 13:19
3 गि 34:13
4 गि 32:29
5 व्य 10:9; यह 13:14
6 उत 48:5; 1इत 5:2
7 उत 48:19, 20
8 गि 35:7; यह 21:1, 2
9 गि 35:2, 5
10 यह 4:19; यह 10:43
11 गि 32:11, 12
12 गि 13:26
13 गि 12:7, 8
14 व्य 1:35, 36
15 गि 13:2, 6
16 गि 13:30; गि 14:6, 7
17 गि 14:24; गि 32:11, 12

दूसरा कॉल.
1 व्य 1:36
2 गि 14:33
3 गि 14:29, 30
4 यह 21:45
5 गि 13:22, 28; गि 13:33
6 गि 14:8; रोम 8:31
7 यह 15:14; न्या 1:20
8 यह 10:36, 37; यह 15:13; यह 21:11, 12; 1इत 6:55, 56
9 गि 14:24; व्य 1:35, 36; यह 14:8
10 उत 23:2
11 लैव 26:6; यह 11:23

अध्य. 15
12 गि 26:55
13 उत 36:19
14 गि 34:2, 3
15 न्या 1:36

14:3 *यानी पूरब में।

15:2 *यानी मृत सागर।

कादेश-बरने के दक्षिण[1] से यह सरहद
उत्तर की तरफ मुड़ती थी और हेसरोन से
होकर अद्दार तक जाती थी और करका
की तरफ मुड़ती थी। 4 आगे यह सर-
हद असमोन[2] से लेकर मिस्र घाटी*[3] तक
जाती थी और सागर# पर खत्म होती
थी। यह उनकी दक्षिणी सरहद थी।
5 यरदन के मुहाने से लेकर पूरा
लवण सागर* यहूदा के इलाके की पूर्वी
सीमा था। उत्तर में उनकी सरहद सागर
की खाड़ी से शुरू होती थी, जहाँ यरदन
नदी, सागर से मिलती थी।[4] 6 यहाँ से
उनकी सरहद बेत-होग्ला[5] से होते हुए
बेत-अराबा[6] के उत्तर में जाती थी और
बोहन के पत्थर पर पहुँचती थी।[7] बोहन,
रूबेन का वंशज था। 7 यह सरहद
आकोर घाटी[8] में दबीर तक जाती थी
और वहाँ से उत्तर में गिलगाल[9] की तरफ
मुड़ती थी। गिलगाल, अदुम्मीम की चढ़ाई
के सामने है और अदुम्मीम, घाटी के
दक्षिण में पड़ता है। यहाँ से उनकी सरहद
एन-शेमेश[10] के सोते से एन-रोगेल[11] तक
जाती थी। 8 फिर 'हिन्नोम के वंशजों
की घाटी'[12] से होते हुए यबूसी[13] शहर
यानी यरूशलेम[14] की दक्षिणी ढलान तक
पहुँचती थी। वहाँ से यह सरहद उस पहाड़
की चोटी तक जाती थी, जो हिन्नोम
घाटी के पश्चिम में और रपाई घाटी के
उत्तरी छोर पर था। 9 फिर यह सरहद
पहाड़ की चोटी से उतरते हुए नेप्तोह के
सोते[15] पर निकलती थी और आगे एप्रोन
पहाड़ पर बसे शहरों तक जाती थी और
फिर बाला पर पहुँचती थी, जिसे किरयत-
यारीम भी कहा जाता है।[16] 10 बाला
से यह सरहद मुड़कर पश्चिम की तरफ
सेईर पहाड़ तक जाती थी और वहाँ से
यारीम पहाड़ की उत्तरी ढलान पर पहुँच-
ती थी, जिसे कसालोन कहते हैं। फिर यह
नीचे बेत-शेमेश[1] को जाती थी और वहाँ
से तिमना[2] पर पहुँचती थी। 11 यह
सरहद एक्रोन[3] की उत्तरी ढलान को छूते
हुए शिक्करोन पर और बाला पहाड़ से
होते हुए यब्नेल पर निकलती थी और
सागर पर खत्म होती थी।
12 महासागर* और उसका तट
यहूदा के इलाके की पश्चिमी सीमा था।[4]
यहूदा के वंशजों के घराने को मिले इलाके
की यही सरहद थी।
13 यहोशू ने यपुन्ने के बेटे कालेब[5]
को यहूदा के वंशजों के इलाके में किर-
यत-अरबा (अरबा, अनाक का पिता था)
यानी हेब्रोन दिया,[6] जैसा यहोवा ने
यहोशू को आज्ञा दी थी। 14 कालेब ने
वहाँ से अनाक के तीन बेटों को खदेड़ा[7]
जिनके नाम थे शेशै, अहीमन और
तल्मै।[8] इन्हीं से अनाकी लोग निकले थे।
15 इसके बाद कालेब दबीर के लोगों से
लड़ने गया।[9] (दबीर पहले किरयत-
सेपर कहलाता था।) 16 कालेब ने
कहा, "जो आदमी किरयत-सेपर पर
हमला करके उसे जीत लेगा, उसकी शादी
मैं अपनी बेटी अकसा से करवाऊँगा।"
17 ओत्नीएल[10] ने किरयत-सेपर को
जीत लिया। वह कालेब के भाई कनज
का बेटा था[11] और कालेब ने अपनी
बेटी अकसा[12] की शादी उससे करवा दी।
18 जब अकसा घर जा रही थी तो वह
अपने पति से बार-बार कहने लगी कि
मेरे पिता से ज़मीन का एक टुकड़ा
माँग। फिर वह गधे से उतरी* और
कालेब ने उससे पूछा, "तू क्या चाहती

15:4 *शब्दावली देखें। #यानी महासागर, भूमध्य सागर। **15:5** *यानी मृत सागर।

15:12 *यानी भूमध्य सागर। **15:18** *या शायद, "ध्यान खींचने के लिए उसने गधे पर बैठे-बैठे ताली बजायी।"

अध्य. 15
1 गि 34:4
2 गि 34:2, 5
3 1रा 8:65
4 गि 34:12
5 यह 18:19, 20
6 यह 18:21, 22
7 यह 18:17, 20
8 यह 7:26
9 यह 5:8, 9
10 यह 18:17, 20
11 1रा 1:9
12 यह 18:16, 20; 2रा 23:10; यिर्म 7:31
13 न्या 1:21
14 यह 18:28; न्या 19:10
15 यह 18:15, 20
16 यह 9:16, 17; 2शम 6:2; 1इत 13:6

दूसरा कॉल.
1 यह 21:8, 16
2 यह 19:43, 48; न्या 14:1, 2; 2इत 28:18
3 1शम 5:10; 1शम 7:14; 2रा 1:2
4 गि 34:2, 6; व्य 11:24
5 गि 13:30; व्य 1:36
6 उत 23:2; उत 35:27; यह 20:7; यह 21:11, 12
7 गि 13:33; यह 11:21
8 गि 13:22; न्या 1:10, 20
9 यह 10:38, 39
10 न्या 3:9-11
11 1इत 4:13
12 1इत 2:49

है?”[1] 19 अकसा ने कहा, “तेरी यह बेटी तुझसे एक आशीर्वाद चाहती है। मुझे गुल्लोत-मइम* का इलाका दे दे क्योंकि मुझे दक्षिण# में ज़मीन का जो टुकड़ा मिला है वह सूखा है।” इसलिए कालेब ने उसे ऊपरी गुल्लोत और निचला गुल्लोत दिया।

20 यह यहूदा गोत्र के सभी घरानों की विरासत थी।

21 यहूदा गोत्र के दक्षिणी छोर पर और एदोम की सरहद[2] की तरफ ये शहर थे: कबसेल, एदेर, यागूर, 22 कीना, दीमोना, अदादा, 23 केदेश, हासोर, यित्नान, 24 ज़ीफ, तेलेम, बालोत, 25 हासोर-हदत्ता, करियोत-हेसरोन यानी हासोर, 26 अमाम, शमा, मोलादा,[3] 27 हसर-गद्दा, हेशमोन, बेत-पालेत,[4] 28 हसर-शूआल, बेरशेबा,[5] बिजयोत्या, 29 बाला, इय्यीम, एसेम, 30 एलतोलद, कसील, होरमा,[6] 31 सिकलग,[7] मदमन्ना, सनसन्ना, 32 लबाओत, शिलहीम, ऐन और रिम्मोन।[8] कुल मिलाकर 29 शहर और इसके अलावा उनकी बस्तियाँ।

33 शफेलाह[9] में उनके ये शहर थे: एशताओल, सोरा,[10] अशना, 34 जानोह, एन-गन्नीम, तप्पूह, एनाम, 35 यरमूत, अदुल्लाम,[11] सोकोह, अजेका,[12] 36 शारैम,[13] अदीतैम और गदेरा और गदेरोतैम,* 14 शहर और इसके अलावा उनकी बस्तियाँ।

37 सनान, हदाशा, मिगदल-गाद, 38 दिलान, मिसपे, योकतेल, 39 लाकीश,[14] बोसकत, एगलोन, 40 कब्बोन, लहमाम, कितलीश, 41 गदेरोत, बेत-दागोन, नामा और मक्केदा,[1] 16 शहर और इसके अलावा उनकी बस्तियाँ।

42 लिब्ना,[2] एतेर, आशान,[3] 43 यिफ्ताह, अशना, नसिब, 44 कीला, अकजीब और मारेशाह, नौ शहर और इसके अलावा उनकी बस्तियाँ।

45 एक्रोन और उसके आस-पास के नगर और बस्तियाँ। 46 एक्रोन के पश्चिम में अशदोद के आस-पास का सारा इलाका और वहाँ की बस्तियाँ।

47 अशदोद[4] और उसके आस-पास के नगर और बस्तियाँ, गाज़ा[5] और उसके आस-पास के नगर और बस्तियाँ जो मिस्र घाटी तक फैली हुई थीं और महासागर* और उसके तट का इलाका।[6]

48 पहाड़ी प्रदेश में ये शहर थे: शामीर, यत्तीर,[7] सोकोह, 49 दन्ना, किरयत-सन्ना यानी दबीर, 50 अनाब, एश्तमो,[8] आनीम, 51 गोशेन,[9] होलोन और गीलो,[10] 11 शहर और इसके अलावा उनकी बस्तियाँ।

52 अरब, दूमा, एशान, 53 यानीम, बेत-तप्पूह, अपेका, 54 हुमता, किरयत-अरबा यानी हेब्रोन[11] और सीओर, नौ शहर और इसके अलावा उनकी बस्तियाँ।

55 माओन,[12] करमेल, ज़ीफ,[13] युत्ता, 56 यिजरेल, योकदाम, जानोह, 57 केन, गिबा और तिमना,[14] दस शहर और इसके अलावा उनकी बस्तियाँ।

58 हलहूल, बेत-सूर, गदोर, 59 मरात, बेतनोत और एलतेकोन, छः शहर और इसके अलावा उनकी बस्तियाँ।

60 किरयत-बाल यानी किरयत-यारीम[15] और रब्बाह, दो शहर और इसके अलावा उनकी बस्तियाँ।

15:19 *मतलब “पानी के कुंड।” #या “नेगेब।” **15:36** *या शायद, “गदेरा और उसकी भेड़शालाएँ।”

15:47 *यानी भूमध्य सागर।

अध्य. 15

1 न्या 1:14, 15
2 गि 34:2, 3; व्य 2:5
3 यह 19:1, 2
4 नहे 11:25, 26
5 उत 21:31; यह 19:1-3
6 गि 14:44, 45; यह 19:1, 4; न्या 1:17
7 यह 19:1, 5; 1शम 27:5, 6; 1इत 12:1
8 यह 19:1, 7; नहे 11:25, 29
9 न्या 1:9
10 यह 19:40, 41; न्या 16:31
11 1शम 22:1
12 1शम 17:1
13 1शम 17:52
14 2रा 18:14

दूसरा कॉल.

1 यह 10:28
2 यह 10:29; 2रा 8:22
3 यह 19:1, 7
4 1शम 5:1
5 उत 10:19
6 गि 34:2, 5
7 यह 21:8, 14
8 1इत 6:57
9 यह 11:16
10 2शम 15:12
11 यह 14:15
12 1शम 23:25; 1शम 25:2, 3
13 1शम 23:14
14 उत 38:12
15 यह 9:16, 17; यह 18:11, 14; 1शम 7:1

61 वीराने में उनके ये शहर थे: बेत-
अराबा,[1] मिद्दीन, सकाका, 62 निब-
शान, लवण शहर और एनगदी,[2] छः
शहर और इसके अलावा उनकी
बस्तियाँ।

63 मगर यरूशलेम में रहनेवाले यबू-
सियों[3] को यहूदा के लोग नहीं खदेड़
पाए।[4] इसलिए यबूसी आज तक उनके
बीच यरूशलेम में रहते हैं।

16 यूसुफ के वंशजों को चिट्ठियाँ
डालकर ज़मीन का जो हिस्सा
दिया गया,[5] उसकी सरहद यरीहो के
पास यरदन से शुरू होती थी और उन
सोतों तक जाती थी जो यरीहो के पूरब
में पड़ते थे। फिर यह सरहद यरीहो के
सामने वीराने से होते हुए बेतेल के पहाड़ी
प्रदेश तक पहुँचती थी।[6] 2 फिर लूज
के पास बेतेल से होते हुए यह अतारोत
तक जाती थी, जो एरेकी लोगों की सीमा
है। 3 वहाँ से यह सरहद पश्चिम की
तरफ यपलेती लोगों की सीमा से उतरकर
निचले बेत-होरोन की सीमा[7] और गेजेर[8]
तक जाती थी और सागर पर खत्म
होती थी।

4 इस तरह यूसुफ के वंशजों,[9]
मनश्शे और एप्रैम गोत्रों ने अपने-अपने
हिस्से की ज़मीन ली।[10] 5 एप्रैम के
वंशजों के सभी घरानों को विरासत में
जो ज़मीन दी गयी, उसकी सरहद यह
थी: पूरब में अतारोत-अद्दार[11] से होते
हुए ऊपरी बेत-होरोन[12] तक 6 और
वहाँ से आगे सागर तक। उत्तर में मिक-
मतात[13] से यह सीमा पूरब की तरफ
तानत-शीलो तक जाती थी और यानोह
से होकर गुज़रती थी। 7 फिर यह सीमा
यानोह से नीचे उतरकर अतारोत और
नारा से होते हुए यरीहो[14] और यर-
दन तक पहुँचती थी। 8 तप्पूह[15] से यह
सरहद पश्चिम की तरफ कानाह घाटी
से होते हुए सागर पर खत्म होती थी।[1]
यह इलाका एप्रैम गोत्र के सभी घरानों
की विरासत था। 9 एप्रैम के वंशजों को
मनश्शे के इलाके में वे शहर और बस्तियाँ
भी मिलीं, जो उनके लिए अलग की
गयी थीं।[2]

10 लेकिन एप्रैमियों ने गेजेर में रहने-
वाले कनानियों को नहीं खदेड़ा।[3] इस-
लिए आज तक कनानी उनके बीच रहते
हैं[4] और उनके अधीन रहकर जब-
रन मज़दूरी करते हैं।[5]

17 फिर मनश्शे[6] गोत्र को चिट्ठियाँ
डालकर ज़मीन दी गयी[7] क्योंकि
मनश्शे, यूसुफ का पहलौठा था।[8]
माकीर,[9] मनश्शे का पहलौठा बेटा और
गिलाद का पिता था। वह एक वीर योद्धा
था इसलिए उसे गिलाद और बाशान का
इलाका मिला।[10] 2 मनश्शे के बाकी
वंशजों के अलग-अलग घरानों को भी
चिट्ठियाँ डालकर ज़मीन दी गयी। ये
वंशज थे: अबीएज़ेर के बेटे,[11] हेलेक के
बेटे, असरीएल के बेटे, शेकेम के बेटे,
हेपेर के बेटे और शमीदा के बेटे। ये
यूसुफ के बेटे मनश्शे के वंश से आए
अलग-अलग घराने के आदमी थे।[12]
3 मनश्शे का बेटा माकीर था, माकीर का
गिलाद, गिलाद का हेपेर और हेपेर का
बेटा सलोफाद[13] था। सलोफाद के कोई
बेटा नहीं था सिर्फ बेटियाँ थीं, जिनके
नाम थे महला, नोआ, होग्ला, मिलका
और तिरसा। 4 इसलिए उन्होंने याजक
एलिआज़र, नून के बेटे यहोशू और
प्रधानों के पास आकर कहा,[14] "यहोवा
ने मूसा को आज्ञा दी थी कि हमारे पिता
के भाइयों के साथ हमें भी विरासत की
ज़मीन दी जाए।"[15] यहोवा के आदेश
पर सलोफाद की बेटियों को अपने पिता

अध्य. 15
1 यह 18:21, 22
2 1शम 23:29
3 उत 10:15, 16
1इत 11:4
4 गि 33:55
न्या 1:8, 21
न्या 19:11
2शम 5:6

अध्य. 16
5 उत 49:22
गि 26:55
गि 33:54
व्य 33:13
नीत 16:33
6 यह 18:11, 13
7 यह 18:11, 13
1इत 7:24
8 1इत 7:20, 28
9 उत 48:5
10 व्य 33:13-15
यह 17:17, 18
11 यह 18:11, 13
12 2इत 8:1, 5
13 यह 17:7
14 यह 6:20, 26
15 यह 17:8

दूसरा कॉल.
1 गि 34:2, 6
2 यह 17:9
3 न्या 1:29
4 गि 33:52, 55
5 यह 17:13

अध्य. 17
6 उत 41:51
उत 46:20
उत 48:17, 18
7 गि 26:55
गि 33:54
नीत 16:33
8 व्य 21:17
9 उत 50:23
गि 26:29
1इत 7:14
10 व्य 3:13
यह 13:31
11 न्या 6:11
12 गि 26:29-32
13 गि 26:33
14 गि 27:1, 2
गि 34:17
यह 14:1
15 गि 27:7, 11

के भाइयों के साथ विरासत की ज़मीन दी गयी।[1]

5 यरदन के पूरब में गिलाद और बाशान[2] के अलावा, मनश्‍शे गोत्र को यरदन के इस पार* भी ज़मीन के दस हिस्से मिले। 6 इसलिए मनश्‍शे गोत्र में बेटों के साथ-साथ बेटियों को भी विरासत मिली। मनश्‍शे के बाकी वंशजों को गिलाद का इलाका दिया गया।

7 मनश्‍शे गोत्र की सरहद आशेर से लेकर मिकमतात तक थी[3] जो शेकेम[4] के सामने पड़ता था। फिर यह सरहद दक्षिण की तरफ एन-तप्पूह के लोगों के इलाके तक जाती थी। 8 तप्पूह[5] का इलाका मनश्‍शे को मिला मगर तप्पूह शहर जो मनश्‍शे की सरहद पर था, एप्रैम के वंशजों के हिस्से में आया। 9 फिर मनश्‍शे की सरहद नीचे उतरकर दक्षिण की तरफ कानाह घाटी तक जाती थी और उसके उत्तर से होते हुए सागर पर खत्म होती थी।[6] मनश्‍शे के इलाके में एप्रैम के भी शहर थे।[7] 10 सरहद का दक्षिणी इलाका एप्रैम का था और उत्तरी इलाका मनश्‍शे का। मनश्‍शे के इलाके की एक सरहद सागर थी।[8] उनकी* उत्तरी सरहद आशेर के इलाके तक और पूर्वी सरहद इस्साकार के इलाके तक थी।

11 इस्साकार और आशेर के इलाकों में मनश्‍शे को ये शहर और उनके लोग दिए गए: बेत-शआन, यिबलाम,[9] दोर,[10] एन्दोर,[11] तानाक[12] और मगिद्दो। इन शहरों के साथ-साथ उनके आस-पास के नगर भी उन्हें दिए गए। इनमें से तीन शहर पहाड़ी इलाके में बसे थे।

17:5 *यानी पश्‍चिम में। 17:10 *यानी मनश्‍शे के लोगों या उनके इलाके की।

12 लेकिन मनश्‍शे के वंशज इन शहरों पर कब्ज़ा नहीं कर पाए क्योंकि कनानी लोग इस इलाके को नहीं छोड़ रहे थे।[1] 13 फिर जब इसराएली ताकतवर हो गए, तो वे कनानियों से जबरन मज़दूरी करवाने लगे।[2] मगर उन्होंने कनानियों को पूरी तरह नहीं खदेड़ा।[3]

14 यूसुफ के वंशजों ने यहोशू से कहा, "हम गिनती में बहुत हैं क्योंकि यहोवा की आशीष हम पर रही है।[4] इतना बड़ा गोत्र होने पर भी हमें* एक ही हिस्सा# क्यों मिला?"[5] 15 यहोशू ने उनसे कहा, "अगर तुम गिनती में इतने ज़्यादा हो कि एप्रैम का पहाड़ी प्रदेश[6] तुम्हारे लिए कम पड़ रहा है, तो जाओ, परिज्जी[7] और रपाई लोगों[8] के जंगलों को काटकर वहाँ का इलाका ले लो।" 16 तब यूसुफ के वंशजों ने कहा, "तूने सच कहा, यह पहाड़ी प्रदेश हमारे लिए काफी नहीं। मगर घाटी में रहनेवाले कनानी जो बेत-शआन[9] और उसके आस-पास के नगरों में और यिजरेल घाटी[10] में रहते हैं, उन सबके पास ऐसे युद्ध-रथ[11] हैं जिनके पहियों में तलवारें लगी हुई हैं।"* 17 तब यहोशू ने यूसुफ के घराने, एप्रैम और मनश्‍शे से कहा, "तुम गिनती में बहुत हो और तुम शक्‍तिशाली भी हो। तुम्हें ज़मीन का सिर्फ एक हिस्सा नहीं मिलेगा[12] 18 बल्कि पूरा पहाड़ी प्रदेश तुम्हारा हो जाएगा।[13] हालाँकि यह इलाका जंगल है मगर तुम इसे काटकर रहने की जगह बनाओगे और यह इलाका तुम्हारी सरहद ठहरेगा। तुम यहाँ से कनानियों को ज़रूर खदेड़ दोगे,

---

17:14 *शा., "मुझे।" #शा., "चिट्ठी डालकर और नापकर देश का एक ही हिस्सा।"
17:16 *शा., "लोहे के रथ हैं।"

अध्य. 17

1 गि 36:6, 12
2 यह 13:29
3 यह 16:5, 6
4 यह 20:7; यह 24:1; 1इत 6:66, 67
5 यह 16:8
6 यह 16:8
7 यह 16:9
8 गि 34:2, 6
9 2रा 9:27
10 यह 12:7, 23
11 1शम 28:7
12 यह 12:7, 21

दूसरा कॉल.

1 न्या 1:27
2 यह 16:10; न्या 1:30; 2इत 8:8
3 निर्ग 23:33; गि 33:55; व्य 20:16, 17; यह 23:12, 13; न्या 1:28
4 उत 48:19; गि 26:34, 37
5 गि 33:54
6 यह 24:33
7 निर्ग 33:2
8 उत 15:18-20
9 यह 17:11
10 यह 19:17, 18; न्या 6:33
11 व्य 20:1; न्या 1:19
12 यह 17:14
13 गि 33:53; यह 20:7; न्या 4:5

फिर चाहे वे कितने ही ताकतवर क्यों
न हों और उनके पास ऐसे युद्ध-रथ क्यों
न हों जिनके पहियों में तलवारें लगी
हुई हैं।"*[1]

18 इसराएलियों की पूरी मंडली
शीलो में इकट्ठा हुई[2] और उन्होंने
वहाँ पर भेंट का तंबू खड़ा किया।[3]
उस समय तक कनान देश उनके अधीन
हो चुका था।[4] 2 लेकिन अभी-भी सात
गोत्रों को विरासत की ज़मीन नहीं दी
गयी थी। 3 इसलिए यहोशू ने इसराए-
लियों से कहा, "यह देश जो तुम्हारे पुरखों
के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, तुम
कब तक इस पर पूरी तरह कब्ज़ा करने
में ढिलाई करोगे?[5] 4 हर गोत्र में से मेरे
लिए तीन आदमी चुनो। वे पूरे देश का
दौरा करें और इलाके की पूरी जानकारी
इकट्ठा करें ताकि इसे हर गोत्र में बाँटा जा
सके। इसके बाद वे मेरे पास आएँ।
5 वे देश को सात हिस्सों में बाँट दें।[6]
यहूदा का गोत्र दक्षिण में अपने इलाके
में ही रहेगा[7] और यूसुफ का घराना
उत्तर में अपने इलाके में।[8] 6 इसलिए
जाओ देश का दौरा करके उसे सात
हिस्सों में बाँटो और उसका नक्शा मेरे
पास लाओ। मैं हमारे परमेश्वर यहोवा
के सामने चिट्ठियाँ डालूँगा[9] कि कौन-सा
हिस्सा किसे मिलना चाहिए। 7 लेकिन
लेवियों को तुम्हारे बीच कोई हिस्सा नहीं
दिया जाएगा।[10] क्योंकि मंदिर में यहोवा
की सेवा करना* ही उनकी विरासत
है।[11] गाद, रूबेन और मनश्शे के आधे
गोत्र[12] को यहोवा के सेवक मूसा ने यर-
दन के पूरब में उनके हिस्से की ज़मीन
पहले ही दे दी थी।"

8 तब उन आदमियों ने जाने की
तैयारी की। यहोशू ने उन्हें आज्ञा दी, "पूरे
देश का दौरा करो और इलाके की पूरी
जानकारी लेकर आओ। फिर मैं शीलो में
यहोवा के सामने तुम लोगों के लिए
चिट्ठियाँ डालूँगा।"[1] 9 तब वे आदमी
निकल पड़े। उन्होंने पूरे देश का दौरा
किया और दस्तावेज़ में लिखा कि वहाँ
कौन-कौन-से शहर हैं। उन्होंने देश
को सात हिस्सों में बाँटा। इसके बाद
वे शीलो की छावनी में यहोशू के पास लौट
आए। 10 तब यहोशू ने शीलो में यहोवा
के सामने इसराएलियों के लिए चिट्ठियाँ
डालीं[2] और उन्हें उनके हिस्से की ज़मीन
बाँटी।[3]

11 पहली चिट्ठी बिन्यामीन गोत्र के
नाम निकली। उनके घरानों को जो
इलाका दिया गया, वह यहूदा[4] और
यूसुफ के इलाकों के बीच पड़ता था।[5]
12 उनकी उत्तरी सरहद यरदन से शुरू
होती थी और यरीहो[6] की उत्तरी ढलान
से होते हुए पश्चिम की तरफ ऊपर पहाड़
पर निकलती थी। फिर बेत-आवेन[7] के
पास वीराने को जाती थी। 13 वहाँ से
यह सरहद बढ़ती हुई लूज यानी बेतेल[8]
की दक्षिणी ढलान तक पहुँचती थी।
फिर पहाड़ पर बसे अतारोत-अद्दार[9] तक
जाती थी, जो निचले बेत-होरोन[10] के
दक्षिण में पड़ता था। 14 बेत-होरोन के
सामने के पहाड़ से यह सरहद दक्षिण की
तरफ मुड़ती थी और किरयत-बाल यानी
किरयत-यारीम[11] पर खत्म होती थी, जो
यहूदा का शहर था। यह बिन्यामीन गोत्र
की पश्चिमी सरहद थी।

15 दक्षिण में उनकी सरहद किरयत-
यारीम के छोर से शुरू होकर पश्चिम की
तरफ जाती थी। यह नेप्तोह के सोते[12]
पर भी जाती थी। 16 फिर यह सरहद

अध्य. 17

1 व्य 20:1, व्य 31:6, यह 13:6, नीत 21:31

अध्य. 18

2 यह 19:51, यह 22:9, न्या 21:19
3 1शम 1:3, 1शम 4:3, भज 78:60, यिर्म 7:12, प्रेष 7:44, 45
4 गि 14:8, व्य 7:22, व्य 33:29
5 गि 33:53, 55
6 गि 34:13, यह 19:51
7 यह 15:1
8 यह 16:1, 4
9 गि 26:55, गि 33:54, यह 14:2, नीत 16:33, प्रेष 13:19
10 गि 18:20, यह 13:33
11 व्य 10:9, व्य 18:1
12 व्य 3:12, 13

दूसरा कॉल.

1 यह 19:51, न्या 21:19
2 नीत 16:33
3 गि 33:54, प्रेष 13:19
4 यह 15:1
5 यह 16:1
6 यह 2:1, यह 16:1
7 यह 7:2
8 उत 28:18, 19
9 यह 16:5
10 यह 10:11, यह 21:20, 22
11 यह 15:9
12 यह 15:9, 12

17:18 *शा., "लोहे के रथ क्यों न हों।"
18:7 *या "यहोवा के याजकों के तौर पर सेवा करना।"

रपाई[1] घाटी के उत्तरी छोर पर पहाड़ के
नीचे तक जाती थी। इस पहाड़ के सामने
‘हिन्नोम के वंशजों की घाटी’[2] थी। पहाड़
से यह सरहद हिन्नोम घाटी में उतरती थी
और यबूसी[3] शहर की दक्षिणी ढलान से
होकर नीचे एन-रोगेल[4] तक जाती थी।
17 वहाँ से यह उत्तर की तरफ एन-
शेमेश को जाती थी और गलीलोत पर
निकलती थी जो अदुम्मीम की चढ़ाई के
सामने था।[5] यह सरहद बोहन के पत्थर[6]
पर पहुँचती थी। बोहन, रूबेन का वंशज
था। **18** फिर यह सरहद अराबा के
सामने उत्तरी ढलान से होते हुए नीचे
अराबा की ओर जाती थी। **19** वहाँ
से यह बेत-होग्ला[7] की उत्तरी ढलान से
आगे बढ़ते हुए लवण सागर* की उत्तरी
खाड़ी और यरदन के दक्षिणी मुहाने पर
खत्म होती थी।[8] यह उनकी दक्षिणी सर-
हद थी। **20** उनकी पूर्वी सरहद यरदन
थी। यह बिन्यामीन के वंशजों के घराने
का इलाका और उसके चारों तरफ की
सरहद थी। यही इलाका उनकी विरासत
ठहरा।

21 बिन्यामीन गोत्र के घरानों को
ये शहर मिले: यरीहो, बेत-होग्ला,
एमेक-कसीस, **22** बेत-अराबा,[9] समा-
रैम, बेतेल,[10] **23** अव्वीम, पारा,
ओप्रा, **24** कपर-अम्मोनी, ओप्नी और
गेबा,[11] 12 शहर और उनकी बस्तियाँ।
25 गिबोन,[12] रामाह, बएरोत,
26 मिसपे, कपीरा, मोसाह, **27** रेकेम,
यिरपेल, तरला, **28** सेला,[13] एलेप,
यबूसी शहर यानी यरूशलेम,[14] गिबा[15]
और किरयत, 14 शहर और उनकी
बस्तियाँ।

यह बिन्यामीन के वंशजों के सारे
घरानों की विरासत थी।

18:19 *यानी मृत सागर।

19 फिर दूसरी चिट्ठी[1] शिमोन गोत्र[2]
के घरानों के नाम निकली और
उन्हें यहूदा के इलाके में ही विरासत की
ज़मीन दी गयी।[3] **2** उनके हिस्से में ये
जगह आयीं: शीबा के साथ बेरशेबा,[4]
मोलादा,[5] **3** हसर-शूआल,[6] बालाह,
एसेम,[7] **4** एलतोलद,[8] बतूल, होरमा,
5 सिकलग,[9] बेत-मरकाबोत, हसर-
सूसा, **6** बेत-लबाओत[10] और शारू-
हेन, 13 शहर और उनकी बस्तियाँ;
7 ऐन, रिम्मोन, एतेर और आशान,[11]
चार शहर और उनकी बस्तियाँ; **8** इन
शहरों के आस-पास और बालात-बेर या
दक्षिण के रामाह तक जितनी भी बस्तियाँ
थीं, उन्हें मिलीं। यह शिमोन गोत्र के सारे
घरानों की विरासत थी। **9** उन्हें यह
विरासत यहूदा के हिस्से से दी गयी थी।
क्योंकि यहूदा का इलाका उसके लोगों के
लिए बहुत बड़ा था। इस तरह शिमोन के
वंशजों को यहूदा के इलाके में ही ज़मीन
मिली।[12]

10 तीसरी चिट्ठी[13] जबूलून के
वंशजों[14] के घरानों के नाम निकली।
उनकी सरहद सारीद तक थी।
11 उनकी सरहद पश्चिम में मरला और
दब्बेशेत को जाती थी और फिर योक-
नाम के सामनेवाली घाटी तक पहुँचती
थी। **12** सारीद से यह सरहद पूरब
में किसलोत-ताबोर की सीमा को छूते
हुए दाबरात[15] पर निकलती थी और
फिर यापी तक जाती थी। **13** वहाँ से
आगे बढ़ती हुई यह पूरब में गत-हेपेर[16]
और एत-कासीन को जाती थी। फिर
रिम्मोन पर निकलकर नेआ तक पहुँच-
ती थी। **14** उत्तर में यह सरहद हन्ना-
तोन की तरफ मुड़ती थी और यिफ-
तह-एल घाटी में जाकर खत्म होती थी।
15 इसके अलावा कत्तात, नहलाल,

अध्य. 18
1 व्य 2:11
2 यह 15:8, 12; यिर्म 7:31; यिर्म 19:2; मत 5:22
3 यह 15:63
4 यह 15:7, 12; 1रा 1:9
5 यह 15:7, 12
6 व्य 19:14; यह 15:6, 12
7 यह 15:6, 12
8 गि 34:12
9 यह 15:6, 12
10 उत 12:8; 1रा 12:28, 29
11 यह 21:8, 17
12 यह 9:16, 17; 1रा 3:4
13 2शम 21:14
14 यह 15:8, 12; 1इत 11:4; 2इत 3:1
15 1शम 10:26

दूसरा कॉल.

अध्य. 19
1 यह 18:6
2 उत 46:10
3 उत 49:5, 7
4 उत 21:31; उत 26:32, 33; यह 15:21, 28
5 यह 15:21, 26; 1इत 4:28-31
6 यह 15:21, 28
7 यह 15:20, 29
8 यह 15:21, 30
9 यह 15:21, 31; 1शम 27:6
10 यह 15:21, 32
11 यह 15:20, 42; 1इत 4:24, 32; 1इत 6:59, 64
12 न्या 1:3
13 यह 18:6
14 उत 49:13
15 यह 21:27, 28
16 2रा 14:25

शिमरोन,[1] यिदला और बेतलेहेम[2] भी
उन्हें दिया गया। कुल मिलाकर 12 शहर
और उनकी बस्तियाँ। **16** ये शहर और
उनकी बस्तियाँ जबूलून के सारे घरानों[3]
की विरासत थी।

17 चौथी चिट्ठी[4] इस्साकार[5] के
वंशजों के घरानों के नाम निकली।
18 उनकी सरहद पर ये जगह थीं: यिज-
रेल,[6] कसुल्लोत, शूनेम,[7] **19** हपा-
रैम, शीओन, अनाहरत, **20** रब्बीत,
किश्योन, एबेस, **21** रेमेत, एन-
गन्नीम,[8] एनहद्दा और बेत-पस्सेस।
22 फिर उनकी सरहद ताबोर,[9] शह-
सूमा और बेत-शेमेश से होते हुए यर-
दन पर खत्म होती थी। कुल मिलाकर
16 शहर और उनकी बस्तियाँ। **23** ये
शहर और उनकी बस्तियाँ इस्साकार गोत्र
के सारे घरानों[10] की विरासत थी।

24 पाँचवीं चिट्ठी[11] आशेर[12] गोत्र
के घरानों के नाम निकली। **25** उनकी
सरहद पर ये जगह थीं: हेलकत,[13]
हली, बेतेन, अक्षाप, **26** अल्लाम-
मेलेक, अमाद और मिशाल। यह सरहद
पश्चिम की तरफ करमेल[14] और शीहोर-
लिबनात तक जाती थी। **27** यह सर-
हद पूरब की ओर बेत-दागोन को जाती
थी और जबूलून की सीमा को छूते हुए
यिफतह-एल घाटी के उत्तर में जाती
थी। वहाँ से यह बेत-एमेक और नीएल
पर निकलती और आगे बढ़ती हुई काबूल
के बायीं तरफ पहुँचती थी। **28** और
यह एबरोन, रहोब, हम्मोन, कानाह
और महानगर सीदोन[15] तक जाती थी।
29 फिर यह रामाह की तरफ जाती
थी और मज़बूत गढ़वाले शहर सोर[16]
तक पहुँचती थी। यह होसा की तरफ
बढ़ती हुई सागर पर खत्म होती थी,
जिसके आस-पास अकजीब, **30** उम्मा,
अपेक[1] और रहोब[2] थे। कुल मिलाकर
22 शहर और उनकी बस्तियाँ। **31** ये
शहर और उनकी बस्तियाँ आशेर गोत्र के
सारे घरानों[3] की विरासत थी।

32 छठी चिट्ठी[4] नप्ताली के वंशजों के
घरानों के नाम निकली। **33** उनकी सर-
हद हेलेप और सानन्नीम में बड़े पेड़[5] से
लेकर अदामी-नेकेब तक और यब्नेल से
होकर लक्कूम तक जाती थी और यर-
दन पर खत्म होती थी। **34** फिर
यह सरहद पश्चिम की तरफ अजनोत-
ताबोर तक जाती थी और वहाँ से
बढ़ती हुई हुक्कोक और दक्षिण में जबू-
लून तक पहुँचती थी। नप्ताली के इलाके
की पश्चिमी सीमा आशेर तक जाती
थी। और पूर्वी सीमा यरदन के पास
यहूदा* तक। **35** उनके मज़बूत गढ़-
वाले शहर ये थे: सिद्दीम, सेर, हम्मत,[6]
रक्कत, किन्नेरेत, **36** अदामा, रामाह,
हासोर,[7] **37** केदेश,[8] एदरेई, एन-
हासोर, **38** यिरोन, मिग-दलेल, होरेम,
बेतनात और बेत-शेमेश।[9] कुल मिलाकर
19 शहर और उनकी बस्तियाँ। **39** ये
शहर और उनकी बस्तियाँ नप्ताली गोत्र
के सारे घरानों[10] की विरासत थी।

40 सातवीं चिट्ठी[11] दान[12] गोत्र के
घरानों के नाम निकली। **41** उनकी
सरहद पर ये जगह थीं: सोरा,[13] एशता-
ओल, ईरशेमेश, **42** शालब्बीन,[14]
अय्यालोन,[15] यितला, **43** एलोन,
तिमना,[16] एक्रोन,[17] **44** एल-तके,
गिब्बतोन,[18] बालात, **45** यहूद, बने-
बराक, गत-रिम्मोन,[19] **46** मे-यरकोन
और रक्कोन। यह सरहद याफा[20] के
सामने से होकर जाती थी। **47** लेकिन

अध्य. 19
1 यह 12:7, 20
2 न्या 12:8
3 गि 26:27
4 गि 33:54
5 उत 49:14
6 यह 17:16; न्या 6:33; 1रा 21:1
7 1शम 28:4; 1रा 1:3; 2रा 4:8
8 यह 21:8, 29
9 न्या 4:6
10 गि 26:25
11 गि 26:55; यह 18:6
12 उत 49:20
13 यह 21:8, 31
14 1रा 18:19
15 उत 10:15; न्या 1:31
16 2शम 5:11; 1रा 5:1

दूसरा कॉल.
1 न्या 1:31
2 यह 21:8, 31
3 गि 26:47
4 गि 26:55; यह 18:6
5 न्या 4:11
6 यह 21:32
7 यह 11:10; न्या 4:2; 1शम 12:9
8 यह 20:7
9 न्या 1:33
10 गि 26:50
11 यह 18:6
12 उत 49:17
13 यह 15:20, 33; न्या 13:2
14 न्या 1:35
15 यह 10:12; यह 21:8, 24
16 न्या 14:1
17 यह 15:20, 45
18 यह 21:8, 23
19 यह 21:8, 24
20 यो 1:3; प्रेष 9:36

19:34 *ज़ाहिर है कि यहाँ यहूदा गोत्र की नहीं बल्कि उस आदमी के घराने की बात की गयी है जो यहूदा गोत्र से था।

दान का इलाका उनके लिए कम पड़ रहा था।[1] इसलिए उन्होंने जाकर लेशेम[2] पर हमला बोला और उसके लोगों को तल-वार से मार डाला। फिर उन्होंने उस पर कब्ज़ा किया और उसमें बस गए। उन्होंने लेशेम का नाम बदलकर दान रखा जो उनके पुरखे का नाम था।[3] 48 ये शहर और उनकी बस्तियाँ दान गोत्र के सारे घरानों की विरासत थी।

49 इस तरह उन्होंने देश को बाँटने और इसराएलियों को अपनी-अपनी विरासत की ज़मीन देने का काम पूरा किया। फिर इसराएलियों ने अपने बीच नून के बेटे यहोशू को उसके हिस्से की ज़मीन दी। 50 यहोवा के हुक्म पर उन्होंने यहोशू को वह शहर दिया जो उसने माँगा था। उसे एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में तिमनत-सेरह[4] दिया गया और यहोशू उस शहर को दोबारा बनाकर उसमें रहने लगा।

51 यह सब विरासत की वह ज़मीन थी जिसे याजक एलिआज़र, नून के बेटे यहोशू और इसराएल के सभी गोत्र के कुलों के मुखियाओं ने शीलो[5] में यहोवा के सामने, भेंट के तंबू के द्वार[6] पर चिट्ठियाँ डालकर बाँटा था।[7] इस तरह उन्होंने देश को बाँटने का काम खत्म किया।

20 फिर यहोवा ने यहोशू से कहा, 2 “इसराएलियों को बता कि जैसा मैंने मूसा से कहलवाया था, वे अपने लिए शरण नगर[8] चुन लें 3 ताकि जो इंसान अनजाने में या गलती से किसी का खून कर दे, वह इन नगरों में भाग सके। वहाँ उसे खून का बदला लेनेवाले से हिफाज़त मिलेगी।[9] 4 उसे उन नगरों में से किसी एक में भागना होगा[10] और नगर के फाटक पर[11] आकर वहाँ के मुखि-याओं के सामने अपना मामला पेश करना होगा। तब वे उसे नगर में ले लेंगे और उसे रहने की जगह देंगे और वह उनके साथ रहेगा। 5 अगर खून का बदला लेनेवाला उसका पीछा करते हुए वहाँ आता है, तो मुखिया उस आदमी को बदला लेनेवाले के हाथ में नहीं सौंपेंगे क्योंकि उसने अनजाने में अपने साथी का खून किया था, न कि नफरत की वजह से।[1] 6 उसे उसी नगर में रहना होगा जब तक कि वह मंडली के सामने मुकद-मे के लिए पेश नहीं होता।[2] और निर्दोष साबित होने के बाद भी उसे नगर में तब तक रहना होगा जब तक महायाजक की मौत नहीं हो जाती।[3] इसके बाद वह चाहे तो अपने शहर और अपने घर लौट सकता है जहाँ से वह भागा था।”[4]

7 इसलिए इसराएलियों ने ये सभी नगर अलग* ठहराए: नप्ताली के पहाड़ी प्रदेश में गलील का केदेश,[5] एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में शेकेम[6] और यहूदा के पहाड़ी प्रदेश में किरयत-अरबा[7] यानी हेब्रोन। 8 यरीहो के पास यरदन के पूरब में उन्होंने ये नगर चुने: रूबेन गोत्र के पठारी इलाके के वीराने में बेसेर,[8] गाद गोत्र के गिलाद में रामोत[9] और मनश्शे गोत्र के बाशान में गोलान।[10]

9 ये वे नगर थे जो इसराएलियों और उनके बीच रहनेवाले परदेसियों के लिए चुने गए ताकि अगर कोई अनजाने में किसी का खून कर दे, तो वह भागकर इन नगरों में शरण ले सके[11] और मंडली के सामने मुकदमे के लिए पेश होने से पहले, खून का बदला लेनेवाला उसे मार न डाले।[12]

21 लेवियों के घरानों के मुखियाओं ने याजक एलिआज़र,[13] नून के बेटे यहोशू और इसराएल गोत्र के कुलों

20:7 *या “पवित्र।”

अध्य. 19
1 गि 26:54, गि 33:54
2 न्या 18:7
3 न्या 18:29
4 यह 24:29, 30
5 न्या 21:19, यिर्म 7:12
6 यह 18:1, 8
7 गि 34:17, यह 14:1

अध्य. 20
8 निर्ग 21:12, 13, गि 35:14, 15, व्य 4:41
9 उत 9:6, निर्ग 21:23, गि 35:26, 27
10 व्य 19:3
11 नीत 31:23

दूसरा कॉल.
1 गि 35:22-24, व्य 19:4-6
2 गि 35:12, 24
3 गि 35:25
4 गि 35:28
5 यह 21:32
6 उत 33:18, यह 21:20, 21
7 यह 14:15, यह 21:13
8 यह 21:8, 36, 1इत 6:77, 78
9 यह 21:8, 38, 1इत 6:77, 80
10 व्य 4:41-43, यह 21:27, 1इत 6:71
11 गि 35:11, 15
12 गि 35:12, 24, व्य 21:5

अध्य. 21
13 गि 34:17

के मुखियाओं के पास 2 कनान देश के
शीलो[1] में आकर उनसे कहा, “यहोवा ने
मूसा के ज़रिए आज्ञा दी थी कि हमें
रहने के लिए शहर दिए जाएँ और
हमारे जानवरों के लिए चरागाह दिए
जाएँ।”[2] 3 यहोवा के आदेश के मुता-
बिक इसराएलियों ने अपनी विरासत की
ज़मीन में से लेवियों को शहर[3] और चरा-
गाह दिए।[4]

4 पहली चिट्ठी कहातियों के घरानों[5]
के नाम निकली। और उन लेवियों को
जो याजक हारून के वंशज थे, यहूदा,[6]
शिमोन[7] और बिन्यामीन के इलाके में से
13 शहर दिए गए।*[8]

5 बाकी कहातियों को एप्रैम[9] और
दान के और मनश्शे के आधे गोत्र के
इलाके में से दस शहर दिए गए।*[10]

6 गेरशोनियों[11] को इस्साकार,
आशेर और नप्ताली गोत्रों और बाशान में
रहनेवाले मनश्शे के आधे गोत्र के इलाके
में से 13 शहर दिए गए।[12]

7 मरारियों[13] को उनके घरानों के
हिसाब से रूबेन, गाद और जबूलून गोत्रों
के इलाके में से 12 शहर दिए गए।[14]

8 इस तरह इसराएलियों ने चिट्ठियाँ
डालकर लेवियों को शहर और उनके
चरागाह दिए, ठीक जैसा यहोवा ने मूसा
को आज्ञा दी थी।[15]

9 ये उन शहरों के नाम हैं जो उन्होंने
यहूदा और शिमोन गोत्रों के इलाके
से दिए।[16] 10 ये शहर हारून के बेटों
को मिले जो लेवी गोत्र के कहाती
घराने से थे क्योंकि पहली चिट्ठी उन्हीं
के नाम निकली थी। 11 इसराएलियों
ने उन्हें यहूदा के पहाड़ी प्रदेश में किरयत-
अरबा[17] (अरबा, अनाक का पिता था)

21:4, 5 * या “चिट्ठियाँ डालकर दिए गए।”

अध्य. 21

1 यह 18:1
2 लैव 25:33, 34; गि 35:2-4; यह 14:4
3 गि 35:8
4 उत 49:5, 7
5 उत 46:11; गि 3:27-31
6 1इत 6:54, 55
7 यह 19:1
8 1इत 6:60, 64
9 1इत 6:66
10 1इत 6:61, 70
11 निर्ग 6:17; गि 3:21, 22
12 गि 32:33; 1इत 6:62
13 निर्ग 6:19
14 1इत 6:63
15 गि 35:2, 5
16 1इत 6:64, 65
17 उत 23:2; उत 35:27; यह 15:13, 14; यह 20:7; न्या 1:10

यानी हेब्रोन[1] और उसके आस-पास के
चरागाह दिए। 12 मगर उन्होंने उस
शहर का खेत और उसकी बस्तियाँ यपुन्ने
के बेटे कालेब को दीं ताकि वे उसकी
जागीर बन जाएँ।[2]

13 याजक हारून के बेटों को हेब्रोन
और उसके चरागाह दिए गए। हेब्रोन[3]
खून के दोषी इंसान के लिए शरण नगर
था।[4] इसके अलावा उन्हें लिब्ना[5] और
उसके चरागाह, 14 यत्तीर[6] और उसके
चरागाह, एश्तमोआ[7] और उसके चरा-
गाह, 15 होलोन[8] और उसके चरागाह,
दबीर[9] और उसके चरागाह, 16 ऐन[10]
और उसके चरागाह, युत्ता[11] और
उसके चरागाह और बेत-शेमेश और
उसके चरागाह भी दिए गए। शिमोन
और यहूदा के इलाके में से उन्हें नौ
शहर मिले।

17 बिन्यामीन के इलाके में से उन्हें
ये शहर दिए गए: गिबोन[12] और उसके
चरागाह, गेबा और उसके चरागाह,[13]
18 अनातोत[14] और उसके चरागाह और
अल्मोन और उसके चरागाह; कुल चार
शहर।

19 हारून के वंशज जो याजक थे,
उन्हें कुल मिलाकर 13 शहर और उनके
चरागाह[15] दिए गए।

20 लेवी गोत्र में कहातियों के बाकी
घरानों के लिए चिट्ठियाँ डाली गयीं और
उन्हें एप्रैम गोत्र के इलाके में से शहर दिए
गए। 21 इसराएलियों ने उन्हें एप्रैम
के पहाड़ी प्रदेश में शेकेम और उसके
चरागाह दिए। शेकेम[16] खून के दोषी
इंसान के लिए शरण नगर था।[17] इसके
अलावा उन्हें गेजेर[18] और उसके चरा-
गाह, 22 किबसैम और उसके चरागाह
और बेत-होरोन[19] और उसके चरागाह
भी दिए गए; कुल चार शहर।

दूसरा कॉल.

1 2शम 2:1; 2शम 15:10; 1इत 6:54-56
2 न्या 1:20
3 यह 15:20, 54
4 गि 35:6, 15
5 यह 15:20, 42
6 यह 15:20, 48
7 यह 15:20, 50
8 यह 15:20, 51
9 यह 15:20, 49; 1इत 6:57, 58
10 यह 19:1, 7
11 यह 15:20, 55
12 यह 9:3; यह 18:21, 25
13 1इत 6:57, 60
14 यिर्म 1:1
15 लैव 25:33, 34; गि 35:4
16 यह 20:7; 1रा 12:1
17 गि 35:11, 15
18 यह 16:10
19 यह 16:1, 3; यह 18:11, 13

23 दान गोत्र के इलाके में से उन्हें एल-तके और उसके चरागाह, गिब्बतोन और उसके चरागाह, **24** अय्यालोन[1] और उसके चरागाह और गत-रिम्मोन और उसके चरागाह दिए गए; कुल चार शहर।

25 उन्हें मनश्शे के आधे गोत्र के इलाके में से तानाक[2] और उसके चरागाह और गत-रिम्मोन और उसके चरागाह दिए गए; कुल दो शहर।

26 कहातियों के बाकी घरानों को कुल मिलाकर दस शहर और उनके चरागाह मिले।

27 लेवियों के कुल में गेरशोनियों[3] को, मनश्शे के आधे गोत्र के इलाके में से (बाशान का) गोलान[4] और उसके चरागाह मिले। गोलान खून के दोषी इंसान के लिए शरण नगर था। इसके अलावा, उन्हें बेशतरा और उसके चरागाह भी मिले; कुल दो शहर।

28 इस्साकार गोत्र के इलाके में से[5] उन्हें किश्योन और उसके चरागाह, दाबरात[6] और उसके चरागाह, **29** यरमूत और उसके चरागाह और एन-गन्नीम और उसके चरागाह दिए गए; कुल चार शहर।

30 आशेर गोत्र के इलाके में से[7] उन्हें मिशाल और उसके चरागाह, अब्दोन और उसके चरागाह, **31** हेलकत[8] और उसके चरागाह और रहोब[9] और उसके चरागाह दिए गए; कुल चार शहर।

32 नप्ताली गोत्र के इलाके में उन्हें गलील में केदेश[10] और उसके चरागाह दिए गए। केदेश खून के दोषी इंसान के लिए शरण नगर था।[11] इसके अलावा, उन्हें हम्मोत-दोर और उसके चरागाह और करतान और उसके चरागाह दिए गए; कुल तीन शहर।

33 गेरशोनियों को उनके घरानों के हिसाब से कुल मिलाकर 13 शहर और उनके चरागाह दिए गए।

34 बाकी लेवियों को यानी मरारियों के घरानों[1] को जबूलून गोत्र के इलाके में से[2] योकनाम[3] और उसके चरागाह, कर्ता और उसके चरागाह, **35** दिम्ना और उसके चरागाह और नहलाल[4] और उसके चरागाह दिए गए; कुल चार शहर।

36 रूबेन गोत्र के इलाके में से उन्हें बेसेर[5] और उसके चरागाह, यहस और उसके चरागाह,[6] **37** कदेमोत और उसके चरागाह और मेपात और उसके चरागाह दिए गए; कुल चार शहर।

38 गाद गोत्र के इलाके में से[7] उन्हें गिलाद में रामोत और उसके चरागाह दिए गए। रामोत खून के दोषी इंसान के लिए शरण नगर था।[8] इसके अलावा उन्हें महनैम[9] और उसके चरागाह, **39** हेशबोन[10] और उसके चरागाह और याजेर[11] और उसके चरागाह दिए गए। कुल चार शहर।

40 लेवियों के बाकी घरानों यानी मरारियों को उनके घरानों के हिसाब से कुल मिलाकर 12 शहर दिए गए।

41 इसराएलियों के बीच लेवियों के हिस्से में कुल मिलाकर 48 शहर और उनके चरागाह आए।[12] **42** इनमें से हर शहर के आस-पास चरागाह था।

43 इस तरह यहोवा ने इसराएलियों को वह सारा देश दिया, जिसे देने का वादा उसने उनके पुरखों से किया था।[13] और इसराएलियों ने उस देश को अपने अधिकार में कर लिया और उसमें बस गए।[14] **44** जैसे यहोवा ने उनके पुरखों से वादा किया था,[15] उसने इसराएलियों को चारों तरफ से चैन दिया और उनका एक भी दुश्मन उनके खिलाफ

अध्य. 21

1 यह 10:12, न्या 1:35, 2इत 28:18
2 यह 17:11
3 यह 21:6
4 1इत 6:71
5 1इत 6:72, 73
6 यह 19:12, 16
7 1इत 6:74, 75
8 यह 19:25, 31
9 यह 19:28, 31, न्या 1:31
10 यह 20:7
11 गि 35:14, 15

दूसरा कॉल.

1 यह 21:7
2 1इत 6:77
3 यह 19:10, 11
4 न्या 1:30
5 व्य 4:41-43, यह 20:8
6 1इत 6:78, 79
7 1इत 6:80, 81
8 यह 20:8, 9, 1रा 22:3
9 उत 32:2, 2शम 2:8
10 गि 21:26, गि 32:37
11 गि 32:1
12 गि 35:5, 7
13 उत 13:14, 15, उत 15:18, उत 26:3, उत 28:4
14 निर्ग 23:30
15 निर्ग 33:14, व्य 12:10, यह 1:13, यह 11:23, यह 22:4

खड़ा न रह सका।[1] यहोवा ने उनके
सब दुश्‍मनों को उनके हाथ कर दिया।[2]
45 यहोवा ने इसराएल के घराने से
जितने भी बेहतरीन वादे किए थे वे सब-
के-सब पूरे हुए, एक भी वादा बिना पूरा
हुए नहीं रहा।[3]

22 फिर यहोशू ने रूबेनियों, गादियों
और मनश्‍शे के आधे गोत्र को
बुलाया 2 और उनसे कहा, "यहोवा के
सेवक मूसा ने तुम्हें जो-जो आज्ञाएँ दी
थीं,[4] उन सबका तुमने पालन किया
और तुमने मेरी बात भी मानी।[5]
3 तुमने अब तक अपने भाइयों का
साथ दिया[6] और अपने परमेश्‍वर यहोवा
की आज्ञाएँ मानकर अपना फर्ज़ अच्छी
तरह निभाया।[7] 4 अब तुम्हारे पर-
मेश्‍वर यहोवा ने तुम्हारे भाइयों को चैन
दिया है, ठीक जैसा उसने उनसे वादा
किया था।[8] इसलिए अब तुम घर लौट
जाओ, यरदन के उस पार * अपने इलाके
में लौट जाओ, जो यहोवा के सेवक मूसा
ने तुम्हें दिया था।[9] 5 मगर हाँ, इस
बात का ध्यान रखना कि तुम उस आज्ञा
और कानून को मानते रहो, जो यहोवा के
सेवक मूसा ने तुम्हें दिया था।[10] यानी तुम
अपने परमेश्‍वर यहोवा से प्यार करना,[11]
उसकी बतायी सब राहों पर चलना,[12]
उसके नियमों का पालन करना,[13] उससे
लिपटे रहना[14] और पूरे दिल और पूरी
जान से उसकी सेवा करना।"[15]

6 इसके बाद, यहोशू ने उन्हें आशीर्वाद
दिया और उन्हें रवाना किया। वे अपने-
अपने घर लौट गए। 7 मनश्‍शे के आधे
गोत्र को मूसा ने बाशान में विरासत की
ज़मीन दी थी[16] जबकि बाकी आधे गोत्र
को यहोशू ने यरदन के पश्‍चिम में उनके
इसराएली भाइयों के साथ ज़मीन दी।[1]
यही नहीं, यहोशू ने उन्हें घर भेजते वक्‍त
आशीर्वाद दिया 8 और उनसे कहा,
"अपने डेरों में वापस लौट जाओ और
अपने साथ बेशुमार दौलत, ढेर सारे
मवेशी, सोना-चाँदी, ताँबा, लोहा और
बहुत सारे कपड़े ले जाओ।[2] दुश्‍मनों से
लूटा गया यह माल तुम अपने भाइयों के
साथ बाँट लेना।"[3]

9 इसके बाद रूबेनी, गादी और
मनश्‍शे के आधे गोत्र ने कनान के
शीलो में अपने इसराएली भाइयों से विदा
ली। वे गिलाद के लिए निकल पड़े[4] जो
उनकी विरासत की ज़मीन थी और जिसमें
बसने का आदेश यहोवा ने मूसा के ज़रिए
उन्हें दिया था।[5] 10 जब रूबेनी, गादी
और मनश्‍शे का आधा गोत्र कनान के
इलाके में यरदन के पास पहुँचा, तो
उन्होंने वहाँ एक बड़ी और शानदार वेदी
बनायी। 11 बाद में बाकी इसराएलियों
ने यह खबर सुनी,[6] "इसराएलियों के
इलाके में रूबेनियों, गादियों और मनश्‍शे
के आधे गोत्र ने यरदन के पास, कनान
की सीमा पर एक वेदी खड़ी की है।"
12 इस पर इसराएल की पूरी मंडली
शीलो में इकट्ठा हुई[7] कि उनसे युद्ध करने
के लिए जाए।

13 तब इसराएलियों ने एलिआज़र
के बेटे याजक फिनेहास[8] को गिलाद
के इलाके में रूबेनियों, गादियों और
मनश्‍शे के आधे गोत्र के पास भेजा।
14 फिनेहास के साथ दस प्रधान भी गए,
हर गोत्र से एक प्रधान। ये सभी अपने-
अपने पिता के कुल के मुखिया थे, जो
कुल हज़ारों इसराएलियों से मिलकर बना
था।[9] 15 जब वे रूबेनियों, गादियों
और मनश्‍शे के आधे गोत्र के पास गिलाद
में आए तो उन्होंने कहा,

अध्य. 21
1 व्य 28:7
2 व्य 7:24
व्य 31:3
3 यह 23:14
1रा 8:56
इब्र 6:18

अध्य. 22
4 गि 32:20-22
व्य 3:18
5 यह 1:16
6 यह 11:18
7 गि 32:25-27
8 यह 21:44
9 गि 32:33
10 व्य 6:6
व्य 12:32
2रा 21:8
11 व्य 6:5
व्य 11:1
मत 22:37
12 व्य 10:12
13 व्य 13:4
1यूह 5:3
14 व्य 4:4
व्य 10:20
यह 23:8
15 व्य 4:29
व्य 6:13
व्य 11:13
यह 24:15
मर 12:30, 33
लूक 4:8
16 यह 13:29, 30

दूसरा कॉल.
1 यह 17:5
2 व्य 28:8
3 गि 31:27
4 गि 32:1
5 गि 32:33
6 व्य 13:12-15
7 यह 18:1
यह 19:51
8 निर्ग 6:25
गि 25:11
न्या 20:28
9 गि 1:16
व्य 1:13

22:4 *यानी पूरब में।

16 “यहोवा की सारी मंडली कह रही
है कि तुमने इसराएल के परमेश्‍वर यहोवा
के साथ यह कैसा विश्‍वासघात किया?[1]
तुमने वेदी खड़ी करके दिखाया है कि तुम
बागी हो और यहोवा के पीछे नहीं चलना
चाहते।[2] 17 क्या पोर में हमने जो पाप
किया वह कम था? भूल गए, यहोवा की
मंडली पर कितना बड़ा कहर टूटा था!
आज तक हम उसका अंजाम भुगत रहे
हैं।[3] 18 तुम यहोवा के पीछे चलना
छोड़कर अच्छा नहीं कर रहे हो। अगर
आज तुमने यहोवा से बगावत की, तो
कल इसराएल की पूरी मंडली पर उसका
क्रोध भड़क उठेगा।[4] 19 अगर तुम्हें
लगता है कि तुम्हारा इलाका अशुद्ध है,
तो इस पार यहोवा के इलाके में आओ[5]
जहाँ यहोवा का पवित्र डेरा है[6] और हमारे
साथ बस जाओ। मगर यहोवा के खिलाफ
बगावत मत करो, न ही परमेश्‍वर यहोवा
की वेदी के अलावा कोई दूसरी वेदी बना-
कर हमें उसके सामने बागी बनाओ।[7]
20 याद है, जब जेरह के बेटे आकान[8]
ने नाश के लायक ठहरायी चीज़ें चुराकर
आज्ञा तोड़ी, तो परमेश्‍वर का क्रोध इस-
राएल की पूरी मंडली पर कितना भड़क
उठा था।[9] उसके गुनाह की वजह से न
सिर्फ उसे बल्कि दूसरों को भी अपनी जान
गँवानी पड़ी।”[10]

21 तब रूबेनियों, गादियों और
मनश्‍शे के आधे गोत्र ने उन आद-
मियों से, जो हज़ारों इसराएलियों से बने
अलग-अलग कुल के मुखिया थे, कहा,[11]
22 “सब ईश्‍वरों से महान ईश्‍वर यहोवा!
हाँ, सब ईश्‍वरों से महान ईश्‍वर यहोवा[12]
जानता है कि सच क्या है और सारा
इसराएल भी जान जाएगा। अगर
हमने सचमुच यहोवा से बगावत की है,
उससे विश्‍वासघात किया है तो वह हमें न
बचाए। 23 अगर हमने यहोवा से मुँह
मोड़ने के लिए यह वेदी खड़ी की है और
इस इरादे से इसे बनाया है कि हम उस
पर होम-बलियाँ, अनाज का चढ़ावा और
शांति-बलियाँ चढ़ाएँ, तो यहोवा हमें सज़ा
दे।[1] 24 मगर भाइयो, हमने यह वेदी
इसलिए बनायी है क्योंकि हमें डर था कि
कहीं आगे चलकर तुम्हारे बेटे हमारे बेटों
से यह न कहें कि ‘इसराएल के परमेश्‍वर
यहोवा से तुम्हारा क्या वास्ता? 25 हे
रूबेनियो और गादियो, यहोवा ने हमारे
और तुम्हारे बीच यरदन को सीमा ठह-
राया है। यहोवा से तुम्हारा कोई लेना-देना
नहीं।’ यह कहकर कहीं तुम्हारे बेटे हमारे
बेटों को यहोवा की उपासना करने* से न
रोक दें।

26 इसलिए हमने सोचा कि हम एक
वेदी बनाएँ। होम-बलियाँ या बलिदान
चढ़ाने के लिए नहीं, 27 बल्कि इस-
लिए कि यह हमारे और तुम्हारे बीच और
हमारी आनेवाली पीढ़ियों के बीच एक
गवाह ठहरे[2] कि हम यहोवा की सेवा
करते रहेंगे और उसके लिए होम-बलियाँ,
शांति-बलियाँ और दूसरे बलिदान चढ़ाते
रहेंगे।[3] कहीं ऐसा न हो कि आगे
चलकर तुम्हारे बेटे हमारे बेटों से कहें,
‘यहोवा से तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं।’
28 हमने सोचा कि अगर वे कभी हमसे
या हमारे बच्चों से ऐसा कहें तो हम
उनसे कहेंगे, ‘यह वेदी देखो जो बिल-
कुल यहोवा की वेदी जैसी दिखती है और
जिसे हमारे पुरखों ने बनाया था। उन्होंने
इसे होम-बलियाँ या बलिदान चढ़ाने के
लिए नहीं बनाया था, यह तो इस बात
की निशानी है कि हमारा तुमसे रिश्‍ता
है।’ 29 हम अपने परमेश्‍वर यहोवा से

22:25 *शा., “का डर मानने।”

अध्य. 22
1 यह 22:11, 12
2 व्य 12:13, 14
3 गि 25:3, 9; व्य 4:3
4 यह 7:1; 1इत 21:14
5 गि 34:2; यह 1:11
6 यह 18:1
7 व्य 12:13, 14
8 यह 7:1
9 यह 7:11, 15
10 यह 7:5; यह 7:24, 25
11 यह 22:13, 14
12 व्य 10:17

दूसरा कॉल.
1 व्य 12:11, 13
2 उत 31:48; यह 24:27
3 व्य 12:5, 6

बगावत करने और उससे मुँह मोड़ने की
सोच भी नहीं सकते![1] जब यहोवा के
पवित्र डेरे के सामने उसकी वेदी पहले से
मौजूद है, तो भला हम दूसरी वेदी बना-
कर उस पर यहोवा के लिए होम-बलियाँ,
अनाज का चढ़ावा और दूसरे बलिदान
कैसे चढ़ा सकते हैं?”[2]

30 जब याजक फिनेहास और मंडली
के प्रधानों ने, जो हज़ारों इसराएलियों
से बने अलग-अलग कुल के मुखिया थे
रूबेन, गाद और मनश्शे के वंशजों की
यह बात सुनी तो उन्हें तसल्ली हुई।[3]
31 फिर एलिआज़र के बेटे याजक फिने-
हास ने रूबेन, गाद और मनश्शे के
वंशजों से कहा, “आज हमें यकीन हो
गया है कि यहोवा हमारे बीच है क्योंकि
तुमने यहोवा से विश्वासघात नहीं किया।
अब यहोवा हम इसराएलियों को सज़ा
नहीं देगा।”

32 इसके बाद, एलिआज़र का बेटा
याजक फिनेहास और सभी प्रधान,
गिलाद के इलाके में रूबेनियों और
गादियों के पास से लौटकर कनान आए।
उन्होंने बाकी इसराएलियों को सारा
हाल कह सुनाया। **33** यह खबर सुन-
कर इसराएली खुश हुए और उन्होंने पर-
मेश्वर की बड़ाई की। उन्होंने रूबेनियों
और गादियों से युद्ध करने और उनके
इलाकों को तबाह करने का विचार छोड़
दिया।

34 इस तरह रूबेनियों और गादियों ने
उस वेदी* को एक नाम दिया और कहा,
“यह वेदी हम सबके लिए इस बात
की गवाह है कि यहोवा ही सच्चा पर-
मेश्वर है।”

22:34 *आस-पास की आयतों से ऐसा मालूम होता है कि उस वेदी का नाम शायद “गवाह” रखा गया।

अध्य. 22
1 व्य 6:14
2 व्य 12:14
3 यह 22:13, 14

दूसरा कॉल.

अध्य. 23
1 निर्ग 33:14, लैव 26:6, यह 21:44
2 यह 13:1
3 व्य 16:18
4 व्य 31:28
5 व्य 20:4, यह 10:11-14, यह 10:40, 42
6 व्य 7:1
7 यह 13:2-6, यह 18:10
8 निर्ग 23:30, निर्ग 33:2, व्य 11:23
9 गि 33:53
10 निर्ग 24:7, व्य 17:18, व्य 31:26
11 व्य 5:32, व्य 12:32, यह 1:7, 8
12 निर्ग 23:33, व्य 7:2
13 निर्ग 23:13
14 निर्ग 20:5
15 व्य 10:20, यह 22:5

23

यहोवा ने इसराएल को उसके
आस-पास के सभी दुश्मनों से
महफ़ूज़ रखा और उन्हें चैन दिलाया।[1]
अब बहुत दिन बीत चुके थे। यहोशू बूढ़ा
हो चला था और उसकी उम्र ढल चुकी
थी।[2] **2** उसने सभी इसराएलियों को,
उनके मुखियाओं, प्रधानों, न्यायियों और
अधिकारियों[3] को इकट्ठा किया।[4] उसने
उनसे कहा, “अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ
और मेरी उम्र ढल चुकी है। **3** तुमने
खुद अपनी आँखों से देखा कि तुम्हारे पर-
मेश्वर यहोवा ने तुम्हारी खातिर दुश्मन
राष्ट्रों के साथ क्या-क्या किया। हाँ,
यहोवा ही तुम्हारी तरफ से लड़ रहा था।[5]
4 यरदन से पश्चिम में महासागर* तक
जितने भी राष्ट्र थे, उन्हें मैंने खदेड़ दिया[6]
और उनका देश तुम्हें दिया।#[7] हालाँकि
कुछ अभी-भी रह गए हैं लेकिन यह देश
तुम्हारा है। **5** तुम्हारे परमेश्वर यहोवा
ने ही तुम्हारे सामने से उन्हें खदेड़ा[8] और
उन्हें यहाँ से निकाला और तुमने उनके
देश को अपने अधिकार में कर लिया,
ठीक जैसा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने
तुमसे वादा किया था।[9]

6 अब तुम्हें मूसा के कानून की
किताब में लिखी सारी बातों का पालन
करने[10] और उस पर चलने के लिए
हिम्मत दिखानी होगी। तुम इससे न तो
दाएँ मुड़ना न बाएँ,[11] **7** न ही उन राष्ट्रों
के लोगों के साथ मेल-जोल रखना[12] जो
तुम्हारे बीच रहते हैं। तुम न तो उनके
देवताओं के नाम पुकारना,[13] न ही
उनकी कसम खाना। तुम उनकी उपासना
न करना और न ही उनके सामने दंडवत
करना।[14] **8** इसके बजाय तुम अपने
परमेश्वर यहोवा से लिपटे रहना,[15]

23:4 *यानी भूमध्य सागर। #या “चिट्ठियाँ डालकर बाँटा।”

जैसा तुम आज तक करते आए हो। 9 यहोवा तुम्हारे सामने से बड़े और शक्तिशाली राष्ट्रों को निकाल देगा[1] क्योंकि आज तक तुम्हारे सामने एक भी आदमी नहीं टिक पाया।[2] 10 तुम्हारा एक आदमी उनके हज़ार आदमियों को खदेड़ देगा[3] क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी तरफ से लड़ेगा,[4] जैसा उसने तुमसे वादा किया था।[5] 11 इसलिए तुम हमेशा इस बात का ध्यान रखना[6] कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा से प्यार करते रहो।[7]

12 लेकिन अगर तुम परमेश्वर को छोड़ दोगे और उन राष्ट्रों के लोगों से मिल जाओगे जो तुम्हारे बीच रह गए हैं,[8] उनसे शादी करके रिश्तेदारी करोगे[9] और मेल-जोल रखोगे 13 तो जान लो, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा इन राष्ट्रों को तुम्हारे लिए फिर नहीं खदेड़ेगा।[10] वे तुम्हारे लिए फंदा और जाल बन जाएँगे। वे तब तक तुम्हारी पीठ पर कोड़ों की तरह बरसेंगे[11] और तुम्हारी आँखों में काँटों की तरह चुभेंगे, जब तक कि तुम इस बढ़िया देश से मिट नहीं जाते जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है।

14 देखो, अब मैं ज़्यादा दिन नहीं जीऊँगा।* तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुमसे जितने भी बेहतरीन वादे किए थे वे सब-के-सब पूरे हुए, एक भी वादा बिना पूरा हुए नहीं रहा।[12] 15 मगर जिस तरह यहोवा ने अपने सारे बेहतरीन वादे पूरे किए,[13] उसी तरह मुसीबतें* लाने के बारे में यहोवा ने जो-जो कहा था, उसे भी पूरा करेगा और यहोवा तुम्हें इस बढ़िया देश से मिटा डालेगा जो उसने तुम्हें दिया है।[1] 16 अगर तुम अपने परमेश्वर यहोवा के उस करार को तोड़ोगे जिसे मानने की आज्ञा उसने तुम्हें दी है और अगर तुम दूसरे देवताओं के आगे दंडवत करोगे और उनकी सेवा करोगे, तो यहोवा का क्रोध तुम पर भड़क उठेगा।[2] और देखते-ही-देखते तुम इस बढ़िया देश से जो परमेश्वर ने तुम्हें दिया है, मिट जाओगे।"[3]

24 इसके बाद, यहोशू ने इसराएल के सभी गोत्रों को शेकेम में इकट्ठा किया और उनके मुखियाओं, प्रधानों, न्यायियों और अधिकारियों को बुलाया।[4] और वे आकर सच्चे परमेश्वर के सामने खड़े हुए। 2 यहोशू ने उन सबसे कहा, "इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'बहुत अरसे पहले तुम्हारे बाप-दादा[5] महानदी के उस पार* रहते थे[6] और दूसरे देवताओं की उपासना करते थे,[7] जिनमें से एक अब्राहम और नाहोर का पिता तिरह था।

3 फिर मैं तुम्हारे पुरखा अब्राहम[8] को महानदी* के उस पार से ले आया और उसे पूरे कनान देश का दौरा करवाया। मैंने उसके वंश को बढ़ाया।[9] मेरी आशीष से वह इसहाक का पिता बना।[10] 4 मैंने इसहाक को दो बेटे दिए, याकूब और एसाव।[11] आगे चलकर मैंने एसाव को सेईर पहाड़ का इलाका दिया कि वह उसकी जागीर बन जाए।[12] और याकूब और उसके बेटे मिस्र चले गए।[13] 5 फिर मैंने मूसा और हारून को भेजा[14] और मिस्र पर तरह-तरह के कहर ढाए[15] और तुम इसराएलियों को वहाँ से निकाल

23:14 *शा., "मैं दुनिया की रीत के मुताबिक जा रहा हूँ।" 23:15 *या "शाप।"

24:2 *यानी फरात नदी के पूरब में। 24:3 *यानी फरात नदी।

अध्य. 23
1 व्य 11:23
2 यह 1:3-5
3 लैव 26:8; न्या 3:31; 2शम 23:8
4 निर्ग 23:27; व्य 3:22
5 व्य 28:7
6 व्य 4:9; यह 22:5
7 व्य 6:5
8 निर्ग 23:29; यह 13:2-6
9 निर्ग 34:16; व्य 7:3; न्या 3:6; 1रा 11:4; एज 9:2
10 न्या 2:3, 21
11 गि 33:55
12 यह 21:45; 1रा 8:56
13 लैव 26:3-12; व्य 28:1

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:14-17; व्य 28:15, 63
2 2रा 24:20
3 यह 23:12, 13

अध्य. 24
4 निर्ग 18:25; यह 23:2
5 उत 11:26, 27
6 उत 11:28, 31
7 यह 24:15
8 उत 12:1; नहे 9:7; प्रेष 7:2
9 उत 15:1, 5
10 उत 21:3
11 उत 25:26
12 उत 36:8; व्य 2:5
13 उत 46:2, 3
14 निर्ग 3:10
15 निर्ग 11:1

ले आया। **6** जब तुम्हारे बाप-दादा
मिस्र से निकलकर[1] लाल सागर के पास
आए, तो मिस्री सेना अपने रथों और घुड़-
सवारों के साथ उनका पीछा करते हुए
वहाँ आ गयी।[2] **7** तब वे मुझ यहोवा
को ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगे।[3] इस-
लिए मैंने उनके और मिस्रियों के
बीच एक काला बादल ठहराया। फिर
मैंने सागर का पानी मिस्रियों पर छोड़
दिया और उन्हें डुबा दिया।[4] इसराएलियों
ने खुद देखा था कि मैंने मिस्र में क्या-क्या
किया।[5] इसके बाद तुम कई सालों* तक
वीराने में रहे।[6]

8 फिर मैं तुम्हें यरदन के उस
पार* ले आया जहाँ एमोरी लोग
रहते थे और उन्होंने तुमसे युद्ध
किया।[7] लेकिन मैंने उन्हें तुम्हारे हाथ
कर दिया ताकि तुम उनके इलाके पर
कब्ज़ा करके उसमें बस जाओ। मैंने उन्हें
तुम्हारे सामने से मिटा डाला।[8] **9** इसके
बाद, सिप्पोर का बेटा और मोआब का
राजा बालाक, इसराएल से लड़ने के लिए
तुम्हारे खिलाफ उठा। उसने बओर के
बेटे बिलाम को बुलाया कि वह तुम्हें शाप
दे।[9] **10** मगर मैंने बिलाम की नहीं
सुनी।[10] मैंने उसी के मुँह से तुम्हें बार-बार
आशीर्वाद दिलवाया[11] और तुम्हें उसके
हाथ से छुड़ाया।[12]

11 फिर तुम यरदन पार करके यरीहो
में आए।[13] यरीहो के अगुवों,* एमो-
रियों, परिज्जियों, कनानियों, हित्तियों,
गिरगाशियों, हिव्वियों और यबूसियों ने
तुमसे युद्ध किया। मगर मैंने उन्हें तुम्हारे
हवाले कर दिया।[14] **12** तुम्हारे वहाँ
जाने से पहले ही मैंने उनका हौसला तोड़
दिया।* और जैसे तुमने एमोरियों के
दोनों राजाओं को खदेड़ा था उसी तरह
तुमने उन्हें भी खदेड़ डाला।[1] मगर यह
जीत तुम्हें अपनी तलवार और धनुष के
दम पर नहीं मिली।[2] **13** इस तरह मैंने
तुम्हें ऐसा देश दिया जिसके लिए तुमने
कोई मेहनत नहीं की और न ही तुमने
इसके शहर खड़े किए।[3] तुम सिर्फ
यहाँ आए और रहने लगे। और अंगूरों
और जैतून के जो बाग तुमने नहीं लगाए,
उनके फल खाने लगे।'[4]

14 इसलिए यहोवा से डरो, निर्दोष
और विश्वासयोग्य बने रहकर* उसकी
सेवा करो।[5] उन देवताओं की मूरतों को
निकाल फेंको जिनकी उपासना तुम्हारे
बाप-दादा महानदी# के उस पार और
मिस्र में करते थे।[6] और यहोवा की
उपासना करो। **15** लेकिन अगर तुम
यहोवा की सेवा नहीं करना चाहते, तो
आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा
करोगे।[7] क्या उन देवताओं की जिन्हें
तुम्हारे बाप-दादा महानदी# के उस पार
पूजते थे?[8] या एमोरियों के देवताओं की,
जिनके इलाके में तुम रह रहे हो?[9] मगर
मैंने और मेरे घराने ने ठान लिया है कि
हम यहोवा की सेवा करेंगे।"

16 इस पर लोगों ने कहा, "हम
यहोवा को छोड़ दूसरे देवताओं की
उपासना करने की सोच भी नहीं सकते।
17 हमारे परमेश्वर यहोवा ने ही
हमें और हमारे बाप-दादा को गुलामी के
घर, मिस्र देश से आज़ाद किया।[10]
उसने हमारी आँखों के सामने बड़े-बड़े
चमत्कार किए।[11] वह पूरे रास्ते हमारी

24:7 *शा., "दिनों।" **24:8** *यानी पूरब में। **24:11** *या शायद, "ज़मींदारों।"

24:12 *या शायद, "उनमें डर; आतंक फैला दिया।" **24:14** *या "सच्चाई से।" **24:14, 15** #यानी फरात नदी।

अध्य. 24
1 निर्ग 12:37
2 निर्ग 14:9
3 निर्ग 14:10
4 निर्ग 14:20, 27; भज 106:11
5 निर्ग 3:20; व्य 4:34
6 गि 14:34
7 गि 21:23
8 नहे 9:22
9 गि 22:2, 5; व्य 23:3, 4
10 गि 22:12
11 गि 23:11, 25; गि 24:10
12 गि 31:7, 49
13 यह 3:17; यह 5:10
14 यह 11:16; यह 21:44; इब्र 11:30

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 23:28; यह 2:9, 10
2 भज 44:3
3 यह 11:14
4 व्य 6:10, 11; व्य 8:7, 8
5 उत 17:1; व्य 10:12; व्य 18:13; 1शम 12:24
6 लैव 17:7; यहे 23:8
7 व्य 30:19, 20; 1रा 18:21
8 यह 24:2
9 निर्ग 23:32; व्य 7:25; न्या 6:10; न्या 10:6
10 निर्ग 19:4; व्य 6:12; व्य 32:12
11 निर्ग 14:31; व्य 4:34; व्य 29:2

हिफाज़त करता रहा और हम जिन-जिन लोगों के बीच से होकर गए, उनसे हमें बचाता रहा।[1] **18** इस देश में हमसे पहले जितने भी एमोरी और दूसरे लोग रहते थे, यहोवा ने उन सबको खदेड़ दिया। इसलिए हम भी यहोवा की सेवा करेंगे क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है।”

19 तब यहोशू ने लोगों से कहा, “क्या तुम सचमुच यहोवा की सेवा कर पाओगे? वह एक पवित्र परमेश्वर है[2] और माँग करता है कि सिर्फ उसी की भक्ति की जाए।[3] वह तुम्हारे अपराधों* और पापों को माफ नहीं करेगा।[4] **20** अगर तुम यहोवा को छोड़ पराए देवताओं की उपासना करने लगो, तो वह तुम्हारे खिलाफ हो जाएगा और तुम्हें पूरी तरह मिटा डालेगा, फिर चाहे उसने तुम्हारे लिए भलाई क्यों न की हो।”[5]

21 लोगों ने यहोशू से कहा, “हम सिर्फ यहोवा की सेवा करेंगे।”[6] **22** तब यहोशू ने उनसे कहा, “तुम इस बात के गवाह हो कि तुमने खुद अपनी मरज़ी से यहोवा की सेवा करने का चुनाव किया है।”[7] उन्होंने कहा, “हाँ, हम इस बात के गवाह हैं।”

23 “तो फिर पराए देवताओं की मूरतें निकाल फेंको और अपना मन इसराएल के परमेश्वर यहोवा की ओर लगाओ।” **24** तब लोगों ने यहोशू से कहा, “हम अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करेंगे और उसी की बात मानेंगे।”

25 उस दिन शेकेम में यहोशू ने लोगों के साथ एक करार किया और इस करार को मानने के लिए उन्हें कुछ नियम और न्याय-सिद्धांत दिए। **26** यहोशू ने ये बातें परमेश्वर के कानून की किताब[1] में लिखीं। फिर उसने एक बड़ा पत्थर लिया[2] और उसे यहोवा की पवित्र जगह के पास एक बड़े पेड़ के नीचे खड़ा किया।

27 यहोशू ने लोगों से कहा, “देखो, यह पत्थर गवाह है[3] क्योंकि यहोवा ने इसी के सामने हमसे ये सारी बातें कही हैं। अगर तुम अपने परमेश्वर को ठुकरा दोगे, तो यह पत्थर तुम्हारे खिलाफ गवाह ठहरेगा।” **28** फिर यहोशू ने लोगों को विदा किया और वे अपने-अपने इलाके में लौट गए।[4]

29 इसके बाद यहोवा के सेवक, नून के बेटे यहोशू की मौत हो गयी। वह 110 साल का था।[5] **30** लोगों ने उसे तिमनत-सेरह में दफनाया। यह जगह एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में गाश पहाड़ के उत्तर में थी और यहोशू को दिए इलाके में आती थी।[6] **31** इसराएली, यहोशू के जीते-जी यहोवा की उपासना करते रहे और उन मुखियाओं के दिनों में भी करते रहे, जो यहोशू के बाद ज़िंदा थे और जानते थे कि यहोवा ने इसराएलियों के लिए क्या-क्या काम किए हैं।[7]

32 इसराएली मिस्र से यूसुफ की जो हड्डियाँ लाए थे,[8] वे उन्होंने शेकेम में ज़मीन के एक टुकड़े में दफना दीं। यह ज़मीन याकूब ने हमोर के बेटों (हमोर के एक बेटे का नाम शेकेम था) से चाँदी के 100 टुकड़ों में खरीदी थी।[9] यह ज़मीन यूसुफ के बेटों की जागीर बन गयी।[10]

33 हारून के बेटे एलिआज़र की भी मौत हो गयी।[11] और लोगों ने उसे ‘फिनेहास की पहाड़ी’ पर दफनाया, जो उसके बेटे फिनेहास[12] को एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में दी गयी थी।

24:19 * या “तुम्हारी बगावत।”

अध्य. 24
1 निर्ग 23:23
2 लैव 19:2; भज 99:5; यश 6:3; 1पत 1:15
3 निर्ग 20:5; निर्ग 34:14; गि 25:11; मत 4:10
4 निर्ग 23:20, 21; गि 14:35
5 व्य 28:15, 20; यह 23:16; 2इत 15:2; यश 63:10; यिर्म 17:13
6 निर्ग 19:8
7 व्य 26:17; यह 24:15

दूसरा कॉल.
1 व्य 31:26
2 उत 31:45
3 उत 31:48
4 न्या 2:6
5 न्या 2:8, 9
6 यह 19:49, 50
7 व्य 31:12, 13; न्या 2:7
8 उत 50:25; निर्ग 13:19; इब्र 11:22
9 उत 33:18, 19; प्रेष 7:15, 16
10 यह 20:7
11 गि 3:4; गि 20:26
12 निर्ग 6:25; न्या 20:28

न्यायियों

सारांश

1 यहूदा और शिमोन की जीत (1-20)
यबूसी, यरूशलेम में ही रहते हैं (21)
बेतेल पर यूसुफ का कब्ज़ा (22-26)
कनानियों को पूरी तरह नहीं खदेड़ा (27-36)

2 यहोवा के स्वर्गदूत की चेतावनी (1-5)
यहोशू की मौत (6-10)
इसराएल के लिए न्यायी ठहराए (11-23)

3 यहोवा ने इसराएल को परखा (1-6)
पहला न्यायी ओत्नीएल (7-11)
न्यायी एहूद ने राजा एगलोन को मार डाला (12-30)
न्यायी शमगर (31)

4 कनानी राजा याबीन का इसराएल पर ज़ुल्म (1-3)
भविष्यवक्तिन दबोरा और न्यायी बाराक (4-16)
याएल ने सेनापति सीसरा को मार डाला (17-24)

5 दबोरा और बाराक का विजय गीत (1-31)
तारे सीसरा से युद्ध करते हैं (20)
कीशोन नदी में बाढ़ (21)
यहोवा से प्यार करनेवाले सूरज की तरह हैं (31)

6 इसराएल पर मिद्यान का ज़ुल्म (1-10)
स्वर्गदूत ने न्यायी गिदोन को मदद का भरोसा दिलाया (11-24)
गिदोन, बाल की वेदी गिराता है (25-32)
पवित्र शक्ति गिदोन पर उतरी (33-35)
ऊन से परखना (36-40)

7 गिदोन और उसके 300 आदमी (1-8)
गिदोन की सेना मिद्यान को हराती है (9-25)
“यहोवा की तलवार और गिदोन की तलवार!” (20)
मिद्यान की छावनी में खलबली (21, 22)

8 एप्रैमी, गिदोन के साथ झगड़े (1-3)
मिद्यानी राजाओं को मार डाला (4-21)
गिदोन ने राजा बनने से इनकार किया (22-27)
गिदोन की ज़िंदगी पर एक नज़र (28-35)

9 अबीमेलेक शेकेम का राजा बना (1-6)
योताम की बतायी मिसाल (7-21)
अबीमेलेक की तानाशाही (22-33)
उसने शेकेम पर हमला किया (34-49)
एक औरत ने उसे घायल किया; उसकी मौत (50-57)

10 न्यायी तोला और याईर (1-5)
इसराएल की बगावत और पश्चाताप (6-16)
अम्मोनी, इसराएल के खिलाफ (17, 18)

11 न्यायी यिप्तह को भगा दिया, फिर अगुवा बनाया (1-11)
यिप्तह, अम्मोन से तर्क करता है (12-28)
यिप्तह की मन्नत और उसकी बेटी (29-40)
वह ज़िंदगी-भर कुँवारी रही (38-40)

12 एप्रैमियों के साथ लड़ाई (1-7)
शिब्बोलेत बुलवाकर परखना (6)
न्यायी इबसान, एलोन और अब्दोन (8-15)

13 मानोह और उसकी पत्नी के पास स्वर्गदूत आया (1-23)
शिमशोन का जन्म (24, 25)

14 न्यायी शिमशोन पलिश्ती लड़की से शादी करना चाहता है (1-4)
यहोवा की पवित्र शक्ति से शेर को मार डाला (5-9)
शादी में शिमशोन की पहेली (10-19)
उसकी पत्नी दूसरे आदमी को दी गयी (20)

15 शिमशोन पलिश्तियों से बदला लेता है (1-20)

16 शिमशोन गाज़ा में (1-3)
शिमशोन और दलीला (4-22)

शिमशोन का बदला और उसकी मौत (23-31)

17 मीका की मूरतें और उसका याजक (1-13)

18 दानी जगह ढूँढ़ते हैं (1-31)
मीका की मूरतें और याजक उठा लिए गए (14-20)
लैश पर कब्ज़ा और उसका नाम दान रखना (27-29)
दान में मूर्तिपूजा (30, 31)

19 बिन्यामीन के लोगों का अपराध (1-30)

20 बिन्यामीन के लोगों से युद्ध (1-48)

21 बिन्यामीन गोत्र मिटने से बचा (1-25)

---

1 यहोशू की मौत के बाद,[1] इसराएलियों ने यहोवा से पूछा,[2] "हममें से पहले कौन कनानियों से लड़ने जाएगा?" **2** यहोवा ने कहा, "यहूदा जाएगा।[3] देखो! मैं यह देश उनके हवाले कर दूँगा।"* **3** तब यहूदा के गोत्र ने अपने भाई शिमोन के गोत्र से कहा, "मेरे साथ आ और मुझे जो इलाका* दिया गया है[4] वहाँ से कनानियों को खदेड़ने में मेरी मदद कर। फिर मैं तेरे इलाके में चलूँगा और तेरी मदद करूँगा।" तब शिमोन का गोत्र उसके साथ गया।

4 यहूदा के लोगों ने जब युद्ध किया, तो यहोवा ने कनानियों और परिज्जियों को उनके हाथ कर दिया।[5] और उन्होंने बेजेक में 10,000 आदमियों को हरा दिया। **5** कनानियों और परिज्जियों[6] को हराते वक्त[7] बेजेक में उनका सामना अदोनी-बेजेक से हुआ और वे उससे लड़े। **6** तब अदोनी-बेजेक अपनी जान बचाकर भागने लगा। यहूदा के लोगों ने उसका पीछा किया और उसे धर-दबोचा। उन्होंने उसके हाथ-पैर के अँगूठे काट दिए। **7** तब अदोनी-बेजेक ने कहा, "मैंने 70 राजाओं के हाथ-पैर के अँगूठे कटवाए थे और वे मेरी मेज़ से गिरे टुकड़े खाते थे। जैसा मैंने दूसरों के साथ किया, वैसा ही परमेश्वर ने मेरे साथ किया है।" इसके बाद वे उसे यरूशलेम[1] ले आए जहाँ उसकी मौत हो गयी।

8 फिर यहूदा के आदमियों ने यरूशलेम से युद्ध करके[2] उस पर कब्ज़ा कर लिया। उन्होंने वहाँ के निवासियों को तलवार से मार डाला और शहर को जला दिया। **9** इसके बाद उन्होंने पहाड़ी प्रदेश, नेगेब और शफेलाह में रहनेवाले कनानियों से लड़ाई की।[3] **10** फिर यहूदा का गोत्र उन कनानियों से लड़ने गया जो हेब्रोन में रहते थे (हेब्रोन का नाम पहले किरयत-अरबा था)। उन्होंने वहाँ शेशै, अहीमन और तल्मै को मार डाला।[4]

11 इसके बाद वे दबीर के निवासियों से लड़ने गए।[5] (दबीर पहले किरयत-सेपर कहलाता था।)[6] **12** तब कालेब[7] ने कहा, "जो आदमी किरयत-सेपर पर हमला करके उसे जीत लेगा, उसकी शादी मैं अपनी बेटी अकसा से करवाऊँगा।"[8] **13** ओत्नीएल[9] ने किरयत-सेपर को जीत लिया। वह कालेब के छोटे भाई कनज का बेटा था[10] और कालेब ने अपनी बेटी अकसा की शादी उससे करवा दी। **14** जब अकसा घर जा रही थी तो वह अपने पति से बार-बार कहने लगी कि मेरे पिता से ज़मीन का

1:2 *या "कर दिया है।" **1:3** *शा., "हिस्सा।"

अध्य. 1
1 यह 24:29
2 गि 27:18, 21; न्या 20:18
3 उत 49:8; व्य 33:7; 1इत 5:2
4 यह 15:1; यह 19:1, 9
5 व्य 9:3
6 उत 15:18-21; निर्ग 3:8; न्या 3:5; 1रा 9:20, 21
7 उत 10:6; व्य 20:17

दूसरा कॉल.
1 यह 15:8, 12
2 यह 15:63; न्या 1:21
3 यह 11:16; यह 15:20, 33
4 यह 11:21; यह 15:13, 14
5 यह 10:38
6 यह 15:15
7 गि 13:3, 6; गि 14:24; व्य 1:35, 36; यह 14:13
8 यह 15:16-19
9 न्या 3:9
10 1इत 4:13

एक टुकड़ा माँग। फिर वह गधे से उतरी*
और कालेब ने उससे पूछा, "तू क्या
चाहती है?" **15** अकसा ने कहा, "तेरी
यह बेटी तुझसे एक आशीर्वाद चाहती
है। मुझे गुल्लोत-मइम* का इलाका दे दे
क्योंकि मुझे दक्षिण# में ज़मीन का जो
टुकड़ा मिला है वह सूखा है।" इसलिए
कालेब ने उसे ऊपरी गुल्लोत और निचला
गुल्लोत दिया।

16 मूसा का ससुर[1] एक केनी आदमी
था, जिसके वंशज[2] यहूदा गोत्र के साथ
खजूर के पेड़ों के शहर[3] से आए थे।
वे अराद[4] के दक्षिण में यहूदा के वीराने
में गए और वहाँ के लोगों के बीच रहने
लगे।[5] **17** यहूदा के गोत्र ने अपने भाई
शिमोन के गोत्र के साथ, सपत शहर
के कनानियों पर हमला बोला और
उसे पूरी तरह नाश कर दिया।[6] इस-
लिए उन्होंने उस शहर का नाम होरमा*
रखा।[7] **18** फिर यहूदा ने गाज़ा[8] और
उसके इलाके, अश्कलोन[9] और उसके
इलाके और एक्रोन[10] और उसके इलाके
पर कब्ज़ा कर लिया। **19** यहोवा यहूदा
के लोगों के साथ था और उन्होंने पहाड़ी
प्रदेश को अपने अधिकार में कर लिया
और वहाँ बस गए। लेकिन वे मैदानी
इलाके में रहनेवाले कनानियों को नहीं
खदेड़ पाए क्योंकि उनके पास युद्ध-
रथ थे जिनके पहियों में तलवारें लगी
हुई थीं।*[11] **20** मूसा के वादे के मुता-
बिक यहूदा के लोगों ने कालेब को हेब्रोन
दिया।[12] कालेब ने वहाँ से अनाक के तीन
बेटों को खदेड़ दिया।[13]

1:14 *या शायद, "ध्यान खींचने के लिए उसने गधे पर बैठे-बैठे ताली बजायी।" **1:15** *मतलब "पानी के कुंड।" #या "नेगेब।" **1:17** *मतलब "नाश के लिए ठहराना।" **1:19** *शा., "लोहे के रथ थे।"

21 लेकिन बिन्यामीन गोत्र ने यरू-
शलेम से यबूसियों को नहीं खदेड़ा। इस-
लिए आज तक यबूसी, यरूशलेम में
बिन्यामीन के लोगों के बीच रहते हैं।[1]

22 इसी दौरान यूसुफ का घराना[2]
बेतेल शहर से लड़ने निकला और
यहोवा उनके साथ था।[3] **23** यूसुफ
के घराने ने बेतेल (इस शहर का नाम
पहले लूज था)[4] में कुछ जासूसों को
अपने आगे-आगे भेजा। **24** जासूसों ने
उस शहर से एक आदमी को बाहर
जाते देखा और उससे कहा, "मेहर-
बानी करके हमें शहर में घुसने का रास्ता
दिखा। बदले में हम तुझ पर कृपा*
करेंगे।" **25** तब उस आदमी ने उन्हें
शहर में घुसने का रास्ता दिखाया और
उन्होंने शहर के सभी निवासियों को तल-
वार से मार डाला। लेकिन उन्होंने उस
आदमी और उसके परिवार को छोड़
दिया।[5] **26** वह आदमी वहाँ से हित्तियों
के देश में गया और उसने अपने लिए एक
शहर खड़ा किया। उसने उस शहर का
नाम लूज रखा जो आज तक इसी नाम से
जाना जाता है।

27 मनश्शे गोत्र ने इन शहरों और
इनके आस-पास के नगरों पर कब्ज़ा नहीं
किया: बेत-शआन, तानाक,[6] दोर, यिब-
लाम और मगिद्दो।[7] कनानी लोग इन
इलाकों में बसे रहे। **28** जब इसराएली
ताकतवर हो गए तो वे कनानियों से
जबरन मज़दूरी करवाने लगे।[8] मगर
उन्होंने कनानियों को पूरी तरह नहीं
खदेड़ा।[9]

29 एप्रैमियों ने भी उन कनानियों को
नहीं खदेड़ा जो गेजेर में रहते थे। और
कनानी, एप्रैमी लोगों के बीच गेजेर में
ही रहे।[10]

1:24 *शा., "अटल प्यार।"

अध्य. 1
1 निर्ग 3:1, निर्ग 4:18, निर्ग 18:1, गि 10:29
2 गि 24:21, न्या 4:11
3 व्य 34:3, न्या 3:13
4 गि 21:1
5 गि 10:29-32
6 लैव 27:29, व्य 20:16
7 यह 19:1, 4
8 उत 10:19, यह 11:22
9 न्या 14:19
10 यह 13:1-3, यह 15:20, 45
11 व्य 20:1, यह 17:16
12 गि 14:24, यह 14:9
13 गि 13:22

दूसरा कॉल.
1 यह 15:63, 2शम 5:6
2 यह 14:4
3 उत 49:22, 24, यह 16:1, भज 44:3
4 उत 35:6
5 यह 6:25, 1शम 15:6
6 यह 21:8, 25, न्या 5:19
7 यह 17:11, 12
8 उत 9:25, 1रा 9:20, 21
9 गि 33:55, व्य 7:2, व्य 20:16, यह 17:13
10 यह 16:10, 1रा 9:16

30 जबूलून गोत्र ने कितरोन और नहलोल[1] में रहनेवाले कनानियों को नहीं खदेड़ा, वे उनके बीच ही रहे। और जबूलून ने उनसे जबरन मज़दूरी करवायी।[2]

31 आशेर गोत्र ने अक्को, सीदोन,[3] अहलाब, अकजीब,[4] हेलबा, अपीक[5] और रहोब[6] के निवासियों को नहीं खदेड़ा। **32** आशेर के लोग कनानियों के बीच ही रहे क्योंकि उन्होंने कनानियों को वहाँ से नहीं खदेड़ा।

33 नप्ताली गोत्र ने भी बेत-शेमेश और बेतनात[7] में रहनेवाले कनानियों को नहीं खदेड़ा बल्कि उनके बीच ही रहे।[8] उन्होंने बेत-शेमेश और बेतनात के लोगों से जबरन मज़दूरी करवायी।

34 एमोरियों ने दान के लोगों को मैदानी इलाके में नहीं आने दिया। इसलिए उन्हें पहाड़ी प्रदेश में ही रहना पड़ा।[9] **35** एमोरी लोग हेरेस पहाड़, अय्यालोन[10] और शालबीम[11] के इलाके को नहीं छोड़ रहे थे। बाद में जब यूसुफ का घराना ताकतवर बना, तो उन्होंने एमोरियों पर जीत हासिल करके उनसे कड़ी मज़दूरी करवायी। **36** एमोरियों के इलाके की सरहद अकराबीम की चढ़ाई[12] से और सेला से ऊपर की तरफ जाती थी।

2 यहोवा का स्वर्गदूत[13] गिलगाल[14] से बोकीम गया और उसने कहा, “मैं तुम्हें मिस्र से निकालकर इस देश में लाया, जिसे देने का वादा मैंने तुम्हारे पुरखों से किया था।[15] मैंने यह भी कहा था, ‘तुम्हारे साथ जो करार मैंने किया है उसे मैं कभी नहीं तोड़ूँगा।[16] **2** और तुम इस देश के निवासियों के साथ करार न करना[17] और उनकी वेदियाँ तोड़ डालना।’[18] पर तुमने मेरी आज्ञा नहीं मानी।[19] तुमने ऐसा क्यों किया? **3** इसलिए जैसा मैंने कहा था, मैं इस देश के लोगों को तुम्हारे सामने से नहीं खदेड़ूँगा।[1] वे तुम्हारे लिए फंदा साबित होंगे[2] और तुम बहककर उनके देवताओं के पीछे हो लोगे।”[3]

4 जब यहोवा के स्वर्गदूत ने इसराएलियों से यह कहा, तो सभी लोग ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। **5** इसलिए उन्होंने उस जगह का नाम बोकीम* रखा और वहाँ यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाया।

6 फिर यहोशू ने इसराएलियों को विदा किया और वे अपनी-अपनी विरासत की ज़मीन पर कब्ज़ा करने के लिए चले गए।[4] **7** वे यहोशू के जीते-जी यहोवा की उपासना करते रहे और उन मुखियाओं के दिनों में भी करते रहे, जो यहोशू के बाद ज़िंदा थे और जिन्होंने देखा था कि यहोवा ने इसराएलियों के लिए कितने बड़े-बड़े काम किए हैं।[5] **8** इसके बाद यहोवा के सेवक, नून के बेटे यहोशू की मौत हो गयी। वह 110 साल का था।[6] **9** लोगों ने उसे तिमनत-हेरेस में दफनाया। यह जगह एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में गाश पहाड़ के उत्तर में थी और यहोशू को दिए इलाके में आती थी।[7] **10** उस पीढ़ी के सभी लोगों की मौत हो गयी।* फिर एक नयी पीढ़ी आयी जो न तो यहोवा को जानती थी, न ही यह जानती थी कि उसने इसराएल के लिए क्या-क्या किया है।

11 इसलिए इसराएली यहोवा की नज़र में बुरे काम करने लगे और बाल देवताओं को पूजने लगे।[8] **12** उन्होंने अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया, जो उन्हें मिस्र से निकाल लाया था।[9] वे आस-पास के लोगों के देवताओं

अध्य. 1

1 यह 19:15, 16
2 व्य 20:17; न्या 2:2
3 यह 11:8; यह 19:28, 31
4 यह 19:29, 31
5 यह 19:30, 31
6 यह 21:8, 31
7 यह 19:38, 39
8 व्य 7:2
9 यह 19:47; न्या 18:1
10 यह 10:12
11 यह 19:42, 48
12 गि 34:2, 4; यह 15:3, 12

अध्य. 2

13 निर्ग 23:20, 23; यह 5:13, 14
14 यह 5:8, 9
15 उत 12:7; उत 26:3
16 उत 17:1, 7; लैव 26:42
17 निर्ग 23:32; व्य 7:2; 2कुर 6:14
18 निर्ग 34:13; गि 33:52
19 न्या 1:28

दूसरा कॉल.

1 न्या 2:20-23
2 गि 33:55; यह 23:12, 13
3 निर्ग 23:33; व्य 7:16; 1रा 11:2
4 यह 24:28
5 यह 23:3; यह 24:31
6 यह 24:29
7 यह 19:49, 50; यह 24:30
8 न्या 3:7; न्या 10:6; 1रा 18:17, 18
9 व्य 31:16

2:5 *मतलब “रोनेवाले।” **2:10** *शा., “लोग अपने पुरखों में जा मिले।”

के पीछे जाने लगे[1] और उन्हें दंडवत
करने लगे। ऐसा करके उन्होंने यहोवा
को गुस्सा दिलाया।[2] **13** वे यहोवा को
छोड़कर बाल देवता और अशतोरेत की
मूरतों की पूजा करने लगे।[3] **14** तब
यहोवा का क्रोध इसराएलियों पर भड़क
उठा और उसने उन्हें लुटेरों के हाथ कर
दिया जो उन्हें लूटने लगे।[4] परमेश्वर ने
उन्हें आस-पास के दुश्मनों के हवाले
कर दिया[5] और वे उनके सामने टिक
नहीं पाए।[6] **15** यहोवा उनके खिलाफ
हो गया इसलिए वे जहाँ-जहाँ गए वह उन
पर मुसीबतें लाया,[7] ठीक जैसा यहोवा ने
कहा था और जैसा यहोवा ने शपथ खायी
थी।[8] इसराएलियों की ज़िंदगी दुखों से
भर गयी।[9] **16** तब यहोवा ने उनके
लिए न्यायी ठहराए जो उन्हें लुटेरों के
हाथ से बचाते।[10]

17 लेकिन इसराएलियों ने न्यायियों
की भी सुनने से इनकार कर दिया। वे
दूसरे देवताओं के आगे दंडवत करने
और उन्हें पूजने* लगे। वे फौरन उस राह
से बहक गए जिस पर उनके बाप-दादा
चलते थे। उनके बाप-दादा तो यहोवा की
बात मानते थे,[11] मगर उन्होंने नहीं मानी।
18 फिर जब दुश्मन उन पर ज़ुल्म ढाते
तो उनका कराहना सुनकर[12] यहोवा
तड़प उठता[13] और उन्हें बचाने के लिए
यहोवा न्यायी ठहराता[14] और उसका पूरा
साथ देता। जब तक इसराएल में न्यायी
रहे, यहोवा ने अपने लोगों को दुश्मनों से
बचाया।

19 लेकिन जब एक न्यायी मर जाता,
तो इसराएली फिर से दूसरे देवताओं के
पीछे चलने लगते और उनकी उपासना
करने लगते।[15] इस तरह वे अपने
पुरखों से भी बढ़कर पाप कर रहे थे।
वे अपने कामों से बाज़ नहीं आए और
ढीठ बने रहे। **20** आखिरकार यहोवा
का गुस्सा इसराएल पर भड़क उठा[1] और
उसने कहा, "इस राष्ट्र ने मेरा वह
करार तोड़ दिया है[2] जो मैंने उनके पुरखों
से किया था और इन्होंने मेरी आज्ञा
नहीं मानी।[3] **21** इसलिए यहोशू की
मौत के बाद इस देश में जितने भी दुश्मन
राष्ट्र बचे हैं, उनमें से मैं एक को भी
नहीं खदेड़ूँगा।[4] **22** मैं परखना चाहता
हूँ कि इसराएली अपने पुरखों की तरह
यहोवा की राह पर चलेंगे या नहीं।"[5]
23 यहोवा ने ऐसा ही किया। उसने उन
राष्ट्रों को वहीं रहने दिया, उन्हें तुरंत नहीं
खदेड़ा और न ही उन्हें यहोशू के हाथ
किया था।

3 यहोवा ने कुछ राष्ट्रों को रहने दिया
ताकि उन इसराएलियों को परखे,
जिन्हें कनान देश से युद्ध करने का कोई
तजुरबा नहीं था।[6] **2** (वह इसलिए कि
इसराएल की नयी पीढ़ी जिसने कभी
युद्ध नहीं देखा था, युद्ध के बारे में
जाने।) **3** इन राष्ट्रों में ये लोग शामिल
थे: पलिश्तियों के पाँच सरदार,[7] सारे
कनानी, सीदोनी[8] और वे सभी हिव्वी[9]
जो लबानोन के पहाड़ों[10] में बाल-हेर-
मोन पर्वत से लेकर लेबो-हमात तक रहते
थे।[11] **4** इन लोगों के ज़रिए इसराए-
लियों को परखा गया कि वे यहोवा की
आज्ञाओं को मानेंगे या नहीं, जो मूसा
ने उनके पुरखों को दी थीं।[12] **5** इस
तरह इसराएली लोग कनानियों, हित्तियों,
एमोरियों, परिज्जियों, हिव्वियों और यबू-
सियों के बीच रहने लगे।[13] **6** इसराए-
लियों ने उनकी बेटियों से शादी की
और अपनी बेटियों की शादी उनके बेटों

2:17 *या "उनके साथ वेश्याओं जैसी बद-
चलनी करने।"

अध्या. 2

1 व्य 6:14
2 निर्ग 20:5
3 न्या 3:7
न्या 10:6
1रा 11:5
4 न्या 3:8
2रा 17:20
भज 106:40, 41
5 न्या 4:2
6 लैव 26:17, 37
व्य 28:15, 25
7 व्य 28:15
8 व्य 4:25, 26
9 न्या 10:9
10 न्या 3:9
1शम 12:11
नहे 9:27
भज 106:43
11 न्या 2:7
12 न्या 4:3
13 व्य 32:36
भज 106:45
14 न्या 3:9
15 न्या 4:1
न्या 8:33

दूसरा कॉल.

1 व्य 7:4
न्या 10:7
भज 106:40
2 निर्ग 24:3, 8
निर्ग 34:27
व्य 29:1
यह 23:16
3 लैव 26:14, 17
4 यह 13:1, 2
5 गि 33:55
व्य 8:2
यह 23:12, 13
न्या 3:4

अध्या. 3

6 व्य 8:2
न्या 2:10
7 न्या 1:18, 19
8 यह 13:1, 4
न्या 1:31
9 यह 9:1, 2
10 यह 13:1, 6
11 गि 34:2, 8
यह 13:1, 5
12 निर्ग 23:33
न्या 2:21, 22
13 न्या 1:29
भज 106:34

से करवायी। और वे उनके देवताओं की
उपासना करने लगे।[1]

7 इस तरह इसराएली यहोवा की
नज़र में बुरे काम करने लगे। वे
अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए
और बाल देवताओं और पूजा-लाठों*
की उपासना करने लगे।[2] **8** इस पर
यहोवा का क्रोध उन पर भड़क उठा।
उसने उन्हें मेसोपोटामिया* के राजा
कूशन-रिशातैम के हवाले कर दिया। इस-
राएलियों ने आठ साल तक कूशन-
रिशातैम की गुलामी की। **9** फिर वे
मदद के लिए यहोवा को पुकारने लगे।[3]
यहोवा ने उन्हें छुड़ाने के लिए ओत्नी-
एल[4] को चुना,[5] जो कालेब के छोटे
भाई कनज का बेटा था। **10** यहोवा
की पवित्र शक्ति ओत्नीएल पर उतरी[6]
और वह इसराएल का न्यायी बना।
जब वह युद्ध करने निकला तो यहोवा
ने मेसोपोटामिया* के राजा कूशन-रिशा-
तैम को उसके हाथ कर दिया और उसने
कूशन-रिशातैम को बुरी तरह हराया।
11 इसके बाद देश में 40 साल तक
शांति बनी रही। फिर कनज का बेटा
ओत्नीएल मर गया।

12 इसराएली एक बार फिर उन्हीं
कामों में लग गए जो यहोवा की नज़र में
बुरे थे।[7] यहोवा ने मोआब[8] के राजा एग-
लोन को इसराएल पर जीत हासिल करने
दी क्योंकि इसराएली यहोवा की नज़र
में बुरे काम कर रहे थे। **13** एगलोन,
अम्मोनियों और अमालेकियों को साथ
लेकर उनके खिलाफ आया।[9] उन्होंने
इसराएल पर हमला किया और खजूर
के पेड़ों के शहर[10] पर कब्ज़ा कर
लिया। **14** इसराएलियों ने 18 साल
तक मोआब के राजा एगलोन की गुलामी
की।[1] **15** फिर वे मदद के लिए यहोवा
को पुकारने लगे।[2] यहोवा ने उनके छुट-
कारे के लिए एहूद[3] को ठहराया,[4] जो
गेरा का बेटा था। वह बिन्यामीन[5] गोत्र से
था और बाएँ हाथ से काम करता था।[6]
जब मोआब के राजा एगलोन को नज़-
राना देने का वक्त आया, तो इसराए-
लियों ने एहूद के हाथ राजा को नज़राना
भेजा। **16** एहूद ने अपने लिए एक
खंजर बनाया जिसके दोनों तरफ धार
थी और जिसकी लंबाई एक हाथ* थी।
उसने अपने कपड़े के नीचे दायीं जाँघ
पर उसे बाँध लिया। **17** फिर मोआब
के राजा एगलोन के पास जाकर
उसने नज़राना दिया। एगलोन बहुत
मोटा था।

18 नज़राना देकर एहूद उन लोगों
के साथ निकल पड़ा जो नज़राना लेकर
उसके साथ राजा के पास आए थे।
19 मगर जब एहूद गिलगाल[7] में गढ़ी
हुई मूरतों* के पास पहुँचा, तो वह वापस
राजा के पास आया। उसने कहा, "हे
राजा, मैं तेरे लिए एक गुप्त संदेश लाया
हूँ।" तब राजा ने अपने सेवकों को बाहर
जाने का आदेश दिया और वे सब चले
गए। **20** राजा छत पर अपने हवा-
दार कमरे में बैठा हुआ था। एहूद ने
उससे कहा, "परमेश्वर ने तेरे लिए एक
संदेश भेजा है।" यह सुनकर राजा अपनी
राजगद्दी से उठा। **21** तभी एहूद ने
अपने बाएँ हाथ से दायीं जाँघ पर बँधा
खंजर निकाला और राजा के पेट में भोंक

अध्य. 3
1 निर्ग 34:15, 16; गि 25:1, 2; व्य 7:3, 4; 1रा 11:1, 4
2 निर्ग 34:13; व्य 12:3; व्य 16:21; व्य 31:16; न्या 2:11; न्या 10:6
3 व्य 4:30; न्या 10:10, 15
4 1इत 4:13
5 न्या 2:16, 18; न्या 3:15
6 गि 11:16, 17; न्या 6:34; न्या 11:29; न्या 14:5, 6; न्या 15:14; 1शम 11:6; 1शम 16:13; 2इत 15:1
7 न्या 2:19
8 उत 19:36, 37
9 उत 19:36, 38; निर्ग 17:8; न्या 6:3; न्या 11:4, 5
10 व्य 34:3

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:48
2 भज 78:34
3 न्या 4:1
4 न्या 3:9
5 उत 49:27
6 न्या 20:15, 16
7 यह 4:19; यह 5:8, 9

3:7 *शब्दावली देखें। **3:8** *शा., "अराम-नहरैम।" **3:10** *शा., "अराम।"

3:16 *शायद एक छोटा हाथ यानी एक हाथ में चार अंगुल कम, जिसकी लंबाई करीब 38 सें.मी. (15 इंच) है। अति. ख14 देखें। **3:19** *या शायद, "पत्थर की खदानों।"

दिया। 22 एहूद ने खंजर बाहर नहीं
खींचा और खंजर के साथ-साथ उसका
हत्था भी उसके पेट में घुस गया। पूरा-
का-पूरा खंजर राजा की चरबी में समा
गया और उसका मल बाहर आ गया।
23 फिर एहूद छत के उस कमरे को ताला
लगाकर बरामदे* से बाहर निकल गया।
24 उसके जाने के बाद राजा के सेवक
वहाँ आए और उन्होंने देखा कि कमरे का
दरवाज़ा बंद है। वे कहने लगे, "राजा
अंदरवाले कमरे में हलका होने* गया
होगा।" 25 काफी देर इंतज़ार करने के
बाद भी जब राजा बाहर नहीं आया
तो वे परेशान हो गए। उन्होंने चाबी लेकर
ताला खोला और देखा कि उनका मालिक
ज़मीन पर मरा पड़ा है।

26 इस बीच एहूद वहाँ से भाग
निकला और गढ़ी हुई मूरतों* से होते
हुए[1] सही-सलामत सेइरे पहुँच गया।
27 वहाँ एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश[2] पहुँचकर
उसने नरसिंगा फूँका[3] और इसराएली
उसके साथ पहाड़ी प्रदेश से नीचे आए।
एहूद उनके आगे-आगे चला। 28 एहूद
ने उनसे कहा, "मेरे पीछे आओ क्योंकि
यहोवा ने तुम्हारे दुश्मन मोआबियों को
तुम्हारे हाथ कर दिया है।" तब वे उसके
पीछे-पीछे गए और यरदन के घाटों पर
तैनात हो गए ताकि मोआबी सैनिक यर-
दन पार न कर सकें। 29 उस दिन इस-
राएलियों ने 10,000 मोआबी सूरमाओं
को मार डाला,[4] उनमें से एक भी बच-
कर न भाग सका।[5] 30 इस तरह इस-
राएलियों ने मोआब को अपने अधीन कर
लिया और देश में 80 साल तक शांति
बनी रही।[6]

31 एहूद के बाद, अनात के बेटे शम-
गर[1] ने इसराएलियों को बचाया। उसने
एक नुकीले छड़* से 600 पलिश्ती
आदमियों[2] को मार गिराया।[3]

4 एहूद की मौत के बाद इसराएली
फिर वही करने लगे जो यहोवा की
नज़र में बुरा था।[4] 2 इसलिए यहोवा
ने उन्हें कनान के राजा याबीन के हवाले
कर दिया,[5] जो हासोर में राज करता
था। उसके सेनापति का नाम सीसरा था,
जो हरोशेत-हाग्गोयीम में रहता था।[6]
3 याबीन के* पास 900 युद्ध-रथ थे
जिनके पहियों में तलवारें लगी हुई
थीं।#[7] वह इसराएलियों पर 20 साल
तक बड़ी बेरहमी से ज़ुल्म ढाता रहा।[8]
इसलिए इसराएलियों ने रो-रोकर यहोवा
से मदद की भीख माँगी।[9]

4 उस वक्त दबोरा नाम की एक
भविष्यवक्तिन[10] इसराएल में न्यायी थी।
वह लप्पीदोत की पत्नी थी। 5 वह
एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में रामाह[11]
और बेतेल[12] के बीच, दबोरा के खजूर के
पेड़ के नीचे बैठा करती थी। इस-
राएली किसी मामले पर परमेश्वर का
फैसला जानने के लिए उसके पास आया
करते थे। 6 दबोरा ने केदेश-नप्ताली[13]
से अबीनोअम के बेटे बाराक[14] को
बुलवाया और उससे कहा, "इसराएल का
परमेश्वर यहोवा तुझे यह आज्ञा देता है,
'जा और नप्ताली और जबूलून गोत्र से
10,000 आदमियों को ले और ताबोर
पहाड़ पर युद्ध के लिए इकट्ठा हो। 7 मैं
याबीन के सेनापति सीसरा, उसके युद्ध-
रथों और सैनिकों को तेरे पास कीशोन
घाटी में लाऊँगा[15] और उन्हें तेरे हाथ कर
दूँगा।'"[16]

अध्य. 3
1 न्या 3:19
2 न्या 7:24
3 न्या 6:34; 1शम 13:3
4 व्य 28:7
5 लैव 26:7, 8
6 न्या 3:11

दूसरा कॉल.
1 न्या 5:6
2 यह 13:1, 2
3 न्या 15:3, 15; 1शम 17:47, 50

अध्य. 4
4 न्या 2:19
5 न्या 2:14; न्या 3:8; न्या 10:7
6 न्या 4:16
7 यह 17:16; न्या 1:19
8 व्य 28:48
9 न्या 2:18; न्या 3:9; भज 107:19
10 निर्ग 15:20; 2रा 22:14; लूक 2:36; प्रेष 21:8, 9
11 यह 18:21, 25
12 उत 28:17, 19
13 यह 21:32
14 इब्र 11:32
15 1रा 18:40; भज 83:9
16 व्य 20:1

3:23 *या शायद, "रौशनदान।" **3:24** *यानी शौच करने। **3:26** *या शायद, "पत्थर की खदानों।"

3:31 *शा., "अंकुश।" **4:3** *शा., "उसके।" #शा., "लोहे के रथ थे।"

8 तब बाराक ने दबोरा से कहा, "मैं वहाँ तभी जाऊँगा जब तू मेरे साथ चलेगी। अगर तू मेरे साथ नहीं आएगी तो मैं भी नहीं जाऊँगा।" **9** दबोरा ने कहा, "मैं तेरे साथ ज़रूर चलूँगी। लेकिन इस युद्ध से तेरी बड़ाई नहीं होगी क्योंकि यहोवा एक औरत के हाथों सीसरा को मरवाएगा।"[1] तब दबोरा, बाराक के साथ केदेश[2] गयी। **10** बाराक ने जबूलून और नप्ताली[3] के लोगों को केदेश बुलाया और 10,000 आदमी उसके पीछे-पीछे चल दिए। दबोरा भी उसके साथ गयी।

11 हेबेर नाम का एक केनी आदमी अपने लोगों[4] से अलग होकर, केदेश में सानन्नीम के बड़े पेड़ के पास तंबू में रहता था। केनी लोग मूसा के ससुर[5] होबाब के वंशज थे।

12 सीसरा को खबर मिली कि अबीनोअम का बेटा बाराक, ताबोर पहाड़ पर आया है।[6] **13** यह सुनते ही सीसरा ने अपने 900 युद्ध-रथों को जिनके पहियों में तलवारें लगी थीं* और अपनी पूरी सेना को इकट्ठा किया कि उन्हें लेकर हरोशेत-हाग्गोयीम से कीशोन घाटी की तरफ जाए।[7] **14** दबोरा ने बाराक से कहा, "तैयार हो जा! आज यहोवा सीसरा को तेरे हाथ कर देगा। देख, यहोवा तेरे आगे-आगे चल रहा है।" बाराक ताबोर पहाड़ से नीचे उतरा और 10,000 आदमी उसके पीछे-पीछे आए। **15** यहोवा ने सीसरा, उसके युद्ध-रथों और उसकी फौज के बीच खलबली मचा दी[8] और वे बाराक की तलवार के आगे हार गए। तब सीसरा अपने रथ से नीचे उतरा और जान बचाकर भागने लगा। **16** बाराक ने सीसरा के युद्ध-रथों और उसकी फौज का हरोशेत-हाग्गोयीम तक पीछा किया। सीसरा की पूरी फौज तलवार से मार डाली गयी, एक भी सैनिक ज़िंदा नहीं बचा।[1]

17 सीसरा भागते-भागते याएल के तंबू पर पहुँचा,[2] जो केनी हेबेर की पत्नी थी।[3] वह वहाँ इसलिए गया क्योंकि हासोर के राजा याबीन[4] और हेबेर के घराने के बीच शांति थी। **18** तब याएल, सीसरा से मिलने तंबू से बाहर आयी और उसने कहा, "आइए मेरे मालिक, अंदर आइए। डरिए मत।" तब सीसरा उसके तंबू में गया और याएल ने उसे कंबल ओढ़ा दिया। **19** सीसरा ने याएल से कहा, "मुझे प्यास लगी है, मेहरबानी करके मुझे थोड़ा पानी पिला दे।" याएल ने एक मशक से दूध लिया और सीसरा को पीने के लिए दिया।[5] फिर उसने दोबारा उसे कंबल ओढ़ा दिया। **20** सीसरा ने याएल से कहा, "तू तंबू के द्वार पर खड़ी हो जा। अगर कोई आकर तुझसे पूछे, 'क्या अंदर कोई आदमी है?' तो कह देना, 'अंदर कोई नहीं है।'"

21 सीसरा बहुत थका हुआ था इसलिए वह गहरी नींद सो गया। तब हेबेर की पत्नी याएल ने तंबू की एक खूँटी और हथौड़ा लिया और दबे पाँव सीसरा के पास आयी। उसने सीसरा की कनपटी पर खूँटी रखकर ऐसा हथौड़ा मारा कि खूँटी उसके सिर के आर-पार होकर ज़मीन में जा धँसी और सीसरा ने वहीं दम तोड़ दिया।[6]

22 जब बाराक, सीसरा को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वहाँ आया तो याएल उससे मिलने बाहर आयी। उसने बाराक से कहा, "मेरे साथ अंदर आ। जिस आदमी को तू ढूँढ़

4:13 *शा., "लोहे के रथों को।"

अध्य. 4
1 न्या 4:21, 22; न्या 5:24, 26
2 यह 20:7, 9; यह 21:32
3 न्या 5:18
4 गि 24:21; न्या 1:16; 1शम 15:6
5 गि 10:29
6 न्या 4:6
7 न्या 5:20, 21
8 निर्ग 14:24; यह 10:10

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:7
2 न्या 5:24
3 न्या 4:11
4 न्या 4:1, 2
5 न्या 5:25
6 न्या 4:9; न्या 5:26, 27

रहा है वह यहाँ है।" बाराक उसके साथ
तंबू में गया और उसने देखा कि सीसरा
मरा पड़ा है और तंबू की खूँटी उसके सिर
के आर-पार घुसी है।

23 उस दिन परमेश्वर ने कनान के
राजा याबीन को इसराएलियों के अधीन
कर दिया।[1] 24 और वे याबीन पर
हावी होते गए और आखिरकार उसे*
मौत के घाट उतार दिया।[2]

5 उस दिन दबोरा[3] ने अबीनोअम के
बेटे बाराक[4] के साथ यह गीत
गाया:[5]

2 "यहोवा की बड़ाई हो!
इसराएली खुशी-खुशी लड़ने आए,[6]
उन्होंने अपनी शपथ* पूरी की।
3 हे राजाओ सुनो! हे शासको कान लगाओ,
मैं यहोवा के लिए गाऊँगी,
इसराएल के परमेश्वर यहोवा[7] की तारीफ में गाऊँगी।*[8]
4 हे यहोवा जब तू सेईर से निकला,[9]
एदोम के इलाके से होकर गया,
तब धरती काँप उठी, आकाश के झरोखे खुल गए
और बादल ज़ोरों से बरसने लगे।
5 यहोवा के सामने पहाड़ पिघल गए,*[10]
हाँ, इसराएल के परमेश्वर यहोवा[11] के सामने
सीनै पहाड़ भी पिघल गया।[12]
6 अनात के बेटे शमगर[13] के दिनों में,
याएल[14] के दिनों में, सड़कें सूनी हो गयीं,
मुसाफिर दूसरे रास्तों से आने-जाने लगे।
7 इसराएल में गाँव-के-गाँव खत्म हो गए।
फिर मैं, दबोरा[1] उनकी मदद के लिए खड़ी हुई
उनकी माँ बनकर मैंने उन्हें सँभाला।[2]
8 उन्होंने अपने लिए नए-नए देवता चुन लिए।[3]
तब शहर के फाटकों पर युद्ध हुआ,[4]
40,000 इसराएलियों में से किसी के पास भी
न तो ढाल थी न ही बरछी।
9 मैं पूरे दिल से इसराएल के सेनापतियों के साथ हूँ[5]
जो लोगों के संग अपने दुश्मनों से लड़ने आगे आए।[6]
यहोवा की बड़ाई हो!
10 हे भूरे गधों पर सवार होनेवालो,
बढ़िया-बढ़िया कालीनों पर बैठनेवालो,
हे सड़कों पर चलनेवालो, ध्यान दो:
11 कुएँ पर पानी पिलानेवालों में बातें हो रही थीं,
वे यहोवा के नेक कामों का गुण गा रहे थे,
उसके लोगों के नेक कामों की वाह-वाही कर रहे थे,
उन लोगों की जो इसराएल के गाँवों में रहते हैं।
तब यहोवा के लोग फाटकों की तरफ गए।
12 हे दबोरा[7] उठ! उठ जा!
उठकर एक गीत गा![8]
हे अबीनोअम के बेटे बाराक![9]

अध्य. 4
1 इब्र 11:32, 33
2 उत 9:25; व्य 7:24

अध्य. 5
3 न्या 4:4
4 न्या 4:6; इब्र 11:32
5 निर्ग 15:1; भज 18:उप
6 न्या 4:10
7 निर्ग 20:2
8 2शम 22:50; भज 7:17
9 व्य 33:2
10 व्य 4:11
11 निर्ग 20:2
12 निर्ग 19:18; नहे 9:13
13 न्या 3:31
14 न्या 4:17

दूसरा कॉल.
1 न्या 4:4
2 न्या 4:5
3 व्य 32:16, 17; न्या 2:12
4 न्या 4:1-3
5 न्या 4:6
6 न्या 4:10
7 न्या 4:4
8 न्या 5:1
9 न्या 4:6

4:24 *शा., "कनान के राजा याबीन को।" 5:2 *शा., "अपने बालों को खुला छोड़ा है।" यह एक निशानी थी कि उन्होंने कोई शपथ खायी है। 5:3 *या "संगीत बजाऊँगी।" 5:5 *या शायद, "काँप उठे।"

फुर्ती कर और अपने बंदियों
को ले जा।
13 बचे हुए लोग हाकिमों के पास आए,
यहोवा के लोग शूरवीरों का सामना
करने मेरे पास आए,
14 जो लोग घाटी में उतरे वे
एप्रैम से थे।
हे बिन्यामीन, वे तेरे लोगों के साथ
तेरे पीछे-पीछे आ रहे हैं।
माकीर[1] से सेनापति आए
और जबूलून से सेना में भरती
करानेवाले।*
15 इस्साकार के हाकिम दबोरा के
साथ थे,
इस्साकार तो था ही, बाराक[2] भी
दबोरा के संग था।
बाराक घाटी में पैदल गया,[3]
मगर रूबेन का घराना मन टटोलता
रह गया।
16 तुम* दो बोरों# के बीच ही
बैठे रहे,
चरवाहों की बाँसुरी की धुन में ही
खो गए,
रूबेन का घराना बस मन टटोलता
रह गया।
17 गिलाद, यरदन के उस पार ही
रहा,[4]
और दान भी जहाज़ों को छोड़कर न
आया।[5]
आशेर समुंदर किनारे हाथ-पर-हाथ
धरे बैठा रहा,
अपने बंदरगाह से टस-से-मस न
हुआ।[6]

5:14 *या "का छड़ लेकर आए।" या शायद, "शास्त्री के लिखने की चीज़ें सँभाल-नेवाले।" **5:16** *यानी रूबेन। #यानी बोझ ढोनेवाले जानवरों पर रखे बोरे।

अध्य. 5
1 गि 32:39
2 न्या 4:6; इब्र 11:32
3 न्या 4:14
4 यह 22:9
5 यह 19:46, 48
6 यह 19:24, 29

दूसरा कॉल.
1 न्या 4:14
2 न्या 4:6, 10
3 न्या 1:27
4 न्या 4:13
5 न्या 4:16
6 न्या 4:7, 13; भज 83:9
7 भज 20:7; नीत 21:31
8 न्या 4:11
9 न्या 4:17
10 न्या 4:19

18 मगर जबूलून अपनी जान पर खेल
गया,
पहाड़ियों[1] पर नप्ताली ने भी जान
की बाज़ी लगा दी।[2]
19 राजाओं ने आकर लड़ाई की,
मगिद्दो के सोतों के पास तानाक में[3]
कनान के राजाओं ने युद्ध किया।[4]
पर लूट में उनके हाथ चाँदी नहीं
लगी।[5]
20 आसमान के तारों ने युद्ध किया,
वे अपने पथ में घूमते हुए सीसरा से
लड़ने लगे।
21 कीशोन नदी दुश्मनों को बहा ले
गयी,[6]
वही प्राचीन नदी, कीशोन नदी।
मैंने बड़े-बड़े योद्धाओं को कुचल
डाला।
22 जंगी घोड़े धड़धड़ाते हुए आए,
सरपट दौड़नेवाले उसके घोड़ों की
टाप बज उठी।[7]
23 यहोवा के स्वर्गदूत ने कहा, 'मेरोज
को शाप दो,
उसके निवासियों को शाप दो।
क्योंकि वे यहोवा की मदद करने
नहीं आए,
उनके सूरमा, यहोवा की मदद के
लिए नहीं पहुँचे।'
24 केनी हेबेर[8] की पत्नी याएल औरतों
में धन्य है,[9]
तंबुओं में रहनेवाली सब औरतों में
धन्य है।
25 सीसरा ने पानी माँगा और उसने
उसे दूध दिया,
दावत के बड़े कटोरे में उसे मलाई-
वाला दूध पिलाया।[10]
26 उसने हाथ बढ़ाकर तंबू की
खूँटी ली,

दाएँ हाथ से उसने मज़दूर का
हथौड़ा उठाया
और सीसरा को ऐसा मारा कि
उसका सिर फट गया,
उसकी कनपटी आर-पार छिद
गयी।[1]
27 वह उसके पैरों पर ही ढेर हो गया,
वह गिरा और फिर उठ न सका,
हाँ, वह उसके पैरों पर ही ढेर हो
गया
और उसने वहीं दम तोड़ दिया।
28 खिड़की पर एक औरत आँखें
बिछाए हुए थी,
हाँ, सीसरा की माँ झरोखे से ताक
रही थी,
'उसका रथ अभी तक आया क्यों
नहीं?
उसके घोड़ों की टाप क्यों नहीं
सुनायी दे रही?'[2]
29 महल की बुद्धिमान औरतों ने उससे
कहा,
उसने भी मन-ही-मन सोचा,
30 'वे लोग ज़रूर लूट का माल बाँट
रहे होंगे,
हर योद्धा को एक या दो लड़कियाँ
दी जा रही होंगी,
सीसरा को रंगीन कपड़े दिए जा रहे
होंगे, लूट में मिले रंगीन कपड़े।
हर लुटेरे को गले में डालने के लिए
रंगीन, कढ़ाईदार कपड़ा मिल रहा
होगा,
हाँ, उन्हें दो-दो कपड़े मिल रहे
होंगे।'
31 हे यहोवा, तेरे सब दुश्मन इसी तरह
मिट जाएँ,[3]
मगर जो तुझसे प्यार करते हैं,
उनका तेज उगते सूरज की तरह
बढ़ता जाए।"

इसके बाद 40 साल तक देश में शांति
बनी रही।[1]

6 इसराएली एक बार फिर वही करने
लगे, जो यहोवा की नज़र में बुरा
था।[2] इसलिए यहोवा ने उन्हें सात साल
के लिए मिद्यानियों के हवाले कर दिया।[3]
2 मिद्यानी, इसराएलियों पर घोर अत्या-
चार करने लगे।[4] उनकी वजह से इस-
राएलियों ने पहाड़ों पर, गुफाओं में और
ऐसी जगहों पर छिपने की जगह* बनायी
जहाँ दुश्मन न पहुँच सकें।[5] 3 जब
इसराएली अपने खेतों में बीज बोते तो
मिद्यानी, अमालेकी[6] और पूर्वी देशों के
लोग[7] उन पर धावा बोल देते। 4 वे
छावनी डालते और गाज़ा तक उनके सारे
खेत उजाड़ देते। वे इसराएलियों के खाने
के लिए कुछ नहीं छोड़ते, उनकी भेड़ों,
बैलों और गधों तक को लूट ले जाते।[8]
5 जब मिद्यानी अपने मवेशियों के साथ
डेरा डालते, तो ऐसा लगता मानो अन-
गिनत टिड्डियाँ मैदान में उतर आयी हों।[9]
मिद्यानियों और उनके ऊँटों का हिसाब
लगाना मुश्किल होता।[10] वे आकर इस-
राएलियों का इलाका तहस-नहस कर
देते। 6 उनकी वजह से इसराएल में
घोर गरीबी फैल गयी और इसराएली
मदद के लिए यहोवा के आगे गिड़गिड़ाने
लगे।[11]

7 जब इसराएलियों ने मिद्यानियों से
परेशान होकर यहोवा को पुकारा,[12]
8 तो यहोवा ने अपना एक भविष्य-
वक्ता भेजा, जिसने उनसे कहा, "इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा का यह
संदेश है, 'मैं तुम्हें गुलामी के घर, मिस्र से
निकाल लाया।[13] 9 मैंने तुम्हें मिस्रियों
से और जो भी तुम पर ज़ुल्म करते

6:2 *या शायद, "अनाज छिपाने की
जगह।"

अध्य. 5
1 न्या 4:21, 22
2 न्या 4:15, 16
3 भज 83:9

दूसरा कॉल.
1 न्या 3:10, 11
न्या 3:30

अध्य. 6
2 न्या 2:19
3 व्य 28:15, 48
न्या 2:14
नहे 9:28
4 गि 33:55
5 1शम 13:5, 6
6 न्या 3:13
7 न्या 8:10
8 व्य 28:15, 33
व्य 28:31, 48
9 न्या 8:10
10 न्या 7:12
11 व्य 4:30
12 न्या 2:18
भज 107:19
13 निर्ग 20:2
लैव 26:13
न्या 2:1

थे, उन सबके हाथ से बचाया और तुम्हारे दुश्मनों को तुम्हारे सामने से खदेड़कर उनका देश तुम्हें दिया।[1] **10** मैंने कहा था, “मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ,[2] तुम एमोरियों के देवताओं की उपासना मत करना, जिनके देश में तुम रहते हो।”[3] लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी।’”[4]

11 इसके बाद, यहोवा का एक स्वर्गदूत ओप्रा में आया[5] और जाकर उस बड़े पेड़ के नीचे बैठ गया जो अबीएजेर वंशी[6] योआश का था। योआश का बेटा गिदोन[7] अंगूर रौंदनेवाले हौद में गेहूँ की बालें पीटकर दाने निकाल रहा था ताकि उन्हें मिद्यानियों से छिपाकर रखे। **12** यहोवा का स्वर्गदूत उसके सामने आया और उसने कहा, “हे वीर योद्धा! यहोवा तेरे साथ है।”[8] **13** गिदोन ने उससे कहा, “माफ करना मेरे मालिक, अगर यहोवा हमारे साथ है तो हमारा यह हाल क्यों हुआ?[9] हमारे बाप-दादा तो उसके अद्‌भुत कामों को याद करते हुए कहते थे,[10] ‘यहोवा ने हमें मिस्र से छुड़ाया।’[11] तो अब वह हमारे लिए क्यों कुछ नहीं करता? यहोवा ने हमें छोड़ दिया है,[12] हमें मिद्यानियों के हवाले कर दिया है!” **14** यहोवा ने उसकी तरफ देखकर कहा, “तू इसराएल को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाएगा[13] क्योंकि मैं तुझे भेज रहा हूँ। इसलिए हिम्मत जुटा और जा।” **15** गिदोन ने उससे कहा, “माफ करना यहोवा, मगर मैं इसराएल को कैसे छुड़ा सकता हूँ? मेरा कुल तो मनश्शे के गोत्र में सबसे छोटा है और मैं अपने पिता के पूरे घराने में एक मामूली इंसान हूँ।” **16** लेकिन यहोवा ने उससे कहा, “मैं तेरे साथ रहूँगा[14] और तू मिद्यानियों को ऐसे मार गिराएगा जैसे कोई अकेले आदमी को मार गिराता है।”

17 तब गिदोन ने उससे कहा, “अगर तू वाकई मुझसे खुश है, तो मुझे कोई निशानी दिखा कि तू* ही मुझसे बात कर रहा है। **18** जब तक मैं अपनी भेंट लेकर न आऊँ और उसे तेरे सामने न रखूँ, तू यहाँ से मत जाना।”[1] उसने कहा, “ठीक है, तेरे आने तक मैं यहीं रहूँगा।” **19** गिदोन अंदर गया और उसने बकरी का एक बच्चा पकाया और एक एपा* आटे से बिन-खमीर की रोटियाँ बनायीं।[2] फिर उसने टोकरी में गोश्त रखा और हाँडी में शोरबा लिया और बाहर आकर बड़े पेड़ के नीचे परोसा।

20 तब सच्चे परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उससे कहा, “यह गोश्त और बिन-खमीर की रोटियाँ ले जाकर उस बड़ी चट्टान पर रख और उस पर शोरबा उँडेल दे।” गिदोन ने ऐसा ही किया। **21** फिर यहोवा के स्वर्गदूत ने अपनी छड़ी उस चट्टान की तरफ बढ़ायी। जैसे ही उसने छड़ी की नोक से गोश्त और बिन-खमीर की रोटियों को छुआ, चट्टान से आग निकली और गोश्त और रोटियाँ भस्म हो गयीं।[3] यहोवा का स्वर्गदूत गिदोन के सामने से गायब हो गया। **22** गिदोन समझ गया कि वह यहोवा का स्वर्गदूत ही था।[4]

गिदोन ने तुरंत कहा, “हे सारे जहान के मालिक यहोवा, मैंने तेरे स्वर्गदूत को आमने-सामने देख लिया![5] हे यहोवा, अब क्या होगा?” **23** यहोवा ने उससे कहा, “शांत हो जा।* डर मत,[6] तू नहीं मरेगा।” **24** इसके बाद गिदोन ने वहाँ यहोवा के लिए एक वेदी बनायी। उसने

6:17 *यानी परमेश्वर। **6:19** *करीब 22 ली. अति. ख14 देखें। **6:23** *शा., “तुझे शांति मिले।”

अध्य. 6

1 यह 10:42; नहे 9:24
2 व्य 6:4
3 यह 24:15
4 व्य 28:15; न्या 2:2; यिर्म 3:13
5 न्या 2:1
6 यह 17:2; न्या 6:24; न्या 8:32
7 उत 49:22, 24; इब्र 11:32
8 न्या 2:18
9 न्या 6:2
10 व्य 4:9; भज 44:1
11 निर्ग 13:14
12 व्य 31:17; 2इत 15:2
13 न्या 8:22; इब्र 11:32
14 व्य 20:3, 4; न्या 2:18

दूसरा कॉल.

1 उत 18:3, 5; न्या 13:15
2 उत 18:6, 7; उत 19:1, 3
3 लैव 9:24; न्या 13:19, 20; 1रा 18:38; 1इत 21:26; 2इत 7:1
4 न्या 13:8, 9; इब्र 13:2
5 उत 16:7, 13; उत 32:24, 30; न्या 13:21, 22; लूक 1:11, 12
6 दान 10:19

उसका नाम यहोवा-शालोम* रखा,[1] जो आज तक इसी नाम से जानी जाती है। यह वेदी आज भी ओप्रा में अबीएजेरियों के इलाके में है।

25 उसी रात यहोवा ने गिदोन से कहा, "अपने पिता का बैल ले, वह बैल* जो सात साल का है। और बाल की जो वेदी तेरे पिता की है उसे गिरा दे और पास खड़ी पूजा-लाठ# भी काट डाल।[2] **26** इसके बाद तू उस ऊँची जगह पर, पत्थरों को कतार में रखकर अपने परमेश्वर यहोवा के लिए एक वेदी बना। और उस पर बैल* को होम-बलि करके चढ़ा। जिस पूजा-लाठ को तू काटेगा, उसी की लकड़ियों पर यह होम-बलि चढ़ाना।" **27** तब गिदोन ने अपने सेवकों में से दस आदमी लिए और जैसा यहोवा ने कहा था, वैसा ही किया। लेकिन उसे अपने पिता के घराने और शहर के लोगों का डर था, इसलिए उसने यह काम दिन में नहीं रात में किया।

28 अगली सुबह जब शहर के आदमी उठे तो उन्होंने देखा कि बाल की वेदी गिरा दी गयी है और उसके पास की पूजा-लाठ भी काट दी गयी है और वहाँ एक नयी वेदी खड़ी है जिस पर बैल* अर्पित किया गया है। **29** तब वे एक-दूसरे से पूछने लगे, "यह किसका काम है?" पूछ-ताछ करने पर उन्हें पता चला कि यह योआश के बेटे गिदोन का काम है। **30** शहर के आदमियों ने योआश से कहा, "बाहर ला अपने बेटे को। हम उसे ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे! उसने बाल की वेदी तोड़ी है और वहाँ खड़ी पूजा-लाठ को काटा है।" **31** तब योआश[3] ने उस भीड़ से जो उसे घेरे खड़ी थी कहा, "क्या बाल को तुम्हारी ज़रूरत है कि तुम उसकी वकालत करो और उसे बचाओ? कान खोलकर सुन लो, जो भी उसकी वकालत करेगा वह आज सुबह मार डाला जाएगा।[1] अगर बाल सचमुच ईश्वर है तो वह खुद को बचाकर दिखाए,[2] आखिर उसकी वेदी गिरायी गयी है।" **32** उस दिन योआश ने अपने बेटे गिदोन का नाम यरुब्बाल* रखा क्योंकि उसने कहा, "बाल खुद को बचाकर दिखाए, आखिर उसकी वेदी गिरायी गयी है।"

33 फिर सभी मिद्यानी,[3] अमालेकी[4] और पूर्वी देशों के लोग एकजुट हो गए[5] और नदी पार कर यिजरेल घाटी में आए और वहाँ अपना डेरा डाला। **34** तब यहोवा की पवित्र शक्ति गिदोन पर उतरी[6] और उसने नरसिंगा फूँका।[7] अबीएजेरी लोग[8] गिदोन के पीछे-पीछे गए। **35** गिदोन ने मनश्शे के पूरे इलाके में अपने दूत भेजे और लोग उसके पीछे हो लिए। उसने आशेर, जबूलून और नप्ताली के इलाकों में भी अपने दूत भेजे और लोग उसका साथ देने आए।

36 गिदोन ने सच्चे परमेश्वर से कहा, "अगर तू अपने वादे के मुताबिक इसराएल को मेरे हाथों बचानेवाला है,[9] **37** तो मैं खलिहान में यह कतरा हुआ ऊन रख रहा हूँ। अगर ऊन पर ओस पड़ी मगर इसके आस-पास की ज़मीन सूखी रही, तो मैं जान लूँगा कि तू मेरे हाथों इसराएल को बचाएगा, ठीक जैसा तूने वादा किया है।" **38** अगले दिन वैसा ही हुआ। जब गिदोन सुबह-सुबह उठा और उसने कतरा हुआ ऊन निचोड़ा,

---

6:24 *मतलब "यहोवा शांति है।" **6:25, 28** *शा., "दूसरा बैल।" **6:25** #शब्दावली देखें। **6:26** *शा., "दूसरे बैल।"

6:32 *मतलब "बाल अपना मुकदमा लड़े (या अपनी पैरवी करे)।"

अध्य. 6
1 उत 22:14; निर्ग 17:15
2 निर्ग 23:24; व्य 12:3
3 न्या 6:11

दूसरा कॉल.
1 व्य 13:5; व्य 17:2-5
2 1रा 18:26, 27; भज 115:5; यिर्म 10:5
3 गि 25:17, 18; न्या 6:2
4 निर्ग 17:16; गि 24:20; व्य 25:19
5 न्या 6:3; न्या 7:12
6 न्या 3:9, 10; न्या 11:29; न्या 13:24, 25; न्या 14:6; न्या 15:14; जक 4:6
7 न्या 3:26, 27
8 यह 17:2
9 न्या 6:14

तो उसमें से इतना पानी निकला कि
एक बड़ा कटोरा भर गया। **39** फिर
गिदोन ने सच्चे परमेश्‍वर से कहा, “हे
परमेश्‍वर, तेरा गुस्सा मुझ पर न भड़के।
तुझसे एक और बिनती है। मैं एक
बार फिर परखकर देखना चाहता हूँ कि
तू मेरे साथ है या नहीं। इस बार ऐसा
हो कि कतरा हुआ ऊन सूखा रहे और
आस-पास की ज़मीन ओस से गीली हो
जाए।” **40** उस रात परमेश्‍वर ने ठीक
वैसा ही किया, ऊन बिलकुल सूखा
रहा मगर आस-पास की ज़मीन ओस से
भीग गयी।

7 फिर यरुब्बाल यानी गिदोन[1] और
उसके सब आदमी सुबह-सुबह उठे
और उन्होंने ‘हरोद के सोते’ के पास डेरा
डाला। मिद्यानियों की छावनी उनके उत्तर
में मोरे पहाड़ी के पास घाटी में थी।
2 यहोवा ने गिदोन से कहा, “तेरे साथ
बहुत ज़्यादा आदमी हैं। अगर मैंने मिद्या-
नियों को तुम्हारे हाथ कर दिया,[2] तो इस-
राएली शायद डींगें मारें और मुझसे कहें,
‘हमने अपने दम पर जीत हासिल की
है।’[3] **3** इसलिए जा और अपने आद-
मियों के सामने घोषणा कर, ‘तुममें से
अगर कोई युद्ध में जाने से डर रहा है, तो
वह अपने घर लौट जाए।’”[4] यह घोषणा
करके गिदोन ने उनको परखा और
22,000 आदमी घर लौट गए, सिर्फ
10,000 आदमी रह गए।

4 यहोवा ने गिदोन से कहा, “अब भी
तेरे पास बहुत ज़्यादा आदमी हैं। ऐसा
कर कि तू इन्हें नीचे पानी की धारा के
पास ले जा और वहाँ मैं इन आदमियों
को छाटँने में तेरी मदद करूँगा। जिसके
बारे में मैं कहूँ कि वह तेरे साथ जाएगा, तू
उसे ले जाना और जिसके बारे में कहूँ कि
वह तेरे साथ नहीं जाएगा, तू उसे मत ले
जाना।” **5** तब गिदोन अपने आदमियों
को नीचे धारा के पास ले गया।

यहोवा ने गिदोन से कहा, “जितने भी
आदमी चुल्लू से पानी पीते वक्‍त चारों
ओर नज़र रखेंगे,* उन्हें तू एक तरफ
कर देना। और जो घुटनों के बल बैठेंगे
और सीधे धारा में मुँह डालकर पीएँगे,
उन्हें तू दूसरी तरफ कर देना।” **6** उन
सबमें से सिर्फ 300 लोग ऐसे निकले
जिन्होंने चुल्लू से पानी पीया जबकि बाकी
आदमियों ने घुटनों के बल बैठकर धारा
में मुँह डालकर पीया।

7 तब यहोवा ने गिदोन से कहा,
“इन्हीं 300 आदमियों के हाथों मैं इस-
राएल को बचाऊँगा और मिद्यानियों को
तुम लोगों के हवाले कर दूँगा।[1] बाकी
आदमियों को तू घर भेज दे।” **8** इस-
लिए गिदोन ने उन 300 आदमियों को
अपने साथ रखा और बाकियों को घर
भेज दिया। बाकी सैनिकों से उन्होंने खाने-
पीने का सामान और नरसिंगे ले लिए।
उनके दुश्‍मन मिद्यानी, नीचे घाटी में डेरा
डाले हुए थे।[2]

9 रात को यहोवा ने गिदोन से कहा,
“मिद्यानियों की छावनी पर हमला करने
के लिए तैयार हो जा क्योंकि मैंने उनको
तेरे हवाले कर दिया है।[3] **10** लेकिन
अगर तू हमला करने से डर रहा है,
तो अपने सेवक पूराह के साथ नीचे
दुश्‍मनों की छावनी में जा **11** और सुन
कि वे आपस में क्या बातें कर रहे हैं।
तब तेरे अंदर उनसे लड़ने की हिम्मत
आ जाएगी।” गिदोन अपने सेवक पूराह
के साथ मिद्यानियों की छावनी के पास
गया।

12 मिद्यानी, अमालेकी और पूर्वी

7:5 *शा., “कुत्ते के समान जीभ से पानी पीएँगे।”

अध्य. 7
1 न्या 6:11, 32
2 1शम 14:6
2इत 14:11
3 1शम 17:47
4 व्य 20:8

दूसरा कॉल.
1 न्या 7:2
2 न्या 6:33
3 न्या 3:9, 10
न्या 4:14

देशों के लोगों[1] से घाटी ऐसी भरी थी मानो वहाँ टिड्डियों का झुंड उतर आया हो। और उनके ऊँटों की गिनती समुंदर किनारे की बालू के किनकों की तरह अनगिनत थी।[2] **13** जब गिदोन दुश्मन की छावनी के पास गया, तो एक आदमी अपने साथी को अपना सपना बता रहा था। उसने कहा, “मैंने सपने में जौ की एक गोल रोटी देखी जो लुढ़कती हुई मिद्यानियों की छावनी की तरफ आ रही थी। वह आकर तंबू से ऐसी टकरायी कि पूरा तंबू पलट गया।[3] ज़रा सोचो, एक रोटी से पूरा-का-पूरा तंबू गिरकर सपाट हो गया।” **14** उसके साथी ने कहा, “यह रोटी कुछ और नहीं गिदोन की तलवार है,[4] उसी इसराएली की जो योआश का बेटा है। परमेश्‍वर ने मिद्यानियों और पूरी छावनी को उसके हाथ कर दिया है।”[5]

15 जैसे ही गिदोन ने वह सपना सुना और उसका मतलब जाना,[6] उसने झुककर परमेश्‍वर को दंडवत किया। इसके बाद वह इसराएल की छावनी में लौट आया। उसने इसराएलियों से कहा, “तैयार हो जाओ क्योंकि यहोवा ने मिद्यानियों को तुम्हारे हाथ कर दिया है।” **16** गिदोन ने 300 आदमियों को तीन दलों में बाँटा और हरेक को एक-एक नरसिंगा[7] और एक-एक मटका दिया जिसके अंदर मशाल थी। **17** फिर उसने कहा, “तुम मुझ पर ध्यान देना और जैसा मैं करूँ, ठीक वैसा करना। जब मैं दुश्‍मनों की छावनी के पास जाऊँ, तो तुम भी मेरे पीछे आना। **18** जब मैं और मेरे साथी नरसिंगे फूँकें तो तुम जो छावनी के चारों तरफ खड़े रहोगे, तुम भी नरसिंगे फूँकना और ज़ोर से चिल्लाना, ‘यह युद्ध यहोवा का है! गिदोन का है!’”

19 अब रात का दूसरा पहर* शुरू हुआ और मिद्यानियों के पहरा देनेवाले आदमी बदले गए। उसी वक्‍त, गिदोन के साथ उसके 100 आदमी मिद्यानियों की छावनी के पास आए। उन्होंने ज़ोर से अपने नरसिंगे फूँके[1] और मटके फोड़े।[2] **20** इस तरह, तीनों दलों ने नरसिंगे फूँके और मटके फोड़े। वे बाएँ हाथ में मशाल और दाएँ हाथ में नरसिंगा लिए ज़ोरदार आवाज़ में चिल्लाए, “यहोवा की तलवार और गिदोन की तलवार!” **21** गिदोन का हर आदमी छावनी के चारों तरफ अपनी-अपनी जगह खड़ा रहा। दुश्‍मन की पूरी सेना चिल्लाती हुई इधर-उधर भागने लगी।[3] **22** इस दौरान, गिदोन के 300 आदमी नरसिंगे फूँकते रहे और यहोवा ने ऐसा किया कि दुश्‍मन सैनिक एक-दूसरे पर ही तलवार चलाने लगे।[4] दुश्‍मन सेना भागते-भागते सरेरा की तरफ बेत-शित्ता पहुँची और फिर वहाँ से आबेल-महोला[5] की सरहद तक गयी, जो तब्बात के नज़दीक है।

23 तब नप्ताली, आशेर और मनश्‍शे के पूरे गोत्र[6] से और भी इसराएलियों को बुलाया गया और उन्होंने मिलकर मिद्यानियों का पीछा किया। **24** गिदोन ने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में सभी जगह दूत भेजे और कहा, “इससे पहले कि मिद्यानी बेतबारा के सोतों और यरदन के घाटों पर पहुँचें, तुम जाकर वहाँ तैनात हो जाओ ताकि वे भाग न पाएँ।” तब एप्रैम के सभी आदमी इकट्ठा हुए और वे यरदन के घाटों और बेतबारा के सोतों पर तैनात हो गए। **25** उन्होंने मिद्यानियों के दो हाकिमों को भी पकड़ लिया, एक का नाम था ओरेब

अध्य. 7
1 न्या 6:33
2 न्या 6:3, 5
3 न्या 6:16
4 न्या 6:14
5 न्या 7:7
6 न्या 7:11
7 न्या 7:8

दूसरा कॉल.
1 न्या 7:8
2 न्या 7:16
3 निर्ग 14:25
2रा 7:6, 7
4 2इत 20:23
5 1रा 19:16
6 न्या 6:35

7:19 *रात के करीब 10 बजे से सुबह करीब 2 बजे तक।

और दूसरे का ज़ाएब। उन्होंने ओरेब को
एक बड़ी चट्टान पर मार डाला, जो आगे
चलकर ओरेब की चट्टान कहलायी।[1]
और ज़ाएब को उन्होंने अंगूर रौंदनेवाले
हौद में मार डाला, जो बाद में ज़ाएब के
हौद के नाम से जाना गया। इसराएली
मिद्यानियों का पीछा करते रहे।[2] और
यरदन के इलाके में जब वे गिदोन के पास
आए, तो अपने साथ ओरेब और ज़ाएब
का सिर लाए।

8 एप्रैम के आदमियों ने गिदोन से कहा,
“जब तू मिद्यानियों से लड़ने गया तो
तूने हमें क्यों नहीं बुलाया?[3] यह तूने ठीक
नहीं किया।” और वे गिदोन से झगड़ने
लगे।[4] **2** लेकिन गिदोन ने उनसे कहा,
“मैं कौन होता हूँ तुम्हारी बराबरी करने-
वाला? हम अबीएजेर के आदमियों[5] ने
जो किया, उससे कहीं बढ़कर तुम एप्रै-
मियों[6] ने किया।* **3** मिद्यानियों के
हाकिम ओरेब और ज़ाएब को पर-
मेश्वर ने तुम्हारे हवाले कर दिया।[7] मैंने
जो किया वह तुम्हारे मुकाबले कुछ भी
नहीं।” गिदोन की बातें सुनकर उनका
गुस्सा ठंडा हो गया।

4 फिर गिदोन दुश्मनों के पीछे-पीछे
यरदन तक आया और उसने उसे पार
किया। वह और उसके 300 आदमी
थककर चूर हो गए, फिर भी वे उनका
पीछा करते रहे। **5** सुक्कोत में आकर
उसने वहाँ के लोगों से कहा, “मैं मिद्या-
नियों के राजा जेबह और सलमुन्ना का
पीछा कर रहा हूँ। मेरे आदमी बहुत थक
चुके हैं, मेहरबानी करके उन्हें खाने के
लिए कुछ रोटियाँ दे दो।” **6** लेकिन
सुक्कोत के हाकिमों ने कहा, “तू तो ऐसे
रोटी माँग रहा है, जैसे तेरे आदमियों ने
जेबह और सलमुन्ना को बंदी बना लिया
हो!” **7** गिदोन ने उनसे कहा, “तो ठीक
है तुम भी सुन लो, जब यहोवा जेबह
और सलमुन्ना को मेरे हाथ कर देगा तो
मैं लौटकर तुम्हें जंगल की कँटीली
झाड़ियों से खूब मारूँगा।”[1] **8** फिर
गिदोन, पनूएल गया और उसने वहाँ भी
लोगों से रोटी माँगी। लेकिन उन्होंने भी
वही जवाब दिया जो सुक्कोत के लोगों ने
दिया था। **9** गिदोन ने पनूएल के लोगों
से कहा, “जब मैं जीतकर लौटूँगा, तो
तुम्हारे शहर की मीनार गिरा दूँगा।”[2]

10 जेबह और सलमुन्ना अपने
15,000 आदमियों के साथ कारकोर में
थे। पूर्वी देश की सेना[3] में सिर्फ इतने
आदमी बच गए थे, बाकी 1,20,000
योद्धा मारे जा चुके थे। **11** गिदोन
आगे बढ़ते हुए नोबह और योगबहा[4] के
पूरब में उस रास्ते से गया जहाँ खाना-
बदोश लोग रहते थे और उसने अचानक
दुश्मनों की छावनी पर हमला बोल दिया।
12 मिद्यानी राजा जेबह और सलमुन्ना
वहाँ से भाग निकले। मगर गिदोन ने
उनका पीछा करके उन्हें पकड़ लिया और
दुश्मनों की पूरी छावनी में अफरा-तफरी
मच गयी।

13 युद्ध से लौटते वक्त, योआश का
बेटा गिदोन उस चढ़ाई से होकर गुज़रा
जो हेरेस को जाती थी। **14** रास्ते में
उसने सुक्कोत के एक जवान आदमी
को पकड़ा और उससे सुक्कोत के हाकिमों
और मुखियाओं के बारे में पूछताछ की।
उस आदमी ने गिदोन को उनके नाम
लिखकर दिए, कुल मिलाकर 77 लोगों
के नाम। **15** तब गिदोन ने सुक्कोत के
आदमियों के पास आकर कहा, “ये रहे
जेबह और सलमुन्ना! इन्हीं के बारे में

8:2 *शा., “क्या एप्रैम के बीने हुए अंगूर
अबीएजेर की काटी गयी फसल से ज़्यादा
नहीं हैं?”

अध्य. 7
1 भज 83:11, यश 10:26
2 न्या 8:4

अध्य. 8
3 न्या 7:2
4 न्या 12:1, 2इत 25:10
5 न्या 6:11, 34
6 न्या 7:24
7 न्या 7:24, 25

दूसरा कॉल.
1 न्या 8:16
2 न्या 8:17
3 न्या 7:12
4 गि 32:34, 35

तुमने मुझसे कहा था, ‘तू तो अपने थके
हुए आदमियों के लिए ऐसे रोटी माँग रहा
है, जैसे उन्होंने जेबह और सलमुन्ना को
बंदी बना लिया हो!’”[1] **16** फिर गिदोन
ने जंगल की कँटीली झाड़ियाँ लेकर
सुक्कोत के मुखियाओं की अच्छी खबर
ली।[2] **17** इसके बाद उसने पनूएल की
मीनार गिरा दी[3] और शहर के आदमियों
को मार डाला।

18 गिदोन ने जेबह और सलमुन्ना से
पूछा, “ताबोर में तुमने जिन लोगों को
मारा था वे दिखने में कैसे थे?” उन्होंने
कहा, “बिलकुल तेरे जैसे। वे किसी
राजा के बेटे से कम नहीं दिख रहे थे।”
19 गिदोन ने कहा, “वे मेरे सगे भाई
थे। मैं जीवित परमेश्वर यहोवा की शपथ
खाकर कहता हूँ, अगर तुमने मेरे भाइयों
को नहीं मारा होता, तो मैं भी तुम्हें नहीं
मारता।” **20** फिर उसने अपने पह-
लौठे बेटे येतेर से कहा, “मार डाल
इन्हें।” लेकिन येतेर ने अपनी तलवार
नहीं निकाली, वह डर गया क्योंकि वह
अभी लड़का ही था। **21** इस पर जेबह
और सलमुन्ना ने गिदोन से कहा, “उससे
क्या कह रहा है, अगर तुझमें हिम्मत है,
तो उठा तलवार और मार डाल हमें।”
तब गिदोन ने आगे बढ़कर जेबह और
सलमुन्ना को मार डाला।[4] और उनके
ऊँटों की गरदन से चंद्रहार ले लिए।

22 इसके बाद इसराएलियों ने गिदोन
से कहा, “तू हमारा राजा बन जा और तेरे
बाद तेरे बेटे और पोते भी हम पर राज
करें क्योंकि तूने हमें मिद्यानियों के हाथ से
बचाया है।”[5] **23** मगर गिदोन ने उनसे
कहा, “न तो मैं, न मेरे बेटे तुम पर
राज करेंगे। यहोवा तुम्हारा राजा है और
वही तुम पर राज करेगा।”[6] **24** उसने
यह भी कहा, “तुमसे एक बिनती है, तुम
अपने लूट के माल में से मुझे एक-
एक नथ दो।” (क्योंकि इसराएलियों ने
जिन्हें हराया था वे इश्माएली[1] थे और
सोने की नथ पहना करते थे।) **25** इस-
राएलियों ने कहा, “ज़रूर, क्यों नहीं।”
उन्होंने एक कपड़ा फैलाया और हर
आदमी अपने लूट के माल से एक-एक
नथ उसमें डालता गया। **26** गिदोन को
सोने की जितनी नथ मिलीं, उनका कुल
वज़न 1,700 शेकेल* सोने के बराबर
था। इसके अलावा उसे चंद्रहार, गले की
लटकन, मिद्यानी राजाओं के बैंजनी रंग
के कपड़े और ऊँटों के गले के हार भी
मिले।[2]

27 गिदोन ने उस सोने से एक एपोद
बनाया[3] और अपने शहर ओप्रा[4] में
उसकी नुमाइश की। मगर सारे इसराएली
एपोद को देवता मानकर पूजने लगे*[5]
और वह एपोद, गिदोन और उसके घराने
के लिए फंदा साबित हुआ।[6]

28 इस तरह मिद्यानी[7] इसराएलियों
से हार गए और वे फिर कभी इसराए-
लियों के खिलाफ खड़े न हुए।* 40 साल
तक, जब तक गिदोन ज़िंदा रहा, उनके
इलाके में शांति बनी रही।[8]

29 योआश का बेटा यरुब्बाल*[9]
अपने घर लौट गया और वहाँ रहने
लगा।

30 गिदोन के 70 बेटे हुए क्योंकि
उसकी बहुत सारी पत्नियाँ थीं।
31 शेकेम में रहनेवाली उसकी उप-पत्नी
से भी उसे एक बेटा हुआ जिसका
नाम उसने अबीमेलेक रखा।[10] **32** एक

8:26 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। **8:27** *या “एपोद के साथ वेश्याओं जैसी बदचलनी करने लगे।” **8:28** *शा., “सिर न उठाया।” **8:29** *यानी गिदोन। न्या 6:32 देखें।

अध्य. 8
1 न्या 8:5, 6
2 न्या 8:7
3 न्या 8:8, 9
4 भज 83:11
5 न्या 6:14
6 निर्ग 15:18, 1शम 10:19, यश 33:22, यश 43:15

दूसरा कॉल.
1 उत 16:11, उत 25:13, उत 28:9, उत 37:28
2 न्या 8:21
3 निर्ग 28:6, न्या 17:5
4 न्या 6:11
5 न्या 2:17
6 भज 106:36
7 न्या 6:1
8 न्या 3:11, न्या 5:31
9 न्या 6:32, 1शम 12:11
10 न्या 9:1, 2, 2शम 11:21

लंबी और खुशहाल ज़िंदगी जीने के बाद योआश का बेटा गिदोन मर गया। उसे अबीएज़ेरियों के इलाके ओप्रा में[1] अपने पिता योआश की कब्र में दफनाया गया।

33 गिदोन के मरने के तुरंत बाद इसराएली फिर से बाल देवताओं की पूजा* करने लगे[2] और उन्होंने बाल-बरीत को अपना ईश्वर बना लिया।[3] **34** वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए[4] जिसने आस-पास के सभी दुश्मनों से उन्हें बचाया था।[5] **35** यही नहीं, यरुब्बाल यानी गिदोन ने उनके साथ जितनी भलाई की थी, वे उसे भी भूल गए और उन्होंने उसके घराने पर कोई कृपा* नहीं की।[6]

9 फिर ऐसा हुआ कि यरुब्बाल का बेटा अबीमेलेक,[7] शेकेम में अपने मामाओं के पास आया। उसने उनसे और अपने नाना के घराने के सब लोगों से कहा, **2** "शेकेम के अगुवों* के पास जाकर पूछो कि तुम्हारे लिए क्या अच्छा है, यरुब्बाल के सभी 70 बेटे[8] तुम पर राज करें या सिर्फ एक आदमी? उन्हें यह भी याद दिलाना कि मैं कोई पराया नहीं, उनका अपना खून हूँ।"#

3 तब उसके मामाओं ने शेकेम के अगुवों को वे सारी बातें बतायीं जो अबीमेलेक ने उनसे कही थीं। शेकेम के अगुवे अबीमेलेक का साथ देने के लिए कायल हो गए* क्योंकि उनका कहना था, "आखिर वह हमारा भाई है।" **4** फिर उन्होंने बाल-बरीत के मंदिर[9] से उसे चाँदी के 70 टुकड़े दिए। अबीमेलेक ने उस रकम से कुछ निठल्ले बदमाश रख लिए। **5** वह उनके साथ अपने पिता के घर ओप्रा गया[1] और उसने अपने भाइयों यानी यरुब्बाल के 70 बेटों को एक ही पत्थर पर मार डाला।[2] मगर यरुब्बाल का सबसे छोटा बेटा योताम छिप गया और ज़िंदा बच गया।

6 फिर शेकेम के सभी अगुवों और बेत-मिल्लो के लोगों ने अबीमेलेक को राजा बनाया।[3] वे शेकेम में बड़े पेड़ के पास, खंभे के पास इकट्ठा हुए थे।

7 जब इस बात की खबर योताम को मिली तो वह तुरंत गरिज्जीम पहाड़[4] पर चढ़ा और ज़ोरदार आवाज़ में कहने लगा, "हे शेकेम के अगुवो, मेरी बात सुनो तब परमेश्वर भी तुम्हारी सुनेगा।

8 एक बार पेड़ों ने सोचा कि वे अपने लिए एक राजा चुनें। उन्होंने जैतून के पेड़ से कहा, 'हम पर राज कर।'[5] **9** लेकिन जैतून के पेड़ ने कहा, 'मेरा काम तो तेल पैदा करना है जिससे परमेश्वर और इंसानों का आदर-सम्मान किया जाता है। भला अपना काम छोड़कर मैं दूसरे पेड़ों पर राज क्यों करूँ?'* **10** इसके बाद पेड़ों ने अंजीर के पेड़ से कहा, 'आ, हम पर राज कर।' **11** लेकिन अंजीर के पेड़ ने कहा, 'मैं अपने मीठे-मीठे फलों और अपनी अच्छी पैदावार को छोड़कर तुम पर राज क्यों करूँ?'* **12** इसके बाद पेड़ों ने अंगूर की बेल से कहा, 'आ, हम पर राज कर।' **13** अंगूर की बेल ने कहा, 'मुझसे नयी दाख-मदिरा बनती है जिससे परमेश्वर और इंसान खुश होते हैं। भला यह काम छोड़कर मैं तुम पर राज क्यों करूँ?'* **14** आखिरकार सब पेड़ों ने

अध्य. 8
1 न्या 6:11, 24
2 न्या 2:17, 19; न्या 10:6
3 न्या 9:4
4 न्या 3:7
5 भज 106:43
6 न्या 9:16-18

अध्य. 9
7 न्या 8:30, 31
8 न्या 8:30
9 न्या 8:33; न्या 9:46

दूसरा कॉल.
1 न्या 6:11; न्या 8:27
2 2रा 11:1; 2इत 21:4
3 व्य 17:14; 1शम 8:7
4 व्य 11:29; यह 8:33; यूह 4:20
5 न्या 8:22

8:33 *या "के साथ वेश्याओं जैसी बदचलनी।" **8:35** *या "अटल प्यार।" **9:2** *या शायद, "ज़मींदारों।" #शा., "तुम्हारा हाड़-माँस हूँ।" **9:3** *शा., "उनका मन उसकी तरफ झुकने लगा।"

9:9 *शा., "के ऊपर क्यों झूमूँ?" **9:11, 13** *शा., "तुम्हारे ऊपर क्यों झूमूँ?"

कँटीली झाड़ी से कहा, ‘आ, हम पर राज कर।’[1] **15** तब कँटीली झाड़ी ने उन पेड़ों से कहा, ‘अगर तुम वाकई मेरा अभिषेक करके मुझे अपना राजा बनाना चाहते हो, तो मेरी छाँव में शरण लो। लेकिन अगर तुम मुझे राजा नहीं बनाओगे, तो मुझसे ऐसी आग निकलेगी जो लबानोन के देवदारों को भस्म कर देगी।’

16 अब बताओ, क्या तुमने सच्चे मन से अबीमेलेक को राजा बनाया है?[2] क्या तुमने ऐसा करके सही किया? क्या तुमने यरुब्बाल और उसके घराने के साथ भलाई की और उसके साथ जैसा व्यवहार किया क्या वह सही था? **17** मेरे पिता ने अपनी जान पर खेलकर तुम्हें मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाया।[3] **18** लेकिन बदले में तुम लोगों ने क्या किया? तुम मेरे पिता के घराने के खिलाफ उठ खड़े हुए और उसके 70 बेटों को एक ही पत्थर पर मार डाला।[4] फिर तुमने उसकी दासी के बेटे अबीमेलेक[5] को शेकेम के अगुवों पर राजा ठहराया, बस इसलिए कि वह तुम्हारा भाई है। **19** अगर तुमने यरुब्बाल और उसके घराने के साथ जो किया, वह सच्चे मन से किया है और अगर वह सही है, तो तुम अबीमेलेक से खुश रहोगे और वह भी तुमसे खुश रहेगा। **20** लेकिन अगर तुमने बुरे इरादे से ऐसा किया है, तो वह शेकेम और बेत-मिल्लो[6] के अगुवों को आग से भस्म कर देगा और शेकेम और बेत-मिल्लो के अगुवे भी अबीमेलेक को आग से भस्म कर देंगे।”[7]

21 फिर योताम[8] वहाँ से भागकर बेर नाम की जगह चला गया और अपने भाई अबीमेलेक के डर से वहीं रहने लगा।

22 अबीमेलेक ने तीन साल तक इसराएल पर मनमाना राज किया। **23** फिर परमेश्‍वर ने उसके और शेकेम के अगुवों के बीच फूट पड़ने दी और वे अबीमेलेक के साथ विश्‍वासघात करने लगे। **24** यह इसलिए हुआ ताकि यरुब्बाल के 70 बेटों के खून का बदला लिया जा सके। और उनके खून का दोष उनके हत्यारे अबीमेलेक पर आए[1] और शेकेम के अगुवों पर भी, जिन्होंने इस कत्लेआम में उसका साथ दिया था। **25** शेकेम के अगुवों ने अबीमेलेक के लिए पहाड़ों पर कुछ आदमियों को घात में बिठाया। और वे लोग आने-जानेवालों को लूटने लगे। इस बात की खबर अबीमेलेक को मिली।

26 फिर एबेद का बेटा गाल अपने भाइयों के साथ शेकेम आया और शेकेम[2] के अगुवे उम्मीद करने लगे कि वह उनकी मदद करेगा। **27** उन्होंने अंगूरों के बाग में जाकर अंगूर इकट्ठे किए, उन्हें रौंदकर रस निकाला और जश्‍न मनाने लगे। वे अपने देवता के मंदिर में जाकर[3] खाने-पीने लगे और अबीमेलेक को कोसने लगे। **28** एबेद के बेटे गाल ने कहा, “अबीमेलेक और शेकेम* कौन होते हैं जो हम उनके अधीन रहें? अबीमेलेक यरुब्बाल[4] का बेटा है तो क्या हुआ? उसका अधिकारी जबूल है तो क्या हुआ? अबीमेलेक के अधीन रहने से अच्छा है कि हम शेकेम के पिता हमोर के बेटों की सेवा करें। **29** अगर यहाँ के निवासी मेरा हुक्म मानें, तो मैं अबीमेलेक का तख्ता पलट दूँगा।” फिर गाल ने अबीमेलेक को चुनौती दी, “तुझे अपनी सेना जितनी बढ़ानी है बढ़ा ले और युद्ध के मैदान में उतर आ।”

30 जब शेकेम के हाकिम जबूल को

9:28 *शायद शेकेम के अधिकारी जबूल की बात की गयी है।

अध्य. 9
1 न्या 9:6
2 न्या 9:6
3 न्या 7:9; न्या 8:28
4 न्या 9:5
5 न्या 8:30, 31
6 न्या 9:6, 49
7 न्या 9:39, 53
8 न्या 9:5

दूसरा कॉल.
1 उत 9:6; न्या 9:5
2 यह 21:20, 21; यह 24:1
3 न्या 8:33
4 न्या 6:32

एबेद के बेटे गाल की बातों का पता चला
तो उसका गुस्सा भड़क उठा। 31 उसने
चुपके से* अपने दूतों के हाथ अबीमेलेक
को यह संदेश भिजवाया, “देख, शेकेम में
एबेद का बेटा गाल और उसके भाई आए
हुए हैं और तेरे खिलाफ शहर के लोगों
को भड़का रहे हैं। 32 इसलिए तू अपने
आदमियों के साथ रात में ही यहाँ आ
जा और बाहर घात लगाकर बैठ।
33 कल सूरज उगते ही शहर पर धावा
बोल दे। जब गाल और उसके आदमी
तुझसे लड़ने आएँ तो किसी भी तरह उसे
हरा दे।”

34 इसलिए रात को अबीमेलेक और
उसके आदमी शेकेम गए और शहर के
पास चार दलों में घात लगाकर बैठ गए।
35 अगले दिन एबेद का बेटा गाल,
शहर के फाटक पर आया। घात में बैठे
अबीमेलेक और उसके आदमी उठकर
शहर की तरफ बढ़ने लगे। 36 जब
गाल ने लोगों को देखा तो जबूल से कहा,
“ऐसा लगता है, लोग पहाड़ों से उतर-
कर हमारी तरफ आ रहे हैं।” मगर जबूल
ने कहा, “यह तेरा वहम है, वे लोग नहीं
पहाड़ों की परछाईं है।”

37 कुछ देर बाद गाल ने कहा, “देख
तो सही, लोग सचमुच पहाड़ी इलाके के
बीच से नीचे उतर रहे हैं और एक दल तो
मोननीम के बड़े पेड़ के रास्ते आ रहा है।”
38 जबूल ने कहा, “क्या कहा था तूने,
‘अबीमेलेक कौन होता है जो हम उसके
अधीन रहें?’[1] अब कहाँ गयी तेरी वे
बड़ी-बड़ी बातें! उनकी सेवा करना तुझे
गवारा नहीं था न! तो अब जा और लड़
उनसे।”

39 इसलिए गाल, शेकेम के अगुवों
के आगे-आगे गया और उसने अबीमेलेक
से लड़ाई की। 40 अबीमेलेक ने गाल
को ऐसा खदेड़ा कि वह उसके सामने से
भाग निकला। शहर के फाटक तक कई
लोगों की लाशें बिछ गयीं।

41 फिर अबीमेलेक अरूमा में रहने
लगा। जबूल[1] ने गाल और उसके भाइयों
को शेकेम से खदेड़ दिया। 42 अगले
दिन अबीमेलेक को खबर दी गयी कि
लोग शहर से बाहर जाने लगे हैं।
43 तब उसने अपने आदमियों को तीन
दलों में बाँटा और शहर के बाहर
घात लगाकर बैठ गया। लोगों को शहर
से बाहर आते देख, उसने उन पर
हमला बोल दिया और उन्हें मार डाला।
44 फिर वह और उसके दल आगे बढ़-
कर शहर के फाटक के सामने तैनात हो
गए, जबकि दो दलों ने उन सब लोगों पर
हमला किया जो शहर के बाहर थे और
उन्हें मार गिराया। 45 अबीमेलेक ने
दिन-भर उस शहर से युद्ध करके उस पर
कब्ज़ा कर लिया और उसके निवासियों
को मार डाला। उसने पूरे शहर की ईंट-
से-ईंट बजा दी[2] और वहाँ की ज़मीन पर
नमक छिड़कवा दिया।

46 जब शेकेम के किले के सभी
अगुवों ने यह सुना तो वे फौरन एल-
बरीत के मंदिर[3] के अंदरवाले कमरे*
में जा छिपे। 47 जैसे ही अबीमेलेक
को पता चला कि शेकेम के किले
के सभी अगुवे मंदिर में इकट्ठा हो
गए हैं, 48 वह अपने सारे आद-
मियों के साथ ज़लमोन पहाड़ पर गया।
उसने कुल्हाड़ी से पेड़ की डाल काटी
और उसे अपने कंधों पर उठाकर ले जाने
लगा। उसने अपने आदमियों से कहा,
“जैसा मैंने किया वैसा ही करो। जल्दी!”

अध्य. 9
1 न्या 9:28, 29

दूसरा कॉल.
1 न्या 9:30
2 1रा 12:25
3 न्या 8:33
न्या 9:4, 27

9:31 * या “चालाकी से।”

9:46 * या “गढ़।”

49 तब सभी आदमियों ने एक-एक डाल काटी और अबीमेलेक के पीछे-पीछे गए। उन्होंने ये डालियाँ मंदिर के उस कमरे के चारों तरफ रख दीं और उनमें आग लगा दी। शेकेम के किले के सभी लोग, करीब 1,000 आदमी-औरत जलकर मर गए।

50 फिर अबीमेलेक, तेबेस शहर गया और उस पर हमला करने के लिए उसने छावनी डाली। उसने शहर पर कब्ज़ा कर लिया। 51 शहर के बीचों-बीच एक मज़बूत मीनार थी। इसलिए शहर के सभी आदमी-औरत और सारे अगुवे वहाँ भाग गए। उन्होंने मीनार में घुसकर उसे अंदर से बंद कर लिया और ऊपर छत की तरफ गए। 52 इतने में अबीमेलेक वहाँ पहुँच गया और उसने मीनार पर हमला बोल दिया। जब वह मीनार में आग लगाने के लिए उसके द्वार पर आया 53 तो मीनार से एक औरत ने चक्की का ऊपरी पाट अबीमेलेक के सिर पर फेंका और अबीमेलेक की खोपड़ी फट गयी।[1] 54 अबीमेलेक ने तुरंत अपने हथियार ढोनेवाले सेवक से कहा, "अपनी तलवार निकाल और मुझे मार डाल। कहीं लोग यह न कहें कि अबीमेलेक एक औरत के हाथों मारा गया।" तब उसके सेवक ने उसे तलवार भोंक दी और वह मर गया।

55 जब इसराएलियों ने देखा कि अबीमेलेक मर चुका है, तो वे सब अपने घर लौट आए। 56 इस तरह परमेश्वर ने अबीमेलेक को उसकी बुराई का सिला दिया, जो उसने अपने 70 भाइयों को मारकर अपने पिता से की थी।[2] 57 परमेश्वर ने शेकेम के आदमियों को भी उनकी बुराई का सिला दिया। उस दिन यरुब्बाल[3] के बेटे योताम का शाप[4] पूरा हुआ।

10

अबीमेलेक की मौत के बाद, इसराएल का उद्धार करने के लिए तोला नाम का न्यायी उठा।[1] वह इस्साकार के घराने से था। वह पूआ का बेटा था और पूआ दोदो का। तोला, एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के शामीर में रहता था। 2 वह 23 साल तक इसराएलियों का न्यायी रहा। फिर उसकी मौत हो गयी और उसे शामीर में दफनाया गया।

3 तोला के बाद गिलाद का रहनेवाला याईर, न्यायी बनकर उठा और उसने 22 साल तक इसराएल का न्याय किया। 4 उसके 30 बेटे थे और उनके पास सवारी करने के लिए 30 गधे थे। गिलाद के इलाके में उनके 30 शहर थे जिन्हें आज तक हव्वोत-याईर के नाम से जाना जाता है।[2] 5 फिर याईर की मौत हो गयी और उसे कामोन में दफनाया गया।

6 इसराएली एक बार फिर वही करने लगे जो यहोवा की नज़र में बुरा था।[3] उन्होंने यहोवा से मुँह मोड़ लिया और उसकी उपासना करना छोड़ दिया। वे बाल देवताओं, अशतोरेत की मूरतों, अराम,* सीदोन और मोआब के देवताओं, साथ ही अम्मोनियों और पलिश्तियों के देवी-देवताओं की पूजा करने लगे।[4] 7 तब यहोवा का गुस्सा इसराएलियों पर भड़क उठा, उसने उन्हें पलिश्तियों और अम्मोनियों के हवाले कर दिया।[5] 8 वे इसराएलियों को सताने और उन पर ज़ुल्म ढाने लगे। लगातार 18 साल तक वे गिलाद के सब इसराएलियों पर अत्याचार करते रहे। यरदन के पूरब में गिलाद का यह इलाका एक वक्त पर एमोरियों का था। 9 इतना ही नहीं, अम्मोनी यरदन पार जाकर

अध्य. 9
1 2शम 11:21
2 उत 9:6; न्या 9:5, 24
3 न्या 6:32
4 न्या 9:7, 20

दूसरा कॉल.

अध्य. 10
1 न्या 2:16
2 व्य 3:14
3 न्या 2:19; न्या 4:1; न्या 6:1; नहे 9:28
4 गि 25:1, 2; न्या 3:7; न्या 16:23; 1शम 5:4; 1रा 11:5; 2रा 1:2; 2रा 23:13; भज 106:36-38
5 व्य 28:15, 48; व्य 31:17; न्या 2:14; न्या 4:2

10:6 * या "सीरिया।"

यहूदा, बिन्यामीन और एप्रैम गोत्रों से भी युद्ध करते रहे। इसराएलियों का जीना मुश्किल हो गया। **10** वे मदद के लिए यहोवा को पुकारने लगे,[1] "हे हमारे परमेश्वर, हमने तेरे खिलाफ पाप किया है! हम तुझे छोड़कर बाल देवताओं की सेवा करने लगे।"[2]

11 यहोवा ने इसराएलियों से कहा, "क्या मैंने तुम्हें मिस्र से नहीं छुड़ाया?[3] और जब एमोरियों,[4] अम्मोनियों, पलिश्तियों,[5] **12** सीदोनियों, अमालेकियों और मिद्यानियों ने तुम पर अत्याचार किया और तुमने मेरी दुहाई दी, तो क्या मैंने तुम्हें उनके हाथ से नहीं बचाया? **13** मगर तुमने क्या किया? तुम मुझे छोड़कर दूसरे देवताओं की उपासना करने लगे।[6] इसलिए अब मैं तुम्हें नहीं बचाऊँगा।[7] **14** जाओ, जाकर उन्हीं से मदद माँगो जिन्हें तुमने अपना ईश्वर बना लिया है।[8] कहो उनसे कि वे तुम्हें इस मुसीबत से निकालें।"[9] **15** इसराएलियों ने यहोवा से कहा, "हमने पाप किया है। तुझे जैसा ठीक लगे, हमारे साथ कर। बस हमें दुश्मनों से बचा ले।" **16** और उन्होंने अपने बीच से पराए देवताओं की मूरतें निकाल फेंकी और यहोवा की सेवा करने लगे।[10] तब इसराएल का दुख परमेश्वर से देखा नहीं गया।*[11]

17 कुछ समय बाद अम्मोनी[12] युद्ध करने के लिए इकट्ठा हुए और उन्होंने गिलाद में छावनी डाली। इसराएलियों ने भी अपने आदमी इकट्ठा किए और मिसपा में छावनी डाली। **18** गिलाद के लोग और हाकिम एक-दूसरे से कहने लगे, "अम्मोनियों से लड़ने में कौन हमारी अगुवाई करेगा?[13] जो भी अगुवाई करेगा, वह गिलाद के लोगों का प्रधान ठहरेगा।"

11

गिलाद का रहनेवाला यिप्तह[1] एक वीर योद्धा था। उसकी माँ पहले एक वेश्या थी और उसके पिता का नाम गिलाद था। **2** गिलाद को अपनी पत्नी* से भी बेटे हुए। जब उसके बेटे बड़े हुए तो उन्होंने यिप्तह को यह कहकर भगा दिया, "तू एक दूसरी औरत का बेटा है, इसलिए हमारे पिता के घराने में तुझे कोई विरासत नहीं मिलेगी।" **3** तब यिप्तह अपने भाइयों के पास से भागकर तोब नाम के इलाके में रहने लगा। वहाँ कुछ बेरोज़गार लोग उसके साथ हो लिए और वे मिलकर अपने दुश्मनों पर धावा बोलने जाते थे।

4 कुछ समय बाद अम्मोनियों ने इसराएलियों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया।[2] **5** जब अम्मोनी इसराएलियों से लड़ने आए तो गिलाद के मुखिया फौरन यिप्तह को वापस लाने के लिए तोब गए। **6** उन्होंने यिप्तह से कहा, "हमारा सेनापति बन जा ताकि हम अम्मोनियों से लड़ सकें।" **7** मगर यिप्तह ने गिलाद के मुखियाओं से कहा, "तुम मुझसे नफरत करते थे, इसीलिए तुमने मुझे अपने पिता के घर से भगा दिया था।[3] अब जब तुम पर मुसीबत आ पड़ी है तो मेरे पास आए हो?" **8** गिलाद के मुखियाओं ने कहा, "तेरी बात सच है। पर देख! अब हम तेरे ही पास आए हैं। अगर तू हमारे साथ चलकर अम्मोनियों से लड़े, तो हम तुझे गिलाद के सभी निवासियों का अगुवा बना देंगे।"[4] **9** यिप्तह ने उनसे कहा, "अगर मैं अम्मोनियों से लड़ने के लिए तुम्हारे साथ चलूँ और अगर यहोवा मुझे

10:16 *या "देखकर परमेश्वर का जी बेचैन हो उठा।"

11:2 *ज़ाहिर है, उसकी एक और पत्नी थी।

अध्य. 10
1 व्य 4:30
2 न्या 2:13; न्या 3:7; 1शम 12:9, 10
3 निर्ग 14:30
4 गि 21:23-25
5 न्या 3:31
6 न्या 2:12
7 2इत 15:2; मी 3:4
8 1रा 18:27
9 यिर्म 2:28
10 व्य 7:26
11 2इत 7:14; 2इत 33:13, 15; भज 106:44; यश 63:9
12 उत 19:36, 38; न्या 3:13
13 न्या 11:1

दूसरा कॉल.

अध्य. 11
1 न्या 12:7; 1शम 12:11; इब्र 11:32
2 न्या 10:17
3 न्या 11:2
4 न्या 10:18

उन पर जीत दिलाए, तो मैं तुम्हारा अगुवा बन जाऊँगा।” 10 गिलाद के मुखियाओं ने यिप्तह से कहा, “हमें मंज़ूर है। जैसा तूने कहा हम वैसा ही करेंगे और यहोवा हमारे बीच इस बात का गवाह* ठहरे।” 11 तब यिप्तह गिलाद के मुखियाओं के साथ गया और लोगों ने उसे अपना अगुवा और सेनापति बनाया। यिप्तह ने मिसपा[1] में यहोवा के सामने वे सारी बातें दोहरायीं जो उसने कही थीं।

12 फिर यिप्तह ने अम्मोनियों[2] के राजा के पास दूत भेजे और कहा, “तेरी हमसे क्या दुश्मनी जो तू हमारे देश पर हमला करने आया है?” 13 अम्मोनियों के राजा ने यिप्तह के दूतों से कहला भेजा, “इसराएलियों ने मुझसे मेरा इलाका छीना है। जब वे मिस्र से निकलकर आए तो उन्होंने अरनोन[3] से लेकर यब्बोक और यरदन तक का सारा इलाका[4] अपने कब्ज़े में कर लिया।[5] अब तू चुपचाप वह सब मुझे लौटा दे।” 14 तब यिप्तह ने अपने दूतों को अम्मोनियों के राजा के पास दोबारा भेजा 15 कि वे उससे कहें,

“यिप्तह का कहना है, ‘इसराएल ने मोआबियों और अम्मोनियों का इलाका नहीं छीना।[6] 16 मिस्र से आज़ाद होने पर वे वीराने से होते हुए लाल सागर तक पहुँचे[7] और फिर कादेश आए।[8] 17 तब इसराएल ने एदोम के राजा के पास अपने दूत भेजकर कहा,[9] “मेहरबानी करके हमें अपने देश से होकर जाने दे।” लेकिन एदोम के राजा ने उनकी न सुनी। उन्होंने मोआब[10] के राजा से भी यही गुज़ारिश की लेकिन वह भी राज़ी न हुआ। इसलिए इसराएली कादेश में ही रहे।[11] 18 फिर वे एदोम और मोआब के बाहर से होते हुए वीराने में चले।[12] वे मोआब के पूरब से होकर[1] अरनोन के इलाके में आए और वहाँ डेरा डाला। मगर वे अरनोन पार नहीं गए क्योंकि वह मोआब की सरहद था।[2]

19 इसके बाद इसराएलियों ने हेशबोन में एमोरियों के राजा सीहोन के पास अपने दूत भेजे और उससे कहा, “मेहरबानी करके हमें अपने देश से होकर जाने दे ताकि हम अपने इलाके में पहुँच सकें।”[3] 20 लेकिन सीहोन को इसराएलियों पर भरोसा नहीं था और उसने उन्हें अपने इलाके में से नहीं जाने दिया, बल्कि अपने आदमियों के साथ यहस में छावनी डालकर इसराएलियों से युद्ध किया।[4] 21 तब इसराएल के परमेश्वर यहोवा ने सीहोन और उसके सभी लोगों को इसराएल के हाथ कर दिया। इसराएलियों ने वहाँ रहनेवाले एमोरियों को हरा दिया और उनका सारा इलाका अपने अधिकार में कर लिया।[5] 22 इस तरह उन्होंने अरनोन से लेकर यब्बोक तक और वीराने से लेकर यरदन तक, एमोरियों के सारे इलाके पर कब्ज़ा कर लिया।[6]

23 जब इसराएल के परमेश्वर यहोवा ने ही एमोरियों को अपने लोगों के सामने से खदेड़ा था,[7] तो अब तू हमें यहाँ से क्यों खदेड़ना चाहता है? 24 अगर तेरा देवता कमोश[8] तुझे कोई इलाका दे, तो क्या तू उसे अपने अधिकार में नहीं करेगा? उसी तरह, हमारे परमेश्वर यहोवा ने जिस किसी को हमारे सामने से खदेड़ा, हमने उसके इलाके पर अधिकार कर लिया।[9] 25 क्या तू सिप्पोर के बेटे, मोआब के राजा बालाक[10] से बढ़कर है? उसने तो इसराएल से लड़ने की जुर्रत नहीं की, अब तू ऐसा करना चाहता है? 26 इसराएली पिछले 300 साल

11:10 *शा., “सुननेवाला।”

अध्य. 11

1 न्या 10:17, न्या 11:34
2 उत 19:36, 38
3 गि 21:26
4 व्य 3:16, 17
5 गि 21:23, 24
6 उत 19:36, 37, व्य 2:9, व्य 2:19, 37
7 गि 14:25
8 गि 20:1
9 उत 36:1, गि 20:14, व्य 2:4
10 उत 19:36, 37
11 गि 20:22
12 गि 21:4

दूसरा कॉल.

1 गि 21:11
2 गि 21:13
3 गि 21:21-26, व्य 2:26, 27
4 व्य 2:32, 33
5 यह 13:15, 21
6 व्य 2:36
7 नहे 9:22
8 1रा 11:7
9 निर्ग 23:28, निर्ग 34:11, गि 33:53, व्य 9:5, व्य 18:12
10 गि 22:2, 3, यह 24:9

से हेशबोन और उसके आस-पास के नगर,[1] अरोएर और उसके आस-पास के नगर और अरनोन के घाट के पास के सब शहरों में बसे हुए हैं। इतने सालों में तुमने इन इलाकों को वापस लेने की कोशिश नहीं की, तो अब क्यों आए हो?[2] **27** मैंने तेरे खिलाफ कोई पाप नहीं किया, लेकिन तूने हमसे युद्ध छेड़कर गलत किया है। अब सबसे बड़ा न्यायी यहोवा[3] ही इसराएलियों और अम्मोनियों के बीच न्याय करे।'"

28 अम्मोनियों के राजा ने यिप्तह का यह संदेश ठुकरा दिया।

29 फिर यहोवा की पवित्र शक्ति यिप्तह पर उतरी[4] और वह गिलाद और मनश्शे से होते हुए गिलाद के मिसपे गया।[5] वहाँ से वह अम्मोनियों का सामना करने आया।

30 तब यिप्तह ने यहोवा से एक मन्नत मानी[6] और कहा, "अगर तू अम्मोनियों को मेरे हाथ कर देगा, **31** तो मेरी जीत की खुशी में जो सबसे पहले मुझसे मिलने मेरे घर से बाहर आएगा, वह यहोवा का हो जाएगा[7] और मैं उसे होम-बलि* के तौर पर परमेश्वर को अर्पित कर दूँगा।"[8]

32 तब यिप्तह अम्मोनियों से लड़ने गया और यहोवा ने उन्हें उसके हाथ कर दिया। **33** यिप्तह, अरोएर से लेकर मिन्नीत तक भारी तादाद में लोगों को मारता गया और उसने 20 शहरों को अपने कब्ज़े में कर लिया। उसने आबेल-करामीम तक अम्मोनियों से युद्ध किया। इस तरह, अम्मोनी इसराएलियों से हार गए।

34 जब यिप्तह मिसपा[1] में अपने घर लौटा तो उसने क्या देखा! उसकी बेटी डफली बजाती और नाचती हुई उससे मिलने आ रही है। वह उसकी इकलौती औलाद थी, उसके सिवा यिप्तह के न तो कोई बेटा था न बेटी। **35** जैसे ही उसने अपनी बेटी को देखा, मारे दुख के उसने अपने कपड़े फाड़े और कहा, "हाय मेरी बेटी! तूने मेरा कलेजा छलनी कर दिया क्योंकि अब मुझे तुझको अपने से दूर भेजना होगा। मैं यहोवा को ज़बान दे चुका हूँ और उससे मुकर नहीं सकता।"[2]

36 तब उसकी बेटी ने उससे कहा, "हे मेरे पिता, अगर तूने यहोवा को ज़बान दी है, तो उसे पूरा कर। क्योंकि यहोवा ने तेरे दुश्मन अम्मोनियों को तेरे हवाले कर दिया ताकि तू उनसे बदला ले सके। इसलिए मेरे साथ वैसा ही कर जैसा तूने वादा किया है।"[3] **37** फिर उसने अपने पिता से कहा, "बस मेरी एक बिनती है, मुझे दो महीने दे। मैं अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों पर जाकर अपने कुँवारेपन पर रोना और दुख मनाना चाहती हूँ।"*

38 इस पर यिप्तह ने अपनी बेटी से कहा, "जा।" और उसे दो महीने के लिए भेज दिया। वह अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों पर जाकर रोने और दुख मनाने लगी कि वह ज़िंदगी-भर कुँवारी रहेगी। **39** दो महीने पूरे होने पर वह अपने पिता के पास लौट आयी। फिर यिप्तह ने उसके बारे में जो मन्नत मानी थी उसे पूरा किया।[4] उसकी बेटी ज़िंदगी-भर कुँवारी रही। इसराएल में यह दस्तूर* बन गया कि **40** हर साल चार दिन के लिए इसराएली लड़कियाँ, गिलादी यिप्तह की

अध्य. 11
1 गि 21:25
2 गि 21:26
3 यश 33:22
4 न्या 3:9, 10; जक 4:6
5 न्या 10:17
6 व्य 23:21
7 1शम 1:11
8 1शम 1:24

दूसरा कॉल.
1 न्या 10:17; न्या 11:11
2 गि 30:2; भज 15:4; सभ 5:4
3 न्या 11:30, 31
4 1शम 1:22, 24

11:31 *ज़ाहिर है, यह एक अलंकार है। इसका मतलब है, परमेश्वर की सेवा के लिए पूरी तरह दे देना।

11:37 *या "अपने दोस्तों के साथ रोना चाहती हूँ क्योंकि मैं कभी शादी नहीं करूँगी।" **11:39** *या "नियम।"

बेटी की तारीफ करने उसके पास जाया
करती थीं।

12 फिर एप्रैम के आदमी इकट्ठा
हुए और नदी पार कर
सापोन* आए। उन्होंने यिप्तह से कहा,
"जब तू अम्मोनियों से लड़ने गया तो
तूने हमें क्यों नहीं बुलाया?[1] अब हम
तुझे और तेरे घर को जला डालेंगे।"
2 लेकिन यिप्तह ने उनसे कहा, "अम्मो-
नियों से मेरी और मेरे आदमियों की
दुश्मनी थी। उनसे लड़ने के लिए मैंने
तुम्हें बुलाया था, मगर तुमने हमारी
मदद नहीं की। 3 जब तुम नहीं आए,
तो मैं अपनी जान हथेली पर रखकर
उनसे लड़ने निकल पड़ा[2] और यहोवा ने
उन्हें मेरे हाथ कर दिया। फिर आज तुम
क्यों आए हो? और क्यों मुझसे लड़ना
चाहते हो?"

4 तब यिप्तह ने गिलाद के सारे आद-
मियों को इकट्ठा कर[3] एप्रैम के लोगों से
युद्ध किया और उन्हें हरा दिया। ये वही
एप्रैमी थे जो उनसे कहा करते थे, "हे
गिलादियो, भले ही तुम मनश्शे और एप्रैम
के लोगों के बीच रहते हो, मगर एप्रैमियों
की नज़र में तुम कुछ भी नहीं।"*
5 गिलाद के लोगों ने जाकर एप्रैम के
सामनेवाले घाटों पर कब्ज़ा कर लिया[4]
ताकि कोई भी एप्रैमी, नदी पार करके भाग
न सके। अगर कोई एप्रैमी घाट पर आकर
कहता, "मुझे उस पार जाना है," तब
गिलाद के आदमी उससे पूछते, "क्या तू
एप्रैमी है?" अगर वह जवाब देता "नहीं"
6 तो वे उसे कहते "शिब्बोलेत बोलकर
बता।" मगर वह उस शब्द को ठीक से
नहीं बोल पाता और कहता "सिब्बोलेत।"
तब गिलाद के आदमी वहीं यरदन के घाट
पर उसे मार डालते। उस दिन 42,000
एप्रैमी मारे गए।

7 गिलाद का यिप्तह छः साल तक
इसराएल का न्यायी रहा। इसके बाद
उसकी मौत हो गयी और उसे उसके शहर
में दफनाया गया जो गिलाद में था।

8 यिप्तह के बाद इबसान इसराएल
का न्यायी बना[1] जो बेतलेहेम का रहने-
वाला था। 9 उसके 30 बेटे और 30
बेटियाँ थीं। उसने अपनी बेटियों की शादी
अपने कुल से बाहर करवायी और अपने
बेटों के लिए वह दूसरे कुल से 30 बहुएँ
लाया। इबसान सात साल तक इसराएल
का न्यायी रहा। 10 फिर उसकी मौत
हो गयी और उसे बेतलेहेम में दफनाया
गया।

11 उसके बाद एलोन इसराएल का
न्यायी बना। वह जबूलून गोत्र से था और
उसने दस साल तक इसराएल का न्याय
किया। 12 फिर एलोन की मौत हो
गयी और उसे जबूलून के इलाके में,
अय्यालोन में दफनाया गया।

13 एलोन के बाद अब्दोन ने
इसराएल का न्याय किया, जो पिरा-
तोन के निवासी हिल्लेल का बेटा था।
14 अब्दोन के 40 बेटे और 30 पोते
थे और उनके पास सवारी करने के लिए
70 गधे थे। अब्दोन आठ साल तक इस-
राएल का न्यायी रहा। 15 इसके बाद
पिरातोन के निवासी हिल्लेल के बेटे
अब्दोन की मौत हो गयी। उसे पिरातोन
में दफनाया गया, जो एप्रैम के इलाके में
अमालेकियों[2] के पहाड़ पर था।

13 इसराएली एक बार फिर यहोवा
की नज़र में बुरे काम करने
लगे।[3] इसलिए यहोवा ने उन्हें 40 साल
के लिए पलिश्तियों के हवाले कर दिया।[4]

अध्य. 12

1 न्या 8:1
2 न्या 11:29
3 व्य 3:12, 13
4 न्या 3:28
न्या 7:24

दूसरा कॉल.

1 न्या 2:16
2 उत 36:12
निर्ग 17:16
गि 13:29
1शम 15:2

अध्य. 13

3 न्या 2:11, 19
न्या 10:6
4 यह 13:1-3
न्या 10:7

12:1 *या शायद, "नदी पार कर उत्तर की तरफ।" **12:4** *शा., "तुम वे लोग हो जो एप्रैम से भाग आए थे।"

2 इस दौरान सोरा शहर[1] में दानियों[2]
के कुल का एक आदमी रहता था,
जिसका नाम मानोह[3] था। उसकी पत्नी
बाँझ थी और उसकी कोई औलाद नहीं
थी।[4] 3 एक दिन यहोवा का स्वर्गदूत
मानोह की पत्नी के सामने प्रकट हुआ
और उसने कहा, “भले ही तू बाँझ है
और तेरी कोई औलाद नहीं, मगर तू गर्भ-
वती होगी और एक बेटे को जन्म देगी।[5]
4 पर ध्यान रख, तू न तो दाख-मदिरा
न ही किसी तरह की शराब पीना[6] और
न कोई अशुद्ध चीज़ खाना।[7] 5 देख,
तू ज़रूर गर्भवती होगी और एक बेटे को
जन्म देगी। उसके सिर पर उस्तरा मत
चलवाना[8] क्योंकि जन्म* से ही वह पर-
मेश्वर के लिए नाज़ीर होगा। वह इस-
राएलियों को पलिश्तियों के हाथ से
छुड़ाएगा।”[9]

6 तब उस औरत ने अपने पति
मानोह के पास जाकर कहा, “सच्चे पर-
मेश्वर का एक सेवक मेरे पास आया
था। वह दिखने में स्वर्गदूत जैसा था और
उसे देखकर मैं विस्मय से भर गयी। न तो
सच्चे परमेश्वर के उस दूत ने मुझे अपना
नाम बताया,[10] न ही मैंने उससे पूछा कि
वह कहाँ से है। 7 लेकिन उसने मुझसे
कहा, ‘तू गर्भवती होगी और एक बेटे
को जन्म देगी। पर ध्यान रख कि तू न
तो दाख-मदिरा न ही किसी तरह की
शराब पीना। और न कोई अशुद्ध चीज़
खाना क्योंकि वह लड़का जन्म* से
लेकर मौत तक परमेश्वर के लिए नाज़ीर
होगा।’”

8 मानोह ने यहोवा से बिनती की, “हे
यहोवा, तूने जिस सेवक को अभी भेजा
था मेहरबानी करके सच्चे परमेश्वर के
उस सेवक को दोबारा भेज कि वह हमें
बताए कि हम बच्चे की परवरिश
कैसे करें।” 9 सच्चे परमेश्वर ने उसकी
बिनती सुन ली और सच्चे परमेश्वर का
स्वर्गदूत एक बार फिर मानोह की पत्नी
के पास आया। उस वक्त वह बाहर बैठी
थी और उसका पति मानोह उसके साथ
नहीं था। 10 वह दौड़कर अपने पति
को बुलाने गयी। उसने कहा, “देख, जो
आदमी उस दिन मेरे पास आया था, वह
आज फिर आया है।”[1]

11 तब मानोह अपनी पत्नी के साथ
उस आदमी के पास आया। मानोह ने
उससे कहा, “क्या तू वही आदमी है
जिसने उस दिन मेरी पत्नी से वह सारी
बातें कही थीं?” उसने कहा, “हाँ, मैं वही
हूँ।” 12 तब मानोह ने कहा, “तूने जो
भी कहा, वह पूरा हो। अब हमें बता
कि उस बच्चे की ज़िंदगी कैसी होगी और
बड़ा होकर वह क्या करेगा।”[2] 13 तब
यहोवा के स्वर्गदूत ने मानोह से कहा,
“तेरी पत्नी को उन सब चीज़ों से दूर रहना
है जिनके बारे में मैंने उसे बताया था।[3]
14 उसे न तो अंगूर की बेल पर लगी
कोई चीज़ खानी है, न ही दाख-मदिरा
या किसी तरह की शराब पीनी है।[4] उसे
अशुद्ध चीज़ें भी नहीं खानी हैं।[5] ध्यान
रख कि जैसा मैंने उससे कहा है वह
वैसा ही करे।”

15 फिर मानोह ने यहोवा के स्वर्ग-
दूत से कहा, “मेहरबानी करके थोड़ी देर
रुक जा। हम अभी तेरे लिए बकरी का
बच्चा पकाकर लाते हैं।”[6] 16 यहोवा
के स्वर्गदूत ने मानोह से कहा, “अगर
मैं रुक भी जाऊँ, तो भी मैं कुछ नहीं
खाऊँगा। हाँ, अगर तू यहोवा को होम-
बलि चढ़ाना चाहता है, तो चढ़ा सकता
है।” मानोह नहीं जानता था कि वह
यहोवा का स्वर्गदूत है। 17 मानोह ने

अध्य. 13
1 यह 15:20, 33; यह 19:41, 48
2 उत 49:16
3 न्या 16:31
4 उत 30:22, 23
5 उत 18:10; 1शम 1:20; लूक 1:11, 13
6 गि 6:2, 3; लूक 1:15
7 लैव 11:26, 27
8 गि 6:2, 5
9 न्या 2:16; न्या 13:1; नहे 9:27
10 न्या 13:17, 18

दूसरा कॉल.
1 न्या 13:3
2 न्या 13:8
3 न्या 13:4
4 गि 6:2, 3
5 लैव 11:26, 27
6 उत 18:5, 7; न्या 6:18, 19; इब्र 13:2

13:5, 7 *शा., “गर्भ।”

यहोवा के स्वर्गदूत से कहा, “हमें अपना
नाम बता[1] ताकि तेरी बात सच होने
पर हम तेरा आदर-सम्मान कर सकें।”
18 मगर यहोवा के स्वर्गदूत ने उससे
कहा, “मेरा नाम मत पूछ क्योंकि वह
निराला है।”

19 फिर मानोह ने बकरी का बच्चा
और अनाज का चढ़ावा लिया और एक
बड़े पत्थर पर उन्हें यहोवा को चढ़ाया।
तब परमेश्वर ने मानोह और उसकी
पत्नी की आँखों के सामने एक अनोखा
काम किया। 20 आग की लपटें वेदी
से आसमान की तरफ उठने लगीं और
यहोवा का स्वर्गदूत उन लपटों के साथ
ऊपर आसमान की तरफ जाने लगा।
यह देखकर मानोह और उसकी पत्नी
तुरंत ज़मीन पर मुँह के बल गिर गए।
21 तब मानोह समझ गया कि वह
यहोवा का स्वर्गदूत था।[2] यहोवा का
स्वर्गदूत फिर उन्हें दिखायी नहीं दिया।
22 मानोह ने अपनी पत्नी से कहा, “अब
हम ज़िंदा नहीं बचेंगे क्योंकि हमने पर-
मेश्वर को देख लिया है।”[3] 23 मगर
उसकी पत्नी ने कहा, “अगर यहोवा हमें
मारना ही चाहता था, तो वह हमारे
हाथ से होम-बलि और अनाज का चढ़ावा
कबूल नहीं करता।[4] न ही वह हमें यह
सब दिखाता और हमसे वे सारी बातें
कहता।”

24 आगे चलकर मानोह की पत्नी ने
एक लड़के को जन्म दिया और उसका
नाम शिमशोन रखा।[5] जैसे-जैसे वह बड़ा
हुआ यहोवा की आशीष उसके साथ रही।
25 फिर जब शिमशोन सोरा और
एशताओल[6] के बीच महनेदान नाम की
जगह[7] में था, तो यहोवा की पवित्र शक्ति
उस पर ज़बरदस्त तरीके से काम करने
लगी।[8]

अध्य. 13
1 उत 32:29
न्या 13:6
2 न्या 6:22, 23
3 निर्ग 33:20
यूह 1:18
4 न्या 13:16
5 इब्र 11:32
6 यह 15:20, 33
7 न्या 18:11, 12
8 न्या 3:9, 10
न्या 6:34
न्या 11:29
1शम 11:6

दूसरा कॉल.

अध्य. 14
1 व्य 7:3
2 न्या 13:1
3 न्या 13:24, 25
4 न्या 14:2
5 उत 24:67
मत 1:24

14 फिर शिमशोन तिमना गया। वहाँ
उसने एक पलिश्ती लड़की को
देखा। 2 उसने जाकर अपने माँ-बाप
से कहा, “तिमना में मैंने एक पलिश्ती
लड़की देखी है। मैं चाहता हूँ कि तुम
उससे मेरी शादी करवा दो।” 3 मगर
उसके माँ-बाप ने उससे कहा, “क्या
तुझे हमारे रिश्तेदारों और हमारे लोगों
में कोई लड़की नहीं मिली,[1] जो तू खतना-
रहित पलिश्तियों की लड़की से शादी
करना चाहता है?” मगर शिमशोन ने
अपने पिता से कहा, “मेरी शादी उसी से
करवा दो, वही मेरे लिए सही रहेगी।”
4 उसके माँ-बाप यह नहीं समझ पाए कि
यहोवा ही उसे ऐसा करने के लिए उभार
रहा है क्योंकि वह पलिश्तियों के खिलाफ
कदम उठाने का रास्ता तैयार कर रहा
था। उस समय पलिश्ती इसराएलियों पर
राज कर रहे थे।[2]

5 तब शिमशोन अपने माँ-बाप के
साथ तिमना गया। जब वह तिमना में
अंगूरों के बाग के पास पहुँचा, तो अचा-
नक एक शेर उसके सामने आया और
गरजने लगा। 6 उसी वक्त यहोवा की
पवित्र शक्ति शिमशोन पर काम करने
लगी[3] और उसने अपने दोनों हाथों से
शेर को ऐसे चीर डाला जैसे कोई बकरी
के बच्चे को चीर देता है। मगर इस बारे
में उसने अपने माता-पिता को कुछ नहीं
बताया। 7 फिर शिमशोन उस लड़की
के पास गया और उससे बातें कीं। उसे
यकीन हो गया कि यह लड़की उसके लिए
बिलकुल सही रहेगी।[4]

8 कुछ समय बाद शिमशोन उस
लड़की को अपने घर लाने के लिए
निकला।[5] रास्ते में वह मरे हुए शेर को
देखने गया। वहाँ उसे शेर का कंकाल
मिला, जिसमें मधुमक्खियों ने छत्ता बना

लिया था और छत्ते में बहुत-सा शहद था। **9** शिमशोन ने शहद अपने हाथ पर निकाला और उसे खाते-खाते अपने माँ-बाप के पीछे गया। उसने उन्हें भी थोड़ा शहद खाने को दिया, मगर यह नहीं बताया कि उसने शेर के कंकाल से उसे निकाला है।

10 फिर शिमशोन अपने पिता के साथ लड़की के यहाँ गया और वहाँ उसने एक दावत रखी। उन दिनों यह दस्तूर था कि दूल्हे इस तरह की दावत रखते थे। **11** जब शिमशोन दावत में आया तो 30 आदमियों से कहा गया कि वे दूल्हे के साथ-साथ रहें। **12** शिमशोन ने उन आदमियों से कहा, "मैं तुमसे एक पहेली पूछता हूँ। अगर तुम इन सात दिनों में दावत के खत्म होने से पहले वह पहेली बूझ लोगे, तो मैं तुम्हें 30 मलमल के कुरते और 30 जोड़े कपड़े दूँगा। **13** लेकिन अगर तुम वह पहेली नहीं बूझ पाए, तो तुम्हें मुझे 30 कुरते और 30 जोड़े कपड़े देने पड़ेंगे।" तब उन्होंने कहा, "ज़रा हम भी तो सुनें क्या पहेली पूछना चाहता है तू।" **14** शिमशोन ने कहा,

"खाता है जो सबको, मिला उससे
कुछ खाने को,
ताकत उसमें है अपार, बहती उससे
मीठी धार।"[1]

तीन दिन तक वे सोचते रहे मगर उस पहेली को न बूझ सके। **15** चौथे दिन उन्होंने शिमशोन की पत्नी* से कहा, "अपने पति# को फुसलाकर[2] उससे पहेली का जवाब पूछ और आकर हमें बता। वरना हम तुझे और तेरे पिता के पूरे घराने को जला देंगे। क्या तूने हमें दावत पर इसीलिए बुलाया था कि हम लुट जाएँ?" **16** तब शिमशोन की पत्नी यह कहकर उसके सामने रोने-धोने लगी, "तू मुझसे प्यार नहीं नफरत करता है,[1] तभी तूने मुझे उस पहेली का जवाब नहीं बताया जो तूने मेरे लोगों से पूछी है।" शिमशोन ने कहा, "मैंने अपने माँ-बाप को नहीं बताया तो तुझे कैसे बता दूँ!" **17** लेकिन जितने दिन दावत चली उतने दिन वह शिमशोन के आगे रोती रही। सातवें दिन शिमशोन ने तंग आकर उसे पहेली का जवाब बता दिया और उसने जाकर अपने लोगों को बता दिया।[2] **18** सातवें दिन सूरज ढलने से पहले* शहर के आदमियों ने आकर शिमशोन से कहा,

"शहद की धार से मीठा और क्या
हो सकता है
और शेर से ताकतवर कौन हो
सकता है?"[3]

शिमशोन ने उनसे कहा,

"अगर तुमने मेरी गाय को हल में न
जोता होता,#[4]
तो तुम यह पहेली कभी न बूझ
पाते।"

19 तब यहोवा की पवित्र शक्ति शिमशोन पर काम करने लगी[5] और उसने अश्कलोन[6] जाकर वहाँ 30 आदमियों को मार डाला। उसने उनके कपड़े उतार लिए और जाकर उन लोगों को दे दिए जिन्होंने उसकी पहेली का जवाब बताया था।[7] इसके बाद वह गुस्से में अपने पिता के घर लौट आया।

20 फिर शिमशोन की पत्नी[8] की

14:15 *इब्री दस्तूर के मुताबिक मंगेतर को पत्नी कहा जाता था। #इब्री दस्तूर के मुताबिक मंगेतर को पति कहा जाता था।

14:18 *या शायद, "इससे पहले कि वह अंदरवाले कमरे में जाता।" #यानी उन्होंने उसकी पत्नी से अपना काम निकलवाया।

अध्य. 14
1 न्या 14:8, 9
2 न्या 16:5

दूसरा कॉल.
1 न्या 16:15
2 न्या 16:16, 18
3 न्या 14:14
4 न्या 14:15
5 न्या 13:24, 25; न्या 14:6; न्या 15:14
6 यह 13:2, 3; न्या 1:18
7 न्या 14:12
8 न्या 14:2

शादी, दावत में शिमशोन के साथ रहने-
वाले एक आदमी से करा दी गयी।[1]

15 कुछ समय बाद, गेहूँ की कटाई
का वक्त आया और शिमशोन
अपनी पत्नी से मिलने गया। वह अपने
साथ बकरी का एक बच्चा ले गया।
उसने कहा, “मैं अपनी पत्नी के कमरे* में
जाना चाहता हूँ।” लेकिन लड़की के पिता
ने उसे अंदर नहीं जाने दिया। **2** उसने
शिमशोन से कहा, “मैंने सोचा कि तू मेरी
लड़की से नफरत करने लगा है,[2] इसलिए
मैंने उसकी शादी उस आदमी से करवा दी
जो दावत में तेरा साथी था।[3] मेरी मान,
तू उसकी छोटी बहन से शादी कर ले, वह
उससे ज़्यादा खूबसूरत है।” **3** शिम-
शोन ने कहा, “अब पलिश्तियों की खैर
नहीं! इस बार वे अपनी बरबादी के लिए
खुद ज़िम्मेदार होंगे।”

4 शिमशोन ने जाकर 300 लोमड़ियाँ
पकड़ीं और मशालें लीं। फिर उसने दो-दो
लोमड़ियों की पूँछ बाँधी और उसमें एक-
एक मशाल खोंस दी। **5** उसने मशाल
जलाकर उन लोमड़ियों को पलिश्तियों
की खड़ी फसल में छोड़ दिया। इस तरह
शिमशोन ने उनकी खड़ी फसल, अनाज
के गट्ठर, साथ ही अंगूरों और जैतून के
बाग में आग लगा दी।

6 पलिश्तियों ने जब पूछा, “यह
किसने किया?” तो जवाब मिला, “तिमना
में रहनेवाले उस आदमी के दामाद शिम-
शोन ने। क्योंकि उसके ससुर ने उसकी
पत्नी की शादी उसी के एक साथी
से करवा दी।”[4] तब पलिश्तियों ने उस
लड़की और उसके पिता को जला दिया।[5]
7 शिमशोन ने उनसे कहा, “जब तुमने
ऐसा किया है, तो मैं तुमसे बदला लेकर ही
दम लूँगा।”[1] **8** इसके बाद शिमशोन ने
एक-के-बाद-एक सबको मार डाला और
लाशों का ढेर लगा दिया। फिर वह एताम
चट्टान की गुफा* में जाकर रहने लगा।

9 कुछ समय बाद पलिश्तियों ने
आकर यहूदा में छावनी डाली। उन्होंने
लही[2] में हर जगह लूटपाट मचा दी।
10 यह देखकर यहूदा के आदमियों ने
कहा, “हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो
तुम हमारे खिलाफ आए हो?” पलिश्तियों
ने कहा, “हम शिमशोन को पकड़ने आए
हैं। हम उसका वही हाल करेंगे जो
उसने हमारा किया है।” **11** तब यहूदा
के 3,000 आदमी नीचे एताम चट्टान की
गुफा* में गए। उन्होंने शिमशोन से कहा,
“क्या तुझे पता नहीं कि पलिश्ती हम पर
राज कर रहे हैं?[3] फिर तूने क्यों ऐसा
काम किया और हमें मुसीबत में डाल
दिया?” शिमशोन ने कहा, “मैंने उनके
साथ वही किया जो उन्होंने मेरे साथ
किया।” **12** यहूदा के आदमी कहने
लगे, “हम तुझे पकड़कर* पलिश्तियों के
हवाले करने आए हैं।” तब शिमशोन ने
कहा, “पहले शपथ खाओ कि तुम मुझे
जान से मारने की कोशिश नहीं करोगे।”
13 उन्होंने कहा, “हम तुझे नहीं मारेंगे,
सिर्फ तुझे बाँधकर पलिश्तियों को दे
देंगे।”

उन्होंने दो नयी रस्सियाँ लीं और
शिमशोन को बाँधकर चट्टान की गुफा
से बाहर लाए। **14** जब उसे लही लाया
गया तब पलिश्ती उसे देखकर अपनी
जीत की खुशी में ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने
लगे। तभी यहोवा की पवित्र शक्ति शिम-
शोन पर काम करने लगी[4] और उसके
हाथ की रस्सियाँ ऐसे टूट गयीं जैसे सन

अध्य. 14
1 न्या 14:11
न्या 15:1, 2

अध्य. 15
2 न्या 14:17
3 न्या 14:11, 20
4 न्या 14:11, 20
5 न्या 14:15

दूसरा कॉल.
1 न्या 14:4
2 2शम 23:11, 12
3 न्या 13:1
4 न्या 13:24, 25
न्या 14:5, 6

15:1 * या “अंदरवाले कमरे।”

15:8, 11 * या “दरार।” **15:12** * या “बाँधकर।”

का धागा जलने पर टूट जाता है और उसके बंधन खुल गए।[1] **15** उसे गधे के जबड़े की ताज़ी हड्डी मिली और उसने उससे 1,000 पलिश्ती आदमियों को मार गिराया।[2] **16** शिमशोन ने कहा,

“गधे के जबड़े की हड्डी से मैंने
दुश्मनों का ढेर लगाया,
सिर्फ एक हड्डी से मैंने 1,000
आदमियों को मार गिराया।”[3]

17 फिर उसने वह हड्डी फेंक दी और उस जगह का नाम रामत-लही* रखा।[4] **18** तब शिमशोन को बड़ी प्यास लगी और उसने यहोवा को पुकारा, “हे परमेश्वर, तूने ही अपने इस दास को इतनी बड़ी जीत दिलायी है। लेकिन क्या अब तू चाहता है कि मैं प्यासा मर जाऊँ और इन खतनारहित लोगों के हाथों में पड़ जाऊँ?” **19** तब परमेश्वर ने लही की ज़मीन में एक गड्ढा बना दिया और उसमें से पानी फूट निकला।[5] पानी पीकर शिमशोन की जान में जान आयी और वह फिर ताज़ादम हो गया। इसलिए उसने उस जगह का नाम एन-हक्कोरे* रखा, जो आज तक लही में है।

20 पलिश्तियों के दिनों में शिमशोन 20 साल तक इसराएल का न्यायी रहा।[6]

16 एक बार शिमशोन गाज़ा गया। वहाँ उसने एक वेश्या को देखा और उसके यहाँ गया। **2** इतने में गाज़ा के लोगों को खबर मिली कि शिमशोन आया हुआ है। उन्होंने उस जगह को चारों तरफ से घेर लिया और शिमशोन को पकड़ने के लिए शहर के फाटक पर घात लगाकर बैठ गए। सारी रात वे यह सोचकर चुपचाप वहीं बैठे रहे कि सुबह होते ही उसे जान से मार डालेंगे।

3 शिमशोन आधी रात तक लेटा रहा, फिर वह उठकर शहर के फाटक पर गया। उसने फाटक को उसके पल्लों, बाज़ुओं और बेड़े के साथ उखाड़ दिया और उसे अपने कंधों पर उठाकर हेब्रोन के सामनेवाले पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया।

4 इसके बाद, शिमशोन को सोरेक घाटी में रहनेवाली दलीला[1] से प्यार हो गया। **5** तब पलिश्तियों के सरदार दलीला के पास आए। उन्होंने कहा, “शिमशोन को फुसलाकर[2] पता लगा कि उसकी ताकत का राज़ क्या है। मालूम कर किस चीज़ से बाँधकर उसे काबू में किया जा सकता है। अगर तू हमारा यह काम कर दे, तो हममें से हरेक तुझे 1,100 चाँदी के टुकड़े देगा।”

6 दलीला ने शिमशोन से कहा, “तुझमें गज़ब की ताकत है! क्या तू मुझे नहीं बताएगा कि तेरी इस ताकत का राज़ क्या है? किस चीज़ से बाँधकर तुझे काबू में किया जा सकता है?” **7** शिमशोन ने उससे कहा, “अगर मुझे धनुष की सात नयी डोरियों* से बाँधा जाए जो सुखायी न गयी हों, तो मेरी ताकत खत्म हो जाएगी और मैं बाकी आदमियों की तरह हो जाऊँगा।” **8** पलिश्तियों के सरदारों ने दलीला को धनुष की सात नयी डोरियाँ लाकर दीं जो सुखायी न गयी थीं और दलीला ने उनसे शिमशोन को बाँध दिया। **9** पलिश्ती, दलीला के अंदरवाले कमरे में घात लगाकर बैठ गए। दलीला ने शिमशोन से कहा, “शिमशोन! पलिश्ती आ गए!” यह सुनते ही

अध्य. 15
1 न्या 16:9, 12
2 न्या 3:31
3 न्या 16:30
4 न्या 15:9
5 निर्ग 17:6
6 उत 49:16; न्या 2:16; न्या 13:1, 5; न्या 16:31; इब्र 11:32

दूसरा कॉल.

अध्य. 16
1 न्या 16:18
2 न्या 14:15

15:17 *मतलब “जबड़े की हड्डी की ऊँची जगह।” **15:19** *मतलब “पुकारनेवाले का सोता।”

16:7 *या “ताँत।”

शिमशोन ने डोरियाँ ऐसे तोड़ दीं जैसे
आँच लगते ही अलसी का धागा टूट जाता
है।[1] शिमशोन की ताकत का राज़, राज़
ही रहा।

10 दलीला ने शिमशोन से कहा, "तूने
मुझसे झूठ कहा, मुझे बेवकूफ बनाया!
अब मुझे सच-सच बता, किस चीज़ से
तुझे बाँधा जा सकता है।" **11** शिम-
शोन ने कहा, "अगर मुझे ऐसी नयी
रस्सियों से बाँध दिया जाए जो कभी
काम में न आयी हों, तो मेरी ताकत खत्म
हो जाएगी और मैं बाकी आदमियों की
तरह हो जाऊँगा।" **12** तब दलीला ने
नयी रस्सियाँ लीं और उनसे शिमशोन को
बाँध दिया। फिर उसने कहा, "शिमशोन!
पलिश्ती आ गए!" (पलिश्ती अंदरवाले
कमरे में घात लगाए बैठे थे।) यह सुनते
ही शिमशोन ने रस्सियाँ ऐसे तोड़ दीं मानो
वे कच्चे धागे हों।[2]

13 दलीला ने शिमशोन से कहा, "तू
कब तक मुझसे झूठ बोलता रहेगा और
मुझे बेवकूफ बनाता रहेगा।[3] सच बता,
तुझे किससे बाँधा जा सकता है।" शिम-
शोन ने उससे कहा, "अगर तू मेरी
सात चोटियाँ करघे में धागे के साथ गूँथ
दे, तो मेरी ताकत खत्म हो जाएगी।"
14 तब दलीला ने चोटियाँ गूँथकर खूँटी
से कस दीं। फिर उसने कहा, "शिमशोन!
पलिश्ती आ गए!" शिमशोन नींद से जाग
गया और उसने एक ही झटके में करघे के
धागे और खूँटी को उखाड़ फेंका।

15 दलीला ने उससे कहा, "तेरा प्यार
झूठा है![4] तुझे मुझ पर कोई भरोसा नहीं।
तीन बार, तीन बार! तूने मुझे झाँसा
दिया और अपनी ताकत का राज़ छिपाए
रखा।"[5] **16** दलीला हर दिन शिमशोन
के पीछे पड़ी रही और उससे ज़िद करती
रही कि वह उसे अपना राज़ बताए। वह
शिमशोन की जान खा गयी।[1] **17** हार-
कर शिमशोन ने उसे सबकुछ बता दिया।
उसने कहा, "अब तक मेरे सिर पर कभी
उस्तरा नहीं चलाया गया है। क्योंकि मुझे
अपनी माँ के गर्भ से ही परमेश्वर के लिए
नाज़ीर चुना गया था।[2] अगर मेरे बाल
काट दिए जाएँ, तो मेरी ताकत खत्म हो
जाएगी और मैं बाकी आदमियों की तरह
हो जाऊँगा।"

18 जब दलीला ने देखा कि शिम-
शोन ने अपना राज़ बता दिया है,
तो उसने तुरंत पलिश्ती सरदारों को
कहलवा भेजा,[3] "इस बार उसने सच में
अपना राज़ बता दिया है इसलिए तुम
लोग जल्दी आओ।" तब पलिश्ती सर-
दार पैसे लेकर उसके पास आए।
19 दलीला ने शिमशोन को अपनी गोद
में सुला दिया। जैसे ही उसकी आँख लगी,
दलीला ने एक आदमी बुलवाकर उसकी
सातों चोटियाँ कटवा दीं। शिमशोन की
ताकत खत्म हो गयी और वह पूरी तरह
दलीला के काबू में आ गया। **20** फिर
दलीला ने कहा, "शिमशोन! पलिश्ती आ
गए!" यह सुनकर शिमशोन नींद से जाग
गया और उसने कहा, "इस बार भी मैं
खुद को बचा लूँगा।"[4] लेकिन उसे नहीं
पता था कि यहोवा ने उसे छोड़ दिया है।
21 तब पलिश्तियों ने उसे पकड़कर
उसकी आँखें निकाल दीं और उसे गाज़ा
ले गए। उन्होंने उसे ताँबे की दो ज़ंजीरों
में जकड़कर कैदखाने में डाल दिया और
उससे अनाज पीसने का काम करवाने
लगे। **22** शिमशोन के बाल जो काट
दिए गए थे,[5] फिर से बढ़ने लगे।

23 फिर पलिश्ती सरदार जश्न मनाने
और अपने देवता दागोन[6] को ढेर सारे
बलिदान चढ़ाने के लिए इकट्ठा हुए।
उनका कहना था कि हमारे देवता ने हमारे

अध्य. 16
1 न्या 15:14
2 न्या 16:9
3 न्या 16:7, 11
4 न्या 14:16
5 न्या 16:7
न्या 16:11
न्या 16:13

दूसरा कॉल.
1 न्या 14:17
2 गि 6:5
न्या 13:5, 7
3 न्या 16:5
4 न्या 16:9
न्या 16:12
न्या 16:14
5 न्या 13:5
6 1शम 5:4

दुश्मन शिमशोन को हमारे हाथ कर दिया है। **24** जब लोगों ने शिमशोन को देखा तो वे अपने देवता की बड़ाई करने लगे। वे कहने लगे, "देखो! जिस दुश्मन ने हमारे देश में तबाही मचा रखी थी,[1] हमारे कई लोगों को मार डाला था,[2] उसे हमारे देवता ने हमारी मुट्ठी में कर दिया है।"

25 सारे पलिश्ती मस्ती में चूर थे। वे कहने लगे, "शिमशोन को बाहर लाओ कि वह हमें तमाशा दिखाए।" वे शिमशोन को कैदखाने से बाहर ले आए कि वह उनका मन बहलाए। उसे खंभों के बीच लाकर खड़ा कर दिया गया। **26** जिस लड़के ने शिमशोन का हाथ पकड़ा हुआ था, उससे शिमशोन ने कहा, "ज़रा मुझे उन खंभों को छूने दे जिन पर यह घर टिका है, मैं उनके सहारे खड़ा रहना चाहता हूँ।" **27** (उस वक्त वह घर आदमियों और औरतों से खचाखच भरा था। सारे पलिश्ती सरदार वहाँ मौजूद थे। छत पर खड़े करीब 3,000 आदमी-औरत शिमशोन पर हँस रहे थे।)

28 तभी शिमशोन[3] ने यहोवा को पुकारा, "हे सारे जहान के मालिक यहोवा, मेरी तरफ ध्यान दे। बस एक आखिरी बार मुझे ताकत से भर दे[4] कि मैं पलिश्तियों से बदला ले सकूँ, कम-से-कम अपनी एक आँख का बदला चुका सकूँ।"[5]

29 तब शिमशोन ने उन दो बीचवाले खंभों पर अपने हाथ रखे जिन पर पूरा घर टिका था। उसने दायाँ हाथ एक खंभे पर रखा और बायाँ हाथ दूसरे खंभे पर। **30** और उसने ज़ोर से प्रार्थना की, "मुझे अपने साथ-साथ इन पलिश्तियों को भी खत्म करने दे।" फिर शिमशोन ने पूरा ज़ोर लगाकर उन खंभों को धक्का दिया और पूरा-का-पूरा घर पलिश्ती सरदारों और सभी लोगों पर आ गिरा।[1] शिमशोन ने जीते-जी जितने लोगों को मारा था, उससे कहीं ज़्यादा लोगों को उसने अपनी मौत के दिन मारा।[2]

31 शिमशोन के भाई और उसके पिता का पूरा घराना वहाँ आया और वे उसकी लाश लेकर चले गए। उन्होंने उसके पिता मानोह[3] की कब्र में उसे दफना दिया, जो सोरा[4] और एशताओल के बीच थी। शिमशोन 20 साल तक इसराएल का न्यायी था।[5]

17

एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश[6] में मीका नाम का एक आदमी रहता था। **2** उसने अपनी माँ से कहा, "तुझे याद है, तेरे चाँदी के 1,100 टुकड़े चोरी हो गए थे और तू उस चुरानेवाले को मेरे सामने कोस रही थी। वह चाँदी मैंने ली थी।" इस पर उसकी माँ ने कहा, "यहोवा तुझे आशीष दे मेरे बेटे!" **3** तब उसने चाँदी के 1,100 टुकड़े अपनी माँ को लौटा दिए। उसकी माँ ने कहा, "यह चाँदी मैं यहोवा के लिए अलग ठहराती हूँ। मैं चाहती हूँ कि तू इससे अपने लिए एक तराशी हुई और एक ढली हुई मूरत बनाए।[7] और यह चाँदी तेरी हो जाएगी।"

4 चाँदी मिलने पर, मीका की माँ ने उसमें से 200 टुकड़े सुनार को दिए। उसने उससे एक तराशी हुई और एक ढली हुई मूरत बना दी। फिर उन मूरतों को मीका के घर में स्थापित किया गया। **5** मीका के यहाँ देवताओं के लिए एक मंदिर था। उसने कुल देवताओं की मूरतें[8] और एक एपोद बनवाया[9] और अपने एक बेटे को याजक ठहराया।*[10] **6** उन दिनों इसराएल राष्ट्र में कोई राजा

अध्या. 16
1 न्या 15:4, 5
2 न्या 15:7, 8; न्या 15:15, 16
3 इब्र 11:32
4 न्या 14:5, 6; न्या 14:19; न्या 15:14
5 न्या 16:21

दूसरा कॉल.
1 न्या 16:27
2 न्या 14:19; न्या 15:7, 8; न्या 15:15, 16
3 न्या 13:8
4 न्या 13:2
5 न्या 2:16; न्या 15:20

अध्या. 17
6 यह 17:14, 15
7 निर्ग 20:4; लैव 26:1; व्य 27:15
8 उत 31:19
9 निर्ग 28:6; न्या 8:27
10 गि 3:10; व्य 12:11, 13; 2इत 13:8, 9

17:5 * शा., "का हाथ भर दिया।"

नहीं था।[1] हर कोई वही कर रहा था जो उसकी नज़र में सही था।[2]

7 यहूदा के बेतलेहेम शहर[3] में एक जवान आदमी, कुछ समय से यहूदा के लोगों के साथ रह रहा था। वह एक लेवी था।[4] 8 एक दिन उसने बेतलेहेम छोड़ दिया और रहने के लिए दूसरी जगह ढूँढ़ने लगा। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वह एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में मीका के घर आया।[5] 9 मीका ने उससे पूछा, "तू कहाँ से आया है?" उसने कहा, "मैं यहूदा के बेतलेहेम से आया हूँ। मैं एक लेवी हूँ और रहने के लिए एक जगह ढूँढ़ रहा हूँ।" 10 तब मीका ने उससे कहा, "तू यहीं मेरे साथ रह और मेरा सलाहकार* और याजक बन जा। मैं तुझे खाना, एक जोड़ी कपड़े और हर साल चाँदी के दस टुकड़े दिया करूँगा।" यह सुनकर लेवी घर के अंदर आया। 11 वह मीका के साथ रहने को तैयार हो गया और मीका उसे अपना बेटा मानने लगा। 12 मीका ने उस लेवी को अपना याजक ठहराया*[6] और वह मीका के घर रहने लगा। 13 मीका ने कहा, "अब यहोवा ज़रूर मेरा भला करेगा क्योंकि एक लेवी मेरा याजक बना है।"

18 उन दिनों इसराएल में कोई राजा न था।[7] इसराएल के गोत्रों के बीच दान के लोगों[8] को विरासत में जो ज़मीन दी गयी थी, वह कम पड़ रही थी और वे अपने लिए और जगह ढूँढ़ने लगे।[9]

2 इसलिए उन्होंने सोरा और एशताओल[10] से अपने गोत्र के पाँच काबिल आदमियों को चुना और उन्हें देश की जासूसी करने भेजा। उन्होंने कहा, "जाओ, देश की खोज-खबर लेकर आओ।" तब वे आदमी निकल पड़े और उन्होंने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में मीका के घर रात गुज़ारी।[1] 3 वे मीका के घर के पास ही थे कि उन्हें लेवी की आवाज़* सुनायी दी और वे उसे पहचान गए। उन्होंने उसके पास जाकर पूछा, "तू यहाँ क्या कर रहा है? किसके कहने पर यहाँ आया है?" 4 लेवी ने उन्हें बताया कि मीका ने उसके लिए क्या-क्या किया और कहा, "उसने मुझे याजक का काम करने के लिए रखा है।"[2] 5 उन्होंने लेवी से कहा, "ज़रा हमारे लिए भी परमेश्वर से पूछ कि हम जिस काम के लिए निकले हैं, उसमें हम कामयाब होंगे या नहीं।" 6 लेवी ने कहा, "बेफिक्र होकर जाओ। यहोवा तुम्हारे साथ है।"

7 तब वे पाँचों अपने सफर में आगे बढ़े और लैश आ पहुँचे।[3] उन्होंने देखा कि सीदोनियों की तरह यहाँ के लोग भी किसी पर निर्भर नहीं। वे शांति से जी रहे हैं। उन्हें किसी हमले का डर नहीं[4] और न ही उन्हें सतानेवाला कोई तानाशाह है। उनका शहर सीदोन से बहुत दूर है और बाकी लोगों से उनका कोई लेना-देना नहीं।

8 जब वे आदमी अपने भाइयों के पास वापस सोरा और एशताओल आए[5] तो उनके भाइयों ने पूछा, "कहो, क्या खबर लाए हो?" 9 उन्होंने जवाब दिया, "वह देश बहुत ही बढ़िया है। आओ हम उस पर चढ़ाई करें। हमारी मानो, हम अभी उस पर कब्ज़ा कर सकते हैं। तो अब देर किस बात की! 10 तुम खुद अपनी आँखों से देख लेना कि वह

17:10 * शा., "पिता।" 17:12 * शा., "का हाथ भर दिया।"

18:3 * या "बोलने का लहज़ा।"

अध्य. 17
1 1शम 8:4, 5
2 न्या 21:25
3 मी 5:2
4 गि 3:45; यह 14:3; यह 18:7
5 न्या 17:1, 5
6 गि 3:10; न्या 17:5

अध्य. 18
7 न्या 8:23; 1शम 8:4, 5
8 यह 19:40
9 यह 19:47, 48; न्या 1:34
10 यह 19:41, 48

दूसरा कॉल.
1 न्या 17:1, 5
2 न्या 17:9, 10
3 यह 19:47, 48; न्या 18:29
4 न्या 18:27
5 यह 15:20, 33; न्या 18:2

देश कितना बड़ा है! वहाँ के लोगों को किसी हमले का डर नहीं।[1] परमेश्‍वर ने वह इलाका तुम्हारे हाथ कर दिया है! उसने तुम्हें ऐसी जगह दी है जहाँ किसी चीज़ की कमी नहीं।”[2]

11 फिर दान गोत्र से 600 आदमी युद्ध के लिए तैयार हुए और सोरा और एशताओल से निकल पड़े।[3] **12** वे यहूदा में किरयत-यारीम के पास गए और उन्होंने वहाँ छावनी डाली।[4] इसलिए उस जगह का नाम आज तक महनेदान*[5] है जो किरयत-यारीम के पश्‍चिम में पड़ती है। **13** वहाँ से वे एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश की तरफ बढ़े और मीका के घर पहुँचे।[6]

14 लैश की जासूसी करनेवाले पाँच आदमियों[7] ने अपने भाइयों से कहा, “पता है, इन घरों में एक एपोद, एक तराशी हुई मूरत, एक ढली हुई मूरत और कुल देवताओं की मूरतें हैं।[8] अब तुम ही सोचो कि क्या किया जाए।” **15** तब वे वहीं रुक गए और पाँच आदमी मीका के घर के पास लेवी के घर आए[9] और उसका हाल-चाल पूछा। **16** इस बीच दान के 600 आदमी[10] जो युद्ध के लिए तैयार थे, द्वार पर ही खड़े रहे। **17** वे पाँच आदमी[11] घर के अंदर घुसे ताकि एपोद,[12] तराशी हुई मूरत, ढली हुई मूरत[13] और कुल देवताओं की मूरतें[14] ले लें। (याजक[15] उन 600 आदमियों के साथ जो युद्ध के लिए तैयार थे, द्वार पर खड़ा था।) **18** जब वे मीका के घर से एपोद, तराशी हुई मूरत, ढली हुई मूरत और कुल देवताओं की मूरतें उठाकर ले जा रहे थे तो उस याजक ने कहा, “यह तुम क्या कर रहे हो?” **19** उन्होंने कहा, “खबरदार जो एक शब्द भी निकाला तो। चुपचाप हमारे साथ चल और हमारा सलाहकार* और याजक बन जा। तू ही सोच, क्या तू एक ही आदमी के घराने का याजक बने रहना चाहता है?[1] या इसराएल के एक पूरे गोत्र, उसके सारे कुलों का याजक बनना चाहता है?”[2] **20** उनकी बात सुनकर याजक खुश हो गया। उसने एपोद, तराशी हुई मूरत और कुल देवताओं की मूरतें लीं[3] और उन लोगों के साथ चल दिया।

21 दान के लोग अपने रास्ते जाने लगे और उन्होंने अपने बच्चों, मवेशियों और कीमती चीज़ों को सबसे आगे रखा और वे खुद पीछे-पीछे चले। **22** वे थोड़ी ही दूर गए थे कि मीका और उसके पड़ोसी इकट्ठा हुए और दानियों के पीछे गए। दानियों के पास पहुँचकर **23** उन्होंने आवाज़ लगायी। दानियों ने मुड़कर मीका को देखा और उससे पूछा, “क्या हुआ? तू इतने सारे लोगों को लेकर क्यों आया है?” **24** तब मीका ने कहा, “तुम मेरे देवताओं की मूरतें उठा लाए जिन्हें मैंने बनवाया था और मेरे याजक को भी अपने साथ ले आए। मेरा सबकुछ लूटकर पूछ रहे हो, क्या हुआ?” **25** दानियों ने कहा, “अपनी आवाज़ नीची रख! कहीं हमारे आदमियों को गुस्सा आ गया तो वे तुम पर टूट पड़ेंगे। और तुझे और तेरे घराने के लोगों को जान से मार डालेंगे।” **26** यह कहकर दान के लोग अपने रास्ते चल दिए। और मीका उलटे पाँव घर लौट गया क्योंकि उसने देखा कि दान के लोग उससे ज़्यादा ताकतवर हैं।

27 दान के लोग, मीका की मूरतें और उसके याजक को लेकर लैश आ

18:12 * मतलब “दान की छावनी।”

18:19 * शा., “पिता।”

अध्य. 18
1 न्या 18:7, 27
2 निर्ग 3:8; व्य 8:7-9
3 न्या 18:2
4 1शम 7:1
5 न्या 13:24, 25
6 न्या 17:1, 5
7 न्या 18:2; न्या 18:29
8 व्य 27:15; न्या 17:4, 5
9 न्या 17:7, 12; न्या 18:30
10 न्या 18:11
11 न्या 18:2
12 निर्ग 28:6; न्या 8:27
13 लैव 19:4; व्य 27:15; न्या 17:3-5
14 उत 31:19
15 न्या 17:12

दूसरा कॉल.
1 न्या 17:12
2 न्या 18:30
3 न्या 17:4, 5

पहुँचे,[1] जहाँ के निवासी शांति से जी रहे थे और उन्हें किसी हमले का डर नहीं था।[2] दानियों ने उन्हें तलवार से मार डाला और उनके शहर को जला दिया। 28 उन्हें बचानेवाला कोई न था क्योंकि उनका शहर सीदोन से बहुत दूर था और बाकी लोगों से उनका कोई लेना-देना न था। लैश, घाटी में बसा था जो बेत-रहोब नाम के इलाके[3] में आती थी। फिर दानियों ने उस शहर को दोबारा खड़ा किया और उसमें बस गए। 29 उन्होंने उस शहर का नाम बदलकर अपने पुरखे के नाम पर दान रखा,[4] जो इसराएल का बेटा था।[5] लेकिन उस शहर का पुराना नाम लैश था।[6] 30 इसके बाद, दानियों ने तराशी हुई मूरत[7] को वहाँ स्थापित किया। और मूसा के बेटे गेरशोम[8] के वंशज, योनातान[9] और उसके बेटों को दान गोत्र का याजक बनाया। वे तब तक उनके लिए याजक ठहरे, जब तक देश के लोगों को बंदी न बना लिया गया। 31 मीका की तराशी हुई मूरत वहाँ तब तक स्थापित रही जब तक सच्चे परमेश्वर का घर* शीलो में रहा।[10]

19 उन दिनों इसराएल राष्ट्र में कोई राजा न था।[11] उस समय एक लेवी एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश[12] के एक दूर-दराज़ इलाके में रहता था। उसने एक औरत को अपनी उप-पत्नी बनाया जो यहूदा के बेतलेहेम[13] से थी। 2 मगर उसकी उप-पत्नी ने उससे बेवफाई की और उसे छोड़कर अपने पिता के घर यहूदा के बेतलेहेम चली गयी। उसे वहाँ रहते चार महीने हो गए। 3 फिर उसका पति उसे मनाने और वापस ले जाने आया। उसके साथ उसका सेवक भी आया था और उनके पास दो गधे थे। उसकी उप-पत्नी उसे अपने पिता के घर के अंदर ले गयी। उसे देखकर लड़की का पिता खुश हो गया 4 और उसने उसे तीन दिन रुकने के लिए मना लिया। तीन दिन तक लेवी वहीं रहा और उसने अपने ससुर के साथ खाया-पीया।

5 चौथे दिन सुबह-सुबह जब वे जाने की तैयारी करने लगे, तो लड़की के पिता ने अपने दामाद से कहा, "पहले कुछ खा-पी ले कि तुझे ताकत मिले, फिर चले जाना।" 6 तब उस लेवी और उसके ससुर ने बैठकर खाया-पीया। इसके बाद उसके ससुर ने कहा, "आज रात यहीं रुक जा और मौज कर।" 7 वह लेवी जाने के लिए उठा मगर उसका ससुर उससे मिन्नत करता रहा, इसलिए वह उस रात वहीं ठहर गया।

8 जब पाँचवें दिन वह सुबह-सुबह जाने के लिए उठा, तो लड़की के पिता ने कहा, "पहले कुछ खा-पी ले कि तुझे ताकत मिले।" ससुर और दामाद ने खाया-पीया और देर तक वहीं बैठे रहे। 9 जब लेवी अपनी उप-पत्नी और अपने सेवक के साथ जाने के लिए उठा तो उसके ससुर ने कहा, "देख, दिन ढलने पर है, कुछ ही देर में अँधेरा हो जाएगा। आज रात यहीं रुक जा और मौज कर। फिर कल सुबह-सुबह अपने घर* के लिए रवाना हो जाना।" 10 लेकिन लेवी वहाँ एक और रात नहीं रुकना चाहता था, इसलिए वह अपनी उप-पत्नी, सेवक और सामान से लदे दोनों गधों को लेकर निकल पड़ा और यबूस यानी यरूशलेम[1] तक गया।

अध्य. 18
1 यह 19:47, 48; न्या 18:29
2 न्या 18:7, 10
3 गि 13:17, 21
4 यह 19:47, 48; न्या 20:1; 1रा 4:25; 1रा 12:28, 29
5 उत 30:6; उत 32:28
6 न्या 18:7
7 न्या 17:1, 4; न्या 18:18
8 निर्ग 2:21, 22
9 न्या 17:12
10 निर्ग 40:2; यह 18:1; 1शम 1:3

अध्य. 19
11 1शम 8:4, 5
12 यह 17:14, 15
13 उत 35:19; मी 5:2

दूसरा कॉल.
1 यह 15:8, 63; यह 18:28; न्या 1:8

18:31 * या "पवित्र डेरा।"

19:9 * शा., "डेरे।"

11 जब वे यबूस के पास पहुँचे तो शाम होने लगी। सेवक ने अपने मालिक से कहा, “क्या हम यबूसियों के शहर में चलें और आज रात वहीं रुक जाएँ?” 12 मालिक ने उससे कहा, “यहाँ कोई इसराएली नहीं रहता इसलिए हम परदेसियों के इस शहर में नहीं रुकेंगे। हम गिबा[1] तक जाएँगे।” 13 उसने यह भी कहा, “आओ जल्दी करो, हम गिबा या रामाह[2] तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। उन्हीं में से किसी एक जगह रात बिताएँगे।” 14 वे आगे बढ़े। बिन्यामीन गोत्र के शहर, गिबा के पास पहुँचते-पहुँचते सूरज ढलने लगा।

15 इसलिए वे रात काटने के लिए गिबा में गए। वे जाकर शहर के चौक पर बैठ गए, लेकिन किसी ने उन्हें अपने घर में पनाह नहीं दी।[3] 16 तब एक बूढ़ा आदमी खेतों में काम करके वापस घर लौट रहा था। वह एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश[4] से था, मगर कुछ समय से गिबा में रह रहा था। वहाँ के निवासी बिन्यामीन गोत्र से थे।[5] 17 जब उसने शहर के चौक पर उस लेवी को बैठे देखा तो उसने पूछा, “तू कहाँ से आया है और तुझे कहाँ जाना है?” 18 लेवी ने जवाब दिया, “हम यहूदा के बेतलेहेम से आ रहे हैं और हमें एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के एक दूर के इलाके में जाना है। मैं वहीं का रहनेवाला हूँ। दरअसल मैं किसी काम से यहूदा के बेतलेहेम गया था[6] और अब यहोवा के भवन जा रहा हूँ।* मगर यहाँ हमें कोई अपने घर में पनाह नहीं दे रहा। 19 मेरे पास अपने गधों के लिए भरपूर चारा और पुआल है।[7] और अपने लिए, अपनी उप-पत्नी और अपने सेवक के लिए रोटियाँ[1] और दाख-मदिरा भी है। हमारे पास खाने-पीने की तो कोई कमी नहीं।” 20 तब उस बूढ़े आदमी ने कहा, “मेरे घर में तुम्हारा स्वागत है।* मैं तुम लोगों का पूरा-पूरा खयाल रखूँगा। बस शहर के चौक पर रात मत गुज़ारो।” 21 यह कहकर वह बूढ़ा आदमी उन्हें अपने घर ले आया। उसने उनके गधों को चारा डाला और उन सबने अपने पैर धोए। फिर वे बैठकर खाने-पीने लगे।

22 वे खा-पी रहे थे कि तभी शहर के कुछ नीच आदमियों ने आकर घर को घेर लिया और दरवाज़ा पीटने लगे। वे घर के मालिक, उस बूढ़े आदमी से कहने लगे, “बाहर ला उस आदमी को जो तेरे घर आया है। हमें उसके साथ संभोग करना है।”[2] 23 यह सुनकर बूढ़ा आदमी घर से बाहर आया और उसने कहा, “मेरे भाइयो, ऐसा दुष्ट काम मत करो। वह आदमी मेरे घर आया मेहमान है, उसके साथ यह घिनौना काम मत करो। 24 मेरी एक कुँवारी बेटी है और उस आदमी की उप-पत्नी भी है। मैं उन्हें तुम्हारे पास ले आता हूँ, अगर तुम्हें कुछ करना ही है, तो उनके साथ कर लो।[3] मगर इस आदमी को छोड़ दो, उसके साथ ऐसा घिनौना काम मत करो।”

25 लेकिन उन आदमियों ने उस बूढ़े की एक न सुनी। तब लेवी ने अपनी उप-पत्नी को पकड़कर उनके पास बाहर धकेल दिया।[4] उन आदमियों ने रात-भर उसका बलात्कार किया और उसे तड़पाया। और पौ फटते ही उसे भेज दिया। 26 वह उस बूढ़े आदमी के घर आयी जहाँ उसका पति रुका हुआ था और वहीं दरवाज़े के सामने गिर पड़ी और उजाला होने तक वहीं पड़ी रही।

19:18 * या शायद, “और मैं यहोवा के भवन में सेवा करता हूँ।”

19:20 * शा., “तुझे शांति मिले।”

अध्य. 19
1 यह 18:28
2 यह 18:21, 25
3 उत 19:2
4 न्या 19:1
5 यह 18:21, 28
6 न्या 19:1, 2
7 उत 24:32

दूसरा कॉल.
1 उत 18:5
उत 19:3
2 उत 19:4, 5
लैव 20:13
रोम 1:27
1कुर 6:9, 10
यहू 7
3 उत 19:6-8
4 न्या 19:2

27 जब उसका पति सुबह उठा और
उसने सफर पर निकलने के लिए घर
के दरवाज़े खोले, तो उसने देखा कि
उसकी उप-पत्नी दरवाज़े पर पड़ी हुई है
और उसके हाथ दहलीज़ पर फैले हुए
हैं। 28 उसने अपनी उप-पत्नी से कहा,
"उठ, हमें जाना है।" लेकिन उसे कोई
जवाब न मिला क्योंकि वह मर चुकी
थी। लेवी ने उसे उठाकर अपने गधे पर
लाद दिया और अपने घर की ओर चल
पड़ा।

29 घर पहुँचकर उसने एक छुरा
लिया और अपनी उप-पत्नी की लाश
के 12 टुकड़े किए और इसराएल के
हर गोत्र को एक-एक टुकड़ा भेज दिया।
30 जिस किसी ने उसे देखा, वह कहने
लगा, "इसराएल में ऐसी घटना पहले
कभी नहीं घटी। मिस्र से निकलने के बाद
से लेकर आज तक हमने न तो कभी ऐसा
होते देखा, न सुना। अब इस बारे में गह-
राई से सोचो, आपस में सलाह करो[1] और
बताओ कि हमें क्या करना चाहिए।"

20 तब दान[2] से लेकर बेरशेबा तक
और गिलाद के इलाके[3] में रहने-
वाले सभी इसराएली आए और पूरी
मंडली एक होकर मिसपा में यहोवा के
सामने इकट्ठा हुई।[4] 2 इसराएल के
सभी लोगों के और गोत्रों के प्रधानों
ने परमेश्वर की मंडली में अपनी-अपनी
जगह ली। तलवार चलानेवाले पैदल
सैनिकों की गिनती 4,00,000 थी।[5]

3 बिन्यामीन के लोगों ने सुना कि
इसराएल के आदमी मिसपा में इकट्ठा
हुए हैं।

इसराएल के आदमियों ने पूछा, "हमें
बता यह सब कैसे हुआ?"[6] 4 तब उस
लेवी[7] ने, जिसकी उप-पत्नी का कत्ल
हुआ था कहा, "मैं बिन्यामीन के
शहर गिबा में रात काटने के लिए गया
था[1] और मेरी उप-पत्नी मेरे साथ थी।
5 रात को गिबा के निवासियों* ने घर
को घेर लिया। वे मेरे साथ घिनौना काम
करना चाहते थे, मुझे मार डालना चाहते
थे। लेकिन मेरी जगह उन्होंने मेरी उप-
पत्नी का बलात्कार किया और वह मर
गयी।[2] 6 उन्होंने बहुत शर्मनाक और
घिनौना काम किया है। इसलिए मैंने
अपनी उप-पत्नी की लाश के टुकड़े
किए और इसराएल के हर गोत्र के
इलाके में भेज दिए।[3] 7 हे इसराएल
के लोगो, तुम ही बताओ कि अब क्या
किया जाए।"[4]

8 तब सब लोगों ने एकमत होकर
कहा, "हममें से कोई भी अपने डेरे
में नहीं जाएगा, न अपने घर लौटेगा।
9 आओ हम चिट्ठियाँ डालकर तय करें
कि कौन-कौन गिबा से लड़ने जाएगा।[5]
10 हमारे सैनिकों के साथ इसराएल
के हर गोत्र में से कुछ और आदमी
भी जाएँगे जो उनके खाने-पीने का ध्यान
रखेंगे, 100 आदमियों में से 10
आदमी, 1,000 में से 100 आदमी और
10,000 में से 1,000 आदमी। बिन्या-
मीन गोत्र ने इसराएल में जो घिनौना
काम किया है उसकी सज़ा हम उन्हें ज़रूर
देंगे।" 11 इस तरह इसराएल के सभी
आदमी एकमत होकर* उस शहर से
लड़ने को तैयार हुए।

12 तब इसराएल के गोत्रों ने बिन्या-
मीन के लोगों के पास आदमी भेजे और
कहा, "तुम लोगों के बीच यह कैसा
घिनौना काम हुआ है! 13 गिबा के उन
नीच आदमियों को हमारे हवाले कर
दो।[6] हम उन्हें जान से मार डालेंगे

अध्य. 19
1 न्या 20:7

अध्य. 20
2 यह 19:47, 48; न्या 18:29
3 यह 22:9
4 1शम 7:5; 1शम 10:17; 2रा 25:23
5 न्या 20:17; 2शम 24:9
6 न्या 19:22
7 न्या 19:1, 2

दूसरा कॉल.
1 न्या 19:12, 14
2 न्या 19:25, 26
3 न्या 19:29
4 न्या 19:30
5 न्या 20:18; नीत 16:33
6 न्या 19:22, 25

20:5 *या शायद, "ज़मींदारों।" 20:11 *शा., "एक आदमी की तरह।"

और इसराएल में से इस बुराई को मिटा
देंगे।"[1] लेकिन बिन्यामीन के लोगों ने
अपने इसराएली भाइयों की एक न सुनी।
14 तब बिन्यामीन के लोग इसराएल
के आदमियों से युद्ध करने के लिए अपने-
अपने शहर से निकलकर गिबा आए।
15 उस दिन बिन्यामीन के लोगों ने
अपने शहरों से 26,000 तलवार
चलानेवाले आदमियों को इकट्ठा किया।
गिबा से भी 700 योद्धा बुलाए गए।
16 ये 700 योद्धा बाएँ हाथवाले थे
और गोफन चलाने में हरेक का निशाना
अचूक था।*
17 बिन्यामीन गोत्र को छोड़, इस-
राएल के सभी आदमियों ने तल-
वार चलानेवाले 4,00,000 सैनिकों को
इकट्ठा किया,[2] हर सैनिक युद्ध में माहिर
था। **18** वे परमेश्वर से सलाह लेने के
लिए बेतेल गए।[3] उन्होंने पूछा, "बिन्या-
मीन से लड़ने के लिए कौन सबसे आगे
रहेगा?" यहोवा का जवाब था, "यहूदा
का गोत्र।"
19 इसके बाद, इसराएलियों ने सुबह
उठकर गिबा के लोगों से लड़ने के लिए
छावनी डाली।
20 फिर इसराएली सैनिक निकल
पड़े और बिन्यामीन के लोगों से युद्ध
करने के लिए गिबा में दल बाँधकर
तैनात हो गए। **21** बिन्यामीन के लोग
अपने शहर गिबा से बाहर आए। उस
दिन उन्होंने 22,000 इसराएली आद-
मियों को मार गिराया। **22** लेकिन इस-
राएली सैनिकों ने हिम्मत नहीं हारी। वे
दोबारा उसी जगह दल बाँधकर
तैनात हो गए जहाँ पहले दिन हुए
थे। **23** इस बीच इसराएली यहोवा के
सामने शाम तक रोते रहे। वे यहोवा
से पूछने लगे, "क्या हम बिन्यामीन के
अपने भाइयों से फिर युद्ध करने जाएँ?"[1]
यहोवा ने कहा, "जाओ।"
24 इसलिए इसराएली अगले दिन
बिन्यामीन के लोगों से लड़ने आए।
25 बिन्यामीन के लोग भी लड़ने के लिए
गिबा से निकले। इस बार उन्होंने तलवार
चलानेवाले 18,000 इसराएली सैनिकों
को मार गिराया।[2] **26** तब सभी इस-
राएली बेतेल गए और यहोवा के सामने
बैठे रोते रहे।[3] उस दिन उन्होंने शाम तक
उपवास किया[4] और यहोवा को होम-
बलियाँ[5] और शांति-बलियाँ[6] चढ़ायीं।
27 फिर उन्होंने यहोवा से सलाह ली।[7]
उन दिनों सच्चे परमेश्वर के करार का
संदूक बेतेल में था **28** और हारून का
पोता और एलिआज़र का बेटा, फिने-
हास[8] संदूक के सामने सेवा करता* था।
इसराएलियों ने पूछा, "क्या हम बिन्या-
मीन के अपने भाइयों से फिर युद्ध करने
जाएँ?"[9] यहोवा का जवाब था, "हाँ,
जाओ। क्योंकि कल मैं उन्हें तुम्हारे हाथ
कर दूँगा।" **29** तब इसराएलियों ने
अपने आदमियों को गिबा के चारों तरफ
घात में बिठाया।[10]
30 इसराएली तीसरे दिन बिन्यामीन
के लोगों से लड़ने निकले और पहले
की तरह वे गिबा के सामने दल बाँधकर
तैनात हो गए।[11] **31** जब बिन्यामीन
के लोग इसराएली सेना से लड़ने बाहर
आए, तो वे इसराएलियों का पीछा
करते हुए शहर से दूर निकल आए।[12]
उन्होंने पहले की तरह इसराएलियों पर
हमला किया और बेतेल की तरफ और
गिबा की तरफ जानेवाले राजमार्गों पर,

20:16 *शा., "अगर वे गोफन से एक बाल पर भी निशाना लगाते तो उनका निशाना खाली न जाता।"

20:28 *शा., "हाज़िर रहता।"

अध्य. 20
1 व्य 13:5, व्य 17:7, व्य 22:22, 1कुर 5:6, 13
2 न्या 20:2
3 निर्ग 28:30, गि 27:21, न्या 20:27

दूसरा कॉल.
1 न्या 20:28
2 न्या 20:21
3 न्या 20:23
4 2इत 20:3, एज 8:21
5 लैव 1:3
6 लैव 3:1
7 गि 27:21, न्या 20:18
8 निर्ग 6:25, गि 25:7
9 न्या 20:23
10 यह 8:3, 4
11 न्या 20:20, 22
12 न्या 20:36

खुले मैदानों में करीब 30 लोगों को मार गिराया।[1] 32 बिन्यामीन के लोगों ने सोचा कि इसराएली सेना पहले की तरह हमसे हार रही है।[2] मगर यह इसराएलियों की चाल थी। उन्होंने कहा था, "जब हम पीठ दिखाकर भागेंगे तो वे हमारा पीछा करेंगे। और हम उन्हें शहर से दूर राजमार्गों पर ले आएँगे।"
33 तब इसराएली सैनिक अपनी-अपनी जगह से उठे और उन्होंने बाल-तामार में दल बाँधा। और गिबा के पास घात लगाए कुछ सैनिकों ने अपनी जगह से निकलकर हमला बोल दिया। 34 इसराएल के 10,000 योद्धाओं ने गिबा पर चढ़ाई कर दी और घमासान युद्ध हुआ। बिन्यामीन के लोग नहीं जानते थे कि उन पर घोर विपत्ति टूटनेवाली है।

35 यहोवा ने इसराएल के सामने बिन्यामीन के लोगों को हरा दिया।[3] उस दिन बिन्यामीन के 25,100 आदमी मार डाले गए, वे सब-के-सब तलवार चलानेवाले सैनिक थे।[4]

36 जब इसराएली बिन्यामीन के लोगों को पीठ दिखाकर भाग रहे थे, तो बिन्यामीन के लोगों को लगा कि इसराएली एक बार फिर हमसे हार जाएँगे।[5] मगर इसराएली इसलिए भागे क्योंकि उन्हें पता था कि उनके कुछ सैनिक गिबा पर हमला करने के लिए घात लगाए बैठे हैं।[6] 37 घात लगानेवाले सैनिकों ने तुरंत गिबा पर हमला बोल दिया। वे शहर में घुसकर चारों तरफ फैल गए और उन्होंने सभी निवासियों को तलवार से मार डाला।

38 इसराएलियों ने घात लगानेवाले सैनिकों से कहा था कि वे जैसे ही शहर पर कब्ज़ा कर लें, तो निशानी के तौर पर धुएँ का बादल उड़ाएँ।

39 जब इसराएली बिन्यामीन के लोगों के सामने से भाग रहे थे, तो बिन्यामीन के आदमियों ने उन पर हमला किया और उनके करीब 30 आदमियों को मार गिराया।[1] वे कहने लगे, "वह देखो! इसराएली एक बार फिर हमसे हार रहे हैं, जैसे पिछली बार हारे थे।"[2]
40 लेकिन तभी गिबा से धुएँ का खंभा ऊपर उठने लगा। जब बिन्यामीन के लोगों ने मुड़कर देखा तो पूरा शहर जल रहा था और धुआँ आसमान की तरफ उठ रहा था। 41 तभी इसराएली पलटकर हमलावरों पर टूट पड़े। बिन्यामीन के सैनिकों के हाथ-पैर फूल गए क्योंकि उन्होंने देखा कि उन पर विपत्ति आ पड़ी है। 42 इसलिए वे इसराएलियों को पीठ दिखाकर वीराने की तरफ भागने लगे। लेकिन इसराएली सैनिकों ने उनका पीछा किया और उन्हें मारने के लिए शहर* से बाकी इसराएली सैनिक भी आ गए। 43 वे चारों तरफ से बिन्यामीन के आदमियों पर बढ़े चले आए और उनका पीछा करते रहे। गिबा के पूरब में आकर उन्होंने बिन्यामीन के आदमियों को रौंद डाला। 44 बिन्यामीन के 18,000 आदमी मारे गए, वे सब-के-सब वीर योद्धा थे।[3]

45 बाकी बचे हुए आदमी वीराने में रिम्मोन की चट्टान की तरफ भागने लगे।[4] मगर इसराएलियों ने उनमें से 5,000 आदमियों को राजमार्गों पर मार गिराया और गिदोम तक उनका पीछा करके और भी 2,000 आदमियों को मार डाला। 46 उस दिन बिन्यामीन के कुल मिलाकर 25,000 तलवार चलानेवाले वीर योद्धा मारे गए।[5] 47 लेकिन 600 आदमी वीराने

अध्य. 20
1 न्या 20:39
2 न्या 20:21, 25
3 न्या 20:28, 48
4 न्या 20:14, 15; न्या 20:46
5 न्या 20:31
6 न्या 20:29

दूसरा कॉल.
1 न्या 20:31
2 न्या 20:21, 25
3 न्या 20:15
4 न्या 21:13
5 न्या 20:15, 35

20:42 * शा., "शहरों।"

में रिम्मोन की चट्टान में जा छिपे और चार महीने तक वहीं रहे।

48 इसराएल के सैनिक वापस बिन्यामीन के शहरों की तरफ आए और वहाँ जितने भी लोग और जानवर रह गए थे, उन सबको मार डाला। इतना ही नहीं, उन्होंने उनके सभी शहरों को जला दिया।

21 मिसपा में इसराएलियों ने शपथ खायी थी,[1] "हममें से कोई भी अपनी बेटियों की शादी बिन्यामीन के आदमियों से नहीं कराएगा।"[2] 2 अब युद्ध के बाद वे बेतेल आए[3] और सच्चे परमेश्वर के सामने शाम तक बैठे रहे। वे फूट-फूटकर रोने लगे 3 और कहने लगे, "हे इसराएल के परमेश्वर यहोवा, यह कैसा दिन देखना पड़ रहा है हमें! आज इसराएल के बीच से एक गोत्र कम हो गया है।" 4 अगले दिन इसराएली सुबह जल्दी उठे और उन्होंने वहाँ एक वेदी बनाकर उस पर होम-बलियाँ और शांति-बलियाँ चढ़ायीं।[4]

5 फिर उन्होंने पूछा, "इसराएल के सभी गोत्रों में से कौन है जो मिसपा में यहोवा के सामने इकट्ठा नहीं हुआ था?" क्योंकि उन्होंने शपथ खायी थी कि जो कोई मिसपा में यहोवा के सामने नहीं आएगा, वह हर हाल में मार डाला जाएगा। 6 इसराएलियों को बिन्यामीन के अपने भाइयों के बारे में सोचकर दुख हुआ और वे कहने लगे, "आज इसराएल के बीच से एक गोत्र खत्म हो* गया है। 7 बचे हुए आदमियों के लिए हम पत्नियाँ कहाँ से लाएँगे? हमने तो यहोवा के सामने शपथ खायी थी[5] कि हम अपनी बेटियों की शादी उनसे नहीं कराएँगे।"[6]

8 उन्होंने पूछा, "इसराएल के गोत्रों में से कौन है जो मिसपा में यहोवा के सामने इकट्ठा नहीं हुआ था?"[1] याबेश-गिलाद से वहाँ कोई भी नहीं आया था। 9 जब इसराएलियों ने गिनना शुरू किया कि वहाँ कौन-कौन आया था, तो उन्हें पता चला कि याबेश-गिलाद का एक भी निवासी वहाँ मौजूद नहीं था। 10 तब इसराएल की मंडली ने अपने 12,000 ताकतवर आदमियों को यह हुक्म देकर भेजा, "जाओ और याबेश-गिलाद के निवासियों को तलवार से मार डालो। उनकी औरतों और बच्चों को भी मत बख्शना।[2] 11 उस शहर के हर आदमी-औरत को मार डालना, सिर्फ कुँवारी लड़कियों को ज़िंदा छोड़ देना।" 12 इस तरह उन्हें याबेश-गिलाद से 400 कुँवारी लड़कियाँ मिलीं जिन्होंने कभी किसी आदमी के साथ यौन-संबंध नहीं रखा था। वे उन्हें कनान देश के शीलो में छावनी के पास ले आए।[3]

13 तब पूरी मंडली ने रिम्मोन की चट्टान में छिपे बिन्यामीन के आदमियों[4] से सुलह करने की पेशकश रखी। 14 बिन्यामीन के आदमी वापस आए और इसराएलियों ने उन्हें वे कुँवारी लड़कियाँ दीं, जिनको उन्होंने याबेश-गिलाद में ज़िंदा छोड़ दिया था।[5] मगर उन लड़कियों की गिनती बिन्यामीन के आदमियों से कम थी। 15 इसराएलियों को बिन्यामीन के लोगों के लिए बड़ा दुख हुआ[6] क्योंकि यहोवा ने इसराएल के गोत्र से उन्हें अलग कर दिया था। 16 मंडली के मुखियाओं ने कहा, "बाकी आदमियों के लिए हम पत्नियाँ कहाँ से लाएँ? हमने तो बिन्यामीन गोत्र की सारी औरतों को मार डाला।" 17 उन्होंने

21:6 *शा., "कट।"

अध्य. 21
1 न्या 20:1
2 न्या 21:18
3 न्या 20:18, 26
4 लैव 3:1
5 लैव 5:4; लैव 19:12; मत 5:33
6 न्या 21:1, 18

दूसरा कॉल.
1 न्या 20:1
2 न्या 21:5
3 यह 18:1
4 न्या 20:46, 47
5 न्या 21:8, 12
6 न्या 21:6

कहा, “बिन्यामीन के बचे हुए आदमियों को उनके हिस्से की ज़मीन ज़रूर मिलनी चाहिए ताकि इसराएल से उनके गोत्र का नाम मिट न जाए। **18** लेकिन हम अपनी बेटियाँ नहीं दे सकते क्योंकि हमने शपथ खायी है कि हममें से जो इसराएली अपनी बेटी की शादी बिन्यामीन के किसी आदमी से कराएगा, वह शापित ठहरेगा।”[1]

19 तब मुखियाओं ने कहा, “हर साल शीलो में यहोवा के लिए त्योहार मनाया जाता है,[2] जो बेतेल के उत्तर में है और बेतेल से शेकेम जानेवाले राजमार्ग के पूरब में और लबोना के दक्षिण में है।” **20** तब उन्होंने बिन्यामीन के आदमियों को आज्ञा दी, “जाओ और वहाँ अंगूरों के बाग में घात लगाकर बैठ जाओ। **21** जब शीलो की जवान लड़कियाँ बाहर आएँगी और घेरा बनाकर नाच रही होंगी, तब तुम अंगूरों के बाग से निकलकर अपने लिए एक-एक लड़की उठा लेना और बिन्यामीन के अपने इलाके में लौट जाना। **22** और अगर उन लड़कियों के पिता और भाई हमारे पास शिकायत लेकर आएँ तो हम उनसे कहेंगे, ‘हम पर एहसान करो और उन्हें जाने दो। क्योंकि हमने उनको पत्नियाँ दिलाने के लिए जो युद्ध किया था, उसमें हमें सबके लिए लड़कियाँ नहीं मिली थीं।[1] वैसे भी, तुमने अपनी बेटियाँ अपनी मरज़ी से नहीं दीं, इसलिए तुम किसी भी तरह दोषी नहीं ठहरोगे।’”[2]

23 बिन्यामीन के आदमियों से जैसा कहा गया उन्होंने वैसा ही किया। वे उन लड़कियों में से जो नाच रही थीं, अपने लिए एक-एक लड़की उठा ले गए और उन्हें अपनी पत्नी बना लिया। फिर वे अपने इलाके में लौट गए और उन्होंने अपने शहरों को दोबारा खड़ा किया[3] और उनमें बस गए।

24 इसराएली अपने-अपने गोत्र और अपने परिवार के पास अपने इलाके में लौट गए।

25 उन दिनों इसराएल में कोई राजा नहीं था।[4] हर कोई वही कर रहा था जो उसकी नज़र में सही था।

अध्य. 21
1 लैव 19:12
न्या 21:1
2 यह 18:1

दूसरा कॉल.
1 न्या 21:12, 14
2 न्या 21:1, 18
3 न्या 20:48
4 न्या 17:6
1शम 8:4, 5

रूत

सारांश

1 एलीमेलेक का परिवार मोआब गया (1, 2)
नाओमी, ओरपा और रूत विधवा हो गयीं (3-6)
नाओमी और परमेश्‍वर से रूत की वफादारी (7-17)
नाओमी, रूत के साथ बेतलेहेम लौटी (18-22)

2 रूत, बोअज़ के खेत में बीनती है (1-3)
रूत और बोअज़ की मुलाकात (4-16)
बोअज़ की दया के बारे में बताया (17-23)

3 नाओमी ने रूत को हिदायत दी (1-4)
रूत और बोअज़ खलिहान में (5-15)
रूत, नाओमी के पास लौटी (16-18)

4 बोअज़ छुड़ानेवाला बना (1-12)
बोअज़ और रूत के बेटे ओबेद का जन्म (13-17)
दाविद की वंशावली (18-22)

1 यह उस समय की बात है जब इस-
राएल में न्यायी[1] शासन* करते थे।
उन दिनों वहाँ अकाल पड़ा। यहूदा के
बेतलेहेम[2] से एक आदमी अपनी पत्नी
और दो बेटों को लेकर, मोआब के
इलाके[3] के लिए रवाना हुआ कि वहाँ
परदेसी बनकर रहे। 2 उस आदमी का
नाम एलीमेलेक* था और उसकी पत्नी
का नाम नाओमी।# उसके बेटों के
नाम थे महलोन△ और किलयोन।⊠ वे
एप्राता यानी यहूदा के बेतलेहेम के रहने-
वाले थे। वे सब मोआब पहुँचे और वहीं
रहने लगे।

3 कुछ समय बाद नाओमी के
पति एलीमेलेक की मौत हो गयी और
नाओमी अपने दो बेटों के साथ अकेली
रह गयी। 4 आगे चलकर उसके बेटों
ने मोआबी लड़कियों से शादी की। एक
का नाम था ओरपा और दूसरी का रूत।[4]
वे सब मोआब में करीब दस साल रहे।
5 फिर नाओमी के दोनों बेटों, मह-
लोन और किलयोन की भी मौत हो
गयी। अब नाओमी का न तो पति रहा
न ही बेटे। 6 मोआब में उसने सुना कि
यहोवा ने एक बार फिर अपने लोगों पर
ध्यान दिया है और उन्हें खाने के लिए
रोटी दी है। इसलिए नाओमी अपनी
बहुओं के साथ वापस अपने देश के लिए
निकल पड़ी।

7 उसने वह जगह छोड़ दी जहाँ वह
अपनी दोनों बहुओं के साथ रहती थी।
जब वे यहूदा लौट रहे थे तो रास्ते
में 8 नाओमी ने अपनी बहुओं से कहा,
“अपने-अपने मायके लौट जाओ। जैसे
तुमने मेरे और मेरे बेटों के लिए
जो अब नहीं रहे, अपने अटल प्यार का
सबूत दिया है, वैसे ही यहोवा तुम्हें अपने
अटल प्यार का सबूत दे।[1] 9 यहोवा से
मेरी यही बिनती है कि तुम दोनों का घर
दोबारा बस जाए और तुम अपने-अपने
पति के घर सुकून पाओ।”[2] फिर
नाओमी ने अपनी बहुओं को चूमा और
वे फूट-फूटकर रोने लगीं। 10 वे बार-
बार कहती रहीं, “हम तुझे छोड़कर नहीं
जाएँगे। हम तेरे साथ तेरे लोगों के पास
चलेंगे।” 11 लेकिन नाओमी ने कहा,
“नहीं मेरी बच्चियो, लौट जाओ। मेरे
साथ आकर तुम्हें क्या मिलेगा? क्या तुम्हें
लगता है, मैं अब भी बेटे पैदा कर सकती
हूँ जिनसे तुम शादी करोगी?[3] 12 लौट
जाओ मेरी बच्चियो, लौट जाओ। मैं
शादी करने के लिए बहुत बूढ़ी हो चुकी
हूँ। अगर आज रात मेरी शादी हो भी
जाती है और मेरे बेटे भी होते हैं, 13 तो
क्या तुम उनके बड़े होने का इंतज़ार
करती रहोगी? क्या तब तक तुम दोबारा
शादी नहीं करोगी? मेरे साथ यह सब इस-
लिए हुआ क्योंकि यहोवा का हाथ मेरे
खिलाफ उठा है।[4] मगर इस वजह से तुम्हें
जो दुख झेलना पड़ रहा है, वह मुझसे
देखा नहीं जाता।”

14 वे फिर फूट-फूटकर रोने लगीं।
इसके बाद ओरपा ने अपनी सास को चूमा
और वह चली गयी। मगर रूत ने नाओमी
का साथ नहीं छोड़ा। 15 नाओमी ने
कहा, “देख, तेरी देवरानी अपने लोगों
और अपने देवताओं के पास लौट गयी
है। तू भी उसके साथ चली जा।”

16 लेकिन रूत ने कहा, “मुझे वापस
जाने के लिए मत कह, अपने साथ आने

अध्य. 1
1 न्या 2:16
2 मी 5:2
3 उत 19:36, 37; व्य 2:9; न्या 3:30
4 मत 1:5

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 34:6; रूत 2:20
2 रूत 3:1
3 व्य 25:5, 6
4 रूत 1:20

1:1 *शा., “न्याय।” **1:2** *मतलब “मेरा परमेश्‍वर राजा है।” #मतलब “मेरे मन को भानेवाली।” △यह शायद एक इब्रानी शब्द से निकला है, जिसका मतलब है, “कमज़ोर पड़ना; बीमार पड़ना।” ⊠मतलब “जो कम-ज़ोर है; खत्म होने पर है।”

से मत रोक। क्योंकि जहाँ तू जाएगी,
वहाँ मैं भी जाऊँगी। और जहाँ तू रात
गुज़ारेगी, वहीं मैं भी रात गुज़ारूँगी।
तेरे लोग मेरे लोग होंगे और तेरा पर-
मेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।[1] **17** जहाँ
तू मरेगी वहाँ मैं भी मरूँगी और दफनायी
जाऊँगी। सिर्फ मौत ही मुझे तुझसे अलग
कर सकती है। अगर किसी और वजह से
मैं तुझसे अलग हुई, तो यहोवा मुझे कड़ी-
से-कड़ी सज़ा दे।”

18 रूत का पक्का इरादा देखकर
नाओमी ने फिर उससे कुछ न कहा।
19 वे दोनों चलते गए और बेतलेहेम
पहुँचे।[2] जैसे ही उन्होंने बेतलेहेम में कदम
रखा, सारे शहर में हलचल मच गयी।
औरतें कहने लगीं, “क्या यह नाओमी
है?” **20** नाओमी ने उन औरतों से
कहा, “मुझे नाओमी* नहीं, मारा# कहो।
क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर के होते
मेरी ज़िंदगी दुखों से भर गयी है।[3]
21 मैं यहाँ से भरी-पूरी गयी थी, लेकिन
यहोवा ने मुझे खाली हाथ लौटाया है।
जब यहोवा ही मेरे खिलाफ हो गया
और सर्वशक्तिमान ने ही मुझ पर मुसी-
बतें आने दीं,[4] तो तुम मुझे नाओमी क्यों
बुलाती हो?”

22 इस तरह नाओमी मोआब के
इलाके[5] से अपनी मोआबी बहू रूत के
साथ वापस बेतलेहेम लौट आयी। उस
वक्त बेतलेहेम में जौ की कटाई शुरू हो
गयी थी।[6]

2 नाओमी के पति एलीमेलेक का एक
रिश्तेदार था, जो उसी के कुल से
था। उसका नाम था बोअज़।[7] वह एक
अमीर आदमी था।

2 एक दिन मोआबी रूत ने नाओमी
से कहा, “अगर तू कहे तो क्या मैं खेतों
में जाऊँ और बालें बीन लाऊँ?[1] जो
कोई मुझ पर दया करेगा, मैं उसके
पीछे-पीछे जाकर बालें इकट्ठी करूँगी।”
तब नाओमी ने कहा, “ठीक है मेरी बेटी,
जा।” **3** रूत खेतों में गयी और कटाई
करनेवालों के पीछे-पीछे बालें बीनने
लगी। इत्तफाक से वह उस खेत में गयी,
जो एलीमेलेक[2] के रिश्तेदार बोअज़[3]
का था। **4** तभी बोअज़ बेतलेहेम शहर
से बाहर अपने खेतों में आया। उसने
अपने कटाई करनेवालों से कहा, “यहोवा
तुम्हारे साथ रहे।” उन्होंने भी कहा,
“यहोवा तुझे आशीष दे।”

5 बोअज़ ने कटाई करनेवालों के
अधिकारी से पूछा, “वह लड़की कौन है?
किसके घराने से है?” **6** उसने जवाब
दिया, “वह एक मोआबी है,[4] नाओमी
के साथ मोआब के इलाके से आयी है।[5]
7 जब वह खेत में आयी तो उसने मुझसे
पूछा, ‘क्या मैं अनाज की उन बालों को
बीन सकती हूँ*[6] जो कटाई करनेवाले
छोड़ रहे हैं?’ वह सुबह से लगी हुई है,
बस कुछ देर पहले थोड़ा आराम करने के
लिए छप्पर के नीचे बैठी थी।”

8 बोअज़ ने रूत से कहा, “सुन बेटी।
तू किसी और के खेत में बीनने मत जाना।
बस मेरे खेत में काम करनेवाली औरतों
के साथ रहना।[7] **9** देखती रहना कि
कहाँ-कहाँ कटाई हो रही है और औरतों
के साथ-साथ जाना। मैंने अपने आद-
मियों से कह दिया है कि वे तुझे परेशान
न करें। अगर तुझे प्यास लगे तो इन घड़ों
से पानी पी लेना जो मेरे आदमियों ने भर-
कर रखे हैं।”

10 तब रूत ने ज़मीन पर गिरकर

1:20 *मतलब “मेरे मन को भानेवाली।” #मतलब “कड़वा।”

2:7 *या शायद, “गट्ठरों के बीच-बीच में बीन सकती हूँ।”

अध्य. 1
1 रूत 2:11, 12
2 रूत 1:1, 2
3 रूत 1:13
4 रूत 1:3, 5
5 गि 21:13; रूत 1:1
6 रूत 2:23

अध्य. 2
7 रूत 2:20; रूत 4:21, 22; मत 1:5; लूक 3:23, 32

दूसरा कॉल.
1 लैव 23:22; व्य 24:19
2 रूत 1:2
3 रूत 2:20
4 रूत 1:3, 4
5 रूत 1:16, 22
6 लैव 23:22; व्य 24:19
7 रूत 2:22

बोअज़ को प्रणाम किया और कहा, “क्या
मैं जान सकती हूँ कि मुझ परदेसी पर
ध्यान देने और मेहरबानी करने की क्या
वजह है?”[1] **11** बोअज़ ने कहा, “मुझे
बताया गया है कि तूने अपने पति की
मौत के बाद अपनी सास के लिए कितना
कुछ किया। तू अपने माँ-बाप और अपने
देश को छोड़कर ऐसे लोगों के बीच
रहने आयी, जिन्हें तू जानती तक नहीं।[2]
12 यहोवा तुझे आशीष दे[3] और इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा से तुझे पूरा
इनाम मिले, जिसके पंखों तले तूने पनाह
ली है।”[4] **13** यह सुनकर रूत ने कहा,
“हे मेरे मालिक, तेरी मेहरबानी मुझ पर
बनी रहे। मैं तो तेरे दास-दासियों में से
नहीं हूँ, फिर भी तूने इस दासी को
दिलासा दिया और अपनी बातों से इसकी
हिम्मत बढ़ायी।”

14 जब खाने का वक्त हुआ तो
बोअज़ ने रूत से कहा, “आ, रोटी
खा ले। अपनी रोटी खट्टी दाख-मदिरा में
डुबोकर खा।” रूत कटाई करनेवालों के
पास बैठ गयी। बोअज़ ने उसे भुना हुआ
अनाज दिया। रूत ने भरपेट खाया और
कुछ अनाज बच भी गया। **15** जब रूत
बालें बीनने के लिए उठी,[5] तो बोअज़
ने अपने आदमियों को आज्ञा दी, “उसे
अनाज की कटी हुई बालें* बीनने देना।
और कोई उसे तंग न करे।[6] **16** गट्ठरों
से भी कुछ बालें गिरा देना कि वह उन्हें
बीन सके। उसे रोकना मत।”

17 रूत शाम तक खेत में बीनती
रही।[7] जब उसने इकट्ठा की हुई बालों को
पीटकर अनाज निकाला, तो करीब एक
एपा* जौ निकला। **18** वह उसे लेकर
शहर लौट आयी। उसने अपनी सास को
दिखाया कि वह क्या बीनकर लायी है।
रूत ने उसे वह खाना भी दिया जो बच
गया था।[1]

19 उसकी सास ने पूछा, “तू किसके
खेत में बीनने गयी थी? जिसने भी
तुझ पर दया की, उसका भला हो।”[2]
रूत ने कहा, “मैं जिस आदमी के खेत
में बीन रही थी उसका नाम बोअज़ है।”
20 नाओमी ने अपनी बहू से कहा,
“यहोवा उसे आशीष दे। सचमुच, पर-
मेश्वर जीवितों और मरे हुओं के लिए
अपने अटल प्यार का सबूत देना कभी
नहीं छोड़ता।”[3] नाओमी ने यह भी कहा,
“वह आदमी हमारा रिश्तेदार है[4] और
हमारे छुड़ानेवालों में से एक है।”[5]
21 मोआबी रूत ने कहा, “उसने मुझसे
यह भी कहा कि जब तक मेरे लोग फसल
की कटाई पूरी न कर लें, तू उनके साथ
ही रहना।”[6] **22** नाओमी ने अपनी बहू
रूत से कहा, “बेटी, यही अच्छा होगा कि
तू उसके खेत में काम करनेवाली औरतों
के साथ रहे, वरना दूसरे खेतों में लोग
बेवजह तुझे परेशान करेंगे।”

23 इसलिए रूत, बोअज़ के खेत में
काम करनेवाली औरतों के साथ ही रही
और जौ और गेहूँ की कटाई खत्म होने
तक बालें बीनती रही।[7] रूत ने अपनी
सास नाओमी का साथ नहीं छोड़ा।[8]

3 फिर नाओमी ने अपनी बहू रूत से
कहा, “बेटी, क्या यह मेरा फर्ज़ नहीं
कि मैं तेरे लिए एक ऐसा घर ढूँढ़ूँ[9]
जहाँ तू सुकून पा सके? **2** देख! बोअज़
हमारा रिश्तेदार है,[10] जिसके खेत में
काम करनेवाली औरतों के साथ रह-
कर तूने बालें बीनीं। आज शाम खलि-
हान में जौ फटकी जाएगी और बोअज़ भी
वहाँ होगा। **3** तू नहा-धोकर खुशबूदार

अध्य. 2
1 निर्ग 23:9; लैव 19:34
2 रूत 1:14, 16
3 रूत 4:11, 17; मत 1:5, 16
4 भज 17:8; भज 36:7; भज 57:1; भज 63:7
5 लैव 19:9; रूत 2:2
6 रूत 2:9
7 रूत 2:7

दूसरा कॉल.
1 रूत 2:14
2 भज 41:1
3 निर्ग 34:6; रूत 1:8; भज 36:7
4 रूत 2:1
5 लैव 25:25; व्य 25:5, 6; रूत 3:9, 12
6 रूत 2:8
7 रूत 1:22
8 रूत 1:16

अध्य. 3
9 रूत 1:9
10 रूत 2:1, 20

2:15 *या शायद, “गट्ठरों के बीच-बीच में।”
2:17 *करीब 22 ली. अति. ख14 देखें।

तेल मल और तैयार होकर* खलि-
हान में जा। मगर उसके पास तब तक
मत जाना जब तक कि वह खा-पी न
ले। 4 जब वह लेट जाए, तो देखना कि
वह कहाँ सोया है। फिर जाकर उसके पैर
से कपड़ा हटाना और उसके पैर के पास
लेट जाना। तब वह तुझे बताएगा कि क्या
करना है।”

5 रूत ने जवाब दिया, “जो कुछ तूने
कहा है, वह सब मैं करूँगी।” 6 वह
खलिहान में गयी और उसकी सास ने
जैसा कहा था, उसने वैसा ही किया।
7 बोअज़ ने खाया-पीया और वह बड़ा
खुश था। फिर वह अनाज के ढेर के पास
जाकर सो गया। तब रूत दबे पाँव आयी
और उसने बोअज़ के पैर से कपड़ा हटाया
और वहीं लेट गयी। 8 आधी रात को
बोअज़ ठंड से ठिठुरने लगा और उठ
गया। जैसे ही वह आगे की तरफ झुका,
उसने देखा कि एक औरत उसके पैरों
के पास लेटी है। 9 बोअज़ ने पूछा,
“तू कौन है?” उस औरत ने कहा, “मैं
तेरी दासी रूत हूँ। तू अपनी इस दासी
को अपना ओढ़ना ओढ़ा दे* क्योंकि तू
हमारा छुड़ानेवाला है।”[1] 10 इस पर
बोअज़ ने कहा, “यहोवा तुझे आशीष दे
मेरी बेटी। तूने पहले भी अपने अटल
प्यार का सबूत दिया है,[2] मगर इस
बार तूने और भी बढ़कर इसका सबूत
दिया है। क्योंकि तू किसी जवान आदमी
के पीछे नहीं गयी, फिर चाहे वह अमीर
हो या गरीब। 11 घबरा मत मेरी बेटी।
तूने मुझसे जो भी कहा है, वह सब मैं
करूँगा[3] क्योंकि शहर में हर कोई जानता
है कि तू एक नेक औरत है। 12 यह
सच है कि मैं तुम्हारा छुड़ानेवाला हूँ,[1]
मगर एक और आदमी है जो छुड़ाने
का पहला हक रखता है क्योंकि मुझसे
ज़्यादा वह तुम्हारा करीबी रिश्तेदार है।[2]
13 तू रात-भर यहीं रुक जा। कल सुबह
मैं उस आदमी से बात करूँगा, अगर वह
तुझे छुड़ाने के लिए राज़ी हो गया, तो
अच्छी बात है।[3] लेकिन अगर वह इन-
कार करेगा, तो जीवित परमेश्वर यहोवा
की शपथ, मैं तुझे छुड़ाऊँगा। तू सुबह
तक यहीं लेटी रह।”

14 इसलिए रूत सुबह होने तक वहीं
उसके पैरों के पास लेटी रही। इससे पहले
कि उजाला हो और कोई उसे देख ले,
वह उठ गयी। बोअज़ नहीं चाहता था कि
किसी को पता चले कि कोई औरत खलि-
हान में आयी थी। 15 फिर उसने रूत
से कहा, “तूने जो चादर ओढ़ी हुई है उसे
फैला।” तब रूत ने अपनी चादर फैलायी
और बोअज़ ने उसमें छः पैमाने* जौ
डाला। फिर उसे उठाकर रूत को दे
दिया। इसके बाद बोअज़ शहर में चला
गया।

16 रूत अपनी सास के पास लौट
आयी। नाओमी ने उससे पूछा, “बेटी,
जल्दी बता क्या हुआ?”* रूत ने उसे
सारा हाल कह सुनाया। 17 रूत ने यह
भी कहा, “उसने मुझे छः पैमाने जौ
दिया और कहा कि अपनी सास के पास
खाली हाथ मत जा।” 18 यह सुनकर
नाओमी ने रूत से कहा, “बेटी, यहीं बैठ-
कर इंतज़ार कर और देख क्या होता है
क्योंकि वह आदमी तब तक चैन से नहीं
बैठेगा, जब तक वह आज यह मामला
निपटा नहीं देता।”

3:3 *या “कपड़े पहनकर।” **3:9** *या “अपनी पनाह में ले ले।”

3:15 *शायद 6 सआ माप या करीब 44 ली. अति. ख14 देखें। **3:16** *शा., “तू कौन है?”

अध्य. 3
1 लैव 25:25 व्य 25:5, 6 रूत 2:20
2 रूत 1:14, 16
3 रूत 3:9

दूसरा कॉल.
1 लैव 25:25 रूत 2:20
2 रूत 4:1
3 रूत 4:5

4 बोअज़ शहर के फाटक पर गया[1]
और वहीं बैठा रहा। तभी वह
छुड़ानेवाला वहाँ से गुज़रा, जिसका ज़िक्र
उसने रूत से किया था।[2] बोअज़ ने उस
आदमी* को बुलाया, “ज़रा इधर आकर
बैठ।” वह आदमी उसके पास आकर बैठ
गया। 2 तब बोअज़ ने शहर के दस
मुखियाओं[3] को इकट्ठा किया और उनसे
कहा, “यहाँ आओ और बैठो।” वे सब
बैठ गए।

3 अब बोअज़ ने उस छुड़ानेवाले[4] से
कहा, “नाओमी मोआब के इलाके से
वापस आ गयी है[5] और उसे हमारे
भाई एलीमेलेक[6] की ज़मीन बेचनी पड़
रही है। 4 मैंने सोचा कि तुझे यह बात
शहर के निवासियों और मेरे लोगों के
मुखियाओं के सामने बता दूँ क्योंकि उस
ज़मीन को खरीदने का पहला हक तेरा
बनता है।[7] इसलिए अगर तू चाहे तो वह
ज़मीन छुड़ा सकता है। लेकिन अगर तू
नहीं छुड़ाएगा, तो मुझे बता क्योंकि तेरे
बाद छुड़ाने का हक मेरा है।” उस आदमी
ने कहा, “मैं उसे छुड़ाने के लिए तैयार
हूँ।”[8] 5 तब बोअज़ ने कहा, “मगर
तुझे यह ज़मीन सिर्फ नाओमी से नहीं
बल्कि उसके बेटे की विधवा मोआबी रूत
से भी खरीदनी होगी। इस तरह
ज़मीन पर उस मरे हुए आदमी का नाम
बना रहेगा।”[9] 6 इस पर उस छुड़ाने-
वाले ने कहा, “मैं यह ज़मीन नहीं छुड़ा
सकता, कहीं ऐसा न हो कि मुझे नुक-
सान उठाना पड़े।* नहीं, मैं उसे नहीं
छुड़ाऊँगा। मेरा हक तू ले ले और उसे
छुड़ा ले।”

7 उन दिनों इसराएल में यह दस्तूर था
कि जब एक आदमी छुड़ाने का अपना
हक किसी दूसरे को दे देता था, तो उसे
सबके सामने अपनी एक जूती उतार-
कर[1] उस दूसरे आदमी को देनी होती
थी। इसराएल में ऐसे मामले को कानूनी
तौर पर पक्का करने का यही तरीका था।
8 इसलिए जब उस छुड़ानेवाले ने बोअज़
से कहा कि तू ही यह ज़मीन खरीद ले,
तो उसने अपनी जूती उतार दी। 9 तब
बोअज़ ने मुखियाओं और सब लोगों के
सामने कहा, “आज तुम लोग इस बात के
गवाह हो[2] कि जो कुछ एलीमेलेक, किल-
योन और महलोन का है उसे मैं नाओमी
से खरीद रहा हूँ। 10 साथ ही, मैं मह-
लोन की विधवा मोआबी रूत को भी
अपनी पत्नी बनाता हूँ ताकि उस मरे
हुए आदमी की ज़मीन पर उसका नाम
बना रहे।[3] और उसका नाम अपने
भाइयों और शहर के लोगों के बीच से*
मिट न जाए। आज तुम सब इस बात के
गवाह हो।”[4]

11 तब शहर के फाटक पर मौजूद
सब लोगों और मुखियाओं ने कहा, “हाँ,
हम इस बात के गवाह हैं। तेरे घर आने-
वाली इस औरत को यहोवा आशीष दे।
वह राहेल और लिआ की तरह फले-
फूले, जिनसे इसराएल का पूरा घराना
निकला।[5] एप्राता[6] में तेरी खूब तरक्की
हो और बेतलेहेम[7] में तेरा एक अच्छा
नाम हो। 12 इस औरत से यहोवा तुझे
जो बच्चा दे,[8] उससे तेरा घराना पेरेस के
घराने जैसा बन जाए,[9] जो यहूदा और
तामार का बेटा था।”

13 तब बोअज़ ने रूत को अपनी
पत्नी बनाया और उसके साथ संबंध

4:1 *उस आदमी का नाम नहीं दिया गया है। 4:6 *शा., “मेरी अपनी विरासत को नुकसान पहुँचे।”

4:10 *या “उसके शहर के फाटक से।”

अध्य. 4

1 व्य 25:7; नीत 31:23
2 रूत 3:12
3 व्य 16:18
4 लैव 25:25; व्य 25:5, 6; रूत 2:20; रूत 3:9, 12
5 रूत 1:1, 6
6 रूत 1:2
7 उत 23:18; यिर्म 32:9, 10
8 रूत 3:13
9 उत 38:7, 8; व्य 25:5, 6

दूसरा कॉल.

1 व्य 25:7, 9
2 उत 23:18; रूत 4:4; यिर्म 32:12
3 उत 38:7, 8; व्य 25:5, 6
4 रूत 4:4
5 उत 28:3; उत 35:23-26; उत 46:15, 18; उत 46:22, 25
6 उत 35:19
7 रूत 1:1; मी 5:2
8 भज 127:3
9 उत 38:29; गि 26:20; मत 1:3

रखे। यहोवा की आशीष से रूत गर्भवती
हुई और उसने एक बेटे को जन्म दिया।
14 तब औरतों ने नाओमी से कहा,
“यहोवा की बड़ाई हो जिसने तुझे बेसहारा
नहीं छोड़ा बल्कि एक छुड़ानेवाले को
भेजा। इसराएल में इस बच्चे का बड़ा नाम
हो। 15 उसने* तुझे एक नयी ज़िंदगी
दी है, वह तेरे बुढ़ापे का सहारा होगा।
आखिर वह तेरी उस बहू का बेटा है जो
तुझसे बेहद प्यार करती है[1] और सात
बेटों से भी बढ़कर है।” 16 नाओमी ने
अपने पोते को सीने से लगाया और

4:15 *यानी नाओमी का पोता।

अध्य. 4
1 रूत 1:14, 16

दूसरा कॉल.
1 मत 1:5
लूक 3:23, 32
2 1शम 17:12
यश 11:1
रोम 15:12
3 रूत 4:12
मत 1:2-6
4 उत 46:12
गि 26:21
1इत 2:5
5 1इत 2:9-15
6 निर्ग 6:23
7 रूत 4:17
1शम 16:1
8 2शम 7:8
1इत 2:13, 15

उसे पाला-पोसा।* 17 आस-पड़ोस की
औरतें कहने लगीं, “नाओमी को एक
बेटा हुआ है।” उन्होंने बच्चे का नाम
ओबेद रखा।[1] ओबेद, यिशै[2] का पिता
और दाविद का दादा था।

18 पेरेस की यह वंशावली है:[3]
पेरेस से हेसरोन पैदा हुआ,[4] 19 हेस-
रोन से राम, राम से अम्मीनादाब,[5]
20 अम्मीनादाब[6] से नहशोन, नहशोन
से सलमोन, 21 सलमोन से बोअज़,
बोअज़ से ओबेद, 22 ओबेद से यिशै[7]
और यिशै से दाविद पैदा हुआ।[8]

4:16 *या “उसकी धाई बन गयी।”

पहला
शमूएल

सारांश

1 एलकाना और उसकी पत्नियाँ (1-8)
एक बेटे के लिए हन्ना की प्रार्थना (9-18)
शमूएल का जन्म; यहोवा को दिया गया (19-28)

2 हन्ना की प्रार्थना (1-11)
एली के दो बेटों के पाप (12-26)
यहोवा ने एली के घराने का न्याय किया (27-36)

3 शमूएल भविष्यवक्ता ठहराया गया (1-21)

4 पलिश्तियों ने संदूक ज़ब्त किया (1-11)
एली और उसके बेटों की मौत (12-22)

5 संदूक पलिश्तियों के इलाके में (1-12)
दागोन नीचा दिखाया गया (1-5)
पलिश्तियों पर कहर (6-12)

6 पलिश्तियों ने संदूक लौटाया (1-21)

7 संदूक किरयत-यारीम में (1)
शमूएल ने बढ़ावा दिया, ‘सिर्फ यहोवा की सेवा करो’ (2-6)
मिसपा में इसराएल की जीत (7-14)
शमूएल, इसराएल का न्यायी (15-17)

8 इसराएल ने राजा की माँग की (1-9)
शमूएल ने लोगों को चेतावनी दी (10-18)
यहोवा ने लोगों की गुज़ारिश पूरी की (19-22)

9 शमूएल, शाऊल से मिला (1-27)

10 शाऊल को राजा ठहराया गया (1-16)
उसे लोगों के सामने पेश किया गया (17-27)

11 शाऊल ने अम्मोनियों को हराया (1-11)
दोबारा ऐलान हुआ, शाऊल राजा है (12-15)

12 शमूएल का विदाई भाषण (1-25)

"खोखली बातों के पीछे मत भागो" (21)
यहोवा अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा (22)

13 शाऊल ने एक सेना चुनी (1-4)
शाऊल की गुस्ताखी (5-9)
शमूएल ने उसे फटकारा (10-14)
इसराएल बिना हथियार के (15-23)

14 मिकमाश में योनातान की जीत (1-14)
इसराएल के दुश्मनों की हार (15-23)
शाऊल ने उतावली में शपथ खायी (24-26)
लोगों ने गोश्त के साथ खून खाया (32-34)
शाऊल के युद्ध; उसका परिवार (47-52)

15 शाऊल ने अगाग को छोड़ दिया (1-9)
शमूएल ने उसे फटकारा (10-23)
"आज्ञा मानना बलिदान चढ़ाने से कहीं बढ़कर है" (22)
शाऊल को ठुकराया गया (24-29)
शमूएल ने अगाग को मार डाला (30-35)

16 दाविद को अगला राजा ठहराया गया (1-13)
"यहोवा दिल देखता है" (7)
शाऊल पर पवित्र शक्ति ने काम करना छोड़ दिया (14-17)
दाविद, शाऊल के लिए सुरमंडल बजाता था (18-23)

17 दाविद ने गोलियात को हराया (1-58)
गोलियात की चुनौती (8-10)
दाविद ने चुनौती स्वीकार की (32-37)
वह यहोवा के नाम से लड़ा (45-47)

18 दाविद और योनातान की दोस्ती (1-4)
दाविद की जीत से शाऊल को जलन (5-9)
दाविद को मारने की कोशिश (10-19)
दाविद की शादी मीकल से (20-30)

19 शाऊल को अब भी दाविद से नफरत (1-13)
दाविद भाग गया (14-24)

20 योनातान दाविद का वफादार (1-42)

21 दाविद ने नज़राने की रोटी खायी (1-9)
गत में पागल होने का ढोंग (10-15)

22 दाविद अदुल्लाम और मिसपे में (1-5)
नोब के याजकों का कत्ल (6-19)
अबियातार भाग निकला (20-23)

23 दाविद ने कीला शहर बचाया (1-12)
शाऊल ने दाविद का पीछा किया (13-15)
योनातान ने दाविद की हिम्मत बँधायी (16-18)
दाविद बाल-बाल बचा (19-29)

24 दाविद ने शाऊल को बख्शा (1-22)
उसने यहोवा के अभिषिक्त जन का आदर किया (6)

25 शमूएल की मौत (1)
नाबाल ने दाविद के आदमियों को ठुकराया (2-13)
अबीगैल ने बुद्धिमानी से काम लिया (14-35)
'थैली में रखी कीमती चीज़ों की तरह यहोवा जान की हिफाज़त करेगा' (29)
मूर्ख नाबाल की मौत (36-38)
अबीगैल दाविद की पत्नी बनी (39-44)

26 दाविद ने फिर से शाऊल को बख्शा (1-25)
उसने यहोवा के अभिषिक्त जन का आदर किया (11)

27 दाविद को सिकलग दिया गया (1-12)

28 शाऊल, एन्दोर में मरे हुओं से संपर्क करनेवाली औरत के पास गया (1-25)

29 पलिश्तियों ने दाविद पर भरोसा नहीं किया (1-11)

30 अमालेकियों ने सिकलग लूटा (1-6)
दाविद को परमेश्वर से हिम्मत मिली (6)
उसने अमालेकियों को हराया (7-31)
बंदियों को छुड़ाया (18, 19)
लूट के बारे में दाविद का नियम (23, 24)

31 शाऊल और उसके 3 बेटों की मौत (1-13)

1 एप्रैम[1] के पहाड़ी प्रदेश के रामातैम-
सोपीम शहर[2] में एक * आदमी रहता
था जिसका नाम एलकाना[3] था। यह
एप्रैमी आदमी यरोहाम का बेटा था और
यरोहाम एलीहू का, एलीहू तोहू का और
तोहू जूफ का बेटा था। 2 एलकाना की
दो पत्नियाँ थीं, एक का नाम हन्ना था
और दूसरी का पनिन्ना। पनिन्ना के बच्चे
थे, मगर हन्ना का कोई बच्चा नहीं था।
3 एलकाना हर साल सेनाओं के पर-
मेश्वर यहोवा की उपासना* करने और
उसके लिए बलिदान चढ़ाने अपने शहर
से शीलो जाया करता था।[4] शीलो में एली
के दो बेटे, होप्नी और फिनेहास[5] याजकों
के नाते यहोवा की सेवा करते थे।[6]

4 एक बार जब एलकाना ने परमेश्वर
को बलिदान चढ़ाया तो उसने अपनी
पत्नी पनिन्ना को और उसके सभी बेटे-
बेटियों को बलिदान में से हिस्से दिए,[7]
5 मगर उसने हन्ना को एक खास हिस्सा
दिया क्योंकि वह उसी से प्यार करता था।
यहोवा ने हन्ना की कोख बंद कर दी थी।
6 हन्ना की सौतन उसे दुख देने के लिए
उस पर लगातार ताने कसती थी क्योंकि
यहोवा ने उसकी कोख बंद कर दी थी।
7 हर साल जब वे यहोवा के भवन जाते[8]
तब उसकी सौतन उसके साथ ऐसा ही
बरताव करती थी। वह हन्ना को इतना
ताना कसती कि हन्ना रोने लगती और
कुछ खाती-पीती नहीं थी। 8 उसके
पति एलकाना ने उससे कहा, “हन्ना, तू
क्यों रो रही है? कुछ खाती क्यों नहीं?
क्यों इतनी उदास है?* क्या मैं तेरे लिए
दस बेटों से भी बढ़कर नहीं?”

9 जब शीलो में वे खा-पी चुके तो
हन्ना उठी और वहाँ गयी जहाँ याजक
एली था। वह यहोवा के मंदिर*[1] की
दहलीज़ के पास कुर्सी पर बैठा था।
10 हन्ना कड़वाहट से भर गयी थी,
वह फूट-फूटकर रोने लगी और यहोवा
से प्रार्थना करने लगी।[2] 11 उसने यह
मन्नत मानी, “हे सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा, अगर तू अपनी दासी की हालत
पर नज़र करे और मुझ पर ध्यान देकर
मेरी बिनती सुने और अपनी दासी को
एक बेटा दे,[3] तो हे यहोवा, मैं उसे
तुझे दूँगी ताकि वह ज़िंदगी-भर तेरी सेवा
करे। उसके सिर पर कभी उस्तरा नहीं
चलेगा।”[4]

12 हन्ना काफी देर तक यहोवा के
सामने प्रार्थना करती रही और इस दौरान
एली उसका मुँह देख रहा था। 13 हन्ना
मन-ही-मन प्रार्थना कर रही थी। उसके
होंठ काँप रहे थे, मगर उसकी आवाज़
नहीं सुनायी दे रही थी। इसलिए
एली ने सोचा कि वह नशे में है।
14 उसने हन्ना से कहा, “तू कब तक
नशे में रहेगी? जा, नशा उतरने के बाद
आना।” 15 तब हन्ना ने उससे कहा,
“नहीं, मेरे मालिक! मैंने कोई दाख-मदिरा
या शराब नहीं पी है। मैं तो दुख की
मारी हूँ। मैं सिर्फ अपने दिल का हाल
यहोवा को बता रही हूँ।[5] 16 तू अपनी
दासी को निकम्मी औरत मत समझना। मैं
अब तक परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी
क्योंकि मेरा मन बहुत दुखी है, मैं बहुत
परेशान हूँ।” 17 तब एली ने उससे
कहा, “तू बेफिक्र होकर घर जा। इस-
राएल का परमेश्वर तेरी बिनती सुने, तेरी
मनोकामना पूरी करे।”[6] 18 तब हन्ना
ने उससे कहा, “तेरी कृपा इस दासी पर

अध्य. 1
1 यह 16:5
2 1शम 1:19; 1शम 7:15, 17
3 1इत 6:22, 27
4 निर्ग 23:14; निर्ग 34:23; व्य 12:5, 6; यह 18:1; न्या 21:19; लूक 2:41
5 1शम 2:12, 22; 1शम 4:17
6 गि 3:10; व्य 33:10; मला 2:7
7 लैव 7:15
8 व्य 16:16; 1शम 2:18, 19

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 25:8; 1शम 3:3; 2शम 7:2
2 भज 55:22; भज 65:2
3 उत 30:22
4 गि 6:5
5 भज 42:6; भज 62:8; भज 142:2
6 1शम 1:11

1:1 *या “के रामाह में एक जूफी।” **1:3** *या “को दंडवत।” **1:8** *या “तेरे मन को क्यों बुरा लग रहा है?”

1:9 *यानी पवित्र डेरे।

बनी रहे।” तब वह औरत वहाँ से चली
गयी। उसने जाकर कुछ खाया और उसके
चेहरे पर फिर उदासी न रही।

19 फिर वे सुबह तड़के उठे और
उन्होंने यहोवा के सामने दंडवत किया।
इसके बाद वे अपने शहर रामाह[1] लौट
गए। एलकाना ने अपनी पत्नी हन्ना
के साथ संबंध रखे और यहोवा ने हन्ना
की हालत पर ध्यान दिया।*[2] 20 एक
साल के अंदर* हन्ना गर्भवती हुई और
उसने एक बेटे को जन्म दिया। हन्ना ने
उसका नाम[3] शमूएल# रखा क्योंकि
उसने कहा, “मैंने यह बेटा यहोवा से
माँगने पर पाया है।”

21 कुछ समय बाद एलकाना अपने
पूरे परिवार के साथ यहोवा के लिए
सालाना बलिदान चढ़ाने और अपनी
मन्नत-बलि अर्पित करने गया।[4]
22 मगर हन्ना उनके साथ नहीं गयी।[5]
उसने अपने पति से कहा, “जैसे ही
बच्चे का दूध छूट जाएगा, मैं उसे लेकर
यहोवा के सामने जाऊँगी। फिर वह
हमेशा के लिए वहीं रहेगा।”[6] 23 उसके
पति एलकाना ने उससे कहा, “ठीक है,
तुझे जो सही लगे वही कर। जब तक
तू उसका दूध नहीं छुड़ाती, तू घर पर ही
रहना। तूने जो कहा है यहोवा उसे पूरा
करे।” इसलिए वह औरत तब तक घर
पर रही जब तक उसने अपने बेटे का दूध
नहीं छुड़ाया।

24 जैसे ही हन्ना ने अपने बेटे का
दूध छुड़ाया, वह उसे शीलो ले गयी।
वह अपने साथ तीन साल का एक बैल,
एपा-भर* आटा और एक बड़ा मटका
दाख-मदिरा भी ले गयी।[1] शीलो में वह
अपने छोटे लड़के को लेकर यहोवा के
भवन में गयी।[2] 25 वहाँ उन्होंने बैल
हलाल किया और वे लड़के को एली के
पास ले गए। 26 तब हन्ना ने एली से
कहा, “मालिक, मैं शपथ खाकर कहती
हूँ कि मैं ही वह औरत हूँ जिसने यहाँ तेरे
सामने खड़े होकर यहोवा से प्रार्थना की
थी।[3] 27 यह वही लड़का है जिसके
लिए मैंने प्रार्थना की थी। यहोवा ने
मेरी बिनती सुनकर मेरी मनोकामना पूरी
की।[4] 28 बदले में अब मैं अपना बेटा
यहोवा को दे* रही हूँ ताकि यह पूरी
ज़िंदगी यहोवा का ही रहे।”

फिर उसने# वहाँ यहोवा के सामने
दंडवत किया।

2 फिर हन्ना ने परमेश्वर से प्रार्थना में
कहा,

“यहोवा के कारण मेरा दिल
मगन है,[5]
यहोवा ने मेरा सींग ऊँचा
किया है।*
मैं निडर होकर अपने दुश्मनों को
जवाब दे सकती हूँ,
क्योंकि तू जो उद्धार दिलाता है
उससे मैं मगन हूँ।
2 यहोवा जैसा पवित्र और कोई नहीं,
तेरी बराबरी कोई नहीं कर
सकता,[6]
हमारे परमेश्वर जैसी चट्टान और
कोई नहीं।[7]
3 घमंड से फूलकर बातें करना बंद
करो,

अध्य. 1
1 1शम 1:1
2 1शम 1:11, भज 66:19, नीत 15:29
3 उत 5:29, उत 41:51, निर्ग 2:21, 22, मत 1:21
4 1शम 1:3
5 व्य 16:16
6 1शम 1:11, 1शम 2:11, 2इत 31:16

दूसरा कॉल.
1 गि 15:8-10
2 यह 18:1
3 1शम 1:15
4 1शम 1:11, 17, भज 66:19

अध्य. 2
5 भज 13:6, लूक 1:46
6 निर्ग 15:11, व्य 4:35, भज 73:25, भज 86:8, भज 89:6
7 व्य 32:4

1:19 *शा., “को याद किया।” **1:20** *या शायद, “वक्त आने पर।” #मतलब “परमेश्वर का नाम।” **1:24** *एक एपा 22 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

1:28 *शा., “उधार दे।” #ज़ाहिर है कि यहाँ एलकाना की बात की गयी है। **2:1** *या “मेरी ताकत बढ़ायी है।” शब्दावली में “सींग” देखें।

अपने मुँह से हेकड़ी-भरी बातें मत
बोलो,
क्योंकि यहोवा को सब बातों का
ज्ञान है,[1]
वह इंसान के हर काम को सही
जाँचता-परखता है।
4 बड़े-बड़े सूरमाओं की कमानें चूर-
चूर कर दी गयी हैं,
मगर ठोकर खानेवालों में ताकत
भर दी गयी है।[2]
5 जो कभी भरपेट खाया करते थे
उन्हें रोटी के लिए मज़दूरी करनी
पड़ती है,
मगर जो अब तक भूखे थे वे अब
भूखे नहीं रहते।[3]
जो कभी बाँझ थी वह सात-सात
बच्चों की माँ बनी है,[4]
मगर जिसके कई बेटे थे उसके अब
और बच्चे नहीं होते।*
6 यहोवा में जान लेने और जान की
हिफाज़त करने* की ताकत है,
वही इंसान को नीचे कब्र में पहुँचाता
है और जो कब्र में हैं उन्हें जी
उठाता है।[5]
7 यहोवा इंसान को कंगाल बनाता है
और मालामाल करता है,[6]
वही नीचे गिराता है और ऊँचा
उठाता है।[7]
8 वह दीन जन को धूल से,
गरीबों को राख के ढेर* से
उठाता है[8]
ताकि उन्हें हाकिमों के साथ बिठाए,
उन्हें सम्मान का पद दे।
धरती की नींव के खंभे यहोवा के
हाथों में हैं[9]
और उन पर ही उसने उपजाऊ
ज़मीन कायम की है।
9 वह अपने वफादार लोगों के कदमों
की रक्षा करता है,[1]
मगर दुष्ट अँधेरे में खामोश कर
दिए जाएँगे,[2]
क्योंकि इंसान अपनी ताकत से जीत
नहीं सकता।[3]
10 यहोवा उन सबको चूर-चूर कर देगा
जो उससे लड़ते हैं,*[4]
वह स्वर्ग से उन पर गरजेगा।[5]
यहोवा धरती के कोने-कोने तक
न्याय करेगा,[6]
वह अपने राजा को ताकत देगा[7]
और अपने अभिषिक्त का सींग
ऊँचा करेगा।"#[8]

11 इसके बाद एलकाना अपने शहर
रामाह लौट गया, मगर उसका लड़का
एली याजक की निगरानी में यहोवा का
एक सेवक बन गया।*[9]
12 एली के बेटे दुष्ट थे,[10] उनके दिल
में यहोवा के लिए कोई इज़्ज़त नहीं थी।
13 और लोगों के बलिदानों के जिस
हिस्से पर याजकों का हक था, उसके साथ
वे ऐसा करते थे:[11] जब बलिदान का
गोश्त उबल रहा होता तो याजक का एक
सेवक हाथ में तीन नोकवाला काँटा लिए
आता 14 और उसे हाँडी या डेगची में
डाल देता। काँटे में जितना भी गोश्त
आता उसे याजक ले लेता था। एली के
दोनों बेटे शीलो में आनेवाले सब इस-
राएलियों के साथ ऐसा ही सलूक करते
थे। 15 और-तो-और, इससे पहले कि
बलिदान चढ़ानेवाला चरबी आग पर

2:5 *शा., "वह अब मुरझा गयी है।" **2:6** *या "ज़िंदा करने।" **2:8** *या शायद, "कूड़े की जगह।"

2:10 *या शायद, "यहोवा से झगड़नेवाले खौफ खाएँगे।" #या "की ताकत बढ़ाएगा।" शब्दावली में "सींग" देखें। **2:11** *या "की सेवा कर रहा था।"

अध्य. 2
1 अय 36:4; अय 37:16; रोम 11:33
2 यश 40:29
3 लूक 1:53
4 1शम 1:11, 20
5 व्य 32:39; अय 14:13; भज 30:3; भज 49:15; भज 68:20; हो 13:14; यूह 11:24; 1कुर 15:55
6 व्य 8:18; व्य 28:12; 2इत 1:11, 12; अय 42:12; नीत 10:22
7 भज 75:7
8 भज 113:5, 7; लूक 1:52
9 भज 102:25

दूसरा कॉल.
1 भज 91:11; भज 97:10; भज 121:3
2 भज 37:28
3 भज 33:16; जक 4:6
4 निर्ग 15:6
5 1शम 7:10; 2शम 22:14; भज 18:13
6 भज 96:13; प्रेष 17:31
7 भज 2:6; भज 110:1; मत 28:18
8 लूक 1:69; प्रेष 4:27
9 1शम 1:11; 1शम 3:1, 15
10 1शम 2:22
11 लैव 7:34

रखकर जलाता कि उससे धुआँ उठे,[1]
याजक का एक सेवक वहाँ आकर
उससे कहता, “याजक के लिए गोश्त दे
ताकि वह उसे भूनकर खाए। उसे उबला
हुआ गोश्त नहीं, कच्चा गोश्त चाहिए।”
16 जब वह आदमी उससे कहता, “पहले
उन्हें चरबी आग में जलाने दे कि उससे
धुआँ उठे,[2] फिर तू जो चाहे ले लेना,”
तब सेवक कहता, “नहीं, मुझे अभी
चाहिए! अगर तू नहीं देगा, तो मैं ज़बर-
दस्ती ले लूँगा।” 17 इस तरह इन
सेवकों ने यहोवा की नज़र में घोर पाप
किया,[3] क्योंकि वे आदमी यहोवा को
अर्पित किए जानेवाले बलिदान का अना-
दर करते थे।

18 हालाँकि शमूएल अभी छोटा
लड़का ही था, फिर भी वह मलमल का
एपोद पहनकर[4] यहोवा के सामने सेवा
करता था।[5] 19 उसकी माँ जब हर
साल अपने पति के साथ सालाना बलि-
दान चढ़ाने शीलो आती,[6] तो शमूएल
के लिए बिन आस्तीन का एक छोटा-
सा बागा बनाकर लाती थी। 20 एली
ने एलकाना और उसकी पत्नी को
आशीर्वाद दिया और एलकाना से कहा,
“तूने अपना बेटा यहोवा को दे* दिया
है। यहोवा तुझे आशीष दे। वह तुझे
इस बेटे के बदले तेरी इस पत्नी से
एक और बच्चा दे।”[7] फिर वे वापस घर
चले गए। 21 यहोवा ने हन्ना पर ध्यान
दिया और उसके और भी बच्चे हुए।[8]
उसने तीन बेटों और दो बेटियों को जन्म
दिया। और शमूएल यहोवा के सामने
बढ़ने लगा।[9]

22 एली बहुत बूढ़ा था। उसने सुना
था कि उसके बेटे इसराएलियों के साथ
कैसे-कैसे काम करते हैं[10] और यह भी
कि वे उन औरतों के साथ संबंध रखते
हैं जो भेंट के तंबू के द्वार के पास
सेवा करती हैं।[1] 23 एली अपने बेटों
से कहा करता था, “सब लोग कह रहे
हैं कि तुम कितने बुरे-बुरे काम कर रहे
हो। तुम क्यों ऐसा करते हो? 24 ऐसा
मत करो बच्चो। यहोवा के लोगों के बीच
तुम्हारे बारे में जो चर्चे हो रहे हैं, वह
ठीक नहीं है। 25 अगर एक आदमी
किसी आदमी के खिलाफ पाप करे, तो
कोई उसकी खातिर यहोवा से बिनती कर
सकता है।* लेकिन अगर एक आदमी
यहोवा के खिलाफ पाप करे,[2] तो कौन
उसके लिए दुआ करेगा?” लेकिन एली
के बेटे उसकी बिलकुल नहीं सुनते थे
और यहोवा ने उन्हें मार डालने की
ठान ली थी।[3] 26 मगर दूसरी तरफ,
लड़का शमूएल डील-डौल में बढ़ता गया
और यहोवा और लोगों का चहेता बनता
गया।[4]

27 परमेश्वर का एक सेवक एली के
पास आया और उससे कहने लगा, “तेरे
लिए यहोवा का यह संदेश है: ‘जब तेरे
पुरखे का घराना मिस्र में फिरौन के घराने
की गुलामी कर रहा था, तब मैंने खुद को
उस पर साफ-साफ ज़ाहिर किया था।[5]
28 मैंने इसराएल के सभी गोत्रों में से तेरे
पुरखे को अपना याजक चुना था[6] ताकि
वह मेरी वेदी[7] पर बलिदान चढ़ाए और
धूप जलाए* और एपोद पहनकर मेरे
सामने सेवा करे। मैंने तेरे पुरखे के घराने
को ही इसराएलियों# के सभी बलिदानों
का हिस्सा दिया था जो आग में जलाकर
अर्पित किए गए।[8] 29 तो फिर तुम

2:20 *शा., “उधार।”

2:25 *या शायद, “परमेश्वर उसकी खातिर बीच-बचाव करेगा।” 2:28 *या शायद, “बलिदान का धुआँ ऊपर उठाए।” #शा., “इसराएल के बेटों।”

अध्य. 2

1 लैव 3:3-5
2 लैव 3:16; लैव 7:25, 31
3 1शम 2:29
4 2शम 6:14
5 1शम 2:11; 1शम 3:15
6 निर्ग 23:14; 1शम 1:3, 21
7 1शम 1:27, 28
8 उत 21:1, 2; 1शम 1:19
9 1शम 2:26; 1शम 3:19
10 1शम 2:12-17

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 38:8; लैव 21:6
2 गि 15:31; 1शम 2:17; 1शम 3:13, 14
3 नीत 29:1; नीत 30:17
4 1शम 2:21
5 निर्ग 4:14, 27
6 निर्ग 28:1; लैव 8:12; गि 17:5, 8
7 गि 18:7
8 लैव 2:3; लैव 6:16; लैव 10:14; गि 5:9; गि 18:9

लोग क्यों मेरे बलिदान और चढ़ावे का
घोर अपमान करते हो,* जिन्हें मैंने अपने
निवास[1] में चढ़ाने की आज्ञा दी थी?
तुम मेरी प्रजा इसराएल के हर बलिदान में
से सबसे बढ़िया हिस्सा खाकर मोटे होते
जा रहे हो।[2] आखिर तू क्यों ऐसा कर
रहा है? तू क्यों हमेशा मुझसे ज़्यादा अपने
बेटों का आदर करता है?

30 इसलिए इसराएल के परमेश्वर
यहोवा की तरफ से तेरे लिए यह संदेश है:
"यह सच है कि मैंने कहा था, तेरा और
तेरे पुरखे का घराना हमेशा मेरे सामने
हाज़िर रहकर मेरी सेवा करेगा।"[3] मगर
अब यहोवा कहता है, "मैं ऐसा करने
की सोच भी नहीं सकता क्योंकि जो मेरा
आदर करते हैं मैं उनका आदर करूँगा,[4]
मगर जो मेरा अनादर करते हैं उन्हें नीचा
दिखाया जाएगा।" 31 देख, वह दिन
दूर नहीं जब मैं तेरा और तेरे पुरखे के
घराने का अधिकार छीन लूँगा* ताकि तेरे
घराने का कोई भी आदमी बुढ़ापे तक जी
न सके।[5] 32 मैं चाहे इसराएल के साथ
जितनी भी भलाई करूँ, तुझे मेरे निवास में
एक दुश्मन दिखायी देगा।[6] और तेरे
घराने में कभी-भी कोई आदमी बुढ़ापे तक
नहीं जी सकेगा। 33 तेरे घराने में से
जिस आदमी को मैं अपनी वेदी के पास
सेवा करते रहने का मौका दूँगा, वह
भी तुझे गम देगा और उसकी वजह से
तू अपनी आँखों की रौशनी खो बैठेगा।
मगर तेरे घराने के ज़्यादातर लोग तल-
वार से मारे जाएँगे।[7] 34 और तेरे
दोनों बेटों का, होप्नी और फिनेहास का
जो अंजाम होगा, वह तेरे लिए एक
निशानी होगा: एक ही दिन में उन दोनों
की मौत हो जाएगी।[8] 35 तब मैं अपने
लिए एक विश्वासयोग्य याजक ठह-
राऊँगा।[1] वह मेरे मन की इच्छा के
मुताबिक काम करेगा और मैं उसके घराने
को ऐसा मज़बूत करूँगा कि वह सदा
कायम रहेगा और हमेशा तक याजक के
नाते मेरे अभिषिक्त के लिए सेवा करेगा।
36 तेरे घराने में से जो कोई बच जाएगा,
वह उस याजक के पास जाएगा और
उसे झुककर प्रणाम करेगा और थोड़ी-सी
कमाई और एक रोटी के लिए यह मिन्नत
करेगा: "मुझे भी याजक का कोई काम दे
ताकि मेरे लिए एक रोटी का जुगाड़ हो
सके।"'"[2]

3 उन दिनों वह लड़का शमूएल एली
की निगरानी में यहोवा की सेवा
करता था[3] और यहोवा का वचन बहुत
कम सुनने को मिलता था। उसकी तरफ
से दर्शन भी कम मिलते थे।[4]

2 एली इतना बूढ़ा हो चुका था कि
उसकी नज़र धुँधली पड़ गयी थी। उसे
कुछ दिखायी नहीं देता था।[5] एक दिन
वह अपने कमरे में सो रहा था। 3 पर-
मेश्वर की दीवट[6] अब भी जल रही थी
और शमूएल यहोवा के मंदिर*[7] में वहाँ
सो रहा था जहाँ परमेश्वर का संदूक था।
4 तभी यहोवा ने शमूएल को आवाज़
दी। शमूएल ने कहा, "अभी आया।"
5 वह दौड़कर एली के पास गया और
उससे कहा, "तूने मुझे बुलाया?" मगर
उसने कहा, "नहीं, मैंने तुझे नहीं बुलाया।
जा, जाकर सो जा।" वह वापस जाकर
सो गया। 6 यहोवा ने एक बार फिर
उसे बुलाया, "शमूएल!" इस पर शमूएल
उठकर एली के पास गया और उससे
कहा, "तूने मुझे बुलाया?" मगर उसने
कहा, "नहीं बेटे, मैंने तुझे नहीं बुलाया।

2:29 *शा., "को लात मारते हो।" **2:31** *शा., "हाथ काट दूँगा।"

3:3 *यानी पवित्र डेरे।

अध्य. 2
1 निर्ग 25:8, यह 18:1, 1शम 1:3
2 1शम 2:14-16
3 निर्ग 28:43
4 भज 18:20, भज 91:14
5 1शम 3:14, 1शम 4:11, 18, 1शम 22:18, 1रा 2:27
6 भज 78:60, 61
7 1शम 22:18, 21
8 1शम 4:11, 17

दूसरा कॉल.
1 1रा 2:27, 35, 1इत 29:22
2 लैव 2:3, गि 5:9

अध्य. 3
3 1शम 2:11, 18
4 गि 12:6, 1इत 17:15
5 1शम 4:15
6 लैव 24:2
7 1शम 1:9, 1शम 3:15

जा, जाकर सो जा।" 7 (अब तक शमूएल ने यहोवा को पूरी तरह नहीं जाना था और यहोवा ने उसे अपना संदेश देना शुरू नहीं किया था।)[1] 8 फिर यहोवा ने तीसरी बार उसे बुलाया, "शमूएल!" वह फिर से उठकर एली के पास गया और उससे कहा, "तूने मुझे बुलाया?"

तब एली को एहसास हुआ कि लड़के को पुकारनेवाला यहोवा है। 9 एली ने शमूएल से कहा, "जाकर सो जा। इस बार अगर तुझे वह आवाज़ सुनायी दे तो कहना, 'हे यहोवा, बोल। तेरा सेवक सुन रहा है।'" तब शमूएल अपनी जगह जाकर सो गया।

10 यहोवा फिर से वहाँ आया और खड़ा हुआ। उसने पहले की तरह शमूएल को बुलाया, "शमूएल, शमूएल!" तब शमूएल ने कहा, "हे परमेश्वर, बोल। तेरा सेवक सुन रहा है।" 11 यहोवा ने शमूएल से कहा, "देख, मैं इसराएल में ऐसा काम करने जा रहा हूँ कि उसके बारे में सुननेवालों के कान झनझना उठेंगे।[2] 12 मैंने एली और उसके घराने के बारे में जो-जो कहा है वह सब मैं उस दिन पूरा करूँगा, शुरू से लेकर आखिर तक सब पूरा करूँगा।[3] 13 तुझे एली को बताना होगा कि मैं उसके घराने को ऐसी सज़ा देनेवाला हूँ जिसका अंजाम उन्हें हमेशा भुगतना पड़ेगा क्योंकि वह जानता है[4] कि उसके बेटे परमेश्वर की निंदा कर रहे हैं,[5] फिर भी उसने उन्हें नहीं फटकारा।[6] 14 इसलिए मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि एली के घराने ने जो पाप किया है, उसका प्रायश्चित बलिदानों या चढ़ावों से कभी नहीं हो सकता।"[7]

15 फिर शमूएल लेट गया और सुबह होने पर उठा और उसने यहोवा के भवन के दरवाज़े खोले। वह दर्शन की बात एली को बताने से डर रहा था। 16 मगर एली ने उसे बुलाया, "बेटा शमूएल।" शमूएल ने कहा, "हाँ, मालिक।" 17 एली ने उससे पूछा, "परमेश्वर ने तुझे क्या संदेश दिया? देख बेटा, मुझसे कुछ मत छिपाना। परमेश्वर ने तुझे जो बताया है उसमें से अगर तूने एक भी बात छिपायी तो वह तुझे कड़ी-से-कड़ी सज़ा दे।" 18 तब शमूएल ने एली को सारी बात बतायी, कुछ नहीं छिपाया। एली ने कहा, "यह बात यहोवा ने कही है। उसे जो सही लगे वह करे।"

19 शमूएल बड़ा होता गया और यहोवा उसका साथ देता रहा[1] और उसने हर वह बात पूरी की जो उसने कही थी।* 20 दान से बेरशेबा तक पूरा इसराएल जान गया कि यहोवा ने शमूएल को अपना भविष्यवक्ता चुना है। 21 यहोवा शीलो में शमूएल पर खुद को प्रकट करता रहा। इस तरह यहोवा ने शीलो में खुद को प्रकट किया। यहोवा अपने वचन के ज़रिए ऐसा करता था।[2]

4 शमूएल का संदेश पूरे इसराएल में फैलता गया।

फिर इसराएली पलिश्तियों से युद्ध करने निकल पड़े। उन्होंने एबनेज़ेर के पास छावनी डाली और पलिश्तियों ने अपेक के पास छावनी डाली। 2 पलिश्तियों ने इसराएलियों से मुकाबला करने के लिए मोरचा बाँधा। युद्ध में पलिश्तियों ने इसराएलियों का बुरा हश्र कर दिया, उनके करीब 4,000 आदमियों को युद्ध के मैदान में मार डाला और उन्हें हरा दिया। 3 जब वे लौटकर अपनी छावनी में आए तो इसराएल के मुखियाओं ने कहा, "आज यहोवा ने हमें

3:19 *शा., "उसकी कोई भी बात धरती पर गिरने नहीं दी।"

अध्य. 3
1 आम 3:7
2 1शम 4:17
3 गि 23:19; 1शम 2:31-34; यश 55:10, 11
4 1शम 2:22, 23; यूह 15:22; याकू 4:17
5 गि 15:30; 1शम 2:12, 17
6 सभ 8:11
7 1शम 4:11; 1शम 22:21; 1रा 2:27

दूसरा कॉल.
1 1शम 2:21
2 1शम 3:1, 4; भज 99:6

पलिश्तियों से क्यों हारने दिया?*[1] चलो,
हम शीलो से यहोवा के करार का संदूक
ले आएँ[2] ताकि वह संदूक हमारे बीच
रहे और हमें दुश्मनों के हाथ से बचाए।"
4 इसलिए लोगों ने कुछ आदमियों को
शीलो भेजा और वे वहाँ से यहोवा के
करार का संदूक ले आए, जो सेनाओं का
परमेश्वर है और करूबों पर * विराजमान
है।[3] सच्चे परमेश्वर के करार के संदूक
के साथ एली के दोनों बेटे होप्नी और
फिनेहास[4] भी थे।

5 जैसे ही यहोवा के करार का संदूक
छावनी में पहुँचा, सारे इसराएली इतनी
ज़ोर से चिल्लाने लगे कि ज़मीन काँपने
लगी। 6 जब पलिश्तियों ने यह शोर
सुना तो वे कहने लगे, "इब्री लोगों की
छावनी में यह शोरगुल कैसा?" बाद में
उन्हें पता चला कि यहोवा का संदूक
इसराएलियों की छावनी में आया है।
7 तब पलिश्ती डर गए, वे कहने लगे,
"उनकी छावनी में ईश्वर आ गया है!"[5]
फिर उन्होंने कहा, "अब तो हम मारे
गए! ऐसा आज तक कभी नहीं हुआ!
8 हाय, अब क्या होगा! उस महाप्रतापी
ईश्वर के हाथ से कौन हमें बचाएगा?
उसी ईश्वर ने वीराने में तरह-तरह के
कहर ढाकर मिस्रियों को मार डाला था।[6]
9 मगर पलिश्तियो, हिम्मत से काम लो,
मर्दानगी दिखाओ ताकि जैसे उन इब्रियों
ने तुम्हारी गुलामी की है, वैसे तुम्हें उनकी
गुलामी न करनी पड़े।[7] हाँ, मर्दानगी
दिखाओ और उनका मुकाबला करो!"
10 तब पलिश्तियों ने इसराएलियों से
जमकर लड़ाई की और उन्हें हरा दिया।[8]
सभी इसराएली अपने-अपने तंबू में भाग
गए। उस दिन बहुत मार-काट मची और
इसराएलियों के 30,000 पैदल सैनिक
मारे गए। 11 और-तो-और, परमेश्वर
का संदूक ज़ब्त कर लिया गया और एली
के दोनों बेटे होप्नी और फिनेहास भी
मारे गए।[1]

12 उस दिन बिन्यामीन गोत्र का एक
आदमी युद्ध के मैदान से भागकर शीलो
आया। उसने अपने कपड़े फाड़े थे और
सिर पर धूल डाल रखी थी।[2] 13 जब
वह शीलो पहुँचा तब एली सड़क किनारे
कुर्सी पर बैठा रास्ता ताक रहा था,
क्योंकि उसे सच्चे परमेश्वर के संदूक की
बहुत चिंता हो रही थी और उसका दिल
काँप रहा था।[3] उस आदमी ने शहर के
सब लोगों को खबर दी। तब सारा
शहर चीखने-चिल्लाने लगा। 14 एली
ने चीख-पुकार सुनकर कहा, "शहर में
यह खलबली क्यों मची है?" फिर वही
आदमी दौड़कर एली के पास आया और
उसे खबर दी। 15 (एली 98 साल का
था, उसकी आँखों की रौशनी चली गयी
थी, उसे कुछ दिखायी नहीं देता था।)[4]
16 उस आदमी ने एली से कहा, "मैं ही
युद्ध के मैदान से भागकर आया हूँ। मैं
आज ही वहाँ से आया हूँ।" एली ने
उससे पूछा, "युद्ध में क्या हुआ बेटा? मुझे
बता।" 17 उस आदमी ने एली को यह
खबर सुनायी, "इसराएली पलिश्तियों से
बुरी तरह हार गए हैं और युद्ध से
भाग गए हैं।[5] तेरे दोनों बेटे होप्नी और
फिनेहास भी मारे गए[6] और दुश्मनों ने
सच्चे परमेश्वर का संदूक ज़ब्त कर
लिया है।"[7]

18 जैसे ही उस आदमी ने सच्चे पर-
मेश्वर के संदूक का ज़िक्र किया, एली जो
फाटक के पास बैठा था, अपनी कुर्सी से
पीछे की तरफ गिर पड़ा और उसकी गर-
दन टूट गयी और उसकी मौत हो

अध्य. 4
1 व्य 28:15, 25; व्य 32:30; न्या 2:14
2 2शम 15:25
3 निर्ग 25:18; गि 7:89; 2रा 19:15; भज 80:1
4 1शम 2:12
5 निर्ग 14:25; निर्ग 15:14
6 निर्ग 7:5; भज 78:43, 51
7 व्य 28:48; न्या 10:7; न्या 13:1
8 लैव 26:14, 17; व्य 28:25; 1शम 4:2

दूसरा कॉल.
1 1शम 2:31, 34; 1शम 4:3, 17; भज 78:61, 64
2 यह 7:6
3 1शम 4:4
4 1शम 3:2
5 1शम 3:11
6 1शम 2:34
7 1शम 4:10, 11

4:3 *शा., "यहोवा ने हमें क्यों हरा दिया?"
4:4 *या शायद, "के बीच।"

गयी, क्योंकि वह बूढ़ा हो चुका था
और शरीर से भारी था। उसने 40 साल
तक इसराएल का न्याय किया था।
19 उसकी बहू यानी फिनेहास की पत्नी
पूरे दिनों पेट से थी। जब उसने सुना कि
सच्चे परमेश्वर का संदूक ज़ब्त कर लिया
गया है और उसके ससुर और पति की
मौत हो गयी है, तो वह दर्द से दोहरी
हो गयी और अचानक उसकी प्रसव-पीड़ा
शुरू हो गयी। उसने एक बच्चे को जन्म
दिया, **20** जिसके बाद उसकी मौत हो
गयी। जब वह आखिरी साँसें गिन रही
थी तो पास खड़ी औरतों ने उससे कहा,
"डर मत, तेरे बेटा हुआ है।" मगर वह
कुछ नहीं बोली और उसने उनकी बातों
पर कोई ध्यान नहीं दिया।* **21** उसने
अपने बेटे का नाम ईकाबोद*[1] रखा
और कहा, "इसराएल की शान बँधुआई
में चली गयी।"[2] उसने यह बात इसलिए
कही क्योंकि सच्चे परमेश्वर का संदूक
ज़ब्त कर लिया गया था और उसके
ससुर और पति की मौत हो चुकी थी।[3]
22 उसने कहा, "इसराएल की शान बँधु-
आई में चली गयी क्योंकि सच्चे परमेश्वर
का संदूक ज़ब्त कर लिया गया है।"[4]

5 जब पलिश्तियों ने सच्चे परमेश्वर
का संदूक ज़ब्त कर लिया[5] तो वे उसे
एबनेज़ेर से अशदोद ले गए। **2** वहाँ वे
संदूक को अपने दागोन देवता के मंदिर
में ले गए और दागोन की मूरत के पास
रख दिया।[6] **3** अगले दिन जब अश-
दोद के लोग सुबह तड़के उठे तो उन्होंने
देखा कि दागोन की मूरत यहोवा के संदूक
के सामने मुँह के बल ज़मीन पर गिरी
पड़ी है।[7] उन्होंने मूरत उठायी और वापस
उसकी जगह रख दी।[8] **4** दूसरे दिन
सुबह तड़के उठने पर उन्होंने देखा कि
दागोन की मूरत फिर से यहोवा के संदूक
के सामने मुँह के बल ज़मीन पर गिरी पड़ी
है। मूरत का सिर और उसकी दोनों हथे-
लियाँ कटी हुई हैं और मंदिर की दहलीज़
पर पड़ी हैं। सिर्फ उसका धड़, जो मछली
जैसा दिखता था,* साबुत बचा हुआ था।
5 यही वजह है कि आज के दिन तक
अशदोद में दागोन के पुजारी और उसके
मंदिर में जानेवाला कोई भी मंदिर की दह-
लीज़ पर पैर नहीं रखता।

6 यहोवा ने अशदोद के लोगों को
कड़ी सज़ा दी और अशदोद और उसके
प्रांतों में रहनेवालों को बवासीर से पीड़ित
करके उनका बुरा हाल कर दिया।[1]
7 यह देखकर अशदोद के आदमियों ने
कहा, "इसराएल के परमेश्वर का संदूक
हमारे बीच से हटा दो क्योंकि वह
हमारे साथ और हमारे दागोन देवता के
साथ बड़ी कठोरता से पेश आया है।"
8 इसलिए उन्होंने पलिश्तियों के सभी
सरदारों को बुलवाया और उन्हें इकट्ठा
करके उनसे पूछा, "हम इसराएल के पर-
मेश्वर के संदूक का क्या करें?" उन्होंने
कहा, "इसराएल के परमेश्वर का संदूक
यहाँ से हटाकर गत ले जाओ।"[2] तब
पलिश्ती, इसराएल के परमेश्वर के संदूक
को गत ले गए।

9 जब संदूक को गत ले जाया गया,
तो यहोवा ने उस शहर पर भी कहर
ढाया जिससे वहाँ डर फैल गया। उसने
शहर के सभी लोगों को, छोटे से लेकर
बड़े तक, सबको बवासीर के रोग से
मारा।[3] **10** इसलिए गत के लोगों ने
सच्चे परमेश्वर का संदूक एक्रोन[4] भिजवा
दिया। मगर जैसे ही संदूक एक्रोन पहुँचा,

अध्य. 4
1 1शम 14:3
2 भज 78:61
3 1शम 2:32, 34; 1शम 4:5, 11
4 1शम 4:11; यिर्म 7:12

अध्य. 5
5 1शम 4:11
6 न्या 16:23; 1इत 10:8-10
7 निर्ग 12:12; 1इत 16:26; भज 97:7
8 यश 46:6, 7

दूसरा कॉल.
1 1शम 6:5, 6
2 1शम 17:4
3 1शम 5:6
4 यह 15:20, 45; 2रा 1:2; आम 1:8

4:20 *या "पर मन नहीं लगाया।" **4:21** *मतलब "शान कहाँ है?"

5:4 *शा., "सिर्फ दागोन।"

वहाँ के लोग चिल्लाने लगे, “वे इसराएल
के परमेश्‍वर का संदूक हमारे पास क्यों
ले आए? क्या वे हमें और हमारे लोगों
को मार डालना चाहते हैं?”[1] 11 फिर
उन्होंने पलिश्‍तियों के सभी सरदारों को
बुलवाया और उन्हें इकट्ठा करके उनसे
कहा, “इसराएल के परमेश्‍वर का संदूक
हमारे यहाँ से दूर कर दो। उसे वापस
उसकी जगह भेज दो ताकि हम और
हमारे लोग मार न डाले जाएँ।” उन्होंने
ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उनके पूरे शहर
पर मौत का खौफ छा गया था। शहर
पर सच्चे परमेश्‍वर की ज़बरदस्त मार
पड़ी थी[2] 12 और जो लोग ज़िंदा बचे
उन्हें बवासीर का रोग लग गया। शहर
के सभी लोग आसमान की तरफ देखकर
मदद के लिए पुकारने लगे।

6 यहोवा का संदूक[3] सात महीने तक
पलिश्‍तियों के इलाके में ही रहा।
2 पलिश्‍तियों ने पुजारियों और ज्योति-
षियों[4] को बुलाकर पूछा, “हम यहोवा
के संदूक का क्या करें? हमें बताओ कि
हम उसे वापस उसकी जगह कैसे भेजें।”
3 उन्होंने कहा, “अगर तुम इसराएल
के परमेश्‍वर यहोवा के करार का संदूक
वापस भेजना चाहते हो, तो उसके साथ
चढ़ावा ज़रूर भेजना। तुम उस पर-
मेश्‍वर को संदूक लौटाते वक्‍त एक दोष-
बलि ज़रूर भेजना।[5] तब जाकर तुम्हारी
बीमारी ठीक होगी और तुम्हें पता चलेगा
कि उसने क्यों तुम पर कहर ढाना
बंद नहीं किया।” 4 फिर पलिश्‍तियों ने
पूछा, “हम दोष-बलि में उसे क्या भेजें?”
उन्होंने कहा, “पलिश्‍तियों के सरदारों की
गिनती[6] के हिसाब से तुम बवासीर के
आकार में सोने की पाँच प्रतिमाएँ और
सोने के पाँच चूहे भेजना, क्योंकि तुम्हारे
सरदार और तुम सब एक ही तरह के
कहर से पीड़ित हो। 5 तुम बवासीर
और उन चूहों की प्रतिमाएँ बनाना[1] जो
तुम्हारे देश को उजाड़ रहे हैं। इस तरह
तुम इसराएल के परमेश्‍वर का आदर
करना। हो सकता है इससे वह तुम पर
और तुम्हारे देवता और तुम्हारे देश पर
कहर ढाना बंद कर दे।[2] 6 तुम फिरौन
और मिस्र के लोगों की तरह अपना दिल
कठोर मत करना।[3] जब परमेश्‍वर ने
उन्हें कड़ी सज़ा दी थी,[4] तो उन्हें इसराए-
लियों को छोड़ना पड़ा और वे मिस्र छोड़-
कर चले गए।[5] 7 तुम एक नयी गाड़ी
तैयार करना और ऐसी दो गायें लेना
जिनके बछड़े हों और जो कभी जुए
में न जोती गयी हों। उन गायों को
गाड़ी में जोतना, मगर उनके बछड़ों को
उनसे अलग करके घर पर ही रखना।
8 यहोवा का संदूक लेकर गाड़ी पर
रखना और उसके साथ एक बक्से में सोने
की प्रतिमाएँ रखना, जो तुम दोष-बलि के
लिए दोगे।[6] फिर उस गाड़ी को रवाना
कर देना। 9 और तुम देखना कि गाड़ी
किधर जाती है। अगर वह बेत-शेमेश[7]
जानेवाली सड़क पर जाए जहाँ से संदूक
लाया गया है, तो जान लेना कि हम पर
यह बड़ी मुसीबत इसराएल का परमेश्‍वर
ही लाया है। लेकिन अगर गाड़ी उधर
नहीं जाती, तो हम जान जाएँगे कि यह
कहर उसकी वजह से नहीं है बल्कि यह
एक इत्तफाक है।”

10 तब उन आदमियों ने वैसा ही
किया। उन्होंने दो ऐसी गायें लीं जिनके
बछड़े थे और उन्हें गाड़ी में जोत दिया
और बछड़ों को घर में बंद कर दिया।
11 फिर उन्होंने गाड़ी पर यहोवा का
संदूक और वह बक्सा रखा जिसमें उन्होंने
बवासीर और चूहे की सोने की प्रतिमाएँ
रखी थीं। 12 तब गायें सीधे बेत-शेमेश

अध्य. 5
1 1शम 5:7
2 1शम 5:6, 9

अध्य. 6
3 1शम 4:11
1शम 5:1
भज 78:61
4 व्य 18:9, 10
यश 2:6
5 1शम 6:4, 17
6 यह 13:2, 3
1शम 6:16

दूसरा कॉल.
1 1शम 6:18
2 1शम 5:6, 11
3 निर्ग 7:13
निर्ग 8:15
निर्ग 14:17
4 निर्ग 9:14, 16
रोम 9:17, 18
5 निर्ग 6:1
निर्ग 11:1
निर्ग 12:33
6 1शम 6:3, 4
7 यह 15:10, 12
यह 21:8, 16
2इत 28:18

जानेवाली सड़क पर चल दीं।[1] वे रँभाती हुई सीधे बड़ी सड़क पर ही चलती रहीं, वे न तो दाएँ मुड़ीं न बाएँ। और पलिश्तियों के सरदार पूरे रास्ते गाड़ी के पीछे-पीछे चलते रहे और वे दूर बेत-शेमेश की सरहद तक आए। **13** बेत-शेमेश के लोग उस समय घाटी के मैदान में गेहूँ की कटाई कर रहे थे। जब उन्होंने आँखें उठाकर देखा कि गाड़ी पर परमेश्वर का संदूक आ रहा है, तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। **14** वह गाड़ी बेत-शेमेश के रहनेवाले यहोशू के खेत में आयी और एक बड़े पत्थर के पास रुक गयी। तब लोगों ने गाड़ी की लकड़ियाँ निकालकर चीरीं और उनमें आग लगाकर गायों[2] की होम-बलि यहोवा को चढ़ायी।

15 तब लेवियों[3] ने गाड़ी से यहोवा का संदूक और वह बक्सा उतारा जिसमें सोने की प्रतिमाएँ थीं और उन्हें उस बड़े पत्थर पर रख दिया। उस दिन बेत-शेमेश के लोगों[4] ने यहोवा के लिए होम-बलियाँ और दूसरे बलिदान भी चढ़ाए।

16 पलिश्तियों के पाँचों सरदारों ने यह सब देखा और वे उसी दिन एक्रोन लौट गए। **17** पलिश्तियों ने बवासीर की सोने की जो प्रतिमाएँ यहोवा को दोष-बलि चढ़ाने के लिए भेजी थीं,[5] उनमें से एक अशदोद[6] की तरफ से, एक गाज़ा, एक अश्कलोन, एक गत[7] और एक एक्रोन[8] की तरफ से थी। **18** उन्होंने सोने के जो पाँच चूहे भेजे थे, वे पाँच सरदारों के सभी किलेबंद शहरों और उनके आस-पास की खुली बस्तियों के हिसाब से थे।

वह बड़ा पत्थर जिस पर यहोवा का संदूक रखा गया था, आज तक बेत-शेमेश के यहोशू के खेत में है और इस घटना का गवाह है। **19** मगर परमेश्वर ने बेत-शेमेश के आदमियों को मार डाला क्योंकि उन्होंने यहोवा का संदूक देख लिया था। उसने 50,070 आदमियों* को मार डाला। वहाँ के लोग मातम मनाने लगे क्योंकि यहोवा ने इतनी बड़ी तादाद में लोगों का घात कर दिया।[1] **20** तब बेत-शेमेश के आदमी कहने लगे, "यहोवा जैसे पवित्र परमेश्वर के सामने कौन खड़ा रह सकता है?[2] अच्छा होगा अगर वह हमारे यहाँ से कहीं और चला जाए।"[3] **21** तब उन्होंने किरयत-यारीम[4] के लोगों के पास अपने दूत भेजे और उनसे कहा, "पलिश्तियों ने यहोवा का संदूक वापस कर दिया है। तुम लोग आकर उसे ले जाओ।"[5]

7 तब किरयत-यारीम के आदमी आए और यहोवा का संदूक ले गए। उन्होंने उसे ले जाकर पहाड़ी पर अबीनादाब के घर[6] में रखा और उसके बेटे एलिआज़र को यहोवा के संदूक की रखवाली के लिए पवित्र ठहराया।

2 किरयत-यारीम में परमेश्वर के संदूक को आए पूरे 20 साल गुज़र गए। इतने लंबे समय बाद इसराएल का पूरा घराना यहोवा की खोज करने लगा।*[7] **3** तब शमूएल ने इसराएल के पूरे घराने से कहा, "अगर तुम वाकई पूरे दिल से यहोवा के पास लौट रहे हो,[8] तो अपने बीच से पराए देवताओं की मूरतें[9] और अशतोरेत देवी की मूरतें निकाल दो।[10] और अपना दिल पूरी तरह यहोवा पर लगाओ और सिर्फ उसकी सेवा करो,[11] तब वह तुम्हें पलिश्तियों के हाथ से

अध्य. 6
1 1शम 6:8, 9
2 1शम 6:7
3 गि 3:30, 31
4 यह 21:8, 16
5 1शम 6:4
6 1शम 5:1
7 1शम 5:8
8 न्या 1:18; 1शम 5:10

दूसरा कॉल.
1 गि 4:15, 20; 1इत 13:10
2 लैव 11:45
3 गि 17:12, 13; 2शम 6:8, 9; भज 76:7
4 यह 18:14; 1इत 13:5, 6
5 1इत 16:1; 2इत 1:4

अध्य. 7
6 2शम 6:2, 4; 1इत 13:5, 7
7 नहे 9:28
8 1शम 12:24
9 यह 24:14, 23; न्या 3:7
10 न्या 2:13; न्या 10:6; 1रा 11:33
11 व्य 10:20; व्य 13:4; लूक 4:8

6:19 * शा., "70 आदमियों, 50,000 आदमियों।" **7:2** * या "मातम मनाते हुए यहोवा के पीछे जाने लगा।"

छुड़ाएगा।”[1] **4** तब इसराएलियों ने बाल देवताओं और अशतोरेत की मूरतें निकाल दीं और वे सिर्फ यहोवा की सेवा करने लगे।[2]

5 फिर शमूएल ने उनसे कहा, “पूरे इसराएल को मिसपा[3] में इकट्ठा करो, मैं तुम सबकी खातिर यहोवा से प्रार्थना करूँगा।”[4] **6** इसलिए वे सब मिसपा में इकट्ठा हुए और पानी भरकर लाए और यहोवा के सामने उसे उँडेला और उस दिन सबने उपवास किया।[5] वहाँ उन सबने कबूल किया, “हमने यहोवा के खिलाफ पाप किया है।”[6] और शमूएल वहाँ मिसपा में इसराएलियों का न्याय करने लगा।[7]

7 जब पलिश्तियों ने सुना कि इसराएली मिसपा में इकट्ठा हुए हैं, तो उनके सरदार[8] इसराएलियों पर हमला करने निकल पड़े। जब यह बात इसराएलियों को पता चली तो वे बहुत डर गए। **8** उन्होंने शमूएल से कहा, “तू हमारे परमेश्वर यहोवा की दुहाई देता रह कि वह हमारी मदद करे[9] और हमें पलिश्तियों के हाथ से बचाए।” **9** तब शमूएल ने एक दूध-पीता मेम्ना लिया और यहोवा के लिए उसकी पूरी होम-बलि चढ़ायी।[10] फिर शमूएल ने इसराएल की तरफ से यहोवा को मदद के लिए पुकारा और यहोवा ने उसकी सुनी।[11] **10** शमूएल होम-बलि चढ़ा ही रहा था कि तभी पलिश्ती इसराएल से लड़ने उनकी तरफ बढ़ने लगे। तब उस दिन यहोवा ने आकाश से पलिश्तियों पर ज़ोर का गरजन करवाया[12] और उन्हें उलझन में डाल दिया।[13] और वे इसराएल से हार गए।[14] **11** तब इसराएल के आदमियों ने मिसपा से निकलकर पलिश्तियों का पीछा किया और वे उन्हें दूर बेतकर के दक्षिण तक घात करते गए। **12** इसके बाद शमूएल ने एक पत्थर लिया[1] और मिसपा और यशाना के बीच रखा। उसने उस पत्थर को एबनेज़ेर* नाम दिया क्योंकि उसने कहा, “यहोवा ने अब तक हमारी मदद की है।”[2] **13** इस तरह पलिश्तियों की हार हुई और वे फिर कभी इसराएल के इलाके में नहीं आए।[3] जब तक शमूएल ज़िंदा था तब तक यहोवा का हाथ पलिश्तियों के खिलाफ उठा रहा।[4] **14** इसके अलावा, इसराएलियों को एक्रोन से गत तक के सभी शहर वापस मिल गए जो पलिश्तियों ने ले लिए थे। इसराएल ने अपना इलाका पलिश्तियों से वापस ले लिया।

इसराएलियों और एमोरियों के बीच भी शांति थी।[5]

15 शमूएल ने पूरी ज़िंदगी इसराएल का न्याय किया।[6] **16** हर साल वह बेतेल,[7] गिलगाल[8] और मिसपा[9] का दौरा करता था और इन जगहों में इसराएल का न्याय करता था। **17** फिर वह रामाह[10] लौट जाता था क्योंकि वहाँ उसका घर था। वह रामाह में भी इसराएल का न्याय करता था। वहाँ उसने यहोवा के लिए एक वेदी बनायी थी।[11]

8 जब शमूएल बूढ़ा हो गया तो उसने अपने बेटों को इसराएल का न्यायी ठहराया। **2** उसके पहलौठे का नाम योएल था और दूसरे बेटे का नाम अबियाह।[12] वे दोनों बेरशेबा में न्याय करते थे। **3** मगर उसके बेटे उसके नक्शे-कदम पर नहीं चलते थे। वे बेईमानी की कमाई के पीछे जाते,[13] रिश्वत लेते[14] और गलत फैसला सुनाकर अन्याय करते थे।[15]

4 कुछ समय बाद इसराएल के सभी

अध्य. 7

1 व्य 28:1
2 न्या 10:16
3 न्या 20:1, 1शम 10:17, 2रा 25:23, यिर्म 40:6
4 1शम 12:23, याकू 5:16
5 2इत 20:3, नहे 9:1, योए 2:12
6 न्या 10:10
7 न्या 2:18
8 यह 13:2, 3, 1शम 6:4
9 1शम 12:19, यश 37:4
10 लैव 1:10
11 भज 99:6
12 1शम 2:10, 2शम 22:14
13 यह 10:10, न्या 4:15
14 व्य 20:4, व्य 28:7

दूसरा कॉल.

1 यह 4:9, यह 24:26
2 भज 44:3
3 1शम 9:16, 1शम 13:5
4 1शम 14:22, 23, 1शम 17:51
5 उत 15:18, 21
6 1शम 3:20, 1शम 12:11, 1शम 25:1, प्रेष 13:20
7 यह 16:1
8 यह 15:7, 12, 1शम 11:15
9 1शम 7:5
10 1शम 1:1, 1शम 8:4, 1शम 19:18
11 निर्ग 20:25

अध्य. 8

12 1इत 6:28
13 निर्ग 18:21
14 निर्ग 23:8, व्य 16:19, भज 15:5, नीत 29:4
15 व्य 24:17

7:12 *मतलब “मदद का पत्थर।”

प्रधान इकट्ठा हुए और रामाह में शमूएल
के पास गए। 5 उन्होंने उससे कहा,
“देख, अब तेरी उम्र हो चुकी है और
तेरे बेटे तेरे नक्शे-कदम पर नहीं चलते।
इसलिए दूसरे राष्ट्रों की तरह हमारा
न्याय करने के लिए हम पर एक राजा
ठहरा।”[1] 6 लेकिन शमूएल को यह
बात बहुत बुरी लगी कि वे अपने
लिए एक राजा की गुज़ारिश कर रहे
हैं जो उनका न्याय करे। इसलिए शमू-
एल ने यहोवा से प्रार्थना की। 7 यहोवा
ने शमूएल से कहा, “लोगों ने तुझसे जो
गुज़ारिश की है, तू वही कर क्योंकि
उन्होंने तुझे नहीं, मुझे ठुकराया है।
उन्होंने मुझे अपना राजा मानने से इन-
कार कर दिया है।[2] 8 जिस दिन मैं उन्हें
मिस्र से निकाल लाया था, उस दिन से
लेकर आज तक वे मुझे ठुकराते ही रहे
हैं। वे हमेशा मुझे छोड़कर[3] दूसरे देव-
ताओं की सेवा करते रहे हैं।[4] वे तेरे साथ
वैसा ही कर रहे हैं जैसा उन्होंने मेरे साथ
किया है। 9 इसलिए अब तू उनकी
बात मान। पर साथ ही तू उन्हें खबर-
दार कर दे कि जब उन पर एक राजा
राज करेगा तो अंजाम क्या होगा। राजा
के पास हक होगा कि वह जो चाहे उसकी
माँग कर सकता है।”

10 तब शमूएल ने यहोवा की बतायी
सारी बातें उन लोगों को सुनायीं जो
उससे राजा की गुज़ारिश कर रहे थे।
11 शमूएल ने कहा, “जो राजा तुम पर
राज करेगा, उसके पास हक होगा कि
वह जो चाहे तुमसे माँग कर सकता है।[5]
वह तुम्हारे बेटों को लेकर[6] उन्हें अपने
रथों पर लगाएगा[7] और घुड़सवार बनाए-
गा।[8] तुम्हारे कुछ बेटों को उसके रथों के
आगे दौड़ना पड़ेगा। 12 वह कुछ लोगों
को हज़ार-हज़ार सैनिकों का और कुछ को
पचास-पचास सैनिकों का अधिकारी ठह-
राएगा।[1] वह कुछ लोगों से हल चल-
वाएगा,[2] अपनी फसल कटवाएगा[3] और
युद्ध के हथियार और अपने रथों का
सामान बनवाएगा।[4] 13 वह तुम्हारी
बेटियों से खुशबूदार तेल* बनवाएगा,
उनसे रोटी और तरह-तरह के पक-
वान बनवाएगा।[5] 14 वह तुम्हारे खेतों
की बढ़िया फसल और अंगूरों और
जैतून के बागों की बढ़िया-बढ़िया उपज ले
लेगा[6] और अपने सेवकों को देगा।
15 वह तुम्हारे अनाज और अंगूरों का
दसवाँ हिस्सा ले लेगा और अपने दर-
बारियों और सेवकों को देगा। 16 वह
तुम्हारे दास-दासियाँ, तुम्हारे बढ़िया-से-
बढ़िया गाय-बैल और गधे ले लेगा
और उन्हें अपने काम पर लगाएगा।[7]
17 वह तुम्हारी भेड़-बकरियों का दसवाँ
हिस्सा ले लेगा।[8] और तुम भी उसके
सेवक बन जाओगे। 18 एक दिन ऐसा
आएगा कि तुम लोग अपने ही चुने हुए
राजा की वजह से रो-रोकर यहोवा से
बिनती करोगे,[9] मगर वह तुम्हारी नहीं
सुनेगा।”

19 मगर लोगों ने शमूएल की बात
सुनने से इनकार कर दिया और कहा,
“नहीं, हमें हर हाल में एक राजा चाहिए।
20 तब हम भी सब राष्ट्रों की तरह होंगे।
हमारा राजा हमारा न्याय और अगुवाई
करेगा और हमारी तरफ से युद्ध करेगा।”
21 शमूएल ने लोगों की पूरी बात सुनी
और फिर उनकी बात यहोवा को बतायी।
22 यहोवा ने शमूएल से कहा, “तू उनकी
बात सुन और उन पर राज करने के लिए
एक राजा ठहरा।”[10] तब शमूएल ने इस-
राएल के आदमियों से कहा, “तुम सब
अपने-अपने शहर लौट जाओ।”

8:13 * या “इत्र।”

अध्य. 8

1 व्य 17:14, 15; 1शम 12:13; प्रेष 13:21
2 न्या 8:23; 1शम 10:19; 1शम 12:12; यश 33:22
3 व्य 9:24
4 न्या 2:19
5 1शम 10:25
6 1शम 14:52
7 1रा 9:22; 1रा 10:26
8 1रा 4:26

दूसरा कॉल.

1 2शम 18:1; 2रा 1:14; 1इत 27:1
2 1इत 27:26
3 1रा 4:7
4 1रा 4:26
5 1रा 4:22
6 1इत 27:28, 31
7 1रा 5:15, 16
8 1रा 4:22, 23
9 1रा 12:3, 4
10 1शम 8:7; हो 13:11

9 बिन्यामीन गोत्र में कीश[1] नाम का एक आदमी था जो अबीएल का बेटा था। अबीएल सरोर का बेटा था, सरोर बकोरत का और बकोरत अपीह का बेटा था। बिन्यामीन गोत्र का यह आदमी[2] कीश बहुत अमीर था। **2** उसका एक जवान बेटा था शाऊल।[3] शाऊल बड़ा ही सुंदर और सजीला था, उसके जैसा पूरे इसराएल में कोई नहीं था। वह इतना लंबा था कि सब लोग उसके कंधे तक ही आते थे।

3 एक बार जब कीश की गधियाँ गुम हो गयीं तो उसने अपने बेटे शाऊल से कहा, "बेटा, तू अपने साथ एक सेवक लेकर जा और गधियों को ढूँढ़ ला।" **4** वे एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में गए और वहाँ ढूँढ़ने लगे। इसके बाद वे शालीशा के इलाके में गए, मगर उन्हें गधियाँ कहीं नहीं मिलीं। फिर वे आगे शालीम के इलाके में गए, मगर वहाँ भी नहीं मिलीं। उन्होंने बिन्यामीन का पूरा इलाका छान मारा, मगर जानवर कहीं भी दिखायी नहीं दिए।

5 फिर वे ज़ूफ के इलाके में आए और वहाँ शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "चल हम वापस चलते हैं, वरना मेरा पिता जानवरों की चिंता छोड़कर हमारी चिंता करने लगेगा।"[4] **6** मगर सेवक ने उससे कहा, "सुन, इस शहर में सच्चे परमेश्वर का एक सेवक रहता है जिसका लोग बहुत सम्मान करते हैं। वह जो कुछ कहता है सच साबित होता है।[5] चलो, हम उसके पास चलते हैं, हो सकता है वह हमें बता दे कि हम किस रास्ते जाएँ।" **7** तब शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "अगर हम सच्चे परमेश्वर के उस सेवक के पास जाएँगे, तो हम उसे तोहफे में क्या देंगे? हमारे पास उसे देने के लिए कुछ भी नहीं है। हमारे थैलों में एक रोटी तक नहीं रही। बता हम क्या करें?" **8** सेवक ने शाऊल से कहा, "देख, मेरे पास चाँदी का एक छोटा-सा टुकड़ा* है। यह मैं सच्चे परमेश्वर के सेवक को दूँगा और वह हमें बताएगा कि हमें किस रास्ते जाना है।" **9** (पुराने समय में इसराएल में जब किसी को परमेश्वर की मरज़ी जाननी होती तो वह कहता, "चलो, हम दर्शी के पास चलते हैं।"[1] आज जिन्हें भविष्यवक्ता कहा जाता है, वे पहले दर्शी कहलाते थे।) **10** तब शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "ठीक है, चलते हैं।" वे दोनों उस शहर में गए जहाँ सच्चे पर-मेश्वर का सेवक रहता था।

11 जब वे ऊपर शहर जा रहे थे तो रास्ते में उन्हें कुछ लड़कियाँ मिलीं जो पानी भरने जा रही थीं। उन्होंने लड़-कियों से पूछा, "क्या दर्शी यहीं है?"[2] **12** लड़कियों ने कहा, "हाँ, वह यहीं है। वह अभी-अभी यहाँ से गया है। आज ही वह शहर आया है और आज लोग उपासना की ऊँची जगह[3] पर बलिदान चढ़ानेवाले हैं।[4] जल्दी जाओ, **13** जैसे ही तुम शहर पहुँचोगे तुम्हें वह मिल जाएगा। जल्दी जाओ, वरना वह ऊँची जगह पर भोज करने चला जाएगा। क्योंकि जब तक वह जाकर बलिदान पर आशीष नहीं माँगेगा, तब तक लोग खा नहीं सकते। जब वह दुआ कर लेगा तब न्यौते में बुलाए गए लोग भोज करेंगे। इसलिए तुम फौरन जाओ ताकि तुम उससे शहर में मिल सको।" **14** तब वे ऊपर शहर की तरफ गए। जब वे शहर में घुस रहे थे तो शमूएल उनसे मिलने आ

अध्य. 9

1 1शम 14:51, 1इत 8:33, प्रेष 13:21
2 न्या 21:17
3 1शम 11:15, 1शम 13:13, 1शम 15:26, 1शम 28:7, 1शम 31:4, 2शम 1:23
4 1शम 10:2
5 1शम 3:19

दूसरा कॉल.

1 1शम 9:19, 2शम 15:27, 1इत 9:22, 1इत 29:29
2 1शम 9:19
3 1रा 3:2, 1इत 16:39, 2इत 1:3
4 1शम 7:9, 1शम 16:5

9:8 *शा., "एक शेकेल चाँदी की चौथाई।" एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

रहा था ताकि वह उन्हें अपने साथ ऊँची
जगह ले जाए।

15 शाऊल के यहाँ आने से एक दिन
पहले यहोवा ने शमूएल को यह बताया
था, **16** "कल इसी समय मैं बिन्या-
मीन के इलाके के रहनेवाले एक आदमी
को तेरे पास भेजूँगा।[1] तू उसका अभिषेक
करके उसे मेरी प्रजा इसराएल का अगुवा
ठहराना।[2] वह मेरे लोगों को पलिश्ति-
यों के हाथ से बचाएगा। मैंने देखा है
कि मेरे लोग कैसी दुख-तकलीफें झेल रहे
हैं और मैंने उनका रोना-बिलखना सुना
है।"[3] **17** जब शमूएल ने शाऊल को
देखा तो यहोवा ने शमूएल से कहा, "देख,
यही वह आदमी है जिसके बारे में मैंने
तुझसे कहा था कि वह मेरे लोगों पर राज
करेगा।"*[4]

18 तब शाऊल शहर के फाटक पर
शमूएल के पास गया और उसने पूछा,
"क्या तू मुझे बता सकता है कि दर्शी का
घर कहाँ है?" **19** शमूएल ने कहा, "मैं
ही दर्शी हूँ। तू मेरे आगे-आगे ऊँची
जगह तक चल। आज वहाँ तुम दोनों
मेरे साथ भोज करोगे।[5] और तू जो भी
जानना चाहता है, वह सब* मैं तुझे
बताऊँगा और कल सुबह तुझे भेज दूँगा।
20 रही बात तेरे जानवरों की जो तीन
दिन पहले खो गए थे,[6] उनकी तू फिक्र
मत कर क्योंकि वे मिल गए हैं। और
फिर इसराएल में जितनी मनभावनी चीज़ें
हैं, वे सब किसकी हैं? क्या वे तेरी और
तेरे पिता के घराने की नहीं?"[7] **21** तब
शाऊल ने कहा, "यह तू क्या कह रहा है?
मैं तो इसराएल के सबसे छोटे गोत्र बिन्या-
मीन से हूँ[8] और मेरे कुल की तो बिन्या-
मीन के कुलों में कोई गिनती ही नहीं।"

22 फिर शमूएल, शाऊल और उसके
सेवक को भोजन के कमरे में लाया, जहाँ
करीब 30 आदमी बैठे थे। उसने शाऊल
और उसके सेवक को सबसे खास जगह
पर बिठाया। **23** शमूएल ने रसोइए से
कहा, "गोश्त का वह हिस्सा ले आ जो
मैंने तुझे दिया था और अलग रखने के
लिए कहा था।" **24** तब रसोइया गया
और बलिदान के गोश्त में से पाया उठा-
कर लाया और उसे शाऊल के सामने
परोसा। शमूएल ने शाऊल से कहा, "तेरे
सामने जो परोसा गया है वह तेरे लिए ही
रखा गया था। इसे खा क्योंकि उन्होंने यह
हिस्सा इस मौके पर खास तेरे लिए रखा
था। मैंने उन्हें बताया था कि मैंने कुछ
मेहमान बुलाए हैं।" तब शाऊल ने शमू-
एल के साथ बैठकर खाया। **25** फिर वे
ऊँची जगह[1] से नीचे शहर गए। घर
पहुँचने पर शमूएल शाऊल से घर की छत
पर बातें करता रहा। **26** अगले दिन
वे सुबह तड़के उठे। छत पर शमूएल ने
शाऊल को आवाज़ देकर कहा, "तैयार
हो जा ताकि मैं तुझे विदा करूँ।" शाऊल
तैयार हो गया और वे दोनों बाहर चले
गए। **27** जब वे शहर से नीचे जा रहे
थे तो शमूएल ने शाऊल से कहा, "अपने
सेवक[2] से कह कि वह आगे चलता रहे।
मगर तू यहीं खड़ा रह। मैं तुझे बताऊँ-
गा कि परमेश्वर ने तेरे लिए क्या संदेश
दिया है।" तब वह सेवक आगे निकल
गया।

10 इसके बाद शमूएल ने तेल की
कुप्पी ली और शाऊल के सिर
पर तेल उँडेला।[3] उसने शाऊल को
चूमा और उससे कहा, "यहोवा ने बेशक
तेरा अभिषेक करके तुझे अपनी प्रजा[4]
का अगुवा ठहराया है।[5] **2** आज जब
तू मेरे पास से चला जाएगा तो तुझे

9:17 *या "को हदों में रखेगा।" **9:19** *शा., "और तेरे दिल की सारी बातें।"

अध्य. 9
1 यह 18:11
2 1शम 10:1; 1शम 15:1
3 भज 106:43, 44; भज 107:19
4 1शम 10:24; 1शम 15:17; प्रेष 13:21
5 1शम 9:13, 24
6 1शम 9:3
7 1शम 8:5, 19; 1शम 12:13
8 न्या 20:46, 47

दूसरा कॉल.
1 1शम 9:13, 19
2 1शम 9:3, 10

अध्य. 10
3 1शम 16:13; 2रा 9:2, 3
4 निर्ग 19:5; व्य 32:9
5 1शम 9:16; प्रेष 13:21

बिन्यामीन के इलाके के सेलसह में राहेल
की कब्र[1] के पास दो आदमी मिलेंगे। वे
तुझसे कहेंगे, 'तू जिन गधियों को ढूँढ़ने
गया था वे मिल गयी हैं। अब तेरे
पिता को जानवरों की चिंता तो नहीं,[2]
बल्कि तेरी चिंता होने लगी है। वह कह
रहा है, "मेरा बेटा अब तक नहीं लौटा,
मैं क्या करूँ?"' 3 फिर तू वहाँ से आगे
बढ़कर ताबोर में बड़े पेड़ के पास जाना।
वहाँ तुझे तीन आदमी मिलेंगे जो सच्चे
परमेश्वर की उपासना करने बेतेल[3] जा
रहे होंगे। एक आदमी के हाथ में बकरी
के तीन बच्चे होंगे, दूसरे के हाथ में तीन
रोटियाँ और तीसरे के हाथ में दाख-मदिरा
का एक बड़ा मटका होगा। 4 वे तेरी
खैरियत पूछेंगे और फिर तुझे दो रोटियाँ
देंगे और तू उनसे लेना। 5 इसके बाद
तू सच्चे परमेश्वर की पहाड़ी पर पहुँ-
चेगा, जहाँ पलिश्ती सैनिकों की एक
चौकी है। जब तू शहर जाएगा तो तुझे
भविष्यवक्ताओं की एक टोली मिलेगी
जो ऊँची जगह से नीचे आ रही होगी।
वे भविष्यवाणी कर रहे होंगे और
उनके आगे-आगे एक तारोंवाला बाजा,
डफली, बाँसुरी और सुरमंडल बजाया
जा रहा होगा। 6 तब यहोवा की पवित्र
शक्ति तुझ पर काम करेगी[4] और तू
भी उन भविष्यवक्ताओं के साथ भविष्य-
वाणी करने लगेगा और बिलकुल एक
अलग इंसान नज़र आएगा।[5] 7 जब
ये सारी निशानियाँ पूरी हो जाएँ तो
तुझे जो मुनासिब लगे वह करना क्योंकि
सच्चा परमेश्वर तेरे साथ है। 8 फिर तू
नीचे गिलगाल[6] जाना और तेरे बाद मैं
भी वहाँ आऊँगा ताकि होम-बलियाँ और
शांति-बलियाँ चढ़ा सकूँ। तू वहाँ सात
दिन तक मेरा इंतज़ार करना, फिर मैं
आकर तुझे बताऊँगा कि तुझे क्या-क्या
करना है।"

अध्य. 10
1 उत 35:19
2 1शम 9:3, 5
3 उत 28:19, 22
4 गि 11:25
5 1शम 10:10
6 1शम 7:15, 16
1शम 11:14

दूसरा कॉल.
1 न्या 14:5, 6
1शम 11:6
1शम 16:13
2 1शम 10:6
1शम 19:23
3 1शम 19:24
4 1शम 9:3
5 1शम 7:5

9 जैसे ही शाऊल शमूएल के पास से
जाने के लिए मुड़ा, परमेश्वर शाऊल के
मन का स्वभाव बदलने लगा जिस वजह से
वह बिलकुल अलग नज़र आने लगा।
वे सारी निशानियाँ उसी दिन पूरी हो
गयीं। 10 वे वहाँ से पहाड़ी पर गए और
वहाँ भविष्यवक्ताओं की एक टोली उससे
मिली। उसी पल परमेश्वर की पवित्र
शक्ति शाऊल पर काम करने लगी[1]
और वह उनके साथ मिलकर भविष्यवाणी
करने लगा।[2] 11 जो लोग शाऊल को
पहले से जानते थे, उन्होंने जब उसे
भविष्यवक्ताओं के साथ भविष्यवाणी
करते देखा तो वे एक-दूसरे से कहने लगे,
"कीश के बेटे शाऊल को क्या हो गया
है? क्या वह भी भविष्यवक्ता बन गया?"
12 तब वहाँ के एक आदमी ने कहा,
"मगर इन लोगों का पिता कौन है?" इसी
घटना से यह कहावत शुरू हुई, "क्या
शाऊल भी भविष्यवक्ता बन गया?"[3]

13 जब शाऊल ने भविष्यवाणी
करना खत्म किया तो वह ऊँची जगह पर
गया। 14 बाद में शाऊल के पिता के
भाई ने उससे और उसके सेवक से
पूछा, "तुम दोनों कहाँ गए थे?" शाऊल
ने कहा, "हम गधियों को ढूँढ़ने गए थे,[4]
मगर वे नहीं मिलीं। इसलिए हम शमू-
एल के पास गए।" 15 तब शाऊल के
पिता के भाई ने उससे पूछा, "क्या मैं
जान सकता हूँ कि शमूएल ने तुम्हें क्या
बताया?" 16 शाऊल ने कहा, "उसने
हमें बताया कि गधियाँ मिल गयी हैं।"
मगर शाऊल ने उसे यह नहीं बताया कि
शमूएल ने उसे राजा ठहराने की बात भी
की थी।

17 इसके बाद, शमूएल ने इसराए-
लियों को मिसपा में यहोवा के सामने
इकट्ठा होने के लिए कहा।[5] 18 वहाँ

उसने लोगों से कहा, “इसराएल के पर-
मेश्वर यहोवा ने कहा है, ‘मैंने ही इस-
राएल को मिस्र से निकाला था।[1] मैंने
तुम लोगों को मिस्र के हाथ से और
उन सभी राज्यों से छुड़ाया था जो तुम पर
ज़ुल्म करते थे। 19 मगर आज तुमने
अपने परमेश्वर को ठुकरा दिया है,[2]
जिसने तुम्हें हर आफत और मुसीबत से
बचाया था। तुमने मुझसे कहा, “नहीं,
तुझे हम पर राज करने के लिए एक राजा
ठहराना ही होगा।” इसलिए अब तुम सब
अपने-अपने गोत्र और कुल के हिसाब से
यहोवा के सामने खड़े हो जाओ।’”

20 फिर शमूएल ने इसराएल के सभी
गोत्रों को आगे आने के लिए कहा।[3]
उन सबमें से बिन्यामीन गोत्र चुना गया।[4]
21 फिर उसने बिन्यामीन गोत्र के सभी
कुलों को आगे आने के लिए कहा। उनमें
से मतरी का कुल चुना गया। आखिर
में, उस कुल में से कीश का बेटा
शाऊल चुना गया।[5] मगर जब वे शाऊल
को ढूँढ़ने लगे तो वह कहीं दिखायी नहीं
दिया। 22 तब उन्होंने यहोवा से पूछा,[6]
“क्या वह आदमी यहाँ आया है?” यहोवा
ने कहा, “देखो, वह उधर है, सामान
के बीच छिपा है।” 23 तब वे दौड़-
कर सामान के पास गए और वहाँ से उसे
ले आए। जब वह लोगों के बीच खड़ा
हुआ तो वह सबसे ऊँचा दिखायी दिया,
बाकी सब उसके कंधे तक ही आते थे।[7]
24 शमूएल ने सब लोगों से कहा, “देखो,
यहोवा ने तुम्हारे लिए कितना बढ़िया
आदमी चुना है![8] इसके जैसा लोगों में
और कोई नहीं है।” तब सब लोग ज़ोर-
ज़ोर से कहने लगे, “राजा की जय हो!
राजा की जय हो!”

25 शमूएल ने लोगों को बताया कि
एक राजा को उनसे क्या-क्या माँग करने

अध्य. 10
1 निर्ग 13:14, व्य 4:34
2 1शम 8:7, 1शम 12:12
3 यह 7:16-18, प्रेष 1:24
4 1शम 9:21
5 प्रेष 13:21
6 न्या 1:1, न्या 20:18, 28, 1शम 23:2
7 1शम 9:2
8 व्य 17:14, 15, 1शम 9:17

दूसरा कॉल.
1 1शम 8:11-18
2 1शम 11:12
3 1रा 10:1, 10, 2इत 17:5

अध्य. 11
4 व्य 2:19
5 न्या 21:8, 1शम 31:11, 12
6 1शम 10:26, 1शम 14:2

का हक है।[1] फिर उसने ये सारी बातें एक
किताब में लिखकर उसे यहोवा के सामने
रख दिया। तब शमूएल ने सब लोगों को
विदा किया और वे अपने-अपने घर लौट
गए। 26 शाऊल भी अपने घर गिबा
लौट गया और उसके साथ वे सभी सूरमा
भी गए जिनके दिलों को यहोवा ने उभारा
था। 27 मगर कुछ निकम्मे आदमी
कहने लगे, “यह हमें क्या बचाएगा?”[2]
उन्होंने शाऊल को तुच्छ समझा और
वे उसके लिए कोई तोहफा नहीं लाए।[3]
मगर शाऊल खामोश रहा।*

11 फिर अम्मोनी[4] नाहाश, गिलाद
में याबेश[5] पर चढ़ाई करने आया
और उसने छावनी डाली। याबेश के सभी
आदमियों ने नाहाश से कहा, “तू हमारे
साथ एक करार* कर और हम तेरी सेवा
करेंगे।” 2 अम्मोनी नाहाश ने उनसे
कहा, “मैं एक शर्त पर तुम लोगों के साथ
करार करूँगा। वह यह कि तुम सबकी
दायीं आँख निकाल दी जाएगी। मैं पूरे
इसराएल को नीचा दिखाने के लिए ऐसा
करूँगा।” 3 याबेश के प्रधानों ने उससे
कहा, “हमें सात दिन का वक्त दे ताकि
हम पूरे इसराएल देश में अपने दूत भेजें।
अगर हमें कोई बचानेवाला नहीं मिला तो
हम खुद को तेरे हवाले कर देंगे।”
4 कुछ समय बाद याबेश के दूत गिबा[6]
पहुँचे जहाँ शाऊल रहता था और वहाँ
के लोगों को यह बात बतायी। तब सभी
लोग चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगे।

5 शाऊल बैलों के पीछे-पीछे खेत
से आ रहा था। उसने पूछा, “लोगों
को क्या हो गया है? वे सब क्यों रो रहे
हैं?” तब उन्होंने शाऊल को याबेश
के आदमियों का संदेश सुनाया। 6 जब

10:27 *शा., “वह गूँगे जैसा हो गया।”
11:1 *या “समझौता।”

शाऊल ने यह सब सुना तो परमेश्वर
की पवित्र शक्ति उस पर काम करने
लगी[1] और वह गुस्से से तमतमा उठा।
7 उसने एक जोड़ी बैल लिए और उनके
टुकड़े-टुकड़े कर डाले। उसने वे टुकड़े
उन दूतों के हाथ पूरे इसराएल में भेजे
और उनसे यह कहलवाया, “जो कोई
शाऊल और शमूएल की बात नहीं
मानेगा, उसके बैलों का यही हाल किया
जाएगा।” तब लोगों में यहोवा का डर
समा गया, इसलिए वे सब एकजुट होकर
शाऊल के पास आए। **8** शाऊल ने
बेजेक में उनकी गिनती ली। उसने पाया
कि उनमें 3,00,000 इसराएली आदमी
हैं और 30,000 यहूदा के आदमी
हैं। **9** शाऊल और उसकी सेना ने
याबेश से आए दूतों से कहा, “तुम गिलाद
में याबेश के आदमियों से कहना कि
कल करीब दोपहर तक उन सबको
दुश्मनों से बचा लिया जाएगा।” उन दूतों
ने जाकर यह संदेश याबेश के आद-
मियों को सुनाया और वे खुशी से फूले न
समाए। **10** फिर याबेश के आदमियों
ने अम्मोनी लोगों से कहा, “कल हम खुद
को तुम्हारे हवाले कर देंगे, फिर तुम्हें जो
सही लगे वह हमारे साथ कर लेना।”[2]

11 अगले दिन, शाऊल ने सैनिकों को
तीन दलों में बाँटा और वे सुबह के
पहर* में अम्मोनियों की छावनी[3] में घुस
गए और उन्हें दोपहर तक घात करते
रहे। जो लोग बच गए थे, वे सब तितर-
बितर हो गए और उनमें से हर किसी को
अकेले भागना पड़ा। **12** तब इसराए-
लियों ने शमूएल से कहा, “कौन कह रहा
था कि शाऊल हम पर क्या राज करेगा।[4]
उन्हें हमारे हवाले कर दे, हम उन्हें मौत के
घाट उतार देंगे।” **13** मगर शाऊल ने
कहा, “नहीं, आज के दिन किसी की जान
न ली जाए[1] क्योंकि आज यहोवा ने इस-
राएल को दुश्मनों से बचाया है।”

14 बाद में शमूएल ने लोगों से कहा,
“आओ हम गिलगाल[2] चलें और एक
बार फिर ऐलान करें कि शाऊल राजा
है।”[3] **15** तब सब लोग गिलगाल गए
और वहाँ उन्होंने यहोवा के सामने शाऊल
को राजा बनाया। फिर उन्होंने यहोवा
के सामने शांति-बलियाँ चढ़ायीं[4] और
शाऊल और इसराएल के सभी आदमियों
ने खुशी से जश्न मनाया।[5]

12 आखिर में शमूएल ने पूरे इस-
राएल से कहा, “देखो, मैंने तुम
लोगों की माँग पूरी की है* और तुम
पर राज करने के लिए एक राजा ठह-
राया है।[6] **2** यही तुम्हारा राजा है जो
तुम्हारी अगुवाई करता है।*[7] जहाँ तक
मेरी बात है, मैं तो बूढ़ा हो चुका हूँ, मेरे
बाल पक गए हैं और मेरे बेटे तुम्हारे
बीच हैं[8] और मैं बचपन से लेकर आज
तक तुम लोगों की अगुवाई करता आया
हूँ।[9] **3** देखो, मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ,
अगर किसी को मुझसे कोई शिकायत
हो तो वह यहोवा और उसके अभिषिक्त
जन के सामने बताए।[10] क्या मैंने कभी
किसी का बैल या गधा लिया है?[11]
क्या मैंने कभी किसी को धोखा दिया
या किसी को कुचला है? क्या मैंने किसी
के साथ अन्याय करने के लिए रिश्वत
ली है?[12] अगर मैंने ऐसा कुछ किया है तो
बताओ, मैं तुम्हारी भरपाई कर दूँगा।”[13]
4 जवाब में उन्होंने कहा, “नहीं, तूने न
तो कभी हमारे साथ धोखाधड़ी की, न हमें

11:11 *यानी सुबह करीब 2 बजे से 6 बजे तक।

12:1 *शा., “तुमने मुझसे जो कुछ कहा मैंने माना है।” **12:2** *शा., “जो तुम्हारे आगे-आगे चलता है।”

अध्य. 11

1 न्या 3:9, 10; न्या 6:34; न्या 11:29; न्या 14:5, 6; 1शम 10:10, 11; 1शम 16:13
2 1शम 11:3
3 1शम 11:1
4 1शम 10:26, 27

दूसरा कॉल.

1 2शम 19:22
2 1शम 7:15, 16
3 1शम 10:17, 24
4 लैव 7:11
5 1रा 1:39, 40; 2रा 11:12, 14; 1इत 12:39, 40

अध्य. 12

6 1शम 8:5; 1शम 10:24; 1शम 11:14, 15
7 1शम 8:20
8 1शम 8:1, 3
9 1शम 3:19
10 1शम 9:16, 17; 1शम 10:1
11 गि 16:15
12 व्य 16:19
13 निर्ग 22:4; लैव 6:4

कुचला और न ही किसी के हाथ से कुछ
लिया।” **5** तब शमूएल ने उनसे कहा,
“आज यहोवा और उसका अभिषिक्त
जन इस बात के गवाह हैं कि तुम लोगों
ने मुझमें कोई दोष नहीं पाया है।” उन्होंने
कहा, “हाँ, वह इस बात का गवाह है।”

6 तब शमूएल ने लोगों से कहा,
“बेशक यहोवा इस बात का गवाह है,
जिसने मूसा और हारून को अपनी सेवा
के लिए ठहराया था और जो तुम्हारे
पुरखों को मिस्र से निकाल लाया था।[1]
7 अब तुम सब आगे आओ। यहोवा ने
तुम्हारे लिए और तुम्हारे पुरखों के लिए
जितने नेक काम किए थे, उन सबको
देखते हुए मैं यहोवा के सामने तुम्हारा
न्याय करूँगा।

8 जब याकूब मिस्र गया[2] और तुम्हारे
पुरखों ने मदद के लिए यहोवा को
पुकारा,[3] तो यहोवा ने बिना देर किए
मूसा और हारून को भेजा[4] ताकि वे
तुम्हारे पुरखों को मिस्र से निकाल लाएँ
और उन्हें इस देश में बसाएँ।[5]
9 मगर तुम्हारे पुरखे अपने परमेश्वर
यहोवा को भूल गए और उसने उन्हें
हासोर के सेनापति सीसरा,[6] पलिश्ति-
यों[7] और मोआब के राजा[8] के हाथों बेच
दिया।[9] ये दुश्मन उनके साथ लड़ते थे।
10 इसलिए वे यह कहकर यहोवा को
मदद के लिए पुकारते थे,[10] ‘हमने
यहोवा को छोड़कर बाल देवताओं[11] और
अशतोरेत की मूरतों[12] की पूजा करके
पाप किया है।[13] अब हे परमेश्वर, हमें
दुश्मनों से बचा ले ताकि हम तेरी सेवा
करें।’ **11** तब यहोवा ने यरुब्बाल,[14]
बदान, यिप्तह[15] और शमूएल[16] को
भेजा और तुम लोगों को आस-पास के
सभी दुश्मनों से बचाया ताकि तुम मह-
फ़ूज़ बसे रहो।[17] **12** जब तुमने देखा
कि अम्मोनियों का राजा नाहाश[1] तुम
पर चढ़ाई करने आया है, तो तुम
मुझसे कहते रहे, ‘हमें हर हाल में
एक राजा चाहिए!’[2] इसके बावजूद कि
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा राजा
है।[3] **13** तुमने राजा की माँग की है न?
ये रहा तुम्हारा राजा जिसे तुमने चुना है।
देखो, यहोवा ने इसे तुम पर राजा ठह-
राया है।[4] **14** अगर तुम यहोवा का डर
मानोगे,[5] उसकी सेवा करोगे,[6] उसकी
आज्ञा मानोगे[7] और यहोवा के आदेश के
खिलाफ बगावत नहीं करोगे और तुम्हारा
राजा और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के
पीछे चलते रहोगे, तो तुम सबका भला
होगा। **15** लेकिन अगर तुम यहोवा
की आज्ञा नहीं मानोगे और यहोवा के
आदेश के खिलाफ बगावत करोगे तो
यहोवा तुम्हें और तुम्हारे पिताओं को
सज़ा देगा।[8] **16** अब तुम सब आगे
आओ और देखो कि यहोवा तुम्हारी
आँखों के सामने कैसा अजूबा करता है।
17 यह गेहूँ की कटाई का मौसम है,
मगर मैं यहोवा से बिनती करूँगा कि वह
बादल गरजाए और बारिश कराए। तब
तुम्हें एहसास हो जाएगा और तुम समझ
जाओगे कि तुमने अपने लिए राजा की
माँग करके यहोवा की नज़र में कैसा दुष्ट
काम किया है।”[9]

18 इसके बाद, शमूएल ने यहोवा
को पुकारा और यहोवा ने उस दिन
बादल गरजाए और बारिश करायी। यह
देखकर सब लोग यहोवा और शमूएल से
बहुत डरने लगे। **19** उन्होंने शमूएल से
कहा, “अपने सेवकों की तरफ से अपने
परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर[10] ताकि
हम मर न जाएँ। हमने अपने लिए राजा
की माँग करके वाकई दुष्ट काम किया है,
अपने पाप और भी बढ़ा लिए हैं।”

अध्य. 12
1 निर्ग 6:26
2 उत 46:6
3 निर्ग 2:23
4 निर्ग 3:9, 10
5 यह 11:23
6 न्या 4:2
7 न्या 10:7; न्या 13:1
8 न्या 3:12
9 व्य 32:18, 30; न्या 2:12, 14
10 न्या 2:18; न्या 3:9
11 न्या 3:7
12 न्या 2:13
13 न्या 10:10, 15
14 न्या 6:32
15 न्या 11:1
16 इब्र 11:32
17 लैव 26:6

दूसरा कॉल.
1 1शम 11:1
2 1शम 8:5, 19
3 न्या 8:23; 1शम 8:7; यश 33:22
4 1शम 9:16, 17; 1शम 10:24
5 व्य 10:12; व्य 17:19
6 यह 24:14
7 व्य 13:4; व्य 28:2
8 लैव 26:14, 17; व्य 28:15; यह 24:20
9 1शम 8:7; हो 13:11
10 1शम 7:5; 1शम 12:23

20 तब शमूएल ने लोगों से कहा,
“डरो मत। यह सच है कि तुम लोगों ने
यह दुष्ट काम किया है, मगर अब तुम
यहोवा के पीछे चलना मत छोड़ो[1] और
पूरे दिल से यहोवा की सेवा करो।[2]
21 तुम उन खोखली बातों के पीछे
मत भागो*[3] जिनसे कोई फायदा नहीं[4]
और जो तुम्हें बचा नहीं सकतीं क्योंकि
वे खोखली बातें हैं।# 22 यहोवा
अपने महान नाम की खातिर[5] कभी
अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा,[6] क्योंकि
यहोवा ने अपनी मरज़ी से तुम्हें अपने
लोग चुना है।[7] 23 और मैं भी तुम
लोगों की खातिर प्रार्थना करना कभी
नहीं छोड़ूँगा। मैं ऐसा करने की कभी
सोच भी नहीं सकता क्योंकि यह यहोवा
के खिलाफ पाप होगा। मैं आगे भी तुम
लोगों को भले और सही रास्ते पर
चलने की हिदायत देता रहूँगा। 24 बस
तुम यहोवा का डर मानो[8] और पूरे
दिल से विश्वासयोग्य रहकर* उसकी
सेवा करते रहो क्योंकि देखो, उसने
तुम्हारे लिए कैसे बड़े-बड़े काम किए हैं।[9]
25 लेकिन अगर तुम ढीठ होकर बुरे
काम करते रहोगे, तो तुम्हारा और तुम्हारे
राजा का सफाया कर दिया जाएगा।”[10]

13 जब शाऊल राजा बना तब
वह . . .* साल का था।[11] उसे
इसराएल पर राज करते दो साल हुए थे।
2 शाऊल ने इसराएलियों में से 3,000
आदमी चुने और बाकी लोगों को अपने-
अपने तंबू में भेज दिया। उन 3,000
आदमियों में से 2,000 आदमी शाऊल
के साथ मिकमाश में और बेतेल के पास
पहाड़ी प्रदेश में थे और 1,000 आदमी
योनातान[1] के साथ बिन्यामीन के गिबा[2]
में थे। 3 योनातान ने पलिश्तियों की
उस चौकी पर फतह हासिल की[3] जो
गिबा[4] में थी और यह खबर पलिश्ति-
यों ने सुनी। शाऊल ने पूरे इसराएल देश
में नरसिंगा फुँकवाकर[5] यह ऐलान कर-
वाया, “इब्री लोगो, सुनो!” 4 तब पूरे
इसराएल ने यह खबर सुनी, “शाऊल
ने पलिश्तियों की एक चौकी पर फतह
हासिल की है और अब पलिश्ती, इस-
राएल से नफरत करने लगे हैं।” इस-
लिए इसराएली लोगों को आदेश दिया
गया कि वे गिलगाल[6] में शाऊल के
पास इकट्ठा हों।

5 उधर पलिश्ती भी इसराएलियों से
लड़ने के लिए इकट्ठा हुए। उनकी सेना
में 30,000 युद्ध-रथ और 6,000 घुड़-
सवार थे। उनके सैनिकों की गिनती इतनी
थी कि वे समुंदर किनारे की बालू के
किनकों जितने लग रहे थे।[7] उन्होंने
ऊपर चढ़कर बेत-आवेन[8] के पूरब में
मिकमाश में छावनी डाली। 6 इसराएल
के आदमियों ने देखा कि अब उन पर
बड़ा संकट आ गया है। डर और चिंता
से उनका बुरा हाल हो गया इसलिए वे
भागकर गुफाओं, गड्ढों, चट्टानों, तह-
खानों और कुंडों में जा छिपे।[9] 7 कुछ
इब्री लोग तो यरदन पार करके गाद
और गिलाद के इलाके में भाग गए।[10]
मगर शाऊल गिलगाल में ही रहा और
जितने लोग उसके साथ थे वे सब डर के
मारे काँप रहे थे। 8 शाऊल शमूएल के
तय समय तक सात दिन इंतज़ार करता
रहा, मगर शमूएल गिलगाल नहीं पहुँचा
और लोग शाऊल को छोड़कर इधर-उधर
जाने लगे थे। 9 आखिरकार शाऊल ने

अध्य. 12
1 व्य 31:29; यह 23:6; 1शम 12:15
2 व्य 6:5
3 व्य 32:21; यिर्म 2:11
4 भज 115:4, 5; यिर्म 16:19
5 यह 7:9; भज 23:3; भज 106:8; यिर्म 14:21; यहे 20:14
6 1रा 6:13; भज 94:14; रोम 11:1
7 निर्ग 19:5; व्य 7:7
8 1शम 12:14; भज 111:10; सभ 12:13
9 व्य 10:12, 21
10 व्य 28:15, 36; यह 24:20

अध्य. 13
11 प्रेष 13:21

दूसरा कॉल.
1 1शम 18:1; 2शम 1:4; 2शम 21:7
2 यह 18:28; 1शम 10:26
3 यह 13:2, 3; 1शम 9:16
4 यह 21:8, 17
5 न्या 3:26, 27; न्या 6:34; 2शम 2:28
6 यह 5:9; 1शम 11:14
7 व्य 20:1
8 यह 7:2; यह 18:11, 12; 1शम 14:23
9 1शम 14:11
10 गि 32:1, 33; यह 13:24, 25

12:21 *या “उन बातों के पीछे मत भागो जो हकीकत नहीं हैं और।” #या “वे हकीकत नहीं हैं।” **12:24** *या “सच्चाई से।” **13:1** *इब्रानी पाठ में संख्या नहीं दी गयी है।

कहा, “होम-बलि और शांति-बलियाँ मेरे पास लाओ।” फिर उसने खुद होम-बलि चढ़ा दी।[1]

10 मगर जैसे ही उसने होम-बलि चढ़ाने का काम पूरा किया, शमूएल आ गया। तब शाऊल जाकर शमूएल से मिला और उससे दुआ-सलाम किया। **11** शमूएल ने उससे कहा, “यह तूने क्या किया?” शाऊल ने कहा, “लोग मुझे छोड़कर जाने लगे थे[2] और तू भी तय समय के अंदर नहीं आया और पलिश्ती मिकमाश में इकट्ठा होने लगे थे।[3] **12** मैंने सोचा अब पलिश्ती नीचे गिलगाल उतर आएँगे और मुझ पर हमला कर देंगे और मैंने अब तक यहोवा की कृपा के लिए उससे बिनती नहीं की है। इसलिए मुझे मजबूर होकर होम-बलि चढ़ानी पड़ी।”

13 तब शमूएल ने शाऊल से कहा, “तूने बड़ी मूर्खता का काम किया है। तूने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा नहीं मानी।[4] अगर मानी होती, तो यहोवा इसराएल पर तेरा राज सदा कायम रखता। **14** मगर अब तेरा राज कायम नहीं रहेगा।[5] यहोवा अपने लिए एक ऐसा आदमी ढूँढ़ लेगा जो उसके दिल को भाता है[6] और यहोवा उसे अपने लोगों का अगुवा ठहराएगा[7] क्योंकि तूने यहोवा की आज्ञा नहीं मानी।”[8]

15 इसके बाद शमूएल गिलगाल से निकला और बिन्यामीन के गिबा गया। शाऊल ने अपने सैनिकों की गिनती ली और पाया कि करीब 600 आदमी उसके साथ रह गए हैं।[9] **16** शाऊल और उसके बेटे योनातान ने और उनके साथवाले आदमियों ने बिन्यामीन के गेबा[10] में छावनी डाली। और पलिश्ती लोग मिकमाश में छावनी डाले हुए थे।[11]

17 पलिश्ती सेना में से लूटमार करनेवाले सैनिक तीन दल बनाकर अपनी छावनी से निकलते थे। एक दल ओप्रा जानेवाले रास्ते से शूआल प्रांत में जाता था, **18** दूसरा दल बेत-होरोन[1] जानेवाला रास्ता लेता था और तीसरा दल उस सरहद की तरफ जानेवाला रास्ता लेता था जिसके सामने सबोईम घाटी है और जो वीराने की तरफ है।

19 पूरे इसराएल देश में एक भी धातु-कारीगर नहीं था क्योंकि पलिश्तियों ने कहा, “ताकि इब्री लोग तलवार या भाला न बना सकें।” **20** सब इसराएलियों को हल के फाल, गैंती, कुल्हाड़ी और हँसिए पर धार लगाने पलिश्तियों के पास जाना पड़ता था। **21** हल के फाल, गैंती, तीन-नोंकवाले औज़ार और कुल्हाड़ी पर धार चढ़ाने और डंडे पर पैना लगवाने की कीमत एक पिम* थी। **22** यही वजह थी कि युद्ध के दिन शाऊल और योनातान के साथवाले आदमियों में से किसी के पास भी तलवार या भाला नहीं था।[2] सिर्फ शाऊल और उसके बेटे योनातान के पास हथियार थे।

23 पलिश्तियों की एक चौकी मिकमाश[3] की तंग घाटी में जा चुकी थी।

14 एक दिन शाऊल के बेटे योनातान[4] ने अपने हथियार ढोनेवाले सेवक से कहा, “चलो, हम उस पार पलिश्तियों की चौकी के पास चलते हैं।” मगर उसने अपने पिता को कुछ नहीं बताया। **2** उस वक्त शाऊल गिबा[5] शहर के बाहर मिगरोन में अनार के पेड़ के नीचे रह रहा था और उसके साथ करीब 600 आदमी थे।[6] **3** (अहीतूब

13:21 *एक प्राचीन बाट-पत्थर, जो एक शेकेल का करीब दो-तिहाई हिस्सा था।

अध्य. 13
1 1शम 15:22, 23
2 1शम 13:6, 8
3 1शम 13:5
4 1शम 15:11
5 1शम 15:28
6 1शम 16:1; 2शम 7:15; भज 78:70; प्रेष 13:22
7 उत 49:10; 2शम 5:2; 2शम 7:8; 1इत 28:4
8 नीत 11:2
9 1शम 13:7; 1शम 14:2
10 1शम 13:3
11 1शम 13:2

दूसरा कॉल.
1 यह 10:11
2 1शम 17:47, 50
3 1शम 13:2; 1शम 14:4, 5

अध्य. 14
4 1शम 14:49; 1शम 18:1; 2शम 1:4
5 1शम 10:26
6 1शम 13:15

का बेटा अहियाह[1] एपोद पहने हुए था।[2]
अहीतूब, ईकाबोद का भाई[3] और फिने-
हास का बेटा[4] था और फिनेहास, शीलो
में यहोवा की सेवा करनेवाले याजक[5]
एली का बेटा[6] था।) उन आदमियों
को पता नहीं था कि योनातान पलिश्ति-
यों के पास गया हुआ है। **4** योनातान
पलिश्तियों की चौकी तक जाने के लिए
जो घाटी पार कर रहा था, उसके दोनों
तरफ एक-एक नुकीली चट्टान थी। एक
चट्टान का नाम बोसेस था और दूसरी का
सेने। **5** एक चट्टान उत्तर में खंभे की
तरह सीधी खड़ी थी और उसके सामने
मिकमाश था और दूसरी चट्टान दक्षिण में
थी और उसके सामने गेबा था।[7]

6 योनातान ने अपने हथियार ढोने-
वाले सेवक से कहा, "चलो हम उस पार
उन खतनारहित आदमियों[8] की चौकी के
पास चलते हैं। हो सकता है यहोवा
हमारी मदद करे क्योंकि चाहे हम गिनती
में थोड़े हों या ज़्यादा, यहोवा हमारे ज़रिए
उद्धार दिला सकता है, उसके लिए कोई
बात रुकावट नहीं है।"[9] **7** सेवक ने
उससे कहा, "तेरा दिल जो कहे वह कर।
तू जहाँ चाहे वहाँ चल, मैं तेरे पीछे-पीछे
चलूँगा।" **8** योनातान ने कहा, "हम
उस पार उन आदमियों के पास जाएँगे
ताकि हम उन्हें नज़र आएँ। **9** अगर वे
कहते हैं, 'तुम हमारे आने तक वहीं खड़े
रहना!' तो हम वहीं खड़े रहेंगे। उनके
पास नहीं जाएँगे। **10** लेकिन अगर वे
कहते हैं, 'आओ, हम पर हमला करो!'
तो हम ऊपर जाएँगे क्योंकि यहोवा उन्हें
हमारे हाथ में कर देगा। यही हमारे लिए
निशानी होगी।"[10]

11 फिर वे दोनों जाकर ऐसी जगह
खड़े हो गए कि पलिश्ती लोग अपनी
चौकी से उन्हें देख सकें। पलिश्तियों ने
उन्हें देखकर कहा, "वह देखो, इब्री
आदमी अपने बिल में से निकलकर आ
रहे हैं, जहाँ वे दुबके हुए थे।"[1] **12** तब
पलिश्तियों की चौकी पर तैनात आदमियों
ने योनातान और उसके सेवक से कहा,
"आओ, आओ, हम तुम्हें सबक सिखाते
हैं!"[2] यह सुनते ही योनातान ने अपने
सेवक से कहा, "मैं आगे चलता हूँ, तू मेरे
पीछे-पीछे आ। यहोवा उन्हें इसराएल के
हाथ में कर देगा।"[3] **13** फिर योना-
तान अपने हाथों और पैरों के बल ऊपर
चढ़कर पलिश्तियों के पास गया। उसके
पीछे-पीछे उसका सेवक भी चढ़कर गया।
योनातान पलिश्तियों पर वार करने लगा
और उसका सेवक भी उसके पीछे-पीछे
उन्हें घात करता गया। **14** योनातान
और उसके सेवक ने पहली बार जो हमला
किया उसमें करीब 20 पलिश्ती मारे गए
और वह भी आधे एकड़ ज़मीन की लंबाई
के अंदर।*

15 तब उन सभी पलिश्तियों में
आतंक फैल गया जो चौकी में तैनात थे
और जो मैदान में छावनी डाले हुए थे।
यहाँ तक कि उनके लुटेरे-दलों[4] में भी
खौफ समा गया और ज़मीन काँपने लगी।
इस सबके पीछे परमेश्वर का हाथ था।
16 शाऊल के जो पहरेदार बिन्यामीन के
गिबा में थे,[5] उन्होंने देखा कि पलिश्ति-
यों में खलबली मची हुई है और वह चारों
तरफ फैलती जा रही है।[6]

17 शाऊल ने अपने आदमियों से
कहा, "ज़रा गिनती लेकर देखो कि हमारे
यहाँ से कौन गया है।" जब उन्होंने गिनती
ली तो देखा कि योनातान और उसका
हथियार ढोनेवाला सेवक गायब हैं।

अध्य. 14
1 1शम 22:9
2 निर्ग 29:5; गि 27:21
3 1शम 4:21
4 1शम 2:12; 1शम 4:17
5 यह 18:1; 1शम 1:3
6 1शम 1:9
7 1शम 13:2, 3
8 उत 17:9, 10; न्या 14:3; न्या 15:18; 1शम 17:36; 1इत 10:4
9 न्या 7:2; 2रा 6:15, 16; 2इत 14:11
10 उत 24:14; न्या 7:11; 1शम 10:7

दूसरा कॉल.
1 1शम 13:6; 1शम 14:22
2 1शम 14:10
3 1शम 14:6; 2शम 5:23, 24; 2रा 6:15, 16
4 1शम 13:17
5 1शम 10:26; 1शम 14:2
6 1शम 14:20

14:14 *यानी ज़मीन का उतना हिस्सा जितना एक जोड़ी बैल एक दिन में जोत सकता है।

18 तब शाऊल ने अहियाह[1] से कहा,
“सच्चे परमेश्‍वर का संदूक यहाँ ले आ!”
(उस वक्‍त सच्चे परमेश्‍वर का संदूक इस-
राएलियों के पास था।) 19 जब शाऊल
याजक से बात कर रहा था, तो
वहाँ पलिश्‍तियों की छावनी में और
ज़्यादा हाहाकार मचने लगा। शाऊल ने
याजक से कहा, “तू यह काम बंद कर।”*
20 फिर शाऊल और उसके सभी आदमी
इकट्ठा हुए और पलिश्‍तियों से युद्ध करने
उनकी छावनी में गए। वहाँ पहुँचने पर
उन्होंने देखा कि पलिश्‍ती एक-दूसरे पर ही
तलवार चला रहे हैं और हर तरफ बड़ी
खलबली मची हुई है। 21 और जो इब्री
लोग पहले पलिश्‍तियों की तरफ हो गए थे
और उनके साथ छावनी में थे, वे अब उन्हें
छोड़कर शाऊल और योनातान के साथ-
वाले इसराएलियों की तरफ आ गए।
22 और जितने इसराएली आदमी एप्रैम
के पहाड़ी प्रदेश में जा छिपे थे[2] उन्होंने जब
सुना कि पलिश्‍ती भाग गए हैं तो वे भी
युद्ध में शामिल होकर पलिश्‍तियों का पीछा
करने लगे। 23 इस तरह यहोवा ने उस
दिन इसराएल को बचाया[3] और यह
लड़ाई दूर बेत-आवेन तक चलती रही।[4]

24 मगर उस दिन इसराएली आद-
मियों की हालत पस्त हो चुकी थी क्योंकि
शाऊल ने उन्हें यह शपथ धरायी थी,
“अगर किसी आदमी ने शाम से पहले,
जब तक मैं अपने दुश्‍मनों से बदला नहीं
ले लेता, एक निवाला भी खाया तो वह
शापित हो!” इसलिए किसी भी आदमी ने
कुछ नहीं खाया था।[5]

25 सभी इसराएली आदमी* एक
जंगल में पहुँचे और वहाँ ज़मीन पर शहद
पड़ा था। 26 उन्होंने देखा कि शहद
टपक रहा है, मगर उनमें से किसी ने
शहद नहीं खाया क्योंकि वे सभी शपथ
की वजह से डर गए थे। 27 मगर
योनातान नहीं जानता था कि उसके पिता
ने लोगों को शपथ धरायी है,[1] इसलिए
उसने अपनी लाठी बढ़ाकर उसका छोर
मधुमक्खी के छत्ते में डाला। फिर जब
उसने हाथ से शहद लेकर मुँह में डाला तो
उसकी जान में जान आयी।* 28 तभी
लोगों में से एक आदमी ने उससे कहा,
“तेरे पिता ने सब लोगों को एक शपथ
धरायी है और सख्ती से कहा है कि अगर
आज किसी ने कुछ खाया तो वह शापित
होगा![2] इसीलिए लोगों की हालत इतनी
पस्त है।” 29 मगर योनातान ने कहा,
“मेरा पिता देश पर बड़ा संकट ले आया
है! देखो, मैंने ज़रा-सा शहद चखा और
मेरी जान में जान आ गयी। 30 अगर
लोगों को दुश्‍मनों की लूट में से जी-
भरकर खाने दिया जाता तो कितना
अच्छा होता![3] हम और भी बड़ी तादाद में
पलिश्‍तियों को मार डालते।”

31 उस दिन वे मिकमाश से अय्या-
लोन[4] तक पलिश्‍तियों को मारते गए और
वे थककर चूर हो गए थे। 32 इस-
लिए वे सब लूट के माल पर टूट पड़े।
वे भेड़ों, गाय-बैलों और बछड़ों को पकड़-
कर ज़मीन पर हलाल करने लगे और
खून के साथ ही गोश्‍त खाने लगे।[5]
33 तब शाऊल को बताया गया कि
लोग खून के साथ गोश्‍त खा रहे हैं और
यहोवा के खिलाफ पाप कर रहे हैं।[6]
इस पर उसने कहा, “तुम लोगों
ने विश्‍वासघात किया है। तुम जल्दी
से एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर मेरे पास ले
आओ।” 34 फिर उसने कहा, “लोगों
के पास जाओ और उनसे कहो, ‘तुम सब

अध्य. 14
1 1शम 14:3
2 1शम 13:6
3 व्य 33:29
न्या 2:18
4 1शम 13:5
5 लैव 5:4
गि 30:2
व्य 23:21

दूसरा कॉल.
1 1शम 14:17
2 1शम 14:24
3 1शम 14:26
4 यह 10:12
5 उत 9:4
लैव 3:17
लैव 17:10
व्य 12:16
प्रेष 15:29
6 व्य 12:23

14:19 *शा., “अपना हाथ खींच।” 14:25 *शा., “सारा देश।”

14:27 *शा., “उसकी आँखें चमक उठीं।”

अपना-अपना बैल और अपनी-अपनी भेड़ यहाँ लाकर हलाल करो और फिर उसे खाओ। तुम खून के साथ गोश्‍त खाकर यहोवा के खिलाफ पाप मत करो।’”[1] तब उस रात हर कोई अपना बैल शाऊल के पास ले गया और वहाँ उसे हलाल किया। 35 फिर शाऊल ने यहोवा के लिए एक वेदी बनायी।[2] यह वह पहली वेदी थी जो उसने यहोवा के लिए बनायी थी।

36 बाद में शाऊल ने अपने आदमियों से कहा, “चलो हम रात में पलिश्‍तियों पर हमला करते हैं और सुबह उजाला होने तक उन्हें लूटते हैं। हम उनमें से एक को भी ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे।” उन्होंने कहा, “तुझे जो सही लगे वह कर।” फिर याजक ने कहा, “आओ, हम इस जगह पर सच्चे परमेश्‍वर से पूछें।”[3] 37 तब शाऊल ने परमेश्‍वर से सलाह की, “क्या मुझे पलिश्‍तियों पर हमला करना चाहिए?[4] क्या तू उन्हें इसराएल के हाथ में कर देगा?” मगर परमेश्‍वर ने उस दिन उसे कोई जवाब नहीं दिया। 38 तब शाऊल ने कहा, “लोगों के सभी प्रधानो, यहाँ आओ और पता लगाओ कि आज हमारे बीच कौन-सा पाप हुआ है। 39 मैं यहोवा के जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ, जिसने इसराएल को बचाया है, जिस किसी ने पाप किया है उसे मौत की सज़ा दी जाएगी, फिर चाहे वह मेरा बेटा योनातान ही क्यों न हो।” मगर लोगों में से किसी ने कुछ नहीं कहा। 40 तब शाऊल ने लोगों से कहा, “तुम सब एक तरफ खड़े हो जाओ, मैं और मेरा बेटा योनातान दूसरी तरफ खड़े होंगे।” लोगों ने कहा, “तुझे जो सही लगे वही कर।”

41 तब शाऊल ने यहोवा से कहा, “हे इसराएल के परमेश्‍वर, तुम्मीम[5] के ज़रिए हमें जवाब दे!” तब योनातान और शाऊल चुने गए और लोग छूट गए। 42 फिर शाऊल ने कहा, “अब चिट्ठियाँ डालकर[1] देखो कि मैं कसूरवार हूँ या मेरा बेटा योनातान।” चिट्ठी योनातान के नाम पर निकली। 43 शाऊल ने योनातान से कहा, “मुझे बता, तूने क्या पाप किया है?” योनातान ने कहा, “मैंने अपनी लाठी के छोर से बस थोड़ा-सा शहद चखा।[2] हाँ, मैं कसूरवार हूँ। मैं मरने के लिए तैयार हूँ!”

44 तब शाऊल ने कहा, “योनातान, अगर तुझे मौत की सज़ा न मिली तो परमेश्‍वर मुझे कड़ी-से-कड़ी सज़ा दे।”[3] 45 मगर लोगों ने शाऊल से कहा, “क्या योनातान मार डाला जाएगा जिसने इसराएल को इतनी बड़ी जीत दिलायी* है?[4] नहीं, यह हरगिज़ नहीं हो सकता! यहोवा के जीवन की शपथ, उसका बाल भी बाँका नहीं होगा क्योंकि उसने आज के दिन परमेश्‍वर के साथ मिलकर काम किया है।”[5] ऐसा कहकर लोगों ने योनातान को बचा लिया# और उसे मौत की सज़ा नहीं दी गयी।

46 इसके बाद शाऊल ने पलिश्‍तियों का पीछा करना छोड़ दिया और वे अपने इलाके में लौट गए।

47 शाऊल ने इसराएल पर अपनी हुकूमत मज़बूत की और आस-पास के सभी दुश्‍मनों से युद्ध किया। उसने मोआबियों,[6] अम्मोनियों,[7] एदोमियों[8] और पलिश्‍तियों[9] से और सोबा के राजाओं[10] से युद्ध किया। वह जहाँ भी गया दुश्‍मनों को हराता गया। 48 उसने बड़ी दिलेरी से युद्ध किया और अमालेकियों पर जीत हासिल की[11] और इसराएल को लुटेरों के हाथ से बचाया।

14:45 *या “उद्धार दिलाया।” #शा., “छुड़ाया।”

अध्य. 14
1 1शम 14:32
2 1शम 7:15, 17
3 गि 27:21; 1शम 30:7, 8
4 न्या 1:1; 1शम 30:8; 2शम 5:19
5 निर्ग 28:30; व्य 33:8; एज 2:62, 63

दूसरा कॉल.
1 नीत 16:33
2 1शम 14:27
3 1शम 14:24
4 1शम 14:14
5 1शम 14:6
6 1शम 12:9
7 1शम 11:11
8 उत 36:8
9 1शम 9:16, 17
10 2शम 10:6
11 निर्ग 17:14; व्य 25:19; 1शम 15:3

49 शाऊल के बेटों के नाम हैं योनातान, यिश्वी और मलकीशूआ।[1] उसकी दो बेटियाँ थीं, बड़ी का नाम मेरब[2] था और छोटी का मीकल।[3] 50 शाऊल की पत्नी का नाम अहीनोअम था जो अहीमास की बेटी थी। शाऊल के सेनापति का नाम अब्नेर[4] था जो उसके पिता के भाई नेर का बेटा था। 51 शाऊल का पिता कीश[5] था और अब्नेर का पिता नेर,[6] अबीएल का बेटा था।

52 शाऊल जब तक जीया तब तक उसके और पलिश्तियों के बीच घमासान युद्ध होता रहा।[7] शाऊल जब भी किसी ताकतवर या बहादुर आदमी को देखता तो उसे अपनी सेना में भरती कर लेता था।[8]

15 फिर शमूएल ने शाऊल से कहा, "यहोवा ने मुझे तेरे पास भेजा था कि मैं तेरा अभिषेक करके तुझे उसकी प्रजा इसराएल पर राजा ठहराऊँ।[9] अब यहोवा का संदेश सुन।[10] 2 सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा कहता है, 'मैं अमालेकियों से उनके कामों का हिसाब लूँगा क्योंकि जब इसराएली मिस्र से निकलकर आ रहे थे तब अमालेकियों ने रास्ते में उनका विरोध किया था।[11] 3 इसलिए अब तू जा और अमालेकियों को नाश कर दे।[12] उन्हें और उनका जो कुछ है, सब पूरी तरह मिटा दे।[13] तू उन्हें ज़िंदा मत छोड़ना,* चाहे आदमी हों या औरत, बड़े बच्चे हों या दूध-पीते बच्चे, बैल हों या भेड़ें, ऊँट हों या गधे, सबको मार डालना।'"[14] 4 शाऊल ने अपने आदमियों को बुलाया और तलाईम में उनकी गिनती ली। उनमें यहूदा गोत्र से 10,000 आदमी थे और बाकी गोत्रों से 2,00,000 पैदल सैनिक।[1]

5 शाऊल अपनी सेना को लेकर बढ़ता हुआ अमालेकियों के शहर तक पहुँच गया और उसने कुछ सैनिकों को घाटी के पास घात में बिठाया। 6 फिर शाऊल ने केनी लोगों[2] से कहा, "तुम अमालेकियों के इलाके से निकल जाओ। कहीं ऐसा न हो कि मैं उनके साथ-साथ तुम्हारा भी सफाया कर दूँ।[3] जब इसराएली मिस्र से निकलकर आ रहे थे तब तुमने उन सब पर कृपा* की थी,[4] इसलिए मैं तुम्हें नाश नहीं करूँगा।" इसलिए केनी लोग अमालेकियों का इलाका छोड़कर चले गए। 7 इसके बाद शाऊल ने अमालेकियों पर हमला किया[5] और वह उन्हें हवीला[6] से लेकर शूर[7] तक घात करता गया जो मिस्र के पास है। 8 उसने अमालेकियों के राजा अगाग[8] को ज़िंदा पकड़ लिया, मगर बाकी सब लोगों को तलवार से मारकर मिटा दिया।[9] 9 शाऊल और उसके लोगों ने अगाग को बख्श दिया* और अमालेकियों की सबसे अच्छी और मोटी-ताज़ी भेड़-बकरियों, मेढ़ों और गाय-बैलों को भी छोड़ दिया। उन्होंने वह सबकुछ छोड़ दिया जो अच्छा था।[10] वे उनका नाश नहीं करना चाहते थे। मगर अमालेकियों का जो कुछ बेकार था और किसी काम का नहीं था, उसे उन्होंने नाश कर दिया।

10 फिर यहोवा का यह संदेश शमूएल के पास पहुँचा, 11 "मुझे दुख* है कि मैंने शाऊल को राजा बनाया। शाऊल ने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया है। मैंने उसे जो करने के लिए कहा था उसने

अध्य. 14
1 1शम 31:2; 1इत 8:33; 1इत 9:39
2 1शम 18:17
3 1शम 18:27; 1शम 25:44; 2शम 3:13; 2शम 6:20
4 1शम 17:55; 2शम 2:8; 2शम 3:27
5 1शम 9:1
6 1रा 2:5
7 उत 49:27; 1शम 9:16, 17
8 1शम 8:11; 1शम 10:26

अध्य. 15
9 1शम 9:16; 1शम 10:1
10 1शम 12:14
11 निर्ग 17:8; गि 24:20; व्य 25:17, 18
12 निर्ग 17:14; व्य 25:19; 1इत 4:43
13 लैव 27:29; 1शम 15:18
14 व्य 9:1, 3; व्य 13:17; यह 6:18

दूसरा कॉल.
1 1शम 11:8; 1शम 13:15
2 गि 10:29, 32; गि 24:21; न्या 1:16
3 उत 18:25; उत 19:12, 13; यह 6:17
4 निर्ग 18:9, 12
5 व्य 25:19; 1शम 14:47, 48
6 उत 25:17, 18
7 1शम 27:8
8 1शम 15:33
9 लैव 27:29; 1शम 15:3
10 यह 7:12

15:3 *या "उन पर तरस मत खाना।"

15:6 *या "अटल प्यार।" **15:9** *या "पर तरस खाया।" **15:11** *या "पछतावा।"

वह नहीं किया।”[1] शमूएल बहुत निराश
हो गया और सारी रात यहोवा की
दुहाई देता रहा।[2] **12** अगले दिन शमू-
एल जब सुबह तड़के उठा ताकि जाकर
शाऊल से मिले, तो उसे बताया गया,
“शाऊल करमेल[3] गया था और वहाँ
उसने अपने सम्मान में एक शानदार खंभा
खड़ा करवाया।[4] इसके बाद वह वहाँ से
गिलगाल चला गया।” **13** आखिरकार
जब शमूएल शाऊल के पास आया तो
शाऊल ने उससे कहा, “यहोवा तुझे
आशीष दे। यहोवा ने मुझसे जो कहा था,
वह मैंने कर दिया।” **14** मगर शमूएल
ने उससे कहा, “अच्छा? तो फिर यह भेड़-
बकरियों के मिमियाने और गाय-बैलों के
रँभाने की आवाज़ कहाँ से आ रही है?”[5]
15 शाऊल ने कहा, “वे सब जानवर
अमालेकियों के यहाँ से लाए गए हैं। जब
सैनिकों ने अच्छी-अच्छी भेड़-बकरियाँ
और गाय-बैल देखे, तो उन्हें छोड़ दिया*
ताकि वे तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए
बलि चढ़ाएँ। मगर बाकी सबको हमने
नाश कर दिया।” **16** तब शमूएल ने
शाऊल से कहा, “बस, बहुत हो चुका!
मैं तुझे बताता हूँ कि कल रात यहोवा
ने मुझसे क्या कहा।”[6] शाऊल ने कहा,
“ठीक है, बता!”

17 शमूएल ने कहा, “जब तुझे इस-
राएल के गोत्रों पर अगुवा ठहराया गया
था और यहोवा ने तेरा अभिषेक करके
तुझे इसराएल का राजा बनाया था,[7] तब
तू खुद को कितना छोटा समझता था![8]
18 मगर अब जब यहोवा ने तुझे यह
काम सौंपा कि तू जाकर उन पापी अमा-
लेकियों को नाश कर दे[9] और उनसे तब
तक लड़ता रह जब तक तू उनका पूरी
तरह सफाया नहीं कर देता,[10] **19** तो
तूने क्यों यहोवा की आज्ञा नहीं मानी?
तू लालच में आकर उनकी लूट पर टूट
पड़ा[1] और तूने वह काम किया जो यहोवा
की नज़र में बुरा है!”

20 शाऊल ने शमूएल से कहा, “मगर
मैंने तो यहोवा की आज्ञा मानी है! यहोवा
ने मुझे जो काम सौंपा था, उसे करने के
लिए मैं गया था। मैंने अमालेकियों को
नाश कर दिया है और मैं उनके राजा
अगाग को पकड़ लाया हूँ।[2] **21** मगर
लोग उन जानवरों में से, जिन्हें नाश
करना था, अच्छी-अच्छी भेड़ों और गाय-
बैलों को ले आए ताकि गिलगाल में तेरे
परमेश्वर यहोवा के लिए इनकी बलि
चढ़ा सकें।”[3]

22 तब शमूएल ने कहा, “क्या यहोवा
को होम-बलियों और बलिदानों से उतनी
खुशी मिलती है[4] जितनी उसकी बात
मानने से? देख, यहोवा की आज्ञा मानना
बलिदान चढ़ाने से कहीं बढ़कर है[5] और
उसकी बात पर ध्यान देना मेढ़ों की
चरबी[6] अर्पित करने से कई गुना बेहतर
है **23** क्योंकि परमेश्वर से बगावत[7]
करना उतना ही बड़ा पाप है जितना कि
ज्योतिषी का काम करना है[8] और अपनी
हद पार करके गुस्ताखी करना, जादू-
टोना और मूर्तिपूजा* के बराबर है। तूने
यहोवा की आज्ञा ठुकरा दी है,[9] इसलिए
उसने भी तुझे ठुकरा दिया है कि तू राजा
न रहे।”[10]

24 तब शाऊल ने शमूएल से कहा,
“मैंने पाप किया है। मैंने यहोवा के आदेश
के खिलाफ काम किया और तेरी हिदाय-
तें नहीं मानीं, क्योंकि मैं लोगों से डर
गया था और मैंने उनकी बात मान ली।
25 अब तू दया करके मेरा पाप माफ

15:15 * या “उन पर तरस खाया।”

15:23 * यानी कुल देवता; मूरतें।

अध्य. 15
1 1शम 13:13; 1शम 15:3
2 1शम 16:1
3 यह 15:20, 55
4 2शम 18:18
5 1शम 15:3
6 1शम 15:10, 11
7 1शम 9:16; 1शम 10:1
8 1शम 9:21; 1शम 10:22
9 1शम 15:3
10 व्य 25:19

दूसरा कॉल.
1 व्य 13:17; 1शम 15:9
2 लैव 27:29; व्य 7:16; 1शम 15:3, 9
3 1शम 15:15
4 यश 1:11
5 नीत 21:3; हो 6:6; मर 12:33
6 लैव 3:16
7 1शम 12:15
8 लैव 20:6; व्य 18:10, 12; 1इत 10:13
9 1शम 15:3
10 1शम 13:14; 1शम 16:1; प्रेष 13:22

कर दे और मेरे साथ चल ताकि मैं यहोवा को दंडवत करूँ।”[1] **26** मगर शमूएल ने शाऊल से कहा, “मैं तेरे साथ नहीं आऊँगा, क्योंकि तूने यहोवा की आज्ञा ठुकरा दी है और यहोवा ने भी तुझे ठुकरा दिया है और तू इसराएल पर आगे राजा नहीं रहेगा।”[2] **27** जैसे ही शमूएल मुड़कर जाने लगा, शाऊल ने उसके बिन आस्तीन के बागे का छोर पकड़ लिया और बागे का छोर फटकर अलग हो गया। **28** तब शमूएल ने उससे कहा, “इसी तरह आज यहोवा ने इसराएल का राज तुझसे छीनकर अलग कर दिया है। वह इसे तेरे किसी संगी को दे देगा जो तुझसे ज़्यादा अच्छा है।[3] **29** इसराएल के महाप्रतापी[4] की बात कभी झूठी साबित नहीं होगी[5] और उसने जो सोचा है उसे कभी नहीं बदलेगा,* क्योंकि वह कोई अदना इंसान नहीं कि अपनी सोच बदले।”#[6]

30 तब शाऊल ने कहा, “मैंने पाप किया है। मगर मेहरबानी करके मेरे लोगों के प्रधानों के सामने और इसराएल के सामने मेरा सम्मान कर। मेरे साथ लौट ताकि मैं तेरे परमेश्वर यहोवा को दंडवत करूँ।”[7] **31** तब शमूएल शाऊल के साथ लौटा और शाऊल ने यहोवा को दंडवत किया। **32** शमूएल ने कहा, “अमालेकियों के राजा अगाग को मेरे पास लाओ।” तब अगाग डरते-झिझकते* शमूएल के पास गया, मगर फिर उसने मन में सोचा, ‘अब तो ज़रूर मुझ पर से मौत का खतरा टल गया होगा।’ **33** मगर शमूएल ने उससे कहा, “जैसे तूने अपनी तलवार से बच्चों को मार-

अध्य. 15

1 1शम 15:30
2 1शम 13:14; 1शम 16:1
3 1शम 13:14; 1शम 16:12, 13; प्रेष 13:22
4 1इत 29:11
5 तीत 1:2; इब्र 6:18
6 गि 23:19
7 1शम 15:25

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 17:14; व्य 25:19; 1शम 15:3
2 1शम 16:1
3 1शम 15:11

अध्य. 16

4 1शम 15:35
5 1शम 15:23, 26
6 1रा 1:39
7 रूत 4:17; 1इत 2:12
8 उत 49:10; 1शम 13:14; भज 78:70; प्रेष 13:22
9 1शम 22:17
10 भज 89:20
11 रूत 4:11; 1शम 20:6

कर उनकी माँओं को बेऔलाद कर दिया, उसी तरह तुझे भी मार डाला जाएगा ताकि तेरी माँ भी बेऔलाद हो जाए।” यह कहने के बाद शमूएल ने गिलगाल में यहोवा के सामने अगाग के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।[1]

34 फिर शमूएल रामाह चला गया और शाऊल गिबा में अपने घर लौट गया। **35** इसके बाद शमूएल ने जीते-जी कभी शाऊल का मुँह नहीं देखा। वह शाऊल की वजह से शोक मनाता रहा।[2] यहोवा को भी दुख हुआ कि उसने शाऊल को इसराएल का राजा बनाया था।[3]

16 कुछ समय बीतने पर यहोवा ने शमूएल से कहा, “तू कब तक शाऊल के लिए शोक मनाता रहेगा?[4] मैंने उसे ठुकरा दिया है। वह आगे इसराएल का राजा नहीं रहेगा।[5] तू सींग में तेल[6] भरकर बेतलेहेम के रहनेवाले यिशै[7] के घर जा क्योंकि मैंने उसके बेटों में से एक को राजा चुना है।”[8] **2** मगर शमूएल ने कहा, “मैं वहाँ कैसे जा सकता हूँ? अगर शाऊल को पता चल गया तो वह मुझे जान से मार डालेगा।”[9] यहोवा ने उससे कहा, “तू अपने साथ एक गाय लेकर जाना और कहना, ‘मैं यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाने आया हूँ।’ **3** तू यिशै को बलिदान के मौके पर आने के लिए कहना। तब मैं तुझे बताऊँगा कि तुझे क्या करना है। मैं तुझे दिखाऊँगा कि मैंने किसे चुना है, तू मेरी तरफ से उसका अभिषेक करना।”[10]

4 शमूएल ने ठीक वैसा ही किया जैसा यहोवा ने उसे बताया था। जब वह बेतलेहेम[11] गया तो वहाँ के प्रधान डरते-काँपते उससे मिलने आए। उन्होंने उससे पूछा, “तू शांति के इरादे से ही आया है न?” **5** उसने कहा, “हाँ, मैं शांति के

15:29 *या “वह नहीं पछताएगा।” #या “जो पछताए।” **15:32** *या शायद, “निडर होकर।”

इरादे से ही आया हूँ। मैं यहोवा के लिए
बलिदान चढ़ाने आया हूँ। तुम सब खुद
को पवित्र करो और मेरे साथ बलिदान
चढ़ाने आओ।" फिर उसने यिशै और
उसके बेटों को पवित्र किया और उन्हें
बलिदान चढ़ाने के लिए आने को कहा।
6 जब वे वहाँ आए तो शमूएल की नज़र
एलीआब[1] पर पड़ी और उसने मन में
सोचा, "ज़रूर यही यहोवा का अभिषिक्त
जन होगा।" **7** मगर यहोवा ने शमूएल
से कहा, "उसके रंग-रूप या उसके
ऊँचे कद पर मत जा[2] क्योंकि मैंने उसे
ठुकरा दिया है। परमेश्वर का देखना
इंसान के देखने जैसा नहीं है। इंसान सिर्फ
बाहरी रूप देखता है, मगर यहोवा दिल
देखता है।"[3] **8** फिर यिशै ने अबीना-
दाब[4] को बुलाया और उसे शमूएल के
सामने खड़ा किया। मगर शमूएल ने
कहा, "यहोवा ने इसे भी नहीं चुना है।"
9 तब यिशै ने शम्माह[5] को शमूएल के
सामने खड़ा किया, मगर शमूएल ने
कहा, "यहोवा ने इसे भी नहीं चुना है।"
10 इस तरह यिशै अपने सात बेटों को
शमूएल के सामने लाया मगर शमूएल ने
उससे कहा, "यहोवा ने इनमें से किसी को
भी नहीं चुना है।"

11 आखिर में शमूएल ने यिशै से
पूछा, "क्या तेरे इतने ही बेटे हैं?"
उसने कहा, "नहीं, एक और लड़का है,
सबसे छोटा।[6] वह भेड़ चराने गया है।"[7]
शमूएल ने यिशै से कहा, "उसे भी बुलवा
क्योंकि जब तक वह नहीं आता हम भोज
के लिए नहीं बैठेंगे।" **12** तब यिशै ने
अपने सबसे छोटे बेटे को बुलवाया और
उसे अंदर लाया। वह लड़का बहुत
सुंदर था, उसका रंग गुलाबी था और
आँखें खूबसूरत थीं।[8] यहोवा ने शमूएल
से कहा, "उठ, इसका अभिषेक कर, मैंने
इसी को चुना है!"[1] **13** तब शमूएल ने
तेल-भरा सींग[2] लेकर उस लड़के के
भाइयों के सामने उसका अभिषेक किया।
उस दिन से यहोवा की पवित्र शक्ति
दाविद पर काम करने लगी।[3] बाद में
शमूएल उठा और रामाह[4] लौट गया।

14 मगर शाऊल पर यहोवा की
पवित्र शक्ति ने काम करना छोड़ दिया
था।[5] यहोवा ने शाऊल की बुरी फित-
रत को उस पर हावी होने दिया जिस
वजह से वह हमेशा खौफ में रहता था।[6]
15 शाऊल के सेवकों ने उससे कहा,
"देख, परमेश्वर ने तुझ पर बुरी फित-
रत हावी होने दी है जिस वजह से तू
हमेशा खौफ में रहता है। **16** इसलिए
मालिक, अपने सेवकों को हुक्म दे कि
हम तेरे लिए एक ऐसा आदमी ढूँढ़
लाएँ जो सुरमंडल बजाने में हुनरमंद
हो।[7] जब भी परमेश्वर तुझ पर बुरी
फितरत हावी होने दे, तो वह आदमी
तेरे लिए सुरमंडल बजाएगा और तेरे मन
को सुकून मिलेगा।" **17** तब शाऊल ने
अपने सेवकों से कहा, "ठीक है, तुम
ऐसा ही करो। जाओ मेरे लिए कोई
ऐसा आदमी ढूँढ़ो जो साज़ बजाने में हुनर-
मंद हो। उसे मेरे पास लाओ।"

18 उसके एक सेवक ने कहा, "मैं एक
लड़के को जानता हूँ जो बहुत बढ़िया साज़
बजाता है। वह बेतलेहेम के रहनेवाले
यिशै का बेटा है। वह लड़का बड़ा
हिम्मतवाला है, जाँबाज़ सैनिक है।[8] वह
बोलने में माहिर है और दिखने में सुंदर-
सजीला है[9] और यहोवा उसके साथ
है।"[10] **19** तब शाऊल ने अपने दूतों
के हाथ यिशै के पास यह संदेश भेजा: "तू
अपने बेटे दाविद को, जो भेड़ें चराता है,
मेरे पास भेज।"[11] **20** तब यिशै ने एक
गधे पर रोटियाँ और दाख-मदिरा की एक

अध्य. 16
1 1शम 17:28, 1इत 2:13
2 1शम 10:21, 23
3 1रा 8:39, 1इत 28:9, भज 7:9, नीत 24:12, यिर्म 17:10, प्रेष 1:24
4 1शम 17:13, 1इत 2:13
5 2शम 13:3
6 1शम 17:14
7 2शम 7:8, भज 78:70
8 1शम 17:42

दूसरा कॉल.
1 1शम 13:14, भज 89:20, प्रेष 13:22
2 1शम 16:1, 1रा 1:39
3 गि 11:17, न्या 3:9, 10, 1शम 10:6, 2शम 23:2
4 1शम 1:1, 19
5 1शम 18:12, 1शम 28:15
6 1शम 18:10, 1शम 19:9
7 नीत 22:29
8 1शम 17:32, 36, 1शम 17:45, 46
9 1शम 16:12
10 1शम 18:12
11 1शम 17:15

मशक लादी और एक बकरी का बच्चा
लिया और यह सब अपने बेटे दाविद
के साथ शाऊल के पास भेजा। **21** इस
तरह दाविद, शाऊल के पास आया
और उसकी सेवा करने लगा।[1] शाऊल
को दाविद से बहुत लगाव हो गया और
दाविद उसका हथियार ढोनेवाला सेवक
बन गया। **22** शाऊल ने यिशै के पास
यह संदेश भेजा: "मेहरबानी करके दाविद
को मेरे पास ही रहने दे ताकि वह
मेरी सेवा करे। मैं उससे बहुत खुश हूँ।"
23 जब भी परमेश्वर शाऊल पर बुरी
फितरत हावी होने देता तो दाविद सुर-
मंडल बजाता। उसे सुनकर शाऊल के
मन को सुकून मिलता और वह अच्छा
महसूस करता और उसकी बुरी फितरत
दूर हो जाती।[2]

17 पलिश्ती लोग[3] अपनी सेना की
टुकड़ियाँ लेकर इसराएलियों से
युद्ध करने सोकोह[4] में इकट्ठा हुए जो
यहूदा के इलाके में है। उन्होंने
सोकोह और अजेका[5] के बीच एपेस-
दम्मीम[6] में छावनी डाली। **2** शाऊल
और इसराएली आदमी भी इकट्ठा हुए
और उन्होंने एलाह घाटी[7] में छावनी
डाली। वे पलिश्तियों से मुकाबला करने
के लिए दल बाँधकर तैनात हो गए।
3 पलिश्ती लोग एक तरफ के पहाड़
पर तैनात थे और इसराएली दूसरी
तरफ के पहाड़ पर। दोनों के बीच एक
घाटी थी।

4 फिर पलिश्तियों की तरफ से एक
वीर योद्धा उनकी छावनी से निकलकर
आया। उसका नाम गोलियात[8] था और
वह गत[9] का रहनेवाला था। वह करीब
साढ़े नौ फुट* लंबा था। **5** उसके सिर
पर ताँबे का टोप था और उसने ताँबे का
बख्तर*[1] पहन रखा था जिसका वज़न
5,000 शेकेल# था। **6** उसकी टाँगों
पर ताँबे का कवच था और वह अपनी
पीठ पर ताँबे की बरछी[2] लटकाए हुए
था। **7** उसके भाले का डंडा जुलाहे के
लट्ठे जैसा भारी था[3] और भाले के लोहे
के फल का वज़न 600 शेकेल* था।
उसके आगे-आगे उसकी ढाल ढोनेवाला
सैनिक चलता था। **8** गोलियात सामने
आकर खड़ा हो गया और उसने इस-
राएल के सेना-दल को यह कहकर लल-
कारा,[4] "तुम लोग यहाँ दल बाँधकर
क्यों आए हो? मैं पलिश्तियों का माना
हुआ सूरमा हूँ और तुम शाऊल के सेवक
हो। जाओ, अपने लिए कोई ऐसा आदमी
चुन लो जो मेरा मुकाबला कर सके और
उसे भेजो मेरे पास। **9** अगर वह मुझसे
लड़कर मुझे मार गिराए तो हम लोग
तुम्हारे गुलाम बन जाएँगे। लेकिन अगर
मैंने उसे मार डाला तो तुम हमारे दास
बन जाओगे, हमारी गुलामी करोगे।"
10 उस पलिश्ती ने यह भी कहा, "आज
मैं इसराएल की सेना को चुनौती देता हूँ,[5]
भेजो किसी आदमी को मेरे पास। हो जाए
मुकाबला!"

11 जब शाऊल और सारे इसराए-
लियों ने उस पलिश्ती की ये बातें सुनीं
तो वे बहुत डर गए और थर-थर काँपने
लगे।

12 दाविद, यहूदा के बेतलेहेम[6]
एप्राता[7] के रहनेवाले यिशै का बेटा था।

अध्य. 16
1 नीत 22:29
2 1शम 16:14, 1शम 18:10, 1शम 19:9

अध्य. 17
3 न्या 3:1, 3, 1शम 9:16, 1शम 14:52
4 2इत 28:18
5 यह 15:20, 35, यिर्म 34:7
6 1इत 11:12, 13
7 1शम 21:9
8 1शम 17:23
9 यह 11:22, 2शम 21:20, 21

दूसरा कॉल.
1 1शम 17:38, 39, 1रा 22:34
2 1शम 17:45
3 1इत 20:5
4 गि 33:55
5 1शम 17:26, 2रा 19:22
6 1शम 17:58, मी 5:2, मत 2:6
7 उत 35:16, 19, रूत 1:2

17:4 *शा., "छः हाथ एक बित्ता।" अति. ख14 देखें।

17:5 *यह कवच अंदर से कपड़े या चमड़े का बना होता था। इसके ऊपर धातु के टुकड़े ऐसे लगे होते थे जैसे मछली पर छिलकों की कतारें होती हैं। #करीब 57 किलो। अति. ख14 देखें। **17:7** *करीब 6.84 किलो। अति. ख14 देखें।

यिशै[1] के आठ बेटे थे[2] और जब शाऊल राजा था तब तक यिशै बूढ़ा हो चुका था। **13** यिशै के तीन बड़े बेटे शाऊल के साथ युद्ध में गए हुए थे।[3] सबसे बड़ा एलीआब था,[4] दूसरा अबीनादाब[5] और तीसरा शम्माह था।[6] **14** दाविद सबसे छोटा था।[7] उसके वे तीनों बड़े भाई शाऊल के साथ युद्ध में गए हुए थे।

15 दाविद अपने पिता की भेड़ों को चराने[8] के लिए शाऊल के यहाँ से बेतलेहेम आया-जाया करता था। **16** इस बीच वह पलिश्ती आदमी हर दिन सुबह-शाम युद्ध के मैदान में आकर इसराएलियों को ललकारता था। ऐसा वह 40 दिन तक करता रहा।

17 एक दिन यिशै ने अपने बेटे दाविद से कहा, "बेटा, ये एपा-भर* भुना हुआ अनाज और ये दस रोटियाँ लेकर फौरन अपने भाइयों के पास छावनी में जा। **18** और पनीर के ये दस टुकड़े ले जाकर उनके सेना-अधिकारी* को दे आ। तू जाकर अपने भाइयों का हाल-चाल पूछ और उनके पास से कोई ऐसी निशानी ला जिससे मुझे यकीन हो कि वे सही-सलामत हैं।" **19** दाविद के भाई पलिश्तियों से लड़ने[9] के लिए शाऊल और बाकी इसराएली आदमियों के साथ एलाह घाटी में थे।[10]

20 दाविद अगले दिन सुबह जल्दी उठा और उसने अपनी भेड़ों की रखवाली करने का ज़िम्मा किसी और को सौंपा। फिर वह सामान बाँधकर निकल पड़ा, ठीक जैसे उसके पिता यिशै ने उसे आज्ञा दी थी। जब दाविद छावनी के पास पहुँचा, तो उसने देखा कि सेना नारे लगाती हुई युद्ध के मैदान की तरफ बढ़ रही है। **21** इसराएली और पलिश्ती सेना मुकाबले के लिए आमने-सामने तैनात हो गयीं। **22** दाविद ने फौरन अपना सामान उस आदमी के पास छोड़ा जो सामान की रखवाली करता था और दौड़कर युद्ध के मैदान में गया। वहाँ उसने अपने भाइयों की खैरियत पूछी।[1]

23 दाविद उनसे बात कर ही रहा था कि तभी पलिश्तियों की सेना में से उनका सूरमा गोलियात[2] निकलकर सामने आया, जो गत से था। उसने हर दिन की तरह इसराएलियों को ललकारा[3] और दाविद ने यह सब सुना। **24** जब इसराएली आदमियों ने उस योद्धा को देखा तो वे सब डर के मारे भाग खड़े हुए।[4] **25** वे एक-दूसरे से कह रहे थे, "देखा उस आदमी को? कैसे इसराएल को ललकारता है।[5] राजा ने कहा है कि जो उस पलिश्ती को मार डालेगा उसे वह खूब सारी दौलत देगा, उससे अपनी बेटी की शादी कराएगा[6] और उसके पिता के घराने को कर और सेवा से छूट दे देगा।"

26 दाविद ने पास खड़े आदमियों से पूछा, "उस पलिश्ती को जो मार डालेगा और इसराएल को बदनाम होने से बचाएगा उसे क्या इनाम मिलेगा? उस खतनारहित पलिश्ती की यह मजाल कि वह जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे?"[7] **27** तब उन आदमियों ने दाविद को वही बात बतायी, "जो उस आदमी को मार डालेगा उसे ये-ये दिया जाएगा।" **28** जब दाविद के बड़े भाई एलीआब[8] ने उसे वहाँ खड़े आदमियों से बात करते देखा तो वह दाविद पर भड़क उठा और कहने लगा, "तू यहाँ क्यों आया है? तू उन थोड़ी-सी भेड़ों को वीराने में किसके पास छोड़ आया?[9] तू सबकुछ छोड़-छाड़कर युद्ध

17:17 *करीब 22 ली. अति. ख14 देखें।
17:18 *या "हज़ारों के प्रधान।"

अध्य. 17
1 रूत 4:22
2 1इत 2:13-15
3 गि 1:3
4 1शम 16:6
5 1शम 16:8
6 1शम 16:9
7 1इत 2:13, 15
8 1शम 16:11, 19
9 1शम 9:16, 17
10 1शम 17:2 1शम 21:9

दूसरा कॉल.
1 1शम 17:17, 18
2 1शम 17:4
3 1शम 17:10
4 1शम 17:11
5 1शम 17:10
6 यह 15:16 1शम 14:49 1शम 18:17, 21
7 1शम 17:10 यिर्म 10:10
8 1शम 16:6, 7 1इत 2:13
9 1शम 17:20

का नज़ारा देखने चला आया? इतनी
गुस्ताखी! मैं जानता हूँ, तेरा दिल साफ
नहीं है।" **29** तब दाविद ने कहा, "मैंने
कौन-सा बड़ा गुनाह कर दिया? बस
एक सवाल ही तो पूछा है!" **30** इस-
लिए दाविद किसी और के पास गया और
उससे भी वही सवाल पूछा।[1] उन लोगों ने
भी वही जवाब दिया।[2]

31 कुछ आदमियों ने दाविद की
बात सुन ली थी और जाकर इस बारे
में शाऊल को बताया। तब शाऊल
ने दाविद को अपने पास बुलवाया।
32 दाविद ने शाऊल से कहा, "उस
पलिश्ती की वजह से किसी का मन कच्चा
न हो।* तेरा यह दास उससे लड़ेगा।"[3]
33 मगर शाऊल ने कहा, "तू उस
पलिश्ती से कैसे लड़ सकता है? तू बस
एक छोटा-सा लड़का है[4] और वह लड़क-
पन से सैनिक* रहा है।" **34** तब
दाविद ने कहा, "तेरा यह दास अपने
पिता की भेड़ों का चरवाहा भी है। एक
बार जब एक शेर[5] मेरी एक भेड़ को उठा-
कर ले जाने लगा और दूसरी बार एक
भालू एक भेड़ को उठाकर ले जाने लगा,
35 तो मैंने उनका पीछा किया और उन्हें
मारा और भेड़ को उनके मुँह से बचाया।
जब उन जानवरों ने मुझ पर हमला किया
तो मैंने उनके बाल कसकर पकड़ लिए*
और उन्हें गिराकर मार डाला। **36** तेरे
दास ने शेर और भालू, दोनों को मार
डाला। इस खतनारहित पलिश्ती का भी
वही अंजाम होगा क्योंकि इसने जीवित
परमेश्वर की सेना को ललकारा है।"[6]
37 दाविद ने यह भी कहा, "यहोवा,
जिसने मुझे शेर और भालू के पंजों से
बचाया था, वही मुझे इस पलिश्ती के हाथ
से भी बचाएगा।"[1] तब शाऊल ने दाविद
से कहा, "जा, यहोवा तेरे साथ रहे।"

38 फिर शाऊल ने दाविद को अपने
कपड़े पहनाए। उसने दाविद के सिर पर
ताँबे का टोप रखा और उसे एक बख्तर
पहनाया। **39** फिर दाविद ने शाऊल
की तलवार अपने कपड़ों पर बाँध ली
और चलने की कोशिश की, मगर वह
चल नहीं पाया क्योंकि वह इन सबका
आदी नहीं था। दाविद ने शाऊल से
कहा, "मैं यह सब पहनकर नहीं चल पा
रहा हूँ, मुझे इनकी आदत नहीं है।"
इसलिए दाविद ने वह सब उतार दिया।
40 उसने हाथ में अपनी लाठी ली और
घाटी से पाँच चिकने-चिकने पत्थर चुने
और अपनी चरवाहे की थैली में रखे।
उसके हाथ में उसका गोफन था।[2] फिर
वह उस पलिश्ती की तरफ बढ़ने लगा।

41 वह पलिश्ती कदम बढ़ाता हुआ
दाविद की तरफ आने लगा और उसकी
ढाल ढोनेवाला सैनिक उसके आगे-आगे
चल रहा था। **42** जब उस पलिश्ती की
नज़र दाविद पर पड़ी तो उसने दाविद को
नीची नज़रों से देखा। उसने दाविद
की खिल्ली उड़ायी क्योंकि वह बस एक
सुंदर-सा लड़का था जिससे लाली झलक-
ती थी।[3] **43** उस पलिश्ती ने दाविद से
कहा, "क्या मैं कुत्ता हूँ[4] जो तू डंडा
लेकर मुझे भगाने आया है?" फिर वह
अपने देवताओं के नाम से दाविद को शाप
देने लगा। **44** उस पलिश्ती ने दाविद
से कहा, "आ जा, मैं तुझे मारकर तेरा
माँस आकाश के पक्षियों और मैदान के
जानवरों को खिला दूँगा।"

45 तब दाविद ने उस पलिश्ती से
कहा, "तू तलवार, भाला और बरछी
लेकर मुझसे लड़ने आ रहा है,[5] मगर मैं

अध्य. 17
1 1शम 17:26
2 1शम 17:25
3 1शम 16:18
4 1शम 17:42
5 यश 31:4
6 1शम 17:10; यिर्म 10:10

दूसरा कॉल.
1 व्य 7:21; 2रा 6:16; इब्र 11:32-34
2 न्या 20:15, 16
3 1शम 16:12; 1शम 17:33
4 1शम 24:14; 2शम 16:9; 2रा 8:13
5 1शम 17:4, 6

17:32 *या "कोई हिम्मत न हारे।" **17:33** *या "एक वीर योद्धा।" **17:35** *या "उन्हें जबड़े से पकड़ा।"

सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के नाम से आ रहा हूँ,[1] इसराएल की सेना के परमेश्वर के नाम से जिसे तूने ललकारा है।[2] **46** आज ही के दिन यहोवा तुझे मेरे हाथ में कर देगा[3] और मैं तुझे मार डालूँगा और तेरा सिर काट डालूँगा। आज मैं सभी पलिश्ती सैनिकों की लाशें आकाश के पक्षियों और धरती के जंगली जानवरों को खिला दूँगा। तब धरती के सब लोग जान जाएँगे कि इसराएल का परमेश्वर ही सच्चा परमेश्वर है।[4] **47** और यहाँ जितने लोग इकट्ठा हैं वे सब जान जाएँगे* कि अपने लोगों को बचाने के लिए यहोवा को तलवार या भाले की ज़रूरत नहीं,[5] क्योंकि युद्ध यहोवा का है[6] और वह तुम सबको हमारे हाथ में कर देगा।”[7]

48 तब वह पलिश्ती दाविद का सामना करने के लिए आगे बढ़ने लगा, मगर दाविद उसका मुकाबला करने पलिश्ती सेना की तरफ फुर्ती से दौड़ा। **49** दाविद ने अपनी थैली से एक पत्थर निकालकर गोफन में रखा और उस पलिश्ती की तरफ ऐसा फेंका कि वह सीधे जाकर उसके माथे पर लगा और अंदर धँस गया। वह पलिश्ती वहीं मुँह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा।[8] **50** इस तरह दाविद ने गोफन और एक पत्थर से उस पलिश्ती को हराया। उसने बिना तलवार के उस पलिश्ती का काम तमाम कर दिया।[9] **51** दाविद दौड़ा-दौड़ा गया और उस पलिश्ती के ऊपर खड़ा हो गया। उसने उस आदमी की म्यान से तलवार निकाली[10] और उसका सिर काट डाला ताकि यह पक्का हो जाए कि वह मर चुका है। जब पलिश्तियों ने देखा कि उनका सूरमा मर गया है तो वे सब भाग गए।[1]

52 यह सब देखकर इसराएल और यहूदा के आदमी खुशी से चिल्लाने लगे। वे पलिश्तियों का पीछा करने लगे और घाटी[2] से लेकर एक्रोन[3] के फाटकों तक उनका घात करते गए। शारैम[4] से लेकर दूर गत और एक्रोन तक, पूरे रास्ते पर उनकी लाशें बिछ गयीं। **53** इस तरह इसराएलियों ने पलिश्तियों का बेतहाशा पीछा किया और वापस आकर उनकी छावनियाँ लूट लीं।

54 फिर दाविद उस पलिश्ती का सिर उठाकर यरूशलेम ले आया, मगर उसके हथियार उसने अपने तंबू में रखे।[5]

55 जब शाऊल ने दाविद को उस पलिश्ती का सामना करने के लिए जाते देखा तो उसने अपने सेनापति अब्नेर[6] से पूछा, “अब्नेर, यह किसका लड़का है?”[7] अब्नेर ने कहा, “हे राजा, तेरे जीवन की शपथ, मैं नहीं जानता!” **56** राजा ने उससे कहा, “पता लगाओ कि यह नौजवान किसका बेटा है।” **57** इसलिए जैसे ही दाविद उस पलिश्ती को मार डालने के बाद लौटा, अब्नेर उसे शाऊल के पास लाया। दाविद के हाथ में उस पलिश्ती का सिर था।[8] **58** शाऊल ने उससे पूछा, “तू किसका बेटा है?” दाविद ने कहा, “मैं तेरे दास यिशै का बेटा हूँ[9] जो बेतलेहेम का रहनेवाला है।”[10]

18

दाविद और शाऊल की इस बातचीत के बाद, योनातान[11] और दाविद के बीच गहरी दोस्ती हो गयी और वह अपनी जान के बराबर दाविद से प्यार करने लगा।[12] **2** उस दिन से शाऊल ने दाविद को अपने पास रख लिया और उसे अपने पिता के घर लौटने नहीं दिया।[13] **3** योनातान और दाविद ने

17:47 *शा., “यह पूरी मंडली जान जाएगी।”

अध्य. 17
1 2शम 5:10; इब्र 11:32-34
2 1शम 17:10; 2रा 19:22
3 व्य 9:1-3; यह 10:8
4 निर्ग 9:16; व्य 28:10; 1रा 8:43; 2रा 19:19; दान 3:29
5 भज 44:6, 7; जक 4:6
6 2इत 20:15; नीत 21:31
7 व्य 20:4
8 1शम 17:37; 2शम 21:22
9 न्या 3:31; न्या 15:15, 16; 1शम 17:47
10 1शम 21:9

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:7; यह 23:10; इब्र 11:32-34
2 1शम 17:2, 19
3 यह 15:20, 45
4 यह 15:20, 36
5 1शम 21:9
6 1शम 14:50
7 1शम 16:19, 21
8 1शम 17:54
9 रूत 4:22; 1शम 16:1; 1इत 2:13, 15; मत 1:6; लूक 3:23, 32; प्रेष 13:22
10 1शम 17:12

अध्य. 18
11 1शम 14:1, 49
12 1शम 19:2; 1शम 20:17, 41; 2शम 1:26
13 1शम 8:11; 1शम 16:22; 1शम 17:15

आपस में दोस्ती का करार किया[1] क्योंकि
योनातान दाविद से अपनी जान के बरा-
बर प्यार करता था।[2] **4** योनातान ने
अपना बिन आस्तीन का बागा उतारकर
दाविद को दिया। उसने अपनी सैनिक की
पोशाक, तलवार, कमान और कमरबंद
भी उसे दिया। **5** दाविद युद्ध में जाने
लगा। शाऊल उसे जहाँ कहीं भेजता
वह जीतकर आता।*[3] इसलिए शाऊल
ने उसे अपने सैनिकों का अधिकारी
बना दिया[4] और इससे शाऊल के सेवक
और बाकी सभी लोग खुश हुए।

6 जब दाविद और दूसरे सैनिक
पलिश्तियों को मारकर लौटते तो इस-
राएल के सभी शहरों से औरतें खुशी
से डफली[5] और चिकारा बजाती और
नाचती-गाती हुई[6] राजा शाऊल का
स्वागत करने बाहर आती थीं। **7** वे
यह गीत गाती हुई जश्न मनाती थीं,

> “शाऊल ने मारा हज़ारों को,
> दाविद ने मारा लाखों को!”[7]

8 यह गीत सुनकर शाऊल को बहुत
बुरा लगा और उसे बहुत गुस्सा आया।[8]
उसने मन में कहा, “वे कहती हैं, दाविद
ने लाखों को मारा है और मैंने सिर्फ हज़ारों
को। अब राजपाट के सिवा उसे और
क्या मिलना बाकी है!”[9] **9** उस दिन से
शाऊल हर वक्त दाविद को शक की
निगाह से देखने लगा।

10 अगले दिन शाऊल पर उसकी
बुरी फितरत हावी हो गयी[10] और पर-
मेश्वर ने ऐसा होने दिया। उस दिन जब
दाविद हमेशा की तरह शाऊल के घर
में सुरमंडल बजा रहा था[11] तो शाऊल
अजीबो-गरीब हरकत* करने लगा।
उसके हाथ में एक भाला था[1] **11** और
उसने यह सोचकर वह भाला दाविद की
तरफ ज़ोर से फेंका[2] कि मैं दाविद को
दीवार में ठोंक दूँगा! उसने दो बार
ऐसा किया, मगर दोनों बार दाविद बच
निकला। **12** शाऊल दाविद से डरने
लगा क्योंकि उसने देखा कि यहोवा दाविद
के साथ है,[3] जबकि उसने शाऊल को
छोड़ दिया है।[4] **13** इसलिए शाऊल ने
दाविद को अपनी नज़रों से दूर कर
दिया और उसे एक हज़ार सैनिकों का
अधिकारी ठहराया। दाविद अपनी सेना
को लेकर युद्ध में जाया करता था।*[5]
14 वह अपने हर काम में कामयाब हो
रहा* था[6] और यहोवा उसके साथ था।[7]
15 और जब शाऊल ने देखा कि दाविद
बहुत कामयाब हो रहा है, तो वह उससे
डरने लगा। **16** मगर सारा इसराएल
और यहूदा दाविद से बहुत प्यार करता
था क्योंकि वह युद्धों में उनकी अगुवाई
करता था।

17 बाद में शाऊल ने दाविद से कहा,
“मैं अपनी बड़ी बेटी मेरब[8] की शादी
तुझसे करा दूँगा,[9] मगर तू मेरे लिए एक
वीर योद्धा बना रह और यहोवा की तरफ
से युद्ध करता रह।”[10] दरअसल शाऊल
ने सोचा, ‘अगर वह युद्ध में जाएगा तो
पलिश्तियों के हाथों मारा जाएगा और
मुझे अपने हाथ उसके खून से नहीं रंगने
पड़ेंगे।’[11] **18** तब दाविद ने शाऊल से
कहा, “मैं क्या हूँ, इसराएल में मेरे पिता
के घराने और रिश्तेदारों की हैसियत ही
क्या है जो मैं राजा का दामाद बनूँ?”[12]
19 लेकिन जब शाऊल की बेटी मेरब
की शादी दाविद से कराने का वक्त

18:5 *या “वहाँ बुद्धिमानी से काम करता।”
18:10 *या “भविष्यवक्ता जैसा बरताव।”
18:13 *शा., “वह लोगों के सामने आया-जाया करता था।” **18:14** *या “अपना हर काम बुद्धिमानी से करता।”

अध्य. 18
1 1शम 20:8, 42; 1शम 23:18; 2शम 9:1; 2शम 21:7
2 नीत 17:17; नीत 18:24
3 1शम 18:30
4 1शम 14:52
5 न्या 11:34
6 निर्ग 15:20, 21; न्या 5:1
7 1शम 21:11; 1शम 29:5
8 उत 4:5; नीत 14:30
9 1शम 13:14; 1शम 15:27, 28; 1शम 16:13; 1शम 20:31; 1शम 24:17, 20
10 1शम 16:14
11 1शम 16:16, 23

दूसरा कॉल.
1 1शम 19:9, 10
2 1शम 20:33
3 1शम 18:28, 29
4 1शम 16:14
5 2शम 5:2
6 1शम 18:5
7 उत 39:2; यह 6:27; 1शम 10:7; 1शम 16:18
8 1शम 14:49
9 1शम 17:25
10 1शम 25:28
11 1शम 18:25
12 2शम 7:18

आया तो पता चला कि शाऊल ने मेरब
की शादी पहले ही महोलाई अदरीएल[1] से
करा दी है।

20 शाऊल की बेटी मीकल[2] को
दाविद से प्यार हो गया था। यह बात
जब शाऊल को बतायी गयी तो वह
बहुत खुश हुआ। 21 उसने सोचा, "यह
अच्छा मौका है दाविद को फँसाने का,
मैं अपनी बेटी की शादी उससे कराने के
लिए उसके सामने ऐसी शर्त रखूँगा कि वह
पलिश्तियों के हाथों मार डाला जाए।"[3]
शाऊल ने एक और बार दाविद से कहा,
"आज तू मुझसे रिश्तेदारी करेगा।"*
22 शाऊल ने अपने सेवकों को आदेश
दिया, "तुम लोग चुपके से दाविद से
कहो, 'देख, राजा तुझसे बहुत खुश है
और उसके सभी सेवक भी तुझे पसंद
करते हैं। इसलिए तू राजा से रिश्तेदारी
कर ले।'" 23 जब शाऊल के सेवकों
ने दाविद को यह बात बतायी तो उसने
कहा, "मैं कैसे राजा से रिश्तेदारी कर लूँ?
मैं ठहरा एक गरीब आदमी, मेरा न कोई
नाम है न रुतबा।"[4] 24 तब शाऊल के
सेवकों ने उसे बताया कि दाविद ने ऐसा-
ऐसा कहा है।

25 शाऊल ने उनसे कहा, "तुम
जाकर दाविद से कहो, 'राजा को महर[5]
में कुछ नहीं चाहिए, बस उसे पलिश्तियों
की 100 खलड़ियाँ चाहिए।[6] वह अपने
दुश्मनों से बदला लेना चाहता है।'" दर-
असल यह शाऊल की साज़िश थी क्योंकि
वह चाहता था कि दाविद पलिश्तियों
के हाथों मारा जाए। 26 उसके सेवकों
ने जाकर शाऊल की ये बातें दाविद
को बतायीं। दाविद को शाऊल से रिश्ते-
दारी करने की बात अच्छी लगी।[7]
दाविद तय समय से पहले ही 27 अपने
आदमियों को लेकर निकल पड़ा और
उसने 200 पलिश्ती आदमियों को मार
डाला और उन सबकी खलड़ियाँ राजा
के पास लाया ताकि राजा से रिश्ते-
दारी कर सके। इसलिए शाऊल ने अपनी
बेटी मीकल की शादी दाविद से करा
दी।[1] 28 शाऊल को एहसास हो गया
कि यहोवा दाविद के साथ है[2] और उसकी
बेटी मीकल दाविद से प्यार करती है।[3]
29 इस वजह से शाऊल, दाविद से और
डरने लगा और सारी ज़िंदगी उसका
दुश्मन बना रहा।[4]

30 पलिश्तियों के हाकिम इसराए-
लियों से युद्ध करने आते थे। जब भी वे
आते तो दाविद शाऊल के बाकी सभी
आदमियों से ज़्यादा जीत हासिल करता
था।*[5] इसलिए दाविद के नाम की बहुत
इज़्ज़त की जाने लगी।[6]

19 बाद में शाऊल ने अपने बेटे
योनातान और अपने सभी
सेवकों से दाविद को मार डालने के बारे
में बात की।[7] 2 मगर योनातान दाविद
को बहुत पसंद करता था[8] इसलिए उसने
दाविद को बताया, "मेरा पिता शाऊल
तुझे मार डालना चाहता है। कल सुबह
तू ज़रा बचकर रहना। किसी ऐसी जगह
छिप जाना जहाँ तू नज़र न आए और वहीं
रहना। 3 मैं अपने पिता के साथ उस
मैदान में खड़ा रहूँगा जहाँ तू छिपा होगा।
मैं उससे तेरे बारे में बात करूँगा और
अगर मुझे कुछ और पता चलेगा तो तुझे
ज़रूर बताऊँगा।"[9]

4 फिर योनातान ने अपने पिता
शाऊल को दाविद के बारे में अच्छी बातें

18:21 *या "मेरा दामाद बनेगा।"

18:30 *या "ज़्यादा बुद्धिमानी से काम करता था।"

अध्य. 18
1 2शम 21:8
2 1शम 14:49; 1शम 19:11; 1शम 25:44; 2शम 3:13; 2शम 6:16
3 1शम 18:17
4 1शम 18:18
5 उत 29:18
6 1शम 17:26, 36; 2शम 3:14
7 1शम 18:21

दूसरा कॉल.
1 1शम 17:25
2 1शम 16:13; 1शम 24:17, 20
3 1शम 18:20
4 1शम 18:9, 12; 1शम 20:33
5 1शम 18:5
6 2शम 7:9

अध्य. 19
7 1शम 18:9; नीत 27:4
8 1शम 18:1; नीत 18:24
9 1शम 20:9, 13; नीत 17:17

बतायीं।[1] उसने शाऊल से कहा, “हे
राजा, अपने सेवक दाविद के खिलाफ
कोई पाप मत कर, क्योंकि उसने तेरे
खिलाफ कोई पाप नहीं किया है बल्कि
हमेशा तेरी भलाई के लिए ही काम किया
है। **5** उसने अपनी जान हथेली पर
रखकर उस पलिश्ती को मार डाला था[2]
और इस वजह से यहोवा ने पूरे इसराएल
को शानदार जीत दिलायी थी।* तूने खुद
अपनी आँखों से यह सब देखा था और
उस वक्त तू खुशी से फूला नहीं समाया
था। फिर अब क्यों तू बेवजह दाविद को
मार डालना चाहता है और एक बेगुनाह
का खून अपने सिर लेना चाहता है?”[3]
6 शाऊल ने योनातान की बात मान
ली और शपथ खाकर कहा, “यहोवा के
जीवन की शपथ, मैं उसकी जान नहीं
लूँगा।” **7** बाद में योनातान ने दाविद
को बुलाया और उसे यह सब बताया।
फिर योनातान दाविद को शाऊल के
पास ले गया और दाविद पहले की तरह
शाऊल की सेवा करने लगा।[4]

8 कुछ समय बाद, इसराएलियों और
पलिश्तियों के बीच एक बार फिर युद्ध
छिड़ गया। दाविद पलिश्तियों से लड़ने
गया और उसने बड़ी तादाद में पलिश्ति-
यों को मार डाला। वे उसके सामने से
भाग गए।

9 जब शाऊल हाथ में भाला लिए
अपने घर पर बैठा था और दाविद सुर-
मंडल पर संगीत बजा रहा था, तो
शाऊल पर उसकी बुरी फितरत हावी हो
गयी और यहोवा ने ऐसा होने दिया।[5]
10 शाऊल ने अपना भाला दाविद पर
फेंका ताकि उसे दीवार पर ठोंक दे, मगर
दाविद हट गया और भाला दीवार से जा
लगा। उस रात दाविद शाऊल से बच-
कर भाग गया। **11** बाद में शाऊल ने
अपने दूतों को दाविद के घर भेजा
ताकि वे दाविद पर नज़र रखें और
सुबह उसे मार डालें,[1] मगर दाविद की
पत्नी मीकल ने उससे कहा, “अगर आज
रात तू यहाँ से नहीं भागेगा तो कल तक
तू ज़िंदा नहीं बचेगा।” **12** फिर मीकल
ने फौरन दाविद को खिड़की से नीचे
उतार दिया ताकि वह बचकर भाग जाए।
13 मीकल ने कुल देवता की मूरत ली
और उसे पलंग पर लिटा दिया और उसके
सिरहाने बकरी के बालों से बनी एक
जाली रख दी और मूरत पर एक कपड़ा
ओढ़ा दिया।

14 शाऊल ने दाविद को पकड़कर
लाने के लिए अपने दूत भेजे, मगर
मीकल ने उनसे कहा कि वह बीमार है।
15 तब शाऊल ने अपने दूतों को यह
कहकर दाविद के पास भेजा, “तुम उसे
पलंग के साथ ही उठा लाओ ताकि
उसे मार डाला जाए।”[2] **16** मगर जब
वे दूत दाविद के कमरे में गए तो उन्होंने
देखा कि पलंग पर मूरत लिटायी गयी
है और उसके सिरहाने बकरी के बालों
से बनी एक जाली रखी है। **17** शाऊल
ने मीकल से कहा, “तूने मुझे क्यों धोखा
दिया? क्यों मेरे दुश्मन[3] को बचकर
जाने दिया?” मीकल ने शाऊल से कहा,
“उसने मुझे धमकी दी थी कि अगर तू मेरी
मदद नहीं करेगी तो मैं तुझे जान से मार
डालूँगा!”

18 दाविद अपने घर से भागकर शमू-
एल के पास रामाह[4] चला गया था।
उसने शमूएल को बताया कि शाऊल ने
उसके साथ क्या-क्या किया। फिर दाविद
और शमूएल नायोत गए और वहाँ रहने
लगे।[5] **19** कुछ वक्त बाद शाऊल को

अध्य. 19
1 1शम 22:14
2 1शम 17:49
3 1शम 20:32
4 1शम 16:21; 1शम 18:2, 13
5 1शम 16:14; 1शम 18:10, 11

दूसरा कॉल.
1 भज 59:उप, 3
2 1शम 18:9
3 1शम 18:29
4 1शम 7:15, 17
5 1शम 20:1

19:5 *या “उद्धार दिलाया था।”

खबर दी गयी कि दाविद रामाह के
नायोत में है। 20 यह सुनते ही
शाऊल ने दाविद को पकड़ लाने के
लिए अपने दूत भेजे। जब दूत वहाँ
गए तो उन्होंने देखा कि भविष्यवक्ताओं
में से बुज़ुर्ग जन भविष्यवाणी कर रहे
हैं और शमूएल वहाँ खड़ा उनकी अगु-
वाई कर रहा है। फिर परमेश्वर की
पवित्र शक्ति शाऊल के दूतों पर उतरी
और वे भी भविष्यवक्ताओं जैसा बरताव
करने लगे।

21 जब शाऊल को यह सब बताया
गया तो उसने फौरन कुछ और दूत भेजे,
मगर वे भी वहाँ जाकर भविष्यवक्ताओं
जैसा बरताव करने लगे। फिर शाऊल
ने कुछ और दूत भेजे, मगर यह तीसरी
टोली भी भविष्यवक्ताओं जैसा बर-
ताव करने लगी। 22 आखिर में वह
खुद रामाह गया। जब वह सेकू में बड़े
कुंड के पास पहुँचा तो उसने लोगों से
पूछा, “शमूएल और दाविद कहा हैं?”
उन्होंने कहा, “वे रामाह के नायोत में
हैं।”[1] 23 जब शाऊल वहाँ से रामाह
के नायोत जाने लगा तो रास्ते में
परमेश्वर की पवित्र शक्ति उस पर
उतरी और वह भी भविष्यवक्ताओं जैसा
बरताव करने लगा और नायोत तक
वह ऐसा ही करता रहा। 24 उसने
भी अपने कपड़े उतार दिए और शमू-
एल के सामने भविष्यवक्ताओं जैसा बर-
ताव करने लगा। वह सारा दिन और
सारी रात बिन कपड़ों के* वहीं पड़ा
रहा। इसी घटना से यह बात चली, “क्या
शाऊल भी भविष्यवक्ता बन गया?”[2]

20 फिर दाविद रामाह के नायोत से
भाग गया। मगर वह योनातान
के पास गया और उससे कहने लगा,
“मैंने क्या किया है?[1] मेरा कसूर क्या
है? मैंने तेरे पिता का क्या बिगाड़ा
है जो वह मेरी जान के पीछे पड़ा है?”
2 योनातान ने कहा, “देख, ऐसा हर-
गिज़ नहीं हो सकता![2] तू नहीं मरेगा।
मेरा पिता मुझे बताए बगैर कोई काम नहीं
करता, फिर चाहे छोटा काम हो या बड़ा।
अगर उसने तुझे मार डालने की सोची
होती तो मुझे ज़रूर बताता। यह नहीं हो
सकता।” 3 मगर फिर दाविद ने शपथ
खायी और कहा, “तेरा पिता अच्छी तरह
जानता है कि तू मुझ पर मेहरबान है[3]
और उसने कहा होगा, ‘इस बारे में योना-
तान को कुछ मत बताना वरना वह गुस्सा
हो जाएगा।’ मैं यहोवा के जीवन की
शपथ और तेरे जीवन की शपथ खाकर
कहता हूँ, मेरी मौत बहुत करीब है।”[4]

4 योनातान ने दाविद से कहा,
“तू मुझसे जो भी कहेगा, मैं तेरे
लिए करूँगा।” 5 दाविद ने योनातान
से कहा, “कल नए चाँद का दिन है।[5]
मुझे राजा के साथ भोज में बैठना
है। लेकिन अगर तू इजाज़त दे तो
मैं जाकर मैदान में छिप जाऊँगा और
तीसरे दिन की शाम तक वहीं छिपा
रहूँगा। 6 अगर तेरा पिता पूछे कि मैं
भोज में क्यों नहीं आया तो कहना,
दाविद ने मुझसे कहा कि वह जल्द-से-
जल्द अपने शहर बेतलेहेम[6] जाना चाहता
है, क्योंकि वहाँ उसके पूरे परिवार के
लिए सालाना बलिदान चढ़ाया जाएगा।
उसने मुझसे बहुत मिन्नत की इसलिए मैंने
उसे जाने की इजाज़त दे दी।[7] 7 तब
अगर तेरा पिता कहे, ‘ठीक है, कोई बात
नहीं,’ तो इसका मतलब है कि तेरे सेवक
को कोई खतरा नहीं। लेकिन अगर तेरा
पिता गुस्सा हो जाता है तो समझ लेना
कि उसने मेरा बुरा करने की ठान ली है।

अध्य. 19
1 1शम 19:18
2 1शम 10:11

दूसरा कॉल.

अध्य. 20
1 1शम 24:11
भज 18:20
2 1शम 19:6
3 1शम 18:1
1शम 19:2
4 1शम 27:1
5 गि 10:10
2इत 2:4
6 1शम 16:4, 18
7 1शम 20:28, 29

19:24 * या “कम कपड़े पहने।”

8 तू अपने इस सेवक के साथ वफा-
दारी* निभाना[1] क्योंकि तूने यहोवा के
सामने अपने सेवक के साथ करार किया
है।[2] लेकिन अगर मैं दोषी हूँ[3] तो तू खुद
मुझे मार डाल। तू क्यों मुझे अपने पिता
के हवाले करना चाहता है?"
9 तब योनातान ने कहा, "तू यह सोच
भी कैसे सकता है कि मैं तेरे साथ ऐसा
करूँगा? अगर मुझे पता चले कि मेरे
पिता ने तेरा बुरा करने की ठान ली है, तो
मैं तुझे ज़रूर बताऊँगा।"[4] 10 दाविद
ने कहा, "अगर तेरा पिता भड़क उठता
है तो मुझे कौन बताएगा?" 11 योना-
तान ने कहा, "चलो हम दोनों मैदान में
चलते हैं।" फिर वे दोनों मैदान में गए।
12 योनातान ने दाविद से कहा, "मैं इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा को गवाह
मानकर तुझसे वादा करता हूँ कि मैं कल
या परसों इस समय तक पता लगाऊँगा
कि मेरे पिता के दिल में क्या है। अगर
वह तुझसे नाराज़ नहीं है तो मैं तुझे ज़रूर
इसकी खबर दूँगा। 13 और अगर मेरे
पिता ने तेरा बुरा करने का इरादा किया है
तो भी मैं तुझे बताऊँगा। अगर मैंने तुझे
नहीं बताया और खतरे से नहीं बचाया
तो यहोवा मुझ योनातान को कड़ी-से-कड़ी
सज़ा दे। मेरी दुआ है कि यहोवा तेरे साथ
रहे,[5] जैसे वह मेरे पिता के साथ था।[6]
14 तू भी यहोवा की तरह मेरे साथ
वफादारी* निभा, मेरे जीते-जी और मेरी
मौत के बाद भी।[7] 15 तू मेरे घराने
के साथ वफादारी निभाना,[8] तब भी
जब यहोवा तेरे सभी दुश्मनों को धरती
से मिटा देगा।" 16 योनातान ने दाविद
के घराने के साथ एक करार किया और
कहा, "यहोवा दाविद के दुश्मनों से
ज़रूर लेखा लेगा।" 17 तब योनातान
ने अपने प्यार का वास्ता देकर एक बार
फिर दाविद से शपथ खिलवायी क्योंकि
वह दाविद से जान के बराबर प्यार
करता था।[1]
18 फिर योनातान ने दाविद से कहा,
"कल नए चाँद के दिन[2] जब तेरी
जगह खाली रहेगी तो सब तुझे ढूँढ़ेंगे।
19 तीसरे दिन वे तेरे बारे में ज़रूर
पूछेंगे। तू इसी जगह आना जहाँ तू उस
दिन* छिपा था और इस पत्थर के पास
रहना। 20 मैं पत्थर के एक तरफ तीन
बार तीर ऐसे चलाऊँगा मानो मैं किसी
निशाने पर मारने की कोशिश कर रहा
हूँ। 21 मैं अपने सेवक को तीर ढूँढ़कर
लाने के लिए कहूँगा। अगर मैं सेवक से
कहूँ, 'देख, तीर तेरे इस तरफ हैं जाकर
ले आ,' तो तू लौट आना क्योंकि यहोवा
के जीवन की शपथ, इसका मतलब यह
होगा कि तेरी जान को कोई खतरा
नहीं है। तू सलामत रहेगा। 22 लेकिन
अगर मैं सेवक से कहूँ, 'देख, तीर बहुत
दूर जा गिरे हैं' तो तू चला जाना क्योंकि
यहोवा तुझे भेज रहा होगा। 23 और
यहोवा सदा के लिए इस बात का गवाह
हो[3] कि हम दोनों ने आपस में दोस्ती का
करार किया है।"[4]
24 इसलिए दाविद जाकर मैदान में
छिप गया। फिर नए चाँद के दिन शाऊल
भोज में अपने खाने की जगह पर
बैठा।[5] 25 वह दीवार के पास उस
जगह बैठा जहाँ वह हमेशा बैठा करता
था। योनातान उसके सामने था और
अब्नेर[6] उसकी बगल में बैठा था, मगर
दाविद की जगह खाली थी। 26 उस
दिन शाऊल ने दाविद के बारे में कुछ
नहीं पूछा क्योंकि उसने सोचा कि ज़रूर
वह किसी वजह से अशुद्ध[7] हो गया

अध्य. 20
1 नीत 17:17
2 1शम 18:3; 1शम 23:18
3 1शम 20:1
4 1शम 19:2
5 1शम 16:13; 1शम 17:37
6 1शम 10:7; 1शम 11:6
7 2शम 9:1, 3; 2शम 9:6, 7
8 2शम 21:7

दूसरा कॉल.
1 1शम 18:1, 3; 2शम 1:26; नीत 18:24
2 1शम 20:5
3 1शम 20:42
4 1शम 20:13, 14
5 1शम 20:5
6 1शम 14:50
7 लैव 11:23, 24; लैव 15:4, 5; लैव 15:16, 18; गि 19:16

20:8, 14 *या "अटल प्यार।"

20:19 *शा., "काम के दिन।"

होगा इसीलिए नहीं आया। **27** लेकिन नए चाँद के दूसरे दिन भी जब दाविद की जगह खाली रही तो शाऊल ने अपने बेटे योनातान से पूछा, “क्या बात है, यिशै का बेटा[1] भोज में नहीं आया? कल भी नहीं आया था और आज भी नहीं आया?” **28** योनातान ने कहा, “दाविद ने मुझसे बेतलेहेम जाने की इजाज़त माँगी थी। उसने मुझसे बहुत मिन्नत की[2] **29** और कहा, ‘मेहरबानी करके मुझे जाने की इजाज़त दे, क्योंकि मेरे शहर में मेरा परिवार बलिदान चढ़ा रहा है और मेरे अपने भाई ने मुझे बुलाया है। अगर तेरी इजाज़त हो तो मैं चुपके से जाकर अपने भाइयों से मिल आऊँगा।’ यही वजह है कि वह राजा की मेज़ पर नहीं आया।” **30** यह सुनते ही शाऊल योनातान पर आग-बबूला हो गया और उससे कहा, “बागी कहीं का!* तुझे क्या लगता है, मुझे नहीं पता कि तू यिशै के उस बेटे का साथ दे रहा है? तू ऐसा करके खुद की और अपनी माँ की बेइज़्ज़ती कर रहा है। **31** जब तक यिशै का वह बेटा ज़िंदा रहेगा तू राजा नहीं बन पाएगा और तेरा राज कायम नहीं रहेगा।[3] इसलिए जल्दी से भेज किसी को और उसे वापस ले आ। उसे मरना ही होगा।”*[4]

32 मगर योनातान ने अपने पिता शाऊल से कहा, “तू क्यों उसकी जान के पीछे पड़ा है?[5] उसने ऐसा क्या किया है?” **33** तब शाऊल ने योनातान पर ज़ोर से भाला फेंका।[6] योनातान समझ गया कि उसके पिता ने दाविद को मार डालने की ठान ली है।[7] **34** योनातान को बहुत गुस्सा आया और वह फौरन मेज़ से उठ गया। उसने नए चाँद के उस दूसरे दिन कुछ नहीं खाया क्योंकि उसे यह देखकर बहुत दुख हुआ कि उसके पिता ने दाविद की कितनी बेइज़्ज़ती की।[1]

35 अगली सुबह योनातान दाविद से मिलने मैदान में गया, ठीक जैसे उसने वादा किया था और उसका जवान सेवक भी उसके साथ था।[2] **36** योनातान ने अपने सेवक से कहा, “मैं तीर मारता हूँ और तू दौड़कर जा और उन्हें ढूँढ़ ला।” सेवक भागकर गया और योनातान ने ऐसा तीर मारा कि वह उससे बहुत आगे निकल गया। **37** जब सेवक योनातान के छोड़े हुए तीर के पास पहुँचा, तो योनातान ने चिल्लाकर कहा, “तीर बहुत दूर जा गिरा है, **38** जल्दी भाग! देर मत कर!” सेवक ने जाकर तीर उठाए और वापस अपने मालिक के पास आया। **39** योनातान और दाविद यह इशारा समझ गए मगर सेवक को इसका कोई अंदाज़ा नहीं था। **40** फिर योनातान ने अपने हथियार सेवक को दिए और उससे कहा, “तू इन्हें लेकर शहर चला जा।”

41 जब सेवक चला गया तो दाविद पास की उस जगह से उठा जो दक्षिण की तरफ थी। वह मुँह के बल गिरकर तीन बार झुका। फिर उन्होंने एक-दूसरे को चूमा और वे एक-दूसरे के लिए रोने लगे। दाविद ज़्यादा रोया। **42** योनातान ने दाविद से कहा, “तू इत्मीनान से जा क्योंकि हम दोनों ने यहोवा के नाम से शपथ खाकर यह करार किया है,[3] ‘यहोवा मेरे और तेरे बीच और मेरे वंशजों और तेरे वंशजों के बीच सदा तक गवाह बना रहे।’”[4]

फिर दाविद वहाँ से चला गया और योनातान शहर लौट गया।

अध्य. 20
1 1शम 17:12
2 1शम 20:6
3 1शम 18:8
4 1शम 19:6, 10
5 1शम 19:5; नीत 17:17; नीत 18:24
6 1शम 18:11; 1शम 19:10
7 1शम 20:6, 7

दूसरा कॉल.
1 1शम 18:1
2 1शम 20: 19-22
3 1शम 20:17, 23
4 1शम 23:18; 2शम 9:7

20:30 *या “बागी औरत की औलाद।” ये शब्द योनातान को बेइज़्ज़त करने के लिए कहे गए थे। **20:31** *शा., “वह मौत का बेटा है।”

21 कुछ समय बाद दाविद नोब[1]
पहुँचा और अहीमेलेक याजक के
पास गया। अहीमेलेक दाविद को वहाँ
देखकर डर गया और काँपने लगा। उसने
दाविद से पूछा, “तू यहाँ अकेला कैसे?
क्या तेरे साथ और कोई नहीं है?”[2]
2 दाविद ने अहीमेलेक से कहा, “राजा
ने मुझे एक काम देकर भेजा है और यह
आदेश दिया है, ‘मैं तुझे जिस काम के
लिए भेज रहा हूँ और मैंने तुझे जो
हिदायतें दी हैं, उनके बारे में किसी को
कुछ मत बताना।’ मैंने अपने आदमियों
को बताया है कि वे मुझे फलाँ जगह पर
मिलें। 3 अगर तेरे पास पाँच रोटियाँ
हों तो मुझे दे। रोटियाँ नहीं हैं तो खाने के
लिए जो भी हो, मुझे दे दे।” 4 याजक
ने कहा, “मेरे पास सिर्फ पवित्र रोटी है,
दूसरी रोटी नहीं है। मैं तुझे पवित्र
रोटी[3] दे सकता हूँ, बशर्ते तेरे जवान
औरतों से दूर रहे हों।”*[4] 5 दाविद ने
कहा, “हाँ, हम औरतों से दूर रहे हैं।
जब भी जवान युद्ध के लिए जाते हैं तो
अपने शरीर को शुद्ध रखते हैं।[5] और
आज तो हम खास काम पर निकले हैं,
इसलिए हमने खुद को शुद्ध रखने का
और भी ध्यान रखा है।” 6 तब याजक
ने दाविद को पवित्र रोटी दे दी[6] क्योंकि
उसके पास नज़राने की रोटी के अलावा
दूसरी रोटी नहीं थी। यह रोटी उसी दिन
यहोवा के सामने से निकाली गयी थी और
उसकी जगह ताज़ी रोटी रखी गयी थी।

7 उस दिन शाऊल का एक सेवक भी
वहाँ मौजूद था, जिसे यहोवा के सामने
रोक लिया गया था। उसका नाम दोएग
था।[7] वह एदोमी[8] था और शाऊल के
चरवाहों का मुखिया था।

8 इसके बाद दाविद ने अहीमेलेक से
कहा, “क्या तेरे पास कोई भाला या तल-
वार है? मैं अपने साथ कोई तलवार
या हथियार नहीं ला पाया क्योंकि मुझे
राजा के काम से जल्दी निकलना था।”
9 तब याजक ने कहा, “यहाँ सिर्फ
एक ही हथियार है, उस पलिश्ती गोलि-
यात की तलवार[1] जिसे तूने एलाह घाटी
में मार डाला था।[2] वह एक कपड़े में
लपेटी हुई एपोद के पीछे रखी है।[3] तू
चाहे तो वह तलवार ले जा सकता है।”
दाविद ने कहा, “उससे बढ़िया हथि-
यार और क्या हो सकता है। ला मुझे
दे दे।”

10 उस दिन दाविद वहाँ से निकलकर
चला गया। शाऊल से भागते-भागते[4] वह
गत के राजा आकीश[5] के यहाँ पहुँचा।
11 आकीश के सेवकों ने अपने राजा से
कहा, “क्या यह आदमी उस देश का राजा
दाविद नहीं? क्या यह वही आदमी नहीं
जिसके बारे में लोगों ने नाचते हुए यह
गीत गाया था,

‘शाऊल ने मारा हज़ारों को,
दाविद ने मारा लाखों को’?”[6]

12 दाविद ने उनकी बातों पर ध्यान दिया
और गत के राजा आकीश से बहुत डर
गया।[7] 13 इसलिए वह उनके सामने*
पागल होने का ढोंग करने लगा।[8] वह
फाटक के पल्लों पर लकीरें खींचने
लगा और उसने अपनी लार दाढ़ी पर
बहने दी। 14 आखिर में आकीश ने
अपने सेवकों से कहा, “यह आदमी तो
पागल है! इसे क्यों लाए हो मेरे पास?
15 क्या मेरे यहाँ पागलों की कमी है जो
तुम एक और ले आए? क्या मैं इसे अपने
घर में रखूँ?”

21:4 *या “इन दिनों यौन-संबंध न रखे हों।”

21:13 *शा., “उनके हाथ में पड़कर।”

अध्य. 21
1 1शम 22:9, 19
2 1शम 18:13
3 निर्ग 25:30, लैव 24:5, 9, मत 12:3, 4
4 निर्ग 19:15, लैव 15:16, 2शम 11:11
5 लैव 15:18
6 लैव 24:7-9, मर 2:25, 26, लूक 6:3, 4
7 1शम 22:9, भज 52:उप
8 उत 36:1

दूसरा कॉल.
1 1शम 17:51, 54
2 1शम 17:2, 50
3 निर्ग 28:6
4 1शम 27:1
5 यह 11:22, 1शम 5:8, 1शम 17:4, 1शम 27:2, भज 56:उप
6 1शम 18:6-8, 1शम 29:4, 5
7 भज 56:3, 6
8 भज 34:उप

22 फिर दाविद वहाँ से चला गया[1]
और अदुल्लाम की गुफा में जा
छिपा।[2] जब यह बात उसके भाइयों और
उसके पिता के पूरे घराने को पता चली
तो वे सब उसके पास आए। 2 इसके
अलावा, जितने लोग मुसीबत के मारे थे,
जो कर्ज़ में डूबे थे और अपने जीवन से
दुखी थे, वे सब दाविद के पास इकट्ठा हुए
और वह उनका मुखिया बन गया। दाविद
के साथ करीब 400 आदमी हो गए।

3 बाद में दाविद वह गुफा छोड़कर
मोआब के मिसपे चला गया और उसने
मोआब के राजा[3] से गुज़ारिश की, “मेरे
माता-पिता को अपने यहाँ तब तक ठहर-
ने की इजाज़त दे जब तक कि मुझे पता
नहीं चलता कि परमेश्वर मेरे लिए क्या
करेगा।” 4 तब दाविद ने अपने माता-
पिता को मोआब के राजा के यहाँ ठहरा
दिया। वे तब तक वहीं रुके रहे जब तक
दाविद उस महफ़ूज़ जगह में छिपा रहा।[4]

5 कुछ समय बाद भविष्यवक्ता गाद[5]
ने दाविद से कहा, “तू उस जगह से निकल
जा और यहूदा के इलाके में चला जा।”[6]
इसलिए दाविद वह जगह छोड़कर हेरेत
के जंगल में चला गया।

6 शाऊल को खबर मिली कि दाविद
और उसके आदमियों का पता चल गया
है। उस समय शाऊल गिबा[7] की एक
पहाड़ी पर झाऊ के पेड़ के नीचे बैठा हुआ
था और उसके हाथ में भाला था।
उसके सभी सेवक उसके चारों तरफ
तैनात थे। 7 शाऊल ने अपने सेवकों
से कहा, “बिन्यामीन के आदमियो, सुनो!
तुम्हें क्या लगता है, क्या यिशै का वह
बेटा[8] भी तुम सबको खेत और अंगूरों
के बाग देगा? क्या वह तुम्हें सौ-सौ और
हज़ार-हज़ार की टुकड़ियों का अधिकारी
ठहराएगा?[9] 8 तुम सबने मिलकर मेरे
खिलाफ साज़िश की है! जब मेरे बेटे ने
यिशै के बेटे के साथ करार किया[1] तब
तुममें से किसी ने मुझे खबर नहीं दी।
तुम्हें मुझसे कोई हमदर्दी नहीं। किसी ने
मुझे नहीं बताया कि मेरे अपने बेटे ने मेरे
सेवक को मेरे खिलाफ भड़काया है और
आज वह सेवक मुझ पर हमला करने के
लिए घात लगाए बैठा है।”

9 फिर शाऊल के सेवकों के मुखिया
एदोमी दोएग[2] ने कहा,[3] “मैंने यिशै के
बेटे को नोब में देखा था। वह अहीतूब
के बेटे अहीमेलेक[4] के पास आया था।
10 और अहीमेलेक ने उसकी खातिर
यहोवा से मार्गदर्शन माँगा और उसे खाना
भी दिया। उसने उसे पलिश्ती गोलि-
यात की तलवार भी दी।”[5] 11 राजा
ने फौरन अपने आदमियों को भेजा कि
वे जाकर अहीतूब याजक के बेटे अही-
मेलेक को और अहीमेलेक के पिता के
घराने के सभी याजकों को, जो नोब में थे,
ले आएँ। तब सारे याजक राजा के पास
आए।

12 शाऊल ने कहा, “अहीतूब के बेटे,
सुन!” अहीमेलेक ने कहा, “हाँ मालिक।”
13 शाऊल ने उससे कहा, “तूने और
यिशै के बेटे ने मिलकर क्यों मेरे खिलाफ
साज़िश की? तूने क्यों उसे रोटी और
तलवार दी और उसकी खातिर परमेश्वर
से सलाह की? वह मेरे खिलाफ उठा है
और आज वह मुझ पर हमला करने के
लिए घात लगाए बैठा है।” 14 अही-
मेलेक ने राजा से कहा, “तेरे सेवकों में
दाविद जैसा भरोसेमंद* आदमी और
कौन है?[6] वह राजा का दामाद है,[7]
तेरे अंगरक्षकों का एक प्रधान है और
तेरे घराने में उसकी बहुत इज़्ज़त है।[8]

अध्य. 22
1 1शम 21:10
2 यह 15:20, 35; 2शम 23:13; भज 34:19; भज 56:13
3 रूत 4:10, 17; 1शम 14:47
4 1शम 22:1
5 2शम 24:11, 12; 1इत 21:9, 10; 1इत 29:29; 2इत 29:25
6 1शम 23:3
7 1शम 10:26
8 रूत 4:22
9 1शम 8:11, 12

दूसरा कॉल.
1 1शम 18:3; 1शम 20:17
2 1शम 21:1, 7; भज 52:उप
3 भज 52:2, 3
4 1शम 14:3; 1शम 22:20
5 1शम 21:6, 9
6 1शम 19:4; 1शम 20:32; 1शम 24:11; 1शम 26:23
7 1शम 17:25; 1शम 18:27
8 1शम 18:5, 13

22:14 * या “विश्वासयोग्य।”

15 और ऐसा नहीं कि मैंने आज पहली
बार उसकी खातिर परमेश्‍वर से सलाह
की।[1] मैं तेरे खिलाफ साज़िश रचूँ, ऐसा
तो मैं कभी सोच भी नहीं सकता! हे
राजा, तू मुझे और मेरे पिता के घराने को
दोषी मत ठहरा क्योंकि तेरा यह सेवक
इस बारे में कुछ नहीं जानता।"[2]

16 मगर राजा ने कहा, "अहीमेलेक,
अब तू ज़िंदा नहीं बचेगा।[3] तुझे और
तेरे पिता के पूरे घराने को मार डाला
जाएगा।"[4] 17 फिर राजा ने अपने
चारों तरफ तैनात पहरदारों से कहा,
"जाओ, यहोवा के इन सभी याजकों को
मार डालो क्योंकि इन्होंने दाविद का साथ
दिया है! ये लोग जानते थे कि वह मुझसे
भाग रहा है फिर भी इन्होंने मुझे खबर
नहीं दी।" मगर राजा के सेवक यहोवा
के उन याजकों पर हाथ नहीं उठाना
चाहते थे। 18 फिर राजा ने दोएग[5] से
कहा, "तू जा और याजकों को मार
डाल!" एदोमी[6] दोएग फौरन गया और
उसने अकेले ही सब याजकों को मार
डाला। उसने उस दिन 85 याजकों का
कत्ल किया जो मलमल का एपोद पहने
हुए थे।[7] 19 फिर वह याजकों के शहर
नोब[8] गया और वहाँ जितने भी आदमी,
औरत और बच्चे थे उन सबको तल-
वार से मार डाला, यहाँ तक कि दूध-पीते
बच्चों को भी। उसने बैलों, गधों और
भेड़ों को भी तलवार से मार डाला।

20 लेकिन अहीतूब के बेटे अही-
मेलेक का एक बेटा अबियातार[9] बच-
कर भाग निकला। वह भागकर दाविद
के पास गया ताकि उसका साथ दे।
21 अबियातार ने दाविद को बताया,
"शाऊल ने यहोवा के याजकों को मार
डाला है।" 22 दाविद ने अबियातार से
कहा, "उस दिन[10] जब मैंने एदोमी दोएग
को वहाँ देखा, तो मैं समझ गया कि वह
ज़रूर शाऊल को मेरे बारे में खबर दे
देगा। तेरे पिता के घराने के सब लोगों की
मौत के लिए मैं ही ज़िम्मेदार हूँ। 23 तू
यहाँ मेरे साथ ही रह। डर मत, मैं तेरी
हिफाज़त करूँगा क्योंकि जो तेरी जान
लेना चाहता है वह मेरी भी जान लेना
चाहता है।"[1]

23

कुछ समय बाद दाविद को
बताया गया, "पलिश्‍ती लोगों ने
कीला[2] शहर पर हमला कर दिया है
और वे खलिहानों से अनाज लूट रहे
हैं।" 2 तब दाविद ने यहोवा से सलाह
माँगी,[3] "क्या मैं जाकर उन पलिश्‍तियों
को मार डालूँ?" यहोवा ने दाविद से
कहा, "हाँ जा, उन पलिश्‍तियों को मार
डाल और कीला को उनके हाथ से छुड़ा
ले।" 3 मगर दाविद के आदमियों ने
उससे कहा, "देख, जब हम यहाँ यहूदा में
रहकर डरे हुए हैं,[4] तो सोच अगर
हम पलिश्‍तियों की सेना से लड़ने[5] कीला
जाएँगे, तो हमें और कितना डर लगेगा!"
4 तब दाविद ने यहोवा से दोबारा सलाह
की।[6] यहोवा ने उसे जवाब दिया, "तू
कीला जा, मैं पलिश्‍तियों को तेरे हाथ में
कर दूँगा।"[7] 5 तब दाविद अपने आद-
मियों को लेकर कीला गया और पलिश्‍ति-
यों से लड़ा। वह उनके मवेशियों को उठा
लाया और उसने भारी तादाद में पलिश्‍ति-
यों को मार गिराया और कीला के
लोगों को बचाया।[8]

6 जब अहीमेलेक का बेटा अबिया-
तार[9] भागकर दाविद के पास कीला
आया था, तब उसके पास एक एपोद था।
7 शाऊल को बताया गया कि दाविद
कीला आया है। तब शाऊल ने कहा,
"परमेश्‍वर ने उसे मेरे हवाले कर दिया
है[10] क्योंकि वह फाटक और बेड़ेवाले

अध्य. 22
1 1शम 22:10
2 1शम 21:1, 2
3 1शम 14:44; 1शम 20:31
4 1शम 2:27, 32
5 भज 52:उप
6 उत 25:30
7 1शम 2:27, 31
8 1शम 21:1; 1शम 22:9
9 1शम 23:6; 1शम 30:7; 2शम 20:25; 1रा 2:27
10 1शम 21:1, 7

दूसरा कॉल.
1 1रा 2:26

अध्य. 23
2 यह 15:20, 44
3 1शम 30:8; 2शम 5:19; भज 37:5
4 1शम 22:5
5 1शम 13:5; 1शम 14:52
6 न्या 6:39
7 1शम 14:6; 2शम 5:19
8 1शम 23:1
9 1शम 22:20
10 1शम 23:14

शहर में घुसकर खुद फँस गया है।" **8** शाऊल ने अपने सभी आदमियों को युद्ध के लिए बुलाया और उन्हें आदेश दिया कि वे कीला जाएँ और दाविद और उसके आदमियों को घेर लें। **9** जब दाविद को पता चला कि शाऊल उसे पकड़ने की चाल चल रहा है, तो उसने याजक अबियातार से कहा, "एपोद मेरे पास ले आ।"[1] **10** फिर दाविद ने कहा, "हे इसराएल के परमेश्वर यहोवा, तेरे इस सेवक को खबर मिली है कि शाऊल कीला आ रहा है और उसने मेरी वजह से इस शहर को नाश करने की ठान ली है।[2] **11** हे इसराएल के परमेश्वर यहोवा, अपने इस सेवक को बता कि क्या कीला के अगुवे* मुझे पकड़कर शाऊल के हवाले कर देंगे? जैसे मैंने सुना है, क्या शाऊल सचमुच नीचे कीला आ रहा है?" यहोवा ने उससे कहा, "हाँ, वह आ रहा है।" **12** दाविद ने पूछा, "क्या कीला के अगुवे मुझे और मेरे आदमियों को पकड़कर शाऊल के हवाले कर देंगे?" यहोवा ने कहा, "हाँ, वे तुम्हें उसके हवाले कर देंगे।"

13 तब दाविद और उसके आदमी फौरन कीला छोड़कर भाग गए। दाविद के साथ करीब 600 आदमी थे।[3] वे जहाँ भी जा सकते थे वहाँ चले गए। शाऊल को खबर मिली कि दाविद कीला से भाग गया है इसलिए वह उसका पीछा करने वहाँ नहीं गया। **14** दाविद ज़ीफ[4] वीराने में उन पहाड़ी जगहों में रहने लगा जहाँ तक किसी का पहुँचना मुश्किल था। इधर शाऊल दिन-रात उसकी तलाश करता रहा[5] मगर यहोवा ने दाविद को उसके हाथ में नहीं पड़ने दिया। **15** जब दाविद ज़ीफ वीराने के होरेश में था तो उसे मालूम पड़ा कि* शाऊल उसकी जान लेने के लिए उसे ढूँढ़ने निकल पड़ा है।

16 शाऊल का बेटा योनातान दाविद से मिलने होरेश गया और उसने यहोवा पर दाविद का भरोसा और बढ़ाया।*[1] **17** उसने दाविद से कहा, "मत डर, मेरा पिता शाऊल तुझे नहीं पकड़ सकेगा। तू ही इसराएल का राजा होगा[2] और मैं तुझसे दूसरे दर्जे पर रहूँगा। यह बात मेरा पिता शाऊल भी जानता है।"[3] **18** फिर उन दोनों ने यहोवा के सामने एक करार किया।[4] इसके बाद योनातान अपने घर लौट गया और दाविद होरेश में ही रहा।

19 बाद में ज़ीफ के आदमी शाऊल के पास गिबा[5] गए और उन्होंने उसे बताया, "दाविद हमारे पास के इलाके होरेश में है,[6] जहाँ पहुँचना मुश्किल है। वह यशीमोन* के दक्षिण में[7] हकीला पहाड़ी[8] पर छिपा है।[9] **20** हे राजा, तू जब चाहे आना, हम उसे पकड़कर तेरे हवाले कर देंगे।"[10] **21** शाऊल ने उनसे कहा, "यहोवा तुम्हें आशीष दे क्योंकि तुम लोगों ने मुझ पर बड़ी कृपा की है। **22** तुम वापस जाओ और ठीक-ठीक पता लगाओ कि वह कहाँ छिपा है और किसने उसे देखा है, क्योंकि मैंने सुना है कि वह बहुत चालाक है। **23** उन सारी जगहों का ठीक-ठीक पता लगाओ जहाँ वह छिपता है और सबूतों के साथ मेरे पास आओ। तब मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। अगर वह यहूदा के प्रांत में है, तो मैं उसे हज़ारों लोगों* में से भी ढूँढ़ निकालूँगा।"

23:11 *या शायद, "ज़मींदार।"

23:15 *या शायद, "वह डर गया क्योंकि।" **23:16** *शा., "उसने उसका हाथ मज़बूत किया।" **23:19** *या शायद, "रेगिस्तान; वीराना।" **23:23** *या "कुलों।"

अध्या. 23

1 गि 27:21, 1शम 30:7
2 1शम 22:19
3 1शम 22:1, 2, 1शम 25:13, 1शम 30:9
4 यह 15:20, 55, 1शम 23:19, 1शम 26:1
5 1शम 18:29, 1शम 20:33, 1शम 27:1

दूसरा कॉल.

1 भज 37:5, नीत 17:17
2 1शम 16:13, 2शम 2:4, 2शम 5:3
3 1शम 20:31, 1शम 24:17, 20
4 1शम 18:3, 1शम 20:42
5 1शम 10:26
6 1शम 23:15
7 1शम 23:24
8 1शम 26:3
9 1शम 26:1, भज 54:उप
10 भज 54:3

24 तब वे आदमी वहाँ से ज़ीफ[1] लौट
गए और बाद में शाऊल वहाँ गया।
इस दौरान दाविद और उसके आदमी
माओन[2] वीराने में थे जो यशीमोन के
दक्षिण की तरफ अराबा[3] में है।
25 फिर शाऊल अपने आदमियों को
लेकर दाविद को ढूँढ़ने निकल पड़ा।[4]
जैसे ही यह खबर दाविद को मिली वह
एक चट्टान की तरफ चला गया[5] और
माओन वीराने में ही रहा। जब शाऊल
को इसका पता चला तो वह दाविद का
पीछा करते हुए माओन वीराने में गया।
26 जब शाऊल पहाड़ के एक तरफ
पहुँचा तो दाविद और उसके आदमी
पहाड़ के दूसरी तरफ थे। दाविद शाऊल
से दूर जाने के लिए जल्दी-जल्दी भागने
लगा।[6] मगर शाऊल और उसके आदमी,
दाविद और उसके आदमियों का पीछा
करते-करते उनके बिलकुल करीब पहुँच
गए। वे दाविद और उसके आदमियों
को घेरकर पकड़ने ही वाले थे[7] कि
27 तभी एक दूत ने आकर शाऊल
से कहा, “जल्दी चल, पलिश्तियों ने देश
पर हमला कर दिया है!” 28 शाऊल
दाविद का पीछा करना छोड़कर[8]
पलिश्तियों का मुकाबला करने निकल
पड़ा। इसीलिए उस जगह का नाम अल-
गाव की चट्टान पड़ा।

29 इसके बाद दाविद वहाँ से ऊपर
एनगदी[9] चला गया और वहाँ ऐसी जगहों
में रहने लगा जहाँ पहुँचना मुश्किल था।

24 जैसे ही शाऊल पलिश्तियों का
पीछा करके लौटा, उसे लोगों ने
बताया कि दाविद एनगदी वीराने में है।[10]
2 इसलिए शाऊल ने पूरे इसराएल में
से चुने हुए 3,000 आदमियों को लिया
और दाविद और उसके आदमियों को
ढूँढ़ने निकल पड़ा। वह उन सबको लेकर
उन पथरीली चट्टानों की तरफ जाने
लगा जहाँ पहाड़ी बकरियाँ घूमा करती
हैं। 3 रास्ते में उन्हें पत्थरों से बनी भेड़-
शालाएँ मिलीं और वहीं एक गुफा थी।
शाऊल गुफा के अंदर हलका होने*
गया। उसी गुफा के बिलकुल कोने में
दाविद और उसके आदमी छिपे बैठे थे।[1]
4 तब दाविद के आदमियों ने उससे कहा,
“आज यहोवा तुझसे कह रहा है, ‘देख!
मैंने तेरे दुश्मन को तेरे हाथ में कर
दिया है।[2] तुझे जो सही लगे वह कर।’”
तब दाविद उठा और चुपके से शाऊल
के पास गया और उसके बिन आस्तीन
के बागे का छोर काट लिया। 5 मगर
फिर दाविद का मन* उसे कचोटने लगा[3]
क्योंकि उसने शाऊल के बागे का छोर
काट लिया था। 6 उसने अपने आद-
मियों से कहा, “मैं अपने मालिक पर
हाथ उठाने की सोच भी नहीं सकता, वह
यहोवा का अभिषिक्त जन है। यहोवा
की नज़र में यह बिलकुल गलत होगा
कि मैं यहोवा के अभिषिक्त जन पर
हाथ उठाऊँ।”[4] 7 यह कहकर दाविद
ने अपने आदमियों को रोक दिया* और
उन्हें शाऊल पर हमला करने नहीं दिया।
फिर शाऊल उठकर गुफा से निकल गया
और अपने रास्ते चला गया।

8 फिर दाविद उठकर गुफा से बाहर
आया और उसने ज़ोर से शाऊल को
आवाज़ दी, “हे मेरे मालिक, हे राजा!”[5]
शाऊल ने पीछे मुड़कर देखा और दाविद
ने मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर प्रणाम
किया। 9 उसने शाऊल से कहा, “तू
क्यों ऐसे आदमियों की बातें सुनता है
जो कहते हैं कि दाविद तेरा बुरा करना

अध्य. 23
1 1शम 23:14
2 यह 15:20, 55; 1शम 25:2, 3
3 व्य 1:7
4 1शम 26:2; भज 54:3
5 1शम 23:28
6 भज 31:22
7 भज 17:9
8 भज 54:7
9 यह 15:20, 62; श्रेष 1:14

अध्य. 24
10 1शम 23:28, 29

दूसरा कॉल.
1 भज 57:उप; भज 142:उप
2 1शम 26:8, 23
3 2शम 24:10
4 निर्ग 22:28; 1शम 26:11; 2शम 1:14; 1इत 16:22
5 1शम 26:17

24:3 *यानी शौच करने। **24:5** *या “ज़मीर।” **24:7** *या शायद, “इधर-उधर भेज दिया।”

चाहता है?[1] **10** आज तूने खुद अपनी
आँखों से देखा कि जब तू गुफा में था तो
यहोवा ने तुझे मेरे हाथ में कर दिया था।
और किसी ने मुझसे कहा भी था कि मैं
तुझे मार डालूँ[2] मगर मैंने तुझ पर तरस
खाया। मैंने कहा, ‘मैं अपने मालिक पर
हाथ नहीं उठाऊँगा क्योंकि वह यहोवा का
अभिषिक्त जन है।’[3] **11** मेरे पिता,
यह देख, तेरे बागे के छोर का एक
टुकड़ा मेरे हाथ में है। जब मैंने यह छोर
काटा तब मैं तुझे जान से मार भी सकता
था। मगर मैंने ऐसा नहीं किया। इससे
तू समझ सकता है कि तेरा बुरा करने
या तुझसे बगावत करने का मेरा कोई
इरादा नहीं। मैंने तेरे खिलाफ कोई पाप
नहीं किया,[4] फिर भी तू मेरी जान लेने
पर तुला हुआ है।[5] **12** अब यहोवा ही
हम दोनों का न्याय करे[6] और यहोवा ही
तुझसे मेरा बदला ले,[7] मगर मैं अपना
हाथ तुझ पर नहीं उठाऊँगा।[8] **13** एक
पुरानी कहावत है, ‘दुष्ट ही दुष्टता के
काम करता है।’ इसलिए मैं तुझ पर
हाथ नहीं उठाऊँगा। **14** हे इसराएल
के राजा, तू किसका पीछा कर रहा है?
किसे पकड़ने की कोशिश कर रहा है?
मुझ मरे हुए कुत्ते को? एक पिस्सू को?[9]
15 यहोवा न्यायी बनकर हम दोनों का
फैसला करे। वही इस मुकदमे की जाँच
करेगा, मेरी तरफ से पैरवी करेगा[10] और
मेरा न्याय करेगा और मुझे तेरे हाथ से
बचाएगा।”

16 जब दाविद ये सारी बातें कह
चुका तो शाऊल ने पूछा, “मेरे बेटे
दाविद, क्या यह तेरी आवाज़ है?”[11]
फिर शाऊल फूट-फूटकर रोने लगा।
17 उसने दाविद से कहा, “तू मुझसे
ज़्यादा नेक है। तूने हमेशा मेरे साथ
भलाई की है और बदले में मैंने तेरा
बुरा ही किया है।[1] **18** और जैसे तूने
मुझे बताया, आज जब यहोवा ने मुझे तेरे
हाथ में कर दिया तब मेरी जान बख्श-
कर तूने मेरा भला किया।[2] **19** कौन
ऐसा होगा जो मौका मिलने पर अपने
दुश्मन को यूँ ही छोड़ दे? आज तूने मेरी
जान न लेकर जो भलाई की है, उसके लिए
यहोवा तुझे इनाम देगा।[3] **20** मैं जानता
हूँ कि तू ज़रूर राजा बनेगा[4] और इस-
राएल पर तेरा राज सदा कायम रहेगा।
21 अब तू यहोवा की शपथ खाकर कह[5]
कि तू मेरी मौत के बाद मेरे वंशजों का
नाश नहीं करेगा और मेरे पिता के घराने
से मेरा नाम नहीं मिटाएगा।”[6] **22** तब
दाविद ने शपथ खाकर शाऊल से ऐसा ही
कहा, जिसके बाद शाऊल अपने घर लौट
गया।[7] मगर दाविद और उसके आदमी
ऊपर महफूज़ जगह चले गए।[8]

25 कुछ समय बाद शमूएल[9] की
मौत हो गयी और पूरा इसराएल
उसके लिए मातम मनाने और उसके घर
के पास उसे दफनाने के लिए रामाह में
इकट्ठा हुआ।[10] इसके बाद दाविद उठा
और नीचे पारान वीराने चला गया।

2 माओन[11] में एक आदमी रहता था
जिसकी जायदाद करमेल*[12] में थी। वह
आदमी बहुत अमीर था। उसके पास
3,000 भेड़ें और 1,000 बकरियाँ थीं।
वह करमेल में अपनी भेड़ों का ऊन कत-
रवा रहा था। **3** उस आदमी का नाम
नाबाल[13] था और उसकी पत्नी का
नाम अबीगैल।[14] अबीगैल हमेशा समझ-
बूझ से काम लेती थी और बहुत खूबसूरत
थी। मगर उसका पति कठोर स्वभाव
का था और सबके साथ बुरा बरताव
करता था।[15] वह कालेबवंशी[16] था।

अध्य. 24
1 1शम 26:19
2 1शम 24:4
3 1शम 9:16, 1शम 10:1, 1शम 26:9, भज 105:15
4 1शम 26:18, भज 35:7
5 1शम 23:14
6 1शम 26:23
7 व्य 32:35
8 1शम 26:11
9 1शम 26:20
10 1शम 25:39, भज 35:1
11 1शम 26:17

दूसरा कॉल.
1 1शम 26:21
2 1शम 24:4, 10
3 1शम 26:25, भज 18:20
4 1शम 13:14, 1शम 15:28, 1शम 18:8, 1शम 20:31, 1शम 23:17
5 लैव 19:12, व्य 6:13
6 2शम 9:1, 2शम 21:7
7 1शम 15:34
8 1शम 23:29

अध्य. 25
9 1शम 1:20, 1शम 2:18, 1शम 3:20, भज 99:6
10 1शम 7:15, 17
11 1शम 23:24
12 यह 15:20, 55
13 1शम 25:25
14 1शम 27:3
15 1शम 25:17, 21
16 गि 13:6, गि 32:11, 12

25:2 *यह करमेल पहाड़ नहीं बल्कि यहूदा का एक शहर है।

4 जब दाविद वीराने में था तब उसने सुना
कि नाबाल अपनी भेड़ों का ऊन कत-
रवा रहा है। 5 उसने अपने दस जवानों
को यह कहकर नाबाल के पास भेजा,
“तुम ऊपर करमेल जाओ और नाबाल
से मिलकर कहो कि मैंने उसकी खैरि-
यत पूछी है। 6 फिर तुम उससे कहना,
‘तू लंबी उम्र जीए, तू* और तेरा घराना
और तेरा सबकुछ सलामत रहे। 7 मैंने
सुना है कि तू अपनी भेड़ों का ऊन कत-
रवा रहा है। जब तेरे चरवाहे हमारे
साथ थे तो हमने कभी उनका नुकसान
नहीं किया।[1] जितने दिन वे करमेल में
रहे उन्होंने एक भी जानवर नहीं खोया।
8 तू चाहे तो इस बारे में अपने जवानों से
पूछ सकता है। अब मेरे जवानों पर मेहर-
बानी कर, हम खुशी के इस मौके पर तेरे
यहाँ आए हैं। तू अपने इन सेवकों को और
अपने बेटे दाविद को जो कुछ दे सकता
है दे।’”[2]

9 दाविद के जवान नाबाल के पास
गए और उन्होंने उसे दाविद का संदेश
दिया। जब उन्होंने अपनी बात पूरी की,
10 तो नाबाल ने उनसे कहा, “दाविद
कौन है? यिशै का बेटा कौन है? आज-
कल जिस सेवक को देखो अपने मालिक
से भागता फिरता है।[3] 11 मैंने यह
रोटी-पानी और गोश्त का इंतज़ाम ऊन
कतरनेवाले अपने सेवकों के लिए किया
है। क्या मैं यह सब उठाकर ऐसे लोगों को
दे दूँ जो पता नहीं कहाँ से चले आते हैं?”

12 तब दाविद के जवान वहाँ से लौट
गए और उन्होंने दाविद को सारी बातें
सुनायीं। 13 दाविद ने फौरन अपने
आदमियों से कहा, “सब लोग अपनी-
अपनी तलवार बाँध लो!”[4] उन सबने
अपनी-अपनी तलवार बाँध ली और
दाविद ने भी अपनी तलवार बाँध ली।
दाविद के साथ करीब 400 आदमी
निकल पड़े जबकि 200 आदमी सामान
की देखभाल के लिए रह गए।

14 इस बीच नाबाल के एक सेवक
ने उसकी पत्नी अबीगैल को बताया,
“दाविद ने वीराने से अपने दूतों के
हाथ हमारे मालिक के लिए शुभकामनाएँ
भेजीं। मगर मालिक उन पर बरस पड़ा
और उनकी बेइज़्ज़ती की।[1] 15 जब
हम उन आदमियों के साथ मैदानों में
थे, तो उन्होंने कभी हमारा नुकसान नहीं
किया। जितने दिन हम उनके साथ थे,
हमारा एक भी जानवर गुम नहीं हुआ।[2]
16 जब हम झुंड की चरवाही करते थे,
तो उन्होंने एक बाड़े की तरह दिन-
रात हमारी हिफाज़त की थी। 17 अब
हमारे मालिक और उसके पूरे घराने पर
मुसीबत आनेवाली है।[3] मालिक ऐसा
निकम्मा आदमी है[4] कि हममें से कोई
उससे बात नहीं कर सकता। इसलिए अब
तुझे ही कुछ करना होगा।”

18 तब अबीगैल[5] ने फौरन खाने-
पीने की ढेर सारी चीज़ें गधों पर लादीं।
उसने 200 रोटियाँ, दो बड़े-बड़े मटके
दाख-मदिरा, पाँच हलाल की हुई भेड़ें,
पाँच सआ* भुना हुआ अनाज, 100
किशमिश की टिकियाँ और 200 अंजीर
की टिकियाँ लीं और गधों पर लादीं।[6]
19 फिर उसने अपने सेवकों से कहा,
“तुम लोग आगे-आगे चलो, मैं तुम्हारे
पीछे आती हूँ।” मगर उसने अपने पति
नाबाल को कुछ नहीं बताया।

20 अबीगैल गधे पर बैठी पहाड़ की
आड़ में नीचे चली जा रही थी कि तभी

अध्या. 25
1 1शम 25:14-16
2 व्य 15:7
3 1शम 22:2
4 भज 37:8; नीत 15:1; सभ 7:9

दूसरा कॉल.
1 1शम 25:10
2 1शम 25:7
3 1शम 25:13
4 1शम 25:3
5 1शम 25:3
6 2शम 16:1; 2शम 17:27-29

25:6 *या “तुझे शांति मिले।”

25:18 *एक सआ 7.33 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

रास्ते में उसकी मुलाकात दाविद और
उसके आदमियों से हुई जो उसकी तरफ
आ रहे थे। **21** अबीगैल से मिलने से
पहले दाविद कह रहा था, “मैंने वीराने
में बेकार ही उस आदमी की हर चीज़
की हिफाज़त की। मेरे रहते उसका एक
भी जानवर गुम नहीं हुआ,[1] मगर आज
वह मेरी भलाई का यह सिला दे रहा है।[2]
22 अगर मैंने कल सुबह तक उसके एक
भी आदमी को ज़िंदा छोड़ा तो परमेश्वर
दाविद के इन दुश्मनों को* कड़ी-से-कड़ी
सज़ा दे।”

23 जैसे ही अबीगैल की नज़र दाविद
पर पड़ी, वह फौरन गधे से उतरी और
उसने दाविद के सामने ज़मीन पर गिरकर
उसे प्रणाम किया। **24** फिर वह दाविद
के पैरों पर गिरकर कहने लगी, “मेरे
मालिक, अपनी दासी को कुछ कहने की
इजाज़त दे। जो भी हुआ है उसके
लिए तू चाहे तो मुझे दोषी ठहरा दे, मगर
अपनी दासी की बात मान ले। **25** उस
निकम्मे नाबाल पर ध्यान मत दे।[3] जैसा
उसका नाम है वैसी उसकी फितरत है।
उसका नाम नाबाल* है, और वह मूर्खों
जैसा ही बरताव करता है। मालिक, तूने
जिन जवानों को हमारे यहाँ भेजा था, उन्हें
मैंने नहीं देखा था। **26** मेरे मालिक,
यहोवा के जीवन की और तेरे जीवन की
शपथ, यहोवा ने ही तुझे खून का दोषी[4]
बनने और अपने हाथों से बदला लेने*
से रोक लिया है।[5] तेरे दुश्मनों का और
जो तेरा बुरा करने की ताक में घूम
रहे हैं उनका वही हाल हो जो नाबाल
का होगा। **27** मालिक, अब तू अपनी
दासी के हाथ से यह तोहफा[6] कबूल कर,
जो मैं तेरे सेवकों के लिए लायी हूँ।[1]
28 मेहरबानी करके अपनी दासी का
अपराध माफ कर दे। यहोवा ज़रूर तेरे
वंशजों को सदा तक राज करने का अधि-
कार देगा,[2] क्योंकि तू यहोवा की तरफ
से युद्ध करता है।[3] तूने ज़िंदगी में कभी
कोई बुरा काम नहीं किया है।[4] **29** जब
कोई तेरी जान लेने के लिए तेरा पीछा
करे, तब तेरा परमेश्वर यहोवा तेरी
जान की वैसे ही हिफाज़त करेगा जैसे
कोई अपनी कीमती चीज़ें थैली में बाँध-
कर हिफाज़त से रखता है। और वह तेरे
दुश्मनों का जीवन ऐसे दूर फेंकेगा, जैसे
गोफन से पत्थर दूर फेंका जाता है।
30 जब यहोवा तेरे साथ वे सारे भलाई
के काम करेगा, जिनका उसने वादा किया
है और तुझे इसराएल का अगुवा ठह-
राएगा,[5] **31** तब तेरा मन तुझे इस बात
के लिए नहीं धिक्कारेगा और तुझे कोई
पछतावा नहीं होगा कि तूने बेवजह खून
बहाया है और खुद अपने हाथों से बदला
लिया है।*[6] मेरे मालिक, जब यहोवा
तुझे आशीष देगा तब तू अपनी दासी
को याद करना।”

32 तब दाविद ने अबीगैल से कहा,
“इसराएल के परमेश्वर यहोवा की बड़ाई
हो जिसने आज तुझे मेरे पास भेजा है!
33 परमेश्वर तुझे आशीष दे क्योंकि तूने
समझदारी से काम लिया है। आज तूने
मुझे खून का दोषी बनने से और अपने
हाथों से बदला लेने* से रोक लिया है,[7]
परमेश्वर तुझे आशीष दे। **34** इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा के जीवन की
शपथ, जिसने मुझे तेरा नुकसान करने से
रोक लिया है,[8] अगर तू फौरन मेरे
पास न आती[9] तो कल सुबह तक

अध्य. 25
1 1शम 25:7
2 1शम 25:10; भज 35:12
3 1शम 25:17
4 उत 9:6
5 उत 20:6
6 1शम 25:18

दूसरा कॉल.
1 1शम 22:2; 1शम 25:13
2 1शम 15:28; 2शम 7:8, 11; 1रा 9:5
3 1शम 17:45; 1शम 18:17
4 1शम 24:11; 1रा 15:5
5 1शम 13:13, 14; 1शम 23:17; 2शम 6:21; 2शम 7:8; भज 89:20
6 व्य 32:35; 1शम 24:15
7 व्य 19:10; 1शम 25:26
8 1शम 25:24
9 1शम 25:18

25:22 *या शायद, “परमेश्वर दाविद को।” **25:25** *मतलब “मूर्ख।” **25:26** *या “उद्धार कराने।”

25:31 *या “उद्धार किया है।” **25:33** *या “उद्धार करने।”

नाबाल के घराने का एक भी आदमी ज़िंदा नहीं बचता।"[1] 35 इसके बाद दाविद ने अबीगैल का तोहफा कबूल किया और उससे कहा, "तू बेफिक्र होकर घर जा। देख, मैंने तेरी बात मान ली है। मैं तेरी गुज़ारिश पूरी करूँगा।"

36 बाद में अबीगैल नाबाल के पास लौटी। उस वक्त वह अपने घर पर राजा की तरह दावत उड़ा रहा था और वह* बहुत खुश था। वह पीकर धुत्त हो गया था। अबीगैल ने नाबाल को सुबह तक कुछ नहीं बताया। 37 सुबह जब नाबाल का नशा उतरा तो उसकी पत्नी अबीगैल ने उसे सारा हाल कह सुनाया। जब नाबाल ने यह सब सुना तो वह पत्थर-सा सुन्न हो गया, उसके दिल ने मानो काम करना बंद कर दिया। 38 करीब दस दिन बाद यहोवा ने नाबाल को मारा और वह मर गया।

39 जब दाविद को नाबाल की मौत की खबर मिली तो उसने कहा, "यहोवा की बड़ाई हो क्योंकि नाबाल ने मेरी जो बेइज़्ज़ती की थी[2] उस मामले में यहोवा ने न्याय किया[3] और मुझे बुरा काम करने से रोक दिया।[4] परमेश्वर ने नाबाल के बुरे कामों का अंजाम उसी के सिर डाल दिया है!" इसके बाद दाविद ने अबीगैल के पास संदेश भेजा कि वह उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है। 40 दाविद के सेवकों ने करमेल आकर अबीगैल से कहा, "दाविद ने हमारे हाथ यह संदेश भेजा है कि वह तुझे अपनी पत्नी बनाना चाहता है।" 41 अबीगैल ने फौरन मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर कहा, "तेरी यह दासी अपने मालिक के सेवकों के पैर धोने[5] के लिए तैयार है।" 42 फिर अबीगैल[1] फौरन उठी और अपने गधे पर सवार होकर निकल पड़ी। उसकी पाँच दासियाँ उसके पीछे-पीछे गयीं। अबीगैल दाविद के दूतों के साथ उसके पास गयी और उसकी पत्नी बन गयी।

43 दाविद ने यिजरेल[2] की रहनेवाली अहीनोअम[3] से भी शादी की थी। इस तरह वे दोनों उसकी पत्नियाँ बन गयीं।[4]

44 मगर शाऊल ने अपनी बेटी यानी दाविद की पत्नी मीकल[5] की शादी, लैश के बेटे पलती[6] से करा दी थी जो गल्लीम का रहनेवाला था।

26 कुछ समय बाद ज़ीफ[7] के आदमी शाऊल के पास गिबा[8] गए और उन्होंने उसे बताया कि दाविद यशीमोन* के सामने हकीला पहाड़ी पर छिपा हुआ है।[9] 2 तब शाऊल ने इसराएल के 3,000 चुने हुए आदमी लिए और दाविद को ढूँढ़ने नीचे ज़ीफ वीराने की तरफ निकल पड़ा।[10] 3 शाऊल ने यशीमोन के सामने हकीला पहाड़ी पर सड़क किनारे छावनी डाली। उस समय दाविद वीराने में रह रहा था और उसे पता चला कि शाऊल उसे पकड़ने के लिए इस वीराने में पहुँच गया है। 4 दाविद ने अपने जासूस भेजे ताकि वे पता लगाएँ कि क्या शाऊल सचमुच वहाँ आया है। 5 बाद में दाविद उस जगह गया जहाँ शाऊल ने छावनी डाली थी। दाविद ने वह जगह देखी जहाँ शाऊल और उसका सेनापति अब्नेर[11] (जो नेर का बेटा था) सो रहे थे। शाऊल छावनी के बीचों-बीच सो रहा था और उसकी सेना की सारी टुकड़ियाँ उसके चारों तरफ थीं। 6 इसके बाद दाविद ने अहीमेलेक से जो हित्ती[12] था और अबीशै[13] से जो

25:36 *शा., "नाबाल का दिल।"

26:1 *या शायद, "रेगिस्तान; वीराना।"

अध्य. 25
1 1शम 25:22
2 1शम 25:10, 14
3 1शम 24:15 भज 35:1
4 1शम 25:34
5 उत 18:3, 4 लूक 7:44

दूसरा कॉल.
1 1शम 25:3
2 यह 15:20, 56
3 1शम 27:3 2शम 3:2 1इत 3:1
4 1शम 30:5 2शम 5:13
5 1शम 18:20
6 2शम 3:14, 15

अध्य. 26
7 यह 15:20, 55
8 न्या 19:14 1शम 10:26
9 1शम 23:14 1शम 23:19, 24 भज 54:उप
10 1शम 24:2
11 1शम 14:50 1शम 17:55 2शम 2:8 2शम 3:27
12 उत 10:15
13 2शम 16:9 2शम 18:5 2शम 23:18

सरूयाह[1] का बेटा और योआब का भाई
था, पूछा, "मेरे साथ शाऊल की छावनी
में कौन चलेगा?" अबीशै ने कहा, "मैं
तेरे साथ चलूँगा।" 7 तब दाविद और
अबीशै रात के वक्त शाऊल की छावनी
में गए और उन्होंने देखा कि शाऊल
छावनी के बीचों-बीच सो रहा है और
उसका भाला उसके सिर के पास ज़मीन
में गड़ा हुआ है। अब्नेर और सारे सैनिक
शाऊल के चारों तरफ सो रहे थे।

8 अबीशै ने दाविद से कहा, "देख,
आज परमेश्वर ने तेरे दुश्मन को तेरे
हाथ में कर दिया है।[2] अब मुझे इजाज़त
दे कि मैं भाले से उसे ज़मीन में ठोंक दूँ।
मैं एक ही वार में उसे मार डालूँगा, मुझे
दोबारा वार करने की ज़रूरत नहीं
होगी।" 9 मगर दाविद ने अबीशै से
कहा, "नहीं, नहीं, तू उसे कुछ मत कर।
क्या कोई यहोवा के अभिषिक्त जन[3] पर
हाथ उठाकर निर्दोष रह सकता है?"[4]
10 फिर दाविद ने कहा, "यहोवा के
जीवन की शपथ, यहोवा खुद उसे मार
डालेगा[5] या फिर वह युद्ध में मारा
जाएगा।[6] अगर नहीं तो जैसे सब मरते
हैं, वैसे ही एक दिन उस पर भी मौत
आ जाएगी।[7] 11 लेकिन मैं यहोवा के
अभिषिक्त जन पर हाथ उठाने की सोच
भी नहीं सकता क्योंकि ऐसा करना यहोवा
की नज़र में गलत होगा।[8] अब चल,
हम उसके सिरहाने से भाला और पानी
की सुराही उठा लें और यहाँ से निकल
जाएँ।" 12 दाविद ने शाऊल के सिर-
हाने से भाला और सुराही उठा ली और
दोनों वहाँ से चले गए। किसी ने भी उन्हें
नहीं देखा,[9] न किसी को पता चला, न ही
कोई जागा। सब लोग सो रहे थे क्योंकि
यहोवा ने उन्हें गहरी नींद सुला दिया
था। 13 फिर दाविद दूसरी तरफ गया
और दूर जाकर पहाड़ की चोटी पर खड़ा
हुआ। शाऊल की छावनी और दाविद के
बीच काफी दूरी थी।

14 दाविद ने वहाँ से शाऊल की सेना
को और नेर के बेटे अब्नेर[1] को ज़ोर
से आवाज़ दी, "अब्नेर! अब्नेर! क्या तू
सुन रहा है?" अब्नेर ने कहा, "तू कौन
है? कौन राजा को आवाज़ दे रहा है?"
15 दाविद ने अब्नेर से कहा, "तू एक
बड़ा योद्धा है, पूरे इसराएल में तेरी
टक्कर का कोई नहीं है। फिर तूने क्यों
अपने मालिक की, अपने राजा की हिफा-
ज़त नहीं की? एक सैनिक तेरे राजा
की जान लेने आया था।[2] 16 ऐसी ला-
परवाही दिखाकर तूने ठीक नहीं किया।
यहोवा के जीवन की शपथ, तुझे मौत
की सज़ा मिलनी चाहिए क्योंकि तूने
अपने मालिक यहोवा के अभिषिक्त जन
की हिफाज़त नहीं की।[3] अब चारों तरफ
नज़र दौड़ाकर देख! राजा के सिरहाने
जो भाला और पानी की सुराही[4] थी वह
कहाँ है?"

17 तब शाऊल ने दाविद की आवाज़
पहचान ली और कहा, "बेटे दाविद,
क्या यह तेरी आवाज़ है?"[5] दाविद ने
कहा, "हाँ मेरे मालिक राजा, मैं ही
बोल रहा हूँ।" 18 फिर दाविद ने कहा,
"मालिक, तू क्यों अपने इस दास का
पीछा कर रहा है?[6] आखिर मैंने किया
क्या है? मेरा दोष क्या है?[7] 19 मेरे
मालिक, ज़रा अपने दास की बात सुन।
अगर यहोवा ने तुझे मेरे खिलाफ
भड़काया है, तो वह मेरा अनाज का
चढ़ावा स्वीकार करे।* लेकिन अगर
इंसानों ने तुझे भड़काया है[8] तो वे यहोवा
के सामने शापित हैं, क्योंकि उन्होंने मुझे
वह देश छोड़ने पर मजबूर किया है

अध्य. 26
1 2शम 2:18; 1इत 2:15, 16
2 1शम 24:4; 1शम 26:23
3 1शम 10:1
4 1शम 24:6; 2शम 1:14; 1इत 16:22; भज 20:6
5 व्य 32:35; 1शम 24:12; 1शम 25:38; भज 94:1, 23
6 1शम 31:3, 6
7 भज 37:12, 13
8 लैव 19:18; 1शम 24:6; 1इत 16:22; भज 105:15
9 1शम 24:4

दूसरा कॉल.
1 1शम 14:50; 1शम 17:55; 2शम 2:8; 2शम 3:8
2 1शम 26:8
3 1शम 9:16, 17; 1शम 10:1
4 1शम 26:11
5 1शम 24:8, 16
6 भज 35:7
7 1शम 24:9, 11
8 1शम 24:9

26:19 *शा., "सूँघे।"

जो यहोवा ने विरासत[1] में दिया है, मानो
मेरा उसमें कोई हिस्सा नहीं। वे एक तरह
से कह रहे हैं, 'जा, जाकर दूसरे देवताओं
की सेवा कर!' 20 यहोवा की मौजूद-
गी से दूर ज़मीन पर मेरा खून न बहाया
जाए। इसराएल का राजा जिसे पकड़ने
निकला है वह बस एक पिस्सू है,[2] राजा
जिसके पीछे भाग रहा है वह पहाड़ों पर
छिपता-फिरता तीतर है।"

21 तब शाऊल ने कहा, "मैंने पाप
किया है।[3] मेरे बेटे दाविद, मेरे पास
वापस आ जा। मैं तुझे कुछ नहीं करूँगा
क्योंकि आज तूने दिखा दिया कि तू मेरी
जान को अनमोल समझता है।[4] मैंने सच-
मुच बेवकूफी की है, बहुत बड़ी गलती की
है।" 22 तब दाविद ने कहा, "यह रहा
राजा का भाला। तेरा एक जवान आकर
इसे ले जाए। 23 यहोवा हर किसी को
उसकी नेकी और वफादारी का इनाम
देगा।[5] आज यहोवा ने तुझे मेरे हाथ में
कर दिया था, मगर मैंने यहोवा के अभि-
षिक्त जन पर हाथ उठाने से इनकार
कर दिया।[6] 24 और जैसे आज मैंने
तेरी जान को अनमोल समझा वैसे ही
यहोवा मेरी जान को अनमोल समझे
और मुझे सारी मुसीबतों से बचाए।"[7]
25 शाऊल ने दाविद से कहा, "मेरे
बेटे दाविद, तुझे आशीष मिले। तू सच-
मुच बड़े-बड़े काम करेगा और हर काम
में कामयाब होगा।"[8] इसके बाद दाविद
अपने रास्ते चला गया और शाऊल
अपनी जगह लौट गया।[9]

27 लेकिन दाविद ने मन में सोचा,
"मैं एक दिन ज़रूर शाऊल के
हाथों मारा जाऊँगा। इसलिए अच्छा होगा
कि मैं पलिश्तियों के देश भाग जाऊँ।[10]
तब शाऊल मुझे इसराएल देश में ढूँढ़ना
बंद कर देगा[11] और मैं उसके हाथ
में पड़ने से बच जाऊँगा।" 2 इस-
लिए दाविद अपने 600 आदमियों[1] को
लेकर गत के राजा आकीश[2] के पास
चला गया जो माओक का बेटा था।
3 वह आकीश के यहाँ गत में रहने
लगा। दाविद के साथ उसके सभी आदमी
और उनके परिवार भी वहाँ रहने लगे।
दाविद के साथ उसकी दोनों पत्नियाँ भी
गयीं, यिजरेल की रहनेवाली अहीनोअम[3]
और करमेल की रहनेवाली अबीगैल,[4]
जो नाबाल की विधवा थी। 4 जब
शाऊल को खबर मिली कि दाविद गत
भाग गया है तो उसने दाविद को ढूँढ़ना
छोड़ दिया।[5]

5 फिर दाविद ने आकीश से कहा,
"अगर तेरी कृपा मुझ पर हो तो मुझे रहने
के लिए देहात के किसी शहर में जगह
दे दे। तेरा यह दास तेरे साथ
राजाओं के शहर में कैसे रह सकता है?"
6 आकीश ने उसी दिन उसे सिकलग[6]
शहर दे दिया। इसीलिए आज तक सिक-
लग यहूदा के राजाओं के अधिकार में है।
7 दाविद पलिश्तियों के देहाती इलाके
में एक साल और चार महीने रहा।[7]
8 वह अपने आदमियों के साथ ऊपर
गशूरियों,[8] गिरजियों और अमालेकियों[9]
पर चढ़ाई करने जाता और उन्हें लूट
लेता था। उन लोगों का इलाका तेलम
से लेकर शूर[10] तक और नीचे मिस्र देश
तक फैला हुआ था। 9 जब भी दाविद
उन इलाकों पर हमला करता तो वहाँ के
आदमी या औरत, किसी को भी ज़िंदा
नहीं छोड़ता था।[11] मगर वह वहाँ से
भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे, ऊँट और
कपड़े उठा लेता और आकीश के पास
लौट आता था। 10 जब आकीश उससे
पूछता कि "आज तूने कौन-सी जगह
लूटी?" तो दाविद कभी कहता, "यहूदा

अध्य. 26
1 निर्ग 19:5; व्य 26:18
2 1शम 24:14
3 1शम 24:17
4 1शम 24:10; 1शम 26:11
5 भज 7:8; भज 18:20
6 1शम 24:6; 1शम 26:9
7 भज 34:19
8 1शम 24:19
9 1शम 24:22; 1शम 27:4

अध्य. 27
10 1शम 19:18; 1शम 22:1, 5
11 1शम 18:29; 1शम 23:23

दूसरा कॉल.
1 1शम 25:13; 1शम 30:9
2 1शम 21:10, 14; 1शम 27:12
3 1शम 25:43
4 1शम 25:39, 42
5 1शम 23:14; 1शम 26:25
6 यह 19:1, 5; 1शम 30:1; 2शम 1:1; 1इत 12:1, 20
7 1शम 29:3
8 यह 13:1, 2
9 उत 36:12; निर्ग 17:8, 14; गि 13:29; 1शम 15:2; 2शम 1:1
10 उत 25:17, 18; निर्ग 15:22; 1शम 15:7
11 व्य 25:19; 1शम 15:3

का दक्षिणी इलाका"*[1] तो कभी "यर-
हमेलियों[2] का दक्षिणी इलाका" तो कभी
कहता, "केनियों[3] का दक्षिणी इलाका।"
11 दाविद जब किसी जगह को लूटता
तो वहाँ के एक भी आदमी या औरत को
ज़िंदा नहीं छोड़ता था ताकि उसे गत न
लाना पड़े क्योंकि वह सोचता था, "कहीं
ऐसा न हो कि वे गत के लोगों को
हमारे बारे में बता दें कि दाविद ने ऐसा-
ऐसा किया है।" (दाविद जितने समय तक
पलिश्तियों के देहात में था वह ऐसा ही
करता था।) **12** इसीलिए आकीश ने
यह सोचकर दाविद पर भरोसा किया कि
इसके अपने इसराएली लोग ज़रूर इससे
नफरत करते होंगे, इसलिए अब यह
हमेशा के लिए मेरा सेवक बना रहेगा।

28 उन्हीं दिनों पलिश्तियों ने इस-
राएल से युद्ध करने के लिए
अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया।[4] तब
आकीश ने दाविद से कहा, "तुझे तो
मालूम ही होगा कि तू और तेरे आदमी भी
मेरे साथ युद्ध में जाएँगे।"[5] **2** दाविद ने
आकीश से कहा, "तू अच्छी तरह जानता
है कि तेरा सेवक क्या करेगा।" आकीश
ने कहा, "इसीलिए मैं तुझे हमेशा के लिए
अपना अंगरक्षक* ठहराता हूँ।"[6]

3 अब तक शमूएल की मौत हो चुकी
थी और पूरे इसराएल ने उसके लिए
मातम मनाया था और उसके अपने
शहर रामाह में उसे दफनाया था।[7]
शाऊल ने देश से उन सब लोगों को
निकाल दिया था जो मरे हुओं से संपर्क
करने का दावा करते थे और भविष्य
बताया करते थे।[8]

4 पलिश्ती अपनी सेनाओं को इकट्ठा
करने के बाद शूनेम[9] गए और उन्होंने
वहाँ अपनी छावनी डाली। इसलिए
शाऊल ने पूरी इसराएली सेना को इकट्ठा
किया और उन्होंने गिलबो[1] में छावनी
डाली। **5** जब शाऊल ने पलिश्तियों
की छावनी देखी तो वह बहुत डर गया।
उसका दिल काँपने लगा।[2] **6** शाऊल
ने यहोवा से सलाह की,[3] मगर
यहोवा ने उसे कोई जवाब नहीं दिया, न
तो सपनों के ज़रिए और न ही ऊरीम[4] या
भविष्यवक्ताओं के ज़रिए। **7** आखिर
में शाऊल ने अपने सेवकों से कहा, "मेरे
लिए एक ऐसी औरत का पता लगाओ जो
मरे हुओं से संपर्क करती हो।[5] मैं जाकर
उससे सलाह करूँगा।" उसके सेवकों ने
कहा, "एन्दोर[6] में एक औरत रहती है जो
मरे हुओं से संपर्क करती है।"

8 तब शाऊल ने अपना भेस बदला।
उसने दूसरे कपड़े पहने और दो आद-
मियों को लेकर रात में उस औरत के
पास गया। शाऊल ने उस औरत से
कहा, "मरे हुओं से संपर्क करने की शक्ति
इस्तेमाल करके मेरा भविष्य बता।[7] मैं
जिसका नाम बताऊँ, उसे बुला और
उससे मेरी बात करा।" **9** मगर उस
औरत ने कहा, "तुझे तो मालूम होना
चाहिए कि शाऊल ने क्या किया है। उसने
देश से उन सभी लोगों को निकाल दिया है
जो भविष्य बताया करते थे और जो मरे
हुओं से संपर्क कराते थे।[8] फिर तू क्यों
मुझे फँसाना चाहता है? क्यों मुझे मर-
वाना चाहता है?"[9] **10** तब शाऊल ने
यहोवा की शपथ खाकर कहा, "यहोवा
के जीवन की शपथ, इसके लिए तुझे
बिलकुल दोषी नहीं ठहराया जाएगा!"
11 तब उस औरत ने कहा, "अच्छा
बता, मैं तेरे लिए किसे बुलाऊँ?" शाऊल
ने कहा, "तू मेरे लिए शमूएल को बुला।"
12 जब उस औरत ने "शमूएल"[10] को

27:10 *या "नेगेब।" **28:2** *शा., "सदा
के लिए अपने सिर का रक्षक।"

अध्य. 27
1 यह 15:1, 2
2 1इत 2:9
3 गि 24:21; 1शम 15:6

अध्य. 28
4 1शम 14:52
5 1शम 27:12; 1शम 29:3
6 1शम 29:2
7 1शम 25:1
8 निर्ग 22:18; लैव 19:31; लैव 20:6, 27; व्य 18:10, 11; प्रक 21:8
9 यह 19:17, 18; 2रा 4:8

दूसरा कॉल.
1 1शम 31:1; 2शम 1:21; 2शम 21:12
2 1शम 28:20
3 1शम 14:37
4 निर्ग 28:30; गि 27:21
5 निर्ग 22:18; लैव 19:31; लैव 20:6; 1शम 15:23; 1शम 28:3
6 यह 17:11
7 व्य 18:10, 11; 1इत 10:13
8 1शम 28:3
9 निर्ग 22:18; लैव 20:27
10 1शम 28:3

देखा* तो वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने
लगी। उसने शाऊल से कहा, "तू तो
शाऊल है! तूने मुझे क्यों धोखा दिया?"
13 राजा ने कहा, "डर मत, बस इतना
बता कि तुझे क्या दिखायी दे रहा है?"
औरत ने कहा, "मुझे देवता जैसा कोई
ज़मीन से ऊपर उठता दिखायी दे रहा
है।" 14 शाऊल ने फौरन पूछा, "वह
दिखने में कैसा है?" औरत ने कहा, "वह
कोई बूढ़ा आदमी है, बिन आस्तीन का
बागा पहने हुए है।"[1] शाऊल समझ गया
कि वह "शमूएल" है और उसने मुँह के
बल ज़मीन पर गिरकर प्रणाम किया।

15 तब "शमूएल" ने शाऊल से कहा,
"तू क्यों मुझे परेशान कर रहा है? तूने
मुझे क्यों ऊपर बुलाया?" शाऊल ने
कहा, "मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। पलिश्ती
मुझसे लड़ने आए हैं और परमेश्वर ने
मुझे छोड़ दिया है। वह मुझे कोई जवाब
नहीं दे रहा, न तो भविष्यवक्ताओं के
ज़रिए न ही सपनों के ज़रिए।[2] इसीलिए
मैंने तुझे बुलाया ताकि तू मुझे बताए कि
मुझे क्या करना चाहिए।"[3]

16 "शमूएल" ने कहा, "जब यहोवा
ने तुझे छोड़ दिया है[4] और तेरा दुश्मन बन
गया है, तो फिर तू मुझसे पूछने क्यों चला
आया? 17 यहोवा ने मुझसे जो भविष्य-
वाणी करवायी थी, उसे वह हर हाल में
पूरी करेगा। यहोवा तुझसे तेरा राज छीन-
कर तेरे संगी दाविद को दे देगा।[5]
18 तूने यहोवा की आज्ञा नहीं मानी
और अमालेकियों का नाश नहीं किया[6]
जिन्होंने उसका क्रोध भड़काया था।
इसलिए आज यहोवा तेरे साथ ऐसा कर
रहा है। 19 यहोवा तुझे और पूरे इस-
राएल को पलिश्तियों के हवाले कर
देगा।[1] कल तू[2] और तेरे बेटे[3] मेरे साथ
होंगे। यहोवा इसराएल की पूरी सेना को
भी पलिश्तियों के हाथ में कर देगा।"[4]

20 यह सुनते ही शाऊल ज़मीन पर
चित गिर पड़ा। "शमूएल" ने जो कहा
उससे वह बहुत डर गया था। उसके शरीर
में वैसे भी कोई ताकत नहीं बची थी
क्योंकि उसने सारा दिन और सारी रात
कुछ नहीं खाया था। 21 जब वह औरत
शाऊल के पास आयी और उसने देखा कि
वह बहुत परेशान है तो उसने शाऊल से
कहा, "देख, तेरी दासी ने तेरी आज्ञा मानी
और अपनी जान हथेली पर रखकर[5]
तेरा काम किया। 22 अब तू भी मेहर-
बानी करके अपनी दासी की बात मान।
मैं थोड़ी रोटी लाती हूँ, उसे खा ताकि
तुझे वापस लौटने के लिए ताकत मिले।"
23 मगर शाऊल ने यह कहकर मना कर
दिया, "नहीं, मैं नहीं खाऊँगा।" मगर
उसके सेवक और वह औरत उसे खाने
के लिए बार-बार कहते रहे। उनके बहुत
मनाने पर वह ज़मीन से उठा और पलंग
पर बैठा। 24 उस औरत के घर में एक
मोटा-ताज़ा बछड़ा था। उसने फौरन उसे
हलाल* किया और आटा गूँधकर बिन-
खमीर की रोटियाँ बनायीं। 25 फिर
उसने शाऊल और उसके सेवकों को
खाना परोसा और उन्होंने खाया। इसके
बाद वे उठे और उसी रात वहाँ से लौट
गए।[6]

29 पलिश्तियों[7] की सारी सेनाएँ
अपेक में इकट्ठा हुईं और इस-
राएलियों ने अपनी छावनी यिजरेल[8] के
सोते के पास डाली थी। 2 पलिश्ति-
यों के सरदार अपनी सौ-सौ और हज़ार-
हज़ार की टुकड़ियाँ लेकर कदम बढ़ाने

28:12 *या "वह देखा जो शमूएल जैसा दिखता था।"

28:24 *या "उसका बलिदान।"

अध्य. 28
1 1शम 15:27
2 1शम 28:6
3 लैव 19:31
4 1शम 15:23, 1शम 16:14
5 1शम 13:14, 1शम 15:28, 1शम 16:13, 1शम 24:20
6 1शम 15:9, 1इत 10:13

दूसरा कॉल.
1 1शम 28:1, 1शम 31:1
2 1शम 31:5
3 1शम 31:2, 2शम 2:8
4 1शम 31:7
5 लैव 20:27
6 1शम 28:8

अध्य. 29
7 1शम 28:1
8 यह 19:17, 18, 1शम 29:11

लगे। दाविद और उसके आदमी आकीश के साथ सेना में सबसे पीछे चल रहे थे।[1] 3 मगर पलिश्तियों के हाकिमों ने पूछा, "ये इब्री लोग यहाँ क्या कर रहे हैं?" आकीश ने हाकिमों से कहा, "यह दाविद है, इसराएल के राजा शाऊल का सेवक। यह एक साल से मेरे साथ रहता है बल्कि उससे भी ज़्यादा समय से।[2] जब से यह अपने राजा के पास से भागकर मेरे पास आया है, तब से लेकर आज तक मैंने इसमें कोई बुराई नहीं पायी।" 4 मगर पलिश्तियों के हाकिम आकीश पर गुस्सा हो गए और उससे कहने लगे, "उस आदमी को वापस भेज दे।[3] उससे कह कि वह उसी जगह लौट जाए जो तूने उसे दी है। इसे हमारे साथ युद्ध में मत आने दे। ऐसा न हो कि युद्ध के वक्त वह उलटा हम पर ही हमला करने लगे। क्या पता, वह हमारे आदमियों का सिर काटकर अपने राजा के पास ले जाए?[4] अपने राजा को खुश करने का इससे बढ़िया मौका उसे कहाँ मिलेगा? 5 यह वही दाविद है जिसके बारे में लोगों ने नाचते-गाते हुए कहा था,

'शाऊल ने मारा हज़ारों को,
दाविद ने मारा लाखों को।'"[5]

6 इसलिए आकीश[6] ने दाविद को बुलाया और उससे कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ, तू एक सीधा-सच्चा इंसान है। मैं तो बहुत खुश हूँ कि तू मेरी सेना के साथ युद्ध करने चला है,[7] क्योंकि जब से तू मेरे पास आया है तब से लेकर आज तक मैंने तुझमें कोई बुराई नहीं पायी।[8] मगर बाकी सरदारों को तुझ पर भरोसा नहीं है।[9] 7 इसलिए तू शांति से लौट जा और ऐसा कोई काम न कर जिससे पलिश्ती सरदारों का गुस्सा तुझ पर भड़क उठे।" 8 लेकिन दाविद ने आकीश से कहा, "मगर क्यों? मैंने ऐसा क्या किया है? जब से तेरा दास तेरे पास आया है तब से लेकर आज तक क्या तूने मुझमें कोई बुराई पायी है? तो फिर हे राजा, मेरे मालिक, मैं तेरे दुश्मनों से लड़ने तेरे साथ क्यों नहीं आ सकता?" 9 आकीश ने दाविद से कहा, "मुझे तो पूरा यकीन है कि तू एक भला आदमी है, बिलकुल परमेश्वर के स्वर्गदूत की तरह।[1] लेकिन पलिश्तियों के हाकिमों ने तेरे बारे में कहा है, 'इसे हमारे साथ युद्ध में मत आने दे।' 10 इसलिए तू कल सुबह तड़के उठ और अपने मालिक के दासों के साथ, जो तेरे साथ आए हैं, उजाला होते ही लौट जा।"

11 इसलिए दाविद और उसके आदमी अगले दिन सुबह तड़के उठे ताकि पलिश्तियों के देश लौट जाएँ। और पलिश्ती सेनाएँ ऊपर यिजरेल[2] गयीं।

30 तीसरे दिन जब दाविद और उसके आदमी सिकलग[3] लौटे, तब तक अमालेकियों[4] ने दक्षिण के इलाके* पर और सिकलग पर हमला करके उन्हें लूट लिया और सिकलग को आग से फूँक दिया था। 2 वे सिकलग की सभी औरतों[5] को और छोटे बच्चे से लेकर बूढ़े तक सबको ले गए और वहाँ उनका जो कुछ था, सब लूट लिया। उन्होंने किसी को जान से नहीं मारा मगर वे उन सबको बंदी बनाकर ले गए। 3 जब दाविद और उसके आदमी शहर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि शहर जलकर राख हो गया है और उनके बीवी-बच्चों को बंदी बनाकर ले जाया गया है। 4 दाविद और उसके आदमी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। वे इतना रोए कि उनमें और रोने की ताकत न रही। 5 दाविद की

अध्य. 29
1 1शम 28:2
2 1शम 27:7, 12
3 1इत 12:19
4 1शम 14:21
5 1शम 18:7; 1शम 21:11
6 1शम 21:10; 1शम 27:2
7 1शम 28:2
8 1शम 27:11, 12
9 1शम 29:3, 9

दूसरा कॉल.
1 1शम 27:12
2 यह 19:17, 18; 1शम 29:1

अध्य. 30
3 यह 15:21, 31; 1शम 27:5, 6
4 उत 36:12; निर्ग 17:14; 1शम 15:2; 1शम 27:8
5 1शम 27:3

30:1 *या "नेगेब।"

दोनों पत्नियाँ, यिजरेली अहीनोअम और अबीगैल (जो करमेली नाबाल की विधवा थी)[1] भी बंदी बना ली गयीं। **6** दाविद के आदमी अपने बच्चों को खोने के गम में इतनी कड़वाहट से भर गए कि वे दाविद को पत्थरों से मार डालने की बात करने लगे। इससे दाविद को गहरा दुख हुआ। मगर उसने अपने परमेश्‍वर यहोवा की मदद से खुद को मज़बूत किया।[2]

7 फिर दाविद ने अहीमेलेक के बेटे अबियातार[3] याजक से कहा, "ज़रा एपोद यहाँ लाना।"[4] तब अबियातार दाविद के पास एपोद लाया। **8** दाविद ने यहोवा से सलाह की,[5] "क्या मैं लुटेरों के उस दल का पीछा करने जाऊँ? क्या मैं उन्हें पकड़ पाऊँगा?" परमेश्‍वर ने कहा, "हाँ, तू जाकर उनका पीछा कर। तू ज़रूर उन्हें पकड़ लेगा और अपना सबकुछ छुड़ा लेगा।"[6]

9 दाविद फौरन अपने 600 आदमियों[7] को लेकर निकल पड़ा। जब वे दूर बसोर घाटी* के पास पहुँचे तो उसके कुछ आदमी वहाँ रुक गए। **10** उनकी गिनती 200 थी। वे इतने थक गए थे कि बसोर घाटी पार करने की उनमें ताकत नहीं थी। मगर दाविद बाकी 400 आदमियों के साथ आगे बढ़ता गया।[8]

11 दाविद के आदमियों को मैदान में एक मिस्री आदमी मिला और वे उसे दाविद के पास ले गए। उन्होंने उस आदमी को खाने-पीने के लिए कुछ दिया। **12** साथ ही अंजीर की टिकिया का एक टुकड़ा और किशमिश की दो टिकियाँ दीं। जब उस आदमी ने यह सब खाया तो उसकी जान में जान आयी क्योंकि तीन दिन और तीन रात से उसने कुछ खाया-पीया नहीं था। **13** फिर दाविद ने उससे पूछा, "तू कहाँ का है और किसका आदमी है?" उसने कहा, "मैं एक मिस्री हूँ और एक अमालेकी आदमी का दास हूँ। मेरा मालिक मुझे तीन दिन पहले यहाँ छोड़कर चला गया क्योंकि मैं बीमार हो गया था। **14** हमने करेती लोगों[1] के दक्षिणी इलाके* पर, यहूदा के इलाके पर और कालेब[2] के दक्षिणी इलाके* पर हमला किया और उन्हें लूट लिया और सिकलग को हमने जला दिया।" **15** तब दाविद ने उससे पूछा, "क्या तू मुझे उस लुटेरे-दल के पास ले जाएगा?" उस आदमी ने कहा, "अगर तू परमेश्‍वर की शपथ खाकर मुझसे कहे कि तू मेरी जान नहीं लेगा और न ही मुझे मेरे मालिक के हवाले करेगा तो मैं तुझे उस दल के पास ले जाऊँगा।"

16 फिर वह मिस्री आदमी दाविद को उस जगह ले गया जहाँ लुटेरा-दल था। वे लुटेरे मैदान में चारों तरफ फैले हुए थे और खा-पीकर जश्‍न मना रहे थे क्योंकि वे पलिश्‍तियों के देश से और यहूदा के इलाके से ढेर सारा माल लूट लाए थे। **17** तब दाविद मुँह अँधेरे उन सबको घात करने लगा और अगली शाम तक उन्हें घात करता रहा। उन 400 आदमियों के सिवा, जो ऊँटों पर भाग गए थे, दाविद ने किसी को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा।[3] **18** दाविद ने अमालेकियों से वह सब छुड़ा लिया जो वे लूटकर ले गए थे।[4] उसने अपनी दोनों पत्नियों को भी बचा लिया। **19** दाविद और उसके आदमियों ने कुछ नहीं खोया। उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को और अपना सारा माल वापस पा लिया। बच्चों से लेकर बुज़ुर्गों तक और छोटी चीज़ से लेकर बड़ी तक, सबकुछ वापस पा लिया।[5] दाविद ने

अध्य. 30
1 1शम 25:42, 1शम 25:43
2 भज 18:6, भज 31:1, 9, भज 34:19, भज 143:5
3 1शम 22:20, 1रा 2:26
4 1शम 23:9
5 गि 27:21, न्या 20:28, 1शम 23:2, 11, 1शम 28:6
6 1शम 30:18, भज 34:19
7 1शम 23:13, 1शम 27:2
8 1शम 30:21

दूसरा कॉल.
1 2शम 8:18, 1रा 1:38, 1इत 18:17, यहे 25:16, सप 2:5
2 यह 14:13
3 निर्ग 17:14
4 1शम 30:3
5 1शम 30:8, भज 34:19

30:9 *शब्दावली देखें।

30:14 *या "नेगेब।"

लुटेरों के हाथ से हर चीज़ छुड़ा ली। **20** उसने लुटेरों की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल भी ले लिए और उसके आदमी इन जानवरों को अपने जानवरों के आगे-आगे हाँकते हुए ले गए। उन्होंने कहा, “यह दाविद की लूट है।”

21 फिर दाविद उन 200 आदमियों के पास पहुँचा जो बहुत थक जाने की वजह से उसके साथ नहीं गए थे बल्कि बसोर घाटी के पास रुक गए थे।[1] वे दाविद और उसके साथवाले आदमियों से मिलने गए। फिर दाविद ने उनके पास जाकर उनका हाल-चाल पूछा। **22** मगर जो आदमी दाविद के साथ गए थे उनमें से कुछ बुरे और निकम्मे लोग कहने लगे, “हम लूट की जो चीज़ें छुड़ा लाए हैं, उनमें से एक भी चीज़ उन्हें नहीं देंगे क्योंकि वे हमारे साथ नहीं आए थे। वे बस अपने बीवी-बच्चों को लेकर जा सकते हैं।” **23** मगर दाविद ने उन्हें समझाया, “मेरे भाइयो, यहोवा की दी हुई चीज़ों के साथ तुम ऐसा मत करो। उसने हमारी हिफाज़त की और उस लुटेरे-दल को हमारे हाथ में कर दिया।[2] **24** तुम जो कह रहे हो क्या उससे कोई राज़ी होगा? जो लोग सामान की देखभाल करने के लिए रह गए थे उन्हें भी उतना ही हिस्सा मिलेगा[3] जितना उन लोगों को जो युद्ध में गए थे। सबको बराबर हिस्सा मिलेगा।”[4] **25** दाविद का यह फैसला उस दिन से पूरे इसराएल के लिए एक नियम और कानून बन गया जो आज तक कायम है।

26 जब दाविद सिकलग लौटा तो उसने लूट में से कुछ माल यहूदा के प्रधानों को भेजा जो उसके दोस्त थे। उसने उन्हें यह संदेश भेजा: “यहोवा के दुश्मनों की लूट में से यह तुम्हारे लिए तोहफा है।” **27** इसी तरह उसने इन सारी जगहों के लोगों को भी लूट में से कुछ माल भेजा: बेतेल,[1] नेगेब* के रामोत, यत्तीर,[2] **28** अरोएर, सिपमोत, एश्तमोआ,[3] **29** राकाल, यरहमेलियों[4] के शहर, केनियों[5] के शहर, **30** होरमा,[6] बोराशान, अताक, **31** और हेब्रोन।[7] दाविद ने उन सारी जगहों के लोगों को कुछ माल भेजा जहाँ वह और उसके आदमी अकसर जाया करते थे।

31 पलिश्ती लोग इसराएलियों से युद्ध कर रहे थे।[8] इसराएली सेना पलिश्तियों से हारकर भाग गयी और बहुत-से इसराएली सैनिक गिलबो पहाड़[9] पर ढेर हो गए। **2** पलिश्ती सैनिक शाऊल और उसके बेटों का पीछा करते-करते उनके पास आ गए। उन्होंने शाऊल के बेटे योनातान,[10] अबीनादाब और मलकीशूआ[11] को मार डाला। **3** फिर उन्होंने शाऊल के साथ जमकर लड़ाई की और जब तीरंदाज़ों ने उसे देखा तो उसे बुरी तरह घायल कर दिया।[12] **4** तब शाऊल ने अपने हथियार ढोनेवाले सैनिक से कहा, “तू अपनी तलवार निकालकर मुझे घोंप दे ताकि ये खतनारहित आदमी[13] मुझे न घोंपें और बेरहमी से न मारें।”* मगर उसके सैनिक ने इनकार कर दिया क्योंकि ऐसा करने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। तब शाऊल ने अपनी तलवार ली और खुद उस पर गिर गया।[14] **5** जब शाऊल के हथियार ढोनेवाले सैनिक ने देखा कि वह मर गया है,[15] तो वह सैनिक भी अपनी तलवार पर गिर पड़ा और मर गया। **6** इस तरह उस दिन शाऊल, उसके तीन बेटे, उसका हथियार ढोनेवाला

अध्य. 30
1 1शम 30:10
2 1शम 30:8
3 1शम 30:10
4 गि 31:27; यह 22:8; भज 68:12

दूसरा कॉल.
1 यह 19:4, 8
2 यह 15:20, 48; यह 21:8, 14
3 यह 15:20, 50; यह 21:8, 14
4 1शम 27:10; 1इत 2:9
5 न्या 1:16; 1शम 15:6
6 गि 21:3; यह 19:1, 4; न्या 1:17
7 यह 14:13; 2शम 2:1

अध्य. 31
8 1शम 14:52; 1शम 29:1
9 1शम 28:4; 2शम 1:21; 1इत 10:1-5
10 1शम 13:2
11 1इत 8:33
12 2शम 1:4, 6
13 1शम 17:26; 2शम 1:20
14 1इत 10:4
15 1शम 26:10; 1इत 10:13

30:27 *या “दक्षिण।” **31:4** *या “मेरे साथ बुरा सलूक न करें।”

सैनिक और उसके सभी सैनिक मर
गए।[1] 7 जब घाटी के इलाके और यर-
दन के इलाके में रहनेवाले इसराएलियों
ने देखा कि इसराएली सैनिक भाग गए हैं
और शाऊल और उसके बेटे मर गए हैं,
तो वे अपना-अपना शहर छोड़कर भागने
लगे।[2] फिर पलिश्ती आकर उन शहरों में
रहने लगे।

8 अगले दिन जब पलिश्ती, मारे गए
इसराएली सैनिकों के कपड़े और हथि-
यार लेने आए तो उन्होंने गिलबो पहाड़
पर शाऊल और उसके तीन बेटों की लाशें
देखीं।[3] 9 उन्होंने शाऊल का सिर काट
लिया और उसका बख्तर और सभी हथि-
यार निकाल लिए। उन्होंने पलिश्तियों के
पूरे देश में संदेश भेजा[4] कि यह खबर
उनके मूरतों[1] के मंदिरों तक और लोगों
तक पहुँचायी जाए। 10 फिर उन्होंने
शाऊल के हथियार ले जाकर अशतोरेत
के मंदिर में रखे और उसकी लाश बेत-
शान[2] की शहरपनाह से ठोंक दी।
11 जब याबेश-गिलाद[3] के लोगों ने
सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल के साथ
क्या किया है, 12 तो उनके सभी योद्धा
निकल पड़े और रात-भर सफर करके
बेतशान गए। उन्होंने शाऊल और उसके
बेटों की लाशें शहरपनाह से उतारीं और
याबेश ले आए और वहाँ उन्हें जला
दिया। 13 फिर उन्होंने उनकी हड्डियाँ[4]
ले जाकर याबेश में झाऊ के पेड़ के
नीचे दफना दीं[5] और सात दिन तक उप-
वास किया।

अध्य. 31

1 1शम 28:19, 1इत 10:6, 7
2 1शम 13:6
3 1शम 28:4, 1शम 31:1, 2शम 1:6, 1इत 10:8-12
4 2शम 1:20

दूसरा कॉल.

1 न्या 16:23
2 यह 17:11, न्या 1:27
3 1शम 11:1, 9-11
4 2शम 21:12
5 2शम 2:4, 5

दूसरा शमूएल

सारांश

1 शाऊल की मौत की खबर (1-16)
   दाविद का शोकगीत (17-27)

2 दाविद, यहूदा का राजा (1-7)
   ईशबोशेत, इसराएल का राजा (8-11)
   दोनों घरानों के बीच युद्ध (12-32)

3 दाविद का घराना ताकतवर (1)
   दाविद के बेटे (2-5)
   अब्नेर, दाविद की तरफ (6-21)
   योआब ने अब्नेर को मार डाला (22-30)
   दाविद ने उसके लिए मातम मनाया (31-39)

4 ईशबोशेत का कत्ल (1-8)
   दाविद ने कातिलों को मरवाया (9-12)

5 दाविद, पूरे इसराएल का राजा (1-5)
   यरूशलेम पर कब्ज़ा (6-16)
      सिय्योन, दाविदपुर (7)
   दाविद ने पलिश्तियों को हराया (17-25)

6 संदूक यरूशलेम लाया गया (1-23)
      उज्जाह ने संदूक पकड़ा; उसकी मौत (6-8)
      मीकल ने दाविद को तुच्छ समझा (16, 20-23)

7 दाविद मंदिर नहीं बनाएगा (1-7)
   दाविद से राज का करार (8-17)
   उसकी धन्यवाद की प्रार्थना (18-29)

8 दाविद की जीत (1-14)
   उसका प्रशासन (15-18)

9 मपीबोशेत के लिए अटल प्यार (1-13)

10 अम्मोन और सीरिया पर जीत (1-19)

11 दाविद ने व्यभिचार किया (1-13)
उरियाह को मरवा डाला (14-25)
बतशेबा को पत्नी बनाया (26, 27)

12 नातान ने दाविद को फटकारा (1-15क)
बतशेबा के बेटे की मौत (15ख-23)
बतशेबा ने सुलैमान को जन्म दिया (24, 25)
रब्बाह शहर पर कब्ज़ा (26-31)

13 अम्नोन ने तामार का बलात्कार किया (1-22)
अबशालोम ने उसे मार डाला (23-33)
अबशालोम गशूर भागा (34-39)

14 योआब और तकोआ की औरत (1-17)
दाविद ने योआब की तरकीब भाँपी (18-20)
अबशालोम को लौटने की इजाज़त (21-33)

15 अबशालोम की साज़िश और बगावत (1-12)
दाविद यरूशलेम से भागा (13-30)
अहीतोपेल, अबशालोम से मिल गया (31)
अहीतोपेल को नाकाम करने के लिए हूशै को भेजा गया (32-37)

16 सीबा ने मपीबोशेत को बदनाम किया (1-4)
शिमी ने दाविद को शाप दिया (5-14)
अबशालोम ने हूशै को स्वीकार किया (15-19)
अहीतोपेल की सलाह (20-23)

17 अहीतोपेल की सलाह नाकाम (1-14)
दाविद अबशालोम से भागा (15-29)
बरजिल्लै और दूसरों ने मदद की (27-29)

18 अबशालोम की हार और मौत (1-18)
दाविद को इसकी खबर मिली (19-33)

19 दाविद ने मातम मनाया (1-4)
योआब ने दाविद को फटकारा (5-8क)
दाविद यरूशलेम लौटा (8ख-15)
शिमी ने माफी माँगी (16-23)
मपीबोशेत बेगुनाह साबित हुआ (24-30)
बरजिल्लै को सम्मान दिया गया (31-40)
गोत्रों के बीच बहस (41-43)

20 शीबा की बगावत; अमासा का कत्ल (1-13)
शीबा का सिर काट डाला गया (14-22)
दाविद का प्रशासन (23-26)

21 गिबोनियों का बदला (1-14)
पलिश्तियों से युद्ध (15-22)

22 दाविद ने परमेश्वर की तारीफ की (1-51)
'यहोवा मेरे लिए बड़ी चट्टान है' (2)
यहोवा, वफादार लोगों का वफादार (26)

23 दाविद के आखिरी शब्द (1-7)
दाविद के वीर योद्धाओं के कारनामे (8-39)

24 दाविद ने गिनती लेकर पाप किया (1-14)
महामारी से 70,000 लोग मरे (15-17)
दाविद ने वेदी बनायी (18-25)
कीमत चुकाए बिना बलिदान नहीं (24)

---

1 शाऊल की मौत हो चुकी थी और दाविद अमालेकियों को हराकर* सिकलग[1] लौट आया था। उसे सिकलग में रहते दो दिन हो गए थे और
2 तीसरे दिन शाऊल की छावनी से एक आदमी अपने कपड़े फाड़े हुए और सिर पर धूल डाले सिकलग आया। जब वह दाविद के पास पहुँचा तो उसने मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर प्रणाम किया।
3 दाविद ने उससे पूछा, "तू कहाँ से आया है?" उसने कहा, "मैं इसराएल की छावनी से भागकर आया हूँ।"
4 दाविद ने पूछा, "युद्ध में क्या हुआ, मुझे बता।" उसने कहा, "इसराएली युद्ध से भाग गए हैं और बहुत-से इसराएली सैनिक मारे

अध्य. 1
1 1शम 27:5, 6

1:1 * या "मारकर।"

गए हैं। शाऊल और उसके बेटे योना-
तान की भी मौत हो गयी है।”[1] 5 तब
दाविद ने खबर लानेवाले उस जवान से
पूछा, “तुझे कैसे मालूम कि शाऊल और
उसका बेटा योनातान मर गए हैं?”
6 उस जवान ने कहा, “इत्तफाक से मैं
उस वक्त गिलबो पहाड़ पर था[2] और मैंने
देखा कि शाऊल भाला टेके खड़ा है और
दुश्मनों के रथ और घुड़सवार तेज़ी से
उसकी ओर बढ़ रहे हैं।[3] 7 जब शाऊल
ने मुड़कर मुझे देखा तो उसने मुझे
बुलाया और मैंने कहा, ‘हाँ, मालिक!’
8 उसने मुझसे पूछा, ‘तू कौन है?’ मैंने
कहा, ‘मैं एक अमालेकी[4] हूँ।’ 9 उसने
कहा, ‘मेरे पास आ और मुझे मार डाल,
तेरी बड़ी मेहरबानी होगी। मैं दर्द से तड़प
रहा हूँ और मेरी जान भी नहीं निकल
रही है।’ 10 तब मैंने पास जाकर उसे
मार डाला[5] क्योंकि मैं जानता था कि वह
इतनी बुरी तरह घायल हो चुका था कि
उसका बचना नामुमकिन था। फिर मैंने
उसके सिर से ताज और हाथ से बाज़ूबंद
निकाल लिया और ये सब तेरे पास लाया
हूँ मालिक।”

11 यह सुनते ही दाविद ने मारे दुख
के अपने कपड़े फाड़े और उसके सभी
आदमियों ने भी वैसा ही किया। 12 वे
शाऊल और उसके बेटे योनातान के लिए
और यहोवा के लोगों और इसराएल के
घराने[6] के लिए शाम तक रोते-बिलखते
रहे और उन्होंने उपवास किया[7] क्योंकि वे
सब तलवार से मारे गए थे।

13 दाविद ने खबर लानेवाले उस
जवान से पूछा, “तू कहाँ का रहनेवाला
है?” उसने कहा, “मैं इसराएल में रहने-
वाले एक परदेसी अमालेकी का बेटा हूँ।”
14 दाविद ने उससे कहा, “यहोवा के
अभिषिक्त जन पर हाथ उठाने की तेरी
हिम्मत कैसे हुई?”[1] 15 फिर दाविद ने
अपने एक आदमी को बुलाया और उससे
कहा, “आगे बढ़ और मार डाल इसे।”
उसने आगे बढ़कर उस जवान को मार
डाला।[2] 16 दाविद ने उस जवान से
कहा, “तेरे खून का दोष तेरे ही सिर पड़े
क्योंकि तूने अपने मुँह से यह कहकर खुद
को दोषी ठहराया, ‘यहोवा के अभिषिक्त
जन को मैंने ही मारा है।’”[3]

17 इसके बाद दाविद ने शाऊल और
उसके बेटे योनातान के लिए एक शोक-
गीत गाया।[4] 18 दाविद ने कहा कि
यहूदा के लोगों को यह शोकगीत सिखाया
जाए जो “धनुष” कहलाता है और याशार
की किताब[5] में लिखा है:

19 “हे इसराएल, तेरा गौरव तेरी ऊँची
जगहों पर घात पड़ा है।[6]
हाय! तेरे वीर कैसे गिर पड़े हैं!
20 यह खबर गत में मत सुनाना,[7]
अश्कलोन की गलियों में इसका
ऐलान मत करना,
वरना पलिश्तियों की बेटियाँ
खुशियाँ मनाएँगी,
वरना खतनारहित लोगों की बेटियाँ
जश्न मनाएँगी।
21 गिलबो के पहाड़ो,[8]
तुम पर न ओस पड़े, न बारिश
गिरे,
न तुम्हारे खेत पवित्र भेंट के लिए
कोई उपज दें,[9]
क्योंकि तुम्हारे यहाँ शूरवीरों की
ढाल दूषित हो गयी,
अब शाऊल की ढाल तेल से नहीं
चमकायी जाती।
22 दुश्मनों का खून बहाए बिना, सूर-
माओं की चरबी भेदे बिना
न योनातान की कमान कभी
लौटती थी,[10]

अध्य. 1
1 1शम 31:1, 6 1इत 10:4, 6
2 1शम 28:4 1इत 10:1
3 1शम 31:3 1इत 10:3
4 निर्ग 17:16 व्य 25:19 1शम 15:20 1शम 30:1
5 1शम 31:4
6 1शम 31:1
7 1शम 31:11, 13

दूसरा कॉल.
1 गि 12:8 1शम 24:6 1शम 26:9 1शम 31:4
2 2शम 4:10
3 2शम 1:6, 10
4 1शम 31:6
5 यह 10:13
6 1शम 31:8
7 1शम 31:9
8 1शम 31:1 1इत 10:1
9 लैव 27:16
10 1शम 18:4 1शम 20:20

न शाऊल की तलवार कभी
लौटती थी।[1]
23 शाऊल और योनातान[2]
सारी ज़िंदगी सबके चहेते* और
प्यारे थे,
मौत के वक्त भी वे एक-दूसरे से
जुदा नहीं हुए।[3]
वे उकाबों से ज़्यादा फुर्तीले[4]
और शेरों से ज़्यादा ताकतवर थे।[5]
24 इसराएल की बेटियो, शाऊल के
लिए रोओ,
जिसने तुम्हें सुर्ख लाल, शानदार
कपड़े पहनाए
और तुम्हें सोने के गहनों से
सजाया।
25 हाय! तेरे वीर कैसे युद्ध में मारे
गए हैं!
योनातान तेरी ऊँची जगहों पर घात
पड़ा है![6]
26 मेरे भाई योनातान, तुझे खोने के
गम से मैं बहुत दुखी हूँ,
तू मेरा कितना अज़ीज़ था![7]
मेरे लिए तेरा प्यार औरतों के प्यार
से कहीं बढ़कर था।[8]
27 हाय! वीर कैसे गिर पड़े हैं,
युद्ध के हथियार कैसे मिट गए हैं!”

2 इसके बाद दाविद ने यहोवा से सलाह
की,[9] “क्या मैं यहूदा के किसी शहर
में जाऊँ?” यहोवा ने कहा, “हाँ, जा।”
दाविद ने पूछा, “मैं किस शहर में जाऊँ?”
परमेश्वर ने कहा, “तू हेब्रोन जा।”[10]
2 तब दाविद अपनी दोनों पत्नियों, यिज-
रेली अहीनोअम[11] और अबीगैल[12] को
साथ लेकर हेब्रोन गया। (अबीगैल, कर-
मेली नाबाल की विधवा थी।) 3 दाविद
अपने आदमियों[13] और उनके परिवारों
को भी साथ ले गया और वे सभी
हेब्रोन के आस-पास के शहरों में बस गए।
4 इसके बाद, यहूदा के आदमी हेब्रोन
आए और उन्होंने दाविद का अभिषेक
करके उसे यहूदा के घराने का राजा ठह-
राया।[1]

उन्होंने दाविद को बताया कि याबेश-
गिलाद के आदमियों ने ही शाऊल को
दफनाया था। 5 तब दाविद ने अपने
दूतों के हाथ याबेश-गिलाद के आद-
मियों को यह संदेश भेजा: “यहोवा
तुम्हें आशीष दे क्योंकि तुमने अपने
मालिक शाऊल को दफनाकर उसके लिए
अपने अटल प्यार का सबूत दिया।[2]
6 यहोवा भी तुम्हें अपने अटल प्यार का
सबूत दे और तुम्हारा विश्वासयोग्य बना
रहे। मैं भी तुम पर कृपा करूँगा क्योंकि
तुमने यह नेक काम किया है।[3] 7 अब
तुम सब खुद को मज़बूत करो और दिलेर
बनो, क्योंकि तुम्हारा मालिक शाऊल
अब नहीं रहा और यहूदा के घराने ने मेरा
अभिषेक करके मुझे अपना राजा ठह-
राया है।”

8 मगर अब्नेर,[4] जो नेर का बेटा और
शाऊल की सेना का सेनापति था, शाऊल
के बेटे ईशबोशेत[5] को नदी पार मह-
नैम[6] ले गया था 9 और वहाँ उसे
राजा बना दिया था। उसने ईशबोशेत को
गिलाद[7] पर, अशूरी लोगों पर, यिज-
रेल,[8] एप्रैम[9] और बिन्यामीन पर, एक
तरह से पूरे इसराएल पर राजा बना दिया
था। 10 शाऊल का बेटा ईशबोशेत
जब इसराएल का राजा बना तो वह
40 साल का था। उसने दो साल राज
किया। मगर यहूदा के घराने ने दाविद
का साथ दिया।[10] 11 दाविद ने हेब्रोन
में रहकर यहूदा के घराने पर साढ़े सात
साल तक राज किया था।[11]

1:23 *या “मनभावने।”

अध्य. 1
1 1शम 14:47
2 1शम 18:1
3 1शम 31:6
1इत 10:6
4 अय 9:26
5 नीत 30:30
6 1शम 31:8
7 1शम 18:1, 3
8 1शम 19:2
1शम 20:17, 41
1शम 23:16-18
नीत 17:17
नीत 18:24

अध्य. 2
9 गि 27:21
1शम 28:6
10 उत 23:2
गि 13:22
यह 14:14
यह 20:7
2शम 5:1
1रा 2:11
11 1शम 25:43
12 1शम 25:42
1शम 30:5
13 1शम 22:1, 2
1शम 27:2
1इत 12:1

दूसरा कॉल.
1 उत 49:10
1शम 15:24, 28
1शम 16:13
2शम 5:4, 5
1इत 11:3
2 1शम 31:11-13
3 2शम 9:7
2शम 10:2
4 1शम 14:50
1शम 17:55
1शम 26:5
2शम 4:1
1रा 2:5
5 2शम 4:5-8
2शम 4:12
6 उत 32:1, 2
यह 13:29, 30
7 यह 13:8, 11
8 यह 19:17, 18
9 यह 16:5-8
10 2शम 2:4
11 1इत 3:4

12 कुछ समय बाद नेर का बेटा
अब्नेर और शाऊल के बेटे ईशबोशेत
के सेवक, महनैम से[1] गिबोन[2] गए।
13 इधर सरूयाह का बेटा योआब[3] और
दाविद के सेवक भी गिबोन के तालाब
के पास गए और वहाँ उन्होंने अब्नेर के
दल का सामना किया। एक दल तालाब
के इस तरफ बैठा था और दूसरा दल
तालाब के उस तरफ। **14** तब अब्नेर
ने योआब से कहा, "एक काम करते हैं।
हम अपने जवानों से कहते हैं कि वे उठ-
कर हमारे सामने एक-दूसरे से मुकाबला
करें।" योआब ने कहा, "ठीक है, हो जाए
मुकाबला।" **15** तब दोनों दल तैयार
हुए और उन्होंने अपने-अपने दल से 12
आदमी चुने। बिन्यामीन और शाऊल के
बेटे ईशबोशेत की तरफ से 12 जवान
थे और दाविद के सेवकों में से 12
जवान। **16** फिर दोनों दलों के जवानों
ने एक-दूसरे के बाल कसकर पकड़े और
हरेक ने अपने विरोधी को तलवार भोंक
दी और सब एक-साथ ढेर हो गए। इसी
घटना से गिबोन प्रांत की उस जगह का
नाम हेलकत-हस्सुरीम पड़ा।

17 उस दिन दोनों दलों के बीच घमा-
सान युद्ध हुआ। आखिरकार अब्नेर और
इसराएल के आदमी दाविद के आद-
मियों से हार गए। **18** दाविद के आद-
मियों में सरूयाह के तीन बेटे[4] योआब,[5]
अबीशै[6] और असाहेल[7] भी थे। असाहेल
जंगली चिकारे की तरह तेज़ दौड़ता था।
19 वह अब्नेर का पीछा करने लगा और
उसके पीछे ऐसा दौड़ता गया कि उसने
दाएँ-बाएँ मुड़कर भी न देखा। **20** जब
अब्नेर ने पीछे मुड़कर देखा तो उसने
पूछा, "असाहेल, क्या तू है?" उसने कहा,
"हाँ, मैं हूँ।" **21** अब्नेर ने कहा, "मेरा
पीछा करना छोड़ दे। मेरे किसी जवान
को पकड़ ले और उसके पास जो कुछ है
छीन ले।" मगर असाहेल रुकने का नाम
ही नहीं ले रहा था। **22** अब्नेर ने असा-
हेल से फिर कहा, "मेरा पीछा करना छोड़
दे, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुझे मार डालूँ।
फिर मैं तेरे भाई योआब को क्या मुँह
दिखाऊँगा?" **23** मगर असाहेल नहीं
माना। इसलिए अब्नेर ने अपने भाले का
पिछला हिस्सा असाहेल के पेट में ऐसा
मारा कि भाला आर-पार निकल गया।[1]
असाहेल गिर पड़ा और उसने वहीं दम
तोड़ दिया। जितने आदमी उस जगह से
गुज़रते जहाँ असाहेल की लाश पड़ी थी,
वे सब थोड़ी देर वहाँ रुकते थे।

24 इसके बाद योआब और अबीशै,
अब्नेर का पीछा करने लगे। सूरज ढलते-
ढलते वे अम्माह नाम की पहाड़ी पर
पहुँचे, जो गीह के सामने और गिबोन के
वीराने की तरफ जानेवाले रास्ते पर
थी। **25** वहाँ बिन्यामीन के लोग अब्नेर
के पीछे इकट्ठा हो गए और दल बाँधकर
एक पहाड़ी की चोटी पर खड़े हो गए।
26 फिर अब्नेर ने योआब को आवाज़
लगायी और कहा, "हम कब तक इस
तरह एक-दूसरे पर तलवार चलाते
रहेंगे? क्या तू नहीं जानता कि आखिर
में इसका अंजाम कड़वा ही होगा? अब
तो अपने आदमियों से बोल कि वे
अपने भाइयों का पीछा करना छोड़ दें।"
27 योआब ने कहा, "सच्चे परमेश्वर के
जीवन की शपथ, अगर तू न कहता तो
मेरे लोग सुबह तक अपने भाइयों का
पीछा करते रहते।" **28** फिर योआब
ने नरसिंगा फूँका और उसके आद-
मियों ने इसराएलियों का पीछा करना
छोड़ दिया। इस तरह लड़ाई थम गयी।

29 इसके बाद अब्नेर और उसके
आदमियों ने रात-भर चलकर अराबा[2]

अध्य. 2

1 2शम 2:8

2 यह 10:12
यह 18:21, 25
यह 21:8, 17
2शम 20:8
2इत 1:3

3 2शम 8:16
2शम 20:23
1रा 1:5, 7
1इत 2:15, 16

4 1इत 2:15, 16

5 2शम 10:7
2शम 24:2
1रा 11:15
1इत 11:6

6 1शम 26:6
2शम 20:6
1इत 11:20

7 2शम 3:27
2शम 23:24
1इत 27:1, 7

दूसरा कॉल.

1 2शम 3:27

2 व्य 1:7
यह 12:2, 3

पार किया। फिर उन्होंने यरदन नदी पार की और उसकी तंग घाटी में चलते हुए* आगे बढ़े और आखिरकार महनैम पहुँचे।[1] **30** जब योआब ने अब्नेर का पीछा करना छोड़ दिया तो उसने अपने सभी आदमियों को इकट्ठा किया। दाविद के सेवकों में से असाहेल के अलावा 19 आदमी कम थे। **31** दाविद के सेवकों ने बिन्यामीनियों और अब्नेर के आदमियों को हरा दिया था। उनके 360 आदमी मारे गए थे। **32** योआब और उसके आदमियों ने असाहेल[2] की लाश उठायी और बेतलेहेम[3] ले जाकर उसके पिता की कब्र में दफना दी। इसके बाद योआब और उसके आदमी पूरी रात चलते रहे और सुबह होते-होते हेब्रोन[4] पहुँचे।

3 शाऊल के घराने और दाविद के घराने के बीच लंबे समय तक युद्ध चलता रहा। दाविद दिनों-दिन ताकतवर होता गया,[5] जबकि शाऊल का घराना कमज़ोर होता गया।[6]

2 इस बीच हेब्रोन में दाविद के कई बेटे हुए।[7] उसका पहलौठा अम्नोन[8] था जो यिजरेली अहीनोअम[9] से पैदा हुआ था। **3** दूसरा बेटा किलाब था जो अबीगैल[10] (वह करमेली नाबाल की विधवा थी) से पैदा हुआ था और तीसरा अबशालोम[11] था जो माका से पैदा हुआ था। माका गशूर के राजा तल्मै[12] की बेटी थी। **4** चौथा अदोनियाह[13] था जो हग्गीत से पैदा हुआ था, पाँचवाँ शपत्याह था जो अबीतल से पैदा हुआ था **5** और छठा बेटा यित्राम था जो एग्ला से पैदा हुआ था। दाविद के ये बेटे हेब्रोन में पैदा हुए थे।

6 एक तरफ जहाँ शाऊल के घराने और दाविद के घराने के बीच युद्ध चलता रहा, वहीं दूसरी तरफ अब्नेर[1] शाऊल के घराने में अपनी धाक जमाने में लगा रहा। **7** शाऊल की एक उप-पत्नी थी रिस्पा,[2] जो अय्या की बेटी थी। बाद में ईशबोशेत[3] ने अब्नेर से कहा, "तूने क्यों मेरे पिता की उप-पत्नी के साथ संबंध रखे?"[4] **8** इस पर अब्नेर को बहुत गुस्सा आया और उसने ईशबोशेत से कहा, "क्या मैं यहूदा का कोई कुत्ता* हूँ जो तू मुझसे ऐसे बात कर रहा है? आज तक मैं तेरे पिता शाऊल के घराने का और उसके भाइयों और दोस्तों का वफादार हूँ।# मैंने कोई गद्दारी नहीं की और तेरे साथ भी मैंने विश्वासघात करके तुझे दाविद के हाथ में नहीं किया। फिर भी तू आज मेरे साथ ऐसा सलूक कर रहा है? मुझसे एक औरत के मामले में गलती क्या हो गयी, तू मुझसे उसका हिसाब माँग रहा है? **9** अब अगर मैं दाविद के साथ यहोवा की शपथ[5] के मुताबिक काम न करूँ, तो परमेश्वर मुझ अब्नेर को कड़ी-से-कड़ी सज़ा दे। **10** परमेश्वर ने शपथ खाकर कहा था कि वह शाऊल के घराने से राज छीनकर दाविद को दे देगा और दाविद की राजगद्दी दान से लेकर बेरशेबा तक[6] पूरे इसराएल और यहूदा पर कायम करेगा।" **11** जवाब में ईशबोशेत से कुछ कहते न बना क्योंकि वह अब्नेर से बहुत डर गया था।[7]

12 अब्नेर ने फौरन अपने दूतों के हाथ दाविद को यह संदेश भेजा: "इस पूरे देश पर किसका अधिकार है?" फिर उसने कहा, "तू मेरे साथ एक करार

अध्य. 2
1 यह 21:8, 38; 2शम 2:8
2 2शम 2:18; 1इत 2:15, 16
3 उत 35:19; रूत 4:11; 1शम 16:1
4 2शम 2:1, 3; 1इत 11:1

अध्य. 3
5 1शम 15:27, 28; 1शम 24:17, 20; 1शम 26:25
6 2शम 2:17
7 1इत 3:1-4
8 2शम 13:1
9 1शम 25:43
10 1शम 25:42
11 2शम 15:12
12 2शम 13:37
13 1रा 1:5

दूसरा कॉल.
1 2शम 2:8
2 2शम 21:8-11
3 2शम 2:10
4 2शम 16:21; 1रा 2:22
5 1शम 15:27, 28; भज 78:70; भज 89:20
6 न्या 20:1; 2शम 24:2
7 2शम 3:39

2:29 *या शायद, "पूरे बितरोन से होकर।"

3:8 *शा., "यहूदा के कुत्ते का सिर।" #या "के लिए अपने अटल प्यार का सबूत देता रहा हूँ।"

कर और मैं पूरे इसराएल को तेरी तरफ
करने में कोई कसर नहीं छोड़ूँगा।”[1]
13 जवाब में दाविद ने कहा, “अच्छी
बात है! मैं ज़रूर तेरे साथ करार करूँगा।
बस मैं तुझसे इतना चाहता हूँ कि जब
तू मुझसे मिलने आए तो शाऊल की
बेटी मीकल[2] को मेरे पास लाए, वरना तू
मुझे अपना मुँह न दिखाना।” 14 फिर
दाविद ने अपने दूतों के हाथ शाऊल के
बेटे ईशबोशेत[3] को यह संदेश भेजा: “मुझे
मेरी पत्नी मीकल वापस दे दे, जिससे मेरी
सगाई पलिश्तियों की 100 खलड़ियाँ
देकर करायी गयी थी।”[4] 15 तब ईश-
बोशेत ने मीकल को लाने के लिए
अपने आदमियों को उसके पति पलती-
एल[5] के पास भेजा जो लैश का बेटा था।
16 जब मीकल जा रही थी तो उसका
पति उसके साथ चलता गया और रोता
हुआ उसके पीछे-पीछे दूर बहूरीम[6] तक
गया। फिर अब्नेर ने पलतीएल से कहा,
“जा, तू लौट जा!” तब वह लौट गया।

17 इस बीच अब्नेर ने इसराएल के
मुखियाओं को यह संदेश भेजा: “तुम लोग
काफी समय से दाविद को अपना राजा
बनाना चाहते थे। 18 अब वैसा ही
करो क्योंकि यहोवा ने दाविद से कहा था,
‘मैं अपने सेवक दाविद[7] के हाथों अपनी
प्रजा इसराएल को पलिश्तियों और बाकी
सभी दुश्मनों से बचाऊँगा।’” 19 फिर
अब्नेर ने बिन्यामीन के लोगों से बात
की।[8] वह हेब्रोन भी गया ताकि दाविद से
अकेले में बात करे और उसे बताए कि
इसराएल और बिन्यामीन का पूरा घराना
क्या करने पर राज़ी हुआ है।

20 जब अब्नेर 20 आदमियों को
लेकर हेब्रोन में दाविद के पास आया
तो दाविद ने उन सबके लिए एक
दावत रखी। 21 फिर अब्नेर ने दाविद
से कहा, “मुझे इजाज़त दे कि मैं जाकर
पूरे इसराएल को अपने मालिक राजा के
सामने इकट्ठा करूँ ताकि वे तेरे साथ एक
करार करें और तू पूरे इसराएल का राजा
बने, जैसा तू चाहता है।” तब दाविद ने
अब्नेर को विदा किया और अब्नेर शांति
से अपने रास्ते चला गया।

22 कुछ ही देर बाद दाविद के सेवक
और योआब कहीं से लूटमार करके
वापस लौटे। वे अपने साथ लूट का
ढेर सारा माल लाए थे। तब तक अब्नेर
हेब्रोन से जा चुका था क्योंकि दाविद
ने उसे शांति से विदा कर दिया था।
23 योआब[1] और उसकी पूरी सेना के
लौटने पर योआब को बताया गया कि
नेर का बेटा अब्नेर[2] राजा के पास आया
था और राजा ने उसे विदा कर दिया और
वह शांति से अपने रास्ता चला गया।
24 तब योआब ने राजा के पास जाकर
उससे कहा, “यह तूने क्या किया? अब्नेर
तेरे पास आया था और तूने उसे यूँ ही
जाने दिया! 25 तू जानता है कि नेर का
वह बेटा अब्नेर कैसा आदमी है। वह तुझे
धोखा देने आया था, तेरे हर काम की
जासूसी करने, तेरे बारे में पूरी जानकारी
लेने आया था।”

26 इसलिए योआब दाविद के पास
से चला गया और उसने अपने दूतों
को अब्नेर के पीछे भेजा। वे उसे सीरा
के कुंड के पास से वापस ले आए। मगर
दाविद को इस बारे में कुछ नहीं पता था।
27 जब अब्नेर हेब्रोन लौटा[3] तो योआब
उसे शहर के फाटक के अंदर एक तरफ
ले गया ताकि अकेले में उससे बात करे।
मगर वहाँ उसने अब्नेर के पेट में तलवार
भोंक दी और वह मर गया।[4] इस तरह
योआब ने अपने भाई असाहेल के खून का
बदला लिया।[5] 28 बाद में जब दाविद

अध्य. 3

1 2शम 5:3

2 1शम 18:20
1शम 19:11
1इत 15:29

3 2शम 2:10

4 1शम 18:25, 27

5 1शम 25:44

6 2शम 16:5
1रा 2:8

7 1शम 13:14
1शम 15:27, 28
1शम 16:1, 13
भज 89:3, 20
भज 132:17
प्रेष 13:22

8 1शम 10:20, 21
1इत 12:29

दूसरा कॉल.

1 2शम 8:16

2 1शम 14:50
1शम 14:51
2शम 2:8, 22

3 2शम 3:20

4 1रा 2:5

5 2शम 2:22, 23

को इसका पता चला तो उसने कहा,
“यहोवा जानता है कि नेर के बेटे अब्नेर
के खून के लिए मैं और मेरा राज किसी
भी तरह दोषी नहीं हैं।[1] **29** अब्नेर के
कत्ल का दोष योआब और उसके पिता
के पूरे घराने पर पड़े।[2] योआब के घराने
में सदा ऐसे लोग रहें जो रिसाव से पीड़ित
हों,[3] कोढ़ी हों,[4] तकली चलानेवाले हों,*
खाने के मोहताज हों या वे तलवार से मारे
जाएँ!”[5] **30** योआब और अबीशै[6] ने
अब्नेर[7] का इसलिए कत्ल किया क्योंकि
उसने उनके भाई असाहेल को गिबोन की
लड़ाई में मार डाला था।[8]

31 फिर दाविद ने योआब से और
उसके साथवाले सभी आदमियों से कहा,
“तुम सब अपने-अपने कपड़े फाड़ो, टाट
बाँधो और अब्नेर के लिए ज़ोर-ज़ोर से
रोओ।” जब अब्नेर की अर्थी ले जायी जा
रही थी तो राजा दाविद भी उसके पीछे-
पीछे चलता गया। **32** उन्होंने अब्नेर
को हेब्रोन में दफनाया। राजा दाविद
अब्नेर की कब्र के पास ज़ोर-ज़ोर से रोया
और लोग भी रोने लगे। **33** राजा ने
रो-रोकर अब्नेर के बारे में यह राग
अलापा,

“यह कैसी नाइंसाफी है!
अब्नेर एक निकम्मे की मौत मरा।
34 न तेरे हाथ बँधे हुए थे,
न तेरे पैर बेड़ियों में जकड़े हुए थे,
फिर भी तू ऐसे गिर गया जैसे
कोई अपराधियों का शिकार हो
जाता है।”[9]

यह सुनकर सब लोग अब्नेर के लिए
फिर से रोने लगे।

3:29 *यहाँ शायद ऐसे लाचार आदमियों की बात की गयी है जिन्हें ऐसे काम में लगाया जाता है जो औरतें करती हैं।

अध्य. 3
1 उत 9:6 निर्ग 21:12 गि 35:33 व्य 21:9
2 भज 7:16 भज 55:23 नीत 5:22
3 लैव 15:2
4 लैव 13:44 गि 5:2
5 व्य 27:24 भज 109:2, 10
6 2शम 2:24
7 2शम 2:8
8 2शम 2:23
9 1रा 2:31, 32

दूसरा कॉल.
1 न्या 20:26
2 2शम 3:28 1रा 2:5
3 1शम 14:50 2शम 2:8 2शम 3:12
4 2शम 2:4
5 1इत 2:15, 16
6 2शम 19:13 2शम 20:10
7 2शम 3:29 1रा 2:5, 34

अध्य. 4
8 2शम 2:8
9 2शम 3:27
10 यह 9:17 यह 18:21, 25

35 अभी दिन का समय ही था और
सब लोग दाविद के पास आए और उसे
रोटी* खाने के लिए मनाने लगे। मगर
दाविद ने शपथ खाकर कहा, “अगर मैंने
सूरज ढलने से पहले रोटी का एक टुकड़ा
भी खाया या कुछ भी मुँह में डाला[1]
तो परमेश्वर मुझे कड़ी-से-कड़ी सज़ा दे!”
36 जब सब लोगों ने यह देखा तो उन्हें
राजा का ऐसा करना सही लगा, ठीक
जैसे दूसरे मामलों में भी उसकी बातें
उन्हें सही लगती थीं। **37** इस तरह
उस दिन सब लोगों को और पूरे इस-
राएल को मालूम पड़ा कि नेर के बेटे
अब्नेर के कत्ल के लिए राजा ज़िम्मे-
दार नहीं था।[2] **38** फिर राजा ने अपने
सेवकों से कहा, “तुम जानते हो कि
आज इसराएल में एक हाकिम की,
एक महान आदमी की मौत हुई है।[3]
39 हालाँकि मेरा अभिषेक करके मुझे
राजा ठहराया गया है,[4] लेकिन आज मैं
बहुत कमज़ोर हूँ क्योंकि सरूयाह के बेटे[5]
बहुत बेरहम हैं।[6] यहोवा दुष्ट को उसकी
दुष्टता की सज़ा दे।”[7]

4 जब शाऊल के बेटे ईशबोशेत*[8] ने
सुना कि हेब्रोन में अब्नेर की मौत हो
गयी है,[9] तो उसकी हिम्मत टूट गयी#
और सभी इसराएलियों में तहलका मच
गया। **2** शाऊल के बेटे के लुटेरे-दलों
के दो सरदार थे, एक का नाम बानाह
था और दूसरे का रेकाब। वे दोनों
रिम्मोन के बेटे थे, जो बिन्यामीन गोत्र का
था और बएरोत का रहनेवाला था। (बए-
रोत[10] भी बिन्यामीन के इलाके का हिस्सा
माना जाता था। **3** बएरोत के लोग

3:35 *या “दिलासे की रोटी।” **4:1** *शा., “शाऊल के बेटे।” #शा., “उसके हाथ ढीले पड़ गए।”

गित्तैम[1] भाग गए थे और वे आज तक
वहाँ परदेसी बनकर रह रहे हैं।)
4 शाऊल के बेटे योनातान[2] का एक
बेटा था जो पैरों से लाचार * था।[3] उसका
नाम मपीबोशेत था। मपीबोशेत पाँच
साल का था जब यिजरेल[4] से खबर
आयी थी कि शाऊल और योनातान
मारे गए हैं। यह खबर सुनकर उसकी
धाई बहुत घबरा गयी थी और जब वह
जल्दी में मपीबोशेत को उठाकर भाग रही
थी तो वह उसके हाथ से गिर गया और
लँगड़ा हो गया।[5]
5 बएरोती रिम्मोन के बेटे रेकाब और
बानाह दोपहर के वक्त, जब बहुत गरमी
होती है, ईशबोशेत के घर गए। ईश-
बोशेत घर में आराम कर रहा था। 6 वे
दोनों घर के अंदर ऐसे गए मानो गेहूँ लेने
आए हों। फिर उन्होंने[6] ईशबोशेत के पेट
में छुरा घोंप दिया और वहाँ से भाग गए।
7 जब वे दोनों घर के अंदर गए थे तब
ईशबोशेत अपने सोने के कमरे में बिस्तर
पर लेटा हुआ था। वहीं उन दोनों ने उसे
मार डाला और उसका सिर काट लिया।
वे उसका सिर लेकर पूरी रात अराबा
जानेवाले रास्ते पर चलते हुए 8 हेब्रोन
पहुँचे। वे ईशबोशेत[7] का सिर लेकर
राजा दाविद के पास आए और उससे
कहने लगे, "देख, यह तेरे जानी दुश्मन
शाऊल[8] के बेटे ईशबोशेत का सिर है!
आज यहोवा ने हमारे मालिक राजा की
तरफ से शाऊल और उसके वंशजों से
बदला लिया है।"
9 लेकिन दाविद ने बएरोती रिम्मोन
के बेटों रेकाब और बानाह से कहा,
"यहोवा के जीवन की शपथ, जिसने मुझे
हर मुसीबत से बचाया है,[9] 10 जब
सिकलग में किसी ने आकर मुझे खबर दी
थी कि शाऊल मर गया है[1] और उसने
सोचा कि वह मुझे खुशखबरी दे रहा है,
तो मैंने उसे पकड़कर मार डाला।[2] उस
खबर देनेवाले को मैंने यही इनाम दिया!
11 तो फिर क्या उन दुष्टों को और भी
बड़ी सज़ा नहीं मिलनी चाहिए जिन्होंने
एक नेक इंसान को उसी के घर में घुस-
कर बिस्तर पर मार डाला? क्या यह सही
नहीं होगा कि मैं तुम दोनों से उसके खून
का हिसाब लूँ[3] और तुम्हें धरती से मिटा
दूँ?" 12 फिर दाविद ने अपने जवानों
को हुक्म दिया कि वे उन दोनों को मार
डालें।[4] उन्होंने उन दोनों को मार डाला,
उनके हाथ-पैर काट डाले और उनकी
लाशें हेब्रोन में तालाब के पास लटका
दीं।[5] मगर उन्होंने ईशबोशेत का सिर
लिया और उसे हेब्रोन में अब्नेर की कब्र में
दफना दिया।

5 कुछ समय बाद इसराएल के सभी
गोत्र हेब्रोन में दाविद के पास आए[6]
और कहने लगे, "देख, तेरे साथ हमारा
खून का रिश्ता है।*[7] 2 बीते समय में
जब शाऊल हमारा राजा था, तब तू ही
लड़ाइयों में इसराएल की अगुवाई करता
था।[8] यहोवा ने तुझसे कहा था, 'तू एक
चरवाहे की तरह मेरी प्रजा इसराएल की
देखभाल करेगा और इसराएल का अगुवा
बनेगा।'"[9] 3 इस तरह इसराएल के
सभी मुखिया हेब्रोन में राजा के पास आए
और राजा दाविद ने हेब्रोन में यहोवा के
सामने उनके साथ एक करार किया।[10]
फिर उन्होंने दाविद का अभिषेक करके
उसे इसराएल का राजा ठहराया।[11]
4 जब दाविद राजा बना तब वह
30 साल का था और उसने 40 साल
राज किया।[12] 5 साढ़े सात साल उसने
हेब्रोन में रहकर यहूदा पर राज किया

4:4 * या "लँगड़ा।"

5:1 * शा., "हम तेरा हाड़-माँस हैं।"

अध्य. 4
1 नहे 11:31, 33
2 1शम 20:16
3 2शम 9:3
4 1शम 29:1, 11
5 2शम 9:13; 1इत 8:34
6 2शम 4:2
7 2शम 2:10
8 1शम 18:10, 11; 1शम 18:28, 29; 1शम 20:1, 33; 1शम 23:15
9 1शम 24:12; 1शम 26:25; 2शम 12:7; भज 34:7

दूसरा कॉल.
1 2शम 1:2, 4
2 2शम 1:13-15
3 उत 9:6; निर्ग 21:12; गि 35:16, 30
4 भज 55:23
5 व्य 21:22

अध्य. 5
6 2शम 2:1, 11; 1इत 12:23
7 1इत 11:1-3
8 1शम 18:13; 1शम 25:28
9 उत 49:10; 1शम 16:1; 1शम 25:30; 2शम 6:21; 2शम 7:8; 1इत 28:4; भज 78:71
10 2रा 11:17
11 1शम 16:13; 2शम 2:4; प्रेष 13:22
12 1इत 29:26, 27

और 33 साल यरूशलेम[1] में रहकर पूरे
इसराएल और यहूदा पर राज किया।
6 एक बार राजा दाविद और उसके
आदमी यबूसियों पर हमला करने यरू-
शलेम के लिए निकल पड़े[2] जो
वहाँ रहते थे। यबूसियों ने दाविद का
मज़ाक बनाते हुए कहा, "तू हमारे इलाके
में कभी कदम नहीं रख पाएगा! तुझे
भगाने के लिए हमारे अंधे और लूले-
लँगड़े ही काफी हैं।" उन्होंने सोचा कि
दाविद उनके इलाके में कभी नहीं घुस
पाएगा।[3] **7** मगर दाविद ने सिय्योन
के गढ़वाले शहर पर कब्ज़ा कर
लिया जो आज दाविदपुर कहलाता है।[4]
8 दाविद ने उस दिन कहा, "यबूसियों पर
हमला करनेवालों को पानी की सुरंग से
जाना चाहिए और 'उन अंधों और लूले-
लँगड़ों' को मार डालना चाहिए जिनसे
दाविद को नफरत है।" इसी घटना से यह
बात चली है, "अंधे और लूले-लँगड़े इस
जगह में कभी कदम नहीं रख पाएँगे।"
9 सिय्योन का किला जीतने के बाद
दाविद वहाँ जाकर बस गया और उस
जगह का नाम दाविदपुर रखा गया।*
दाविद टीले#[5] पर और शहर की दूसरी
जगहों में दीवारें और इमारतें बनवाने
लगा।[6] **10** इस तरह दाविद दिनों-दिन
महान होता गया[7] और सेनाओं का पर-
मेश्वर यहोवा उसके साथ था।[8]

11 सोर के राजा हीराम[9] ने दाविद
के पास अपने दूत भेजे। साथ ही, उसने
देवदार की लकड़ी और कुछ बढ़ई और
दीवार बनाने के लिए राजमिस्त्री भेजे।[10]
ये कारीगर दाविद के लिए महल बनाने
लगे।[11] **12** और दाविद को एहसास हो
गया कि यहोवा ने इसराएल पर उसका
राज मज़बूती से कायम किया है[1] और
अपनी प्रजा इसराएल की खातिर[2] उसका
राज ऊँचा किया है।[3]

13 दाविद ने हेब्रोन से यरूशलेम आने
के बाद और भी कुछ औरतों से शादी की
और कुछ उप-पत्नियाँ रखीं[4] और उनसे
दाविद के और भी बेटे-बेटियाँ हुए।[5]
14 यरूशलेम में उसके जो बेटे हुए उनके
नाम ये हैं: शम्मू, शोबाब, नातान,[6] सुलै-
मान,[7] **15** यिभार, एलीशू, नेपेग,
यापी, **16** एलीशामा, एल्यादा और
एलीपेलेत।

17 जब पलिश्तियों ने सुना कि दाविद
का अभिषेक करके उसे इसराएल का
राजा बनाया गया है,[8] तो वे सब दाविद
की खोज में निकल पड़े।[9] जब दाविद
को इसका पता चला तो वह एक महफूज़
जगह चला गया।[10] **18** फिर पलिश्ती
लोग आए और रपाई घाटी[11] में फैल
गए। **19** तब दाविद ने यहोवा से
सलाह की,[12] "क्या मैं जाकर पलिश्तियों
पर हमला करूँ? क्या तू उन्हें मेरे
हाथ में कर देगा?" यहोवा ने दाविद से
कहा, "तू जाकर पलिश्तियों पर हमला
कर। मैं उन्हें ज़रूर तेरे हाथ में कर
दूँगा।"[13] **20** तब दाविद बाल-परासीम
गया और वहाँ उसने पलिश्तियों को मार
गिराया। दाविद ने कहा, "यहोवा मेरे
आगे-आगे जाकर पानी की तेज़ धारा
की तरह मेरे दुश्मनों पर टूट पड़ा
और उनका नाश कर दिया।"[14] इसी-
लिए दाविद ने उस जगह का नाम
बाल-परासीम* रखा।[15] **21** पलिश्ति-
यों ने अपनी मूर्तियाँ वहीं छोड़ दी थीं
और दाविद और उसके आदमी उन्हें उठा
ले गए।

5:9 *या शायद, "उसने उस जगह का नाम दाविदपुर रखा।" #या "मिल्लो।" इस इब्रानी शब्द का मतलब "भरना" है।

5:20 *मतलब "टूट पड़नेवाला मालिक।"

अध्य. 5
1 उत 14:18
2 निर्ग 23:23; यह 15:63; न्या 1:8, 21
3 1इत 11:4-6
4 1रा 2:10; नहे 12:37
5 1रा 9:15, 24; 1रा 11:27; 2इत 32:5
6 1इत 11:7-9
7 1शम 16:13; 2शम 3:1
8 1शम 17:45
9 1रा 5:1, 8
10 2इत 2:3
11 2शम 7:2; 1इत 14:1, 2

दूसरा कॉल.
1 2शम 7:16; भज 41:11; भज 89:21
2 1रा 10:9; 2इत 2:11
3 भज 89:27
4 2शम 15:16
5 1इत 3:5-9; 1इत 14:3-7
6 लूक 3:23, 31
7 2शम 12:24
8 2शम 5:3
9 भज 2:2
10 1शम 22:1, 5; 1शम 24:22; 2शम 23:14; 1इत 14:8
11 यह 15:8, 12; 1इत 11:15; 1इत 14:9
12 गि 27:21
13 1इत 14:10-12
14 2शम 22:41
15 यश 28:21

22 बाद में पलिश्‍ती एक बार फिर आए और रपाई घाटी में फैल गए।[1] **23** दाविद ने यहोवा से सलाह की, मगर उसने दाविद से कहा, “तू उन पर सामने से हमला मत करना। इसके बजाय, तू पीछे से जाना और बाका झाड़ियों के सामने से उन पर हमला करना। **24** जब तुझे झाड़ियों के ऊपर सेना के चलने की आवाज़ सुनायी दे, तो तू फौरन कदम उठाना क्योंकि यहोवा पलिश्‍ती सेना को मार गिराने के लिए तेरे आगे-आगे जा चुका होगा।” **25** दाविद ने ठीक वैसे ही किया जैसे यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी और वह गेबा[2] से लेकर गेजेर[3] तक पूरे रास्ते पलिश्‍तियों को मारता गया।[4]

6 दाविद ने एक बार फिर इसराएल की सेना से सभी अच्छे-अच्छे सैनिकों की टुकड़ियाँ इकट्ठी कीं। उन आदमियों की गिनती 30,000 थी। **2** फिर दाविद और वे सभी आदमी बाले-यहूदा की तरफ निकल पड़े ताकि वहाँ से सच्चे परमेश्‍वर का संदूक ले आएँ,[5] जो करूबों पर* विराजमान है। उसी संदूक के सामने लोग सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा का नाम पुकारते हैं।[6] **3** मगर दाविद और उसके आदमियों ने वहाँ से संदूक लाने के लिए उसे एक नयी बैल-गाड़ी पर रखा।[7] संदूक पहाड़ी पर अबीनादाब के घर में था।[8] जब संदूक ले जाया जा रहा था तो अबीनादाब के बेटे उज्जाह और अहयो गाड़ी के आगे-आगे चल रहे थे।

4 इस तरह वे पहाड़ी पर अबीनादाब के घर गए और वहाँ से सच्चे परमेश्‍वर का संदूक लेकर चल दिए। अहयो संदूक के आगे-आगे चल रहा था। **5** दाविद और इसराएल का पूरा घराना यहोवा के सामने जश्‍न मना रहा था। वे सनोवर की लकड़ी से बने तरह-तरह के साज़, सुरमंडल, तारोंवाले दूसरे बाजे,[1] डफली,[2] झीका और झाँझ बजाते हुए खुशियाँ मना रहे थे।[3] **6** मगर जब वे नाकोन नाम के खलिहान पहुँचे तो ऐसा हुआ कि बैल-गाड़ी पलटने पर हो गयी। तभी उज्जाह ने हाथ बढ़ाकर सच्चे परमेश्‍वर का संदूक पकड़ लिया।[4] **7** इस पर यहोवा का क्रोध उज्जाह पर भड़क उठा और सच्चे परमेश्‍वर ने उसे वहीं मार डाला[5] क्योंकि उसने परमेश्‍वर के कानून का अनादर किया था।[6] उज्जाह सच्चे परमेश्‍वर के संदूक के पास ही मर गया। **8** मगर यह देखकर कि यहोवा का क्रोध उज्जाह पर भड़क उठा, दाविद बहुत गुस्सा* हुआ। इसी घटना की वजह से वह जगह आज तक पेरेस-उज्जाह# के नाम से जानी जाती है। **9** फिर उस दिन दाविद यहोवा से बहुत डर गया[7] और उसने कहा, “यहोवा का संदूक मेरे यहाँ कैसे आ पाएगा?”[8] **10** दाविद यहोवा के संदूक को अपने शहर दाविदपुर लाने से झिझक रहा था।[9] इसलिए उसने वह संदूक गत के रहनेवाले ओबेद-एदोम के घर पहुँचा दिया।[10]

11 यहोवा का संदूक तीन महीने तक गत के रहनेवाले ओबेद-एदोम के घर में ही रहा। इस दौरान यहोवा ओबेद-एदोम और उसके पूरे घराने को आशीषें देता रहा।[11] **12** राजा दाविद को बताया गया कि यहोवा ने ओबेद-एदोम के घर पर और उसका जो कुछ है उस पर आशीष दी है क्योंकि सच्चे परमेश्‍वर का संदूक उसके घर

अध्य. 5
1 यह 15:8, 12; 1इत 11:15; 1इत 14:13-17
2 यह 18:21, 24
3 यह 16:10
4 लैव 26:7

अध्य. 6
5 1शम 7:2; 1रा 8:1; 1इत 13:1-5
6 निर्ग 25:22; व्य 20:4; 1शम 1:3; 1शम 4:4; 1इत 13:6-11; 1इत 17:24; भज 80:1
7 निर्ग 25:14; गि 7:9; यह 3:14
8 1शम 7:1

दूसरा कॉल.
1 1शम 10:5
2 निर्ग 15:20
3 भज 150:3-5
4 गि 4:15; 1इत 15:2
5 लैव 10:1, 2; 1शम 6:19
6 नीत 11:2
7 1शम 6:20; भज 119:120
8 1इत 13:12-14
9 2शम 5:7
10 1इत 15:25
11 उत 30:27; उत 39:5

6:2 *या शायद, “के बीच।”

6:8 *या “नाराज़।” #मतलब “उज्जाह पर भड़क उठा।”

में है। इसलिए दाविद ओबेद-एदोम के
घर गया ताकि सच्चे परमेश्वर का संदूक
खुशियाँ मनाते हुए दाविदपुर ले आए।[1]
13 जब यहोवा का संदूक ढोनेवालों[2] ने
छः कदम आगे बढ़ाए तो दाविद ने एक
बैल और एक मोटे किए हुए जानवर की
बलि चढ़ायी।

14 दाविद मलमल का एपोद पहने*
यहोवा के सामने पूरे जोश और उमंग
से नाच रहा था।[3] **15** वह और इस-
राएल के घराने के सब लोग जयजयकार
करते हुए[4] और नरसिंगा फूँकते हुए[5]
यहोवा का संदूक[6] ला रहे थे। **16** मगर
जब यहोवा का संदूक दाविदपुर पहुँचा
और शाऊल की बेटी मीकल[7] ने खिड़की
से नीचे झाँककर देखा कि राजा दाविद
यहोवा के सामने झूम-झूमकर नाच रहा
है तो वह मन-ही-मन दाविद को तुच्छ
समझने लगी।[8] **17** फिर वे यहोवा का
संदूक उस तंबू में ले आए जो दाविद ने
उसके लिए खड़ा किया था। उन्होंने
उसे तंबू के अंदर ठहरायी गयी जगह
पर रख दिया।[9] इसके बाद दाविद ने
यहोवा के सामने होम-बलियाँ और शांति-
बलियाँ चढ़ायीं।[10] **18** जब दाविद ये
बलियाँ चढ़ा चुका, तो उसने सेनाओं के
परमेश्वर यहोवा के नाम से लोगों को
आशीर्वाद दिया। **19** और उसने पूरे
इसराएल में से हर आदमी और हर औरत
को एक छल्ले जैसी रोटी, एक खजूर की
टिकिया और एक किशमिश की टिकिया
दी। फिर सब लोग अपने-अपने घर
लौट गए।

20 जब दाविद अपने घराने को
आशीर्वाद देने लौटा तो शाऊल की बेटी
मीकल[11] उससे मिलने बाहर आयी। वह
कहने लगी, "वाह! आज इसराएल के
राजा ने क्या शान दिखायी! अपने सेवकों
की दासियों के सामने अधनंगा होकर
वह ऐसे नाच रहा था जैसे कोई निकम्मा
आदमी खुलेआम अधनंगा घूमता है।"[1]
21 दाविद ने मीकल से कहा, "मैं यहोवा
के सामने जश्न मना रहा था, जिसने तेरे
पिता और उसके पूरे घराने के बदले मुझे
चुना। यहोवा ने मुझे अपनी प्रजा इस-
राएल का अगुवा ठहराया है।[2] इसलिए
मैं यहोवा के सामने ज़रूर जश्न मनाऊँ-
गा **22** और मैं खुद को इससे भी नीचा
करूँगा और अपनी नज़रों में खुद को और
भी दीन करूँगा। मैं चाहे दीन हो जाऊँ,
फिर भी वे दासियाँ जिनके बारे में तूने
कहा है, मेरी शान की बड़ाई करेंगी।"
23 इसलिए शाऊल की बेटी मीकल[3]
सारी ज़िंदगी बेऔलाद रही।

7 जब राजा दाविद अपने महल में रहने
लगा[4] और यहोवा ने उसे आस-पास
के सभी दुश्मनों से राहत दिलायी, **2** तो
राजा ने भविष्यवक्ता नातान[5] से कहा,
"देख, मैं तो देवदार से बने महल में रह
रहा हूँ,[6] जबकि सच्चे परमेश्वर का संदूक
कपड़े से बने तंबू में रखा हुआ है।"[7]
3 नातान ने राजा से कहा, "जा, तेरे मन
में जो कुछ है वह कर क्योंकि यहोवा तेरे
साथ है।"[8]

4 उसी दिन, रात को यहोवा का यह
संदेश नातान के पास पहुँचा, **5** "तू
जाकर मेरे सेवक दाविद से कहना,
'यहोवा तुझसे कहता है, "क्या तू मेरे
निवास के लिए एक भवन बनाना चाहता
है?[9] **6** जब से मैं इसराएल के लोगों
को मिस्र से निकाल लाया, तब से लेकर
आज तक क्या मैंने किसी भवन में
निवास किया है?[10] मैं हमेशा एक तंबू या
डेरे में रहकर एक जगह से दूसरी जगह
जाता रहा।[11] **7** जिस दौरान मैं अपनी

6:14 *शा., "कमर में कसे हुए।"

अध्य. 6

1 1इत 15:25, 26
भज 24:7
भज 68:24
2 गि 4:15
गि 7:9
यह 3:3
1इत 15:2, 15
3 1इत 15:27, 28
4 1इत 15:16
5 भज 150:3
6 निर्ग 37:1
भज 132:8
7 1शम 14:49
1शम 18:20, 27
2शम 3:14
8 1इत 15:29
9 1इत 15:1
10 लैव 1:3
लैव 3:1
1इत 16:1-3
11 1शम 18:27

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 22:28
2 1शम 13:13, 14
1शम 15:27, 28
1शम 16:1, 12
3 1शम 14:49
2शम 6:16

अध्य. 7

4 1इत 17:1
5 2शम 12:1
1इत 29:29
6 2शम 5:11
7 2शम 6:17
8 1रा 8:17
1इत 17:2
1इत 22:7
9 1रा 5:3
1रा 8:17-19
1इत 17:4-6
1इत 22:7, 8
10 यह 18:1
11 निर्ग 40:18, 34

प्रजा इसराएल के साथ-साथ चलता रहा और मैंने उसके गोत्रों पर प्रधान ठहराए थे कि वे चरवाहों की तरह उनकी देख-भाल करें, तब क्या मैंने कभी किसी प्रधान से कहा कि तूने मेरे लिए देवदार का भवन क्यों नहीं बनाया?"' **8** तू मेरे सेवक दाविद से कहना, 'सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता है, "मैं तुझे चरागाहों से ले आया था जहाँ तू भेड़ों की देखभाल करता था[1] और तुझे अपनी प्रजा इसराएल का अगुवा बनाया।[2] **9** तू जहाँ कहीं जाएगा मैं तेरे साथ रहूँगा[3] और तेरे सामने से तेरे सभी दुश्मनों को नाश कर दूँगा[4] और तेरा नाम ऐसा महान करूँगा[5] कि तू दुनिया के बड़े-बड़े नामी आदमियों में गिना जाएगा। **10** मैं अपनी प्रजा इसराएल के लिए एक जगह चुनूँगा और वहाँ उन्हें बसाऊँगा। वे वहाँ चैन से जीएँगे, कोई उन्हें दुख नहीं देगा। उन पर दुष्ट लोग अत्याचार नहीं करेंगे, जैसे गुज़रे वक्त में[6] **11** दुष्ट मेरे लोगों पर तब से अत्याचार करते रहे जब मैंने उन पर न्यायी ठहराए थे।[7] मैं तुझे तेरे सभी दुश्मनों से राहत दिलाऊँगा।[8]

यहोवा तुझसे यह भी कहता है कि यहोवा तेरे लिए एक राज-घराना तैयार करेगा।[9] **12** जब तेरी उम्र पूरी हो जाएगी[10] और तेरी मौत हो जाएगी* तो मैं तेरे वंश# को, तेरे अपने बेटे को△ खड़ा करूँगा और उसका राज मज़बूती से कायम करूँगा।[11] **13** वही मेरे नाम की महिमा के लिए एक भवन बनाएगा[12] और मैं उसकी राजगद्दी सदा के लिए मज़बूती से कायम करूँगा।[1] **14** मैं उसका पिता बनूँगा और वह मेरा बेटा होगा।[2] जब वह गलती करेगा तो मैं उसे सुधारूँगा* और इंसानों की तरह कोड़े मारकर उसे सज़ा दूँगा।[3] **15** मैं उससे प्यार* करना कभी नहीं छोड़ूँगा, जैसे मैंने शाऊल से करना छोड़ दिया था जो तुझसे पहले था।[4] **16** तेरा राज-घराना और तेरा राज तेरे सामने हमेशा बने रहेंगे। तेरी राजगद्दी सदा तक कायम रहेगी।"'"[5]

17 नातान ने जाकर ये सारी बातें और यह पूरा दर्शन दाविद को बताया।[6]

18 तब राजा दाविद यहोवा के सामने बैठकर कहने लगा, "हे सारे जहान के मालिक यहोवा, मेरी हस्ती ही क्या है? मैं और मेरा घराना कुछ भी नहीं। फिर भी तूने मुझे ऊँचा उठाकर इस मुकाम तक पहुँचाया।[7] **19** हे सारे जहान के मालिक यहोवा, तूने यह भी वादा किया है कि तेरे सेवक का राज-घराना मुद्दतों तक कायम रहेगा। हे सारे जहान के मालिक यहोवा, यह कानून* सभी इंसानों के लिए है। **20** तेरा यह सेवक दाविद भला तुझसे और क्या कह सकता है? हे सारे जहान के मालिक यहोवा, तू अपने सेवक को अच्छी तरह जानता है।[8] **21** तूने ये सारे महान काम इसलिए किए हैं क्योंकि तूने ऐसा करने का वादा किया था और यह तेरे मन की इच्छा के मुताबिक था। और तूने यह सब अपने सेवक पर ज़ाहिर किया है।[9] **22** इसीलिए हे सारे जहान के मालिक यहोवा, तू सचमुच महान है![10] तेरे

7:12 *शा., "तू अपने पुरखों के साथ सो जाएगा।" #शा., "बीज।" △शा., "जो तेरे अंदरूनी अंगों से निकलेगा उसको।"

7:14 *शा., "इंसानों की छड़ी से उसे सुधारूँगा।" **7:15** *या "अटल प्यार।" **7:19** *या "हिदायत।"

अध्य. 7
1 1शम 16:11
2 2शम 5:2; 1इत 17:7-10; 1इत 28:4; भज 78:70, 71
3 1शम 18:14; 2शम 5:10
4 2शम 22:1; भज 18:37
5 1इत 14:2, 17
6 न्या 2:14; भज 89:20, 22
7 न्या 2:16
8 व्य 25:19
9 1रा 2:24; भज 89:4
10 1रा 2:1
11 उत 49:10; 1रा 8:20; 1इत 17:11-14; भज 132:11; यश 9:7; यश 11:1; मत 21:9; मत 22:42; लूक 1:32, 33; यूह 7:42; प्रेष 2:30
12 1रा 5:5; 1रा 6:12; जक 6:12, 13

दूसरा कॉल.
1 1रा 1:37; 1इत 22:10; 1इत 28:7; भज 89:4, 36
2 1इत 28:6; मत 3:17; इब्र 1:5
3 भज 89:30, 32; यिर्म 52:3
4 1शम 15:23, 26
5 भज 45:6; भज 89:36; दान 2:44; इब्र 1:8; प्रक 11:15
6 1इत 17:15
7 1इत 17:16-22
8 1शम 16:7; भज 17:3
9 भज 25:14
10 व्य 3:24; 1इत 16:25

जैसा और कोई नहीं।[1] हमने बहुत-से ईश्‍वरों के बारे में सुना है, मगर तुझे छोड़ और कोई परमेश्‍वर नहीं।[2] 23 और इस धरती पर तेरी प्रजा इसराएल जैसा कौन-सा राष्ट्र है?[3] परमेश्‍वर जाकर उन्हें छुड़ा लाया ताकि वे उसके अपने लोग बनें।[4] उसने उनकी खातिर महान और विस्मयकारी काम करके[5] अपना नाम ऊँचा किया।[6] तूने अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाने के बाद उनकी खातिर दूसरी जातियों को और उनके देवताओं को खदेड़कर बाहर कर दिया। 24 तूने अपनी प्रजा इसराएल को हमेशा के लिए अपने लोग बना लिया[7] और हे यहोवा, तू उनका परमेश्‍वर बन गया।[8]

25 अब हे यहोवा परमेश्‍वर, तूने अपने सेवक और उसके घराने के बारे में जो वादा किया है, उसे तू हमेशा निभाए और ठीक वैसा ही करे जैसा तूने वादा किया है।[9] 26 तेरा नाम सदा ऊँचा रहे[10] ताकि लोग कहें, 'सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा इसराएल का परमेश्‍वर है' और तेरे सेवक दाविद का राज-घराना तेरे सामने सदा तक मज़बूती से कायम रहे।[11] 27 हे सेनाओं के पर-मेश्‍वर यहोवा, हे इसराएल के परमेश्‍वर, तूने अपने सेवक पर यह बात ज़ाहिर की है कि मैं तेरे लिए एक राज-घराना बनाऊँगा।[12] इसीलिए तेरा यह सेवक तुझसे यह प्रार्थना करने की हिम्मत जुटा पाया है। 28 हे सारे जहान के मालिक यहोवा, तू ही सच्चा परमेश्‍वर है और तेरे वचन सच्चे हैं[13] और तूने अपने सेवक से इन भले कामों का वादा किया है। 29 इसलिए मेरी दुआ है कि तू अपने सेवक के घराने को खुशी-खुशी आशीष दे और यह घराना तेरे सामने हमेशा कायम रहे[1] क्योंकि हे सारे जहान के मालिक यहोवा, तूने ही यह वादा किया है और तेरी आशीष तेरे सेवक के घराने पर सदा बनी रहे।"[2]

8 कुछ समय बाद दाविद ने पलिश्‍ति-यों[3] को हरा दिया और उन्हें अपने अधीन कर लिया[4] और उनके हाथ से मेतग-अम्माह नाम की जगह ले ली।

2 दाविद ने मोआबियों को भी हरा दिया[5] और उनके सैनिकों को ज़मीन पर कतार में लेटने को कहा। फिर उसने नापने की डोरी से कतार नापी ताकि दो डोरी-भर सैनिकों को मार डाला जाए और एक डोरी-भर सैनिकों को ज़िंदा छोड़ दिया जाए।[6] इसके बाद मोआबी लोग दाविद के सेवक बन गए और उसे नज़-राना देने लगे।[7]

3 दाविद ने सोबा के राजा हदद-एजेर को हरा दिया जो रहोब का बेटा था।[8] जब हदद-एजेर फरात नदी तक के इलाके को वापस अपने अधिकार में करने जा रहा था, तब दाविद ने उसे हरा दिया।[9] 4 दाविद ने हदद-एजेर के 1,700 घुड़सवारों और 20,000 पैदल सैनिकों को पकड़ लिया। इसके बाद दाविद ने उसके रथों के 100 घोड़ों को छोड़ बाकी सब घोड़ों की घुटनस काट दी।[10]

5 जब दमिश्‍क के रहनेवाले सीरि-याई लोग[11] सोबा के राजा हदद-एजेर की मदद करने आए तो दाविद ने 22,000 सीरियाई लोगों को मार डाला।[12] 6 फिर दाविद ने दमिश्‍क के सीरियाई लोगों के इलाके में सैनिकों की चौकियाँ बनायीं और वे दाविद के सेवक बन गए और उसे नज़राना देने लगे। दाविद जहाँ कहीं गया यहोवा ने उसे जीत

अध्य. 7

1 निर्ग 15:11, भज 83:18
2 व्य 4:35
3 व्य 4:7, भज 147:19, 20
4 निर्ग 3:8, निर्ग 19:5, यश 63:9
5 व्य 10:21
6 निर्ग 9:16
7 व्य 26:18
8 निर्ग 15:2
9 1इत 17:23-27, भज 89:20, 28
10 1इत 29:11, भज 72:19, मत 6:9, यूह 12:28
11 यश 9:7, यिर्म 33:22
12 2शम 7:11
13 गि 23:19, भज 89:35, भज 132:11, यूह 17:17

दूसरा कॉल.

1 भज 89:20, 36, भज 132:12
2 2शम 22:51, भज 72:17

अध्य. 8

3 यह 13:2, 3, 2शम 21:15
4 1इत 18:1
5 गि 24:17, न्या 3:29, 1शम 14:47, भज 60:8
6 व्य 23:3-6
7 2रा 3:4, 1इत 18:2
8 2शम 10:6, 1रा 11:23, भज 60:उप
9 उत 15:18, निर्ग 23:31, 1रा 4:21, 1इत 18:3, 4
10 व्य 17:16, भज 20:7, भज 33:17
11 यश 7:8
12 1इत 18:5, 6

दिलायी।*[1] 7 इतना ही नहीं, दाविद ने हदद-एज़ेर के सेवकों से सोने की गोलाकार ढालें ले लीं और यरूशलेम ले आया।[2] 8 राजा दाविद, हदद-एज़ेर के शहर बेतह और बरौतै से बहुत सारा ताँबा भी ले आया।

9 जब हमात[3] के राजा तोई ने सुना कि दाविद ने हदद-एज़ेर की पूरी सेना को हरा दिया है,[4] 10 तो उसने अपने बेटे योराम को राजा दाविद के पास भेजा ताकि वह दाविद की खैरियत पूछे और उसे मुबारकबाद दे कि उसने हदद-एज़ेर को हरा दिया। (तोई ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि हदद-एज़ेर ने कई बार उससे युद्ध किया था।) योराम अपने साथ सोने, चाँदी और ताँबे की चीज़ें लाया था। 11 राजा दाविद ने ये सारी चीज़ें यहोवा के लिए पवित्र ठहरायीं, ठीक जैसे उसने दूसरे राष्ट्रों को हराकर उनके यहाँ से लाया सोना-चाँदी पवित्र ठहराया था,[5] 12 यानी सीरिया और मोआब,[6] अम्मोनियों, पलिश्तियों,[7] अमालेकियों[8] से लाया सोना-चाँदी और सोबा के राजा हदद-एज़ेर से (जो रहोब का बेटा था) लाया लूट का माल।[9] 13 दाविद ने नमक घाटी में 18,000 एदोमियों को भी मार गिराया जिससे उसका और भी बड़ा नाम हुआ।[10] 14 उसने एदोम में सैनिकों की चौकियाँ बनायीं। उसने पूरे एदोम में सैनिकों की चौकियाँ बनायीं और सभी एदोमी लोग दाविद के सेवक बन गए।[11] दाविद जहाँ कहीं गया, यहोवा ने उसे जीत दिलायी।*[12]

15 दाविद पूरे इसराएल पर राज करता था।[13] वह अपनी सारी प्रजा के लिए न्याय और नेकी करता था।[14] 16 सरूयाह का बेटा योआब[15] दाविद की सेना का सेनापति था और अहीलूद का बेटा यहोशापात[1] शाही इतिहासकार था। 17 अहीतूब का बेटा सादोक[2] और अबियातार का बेटा अहीमेलेक याजक थे और सरायाह राज-सचिव था। 18 यहोयादा का बेटा बनायाह,[3] करेती और पलेती लोगों[4] का अधिकारी था। और दाविद के बेटे खास मंत्री* बने।

9

फिर दाविद ने पूछा, "क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है? अगर कोई है तो मैं योनातान की खातिर उस पर कृपा* करना चाहता हूँ।"[5] 2 शाऊल के घराने में सीबा नाम का एक सेवक था।[6] उसे राजा दाविद के पास बुलाया गया और दाविद ने उससे पूछा, "क्या तू सीबा है?" उसने कहा, "हाँ, मैं तेरा सेवक सीबा हूँ।" 3 राजा ने उससे पूछा, "क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है? मैं उस पर कृपा* करना चाहता हूँ, ठीक जैसे परमेश्वर करता है।" सीबा ने राजा से कहा, "योनातान का एक बेटा ज़िंदा है। वह दोनों पैरों से लाचार# है।"[7] 4 राजा ने कहा, "वह कहाँ है?" सीबा ने कहा, "वह लो-देबार में रहता है, अम्मीएल के बेटे माकीर के घर में।"[8]

5 राजा दाविद ने फौरन अपने आदमियों को लो-देबार में अम्मीएल के बेटे माकीर के घर भेजा और वे योनातान के बेटे को वहाँ से ले आए। 6 जब योनातान का बेटा और शाऊल का पोता मपीबोशेत, दाविद के पास आया तो उसने राजा के सामने मुँह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया। दाविद ने उससे कहा, "मपीबोशेत!" उसने कहा, "क्या आज्ञा

8:6, 14 * या "उद्धार दिलाया।"

8:18 * शा., "याजक।" 9:1, 3 * या "अटल प्यार।" 9:3 # या "लँगड़ा।"

अध्य. 8

1 व्य 7:24; 2शम 8:14
2 1इत 18:7, 8
3 2रा 14:28
4 1इत 18:9-11
5 यह 6:19; 1रा 7:51; 1इत 22:14; 1इत 26:27
6 2शम 8:2
7 2शम 8:1
8 1शम 30:18
9 2शम 8:7
10 1इत 18:12, 13; भज 60:उप
11 उत 25:23, 26; उत 27:29, 37; गि 24:18
12 भज 60:12
13 2शम 5:3, 5
14 1रा 3:6; 1इत 18:14-17
15 2शम 20:23; 1इत 11:6

दूसरा कॉल.

1 2शम 20:24; 1रा 4:3
2 2शम 15:27; 1इत 6:8; 1इत 24:3
3 2शम 23:20; 1रा 1:44; 1रा 2:35
4 2शम 15:18; 2शम 20:7

अध्य. 9

5 1शम 18:1, 3; 1शम 20:15, 42
6 2शम 16:1; 2शम 19:17
7 2शम 4:4; 2शम 9:13; 2शम 19:26
8 2शम 17:27-29

मालिक?" 7 दाविद ने उससे कहा, "घबरा मत। मैं तेरे पिता योनातान की खातिर ज़रूर तेरे साथ कृपा* से पेश आऊँगा।[1] मैं तेरे दादा शाऊल की सारी ज़मीन तुझे लौटा दूँगा और तू सदा मेरी मेज़ पर खाया करेगा।"[2]

8 यह सुनते ही मपीबोशेत ने ज़मीन पर गिरकर दाविद को प्रणाम किया और उससे कहा, "तेरा यह सेवक तो कुछ भी नहीं है। मैं बस एक मरे हुए कुत्ते के समान हूँ,[3] फिर भी तूने मुझ पर ध्यान दिया है।" 9 फिर राजा ने शाऊल के सेवक सीबा को बुलवाया और उससे कहा, "तेरे मालिक शाऊल और उसके घराने का जो कुछ है वह सब मैं शाऊल के इस पोते को दे रहा हूँ।[4] 10 तू, तेरे बेटे और तेरे दास इसकी ज़मीन जोतेंगे और उसकी उपज बटोरकर तेरे मालिक के इस पोते को दिया करेंगे ताकि इसके घराने को भोजन मिलता रहे। मगर जहाँ तक तेरे मालिक के पोते मपीबोशेत की बात है वह सदा मेरी मेज़ पर खाया करेगा।"[5]

सीबा के 15 बेटे और 20 दास थे।[6] 11 सीबा ने राजा से कहा, "मेरे मालिक, तू अपने सेवक को जो-जो करने की आज्ञा देगा वह सब मैं करूँगा।" इसलिए मपीबोशेत दाविद की* मेज़ पर खाने लगा जैसे राजा के बेटे खाया करते थे। 12 मपीबोशेत का एक छोटा बेटा था जिसका नाम मिका था।[7] सीबा के घर में जितने लोग रहते थे मपीबोशेत के सेवक बन गए। 13 मपीबोशेत यरूशलेम में रहने लगा और वह राजा की मेज़ से खाया करता था।[8] वह दोनों पैरों से लाचार था।[9]

10 बाद में अम्मोनियों[1] के राजा की मौत हो गयी और उसकी जगह उसका बेटा हानून राजा बना।[2] 2 तब दाविद ने कहा, "हानून का पिता नाहाश जिस तरह मेरे साथ कृपा* से पेश आया था, उसी तरह मैं भी हानून के साथ पेश आऊँगा।" इसलिए दाविद ने हानून को दिलासा देने के लिए उसके पास अपने सेवक भेजे। मगर जब दाविद के सेवक अम्मोनियों के देश गए 3 तो अम्मोनियों के हाकिमों ने अपने मालिक हानून से कहा, "तुझे क्या लगता है, क्या दाविद ने वाकई तेरे पिता का सम्मान करने और तुझे दिलासा देने के लिए अपने सेवक भेजे हैं? नहीं। उसने तो हमारे शहर को देख आने और उसकी जासूसी करने के लिए अपने आदमी भेजे हैं ताकि बाद में आकर इसका तख्ता उलट दे।" 4 तब हानून ने दाविद के सेवकों को पकड़कर उन सबकी एक तरफ की दाढ़ी मुँड़वा दी[3] और कमर से नीचे के उनके कपड़े कटवा दिए और फिर उन्हें भेज दिया। 5 जब दाविद को बताया गया कि उनके साथ कैसा सलूक किया गया है तो उसने फौरन अपने आदमियों को उन सेवकों से मिलने भेजा क्योंकि उनका घोर अपमान हुआ था। राजा ने उनके पास यह संदेश भेजाः "जब तक तुम्हारी दाढ़ी फिर नहीं बढ़ जाती तब तक तुम यरीहो[4] में ही रहना। उसके बाद तुम यहाँ लौट आना।"

6 कुछ समय बाद अम्मोनी लोग समझ गए कि उन्होंने दाविद से दुश्मनी मोल ली है। इसलिए अम्मोनियों ने दूसरे देशों में अपने दूत भेजे और वहाँ से किराए पर आदमी मँगाए। बेत-रहोब[5] और सोबा से 20,000 सीरियाई आदमी[6] आए जो पैदल सैनिक

9:7; 10:2 *या "अटल प्यार।" **9:11** *या शायद, "मेरी।"

अध्य. 9
1 नीत 11:17
2 2शम 19:28, नीत 11:25
3 1शम 24:14
4 2शम 9:1, 2शम 16:4, 2शम 19:29
5 2शम 19:28
6 2शम 19:17
7 1इत 8:34, 1इत 9:40
8 2शम 9:7, 2शम 19:28
9 2शम 4:4

दूसरा कॉल.

अध्य. 10
1 उत 19:36, 38, न्या 10:7, न्या 11:12, 33, 1शम 11:1
2 1इत 19:1-5
3 लैव 19:27
4 यह 18:21
5 गि 13:21
6 2शम 8:5

थे। माका[1] का राजा अपने 1,000
आदमियों के साथ आया और इश-
तोब* से 12,000 आदमी आए।[2]
7 जब दाविद ने इस बारे में सुना तो
उसने योआब के साथ अपनी पूरी सेना
को और बड़े-बड़े सूरमाओं को भेजा।[3]
8 अम्मोनी लोग दल बाँधकर शहर के
फाटक पर तैनात हो गए, जबकि सोबा
और रहोब के सीरियाई लोग और इश-
तोब* और माका के आदमी उनसे अलग
खुले मैदान में थे।

9 जब योआब ने देखा कि दुश्मन
की सेनाएँ उस पर आगे-पीछे दोनों
तरफ से हमला करने के लिए खड़ी हैं, तो
उसने इसराएल के सबसे बढ़िया सैनिक
चुने और उन्हें दल बाँधकर सीरियाई
लोगों का मुकाबला करने के लिए तैनात
किया।[4] **10** उसने बाकी सैनिकों को
अपने भाई अबीशै की कमान* के नीचे
तैनात किया[5] और उन्हें दल बाँधकर
अम्मोनियों[6] का मुकाबला करने भेजा।
11 उसने अबीशै से कहा, "अगर सीरि-
याई सेना मुझ पर भारी पड़े तो तू मुझे
बचाने आना और अगर अम्मोनी लोग
तुझ पर भारी पड़े तो मैं तुझे बचाने
आऊँगा। **12** हमें अपने लोगों की
खातिर और अपने परमेश्वर के शहरों
की खातिर मज़बूत बने रहना होगा और
हिम्मत से लड़ना होगा[7] और यहोवा वही
करेगा जो उसे सही लगता है।"[8]

13 फिर योआब और उसके आदमी
सीरियाई लोगों का मुकाबला करने आगे
बढ़े और सीरियाई लोग उसके सामने
से भाग गए।[9] **14** जब अम्मोनियों ने
देखा कि सीरियाई लोग भाग गए हैं
तो वे अबीशै के सामने से भाग गए और
अपने शहर के अंदर चले गए। इसके
बाद योआब अम्मोनियों के यहाँ से यरू-
शलेम लौट आया।

15 जब सीरियाई लोगों ने देखा कि वे
इसराएल से हार गए हैं तो उन्होंने फिर
से युद्ध के लिए अपनी सेना इकट्ठी की।[1]
16 हदद-एजेर[2] ने महानदी*[3] के इलाके
के सीरियाई लोगों को बुलवाया और वे
हदद-एजेर की सेना के सेनापति शोबक
की अगुवाई में हेलाम आए।

17 जब दाविद को इसकी खबर दी
गयी तो उसने फौरन पूरी इस-
राएली सेना को इकट्ठा किया और यर-
दन पार करके हेलाम गया। तब सीरि-
याई लोगों ने दाविद से मुकाबला करने के
लिए दल बाँधा और उससे युद्ध किया।[4]
18 मगर सीरियाई लोग इसराएल से
हारकर भाग गए और दाविद ने उनके
700 सारथियों और 40,000 घुड़-
सवारों को मार डाला। उसने उनके सेना-
पति शोबक पर वार किया और वह
वहीं मर गया।[5] **19** जब हदद-एजेर के
अधीन सब राजाओं ने देखा कि वे इस-
राएल से हार गए हैं तो उन्होंने बिना देर
किए इसराएल के साथ सुलह कर ली
और वे उसकी प्रजा बन गए।[6] इसके बाद
फिर कभी सीरियाई लोगों ने अम्मोनियों
की मदद करने की हिम्मत नहीं की।

11 साल की शुरूआत में* जब राजा
युद्ध के लिए जाया करते हैं, तो
ऐसे वक्त पर दाविद ने योआब और
अपने सेवकों और इसराएल की पूरी
सेना को अम्मोनियों से युद्ध करने भेजा
ताकि वे उन्हें धूल चटा दें। उन्होंने

10:6 *या "तोब के आदमियों।" **10:8** *या "तोब के आदमी।" **10:10** *शा., "के हाथ।"

10:16 *यानी फरात नदी। **11:1** *यानी वसंत में।

अध्य. 10
1 यह 13:13
2 1इत 19:6, 7
3 2शम 23:8; 1इत 19:8, 9
4 1इत 19:10-13
5 1शम 26:6; 2शम 2:18; 2शम 23:18; 1इत 2:15, 16
6 गि 21:24
7 व्य 31:6
8 भज 37:5; भज 44:5; नीत 29:25
9 1इत 19:14, 15

दूसरा कॉल.
1 1इत 19:16
2 2शम 8:3-5
3 उत 15:18; निर्ग 23:31
4 1इत 19:17-19
5 व्य 20:1; भज 18:37, 38
6 उत 15:18; व्य 20:10, 11

जाकर अम्मोनियों के शहर रब्बाह को घेर लिया।[1] मगर दाविद यरूशलेम में ही रहा।[2]

2 एक शाम* दाविद अपने बिस्तर से उठा और राजमहल की छत पर टहलने लगा। उसने छत से एक औरत को देखा जो नहा रही थी। वह औरत बहुत खूबसूरत थी। 3 दाविद ने किसी को भेजकर पता लगवाया कि वह औरत कौन है। उसने आकर दाविद को बताया कि उस औरत का नाम बतशेबा[3] है और वह एलीआम की बेटी[4] और हित्ती[5] उरियाह[6] की पत्नी है। 4 फिर दाविद ने उस औरत को लाने के लिए अपने दूत भेजे।[7] जब वह औरत आयी तो दाविद ने उसके साथ संबंध रखे।[8] (उस वक्त वह औरत अपनी अशुद्धता* दूर करने के लिए खुद को शुद्ध कर रही थी।)[9] इसके बाद वह अपने घर लौट गयी।

5 वह औरत गर्भवती हो गयी। उसने दाविद के पास खबर भेजी कि मैं गर्भवती हूँ। 6 तब दाविद ने योआब के पास यह संदेश भेजा: "हित्ती उरियाह को मेरे पास भेज।" योआब ने उरियाह को दाविद के पास भेज दिया। 7 जब उरियाह दाविद के पास आया तो दाविद ने उससे पूछा कि योआब और सभी सैनिकों के क्या हाल-चाल हैं और युद्ध कैसा चल रहा है। 8 फिर दाविद ने उरियाह से कहा, "अब तू अपने घर जा और आराम कर।"* उरियाह राजा के महल से चला गया। फिर राजा ने उसके लिए तोहफे# भेजे। 9 मगर उरियाह अपने घर नहीं गया। वह अपने मालिक राजा के महल के द्वार पर ही सोया जहाँ राजा के बाकी सभी सेवक सोते थे। 10 दाविद को बताया गया कि उरियाह अपने घर नहीं गया। तब दाविद ने उरियाह से कहा, "तू अभी-अभी सफर से लौटा है, तू अपने घर क्यों नहीं चला जाता?" 11 मगर उरियाह ने कहा, "जब करार का संदूक[1] और इसराएल और यहूदा डेरों में रह रहे हैं और मेरा मालिक योआब और उसके सेवक खुले मैदान में छावनी डाले हुए हैं, तो भला मैं कैसे अपने घर जाकर खाऊँ-पीऊँ और अपनी पत्नी के संग सोऊँ?[2] मैं तेरी और तेरे जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ, मैं ऐसा हरगिज़ नहीं कर सकता!"

12 दाविद ने उरियाह से कहा, "ठीक है, तू आज भी यहीं रह जा। कल मैं तुझे भेज दूँगा।" इसलिए उरियाह उस दिन और अगले दिन भी यरूशलेम में ही रहा। 13 फिर दाविद ने उसे अपने साथ खाने-पीने के लिए बुलवाया और उसने उरियाह को इतनी पिलायी कि उसे नशा हो गया। फिर भी शाम होने पर उरियाह अपने घर नहीं गया बल्कि वहीं जाकर सोया जहाँ उसके मालिक के सेवक सोते थे। 14 सुबह होने पर दाविद ने योआब के नाम एक चिट्ठी लिखी और उरियाह के हाथ भेज दी। 15 दाविद ने चिट्ठी में यह लिखा था: "उरियाह को युद्ध में सबसे आगे की कतार में रखना जहाँ घमासान लड़ाई हो रही हो। फिर तुम सब पीछे हट जाना ताकि दुश्मन उस पर हमला करके उसे मार डालें।"[3]

16 योआब रब्बाह शहर पर कड़ी नज़र रखे हुए था। वह जानता था कि दुश्मन के बड़े-बड़े सूरमा किस जगह तैनात हैं इसलिए उसने उरियाह को उसी जगह तैनात किया। 17 जब शहर के

11:2 *या "एक दिन देर दोपहर को।" **11:4** *शायद माहवारी की अशुद्धता। **11:8** *शा., "अपने पैर धो।" #या "राजा का हिस्सा," यानी वह हिस्सा जो मेज़बान अपने खास मेहमान को भेजता था।

अध्य. 11

1 2शम 12:26
2 1इत 20:1
3 2शम 12:24 1रा 1:11
4 1इत 3:5, 9
5 उत 10:15 व्य 20:17
6 2शम 23:8, 39 1रा 15:5
7 निर्ग 20:14, 17
8 लैव 18:20 लैव 20:10 नीत 6:32 इब्र 13:4
9 लैव 12:2 लैव 15:19 लैव 18:19

दूसरा कॉल.

1 2शम 6:17 2शम 7:2
2 लैव 15:16 1शम 21:5
3 भज 51:14 नीत 3:29

आदमी आए और योआब से युद्ध करने
लगे तो दाविद के कुछ सेवक मारे गए
और उनमें हित्ती उरियाह भी एक था।[1]
18 फिर योआब ने दाविद को युद्ध
की सारी खबर भेजी। 19 उसने अपने
दूत को यह कहकर भेजाः “जब तू
राजा को युद्ध की पूरी खबर सुनाएगा,
20 तो राजा शायद गुस्सा हो जाए और
तुझसे कहे, ‘तुम लोगों को युद्ध करने के
लिए शहर के इतने करीब जाने की क्या
ज़रूरत थी? क्या तुम्हें पता नहीं था कि
दुश्मन शहरपनाह के ऊपर से तुम पर
तीर चलाएँगे? 21 भूल गए, यरुब्बे-
शेत के बेटे अबीमेलेक के साथ तेबेस
में क्या हुआ था?[2] एक औरत ने शहर-
पनाह के ऊपर से चक्की का ऊपरी पाट
उस पर फेंककर उसे मार डाला था। तुम्हें
शहरपनाह के इतने करीब जाने की क्या
ज़रूरत थी?’ तब तू राजा से कहना, ‘तेरा
सेवक हित्ती उरियाह भी मारा गया।’”

22 वह दूत दाविद के पास गया और
उसने वह सारा हाल कह सुनाया जो
योआब ने उसे सुनाने के लिए कहा था।
23 दूत ने दाविद से कहा, “दुश्मन हम
पर भारी पड़ने लगे और मैदान में आकर
हम पर टूट पड़े। मगर हमने उन्हें वापस
शहर के फाटक तक खदेड़ा। 24 तब
दुश्मन के तीरंदाज़ शहरपनाह के ऊपर
से तेरे सेवकों पर तीर चलाने लगे
जिस वजह से राजा के कुछ सेवक मारे
गए। तेरा सेवक हित्ती उरियाह भी मारा
गया।”[3] 25 दाविद ने दूत से कहा, “तू
जाकर योआब से कहना, ‘जो हुआ है
उसकी वजह से तू ज़्यादा दुखी मत होना।
युद्ध है तो लोग मरेंगे ही। तू हमला और
तेज़ कर दे और शहर पर कब्ज़ा कर
ले।’[4] ऐसा कहकर तू योआब की हिम्मत
बँधाना।”

26 जब उरियाह की पत्नी ने सुना
कि उसका पति उरियाह मर गया है
तो वह अपने पति के लिए मातम
मनाने लगी। 27 जैसे ही उसका मातम
मनाने का समय पूरा हुआ दाविद ने उसे
अपने घर बुलवा लिया और वह उसकी
पत्नी बन गयी।[1] फिर उसने दाविद के
बेटे को जन्म दिया। मगर दाविद ने जो
किया था वह यहोवा की नज़रों में बहुत
बुरा था।[2]

12 इसलिए यहोवा ने नातान[3] को
दाविद के पास भेजा। नातान
दाविद के पास आकर[4] कहने लगा,
“एक शहर में दो आदमी रहते थे। एक
अमीर था और दूसरा गरीब। 2 अमीर
के पास बहुत-सी भेड़ें और बहुत-से गाय-
बैल थे।[5] 3 मगर गरीब के पास सिर्फ
एक भेड़ की बच्ची थी। उसने उसे खरीदा
था।[6] वह बड़े प्यार से उसकी देखभाल
करता था। भेड़ की वह बच्ची उस आदमी
के घर में उसके बेटों के साथ बड़ी होने
लगी। उस आदमी के पास जो थोड़ा-बहुत
खाना होता उसी में से वह अपने मेम्ने को
खिलाता था। वह उसके प्याले में से पीती
और उसकी गोद में सोती थी। वह
आदमी उसे अपनी बेटी की तरह देखता
था। 4 एक दिन जब अमीर आदमी के
घर एक मेहमान आया तो उसने मेहमान
के खाने के लिए अपनी भेड़ों और गाय-
बैलों में से कोई जानवर हलाल नहीं
किया। इसके बजाय, उसने उस गरीब का
मेम्ना ले लिया और उसका गोश्त पकाकर
अपने मेहमान के सामने परोस दिया।”[7]

5 जब दाविद ने यह सुना तो उस
अमीर आदमी के खिलाफ उसका गुस्सा
भड़क उठा। उसने नातान से कहा,
“यहोवा के जीवन की शपथ,[8] जिस
आदमी ने ऐसा किया वह मौत की सज़ा

अध्य. 11
1 2शम 12:9
2 न्या 6:32; न्या 7:1; न्या 9:50-53
3 2शम 11:17
4 2शम 12:26

दूसरा कॉल.
1 2शम 5:13; 2शम 12:9
2 उत 39:7-9; 1रा 15:5; भज 5:6; भज 11:4; इब्र 13:4

अध्य. 12
3 1रा 1:8; 1इत 17:1; 1इत 29:29
4 भज 51:उप
5 2शम 5:13; 2शम 15:16
6 2शम 11:3
7 2शम 11:4
8 व्य 6:13

के लायक है! 6 उसे उस मेम्ने की चार
गुना भरपाई करनी होगी[1] क्योंकि उसने
कितना दुष्ट काम किया है और बिलकुल
रहम नहीं किया।”

7 तब नातान ने दाविद से कहा, “तू
ही वह आदमी है! इसराएल के पर-
मेश्वर यहोवा ने कहा है, ‘मैंने तेरा
अभिषेक करके तुझे इसराएल का राजा
बनाया था[2] और तुझे शाऊल के
हाथ से बचाया था।[3] 8 तेरे मालिक का
जो कुछ था वह सब मैंने तुझे दे दिया[4]
और उसकी पत्नियाँ भी तुझे दे दीं।[5] मैंने
तुझे इसराएल और यहूदा का घराना दे
दिया था[6] और अगर यह सब काफी न
होता, तो मैं तेरी खातिर और भी बहुत
कुछ करने को तैयार था।[7] 9 फिर
तूने यहोवा की आज्ञा को क्यों तुच्छ
समझा और ऐसा काम क्यों किया जो
उसकी नज़र में बुरा है? तूने हित्ती उरि-
याह को तलवार से मार डाला![8] उसे
अम्मोनियों की तलवार से मरवा डाला[9]
और फिर उसकी पत्नी को अपनी पत्नी
बना लिया।[10] 10 अब देख, तेरे घर
से तलवार कभी नहीं हटेगी[11] क्योंकि
तूने मुझे तुच्छ जाना और हित्ती उरि-
याह की पत्नी को अपनी पत्नी बना
लिया।’ 11 यहोवा ने कहा है, ‘अब मैं
तेरे ही परिवार से तुझ पर मुसीबतें ले
आऊँगा।[12] तेरी आँखों के सामने मैं तेरी
पत्नियों को लेकर दूसरे आदमी* को दे
दूँगा[13] और वह दिन-दहाड़े तेरी पत्नियों
के साथ संबंध रखेगा।[14] 12 तूने चोरी-
छिपे पाप किया था[15] मगर मैं पूरे इस-
राएल की नज़रों के सामने और दिन-
दहाड़े तेरे साथ ऐसा करवाऊँगा।’”

13 तब दाविद ने नातान से कहा,
“मैंने यहोवा के खिलाफ पाप किया
है।”[1] नातान ने दाविद से कहा, “यहोवा
ने तेरा पाप माफ किया है।[2] तू नहीं
मरेगा।[3] 14 मगर अभी-अभी तेरा जो
बेटा पैदा हुआ है वह ज़रूर मर जाएगा
क्योंकि तूने यह पाप करके यहोवा का
घोर अनादर किया है।”

15 फिर नातान अपने घर लौट गया।

यहोवा ने दाविद के उस बच्चे को
बीमार कर दिया जो उरियाह की पत्नी
से पैदा हुआ था। 16 दाविद ने उस
लड़के की खातिर सच्चे परमेश्वर से बहुत
मिन्नतें कीं। वह उपवास करने लगा और
उसने एक दाना तक मुँह में नहीं डाला।
वह हर रात अपने कमरे में जाता और
ज़मीन पर पड़ा रहता था।[4] 17 उसके
घर के मुखिया उसके पास आते और उसे
उठाने की कोशिश करते मगर वह नहीं
उठता और कुछ भी खाने से इनकार कर
देता था। 18 सातवें दिन उसका बच्चा
मर गया। मगर दाविद के सेवक उसे यह
खबर देने से डर रहे थे। वे कहने लगे,
“जब बच्चा ज़िंदा था तब भी उसने हमारी
बात नहीं मानी, तो अब हम उसे कैसे
बताएँ कि बच्चा मर गया है। कहीं यह
खबर सुनकर वह अपने साथ कुछ बुरा न
कर बैठे।”

19 जब दाविद ने देखा कि उसके
सेवक आपस में कुछ फुसफुसा रहे हैं तो
वह समझ गया कि बच्चा मर गया है।
उसने सेवकों से पूछा, “क्या बच्चा मर
गया है?” उन्होंने कहा, “हाँ, वह मर
गया है।” 20 दाविद ज़मीन से उठा
और नहाया, अपने शरीर पर तेल मला,[5]
कपड़े बदले और यहोवा के भवन[6]
में जाकर मुँह के बल गिरा और दंड-
वत किया। इसके बाद वह महल वापस
आया और उसने कहा कि उसके लिए
खाना परोसा जाए। फिर उसने खाना

अध्य. 12
1 निर्ग 22:1
2 1शम 16:13; 2शम 7:8
3 1शम 18:10, 11; 1शम 19:10; 1शम 23:14
4 1शम 13:13, 14; 1शम 15:26, 28
5 2शम 3:7; 1रा 2:22
6 2शम 2:4; 2शम 5:5
7 2शम 7:19
8 निर्ग 20:13
9 2शम 11:15, 27
10 निर्ग 20:14, 17
11 गि 14:18; 2शम 13:32; 2शम 18:33; गल 6:7
12 2शम 12:15, 19; 2शम 13:10-15; 2शम 15:14
13 निर्ग 21:24; अय 31:9-11; अय 34:11
14 2शम 16:21, 22
15 2शम 11:4, 15

दूसरा कॉल.
1 उत 39:9; भज 32:5; भज 38:3; भज 51:उप, 4; नीत 28:13
2 निर्ग 34:6; भज 32:1
3 लैव 20:10; भज 103:10
4 2शम 12:22; यो 3:8, 9
5 रूत 3:3; 2शम 14:2
6 2शम 6:17

12:11 *या “तेरे संगी-साथी।”

खाया। 21 उसके सेवकों ने उससे पूछा,
“तूने ऐसा क्यों किया? जब बच्चा ज़िंदा
था तब तूने कुछ नहीं खाया-पीया और
रोता रहा। मगर जैसे ही बच्चे की मौत
हो गयी तू उठा और तूने खाना खाया।”
22 दाविद ने कहा, “जब बच्चा ज़िंदा था
तब मैंने उपवास किया[1] और मैं रोता रहा
क्योंकि मैंने सोचा, ‘शायद यहोवा मुझ पर
रहम करे और बच्चे को ज़िंदा रहने दे।’[2]
23 लेकिन अब जब बच्चा नहीं रहा तो
मैं क्यों उपवास करूँ? क्या मैं उसे ज़िंदा
कर सकता हूँ?[3] वह मेरे पास वापस नहीं
आ सकता,[4] मैं ही उसके पास कब्र में
जाऊँगा।”[5]

24 फिर दाविद ने अपनी पत्नी बत-
शेबा[6] को दिलासा दिया। इसके बाद वह
बतशेबा के पास गया और उसके
साथ संबंध रखे। कुछ समय बाद बत-
शेबा ने एक बेटे को जन्म दिया
और उसका नाम सुलैमान* रखा गया।[7]
यहोवा उससे बहुत प्यार करता था[8] और
25 उसने भविष्यवक्ता नातान के हाथ
यह संदेश भेजा[9] कि यहोवा की खातिर
उस बच्चे का नाम यदीद्याह* रखा जाए।

26 उधर योआब ने अम्मोनियों[10] के
शहर रब्बाह[11] के खिलाफ अपनी लड़ाई
जारी रखी और उस शाही शहर* पर
कब्ज़ा कर लिया।[12] 27 फिर योआब
ने दाविद के पास अपने दूतों के
हाथ यह संदेश भेजा: “मैंने रब्बाह पर
हमला करके[13] पानीवाले इस शहर* पर
कब्ज़ा कर लिया है। 28 अब तू सेना
की बाकी टुकड़ियों को इकट्ठा करके यहाँ
आ और शहर को घेरकर उस पर कब्ज़ा
कर ले, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मैं शहर
पर जीत हासिल करूँ और इसका श्रेय
मुझे मिले।”*

29 इसलिए दाविद ने अपनी सेना की
सारी टुकड़ियाँ इकट्ठी कीं और उन्हें लेकर
रब्बाह गया और उससे युद्ध करके उस
पर कब्ज़ा कर लिया। 30 फिर उसने
मलकाम के सिर से ताज उतार लिया।
वह ताज एक तोड़े* सोने का था और उस
पर कीमती रत्न जड़े हुए थे। वह ताज
दाविद के सिर पर रखा गया। दाविद
उस शहर से खूब सारा लूट का माल भी ले
आया।[1] 31 उसने शहर के लोगों को
बंदी बना लिया और उन्हें लाकर पत्थर
काटने में, तेज़ धारवाले लोहे के औज़ारों
और कुल्हाड़ों से काम करने में और ईंटें
बनाने में लगा दिया। उसने अम्मोनियों के
सभी शहरों के साथ ऐसा किया। आखिर
में दाविद और उसकी सारी टुकड़ियाँ यरू-
शलेम लौट आयीं।

13 दाविद के बेटे अबशालोम की
एक बहन थी जिसका नाम
तामार था।[2] वह बहुत सुंदर थी। दाविद
के बेटे अम्नोन[3] को उससे प्यार हो गया
था। 2 मगर तामार कुँवारी थी और
अम्नोन के लिए उसके साथ कुछ भी
करना नामुमकिन था। इसलिए अम्नोन
बेचैन और बेहाल-सा रहने लगा।
3 अम्नोन का एक दोस्त था यहोना-
दाब,[4] जो दाविद के भाई शिमयाह[5] का
बेटा था। यहोनादाब बड़ा शातिर दिमाग-
वाला था। 4 उसने अम्नोन से पूछा,
“क्या बात है, राजा का बेटा आजकल
इतना मायूस क्यों रहता है? मुझे नहीं

12:24 *यह नाम एक इब्रानी शब्द से निकला है जिसका मतलब “शांति” है। **12:25** *मतलब “याह का प्यारा।” **12:26** *या “राजनगर।” **12:27** *यहाँ शायद शहर के पानी के सोतों की बात की गयी है।

12:28 *शा., “वह मेरे नाम से कहलाए।” **12:30** *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 12

1 2शम 12:16, योए 1:14
2 यश 38:3, 5, योए 2:13, 14, आम 5:15, यो 3:8, 9
3 सभ 9:6
4 सभ 9:5, 10
5 अय 30:23, सभ 3:20, प्रेष 2:29, 34, प्रेष 13:36
6 2शम 11:3
7 1इत 3:5, 9, 1इत 22:9, 1इत 28:5, मत 1:6
8 2शम 7:12, 1इत 29:1
9 2शम 7:4, 5, 2शम 12:1, 1रा 1:8
10 व्य 23:3, 6
11 व्य 3:11, यह 13:24, 25
12 2शम 11:25, 1इत 20:1
13 2शम 11:1

दूसरा कॉल.

1 2शम 8:11, 12, 1इत 20:2, 3

अध्य. 13

2 1इत 3:9
3 2शम 3:2
4 2शम 13:35
5 1शम 16:9, 1इत 2:13

बताएगा?” अम्नोन ने उससे कहा, “मुझे
मेरे भाई अबशालोम की बहन[1] तामार
से प्यार हो गया है।” 5 यहोनादाब ने
उससे कहा, “तू एक काम कर। बीमार
होने का बहाना करके बिस्तर पर लेटा
रह। फिर जब तेरा पिता तुझे देखने
आएगा तो उससे कहना, ‘मेहरबानी
करके मेरी बहन तामार से कह कि वह
मेरे पास आए और मुझे खाने के लिए कुछ
दे। मैं चाहता हूँ कि तामार मेरी आँखों के
सामने वह खाना* तैयार करे जो बीमारों
को दिया जाता है। फिर मैं उसके हाथ से
खाऊँगा।’”

6 अम्नोन ने ऐसा ही किया। वह
बिस्तर पर लेट गया और बीमार होने का
ढोंग करने लगा। जब राजा उसे देखने
आया तो अम्नोन ने उससे कहा, “मेहर-
बानी करके मेरी बहन तामार से कह कि
वह मेरे पास आए और मेरी आँखों के
सामने दिल के आकार की दो टिकियाँ
तैयार करे ताकि मैं उसके हाथ से खाऊँ।”
7 तब दाविद ने तामार के पास यह
संदेश भेजा: “ज़रा अपने भाई अम्नोन के
घर जा और उसके लिए खाना* बना।”
8 तामार अपने भाई अम्नोन के घर
गयी। वह बिस्तर पर लेटा हुआ था।
तामार ने गुँधा हुआ आटा लिया और
अम्नोन की आँखों के सामने बेलकर
टिकियाँ बनायीं। 9 फिर उसने तवे से
टिकियाँ लेकर अम्नोन के सामने परोसीं।
मगर अम्नोन ने खाने से इनकार कर दिया
और कहा, “पहले सब लोगों को मेरे पास
से बाहर जाने को कहो!” तब सब लोग
उसके पास से चले गए।

10 फिर अम्नोन ने तामार से कहा,
“तू खाना* लेकर मेरे सोने के कमरे में
आ। मैं तेरे हाथ से खाना चाहता हूँ।”

अध्य. 13
1 लैव 18:9
लैव 20:17

दूसरा कॉल.
1 लैव 18:9, 29
लैव 20:17
व्य 27:22

2 उत 34:2, 7
न्या 20:5, 6

3 यह 7:6
एस 4:1
यिर्म 6:26

तब तामार दिल के आकार की
टिकियाँ लेकर अपने भाई अम्नोन के
पास उसके सोने के कमरे में गयी।
11 जब उसने वह टिकियाँ अम्नोन को
दीं तो उसने झट-से तामार को पकड़
लिया और कहा, “आ मेरी बहन, मेरे
साथ सो।” 12 मगर तामार ने कहा,
“नहीं मेरे भाई, मेरे साथ ऐसा नीच काम
मत कर। यह इसराएल में एक बड़ा
पाप है।[1] तू यह शर्मनाक काम मत
कर।[2] 13 मैं बदनामी का कलंक लेकर
कैसे जीऊँगी? और तू भी इसराएल में
बदनाम हो जाएगा। मेरी बात मान,
मेरे साथ ऐसा मत कर। अगर तू राजा से
मेरा हाथ माँगे तो वह इनकार नहीं
करेगा।” 14 मगर उसने तामार की
एक न सुनी। उसने तामार के साथ ज़बर-
दस्ती की और उसका बलात्कार करके
उसे कलंकित कर दिया। 15 इसके
बाद अम्नोन को उससे नफरत हो गयी।
वह पहले तामार से जितना प्यार करता
था अब उससे कहीं ज़्यादा नफरत करने
लगा। अम्नोन ने उससे कहा, “चली
जा यहाँ से!” 16 मगर तामार ने कहा,
“नहीं मेरे भाई, ऐसा मत कर। मुझे इस
तरह भेजना उस काम से भी बुरा होगा
जो तूने अभी मेरे साथ किया है!” मगर
अम्नोन ने उसकी बात नहीं मानी।

17 उसने फौरन अपने एक जवान
सेवक को बुलाया और कहा, “इसे
बाहर ले जा और दरवाज़ा बंद कर
दे।” 18 उसका सेवक तामार को बाहर
ले गया और दरवाज़ा बंद कर दिया।
(तामार एक खास* कुरता पहने हुई
थी जैसा राजा की कुँवारी बेटियाँ पहना
करती थीं।) 19 तामार ने अपने सिर
पर राख डाली,[3] अपना कुरता फाड़ा

13:5, 7, 10 *या “दिलासे की रोटी।”

13:18 *या “ज़रीदार।”

और सिर पर हाथ रखकर रोती हुई वहाँ
से चली गयी।

20 तामार को देखकर उसके भाई
अबशालोम[1] ने उससे पूछा, “क्या तेरा
यह हाल करनेवाला तेरा भाई अम्नोन
था? बहन, अब तू यह बात किसी से न
कहना। वह तेरा भाई ही तो है।[2] इस बारे
में ज़्यादा मत सोच।” फिर तामार सब
लोगों से दूर अपने भाई अबशालोम के
घर रहने लगी। 21 जब राजा दाविद
को इन सारी बातों का पता चला तो उसे
बहुत गुस्सा आया।[3] मगर वह अपने बेटे
अम्नोन को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता था
क्योंकि अम्नोन उसका पहलौठा था और
वह अपने बेटे से बहुत प्यार करता
था। 22 जहाँ तक अबशालोम की बात
है, उसने अम्नोन से भला-बुरा कुछ नहीं
कहा। वह मन-ही-मन अम्नोन से नफरत
करने लगा[4] क्योंकि उसने उसकी बहन
तामार को कलंकित किया था।[5]

23 इस घटना के पूरे दो साल बाद
अबशालोम ने अपनी भेड़ों के ऊन
कतरने के मौके पर राजा के सभी
बेटों को न्यौता दिया।[6] उसके सेवक
एप्रैम[7] के पास बाल-हासोर में उसकी भेड़ों
का ऊन कतर रहे थे। 24 अबशालोम
ने राजा के पास आकर उससे कहा,
“तेरा सेवक अपनी भेड़ों का ऊन कतरवा
रहा है। राजा और उसके सेवक अगर
मेरे साथ चलें तो बड़ी मेहरबानी होगी।”
25 मगर राजा ने अबशालोम से कहा,
“नहीं बेटे, अगर हम सब आएँगे तो
तुझ पर बोझ बन जाएँगे।” अबशालोम
ने राजा को बहुत मनाया फिर भी
वह राज़ी नहीं हुआ और उसने अब-
शालोम को आशीर्वाद दिया। 26 फिर
अबशालोम ने कहा, “अगर तू नहीं
आ सकता तो मेहरबानी करके मेरे
भाई अम्नोन को हमारे साथ आने दे।”[1]
राजा ने उससे पूछा, “मगर वही क्यों?”
27 अबशालोम ने किसी तरह राजा को
मना लिया इसलिए उसने अम्नोन और
अपने सभी बेटों को उसके साथ भेजा।

28 फिर अबशालोम ने अपने सेवकों
को हुक्म दिया, “तुम लोग होशियार
रहना, जैसे ही अम्नोन दाख-मदिरा पीकर
मगन हो जाएगा मैं तुमसे कहूँगा, ‘मार
डालो अम्नोन को!’ तुम उसे फौरन
मार डालना। बिलकुल डरना मत। यह
मेरा हुक्म है। दिलेर बनना और हिम्मत से
काम लेना।” 29 अबशालोम के सेवकों
ने ठीक वैसा ही किया जैसा उसने हुक्म
दिया था। उन्होंने अम्नोन को मार डाला।
तब राजा के बाकी सभी बेटे उठे और
अपने-अपने खच्चर पर सवार होकर
भाग गए। 30 जब वे रास्ते में ही थे
तो दाविद को यह खबर दी गयी, “अब-
शालोम ने राजा के सभी बेटों को
मार डाला। एक भी ज़िंदा नहीं बचा।”
31 यह सुनने पर राजा उठा और उसने
अपने कपड़े फाड़े और ज़मीन पर लेट
गया। उसके सब सेवकों ने भी अपने
कपड़े फाड़े और उसके पास खड़े रहे।

32 मगर यहोनादाब[2] ने, जो दाविद
के भाई शिमयाह[3] का बेटा था, दाविद
से कहा, “मेरे मालिक, राजा के सारे
बेटे नहीं मारे गए। सिर्फ अम्नोन मारा
गया है।[4] और यह काम अबशालोम के
कहने पर किया गया है। वह उसी
दिन से ऐसा करने की साज़िश करने लगा
था[5] जिस दिन अम्नोन ने उसकी बहन[6]
तामार को कलंकित किया था।[7] 33 हे
राजा, मेरे मालिक, तू इस झूठी खबर
पर यकीन मत करना कि राजा के सभी
बेटे मर गए हैं। सिर्फ अम्नोन की मौत
हुई है।”

अध्य. 13

1 2शम 3:3; 2शम 13:1
2 लैव 18:9; व्य 27:22
3 नीत 19:13
4 नीत 18:19
5 उत 34:7
6 1रा 1:9, 19
7 यूह 11:54

दूसरा कॉल.

1 भज 55:21; नीत 10:18; नीत 26:24-26
2 2शम 13:3
3 1शम 16:9; 1इत 2:13
4 2शम 12:10
5 उत 27:41; भज 7:14; नीत 18:19
6 लैव 18:9, 29
7 2शम 13:12-14

34 इस बीच अबशालोम वहाँ से भाग
गया था।[1] बाद में शहर के पहरेदार ने
देखा कि पीछे की तरफ पहाड़ के पास-
वाले रास्ते से बहुत-से लोग आ रहे हैं।
35 तब यहोनादाब[2] ने राजा से कहा,
“देख! राजा के बेटे लौट आए हैं। जैसा
तेरे दास ने कहा था वैसा ही हुआ।”
36 जैसे ही उसने अपनी बात खत्म की,
राजा के बेटे वहाँ पहुँच गए। वे सभी
ज़ोर-ज़ोर से रो रहे थे। राजा और उसके
सारे सेवक भी फूट-फूटकर रोने लगे।
37 मगर अबशालोम भागकर गशूर के
राजा तल्मै के पास चला गया[3] जो अम्मी-
हूद का बेटा था। दाविद ने अपने बेटे
अम्नोन के लिए कई दिनों तक मातम
मनाया। 38 अबशालोम जब भागकर
गशूर चला गया[4] तो वह तीन साल तक
वहाँ रहा।

39 जब इतना लंबा समय बीत गया
तो राजा दाविद अबशालोम से जाकर
मिलने के लिए तरसने लगा। वह अब
तक अम्नोन की मौत के गम से उबर
चुका था।*

14 अब सरूयाह के बेटे योआब[5]
को पता चला कि राजा का
मन अबशालोम के लिए तरस रहा है।[6]
2 इसलिए योआब ने तकोआ[7] से एक
औरत को बुलवाया जो बहुत होशि-
यार थी। उसने उस औरत से गुज़ा-
रिश की, “तू शोक मनाने का ढोंग
करना। मातम के कपड़े पहनना और
शरीर पर तेल मत मलना।[8] तू ऐसे पेश
आना जैसे तू लंबे समय से किसी की मौत
का मातम मना रही हो। 3 तू राजा के
पास जाना और उससे ये-ये कहना।” फिर
योआब ने औरत को बताया कि उसे क्या-
क्या कहना है।

4 तकोआ की वह औरत राजा के
पास गयी और उसने मुँह के बल ज़मीन
पर गिरकर राजा को प्रणाम किया और
कहा, “हे राजा, मेरी मदद कर!”
5 राजा ने उससे पूछा, “तेरी क्या समस्या
है?” उसने कहा, “तेरी यह दासी विधवा
है, मेरा पति मर चुका है। 6 तेरी दासी
के दो बेटे थे। वे मैदान में एक-दूसरे
से लड़ने लगे। उनका बीच-बचाव करने-
वाला कोई न था, इसलिए एक ने दूसरे
को मार डाला। 7 अब मेरे परिवार के
सब लोग मेरे खिलाफ हो गए हैं और
कह रहे हैं, ‘तेरे जिस लड़के ने अपने भाई
को मार डाला, उसे हमारे हवाले कर दे
ताकि हम उसे मार डालें और उसके
भाई के खून का बदला उससे लें,[1] भले
ही इससे तेरे खानदान का वारिस क्यों न
मिट जाए!’ वे मेरे बचे हुए अंगारे*
को बुझा देंगे और धरती से मेरे पति
का नाम और उसकी आखिरी निशानी भी
मिटा देंगे।”

8 राजा ने औरत से कहा, “तू अपने
घर जा, तुझे ज़रूर इंसाफ मिलेगा। मैं
तेरे बारे में एक आदेश दूँगा।” 9 तब
तकोआ की उस औरत ने राजा से कहा,
“हे राजा, मेरे मालिक, मेरे बेटे के पाप
का दोष मुझे और मेरे घराने को लगे। तब
राजा और उसका शाही खानदान निर्दोष
ठहरेगा।” 10 राजा ने कहा, “अगर
इसके बाद भी कोई तुझसे कुछ कहे तो
उसे मेरे पास लाना। वह तुझे फिर कभी
परेशान नहीं करेगा।” 11 तब औरत
ने कहा, “हे राजा, तेरी बड़ी कृपा होगी
अगर तू अपने परमेश्वर यहोवा को याद

13:39 *या “के मामले में दिलासा पा चुका था।”

14:7 *यानी वंशजों के लिए आखिरी आशा।

अध्य. 13

1 2शम 13:38

2 2शम 13:3

3 2शम 3:3

4 व्य 3:14
यह 12:4, 5
2शम 14:23

अध्य. 14

5 2शम 2:18
1इत 2:15, 16

6 2शम 13:39
2शम 18:33
2शम 19:2

7 2इत 11:5, 6
2इत 20:20
आम 1:1

8 सभ 9:8
दान 10:3

दूसरा कॉल.

1 गि 35:19
व्य 19:11, 12

करे ताकि खून का बदला लेनेवाला[1] मेरे
बेटे की जान लेकर मेरा दुख और न बढ़ा
दे।” राजा ने कहा, “यहोवा के जीवन की
शपथ,[2] तेरे बेटे का बाल भी बाँका नहीं
होगा।” **12** उस औरत ने कहा, “मेरे
मालिक, राजा, तेरी इजाज़त हो तो तेरी
दासी एक और बात कहना चाहती है।”
राजा ने कहा, “इजाज़त है!”

13 उस औरत ने कहा, “फिर तूने
ऐसा काम करने की क्यों सोची जिससे
परमेश्वर के लोगों का नुकसान हो?[3]
राजा ने अभी-अभी जो फैसला सुनाया
वह खुद उसे दोषी ठहराता है क्योंकि
राजा ने अपने बेटे को देश-निकाला
दे दिया और उसे वापस नहीं लाया।[4]
14 यह सच है कि मौत हम सब पर
आती है और हम उस पानी की तरह बन
जाते हैं जिसे ज़मीन पर एक बार उँडेल
दिया जाए तो वापस इकट्ठा नहीं किया जा
सकता। फिर भी परमेश्वर यूँ ही किसी
की जान नहीं लेता बल्कि देखता है कि
जिसे देश-निकाला दिया गया है उसे
वापस लाने की क्या कोई गुंजाइश है।
15 मैं अपने मालिक राजा को यह बात
इसलिए बताने आयी हूँ क्योंकि लोगों ने
मुझे डरा दिया था। इसलिए तेरी दासी ने
सोचा कि मैं राजा से इस मामले पर भी
बात करके देखती हूँ। हो सकता है वह
अपनी दासी की गुज़ारिश मान ले।
16 क्योंकि मेरे मामले में राजा ने मेरी
बिनती सुन ली और वह मुझे उस आदमी
से बचाने के लिए राज़ी हो गया, जो
मुझसे और मेरे इकलौते बेटे से परमेश्वर
की दी हुई विरासत छीनने पर तुला है।[5]
17 तेरी दासी ने सोचा, हो सकता है
राजा मेरी यह गुज़ारिश भी मानकर मेरे
मन को राहत दे, क्योंकि मेरा मालिक
राजा अच्छे-बुरे में फर्क करने में बिल-
कुल सच्चे परमेश्वर के स्वर्गदूत जैसा है।
मेरी दुआ है कि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे
साथ रहे।”

18 तब राजा ने औरत से कहा, “अब
मैं तुझसे जो पूछूँगा, सच-सच बताना।
कुछ छिपाना मत।” औरत ने कहा, “मेरे
मालिक राजा, तुझे जो भी पूछना है
पूछ।” **19** राजा ने पूछा, “क्या यह सब
कहने के लिए तुझे योआब ने मेरे पास
भेजा है?”[1] औरत ने कहा, “मेरे मालिक,
राजा। तेरे जीवन की शपथ, तूने बिल-
कुल सही कहा।* तेरे सेवक योआब ने
ही मुझे यह सब सिखाकर भेजा और यह
सब कहने के लिए कहा। **20** तेरे सेवक
योआब ने यह सब इसलिए किया ताकि
इस मामले के बारे में तेरा नज़रिया बदले।
मेरे मालिक के पास सच्चे परमेश्वर के
स्वर्गदूत जैसी बुद्धि है और वह जानता है
कि देश में क्या-क्या हो रहा है।”

21 फिर राजा ने योआब से कहा,
“ठीक है, मैं अबशालोम के साथ ऐसा ही
करूँगा।[2] तू जा और उस जवान को ले
आ।”[3] **22** तब योआब ने मुँह के बल
ज़मीन पर गिरकर राजा को प्रणाम किया
और उसकी तारीफ की। योआब ने कहा,
“मेरे मालिक राजा, आज तेरा यह सेवक
जान गया है कि तूने मुझ पर कृपा की
है क्योंकि राजा ने अपने सेवक की
गुज़ारिश पूरी की है।” **23** तब योआब
उठा और गशूर गया[4] और अबशालोम
को यरूशलेम ले आया। **24** मगर राजा
ने कहा, “वह अपने घर लौट सकता है,
पर वह मुझे अपना मुँह न दिखाए।” इस-
लिए अबशालोम अपने घर लौट गया,
लेकिन राजा के सामने नहीं आया।

25 अबशालोम एक सुंदर-सजीला

अध्य. 14
1 गि 35:19, 27; व्य 19:6
2 व्य 6:13; सभ 8:4
3 निर्ग 19:5; गि 6:27
4 2शम 13:38
5 2शम 14:2, 7

दूसरा कॉल.
1 2शम 14:1-3
2 2शम 14:13
3 2शम 13:38
4 व्य 3:14; 2शम 3:3; 2शम 13:37

14:19 *या “तूने जो कहा है उससे कोई भी दाएँ या बाएँ नहीं जा सकता।”

जवान था। सिर से पाँव तक उसमें
कोई ऐब नहीं था और पूरे देश में उसके
जैसा खूबसूरत आदमी कोई न था। हर
कहीं उसके रंग-रूप के चर्चे होते थे।
26 उसे अपने बालों का वज़न ढोना भारी
पड़ता था इसलिए हर साल के आखिर में
उसे अपने बाल कटवाने पड़ते थे। जब
वह बाल कटवाता तो उनका वज़न शाही
बाट-पत्थर* के हिसाब से 200 शेकेल#
होता था। **27** अबशालोम के तीन बेटे[1]
और एक बेटी थी। उसकी बेटी का नाम
तामार था और वह बहुत खूबसूरत थी।

28 अबशालोम को यरूशलेम में रहते
पूरे दो साल बीत गए, मगर वह कभी
राजा के सामने नहीं गया।[2] **29** इस-
लिए अबशालोम ने योआब को बुलवाया
ताकि वह उसे राजा के पास भेजे। मगर
योआब अबशालोम के पास नहीं आया।
अबशालोम ने उसे दूसरी बार बुलवाया
फिर भी उसने आने से इनकार कर दिया।
30 आखिर में, अबशालोम ने अपने
सेवकों से कहा, "योआब की ज़मीन मेरी
ज़मीन के पास ही है। और अभी उसकी
ज़मीन में जौ की फसल खड़ी है। तुम
जाओ और उसकी फसल में आग लगा
दो।" अबशालोम के सेवकों ने जाकर
उसके खेत में आग लगा दी। **31** तब
योआब ने अबशालोम के घर आकर
उससे कहा, "तेरे सेवकों ने क्यों मेरे खेत
में आग लगा दी?" **32** अबशालोम ने
कहा, "देख, मैंने तेरे पास संदेश भेजा था
कि मेरे पास आ ताकि मैं तुझे राजा के
पास यह पूछने के लिए भेजूँ, 'मैं गशूर
से क्यों वापस आया?[3] यहाँ आने से तो
अच्छा होता कि मैं वहीं रह जाता। मुझे
राजा के सामने हाज़िर होने की इजाज़त
दी जाए। अगर मैंने कोई अपराध किया
है तो वह मुझे मौत की सज़ा दे दे।'"

33 तब योआब ने राजा के पास
जाकर उसे यह बात बतायी। राजा
ने अबशालोम को बुलवाया। अबशालोम
राजा के पास आया और उसने राजा के
सामने मुँह के बल गिरकर उसे प्रणाम
किया। फिर राजा ने अबशालोम को
चूमा।[1]

15 इसके बाद अबशालोम ने अपने
लिए एक रथ और कुछ घोड़े
हासिल किए और 50 आदमियों को
अपने आगे-आगे दौड़ने के काम पर
लगाया।[2] **2** अबशालोम सुबह तड़के
उठता और शहर के फाटक की तरफ
जानेवाले रास्ते के पास खड़ा हो जाता
था।[3] जब भी कोई आदमी ऐसा मुकद-
मा लेकर जा रहा होता जिसका न्याय
राजा को करना था,[4] तो अबशालोम
उसे अपने पास बुला लेता। वह उससे
पूछता, "तू किस शहर का है?" वह
आदमी कहता, "तेरा सेवक इसराएल
के फलाँ गोत्र का है।" **3** अबशालोम
उससे कहता, "देख, तेरा दावा सही
है, तुझे इंसाफ मिलना चाहिए। मगर
राजा की तरफ से तेरा मामला सुननेवाला
कोई नहीं है।" **4** अबशालोम कहता,
"काश! मुझे इस देश का न्यायी ठहराया
जाता। फिर जिसकी भी कोई शिकायत
होती या कोई मामला होता, वह मेरे
पास आ सकता और मैं उसे ज़रूर इंसाफ
दिलाता।"

5 और जब भी कोई आदमी अब-
शालोम के पास आता और उसके सामने
झुकने लगता तो अबशालोम अपना हाथ
बढ़ाकर उसे झट-से पकड़ लेता और

अध्य. 14
1 2शम 18:18
2 2शम 14:24
3 2शम 14:23

दूसरा कॉल.
1 उत 45:15

अध्य. 15
2 1शम 8:11
1रा 1:5
नीत 11:2
3 व्य 25:7
रूत 4:1
4 1शम 8:20
2शम 8:15

14:26 *यह शायद राजमहल में रखा गया बाट था या एक "शाही" शेकेल था जो आम शेकेल से अलग था। #करीब 2.3 किलो। अति. ख14 देखें।

चूमता।[1] 6 वह उन सभी इसराएलियों
के साथ ऐसा करता था जो इंसाफ के
लिए राजा के पास आते। इस तरह अब-
शालोम इसराएल के लोगों को बहका-
कर उनके दिलों को अपनी तरफ खींचने
लगा।[2]

7 चार साल* के आखिर में अब-
शालोम ने राजा से कहा, "मेहरबानी
करके मुझे हेब्रोन जाने दे।[3] मैंने यहोवा से
जो मन्‍नत मानी है वह पूरी करना चाहता
हूँ। 8 तेरे सेवक ने सीरिया के गशूर में
रहते वक्‍त[4] यह मन्‍नत मानी थी,[5] 'अगर
यहोवा मुझे वापस यरूशलेम ले जाए तो
मैं यहोवा के लिए एक चढ़ावा अर्पित
करूँगा।'"* 9 राजा ने उससे कहा,
"जा, मेरी शुभकामनाएँ तेरे साथ हैं।"*
तब अबशालोम वहाँ से निकल पड़ा और
हेब्रोन गया।

10 फिर अबशालोम ने अपने जासूसों
को यह बताकर इसराएल के सभी गोत्रों
के इलाकों में भेजा, "जैसे ही तुम्हें नर-
सिंगे की आवाज़ सुनायी दे तुम यह ऐलान
करना, 'अबशालोम हेब्रोन में राजा बन
गया है!'"[6] 11 जब अबशालोम हेब्रोन
गया तो उसके साथ यरूशलेम से 200
आदमी गए थे। उन आदमियों को उसके
साथ जाने का न्यौता दिया गया था। वे
अबशालोम की साज़िश के बारे में कुछ
नहीं जानते थे और न ही उन्हें ज़रा
भी शक हुआ था, इसलिए वे उसके
साथ चल दिए। 12 जब अबशालोम ने
हेब्रोन में बलिदान चढ़ाए तो उसने दाविद
के सलाहकार अहीतोपेल[7] को भी गीलो
शहर[8] से बुलवाया। अहीतोपेल गीलो
शहर का रहनेवाला था। अबशालोम की
साज़िश ज़ोर पकड़ती गयी और उसका
साथ देनेवालों की गिनती दिनों-दिन
बढ़ती गयी।[1]

13 कुछ समय बाद एक दूत ने दाविद
के पास आकर उसे यह खबर दी:
"इसराएल के लोग अबशालोम की तरफ
हो गए हैं।" 14 यह सुनते ही दाविद
ने अपने सभी सेवकों से, जो उसके साथ
यरूशलेम में थे, कहा, "चलो हम सब
यहाँ से भाग निकलते हैं,[2] वरना हममें से
कोई भी अबशालोम के हाथ से नहीं
बच पाएगा! जल्दी करो, कहीं ऐसा न
हो कि वह हमें फौरन घेर ले और हमें
और पूरे शहर को तलवार से घात
करके बरबाद कर दे!"[3] 15 राजा के
सेवकों ने उससे कहा, "हमारा मालिक
राजा जो भी फैसला करे हम उसके
मुताबिक काम करने के लिए तैयार हैं।"[4]
16 तब राजा अपने पूरे घराने को लेकर
निकल पड़ा, मगर उसने अपनी दस उप-
पत्नियों को महल की देखभाल करने के
लिए छोड़ दिया।[5] 17 राजा अपने सब
लोगों को साथ लेकर आगे बढ़ता गया
और जब वे बेत-मेरहक पहुँचे तो वहाँ
रुक गए।

18 उसके साथ उसके सभी सेवक,
सभी करेती और पलेती लोग[6] और गत
के 600 आदमी[7] भी थे जो गत से उसके
साथ आए थे।[8] जब वे राजा के सामने
से गुज़र रहे थे तो उसने उनका मुआयना
किया। 19 फिर राजा ने गत के रहने-
वाले इत्तै[9] से कहा, "तू क्यों हमारे
साथ आ रहा है? तू वापस चला जा और
नए राजा के साथ रह। तू एक परदेसी है
और अपना देश छोड़कर यहाँ आया है।
20 तू कल ही तो आया था और आज
मैं तुझे कैसे मजबूर करूँ कि तू भी हमारे
साथ जगह-जगह भटकता रहे? मैं तुझसे

अध्य. 15
1 भज 10:9, भज 55:21, नीत 26:25
2 नीत 11:9
3 2शम 3:2
4 2शम 13:38, 2शम 14:23
5 लैव 22:21
6 2शम 2:1, 2शम 5:1, 5, 1इत 3:4
7 2शम 16:23, 2शम 17:14, 2शम 23:8, 34, भज 41:9, भज 55:12, 13, यूह 13:18
8 यह 15:20, 51

दूसरा कॉल.
1 भज 3:1, नीत 24:21
2 2शम 19:9, भज 3:उप
3 2शम 12:11
4 नीत 18:24
5 2शम 12:11, 2शम 16:21, 2शम 20:3
6 2शम 8:18, 2शम 20:7, 1रा 1:38, 1इत 18:17
7 यह 13:2, 3
8 1शम 27:4, 1इत 18:1
9 2शम 18:2

15:7 *या शायद, "40 साल।" **15:8** *या "की उपासना करूँगा।" **15:9** *शा., "शांति से जा।"

कैसे कह सकता हूँ कि मैं जब जहाँ जाऊँ तू भी हमारे साथ आ? तू लौट जा और अपने भाइयों को भी साथ ले जा। यहोवा तुझे अपने अटल प्यार का सबूत दे और तेरा विश्वासयोग्य बना रहे!"[1] **21** मगर इत्तै ने राजा से कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ और मेरे मालिक राजा के जीवन की शपथ, मेरा मालिक राजा जहाँ कहीं जाए वहाँ तेरा यह सेवक भी जाएगा, फिर चाहे मुझे मौत को ही क्यों न गले लगाना पड़े!"[2] **22** दाविद ने इत्तै[3] से कहा, "ठीक है, तू भी घाटी पार कर।" तब गत के रहनेवाले इत्तै ने अपने सभी आदमियों और बच्चों के साथ घाटी पार की।

23 जब ये सब लोग घाटी पार कर रहे थे तो यरूशलेम और आस-पास के सभी लोग ज़ोर-ज़ोर से रो रहे थे। राजा किदरोन घाटी[4] के पास खड़ा था और सब लोग घाटी पार करके उस रास्ते पर जाने लगे जो वीराने की तरफ जाता है। **24** सादोक[5] भी वहाँ था और उसके साथ सभी लेवी थे[6] जो सच्चे परमेश्वर के करार का संदूक[7] उठाए हुए थे।[8] जब सब लोग शहर से निकलकर घाटी पार कर रहे थे, तो उन्होंने संदूक नीचे रख दिया और अबियातार[9] भी वहाँ था। **25** मगर राजा ने सादोक से कहा, "सच्चे परमेश्वर का संदूक वापस शहर ले जा।[10] अगर यहोवा ने मुझ पर कृपा की है तो वह मुझे ज़रूर वापस लाएगा और मुझे यह संदूक और इसका निवास देखने का मौका देगा।[11] **26** लेकिन अगर वह कहे कि मैं तुझसे खुश नहीं हूँ तो उसे जो सही लगे वह मेरे साथ करे।" **27** फिर राजा ने सादोक याजक से कहा, "क्या तू एक दर्शी[12] नहीं है? तू शांति से शहर लौट जा। अबियातार, तू भी चला जा। सादोक, तू अपने साथ अपने बेटे अहीमास और अबियातार के बेटे योनातान को ले जा।[1] **28** देख, मैं वीराने के पासवाले घाटों में तब तक रहूँगा जब तक मुझे तेरे यहाँ से कोई खबर नहीं मिलती।"[2] **29** तब सादोक और अबियातार सच्चे परमेश्वर का संदूक वापस यरूशलेम ले गए और वहीं रहे।

30 फिर दाविद जैतून पहाड़*[3] चढ़ने लगा। वह अपना सिर ढाँपे और रोते हुए नंगे पाँव चल रहा था। उसके साथ जितने लोग थे वे भी अपना सिर ढाँपे हुए थे और रोते हुए चढ़ रहे थे। **31** तभी दाविद को बताया गया कि अहीतोपेल भी अबशालोम के साथ साज़िश करनेवालों में से है।[4] यह सुनकर दाविद ने बिनती की, "हे यहोवा, तू ऐसा कर कि अहीतोपेल की सलाह मूर्खों की सलाह लगे!"[5]

32 जब दाविद पहाड़ की उस चोटी पर पहुँचा जहाँ लोग झुककर परमेश्वर को दंडवत करते थे, तो वहाँ एरेकी[6] हूशै[7] उससे मिलने आया। वह अपना चोगा फाड़े और सिर पर धूल डाले हुए था। **33** मगर दाविद ने उससे कहा, "अगर तू मेरे साथ घाटी पार करेगा तो मुझ पर एक बोझ बन जाएगा। **34** लेकिन अगर तू शहर लौट जाए और अबशालोम से कहे, 'हे राजा मैं तेरा सेवक हूँ। कल तक मैं तेरे पिता का सेवक था, मगर आज मैं तेरा सेवक हूँ,'[8] तब तू अहीतोपेल की सलाह नाकाम कर पाएगा।[9] **35** सादोक और अबियातार याजक भी वहाँ तेरे साथ होंगे। राजमहल से तुझे जो भी खबर मिले वह याजक सादोक और याजक अबियातार को

15:30 * या "की चढ़ाई।"

अध्य. 15

1 2शम 2:5, 6; भज 25:10; भज 57:3; भज 61:7; भज 89:14
2 नीत 17:17; नीत 18:24
3 2शम 18:2
4 1रा 2:36, 37; 2इत 30:14; यूह 18:1
5 2शम 8:17; 2शम 20:25; 1रा 1:8; 1रा 2:35; 1इत 6:8
6 गि 8:19
7 निर्ग 37:1; लैव 16:2
8 गि 4:15; गि 7:9; 1इत 15:2
9 1शम 22:20; 1शम 30:7
10 2शम 6:17
11 2शम 7:2; भज 26:8; भज 27:4
12 1शम 9:9

दूसरा कॉल.

1 2शम 17:17
2 2शम 15:36; 2शम 17:16, 21
3 मत 21:1; मत 24:3; प्रेष 1:12
4 भज 3:उप; भज 41:9; भज 55:12, 13; यूह 13:18
5 2शम 16:23; 2शम 17:14; भज 3:7
6 यह 16:1, 2
7 2शम 16:16
8 2शम 16:18, 19
9 2शम 17:7, 14

बताया करना।[1] 36 देख, वहाँ उनके
बेटे भी हैं, सादोक का बेटा अहीमास[2]
और अबियातार का बेटा योनातान।[3]
तुम्हें जो भी खबर मिले उनके ज़रिए
मुझ तक पहुँचाते रहना।” 37 इसलिए
दाविद का दोस्त* हूशै[4] शहर चला गया।
उस समय अबशालोम यरूशलेम के अंदर
जा रहा था।

16 जब दाविद पहाड़ की चोटी[5] से
थोड़ा आगे बढ़ा तो वहाँ मपी-
बोशेत[6] का सेवक सीबा[7] उससे मिलने
आया। सीबा अपने साथ काठी कसे दो
गधे लाया और उन पर 200 रोटियाँ,
किशमिश की 100 टिकियाँ, गरमियों के
फलों* से बनी 100 टिकियाँ और दाख-
मदिरा से भरा एक बड़ा मटका लदा हुआ
था।[8] 2 राजा ने सीबा से पूछा, “तू ये
सब क्यों लाया है?” सीबा ने कहा, “ये
जानवर राजा के घराने के लोगों के लिए
हैं ताकि वे इन पर सवार होकर जाएँ।
रोटियाँ और गरमियों के फल राजा के
जवानों के खाने के लिए हैं और दाख-
मदिरा इसलिए है कि अगर तुममें से कोई
वीराने में सफर करते-करते थक जाए तो
पी सके।”[9] 3 फिर राजा ने पूछा, “तेरे
मालिक का बेटा* कहाँ है?”[10] सीबा ने
कहा, “वह यरूशलेम में ही है। उसने
कहा, ‘आज इसराएल का घराना मेरे
पिता का राज मुझे लौटा देगा।’”[11]
4 तब राजा ने सीबा से कहा, “देख! जो
कुछ मपीबोशेत का है वह सब मैं तेरे
अधिकार में कर देता हूँ।”[12] सीबा ने
कहा, “मैं तेरे आगे झुककर तुझे प्रणाम
करता हूँ। मेरे मालिक राजा, तेरी कृपा
मुझ पर बनी रहे।”[13]

5 जब राजा दाविद बहूरीम पहुँचा तो
शिमी नाम का एक आदमी निकला जो
शाऊल के घराने के एक परिवार से था
और गेरा का बेटा था।[1] वह दाविद की
तरफ आते हुए चिल्ला-चिल्लाकर उसे
शाप देने लगा।[2] 6 वह राजा दाविद
पर, उसके सभी सेवकों और उसके साथ
आए लोगों पर और उसके दाएँ-बाएँ
चल रहे वीर योद्धाओं पर पत्थर फेंकने
लगा। 7 शिमी यह कहकर दाविद को
शाप देने लगा, “चला जा यहाँ से,
निकल जा। तू कातिल है, निकम्मा है!
8 तूने शाऊल के घराने को मार डाला,
उसका राज छीनकर खुद राजा बन बैठा।
इसीलिए यहोवा आज तुझसे उन सबके
खून का बदला ले रहा है और यहोवा
ने राज तेरे बेटे अबशालोम के हाथ कर
दिया है। तू खून का दोषी है इसीलिए तुझ
पर यह मुसीबत आयी है!”[3]

9 तब सरूयाह के बेटे अबीशै[4] ने
राजा से कहा, “इसकी यह मजाल कि मेरे
मालिक राजा को शाप दे?[5] यह तो
मरे हुए कुत्ते के समान है।[6] तू हुक्म दे
तो मैं जाकर उसका सिर काट डालूँ।”[7]
10 मगर राजा ने कहा, “सरूयाह के
बेटो, इसमें तुम क्यों दखल दे रहे हो?[8]
वह मुझे शाप दे रहा है तो देने दो[9]
क्योंकि जब यहोवा ने ही उससे कहा है,[10]
‘दाविद को शाप दे!’ तो कौन उसे रोक
सकता है?” 11 फिर दाविद ने अबीशै
और अपने सब सेवकों से कहा, “जब
मेरा अपना बेटा, जो मुझसे पैदा हुआ,
मेरी जान के पीछे पड़ा है[11] तो मैं
बिन्यामीन गोत्र के इस आदमी[12] के बारे
में क्या कहूँ! अगर यह मुझे शाप दे रहा है
तो देने दो क्योंकि यहोवा ने इसे ऐसा
करने को कहा है! 12 क्या पता यहोवा
मेरा दुख देखे[13] और आज मुझे जो शाप

अध्य. 15

1 2शम 17:15, 16
2 2शम 18:19
3 2शम 17:17; 1रा 1:42
4 2शम 16:16; 1इत 27:33

अध्य. 16

5 2शम 15:30
6 2शम 9:6
7 2शम 9:2, 9
8 1शम 25:18
9 2शम 17:27-29
10 2शम 9:3
11 2शम 19:25-27
12 2शम 9:9, 10
13 नीत 26:22

दूसरा कॉल.

1 2शम 19:16; 1रा 2:8, 44
2 निर्ग 22:28; सभ 10:20
3 1शम 24:6, 7; 1शम 26:9, 11; भज 3:1, 2; भज 7:1; भज 71:10, 11
4 1इत 2:15, 16
5 निर्ग 22:28
6 1शम 24:14
7 1शम 26:8
8 2शम 19:22; 1रा 2:5
9 भज 37:8; 1पत 2:23
10 2शम 12:10
11 2शम 12:11; 2शम 15:14; 2शम 17:12
12 2शम 19:16
13 उत 29:32; निर्ग 3:7; भज 25:18

15:37 *या “राज़दार।” **16:1** *खासकर अंजीर और शायद खजूर भी। **16:3** *या “पोता।”

दिया जा रहा है, उसके बदले यहोवा मेरे
साथ फिर से भलाई करे।”[1] 13 दाविद
के ऐसा कहने के बाद दाविद और उसके
आदमी आगे बढ़ते गए। शिमी उस पहाड़
पर दाविद के साथ-साथ चलता हुआ
चिल्ला-चिल्लाकर उसे शाप देता रहा[2]
और उस पर पत्थर और ढेर सारी धूल
फेंकता रहा।

14 आखिरकार दाविद और सारे
लोग जब तय जगह पर पहुँचे तो वे थक-
कर पस्त हो चुके थे इसलिए उन्होंने वहाँ
आराम किया।

15 इधर अबशालोम और इसराएल
के सारे आदमी यरूशलेम पहुँचे। अब-
शालोम के साथ अहीतोपेल भी था।[3]
16 जब दाविद का दोस्त* एरेकी[4] हूशै[5]
अबशालोम के पास आया तो उसने अब-
शालोम से कहा, “राजा की जय हो![6]
राजा की जय हो!” 17 अबशालोम ने
हूशै से कहा, “तू अपने दोस्त के साथ क्यों
नहीं गया? यही है तेरी वफादारी?”*
18 हूशै ने अबशालोम से कहा, “मैं तो
उसी का साथ दूँगा जिसे यहोवा ने और
इन लोगों ने और इसराएल के सभी आद-
मियों ने चुना है। मैं उसी के साथ रहूँगा।
19 मैं एक बार फिर कहता हूँ, उसके बेटे
की सेवा करना मेरा फर्ज़ है। जैसे मैंने तेरे
पिता की सेवा की थी, वैसे मैं तेरी सेवा
करूँगा।”[7]

20 तब अबशालोम ने अहीतोपेल से
कहा, “अब हमें क्या करना चाहिए,
तेरी क्या सलाह है?”[8] 21 अहीतोपेल
ने कहा, “तू अपने पिता की उप-पत्नियों
के साथ संबंध रख,[9] जिन्हें वह महल की
देखभाल के लिए छोड़ गया है।[10] तब
पूरा इसराएल जान जाएगा कि तूने अपने
पिता का अपमान किया है और इससे तेरा
साथ देनेवालों की हिम्मत बढ़ जाएगी।”
22 इसलिए छत पर एक तंबू खड़ा किया
गया[1] और अबशालोम ने वहाँ पूरे इस-
राएल के सामने अपने पिता की उप-
पत्नियों के साथ संबंध रखे।[2]

23 उन दिनों अहीतोपेल की सलाह[3]
सच्चे परमेश्वर का वचन मानी जाती
थी।* दाविद और अबशालोम, अहीतो-
पेल की हर सलाह को बहुत अनमोल
समझते थे।

17 फिर अहीतोपेल ने अबशालोम से
कहा, “मुझे इजाज़त दे कि मैं
12,000 आदमी चुनकर आज रात ही
दाविद का पीछा करूँ। 2 मैं ऐसे वक्त
पर उस पर टूट पड़ूँगा जब वह थका-
माँदा और कमज़ोर होगा।*[4] मैं उसे
डरा दूँगा, तब उसके साथ जितने लोग
हैं वे सब भाग जाएँगे। और राजा
जब अकेला रह जाएगा तो मैं उसे मार
डालूँगा।[5] 3 इसके बाद मैं बाकी सब
लोगों को तेरे पास ले आऊँगा। तू जिसकी
तलाश कर रहा है, उसे हटाने पर ही सब
लोग तेरे पास वापस आएँगे। तब सब
लोग शांति से रहेंगे।” 4 अहीतोपेल का
यह सुझाव अबशालोम और इसराएल के
सभी मुखियाओं को एकदम सही लगा।

5 फिर भी अबशालोम ने कहा, “ज़रा
एरेकी हूशै को भी बुलाओ,[6] देखते हैं
वह क्या सलाह देता है।” 6 तब हूशै
अबशालोम के पास आया। अबशालोम
ने उससे कहा, “अहीतोपेल ने हमें यह
सलाह दी है। तुझे क्या लगता है,
हमें उसकी बात माननी चाहिए या नहीं?

16:16 *या “राज़दार।” **16:17** *या “तेरा अटल प्यार?”

16:23 *या “ऐसी थी मानो कोई सच्चे पर-मेश्वर का वचन पूछ रहा हो।” **17:2** *या “थका-माँदा होगा और उसके दोनों हाथ कमज़ोर होंगे।”

अध्य. 16
1 भज 109:28
2 2शम 16:5
3 2शम 15:12, 31
4 यह 16:1, 2
5 2शम 15:32, 37; 1इत 27:33
6 1रा 1:25
7 2शम 15:34
8 भज 37:12
9 लैव 18:8; लैव 20:11; 1रा 2:22
10 2शम 15:16

दूसरा कॉल.
1 2शम 11:2
2 व्य 22:30; 2शम 12:11, 12; 2शम 20:3
3 2शम 15:12; 2शम 17:14, 23

अध्य. 17
4 2शम 16:14
5 भज 37:12; भज 41:9; भज 55:12, 13
6 2शम 15:32; 2शम 16:16

अगर नहीं, तो तू कोई सलाह दे।”
7 हूशै ने अबशालोम से कहा, “अहीतो-
पेल ने इस बार जो सलाह दी, वह सही
नहीं है!”[1]

8 इसके बाद हूशै ने कहा, “तू अच्छी
तरह जानता है कि तेरा पिता और उसके
आदमी कितने ताकतवर हैं[2] और इस
समय वे भड़के हुए हैं, ऐसी रीछनी की
तरह जिसके बच्चे खो गए हों।[3] और तू
यह भी मत भूल कि तेरा पिता एक वीर
योद्धा है।[4] वह आज रात लोगों के साथ
नहीं रहेगा। **9** वह तो इस वक्त किसी
गुफा* में या किसी और जगह छिपा
होगा।[5] अगर उसने पहले हमारे लोगों
पर हमला कर दिया, तो यह अफवाह
फैल जाएगी कि ‘अबशालोम के पक्ष-
वाले हार गए हैं!’ **10** ऐसे में तो शेर-
दिल सैनिकों[6] की भी हिम्मत टूट जाएगी,
क्योंकि पूरा इसराएल जानता है कि
तेरा पिता कितना बड़ा सूरमा है[7] और
उसके साथवाले आदमी भी बड़े दिलेर
हैं। **11** इसलिए मेरी सलाह है कि दान
से बेरशेबा[8] तक के सभी इसराएली तेरे
पास इकट्ठा हो जाएँ ताकि उनकी तादाद
समुंदर किनारे की बालू के किनकों जैसी
हो।[9] फिर तू खुद उन सबको लेकर युद्ध
में जा। **12** वह जहाँ भी मिले हम उस
पर ऐसे हमला करेंगे, जैसे ज़मीन पर
ओस की बूँदें छा जाती हैं। तब उनमें से
कोई बच नहीं पाएगा, न तो वह और न
ही उसका कोई आदमी। **13** अगर वह
किसी शहर में भाग जाएगा, तो हम पूरे
इसराएल को लेकर जाएँगे और उस शहर
को नाश कर देंगे। और हम शहर को
रस्सों से घसीटकर घाटी में फेंक देंगे ताकि
वहाँ एक पत्थर भी न बचे।”

14 तब अबशालोम और इसराएल के
सभी आदमियों ने कहा, “एरेकी हूशै की
सलाह अहीतोपेल की सलाह से ज़्यादा
अच्छी है!”[1] ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि
यहोवा ने ठान लिया था* कि वह अहीतो-
पेल की बढ़िया सलाह को नाकाम कर
देगा[2] ताकि यहोवा अबशालोम पर कहर
ढा सके।[3]

15 फिर हूशै ने याजक सादोक
और याजक अबियातार को बताया,[4]
“अहीतोपेल ने अबशालोम और इस-
राएल के मुखियाओं को यह सलाह दी थी
जबकि मैंने यह सलाह दी है। **16** इस-
लिए तुम जल्दी से दाविद के पास यह
संदेश भेजो और उसे खबरदार करो कि
आज रात वह वीराने के घाटों* के
पास न रहे, बल्कि हर हाल में नदी
के उस पार चला जाए, वरना राजा और
उसके साथ जितने लोग हैं वे सब मिटा
दिए जाएँगे।”[5]

17 योनातान[6] और अहीमास[7] एन-
रोगेल[8] में ठहरे हुए थे क्योंकि अगर लोग
उन्हें शहर के अंदर जाते देख लेते तो
उन्हें खतरा हो सकता था। इसलिए एक
दासी ने जाकर उन्हें यह खबर दी। फिर
वे दोनों राजा दाविद को यह बात
बताने के लिए निकल पड़े। **18** मगर
एक जवान आदमी ने उन दोनों को
देख लिया और जाकर अबशालोम को
बता दिया। इसलिए वे दोनों फौरन वहाँ
से भाग निकले और बहूरीम[9] में एक
आदमी के घर पहुँचे। उस घर के आँगन
में एक कुआँ था। वे उसमें उतरकर
छिप गए। **19** उस आदमी की पत्नी ने
कुएँ का मुँह एक कपड़े से ढाँप दिया
और उस पर दला हुआ अनाज फैला

17:9 *या “गड्ढे; तंग घाटी।”

17:14 *या “आज्ञा दी थी।” **17:16** *या
शायद, “रेगिस्तानी मैदान।”

अध्य. 17
1 2शम 15:34
2 1शम 16:18; 2शम 15:18; 2शम 23:8, 18; 1इत 11:26
3 नीत 17:12
4 1शम 17:50; 1शम 18:7; 1शम 19:8; 2शम 10:18
5 1शम 22:1; 1शम 23:19
6 उत 49:9; 2शम 1:23; यश 31:4
7 1शम 18:5
8 न्या 20:1
9 1रा 4:20

दूसरा कॉल.
1 नीत 21:1
2 2शम 15:31, 34; 2शम 16:23; नीत 19:21; नीत 21:30
3 व्य 2:30; 2इत 25:20
4 2शम 8:17; 2शम 15:35
5 भज 35:24, 25
6 1रा 1:42
7 2शम 15:27, 36; 2शम 18:19
8 यह 15:7, 12; यह 18:16, 20; 1रा 1:9
9 2शम 16:5; 2शम 19:16

दिया, इसलिए किसी को कुछ पता नहीं चला। 20 अबशालोम के सेवक उस औरत के घर आए और उन्होंने उससे पूछा, “अहीमास और योनातान कहाँ हैं?” औरत ने कहा, “वे नदी की तरफ चले गए।”[1] अबशालोम के आदमियों ने उन्हें बहुत ढूँढ़ा, मगर वे कहीं नहीं मिले। इसलिए वे यरूशलेम लौट गए।

21 उन आदमियों के जाने के बाद वे दोनों कुएँ से निकलकर ऊपर आए। फिर उन्होंने जाकर राजा दाविद को खबर दी। उन्होंने उससे कहा, “तू जल्दी से नदी के पार चला जा क्योंकि अहीतोपेल ने तेरा बुरा करने के लिए यह सलाह दी है।”[2] 22 यह खबर सुनते ही दाविद और उसके सभी लोग वहाँ से निकल पड़े और यरदन नदी के पार चले गए। सुबह होने तक यरदन के इस पार एक भी आदमी नहीं बचा था।

23 जब अहीतोपेल ने देखा कि उसकी सलाह नहीं मानी गयी, तो वह एक गधे पर सवार होकर अपने शहर लौट गया।[3] उसने अपने घराने को ज़रूरी हिदायतें दीं[4] और फिर फाँसी लगा ली* और मर गया।[5] उसे उसके पुरखों के कब्रिस्तान में दफनाया गया।

24 इस बीच दाविद महनैम[6] चला गया। उधर अबशालोम ने इसराएल के सभी आदमियों के साथ यरदन पार की। 25 अबशालोम ने योआब की जगह अमासा[7] को सेनापति बनाया था।[8] अमासा, यित्रा नाम के एक इसराएली आदमी का बेटा था जिसने नाहाश की बेटी अबीगैल के साथ संबंध रखे थे।[9] अबीगैल, योआब की माँ सरूयाह की बहन थी। 26 अबशालोम और उसके साथवाले सभी इसराएलियों ने गिलाद के इलाके[1] में छावनी डाली।

27 जैसे ही दाविद महनैम पहुँचा, शोबी (जो अम्मोनियों के शहर रब्बाह[2] के रहनेवाले नाहाश का बेटा था), माकीर[3] (जो लो-देबार के रहनेवाले अम्मीएल का बेटा था) और बरजिल्लै[4] (जो रोग-लीम का रहनेवाला गिलादी था) उसके पास आए। 28 वे अपने साथ बिस्तर, कटोरे, मिट्टी के बरतन, गेहूँ, जौ, आटा, भुना हुआ अनाज, बाकला, दाल, सूखा अनाज, 29 शहद, मक्खन, पनीर* और भेड़ें ले आए थे। वे ये सारी चीज़ें दाविद और उसके लोगों के लिए लाए थे[5] क्योंकि उन्होंने सोचा, “लोग वीराने में भूखे-प्यासे और थके-माँदे होंगे।”[6]

18 फिर दाविद ने उन आदमियों की गिनती ली जो उसके साथ थे और उन्हें सौ-सौ और हज़ार-हज़ार की टुकड़ियों में बाँटकर उन पर सेना-पति ठहराए।[7] 2 दाविद ने एक-तिहाई आदमियों को योआब की कमान के नीचे किया,[8] एक-तिहाई को योआब के भाई और सरूयाह के बेटे अबीशै[9] की कमान के नीचे[10] और एक-तिहाई को गत के रहनेवाले इत्तै की कमान के नीचे किया।[11] फिर राजा ने अपने आद-मियों से कहा, “मैं भी तुम लोगों के साथ चलता हूँ।” 3 मगर उन्होंने कहा, “नहीं, तुझे शहर से बाहर नहीं जाना चाहिए,[12] क्योंकि अगर हम भाग जाएँ या हममें से आधे लोग मारे जाएँ तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन तू हमारे जैसे 10,000 सैनिकों के बराबर है।[13] इसलिए अच्छा होगा कि तू शहर में ही रहे और यहाँ से हमारी मदद करे।”

अध्य. 17
1 निर्ग 1:19; यह 2:3-5; 1शम 19:12, 14; 1शम 21:2
2 2शम 17:1, 2
3 यह 15:20, 51; 2शम 15:12
4 2रा 20:1
5 1शम 31:4; 1रा 16:18; भज 5:10; भज 55:23; मत 27:3, 5; प्रेष 1:18
6 उत 32:1, 2; यह 13:24, 26
7 2शम 19:13; 2शम 20:4, 10
8 2शम 8:16
9 1इत 2:16, 17

दूसरा कॉल.
1 गि 32:1; व्य 3:15
2 व्य 3:11; यह 13:24, 25; 2शम 12:26, 29
3 2शम 9:3-5
4 2शम 19:31, 32; 1रा 2:7
5 नीत 11:25
6 1शम 25:18; 2शम 16:2

अध्य. 18
7 नीत 20:18
8 2शम 8:16; 2शम 10:7
9 1इत 2:15, 16
10 2शम 23:18, 19
11 2शम 15:19, 21
12 2शम 21:17
13 2शम 17:1-3; विल 4:20

17:23 *या “अपना गला घोंट लिया।”

17:29 *शा., “गाय की दही।”

4 राजा ने कहा, “ठीक है, तुम्हें जो सही लगता है मैं वही करूँगा।” इसलिए राजा शहर के फाटक के पास खड़ा रहा और उसके सभी आदमी सौ-सौ और हज़ार-हज़ार की टुकड़ियों में वहाँ से रवाना हो गए। **5** फिर राजा ने योआब, अबीशै और इत्तै को यह आदेश दिया, “तुम लोग मेरी खातिर जवान अबशालोम के साथ नरमी से पेश आना।”[1] जब राजा ने सभी सेनापतियों को अबशालोम के बारे में यह आदेश दिया तो सारे सैनिक सुन रहे थे।

6 फिर वे सभी आदमी इसराएली सैनिकों से मुकाबला करने युद्ध की जगह गए। युद्ध एप्रैम के जंगल में हुआ।[2] **7** दाविद के आदमियों ने इसराएली सैनिकों[3] को हरा दिया[4] और उस दिन बहुत मार-काट मची और 20,000 आदमी मारे गए। **8** लड़ाई पूरे इलाके में फैल गयी। उस दिन जितने लोग तलवार से मारे गए उससे कहीं ज़्यादा लोग जंगल का कौर हो गए।

9 फिर ऐसा हुआ कि अबशालोम ने दाविद के आदमियों को अपनी तरफ आते देखा। अबशालोम एक खच्चर पर सवार था और खच्चर भागते-भागते जब एक बड़े पेड़ के नीचे से गुज़रा तो अबशालोम के बाल पेड़ की मोटी-मोटी डालियों में उलझ गए। खच्चर आगे निकल गया और अबशालोम अधर में लटका रह गया। **10** जब एक सैनिक ने उसे देखा तो उसने जाकर योआब[5] को बताया, “मैंने अबशालोम को एक बड़े पेड़ में लटके हुए देखा है!” **11** योआब ने उससे कहा, “अगर तूने उसे देखा तो उसे वहीं मारकर ज़मीन पर क्यों नहीं गिरा दिया? तब मैं खुश होकर तुझे चाँदी के दस टुकड़े और एक कमरबंद देता।” **12** लेकिन सैनिक ने योआब से कहा, “चाहे मुझे चाँदी के 1,000 टुकड़े दिए जाते,* तो भी मैं राजा के बेटे पर हाथ नहीं उठाता क्योंकि हमारे सामने ही राजा ने तुझे, अबीशै और इत्तै को आदेश दिया था कि ‘ध्यान रखना, तुममें से कोई भी जवान अबशालोम के साथ कुछ बुरा न करे।’[1] **13** अगर मैं राजा की आज्ञा तोड़कर उसके बेटे की जान ले लेता तो यह बात राजा से छिपी नहीं रहती और तब तू भी मुझे नहीं बचाता।” **14** योआब ने कहा, “अब मैं तुझसे बात करके और वक्त बरबाद नहीं करूँगा!” फिर योआब ने तीन बड़े-बड़े कीले* लिए और अबशालोम के दिल में आर-पार भेद दिए जो बड़े पेड़ के बीच ज़िंदा लटका हुआ था। **15** फिर योआब के हथियार ढोनेवाले दस सेवक वहाँ आए और अबशालोम को तब तक मारते रहे जब तक कि वह मर न गया।[2] **16** फिर योआब ने नरसिंगा फूँका और दाविद के आदमी इसराएलियों का पीछा करना छोड़कर लौट आए। इस तरह योआब ने उन्हें रोक दिया। **17** उन्होंने अबशालोम की लाश उठाकर जंगल में एक बड़े गड्ढे में फेंक दी और उसके ऊपर पत्थरों का बहुत बड़ा ढेर लगा दिया।[3] फिर सभी इसराएली अपने-अपने घर भाग गए।

18 अबशालोम जब ज़िंदा था तो उसने ‘राजा की घाटी’[4] में अपने लिए एक खंभा खड़ा करवाया था क्योंकि उसने कहा था, “मेरे बाद मेरा नाम चलाने के लिए मेरा कोई बेटा नहीं है।”[5] इसलिए उसने उस खंभे का नाम अपने नाम पर

अध्य. 18
1 2शम 18:12
2 2शम 17:26
3 2शम 16:15
4 भज 3:7; नीत 24:21, 22
5 2शम 8:16; 2शम 18:2

दूसरा कॉल.
1 2शम 18:5
2 2शम 12:10; नीत 2:22; नीत 20:20; नीत 30:17
3 यह 7:24, 26; यह 8:29; यह 10:23, 27
4 उत 14:17
5 2शम 14:27

18:12 *शा., “मेरी हथेलियों पर चाँदी के 1,000 टुकड़े तौलकर दिए जाते।” **18:14** *या शायद, “नुकीले छड़; भाले।” शा., “लाठियाँ।”

रखा था और वह खंभा आज तक अबशालोम स्मारक कहलाता है।

19 अब सादोक के बेटे अहीमास[1] ने योआब से कहा, “मेहरबानी करके मुझे इजाज़त दे कि मैं दौड़कर राजा को खबर दूँ क्योंकि यहोवा ने उसे दुश्मनों से छुड़ाकर इंसाफ दिलाया है।”[2] 20 मगर योआब ने कहा, “नहीं, आज तू खबर नहीं ले जाएगा। तू फिर कभी खबर सुनाना। मगर आज नहीं क्योंकि आज राजा के अपने बेटे की मौत हुई है।”[3] 21 फिर योआब ने एक कूशी आदमी[4] से कहा, “तू जाकर राजा को खबर दे। तूने जो देखा है उसे बता।” तब कूशी ने योआब के सामने झुककर प्रणाम किया और दौड़कर जाने लगा। 22 सादोक के बेटे अहीमास ने एक बार फिर योआब से कहा, “चाहे जो भी हो, मुझे भी उस कूशी के पीछे जाने दे।” मगर योआब ने कहा, “बेटे, तेरे बताने के लिए कोई खबर नहीं है, फिर तू क्यों जाना चाहता है?” 23 फिर भी उसने कहा, “कुछ भी हो, मुझे भी भेज।” तब योआब ने उससे कहा, “ठीक है, दौड़!” तब अहीमास यरदन ज़िले से गुज़रनेवाले रास्ते से दौड़कर गया और इतना तेज़ दौड़ा कि कूशी आदमी से आगे निकल गया।

24 दाविद शहर के दो फाटकों के बीच बैठा हुआ था।[5] पहरेदार[6] दीवार से होकर फाटक की छत पर गया था। उसने देखा कि एक आदमी अकेला दौड़ा चला आ रहा है। 25 उसने राजा को आवाज़ दी और यह बात उसे बतायी। राजा ने कहा, “अगर वह अकेला आ रहा है तो ज़रूर कोई खबर ला रहा होगा।” जब अहीमास दौड़ता हुआ पास आ रहा था, 26 तो पहरेदार को एक और आदमी दौड़ता हुआ नज़र आया। पहरेदार ने दरबान को आवाज़ देकर कहा, “देख, एक और आदमी अकेला दौड़ता हुआ आ रहा है!” राजा ने कहा, “वह भी ज़रूर कोई खबर ला रहा होगा।” 27 पहरेदार ने कहा, “मुझे पहले आदमी का दौड़ना सादोक के बेटे अहीमास के दौड़ने जैसा लग रहा है।”[1] राजा ने कहा, “वह एक अच्छा आदमी है, ज़रूर कोई अच्छी खबर ला रहा होगा।” 28 फिर अहीमास ने राजा को आवाज़ दी और कहा, “खुशखबरी है खुशखबरी!” ऐसा कहकर उसने ज़मीन पर गिरकर राजा को प्रणाम किया। फिर उसने कहा, “तेरे परमेश्वर यहोवा की बड़ाई हो। उसने मेरे मालिक राजा से बगावत करनेवालों* को उसके हवाले कर दिया है!”[2]

29 मगर राजा ने कहा, “अबशालोम की क्या खबर है? वह तो सलामत है न?” अहीमास ने कहा, “जब योआब ने राजा के सेवक को और तेरे इस दास को भेजा तो मैंने देखा कि बड़ी खलबली मची हुई है, मगर मैं नहीं जान सका कि बात क्या है।”[3] 30 राजा ने कहा, “ज़रा इस तरफ आ, यहाँ खड़ा रह।” तब वह एक तरफ जाकर खड़ा हो गया।

31 तभी वह कूशी आदमी वहाँ पहुँचा[4] और उसने कहा, “मेरे मालिक राजा, तेरे लिए यह खबर है: आज यहोवा ने तुझे इंसाफ दिलाया है। तुझे उन सभी के हाथ से छुड़ा लिया है जो तुझसे बगावत करते थे।”[5] 32 मगर राजा ने कूशी से पूछा, “अबशालोम ठीक तो है न?” कूशी ने कहा, “मेरे मालिक राजा के सभी दुश्मनों का और तुझसे बगावत करनेवालों का वही हश्र हो जो उस जवान का हुआ है!”[6]

18:28 *शा., “के खिलाफ हाथ उठानेवालों।”

अध्य. 18
1 2शम 15:35, 36; 2शम 17:17
2 भज 9:4
3 2शम 18:5
4 उत 10:6
5 2शम 18:4
6 2रा 9:17

दूसरा कॉल.
1 2शम 18:19
2 2शम 22:47; भज 144:1
3 2शम 18:22
4 2शम 18:21
5 2शम 22:49; भज 55:18; भज 94:1; भज 124:2, 3
6 भज 27:2

33 यह खबर सुनकर राजा को गहरा
सदमा पहुँचा। वह फाटक की ऊपरवाली
कोठरी में चला गया और रोने लगा।
वह ऊपर चढ़ते वक्त रो-रोकर कह रहा
था, "हाय! मेरे बेटे अबशालोम, मेरे बेटे!
काश, तेरे बदले मेरी मौत हो जाती! हाय!
मेरे बेटे अबशालोम, मेरे बेटे!"[1]

19 योआब को बताया गया कि अब-
शालोम के लिए राजा बहुत रो
रहा है और मातम मना रहा है।[2] **2** जब
लोगों ने सुना कि राजा शोक मना रहा है
तो वे भी जीत* का जश्न मनाने के बजाय
मातम मनाने लगे। **3** उस दिन वे सब
चुपचाप शहर[3] में ऐसे लौट गए जैसे युद्ध
से भागे हुए सैनिक मारे शर्म के चले जाते
हैं। **4** राजा अपना मुँह ढाँपे, ज़ोर-ज़ोर
से रोते हुए कह रहा था, "हाय, मेरे बेटे
अबशालोम, मेरे बेटे! हाय, मेरे बेटे अब-
शालोम!"[4]

5 तब योआब राजा से मिलने घर पर
गया। उसने राजा से कहा, "आज तूने
अपने सभी सेवकों को शर्मिंदा किया है
जिन्होंने आज के दिन तेरी, तेरे बेटे-
बेटियों की,[5] तेरी पत्नियों और उप-
पत्नियों की जान बचायी है।[6] **6** तू उन
लोगों से प्यार करता है जो तुझसे नफ-
रत करते हैं और उन लोगों से नफरत
करता है जो तुझसे प्यार करते हैं। आज
तूने दिखा दिया कि तेरे सेनापति और
सेवक तेरी नज़रों में कुछ भी नहीं हैं। अब
मैं जान गया हूँ कि आज अगर हम सब-
के-सब मर जाते और सिर्फ अबशालोम
ज़िंदा रहता तो तू खुश होता। **7** अब
उठ और अपने सेवकों के पास जा और
उनकी हिम्मत बँधा क्योंकि मैं यहोवा की
शपथ खाकर कहता हूँ, अगर तू उनके
पास नहीं गया तो आज रात तेरे साथ एक
भी आदमी नहीं रहेगा। और तेरे लिए यह
दुख उन सारे दुखों से कहीं ज़्यादा होगा जो
तूने बचपन से लेकर आज तक झेले हैं।"
8 तब राजा उठा और जाकर शहर के
फाटक पर बैठा। सब लोगों को खबर दी
गयी कि राजा फाटक पर बैठा है। तब वे
सब राजा के सामने आए।

मगर जो इसराएली युद्ध में हार गए थे,
वे अपने-अपने घर भाग गए।[1] **9** इस-
राएल के सभी गोत्रों के लोगों में बहस
छिड़ गयी और वे एक-दूसरे से कहने लगे,
"राजा ने हमें दुश्मनों से बचाया था[2] और
पलिश्तियों के हाथों से छुड़ाया था, मगर
अब उसे अबशालोम की वजह से देश
छोड़ना पड़ा।[3] **10** हमने अबशालोम
का अभिषेक करके उसे अपना राजा ठह-
राया था,[4] मगर वह युद्ध में मारा गया
है।[5] इसलिए अब तुम कुछ करते क्यों
नहीं? जाकर राजा को वापस क्यों नहीं
लाते?"

11 राजा दाविद ने याजक सादोक[6]
और याजक अबियातार[7] के पास यह
संदेश भेजा: "यहूदा के मुखियाओं से
बात करो[8] और उनसे कहो, 'इसराएल
के बाकी सभी गोत्रों के यहाँ से राजा के
पास संदेश पहुँचा है कि राजा को
वापस महल लाया जाए। मगर तुम
लोग उसे लाने में पीछे क्यों रह गए हो?
12 तुम तो मेरे भाई हो। तुम्हारे साथ मेरा
खून का रिश्ता है।* तुम्हें तो राजा को
वापस ले जाने के लिए सबसे पहले आना
चाहिए था। फिर तुम लोग क्यों पीछे
रह गए हो?' **13** और अमासा[9] से तुम
कहना, 'तेरे साथ मेरा खून का रिश्ता है।
इसलिए अब से योआब के बदले तू मेरा
सेनापति होगा। अगर मैंने तुझे अपना

19:2 *या "उद्धार।"

19:12 *शा., "तुम मेरा हाड़-माँस हो।"

अध्य. 18
1 2शम 12:10, 2शम 17:14, 2शम 19:1, नीत 19:13

अध्य. 19
2 2शम 18:5, 2शम 18:14
3 2शम 17:24
4 2शम 18:33
5 2शम 3:2-5, 2शम 5:14-16, 2शम 13:1
6 2शम 5:13, 2शम 15:16

दूसरा कॉल.
1 2शम 18:17
2 1शम 17:50, 1शम 18:7, 1शम 19:5, 2शम 5:25, 2शम 8:5
3 2शम 15:14
4 2शम 15:10, 12
5 2शम 18:14
6 2शम 8:17, 2शम 15:25, 1रा 1:8
7 1शम 22:20, 1शम 30:7, 2शम 15:24, 1इत 15:11, 12
8 2शम 2:4
9 2शम 17:25, 1इत 2:16, 17

सेनापति नहीं ठहराया तो परमेश्‍वर मुझे
कड़ी-से-कड़ी सज़ा दे।’”[1]

14 इस तरह दाविद ने यहूदा के
सभी आदमियों का दिल जीत लिया और
उन्होंने एकमत होकर राजा को यह संदेश
भेजाः “तू अपने सभी सेवकों को लेकर
वापस आ जा।”

15 राजा वापस जाने के लिए निकल
पड़ा। जब वह यरदन नदी पहुँचा तो
यहूदा के लोग गिलगाल आए[2] ताकि
राजा से मिलें और उसे सही-सलामत यर-
दन पार करा सकें। **16** राजा से मिलने
के लिए उनके साथ गेरा का बेटा शिमी[3]
भी जल्दी-जल्दी आया। शिमी बिन्या-
मीन गोत्र का था और बहूरीम का
रहनेवाला था। **17** उसके साथ बिन्या-
मीन गोत्र के 1,000 आदमी आए थे।
इन सबके अलावा शाऊल के घराने का
सेवक सीबा[4] भी आया। वह हड़बड़ाता
हुआ राजा से पहले ही यरदन के पास
पहुँच गया था। सीबा अपने 15 बेटों और
20 दासों को साथ लेकर आया था।
18 वह* घाट उतरकर नदी के उस पार
गया ताकि राजा के घराने को नदी पार
करा सके और राजा उससे जो भी
कहे वह करे। जब राजा यरदन पार
करने ही वाला था तो गेरा के बेटे
शिमी ने उसके सामने गिरकर **19** कहा,
“मेरे मालिक, मेरा गुनाह माफ कर
दे। जिस दिन तू यरूशलेम छोड़कर जा
रहा था उस दिन मैंने तेरे साथ जो
किया उसे भुला दे।[5] उस बात को दिल
पर मत ले। **20** तेरे दास को एह-
सास हो गया है कि उसने कितना बड़ा
पाप किया है। तभी आज मैं यूसुफ के
पूरे घराने में से सबसे पहले अपने मालिक
राजा से मिलने आया हूँ।”

21 सरूयाह के बेटे अबीशै[1] ने फौरन
दाविद से कहा, “शिमी को तो मार
डालना चाहिए क्योंकि उसने यहोवा के
अभिषिक्‍त जन को शाप दिया था!”[2]
22 मगर दाविद ने कहा, “सरूयाह के
बेटो, इस मामले से तुम्हारा क्या लेना-
देना?[3] तुम क्यों मेरी मरज़ी के खिलाफ
काम करना चाहते हो? आज मैं पूरे इस-
राएल का राजा हूँ, इसलिए क्या आज के
दिन इसराएल में किसी को मार डालना
सही होगा?” **23** फिर राजा ने शिमी से
कहा, “तू मारा नहीं जाएगा।” और राजा
ने उससे शपथ खायी।[4]

24 शाऊल का पोता मपीबोशेत[5] भी
राजा से मिलने आया। जिस दिन राजा
शहर छोड़कर गया था तब से लेकर
उसके सही-सलामत लौटने तक मपी-
बोशेत ने न अपने पैर धोए,* न अपनी
मूँछें काटीं और न ही कपड़े धोए थे।
25 जब वह यरूशलेम में* राजा से
मिलने गया तो राजा ने उससे पूछा,
“मपीबोशेत, तू मेरे साथ क्यों नहीं आया
था?” **26** उसने कहा, “मेरे मालिक
राजा, मेरे सेवक[6] ने मुझे धोखा दिया।
तू जानता है कि मैं पैरों से लाचार
हूँ[7] इसलिए मैंने कहा, ‘मैं अपने गधे
पर काठी कसता हूँ ताकि उस पर
सवार होकर राजा के साथ-साथ जाऊँ।’
27 मगर उसने मेरे बारे में मालिक
से झूठ बोलकर मुझे बदनाम कर दिया।[8]
लेकिन मेरे मालिक राजा, तू सच्चे पर-
मेश्‍वर के एक स्वर्गदूत जैसा है, इस-
लिए तुझे जो सही लगे वह कर। **28** तू
चाहता तो मेरे पिता के पूरे घराने को

अध्या. 19

1 2शम 8:16
2शम 18:5, 14

2 यह 5:9
1शम 11:14

3 2शम 16:5
1रा 2:8, 9

4 2शम 9:2, 10
2शम 16:1

5 2शम 16:5

दूसरा कॉल.

1 2शम 2:18
2शम 23:18

2 निर्ग 22:28
2शम 16:7
1रा 21:13

3 2शम 3:39
2शम 16:10

4 1रा 2:8, 9

5 2शम 9:3, 6
2शम 16:3, 4

6 2शम 9:9

7 2शम 4:4

8 लैव 19:16
2शम 16:3

19:18 *या शायद, “वे।”

19:24 *यहाँ इस्तेमाल हुए इब्रानी शब्दों का यह मतलब भी हो सकता है कि उसने पैरों के नाखून नहीं काटे थे। **19:25** *या शायद, “से।”

मिटा सकता था। लेकिन तूने ऐसा नहीं
किया बल्कि अपने इस दास को अपनी
मेज़ से खाने का सम्मान दिया।[1] इसलिए
मेरा क्या हक बनता है कि मैं राजा की
और दुहाई दूँ?”

29 लेकिन राजा ने उससे कहा, “बस,
अब मुझे और कुछ नहीं सुनना। मैंने
फैसला कर लिया है, तेरी ज़मीन
पर तेरा और सीबा, दोनों का बराबर
का हिस्सा होगा।”[2] **30** मपीबोशेत ने
राजा से कहा, “वह चाहे तो पूरी ज़मीन ले
ले। मेरा मालिक राजा सही-सलामत
महल लौट आया है, मेरे लिए यही
बहुत है।”

31 गिलाद का रहनेवाला बरजिल्लै[3]
भी राजा को यरदन पार कराने रोगलीम
से आया। **32** बरजिल्लै बहुत बूढ़ा था,
उसकी उम्र 80 साल थी। वह एक
अमीर आदमी था इसलिए जब राजा मह-
नैम में ठहरा हुआ था तब बरजिल्लै ने
उसकी खाने-पीने की ज़रूरतें पूरी कीं।[4]
33 इसलिए राजा ने बरजिल्लै से कहा,
“तू यरदन पार करके मेरे साथ यरूशलेम
चल। तू मेरे साथ भोजन किया करना।”[5]
34 मगर बरजिल्लै ने राजा से कहा,
“मेरी ज़िंदगी के दिन ही कितने रह गए
हैं कि मैं राजा के साथ यरूशलेम जाऊँ?
35 तेरा यह दास 80 साल का हो गया
है।[6] क्या अब मैं अच्छे-बुरे में फर्क कर
सकता हूँ? क्या मैं खाने-पीने का मज़ा
ले सकता हूँ? क्या मैं गायक-गायिकाओं
के सुरीले गीत सुन सकता हूँ?[7] तो फिर
मैं इस उम्र में अपने मालिक राजा पर
क्यों बोझ बनूँ? **36** मुझे राजा को यर-
दन तक लाने का जो सम्मान मिला है,
यही मेरे लिए बहुत है। बदले में राजा
मुझे इतना बड़ा इनाम क्यों दे? **37** अब
मेहरबानी करके अपने सेवक को लौट

अध्य. 19
1 2शम 9:7-10
2 2शम 16:4
3 2शम 17:27-29, 1रा 2:7
4 नीत 3:27
5 नीत 11:25
6 भज 90:10
7 सभ 2:8

दूसरा कॉल.
1 उत 50:13
2 1रा 2:7
3 उत 31:55, 1शम 20:41, प्रेष 20:37
4 1शम 11:14
5 2शम 2:4
6 न्या 8:1, न्या 12:1, 2शम 19:15
7 भज 78:68, 70

जाने की इजाज़त दे ताकि मेरी मौत
मेरे अपने शहर में हो जहाँ मेरे माँ-बाप
की कब्र है।[1] लेकिन मैं तेरे सेवक किम-
हाम को पेश करता हूँ।[2] मेरा मालिक
राजा इसे अपने साथ यरदन पार ले जाए
और इसके साथ जो भी भला करना
चाहे करे।”

38 राजा ने कहा, “ठीक है, किमहाम
मेरे साथ नदी पार जाएगा और मैं उसके
लिए वही करूँगा जो तू चाहता है। तू
मुझसे जो भी कहे, मैं तेरे लिए करूँगा।”
39 इसके बाद सभी लोग यरदन पार
करने लगे। राजा ने नदी पार करने से
पहले बरजिल्लै को चूमा[3] और उसे
आशीर्वाद दिया। फिर बरजिल्लै अपने
घर लौट गया। **40** जब राजा उस पार
गिलगाल गया[4] तो किमहाम भी उसके
साथ गया। यहूदा के सभी लोगों ने और
इसराएल के आधे लोगों ने राजा को यर-
दन पार कराया।[5]

41 फिर इसराएल के सभी आदमी
राजा के पास आए और उससे कहने लगे,
“हे राजा, यहूदा के हमारे भाई क्यों हमें
बताए बिना चोरी से तुझे और तेरे
घराने और तेरे सभी आदमियों को
यरदन पार ले आए?”[6] **42** जवाब
में यहूदा के सभी आदमियों ने कहा,
“क्योंकि राजा हमारा रिश्तेदार है।[7] तुम
क्यों गुस्सा हो रहे हो? क्या हमने राजा
का दिया कुछ खाया है या हमें कुछ तोहफे
दिए गए हैं?”

43 मगर इसराएल के लोगों ने यहूदा
के लोगों से कहा, “इस राज्य के दस
हिस्से हमारे हैं, इसलिए दाविद पर तुमसे
ज़्यादा हमारा हक बनता है। तो फिर
तुमने क्यों हमें तुच्छ समझा? क्या यह
सही नहीं होता कि राजा को लाने के लिए
पहले हम जाते?” फिर भी, इसराएल के

आदमी यहूदा के आदमियों से बहस जीत न सके।*

20 बिन्यामीन गोत्र में शीबा नाम का एक आदमी था जो बड़ा फसादी था।[1] वह बिकरी का बेटा था। शीबा ने नरसिंगा फूँककर[2] यह ऐलान किया: "दाविद के साथ हमारा कोई साझा नहीं। यिशै के बेटे की विरासत उसी के पास रहे।[3] इसराएलियो, तुम सब अपने-अपने देवता के पास* लौट जाओ!"[4] 2 तब इसराएल के सब आदमी दाविद के पीछे चलना छोड़कर बिकरी के बेटे शीबा के पीछे चलने लगे।[5] मगर यहूदा के आदमियों ने अपने राजा का साथ नहीं छोड़ा। वे यरदन से यरूशलेम तक उसके साथ ही रहे।[6]

3 जब राजा दाविद यरूशलेम में अपने महल वापस आया[7] तो उसने उन दस उप-पत्नियों को एक अलग घर में रखा, जिन्हें वह महल की देखभाल के लिए छोड़ गया था।[8] उसने उस घर पर पहरा लगा दिया। वह उन औरतों को खाना-पीना मुहैया कराता रहा, मगर उसने उनके साथ संबंध नहीं रखे।[9] वे अपनी मौत तक उस घर में कैद रहीं और पति के रहते हुए भी उन्हें विधवाओं जैसी ज़िंदगी बितानी पड़ी।

4 अब राजा ने अमासा[10] से कहा, "तीन दिन के अंदर यहूदा के आदमियों को मेरे सामने इकट्ठा कर। तू भी यहाँ हाज़िर होना।" 5 अमासा यहूदा के सभी आदमियों को इकट्ठा करने निकल गया, मगर वह तय समय के अंदर नहीं आया। 6 फिर दाविद ने अबीशै[11] से कहा, "बिकरी का बेटा शीबा[12] हमारे लिए अबशालोम से ज़्यादा खतरनाक साबित हो सकता है।[1] इसलिए तू मेरे सेवकों* को लेकर जल्दी से शीबा का पीछा कर और उसे पकड़ ला ताकि वह किलेबंद शहरों में भागकर हमसे बच न जाए।" 7 तब योआब के आदमी[2] और करेती और पलेती लोग[3] और सारे वीर योद्धा उसके* पीछे चल दिए। वे सब बिकरी के बेटे शीबा का पीछा करने यरूशलेम से निकल पड़े। 8 जब वे गिबोन[4] में बड़े पत्थर के पास पहुँचे तो अमासा[5] उनसे मिलने आया। योआब उस वक्त सैनिक की पोशाक पहने हुए था और उसकी कमर पर तलवार बँधी हुई थी। जब उसने कदम बढ़ाए तो तलवार म्यान से निकलकर नीचे गिर पड़ी।

9 योआब ने अमासा से कहा, "कैसे हो मेरे भाई?" फिर योआब ने अपने दाएँ हाथ से अमासा की दाढ़ी पकड़ी मानो वह उसे चूमने जा रहा हो। 10 अमासा ने ध्यान नहीं दिया कि योआब के हाथ में तलवार है। योआब ने अमासा के पेट में तलवार भोंक दी[6] और उसकी अंतड़ियाँ निकलकर ज़मीन पर गिर पड़ीं। योआब को दोबारा तलवार नहीं चलानी पड़ी, उसका एक ही वार काफी था। इसके बाद योआब और उसका भाई अबीशै, बिकरी के बेटे शीबा का पीछा करने आगे बढ़े।

11 योआब का एक जवान अमासा के पास खड़ा हो गया और कहने लगा, "जो-जो योआब की तरफ हैं और दाविद के लोग हैं, वे सब योआब के पीछे चलें!" 12 अमासा बीच सड़क पर खून से लथपथ छटपटा रहा था और जब सैनिक वहाँ से गुज़रते तो वे रुक जाते थे। यह

अध्य. 20
1 2शम 20:21
2 न्या 3:26, 27; 2शम 15:10
3 2शम 19:43
4 1रा 12:16
5 नीत 24:21
6 2शम 19:15; 2शम 19:41, 42
7 2शम 5:11
8 2शम 15:16
9 2शम 16:21, 22
10 2शम 17:25; 2शम 19:13; 1इत 2:17
11 1शम 26:6; 2शम 10:10; 2शम 23:18; 1इत 18:12
12 2शम 20:1

दूसरा कॉल.
1 2शम 15:12
2 2शम 8:16
3 2शम 8:18; 2शम 15:18; 1रा 1:38
4 यह 18:21, 25; यह 21:8, 17
5 2शम 17:25; 2शम 19:13
6 2शम 3:27; 1रा 2:5

19:43 *या "यहूदा के आदमियों ने इसराएल के आदमियों से ज़्यादा कड़ी बातें कहीं।" **20:1** *या शायद, "तंबू को।"

20:6 *शा., "अपने मालिक के सेवकों।"
20:7 *मुमकिन है कि यह अबीशै था।

देखकर वह जवान अमासा को रास्ते से
हटाकर मैदान में ले गया। फिर उसने
अमासा के ऊपर एक कपड़ा डाल दिया
क्योंकि उसने देखा कि वहाँ से गुज़रने-
वाला हर कोई वहाँ रुक जाता है।
13 जब उसने अमासा को सड़क से
हटा दिया, तो सभी आदमी बिकरी के
बेटे शीबा[1] को पकड़ने योआब के पीछे
चल दिए।

14 शीबा इसराएल के सब गोत्रों के
इलाकों से गुज़रता हुआ बेत-माका के
हाबिल शहर[2] में घुस गया। बिकरी के
खानदान के सभी लोग इकट्ठा हो गए और
वे भी शीबा के पीछे-पीछे शहर के अंदर
चले गए।

15 योआब और उसके आदमी* बेत-
माका के हाबिल शहर आए और उन्होंने
शहर को घेर लिया, जिसकी दीवारों के
चारों तरफ सुरक्षा की एक ढलान थी।
योआब और उसके आदमियों ने शहर पर
हमला करने के लिए एक ढलान खड़ी की
और शहरपनाह तोड़ने लगे। **16** तब
उस शहर की एक बुद्धिमान औरत ने
शहरपनाह के ऊपर से आवाज़ देकर
कहा, "सैनिको सुनो, मेहरबानी करके
योआब से कहो कि वह यहाँ आए। मैं
उससे कुछ कहना चाहती हूँ।" **17** तब
योआब उस औरत के पास गया और उस
औरत ने कहा, "क्या तू योआब है?"
उसने कहा, "हाँ।" औरत ने कहा, "तेरी
दासी कुछ कहना चाहती है।" योआब
ने कहा, "बोल, क्या कहना चाहती है।"
18 औरत ने कहा, "हमारे शहर के बारे
में गुज़रे ज़माने में यह बात मशहूर थी कि
सलाह लेनी हो तो हाबिल जाओ, मामला
सुलझ जाएगा। **19** मैं इसराएल के
अमन-पसंद और विश्वासयोग्य लोगों की

20:15 *शा., "वे।"

तरफ से बात कर रही हूँ। तू ऐसा
शहर क्यों नाश करना चाहता है जो इस-
राएल में बहुत खास है? क्यों यहोवा की
दी हुई विरासत मिटाना* चाहता है?"[1]
20 योआब ने कहा, "मैं इस शहर को
मिटाने, इसे नाश करने की बात सोच भी
नहीं सकता। **21** मेरा ऐसा कोई इरादा
नहीं। दरअसल, शीबा[2] नाम के आदमी
ने, जो एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश[3] का रहने-
वाला और बिकरी का बेटा है, राजा
दाविद से बगावत की है।* वह तुम्हारे
शहर में घुस आया है। अगर तुम लोग
उसे मेरे हवाले कर दो तो मैं शहर छोड़कर
चला जाऊँगा।" तब औरत ने योआब
से कहा, "ठीक है, उसका सिर काट-
कर दीवार के बाहर तेरे पास फेंक दिया
जाएगा!"

22 उस बुद्धिमान औरत ने फौरन
जाकर शहर के सब लोगों को यह बात
बतायी। उन्होंने बिकरी के बेटे शीबा का
सिर काट लिया और योआब के पास फेंक
दिया। फिर योआब ने नरसिंगा फूँका
और उसके सभी आदमी शहर छोड़कर
चले गए और अपने-अपने घर लौट
गए।[4] और योआब राजा के पास यरू-
शलेम लौट आया।

23 योआब इसराएल की पूरी सेना
का सेनापति था।[5] यहोयादा[6] का बेटा
बनायाह,[7] करेती और पलेती लोगों का
अधिकारी था।[8] **24** अदोराम[9] जब-
रन मज़दूरी करनेवालों का अधिकारी
था। अहीलूद का बेटा यहोशापात[10] शाही
इतिहासकार था। **25** शेवा राज-सचिव
था और सादोक[11] और अबियातार[12]
याजक थे। **26** याईर के खानदान का
ईरा भी दाविद का एक खास मंत्री बना।

20:19 *शा., "निगल जाना।" **20:21** *शा., "के खिलाफ हाथ उठाया है।"

अध्य. 20
1 2शम 20:1
2 1रा 15:20
2रा 15:29

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 19:5
व्य 32:9
2 2शम 20:1
3 यह 17:14, 15
न्या 2:8, 9
4 सभ 9:14, 15
सभ 9:18
5 2शम 8:16
2शम 19:13
6 1इत 12:27
7 2शम 23:20
1इत 27:5
8 2शम 8:18
2शम 15:18
1रा 1:38, 44
9 1रा 4:6
1रा 12:18
10 1रा 4:3
11 2शम 15:27
12 2शम 17:15
2शम 19:11
1रा 4:4

21 दाविद के दिनों में इसराएल में
अकाल पड़ा[1] और यह तीन साल
तक रहा। जब दाविद ने यहोवा से सलाह
की तो यहोवा ने कहा, “शाऊल और
उसका घराना खून का दोषी है क्योंकि
उसने गिबोनियों को मार डाला था।”[2]
2 तब राजा ने गिबोनियों[3] को बुलाया
और उनसे बात की। (गिबोनी लोग इस-
राएली नहीं थे बल्कि बचे हुए एमोरी
लोगों[4] में से थे। इसराएलियों ने उन्हें
ज़िंदा छोड़ देने की शपथ खायी थी,[5] मगर
शाऊल इसराएल और यहूदा के लोगों की
खातिर जोश में आकर सभी गिबोनियों
का कत्ल करने पर उतारू हो गया था।)
3 दाविद ने गिबोनियों से कहा, “बताओ
मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ? जो पाप
हुआ है उसके प्रायश्‍चित के लिए मैं क्या
करूँ ताकि तुम यहोवा की विरासत के
लिए दुआ करो कि उस पर आशीष
हो?” 4 गिबोनियों ने कहा, “शाऊल
और उसके घराने ने हमारे साथ जो
किया है उसकी भरपाई सोने-चाँदी से नहीं
हो सकती।[6] और हमारे पास यह हक भी
नहीं कि हम इसराएल में किसी को मार
डालें।” तब दाविद ने कहा, “तुम जो भी
कहो मैं तुम्हारे लिए करूँगा।” 5 उन्होंने
कहा, “जिस आदमी ने हमें नाश कर दिया
था और हमें मिटा देने की साज़िश की
थी ताकि हम इसराएल देश में कहीं
नज़र न आएँ[7]— 6 उसके वंशजों में से
सात आदमियों को हमारे हवाले कर दे।
हम उनकी लाशें यहोवा के सामने गिबा
शहर[8] में लटका देंगे[9] जो यहोवा के
चुने हुए जन शाऊल[10] का शहर है।”
तब राजा ने कहा, “मैं उनको तुम्हारे हवाले
कर दूँगा।”

7 मगर राजा ने योनातान के बेटे
और शाऊल के पोते मपीबोशेत पर रहम
किया[1] क्योंकि दाविद और योनातान ने
यहोवा के सामने एक-दूसरे से शपथ
खायी थी।[2] 8 लेकिन उसने शाऊल के
बेटे अरमोनी और मपीबोशेत को लिया,
जो अय्या की बेटी रिस्पा[3] से पैदा हुए
थे। इन दोनों के अलावा, दाविद ने
शाऊल की बेटी मीकल*[4] के पाँच बेटों
को लिया। मीकल के इन बेटों का
पिता अदरीएल[5] था, जो महोलाई बर-
जिल्लै का बेटा था। 9 राजा ने उन
सातों आदमियों को गिबोनियों के हवाले
कर दिया। गिबोनियों ने उन्हें मार डाला
और उनकी लाशें पहाड़ पर ले जाकर
यहोवा के सामने लटका दीं।[6] इस तरह
वे सातों एक-साथ मर गए। उन्हें कटाई
के शुरूआती दिनों में, यानी जौ की
कटाई की शुरूआत में मारा गया था।
10 फिर अय्या की बेटी रिस्पा[7] ने टाट
लिया और चट्टान पर बिछाकर बैठ गयी।
वह कटाई की शुरूआत से लेकर तब तक
बैठी रही जब तक आसमान से उन लाशों
पर पानी न बरसा। रिस्पा ने न तो दिन
के वक्‍त आकाश के पक्षियों को लाशों पर
आने दिया और न ही रात के वक्‍त
मैदान के जंगली जानवरों को पास फटक-
ने दिया।

11 दाविद को बताया गया कि अय्या
की बेटी यानी शाऊल की उप-पत्नी रिस्पा
ने ऐसा-ऐसा किया है। 12 तब दाविद
याबेश-गिलाद गया और वहाँ के अगुवों*
से शाऊल और उसके बेटे योनातान की
हड्डियाँ ले आया।[8] पलिश्‍तियों ने जिस
दिन शाऊल को गिलबो में मारा था उस
दिन उन्होंने शाऊल और योनातान की
लाशें बेतशान के चौक में लटका दी थीं।
बाद में याबेश-गिलाद के अगुवे चुपके

अध्य. 21
1 लैव 26:18, 20
2 उत 9:6
निर्ग 20:13
गि 35:30, 33
3 यह 9:3, 27
4 उत 10:15, 16
5 यह 9:15
6 गि 35:31
7 2शम 21:1
8 1शम 10:26
9 गि 25:4
व्य 21:22
10 1शम 9:17

दूसरा कॉल.
1 2शम 4:4
2शम 9:10
2शम 19:24
2 1शम 18:3
1शम 20:42
3 2शम 3:7
4 1शम 18:20
1शम 25:44
2शम 3:14
2शम 6:23
5 1शम 18:19
6 गि 35:31
व्य 19:21
7 2शम 3:7
8 2शम 2:5

21:8 *या शायद, “मेरब।” 21:12 *या शायद, “ज़मींदारों।”

से जाकर बेतशान से उनकी लाशें अपने
यहाँ ले आए थे।[1] 13 जब दाविद
शाऊल और योनातान की हड्डियाँ ले
आया, तो उन सात आदमियों की हड्डियाँ
भी इकट्ठी की गयीं जिन्हें मौत की सज़ा दी
गयी थी।[2] 14 फिर लोग शाऊल और
योनातान की हड्डियाँ बिन्यामीन के इलाके
के सेला शहर[3] ले गए और वहाँ शाऊल
के पिता कीश[4] की कब्र में दफना दीं।
उन्होंने वह सब किया जिसकी राजा ने
उन्हें आज्ञा दी थी। इसके बाद परमेश्वर
ने देश की खातिर की गयी उनकी बिन-
तियाँ सुनीं।[5]

15 एक बार फिर पलिश्तियों और
इसराएलियों के बीच युद्ध हुआ।[6] तब
दाविद और उसके सेवकों ने जाकर
पलिश्तियों से लड़ाई की। दाविद लड़ते-
लड़ते पस्त हो गया। 16 पलिश्ती सेना
में यिशबी-बनोब नाम का एक आदमी
था, जो रपाई[7] का वंशज था। उसके ताँबे
के भाले का वज़न 300 शेकेल* था[8]
और उसके पास एक नयी तलवार थी।
यिशबी-बनोब ने दाविद को मार डालने
की कोशिश की। 17 मगर तभी सरू-
याह का बेटा अबीशै[9] दाविद की मदद के
लिए आ गया[10] और उसने पलिश्ती पर
वार करके उसे मार डाला। तब दाविद
के आदमियों ने शपथ खाकर कहा: "हम
तुझे फिर कभी अपने साथ युद्ध में नहीं
आने देंगे।[11] ऐसा न हो कि इसराएल का
दीया बुझ जाए!"[12]

18 इसके बाद, पलिश्तियों और इस-
राएलियों के बीच फिर से युद्ध छिड़
गया।[13] गोब में हुए इस युद्ध में हूशाई
सिब्बकै[14] ने रपाई[15] के एक और वंशज
सप को मार डाला।

19 पलिश्तियों और इसराएलियों के
बीच एक बार फिर गोब में लड़ाई छिड़
गयी।[1] इस बार बेतलेहेम के रहनेवाले
यार-योरगीम के बेटे एल्हानान ने गत के
रहनेवाले गोलियात को मार डाला।
गोलियात के भाले का डंडा जुलाहे के लट्ठे
जितना भारी था।[2]

20 गत में एक बार फिर युद्ध छिड़ा।
पलिश्ती सेना में एक आदमी था जो
बहुत ऊँची कद-काठी का था। उसके
हाथों और पैरों में छः-छः उँगलियाँ थीं
यानी कुल मिलाकर उसकी 24 उँग-
लियाँ थीं। वह भी रपाई का वंशज था।[3]
21 वह इसराएल को लगातार ललकार-
ता था।[4] इसलिए योनातान ने, जो दाविद
के भाई शिमी[5] का बेटा था, उसे मार
डाला।

22 रपाई के ये चारों वंशज गत में
रहते थे और वे दाविद और उसके सेवकों
के हाथों मारे गए।[6]

22 यह गीत दाविद ने यहोवा के
लिए तब गाया[7] जब यहोवा ने
उसे सभी दुश्मनों से और शाऊल के हाथ
से छुड़ाया।[8] 2 दाविद ने कहा,

"यहोवा मेरे लिए बड़ी चट्टान और
मज़बूत गढ़ है,[9] वही मेरा छुड़ाने-
वाला है।[10]
3 मेरा परमेश्वर मेरी चट्टान है[11]
जिसकी मैं पनाह लेता हूँ,
वह मेरी ढाल[12] और मेरा
उद्धार* का सींग# है, मेरा ऊँचा
गढ़ है,[13]
वह मेरे लिए ऐसी जगह है जहाँ
मैं भागकर जा सकता हूँ,[14] वह
मेरा उद्धारकर्ता है।[15]

21:16 *करीब 3.42 किलो। अति. ख14 देखें।

22:3 *या "मेरे ताकतवर उद्धारकर्ता।" #शब्दावली देखें।

अध्य. 21
1 1शम 28:4; 1शम 31:1; 1शम 31:11, 12; 2शम 1:6; 1इत 10:8
2 2शम 21:9
3 यह 18:28
4 1शम 9:1; 1शम 10:11
5 यह 7:24-26; 2शम 24:25
6 2शम 5:17, 22
7 व्य 2:11
8 1शम 17:4, 7; 1इत 11:23
9 2शम 23:18, 19
10 2शम 22:19
11 2शम 18:3
12 1रा 11:36; 1रा 15:4; 2रा 8:19
13 1इत 20:4
14 1इत 11:26, 29; 1इत 27:1, 11
15 उत 14:5

दूसरा कॉल.
1 1इत 20:5
2 1शम 17:4, 7
3 1इत 20:6-8
4 1शम 17:10, 45; 2रा 19:22
5 1शम 16:9; 1शम 17:13; 1इत 2:13
6 भज 60:12

अध्य. 22
7 निर्ग 15:1; न्या 5:1
8 1शम 23:14; भज 18:उप; भज 34:19
9 भज 31:3
10 भज 18:2, 3
11 व्य 32:4; 1शम 2:1, 2
12 उत 15:1; व्य 33:29; भज 3:3
13 भज 9:9; नीत 18:10
14 भज 59:16
15 यश 12:2; लूक 1:46, 47; तीत 3:4

तू ही मुझे ज़ुल्म से बचाता है।
4 मैं यहोवा को पुकारता हूँ जो तारीफ के काबिल है
और मुझे दुश्मनों से बचाया जाएगा।
5 मौत की लहरों ने मुझे चारों तरफ से आ घेरा,[1]
निकम्मे आदमियों ने अचानक आनेवाली बाढ़ की तरह मुझे डरा दिया।[2]
6 कब्र के रस्सों ने मुझे घेर लिया,[3]
मेरे सामने मौत के फंदे बिछाए गए।[4]
7 मुसीबत में मैंने यहोवा को पुकारा,[5]
अपने परमेश्वर को मैं पुकारता रहा।
तब अपने मंदिर से उसने मेरी सुनी,
मेरी मदद की पुकार उसके कानों तक पहुँची।[6]
8 धरती काँपने लगी, बुरी तरह डोलने लगी,[7]
आकाश की नींव हिल गयी,[8]
उसमें भयानक हलचल हुई क्योंकि उसका क्रोध भड़क उठा था।[9]
9 उसके नथनों से धुआँ उठने लगा,
मुँह से भस्म करनेवाली आग निकलने लगी,[10]
उसके पास से दहकते अंगारे बरसने लगे।
10 नीचे उतरते वक्त उसने आसमान झुका दिया,[11]
काली घटाएँ उसके पैरों तले आ गयीं।[12]
11 वह एक करूब पर सवार होकर[13] उड़ता हुआ आया।
वह एक स्वर्गदूत*[1] के पंखों पर दिखायी दिया।
12 फिर उसने काली घनघोर घटाओं को,
उनके अंधकार को अपना मंडप बनाया।[2]
13 उसके सामने ऐसा तेज था कि धधकते अंगारे निकल रहे थे।
14 फिर स्वर्ग से यहोवा गरजने लगा,[3]
परम-प्रधान ने अपनी बुलंद आवाज़ सुनायी।[4]
15 उसने तीर चलाकर[5] उन्हें तितर-बितर कर दिया,
बिजली चमकाकर उनमें खलबली मचा दी।[6]
16 जब यहोवा ने डाँट लगायी और उसके नथनों से फुंकार निकली,[7]
तो समुंदर का तल नज़र आने लगा,[8]
धरती की बुनियाद तक दिखने लगी।
17 उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया,
गहरे पानी से खींचकर बाहर निकाल लिया।[9]
18 उसने मुझे ताकतवर दुश्मन से छुड़ाया,[10]
उन लोगों से जो मुझसे नफरत करते थे, मुझसे ज़्यादा ताकतवर थे।
19 वे मेरी मुसीबत के दिन मुझ पर टूट पड़े,[11]
लेकिन यहोवा मेरा सहारा था।
20 वह मुझे निकालकर एक महफूज़* जगह ले आया,[12]

अध्य. 22
1 भज 69:14
2 भज 18:4
3 भज 116:3, 4
4 भज 18:5
5 भज 142:1; यो 2:2
6 निर्ग 3:7; भज 18:6; भज 34:15
7 न्या 5:4
8 अय 26:11
9 भज 18:7-12; भज 77:18
10 यश 30:27
11 भज 144:5; यश 64:1
12 व्य 4:11; 1रा 8:12; भज 18:9; भज 97:2
13 1शम 4:4; भज 80:1; भज 99:1

दूसरा कॉल.
1 इब्र 1:7
2 अय 36:29
3 निर्ग 19:16; 1शम 2:10
4 भज 18:13-16; यश 30:30
5 भज 7:13; भज 77:17
6 भज 144:6
7 निर्ग 15:8
8 निर्ग 14:21; भज 106:9; भज 114:3
9 भज 18:16-19; भज 124:2-4; भज 144:7
10 भज 3:7; भज 56:9
11 1शम 19:11; 1शम 23:26; 2शम 15:10
12 भज 31:8

22:11 * या "हवा।" 22:20 * या "खुली।"

उसने मुझे दुश्मनों से छुड़ाया क्योंकि
वह मुझसे खुश था।[1]
21 यहोवा मेरी नेकी के मुताबिक मुझे
फल देता है,[2]
मेरी बेगुनाही* के मुताबिक इनाम
देता है।[3]
22 क्योंकि मैं हमेशा यहोवा की राहों
पर चलता रहा,
मैंने अपने परमेश्वर से दूर जाने की
दुष्टता नहीं की।
23 उसके सभी न्याय-सिद्धांत[4] मेरे
सामने हैं,
मैं कभी उसकी विधियों से हटकर
दूर नहीं जाऊँगा।[5]
24 मैं उसकी नज़रों में निर्दोष बना
रहूँगा,[6]
मैं हमेशा खुद को बुराई से दूर
रखूँगा।[7]
25 यहोवा मेरी नेकी के मुताबिक मुझे
फल दे,[8]
मेरी बेगुनाही के मुताबिक इनाम
दे जो उसने अपनी आँखों से
देखी है।[9]
26 जो वफादार रहता है उसके साथ तू
वफादारी निभाता है[10]
जो सीधा है उसके साथ तू सीधाई से
पेश आता है,[11]
27 जो खुद को शुद्ध बनाए रखता है
उसे तू दिखाएगा कि तू शुद्ध है,[12]
मगर जो टेढ़ी चाल चलता है
उसके साथ तू होशियारी* से
काम लेता है।[13]
28 तू नम्र लोगों को बचाता है,[14]
लेकिन मगरूरों से तू अपनी
आँखें फेर लेता है, उन्हें नीचे
गिराता है।[15]

29 हे यहोवा, तू मेरा दीपक है,[1]
यहोवा ही मेरे अँधेरे को उजाला
करता है।[2]
30 तेरी मदद से मैं लुटेरे-दल का
मुकाबला कर सकता हूँ,
परमेश्वर की ताकत से मैं दीवार
लाँघ सकता हूँ।[3]
31 सच्चे परमेश्वर का काम खरा* है,[4]
यहोवा का वचन पूरी तरह
शुद्ध है।[5]
वह उसकी पनाह लेनेवालों के लिए
एक ढाल है।[6]
32 यहोवा को छोड़ और कौन
परमेश्वर है?[7]
हमारे परमेश्वर के सिवा और कौन
चट्टान है?[8]
33 सच्चा परमेश्वर मेरा मज़बूत
किला है,[9]
वह मेरे लिए सीधी* राह निका-
लेगा।[10]
34 वह मेरे पैरों को हिरन के पैरों जैसा
बनाता है,
मुझे ऊँची-ऊँची जगहों पर खड़ा
करता है।[11]
35 वह मेरे हाथों को युद्ध का कौशल
सिखाता है,
मेरे बाज़ू ताँबे की कमान मोड़
सकते हैं।
36 तू मुझे अपनी उद्धार की ढाल
देता है,
तेरी नम्रता मुझे ऊँचा उठाती है।[12]
37 तू मेरे कदमों के लिए रास्ता चौड़ा
करता है,
मेरे पैर* नहीं फिसलेंगे।[13]

22:21 *शा., "शुद्धता।" **22:27** *या शायद, "नासमझी।"

22:31, 33 *या "परिपूर्ण।" **22:37** *या "टखने।"

अध्य. 22
1 भज 149:4
2 1शम 26:23; 1रा 8:32
3 भज 18:20-24; भज 24:3, 4
4 व्य 6:1; भज 19:9
5 व्य 8:11
6 भज 84:11
7 भज 18:23; नीत 14:16
8 अय 34:11; यश 3:10; इब्र 11:6
9 भज 18:24; नीत 5:21
10 भज 37:28; भज 97:10
11 भज 18:25-30
12 मत 5:8; 1पत 1:16
13 भज 125:5
14 अय 34:28
15 दान 4:37; 1पत 5:5

दूसरा कॉल.
1 भज 27:1
2 भज 97:11
3 भज 18:29; फिल 4:13; इब्र 11:33, 34
4 व्य 32:4
5 भज 12:6; नीत 30:5
6 भज 35:2; भज 91:4
7 यश 44:6
8 व्य 32:31; भज 18:31-42
9 भज 27:1; यश 12:2
10 यश 26:7
11 यश 33:15, 16; हब 3:19
12 भज 18:35; भज 113:6-8
13 भज 17:5

38 मैं अपने दुश्मनों का पीछा करूँगा
और उन्हें नाश कर दूँगा,
मैं उन्हें मिटाकर ही लौटूँगा।
39 मैं उन्हें मिटा दूँगा, उन्हें कुचल दूँगा
ताकि वे उठ न सकें,[1]
वे मेरे पैरों तले गिर जाएँगे।
40 तू मुझे ताकत देकर युद्ध के काबिल
बनाएगा,[2]
मेरे दुश्मनों को मेरे कदमों के नीचे
कर देगा।[3]
41 तू मेरे दुश्मनों को मुझसे दूर भागने
पर मजबूर करेगा,*[4]
मुझसे नफरत करनेवालों का मैं अंत
कर दूँगा।[5]
42 वे मदद के लिए पुकारते हैं, मगर
उन्हें बचानेवाला कोई नहीं,
वे यहोवा को भी पुकारते हैं, मगर
वह उन्हें जवाब नहीं देता।[6]
43 मैं उन्हें कूटकर ज़मीन की धूल बना
दूँगा,
उन्हें चूर-चूर कर दूँगा और रौंदकर
गलियों का कीचड़ बना दूँगा।
44 तू मुझे मेरे अपने लोगों के विरोध से
भी बचाएगा,[7]
तू मेरी हिफाज़त करेगा ताकि मैं
राष्ट्रों का मुखिया बनूँ,[8]
जिन लोगों को मैं जानता तक नहीं
वे मेरी सेवा करेंगे।[9]
45 परदेसी डरते-काँपते मेरे सामने
आएँगे,[10]
वे मेरे बारे में जो सुनते हैं, वह उन्हें
उभारेगा कि मेरी आज्ञा मानें।
46 परदेसी हिम्मत हार जाएँगे,*
अपने किलों से थरथराते हुए बाहर
निकलेंगे।

22:41 *या "तू मुझे मेरे दुश्मनों की पीठ दे देगा।" 22:46 *या "मुरझा जाएँगे।"

अध्य. 22
1 निर्ग 14:13
2 1शम 23:5
3 1शम 17:49
भज 44:3, 5
4 उत 49:8
5 भज 18:40
6 1शम 28:6
नीत 1:28
यश 1:15
मी 3:4
7 1शम 30:6
2शम 15:12
8 2शम 8:3
भज 2:8
भज 60:8
9 भज 18:43-45
10 व्य 33:29

दूसरा कॉल.
1 व्य 32:4
2 भज 18:46
भज 89:26
3 1शम 25:29
2शम 18:19
4 भज 18:47
भज 110:1
भज 144:1, 2
5 2शम 5:12
2शम 7:9
6 भज 18:48
7 व्य 32:43
भज 117:1
8 1इत 16:9
भज 145:2
रोम 15:9
9 भज 2:6
भज 21:1
10 भज 89:20, 29
लूक 1:32, 33

अध्य. 23
11 उत 49:1
व्य 33:1
12 1शम 17:58
मत 1:6
13 2शम 7:8
14 1शम 16:13
15 1इत 16:9
16 मर 12:36
2ती 3:16

47 यहोवा जीवित परमेश्वर है! मेरी
चट्टान की तारीफ हो![1]
परमेश्वर जो मेरे उद्धार की चट्टान
है, उसकी बड़ाई हो![2]
48 सच्चा परमेश्वर मेरी तरफ से
बदला लेता है,[3]
देश-देश के लोगों को मेरे अधीन
कर देता है,[4]
49 वह मुझे दुश्मनों से छुड़ाता है।
तू मुझे मेरे हमलावरों से ऊँचा
उठाता है,[5]
मुझे ज़ुल्मी के हाथ से बचाता है।[6]
50 इसीलिए हे यहोवा, मैं राष्ट्रों के
बीच तेरा शुक्रिया अदा करूँगा,[7]
तेरे नाम की तारीफ में गीत
गाऊँगा:*[8]
51 परमेश्वर शानदार तरीके से अपने
राजा का उद्धार करता है,*[9]
वह अपने अभिषिक्त जन से,
दाविद और उसके वंश से सदा
प्यार# करता है।"[10]

23

दाविद ने आखिर में जो शब्द कहे वे ये हैं:[11]
"ये बोल यिशै के बेटे दाविद[12]
के हैं,
उस आदमी के, जिसे ऊँचा उठाया
गया,[13]
जो याकूब के परमेश्वर का अभि-
षिक्त जन[14]
और इसराएल में मधुर
गायक* है।[15]
2 यहोवा की पवित्र शक्ति ने मेरे
ज़रिए बात की।[16]

22:50 *या "संगीत बजाऊँगा।" 22:51 *या "परमेश्वर अपने राजा के लिए बड़ी-बड़ी जीत दिलाता है।" #या "अटल प्यार।" 23:1 *या "प्यारा जन।"

उसका वचन मेरी ज़बान पर था।[1]
3 इसराएल के परमेश्‍वर ने,
इसराएल की चट्टान[2] ने मुझसे
कहा,
'जब इंसानों पर राज करनेवाला
नेक होता है[3]
परमेश्‍वर का डर मानकर राज
करता है,[4]
4 तो उसका राज सुबह के उजाले
जैसा होता है,[5]
जब सूरज खुले आसमान में चमक-
ता है।
उसका राज बारिश के बाद
निकलनेवाली धूप जैसा होता है,
जिससे ज़मीन पर हरी-हरी घास उग
आती है।'[6]
5 क्या मेरा घराना परमेश्‍वर की नज़र
में बिलकुल ऐसा ही नहीं?
उसने मेरे साथ सदा का करार
किया है,[7]
जो बड़े कायदे से तैयार किया
गया है और कभी नहीं तोड़ा
जाएगा।
यह करार मुझे पूरी तरह उद्धार
दिलाएगा और सारी खुशियाँ
देगा,
क्या यही वजह नहीं कि वह मेरे
घराने को बढ़ाता है?[8]
6 मगर सभी निकम्मे आदमियों को
कँटीली झाड़ियों की तरह फेंक
दिया जाता है।[9]
उन्हें हाथों से नहीं उठाया जा
सकता।
7 उन्हें उठाने के लिए लोहे का औज़ार
और भाला होना ज़रूरी है,
उन्हें उनकी जगह पर आग से पूरी
तरह जला देना चाहिए।"

8 दाविद के वीर योद्धाओं के नाम ये
हैं:[1] तहक-मोनी योशेब-बशेबेत जो तीन
सूरमाओं में मुखिया था।[2] एक बार
उसने अपने भाले से 800 से ज़्यादा
दुश्‍मनों को मार गिराया था। 9 अगला
सूरमा था एलिआज़र,[3] जो दोदो[4] का
बेटा और अहोही का पोता था। एक
बार जब पलिश्‍ती इसराएल से युद्ध करने
आए, तो दाविद के तीन सूरमा उसके
साथ थे और इन्होंने पलिश्‍तियों को लल-
कारा था। एलिआज़र उनमें से एक
था। लड़ाई के वक्‍त इसराएली सैनिक
भाग गए, 10 मगर एलिआज़र मैदान
में डटा रहा। वह पलिश्‍तियों को तब तक
मार गिराता रहा जब तक कि उसका हाथ
थक नहीं गया और उसकी मुट्ठी तलवार
पर जम न गयी।[5] उस दिन यहोवा ने इस-
राएलियों को शानदार जीत दिलायी।*[6]
फिर मारे गए लोगों की चीज़ें लूटने के
लिए इसराएली सैनिक एलिआज़र के
पास लौट आए।

11 अगला सूरमा था शम्माह। वह
हरारी आगी का बेटा था। एक बार
पलिश्‍ती इसराएलियों से युद्ध करने लही
में इकट्ठा हुए, जहाँ मसूर का एक खेत
था। लोग पलिश्‍तियों को देखकर भाग
गए, 12 मगर शम्माह खेत के बीचों-
बीच खड़ा उसकी रक्षा करता रहा और
पलिश्‍तियों को मार गिराता रहा। इस-
लिए यहोवा ने इसराएलियों को बड़ी जीत
दिलायी।*[7]

13 दाविद की सेना के 30 मुखि-
याओं में से तीन आदमी कटाई के दिनों
में अदुल्लाम की गुफा में गए जहाँ दाविद
था।[8] पलिश्‍तियों की एक टुकड़ी* रपाई

अध्य. 23
1 प्रेष 1:16; 2पत 1:21
2 व्य 32:4; भज 144:1
3 नीत 29:2; यश 9:7; यश 32:1
4 निर्ग 18:21; यश 11:3
5 मला 4:2; मत 17:2; प्रक 1:16
6 भज 72:1, 6
7 2शम 7:16, 19; 1इत 17:11; भज 89:3; भज 89:28, 29; भज 132:11
8 यश 9:7; यश 11:1; आम 9:11
9 भज 37:10

दूसरा कॉल.
1 2शम 10:7; 2शम 20:7; 1इत 11:10
2 1इत 11:11
3 1इत 11: 12-14
4 1इत 27:1, 4
5 न्या 8:4
6 न्या 15:14, 16; 1शम 14:6; 1शम 19:5
7 भज 3:8; भज 44:3
8 यह 15:20, 35; 1शम 22:1

23:10, 12 *या "उद्धार दिलाया।"
23:13 *या "बस्ती।"

घाटी में छावनी डाले हुई थी।[1] **14** उस वक्त दाविद एक महफ़ूज़ जगह पर था[2] और पलिश्तियों की एक चौकी बेतलेहेम में थी। **15** तब दाविद ने कहा, "काश! मुझे बेतलेहेम के फाटक-वाले कुंड से थोड़ा पानी पीने को मिल जाता!" **16** तब उसके तीन सूरमा पलिश्ती सेना को चीरकर उनकी छावनी में घुस गए और उन्होंने बेतलेहेम के फाटक-वाले कुंड से पानी निकाला और दाविद के पास ले आए। मगर दाविद ने पानी पीने से इनकार कर दिया और यहोवा के सामने उँडेल दिया।[3] **17** उसने कहा, "हे यहोवा, मैं यह पानी पीने की सोच भी नहीं सकता। मैं इन आदमियों का खून कैसे पी सकता हूँ[4] जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डाल दी थी?" इसीलिए दाविद ने वह पानी पीने से इनकार कर दिया। उसके तीन सूरमाओं ने ये बड़े-बड़े काम किए थे।

18 अबीशै,[5] जो योआब का भाई और सरूयाह का बेटा था,[6] तीन और योद्धाओं का अधिकारी था। उसने अपने भाले से 300 से भी ज़्यादा दुश्मनों को मार गिराया था। वह भी उन तीन योद्धाओं जितना मशहूर था।[7] **19** हालाँकि वह उन तीन योद्धाओं से ज़्यादा कुशल था और उनका मुखिया था, फिर भी वह पहले तीन सूरमाओं के बराबर नहीं पहुँचा।

20 यहोयादा का बेटा बनायाह[8] भी एक दिलेर सैनिक था।* उसने कबसेल[9] में कई बहादुरी के काम किए थे। उसने मोआब के रहनेवाले अरीएल के दो बेटों को मार गिराया और एक दिन जब बहुत बर्फ पड़ रही थी तो उसने एक सूखे हौद के अंदर जाकर एक शेर को मार डाला।[1] **21** उसने एक मिस्री आदमी को भी मार डाला था जो बहुत ही ऊँची कद-काठी का था। उस मिस्री के हाथ में भाला था जबकि बनायाह के हाथ में सिर्फ एक डंडा था। बनायाह ने उसका भाला छीन लिया और उसी के भाले से उसे मार डाला। **22** यहोयादा के बेटे बनायाह ने ये बड़े-बड़े काम किए थे। वह उन तीन सूरमाओं जितना मशहूर था। **23** हालाँकि वह तीस योद्धाओं से ज़्यादा कुशल था, फिर भी वह उन तीन सूरमाओं के बराबर नहीं पहुँचा। लेकिन दाविद ने बनायाह को ही अपने अंगरक्षकों का अधिकारी ठहराया।

24 ये आदमी दाविद के तीस वीर योद्धाओं में से थे: योआब का भाई असाहेल,[2] बेतलेहेम के रहनेवाले दोदो का बेटा एल्हानान,[3] **25** हरोद का रहनेवाला शम्माह, हरोद का रहनेवाला एलीका, **26** पालेती हेलेस,[4] तकोआ के रहनेवाले इक्केश का बेटा ईरा,[5] **27** अनातोत[6] का रहनेवाला अबीएजेर,[7] हूशाई मबुन्ने, **28** अहोही के घराने का ज़लमोन, नतोपा का रहनेवाला महरै,[8] **29** नतोपा के रहनेवाले बानाह का बेटा हेलेब, बिन्यामीन गोत्र के गिबा के रहनेवाले रीबै का बेटा इत्तै, **30** पिरातोन का रहनेवाला बनायाह,[9] गाश[10] की घाटियों* का रहनेवाला हिद्दै, **31** बेत-अराबा का रहनेवाला अबी-अल्बोन, बरहूमी का रहनेवाला अज़मावेत, **32** शालबोनी एलीयाबा, याशेन के बेटे, योनातान, **33** हरारी शम्माह, हरारी शारार का बेटा अहीआम, **34** एक माकाती आदमी के बेटे अहसबै

23:20 *शा., "एक वीर का बेटा था।"

23:30 *शब्दावली देखें।

अध्य. 23
1 यह 15:1, 8; 2शम 5:22; 1इत 11:15-19
2 1शम 22:1, 4; 1इत 12:16
3 लैव 9:9; लैव 17:13
4 उत 9:4; लैव 17:10
5 1शम 26:6; 2शम 21:17
6 2शम 2:18; 1इत 2:15, 16
7 1इत 11:20, 21
8 2शम 8:18; 2शम 20:23; 1रा 1:8; 1रा 2:29; 1इत 27:5, 6
9 यह 15:21

दूसरा कॉल.
1 1इत 11:22-25; नीत 30:30
2 2शम 2:18, 23; 1इत 2:15, 16; 1इत 27:1, 7
3 1इत 11:26-41
4 1इत 27:1, 10
5 1इत 27:1, 9
6 यह 21:8, 18; यिर्म 1:1
7 1इत 27:1, 12
8 1इत 27:1, 13
9 1इत 27:1, 14
10 न्या 2:8, 9

का बेटा एलीपेलेत, गीलो के रहने-
वाले अहीतोपेल[1] का बेटा एलीआम,
35 करमेल का रहनेवाला हेसरो, अरब
शहर का रहनेवाला पारै, 36 सोबा के
रहनेवाले नातान का बेटा यिगाल, गाद
गोत्र का बानी, 37 अम्मोनी सेलेक,
बएरोत का रहनेवाला नहरै जो सरू-
याह के बेटे योआब का हथियार
ढोनेवाला सैनिक था, 38 यित्री ईरा,
यित्री गारेब[2] 39 और हित्ती उरि-
याह।[3] दाविद के वीर योद्धाओं की कुल
गिनती 37 थी।

24 यहोवा का क्रोध इसराएल पर
फिर से भड़क उठा[4] जब किसी
ने दाविद को इसराएलियों के खिलाफ
काम करने के लिए उकसाया और*
कहा, "जा, इसराएल और यहूदा के
लोगों की गिनती ले।"[5] 2 इसलिए
राजा दाविद ने अपने सेनापति योआब[6]
से, जो उसके साथ था, कहा, "दान
से बेरशेबा[7] तक इसराएल के सब गोत्रों
में जा और लोगों का नाम लिख।
मैं लोगों की गिनती जानना चाहता
हूँ।" 3 मगर योआब ने राजा से कहा,
"मालिक, तेरा परमेश्वर यहोवा लोगों
की गिनती 100 गुना बढ़ाए और तू
अपनी आँखों से उनकी बढ़ती देखे। मगर
मेरा मालिक राजा यह काम क्यों करना
चाहता है?"

4 लेकिन दाविद नहीं माना और
योआब और सभी सेनापतियों को राजा
की बात के आगे झुकना पड़ा। इसलिए
वे इसराएल के लोगों की नाम-लिखाई के
लिए राजा के सामने से चले गए।[8]
5 उन्होंने यरदन पार की और अरोएर
शहर[1] में डेरा डाला और घाटी के बीच-
वाले शहर के दायीं तरफ* डेरा डाला।
फिर वे गादियों के इलाके और याजेर[2]
की तरफ बढ़े। 6 वहाँ से वे गिलाद[3]
और तहतीम-होदशी देश गए और आगे
बढ़ते हुए दान-यान गए और फिर घूम-
कर सीदोन[4] गए। 7 इसके बाद वे सोर
के किले[5] में और हिव्वियों[6] और कना-
नियों के सभी शहरों में गए। सबसे
आखिर में वे बेरशेबा[7] गए जो यहूदा के
नेगेब में था।[8] 8 इस तरह उन्होंने पूरे
देश का दौरा किया और नौ महीने
20 दिन बीतने पर यरूशलेम लौटे।
9 फिर योआब ने राजा को उन लोगों की
गिनती बतायी जिनका नाम लिखा गया
था। इसराएल में तलवारों से लैस सैनिक
8,00,000 थे और यहूदा के सैनिक
5,00,000.[9]

10 मगर लोगों की गिनती लेने के
बाद दाविद का मन* उसे बुरी तरह
कचोटने लगा।[10] दाविद ने यहोवा से
कहा, "मैंने लोगों की गिनती लेकर बहुत
बड़ा पाप किया है।[11] हे यहोवा, दया
करके अपने सेवक को माफ कर दे।[12]
मैंने बड़ी मूर्खता का काम किया है।"[13]
11 जब सुबह दाविद उठा तो यहोवा
का संदेश भविष्यवक्ता गाद[14] के पास
पहुँचा, जो दाविद का दर्शी था।
12 परमेश्वर ने उससे कहा, "दाविद के
पास जा और उससे कह, 'यहोवा तुझसे
कहता है, "मैं तुझे तीन तरह के कहर
बताता हूँ। तू चुन ले कि मैं तुझ पर कौन-
सा कहर ढाऊँ।"'"[15] 13 तब गाद ने
दाविद के पास जाकर कहा, "तू क्या
चाहता है, तेरे देश पर सात साल तक
अकाल पड़े[16] या तीन महीने तक तेरे

24:1 *या "जब दाविद उकसाया गया था और उसने।"

24:5 *या "के दक्षिण में।" 24:10 *या "ज़मीर।"

अध्य. 23
1 2शम 15:31, 2शम 16:23, 2शम 17:23, 1इत 27:33
2 1इत 2:53
3 2शम 11:3, 1रा 15:5

अध्य. 24
4 2शम 21:1
5 1इत 21:1-3, 1इत 27:23, 24
6 2शम 8:16, 2शम 20:23
7 न्या 20:1
8 गि 1:2, 1इत 21:4

दूसरा कॉल.
1 व्य 2:36, यह 13:8, 9
2 गि 32:34, 35
3 गि 32:40
4 उत 10:15, उत 49:13, यह 11:8
5 यह 19:24, 29
6 यह 11:19
7 उत 21:31, यह 15:21, 28
8 यह 15:1
9 गि 2:32, गि 26:51, 1इत 21:5, 6, 1इत 27:23
10 1शम 24:5, रोम 2:15
11 2शम 12:13
12 भज 130:3, हो 14:2, 1यूह 1:9
13 1इत 21:8-13
14 1शम 22:5, 1इत 29:29
15 नीत 3:12
16 लैव 26:18, 20, 2शम 21:1

दुश्मन तेरा पीछा करते रहें और तू
उनसे भागता फिरे[1] या तीन दिन तक
तेरे देश में महामारी फैले?[2] अच्छी तरह
सोचकर बता कि मैं अपने भेजनेवाले को
क्या जवाब दूँ।" **14** दाविद ने गाद से
कहा, "मैं बड़े संकट में हूँ। अच्छा है कि
हम यहोवा ही के हाथ पड़ जाएँ[3] क्योंकि
वह बड़ा दयालु है।[4] मगर मुझे इंसान के
हाथ न पड़ने दे।"[5]

15 फिर यहोवा ने इसराएल पर
महामारी का कहर ढाया,[6] जो सुबह
से लेकर तय समय तक फैली रही। इस
महामारी की वजह से दान से लेकर बेर-
शेबा[7] तक 70,000 लोग मारे गए।[8]
16 जब स्वर्गदूत ने यरूशलेम के लोगों
का नाश करने के लिए अपना हाथ
बढ़ाया तो यहोवा को इस तबाही पर
बड़ा दुख हुआ*[9] और उसने लोगों का
नाश करनेवाले स्वर्गदूत से कहा, "बस,
अब रुक जा! अपना हाथ रोक ले।"
उस वक्त यहोवा का स्वर्गदूत यबूसी[10]
अरौना के खलिहान[11] के बिलकुल
पास था।

17 जब दाविद ने उस स्वर्गदूत को
देखा जो लोगों को घात कर रहा था,
तो उसने यहोवा से कहा, "पाप तो मैंने
किया है, गलती मेरी है। फिर तू इन
लोगों को क्यों मार रहा है? इन भेड़ों[12]
का क्या कसूर है? दया करके इन्हें छोड़
दे और मुझे और मेरे पिता के घराने को
सज़ा दे।"[13]

18 इसलिए उस दिन गाद दाविद के
पास आया और उससे कहा, "ऊपर जा
और यबूसी अरौना के खलिहान में
यहोवा के लिए एक वेदी खड़ी कर।"[14]
19 तब दाविद ऊपर गया, ठीक जैसे
यहोवा ने गाद के ज़रिए उसे आज्ञा दी
थी। **20** जब अरौना ने राजा और
उसके सेवकों को अपनी तरफ आते
देखा, तो वह फौरन उनके पास गया
और राजा के सामने मुँह के बल ज़मीन
पर गिरकर उसे प्रणाम किया। **21** फिर
अरौना ने पूछा, "मैं अपने मालिक राजा
की क्या सेवा कर सकता हूँ?" दाविद
ने कहा, "मैं तुझसे यह खलिहान खरीद-
ने आया हूँ क्योंकि मैं यहाँ यहोवा के
लिए एक वेदी बनाना चाहता हूँ ताकि
लोगों पर जो कहर आ पड़ा है वह
बंद हो जाए।"[1] **22** अरौना ने कहा,
"मेरा मालिक राजा यह खलिहान ले ले
और बलिदान के लिए भी उसे जो कुछ
अच्छा लगे* वह ले ले। देख, यहाँ होम-
बलि के लिए बैल हैं और जलाने की
लकड़ी के लिए दाँवने की पटिया और
जुआ भी है। **23** अरौना ये सब राजा
को देता है।" इसके बाद अरौना ने राजा
से कहा, "तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ पर
कृपा करे।"

24 मगर राजा ने अरौना से कहा,
"नहीं, मैं ऐसे नहीं लूँगा। मैं दाम देकर
तुझसे यह खरीदूँगा। मैं अपने परमेश्वर
यहोवा को ऐसी होम-बलियाँ नहीं चढ़ाऊँ-
गा जिनकी मैंने कोई कीमत न चुकायी
हो।" तब दाविद ने 50 शेकेल* चाँदी में
खलिहान और बैल खरीद लिए।[2]
25 फिर दाविद ने उस जगह यहोवा के
लिए एक वेदी खड़ी की[3] और उस पर
होम-बलियाँ और शांति-बलियाँ चढ़ायीं।
तब यहोवा ने देश की खातिर की गयी
बिनती सुनी[4] और इसराएल से महामारी
दूर हो गयी।

24:16 *या "पछतावा महसूस हुआ।"

24:22 *शा., "जो उसकी नज़रों में अच्छा है।" **24:24** *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 24
1 लैव 26:14, 17
2 लैव 26:16
3 इब्र 12:6
4 भज 103:8; भज 119:156
5 2इत 28:1, 5
6 गि 16:46; 1इत 27:24
7 2शम 24:2
8 1इत 21:14, 15
9 भज 78:38; यिर्म 26:19; योए 2:13
10 उत 10:15, 16; यह 15:8
11 2इत 3:1
12 भज 95:7
13 1इत 21:16, 17
14 1इत 21:18-23; 2इत 3:1

दूसरा कॉल.
1 गि 16:46, 47; गि 25:8; 2शम 24:15
2 1इत 21:24-28
3 निर्ग 20:25; 1इत 22:1
4 2शम 21:14; 2इत 33:13

पहला

राजा

सारांश

1 दाविद और अबीशग (1-4)
अदोनियाह ने राजगद्दी हथियाने की कोशिश की (5-10)
नातान और बतशेबा ने कदम उठाया (11-27)
सुलैमान का अभिषेक करने का आदेश (28-40)
अदोनियाह वेदी के पास भागा (41-53)

2 दाविद ने सुलैमान को हिदायतें दीं (1-9)
दाविद की मौत; सुलैमान राजा बना (10-12)
अदोनियाह की साज़िश और मौत (13-25)
अबियातार बाहर किया गया; योआब मार डाला गया (26-35)
शिमी मार डाला गया (36-46)

3 फिरौन की बेटी से सुलैमान की शादी (1-3)
यहोवा ने सुलैमान को दर्शन दिया (4-15)
सुलैमान ने बुद्धि माँगी (7-9)
दो माँओं का मुकदमा (16-28)

4 सुलैमान का प्रशासन (1-19)
उसके राज में खुशहाली (20-28)
अंगूर की बेल और अंजीर पेड़ तले चैन (25)
सुलैमान की बुद्धि और नीतिवचन (29-34)

5 राजा हीराम ने सामान भेजा (1-12)
सुलैमान ने मज़दूर काम पर लगाए (13-18)

6 सुलैमान ने मंदिर बनाया (1-38)
भीतरी कमरा (19-22)
करूब (23-28)
नक्काशियाँ, फाटक, भीतरी आँगन (29-36)
करीब 7 साल में मंदिर तैयार (37, 38)

7 सुलैमान का महल; दूसरी इमारतें (1-12)
कुशल कारीगर हीराम (13-47)
ताँबे के दो खंभे (15-22)
धातु का बड़ा हौद (23-26)
10 हथ-गाड़ियाँ; ताँबे की हौदियाँ (27-39)
सोने की चीज़ें बनाना पूरा हुआ (48-51)

8 संदूक मंदिर लाया गया (1-13)
सुलैमान का भाषण (14-21)
मंदिर के समर्पण की प्रार्थना (22-53)
उसने लोगों को आशीर्वाद दिया (54-61)
बलिदान और समर्पण का त्योहार (62-66)

9 सुलैमान को दूसरी बार दर्शन मिला (1-9)
उसने हीराम को तोहफा दिया (10-14)
सुलैमान का निर्माण काम (15-28)

10 शीबा की रानी मिलने आयी (1-13)
सुलैमान की बेशुमार दौलत (14-29)

11 सुलैमान की पत्नियों ने उसे बहकाया (1-13)
सुलैमान के विरोधी (14-25)
यारोबाम को 10 गोत्र देने का वादा (26-40)
सुलैमान की मौत; रहूबियाम राजा बना (41-43)

12 रहूबियाम का कठोर जवाब (1-15)
10 गोत्रों की बगावत (16-19)
यारोबाम इसराएल का राजा बना (20)
रहूबियाम से कहा गया, इसराएल से युद्ध न करे (21-24)
यारोबाम ने बछड़े की उपासना करवायी (25-33)

13 बेतेल की वेदी के खिलाफ भविष्यवाणी (1-10)
वेदी के दो टुकड़े हो गए (5)
परमेश्वर के सेवक ने आज्ञा तोड़ी (11-34)

14 यारोबाम के खिलाफ अहियाह की भविष्यवाणी (1-20)
यहूदा का राजा रहूबियाम (21-31)
शीशक का हमला (25, 26)

15 यहूदा का राजा अबियाम (1-8)
यहूदा का राजा आसा (9-24)
इसराएल का राजा नादाब (25-32)
इसराएल का राजा बाशा (33, 34)

16 यहोवा ने बाशा को सज़ा सुनायी (1-7)
इसराएल का राजा एलाह (8-14)
इसराएल का राजा जिमरी (15-20)
इसराएल का राजा ओम्री (21-28)
इसराएल का राजा अहाब (29-33)
हीएल ने यरीहो दोबारा बनाया (34)

17 एलियाह ने सूखे की भविष्यवाणी की (1)
उसके लिए कौवे खाना लाए (2-7)
वह सारपत की विधवा के पास गया (8-16)
विधवा के बेटे की मौत; ज़िंदा हुआ (17-24)

18 एलियाह, ओबद्याह और अहाब से मिला (1-18)
करमेल पर एलियाह का बाल के भविष्यवक्ताओं के साथ सामना (19-40)
'दो विचारों में लटके रहना' (21)
साढ़े तीन साल का सूखा खत्म (41-46)

19 एलियाह इज़ेबेल की वजह से भागा (1-8)
होरेब के पास यहोवा एलियाह के सामने प्रकट हुआ (9-14)
उससे कहा गया, वह हजाएल, येहू और एलीशा का अभिषेक करे (15-18)
एलीशा, एलियाह की जगह लेगा (19-21)

20 अहाब से सीरियाई लोगों का युद्ध (1-12)
उसने उन्हें हराया (13-34)
अहाब के खिलाफ भविष्यवाणी (35-43)

21 अहाब ने नाबोत के बाग का लालच किया (1-4)
इज़ेबेल ने नाबोत को मरवाया (5-16)
अहाब के खिलाफ संदेश (17-26)
उसने खुद को नम्र किया (27-29)

22 अहाब के साथ यहोशापात की संधि (1-12)
मीकायाह ने हार की भविष्यवाणी की (13-28)
स्वर्गदूत ने अहाब को बेवकूफ बनाया (21, 22)
अहाब रामोत-गिलाद में मारा गया (29-40)
यहूदा पर यहोशापात का राज (41-50)
इसराएल का राजा अहज्याह (51-53)

---

1 राजा दाविद की उम्र ढल चुकी थी,[1]
वह काफी बूढ़ा हो गया था। उसे
कई कंबल ओढ़ाए जाते थे, फिर भी
उसके शरीर को गरमी नहीं मिलती थी।
2 इसलिए उसके सेवकों ने उससे कहा,
"अगर इजाज़त हो तो हम अपने मालिक
राजा की देखभाल के लिए एक कुँवारी
लड़की ढूँढ़कर लाएँगे। वह लड़की राजा
के पास रहकर राजा की सेवा और देख-
भाल करेगी। वह तेरे पास लेटा करेगी
ताकि तुझे गरमी मिले।" **3** उन्होंने पूरे
इसराएल देश में एक खूबसूरत लड़की की
तलाश की और उन्हें अबीशग[2] नाम की
एक लड़की मिली जो शूनेम[3] की रहने-
वाली थी। वे उसे राजा के पास ले आए।
4 वह लड़की बहुत खूबसूरत थी। वह
राजा के पास रहकर उसकी देखभाल
करने लगी। मगर राजा ने उसके साथ
संबंध नहीं रखे।
5 इन्हीं दिनों हग्गीत का बेटा अदो-
नियाह[1] यह कहकर खुद को ऊँचा उठाने
लगा, "अगला राजा मैं ही बनूँगा!" उसने
अपने लिए एक रथ तैयार करवाया, कुछ
घुड़सवार चुने और 50 आदमियों को
अपने आगे-आगे दौड़ने के काम पर
लगाया।[2] **6** मगर उसके पिता ने कभी
यह कहकर उसे नहीं रोका,* "तूने ऐसा
क्यों किया?" अदोनियाह भी बहुत सुंदर-
सजीला था। उसका जन्म अबशालोम के
बाद हुआ था। **7** उसने सरूयाह के बेटे
योआब और याजक अबियातार[3] से बात
की और वे अदोनियाह की मदद करने

अध्य. 1
1 2शम 5:4
1इत 29:26, 27
2 1रा 2:17, 22
3 यह 19:17, 18

दूसरा कॉल.
1 2शम 3:2, 4
1इत 3:1, 2
2 2शम 15:1
3 2शम 20:25

1:6 * या "उसे ठेस नहीं पहुँचायी; उसे नहीं डाँटा।"

और उसका साथ देने के लिए तैयार हो
गए।[1] **8** मगर याजक सादोक,[2] यहो-
यादा के बेटे बनायाह,[3] भविष्यवक्ता
नातान,[4] शिमी,[5] रेई और दाविद के वीर
योद्धाओं[6] ने अदोनियाह का साथ नहीं
दिया।

9 आखिरकार एक दिन अदोनियाह
ने एन-रोगेल से कुछ दूरी पर जोहे-
लेत के पत्थर के पास बलिदान का इंत-
ज़ाम किया।[7] उसने भेड़ों, गाय-बैलों और
मोटे किए जानवरों की बलि चढ़ायी। इस
मौके पर उसने अपने सभी भाइयों को
यानी राजा के सभी बेटों को और यहूदा
के सभी आदमियों को यानी राजा के
सभी सेवकों को न्यौता दिया। **10** मगर
उसने भविष्यवक्ता नातान को, बनायाह
को, दाविद के वीर योद्धाओं को और
अपने भाई सुलैमान को नहीं बुलाया।
11 तब नातान[8] ने सुलैमान की माँ बत-
शेबा[9] के पास जाकर कहा, "क्या तूने
सुना है कि हग्गीत का बेटा अदोनियाह[10]
राजा बन गया है और हमारे मालिक
राजा को इस बारे में कोई खबर नहीं?
12 अब अगर तू अपनी और अपने बेटे
सुलैमान की जान बचाना चाहती है, तो
मेरी सलाह मान।[11] **13** तू राजा दाविद
के पास जा और उससे कह, 'मेरे मालिक
राजा, तूने शपथ खाकर अपनी दासी से
कहा था, "मेरे बाद तेरा बेटा सुलैमान
राजा बनेगा और वही मेरी राजगद्दी पर
बैठेगा।"[12] तो फिर अब अदोनियाह कैसे
राजा बन गया है?' **14** जब तू राजा से
बात कर रही होगी, तब मैं भी वहाँ आ
जाऊँगा और राजा से कहूँगा कि तू सही
कह रही है।"

15 इसलिए बतशेबा राजा के पास
उसके सोने के कमरे में गयी। राजा
बहुत बूढ़ा था और शूनेम की रहने-
वाली अबीशग[1] उसकी सेवा कर रही
थी। **16** बतशेबा ने राजा के सामने
झुककर उसे प्रणाम किया। राजा ने उससे
कहा, "मैं तेरे लिए क्या कर सकता हूँ?"
17 बतशेबा ने कहा, "मेरे मालिक, तूने
ही अपने परमेश्वर यहोवा की शपथ
खाकर अपनी दासी से कहा था, 'मेरे बाद
तेरा बेटा सुलैमान राजा बनेगा और वही
मेरी राजगद्दी पर बैठेगा।'[2] **18** मगर
देख! अब अदोनियाह राजा बन गया है
और मालिक को इसकी कोई खबर
नहीं।[3] **19** उसने बड़ी तादाद में बैलों,
भेड़ों और मोटे किए जानवरों की बलि
चढ़ायी है। इस मौके पर उसने राजा के
सभी बेटों को और याजक अबियातार
और सेनापति योआब को न्यौता दिया
है,[4] मगर तेरे सेवक सुलैमान को नहीं
बुलाया।[5] **20** हे मेरे मालिक राजा,
अब पूरे इसराएल की नज़र तुझ पर टिकी
है कि तू उन्हें बताए कि तेरे बाद तेरी
राजगद्दी पर कौन बैठेगा। **21** अगर
मालिक ने नहीं बताया तो जैसे ही मालिक
की मौत हो जाएगी,* मेरे साथ और मेरे
बेटे सुलैमान के साथ गद्दारों जैसा सलूक
किया जाएगा।"

22 बतशेबा राजा से बात कर ही
रही थी कि तभी भविष्यवक्ता नातान
वहाँ पहुँच गया।[6] **23** राजा को फौरन
बताया गया, "भविष्यवक्ता नातान आया
है!" नातान राजा के सामने गया और
उसने झुककर राजा को प्रणाम किया।
24 फिर नातान ने कहा, "मेरे मालिक
राजा, क्या तूने कहा है कि तेरे बाद
अदोनियाह राजा बनेगा और वही
तेरी राजगद्दी पर बैठेगा?[7] **25** क्योंकि
आज अदोनियाह बड़ी तादाद में बैलों,

अध्या. 1
1 1रा 2:22
2 2शम 8:17
3 2शम 20:23; 1इत 27:5
4 2शम 7:2; 2शम 12:1
5 1रा 4:7, 18
6 2शम 23:8; 1इत 11:10
7 2शम 15:12
8 2शम 7:4, 5
9 2शम 11:3, 27; 2शम 12:24
10 2शम 3:2, 4
11 न्या 9:4-6; 1रा 1:21; 2रा 11:1
12 1इत 22:9; 1इत 28:5; 1इत 29:1

दूसरा कॉल.
1 1रा 1:1, 3
2 1रा 1:13; 1इत 22:9, 10
3 1रा 1:5, 11
4 1रा 1:7
5 1रा 1:9, 10
6 1रा 1:14
7 1रा 1:5

1:21 *शा., "मालिक अपने पुरखों के साथ सो जाएगा।"

भेड़ों और मोटे किए जानवरों की बलि चढ़ाने गया है[1] और उसने राजा के सभी बेटों, सेनापतियों और याजक अबियातार को बुलाया है।[2] वे सब उसके साथ मिलकर दावत उड़ा रहे हैं और कह रहे हैं, 'राजा अदोनियाह की जय हो!' 26 मगर उसने तेरे इस सेवक को नहीं बुलाया। उसने याजक सादोक को, यहोयादा के बेटे बनायाह[3] को और तेरे सेवक सुलैमान को भी नहीं बुलाया। 27 क्या अदोनियाह को यह सब करने का अधिकार राजा ने दिया है? क्या तूने फैसला किया कि वही तेरे बाद राजगद्दी पर बैठेगा? तूने मुझे तो इस बारे में कुछ नहीं बताया।"

28 तब राजा दाविद ने कहा, "बतशेबा को बुलाओ।" बतशेबा अंदर आयी और राजा के सामने खड़ी हो गयी। 29 राजा ने शपथ खाकर उससे वादा किया, "यहोवा के जीवन की शपथ, जिसने मुझे हर मुसीबत से छुड़ाया है,[4] 30 आज मैं अपनी वह शपथ पूरी करूँगा जो मैंने इसराएल के परमेश्वर यहोवा के नाम से खायी थी कि मेरे बाद तेरा बेटा सुलैमान राजा बनेगा और वही मेरी राजगद्दी पर बैठेगा!" 31 तब बतशेबा ने ज़मीन पर झुककर राजा को प्रणाम किया और कहा, "मेरा मालिक राजा दाविद लंबी उम्र पाए!"

32 राजा दाविद ने फौरन कहा, "याजक सादोक, भविष्यवक्ता नातान और यहोयादा के बेटे बनायाह[5] को बुलाओ।"[6] तब वे तीनों राजा के पास आए। 33 राजा ने उनसे कहा, "तुम मेरे सेवकों को लेकर जाओ और मेरे बेटे सुलैमान को मेरे खच्चर* पर बिठाओ[1] और उसे नीचे गीहोन[2] ले जाओ। 34 याजक सादोक और भविष्यवक्ता नातान वहाँ उसका अभिषेक करके[3] उसे इसराएल का राजा ठहराएँगे। फिर नरसिंगा फूँककर यह ऐलान करवाया जाए, 'राजा सुलैमान की जय हो!'[4] 35 इसके बाद तुम सब उसके पीछे-पीछे यहाँ लौट आना और फिर वह अंदर आकर मेरी राजगद्दी पर बैठेगा। वही मेरी जगह राजा बनेगा और मैं उसे इसराएल और यहूदा का अगुवा ठहराऊँगा।" 36 तब यहोयादा के बेटे बनायाह ने फौरन राजा से कहा, "आमीन! मेरे मालिक राजा का परमेश्वर यहोवा वही करे जो राजा ने कहा है। 37 जिस तरह यहोवा मेरे मालिक के साथ रहा है, वैसे ही वह सुलैमान के साथ रहे[5] और उसके राज को मेरे मालिक राजा दाविद के राज से भी ज़्यादा महान करे।"[6]

38 तब याजक सादोक, भविष्यवक्ता नातान, यहोयादा के बेटे बनायाह[7] और करेती और पलेती लोगों[8] ने सुलैमान को राजा दाविद के खच्चर पर बिठाया[9] और उसे नीचे गीहोन[10] ले गए। 39 फिर याजक सादोक ने तेल-भरा वह सींग लिया[11] जो तंबू[12] से लाया गया था और उस तेल से सुलैमान का अभिषेक किया।[13] इसके बाद वे नरसिंगा फूँकने लगे और सब लोग ज़ोर-ज़ोर से कहने लगे, "राजा सुलैमान की जय हो! राजा सुलैमान की जय हो!" 40 इसके बाद सब लोग बाँसुरी बजाते और जश्न मनाते हुए सुलैमान के पीछे-पीछे चलने लगे। लोगों ने इतनी ऊँची आवाज़ में जयजयकार की कि ज़मीन फटने लगी।[14]

41 अदोनियाह और उसकी दावत में आए सभी लोगों ने यह शोर सुना। अब तक वे खा-पी चुके थे।[15] जैसे ही योआब

1:33 *या "मादा खच्चर।"

अध्य. 1
1 2शम 15:12
2 1रा 1:5, 7
3 1इत 27:5
4 भज 71:23; भज 103:4
5 2शम 20:23; 2शम 23:20; 1इत 27:5
6 1रा 1:8

दूसरा कॉल.
1 1रा 1:38; लूक 19:33-35
2 2इत 32:30
3 1शम 16:13
4 1शम 10:1, 24; 2शम 15:10; 2रा 11:12
5 1इत 28:20
6 1रा 3:12; 1रा 10:23; भज 72:8
7 1इत 27:5
8 2शम 15:18; 1इत 18:17
9 1रा 1:33; मत 21:7
10 2इत 32:30
11 निर्ग 30:23-25; 1शम 16:13
12 2शम 6:17
13 1इत 29:22
14 1शम 4:5
15 1रा 1:9, 25

ने नरसिंगे की आवाज़ सुनी, उसने कहा,
“शहर में यह होहल्ला कैसा?” 42 जब
वह बोल ही रहा था तो याजक अबिया-
तार का बेटा योनातान[1] वहाँ आया।
अदोनियाह ने कहा, “आ, अंदर आ। तू
एक अच्छा* इंसान है। तू ज़रूर कोई
अच्छी खबर लाया होगा।” 43 मगर
योनातान ने अदोनियाह से कहा, “माफ
करना, खबर अच्छी नहीं है। हमारे
मालिक राजा दाविद ने सुलैमान को
राजा बना दिया है। 44 राजा ने सुलै-
मान के साथ याजक सादोक, भविष्य-
वक्ता नातान, यहोयादा के बेटे बनायाह
और करेती और पलेती लोगों को भेजा
और उन्होंने उसे राजा के खच्चर पर
बिठाया।[2] 45 वे उसे गीहोन ले गए
जहाँ याजक सादोक और भविष्यवक्ता
नातान ने उसका अभिषेक करके उसे
राजा बना दिया। इसके बाद वे जश्न
मनाते हुए वहाँ से शहर लौट गए। इसी-
लिए पूरे शहर में इतना होहल्ला मचा है।
तुम लोगों ने जो शोर सुना है वह यही
है। 46 और-तो-और, सुलैमान राज-
गद्दी पर बैठ गया है। 47 और हाँ,
हमारे मालिक राजा के सेवक राजा को
यह कहकर बधाई दे रहे हैं, ‘तेरा पर-
मेश्वर सुलैमान का नाम तेरे नाम से
ज़्यादा मशहूर करे और उसके राज को
तेरे राज से ज़्यादा महान करे!’ यह
सब सुनकर राजा ने, जो बिस्तर पर
था, अपना सिर झुकाया 48 और कहा,
‘इसराएल के परमेश्वर यहोवा की तारीफ
हो, जिसने आज मेरे बेटे को मेरी राजगद्दी
पर बिठाया है और मुझे अपनी आँखों से
यह देखने का मौका दिया है!’”

49 जब अदोनियाह के मेहमानों ने
यह खबर सुनी तो वे सब बहुत डर गए

1:42 *या “काबिल।”

अध्य. 1

1 2शम 15:36
2शम 17:17

2 1रा 1:33, 34

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 21:14
निर्ग 38:1, 2
1रा 2:28

2 1रा 2:23

अध्य. 2

3 व्य 31:6
यह 1:6
1इत 28:20

4 1रा 3:7

5 व्य 17:18-20
सभ 12:13

और उठकर अपने-अपने रास्ते चले गए।
50 अदोनियाह भी सुलैमान की वजह से
बहुत डर गया, इसलिए वह उठकर वेदी
के पास गया और उसने वेदी के सींग
पकड़ लिए।[1] 51 सुलैमान को खबर
दी गयी कि अदोनियाह उससे बहुत डर
गया है और वेदी के सींग पकड़कर कह
रहा है, “मैं यहाँ से तब तक नहीं जाऊँगा
जब तक राजा सुलैमान मुझसे शपथ
खाकर नहीं कहता कि वह अपने इस
सेवक को तलवार से नहीं मार डालेगा।”
52 सुलैमान ने कहा, “अगर वह भला
आदमी बनकर रहेगा, तो उसका बाल
भी बाँका नहीं होगा। लेकिन अगर
उसने कुछ गलत किया[2] तो वह ज़िंदा
नहीं बचेगा।” 53 तब राजा सुलैमान ने
अपने सेवकों को भेजा कि वे उसे वेदी
पर से उतार लाएँ। फिर अदोनियाह राजा
सुलैमान के पास आया और उसने झुक-
कर उसे प्रणाम किया। सुलैमान ने उससे
कहा, “जा, अपने घर चला जा।”

2 जब दाविद की मौत करीब थी
तो उसने अपने बेटे सुलैमान को
ये हिदायतें दीं: 2 “देख, अब मैं ज़्यादा
दिन नहीं जीऊँगा।* इसलिए तू हिम्मत
से काम लेना[3] और हौसला रखना।[4]
3 तू हमेशा यहोवा की बतायी राह
पर चलना। उसने मूसा के कानून में
जो विधियाँ, आज्ञाएँ, न्याय-सिद्धांत और
याद दिलानेवाली हिदायतें लिखवायी हैं
उन सबका तू पालन करना। इस तरह
तू अपना फर्ज़ निभाना।[5] तब तू जो भी
काम करे और जहाँ भी जाए, तू काम-
याब होगा।* 4 और यहोवा अपना
यह वादा निभाएगा जो उसने मेरे बारे में

2:2 *शा., “मैं दुनिया की रीत के मुता-
बिक जानेवाला हूँ।” 2:3 *या “बुद्धिमानी
से काम करेगा।”

किया था, 'अगर तेरे बेटे मेरे सामने पूरे
दिल, पूरी जान और पूरी वफ़ादारी से
सही राह पर चलते रहेंगे और इस तरह
अपने चालचलन पर ध्यान देंगे,[1] तो ऐसा
कभी नहीं होगा कि इसराएल की राज-
गद्दी पर बैठने के लिए तेरे वंश का कोई
आदमी न हो।'[2]

5 तू यह भी अच्छी तरह जानता है
कि सरूयाह के बेटे योआब ने मेरे साथ
क्या किया था। उसने इसराएल के दो
सेनापतियों को यानी नेर के बेटे अब्नेर[3]
और येतेर के बेटे अमासा को मार
डाला।[4] उसने युद्ध के समय नहीं बल्कि
शांति के समय उनका खून बहाया।[5] ऐसा
करके उसने अपने कमरबंद और जूतों
पर खून का दाग लगाया। **6** तू अपनी
बुद्धि से काम लेना और उसे ऐसी मौत
मरने मत देना जैसी सब इंसानों पर
आती है।*[6]

7 मगर तू गिलाद के रहनेवाले बर-
ज़िल्लै[7] के बेटों पर कृपा* करना। वे
तेरी मेज़ से खाया करें क्योंकि जब मैं
तेरे भाई अबशालोम से भाग रहा था[8] तो
उन्होंने मेरा साथ दिया था।[9]

8 और तेरे पड़ोस में बहूरीम का
जो शिमी रहता है, बिन्यामीन गोत्र के
गेरा का बेटा, उसे मत छोड़ना। जिस
दिन मैं महनैम जा रहा था,[10] उस दिन
उसने मुझे शाप दिया था, बड़े तीखे
शब्दों से मुझ पर वार किया था।[11] बाद
में जब वह यरदन के पास मुझसे
मिलने आया था, तब हालाँकि मैंने
यहोवा की शपथ खाकर उससे कहा था,
'मैं तुझे तलवार से नहीं मार डालूँगा,'[12]
9 मगर अब तू उसे सज़ा दिए बिना मत
छोड़ना।[1] तू बुद्धिमान आदमी है और
जानता है कि उसके साथ क्या किया जाना
चाहिए। तू उसे मौत की सज़ा देना ताकि
वह बुढ़ापे में शांति से न मर सके।"*[2]

10 इसके बाद दाविद की मौत हो
गयी* और उसे दाविदपुर में दफनाया
गया।[3] **11** दाविद ने इसराएल पर
40 साल राज किया था, 7 साल हेब्रोन[4]
में रहकर और 33 साल यरूशलेम में
रहकर।[5]

12 फिर सुलैमान ने अपने पिता की
राजगद्दी सँभाली और उसका राज दिनों-
दिन मज़बूत होता गया।[6]

13 कुछ समय बाद हग्गीत का बेटा
अदोनियाह, सुलैमान की माँ बतशेबा के
पास आया। बतशेबा ने उससे पूछा, "तू
नेक इरादे से ही आया है न?" अदो-
नियाह ने कहा, "हाँ, मैं नेक इरादे से ही
आया हूँ।" **14** फिर उसने कहा, "मैं
तुझसे कुछ कहना चाहता हूँ।" बत-
शेबा ने कहा, "बोल, क्या कहना
चाहता है।" **15** उसने कहा, "तू अच्छी
तरह जानती है कि राजगद्दी मुझे
मिलनी थी और पूरा इसराएल भी यही
उम्मीद लगाए था* कि मैं राजा बनूँगा।[7]
मगर राजगद्दी मेरे हाथ से निकल गयी
और मेरे भाई को मिल गयी। खैर
कोई बात नहीं। यहोवा की यही मरज़ी
थी कि राजगद्दी उसे मिले।[8] **16** मगर
अब मैं तुझसे बस एक गुज़ारिश करना
चाहता हूँ। तू इनकार मत करना।" बत-
शेबा ने कहा, "बोल, क्या गुज़ारिश
है।" **17** उसने कहा, "मेहरबानी करके
राजा सुलैमान से कह कि वह शूनेम की

अध्य. 2

1 व्य 6:5; 2रा 20:3; 2रा 23:3; 2इत 17:3; मत 22:37
2 2शम 7:12, 16; 1रा 8:25; 1इत 17:11; भज 132:11, 12
3 2शम 3:27, 30
4 2शम 17:25; 2शम 20:10; 1इत 2:17
5 गि 35:33; 2शम 3:28
6 2शम 3:29; 1रा 2:31-34
7 2शम 19:31
8 2शम 15:14
9 2शम 17:27-29
10 2शम 17:24
11 2शम 16:5-7
12 2शम 19:23

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 22:28
2 1रा 2:44, 46
3 2शम 5:7; 1इत 11:7; 1इत 29:26, 27; प्रेष 2:29
4 1इत 12:23
5 2शम 5:4, 5
6 2शम 7:8, 12; 1इत 29:23; 2इत 1:1; भज 89:36, 37; भज 132:12
7 1रा 1:5, 25
8 1इत 22:9

2:6 *शा., "उसके पके बालों को शांति से कब्र में मत जाने देना।" **2:7** *या "अटल प्यार।"

2:9 *शा., "तू उसके पके बालों को खून के साथ कब्र में उतार देना।" **2:10** *शा., "दाविद अपने पुरखों के साथ सो गया।" **2:15** *शा., "मेरी ओर मुँह किए था।"

अबीशग[1] मुझे दे दे, मैं उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ। वह तेरी बात नहीं टालेगा।” **18** बतशेबा ने कहा, “ठीक है। मैं तेरी तरफ से राजा से बात करूँगी।”

19 तब बतशेबा अदोनियाह की तरफ से बात करने राजा सुलैमान के पास गयी। जैसे ही वह राजा के सामने आयी, राजा अपनी राजगद्दी से उठा और झुककर उसे प्रणाम किया। फिर वह अपनी राजगद्दी पर बैठ गया और राजमाता के लिए एक आसन मँगवाया ताकि वह उसके दायीं तरफ बैठे। **20** फिर बतशेबा ने कहा, “मैं एक छोटी-सी गुज़ारिश लेकर आयी हूँ। तू इनकार मत करना।” राजा ने कहा, “माँ, तुझे जो गुज़ारिश करनी है कर। मैं इनकार नहीं करूँगा।” **21** बतशेबा ने कहा, “तू अपने भाई अदोनियाह को शूनेम की अबीशग दे दे ताकि वह उसे अपनी पत्नी बना सके।” **22** राजा सुलैमान ने अपनी माँ से कहा, “तू अदोनियाह के लिए सिर्फ शूनेम की अबीशग ही क्यों माँग रही है? उसके लिए पूरा राजपाट माँग ले![2] वह मेरा बड़ा भाई जो है[3] और याजक अबियातार और सरूयाह का बेटा योआब[4] भी उसकी तरफ हैं।”[5]

23 इसके बाद राजा सुलैमान ने यहोवा की शपथ खाकर कहा, “अदोनियाह को इस गुज़ारिश की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ेगी। अगर मैंने उसे मौत के घाट न उतारा तो परमेश्वर मुझे कड़ी-से-कड़ी सज़ा दे। **24** यहोवा के जीवन की शपथ, जिसने अपने वादे के मुताबिक मुझे मेरे पिता दाविद की राजगद्दी पर बिठाया, मेरा राज मज़बूती से कायम किया[6] और मेरे लिए एक राज-घराना तैयार किया,[7] आज अदोनियाह को मौत के घाट उतारा जाएगा।”[1] **25** ऐसा कहने के फौरन बाद राजा सुलैमान ने यहोयादा के बेटे बनायाह[2] को भेजा जिसने जाकर अदोनियाह पर वार किया और वह मर गया।

26 और याजक अबियातार[3] से राजा ने कहा, “तू अनातोत में अपने खेत लौट जा![4] वैसे तो तू मौत की सज़ा के लायक है, मगर मैं आज तुझे नहीं मार डालूँगा क्योंकि तूने मेरे पिता दाविद के साथ रहते सारे जहान के मालिक यहोवा का संदूक उठाया था[5] और तूने मेरे पिता के दुखों में उसका साथ दिया था।”[6] **27** सुलैमान ने अबियातार को याजकपद से हटा दिया ताकि वह अब से याजक के नाते यहोवा की सेवा न करे। इस तरह उसने यहोवा की वह बात पूरी की जो उसने शीलो[7] में एली के घराने के खिलाफ सुनायी थी।[8]

28 जब ये सारी खबर योआब तक पहुँची, तो वह भागकर यहोवा के तंबू[9] में गया और उसने वेदी के सींग पकड़ लिए। उसने भले ही अबशालोम का साथ नहीं दिया था,[10] मगर उसने अदोनियाह का साथ दिया था।[11] **29** राजा सुलैमान को बताया गया कि योआब भागकर यहोवा के तंबू में गया है और वेदी के पास खड़ा है। तब सुलैमान ने यहोयादा के बेटे बनायाह को यह कहकर भेजा, “जा, उसे खत्म कर दे!” **30** बनायाह यहोवा के तंबू में गया और उसने योआब से कहा, “राजा का हुक्म है, ‘तू बाहर आ!’” मगर योआब ने कहा, “नहीं, मैं यहीं मरूँगा।” बनायाह ने वापस आकर राजा को बताया कि योआब ने ऐसा-ऐसा कहा है। **31** राजा ने कहा, “ठीक है। वह जैसा कहता है वैसा ही कर। उसे वहीं मार डाल और उसकी लाश ले

अध्य. 2

1 1रा 1:1, 3
2 2शम 16:21
3 1इत 3:1, 2, 5
4 2शम 8:16
5 1रा 1:7
6 1इत 22:9, 10
7 2शम 7:11; 1इत 17:10

दूसरा कॉल.

1 1रा 1:51, 52
2 2शम 8:18; 1रा 1:8; 1इत 27:5
3 1शम 22:20; 1रा 1:7
4 यह 21:8, 18; यिर्म 1:1
5 1शम 23:6; 2शम 15:24; 1इत 15:11, 12
6 1शम 22:22, 23
7 यह 18:1
8 1शम 2:31; 1शम 3:12
9 1इत 21:29
10 2शम 18:14
11 1रा 1:7

जाकर दफना दे। उसने बेगुनाहों का खून
बहाकर मुझ पर और मेरे पिता के घराने
पर जो दोष लगाया है उसे दूर कर।[1]
32 यहोवा उसके खून का दोष उसी के
सिर डाले क्योंकि उसने इसराएल के
सेनापति अब्नेर[2] को और यहूदा के सेना-
पति अमासा[3] को मार डाला और मेरे
पिता को इस बारे में कोई खबर नहीं थी।
नेर का बेटा अब्नेर और येतेर का बेटा
अमासा, दोनों उससे ज़्यादा नेक और भले
आदमी थे, उसने उन दोनों को तलवार से
मार डाला।[4] 33 उन दोनों के खून के
लिए योआब और उसके वंशज सदा दोषी
रहेंगे।[5] मगर दाविद और उसके वंशजों
को, उसके घराने और उसके राज को
सदा तक यहोवा की तरफ से शांति
मिले।" 34 इसके बाद यहोयादा के बेटे
बनायाह ने जाकर योआब को मार डाला
और उसकी लाश वीराने में उसके घर के
पास दफना दी। 35 फिर राजा ने यहो-
यादा के बेटे बनायाह[6] को योआब की
जगह सेनापति ठहराया और सादोक[7] को
अबियातार की जगह याजक ठहराया।

36 फिर राजा ने शिमी[8] को बुलवाया
और उससे कहा, "तू यरूशलेम में अपने
लिए एक घर बना और यहीं रह। तू
यह शहर छोड़कर कहीं नहीं जा सकता।
37 जिस दिन तू शहर से बाहर निक-
लेगा और किदरोन घाटी पार करेगा,[9]
उस दिन तू ज़रूर मार डाला जाएगा। तेरा
खून तेरे ही सिर पड़ेगा।" 38 शिमी ने
राजा से कहा, "मेरे मालिक राजा, तेरा
यह फैसला सही है। तूने जैसा कहा है,
तेरा यह दास वैसा ही करेगा।" इसलिए
शिमी यरूशलेम में रहने लगा और काफी
समय तक वहीं रहा।

39 मगर तीसरे साल के आखिर में
शिमी के दासों में से दो आदमी भाग
गए और गत के राजा आकीश[1] के पास
चले गए, जो माका का बेटा था। जैसे
ही शिमी को बताया गया, "देख, तेरे
दास गत में हैं," 40 उसने फौरन अपने
गधे पर काठी कसी और अपने दासों को
ढूँढ़ने आकीश के पास गत गया। जब
शिमी अपने दासों को लेकर वापस आया,
41 तो सुलैमान को खबर दी गयी कि
शिमी यरूशलेम छोड़कर गत गया था
और अब लौट आया है। 42 तब राजा
ने शिमी को बुलवाया और उससे कहा,
"क्या मैंने तुझे यहोवा की शपथ नहीं
धरायी थी और तुझे खबरदार नहीं किया
था कि जिस दिन तू यह शहर छोड़कर
कहीं और जाएगा, उस दिन तू ज़रूर मार
डाला जाएगा? और क्या तूने नहीं कहा
था कि मेरा फैसला सही है और तू मेरी
बात मानेगा?[2] 43 तो फिर तूने क्यों
अपनी बात नहीं रखी जो तूने यहोवा की
शपथ खाकर कही थी? और मैंने तुझ पर
जो पाबंदी लगायी थी वह तूने क्यों नहीं
मानी?" 44 राजा ने शिमी से यह भी
कहा, "तू खुद अच्छी तरह जानता है कि
तूने मेरे पिता दाविद के साथ कितना बुरा
किया था।[3] अब यहोवा तुझे उस बुराई
का फल देगा।[4] 45 मगर राजा सुलै-
मान को आशीष मिलेगी[5] और दाविद का
राज यहोवा के सामने हमेशा तक मज़-
बूती से कायम रहेगा।" 46 यह कह-
कर राजा ने यहोयादा के बेटे बनायाह को
हुक्म दिया कि वह शिमी को मार डाले।
बनायाह ने जाकर उसे मार डाला।[6]

इस तरह इसराएल पर सुलैमान का
राज मज़बूती से कायम हो गया।[7]

3 राजा सुलैमान ने मिस्र के राजा
फिरौन से रिश्तेदारी की। उसने
फिरौन की बेटी से शादी की[8] और
उसे दाविदपुर[9] ले आया। सुलैमान ने

अध्य. 2
1 उत 9:6, निर्ग 21:14, गि 35:33, व्य 19:13, 1रा 2:5
2 2शम 2:8
3 2शम 17:25
4 2शम 3:26, 27; 2शम 20:10
5 2शम 3:29
6 1इत 11:24; 1इत 27:5
7 1शम 2:35; 1इत 6:50, 53; 1इत 12:28; 1इत 16:37, 39; 1इत 24:3
8 1रा 2:8
9 2शम 15:23; 2रा 23:6; यूह 18:1

दूसरा कॉल.
1 1शम 21:10; 1शम 27:2
2 1रा 2:38
3 2शम 16:5, 13
4 भज 7:16; नीत 5:22
5 भज 21:6; भज 72:17
6 1रा 2:8, 9
7 2इत 1:1; नीत 16:12

अध्य. 3
8 व्य 7:3, 4; 1रा 7:8; 1रा 9:24; 1रा 11:1; नहे 13:25-27
9 2शम 5:7; 1इत 11:7

उसे तब तक दाविदपुर में रखा जब तक
कि उसने अपने लिए एक महल, यहोवा
का भवन[1] और यरूशलेम की शहर-
पनाह बनाने का काम पूरा न कर
लिया।[2] 2 लोग अब भी ऊँची जगहों
पर बलिदान चढ़ाया करते थे[3] क्योंकि
तब तक यहोवा के नाम की महिमा के
लिए कोई भवन नहीं बनाया गया था।[4]
3 सुलैमान उन विधियों पर चलता रहा
जो उसके पिता दाविद ने उसे बतायी
थीं और इस तरह यहोवा से प्यार करता
रहा। मगर वह ऊँची जगहों पर बलिदान
चढ़ाता था ताकि उनका धुआँ उठे।[5]

4 राजा बलिदान चढ़ाने के लिए
गिबोन गया क्योंकि वहाँ की ऊँची जगह
बाकी सभी ऊँची जगहों से खास थी।[6]
सुलैमान ने वहाँ की वेदी पर 1,000
होम-बलियाँ चढ़ायीं।[7] 5 गिबोन में
रात के वक्त सुलैमान को सपने में यहोवा
ने दर्शन दिया। उसने सुलैमान से कहा,
"तू जो चाहे माँग, मैं तुझे दूँगा।"[8]
6 सुलैमान ने कहा, "तूने अपने सेवक,
मेरे पिता दाविद से बहुत प्यार* किया
क्योंकि वह हमेशा तेरे सामने सच्चाई,
नेकी और मन की सीधाई से चलता रहा।
तू आज भी उससे बहुत प्यार* करता है,
इसीलिए तूने उसे एक बेटा दिया ताकि
वह उसकी राजगद्दी पर बैठे।[9] 7 हे मेरे
परमेश्वर यहोवा, अब तूने अपने इस
सेवक को मेरे पिता दाविद की जगह राजा
बनाया है, इसके बावजूद कि मैं बस एक
जवान* हूँ और मुझे कोई तजुरबा नहीं
है।#[10] 8 और तेरे सेवक को तेरे चुने
हुए लोगों[11] पर राज करने के लिए ठह-
राया गया है, जो तादाद में इतने ज़्यादा हैं
कि उनकी गिनती भी नहीं ली जा सकती।
9 इतनी बड़ी* प्रजा पर राज करना एक
भारी ज़िम्मेदारी है। इसलिए मेहरबानी
करके अपने सेवक को ऐसा दिल दे जो
हमेशा तेरी आज्ञा माने ताकि मैं तेरे लोगों
का न्याय कर सकूँ[1] और अच्छे-बुरे में
फर्क कर सकूँ।"[2]

10 सुलैमान की यह गुज़ारिश सुनकर
यहोवा बहुत खुश हुआ।[3] 11 उसने
सुलैमान से कहा, "क्योंकि तूने यह गुज़ा-
रिश की है और अपने लिए न तो लंबी
उम्र माँगी, न दौलत और न ही अपने
दुश्मनों की मौत माँगी है बल्कि तूने मुकद-
मों की सुनवाई करने के लिए समझ
माँगी है,[4] 12 इसलिए तूने जो माँगा है
वह मैं तुझे दूँगा।[5] मैं तुझे बुद्धि और
समझ से भरा ऐसा दिल दूँगा[6] कि जैसे
तेरे समान पहले कोई नहीं था, वैसे ही तेरे
बाद भी कोई नहीं होगा।[7] 13 इतना
ही नहीं, मैं तुझे वह भी दूँगा जिसकी
तूने गुज़ारिश नहीं की है।[8] मैं तुझे इतनी
दौलत और शोहरत दूँगा[9] कि तेरे जीवन-
काल में तेरी बराबरी का कोई राजा न
होगा।[10] 14 और अगर तू अपने पिता
दाविद की तरह मेरे कायदे-कानून और
आज्ञाएँ मानकर मेरी राहों पर चलता
रहेगा,[11] तो मैं तुझे लंबी उम्र की आशीष
भी दूँगा।"*[12]

15 जब सुलैमान नींद से जाग उठा
तो उसे एहसास हुआ कि वह दर्शन देख
रहा था। फिर वह यरूशलेम आया और
यहोवा के करार के संदूक के सामने
खड़ा हुआ। वहाँ उसने होम-बलियाँ और
शांति-बलियाँ[13] चढ़ायीं और अपने सभी
सेवकों के लिए दावत रखी।

16 बाद में एक दिन दो वेश्याएँ राजा

3:6 *या "अटल प्यार।" 3:7 *या "छोटा
लड़का।" #शा., "और मैं बाहर जाना और
अंदर आना नहीं जानता।"

3:9 *या शायद, "ढीठ।" शा., "भारी।"
3:14 *शा., "मैं तेरे दिन बढ़ाऊँगा।"

अध्य. 3

1 1रा 8:17-19
2 1रा 7:1; 1रा 9:15
3 2इत 33:17
4 व्य 12:5, 6; 1रा 5:3; 1इत 28:6
5 1शम 7:9; 1शम 10:8; 1इत 21:26
6 1इत 16:39, 40; 1इत 21:29
7 2इत 1:3-6
8 2इत 1:7-10
9 1रा 2:1, 4
10 1इत 29:1; यिर्म 1:6
11 निर्ग 19:5, 6

दूसरा कॉल.

1 भज 72:1; भज 119:34
2 इब्र 5:14
3 नीत 15:8
4 1इत 22:12; 1इत 29:19; 2इत 1:11, 12; नीत 16:16
5 सभ 1:16; 1यूह 5:14
6 1रा 4:29; नीत 2:3-5; याकू 1:5
7 मत 12:42
8 भज 84:11; मत 6:33; इफ 3:20
9 1रा 4:21; सभ 7:11
10 1रा 10:23
11 1रा 15:5
12 भज 21:4; भज 91:14, 16; नीत 3:13, 16
13 लैव 7:11

के सामने हाज़िर हुईं। **17** एक औरत
ने कहा, “मालिक, मैं और यह औरत एक
ही घर में रहती हैं। मेरा एक बच्चा हुआ
था और **18** तीसरे दिन इस औरत का
भी एक बच्चा हुआ। उस घर में सिर्फ हम
दोनों रहती हैं, हमें छोड़ और कोई नहीं
है। **19** रात को इसका बेटा मर गया
क्योंकि यह औरत नींद में उसके ऊपर सो
गयी थी। **20** इसलिए आधी रात को
वह उठी और यह देखकर कि मैं सो रही
थी, उसने मेरा बेटा ले लिया और अपने
पास* सुला लिया और अपना मरा हुआ
बच्चा मेरे पास सुला दिया। **21** सुबह
जब मैं अपने बेटे को दूध पिलाने उठी तो
मैंने देखा कि वह मरा हुआ है। फिर जब
मैंने गौर से देखा तो पाया कि वह मेरा
बेटा नहीं है।” **22** मगर तभी दूसरी
औरत ने कहा, “नहीं, तू झूठ बोल रही
है। ज़िंदा बच्चा मेरा है, मरा हुआ बच्चा
तेरा है!” मगर पहली औरत कहने लगी,
“नहीं, मरा हुआ बच्चा तेरा है, ज़िंदा मेरा
है!” इस तरह वे दोनों राजा के सामने
झगड़ने लगीं।

23 आखिरकार राजा ने कहा, “यह
औरत कहती है, ‘ज़िंदा बच्चा मेरा
है, मरा बच्चा तेरा है’ और वह औरत
कहती है, ‘नहीं, मरा बच्चा तेरा है, ज़िंदा
बच्चा मेरा है।’” **24** राजा ने कहा,
“एक तलवार लाओ।” राजा के सेवक
एक तलवार ले आए। **25** राजा ने
कहा, “इस ज़िंदा बच्चे के दो टुकड़े
कर दो और दोनों औरतों को आधा-
आधा दे दो।” **26** यह सुनते ही बच्चे
की असली माँ राजा से गिड़गिड़ाकर
बिनती करने लगी कि वह बच्चे को न
मारे, क्योंकि अपने बेटे के लिए उसकी
ममता उमड़ पड़ी। उसने राजा से कहा,
“नहीं मालिक, ऐसा मत कर! चाहे तो
बच्चा इस औरत को दे दे, मगर बच्चे को
किसी भी हाल में मत मार!” मगर दूसरी
औरत कहने लगी, “नहीं, यह बच्चा न
मेरा होगा न तेरा! हो जाने दे इसके दो
टुकड़े!” **27** तब राजा ने कहा, “बच्चे
को मत मारो, इसे पहली औरत को दे दो!
वही इसकी माँ है।”

28 राजा ने जो फैसला सुनाया,
उसकी खबर पूरे इसराएल में फैल गयी।
जब लोगों ने देखा कि उसमें परमेश्वर की
बुद्धि है जिस वजह से उसने ऐसा न्याय
किया,[1] तो वे राजा का गहरा सम्मान
करने* लगे।[2]

4 राजा सुलैमान पूरे इसराएल पर
राज करता था।[3] **2** उसके दर-
बार के बड़े-बड़े अधिकारी* ये थे:
सादोक[4] का बेटा अजरयाह याजक था,
3 शीशा के बेटे एलीहोरेप और अहि-
याह राज-सचिव[5] थे, अहीलूद का
बेटा यहोशापात[6] शाही इतिहासकार था,
4 यहोयादा का बेटा बनायाह[7] सेना का
अधिकारी था, सादोक और अबियातार[8]
याजक थे, **5** नातान[9] का बेटा अजर-
याह प्रांतीय प्रशासकों का अधिकारी था,
नातान का बेटा जाबूद एक याजक था
और राजा का दोस्त[10] भी था, **6** अही-
शार राजमहल की देखरेख करनेवाला
अधिकारी था और अब्दा का बेटा अदो-
नीराम[11] जबरन मज़दूरी करनेवालों[12]
का अधिकारी था।

7 सुलैमान ने पूरे इसराएल में 12
प्रांतीय प्रशासक ठहराए थे, जो राजा और
उसके पूरे घराने के लिए भोजन का इंत-
ज़ाम करते थे। हर प्रशासक साल के एक
महीने खाने-पीने की चीज़ें मुहैया कराने के

दूसरा कॉल.

अध्य. 3

1 1रा 3:9, 10

2 1इत 29:23-25
भज 72:5

अध्य. 4

3 2इत 9:30
सभ 1:12

4 1इत 6:8
1इत 27:16, 17

5 2शम 8:17
1इत 27:32

6 2शम 8:16
2शम 20:24

7 1रा 1:8
1रा 2:35
1इत 27:5

8 1रा 2:26

9 1रा 1:9, 10

10 2शम 15:37
1इत 27:33

11 2शम 20:24
1रा 5:14
1रा 12:18

12 1रा 9:15

3:20 *शा., “अपनी छाती पर।”

3:28 *शा., “से डरने।” **4:2** *या “उसके हाकिम।”

लिए ज़िम्मेदार था।[1] 8 प्रांतीय प्रशासक ये थे: हूर का बेटा, जिसके अधिकार में एप्रैम का पहाड़ी प्रदेश था; 9 देकेर का बेटा, जिसके अधिकार में माकस, शालबीम,[2] बेत-शेमेश और एलोन-बेत-हानान था; 10 अरुब्बोत में हेसेद का बेटा (जिसके अधिकार में सोकोह और हेपेर का पूरा इलाका था); 11 अबीनादाब का बेटा, जिसके अधिकार में दोर की सभी ढलानें थीं (अबीनादाब के इस बेटे की पत्नी तापत सुलैमान की बेटी थी); 12 अहीलूद का बेटा बाना, जिसके अधिकार में तानाक, मगिद्दो,[3] बेत-शआन[4] का पूरा इलाका (जो सारतान के पास और यिजरेल के नीचे है) और बेत-शआन से आबेल-महोला तक और वहाँ से योकमाम[5] तक का इलाका था; 13 रामोत-गिलाद[6] में गेबेर का बेटा (जिसके अधिकार में मनश्शे के बेटे याईर के कसबे[7] थे जो गिलाद[8] में हैं, साथ ही अरगोब का इलाका[9] जो बाशान[10] में है। अरगोब में शहरपनाहवाले 60 बड़े-बड़े शहर हैं जिनके फाटकों में ताँबे के बेड़े लगे हैं); 14 इद्दो का बेटा अहीनादाब, जिसके अधिकार में महनैम[11] था; 15 अहीमास, जिसके अधिकार में नप्ताली का इलाका था (उसकी पत्नी बाशमत भी सुलैमान की बेटी थी); 16 हूशै का बेटा बाना, जिसके अधिकार में आशेर और बालोत का इलाका था; 17 पारूह का बेटा यहोशापात, जिसके अधिकार में इस्साकार का इलाका था; 18 एला का बेटा शिमी,[12] जिसके अधिकार में बिन्यामीन का इलाका था;[13] 19 ऊरी का बेटा गेबेर, जिसके अधिकार में गिलाद का इलाका था।[14] गिलाद पर पहले एमोरियों के राजा सीहोन[15] और बाशान के राजा ओग[16] का कब्ज़ा था। इसराएल देश के इन सभी प्रांतीय प्रशासकों का भी एक अधिकारी था।

20 यहूदा और इसराएल की आबादी इतनी थी कि वह समुंदर किनारे की बालू के किनकों जितनी थी।[1] उन्हें खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी और वे खुशहाल ज़िंदगी जीते थे।[2]

21 सुलैमान महानदी*[3] से लेकर पलिश्तियों के देश और मिस्र की सरहद तक के सभी राज्यों पर राज करता था। ये राज्य सुलैमान को नज़राना देते थे और ये सब उसके जीवन-भर उसके अधीन रहे।[4]

22 सुलैमान के महल में हर दिन के भोजन के लिए इतनी चीज़ें लगती थीं: 30 कोर* मैदा, 60 कोर आटा, 23 मोटे किए गए 10 गाय-बैल, चरागाहों में चरनेवाले 20 गाय-बैल और 100 भेड़ें। इनके अलावा कुछ हिरनों, चिकारों, छोटे-छोटे हिरनों और मोटी-मोटी कोयलों का गोश्त भी पकाया जाता था। 24 सुलैमान के अधिकार में महानदी* के पश्चिम का पूरा इलाका था,[5] यानी तिपसह से लेकर गाज़ा[6] तक का पूरा इलाका। वहाँ के सभी राजा, सुलैमान के अधीन थे। उसके पूरे राज्य में हर कहीं शांति थी।[7] 25 सुलैमान के दिनों में पूरा यहूदा और इसराएल हर खतरे से महफूज़ था। दान से बरशेबा तक हर कोई अपनी अंगूर की बेल और अपने अंजीर के पेड़ तले चैन से रहता था।

26 सुलैमान के रथों के घोड़ों के लिए 4,000* अस्तबल थे और उसके 12,000 घोड़े# थे।[8]

4:21, 24 *यानी फरात नदी। **4:22** *एक कोर 220 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। **4:26** *यह संख्या कुछ हस्तलिपियों और 2इत 9:25 में दी गयी है। दूसरी हस्तलिपियों में 40,000 लिखा है। #या "घुड़सवार।"

अध्य. 4
1 1इत 27:1
2 यह 19:42, 48
3 2रा 23:29
4 यह 17:11; 1शम 31:8, 10
5 यह 21:34
6 व्य 4:41-43; 1रा 22:3
7 गि 32:41; व्य 3:14
8 गि 32:1
9 व्य 3:4
10 यह 13:8, 11
11 उत 32:1, 2; 2शम 2:8, 9
12 1रा 1:8
13 यह 18:11
14 यह 17:1
15 गि 21:21
16 व्य 3:4

दूसरा कॉल.
1 उत 22:15, 17
2 सभ 2:24
3 उत 15:18; निर्ग 23:31; 2शम 8:3; भज 72:8-10
4 भज 72:10
5 यह 1:4
6 उत 10:19
7 1रा 5:4; 1इत 22:9; भज 72:7
8 व्य 17:15, 16; 1रा 10:24-26; 2इत 1:14, 17

27 राजा सुलैमान के प्रांतीय प्रशासक उसके लिए और उसकी मेज़ से खानेवाले सभी लोगों के लिए खाना मुहैया कराते थे। हर प्रशासक की ज़िम्मेदारी थी कि उसके लिए जो महीना तय है, उस महीने वह खाना मुहैया कराए और इस बात का ध्यान रखे कि किसी चीज़ की कमी न हो।[1] 28 इतना ही नहीं, इन प्रशासकों की यह ज़िम्मेदारी भी थी कि वे घोड़ों और रथ खींचनेवाले घोड़ों के लिए जौ और पुआल मुहैया कराएँ। हर प्रशासक के लिए तय था कि वह कितना जौ और पुआल देगा और उसकी ज़िम्मेदारी थी कि जहाँ जितने जौ और पुआल की ज़रूरत है, वहाँ उतना पहुँचाए।

29 परमेश्वर ने सुलैमान को बहुतायत में बुद्धि और पैनी समझ दी और समझ से भरा ऐसा मन दिया जो समुंदर किनारे फैली बालू की तरह विशाल था।[2] 30 सुलैमान पूरब के देशों के और मिस्र के सभी ज्ञानियों से कहीं ज़्यादा बुद्धिमान था।[3] 31 उसके जैसा बुद्धिमान इंसान कोई न था। वह जेरह के वंशज एतान[4] से और माहोल के बेटों यानी हेमान,[5] कलकोल[6] और दरदा से भी कहीं ज़्यादा बुद्धिमान था। उसकी शोहरत आस-पास के सभी देशों तक फैली थी।[7] 32 उसने 3,000 नीतिवचनों की रचना की*[8] और उसके 1,005 गीत भी हैं।[9] 33 वह तरह-तरह के पेड़ों के बारे में बताया करता था, लबानोन के देवदार से लेकर दीवार पर उगनेवाले मरुआ[10] तक के बारे में। वह जानवरों,[11] पक्षियों,*[12] रेंगनेवाले जीव-जंतुओं#[13] और मछलियों के बारे में भी बताया करता था। 34 सभी देशों से लोग सुलैमान की बुद्धि-भरी बातें सुनने के लिए आते थे। यहाँ तक कि दुनिया के कोने-कोने से राजा भी आते थे जिन्होंने उसकी बुद्धि के चर्चे सुने थे।[1]

5 जब सोर[2] के राजा हीराम ने सुना कि सुलैमान का अभिषेक करके उसे उसके पिता की जगह राजा बनाया गया है, तो उसने सुलैमान के पास अपने सेवक भेजे। हीराम हमेशा से दाविद का अच्छा दोस्त रहा था।*[3] 2 फिर सुलैमान ने हीराम के पास यह संदेश भेजा:[4] 3 “तू अच्छी तरह जानता है कि मेरा पिता दाविद अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की महिमा के लिए एक भवन नहीं बना पाया, क्योंकि उसे अपने चारों तरफ के दुश्मनों से युद्ध करने पड़े। आखिरकार, यहोवा ने उसके सभी दुश्मनों को उसके पैरों तले कर दिया।[5] 4 मगर अब मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे चारों तरफ के दुश्मनों से राहत दी है।[6] अब न मेरे खिलाफ कोई सिर उठानेवाला है और न मेरे राज्य में कोई मुसीबत है।[7] 5 इसलिए मैं अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की महिमा के लिए एक भवन बनाना चाहता हूँ, ठीक जैसे यहोवा ने मेरे पिता दाविद से यह वादा किया था, ‘तेरा बेटा जिसे मैं तेरी जगह राजगद्दी पर बिठाऊँगा, वही मेरे नाम की महिमा के लिए एक भवन बनाएगा।’[8] 6 इसलिए अब तू अपने लोगों को हुक्म दे कि वे मुझे लबानोन के देवदार काटकर दें।[9] मेरे सेवक तेरे सेवकों के साथ मिलकर काम करेंगे। और तू अपने सेवकों के लिए जितनी मज़दूरी तय करेगा मैं उन्हें उतनी मज़दूरी दूँगा। तू अच्छी तरह जानता है कि

4:32 *या “नीतिवचन कहे।” **4:33** *या “उड़नेवाले जीवों।” #शायद इनमें साँप, छिपकली जैसे जंतु और कीड़े शामिल हैं।

5:1 *या “दाविद को हमेशा प्यार करता था।”

अध्य. 4
1 1रा 4:7
2 1रा 10:23, 2इत 1:10, नीत 2:6
3 प्रेष 7:22
4 भज 89:उप
5 भज 88:उप
6 1इत 2:4, 6
7 1रा 10:1, 7, लूक 11:31
8 नीत 1:1, सभ 12:9
9 श्रेष 1:1
10 निर्ग 12:22
11 नीत 30:30
12 नीत 30:19
13 नीत 6:6, नीत 30:25

दूसरा कॉल.
1 2इत 9:1, 23

अध्य. 5
2 यहे 27:3
3 2शम 5:11
4 2इत 2:3
5 2शम 7:5, 1इत 22:7, 8
6 1रा 4:24, 25
7 नीत 16:7
8 2शम 7:12, 13, 1इत 22:9, 10, 2इत 2:4
9 1रा 6:9, 20

सीदोनियों की तरह पेड़ काटनेवाला हमारे यहाँ कोई नहीं है।”[1]

7 हीराम ने जब सुलैमान का संदेश सुना, तो वह बहुत खुश हुआ और उसने कहा, “आज यहोवा की बड़ाई हो क्योंकि उसने दाविद को एक बुद्धिमान बेटा दिया है ताकि वह इतनी बड़ी प्रजा पर राज करे!”[2] 8 फिर हीराम ने सुलैमान को यह संदेश भेजा: “मुझे तेरा संदेश मिला है। तू जैसा चाहता है मैं वैसा ही करूँगा। मैं तेरे यहाँ देवदार और सनोवर की लकड़ी[3] भेजूँगा। 9 मेरे सेवक लबानोन से पेड़ काटकर समुंदर किनारे ले आएँगे। मैं उनकी शहतीरों के बेड़े बनवाकर समुंदर के रास्ते उस जगह पहुँचा दूँगा जो तू मुझे बताएगा। फिर मैं वहाँ अपने आदमियों से उन्हें खुलवा दूँगा और तू उन्हें वहाँ से उठाकर ले जा सकता है। मेरी इस सेवा के बदले तू मेरे घराने के लिए खाने की वे चीज़ें दिया करना जिनकी मैं गुज़ारिश करता हूँ।”[4]

10 तब हीराम ने सुलैमान को देवदार और सनोवर की उतनी लकड़ी दी, जितनी सुलैमान ने माँगी थी। 11 और सुलैमान ने हीराम के घराने के लिए 20,000 कोर* गेहूँ और 20 कोर बढ़िया जैतून तेल# दिया। सुलैमान हर साल हीराम को ये चीज़ें दिया करता था।[5] 12 यहोवा ने सुलैमान को बुद्धि दी, ठीक जैसे उसने वादा किया था।[6] सुलैमान और हीराम के बीच शांति का रिश्ता था और उन्होंने आपस में एक संधि की।*

13 राजा सुलैमान ने भवन बनाने के काम के लिए पूरे इसराएल से 30,000 जबरन मज़दूरी करनेवालों को लगाया।[1] 14 वह उनमें से दस-दस हज़ार आदमियों को हर महीने बारी-बारी से भेजता था। वे एक महीना लबानोन में काम करते और दो महीने अपने घर पर रहते थे। अदोनीराम[2] इन सभी मज़दूरों का अधिकारी था। 15 सुलैमान के यहाँ 70,000 आम मज़दूर* थे और पहाड़ों पर पत्थर काटनेवाले 80,000 मज़दूर थे।[3] 16 इनके अलावा, सुलैमान ने 3,300 आदमियों को मज़दूरों की निगरानी का काम सौंपा।[4] 17 राजा के हुक्म पर मज़दूरों ने भवन की बुनियाद[5] के लिए खदानों पर बड़े-बड़े पत्थर काटे।[6] ये पत्थर बहुत कीमती थे।[7] 18 इस तरह सुलैमान के राजगीरों, हीराम के राजगीरों और गबाली लोगों[8] ने मिलकर पत्थर और लकड़ी काटने का काम किया ताकि उनसे भवन बनाया जा सके।

6 सुलैमान ने इसराएल का राजा बनने के चौथे साल के जिव* महीने[9] में (यानी दूसरे महीने में) यहोवा के लिए भवन# बनाने का काम शुरू किया। यह इसराएलियों△ के मिस्र से निकलने[10] का 480वाँ साल था।[11] 2 राजा सुलैमान ने यहोवा के लिए जो भवन बनाया उसकी लंबाई 60 हाथ,* चौड़ाई 20 हाथ और ऊँचाई 30 हाथ थी।[12] 3 मंदिर* के पवित्र भाग के सामने जो बरामदा[13] था उसकी लंबाई# 20 हाथ थी यानी भवन की चौड़ाई के बराबर। भवन के सामने से

5:11 *एक कोर 220 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। #शा., “कूटकर निकाला गया तेल।” **5:12** *या “करार किया।”

5:15 *या “बोझ ढोनेवाले।” **6:1** *अति. ख15 देखें। #अति. ख8 देखें। △शा., “इसराएल के बेटों।” **6:2** *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें। **6:3** *शा., “भवन के मंदिर।” #या “चौड़ाई।”

अध्य. 5

1 2इत 2:8
2 2इत 2:11, 12
3 2शम 6:5; 1रा 6:15; 2इत 3:5
4 2इत 2:15, 16; एज 3:7
5 2इत 2:10
6 1रा 3:12; 1रा 4:29; याकू 1:5

दूसरा कॉल.

1 1रा 9:15
2 2शम 20:24; 1रा 4:6; 1रा 12:18
3 यह 16:10; 1रा 9:20-22; 1इत 22:15; 2इत 2:2; 2इत 2:17, 18; 2इत 8:7-9
4 1रा 9:23
5 प्रक 21:14
6 1रा 6:7
7 1रा 7:9; 1इत 22:2
8 यह 13:1, 5

अध्य. 6

9 1रा 6:37
10 निर्ग 12:14, 51
11 1इत 28:11, 12; 2इत 3:1, 2
12 2इत 3:3; एज 6:3
13 2इत 3:4

अगर बरामदे की चौड़ाई नापी जाए तो
वह दस हाथ थी।
4 उसने भवन में ऐसी खिड़कियाँ
बनायीं जो अंदर की ओर चौड़ी और
बाहर की ओर सँकरी थीं।[1] **5** उसने
भवन की दीवार से सटी हुई एक इमा-
रत बनायी। उसने यह इमारत भवन
की दीवारों के चारों तरफ बनायी, यानी
मंदिर* और भीतरी कमरे[2] की दीवारों
के चारों तरफ। उसने चारों तरफ
खाने बनाए।[3] **6** इन खानों की निचली
मंज़िल के फर्श की चौड़ाई पाँच हाथ,
बीचवाली मंज़िल के फर्श की चौड़ाई
छः हाथ और ऊपरी मंज़िल के फर्श की
चौड़ाई सात हाथ थी। उसने भवन के
चारों तरफ की दीवारों में ताक बनाए,
इसलिए भवन की दीवारों में कोई शहतीर
नहीं घुसायी गयी।[4]
7 यह भवन ऐसे पत्थरों से बनाया
गया था जो खदानों पर पहले से गढ़कर
तैयार किए गए थे।[5] इसलिए भवन
बनाने की जगह पर हथौड़ी, कुल्हाड़ी
या लोहे के किसी औज़ार की आवाज़
नहीं सुनायी दी। **8** खानोंवाली निचली
मंज़िल का प्रवेश भवन के दक्षिण की
तरफ* था।[6] निचली मंज़िल से बीच-
वाली मंज़िल तक और वहाँ से ऊपरी
मंज़िल तक जाने के लिए घुमावदार
सीढ़ियाँ थीं। **9** इस तरह सुलैमान
भवन बनाने का काम करता गया और
उसे पूरा किया।[7] फिर उसने भवन की
छत में देवदार की शहतीरें लगायीं और
देवदार के तख्तों[8] से उसे ढक दिया।
10 उसने भवन की दीवार से सटकर
जो खाने बनाए[9] उनकी ऊँचाई पाँच-
पाँच हाथ थी। इन खानों को देव-
दार की लकड़ियों से भवन के साथ जोड़ा
गया था।
11 इसी दौरान यहोवा का यह संदेश
सुलैमान के पास पहुँचाः **12** "अगर तू
मेरी विधियों पर चलेगा, मेरे न्याय-
सिद्धांतों का पालन करेगा और मेरी सभी
आज्ञाओं को मानेगा,[1] तो मैं अपना वह
वादा पूरा करूँगा जो मैंने तेरे बारे में
तेरे पिता दाविद से किया था,[2] खासकर
वह वादा निभाऊँगा जो मैंने इस भवन के
बारे में किया था **13** कि मैं इसराएलियों
के बीच निवास करूँगा[3] और अपनी प्रजा
इसराएल को कभी नहीं छोड़ूँगा।"[4]
14 सुलैमान ने मंदिर बनाने का काम
जारी रखा ताकि वह पूरा हो। **15** उसने
देवदार के तख्तों से भवन के अंदर की
दीवारें बनायीं। उसने दीवारों पर फर्श से
लेकर छत की शहतीरों तक देवदार के
तख्ते लगाए। भवन के फर्श पर उसने
सनोवर के तख्ते लगाए।[5] **16** और
उसने भवन की पिछली दीवार से 20 हाथ
की लंबाई पर, फर्श से लेकर छत की शह-
तीरों तक देवदार के तख्ते लगाकर एक
कमरा बनाया। इस तरह उसने उसके
अंदर* भीतरी कमरा[6] या परम-पवित्र
भाग बनाया।[7] **17** भवन का सामने-
वाला भाग यानी मंदिर*[8] 40 हाथ लंबा
था। **18** भवन के अंदर लगाए गए
देवदार के तख्तों पर खरबूजों और खिले
हुए फूलों की नक्काशी थी।[9] पूरे भवन
पर देवदार के तख्ते लगाए गए थे जिस
वजह से कहीं एक पत्थर भी नज़र नहीं
आता था।
19 उसने भवन के बिलकुल अंदर
भीतरी कमरा तैयार किया[10] ताकि उसमें

6:5 *यहाँ पवित्र भाग की बात की गयी है।
6:8 *या "दायीं तरफ।"

6:16 *यानी भवन के अंदर। **6:17** *यानी
पवित्र भाग, जो परम-पवित्र भाग के
सामने था।

अध्य. 6
1 यहे 41:26
2 लैव 16:2; 2इत 5:7; इब्र 9:3
3 1रा 6:10; यहे 41:5, 26
4 यहे 41:6, 7
5 1रा 5:17
6 यहे 41:11
7 1रा 6:38
8 1रा 5:6; 1रा 6:20
9 1रा 6:5

दूसरा कॉल.
1 व्य 17:18, 19; 1रा 8:25; 1इत 28:9
2 2शम 7:13; 1इत 22:9
3 निर्ग 25:8; लैव 26:12; भज 132:13
4 1इत 28:20
5 1रा 5:8; 2इत 3:5
6 1रा 6:5
7 2इत 3:8, 9; इब्र 9:3
8 इब्र 9:2
9 निर्ग 25:33; 1रा 7:24
10 इब्र 9:3

यहोवा के करार का संदूक रखा जा
सके।[1] 20 इस भीतरी कमरे की लंबाई
20 हाथ, चौड़ाई 20 हाथ और ऊँचाई
20 हाथ थी।[2] उसने इस पूरे कमरे पर
शुद्ध सोना मढ़ा। वेदी[3] पर उसने देव-
दार की लकड़ी लगायी। 21 सुलैमान
ने भवन के अंदर के पूरे हिस्से पर शुद्ध
सोना मढ़ा।[4] उसने सोने से मढ़े भीतरी
कमरे[5] के ठीक बाहर सोने की ज़ंजीरें
लगायीं। 22 उसने पूरे भवन को सोने
से मढ़ा। उसने भीतरी कमरे के पास रखी
वेदी को भी पूरी तरह सोने से मढ़ा।[6]

23 उसने भीतरी कमरे में चीड़ की
लकड़ी* से दो करूब[7] बनाए। हर करूब
दस हाथ लंबा था।[8] 24 एक करूब के
दोनों पंख पाँच-पाँच हाथ लंबे थे। इस-
लिए उसके एक पंख के छोर से लेकर
दूसरे पंख के छोर तक की लंबाई दस हाथ
थी। 25 दूसरे करूब के दोनों पंखों की
कुल लंबाई भी दस हाथ थी। दोनों करूब
एक ही माप और एक ही आकार के थे।
26 दोनों करूबों की लंबाई दस-दस हाथ
थी। 27 उसने इन दोनों करूबों[9] को
भीतरी कमरे* में खड़ा किया। करूबों के
पंख इस तरह फैले हुए थे कि एक करूब
का एक पंख एक तरफ की दीवार को
छूता था और दूसरे करूब का एक पंख
दूसरी तरफ की दीवार को छूता था।
उनके बाकी दोनों पंख कमरे के बीचों-
बीच एक-दूसरे को छूते थे। 28 उसने
इन करूबों पर सोना मढ़ा।

29 उसने भवन की सभी दीवारों पर
यानी भीतरी कमरे और बाहरी कमरे*
की दीवारों पर करूबों,[10] खजूर के
पेड़ों[11] और खिले हुए फूलों की नक्काशी
की।[1] 30 उसने भवन के भीतरी और
बाहरी कमरे के फर्श पर सोना मढ़ा।
31 उसने भीतरी कमरे के प्रवेश के लिए
दो किवाड़वाला फाटक चीड़ की लकड़ी
से बनाया और प्रवेश के दोनों तरफ खंभे
और फाटक के बाज़ू और पाँचवाँ
हिस्सा* भी बनाया। 32 फाटक के
दोनों किवाड़ चीड़ की लकड़ी के बने
थे। उसने दोनों किवाड़ों पर करूबों,
खजूर के पेड़ों और खिले हुए फूलों
की नक्काशी की और उस नक्काशी पर
सोना मढ़ा। उसने करूबों और खजूर के
पेड़ों पर यह सोना पीट-पीटकर लगाया।
33 उसने मंदिर# के प्रवेश के लिए भी
इसी तरह चीड़ की लकड़ी से फाटक के
बाज़ू बनाए जो चौथे हिस्से* के थे।
34 उसने फाटक के दोनों किवाड़ सनो-
वर की लकड़ी के बनाए। हर किवाड़
के दो पल्ले थे जो चूलों पर मुड़कर
दोहरे हो जाते थे।[2] 35 उसने किवाड़ों
पर करूबों, खजूर के पेड़ों और खिले हुए
फूलों की नक्काशी की और उस नक्काशी
पर सोना मढ़ा।

36 उसने भीतरी आँगन[3] के लिए
एक दीवार खड़ी की, जो गढ़े हुए पत्थर
के तीन रद्दों से और देवदार की शहतीरों
की एक कतार से बनी थी।[4]

37 सुलैमान के राज के चौथे साल के
जिव* महीने में यहोवा के भवन की बुनि-
याद डाली गयी थी[5] 38 और 11वें
साल के बूल* महीने में (यानी आठवें
महीने में) पूरा भवन बनकर तैयार
हो गया। मंदिर के लिए जो नमूना दिया
गया था, ठीक उसी के मुताबिक उसे

6:23 *शा., "तेल की लकड़ी," शायद हैलाब चीड़। **6:27** *यानी परम-पवित्र भाग। **6:29** *शा., "अंदर और बाहर।"

6:31, 33 *यहाँ शायद फाटक की चौखट की बनावट या फाटक के माप की बात की गयी है। **6:33** #यहाँ पवित्र भाग की बात की गयी है। **6:37, 38** *अति. ख15 देखें।

अध्य. 6
1 निर्ग 40:21, 1रा 8:6
2 1रा 6:16
3 निर्ग 30:1, 1रा 7:48
4 निर्ग 26:29, 2इत 3:7
5 निर्ग 26:33
6 निर्ग 30:1, 3, निर्ग 40:5
7 उत 3:24, 2रा 19:15, भज 99:1
8 2इत 3:10-13, 2इत 5:8
9 भज 80:1, यश 37:16, इब्र 9:4, 5
10 2इत 3:14
11 यहे 41:17, 18

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 25:33, 1रा 6:18
2 यहे 41:24, 25
3 निर्ग 27:9, 2इत 4:9, 2इत 7:7
4 1रा 7:12
5 1रा 6:1

बनाया गया और हर बारीकी का ध्यान रखा गया।[1] सुलैमान को इसे बनाने में सात साल लगे।

7 सुलैमान ने अपने लिए एक महल बनवाया और उसे पूरा करने में उसे 13 साल लगे।[2]

2 उसने 'लबानोन का वन भवन' बनवाया।[3] इस भवन की लंबाई 100 हाथ,* चौड़ाई 50 हाथ और ऊँचाई 30 हाथ थी। यह भवन चार कतारों में खड़े किए देवदार के खंभों पर बनाया गया। इन खंभों के ऊपर देवदार की शहतीरें[4] लगायी गयीं। **3** खंभों पर धरनी रखकर जो भवन तैयार किया गया उसके अंदर देवदार के तख्ते लगाए गए। इनकी गिनती कुल मिलाकर 45 थी यानी हर कतार में 15. **4** इस भवन में तीन मंज़िलें थीं और इसमें तीन कतारों में चौखटवाली खिड़कियाँ बनायी गयीं। ये सारी खिड़कियाँ एक-दूसरे के सामने थीं। **5** भवन के सभी दरवाज़ों और उनके बाज़ुओं की चौखटें चौकोर थीं। तीन मंज़िलों में आमने-सामने बनी खिड़कियों की चौखटें भी चौकोर* थीं।

6 उसने एक 'खंभोंवाला बरामदा' बनाया जिसकी लंबाई 50 हाथ और चौड़ाई 30 हाथ थी। इसके सामने एक और बरामदा था जिसमें खंभे और एक छज्जा था।

7 उसने एक राजगद्दी भवन[5] भी बनाया जहाँ वह न्याय करता था। इसे न्याय भवन[6] भी कहा जाता था। इस भवन के अंदर भी फर्श से लेकर छत की शहतीरों तक दीवारों पर देवदार के तख्ते लगाए गए।

8 उसने भवन के पीछे दूसरे आँगन[1] में अपने लिए एक महल बनाया। उसकी बनावट भी भवन जैसी थी। सुलैमान ने उस भवन के जैसा एक और महल फिरौन की बेटी के लिए बनाया जिससे उसने शादी की थी।[2]

9 सभी इमारतें ऐसे कीमती पत्थरों[3] से बनायी गयी थीं जिन्हें नाप के मुताबिक गढ़ा गया था और पत्थर के आरों से चारों तरफ से समतल किया गया था। सभी इमारतों की बुनियाद से लेकर दीवार के ऊपरी हिस्से तक के पत्थर, यहाँ तक कि मंदिर के बड़े आँगन[4] की दीवार में लगे पत्थर इसी तरह तैयार किए गए थे। **10** इमारतों की बुनियाद में लगाए गए पत्थर बहुत बड़े-बड़े और कीमती थे। कुछ पत्थर आठ हाथ लंबे थे तो कुछ दस हाथ लंबे। **11** इन पत्थरों के ऊपर ऐसे कीमती पत्थर लगाए गए जिन्हें नाप के मुताबिक गढ़ा गया था। साथ ही देवदार की लकड़ी का भी इस्तेमाल किया गया। **12** मंदिर के बड़े आँगन के चारों तरफ जो दीवार थी वह गढ़े हुए पत्थरों के तीन रद्दों और देवदार की शहतीरों की एक कतार से बनी थी, ठीक जैसे यहोवा के भवन और भवन के बरामदे[5] के भीतरी आँगन[6] के चारों तरफ की दीवार बनी थी।

13 राजा सुलैमान ने अपने आदमियों को सोर भेजकर हीराम[7] को बुलवाया। **14** हीराम की माँ नप्ताली गोत्र से थी और एक विधवा थी। हीराम का पिता सोर का रहनेवाला था और ताँबे का काम करता था।[8] हीराम को ताँबे* के हर तरह के काम की अच्छी समझ थी और

7:2 *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें। **7:5** *या "आयताकार।"

7:14 *या "काँसे।" इस अध्याय के आगे की आयतों में भी जहाँ "ताँबा" आता है, वह "काँसा" हो सकता है।

अध्य. 6
1 1इत 28:11, 12

अध्य. 7
2 1रा 9:10; सभ 2:4, 5
3 1रा 10:16, 17; यश 22:8
4 1रा 5:8
5 1रा 10:18; भज 122:2, 5
6 1रा 3:9, 28; नीत 20:8

दूसरा कॉल.
1 2रा 20:4
2 1रा 3:1; 1रा 9:24; 2इत 8:11
3 1रा 5:17
4 2इत 4:9
5 1रा 6:3
6 1रा 6:36; 2इत 4:9; 2इत 7:7
7 1रा 7:40; 2इत 2:13, 14
8 2इत 4:16

काफी तजुरबा था।[1] उसे इस काम में
महारत हासिल थी। इसलिए वह राजा
सुलैमान के पास आया और उसका सारा
काम किया।

15 उसने ताँबे के दो खंभे ढालकर
बनाए।[2] हर खंभे की ऊँचाई 18 हाथ
और गोलाई 12 हाथ थी।*[3] **16** उसने
दोनों खंभों के ऊपर लगाने के लिए
ताँबे के दो कंगूरे ढालकर बनाए। दोनों
कंगूरों की ऊँचाई पाँच-पाँच हाथ थी।
17 हर कंगूरे पर जालीदार काम किया
गया और उस पर गुंथी हुई ज़ंजीरें सजायी
गयीं। दोनों कंगूरों के लिए सात-सात
जालियाँ बनायी गयी थीं।[4] **18** उसने
हर कंगूरे के जालीदार काम पर दो कतारों
में अनार बनाए और इस तरह कंगूरे
को सजाया। **19** बरामदे के पासवाले
खंभों के कंगूरों का आकार सोसन के फूल
जैसा था जिनकी ऊँचाई चार हाथ थी।
20 कंगूरों के ये हिस्से दोनों खंभों के
ऊपर थे और उनका निचला हिस्सा उभरा
हुआ था जिस पर जालीदार काम किया
हुआ था। और हर कंगूरे पर चारों तरफ
कतारों में जो अनार बनाए गए थे उनकी
गिनती 200 थी।[5]

21 उसने मंदिर* के बरामदे के
बाहर ये खंभे खड़े किए।[6] उसने एक
खंभा दायीं# तरफ खड़ा किया और
उसे याकीन△ नाम दिया और दूसरा
खंभा बायीं⊠ तरफ खड़ा किया और
उसे बोअज़□ नाम दिया।[7] **22** खंभों के
ऊपर का आकार सोसन के फूल जैसा
था। इस तरह उसने खंभों का काम पूरा
किया।

23 इसके बाद उसने ताँबे का बड़ा
हौद ढालकर बनाया जिसे 'सागर' कहा
जाता था।[1] यह गोलाकार था और इसके
मुँह की चौड़ाई 10 हाथ थी और मुँह
के पूरे घेरे की लंबाई 30 हाथ थी।*
हौद की ऊँचाई 5 हाथ थी।[2] **24** हौद
के मुँह के नीचे, चारों तरफ दो कतारों
में खरबूजों की बनावट थी।[3] एक-एक
हाथ की जगह में दस-दस खरबूजे बने थे।
खरबूजों को हौद के साथ ही ढाला गया
था। **25** यह हौद ताँबे के 12 बैलों पर
रखा गया था,[4] 3 बैल उत्तर की तरफ मुँह
किए हुए थे, 3 पश्चिम की तरफ,
3 दक्षिण की तरफ और 3 पूरब की
तरफ। सभी बैलों का पिछला भाग अंदर
की तरफ था। इन बैलों पर हौद टिकाया
गया था। **26** हौद की दीवार की मोटाई
चार अंगुल* थी। उसके मुँह की बना-
वट प्याले के मुँह जैसी थी और यह
दिखने में खिले हुए सोसन के फूल जैसा
था। इस हौद में 2,000 बत# पानी भरा
जाता था।

27 फिर उसने ताँबे की दस हथ-
गाड़ियाँ* बनायीं।[5] हर गाड़ी की लंबाई
चार हाथ, चौड़ाई चार हाथ और
ऊँचाई तीन हाथ थी। **28** हथ-गाड़ियों
की बनावट इस तरह थी: इनकी दीवारें
पट्टियों से बनी थीं और ये पट्टियाँ चौखटों
के बीच थीं। **29** चौखटों के बीच पट्टियों

अध्य. 7
1 निर्ग 36:1
2 1रा 7:21
3 2रा 25:13, 17; 2इत 3:15; यिर्म 52:21
4 2रा 25:17; 2इत 4:12, 13
5 2रा 25:17; 2इत 3:16; यिर्म 52:22, 23
6 1रा 6:3; यहे 40:48
7 2इत 3:17

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 30:18; 2रा 25:13
2 2इत 4:2-5
3 1रा 6:18
4 यिर्म 52:20
5 2रा 25:16; यिर्म 52:17

7:15 *या "उसकी गोलाई नापने के लिए 12 हाथ लंबी नापने की डोरी लगती थी।" **7:21** *यहाँ पवित्र भाग की बात की गयी है। #या "दक्षिण की।" △मतलब "वह [यानी यहोवा] मज़बूती से कायम करे।" ⊠या "उत्तर की।" □शायद इसका मतलब है, "ताकत के साथ।"

7:23 *या "उसकी गोलाई नापने के लिए 30 हाथ लंबी नापने की डोरी लगती थी।" **7:26** *करीब 7.4 सें.मी. (2.9 इंच)। अति. ख14 देखें। #एक बत 22 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। **7:27** *या "पानी के ठेले।"

पर शेर,[1] बैल और करूब[2] बने हुए थे।
चौखटों पर भी यही बनावट थी। शेरों
और बैलों के ऊपर और नीचे लटक-
ती हुई फूल-मालाओं जैसी बनावट थी।
30 हर गाड़ी में ताँबे के चार पहिए
और ताँबे की धुरियाँ थीं। गाड़ी के चारों
कोनों पर चार पाए थे जिनमें धुरियाँ
और पहिए लगे थे। हौदी के नीचे टेक
थीं जिन पर फूल-मालाओं जैसी बना-
वट थी। यह बनावट टेक के साथ ढाली
गयी थी। **31** हौदी का मुहाना गाड़ी के
ऊपरी सिरे के अंदर था और ऊपर की
तरफ एक हाथ उठा हुआ था। गाड़ी का
मुहाना गोल था और टेक के साथ मिल-
कर डेढ़ हाथ ऊँचा था। इस मुहाने पर
नक्काशियाँ थीं। उनके चारों तरफ की
पट्टियाँ गोल नहीं चौकोर थी। **32** गाड़ी
की पट्टीदार दीवारों के नीचे चार पहिए
लगे थे और पहियों को अपनी जगह पर
बनाए रखने के लिए धुरियों में कीलें लगी
थीं। हर पहिए की ऊँचाई डेढ़ हाथ थी।
33 गाड़ी के पहिए रथ के पहिए जैसे थे।
पहियों की कीलें, उनके घेरे, तीलियाँ और
पहियों की नाभियाँ ढालकर बनायी गयी
थीं। **34** हर गाड़ी के चारों कोनों पर
चार पाए थे जो गाड़ी के साथ ही ढालकर
बनाए गए थे।* **35** गाड़ी के ऊपरी
सिरे में एक गोलाकार पट्टी थी जिसकी
ऊँचाई आधा हाथ थी। गाड़ी के सिरे पर
चौखटें और पट्टियाँ गाड़ी के साथ ही ढाली
गयी थीं।* **36** इन चौखटों और पट्टियों
पर जगह के हिसाब से करूब, शेर, खजूर
के पेड़ और चारों तरफ फूल-मालाओं
जैसी बनावट थी।[3] **37** उसने दसों हथ-
गाड़ियाँ इसी तरीके से बनायीं,[4] वे सभी
एक ही नमूने पर ढाली गयी थीं।[5] सारी
गाड़ियाँ एक ही नाप और एक ही आकार
की थीं।

38 उसने ताँबे की दस हौदियाँ
बनायीं।[1] हर हौदी में 40 बत पानी भरा
जा सकता था। हर हौदी का माप चार
हाथ था।* दस हथ-गाड़ियों में से हर
गाड़ी के लिए एक हौदी थी। **39** उसने
पाँच हथ-गाड़ियाँ भवन के दायीं तरफ
खड़ी कीं और पाँच बायीं तरफ। उसने
पानी के बड़े हौद यानी 'सागर' को भवन
के दायीं तरफ दक्षिण-पूर्व में रखा।[2]

40 हीराम[3] ने बड़े-बड़े बरतन,
बेलचे[4] और कटोरे[5] भी बनाए।

इस तरह उसने यहोवा के भवन के
लिए वह सारा काम पूरा किया जो
राजा सुलैमान ने उसे दिया था।[6] उसने
यह सब बनायाः **41** दो खंभे[7] और
उनके ऊपर दो कटोरानुमा कंगूरे, कंगूरों
की सजावट के लिए दो-दो जालीदार
काम,[8] **42** दोनों जालीदार काम के
लिए 400 अनार,[9] यानी हर जालीदार
काम के लिए दो कतारों में अनार जिससे
दोनों खंभों पर कटोरानुमा कंगूरे ढक
जाएँ, **43** दस हौदियाँ[10] और उन्हें ढोने
के लिए दस हथ-गाड़ियाँ,[11] **44** पानी
का बड़ा हौद[12] और उसके नीचे 12 बैल,
45 हंडियाँ, बेलचे, कटोरे और बाकी
सारी चीज़ें। हीराम ने राजा सुलैमान के
कहे मुताबिक यहोवा के भवन के लिए
यह सब झलकाए हुए ताँबे से तैयार
किया। **46** राजा ने ये सारी चीज़ें यर-
दन ज़िले में सुक्कोत और सारतान के
बीच मिट्टी के साँचे में ढलवाकर बनवायीं।

47 सुलैमान ने इनमें से किसी भी
चीज़ का वज़न नहीं करवाया क्योंकि
इनकी तादाद बहुत ज़्यादा थी। इसलिए

7:34 *या "एक ही टुकड़े के बने थे।"
7:35 *या "एक ही टुकड़े की बनी थीं।"
7:38 *या "चौड़ाई चार हाथ थी।"

अध्य. 7
1 यहे 41:19
2 उत 3:24; निर्ग 25:18; 1रा 6:27; 2इत 3:7; यहे 41:17, 18
3 1रा 6:29; 1रा 6:32
4 1रा 7:27
5 1रा 7:15, 46; 2इत 4:3

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 30:18
2 2इत 4:6, 10
3 1रा 7:13; 2इत 2:13
4 निर्ग 27:3; 2रा 25:14
5 निर्ग 24:6
6 2इत 4:11-17
7 1रा 7:15
8 1रा 7:17
9 1रा 7:20
10 1रा 7:38
11 1रा 7:27
12 1रा 7:23

यह मालूम न हो सका कि कितना ताँबा इस्तेमाल हुआ था।[1] 48 सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिए ये सारी चीज़ें बनवायीं: सोने की वेदी,[2] नज़राने की रोटी रखने के लिए सोने की मेज़,[3] 49 शुद्ध सोने की दीवटें,[4] पाँच भीतरी कमरे के सामने दायीं तरफ के लिए और पाँच बायीं तरफ के लिए, दीवटों पर सोने की पंखुड़ियाँ,[5] सोने के दीए, सोने के चिमटे,[6] 50 शुद्ध सोने के बड़े-बड़े कटोरे, बाती बुझाने के लिए कैंचियाँ,[7] कटोरियाँ, प्याले[8] और आग उठाने के करछे,[9] भीतरी कमरे यानी परम-पवित्र भाग के दरवाज़ों[10] की चूलों के खाने और मंदिर यानी पवित्र भाग के दरवाज़ों[11] की चूलों के खाने। उसने ये सारी चीज़ें सोने की बनवायीं।

51 इस तरह राजा सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिए वह सारा काम पूरा किया जो उसे करना था। इसके बाद सुलैमान वह सारी चीज़ें भवन में ले आया जो उसके पिता दाविद ने पवित्र ठहरायी थीं।[12] उसने सोना, चाँदी और बाकी सारी चीज़ें यहोवा के भवन के खज़ानों में रख दीं।[13]

8 तब सुलैमान ने इसराएल के सभी अगुवों को, यानी सभी गोत्रों के मुखियाओं और पिताओं के घरानों के प्रधानों को यरूशलेम बुलवाया[14] ताकि वे दाविदपुर यानी सिय्योन[15] से यहोवा के करार का संदूक ले आएँ।[16] तब वे सभी यरूशलेम में राजा सुलैमान के पास आए। 2 इसराएल के सभी आदमी, एतानीम* नाम के सातवें महीने में त्योहार# के समय राजा सुलैमान के सामने इकट्ठा हुए।[1] 3 जब इसराएल के सारे अगुवे आए तो याजकों ने करार का संदूक उठाया।[2] 4 याजक और लेवी यहोवा के करार का संदूक, भेंट का तंबू[3] और उसमें रखी सारी पवित्र चीज़ें ले आए। 5 राजा सुलैमान और इसराएल की पूरी मंडली, जिसे उसने बुलवाया था, करार के संदूक के सामने हाज़िर थे। इतनी तादाद में भेड़ों और गाय-बैलों की बलि चढ़ायी गयी[4] कि उनकी गिनती नहीं की जा सकती थी।

6 फिर याजक यहोवा के करार का संदूक उस जगह ले आए जो उसके लिए बनायी गयी थी।[5] वे उसे भवन के भीतरी कमरे यानी परम-पवित्र भाग में ले आए और उसे करूबों के पंखों के नीचे रख दिया।[6]

7 इस तरह करूबों के पंख उस जगह के ऊपर फैले हुए थे जहाँ संदूक रखा गया था और करूब, संदूक और उसके डंडों पर छाया किए हुए थे।[7] 8 संदूक के डंडे[8] इतने लंबे थे कि उनके सिरे पवित्र भाग से दिखते थे जो भीतरी कमरे के सामने था। मगर डंडों के सिरे बाहर से नहीं दिखायी देते थे। आज तक ये चीज़ें वहीं रखी हुई हैं। 9 संदूक में पत्थर की दो पटियाओं[9] को छोड़ और कुछ नहीं था जो मूसा ने उसके अंदर रखी थीं।[10] मूसा ने ये पटियाएँ होरेब में उस वक्त रखी थीं जब यहोवा ने इसराएलियों के साथ उनके मिस्र से निकलकर आते वक्त एक करार किया था।[11]

10 जब याजक पवित्र जगह से बाहर निकल आए तो यहोवा का भवन बादल[12] से भर गया।[13] 11 बादल की वजह से याजक वहाँ खड़े होकर सेवा नहीं कर पाए क्योंकि यहोवा का भवन यहोवा

8:2 *अति. ख15 देखें। #यानी छप्परों के त्योहार।

अध्य. 7
1 1इत 22:14, 16; 2इत 4:18-22
2 निर्ग 37:25
3 निर्ग 37:10
4 निर्ग 37:17; प्रक 1:20
5 1रा 6:18
6 निर्ग 37:23
7 यिर्म 52:18
8 निर्ग 25:29
9 लैव 16:12
10 1रा 6:31
11 1रा 6:33
12 2शम 8:10-12
13 2इत 5:1

अध्य. 8
14 2इत 5:2, 3; सभ 1:1
15 2शम 5:7; 1इत 11:5
16 2शम 6:17

दूसरा कॉल.
1 लैव 23:34; व्य 16:13
2 1इत 15:2, 15; 2इत 5:4-6
3 निर्ग 40:2; 2इत 1:13
4 1इत 16:1
5 निर्ग 26:33; निर्ग 40:21; 2शम 6:17; प्रक 11:19
6 1रा 6:27; 2इत 5:7; भज 80:1; यहे 10:5
7 निर्ग 25:20; 2इत 5:8-10
8 निर्ग 25:14; निर्ग 37:4
9 व्य 4:13; इब्र 9:4
10 निर्ग 40:20; व्य 10:5
11 निर्ग 19:1; निर्ग 24:8; गि 10:11, 12
12 निर्ग 40:34; लैव 16:2
13 2इत 5:11-14

की महिमा से भर गया था।[1] **12** उस वक्त सुलैमान ने कहा, “यहोवा ने कहा था कि वह घने बादलों में निवास करेगा।[2] **13** मैं तेरे लिए एक शानदार भवन, एक मज़बूत भवन बनाने में कामयाब हो गया ताकि तू सदा इसमें निवास करे।”[3]

14 फिर राजा इसराएल की पूरी मंडली की तरफ मुड़ा जो वहाँ खड़ी थी और लोगों को आशीर्वाद देने लगा।[4] **15** उसने कहा, “इसराएल के परमेश्वर यहोवा की तारीफ हो। उसने अपने मुँह से जो वादा किया था उसे आज अपने हाथों से पूरा किया है। उसने मेरे पिता दाविद से कहा था, **16** ‘जिस दिन मैं अपनी प्रजा इसराएल को मिस्र से निकाल लाया था, उस दिन से लेकर अब तक मैंने इसराएल के किसी भी गोत्र के इलाके में कोई शहर नहीं चुना कि वहाँ मेरे नाम की महिमा के लिए कोई भवन बनाया जाए।[5] मगर मैंने दाविद को अपनी प्रजा इसराएल पर राज करने के लिए चुना है।’ **17** मेरे पिता दाविद की दिली तमन्ना थी कि वह इसराएल के परमेश्वर यहोवा के नाम की महिमा के लिए एक भवन बनाए।[6] **18** मगर यहोवा ने मेरे पिता दाविद से कहा, ‘यह अच्छी बात है कि तू मेरे नाम की महिमा के लिए एक भवन बनाने की दिली तमन्ना रखता है। **19** पर तू मेरे लिए भवन नहीं बनाएगा बल्कि तेरा अपना बेटा, जो तुझसे पैदा होगा, वह मेरे नाम की महिमा के लिए एक भवन बनाएगा।’[7] **20** यहोवा ने अपना यह वादा पूरा किया है क्योंकि मैं अपने पिता दाविद के बाद राजा बना हूँ और इसराएल की राजगद्दी पर बैठा हूँ, ठीक जैसे यहोवा ने वादा किया था। और मैंने इसराएल के परमेश्वर यहोवा के नाम की महिमा के लिए भवन भी बनाया है।[1] **21** इस भवन में मैंने उस संदूक के लिए जगह तैयार की है जिसमें करार की पटियाएँ हैं।[2] यहोवा ने यह करार हमारे पुरखों के साथ उस समय किया था जब वह उन्हें मिस्र से निकालकर ला रहा था।”

22 फिर सुलैमान इसराएल की पूरी मंडली के देखते यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ और उसने आसमान की तरफ अपने हाथ फैलाकर यह प्रार्थना की:[3] **23** “हे इसराएल के परमेश्वर यहोवा, तेरे जैसा परमेश्वर कोई नहीं,[4] न ऊपर आसमान में न नीचे धरती पर। तू हमेशा अपना करार पूरा करता है और अपने उन सेवकों से प्यार* करता है[5] जो तेरे सामने पूरे दिल से सही राह पर चलते हैं।[6] **24** तूने अपना वह वादा पूरा किया है जो तूने अपने सेवक, मेरे पिता दाविद से किया था। तूने खुद अपने मुँह से यह वादा किया था और आज उसे अपने हाथों से पूरा भी किया।[7] **25** अब हे इसराएल के परमेश्वर यहोवा, तू अपना यह वादा भी पूरा करना जो तूने अपने सेवक, मेरे पिता दाविद से किया था: ‘अगर तेरे बेटे तेरी तरह मेरे सामने सही राह पर चलते रहेंगे और इस तरह अपने चालचलन पर ध्यान देंगे, तो ऐसा कभी नहीं होगा कि मेरे सामने इसराएल की राजगद्दी पर बैठने के लिए तेरे वंश का कोई आदमी न हो।’[8] **26** हे इसराएल के परमेश्वर, मेहरबानी करके तू अपना यह वादा पूरा करना जो तूने अपने सेवक, मेरे पिता दाविद से किया था।

27 लेकिन क्या परमेश्वर वाकई धरती पर निवास करेगा?[9] देख, तू तो आकाश में, हाँ, विशाल आकाश में भी

8:23 * या “अटल प्यार।”

अध्य. 8
1 निर्ग 40:35, यहे 10:4, यहे 43:4, यहे 44:4, प्रेष 7:55, प्रक 21:23
2 निर्ग 20:21, व्य 5:22, 2इत 6:1, 2, भज 18:11, भज 97:2
3 भज 78:69, भज 132:13, 14
4 2इत 6:3-11
5 व्य 12:11
6 2शम 7:1-3, 1इत 17:1, 2
7 2शम 7:12, 13

दूसरा कॉल.
1 1इत 28:5, 6
2 निर्ग 34:28, व्य 9:9, व्य 31:26
3 2इत 6:12
4 निर्ग 15:11, 1शम 2:2, 2शम 7:22
5 व्य 7:9
6 2इत 6:14-17
7 2शम 7:12, 13
8 1रा 2:4, भज 132:12
9 यश 66:1

नहीं समा सकता।[1] फिर यह भवन क्या है जो मैंने बनाया है, कुछ भी नहीं![2] **28** हे मेरे परमेश्वर यहोवा, आज तेरा यह सेवक तेरे सामने जो प्रार्थना कर रहा है उस पर ध्यान दे, उसकी कृपा की बिनती सुन। तू उसकी मदद की पुकार सुन और उसकी प्रार्थना स्वीकार कर। **29** तूने इस भवन के बारे में कहा था कि इससे तेरा नाम जुड़ा रहेगा,[3] इसलिए तेरी आँखें दिन-रात इस भवन पर लगी रहें और जब तेरा सेवक इस भवन की तरफ मुँह करके प्रार्थना करे तो तू उस पर ध्यान देना।[4] **30** जब तेरा यह सेवक और तेरी प्रजा इसराएल के लोग इस जगह की तरफ मुँह करके तुझसे कृपा की बिनती करें तो तू उनकी सुनना, अपने निवास-स्थान स्वर्ग से उनकी सुनना।[5] तू उनकी फरियाद सुनना और उनके पाप माफ करना।[6]

31 अगर एक आदमी का संगी-साथी उस पर इलज़ाम लगाए कि तूने मेरे साथ गलत किया है और उसे शपथ धरायी जाती है* और वह आदमी शपथ की वजह से इस भवन में तेरी वेदी के सामने आए,[7] **32** तो तू स्वर्ग से सुनकर कार्रवाई करना। तू अपने सेवकों का न्याय करना, उनमें से जो दुष्ट है उसे दोषी* ठहराना और उसे उसके किए की सज़ा देना और जो नेक है उसे बेकसूर# ठहराना और उसकी नेकी के मुताबिक उसे फल देना।[8]

33 अगर तेरी प्रजा इसराएल तेरे खिलाफ पाप करते रहने की वजह से दुश्मन से युद्ध हार जाए[1] और वह बाद में तेरे पास लौट आए, तेरे नाम की महिमा करे[2] और इस भवन में आकर तुझसे प्रार्थना करे और रहम की भीख माँगे,[3] **34** तो तू स्वर्ग से अपनी प्रजा इसराएल के लोगों की बिनती सुनना और उनके पाप माफ करना। तू उन्हें इस देश में लौटा ले आना जो तूने उनके पुरखों को दिया था।[4]

35 अगर उनके पाप करते रहने की वजह से आकाश के झरोखे बंद हो जाएँ और बारिश न हो[5] और तू उन्हें नम्रता का सबक सिखाए* और इस वजह से वे इस जगह की तरफ मुँह करके प्रार्थना करें, तेरे नाम की महिमा करें और पाप की राह से पलटकर लौट आएँ,[6] **36** तो तू स्वर्ग से अपनी प्रजा इसराएल की सुनना और अपने सेवकों के पाप माफ करना क्योंकि तू उन्हें सही राह के बारे में सिखाएगा[7] जिस पर उन्हें चलना चाहिए और अपने इस देश पर बारिश करेगा[8] जिसे तूने अपने लोगों को विरासत में दिया है।

37 अगर देश में अकाल पड़े[9] या महामारी फैले या फसलों पर झुलसन, बीमारी,[10] दलवाली टिड्डियों या भूखी टिड्डियों का कहर टूटे या कोई दुश्मन आकर देश के किसी शहर* को घेर ले या देश में कोई बीमारी फैले या किसी और तरह की मुसीबत आए[11] **38** और ऐसे में एक आदमी या तेरी प्रजा इसराएल के सब लोग इस भवन की तरफ हाथ फैलाकर तुझसे कृपा की बिनती करें[12] (क्योंकि हर कोई अपने मन की पीड़ा जानता है),[13] **39** तो तू अपने निवास-स्थान स्वर्ग से उनकी सुनना,[14] उन्हें माफ

8:31 *या "संगी-साथी उसे शाप देता है।" यानी ऐसी शपथ जिसमें उस इंसान को शाप मिलता था जो झूठी शपथ खाता है या अपनी शपथ पूरी नहीं करता। **8:32** *शा., "दुष्ट।" #शा., "नेक।"

8:35 *या "दुख दे।" **8:37** *शा., "उसके फाटकों के देश।"

अध्य. 8
1 भज 148:13; यिर्म 23:24
2 2इत 2:6; 2इत 6:18-21; नहे 9:6; प्रेष 17:24
3 निर्ग 20:24; 2शम 7:13
4 दान 6:10; 1पत 3:12
5 भज 33:13
6 2इत 7:13, 14; दान 9:19
7 2इत 6:22, 23
8 अय 34:11

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:14, 17; यह 7:8, 11; 2रा 17:6, 7
2 नहे 1:11
3 2रा 19:19, 20; 2इत 6:24, 25
4 भज 106:47
5 लैव 26:19; व्य 28:23; यहे 14:13
6 2इत 6:26, 27
7 यश 30:20; यश 54:13
8 1रा 18:1
9 लैव 26:16; 2रा 6:25
10 व्य 28:21, 22; आम 4:9
11 2इत 6:28-31
12 2इत 33:12, 13
13 नीत 14:10
14 यश 63:15

करना[1] और कदम उठाना। तू उनमें से
हरेक को उसके कामों के हिसाब से फल
देना[2] क्योंकि तू हरेक का दिल जानता है
(सिर्फ तू ही सही मायनों में जानता है कि
हर इंसान का दिल कैसा है)।[3] 40 तब
वे जब तक इस देश में रहेंगे, जो तूने
हमारे पुरखों को दिया था, तेरा डर मानते
रहेंगे।

41 अगर कोई परदेसी, जो तेरी
प्रजा इसराएल में से नहीं है, तेरे नाम
के बारे में सुनकर दूर देश से आता है[4]
42 (क्योंकि परदेसी तेरे महान नाम के
बारे में सुनेंगे[5] और यह भी कि तूने
कैसे अपना शक्तिशाली हाथ बढ़ाकर
बड़े-बड़े काम किए थे) और इस भवन
की तरफ मुँह करके प्रार्थना करता है,
43 तो तू अपने निवास-स्थान स्वर्ग से
उसकी सुनना[6] और उसके लिए वह सब
करना जिसकी वह गुज़ारिश करता है
ताकि धरती के सब देशों के लोग तेरा
नाम जानें और तेरा डर मानें,[7] जैसे तेरी
इसराएली प्रजा तेरा डर मानती है और
वे जानें कि यह भवन जो मैंने बनाया है,
इससे तेरा नाम जुड़ा है।

44 जब तू अपने लोगों को दुश्मन से
लड़ने कहीं भेजे[8] और वे तेरे चुने हुए
शहर की तरफ[9] और इस भवन की तरफ
मुँह करके, जो मैंने तेरे नाम की महिमा
के लिए बनाया है, तुझ यहोवा से प्रार्थना
करें,[10] 45 तो तू स्वर्ग से उनकी प्रार्थना
और उनकी कृपा की बिनती सुनना और
उन्हें न्याय दिलाना।

46 अगर वे तेरे खिलाफ पाप करें
(क्योंकि ऐसा कोई भी इंसान नहीं जो
पाप न करता हो)[11] और तू क्रोध
से भरकर उन्हें दुश्मनों के हवाले कर दे
और दुश्मन उन्हें बंदी बनाकर अपने
देश ले जाएँ, फिर चाहे वह पास का
देश हो या दूर का[1] 47 और वहाँ जाने
के बाद जब उन्हें अपनी गलती का एह-
सास हो[2] और वे बँधुआई के देश में
रहते तेरे पास लौट आएँ[3] और तुझसे
रहम की भीख माँगें[4] और कहें, 'हमने
पाप किया है, हमने गुनाह किया है,
दुष्टता का काम किया है'[5] 48 और वे
दुश्मनों के देश में रहते पूरे दिल और पूरी
जान से तेरे पास लौट आएँ[6] और अपने
इस देश की तरफ मुँह करके तुझसे
प्रार्थना करें जो तूने उनके पुरखों को
दिया था और तेरे चुने हुए शहर की
तरफ और इस भवन की तरफ, जो मैंने
तेरे नाम की महिमा के लिए बनाया है,
मुँह करके प्रार्थना करें[7] 49 तो तू अपने
निवास-स्थान स्वर्ग से उनकी प्रार्थना
और कृपा की बिनती सुनना[8] और उन्हें
न्याय दिलाना। 50 तू अपने लोगों के
पाप और उनके सारे अपराध माफ कर
देना जो उन्होंने तेरे खिलाफ किए होंगे।
तू उनके दुश्मनों को उन पर दया करने
के लिए उभारना और तब दुश्मन उन
पर दया करेंगे[9] 51 (क्योंकि वे तेरे
अपने लोग और तेरी विरासत हैं[10]
जिन्हें तू मिस्र से, लोहा पिघलानेवाले
भट्ठे से निकालकर लाया था)।[11]
52 जब भी तेरा यह सेवक और तेरी
प्रजा इसराएल तुझसे कृपा की बिनती
करें तो तू उनकी सुनना,[12] वे जब भी तुझे
पुकारें* तू उनकी तरफ कान लगाना[13]
53 क्योंकि हे सारे जहान के मालिक
यहोवा, तूने उन्हें धरती के सभी लोगों
से अलग किया और उन्हें अपनी विरा-
सत बनाया,[14] ठीक जैसे तूने अपने सेवक
मूसा से उस वक्त ऐलान करवाया था जब
तू हमारे पुरखों को मिस्र से निकालकर ला
रहा था।"

अध्य. 8

1 भज 130:4
2 अय 34:11
भज 18:20
3 1शम 16:7
1इत 28:9
यिर्म 17:10
4 गि 9:14
रूत 1:16
2रा 5:15
2इत 6:32, 33
यश 56:6, 7
प्रेष 8:27
5 नहे 9:10
6 भज 11:4
7 भज 67:2
भज 102:15
8 निर्ग 23:31
1रा 20:13
9 भज 78:68
भज 132:13
10 2इत 6:34, 35
2इत 14:11
2इत 20:5, 6
11 भज 51:5
भज 130:3
सभ 7:20
रोम 3:23
1यूह 1:8

दूसरा कॉल.

1 व्य 28:15, 36
2रा 17:6
2रा 25:21
2इत 6:36-39
2 लैव 26:40
3 व्य 30:1, 2
4 व्य 4:27, 29
2इत 33:12, 13
5 नहे 1:6
भज 106:6
नीत 28:13
दान 9:5
6 1शम 7:3
7 दान 6:10
8 यश 63:15
9 2इत 30:9
एज 7:28
नहे 2:7, 8
10 निर्ग 19:5
व्य 9:26
11 निर्ग 14:30
व्य 4:20
12 2इत 6:40
13 भज 86:5
भज 145:18
14 निर्ग 19:6
व्य 4:34
व्य 32:9

8:52 *या "जो कुछ तुझसे माँगें।"

54 जब सुलैमान यहोवा से प्रार्थना
और कृपा की बिनती कर चुका तो वह
यहोवा की वेदी के सामने से उठा, जहाँ
वह घुटने टेके और स्वर्ग की तरफ हाथ
फैलाए प्रार्थना कर रहा था।[1] 55 फिर
उसने खड़े होकर बुलंद आवाज़ में इस-
राएल की पूरी मंडली को यह आशीर्वाद
दिया: 56 “यहोवा की बड़ाई हो, जिसने
अपने वादे के मुताबिक अपनी प्रजा इस-
राएल को विश्राम की जगह दी है।[2]
उसने अपने सेवक मूसा के ज़रिए जितने
भी वादे किए थे, वे सब-के-सब पूरे हुए,
एक भी वादा बिना पूरा हुए नहीं रहा।[3]
57 हमारा परमेश्वर यहोवा हमारे साथ
रहे, ठीक जैसे वह हमारे पुरखों के साथ
रहा था।[4] वह हमें कभी न छोड़े न कभी
त्यागे।[5] 58 वह हमारे दिलों को अपनी
तरफ खींचे[6] ताकि हम उसकी सभी राहों
पर चलें और उसकी आज्ञाओं, उसके
कायदे-कानूनों और न्याय-सिद्धांतों का
पालन करें जो उसने हमारे पुरखों को दिए
थे। 59 अब तक मैंने यहोवा से दया
के लिए जो-जो बिनतियाँ कीं, उन्हें हमारा
परमेश्वर यहोवा दिन-रात याद रखे ताकि
वह अपने इस सेवक को और अपनी
प्रजा इसराएल को हर दिन उठनेवाले
हालात के मुताबिक न्याय दिलाता रहे
60 जिससे धरती के सब देशों के लोग
जानें कि यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है,[7]
उसके सिवा कोई और परमेश्वर नहीं![8]
61 इसलिए जैसे आज तुम्हारा दिल पूरी
तरह हमारे परमेश्वर यहोवा पर लगा है
उसी तरह हमेशा लगा रहे[9] और तुम सब
उसके कायदे-कानून और उसकी आज्ञाएँ
मानते रहना।”

62 फिर राजा और पूरे इसराएल ने
यहोवा के सामने बड़ी तादाद में बलिदान
चढ़ाए।[10] 63 सुलैमान ने यहोवा के
लिए 22,000 बैलों और 1,20,000
भेड़ों की शांति-बलियाँ चढ़ायीं।[1] इस
तरह राजा और पूरे इसराएल ने यहोवा
के भवन का उद्‌घाटन किया।[2] 64 उस
दिन राजा ने यहोवा के भवन के
सामनेवाले आँगन के बीच का हिस्सा
पवित्र ठहराया क्योंकि वहाँ पर उसे
होम-बलियाँ, अनाज के चढ़ावे और
शांति-बलियों की चरबी चढ़ानी थी।
उसने ये सारे बलिदान वहाँ इसलिए
चढ़ाए क्योंकि यहोवा के सामने जो ताँबे
की वेदी[3] थी, वह इतनी तादाद में होम-
बलियों, अनाज के चढ़ावों और शांति-
बलियों की चरबी[4] चढ़ाने के लिए छोटी
पड़ जाती। 65 इस मौके पर सुलैमान
ने इसराएलियों की एक बड़ी भीड़ के
साथ मिलकर हमारे परमेश्वर यहोवा के
सामने त्योहार मनाया।[5] इस भीड़ में
लेबो-हमात* से लेकर मिस्र घाटी#[6] तक
के सारे लोग शामिल थे। सुलैमान ने
उन सबके साथ मिलकर 7 दिन त्योहार
मनाया। इसके बाद उन्होंने 7 दिन और
त्योहार मनाया। कुल मिलाकर 14 दिन
तक यह चलता रहा। 66 अगले* दिन
राजा ने लोगों को विदा किया और
उन्होंने राजा को आशीर्वाद दिया। यहोवा
ने अपने सेवक दाविद और अपनी प्रजा
इसराएल की खातिर जो भलाई की थी,
उससे उनका दिल खुशी से उमड़ रहा था[7]
और वे सब आनंद मनाते हुए अपने-
अपने घर लौटे।

9 जब सुलैमान ने यहोवा का भवन,
अपना राजमहल और जो कुछ वह
बनाना चाहता था वह सब बनाने का

अध्य. 8
1 2इत 6:12, 13
2 1रा 4:24, 25
3 व्य 10:11, यह 21:45
4 व्य 31:6, यह 1:5, 2इत 32:7, भज 46:7
5 यश 41:10, इब्र 13:5
6 भज 86:11, भज 119:36, 2थि 3:5
7 यह 4:24, 1शम 17:46, यहे 36:23, यहे 39:7
8 व्य 4:35, 39, यश 44:6
9 व्य 18:13, 2रा 20:3, 1इत 28:9, मत 22:37
10 2इत 7:4, 5

दूसरा कॉल.
1 लैव 3:1
2 एज 6:16, नहे 12:27
3 2इत 4:1
4 लैव 3:16
5 लैव 23:34
6 उत 15:18, गि 34:5, 8
7 भज 31:19, यश 63:7, यिर्म 31:12

8:65 *या “हमात के प्रवेश।” #शब्दावली देखें। 8:66 *शा., “आठवें,” यानी उन्होंने जो 7 दिन और त्योहार मनाया था, उसका अगला दिन।

काम पूरा किया,[1] तो इसके फौरन बाद **2** यहोवा ने उसे दूसरी बार दर्शन दिया, जैसे उसने गिबोन में उसे दर्शन दिया था।[2] **3** यहोवा ने दर्शन में उससे कहा, “तूने मुझसे जो प्रार्थना और कृपा की बिनती की है वह मैंने सुनी है। मैंने इस भवन के साथ, जिसे तूने बनाया है, अपना नाम हमेशा के लिए जोड़ा है और इस तरह इसे पवित्र ठहराया है।[3] मेरी आँखें हमेशा इस पर लगी रहेंगी और यह भवन सदा मेरे दिल के करीब रहेगा।[4] **4** और अगर तू वह सब करेगा जिसकी मैंने तुझे आज्ञा दी है[5] और मेरे नियम और न्याय-सिद्धांत मानेगा और इस तरह अपने पिता दाविद की तरह मेरे सामने सीधाई[6] से और निर्दोष मन[7] से चलेगा,[8] **5** तो मैं इसराएल पर तेरी राजगद्दी हमेशा के लिए कायम रखूँगा, ठीक जैसे मैंने तेरे पिता दाविद से यह वादा किया था, ‘ऐसा कभी नहीं होगा कि इसराएल की राजगद्दी पर बैठने के लिए तेरे वंश का कोई आदमी न हो।’[9] **6** लेकिन अगर तू और तेरे वंशज मुझसे मुँह फेरकर मेरे पीछे चलना छोड़ देंगे और मेरी आज्ञाओं और विधियों को मानना छोड़ देंगे जो मैंने तुझे दी हैं और जाकर पराए देवताओं की पूजा करेंगे और उन्हें दंडवत करेंगे,[10] **7** तो मैं इसराएल को इस देश में से मिटा दूँगा जो मैंने उसे दिया है[11] और इस भवन को, जिसे मैंने अपने नाम की महिमा के लिए पवित्र ठहराया है, अपनी नज़रों से दूर कर दूँगा।[12] तब इसराएल सब देशों में मज़ाक* बनकर रह जाएगा, उसकी बरबादी देखकर सब हँसेंगे।[13] **8** और यह भवन मलबे का ढेर हो जाएगा।[14] इसके पास से गुज़रनेवाला हर कोई इसे फटी आँखों से देखता रह जाएगा और मज़ाक उड़ाते हुए सीटी बजाएगा और कहेगा, ‘यहोवा ने इस देश की और इस भवन की ऐसी हालत क्यों कर दी?’[1] **9** फिर वे कहेंगे, ‘वह इसलिए कि उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया जो उनके पुरखों को मिस्र से निकाल लाया था और उन्होंने दूसरे देवताओं को अपना लिया और वे उन्हें दंडवत करके उनकी सेवा करने लगे। इसीलिए यहोवा उन पर यह संकट ले आया।’”[2]

10 सुलैमान को यहोवा का भवन और राजमहल बनाने में पूरे 20 साल लगे।[3] इसके बाद **11** राजा सुलैमान ने सोर के राजा हीराम[4] को गलील प्रांत के 20 शहर तोहफे में दिए क्योंकि हीराम ने उसे देवदार और सनोवर की लकड़ी दी थी और सुलैमान ने उससे जितना सोना माँगा था उतना उसने दिया था।[5] **12** हीराम, सोर से उन शहरों को देखने गया जो सुलैमान ने उसे दिए थे, मगर वे शहर उसे पसंद नहीं आए।* **13** उसने सुलैमान से कहा, “मेरे भाई, ये कैसे शहर दिए हैं तूने?” इसलिए उन शहरों को काबूल देश* कहा गया और आज तक वे इसी नाम से जाने जाते हैं। **14** हीराम ने राजा सुलैमान के लिए 120 तोड़े* सोना भेजा था।[6]

15 यह उन लोगों के कामों का ब्यौरा है जिन्हें राजा सुलैमान ने जबरन मज़दूरी पर लगाया था।[7] उन्होंने यहोवा का भवन,[8] सुलैमान का राजमहल, टीला,*[9]

9:7 *शा., “कहावत।”

9:12 *शा., “वे उसकी नज़रों में सही नहीं थे।” **9:13** *या शायद, “न के बराबर देश।” **9:14** *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें। **9:15** *या “मिल्लो।” इस इब्रानी शब्द का मतलब “भरना” है।

अध्य. 9
1 2इत 7:11, 2इत 8:1, सभ 2:4
2 1रा 3:5
3 व्य 12:5, 6, 1रा 8:28, 29
4 2इत 6:40, 2इत 16:9, भज 132:13
5 सभ 12:13
6 1इत 29:17
7 भज 78:70, 72
8 1रा 3:6, 2इत 7:17, 18
9 2शम 7:16, 17, 1रा 2:4, भज 89:20, 29
10 1रा 11:4, 2इत 7:19-22
11 लैव 18:28, व्य 4:26, 2शम 7:14, 2रा 17:22, 23, भज 89:30-32
12 2रा 25:9, 10, 2इत 15:2
13 व्य 28:37, भज 44:14
14 2इत 36:19, यश 64:11

दूसरा कॉल.
1 व्य 29:24, 25, यिर्म 22:8, 9
2 व्य 28:64, यिर्म 5:19, यिर्म 12:7
3 1रा 6:37–7:1, 2इत 8:1, 2
4 1रा 5:1, 7
5 1रा 5:8
6 1रा 10:21
7 1रा 4:6, 1रा 5:13
8 1रा 6:37
9 2शम 5:9, 1रा 11:27, 2रा 12:20

यरूशलेम की शहरपनाह, साथ ही हासोर,[1] मगिद्दो[2] और गेजेर शहर[3] बनाए। 16 (मिस्र के राजा फिरौन ने आकर गेजेर पर कब्ज़ा कर लिया था और उसे आग से फूँक दिया था। उसने शहर में रहनेवाले कनानियों[4] को भी मार डाला था। उसने यह शहर अपनी बेटी यानी सुलैमान की पत्नी को विदाई के वक्त तोहफे* में दिया था।)[5] 17 सुलैमान ने गेजेर, निचला बेत-होरोन[6] और 18 बालात,[7] साथ ही तामार शहर बनाया* जो इसराएल देश के वीराने में आता है। 19 इसके अलावा, सुलैमान ने अपने सभी गोदामवाले शहर, रथों के शहर[8] और घुड़सवारों के लिए शहर बनाए और यरूशलेम और लबानोन में और अपने राज्य के पूरे इलाके में वह जो-जो बनाना चाहता था वह सब उसने बनाया। 20 एमोरियों, हित्तियों, परिज्जियों, हिव्वियों और यबूसियों में से बचे हुए लोग,[9] जो इसराएल की प्रजा नहीं थे[10] 21 और जिन्हें इसराएली नाश नहीं कर पाए थे, उनके वंशज इसराएल देश में रहते थे। सुलैमान ने इन लोगों को गुलाम बनाकर जबरन मज़दूरी में लगा दिया और आज तक वे यही काम करते हैं।[11] 22 मगर सुलैमान ने किसी भी इसराएली को गुलाम नहीं बनाया।[12] वे तो उसके योद्धा, उसके अधिकारी, हाकिम, सहायक सेना-अधिकारी और सारथियों और घुड़सवारों के प्रधान थे। 23 सुलैमान के काम की निगरानी करनेवाले अधिकारियों की गिनती 550 थी। उन्हें कर्मचारियों पर अधिकार दिया गया था।[13]

9:16 *या "शादी के तोहफे; दहेज।"
9:18 *या "मज़बूत किया।"

अध्य. 9

1 यह 19:32, 36
2 यह 17:11, न्या 5:19, 2रा 9:27
3 न्या 1:29
4 यह 16:10
5 1रा 3:1
6 यह 16:1, 3, 2इत 8:4-6
7 यह 19:44, 48
8 1रा 4:26
9 गि 13:29, व्य 7:1, न्या 1:21
10 2इत 8:7-10
11 उत 9:25
12 लैव 25:39
13 1रा 5:16, 2इत 2:18

दूसरा कॉल.

1 1रा 3:1, 1रा 7:8, 2इत 8:11
2 2शम 5:9
3 1रा 9:15
4 निर्ग 23:14
5 2इत 8:12, 13
6 2इत 8:16
7 व्य 2:8
8 2इत 8:17, 18
9 1रा 5:12
10 उत 10:29, 1इत 29:3, 4, भज 45:9

अध्य. 10

11 1रा 4:29
12 2इत 9:1, 2, मत 12:42
13 भज 72:10
14 निर्ग 25:3, 6, 2रा 20:13

24 मगर फिरौन की बेटी[1] दाविद-पुर[2] छोड़कर उस महल में रहने लगी जो सुलैमान ने उसके लिए बनवाया था। फिर सुलैमान ने टीला* बनवाया।[3]

25 सुलैमान साल में तीन बार[4] उस वेदी पर, जो उसने यहोवा के लिए बनायी थी, होम-बलियाँ और शांति-बलियाँ चढ़ाया करता था।[5] साथ ही, यहोवा के सामने जो वेदी थी, उस पर भी वह बलिदान चढ़ाता था ताकि धुआँ उठे। इस तरह उसने भवन बनाने का काम पूरा किया।[6]

26 राजा सुलैमान ने एस्योन-गेबेर[7] में जहाज़ों का एक बड़ा लशकर भी बनाया। एस्योन-गेबेर, एदोम देश में लाल सागर के तट पर एलोत के पास है।[8] 27 हीराम ने जहाज़ों के लशकर के साथ अपने तजुरबेकार नाविकों को भेजा था[9] ताकि वे सुलैमान के सेवकों के साथ मिलकर काम करें। 28 वे ओपीर[10] गए और वहाँ से 420 तोड़े सोना राजा सुलैमान के पास ले आए।

10 शीबा की रानी ने सुलैमान की शोहरत के बारे में सुना जो उसे यहोवा के नाम की बदौलत हासिल हुई थी।[11] इसलिए वह सुलैमान के पास आयी ताकि बेहद मुश्किल और पेचीदा सवालों से* उसे परखे।[12] 2 वह एक बहुत बड़ा और शानदार कारवाँ लेकर यरूशलेम पहुँची।[13] वह अपने साथ बलसाँ के तेल,[14] भारी तादाद में सोने और अनमोल रत्नों से लदे ऊँट लायी। जब वह सुलैमान के पास आयी तो उसके मन में जितने भी सवाल थे, वे सब उसने राजा से पूछे। 3 और

9:24 *या "मिल्लो।" इस इब्रानी शब्द का मतलब "भरना" है। **10:1** *या "पहेलियाँ पूछकर।"

सुलैमान ने उसके सभी सवालों के जवाब
दिए। ऐसी कोई बात नहीं थी* जिसके
बारे में उसे समझाना राजा के लिए
मुश्किल रहा हो।

4 जब शीबा की रानी ने सुलैमान
की लाजवाब बुद्धि,[1] उसका बनाया राज-
महल,[2] **5** मेज़ पर लगा शाही खाना,[3]
उसके अधिकारियों के बैठने के लिए
किया गया इंतज़ाम, खाना परोसनेवालों
की सेवाएँ और उनकी खास पोशाक,
उसके साकी और वे होम-बलियाँ देखीं
जिन्हें वह नियमित तौर पर यहोवा के
भवन में चढ़ाया करता था, तो वह
ऐसी दंग रह गयी कि उसकी साँस ऊपर-
की-ऊपर और नीचे-की-नीचे रह गयी।
6 उसने राजा से कहा, "मैंने अपने देश
में तेरी कामयाबियों* के बारे में और तेरी
बुद्धि के बारे में जो चर्चे सुने थे, वे बिल-
कुल सही थे। **7** लेकिन मैंने तब तक
यकीन नहीं किया जब तक मैंने यहाँ
आकर खुद अपनी आँखों से नहीं देखा।
अब मुझे लगता है कि मुझे इसका आधा
भी नहीं बताया गया था। तेरी बुद्धि और
तेरा ऐश्वर्य उससे कहीं ज़्यादा है जो मैंने
तेरे बारे में सुना था। **8** तेरे इन आद-
मियों और सेवकों को कितना बड़ा सम्मान
मिला है कि वे हर समय तेरे सामने रह-
कर तेरे मुँह से बुद्धि की बातें सुनते
हैं![4] **9** तेरे परमेश्वर यहोवा की बड़ाई
हो,[5] जिसने तुझसे खुश होकर तुझे इस-
राएल की राजगद्दी पर बिठाया। यहोवा
इसराएल से सदा प्यार करता है, इसीलिए
उसने तुझे राजा ठहराया ताकि तू न्याय
और नेकी करे।"

10 इसके बाद शीबा की रानी ने राजा
को 120 तोड़े* सोना, बहुत सारा बलसाँ
का तेल[1] और अनमोल रत्न तोहफे में
दिए।[2] उसने सुलैमान को जितना बलसाँ
का तेल दिया था उतना फिर कभी किसी
ने नहीं दिया।

11 हीराम के जहाज़ों का जो लशकर
ओपीर से सोना लाया करता था,[3] वही
लशकर वहाँ से अनमोल रत्न और बड़ी
तादाद में लाल-चंदन की लकड़ी भी लाता
था।[4] **12** राजा सुलैमान ने लाल-चंदन
की लकड़ी से यहोवा के भवन के लिए
और राजमहल के लिए टेक बनायी, साथ
ही उस लकड़ी से गायकों के लिए सुर-
मंडल और तारोंवाले दूसरे बाजे बनाए।[5]
तब से लेकर आज तक इतनी सारी लाल-
चंदन की लकड़ी न तो कभी लायी गयी
और न देखी गयी।

13 राजा सुलैमान ने भी उदारता से
शीबा की रानी को तोहफे में बहुत कुछ
दिया। इसके अलावा, रानी ने उससे जो
कुछ माँगा वह सब उसने दिया। इसके
बाद रानी अपने सेवकों के साथ अपने
देश लौट गयी।[6]

14 सुलैमान को हर साल करीब
666 तोड़े सोना मिलता था।[7]
15 इसके अलावा उसे सौदागरों, लेन-
देन करनेवाले व्यापारियों और अरब के
सब राजाओं और देश के राज्यपालों से
कर भी मिलता था।

16 राजा सुलैमान ने मिश्रित सोने
की 200 बड़ी-बड़ी ढालें[8] (हर ढाल
में 600 शेकेल* सोना लगा था)[9]
17 और 300 छोटी-छोटी ढालें* बनायीं

10:3 *शा., "ऐसी कोई बात उससे छिपी न थी।" **10:6** *या "बातों।"

10:10 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें। **10:16** *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। **10:17** *ये ढालें अकसर तीरं-दाज़ ढोते थे।

अध्य. 10
1 1रा 3:28, सभ 12:9
2 2इत 9:3-8
3 1रा 4:22
4 नीत 8:34
5 1रा 5:7

दूसरा कॉल.
1 उत 43:11
2 भज 72:10
3 1रा 9:27, 28, भज 45:9
4 2इत 2:8, 2इत 9:10, 11
5 2इत 5:12, भज 150:3
6 2इत 9:12
7 2इत 9:13, 14
8 1रा 14:25, 26
9 2इत 9:15, 16

(हर छोटी ढाल में तीन मीना* सोना लगा था)। राजा ने ये ढालें 'लबानोन के वन भवन'[1] में रखीं।

18 राजा ने हाथी-दाँत की एक बड़ी राजगद्दी भी बनायी[2] और उस पर ताया हुआ सोना मढ़ा।[3] **19** राजगद्दी तक जाने के लिए छः सीढ़ियाँ थीं और राजगद्दी के ऊपर एक छत्र बना था। राजगद्दी के दोनों तरफ हाथ रखने के लिए टेक बनी थी और दोनों तरफ टेक के पास एक-एक शेर खड़ा हुआ बना था।[4] **20** राजगद्दी तक जानेवाली छः सीढ़ियों में से हर सीढ़ी के दोनों तरफ भी एक-एक शेर खड़ा हुआ बना था यानी कुल मिलाकर 12 शेर थे। ऐसी राजगद्दी किसी और राज्य में नहीं थी।

21 राजा सुलैमान के सभी प्याले सोने के थे और 'लबानोन के वन भवन'[5] के सारे बरतन भी शुद्ध सोने के थे। एक भी चीज़ चाँदी की नहीं थी क्योंकि सुलैमान के दिनों में चाँदी का कोई मोल नहीं था।[6] **22** राजा के पास तरशीश के जहाज़ों का एक बड़ा लशकर था[7] जो हीराम के लशकर के साथ सफर पर जाया करता था। हर तीन साल में एक बार तरशीश के जहाज़ों का लशकर सोना, चाँदी, हाथी-दाँत,[8] बंदर और मोर लाता था।

23 राजा सुलैमान इतना बुद्धिमान था और उसके पास दौलत का ऐसा अंबार था कि दुनिया का कोई भी राजा उसकी बराबरी नहीं कर सकता था।[9] **24** परमेश्वर ने उसे बहुत बुद्धि दी थी[10] और उसकी बुद्धि की बातें सुनने धरती के कोने-कोने से लोग उसके पास आया करते थे।* **25** जब भी कोई सुलैमान के पास आता तो वह तोहफे में राजा को सोने-चाँदी की चीज़ें, कपड़े, हथियार, बलसाँ का तेल, घोड़े और खच्चर देता था। ऐसा साल-दर-साल चलता रहा।

26 सुलैमान ज़्यादा-से-ज़्यादा रथ और घोड़े* इकट्ठे करता गया। उसके पास 1,400 रथ और 12,000 घोड़े* जमा हो गए।[1] उसने इन्हें रथों के शहरों में और यरूशलेम में अपने पास रखा था।[2]

27 राजा ने यरूशलेम में इतनी तादाद में चाँदी इकट्ठी की कि वह पत्थर जितनी आम हो गयी थी और उसने देवदार की इतनी सारी लकड़ी इकट्ठी की कि उसकी तादाद शफेलाह के गूलर पेड़ों जितनी हो गयी थी।[3]

28 सुलैमान के घोड़े मिस्र से मँगाए गए थे। राजा के व्यापारियों का दल ठहराए हुए दाम पर घोड़ों के झुंड-के-झुंड खरीदकर लाता था।*[4] **29** मिस्र से मँगाए गए हर रथ की कीमत चाँदी के 600 टुकड़े थी और हर घोड़े की कीमत चाँदी के 150 टुकड़े थी। फिर ये व्यापारी रथ और घोड़े हित्तियों[5] के सभी राजाओं और सीरिया के सभी राजाओं को बेचते थे।

11 मगर राजा सुलैमान ने फिरौन की बेटी के अलावा[6] दूसरे देशों की बहुत-सी औरतों से प्यार किया।[7] उसने मोआबी,[8] अम्मोनी,[9] एदोमी, सीदोनी[10] और हित्ती[11] औरतों से प्यार किया।

अध्य. 10
1 1रा 7:2
2 भज 122:2, 5
3 2इत 9:17-19
4 उत 49:9; गि 23:24; गि 24:9
5 1रा 7:2
6 2इत 9:20, 21
7 उत 10:4; भज 72:10; यहे 27:12; यो 1:3
8 1रा 10:18
9 1रा 3:12, 13; 1रा 4:29; 2इत 9:22-24; सभ 5:19
10 नीत 2:6

दूसरा कॉल.
1 व्य 17:15, 16; 1रा 4:26
2 2इत 1:14; 2इत 9:25
3 2इत 1:15; 2इत 9:27
4 2इत 1:16, 17; 2इत 9:28
5 यह 1:4

अध्य. 11
6 1रा 3:1
7 व्य 17:15, 17; नहे 13:26
8 उत 19:36, 37
9 1रा 14:21
10 1रा 16:30, 31
11 उत 26:34, 35

10:17 *इब्रानी शास्त्र में बताए एक मीना का वज़न 570 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

10:24 *शा., "उसका मुँह देखना चाहते थे।" **10:26** *या "घुड़सवार।" **10:28** *या शायद, "मिस्र और कोए से मँगाए गए थे; राजा के व्यापारी कोए से घोड़े खरीदकर लाते थे।" शायद कोए, किलिकिया है।

2 ये औरतें उन्हीं देशों से थीं जिनके बारे
में यहोवा ने इसराएलियों से कहा था,
“तुम उनके बीच न जाना* और वे तुम्हारे
बीच न आएँ क्योंकि वे ज़रूर तुम्हारे
दिलों को अपने देवताओं की तरफ
बहका देंगे।”[1] फिर भी सुलैमान ने
उनसे गहरा लगाव रखा और उनसे प्यार
किया। 3 सुलैमान की 700 पत्नियाँ
थीं, जो शाही घराने की थीं और उसकी
300 उप-पत्नियाँ थीं। उसकी पत्नियों
ने धीरे-धीरे उसका दिल बहका दिया।*
4 सुलैमान के बुढ़ापे में[2] उसकी पत्नियों
ने उसके दिल को दूसरे देवताओं की तरफ
बहका* दिया।[3] उसका दिल अपने पर-
मेश्वर यहोवा पर पूरी तरह न लगा रहा।
वह अपने पिता दाविद की तरह नहीं
बना रहा, जिसका दिल परमेश्वर पर पूरी
तरह लगा था। 5 सुलैमान ने सीदो-
नियों की देवी अशतोरेत[4] और अम्मो-
नियों के घिनौने देवता मिलकोम की पूजा
की।[5] 6 उसने यहोवा की नज़र में बुरे
काम किए और पूरे दिल से यहोवा के
पीछे नहीं चला जैसे उसका पिता दाविद
चलता था।[6]

7 उन्हीं दिनों सुलैमान ने मोआब के
घिनौने देवता कमोश के लिए यरू-
शलेम के सामनेवाले पहाड़ पर ऊँची
जगह बनायी[7] और उसने अम्मोनियों के
घिनौने देवता मोलेक[8] के लिए भी ऊँची
जगह बनायी।[9] 8 उसने अपनी उन
सभी पत्नियों के लिए ऐसा किया, जो
दूसरे देशों से थीं और अपने देव-
ताओं के लिए बलिदान चढ़ाती थीं ताकि
उनका धुआँ उठे।

9 यहोवा को सुलैमान पर बहुत क्रोध
आया क्योंकि उसका दिल इसराएल के
परमेश्वर यहोवा से बहककर दूर चला
गया था,[1] जिसने दो बार उसे दर्शन
दिया था[2] 10 और उसे साफ चेताव-
नी दी थी कि वह दूसरे देवताओं के पीछे
न जाए।[3] मगर उसने यहोवा की आज्ञा
नहीं मानी। 11 इसलिए यहोवा ने सुलै-
मान से कहा, “तूने जो ऐसा काम किया है
और मैंने जिस करार को मानने और जिन
विधियों पर चलने की आज्ञा दी, उन्हें तूने
नहीं माना, इसलिए मैं तुझसे तेरा राज
छीन लूँगा और तेरे एक सेवक को दे
दूँगा।[4] 12 लेकिन तेरे पिता दाविद
की खातिर मैं यह काम तेरे जीते-जी नहीं
करूँगा। मैं तेरे बेटे के हाथ से राज छीन
लूँगा।[5] 13 मगर मैं उससे पूरा राज
नहीं छीनूँगा।[6] मैं अपने सेवक दाविद की
खातिर और अपने चुने हुए शहर यरू-
शलेम की खातिर[7] एक गोत्र तेरे बेटे को
दूँगा।”[8]

14 फिर यहोवा ने सुलैमान का एक
विरोधी खड़ा किया[9] जिसका नाम हदद
था। हदद एदोमी था और एदोम के
शाही घराने से था।[10] 15 जब दाविद ने
एदोम को हराया था[11] और उसका सेना-
पति योआब मारे गए लोगों को दफ-
नाने गया था, तब योआब ने एदोम के
हर आदमी और लड़के को मार डालने
की कोशिश की थी। 16 (योआब और
सभी इसराएली सैनिक छः महीने तक
एदोम में रहे जब तक कि उन्होंने वहाँ
के हर आदमी और लड़के को मार*
न डाला।) 17 मगर हदद अपने पिता
के कुछ एदोमी सेवकों के साथ मिस्र की
तरफ भाग गया। उस वक्त हदद एक
छोटा लड़का था। 18 जब वे मिद्यान से
निकले थे तो रास्ते में वे पारान गए और

अध्य. 11

1 निर्ग 34:16, व्य 7:3, यह 23:12, 13, 2कुर 6:14
2 1रा 11:42
3 व्य 7:3, 4, नहे 13:26
4 न्या 2:11, 13, न्या 10:6, 1शम 7:3
5 सप 1:5
6 1रा 15:5
7 लैव 26:30, गि 33:52, 2रा 21:1, 3
8 लैव 18:21, प्रेष 7:43
9 2रा 23:13

दूसरा कॉल.

1 व्य 7:3, 4, नीत 4:23
2 1रा 3:5, 1रा 9:2
3 2इत 7:19, 20
4 2रा 17:21
5 2इत 10:18, 19
6 2शम 7:12, 15
7 व्य 12:11
8 1रा 12:20, 2इत 11:1
9 2शम 7:12, 14
10 उत 27:40
11 2शम 8:13

11:2 *या “उन जातियों के लोगों से शादी मत करना।” **11:3** *या “उस पर ज़बर-दस्त असर किया।” **11:4** *या “फेर।”

11:16 *शा., “काट।”

वहाँ के कुछ आदमियों को उन्होंने साथ लिया[1] और मिस्र पहुँचे। वहाँ वे मिस्र के राजा फिरौन से मिले। फिरौन ने हदद को रहने के लिए एक घर दिया और उसकी खाने-पीने की ज़रूरतें पूरी कीं और उसे ज़मीन भी दी थी। **19** हदद से फिरौन इतना खुश था कि उसने अपनी रानी* तहपनेस की बहन की शादी उससे करायी थी। **20** कुछ समय बाद तहपनेस की बहन ने हदद के बेटे को जन्म दिया, जिसका नाम गनूबत था। तहपनेस ने फिरौन के राजमहल में गनूबत की परवरिश की थी।* इस तरह गनूबत फिरौन के राजमहल में ही उसके बेटों के साथ पला-बढ़ा था।

21 मिस्र में जब हदद को खबर मिली कि दाविद की मौत हो गयी है*[2] और उसका सेनापति योआब भी मर गया है,[3] तो उसने फिरौन से कहा, "मुझे अपने देश लौट जाने दे।" **22** मगर फिरौन ने उससे कहा, "मेरे यहाँ तुझे किस चीज़ की कमी है, जो तू अपने देश लौट जाना चाहता है?" हदद ने कहा, "कोई कमी नहीं, फिर भी मुझे जाने की इजाज़त दे।"

23 परमेश्वर ने सुलैमान का एक और विरोधी खड़ा किया।[4] वह एल्यादा का बेटा रजोन था, जो अपने मालिक सोबा के राजा हदद-एजेर[5] के यहाँ से भाग गया था। **24** जब दाविद ने सोबा के आदमियों को हराया,*[6] तब रजोन ने कुछ आदमी इकट्ठा करके एक लुटेरा-दल बनाया था और वह उस दल का सरदार बन गया था। रजोन और उसके आदमी दमिश्क[1] जाकर बस गए और वहाँ राज करने लगे थे। **25** रजोन, सुलैमान की सारी ज़िंदगी इसराएल का विरोधी बना रहा। इसराएल पर हदद ने पहले ही जो मुश्किलें खड़ी की थीं, उन्हें अब रजोन ने और बढ़ा दीं। सीरिया पर अपने राज के दौरान, रजोन इसराएल से नफरत करता रहा।

26 यारोबाम[2] नाम का एक आदमी भी राजा सुलैमान से बगावत करने लगा।[3] वह सुलैमान का ही एक सेवक था।[4] वह सरेदा का रहनेवाला एप्रैमी था और उसके पिता का नाम नबात था। यारोबाम की माँ सरूआह एक विधवा थी। **27** यारोबाम ने राजा से इस वजह से बगावत की थीः सुलैमान ने टीला* बनाया था[5] और अपने पिता के शहर दाविदपुर[6] की शहरपनाह की दरार भरी थी। **28** यारोबाम एक काबिल जवान था। जब सुलैमान ने देखा कि वह बहुत मेहनती है, तो उसने उसे यूसुफ के घराने के उन सभी आदमियों की निगरानी करने की ज़िम्मेदारी सौंपी[7] जिन्हें जबरन मज़दूरी पर लगाया गया था। **29** उन्हीं दिनों यारोबाम यरूशलेम से बाहर गया था। जब वह रास्ते में था तो शीलो का रहनेवाला भविष्यवक्ता अहियाह[8] आकर उससे मिला। उस वक्त मैदान में उन दोनों के सिवा और कोई न था। अहियाह एक नया बागा पहने हुए था। **30** उसने अपना बागा लिया और उसे फाड़कर उसके 12 टुकड़े कर दिए। **31** फिर उसने यारोबाम से कहा,

"ये दस टुकड़े तेरे लिए हैं क्योंकि इसराएल के परमेश्वर यहोवा ने कहा है, 'मैं सुलैमान के हाथ से राज छीन लूँगा और

अध्य. 11
1 गि 10:12
2 1रा 2:10
3 1रा 2:34
4 1रा 11:14
5 2शम 8:3
6 2शम 10:18

दूसरा कॉल.
1 2शम 8:5, 1रा 19:15, यश 7:8
2 1रा 11:31, 1रा 12:32, 1रा 14:10, 2इत 11:14, 2इत 13:3, 20
3 2इत 13:6
4 1रा 9:22
5 1रा 9:15, 24
6 2शम 5:7
7 1रा 5:16
8 1रा 12:15, 1रा 14:2, 2इत 9:29

11:19 *राज करनेवाली रानी नहीं। **11:20** *या शायद, "का दूध छुड़ाया था।" **11:21** *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया है।" **11:24** *शा., "घात किया।"

11:27 *या "मिल्लो।" इस इब्रानी शब्द का मतलब "भरना" है।

उसके दस गोत्र तुझे दे दूँगा।[1] 32 मगर
मैं अपने सेवक दाविद की खातिर[2] और
यरूशलेम की खातिर, जिसे मैंने इसराएल
के सभी गोत्रों में से चुना है,[3] एक गोत्र
सुलैमान का ही रहने दूँगा।[4] 33 मैं
उसका राज इसलिए छीन लूँगा क्योंकि
उन्होंने मुझे छोड़ दिया है[5] और वे सीदो-
नियों की देवी अशतोरेत और मोआब के
देवता कमोश और अम्मोनियों के देवता
मिलकोम को दंडवत कर रहे हैं। वे ऐसे
काम नहीं करते जो मेरी नज़र में सही
हैं और वे मेरी विधियों और मेरे न्याय-
सिद्धांतों का पालन नहीं करते। इस तरह
उन्होंने मेरी राहों पर चलना छोड़ दिया
है, जैसे सुलैमान का पिता दाविद चलता
था। 34 मगर मैं सुलैमान के हाथ से
पूरा राज नहीं छीनूँगा। वह जब तक
ज़िंदा रहेगा मैं उसे प्रधान बने रहने दूँगा।
ऐसा मैं अपने सेवक दाविद की खातिर
करूँगा जिसे मैंने चुना था[6] क्योंकि वह
मेरी आज्ञाएँ और विधियाँ मानता था।
35 मगर मैं सुलैमान के बेटे के हाथ से
राज छीन लूँगा और तुझे दस गोत्र दे
दूँगा।[7] 36 उसके बेटे को मैं एक गोत्र
दूँगा ताकि मेरे सेवक दाविद का दीया मेरे
सामने यरूशलेम में हमेशा जलता रहे,[8]
उस शहर में जिसे मैंने इसलिए चुना है कि
मेरा नाम उससे जुड़ा रहे। 37 मैं तुझे
चुनूँगा और तू इसराएल का राजा बनेगा
और मैं तुझे वह सारा इलाका दूँगा जो
तू चाहता है। 38 अगर तू वह सब करे
जिसकी मैं तुझे आज्ञा दूँगा और मेरे सेवक
दाविद की तरह[9] मेरी राहों पर चले और
मेरी विधियों और आज्ञाओं का पालन
करके ऐसा काम करे जो मेरी नज़र में
सही है, तो मैं तेरे साथ भी रहूँगा। मैं तेरा
राज-घराना सदा के लिए कायम करूँगा,
ठीक जैसे मैंने दाविद का राज-घराना
कायम किया था[1] और मैं इसराएल का
राज तुझे दे दूँगा। 39 दाविद की संतान
ने जो किया है उसकी वजह से मैं उन्हें
नीचा दिखाऊँगा,[2] मगर मैं ऐसा सदा तक
नहीं करूँगा।'"[3]

40 इसलिए सुलैमान ने यारोबाम को
मार डालने की कोशिश की, मगर यारो-
बाम मिस्र भाग गया और वहाँ के राजा
शीशक[4] के पास चला गया।[5] वह सुलै-
मान की मौत तक मिस्र में ही रहा।

41 सुलैमान की ज़िंदगी की बाकी
कहानी, उसके सभी कामों का ब्यौरा और
उसकी बुद्धि की बातें सुलैमान के इतिहास
की किताब में लिखी हैं।[6] 42 सुलैमान
ने यरूशलेम में रहकर पूरे इसराएल पर
40 साल राज किया। 43 फिर उसकी
मौत हो गयी* और उसे उसके पिता
दाविद के शहर दाविदपुर में दफनाया
गया। उसकी जगह उसका बेटा रहू-
बियाम[7] राजा बना।

12 रहूबियाम शेकेम गया क्योंकि
पूरा इसराएल उसे राजा बनाने के
लिए शेकेम में इकट्ठा हुआ था।[8] 2 जैसे
ही इसकी खबर नबात के बेटे यारोबाम
को मिली (वह अब भी मिस्र में था क्योंकि
वह राजा सुलैमान की वजह से मिस्र
भाग गया था और वहीं रह रहा था),[9]
3 लोगों ने उसे मिस्र से बुलवाया।
इसके बाद, यारोबाम और इसराएल की
पूरी मंडली रहूबियाम के पास आयी
और कहने लगी, 4 "तेरे पिता ने हमसे
कड़ी मज़दूरी करवाकर हम पर भारी
बोझ लाद दिया था।[10] अगर तू हमारे
साथ थोड़ी रिआयत करे और यह भारी
बोझ ज़रा हलका कर दे, तो हम तेरी सेवा
करेंगे।"

11:43 * शा., "वह अपने पुरखों के साथ सो गया।"

अध्य. 11
1 1रा 12:16
2 उत 49:10
3 व्य 12:5, 6; 1रा 11:13; भज 132:13
4 1रा 12:20; 2इत 11:1
5 व्य 28:15; 2इत 15:2
6 1रा 9:4, 5; भज 89:49; भज 132:17; यश 9:7
7 1रा 12:20; 2इत 10:16
8 2शम 7:29; 1रा 15:4; 2रा 8:19
9 1रा 15:5

दूसरा कॉल.
1 2शम 7:11
2 1रा 12:16
3 उत 49:10; यश 11:1; लूक 1:32, 33
4 1रा 14:25
5 2इत 10:2
6 2इत 9:29-31
7 1इत 3:10; 2इत 13:7; मत 1:7

अध्य. 12
8 उत 12:6; यह 20:7, 9; न्या 9:1, 2; 2इत 10:1-4; प्रेष 7:15, 16
9 1रा 11:26, 40
10 1शम 8:11-18; 1रा 4:7

5 रहूबियाम ने उनसे कहा, “तुम लोग अभी जाओ, तीन दिन बाद वापस आना।” तब लोग वहाँ से चले गए।[1] 6 इस बीच राजा रहूबियाम ने उन बुज़ुर्गों* से सलाह की जो उसके पिता सुलैमान के सलाहकार हुआ करते थे। उसने उनसे पूछा, “तुम्हारी क्या राय है, इन लोगों को क्या जवाब देना सही रहेगा?” 7 बुज़ुर्गों ने उससे कहा, “आज अगर तू इन लोगों का सेवक बने, उनकी गुज़ारिश पूरी करे और उनसे प्यार से बात करे, तो वे हमेशा तेरे सेवक बने रहेंगे।”

8 मगर रहूबियाम ने बुज़ुर्गों* की सलाह ठुकरा दी और उन जवानों से सलाह-मशविरा किया जो उसके साथ पले-बढ़े थे और अब उसके सेवक थे।[2] 9 उसने उनसे पूछा, “तुम क्या सलाह देते हो? मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ जिन्होंने मुझसे कहा है, ‘तेरे पिता ने हम पर जो भारी बोझ लादा था उसे हलका कर दे’?” 10 उसके साथ पले-बढ़े जवानों ने उससे कहा, “जिन लोगों ने तुझसे कहा है, ‘तेरे पिता ने हम पर जो भारी बोझ लादा था उसे हलका कर दे,’ उनसे तू कहना, ‘मेरी छोटी उँगली मेरे पिता की कमर से भी मोटी होगी। 11 मेरे पिता ने तुम पर जो भारी बोझ लादा था मैं उसे और बढ़ा दूँगा। मेरा पिता तुम्हें कोड़ों से पिटवाता था, मगर मैं तुम्हें कीलोंवाले कोड़ों से पिटवाऊँगा।’”

12 तीसरे दिन यारोबाम और सब लोग रहूबियाम के पास आए, ठीक जैसे राजा ने उनसे तीसरे दिन आने को कहा था।[3] 13 मगर राजा ने उनके साथ कठोरता से बात की क्योंकि उसने बुज़ुर्गों* की सलाह ठुकरा दी थी। 14 उसने जवानों की सलाह मानकर लोगों से कहा, “मेरे पिता ने तुम पर जो भारी बोझ लादा था, मैं उसे और भी बढ़ा दूँगा। मेरा पिता तुम्हें कोड़ों से पिटवाता था, मगर मैं तुम्हें कीलोंवाले कोड़ों से पिटवाऊँगा।” 15 इस तरह राजा ने लोगों की बात नहीं मानी। इसके पीछे यहोवा का हाथ था।[1] यहोवा ने ऐसा इसलिए किया ताकि वह वचन पूरा हो जो उसने शीलो के रहनेवाले अहियाह के ज़रिए नबात के बेटे यारोबाम से कहा था।[2]

16 जब इसराएल के सभी लोगों ने देखा कि राजा ने उनकी बात नहीं मानी, तो उन्होंने राजा से कहा, “अब दाविद के साथ हमारा क्या साझा? यिशै के बेटे की विरासत उसी के पास रहे। इसराएलियो, तुम सब अपने-अपने देवता के पास लौट जाओ! हे दाविद, अब तू अपने ही घराने की देखभाल करना!” यह कहकर इसराएल के लोग अपने-अपने घर* लौट गए।[3] 17 मगर रहूबियाम उन इसराएलियों पर राज करता रहा जो यहूदा के शहरों में रहते थे।[4]

18 फिर राजा रहूबियाम ने अदोराम[5] को इसराएलियों के पास भेजा, जो जबरन मज़दूरी करनेवालों का अधिकारी था। मगर पूरे इसराएल के लोगों ने उसे पत्थरों से मार डाला। राजा रहूबियाम किसी तरह अपने रथ पर सवार होकर यरूशलेम भाग गया।[6] 19 तब से लेकर आज तक इसराएली, दाविद के घराने से बगावत करते आ रहे हैं।[7]

20 इसराएल के सब लोगों को जैसे ही खबर मिली कि यारोबाम वापस आया है,

अध्य. 12
1 2इत 10:5-7
2 2इत 10:8-11
3 2इत 10:12-15

दूसरा कॉल.
1 व्य 2:30; 2इत 22:7; रोम 9:18
2 1रा 11:31
3 2इत 10:16, 17
4 1रा 11:12, 13; 2इत 11:13, 16
5 2शम 20:24; 1रा 4:6; 1रा 5:13, 14
6 2इत 10:18, 19
7 2रा 17:21

12:6, 8, 13 * या “मुखियाओं।”

12:16 * शा., “तंबू को।”

उन्होंने उसे लोगों की मंडली के पास बुलवाया और उसे पूरे इसराएल का राजा बनाया।[1] यहूदा गोत्र को छोड़ किसी और ने दाविद के घराने का साथ नहीं दिया।[2]

21 जब रहूबियाम यरूशलेम पहुँचा तो उसने फौरन यहूदा के पूरे घराने से और बिन्यामीन गोत्र से 1,80,000 तालीम पाए* सैनिकों को इकट्ठा किया ताकि वे इसराएल के घराने से युद्ध करें और पूरा राज सुलैमान के बेटे रहूबियाम के अधिकार में कर दें।[3] **22** तब सच्चे परमेश्वर का यह संदेश सच्चे परमेश्वर के सेवक शमायाह के पास पहुँचा,[4] **23** "सुलैमान के बेटे, यहूदा के राजा रहूबियाम से, साथ ही यहूदा के पूरे घराने, बिन्यामीन गोत्र और बाकी सभी लोगों से कहना, **24** 'यहोवा ने कहा है, "तुम ऊपर जाकर अपने इसराएली भाइयों से युद्ध मत करना। तुम सब अपने-अपने घर लौट जाओ क्योंकि यह सब मैंने ही करवाया है।"'"[5] उन्होंने यहोवा की बात मान ली और सब अपने-अपने घर लौट गए, ठीक जैसे यहोवा ने उनसे कहा था।

25 इसके बाद यारोबाम ने शेकेम बनाया*[6] जो एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में था और वहीं रहने लगा। वहाँ से वह पनूएल शहर[7] गया और उसे भी बनाया।* **26** यारोबाम ने मन-ही-मन कहा, "कहीं ऐसा न हो कि मेरे राज के लोग फिर से दाविद के घराने से मिल जाएँ।[8] **27** अगर वे यहोवा के भवन में बलिदान चढ़ाने के लिए यरूशलेम जाते रहेंगे,[9] तो उनका दिल अपने मालिक यहूदा के राजा रहूबियाम की तरफ फिर जाएगा। फिर तो वे मुझे मार डालेंगे और यहूदा के राजा रहूबियाम के पास लौट जाएँगे।" **28** इसलिए राजा ने सलाह-मशविरा करने के बाद दो सोने के बछड़े बनवाए[1] और लोगों से कहा, "तुम यरूशलेम जाने की तकलीफ क्यों उठाते हो। हे इसराएलियो देखो, तुम्हारा परमेश्वर यही है। यही तुम्हें मिस्र देश से निकाल लाया था।"[2] **29** फिर यारोबाम ने एक बछड़ा बेतेल[3] में खड़ा करवाया और दूसरा दान[4] में। **30** इस वजह से लोगों ने पाप किया[5] और वे दान में रखे बछड़े को पूजने के लिए वहाँ तक का लंबा सफर तय करने लगे।

31 यारोबाम ने ऊँची जगहों पर पूजा-घर बनवाए और आम लोगों को याजक ठहरा दिया जो लेवी नहीं थे।[6] **32** साथ ही, उसने आठवें महीने के 15वें दिन एक त्योहार शुरू किया, जो यहूदा में मनाए जानेवाले त्योहार जैसा था।[7] उसने बेतेल[8] में बनायी वेदी पर उन बछड़ों के लिए बलिदान चढ़ाया जो उसने बनाए थे और बेतेल में बनायी ऊँची जगहों पर सेवा करने के लिए याजक ठहराए। **33** उसने बेतेल में जो वेदी बनायी थी, उस पर वह आठवें महीने के 15वें दिन चढ़ावे अर्पित करने लगा। यह महीना उसने खुद चुना था। उसने इसराएल के लोगों के लिए एक त्योहार शुरू किया और वेदी पर चढ़कर चढ़ावा अर्पित किया और बलिदान चढ़ाए ताकि धुआँ उठे।

13 यारोबाम वेदी के पास खड़ा था ताकि बलिदान चढ़ाए जिससे धुआँ उठे।[9] उसी समय यहोवा का एक सेवक[10] उसकी आज्ञा पाकर यहूदा से बेतेल आया। **2** उसने यहोवा की आज्ञा के मुताबिक वेदी की तरफ मुँह करके ज़ोर से कहा, "हे वेदी! हे वेदी! तेरे लिए

अध्य. 12
1 1रा 11:30, 31
2 1रा 11:12, 13; हो 11:12
3 2इत 11:1-4; 2इत 25:5
4 2इत 12:5
5 1रा 11:30, 31
6 1रा 12:1
7 उत 32:30; न्या 8:13, 17
8 1रा 11:38
9 व्य 12:5, 6

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:4; 2रा 10:29
2 निर्ग 32:4, 8; 2इत 11:15, 16
3 उत 12:8, 9; उत 28:19
4 उत 14:14; व्य 34:1; न्या 18:29; न्या 20:1
5 2रा 10:31; 2रा 17:21-23
6 गि 3:10; 1रा 13:33; 2इत 11:14; 2इत 13:9
7 लैव 23:34
8 आम 7:13

अध्य. 13
9 1रा 12:32; आम 3:14
10 2रा 23:16, 17

12:21 *शा., "चुने हुए।" **12:25** *या "मज़बूत किया।"

यहोवा का यह संदेश है: 'देख! दाविद के
घराने में योशियाह नाम का एक लड़का
पैदा होगा।[1] वह तुझ पर उन्हीं याजकों
की बलि चढ़ा देगा जो ऊँची जगहों पर
सेवा करते और तुझ पर बलिदान चढ़ाते
हैं ताकि धुआँ उठे। वह तुझ पर इंसानों
की हड्डियाँ जलाएगा।'"[2] 3 इसके बाद
उसने उसी दिन एक निशानी दी। उसने
कहा, "इस बात के पूरा होने की यहोवा ने
यह निशानी दी है: देखो, इस वेदी के दो
टुकड़े हो जाएँगे और इस पर जो राख* है
वह बिखर जाएगी।"

4 जैसे ही राजा यारोबाम ने सच्चे पर-
मेश्वर के सेवक का संदेश सुना, जो उसने
बेतेल की वेदी के खिलाफ सुनाया था,
उसने वेदी से अपना हाथ हटा लिया और
परमेश्वर के सेवक की तरफ हाथ बढ़ा-
कर कहा, "पकड़ लो उसे!"[3] जैसे ही
उसने यह कहा, उसका बढ़ाया हुआ हाथ
सूख गया* और वह उसे अपनी तरफ
खींच न सका।[4] 5 तब वेदी के दो
टुकड़े हो गए और वेदी की सारी राख
बिखर गयी। इस तरह वह निशानी पूरी
हुई जो सच्चे परमेश्वर यहोवा के सेवक ने
उसकी आज्ञा से बतायी थी।

6 राजा ने सच्चे परमेश्वर के सेवक से
कहा, "मेहरबानी करके अपने परमेश्वर
यहोवा से मेरे लिए रहम की भीख
माँग। मेरे लिए प्रार्थना कर कि मेरा हाथ
ठीक हो जाए।"[5] तब सच्चे परमेश्वर के
सेवक ने यहोवा से रहम की भीख
माँगी और राजा का हाथ पहले जैसा हो
गया। 7 फिर राजा ने सच्चे परमेश्वर
के सेवक से कहा, "मेरे साथ घर चल-
कर कुछ खा-पी ले। मैं तुझे एक तोहफा
भी देना चाहता हूँ।" 8 मगर सच्चे पर-
मेश्वर के सेवक ने राजा से कहा,
"अगर तू मुझे अपना आधा महल दे
दे, तो भी मैं तेरे साथ नहीं चलूँगा
और इस जगह मैं न तो रोटी खाऊँगा न
पानी पीऊँगा 9 क्योंकि यहोवा ने मुझे
आज्ञा दी है कि तू यहाँ न तो रोटी
खाना, न पानी पीना और न उस रास्ते से
लौटना जिससे तू आया है।" 10 इस-
लिए वह दूसरे रास्ते से लौट गया।
उसने वह रास्ता नहीं लिया जिससे वह
बेतेल आया था।

11 बेतेल में एक बूढ़ा भविष्यवक्ता
रहता था। उसके बेटों ने घर आकर उसे
बताया कि उस दिन बेतेल में सच्चे पर-
मेश्वर के सेवक ने क्या-क्या किया और
राजा से क्या-क्या कहा। यह सब सुनकर
12 पिता ने उनसे पूछा, "वह आदमी
किस रास्ते गया है?" उसके बेटों ने
बताया कि यहूदा से आया सच्चे परमेश्वर
का सेवक फलाँ रास्ते गया है। 13 तब
उसने अपने बेटों से कहा, "मेरे लिए गधे
पर काठी कसो।" उन्होंने गधे पर काठी
कसी और वह उस पर सवार होकर
निकल पड़ा।

14 वह सच्चे परमेश्वर के सेवक को
ढूँढ़ता हुआ गया और उसे एक बड़े पेड़
के नीचे बैठा हुआ पाया। बूढ़े भविष्य-
वक्ता ने उससे पूछा, "क्या तू ही सच्चे
परमेश्वर का वह सेवक है जो यहूदा
से आया था?"[1] उसने कहा, "हाँ, मैं ही
हूँ।" 15 भविष्यवक्ता ने उससे कहा,
"मेरे साथ मेरे घर चल और कुछ खा-
पी ले।" 16 मगर उस सेवक ने कहा,
"माफ करना, मैं तेरा न्यौता स्वीकार नहीं
कर सकता। मैं तेरे साथ नहीं जा सकता।
मैं इस जगह न तो रोटी खा सकता हूँ

13:3 *यानी बलिदान में जलाए गए जान-वरों की पिघली चरबी से भीगी राख। **13:4** *या "उसके बढ़ाए हुए हाथ को लकवा मार गया।"

अध्य. 13

1 2रा 21:24
2रा 22:1

2 2रा 23:15, 16
2इत 34:33

3 2इत 16:10
यिर्म 20:2

4 2रा 6:18

5 निर्ग 10:16, 17
गि 21:7
यिर्म 37:3
प्रेष 8:24

दूसरा कॉल.

1 1रा 13:1

न पानी पी सकता हूँ 17 क्योंकि यहोवा
ने मुझे आज्ञा दी है, ‘तू यहाँ न तो रोटी
खाना न पानी पीना और जिस रास्ते से तू
आया है उसी रास्ते से वापस न जाना।’”
18 इस पर बूढ़े भविष्यवक्ता ने कहा,
“मैं भी तेरे जैसा एक भविष्यवक्ता हूँ
और एक स्वर्गदूत ने मुझे यहोवा का यह
संदेश दिया है: ‘जा, उसे वापस ले आ,
उसे अपने घर ले जा ताकि वह रोटी
खाए और पानी पीए।’” (भविष्यवक्ता
ने उससे झूठ बोला था।) 19 तब वह
सेवक उसके साथ वापस गया ताकि उसके
घर रोटी खाए और पानी पीए।

20 जब वे मेज़ पर बैठे हुए थे, तो
यहोवा का संदेश उस बूढ़े भविष्यवक्ता
के पास आया जो उसे वापस लाया था।
21 उस भविष्यवक्ता ने यहूदा से आए
सच्चे परमेश्वर के सेवक से कहा, “तेरे
लिए यहोवा का यह संदेश है: ‘तूने यहोवा
के आदेश के खिलाफ काम किया है और
तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे जो आज्ञा
दी थी, उसे तूने नहीं माना। 22 तू
उसी जगह रोटी खाने और पानी
पीने वापस गया जहाँ तुझे खाने-पीने
को मैंने मना किया था। इसलिए तेरी
लाश तेरे पुरखों की कब्र में नहीं दफनायी
जाएगी।’”[1]

23 जब सच्चे परमेश्वर का सेवक
खा-पी चुका, तो बूढ़े भविष्यवक्ता ने उस
भविष्यवक्ता के लिए गधे पर काठी कसी
जिसे वह वापस लाया था। 24 फिर
भविष्यवक्ता गधे पर सवार होकर वहाँ से
चल दिया, मगर रास्ते में एक शेर आया
और उसे मार डाला।[2] उसकी लाश रास्ते
पर पड़ी रही और गधा लाश के पास ही
खड़ा रहा। शेर भी वहीं पास में खड़ा
रहा। 25 वहाँ से आने-जानेवाले लोगों
ने देखा कि रास्ते पर लाश पड़ी है और
पास में एक शेर खड़ा है। उन्होंने जाकर
यह खबर उस शहर में बतायी जहाँ बूढ़ा
भविष्यवक्ता रहता था।

26 जब उस भविष्यवक्ता ने यह खबर
सुनी, जो उसे रास्ते से वापस लाया था,
तो उसने फौरन कहा, “वह ज़रूर सच्चे
परमेश्वर के सेवक की लाश होगी। उसने
यहोवा के आदेश के खिलाफ काम किया
था,[1] इसीलिए यहोवा ने उसे शेर के
हवाले कर दिया कि वह उसे चीर-फाड़कर
मार डाले। यहोवा ने उससे जैसा कहा था,
बिलकुल वैसा ही हुआ।”[2] 27 फिर बूढ़े
भविष्यवक्ता ने अपने बेटों से कहा, “मेरे
लिए गधे पर काठी कसो।” उन्होंने गधे
पर काठी कसी। 28 भविष्यवक्ता वहाँ
से निकल पड़ा और उसने देखा कि
लाश रास्ते पर पड़ी हुई है और उसके
पास गधा और शेर खड़ा है। शेर ने न तो
लाश खायी थी और न गधे को कुछ किया
था। 29 भविष्यवक्ता ने सच्चे परमेश्वर
के सेवक की लाश उठायी और उसे गधे
पर लादा। वह उसे अपने शहर ले आया
ताकि उसके लिए मातम मनाया जाए और
उसे दफनाया जाए। 30 भविष्यवक्ता ने
वह लाश उस कब्र में दफनायी जो उसने
अपने लिए बनवायी थी। वे उसके लिए
रोते हुए कहने लगे, “हाय मेरे भाई, तेरे
साथ कितना बुरा हुआ!” 31 लाश दफ-
नाने के बाद भविष्यवक्ता ने अपने बेटों
से कहा, “जब मेरी मौत हो जाए तो
मुझे उसी जगह दफनाना जहाँ सच्चे पर-
मेश्वर के सेवक को दफनाया गया है। मेरी
हड्डियाँ उसकी हड्डियों के पास रखना।[3]
32 उसने बेतेल की वेदी के खिलाफ और
सामरिया के शहरों की ऊँची जगहों पर
बने सभी पूजा-घरों[4] के खिलाफ यहोवा
का जो वचन सुनाया था, वह ज़रूर पूरा
होगा।”[5]

अध्य. 13
1 1रा 13:30; 2रा 23:17, 18
2 2शम 6:7; 1रा 20:35, 36; 2रा 17:25

दूसरा कॉल.
1 1रा 13:9
2 1रा 13:21, 22
3 2रा 23:17, 18
4 लैव 26:30; 1रा 12:29, 31
5 2रा 23:15, 19

33 इतना सब होने के बाद भी यारोबाम ने बुराई का रास्ता नहीं छोड़ा। वह ऊँची जगहों पर सेवा करने के लिए आम लोगों में से याजक ठहराता रहा।[1] जो कोई याजक बनना चाहता उसे यारोबाम याजकपद सौंपता था।* वह कहता, "उसे याजक बनना है तो बनने दो।"[2] 34 यारोबाम के घराने के इस पाप[3] की वजह से ही उनका विनाश हुआ और धरती से उनका नामो-निशान मिट गया।[4]

14 उसी दौरान यारोबाम का बेटा अबियाह बीमार पड़ गया। 2 यारोबाम ने अपनी पत्नी से कहा, "तू शीलो जा। तू अपना भेस बदलकर जा ताकि लोगों को पता न चले कि तू यारोबाम की पत्नी है। देख, शीलो में भविष्यवक्ता अहियाह रहता है। उसी ने मेरे बारे में कहा था कि मैं इन लोगों का राजा बनूँगा।[5] 3 तू अपने साथ दस रोटियाँ, कुछ टिकियाँ और सुराही-भर शहद ले जा। वह तुझे बताएगा कि हमारे बेटे का क्या होगा।"

4 यारोबाम ने जैसा बताया उसकी पत्नी ने वैसा ही किया। वह शीलो[6] गयी और अहियाह के घर पहुँची। ढलती उम्र की वजह से अहियाह की आँखों की रौशनी जा चुकी थी, उसे कुछ दिखायी नहीं देता था।

5 लेकिन यहोवा ने अहियाह को यह बताया था, "यारोबाम का बेटा बीमार है, इसलिए उसकी पत्नी लड़के के बारे में जानने के लिए तेरे पास आ रही है। मैं तुझे बताऊँगा कि तुझे उससे क्या कहना है।* जब वह आएगी तो अपनी पहचान छिपाएगी।"

13:33 *शा., "यारोबाम उसके हाथ भर देता था।" **14:5** *या "तू उससे ये-ये कहना।"

6 जब यारोबाम की पत्नी दरवाज़े से अंदर आ रही थी तो अहियाह ने उसके कदमों की आहट सुनते ही कहा, "यारोबाम की पत्नी, अंदर आ। तू क्यों अपनी पहचान छिपा रही है? परमेश्वर ने मुझसे कहा है कि मैं तेरे लिए एक कड़वा संदेश सुनाऊँ। 7 तू जाकर यारोबाम से कहना, 'इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, "मैंने तुझे तेरे लोगों के बीच से चुना था ताकि तुझे अपनी प्रजा इसराएल का अगुवा ठहराऊँ।[1] 8 फिर मैंने दाविद के घराने से राज छीनकर तुझे दे दिया।[2] मगर तू मेरे सेवक दाविद की तरह नहीं बना, जो मेरी आज्ञाओं का पालन करता रहा और पूरे दिल से मेरी बतायी राह पर चलता रहा। वह सिर्फ ऐसे काम करता था जो मेरी नज़र में सही हैं।[3] 9 मगर तूने उन सबसे बढ़कर बुरे काम किए जो तुझसे पहले थे। तूने अपने लिए एक और देवता बना लिया, हाँ, तूने धातु की मूरतें* बनाकर मेरा क्रोध भड़काया।[4] तूने मुझे ही अपनी पीठ दिखायी।[5] 10 इसलिए मैं यारोबाम के घराने पर कहर ढानेवाला हूँ, मैं उसके हर आदमी और हर लड़के को मार डालूँगा, यहाँ तक कि इसराएल के बेसहारा और कमज़ोर लोगों को भी मिटा दूँगा। मैं उसके घराने का पूरी तरह सफाया कर दूँगा,[6] जैसे कोई मल को तब तक साफ करता है जब तक कि वह पूरी तरह साफ न हो जाए! 11 यारोबाम के वंशजों में से जो कोई शहर में मरेगा उसे कुत्ते खा जाएँगे और जो मैदान में मरेगा उसे आकाश के पक्षी खा जाएँगे। ऐसा ज़रूर होगा क्योंकि यह बात यहोवा ने कही है।"'

14:9 *या "ढली हुई मूरतें।"

अध्य. 13
1 1रा 12:25, 31
2 2इत 11:14, 15
3 1रा 16:30, 31; 2रा 3:1, 3; 2रा 10:31; 2रा 13:1, 2
4 1रा 14:10; 1रा 15:25-29; 2रा 17:22, 23

अध्य. 14
5 1रा 11:30, 31
6 यह 18:1; 1शम 4:3

दूसरा कॉल.
1 1रा 11:30, 31; 1रा 12:20
2 1रा 12:16
3 1रा 15:5; प्रेष 13:22
4 व्य 27:15; 2इत 11:15
5 नहे 9:26; भज 50:17
6 1रा 15:25-29

12 अब तू जा, अपने घर चली जा।
जब तू शहर में कदम रखेगी तो तेरा
बच्चा मर जाएगा। 13 उसके लिए पूरा
इसराएल मातम मनाएगा और उसे दफ-
नाएगा। यारोबाम के परिवार में से सिर्फ
उसी को कब्र में दफनाया जाएगा, क्योंकि
यारोबाम के परिवार में से सिर्फ उसी
में इसराएल के परमेश्वर यहोवा ने कुछ
अच्छाई पायी है। 14 यहोवा अपने
लिए इसराएल में एक ऐसा राजा खड़ा
करेगा जो समय आने पर यारोबाम
के घराने को मिटा देगा।[1] परमेश्वर
चाहे तो अभी से ऐसा कर सकता है।
15 यहोवा इसराएल पर ऐसा वार करेगा
कि उसकी हालत पानी में झूलते नर-
कट की तरह हो जाएगी। वह इसराएल
को इस बढ़िया देश से उखाड़ फेंकेगा जो
उसने उनके पुरखों को दिया था।[2] वह
उन्हें महानदी* से आगे तक तितर-बितर
कर देगा[3] क्योंकि उन्होंने पूजा-लाठ#[4]
बनाकर यहोवा को गुस्सा दिलाया है।
16 यारोबाम ने जो पाप किए हैं और इस-
राएल से जो पाप करवाया है,[5] उस वजह
से परमेश्वर इसराएल को छोड़ देगा।”

17 तब यारोबाम की पत्नी उठी और
अपने रास्ते चल दी। वह तिरसा आयी
और जैसे ही उसने घर की दहलीज़
पर कदम रखा उसका लड़का मर गया।
18 उन्होंने उसे दफनाया और पूरे इस-
राएल ने उसके लिए मातम मनाया। इस
तरह यहोवा का वह वचन पूरा हुआ जो
उसने अपने सेवक, भविष्यवक्ता अहि-
याह से कहलवाया था।

19 यारोबाम की ज़िंदगी की बाकी
कहानी, उसने कैसे युद्ध किया[6] और कैसे
राज किया, यह सब इसराएल के राजाओं
के इतिहास की किताब में लिखा है।
20 यारोबाम ने 22 साल राज किया
था। इसके बाद उसकी मौत हो गयी*[1]
और उसकी जगह उसका बेटा नादाब
राजा बना।[2]

21 उधर यहूदा में सुलैमान का बेटा
रहूबियाम राज करता था। जब वह राजा
बना तब वह 41 साल का था और
उसने 17 साल यरूशलेम में रहकर
राज किया, जिसे यहोवा ने इसराएल के
सभी गोत्रों में से इसलिए चुना था[3] कि
उस शहर से उसका नाम जुड़ा रहे।[4] रहू-
बियाम की माँ नामा एक अम्मोनी औरत
थी।[5] 22 यहूदा के लोगों ने यहोवा की
नज़र में बुरे काम किए।[6] उन्होंने ऐसे
पाप किए कि अपने पुरखों से कहीं
ज़्यादा उन्होंने परमेश्वर का क्रोध भड़-
काया।[7] 23 वे भी हर ऊँची पहाड़ी
पर[8] और हर घने पेड़ के नीचे अपने लिए
ऊँची जगह, पूजा-स्तंभ और पूजा-लाठ
बनाते गए।[9] 24 देश में ऐसे आदमी
भी थे जिन्हें मंदिरों में इसलिए रखा गया
था कि उनके साथ दूसरे आदमी संभोग
करें।[10] उन्होंने वे सारे घिनौने काम किए
जो दूसरी जातियों के लोग करते थे और
जिन्हें यहोवा ने इसराएलियों के सामने से
निकाल दिया था।

25 रहूबियाम के राज के पाँचवें साल
में, मिस्र के राजा शीशक[11] ने यरूशलेम
पर हमला किया।[12] 26 वह यहोवा के
भवन का खज़ाना और राजमहल का
खज़ाना लूट ले गया।[13] वह सबकुछ ले
गया, यहाँ तक कि सोने की सारी
ढालें भी जो सुलैमान ने बनवायी थीं।[14]
27 इसलिए राजा रहूबियाम ने उन ढालों
के बदले ताँबे की ढालें बनवायीं और

14:15 *यानी फरात नदी। #शब्दावली देखें।

14:20 *शा., “वह अपने पुरखों के साथ सो गया।”

अध्य. 14
1 1रा 15:25-29
2 व्य 8:7-9; व्य 29:28; यह 23:15; 2रा 17:6
3 व्य 28:64; 2रा 15:29; 2रा 18:11
4 व्य 12:3
5 1रा 12:28-30; 1रा 13:33, 34
6 2इत 12:15; 2इत 13:3

दूसरा कॉल.
1 2इत 13:20
2 1रा 15:25
3 भज 78:68; भज 132:13
4 निर्ग 20:24; व्य 12:5, 6; 1रा 8:16, 17
5 1रा 11:1; 2इत 12:13
6 1रा 11:7; 2इत 12:1
7 यश 65:2
8 यश 65:7
9 लैव 26:1; व्य 12:2, 3; यश 57:5; यिर्म 2:20; हो 4:13
10 व्य 23:17, 18; 1रा 15:11, 12; 1रा 22:46; 2रा 23:7; हो 4:14
11 1रा 11:40
12 2इत 12:2-4
13 1रा 7:51; 1रा 15:18; 2रा 18:14, 15; 2रा 24:12, 13
14 1रा 10:16, 17; 2इत 12:9-11

उनकी देखभाल की ज़िम्मेदारी उन पहरे-
दारों के सरदारों को दी जो राजमहल के
प्रवेश पर पहरा देते थे। **28** जब भी
राजा यहोवा के भवन में आता तो पहरे-
दार ये ढालें लेकर चलते और फिर उन्हें
वापस पहरेदारों के खाने में रख देते थे।
29 रहूबियाम की ज़िंदगी की बाकी
कहानी, उसके सभी कामों का ब्यौरा
यहूदा के राजाओं के इतिहास की किताब
में लिखा है।[1] **30** रहूबियाम और
यारोबाम के बीच लगातार युद्ध चलता
रहा।[2] **31** फिर रहूबियाम की मौत हो
गयी* और उसे दाविदपुर में उसके
पुरखों की कब्र में दफनाया गया।[3] उसकी
माँ नामा एक अम्मोनी औरत थी।[4] रहू-
बियाम की जगह उसका बेटा अबीयाम#[5]
राजा बना।

15 अबीयाम जब यहूदा का राजा
बना तब नबात के बेटे यारोबाम
के राज का 18वाँ साल चल रहा था।[6]
2 अबीयाम ने यरूशलेम में रहकर तीन
साल राज किया। उसकी माँ का नाम
माका था,[7] जो अबीशालोम की नातिन
थी। **3** अबीयाम ने सारी ज़िंदगी वही
पाप किए जो उससे पहले उसके पिता ने
किए थे। अबीयाम का दिल अपने पर-
मेश्वर यहोवा पर पूरी तरह नहीं लगा
रहा, जैसे उसके पुरखे दाविद का दिल
लगा रहा था। **4** फिर भी दाविद के
परमेश्वर यहोवा ने दाविद की खातिर[8]
यरूशलेम में उसका दीया जलने दिया।[9]
परमेश्वर ने उसके बेटे को राजा ठह-
राया और यरूशलेम को बने रहने दिया।
5 यहोवा ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि
दाविद ने परमेश्वर की नज़र में सही काम
किए थे। उसने ज़िंदगी-भर परमेश्वर की
सभी आज्ञाएँ मानीं, कभी उसके नियमों
से नहीं हटा, बस एक बार हित्ती उरियाह
के मामले में वह चूक गया था।[1] **6** जब
तक रहूबियाम ज़िंदा था तब तक उसके
और यारोबाम के बीच युद्ध चलता रहा।[2]
7 अबीयाम की ज़िंदगी की बाकी
कहानी, उसके सभी कामों का ब्यौरा
यहूदा के राजाओं के इतिहास की किताब
में लिखा है।[3] अबीयाम और यारोबाम
के बीच भी युद्ध चलता रहा।[4] **8** फिर
अबीयाम की मौत हो गयी* और उसे
दाविदपुर में दफनाया गया। अबीयाम की
जगह उसका बेटा आसा[5] राजा बना।[6]
9 जब आसा ने यहूदा पर राज
करना शुरू किया तब इसराएल में राजा
यारोबाम के राज का 20वाँ साल चल
रहा था। **10** आसा ने यरूशलेम में 41
साल राज किया। उसकी दादी का नाम
माका था,[7] जो अबीशालोम की नातिन
थी। **11** आसा ने अपने पुरखे दाविद
की तरह वही किया जो यहोवा की नज़र
में सही था।[8] **12** उसने देश से उन
आदमियों को निकाल दिया जो मंदिरों
में दूसरे आदमियों के साथ संभोग करते
थे।[9] उसने वे सारी घिनौनी मूरतें* भी
हटा दीं जो उसके पुरखों ने बनवायी
थीं।[10] **13** यहाँ तक कि उसने अपनी
दादी माका[11] को राजमाता के पद से हटा
दिया क्योंकि माका ने पूजा-लाठ* की
उपासना के लिए एक अश्लील मूरत खड़ी
करवायी थी। आसा ने उसकी अश्लील
मूरत काट डाली[12] और उसे किदरोन

14:31; 15:8 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।" **14:31** #अबियाह भी कहलाता था।

15:12 *इनका इब्रानी शब्द शायद "मल" के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है। **15:13** *शब्दावली देखें।

अध्य. 14

1 1इत 27:24; 2इत 12:15
2 1रा 15:6
3 1रा 11:43
4 1रा 11:1; 2इत 12:13
5 1इत 3:10; मत 1:7

अध्य. 15

6 1रा 12:20; 2इत 13:1, 2
7 2इत 11:20-22
8 2शम 7:8, 12; भज 89:33-37; यश 37:35; यिर्म 33:20, 21
9 1रा 11:36; 2इत 21:7; भज 132:13, 17

दूसरा कॉल.

1 2शम 11:4, 15; भज 51:उप
2 1रा 14:30; 2इत 12:15
3 2इत 13:22
4 2इत 13:3
5 1इत 3:10; मत 1:7
6 2इत 14:1
7 2इत 11:21, 22
8 2इत 14:2-5; 2इत 14:11; 2इत 15:17
9 व्य 23:17, 18; 1रा 14:24; 1रा 22:45, 46
10 1रा 11:7; 1रा 14:22, 23
11 2इत 11:18, 20
12 व्य 7:5; 2रा 18:1, 4; 2इत 34:1, 4

घाटी में जला दिया।[1] 14 मगर ऊँची जगह नहीं मिटायी गयीं।[2] फिर भी आसा का दिल सारी ज़िंदगी यहोवा पर पूरी तरह लगा रहा। 15 वह यहोवा के भवन में वह सारा सोना, चाँदी और दूसरी चीज़ें ले आया जो उसने और उसके पिता ने पवित्र ठहरायी थीं।[3]

16 आसा और इसराएल के राजा बाशा[4] के बीच लगातार युद्ध चलता रहा। 17 इसराएल के राजा बाशा ने यहूदा पर हमला बोल दिया। वह रामाह[5] को बनाने* लगा ताकि न तो उसके यहाँ से कोई यहूदा के राजा आसा के इलाके में जा सके और न वहाँ से कोई यहाँ आ सके।#[6] 18 तब आसा ने यहोवा के भवन के खज़ाने और राजमहल के खज़ाने का बचा हुआ सारा सोना-चाँदी लिया और अपने सेवकों के हाथ सीरिया के राजा[7] बेन-हदद के पास भेजा। बेन-हदद, तबरिम्मोन का बेटा और हेज्योन का पोता था और वह दमिश्क में रहता था। आसा ने बेन-हदद के पास यह संदेश भेजा: 19 "जैसे तेरे पिता और मेरे पिता के बीच संधि* थी वैसे ही हम दोनों के बीच भी संधि है। देख, मैं तेरे लिए तोहफे में सोना-चाँदी भेज रहा हूँ। तू आकर इसराएल के राजा बाशा के साथ अपनी संधि तोड़ दे। तब वह मेरा इलाका छोड़कर चला जाएगा।" 20 बेन-हदद ने राजा आसा की बात मान ली और अपने सेनापतियों को इस-राएल के शहरों पर हमला करने भेजा। उन्होंने जाकर इय्योन,[8] दान,[9] आबेल-बेत-माका और पूरे किन्नेरेत को और नप्ताली के पूरे इलाके को नाश कर दिया। 21 जब इसकी खबर बाशा को मिली तो उसने रामाह को बनाने* का काम फौरन रोक दिया और तिरसा[1] में रहने लगा। 22 फिर राजा आसा ने यहूदा के सभी लोगों को बुल-वाया, किसी को भी छूट नहीं दी। और वे रामाह से वे सारे पत्थर और शहतीरें उठाकर ले गए जिनसे बाशा, रामाह शहर बना रहा था। उन चीज़ों से राजा आसा ने मिसपा शहर[2] और बिन्यामीन के इलाके के गेबा शहर[3] बनाए।*

23 आसा की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसके सभी बड़े-बड़े काम, उसने जो-जो शहर बनवाए,* उन सबका ब्यौरा यहूदा के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है। मगर बुढ़ापे में आसा के पैरों में कुछ बीमारी हो गयी जिससे उसे बहुत तकलीफ सहनी पड़ी।[4] 24 फिर आसा की मौत हो गयी* और उसे उसके पुरखे दाविद के शहर दाविदपुर में पुरखों की कब्र में दफनाया गया। उसकी जगह उसका बेटा यहोशापात[5] राजा बना।

25 यहूदा के राजा आसा के राज के दूसरे साल, यारोबाम का बेटा नादाब[6] इसराएल का राजा बना। उसने इसराएल पर दो साल राज किया। 26 नादाब यहोवा की नज़र में बुरे काम करता रहा। वह अपने पिता के ही नक्शे-कदम पर चला[7] और उसने वही पाप किया जो उसके पिता ने किया था और इसराएल से भी करवाया था।[8] 27 बाशा ने, जो इस्साकार गोत्र के अहियाह का बेटा था, नादाब के खिलाफ साज़िश की। जब नादाब और पूरा इसराएल पलिश्ती शहर

15:17, 21 *या "मज़बूत करने; दोबारा बनाने।" **15:17** #शा., "कोई यहूदा के राजा आसा के पास आने-जाने न पाए।" **15:19** *या "करार।"

15:22, 23 *या "मज़बूत किए; दोबारा बनाए।" **15:24** *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।"

अध्य. 15
1 2शम 15:23; 2इत 15:16-18; यूह 18:1
2 गि 33:52; व्य 12:2; 1रा 22:41, 43
3 1इत 26:26, 27
4 1रा 16:3, 12
5 यह 18:21, 25
6 2इत 16:1-6
7 2इत 16:7
8 2रा 15:29
9 न्या 18:29; 1रा 12:28, 29

दूसरा कॉल.
1 1रा 14:17; श्रेष 6:4
2 यह 18:21, 26; न्या 20:1; 1शम 7:5; यिर्म 40:6
3 यह 21:8, 17
4 2इत 16:11-14
5 1रा 22:42; 2इत 17:3, 4; 2इत 18:1; 2इत 19:4; मत 1:8
6 1रा 14:20
7 1रा 14:7, 9
8 1रा 12:28-30; 1रा 13:33

गिब्बतोन[1] की घेराबंदी किए हुए था, तो उस दौरान बाशा ने नादाब को गिब्बतोन में मार डाला। 28 इस तरह बाशा, नादाब को मारकर खुद राजा बन बैठा। यह घटना यहूदा के राजा आसा के राज के तीसरे साल में हुई थी। 29 बाशा जैसे ही राजा बना उसने यारोबाम के पूरे घराने का सफाया कर दिया, एक को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा। इस तरह यहोवा का वह वचन पूरा हुआ जो उसने शीलो के रहनेवाले अपने सेवक अहियाह से कहलवाया था।[2] 30 ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि यारोबाम ने पाप किए और इसराएल से पाप करवाए थे और इसराएल के परमेश्वर यहोवा का क्रोध भड़काया था। 31 जहाँ तक नादाब की बात है उसकी ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसके सभी कामों का ब्यौरा इसराएल के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है। 32 आसा और इसराएल के राजा बाशा के बीच लगातार युद्ध चलता रहा।[3]

33 अहियाह का बेटा बाशा जब पूरे इसराएल का राजा बना तब यहूदा में राजा आसा के राज का तीसरा साल चल रहा था। बाशा ने इसराएल के तिरसा में रहकर 24 साल राज किया।[4] 34 मगर वह यहोवा की नज़र में बुरे काम करता रहा।[5] वह यारोबाम के नक्शे-कदम पर चला और उसने वही पाप किया जो यारोबाम ने किया था और इसराएल से भी करवाया था।[6]

16 फिर यहोवा ने हनानी[7] के बेटे येहू[8] के ज़रिए बाशा को यह सज़ा सुनायी: 2 "मैंने तुझे धूल से उठाया था और अपनी प्रजा इसराएल का अगुवा बनाया था।[9] मगर तू यारोबाम के नक्शे-कदम पर चलता रहा और तूने मेरी प्रजा इसराएल से भी पाप करवाया और उन्होंने अपने पापों से मेरा क्रोध भड़काया।[1] 3 इसलिए हे बाशा, मैं तेरा और तेरे घराने का पूरी तरह सफाया कर दूँगा। मैं तेरे घराने का वही हश्र करूँगा जो मैंने नबात के बेटे यारोबाम के घराने का किया था।[2] 4 तेरे वंशजों में से जो कोई शहर में मरेगा उसे कुत्ते खा जाएँगे और जो मैदान में मरेगा उसे आकाश के पक्षी खा जाएँगे।"

5 बाशा की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसने जो बड़े-बड़े काम किए उनका और उसके बाकी कामों का ब्यौरा इसराएल के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है। 6 फिर बाशा की मौत हो गयी* और उसे तिरसा में दफनाया गया।[3] उसकी जगह उसका बेटा एलाह राजा बना। 7 बाशा ने यहोवा की नज़र में बहुत-से बुरे काम करके उसका क्रोध भड़काया और इस तरह वह यारोबाम के घराने जैसा बन गया था। साथ ही, बाशा ने उसे* मार डाला था। इन दोनों वजहों से यहोवा ने हनानी के बेटे भविष्यवक्ता येहू के ज़रिए बाशा और उसके घराने को सज़ा सुनायी।[4]

8 बाशा का बेटा एलाह जब इसराएल का राजा बना, तब यहूदा में राजा आसा के राज का 26वाँ साल चल रहा था। एलाह ने तिरसा में रहकर दो साल राज किया। 9 उसका एक सेवक था जिमरी जो उसकी आधी रथ-सेना का सेनापति था। उसने एलाह के खिलाफ साज़िश की और जब एलाह तिरसा में अपने राजमहल की देखरेख के अधिकारी अरसा के घर पीकर धुत्त हो गया था, 10 तब जिमरी ने आकर उसे मार डाला[5] और

16:6 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।" **16:7** *यानी यारोबाम के बेटे नादाब को।

अध्य. 15
1 यह 19:44, 48; यह 21:20, 23; 1रा 16:15
2 1रा 14:9, 10
3 2इत 12:15
4 1रा 16:8
5 1रा 16:7
6 1रा 12:28-30; 1रा 13:33

अध्य. 16
7 2इत 16:7
8 2इत 19:2; 2इत 20:34
9 1शम 2:8

दूसरा कॉल.
1 1रा 13:33
2 1रा 14:10, 11; 1रा 15:29
3 1रा 15:21, 33
4 1रा 15:25-29
5 2रा 9:31

उसकी जगह खुद राजा बन गया। जब
जिमरी राजा बना तब यहूदा में राजा
आसा के राज का 27वाँ साल चल रहा
था। **11** जिमरी जैसे ही राजगद्दी पर
बैठा, उसने बाशा के पूरे घराने को मार
डाला। उसके रिश्तेदारों* और दोस्तों में
से एक भी आदमी या लड़के को ज़िंदा
नहीं छोड़ा। **12** इस तरह जिमरी ने
बाशा के पूरे घराने को मिटा दिया और
यहोवा का वह वचन पूरा हुआ जो उसने
भविष्यवक्ता येहू से बाशा के खिलाफ
सुनाया था।[1] **13** बाशा के घराने का
यह अंजाम इसलिए हुआ क्योंकि बाशा
और उसके बेटे एलाह ने बहुत-से पाप
किए और इसराएलियों से पाप कर-
वाया था। और इसराएलियों ने निकम्मी
मूरतों की पूजा करके इसराएल के पर-
मेश्वर यहोवा का क्रोध भड़काया था।[2]
14 एलाह की ज़िंदगी की बाकी कहानी,
उसके सभी कामों का ब्यौरा इसराएल
के राजाओं के इतिहास की किताब में
लिखा है।

15 जब यहूदा में राजा आसा के राज
का 27वाँ साल चल रहा था, तब तिरसा
में जिमरी राजा बना और उसने सात दिन
राज किया। उस दौरान सेना की टुक-
ड़ियाँ पलिश्तियों के शहर गिब्बतोन[3] पर
हमला करने के लिए छावनी डाले हुई
थीं। **16** कुछ वक्त बाद उस छावनी में
खबर पहुँची कि जिमरी ने राजा के
खिलाफ साज़िश की और उसे मार डाला
है। तब पूरे इसराएल ने उसी दिन छावनी
में सेनापति ओम्री[4] को इसराएल का राजा
बना दिया। **17** ओम्री और उसके साथ
पूरा इसराएल गिब्बतोन से निकलकर
ऊपर गए और उन्होंने तिरसा की घेरा-

16:11 *या "उसके खून का बदला लेने-
वालों।"

अध्य. 16
1 1रा 16:1-3
2 व्य 32:21
1शम 12:21
2रा 17:15
यश 41:29
3 यह 19:44, 48
यह 21:20, 23
1रा 15:27
4 2रा 8:26
मी 6:16

बंदी की। **18** जब जिमरी ने देखा कि
शहर पर कब्ज़ा कर लिया गया है
तो वह राजमहल की मीनार में चला गया
और उसने महल में आग लगा दी और
उसी में जलकर मर गया।[1] **19** जिमरी
का यही अंजाम हुआ क्योंकि उसने यारो-
बाम के नक्शे-कदम पर चलकर यहोवा
की नज़र में बुरे काम किए थे और
इसराएल से भी पाप करवाया था।[2]
20 जिमरी की ज़िंदगी की बाकी कहानी,
उसने जो साज़िश रची उसका ब्यौरा इस-
राएल के राजाओं के इतिहास की किताब
में लिखा है।

21 इसी घटना के बाद इसराएल के
लोग दो गुटों में बँट गए। एक गुट के लोग
गीनत के बेटे तिब्नी की तरफ थे और
उसे राजा बनाना चाहते थे और दूसरे गुट
के लोग ओम्री की तरफ थे। **22** ओम्री
के गुट के लोगों ने गीनत के बेटे तिब्नी
के गुट को हरा दिया। तिब्नी की मौत हो
गयी और ओम्री राजा बन गया।

23 जब ओम्री इसराएल का राजा
बना, तब यहूदा में राजा आसा के
राज का 31वाँ साल चल रहा था।
ओम्री ने 12 साल राज किया। छः
साल उसने तिरसा से राज किया था।
24 उसने शेमेर से दो तोड़े* चाँदी की
कीमत पर सामरिया पहाड़ खरीदा और
उस पर एक शहर बनवाया। उसने शहर
का नाम, पहाड़ के पुराने मालिक शेमेर के
नाम पर सामरिया# रखा।[3] **25** ओम्री
यहोवा की नज़र में बुरे काम करता
रहा और वह उन सभी राजाओं से
बदतर निकला जो उससे पहले हुए थे।[4]
26 उसने नबात के बेटे यारोबाम के

16:24 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बरा-
बर था। अति. ख14 देखें। #मतलब "शेमेर
कुल का।"

दूसरा कॉल.
1 न्या 9:53, 54
1शम 31:4
2शम 17:23
2 1रा 12:28-30
1रा 14:7, 9
3 1रा 20:1
2रा 17:24
आम 6:1
प्रेष 8:5
4 मी 6:16

सभी तौर-तरीके अपना लिए और इसराएल से भी पाप करवाया। और इसराएलियों ने निकम्मी मूरतों की पूजा करके इसराएल के परमेश्वर यहोवा का क्रोध भड़काया था।[1] **27** ओम्री की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसकी बड़ी-बड़ी कामयाबियों और उसके कामों का ब्यौरा इसराएल के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है। **28** फिर ओम्री की मौत हो गयी* और उसे सामरिया में दफनाया गया। उसकी जगह उसका बेटा अहाब[2] राजा बना।

29 ओम्री का बेटा अहाब जब इसराएल का राजा बना, तब यहूदा में राजा आसा के राज का 38वाँ साल चल रहा था। ओम्री के बेटे अहाब ने सामरिया[3] से इसराएल पर 22 साल राज किया। **30** ओम्री का बेटा अहाब यहोवा की नज़र में उन सभी राजाओं से बदतर निकला जो उससे पहले हुए थे।[4] **31** उसने भी वही पाप किए जो नबात के बेटे यारोबाम ने किए थे[5] और मानो यह काफी न था, उसने सीदोनियों[6] के राजा एतबाल की बेटी इज़ेबेल[7] से शादी की और वह बाल देवता की सेवा करने और उसके आगे दंडवत करने लगा।[8] **32** इतना ही नहीं, उसने सामरिया में बाल देवता का जो मंदिर[9] बनवाया था, वहाँ उस देवता के लिए एक वेदी भी खड़ी करवायी। **33** उसने पूजा-लाठ* भी बनवायी।[10] अहाब ने इतने पाप किए कि उसने उन सभी राजाओं से बढ़कर यहोवा का क्रोध भड़काया, जो उससे पहले इसराएल में हुए थे।

34 अहाब के दिनों में बेतेल के रहनेवाले हीएल ने यरीहो शहर को दोबारा बनवाया। मगर उसे इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी। जब उसने यरीहो की नींव डाली तो उसका पहलौठा अबीराम मर गया और जब उसने फाटक लगवाए तो उसका सबसे छोटा बेटा सगूब मर गया। इस तरह यहोवा का वह वचन पूरा हुआ जो उसने नून के बेटे यहोशू से कहलवाया था।[1]

17 गिलाद[2] के तिशबे के रहनेवाले एलियाह*[3] ने अहाब से कहा, “इसराएल के परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ, जिसकी मैं सेवा करता हूँ,# अब से आनेवाले सालों में देश में न ओस की बूँदें गिरेंगी, न बारिश होगी! जब तक मैं न कहूँ, तब तक ऐसा ही रहेगा।”[4]

2 फिर यहोवा का यह संदेश एलियाह के पास पहुँचा: **3** “तू यह जगह छोड़कर पूरब की तरफ चला जा। तू यरदन के पूरब में करीत घाटी में जाकर छिप जा। **4** तू वहाँ नदी का पानी पीना और मैं कौवों को तेरे पास खाना पहुँचाने का हुक्म दूँगा।”[5] **5** एलियाह फौरन वहाँ से निकल पड़ा और उसने वही किया जो यहोवा ने उससे कहा था। वह जाकर यरदन के पूरब में करीत घाटी में रहने लगा। **6** कौवे उसके लिए हर दिन, सुबह और शाम रोटी और गोश्त लाया करते थे और वह नदी का पानी पीता था।[6] **7** मगर कुछ दिन बाद नदी सूख गयी[7] क्योंकि देश में बिलकुल बारिश नहीं हुई थी।

8 फिर यहोवा का यह संदेश एलियाह के पास पहुँचा: **9** “अब तू यहाँ से निकलकर सीदोन के सारपत नगर जा और वहाँ रह। वहाँ मैं एक विधवा

16:28 *शा., “अपने पुरखों के साथ सो गया।” **16:33** *शब्दावली देखें।

17:1 *मतलब “मेरा परमेश्वर यहोवा है।” #शा., “जिसके सामने मैं खड़ा रहता हूँ।”

अध्य. 16

1 1रा 12:28-30, 1रा 13:33
2 1रा 16:33, 1रा 21:4, 1रा 21:20-22, 2रा 10:1
3 1रा 16:23, 24, यश 7:9
4 1रा 16:25, 1रा 21:25, 2रा 3:1, 2
5 1रा 12:28-30
6 उत 10:15
7 1रा 18:4, 19, 1रा 21:7, 2रा 9:30, प्रक 2:20
8 न्या 2:11, न्या 10:6, 2रा 10:19, 2रा 17:16
9 2रा 10:21, 27
10 निर्ग 34:13, 2रा 10:26, 28, 2रा 13:6

दूसरा कॉल.

1 यह 6:26

अध्य. 17

2 यह 22:9
3 1रा 17:15, 16, 1रा 17:22, 24, 1रा 18:36, 38, 1रा 18:46, 2रा 2:8, 11, लूक 1:17, यूह 1:19, 21
4 व्य 28:15, 23, यिर्म 14:22, लूक 4:25, याकू 5:17
5 भज 37:25, मत 6:11
6 गि 11:23, न्या 15:19
7 1रा 18:5

को हुक्म दूँगा कि वह तुझे खाना दिया
करे।”[1] 10 तब एलियाह वहाँ से सार-
पत गया। जब वह नगर के फाटक पर
पहुँचा, तो उसने देखा कि एक विधवा
लकड़ियाँ बीन रही है। एलियाह ने उसे
बुलाकर कहा, “क्या मुझे पीने के लिए
थोड़ा पानी मिलेगा?”[2] 11 जब वह
औरत पानी लेने जा रही थी, तो एलियाह
ने उससे कहा, “क्या तू मेरे लिए एक रोटी
भी लाएगी?” 12 औरत ने कहा, “तेरे
परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ, मेरे
पास एक भी रोटी नहीं है। बड़े मटके में
बस मुट्ठी-भर आटा और कुप्पी में थोड़ा-
सा तेल बचा है।[3] मैं यहाँ दो-चार लक-
ड़ियाँ बीनने आयी थी ताकि घर जाकर
अपने और अपने बेटे के लिए खाना बना
सकूँ, क्योंकि उसके बाद तो हमें भूख से
मरना ही है।”

13 एलियाह ने उससे कहा, “तू डर
मत, घर जा और जैसा तूने कहा है, वैसा
ही कर। मगर तेरे पास जो है, उससे पहले
मेरे लिए एक छोटी-सी रोटी बनाकर ला।
इसके बाद, अपने और अपने बेटे के लिए
कुछ बना लेना 14 क्योंकि इसराएल के
परमेश्वर यहोवा ने कहा है, ‘जब तक मैं
यहोवा ज़मीन पर पानी न बरसाऊँ, उस
दिन तक न तो तेरे बड़े मटके का
आटा खत्म होगा, न कुप्पी का तेल।’”[4]
15 तब वह अंदर गयी और उसने वही
किया जो एलियाह ने उससे कहा था।
इसके बाद वह औरत और उसका परि-
वार और एलियाह बहुत दिनों तक खाते
रहे।[5] 16 जैसे यहोवा ने एलियाह के
ज़रिए वादा किया था, न बड़े मटके का
आटा खत्म हुआ, न कुप्पी का तेल।

17 कुछ समय बाद उस औरत का
बेटा बीमार पड़ गया जिसके घर एलियाह
ठहरा था। उसकी तबियत इतनी खराब
हो गयी कि एक दिन उसकी साँस रुक
गयी।[1] 18 तब उस औरत ने एलियाह
से कहा, “हे सच्चे परमेश्वर के सेवक,
तूने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?*
क्या तू इसीलिए मेरे घर आया था कि
मुझे मेरे पाप याद दिलाए और मेरे
बेटे को मार डाले?”[2] 19 एलियाह ने
औरत से कहा, “अपना बेटा मुझे दे।”
उसने औरत के हाथ से उसका बेटा लिया
और उसे उठाकर छत पर उस कमरे में
ले गया, जहाँ एलियाह रहता था। उसने
लड़के को अपने बिस्तर पर लिटा दिया।[3]
20 फिर उसने यहोवा को पुकारकर
कहा, “हे यहोवा, मेरे परमेश्वर,[4] तू इस
विधवा पर भी क्यों मुसीबत ले आया है,
जिसके घर मैं ठहरा हूँ? तूने क्यों
इसके बेटे को मार डाला?” 21 तब वह
बच्चे के ऊपर लेट गया। उसने ऐसा
तीन बार किया और यहोवा से फरियाद
की, “हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, इस बच्चे
को दोबारा ज़िंदा कर दे।” 22 यहोवा
ने एलियाह की फरियाद सुनी[5] और
बच्चा ज़िंदा हो गया।[6] 23 एलियाह
बच्चे को लेकर छत के कमरे से नीचे
आया और उसे उसकी माँ को दे दिया।
एलियाह ने कहा, “देख, तेरा बेटा ज़िंदा
हो गया है!”[7] 24 तब औरत ने एलि-
याह से कहा, “अब मैं जान गयी हूँ कि
तू सचमुच परमेश्वर का सेवक है[8] और
यहोवा का जो वचन तेरे मुँह से निकलता
है, वह सच होता है।”

18 काफी समय बाद, तीसरे साल[9]
यहोवा का यह संदेश एलियाह के
पास पहुँचा: “जा, अहाब के पास जा।
अब मैं देश की ज़मीन पर पानी बर-
साऊँगा।”[10] 2 तब एलियाह, अहाब

17:18 * या “मेरा तुझसे क्या काम?”

अध्य. 17
1 लूक 4:25, 26
2 इब्र 11:32, 37
3 2रा 4:2
4 भज 34:10, भज 37:17, 19, फिल 4:19
5 मत 10:41, 42, लूक 4:25, 26

दूसरा कॉल.
1 2रा 4:19, 20
2 अय 13:26
3 2रा 4:21, 32
4 भज 99:6
5 याकू 5:16
6 व्य 32:39, 1शम 2:6, 2रा 4:32, 34, 2रा 13:21, लूक 7:15, लूक 8:54, 55, यूह 5:28, 29, यूह 11:44, प्रेष 9:40, 41, प्रेष 20:9, 10, रोम 14:9, इब्र 11:17, 19
7 इब्र 11:35
8 यूह 3:2

अध्य. 18
9 लूक 4:25, याकू 5:17
10 भज 65:9, 10, यिर्म 14:22

के पास गया। उस समय तक सामरिया में
अकाल भयंकर रूप ले चुका था।[1]
3 इस बीच अहाब ने अपने राज-
महल की देखरेख के अधिकारी ओबद्याह
को बुलवाया। (ओबद्याह यहोवा का बहुत
डर मानता था। 4 जब इज़ेबेल[2] यहोवा
के भविष्यवक्ताओं को मरवा रही थी,
तब ओबद्याह ने 100 भविष्यवक्ताओं
को पचास-पचास में बाँटकर दो गुफाओं
में छिपा दिया था और वह उनके लिए
रोटी और पानी मुहैया कराता रहा।)
5 अहाब ने ओबद्याह से कहा, "देश
की सभी घाटियों और पानी के सोतों के
पास जा। हो सकता है हमारे घोड़ों और
खच्चरों के लिए भरपूर घास मिल जाए,
वरना हमारे सभी जानवर मर जाएँगे।"
6 फिर अहाब और ओबद्याह ने देश का
दौरा करने के लिए इलाका आपस में बाँट
लिया, एक तरफ अहाब गया और दूसरी
तरफ ओबद्याह।
7 जब ओबद्याह जा रहा था तो रास्ते
में उसकी मुलाकात एलियाह से हुई जो
उससे मिलने के लिए वहाँ था। ओब-
द्याह ने एलियाह को देखते ही पह-
चान लिया और मुँह के बल गिरकर
उससे कहा, "मेरे मालिक एलियाह, क्या
तू है?"[3] 8 एलियाह ने कहा, "हाँ, मैं
हूँ। तू जाकर अपने मालिक को बता कि
एलियाह आया है।" 9 मगर ओबद्याह
ने कहा, "मैंने ऐसा क्या पाप किया है जो
तू अपने इस सेवक को अहाब के
हवाले कर रहा है? तू क्यों मुझे मरवाना
चाहता है? 10 तेरे परमेश्वर यहोवा के
जीवन की शपथ, ऐसा एक भी देश या
राज्य नहीं जहाँ मेरे मालिक ने तुझे
ढूँढ़ने के लिए अपने आदमी न भेजे हों।
जब भी किसी देश या राज्य के लोग
कहते, 'वह यहाँ नहीं है' तो मालिक
उनसे शपथ खिलवाता कि उन्होंने तुझे
नहीं देखा।[1] 11 अब तू मुझसे कह रहा
है कि जाकर अपने मालिक को बता कि
एलियाह यहाँ है। 12 जब मैं तेरे पास
से जाऊँगा तो यहोवा की पवित्र शक्ति
तुझे यहाँ से किसी ऐसी जगह ले जाएगी[2]
जिसका मुझे पता नहीं होगा और जब
मैं अहाब को तेरी खबर दूँगा और तू
उसे नहीं मिलेगा तो वह ज़रूर मुझे मार
डालेगा। तेरा सेवक बचपन से यहोवा का
डर मानता आया है। 13 मालिक, क्या
तुझे नहीं बताया गया कि जब इज़ेबेल
यहोवा के भविष्यवक्ताओं को मरवा रही
थी तो मैंने क्या किया था? मैंने यहोवा के
100 भविष्यवक्ताओं को पचास-पचास
में बाँटकर गुफाओं में छिपा दिया और
उनके लिए रोटी और पानी मुहैया कराता
रहा।[3] 14 मगर अब तू मुझसे कह रहा
है कि जाकर अपने मालिक को बता कि
एलियाह यहाँ है। वह ज़रूर मुझे मार
डालेगा।" 15 मगर एलियाह ने कहा,
"सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के जीवन
की शपथ, जिसकी मैं सेवा करता हूँ,*
आज मैं उसके सामने जाऊँगा।"
16 तब ओबद्याह ने अहाब के पास
जाकर उसे एलियाह के बारे में बताया
और अहाब, एलियाह से मिलने निकल
पड़ा।
17 जैसे ही अहाब ने एलियाह को देखा
उसने एलियाह से कहा, "इसराएल पर
घोर संकट लानेवाले, तू फिर आ गया?"
18 एलियाह ने कहा, "इसराएल पर
संकट लानेवाला मैं नहीं, तू और तेरे पिता
का घराना है। तुम लोगों ने यहोवा के
नियमों पर चलना छोड़ दिया और बाल
देवताओं को मानने लगे हो।[4] 19 अब

18:15 *शा., "जिसके सामने मैं खड़ा रहता हूँ।"

अध्य. 18
1 लैव 26:26; व्य 28:24
2 1रा 16:31
3 2रा 1:8

दूसरा कॉल.
1 1रा 17:2, 3
2 2रा 2:15, 16; मत 4:1; प्रेष 8:39
3 1रा 18:4
4 निर्ग 20:4; 1रा 9:9; 1रा 16:30-33

तू पूरे इसराएल को आदेश दे कि वह करमेल पहाड़[1] पर मेरे सामने इकट्ठा हो। साथ ही, बाल के 450 भविष्यवक्ताओं और पूजा-लाठ*[2] की उपासना करने-वाले 400 भविष्यवक्ताओं को भी बुला जो इज़ेबेल की मेज़ से खाते हैं।" **20** तब अहाब ने इसराएल के सब लोगों को करमेल पहाड़ पर आने का संदेश भेजा, साथ ही भविष्यवक्ताओं को वहाँ इकट्ठा किया।

21 फिर एलियाह सब लोगों के पास आकर कहने लगा, "तुम लोग कब तक दो विचारों में लटके रहोगे?*[3] अगर यहोवा सच्चा परमेश्वर है तो उसे मानो[4] और अगर बाल सच्चा परमेश्वर है तो उसे मानो!" मगर जवाब में लोगों ने एक शब्द भी न कहा। **22** तब एलियाह ने उनसे कहा, "यहोवा के भविष्यवक्ताओं में से सिर्फ मैं बचा हूँ[5] जबकि बाल के भविष्यवक्ता 450 हैं। **23** हमारे लिए दो बैल लाए जाएँ और बाल के भविष्य-वक्ता उनमें से एक बैल चुन लें। वे उसके टुकड़े-टुकड़े करके उसे लकड़ी पर रखें, मगर उसे आग न लगाएँ। दूसरा बैल मैं लूँगा और उसके टुकड़े-टुकड़े करके लकड़ी पर रखूँगा, मगर उसे आग नहीं लगाऊँगा। **24** फिर तुम लोग अपने देवता का नाम पुकारना[6] और मैं यहोवा का नाम पुकारूँगा। जो परमेश्वर जवाब में आग भेजेगा वही सच्चा परमेश्वर साबित होगा।"[7] तब सब लोगों ने कहा, "हाँ, यह सही रहेगा।"

25 फिर एलियाह ने बाल के भविष्य-वक्ताओं से कहा, "पहले तुम इनमें से एक बैल चुन लो और उसे बलि के लिए तैयार करो क्योंकि तुम्हारी तादाद ज़्यादा है। इसके बाद तुम अपने देवता का नाम पुकारना, मगर लकड़ी में आग मत लगाना।" **26** तब उन्होंने वह बैल लिया जो उन्हें दिया गया था। उन्होंने उसे बलि के लिए तैयार किया। फिर वे बाल देवता का नाम पुकारने लगे। वे सुबह से दोपहर तक कहते रहे, "हे बाल, हमारी सुन! हे बाल, हमारी सुन!" मगर उन्हें कोई जवाब नहीं मिला, कोई आवाज़ सुनायी नहीं दी।[1] फिर भी वे अपनी बनायी वेदी के चारों तरफ उछलते-कूदते रहे। **27** दोपहर के करीब एलियाह उनका मज़ाक उड़ाते हुए कहने लगा, "और ज़ोर से चिल्लाओ! वह एक देवता है,[2] शायद किसी बात को लेकर गहरी सोच में पड़ा हो या फिर वह हलका होने गया हो।* या क्या पता वह सो रहा हो, उसे जगाने की ज़रूरत पड़े!" **28** बाल के भविष्यवक्ता गला फाड़-फाड़कर पुकार रहे थे। वे अपने दस्तूर के मुताबिक खुद को बरछों और कटारों से काटने लगे। वे ऐसा तब तक करते रहे जब तक कि उनका पूरा शरीर लहू-लुहान न हो गया। **29** दोपहर बीत गयी, यहाँ तक कि शाम के अनाज के चढ़ावे का समय हो गया, फिर भी वे पागलों* जैसा बरताव करते रहे। मगर उन्हें कोई जवाब नहीं मिला, कोई आवाज़ सुनायी नहीं दी। उन पर ध्यान देनेवाला कोई न था।[3]

30 आखिरकार एलियाह ने सब लोगों से कहा, "तुम लोग मेरे पास आओ।" तब सब लोग उसके पास गए। फिर उसने यहोवा की वह वेदी ठीक की जो ढा दी गयी थी।[4] **31** फिर एलियाह ने 12 पत्थर लिए। ये पत्थर

18:19 *शब्दावली देखें। **18:21** *या "दो बैसाखियों के सहारे लँगड़ाते रहोगे?"

18:27 *या शायद, "किसी सफर पर निकला हो।" **18:29** *या "भविष्य-वक्ताओं।"

अध्य. 18

1 यह 19:26, 31
2 1रा 16:33
3 यिर्म 2:11; हो 10:2; मत 12:30; 1कुर 10:21; 2कुर 6:14, 15
4 निर्ग 20:5; यह 24:15; 1शम 7:3; भज 100:3
5 1रा 19:9, 10
6 न्या 6:31
7 लैव 9:23, 24; व्य 4:24; न्या 6:21; 1इत 21:26; 2इत 7:1

दूसरा कॉल.

1 यश 45:20; यिर्म 10:5; दान 5:23; हब 2:18, 19; 1कुर 8:4
2 यश 41:23
3 यश 44:19, 20
4 1रा 19:14

याक़ूब के बेटों से बने गोत्रों की गिनती के
हिसाब से थे, जिससे यहोवा ने कहा था,
"तेरा नाम इसराएल होगा।"[1] **32** उन
पत्थरों से एलियाह ने यहोवा के नाम
की महिमा के लिए एक वेदी बनायी।[2]
वेदी के चारों तरफ उसने खाई खुदवायी।
खाई जितनी ज़मीन पर बनायी गयी थी,
उसका माप उतनी ज़मीन के बराबर था
जिसमें दो सआ* बीज बोया जा सकता
है। **33** इसके बाद उसने वेदी पर लक-
ड़ियाँ तरतीब से रखीं, बैल के टुकड़े-
टुकड़े किए और लकड़ी पर रखे।[3] फिर
उसने कहा, "चार बड़े-बड़े मटकों में पानी
भरो और होम-बलि के जानवर पर और
लकड़ी पर उँडेल दो।" **34** उन्होंने जब
ऐसा किया तो उसने कहा, "एक बार
और करो।" उन्होंने दोबारा किया। उसने
कहा, "फिर से पानी उँडेलो।" उन्होंने
तीसरी बार ऐसा किया। **35** पानी वेदी
पर से चारों तरफ बहने लगा। उसने खाई
को भी पानी से भरवा दिया।

36 शाम का अनाज का चढ़ावा
अर्पित करने का समय हो गया था।[4]
भविष्यवक्ता एलियाह वेदी के पास आया
और उसने कहा, "हे यहोवा, अब्राहम,
इसहाक और इसराएल के परमेश्वर,[5]
आज तू यह ज़ाहिर कर दे कि इस-
राएल में तू ही परमेश्वर है और मैं तेरा
सेवक हूँ और तेरे आदेश पर ही मैंने यह
सब किया है।[6] **37** हे यहोवा, मेरी सुन
ले। मेरी दुआ सुन ले ताकि ये लोग जानें
कि तू यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है और
तू उनके दिलों को वापस अपनी तरफ फेर
रहा है।"[7]

38 तब यहोवा ने ऊपर से आग
भेजी जिससे होम-बलि, लकड़ी, पत्थर,
धूल, सबकुछ भस्म हो गया[1] और खाई
का पानी भी पूरी तरह सूख गया।[2]
39 जब लोगों ने यह सब देखा, तो वे
फौरन मुँह के बल गिरकर कहने लगे:
"यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है! यहोवा
ही सच्चा परमेश्वर है!" **40** तब एलि-
याह ने उनसे कहा, "बाल के सभी
भविष्यवक्ताओं को पकड़ लो! एक भी
भागने न पाए!" लोगों ने फौरन भविष्य-
वक्ताओं को पकड़ लिया। एलियाह उन्हें
कीशोन नदी[3] के पास ले गया और वहाँ
उन सबको मार डाला।[4]

41 फिर एलियाह ने अहाब से कहा,
"तू ऊपर जा और कुछ खा-पी ले क्योंकि
मूसलाधार बारिश की आवाज़ सुनायी दे
रही है।"[5] **42** तब अहाब खाने-पीने के
लिए ऊपर गया जबकि एलियाह कर-
मेल पहाड़ की चोटी पर गया। वह ज़मीन
पर घुटनों के बल झुका और उसने अपना
मुँह घुटनों के बीच रखा।[6] **43** फिर
उसने अपने सेवक से कहा, "ज़रा ऊपर
जा और समुंदर की तरफ देखकर आ।"
सेवक ने ऊपर जाकर देखा और कहा,
"कुछ नहीं दिखायी दे रहा।" एलियाह
ने सात बार उससे कहा, "जाकर देख।"
44 सातवीं बार सेवक ने कहा, "देख,
समुंदर पर से आदमी की हथेली जितना
छोटा बादल ऊपर उठ रहा है!" एलियाह
ने कहा, "अहाब के पास जा और उससे
कहना, 'रथ तैयार करवाकर यहाँ से
फौरन नीचे चला जा! वरना तू मूसलाधार
बारिश में फँस जाएगा।'" **45** इस बीच
आसमान काले बादलों से ढक गया,
तेज़ हवाएँ चलने लगीं और मूसलाधार
बारिश होने लगी।[7] अहाब रथ पर सवार
होकर यिजरेल की तरफ भागता गया।[8]
46 मगर यहोवा ने एलियाह को शक्ति
दी और एलियाह ने अपने कपड़े से अपनी

18:32 *एक सआ 7.33 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 18

1 उत 32:28, 30; उत 35:10; यश 48:1
2 निर्ग 20:25; व्य 27:6
3 उत 22:9; लैव 1:7, 8
4 निर्ग 29:41
5 उत 26:24; उत 28:13
6 गि 16:28; यूह 11:42
7 यिर्म 31:18; यहे 33:11

दूसरा कॉल.

1 लैव 9:23, 24; न्या 6:21; 2इत 7:1
2 1रा 18:23, 24
3 न्या 5:20, 21; भज 83:9
4 व्य 13:1-5; व्य 18:20
5 1रा 17:1
6 याकू 5:17, 18
7 1शम 12:18; अय 38:37
8 यह 19:17, 18; 1रा 21:1

कमर कसी और दौड़ने लगा। वह इतनी
तेज़ दौड़ा कि अहाब से आगे निकल गया
और यिजरेल तक दौड़ता गया।

19 फिर अहाब[1] ने इज़ेबेल[2] को सारा
हाल कह सुनाया। उसने बताया
कि एलियाह ने क्या-क्या किया और
कैसे सभी भविष्यवक्ताओं को तलवार
से मार डाला।[3] **2** तब इज़ेबेल ने एक
दूत के हाथ एलियाह के पास यह
संदेश भेजा: "अगर कल इस वक्त तक,
मैंने तेरा वह हश्र नहीं किया जो तूने सभी
भविष्यवक्ताओं का किया है, तो मुझ पर
मेरे देवताओं का कहर टूटे!" **3** यह
सुनकर एलियाह बहुत डर गया। वह
फौरन उठा और अपनी जान बचा-
कर भाग गया।[4] जब वह यहूदा के
बेरशेबा[5] पहुँचा, तो उसने अपने सेवक
को वहीं छोड़ दिया। **4** वह एक दिन
का सफर तय करके वीराने में गया
और वहाँ एक झाड़ी के नीचे बैठ गया
और उसने परमेश्वर से मौत माँगी।
उसने कहा, "हे यहोवा, अब मुझसे और
बरदाश्त नहीं होता! तू मेरी जान ले ले[6]
क्योंकि मैं अपने पुरखों से कुछ बढ़कर
नहीं हूँ।"

5 फिर वह झाड़ी के नीचे लेट गया
और सो गया। अचानक एक स्वर्गदूत ने
आकर उसे छुआ[7] और उससे कहा, "उठ
और कुछ खा ले।"[8] **6** जब वह उठा तो
उसने देखा कि उसके सिरहाने गरम
पत्थरों पर एक गोल रोटी रखी है,
साथ ही पानी की एक सुराही भी है।
उसने रोटी खायी, पानी पीया और फिर से
लेट गया। **7** बाद में यहोवा का स्वर्ग-
दूत फिर से उसके पास आया और उसे
छूकर कहा, "उठ और कुछ खा ले क्योंकि
आगे का सफर तेरे लिए बहुत मुश्किल
और थकाऊ होगा।" **8** तब उसने उठ-
कर खाया-पीया। उस खाने से ताकत
पाकर वह 40 दिन और 40 रात पैदल
चलता रहा। आखिर में वह सच्चे पर-
मेश्वर के पहाड़ होरेब[1] पहुँचा।

9 वहाँ एलियाह एक गुफा के अंदर
गया[2] और उसने वहीं रात बितायी।
फिर यहोवा का संदेश उसके पास पहुँचा।
उसने कहा, "एलियाह, तू यहाँ क्या कर
रहा है?" **10** एलियाह ने कहा, "मैंने
सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की उपासना
के लिए बढ़-चढ़कर जोश दिखाया है,[3]
क्योंकि इसराएल के लोगों ने तेरा करार
मानना छोड़ दिया,[4] तेरी वेदियाँ ढा दीं
और तेरे भविष्यवक्ताओं को तलवार
से मार डाला।[5] मैं ही अकेला बचा हूँ
और अब वे मेरी जान के पीछे पड़े हैं।"[6]
11 मगर परमेश्वर ने कहा, "यहाँ से
बाहर जा और पहाड़ पर यहोवा के
सामने खड़ा हो।" और देखो! यहोवा वहाँ
से गुज़रने लगा[7] और यहोवा के सामने
एक भयानक और ज़बरदस्त आँधी चली
जिससे पहाड़ फटने लगे और चट्टानें चूर-
चूर होने लगीं,[8] मगर यहोवा आँधी में
नहीं था। आँधी के बाद एक भूकंप
आया,[9] मगर यहोवा भूकंप में नहीं
था। **12** भूकंप के बाद आग की ज्वाला
भड़की,[10] मगर यहोवा आग में नहीं
था। आग के बाद एक धीमी आवाज़
सुनायी दी और उस आवाज़ में नरमी
थी।[11] **13** जैसे ही एलियाह ने वह
आवाज़ सुनी उसने अपनी पोशाक* से
अपना चेहरा ढक लिया[12] और गुफा से
बाहर आया और उसके मुहाने पर खड़ा
हो गया। तब एक आवाज़ ने एलियाह
से पूछा, "एलियाह, तू यहाँ क्या कर
रहा है?" **14** एलियाह ने कहा, "मैंने
सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की उपासना

अध्य. 19
1 1रा 16:29; 1रा 21:25
2 1रा 16:31
3 1रा 18:40
4 निर्ग 2:15; 1शम 27:1
5 उत 21:31; यह 15:21, 28
6 गि 11:15; अय 3:21; यो 4:3
7 दान 10:8-10; प्रेष 12:7
8 भज 34:7; इब्र 1:7, 14

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 3:1; निर्ग 19:18; मला 4:4
2 इब्र 11:32, 38
3 निर्ग 20:4, 5; गि 25:11; भज 69:9
4 व्य 29:24, 25; न्या 2:20; 1रा 8:9; 2रा 17:15
5 1रा 18:4
6 1रा 19:2; रोम 11:2, 3
7 निर्ग 33:22
8 भज 50:3; यश 29:6
9 1शम 14:15; अय 9:6; भज 68:8; नहू 1:5
10 व्य 4:11
11 निर्ग 34:5, 6
12 निर्ग 3:6

19:13 *या "भविष्यवक्ता की पोशाक।"

के लिए बढ़-चढ़कर जोश दिखाया है,
क्योंकि इसराएल के लोगों ने तेरा करार
मानना छोड़ दिया,[1] तेरी वेदियाँ ढा दीं
और तेरे भविष्यवक्ताओं को तलवार
से मार डाला। मैं ही अकेला बचा हूँ और
अब वे मेरी जान के पीछे पड़े हैं।”[2]
15 यहोवा ने उससे कहा, “तू यहाँ से
लौट जा और दमिश्क के वीराने में
जा। दमिश्क में तू हजाएल[3] को सीरिया
का राजा ठहरा। 16 और निमशी के
पोते येहू का अभिषेक करके[4] उसे इस-
राएल का राजा ठहरा। और तू आबेल-
महोला के रहनेवाले शापात के बेटे
एलीशा* का अभिषेक कर ताकि वह
तेरी जगह भविष्यवक्ता बने।[5] 17 जो
कोई हजाएल की तलवार[6] से बचेगा उसे
येहू मार डालेगा[7] और जो येहू की तल-
वार से बचेगा उसे एलीशा मार डालेगा।[8]
18 और देख, इसराएल में अब भी मेरे
7,000 लोग हैं[9] जिन्होंने बाल के सामने
घुटने टेककर दंडवत नहीं किया[10] और न
ही उसे चूमा।”[11]
19 तब एलियाह वहाँ से चला गया।
इसके बाद वह शापात के बेटे एलीशा से
मिला जो हल चला रहा था। वहाँ 12
जोड़ी बैलों से खेत जोता जा रहा था और
एलीशा सबसे पीछे 12वीं जोड़ी के साथ
था। एलियाह, एलीशा के पास गया और
उसने अपनी पोशाक*[12] उस पर डाली।
20 एलीशा ने फौरन बैल छोड़ दिए और
दौड़कर एलियाह के पास गया। उसने
एलियाह से गुज़ारिश की, “मुझे अपने
माता-पिता को चूमकर विदा लेने दे।
उसके बाद मैं तेरे साथ चलूँगा।” एलि-
याह ने कहा, “ठीक है, जा। मैं तुझे
नहीं रोकूँगा।” 21 तब एलीशा वापस
गया और उसने एक जोड़ी बैल लिए
और उनकी बलि चढ़ायी। फिर उसने हल
और जुए की लकड़ी जलाकर बैलों का
गोश्त उबाला और लोगों को दिया और
उन्होंने खाया। इसके बाद वह एलियाह
के साथ हो लिया और उसकी सेवा करने
लगा।[1]

20 सीरिया[2] के राजा बेन-हदद[3] ने
अपनी पूरी सेना इकट्ठी की, साथ
ही 32 दूसरे राजाओं और उनके घोड़ों
और रथों को लिया और सामरिया पर
हमला करने के लिए उसकी घेराबंदी
की।[4] 2 फिर उसने अपने दूतों को इस-
राएल के राजा अहाब[5] के पास साम-
रिया भेजा। उन्होंने जाकर अहाब से
कहा, “बेन-हदद ने यह संदेश भेजा है:
3 ‘तेरा सारा सोना-चाँदी और तेरी
पत्नियों और बेटों में जो सबसे सुंदर हैं
वे मेरे हैं।’” 4 जवाब में इसराएल के
राजा ने कहा, “मेरे मालिक राजा, जैसी
तेरी मरज़ी। मैं और मेरा जो कुछ है वह
सब तेरा है।”[6]
5 बाद में वे दूत इसराएल के राजा
के पास फिर आए और उन्होंने यह
संदेश दिया: “बेन-हदद ने कहा है,
‘मैंने पहले तेरे पास संदेश भेजा था
कि तू अपना सोना-चाँदी और अपनी
पत्नियाँ और बेटे मेरे हवाले कर दे।’
6 मगर अब मैं कहता हूँ कि कल
इसी समय मैं अपने सेवकों को तेरे पास
भेजूँगा और वे तेरे महल और तेरे सेवकों
के घरों का कोना-कोना छान मारेंगे और
तेरी सारी कीमती चीज़ें ज़ब्त करके ले
जाएँगे।”
7 तब इसराएल के राजा ने देश के
सभी मुखियाओं को बुलवाया और उनसे
कहा, “ज़रा इस बात पर गौर करो, उस
आदमी ने इसराएल को बरबाद करने की

19:16 *मतलब “परमेश्वर उद्धार है।”
19:19 *या “भविष्यवक्ता की पोशाक।”

अध्य. 19
1 व्य 31:20; भज 78:37; यश 1:4; यिर्म 22:9
2 रोम 11:2, 3
3 2रा 8:7, 8; आम 1:4
4 2रा 9:1-3; 2रा 9:30-33
5 2रा 2:9, 15
6 2रा 8:12; 2रा 10:32; 2रा 13:3
7 2रा 9:14, 24; 2रा 10:6, 7; 2रा 10:23, 25
8 2रा 2:23, 24
9 रोम 11:4
10 निर्ग 20:5
11 हो 13:2
12 2रा 2:8

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 24:13; 2रा 2:3; 2रा 3:11

अध्य. 20
2 2शम 8:6; 2रा 5:2; यश 9:12
3 2रा 8:7
4 व्य 28:52; 2रा 6:24; 2रा 17:5
5 1रा 16:29
6 व्य 28:15, 48

ठान ली है। उसने माँग की है कि मैं उसे
अपनी पत्नियाँ और बेटे और सोना-चाँदी
दे दूँ और मैंने हाँ कह दिया है।" 8 तब
सभी मुखियाओं और लोगों ने उससे
कहा, "तू उसकी बात मत मान, उसकी
माँग मत पूरी कर।" 9 राजा ने बेन-
हदद के दूतों से कहा, "तुम मेरे मालिक
राजा से कहना, 'तेरा यह सेवक तेरी
पहली माँग पूरी करेगा, मगर इस बार
तूने जो माँग की है वह मैं पूरी नहीं
कर सकता।'" दूतों ने वापस जाकर यह
संदेश बेन-हदद को सुनाया।

10 तब बेन-हदद ने इसराएल के
राजा के पास यह संदेश भेजा: "मैं अपनी
विशाल सेना से सामरिया को खाक में
मिला दूँगा। वहाँ इतनी धूल भी न बचेगी
कि मेरे हर सैनिक के हाथ में मुट्ठी-
भर धूल आ सके। अगर मैंने ऐसा
नहीं किया तो मुझ पर देवताओं का
कहर टूटे!" 11 इसराएल के राजा ने
जवाब दिया, "जाकर उससे कहो, 'युद्ध
शुरू होने से पहले ही तू शेखी मत
मार मानो तूने युद्ध जीत लिया है।'"[1]
12 जब यह संदेश बेन-हदद के पास
पहुँचा तब वह और उसके साथवाले राजा
अपने तंबुओं* में शराब पी रहे थे। यह
संदेश पाते ही बेन-हदद ने अपने सेवकों
को हुक्म दिया, "हमले के लिए तैयार हो
जाओ!" वे शहर पर हमला करने तैयार
हो गए।

13 मगर एक भविष्यवक्ता इसराएल
के राजा अहाब[2] के पास आया और
कहने लगा, "तेरे लिए यहोवा का यह
संदेश है: 'यह बड़ी सेना जो तू देख
रहा है इसे मैं आज तेरे हाथ में कर
दूँगा और तब तू जान जाएगा कि मैं
यहोवा हूँ।'"[1] 14 अहाब ने पूछा, "यह
सब किसके ज़रिए होगा?" भविष्यवक्ता
ने कहा, "यहोवा ने कहा है, 'सभी प्रांतों*
के हाकिमों के सेवकों के ज़रिए।'" इस-
लिए अहाब ने पूछा, "युद्ध कौन शुरू
करेगा?" भविष्यवक्ता ने कहा, "तू शुरू
करेगा!"

15 फिर अहाब ने सभी प्रांतों के
हाकिमों के सेवकों की गिनती ली और
वे 232 निकले। इसके बाद उसने सभी
इसराएली सैनिकों की गिनती ली और
वे 7,000 थे। 16 वे दुश्मन पर हमला
करने दोपहर को शहर से बाहर निकले।
उस वक्त बेन-हदद उन 32 राजाओं
के साथ तंबुओं* में खूब शराब पी
रहा था जो उसकी मदद करने आए
थे। 17 जब इसराएल के हाकिमों के
सेवक शहर से बाहर निकले थे, तभी
बेन-हदद ने भी अपने दूतों को भेजा
था। दूतों ने वापस जाकर बेन-हदद को
खबर दी कि सामरिया के आदमी शहर
से बाहर निकल आए हैं। 18 बेन-
हदद ने कहा, "अगर वे हमसे सुलह
करने आए हैं तो उन्हें पकड़ लाओ।
अगर वे युद्ध करने आए हैं, तो भी
उन्हें ज़िंदा पकड़ लाओ।" 19 इस-
राएली प्रांतों के हाकिमों के सेवक और
उनके पीछे चलनेवाले सैनिक, जो शहर से
बाहर आए थे, 20 वे दुश्मनों को मार
गिराने लगे। तब सीरिया के लोग भागने
लगे[2] और इसराएलियों ने उनका पीछा
किया। मगर सीरिया का राजा बेन-हदद
घोड़े पर सवार होकर अपने कुछ घुड़-
सवारों के साथ भाग निकला। 21 इस-
राएल का राजा भी बाहर आया और वह
घोड़ों पर और रथों पर सवार लोगों को

अध्य. 20
1 नीत 16:18; नीत 27:1; सभ 7:8
2 1रा 16:29

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 14:18; भज 37:20
2 लैव 26:8; व्य 28:7

20:12, 16 * या "छप्परों।"

20:14 * या "ज़िला अधिकार-क्षेत्रों।"

मार डालने लगा और उसने सीरिया को
बुरी तरह हरा दिया।*
22 बाद में भविष्यवक्ता[1] ने इस-
राएल के राजा के पास आकर उससे
कहा, "सीरिया का राजा अगले साल की
शुरूआत* में फिर से तुझ पर हमला
करेगा।[2] इसलिए तू जाकर अपनी सेना
को मज़बूत कर और आगे कैसे-क्या
कार्रवाई करेगा, इस बारे में अच्छी तरह
विचार कर।"[3]
23 सीरिया के राजा के सेवकों ने
उससे कहा, "उनका परमेश्वर पहाड़ों का
परमेश्वर है, इसीलिए वे हमें हरा सके।
लेकिन अगर हम उनसे मैदान में लड़ें
तो हम उन्हें हरा देंगे। 24 तू एक और
काम कर: सैनिकों की अगुवाई करने के
काम से सभी राजाओं[4] को हटा दे
और उनकी जगह राज्यपालों को ठहरा।
25 फिर तू उतनी बड़ी सेना इकट्ठा कर*
जितनी तू पहले लेकर गया था। तूने
जितने घोड़े और रथ खोए थे, उतने घोड़े
और रथ लेकर पहले के बराबर सेना
तैयार कर। हम उनसे मैदान में युद्ध
करेंगे। तब देखना, जीत हमारी होगी।"
बेन-हदद ने उनकी सलाह मानी और ऐसा
ही किया।
26 अगले साल की शुरूआत* में
बेन-हदद ने सीरिया के सैनिकों को
इकट्ठा किया और वे इसराएल से युद्ध
करने अपेक शहर[5] गए। 27 इधर
इसराएल के सैनिकों को भी इकट्ठा किया
गया और उन्हें ज़रूरत की चीज़ें मुहैया
करायी गयीं। वे सीरिया की सेना से
मुकाबला करने निकल पड़े। जब इस-

20:21 *या "सीरिया में मार-काट मचा दी।" **20:22, 26** *यानी अगले वसंत। **20:25** *शा., "सेना की गिनती ले।"

अध्य. 20
1 1रा 20:13
2 2शम 11:1
3 नीत 20:18
4 1रा 20:1, 16
5 2रा 13:17

दूसरा कॉल.
1 न्या 6:5, 6
1शम 13:5
2इत 32:7
2 व्य 32:26, 27
यहे 20:9
यहे 36:22
3 निर्ग 6:7
निर्ग 7:5
भज 83:18
यहे 6:14
यहे 39:7
4 1रा 20:26
5 यो 3:8, 9

राएल के सैनिक उनके सामने छावनी
डाले हुए थे तो वे बकरियों के दो छोटे-
छोटे झुंड जैसे लग रहे थे, जबकि सीरिया
के सैनिकों की तादाद इतनी थी कि वे पूरे
इलाके में छा गए थे।[1] 28 फिर सच्चे
परमेश्वर के सेवक ने इसराएल के राजा
के पास आकर उससे कहा, "तेरे लिए
यहोवा का यह संदेश है: 'सीरिया के
लोगों ने कहा है, "यहोवा पहाड़ों का पर-
मेश्वर है, मैदानों का नहीं।" इसलिए मैं
इस बड़ी भीड़ को तेरे हाथ में कर
दूँगा[2] और तू बेशक जान जाएगा कि मैं
यहोवा हूँ।'"[3]
29 इसराएल और सीरिया के सैनिक
सात दिन तक एक-दूसरे के सामने छावनी
डाले रहे। सातवें दिन युद्ध शुरू हुआ।
इसराएली सैनिकों ने एक दिन में सीरिया
के 1,00,000 पैदल सैनिकों को मार
डाला। 30 सीरिया के बाकी सैनिक
भागकर अपेक शहर के अंदर चले गए।[4]
मगर बचे हुओं में से 27,000 सैनिकों
पर दीवार गिर गयी। बेन-हदद भी भाग
गया और शहर के अंदर चला गया और
एक घर के भीतरी कमरे में जा छिपा।
31 बेन-हदद के सेवकों ने उससे
कहा, "देख, हमने सुना है कि इसराएल
के राजा बड़े दयालु* होते हैं। तेरी इजा-
ज़त हो तो हम अपनी कमर पर टाट और
सिर पर रस्सी बाँधकर इसराएल के राजा
के पास जाएँगे। हो सकता है वह आपको
ज़िंदा छोड़ दे।"[5] 32 वे कमर पर टाट
और सिर पर रस्सी बाँधकर इसराएल के
राजा के पास आए और कहने लगे, "तेरे
सेवक बेन-हदद ने कहा है, 'दया करके
मुझे बख्श दे।'" इसराएल के राजा ने
कहा, "क्या वह ज़िंदा है? वह मेरा भाई

20:31 *या "अटल प्यार से भरपूर।"

है।” 33 उन आदमियों ने इसे शुभ-
चिन्ह माना और वे फौरन समझ गए कि
राजा साफ नीयत से यह कह रहा है। इस-
लिए उन्होंने कहा, “बिलकुल, बेन-हदद
तेरा भाई ही है।” अहाब ने कहा, “जाओ,
उसे यहाँ ले आओ।” फिर बेन-हदद
निकलकर उसके पास आया और अहाब
ने उसे अपने साथ रथ पर बिठाया।

34 बेन-हदद ने उससे कहा, “मेरे
पिता ने तेरे पिता से जो शहर ले लिए
थे वे मैं तुझे लौटा दूँगा। इतना ही नहीं,
तू दमिश्क में बाज़ार खुलवा लेना* जैसे
मेरे पिता ने सामरिया में बाज़ार खुल-
वाए थे।”

जवाब में अहाब ने कहा, “ठीक है,
इसी समझौते# पर मैं तुझे जाने देता हूँ।”

इस तरह अहाब ने बेन-हदद के साथ
समझौता किया और उसे जाने दिया।

35 फिर भविष्यवक्ताओं के बेटों*[1]
में से एक को यहोवा का संदेश मिला और
उसने उस संदेश के मुताबिक अपने एक
साथी से कहा, “मुझे मार।” मगर उसके
साथी ने इनकार कर दिया। 36 तब
भविष्यवक्ता ने उससे कहा, “तूने यहोवा
की बात नहीं मानी, इसलिए जैसे ही तू
मुझे छोड़कर यहाँ से जाएगा एक शेर
तुझे मार डालेगा।” जब वह भविष्यवक्ता
को छोड़कर गया तो एक शेर ने उस पर
हमला किया और उसे मार डाला।

37 फिर भविष्यवक्ता को एक और
आदमी मिला और उसने उस आदमी से
कहा, “मुझे मार।” उस आदमी ने उसे
मारा और घायल कर दिया।

38 फिर भविष्यवक्ता ने अपनी पह-
चान छिपाने के लिए आँखों पर पट्टी बाँधी
और एक सड़क पर खड़े होकर राजा का
इंतज़ार करने लगा। 39 जब राजा वहाँ
से गुज़रा तो उसने राजा की दुहाई
देते हुए कहा, “मालिक, तेरा यह सेवक
युद्ध में गया था। उस वक्त घमासान
लड़ाई चल रही थी और एक आदमी
दूसरे आदमी को लेकर मेरे पास आया
और बोला, ‘इस आदमी पर नज़र
रख। अगर यह गायब हुआ तो इसके
बदले तेरी जान ले ली जाएगी[1] या
फिर तुझे एक तोड़ा* चाँदी देनी होगी।’
40 जब तेरा सेवक वहाँ किसी काम में
लगा हुआ था तो अचानक वह आदमी
गायब हो गया।” तब इसराएल के
राजा ने उससे कहा, “तेरा मामला साफ
है। तूने खुद अपना फैसला सुनाया है।”
41 तब उस आदमी ने फौरन अपनी
आँखों से पट्टी उतारी और इसराएल के
राजा ने पहचान लिया कि वह भविष्य-
वक्ताओं में से एक है।[2] 42 भविष्य-
वक्ता ने राजा से कहा, “तेरे लिए यहोवा
का यह संदेश है: ‘तूने उस आदमी
को हाथ से जाने दिया जिसके बारे में
मैंने कहा था कि उसे नाश कर दिया
जाए।[3] इसलिए उसकी जान के बदले
तेरी जान ले ली जाएगी[4] और उसके
लोगों के बदले तेरे लोगों का नाश
किया जाएगा।’”[5] 43 यह सुनकर
इसराएल का राजा उदास हो गया और
मुँह लटकाए सामरिया में अपने महल
चला गया।[6]

21 इसके बाद यिजरेल[7] के रहने-
वाले नाबोत के अंगूरों के बाग
के सिलसिले में एक घटना घटी। नाबोत

20:34 *या “सड़कें ठहराना।” #या “करार।” **20:35** *“भविष्यवक्ताओं के बेटों” का मतलब शायद भविष्यवक्ताओं का दल था या भविष्यवक्ताओं का एक संघ था जिसमें उन्हें तालीम दी जाती थी।

20:39 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 20
1 2रा 2:3

दूसरा कॉल.
1 2रा 10:24, प्रेष 12:19, प्रेष 16:27
2 1रा 20:35
3 लैव 27:29, 1शम 15:9, यिर्म 48:10
4 1रा 22:31, 35, 2इत 18:33
5 2रा 6:24, 2रा 8:12, 2इत 18:16
6 1रा 16:29

अध्य. 21
7 यह 19:17, 18

का बाग, यिजरेल में सामरिया के राजा
अहाब के महल के पास था। 2 अहाब
ने नाबोत से कहा, “अपना अंगूरों
का बाग मुझे दे दे क्योंकि वह मेरे
महल के पास है। मैं उसे सब्ज़ियों
का बाग बनाना चाहता हूँ। उसके बदले
मैं तुझे उससे भी बढ़िया अंगूरों का
बाग दूँगा। या तू चाहे तो मैं उसकी
कीमत चुका दूँगा।” 3 मगर नाबोत ने
अहाब से कहा, “मैं तुझे अपने पुरखों की
विरासत की ज़मीन देने की बात सोच भी
नहीं सकता, क्योंकि ऐसा करना यहोवा
की नज़र में गलत होगा।”[1] 4 यिज-
रेली नाबोत का यह जवाब सुनकर कि मैं
अपने पुरखों से मिली विरासत तुझे नहीं
दूँगा, अहाब बहुत उदास हो गया और
मुँह लटकाए अपने महल में आया। वह
बिस्तर पर लेट गया और उसने अपना
मुँह फेर लिया और खाने से इनकार कर
दिया।

5 अहाब की पत्नी इज़ेबेल[2] उसके
पास आयी और कहने लगी, “तू क्यों
इतना उदास है कि खाना भी नहीं
खा रहा?” 6 अहाब ने कहा, “मैंने
यिजरेली नाबोत से कहा कि तू मुझे
अपना अंगूरों का बाग दे दे, मैं तुझे उसकी
कीमत दे दूँगा। या तू चाहे तो मैं तुझे एक
और अंगूरों का बाग दूँगा। मगर उसने
अपना बाग बेचने से इनकार कर दिया।”
7 तब उसकी पत्नी इज़ेबेल ने कहा, “तू
इसराएल का राजा है न? उठकर खा-
पी और खुश रह। यिजरेली नाबोत के
अंगूरों का बाग मैं तुझे दिलाती हूँ।”[3]
8 इज़ेबेल ने अहाब के नाम पर चिट्ठियाँ
लिखीं, उन पर राजा की मुहर लगायी[4]
और नाबोत के शहर के मुखियाओं[5]
और रुतबेदार आदमियों के पास भेजीं।
9 चिट्ठियों में यह लिखा था, “तुम उप-
वास का ऐलान करो और नाबोत को सब
लोगों के आगे बिठाओ। 10 और कहीं
से दो निकम्मे आदमियों को लाकर नाबोत
के सामने बिठाओ। उनसे कहना कि वे
नाबोत के खिलाफ यह गवाही दें,[1] ‘तूने
परमेश्वर और राजा की निंदा की है!’[2]
फिर नाबोत को बाहर ले जाओ और उसे
पत्थरों से मार डालो।”[3]

11 शहर के मुखियाओं और रुतबे-
दार आदमियों ने वैसा ही किया जैसा
इज़ेबेल की भेजी चिट्ठियों में लिखा था।
12 उन्होंने उपवास का ऐलान किया और
नाबोत को सब लोगों के आगे बिठाया।
13 फिर दो निकम्मे आदमी आए और
नाबोत के सामने बैठ गए। वे सब लोगों
के सामने नाबोत के खिलाफ यह गवाही
देने लगे, “नाबोत ने परमेश्वर और राजा
की निंदा की है!”[4] इसके बाद नाबोत को
शहर से बाहर ले जाया गया और उसे
पत्थरों से मार डाला गया।[5] 14 फिर
उन आदमियों ने इज़ेबेल के पास खबर
भेजी कि नाबोत को पत्थरों से मार डाला
गया है।[6]

15 जैसे ही इज़ेबेल ने सुना कि नाबोत
को पत्थरों से मार डाला गया है,
उसने अहाब से कहा, “चल उठ, जाकर
यिजरेली नाबोत का अंगूरों का बाग
अपने अधिकार में ले ले,[7] जिसे बेचने
से उसने इनकार कर दिया था क्योंकि
नाबोत मर गया है।” 16 जब अहाब ने
सुना कि नाबोत मर गया है, तो वह फौरन
उसके अंगूरों के बाग पर कब्ज़ा करने
निकल पड़ा।

17 मगर यहोवा का यह संदेश तिशबे
के रहनेवाले एलियाह[8] के पास पहुँचा:
18 “तू सामरिया जा और इसराएल के
राजा अहाब से मिल।[9] वह नाबोत के
अंगूरों के बाग में है। वह उसे अपने

अध्य. 21
1 लैव 25:23, गि 36:7
2 1रा 16:31, 1रा 18:4, 1रा 19:2, 1रा 21:25
3 मी 2:1, मी 7:3
4 नहे 9:38, एस 8:8
5 व्य 16:18

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:16, व्य 17:6
2 निर्ग 22:28
3 लैव 24:16, यूह 10:33
4 आम 5:12, हब 1:4
5 2रा 9:25, 26, सभ 4:1
6 सभ 5:8, सभ 8:14, हब 1:13
7 1रा 21:7
8 1रा 17:1
9 1रा 16:29

अधिकार में करने वहाँ गया है। 19 तू
उससे कहना, ‘तेरे लिए यहोवा का यह
संदेश है: “तूने क्यों एक आदमी का कत्ल
कर दिया[1] और क्यों उसकी जायदाद ले
ली?”’[2] इसके बाद तू उससे कहना,
‘यहोवा ने कहा है, “जिस जगह कुत्तों ने
नाबोत का खून चाटा था, उसी जगह कुत्ते
तेरा खून भी चाटेंगे।”’”[3]

20 अहाब ने एलियाह से कहा,
“अच्छा तो मेरे दुश्मन ने मुझे पकड़
लिया!”[4] एलियाह ने कहा, “हाँ, मैंने
तुझे पकड़ लिया। परमेश्वर ने कहा है,
‘तूने यहोवा की नज़र में बुरे काम करने
की ठान ली है,*[5] 21 इसलिए मैं तुझ
पर कहर ढानेवाला हूँ। मैं तेरे घराने का
पूरी तरह सफाया कर दूँगा, तेरे घराने के
हर आदमी और हर लड़के को मार
डालूँगा,[6] यहाँ तक कि इसराएल के बे-
सहारा और कमज़ोर लोगों को भी मिटा
दूँगा।[7] 22 मैं तेरे घराने का वही हश्र
करूँगा जो मैंने नबात के बेटे यारोबाम के
घराने का और अहियाह के बेटे बाशा
के घराने का किया था,[8] क्योंकि तूने
मेरा क्रोध भड़काया है और इस-
राएल से पाप करवाया है।’ 23 और
इज़ेबेल के बारे में यहोवा ने कहा है,
‘यिजरेल की इसी ज़मीन पर इज़ेबेल की
लाश कुत्ते खा जाएँगे।[9] 24 अहाब के
वंशजों में से जो कोई शहर में मरेगा उसे
कुत्ते खा जाएँगे और जो मैदान में
मरेगा उसे आकाश के पक्षी खा जाएँगे।[10]
25 वाकई, आज तक अहाब जैसा
कोई नहीं हुआ है,[11] जिसने अपनी
पत्नी इज़ेबेल के उकसाने[12] पर ऐसे
काम करने की ठान ली है* जो यहोवा की
नज़र में बुरे हैं। 26 अहाब ने घिनौनी

21:20, 25 *शा., “के लिए खुद को बेच दिया है।”

अध्य. 21
1 उत 4:8, 10
2 व्य 5:21; हब 2:9
3 1रा 22:37, 38; 2रा 9:25, 26
4 1रा 18:17; आम 5:10
5 1रा 16:30
6 2रा 10:7, 17
7 2रा 9:7-9
8 1रा 15:25-29; 1रा 16:3, 11
9 2रा 9:10, 35
10 1रा 14:11; 1रा 16:4
11 1रा 16:30
12 1रा 16:31; 2इत 22:2, 3; प्रक 2:20

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 23:28; व्य 9:5
2 भज 78:34
3 2रा 9:25, 26; 2रा 10:7, 11

अध्य. 22
4 1रा 15:24
5 2इत 18:2, 3
6 यह 20:8, 9; 1रा 4:7, 13
7 2रा 3:7; 2इत 19:2

मूरतों* की पूजा करके नीचता करने
में हद कर दी है। वह उन एमोरियों
जैसा बन गया है जिन्हें यहोवा ने इसराए-
लियों के सामने से खदेड़ दिया था।’”[1]

27 जैसे ही अहाब ने यह संदेश
सुना, उसने अपने कपड़े फाड़े और शरीर
पर टाट ओढ़ लिया और वह उप-
वास करने लगा। वह टाट ओढ़े लेटा
रहता और मायूस होकर इधर-उधर
चलने लगता। 28 फिर यहोवा का यह
संदेश तिशबे के रहनेवाले एलियाह के
पास पहुँचा: 29 “क्या तूने देखा है कि
अहाब कैसे मेरे सामने नम्र बन गया है?[2]
क्योंकि वह मेरे सामने नम्र बन गया है
इसलिए मैं यह संकट उसके जीते-जी नहीं
लाऊँगा। मैं उसके घराने पर यह संकट
उसके बेटे के दिनों में लाऊँगा।”[3]

22 सीरिया और इसराएल के बीच
तीन साल तक कोई युद्ध नहीं
हुआ। 2 तीसरे साल यहूदा का राजा
यहोशापात[4] इसराएल के राजा से मिलने
गया।[5] 3 इसराएल के राजा ने अपने
सेवकों से कहा, “क्या रामोत-गिलाद[6]
हमारा इलाका नहीं है? फिर हम उसे
सीरिया के राजा से वापस लेने से क्यों
झिझक रहे हैं?” 4 फिर उसने यहोशा-
पात से कहा, “क्या तू युद्ध करने मेरे
साथ रामोत-गिलाद चलेगा?” यहोशापात
ने इसराएल के राजा से कहा, “हम दोनों
एक हैं। मेरे लोग तेरे ही लोग हैं। मेरे घोड़े
तेरे घोड़े हैं।”[7]

5 मगर यहोशापात ने इसराएल के
राजा से कहा, “क्यों न हम पहले

21:26 *इनका इब्रानी शब्द शायद “मल” के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

यहोवा से पूछें[1] कि उसकी क्या सलाह
है?”[2] 6 इसलिए इसराएल के राजा ने
भविष्यवक्ताओं को इकट्ठा किया जो
करीब 400 थे। उसने उनसे पूछा,
“क्या मैं रामोत-गिलाद पर हमला करने
जाऊँ?” उन्होंने कहा, “जा, तू हमला
कर, यहोवा उसे तेरे हाथ में कर देगा।”
7 फिर यहोशापात ने कहा, “क्या यहाँ
यहोवा का कोई भविष्यवक्ता नहीं है?
चलो हम उसके ज़रिए भी पूछते हैं।”[3]
8 तब इसराएल के राजा ने यहोशापात से
कहा, “एक और आदमी है जिसके ज़रिए
हम यहोवा से सलाह माँग सकते हैं,[4] मगर
मुझे उस आदमी से नफरत है।[5] वह मेरे
बारे में कभी अच्छी बातों की भविष्यवाणी
नहीं करता, सिर्फ बुरी बातें कहता है।[6]
वह यिम्ला का बेटा मीकायाह है।” मगर
यहोशापात ने कहा, “राजा को ऐसी बात
नहीं कहनी चाहिए।”
9 तब इसराएल के राजा ने अपने
एक दरबारी को बुलाया और उससे कहा,
“यिम्ला के बेटे मीकायाह को फौरन
यहाँ ले आ।”[7] 10 इसराएल का राजा
अहाब और यहूदा का राजा यहोशा-
पात, शाही कपड़े पहने सामरिया के
फाटक के पास एक खलिहान में अपनी-
अपनी राजगद्दी पर बैठे थे। सारे भविष्य-
वक्ता उन दोनों के सामने भविष्यवाणी
कर रहे थे।[8] 11 तब कनाना के बेटे
सिदकियाह ने अपने लिए लोहे के सींग
बनवाए और कहा, “तेरे लिए यहोवा का
यह संदेश है: ‘तू सीरिया के लोगों को
इनसे तब तक मारता* रहेगा जब तक कि
वे मिट नहीं जाते।’” 12 बाकी भविष्य-
वक्ता भी यही भविष्यवाणी कर रहे थे।
वे कह रहे थे, “जा, तू रामोत-गिलाद पर
हमला कर। तू ज़रूर कामयाब होगा,
यहोवा उसे तेरे हाथ में कर देगा।”
13 मीकायाह को बुलाने के लिए जो
दूत गया था, उसने मीकायाह से कहा,
“देख, सारे भविष्यवक्ता राजा को एक ही
बात बता रहे हैं। वे उसे अच्छी बातों की
भविष्यवाणी सुना रहे हैं। इसलिए मेहर-
बानी करके तू भी उनकी तरह कोई
अच्छी बात सुना।”[1] 14 मगर मीका-
याह ने कहा, “यहोवा के जीवन की
शपथ, मैं वही बात बताऊँगा जो यहोवा
मुझे बताएगा।” 15 फिर मीकायाह
राजा के पास आया और राजा ने
उससे पूछा, “मीकायाह, तू क्या कहता
है, हम रामोत-गिलाद पर हमला करें या
न करें?” उसने फौरन जवाब दिया,
“जा, तू रामोत-गिलाद पर हमला कर।
तू ज़रूर कामयाब होगा, यहोवा उसे तेरे
हाथ में कर देगा।” 16 राजा ने उससे
कहा, “मैं तुझे कितनी बार शपथ धराकर
कहूँ कि तू यहोवा के नाम से मुझे सिर्फ
सच बताएगा?” 17 तब मीकायाह ने
कहा, “मैं देख रहा हूँ कि सारे इसराएली
पहाड़ों पर तितर-बितर हो गए हैं,[2] उन
भेड़ों की तरह जिनका कोई चरवाहा नहीं
होता। यहोवा कहता है, ‘इनका कोई
मालिक नहीं है। इनमें से हर कोई शांति से
अपने घर लौट जाए।’”
18 तब इसराएल के राजा ने यहोशा-
पात से कहा, “देखा, मैंने कहा था न,
यह आदमी मेरे बारे में अच्छी बातों की
भविष्यवाणी नहीं करेगा, सिर्फ बुरी बातें
कहेगा।”[3]
19 फिर मीकायाह ने कहा, “इसलिए
अब यहोवा का संदेश सुन। मैंने देखा है
कि यहोवा अपनी राजगद्दी पर बैठा है[4]
और उसके दायीं और बायीं तरफ स्वर्ग की
सारी सेना खड़ी है।[5] 20 फिर यहोवा ने

22:11 * या “धकेलता।”

अध्य. 22
1 गि 27:21
2 2इत 18:4, 5
3 2रा 3:11; 2इत 18:6, 7
4 1रा 18:4
5 1रा 21:20; 2इत 36:16
6 यश 30:9, 10; यिर्म 38:4
7 2इत 18:8-11
8 यहे 13:2, 3

दूसरा कॉल.
1 2इत 18:12-16
2 व्य 28:15, 25
3 2इत 18:17
4 यश 6:1; यहे 1:26
5 2इत 18:18-22; अय 1:6; दान 7:9, 10; मत 18:10; प्रक 5:11

कहा, 'अहाब को कौन बेवकूफ बनाए-
गा ताकि वह रामोत-गिलाद जाए और
वहाँ मारा जाए?' तब सेना में से किसी
ने कुछ कहा तो किसी ने कुछ। 21 फिर
एक स्वर्गदूत[1] यहोवा के सामने आकर
खड़ा हुआ और उसने कहा, 'मैं अहाब
को बेवकूफ बनाऊँगा।' यहोवा ने पूछा,
'तू यह कैसे करेगा?' 22 उसने कहा,
'मैं जाकर उसके सभी भविष्यवक्ताओं के
मुँह से झूठ बुलवाऊँगा।'[2] परमेश्वर ने
कहा, 'तू उसे बेवकूफ बना लेगा, तू
ज़रूर कामयाब होगा। जा, तूने जैसा
कहा है वैसा ही कर।' 23 इसलिए
यहोवा ने तेरे इन सभी भविष्यवक्ताओं के
मुँह से झूठ बुलवाया है,[3] मगर यहोवा ने
ऐलान किया है कि तुझ पर संकट
आएगा।"[4]

24 तब कनाना का बेटा सिदकियाह,
मीकायाह के पास गया और उसके गाल
पर ज़ोर से थप्पड़ मारा और कहा,
"यहोवा का स्वर्गदूत कब से मुझे
छोड़कर तुझसे बात करने लगा है?"[5]
25 मीकायाह ने कहा, "इसका जवाब
तुझे उस दिन मिलेगा जब तू भागकर
अंदर के कमरे में जा छिपेगा।" 26 तब
इसराएल के राजा ने हुक्म दिया, "ले
जाओ इस मीकायाह को। इसे शहर के
प्रधान आमोन और राजा के बेटे योआश
के हवाले कर दो। 27 उनसे कहना,
'राजा ने आदेश दिया है कि इसे जेल में
बंद कर दो[6] और जब तक मैं सही-सला-
मत लौट नहीं आता तब तक इसे
नाम के लिए खाना-पानी देते रहना।'"
28 मगर मीकायाह ने कहा, "अगर तू
सही-सलामत लौटा तो इसका मतलब यह
होगा कि यहोवा ने मेरे ज़रिए बात नहीं
की है।"[7] फिर उसने कहा, "लोगो, तुम
सब यह बात याद रखना।"

29 इसके बाद इसराएल का राजा
अहाब और यहूदा का राजा यहोशापात
रामोत-गिलाद गए।[1] 30 इसराएल के
राजा ने यहोशापात से कहा, "मैं अपना
भेस बदलकर युद्ध में जाऊँगा, मगर तू
अपने शाही कपड़े पहने रहना।" इस-
राएल का राजा भेस बदलकर युद्ध
में गया।[2] 31 वहाँ सीरिया के राजा ने
अपनी रथ-सेना के 32 सेनापतियों[3] को
यह हुक्म दिया था, "तुम लोग सीधे इस-
राएल के राजा से युद्ध करना, उसके
सिवा किसी और से मत लड़ना, फिर
चाहे वह कोई मामूली सैनिक हो या
बड़ा अधिकारी।" 32 जैसे ही रथ-
सेना के सेनापतियों ने यहोशापात को
देखा उन्होंने सोचा, "ज़रूर यही इस-
राएल का राजा होगा।" इसलिए वे सब
यहोशापात पर हमला करने लगे और वह
मदद के लिए पुकारने लगा। 33 जैसे
ही सेनापतियों को पता चला कि वह इस-
राएल का राजा नहीं है, उन्होंने उसका
पीछा करना छोड़ दिया।

34 तब किसी सैनिक ने यूँ ही एक
तीर चलाया और वह तीर इसराएल के
राजा को वहाँ जा लगा जहाँ कवच और
बख्तर का दूसरा हिस्सा जुड़ा हुआ था।
राजा ने अपने सारथी से कहा, "रथ घुमा-
कर मुझे युद्ध के मैदान से बाहर ले
जा, मैं बुरी तरह घायल हो गया हूँ।"[4]
35 पूरे दिन घमासान लड़ाई चलती
रही और राजा को सहारा देकर सीरिया
के लोगों के सामने रथ पर खड़ा रखना
पड़ा। राजा के घाव से खून निकलकर रथ
के फर्श पर बहता रहा और शाम होते-
होते वह मर गया।[5] 36 जब सूरज
ढलने लगा तो पूरी छावनी में यह ऐलान
किया गया, "सब लोग अपने-अपने शहर
लौट जाएँ! सब लोग अपने-अपने देश

अध्य. 22

1 भज 104:4; इब्र 1:7, 14
2 1रा 22:6
3 यहे 14:9
4 1रा 20:42
5 2इत 18:23-27
6 इब्र 11:32, 36
7 गि 16:28, 29

दूसरा कॉल.

1 2इत 18:28-32
2 2इत 35:22
3 1रा 20:1
4 2इत 18:33, 34
5 1रा 20:42

लौट जाएँ!”[1] 37 इस तरह राजा की
मौत हो गयी और उसकी लाश साम-
रिया लायी गयी और वहाँ दफना दी
गयी। 38 जब उन्होंने उसका रथ साम-
रिया के तालाब के पास धोया तो कुत्तों
ने उसका खून चाटा और वहाँ वेश्याओं
ने नहाया।* इस तरह वह बात पूरी हुई
जो यहोवा ने कही थी।[2]

39 अहाब की ज़िंदगी की बाकी
कहानी, उसने जो-जो काम किए, हाथी-
दाँत[3] का जो महल बनवाया और जो
शहर बनवाए, उन सबका ब्यौरा इस-
राएल के राजाओं के इतिहास की
किताब में लिखा है। 40 अहाब की
मौत हो गयी*[4] और उसकी जगह उसका
बेटा अहज्याह[5] राजा बना।

41 जब इसराएल में अहाब के
राज का चौथा साल चल रहा था, तब
यहूदा में आसा का बेटा यहोशापात[6] राजा
बना था। 42 जब यहोशापात राजा बना
तब वह 35 साल का था और उसने यरू-
शलेम में रहकर 25 साल राज किया।
उसकी माँ का नाम अजूबाह था जो
शिलही की बेटी थी। 43 यहोशापात
अपने पिता आसा के नक्शे-कदम पर
चलता रहा।[7] वह उस राह से नहीं
भटका और उसने यहोवा की नज़र में
सही काम किए।[8] फिर भी, उसके राज
में ऊँची जगह नहीं मिटायी गयीं और
लोग अब भी उन जगहों पर बलिदान
चढ़ाया करते थे ताकि उनका धुआँ उठे।[9]
44 यहोशापात ने इसराएल के राजा के
साथ शांति बनाए रखी।[10] 45 यहोशा-
पात की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसकी
बड़ी-बड़ी कामयाबियाँ और उसने कैसे
युद्ध किए, उन सबका ब्यौरा यहूदा के
राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा
है। 46 उसने अपने पिता आसा के
समय के बचे हुए उन आदमियों को भी
देश से निकाल दिया जो मंदिरों में दूसरे
आदमियों के साथ संभोग करते थे।[1]

47 उन दिनों एदोम[2] में कोई राजा
नहीं था, सिर्फ एक राज्यपाल राज
करता था।[3]

48 यहोशापात ने तरशीश के जहाज़*
भी बनवाए ताकि ये सोना लाने के लिए
ओपीर जाएँ,[4] मगर ये जहाज़ वहाँ नहीं
जा सके क्योंकि एस्योन-गेबेर में ये टूटकर
तहस-नहस हो गए।[5] 49 फिर अहाब
के बेटे अहज्याह ने यहोशापात से कहा,
“मेरे सेवकों को तू अपने सेवकों के साथ
जहाज़ों पर जाने दे,” मगर यहोशापात
राज़ी नहीं हुआ।

50 फिर यहोशापात की मौत हो
गयी*[6] और उसे उसके पुरखे दाविद के
शहर दाविदपुर में पुरखों की कब्र में दफ-
नाया गया। उसकी जगह उसका बेटा
यहोराम[7] राजा बना।

51 जब यहूदा में यहोशापात के राज
का 17वाँ साल चल रहा था तब इस-
राएल में अहाब का बेटा अहज्याह[8] राजा
बना। अहज्याह ने सामरिया से इस-
राएल पर दो साल राज किया। 52 वह
यहोवा की नज़र में बुरे काम करता
रहा। वह अपने माता-पिता[9] के नक्शे-
कदम पर और नबात के बेटे यारोबाम के
नक्शे-कदम पर चला, जिसने इसराएल
से पाप करवाया था।[10] 53 वह अपने
पिता की तरह बाल देवता की सेवा करता
रहा[11] और उसके आगे दंडवत करके
इसराएल के परमेश्वर यहोवा का क्रोध
भड़काता रहा।[12]

अध्या. 22

1 1रा 22:17
2 1रा 21:18, 19
3 1रा 10:22, यहे 27:15
4 1रा 16:28
5 2रा 1:2, 2इत 20:35
6 1इत 3:10, 2इत 17:1, 2इत 20:31, मत 1:8
7 1रा 15:11, 2इत 14:11, 2इत 15:8
8 2इत 17:3
9 व्य 12:14, 1रा 14:23, 1रा 15:14
10 2इत 18:1, 2इत 19:2

दूसरा कॉल.

1 व्य 23:17, 18, 1रा 14:24, 1रा 15:11, 12
2 उत 36:1, 9
3 2शम 8:14, 2रा 8:20-22, भज 108:9
4 1रा 10:22
5 1रा 9:26, 2इत 20:35-37
6 1रा 2:10
7 2रा 8:16, 2इत 21:1, 5
8 2रा 1:2
9 1रा 16:30, 1रा 21:25
10 1रा 12:28-30, 1रा 13:33
11 1रा 16:31, 32, 2रा 1:2
12 निर्ग 20:3, निर्ग 34:14

22:38 *या शायद, “जहाँ वेश्याएँ नहाती थीं, वहाँ कुत्तों ने उसका खून चाटा।”
22:40, 50 *शा., “अपने पुरखों के साथ सो गया।”
22:48 *शब्दावली देखें।

दूसरा

राजा

सारांश

1 अहज्याह की मौत की भविष्यवाणी (1-18)

2 एलियाह आँधी में उठा लिया गया (1-18)
उसकी पोशाक एलीशा को मिली (13, 14)
एलीशा ने पानी पीने लायक बनाया (19-22)
रीछनियों ने लड़कों को मार डाला (23-25)

3 इसराएल का राजा यहोराम (1-3)
मोआब की बगावत (4-25)
मोआब की हार (26, 27)

4 एलीशा ने विधवा का तेल बढ़ाया (1-7)
शूनेमी औरत की मेहमान-नवाज़ी (8-16)
बदले में बेटा मिला; बेटे की मौत (17-31)
एलीशा ने उसे ज़िंदा किया (32-37)
शोरबा खाने लायक बनाया (38-41)
रोटी की गिनती बढ़ायी (42-44)

5 एलीशा ने नामान का कोढ़ ठीक किया (1-19)
गेहजी को कोढ़ हुआ (20-27)

6 एलीशा के चमत्कार से कुल्हाड़ी पानी के ऊपर (1-7)
सीरियाई लोगों से उसका सामना (8-23)
सेवक की आँखें खोली गयीं (16, 17)
सीरियाई लोग दिमागी तौर पर अंधे (18, 19)
घेराबंदी के दौरान सामरिया में अकाल (24-33)

7 एलीशा ने अकाल के अंत की भविष्यवाणी की (1, 2)
सीरियाई सेना भागी; उसकी छावनी में खाना (3-15)
एलीशा की भविष्यवाणी पूरी हुई (16-20)

8 शूनेमी औरत को ज़मीन वापस मिली (1-6)
एलीशा, बेन-हदद और हजाएल (7-15)
यहूदा का राजा यहोराम (16-24)
यहूदा का राजा अहज्याह (25-29)

9 येहू, इसराएल का राजा बना (1-13)
यहोराम और अहज्याह की मौत (14-29)
इज़ेबेल की मौत; कुत्ते माँस खा गए (30-37)

10 अहाब का घराना मिट गया (1-17)
यहोनादाब, येहू के साथ (15-17)
बाल के उपासक मारे गए (18-27)
येहू के राज का सारांश (28-36)

11 अतल्याह ने राजगद्दी हड़पी (1-3)
यहोआश चुपके से राजा बनाया गया (4-12)
अतल्याह मारी गयी (13-16)
यहोयादा ने देश में सुधार किया (17-21)

12 यहूदा का राजा यहोआश (1-3)
उसने मंदिर की मरम्मत की (4-16)
सीरिया का हमला (17, 18)
यहोआश का कत्ल (19-21)

13 इसराएल का राजा यहोआहाज (1-9)
इसराएल का राजा यहोआश (10-13)
एलीशा ने उसका जोश परखा (14-19)
एलीशा की मौत; उसकी हड्डियों से एक मुरदा ज़िंदा हुआ (20, 21)
उसकी आखिरी भविष्यवाणी पूरी हुई (22-25)

14 यहूदा का राजा अमज्याह (1-6)
एदोम और इसराएल के साथ युद्ध (7-14)
इसराएल के यहोआश की मौत (15, 16)
अमज्याह की मौत (17-22)
इसराएल का राजा यारोबाम द्वितीय (23-29)

15 यहूदा का राजा अजरयाह (1-7)
इसराएल के आखिरी राजाः जकरयाह (8-12), शल्लूम (13-16), मनहेम (17-22), पकह-याह (23-26), पेकह (27-31)
यहूदा का राजा योताम (32-38)

16 यहूदा का राजा आहाज (1-6)
उसने अश्शूरियों को रिश्वत दी (7-9)

झूठे देवताओं की वेदी की नकल बनायी (10-18)
आहाज की मौत (19, 20)

17 इसराएल का राजा होशेआ (1-4)
इसराएल का अंत (5, 6)
बागी इसराएल बँधुआई में (7-23)
परदेसी सामरिया के शहरों में (24-26)
उनका मिला-जुला धर्म (27-41)

18 यहूदा का राजा हिजकियाह (1-8)
इसराएल के अंत पर दोबारा नज़र (9-12)
यहूदा पर सनहेरीब का हमला (13-18)
रबशाके ने यहोवा पर ताना कसा (19-37)

19 हिजकियाह ने परमेश्वर से मदद माँगी (1-7)
सनहेरीब की धमकी (8-13)
हिजकियाह की प्रार्थना (14-19)
यशायाह ने परमेश्वर का जवाब बताया (20-34)
स्वर्गदूत ने 1,85,000 अश्शूरियों को मार डाला (35-37)

20 हिजकियाह बीमार; वह ठीक हुआ (1-11)
बैबिलोन से आए दूत (12-19)
हिजकियाह की मौत (20, 21)

21 यहूदा का राजा मनश्शे; खून की नदियाँ बहायीं (1-18)
यरूशलेम नाश किया जाएगा (12-15)
यहूदा का राजा आमोन (19-26)

22 यहूदा का राजा योशियाह (1, 2)
मंदिर की मरम्मत के बारे में निर्देश (3-7)
कानून की किताब मिली (8-13)
हुल्दा ने विपत्ति की भविष्यवाणी की (14-20)

23 योशियाह ने देश में सुधार किया (1-20)
फसह मनाया गया (21-23)
उसने और भी सुधार किया (24-27)
योशियाह की मौत (28-30)
यहूदा का राजा यहोआहाज (31-33)
यहूदा का राजा यहोयाकीम (34-37)

24 यहोयाकीम की बगावत और मौत (1-7)
यहूदा का राजा यहोयाकीन (8, 9)
बँधुआई में जानेवाला पहला समूह (10-17)
यहूदा का राजा सिदकियाह; उसकी बगावत (18-20)

25 नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम को घेरा (1-7)
यरूशलेम और मंदिर का नाश; बँधुआई में जानेवाला दूसरा समूह (8-21)
गदल्याह राज्यपाल बना (22-24)
उसका कत्ल; लोग मिस्र भागे (25, 26)
बैबिलोन में यहोयाकीन की रिहाई (27-30)

---

1 अहाब की मौत के बाद मोआब देश[1]
ने इसराएल से बगावत की।
2 उसी दौरान अहज्याह सामरिया में
अपने महल की छत के जंगले से गिर
पड़ा और घायल हो गया। इसलिए उसने
अपने दूतों को यह कहकर भेजा, "तुम
जाकर एक्रोन[2] के देवता बाल-जबूब से
पूछो कि मैं बिस्तर से उठूँगा या नहीं।"[3]
3 मगर यहोवा के एक स्वर्गदूत ने तिशबे
के रहनेवाले एलियाह*[4] से कहा, "तू
जाकर सामरिया के राजा के दूतों से मिल
और उन्हें यह संदेश दे: 'क्या इसराएल
में कोई परमेश्वर नहीं है जो तू एक्रोन के
देवता बाल-जबूब से पूछने के लिए दूत
भेज रहा है?[1] 4 इसलिए यहोवा ने
कहा है, "तू इस बिस्तर से नहीं उठेगा, तू
ज़रूर मर जाएगा।"'" तब एलियाह
उन दूतों से मिलने निकल पड़ा।
5 जब राजा के दूत उसके पास लौट
आए तो उसने फौरन उनसे पूछा, "तुम
लोग वापस क्यों आ गए?" 6 उन्होंने

1:3 * मतलब "मेरा परमेश्वर यहोवा है।"

अध्य. 1
1 उत 19:36, 37; 2शम 8:2; भज 60:8
2 यह 13:2, 3; 1शम 5:10
3 2रा 1:16
4 1रा 17:1; 1रा 18:36

दूसरा कॉल.
1 यश 8:19; यिर्म 2:11

कहा, “एक आदमी हमसे मिलने आया
और उसने कहा, ‘जिस राजा ने तुम्हें
भेजा है, उसके पास लौट जाओ और
उससे कहो, “तेरे लिए यहोवा का यह
संदेश है: ‘क्या इसराएल में कोई पर-
मेश्वर नहीं है जो तू एक्रोन के देवता
बाल-जबूब से पूछने के लिए दूत भेज रहा
है? इसलिए तू इस बिस्तर से नहीं उठेगा,
तू ज़रूर मर जाएगा।’”’”[1] **7** राजा ने
उनसे पूछा, “जिस आदमी ने आकर तुमसे
यह बात कही, वह दिखने में कैसा था?”
8 उन्होंने कहा, “वह आदमी रोएँदार
कपड़ा[2] और कमर पर चमड़े का पट्टा
पहने हुए था।”[3] यह सुनते ही राजा ने
कहा, “वह तिशबे का रहनेवाला एलि-
याह है।”

9 तब राजा ने 50 सैनिकों के एक
अधिकारी को उसके 50 आदमियों के
साथ एलियाह के पास भेजा। जब वह
अधिकारी एलियाह के पास गया तो वह
एक पहाड़ की चोटी पर बैठा हुआ
था। अधिकारी ने एलियाह से कहा, “हे
सच्चे परमेश्वर के सेवक,[4] राजा ने
कहा है, ‘नीचे उतर आ।’” **10** मगर
एलियाह ने उससे कहा, “अगर मैं पर-
मेश्वर का सेवक हूँ, तो आसमान से आग
बरसे[5] और तुझे और तेरे 50 आदमियों
को भस्म कर दे।” तब आसमान से आग
बरसी और वह अधिकारी और उसके 50
आदमी भस्म हो गए।

11 तब राजा ने 50 सैनिकों के
एक और अधिकारी को उसके 50
आदमियों के साथ भेजा। उसने एलि-
याह के पास जाकर कहा, “हे सच्चे पर-
मेश्वर के सेवक, राजा ने कहा है,
‘जल्दी नीचे आ।’” **12** मगर एलियाह
ने कहा, “अगर मैं सच्चे परमेश्वर का
सेवक हूँ, तो आसमान से आग बरसे और
तुझे और तेरे 50 आदमियों को भस्म कर
दे।” तब परमेश्वर ने आसमान से आग
बरसायी और वह अधिकारी और उसके
50 आदमी भस्म हो गए।

13 इसके बाद राजा ने तीसरी बार
50 सैनिकों के एक अधिकारी को उसके
50 आदमियों के साथ भेजा। यह तीसरा
अधिकारी ऊपर चढ़कर एलियाह के पास
गया और उसके सामने घुटनों के बल
झुका और रहम की भीख माँगने लगा,
“हे सच्चे परमेश्वर के सेवक, मेरी और
तेरे इन 50 सेवकों की जान तेरी नज़र में
अनमोल ठहरे। **14** जैसे उन दो अधि-
कारियों और उनके 50 आदमियों पर
आसमान से आग बरसी और उन्हें भस्म
कर दिया, वैसे मेरे साथ मत होने दे। मेरी
और तेरे इन 50 सेवकों की जान तेरी
नज़र में अनमोल ठहरे।”

15 तब यहोवा के स्वर्गदूत ने एलि-
याह से कहा, “तू इसके साथ नीचे जा।
उससे मत डर।” तब एलियाह उठकर
अधिकारी के साथ नीचे उतरा और राजा
के पास गया। **16** एलियाह ने राजा से
कहा, “तेरे लिए यहोवा का यह संदेश है:
‘क्या इसराएल में कोई परमेश्वर नहीं है
जो तूने एक्रोन[1] के देवता बाल-जबूब से
पूछने के लिए दूत भेजे?[2] तूने इस-
राएल के परमेश्वर से क्यों नहीं पूछा?
इसलिए तू जिस बिस्तर पर पड़ा है
उससे कभी नहीं उठेगा। तू इसी पर
मर जाएगा।’” **17** एलियाह ने यहोवा
का जो संदेश सुनाया, बिलकुल वैसा ही
हुआ। अहज्याह की मौत हो गयी।
उसका कोई बेटा नहीं था इसलिए उसकी
जगह यहोराम*[3] राजा बना। जब यहो-
राम इसराएल का राजा बना तब यहूदा में

अध्य. 1

1 1इत 10:13, 14

2 1रा 19:19
जक 13:4
इब्र 11:32, 37

3 मत 3:4

4 व्य 33:1

5 गि 11:1
गि 16:35
लूक 9:54
यहू 7

दूसरा कॉल.

1 यह 13:2, 3

2 2रा 1:3

3 2रा 3:1
2रा 9:22

1:17 * यानी अहज्याह का भाई।

यहोशापात के बेटे यहोराम[1] के राज का दूसरा साल चल रहा था।

18 अहज्याह[2] की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसने जो-जो काम किए उन सबका ब्यौरा इसराएल के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है।

2 जब यहोवा एलियाह[3] को एक आँधी के ज़रिए आसमान की तरफ उठा लेनेवाला था[4] तो एलियाह और एलीशा[5] गिलगाल[6] से निकले। 2 एलियाह ने एलीशा से कहा, "तू यहीं ठहर जा क्योंकि यहोवा ने मुझे बेतेल जाने के लिए कहा है।" मगर एलीशा ने कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, मैं तेरा साथ नहीं छोड़ूँगा।" इसलिए वे दोनों नीचे बेतेल[7] गए। 3 बेतेल में भविष्यवक्ताओं के बेटे* एलीशा के पास आकर कहने लगे, "क्या तुझे पता है, आज यहोवा तेरे मालिक को तुझसे दूर ले जानेवाला है, तेरा मुखिया तुझसे जुदा होनेवाला है?"[8] उसने कहा, "हाँ, मुझे पता है। तुम इस बारे में बात मत करो।"

4 फिर एलियाह ने एलीशा से कहा, "एलीशा, तू यहीं ठहर जा क्योंकि यहोवा ने मुझे यरीहो जाने के लिए कहा है।"[9] मगर उसने कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, मैं तेरा साथ नहीं छोड़ूँगा।" इसलिए वे दोनों यरीहो गए। 5 यरीहो में भविष्यवक्ताओं के बेटे थे, वे एलीशा के पास आकर कहने लगे, "क्या तुझे पता है, आज यहोवा तेरे मालिक को तुझसे दूर ले जानेवाला है, तेरा मुखिया तुझसे जुदा होनेवाला है?" उसने कहा, "हाँ, मुझे पता है। तुम इस बारे में बात मत करो।"

6 फिर एलियाह ने एलीशा से कहा, "तू यहीं ठहर जा क्योंकि यहोवा ने मुझे यरदन नदी के पास जाने के लिए कहा है।" मगर उसने कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, मैं तेरा साथ नहीं छोड़ूँगा।" इसलिए वे दोनों आगे गए। 7 भविष्यवक्ताओं के बेटों में से 50 आदमी भी उनके साथ गए। जब एलियाह और एलीशा यरदन नदी के पास पहुँचे तो वे भविष्यवक्ता दूर खड़े उन्हें देखने लगे। 8 एलियाह ने अपनी पोशाक*[1] उतारी और उसे मोड़कर पानी पर मारा और नदी का पानी दायीं और बायीं तरफ हटकर दो हिस्सों में बँट गया। तब वे दोनों बीच में सूखी ज़मीन पर चलकर नदी के उस पार गए।[2]

9 जैसे ही वे दोनों उस पार पहुँचे, एलियाह ने एलीशा से कहा, "इससे पहले कि परमेश्वर मुझे तुझसे दूर ले जाए, तू जो चाहे मुझसे माँग ले।" एलीशा ने कहा, "परमेश्वर ने तुझे जो शक्ति* दी है[3] क्या उसके दो हिस्से[4] मुझे मिल सकते हैं?" 10 एलियाह ने कहा, "तूने एक मुश्किल चीज़ माँगी है। जब मुझे तुझसे दूर ले जाया जाएगा, तब अगर तू मुझे देखेगा तो तूने जो माँगा है वह तुझे मिल जाएगा। लेकिन अगर तू मुझे नहीं देखेगा तो तुझे वह नहीं मिलेगा।"

11 जब वे दोनों बातें करते हुए साथ-साथ चल रहे थे, तब अचानक एक रथ और कुछ घोड़े दिखायी पड़े जो आग की तरह तेज़ चमक रहे थे[5] और उन्होंने उन

2:3 *"भविष्यवक्ताओं के बेटों" का मतलब शायद भविष्यवक्ताओं का दल था या भविष्यवक्ताओं का एक संघ था जिसमें उन्हें तालीम दी जाती थी।

2:8 *या "भविष्यवक्ता की पोशाक।" **2:9** *यहाँ शक्ति का मतलब परमेश्वर की पवित्र शक्ति या एलियाह का स्वभाव हो सकता है।

अध्य. 1
1 2रा 8:16
2 1रा 22:51

अध्य. 2
3 1रा 17:1
4 2रा 2:11
5 1रा 19:16
6 2रा 4:38
7 उत 28:18, 19; 1रा 12:28, 29; 2रा 2:23
8 1रा 19:16
9 यह 6:26; 1रा 16:34

दूसरा कॉल.
1 1रा 19:19
2 निर्ग 14:21, 22; यह 3:17; 2रा 2:13, 14
3 व्य 34:9; 1रा 19:16; लूक 1:17
4 व्य 21:17
5 2रा 6:17; भज 68:17

दोनों को अलग कर दिया। फिर एलियाह एक आँधी में आसमान की तरफ ऊपर उठने लगा।[1] **12** एलीशा जब यह सब देख रहा था तो वह ज़ोर-ज़ोर से कह रहा था, "हे मेरे पिता, हे मेरे पिता! देख, इसराएल का रथ और उसके घुड़सवार!"[2] जब एलियाह उसकी आँखों से ओझल हो गया, तो उसने अपने कपड़े फाड़कर दो टुकड़े कर दिए।[3] **13** इसके बाद उसने एलियाह की पोशाक*[4] उठायी जो नीचे गिर गयी थी। फिर वह वापस यरदन नदी के किनारे गया और वहाँ खड़ा हो गया। **14** उसने एलियाह की पोशाक ली और उसे पानी पर मारा और कहा, "एलियाह का परमेश्वर यहोवा कहाँ है?" जब उसने पोशाक पानी पर मारी, तो नदी का पानी दायीं और बायीं तरफ हटकर दो हिस्सों में बँट गया और एलीशा बीच से चलता हुआ उस पार गया।[5]

15 जब यरीहो के भविष्यवक्ताओं ने दूर से उसे देखा तो उन्होंने कहा, "एलियाह की शक्ति अब एलीशा में आ गयी है।"[6] फिर वे उससे मिलने उसके पास गए और उन्होंने उसके सामने ज़मीन पर गिरकर उसे प्रणाम किया। **16** उन्होंने उससे कहा, "देख, अब तेरी सेवा में 50 काबिल आदमी हाज़िर हैं। इजाज़त हो तो वे जाकर तेरे मालिक को ढूँढ़ लाएँगे। हो सकता है यहोवा की पवित्र शक्ति* उसे उठाकर ले गयी हो और उसे किसी पहाड़ पर या किसी घाटी में छोड़ दिया हो।"[7] मगर एलीशा ने कहा, "उन्हें मत भेजो।" **17** फिर भी वे उससे बार-बार कहते रहे, इसलिए वह उलझन में पड़ गया और उसने कहा, "ठीक है, भेज दो उन्हें।" उन्होंने एलियाह को ढूँढ़ने 50 आदमियों को भेजा। वे तीन दिन तक उसे ढूँढ़ते रहे, मगर वह उन्हें नहीं मिला। **18** वे एलीशा के पास लौट आए जो उस वक्त यरीहो[1] में ठहरा था। उसने उनसे कहा, "मैंने तुम्हें जाने से मना किया था न!"

19 कुछ समय बाद यरीहो शहर के आदमियों ने एलीशा से कहा, "मालिक, तू देख सकता है कि हमारा शहर कितनी अच्छी जगह पर बसा है।[2] मगर यहाँ का पानी खराब है और ज़मीन बंजर है।"* **20** एलीशा ने कहा, "एक नयी कटोरी लो और उसमें नमक डालकर मेरे पास लाओ।" उन्होंने एक कटोरी में नमक डालकर उसे दिया। **21** एलीशा पानी के सोते के पास गया और उसने उस पर नमक फेंककर[3] कहा, "यहोवा कहता है, 'मैंने इस पानी को पीने लायक कर दिया है। अब से इसकी वजह से न तो किसी की मौत होगी, न कोई औरत बाँझ रहेगी।'"* **22** जैसे एलीशा ने कहा था, वहाँ का पानी पीने लायक हो गया और आज तक ऐसा ही है।

23 इसके बाद एलीशा वहाँ से बेतेल गया। जब वह बेतेल की तरफ ऊपर जा रहा था तो शहर से कुछ लड़के बाहर आए और उसकी खिल्ली उड़ाने लगे,[4] "ओ गंजे! जा ऊपर जा! ओ गंजे, जा ऊपर जा!" **24** कुछ देर बाद, एलीशा ने मुड़कर उनकी तरफ देखा और यहोवा के नाम से उन्हें शाप दिया। तब जंगल से दो रीछनियाँ[5] निकलकर आयीं और उनमें से 42 बच्चों को फाड़ डाला।[6] **25** फिर एलीशा वहाँ से आगे बढ़ता

अध्य. 2
1 2इत 21:5, 12; यूह 3:13
2 2रा 13:14
3 2शम 1:11, 12; अय 1:19, 20
4 1रा 19:19; 2रा 1:8; जक 13:4; मत 3:4
5 यह 3:13; 2रा 2:8
6 गि 11:24, 25; गि 27:18, 20; 2रा 2:9
7 1रा 18:11, 12

दूसरा कॉल.
1 यह 6:26; 1रा 16:34
2 व्य 34:1-3
3 निर्ग 15:23-25; 2रा 4:38-41
4 2इत 36:15, 16; लूक 10:16
5 नीत 17:12
6 2रा 1:10

2:13 *या "भविष्यवक्ता की पोशाक।" **2:16** *या "आँधी।"

2:19 *या शायद, "ज़मीन गर्भ गिरा देती है।" **2:21** *या शायद, "न किसी का गर्भ गिरेगा।"

हुआ करमेल पहाड़[1] पर गया और वहाँ
से सामरिया लौट गया।

3 जब अहाब का बेटा यहोराम[2] इस-
राएल का राजा बना, तब यहूदा
में राजा यहोशापात के राज का 18वाँ
साल चल रहा था। यहोराम ने साम-
रिया में रहकर 12 साल राज किया।
2 वह यहोवा की नज़र में बुरे काम करता
रहा। मगर वह उस हद तक नहीं गया
जिस हद तक उसके माता-पिता ने बुरे
काम किए थे, क्योंकि उसने बाल का वह
पूजा-स्तंभ हटा दिया जो उसके पिता ने
बनवाया था।[3] **3** लेकिन वह ऐसे पाप
करने में लगा रहा जो नबात के बेटे यारो-
बाम ने इसराएल से करवाए थे।[4] वह
उनसे बाज़ नहीं आया।

4 मोआब का राजा मेशा बड़ी तादाद
में भेड़ें रखता था। वह इसराएल के राजा
को नज़राने में 1,00,000 मेम्ने और
ऐसे 1,00,000 मेढ़े देता था जिनका
ऊन न कतरा गया हो। **5** जैसे ही
अहाब की मौत हो गयी,[5] मोआब का
राजा इसराएल के राजा से बगावत
करने लगा।[6] **6** इसलिए राजा यहोराम
सामरिया से निकला और उसने युद्ध के
लिए सारे इसराएल को इकट्ठा किया।
7 साथ ही उसने यहूदा के राजा यहोशा-
पात को यह संदेश भेजा: "मोआब के
राजा ने मुझसे बगावत की है। क्या
तू उससे युद्ध करने मेरे साथ चलेगा?"
यहोशापात ने कहा, "मैं ज़रूर चलूँगा।[7]
हम दोनों एक हैं। मेरे लोग तेरे ही
लोग हैं। मेरे घोड़े तेरे घोड़े हैं।"[8]
8 तब यहोशापात ने पूछा, "हमें किस
रास्ते से जाना चाहिए?" यहोराम ने कहा,
"एदोम के वीराने के रास्ते से।"

9 तब इसराएल का राजा, यहूदा और
एदोम[9] के राजा के साथ निकल पड़ा।
सात दिन तक घुमावदार रास्ते से सफर
करने के बाद, उनके पीछे-पीछे चलनेवाले
सैनिकों और पालतू जानवरों के लिए
पानी नहीं बचा। **10** इसराएल के राजा
ने कहा, "यह कैसी मुसीबत है! लगता
है यहोवा ने हम तीनों राजाओं को इसी-
लिए इकट्ठा किया कि हमें मोआब के हाथ
में कर दे!" **11** यहोशापात ने कहा,
"क्या यहाँ यहोवा का कोई भविष्यवक्ता
नहीं है जिससे हम यहोवा की मरज़ी जान
सकें?"[1] इसराएल के राजा के एक सेवक
ने कहा, "एक भविष्यवक्ता है, शापात
का बेटा एलीशा[2] जो एलियाह के हाथ
धुलाने के लिए पानी डालता था।"*[3]
12 यहोशापात ने कहा, "वह हमें यहोवा
की मरज़ी बता सकता है।" तब इसराएल
का राजा और यहोशापात और एदोम का
राजा, एलीशा के पास गए।

13 एलीशा ने इसराएल के राजा से
कहा, "तेरा मुझसे क्या काम?[4] जा,
अपने पिता के भविष्यवक्ताओं और
अपनी माँ के भविष्यवक्ताओं के पास
जा।"[5] मगर इसराएल के राजा ने
कहा, "नहीं, मैं नहीं जाऊँगा क्योंकि
हम तीनों राजाओं को यहोवा ने इकट्ठा
किया है ताकि वह हमें मोआब के
हाथ में कर दे।" **14** एलीशा ने कहा,
"सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के जीवन
की शपथ जिसकी मैं सेवा करता हूँ,*
अगर मैं यहूदा के राजा यहोशापात[6] का
आदर नहीं करता, तो मैं तेरी तरफ कोई
ध्यान नहीं देता,[7] तुझे देखता तक नहीं।
15 अब जाओ, जाकर एक सुरमंडल
बजानेवाले* को लाओ।"[8] जब सुरमंडल
बजानेवाला आकर साज़ बजाने लगा, तो

3:11 *या "जो एलियाह का सेवक था।"
3:14 *शा., "जिसके सामने मैं खड़ा रहता
हूँ।" **3:15** *या "संगीतकार।"

अध्य. 2
1 2रा 4:25

अध्य. 3
2 2रा 1:17
3 1रा 16:30-33
4 1रा 12:28-30
5 1रा 22:37
6 2शम 8:2
7 2इत 19:2
8 1रा 22:3, 4
9 2शम 8:14

दूसरा कॉल.
1 1रा 22:7
2 1रा 19:16; 2रा 2:15
3 1रा 19:19, 21
4 1शम 2:30; यहे 14:3
5 न्या 10:14; 1रा 18:19; 1रा 22:6
6 2इत 17:3, 4; 2इत 19:3, 4
7 नीत 15:29
8 1शम 10:5; 1इत 25:1

यहोवा की शक्ति* एलीशा पर आयी।[1]
16 एलीशा ने कहा, “यहोवा कहता है,
‘इस घाटी में जगह-जगह खाई खोदो।
17 मैं यहोवा कहता हूँ, “तुम्हें न आँधी
चलती दिखायी देगी और न बारिश
होती नज़र आएगी, फिर भी यह घाटी
पानी से भर जाएगी।[2] तुम और तुम्हारे
सभी जानवर उससे पीएँगे।”’ 18 ऐसा
करना यहोवा के लिए कोई बड़ी बात नहीं
है।[3] वह तो मोआब को भी तुम्हारे हाथ में
कर देगा।[4] 19 तुम उनके हर किलेबंद
शहर[5] को और हर बढ़िया शहर को नाश
कर देना। तुम हर अच्छे पेड़ को काट
डालना, उनके सभी सोते बंद कर देना
और उनका हर उपजाऊ खेत पत्थरों से
भरकर बरबाद कर देना।”[6]

20 अगले दिन सुबह अनाज के
चढ़ावे के समय,[7] एदोम देश की दिशा
से अचानक पानी बहता हुआ आया और
पूरी घाटी पानी से भर गयी।

21 जब सभी मोआबियों ने सुना कि
राजा उनसे लड़ने आए हैं, तो उन्होंने
अपने उन सभी आदमियों को इकट्ठा
किया जो हथियार चला सकते थे।*
वे देश की सीमा पर तैनात हुए।
22 जब वे सुबह जल्दी उठे, तो उस वक्‍त
सूरज की रौशनी से घाटी का पानी चमक
रहा था। उस पार जो मोआबी थे, उन्हें
यह पानी खून जैसा लाल दिखायी दिया।
23 उन्होंने कहा, “यह तो खून है! ज़रूर
उन राजाओं ने एक-दूसरे को तलवार से
मार डाला होगा। मोआबियो, चलो उन्हें
लूटकर आते हैं!”[8] 24 जब मोआबी
इसराएल की छावनी में आए, तो इस-
राएली उन्हें घात करने लगे। मोआबी
उनसे भागने लगे,[9] मगर इसराएलियों ने
उनका पीछा किया। इसराएली मोआब
की तरफ बढ़ने लगे और पूरे रास्ते उनको
घात करते गए। 25 उन्होंने वहाँ के
शहरों को ढा दिया और उनका हर उप-
जाऊ खेत पत्थरों से भर दिया। उन्होंने
उनके पानी के सभी सोते बंद कर दिए[1]
और उनके सभी अच्छे-अच्छे पेड़ काट
डाले।[2] आखिर में सिर्फ कीर-हरासत[3]
शहर की पत्थर की दीवारें बच गयीं।
फिर गोफन चलानेवाले सैनिकों ने उसे घेर
लिया और ढा दिया।

26 जब मोआब के राजा ने देखा कि
वह युद्ध हार गया है, तो उसने तलवारों से
लैस 700 आदमी लिए और दुश्मन सेना
को चीरकर एदोम के राजा तक पहुँचने
की कोशिश की।[4] मगर वह नाकाम रहा।
27 आखिरकार उसने अपने पहलौठे को
लिया, जो उसकी राजगद्दी का वारिस
था और शहरपनाह पर आग में उसकी
बलि चढ़ा दी।[5] तब इसराएल पर मोआ-
बियों का क्रोध भड़क उठा। इसलिए इस-
राएल ने मोआब के राजा पर हमला करना
छोड़ दिया और अपने देश लौट गया।

4 भविष्यवक्ताओं के बेटों[6] में से एक
आदमी की मौत हो गयी थी और
उसकी विधवा एलीशा के पास आकर
अपना दुखड़ा रोने लगी, “मेरे पति की
मौत हो गयी है। तू अच्छी तरह जानता
है कि तेरा सेवक हमेशा यहोवा का
डर मानता था।[7] उसने एक आदमी से
कर्ज़ लिया था और अब वह आदमी
मेरे दोनों बच्चों को दास बनाकर ले
जाने आया है।” 2 एलीशा ने कहा,
“मैं तेरी क्या मदद कर सकता हूँ? तेरे
घर में क्या है?” उसने कहा, “तेरी दासी
के घर में सुराही-भर* तेल के सिवा

3:15 *शा., “हाथ।” **3:21** *या “जो कमरबंद बाँधे हुए थे।”

4:2 *या “टोंटीदार सुराही।”

अध्य. 3
1 1रा 18:46, यहे 1:3, प्रेष 11:21
2 भज 107:35
3 यिर्म 32:17, मर 10:27
4 व्य 28:7
5 व्य 3:5
6 2रा 3:25
7 निर्ग 29:39, 40
8 निर्ग 15:9, 10
9 लैव 26:7

दूसरा कॉल.
1 उत 26:15, 2इत 32:4
2 2रा 3:19
3 यश 16:7
4 2रा 3:9
5 व्य 12:31, 2इत 28:1, 3, भज 106:37, 38

अध्य. 4
6 2रा 2:3, 5
7 1रा 19:18

कुछ नहीं है।”[1] 3 एलीशा ने कहा,
“अपने सभी पड़ोसियों के पास जा और
उनसे खाली बरतन माँगकर ला। जितने
ज़्यादा बरतन माँग सकती है माँग-
कर ला। 4 इसके बाद तू अपने बेटों के
साथ घर के अंदर जाना और दरवाज़ा बंद
कर लेना। तू सभी बरतनों में तेल भरती
जाना और भरे हुए बरतनों को एक तरफ
रखती जाना।” 5 तब वह औरत वहाँ
से चली गयी।

उसने अपने बेटों के साथ घर के अंदर
जाकर दरवाज़ा बंद कर लिया। उसके
बेटे उसे बरतन ला-लाकर देते रहे और
वह उन्हें भरती रही।[2] 6 जब सारे बर-
तन भर गए तो उसने अपने एक बेटे
से कहा, “एक और बरतन ला।”[3] मगर
बेटे ने कहा, “और बरतन नहीं है।” तब
उसकी सुराही से तेल निकलना बंद हो
गया।[4] 7 फिर उस औरत ने सच्चे पर-
मेश्वर के सेवक को यह सब बताया।
उसने औरत से कहा, “अब जा और तेल
बेचकर अपना सारा कर्ज़ चुका दे। जो
पैसा बचेगा उससे तू अपना और अपने
बेटों का गुज़ारा करना।”

8 एक दिन एलीशा शूनेम[5] गया और
वहाँ की एक नामी औरत उसे बहुत मनाने
लगी कि वह उसके घर आकर खाना
खाए।[6] उसके बाद से जब भी वह
वहाँ से गुज़रता उसके घर रुककर खाना
खाता था। 9 एक बार उस औरत ने
अपने पति से कहा, “परमेश्वर का यह
खास सेवक अकसर यहाँ से गुज़रता
है। 10 क्यों न हम अपने घर की छत
पर उसके लिए एक छोटा-सा कमरा[7]
बनाएँ? हम उसके लिए एक पलंग, मेज़,
कुर्सी और दीवट रख सकते हैं ताकि वह
जब भी हमारे घर आए तो उस कमरे में
रह सके।”[8]

11 एक दिन एलीशा उनके घर आया
और लेटने के लिए छतवाले कमरे में
गया। 12 उसने अपने सेवक गेहजी[1]
से कहा, “शूनेमी[2] औरत को बुला।”
गेहजी ने उस औरत को बुलाया और वह
आकर एलीशा के सामने खड़ी हो गयी।
13 एलीशा ने गेहजी से कहा, “उससे
कह, ‘तू हमारे लिए बहुत तकलीफ
उठाती है।[3] बता मैं तेरे लिए क्या कर
सकता हूँ?[4] तू चाहे तो मैं राजा या उसके
सेनापति से बात करके तेरी खातिर कुछ
कर सकता हूँ।’”[5] औरत ने कहा, “नहीं,
मुझे कोई परेशानी नहीं है, मैं तो अपने
लोगों के बीच चैन से रह रही हूँ।”
14 एलीशा ने गेहजी से पूछा, “तो फिर
उसके लिए क्या किया जा सकता है?”
गेहजी ने कहा, “उसका कोई बेटा नहीं
है[6] और उसका पति बूढ़ा हो चुका है।”
15 एलीशा ने फौरन कहा, “जा, उसे
बुला।” गेहजी उस औरत को बुला लाया
और वह आकर दरवाज़े के पास खड़ी
हो गयी। 16 एलीशा ने औरत से कहा,
“अगले साल इस समय तक तेरी गोद में
एक बेटा होगा।”[7] लेकिन औरत ने कहा,
“मालिक, तू सच्चे परमेश्वर का सेवक
है। अपनी दासी से झूठ मत बोल।”

17 मगर एलीशा की बात सच
निकली। वह औरत गर्भवती हुई और
अगले साल उसी समय के दौरान उसने
एक बेटे को जन्म दिया, ठीक जैसे
एलीशा ने कहा था। 18 जब बच्चा
थोड़ा बड़ा हुआ तब एक दिन वह
अपने पिता के पास गया जो खेत में
कटाई करनेवालों के साथ था। 19 वहाँ
वह अपने पिता से बार-बार कहने लगा,
“मेरे सिर में बहुत दर्द हो रहा है!”
पिता ने अपने सेवक से कहा, “इसे उठा-
कर इसकी माँ के पास ले जा।” 20 तब

अध्य. 4

1 1रा 17:9, 12
2 मर 6:41; मर 8:6-8; यूह 2:7-9
3 मत 14:19
4 यह 5:12; 1रा 17:14
5 यह 19:17, 18
6 उत 19:1-3; न्या 13:15
7 न्या 3:20; 1रा 17:19
8 मत 10:41; रोम 12:13; इब्र 13:2

दूसरा कॉल.

1 2रा 5:25-27; 2रा 8:4
2 यह 19:17, 18
3 रोम 16:6
4 2रा 4:1, 2; इब्र 6:10
5 2रा 8:3
6 उत 15:2; उत 30:1
7 उत 18:10

सेवक उसे उठाकर उसकी माँ के पास ले गया। वह लड़का अपनी माँ की गोद में दोपहर तक बैठा रहा और फिर उसकी मौत हो गयी।[1] **21** वह औरत अपने बेटे को उठाकर ऊपर ले गयी और उसे सच्चे परमेश्‍वर के सेवक के पलंग पर लिटा दिया।[2] फिर वह दरवाज़ा बंद करके नीचे आयी। **22** उसने अपने पति को बुलवाया और कहा, “मैं अभी सच्चे परमेश्‍वर के सेवक के पास जाना चाहती हूँ। मेरे साथ एक सेवक को भेज और सफर के लिए एक गधा भी दे। मैं जल्दी जाकर लौट आऊँगी।” **23** मगर उसके पति ने कहा, “आज तो कोई नए चाँद[3] या सब्त का दिन नहीं है। फिर तू क्यों उसके पास जाना चाहती है?” उसने कहा, “चिंता मत कर, सब ठीक है।” **24** औरत ने गधे पर काठी कसी और उस पर बैठकर अपने सेवक से कहा, “जल्दी-जल्दी हाँक। जब तक मैं न बोलूँ तब तक हाँकने में ढिलाई मत करना।”

25 वह औरत सच्चे परमेश्‍वर के सेवक से मिलने करमेल पहाड़ पर गयी। जैसे ही सच्चे परमेश्‍वर के सेवक ने उसे दूर से देखा, उसने अपने सेवक गेहजी से कहा, “देख, शूनेमी औरत आ रही है। **26** तू दौड़कर उसके पास जा और उसकी खैरियत पूछ और यह भी पूछ कि उसका पति और बच्चा ठीक तो है।” गेहजी के पूछने पर औरत ने कहा, “सब ठीक है।” **27** वह सच्चे परमेश्‍वर के सेवक एलीशा के पास गयी और उसने झट-से उसके पैर पकड़ लिए।[4] तब गेहजी उसके पास आया कि उसे धक्का देकर हटा दे, मगर सच्चे परमेश्‍वर के सेवक ने कहा, “इसे छोड़ दे क्योंकि इस वक्‍त इसका मन बहुत दुखी है। यहोवा ने मुझे नहीं बताया है कि बात क्या है।” **28** तब औरत ने कहा, “मालिक, क्या मैंने तुझसे कभी बेटे के लिए मिन्‍नत की थी? क्या मैंने तुझसे नहीं कहा था, ‘मुझे झूठी आशा मत दे’?”[1]

29 एलीशा ने फौरन गेहजी से कहा, “अपनी पोशाक कमर पर कस[2] और मेरी लाठी लेकर जल्दी से इस औरत के घर जा। रास्ते में अगर कोई मिले तो उसे दुआ-सलाम मत करना। अगर कोई तुझे दुआ-सलाम करे, तो उसे जवाब मत देना। जाकर मेरी यह लाठी लड़के के चेहरे पर रखना।” **30** इस पर लड़के की माँ ने एलीशा से कहा, “तुझे भी आना होगा। यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, मैं ऐसे नहीं जाऊँगी।”[3] इसलिए एलीशा भी उस औरत के साथ गया। **31** गेहजी उन दोनों से पहले चला गया था। उसने जाकर एलीशा की लाठी लड़के के चेहरे पर रखी, मगर लड़का हिला नहीं और न ही उसके मुँह से कोई आवाज़ आयी।[4] गेहजी वापस एलीशा से मिलने निकल पड़ा और उससे मिलकर उसे बताया कि लड़का नहीं उठा।

32 जब एलीशा उस औरत के घर आया तो उसने देखा कि लड़के की लाश उसके पलंग पर पड़ी है।[5] **33** एलीशा कमरे के अंदर गया और उसने दरवाज़ा बंद कर लिया। वहाँ उन दोनों के सिवा और कोई न था। फिर वह यहोवा से प्रार्थना करने लगा।[6] **34** इसके बाद वह बिस्तर पर जाकर लड़के के ऊपर लेट गया। उसने अपना मुँह लड़के के मुँह पर रखा, अपनी आँखें उसकी आँखों पर और अपनी हथेलियाँ उसकी हथेलियों पर रखीं। वह कुछ देर तक इसी तरह उसके ऊपर लेटा रहा। तब बच्चे का शरीर गरमाने लगा।[7] **35** एलीशा

अध्य. 4
1 1रा 17:17
2 2रा 4:9, 10
3 गि 10:10
गि 28:11
4 मत 28:9

दूसरा कॉल.
1 2रा 4:16
2 1रा 18:46
3 मत 15:22, 28
4 मत 17:15, 16
मर 9:17, 18
5 2रा 4:21
6 1रा 17:19, 20
यूह 11:41
प्रेष 9:40
7 1रा 17:21, 22
प्रेष 20:9, 10

उठा और कमरे में एक बार इधर से उधर चला। वह फिर से बिस्तर पर जाकर लड़के पर लेट गया। तब लड़के ने सात बार छींका और उसके बाद अपनी आँखें खोलीं।[1] **36** एलीशा ने गेहजी को बुलाया और उससे कहा, “शूनेमी औरत को बुला।” गेहजी ने औरत को बुलाया और वह कमरे में एलीशा के पास गयी। एलीशा ने उससे कहा, “अपने बेटे को गोद में उठा ले।”[2] **37** तब वह औरत एलीशा के पैरों पर गिर पड़ी और ज़मीन पर झुककर उसे प्रणाम किया। इसके बाद वह अपने बेटे को उठाकर ले गयी।

38 जब एलीशा गिलगाल लौटा तो वहाँ अकाल पड़ा हुआ था।[3] जब भविष्यवक्ताओं के बेटे[4] उसके सामने बैठे हुए थे तो एलीशा ने अपने सेवक से कहा,[5] “हंडा चढ़ा दे और भविष्य-वक्ताओं के बेटों के लिए शोरबा बना।” **39** उनमें से एक सब्ज़ियाँ लेने खेत गया। मगर जब उसे एक जंगली बेल दिखायी दी, तो उसने उसका फल तोड़ लिया और अपने कपड़े में भरकर ले आया। वह नहीं जानता था कि वह असल में क्या है। उसने उन्हें काटा और हंडे में डाल दिया। **40** बाद में शोरबा भविष्यवक्ताओं को परोसा गया। मगर जैसे ही उन्होंने मुँह में डाला वे चिल्ला पड़े, “यह तो ज़हर है ज़हर! सच्चे पर-मेश्वर के सेवक, यह ज़हर है!” वे उसे नहीं खा पाए। **41** तब एलीशा ने कहा, “थोड़ा आटा ले आओ।” उसने आटा हंडे में डाला और कहा, “अब यह सब लोगों को परोसो।” तब हंडे के शोरबे से कोई नुकसान नहीं हुआ।[6]

42 बाल-शालीशा[7] से एक आदमी आया और उसने सच्चे परमेश्वर के सेवक को जौ की 20 रोटियाँ[1] लाकर दीं। ये रोटियाँ जौ की पहली फसल से बनी थीं। वह एक थैला-भर नया अनाज भी लाया।[2] एलीशा ने अपने सेवक से कहा, “यह सब लोगों को खाने के लिए दे।” **43** मगर सेवक ने कहा, “मैं यह 100 लोगों में कैसे बाँट सकता हूँ?”[3] एलीशा ने कहा, “तू यह लोगों को खाने के लिए दे क्योंकि यहोवा ने कहा है, ‘वे सब खाएँगे और उसके बाद कुछ बच भी जाएगा।’”[4] **44** तब सेवक ने खाना सबको दिया और जैसे यहोवा ने कहा था, सबने खाया और खाने के बाद कुछ बच भी गया।[5]

5 सीरिया के राजा का सेनापति नामान एक मशहूर आदमी था। राजा उसका बहुत सम्मान करता था क्योंकि उसके ज़रिए यहोवा ने सीरिया को जीत दिलायी थी।* नामान एक वीर योद्धा था, इसके बावजूद कि उसे कोढ़ की बीमारी थी।# **2** सीरिया के सैनिक इसराएल में अकसर लूटमार करते थे। एक बार जब वे इसराएल से कुछ लोगों को बंदी बनाकर ले गए तो उनमें एक छोटी लड़की भी थी जो नामान की पत्नी की दासी बनी। **3** उस लड़की ने अपनी मालकिन से कहा, “अगर मेरा मालिक सामरिया के भविष्यवक्ता[6] के पास जाए तो वह ठीक हो सकता है। वह भविष्यवक्ता ज़रूर उसका कोढ़ दूर कर देगा।”[7] **4** इसलिए उसने* जाकर इसराएल की उस लड़की की बात अपने मालिक को बतायी।

5 सीरिया के राजा ने नामान से कहा, “तू अभी वहाँ जा। मैं इसराएल के राजा

5:1 *या “उद्धार दिलाया था।” #या “वह त्वचा रोग से पीड़ित था।” **5:4** *यहाँ शायद नामान की बात की गयी है।

अध्य. 4
1 2रा 8:1, 5
2 इब्र 11:35
3 व्य 28:23, 24; 2रा 8:1; यहे 14:13
4 2रा 2:3, 5
5 2रा 4:12
6 निर्ग 15:23-25; 2रा 2:19-21
7 1शम 9:3, 4

दूसरा कॉल.
1 यूह 6:9
2 1शम 9:6, 7
3 मत 14:17; मर 8:4
4 मत 14:20; मर 8:8
5 लूक 9:17; यूह 6:13

अध्य. 5
6 1रा 19:16
7 मत 8:2; मत 11:5; लूक 4:27

को एक खत भेजता हूँ।” तब नामान इस-
राएल के लिए निकल पड़ा। वह अपने
साथ दस तोड़े* चाँदी, सोने के 6,000
टुकड़े और दस जोड़े कपड़े ले गया।
6 उसने इसराएल के राजा को वह खत
दिया जिसमें लिखा था: “खत के साथ
मैं अपने सेवक नामान को तेरे पास भेज
रहा हूँ ताकि तू उसका कोढ़ दूर कर दे।”
7 जैसे ही इसराएल के राजा ने खत पढ़ा,
उसने अपने कपड़े फाड़े और वह कहने
लगा, “क्या मैं परमेश्वर हूँ? क्या ज़िंदगी
और मौत देना मेरे हाथ में है?[1] देखो तो
उसे! इस आदमी को भेजकर कहता है
मैं उसका कोढ़ ठीक कर दूँ। मुझे मालूम
है, वह बस लड़ाई की चिंगारी भड़काना
चाहता है।”

8 मगर जब सच्चे परमेश्वर के सेवक
एलीशा ने सुना कि इसराएल के राजा
ने अपने कपड़े फाड़े हैं तो उसने फौरन
राजा के पास यह संदेश भेजा: “तूने
अपने कपड़े क्यों फाड़े? मेहरबानी करके
तू उस आदमी को मेरे पास आने दे
ताकि वह जान जाए कि इसराएल में
एक भविष्यवक्ता रहता है।”[2] **9** तब
नामान अपने घोड़ों और युद्ध-रथों को
लेकर एलीशा के घर गया और द्वार
पर खड़ा हुआ। **10** मगर एलीशा उससे
मिलने बाहर नहीं आया बल्कि एक दूत
के हाथ यह कहला भेजा, “जाकर यर-
दन नदी[3] में सात बार[4] डुबकी लगा, तब
तेरा शरीर दुरुस्त हो जाएगा और तू शुद्ध
हो जाएगा।” **11** मगर नामान गुस्से से
भड़क उठा और यह कहकर वापस लौटने
लगा, “मैंने सोचा था, वह बाहर आकर
मुझसे मिलेगा और यहाँ खड़े होकर
अपने परमेश्वर यहोवा का नाम पुका-
रेगा और मेरे कोढ़ पर अपना हाथ फेर-
कर उसे ठीक कर देगा। **12** क्या हमारे
दमिश्क[1] की अबाना और पर्पर नदी,
इसराएल की सभी नदियों से बढ़कर नहीं
हैं? क्या मैं उनमें डुबकी लगाकर शुद्ध
नहीं हो सकता?” वह तमतमाता हुआ
मुड़ा और वापस जाने लगा।

13 तब उसके सेवकों ने उसके पास
आकर कहा, “मेरे पिता, अगर भविष्य-
वक्ता तुझे कोई मुश्किल काम करने को
कहता तो क्या तू नहीं करता? फिर
जब उसने इतना ही कहा है कि तू जाकर
नदी में डुबकी लगा और शुद्ध हो जा, तो
क्या तुझे यह आसान काम नहीं करना
चाहिए?” **14** तब वह यरदन नदी पर
गया और उसने सात बार उसमें डुबकी
लगायी, ठीक जैसे सच्चे परमेश्वर के
सेवक ने उससे कहा था।[2] तब उसकी
त्वचा एक छोटे लड़के की त्वचा जैसी हो
गयी[3] और वह शुद्ध हो गया।[4]

15 इसके बाद नामान अपने सेवकों
की पूरी टोली के साथ वापस सच्चे पर-
मेश्वर के सेवक के पास गया[5] और उसके
सामने खड़ा हुआ। उसने कहा, “अब मैं
जान गया हूँ कि पूरी धरती पर सिर्फ इस-
राएल में ही परमेश्वर है, और कहीं
नहीं।[6] अब मेहरबानी करके अपने सेवक
के हाथ से यह तोहफा* कबूल कर।”
16 मगर एलीशा ने कहा, “यहोवा के
जीवन की शपथ जिसकी मैं सेवा करता
हूँ,* मैं यह तोहफा नहीं लूँगा।”[7] नामान
ने उसे बहुत मनाया, फिर भी उसने नहीं
लिया। **17** आखिर में नामान ने कहा,
“ठीक है, मगर तू अपने सेवक की
एक गुज़ारिश पूरी कर। मुझे इस देश
की ज़मीन की इतनी मिट्टी दे जितनी

अध्य. 5
1 व्य 32:39
2 1रा 17:24
1रा 19:16
2रा 3:11, 12
2रा 8:4
3 यूह 9:6, 7
4 लैव 14:7
गि 19:4

दूसरा कॉल.
1 यश 7:8
2 2रा 5:10
3 अय 33:25
4 लूक 4:27
लूक 5:13
5 लूक 17:15, 16
6 भज 96:4, 5
यश 43:10
7 मत 10:8

5:5 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

5:15 *शा., “आशीर्वाद।” **5:16** *शा., “जिसके सामने मैं खड़ा रहता हूँ।”

दो खच्चर उठा सकें, क्योंकि मैं अब से
यहोवा को छोड़ किसी और ईश्वर को
होम-बलि या कोई और बलि नहीं चढ़ाऊँ-
गा। 18 लेकिन यहोवा तेरे सेवक को
सिर्फ इस बात के लिए माफ कर दे:
जब मेरा मालिक राजा, रिम्मोन देवता
के मंदिर में जाकर उसके आगे दंड-
वत करता है तब वह मेरे हाथों का
सहारा लेता है, इसलिए मुझे भी मंदिर में
झुकना पड़ता है। जब मैं रिम्मोन के
मंदिर में झुकूँगा तब यहोवा दया करके
मुझे माफ कर दे।" 19 एलीशा ने
कहा, "तू बेफिक्र होकर जा।" तब नामान
वहाँ से चला गया। वह कुछ ही दूर
तक गया था 20 कि यहाँ सच्चे पर-
मेश्वर के सेवक[1] एलीशा का सेवक
गेहजी[2] मन-ही-मन सोचने लगा, 'मेरे
मालिक ने यह क्या किया! सीरिया के
नामान[3] का तोहफा लिए बिना ही उसे
भेज दिया! यहोवा के जीवन की शपथ,
मैं अभी नामान के पीछे भागकर जाऊँगा
और उससे कुछ लेकर ही आऊँगा।'
21 गेहजी नामान से मिलने दौड़ा। जब
नामान ने देखा कि उसके पीछे कोई
भागता हुआ आ रहा है तो वह उससे
मिलने के लिए अपने रथ से नीचे उतरा।
उसने गेहजी से पूछा, "सब ठीक तो है?"
22 उसने कहा, "हाँ, सब ठीक है। मेरे
मालिक ने तेरे लिए यह संदेश भेजा है:
'देख! अभी-अभी एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश
के भविष्यवक्ताओं के बेटों में से दो
जवान मेरे पास आए हैं। मेहरबानी करके
उनके लिए एक तोड़ा चाँदी और दो जोड़े
कपड़े देना।'"[4] 23 नामान ने कहा,
"एक क्या, दो तोड़े चाँदी ले जा।" नामान
उससे बार-बार कहने लगा[5] और उसने
दो बोरियों में दो तोड़े चाँदी और दो जोड़े
कपड़े बाँध दिए और अपने दो सेवकों के

अध्य. 5
1 1रा 17:24
2 2रा 4:12
2रा 8:4
3 2रा 5:1
लूक 4:27
4 2रा 5:5
5 2रा 5:16

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 5:8, 9
2 मत 10:8
लूक 12:15
प्रेष 20:33
1ती 6:10
3 2रा 5:1
4 निर्ग 4:6
गि 12:10

अध्य. 6
5 2रा 2:3, 5
2रा 9:1

हाथ में दिए और वे उन्हें उठाकर गेहजी
के आगे-आगे चल दिए।
24 जब गेहजी ओपेल* पहुँचा तो
उसने उनके हाथ से बोरियाँ ले लीं और
अपने घर में रख दीं और उन आद-
मियों को भेज दिया। उनके जाने के बाद,
25 गेहजी अपने मालिक एलीशा के
पास गया और उसके सामने खड़ा हुआ।
एलीशा ने उससे पूछा, "गेहजी, तू कहाँ
गया था?" उसने कहा, "तेरा सेवक कहीं
नहीं गया था।"[1] 26 एलीशा ने उससे
कहा, "जब वह आदमी तुझसे मिलने के
लिए अपने रथ से उतरा तो उसी घड़ी
मेरा मन यह बात जान गया था। क्या
यह वक्त चाँदी और कपड़े कबूल करने
का है? क्या यह वक्त जैतून या अंगूरों के
बाग लेने का है? भेड़-बकरी, गाय-बैल,
दास-दासियाँ लेने का है?[2] 27 अब
नामान का कोढ़[3] तुझे लग जाएगा और
पीढ़ी-दर-पीढ़ी तेरे वंशजों को भी लगा
रहेगा।" तब गेहजी को कोढ़ लग गया
और उसका शरीर बर्फ जैसा सफेद हो
गया।[4] इसलिए वह फौरन एलीशा के
सामने से चला गया।

6 भविष्यवक्ताओं के बेटों[5] ने एलीशा
से कहा, "देख, यह जगह हम सबके
रहने के लिए कम पड़ रही है। 2 इजा-
ज़त हो तो हम सब यरदन चले जाएँ।
वहाँ हममें से हर कोई एक शहतीर
लेकर आए और हम सब रहने के लिए
एक घर बनाएँ।" एलीशा ने कहा, "ठीक
है, जाओ।" 3 उनमें से एक ने कहा,
"मालिक, अगर तू भी हमारे साथ चले
तो बड़ी मेहरबानी होगी।" उसने कहा,
"अच्छा, मैं भी चलता हूँ।" 4 वह
उनके साथ चल दिया और वे सब यरदन

5:24 *सामरिया की एक जगह जो शायद
एक पहाड़ी या किला है।

के पास पहुँचे और लकड़ी के लिए पेड़ काटने लगे। 5 उनमें से एक जब पेड़ काट रहा था, तो कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर पानी में जा गिरी। वह ज़ोर से चिल्लाया, “मालिक, अब क्या होगा! वह कुल्हाड़ी माँगी हुई थी।” 6 सच्चे परमेश्वर के सेवक ने पूछा, “कुल्हाड़ी कहाँ गिरी?” उसने एलीशा को जगह दिखायी। एलीशा ने लकड़ी का एक टुकड़ा काटा और उसे उसी जगह फेंका। तब कुल्हाड़ी पानी के ऊपर आकर तैरने लगी। 7 एलीशा ने कहा, “कुल्हाड़ी उठा ले।” उस आदमी ने हाथ बढ़ाकर कुल्हाड़ी उठा ली।

8 सीरिया का राजा इसराएल से युद्ध करने निकल पड़ा।[1] उसने अपने सेवकों से सलाह-मशविरा किया और उनसे कहा, “मैं तुम लोगों के साथ फलाँ जगह छावनी डालूँगा।” 9 तब सच्चे परमेश्वर के सेवक[2] ने इसराएल के राजा के पास यह संदेश भेजाः “तू उस जगह से मत गुज़रना क्योंकि सीरिया की सेना हमला करने वहीं आ रही है।” 10 इसलिए इसराएल के राजा ने उस जगह संदेश भिजवाया, जिसके बारे में सच्चे परमेश्वर के सेवक ने उसे खबरदार किया था। उसने राजा को खबरदार किया और राजा उस जगह से दूर रहा। ऐसा कई बार* हुआ।[3]

11 इस वजह से सीरिया का राजा* गुस्से से भर गया। उसने अपने सेवकों को बुलाया और उनसे कहा, “बताओ! हमारे बीच ऐसा कौन है जो इसराएल के राजा का साथ दे रहा है?” 12 उनमें से एक ने कहा, “मेरे मालिक राजा, हमारे बीच ऐसा कोई नहीं है। इसराएल में जो भविष्यवक्ता एलीशा है, यह उसी का काम है। वही जाकर उस राजा को वे सारी बातें बता देता है जो तू सोने के कमरे में कहता है।”[1] 13 तब सीरिया के राजा ने कहा, “जाओ, जाकर पता लगाओ वह कहाँ है। मैं अपने आदमी भेजकर उसे पकड़वा लूँगा।” बाद में राजा को खबर दी गयी कि एलीशा दोतान[2] शहर में है। 14 राजा ने फौरन घोड़ों और युद्ध-रथों समेत एक बड़ी सेना भेजी और वे रात को दोतान पहुँचे और उन्होंने शहर को घेर लिया।

15 अगले दिन जब वह आदमी जो सच्चे परमेश्वर का सेवक था, सुबह-सुबह उठा और बाहर गया, तो उसने देखा कि घोड़ों और युद्ध-रथों समेत एक बड़ी सेना शहर को घेरे हुए है। वह फौरन एलीशा के पास जाकर कहने लगा, “मालिक, मालिक, अब हम क्या करें?” 16 मगर एलीशा ने कहा, “घबरा मत![3] उनके साथ जितने हैं उनसे कहीं ज़्यादा हमारे साथ हैं।”[4] 17 फिर एलीशा प्रार्थना करने लगा, “हे यहोवा, मेहरबानी करके इसकी आँखें खोल दे ताकि यह देख सके।”[5] यहोवा ने फौरन सेवक की आँखें खोल दीं और उसने देखा कि एलीशा के चारों तरफ[6] का पहाड़ी इलाका ऐसे घोड़ों और युद्ध-रथों से भरा पड़ा है जो आग जैसे दिखायी दे रहे थे।[7]

18 जब सीरिया की सेना एलीशा की तरफ बढ़ने लगी तो उसने यहोवा से प्रार्थना की, “हे परमेश्वर, इस राष्ट्र को अंधा कर दे।”[8] परमेश्वर ने एलीशा की बिनती सुनी और उन सबको अंधा कर दिया। 19 फिर एलीशा ने उनसे कहा, “तुम लोग गलत रास्ते आ गए हो। तुम जिस शहर पर हमला करने आए हो, वह यह नहीं है। तुम मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें

अध्य. 6
1 1रा 20:1, 34; 1रा 22:31
2 1रा 17:24
3 मत 2:12

दूसरा कॉल.
1 दान 2:22, 28
2 उत 37:16, 17
3 निर्ग 14:13; भज 3:6
4 2शम 22:31; 2इत 32:7; भज 18:2; भज 27:3; भज 46:7; भज 55:18; भज 118:11; रोम 8:31
5 प्रेष 7:56
6 भज 34:7; मत 26:53
7 2रा 2:11; भज 68:17; जक 6:1
8 उत 19:10, 11

6:10 *या “एक-दो से ज़्यादा बार।” **6:11** *शा., “के राजा का दिल।”

उस आदमी के पास ले जाऊँगा जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो।" मगर एलीशा उन्हें सामरिया[1] ले गया।

20 जब वे सामरिया पहुँचे तो एलीशा ने प्रार्थना की, "हे यहोवा, इनकी आँखें खोल दे ताकि ये देख सकें।" तब यहोवा ने उनकी आँखें खोल दीं और उन्होंने देखा कि वे सामरिया के बीचों-बीच हैं। **21** जब इसराएल के राजा ने उन्हें देखा तो उसने एलीशा से पूछा, "मेरे पिता, क्या मैं इन्हें मार डालूँ? इन्हें खत्म कर दूँ?" **22** मगर उसने कहा, "नहीं, इन्हें मत मार। तू जिन लोगों को तलवार और तीर-कमान के दम पर बंदी बनाता है, क्या उन्हें मार डालता है? इन्हें रोटी और पानी दे ताकि ये खा-पीकर[2] अपने मालिक के पास लौट जाएँ।" **23** इसलिए राजा ने उन सबके लिए एक बड़ी दावत रखी और उन्होंने खाया-पीया। फिर राजा ने उन्हें उनके मालिक के पास वापस भेज दिया। इसके बाद फिर कभी सीरिया के लुटेरे-दलों[3] ने इसराएल देश में कदम नहीं रखा।

24 बाद में सीरिया के राजा बेन-हदद ने अपनी पूरी सेना इकट्ठी की और जाकर सामरिया को घेर लिया।[4] **25** घेराबंदी काफी समय तक रही जिस वजह से सामरिया में ऐसा भयंकर अकाल पड़ा[5] कि वहाँ गधे का सिर[6] चाँदी के 80 टुकड़ों में और कब* की चौथाई-भर फाख्ता की बीट चाँदी के 5 टुकड़ों में बिकने लगी। **26** एक दिन जब इसराएल का राजा शहरपनाह के ऊपर चलता हुआ जा रहा था तो एक औरत ने उसकी दुहाई दी, "हे राजा, मेरे मालिक, मेरी मदद कर!" **27** राजा ने कहा, "जब यहोवा तुम लोगों की कोई मदद नहीं कर रहा, तो मैं कैसे मदद कर सकता हूँ? मैं कहाँ से खाना, तेल या दाख-मदिरा लाकर दूँ?" **28** फिर राजा ने उससे पूछा, "बोल, क्या बात है?" उसने कहा, "इस औरत ने मुझसे कहा था, 'आज तू अपना बेटा दे, हम उसे खाएँगे। फिर कल मैं अपना बेटा दूँगी और हम उसे खाएँगे।'[1] **29** मैंने अपना बेटा दिया और हमने उसे उबालकर खाया।[2] अगले दिन मैंने उससे कहा कि तू अपना बेटा दे कि हम उसे खाएँ, मगर उसने नहीं दिया। उसने अपने बेटे को छिपा लिया।"

30 जैसे ही राजा ने औरत की बात सुनी, उसने अपने कपड़े फाड़े।[3] जब वह शहरपनाह के ऊपर चल रहा था तो लोगों ने देखा कि वह अपने कपड़े के अंदर* टाट पहने हुए है। **31** उसने कहा, "आज अगर मैंने शापात के बेटे एलीशा का सिर न उड़ा दिया तो परमेश्वर मुझे कड़ी-से-कड़ी सज़ा दे!"[4]

32 एलीशा अपने घर में बैठा था और उसके साथ मुखिया भी बैठे थे। राजा ने अपने आगे-आगे एलीशा के पास एक दूत भेजा। इससे पहले कि दूत वहाँ पहुँचता, एलीशा ने मुखियाओं से कहा, "देखो, कातिल के उस बेटे[5] ने मेरा सिर कटवाने के लिए अपना दूत भेजा है। इसलिए तुम देखते रहना, जब वह दूत आएगा तो तुम दरवाज़ा बंद कर देना और दबाकर रखना ताकि वह अंदर घुस न सके। उसके पीछे उसका मालिक भी आ रहा है।" **33** एलीशा उन्हें यह बात बता ही रहा था कि दूत वहाँ पहुँच गया और राजा ने कहा, "यह कहर यहोवा ने ही ढाया है। इसलिए मैं राहत के लिए अब और यहोवा की तरफ क्यों आस लगाऊँ?"

अध्य. 6
1 1रा 16:29
2 नीत 25:21; रोम 12:20
3 2रा 5:2
4 व्य 28:52; 1रा 20:1
5 लैव 26:26; व्य 28:15, 17
6 व्य 14:3; यहे 4:14

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:29; व्य 28:53-57; यहे 5:10
2 विल 4:10
3 उत 37:29; 1रा 21:27
4 यिर्म 38:4
5 1रा 18:13; 1रा 21:9, 10

6:25 *एक कब 1.22 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

6:30 *या "अंदर अपने शरीर पर।"

7 फिर एलीशा ने कहा, “अब यहोवा का संदेश सुनो। यहोवा कहता है, ‘कल इसी समय सामरिया के फाटक* पर एक सआ# मैदा एक शेकेल△ में और दो सआ जौ एक शेकेल में मिलेगा।’”[1] **2** तब सहायक सेना-अधिकारी ने, जो राजा का भरोसेमंद सेवक था, सच्चे पर-मेश्वर के सेवक से कहा, “अगर यहोवा आकाश के झरोखे खोल दे तो भी यह नहीं हो सकता!”[2] तब एलीशा ने कहा, “कल तू खुद अपनी आँखों से यह देखेगा,[3] मगर उसमें से कुछ खा नहीं पाएगा।”[4]

3 सामरिया के फाटक के पास चार कोढ़ी बैठे थे।[5] उन्होंने एक-दूसरे से कहा, “हम यहाँ बैठे-बैठे मौत का इंतज़ार क्यों कर रहे हैं? **4** चाहे हम यहाँ बैठे रहें या शहर के अंदर जाएँ, हमारी मौत तय है क्योंकि वहाँ अकाल पड़ा है।[6] इसलिए क्यों न हम सीरिया के लोगों की छावनी में चले जाएँ? अगर उन्होंने हमें ज़िंदा छोड़ दिया तो अच्छी बात है। लेकिन अगर उन्होंने हमें मार डाला तो भी कोई बात नहीं, मरना तो है ही।” **5** इसलिए शाम को जब अँधेरा हो गया तो वे कोढ़ी उठकर सीरिया के लोगों की छावनी में गए। जब वे छावनी के किनारे पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ कोई नहीं है।

6 दरअसल यहोवा ने ऐसा किया था कि सीरिया के सैनिकों को युद्ध-रथों, घोड़ों और एक विशाल सेना का शोर सुनायी पड़ा।[7] वे एक-दूसरे से कहने लगे, “लगता है इसराएल के राजा ने हमसे लड़ने के लिए हित्तियों के राजाओं और मिस्र के राजाओं को किराए पर बुलाया है!” **7** इसलिए शाम को जब अँधेरा हो गया था, तब वे अपनी जान बचाने के लिए फौरन छावनी छोड़कर भाग गए। उन्होंने अपने तंबू, घोड़े, गधे, यहाँ तक कि पूरी छावनी जैसी की तैसी छोड़ दी थी।

8 जब वे कोढ़ी उनकी छावनी के किनारे पहुँचे तो उनके एक तंबू में गए और खाने-पीने लगे। उन्होंने वहाँ से सोना, चाँदी और कपड़े लिए और जाकर यह सब कहीं छिपा दिया। फिर से वे छावनी में आए और एक दूसरे तंबू में गए और वहाँ से भी कुछ चीज़ें ले जाकर छिपा दीं।

9 कुछ देर बाद वे एक-दूसरे से कहने लगे, “हम जो कर रहे हैं वह सही नहीं है। आज का दिन खुशखबरी सुनाने का दिन है! अगर हमने अभी जाकर यह खबर नहीं सुनायी और सुबह सबको यह बात पता चल गयी तो हम सज़ा के लायक ठहरेंगे। चलो अब हम जाकर राजा के महल तक यह खबर पहुँचाते हैं।” **10** वे वहाँ से चले गए और उन्होंने शहर के फाटक के पहरेदारों को आवाज़ देकर बताया, “हम सीरिया के लोगों की छावनी में गए थे, मगर वहाँ कोई नहीं था। हमें किसी की आवाज़ नहीं सुनायी दी। वहाँ सिर्फ उनके घोड़े और गधे बँधे हुए थे और वे अपने तंबू ऐसे ही छोड़कर चले गए।” **11** यह सुनते ही पहरेदारों ने राजमहल के लोगों को आवाज़ दी और उन्हें यह खबर सुनायी।

12 राजा रात को ही उठा और उसने अपने सेवकों से कहा, “यह ज़रूर सीरिया के लोगों की चाल है। वे जानते हैं कि हम भूख से मर रहे हैं,[1] इसलिए

7:1 *या “बाज़ारों।” #एक सआ 7.33 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। △एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 7
1 व्य 32:36
2रा 7:18
2 गि 14:11
3 गि 11:23
4 2रा 7:17
5 लैव 13:45, 46
6 2रा 6:25
7 व्य 28:7
2शम 5:24

दूसरा कॉल.
1 2रा 6:25
2रा 6:28, 29

वे यह सोचकर कहीं मैदान में छिप गए हैं कि जैसे ही इसराएली शहर से बाहर आएँगे हम उन्हें ज़िंदा पकड़ लेंगे और उनके शहर में घुस जाएँगे।”[1] **13** तब राजा के एक सेवक ने कहा, “राजा से मेरी गुज़ारिश है कि वह कुछ आदमियों से कहे कि वे शहर में बचे पाँच घोड़े लेकर जाएँ और इस बात का सही-सही पता लगाएँ। अगर वे मारे गए तो भी कोई बात नहीं क्योंकि यहाँ शहर में रहकर भी वे कौन-से ज़िंदा रहनेवाले हैं। हम सब इसराएलियों के साथ वे भी तो मरेंगे ही।” **14** तब उन आदमियों ने घोड़ों के साथ दो रथ लिए और उन्हें राजा ने यह कहकर सीरिया के लोगों की छावनी में भेजा, “जाओ, जाकर देख आओ।” **15** वे सीरिया के लोगों को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते दूर यरदन तक पहुँच गए। उन्होंने देखा कि पूरे रास्ते में कपड़े और बरतन फैले पड़े हैं क्योंकि सीरिया के लोग जब डर के मारे भागने लगे तो उन्होंने रास्ते में ये चीज़ें फेंक दी थीं। राजा के दूतों ने वापस आकर उसे खबर दी।

16 फिर इसराएल के लोग शहर से निकलकर सीरिया के लोगों की छावनी में गए और उन्होंने उसे लूट लिया। इसलिए एक सआ मैदा एक शेकेल में और दो सआ जौ एक शेकेल में बिकने लगा, ठीक जैसे यहोवा ने कहा था।[2] **17** राजा ने अपने सहायक सेना-अधिकारी को, जो उसका भरोसेमंद सेवक था, फाटक का अधिकारी ठहराया था। मगर वह वहाँ लोगों के पैरों के नीचे दबकर मर गया। तब सच्चे परमेश्वर के सेवक की वह बात पूरी हुई जो उसने राजा से उस वक्त कही थी जब राजा उसके पास गया था। **18** सच्चे परमेश्वर के सेवक की यह बात पूरी हुई जो उसने राजा से कही थी, “कल इसी समय सामरिया के फाटक पर दो सआ जौ एक शेकेल में और एक सआ मैदा एक शेकेल में मिलेगा।”[1] **19** मगर सहायक सेना-अधिकारी ने सच्चे परमेश्वर के सेवक से कहा था, “अगर यहोवा आकाश के झरोखे खोल दे तो भी यह नहीं हो सकता!” तब एलीशा ने कहा था, “कल तू खुद अपनी आँखों से यह देखेगा, मगर उसमें से कुछ खा नहीं पाएगा।” **20** उस अधिकारी के साथ ठीक ऐसा ही हुआ क्योंकि फाटक पर लोगों के रौंदने से उसकी मौत हो गयी।

8 एलीशा ने उस औरत से, जिसके बेटे को उसने ज़िंदा किया था,[2] कहा, “तू अपने घराने के साथ यह देश छोड़कर जा और जहाँ कहीं तू रह सकती है वहाँ परदेसी की तरह रह, क्योंकि यहोवा ने कहा है कि इस देश में सात साल तक अकाल पड़ेगा।”[3] **2** उस औरत ने ठीक वैसा ही किया जैसा सच्चे परमेश्वर के सेवक ने उससे कहा था। वह अपने घराने को लेकर निकल पड़ी और पलिश्तियों के देश[4] चली गयी और वहाँ सात साल रही।

3 सात साल के बीतने पर वह औरत पलिश्तियों के देश से अपने देश लौट आयी। वह राजा से फरियाद करने गयी कि उसका घर और खेत उसे लौटा दिया जाए। **4** उस वक्त राजा सच्चे परमेश्वर के सेवक एलीशा के सेवक गेहजी से बात कर रहा था। उसने गेहजी से कहा था, “ज़रा मुझे उन सभी बड़े-बड़े कामों के बारे में बता जो एलीशा ने किए हैं।”[5] **5** और गेहजी जब राजा को सुना रहा था कि एलीशा ने कैसे एक मरे हुए लड़के को ज़िंदा किया,[6] तो उसी वक्त वह औरत वहाँ पहुँची। वह राजा से अपने घर और

अध्य. 7
1 यह 8:4, 12
न्या 20:29, 37
2 गि 23:19
2रा 7:1
यश 55:10, 11

दूसरा कॉल.
1 2रा 7:1, 2

अध्य. 8
2 2रा 4:32-35
3 लैव 26:19
व्य 28:15, 23
1रा 17:1
4 यह 13:2, 3
5 2रा 2:14
2रा 2:20, 21
2रा 3:17
2रा 4:4, 7
2रा 6:5-7
2रा 7:1
6 2रा 4:32-35

खेत के लिए फरियाद करने लगी।[1] उसे
देखते ही गेहजी ने कहा, “मेरे मालिक
राजा, यही वह औरत है और यही
उसका लड़का है जिसे एलीशा ने ज़िंदा
किया था।” **6** राजा ने उस औरत से
कहा कि वह उस वाकये के बारे में उसे
बताए और उस औरत ने उसे पूरी कहानी
सुनायी। फिर राजा ने अपने एक दर-
बारी को यह ज़िम्मेदारी दी, “तू इस बात
का ध्यान रख कि इस औरत की पूरी
जायदाद इसे लौटा दी जाए। इसने जिस
दिन यह देश छोड़ा था तब से लेकर आज
तक इसके खेत से जितनी पैदावार होती,
उसकी कीमत इसे अदा कर दी जाए।”

7 जब सीरिया का राजा बेन-हदद[2]
बीमार था तो एलीशा दमिश्क[3] गया।
बेन-हदद को खबर दी गयी कि सच्चे पर-
मेश्वर का सेवक[4] आया है। **8** राजा ने
हजाएल[5] से कहा, “तू सच्चे परमेश्वर के
सेवक के लिए कुछ तोहफा लेकर उससे
मिलने जा।[6] उससे कह कि वह यहोवा
से पूछकर बताए कि मेरी यह बीमारी दूर
होगी या नहीं।” **9** हजाएल एलीशा से
मिलने निकला। उसने एलीशा को तोहफे
में देने के लिए दमिश्क की हर तरह
की अच्छी चीज़ों से 40 ऊँट लदवाए।
यह सब लेकर वह एलीशा के पास आया
और उसके सामने खड़े होकर कहने लगा,
“तेरे सेवक सीरिया के राजा बेन-हदद ने
मुझे तेरे पास भेजा है। वह जानना चाहता
है कि उसकी बीमारी ठीक होगी या
नहीं।” **10** एलीशा ने कहा, “जाकर
उससे कह, ‘तू ज़रूर ठीक हो जाएगा।’
मगर यहोवा ने मुझ पर ज़ाहिर किया है
कि वह ज़रूर मर जाएगा।”[7] **11** यह
कहने के बाद एलीशा हजाएल को ऐसे
घूरने लगा कि वह झिझक महसूस करने
लगा। फिर सच्चे परमेश्वर का सेवक
रोने लगा। **12** हजाएल ने पूछा, “क्या
हुआ मालिक? तू क्यों रो रहा है?”
एलीशा ने कहा, “क्योंकि मैं जानता
हूँ कि तू इसराएल के लोगों पर क्या-
क्या कहर ढानेवाला है।[1] तू उनके किले-
बंद शहरों को आग से फूँक देगा, उनके
वीर योद्धाओं को तलवार से मार डालेगा,
उनके बच्चों को पटक-पटककर मार
डालेगा और उनकी गर्भवती औरतों का
पेट चीर देगा।”[2] **13** हजाएल ने कहा,
“मगर तेरे सेवक की औकात ही क्या है
कि यह काम कर सके? मैं तो सिर्फ एक
कुत्ता हूँ।” मगर एलीशा ने कहा, “यहोवा
ने मुझ पर ज़ाहिर किया है कि तू सीरिया
का राजा बनेगा।”[3]

14 तब हजाएल एलीशा के यहाँ से
चला गया और अपने मालिक राजा के
पास लौट आया। राजा ने उससे पूछा,
“एलीशा ने तुझसे क्या कहा?” हजाएल
ने कहा, “उसने कहा कि तू ज़रूर ठीक हो
जाएगा।”[4] **15** मगर अगले दिन हजा-
एल ने एक चादर पानी में डुबोकर
राजा के मुँह पर रखी और उसे दबाकर
मार डाला।[5] इसके बाद हजाएल राजा
बन गया।[6]

16 जब इसराएल में अहाब के बेटे
यहोराम[7] के राज का पाँचवाँ साल
चल रहा था, तब यहूदा में यहोशा-
पात राजा था और उसी दौरान उसका
बेटा यहोराम[8] यहूदा का राजा बना।
17 यहोशापात का बेटा यहोराम 32
साल की उम्र में राजा बना और उसने
यरूशलेम में रहकर आठ साल राज
किया। **18** यहोराम ने इसराएल के
राजाओं के तौर-तरीके अपना लिए,[9]
ठीक जैसे अहाब के घराने ने किया
था[10] क्योंकि उसकी शादी अहाब की
बेटी से हुई थी।[11] वह यहोवा की नज़र

अध्य. 8

1 गि 36:9
2 1रा 20:1; 2रा 6:24
3 यश 7:8
4 1रा 17:24
5 1रा 19:15
6 1शम 9:8; 1रा 14:2, 3
7 2रा 8:15

दूसरा कॉल.

1 2रा 10:32; 2रा 12:17; 2रा 13:3; आम 1:3
2 व्य 28:63; आम 1:13
3 1रा 19:15
4 2रा 8:10
5 1रा 16:8, 10; 2रा 11:1; 2रा 15:8, 10
6 1रा 19:15
7 2रा 1:17
8 1रा 22:50; 2इत 21:3, 5
9 1रा 12:28-30
10 1रा 16:32, 33; 1रा 21:25
11 2रा 8:26, 27; 2इत 18:1

में बुरे काम करता रहा।[1] 19 फिर भी
यहोवा ने अपने सेवक दाविद की खातिर
यहूदा राज का नाश नहीं करना चाहा।[2]
उसने दाविद से वादा किया था कि उसका
और उसके बेटों का दीया हमेशा जलता
रहेगा।[3]

20 यहोराम के दिनों में एदोम ने
यहूदा से बगावत की[4] और फिर अपना
एक राजा खड़ा किया।[5] 21 इसलिए
यहोराम अपने सभी रथ लेकर उस पार
साईर गया। उसने रात के वक्त जाकर
एदोमियों पर हमला किया, जो उसे और
रथ-सेना के अधिकारियों को घेरे हुए थे।
उसने एदोमियों को हरा दिया और उनकी
सेनाएँ अपने तंबुओं में भाग गयीं।
22 इसके बाद भी एदोम ने यहूदा से
बगावत करना नहीं छोड़ा और आज तक
वह बगावत कर रहा है। उन्हीं दिनों
लिब्ना[6] ने भी यहूदा से बगावत की।

23 यहोराम की ज़िंदगी की बाकी
कहानी, उसके सभी कामों का ब्यौरा
यहूदा के राजाओं के इतिहास की किताब
में लिखा है। 24 फिर यहोराम की मौत
हो गयी* और उसे दाविदपुर में उसके
पुरखों की कब्र में दफनाया गया।[7] यहो-
राम की जगह उसका बेटा अहज्याह[8]
राजा बना।

25 जब राजा यहोराम का बेटा
अहज्याह यहूदा का राजा बना, तब इस-
राएल में अहाब के बेटे यहोराम के
राज का 12वाँ साल चल रहा था।[9]
26 अहज्याह 22 साल की उम्र में राजा
बना और उसने यरूशलेम में रहकर एक
साल राज किया। उसकी माँ का नाम
अतल्याह[10] था जो इसराएल के राजा
ओम्री[11] की पोती* थी। 27 अहज्याह
ने अहाब के घराने के तौर-तरीके अपना
लिए[1] और वह उस घराने की तरह
यहोवा की नज़र में बुरे काम करता रहा,
क्योंकि वह अहाब के घराने का रिश्तेदार
था।[2] 28 इसलिए वह अहाब के बेटे
यहोराम के साथ सीरिया के राजा हजा-
एल से युद्ध करने रामोत-गिलाद[3] गया,
मगर सीरिया के सैनिकों ने यहोराम को
घायल कर दिया।[4] 29 राजा यहोराम
ठीक होने के लिए यिजरेल[5] लौटा क्योंकि
रामाह में सीरिया के राजा हजाएल के
सैनिकों ने उसे घायल कर दिया था।[6]
अहाब का बेटा यहोराम ज़ख्मी हो गया
था,* इसलिए उसे देखने के लिए यहूदा
का राजा अहज्याह, जो यहोराम का बेटा
था, यिजरेल गया।

9 फिर भविष्यवक्ता एलीशा ने
भविष्यवक्ताओं के बेटों में से एक
को बुलाया और उससे कहा, "अपनी
कमर कस ले और तेल की यह
सुराही लेकर फौरन रामोत-गिलाद[7] जा।
2 वहाँ पहुँचकर तू येहू[8] को ढूँढ़ना, जो
यहोशापात का बेटा और निमशी का
पोता है। तू उसके पास जाना और उसे
उसके भाइयों के बीच से बुलाकर अंदर
के कमरे में ले जाना। 3 यह तेल उसके
सिर पर उँडेलना और उससे कहना,
'यहोवा ने कहा है, "मैं तेरा अभिषेक
करके तुझे इसराएल का राजा ठह-
राता हूँ।"'[9] इसके बाद दरवाज़ा खोलकर
तुरंत वहाँ से भाग निकलना।"

4 तब भविष्यवक्ता का सेवक रामोत-
गिलाद के लिए निकल पड़ा। 5 जब
वह वहाँ पहुँचा तो सेनापति बैठे हुए थे।
उसने कहा, "हे प्रधान, मैं तेरे लिए एक
संदेश लाया हूँ।" येहू ने पूछा, "हममें से
किसके लिए?" उसने येहू से कहा,

8:24 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।" 8:26 *शा., "बेटी।"

8:29 *या "बीमार था।"

अध्या. 8

1 2इत 21:6, 7
2 उत 49:10; 2शम 7:16, 17
3 1रा 11:36; भज 132:17
4 उत 27:40; 2शम 8:14
5 1रा 22:47; 2इत 21:8-10
6 यह 21:13; 2रा 19:8
7 1रा 2:10; 2इत 21:18-20
8 1इत 3:10, 11; 2इत 21:16, 17; 2इत 22:1, 2
9 2रा 9:29
10 2रा 11:1; 2रा 11:13, 16
11 1रा 16:16, 23

दूसरा कॉल.

1 1रा 16:33
2 2रा 8:16, 18; 2इत 22:3, 4
3 यह 21:38; 1रा 22:2, 3
4 1रा 19:17; 2इत 22:5
5 यह 19:17, 18; 1रा 21:1; 2इत 22:6
6 2रा 9:15

अध्या. 9

7 2रा 8:25, 28
8 1रा 19:16, 17
9 2इत 22:7

“प्रधान, तेरे लिए।” 6 येहू उठा और
घर के अंदर गया। फिर सेवक ने
उसके सिर पर तेल उँडेलकर कहा, “इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा ने कहा है,
‘मैं यहोवा तेरा अभिषेक करके तुझे
अपनी प्रजा इसराएल का राजा ठह-
राता हूँ।[1] 7 तू अपने मालिक अहाब
के घराने को मिटा देना। मैं अपने सभी
भविष्यवक्ताओं के खून का और यहोवा
के उन सभी सेवकों के खून का बदला
लूँगा जो इज़ेबेल के हाथों मारे गए
थे।[2] 8 अहाब का पूरा घराना नाश हो
जाएगा। मैं उसके घराने के हर आदमी
और लड़के को मार डालूँगा, यहाँ तक कि
इसराएल के बेसहारा और कमज़ोर लोगों
को भी मिटा दूँगा।[3] 9 मैं अहाब के
घराने का वही हश्र करूँगा जो मैंने नबात
के बेटे यारोबाम के घराने का[4] और अहि-
याह के बेटे बाशा के घराने का किया
था।[5] 10 और इज़ेबेल की लाश को
यिजरेल की ज़मीन के उस टुकड़े पर कुत्ते
खा जाएँगे[6] और उसे कोई नहीं दफ-
नाएगा।’” इतना कहकर उसने दरवाज़ा
खोला और भाग गया।[7]

11 जब येहू राजा के दूसरे सेनापतियों
के पास लौटा तो वे उससे पूछने लगे,
“सब ठीक तो है न? वह पागल तेरे पास
क्यों आया था?” उसने कहा, “तुम तो उन
आदमियों को जानते हो, बेसिर-पैर की
बातें करते हैं।” 12 मगर उन्होंने कहा,
“नहीं, कुछ तो बात है। क्या तू हमें नहीं
बताएगा?” येहू ने कहा, “उसने मुझसे
ऐसा-ऐसा कहा और फिर यह संदेश
दिया: ‘यहोवा ने कहा है, “मैं तेरा अभि-
षेक करके तुझे इसराएल का राजा ठह-
राता हूँ।”’”[8] 13 तब उन सबने फौरन
अपना-अपना कपड़ा लिया और येहू के
आगे सीढ़ियों पर बिछाया[9] और नरसिंगा
फूँककर कहा, “येहू राजा बन गया है!”[10]

अध्य. 9
1 1रा 19:16
2 1रा 18:4
1रा 19:2
1रा 21:15, 25
लूक 18:7
3 1रा 21:20, 21
4 1रा 15:28, 29
5 1रा 16:11, 12
6 1रा 21:23
7 2रा 9:3
8 2रा 9:6
9 मत 21:7
10 2शम 15:10
1रा 1:34, 39

दूसरा कॉल.
1 1रा 19:16
2 2रा 8:28
3 1रा 19:15
2रा 8:15
2रा 10:32
4 यह 19:17, 18
1रा 21:1
5 2इत 22:6

14 इसके बाद येहू[1] ने, जो यहोशापात
का बेटा और निमशी का पोता था, यहो-
राम के खिलाफ साज़िश रची।

यहोराम पूरी इसराएली सेना के साथ
रामोत-गिलाद गया हुआ था[2] ताकि
सीरिया के राजा हजाएल[3] से उस शहर
की रक्षा कर सके। 15 बाद में वह
यिजरेल[4] लौट आया क्योंकि सीरिया के
राजा हजाएल से लड़ते वक्त वह ज़ख्मी
हो गया था।[5]

अब येहू ने दूसरे सेनापतियों से कहा,
“अगर तुम मेरी तरफ हो, तो शहर
में से किसी को भी बाहर मत जाने देना
ताकि यह खबर यिजरेल तक न पहुँचे।”
16 फिर येहू अपने रथ पर सवार होकर
यिजरेल गया क्योंकि यहोराम ठीक होने
के लिए वहाँ गया था। यहोराम को देखने
यहूदा का राजा अहज्याह वहाँ आया
हुआ था। 17 यिजरेल की मीनार पर
तैनात पहरेदार ने देखा कि येहू के आद-
मियों का दल पास आ रहा है। उन्हें
देखते ही उसने कहा, “मुझे आदमियों का
एक बड़ा दल आता दिखायी दे रहा
है।” यहोराम ने कहा, “एक घुड़सवार
से कहो कि वह उनसे मिलने जाए और
पूछे, ‘तुम शांति के इरादे से ही आए हो
न?’” 18 तब एक घुड़सवार निकला
और जाकर येहू से मिला और उसने कहा,
“राजा ने पूछा है, ‘तुम शांति के इरादे से
ही आए हो न?’” मगर येहू ने कहा, “तू
कौन होता है यह पूछनेवाला? मेरे पीछे
चल!”

तब पहरेदार ने यहोराम से कहा, “दूत
उन तक पहुँचा तो है, मगर अभी तक
लौटा नहीं।” 19 फिर एक और घुड़-
सवार भेजा गया। वह जाकर येहू और
उसके दल से मिला और उसने कहा,
“राजा ने पूछा है, ‘तुम शांति के इरादे
से ही आए हो न?’” मगर येहू ने कहा,

“तू कौन होता है यह पूछनेवाला? मेरे पीछे चल!”

20 तब पहरेदार ने यहोराम से कहा, “दूत उन तक पहुँचा तो है, मगर अभी तक लौटा नहीं। मुझे कोई तेज़ी से रथ हाँकता हुआ दिखायी दे रहा है। उसका रथ चलाना निमशी के पोते* येहू जैसा है क्योंकि वही पागलों की तरह रथ दौड़ाता है।” 21 यहोराम ने कहा, “जल्दी से मेरा रथ तैयार करो!” उसका युद्ध-रथ तैयार किया गया और इसराएल का राजा यहोराम और यहूदा का राजा अहज्याह[1] येहू से मिलने अपने-अपने रथ पर निकल पड़े। वे येहू से यिजरेली नाबोत[2] की ज़मीन पर मिले।

22 जैसे ही यहोराम ने येहू को देखा, उसने पूछा, “येहू, तू शांति के इरादे से ही आया है न?” मगर येहू ने कहा, “जब तक तेरी माँ इज़ेबेल बदचलनी[3] और टोना-टोटका करती रहेगी,[4] तब तक कहाँ से शांति हो सकती है?” 23 यहोराम ने वहाँ से भाग निकलने के लिए फौरन अपना रथ घुमाया और अहज्याह से कहा, “अहज्याह, यह एक चाल है!” 24 तब येहू ने अपनी कमान उठायी और यहोराम की पीठ पर ऐसा तीर मारा कि वह उसके दिल के आर-पार हो गया और वह रथ पर ही ढेर हो गया। 25 येहू ने अपने सहायक सेना-अधिकारी बिदकर से कहा, “इसे उठाकर यिजरेली नाबोत की इसी ज़मीन पर फेंक दे।[5] याद है न, जब हम दोनों इसके पिता अहाब के पीछे-पीछे रथ चला रहे थे तब यहोवा ने अहाब को यह सज़ा सुनायी थी,[6] 26 ‘यहोवा ऐलान करता है, “कल नाबोत और उसके बेटों का जो खून बहाया गया था वह मैंने देखा है।”[7] यहोवा ऐलान करता है, “मैं इसी ज़मीन पर तुझसे उनके खून का बदला लूँगा।”’[1] इसलिए बिदकर, तू इसे उठाकर नाबोत की इसी ज़मीन पर फेंक दे, ठीक जैसे यहोवा ने कहा था।”[2]

27 जब यहूदा के राजा अहज्याह[3] ने यह सब देखा, तो वह बगीचे के घर के रास्ते से भाग गया। (बाद में येहू ने उसका पीछा किया और अपने आदमियों से कहा, “उसे भी मार डालो!” जब अहज्याह अपने रथ पर सवार ऊपर गूर की तरफ जा रहा था, जो यिबलाम[4] के पास है, तो येहू के आदमियों ने उस पर वार किया। मगर वह भागता ही रहा और भागते-भागते मगिद्दो पहुँचा जहाँ उसकी मौत हो गयी। 28 अहज्याह के सेवक उसकी लाश रथ में रखकर यरूशलेम ले आए और दाविदपुर[5] में उसके पुरखों की कब्र में उसे दफना दिया। 29 अहज्याह,[6] अहाब के बेटे यहोराम के राज के 11वें साल में यहूदा का राजा बना था।)

30 जब येहू यिजरेल[7] आया तो इसकी खबर इज़ेबेल[8] को मिली। इसलिए इज़ेबेल ने अपनी आँखों में काजल लगाया, अपने बाल सँवारे और खिड़की से नीचे देखने लगी। 31 जैसे ही येहू फाटक से अंदर आया, इज़ेबेल ने कहा, “याद है, जिमरी का क्या हुआ था जिसने अपने मालिक का कत्ल किया था?”[9] 32 येहू ने ऊपर खिड़की की तरफ देखकर कहा, “कौन है मेरी तरफ? कौन?”[10] फौरन ऊपर से दो-तीन दरबारियों ने उसे देखा। 33 येहू ने उनसे कहा, “उस औरत को नीचे फेंक दो!” दरबारियों ने उसे नीचे फेंक दिया और उसके खून के छींटे दीवार पर और घोड़ों पर पड़े। येहू ने अपने घोड़ों से उसे रौंद दिया। 34 इसके बाद येहू अंदर गया

9:20 *शा., “बेटे।”

अध्य. 9

1 2रा 8:25, 2रा 8:29, 2इत 22:7
2 1रा 21:1, 15
3 1रा 16:31, 1रा 18:4, 1रा 19:2, 1रा 21:7
4 लैव 20:6, व्य 18:10, 1रा 18:19
5 1रा 21:19
6 1रा 21:29
7 उत 4:8, 10, भज 9:12, भज 72:14

दूसरा कॉल.

1 उत 9:5, लैव 24:17
2 1रा 21:24
3 2रा 8:29, 2इत 22:7
4 यह 17:11
5 2शम 5:7
6 2रा 8:24, 2इत 22:2
7 1रा 21:1
8 1रा 16:31, 1रा 21:25
9 1रा 16:15-19
10 निर्ग 32:26, भज 94:16

और उसने खाया-पीया। फिर उसने कहा, “उस शापित औरत की लाश ले जाकर दफना दो, आखिर वह एक राजा की बेटी जो है।”[1] 35 मगर जब वे उसे दफनाने के लिए वहाँ गए तो उन्होंने देखा कि वहाँ सिर्फ उसकी खोपड़ी, पैर और हथेलियाँ बची हैं।[2] 36 जब उन्होंने लौटकर यह बात येहू को बतायी तो उसने कहा, “आज यहोवा का वह वचन पूरा हुआ है[3] जो उसने अपने सेवक तिशबे के रहनेवाले एलियाह से कहलवाया था, ‘यिजरेल की इसी ज़मीन पर कुत्ते इज़ेबेल का माँस खा जाएँगे[4] 37 और उसकी लाश यिजरेल की ज़मीन पर खाद बन जाएगी ताकि कोई यह न कह सके, “यह इज़ेबेल है।”’”

10 अहाब[5] के 70 बेटे सामरिया में रहते थे। इसलिए येहू ने यिजरेल के हाकिमों, मुखियाओं[6] और अहाब के बच्चों की देखभाल करनेवाले आदमियों के नाम चिट्ठियाँ लिखकर सामरिया भेजीं। उसने उनको लिखा, 2 “जब तुम्हारे पास यह चिट्ठी पहुँचेगी, तो तुम्हारे साथ तुम्हारे मालिक के बेटे होंगे और तुम्हारे पास युद्ध-रथ, घोड़े और किलेबंद शहर और हथियार भी होंगे। 3 तुम अपने मालिक के बेटों में से सबसे काबिल और होनहार* बेटे को चुनना और उसे उसके पिता की राजगद्दी पर बिठाना। फिर तुम अपने मालिक के घराने की रक्षा के लिए लड़ना।”

4 लेकिन वे सब डर गए और कहने लगे, “जब दो राजा उसके सामने टिक न सके,[7] तो हम कैसे टिकेंगे?” 5 इसलिए राजमहल* की निगरानी करनेवाले आदमी, शहर के राज्यपाल, मुखियाओं और अहाब के बच्चों की देखभाल करनेवालों ने येहू को यह संदेश भेजा: “हम तेरे सेवक हैं। तू हमसे जो भी कहेगा, हम करेंगे। हम किसी को राजा नहीं बनाएँगे। तुझे जो सही लगे वह कर।”

6 तब येहू ने उन्हें दूसरी चिट्ठी लिखी, “अगर तुम मेरी तरफ हो और मेरा हुक्म मानने के लिए तैयार हो, तो एक काम करो। अपने मालिक के बेटों का सिर काटकर कल इस वक्त मेरे पास यिजरेल ले आओ।”

राजा अहाब के 70 बेटे शहर के उन खास-खास आदमियों के साथ थे जो उनकी देखभाल करते थे। 7 जैसे ही उन्हें येहू की चिट्ठी मिली, उन्होंने राजा के 70 बेटों को मार डाला।[1] उन्होंने उन आदमियों के सिर काटकर टोकरों में भरे और येहू के पास यिजरेल भेज दिए। 8 दूत ने येहू के पास आकर कहा, “वे राजा के बेटों के सिर लाए हैं।” येहू ने कहा, “शहर के फाटक पर उनके दो ढेर लगा दो और कल सुबह तक उन्हें वहीं रहने दो।” 9 सुबह जब वह बाहर गया तो सब लोगों के सामने खड़े होकर कहने लगा, “तुम सब निर्दोष* हो। यह सच है कि मैंने अपने मालिक के खिलाफ साज़िश की और उसे मार डाला,[2] मगर इन सबको किसने मारा है? 10 इसलिए तुम सब जान लो कि यहोवा ने अहाब के घराने को जो सज़ा सुनायी थी और उसके बारे में यहोवा ने जो कहा था, उसकी एक-एक बात सच निकलेगी।*[3] यहोवा ने बिलकुल वैसा ही किया, जैसा उसने अपने सेवक एलियाह से कहलवाया था।”[4] 11 इसके अलावा, येहू ने अहाब के

10:3 *या “सीधे-सच्चे।” **10:5** *शा., “घर।”

10:9 *या “नेक।” **10:10** *शा., “धरती पर नहीं गिरेगी।”

अध्य. 9
1 1रा 16:31
2 2रा 9:10
3 यश 55:10, 11
4 1रा 21:23

अध्य. 10
5 1रा 16:29
6 1रा 21:8
7 2रा 9:24, 27

दूसरा कॉल.
1 1रा 21:21
2 2रा 9:14, 24
3 1शम 15:29
यश 14:27
4 1रा 21:19-24
2रा 9:7, 36

घराने के उन लोगों को भी मार डाला जो
यिजरेल में बचे थे। साथ ही, उसने अहाब
के सभी खास-खास आदमियों, दोस्तों
और पुजारियों को मार डाला,[1] एक
को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा।[2]

12 इसके बाद वह सामरिया के लिए
निकल पड़ा। रास्ते में एक ऐसी जगह थी
जहाँ चरवाहे भेड़ों का ऊन कतरते थे।
13 वहाँ येहू की मुलाकात यहूदा के राजा
अहज्याह[3] के भाइयों से हुई। उसने उनसे
पूछा, "तुम लोग कौन हो?" उन्होंने कहा,
"हम अहज्याह के भाई हैं। हम राजा के
बेटों और राजमाता के बेटों की खैरि-
यत पूछने जा रहे हैं।" **14** येहू ने फौरन
अपने आदमियों से कहा, "पकड़ लो इन
सबको!" उन्होंने उनको पकड़ लिया और
ऊन कतरनेवाली जगह के पास जो कुंड
था, वहाँ उन सबको मार डाला। एक को
भी ज़िंदा नहीं छोड़ा। वे कुल मिलाकर
42 आदमी थे।[4]

15 जब येहू वहाँ से आगे बढ़ा तो
उसकी मुलाकात रेकाब[5] के बेटे यहोना-
दाब[6] से हुई जो उससे मिलने आ रहा था।
जब यहोनादाब ने उसे सलाम किया* तो
येहू ने उससे पूछा, "क्या तू पूरे# दिल से
मेरे साथ है, जैसे मैं पूरे दिल से तेरे
साथ हूँ?"

यहोनादाब ने कहा, "हाँ, मैं हूँ।"

येहू ने कहा, "तो फिर अपना हाथ
मुझे दे।"

यहोनादाब ने उसे अपना हाथ दिया
और येहू ने उसे अपने साथ रथ पर
चढ़ाया। **16** फिर उसने यहोनादाब से
कहा, "तू मेरे साथ चल और देख
कि मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकता
कि यहोवा के सिवा किसी और की
उपासना की जाए।"*[1] इस तरह यहोना-
दाब को येहू के युद्ध-रथ पर चढ़ा दिया
गया। **17** फिर येहू सामरिया पहुँचा
और वहाँ अहाब के घराने के जितने भी
लोग बचे थे उन सबको उसने मार डाला।
उसने उनका पूरी तरह सफाया कर
दिया,[2] ठीक जैसे यहोवा ने एलियाह से
कहा था।[3]

18 इसके बाद येहू ने सब लोगों को
इकट्ठा किया और उनसे कहा, "अहाब
ने बाल की उपासना के लिए जो किया
वह बहुत कम था,[4] अब येहू बढ़-चढ़-
कर उसकी उपासना करेगा। **19** इस-
लिए बाल के सब भविष्यवक्ताओं,[5] सब
भक्तों और सब पुजारियों[6] को मेरे पास
इकट्ठा करो। ध्यान रखो कि एक भी
छूटने न पाए क्योंकि मैं बाल के लिए एक
बड़ा बलिदान चढ़ानेवाला हूँ। जो कोई
इस मौके पर हाज़िर नहीं होगा उसे मार
डाला जाएगा।" दरअसल यह येहू की
एक चाल थी। वह बाल के सभी उपासकों
को मिटा देना चाहता था।

20 येहू ने यह भी कहा, "बाल के
लिए एक खास सभा का ऐलान किया
जाए।" इसलिए इसका ऐलान किया
गया। **21** इसके बाद येहू ने इसराएल
के कोने-कोने में इसकी खबर भिजवायी
और बाल के सभी उपासक सभा में आए,
एक भी नहीं छूटा। वे सब-के-सब बाल के
मंदिर में गए[7] जिस वजह से मंदिर खचा-
खच भर गया। **22** येहू ने पोशाक-घर
के अधिकारी से कहा, "बाल के सभी
भक्तों के लिए पोशाकें ले आ।" वह उन
सबके लिए पोशाकें ले आया। **23** फिर
येहू और रेकाब का बेटा यहोनादाब[8] बाल

10:15 *या "आशीर्वाद दिया।" #शा., "सीधे-सच्चे।"

10:16 *या "देख कि यहोवा के लिए मुझमें कितना जोश है।"

अध्य. 10

1 1रा 18:19, 2रा 23:19, 20
2 1रा 21:21
3 2रा 8:29, 2रा 9:21, 27, 2इत 22:1
4 2इत 22:8
5 1इत 2:55
6 यिर्म 35:6, 19

दूसरा कॉल.

1 गि 25:11, 1रा 19:10
2 2रा 9:8, 2इत 22:7
3 1रा 21:20, 21, 2रा 9:26
4 1रा 16:32, 33, 1रा 18:22
5 2रा 3:13
6 2रा 10:11
7 1रा 16:30, 32
8 2रा 10:15, यिर्म 35:6, 19

के मंदिर में गए। येहू ने बाल के भक्तों
से कहा, "अच्छी तरह देखो कि यहाँ
कोई यहोवा का उपासक तो नहीं है।
यहाँ सिर्फ बाल के उपासक होने चाहिए।"
24 इसके बाद वे बलिदान और होम-
बलियाँ चढ़ाने अंदर गए। येहू ने अपने
80 आदमियों को बाहर खड़ा किया था
और उन्हें बताया था, "उन सबको मार
डालना, किसी को भी मत छोड़ना। अगर
तुममें से कोई किसी को भाग जाने देगा,
तो उसे भागनेवाले के बदले मार डाला
जाएगा।"

25 जैसे ही येहू आग में बलिदान चढ़ा
चुका, उसने पहरेदारों और सहायक सेना-
अधिकारियों से कहा, "अंदर आओ, इन
सबको मार डालो! एक भी भागने न
पाए!"[1] पहरेदार और सहायक सेना-
अधिकारी सबको तलवार से मारते गए
और उनकी लाशें बाहर फेंकते गए। वे
लोगों को घात करते-करते बाल के मंदिर
के अंदरवाले कमरे* तक पहुँच गए।
26 फिर वे मंदिर से सारे पूजा-स्तंभ[2]
बाहर ले आए और उन्हें जला दिया।[3]
27 उन्होंने बाल का पूजा-स्तंभ ढा दिया[4]
और मंदिर[5] को गिरा दिया और उस
जगह को शौचालय बना दिया। वह आज
तक ऐसा ही है।

28 इस तरह येहू ने इसराएल से
बाल की उपासना का नामो-निशान मिटा
दिया। **29** मगर वह उन पापों से दूर
नहीं रहा, जो नबात के बेटे यारोबाम ने
इसराएल से करवाए थे। येहू ने बेतेल
और दान में बने सोने के बछड़े की मूरतें
रहने दीं।[6] **30** यहोवा ने येहू से कहा,
"मैंने अहाब के घराने के बारे में अपने मन
में जो-जो ठाना था,[7] वह सब तूने
किया और इस तरह मेरी नज़र में सही
काम किया। तूने जो सही कदम उठाया,
उस वजह से चार पीढ़ियों तक तेरे
बेटे इसराएल की राजगद्दी पर बैठेंगे।"[1]
31 मगर येहू ने इसराएल के परमेश्वर
यहोवा के कानून को पूरे दिल से मानने
का ध्यान नहीं रखा।[2] वह उन पापों से
दूर नहीं रहा जो यारोबाम ने इसराएल से
करवाए थे।[3]

32 उन्हीं दिनों यहोवा इसराएल के
इलाके की सीमा घटाने लगा। हजाएल
पूरे इसराएल के अलग-अलग प्रांतों पर
हमला करता रहा।[4] **33** उसने यरदन
के पूरब में गिलाद के पूरे इलाके से हमला
करना शुरू किया, जहाँ गाद, रूबेन
और मनश्शे गोत्र के लोग[5] रहते थे।
इसमें अरनोन घाटी के पासवाले अरो-
एर से लेकर गिलाद और बाशान तक का
इलाका भी शामिल था।[6]

34 येहू की ज़िंदगी की बाकी कहानी,
उसने जो-जो काम किए, उनका और
उसके बड़े-बड़े कामों का ब्यौरा इस-
राएल के राजाओं के इतिहास की किताब
में लिखा है। **35** फिर येहू की मौत
हो गयी* और उसे सामरिया में दफ-
नाया गया। उसकी जगह उसका बेटा
यहोआहाज[7] राजा बना। **36** येहू ने
सामरिया से इसराएल पर 28 साल राज
किया था।

11 जब अहज्याह की माँ अतल्याह[8]
ने देखा कि उसका बेटा मर गया
है,[9] तो उसने शाही खानदान के सभी
वारिसों को मार डाला।*[10] **2** लेकिन
राजा यहोराम की बेटी और अहज्याह
की बहन यहोशेबा ने अहज्याह के बेटे

अध्य. 10
1 निर्ग 32:26, 27; व्य 13:6-9; यहे 9:5
2 लैव 26:1
3 व्य 7:25
4 लैव 26:30; व्य 7:5
5 1रा 16:30, 32
6 1रा 12:28-30; 1रा 13:33; हो 8:6
7 1रा 21:21

दूसरा कॉल.
1 2रा 13:1, 10; 2रा 14:23; 2रा 15:8, 12
2 व्य 10:12; हो 1:4
3 1रा 12:28-30; 1रा 13:34; 1रा 14:16
4 1रा 19:17; 2रा 8:12; 2रा 13:22
5 गि 32:33; यह 22:9
6 व्य 3:13-16; व्य 28:63; यह 13:8-12
7 2रा 13:1

अध्य. 11
8 2रा 8:26; 2रा 11:20; 2इत 21:5, 6; 2इत 24:7
9 2रा 9:27
10 2इत 21:4; 2इत 22:10-12

10:25 *शा., "शहर," शायद किले जैसी एक इमारत।

10:35 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।" **11:1** *शा., "राज के सारे बीज नाश कर दिए।"

यहोआश[1] को बचा लिया। उसने यहो-
आश को राजा के बेटों में से चुपके से उठा
लिया जिन्हें अतल्याह मार डालनेवाली
थी। यहोशेबा, यहोआश और उसकी धाई
को सोने के कमरे में ले गयी और उन्हें
वहाँ छिपा दिया। उन्होंने किसी तरह यहो-
आश को अतल्याह से छिपाए रखा, इस-
लिए वह नहीं मारा गया। **3** यहो-
आश छः साल तक उसके साथ रहा।
उसे यहोवा के भवन में छिपाकर रखा
गया। इस दौरान अतल्याह देश पर राज
करती रही।

4 सातवें साल यहोयादा ने सौ-सौ
शाही अंगरक्षकों* के दल के अधि-
कारियों को और महल के सौ-सौ पहरे-
दारों के दल के अधिकारियों[2] को बुल-
वाया और उन्हें यहोवा के भवन में अपने
पास इकट्ठा किया। यहोयादा ने यहोवा के
भवन में उन अधिकारियों के साथ एक
करार किया और उन्हें शपथ धरायी कि
वे उस करार को मानेंगे। इसके बाद
उसने उन्हें राजा का बेटा दिखाया।[3]
5 उसने उन्हें आदेश दिया, “तुम्हें यह
करना होगाः तुममें से एक-तिहाई आदमी
सब्त के दिन काम पर होंगे और राज-
महल पर कड़ी नज़र रखेंगे,[4] **6** एक-
तिहाई आदमी ‘नींव के फाटक’ पर तैनात
होंगे और बचे हुए एक-तिहाई आदमी
महल में पहरेदारों के पीछेवाले फाटक पर
तैनात होंगे। तुम सब बारी-बारी से भवन
पर नज़र रखोगे। **7** पहरेदारों के उन
दो दलों को भी आना होगा जिनकी सब्त
के दिन काम पर आने की बारी नहीं है
और उन्हें यहोवा के भवन में राजा की
हिफाज़त के लिए सख्त पहरा देना होगा।
8 तुम सब अपने हाथों में हथियार लिए
राजा के चारों तरफ तैनात रहना और
उसकी रक्षा करना। अगर कोई सैनिकों
के घेरे के अंदर घुसने की कोशिश करे तो
उसे मार डालना। राजा जहाँ कहीं जाए*
तुम उसके साथ रहना।”

9 सौ-सौ की टुकड़ियों के अधि-
कारियों[1] ने ठीक वैसा ही किया जैसा
यहोयादा याजक ने उन्हें आदेश दिया था।
सब्त के दिन हर अधिकारी ने अपने दल
के सभी आदमियों को लिया। जिन
आदमियों की सेवा करने की बारी थी,
उनके साथ-साथ उन आदमियों को भी
लिया गया जिनकी बारी नहीं थी। वे सब
यहोयादा याजक के पास इकट्ठा हुए।[2]
10 याजक ने सौ-सौ की टुकड़ियों के
अधिकारियों को भाले और गोलाकार
ढालें दीं। ये हथियार राजा दाविद के
थे जो यहोवा के भवन में रखे हुए
थे। **11** महल के पहरेदार[3] हाथ में
हथियार लिए परमेश्वर के भवन में
अपनी-अपनी जगह तैनात हुए। वे भवन
के दाएँ कोने से लेकर बाएँ कोने तक
तैनात थे। वे वेदी[4] और भवन के
पास यानी राजा के चारों तरफ खड़े
थे। **12** फिर यहोयादा, राजा के बेटे[5]
को बाहर लाया और उसे ताज पहनाया
और उसके ऊपर साक्षी-पत्र*[6] रखा और
उन्होंने उसका अभिषेक करके उसे राजा
बनाया। फिर वे तालियाँ बजाने लगे और
कहने लगे, “राजा की जय हो! राजा की
जय हो!”[7]

13 जब अतल्याह ने लोगों के दौड़ने
का शोर सुना तो वह फौरन यहोवा के
भवन में वहाँ आयी जहाँ लोगों की
भीड़ इकट्ठा थी।[8] **14** उसने देखा
कि दस्तूर के मुताबिक राजा खंभे के

11:4 *शा., “कारी लोगों।”

11:8 *शा., “जब वह बाहर जाए और जब वह अंदर आए।” **11:12** *शायद एक खर्रा जिसमें परमेश्वर का कानून लिखा था।

अध्य. 11
1 2रा 12:1
2 1रा 14:27
3 2इत 23:1-3
4 1रा 7:1, 2इत 23:4-7

दूसरा कॉल.
1 2रा 11:4
2 2इत 23:8-11
3 1रा 14:27
4 1रा 8:22, 2इत 4:1
5 2रा 11:2
6 निर्ग 25:21, निर्ग 31:18
7 1रा 1:39, 40
8 2इत 23:12-15

पास खड़ा है[1] और उसके साथ प्रधान
और तुरही फूँकनेवाले[2] भी हैं। देश के
सभी लोग खुशियाँ मना रहे हैं और तुर-
हियाँ फूँकी जा रही हैं। यह देखते ही
अतल्याह ने अपने कपड़े फाड़े और
वह चिल्लाने लगी, "यह साज़िश है!
साज़िश!" **15** तब यहोयादा याजक ने
सौ-सौ की टुकड़ियों के अधिकारियों को
हुक्म दिया,[3] "इस औरत को सैनिकों के
बीच से बाहर ले जाओ। अगर कोई इसके
पीछे-पीछे जाए तो उसे तलवार से मार
डालो!" याजक ने उनसे कहा था, "उस
औरत को यहोवा के भवन में घात मत
करना।" **16** इसलिए वे उसे पकड़कर
ले गए और जब वह उस जगह पहुँची
जहाँ से घोड़े महल[4] में जाया करते थे, तो
उसे मार डाला गया।

17 फिर यहोयादा ने यहोवा और राजा
और लोगों के बीच एक करार किया[5] कि
वे यहोवा के लोग बने रहेंगे। उसने राजा
और लोगों के बीच भी एक करार किया।[6]
18 इसके बाद देश के सब लोगों ने बाल
के मंदिर में जाकर उसकी वेदियाँ ढा दीं,[7]
उसकी मूरतें चूर-चूर कर दीं[8] और वेदियों
के सामने ही बाल के पुजारी मत्तान को
मार डाला।[9]

फिर यहोयादा याजक ने कुछ आद-
मियों को यहोवा के भवन की निगरानी
करने का काम सौंपा।[10] **19** फिर उसने
सौ-सौ की टुकड़ियों के अधिकारियों,[11]
शाही अंगरक्षकों, महल के पहरेदारों[12]
और देश के सभी लोगों को साथ लिया
और वे सब राजा को यहोवा के भवन
से बाहर ले गए। वे महल के पहरेदारों-
वाले फाटक से राजमहल के अंदर आए।
फिर वह जाकर राजगद्दी पर बैठ गया।[13]
20 देश के सभी लोगों ने खुशियाँ मनायीं
और शहर में शांति छा गयी क्योंकि राज-
महल के पास अतल्याह को तलवार से
मार डाला गया था।

21 यहोआश[1] जब राजा बना तब
वह सात साल का था।[2]

12 यहोआश[3] येहू के राज[4] के
सातवें साल में राजा बना था और
उसने 40 साल यरूशलेम में रहकर राज
किया। उसकी माँ का नाम सिब्याह था
जो बेरशेबा की रहनेवाली थी।[5] **2** जब
तक याजक यहोयादा यहोआश का मार्ग-
दर्शन करता रहा तब तक वह यहोवा की
नज़र में सही काम करता रहा। **3** मगर
उसके राज में ऊँची जगह[6] नहीं मिटायी
गयीं और लोग उन जगहों पर बलिदान
चढ़ाते रहे ताकि उनका धुआँ उठे।

4 यहोआश ने याजकों से कहा,
"यहोवा के भवन में पवित्र चढ़ावे के तौर
पर जितना पैसा दिया जाता है वह सब
तुम लेना,[7] यानी हर किसी का कर,[8] हर
किसी के लिए तय की गयी रकम और
वह पैसा जो दिल के उभारने पर लोग
यहोवा के भवन में लाकर देते हैं।[9]
5 हर याजक खुद जाकर दान करने-
वालों* से पैसा इकट्ठा करेगा और भवन
में जहाँ कहीं दरारें हों उनकी मरम्मत के
लिए सारा पैसा इस्तेमाल करेगा।"[10]

6 राजा यहोआश के राज का 23वाँ
साल हो गया था मगर याजकों ने अब
तक भवन की मरम्मत नहीं करवायी।[11]
7 इसलिए राजा ने याजक यहोयादा[12]
और दूसरे याजकों को बुलाया और उनसे
कहा, "भवन की मरम्मत अब तक क्यों
नहीं की गयी? अगर तुम मरम्मत के
काम के लिए पैसा इस्तेमाल नहीं कर रहे
हो, तो दान करनेवालों से पैसा लेना बंद
कर दो।"[13] **8** याजकों ने लोगों से पैसा

12:5 * या "जान-पहचानवालों।"

अध्य. 11
1 2रा 23:3
2 2इत 5:12
3 2रा 11:4, 2इत 23:9
4 1रा 7:1
5 1शम 10:25, 2शम 5:3
6 2इत 23:16, 17
7 व्य 12:3
8 व्य 7:25
9 व्य 13:5
10 2इत 23:18-21
11 2रा 11:4, 15
12 1रा 14:27
13 2शम 7:8, 16

दूसरा कॉल.
1 2रा 11:2
2 2इत 24:1

अध्य. 12
3 2रा 11:2, 1इत 3:10, 11
4 1रा 19:16, 2रा 10:30
5 2इत 24:1, 2
6 गि 33:52
7 2इत 31:12
8 निर्ग 30:13, 2इत 24:9
9 निर्ग 25:2, निर्ग 35:21
10 2इत 24:7
11 2इत 24:5
12 2रा 11:4, 2इत 23:1, 2इत 24:15
13 2इत 24:6

लेने और भवन की मरम्मत करने की ज़िम्मेदारी राजा को वापस दे दी।

9 तब याजक यहोयादा ने एक पेटी[1] ली और उसके ढक्कन में छेद किया और उसे यहोवा के भवन में ऐसी जगह रखा कि वह भवन में आनेवालों को दायीं तरफ वेदी के पास नज़र आए। दरबान का काम करनेवाले याजक उस पेटी में वह सारा पैसा डालते थे जो यहोवा के भवन में लाया जाता था।[2] **10** जब भी वे देखते कि पेटी भर गयी है, वे जाकर राजा के सचिव और महायाजक को बताते और वे दोनों आकर यहोवा के भवन में लाया गया सारा पैसा इकट्ठा करते* और उसकी गिनती करते।[3] **11** फिर वे पैसा ले जाकर उन आदमियों को देते जिन्हें यहोवा के भवन में काम की निगरानी सौंपी गयी थी। फिर निगरानी करनेवाले पैसा ले जाकर यहोवा के भवन की मरम्मत करने-वाले बढ़इयों और राजगीरों को देते थे,[4] **12** और राजमिस्त्रियों और पत्थर काटने-वाले कारीगरों को भी देते थे। इतना ही नहीं, वे उस पैसे से यहोवा के भवन की मरम्मत के लिए शहतीरें और गढ़े हुए पत्थर लाया करते थे और मरम्मत के काम का बाकी सारा खर्च पूरा करते थे।

13 मगर यहोवा के भवन में लाया गया पैसा चाँदी के कटोरे, बाती बुझाने की कैंचियाँ, कटोरियाँ और तुरहियाँ[5] बनाने में बिलकुल इस्तेमाल नहीं किया गया, न ही यहोवा के भवन के लिए सोने-चाँदी की कोई और चीज़ बनाने में लगाया गया।[6] **14** यह पैसा वे सिर्फ निगरानी करनेवालों को दिया करते थे जो उसे यहोवा के भवन की मरम्मत में लगाते थे। **15** वे निग-रानी करनेवाले उन आदमियों से कभी हिसाब-किताब नहीं माँगते थे जिन्हें कारी-गरों की मज़दूरी चुकाने के लिए पैसा दिया जाता था क्योंकि वे भरोसेमंद आदमी थे।[1] **16** लेकिन जो पैसा दोष-बलियों[2] और पाप-बलियों के लिए दिया जाता था वह यहोवा के भवन की मरम्मत में नहीं इस्ते-माल किया जाता था। उस पर याजकों का हक था।[3]

17 बाद में सीरिया के राजा हजाएल[4] ने गत[5] पर हमला किया और उस पर कब्ज़ा कर लिया। फिर उसने यरूशलेम पर हमला करने का फैसला किया।*[6] **18** तब यहूदा के राजा यहोआश ने वह सारी चीज़ें हजाएल को भेज दीं जो उसके पुरखों ने यानी यहूदा के राजा यहोशा-पात, यहोराम और अहज्याह ने पवित्र ठहरायी थीं और वह चीज़ें भी जो खुद उसने पवित्र ठहरायी थीं। उसने यहोवा के भवन के खज़ाने और राजमहल के खज़ाने का सारा सोना भी उसे भेज दिया। इसलिए हजाएल ने यरूशलेम पर हमला नहीं किया और लौट गया।[7]

19 यहोआश की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसके सभी कामों का ब्यौरा यहूदा के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है। **20** यहोआश के सेवकों ने मिलकर उसके खिलाफ साज़िश रची[8] और सिल्ला जानेवाले रास्ते पर टीले*[9] के भवन में उसे मार डाला। **21** उसका कत्ल करनेवाले सेवक थे, शिमात का बेटा योजाकार और शोमेर का बेटा यहोजा-बाद।[10] उन्होंने उसे दाविदपुर में उसके पुरखों की कब्र में दफना दिया और उसकी जगह उसका बेटा अमज्याह राजा बना।[11]

अध्य. 12
1 2इत 24:8, मर 12:41, लूक 21:1
2 2इत 24:10
3 2इत 24:11
4 2रा 22:4-6, 2इत 24:12
5 गि 10:2, 2इत 5:12
6 2इत 24:14

दूसरा कॉल.
1 2रा 22:7
2 लैव 5:15
3 लैव 7:7, गि 18:8
4 1रा 19:15, 2रा 8:13, 2रा 10:32
5 1इत 18:1
6 2इत 24:23
7 1रा 15:18, 2रा 16:8, 2रा 18:15
8 2इत 24:25, 26, 2इत 25:27
9 2शम 5:9, 1रा 9:15, 24, 2इत 32:5
10 2रा 14:1, 5
11 2इत 24:27

12:10 *या "थैलियों में डालते।" शा., "थैलियों में बाँधते।"

12:17 *शा., "हजाएल ने यरूशलेम के खिलाफ अपना मुँह किया।" **12:20** *या "बेत-मिल्लो।"

13 जब यहूदा में अहज्याह[1] के बेटे यहोआश[2] के राज का 23वाँ साल चल रहा था, तब इसराएल में येहू[3] का बेटा यहोआहाज राजा बना। यहोआहाज ने सामरिया में रहकर 17 साल राज किया। **2** वह यहोवा की नज़र में बुरे काम करता रहा। वह उस पाप में डूबा रहा जो नबात के बेटे यारोबाम ने इसराएल से करवाया था।[4] वह उससे बाज़ नहीं आया। **3** इसलिए इसराएल पर यहोवा का क्रोध[5] भड़क उठा[6] और उसने उन्हें सीरिया के राजा हजाएल[7] और उसके बेटे बेन-हदद[8] के हाथ में कर दिया। और वे काफी समय तक उनके कब्ज़े में रहे।

4 कुछ समय बाद यहोआहाज ने यहोवा से रहम की भीख माँगी और यहोवा ने उसकी बिनती सुनी, क्योंकि उसने देखा था कि सीरिया का राजा इसराएल पर कैसे-कैसे अत्याचार कर रहा है।[9] **5** इसलिए यहोवा ने इसराएल को एक बचानेवाला दिया[10] जिसने उसे सीरिया के चंगुल से छुड़ाया। अब इसराएली पहले की तरह अपने घरों में रहने लगे।* **6** (फिर भी उन्होंने वह पाप करना नहीं छोड़ा जो यारोबाम के घराने ने इसराएल से करवाया था।[11] वे उस पाप में डूबे रहे* और सामरिया में जो पूजा-लाठ#[12] थी उसे नहीं हटाया गया।) **7** यहोआहाज के पास सिर्फ 50 घुड़सवारों, 10 रथों और 10,000 पैदल सैनिकों की सेना रह गयी थी, क्योंकि सीरिया के राजा ने उसकी सेना को नाश कर दिया था[13] और उसे खलिहान में अनाज की धूल की तरह रौंद डाला था।[14]

8 यहोआहाज की ज़िंदगी की बाकी कहानी और उसने जो-जो काम किए, उनका और उसके बड़े-बड़े कामों का ब्यौरा इसराएल के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है। **9** फिर यहोआहाज की मौत हो गयी* और उसे सामरिया में दफनाया गया।[1] उसकी जगह उसका बेटा यहोआश राजा बना।

10 जब यहोआहाज का बेटा यहोआश[2] इसराएल का राजा बना, तब यहूदा में राजा यहोआश के राज का 37वाँ साल चल रहा था। इसराएल के राजा यहोआश ने सामरिया में रहकर 16 साल राज किया। **11** वह यहोवा की नज़र में बुरे काम करता रहा और उन पापों से बाज़ नहीं आया जो नबात के बेटे यारोबाम ने इसराएल से करवाए थे।[3] वह उन पापों में डूबा रहा।

12 यहोआश की ज़िंदगी की बाकी कहानी और उसने जो-जो काम किए उनका, उसके महान कामों का और उसने कैसे यहूदा के राजा अमज्याह से युद्ध किया,[4] उन सबका ब्यौरा इसराएल के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है। **13** फिर यहोआश की मौत हो गयी* और उसे सामरिया में इसराएल के राजाओं की कब्र में दफनाया गया।[5] यहोआश के बाद यारोबाम#[6] राजगद्दी पर बैठा।

14 एलीशा[7] बीमार हो गया था जिस वजह से बाद में उसकी मौत हो गयी। जब वह बीमार था तब इसराएल का राजा यहोआश उसके पास आया और उसके लिए रोने लगा। उसने कहा, “हे मेरे पिता, मेरे पिता! इसराएल का रथ

13:5 *यानी शांति और सुरक्षा से रहने लगे। **13:6** *शा., “वह उसमें चलता रहा।” #शब्दावली देखें।

13:9, 13 *शा., “अपने पुरखों के साथ सो गया।” **13:13** #यानी यारोबाम द्वितीय।

अध्य. 13

1 2रा 8:26; 2रा 9:27
2 2रा 11:2, 21
3 2रा 10:30, 35
4 1रा 12:28-30; 1रा 13:33; 1रा 14:16
5 इब्र 12:29
6 लैव 26:14, 17
7 1रा 19:17; 2रा 8:12
8 2रा 13:24
9 निर्ग 3:7; न्या 10:16; 2रा 14:26, 27
10 नहे 9:27
11 2रा 10:29; 2रा 17:21
12 व्य 7:5; 1रा 14:15; 1रा 16:33
13 2रा 8:12; 2रा 10:32
14 आम 1:3

दूसरा कॉल.

1 2रा 10:35
2 2रा 14:1
3 2रा 10:29
4 2रा 14:8, 13
5 2रा 10:35; 2रा 13:9
6 2रा 14:28
7 1रा 19:16

और उसके घुड़सवार!”[1] 15 एलीशा ने
उससे कहा, “एक कमान और कुछ तीर
ले।” उसने एक कमान और कुछ तीर
लिए। 16 एलीशा ने इसराएल के राजा
से कहा, “अपनी कमान हाथ में ले।”
उसने कमान ली और एलीशा ने अपने
हाथ राजा के हाथों पर रखे। 17 उसने
राजा से कहा, “पूरब की तरफवाली
खिड़की खोल।” उसने खिड़की खोली।
एलीशा ने कहा, “चला तीर!” उसने
तीर चलाया। एलीशा ने कहा, “यह
यहोवा से मिलनेवाली जीत* का तीर है,
सीरिया पर मिलनेवाली जीत# का तीर!
तू अपेक[2] में सीरिया को तब तक मारता
रहेगा△ जब तक कि तू उसे मिटा नहीं
देता।”

18 फिर एलीशा ने कहा, “कुछ तीर
हाथ में ले।” उसने तीर लिए। एलीशा
ने इसराएल के राजा से कहा, “अब इन्हें
ज़मीन पर मार।” वह तीन बार मारकर
रुक गया। 19 यह देखकर सच्चे पर-
मेश्वर के सेवक को उस पर बहुत गुस्सा
आया और उसने कहा, “तुझे ज़मीन पर
पाँच-छः बार मारना चाहिए था! अगर तू
ऐसा करता, तो तू सीरिया को तब तक
मारता रहता जब तक कि उसे मिटा नहीं
देता। मगर अब तू सिर्फ तीन बार उसे
हरा पाएगा।”[3]

20 इसके बाद एलीशा की मौत हो
गयी और उसे दफनाया गया। मोआब
के लुटेरे-दल[4] साल की शुरूआत में*
इसराएल पर हमला करने आते थे।
21 जब कुछ आदमी एक लाश दफना
रहे थे, तो उन्होंने मोआब के लुटेरे-
दल को देखा। इसलिए वे जल्दी से लाश
एलीशा की कब्र में फेंककर भाग गए।
वह लाश एलीशा की हड्डियों से जा लगी
और वह आदमी ज़िंदा हो गया[1] और
अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

22 यहोआहाज की सारी ज़िंदगी
सीरिया का राजा हजाएल[2] इसराएल
पर अत्याचार करता रहा।[3] 23 मगर
यहोवा ने अब्राहम,[4] इसहाक[5] और
याकूब के साथ किए करार[6] की वजह से
इसराएल पर तरस खाया और उस पर
दया की।[7] वह इसराएल को नाश नहीं
करना चाहता था। उसने आज तक इस-
राएल को अपनी नज़रों से दूर नहीं
किया। 24 जब सीरिया का राजा हजा-
एल मर गया, तो उसकी जगह उसका
बेटा बेन-हदद राजा बना। 25 फिर
यहोआहाज के बेटे यहोआश ने हजाएल
के बेटे बेन-हदद से वे सारे शहर वापस ले
लिए, जो हजाएल ने यहोआहाज से युद्ध
करके ले लिए थे। यहोआश ने बेन-हदद
को तीन बार युद्ध में हराया[8] और इस-
राएल के शहर उससे वापस ले लिए।

14 जब इसराएल में यहोआहाज के
बेटे राजा यहोआश[9] के राज
का दूसरा साल चल रहा था, तब यहूदा
में राजा यहोआश का बेटा अमज्याह
राजा बना। 2 उस समय अमज्याह
25 साल का था और उसने यरूशलेम में
रहकर 29 साल राज किया। उसकी माँ
का नाम यहोअद्दीन था जो यरूशलेम की
रहनेवाली थी।[10] 3 अमज्याह यहोवा
की नज़र में सही काम करता रहा, मगर
वह अपने पुरखे दाविद[11] की तरह नहीं
था। उसने सबकुछ वैसा ही किया जैसा
उसके पिता यहोआश ने किया था।[12]
4 मगर उसके राज में ऊँची जगह नहीं
मिटायी गयीं[13] और लोग अब भी उन
जगहों पर बलिदान चढ़ाते थे ताकि उनका

अध्य. 13
1 2रा 2:11, 12
2 1शम 29:1
1रा 20:26
3 2रा 13:25
4 2रा 1:1
2रा 24:2

दूसरा कॉल.
1 यूह 11:44
इब्र 11:35
2 1रा 19:15
3 2रा 8:12
2रा 10:32
4 उत 13:14-16
5 उत 26:3
6 उत 28:13
भज 105:8
मी 7:20
7 2रा 14:26, 27
8 2रा 13:19

अध्य. 14
9 2रा 13:10
10 2इत 25:1-4
11 1रा 15:5
12 2इत 24:2
13 1रा 15:14

13:17 *या “की तरफ से मिलनेवाले उद्धार।” #या “से उद्धार।” △या “हराएगा।” **13:20** *शायद वसंत में।

धुआँ उठे।[1] 5 जैसे ही अमज्याह ने राज
पर अपनी पकड़ मज़बूत की, उसने अपने
उन सेवकों को मार डाला जिन्होंने उसके
पिता यहोआश का कत्ल किया था।[2]
6 मगर उसने उन कातिलों के बेटों को
नहीं मारा क्योंकि उसने मूसा के कानून
की किताब में लिखी यहोवा की यह
आज्ञा मानीः "बेटों के पाप के लिए
पिताओं को न मार डाला जाए और न
ही पिताओं के पाप के लिए बेटों को
मार डाला जाए। जो पाप करता है
उसके पाप के लिए उसी को मौत की सज़ा
दी जाए।"[3] 7 फिर अमज्याह ने नमक
घाटी[4] में एदोम[5] से युद्ध करके उसके
10,000 आदमियों को मार डाला और
एदोमी शहर सेला पर कब्ज़ा कर लिया।[6]
उसने शहर का नाम बदलकर योकतेल
रखा और आज तक उसका नाम यही है।

8 इसके बाद अमज्याह ने अपने दूतों
के हाथ इसराएल के राजा यहोआश को
(जो यहोआहाज का बेटा और येहू का
पोता था) यह संदेश भेजाः "युद्ध के
मैदान में आ, हम एक-दूसरे से मुकाब-
ला* करें।"[7] 9 इसराएल के राजा
यहोआश ने यहूदा के राजा अमज्याह
को यह जवाब भेजाः "लबानोन के काँटे-
दार पौधे ने लबानोन के देवदार को एक
संदेश भेजा, 'अपनी बेटी का हाथ मेरे बेटे
के हाथ में दे दे।' मगर लबानोन का एक
जंगली जानवर वहाँ से गुज़रा और उसने
काँटेदार पौधे को रौंद डाला। 10 माना
कि तूने एदोम को हराया है,[8] मगर तेरा
मन घमंड से इतना क्यों फूल रहा है?
तूने जो नाम कमाया है उसकी खुशियाँ
मना, पर अपने महल में रहकर। क्यों तू
बेकार में मुसीबत को दावत दे रहा है?
खुद तो डूबेगा ही, साथ में पूरे यहूदा को
भी ले डूबेगा।" 11 मगर अमज्याह ने
यहोआश की बात नहीं मानी।[1]

इसलिए इसराएल का राजा यहोआश,
यहूदा के राजा अमज्याह से युद्ध करने
निकला और उनका मुकाबला बेत-शेमेश[2]
में हुआ जो यहूदा के इलाके में है।[3]
12 इसराएल ने यहूदा को हरा दिया और
यहूदा के सभी लोग अपने-अपने घर*
भाग गए। 13 इसराएल के राजा यहो-
आश ने बेत-शेमेश में यहूदा के राजा
अमज्याह को पकड़ लिया, जो यहोआश
का बेटा और अहज्याह का पोता था।
यहोआश अमज्याह को पकड़कर यरू-
शलेम ले आया और उसने वहाँ की
शहरपनाह का एक हिस्सा तोड़ दिया।
उसने एप्रैम फाटक[4] से लेकर 'कोने-
वाले फाटक'[5] तक का 400 हाथ*
लंबा हिस्सा ढा दिया। 14 यहोआश ने
यहोवा के भवन से और राजमहल के
खज़ानों से सारा सोना-चाँदी और दूसरा
सामान लूट लिया और कुछ लोगों को
बंदी बना लिया। फिर वह सामरिया लौट
गया।

15 यहोआश की ज़िंदगी की बाकी
कहानी, उसने जो-जो काम किए उनका,
उसके बड़े-बड़े कामों का और उसने
कैसे यहूदा के राजा अमज्याह से युद्ध
किया, उन सबका ब्यौरा इसराएल के
राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा
है। 16 फिर यहोआश की मौत हो
गयी* और उसे सामरिया में इसराएल
के राजाओं की कब्र में दफनाया गया।[6]
उसकी जगह उसका बेटा यारोबाम#[7]
राजा बना।

अध्य. 14
1 2रा 12:1, 3
2 2रा 12:20; 2इत 24:25
3 व्य 24:16
4 2शम 8:13; 1इत 18:12
5 2रा 8:20
6 2इत 25:11, 12
7 2इत 25: 17-19
8 2रा 14:7

दूसरा कॉल.
1 2इत 25:15, 16
2 यह 15:10, 12; यह 21:8, 16
3 2इत 25: 20-24
4 नहे 8:16; नहे 12:38, 39
5 यिर्म 31:38; जक 14:10
6 2रा 10:35; 2रा 13:9
7 हो 1:1; आम 1:1; आम 7:10

14:8 *या "का सामना।"

14:12 *शा., "तंबू।" **14:13** *करीब 178 मी. (584 फुट)। अति. ख14 देखें। **14:16** *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।" #यानी यारोबाम द्वितीय।

17 इसराएल के राजा यहोआहाज
के बेटे यहोआश की मौत के बाद[1]
यहूदा का राजा अमज्याह[2] (जो यहोआश
का बेटा था) 15 साल और जीया।[3]
18 अमज्याह की ज़िंदगी की बाकी
कहानी यहूदा के राजाओं के इतिहास की
किताब में लिखी है। 19 बाद में यरू-
शलेम में उसके खिलाफ साज़िश रची
गयी,[4] इसलिए वह लाकीश भाग गया।
मगर उसके दुश्मनों ने अपने आदमियों
को लाकीश भेजा और उसे वहाँ मरवा
डाला। 20 वे उसकी लाश घोड़ों पर
लादकर यरूशलेम ले आए और वहाँ
दाविदपुर में उसके पुरखों की कब्र में
उसे दफनाया गया।[5] 21 फिर यहूदा के
सब लोगों ने अमज्याह के बेटे अजर-
याह*[6] को उसकी जगह राजा बनाया।[7]
उस वक्त अजरयाह 16 साल का था।[8]
22 जब राजा* की मौत हो गयी# तो
उसने एलत[9] को फिर से बनाया और
उसे वापस यहूदा के अधिकार में कर
दिया।[10]

23 जब यहूदा में यहोआश के बेटे,
राजा अमज्याह के राज का 15वाँ साल
चल रहा था, तब इसराएल में राजा यहो-
आश का बेटा यारोबाम[11] राजा बना।
यारोबाम ने सामरिया से इसराएल पर
41 साल राज किया। 24 वह यहोवा
की नज़र में बुरे काम करता रहा। वह उन
सभी पापों से बाज़ नहीं आया जो नबात
के बेटे यारोबाम ने इसराएल से कर-
वाए थे।[12] 25 उसने लेबो-हमात*[13]
से लेकर अराबा के सागर*[1] तक इस-
राएल का पूरा इलाका वापस ले
लिया। इस तरह इसराएल के पर-
मेश्वर यहोवा की वह बात पूरी हुई जो
उसने अपने सेवक, भविष्यवक्ता योना[2]
से कहलवायी थी। योना, अमित्तै का बेटा
था और गत-हेपेर[3] का रहनेवाला था।
26 यहोवा ने देखा था कि इसराएल पर
कैसा घोर अत्याचार हो रहा है।[4] इस-
राएल की मदद करनेवाला कोई नहीं था।
यहाँ तक कि लाचार या गरीब लोग भी
नहीं रह गए थे। 27 मगर यहोवा ने
वादा किया था कि वह धरती से इसराएल
का नाम नहीं मिटने देगा।[5] इसलिए उसने
यहोआश के बेटे यारोबाम के ज़रिए इस-
राएल को बचाया।[6]

28 यारोबाम की ज़िंदगी की बाकी
कहानी, उसने जो-जो काम किए उनका,
उसके बड़े-बड़े कामों का और उसने
कैसे युद्ध किए और कैसे दमिश्क[7] और
हमात[8] शहर वापस यहूदा और इसराएल
में मिलाए, उन सबका ब्यौरा इसराएल के
राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा
है। 29 फिर यारोबाम की मौत हो
गयी# और उसे इसराएल के राजाओं
की कब्र में दफनाया गया। उसकी जगह
उसका बेटा जकरयाह[9] राजा बना।

15 जब इसराएल में राजा यारोबाम#
के राज का 27वाँ साल चल रहा
था, तब यहूदा में राजा अमज्याह[10]
का बेटा अजरयाह*[11] राजा बना।[12]
2 उस समय अजरयाह 16 साल का था
और उसने यरूशलेम में रहकर 52 साल
राज किया। उसकी माँ का नाम यकोल्याह
था जो यरूशलेम की रहनेवाली थी।
3 अजरयाह अपने पिता अमज्याह की

14:21; 15:1 *मतलब "यहोवा ने मदद की।" उसे 2रा 15:13; 2इत 26:1-23; यश 6:1 और जक 14:5 में उज्जियाह कहा गया है। **14:22** *यानी उसका पिता अमज्याह। **14:22, 29** #शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।" **14:25** *या "हमात के प्रवेश।"

14:25 *यानी लवण सागर या मृत सागर। **15:1** #यानी यारोबाम द्वितीय।

अध्य. 14
1 2रा 13:10
2 2रा 14:1
3 2इत 25:25-28
4 2रा 12:20
5 1रा 2:10
6 मत 1:8
7 2इत 26:1
8 2रा 15:1, 2
9 व्य 2:8; 1रा 9:26; 2रा 16:6
10 2इत 26:2
11 हो 1:1; आम 1:1
12 1रा 12:28-30; 1रा 13:34; भज 106:20
13 गि 13:21; गि 34:2, 7, 8

दूसरा कॉल.
1 व्य 3:16, 17
2 यो 1:1; मत 12:39
3 यह 19:10, 13
4 निर्ग 3:7; न्या 10:16; भज 106:43, 44
5 यिर्म 31:20
6 2रा 13:4, 5
7 2शम 8:6
8 2इत 8:3
9 2रा 15:8

अध्य. 15
10 2रा 14:1
11 2रा 14:21
12 2इत 26:1, 3

तरह यहोवा की नज़र में सही काम करता
रहा।[1] 4 मगर उसके राज में ऊँची
जगह नहीं मिटायी गयीं[2] और लोग अब
भी उन जगहों पर बलिदान चढ़ाते थे ताकि
उनका धुआँ उठे।[3] 5 यहोवा ने अजर-
याह को कोढ़ की बीमारी से पीड़ित किया[4]
और वह अपनी मौत तक कोढ़ी रहा। वह
एक अलग घर में रहने लगा[5] और उस
दौरान उसके बेटे योताम[6] ने महल की
बागडोर सँभाली और वह देश के लोगों
का न्याय करता था।[7] 6 अजरयाह की
ज़िंदगी की बाकी कहानी,[8] उसके सभी
कामों का ब्यौरा यहूदा के राजाओं के इति-
हास की किताब में लिखा है। 7 फिर
अजरयाह की मौत हो गयी*[9] और उसे
दाविदपुर में उसके पुरखों की कब्र में
दफनाया गया। उसकी जगह उसका बेटा
योताम राजा बना।

8 जब यहूदा में अजरयाह[10] के राज
का 38वाँ साल चल रहा था, तब इस-
राएल के सामरिया में यारोबाम का
बेटा जकरयाह[11] राजा बना। जकर-
याह ने छः महीने राज किया। 9 उसने
अपने पुरखों की तरह ऐसे काम किए
जो यहोवा की नज़र में बुरे थे। उसने
वे पाप करने नहीं छोड़े जो नबात
के बेटे यारोबाम ने इसराएल से करवाए
थे।[12] 10 फिर याबेश के बेटे शल्लूम
ने जकरयाह के खिलाफ साज़िश रची
और उसे यिबलाम[13] में मार डाला।[14]
उसका कत्ल करने के बाद वह खुद राजा
बन गया। 11 जकरयाह की ज़िंदगी
की बाकी कहानी इसराएल के राजाओं
के इतिहास की किताब में लिखी है।
12 इस तरह यहोवा की वह बात पूरी हुई
जो उसने येहू से कही थी, "चार पीढ़ियों
तक तेरे बेटे[1] इसराएल की राजगद्दी पर
बैठेंगे।"[2] और वैसा ही हुआ।

13 जब इसराएल में याबेश का बेटा
शल्लूम राजा बना, तब यहूदा में उज्जि-
याह[3] के राज का 39वाँ साल चल रहा
था। शल्लूम ने सामरिया से इसराएल पर
एक महीने राज किया। 14 फिर गादी
का बेटा मनहेम, तिरसा[4] से सामरिया
आया और वहाँ उसने याबेश के बेटे
शल्लूम को मार डाला।[5] उसका कत्ल
करने के बाद वह खुद राजा बन गया।
15 शल्लूम की ज़िंदगी की बाकी कहानी
और उसने जो साज़िश की, उसका ब्यौरा
इसराएल के राजाओं के इतिहास की
किताब में लिखा है। 16 उसी दौरान
मनहेम, तिरसा से तिपसह आया और
उसने तिपसह और उसके आस-पास के
इलाके पर हमला कर दिया। तिप-
सह के लोगों ने उसके लिए फाटक नहीं
खोले, इसलिए उसने तिपसह और आस-
पास के इलाके के सभी लोगों को मार
डाला। उसने तिपसह को तबाह कर दिया
और वहाँ की गर्भवती औरतों के पेट
चीर दिए।

17 जब इसराएल में गादी का बेटा
मनहेम राजा बना, तब यहूदा में अजर-
याह के राज का 39वाँ साल चल रहा
था। मनहेम ने सामरिया से इसराएल पर
दस साल राज किया। 18 वह यहोवा
की नज़र में बुरे काम करता रहा। उसने
सारी ज़िंदगी वे पाप करने नहीं छोड़े
जो नबात के बेटे यारोबाम ने इस-
राएल से करवाए थे।[6] 19 अश्शूर
का राजा पूल[7] इसराएल पर हमला
करने आया। तब मनहेम ने पूल को
इस इरादे से 1,000 तोड़े* चाँदी दी

15:7 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।"

15:19 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 15
1 2इत 26:4, 5
2 गि 33:52
3 व्य 12:13, 14; 1रा 22:41, 43; 2रा 14:1, 4
4 गि 12:10; 2रा 5:27
5 लैव 13:45, 46
6 2रा 15:32
7 2इत 26:16-21
8 2इत 26:22, 23
9 यश 6:1
10 2रा 14:21
11 2रा 14:29
12 1रा 12:28-30; 1रा 13:33; 1रा 14:16
13 यह 17:11
14 हो 1:4; आम 7:9

दूसरा कॉल.
1 2रा 13:1, 10; 2रा 14:23, 29
2 2रा 10:30
3 2इत 26:1
4 1रा 14:17; 1रा 15:21; 1रा 16:8, 17
5 2रा 15:10
6 1रा 12:28-30; 1रा 13:33; 1रा 14:16
7 1इत 5:26

कि वह इसराएल पर उसका राज मज़बूत
करने में उसकी मदद करे।[1] **20** उसने
ये चाँदी इसराएल के बड़े-बड़े रईसों से
वसूल करके इकट्ठी की थी।[2] उसने हर
रईस से 50 शेकेल* चाँदी लेकर अश्शूर
के राजा को दी। इसलिए उस राजा
ने देश पर हमला नहीं किया और
वापस लौट गया। **21** मनहेम की
ज़िंदगी की बाकी कहानी,[3] उसके सभी
कामों का ब्यौरा इसराएल के राजाओं
के इतिहास की किताब में लिखा है।
22 फिर मनहेम की मौत हो गयी*
और उसकी जगह उसका बेटा पकह-याह
राजा बना।

23 जब इसराएल के सामरिया में
मनहेम का बेटा पकह-याह राजा बना,
तब यहूदा में अजरयाह के राज का
50वाँ साल चल रहा था। पकह-याह ने
दो साल राज किया। **24** वह यहोवा की
नज़र में बुरे काम करता रहा। उसने वे
पाप करने नहीं छोड़े जो नबात के बेटे
यारोबाम ने इसराएल से करवाए थे।[4]
25 फिर उसके सहायक सेना-अधिकारी
पेकह[5] ने, जो रमल्याह का बेटा था,
उसके खिलाफ साज़िश की और अरगोब
और अरये के साथ मिलकर उसका कत्ल
कर दिया। पेकह ने उसे सामरिया में राज-
महल की मीनार में मार डाला। पेकह के
साथ गिलाद के 50 आदमी थे। पकह-
याह का कत्ल करने के बाद पेकह
खुद राजा बन गया। **26** पकह-याह की
ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसके सभी
कामों का ब्यौरा इसराएल के राजाओं के
इतिहास की किताब में लिखा है।

27 जब इसराएल के सामरिया में
रमल्याह का बेटा पेकह राजा बना, तब
यहूदा में अजरयाह के राज का 52वाँ
साल चल रहा था। पेकह[1] ने 20
साल राज किया। **28** वह यहोवा की
नज़र में बुरे काम करता रहा। उसने
वे पाप करने नहीं छोड़े जो नबात के बेटे
यारोबाम ने इसराएल से करवाए थे।[2]
29 इसराएल के राजा पेकह के दिनों
में अश्शूर के राजा तिगलत-पिलेसेर[3] ने
इसराएल पर हमला किया और इय्योन,
आबेल-बेत-माका,[4] यानोह, केदेश,[5]
हासोर, गिलाद[6] और गलील पर यानी
नप्ताली के पूरे इलाके पर कब्ज़ा कर
लिया[7] और वहाँ के लोगों को बंदी
बनाकर अश्शूर ले गया।[8] **30** फिर
एलाह के बेटे होशेआ[9] ने रमल्याह के बेटे
पेकह के खिलाफ साज़िश की और उसे
मार डाला। उसका कत्ल करने के बाद
होशेआ खुद राजा बन गया। यह घटना
उज्जियाह के बेटे योताम के राज के
20वें साल[10] में घटी थी। **31** पेकह की
ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसके सभी
कामों का ब्यौरा इसराएल के राजाओं के
इतिहास की किताब में लिखा है।

32 जब इसराएल में रमल्याह के
बेटे पेकह के राज का दूसरा साल
चल रहा था, तब यहूदा में उज्जि-
याह[11] का बेटा योताम[12] राजा बना।
33 उस समय योताम 25 साल का
था और उसने यरूशलेम में रहकर
16 साल राज किया। उसकी माँ का नाम
यरूशा था जो सादोक की बेटी थी।[13]
34 योताम अपने पिता उज्जियाह की
तरह यहोवा की नज़र में सही काम
करता रहा।[14] **35** मगर उसके राज में
ऊँची जगह नहीं मिटायी गयीं और
लोग अब भी उन जगहों पर बलि-
दान चढ़ाते थे ताकि उनका धुआँ उठे।[15]

15:20 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। **15:22** *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।"

अध्य. 15
1 2रा 12:18; 2रा 16:8
2 2रा 23:35
3 2रा 15:14
4 1रा 12:28-30; 1रा 13:33; 1रा 14:16
5 2इत 28:6

दूसरा कॉल.
1 2इत 28:6; यश 7:1, 4
2 1रा 12:28-30; 1रा 13:33; 1रा 14:16
3 2रा 16:7; 1इत 5:6; 1इत 5:26; 2इत 28:19, 20
4 1रा 15:20
5 यह 20:7, 9
6 गि 32:40
7 यश 9:1
8 लैव 26:38; व्य 28:64; 2रा 17:22, 23; यश 8:4
9 2रा 17:1
10 2इत 27:1
11 2रा 14:21
12 2इत 27:7; मत 1:9
13 2इत 27:1
14 2इत 27:2
15 गि 33:52; व्य 12:14

योताम ने ही यहोवा के भवन का ऊपरी
फाटक बनवाया था।[1] 36 योताम की
ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसके सभी
कामों का ब्यौरा यहूदा के राजाओं के
इतिहास की किताब में लिखा है।
37 उन्हीं दिनों यहोवा ने सीरिया के
राजा रसीन और रमल्याह के बेटे पेकह[2]
को यहूदा पर हमला करने भेजा।[3]
38 फिर योताम की मौत हो गयी* और
उसे उसके पुरखे दाविद के शहर दाविद-
पुर में पुरखों की कब्र में दफनाया
गया। उसकी जगह उसका बेटा आहाज
राजा बना।

16 जब यहूदा में राजा योताम का
बेटा आहाज[4] राजा बना, तब
इसराएल में रमल्याह के बेटे पेकह के
राज का 17वाँ साल चल रहा था।
2 उस समय आहाज 20 साल का
था और उसने यरूशलेम से यहूदा पर
16 साल राज किया। उसने ऐसे काम
नहीं किए जो उसके परमेश्वर यहोवा की
नज़र में सही थे, जैसे उसके पुरखे दाविद
ने किए थे।[5] 3 इसके बजाय उसने इस-
राएल के राजाओं के तौर-तरीके अपना
लिए[6] और उन राष्ट्रों के जैसे घिनौने
काम किए,[7] जिन्हें यहोवा ने इसराए-
लियों के सामने से खदेड़ दिया था। यहाँ
तक कि उसने अपने बेटे को आग में होम
कर दिया।[8] 4 इतना ही नहीं, वह ऊँची
जगहों और पहाड़ियों पर और हर घने
पेड़ के नीचे[9] बलिदान चढ़ाता था ताकि
उनका धुआँ उठे।[10]

5 उन्हीं दिनों सीरिया का राजा रसीन
और इसराएल का राजा पेकह, जो
रमल्याह का बेटा था, आहाज से युद्ध
करने यरूशलेम आए।[11] उन्होंने शहर
को घेर लिया मगर वे उस पर कब्ज़ा
नहीं कर पाए। 6 उसी दौरान सीरिया
के राजा रसीन ने एदोम को एलत
शहर वापस दिलाया[1] और उसके बाद
एलत से यहूदियों* को भगा दिया। और
एदोमी आकर एलत में रहने लगे और वे
आज तक वहीं बसे हुए हैं। 7 इसलिए
आहाज ने अपने दूतों के हाथ अश्शूर के
राजा तिगलत-पिलेसेर[2] के पास यह
संदेश भेजा: "मालिक, मेरी मदद कर। मैं
तेरा सेवक हूँ, तेरे सहारे जीता हूँ।* हमें
सीरिया के राजा और इसराएल के
राजा से बचा ले, जो हम पर हमला करने
आए हैं।" 8 तब आहाज ने यहोवा के
भवन और राजमहल के खज़ानों से सारा
सोना-चाँदी लिया और अश्शूर के राजा
को रिश्वत में भेजा।[3] 9 अश्शूर के
राजा ने उसकी गुज़ारिश मान ली।
उसने दमिश्क जाकर उस पर हमला किया
और उस पर कब्ज़ा कर लिया। वह
उसके लोगों को बंदी बनाकर कीर ले
गया[4] और उसने रसीन को मार डाला।[5]

10 तब राजा आहाज अश्शूर के
राजा तिगलत-पिलेसेर से मिलने दमिश्क
गया। जब आहाज ने वहाँ की वेदी
देखी तो उसने उसका एक नमूना
याजक उरीयाह को भेजा जिसमें
वेदी की बनावट की सारी बारीकियाँ
बतायी गयी थीं।[6] 11 याजक उरी-
याह[7] ने उन सारी हिदायतों के मुताबिक
एक वेदी बनायी[8] जो राजा आहाज ने
दमिश्क से भेजी थीं। उसने वह वेदी राजा
के दमिश्क से लौटने से पहले बनाकर
तैयार कर दी। 12 जब राजा दमिश्क
से लौटा तो उसने जाकर वेदी देखी। फिर
वह वेदी के पास गया और उसने

15:38 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।"

16:6 *या "यहूदा के लोगों।" **16:7** *शा., "तेरा बेटा हूँ।"

अध्य. 15
1 2इत 27:3
2 2रा 15:27; 2इत 28:6
3 2रा 16:5; यश 7:1, 2

अध्य. 16
4 यश 1:1; यश 7:1; हो 1:1; मी 1:1; मत 1:9
5 2इत 28:1-4
6 1रा 12:28-30; 1रा 16:33
7 व्य 12:29-31
8 लैव 20:2, 3; 2इत 33:1, 6; यिर्म 7:31
9 व्य 12:2
10 गि 33:52
11 2रा 15:37; 2इत 28:5, 6

दूसरा कॉल.
1 2रा 14:21, 22
2 2रा 15:29
3 1रा 15:18, 19
4 आम 1:4, 5
5 यश 9:11
6 व्य 12:30
7 यश 8:2
8 यिर्म 23:11; यहे 22:26

उस पर बलिदान चढ़ाए।[1] 13 वह
एक-के-बाद-एक होम-बलियाँ और अपने
अनाज के चढ़ावे चढ़ाता रहा ताकि
उनका धुआँ उठे। उसने अपना अर्घ भी
चढ़ाया और अपनी शांति-बलियों का खून
वेदी पर छिड़का। 14 फिर उसने ताँबे
की वह वेदी हटा दी[2] जो भवन के
आगे यहोवा के सामने रखी हुई थी। उसने
उस वेदी को अपनी बनायी हुई वेदी और
यहोवा के भवन के बीच से हटा दिया और
अपनी वेदी के उत्तर में रखा। 15 राजा
आहाज ने याजक उरीयाह[3] को आदेश
दिया, "तू अब से इसी महावेदी पर सुबह
की होम-बलि[4] और शाम का अनाज
का चढ़ावा[5] और राजा की दी हुई होम-
बलि और अनाज का चढ़ावा, साथ ही
लोगों की दी हुई होम-बलियाँ, अनाज के
चढ़ावे और अर्घ चढ़ाना। तू होम-बलियों
और दूसरे बलिदानों का सारा खून इसी
वेदी पर छिड़कना। जहाँ तक उस ताँबे
की वेदी की बात है, मैं सोचकर बताता
हूँ कि उसका क्या किया जाना चाहिए।"
16 राजा आहाज ने जो-जो आदेश दिया,
याजक उरीयाह ने उन सबका पालन
किया।[6]

17 इसके अलावा, राजा आहाज ने
भवन की हथ-गाड़ियों में से हौदियाँ
निकाल दीं[7] और गाड़ियों की पट्टियाँ
काटकर उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।[8]
ताँबे के बैलों पर जो बड़ा हौद रखा था[9]
उसे उसने उतार दिया और पत्थर के
एक फर्श पर रख दिया।[10] 18 भवन में
सब्त के लिए जो छतवाली जगह बनी थी,
उसे और उस दरवाज़े को उसने हटा दिया
जहाँ से राजा यहोवा के भवन में जाया
करता था। उसने अश्शूर के राजा की
वजह से ऐसा किया।

19 आहाज की ज़िंदगी की बाकी
कहानी, उसने जो-जो काम किए, उनका

अध्य. 16
1 2इत 28:22, 23
2इत 28:25
2 2इत 4:1
3 यश 8:2
4 2इत 28:23
5 निर्ग 29:39-41
6 2रा 16:11
7 1रा 7:38
2इत 4:6
8 1रा 7:27, 28
9 1रा 7:23, 25
10 2इत 28:24
2इत 29:19

दूसरा कॉल.
1 2इत 28:26, 27
2 2रा 18:1
2इत 29:1
यश 1:1
हो 1:1
मत 1:9

अध्य. 17
3 2रा 15:30
4 2रा 18:9
यश 10:5, 6
हो 10:14, 15
5 2रा 18:14
6 यश 31:1
7 हो 13:16
8 लैव 26:32, 33
व्य 4:27
व्य 28:64
1रा 14:15
9 1इत 5:26

ब्यौरा यहूदा के राजाओं के इतिहास की
किताब में लिखा है।[1] 20 फिर आहाज
की मौत हो गयी* और उसे दाविदपुर में
उसके पुरखों की कब्र में दफनाया गया।
उसकी जगह उसका बेटा हिजकियाह#[2]
राजा बना।

17 जब यहूदा में आहाज के राज
का 12वाँ साल चल रहा था,
तब इसराएल में एलाह का बेटा होशेआ[3]
राजा बना। उसने सामरिया से इसराएल
पर नौ साल राज किया। 2 वह यहोवा
की नज़र में बुरे काम करता रहा, मगर
उस हद तक नहीं जिस हद तक उससे
पहले के इसराएल के राजाओं ने किए
थे। 3 अश्शूर के राजा शलमन-एसेर
ने होशेआ पर हमला कर दिया[4] और
होशेआ उसके अधीन हो गया और उसे
कर देने लगा।[5] 4 कुछ समय बाद
अश्शूर के राजा को पता चला कि होशेआ
उसके खिलाफ साज़िश कर रहा है क्योंकि
होशेआ ने मिस्र के राजा सो के पास अपने
दूत भेजे थे[6] और उसने अश्शूर के राजा
को कर लाकर नहीं दिया, जैसे वह बीते
सालों में दिया करता था। इसलिए अश्शूर
के राजा ने होशेआ को पकड़ लिया और
कैद में डाल दिया।

5 इसके बाद अश्शूर के राजा ने
आकर पूरे इसराएल देश पर हमला कर
दिया और सामरिया की घेराबंदी की और
तीन साल तक उसे घेरे रहा। 6 उसने
होशेआ के राज के नौवें साल में सामरिया
पर कब्ज़ा कर लिया।[7] फिर वह इस-
राएल के लोगों को बंदी[8] बनाकर अश्शूर
ले गया और उन्हें हलह में, गोजान नदी[9]

16:20 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।" #मतलब "यहोवा मज़बूत करता है।"

के पास हाबोर में और मादियों के शहरों में
बसा दिया।[1]

7 यह सब इसलिए हुआ क्योंकि इस-
राएल के लोगों ने अपने परमेश्वर यहोवा
के खिलाफ पाप किया था, जो उन्हें
मिस्र के राजा फिरौन के चंगुल से छुड़ा-
कर वहाँ से निकाल लाया था।[2] इस-
राएल के लोग दूसरे देवताओं को पूजते
थे।*[3] 8 उन्होंने उन राष्ट्रों के रीति-
रिवाज़ अपना लिए जिन्हें यहोवा ने उनके
सामने से खदेड़ दिया था, साथ ही वे इस-
राएल के राजाओं के बनाए रीति-रिवाज़
भी मानते थे।

9 इसराएली ऐसे कामों में लग गए जो
उनके परमेश्वर यहोवा के मुताबिक सही
नहीं थे। वे अपने सभी शहरों में ऊँची
जगह बनाते गए, उन्होंने पहरे की मीनार
से लेकर किलेबंद शहरों तक का कोना-
कोना ऊँची जगहों से भर दिया।*[4]
10 वे हर ऊँची पहाड़ी पर और हर घने
पेड़ के नीचे[5] अपने लिए पूजा-स्तंभ और
पूजा-लाठ* बनाते गए।[6] 11 वे उन
सभी ऊँची जगहों पर बलिदान चढ़ाते थे
ताकि उनका धुआँ उठे। वे उन राष्ट्रों की
देखा-देखी ऐसा करने लगे जिन्हें यहोवा ने
उनके सामने से खदेड़ दिया था।[7] वे लगा-
तार दुष्ट काम करके यहोवा का क्रोध
भड़काते रहे।

12 वे उन घिनौनी मूरतों* की पूजा
करते रहे[8] जिनके बारे में यहोवा ने
उनसे कहा था, "तुम ऐसा मत करना!"[1]
13 यहोवा अपने सब भविष्यवक्ताओं
और दर्शियों को भेजकर इसराएल और
यहूदा को चेतावनी देता और समझाता
रहा,[2] "तुम लोग ये दुष्ट काम
करना छोड़ दो और पलटकर मेरे पास
लौट आओ![3] और उस कानून में लिखी
आज्ञाएँ और विधियाँ मानो जो मैंने तुम्हारे
पुरखों को दिया था और अपने सेवक
भविष्यवक्ताओं के ज़रिए तुम्हें दिया
था।" 14 मगर उन्होंने उसकी बात नहीं
मानी और वे अपने पुरखों की तरह ढीठ
बने रहे जिन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा
पर विश्वास नहीं किया था।[4] 15 वे
उसके नियमों को ठुकराते रहे और उन्होंने
वह करार तोड़ दिया[5] जो परमेश्वर
ने उनके पुरखों के साथ किया था। पर-
मेश्वर उन्हें याद दिलाकर चेतावनी देता
रहा मगर वे अनसुनी करते रहे।[6] वे
निकम्मी मूरतों की पूजा करते रहे[7] और
खुद निकम्मे बन गए।[8] इस तरह उन्होंने
अपने आस-पास के राष्ट्रों के तौर-तरीके
अपना लिए, जबकि यहोवा ने उन्हें आज्ञा
दी थी कि तुम उनके तौर-तरीके मत अप-
नाना।[9]

16 वे अपने परमेश्वर यहोवा की
सारी आज्ञाएँ तोड़ते रहे। उन्होंने धातु
के दो बछड़े तैयार किए*[10] और एक
पूजा-लाठ[11] बनायी और वे आकाश की
सारी सेना के आगे झुककर दंडवत करने
लगे[12] और बाल देवता को पूजने लगे।[13]
17 इतना ही नहीं, उन्होंने अपने बेटे-
बेटियों को आग में होम कर दिया,[14]
ज्योतिषी के काम करने लगे,[15] शकुन
विचारने लगे और ऐसे कामों में डूब गए*

17:7 *शा., "का डर मानते थे।" **17:9** *यानी हर जगह पर, फिर चाहे वहाँ थोड़े लोग बसे हों या घनी आबादी हो। **17:10** *शब्दावली देखें। **17:12** *इनका इब्रानी शब्द शायद "मल" के लिए इस्तेमाल होने-वाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

17:16 *या "दो बछड़ों की मूरतें ढालकर बनायीं।" **17:17** *शा., "के लिए खुद को बेच दिया।"

अध्य. 17
1 2रा 18:9-11
2 निर्ग 20:2
3 निर्ग 20:5
4 हो 12:11
5 व्य 12:2; यश 57:5
6 निर्ग 34:13; व्य 16:21, 22
7 लैव 20:23
8 1रा 12:28-30; 1रा 21:25, 26

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:3-5; लैव 26:1; व्य 4:23
2 2इत 24:18, 19; 2इत 36:15, 16; यिर्म 25:4
3 यश 55:7
4 व्य 1:32; व्य 31:27
5 व्य 5:2; व्य 29:12
6 हो 4:6
7 व्य 32:21; 1शम 12:21
8 भज 115:4-8; यश 44:9
9 व्य 12:30
10 1रा 12:28-30
11 1रा 14:15; 1रा 16:33
12 व्य 4:19; यिर्म 8:2
13 1रा 16:30, 31; 1रा 22:51, 53; 2रा 10:21; 2रा 23:4, 5
14 2रा 16:1, 3
15 व्य 18:10; मी 5:12

जो यहोवा की नज़र में बुरे थे और उन्होंने
ऐसा करके उसका क्रोध भड़काया।

18 इसलिए यहोवा इसराएल पर
बहुत क्रोधित हुआ और उसने उन्हें अपनी
नज़रों से दूर कर दिया।[1] उसने यहूदा
गोत्र के सिवा किसी और को न छोड़ा।

19 यहूदा के लोगों ने भी अपने पर-
मेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ नहीं मानीं।[2]
उन्होंने भी वही रीति-रिवाज़ अपना
लिए जो इसराएल के लोगों ने अप-
नाए थे।[3] 20 यहोवा ने इसराएल के
सभी वंशजों को ठुकरा दिया, उन्हें नीचा
दिखाया और लुटेरों के हाथ में कर दिया।
वह ऐसा तब तक करता रहा जब तक
उसने उन्हें अपने सामने से हटा न दिया।
21 उसने दाविद के घराने से इसराएल
को छीन लिया। फिर नबात के बेटे
यारोबाम को राजा बनाया गया।[4] मगर
यारोबाम इसराएलियों को यहोवा की
उपासना से दूर ले गया और उनसे एक
बहुत बड़ा पाप करवाया। 22 वे उन
सभी पापों में डूबे रहे जो यारोबाम
ने किए थे।[5] उन्होंने वे पाप करने नहीं
छोड़े। 23 आखिरकार यहोवा ने इस-
राएल को अपनी नज़रों से दूर कर दिया,
ठीक जैसे उसने अपने सब सेवकों यानी
भविष्यवक्ताओं से कहलवाया था।[6] इस-
लिए इसराएल के लोगों को बंदी बनाकर
अश्शूर ले जाया गया[7] और वे आज तक
वहीं हैं।

24 फिर अश्शूर का राजा बैबिलोन,
कूता, अव्वा, हमात और सपरवैम[8] शहर
से लोगों को ले आया और उसने उन
सबको सामरिया के शहरों में बसा दिया
जहाँ इसराएली रहते थे। उन लोगों ने
सामरिया को अपने अधिकार में कर
लिया और वे उसके शहरों में बस गए।
25 जब वे लोग वहाँ बसे तो शुरू में
वे यहोवा का डर नहीं मानते थे।* इस-
लिए यहोवा ने उनके यहाँ शेरों को भेजा[1]
जिन्होंने उनमें से कुछ लोगों को मार
डाला। 26 अश्शूर के राजा को यह
खबर दी गयी: "तूने जिन राष्ट्रों के लोगों
को बंदी बनाकर सामरिया के शहरों में
बसाया है, वे उस देश के परमेश्वर की
उपासना करने का तरीका* नहीं जानते।
इसलिए वह परमेश्वर उनके बीच शेरों
को भेज रहा है जो लोगों को मार डालते
हैं। ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि उनमें
से कोई भी उस देश के परमेश्वर की
उपासना करने का तरीका नहीं जानता।"

27 यह खबर सुनकर अश्शूर के
राजा ने हुक्म दिया, "तुम जिन लोगों को
सामरिया से बंदी बनाकर लाए हो उनमें
से एक याजक को वापस वहाँ भेज दो।
वह वहाँ रहकर लोगों को उस देश के
परमेश्वर की उपासना करने का तरीका
सिखाएगा।" 28 तब सामरिया से बंदी
बनाए गए याजकों में से एक याजक
वापस बेतेल[2] आया और वहाँ रहकर
वह लोगों को सिखाने लगा कि उन्हें कैसे
यहोवा का डर मानना* चाहिए।[3]

29 फिर भी हर राष्ट्र के लोगों ने
अपने-अपने देवता की मूरत बनायी*
और उन मूरतों को ऊँची जगहों पर बने
पूजा-घरों में रखा। ये सभी ऊँची जगह
सामरी लोगों ने बनायी थीं। हर राष्ट्र से
आए लोगों ने उन शहरों में ऐसा किया
था जहाँ वे बस गए थे। 30 बैबिलोन के
लोगों ने सुक्कोत-बनोत की मूरत बनायी,
कूत के लोगों ने नेरगल की, हमात के
लोगों[4] ने अशीमा की 31 और अव्वा

अध्य. 17

1 यह 23:12, 13; यश 42:24
2 1रा 14:22; यिर्म 3:8
3 यहे 23:4, 11
4 1रा 12:20
5 1रा 12:28-30
6 व्य 28:45, 63; 1रा 14:16; हो 1:4; आम 5:27; मी 1:6
7 2रा 18:11
8 2रा 19:11, 13

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 23:29
2 उत 28:18, 19; यह 16:1; 1रा 12:28, 29
3 यूह 4:20-22
4 2रा 17:24

17:25 *या "की उपासना नहीं करते थे।" **17:26** *या "के धार्मिक रिवाज़।" **17:28** *या "की उपासना करनी।" **17:29** *या "देवताओं की मूरतें बनायीं।"

के लोगों ने निभज और तरताक की मूरतें
बनायीं। सपरवैम के लोग अपने यहाँ
के देवता अद्र-मेलेक और अन-मेलेक के
लिए अपने बेटों को आग में होम करते
थे।[1] **32** हालाँकि लोग यहोवा का डर
मानते थे मगर उन्होंने आम लोगों में
से कुछ आदमियों को चुनकर उन्हें
ऊँची जगहों के पुजारी बना दिया और
ये पुजारी ऊँची जगहों पर बने पूजा-
घरों में सेवा करते थे।[2] **33** इस
तरह लोग यहोवा का डर तो मानते
थे लेकिन पूजा अपने देवताओं की ही
करते थे और उन राष्ट्रों के धर्मों* को
मानते थे जहाँ से उन्हें बंदी बनाकर यहाँ
लाया गया था।[3]

34 आज तक ये लोग अपने पुराने
धर्मों* को ही मानते हैं। उनमें से कोई
भी यहोवा की उपासना नहीं करता,#
न ही यहोवा की विधियों, उसके न्याय-
सिद्धांतों, कानून और उसकी आज्ञाओं
को मानता है जो उसने याकूब के बेटों को
दी थीं, जिसका नाम बदलकर उसने इस-
राएल रखा था।[4] **35** यहोवा ने उसके
बेटों के साथ एक करार किया था[5] और
उन्हें यह आज्ञा दी थी, "तुम दूसरे देव-
ताओं का डर मत मानना और उनके
आगे दंडवत मत करना, न उनकी सेवा
करना और न ही उनके लिए बलिदान
चढ़ाना।[6] **36** तुम सिर्फ यहोवा का डर
मानना[7] जो अपना हाथ बढ़ाकर अपनी
महाशक्ति से तुम्हें मिस्र से निकाल लाया
था।[8] तुम उसी के आगे दंडवत करना
और उसी के लिए बलिदान चढ़ाना।
37 उसने तुम्हारे लिए जो नियम, न्याय-
सिद्धांत, कानून और आज्ञाएँ लिखवायी
थीं,[9] तुम उनका सख्ती से पालन करना
और दूसरे देवताओं का डर मत मानना।
38 तुम वह करार कभी मत भूलना जो
मैंने तुम्हारे साथ किया था[1] और दूसरे
देवताओं का डर मत मानना। **39** मगर
तुम सिर्फ अपने परमेश्वर यहोवा का डर
मानना क्योंकि वही तुम्हें सभी दुश्मनों के
हाथ से छुड़ाएगा।"

40 मगर उन्होंने उसकी आज्ञा नहीं
मानी और वे अपने पुराने धर्म* को
ही मानते रहे।[2] **41** वे यहोवा का डर
मानने लगे,[3] पर साथ ही अपनी गढ़ी
हुई मूरतों की सेवा करते थे। उनके बेटे
और पोते भी उन्हीं की लीक पर चले और
आज तक वे ऐसा ही करते हैं।

18 जब इसराएल में एलाह के बेटे
होशेआ[4] के राज का तीसरा साल
चल रहा था, तब यहूदा में राजा आहाज[5]
का बेटा हिजकियाह[6] राजा बना।
2 उस समय हिजकियाह 25 साल का था
और उसने यरूशलेम में रहकर 29
साल राज किया। उसकी माँ का नाम
अबी* था जो जकरयाह की बेटी थी।[7]
3 हिजकियाह यहोवा की नज़र में सही
काम करता रहा,[8] ठीक जैसे उसके
पुरखे दाविद ने किया था।[9] **4** हिज-
कियाह ही वह राजा था जिसने ऊँची
जगह हटायीं,[10] पूजा-स्तंभ चूर-चूर कर
दिए और पूजा-लाठ* काट डाली।[11]
उसने ताँबे का वह साँप भी चूर-चूर कर
दिया जो मूसा ने बनवाया था।[12] उस
साँप को 'ताँबे के साँप की मूरत'#
कहा जाता था। इसराएली अब भी
उसके आगे बलिदान चढ़ाया करते थे
ताकि उनका धुआँ उठे। **5** हिजकियाह
ने हमेशा इसराएल के परमेश्वर यहोवा

17:33, 34, 40 *या "धार्मिक रिवाज़ों।"
17:34 #शा., "का डर नहीं मानता।"

18:2 *यह अबियाह नाम का छोटा रूप
है। **18:4** *शब्दावली देखें। #या "नहुश-
तान।"

अध्य. 17
1 2रा 18:34
2 1रा 12:31, 32
1रा 13:33
3 2रा 17:24, 41
4 उत 32:28
5 निर्ग 19:5
निर्ग 24:7
व्य 29:1
6 निर्ग 20:3-5
निर्ग 23:24
निर्ग 34:14
व्य 5:9
7 व्य 6:12, 13
8 निर्ग 6:6
9 व्य 31:9

दूसरा कॉल.
1 व्य 4:23
2 2रा 17:34
3 एज 4:1, 2

अध्य. 18
4 2रा 15:30
2रा 17:1
5 2रा 16:2, 20
6 2इत 28:27
मत 1:9
7 2इत 29:1, 2
8 2रा 20:3
2इत 31:20, 21
भज 119:128
9 1रा 15:5
10 गि 33:52
1रा 3:2
2रा 14:1, 4
11 व्य 7:5
व्य 12:3
2इत 31:1
12 गि 21:8, 9

पर भरोसा रखा।[1] यहूदा में जितने राजा हुए थे उनमें हिजकियाह जैसा राजा कोई न था, न उसके पहले न उसके बाद। **6** वह हमेशा यहोवा से लिपटा रहा[2] और उसकी बतायी राह से कभी दूर नहीं गया। वह उन आज्ञाओं को मानता रहा जो यहोवा ने मूसा को दी थीं। **7** और यहोवा ने भी उसका साथ नहीं छोड़ा। हिजकियाह ने जो भी काम किया बड़ी बुद्धिमानी से किया। उसने अश्शूर के राजा से बगावत की और उसकी सेवा करने से इनकार कर दिया।[3] **8** उसने पलिश्तियों को भी हरा दिया[4] और पहरे की मीनार से लेकर किलेबंद शहर तक* उनके सभी इलाकों पर कब्ज़ा कर लिया। उनमें गाज़ा और उसके आस-पास के इलाके भी थे।

9 जब यहूदा में हिजकियाह के राज का चौथा साल और इसराएल में एलाह के बेटे होशेआ[5] के राज का सातवाँ साल चल रहा था, तब अश्शूर के राजा शल-मन-एसेर ने सामरिया पर हमला कर दिया और उसकी घेराबंदी करने लगा।[6] **10** घेराबंदी का तीसरा साल खत्म होते-होते, अश्शूरियों ने सामरिया पर कब्ज़ा कर लिया।[7] उस समय यहूदा में हिजकियाह के राज का छठा साल चल रहा था और इसराएल में होशेआ के राज का नौवाँ साल। **11** सामरिया पर कब्ज़ा करने के बाद अश्शूर का राजा इसराएल के लोगों को बंदी[8] बनाकर अश्शूर ले गया और उन्हें हलह में, गोजान नदी के पास हाबोर में और मादियों के शहरों में बसा दिया।[9] **12** यह इस-लिए हुआ क्योंकि उन्होंने अपने पर-मेश्वर यहोवा की बात नहीं मानी और वे उसके करार के खिलाफ काम करते रहे, यानी यहोवा के सेवक मूसा ने जितनी आज्ञाएँ दी थीं, उन सबका उन्होंने उल्लं-घन किया।[1] उन्होंने न तो परमेश्वर की बात सुनी और न उसकी आज्ञा मानी।

13 हिजकियाह के राज के 14वें साल में अश्शूर के राजा सनहेरीब[2] ने यहूदा के सभी किलेबंद शहरों पर हमला कर दिया और उन पर कब्ज़ा कर लिया।[3] **14** तब यहूदा के राजा हिजकियाह ने अश्शूर के राजा के पास लाकीश में यह संदेश भेजा: "मुझसे गलती हो गयी। तू मुझ पर जो जुरमाना लगाना चाहे लगा दे, मैं देने को तैयार हूँ। तू यह घेराबंदी हटा दे।" अश्शूर के राजा ने हिजकियाह पर 300 तोड़े* चाँदी और 30 तोड़े सोने का जुरमाना लगाया। **15** इसलिए हिजकियाह ने यहोवा के भवन और राज-महल के खज़ानों से सारी चाँदी निकाल-कर उस राजा को दे दी।[4] **16** उस वक्त हिजकियाह ने यहोवा के मंदिर के दर-वाज़े[5] और उनके बाज़ू निकाल दिए जिन पर उसने खुद सोना मढ़वाया था[6] और यह सब अश्शूर के राजा को दे दिया।

17 तब अश्शूर के राजा ने लाकीश[7] से तरतान,* रबसारीस# और रब-शाके△ को एक विशाल सेना के साथ राजा हिजकियाह के पास यरू-शलेम भेजा।[8] वे यरूशलेम गए और वहाँ के ऊपरवाले तालाब की नहर के पास खड़े हो गए, जो धोबी के मैदान की तरफ जानेवाले राजमार्ग के पास थी।[9] **18** जब उन्होंने यहूदा के राजा को बाहर

18:8 *यानी हर जगह पर, फिर चाहे वहाँ थोड़े लोग बसे हों या घनी आबादी हो।

18:14 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें। **18:17** *या "सेना-पति।" #या "मुख्य दरबारी।" △या "प्रधान साकी।"

अध्य. 18

1 2रा 19:15; 2इत 32:7, 8
2 व्य 10:20; यह 23:8
3 2रा 16:7
4 2इत 28:18, 19; यश 14:28, 29
5 2रा 17:1
6 2रा 17:3-6
7 हो 13:16; आम 3:11; मी 1:6
8 यश 8:4; आम 6:1, 7
9 2रा 17:6; 1इत 5:26

दूसरा कॉल.

1 व्य 8:20; 1रा 14:15
2 यश 10:5
3 2इत 32:1; यश 36:1
4 2रा 12:18; 2रा 16:8; 2इत 16:2, 3
5 1रा 6:33-35
6 2इत 29:1, 3
7 यह 15:20, 39; 2इत 11:5, 9
8 2इत 32:9
9 यश 36:2, 3

आने के लिए आवाज़ दी, तो उसके राजघराने की देखरेख करनेवाला अधिकारी एल्याकीम[1] (जो हिलकियाह का बेटा था), राज-सचिव शेबनाह[2] और शाही इतिहासकार योआह (जो आसाप का बेटा था) बाहर उनके पास आए।

19 रबशाके ने उनसे कहा, “जाकर हिजकियाह से कहो, ‘अश्शूर के राजाधिराज का यह संदेश है: “तू किस बात पर भरोसा किए बैठा है?[3] 20 तू जो कहता है कि मेरे पास युद्ध की रणनीति तैयार है, मेरे पास बहुत ताकत है, यह सब बकवास है! तूने किस पर भरोसा करके मुझसे बगावत करने की जुर्रत की है?[4] 21 उस मिस्र पर? वह तो कुचला हुआ नरकट है! अगर कोई उसका सहारा लेने के लिए उस पर हाथ रखे तो वह उसकी हथेली में चुभ जाएगा। मिस्र के राजा फिरौन पर जितने लोग भरोसा रखते हैं[5] उनके लिए वह एक कुचले हुए नरकट के सिवा कुछ नहीं है। 22 अब यह मत कहना कि हमें अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा है।[6] हिजकियाह ने तो उसकी सारी ऊँची जगह और वेदियाँ ढा दीं[7] और वह यहूदा और यरूशलेम के लोगों से कहता है, ‘तुम सिर्फ यरूशलेम की इस वेदी के आगे दंडवत करना।’”’[8] 23 अब आ और मेरे मालिक अश्शूर के राजा से यह बाज़ी लगा: मैं तुझे 2,000 घोड़े देता हूँ, तू उनके लिए सवार लाकर दिखा।[9] 24 जब तू यह नहीं कर सकता, तो हमारी सेना का मुकाबला कैसे करेगा? तू चाहे मिस्र के सारे रथ और घुड़सवार ले आए, फिर भी मेरे मालिक के एक राज्यपाल को, उसके सबसे छोटे सेवक को भी हरा नहीं पाएगा। 25 और क्या मैं बिना यहोवा की इजाज़त के इस जगह को नाश करने आया हूँ? यहोवा ने खुद मुझसे कहा है, ‘जा उस देश पर हमला कर, उसे तबाह कर दे।’”

26 तब हिलकियाह के बेटे एल्याकीम और शेबनाह[1] और योआह ने रबशाके[2] से कहा, “मेहरबानी करके अपने सेवकों से अरामी* भाषा[3] में बात कर क्योंकि हम वह भाषा समझ सकते हैं। तू हमसे यहूदियों की भाषा में बात न कर क्योंकि शहरपनाह पर खड़े लोग सुन रहे हैं।”[4] 27 मगर रबशाके ने उनसे कहा, “मेरे मालिक ने मुझे सिर्फ तुम्हें और तुम्हारे मालिक को संदेश सुनाने के लिए नहीं भेजा। यह संदेश शहरपनाह पर खड़े आदमियों के लिए भी है, क्योंकि उनकी और तुम्हारी ऐसी हालत होगी कि तुम अपना ही मल खाओगे और अपना ही पेशाब पीओगे।”

28 फिर रबशाके यहूदियों की भाषा में ज़ोर-ज़ोर से कहने लगा, “अश्शूर के राजाधिराज का संदेश सुनो,[5] 29 ‘तुम लोग हिजकियाह की बातों में मत आओ, वह तुम्हें मेरे हाथ से नहीं छुड़ा सकता।[6] 30 उसकी बात पर यकीन मत करो जो तुम्हें यहोवा पर भरोसा दिलाने के लिए कहता है, “यहोवा हमें ज़रूर बचाएगा और यह शहर अश्शूर के राजा के हाथ में नहीं किया जाएगा।”[7] 31 तुम उसकी बात बिलकुल मत सुनना। अश्शूर के राजा ने कहा है, “तुम लोग मेरे साथ सुलह कर लो और अपने हथियार डाल दो,* तब तुममें से हर कोई अपने-अपने अंगूरों के बाग और अंजीर के पेड़ से खा सकेगा और अपने कुंड से पानी पी सकेगा। 32 फिर मैं आकर

18:26 *या “सीरियाई।” **18:31** *शा., “मेरे साथ आशीर्वाद करो और मेरे पास निकल आओ।”

अध्य. 18
1 2रा 19:2; यश 22:20-24
2 यश 22:15-19
3 2इत 32:10; यश 36:4-10
4 2रा 18:7
5 यश 30:1, 2
6 2इत 32:8
7 2इत 31:1
8 व्य 12:11, 13; 2इत 32:12
9 यश 10:12, 13

दूसरा कॉल.
1 2रा 18:18
2 2रा 18:17
3 एज 4:7; दान 2:4
4 यश 36:11, 12
5 यश 36:13-20
6 2इत 32:15
7 2रा 19:32-34

तुम्हें एक ऐसे देश में ले जाऊँगा जो तुम्हारे देश जैसा है।[1] वहाँ अनाज, नयी दाख-मदिरा, रोटी और शहद की भरमार होगी और जगह-जगह अंगूरों के बाग और जैतून के पेड़ होंगे। तब तुम्हारी जान सलामत रहेगी, तुम्हें मौत का खतरा नहीं होगा। हिजकियाह की बात मत सुनो, वह यह कहकर तुम्हें गुमराह कर रहा है, ‘यहोवा हमें बचा लेगा।’ **33** क्या आज तक किसी राष्ट्र का देवता अपने देश को अश्शूर के राजा के हाथ से बचा पाया है? **34** हमात[2] और अरपाद के देवता कहाँ गए? कहाँ गए सपरवैम,[3] हेना और इव्वा के देवता? क्या वे सामरिया को मेरे हाथ से बचा सके?[4] **35** क्या उनमें से एक भी देवता ऐसा है जो अपने देश को मेरे हाथ से बचा पाया हो? तो फिर यहोवा कैसे यरूशलेम को मेरे हाथ से बचा पाएगा?”’”[5]

36 मगर लोग चुप रहे, उन्होंने जवाब में कुछ नहीं कहा क्योंकि राजा का यह आदेश था: “तुम उसे कोई जवाब मत देना।”[6] **37** इसके बाद राज-घराने की देखरेख करनेवाला अधिकारी एल्याकीम (जो हिलकियाह का बेटा था), राज-सचिव शेबनाह और शाही इतिहासकार योआह ने (जो आसाप का बेटा था) अपने कपड़े फाड़े और हिजकियाह के पास आकर उसे रबशाके की सारी बातें बतायीं।

19 जैसे ही राजा हिजकियाह ने यह सुना, उसने अपने कपड़े फाड़े और टाट ओढ़कर यहोवा के भवन में गया।[7] **2** फिर उसने राज-घराने की देखरेख के अधिकारी एल्याकीम, राज-सचिव शेबनाह और याजकों के मुखियाओं को आमोज के बेटे भविष्य-वक्ता यशायाह[8] के पास भेजा। वे सभी टाट ओढ़े उसके पास गए। **3** उन्होंने उससे कहा, “हिजकियाह ने कहा है, ‘आज का दिन भारी संकट का दिन है, निंदा* और अपमान का दिन है। हमारी हालत ऐसी औरत की तरह हो गयी है जिसके बच्चे होने का वक्त आ गया है, मगर उसमें बच्चा जनने की ताकत नहीं है।[1] **4** इसलिए तू इस देश में बचे हुओं की खातिर परमेश्वर से बिनती कर।[2] हो सकता है तेरा परमेश्वर यहोवा रबशाके की सारी बातों पर ध्यान दे जिसे अश्शूर के राजा ने जीवित परमेश्वर पर ताना कसने भेजा।[3] और तेरा परमेश्वर यहोवा उससे उन सारी बातों का हिसाब ले जो उसने सुनी हैं।’”

5 जब राजा हिजकियाह के सेवकों ने यशायाह को यह संदेश सुनाया,[4] **6** तो यशायाह ने उनसे कहा, “तुम जाकर अपने मालिक से कहना, ‘यहोवा ने कहा है, “अश्शूर के राजा के सेवकों ने मेरी निंदा में जो बातें कही हैं,[5] उनकी वजह से तू मत डर।[6] **7** मैं उसके दिमाग में एक बात डालूँगा और वह एक खबर सुनकर अपने देश लौट जाएगा। फिर मैं उसे उसी के देश में तलवार से मरवा डालूँगा।”’”[7]

8 रबशाके को खबर मिली कि अश्शूर का राजा लाकीश[8] से अपनी सेना लेकर चला गया है, तब रबशाके वापस अपने राजा के पास लौट गया और उसने देखा कि राजा लिब्ना से युद्ध कर रहा है।[9] **9** अश्शूर के राजा को खबर मिली कि इथियोपिया का राजा तिर-हाका उससे युद्ध करने आया है। इस-लिए उसने अपने दूतों[10] से यह कह-कर उन्हें फिर हिजकियाह के पास भेजा: **10** “तुम जाकर यहूदा के राजा हिज-कियाह से कहना, ‘तू अपने परमेश्वर की

अध्य. 18
1 2रा 17:6
2 गि 13:21
3 2रा 17:24
4 2रा 17:6
5 2रा 19:17-19; 2इत 32:15; यश 37:23
6 यश 36:21, 22

अध्य. 19
7 यश 37:1-4
8 यश 1:1

दूसरा कॉल.
1 यश 26:17, 18
2 2शम 22:7; 2इत 20:9; 2इत 32:20; भज 50:15
3 1शम 17:45; 2रा 18:35
4 यश 37:5-7
5 2रा 18:17
6 व्य 20:3; यश 41:10; यश 51:7
7 2इत 32:21; यश 37:37, 38
8 2रा 18:14
9 यश 37:8-13
10 2रा 18:17

19:3 * या “बेइज़्ज़ती।”

बात पर यकीन मत कर। वह तुझे यह
कहकर धोखा दे रहा है कि यरूशलेम
अश्शूर के राजा के हाथ में नहीं किया
जाएगा।[1] **11** तू अच्छी तरह जानता है
कि अश्शूर के राजाओं ने दूसरे सभी देशों
का क्या हाल किया, उन्हें कैसे धूल चटा
दी।[2] फिर तूने यह कैसे सोच लिया कि
तू अकेला बच जाएगा? **12** मेरे पुरखों
ने जिन राष्ट्रों का नाश किया था, क्या
उनके देवता अपने राष्ट्रों को बचा सके?
गोज़ान, हारान[3] और रेसेप, आज ये
सारे राष्ट्र कहाँ हैं? तलस्सार में रहनेवाले
अदन के लोग कहाँ गए? **13** हमात
का राजा, अरपाद का राजा और सपर-
वैम, हेना, इव्वा,[4] इन सारे शहरों के राजा
कहाँ रहे?'"

14 हिजकियाह ने दूतों से वे चिट्ठियाँ
लीं और उन्हें पढ़ा। फिर वह यहोवा के
भवन में गया और उसने यहोवा के सामने
चिट्ठियाँ फैलाकर रख दीं।[5] **15** फिर
हिजकियाह यहोवा के सामने बिनती
करने लगा,[6] "हे इसराएल के परमेश्वर
यहोवा, तू जो करूबों पर* विराजमान
है,[7] धरती के सब राज्यों में तू अकेला
सच्चा परमेश्वर है।[8] तूने ही आकाश
और धरती को बनाया है। **16** हे
यहोवा, मेरी तरफ कान लगा और सुन![9]
हे यहोवा, हम पर नज़र कर![10] सनहे-
रीब ने तुझ जीवित परमेश्वर को ताना
मारने के लिए जो बातें लिखी हैं, उन
पर ध्यान दे। **17** हे यहोवा, यह सच है
कि अश्शूर के राजाओं ने कई राष्ट्रों
और उनके इलाकों को तहस-नहस कर
दिया[11] और **18** उनके देवताओं को
आग में झोंक दिया। मगर वे उन देव-
ताओं को इसलिए नाश कर पाए क्योंकि
वे देवता नहीं,[12] बस इंसानों की कारीगरी
थे,[1] पत्थर और लकड़ी थे। **19** अब हे
हमारे परमेश्वर यहोवा, दया करके तू हमें
उसके हाथ से बचा ले ताकि धरती के
सब राज्य जान लें कि तू यहोवा ही पर-
मेश्वर है।"[2]

20 तब आमोज के बेटे यशायाह ने
हिजकियाह के पास यह संदेश भेजा:
"इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता
है, 'तूने अश्शूर के राजा सनहेरीब के
बारे में मुझसे जो प्रार्थना की, वह मैंने
सुन ली है।[3] **21** यहोवा ने सनहेरीब के
खिलाफ यह फैसला सुनाया है:

"सिय्योन की कुँवारी बेटी तुझे
तुच्छ समझती है, तेरी खिल्ली
उड़ाती है।
यरूशलेम की बेटी सिर हिला-हिला-
कर तुझ पर हँसती है।
22 तू जानता भी है तूने किसे ताना
मारा है, किसकी निंदा की है?[4]
किसके खिलाफ आवाज़
उठायी है?[5]
तू घमंड से भरकर किसे आँख
दिखा रहा है?
इसराएल के पवित्र परमेश्वर को![6]
23 तूने अपने दूतों[7] के हाथ यह
संदेश भेजकर यहोवा को ताना
मारा है:[8]
'मैं अपने बेहिसाब युद्ध-रथ लेकर
आऊँगा,
पहाड़ों की चोटियों पर चढ़
जाऊँगा,
लबानोन के दूर-दूर के इलाकों तक
पहुँच जाऊँगा।
मैं उसके ऊँचे-ऊँचे देवदार, बढ़िया-
बढ़िया सनोवर काट डालूँगा।
मैं दूर-दूर तक बसे आशियाने में,
उसके सबसे घने जंगलों में घुस
जाऊँगा।

19:15 *या शायद, "के बीच।"

अध्य. 19
1 2इत 32:15
2 2रा 17:5; 2इत 32:10, 13; यश 10:8-11
3 उत 11:31
4 2रा 17:24; 2रा 18:33, 34
5 1रा 8:30; यश 37:14-20
6 2इत 32:20
7 निर्ग 25:22
8 1इत 29:10, 11
9 1रा 8:29; भज 65:2
10 2इत 16:9; दान 9:18
11 2रा 16:8, 9; 2रा 17:6, 24
12 यश 41:29

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 10:3
2 भज 83:17, 18; यश 45:5, 6
3 2रा 19:15; यश 37:21, 22
4 2रा 19:10
5 2रा 18:30; यश 10:12, 13
6 यश 37:23-25
7 2रा 18:17
8 2इत 32:17; यश 10:10, 11

24 मैं परायी ज़मीन पर कुएँ खुदवाऊँ-
गा, वहाँ का पानी पीऊँगा,
अपने पैरों के तलवे से मिस्र की
सारी नदियाँ* सुखा दूँगा।’
25 क्या तूने नहीं सुना? मैंने बहुत
पहले ही यह फैसला कर
लिया था।[1]
अरसों पहले इसकी तैयारी कर
ली थी।*[2]
अब वक्त आ गया है इसे अंजाम
देने का।[3]
तू किलेबंद शहरों को मलबे का ढेर
बना देगा।[4]
26 उनके निवासी बेबस हो जाएँगे,
उनमें डर समा जाएगा, वे शर्मिंदा
हो जाएँगे।
वे मैदान के पेड़-पौधों और हरी
घास की तरह कमज़ोर हो
जाएँगे,[5]
छत की घास जैसे हो जाएँगे जो
पूरब की हवा से झुलस जाती है।
27 मैं तेरा उठना-बैठना, आना-जाना
सब जानता हूँ,[6]
यह भी कि तू कब मुझ पर भड़क
उठता है।[7]
28 क्योंकि तेरा क्रोध करना[8] और
तेरा दहाड़ना मेरे कानों तक
पहुँचा है।[9]
मैं तेरी नाक में नकेल डालूँगा
और तेरे मुँह में लगाम
लगाऊँगा,[10]
तुझे खींचकर उसी रास्ते
वापस ले जाऊँगा जिससे तू
आया है।”[11]

29 ये बातें ज़रूर होंगी, इसकी मैं
तुझे* यह निशानी देता हूँ: इस साल
तुम लोग वह अनाज खाओगे जो
अपने आप उगता है,# अगले साल वह
अनाज खाओगे जो पिछले अनाज के
गिरने से उगता है[1] और तीसरे साल तुम
बीज बोओगे और उसकी फसल काटोगे
और अंगूरों के बाग लगाओगे और उनके
फल खाओगे।[2] 30 यहूदा के घराने के
जो लोग बच जाएँगे,[3] वे पौधों की
तरह जड़ पकड़ेंगे और फल पैदा करेंगे।
31 बचे हुए लोग यरूशलेम से निक-
लेंगे, हाँ, जो ज़िंदा बच जाएँगे वे सिय्योन
पहाड़ से निकलेंगे। सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा अपने जोश के कारण ऐसा ज़रूर
करेगा।[4]

32 इसलिए यहोवा अश्शूर के राजा
के बारे में कहता है,[5]

“वह इस शहर में नहीं आएगा,[6]
न यहाँ एक भी तीर चलाएगा,
न ढाल लेकर हमला करेगा,
न ही घेराबंदी की ढलान खड़ी
करेगा।[7]
33 वह जिस रास्ते आया है उसी रास्ते
लौट जाएगा,
वह इस शहर में नहीं आएगा।” यह
यहोवा का ऐलान है।
34 “मैं अपने नाम की खातिर[8] और
अपने सेवक दाविद की खातिर[9]
इस शहर की रक्षा करूँगा, इसे
बचाऊँगा।”’”[10]

35 फिर उसी रात यहोवा का स्वर्गदूत
अश्शूरियों की छावनी में गया और उनके
1,85,000 सैनिकों को मार डाला।[11]
जब लोग सुबह तड़के उठे तो उन्होंने
देखा कि चारों तरफ लाशें बिछी हैं।[12]

19:24 *या “नील नदी की नहरें।” 19:25 *या “इसे रचा था।”

19:29 *यानी हिजकियाह को। #या “बिखरे हुए दानों से हुई पैदावार खाओगे।”

अध्य. 19

1 यश 14:24
2 भज 33:11
3 यश 46:10
4 यश 10:5; यश 37:26, 27
5 यश 40:7
6 नीत 5:21; इब्र 4:13
7 यश 37:28, 29
8 भज 46:6; यश 10:5, 15
9 2रा 18:35; यश 10:12, 13
10 भज 32:9
11 2रा 19:33

दूसरा कॉल.

1 लैव 25:4-6
2 यश 37:30-32
3 2इत 32:22; यश 10:20
4 यश 59:17; जक 1:14, 15
5 यश 10:24
6 2इत 32:22
7 यश 37:33-35
8 1शम 12:22; यश 43:25; यहे 36:22
9 2रा 20:6; यिर्म 23:5
10 यश 31:5
11 2इत 32:21; यश 31:8
12 निर्ग 12:30; यश 37:36-38

36 तब अश्शूर का राजा सनहेरीब वहाँ से चला गया और नीनवे[1] लौट गया और वहीं रहा।[2] **37** एक दिन जब वह अपने देवता निसरोक के मंदिर में झुककर दंडवत कर रहा था तो उसके अपने बेटों ने, अद्र-मेलेक और शरेसेर ने उसे तलवार से मार डाला।[3] फिर वे अरारात देश भाग गए।[4] सनहेरीब की जगह उसका बेटा एसर-हद्दोन[5] राजा बना।

20 उन दिनों हिजकियाह बीमार हो गया। उसकी हालत इतनी खराब हो गयी कि वह मरनेवाला था।[6] तब आमोज का बेटा, भविष्यवक्ता यशायाह उसके पास आया और उससे कहा, “यहोवा ने कहा है, ‘तू अपने घराने को ज़रूरी हिदायतें दे क्योंकि तू इस बीमारी से ठीक नहीं होगा, तेरी मौत हो जाएगी।’”[7] **2** यह सुनकर हिजकियाह ने दीवार की तरफ मुँह किया और वह यहोवा से प्रार्थना करने लगा, **3** “हे यहोवा, मैं तुझसे बिनती करता हूँ, याद कर कि मैं कैसे तेरा विश्वासयोग्य बना रहा और पूरे दिल से तेरे सामने सही राह पर चलता रहा। मैंने हमेशा वही किया जो तेरी नज़र में सही है।”[8] यह कहकर हिजकियाह फूट-फूटकर रोने लगा।

4 हिजकियाह को संदेश सुनाने के बाद यशायाह महल के बीचवाले आँगन तक पहुँचा भी न था कि यहोवा का यह संदेश उसके पास आया,[9] **5** “तू मेरे लोगों के अगुवे हिजकियाह के पास वापस जा और उससे कह, ‘तेरे पुरखे दाविद के परमेश्वर यहोवा ने कहा है, “मैंने तेरी प्रार्थना सुनी है, तेरे आँसू देखे हैं।[10] मैं तेरी बीमारी दूर कर दूँगा।[11] तीसरे दिन तू यहोवा के भवन में जाएगा।[12] **6** मैं तेरी उम्र 15 साल और बढ़ा दूँगा। मैं तुझे और इस शहर को अश्शूर के राजा के हाथ से बचाऊँगा।[1] अपने नाम की खातिर और अपने सेवक दाविद की खातिर मैं इस शहर की हिफाज़त करूँगा।”’”[2]

7 फिर यशायाह ने राजा के सेवकों से कहा, “सूखे अंजीरों की एक टिकिया ले आओ।” उन्होंने सूखे अंजीरों की टिकिया लाकर हिजकियाह के फोड़े पर लगायी। इसके बाद वह धीरे-धीरे ठीक हो गया।[3]

8 हिजकियाह ने यशायाह से पूछा था, “मैं कैसे यकीन करूँ कि यहोवा मेरी बीमारी दूर कर देगा और तीसरे दिन मैं यहोवा के भवन में जा पाऊँगा? क्या तू मुझे इसकी कोई निशानी देगा?”[4] **9** यशायाह ने उससे कहा, “यहोवा की तरफ से तेरे लिए यह निशानी होगी जिससे तू यकीन करे कि यहोवा ने जो कहा है उसे वह पूरा भी करेगाः तू क्या चाहता है, सीढ़ियों* पर छाया दस कदम आगे बढ़े या दस कदम पीछे जाए?”[5] **10** हिजकियाह ने कहा, “छाया का दस कदम आगे बढ़ना आसान है, मगर पीछे जाना मुश्किल।” **11** तब भविष्यवक्ता यशायाह ने यहोवा को पुकारा और परमेश्वर ने आहाज की सीढ़ियों पर वह छाया दस कदम पीछे कर दी जो आगे बढ़ चुकी थी।[6]

12 उस वक्त बैबिलोन के राजा बरोदक-बलदान ने, जो बलदान का बेटा था, अपने दूतों के हाथ हिजकियाह को चिट्ठियाँ और एक तोहफा भेजा क्योंकि उसे हिजकियाह की बीमारी का पता चला था।[7] **13** हिजकियाह ने उन दूतों का

20:9 *शायद इन सीढ़ियों का इस्तेमाल एक धूप-घड़ी की तरह समय मापने के लिए किया जाता था।

अध्य. 19
1 यो 1:2
2 2रा 19:7, 28
3 2इत 32:21
4 उत 8:4
5 एज 4:2

अध्य. 20
6 2इत 32:24
7 यश 38:1-3
8 2इत 31:20, 21; भज 25:7; भज 119:49
9 यश 38:4-6
10 भज 39:12
11 व्य 32:39; भज 41:3; भज 103:3; भज 147:3
12 भज 66:13; भज 116:12-14

दूसरा कॉल.
1 2इत 32:22; यश 10:24
2 2रा 19:34; यश 37:35
3 यश 38:21, 22
4 न्या 6:17; यश 7:11
5 यश 38:7, 8
6 यह 10:12; 2इत 32:31
7 यश 39:1, 2

स्वागत किया* और उन्हें अपना सारा खज़ाना दिखा दिया।[1] उसने सारा सोना-चाँदी, बलसाँ का तेल, दूसरे किस्म के बेशकीमती तेल, हथियारों का भंडार और वह सारी चीज़ें दिखायीं जो उसके खज़ानों में थीं। उसके महल और पूरे राज्य में ऐसी एक भी चीज़ नहीं थी जो उसने उन्हें न दिखायी हो।

14 इसके बाद भविष्यवक्ता यशायाह राजा हिजकियाह के पास आया और उससे पूछा, "ये आदमी कहाँ से आए थे और इन्होंने तुझसे क्या कहा?" हिजकियाह ने कहा, "वे एक दूर देश बैबिलोन से आए थे।"[2] **15** फिर यशायाह ने पूछा, "उन्होंने तेरे महल में क्या-क्या देखा?" हिजकियाह ने कहा, "उन्होंने मेरे महल की हर चीज़ देखी। मेरे खज़ानों में ऐसा कुछ नहीं जो मैंने उन्हें न दिखाया हो।"

16 तब यशायाह ने हिजकियाह से कहा, "अब तू यहोवा का संदेश सुन।[3] **17** यहोवा कहता है, 'देख! वह दिन आ रहा है जब तेरे महल का सारा खज़ाना बैबिलोन ले जाया जाएगा। तेरे पुरखों ने आज के दिन तक जितना धन जमा किया था, वह सब भी लूट लिया जाएगा।[4] एक भी चीज़ नहीं छोड़ी जाएगी। **18** और तेरे जो बेटे होंगे उनमें से कुछ को बैबिलोन ले जाया जाएगा[5] और वहाँ के राजमहल में दरबारी बनाया जाएगा।'"[6]

19 हिजकियाह ने यशायाह से कहा, "तूने यहोवा का जो फैसला सुनाया है, वह सही है।"[7] फिर उसने कहा, "परमेश्वर की बड़ी दया है कि मेरे जीते-जी* मेरे राज में शांति और सुरक्षा# रहेगी।"[8]

20 हिजकियाह की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसके बड़े-बड़े कामों का और कैसे उसने कुंड[1] और पानी की सुरंग बनवाकर शहर में पानी लाने का इंतज़ाम किया,[2] उन सबका ब्यौरा यहूदा के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है। **21** फिर हिजकियाह की मौत हो गयी*[3] और उसकी जगह उसका बेटा मनश्शे[4] राजा बना।[5]

21

मनश्शे[6] जब राजा बना तब वह 12 साल का था और उसने यरूशलेम में रहकर 55 साल राज किया।[7] उसकी माँ का नाम हेपसीबा था। **2** मनश्शे ने यहोवा की नज़र में बुरे काम किए। उसने उन राष्ट्रों के जैसे घिनौने काम किए[8] जिन्हें यहोवा ने इसराएल के लोगों के सामने से खदेड़ दिया था।[9] **3** उसने वे ऊँची जगह फिर से बनवा दीं जो उसके पिता हिजकियाह ने ढा दी थीं।[10] उसने बाल के लिए वेदियाँ खड़ी करवायीं और एक पूजा-लाठ* बनवायी,[11] ठीक जैसे इसराएल के राजा अहाब ने किया था।[12] मनश्शे आकाश की सारी सेना के आगे दंडवत करता था और उसकी पूजा करता था।[13] **4** उसने यहोवा के उस भवन में भी वेदियाँ खड़ी कर दीं[14] जिसके बारे में यहोवा ने कहा था, "यरूशलेम से मेरा नाम जुड़ा रहेगा।"[15] **5** उसने यहोवा के भवन के दोनों आँगनों[16] में आकाश की सारी सेना के लिए वेदियाँ खड़ी कीं।[17] **6** उसने अपने बेटे को आग में होम कर दिया। वह जादू करता था और शकुन विचारता था[18] और उसने देश में मरे हुओं से संपर्क करने का दावा करनेवालों और भविष्य बतानेवालों

20:13 *या "की सुनी।" **20:19** *शा., "दिनों में।" #या "सच्चाई।"

20:21 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।" **21:3** *शब्दावली देखें।

अध्य. 20
1 2इत 32:27
2 यश 39:3, 4
3 यश 39:5-7
4 2रा 24:12, 13; 2रा 25:13; 2इत 36:7, 18; यिर्म 27:21, 22; दान 1:2
5 2रा 24:12
6 दान 1:19; दान 2:49
7 भज 141:5
8 यश 39:8

दूसरा कॉल.
1 यूह 9:11
2 2इत 32:30
3 1रा 2:10
4 2रा 21:16; 2रा 23:26; 2इत 33:11-13
5 2इत 32:33

अध्य. 21
6 1इत 3:13; मत 1:10
7 2इत 33:1
8 व्य 12:30, 31; 2इत 36:14; यहे 16:51
9 2इत 33:2-6
10 2रा 18:1, 4
11 2रा 23:4
12 1रा 16:30, 32
13 व्य 4:19
14 यिर्म 32:34
15 व्य 12:5; 2शम 7:12, 13; 1रा 8:29; 1रा 9:3
16 1रा 6:36; 1रा 7:12
17 यहे 8:16
18 लैव 19:26

को ठहराया था।[1] उसने ऐसे काम करने
में सारी हदें पार कर दीं जो यहोवा की
नज़र में बुरे थे और उसका क्रोध भड़-
काया।

7 उसने जो पूजा-लाठ तराशकर बन-
वायी थी[2] उसे ले जाकर यहोवा के भवन
में रख दिया, जिसके बारे में परमेश्वर
ने दाविद और उसके बेटे सुलैमान से
कहा था, “इस भवन और यरूशलेम के
साथ मेरा नाम हमेशा जुड़ा रहेगा, जिन्हें
मैंने इसराएल के सभी गोत्रों के इलाके में
से चुना है।[3] 8 मैं इसराएलियों को इस
देश से निकालकर फिर कभी नहीं भट-
काऊँगा जो मैंने उनके पुरखों को दिया
था,[4] बशर्ते वे मेरी सब आज्ञाओं को
सख्ती से मानें,[5] उस पूरे कानून को जो
मेरे सेवक मूसा ने उन्हें दिया था।”
9 मगर उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा नहीं
मानी और मनश्शे उन्हें सही राह से दूर
ले जाता रहा और उन राष्ट्रों से भी बढ़-
कर दुष्ट काम करवाता रहा, जिन्हें
यहोवा ने इसराएलियों के सामने से मिटा
दिया था।[6]

10 यहोवा अपने सेवकों यानी
भविष्यवक्ताओं के ज़रिए बार-बार
उनसे कहता था,[7] 11 “यहूदा के राजा
मनश्शे ने ये सारे घिनौने काम किए
है। उसने उन सभी एमोरियों से बढ़-
कर दुष्टता की है[8] जो उससे पहले
हुआ करते थे।[9] उसने घिनौनी मूरतें*
खड़ी करवाकर यहूदा से पाप कर-
वाया है। 12 इसलिए इसराएल का
परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘मैं यरूशलेम
और यहूदा पर ऐसा कहर ढाऊँगा[1] कि
सुननेवालों के कान झनझना जाएँगे।[2]
13 मैं यरूशलेम को उसी नापने की डोरी
से नापूँगा[3] जिससे मैंने सामरिया को नापा
था[4] और उस पर वही साहुल इस्ते-
माल करूँगा जो मैंने अहाब के घराने पर
इस्तेमाल किया था।[5] मैं यरूशलेम का
ऐसा सफाया कर दूँगा जैसे कोई कटोरे
को साफ कर देता है और उसे पोंछकर
उलट देता है।[6] 14 मैं अपनी जागीर के
बचे हुए लोगों को त्याग दूँगा[7] और उन्हें
उनके दुश्मनों के हवाले कर दूँगा। उन्हें
बंदी बना लिया जाएगा और उनके सारे
दुश्मन आकर उनकी चीज़ें लूट लेंगे[8]
15 क्योंकि उन्होंने मेरी नज़र में बुरे
काम किए हैं और जिस दिन उनके बाप-
दादे मिस्र से निकले थे तब से लेकर
आज तक वे लगातार मेरा क्रोध भड़काते
आए हैं।’”[9]

16 मनश्शे ने यहूदा के लोगों से
ऐसे काम करवाए थे जो यहोवा की
नज़र में बुरे थे। इस पाप के अलावा,
उसने बेहिसाब मासूमों का खून बहाया।
उसने यरूशलेम के एक छोर से दूसरे
छोर तक खून की नदियाँ बहा दीं।[10]
17 मनश्शे की ज़िंदगी की बाकी कहानी,
उसने जो-जो काम किए, उनका और
उसके सभी पापों का ब्यौरा यहूदा के
राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा
है। 18 फिर मनश्शे की मौत हो गयी*
और उसे उसी के महल के बाग में,
जो उज्जा का बाग कहलाता है, दफनाया
गया।[11] उसकी जगह उसका बेटा आमोन
राजा बना।

19 जब आमोन[12] राजा बना तब
वह 22 साल का था और उसने यरूशलेम

21:11 *इनका इब्रानी शब्द शायद “मल” के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

21:18 *शा., “अपने पुरखों के साथ सो गया।”

अध्य. 21
1 लैव 20:27, व्य 18:10, 11
2 2रा 23:6
3 2इत 33:7-9
4 1इत 17:9
5 व्य 28:1
6 व्य 7:1
7 2इत 33:10, 2इत 36:15, 16, यिर्म 7:25, मत 23:37
8 उत 15:16
9 लैव 18:24, 25, 2रा 23:26, 2रा 24:3, यिर्म 15:4

दूसरा कॉल.
1 2रा 22:16, 17, मी 3:12
2 यिर्म 19:3
3 यश 28:17, विल 2:8
4 2रा 17:6, यहे 23:33
5 1रा 21:21, 2रा 10:11
6 यिर्म 25:9
7 व्य 32:9, 2रा 17:18
8 लैव 26:25, व्य 28:63
9 व्य 9:21, व्य 31:29, न्या 2:11, 13
10 2रा 24:3, 4, यिर्म 2:34, मत 23:30, इब्र 11:37
11 2रा 21:23, 26
12 मत 1:10

से यहूदा पर दो साल राज किया।[1]
उसकी माँ का नाम मशुल्लेमेत था जो
योत्बा के रहनेवाले हारूस की बेटी
थी। 20 आमोन अपने पिता मनश्शे
की तरह यहोवा की नज़र में बुरे काम
करता रहा।[2] 21 वह अपने पिता के
ही नक्शे-कदम पर चला। वह उन घिनौनी
मूरतों के आगे दंडवत करता था और
उनकी पूजा करता था जिन्हें उसका पिता
पूजता था।[3] 22 उसने अपने पुरखों के
परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया और वह
यहोवा की राह पर नहीं चला।[4]
23 बाद में आमोन के सेवकों ने उसके
खिलाफ साज़िश रची और उसी के महल
में उसका कत्ल कर दिया। 24 मगर
देश के लोगों ने उन सबको मार डाला
जिन्होंने राजा आमोन के खिलाफ साज़िश
की थी। फिर उन्होंने आमोन की जगह
उसके बेटे योशियाह को राजा बनाया।[5]
25 आमोन की ज़िंदगी की बाकी कहानी,
उसने जो-जो काम किए, उनका ब्यौरा
यहूदा के राजाओं के इतिहास की किताब
में लिखा है। 26 आमोन को उज्जा के
बाग में उसकी अपनी कब्र में दफनाया
गया।[6] उसकी जगह उसका बेटा योशि-
याह[7] राजा बना।

22 योशियाह[8] जब राजा बना तब
वह आठ साल का था और
उसने यरूशलेम में रहकर 31 साल राज
किया।[9] उसकी माँ का नाम यदीदा था जो
बोसकत[10] के रहनेवाले अदायाह की बेटी
थी। 2 योशियाह ने यहोवा की नज़र
में सही काम किए और वह अपने पुरखे
दाविद के नक्शे-कदम पर चला।[11] वह
परमेश्वर की बतायी राह से न कभी दाएँ
मुड़ा न बाएँ।

3 योशियाह ने अपने राज के 18वें
साल में राज-सचिव शापान को (जो
असल्याह का बेटा और मशुल्लाम का
पोता था) यह कहकर यहोवा के भवन में
भेजा:[1] 4 "महायाजक हिलकियाह[2] के
पास जा और उससे कह कि वह यहोवा
के भवन से सारा पैसा निकाले जो लोगों
ने दान में दिया है[3] और जिसे दरबानों
ने इकट्ठा किया है।[4] 5 उन्हें बताना कि
वह पैसा उन आदमियों को दें जिन्हें
यहोवा के भवन में काम की निगरानी
सौंपी गयी है। फिर निगरानी करने-
वाले पैसा ले जाकर यहोवा के भवन की
मरम्मत करनेवाले[5] 6 कारीगरों, राज-
गीरों और राजमिस्त्रियों को देंगे। वे उस
पैसे से भवन की मरम्मत के लिए शहतीरें
और गढ़े हुए पत्थर खरीदेंगे।[6] 7 मगर
निगरानी करनेवालों से उस पैसे का कोई
हिसाब-किताब न लिया जाए क्योंकि वे
भरोसेमंद आदमी हैं।"[7]

8 बाद में महायाजक हिलकियाह ने
राज-सचिव शापान[8] से कहा, "मुझे
यहोवा के भवन में कानून की
किताब मिल गयी है!"[9] हिलकियाह ने
वह किताब शापान को दी और
शापान उसे पढ़ने लगा।[10] 9 फिर राज-
सचिव शापान राजा के पास गया और
उसे बताया, "तेरे सेवकों ने भवन का
सारा पैसा निकालकर उन आदमियों को दे
दिया है जिन्हें यहोवा के भवन में काम की
निगरानी सौंपी गयी है।"[11] 10 राज-
सचिव शापान ने राजा को यह खबर
भी दी, "याजक हिलकियाह ने मुझे एक
किताब[12] दी है।" फिर शापान राजा को
वह किताब पढ़कर सुनाने लगा।

11 जैसे ही राजा ने कानून की किताब
में लिखी बातें सुनीं, उसने अपने कपड़े
फाड़े।[13] 12 फिर उसने याजक हिल-
कियाह, शापान के बेटे अहीकाम,[14]
मीकायाह के बेटे अकबोर, राज-सचिव

अध्य. 21

1 2इत 33:21
2 2इत 33:22, 23
3 2रा 21:1, 3
4 2रा 22:16, 17; यिर्म 2:13
5 2इत 33:25
6 2रा 21:18
7 मत 1:10

अध्य. 22

8 1रा 13:2; यिर्म 1:2; सप 1:1
9 2इत 34:1, 2
10 यह 15:20, 39
11 1रा 15:5

दूसरा कॉल.

1 2इत 34:8
2 1इत 6:13
3 2रा 12:4, 5; 2इत 24:8
4 2रा 12:9; 2इत 34:9
5 2रा 12:11, 12; 2इत 34:10
6 2इत 34:11
7 2रा 12:15; 2इत 34:12
8 2रा 22:3
9 व्य 31:24-26
10 2इत 34:14, 15
11 2इत 34:16-18
12 व्य 31:9
13 2इत 34:19-21; योए 2:13
14 2रा 25:22; यिर्म 26:24

शापान और अपने सेवक असायाह को
यह आदेश दियाः 13 “तुम लोग मेरी
तरफ से और लोगों और पूरे यहूदा की
तरफ से जाओ और यह जो किताब मिली
है, इसमें लिखी बातों के बारे में यहोवा
से पूछो। हमारे पुरखों ने इस किताब में
लिखी आज्ञाओं का पालन नहीं किया,
इसमें जो लिखा है उसे नहीं माना, जिसका
हमें भी पालन करना चाहिए। इसलिए
यहोवा का गुस्सा, उसके क्रोध की ज्वाला
हम पर भड़क उठी है।”[1]

14 तब याजक हिलकियाह, अही-
काम, अकबोर, शापान और असायाह,
सब मिलकर भविष्यवक्तिन[2] हुल्दा के
पास गए। भविष्यवक्तिन हुल्दा, शल्लूम
की पत्नी थी जो तिकवा का बेटा और हर-
हस का पोता था। शल्लूम पोशाक-घर की
देखरेख करनेवाला था। हुल्दा यरूशलेम
के ‘नए हिस्से’ में रहती थी और वहीं
योशियाह के भेजे हुए आदमियों ने उससे
बात की।[3] 15 हुल्दा ने उनसे कहा,
“इसराएल के परमेश्वर यहोवा ने कहा है,
‘जिस आदमी ने तुम्हें मेरे पास भेजा
है, उससे कहनाः 16 “यहोवा ने कहा
है, ‘मैं इस जगह पर और यहाँ
रहनेवालों पर विपत्ति लाऊँगा, ठीक
जैसे उस किताब में लिखा है जो यहूदा के
राजा ने पढ़ी है।[4] 17 उन्होंने मुझे छोड़
दिया है और वे दूसरे देवताओं के
सामने बलिदान चढ़ाते हैं[5] और अपने
हाथ की बनायी चीज़ों से मुझे गुस्सा
दिलाते हैं,[6] इसलिए मेरे क्रोध की ज्वाला
इस जगह पर भड़क उठेगी और वह
नहीं बुझेगी।’”[7] 18 मगर तुम यहूदा
के राजा से, जिसने यहोवा की मरज़ी
जानने के लिए तुम्हें भेजा है, कहना,
“तूने जो बातें सुनी हैं उनके बारे में इस-
राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है,

19 ‘जब तूने सुना कि मैं इस जगह और
यहाँ रहनेवालों को इस कदर नाश करूँगा
कि वे शापित ठहरेंगे और उनकी बर-
बादी देखनेवाले दहल जाएँगे, तो इस बात
ने तेरे दिल पर गहरा असर किया और
तूने खुद को यहोवा के सामने नम्र किया
है[1] और तू अपने कपड़े फाड़कर[2] मेरे
सामने रोया। इसलिए मैंने तेरी बिनती
सुनी है।’ यहोवा का यह ऐलान है।
20 ‘इसलिए तेरे जीते-जी मैं इस जगह
पर कहर नहीं ढाऊँगा। तू शांति से मौत
की नींद सोएगा* और तुझे अपनी कब्र में
दफना दिया जाएगा।’”’” तब उन आद-
मियों ने जाकर यह संदेश राजा को
सुनाया।

23 इसलिए राजा ने आदेश दिया
और उन्होंने यहूदा और यरू-
शलेम के सभी मुखियाओं को बुल-
वाया।[3] 2 इसके बाद राजा योशियाह,
यहूदा के सभी आदमियों को, याजकों
और भविष्यवक्ताओं को और यरू-
शलेम के छोटे-बड़े सब लोगों को लेकर
यहोवा के भवन में गया। फिर उसने
सबको करार[4] की पूरी किताब[5] पढ़-
कर सुनायी जो यहोवा के भवन में मिली
थी।[6] 3 राजा खंभे के पास खड़ा हुआ
और उसने यहोवा के सामने यह करार
किया*[7] कि हम सब यहोवा के पीछे
चलेंगे और पूरे दिल और पूरी जान से
उसकी आज्ञाओं और विधियों पर चलेंगे,
जो हिदायतें वह याद दिलाता है उन्हें
मानेंगे और इस किताब में लिखी करार
की बातों का हमेशा पालन करेंगे। तब
सब लोगों ने इस करार के मुताबिक काम
करने की हामी भरी।[8]

22:20 *शा., “अपने पुरखों में जा मिलेगा।” **23:3** *या “दोबारा करार किया।”

अध्य. 22
1 व्य 4:24, व्य 29:27, व्य 31:17
2 निर्ग 15:20, न्या 4:4, नहे 6:14, लूक 2:36, प्रेष 21:8, 9
3 2इत 34:22-28
4 2रा 22:8
5 निर्ग 20:3, व्य 32:17, न्या 2:12, यिर्म 2:11
6 यश 2:8
7 व्य 32:22, यश 33:14, यिर्म 7:20, यहे 20:48

दूसरा कॉल.
1 1रा 21:29, याकू 4:6
2 2रा 22:11

अध्य. 23
3 2इत 34:29, 30
4 निर्ग 24:8
5 व्य 31:26
6 2रा 22:8
7 2रा 11:17, 2इत 15:10, 12
8 यह 24:24, 25, 2इत 34:31, 32

4 इसके बाद राजा ने महायाजक
हिलकियाह[1] और दूसरे याजकों और दर-
बानों को हुक्म दिया कि वे यहोवा
के मंदिर से वे सारी चीज़ें बाहर निकाले
जो बाल और पूजा-लाठ*[2] और आकाश
की सारी सेना के लिए बनायी गयी
थीं। फिर उसने वे सारी चीज़ें यरूशलेम
के बाहर ले जाकर किदरोन की ढलानों
पर जला दीं और उनकी राख बेतेल[3] ले
गया। 5 उसने पराए देवताओं के पुजा-
रियों को हटा दिया जिन्हें यहूदा के
राजाओं ने यहूदा के शहरों और यरू-
शलेम के आस-पास की ऊँची जगहों
पर बलिदान चढ़ाने के लिए ठहराया था
ताकि उनका धुआँ उठे। उसने उन लोगों
को भी निकाल दिया जो बाल, सूर्य,
चाँद, राशि के नक्षत्रों और आकाश की
सारी सेना के लिए बलिदान चढ़ाते थे
ताकि उनका धुआँ उठे।[4] 6 वह यहोवा
के भवन से पूजा-लाठ[5] निकालकर यरू-
शलेम के बाहर किदरोन घाटी में ले गया
और वहाँ उसे जला दिया।[6] फिर उसने
उसे चूर-चूर कर दिया और उसकी राख
आम लोगों की कब्रों पर बिखरा दी।[7]
7 उसने यहोवा के भवन में उन आद-
मियों के लिए बने घर भी ढा दिए जो
मंदिरों में दूसरे आदमियों के साथ संभोग
करते थे।[8] उन घरों में औरतें पूजा-
लाठ के लिए तंबूवाले पूजा-घर बुनकर
बनाती थीं।

8 फिर वह यहूदा के शहरों से सभी
याजकों को बाहर ले आया और उसने
गेबा[9] से बेरशेबा[10] तक सारी ऊँची
जगहों का ऐसा हाल कर दिया कि वहाँ
पूजा न की जा सके। उन जगहों पर
पुजारी बलिदान चढ़ाया करते थे ताकि
उनका धुआँ उठे। उसने शहर के मुखिया
यहोशू के फाटक के पासवाली वे सभी
ऊँची जगह भी ढा दीं जो शहर में दाखिल
होने पर बायीं तरफ पड़ती थीं। 9 जो
याजक ऊँची जगहों में पुजारी का काम
करते थे उन्हें यरूशलेम में यहोवा की
वेदी के पास सेवा नहीं करने दिया
गया,[1] मगर उन्हें बाकी याजकों के साथ
बिन-खमीर की रोटी खाने दिया गया।
10 राजा ने 'हिन्नोम के वंशजों की
घाटी'*[2] के तोपेत[3] का भी ऐसा हाल
किया कि वहाँ पूजा न की जा सके। उसने
ऐसा इसलिए किया ताकि तोपेत में कोई
अपने बेटे या बेटी को मोलेक के लिए
आग में होम न कर सके।[4] 11 और
राजा ने सूर्य को अर्पित घोड़ों को यहोवा
के भवन में ले जाने पर रोक लगा
दी। ये घोड़े, यहूदा के राजाओं ने सूर्य को
अर्पित किए थे और इन्हें दरबारी नतन-
मेलेक के कमरे* से होते हुए भवन में
ले जाया जाता था, जो खंभोंवाले बराम-
दे के पास था। साथ ही, राजा ने सूर्य
की पूजा में इस्तेमाल होनेवाले सारे
रथ जला दिए।[5] 12 राजा ने वे सारी
वेदियाँ भी ढा दीं जो यहूदा के राजाओं
ने आहाज के ऊपरी कमरे की छत[6] पर
खड़ी करवायी थीं। साथ ही, वे वेदियाँ
भी नष्ट कर दीं जो मनश्शे ने यहोवा
के भवन के दो आँगनों में खड़ी कर-
वायी थीं।[7] उसने उन वेदियों को चूर-चूर
कर दिया और उनकी धूल किदरोन घाटी
में बिखरा दी। 13 और जो ऊँची जगह
यरूशलेम के सामने और तबाही पहाड़*
के दक्षिण# में थीं, उनका भी राजा ने

अध्य. 23
1 2रा 22:4
2 2रा 21:1, 7; 2इत 34:4
3 1रा 12:28, 29
4 2रा 21:1, 3; यिर्म 8:1, 2
5 2रा 21:1, 7
6 व्य 7:25
7 2इत 34:4
8 लैव 18:22; व्य 23:17, 18; 1रा 15:11, 12; 1रा 22:46
9 यह 21:17, 19; 1रा 15:22
10 उत 21:31

दूसरा कॉल.
1 यहे 44:10; मला 2:7, 8
2 यह 15:8
3 यिर्म 7:31
4 2रा 16:2, 3; यिर्म 32:35
5 व्य 4:19; यहे 8:16
6 यिर्म 19:13; सप 1:4, 5
7 2रा 21:1, 5

23:4 *शब्दावली देखें।

23:10 *शब्दावली में "गेहन्ना" देखें। 23:11 *या "भोजन के कमरे।" 23:13 *यानी जैतून पहाड़, खासकर दक्षिणी कोना जिसे अपराध का पहाड़ भी कहा जाता है। #शा., "दायीं तरफ।" यानी जब कोई पूरब की तरफ मुँह करता है तो उसके दक्षिण में।

ऐसा हाल किया कि वहाँ पूजा न की जा सके। ये ऊँची जगह इसराएल के राजा सुलैमान ने सीदोनियों की घिनौनी देवी अशतोरेत के लिए, मोआब के घिनौने देवता कमोश के लिए और अम्मोनियों के घिनौने देवता मिलकोम[1] के लिए बनवायी थीं। **14** राजा योशियाह ने पूजा-स्तंभ चूर-चूर कर दिए, पूजा-लाठें काट डालीं[2] और उन्हें जिन-जिन जगहों पर खड़ा किया गया था वहाँ इंसानों की हड्डियाँ भर दीं। **15** उसने बेतेल की वेदी और ऊँची जगह भी ढा दी जिन्हें नबात के बेटे यारोबाम ने खड़ा करके इसराएल से पाप करवाया था।[3] फिर उसने वह जगह आग से भस्म कर दी, सबकुछ चूर-चूर कर दिया और पूजा-लाठ जला दी।[4]

16 जब योशियाह ने मुड़कर पहाड़ पर कब्रें देखीं तो उसने उनमें से हड्डियाँ निकलवायीं और उन्हें उस वेदी पर जला दिया ताकि वहाँ पूजा न की जा सके। इस तरह यहोवा की वह बात पूरी हुई जो उसने अपने सेवक से ऐलान करवायी थी। सच्चे परमेश्वर के उस सेवक ने भविष्यवाणी की थी कि ये सारी घटनाएँ होंगी।[5] **17** इसके बाद योशियाह ने पूछा, "यह कब्र किसकी है?" शहर के आदमियों ने उसे बताया, "यह कब्र सच्चे परमेश्वर के उस सेवक की है जो यहूदा से आया था।[6] और तूने बेतेल की वेदी के साथ अभी जो किया है, उसके बारे में उसी ने भविष्यवाणी की थी।" **18** तब राजा ने कहा, "उसकी कब्र छोड़ दो। उसकी हड्डियों को कोई हाथ न लगाए।" इसलिए उन्होंने उसकी हड्डियों को कुछ नहीं किया और सामरिया के भविष्यवक्ता की हड्डियों को भी नहीं छुआ।[7]

19 योशियाह ने सामरिया के शहरों की ऊँची जगहों पर बने सभी पूजा-घरों को भी मिटा दिया।[1] ये पूजा-घर बनवाकर इसराएल के राजाओं ने परमेश्वर का क्रोध भड़काया था। योशियाह ने इनका भी वही हाल किया जो उसने बेतेल के पूजा-घर का किया था।[2] **20** उसने ऊँची जगहों पर सेवा करनेवाले सभी पुजारियों को वेदियों पर बलि कर दिया और उन वेदियों पर इंसानों की हड्डियाँ जला दीं।[3] इसके बाद वह यरूशलेम लौट गया।

21 फिर राजा ने सब लोगों को आज्ञा दी, "अपने परमेश्वर यहोवा के लिए फसह मनाओ,[4] जैसे करार की इस किताब में लिखा है।"[5] **22** योशियाह के दिनों में जिस तरह का फसह मनाया गया, वैसा इसराएल के न्यायियों के ज़माने से अब तक नहीं मनाया गया था, न इसराएल के किसी राजा के दिनों में और न ही यहूदा के किसी राजा के दिनों में।[6] **23** यहोवा के लिए यह फसह योशियाह के राज के 18वें साल में यरूशलेम में मनाया गया।

24 योशियाह ने यहूदा और यरूशलेम से उन लोगों को भी निकाल दिया जो मरे हुओं से संपर्क करने का दावा करते थे और भविष्य बताते थे,[7] साथ ही उसने कुल देवताओं की मूरतें,[8] घिनौनी मूरतें* और दूसरी सारी घिनौनी चीज़ें हटा दीं। उसने यह सब इसलिए किया क्योंकि वह उस किताब में लिखे कानून का पालन करना चाहता था[9] जो याजक हिलकियाह को यहोवा के भवन में मिली थी।[10] **25** योशियाह ने

अध्य. 23
1 1रा 11:5, 7; सप 1:4, 5
2 निर्ग 23:24; व्य 7:5; 2इत 34:1, 3
3 1रा 12:28, 33
4 2इत 34:6, 7
5 1रा 13:2
6 1रा 13:1
7 1रा 13:30, 31

दूसरा कॉल.
1 1रा 12:25, 31; 1रा 13:32; 2रा 17:9
2 2इत 34:6, 7
3 1रा 13:2
4 2इत 35:1
5 निर्ग 12:3-14
6 2इत 35:18, 19
7 लैव 19:31; व्य 18:10, 11; 2रा 21:1, 6; यश 8:19
8 उत 31:19
9 गि 33:52; व्य 12:2
10 2रा 22:8

23:24 *इनका इब्रानी शब्द शायद "मल" के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

जैसे मूसा के पूरे कानून का पालन करके यहोवा के पास लौट आने में पूरी जान, पूरा दिल[1] और पूरी ताकत लगा दी, वैसे किसी और राजा ने नहीं किया। न उससे पहले कोई ऐसा राजा हुआ था और न उसके बाद।

26 फिर भी यहूदा पर यहोवा का क्रोध भड़का रहा क्योंकि मनश्शे ने बहुत-से दुष्ट काम करके उसे गुस्सा दिलाया था।[2] **27** यहोवा ने कहा, "मैं यहूदा को अपनी नज़रों से दूर कर दूँगा,[3] ठीक जैसे मैंने इसराएल को दूर कर दिया।[4] मैं यरूशलेम शहर को ठुकरा दूँगा जिसे मैंने चुना था और उस भवन को भी ठुकरा दूँगा जिसके बारे में मैंने कहा था, 'मेरा नाम उससे हमेशा जुड़ा रहेगा।'"[5]

28 योशियाह की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसके सभी कामों का ब्यौरा यहूदा के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है। **29** उसके दिनों में मिस्र का राजा फिरौन निको अश्शूर के राजा की मदद करने फरात नदी की तरफ निकला। तब राजा योशियाह, निको से युद्ध करने गया, मगर जब निको ने उसे देखा तो मगिद्दो में उसे मार डाला।[6] **30** योशियाह के सेवक उसकी लाश रथ में रखकर मगिद्दो से यरूशलेम ले आए और उसकी कब्र में उसे दफना दिया। फिर यहूदा के लोगों ने योशियाह के बेटे यहोआहाज का अभिषेक किया और उसके पिता की जगह उसे राजा बनाया।[7]

31 यहोआहाज[8] जब राजा बना तब वह 23 साल का था और उसने यरूशलेम में रहकर तीन महीने राज किया। उसकी माँ का नाम हमूतल[9] था जो लिब्ना के रहनेवाले यिर्मयाह की बेटी थी। **32** यहोआहाज अपने पुरखों की तरह ऐसे काम करने लगा जो यहोवा की नज़र में बुरे थे।[1] **33** फिरौन निको[2] ने उसे हमात के इलाके के रिबला में कैद कर दिया[3] ताकि वह यरूशलेम में राज न कर सके। फिर निको ने यहूदा देश पर 100 तोड़े* चाँदी और एक तोड़े सोने का जुरमाना लगा दिया।[4] **34** और फिरौन निको ने योशियाह की जगह उसके बेटे एल्याकीम को राजा बना दिया और उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रख दिया। मगर निको, यहोआहाज को मिस्र ले गया[5] जहाँ बाद में उसकी मौत हो गयी।[6] **35** यहोयाकीम ने फिरौन को चाँदी और सोने का जुरमाना भरा, मगर उसकी माँग पूरी करने के लिए उसे देश की ज़मीन पर कर लगाना पड़ा। यहोयाकीम ने हर आदमी की ज़मीन की कीमत के हिसाब से सोना-चाँदी वसूल किया ताकि फिरौन निको को अदा कर सके।

36 यहोयाकीम[7] जब राजा बना तब वह 25 साल का था और उसने यरूशलेम से यहूदा पर 11 साल राज किया।[8] उसकी माँ का नाम जबीदा था जो रूमा के रहनेवाले पदायाह की बेटी थी। **37** यहोयाकीम अपने पुरखों की तरह ऐसे काम करता रहा[9] जो यहोवा की नज़र में बुरे थे।[10]

24

यहोयाकीम के दिनों में बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर[11] ने यरूशलेम पर हमला किया और यहोयाकीम तीन साल तक उसके अधीन रहा। मगर फिर वह नबूकदनेस्सर के खिलाफ उठा और उससे बगावत करने लगा। **2** तब यहोवा, यहोयाकीम पर हमला करने के

23:33 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 23
1 व्य 4:29
2 2रा 21:11, 12; 2रा 24:3, 4; यिर्म 15:4
3 व्य 29:28; 2रा 25:11; यहे 23:33
4 2रा 18:11; 2रा 21:13
5 व्य 12:5; 1रा 8:29; 1रा 9:3
6 1रा 9:15; 2इत 35:20-25; जक 12:11
7 2इत 36:1, 2
8 यिर्म 22:11
9 2रा 24:18

दूसरा कॉल.
1 2रा 21:1, 2; 2रा 21:19-21
2 2रा 23:29
3 यिर्म 39:5; यिर्म 52:10
4 2इत 36:3
5 2इत 36:4, 5
6 यिर्म 22:11, 12
7 यिर्म 1:3; यिर्म 22:18, 19
8 2इत 36:5
9 2इत 28:24, 25; 2इत 33:1, 4
10 यिर्म 26:21; यिर्म 36:22-24

अध्य. 24
11 यिर्म 25:1; यिर्म 46:2; दान 1:1; दान 3:1; दान 4:33

लिए कसदियों,[1] मोआबियों, अम्मोनियों और सीरिया के लोगों के लुटेरे-दल भेजने लगा। वह उन सबको इसलिए भेजता रहा ताकि वे यहूदा को नाश कर दें। इस तरह यहोवा की वह बात पूरी हुई[2] जो उसने अपने सेवकों यानी भविष्यवक्ताओं से कहलवायी थी। **3** बेशक यहूदा पर यह संकट यहोवा के आदेश पर ही आया। परमेश्वर ने यहूदा को अपनी नज़रों से दूर करने के लिए ऐसा किया[3] क्योंकि मनश्शे ने बेहिसाब पाप किए थे[4] **4** और मासूमों के खून से पूरे यरूशलेम को भर दिया था।[5] यहोवा ने यहूदा को माफ करना न चाहा।[6]

5 यहोयाकीम की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसके सभी कामों का ब्यौरा यहूदा के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है।[7] **6** फिर यहोयाकीम की मौत हो गयी*[8] और उसकी जगह उसका बेटा यहोयाकीन राजा बना।

7 मिस्र के राजा ने फिर कभी अपनी सेनाओं को किसी से युद्ध करने नहीं भेजा, क्योंकि बैबिलोन के राजा ने उसका सारा इलाका ले लिया था[9] जो मिस्र घाटी*[10] से लेकर फरात नदी तक फैला था।[11]

8 जब यहोयाकीन[12] राजा बना तब वह 18 साल का था और उसने यरूशलेम से यहूदा पर तीन महीने राज किया।[13] उसकी माँ का नाम नहुश्ता था जो यरूशलेम के रहनेवाले एलनातान की बेटी थी। **9** यहोयाकीन अपने पिता की तरह यहोवा की नज़र में बुरे काम करता रहा। **10** उन दिनों बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर के सेवकों ने आकर यरूशलेम पर हमला कर दिया और शहर को घेर लिया।[1] **11** जब नबूकदनेस्सर के सेवक शहर को घेरे हुए थे तो उस दौरान वह शहर आया।

12 यहूदा का राजा यहोयाकीन, अपनी माँ और अपने सेवकों, हाकिमों और दरबारियों[2] के साथ बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर के सामने गया[3] और नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीन को बंदी बना लिया। यह घटना नबूकदनेस्सर के राज के आठवें साल में हुई थी।[4] **13** फिर नबूकदनेस्सर ने वहाँ यहोवा के भवन और राजमहल के खज़ाने से सारा धन निकाल लिया।[5] उसने सोने की उन सारी चीज़ों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जो इसराएल के राजा सुलैमान ने बनवाकर यहोवा के मंदिर में रखी थीं।[6] यह बिलकुल वैसे ही हुआ जैसे यहोवा ने भविष्यवाणी की थी। **14** नबूकदनेस्सर, पूरे यरूशलेम को यानी सभी हाकिमों,[7] वीर योद्धाओं, कारीगरों और धातु-कारीगरों* को बंदी बनाकर ले गया[8] जो कुल मिलाकर 10,000 थे। देश के सबसे गरीब लोगों को छोड़ वह सबको ले गया।[9] **15** इस तरह वह यहोयाकीन[10] को बंदी बनाकर बैबिलोन ले गया।[11] साथ ही, वह उसकी माँ, उसकी पत्नियों, दरबारियों और देश के सबसे खास-खास आदमियों को भी बंदी बनाकर यरूशलेम से बैबिलोन ले गया। **16** बैबिलोन का राजा यरूशलेम के सभी 7,000 योद्धाओं और 1,000 कारीगरों और धातु-कारीगरों* को बंदी बनाकर बैबिलोन ले गया। ये सभी बड़े-बड़े सूरमा थे जिन्हें युद्ध की तालीम दी गयी थी। **17** बैबिलोन के

24:6 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।" **24:7** *शब्दावली देखें।

24:14, 16 *या शायद, "सुरक्षा-दीवार बनानेवालों।"

अध्य. 24
1 हब 1:6
2 लैव 26:27, 28; व्य 28:15; 2रा 23:27
3 लैव 26:33; व्य 4:26
4 2रा 21:11; 2रा 23:26
5 2रा 21:16; यिर्म 2:34; यिर्म 19:4
6 यिर्म 15:1; विल 3:42
7 2इत 36:8
8 यिर्म 22:18, 19; यिर्म 36:30
9 यिर्म 46:2
10 गि 34:2, 5
11 उत 15:18; 1रा 4:21
12 यिर्म 24:1; यिर्म 37:1
13 2इत 36:8

दूसरा कॉल.
1 दान 1:1
2 यिर्म 29:1, 2
3 2इत 36:9, 10; यिर्म 24:1; यहे 17:12
4 यिर्म 52:28
5 2रा 20:13, 17
6 1रा 7:48-50; एज 1:7; दान 5:2
7 दान 1:3, 6
8 यिर्म 24:1
9 2रा 25:12
10 2रा 25:27; 1इत 3:17
11 यिर्म 22:24, 25

राजा ने यहोयाकीन की जगह उसके
चाचा मत्तन्याह[1] को राजा बनाया। उसने
मत्तन्याह का नाम बदलकर सिदकियाह[2]
रख दिया।

18 सिदकियाह जब राजा बना तब
वह 21 साल का था और उसने यरू-
शलेम में रहकर 11 साल राज किया।
उसकी माँ का नाम हमूतल था जो
लिब्ना के रहनेवाले यिर्मयाह की बेटी थी।
19 सिदकियाह, यहोयाकीम की तरह वे
सारे काम करता रहा जो यहोवा की नज़र
में बुरे थे।[3] **20** यरूशलेम और यहूदा
के साथ ये बुरी घटनाएँ इसलिए घटीं
क्योंकि यहोवा का क्रोध उन पर भड़का
हुआ था और आखिर में उसने उन्हें
अपनी नज़रों से दूर कर दिया। सिद-
कियाह ने बैबिलोन के राजा से बगा-
वत की।[4]

25 सिदकियाह के राज के नौवें साल
के दसवें महीने के दसवें दिन,
बैबिलोन का राजा नबूकदनेस्सर[5]
अपनी पूरी सेना लेकर यरूशलेम पर
हमला करने आया।[6] उसने यरू-
शलेम के बाहर छावनी डाली और उसके
चारों तरफ घेराबंदी की दीवार खड़ी
की।[7] **2** यह घेराबंदी सिदकियाह के
राज के 11वें साल तक रही। **3** चौथे
महीने के नौवें दिन, जब शहर में भयं-
कर अकाल था[8] और लोगों के पास
खाने को कुछ नहीं था,[9] **4** तब नबूकद-
नेस्सर के सैनिकों ने शहरपनाह में दरार
कर दी।[10] जब कसदी शहर को घेरे हुए
थे तब यरूशलेम के सभी सैनिक रात
के वक्त उस फाटक से भाग निकले,
जो राजा के बाग के पास दो दीवारों
के बीच था। और राजा सिदकियाह
अराबा के रास्ते से गया।[11] **5** मगर
कसदी सेना ने राजा का पीछा किया और
यरीहो के वीरानों में उसे पकड़ लिया।
तब राजा की सारी सेना उसे छोड़कर
इधर-उधर भाग गयी। **6** कसदी लोग
राजा सिदकियाह को पकड़कर[1] बैबिलोन
के राजा के पास रिबला ले गए और वहाँ
उसे सज़ा सुनायी गयी। **7** उन्होंने सिद-
कियाह की आँखों के सामने उसके बेटों
को मार डाला। फिर नबूकदनेस्सर ने
सिदकियाह की आँखें फोड़ दीं और वह
उसे ताँबे की बेड़ियों में जकड़कर बैबिलोन
ले गया।[2]

8 फिर बैबिलोन के राजा का सेवक
नबूजरदान,[3] जो पहरेदारों का सरदार
था, पाँचवें महीने के सातवें दिन यरू-
शलेम आया। यह नबूकदनेस्सर के राज
का 19वाँ साल था।[4] **9** नबूजरदान ने
यहोवा का भवन, राजमहल,[5] यरूशलेम
के सभी घर और सभी खास-खास आद-
मियों के घर जलाकर राख कर दिए।[6]
10 पहरेदारों के सरदार के साथ आयी
पूरी कसदी सेना ने यरूशलेम की शहर-
पनाह ढा दी।[7] **11** शहर में जो लोग
बचे थे, साथ ही जो लोग यहूदा के राजा
का साथ छोड़कर बैबिलोन के राजा की
तरफ चले गए थे, उन सबको नबूजरदान
बंदी बनाकर ले गया। उनके अलावा, देश
के बाकी लोगों को भी वह ले गया।[8]
12 मगर पहरेदारों के सरदार ने देश
के कुछ ऐसे लोगों को छोड़ दिया जो
बहुत गरीब थे ताकि वे अंगूरों के बाग
में काम करें और जबरन मज़दूरी करें।[9]
13 कसदियों ने यहोवा के भवन में ताँबे के
बने खंभों[10] के टुकड़े-टुकड़े कर दिए
और यहोवा के भवन में जो हथ-
गाड़ियाँ[11] और ताँबे का बड़ा हौद[12] था
उसके भी टुकड़े-टुकड़े कर दिए और
सारा ताँबा निकालकर बैबिलोन ले

अध्य. 24

1 1इत 3:15
2 2इत 36:10-12; यिर्म 37:1; यिर्म 52:1
3 यिर्म 24:8; यिर्म 38:5, 6; यहे 21:25
4 2इत 36:11, 13; यहे 17:12-15

अध्य. 25

5 यिर्म 27:8; यिर्म 43:10; दान 4:1
6 2इत 36:17; यहे 24:1, 2
7 यश 29:3; यिर्म 32:2, 28; यिर्म 39:1; यिर्म 52:4, 5; यहे 4:1, 2; यहे 21:21, 22
8 लैव 26:26; व्य 28:53; यिर्म 38:2; विल 4:4; यहे 5:10, 12
9 यिर्म 52:6-11
10 यिर्म 39:2, 4-7; यहे 33:21
11 यहे 12:12

दूसरा कॉल.

1 यिर्म 21:7
2 यिर्म 32:4, 5; यहे 12:12, 13
3 यिर्म 40:1
4 यिर्म 52:12-14; विल 4:12
5 1रा 7:1
6 2इत 36:19; भज 79:1; यश 64:11; यिर्म 34:22; विल 2:7; मी 3:12
7 नहे 1:3; यिर्म 39:8
8 यिर्म 15:2; यिर्म 39:9; यिर्म 52:15, 30; यहे 5:2
9 यिर्म 39:10; यिर्म 52:16
10 1रा 7:15
11 1रा 7:27
12 1रा 7:23

गए।[1] 14 वे मंदिर में इस्तेमाल होने-
वाली हंडियाँ, बेलचे, बाती बुझाने की
कैंचियाँ, प्याले और ताँबे की बाकी सारी
चीज़ें उठा ले गए। 15 पहरेदारों का
सरदार आग उठाने के करछे और कटोरे
भी ले गया जो शुद्ध सोने[2] और चाँदी के
बने थे।[3] 16 सुलैमान ने यहोवा के
भवन के लिए जो दो खंभे, बड़ा हौद और
हथ-गाड़ियाँ बनायी थीं उन सबमें इतना
ताँबा लगा था कि उसका तौल नहीं किया
जा सकता था।[4] 17 हर खंभे की ऊँचाई
18 हाथ* थी[5] और दोनों खंभों के ऊपर
ताँबे का एक-एक कंगूरा लगा था। दोनों
कंगूरों की ऊँचाई तीन-तीन हाथ थी। हर
कंगूरे के चारों तरफ जो जालीदार काम
किया गया था और अनार बनाए गए थे वे
भी ताँबे के थे।[6]

18 पहरेदारों के सरदार ने प्रधान
याजक सरायाह[7] को और उसके सहायक
याजक सपन्याह[8] और तीन दरबानों को
भी पकड़ लिया।[9] 19 वह शहर से उस
अधिकारी को ले गया जिसकी कमान के
नीचे सैनिक थे, साथ ही वह राजा के
पाँच सलाहकारों को भी ले गया जो शहर
में पाए गए। उसने सेनापति के सचिव
को भी पकड़ लिया जो देश के लोगों
को सेना के लिए इकट्ठा करता था। और
शहर में अब भी जो आम लोग बचे हुए
थे उनमें से 60 आदमियों को वह पकड़-
कर ले गया। 20 पहरेदारों का सर-
दार नबूजरदान[10] उन सबको बैबिलोन
के राजा के पास रिबला ले गया।[11]
21 बैबिलोन के राजा ने हमात[12] के
रिबला में उन सबको मार डाला। इस
तरह यहूदा को उसके देश से निकालकर
बँधुआई में ले जाया गया।[13]

22 बैबिलोन के राजा नबूकद-
नेस्सर ने यहूदा में जिन लोगों को छोड़
दिया था, उन पर उसने गदल्याह को
अधिकारी ठहराया।[1] गदल्याह, अही-
काम[2] का बेटा और शापान[3] का पोता
था।[4] 23 जब सभी सेनापतियों और
उनके आदमियों ने सुना कि बैबिलोन के
राजा ने गदल्याह को अधिकारी ठहराया
है तो वे फौरन गदल्याह के पास मिसपा
गए। ये थे नतन्याह का बेटा इश्मा-
एल, कारेह का बेटा योहानान, नतोपा के
रहनेवाले तनहूमेत का बेटा सरायाह, एक
माकाती आदमी का बेटा याजन्याह और
उनके आदमी।[5] 24 गदल्याह ने शपथ
खाकर सेनापतियों और उनके आदमियों
से कहा, “तुम लोग कसदियों के सेवक
बनने से मत डरो। तुम इसी देश में
रहो और बैबिलोन के राजा की सेवा
करो। तुम्हें कुछ नहीं होगा, तुम सलामत
रहोगे।”[6]

25 मगर सातवें महीने में इश्मा-
एल,[7] जो शाही खानदान* के नतन्याह
का बेटा और एलीशामा का पोता था,
दस आदमियों के साथ आया और उन्होंने
गदल्याह को मार डाला। इस तरह
गदल्याह मिसपा में उन यहूदियों और
कसदियों के संग मारा गया जो उसके
साथ थे।[8] 26 इसके बाद छोटे-बड़े सब
लोग, यहाँ तक कि सारे सेनापति मिस्र
भाग गए[9] क्योंकि वे कसदियों से डर
गए थे।[10]

27 यहूदा के राजा यहोयाकीन[11] की
बँधुआई के 37वें साल के 12वें
महीने के 27वें दिन, बैबिलोन के राजा
एवील-मरोदक ने यहोयाकीन को कैद
से रिहा कर दिया। एवील-मरोदक उसी

अध्य. 25
1 2रा 20:17; यिर्म 52:17-20
2 1रा 7:48, 50
3 2इत 24:14; 2इत 36:18; एज 1:7, 10, 11; दान 5:2
4 1रा 7:47
5 1रा 7:15
6 1रा 7:16, 20; यिर्म 52:21-23
7 एज 7:1
8 यिर्म 21:1, 2; यिर्म 29:25, 29
9 यिर्म 52:24-27
10 2रा 25:8; यिर्म 39:9; यिर्म 40:1
11 यिर्म 39:5
12 गि 34:2, 8; 1रा 8:65
13 व्य 28:36, 64; 2रा 23:27; यिर्म 25:11

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 39:13, 14
2 यिर्म 26:24
3 2रा 22:8
4 यिर्म 40:5, 6
5 यिर्म 40:7-9
6 यिर्म 27:12
7 यिर्म 40:15
8 यिर्म 41:1, 2
9 यिर्म 42:14; यिर्म 43:4, 7
10 यिर्म 41:17, 18
11 2रा 24:8, 12; यिर्म 24:1; मत 1:11

25:17 *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

25:25 *शा., “राज के बीज।”

साल राजा बना था।[1] 28 वह यहोया-
कीन के साथ प्यार से बात करता था
और उसने यहोयाकीन को उन राजाओं
से बढ़कर सम्मान का पद सौंपा जो बैबि-
लोन में थे। 29 यहोयाकीन ने कैद-
खाने के कपड़े बदल दिए और
उसने सारी ज़िंदगी एवील-मरोदक की
मेज़ पर भोजन किया। 30 यहोयाकीन
को सारी ज़िंदगी, रोज़-ब-रोज़ राजा के
यहाँ से खाना मिलता रहा।

अध्य. 25

1 यिर्म 52:31-34

पहला
इतिहास

सारांश

1 आदम से अब्राहम तक (1-27)
अब्राहम के वंशज (28-37)
एदोमी, उनके राजा और शेख (38-54)

2 इसराएल के 12 बेटे (1, 2)
यहूदा के वंशज (3-55)

3 दाविद के वंशज (1-9)
दाविद का राज-वंश (10-24)

4 यहूदा के दूसरे वंशज (1-23)
याबेस और उसकी प्रार्थना (9, 10)
शिमोन के वंशज (24-43)

5 रूबेन के वंशज (1-10)
गाद के वंशज (11-17)
हगरी लोगों पर जीत (18-22)
मनश्शे का आधा गोत्र (23-26)

6 लेवी के वंशज (1-30)
मंदिर के गायक (31-47)
हारून के वंशज (48-53)
लेवियों की बस्तियाँ (54-81)

7 इस्साकार के वंशज (1-5), बिन्यामीन के वंशज (6-12), नप्ताली के वंशज (13), मनश्शे के वंशज (14-19), एप्रैम के वंशज (20-29) और आशेर के वंशज (30-40)

8 बिन्यामीन के वंशज (1-40)
शाऊल की वंशावली (33-40)

9 बँधुआई से लौटने के बाद की वंशावली (1-34)
शाऊल की वंशावली दोहरायी गयी (35-44)

10 शाऊल और उसके बेटों की मौत (1-14)

11 दाविद का अभिषेक (1-3)
सिय्योन पर दाविद का कब्ज़ा (4-9)
दाविद के वीर योद्धा (10-47)

12 दाविद के राज का साथ देनेवाले (1-40)

13 संदूक किरयत-यारीम से लाया गया (1-14)
उज्जाह की मौत (9, 10)

14 दाविद का राज कायम हुआ (1, 2)
दाविद का परिवार (3-7)
पलिश्तियों की हार (8-17)

15 लेवी संदूक ढोकर यरूशलेम लाए (1-29)
मीकल ने दाविद को तुच्छ समझा (29)

16 संदूक एक तंबू में रखा गया (1-6)
दाविद का धन्यवाद का गीत (7-36)
"यहोवा राजा बना है!" (31)
संदूक के सामने सेवा (37-43)

17 दाविद मंदिर नहीं बनाएगा (1-6)
दाविद से राज का करार (7-15)
उसकी धन्यवाद की प्रार्थना (16-27)

18 दाविद की जीत (1-13)
उसका प्रशासन (14-17)

19 अम्मोनियों ने दूतों का अपमान किया (1-5)
अम्मोन और सीरिया पर जीत (6-19)

20 रब्बाह पर कब्ज़ा (1-3)
ऊँची कद-काठीवाले पलिश्ती मारे गए (4-8)

21 दाविद ने गिनती लेकर आज्ञा तोड़ी (1-6)
यहोवा से सज़ा मिली (7-17)
दाविद ने वेदी बनायी (18-30)

22 मंदिर की तैयारियाँ (1-5)
सुलैमान को हिदायतें (6-16)
हाकिमों को आज्ञा (17-19)

23 दाविद ने लेवियों को संगठित किया (1-32)
हारून और बेटे अलग किए गए (13)

24 याजकों के 24 दल (1-19)
बाकी लेवियों के काम (20-31)

25 भवन के लिए संगीतकार और गायक (1-31)

26 पहरेदारों के दल (1-19)
खज़ानची और दूसरे अधिकारी (20-32)

27 राजा की सेवा में अधिकारी (1-34)

28 दाविद का भाषण (1-8)
सुलैमान को हिदायतें; मंदिर का नमूना (9-21)

29 मंदिर बनाने के लिए दान (1-9)
दाविद की प्रार्थना (10-19)
लोग खुश; सुलैमान का राज (20-25)
दाविद की मौत (26-30)

---

1 आदम,
शेत,[1]
एनोश,
2 केनान,
महल-लेल,[2]
येरेद,[3]
3 हनोक,[4]
मतूशेलह,
लेमेक,[5]
4 नूह,[6]
शेम,[7] हाम और येपेत।
5 येपेत के बेटे थे गोमेर, मागोग,
मादई, यावान, तूबल,[8] मेशेक[9] और
तीरास।[10]
6 गोमेर के बेटे थे अशकनज, रीपत
और तोगरमा।[11]
7 यावान के बेटे थे एलीशाह, तर-
शीश, कित्तीम और रोदानी।
8 हाम के बेटे थे कूश,[12] मिसरैम, पुट
और कनान।
9 कूश के बेटे थे सबा,[13] हवीला,
सबता, रामा[14] और सब-तका।
रामा के बेटे थे शीबा और ददान।
10 कूश का एक और बेटा था, निम-
रोद।[1] निमरोद दुनिया का पहला ऐसा
आदमी था जिसने बहुत ताकत हासिल
की थी।
11 मिसरैम के बेटे थे लूदी,[2] अनामी,
लहाबी, नपतूही, 12 पत्रूसी,[3] कसलूही
(इससे पलिश्ती जाति[4] निकली) और
कप्तोरी।[5]
13 कनान के बेटे थे उसका पहलौठा
सीदोन,[6] फिर हित्त,[7] 14 यबूसी,[8]
एमोरी,[9] गिरगाशी,[10] 15 हिव्वी,[11]
अरकी, सीनी, 16 अरवादी,[12] समारी
और हमाती।
17 शेम के बेटे थे एलाम,[13]
अस्सूर,[14] अरपक्षद, लूद, अराम,
और* ऊज़, हूल, गेतेर और मश।[15]
18 अरपक्षद का बेटा शेलह[16] था
और शेलह का बेटा एबेर था।
19 एबेर के दो बेटे थे। एक का

अध्य. 1
1 उत 4:25
2 उत 5:12, 15
3 उत 5:18
4 इब्र 11:5
5 उत 5:25, 28
6 उत 5:29
7 उत 11:10
8 यश 66:19
9 यहे 27:13
10 उत 10:2
11 यहे 27:14
12 यश 11:11
13 भज 72:10
14 यहे 27:22

दूसरा कॉल.
1 उत 10:8, 9
2 यिर्म 46:9
3 यहे 29:14
4 यह 13:2, 3
5 व्य 2:23
आम 9:7
6 यश 23:2
7 उत 10:15-18
8 न्या 1:21
9 उत 15:16
गि 13:29
व्य 3:8
10 व्य 7:1
11 यह 9:3, 7
12 यहे 27:11
13 एज 4:9
14 यहे 27:23
15 उत 10:22, 23
16 उत 11:14

1:17 *आगे अराम के बेटों के नाम हैं। उत 10:23 देखें।

नाम पेलेग*[1] था क्योंकि उसके दिनों में
धरती# का बँटवारा हुआ था। उसके भाई
का नाम योकतान था।

20 योकतान के बेटे थे अल्मोदाद,
शेलेप, हसरमावेत, येरह,[2] **21** हदो-
राम, ऊजाल, दिक्ला, **22** ओबाल,
अबीमाएल, शीबा, **23** ओपीर,[3]
हवीला[4] और योबाब। ये सब योकतान के
बेटे थे।

24 शेम,
अरपक्षद,
शेलह,
25 एबेर,
पेलेग,[5]
रऊ,[6]
26 सरूग,[7]
नाहोर,[8]
तिरह,[9]
27 अब्राम यानी अब्राहम।[10]

28 अब्राहम के बेटे थे इसहाक[11] और
इश्माएल।[12]

29 इनसे ये कुल निकलेः इश्माएल
का पहलौठा नबायोत,[13] फिर केदार,[14]
अदबेल, मिबसाम,[15] **30** मिशमा, दूमा,
मस्सा, हदद, तेमा, **31** यतूर, नापीश
और केदमा। ये सब इश्माएल के बेटे थे।

32 अब्राहम की उप-पत्नी कतूरा[16] से
उसके ये बेटे हुएः जिमरान, योक्षान,
मदान, मिद्यान,[17] यिशबाक और शूह।[18]

योक्षान के बेटे थे शीबा और ददान।[19]

33 मिद्यान के बेटे थे एपा,[20] एपेर,
हानोक, अबीदा और एलदा।

ये सब कतूरा के बेटे थे।

34 अब्राहम का बेटा इसहाक था।[21]
इसहाक के बेटे थे एसाव[22] और इस-
राएल।[23]

1:19 *मतलब "बँटवारा।" #या "धरती
की आबादी।"

अध्य. 1
1 उत 11:19
2 उत 10:26-29
3 1रा 9:28
4 उत 2:11
उत 25:18
5 उत 11:19
6 उत 11:21
7 उत 11:23
8 उत 11:25
9 उत 11:26
10 उत 17:5
11 उत 21:3
12 उत 16:11, 12
13 उत 28:9
14 यहे 27:21
15 उत 25:13-15
16 उत 25:1-4
17 उत 37:28
18 अय 2:11
19 यश 21:13
20 यश 60:6
21 प्रेष 7:8
22 उत 25:25
23 उत 32:28

दूसरा कॉल.
1 उत 36:4, 5
2 ओब 9
3 उत 36:11, 12
4 उत 36:13
5 उत 36:8
6 उत 36:20, 21
7 उत 36:22
8 उत 36:23, 24
9 उत 36:25, 26
10 1इत 1:38
11 उत 36:27, 28
12 उत 32:3
13 उत 36:31-39
14 यिर्म 49:13

35 एसाव के बेटे थे एलीपज, रूएल,
यूश, यालाम और कोरह।[1]

36 एलीपज के बेटे थे तेमान,[2]
ओमार, सपो, गाताम, कनज, तिम्ना और
अमालेक।[3]

37 रूएल के बेटे थे नहत, जेरह,
शम्माह और मिज्जा।[4]

38 सेईर[5] के बेटे थे लोतान, शोबाल,
सिबोन, अना, दीशोन, एजेर और
दीशान।[6]

39 लोतान के बेटे थे होरी और
होमाम। लोतान की बहन तिम्ना थी।[7]

40 शोबाल के बेटे थे आल्वान, मान-
हत, एबाल, शपो और ओनाम।

सिबोन के बेटे थे अय्या और अना।[8]

41 अना का बेटा था* दीशोन।

दीशोन के बेटे थे हेमदान, एशबान,
यित्रान और करान।[9]

42 एजेर[10] के बेटे थे बिलहान,
जावान और अकान।

दीशान के बेटे थे ऊज़ और अरान।[11]

43 इसराएलियों* में राजाओं का दौर
शुरू होने से पहले एदोम के इलाके[12] में
जो राजा हुआ करते थे,[13] वे ये हैंः
बओर का बेटा बेला जिसका शहर
दिनहाबा था। **44** बेला की मौत के
बाद योबाब ने राज किया। योबाब,
बोसरा[14] के रहनेवाले जेरह का बेटा था।
45 योबाब की मौत के बाद हूशाम ने
राज किया जो तेमानी लोगों के इलाके से
था। **46** हूशाम की मौत के बाद बदद
के बेटे हदद ने राज किया। यह वही
हदद था जिसने मोआब के इलाके में
मिद्यान को हराया था। उसका शहर
अवीत था। **47** हदद की मौत के बाद

1:41 *शा., "के बेटे थे।" **1:43** *शा.,
"इसराएल के बेटों।"

समला ने राज किया जो मसरेका से था।
48 समला की मौत के बाद शौल ने राज
किया, जो नदी के पासवाले रहोबोत शहर
से था। 49 शौल की मौत के बाद अक-
बोर के बेटे बाल-हानान ने राज किया।
50 बाल-हानान की मौत के बाद हदद ने
राज किया जिसका शहर पाऊ था।
उसकी पत्नी का नाम महेतबेल था जो
मत्रेद की बेटी थी। और मत्रेद, मेज़ाहाब
की बेटी थी। 51 फिर हदद की मौत हो
गयी।

एदोम के शेख* ये थे: शेख तिम्ना, शेख
अलवा, शेख यतेत,[1] 52 शेख ओहो-
लीबामा, शेख एलाह, शेख पीनोन,
53 शेख कनज, शेख तेमान, शेख
मिबसार, 54 शेख मगदीएल और शेख
ईराम। ये सभी एदोम के शेख थे।

2 ये इसराएल के बेटे थे: रूबेन,[2]
शिमोन,[3] लेवी,[4] यहूदा,[5] इस्सा-
कार,[6] जबूलून,[7] 2 दान,[8] यूसुफ,[9]
बिन्यामीन,[10] नप्ताली,[11] गाद[12] और
आशेर।[13]

3 यहूदा के बेटे थे एर, ओनान और
शेलह। यहूदा के ये तीनों बेटे एक कनानी
औरत से पैदा हुए थे जो शूआ की
बेटी थी।[14] मगर यहूदा का पहलौठा एर
यहोवा की नज़र में दुष्ट था इसलिए पर-
मेश्वर ने उसे मार डाला। 4 यहूदा के
बेटे पेरेस[15] और जेरह, उसकी बहू
तामार[16] से पैदा हुए। यहूदा के कुल
मिलाकर पाँच बेटे थे।

5 पेरेस के बेटे थे हेसरोन और
हामूल।

6 जेरह के बेटे थे जिमरी, एतान,
हेमान, कलकोल और देरा। उसके कुल
पाँच बेटे थे।

7 करमी का बेटा था* आकार# जो
इसराएल पर आफत△ ले आया था।[1]
वह उन चीज़ों के मामले में विश्वासयोग्य
नहीं रहा जो नाश के लायक ठहरायी
गयी थीं।[2]

8 एतान का बेटा था* अजरयाह।

9 हेसरोन के बेटे थे यरहमेल,[3] राम[4]
और कलूबै।*

10 राम का बेटा अम्मीनादाब था।[5]
अम्मीनादाब का बेटा नहशोन था,[6] जो
यहूदा के वंशजों का प्रधान था। 11 नह-
शोन का बेटा सलमा था।[7] सलमा का
बेटा बोअज़[8] था। 12 बोअज़ का बेटा
ओबेद था। ओबेद का बेटा यिशै था।[9]
13 यिशै के बेटे थे उसका पहलौठा एली-
आब, दूसरा अबीनादाब,[10] तीसरा
शिमा,[11] 14 चौथा नतनेल, पाँचवाँ
रद्दै, 15 छठा ओसेम और सातवाँ
दाविद।[12] 16 उनकी बहनें थीं सरूयाह
और अबीगैल।[13] सरूयाह के तीन बेटे
थे अबीशै,[14] योआब[15] और असा-
हेल।[16] 17 अबीगैल से अमासा[17] पैदा
हुआ। अमासा का पिता इश्माएली
येतेर था।

18 कालेब* (जो हेसरोन का बेटा था)
की पत्नी अजूबाह से और यरीओत से
उसके बेटे हुए। उसके बेटे थे येशेर,
शोबाब और अरदोन। 19 अजूबाह की
मौत के बाद कालेब ने एप्रात से शादी
की और एप्रात से उसका बेटा हूर[18] पैदा

1:51 *शेख, गोत्र का प्रधान था।

2:7, 8 *शा., "के बेटे थे।" 2:7 #मतलब "आफत लानेवाला; घोर संकट लानेवाला।" यह 7:1 में इसका दूसरा नाम आकान है। △या "मुसीबत; घोर संकट।" 2:9 *आय. 18, 19, 42 में इसका दूसरा नाम कालेब है। 2:18 *आय. 9 में इसका दूसरा नाम कलूबै है।

अध्य. 1
1 उत 36:40-43

अध्य. 2
2 उत 29:32, उत 49:3, 4
3 उत 29:33
4 उत 29:34, उत 49:5-7
5 उत 29:35, उत 49:8-12, इब्र 7:14
6 उत 30:18, उत 49:14, 15
7 उत 30:20, उत 49:13
8 उत 30:4-6, उत 49:16-18
9 उत 30:22, 24, उत 49:22-26
10 उत 35:16, 18, उत 49:27
11 उत 30:7, 8, उत 49:21
12 उत 30:9-11, उत 49:19
13 उत 30:12, 13, उत 49:20
14 उत 38:2-5
15 लूक 3:23, 33
16 उत 38:11

दूसरा कॉल.
1 यह 7:15, 18
2 यह 6:18, यह 22:20
3 1शम 27:10
4 रूत 4:19-21, मत 1:3
5 मत 1:4, 5
6 गि 2:3
7 लूक 3:23, 32
8 रूत 2:1
9 रूत 4:17, 22
10 1शम 17:13
11 1शम 16:6-10
12 1शम 16:13, 1शम 17:12, मत 1:6
13 2शम 17:25
14 2शम 21:17, 2शम 23:18, 19
15 1इत 11:6
16 2शम 2:18, 2शम 3:30, 2शम 23:24
17 2शम 19:13, 1रा 2:5
18 निर्ग 17:12, निर्ग 24:14

हुआ। 20 हूर का बेटा ऊरी था। ऊरी का बेटा बसलेल था।[1]

21 बाद में हेसरोन ने माकीर[2] (जो गिलाद का पिता था)[3] की बेटी से शादी की। तब वह 60 साल का था। जब हेसरोन ने उसके साथ संबंध रखे तो उसका बेटा सगूब पैदा हुआ। 22 सगूब का बेटा याईर[4] था जिसके गिलाद के इलाके[5] में 23 शहर थे। 23 बाद में गशूर[6] और सीरिया[7] ने उनसे हव्वोत-याईर[8] ले लिया। साथ ही कनात[9] और उसके आस-पास के नगर भी ले लिए। उन्होंने कुल मिलाकर 60 शहर ले लिए। ये सभी गिलाद के पिता माकीर के वंशज थे।

24 कालेब-एप्राता में हेसरोन[10] की मौत के बाद, हेसरोन की पत्नी अबियाह से उसका बेटा अशहूर[11] पैदा हुआ जो तकोआ[12] का पिता था।*

25 हेसरोन के पहलौठे यरहमेल के बेटे ये थे: पहलौठा राम, फिर बूना, ओरेन, ओसेम और अहियाह। 26 यरहमेल की एक और पत्नी थी जिसका नाम अतारा था। वह ओनाम की माँ थी। 27 यरहमेल के पहलौठे राम के बेटे थे मास, यामीन और एकेर। 28 ओनाम के बेटे थे शम्मै और यादा। शम्मै के बेटे थे नादाब और अबीशूर। 29 अबीशूर की पत्नी का नाम अबीहैल था जिसने उसके बेटे अहबान और मोलीद को जन्म दिया। 30 नादाब के बेटे थे सेलेद और अप्पैम। मगर सेलेद बेऔलाद मर गया। 31 अप्पैम का बेटा था* यिशी। यिशी का बेटा था* शेशान और शेशान का बेटा था* अहलै। 32 शम्मै के भाई यादा के बेटे थे येतेर और योनातान। मगर येतेर बेऔलाद मर गया। 33 योनातान के बेटे थे पीलेत और ज़ाज़ा। ये सभी यरहमेल के वंशज थे।

34 शेशान का कोई बेटा नहीं था सिर्फ बेटियाँ थीं। शेशान का एक मिस्री सेवक था जिसका नाम यरहा था। 35 शेशान ने अपनी बेटी की शादी अपने सेवक यरहा से करायी जिसने यरहा के बेटे अत्तै को जन्म दिया। 36 अत्तै का बेटा नातान था। नातान का बेटा जाबाद था। 37 जाबाद का बेटा एपलाल था। एपलाल का बेटा ओबेद था। 38 ओबेद का बेटा येहू था। येहू का बेटा अजरयाह था। 39 अजरयाह का बेटा हेलेस था। हेलेस का बेटा एलिआसा था। 40 एलिआसा का बेटा सिस्मै था। सिस्मै का बेटा शल्लूम था। 41 शल्लूम का बेटा यकम्याह था। यकम्याह का बेटा एलीशामा था।

42 यरहमेल के भाई कालेब*[1] के बेटे ये थे: उसका पहलौठा मेशा जो ज़ीफ का पिता था और मारेशाह के बेटे। मारेशाह का बेटा हेब्रोन था। 43 हेब्रोन के बेटे थे कोरह, तप्पूह, रेकेम और शमा। 44 शमा का बेटा रहम था, जो योरकाम का पिता था। रेकेम का बेटा शम्मै था। 45 शम्मै का बेटा माओन था। माओन बेत-सूर[2] का पिता था। 46 कालेब की उप-पत्नी एपा ने हारान, मोसा और गाजेज को जन्म दिया। हारान का बेटा गाजेज था। 47 याहदै के बेटे थे रेगेम, योताम, गेशान, पेलेत, एपा और शाफ। 48 कालेब की उप-पत्नी माका ने शेबेर और तिरहाना को जन्म दिया। 49 बाद में माका ने इनको जन्म दिया:

2:24 *इस अध्याय में कुछ नाम लोगों के नहीं बल्कि जगहों के हैं। उन आयतों में “पिता” का शायद मतलब उस जगह को बसानेवाला है। 2:31 *शा., “के बेटे थे।”

2:42 *आय. 9 में इसका दूसरा नाम कलूबै है।

अध्य. 2
1 निर्ग 31:2-5, निर्ग 36:1, निर्ग 37:1
2 उत 50:23, 1इत 7:14
3 गि 26:29, यह 17:1
4 व्य 3:14, यह 13:29, 30
5 गि 32:40, 41
6 2शम 3:3, 2शम 13:38
7 2शम 8:6
8 1रा 4:13
9 गि 32:42
10 उत 46:12
11 1इत 4:5
12 नहे 3:5

दूसरा कॉल.
1 1इत 2:9
2 यह 15:20, 58, नहे 3:16

शाफ जो मदमन्ना[1] का पिता था, शेवा जो
मकबेना और गिबा[2] का पिता था। कालेब
की बेटी अकसा थी।[3] 50 ये सभी
कालेब के वंशज थे।

एप्राता के पहलौठे हूर के बेटे
ये थे: शोबाल जो किरयत-यारीम[4] का
पिता था, 51 सलमा जो बेतलेहेम[5]
का पिता था और हारेप जो बेत-
गादेर का पिता था। 52 शोबाल जो
किरयत-यारीम का पिता था, उसके
बेटे ये थे: हारोए और मनुहोत के
आधे निवासी। 53 किरयत-यारीम
में रहनेवाले घराने ये थे: यित्री,[6] पूती,
शूमाती और मिश्राई। इन्हीं में से सोरा
और एशताओल[7] के निवासी निकले।
54 सलमा के बेटे थे बेतलेहेम,[8]
नतोपा और अतरोत-बेत-योआब के
निवासी, मानहत के आधे निवासी और
सोरी लोग। 55 याबेस में रहनेवाले
शास्त्रियों के घराने थे तिराती, शिमाती
और सूकाती। ये वे केनी लोग[9] थे जो
हम्मत के वंशज थे। हम्मत, रेकाब[10] के
घराने का पिता था।

3 दाविद के ये बेटे हेब्रोन में पैदा हुए
थे:[11] पहलौठा अम्नोन[12] जिसकी
माँ यिजरेली अहीनोअम[13] थी, दूसरा
दानियेल जिसकी माँ करमेल की रहने-
वाली अबीगैल[14] थी, 2 तीसरा अब-
शालोम[15] जो माका का बेटा था (माका,
गशूर के राजा तल्मै की बेटी थी), चौथा
अदोनियाह[16] जो हग्गीत का बेटा था,
3 पाँचवाँ शपत्याह जिसकी माँ अबीतल
थी और छठा यित्राम जिसकी माँ दाविद
की पत्नी एग्ला थी। 4 दाविद के ये
छः बेटे हेब्रोन में पैदा हुए थे। उसने
हेब्रोन में रहकर साढ़े सात साल और
यरूशलेम में रहकर 33 साल राज
किया था।

5 दाविद के ये बेटे यरूशलेम में पैदा
हुए थे:[1] शिमा, शोबाब, नातान[2] और
सुलैमान।[3] इन चारों की माँ बतशेबा[4]
थी जो अम्मीएल की बेटी थी। 6 दाविद
के नौ और बेटे थे: यिभार, एलीशामा,
एलीपेलेत, 7 नोगाह, नेपेग, यापी,
8 एलीशामा, एल्यादा और एलीपेलेत।
9 ये सभी दाविद के बेटे थे और उनकी
बहन का नाम तामार था।[5] इनके अलावा
दाविद की उप-पत्नियों से भी उसके
बेटे हुए।

10 सुलैमान का बेटा रहूबियाम था,[6]
रहूबियाम का बेटा अबियाह[7] था, अबि-
याह का आसा,[8] आसा का यहो-
शापात,[9] 11 यहोशापात का यहो-
राम,[10] यहोराम का अहज्याह,[11]
अहज्याह का यहोआश,[12] 12 यहो-
आश का अमज्याह,[13] अमज्याह का
अजरयाह,[14] अजरयाह का योताम,[15]
13 योताम का आहाज,[16] आहाज का
हिजकियाह,[17] हिजकियाह का मनश्शे,[18]
14 मनश्शे का आमोन[19] और आमोन
का बेटा योशियाह[20] था। 15 योशि-
याह के बेटे ये थे: पहलौठा योहा-
नान, दूसरा यहोयाकीम,[21] तीसरा सिद-
कियाह[22] और चौथा शल्लूम।
16 यहोयाकीम का बेटा यकोन्याह[23]
था और यकोन्याह का बेटा सिद-
कियाह था। 17 बंदी यकोन्याह के बेटे
ये थे: शालतीएल, 18 मल्कीराम, पदा-
याह, शेनस्सर, यकम्याह, होशामा और
नदबायाह। 19 पदायाह के बेटे थे
जरुबाबेल[24] और शिमी। जरुबाबेल के
बेटे थे मशुल्लाम और हनन्याह (और
उनकी बहन शलोमीत थी)। 20 उसके
पाँच और बेटे थे हशूबा, ओहेल,
बेरेक्याह, हसदयाह और यूशब-हेसेद।
21 हनन्याह के बेटे थे पलत्याह और

अध्य. 2
1 यह 15:21, 31
2 यह 15:20, 57
3 यह 15:16, 17
4 यह 15:9, 12
1इत 13:5
5 उत 35:19
यूह 7:42
6 1इत 11:10, 40
7 यह 15:20, 33
8 मत 2:1
9 न्या 1:16
न्या 4:11
1शम 15:6
10 2रा 10:15
यिर्म 35:6, 19

अध्य. 3
11 2शम 3:2-5
12 2शम 13:32
13 1शम 25:43
14 1शम 25:2, 39
15 2शम 13:28, 37
2शम 15:10
2शम 18:14
16 1रा 1:5, 11
1रा 2:24

दूसरा कॉल.
1 2शम 5:13-16
2 लूक 3:23, 31
3 मत 1:7
4 2शम 11:3, 27
5 2शम 13:1
6 1रा 11:43
7 2इत 13:1
8 2इत 14:1
9 2इत 20:31
10 2इत 21:5
11 2इत 22:2
12 2इत 24:1
13 2इत 25:1
14 2रा 14:21
15 2इत 27:1
16 2इत 28:1
17 2इत 29:1
18 2रा 21:1
19 2रा 21:19
20 2रा 22:1
21 2रा 23:34
2इत 36:5
22 2रा 24:17
2इत 36:11
23 2रा 24:6, 8
2रा 25:27
24 एज 5:2
मत 1:12
लूक 3:23, 27

यशाया। यशाया का बेटा था* रपायाह, रपायाह का बेटा# अरनान, अरनान का बेटा# ओबद्याह और ओबद्याह का बेटा था* शकन्याह। **22** शकन्याह के बेटे ये थे: शमायाह और उसके बेटे हत्तूश, यिगाल, बारीह, नारयाह और शापात। ये कुल मिलाकर छः थे। **23** नारयाह के तीन बेटे थे: एल्योएनै, हिजकायाह और अजरीकाम। **24** एल्योएनै के सात बेटे थे: होदव्याह, एल्याशीब, पलायाह, अक्कूब, योहानान, दलायाह और अनानी।

4 यहूदा के बेटे थे पेरेस,[1] हेसरोन,[2] करमी, हूर[3] और शोबाल।[4] **2** शोबाल का बेटा रायाह था और रायाह का बेटा यहत। यहत के बेटे थे अहूमै और लहद। ये सोराई घराने थे।[5] **3** एताम[6] के पिता के बेटे थे: यिजरेल, यिश्मा और यिदबाश (और उनकी बहन का नाम हसलेल-पोनी था) **4** और पनूएल, गदोर का पिता था और एजेर, हूशा का पिता था। ये हूर[7] के बेटे थे जो एप्राता का पहलौठा था और बेतलेहेम[8] का पिता था। **5** तकोआ[9] के पिता अशहूर[10] की दो पत्नियाँ थीं, हेला और नारा। **6** नारा से अशहूर के ये बेटे हुए: अहुज्जाम, हेपेर, तेमनी और हाहशतारी। ये नारा के बेटे थे। **7** हेला के बेटे थे सेरेत, यिसहार और एतनान। **8** कोस, आनूब और सोबेबा का और हारूम के बेटे अहरहेल के घरानों का पिता था।

9 याबेस ने अपने भाइयों से ज़्यादा सम्मान पाया और उसकी माँ ने यह कहकर उसका नाम याबेस* रखा, "मैंने बहुत दर्द झेलकर इसे जन्म दिया है।" **10** याबेस ने इसराएल के परमेश्वर से यह प्रार्थना की थी: "हे परमेश्वर, मुझे आशीष दे और मेरी सरहद बढ़ा दे। तेरा हाथ मुझ पर हो और मुझे मुसीबतों से बचाए रखे ताकि मुझे कोई खतरा न हो!" इसलिए परमेश्वर ने उसकी खातिर वही किया जो उसने माँगा था।

11 शूहा के भाई कलूब का बेटा महीर था। महीर का बेटा एशतोन था। **12** एशतोन बेत-रापा, पासेह और तहिन्ना का पिता था और तहिन्ना, ईर-नाहाश का पिता था। ये रेका के आदमी थे। **13** कनज के बेटे थे ओत्नीएल[1] और सरायाह। ओत्नीएल का बेटा था* हतत। **14** मोनोतै का बेटा ओप्रा था। सरायाह का बेटा योआब था। और योआब, गेहराशीम* के निवासियों का पिता था। यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि वे लोग कारीगर थे।

15 यपुन्ने के बेटे कालेब[2] के बेटे थे ईरू, एलाह और नाअम। एलाह का बेटा था* कनज। **16** यहल्ले-लेल के बेटे थे ज़ीफ, जीपा, तीरया और असरेल। **17** एजराह के बेटे थे येतेर, मेरेद, एपेर और यालोन। वह* गर्भवती हुई और उसने मिरयम, शम्मै और यिशबह को जन्म दिया जो एश्तमोआ का पिता था। **18** (उसकी यहूदी पत्नी ने येरेद, हेबेर और यकूतीएल को जन्म दिया। येरेद गदोर का पिता था, हेबेर सोको का पिता था और यकूतीएल जानोह का पिता था।) ये फिरौन की बेटी बित्या के बेटे थे जिससे मेरेद ने शादी की थी।

3:21; 4:13, 15 *शा., "के बेटे थे।" **3:21** #शा., "के बेटे।" **4:9** *नाम याबेस शायद उस इब्रानी शब्द से संबंध रखता है जिसका मतलब "दर्द" है।

4:14 *मतलब "कारीगरों की घाटी।" **4:17** *यह शायद आय. 18 में बतायी बित्या है।

अध्य. 4
1 उत 38:29 गि 26:20 रूत 4:18 मत 1:3
2 उत 46:12 1इत 2:5
3 निर्ग 17:12 निर्ग 24:14 1इत 2:19
4 1इत 2:50
5 1इत 2:53
6 2इत 11:5, 6
7 1इत 2:19
8 मी 5:2
9 2इत 11:5, 6
10 1इत 2:24

दूसरा कॉल.
1 यह 15:16, 17 न्या 3:9, 11
2 गि 32:11, 12 यह 15:13

19 नहम की बहन यानी होदियाह की
पत्नी के बेटे, गेरेमी कीला और माकाती
एश्तमोआ के पिता थे। 20 और
शीमोन के बेटे थे अम्नोन, रिन्‍ना, बेन-
हानान और तीलोन। यिशी के बेटे जोहेत
और बेन-जोहेत थे।

21 यहूदा के बेटे शेलह के बेटे[1] ये थे:
एर जो लेका का पिता था, लादा जो मारे-
शाह का पिता था, अशबेआ के घराने के
परिवार जो बेहतरीन कपड़े तैयार करने
का काम करते थे, 22 योकीम, कोजेबा
के आदमी, योआश और सराप जिन्होंने
मोआबी औरतों से शादी की थी और
याशूब-लेहेम। ये पुराने ज़माने के दस्ता-
वेज़ हैं।* 23 ये कुम्हार थे जो नताईम
और गदेरा में रहते थे। वे वहाँ रहकर
राजा के लिए काम करते थे।

24 शिमोन के बेटे थे[2] नमूएल,
यामीन, यारीब, जेरह और शौल।[3]
25 शौल का बेटा शल्लूम था, शल्लूम
का मिबसाम और मिबसाम का बेटा
मिशमा था। 26 मिशमा के बेटे थे:
उसका बेटा हम्मूएल, हम्मूएल का जक्कूर
और जक्कूर का बेटा शिमी। 27 शिमी
के 16 बेटे और 6 बेटियाँ थीं। मगर
उसके भाइयों के ज़्यादा बेटे नहीं थे और
उनके किसी भी घराने में इतने ज़्यादा
आदमी नहीं थे जितने यहूदा के
आदमी थे।[4] 28 वे इन जगहों में रहते
थे: बेरशेबा,[5] मोलादा,[6] हसर-शूआल,[7]
29 बिल्हा, एसेम,[8] तोलाद, 30 बतू-
एल,[9] होरमा,[10] सिकलग,[11] 31 बेत-
मरकाबोत, हसर-सूसीम,[12] बेत-बिरी
और शारैम। दाविद के राज तक ये शहर
उनके थे।

32 उनकी बस्तियाँ थीं एताम, ऐन,
रिम्मोन, तोकेन और आशान,[13] यानी
पाँच शहर, 33 साथ ही दूर बाल तक
की वे बस्तियाँ जो इन शहरों के आस-
पास थीं। ये उनकी वंशावलियाँ और
उन जगहों के नाम हैं जहाँ वे रहते
थे। 34 और मशोबाब, यम्लेक, योशा
जो अमज्याह का बेटा था, 35 योएल,
येहू जो योशिब्याह का बेटा, सरायाह
का पोता और असीएल का परपोता था,
36 एल्योएनै, याकोबा, यशोहायाह,
असायाह, अदीएल, यसीमीएल, बना-
याह, 37 और ज़ीज़ा जो शिपी का बेटा
था, शिपी अल्लोन का, अल्लोन यदायाह
का, यदायाह शिम्री का और शिम्री शमा-
याह का बेटा था। 38 ये उनके नाम
हैं जो अपने-अपने घराने के प्रधान थे।
उनके पुरखों के घराने के लोगों की तादाद
बहुत बढ़ गयी थी। 39 वे अपनी भेड़-
बकरियों के झुंडों के लिए चरागाहों की
तलाश में गदोर के फाटक तक पहुँच गए
जो घाटी के पूरब में था। 40 आखिर-
कार उन्हें बहुत अच्छे और हरे-भरे चरा-
गाह मिले। वह काफी बड़ा और शांत
इलाका था और वहाँ कोई खतरा नहीं
था। वहाँ पहले हाम के वंशज रहते थे।[1]
41 ये लोग, जिनके नामों की सूची दी
गयी है, यहूदा के राजा हिजकियाह[2] के
दिनों में वहाँ गए और उन्होंने वहाँ रहने-
वाले हाम के वंशजों और मऊनी लोगों के
तंबू नाश कर दिए। उन्होंने उनको मिटा
दिया जिसका सबूत आज भी देखा जा
सकता है और वे उनकी जगह बस गए
क्योंकि उनके झुंडों के लिए वहाँ चरा-
गाह थे।

42 कुछ शिमोनी आदमी, जिनकी
गिनती 500 थी, पलत्याह, नारयाह,
रपायाह और उज्जीएल के साथ सेईर
पहाड़[3] पर गए। यिशी के इन बेटों ने
उन 500 आदमियों की अगुवाई की

4:22 * या "ये पुरानी परंपरा की बातें हैं।"

अध्य. 4
1 उत 38:2, 5 गि 26:20
2 उत 46:10
3 गि 26:12, 13
4 गि 26:22
5 यह 19:1, 2
6 यह 15:21, 26
7 यह 15:21, 28 यह 19:1, 3 नहे 11:25-27
8 यह 15:21, 29
9 यह 19:1, 4
10 न्या 1:17
11 यह 15:20, 31 यह 19:1, 5 1शम 27:5, 6
12 यह 19:1, 5
13 यह 19:1, 7

दूसरा कॉल.
1 उत 10:6, 20
2 2इत 29:1
3 उत 36:8

थी। 43 उन्होंने वहाँ उन अमालेकियों[1]
को मार डाला जो बच निकले थे। वे आज
तक वहीं बसे हुए हैं।

5 इसराएल के पहलौठे रूबेन[2] के बेटों
के नाम नीचे दिए गए हैं। रूबेन पह-
लौठा था मगर क्योंकि उसने अपने पिता
की सेज दूषित* कर दी थी,[3] इसलिए
उसका पहलौठे का हक इसराएल के बेटे
यूसुफ के बेटों को दे दिया गया।[4] रूबेन
का नाम पहलौठे के हक के लिए वंशा-
वली में नहीं लिखा गया। 2 हालाँकि
यहूदा[5] अपने भाइयों से ज़्यादा महान था
और उसी के वंश से वह आया जो अगुवा
होता,[6] फिर भी पहलौठे का हक यूसुफ
का था। 3 इसराएल के पहलौठे रूबेन
के बेटे थे हानोक, पल्लू, हेसरोन और
करमी।[7] 4 योएल के बेटे थे शमायाह,
शमायाह का बेटा गोग, गोग का शिमी,
5 शिमी का मीका, मीका का रायाह,
रायाह का बाल, 6 और बाल का बेटा
बएराह था, जिसे अश्शूर का राजा तिल-
गत-पिलनेसेर[8] बंदी बनाकर ले गया।
बएराह, रूबेनियों का एक प्रधान था।
7 उनके घरानों की वंशावली के मुताबिक
उसके भाई ये थे: यीएल जो प्रधान था,
जकरयाह 8 और बेला जो अजाज का
बेटा, शमा का पोता और योएल का पर-
पोता था। बेला अरोएर[9] में और दूर नबो
और बालमोन[10] तक रहता था। 9 वह
पूरब में दूर उस जगह तक बस गया जहाँ
से फरात नदी के पासवाला वीराना शुरू
होता है[11] क्योंकि गिलाद के इलाके में
उनके मवेशियों की तादाद बहुत बढ़ गयी
थी।[12] 10 शाऊल के दिनों में उन्होंने
हगरी लोगों से युद्ध किया और उन्हें हरा
दिया। इसलिए वे गिलाद के पूरब के सारे
इलाके में हगरी लोगों के तंबुओं में रहने
लगे।

11 उनके पड़ोस में गाद के वंशज थे।
वे बाशान प्रदेश में दूर सलका तक बसे
हुए थे।[1] 12 बाशान में योएल मुखिया
था, उसके बाद शापाम था और यानै और
शापात भी अगुवे थे। 13 उनके पिताओं
के घरानों में उनके भाई थे मीकाएल,
मशुल्लाम, शीबा, योरै, याकान, ज़िआ
और एबेर। ये कुल मिलाकर सात थे।
14 ये अबीहैल के बेटे थे, अबीहैल हूरी
का बेटा था, हूरी यारोह का, यारोह
गिलाद का, गिलाद मीकाएल का, मीका-
एल यशीशै का, यशीशै यहदो का और
यहदो बूज का बेटा था। 15 उनके पिता
के घराने का मुखिया अही था, जो अब्दी-
एल का बेटा और गूनी का पोता था।
16 वे गिलाद और बाशान में, उनके आस-
पास के नगरों में और शारोन के सब चरा-
गाहों में उनकी सरहदों तक रहते थे।[2]
17 उन सभी का नाम यहूदा के राजा
योताम[3] और इसराएल के राजा यारो-
बाम*[4] के दिनों में वंशावली में लिखा
गया था।

18 रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के
आधे गोत्र की सेना में 44,760 वीर
योद्धा थे जो ढालों, तलवारों और कमान
से लैस रहते थे और युद्ध की तालीम पाए
हुए थे। 19 उन्होंने हगरी लोगों से और
यतूर, नापीश[5] और नोदाब से युद्ध किया
था।[6] 20 उन्होंने युद्ध में परमेश्वर से
मदद माँगी थी और परमेश्वर ने उनकी
बिनती सुनकर उनकी मदद की क्योंकि
उन्होंने उस पर भरोसा किया था।[7] पर-
मेश्वर ने हगरी लोगों और उनके साथ-
वाले सभी लोगों को उनके हाथ में कर

5:1 * या "अशुद्ध।"

5:17 * यानी यारोबाम द्वितीय।

अध्य. 4
1 निर्ग 17:14, 16; 1शम 15:7

अध्य. 5
2 उत 29:32; उत 49:3, 4
3 उत 35:22
4 उत 49:22, 26; यह 14:4
5 उत 49:8, 10; गि 2:3; गि 10:14; न्या 1:1, 2; भज 60:7
6 मत 2:6; इब्र 7:14
7 उत 46:9; निर्ग 6:14
8 2रा 16:7
9 व्य 2:36
10 गि 32:34, 38; यह 13:15, 17; यहे 25:9, 10
11 उत 15:18; व्य 1:7; यह 1:4; 2शम 8:3
12 यह 22:9

दूसरा कॉल.
1 व्य 3:8, 10; यह 12:4, 5
2 गि 32:1; व्य 3:3, 13; व्य 32:14
3 2रा 15:32; 2इत 27:1; यश 1:1; हो 1:1; मी 1:1
4 2रा 14:16, 28
5 उत 25:13, 15; 1इत 1:31
6 1इत 5:10
7 भज 20:7; भज 22:4

दिया। 21 उन्होंने उनके सभी जानवर हड़प लिए, 50,000 ऊँट, 2,50,000 भेड़ें और 2,000 गधे। साथ ही उनके 1,00,000 लोगों को बंदी बना लिया। 22 बहुत-से लोग मार डाले गए क्योंकि यह लड़ाई सच्चे परमेश्वर की ओर से थी।[1] और वे बँधुआई के समय तक उनके इलाके में बसे रहे।[2]

23 मनश्शे के आधे गोत्र के वंशज[3] बाशान से बाल-हेरमोन तक के इलाके में और सनीर और हेरमोन पहाड़ के इलाके में रहते थे।[4] उनकी आबादी बहुत ज़्यादा थी। 24 उनके पिताओं के घरानों के मुखिया ये थे: एपेर, यिशी, एलीएल, अजरीएल, यिर्मयाह, होदव्याह और यहदीएल। वे वीर योद्धा और मशहूर आदमी थे और अपने-अपने पिता के घराने के मुखिया थे। 25 मगर उन्होंने अपने पुरखों के परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया और अपने इलाके के उन लोगों के देवताओं को पूजने* लगे[5] जिन्हें परमेश्वर ने उनके सामने से मिटा दिया था। 26 इसलिए इसराएल के परमेश्वर ने अश्शूर के राजा पूल (यानी अश्शूर के राजा तिलगत-पिलनेसेर)[6] के मन को उकसाया[7] और पूल ने रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र को बंदी बना लिया और उन्हें हलह, हाबोर, हारा और गोजान नदी तक ले गया।[8] वे आज तक उन्हीं जगहों में रहते हैं।

6 लेवी के बेटे थे[9] गेरशोन, कहात[10] और मरारी।[11] 2 कहात के बेटे थे अमराम, यिसहार,[12] हेब्रोन और उज्जीएल।[13] 3 अमराम के बच्चे* थे[14] हारून,[15] मूसा[16] और मिरयम।[17] हारून के बेटे थे नादाब, अबीहू,[1] एलिआज़र[2] और ईतामार।[3] 4 एलिआज़र का बेटा फिनेहास था[4] और फिनेहास का बेटा अबीशू था। 5 अबीशू का बेटा बुक्की और बुक्की का बेटा उज्जी था। 6 उज्जी का बेटा जरहयाह और जरहयाह का बेटा मरायोत था। 7 मरायोत का बेटा अमरयाह और अमरयाह का बेटा अहीतूब[5] था। 8 अहीतूब का बेटा सादोक[6] और सादोक का बेटा अहीमास था।[7] 9 अहीमास का बेटा अजरयाह और अजरयाह का बेटा योहानान था। 10 योहानान का बेटा अजरयाह था। उसने यरूशलेम में सुलैमान के बनाए भवन में याजक के नाते सेवा की थी।

11 अजरयाह का बेटा अमरयाह और अमरयाह का बेटा अहीतूब था। 12 अहीतूब का बेटा सादोक[8] और सादोक का बेटा शल्लूम था। 13 शल्लूम का बेटा हिलकियाह[9] और हिलकियाह का बेटा अजरयाह था। 14 अजरयाह का बेटा सरायाह[10] और सरायाह का बेटा यहोसादाक[11] था। 15 यहोसादाक उस समय बँधुआई में चला गया जब यहोवा ने यहूदा और यरूशलेम को नबूकदनेस्सर के हाथ बँधुआई में भेज दिया था।

16 लेवी के बेटे थे गेरशोम,* कहात और मरारी। 17 गेरशोम के बेटे थे लिबनी और शिमी।[12] 18 कहात के बेटे थे अमराम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल।[13] 19 मरारी के बेटे थे महली और मूशी।

लेवियों के पुरखों से निकले घराने ये थे:[14] 20 गेरशोम के वंशज थे[15] उसका बेटा लिबनी, लिबनी का यहत, यहत का

5:25 *या "के साथ वेश्याओं जैसी बदचलनी करने।" **6:3** *शा., "बेटे।"

6:16 *आय. 1 में इसका दूसरा नाम गेरशोन है।

अध्य. 5
1 यह 10:42; 1शम 17:45, 47; 2इत 20:15
2 2रा 15:29; 2रा 17:6
3 यह 13:29, 30
4 व्य 4:47, 48
5 व्य 5:7-9; न्या 2:17; न्या 8:33; 2रा 17:10, 11
6 2रा 15:19, 29
7 एज 1:1; नीत 21:1
8 2रा 17:6; 2रा 18:11

अध्य. 6
9 उत 29:34; निर्ग 6:16
10 निर्ग 6:18; गि 3:27
11 गि 3:17; गि 26:57
12 निर्ग 6:21
13 निर्ग 6:22; लैव 10:4
14 निर्ग 6:20
15 1इत 23:13
16 निर्ग 6:26; प्रेष 7:37, 38
17 निर्ग 15:20

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 24:1; लैव 10:1
2 गि 3:32; व्य 10:6
3 निर्ग 6:23; निर्ग 28:1; गि 4:28; 1इत 24:2, 4
4 निर्ग 6:25; गि 25:11
5 2शम 8:17
6 1रा 1:8; 1रा 2:35
7 2शम 15:27, 36
8 नहे 11:11
9 2इत 34:14
10 2रा 25:18
11 हाग 1:1
12 गि 3:18
13 गि 3:19, 20
14 गि 26:57
15 गि 3:18

जिम्मा, 21 जिम्मा का योआह, योआह
का इद्दो, इद्दो का जेरह और जेरह
का बेटा यातरै। 22 कहात के बेटे*
थे अम्मीनादाब, अम्मीनादाब का बेटा
कोरह,[1] कोरह के बेटे अस्सीर,
23 एलकाना और एब्यासाप,[2] एब्या-
साप का बेटा अस्सीर, 24 अस्सीर का
ताहत, ताहत का उरीएल, उरीएल का
उज्जियाह और उज्जियाह का बेटा शौल।
25 एलकाना के बेटे थे अमासै और
अहीमोत। 26 एक और एलकाना के
बेटे थे सोपै, सोपै का बेटा नहत,
27 नहत का एलीआब, एलीआब का
यरोहाम और यरोहाम का बेटा एल-
काना।[3] 28 शमूएल[4] के बेटे थे, पह-
लौठा योएल और दूसरा बेटा अबि-
याह।[5] 29 मरारी के बेटे* थे महली,[6]
महली का बेटा लिबनी, लिबनी का
शिमी, शिमी का उज्जाह, 30 उज्जाह
का शिमा, शिमा का हग्गियाह और हग्गि-
याह का बेटा असायाह।

31 दाविद ने कुछ लेवियों को इस-
लिए चुना कि जब संदूक यहोवा के
भवन में रखा जाए तो वहाँ वे गीत गाने
का निर्देशन करें।[7] 32 जब तक सुलै-
मान ने यरूशलेम में यहोवा का भवन नहीं
बनाया[8] तब तक भेंट के तंबू में वे गानों
के लिए ज़िम्मेदार थे। उनके लिए जो
नियम ठहराया गया था उसके मुताबिक
वे सेवा करते थे।[9] 33 उन आदमियों
के नाम ये हैं जो अपने बेटों के साथ मिल-
कर यह सेवा करते थे: कहातियों में से
हेमान[10] गायक जो योएल[11] का बेटा था,
योएल शमूएल का, 34 शमूएल एल-
काना[12] का, एलकाना यरोहाम का,
यरोहाम एलीएल का, एलीएल तोह
का, 35 तोह ज़ूफ का, ज़ूफ एलकाना
का, एलकाना महत का, महत अमासै
का, 36 अमासै एलकाना का, एल-
काना योएल का, योएल अजरयाह का,
अजरयाह सपन्याह का, 37 सपन्याह
ताहत का, ताहत अस्सीर का, अस्सीर
एब्यासाप का, एब्यासाप कोरह का,
38 कोरह यिसहार का, यिसहार कहात
का, कहात लेवी का और लेवी इसराएल
का बेटा था।

39 हेमान का भाई आसाप[1] उसके
दायीं तरफ खड़ा रहता था। आसाप
बेरेक्याह का बेटा था, बेरेक्याह शिमा
का, 40 शिमा मीकाएल का, मीकाएल
बासेयाह का, बासेयाह मल्कियाह का,
41 मल्कियाह एत्नी का, एत्नी जेरह का,
जेरह अदायाह का, 42 अदायाह एतान
का, एतान जिम्मा का, जिम्मा शिमी का,
43 शिमी यहत का, यहत गेरशोम का
और गेरशोम लेवी का बेटा था।

44 उनके भाई यानी मरारी के वंशज[2]
हेमान के बायीं तरफ खड़े रहते थे।
एतान[3] जो कीशी का बेटा था,
कीशी अब्दी का, अब्दी मल्लूक का,
45 मल्लूक हशब्याह का, हशब्याह
अमज्याह का, अमज्याह हिलकियाह का,
46 हिलकियाह अमसी का, अमसी बानी
का, बानी शेमेर का, 47 शेमेर महली
का, महली मूशी का, मूशी मरारी का और
मरारी लेवी का बेटा था।

48 उनके दूसरे लेवी भाइयों को सच्चे
परमेश्वर के भवन यानी पवित्र डेरे की
सारी सेवाएँ करने के लिए ठहराया गया
था।*[4] 49 हारून और उसके बेटे[5]
होम-बलि की वेदी पर बलिदान चढ़ाते थे
ताकि उसका धुआँ उठे,[6] धूप की वेदी पर
धूप जलाते थे[7] और सबसे पवित्र चीज़ों

6:22, 29 *या "वंशज।"

6:48 *शा., "दिया गया था।"

अध्य. 6
1 गि 16:1, 32; गि 26:10, 11; यहू 11
2 निर्ग 6:24
3 1शम 1:1
4 1शम 1:20
5 1शम 8:1, 2
6 निर्ग 6:19; 1इत 23:21
7 2शम 6:17; 1इत 15:16
8 1रा 6:14
9 2इत 35:15
10 1इत 15:16, 17
11 1शम 8:1, 2
12 1शम 1:1

दूसरा कॉल.
1 1इत 25:1; 2इत 5:12; भज 50:उप
2 1इत 23:6
3 1इत 15:16, 17
4 गि 3:5-7
5 निर्ग 28:1; गि 3:10
6 निर्ग 29:38
7 निर्ग 30:7

से जुड़ी ज़िम्मेदारियाँ निभाते थे। वे इस-
राएल के लिए प्रायश्चित करते थे।[1] इस
तरह वे वह सारा काम करते थे जिसकी
आज्ञा सच्चे परमेश्वर के सेवक मूसा
ने दी थी। 50 हारून के वंशज ये थे:[2]
उसका बेटा एलिआज़र,[3] एलिआज़र
का बेटा फिनेहास, फिनेहास का अबीशू,
51 अबीशू का बुक्की, बुक्की का उज्जी,
उज्जी का जरहयाह, 52 जरहयाह का
मरायोत, मरायोत का अमरयाह, अमर-
याह का अहीतूब,[4] 53 अहीतूब का
सादोक[5] और सादोक का बेटा अहीमास।

54 वे अपने इलाके की इन जगहों में
छावनियाँ* डालकर रहते थे: कहातियों
के घराने में से हारून के वंशजों को,
जिनके नाम पर पहली चिट्ठी निकली थी,
55 उन्होंने यहूदा के इलाके में से हेब्रोन[6]
और उसके आस-पास के चरागाह दिए।
56 मगर उन्होंने उस शहर का खेत और
उसकी बस्तियाँ यपुन्ने के बेटे कालेब को
दीं।[7] 57 उन्होंने हारून के वंशजों को
शरण नगर[8] दिए,* यानी हेब्रोन।[9] साथ
ही उन्होंने लिब्ना[10] और उसके चरागाह,
यत्तीर,[11] एश्तमोआ और उसके चरा-
गाह,[12] 58 हीलेन और उसके चरा-
गाह, दबीर[13] और उसके चरागाह,
59 आशान[14] और उसके चरागाह और
बेत-शेमेश[15] और उसके चरागाह दिए।
60 बिन्यामीन गोत्र ने उन्हें गेबा[16] और
उसके चरागाह, आलेमेत और उसके
चरागाह और अनातोत[17] और उसके
चरागाह दिए। उनके घरानों के कुल
मिलाकर 13 शहर थे।[18]

61 बाकी कहातियों को दस शहर
दिए गए। ये शहर गोत्र के घराने के,
आधे गोत्र के, मनश्शे के आधे गोत्र के
इलाके से दिए गए।*[1]

62 गेरशोमियों को उनके घरानों के
हिसाब से 13 शहर दिए गए। ये शहर
इस्साकार, आशेर और नप्ताली गोत्रों
और बाशान में रहनेवाले मनश्शे गोत्र के
इलाके से दिए गए।[2]

63 मरारियों को उनके घरानों के
हिसाब से चिट्ठी डालकर 12 शहर दिए
गए। ये शहर रूबेन, गाद और जबूलून
गोत्रों के इलाके से दिए गए।[3]

64 इस तरह इसराएलियों ने लेवियों
को ये शहर और उनके चरागाह दिए।[4]
65 इनके अलावा उन्होंने चिट्ठी डालकर
यहूदा, शिमोन और बिन्यामीन गोत्रों के
इलाके से शहर दिए जिनका ज़िक्र उनके
नाम से किया गया है।

66 कुछ कहाती घरानों को एप्रैम गोत्र
के इलाके में से शहर मिले ताकि वे
उनके इलाके हों।[5] 67 उन्होंने उन्हें
शरण नगर दिए* यानी एप्रैम के
पहाड़ी प्रदेश में शेकेम[6] और उसके चरा-
गाह दिए, साथ ही गेजेर[7] और उसके
चरागाह, 68 योकमाम और उसके
चरागाह, बेत-होरोन[8] और उसके चरा-
गाह, 69 अय्यालोन[9] और उसके चरा-
गाह और गत-रिम्मोन[10] और उसके चरा-
गाह। 70 उन्होंने कहातियों के बाकी
घरानों को मनश्शे के आधे गोत्र के इलाके
से आनेर और उसके चरागाह और बिल-
आम और उसके चरागाह दिए।

71 उन्होंने गेरशोमियों को मनश्शे
के आधे गोत्र के घराने के इलाके से
(बाशान का) गोलान[11] और उसके चरा-
गाह और अश्तारोत और उसके चरागाह

6:54 *या "दीवारों से घिरी छावनियाँ।"
6:57 *या शायद, "शरण नगर दिया।" यह बात यह 21:13 से मेल खाती है।

6:61 *या "चिट्ठी डालकर दिए गए।"
6:67 *या शायद, "शरण नगर दिया।" यह बात यह 21:21 से मेल खाती है।

अध्य. 6
1 निर्ग 30:10; लैव 4:20; लैव 17:11; 2इत 29:24
2 निर्ग 6:23
3 निर्ग 28:1; गि 3:32
4 2शम 8:17
5 1रा 2:35
6 गि 13:22; यह 21:8, 11
7 यह 14:13; न्या 1:20
8 गि 35:12, 13
9 यह 20:7, 9
10 यह 15:20, 42
11 यह 15:20, 48
12 यह 21:13-16
13 न्या 1:11
14 1इत 4:24, 32
15 यह 15:10, 12
16 यह 18:21, 24
17 यह 21:8, 18; यिर्म 1:1
18 यह 21:4

दूसरा कॉल.
1 यह 21:5
2 यह 21:27-33
3 यह 21:34-40
4 गि 35:2-4
5 यह 21:20-26
6 यह 20:7, 9
7 यह 16:10
8 यह 10:11
9 यह 10:12; न्या 1:35
10 यह 19:45, 48
11 व्य 4:41-43

दिए।[1] **72** इस्साकार गोत्र के इलाके
से केदेश और उसके चरागाह, दाब-
रात[2] और उसके चरागाह,[3] **73** रामोत
और उसके चरागाह और आनेम और
उसके चरागाह दिए। **74** आशेर गोत्र
के इलाके से माशाल और उसके चरा-
गाह, अब्दोन और उसके चरागाह,[4]
75 हूकोक और उसके चरागाह और
रहोब[5] और उसके चरागाह दिए।
76 नप्ताली गोत्र के इलाके से (गलील[6]
का) केदेश[7] और उसके चरागाह, हम्मोन
और उसके चरागाह और किरयातैम और
उसके चरागाह दिए।

77 उन्होंने बाकी मरारियों को जबूलून
गोत्र के इलाके से रिम्मोनो और उसके
चरागाह और ताबोर और उसके चरा-
गाह दिए।[8] **78** यरीहो के पास, यर-
दन प्रांत के पूरब में रहनेवाले रूबेन गोत्र
के इलाके से बेसेर (जो वीराने में है) और
उसके चरागाह, यहस[9] और उसके चरा-
गाह, **79** कदेमोत[10] और उसके चरा-
गाह और मेपात और उसके चरागाह
दिए। **80** और गाद गोत्र के इलाके
से (गिलाद का) रामोत और उसके चरा-
गाह, महनैम[11] और उसके चरागाह,
81 हेशबोन[12] और उसके चरागाह और
याजेर[13] और उसके चरागाह दिए।

7 इस्साकार के चार बेटे थे तोला,
पूआ, याशूब और शिमरोन।[14]
2 तोला के बेटे थे उज्जी, रपायाह, यरी-
एल, यहमै, यिबसाम और शिमूएल। ये
सब अपने पिताओं के घराने के मुखिया
थे। तोला के वंशज वीर योद्धा थे
और दाविद के दिनों में उनकी गिनती
22,600 थी। **3** उज्जी के वंशज* थे
यिज्रयाह और यिज्रयाह के बेटे मीका-
एल, ओबद्याह, योएल और यिश्शायाह।
ये पाँचों प्रधान थे। **4** उनके पिताओं के
घरानों की वंशावली के मुताबिक उनकी
सेना में 36,000 सैनिक थे क्योंकि
उनकी बहुत-सी पत्नियाँ और बहुत-से
बेटे थे। **5** इस्साकार के सभी घरानों के
आदमी वीर योद्धा थे और वंशावली में
उनकी गिनती 87,000 थी।[1]

6 बिन्यामीन के तीन बेटे थे[2] बेला,[3]
बेकेर[4] और यदीएल।[5] **7** बेला के पाँच
बेटे थे एसबोन, उज्जी, उज्जीएल, यरी-
मोत और ईरी। वे अपने-अपने घराने के
मुखिया थे और वीर योद्धा थे और उनकी
वंशावली में उनकी गिनती 22,034
थी।[6] **8** बेकेर के बेटे थे जमीरा,
योआश, एलीएज़ेर, एल्योएनै, ओम्री,
यरेमोत, अबियाह, अनातोत और आले-
मेत। ये सब बेकेर के बेटे थे। **9** जिन
वंशजों के नाम वंशावली में लिखे गए थे
यानी वे जो पिताओं के घरानों के
मुखिया थे, उनकी गिनती 20,200 थी।
10 यदीएल[7] के बेटे थे बिलहान और
बिलहान के बेटे यूश, बिन्यामीन, एहूद,
कनाना, जेतान, तरशीश और अहीश-
हर। **11** ये सब यदीएल के बेटे और
अपने-अपने पिता के घराने के मुखिया
थे। उनके 17,200 वीर योद्धा सेना के
साथ युद्ध में जाने के लिए तैयार रहते थे।

12 शुप्पीम और हुप्पीम लोग ईर[8] के
बेटे थे और हूशी लोग अहेर के बेटे थे।

13 नप्ताली के बेटे थे[9] यहसीएल,
गूनी, येसेर और शल्लूम। ये सब बिल्हा
के वंशज* थे।[10]

14 मनश्शे[11] के बेटे ये थे: असरी-
एल जो उसकी सीरियाई उप-पत्नी से
पैदा हुआ था। (उसने माकीर को भी
जन्म दिया जो गिलाद का पिता था।[12]
15 माकीर ने हुप्पीम और शुप्पीम की

अध्य. 6
1 यह 21:27
2 यह 19:12, 16
3 यह 21:8, 28
4 यह 21:8, 30
5 यह 19:28, 31 न्या 1:31
6 मत 3:13
7 यह 20:7, 9 यह 21:32, 33
8 यह 21:34-39
9 गि 21:23
10 व्य 2:26
11 उत 32:1, 2 2शम 2:8
12 गि 21:26
13 गि 32:1

अध्य. 7
14 उत 46:13 गि 26:23, 24

दूसरा कॉल.
1 गि 26:25
2 उत 35:16, 18 गि 26:38, 39
3 1इत 8:1
4 उत 46:21
5 1इत 7:10
6 गि 26:41
7 1इत 7:6
8 1इत 7:7
9 गि 26:48, 49
10 उत 30:3, 8 उत 46:24, 25
11 उत 41:50, 51
12 उत 50:23 गि 26:29 व्य 3:15

7:3, 13 *शा., "बेटे।"

शादी करवायी, जिसकी बहन का नाम
माका था।) दूसरे का नाम सलोफाद[1] था,
मगर सलोफाद की सिर्फ बेटियाँ थीं।[2]
16 माकीर की पत्नी माका ने एक बेटे
को जन्म दिया जिसका नाम उसने पेरेश
रखा। पेरेश के भाई का नाम शेरेश था
और शेरेश के बेटे थे ऊलाम और रेकेम।
17 ऊलाम का बेटा था* बदान। ये सभी
गिलाद के बेटे थे, जो माकीर का बेटा
और मनश्शे का पोता था। **18** गिलाद
की बहन हम्मोलेकेत थी। उसने ईशहोद,
अबीएजेर और महला को जन्म दिया।
19 शमीदा के बेटे थे अहयान, शेकेम,
लिकही और अनीआम।

20 एप्रैम के बेटे[3] ये थे: शूतेलह,[4]
शूतेलह का बेटा बेरेद, बेरेद का ताहत,
ताहत का एलादा, एलादा का ताहत,
21 ताहत का जाबाद और जाबाद का
बेटा शूतेलह। एजेर और एलाद भी एप्रैम
के बेटे थे। गत[5] के आदमियों ने, जो उस
इलाके में पैदा हुए थे, उन दोनों को मार
डाला क्योंकि वे एप्रैमियों के मवेशियों
को चुराने नीचे गए थे। **22** उनका
पिता एप्रैम कई दिनों तक मातम मनाता
रहा और उसके भाई उसके पास आकर
उसे दिलासा देते रहे। **23** बाद में एप्रैम
ने अपनी पत्नी के साथ संबंध रखे और
वह गर्भवती हुई और उसने एक बेटे
को जन्म दिया। मगर एप्रैम ने उसका
नाम बरीआ* रखा क्योंकि उसकी पत्नी
ने ऐसे वक्त पर बेटे को जन्म दिया
जब उसके घराने पर मुसीबत टूट पड़ी
थी। **24** उसकी बेटी शेरा थी जिसने
निचले[6] और ऊपरी बेत-होरोन[7] को और
उज्जेन-शेरा को बनाया था। **25** उसके
बेटे थे रेपा और रेशेप, रेशेप का बेटा था

7:17 *शा., "के बेटे थे।" **7:23** *मतलब
"मुसीबत के साथ।"

अध्य. 7
1 गि 26:33
2 गि 27:1, 7
3 गि 1:33
4 गि 26:35
5 1शम 7:14; 1शम 17:4
6 यह 16:1, 3
7 यह 16:5; यह 21:20, 22; 2इत 8:3, 5

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 33:11; गि 11:28; गि 32:11, 12; व्य 34:9; यह 1:1
2 उत 28:16, 19; यह 16:1, 2
3 यह 17:11; 1शम 31:8, 10
4 न्या 5:1, 19
5 न्या 1:27; 1रा 9:15
6 1रा 4:7, 11
7 गि 26:44, 45
8 उत 46:17

तेलह, तेलह का तहन, **26** तहन का
लादान, लादान का अम्मीहूद, अम्मीहूद
का एलीशामा, **27** एलीशामा का नून
और नून का बेटा यहोशू* था।[1]

28 उनकी जागीर और बस्तियाँ ये
थीं: बेतेल[2] और उसके आस-पास के
नगर, पूरब में नारान, पश्चिम में गेजेर
और उसके आस-पास के नगर, शेकेम
और उसके आस-पास के नगर, दूर
अय्याह* और उसके आस-पास के नगर,
29 मनश्शे के वंशजों के इलाके के पास
बेत-शआन[3] और उसके आस-पास के
नगर, तानाक[4] और उसके आस-पास के
नगर, मगिद्दो[5] और उसके आस-पास के
नगर और दोर[6] और उसके आस-पास
के नगर। इन इलाकों में इसराएल के बेटे
यूसुफ के वंशज रहते थे।

30 आशेर के बेटे थे यिम्नाह, यिश्वा,
यिश्वी और बरीआ।[7] उनकी बहन थी
सेरह।[8] **31** बरीआ के बेटे थे हेबेर
और मलकीएल और मलकीएल बिर-
जोत का पिता था। **32** हेबेर के बेटे
थे यपलेत, शोमेर और होताम।
उनकी बहन शूआ थी। **33** यपलेत के
बेटे थे पासक, बिमहाल और अश्वात।
ये यपलेत के बेटे थे। **34** शेमेर*
के बेटे थे अही, रोहगा, यहुब्बा और
अराम। **35** उसके भाई हेलेम* के बेटे
थे सोपह, यिम्ना, शेलेश और आमाल।
36 सोपह के बेटे थे सूह, हरनेपेर,
शूआल, बेरी, इमरा, **37** बेसेर, होद,
शम्मा, शिलशा, यित्रान और बीरा।

7:27 *या "यहोशुआ" जिसका मतलब
है, "यहोवा उद्धार है।" **7:28** *या शायद,
"गाज़ा" मगर पलिश्त का गाज़ा नहीं।
7:34 *आय. 32 में इसका दूसरा नाम
शोमेर है। **7:35** *यह शायद आय. 32 में
बताया "होताम" है।

38 येतेर के बेटे थे यपुन्ने, पिस्पा और अरा। 39 उल्ला के बेटे थे आरह, हन्नीएल और रिस्या। 40 ये सब आशेर के बेटे थे। वे अपने-अपने पिता के घराने के मुखिया थे। वे खास आदमी और वीर योद्धा थे और सेनापतियों के मुखिया थे। वंशावली के मुताबिक[1] उनकी 26,000 आदमियों की सेना थी[2] जो युद्ध के लिए तैयार रहती थी।

8 बिन्यामीन[3] के बेटे ये थे: पहलौठा बेला,[4] दूसरा अशबेल,[5] तीसरा अहरह, 2 चौथा नोहा और पाँचवाँ रापा। 3 बेला के बेटे थे अद्दार, गेरा,[6] अबीहूद, 4 अबीशू, नामान, अहोह, 5 गेरा, शपूपान और हूराम। 6 ये एहूद के बेटे थे यानी गेबा[7] के निवासियों के पिताओं के घरानों के मुखिया, जिन्हें बंदी बनाकर मानहत ले जाया गया था: 7 नामान, अहियाह और गेरा। गेरा ही उन्हें बँधुआई में ले गया था। उसके बेटे थे उज्जा और अहीहूद। 8 शहरैम के बच्चे मोआब के इलाके में पैदा हुए थे। इससे पहले उसने उन्हें भेज दिया था। उसकी पत्नियाँ थीं हूशीम और बारा।* 9 उसकी पत्नी होदेश से उसके ये बेटे हुए: योबाब, सिब्या, मेशा, मलकाम, 10 यूस, साकयाह और मिरमाह। उसके ये बेटे अपने पिताओं के घरानों के मुखिया थे।

11 हूशीम से उसके बेटे अबीतूब और एलपाल पैदा हुए। 12 एलपाल के बेटे थे एबेर, मिशाम, शेमेद (उसने ओनो[8] और लोद[9] और उसके आस-पास के नगर बनाए थे), 13 बरीआ और शमा। ये अय्यालोन[10] के निवासियों के पिताओं के घरानों के मुखिया थे। इन्होंने गत के निवासियों को भगा दिया था। 14 और अहयो, शाशक, यरेमोत, 15 जबद्याह, अराद, एदेर, 16 मीकाएल, यिस्पा और योहा जो बरीआ के बेटे थे। 17 जबद्याह, मशुल्लाम, हिजकी, हेबेर, 18 यिशमरै, यिजलीआ और योबाब जो एलपाल के बेटे थे। 19 याकीम, जिक्री, जब्दी, 20 एलीएनै, सिल्लतै, एलीएल, 21 अदायाह, बरायाह और शिमरात जो शिमी के बेटे थे। 22 यिशपान, एबेर, एलीएल, 23 अब्दोन, जिक्री, हानान, 24 हनन्याह, एलाम, अन्तोतियाह, 25 यिपदयाह और पनूएल जो शाशक के बेटे थे। 26 शमशरै, शहरयाह, अतल्याह, 27 योरेश्याह, एलियाह और जिक्री जो यरोहाम के बेटे थे। 28 ये सभी अपनी वंशावली के मुताबिक अपने-अपने पिता के घराने के मुखिया थे। ये प्रधान यरूशलेम में रहते थे।

29 गिबोन का पिता यीएल गिबोन में रहता था।[1] उसकी पत्नी का नाम माका था।[2] 30 उसका पहलौठा अब्दोन था, फिर सूर, कीश, बाल, नादाब, 31 गदोर, अहयो और जेकेर। 32 मिकलोत का बेटा शिमयाह था। ये सभी अपने भाइयों के साथ यरूशलेम में रहते थे। उनके साथ उनके और भी भाई रहते थे।

33 नेर[3] का बेटा कीश था, कीश का बेटा शाऊल था[4] और शाऊल के बेटे थे योनातान,[5] मलकीशूआ,[6] अबीनादाब[7] और एशबाल।*[8] 34 योनातान का बेटा मरीब्बाल* था।[9] मरीब्बाल का बेटा मीका था।[10] 35 मीका के बेटे

8:8 *या शायद, "इससे पहले उसने अपनी पत्नियों को यानी हूशीम और बारा को भेज दिया था।"

8:33 *ईशबोशेत भी कहलाता था। 8:34 *मपीबोशेत भी कहलाता था।

अध्य. 7
1 निर्ग 30:14
2 गि 1:41; गि 26:47

अध्य. 8
3 उत 35:16, 18
4 1इत 7:6
5 उत 46:21
6 उत 46:21
7 यह 21:8, 17; 1शम 13:16
8 नहे 6:2
9 एज 2:1, 33
10 यह 19:42, 48; यह 21:8, 24

दूसरा कॉल.
1 यह 9:15, 17; यह 21:8, 17; 1इत 21:29
2 1इत 9:35-38
3 1शम 14:50
4 1शम 9:1, 2; 1शम 11:15
5 1शम 14:45
6 1शम 14:49
7 1शम 31:2
8 2शम 2:8; 1इत 9:39-44
9 2शम 4:4
10 2शम 9:12

थे पीतोन, मेलेक, तारेआ और आहाज।
36 आहाज का बेटा यहोअद्दा था
और यहोअद्दा के बेटे थे आलेमेत,
अज़्मावेत और जिमरी। जिमरी का
बेटा मोसा था। 37 मोसा का बेटा
बिनआ था, बिनआ का रापाह, रापाह
का एलिआसा और एलिआसा का
बेटा आसेल था। 38 आसेल के छः
बेटे थे और उनके नाम थे अजरीकाम,
बोकरू, इश्माएल, शारयाह, ओबद्याह
और हानान। ये सभी आसेल के बेटे थे।
39 उसके भाई एशेक के बेटे थे पहलौठा
ऊलाम, दूसरा यूश और तीसरा एली-
पेलेत। 40 ऊलाम के बेटे वीर योद्धा थे
जो कमान चलाने में माहिर थे। उनके कई
बेटे और पोते थे जिनकी गिनती 150
थी। ये सभी बिन्यामीन के वंशज थे।

9 सभी इसराएलियों के नाम उनके
घरानों के मुताबिक वंशावली में
लिखे गए थे। यह वंशावली इसराएल
के राजाओं की किताब में लिखी है।
यहूदा के लोग परमेश्वर के विश्वास-
योग्य नहीं रहे इसलिए उन्हें बंदी बना-
कर बैबिलोन ले जाया गया था।[1] 2 जो
लोग पहले अपने-अपने शहर लौट आए,
जहाँ उनकी जागीर थी, वे थे कुछ इस-
राएली, याजक, लेवी और मंदिर के
सेवक।*[2] 3 यहूदा, बिन्यामीन, एप्रैम
और मनश्शे के कुछ वंशज[3] जो यरू-
शलेम में बस गए थे, वे ये थे: 4 ऊतै
जो अम्मीहूद का बेटा था और अम्मी-
हूद ओम्री का, ओम्री इमरी का और इमरी
बानी का बेटा था और बानी यहूदा के बेटे
पेरेस[4] का एक वंशज था। 5 शिलो-
नियों में से असायाह, जो अपने पिता के
परिवार में पहलौठा था और उसके बेटे।

9:2 *या "नतीन लोग।" शा., "दिए गए लोग।"

6 जेरह[1] के बेटों में से यूएल और उनके
690 भाई।

7 बिन्यामीन के वंशजों में से सल्लू
जो मशुल्लाम का बेटा, होदव्याह का
पोता और हस्सनूआ का परपोता था,
8 यिबनायाह जो यरोहाम का बेटा था,
एलाह जो उज्जी का बेटा और मिकरी
का पोता था और मशुल्लाम जो शपत्याह
का बेटा, रूएल का पोता और यिबनियाह
का परपोता था। 9 और उन सबके
भाइयों की गिनती उनकी वंशावली के
मुताबिक 956 थी। ये सभी आदमी
अपने-अपने पिता के घराने के
मुखिया थे।

10 याजकों में से ये थे: यदायाह, यहो-
यारीब, याकीन,[2] 11 अजरयाह जो
हिलकियाह का बेटा था और हिल-
कियाह मशुल्लाम का, मशुल्लाम सादोक
का, सादोक मरायोत का और मरा-
योत अहीतूब का बेटा था, जो सच्चे
परमेश्वर के भवन* में एक अगुवा
था, 12 अदायाह जो यरोहाम का बेटा,
पशहूर का पोता और मल्कियाह का
परपोता था, मासै जो अदीएल का बेटा
था और अदीएल यहजेरा का, यह-
जेरा मशुल्लाम का, मशुल्लाम मशिल्ले-
मीत का और मशिल्लेमीत इम्मेर का
बेटा था, 13 और उन सबके भाई।
वे 1,760 आदमी थे जो अपने-अपने
पिता के घराने के मुखिया थे। वे बड़े
ताकतवर और काबिल आदमी थे और
सच्चे परमेश्वर के भवन में सेवा के लिए
तैयार रहते थे।

14 लेवियों में से ये थे: शमायाह[3] जो
हश्शूब का बेटा, अजरीकाम का पोता और
मरारी के वंशज हशब्याह का परपोता था,
15 बकबक्कर, हेरेश, गालाल, मत्तन्याह

9:11 *या "मंदिर।"

अध्य. 9
1 यिर्म 39:9
2 यह 9:3, 27
एज 2:43-54
एज 2:70
एज 8:20
नहे 7:73
नहे 11:3
3 नहे 11:4, 5
नहे 11:7-9
4 उत 46:12
1इत 2:4

दूसरा कॉल.
1 1इत 2:4, 6
2 नहे 11:10-14
3 नहे 11:15

जो मिका का बेटा, ज़िक्री का पोता और आसाप का परपोता था, **16** ओबद्याह जो शमायाह का बेटा, गालाल का पोता और यदूतून का परपोता था और बेरेक्याह जो आसा का बेटा और एलकाना का पोता था और नतोपा के लोगों की बस्तियों[1] में रहता था।

17 पहरेदार[2] ये थे: शल्लूम, अक्कूब, तल्मोन और अहीमन। उनका भाई शल्लूम मुखिया था। **18** मगर इससे पहले शल्लूम पूरब की तरफ राजा के फाटक पर तैनात रहता था।[3] ये सभी आदमी लेवियों की छावनियों के पहरेदार थे। **19** शल्लूम (जो कोरे का बेटा, एब्यासाप का पोता और कोरह का परपोता था) और उसके पिता के घराने के भाई यानी कोरहवंशी लोग तंबू के पहरेदार थे और इस नाते सेवा से जुड़े कामों की निगरानी करते थे, ठीक जैसे उनके बाप-दादे यहोवा की छावनी की निगरानी करनेवाले और उसके प्रवेश के पहरेदार थे। **20** गुज़रे ज़माने में एलिआज़र का बेटा फिनेहास[4] उनका अगुवा था और यहोवा उसके साथ था। **21** मेशेलेम्याह का बेटा जकरयाह[5] भेंट के तंबू के प्रवेश का पहरेदार था।

22 जिन आदमियों को प्रवेश के पहरेदार चुना गया था, उनकी कुल गिनती 212 थी। वंशावली में जिस क्रम में उनका नाम लिखा गया था,[6] उसके मुताबिक वे अपनी-अपनी बस्ती में बसे थे। दाविद और शमूएल दर्शी[7] ने उन्हें यह पद इसलिए सौंपा था क्योंकि वे भरोसेमंद आदमी थे। **23** उन्हें और उनके बेटों को यहोवा के भवन यानी तंबू के भवन के द्वार पर पहरेदार ठहराया गया था।[8] **24** पहरेदार उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम चारों दिशाओं में तैनात थे।[1] **25** उनके भाइयों को अपनी-अपनी बस्ती से बारी-बारी से आना होता था ताकि वे उनके साथ मिलकर सात दिन तक सेवा करें। **26** चार आदमियों को मुख्य पहरेदारों का पद सौंपा गया था क्योंकि वे भरोसेमंद थे। वे लेवी थे और उनकी ज़िम्मेदारी थी सच्चे परमेश्वर के भवन के खानों* और खज़ानों की देखरेख करना।[2] **27** वे सच्चे परमेश्वर के भवन के चारों तरफ अपनी-अपनी जगह पर खड़े रहकर पूरी रात पहरा देते थे क्योंकि यही उनकी ज़िम्मेदारी थी और चाबी उनके हाथ में दी गयी थी और वे हर सुबह भवन के फाटक खोलते थे।

28 उनमें से कुछ को सेवा से जुड़ी चीज़ों की देखरेख करने की ज़िम्मेदारी दी गयी थी।[3] जब भी ये चीज़ें अंदर लायी जातीं तो वे उनकी गिनती करते थे और जब उन्हें बाहर ले जाया जाता, तब भी वे उनकी गिनती करते थे। **29** दूसरों को बाकी चीज़ों, सभी पवित्र बरतनों,[4] मैदे,[5] दाख-मदिरा,[6] तेल,[7] लोबान[8] और बलसाँ के तेल[9] का ज़िम्मा सौंपा गया था। **30** याजकों के कुछ वंशज बलसाँ के तेल से मिश्रण तैयार करते थे। **31** लेवियों में से मतित्याह को, जो कोरहवंशी शल्लूम का पहलौठा था, तवे पर पकायी जानेवाली चीज़ों[10] का ज़िम्मा सौंपा गया था क्योंकि वह भरोसेमंद था। **32** कुछ कहाती भाइयों को रोटियों के ढेर* की ज़िम्मेदारी सौंपी गयी थी[11] ताकि वे हर सब्त के दिन उन्हें तैयार करें।[12]

33 ये गायक थे जो लेवियों के पिताओं के घरानों के मुखिया थे। वे

9:26 *या "भोजन के कमरों।" **9:32** *यानी नज़राने की रोटी।

अध्य. 9
1 1इत 2:54; नहे 12:28
2 एज 2:1, 42; नहे 11:19
3 नहे 3:29
4 निर्ग 6:25; गि 3:32; गि 25:11, 13; यह 22:30; न्या 20:28
5 1इत 26:14, 19
6 1इत 9:1
7 1शम 9:9
8 2इत 23:16, 19; नहे 12:45

दूसरा कॉल.
1 1इत 26: 14-16
2 1इत 26:20; 1इत 28:11, 12; 2इत 31:12
3 गि 1:50
4 1रा 8:4
5 लैव 2:1; 1इत 23:29
6 लैव 23:12, 13
7 निर्ग 27:20
8 लैव 2:1, 2
9 निर्ग 25:3, 6
10 लैव 2:5, 7
11 2इत 2:4; 2इत 13:11
12 लैव 24:6, 8

भवन के खानों* में रहते थे और उन्हें
दूसरे कामों से छूट दी जाती थी, क्योंकि
उन्हें जो काम सौंपा गया था उसमें दिन-
रात लगे रहना उनकी ज़िम्मेदारी थी।
34 वे अपनी वंशावली के मुताबिक
लेवियों के पिताओं के घरानों के मुखिया
और अगुवे थे। वे यरूशलेम में रहते थे।
35 गिबोन का पिता यीएल गिबोन में
रहता था।[1] उसकी पत्नी का नाम माका
था। 36 उसका पहलौठा अब्दोन था,
फिर सूर, कीश, बाल, नेर, नादाब,
37 गदोर, अहयो, जकरयाह और मिक-
लोत। 38 मिकलोत का बेटा शिमाम
था। ये सभी अपने भाइयों के साथ यरू-
शलेम में रहते थे। उनके साथ उनके और
भी भाई रहते थे। 39 नेर[2] का बेटा
कीश था, कीश का बेटा शाऊल था[3]
और शाऊल के बेटे थे, योनातान,[4]
मलकीशूआ,[5] अबीनादाब[6] और एश-
बाल। 40 योनातान का बेटा मरीब्बाल
था।[7] मरीब्बाल का बेटा मीका था।[8]
41 मीका के बेटे थे पीतोन, मेलेक, तहरे
और आहाज। 42 आहाज का बेटा
यारा था और यारा के बेटे थे आले-
मेत, अज़मावेत और जिमरी। जिमरी
का बेटा मोसा था। 43 मोसा का बेटा
बिनआ था, बिनआ का रपायाह, रपा-
याह का एलिआसा और एलिआसा का
बेटा आसेल था। 44 आसेल के छः
बेटे थे और उनके नाम थेः अजरीकाम,
बोकरू, इश्माएल, शारयाह, ओबद्याह
और हानान। ये सब आसेल के बेटे थे।

10 पलिश्ती लोग इसराएलियों से
युद्ध कर रहे थे। इसराएली सेना
पलिश्तियों से हारकर भाग गयी और
बहुत-से इसराएली सैनिक गिलबो पहाड़
पर ढेर हो गए।[1] 2 पलिश्ती सैनिक
शाऊल और उसके बेटों का पीछा करते-
करते उनके पास आ गए। उन्होंने शाऊल
के बेटे योनातान, अबीनादाब और
मलकीशूआ[2] को मार डाला। 3 फिर
उन्होंने शाऊल के साथ जमकर लड़ाई की
और जब तीरंदाज़ों ने उसे देखा तो उसे
घायल कर दिया।[3] 4 तब शाऊल ने
अपने हथियार ढोनेवाले सैनिक से कहा,
"तू अपनी तलवार निकालकर मुझे घोंप
दे ताकि ये खतनारहित आदमी मुझे बे-
रहमी से न मारें।"*[4] मगर उसके सैनिक
ने इनकार कर दिया क्योंकि ऐसा करने
की उसकी हिम्मत नहीं हुई। तब शाऊल
ने अपनी तलवार ली और खुद उस पर
गिर गया।[5] 5 जब शाऊल के हथियार
ढोनेवाले सैनिक ने देखा कि वह मर गया
है, तो वह सैनिक भी अपनी तलवार पर
गिर पड़ा और मर गया। 6 इस तरह
शाऊल और उसके तीन बेटे मर गए और
उनके साथ-साथ उसके घराने के सभी
लोग मर गए।[6] 7 जब घाटी के इलाके
में रहनेवाले सब इसराएलियों ने देखा कि
सब लोग भाग गए हैं और शाऊल और
उसके बेटे मर गए हैं, तो वे अपना-अपना
शहर छोड़कर भागने लगे। फिर पलिश्ती
आकर उन शहरों में रहने लगे।
8 अगले दिन जब पलिश्ती, मारे गए
इसराएली सैनिकों के कपड़े और हथियार
लेने आए तो उन्होंने गिलबो पहाड़ पर
शाऊल और उसके बेटों की लाशें देखीं।[7]
9 उन्होंने शाऊल का सिर काट लिया
और उसका बख्तर और सभी हथियार
निकाल लिए। उन्होंने पलिश्तियों के पूरे
देश में संदेश भेजा कि यह खबर उनके
मूरतों के मंदिरों तक और लोगों तक पहुँ-
चायी जाए।[8] 10 फिर उन्होंने शाऊल

अध्य. 9
1 यह 21:8, 17
2 1शम 14:50
3 1शम 9:1, 2
1शम 11:15
4 1शम 14:45
1शम 18:1
2शम 1:23
5 1शम 14:49
6 1शम 31:2
7 2शम 4:4
8 2शम 9:12

दूसरा कॉल.

अध्य. 10
1 1शम 31:1-5
2शम 1:21, 25
2 1इत 8:33
3 1शम 26:9, 10
4 न्या 16:21, 23
5 1इत 10:13
6 1शम 31:6, 7
7 1शम 28:4
1शम 31:8-10
8 न्या 16:23, 24

9:33 * या "भोजन के कमरों।"

10:4 * या "मेरे साथ बुरा सलूक न करें।"

के हथियार ले जाकर अपने देवता के
मंदिर में रखे और उसका सिर दागोन के
मंदिर[1] में लटका दिया।
11 जब गिलाद के याबेश में रहने-
वालों[2] ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल
के साथ क्या किया है,[3] **12** तो उनके
सभी योद्धा निकल पड़े और शाऊल और
उसके बेटों की लाशें उठा लाए। वे उन
लाशों को याबेश ले आए और उनकी
हड्डियाँ याबेश में बड़े पेड़ के नीचे दफना
दीं।[4] और उन्होंने सात दिन तक उपवास
किया।
13 इस तरह शाऊल मर गया क्योंकि
वह यहोवा का विश्वासयोग्य न रहा और
उसने यहोवा की आज्ञा न मानी,[5] साथ
ही उसने मरे हुओं से संपर्क करने का
दावा करनेवाली औरत से पूछताछ की[6]
14 बजाय इसके कि वह यहोवा से उसकी
मरज़ी पूछता। इसलिए परमेश्वर ने उसे
मार डाला और यिशै के बेटे दाविद को
राज सौंप दिया।[7]

11 कुछ समय बाद सभी इसराएली
हेब्रोन में दाविद के पास इकट्ठा
हुए[8] और कहने लगे, "देख, तेरे साथ
हमारा खून का रिश्ता है।*[9] **2** बीते
समय में जब शाऊल राजा था, तब तू ही
लड़ाइयों में इसराएल की अगुवाई करता
था।[10] तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझसे
कहा था, 'तू एक चरवाहे की तरह
मेरी प्रजा इसराएल की देखभाल करेगा
और इसराएल का अगुवा बनेगा।'"[11]
3 इस तरह इसराएल के सभी मुखिया
हेब्रोन में राजा के पास आए और दाविद
ने हेब्रोन में यहोवा के सामने उनके साथ
एक करार किया। फिर उन्होंने दाविद का
अभिषेक करके उसे इसराएल का राजा
ठहराया,[1] ठीक जैसे यहोवा ने शमूएल से
कहलवाया था।[2]
4 बाद में दाविद और सभी इसराएली
यरूशलेम यानी यबूस[3] के लिए निकल
पड़े जहाँ यबूसी[4] रहते थे। **5** यबूस के
निवासियों ने दाविद का मज़ाक बनाते हुए
कहा, "तू हमारे इलाके में कभी कदम
नहीं रख पाएगा!"[5] मगर दाविद ने
सिय्योन[6] के गढ़वाले शहर पर कब्ज़ा कर
लिया जो आज दाविदपुर[7] कहलाता है।
6 दाविद ने कहा, "जो कोई सबसे
पहले यबूसियों पर हमला करेगा वही
प्रधान और हाकिम बनेगा।" सरूयाह
का बेटा योआब[8] सबसे पहले गया और
वह प्रधान बन गया। **7** सिय्योन का
किला जीतने के बाद दाविद वहाँ जाकर
बस गया। इसीलिए उन्होंने उसे दाविद-
पुर नाम दिया। **8** वह शहर को बनाने
लगा। वह टीले* पर और उसके चारों
तरफ दूसरी जगहों में दीवारें और इमार-
तें बनवाने लगा और शहर की बाकी
जगहों को योआब ने दोबारा बनाया।
9 इस तरह दाविद दिनों-दिन महान होता
गया[9] और सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
उसके साथ था।
10 दाविद के वीर योद्धाओं के मुखिया
ये थे, जिन्होंने सब इसराएलियों के
संग मिलकर उसे पूरा साथ दिया और
जैसे यहोवा ने इसराएल से वादा किया था
उन्होंने उसे राजा बनाया।[10] **11** दाविद
के वीर योद्धाओं की सूची यह है: याशो-
बाम[11] जो एक हकमोनी का बेटा था
और तीन सूरमाओं में मुखिया था।[12]
एक बार उसने अपने भाले से 300
से ज़्यादा दुश्मनों को मार गिराया था।[13]

अध्य. 10
1 1शम 5:2
2 1शम 11:1
3 1शम 31:11-13
4 2शम 2:5; 2शम 21:12
5 1शम 13:13; 1शम 15:22, 23
6 लैव 20:6; 1शम 28:7
7 रूत 4:17; 1शम 13:14; 1शम 15:27, 28; 2शम 5:3

अध्य. 11
8 गि 13:22; 2शम 2:1; 2शम 5:5; 1इत 12:23
9 2शम 5:1, 2
10 1शम 18:6, 13
11 2शम 6:21; 2शम 7:8, 9; भज 78:70, 71

दूसरा कॉल.
1 1शम 16:13; 2शम 2:4; 2शम 5:3
2 1शम 15:27, 28
3 यह 15:63; न्या 1:21; न्या 19:10
4 उत 10:15, 16; उत 15:18, 21; निर्ग 3:17
5 2शम 5:6-10
6 1रा 8:1; भज 2:6; भज 48:2
7 1रा 2:10
8 2शम 2:18
9 2शम 3:1
10 1शम 16:12, 13
11 1इत 27:1, 2
12 2शम 23:8
13 यह 23:10

11:1 *शा., "हम तेरा हाड़-माँस हैं।"

11:8 *या "मिल्लो।" इस इब्रानी शब्द का मतलब "भरना" है।

12 अगला सूरमा था एलिआज़र,[1] जो
अहोही[2] दोदो का बेटा था। वह तीन सूर-
माओं में से एक था। **13** वह दाविद के
साथ पस-दम्मीम[3] में था जहाँ पलिश्ती
युद्ध के लिए इकट्ठा हुए थे। वहाँ जौ
का एक खेत था। लोग पलिश्तियों
को देखकर भाग गए, **14** मगर एलि-
आज़र खेत के बीचों-बीच खड़ा उसकी
रक्षा करता रहा और पलिश्तियों को मार
गिराता रहा। इसलिए यहोवा ने इसराए-
लियों को बड़ी जीत दिलायी।*[4]

15 दाविद की सेना के 30 मुखियाओं
में से तीन आदमी चट्टान यानी अदुल्लाम
की गुफा में गए जहाँ दाविद था।[5]
उस समय पलिश्ती सेना रपाई घाटी में
छावनी डाले हुई थी।[6] **16** दाविद एक
महफूज़ जगह पर था और पलिश्तियों की
एक टुकड़ी बेतलेहेम में थी। **17** तब
दाविद ने कहा, "काश! मुझे बेतलेहेम[7] के
फाटकवाले कुंड से थोड़ा पानी पीने को
मिल जाता!" **18** तब उसके तीन सूरमा
पलिश्ती सेना को चीरकर उनकी छावनी
में घुस गए और उन्होंने बेतलेहेम के
फाटकवाले कुंड से पानी निकाला और
दाविद के पास ले आए। मगर दाविद
ने पानी पीने से इनकार कर दिया और
यहोवा के सामने उँडेल दिया। **19** उसने
कहा, "मैं यह पानी पीने की सोच भी
नहीं सकता, ऐसा करना मेरे परमेश्वर
की नज़र में बिलकुल गलत होगा! मैं
इन आदमियों का खून कैसे पी सकता हूँ
जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डाल दी
थी?[8] वे अपनी जान जोखिम में डाल-
कर यह पानी लाए।" इसीलिए दाविद
ने वह पानी पीने से इनकार कर दिया।
उसके तीन सूरमाओं ने ये बड़े-बड़े काम
किए थे।

20 अबीशै,[1] जो योआब का भाई
था,[2] तीन और योद्धाओं का अधिकारी
बना। उसने अपने भाले से 300 से भी
ज़्यादा दुश्मनों को मार गिराया था।
वह भी उन तीन योद्धाओं जितना मश-
हूर था।[3] **21** हालाँकि वह उन तीन
योद्धाओं में से दो से ज़्यादा कुशल
था और उनका मुखिया था, फिर भी
वह पहले तीन सूरमाओं के बराबर नहीं
पहुँचा।

22 यहोयादा का बेटा बनायाह[4] भी
एक दिलेर सैनिक था।* उसने कब-
सेल[5] में कई बहादुरी के काम किए थे।
उसने मोआब के रहनेवाले अरीएल के दो
बेटों को मार गिराया और एक दिन जब
बहुत बर्फ पड़ रही थी तो उसने एक सूखे
हौद के अंदर जाकर एक शेर को मार
डाला।[6] **23** उसने एक मिस्री आदमी
को भी मार डाला था जो बहुत ऊँची
कद-काठी का था। वह पाँच हाथ* लंबा
था।[7] उस मिस्री के हाथ में जुलाहे के
लट्ठे जितना भारी भाला था[8] जबकि बना-
याह के हाथ में सिर्फ एक डंडा था। बना-
याह ने उसका भाला छीन लिया और उसी
के भाले से उसे मार डाला।[9] **24** यहो-
यादा के बेटे बनायाह ने ये बड़े-बड़े
काम किए थे। वह उन तीन सूरमाओं
जितना मशहूर था। **25** हालाँकि वह
तीस योद्धाओं से ज़्यादा कुशल था, फिर
भी वह उन तीन सूरमाओं के बराबर नहीं
पहुँचा।[10] लेकिन दाविद ने बनायाह को
ही अपने अंगरक्षकों का अधिकारी ठह-
राया।

26 सेना के वीर योद्धा थे, योआब का
भाई असाहेल,[11] बेतलेहेम के रहनेवाले

11:14 *या "का बड़ा उद्धार किया।"

11:22 *शा., "एक वीर का बेटा था।"
11:23 *वह 2.23 मी. (7.3 फुट) लंबा
था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 11
1 2शम 23:9, 10
2शम 23:
15-17
2 1इत 8:1, 4
3 1शम 17:1
4 भज 18:50
5 1शम 22:1
6 यह 15:8, 12
2शम 23:
13-17
7 1शम 20:6
8 उत 9:4
लैव 17:10

दूसरा कॉल.
1 1शम 26:6
2शम 2:18
2शम 18:2
2 2शम 3:30
3 2शम 23:18,
19
4 1रा 4:4
1इत 27:1, 5
5 यह 15:21
6 न्या 14:5, 6
1शम 17:36,
37
2शम 23:
20-23
7 1शम 17:4
8 1शम 17:7
9 1शम 17:51
10 1इत 11:19
11 2शम 2:18, 23
1इत 27:1, 7

दोदो का बेटा एल्हानान,[1] **27** हरोर का
रहनेवाला शम्मोत, पलोनी हेलेस,
28 तकोआ के रहनेवाले इक्केश का
बेटा ईरा,[2] अनातोत का रहनेवाला अबी-
एजेर,[3] **29** हूशाई सिब्बकै,[4] अहोही
के घराने का ईलै, **30** नतोपा का रहने-
वाला महरै,[5] नतोपा के रहनेवाले बानाह
का बेटा हेलेद,[6] **31** बिन्यामीन गोत्र
के गिबा[7] के रहनेवाले रीबै का बेटा
इत्तै, पिरातोन का रहनेवाला बनायाह,
32 गाश[8] की घाटियों* का रहनेवाला
हूरै, बेत-अराबा का रहनेवाला अबीएल,
33 बहूरीम का रहनेवाला अज़्मा-
वेत, शालबोनी एलीयाबा, **34** गिजोनी
हाशेम के बेटे, हरारी शागे का
बेटा योनातान, **35** हरारी सकार का
बेटा अहीआम, ऊर का बेटा एली-
पाल, **36** मकेराई हेपेर, पलोनी अहि-
याह, **37** करमेल का रहनेवाला हेसरो,
एजबै का बेटा नारै, **38** नातान का
भाई योएल, हगरी का बेटा मिभार,
39 अम्मोनी सेलेक, बेरोत का रहनेवाला
नहरै जो सरूयाह के बेटे योआब का हथि-
यार ढोनेवाला सैनिक था, **40** यित्री
ईरा, यित्री गारेब, **41** हित्ती उरियाह,[9]
अहलै का बेटा जाबाद, **42** रूबेनी
शीजा का बेटा अदीना जो रूबेनियों और
उसके साथवाले 30 आदमियों का एक
मुखिया था, **43** माका का बेटा हानान,
मित्नी योशापात, **44** अश्तारोत का
रहनेवाला उज्जिया, अरोएर के रहनेवाले
होताम के बेटे शामा और यीएल,
45 शिम्री का बेटा यदीएल और उसका
भाई योहा जो तीसी था, **46** महवी
एलीएल, एलनाम के बेटे यरीबै और
योशव्याह, मोआबी यित्मा, **47** एली-
एल, ओबेद और मसोबाई यासीएल।

11:32 * शब्दावली देखें।

अध्य. 11
1 2शम 23: 24-39
2 1इत 27:1, 9
3 1इत 27:1, 12
4 2शम 21:18 1इत 27:1, 11
5 1इत 27:1, 13
6 1इत 27:1, 15
7 न्या 20:15 1इत 12:1, 2
8 यह 24:30
9 2शम 11:3, 17 2शम 12:9 1रा 15:5

दूसरा कॉल.

अध्य. 12
1 1शम 27:5, 6 2शम 1:1
2 1शम 27:1
3 1इत 11:10
4 न्या 3:15 न्या 20:15, 16
5 1शम 17:49
6 उत 49:27
7 1शम 11:4
8 1इत 11:26, 33
9 यह 9:3
10 1इत 11:15
11 गि 26:10, 11
12 1शम 23:14, 29 1शम 24:22 1इत 11:16

12 जब दाविद सिकलग में था[1] और
कीश के बेटे शाऊल की वजह
से खुलेआम घूम नहीं पा रहा था,[2]
तब ये आदमी उसके पास आए। वे
उन वीर योद्धाओं में से थे जिन्होंने युद्ध
में उसका साथ दिया था।[3] **2** वे तीर-
कमान से लैस रहते थे और दाएँ-बाएँ
दोनों हाथों[4] से गोफन का पत्थर और
तीर चला सकते थे।[5] वे बिन्या-
मीन[6] गोत्र से थे यानी शाऊल के
भाई थे। **3** उनका मुखिया अहीएजेर
था और उसके साथ थेः योआश, गिबा[7]
के रहनेवाले शमाआ के दोनों बेटे,
अज़्मावेत[8] के बेटे यजीएल और पेलेत,
बराका, अनातोत का रहनेवाला येहू,
4 गिबोनी[9] यिशमायाह जो तीस[10] में
से एक वीर योद्धा था और उनका
अधिकारी था, यिर्मयाह, यहजीएल,
योहानान, गदेरा का रहनेवाला योजाबाद,
5 एलूजै, यरीमोत, बाल्याह, शमरयाह,
हारीपी शपत्याह, **6** कोरह के वंशजों में
से एलकाना, यिश्शायाह, अजरेल, योए-
जेर और याशोबाम,[11] **7** और गदोर के
रहनेवाले यरोहाम के बेटे योएला और
जबद्याह।

8 कुछ गादी लोग दाविद की तरफ
हो गए और वे उसके पास वीराने में
महफ़ूज़ जगह आए।[12] वे वीर योद्धा थे
जिन्होंने युद्ध की तालीम पायी थी। वे
हाथ में बड़ी ढाल और बरछा लिए
हमेशा तैयार रहते थे। उनका मुँह शेर
के मुँह जैसा था और वे पहाड़ी
चिकारे की तरह फुर्ती से दौड़ते थे।
9 उनका मुखिया एजेर था, दूसरे
पद पर ओबद्याह था, तीसरा एलीआब,
10 चौथा मिशमन्ना, पाँचवाँ यिर्म-
याह, **11** छठा अत्तै, सातवाँ एलीएल,
12 आठवाँ योहानान, नौवाँ एलजाबाद,

13 दसवाँ यिर्मयाह और ग्यारहवाँ मकबन्नै। 14 ये सभी गादी[1] थे और सेना के मुखिया थे। उनमें जो सबसे छोटा था वह 100 सैनिकों के बराबर था और सबसे बड़ा 1,000 के बराबर।[2] 15 यही वे आदमी थे जिन्होंने पहले महीने में यरदन पार की थी जब पानी तट के ऊपर बह रहा था। उन्होंने निचले इलाकों में रहनेवाले सब लोगों को पूरब और पश्‍चिम की तरफ भगा दिया।

16 बिन्यामीन और यहूदा के भी कुछ आदमी दाविद के पास महफूज़ जगह आए थे।[3] 17 तब दाविद बाहर उनके पास आया और उनसे कहा, "अगर तुम शांति के इरादे से मेरी मदद करने आए हो तो मेरा दिल तुम्हारे साथ एक होगा। लेकिन अगर तुम मुझे धोखा देकर दुश्‍मनों के हवाले करने आए हो जबकि मैंने कोई गलती नहीं की है, तो हमारे पुरखों का परमेश्‍वर देखे और न्याय करे।"[4] 18 तब परमेश्‍वर की पवित्र शक्‍ति अमासै पर आयी,[5] जो तीस का मुखिया था और उसने कहा,

"हे दाविद, हम तेरे लोग हैं, हे यिशै
के बेटे, हम तेरे साथ हैं।[6]
तुझे शांति मिले शांति और तेरी
मदद करनेवालों को भी शांति
मिले,
क्योंकि तेरा परमेश्‍वर तेरी मदद
कर रहा है।"[7]

इसलिए दाविद ने उन्हें स्वीकार किया और अपनी टुकड़ियों का मुखिया ठहराया।

19 मनश्‍शे के कुछ लोग भी शाऊल की सेना छोड़कर दाविद के पास आ गए। ऐसा तब हुआ जब दाविद पलिश्‍तियों के साथ मिलकर शाऊल से युद्ध करने गया था। मगर दाविद ने पलिश्‍तियों की मदद नहीं की क्योंकि पलिश्‍ती सरदारों[1] ने सलाह-मशविरा करने के बाद उसे भेज दिया था। उन्होंने कहा, "यह हमें छोड़कर अपने मालिक शाऊल के पास चला जाएगा और हमें अपनी जान की कीमत चुकानी पड़ेगी।"[2] 20 जब दाविद सिकलग गया था,[3] तो मनश्‍शे गोत्र से जो लोग उससे जा मिले वे ये थे: अदनाह, योजाबाद, यदीएल, मीकाएल, योजाबाद, एलीहू और सिल्लतै। वे मनश्‍शे की सेना में हज़ारों[4] के मुखिया थे। 21 उन्होंने लुटेरे-दल से लड़ने में दाविद की मदद की थी क्योंकि वे सब बड़े ताकतवर और दिलेर थे[5] और वे उसकी सेना के प्रधान बन गए। 22 हर दिन लोग दाविद की मदद करने उसके पास आते रहे[6] और दाविद की सेना बढ़ते-बढ़ते परमेश्‍वर की सेना जितनी विशाल हो गयी।[7]

23 ये हथियारबंद सैनिकों के मुखियाओं की गिनती है जो हेब्रोन में दाविद के पास इसलिए आए[8] कि यहोवा के आदेश के मुताबिक शाऊल का राज उसे सौंप दें।[9] 24 यहूदा के आदमी जो हाथ में बड़ी ढाल और बरछे लिए युद्ध के लिए तैयार थे, वे 6,800 थे। 25 शिमोनियों में से ताकतवर और दिलेर आदमियों की गिनती 7,100 थी।

26 लेवियों में से 4,600 थे। 27 हारून के बेटों[10] का अगुवा यहोयादा[11] था और उसके साथ 3,700 आदमी थे। 28 उनमें सादोक[12] भी था जो एक ताकतवर और दिलेर जवान था और उसके साथ उसके पिता के घराने के 22 प्रधान थे।

29 बिन्यामीनियों यानी शाऊल के भाइयों[13] में से 3,000 आदमी थे जिनमें से ज़्यादातर पहले शाऊल के घराने के कामों की निगरानी करते थे।

अध्य. 12
1 उत 49:19, व्य 33:20
2 लैव 26:8
3 1शम 22:1, 1शम 23:14, 1शम 24:22
4 1शम 24:12, 15, 1शम 26:23, भज 7:6
5 न्या 6:34, न्या 13:24, 25
6 2शम 15:21
7 भज 54:4

दूसरा कॉल.
1 न्या 3:1, 3
2 1शम 29:2-4
3 1शम 30:1
4 व्य 33:17
5 1इत 5:23, 24, 1इत 11:10
6 2शम 2:3
7 2शम 3:1
8 2शम 2:1, 2शम 5:1
9 1शम 16:1, 13, 1इत 11:10
10 1इत 6:49
11 1इत 27:1, 5
12 2शम 8:17, 1रा 1:8, 1रा 2:35, 1इत 6:1, 8, 1इत 27:16, 17
13 1इत 8:1, 33, 1इत 12:1, 2

30 एप्रैमियों में से 20,800 ताकत-
वर और दिलेर आदमी थे जिनका अपने-
अपने पिता के घराने में बड़ा नाम था।
31 मनश्शे के आधे गोत्र में से
18,000 आदमी थे जिन्हें नाम लेकर
चुना गया था कि वे आकर दाविद को
राजा बनाएँ। **32** इस्साकार गोत्र में से
200 मुखिया थे जिन्होंने उस वक्त के
हालात को समझा था और वे जानते
थे कि इसराएल को क्या करना चाहिए।
उनके सभी भाई उनकी कमान के नीचे
थे। **33** जबूलून गोत्र में से 50,000
आदमी थे जो दल बनाकर युद्ध के लिए
तैयार थे और सारे हथियारों से लैस थे।
वे सब दाविद से जा मिले और उन्होंने
ठान लिया था कि वे सिर्फ उसके वफादार
रहेंगे।* **34** नप्ताली गोत्र से 1,000
प्रधान थे और उनके साथ 37,000
सैनिक थे जो बड़ी ढाल और भाला
पकड़ते थे। **35** दान गोत्र से 28,600
आदमी दल बनाकर युद्ध के लिए तैयार
थे। **36** आशेर गोत्र से 40,000 थे
जो दल बनाकर युद्ध के लिए तैयार थे।
37 यरदन के उस पार[1] रूबेनियों,
गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र से
1,20,000 सैनिक थे जो हर तरह के
हथियार से लैस थे। **38** ये सभी बड़े-
बड़े योद्धा थे जो युद्ध के लिए दल बाँधकर
खड़े रहते थे। वे पूरे दिल से हेब्रोन आए
ताकि दाविद को सारे इसराएल का राजा
बनाएँ। और बाकी इसराएली भी दाविद
को राजा बनाने के लिए उनके साथ एक
हो गए।*[2] **39** वे दाविद के साथ वहाँ
तीन दिन रहे और उन्होंने खाया-पीया
क्योंकि उनके भाइयों ने उनके लिए इसका
इंतज़ाम किया था। **40** उनके पास के
इलाकों में रहनेवाले, यहाँ तक कि दूर
इस्साकार, जबूलून और नप्ताली के लोग
भी उनके लिए बड़ी तादाद में खाने की
चीज़ें लाते रहे। वे गधों, ऊँटों, खच्चरों
और गाय-बैलों पर मैदा, अंजीर और
किशमिश की टिकियाँ, दाख-मदिरा और
तेल लादकर लाए और गाय-बैल और
भेड़ ले आए क्योंकि इसराएल में खुशियाँ
मनायी गयीं।

13 दाविद ने सैकड़ों और हज़ारों
की टुकड़ियों के प्रधानों से और
हर अगुवे से सलाह-मशविरा किया।[1]
2 फिर उसने इसराएल की पूरी मंडली से
कहा, "अगर तुम्हें सही लगे और हमारे
परमेश्वर यहोवा को मंज़ूर हो तो हम
इसराएल के सभी इलाकों में रहने-
वाले अपने बाकी भाइयों को खबर
भेजेंगे और याजकों और लेवियों को भी,
जो अपने उन शहरों में हैं[2] जिनके आस-
पास चरागाह हैं, खबर भेजेंगे कि वे सभी
आएँ और हम सब मिलकर **3** हमारे
परमेश्वर का संदूक वापस ले आएँ।"[3]
क्योंकि उन्होंने शाऊल के दिनों में संदूक
की देखभाल नहीं की थी।[4] **4** पूरी
मंडली सहमत हुई क्योंकि सब लोगों को
यह बात सही लगी। **5** तब दाविद ने
मिस्र की नदी* से लेकर दूर लेबो-
हमात# तक रहनेवाले सभी इसराए-
लियों को इकट्ठा किया[5] ताकि वे किरयत-
यारीम से सच्चे परमेश्वर का संदूक ले
आएँ।[6]
6 दाविद और पूरा इसराएल बाला[7]
यानी किरयत-यारीम गए जो यहूदा में है
ताकि वहाँ से सच्चे परमेश्वर यहोवा का

अध्य. 12
1 गि 32:33; यह 13:8
2 उत 49:8, 10; 1इत 11:10

दूसरा कॉल.

अध्य. 13
1 1इत 15:25
2 गि 35:2
3 1शम 7:2
4 1शम 14:18
5 गि 34:2, 8
6 1शम 6:21–7:1; 2शम 6:1, 2; 1इत 15:3
7 यह 15:9, 12

12:33 *या "जो दाविद से जा मिले उनमें से कोई दोहरे मन का नहीं था।" **12:38** *शा., "एक दिल के थे।"

13:5 *या "शीहोर।" #या "हमात के प्रवेश।"

संदूक ले आएँ, जो करूबों पर* विराज-
मान है।[1] उसी संदूक के सामने लोग
उसका नाम पुकारते हैं। **7** मगर उन्होंने
सच्चे परमेश्वर के संदूक को एक नयी
बैल-गाड़ी पर रखा[2] और अबीनादाब के
घर से ले जाने लगे। उज्जाह और
अहयो गाड़ी के आगे-आगे चल रहे थे।[3]
8 दाविद और पूरा इसराएल सच्चे पर-
मेश्वर के सामने पूरे दिल से जश्न मना
रहा था। वे सुरमंडल और तारोंवाले दूसरे
बाजे, डफली,[4] झाँझ बजाते,[5] तुरहियाँ
फूँकते और गीत गाते हुए जा रहे थे।[6]
9 मगर जब वे कीदोन के खलिहान पहुँचे
तो ऐसा हुआ कि बैल-गाड़ी पलटने पर हो
गयी। तभी उज्जाह ने हाथ बढ़ाकर संदूक
पकड़ लिया। **10** इस पर यहोवा का
क्रोध उज्जाह पर भड़क उठा और उसने
उसे वहीं मार डाला क्योंकि उज्जाह ने
हाथ बढ़ाकर संदूक पकड़ लिया था[7] और
वह परमेश्वर के सामने मर गया।[8]
11 मगर यह देखकर कि यहोवा का क्रोध
उज्जाह पर भड़क उठा, दाविद बहुत
गुस्सा हुआ। इसी घटना की वजह से वह
जगह आज तक पेरेस-उज्जाह* के नाम
से जानी जाती है।

12 उस दिन दाविद सच्चे परमेश्वर
से बहुत डर गया और उसने कहा,
"मैं सच्चे परमेश्वर का संदूक अपने पास
कैसे लाऊँगा?"[9] **13** दाविद संदूक को
अपने शहर दाविदपुर नहीं लाया बल्कि
उसे गत के रहनेवाले ओबेद-एदोम के घर
पहुँचा दिया। **14** सच्चे परमेश्वर का
संदूक तीन महीने तक ओबेद-एदोम के
घराने के पास ही रहा और यहोवा ओबेद-
एदोम के घराने पर और उसका जो कुछ
था उस पर आशीषें देता रहा।[10]

14 सोर के राजा हीराम[1] ने दाविद
के पास अपने दूत भेजे। साथ
ही, उसने देवदार की लकड़ी और कुछ
राजमिस्त्री* और बढ़ई भेजे ताकि वे
दाविद के लिए एक महल बनाएँ।[2]
2 और दाविद को एहसास हो गया कि
यहोवा ने इसराएल पर उसका राज मज़-
बूती से कायम किया है,[3] क्योंकि पर-
मेश्वर ने अपनी प्रजा इसराएल की
खातिर उसका राज ऊँचा किया था।[4]

3 दाविद ने यरूशलेम में और भी
कुछ औरतों से शादी की[5] और उसके
और भी बेटे-बेटियाँ हुए।[6] **4** यरू-
शलेम में उसके जो बेटे हुए उनके नाम
ये हैं:[7] शम्मू, शोबाब, नातान,[8] सुलै-
मान,[9] **5** यिभार, एलीशू, एलपेलेत,
6 नोगाह, नेपेग, यापी, **7** एलीशामा,
बेल्यादा और एलीपेलेत।

8 जब पलिश्तियों ने सुना कि दाविद
का अभिषेक करके उसे पूरे इसराएल का
राजा बनाया गया है,[10] तो वे सब दाविद
की खोज में निकल पड़े।[11] जब दाविद
को इसका पता चला तो वह उनसे युद्ध
करने चल पड़ा। **9** फिर पलिश्ती लोग
आए और रपाई घाटी[12] में रहनेवालों
पर हमला करते रहे। **10** तब दाविद ने
परमेश्वर से सलाह की, "क्या मैं जाकर
पलिश्तियों पर हमला करूँ? क्या तू उन्हें
मेरे हाथ में कर देगा?" यहोवा ने दाविद
से कहा, "तू जाकर पलिश्तियों पर हमला
कर। मैं उन्हें ज़रूर तेरे हाथ में कर
दूँगा।"[13] **11** तब दाविद ऊपर बाल-
परासीम[14] गया और वहाँ उसने पलिश्ति-
यों को मार गिराया। दाविद ने कहा,
"सच्चा परमेश्वर मेरे आगे-आगे जाकर
पानी की तेज़ धारा की तरह मेरे दुश्मनों

13:6 *या शायद, "के बीच।" **13:11** *मतलब "उज्जाह पर भड़क उठा।"

14:1 *या "दीवार बनानेवाले।"

अध्य. 13
1 निर्ग 25:22, गि 7:89, 1शम 4:4, 2शम 6:2
2 निर्ग 37:5
3 2शम 6:3-8
4 निर्ग 15:20
5 1इत 25:1
6 2इत 5:13
7 गि 4:15
8 लैव 10:1, 2
9 2शम 6:9-11
10 उत 30:27, उत 39:5

दूसरा कॉल.

अध्य. 14
1 1रा 5:6, 8
2 2शम 5:11, 12
3 भज 89:20, 21
4 2शम 7:8
5 व्य 17:17
6 2शम 5:13-16
7 1इत 3:5-9
8 लूक 3:23, 31
9 1रा 1:47, मत 1:6
10 1इत 11:3
11 2शम 5:17, भज 2:2
12 2शम 5:18, 22, 2शम 23:13
13 2शम 5:19-21
14 यश 28:21

पर टूट पड़ा और मेरे हाथों उनका
नाश कर दिया।” इसीलिए उन्होंने उस
जगह का नाम बाल-परासीम* रखा।
12 पलिश्तियों ने अपने देवताओं की
मूर्तियाँ वहीं छोड़ दी थीं और दाविद के
आदेश पर उन्हें आग में जला दिया
गया।[1]

13 बाद में पलिश्ती लोगों ने एक बार
फिर रपाई घाटी पर हमला कर दिया।[2]
14 दाविद ने एक बार फिर सच्चे पर-
मेश्वर से सलाह की, मगर उसने दाविद
से कहा, “तू उन पर सामने से
हमला मत करना। इसके बजाय, तू पीछे
से जाना और बाका झाड़ियों के सामने से
उन पर हमला करना।[3] **15** जब तुझे
झाड़ियों के ऊपर सेना के चलने की
आवाज़ सुनायी दे, तो तू हमला शुरू
कर देना क्योंकि सच्चा परमेश्वर पलिश्ती
सेना को मार गिराने के लिए तेरे आगे-
आगे जा चुका होगा।”[4] **16** दाविद ने
ठीक वैसे ही किया जैसे सच्चे पर-
मेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी[5] और वे
गिबोन से लेकर गेजेर[6] तक पलिश्ती
सेना को मारते गए। **17** सभी देशों में
दाविद का नाम होता गया और यहोवा ने
सब राष्ट्रों में उसका डर फैला दिया।[7]

15 दाविद अपने लिए दाविदपुर में
कई इमारतें बनवाता रहा और
उसने सच्चे परमेश्वर के संदूक के लिए
एक जगह तैयार की और एक तंबू खड़ा
किया।[8] **2** तब जाकर दाविद ने कहा,
“लेवियों को छोड़ और कोई सच्चे पर-
मेश्वर का संदूक नहीं उठाएगा, क्योंकि
यहोवा ने उन्हीं को चुना है कि वे यहोवा
का संदूक उठाएँ और हमेशा उसकी
सेवा करें।”[9] **3** फिर दाविद ने पूरे इस-
राएल को यरूशलेम में इकट्ठा किया ताकि
वे यहोवा का संदूक उस जगह ले जाएँ जो
उसने तैयार की थी।[1]

4 दाविद ने हारून के वंशजों[2]
को और लेवियों[3] को इकट्ठा किया:
5 कहातियों में से प्रधान उरीएल और
उसके 120 भाई, **6** मरारियों में से
प्रधान असायाह[4] और उसके 220 भाई,
7 गेरशोमियों में से प्रधान योएल[5] और
उसके 130 भाई, **8** एलीसापान[6] के
वंशजों में से प्रधान शमायाह और उसके
200 भाई, **9** हेब्रोन के वंशजों में से
प्रधान एलीएल और उसके 80 भाई,
10 उज्जीएल[7] के वंशजों में से प्रधान
अम्मीनादाब और उसके 112 भाई।
11 इसके अलावा, दाविद ने सादोक
और अबियातार याजकों[8] को और इन
लेवियों को बुलाया, उरीएल, असायाह,
योएल, शमायाह, एलीएल और अम्मीना-
दाब **12** और उसने उन सबसे कहा,
“तुम सब लेवियों के पिताओं के घरानों
के मुखिया हो। तुम और तुम्हारे भाई खुद
को पवित्र करें और इसराएल के पर-
मेश्वर यहोवा का संदूक उस जगह पहुँ-
चाएँ जो मैंने उसके लिए तैयार की
है। **13** पहली बार तुम लोगों ने संदूक
नहीं ढोया था[9] क्योंकि हमने इसे ढोने
का सही तरीका जानने की कोशिश नहीं
की थी।[10] इस वजह से हमारे परमेश्वर
यहोवा का क्रोध हम पर भड़क उठा।”[11]
14 इसलिए याजकों और लेवियों ने खुद
को पवित्र किया ताकि इसराएल के पर-
मेश्वर यहोवा का संदूक ला सकें।

15 फिर लेवियों ने सच्चे परमेश्वर
का संदूक डंडों के सहारे अपने कंधों
पर उठाया,[12] ठीक जैसे यहोवा के
वचन के मुताबिक मूसा ने आज्ञा दी
थी। **16** इसके बाद दाविद ने लेवियों के
प्रधानों को बताया कि वे अपने भाइयों

अध्य. 14
1 व्य 7:25
2 2शम 5:22-25
3 यह 8:2; भज 18:34
4 व्य 23:14; न्या 4:14
5 उत 6:22; निर्ग 39:32
6 यह 16:10
7 व्य 2:25; व्य 11:25; यह 2:9

अध्य. 15
8 2शम 7:1, 2; 1इत 16:1; भज 132:1-5
9 गि 4:15; व्य 10:8

दूसरा कॉल.
1 2शम 6:12; 1इत 13:5
2 गि 3:2, 3
3 1इत 6:1
4 1इत 6:29, 30
5 1इत 23:6-8
6 निर्ग 6:18, 22
7 निर्ग 6:16, 18
8 1शम 22:20; 2शम 8:17; 1रा 2:27, 35
9 2शम 6:3
10 गि 4:15; व्य 31:9
11 2शम 6:8
12 निर्ग 25:14; गि 4:6; 2इत 5:9

14:11 *मतलब “टूट पड़नेवाला मालिक।”

को, जो गायक थे, गाने के लिए ठहराएँ
ताकि वे तारोंवाले बाजे, सुरमंडल[1] और
झाँझ बजाकर ऊँची आवाज़ में गाते हुए
जयजयकार करें।[2]

17 इसलिए लेवियों ने योएल के बेटे
हेमान[3] को, उसके भाइयों में से
बेरेक्याह के बेटे आसाप[4] को और
उनके मरारी भाइयों में से कूशायाह
के बेटे एतान[5] को ठहराया। 18 उनके
साथ दूसरे दल के ये भाई थे:[6] जकर-
याह, बेन, याजीएल, शमीरामोत, यही-
एल, उन्नी, एलीआब, बनायाह, मासे-
याह, मतित्याह, एलीपलेहू, मिकनेयाह
और पहरेदार ओबेद-एदोम और
यीएल। 19 गायक हेमान,[7] आसाप[8]
और एतान को ताँबे के झाँझ बजाने
थे,[9] 20 जकरयाह, अजीएल, शमीरा-
मोत, यहीएल, उन्नी, एलीआब, मासेयाह
और बनायाह ने अलामोत की शैली*[10]
के मुताबिक तारोंवाले बाजे बजाए,
21 मतित्याह,[11] एलीपलेहू, मिकनेयाह,
ओबेद-एदोम, यीएल और अजज्याह ने
शेमिनिथ* की धुन[12] पर सुरमंडल बजाए
ताकि वे संगीत का निर्देशन करें।
22 लेवियों के प्रधान कनन्याह[13] ने
संदूक ढोने के काम की निगरानी की
क्योंकि वह इस काम में कुशल था।
23 बेरेक्याह और एलकाना संदूक के
पहरेदार थे। 24 इन याजकों ने सच्चे
परमेश्वर के संदूक के सामने ज़ोर-ज़ोर
से तुरहियाँ फूँकी:[14] शबनयाह, योशा-
पात, नतनेल, अमासै, जकरयाह, बना-
याह और एलीएज़ेर। ओबेद-एदोम और
यहियाह भी संदूक के पहरेदार थे।

25 दाविद और इसराएल के मुखिया
और हज़ारों की टुकड़ियों के प्रधान साथ
मिलकर ओबेद-एदोम के घर की तरफ
गए ताकि वहाँ से यहोवा के करार के
संदूक को खुशियाँ मनाते हुए ला सकें।[1]
26 सच्चे परमेश्वर ने उन लेवियों की
मदद की जो यहोवा के करार का संदूक
ढोकर ले जा रहे थे इसलिए उन्होंने सात
बैलों और सात मेढ़ों की बलि चढ़ायी।[2]
27 दाविद बेहतरीन कपड़े से बना बिन
आस्तीन का बागा पहने हुए था, ठीक
जैसे संदूक ढोनेवाले सभी लेवी, गायक
और संदूक ढोनेवाले गायकों की निग-
रानी करनेवाला कनन्याह पहने हुए था।
दाविद मलमल का एपोद भी पहने हुए
था।[3] 28 सभी इसराएली नरसिंगे और
तुरही फूँकते हुए,[4] झाँझ और तारोंवाले
बाजे और सुरमंडल ज़ोर-ज़ोर से बजाते
हुए और जयजयकार करते हुए यहोवा के
करार का संदूक ला रहे थे।[5]

29 मगर जब यहोवा के करार का
संदूक दाविदपुर पहुँचा[6] और शाऊल की
बेटी मीकल[7] ने खिड़की से नीचे झाँककर
देखा कि राजा दाविद उछलते-कूदते जश्न
मना रहा है तो वह मन-ही-मन उसे तुच्छ
समझने लगी।[8]

16 फिर वे सच्चे परमेश्वर का संदूक
ले आए और उसे उस तंबू के
अंदर रख दिया जो दाविद ने उसके
लिए खड़ा किया था।[9] उन्होंने सच्चे पर-
मेश्वर के सामने होम-बलियाँ और शांति-
बलियाँ चढ़ायीं।[10] 2 जब दाविद ये
बलियाँ चढ़ा चुका,[11] तो उसने यहोवा
के नाम से लोगों को आशीर्वाद दिया।
3 और उसने सभी इसराएलियों में से
हर आदमी और हर औरत को एक
गोल रोटी, एक खजूर की टिकिया और
एक किशमिश की टिकिया दी। 4 फिर
उसने कुछ लेवियों को यहोवा के संदूक के
सामने सेवा करने, इसराएल के परमेश्वर

अध्य. 15
1 भज 33:2
2 1इत 16:5; 2इत 5:12, 13
3 1इत 6:31, 33; 1इत 25:5
4 1इत 6:31, 39; 1इत 25:1, 2; भज 83:उप
5 1इत 6:31, 44
6 1इत 25:9
7 1इत 6:31-33
8 1इत 25:1
9 1इत 13:8
10 भज 46:उप
11 1इत 16:4, 5
12 भज 6:उप
13 1इत 15:27
14 1इत 16:4, 6

दूसरा कॉल.
1 2शम 6:4, 5; 2शम 6:12; 1इत 13:14
2 2शम 6:13
3 2शम 6:14, 15
4 1इत 16:4, 6
5 2शम 6:5; 1इत 13:8
6 1इत 17:1
7 1शम 18:27; 2शम 3:13, 14
8 2शम 6:16

अध्य. 16
9 1रा 8:1; 1इत 15:1
10 2शम 6:17-19; 1रा 8:5
11 लैव 1:3; लैव 3:1

15:20, 21 *शब्दावली देखें।

यहोवा का आदर करने,* उसका शुक्रिया
अदा करने और उसकी बड़ाई करने
के लिए ठहराया।[1] 5 आसाप[2] मुखिया
था और दूसरे पद पर जकरयाह था।
यीएल, शमीरामोत, यहीएल, मतित्याह,
एलीआब, बनायाह, ओबेद-एदोम और
यीएल[3] तारोंवाले बाजे और सुरमंडल
बजाते थे,[4] आसाप झाँझ बजाता था[5]
6 और याजक बनायाह और याजक
यहजीएल सच्चे परमेश्वर के करार के
संदूक के सामने लगातार तुरहियाँ
फूँकते थे।

7 उसी दिन दाविद ने पहली बार
यहोवा के लिए धन्यवाद का एक गीत
रचा और आसाप और उसके भाइयों को
वह गीत गाने की हिदायत दी।[6] वह गीत
यह था:

8 "यहोवा का शुक्रिया अदा करो,[7]
उसका नाम पुकारो,
उसके कामों के बारे में देश-देश के
लोगों को बताओ![8]
9 उसके लिए गीत गाओ, उसकी
तारीफ में गीत गाओ,*[9]
उसके सभी आश्चर्य के कामों पर
गहराई से सोचो।#[10]
10 गर्व से उसके पवित्र नाम का बखान
करो।[11]
यहोवा की खोज करनेवालों का
दिल मगन हो।[12]
11 यहोवा और उससे मिलनेवाली
ताकत की खोज करो।[13]
उसकी मंज़ूरी पाने की कोशिश
करो।[14]
12 उसने जो आश्चर्य के काम और
चमत्कार किए,

अध्य. 16
1 गि 18:2
2 1इत 6:31, 39
3 1इत 15:18
4 1इत 15:21
5 1इत 15:17, 19
6 1इत 6:31, 39
7 भज 106:1
8 भज 67:2; भज 105:1-6; यश 12:4
9 2शम 23:1; इफ 5:19
10 भज 107:43
11 लैव 22:32; यश 45:25; यिर्म 9:24
12 1इत 28:9; फिल 4:4
13 आम 5:4; सप 2:3
14 भज 24:5, 6

दूसरा कॉल.
1 भज 111:2-4
2 यश 41:8
3 भज 135:4
4 भज 95:7
5 भज 105:7-11
6 व्य 7:9
7 उत 15:18; उत 17:1, 2
8 उत 26:3-5
9 उत 28:14
10 उत 12:7; उत 17:8; उत 35:12
11 व्य 32:8
12 उत 34:30; व्य 26:5; भज 105: 12-15
13 उत 20:1; उत 46:6
14 उत 31:7, 42
15 उत 12:17; उत 20:3

जो फैसले सुनाए उन्हें याद करो,[1]
13 तुम जो उसके सेवक इसराएल का
वंश हो,[2]
याकूब के बेटे और उसके चुने हुए
लोग हो,[3] उन्हें याद करो।
14 वह हमारा परमेश्वर यहोवा है।[4]
उसके किए फैसले सारी धरती पर
लागू हैं।[5]
15 उसका करार सदा तक याद रखो,
वह वादा जो उसने हज़ारों पीढ़ियों
के लिए किया है,*[6]
16 वह करार जो उसने अब्राहम से
किया था,[7]
वह शपथ जो उसने इसहाक से
खायी थी[8]
17 और जिसे याकूब के लिए एक
आदेश[9]
और इसराएल के लिए सदा का
करार बना दिया था
18 और कहा था, 'मैं तुम्हें कनान देश
दूँगा[10]
ताकि यह तुम्हारी तय विरासत
हो।'[11]
19 यह उसने तब कहा था जब तुम
गिनती में कम थे,
हाँ, तुम बहुत कम थे और उस देश
में परदेसी थे।[12]
20 वे एक देश से दूसरे देश में,
एक राज्य से दूसरे राज्य में
जाते थे।[13]
21 उसने किसी इंसान को उन्हें सताने
नहीं दिया,[14]
इसके बजाय, उनकी खातिर
राजाओं को फटकारा,[15]
22 उनसे कहा, 'मेरे अभिषिक्त जनों
को हाथ मत लगाना,

16:4 *शा., "को याद करने।" **16:9** *या "संगीत बजाओ।" #या शायद, "के बारे में बताओ।"

16:15 *शा., "उस वचन को, जो उसने हज़ारों पीढ़ियों के लिए ठहराया है।"

मेरे भविष्यवक्ताओं के साथ कुछ
बुरा न करना।'[1]
23 सारी धरती के लोगो, यहोवा के
लिए गीत गाओ!
वह जो उद्धार दिलाता है, रोज़-ब-
रोज़ उसका ऐलान करो![2]
24 राष्ट्रों में उसकी महिमा का ऐलान
करो,
देश-देश के लोगों में उसके अजूबों
का ऐलान करो।
25 क्योंकि यहोवा महान है, सबसे
ज़्यादा तारीफ के काबिल है।
सभी देवताओं से बढ़कर विस्मय-
कारी है।[3]
26 देश-देश के लोगों के सभी देवता
निकम्मे हैं,[4]
मगर यहोवा ने ही आकाश
बनाया।[5]
27 उसके सामने प्रताप* और
वैभव है,[6]
उसके निवास-स्थान में शक्ति और
आनंद है।[7]
28 देश-देश के सभी घरानो, यहोवा का
आदर करो,
यहोवा का आदर करो क्योंकि
वह महिमा और ताकत से भर-
पूर है।[8]
29 यहोवा का नाम जितनी महिमा का
हकदार है उतनी महिमा उसे दो,[9]
भेंट लेकर उसके सामने आओ।[10]
पवित्र पोशाक पहने* यहोवा को
दंडवत करो।#[11]
30 सारी धरती के लोगो, उसके सामने
थर-थर काँपो!
पृथ्वी* मज़बूती से कायम की
गयी है, यह हिलायी नहीं जा
सकती।[1]
31 आसमान मगन हो, धरती आनंद
मनाए,[2]
राष्ट्रों में ऐलान करो, 'यहोवा राजा
बना है!'[3]
32 समुंदर और उसमें जो भी है, खुशी
से गरजें।
मैदान और उनमें जो भी है, खुशियाँ
मनाएँ।
33 जंगल के पेड़ भी यहोवा के सामने
खुशी से जयजयकार करें,
क्योंकि वह धरती का न्याय करने
आ रहा है।*
34 यहोवा का शुक्रिया अदा करो
क्योंकि वह भला है,[4]
उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।[5]
35 और कहो, 'हे हमारे उद्धारकर्ता
परमेश्वर, हमें बचा ले,[6]
हमें दूसरे राष्ट्रों से इकट्ठा करके
छुड़ा ले
ताकि हम तेरे पवित्र नाम की
तारीफ करें[7]
और तेरी तारीफ करने[8] में बहुत
खुशी पाएँ।
36 इसराएल के परमेश्वर यहोवा की
युग-युग तक* तारीफ होती
रहे।'"
तब सब लोगों ने कहा, "आमीन!"#
और उन्होंने यहोवा की बड़ाई की।
37 फिर दाविद ने आसाप और उसके
भाइयों को यहोवा के करार के संदूक

अध्य. 16
1 उत 20:7
2 भज 40:10; भज 96:1-6
3 निर्ग 15:11
4 यश 45:20; 1कुर 8:4
5 यश 44:24
6 व्य 33:26; भज 8:1
7 1ती 1:11
8 भज 68:34; भज 96:7-13
9 व्य 28:58; नहे 9:5; भज 148:13
10 1इत 29:3-5; मत 5:23
11 व्य 26:10

दूसरा कॉल.
1 भज 104:5; सभ 1:4
2 भज 97:1
3 प्रक 19:6
4 2इत 5:13; लूक 18:19
5 भज 103:17; यिर्म 31:3; विल 3:22
6 भज 68:20
7 भज 122:4
8 यश 43:21

16:27 *या "गरिमा।" 16:29 *या शायद, "उसकी पवित्रता के वैभव की वजह से।" #या "की उपासना करो।"

16:30 *या "उपजाऊ ज़मीन।" 16:33 *या "आ गया है।" 16:36 *या "हमेशा से हमेशा तक।" #या "ऐसा ही हो!"

के सामने ठहराया[1] ताकि वे हर दिन
के नियम के मुताबिक संदूक के सामने
लगातार सेवा करते रहें।[2] 38 ओबेद-
एदोम और उसके भाइयों की गिनती
68 थी। उसने यदूतून के बेटे ओबेद-
एदोम और होसे को पहरेदार ठहराया।
39 याजक सादोक[3] और उसके साथी
याजकों को गिबोन में ऊँची जगह[4] पर
ठहराया ताकि वे यहोवा के पवित्र डेरे के
सामने 40 होम-बलि की वेदी पर सुबह-
शाम नियमित तौर पर यहोवा के लिए
होम-बलियाँ चढ़ाएँ और वे सारे काम करें
जो यहोवा के कानून में लिखे गए
थे और जिनकी आज्ञा उसने इसराएल
को दी थी।[5] 41 उनके साथ हेमान,
यदूतून[6] और चुनिंदा आदमियों में से
बाकी लोग भी थे जिन्हें नाम से चुना गया
था ताकि वे यहोवा का शुक्रिया अदा करें[7]
क्योंकि "उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।"[8] 42 और उनके साथ उसने
हेमान[9] और यदूतून को तुरहियाँ फूँकने,
झाँझ बजाने और सच्चे परमेश्वर की
तारीफ में दूसरे साज़* बजाने का काम
सौंपा और यदूतून के बेटों[10] को फाटक
पर ठहराया। 43 इसके बाद सब लोग
अपने-अपने घर लौट गए और दाविद
अपने घराने को आशीर्वाद देने के लिए
गया।

17 जब दाविद अपने महल में
रहने लगा, तो उसके कुछ ही
समय बाद उसने भविष्यवक्ता नातान[11]
से कहा, "देख, मैं तो देवदार से बने महल
में रह रहा हूँ,[12] जबकि यहोवा के करार
का संदूक कपड़े से बने तंबू में है।"[13]
2 नातान ने दाविद से कहा, "तेरे मन में
जो कुछ है वह कर क्योंकि सच्चा पर-
मेश्वर तेरे साथ है।"

16:42 *या "परमेश्वर के गीतों के साज़।"

3 उसी दिन, रात को परमेश्वर का
यह संदेश नातान के पास पहुँचा, 4 "तू
जाकर मेरे सेवक दाविद से कहना,
'यहोवा तुझसे कहता है, "मेरे निवास के
लिए भवन बनानेवाला तू नहीं होगा।[1]
5 जब से मैं इसराएल को निकाल लाया,
तब से लेकर आज तक क्या मैंने किसी
भवन में निवास किया है? मैं हमेशा एक
तंबू से दूसरे तंबू में और एक डेरे से दूसरे
डेरे* में जाता रहा।[2] 6 जिस दौरान मैं
पूरे इसराएल के साथ-साथ चलता रहा
और मैंने अपने लोगों पर न्यायी ठहराए
कि वे चरवाहों की तरह उनकी देखभाल
करें, तब क्या मैंने कभी किसी न्यायी से
कहा कि तूने मेरे लिए देवदार का भवन
क्यों नहीं बनाया?"'

7 तू मेरे सेवक दाविद से कहना,
'सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता है,
"मैं तुझे चरागाहों से ले आया था
जहाँ तू भेड़ों की देखभाल करता था और
तुझे अपनी प्रजा इसराएल का अगुवा
बनाया।[3] 8 तू जहाँ कहीं जाएगा मैं तेरे
साथ रहूँगा[4] और तेरे सामने से तेरे सभी
दुश्मनों को नाश कर दूँगा[5] और तेरा नाम
ऐसा महान करूँगा कि तू दुनिया के बड़े-
बड़े नामी आदमियों में गिना जाएगा।[6]
9 मैं अपनी प्रजा इसराएल के लिए एक
जगह चुनूँगा और वहाँ उन्हें बसाऊँगा। वे
वहाँ चैन से जीएँगे, कोई उन्हें दुख नहीं
देगा। उन पर दुष्ट लोग अत्याचार नहीं
करेंगे, जैसे गुज़रे वक्त में[7] 10 दुष्ट मेरे
लोगों पर तब से अत्याचार करते रहे
जब मैंने उन पर न्यायी ठहराए थे।[8] मैं
तेरे सब दुश्मनों को तेरे अधीन कर
दूँगा।[9] मैं तुझे एक और बात बताता हूँ,

17:5 *शायद इसका मतलब है, "एक तंबू की जगह से दूसरी जगह और एक निवास से दूसरे निवास।"

अध्य. 16

1 1इत 15:16, 17
2 निर्ग 29:38; 1इत 16:4-6; 2इत 13:11; एज 3:4
3 1इत 12:28
4 1रा 3:4
5 निर्ग 29:39; 2इत 2:4
6 1इत 25:1
7 1इत 16:4
8 2इत 5:13; एज 3:11
9 1इत 6:31, 33; 1इत 15:16, 17
10 1इत 25:1, 3

अध्य. 17

11 1रा 1:8; 1इत 29:29
12 1इत 14:1
13 2शम 7:1-3; 1इत 15:1; 2इत 1:4

दूसरा कॉल.

1 2शम 7:4-7; 1रा 8:17-19; 1इत 22:7, 8
2 निर्ग 40:2; गि 4:24, 25; 2शम 6:17; भज 78:60
3 1शम 16:11, 12; 1शम 17:15; 1शम 25:30; 2शम 7:8-11; भज 78:70, 71
4 1शम 18:14; 2शम 8:6
5 1शम 25:29; 1शम 26:10; भज 89:20, 22
6 1शम 18:30
7 निर्ग 2:23
8 न्या 2:16
9 भज 18:40

‘यहोवा तेरे लिए एक राज-घराना तैयार
करेगा।’

11 जब तेरी उम्र पूरी हो जाएगी और
तेरी मौत हो जाएगी* तो मैं तेरे वंश को,
तेरे बेटों में से एक को खड़ा करूँगा[1] और
उसका राज मज़बूती से कायम करूँगा।[2]
12 वही मेरे लिए एक भवन बनाएगा[3]
और मैं उसकी राजगद्दी सदा के लिए मज़-
बूती से कायम करूँगा।[4] 13 मैं उसका
पिता बनूँगा और वह मेरा बेटा होगा।[5]
मैं उससे प्यार* करना कभी नहीं
छोड़ूँगा,[6] जैसे मैंने उस इंसान से करना
छोड़ दिया था जो तुझसे पहले था।[7]
14 मैं हमेशा के लिए उसे अपने भवन
में ठहराऊँगा और अपना राज सौंपूँगा[8]
और उसकी राजगद्दी सदा तक कायम
रहेगी।”’”[9]

15 नातान ने जाकर ये सारी बातें
और यह पूरा दर्शन दाविद को बताया।

16 तब राजा दाविद यहोवा के सामने
बैठकर कहने लगा, “हे यहोवा परमेश्वर,
मेरी हस्ती ही क्या है? मैं और मेरा
घराना कुछ भी नहीं। फिर भी तूने
मुझे ऊँचा उठाकर इस मुकाम तक पहुँ-
चाया।[10] 17 हे परमेश्वर, तूने यह भी
वादा किया है कि तेरे सेवक का राज-
घराना मुद्दतों तक कायम रहेगा।[11] हे
यहोवा परमेश्वर, तूने मुझे इस काबिल
समझा है कि मैं और ऊँचा उठाया
जाऊँ।* 18 तेरा यह सेवक दाविद इस
सम्मान के बारे में तुझसे और क्या कह
सकता है? तू तो अपने सेवक को अच्छी
तरह जानता है।[12] 19 हे यहोवा, तूने
अपने सेवक की खातिर और अपने मन
की इच्छा के मुताबिक ये सारे महान काम
किए हैं और इस तरह अपनी महान-
ता ज़ाहिर की है।[1] 20 हे यहोवा, तेरे
जैसा और कोई नहीं।[2] हमने बहुत-से
ईश्वरों के बारे में सुना है, मगर तुझे छोड़
और कोई परमेश्वर नहीं।[3] 21 और
इस धरती पर तेरी प्रजा इसराएल जैसा
और कौन-सा राष्ट्र है?[4] सच्चा पर-
मेश्वर जाकर उन्हें छुड़ा लाया ताकि वे
उसके अपने लोग बनें।[5] तूने अपने लोगों
को मिस्र से छुड़ाया और उनके सामने से
दूसरी जातियों को खदेड़कर बाहर कर
दिया।[6] तूने महान और विस्मयकारी
काम करके अपना नाम ऊँचा किया।[7]
22 तूने अपनी प्रजा इसराएल को हमेशा
के लिए अपने लोग बना लिया[8] और हे
यहोवा, तू उनका परमेश्वर बन गया।[9]
23 अब हे यहोवा, तूने अपने सेवक और
उसके घराने के बारे में जो वादा किया
था उसे पूरा करने में तू हमेशा विश्वास-
योग्य रहे और तू ठीक वैसा ही करे
जैसा तूने वादा किया है।[10] 24 तेरा
नाम सदा कायम* और ऊँचा रहे[11] ताकि
लोग कहें, ‘सेनाओं का परमेश्वर और
इसराएल का परमेश्वर यहोवा इसराएल
के लिए परमेश्वर है’ और तेरे सेवक
दाविद का राज-घराना तेरे सामने सदा
तक मज़बूती से कायम रहे।[12] 25 हे
मेरे परमेश्वर, तूने अपने सेवक को
अपना यह मकसद बताया है कि तू उसके
लिए एक राज-घराना बनाएगा। इसीलिए
तेरा यह सेवक पूरे यकीन के साथ तुझसे
यह प्रार्थना कर पाया है। 26 हे यहोवा,
तू ही सच्चा परमेश्वर है और तूने अपने
सेवक के बारे में इन भले कामों का वादा
किया है। 27 इसलिए मेरी दुआ है कि
तू अपने सेवक के घराने को खुशी-खुशी

17:11 *शा., “तू अपने पुरखों के साथ होने के लिए जाएगा।” **17:13** *या “अटल प्यार।” **17:17** *या “तूने मुझे ऊँचे पद का आदमी समझा है।”

17:24 *या “विश्वासयोग्य साबित हो।”

अध्य. 17

1 1रा 8:20, भज 132:11
2 2शम 7:12-17, 1रा 9:5, 1इत 28:5, यिर्म 23:5
3 1रा 5:5, 1इत 22:10
4 भज 89:3, 4, यश 9:7, दान 2:44
5 2शम 7:14, लूक 9:35, इब्र 1:5
6 यश 55:3
7 1शम 15:24, 28, 1इत 10:13, 14
8 दान 2:44, यूह 1:49, 2पत 1:11
9 भज 89:36, यिर्म 33:20, 21, लूक 1:32, 33, इब्र 1:8, प्रक 3:21
10 2शम 7:8, 2शम 7:18-20
11 मत 22:42, प्रेष 13:34, प्रक 22:16
12 भज 139:1

दूसरा कॉल.

1 2शम 7:21-24
2 निर्ग 15:11
3 यश 43:10
4 व्य 4:7, भज 147:20
5 निर्ग 19:5, भज 77:15
6 व्य 7:1, यह 10:42, यह 21:44
7 व्य 4:34, नहे 9:10, यश 63:12, यहे 20:9
8 1शम 12:22
9 उत 17:7, व्य 7:6, 9
10 2शम 7:25-29
11 2इत 6:33, भज 72:19, मत 6:9, यूह 12:28
12 भज 89:35, 36

आशीष दे और यह घराना तेरे सामने हमेशा कायम रहे क्योंकि हे यहोवा, तूने ही इस घराने को आशीष दी है और यह आशीष सदा बनी रहेगी।”

18 कुछ समय बाद दाविद ने पलिश्तियों को हरा दिया और उन्हें अपने अधीन कर लिया और उनके हाथ से गत[1] और उसके आस-पास के नगर ले लिए।[2] 2 फिर उसने मोआब को हरा दिया[3] और मोआबी लोग दाविद के सेवक बन गए और उसे नज़राना देने लगे।[4]

3 दाविद ने सोबा के राजा[5] हदद-एजेर[6] को हमात[7] के पास उस वक्‍त हरा दिया, जब हदद-एजेर फरात नदी तक के इलाके को अपने अधिकार में करने जा रहा था।[8] 4 दाविद ने हदद-एजेर के 1,000 रथों, 7,000 घुड़सवारों और 20,000 पैदल सैनिकों को पकड़ लिया।[9] इसके बाद दाविद ने उसके रथों के 100 घोड़ों को छोड़ बाकी सब घोड़ों की घुटनस काट दी।[10] 5 जब दमिश्‍क के रहनेवाले सीरियाई लोग सोबा के राजा हदद-एजेर की मदद करने आए तो दाविद ने 22,000 सीरियाई लोगों को मार डाला।[11] 6 फिर दाविद ने दमिश्‍क के सीरियाई लोगों के इलाके में सैनिकों की चौकियाँ बनायीं और वे दाविद के सेवक बन गए और उसे नज़राना देने लगे। दाविद जहाँ कहीं गया यहोवा ने उसे जीत दिलायी।*[12] 7 इतना ही नहीं, दाविद ने हदद-एजेर के सेवकों से सोने की गोलाकार ढालें ले लीं और यरूशलेम ले आया। 8 दाविद, हदद-एजेर के शहर तिभत और कून से बहुत सारा ताँबा भी ले आया। उसी ताँबे से सुलैमान ने ताँबे का बड़ा हौद,[1] ताँबे के खंभे और ताँबे की बाकी सारी चीज़ें बनायीं।[2]

9 जब हमात के राजा तोऊ ने सुना कि दाविद ने सोबा के राजा हदद-एजेर की पूरी सेना को हरा दिया है,[3] 10 तो उसने फौरन अपने बेटे हदोराम को राजा दाविद के पास भेजा ताकि वह दाविद की खैरियत पूछे और उसे मुबारकबाद दे कि उसने हदद-एजेर को हरा दिया। (तोऊ ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि हदद-एजेर ने कई बार उससे युद्ध किया था।) हदोराम अपने साथ सोने, चाँदी और ताँबे की चीज़ें लाया था। 11 राजा दाविद ने ये सारी चीज़ें यहोवा के लिए पवित्र ठहरायीं,[4] ठीक जैसे उसने दूसरे राष्ट्रों के यहाँ से लाया सोना-चाँदी पवित्र ठहराया था यानी एदोम और मोआब, अम्मोनियों,[5] पलिश्तियों[6] और अमालेकियों[7] से लाया सोना-चाँदी।

12 सरूयाह के बेटे अबीशै[8] ने नमक घाटी में 18,000 एदोमियों को मार गिराया।[9] 13 उसने एदोम में सैनिकों की चौकियाँ बनायीं और सभी एदोमी लोग दाविद के सेवक बन गए।[10] दाविद जहाँ कहीं गया, यहोवा ने उसे जीत दिलायी।*[11] 14 दाविद पूरे इसराएल पर राज करता था।[12] वह अपनी सारी प्रजा के लिए न्याय और नेकी करता था।[13] 15 सरूयाह का बेटा योआब दाविद की सेना का सेनापति था,[14] अहीलूद का बेटा यहोशापात[15] शाही इतिहासकार था, 16 अहीतूब का बेटा सादोक और अबियातार का बेटा अहीमेलेक याजक थे और शबशा राज-सचिव था। 17 यहोयादा का बेटा बनायाह, करेती[16] और पलेती लोगों का अधिकारी था।[17] और दाविद के बेटे राजा के बादवाले ओहदे पर थे।

अध्या. 18
1 1शम 5:8, 2शम 1:20
2 2शम 8:1
3 गि 24:17, भज 60:8
4 2शम 8:2, 2रा 3:4
5 1शम 14:47, 2शम 10:6, भज 60:उप
6 1रा 11:23
7 2इत 8:3
8 उत 15:18, निर्ग 23:31, 2शम 8:3, 4
9 भज 20:7
10 व्य 17:16, भज 33:17
11 2शम 8:5-8
12 1इत 17:8

दूसरा कॉल.
1 1रा 7:23
2 1रा 7:15, 45
3 2शम 8:3, 2शम 8:9-11
4 यह 6:19, 2इत 5:1
5 1इत 20:1
6 2शम 5:25
7 1शम 27:8, 9, 1शम 30:18, 20
8 1शम 26:6, 2शम 3:30, 2शम 10:10, 2शम 20:6, 2शम 21:17, 1इत 2:15, 16
9 2शम 8:13, 14
10 उत 25:23, उत 27:40
11 भज 18:48, भज 144:10
12 1रा 2:11
13 2शम 8:15-18, 2शम 23:3, 4, भज 78:70-72
14 1इत 11:6
15 1रा 4:3
16 1शम 30:14, सप 2:5
17 1रा 1:38

18:6, 13 * या “उद्धार दिलाया।”

19 बाद में अम्मोनियों के राजा नाहाश की मौत हो गयी और उसकी जगह उसका बेटा राजा बना।[1] **2** तब दाविद ने कहा, “हानून का पिता नाहाश मेरे साथ कृपा* से पेश आया था,[2] इसलिए मैं भी हानून के साथ कृपा* से पेश आऊँगा।” दाविद ने हानून को दिलासा देने के लिए उसके पास अपने दूत भेजे। मगर जब दाविद के सेवक हानून को दिलासा देने के लिए अम्मोनियों[3] के देश गए **3** तो अम्मोनियों के हाकिमों ने हानून से कहा, “तुझे क्या लगता है, क्या दाविद ने वाकई तेरे पिता का सम्मान करने और तुझे दिलासा देने के लिए अपने सेवक भेजे हैं? नहीं। उसके सेवक तो इस देश की अच्छी तरह छानबीन और जासूसी करने आए हैं ताकि बाद में आकर तेरा तख्ता उलट दें।” **4** तब हानून ने दाविद के सेवकों को पकड़कर उनकी दाढ़ी मुँड़वा दी[4] और कमर से नीचे के उनके कपड़े कटवा दिए और फिर उन्हें भेज दिया। **5** जब दाविद को बताया गया कि उनके साथ कैसा सलूक किया गया है तो उसने फौरन कुछ सेवकों को उनसे मिलने भेजा क्योंकि उनका घोर अपमान हुआ था। राजा ने उनके पास यह संदेश भेजा: “जब तक तुम्हारी दाढ़ी फिर नहीं बढ़ जाती तब तक तुम यरीहो[5] में ही रहना। उसके बाद तुम यहाँ लौट आना।”

6 कुछ समय बाद अम्मोनी लोग समझ गए कि उन्होंने दाविद से दुश्मनी मोल ली है। इसलिए हानून और अम्मोनियों ने मेसोपोटामिया,* अराम-माका और सोबा के पास 1,000 तोड़े# चाँदी भेजी ताकि वहाँ से किराए पर रथ और घुड़सवार मँगा सकें।[1] **7** इस तरह उन्होंने 32,000 रथों को और माका के राजा और उसके लोगों को किराए पर लिया। फिर वे सब आए और उन्होंने मेदबा[2] के सामने छावनी डाली। अम्मोनी लोग युद्ध के लिए अपने-अपने शहर से आकर जमा हो गए।

8 जब दाविद ने इस बारे में सुना तो उसने योआब[3] के साथ अपनी पूरी सेना को और बड़े-बड़े सूरमाओं को भेजा।[4] **9** अम्मोनी लोग दल बाँधकर शहर के फाटक पर तैनात हो गए, जबकि युद्ध के लिए आए दूसरे राजा उनसे अलग खुले मैदान में थे।

10 जब योआब ने देखा कि दुश्मन की सेनाएँ उस पर आगे-पीछे दोनों तरफ से हमला करने के लिए खड़ी हैं, तो उसने इसराएल के सबसे बढ़िया सैनिक चुने और उन्हें दल बाँधकर सीरियाई लोगों का मुकाबला करने के लिए तैनात किया।[5] **11** उसने बाकी सैनिकों को अपने भाई अबीशै की कमान* के नीचे तैनात किया[6] और उन्हें दल बाँधकर अम्मोनियों का मुकाबला करने भेजा। **12** उसने अबीशै से कहा, “अगर सीरियाई सेना[7] मुझ पर भारी पड़े तो तू मुझे बचाने आना और अगर अम्मोनी लोग तुझ पर भारी पड़े तो मैं तुझे बचाऊँगा। **13** हमें अपने लोगों की खातिर और अपने परमेश्वर के शहरों की खातिर मज़बूत बने रहना होगा और हिम्मत से लड़ना होगा[8] और यहोवा वही करेगा जो उसे सही लगता है।”

14 फिर योआब और उसके आदमी सीरियाई लोगों का मुकाबला करने आगे बढ़े और सीरियाई लोग उसके सामने

अध्य. 19
1 2शम 10:1-5
2 2शम 9:7
3 उत 19:36, 38
4 लैव 19:27
5 1रा 16:34

दूसरा कॉल.
1 1शम 14:47, 2शम 8:3, 2शम 10:6
2 यह 13:8, 9
3 2शम 8:16
4 2शम 10:7, 8, 2शम 23:8
5 2शम 10:9-12
6 1इत 11:20, 21
7 2शम 8:5
8 व्य 31:6, यह 1:9

19:2 *या “अटल प्यार।” **19:6** *शा., “अरम-नहरैम।” #एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

19:11 *शा., “के हाथ।”

से भाग गए।[1] 15 जब अम्मोनियों ने देखा कि सीरियाई लोग भाग गए हैं तो वे भी योआब के भाई अबीशै के सामने से भाग गए और अपने शहर के अंदर चले गए। इसके बाद योआब यरूशलेम लौट आया।

16 जब सीरियाई लोगों ने देखा कि वे इसराएल से हार गए हैं तो उन्होंने महा-नदी*[2] के इलाके के सीरियाई लोगों के पास दूतों के हाथ यह संदेश भेजा कि वे हदद-एजेर की सेना के सेनापति शोपक की अगुवाई में आएँ।[3]

17 जब दाविद को इसकी खबर दी गयी तो उसने फौरन पूरी इसराएली सेना को इकट्ठा किया और यरदन पार करके उनके पास गया। उसने उनसे मुकाब-ला करने के लिए दल बाँधा और उन्होंने उससे युद्ध किया।[4] 18 मगर सीरियाई लोग इसराएल से हारकर भाग गए और दाविद ने उनके 7,000 सारथियों और 40,000 पैदल सैनिकों को मार डाला। उसने उनके सेनापति शोपक को भी मार डाला। 19 जब हदद-एजेर के सेवकों ने देखा कि वे इसराएल से हार गए हैं[5] तो उन्होंने बिना देर किए दाविद के साथ सुलह कर ली और वे उसकी प्रजा बन गए।[6] इसके बाद फिर कभी सीरियाई लोगों ने अम्मोनियों की मदद करनी नहीं चाही।

20 साल की शुरूआत में* जब राजा युद्ध के लिए जाया करते हैं, तो ऐसे वक्त पर योआब[7] ने एक सेना को लेकर अम्मोनियों का देश तबाह कर दिया और उसके शहर रब्बाह[8] को घेर लिया। मगर दाविद यरूशलेम में ही रहा।[9] योआब ने रब्बाह पर हमला करके उसे ढा दिया।[1] 2 फिर दाविद ने मल-काम के सिर से ताज उतार लिया और पाया कि ताज एक तोड़े* सोने का था और उस पर कीमती रत्न जड़े हुए थे। वह ताज दाविद के सिर पर रखा गया। वह उस शहर से खूब सारा लूट का माल भी ले आया।[2] 3 उसने शहर के लोगों को बंदी बना लिया और उन्हें लाकर पत्थर काटने में और तेज़ धारवाले लोहे के औज़ारों और कुल्हाड़ों से काम करने में लगा दिया।[3] उसने अम्मोनियों के सभी शहरों के साथ ऐसा किया। आखिर में दाविद और उसकी सारी टुकड़ियाँ यरू-शलेम लौट आयीं।

4 इसके बाद, गेजेर में पलिश्ति-यों और इसराएलियों के बीच युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में हूशाई सिब्बकै[4] ने रपाई[5] के एक वंशज सिप्पै को मार डाला और पलिश्ती लोग इसराएलियों के अधीन हो गए।

5 पलिश्तियों और इसराएलियों के बीच एक बार फिर लड़ाई छिड़ गयी। इस बार याईर के बेटे एल्हानान ने लहमी को मार डाला, जो गत के रहने-वाले गोलियात[6] का भाई था। लहमी के भाले का डंडा जुलाहे के लट्ठे जितना भारी था।[7]

6 गत[8] में एक बार फिर युद्ध छिड़ा। पलिश्ती सेना में एक आदमी था जो बहुत ऊँची कद-काठी का था।[9] उसके हाथों और पैरों में छः-छः उँगलियाँ थीं यानी कुल मिलाकर उसकी 24 उँगलियाँ थीं। वह भी रपाई का वंशज था।[10] 7 वह इसराएल को लगातार ललकारता था।[11] इसलिए योनातान ने, जो दाविद के भाई शिमा[12] का बेटा था, उसे मार डाला।

19:16 *यानी फरात नदी। **20:1** *यानी वसंत में।

20:2 *करीब 34.2 किलो। अति. ख14 देखें।

अध्य. 19
1 लैव 26:7, 8; व्य 28:7; 2शम 10:13, 14
2 2शम 8:3
3 2शम 10:15, 16
4 2शम 10:17-19
5 भज 18:39
6 1इत 14:17; भज 18:44

अध्य. 20
7 1इत 11:6
8 व्य 3:11
9 2शम 11:1

दूसरा कॉल.
1 2शम 12:26
2 2शम 8:11, 12; 2शम 12:30, 31
3 1रा 9:20, 21
4 2शम 21:18; 1इत 11:26, 29
5 व्य 3:13
6 1शम 17:4, 7; 1शम 21:9
7 2शम 21:19; 1इत 11:23, 24
8 यह 11:22; 1शम 7:14
9 गि 13:33; व्य 2:10; व्य 3:11
10 2शम 21:16; 2शम 21:20-22
11 1शम 17:10; 2रा 19:22
12 1इत 2:13

8 रपाई के ये वंशज[1] गत[2] में रहते थे
और वे दाविद और उसके सेवकों के हाथों
मारे गए।

21 फिर शैतान* इसराएल के
खिलाफ उठा और उसने दाविद
को इसराएलियों की गिनती लेने के
लिए उकसाया।[3] 2 इसलिए दाविद ने
योआब[4] और सेनापतियों से कहा,
"जाओ और बेरशेबा से दान[5] तक इस-
राएलियों की गिनती लो। फिर आकर
मुझे बताओ ताकि मैं उनकी गिनती
जान सकूँ।" 3 मगर योआब ने कहा,
"यहोवा अपने लोगों की गिनती 100
गुना बढ़ाए! मेरे मालिक राजा, क्या वे
सभी पहले से ही तेरे सेवक नहीं हैं? फिर
तू क्यों यह काम करना चाहता है? तू क्यों
इसराएल पर दोष लगने का कारण बनना
चाहता है?"

4 लेकिन राजा नहीं माना और
योआब को उसकी बात के आगे
झुकना पड़ा। इसलिए योआब ने पूरे
इसराएल का दौरा किया, उसके बाद
यरूशलेम लौट आया।[6] 5 योआब ने
दाविद को उन लोगों की गिनती बतायी
जिनका नाम लिखा गया था। पूरे इस-
राएल में तलवारों से लैस सैनिक
11,00,000 थे और यहूदा के सैनिक
4,70,000.[7] 6 मगर लेवी और
बिन्यामीन गोत्र के आदमियों की नाम-
लिखाई नहीं की गयी[8] क्योंकि योआब को
राजा की बात बिलकुल घिनौनी लगी।[9]

7 दाविद के इस काम पर सच्चे पर-
मेश्वर को बहुत क्रोध आया इसलिए
उसने इसराएल को सज़ा दी। 8 तब
दाविद ने सच्चे परमेश्वर से कहा, "मैंने
लोगों की गिनती लेकर बहुत बड़ा पाप
किया है।[1] दया करके अपने सेवक को
माफ कर दे।[2] मैंने बड़ी मूर्खता का काम
किया है।"[3] 9 तब यहोवा ने दाविद
के दर्शी गाद[4] से कहा, 10 "दाविद के
पास जा और उससे कह, 'यहोवा तुझसे
कहता है, "मैं तुझे तीन तरह के कहर
बताता हूँ। तू चुन ले कि मैं तुझ पर
कौन-सा कहर ढाऊँ।"'" 11 तब गाद
ने दाविद के पास जाकर कहा, "यहोवा
ने कहा है, 'तू चुन ले कि तुझ पर
कौन-सा कहर ढाया जाए। 12 तेरे देश
पर तीन साल तक अकाल पड़े[5] या
तीन महीने तक तेरे दुश्मनों की तलवार
तुझ पर चलती रहे और तुझे नाश
करती रहे[6] या तीन दिन तक तेरे देश
पर यहोवा की तलवार चले यानी महा-
मारी फैले[7] और यहोवा का स्वर्गदूत इस-
राएल के पूरे इलाके को उजाड़ दे?'[8]
सोचकर बता कि मैं अपने भेजनेवाले को
क्या जवाब दूँ।" 13 दाविद ने गाद से
कहा, "मैं बड़े संकट में हूँ। अच्छा है कि मैं
यहोवा ही के हाथ पड़ जाऊँ क्योंकि वह
बड़ा दयालु है।[9] मगर मुझे इंसान के हाथ
न पड़ने दे।"[10]

14 फिर यहोवा ने इसराएल पर महा-
मारी का कहर ढाया[11] जिससे 70,000
लोग मारे गए।[12] 15 इतना ही नहीं,
सच्चे परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत को यरू-
शलेम का नाश करने के लिए भेजा।
मगर जैसे ही यहोवा ने उसे तबाह करते
देखा, उसे बड़ा दुख हुआ*[13] और उसने
नाश करनेवाले स्वर्गदूत से कहा, "बस,
अब रुक जा![14] अपना हाथ रोक ले।"
उस वक्त यहोवा का स्वर्गदूत यबूसी[15]
ओरनान के खलिहान[16] के बिलकुल पास
खड़ा था।

21:1 *या शायद, "एक विरोधी।"

21:15 *या "इसराएल में हुई तबाही पर पछतावा महसूस हुआ।"

अध्य. 20
1 व्य 2:11
2 1शम 17:4

अध्य. 21
3 2शम 24:1-3
4 2शम 8:16
5 न्या 18:29; 2शम 17:11
6 2शम 24:4, 8
7 2शम 24:9
8 गि 1:47
9 1इत 27:23, 24

दूसरा कॉल.
1 2शम 12:13
2 भज 25:11; भज 51:1
3 2शम 24: 10-14
4 1इत 29:29
5 लैव 26:26
6 लैव 26:14, 17
7 लैव 26:25
8 2रा 19:35
9 निर्ग 34:6; भज 51:1; यश 55:7; विल 3:22
10 2इत 28:9
11 गि 16:46
12 2शम 24:15, 16
13 निर्ग 32:14; व्य 32:36
14 भज 90:13
15 2शम 5:6
16 2इत 3:1

16 जब दाविद ने अपनी आँखें उठायीं
तो देखा कि यहोवा का स्वर्गदूत धरती
और स्वर्ग के बीच खड़ा है और उसके
हाथ में एक तलवार है जिसे वह खींच-
कर यरूशलेम की तरफ बढ़ाए हुए है।[1]
दाविद और प्रधान टाट ओढ़े हुए[2] फौरन
मुँह के बल ज़मीन पर गिर गए।[3]
17 दाविद ने सच्चे परमेश्वर से कहा,
"लोगों की गिनती लेने के लिए मैंने ही
कहा था। पाप तो मैंने किया है, गलती
मेरी है।[4] फिर तू इन लोगों को क्यों मार
रहा है? इन भेड़ों का क्या कसूर है? हे
यहोवा, मेरे परमेश्वर, दया करके इन्हें
छोड़ दे और मुझे और मेरे पिता के घराने
को सज़ा दे। यह कहर अपने लोगों पर
मत ला।"[5]

18 तब यहोवा के स्वर्गदूत ने गाद[6] से
कहा कि वह दाविद से कहे कि वह ऊपर
जाए और यबूसी ओरनान के खलिहान
में यहोवा के लिए एक वेदी खड़ी करे।[7]
19 तब दाविद ऊपर गया, ठीक जैसे
गाद ने यहोवा के नाम से उसे बताया था।
20 इस बीच जब ओरनान पीछे मुड़ा
तो उसने स्वर्गदूत को देखा। उसके साथ
उसके जो चार बेटे थे वे जाकर छिप गए।
उस समय ओरनान गेहूँ दाँव रहा था।
21 जब दाविद ओरनान के यहाँ गया
तो दाविद को देखते ही वह खलिहान से
बाहर आया और उसके पास गया। उसने
दाविद के सामने मुँह के बल ज़मीन पर
गिरकर उसे प्रणाम किया। **22** दाविद
ने ओरनान से कहा, "मुझे इस खलिहान
की ज़मीन बेच दे* ताकि मैं यहाँ यहोवा
के लिए एक वेदी बनाऊँ। तू मुझसे
इसकी पूरी कीमत ले ताकि लोगों पर
जो कहर आ पड़ा है वह बंद हो जाए।"[8]
23 मगर ओरनान ने दाविद से कहा,

21:22 *शा., "दे दे।"

अध्य. 21
1 गि 22:31, यह 5:13
2 2रा 19:1
3 2शम 24:17
4 भज 51:4
5 निर्ग 32:12, गि 16:22
6 2शम 24:11
7 2शम 24:18-23, 2इत 3:1
8 गि 25:8

दूसरा कॉल.
1 यश 28:27
2 2शम 24:24, 25
3 निर्ग 20:25
4 लैव 9:23, 24, 1रा 18:38, 2इत 7:1
5 2शम 24:16, भज 103:20
6 1रा 3:4, 1इत 16:39, 2इत 1:3

"मेरे मालिक राजा, इसे अपनी ज़मीन
समझ ले। तू इसे ले ले और तुझे जो
अच्छा लगे वह कर। मैं तुझे होम-बलियों
के लिए बैल, जलाने की लकड़ी के लिए
दाँवने की पटिया[1] और अनाज के चढ़ावे
के लिए गेहूँ देता हूँ। यह सब मैं तुझे
देता हूँ।"

24 मगर राजा दाविद ने ओरनान से
कहा, "नहीं, मैं ऐसे नहीं लूँगा। मैं पूरा
दाम देकर तुझसे यह खरीदूँगा क्योंकि जो
तेरा है वह मैं यूँ ही लेकर यहोवा को नहीं
दूँगा, न ही ऐसी होम-बलियाँ चढ़ाऊँगा
जिनकी मैंने कोई कीमत न चुकायी हो।"[2]
25 इसलिए दाविद ने उस ज़मीन के लिए
ओरनान को 600 शेकेल* सोना तौल-
कर दिया। **26** दाविद ने उस जगह
यहोवा के लिए एक वेदी खड़ी की[3]
और उस पर होम-बलियाँ और शांति-
बलियाँ चढ़ायीं। उसने यहोवा को पुकारा
और परमेश्वर ने स्वर्ग से होम-बलि की
वेदी पर आग भेजकर दाविद को जवाब
दिया।[4] **27** फिर यहोवा ने स्वर्गदूत को
हुक्म दिया[5] कि वह अपनी तलवार
वापस म्यान में रख ले। **28** उस वक्त
जब दाविद ने देखा कि यहोवा ने यबूसी
ओरनान के खलिहान में उसे जवाब
दिया है तो वह तब से उसी जगह
पर बलिदान चढ़ाने लगा। **29** मगर
उस समय यहोवा का पवित्र डेरा, जो मूसा
ने वीराने में बनाया था और होम-बलि
की वेदी गिबोन में ऊँची जगह पर थी।[6]
30 दाविद परमेश्वर से सलाह करने के
लिए वहाँ नहीं जा पाया क्योंकि वह
यहोवा के स्वर्गदूत की तलवार से बहुत
डर गया था।

21:25 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

22 फिर दाविद ने कहा, “यह सच्चे
परमेश्‍वर यहोवा का भवन है
और यह इसराएल के लिए होम-बलि की
वेदी है।”[1]

2 फिर दाविद ने हुक्म दिया कि इस-
राएल में जो परदेसी रहते हैं,[2] उन सबको
इकट्ठा किया जाए। उसने उन्हें सच्चे पर-
मेश्‍वर का भवन बनाने के लिए पत्थर
काटने और गढ़ने का काम सौंपा।[3]
3 दाविद ने दरवाज़ों के कीलों और जोड़ों
के लिए ढेर सारा लोहा इकट्ठा किया और
उसने इतना ताँबा इकट्ठा किया कि उसे
तौला नहीं जा सकता था।[4] 4 उसने
देवदार की बेहिसाब लकड़ियाँ[5] जमा कीं,
क्योंकि सीदोन और सोर के लोगों[6] ने
भारी तादाद में देवदार की लकड़ी लाकर
दाविद को दी थी। 5 दाविद ने कहा,
“मेरा बेटा सुलैमान अभी लड़का ही है
और उसे कोई तजुरबा नहीं है*[7] और
यहोवा के लिए ऐसा भवन बनाया जाना
है जो इतना आलीशान और सुंदर हो कि
पूरी दुनिया में उसकी शान के चर्चे हों।[8]
इसलिए सुलैमान की खातिर मैं भवन
बनाने की तैयारियाँ करूँगा।” दाविद ने
अपनी मौत से पहले ढेर सारा सामान
इकट्ठा किया।

6 साथ ही उसने अपने बेटे सुलै-
मान को बुलाया और उसे हिदायत दी
कि वह इसराएल के परमेश्‍वर यहोवा
के लिए एक भवन बनाए। 7 दाविद
ने अपने बेटे सुलैमान से कहा, “यह मेरी
दिली तमन्‍ना थी कि मैं अपने परमेश्‍वर
यहोवा के नाम की महिमा के लिए एक
भवन बनाऊँ।[9] 8 मगर यहोवा का यह
संदेश मुझे दिया गया: ‘तूने बहुत सारा
खून बहाया है और बड़े-बड़े युद्ध किए हैं।
तू मेरे नाम की महिमा के लिए भवन नहीं
बनाएगा,[1] क्योंकि तूने धरती पर बहुत
सारा खून बहाया है। 9 मगर देख, तेरा
एक बेटा होगा,[2] जो शांति लानेवाला
होगा और मैं उसे आस-पास के सभी
दुश्‍मनों से राहत दिलाऊँगा,[3] क्योंकि
उसका नाम सुलैमान*[4] होगा और मैं
उसके दिनों में शांति और चैन की आशीष
दूँगा।[5] 10 वही मेरे नाम की महिमा के
लिए एक भवन बनाएगा।[6] वह मेरा बेटा
होगा और मैं उसका पिता होऊँगा।[7] मैं
इसराएल पर उसकी राजगद्दी सदा के
लिए मज़बूती से कायम करूँगा।’[8]

11 इसलिए बेटे, मैं दुआ करता हूँ कि
यहोवा तेरे साथ रहे और तू अपने पर-
मेश्‍वर यहोवा के लिए एक भवन बनाने
में कामयाब हो, ठीक जैसे उसने तेरे बारे
में कहा है।[9] 12 जब यहोवा तुझे इस-
राएल पर अधिकार देगा तब वह तुझे
सूझ-बूझ से काम लेने की काबिलीयत
और समझ दे,[10] ताकि तू अपने पर-
मेश्‍वर यहोवा के कानून का पालन करता
रहे।[11] 13 अगर तू उन नियमों और
न्याय-सिद्धांतों को सख्ती से मानेगा,[12]
जिन्हें इसराएल को देने के लिए यहोवा
ने मूसा को आज्ञा दी थी,[13] तो तू काम-
याब होगा। तू हिम्मत से काम लेना और
हौसला रखना। तू डरना मत और न
ही खौफ खाना।[14] 14 मैंने बड़े जतन
से यहोवा के भवन के लिए 1,00,000
तोड़े* सोना और 10,00,000 तोड़े
चाँदी इकट्ठी की है। और इतना सारा
ताँबा और लोहा इकट्ठा किया है[15] कि
तौला नहीं जा सकता। मैंने लकड़ियाँ
और पत्थर भी इकट्ठे किए हैं,[16] मगर तू

अध्य. 22
1 व्य 12:5, 6; 2शम 24:18; 2इत 3:1
2 1रा 9:20, 21; 2इत 2:17, 18
3 1रा 5:15, 17; 1रा 6:7; 1रा 7:9
4 1रा 7:47
5 2शम 5:11
6 1रा 5:6, 8; 2इत 2:3
7 1रा 3:7
8 2इत 2:5; भज 68:29; हाग 2:3
9 व्य 12:5, 6; 2शम 7:2; भज 132:3-5

दूसरा कॉल.
1 1इत 17:4
2 1इत 28:5
3 2शम 7:12, 13; 1रा 4:25; 1रा 5:4
4 2शम 12:24
5 भज 72:7
6 1रा 5:5
7 2शम 7:14; इब्र 1:5
8 1इत 17:12-14; भज 89:35, 36
9 1इत 28:20
10 2इत 1:10; भज 72:1
11 व्य 4:6
12 लैव 19:37; 1इत 28:7
13 व्य 12:1; व्य 17:18, 19; यह 1:8; 1रा 2:3; 1इत 28:7; भज 19:8, 11
14 यह 1:6, 9; 1इत 28:20
15 1इत 29:6, 7
16 1इत 29:2-4

22:5 *या “नाज़ुक है।”

22:9 *यह नाम एक इब्रानी शब्द से निकला है जिसका मतलब “शांति” है। **22:14** *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

उन्हें और बढ़ाएगा। 15 तेरे पास भारी तादाद में कारीगर भी हैं, पत्थर काटने-वाले, राजमिस्त्री,[1] बढ़ई और हर तरह के कुशल कारीगर।[2] 16 इस काम के लिए इतना सोना, चाँदी, ताँबा और लोहा है कि उसका हिसाब नहीं।[3] अब तू यह काम शुरू कर दे और मेरी दुआ है कि यहोवा तेरे साथ रहे।"[4]

17 इसके बाद दाविद ने इसराएल के सब हाकिमों को आज्ञा दी कि वे उसके बेटे सुलैमान की मदद करें। उसने कहा, 18 "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ है और उसने तुम्हें हर तरफ से शांति दी है। उसने इस देश के निवासियों को मेरे हाथ में कर दिया है और यह देश, यहोवा और उसके लोगों के सामने मेरे अधीन कर दिया गया है। 19 इसलिए अब तुम ठान लो कि तुम पूरे दिल से और पूरी जान से अपने परमेश्वर यहोवा की खोज करोगे।[5] और तुम सच्चे परमेश्वर यहोवा का पवित्र-स्थान बनाने का काम शुरू कर दो[6] ताकि यहोवा के करार का संदूक और सच्चे परमेश्वर की पवित्र चीज़ें उस भवन में लायी जाएँ[7] जो यहोवा के नाम की महिमा के लिए बनाया जाएगा।"[8]

23 जब दाविद बहुत बूढ़ा हो गया और उसकी मौत करीब थी,* तब उसने अपने बेटे सुलैमान को इस-राएल का राजा बनाया।[9] 2 फिर उसने इसराएल के सभी हाकिमों, याजकों[10] और लेवियों[11] को इकट्ठा किया। 3 उन लेवियों की गिनती ली गयी जिनकी उम्र 30 या उससे ज़्यादा थी।[12] उन सब आदमियों की गिनती 38,000 थी। 4 इनमें 24,000 लेवी यहोवा के भवन के काम की देखरेख करनेवाले थे, 6,000 अधिकारी और न्यायी थे,[1] 5 4,000 पहरेदार थे[2] और 4,000 आदमी वे साज़ बजाकर यहोवा की तारीफ करते थे,[3] जिनके बारे में दाविद ने कहा, "मैंने ये साज़ इसलिए बनाए हैं कि इनसे परमेश्वर की तारीफ की जाए।"

6 फिर दाविद ने उन्हें लेवियों के बेटों यानी गेरशोन, कहात और मरारी[4] के मुताबिक अलग-अलग दलों में बाँटा।*[5] 7 गेरशोनियों में से लादान और शिमी थे। 8 लादान के तीन बेटे थे, प्रधान यहीएल, जेताम और योएल।[6] 9 शिमी के तीन बेटे थे शलोमोत, हजी-एल और हारान। ये उन पिताओं के घरानों के मुखिया थे जो लादान के घराने में गिने जाते थे। 10 शिमी के बेटे थे यहत, ज़िना, यूश और बरीआ। ये चारों शिमी के बेटे थे। 11 यहत प्रधान था और उसके बाद ज़ीज़ाह था। मगर यूश और बरीआ के ज़्यादा बेटे नहीं थे इसलिए उन दोनों के घरानों को एक ही घराना गिना गया और उन्हें एक ही काम सौंपा गया।

12 कहात के चार बेटे थे अम-राम, यिसहार,[7] हेब्रोन और उज्जीएल।[8] 13 अमराम के बेटे थे हारून[9] और मूसा।[10] मगर हारून और उसके बेटों को सदा के लिए अलग किया गया था[11] ताकि वे परम-पवित्र भाग को पवित्र बनाए रखें, यहोवा के सामने बलि-दान चढ़ाएँ, उसकी सेवा करें और उसके नाम से लोगों को हमेशा आशीर्वाद दिया करें।[12] 14 सच्चे परमेश्वर के सेवक मूसा के बेटों का नाम लेवियों के गोत्र में गिना गया। 15 मूसा के बेटे थे गेर-शोम[13] और एलीएज़ेर।[14] 16 गेरशोम

23:1 * शा., "बूढ़ा और पूरी उम्र का हो गया था।"

23:6 * या "संगठित किया।"

अध्य. 22

1 1रा 5:17; 1रा 6:7; 1रा 7:9
2 1रा 7:13, 14
3 1इत 22:3
4 2इत 1:1
5 व्य 4:29; 2इत 20:3; दान 9:3
6 1रा 6:1
7 1रा 8:6, 21
8 व्य 12:21; 1रा 8:29; 1रा 9:3

अध्य. 23

9 1रा 1:33, 39; 1इत 28:5
10 निर्ग 29:8, 9
11 गि 3:6
12 गि 4:2, 3

दूसरा कॉल.

1 व्य 16:18; 1इत 26:29; 2इत 19:8
2 1इत 26:12
3 1इत 6:31, 32
4 निर्ग 6:16
5 2इत 8:14; 2इत 31:2
6 1इत 26:21, 22
7 निर्ग 6:21
8 निर्ग 6:18
9 निर्ग 4:14
10 निर्ग 6:20, 26
11 निर्ग 28:1
12 लैव 9:22; गि 6:23-27; व्य 21:5
13 निर्ग 2:21, 22
14 निर्ग 18:3, 4

के बेटों में से शबूएल[1] प्रधान था।
17 एलीएज़ेर के वंशजों* में से उसका
बेटा रहबयाह[2] प्रधान था। रहबयाह के
अलावा उसका कोई और बेटा नहीं
था। मगर रहबयाह के बहुत-से बेटे थे।
18 यिसहार के बेटों[3] में से शलोमीत[4]
प्रधान था। 19 हेब्रोन के बेटे थे प्रधान
यरीयाह, दूसरा अमरयाह, तीसरा यहजी-
एल और चौथा यकमाम।[5] 20 उज्जी-
एल के बेटे थे[6] प्रधान मीका और दूसरा
यिश्शायाह।

21 मरारी के बेटे थे महली और
मूशी।[7] महली के बेटे थे एलिआज़र और
कीश। 22 जब एलिआज़र की मौत हुई
तो उसका कोई बेटा नहीं था, सिर्फ
बेटियाँ थीं। इसलिए उनके रिश्तेदारों*
यानी कीश के बेटों ने उनसे शादी की।
23 मूशी के तीन बेटे थे महली, एदेर
और यरेमोत।

24 ये सभी लेवी के बेटे थे, जिनके
नाम उनके कुलों और पिताओं के घरानों
के मुखियाओं के मुताबिक लिखे गए
थे। उन्होंने यहोवा के भवन में सेवा की
अलग-अलग ज़िम्मेदारियाँ निभायीं। उन
सभी की उम्र 20 साल या उससे ज़्यादा
थी। 25 दाविद ने कहा, "इसराएल के
परमेश्वर यहोवा ने अपने लोगों को
राहत दिलायी है[8] और वह यरूशलेम में
सदा निवास करेगा।[9] 26 लेवियों को
पवित्र डेरा या उसकी सेवा में इस्ते-
माल होनेवाला कोई भी सामान ढोना नहीं
पड़ेगा।"[10] 27 दाविद की आखिरी
हिदायतों के मुताबिक उन लेवियों की
गिनती ली गयी थी जिनकी उम्र 20 साल
या उससे ज़्यादा थी। 28 उनका काम
था यहोवा के भवन की सेवा में हारून
के बेटों की मदद करना,[1] आँगनों[2] और
भोजन के कमरों की और हर पवित्र चीज़
को शुद्ध बनाए रखने के काम की देख-
रेख करना और सच्चे परमेश्वर के भवन
की सेवा में जो भी काम ज़रूरी है
उसे करना। 29 वे इन चीज़ों के मामले
में मदद करते थे, रोटियों के ढेर,*[3]
अनाज के चढ़ावे के लिए मैदा, बिन-
खमीर की पापड़ियाँ,[4] तवे पर पकायी
जानेवाली टिकियाँ और तेल से गुँधा हुआ
आटा।[5] साथ ही वे नाप-तौल के हर काम
में मदद देते थे। 30 उन्हें हर सुबह और
हर शाम खड़े होकर[6] यहोवा का धन्य-
वाद करना था और उसकी तारीफ करनी
थी।[7] 31 सब्त के मौकों पर,[8] नए चाँद
के मौकों पर[9] और साल के अलग-अलग
त्योहारों में[10] जब भी यहोवा को होम-
बलियाँ चढ़ायी जातीं तो वे मदद करते
थे। उनके बारे में दिए गए नियम के
मुताबिक जितने लोगों की माँग की गयी
थी, उतने लोग यहोवा के सामने निय-
मित तौर पर सेवा करते थे। 32 वे भेंट
के तंबू यानी पवित्र जगह से जुड़ी सेवाएँ
करते और अपने भाइयों यानी हारून के
बेटों की मदद करते थे। यहोवा के भवन
में उनकी यही ज़िम्मेदारियाँ थीं।

24 हारून के वंशजों को जिन दलों
में बाँटा गया था वे ये थे: हारून
के बेटे थे नादाब, अबीहू,[11] एलिआज़र
और ईतामार।[12] 2 मगर नादाब और
अबीहू अपने पिता से पहले ही मर गए[13]
और उन दोनों का कोई बेटा नहीं था।
मगर एलिआज़र[14] और ईतामार याजकों
के नाते सेवा करते रहे। 3 दाविद ने
एलिआज़र के बेटों में से सादोक[15] और
ईतामार के बेटों में से अहीमेलेक के साथ

23:17 *शा., "बेटों।" 23:22 *शा., "भाइयों।"

23:29 *यानी नज़राने की रोटी।

अध्य. 23
1 1इत 26:24
2 1इत 26:25
3 गि 3:27
4 1इत 24:20, 22
5 1इत 24:20, 23
6 निर्ग 6:22
7 निर्ग 6:19
8 2शम 7:1
9 1रा 8:12, 13 भज 135:21
10 गि 4:15

दूसरा कॉल.
1 गि 3:9
2 1रा 6:36
3 लैव 24:5, 6 1इत 9:32
4 निर्ग 29:1, 2 लैव 2:4
5 लैव 7:12
6 निर्ग 29:39
7 1इत 16:4, 37
8 निर्ग 20:10
9 गि 10:10 भज 81:3
10 व्य 16:16

अध्य. 24
11 लैव 10:1
12 निर्ग 6:23 निर्ग 28:1
13 गि 26:61
14 गि 16:39, 40
15 2शम 8:17

मिलकर हारून के वंशजों को सेवा के
अलग-अलग दल में बाँटा। **4** एलि-
आज़र के बेटों में ईतामार के बेटों
से ज़्यादा मुखिया थे इसलिए उन्होंने इस
तरह उन्हें दलों में बाँटाः एलिआज़र के
बेटों में उनके पिताओं के घराने के 16
मुखिया थे और ईतामार के बेटों में उनके
पिताओं के घराने के 8 मुखिया थे।

5 इसके अलावा, उन्होंने चिट्ठियाँ
डालकर[1] दोनों समूहों को अलग-अलग
दल में बाँटा क्योंकि पवित्र जगह के
प्रधान और सच्चे परमेश्वर की सेवा करने-
वाले प्रधान दोनों समूहों में थे यानी एलि-
आज़र और ईतामार के बेटों में। **6** फिर
नतनेल के बेटे शमायाह ने, जो लेवियों
का सचिव था, राजा, हाकिमों, सादोक[2]
याजक, अबियातार[3] के बेटे अहीमेलेक[4]
और याजकों और लेवियों के पिताओं के
घरानों के प्रधानों के सामने उनके नाम
लिखे। चिट्ठी डालकर एलिआज़र के समूह
से एक पिता का घराना चुना जाता और
एक पिता का घराना ईतामार के समूह से
चुना जाता।

7 पहली चिट्ठी यहोयारीब के नाम
पड़ी, दूसरी यदायाह के नाम, **8** तीसरी
हारीम के नाम, चौथी सोरीम के
नाम, **9** पाँचवीं मल्कियाह के नाम,
छठी मियामीन के नाम, **10** सातवीं
हक्कोस के नाम, आठवीं अबियाह के
नाम,[5] **11** नौवीं येशू के नाम, दसवीं
शकन्याह के नाम, **12** 11वीं एल्या-
शीब के नाम, 12वीं याकीम के नाम,
13 13वीं हुप्पा के नाम, 14वीं येसे-
बाब के नाम, **14** 15वीं बिलगा के
नाम, 16वीं इम्मेर के नाम, **15** 17वीं
हेजीर के नाम, 18वीं हप्पिसेस के
नाम, **16** 19वीं पतहयाह के नाम,
20वीं यहेजकिएल के नाम, **17** 21वीं
याकीन के नाम, 22वीं गामूल के नाम,
18 23वीं दलायाह के नाम और 24वीं
माज्याह के नाम।

19 इन लेवियों के लिए यही कायदा
ठहराया गया था और वे इसी क्रम से
यहोवा के भवन में आते और उस इंतज़ाम
के मुताबिक सेवा करते थे[1] जो उनके
पुरखे हारून ने ठहराया था, ठीक जैसे
इसराएल के परमेश्वर यहोवा ने उसे
आज्ञा दी थी।

20 बाकी लेवी ये थेः अमराम[2] के
बेटों में से शूबाएल,[3] शूबाएल के
बेटों में से येहदयाह, **21** रहबयाह[4] के
बेटों में से प्रधान यिश्शायाह, **22** यिस-
हारियों में से शलोमोत,[5] शलोमोत के
बेटों में से यहत, **23** हेब्रोन के बेटों
में से प्रधान यरीयाह,[6] दूसरा अमर-
याह, तीसरा यहजीएल और चौथा यक-
माम, **24** उज्जीएल के बेटों में से मीका,
मीका के बेटों में से शामीर। **25** मीका
का भाई यिश्शायाह था और यिश्शायाह
के बेटों में से जकरयाह।

26 मरारी[7] के बेटे थे महली और
मूशी, याजियाह के बेटों में से बिनो,
27 मरारी के बेटे ये थेः याजियाह के
वंशजों में से बिनो, शोहम, जक्कूर और
इब्री। **28** महली के वंशजों में से एलि-
आज़र जिसका कोई बेटा नहीं था,[8]
29 कीश के वंशजों में से यरहमेल
30 और मूशी के बेटे थे महली, एदेर
और यरीमोत।

ये अपने पिताओं के घरानों के मुता-
बिक लेवियों के बेटे थे। **31** इन्होंने भी
अपने भाइयों यानी हारून के बेटों की
तरह राजा दाविद, सादोक, अहीमेलेक
और याजकों और लेवियों के पिताओं
के घरानों के प्रधानों के सामने चिट्ठियाँ
डालीं।[9] उनके पिताओं के सभी घराने

अध्य. 24
1 नीत 16:33
2 1रा 2:35
3 2शम 19:11 1रा 1:5, 7
4 2शम 8:17
5 लूक 1:5

दूसरा कॉल.
1 2रा 11:9 लूक 1:8, 23
2 निर्ग 6:18
3 1इत 23:16 1इत 26:24
4 1इत 23:17
5 1इत 23:18
6 1इत 26:31
7 उत 46:11
8 1इत 23:22
9 नीत 16:33

बराबर माने गए, फिर चाहे वे बड़े थे या
छोटे।

25 इसके अलावा, दाविद और
मंदिर में सेवा करनेवाले समूहों
के प्रधानों ने मिलकर आसाप, हेमान और
यदूतून के कुछ बेटों[1] को अलग किया
ताकि वे सुरमंडल, तारोंवाले बाजों[2] और
झाँझ की धुन पर[3] भविष्यवाणी करें।
इस सेवा के लिए चुने गए आदमियों
की सूची यह थी: **2** आसाप के बेटों
में से जक्कूर, यूसुफ, नतन्याह और
अशरेला। आसाप के ये बेटे उसके निर्दे-
शन में सेवा करते थे और आसाप
राजा के निर्देशन में भविष्यवाणी करता
था। **3** यदूतून[4] के बेटों में से गदल्याह,
सरी, यशाया, शिमी, हशब्याह और
मतित्याह।[5] ये छः अपने पिता यदूतून के
निर्देशन में सेवा करते थे। यदूतून सुर-
मंडल की धुन पर भविष्यवाणी करता
और यहोवा का शुक्रिया अदा करता और
उसकी तारीफ करता था।[6] **4** हेमान[7]
के बेटों में से बुक्कियाह, मत्तन्याह,
उज्जीएल, शबूएल, यरीमोत, हनन्याह,
हनानी, एलीयाता, गिद्दलती, रोममती-
एज़ेर, योशबकाशा, मल्लोती, होतीर
और महजीओत। **5** ये सभी हेमान के
बेटे थे। हेमान राजा का एक दर्शी
था, जो सच्चे परमेश्वर की महिमा के
लिए उसका संदेश सुनाता था। इसलिए
सच्चे परमेश्वर ने हेमान को 14 बेटे
और 3 बेटियाँ दीं। **6** ये सभी अपने
पिता के निर्देशन में सेवा करते थे और
यहोवा के भवन में झाँझ, तारोंवाले बाजों
और सुरमंडल की धुन पर गीत गाते थे।[8]
सच्चे परमेश्वर के भवन में उनकी यही
सेवा थी।

आसाप, यदूतून और हेमान राजा के
निर्देशन में सेवा करते थे।

7 इनकी और इनके भाइयों की
गिनती 288 थी, जिन्हें यहोवा के लिए
गीत गाने की तालीम दी गयी थी और
वे सभी कुशल गायक थे। **8** उन सबने
अपनी ज़िम्मेदारी तय करने के लिए
चिट्ठियाँ डालीं,[1] फिर चाहे वे छोटे थे या
बड़े, गाने में कुशल थे या नौसिखिए।

9 पहली चिट्ठी आसाप के बेटे
यूसुफ के नाम निकली,[2] दूसरी
गदल्याह के नाम[3] (उसकी, उसके
भाइयों और बेटों की गिनती 12
थी) **10** तीसरी जक्कूर,[4] उसके बेटों
और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **11** चौथी यिसरी, उसके बेटों
और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **12** पाँचवीं नतन्याह,[5] उसके
बेटों और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **13** छठी बुक्कियाह, उसके
बेटों और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **14** सातवीं यसरेला, उसके
बेटों और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **15** आठवीं यशाया, उसके
बेटों और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **16** नौवीं मत्तन्याह, उसके बेटों
और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **17** दसवीं शिमी, उसके बेटों
और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **18** 11वीं अजरेल, उसके बेटों
और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **19** 12वीं हशब्याह, उसके
बेटों और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **20** 13वीं शूबाएल,[6] उसके
बेटों और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **21** 14वीं मतित्याह, उसके
बेटों और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, **22** 15वीं यरेमोत, उसके बेटों
और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती 12
थी, **23** 16वीं हनन्याह, उसके बेटों

अध्य. 25

1 1इत 16:41, 42; 2इत 5:11, 12; 2इत 35:15
2 1शम 10:5
3 1इत 15:16
4 1इत 16:41, 42
5 1इत 15:16, 18
6 इफ 5:19
7 1इत 15:16, 19
8 1इत 13:8; 1इत 15:16; 1इत 16:5

दूसरा कॉल.

1 नीत 16:33
2 1इत 25:1, 2
3 1इत 25:1, 3
4 1इत 25:1, 2
5 1इत 25:1, 2
6 1इत 25:1, 4

और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, 24 17वीं योशबकाशा, उसके
बेटों और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती
12 थी, 25 18वीं हनानी, उसके बेटों
और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती 12
थी, 26 19वीं मल्लोती, उसके बेटों
और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती 12
थी, 27 20वीं एलीयाता, उसके बेटों
और भाइयों के नाम, जिनकी गिनती 12
थी, 28 21वीं होतीर, उसके बेटों और
भाइयों के नाम, जिनकी गिनती 12 थी,
29 22वीं गिद्दलती,[1] उसके बेटों और
भाइयों के नाम, जिनकी गिनती 12 थी,
30 23वीं महजीओत,[2] उसके बेटों और
भाइयों के नाम, जिनकी गिनती 12 थी
31 और 24वीं रोममती-एज़ेर,[3] उसके
बेटों और भाइयों के नाम निकली जिनकी
गिनती 12 थी।

26 पहरेदारों के दल[4] ये थे: कोरह-
वंशियों में से मेशेलेम्याह[5] जो
कोरे का बेटा था और कोरे आसाप के
बेटों में से था। 2 मेशेलेम्याह के बेटे ये
थे: पहलौठा जकरयाह, दूसरा यदीएल,
तीसरा जबद्याह, चौथा यतनीएल,
3 पाँचवाँ एलाम, छठा यहोहानान
और सातवाँ एल्यहो-एनै। 4 ओबेद-
एदोम के बेटे ये थे: पहलौठा शमा-
याह, दूसरा यहोजाबाद, तीसरा योआह,
चौथा सकार, पाँचवाँ नतनेल, 5 छठा
अम्मीएल, सातवाँ इस्साकार और आठवाँ
पुल्लतै। परमेश्वर की आशीष से उसके
ये बेटे हुए थे।

6 ओबेद-एदोम के बेटे शमायाह के
बेटे अपने-अपने पिता के घराने के प्रधान
थे क्योंकि वे ताकतवर और काबिल
आदमी थे। 7 शमायाह के बेटे ये थे:
ओत्नी, रपाएल, ओबेद और एलजा-
बाद। शमायाह के भाई एलीहू और
समक्याह भी काबिल आदमी थे। 8 ये
सभी ओबेद-एदोम के बेटे थे। वे और
उनके बेटे और भाई, सभी सेवा के
लिए पूरी तरह काबिल और बिलकुल
सही थे। ओबेद-एदोम के घराने से आए
इन सभी की गिनती 62 थी। 9 मेशेले-
म्याह[1] के बेटे और भाई कुल मिलाकर
18 काबिल आदमी थे। 10 मरारी के
बेटों में से होसा के बेटे थे: शिम्री प्रधान
था। हालाँकि वह पहलौठा नहीं था, फिर
भी उसके पिता ने उसे परिवार का प्रधान
ठहराया था। 11 दूसरा हिलकियाह,
तीसरा तबल्याह और चौथा जकरयाह।
होसा के सभी बेटों और भाइयों की
गिनती 13 थी।

12 पहरेदारों के इन दलों में मुखि-
याओं को यहोवा के भवन में सेवा करने
के लिए वही काम सौंपा गया था जो उनके
भाइयों को दिया गया था। 13 इसलिए
उन सबने, फिर चाहे उनका घराना छोटा
था या बड़ा, अलग-अलग फाटकों की
ज़िम्मेदारियाँ तय करने के लिए चिट्ठियाँ
डालीं।[2] 14 पूरब के फाटक के लिए
चिट्ठी शेलेम्याह के नाम निकली। उन्होंने
उसके बेटे जकरयाह के लिए चिट्ठियाँ
डालीं और उसकी चिट्ठी उत्तर के फाटक
के लिए निकली। जकरयाह एक सूझ-
बूझवाला सलाहकार था। 15 दक्षिण
के फाटक के लिए चिट्ठी ओबेद-एदोम के
नाम निकली और उसके बेटों[3] को भंडार-
घरों का काम सौंपा गया। 16 पश्चिम
के फाटक के लिए चिट्ठी शुप्पीम और
होसा[4] के नाम निकली। यह फाटक
शल्लेकेत नाम फाटक के पास ऊपर
जानेवाले राजमार्ग के पास था। पहरे-
दारों के दल पास-पास तैनात किए गए
थे। 17 पूरब के फाटक के पास छः
लेवी ठहराए गए और उत्तर की तरफ हर

अध्य. 25
1 1इत 25:1, 4
2 1इत 25:1, 4
3 1इत 25:1, 4

अध्य. 26
4 1इत 9:2, 22; 2इत 23:16, 19
5 1इत 26:14, 19

दूसरा कॉल.
1 1इत 26:14, 19
2 नीत 16:33
3 1इत 26:4, 5
4 1इत 26:10, 11

दिन चार और दक्षिण की तरफ हर
दिन चार ठहराए गए थे। भंडार-घरों के
लिए दो पहरेदारों के पास दो पहरे-
दार तैनात किए गए।[1] 18 पश्चिम
में खंभोंवाले बरामदे के लिए, राजमार्ग
के पास चार[2] और खंभोंवाले बराम-
दे के पास दो पहरेदार तैनात किए गए।
19 कोरह और मरारी के वंशजों में से
पहरेदारों के दल ये थे।

20 सच्चे परमेश्वर के भवन के
खज़ानों पर और पवित्र ठहरायी गयी*
चीज़ों के खज़ानों पर लेवियों में से
अहियाह को अधिकार सौंपा गया।[3]
21 लादान के बेटे ये थे: लादान
से निकले गेरशोनियों यानी लादान से
निकले पिताओं के घरानों के मुखि-
याओं में से यहोएली[4] 22 और उसके
बेटे जेताम और योएल। उन्हें यहोवा
के भवन के खज़ानों[5] पर अधिकार
सौंपा गया था। 23 अमरामियों, यिस-
हारियों, हेब्रोनियों और उज्जीएलियों[6] में
से 24 शबूएल, जो मूसा के बेटे गेर-
शोम का बेटा था। शबूएल एक अगुवा था
और उसे भंडार-घरों पर अधिकार सौंपा
गया था। 25 शबूएल के भाई, यानी
एलीएज़ेर[7] के वंशज ये थे: एलीएज़ेर का
बेटा रहबयाह[8] और रहबयाह के वंशज
यशाया, योराम, जिक्री और शलोमोत।
26 इसी शलोमोत को और उसके भाइयों
को पवित्र ठहरायी गयी चीज़ों के सभी
खज़ानों[9] पर अधिकार सौंपा गया था।
इन चीज़ों को राजा दाविद,[10] पिताओं के
घरानों के मुखियाओं,[11] हज़ारों और
सैकड़ों के प्रधानों और सेनापतियों ने
पवित्र ठहराया था। 27 युद्धों और लूट
से मिली चीज़ों[12] को उन्होंने पवित्र ठह-
राया था ताकि यहोवा के भवन का रख-
रखाव हो सके। 28 वे उन चीज़ों के भी
अधिकारी थे जिन्हें शमूएल दर्शी,[1] कीश
के बेटे शाऊल, नेर के बेटे अब्नेर[2] और
सरूयाह के बेटे योआब[3] ने पवित्र ठह-
राया था। पवित्र ठहरायी गयी हर चीज़
शलोमीत और उसके भाइयों के अधिकार
में सौंपी गयी थी।

29 यिसहारियों[4] में से कनन्याह और
उसके बेटों को परमेश्वर के भवन के
बाहर, प्रशासन का काम दिया गया था। वे
इसराएल में अधिकारी और न्यायी थे।[5]

30 हेब्रोनियों[6] में से हशब्याह और
उसके भाई, जो कुल मिलाकर 1,700
काबिल आदमी थे, इसराएल में यर-
दन के पश्चिम के इलाके के प्रशा-
सन के अधिकारी थे। यहोवा के काम
और राजा के काम में उनकी यही ज़िम्मे-
दारियाँ थीं। 31 हेब्रोनियों में से यरि-
याह[7] अपने पिता के घराने से निकले
हेब्रोनियों का मुखिया था। दाविद के राज
के 40वें साल में[8] हेब्रोनियों में ताकतवर
काबिल आदमी ढूँढ़े गए और वे गिलाद
के याजेर[9] में पाए गए। 32 यरियाह के
भाइयों की गिनती 2,700 थी। वे सभी
काबिल आदमी थे जो अपने पिताओं
के घरानों के मुखिया थे। इसलिए राजा
दाविद ने उन्हें रूबेनियों, गादियों और
मनश्शे के आधे गोत्र का अधिकारी ठह-
राया ताकि वे सच्चे परमेश्वर के काम
और राजा के काम से जुड़े हर मामले की
देखरेख करें।

27 यह इसराएली सेना-दलों की
गिनती है। इनमें पिताओं के
घरानों के मुखिया, हज़ारों और सैकड़ों के
प्रधान[10] और उनके अधीन काम करने-
वाले अधिकारी हैं। ये दल साल के
हर महीने बारी-बारी से राजा की सेवा

अध्य. 26
1 1इत 26:15
2 1इत 26:16
3 1रा 7:51; 1रा 14:25, 26; 1इत 9:26; 1इत 18:10, 11
4 1इत 29:8
5 1रा 15:18
6 गि 3:27
7 निर्ग 18:3, 4
8 1इत 23:17
9 गि 31:50; 1इत 18:10, 11
10 1इत 29:3, 4
11 1इत 29:6, 7
12 गि 31:28; यह 6:19

दूसरा कॉल.
1 1शम 9:9
2 1शम 14:50
3 2शम 2:18; 2शम 20:23
4 1इत 23:12
5 व्य 17:9; 2इत 19:8
6 1इत 23:12
7 1इत 23:19
8 1इत 29:26, 27
9 यह 13:24, 25; यह 21:8, 39

अध्य. 27
10 निर्ग 18:25; व्य 1:15; 1शम 8:11, 12

26:20 * या "समर्पित की हुई।"

करते थे।*[1] हर सेना-दल में 24,000 आदमी थे।

2 पहले महीनेवाले पहले दल का मुखिया जब्दीएल का बेटा याशोबाम[2] था। उसके दल में 24,000 आदमी थे। **3** पेरेस के बेटों[3] में से वही उन सभी दलों के प्रधानों का मुखिया था जिन्हें पहले महीने सेवा करने के लिए ठहराया गया था। **4** दूसरे महीनेवाले दल का मुखिया अहोही[4] दोदै[5] था। उसके दल का अगुवा मिकलोत था। इस दल में 24,000 आदमी थे। **5** तीसरे महीने सेवा के लिए ठहराए गए दल का मुखिया बनायाह[6] था जो प्रधान याजक यहोयादा[7] का बेटा था। उसके दल में 24,000 आदमी थे। **6** यह बनायाह तीस में से एक वीर योद्धा था और उनका अधिकारी था। उसके दल का अधिकारी उसका बेटा अम्मीजाबाद था। **7** चौथे महीने के लिए चौथा प्रधान योआब का भाई असाहेल[8] का था। उसके बाद उसका बेटा जबद्याह था और उसके दल में 24,000 आदमी थे। **8** पाँचवें महीने के लिए पाँचवाँ प्रधान यिज्राही शमहूत था। उसके दल में 24,000 आदमी थे। **9** छठे महीने के लिए छठा प्रधान तकोआ[9] के रहनेवाले इक्केश का बेटा ईरा[10] था। उसके दल में 24,000 आदमी थे। **10** सातवें महीने के लिए सातवाँ प्रधान एप्रैमियों का पलोनी हेलेस[11] था। उसके दल में 24,000 आदमी थे। **11** आठवें महीने के लिए आठवाँ प्रधान जेरहियों[12] का हूशाई सिब्बकै[13] था। उसके दल में 24,000 आदमी थे। **12** नौवें महीने के लिए नौवाँ प्रधान बिन्यामीनियों के अनातोत[1] का रहनेवाला अबीएजेर[2] था। उसके दल में 24,000 आदमी थे। **13** दसवें महीने के लिए दसवाँ प्रधान जेरहियों[3] के नतोपा का रहनेवाला महरै[4] था। उसके दल में 24,000 आदमी थे। **14** 11वें महीने के लिए 11वाँ प्रधान एप्रैमियों के पिरातोन का रहनेवाला बनायाह[5] था। उसके दल में 24,000 आदमी थे। **15** 12वें महीने के लिए 12वाँ प्रधान हेल्दै था। हेल्दै नतोपा का रहनेवाला और ओत्नीएल का वंशज था। उसके दल में 24,000 आदमी थे।

16 ये इसराएल के गोत्रों के अगुवे थे: रूबेनियों का अगुवा जिक्री का बेटा एलीएज़ेर था। शिमोनियों का अगुवा माका का बेटा शपत्याह था। **17** लेवी गोत्र का अगुवा कमूएल का बेटा हशब्याह था। हारून के वंशजों का अगुवा सादोक था। **18** यहूदा गोत्र का अगुवा एलीहू[6] था जो दाविद के भाइयों में से एक था। इस्साकार गोत्र का अगुवा मीकाएल का बेटा ओम्री था। **19** जबूलून गोत्र का अगुवा ओबद्याह का बेटा यिशमायाह था। नप्ताली गोत्र का अगुवा अजरीएल का बेटा यरीमोत था। **20** एप्रैमियों का अगुवा अजज्याह का बेटा होशेआ था। मनश्शे के आधे गोत्र का अगुवा पदायाह का बेटा योएल था। **21** गिलाद के मनश्शे के आधे गोत्र का अगुवा जकरयाह का बेटा इद्दो था। बिन्यामीन गोत्र का अगुवा अब्नेर[7] का बेटा यासीएल था। **22** दान गोत्र का अगुवा यरोहाम का बेटा अजरेल था। ये सभी इसराएल के गोत्रों के हाकिम थे।

23 दाविद ने 20 साल या उससे कम उम्र के लोगों की गिनती नहीं ली क्योंकि यहोवा ने वादा किया था

27:1 *शा., "से अंदर आते और बाहर जाते थे।"

अध्य. 27
1 1इत 28:1
2 1इत 11:11
3 गि 26:20, 21
4 1इत 8:1, 4
5 2शम 23:9
6 2शम 23: 20-23; 1रा 4:4
7 1इत 12:27
8 2शम 2:18; 2शम 23:8, 24; 1इत 2:15, 16
9 2इत 11:5, 6; आम 1:1
10 2शम 23:8, 26
11 1इत 11:10, 27
12 गि 26:20
13 2शम 21:18

दूसरा कॉल.
1 1इत 6:60, 64
2 2शम 23:8, 27
3 गि 26:20
4 2शम 23:8, 28
5 2शम 23:8, 30
6 1शम 16:1, 6; 1शम 17:28
7 1शम 14:50; 2शम 3:27

कि वह इसराएल की गिनती बढ़ाकर
आसमान के तारों जितनी बेशुमार कर
देगा।[1] **24** सरूयाह के बेटे योआब ने
उनकी गिनती करना शुरू किया, मगर
पूरा नहीं किया। गिनती लेने की वजह से
परमेश्‍वर का क्रोध इसराएल पर भड़क
उठा था[2] और उनकी गिनती राजा दाविद
के ज़माने के इतिहास में नहीं लिखी
गयी थी।

25 राजा के खज़ानों[3] का अधिकारी
अदीएल का बेटा अज़्मावेत था। खेतों,
शहरों, कसबों और मीनारों के गोदामों*
का अधिकारी उज्जियाह का बेटा योना-
तान था। **26** खेती-बाड़ी करनेवालों
का अधिकारी कलूब का बेटा एज्री था।
27 अंगूरों के बागों की देखरेख करने-
वाला अधिकारी शिमी था जो रामाह
का रहनेवाला था। दाख-मदिरा बनाने के
लिए इस्तेमाल होनेवाली उपज की
देखरेख करनेवाला अधिकारी शापामी
जब्दी था। **28** शफेलाह[4] के जैतून के
बागों और गूलर पेड़ों[5] की देखरेख
करनेवाला अधिकारी गदेरी बाल-
हानान था। तेल के भंडारों की देख-
रेख करनेवाला अधिकारी योआश था।
29 शारोन[6] में चरनेवाली भेड़ों के झुंडों
की देखरेख करनेवाला अधिकारी शित्रै
था जो शारोन का रहनेवाला था। घाटी
के मैदानों में चरनेवाले गाय-बैलों के झुंडों
की देखरेख करनेवाला अधिकारी अदलै
का बेटा शापात था। **30** ऊँटों की
देखरेख करनेवाला अधिकारी इश्‍माएली
ओबील था और गधियों के झुंडों की
देखरेख करनेवाला अधिकारी येहदयाह
था जो मेरोनोत का रहनेवाला था।
31 भेड़-बकरियों के झुंडों की देखरेख
करनेवाला अधिकारी हगरी याजीज था।
ये सभी राजा दाविद की दौलत की देख-
रेख करनेवाले प्रधान थे।

32 दाविद का भतीजा योनातान[1]
एक सलाहकार था। वह अच्छी समझ
रखनेवाला आदमी था और राज-
सचिव था। हकमोनी का बेटा यहीएल
राजा के बेटों[2] की देखभाल करता था।
33 अहीतोपेल[3] राजा का सलाहकार था
और एरेकी हूशै[4] राजा का दोस्त* था।
34 अहीतोपेल के बाद बनायाह का बेटा
यहोयादा[5] और अबियातार[6] सलाहकार
बने और योआब[7] राजा की सेना का
सेनापति था।

28 फिर दाविद ने इसराएल के
इन सभी अधिकारियों को यरू-
शलेम में इकट्ठा किया: सभी गोत्रों के
हाकिम, राजा की सेवा करनेवाले सेना-
दलों के प्रधान,[8] हज़ारों और सैकड़ों
के प्रधान,[9] राजा और उसके बेटों[10]
की सारी दौलत और मवेशियों की देख-
रेख करनेवाले प्रधान,[11] साथ ही दर-
बारी और हर ताकतवर और काबिल
आदमी।[12] **2** राजा दाविद खड़ा हुआ
और उसने कहा,

“मेरे भाइयो और मेरे लोगो, मेरी
सुनो। मेरी दिली तमन्‍ना थी कि मैं एक
ऐसा भवन बनाऊँ जो यहोवा के करार के
संदूक के लिए विश्राम की जगह हो और
हमारे परमेश्‍वर के लिए पाँवों की चौकी
हो।[13] मैंने उसे बनाने की तैयारियाँ भी की
थीं।[14] **3** मगर सच्चे परमेश्‍वर ने मुझसे
कहा, ‘तू मेरे नाम की महिमा के लिए
भवन नहीं बनाएगा[15] क्योंकि तूने बहुत-
से युद्ध किए हैं और बहुत खून बहाया
है।’[16] **4** इसराएल के परमेश्‍वर यहोवा
ने मेरे पिता के पूरे घराने में से मुझे ही चुना

27:25 * या “खज़ानों।”

27:33 * या “राज़दार।”

अध्य. 27
1 उत 15:5
2 2शम 24:2, 15; 1इत 21:6, 7
3 2रा 18:15
4 2इत 26:9, 10
5 2इत 9:27
6 यश 35:2

दूसरा कॉल.
1 2शम 13:3; 2शम 21:21
2 1इत 3:1-9
3 2शम 15:12; 2शम 16:23; 2शम 17:23
4 2शम 15:37; 2शम 16:16, 17
5 2शम 23:20-23; 1रा 2:35
6 1रा 1:7
7 1इत 11:6

अध्य. 28
8 1इत 27:1
9 निर्ग 18:25
10 1इत 3:1-9
11 1इत 27:25, 29
12 1इत 11:10
13 भज 132:3-5
14 1इत 22:2-4
15 1इत 17:4
16 1इत 22:7, 8

था ताकि मैं सदा के लिए इसराएल का
राजा बनूँ।[1] उसने यहूदा को अगुवा चुना
था[2] और यहूदा के घरानों में से मेरे
पिता का घराना चुना[3] और मेरे पिता के
बेटों में से मुझी को पूरे इसराएल का राजा
बनने के लिए मंज़ूर किया।[4] **5** यहोवा
ने मुझे कई बेटे दिए[5] और उनमें से मेरे
बेटे सुलैमान को यहोवा की राजगद्दी पर
बैठकर इसराएल पर राज करने के लिए
चुना।[6]

6 परमेश्वर ने मुझसे कहा, 'तेरा बेटा
सुलैमान ही मेरे लिए भवन और आँगन
बनाएगा, क्योंकि मैंने उसे अपना बेटा
चुना है और मैं उसका पिता बनूँगा।[7]
7 अगर वह मेरी आज्ञाओं और मेरे
न्याय-सिद्धांतों को मानने में अटल बना
रहेगा,[8] जैसे वह अभी मान रहा है, तो
मैं उसका राज हमेशा के लिए मज़बूती
से कायम रखूँगा।'[9] **8** इसलिए आज मैं
पूरे इसराएल के सामने, यहोवा की मंडली
के सामने और हमारे परमेश्वर के सामने
तुम लोगों से कहता हूँ कि तुम अपने
परमेश्वर यहोवा की सभी आज्ञाओं को
अच्छी तरह समझो और उन्हें मानो, ताकि
इस बढ़िया देश पर तुम्हारा अधिकार
बना रहे[10] और तुम बाद में अपने बेटों को
इसे सदा के लिए विरासत में दे सको।

9 और मेरे बेटे सुलैमान, तू अपने
पिता के परमेश्वर को जान और पूरे*
दिल से और खुशी-खुशी उसकी सेवा
कर,[11] क्योंकि यहोवा सबके दिलों को
जाँचता है[12] और मन के हर विचार और
इरादे को जानता है।[13] अगर तू उसकी
खोज करेगा तो वह तुझे मिलेगा।[14]
लेकिन अगर तू उसे छोड़ देगा, तो
वह तुझे हमेशा के लिए ठुकरा देगा।[15]

10 इस बात पर अच्छी तरह ध्यान दे
क्योंकि यहोवा ने तुझे एक ऐसा भवन
बनाने के लिए चुना है जो उसका पवित्र-
स्थान होगा। हिम्मत रख और काम में
लग जा।"

11 फिर दाविद ने अपने बेटे सुलैमान
को मंदिर का बरामदा,[1] उसके कमरे,
भंडार-घर, छत के खाने, भीतरी कमरे
और प्रायश्चित के ढकने का भवन*[2]
बनाने का नमूना[3] दिया। **12** दाविद
को परमेश्वर की प्रेरणा से इन सब
चीज़ों का जो नमूना मिला था वह
सब उसने सुलैमान को दिया: यहोवा के
भवन के आँगन,[4] उसके चारों तरफ के
भोजन के कमरे, सच्चे परमेश्वर के भवन
के खज़ाने और पवित्र ठहरायी गयी*
चीज़ों के खज़ाने।[5] **13** साथ ही, उसने
याजकों और लेवियों के दलों[6] के बँट-
वारे के बारे में, यहोवा के भवन में होने-
वाली सारी सेवाओं के बारे में और यहोवा
के भवन में सेवा के लिए इस्तेमाल होने-
वाली सारी चीज़ों के बारे में हिदायतें दीं।
14 दाविद ने यह भी बताया कि अलग-
अलग कामों में इस्तेमाल होनेवाली सोने
की चीज़ें बनाने में कितना सोना लगाए,
चाँदी की चीज़ों के लिए कितनी चाँदी
लगाए, **15** सोने की दीवटों[7] और सोने
के दीयों के लिए कितना सोना लगाए,
चाँदी की दीवटों में से हर दीवट और
उसके दीयों के इस्तेमाल के मुताबिक
कितनी चाँदी लगाए, **16** रोटियों का
ढेर* रखनेवाली मेज़ों[8] में से हर मेज़ के
लिए कितना सोना लगाए और चाँदी की
मेज़ों के लिए कितनी चाँदी लगाए,
17 काँटों, कटोरों और सुराहियों के लिए

28:9 *या "पूरी तरह लगे हुए।"

28:11 *या "प्रायश्चित का भवन।" **28:12** *या "समर्पित की हुई।" **28:16** *यानी नज़राने की रोटी।

अध्य. 28
1 1शम 16:1, 13; 2शम 7:8; भज 89:20
2 उत 49:10; 1इत 5:2; भज 60:7
3 रूत 4:22
4 1शम 13:14; 1शम 16:11, 12
5 1इत 3:1-9
6 1इत 17:14; 1इत 22:9; 2इत 1:8
7 2शम 7:13, 14
8 व्य 12:1; 1रा 6:12
9 1इत 17:13, 14; भज 72:8
10 व्य 6:3
11 व्य 10:12
12 1शम 16:7; 1इत 29:17; नीत 17:3; प्रक 2:23
13 व्य 31:21; भज 139:2
14 मत 7:7; इब्र 11:6; याकू 4:8
15 व्य 31:17; 2इत 15:2; इब्र 10:38

दूसरा कॉल.
1 2इत 3:4
2 लैव 16:2; 1रा 6:19
3 इब्र 8:5
4 1रा 6:36; 1रा 7:12
5 1इत 9:26; 1इत 26:20
6 1इत 24:1
7 2इत 4:7
8 2इत 4:8, 19

कितना शुद्ध सोना लगाए, सोने की कटो-
रियों[1] में से हर कटोरी के लिए कितना
सोना लगाए और चाँदी की कटोरियों में से
हर कटोरी के लिए कितनी चाँदी लगाए।
18 उसने यह भी बताया कि धूप की वेदी
के लिए कितना शुद्ध सोना लगाए[2] और
रथ के प्रतीक[3] यानी सोने के उन
करूबों[4] के लिए कितना सोना लगाए, जो
यहोवा के करार के संदूक के ऊपर पंख
फैलाए हुए होंगे और उस पर छाया किए
हुए होंगे। 19 दाविद ने कहा, "यहोवा
ने मुझे अंदरूनी समझ दी जिस वजह
से मैंने भवन की सारी बारीकियों का एक
नमूना[5] तैयार किया।"[6]

20 फिर दाविद ने अपने बेटे सुलै-
मान से कहा, "तू हिम्मत से काम ले और
हौसला रख और काम में लग जा। तू
डरना मत और न ही खौफ खाना क्योंकि
मेरा परमेश्वर यहोवा तेरे साथ है।[7] वह
तुझे नहीं छोड़ेगा, न ही त्यागेगा।[8] वह
तेरे साथ तब तक रहेगा जब तक कि
यहोवा के लिए भवन बनाने का सारा
काम पूरा नहीं हो जाता। 21 सच्चे पर-
मेश्वर के भवन की सारी सेवाओं के लिए
याजकों और लेवियों[9] के ये सारे दल[10]
तैयार हैं। तेरे लिए ऐसे कारीगर मौजूद
हैं जो हर तरह का काम खुशी-खुशी और
कुशलता से करेंगे।[11] साथ ही हाकिम[12]
और सारे लोग भी हैं जो तेरी सब हिदाय-
तों का पालन करेंगे।"

29 अब राजा दाविद ने पूरी मंडली
से कहा, "मेरा बेटा सुलैमान,
जिसे परमेश्वर ने चुना है,[13] अभी जवान
है और उसे कोई तजुरबा नहीं है*[14] और
यह काम बहुत बड़ा है, क्योंकि किसी
इंसान के लिए महल नहीं बल्कि यहोवा
परमेश्वर के लिए मंदिर बनाया जाना
है।[1] 2 मैंने अपने परमेश्वर के भवन
के लिए तैयारियाँ करने में कोई कसर नहीं
छोड़ी। मैंने सोने के काम के लिए सोना,
चाँदी के काम के लिए चाँदी, ताँबे के
काम के लिए ताँबा, लोहे के काम के लिए
लोहा,[2] लकड़ी,[3] सुलेमानी पत्थर, ऐसे
पत्थर जिन्हें गारे से जड़ा जा सकता है,
पच्चीकारी के पत्थर, हर तरह का
कीमती रत्न और भारी तादाद में सिल-
खड़ी पत्थर इकट्ठा किया है। 3 इन
सबके अलावा, मैं पवित्र भवन के लिए
अपने खुद के खज़ाने[4] से सोना-चाँदी
दे रहा हूँ क्योंकि मैं अपने परमेश्वर
के भवन से गहरा लगाव रखता हूँ।[5]
4 मैं अपने खज़ाने से ओपीर से लाया
3,000 तोड़े* सोना[6] और 7,000 तोड़े
शुद्ध चाँदी दे रहा हूँ ताकि भवन के कमरों
की दीवारें मढ़ी जा सकें। 5 मैं सोने के
काम के लिए सोना और चाँदी के काम के
लिए चाँदी और कारीगरों के सब कामों के
लिए मैं ये सारी चीज़ें देता हूँ। अब तुममें
से कौन आगे बढ़कर अपनी इच्छा से
यहोवा के लिए भेंट देना चाहेगा?"[7]

6 तब पिताओं के घरानों के हाकिम,
इसराएल के गोत्रों के हाकिम, हज़ारों
और सैकड़ों के प्रधान[8] और राजा
के काम पर ठहराए गए अधि-
कारी[9] अपनी इच्छा से आगे आए।
7 उन्होंने सच्चे परमेश्वर के भवन के
काम के लिए यह सब दान किया:
5,000 तोड़े सोना, 10,000 दर्क-
नोन,* 10,000 तोड़े चाँदी, 18,000
तोड़े ताँबा और 1,00,000 तोड़े लोहा।
8 जिन-जिनके पास कीमती रत्न थे

अध्य. 28
1 1रा 7:48, 50
2 1रा 7:48
3 भज 18:10
4 निर्ग 25:20; 1शम 4:4; 1रा 6:23
5 1इत 28:11
6 निर्ग 25:9, 40
7 व्य 31:6; यह 1:6, 9; रोम 8:31
8 यह 1:5
9 1इत 24:20
10 1इत 24:1
11 निर्ग 36:1, 2
12 1इत 22:17; 1इत 28:1

अध्य. 29
13 1इत 28:5
14 1रा 3:7

दूसरा कॉल.
1 2इत 2:4
2 1इत 22:3, 16
3 1इत 22:4, 14
4 1इत 21:24
5 भज 26:8; भज 27:4; भज 122:1
6 अय 28:16
7 निर्ग 35:5
8 निर्ग 18:25
9 1इत 27:25, 29; 1इत 27:31

29:1 *या "नाज़ुक है।"

29:4 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें। 29:7 *दर्कनोन सोने का एक फारसी सिक्का था। अति. ख14 देखें।

उन्होंने यहोवा के भवन के खज़ाने के लिए
दे दिए जिसकी देखरेख गेरशोनी[1] यही-
एल करता था।[2] **9** लोगों को ये चीज़ें
भेंट करने में बड़ी खुशी हुई क्योंकि उन्होंने
पूरे दिल से और अपनी इच्छा से यहोवा
को भेंट की थी[3] और राजा दाविद भी
बहुत मगन हुआ।

10 फिर दाविद ने पूरी मंडली के
सामने यहोवा की बड़ाई की। दाविद
ने कहा, "हे हमारे पिता इसराएल के
परमेश्वर यहोवा, युग-युग तक* तेरी
तारीफ होती रहे। **11** हे यहोवा,
महानता,[4] ताकत,[5] सौंदर्य, वैभव और
प्रताप* तेरा ही है[6] क्योंकि आकाश
और धरती पर जो कुछ है, सब तेरा है।[7]
हे यहोवा, राज तेरा है।[8] तू ऐसा पर-
मेश्वर है जिसने खुद को सबसे ऊँचा
किया है, तू परम-प्रधान है। **12** धन
और सम्मान तुझी से मिलता है[9] और
तू हर चीज़ पर राज करता है।[10] तेरे
हाथ में शक्ति[11] और ताकत है।[12] तेरा
हाथ सबको महान बना सकता है,[13]
उन्हें ताकत दे सकता है।[14] **13** इस-
लिए अब हे हमारे परमेश्वर, हम तेरा
शुक्रिया अदा करते हैं, तेरे खूबसूरत नाम
की तारीफ करते हैं।

14 मैं क्या हूँ, मेरी प्रजा क्या है कि
हम इस तरह अपनी इच्छा से तुझे कुछ
भेंट करें? क्योंकि सबकुछ तुझी से मिलता
है और हमने तुझे जो भी दिया वह
तेरा ही दिया हुआ है। **15** हम तो तेरी
नज़र में परदेसी और प्रवासी जैसे हैं, जैसे
हमारे बाप-दादे हुआ करते थे।[15] धरती
पर हमारी ज़िंदगी के दिन एक छाया के
समान हैं[16] और हमें कोई आशा नहीं है।
16 हे यहोवा, हमारे परमेश्वर, हमने ये
जो दौलत इकट्ठी की है ताकि तेरे पवित्र
नाम की महिमा के लिए भवन बना सकें,
यह सब तेरी ही दी हुई है, सब पर तेरा ही
हक है। **17** हे मेरे परमेश्वर, मैं अच्छी
तरह जानता हूँ कि तू दिल को जाँचता है[1]
और तू निर्दोष चालचलन* से खुश होता
है।[2] मैंने सीधे-सच्चे मन से और अपनी
इच्छा से ये सारी चीज़ें तुझे भेंट की हैं
और यह देखकर मैं फूला नहीं समा रहा
हूँ कि तेरे लोग जो यहाँ मौजूद हैं, अपनी
इच्छा से तुझे भेंट दे रहे हैं। **18** हे
यहोवा, हमारे बाप-दादे अब्राहम, इसहाक
और इसराएल के परमेश्वर, तू अपने
लोगों की मदद कर ताकि वे अपना यह
जज़्बा हमेशा बनाए रखें और पूरे दिल से
तेरी सेवा करते रहें।[3] **19** और मेरे बेटे
सुलैमान की मदद कर ताकि वह पूरे*
दिल से[4] तेरी आज्ञाओं और नियमों पर
चले,[5] तू जो हिदायतें याद दिलाता है उन्हें
माने और उनका पालन करता रहे और
वह मंदिर# बनाए जिसके लिए मैंने तैया-
रियाँ की हैं।"[6]

20 फिर दाविद ने पूरी मंडली से
कहा, "अब तुम सब अपने परमेश्वर
यहोवा की तारीफ करो।" तब सारी
मंडली ने अपने पुरखों के परमेश्वर
यहोवा की तारीफ की और मुँह के बल
गिरकर यहोवा को दंडवत किया और
राजा को प्रणाम किया। **21** और अगले
दिन तक वे सब यहोवा के लिए बलि-
दान और होम-बलियाँ चढ़ाते रहे।[7]
उन्होंने यहोवा के लिए 1,000 बैल,
1,000 मेढ़े, 1,000 नर मेम्ने और अर्घ
चढ़ाए।[8] उन्होंने पूरे इसराएल की
तरफ से भारी तादाद में बलिदान

अध्य. 29
1 1इत 6:1
2 1इत 26:22
3 2कुर 9:7
4 भज 145:3
1ती 1:17
5 प्रक 5:13
6 1इत 16:27
भज 8:1
7 भज 24:1
यश 42:5
8 भज 103:19
मत 6:10
9 व्य 8:18
नीत 10:22
फिल 4:19
10 2इत 20:6
11 यश 40:26
12 व्य 3:24
इफ 1:19
प्रक 15:3
13 2इत 1:11, 12
14 2इत 16:9
भज 18:32
यश 40:29
15 लैव 25:23
इब्र 11:13
16 अय 14:1, 2
याकू 4:13, 14

दूसरा कॉल.
1 1इत 28:9
2 नीत 11:20
नीत 15:8
इब्र 1:9
3 भज 10:17
भज 86:11
4 मर 12:30
5 1रा 6:12
6 1इत 22:14
7 लैव 1:3
8 लैव 23:12, 13
गि 15:5

29:10 *या "हमेशा से हमेशा तक।"
29:11 *या "गरिमा।"

29:17 *या "सदाचार; सीधाई।" **29:19**
*या "पूरी तरह लगे हुए।" #या "किला;
महल।"

चढ़ाए।[1] 22 उस दिन उन्होंने यहोवा
के सामने खाया-पीया और खुशियाँ
मनायीं[2] और दोबारा दाविद के बेटे
सुलैमान को राजा बनाया और यहोवा
के सामने उसका अभिषेक करके उसे
अगुवा ठहराया[3] और सादोक का अभि-
षेक करके उसे याजक ठहराया।[4]
23 सुलैमान अपने पिता दाविद की जगह
यहोवा की राजगद्दी पर बैठा[5] और वह
कामयाब हुआ। सभी इसराएली उसकी
आज्ञा मानते थे। 24 सभी हाकिमों,[6]
वीर योद्धाओं[7] और राजा दाविद के सभी
बेटों[8] ने खुद को राजा सुलैमान के अधीन
किया। 25 यहोवा ने सुलैमान को पूरे
इसराएल के सामने बहुत महान किया
और उसे इतना राजकीय वैभव दिया
जितना कि उससे पहले इसराएल में किसी
राजा को नहीं मिला था।[9]
26 इस तरह यिशै के बेटे दाविद ने
पूरे इसराएल पर राज किया। 27 उसने
40 साल इसराएल पर राज किया,
7 साल हेब्रोन में रहकर[1] और 33 साल
यरूशलेम में रहकर।[2] 28 वह अपनी
ज़िंदगी से पूरी तरह खुश था। उसने
काफी दौलत और शोहरत हासिल की
थी और एक लंबी और खुशहाल ज़िंदगी
जीने के बाद उसकी मौत हो गयी।[3]
उसकी जगह उसका बेटा सुलैमान राजा
बना।[4] 29 राजा दाविद का शुरू से
लेकर आखिर तक का पूरा इतिहास दर्शी
शमूएल, भविष्यवक्ता नातान[5] और दर्शी
गाद[6] के लेखनों में लिखा है। 30 साथ
ही उसके राज और उसके बड़े-बड़े कामों
का ब्यौरा, उसकी ज़िंदगी की घटनाएँ और
उसके दिनों में इसराएल और आस-पास के
सभी राज्यों में हुई घटनाएँ भी लिखी हैं।

अध्य. 29

1 1रा 8:63, 64
2 व्य 12:7; 2इत 7:10; नहे 8:12
3 1रा 1:38-40; 1इत 23:1
4 1रा 2:35
5 1इत 28:5
6 1इत 22:17
7 1इत 28:1
8 1इत 3:1-9
9 1रा 3:12; 2इत 1:1, 12; सभ 2:9

दूसरा कॉल.

1 2शम 2:11
2 2शम 5:4, 5
3 1रा 1:1
4 1रा 2:10-12
5 2शम 7:2; 2शम 12:1
6 1इत 21:9, 10

दूसरा

इतिहास

सारांश

1 सुलैमान ने बुद्धि माँगी (1-12)
सुलैमान की दौलत (13-17)

2 मंदिर बनाने की तैयारियाँ (1-18)

3 सुलैमान ने मंदिर बनाना शुरू किया (1-7)
परम-पवित्र भाग (8-14)
ताँबे के दो खंभे (15-17)

4 वेदी, बड़ा हौद और हौदियाँ (1-6)
दीवटें, मेज़ और आँगन (7-11क)
मंदिर की चीज़ें बनाना पूरा हुआ (11ख-22)

5 मंदिर के उद्‌घाटन की तैयारियाँ (1-14)
संदूक मंदिर लाया गया (2-10)

6 सुलैमान का भाषण (1-11)
उद्‌घाटन पर सुलैमान की प्रार्थना (12-42)

7 मंदिर यहोवा की महिमा से भरा (1-3)
उद्‌घाटन समारोह (4-10)
यहोवा सुलैमान के सामने प्रकट हुआ (11-22)

8 सुलैमान के दूसरे निर्माण काम (1-11)
मंदिर में उपासना की व्यवस्था (12-16)
सुलैमान के जहाज़ों का लश्कर (17, 18)

9 शीबा की रानी मिलने आयी (1-12)
सुलैमान की दौलत (13-28)
सुलैमान की मौत (29-31)

10 इसराएल की बगावत (1-19)

11 रहूबियाम का राज (1-12)
वफादार लेवी यहूदा चले गए (13-17)
रहूबियाम का परिवार (18-23)

12 यरूशलेम पर शीशक का हमला (1-12)
रहूबियाम के राज का अंत (13-16)

13 यहूदा का राजा अबियाह (1-22)
अबियाह ने यारोबाम को हराया (3-20)

14 अबियाह की मौत (1)
यहूदा का राजा आसा (2-8)
उसने इथियोपिया को हराया (9-15)

15 आसा ने देश में सुधार किया (1-19)

16 सीरिया के साथ आसा की संधि (1-6)
हनानी ने आसा को फटकारा (7-10)
आसा की मौत (11-14)

17 यहूदा का राजा यहोशापात (1-6)
सिखाने का अभियान (7-9)
यहोशापात की सेना की ताकत (10-19)

18 यहोशापात की अहाब से रिश्तेदारी (1-11)
मीकायाह ने हार की भविष्यवाणी की (12-27)
रामोत-गिलाद में अहाब की मौत (28-34)

19 येहू ने यहोशापात को फटकारा (1-3)
यहोशापात ने देश में सुधार किया (4-11)

20 पड़ोसी राष्ट्रों से यहूदा के लिए खतरा (1-4)
यहोशापात की प्रार्थना (5-13)
यहोवा का जवाब (14-19)
यहूदा बचाया गया (20-30)
यहोशापात के राज का अंत (31-37)

21 यहूदा का राजा यहोराम (1-11)
एलियाह से लिखित संदेश (12-15)
यहोराम का बुरा अंत (16-20)

22 यहूदा का राजा अहज्याह (1-9)
अतल्याह ने राजगद्दी हड़पी (10-12)

23 यहोयादा ने कदम उठाया; यहोआश राजा बना (1-11)
अतल्याह मारी गयी (12-15)
यहोयादा ने देश में सुधार किया (16-21)

24 यहोआश का राज (1-3)
उसने मंदिर की मरम्मत की (4-14)
उसने परमेश्वर को छोड़ दिया (15-22)
यहोआश का कत्ल (23-27)

25 यहूदा का राजा अमज्याह (1-4)
एदोम के साथ युद्ध (5-13)
अमज्याह ने मूर्तिपूजा की (14-16)
इसराएल के राजा यहोआश से युद्ध (17-24)
अमज्याह की मौत (25-28)

26 यहूदा का राजा उज्जियाह (1-5)
उसने कई युद्ध जीते (6-15)
उसे कोढ़ी बना दिया गया (16-21)
उसकी मौत (22, 23)

27 यहूदा का राजा योताम (1-9)

28 यहूदा का राजा आहाज (1-4)
सीरिया और इसराएल से हार (5-8)
ओदेद ने इसराएल को चेतावनी दी (9-15)
यहूदा को नीचा दिखाया गया (16-19)
आहाज ने मूर्तिपूजा की; उसकी मौत (20-27)

29 यहूदा का राजा हिजकियाह (1, 2)
उसने देश में सुधार किया (3-11)
मंदिर शुद्ध किया गया (12-19)
मंदिर की सेवाएँ फिर से शुरू (20-36)

30 हिजकियाह ने फसह मनाया (1-27)

31 हिजकियाह ने झूठी उपासना मिटा दी (1)
याजकों और लेवियों की देखभाल (2-21)

32 सनहेरीब की धमकी (1-8)
उसने यहोवा को कुछ नहीं समझा (9-19)
स्वर्गदूत ने अश्शूरियों को नाश किया (20-23)
हिजकियाह की बीमारी; उसका घमंड (24-26)
उसकी कामयाबियाँ और मौत (27-33)

33 यहूदा का राजा मनश्शे (1-9)
मनश्शे का पश्चाताप (10-17)
मनश्शे की मौत (18-20)
यहूदा का राजा आमोन (21-25)

34 यहूदा का राजा योशियाह (1, 2)
उसने देश में सुधार किया (3-13)
कानून की किताब मिली (14-21)
हुल्दा की भविष्यवाणी (22-28)
योशियाह ने किताब पढ़कर सुनायी (29-33)

35 फसह के बड़े त्योहार का इंतज़ाम (1-19)
योशियाह मार डाला गया (20-27)

36 यहूदा का राजा यहोआहाज (1-3)
यहूदा का राजा यहोयाकीम (4-8)
यहूदा का राजा यहोयाकीन (9, 10)
यहूदा का राजा सिदकियाह (11-14)
यरूशलेम का नाश (15-21)
कुसरू का फरमान (22, 23)

---

1 दाविद के बेटे सुलैमान का राज दिनों-
दिन मज़बूत होता गया। उसका पर-
मेश्वर यहोवा उसके साथ था और पर-
मेश्वर ने उसे महानता की बुलंदी तक
पहुँचा दिया।[1]

2 सुलैमान ने पूरे इसराएल को,
हज़ारों और सैकड़ों की टुकड़ियों के
प्रधानों, न्यायियों और इसराएल के उन
सभी अधिकारियों को बुलाया जो पिताओं
के घरानों के मुखिया थे। **3** फिर सुलै-
मान और पूरी मंडली के लोग गिबोन की
ऊँची जगह गए,[2] क्योंकि वहीं सच्चे पर-
मेश्वर की भेंट का तंबू था जिसे यहोवा
के सेवक मूसा ने वीराने में बनाया था।
4 मगर सच्चे परमेश्वर के संदूक को
दाविद किरयत-यारीम[3] से उस जगह ले
आया था जो उसने संदूक के लिए तैयार
की थी। दाविद ने संदूक के लिए यरू-
शलेम में एक तंबू खड़ा किया था।[4]
5 और ताँबे की वेदी,[5] जो ऊरी के बेटे
और हूर के पोते बसलेल[6] ने बनायी
थी, यहोवा के पवित्र डेरे के सामने रखी
गयी थी। इसी वेदी के सामने सुलैमान
और मंडली के लोग प्रार्थना करते थे।*
6 अब सुलैमान ने वहाँ यहोवा के सामने
बलिदान चढ़ाए। उसने भेंट के तंबू के
पास ताँबे की वेदी पर 1,000 होम-
बलियाँ चढ़ायीं।[1]

7 उसी दिन, रात को परमेश्वर सुलै-
मान के सामने प्रकट हुआ और उससे
कहा, "तू जो चाहे माँग, मैं तुझे दूँगा।"[2]
8 सुलैमान ने परमेश्वर से कहा, "तूने
मेरे पिता दाविद से बहुत प्यार* किया[3]
और उसकी जगह मुझे राजा बनाया है।[4]
9 अब हे परमेश्वर यहोवा, तूने मेरे पिता
दाविद से जो वादा किया था उसे पूरा
कर।[5] तूने मुझे जिस प्रजा का राजा
बनाया है वह धरती की धूल के कणों की
तरह बेशुमार है।[6] **10** इसलिए तेरे इन
लोगों की अगुवाई करने के लिए* मुझे
बुद्धि और ज्ञान दे,[7] क्योंकि तेरी मदद के
बगैर कौन इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर
सकता है?"[8]

11 तब परमेश्वर ने सुलैमान से कहा,
"तूने अपने लिए न तो धन-दौलत न
मान-सम्मान माँगा, न तुझसे नफरत
करनेवालों की मौत माँगी और न ही खुद
के लिए लंबी उम्र की गुज़ारिश की। इसके
बजाय तूने बुद्धि और ज्ञान की बिनती की
ताकि तू मेरे लोगों का न्याय कर सके,

अध्य. 1
1 1इत 29:25
सभ 2:9
मत 6:28, 29
मत 12:42
2 1रा 3:4
1इत 21:29
3 1इत 13:5
4 1इत 16:1
5 निर्ग 38:1, 2
6 निर्ग 31:2-5

दूसरा कॉल.
1 1रा 3:4
2 1रा 3:5-9
3 2शम 7:8
4 1इत 28:5
भज 89:28, 29
5 2शम 7:12
1इत 28:6
भज 132:11
6 उत 13:14, 16
7 नीत 2:6
याकू 1:5
8 भज 72:1, 2

1:5 *या "परमेश्वर की मरज़ी पूछते थे।"

1:8 *या "अटल प्यार।" **1:10** *शा., "लोगों के सामने बाहर जाने और अंदर आने के लिए।"

जिन पर मैंने तुझे राजा ठहराया है।
तेरी यही दिली तमन्ना है[1] **12** इसलिए
मैं तुझे ज़रूर बुद्धि और ज्ञान दूँगा। यही
नहीं, मैं तुझे इतनी धन-दौलत और इतना
मान-सम्मान दूँगा जितना न तो तुझसे
पहले किसी राजा के पास था और न ही
तेरे बाद किसी राजा के पास होगा।”[2]

13 फिर सुलैमान गिबोन की ऊँची
जगह[3] से यानी भेंट के तंबू के सामने
से यरूशलेम आया और उसने इसराएल
पर राज किया। **14** सुलैमान ज़्यादा-से-
ज़्यादा रथ और घोड़े* इकट्ठे करता
गया। उसके पास 1,400 रथ और
12,000 घोड़े* जमा हो गए।[4] उसने
इन्हें रथों के शहरों[5] में और यरू-
शलेम में अपने पास रखा।[6] **15** राजा
ने यरूशलेम में इतनी तादाद में सोना-
चाँदी इकट्ठा किया कि वह पत्थर जितना
आम हो गया था[7] और उसने देवदार की
इतनी सारी लकड़ी इकट्ठी की कि उसकी
तादाद शफेलाह के गूलर पेड़ों जितनी हो
गयी थी।[8] **16** सुलैमान के घोड़े मिस्र से
मँगाए गए थे।[9] राजा के व्यापारियों का
दल ठहराए हुए दाम पर घोड़ों के झुंड-के-
झुंड खरीदकर लाता था।*[10] **17** मिस्र
से मँगाए गए हर रथ की कीमत चाँदी
के 600 टुकड़े थी और हर घोड़े की
कीमत चाँदी के 150 टुकड़े थी। फिर ये
व्यापारी रथ और घोड़े हित्तियों के सभी
राजाओं और सीरिया के सभी राजाओं
को बेचते थे।

2 सुलैमान ने यहोवा के नाम की
महिमा के लिए एक भवन[11] और
एक राजमहल बनाने का आदेश दिया।[12]

1:14 *या “घुड़सवार।” **1:16** *या शायद, “मिस्र और कोए से मँगाए गए थे; राजा के व्यापारी कोए से घोड़े खरीदकर लाते थे।” शायद कोए, किलिकिया है।

अध्य. 1
1 1रा 3:10-13; 1रा 3:28
2 1इत 29:25; 2इत 9:22; सभ 2:9
3 1रा 3:4
4 व्य 17:16; 1रा 4:26
5 2इत 8:5, 6
6 2इत 9:25
7 1रा 10:21
8 1रा 10:27; 2इत 9:27
9 2इत 9:28
10 1रा 10:28, 29

अध्य. 2
11 व्य 12:11; 1इत 22:10
12 1रा 7:1

दूसरा कॉल.
1 1रा 5:15
2 1रा 5:16; 1रा 9:22; 2इत 2:17, 18
3 1रा 5:1
4 2शम 5:11
5 निर्ग 30:7
6 निर्ग 25:30
7 गि 28:4
8 गि 28:9
9 गि 28:11
10 व्य 16:16
11 1रा 8:27; यश 66:1; प्रेष 17:24
12 1रा 7:13, 14

2 सुलैमान ने 70,000 आम मज़-
दूरों* और पहाड़ों पर पत्थर काटनेवाले
80,000 मज़दूरों को काम पर लगाया[1]
और उनकी निगरानी करने के लिए
3,600 आदमियों को ठहराया।[2]
3 इसके अलावा, सुलैमान ने सोर के
राजा हीराम[3] के पास यह संदेश भेजा:
“जैसे तूने मेरे पिता दाविद को महल
बनाने के लिए देवदार की लकड़ी भेजी
थी, उसी तरह मेरे लिए भी भेज।[4] **4** मैं
अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की महिमा
के लिए एक भवन बनाने जा रहा हूँ
ताकि भवन को उसके लिए पवित्र किया
जाए, उसके सामने सुगंधित धूप जलाया
जाए,[5] उसमें लगातार रोटियों का ढेर*
रखा जाए[6] और सुबह-शाम,[7] सब्त के
मौकों पर,[8] नए चाँद के मौकों पर[9] और
हमारे परमेश्वर यहोवा के लिए मनाए
जानेवाले साल के अलग-अलग त्योहारों
पर[10] होम-बलियाँ चढ़ायी जाएँ। इस-
राएल को यह फर्ज़ सदा के लिए निभाना
है। **5** मैं जो भवन बनाने जा रहा हूँ वह
बहुत आलीशान होगा क्योंकि हमारा पर-
मेश्वर सभी देवताओं से कहीं महान है।
6 मगर देखा जाए तो उसके लिए भवन
बनाना किसी के बस की बात नहीं है
क्योंकि वह तो आकाश में, हाँ विशाल
आकाश में भी नहीं समा सकता।[11] मैं
भी उसके लिए भवन नहीं बना सकता,
मैं बस एक ऐसी जगह बना सकता हूँ जहाँ
उसके सामने बलिदान चढ़ाया जाए ताकि
धुआँ उठे। **7** अब तू मेरे पास एक ऐसा
कारीगर भेज जो सोने, चाँदी, ताँबे,[12]
लोहे, बैंजनी ऊन, गहरे लाल रंग के
धागे और नीले धागे के काम में हुनर-
मंद हो और नक्काशी करना जानता

2:2 *या “बोझ ढोनेवालों।” **2:4** *यानी नज़राने की रोटी।

हो। वह यहूदा में और यरूशलेम में रह-
कर मेरे उन कुशल कारीगरों के साथ
काम करेगा, जिनका इंतज़ाम मेरे पिता
दाविद ने किया है।[1] **8** तू मुझे लबानोन
से देवदार, सनोवर[2] और लाल-चंदन की
लकड़ी भी भेज,[3] क्योंकि मैं जानता हूँ कि
तेरे सेवकों को लबानोन में पेड़ काटने का
काफी तजुरबा है।[4] मेरे सेवक तेरे सेवकों
के साथ मिलकर काम करेंगे।[5] **9** वे
मेरे लिए भारी तादाद में लकड़ी तैयार
करेंगे क्योंकि मैं एक ऐसा भवन बनाने जा
रहा हूँ जो बिलकुल अनोखा और बेजोड़
होगा। **10** देख, मैं पेड़ काटनेवाले तेरे
सेवकों के लिए खाना मुहैया कराऊँगा।[6]
मैं उनके लिए 20,000 कोर* गेहूँ,
20,000 कोर जौ, 20,000 बत#
दाख-मदिरा और 20,000 बत तेल
दूँगा।”

11 जवाब में सोर के राजा हीराम ने
सुलैमान को यह संदेश लिखकर भेजा:
“यहोवा अपने लोगों से प्यार करता है
इसलिए उसने तुझे उनका राजा बनाया
है।” **12** हीराम ने यह भी कहा, “इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा की बड़ाई
हो, जिसने आकाश और धरती बनायी
क्योंकि उसने राजा दाविद को एक
बुद्धिमान बेटा दिया है,[7] सूझ-बूझ से
काम लेनेवाला और समझदार बेटा,[8]
जो यहोवा के लिए एक भवन और
अपने लिए एक राजमहल बनाएगा।
13 मैं तेरे पास हूराम-अबी नाम के एक
समझदार और कुशल कारीगर को भेज
रहा हूँ[9] **14** जिसकी माँ दान गोत्र की है
और पिता सोर का था। उसे सोने, चाँदी,
ताँबे, लोहे, पत्थर, लकड़ी, बैंजनी ऊन,
गहरे लाल रंग के धागे और नीले धागे
और बेहतरीन कपड़ों के काम का तजुर-
बा है।[1] वह हर तरह की नक्काशी और
हर तरह की कारीगरी कर सकता है।[2]
वह तेरे कुशल कारीगरों के साथ और
मेरे मालिक यानी तेरे पिता दाविद के
कुशल कारीगरों के साथ मिलकर काम
करेगा। **15** मेरे मालिक, तू अपने वादे
के मुताबिक अपने सेवकों को गेहूँ, जौ,
तेल और दाख-मदिरा भेज।[3] **16** तुझे
जितनी लकड़ी चाहिए, उतनी हम लबा-
नोन से काटेंगे[4] और शहतीरों के बेड़े
बनवाकर समुंदर के रास्ते याफा ले
आएँगे।[5] फिर तू वहाँ से उन्हें यरूशलेम
ले जाना।”[6]

17 फिर सुलैमान ने उन सभी आद-
मियों की गिनती ली जो इसराएल देश में
परदेसी थे[7] और पाया कि वे 1,53,600
थे। सुलैमान ने यह गिनती दाविद के
गिनती लेने के बाद ली थी।[8] **18** तब
सुलैमान ने उन परदेसियों में से 70,000
को आम मज़दूरी* के काम पर और
80,000 को पहाड़ों पर पत्थर काटने के
काम पर लगाया[9] और उनकी निग-
रानी करने के लिए 3,600 आद-
मियों को ठहराया ताकि वे इन मज़दूरों से
काम कराएँ।[10]

3 फिर सुलैमान ने यरूशलेम में मोरिया
पहाड़[11] पर यहोवा के लिए भवन
बनाने का काम शुरू किया,[12] जहाँ यहोवा
उसके पिता दाविद के सामने प्रकट
हुआ था।[13] यह जगह यबूसी ओरनान
के खलिहान में थी जो दाविद ने तैयार
की थी।[14] **2** सुलैमान ने अपने राज के
चौथे साल के दूसरे महीने के दूसरे
दिन भवन बनाने का काम शुरू किया।

2:10 *एक कोर 220 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। #एक बत 22 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

2:18 *या “बोझ ढोने।”

अध्य. 2
1 1इत 22:15
2 1रा 5:6, 8; 2इत 3:5
3 1रा 10:11
4 1रा 5:9
5 1रा 5:14
6 1रा 5:11
7 1रा 5:7
8 2इत 1:11, 12
9 1रा 7:13, 14; 2इत 4:11-16

दूसरा कॉल.
1 2इत 3:14
2 निर्ग 31:2-5
3 2इत 2:10
4 1रा 5:6, 8
5 यह 19:46, 48; एज 3:7
6 1रा 5:9
7 2इत 8:7, 8
8 1इत 22:2
9 1रा 5:17, 18; 1इत 22:15
10 1रा 5:15, 16

अध्य. 3
11 उत 22:2, 14
12 1रा 6:1; 1रा 6:37
13 2शम 24:25; 1इत 21:18
14 2शम 24:18; 1इत 21:22

3 उसने सच्चे परमेश्‍वर के भवन के
लिए जो बुनियाद डाली वह पुराने ज़माने
की नाप* के मुताबिक 60 हाथ लंबी
और 20 हाथ चौड़ी थी।[1] **4** भवन का
सामनेवाला बरामदा 20 हाथ लंबा था
यानी भवन की चौड़ाई के बराबर। उसकी
ऊँचाई 120* थी। उसने बरामदे के
अंदर का पूरा हिस्सा शुद्ध सोने से मढ़ा।[2]
5 उसने भवन के बड़े कमरे पर सनो-
वर के तख्ते लगाए और उन पर बढ़िया
सोना मढ़ा।[3] फिर उसे खजूर के पेड़ों
की नक्काशी[4] और ज़ंजीरों से सजाया।[5]
6 इसके अलावा, उसने भवन पर सुंदर,
कीमती रत्न जड़े।[6] उसने जो सोना[7]
इस्तेमाल किया वह पर्वेम से लाया गया
था। **7** उसने भवन और उसके शह-
तीरों, दहलीज़ों, दीवारों और दरवाज़ों पर
सोना मढ़ा[8] और दीवारों पर करूबों की
नक्काशी की।[9]

8 इसके बाद उसने परम-पवित्र
भाग* बनाया।[10] उसकी लंबाई भवन की
चौड़ाई के बराबर यानी 20 हाथ थी।
उसकी चौड़ाई 20 हाथ थी। उसने परम-
पवित्र भाग पर 600 तोड़े# बढ़िया सोना
मढ़ा।[11] **9** कीलों के लिए 50 शेकेल*
सोना इस्तेमाल किया गया। उसने छत के
खानों को सोने से मढ़ा।

10 फिर उसने परम-पवित्र भाग* में
दो करूब बनाए और उन पर सोना
मढ़ा।[1] **11** दोनों करूबों के पंखों[2] की
कुल लंबाई 20 हाथ थी। एक करूब का
एक पंख पाँच हाथ लंबा था और भवन
की दीवार को छूता था। उसका दूसरा पंख
भी पाँच हाथ लंबा था और दूसरे करूब के
एक पंख को छूता था। **12** दूसरे करूब
का भी एक पंख पाँच हाथ लंबा था
और भवन की दीवार को छूता था।
उसका दूसरा पंख पाँच हाथ लंबा था और
पहले करूब के एक पंख को छूता था।
13 इन करूबों के पंख फैले हुए थे और
उनकी कुल लंबाई 20 हाथ थी। वे अपने
पैरों पर खड़े थे और अंदर की तरफ मुँह
किए हुए थे।*

14 उसने नीले धागे, बैंजनी ऊन,
गहरे लाल रंग के धागे और बेहतरीन
कपड़े से परदा[3] भी बनाया और उस पर
करूबों की कढ़ाई की।[4]

15 फिर उसने भवन के सामने दो
खंभे[5] बनाए जो 35 हाथ लंबे थे। हर
खंभे के ऊपरी सिरे पर एक कंगूरा था
जो पाँच हाथ का था।[6] **16** उसने हार
जैसी ज़ंजीरें बनायीं और उन्हें खंभों के
ऊपरी सिरे पर लगाया। उसने 100
अनार बनाकर उन्हें ज़ंजीरों पर लगाया।
17 उसने खंभों को मंदिर के सामने खड़ा
किया, एक को दायीं* तरफ और एक
को बायीं# तरफ। उसने दाएँ खंभे का
नाम याकीन△ रखा और बाएँ का नाम
बोअज़।⊠

3:3 *मानक नाप के मुताबिक एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था, मगर कुछ लोगों का मानना है कि "पुराने ज़माने की नाप" का मतलब लंबा हाथ है जो 51.8 सें.मी. (20.4 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें। **3:4** *इस नाप के बारे में कोई जानकारी नहीं है। **3:8, 10** *शा., "भवन।" **3:8** #एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें। **3:9** *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

3:13 *यानी पवित्र भाग की तरफ। **3:17** *या "दक्षिण की।" #या "उत्तर की।" △मतलब "वह [यानी यहोवा] मज़बूती से कायम करे।" ⊠शायद इसका मतलब है, "ताकत के साथ।"

अध्य. 3
1 1रा 6:2
2 1रा 6:3
3 1रा 6:15, 22
4 1रा 6:29
5 1रा 6:21
6 1इत 29:2, 8
7 1इत 29:3, 4
8 निर्ग 26:29
9 निर्ग 26:1; 1रा 6:29
10 निर्ग 26:33; 1रा 8:6; इब्र 9:24
11 1रा 6:20

दूसरा कॉल.
1 1रा 6:23-28
2 1रा 8:6; 1इत 28:18
3 मत 27:51; इब्र 10:19, 20
4 निर्ग 26:31, 33
5 2रा 25:13
6 1रा 7:15-22; 2रा 25:17; 2इत 4:11-13; यिर्म 52:22, 23

4 फिर उसने ताँबे की वेदी[1] बनायी जो 20 हाथ लंबी, 20 हाथ चौड़ी और 10 हाथ ऊँची थी।

2 उसने ताँबे का बड़ा हौद ढालकर बनाया जिसे 'सागर' कहा जाता था।[2] यह गोलाकार था और इसके मुँह की चौड़ाई 10 हाथ थी और मुँह के पूरे घेरे की लंबाई 30 हाथ थी। हौद की ऊँचाई 5 हाथ थी।[3] **3** हौद के मुँह के नीचे, चारों तरफ दो कतारों में खरबूजों की बनावट थी।[4] एक-एक हाथ की जगह में दस-दस खरबूजे बने थे। खरबूजों को हौद के साथ ही ढाला गया था। **4** यह हौद ताँबे के 12 बैलों पर रखा गया था,[5] 3 बैल उत्तर की तरफ मुँह किए हुए थे, 3 पश्चिम की तरफ, 3 दक्षिण की तरफ और 3 पूरब की तरफ। सभी बैलों का पिछला भाग अंदर की तरफ था। इन बैलों पर हौद टिकाया गया था। **5** हौद की दीवार की मोटाई चार अंगुल* थी। उसके मुँह की बनावट प्याले के मुँह जैसी थी और यह दिखने में खिले हुए सोसन के फूल जैसा था। इस हौद में 3,000 बत# पानी भरा जा सकता था।

6 इसके अलावा, उसने दस हौदियाँ बनायीं। उसने पाँच दायीं तरफ और पाँच बायीं तरफ रखीं।[6] वे उन हौदियों में उन चीज़ों को धोया करते थे जो होम-बलियों के लिए इस्तेमाल की जाती थीं।[7] मगर पानी का बड़ा हौद याजकों के हाथ-पैर धोने के लिए था।[8]

7 फिर उसने सोने की दस दीवटें बनायीं,[9] ठीक जैसे बताया गया था[10] और उन्हें मंदिर में रखा, पाँच दायीं तरफ और पाँच बायीं तरफ।[11]

4:5 *करीब 7.4 सें.मी. (2.9 इंच)। अति. ख14 देखें। #एक बत 22 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 4
1 निर्ग 38:1, 2; 1रा 8:22
2 निर्ग 30:20; निर्ग 38:8
3 1रा 7:23-26
4 1रा 6:18
5 यिर्म 52:20
6 1रा 7:38, 39
7 लैव 1:9; लैव 9:14
8 निर्ग 29:4
9 निर्ग 37:17
10 1इत 28:12, 15
11 निर्ग 40:24

दूसरा कॉल.
1 2इत 4:19
2 निर्ग 27:9; लैव 6:16; 1रा 6:36
3 1रा 7:12
4 1रा 7:39
5 निर्ग 27:3
6 1रा 7:40-46
7 2इत 3:17
8 1रा 7:17
9 1रा 7:20
10 यिर्म 52:22
11 1रा 7:27, 38
12 1रा 7:23, 25
13 निर्ग 38:3
14 2इत 2:13, 14
15 यह 13:27, 28
16 1रा 7:47; 1इत 22:3, 14; यिर्म 52:20

8 उसने दस मेज़ें भी बनायीं और उन्हें मंदिर में रखा, पाँच दायीं तरफ और पाँच बायीं तरफ।[1] उसने सोने की 100 कटोरियाँ बनायीं।

9 फिर उसने याजकों का आँगन[2] और बड़ा आँगन बनाया[3] और उस आँगन के लिए दरवाज़े बनाए। उसने दरवाज़ों पर ताँबा मढ़ा। **10** उसने पानी के बड़े हौद को दायीं तरफ, दक्षिण-पूर्व में रखा।[4]

11 हीराम ने हंडियाँ, बेलचे और कटोरे भी बनाए।[5]

इस तरह हीराम ने सच्चे परमेश्वर के भवन के लिए वह सारा काम पूरा किया जो राजा सुलैमान ने उसे दिया था। उसने यह सब बनाया:[6] **12** दो खंभे[7] और उनके ऊपर दो कटोरानुमा कंगूरे, कंगूरों की सजावट के लिए दो-दो जालीदार काम,[8] **13** दोनों जालीदार काम के लिए 400 अनार,[9] यानी हर जालीदार काम के लिए दो कतारों में अनार जिससे दोनों खंभों पर कटोरानुमा कंगूरे ढक जाएँ,[10] **14** दस हौदियाँ और उन्हें ढोने के लिए दस हथ-गाड़ियाँ,*[11] **15** पानी का बड़ा हौद और उसके नीचे 12 बैल,[12] **16** हंडियाँ, बेलचे, काँटे[13] और उनसे जुड़ी बाकी सारी चीज़ें। हूराम-अबीव[14] ने राजा सुलैमान के कहे मुताबिक यहोवा के भवन के लिए यह सब झलकाए हुए ताँबे से तैयार किया। **17** राजा ने ये सारी चीज़ें यरदन ज़िले में सुक्कोत[15] और सरेदा के बीच मिट्टी के साँचे में ढलवाकर बनवायीं। **18** सुलैमान ने ये सारी चीज़ें भारी तादाद में बनवायीं, इसलिए यह मालूम न हो सका कि उन्हें बनाने में कितना ताँबा इस्तेमाल हुआ।[16]

4:14 *या "पानी के ठेले।"

19 सुलैमान ने सच्चे परमेश्वर के
भवन के लिए ये सारी चीज़ें बनवायीं:[1]
सोने की वेदी,[2] नज़राने की रोटी रखने
की मेज़ें,[3] **20** शुद्ध सोने की दीवटें
और दीए[4] ताकि नियम के मुताबिक
उन्हें भीतरी कमरे में जलाया जाए,
21 दीवटों पर एकदम शुद्ध सोने की
पंखुड़ियाँ, दीए और चिमटे, **22** बाती
बुझाने की शुद्ध सोने की कैंचियाँ, शुद्ध
सोने की कटोरियाँ, प्याले और आग
उठाने के करछे और भवन का प्रवेश,
परम-पवित्र भाग के दरवाज़े[5] और मंदिर
के दरवाज़े जो सोने के थे।[6]

5 इस तरह सुलैमान ने यहोवा के भवन
के लिए वह सारा काम पूरा किया
जो उसे करना था।[7] इसके बाद
सुलैमान वह सारी चीज़ें भवन में ले आया
जो उसके पिता दाविद ने पवित्र ठह-
रायी थीं।[8] उसने सोना, चाँदी और
बाकी सारी चीज़ें सच्चे परमेश्वर के भवन
के खज़ानों में रख दीं।[9] **2** तब सुलै-
मान ने इसराएल के सभी अगुवों को,
यानी सभी गोत्रों के मुखियाओं और
पिताओं के घरानों के प्रधानों को यरू-
शलेम बुलवाया ताकि वे दाविदपुर यानी
सिय्योन से यहोवा के करार का संदूक
ले आएँ। तब वे सभी यरूशलेम आए।[10]
3 इसराएल के सभी आदमी सातवें महीने
में त्योहार* के समय राजा के सामने
इकट्ठा हुए।[11]

4 जब इसराएल के सारे अगुवे आए
तो लेवियों ने करार का संदूक उठाया।[12]
5 याजक और लेवी* करार का संदूक,
भेंट का तंबू[13] और उसमें रखी सारी
पवित्र चीज़ें ले आए। **6** राजा सुलै-
मान और इसराएल की पूरी मंडली, जिसे
उसने बुलवाया था, करार के संदूक के
सामने हाज़िर थे। इतनी तादाद में भेड़ों
और गाय-बैलों की बलि चढ़ायी गयी[1] कि
उनकी गिनती नहीं की जा सकती थी।
7 फिर याजक यहोवा के करार का संदूक
उस जगह ले आए जो उसके लिए बनायी
गयी थी। वे उसे भवन के भीतरी कमरे
यानी परम-पवित्र भाग में ले आए और
उसे करूबों के पंखों के नीचे रख दिया।[2]
8 इस तरह करूबों के पंख उस जगह के
ऊपर फैले हुए थे जहाँ संदूक रखा गया
था और करूब, संदूक और उसके डंडों
को ढाँपे हुए थे।[3] **9** संदूक के डंडे
इतने लंबे थे कि उनके सिरे पवित्र भाग से
दिखते थे जो भीतरी कमरे के सामने था।
मगर डंडों के सिरे बाहर से नहीं दिखायी
देते थे। आज तक ये चीज़ें वहीं रखी
हुई हैं। **10** संदूक में पत्थर की दो पटि-
याओं को छोड़ और कुछ नहीं था जो
मूसा ने उसके अंदर रखी थीं। मूसा ने
ये पटियाएँ होरेब में उस वक्त रखी
थीं[4] जब यहोवा ने इसराएलियों के साथ
उनके मिस्र से निकलकर आते वक्त[5] एक
करार किया था।[6]

11 जब याजक पवित्र जगह से बाहर
निकल आए (क्योंकि वहाँ मौजूद सभी
याजकों ने खुद को पवित्र किया था,[7] फिर
चाहे वे किसी भी दल के थे)[8] **12** तो
आसाप,[9] हेमान,[10] यदूतून[11] और उनके
बेटों और भाइयों के दलों के सभी लेवी
गायक[12] बेहतरीन कपड़े पहने झाँझ,
तारोंवाले बाजे और सुरमंडल बजाते हुए
वेदी के पूरब में खड़े थे। उनके साथ 120
याजक तुरहियाँ फूँकते हुए खड़े थे।[13]
13 तुरहियाँ फूँकनेवाले और गायक सुर-
में-सुर मिलाकर यहोवा की तारीफ और
उसका शुक्रिया अदा कर रहे थे। उनकी

अध्या. 4
1 2रा 24:13
2 निर्ग 37:25, 26
प्रक 8:3
3 निर्ग 25:23, 24
1रा 7:48-50
2इत 4:8
4 निर्ग 25:31, 37
5 1रा 6:31, 32
6 1रा 6:33-35

अध्या. 5
7 1रा 6:38
8 1इत 22:14
9 1रा 7:51
1इत 26:26
10 2शम 6:12
1रा 8:1, 2
2इत 1:4
भज 2:6
11 लैव 23:34
2इत 7:8
12 निर्ग 25:14
गि 4:15
1रा 8:3-5
1इत 15:2, 15
13 निर्ग 40:35
गि 4:29, 31

दूसरा कॉल.
1 2शम 6:13
2 1रा 6:20, 23
1रा 8:6-9
3 निर्ग 25:14
4 निर्ग 34:1
निर्ग 40:20
5 निर्ग 19:1
6 निर्ग 19:5
निर्ग 24:7
7 निर्ग 19:10
गि 8:21
8 1इत 24:1
9 1इत 6:31, 39
10 1इत 6:31, 33
11 1इत 16:41
1इत 25:1, 6
1इत 25:3
12 1इत 15:16
13 1इत 15:24

5:3 *यानी छप्परों का त्योहार। **5:5** *या "लेवी याजक।"

तुरहियों, झाँझ और दूसरे साज़ों की तेज़ आवाज़ गूँज रही थी और वे यह कहकर यहोवा की तारीफ कर रहे थे, “क्योंकि वह भला है, उसका अटल प्यार सदा बना रहता है।”[1] जब वे ऐसा कर रहे थे तो यहोवा का भवन बादल से भर गया।[2] **14** बादल की वजह से याजक वहाँ खड़े होकर सेवा नहीं कर पाए क्योंकि सच्चे परमेश्वर यहोवा का भवन उसकी महिमा से भर गया था।[3]

6 उस वक्त सुलैमान ने कहा, “हे यहोवा, तूने कहा था कि तू घने बादलों में निवास करेगा।[4] **2** मैंने तेरे लिए एक शानदार भवन बनाया है ताकि तू सदा तक इसमें निवास करे।”[5]

3 फिर राजा इसराएल की पूरी मंडली की तरफ मुड़ा जो वहाँ खड़ी थी और लोगों को आशीर्वाद देने लगा।[6] **4** उसने कहा, “इसराएल के परमेश्वर यहोवा की तारीफ हो। उसने अपने मुँह से जो वादा किया था उसे आज अपने हाथों से पूरा किया है। उसने मेरे पिता दाविद से कहा था, **5** ‘जिस दिन मैं अपनी प्रजा इसराएल को मिस्र से निकाल लाया था, उस दिन से लेकर अब तक मैंने इसराएल के किसी भी गोत्र के इलाके में कोई शहर नहीं चुना कि वहाँ मेरे नाम की महिमा के लिए कोई भवन बनाया जाए।[7] और मैंने अपनी प्रजा इसराएल का अगुवा होने के लिए किसी इंसान को नहीं चुना था। **6** मगर मैंने यरूशलेम को चुना[8] कि उससे मेरा नाम जुड़ा रहे और मैंने दाविद को अपनी प्रजा इसराएल पर राज करने के लिए चुना है।’[9] **7** मेरे पिता दाविद की दिली तमन्ना थी कि वह इसराएल के परमेश्वर यहोवा के नाम की महिमा के लिए एक भवन बनाए।[10] **8** मगर यहोवा ने मेरे पिता दाविद से कहा, ‘यह अच्छी बात है कि तू मेरे नाम की महिमा के लिए एक भवन बनाने की दिली तमन्ना रखता है। **9** पर तू मेरे लिए भवन नहीं बनाएगा बल्कि तेरा अपना बेटा, जो तुझसे पैदा होगा, वह मेरे नाम की महिमा के लिए एक भवन बनाएगा।’[1] **10** यहोवा ने अपना यह वादा पूरा किया है क्योंकि मैं अपने पिता दाविद के बाद राजा बना हूँ और इसराएल की राजगद्दी पर बैठा हूँ,[2] ठीक जैसे यहोवा ने वादा किया था।[3] और मैंने इसराएल के परमेश्वर यहोवा के नाम की महिमा के लिए भवन भी बनाया है। **11** इस भवन में मैंने वह संदूक रखा है जिसमें उस करार की पटियाएँ हैं[4] जो यहोवा ने इसराएल के लोगों के साथ किया था।”

12 फिर वह इसराएल की पूरी मंडली के देखते यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ और उसने आसमान की तरफ अपने हाथ फैलाए।[5] **13** (सुलैमान ने ताँबे का एक चबूतरा बनाया था और उसे आँगन के बीच रखा था।[6] यह चबूतरा पाँच हाथ* लंबा, पाँच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊँचा था। सुलैमान उस पर खड़ा था।) उसने इसराएल की पूरी मंडली के सामने घुटने टेककर और आसमान की तरफ अपने हाथ फैलाकर यह प्रार्थना की:[7] **14** “हे इसराएल के परमेश्वर यहोवा, तेरे जैसा परमेश्वर कोई नहीं, न आसमान में न धरती पर। तू हमेशा अपना करार पूरा करता है और अपने उन सेवकों से प्यार* करता है जो तेरे सामने पूरे दिल से सही राह पर चलते हैं।[8] **15** तूने अपना वह

6:13 *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें। **6:14** *या “अटल प्यार।”

अध्य. 5
1 1इत 16:34
2 निर्ग 40:34, 35; 1रा 8:10, 11
3 2इत 7:1, 2; यहे 10:4; प्रक 21:23

अध्य. 6
4 निर्ग 20:21; 1रा 8:12, 13; भज 97:2
5 भज 132:13, 14
6 1रा 8:14-21
7 व्य 12:5, 6
8 भज 48:1
9 2शम 7:8; 1इत 28:4
10 2शम 7:2; 1रा 5:3

दूसरा कॉल.
1 1इत 17:4
2 1इत 28:5; 1इत 29:23
3 1इत 17:11
4 निर्ग 40:20; 1रा 8:9
5 1रा 8:22
6 1रा 6:36
7 1रा 8:54
8 व्य 7:9; 1रा 8:23-26

वादा पूरा किया है जो तूने अपने सेवक,
मेरे पिता दाविद से किया था।[1] तूने
खुद अपने मुँह से यह वादा किया था
और आज उसे अपने हाथों से पूरा भी
किया।[2] **16** अब हे इसराएल के पर-
मेश्वर यहोवा, तू अपना यह वादा भी
पूरा करना जो तूने अपने सेवक, मेरे पिता
दाविद से किया था: 'अगर तेरे बेटे तेरी
तरह मेरे सामने सही राह पर चलते रहेंगे
और इस तरह अपने चालचलन पर ध्यान
देंगे, तो ऐसा कभी नहीं होगा कि मेरे
सामने इसराएल की राजगद्दी पर बैठने के
लिए तेरे वंश का कोई आदमी न हो।'[3]
17 हे इसराएल के परमेश्वर यहोवा, तू
अपना यह वादा पूरा करना जो तूने अपने
सेवक दाविद से किया था।

18 लेकिन क्या परमेश्वर वाकई
धरती पर इंसानों के साथ निवास
करेगा?[4] देख, तू तो आकाश में, हाँ,
विशाल आकाश में भी नहीं समा सकता।[5]
फिर यह भवन क्या है जो मैंने बनाया
है, कुछ भी नहीं![6] **19** हे मेरे परमेश्वर
यहोवा, तेरा यह सेवक तेरे सामने जो
प्रार्थना कर रहा है उस पर ध्यान दे,
उसकी कृपा की बिनती सुन। तू उसकी
मदद की पुकार सुन और उसकी प्रार्थना
स्वीकार कर। **20** तूने इस भवन के बारे
में कहा था कि इससे तेरा नाम जुड़ा
रहेगा,[7] इसलिए तेरी आँखें दिन-रात इस
भवन पर लगी रहें और जब तेरा सेवक
इस भवन की तरफ मुँह करके प्रार्थना करे
तो तू उस पर ध्यान देना। **21** जब तेरा
यह सेवक और तेरी प्रजा इसराएल के
लोग इस जगह की तरफ मुँह करके मदद
के लिए गिड़गिड़ाकर बिनती करें तो तू
उनकी सुनना,[8] अपने निवास-स्थान स्वर्ग
से उनकी सुनना।[9] तू उनकी फरियाद
सुनना और उनके पाप माफ करना।[10]

अध्य. 6
1 1रा 3:6
2 2शम 7:12, 13
1इत 22:10
3 1रा 2:4
भज 132:12
4 प्रेष 7:48
5 2इत 2:6
यश 40:12
प्रेष 17:24
6 1रा 8:27-30
यश 66:1
7 व्य 26:2
8 दान 6:10
9 2रा 19:20
2इत 30:27
10 2इत 7:12-14
मी 7:18

दूसरा कॉल.
1 1रा 8:31, 32
2 अय 34:11
3 यश 3:10, 11
यहे 18:20
4 लैव 26:14, 17
यह 7:8, 11
न्या 2:14
5 दान 9:3, 19
6 एज 9:5
7 1रा 8:33, 34
8 यश 57:15
9 भज 106:47
10 यहे 14:13
11 लैव 26:19
व्य 28:23
12 1रा 8:35, 36

22 अगर एक आदमी का संगी-साथी
उस पर इलज़ाम लगाए कि तूने मेरे साथ
गलत किया है और उसे शपथ धरायी
जाती है* और वह आदमी शपथ# की
वजह से इस भवन में तेरी वेदी के सामने
आए,[1] **23** तो तू स्वर्ग से सुनकर कार्र-
वाई करना। तू अपने सेवकों का न्याय
करना, उनमें से जो दुष्ट है उसे उसके
किए की सज़ा देना[2] और जो नेक है उसे
बेकसूर* ठहराना और उसकी नेकी के
मुताबिक उसे फल देना।[3]

24 अगर तेरी प्रजा इसराएल तेरे
खिलाफ पाप करते रहने की वजह से
दुश्मन से युद्ध हार जाए[4] और वह
बाद में तेरे पास लौट आए, तेरे नाम की
महिमा करे[5] और इस भवन में आकर
तुझसे प्रार्थना करे[6] और रहम की भीख
माँगे,[7] **25** तो तू स्वर्ग से अपनी प्रजा
इसराएल के लोगों की बिनती सुनना[8]
और उनके पाप माफ करना। तू उन्हें
इस देश में लौटा ले आना जो तूने उन्हें
और उनके पुरखों को दिया था।[9]

26 अगर उनके पाप करते रहने की
वजह से[10] आकाश के झरोखे बंद हो जाएँ
और बारिश न हो[11] और तू उन्हें नम्रता
का सबक सिखाए* और इस वजह से
वे इस जगह की तरफ मुँह करके प्रार्थना
करें, तेरे नाम की महिमा करें और
पाप की राह से पलटकर लौट आएँ,[12]
27 तो तू स्वर्ग से अपनी प्रजा इसराएल
की सुनना और अपने सेवकों के पाप माफ

6:22 *या "संगी-साथी उसे शाप देता है।" यानी ऐसी शपथ जिसमें उस इंसान को शाप मिलता था जो झूठी शपथ खाता है या अपनी शपथ पूरी नहीं करता। #शा., "शाप।" **6:23** *शा., "नेक।" **6:26** *या "दुख दे।"

करना क्योंकि तू उन्हें सही राह के बारे में
सिखाएगा जिस पर उन्हें चलना चाहिए[1]
और अपने इस देश पर बारिश करेगा[2]
जिसे तूने अपने लोगों को विरासत में
दिया है।

28 अगर देश में अकाल पड़े[3] या
महामारी फैले[4] या फसलों पर झुल-
सन, बीमारी,[5] दलवाली टिड्डियों या भूखी
टिड्डियों का कहर टूटे[6] या दुश्मन आकर
देश के किसी शहर* को घेर लें[7] या देश
में कोई बीमारी फैले या किसी और तरह
की मुसीबत आए[8] 29 और ऐसे में एक
आदमी या तेरी प्रजा इसराएल के सब
लोग इस भवन की तरफ हाथ फैलाकर
तुझसे कृपा की बिनती करें[9] (क्योंकि हर
कोई अपनी पीड़ा और अपना दर्द जानता
है),[10] 30 तो तू अपने निवास-स्थान
स्वर्ग से उनकी सुनना[11] और उन्हें माफ
करना।[12] तू उनमें से हरेक को उसके
कामों के हिसाब से फल देना क्योंकि तू
हरेक का दिल जानता है (सिर्फ तू ही सही
मायनों में जानता है कि इंसान का दिल
कैसा है)।[13] 31 तब वे जब तक इस
देश में रहेंगे, जो तूने हमारे पुरखों को
दिया था, तेरी राहों पर चलकर तेरा डर
मानते रहेंगे।

32 अगर कोई परदेसी, जो तेरी प्रजा
इसराएल में से नहीं है, तेरे महान नाम के
बारे में सुनकर और यह भी कि तूने कैसे
अपना शक्तिशाली हाथ बढ़ाकर बड़े-बड़े
काम किए थे, दूर देश से आता है[14] और
इस भवन की तरफ मुँह करके प्रार्थना
करता है,[15] 33 तो तू अपने निवास-
स्थान स्वर्ग से उसकी सुनना और उसके
लिए वह सब करना जिसकी वह गुज़ारिश
करता है ताकि धरती के सब देशों के लोग
तेरा नाम जानें[1] और तेरा डर मानें, जैसे
तेरी इसराएली प्रजा तेरा डर मानती है
और वे जानें कि यह भवन जो मैंने बनाया
है, इससे तेरा नाम जुड़ा है।

34 जब तू अपने लोगों को दुश्मनों से
लड़ने कहीं भेजे[2] और वे तेरे चुने हुए
शहर की तरफ और इस भवन की तरफ
मुँह करके, जो मैंने तेरे नाम की महिमा
के लिए बनाया है, तुझसे प्रार्थना करें,[3]
35 तो तू स्वर्ग से उनकी प्रार्थना और
उनकी कृपा की बिनती सुनना और उन्हें
न्याय दिलाना।[4]

36 अगर वे तेरे खिलाफ पाप करें
(क्योंकि ऐसा कोई भी इंसान नहीं जो पाप
न करता हो)[5] और तू क्रोध से भरकर
उन्हें दुश्मनों के हवाले कर दे और दुश्मन
उन्हें बंदी बनाकर किसी देश में ले जाएँ,
फिर चाहे वह पास का देश हो या दूर
का[6] 37 और वहाँ जाने के बाद जब
उन्हें अपनी गलती का एहसास हो और
वे बँधुआई के देश में रहते तेरे पास लौट
आएँ और तुझसे रहम की भीख माँगें और
कहें, 'हमने पाप किया है, हमने गुनाह
किया है, हमने दुष्टता का काम किया है'[7]
38 और वे बँधुआई के देश में रहते[8]
पूरे दिल और पूरी जान से तेरे पास लौट
आएँ[9] और अपने इस देश की तरफ मुँह
करके तुझसे प्रार्थना करें जो तूने उनके
पुरखों को दिया था और तेरे चुने हुए
शहर की तरफ और इस भवन की
तरफ, जो मैंने तेरे नाम की महिमा के
लिए बनाया है, मुँह करके प्रार्थना करें[10]
39 तो तू अपने निवास-स्थान स्वर्ग से
उनकी प्रार्थना और कृपा की बिनती
सुनना और उन्हें न्याय दिलाना।[11] तू
अपने लोगों के पाप माफ कर देना जो
उन्होंने तेरे खिलाफ किए होंगे।

अध्य. 6

1 यश 30:20, 21; यश 54:13
2 1रा 18:1
3 रूत 1:1; 2रा 6:25
4 लैव 26:14, 16; व्य 28:21, 22
5 आम 4:9; हाग 2:17
6 व्य 28:38; योए 1:4
7 2इत 12:2; 2इत 32:1
8 1रा 8:37-40
9 2इत 20:5, 6; 2इत 33:13
10 नीत 14:10; दान 6:10
11 यश 63:15
12 भज 130:4
13 1शम 16:7; 1इत 28:9; यिर्म 11:20; यिर्म 17:10
14 निर्ग 12:48; रूत 1:16; 2रा 5:15; यश 56:6, 7; प्रेष 8:27
15 1रा 8:41-43

दूसरा कॉल.

1 भज 22:27; भज 46:10
2 गि 31:2; यह 8:1; न्या 1:1, 2; 1शम 15:3
3 1रा 8:44, 45; 2इत 14:11; 2इत 20:5, 6
4 यश 37:36
5 भज 130:3; सभ 7:20; रोम 3:23
6 लैव 26:34; 1रा 8:46-50; दान 9:7
7 लैव 26:40; एज 9:6; नहे 1:6; भज 106:6; दान 9:5
8 व्य 30:1-3; दान 9:2, 3
9 1शम 7:3
10 दान 6:10
11 यिर्म 51:36, 37

6:28 *शा., "उसके फाटकों के देश।"

40 हे मेरे परमेश्‍वर, मेहरबानी करके
उन लोगों की प्रार्थना सुनना जो इस जगह
पर* करेंगे और तेरी नज़र उन पर बनी
रहे।[1] **41** अब हे यहोवा परमेश्‍वर,
उठ, अपने विश्राम की जगह आ।[2] तू
और तेरा संदूक आए जो तेरी ताकत
की निशानी है। हे यहोवा परमेश्‍वर, तेरे
याजक उद्धार की पोशाक पहने हुए हों
और तेरे वफादार लोग तेरी भलाई के
कारण मगन हों।[3] **42** हे यहोवा पर-
मेश्‍वर, अपने अभिषिक्‍त जन को न
ठुकरा।*[4] तूने अपने सेवक दाविद से जो
प्यार# किया था, तू उसे याद रखे।"[5]

7 जैसे ही सुलैमान ने प्रार्थना खत्म
की,[6] आकाश से आग बरसी[7] और
होम-बलि और दूसरे बलिदान भस्म हो
गए और भवन यहोवा की महिमा
से भर गया।[8] **2** याजक यहोवा के
भवन में नहीं जा सके क्योंकि यहोवा का
भवन यहोवा की महिमा से भर गया।[9]
3 जब आग ऊपर से बरसी और यहोवा
की महिमा भवन पर छा गयी, तो सब
इसराएली देख रहे थे। उन्होंने झुककर
और फर्श पर मुँह के बल गिरकर दंड-
वत किया और यह कहकर यहोवा का
शुक्रिया अदा किया, "क्योंकि वह भला
है, उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।"

4 फिर राजा और सब लोगों ने यहोवा
के सामने बलिदान चढ़ाए।[10] **5** राजा
सुलैमान ने 22,000 बैलों और 1,20,-
000 भेड़ों की बलि चढ़ायी। इस तरह
राजा और सब लोगों ने सच्चे परमेश्‍वर के
भवन का उद्‌घाटन किया।[11] **6** याजक
सेवा के लिए अपनी-अपनी ठहरायी
जगह खड़े थे और वे लेवी भी खड़े
थे जिनके पास यहोवा के लिए गीत
गाते समय बजानेवाले साज़ होते थे।[1]
(राजा दाविद ने ये साज़ इसलिए बनाए थे
ताकि ये उस वक्‍त बजाए जाएँ जब
वह उनके* साथ परमेश्‍वर की तारीफ
करे और यह कहकर यहोवा का शुक्रिया
अदा करे, "क्योंकि उसका अटल प्यार
सदा बना रहता है।") और उनके सामने
याजक ज़ोर-ज़ोर से तुरहियाँ फूँक रहे थे[2]
और सारे इसराएली वहाँ खड़े थे।

7 फिर सुलैमान ने यहोवा के भवन
के सामनेवाले आँगन के बीच का हिस्सा
पवित्र ठहराया क्योंकि वहाँ पर उसे होम-
बलियाँ और शांति-बलियों की चरबी
चढ़ानी थी।[3] उसने ये सारे बलिदान
वहाँ इसलिए चढ़ाए क्योंकि उसकी बनायी
ताँबे की वेदी[4] पर इतनी तादाद में होम-
बलियाँ, अनाज के चढ़ावे[5] और चरबी
नहीं चढ़ायी जा सकी।[6] **8** इस मौके
पर सुलैमान ने सात दिन तक इसराए-
लियों की एक बड़ी भीड़ के साथ मिल-
कर त्योहार मनाया।[7] इस भीड़ में लेबो-
हमात* से लेकर मिस्र घाटी# तक के
सारे लोग शामिल थे।[8] **9** मगर आठवें
दिन* उन्होंने एक पवित्र सभा रखी[9]
क्योंकि उन्होंने सात दिन तक वेदी का
उद्‌घाटन किया था और सात दिन त्योहार
मनाया था। **10** फिर सातवें महीने के
23वें दिन सुलैमान ने लोगों को अपने-
अपने घर भेज दिया। यहोवा ने दाविद
और सुलैमान और अपनी प्रजा इसराएल
की खातिर जो भलाई की थी, उससे
उनका दिल खुशी से उमड़ रहा था[10] और

अध्य. 6
1 2इत 7:15, 2इत 16:9, भज 65:2, यश 37:17
2 1इत 28:2
3 भज 65:4, भज 132:8-10
4 1रा 1:34, भज 18:50
5 प्रेष 13:34

अध्य. 7
6 1रा 8:54
7 लैव 9:24, 1इत 21:26
8 निर्ग 40:34, 35
9 1रा 8:11
10 1रा 8:62, 63
11 एज 6:16

दूसरा कॉल.
1 1इत 25:7, 2इत 5:11, 12
2 2इत 5:13
3 लैव 1:3
4 2इत 4:1
5 लैव 2:1
6 लैव 4:8-10, 1रा 8:64-66
7 लैव 23:34, व्य 16:13
8 गि 34:2, 5, 8
9 लैव 23:36
10 2इत 6:41

6:40 *या "के बारे में।" **6:42** *शा., "का मुँह न फेर दे।" #या "अटल प्यार।"

7:6 *शायद यहाँ लेवियों की बात की गयी है। **7:8** *या "हमात के प्रवेश।" #शब्दावली देखें। **7:9** *त्योहार के बादवाला दिन या 15वाँ दिन।

वे सब आनंद मनाते हुए अपने-अपने घर
लौटे।[1]
11 इस तरह सुलैमान ने यहोवा का
भवन और राजमहल बनाने का काम
पूरा किया।[2] उसने यहोवा के भवन और
अपने महल में जो भी बनाना चाहा, वह
सब बनाने में कामयाब रहा।[3] 12 फिर
यहोवा रात के वक्त सुलैमान के सामने
प्रकट हुआ[4] और उससे कहा, "मैंने तेरी
प्रार्थना सुनी है और मैंने यह जगह अपने
लिए बलिदान की जगह ठहरायी है।[5]
13 जब मैं आकाश के झरोखे बंद कर
दूँ और बारिश न हो और मैं टिड्डियों को
आदेश दूँ कि वे इस ज़मीन को चट कर
जाएँ और अपने लोगों में महामारी भेजूँ,
14 तब अगर मेरे लोग जो मेरे नाम से
जाने जाते हैं,[6] खुद को नम्र करें[7] और
प्रार्थना करके मेरी मंज़ूरी पाने की कोशिश
करें और अपनी बुरी राहों से फिर जाएँ,[8]
तो मैं स्वर्ग से उनकी प्रार्थना सुनूँगा और
उनके पाप माफ करूँगा और उनके देश
को चंगा करूँगा।[9] 15 इस जगह पर
जो लोग प्रार्थना करेंगे, मैं उनकी सुनूँगा
और मेरी नज़र उन पर बनी रहेगी।[10]
16 मैंने यह भवन चुना है और इसे पवित्र
किया है ताकि सदा तक मेरा नाम इससे
जुड़ा रहे[11] और मैं इसकी देखभाल के
लिए हमेशा अपनी आँखें इस पर लगाए
रखूँगा और यह भवन सदा मेरे दिल के
करीब रहेगा।[12]
17 और अगर तू वह सब करेगा
जिसकी मैंने तुझे आज्ञा दी है और मेरे
नियम और न्याय-सिद्धांत मानेगा और
इस तरह अपने पिता दाविद की तरह मेरे
सामने सही राह पर चलेगा,[13] 18 तो मैं
तेरी राजगद्दी हमेशा के लिए कायम
रखूँगा,[14] ठीक जैसे मैंने तेरे पिता दाविद
से यह करार किया था,[15] 'ऐसा कभी नहीं
होगा कि इसराएल की राजगद्दी पर बैठने
के लिए तेरे वंश का कोई आदमी न हो।'[1]
19 लेकिन अगर तू मुझसे मुँह फेर
लेगा और मेरी आज्ञाओं और विधियों
को मानना छोड़ देगा जो मैंने तुझे दी
हैं और जाकर पराए देवताओं की पूजा
करेगा और उन्हें दंडवत करेगा,[2]
20 तो मैं इसराएल को अपने देश से
उखाड़ फेंकूँगा जो मैंने उसे दिया है[3] और
इस भवन को, जिसे मैंने अपने नाम की
महिमा के लिए पवित्र ठहराया है, अपनी
नज़रों से दूर कर दूँगा। यह भवन सब
देशों में मज़ाक* बनकर रह जाएगा,
इसकी बरबादी देखकर सब हँसेंगे।[4]
21 और यह भवन मलबे का ढेर हो
जाएगा। इसके पास से गुज़रनेवाला हर
कोई इसे फटी आँखों से देखता रह
जाएगा[5] और कहेगा, 'यहोवा ने इस देश
की और इस भवन की ऐसी हालत क्यों
कर दी?'[6] 22 फिर वे कहेंगे, 'वह इस-
लिए कि उन्होंने अपने पुरखों के पर-
मेश्वर यहोवा को छोड़ दिया[7] जो उन्हें
मिस्र से निकाल लाया था[8] और उन्होंने
दूसरे देवताओं को अपना लिया और वे
उन्हें दंडवत करके उनकी सेवा करने
लगे।[9] इसीलिए वह उन पर यह संकट
ले आया।'"[10]

8 सुलैमान को यहोवा का भवन
और अपना राजमहल बनाने में पूरे
20 साल लगे।[11] इसके बाद 2 उसने
वे शहर दोबारा बनाए जो हीराम[12] ने
उसे दिए थे और वहाँ इसराएलियों*
को बसाया। 3 इसके अलावा, सुलै-
मान ने हमात-सोबा जाकर उस पर
कब्ज़ा कर लिया। 4 फिर उसने वीराने
में तदमोर और उन सभी गोदामवाले

अध्य. 7
1 व्य 16:15
2 सभ 2:4
3 1रा 9:1-3
4 2इत 1:7
5 व्य 12:5, 6; भज 78:68
6 यश 43:10
7 लैव 26:41; 2इत 33:12, 13
8 यश 55:7
9 2इत 6:39
10 2इत 6:40
11 व्य 12:21
12 2इत 6:20
13 1रा 9:4, 5
14 2शम 7:12, 13
15 भज 89:28, 29

दूसरा कॉल.
1 1रा 2:4
2 निर्ग 20:5; 1रा 9:6-9
3 व्य 4:25, 26; 2रा 17:20
4 व्य 28:37; यिर्म 24:9
5 2इत 29:8; दान 9:12
6 व्य 29:24, 25; 2रा 25:8, 9; यिर्म 22:8, 9
7 2इत 15:2
8 निर्ग 12:51
9 यश 2:8; यिर्म 2:11
10 2इत 36:17

अध्य. 8
11 1रा 6:37, 38; 1रा 7:1; 1रा 9:10
12 1रा 5:1

7:20 * शा., "कहावत।" **8:2** * शा., "इस-राएल के बेटों।"

शहरों को मज़बूत किया*[1] जो उसने हमात में बनाए थे।[2] 5 उसने ऊपरी बेत-होरोन[3] और निचली बेत-होरोन[4] की दीवारें, फाटक और बेड़े बनाकर उन शहरों को भी मज़बूत किया। 6 सुलैमान ने बालात[5] और अपने सभी गोदामवाले शहर, रथों के शहर[6] और घुड़सवारों के लिए शहर भी बनाए और यरूशलेम और लबानोन में और अपने राज्य के पूरे इलाके में वह जो-जो बनाना चाहता था वह सब उसने बनाया।

7 हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, हिव्वियों और यबूसियों[7] में से बचे हुए लोग, जो इसराएल की प्रजा नहीं थे[8] 8 और जिन्हें इसराएलियों ने नहीं मिटाया था, उनके वंशज इसराएल देश में रहते थे।[9] सुलैमान ने इन लोगों को जबरन मज़दूरी में लगा दिया और आज तक वे यही काम करते हैं।[10] 9 मगर सुलैमान ने किसी भी इसराएली को गुलाम बनाकर उससे मज़दूरी नहीं करवायी।[11] वे तो उसके योद्धा, सहायक सेना-अधिकारियों के मुखिया और सारथियों और घुड़सवारों के प्रधान थे।[12] 10 राजा सुलैमान के काम की निगरानी करनेवाले अधिकारियों की गिनती 250 थी। उन्हें कर्मचारियों पर अधिकार दिया गया था।[13]

11 सुलैमान फिरौन की बेटी[14] को दाविदपुर से उस महल में ले आया जो उसने उसके लिए बनवाया था[15] क्योंकि उसने कहा, "भले ही वह मेरी पत्नी है, मगर वह इसराएल के राजा दाविद के महल में नहीं रह सकती क्योंकि जिन जगहों पर यहोवा का संदूक आया है वे पवित्र हैं।"[16]

12 फिर सुलैमान ने यहोवा की उस वेदी[1] पर यहोवा के लिए होम-बलियाँ चढ़ायीं[2] जो उसने बरामदे के सामने बनायी थी।[3] 13 वह मूसा की आज्ञा के मुताबिक हर दिन, सब्त के दिन,[4] नए चाँद के मौकों पर[5] और साल के इन तीन त्योहारों पर बलिदान चढ़ाता था:[6] बिन-खमीर की रोटी का त्योहार,[7] कटाई का त्योहार[8] और छप्परों का त्योहार।[9] 14 साथ ही, उसने अपने पिता दाविद के कायदे के मुताबिक याजकों को सेवा के लिए अलग-अलग दलों में ठहराया[10] और लेवियों को उनकी ज़िम्मेदारियाँ सौंपीं ताकि वे रोज़ के नियम के मुताबिक परमेश्वर की तारीफ करें[11] और याजकों के सामने सेवा करें। उसने पहरेदारों के दलों को अलग-अलग फाटकों पर ठहराया[12] क्योंकि सच्चे परमेश्वर के सेवक दाविद ने ऐसा करने की आज्ञा दी थी। 15 राजा ने याजकों और लेवियों को भंडार-घरों के मामले में या किसी और मामले में जो भी आज्ञा दी थी उसे मानने से वे नहीं चूके। 16 जिस दिन यहोवा के भवन की बुनियाद डाली गयी[13] तब से लेकर उसे बनाने का काम पूरा करने तक सुलैमान ने हर काम की अच्छी व्यवस्था की।* इस तरह यहोवा के भवन का काम पूरा हुआ।[14]

17 इसके बाद सुलैमान एस्योन-गेबेर[15] और एलोत[16] गया जो एदोम देश के तट पर हैं।[17] 18 हीराम[18] ने अपने सेवकों के ज़रिए अपने जहाज़ और तजुरबेकार नाविक सुलैमान के पास भेजे। वे सुलैमान के सेवकों के साथ मिलकर ओपीर[19] गए और वहाँ से 450 तोड़े* सोना[20] राजा सुलैमान के पास ले आए।[21]

अध्य. 8

1 1रा 9:17-19
2 2रा 14:28
3 यह 16:5
4 यह 16:1, 3; 1इत 7:24
5 यह 19:44, 48
6 1रा 4:26
7 उत 15:18-21; गि 13:29
8 1रा 9:20-23
9 यह 15:63; यह 17:12
10 यह 16:10; 2इत 2:17, 18
11 लैव 25:39
12 1शम 8:11, 12
13 1रा 5:16; 1रा 9:23; 2इत 2:18
14 1रा 3:1
15 1रा 7:8; 1रा 9:24
16 निर्ग 29:43

दूसरा कॉल.

1 2इत 4:1
2 लैव 1:3
3 1रा 6:3
4 गि 28:9
5 गि 28:11-15
6 व्य 16:16
7 लैव 23:6
8 लैव 23:15, 16
9 लैव 23:34
10 1इत 24:1
11 1इत 6:31, 32; 1इत 15:16; 1इत 16:37, 42; 1इत 25:1
12 1इत 26:1
13 1रा 6:1
14 1रा 7:51
15 गि 33:1, 35; 1रा 22:48
16 व्य 2:8; 2रा 14:21, 22; 2रा 16:6
17 1रा 9:26-28
18 2शम 5:11
19 1रा 22:48; भज 45:9
20 1रा 10:22
21 सभ 2:8

8:4 *या "दोबारा बनाया।"

8:16 *या "का अच्छा इंतज़ाम किया; पूरा किया।" **8:18** *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

9 शीबा की रानी[1] ने सुलैमान की शोह-
रत के बारे में सुना, इसलिए वह यरू-
शलेम आयी ताकि बेहद मुश्किल और
पेचीदा सवालों से* उसे परखे। उसके
साथ एक बहुत बड़ा और शानदार कारवाँ
आया। वह अपने साथ बलसाँ के तेल,
भारी तादाद में सोने[2] और अनमोल रत्नों
से लदे ऊँट लायी। जब वह सुलैमान के
पास आयी तो उसके मन में जितने भी
सवाल थे, वे सब उसने राजा से पूछे।[3]
2 और सुलैमान ने उसके सभी सवालों
के जवाब दिए। ऐसी कोई बात नहीं थी*
जिसके बारे में उसे समझाना सुलैमान के
लिए मुश्किल रहा हो।

3 जब शीबा की रानी ने सुलैमान
की बुद्धि,[4] उसका बनाया राजमहल,[5]
4 मेज़ पर लगा शाही खाना,[6] उसके
अधिकारियों के बैठने के लिए किया गया
इंतज़ाम, खाना परोसनेवालों की सेवाएँ
और उनकी खास पोशाक, उसके साकी
और उनकी खास पोशाक और वे होम-
बलियाँ देखीं जिन्हें वह नियमित तौर पर
यहोवा के भवन में चढ़ाया करता था,[7]
तो वह ऐसी दंग रह गयी कि उसकी
साँस ऊपर-की-ऊपर और नीचे-की-नीचे
रह गयी। 5 उसने राजा से कहा, "मैंने
अपने देश में तेरी कामयाबियों* के बारे
में और तेरी बुद्धि के बारे में जो चर्चे
सुने थे, वे बिलकुल सही थे। 6 लेकिन
मैंने तब तक यकीन नहीं किया जब तक
मैंने यहाँ आकर खुद अपनी आँखों से
नहीं देखा।[8] अब मैं देख सकती हूँ कि
तेरी बुद्धि वाकई लाजवाब है। मुझे लगता
है कि मुझे इसका आधा भी नहीं बताया
गया था।[1] मैंने तेरे बारे में जो सुना था,
तू उससे कहीं ज़्यादा महान है।[2] 7 तेरे
इन आदमियों और सेवकों को कितना
बड़ा सम्मान मिला है कि वे हर समय
तेरे सामने रहकर तेरे मुँह से बुद्धि की
बातें सुनते हैं! 8 तेरे परमेश्वर यहोवा
की बड़ाई हो, जिसने तुझसे खुश होकर
तुझे अपनी राजगद्दी पर बिठाया ताकि तू
अपने परमेश्वर यहोवा की तरफ से राज
करे। तेरा परमेश्वर इसराएल से प्यार
करता है[3] और उसे सदा तक कायम
रखना चाहता है, इसीलिए उसने तुझे इस-
राएल का राजा ठहराया ताकि तू न्याय
और नेकी करे।"

9 इसके बाद शीबा की रानी ने राजा
को 120 तोड़े* सोना, बहुत सारा
बलसाँ का तेल और अनमोल रत्न तोहफे
में दिए।[4] उसने राजा सुलैमान को जितना
बलसाँ का तेल दिया था उतना फिर कभी
किसी ने नहीं दिया।[5]

10 इसके अलावा, हीराम के सेवक
और सुलैमान के सेवक, जो ओपीर से
सोना लाया करते थे,[6] वहाँ से अन-
मोल रत्न और लाल-चंदन की लकड़ी भी
लाते थे।[7] 11 राजा ने लाल-चंदन की
लकड़ी से यहोवा के भवन के लिए और
राजमहल[8] के लिए सीढ़ियाँ बनायीं,[9]
साथ ही उस लकड़ी से गायकों के लिए
सुरमंडल और तारोंवाले दूसरे बाजे
बनाए।[10] इतनी उम्दा चीज़ें यहूदा देश में
पहले कभी नहीं देखी गयी थीं।

12 राजा सुलैमान ने भी शीबा की
रानी को वह सब दिया जो उसने माँगा।
रानी उसके लिए जितने तोहफे लायी थी
उससे कई गुना ज़्यादा चीज़ें राजा ने

9:1 *या "ताकि पहेलियाँ पूछकर।" **9:2** *शा., "कोई बात उससे छिपी न थी।" **9:5** *या "बातों।"

9:9 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 9

1 मत 12:42, लूक 11:31
2 भज 72:15
3 1रा 10:1-3
4 1रा 3:28, सभ 12:9
5 1रा 10:4-9
6 1रा 4:22, 23
7 2इत 8:12, 13
8 लूक 11:31

दूसरा कॉल.

1 सभ 1:16
2 1रा 4:31, 34, 2इत 1:11, 12
3 2इत 2:11
4 1रा 10:10
5 भज 72:10
6 1रा 9:27, 28, 1रा 10:22, 2इत 8:18
7 1रा 10:11, 12
8 1रा 7:1
9 1रा 6:8
10 1इत 25:1, भज 92:3

उसे दीं।* फिर रानी अपने सेवकों के साथ अपने देश लौट गयी।[1]

13 सुलैमान को हर साल करीब 666 तोड़े सोना मिलता था।[2] 14 इसके अलावा उसे सौदागरों, लेन-देन करनेवाले व्यापारियों और अरब के सब राजाओं और देश के राज्यपालों से भी सोना मिलता था क्योंकि वे सोना-चाँदी लाकर उसे देते थे।[3]

15 राजा सुलैमान ने मिश्रित सोने की 200 बड़ी-बड़ी ढालें[4] (हर ढाल में 600 शेकेल* सोना लगा था)[5] 16 और 300 छोटी-छोटी ढालें* बनायीं (हर छोटी ढाल में तीन मीना# सोना लगा था)। राजा ने ये ढालें 'लबानोन के वन भवन' में रखीं।[6]

17 राजा ने हाथी-दाँत की एक बड़ी राजगद्दी भी बनायी और उस पर शुद्ध सोना मढ़ा।[7] 18 राजगद्दी तक जाने के लिए छः सीढ़ियाँ थीं और राजगद्दी से पाँवों की चौकी लगी थी जो सोने की थी। राजगद्दी के दोनों तरफ हाथ रखने के लिए टेक बनी थी और दोनों तरफ टेक के पास एक-एक शेर[8] खड़ा हुआ बना था। 19 राजगद्दी तक जानेवाली छः सीढ़ियों में से हर सीढ़ी के दोनों तरफ भी एक-एक शेर खड़ा हुआ बना था यानी कुल मिलाकर 12 शेर थे।[9] ऐसी राजगद्दी किसी और राज्य में नहीं थी। 20 राजा सुलैमान के सभी प्याले सोने के थे और 'लबानोन के वन भवन' के सारे बरतन भी शुद्ध सोने के थे। एक भी चीज़ चाँदी की नहीं थी क्योंकि सुलैमान के दिनों में चाँदी का कोई मोल नहीं था।[1] 21 राजा के जहाज़ हीराम के सेवकों के साथ तरशीश[2] जाते थे।[3] हर तीन साल में एक बार तरशीश के जहाज़ों का लशकर सोना, चाँदी, हाथी-दाँत,[4] बंदर और मोर लाता था।

22 राजा सुलैमान इतना बुद्धिमान था और उसके पास दौलत का ऐसा अंबार था कि दुनिया का कोई भी राजा उसकी बराबरी नहीं कर सकता था।[5] 23 सच्चे परमेश्वर ने उसे बहुत बुद्धि दी थी और उसकी बुद्धि की बातें सुनने धरती के कोने-कोने से राजा उसके पास आया करते थे।*[6] 24 जब भी कोई सुलैमान के पास आता तो वह तोहफे में राजा को सोने-चाँदी की चीज़ें, कपड़े,[7] हथियार, बलसाँ का तेल, घोड़े और खच्चर देता था। ऐसा साल-दर-साल चलता रहा। 25 सुलैमान के पास घोड़ों और रथों के लिए 4,000 अस्तबल थे और उसके 12,000 घोड़े* थे।[8] उसने इन्हें रथों के शहरों में और यरूशलेम में अपने पास रखा था।[9] 26 वह महानदी* से लेकर पलिश्तियों के देश और मिस्र की सरहद तक के सभी राजाओं पर राज करता था।[10] 27 राजा ने यरूशलेम में इतनी तादाद में चाँदी इकट्ठी की कि वह पत्थर जितनी आम हो गयी थी और उसने देवदार की इतनी सारी लकड़ी इकट्ठी की कि उसकी तादाद शफेलाह के गूलर पेड़ों जितनी हो गयी थी।[11] 28 सुलैमान के लिए मिस्र और दूसरे देशों से घोड़े लाए जाते थे।[12]

9:12 *या शायद, "उसके बराबर की कीमत के तोहफे भी राजा ने उसे दिए।" 9:15 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। 9:16 *ये ढालें अकसर तीरंदाज़ ढोते थे। #इब्रानी शास्त्र में बताए एक मीना का वज़न 570 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

9:23 *शा., "उसका मुँह देखना चाहते थे।" 9:25 *या "घुड़सवार।" 9:26 *यानी फरात नदी।

अध्य. 9
1 1रा 10:13
2 1रा 10:14, 15; 2इत 1:15; भज 68:29; भज 72:15
3 भज 72:10
4 2इत 12:9
5 1रा 10:16, 17
6 1रा 7:2
7 1रा 10:18-20
8 उत 49:9
9 गि 23:24

दूसरा कॉल.
1 1रा 10:21, 22; 1रा 10:27
2 भज 72:10; यो 1:3
3 1रा 9:27
4 1रा 10:18
5 1रा 3:12, 13; 1रा 4:29; 1रा 10:23-25
6 1रा 3:28; 1रा 4:34; 2इत 1:12; नीत 2:6
7 मत 6:29
8 व्य 17:16; 1रा 4:26
9 1रा 10:26
10 1रा 4:21
11 1रा 10:27; 1इत 27:28
12 1रा 10:28; 2इत 1:16

29 सुलैमान की ज़िंदगी की बाकी कहानी[1] यानी शुरू से लेकर आखिर तक का इतिहास भविष्यवक्ता नातान के लेखनों में,[2] शीलो के रहनेवाले अहियाह की भविष्यवाणी की किताब में[3] और दर्शी इद्दो की उस किताब में लिखा है[4] जिसमें नबात के बेटे यारोबाम[5] के बारे में दर्शन लिखे हैं। 30 सुलैमान ने यरूशलेम में रहकर पूरे इसराएल पर 40 साल राज किया। 31 फिर उसकी मौत हो गयी* और उसे उसके पिता दाविद के शहर दाविदपुर में दफनाया गया।[6] उसकी जगह उसका बेटा रहूबियाम राजा बना।[7]

10 रहूबियाम शेकेम[8] गया क्योंकि पूरा इसराएल उसे राजा बनाने के लिए शेकेम में इकट्ठा हुआ था।[9] 2 जैसे ही इसकी खबर नबात के बेटे यारोबाम[10] को मिली, वह मिस्र से वापस आ गया। (वह अब भी मिस्र में था क्योंकि वह राजा सुलैमान की वजह से मिस्र भाग गया था।)[11] 3 फिर लोगों ने यारोबाम को बुलवाया और वह और पूरा इसराएल रहूबियाम के पास आया और वे कहने लगे, 4 "तेरे पिता ने हमसे कड़ी मज़दूरी करवाकर हम पर भारी बोझ लाद दिया था।[12] अगर तू हमारे साथ थोड़ी रिआयत करे और यह भारी बोझ ज़रा हलका कर दे, तो हम तेरी सेवा करेंगे।"

5 रहूबियाम ने उनसे कहा, "तुम लोग तीन दिन बाद वापस आना।" तब लोग वहाँ से चले गए।[13] 6 इस बीच राजा रहूबियाम ने उन बुज़ुर्गों* से सलाह की जो उसके पिता सुलैमान के सलाहकार हुआ करते थे। उसने उनसे पूछा, "तुम्हारी क्या राय है, इन लोगों को क्या जवाब देना सही रहेगा?" 7 बुज़ुर्गों ने उससे कहा, "अगर तू इन लोगों के साथ भलाई करे, उन्हें खुश करे और उनसे प्यार से बात करे, तो वे हमेशा तेरे सेवक बने रहेंगे।"

8 मगर रहूबियाम ने बुज़ुर्गों* की सलाह ठुकरा दी और उन जवानों से सलाह-मशविरा किया जो उसके साथ पले-बढ़े थे और अब उसके सेवक थे।[1] 9 उसने उनसे पूछा, "तुम क्या सलाह देते हो? मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ जिन्होंने मुझसे कहा है, 'तेरे पिता ने हम पर जो भारी बोझ लादा था उसे हलका कर दे'?" 10 उसके साथ पले-बढ़े जवानों ने उससे कहा, "जिन लोगों ने तुझसे कहा है, 'तेरे पिता ने हम पर जो भारी बोझ लादा था उसे हलका कर दे,' उनसे तू कहना, 'मेरी छोटी उँगली मेरे पिता की कमर से भी मोटी होगी। 11 मेरे पिता ने तुम पर जो भारी बोझ लादा था मैं उसे और बढ़ा दूँगा। मेरा पिता तुम्हें कोड़ों से पिटवाता था, मगर मैं तुम्हें कीलोंवाले कोड़ों से पिटवाऊँगा।'"

12 तीसरे दिन यारोबाम और सब लोग रहूबियाम के पास आए, ठीक जैसे राजा ने उनसे तीसरे दिन आने को कहा था।[2] 13 मगर राजा रहूबियाम ने उनके साथ कठोरता से बात की। इस तरह उसने बुज़ुर्गों* की सलाह ठुकरा दी। 14 उसने जवानों की सलाह मानकर लोगों से कहा, "मैं तुम लोगों का बोझ और भारी कर दूँगा, उसे बढ़ा दूँगा। मेरा पिता तुम्हें कोड़ों से पिटवाता था, मगर मैं तुम्हें कीलोंवाले कोड़ों से पिटवाऊँगा।" 15 इस तरह राजा ने लोगों की बात नहीं मानी। इसके पीछे

अध्य. 9
1 1रा 11:41-43
2 2शम 7:2; 2शम 12:1; 1रा 1:8; 1इत 29:29
3 1रा 11:30, 31; 1रा 14:2; 1रा 14:6, 10
4 2इत 12:15; 2इत 13:22
5 1रा 11:26
6 2शम 5:9; 1रा 2:10
7 1रा 14:21

अध्य. 10
8 यह 20:7; यह 24:1; न्या 9:1
9 1रा 12:1-4
10 1रा 11:28
11 1रा 11:40
12 1शम 8:11-18; 1रा 4:7
13 1रा 12:5-7

दूसरा कॉल.
1 1रा 12:8-11
2 1रा 12:12-15

9:31 *शा., "वह अपने पुरखों के साथ सो गया।" 10:6, 8, 13 *या "मुखियाओं।"

सच्चे परमेश्‍वर यहोवा का हाथ था।[1] उसने ऐसा इसलिए किया ताकि वह वचन पूरा हो जो उसने शीलो के रहनेवाले अहियाह के ज़रिए नबात के बेटे यारोबाम से कहा था।[2]

16 जब राजा ने इसराएलियों की बात मानने से इनकार कर दिया, तो उन्होंने राजा से कहा, "अब दाविद के साथ हमारा क्या साझा? यिशै के बेटे की विरासत उसी के पास रहे। इसराएलियो, तुममें से हरेक अपने देवताओं के पास लौट जाए! हे दाविद, अब तू अपने ही घराने की देखभाल करना!"[3] यह कहकर इसराएल के सभी लोग अपने-अपने घर* लौट गए।[4]

17 मगर रहूबियाम उन इसराएलियों पर राज करता रहा जो यहूदा के शहरों में रहते थे।[5]

18 फिर राजा रहूबियाम ने हदोराम[6] को इसराएलियों के पास भेजा, जो जबरन मज़दूरी करनेवालों का अधिकारी था। मगर इसराएलियों ने उसे पत्थरों से मार डाला। राजा रहूबियाम किसी तरह अपने रथ पर सवार होकर यरूशलेम भाग गया।[7] 19 तब से लेकर आज तक इसराएली दाविद के घराने से बगावत करते आ रहे हैं।

11 जब रहूबियाम यरूशलेम पहुँचा तो उसने फौरन यहूदा के घराने से और बिन्यामीन गोत्र[8] से 1,80,000 तालीम पाए* सैनिकों को इकट्ठा किया ताकि वे इसराएल से युद्ध करें और राज फिर से रहूबियाम के अधिकार में कर दें।[9] 2 तब यहोवा का यह संदेश सच्चे परमेश्‍वर के सेवक शमायाह[10] के पास पहुँचा, 3 "सुलैमान के बेटे, यहूदा के राजा रहूबियाम से, साथ ही यहूदा के घराने और बिन्यामीन गोत्र के सभी इसराएलियों से कहना, 4 'यहोवा ने कहा है, "तुम ऊपर जाकर अपने भाइयों से युद्ध मत करना। तुम सब अपने-अपने घर लौट जाओ क्योंकि यह सब मैंने ही करवाया है।"'"[1] उन्होंने यहोवा की बात मान ली और सब अपने-अपने घर लौट गए और यारोबाम से युद्ध करने नहीं गए।

5 रहूबियाम यरूशलेम में रहा और उसने यहूदा में किलेबंद शहर बनाए। 6 उसने बेतलेहेम,[2] एताम, तकोआ,[3] 7 बेत-सूर, सोको,[4] अदुल्लाम,[5] 8 गत,[6] मारेशाह, ज़ीफ,[7] 9 अदोरैम, लाकीश,[8] अजेका,[9] 10 सोरा, अय्यालोन[10] और हेब्रोन[11] को बनाया।* ये सारे किलेबंद शहर यहूदा और बिन्यामीन के इलाके में थे। 11 यही नहीं, उसने उन किलेबंद शहरों को मज़बूत किया और उनमें सेनापति ठहराए और वह उन्हें खाने-पीने की चीज़ें, तेल और दाख-मदिरा मुहैया कराता रहा। 12 उसने अलग-अलग शहरों में भारी तादाद में बड़ी-बड़ी ढालें और भाले रखवाए और उन्हें सुरक्षित करके बहुत मज़बूत किया। यहूदा और बिन्यामीन के लोग उसी की प्रजा बने रहे।

13 पूरे इसराएल में रहनेवाले याजक और लेवी रहूबियाम का साथ देने के लिए अपना-अपना इलाका छोड़कर उसके पास आ गए। 14 लेवी अपने चरागाह और अपनी जागीर छोड़कर[12] यहूदा और यरूशलेम आ गए, क्योंकि यारोबाम और उसके बेटों ने उन्हें यहोवा के लिए याजक के नाते सेवा करने से हटा दिया था।[13] 15 फिर यारोबाम ने

10:16 *शा., "तंबू।" 11:1 *शा., "चुने हुए।"

11:10 *या "मज़बूत किया।"

अध्य. 10
1 व्य 2:30; 2शम 17:14
2 1रा 11:29-31
3 1रा 11:32
4 1रा 12:16, 17
5 1रा 11:35, 36
6 2शम 20:24; 1रा 4:6
7 1रा 12:18, 19

अध्य. 11
8 उत 49:27; 2इत 14:8
9 1रा 12:21-24
10 2इत 12:15

दूसरा कॉल.
1 1रा 11:31; 2इत 10:15
2 उत 35:19; मत 2:1
3 आम 1:1
4 2इत 28:18
5 1शम 22:1
6 1इत 18:1
7 1शम 23:14
8 2इत 32:9
9 यह 10:10; यिर्म 34:7
10 यह 19:42, 48
11 यह 14:14, 15; 2शम 2:1
12 गि 35:2, 3
13 1रा 12:31, 32

खुद ही कुछ आदमियों को अपनी बनायी
ऊँची जगहों के लिए और दुष्ट स्वर्ग-
दूतों*[1] और बछड़ों[2] की सेवा के लिए
याजक ठहरा दिया।[3] 16 इसराएल के
सब गोत्रों में से जितने लोगों ने अपने
दिल में इसराएल के परमेश्‍वर यहोवा की
खोज करने की ठान ली थी, वे उन
याजकों और लेवियों के पीछे-पीछे यरू-
शलेम आ गए ताकि अपने पुरखों के पर-
मेश्‍वर यहोवा को बलिदान चढ़ा सकें।[4]
17 वे तीन साल तक यहूदा के राज को
मज़बूत करते रहे और सुलैमान के बेटे
रहूबियाम का साथ देते रहे, क्योंकि इन
तीन सालों के दौरान वे दाविद और सुलै-
मान की राह पर चलते रहे।

18 फिर रहूबियाम ने महलत से शादी
की, जो दाविद के बेटे यरीमोत की
बेटी थी। महलत की माँ अबीहैल थी जो
यिशै के बेटे एलीआब[5] की बेटी थी।
19 कुछ समय बाद महलत ने रहू-
बियाम के इन बेटों को जन्म दिया: यूश,
शमरयाह और जाहम। 20 फिर रहू-
बियाम ने माका से शादी की, जो अब-
शालोम[6] की नातिन थी। कुछ समय
बाद माका ने इन बेटों को जन्म दिया:
अबियाह,[7] अत्तै, ज़ीज़ा और शलोमीत।
21 रहूबियाम की 18 पत्नियाँ और 60
उप-पत्नियाँ थीं और उसके 28 बेटे और
60 बेटियाँ थीं। मगर अपनी सब पत्नियों
और उप-पत्नियों में से वह सबसे ज़्यादा
अबशालोम की नातिन माका से प्यार
करता था।[8] 22 इसलिए रहूबियाम ने
माका के बेटे अबियाह को उसके भाइयों
का मुखिया और अगुवा ठहराया, क्योंकि
वह चाहता था कि उसके बाद अबियाह
राजा बने। 23 रहूबियाम ने समझ से
काम लिया और अपने कुछ बेटों को
यहूदा और बिन्यामीन के सभी प्रदेशों
के सभी किलेबंद शहरों में भेज दिया*[1]
और उन्हें खाने-पीने की चीज़ें बहुतायत में
दीं और बहुत-सी औरतों से उनकी शादी
करायी।

12 जैसे ही रहूबियाम का राज मज़-
बूती से कायम हो गया[2] और वह
ताकतवर बन गया, उसने और पूरे इस-
राएल ने यहोवा का कानून मानना छोड़
दिया।[3] 2 रहूबियाम के राज के पाँचवें
साल में मिस्र के राजा शीशक[4] ने यरू-
शलेम पर हमला किया, क्योंकि इस-
राएलियों ने यहोवा के साथ विश्‍वास-
घात किया था। 3 राजा शीशक मिस्र से
अपने साथ 1,200 रथ, 60,000 घुड़-
सवार और सैनिकों की अनगिनत टुक-
ड़ियाँ लेकर आया। उसकी सेना में
लिबिया और इथियोपिया के लोगों की
सेना और सुक्कियों की सेना थीं।[5]
4 उसने यहूदा के किलेबंद शहरों पर
कब्ज़ा कर लिया और यरूशलेम तक आ
गया।

5 भविष्यवक्ता शमायाह[6] रहूबियाम
और यहूदा के हाकिमों के पास आया,
जो शीशक की वजह से यरूशलेम में
इकट्ठा हुए थे। शमायाह ने उनसे कहा,
"यहोवा ने कहा है, 'तुमने मुझे छोड़
दिया है इसलिए मैंने तुम्हें छोड़ दिया[7]
और शीशक के हवाले कर दिया है।'"
6 इस पर राजा और इसराएल के
हाकिमों ने खुद को नम्र किया[8] और
कहा, "यहोवा नेक है।" 7 जब यहोवा
ने देखा कि उन्होंने खुद को नम्र किया
है, तो यहोवा का यह संदेश शमायाह के
पास पहुँचा, "उन्होंने खुद को नम्र किया
है। इसलिए मैं उन्हें नाश नहीं करूँगा[9]
और बहुत जल्द उन्हें छुड़ाऊँगा। मैं

11:15 * शा., "बकरों।"

11:23 * या "तितर-बितर कर दिया।"

अध्या. 11
1 लैव 17:7
2 1रा 12:26, 28
3 1रा 13:33
4 व्य 12:11; 1इत 22:1; 2इत 15:8, 9; 2इत 30:10, 11
5 1शम 16:6; 1शम 17:13
6 2शम 13:1; 2शम 18:33
7 1रा 15:1; 2इत 12:16; मत 1:7
8 व्य 17:17

दूसरा कॉल.
1 2इत 11:5, 11

अध्या. 12
2 2इत 11:17
3 व्य 32:15; 2इत 26:11, 16
4 1रा 11:40; 1रा 14:25
5 नहू 3:9
6 1रा 12:22-24
7 व्य 28:15; 2इत 15:2
8 2इत 33:10, 12
9 1रा 21:29; 2इत 34:26, 27

शीशक के ज़रिए यरूशलेम पर अपने
क्रोध का प्याला नहीं उँडेलूँगा। **8** फिर
भी, वे उसके सेवक बन जाएँगे और तब
वे जान लेंगे कि मेरी सेवा करने और दूसरे
देशों के राजाओं* की सेवा करने में क्या
फर्क है।”

9 इसलिए मिस्र के राजा शीशक ने
यरूशलेम पर हमला कर दिया। वह
यहोवा के भवन का खज़ाना और राजा
के महल का खज़ाना लूट ले गया।[1] वह
सबकुछ ले गया, यहाँ तक कि सोने की
वे ढालें भी जो सुलैमान ने बनवायी थीं।[2]
10 इसलिए राजा रहूबियाम ने उन ढालों
के बदले ताँबे की ढालें बनवायीं और
उनकी देखभाल की ज़िम्मेदारी उन पहरे-
दारों के सरदारों को दी जो राजमहल के
प्रवेश पर पहरा देते थे। **11** जब भी
राजा यहोवा के भवन में आता तो पहरे-
दार अंदर आते और ये ढालें लेकर
चलते और फिर उन्हें वापस पहरेदारों के
खाने में रख देते थे। **12** राजा ने खुद
को नम्र किया था, इसलिए यहोवा ने
अपना क्रोध उस पर नहीं भड़काया[3] और
उन्हें पूरी तरह नाश नहीं किया।[4] इसके
अलावा, यहूदा के लोगों में कुछ अच्छाइ-
याँ पायी गयी थीं।[5]

13 राजा रहूबियाम यरूशलेम में
ताकतवर होता गया और वह राज करता
रहा। जब वह राजा बना तब वह 41
साल का था और उसने 17 साल यरू-
शलेम में रहकर राज किया, जिसे यहोवा ने
इसराएल के सभी गोत्रों में से इसलिए चुना
था कि उस शहर से उसका नाम जुड़ा रहे।
राजा की माँ नामा एक अम्मोनी औरत
थी।[6] **14** मगर रहूबियाम ने बुरे काम
किए क्योंकि उसने अपने दिल में यहोवा की
खोज करने की नहीं ठानी थी।[7]

15 रहूबियाम का शुरू से लेकर
आखिर तक का पूरा इतिहास भविष्य-
वक्ता शमायाह और दर्शी इद्दो के
लेखनों में लिखा गया[1] जो वंशावली के
रूप में है। और रहूबियाम और यारो-
बाम के बीच लगातार युद्ध चलता रहा।[2]
16 फिर रहूबियाम की मौत हो गयी*
और उसे दाविदपुर में दफनाया गया।[3]
रहूबियाम की जगह उसका बेटा अबी-
याह[4] राजा बना।

13 अबियाह जब यहूदा का राजा
बना तब यारोबाम के राज का
18वाँ साल चल रहा था।[5] **2** अबियाह
ने यरूशलेम में रहकर तीन साल राज
किया। उसकी माँ का नाम मीकायाह
था,[6] जो गिबा[7] के रहनेवाले उरीएल की
बेटी थी। अबियाह और यारोबाम के बीच
युद्ध हुआ।[8]

3 अबियाह तालीम पाए हुए*
4,00,000 वीर योद्धाओं को लेकर युद्ध
करने गया।[9] और यारोबाम ने उसका
मुकाबला करने के लिए तालीम पाए हुए*
8,00,000 वीर योद्धाओं को तैनात
किया। **4** अबियाह, समारैम पहाड़ पर
खड़ा हुआ जो एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में है
और उसने कहा, “हे यारोबाम और पूरे
इसराएल, मेरी बात सुनो। **5** क्या तुम
नहीं जानते कि इसराएल के परमेश्वर
यहोवा ने दाविद और उसके बेटों[10] के
साथ नमक का करार*[11] करके इस-
राएल का राज सदा के लिए उन्हें
दे दिया है?[12] **6** मगर नबात का बेटा
यारोबाम,[13] जो दाविद के बेटे सुलैमान

अध्य. 12
1 1रा 7:51
2 1रा 10:16, 17; 1रा 14:25-28
3 2इत 33:10, 12
4 विल 3:22
5 उत 18:23-25; 1रा 14:1, 13; 2इत 19:2, 3
6 व्य 23:3; 1रा 11:1; 1रा 14:21
7 1शम 7:3; 1रा 18:21; मर 12:30

दूसरा कॉल.
1 1रा 12:22-24; 2इत 9:29; 2इत 13:22
2 1रा 14:30, 31
3 2शम 5:9
4 मत 1:7

अध्य. 13
5 1रा 15:1, 2
6 2इत 11:20, 21
7 यह 18:28; 1शम 10:26
8 1रा 15:6
9 2इत 11:1
10 2शम 7:12, 13; 1इत 17:11, 14; लूक 1:32
11 भज 89:28, 29
12 उत 49:10; 2शम 7:8; भज 78:70, 71
13 2इत 10:2

12:8 *शा., “राज्यों।”

12:16 *शा., “अपने पुरखों के साथ सो गया।” **13:3** *शा., “चुने हुए।” **13:5** *यानी यह करार सदा के लिए है और कभी नहीं बदलेगा।

का सेवक था, अपने मालिक के खिलाफ खड़ा हुआ और बगावत करने लगा।[1] **7** और निकम्मे और आलसी आदमी उसके पास इकट्ठा होते गए। वे सुलैमान के बेटे रहूबियाम से ज़्यादा ताकतवर निकले क्योंकि रहूबियाम छोटा और बुज़दिल था और वह उनके आगे टिक नहीं पाया।

8 और अब तुम सोचते हो कि तुम यहोवा के राज के खिलाफ खड़े हो सकोगे, जो दाविद के बेटों के हाथ में है क्योंकि तुम गिनती में बहुत ज़्यादा हो और तुम्हारे पास सोने के वे बछड़े हैं जिन्हें यारोबाम ने बनाया कि वे तुम्हारे देवता हों।[2] **9** तुम लोगों ने यहोवा के याजकों को भगा दिया[3] जो हारून के वंशज हैं और लेवियों को भी भगा दिया और उनके बदले खुद ही दूसरे आदमियों को याजक बना दिया, जैसे दूसरे देशों के लोग करते हैं।[4] जो भी एक बैल और सात मेढ़े लेकर आता है,* वह उन मूरतों का याजक बन जाता है जो ईश्वर नहीं हैं। **10** लेकिन हमारा परमेश्वर यहोवा है[5] और हमने उसे नहीं छोड़ा है। हमारे याजक हारून के वंशज हैं, जो यहोवा की सेवा करते हैं और लेवी उनकी मदद करते हैं। **11** वे हर दिन सुबह-शाम यहोवा के लिए होमबलियाँ चढ़ाते हैं ताकि उनका धुआँ उठे,[6] सुगंधित धूप जलाते हैं,[7] शुद्ध सोने की मेज़ पर रोटियों का ढेर*[8] रखते हैं और हर शाम सोने की दीवट[9] और उसके दीए जलाते हैं[10] क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा की तरफ हमारी जो ज़िम्मेदारी बनती है उसे हम निभाते हैं। मगर तुम लोगों ने उसे छोड़ दिया है। **12** अब देखो, सच्चा परमेश्वर हमारे साथ है और हमारी अगुवाई कर रहा है। उसके याजक भी हमारे साथ हैं, जो तुम्हारे खिलाफ युद्ध का ऐलान करने के लिए हाथ में तुरहियाँ लिए हुए हैं। इसराएल के आदमियो, अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा से युद्ध मत करो क्योंकि तुम कामयाब नहीं होगे।"[1]

13 मगर यारोबाम ने उनके पीछे सैनिकों को घात में बिठाया, इसलिए उसका एक सेना-दल यहूदा के सामने था और घात लगाए हुए सैनिक पीछे थे। **14** जब यहूदा के आदमी पीछे मुड़े तो उन्होंने देखा कि अब उन पर आगे-पीछे दोनों तरफ से हमला होनेवाला है। वे मदद के लिए यहोवा को पुकारने लगे[2] और याजक ज़ोर-ज़ोर से तुरहियाँ फूँकने लगे। **15** फिर यहूदा के आदमियों ने ज़ोर से युद्ध की पुकार लगायी। जब उन्होंने ऐसा किया तो सच्चे परमेश्वर ने अबियाह और यहूदा के सामने यारोबाम और पूरे इसराएल को हरा दिया। **16** इसराएली यहूदा के सामने से भाग गए और परमेश्वर ने उन्हें यहूदा के आदमियों के हाथ में कर दिया। **17** अबियाह और उसके लोगों ने इतनी मार-काट मचायी कि इसराएल के तालीम पाए हुए* 5,00,000 सैनिक मारे गए। **18** इस तरह इसराएल के लोगों को नीचा दिखाया गया, जबकि यहूदा के लोग ताकतवर साबित हुए क्योंकि उन्होंने अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखा था।[3] **19** अबियाह, यारोबाम का पीछा करता गया और उसने यारोबाम से कुछ शहर ले लिए। उसने बेतेल[4] और उसके आस-पास के नगरों पर, यशाना और उसके आस-पास के नगरों पर और एप्रोन[5]

अध्य. 13
1 1रा 11:26, 27; 1रा 12:20
2 1रा 12:26, 28; 2इत 11:15
3 2इत 11:14
4 1रा 12:31, 33; 1रा 13:33
5 2इत 11:16
6 निर्ग 29:39
7 निर्ग 30:1
8 निर्ग 25:30
9 निर्ग 25:31
10 निर्ग 27:20

दूसरा कॉल.
1 गि 10:9
2 2इत 14:11; 2इत 18:31
3 2रा 18:1, 5; 1इत 5:20; 2इत 16:8; भज 22:5; भज 37:5; नहू 1:7
4 1रा 12:28, 29
5 यूह 11:54

13:9 *शा., "अपना हाथ भरने आता है।"
13:11 *यानी नज़राने की रोटी।
13:17 *शा., "चुने हुए।"

और उसके आस-पास के नगरों पर कब्ज़ा कर लिया। **20** अबियाह के राज के दौरान यारोबाम फिर कभी पहले की तरह ताकतवर नहीं बन सका। इसके बाद यहोवा ने उसे सज़ा दी और वह मर गया।[1]

21 मगर अबियाह का राज मज़बूत होता गया। कुछ समय बाद उसने 14 औरतों से शादी की[2] और उसके 22 बेटे और 16 बेटियाँ हुईं। **22** अबियाह की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसने जो-जो काम किए और बातें कहीं, उनका ब्यौरा भविष्यवक्ता इद्दो के लेखनों* में लिखा है।[3]

14 फिर अबियाह की मौत हो गयी* और उसे दाविदपुर[4] में दफनाया गया। उसकी जगह उसका बेटा आसा राजा बना। उसके राज के दस सालों के दौरान देश में शांति थी।

2 आसा ने वही किया जो उसके परमेश्वर यहोवा की नज़र में सही और भला था। **3** उसने पराए देवताओं की वेदियाँ और ऊँची जगह मिटा दीं,[5] पूजा-स्तंभ चूर-चूर कर दिए[6] और पूजा-लाठें* काट डालीं।[7] **4** और उसने यहूदा के लोगों को बढ़ावा दिया कि वे अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा की खोज करें और उसके कानून और उसकी आज्ञाओं का पालन करें। **5** उसने यहूदा के सब शहरों में से ऊँची जगह और धूप-स्तंभ निकाल दिए[8] और उसके राज में यहूदा देश में चैन रहा। **6** उसने यहूदा में किलेबंद शहर बनाए[9] क्योंकि इन सालों के दौरान देश में चैन था और किसी ने आसा से युद्ध नहीं किया। यहोवा ने उसे शांति दी थी।[1] **7** आसा ने यहूदा के लोगों से कहा, "आओ हम ये शहर बनाएँ, इनके चारों तरफ शहरपनाह, मीनारें,[2] फाटक* और बेड़े बनाएँ। यह देश हमारे अधिकार में है क्योंकि हमने अपने परमेश्वर यहोवा की खोज की है। हमने उसकी खोज की और उसने हमें चारों तरफ शांति दी है।" इसलिए वे शहर बनाने में कामयाब रहे।[3]

8 आसा की सेना में यहूदा के 3,00,000 आदमी थे जो बड़ी ढालों और भालों से लैस थे। और बिन्यामीन गोत्र के 2,80,000 वीर योद्धा थे जो छोटी ढालों* और तीर-कमान से लैस थे।[4]

9 बाद में इथियोपिया का जेरह 10,00,000 आदमियों और 300 रथों की सेना के साथ उन पर हमला करने आया।[5] जब वह मारेशाह पहुँचा,[6] **10** तो आसा उसका मुकाबला करने गया। आसा ने अपनी सेना को मारेशाह के सापता घाटी में तैनात किया। **11** फिर आसा ने अपने परमेश्वर यहोवा को यह कहकर पुकारा,[7] "हे यहोवा, तू जिन लोगों की मदद करना चाहता है, उनकी मदद ज़रूर कर सकता है, फिर चाहे वे गिनती में ज़्यादा हों या उनके पास ताकत न हो।[8] हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हमारी मदद कर क्योंकि हमने तुझ पर भरोसा किया है[9] और तेरे नाम से हम इस विशाल सेना का मुकाबला करने आए हैं।[10] हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है। नश्वर इंसान को तुझ पर जीत हासिल करने न दे।"[11]

12 इसलिए यहोवा ने आसा और यहूदा के सामने इथियोपिया के लोगों को हरा दिया और वे लोग भाग गए।[12]

13:22 *या "वर्णन; टिप्पणी।" **14:1** *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।" **14:3** *शब्दावली देखें।

14:7 *शा., "दो पल्लेवाले फाटक।" **14:8** *ये ढालें अकसर तीरंदाज़ ढोते थे।

अध्य. 13

1 1शम 25:38, 1रा 14:20, प्रेष 12:21-23
2 व्य 17:17
3 2इत 9:29, 2इत 12:15

अध्य. 14

4 2शम 5:9
5 व्य 7:5
6 निर्ग 23:24
7 1रा 14:22, 23, 2रा 18:1, 4
8 2इत 34:1, 4
9 2इत 11:5

दूसरा कॉल.

1 2इत 15:15, नीत 16:7
2 2इत 32:2, 5
3 भज 127:1
4 2इत 11:1, 12, 2इत 13:3
5 2इत 16:8
6 यह 15:20, 44, 2इत 11:5, 8
7 निर्ग 14:10, 1इत 5:20, 2इत 32:20
8 न्या 7:7, 1शम 14:6
9 2इत 13:12, 2इत 32:7, 8
10 1शम 17:45, भज 20:5, नीत 18:10
11 यह 7:9, भज 9:19
12 व्य 28:7

13 आसा और उसके लोगों ने दूर गरार[1] तक इथियोपिया के लोगों का पीछा किया और वे उन्हें तब तक घात करते गए जब तक कि उनमें से एक भी ज़िंदा न बचा। यहोवा और उसकी सेना ने इथियोपिया के लोगों को कुचल दिया। इसके बाद यहूदा के लोग लूट का ढेर सारा माल लेकर चल दिए। **14** उन्होंने गरार के आस-पास के सभी शहरों को भी नाश कर दिया क्योंकि उन शहरों में यहोवा का खौफ समा गया था। यहूदा के लोगों ने उन सभी शहरों को लूट लिया क्योंकि वहाँ लूट के लिए ढेर सारा माल था। **15** उन्होंने उन तंबुओं पर भी हमला किया जिनमें मवेशी पालनेवाले रहते थे। उन्होंने भारी तादाद में उनकी भेड़-बकरियाँ और ऊँट ले लिए और इसके बाद वे यरूशलेम लौट गए।

15 परमेश्वर की पवित्र शक्ति ओदेद के बेटे अजरयाह पर आयी। **2** तब अजरयाह आसा से मिलने गया और उससे कहा, "हे आसा और यहूदा और बिन्यामीन के सब लोगो, मेरी बात सुनो! यहोवा तब तक तुम्हारे साथ रहेगा जब तक तुम उसके साथ रहोगे।[2] अगर तुम उसकी खोज करोगे तो वह तुम्हें मिलेगा,[3] लेकिन अगर तुम उसे छोड़ दोगे तो वह भी तुम्हें छोड़ देगा।[4] **3** इसराएल काफी लंबे समय* तक बिना सच्चे परमेश्वर के, बिना सिखानेवाले याजक के और बिना कानून के रहा था।[5] **4** मगर जब वे संकट में पड़ गए और इसराएल के परमेश्वर यहोवा के पास लौट आए और उसकी खोज करने लगे, तो वह उन्हें मिला।[6] **5** उन दिनों कोई भी सही-सलामत कहीं सफर नहीं कर सकता था* क्योंकि देश के सब लोगों में काफी खलबली मची हुई थी। **6** एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को और एक शहर दूसरे शहर को कुचल रहा था, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर हर तरह का संकट लाकर उन्हें गड़बड़ी में डाल दिया था।[1] **7** मगर तुम लोग मज़बूत बने रहो और हिम्मत न हारो*[2] क्योंकि तुम्हें अपने काम का इनाम मिलेगा।"

8 जैसे ही आसा ने अजरयाह के ये शब्द और भविष्यवक्ता ओदेद की भविष्यवाणी सुनी, उसे हिम्मत मिली और उसने यहूदा और बिन्यामीन के पूरे इलाके से और एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के उन शहरों से, जिन पर उसने कब्ज़ा किया था, घिनौनी मूरतें निकाल दीं।[3] उसने यहोवा की वेदी ठीक की, जो यहोवा के भवन के बरामदे के सामने थी।[4] **9** उसने यहूदा और बिन्यामीन के सब लोगों को और एप्रैम, मनश्शे और शिमोन के इलाकों में रहनेवाले परदेसियों को इकट्ठा किया। ये परदेसी बड़ी तादाद में इसराएल छोड़कर आसा के पास आ गए थे[5] क्योंकि उन्होंने देखा था कि आसा का परमेश्वर यहोवा उसके साथ है। **10** उन सबको आसा के राज के 15वें साल के तीसरे महीने में यरूशलेम में इकट्ठा किया गया। **11** उस दिन उन्होंने लूट के माल से, जो वे लाए थे, 700 बैलों और 7,000 भेड़ों को यहोवा के लिए बलि किया। **12** साथ ही, उन्होंने यह करार किया कि वे पूरे दिल और पूरी जान से अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा की खोज करेंगे।[6] **13** जो कोई इसराएल के परमेश्वर यहोवा की खोज नहीं करेगा वह

15:3 *शा., "बहुत दिनों।"

15:5 *शा., "न बाहर जानेवाले को शांति थी न अंदर आनेवाले को।" **15:7** *शा., "तुम्हारे हाथ ढीले न पड़ें।"

अध्य. 14
1 उत 20:1

अध्य. 15
2 याकू 4:8
3 यश 55:6
4 1इत 28:9; इब्र 10:38
5 व्य 33:8, 10; 2इत 17:8, 9; मला 2:7
6 भज 106:43, 44; यश 55:7

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:15, 48
2 यह 1:9; 1इत 28:20
3 2रा 23:24
4 2इत 8:12
5 2इत 11:16; 2इत 30:25
6 व्य 4:29; 2रा 23:3; नहे 10:28, 29

मार डाला जाएगा, फिर चाहे वह छोटा
हो या बड़ा, आदमी हो या औरत।[1]
14 उन्होंने तुरहियाँ और नरसिंगे फूँकते
हुए ज़ोरदार आवाज़ में यहोवा से शपथ
खायी और खुशी से जयजयकार की।
15 इस शपथ पर सारे यहूदा के लोगों ने
खुशियाँ मनायीं, क्योंकि उन्होंने पूरे दिल
से शपथ खायी थी और पूरे जोश से
उसकी खोज की थी और वह उन्हें
मिला।[2] यहोवा उन्हें हर तरफ से शांति
देता रहा।[3]

16 यहाँ तक कि राजा आसा ने
अपनी दादी माका[4] को राजमाता के
पद से हटा दिया क्योंकि माका ने पूजा-
लाठ* की उपासना के लिए एक
अश्लील मूरत खड़ी करवायी थी।[5] आसा
ने उसकी अश्लील मूरत काट डाली,
उसे चूर-चूर करके किदरोन घाटी में जला
दिया।[6] **17** मगर इसराएल से ऊँची
जगह नहीं मिटायी गयीं।[7] फिर भी आसा
का दिल सारी ज़िंदगी परमेश्वर पर पूरी
तरह लगा रहा।[8] **18** वह सच्चे पर-
मेश्वर के भवन में वह सारा सोना, चाँदी
और दूसरी चीज़ें ले आया जो उसने
और उसके पिता ने पवित्र ठहरायी थीं।[9]
19 आसा के राज के 35वें साल तक
कोई युद्ध नहीं हुआ।[10]

16 आसा के राज के 36वें साल
में इसराएल के राजा बाशा[11]
ने यहूदा पर हमला बोल दिया। वह
रामाह[12] को बनाने* लगा ताकि न तो
उसके यहाँ से कोई यहूदा के राजा आसा
के इलाके में जा सके और न वहाँ से कोई
यहाँ आ सके।[13] **2** तब आसा ने यहोवा
के भवन के खज़ाने और राजमहल के
खज़ाने से सोना-चाँदी निकाला[1] और
सीरिया के राजा बेन-हदद के पास भेजा,[2]
जो दमिश्क में रहता था और उससे कहा,
3 "जैसे तेरे पिता और मेरे पिता के बीच
संधि* थी वैसे ही हम दोनों के बीच भी
संधि है। देख, मैं तेरे लिए सोना-चाँदी
भेज रहा हूँ। तू आकर इसराएल के राजा
बाशा के साथ अपनी संधि तोड़ दे। तब
वह मेरा इलाका छोड़कर चला जाएगा।"

4 बेन-हदद ने राजा आसा की बात
मान ली और अपने सेनापतियों को इस-
राएल के शहरों पर हमला करने भेजा।
उन्होंने जाकर इय्योन,[3] दान[4] और
आबेल-मैम को और नप्ताली के शहरों
के सभी गोदामों को नाश कर दिया।[5]
5 जब इसकी खबर बाशा को मिली तो
उसने रामाह को बनाने* का काम फौरन
रोक दिया और काम वहीं बंद कर
दिया। **6** फिर राजा आसा ने यहूदा के
सभी लोगों को लिया और वे रामाह[6] से
वे सारे पत्थर और शहतीरें उठाकर ले
गए जिनसे बाशा, रामाह शहर बना रहा
था।[7] उन चीज़ों से आसा ने गेबा[8] और
मिसपा[9] शहर बनाए।*

7 तब हनानी[10] दर्शी यहूदा के राजा
आसा के पास आया और उसने उससे
कहा, "तूने अपने परमेश्वर यहोवा पर
भरोसा करने के बजाय सीरिया के राजा
पर भरोसा किया, इसलिए सीरिया के
राजा की सेना तेरे हाथ से निकल गयी
है।[11] **8** क्या इथियोपिया और लिबिया
के लोगों की एक बहुत बड़ी और विशाल
सेना नहीं आयी थी? क्या उनके बहुत-
से रथ और घुड़सवार नहीं थे? फिर भी
यहोवा ने उन्हें तेरे हाथ में कर दिया था
क्योंकि तूने उस पर भरोसा किया था।[12]

15:16 *शब्दावली देखें। **16:1, 5** *या "मज़बूत करने; दोबारा बनाने।"

16:3 *या "करार।" **16:6** *या "मज़बूत किए; दोबारा बनाए।"

अध्य. 15
1 निर्ग 22:20
2 2इत 15:2
3 नीत 16:7
4 1रा 15:9, 10
5 व्य 13:6-9
6 1रा 15:13, 14
7 1रा 14:22, 23; 1रा 22:43; 2रा 14:3, 4; 2रा 23:19, 20
8 1रा 8:61
9 1रा 7:51; 1रा 15:15; 1इत 26:26
10 2इत 14:1

अध्य. 16
11 1रा 15:25, 27
12 यह 18:21, 25
13 1रा 15:17-19

दूसरा कॉल.
1 1रा 7:51
2 1रा 20:1; 2रा 12:18; 2रा 16:8
3 2रा 15:29
4 न्या 18:29
5 1रा 15:20-22
6 यह 18:21, 25
7 1रा 15:17
8 यह 18:21, 24; 1इत 6:60, 64
9 यह 18:21, 26; न्या 20:1
10 1रा 16:1; 2इत 19:2; 2इत 20:34
11 यिर्म 17:5
12 2इत 14:9, 11; भज 37:39, 40

9 यहोवा की आँखें सारी धरती पर इस-
लिए फिरती रहती हैं[1] कि वह उन
लोगों की खातिर अपनी ताकत दिखाए*
जिनका दिल उस पर पूरी तरह लगा
रहता है।[2] तूने इस मामले में मूर्खता का
काम किया है इसलिए अब से तू लड़ाइयों
में उलझा रहेगा।”[3]

10 मगर आसा को यह बात बहुत
बुरी लगी। इसलिए वह दर्शी पर भड़क
उठा और उसे कैद में डाल दिया। और
आसा बाकी लोगों के साथ भी बुरा
सलूक करने लगा। 11 आसा का शुरू
से लेकर आखिर तक का पूरा इतिहास,
यहूदा और इसराएल के राजाओं की
किताब में लिखा है।[4]

12 अपने राज के 39वें साल में
आसा के पैरों में एक रोग लग गया और
वह बहुत बीमार हो गया। मगर अपनी
बीमारी में भी वह मदद के लिए यहोवा के
पास नहीं गया बल्कि वैद्यों के पास गया।
13 फिर आसा अपने राज के 41वें
साल में मर गया।*[5] 14 उसे दाविद-
पुर[6] में एक शानदार कब्र में दफनाया
गया, जो उसने खुद के लिए बनवायी थी।
उसकी लाश जिस अर्थी पर रखी गयी
थी, उसे बलसाँ के तेल और अलग-अलग
मसालों और सुगंधित तेलों से बनाए
मिश्रण से भरा गया था।[7] इसके अलावा,
उसके सम्मान में एक बड़ी आग जलायी
गयी थी।*

17 आसा की जगह उसका बेटा
यहोशापात[8] राजा बना और वह
इसराएल में ताकतवर होता गया।
2 उसने यहूदा के सभी किलेबंद शहरों
में सेना की टुकड़ियाँ तैनात कीं और
यहूदा देश में और एप्रैम के उन शहरों
में सैनिकों की चौकियाँ बनायीं जिन पर
उसके पिता आसा ने कब्ज़ा किया था।[1]
3 यहोवा यहोशापात के साथ रहा क्योंकि
वह उन राहों पर चला जिन पर उसका
पुरखा दाविद गुज़रे वक्त में चला था[2]
और वह बाल देवताओं की तरफ नहीं
फिरा। 4 यहोशापात ने अपने पिता
के परमेश्वर की खोज की[3] और
उसकी आज्ञाएँ मानीं* और इसराएल के
तौर-तरीके नहीं अपनाए।[4] 5 यहोवा
उसका राज मज़बूत करता रहा[5] और
यहूदा के सभी लोग यहोशापात को तोहफे
दिया करते थे। उसने खूब दौलत और
शोहरत हासिल की।[6] 6 उसने यहोवा
की राहों पर चलने के लिए हिम्मत से
काम लिया, यहाँ तक कि यहूदा से ऊँची
जगह और पूजा-लाठें* निकाल दीं।[7]

7 अपने राज के तीसरे साल उसने
इन हाकिमों को बुलवाया: बेन-हैल, ओब-
द्याह, जकरयाह, नतनेल और मीकायाह।
उसने अपने इन हाकिमों को यहूदा के
शहरों में सिखाने भेजा। 8 उनके साथ
ये लेवी भी थे: शमायाह, नतन्याह, जब-
द्याह, असाहेल, शमीरामोत, यहोनातान,
अदोनियाह, तोबियाह और तोब-अदो-
नियाह। साथ ही, याजक एलीशामा और
याजक यहोराम भी थे।[8] 9 वे यहोवा
के कानून की किताब अपने साथ लिए
हुए यहूदा में सिखाने लगे।[9] उन्होंने सभी
शहरों में घूम-घूमकर लोगों को सिखाया।

10 यहूदा के आस-पास के सभी
राज्यों में यहोवा का खौफ छा गया
और उन्होंने यहोशापात से लड़ाई नहीं
की। 11 पलिश्ती लोग यहोशापात को

16:9 *या “उन लोगों का साथ दे।” 16:13 *शा., “अपने पुरखों के साथ सो गया।” 16:14 *ज़ाहिर है, आसा की लाश नहीं बल्कि मसाले जलाए गए थे।

17:4 *शा., “आज्ञाओं पर चला।” 17:6 *शब्दावली देखें।

अध्य. 16
1 जक 4:10
2 1पत 3:12
3 1रा 15:32
4 1रा 15:23
5 1रा 15:24
6 2शम 5:7
7 मर 16:1, लूक 23:55, 56, यूह 19:40

अध्य. 17
8 1रा 15:24, 1रा 22:41

दूसरा कॉल.
1 2इत 15:8
2 2शम 8:15
3 व्य 4:29, 2इत 26:1, 5
4 1रा 12:28-30, 1रा 13:33
5 1रा 9:4, 5, भज 132:12
6 2इत 18:1
7 व्य 7:5, 1रा 22:42, 43
8 व्य 33:8, 10, मला 2:7
9 व्य 31:11, यह 1:7, 8, नहे 8:7

नज़राने में तोहफे और पैसे दिया करते
थे। अरबी लोगों ने अपने जानवरों के
झुंड में से 7,700 मेढ़े और 7,700
बकरे लाकर उसे दिए।

12 यहोशापात दिनों-दिन ताकतवर
होता गया[1] और वह यहूदा में किले
और गोदामवाले शहर बनाता गया।[2]
13 उसने यहूदा के शहरों में बड़े-बड़े
काम करवाए और यरूशलेम में उसके
वीर योद्धा थे। **14** उन्हें अपने-अपने
पिता के घराने के मुताबिक इन दलों में
बाँटा गया थाः यहूदा गोत्र में हज़ारों
के प्रधान ये थे, सेनापति अदनाह और
उसके साथ 3,00,000 वीर योद्धा।[3]
15 उसकी कमान के नीचे सेनापति यहो-
हानान था और उसके साथ 2,80,000
सैनिक थे। **16** अदनाह की कमान के
नीचे जिक्री का बेटा अमस्याह भी था, जो
यहोवा की सेवा के लिए खुद आगे
आया था और उसके साथ 2,00,000
वीर योद्धा थे। **17** बिन्यामीन गोत्र[4] में
से एल्यादा एक वीर योद्धा था और
उसके साथ 2,00,000 सैनिक थे जो
तीर-कमान और ढालों से लैस थे।[5]
18 एल्यादा की कमान के नीचे यहोजा-
बाद था और उसके साथ 1,80,000
हथियारबंद सैनिक थे। **19** वे राजा की
सेवा करते थे। उनके अलावा राजा के
और भी सैनिक थे जिन्हें उसने पूरे यहूदा
के किलेबंद शहरों में तैनात किया था।[6]

18 यहोशापात ने खूब दौलत और
शोहरत हासिल की थी,[7] मगर
उसने अहाब से रिश्तेदारी कर ली।[8]
2 इसलिए कुछ साल बाद यहोशापात,
अहाब से मिलने सामरिया गया।[9] अहाब
ने उसके लिए और उसके साथ आए लोगों
के लिए बहुत-सी भेड़ों और गाय-बैलों
का बलिदान किया। और उसने यहोशा-
पात को रामोत-गिलाद[1] पर हमला करने
के लिए कायल कर दिया। **3** फिर इस-
राएल के राजा अहाब ने यहूदा के
राजा यहोशापात से कहा, "क्या तू युद्ध
करने मेरे साथ रामोत-गिलाद चलेगा?"
यहोशापात ने उससे कहा, "हम दोनों एक
हैं और मेरे लोग तेरे ही लोग हैं। हम युद्ध
में ज़रूर तेरा साथ देंगे।"

4 मगर यहोशापात ने इसराएल के
राजा से कहा, "क्यों न हम पहले यहोवा
से पूछें कि उसकी क्या सलाह है?"[2]
5 इसलिए इसराएल के राजा ने सभी
भविष्यवक्ताओं को इकट्ठा किया जो
400 थे। उसने उनसे पूछा, "क्या हम
रामोत-गिलाद पर हमला करने जाएँ?"
उन्होंने कहा, "जा, तू हमला कर, सच्चा
परमेश्वर उसे तेरे हाथ में कर देगा।"

6 फिर यहोशापात ने कहा, "क्या
यहाँ यहोवा का कोई भविष्यवक्ता नहीं
है?[3] चलो हम उसके ज़रिए भी पूछते
हैं।"[4] **7** तब इसराएल के राजा ने
यहोशापात से कहा, "एक और आदमी
है[5] जिसके ज़रिए हम यहोवा से सलाह
माँग सकते हैं, मगर मुझे उस आदमी से
नफरत है। वह मेरे बारे में कभी अच्छी
बातों की भविष्यवाणी नहीं करता, हमेशा
बुरी बातें कहता है।[6] वह यिम्ला का
बेटा मीकायाह है।" मगर यहोशापात ने
कहा, "राजा को ऐसी बात नहीं कहनी
चाहिए।"

8 तब इसराएल के राजा ने अपने
एक दरबारी को बुलाया और उससे कहा,
"यिम्ला के बेटे मीकायाह को फौरन यहाँ
ले आ।"[7] **9** इसराएल का राजा अहाब
और यहूदा का राजा यहोशापात, शाही
कपड़े पहने सामरिया के फाटक के
पास एक खलिहान में अपनी-अपनी राज-
गद्दी पर बैठे थे। सारे भविष्यवक्ता उन

अध्य. 17

1 2इत 18:1
2 1रा 9:19; 2इत 8:3, 4; 2इत 14:2, 6
3 2इत 13:3; 2इत 26:11-13
4 उत 49:27
5 2इत 14:8
6 2इत 11:5, 23

अध्य. 18

7 2इत 17:5
8 1रा 16:28, 33; 1रा 21:25
9 1रा 22:2-4; 2इत 19:2

दूसरा कॉल.

1 व्य 4:41-43; 1इत 6:77, 80
2 2शम 2:1; 1रा 22:5, 6
3 2रा 3:11
4 1रा 22:7, 8
5 1रा 18:4; 1रा 19:9, 10
6 यिर्म 38:4
7 1रा 22:9-12

दोनों के सामने भविष्यवाणी कर रहे
थे। **10** तब कनाना के बेटे सिदकियाह
ने अपने लिए लोहे के सींग बनवाए और
कहा, "तेरे लिए यहोवा का यह संदेश
है: 'तू सीरिया के लोगों को इनसे तब
तक मारता* रहेगा जब तक कि वे मिट
नहीं जाते।'" **11** बाकी भविष्यवक्ता
भी यही भविष्यवाणी कर रहे थे। वे कह
रहे थे, "जा, तू रामोत-गिलाद पर हमला
कर। तू ज़रूर कामयाब होगा,[1] यहोवा
उसे तेरे हाथ में कर देगा।"

12 मीकायाह को बुलाने के लिए जो
दूत गया था, उसने मीकायाह से कहा,
"देख, सारे भविष्यवक्ता राजा को एक
ही बात बता रहे हैं। वे उसे अच्छी
बातों की भविष्यवाणी सुना रहे हैं। इस-
लिए मेहरबानी करके तू भी उनकी तरह
कोई अच्छी बात सुना।"[2] **13** मगर
मीकायाह ने कहा, "यहोवा के जीवन
की शपथ, मैं वही बात बताऊँगा जो मेरा
परमेश्वर मुझे बताएगा।"[3] **14** फिर
मीकायाह राजा के पास आया और राजा
ने उससे पूछा, "मीकायाह, तू क्या कहता
है, हम रामोत-गिलाद पर हमला करें
या न करें?" उसने फौरन जवाब दिया,
"जा, तू रामोत-गिलाद पर हमला कर।
तू ज़रूर कामयाब होगा, वे तुम्हारे हाथ
में कर दिए जाएँगे।" **15** राजा ने उससे
कहा, "मैं तुझे कितनी बार शपथ धराकर
कहूँ कि तू यहोवा के नाम से मुझे सिर्फ
सच बताएगा?" **16** तब मीकायाह ने
कहा, "मैं देख रहा हूँ कि सारे इसराएली
पहाड़ों पर तितर-बितर हो गए हैं, उन
भेड़ों की तरह जिनका कोई चरवाहा नहीं
होता।[4] यहोवा कहता है, 'इनका कोई
मालिक नहीं है। इनमें से हर कोई शांति से
अपने घर लौट जाए।'"

18:10 * या "धकेलता।"

17 तब इसराएल के राजा ने यहोशा-
पात से कहा, "देखा, मैंने कहा था न,
यह आदमी मेरे बारे में अच्छी बातों की
भविष्यवाणी नहीं करेगा, सिर्फ बुरी बातें
कहेगा।"[1]

18 फिर मीकायाह ने कहा, "इसलिए
अब यहोवा का संदेश सुनो। मैंने देखा है
कि यहोवा अपनी राजगद्दी पर बैठा
है[2] और उसके दायीं और बायीं तरफ
स्वर्ग की सारी सेना खड़ी है।[3] **19** फिर
यहोवा ने कहा, 'इसराएल के राजा
अहाब को कौन बेवकूफ बनाएगा ताकि
वह रामोत-गिलाद जाए और वहाँ मारा
जाए?' तब सेना में से किसी ने कुछ
कहा तो किसी ने कुछ। **20** फिर एक
स्वर्गदूत[4] यहोवा के सामने आकर खड़ा
हुआ और उसने कहा, 'मैं अहाब को
बेवकूफ बनाऊँगा।' यहोवा ने पूछा,
'तू यह कैसे करेगा?' **21** उसने कहा,
'मैं जाकर उसके सभी भविष्यवक्ताओं
के मुँह से झूठ बुलवाऊँगा।' परमेश्वर
ने कहा, 'तू उसे बेवकूफ बना लेगा, तू
ज़रूर कामयाब होगा। जा, तूने जैसा कहा
है वैसा ही कर।' **22** इसलिए यहोवा ने
तेरे इन भविष्यवक्ताओं के मुँह से झूठ
बुलवाया है,[5] मगर यहोवा ने ऐलान
किया है कि तुझ पर संकट आएगा।"

23 तब कनाना का बेटा सिद-
कियाह,[6] मीकायाह[7] के पास गया और
उसके गाल पर ज़ोर से थप्पड़ मारा[8] और
कहा, "यहोवा का स्वर्गदूत कब से मुझे
छोड़कर तुझसे बात करने लगा है?"[9]
24 मीकायाह ने कहा, "इसका जवाब
तुझे उस दिन मिलेगा जब तू भागकर
अंदर के कमरे में जा छिपेगा।" **25** तब
इसराएल के राजा ने हुक्म दिया, "ले
जाओ इस मीकायाह को। इसे शहर
के प्रधान आमोन और राजा के बेटे

अध्य. 18
1 मी 3:5
2 1रा 22:13-17, यश 30:9, 10
3 यिर्म 23:28, प्रेष 20:27
4 लैव 26:14, 17, गि 27:16, 17

दूसरा कॉल.
1 1रा 22:18
2 यश 6:1, यहे 1:26, प्रक 20:11
3 1रा 22:19-23, अय 1:6, दान 7:9, 10
4 भज 104:4
5 यश 19:14, यहे 14:9
6 2इत 18:10
7 2इत 18:7
8 यिर्म 20:2, मर 14:65
9 1रा 22:24-28

योआश के हवाले कर दो। **26** उनसे
कहना, ‘राजा ने आदेश दिया है कि
इसे जेल में बंद कर दो[1] और जब
तक मैं सही-सलामत लौट नहीं आता तब
तक इसे नाम के लिए खाना-पानी देते
रहना।’” **27** मगर मीकायाह ने कहा,
“अगर तू सही-सलामत लौटा तो इसका
मतलब यह होगा कि यहोवा ने मेरे ज़रिए
बात नहीं की है।”[2] फिर उसने कहा,
“लोगो, तुम सब यह बात याद रखना।”

28 इसके बाद इसराएल का राजा
अहाब और यहूदा का राजा यहोशापात
रामोत-गिलाद गए।[3] **29** इसराएल के
राजा ने यहोशापात से कहा, “मैं अपना
भेस बदलकर युद्ध में जाऊँगा, मगर तू
अपने शाही कपड़े पहने रहना।” इस-
राएल के राजा ने भेस बदला और
वे दोनों युद्ध में गए। **30** वहाँ सीरिया
के राजा ने अपनी रथ-सेना के सेनापतियों
को यह हुक्म दिया था, “तुम लोग सीधे
इसराएल के राजा से युद्ध करना, उसके
सिवा किसी और से मत लड़ना, फिर चाहे
वह कोई मामूली सैनिक हो या बड़ा अधि-
कारी।” **31** जैसे ही रथ-सेना के सेना-
पतियों ने यहोशापात को देखा उन्होंने
सोचा, “यही इसराएल का राजा होगा।”
इसलिए वे सब यहोशापात पर हमला
करने लगे और वह मदद के लिए पुकार-
ने लगा।[4] यहोवा ने उसकी मदद की और
दुश्मनों को फौरन उससे दूर ले गया।
32 जैसे ही सेनापतियों को पता चला कि
वह इसराएल का राजा नहीं है, उन्होंने
उसका पीछा करना छोड़ दिया।

33 तब किसी सैनिक ने यूँ ही एक
तीर चलाया और वह तीर इसराएल के
राजा को वहाँ जा लगा जहाँ कवच और
बख्तर का दूसरा हिस्सा जुड़ा हुआ था।
राजा ने अपने सारथी से कहा, “रथ घुमा-
कर मुझे युद्ध के मैदान* से बाहर ले
जा, मैं बुरी तरह घायल हो गया हूँ।”[1]
34 पूरे दिन घमासान लड़ाई चलती रही
और इसराएल के राजा को सहारा देकर
शाम तक सीरिया के लोगों के सामने रथ
पर खड़ा रखना पड़ा। और सूरज ढलते-
ढलते वह मर गया।[2]

19 फिर यहूदा का राजा यहोशा-
पात सही-सलामत*[3] यरूशलेम
में अपने महल लौट आया। **2** तब
हनानी[4] दर्शी का बेटा येहू[5] राजा यहोशा-
पात से मिलने आया और उससे कहा,
“क्या तुझे एक दुष्ट की मदद करनी
चाहिए[6] और उन लोगों से प्यार करना
चाहिए जो यहोवा से नफरत करते हैं?[7]
इसलिए यहोवा का क्रोध तुझ पर भड़क
उठा है। **3** फिर भी तुझमें कुछ अच्छाइ-
याँ पायी गयी हैं[8] क्योंकि तूने देश से पूजा-
लाठें* निकाल दीं और सच्चे परमेश्वर
की खोज करने के लिए अपने दिल को
तैयार किया है।”#[9]

4 यहोशापात यरूशलेम में ही रहा
और वह एक बार फिर बेरशेबा से लेकर
एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश[10] तक रहनेवालों के
पास गया ताकि उन्हें उनके पुरखों के पर-
मेश्वर यहोवा के पास लौटा ले आए।[11]
5 साथ ही, यहूदा में जितने किलेबंद
शहर थे उनमें से हर शहर में उसने न्यायी
ठहराए[12] **6** और उनसे कहा, “तुम जो
न्याय करते हो उस पर ध्यान दो क्योंकि
तुम इंसान की तरफ से नहीं, यहोवा की
तरफ से न्याय करते हो। और जब तुम
फैसला सुनाते हो तो वह तुम्हारे साथ
रहता है।[13] **7** यहोवा का डर तुममें
बना रहे।[14] तुम अपना काम सावधानी

अध्य. 18
1 2इत 16:10; प्रेष 5:18
2 गि 16:29
3 यह 20:8; 1रा 22:29-33; 2इत 18:2
4 निर्ग 14:10; 2इत 13:14

दूसरा कॉल.
1 1रा 22:34, 35
2 2इत 18:22

अध्य. 19
3 2इत 18:31, 32
4 2इत 16:7
5 1रा 16:1
6 1रा 21:25
7 भज 139:21
8 1रा 14:1, 13
9 2इत 17:3-6
10 यह 17:14, 15
11 2इत 15:8
12 व्य 16:18
13 व्य 1:16, 17; भज 82:1
14 निर्ग 18:21

18:33 *शा., “मुझे छावनी।” **19:1** *या “शांति से।” **19:3** *शब्दावली देखें। #या “करने की तेरे दिल ने ठान ली है।”

से करना क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा कभी अन्याय नहीं करता,[1] किसी की तरफदारी नहीं करता[2] और न ही रिश्वत लेता है।”[3]

8 यहोशापात ने यरूशलेम में भी कुछ लेवियों, याजकों और इसराएल के पिताओं के घरानों के मुखियाओं को न्यायी ठहराया ताकि वे यहोवा की तरफ से यरूशलेम के लोगों के मुकदमे सुलझाएँ।[4] **9** उसने उन्हें आज्ञा दी, “तुम यहोवा का डर मानकर, विश्वासयोग्य बने रहकर और पूरे दिल से ऐसा करना: **10** जब भी दूसरे शहरों में रहनेवाले तुम्हारे भाई ऐसा मामला लाते हैं जिसमें किसी का खून किया गया हो[5] या किसी कानून, आज्ञा, नियम या न्याय-सिद्धांत को लेकर सवाल उठा हो तो तुम उन्हें आगाह करना ताकि वे यहोवा के सामने दोषी न ठहरें। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो परमेश्वर का क्रोध तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर भड़क उठेगा। तुम ऐसा ही करना ताकि तुम दोषी न ठहरो। **11** देखो, यहोवा से जुड़े हर मामले की देखरेख करने के लिए प्रधान याजक अमरयाह को तुम्हारा अधिकारी ठहराया गया है।[6] और राजा से जुड़े हर मामले की देखरेख करने के लिए जबद्याह को ठहराया गया है, जो इश्माएल का बेटा और यहूदा के घराने का अगुवा है। और लेवी तुम्हारे लिए अधिकारी के नाते सेवा करेंगे। तुम सब हिम्मत से काम लेना। यहोवा उनके साथ रहे जो भला करते हैं।”*[7]

20 बाद में मोआबी[8] और अम्मोनी[9] लोग और उनके साथ कुछ अम्मोनिम लोग* यहोशापात से युद्ध करने आए। **2** यहोशापात को यह खबर दी गयी: “सागर* के इलाके से, एदोम[1] से एक विशाल सेना तुझसे युद्ध करने आयी है। वे अभी हसासोन-तामार यानी एनगदी[2] में हैं।” **3** यह सुनकर यहोशापात डर गया और उसने यहोवा की खोज करने की ठानी।[3] इसलिए उसने पूरे यहूदा में उपवास का ऐलान किया। **4** फिर यहूदा के लोग यहोवा से मदद माँगने के लिए इकट्ठा हुए।[4] वे यहोवा से सलाह करने यहूदा के सब शहरों से आए।

5 यहूदा और यरूशलेम के लोगों की मंडली यहोवा के भवन में नए आँगन के सामने इकट्ठा हुई। तब यहोशापात मंडली के सामने खड़ा हुआ **6** और उसने कहा:

“हे यहोवा, हमारे पुरखों के परमेश्वर, क्या स्वर्ग में तू ही परमेश्वर नहीं है?[5] क्या राष्ट्रों के सब राज्यों पर तेरा ही अधिकार नहीं है?[6] तेरे हाथ में शक्ति और ताकत है और कोई तेरे खिलाफ खड़ा नहीं हो सकता।[7] **7** हे हमारे परमेश्वर, क्या तूने अपनी प्रजा इसराएल के सामने इस देश से लोगों को खदेड़ नहीं दिया था? और क्या तूने यह देश अपने दोस्त अब्राहम के वंश के लिए हमेशा की जागीर बनाकर नहीं दे दिया था?[8] **8** वे इस देश में बस गए और उन्होंने तेरे नाम की महिमा के लिए यहाँ एक पवित्र-स्थान बनाया[9] और कहा, **9** ‘अगर हम तलवार चलने, कड़ी सज़ा पाने या महामारी या अकाल की वजह से संकट में पड़ जाएँ, तो हमें इस भवन के सामने और तेरे सामने खड़े होने दे (क्योंकि तेरा नाम इस भवन से जुड़ा है)[10] और तुझे मदद के लिए पुकारने दे और तू

अध्य. 19
1 उत 18:25; व्य 32:4
2 प्रेष 10:34; रोम 2:11; 1पत 1:17
3 व्य 10:17; व्य 16:19
4 व्य 17:9; व्य 21:5; व्य 25:1
5 व्य 17:8
6 मला 2:7
7 2इत 15:2

अध्य. 20
8 न्या 3:14; 2शम 8:2; भज 83:2, 6
9 उत 19:36-38

दूसरा कॉल.
1 यह 15:1
2 यह 15:20, 62
3 2इत 19:1, 3
4 व्य 4:29-31
5 1रा 8:23; मत 6:9
6 1इत 29:11; दान 4:17
7 1इत 29:12; यश 40:15, 17; दान 4:35
8 उत 12:7; नहे 9:7, 8; यश 41:8; याकू 2:23
9 2इत 2:4
10 2इत 6:20

19:11 *या “यहोवा भलाई के साथ रहे।”
20:1 *या शायद, “मऊनी लोग।”
20:2 *ज़ाहिर है, मृत सागर।

हमारी सुने और हमें बचाए।'[1] 10 अब
अम्मोनी, मोआबी और सेईर के पहाड़ी
प्रदेश[2] के लोगों को देख। जब इस-
राएली मिस्र से निकले थे तो तूने उन्हें इन
लोगों पर हमला करने की इजाज़त नहीं
दी थी। इसराएलियों ने उनका नाश नहीं
किया था और उनसे दूर चले गए थे।[3]
11 देख, अब ये लोग उसका कैसा बदला
दे रहे हैं, ये हमें इस जागीर से खदेड़ने
आए हैं जो तूने हमें विरासत में दी है।[4]
12 हे हमारे परमेश्वर, क्या तू उन्हें सज़ा
नहीं देगा?[5] हमारे पास इस विशाल सेना
का मुकाबला करने की ताकत नहीं है
जो हम पर हमला करने आयी है।
और हम नहीं जानते कि हमें क्या
करना चाहिए,[6] हमारी आँखें तेरी ओर
लगी हैं।"[7]

13 इस दौरान, यहूदा के सब आदमी
अपनी पत्नियों, बच्चों,* यहाँ तक कि
छोटे-छोटे बच्चों के साथ यहोवा के सामने
खड़े थे।

14 तब उस मंडली के बीच यहज़ी-
एल पर यहोवा की पवित्र शक्ति आयी,
जो जकरयाह का बेटा था। जकरयाह
बनायाह का, बनायाह यीएल का और
यीएल मत्तन्याह का बेटा था, जो आसाप
के बेटों में से एक लेवी था। 15 यहज़ी-
एल ने कहा, "हे पूरे यहूदा और यरूशलेम
के लोगो और हे राजा यहोशापात, ध्यान
से सुनो! यहोवा तुमसे कहता है, 'इस
विशाल सेना से मत डरो और न ही खौफ
खाओ क्योंकि यह लड़ाई तुम्हारी नहीं,
परमेश्वर की है।[8] 16 तुम कल उनसे
युद्ध करने जाओ। वे सीस की तंग घाटी
से आएँगे और तुम उन्हें घाटी के छोर
पर यरुएल वीराने के सामने पाओगे।
17 तुम्हें यह लड़ाई लड़ने की ज़रूरत
नहीं होगी। तुम अपनी जगह खड़े रहना
और देखना[1] कि यहोवा कैसे तुम्हारा
उद्धार करता है।*[2] हे यहूदा और यरू-
शलेम, तुम मत डरना और न ही खौफ
खाना।[3] कल तुम उनसे युद्ध करने जाना
और यहोवा तुम्हारे साथ रहेगा।'"[4]

18 यह सुनते ही यहोशापात ने
ज़मीन की तरफ सिर झुकाकर दंड-
वत किया और पूरे यहूदा और यरू-
शलेम के लोगों ने यहोवा के सामने गिर-
कर यहोवा की उपासना की। 19 तब
वे लेवी, जो कहातियों के वंशज[5] और
कोरहवंशी थे, खड़े हुए ताकि बुलंद
आवाज़ में[6] इसराएल के परमेश्वर यहोवा
की तारीफ करें।

20 अगले दिन सुबह वे जल्दी उठे
और तकोआ के वीराने[7] में गए। जब वे
जा रहे थे तो यहोशापात खड़ा हुआ
और कहने लगा, "यहूदा और यरूशलेम
के लोगो, मेरी सुनो! तुम अपने पर-
मेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो ताकि
तुम मज़बूत खड़े रह सको।* उसके
भविष्यवक्ताओं पर विश्वास रखो[8] और
तुम कामयाब होगे।"

21 यहोशापात ने लोगों से सलाह
करने के बाद कुछ आदमियों को चुना
ताकि वे यहोवा की तारीफ में गीत
गाएँ।[9] वे पवित्र पोशाक पहने, हथियार-
बंद सैनिकों के आगे-आगे चलते हुए यह
गीत गाएँगे: "यहोवा का शुक्रिया अदा
करो क्योंकि उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।"[10]

22 जब वे खुशी-खुशी तारीफ के
गीत गाने लगे तो यहोवा ने यहूदा
पर धावा बोलनेवाले अम्मोन, मोआब

20:13 *शा., "बेटों।"

20:17 *या "तुम्हें छुड़ाता है।" 20:20
*या "धीरज धर सको।"

अध्य. 20
1 1रा 8:33, 34; 2इत 6:28-30
2 उत 36:8
3 गि 20:17, 18; व्य 2:5, 9, 19
4 न्या 11:23, 24; भज 83:2, 4
5 न्या 11:27, 28; भज 7:6
6 2रा 6:15, 16
7 2इत 14:11; भज 25:15; भज 62:1
8 व्य 1:29, 30; यह 11:4, 6; 2इत 32:7, 8

दूसरा कॉल.
1 यश 30:15
2 निर्ग 14:13, 14; निर्ग 15:2; 1शम 2:1; 1इत 16:23; विल 3:26
3 व्य 31:8; यह 10:25
4 गि 14:9; 2इत 15:2
5 1इत 23:12
6 1इत 15:16
7 2इत 11:5, 6
8 निर्ग 14:31; निर्ग 19:9
9 1इत 15:16
10 निर्ग 34:6

और सेईर के पहाड़ी प्रदेश के लोगों पर पीछे से हमला करवाया और उन लोगों ने एक-दूसरे को मार डाला।[1] **23** अम्मोनी और मोआबी लोग सेईर के पहाड़ी प्रदेश के लोगों पर टूट पड़े[2] ताकि उन्हें नाश कर दें, उन्हें मिटा दें। सेईर के लोगों को नाश करने के बाद उन्होंने एक-दूसरे को नाश कर दिया।[3]

24 जब यहूदा के लोग वीराने में पहरे की मीनार तक पहुँचे[4] तो उन्होंने वहाँ से देखा कि दुश्मनों की लाशें ज़मीन पर पड़ी हैं।[5] कोई भी ज़िंदा नहीं बचा था। **25** तब यहोशापात और उसके लोग उन्हें लूटने के लिए वहाँ गए। उन्हें ढेर सारी चीज़ें, कपड़े और सुंदर-सुंदर चीज़ें मिलीं और वे लाशों से ये चीज़ें उतारने लगे। वे तब तक बटोरते रहे जब तक कि और न ले जा सके।[6] लूट का इतना सारा माल था कि उन्हें बटोरने में तीन दिन लगे। **26** चौथे दिन वे सब बराका घाटी में इकट्ठा हुए और वहाँ उन्होंने यहोवा की तारीफ की।* इसीलिए उन्होंने उस जगह का नाम बराका# घाटी रखा[7] और आज तक उसका नाम यही है।

27 इसके बाद यहूदा और यरूशलेम के सभी आदमी खुशियाँ मनाते हुए यरूशलेम लौट गए क्योंकि यहोवा ने उन्हें दुश्मनों पर जीत दिलायी थी।[8] उनके आगे-आगे यहोशापात था। **28** वे तारोंवाले बाजे और सुरमंडल बजाते हुए[9] और तुरहियाँ फूँकते हुए[10] यरूशलेम आए और यहोवा के भवन गए।[11] **29** जब सब देशों के राज्यों ने सुना कि यहोवा ने इसराएल के दुश्मनों से युद्ध किया है, तो परमेश्वर का खौफ उन सबमें समा गया।[12] **30** इसलिए यहोशापात के राज में शांति बनी रही और उसका परमेश्वर उसे चारों तरफ के दुश्मनों से राहत देता रहा।[1]

31 यहोशापात यहूदा पर राज करता रहा। जब वह राजा बना तब वह 35 साल का था और उसने यरूशलेम में रहकर 25 साल राज किया। उसकी माँ का नाम अजूबाह था जो शिलही की बेटी थी।[2] **32** यहोशापात अपने पिता आसा के नक्शे-कदम पर चलता रहा।[3] वह उस राह से नहीं भटका और उसने यहोवा की नज़र में सही काम किए।[4] **33** लेकिन उसके राज के दौरान ऊँची जगह नहीं मिटायी गयीं[5] और लोगों ने अपने पुरखों के परमेश्वर की खोज करने के लिए अब तक अपने दिल को तैयार नहीं किया था।[6]

34 यहोशापात की ज़िंदगी की बाकी कहानी यानी शुरू से लेकर आखिर तक का इतिहास हनानी[7] के बेटे येहू[8] के लेखनों में लिखा है। इन लेखनों को इसराएल के राजाओं की किताब में शामिल किया गया था। **35** इसके बाद यहूदा के राजा यहोशापात ने इसराएल के राजा अहज्याह के साथ संधि की। अहज्याह दुष्ट काम करता था।[9] **36** यहोशापात ने तरशीश जानेवाले जहाज़[10] बनाने के काम में उसके साथ साझेदारी की। और उन्होंने एस्योन-गेबेर[11] में जहाज़ बनाए। **37** मगर एलीएज़ेर ने, जो मारेशा के रहनेवाले दोदावाहू का बेटा था, यहोशापात के खिलाफ यह भविष्यवाणी की: "यहोवा तेरे काम को नाकाम कर देगा क्योंकि तूने अहज्याह के साथ संधि की है।"[12] इसलिए उनके जहाज़ टूटकर तहस-नहस हो गए[13] और तरशीश नहीं जा सके।

20:26 *शा., "को आशीर्वाद दिया।" #मतलब "आशीर्वाद।"

अध्य. 20
1 न्या 7:22; 1शम 14:20
2 व्य 2:5
3 निर्ग 14:25; यहे 38:21
4 2इत 20:16
5 निर्ग 14:30; भज 110:5, 6; यश 37:36
6 निर्ग 12:35; 2रा 7:15, 16
7 निर्ग 17:14, 15; 1शम 7:12
8 1शम 2:1; भज 20:5; भज 30:1
9 2शम 6:5; 1इत 16:5
10 गि 10:8; 1इत 13:8; 2इत 29:26
11 भज 116:19
12 निर्ग 15:13, 14; यह 9:3, 9; 2इत 17:10

दूसरा कॉल.
1 यह 23:1; 2शम 7:1; 2इत 15:15
2 1रा 22:41, 42
3 1रा 15:11
4 2इत 17:3, 4; 2इत 19:2, 3
5 1रा 15:14; 1रा 22:43; 2इत 17:1, 6
6 1रा 18:21
7 2इत 16:7
8 1रा 16:1; 2इत 19:2
9 2रा 1:2, 16
10 1रा 10:22, 23
11 गि 33:1, 35; व्य 2:8; 1रा 9:26
12 2इत 19:2; भज 127:1
13 1रा 22:48

21 फिर यहोशापात की मौत हो गयी* और उसे दाविदपुर में उसके पुरखों की कब्र में दफनाया गया। उसकी जगह उसका बेटा यहोराम राजा बना।[1] 2 यहोराम के भाई यानी यहोशापात के बेटे थे अजरयाह, यहीएल, जकरयाह, अजरयाह, मीकाएल और शपत्याह। ये सभी इसराएल के राजा यहोशापात के बेटे थे। 3 उनके पिता ने उन्हें तोहफे में बहुत सारा सोना, चाँदी और कीमती चीज़ें दीं, साथ ही यहूदा के किलेबंद शहर भी दिए,[2] मगर यहोराम को उसने अपना राज सौंपा[3] क्योंकि वह पहलौठा था।

4 जब यहोराम ने अपने पिता के राज की बागडोर हाथ में ली, तो उसने अपना दबदबा बनाए रखने के लिए अपने सब भाइयों को और इसराएल के कुछ हाकिमों को तलवार से मार डाला।[4] 5 यहोराम 32 साल की उम्र में राजा बना और उसने यरूशलेम में रहकर आठ साल राज किया।[5] 6 यहोराम ने इसराएल के राजाओं के तौर-तरीके अपना लिए,[6] ठीक जैसे अहाब के घराने ने किया था क्योंकि उसकी शादी अहाब की बेटी से हुई थी।[7] वह यहोवा की नज़र में बुरे काम करता रहा। 7 फिर भी यहोवा ने दाविद के घराने का नाश नहीं करना चाहा, क्योंकि उसने दाविद के साथ करार किया था[8] कि उसका और उसके बेटों का दीया हमेशा जलता रहेगा।[9]

8 यहोराम के दिनों में एदोम ने यहूदा से बगावत की[10] और फिर अपना एक राजा खड़ा किया।[11] 9 इसलिए यहोराम और उसके सेनापति अपने सभी रथ लेकर उस पार गए। यहोराम ने रात के वक्त जाकर एदोमियों पर हमला किया, जो उसे और रथ-सेना के अधिकारियों को घेरे हुए थे और उन्हें हरा दिया। 10 इसके बाद भी एदोम ने यहूदा से बगावत करना नहीं छोड़ा और आज तक वह बगावत कर रहा है। उन्हीं दिनों लिब्ना[1] ने भी यहूदा से बगावत की क्योंकि यहोराम ने अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया था।[2] 11 उसने यहूदा के पहाड़ों पर ऊँची जगह भी बनवायीं[3] ताकि यरूशलेम के लोगों को परमेश्वर से विश्वासघात* करने के लिए उकसाए। वह यहूदा को बहकाकर परमेश्वर से दूर ले गया।

12 कुछ समय बाद उसे भविष्यवक्ता एलियाह[4] का लिखा यह संदेश मिलाः "तेरे पुरखे दाविद का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'तू अपने पिता यहोशापात[5] और यहूदा के राजा आसा के नक्शे-कदम पर नहीं चला।[6] 13 इसके बजाय, तूने इसराएल के राजाओं के तौर-तरीके अपना लिए[7] और यहूदा और यरूशलेम के लोगों को परमेश्वर से विश्वासघात* करने के लिए उकसाया,[8] ठीक जैसे अहाब के घराने ने विश्वासघात किया।[9] तूने अपने पिता के घराने को, अपने भाइयों तक को मार डाला[10] जो तुझसे अच्छे थे। 14 इसलिए यहोवा तेरे लोगों, तेरे बेटों और तेरी पत्नियों पर भारी कहर ढाएगा और तेरी सारी दौलत नाश कर देगा। 15 और तू कई बीमारियों से पीड़ित होगा, तुझे अंतड़ियों की बीमारी भी लग जाएगी और दिनों-दिन यह बीमारी इतनी बढ़ जाएगी कि तेरी अंतड़ियाँ बाहर निकल आएँगी।'"

21:1 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।"

21:11, 13 *या "को वेश्याओं जैसी बदचलनी।"

अध्य. 21
1 1रा 22:50
2 2इत 11:5, 23
3 2रा 8:16
4 न्या 9:5, 6
5 2रा 8:17-19
6 1रा 14:7, 9 हो 4:1
7 2इत 22:2 नहे 13:26
8 2शम 23:5 भज 89:20, 28 यिर्म 33:20, 21
9 2शम 7:12, 16 1रा 11:36 भज 132:11
10 उत 27:40
11 1रा 22:47 2रा 8:20-22

दूसरा कॉल.
1 यह 21:13 2रा 19:8
2 2इत 15:2 यिर्म 2:13
3 व्य 12:2
4 2रा 2:1, 11
5 2इत 17:3
6 1रा 15:11 2इत 14:2, 5
7 1रा 16:25, 33
8 निर्ग 34:15 यिर्म 3:8
9 2रा 9:22
10 2इत 21:4

16 फिर यहोवा ने पलिश्तियों[1] को
और उन अरबी लोगों[2] को, जो इथियो-
पिया के लोगों के पास रहते थे, यहो-
राम पर हमला करने के लिए भड़-
काया।[3] 17 इसलिए उन्होंने यहूदा पर
हमला किया और वे देश में घुसकर राज-
महल से वह सारी दौलत उठा ले गए जो
उन्हें मिली थी।[4] वे यहोराम के बेटों और
पत्नियों को भी ले गए, सिर्फ उसका सबसे
छोटा बेटा यहोआहाज*[5] उसके पास रह
गया। 18 यह सब होने के बाद, यहोवा
ने उसे अंतड़ियों की एक लाइलाज बीमारी
से पीड़ित किया।[6] 19 कुछ समय बाद,
दो साल बीतने पर बीमारी की वजह से
उसकी अंतड़ियाँ बाहर निकल आयीं। इस
बीमारी में उसने बहुत दर्द झेला और
फिर वह मर गया। उसके लोगों ने उसके
सम्मान में आग नहीं जलायी, जैसे उसके
पुरखों के लिए जलायी थी।[7] 20 यहो-
राम 32 साल की उम्र में राजा बना था
और उसने यरूशलेम में रहकर आठ साल
राज किया था। जब उसकी मौत हुई
तो किसी को दुख नहीं हुआ। उन्होंने उसे
दाविदपुर में दफनाया,[8] मगर राजाओं की
कब्र में नहीं।[9]

22 फिर यरूशलेम के लोगों ने यहो-
राम के सबसे छोटे बेटे अहज्याह
को उसकी जगह राजा बनाया, क्योंकि
अरबी लोगों के साथ आए लुटेरे-दल ने
उसके सभी बड़े बेटों को मार डाला था।[10]
इस तरह यहोराम का बेटा अहज्याह
यहूदा का राजा बना।[11] 2 उस वक्त
वह 22 साल का था और उसने यरूशलेम
में रहकर एक साल राज किया। उसकी
माँ का नाम अतल्याह[12] था जो ओम्री[13]
की पोती* थी।

21:17 *अहज्याह भी कहलाता था। 22:2
*शा., "बेटी।"

3 अहज्याह ने अहाब के घराने के
तौर-तरीके अपना लिए[1] क्योंकि उसकी
माँ उसे दुष्ट काम करने की सलाह देती
थी। 4 वह अहाब के घराने की तरह
यहोवा की नज़र में बुरे काम करता रहा,
क्योंकि उसके पिता की मौत के बाद
अहाब के घराने के लोग उसके सलाह-
कार बन गए। इस वजह से वह बर-
बाद हो गया। 5 उनकी सलाह मान-
कर वह इसराएल के राजा अहाब के बेटे
यहोराम के साथ सीरिया के राजा हजा-
एल[2] से युद्ध करने रामोत-गिलाद[3] गया।
उस युद्ध में तीरंदाज़ों ने यहोराम को
घायल कर दिया। 6 वह ठीक होने के
लिए यिजरेल[4] लौटा क्योंकि रामाह में
सीरिया के राजा हजाएल के सैनिकों ने
उसे घायल कर दिया था।[5]

अहाब का बेटा यहोराम[6] ज़ख्मी हो
गया* था, इसलिए उसे देखने के लिए
यहूदा का राजा अहज्याह# जो यहोराम[7]
का बेटा था, यिजरेल गया।[8] 7 यहो-
राम के पास जाना अहज्याह की मौत की
वजह बन गया। यह सब परमेश्वर की
तरफ से हुआ था। जब वह यहोराम के
पास गया तो वह और यहोराम, निमशी
के पोते* येहू से मिलने गए।[9] यहोवा
ने येहू का अभिषेक किया था ताकि वह
अहाब के घराने को मिटा दे।[10] 8 जब
येहू अहाब के घराने का नाश करने लगा,
तो उसने यहूदा के हाकिमों और अहज्याह
के भतीजों को देखा, जो अहज्याह के
मंत्री थे और उसने उनको मार डाला।[11]
9 फिर येहू अहज्याह को ढूँढ़ने लगा।
उसके आदमियों ने अहज्याह को साम-
रिया में पकड़ लिया जहाँ वह छिपा था। वे

22:6 *या "बीमार।" #कुछ इब्रानी हस्त-
लिपियों में "अजरयाह।" 22:7 *शा.,
"बेटे।"

अध्य. 21

1 यह 13:1, 2; 2शम 8:1
2 2इत 17:11
3 1रा 11:14; 2इत 33:11; यश 10:5
4 1रा 14:25, 26
5 2इत 22:1
6 प्रेष 12:21-23
7 2इत 16:13, 14; यिर्म 34:4, 5
8 1रा 2:10
9 2इत 24:24, 25; 2इत 28:27

अध्य. 22

10 2इत 21:16, 17
11 2रा 8:24-26
12 2रा 11:1; 2रा 11:13, 16; 2इत 24:7
13 1रा 16:28

दूसरा कॉल.

1 1रा 16:33; 2रा 8:27, 28; मी 6:16
2 2रा 8:15; 2रा 10:32
3 1रा 22:3; 2इत 18:14
4 यह 19:18, 23
5 2रा 9:15
6 2रा 3:1
7 2रा 8:16
8 2रा 9:16
9 1रा 19:16; 2रा 9:20, 21
10 2रा 9:6, 7
11 2रा 10:10-14

उसे येहू के पास ले आए। उन्होंने उसे मार डाला और दफना दिया[1] क्योंकि उन्होंने कहा, “यह यहोशापात का पोता है जो पूरे दिल से यहोवा की खोज करता था।”[2] अहज्याह के घराने में ऐसा कोई नहीं था जो उसकी राजगद्दी सँभाल सके।

10 जब अहज्याह की माँ अतल्याह[3] ने देखा कि उसका बेटा मर गया है, तो उसने यहूदा के शाही खानदान के सभी वारिसों को मार डाला।*[4] **11** लेकिन राजा की बेटी यहोशावत ने अहज्याह के बेटे यहोआश[5] को बचा लिया। उसने यहोआश को राजा के बेटों में से चुपके से उठा लिया जिन्हें अतल्याह मार डालनेवाली थी। यहोशावत ने यहोआश और उसकी धाई को सोने के कमरे में रखा। राजा यहोराम[6] की बेटी यहोशावत ने किसी तरह यहोआश को अतल्याह से छिपाए रखा, इसलिए वह उसे नहीं मार सकी।[7] (यहोशावत, याजक यहोयादा[8] की पत्नी और अहज्याह की एक बहन थी।) **12** यहोआश छः साल तक उनके साथ रहा। उसे सच्चे परमेश्वर के भवन में छिपाकर रखा गया। इस दौरान अतल्याह देश पर राज करती रही।

23 सातवें साल यहोयादा ने हिम्मत से काम लिया और सौ-सौ की टुकड़ियों के इन अधिकारियों के साथ एक करार किया:[9] यरोहाम का बेटा अजरयाह, यहोहानान का बेटा इश्माएल, ओबेद का बेटा अजरयाह, अदायाह का बेटा मासेयाह और जिक्री का बेटा एलीशापात। **2** फिर वे पूरे यहूदा में गए और उन्होंने यहूदा के सब शहरों से लेवियों[10] को और इसराएल के पिताओं के घरानों के मुखियाओं को इकट्ठा किया। जब वे यरूशलेम आए, **3** तो पूरी मंडली ने सच्चे परमेश्वर के भवन में राजा के साथ एक करार किया।[1] इसके बाद यहोयादा ने उनसे कहा,

“देखो! राजा का बेटा अब राज करेगा, ठीक जैसे यहोवा ने दाविद के बेटों के बारे में वादा किया था।[2] **4** तुम्हें यह करना होगाः सब्त के दिन जो लेवी और याजक काम पर होंगे[3] उनमें से एक-तिहाई आदमी दरबान होंगे,[4] **5** एक-तिहाई आदमी राजमहल के पास तैनात होंगे[5] और एक-तिहाई आदमी ‘नींव के फाटक’ पर तैनात होंगे। और बाकी लोग यहोवा के भवन के आँगनों में होंगे।[6] **6** मंदिर में सेवा करनेवाले याजकों और लेवियों को छोड़ किसी को भी यहोवा के भवन के अंदर आने मत देना।[7] सिर्फ याजकों और लेवियों को आने देना क्योंकि वे पवित्र लोगों का दल हैं और बाकी सब लोग यहोवा की तरफ अपना फर्ज़ निभाएँगे। **7** तुम लेवी अपने हाथों में हथियार लिए राजा के चारों तरफ तैनात रहना और उसकी रक्षा करना। अगर कोई भवन के अंदर आए तो उसे मार डालना। राजा जहाँ कहीं जाए* तुम उसके साथ रहना।”

8 लेवियों और पूरे यहूदा के लोगों ने ठीक वैसा ही किया जैसा यहोयादा याजक ने उन्हें आदेश दिया था। सब्त के दिन हर अधिकारी ने अपने दल के सभी आदमियों को लिया। जिन आदमियों की सेवा करने की बारी थी, उनके साथ-साथ उन आदमियों को भी लिया गया जिनकी बारी नहीं थी,[8] क्योंकि यहोयादा

22:10 *शा., “राज के सारे बीज नाश कर दिए।”

23:7 *शा., “जब राजा बाहर जाए और जब वह अंदर आए।”

अध्य. 22
1 2रा 9:27, 28
2 2इत 17:3, 4
3 2इत 22:2
4 2रा 11:1-3
5 2रा 11:21
6 2रा 8:16
7 2शम 7:12, 13; 1रा 15:4; 2इत 21:7
8 2इत 23:1

अध्य. 23
9 2रा 11:4
10 2इत 8:14

दूसरा कॉल.
1 2शम 5:3
2 2शम 7:8, 12; 1रा 2:4; 1रा 9:5; भज 89:20, 29
3 1इत 24:3
4 2रा 11:5-8; 1इत 9:22-25; 1इत 26:1
5 1रा 7:1
6 1रा 7:12
7 1इत 23:28, 32
8 2रा 11:9-12

याजक ने किसी भी दल को छुट्टी नहीं दी
थी।[1] **9** फिर यहोयादा याजक ने सौ-
सौ की टुकड़ियों के अधिकारियों[2] को
भाले, छोटी ढालें* और गोलाकार ढालें
दीं। ये हथियार राजा दाविद के थे[3] जो
सच्चे परमेश्वर के भवन में रखे हुए थे।[4]
10 उसने सब लोगों को, जो हाथ में हथि-
यार लिए हुए थे, भवन के दाएँ कोने से
लेकर बाएँ कोने तक तैनात किया।
उसने उन्हें वेदी और भवन के पास
यानी राजा के चारों तरफ खड़ा कर-
वाया। **11** फिर वे राजा के बेटे[5] को
बाहर ले आए और उसे ताज पहनाया
और उसके ऊपर साक्षी-पत्र*[6] रखा और
उसे राजा बनाया। यहोयादा और उसके
बेटों ने उसका अभिषेक किया। फिर वे
कहने लगे, "राजा की जय हो! राजा की
जय हो!"[7]

12 जब अतल्याह ने लोगों के दौड़ने
और राजा की जयजयकार करने का शोर
सुना, तो वह फौरन यहोवा के भवन में
वहाँ आयी जहाँ लोगों की भीड़ इकट्ठा
थी।[8] **13** उसने देखा कि राजा भवन के
प्रवेश में अपने खंभे के पास खड़ा है और
उसके साथ हाकिम[9] और तुरही फूँकने-
वाले भी हैं। देश के सभी लोग खुशियाँ
मना रहे हैं,[10] तुरहियाँ फूँकी जा रही हैं
और गायक साज़ बजाते हुए जश्न
मनाने में अगुवाई कर रहे हैं। यह
देखते ही अतल्याह ने अपने कपड़े फाड़े
और वह चिल्लाने लगी, "यह साज़िश है!
साज़िश!" **14** तब यहोयादा याजक ने
सौ-सौ की टुकड़ियों के अधिकारियों को
यह कहकर बाहर भेजा, "इस औरत को
सैनिकों के बीच से बाहर ले जाओ। अगर
कोई इसके पीछे-पीछे जाए तो उसे तल-
वार से मार डालो!" याजक ने उनसे
कहा था, "उस औरत को यहोवा के
भवन में घात मत करना।" **15** इस-
लिए वे उसे पकड़कर ले गए और जब वह
महल के घोड़ा फाटक के प्रवेश के पास
पहुँची, तो उन्होंने फौरन उसे मार डाला।

16 फिर यहोयादा ने अपने और
राजा और लोगों के बीच एक करार
किया कि वे यहोवा के लोग बने रहेंगे।[1]
17 इसके बाद सब लोगों ने जाकर
बाल का मंदिर ढा दिया[2] और उसकी
वेदियाँ और मूरतें चूर-चूर कर दीं[3] और
वेदियों के सामने ही बाल के पुजारी
मत्तान को मार डाला।[4] **18** फिर यहो-
यादा ने यहोवा के भवन की निगरानी का
ज़िम्मा याजकों और लेवियों को सौंपा।
दाविद ने इन्हें अलग-अलग दलों में बाँट-
कर यहोवा के भवन की ज़िम्मेदारी सौंपी
थी ताकि वे यहोवा के लिए होम-बलियाँ
चढ़ाएँ,[5] ठीक जैसे मूसा के कानून में
लिखा है[6] और दाविद के निर्देश के मुता-
बिक खुशियाँ मनाएँ और गीत गाएँ।
19 इसके अलावा, यहोयादा ने यहोवा के
भवन के फाटकों पर पहरेदारों को तैनात
किया[7] ताकि ऐसा कोई भी इंसान अंदर
न जा सके जो किसी भी तरह से अशुद्ध
है। **20** फिर उसने सौ-सौ की टुक-
ड़ियों के अधिकारियों,[8] रुतबेदार आद-
मियों, लोगों के शासकों और देश के सभी
लोगों को साथ लिया और वे सब राजा
को यहोवा के भवन से बाहर ले गए। वे
ऊपरी फाटक से राजमहल के अंदर
आए और उन्होंने राजा को राजगद्दी[9]
पर बिठाया।[10] **21** देश के सभी लोगों
ने खुशियाँ मनायीं और शहर में शांति छा
गयी क्योंकि अतल्याह को तलवार से मार
डाला गया था।

अध्य. 23
1 1इत 24:1
1इत 26:1
2 2रा 11:4
3 2शम 8:7
4 1इत 26:26, 27
2इत 5:1
5 2रा 11:2
6 व्य 17:18
7 1शम 10:1, 24
8 2रा 11:13-16
9 2इत 23:1
10 1रा 1:39, 40

दूसरा कॉल.
1 2रा 11:17, 18
2इत 34:1, 31
2 2रा 10:27, 28
3 व्य 12:3
2इत 34:1, 4
4 व्य 13:5
1रा 18:40
5 1इत 23:6
1इत 23:30, 31
6 निर्ग 29:38
गि 28:2
7 1इत 9:26
1इत 26:1, 13
8 2रा 11:9
9 1रा 7:7
10 2रा 11:19, 20

23:9 *ये ढालें अकसर तीरंदाज़ ढोते थे।
23:11 *शायद एक खर्रा जिसमें परमेश्वर का कानून लिखा था।

24 यहोआश जब राजा बना तब वह सात साल का था[1] और उसने 40 साल यरूशलेम में रहकर राज किया। उसकी माँ का नाम सिब्याह था जो बेरशेबा की रहनेवाली थी।[2] 2 जब तक याजक यहोयादा ज़िंदा था तब तक यहोआश यहोवा की नज़र में सही काम करता रहा।[3] 3 यहोयादा ने दो औरतों से उसकी शादी करायी और उसके कई बेटे-बेटियाँ हुए।

4 बाद में यहोआश के दिल में यह इच्छा जागी कि वह यहोवा के भवन की मरम्मत करे।[4] 5 इसलिए उसने याजकों और लेवियों को इकट्ठा किया और उनसे कहा, "यहूदा के शहरों में जाओ और पूरे इसराएल से पैसा इकट्ठा करो ताकि हर साल तुम्हारे परमेश्वर के भवन की मरम्मत की जा सके।[5] तुम्हें इस काम के लिए फौरन कदम उठाना है।" मगर लेवियों ने फौरन कदम नहीं उठाया।[6] 6 इसलिए राजा ने प्रधान याजक यहोयादा को बुलाया और उससे कहा,[7] "तूने लेवियों से क्यों नहीं पूछा कि यहूदा और यरूशलेम से पवित्र कर लाने का काम क्यों नहीं हुआ, जिसकी आज्ञा यहोवा के सेवक मूसा ने दी थी?[8] इसराएल की मंडली से उस तंबू के लिए पवित्र कर क्यों नहीं इकट्ठा किया गया जिसमें गवाही का संदूक रखा है?[9] 7 उस दुष्ट औरत अतल्याह के बेटे[10] सच्चे परमेश्वर यहोवा के भवन में ज़बरदस्ती घुस गए थे[11] और उन्होंने वहाँ की सारी पवित्र चीज़ें ले जाकर बाल देवताओं के लिए इस्तेमाल कर दी थीं।" 8 फिर राजा के हुक्म पर एक पेटी[12] तैयार की गयी और उसे यहोवा के भवन के फाटक के बाहर रखा गया।[13] 9 इसके बाद पूरे यहूदा और यरूशलेम में ऐलान किया गया कि यहोवा के लिए वह पवित्र कर[1] लाया जाए जिसकी आज्ञा सच्चे परमेश्वर के सेवक मूसा ने वीराने में इसराएल को दी थी। 10 सारे हाकिम और सब लोग बहुत खुश हुए[2] और वे दान लाकर पेटी में डालते रहे। वे तब तक लाते थे जब तक कि पेटी भर नहीं जाती।*

11 जब भी लेवी देखते कि पेटी भर गयी है, वे उसे राजा के पास ले जाते और राजा का सचिव और प्रधान याजक का सहायक आकर उसे खाली करते।[3] फिर वे पेटी को वापस उसकी जगह रख देते। वे ऐसा हर दिन करते थे और उन्होंने बहुत सारा पैसा जमा किया। 12 फिर राजा और यहोयादा वह पैसा उन आदमियों को देते जो यहोवा के भवन के काम की देखरेख करते थे। और काम की देखरेख करनेवाले पैसे से यहोवा के भवन की मरम्मत करने के लिए पत्थर काटनेवालों और कारीगरों को काम पर लगाते थे।[4] साथ ही, वे लोहे और ताँबे का काम करनेवालों को भी यहोवा के भवन की मरम्मत करने के लिए लगाते थे। 13 काम की देखरेख करनेवालों ने काम शुरू करवा दिया और उनकी निगरानी में मरम्मत का काम चलता रहा। आखिरकार उन्होंने परमेश्वर के भवन को मज़बूत बनाकर उसे बिलकुल वैसा ही बना दिया जैसा पहले था। 14 जैसे ही उन्होंने काम पूरा कर दिया, बचा हुआ पैसा लाकर राजा और यहोयादा को दे दिया और उन्होंने यह पैसा यहोवा के भवन के लिए चीज़ें, सेवा में और बलि चढ़ाने में इस्तेमाल होनेवाली चीज़ें और सोने और चाँदी के प्याले और दूसरी चीज़ें बनाने में लगाया।[5] जब तक

अध्य. 24
1 2रा 11:21
2 उत 21:14; 2शम 3:10; 2रा 12:1
3 2रा 12:2
4 2रा 22:3-5
5 2रा 12:4, 5; 2इत 29:1, 3; 2इत 34:9, 10
6 2रा 12:6
7 2रा 12:7
8 निर्ग 30:12-16
9 गि 1:50
10 2इत 22:2, 3
11 2इत 28:24
12 मर 12:41
13 2रा 12:9

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 30:12-16; नहे 10:32; मत 17:24
2 1इत 29:9
3 2रा 12:10
4 2रा 12:11, 12; 2इत 34:10, 11
5 निर्ग 37:16; गि 7:84

24:10 *या शायद, "जब तक कि सब नहीं दे देते।"

यहोयादा ज़िंदा था तब तक वे यहोवा के भवन में नियमित तौर पर होम-बलियाँ चढ़ाते थे।[1]

15 फिर यहोयादा की मौत हो गयी। वह 130 साल का था। उसने एक लंबी और खुशहाल ज़िंदगी जी थी। **16** उन्होंने उसे दाविदपुर में राजाओं की कब्र में दफनाया[2] क्योंकि उसने इसराएल में भले काम किए थे,[3] खासकर सच्चे परमेश्वर और उसके भवन के मामले में।

17 यहोयादा की मौत के बाद, यहूदा के हाकिम राजा के पास आए और उसे झुककर प्रणाम किया और राजा ने उनकी बात मानी। **18** लोगों ने अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा का भवन छोड़ दिया और वे पूजा-लाठों* और मूरतों की सेवा करने लगे। उनके इस पाप की वजह से परमेश्वर का क्रोध यहूदा और यरूशलेम पर भड़क उठा। **19** यहोवा उनके पास भविष्यवक्ताओं को भेजता रहा ताकि वे उन्हें उसके पास लौटा लाएँ। वे उन लोगों को चेतावनी* देते रहे मगर उन्होंने सुनने से इनकार कर दिया।[4]

20 परमेश्वर की पवित्र शक्ति यहोयादा[5] याजक के बेटे जकरयाह पर आयी और उसने एक ऊँची जगह पर खड़े होकर लोगों से कहा, "सच्चे परमेश्वर ने कहा है, 'तुम लोग क्यों यहोवा की आज्ञाएँ तोड़ते हो? तुम कामयाब नहीं होगे! तुम लोगों ने यहोवा को छोड़ दिया है इसलिए वह भी तुम्हें छोड़ देगा।'"[6] **21** मगर उन्होंने उसके खिलाफ साज़िश की[7] और राजा के हुक्म पर उसे यहोवा के भवन के आँगन में पत्थरों से मार डाला।[8]

22 इस तरह राजा यहोआश वह प्यार* भूल गया जो उसके पिता# यहोयादा ने उससे किया था। उसने यहोयादा के बेटे को मार डाला। जकरयाह ने मरते वक्त कहा, "यहोवा यह देखे और तुझसे लेखा ले।"[1]

23 साल की शुरूआत में सीरिया की सेना यहोआश से लड़ने आयी और यहूदा और यरूशलेम पर हमला कर दिया।[2] उन्होंने लोगों के सभी हाकिमों[3] को मार डाला और सारा माल लूटकर दमिश्क के राजा को भेज दिया। **24** सीरिया की सेना छोटी थी, फिर भी यहोवा ने यहूदा की विशाल सेना को उसके हवाले कर दिया[4] क्योंकि उन्होंने अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया था। इसलिए उन्होंने* यहोआश को सज़ा दी। **25** यहोआश को बहुत-से ज़ख्म लगे थे।* जब सीरिया के लोग यहोआश को छोड़कर चले गए, तो उसके अपने सेवकों ने उसके खिलाफ साज़िश रची क्योंकि उसने यहोयादा याजक के बेटों# का खून बहाया था।[5] उन्होंने उसी के बिस्तर पर उसे मार डाला।[6] उसे दाविदपुर में दफनाया गया,[7] मगर राजाओं की कब्र में नहीं।[8]

26 उसके खिलाफ साज़िश करनेवाले थे,[9] जाबाद जो अम्मोनी औरत शिमात का बेटा था और यहोजाबाद जो मोआबी औरत शिमरित का बेटा था। **27** यहोआश के बेटों के बारे में, उसके खिलाफ जो संदेश सुनाए गए थे[10] उनके बारे में और सच्चे परमेश्वर के भवन की

24:18 *शब्दावली देखें। **24:19** *या "के खिलाफ गवाही।"

24:22 *या "अटल प्यार।" #यानी जकरयाह का पिता। **24:24** *यानी सीरिया की सेना ने। **24:25** *या "बहुत-सी बीमारियाँ लगी थीं।" #या "बेटे।" शायद सम्मान देने के लिए बहुवचन इस्तेमाल हुआ है।

अध्य. 24

1 गि 28:3
2 1रा 2:10
3 2इत 23:1
4 2रा 17:13, 14; 2इत 36:15, 16; यिर्म 7:25, 26
5 2इत 23:11
6 व्य 29:24, 25; 1इत 28:9; 2इत 15:2
7 यिर्म 11:19
8 मत 23:35; लूक 11:51

दूसरा कॉल.

1 उत 9:5; भज 94:1; यिर्म 11:20; इब्र 10:30
2 2रा 12:17
3 2इत 24:17, 18
4 लैव 26:17, 37; व्य 32:30
5 2इत 24:20, 21
6 2रा 12:20
7 2शम 5:9; 1रा 2:10
8 2इत 21:16, 20; 2इत 28:27
9 2रा 12:21
10 2इत 24:20

मरम्मत*[1] का पूरा ब्यौरा राजाओं की किताब के लेखनों# में लिखा है। यहोआश की जगह उसका बेटा अमज्याह राजा बना।

25 अमज्याह जब राजा बना तब वह 25 साल का था और उसने यरूशलेम में रहकर 29 साल राज किया। उसकी माँ का नाम यहोअद्दान था जो यरूशलेम की रहनेवाली थी।[2] **2** अमज्याह यहोवा की नज़र में सही काम करता रहा, मगर पूरे दिल से नहीं। **3** जैसे ही अमज्याह ने राज पर अपनी पकड़ मज़बूत की, उसने अपने उन सेवकों को मार डाला जिन्होंने उसके पिता यहोआश का कत्ल किया था।[3] **4** मगर उसने उन सेवकों के बेटों को नहीं मारा क्योंकि उसने मूसा के कानून की किताब में लिखी यहोवा की यह आज्ञा मानी: "बेटों के पाप के लिए पिताओं को न मार डाला जाए और न ही पिताओं के पाप के लिए बेटों को मार डाला जाए। जो पाप करता है उसके पाप के लिए उसी को मौत की सज़ा दी जाए।"[4]

5 अमज्याह ने यहूदा और बिन्यामीन के लोगों को इकट्ठा किया और उन्हें पिताओं के घरानों के मुताबिक, हज़ारों और सैकड़ों की टुकड़ियों के प्रधानों की निगरानी में खड़ा किया।[5] उसने 20 साल और उससे ज़्यादा उम्र के आदमियों का नाम लिखवाया[6] और पाया कि वे 3,00,000 योद्धा थे। वे तालीम पाए हुए सैनिक थे और भाले और बड़ी ढालें लेकर युद्ध करने के काबिल थे। **6** इनके अलावा, उसने इसराएल के 1,00,000 वीर योद्धाओं को 100 तोड़े* चाँदी देकर किराए पर बुलाया। **7** मगर सच्चे परमेश्वर के एक सेवक ने आकर उससे कहा, "हे राजा, तू इसराएल की सेना को अपने साथ मत आने दे क्योंकि यहोवा इसराएल के साथ नहीं है,[1] वह एप्रैमियों में से किसी के साथ नहीं है। **8** युद्ध के लिए तू ही जा और हिम्मत से लड़। अगर तू उन्हें ले जाएगा तो सच्चा परमेश्वर तुझे दुश्मन के सामने गिरा देगा, क्योंकि परमेश्वर के पास मदद करने और गिराने की भी ताकत है।"[2] **9** अमज्याह ने सच्चे परमेश्वर के सेवक से कहा, "मगर उन 100 तोड़ों का क्या, जो मैंने इसराएल की टुकड़ियों को दे दिए हैं?" सच्चे परमेश्वर के सेवक ने कहा, "यहोवा के पास तुझे उससे भी ज़्यादा देने की ताकत है।"[3] **10** तब अमज्याह ने एप्रैम से आयी टुकड़ियों को वापस उनकी जगह भेज दिया। मगर उन सैनिकों को यहूदा पर बहुत गुस्सा आया और वे तमतमाते हुए अपनी जगह लौट गए।

11 फिर अमज्याह हिम्मत जुटाकर अपनी टुकड़ियों को लेकर नमक घाटी[4] गया और उसने सेईर के 10,000 आदमियों को मार डाला।[5] **12** यहूदा के आदमियों ने 10,000 आदमियों को ज़िंदा पकड़ा और चट्टान के ऊपर ले गए और वहाँ से उन्हें नीचे गिरा दिया। वे सब चूर-चूर हो गए। **13** मगर जिन टुकड़ियों को अमज्याह ने अपने साथ युद्ध में नहीं आने दिया और वापस भेज दिया,[6] उन्होंने सामरिया[7] से लेकर बेत-होरोन[8] तक यहूदा के शहरों को लूट लिया और 3,000 लोगों को मार डाला और खूब सारा माल लूटकर ले गए।

अध्य. 24
1 2इत 24:13

अध्य. 25
2 2रा 14:1-6
3 2इत 24:26
4 व्य 24:16
5 1शम 8:11, 12
6 गि 1:2, 3

दूसरा कॉल.
1 2इत 19:2
2 2इत 14:11; 2इत 20:6
3 1शम 2:7; नीत 10:22; हाग 2:8
4 2शम 8:13; भज 60:उप
5 2रा 14:7; 2इत 20:10, 11
6 2इत 25:9
7 1रा 16:29
8 2इत 8:3, 5

24:27 *शा., "बुनियाद डालने।" #या "वर्णन; टिप्पणी।"

25:6 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

14 मगर जब अमज्याह एदोमियों को मार डालने के बाद लौटा, तो वह अपने साथ सेईर के लोगों के देवताओं की मूरतें ले आया और उन्हें अपना देवता बना लिया।[1] वह उनके आगे दंडवत करने लगा और बलिदान चढ़ाने लगा ताकि उनका धुआँ उठे। **15** इस पर यहोवा का क्रोध अमज्याह पर भड़क उठा और उसने एक भविष्यवक्ता को उसके पास भेजा। भविष्यवक्ता ने उससे कहा, “तू उन देवताओं के पीछे क्यों जाता है जो अपने लोगों को तेरे हाथ से बचा नहीं सके?”[2] **16** भविष्यवक्ता बात कर ही रहा था कि राजा ने उसे बीच में टोककर कहा, “तुझे किसने राजा का सलाहकार बनाया है?[3] चुप हो जा,[4] वरना तू मार डाला जाएगा!” तब भविष्यवक्ता यह कहकर चुप हो गया, “मैं जानता हूँ कि परमेश्‍वर ने तेरा नाश करने का फैसला किया है क्योंकि तूने यह काम किया है और मेरी सलाह नहीं मानी।”[5]

17 यहूदा के राजा अमज्याह ने अपने सलाहकारों से बात करने के बाद, अपने दूतों के हाथ इसराएल के राजा यहोआश को (जो यहोआहाज का बेटा और येहू का पोता था) यह संदेश भेजा: “युद्ध के मैदान में आ, हम एक-दूसरे से मुकाबला* करें।”[6] **18** इसराएल के राजा यहोआश ने यहूदा के राजा अमज्याह को यह जवाब भेजा: “लबानोन के काँटेदार पौधे ने लबानोन के देवदार को एक संदेश भेजा, ‘अपनी बेटी का हाथ मेरे बेटे के हाथ में दे दे।’ मगर लबानोन का एक जंगली जानवर वहाँ से गुज़रा और उसने काँटेदार पौधे को रौंद डाला। **19** तू कहता है, “देखा, मैंने* एदोम को हरा दिया है!”[1] तेरा मन घमंड से फूल गया है, तू अपनी वाह-वाही चाहता है। मगर अब तू अपने महल में ही रह। क्यों तू बेकार में मुसीबत को दावत दे रहा है? खुद तो डूबेगा ही, साथ में पूरे यहूदा को भी ले डूबेगा।”

20 मगर अमज्याह ने यहोआश की बात नहीं मानी।[2] सच्चे परमेश्‍वर की यही मरज़ी थी कि वे दुश्‍मनों के हाथ में कर दिए जाएँ[3] क्योंकि वे एदोम के देवताओं के पीछे चलने लगे थे।[4] **21** इसलिए इसराएल का राजा यहोआश, यहूदा के राजा अमज्याह से युद्ध करने निकला और उनका मुकाबला बेत-शेमेश[5] में हुआ जो यहूदा के इलाके में है। **22** इसराएल ने यहूदा को हरा दिया और यहूदा के सभी लोग अपने-अपने घर* भाग गए। **23** इसराएल के राजा यहोआश ने बेत-शेमेश में यहूदा के राजा अमज्याह को पकड़ लिया, जो यहोआश का बेटा और यहोआहाज* का पोता था। यहोआश अमज्याह को पकड़कर यरूशलेम ले आया और वहाँ की शहरपनाह का एक हिस्सा तोड़ दिया। उसने एप्रैम फाटक[6] से लेकर ‘कोनेवाले फाटक’[7] तक का 400 हाथ# लंबा हिस्सा ढा दिया। **24** यहोआश ने सच्चे परमेश्‍वर के भवन से सारा सोना-चाँदी और दूसरा सामान लूट लिया, जो ओबेद-एदोम की देखरेख में था। उसने राजमहल के खज़ानों से भी सारा सोना-चाँदी और दूसरा सामान लूट लिया[8] और कुछ लोगों को बंदी बना लिया। फिर वह सामरिया लौट गया।

25:17 *या “का सामना।” **25:19** *शा., “तूने।”

25:22 *शा., “तंबू।” **25:23** *अहज्याह भी कहलाता था। #करीब 178 मी. (584 फुट)। अति. ख14 देखें।

अध्य. 25
1 निर्ग 20:3, 5; व्य 7:25; 2इत 28:22, 23
2 2इत 24:20; भज 115:8; यिर्म 2:5; यिर्म 10:5
3 2इत 16:10; 2इत 18:25, 26
4 यश 30:10
5 1शम 2:25; नीत 29:1
6 2रा 14:8-10

दूसरा कॉल.
1 2इत 25:11
2 2रा 14:11-14
3 2इत 22:7
4 2इत 25:14
5 यह 21:8, 16; 1शम 6:19
6 नहे 8:16; नहे 12:38, 39
7 2इत 26:9; यिर्म 31:38; जक 14:10
8 1रा 7:51; 1रा 15:18; 2रा 24:12, 13; 2रा 25:13-15; 2इत 12:9

25 इसराएल के राजा यहोआहाज
के बेटे यहोआश[1] की मौत के बाद
यहूदा का राजा अमज्याह[2] (जो यहो-
आश का बेटा था) 15 साल और
जीया।[3] **26** अमज्याह की ज़िंदगी की
बाकी कहानी, शुरू से लेकर आखिर
तक का इतिहास, यहूदा और इसराएल
के राजाओं की किताब में लिखा है।
27 जब से अमज्याह ने यहोवा के पीछे
चलना छोड़ दिया, तब से यरूशलेम में
उसके दुश्मन उसके खिलाफ साज़िश
करने लगे,[4] इसलिए वह लाकीश भाग
गया। मगर उसके दुश्मनों ने अपने आद-
मियों को लाकीश भेजा और उसे वहाँ
मरवा डाला। **28** वे उसकी लाश घोड़ों
पर लादकर ले आए और यहूदा के शहर
में उसके पुरखों की कब्र में दफना दी।

26 फिर यहूदा के सब लोगों ने
अमज्याह के बेटे उज्जियाह[5]
को उसकी जगह राजा बनाया। उस
वक्त उज्जियाह 16 साल का था।[6]
2 जब राजा* की मौत हो गयी# तो
उसने एलत[7] को फिर से बनाया और उसे
वापस यहूदा के अधिकार में कर दिया।[8]
3 उज्जियाह[9] जब राजा बना तब वह
16 साल का था और उसने यरूशलेम
में रहकर 52 साल राज किया। उसकी
माँ का नाम यकोल्याह था जो यरू-
शलेम की रहनेवाली थी।[10] **4** उज्जि-
याह अपने पिता अमज्याह की तरह
यहोवा की नज़र में सही काम करता
रहा।[11] **5** जकरयाह के दिनों में वह
परमेश्वर की खोज करता रहा। जकर-
याह ने ही उसे सच्चे परमेश्वर का डर
मानना सिखाया था। जब तक उज्जियाह
सच्चे परमेश्वर यहोवा की खोज करता
रहा, तब तक परमेश्वर की आशीष से
वह फलता-फूलता रहा।[1]

6 वह पलिश्तियों से लड़ने गया[2] और
गत,[3] यब्ने[4] और अशदोद[5] की शहर-
पनाहों में छेद करके उन शहरों में
घुस गया और उसने उन पर कब्ज़ा
कर लिया। फिर उसने अशदोद के
इलाके में और पलिश्तियों के इलाके
में शहर बनाए। **7** सच्चा परमेश्वर उसे
पलिश्तियों, गूरबाल में रहनेवाले अरबी
लोगों[6] और मऊनी लोगों पर जीत
हासिल करने में मदद देता रहा।
8 अम्मोनी लोग[7] उज्जियाह को नज़-
राना देने लगे। उसकी शोहरत दूर मिस्र
तक फैल गयी क्योंकि वह बहुत ताकतवर
हो गया था। **9** इसके अलावा, उज्जि-
याह ने यरूशलेम के 'कोनेवाले फाटक'[8]
के पास, 'घाटी के फाटक'[9] के पास और
पुश्ते के पास मज़बूत मीनारें खड़ी कीं।[10]
10 उसने वीराने में भी मीनारें[11] खड़ी
कीं और बहुत-से कुंड खुदवाए* (क्योंकि
उसके पास बड़ी तादाद में मवेशी थे)।
उसने शफेलाह और मैदान में# भी मीनारें
बनवायीं और कुंड खुदवाए। पहाड़ों पर
और करमेल में उसके किसान और अंगूरों
के बागों के माली थे, क्योंकि वह खेती-
बाड़ी का बड़ा शौकीन था।

11 उज्जियाह की एक मज़बूत सेना
भी थी जो हथियारों से लैस थी। उन्हें
अलग-अलग दलों में बाँटा गया था और
इसी कायदे से वे युद्ध में जाते थे। राज-
सचिव[12] यीएल और अधिकारी मासेयाह
ने उनकी गिनती की और उनका नाम
लिखवाया था।[13] वे दोनों राजा के एक
हाकिम हनन्याह की कमान के नीचे काम

26:2 *यानी उसके पिता अमज्याह। #शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।"

26:10 *या "काटे," शायद चट्टान में से। #या "पठार पर।"

अध्य. 25
1 2रा 13:10
2 2रा 14:1
3 2रा 14:17-20
4 2रा 12:20; 2रा 15:8, 10; 2रा 21:23

अध्य. 26
5 मत 1:8
6 2रा 14:21
7 1रा 9:26; 2रा 16:6
8 2रा 14:22
9 यश 1:1; यश 6:1
10 2रा 15:2
11 2रा 14:1, 3

दूसरा कॉल.
1 2इत 14:7; भज 1:2, 3
2 2शम 8:1; 2इत 21:16; यश 14:29
3 1इत 18:1
4 यह 15:11, 12
5 यह 15:20, 46; 1शम 5:1
6 2इत 17:11
7 उत 19:36, 38; न्या 11:15
8 2रा 14:13; यिर्म 31:38; जक 14:10
9 नहे 3:13
10 2इत 14:2, 7
11 2रा 9:17
12 2इत 24:11
13 गि 1:2, 3; 2शम 24:9

करते थे। **12** राजा के वीर योद्धाओं के
सेनापति, पिताओं के घरानों के मुखिया
थे और उनकी कुल गिनती 2,600 थी।
13 और उनकी कमान के नीचे 3,07,-
500 सैनिक थे जो युद्ध के लिए तैयार
थे। राजा की तरफ से दुश्मनों से लड़ने-
वाली यह सेना बहुत ताकतवर थी।[1]
14 उज्जियाह ने अपनी पूरी सेना को
ढालों, बरछों,[2] टोपों, बख्तर,[3] तीर-
कमानों और गोफन के पत्थरों से लैस
कराया।[4] **15** इतना ही नहीं, उसने
यरूशलेम में कुशल कारीगरों से युद्ध के
यंत्र बनवाए थे। ये यंत्र मीनारों[5] पर और
शहरपनाहों के कोनों पर रखे गए थे और
इनसे तीर छोड़े जाते और बड़े-बड़े पत्थर
फेंके जाते थे। उज्जियाह की शोहरत दूर-
दूर तक फैल गयी क्योंकि उसे बहुत मदद
मिली थी और वह काफी ताकतवर हो
गया था।

16 मगर जैसे ही वह ताकतवर हो
गया, उसका मन घमंड से फूल उठा
और यह उसकी बरबादी का कारण बन
गया। वह धूप की वेदी पर धूप जलाने के
लिए यहोवा के मंदिर में घुस गया और
ऐसा करके उसने अपने परमेश्वर यहोवा
के साथ विश्वासघात किया।[6] **17** जब
वह अंदर गया तो फौरन अजरयाह
याजक और यहोवा के 80 और
दिलेर याजक उसके पीछे-पीछे गए।
18 उन्होंने राजा उज्जियाह को रोकते हुए
कहा, "उज्जियाह, यहोवा के लिए धूप
जलाना तेरा काम नहीं है![7] यह काम
सिर्फ याजकों का है क्योंकि वे हारून के
वंशज हैं[8] और उन्हें पवित्र किया गया
है। तू पवित्र-स्थान से बाहर चला जा,
तूने विश्वासघात किया है। इस काम के
लिए यहोवा परमेश्वर से तुझे सम्मान नहीं
मिलेगा।"

अध्य. 26

1 2इत 11:1, 2इत 13:3, 2इत 14:8, 2इत 17:14, 2इत 25:5
2 2इत 11:5, 12
3 1शम 17:4, 5
4 न्या 20:16, 1शम 17:49, 1इत 12:1, 2
5 2इत 14:2, 7
6 गि 1:51
7 गि 16:39, 40, गि 18:7
8 निर्ग 30:7, 1इत 23:13

दूसरा कॉल.

1 2इत 16:10, 2इत 25:15, 16
2 गि 12:10, 2रा 5:27
3 लैव 13:45, 46, गि 5:2, गि 12:14, 15
4 2रा 15:5-7
5 यश 1:1, यश 6:1
6 2रा 15:32

अध्य. 27

7 यश 1:1, हो 1:1, मी 1:1, मत 1:9
8 2रा 15:33
9 2रा 15:34, 35, 2इत 26:3, 4

19 मगर उज्जियाह, जिसके हाथ में
धूपदान था, उन याजकों पर भड़क
उठा।[1] वह याजकों पर गुस्सा कर ही रहा
था कि तभी उसके माथे पर कोढ़[2] फूट
निकला। यह सब यहोवा के भवन में, धूप
की वेदी के पास याजकों के सामने हुआ।
20 प्रधान याजक अजरयाह और बाकी
सब याजकों ने देखा कि उसके माथे पर
कोढ़ हो गया है! वे उसे फौरन वहाँ से
बाहर ले जाने लगे और वह खुद भी जल्दी
करने लगा, क्योंकि यहोवा ने उसे कोढ़ी
बना दिया।

21 राजा उज्जियाह अपनी मौत तक
कोढ़ी रहा। वह एक अलग घर में रहने
लगा[3] क्योंकि उसे यहोवा के भवन में
जाने की इजाज़त नहीं थी। उसके बेटे
योताम ने महल की बागडोर सँभाली और
वह देश के लोगों का न्याय करता था।[4]

22 उज्जियाह की ज़िंदगी की बाकी
कहानी, शुरू से लेकर आखिर तक का
इतिहास आमोज के बेटे भविष्यवक्ता
यशायाह ने दर्ज़ किया था।[5] **23** फिर
उज्जियाह की मौत हो गयी* और उसे
उसके पुरखों की कब्र में दफनाया गया,
मगर उसे राजाओं की कब्र की पासवाली
ज़मीन में दफनाया गया क्योंकि उन्होंने
कहा, "वह कोढ़ी है।" उसकी जगह
उसका बेटा योताम[6] राजा बना।

27 योताम[7] जब राजा बना तब वह
25 साल का था और उसने यरू-
शलेम में रहकर 16 साल राज किया।
उसकी माँ का नाम यरूशा था जो सादोक
की बेटी थी।[8] **2** योताम अपने पिता
उज्जियाह की तरह यहोवा की नज़र में
सही काम करता रहा।[9] उसके पिता और
उसमें यही फर्क था कि वह अपने

26:23 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।"

पिता की तरह ज़बरदस्ती यहोवा के मंदिर में नहीं घुसा।[1] मगर लोग अब भी बुरे काम करते थे। **3** उसने यहोवा के भवन का ऊपरी फाटक बनवाया[2] और ओपेल की शहरपनाह पर काफी काम करवाया।[3] **4** उसने यहूदा के पहाड़ी प्रदेश[4] में भी शहर बनवाए[5] और जंगलों में किले[6] और मीनारें बनवायीं।[7] **5** उसने अम्मोनियों के राजा से युद्ध किया[8] और आखिरकार उन्हें हरा दिया, इसलिए अम्मोनियों ने उस साल उसे 100 तोड़े* चाँदी और दस-दस हज़ार कोर# गेहूँ और जौ दिए। अम्मोनियों ने दूसरे और तीसरे साल भी उसे यह सब दिया।[9] **6** इस तरह योताम दिनों-दिन ताकतवर होता गया, क्योंकि उसने अपने परमेश्वर यहोवा की राहों पर चलने की ठान ली थी।

7 योताम की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसने जो-जो युद्ध किए, उनके बारे में और उसके चालचलन के बारे में इसराएल और यहूदा के राजाओं की किताब में लिखा है।[10] **8** जब वह राजा बना तब वह 25 साल का था और उसने यरूशलेम में रहकर 16 साल राज किया।[11] **9** फिर योताम की मौत हो गयी* और उसे दाविदपुर[12] में दफनाया गया। उसकी जगह उसका बेटा आहाज राजा बना।[13]

28 आहाज[14] जब राजा बना तब वह 20 साल का था और उसने यरूशलेम में रहकर 16 साल राज किया। उसने ऐसे काम नहीं किए जो यहोवा की नज़र में सही थे, जैसे उसके पुरखे दाविद ने किए थे।[1] **2** इसके बजाय उसने इसराएल के राजाओं के तौर-तरीके अपना लिए,[2] यहाँ तक कि बाल देवताओं की धातु की मूरतें* बनवायीं।[3] **3** और उसने 'हिन्नोम के वंशजों की घाटी'* में बलिदान चढ़ाए ताकि उनका धुआँ उठे और आग में अपने बेटों को होम कर दिया।[4] इस तरह उसने उन राष्ट्रों के जैसे घिनौने काम किए,[5] जिन्हें यहोवा ने इसराएलियों के सामने से खदेड़ दिया था। **4** इतना ही नहीं, वह ऊँची जगहों[6] और पहाड़ियों पर और हर घने पेड़ के नीचे बलिदान चढ़ाता था[7] ताकि उनका धुआँ उठे।

5 इसलिए उसके परमेश्वर यहोवा ने उसे सीरिया के राजा के हाथ में कर दिया।[8] उन्होंने उसे हरा दिया और बहुत-से लोगों को बंदी बनाकर दमिश्क[9] ले गए। आहाज को इसराएल के राजा के हाथ में भी कर दिया गया, जिसने उसके यहाँ आकर बहुत मार-काट मचायी। **6** रमल्याह के बेटे पेकह[10] ने एक ही दिन में यहूदा के 1,20,000 दिलेर आदमियों को मार डाला, क्योंकि उन्होंने अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया था।[11] **7** एक एप्रैमी योद्धा जिक्री ने राजा के बेटे मासेयाह को और अजरीकाम को मार डाला, जिसे राजमहल* का ज़िम्मा सौंपा गया था। उसने एलकाना को भी मार डाला जो राजा के बादवाले ओहदे पर था। **8** और इसराएलियों ने यहूदा से अपने 2,00,000 भाइयों को बंदी बना लिया, जिनमें औरतें, लड़के और लड़कियाँ भी थीं। उन्होंने खूब सारा माल लूटा और सामरिया[12] ले गए।

27:5 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें। #एक कोर 220 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। **27:9** *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।"

28:2 *या "ढली हुई मूरतें।" **28:3** *शब्दावली में "गेहन्ना" देखें। **28:7** *शा., "घर।"

अध्य. 27

1 2इत 26:16-18
2 यिर्म 26:10
3 2इत 33:1, 14; नहे 3:26
4 यह 14:12, 13
5 2इत 11:5; 2इत 14:2, 7
6 2इत 17:12
7 2रा 9:17; 2इत 26:9, 10
8 न्या 11:4; 2शम 10:6; 2इत 20:1; यिर्म 49:1
9 2इत 26:8
10 2रा 15:36
11 2रा 15:33
12 2शम 5:9
13 2रा 15:38

अध्य. 28

14 हो 1:1; मी 1:1; मत 1:9

दूसरा कॉल.

1 2रा 16:2
2 1रा 12:26, 28; 1रा 16:33
3 निर्ग 34:17
4 2इत 33:1, 6; यिर्म 7:31
5 व्य 12:31
6 लैव 26:30
7 यश 57:4, 5
8 2रा 16:5, 6; 2इत 24:24
9 2शम 8:6; 1इत 18:5
10 2रा 15:37; यश 7:1
11 2इत 15:2; भज 73:27
12 1रा 16:23, 24; 1रा 22:51

9 मगर वहाँ यहोवा का एक भविष्य-
वक्ता था जिसका नाम ओदेद था। वह
सामरिया आनेवाली सेना के सामने गया
और सैनिकों से कहा, "देखो! तुम्हारे
पुरखों के परमेश्वर यहोवा का क्रोध
यहूदा पर भड़का हुआ था, इसलिए उसने
यहूदा के लोगों को तुम्हारे हाथ में कर
दिया।[1] और तुमने ऐसी जलजलाहट से
यहूदा में मार-काट मचायी है कि उनकी
चीख-पुकार स्वर्ग तक पहुँच गयी है।
10 और अब तुम यहूदा और यरूशलेम
के लोगों को अपने दास-दासी बनाना
चाहते हो।[2] मगर क्या तुम भी अपने पर-
मेश्वर यहोवा के सामने दोषी नहीं हो?
11 इसलिए मेरी सुनो और इन बंदियों
को लौटा दो जिन्हें तुम अपने भाइयों के
यहाँ से ले आए हो, क्योंकि यहोवा के
क्रोध की आग तुम पर भड़क उठी है।"

12 तब एप्रैमियों के कुछ मुखियाओं
ने यानी यहोहानान के बेटे अजरयाह,
मशिल्लेमोत के बेटे बेरेक्याह, शल्लूम
के बेटे यहिजकियाह और हदलै के
बेटे अमासा ने युद्ध से लौटनेवालों
का सामना किया 13 और उनसे कहा,
"तुम बंदियों को हमारे यहाँ मत लाना,
वरना हम यहोवा के सामने दोषी ठह-
रेंगे। तुम जो करने की सोच रहे हो, उससे
हमारा पाप और दोष और बढ़ जाएगा,
क्योंकि हम पहले ही बहुत दोषी हैं और
इसराएल पर परमेश्वर का क्रोध भड़क
उठा है।" 14 तब हथियारबंद सैनिकों
ने बंदियों और लूट के माल[3] को हाकिमों
और पूरी मंडली के हवाले कर दिया।
15 फिर जिन आदमियों को नाम से चुना
गया था, उन्होंने आकर बंदियों को लिया।
उन्होंने बंदियों में से उन्हें लूट के माल से
कपड़े दिए जिनके पास कपड़े नहीं थे।
साथ ही उन्हें पैरों के लिए जूतियाँ दीं,
खाने-पीने की चीज़ें दीं और शरीर के
लिए तेल दिया। और उन्होंने कमज़ोरों
को गधों पर चढ़ाया और उनके भाइयों के
पास यरीहो ले आए, जो खजूर के पेड़ों
का शहर है। इसके बाद, वे सामरिया
लौट गए।

16 उन्हीं दिनों राजा आहाज ने
अश्शूर के राजाओं से मदद माँगी।[1]
17 एक बार फिर एदोमियों ने यहूदा पर
हमला करके उसे हरा दिया और बंदियों
को उठाकर ले गए। 18 पलिश्तियों[2]
ने भी यहूदा के शफेलाह[3] और नेगेब
के इलाके पर धावा बोल दिया और
इन शहरों पर कब्ज़ा कर लिया: बेत-
शेमेश,[4] अय्यालोन,[5] गदेरोत, सोको
और उसके आस-पास के नगर, तिमना[6]
और उसके आस-पास के नगर और
गिमजो और उसके आस-पास के नगर।
और वे इन शहरों में बस गए।
19 यहोवा ने इसराएल के राजा आहाज
की वजह से यहूदा को नीचा दिखाया,
क्योंकि आहाज ने यहूदा को पाप करने
की पूरी छूट दे दी जिस वजह से लोगों ने
यहोवा से विश्वासघात करने में हद कर
दी थी।

20 आखिरकार अश्शूर के राजा
तिलगत-पिलनेसेर[7] ने आहाज पर हमला
कर दिया और वह उसे मज़बूत करने
के बजाय उस पर मुसीबत ले आया।[8]
21 आहाज ने यहोवा का भवन, राज-
महल और हाकिमों के भवनों को पूरी
तरह खाली करके[9] अश्शूर के राजा को
तोहफा दिया था, मगर इससे कोई फायदा
नहीं हुआ। 22 और मुसीबत के वक्त
राजा आहाज ने यहोवा से और भी
विश्वासघात किया। 23 जिस दमिश्क
ने उसे हरा दिया था, वह उसी के देव-
ताओं के आगे बलिदान चढ़ाने लगा[10]

अध्य. 28

1 न्या 2:14; न्या 3:8
2 लैव 25:39, 46; 2इत 8:9
3 2इत 28:8

दूसरा कॉल.

1 2रा 16:7, 8; यश 7:10-12
2 2इत 26:1, 6
3 2इत 26:10
4 यह 15:10, 12
5 2इत 11:10
6 न्या 14:1
7 2रा 15:29; 2रा 16:7, 8; 1इत 5:26
8 2रा 17:5; यश 7:20
9 2रा 18:15, 16; 2इत 12:9
10 2रा 16:10-13; 2इत 25:14

क्योंकि उसने कहा, “सीरिया के राजाओं
के देवता उनकी मदद कर रहे हैं, इस-
लिए मैं भी उन देवताओं के आगे
बलिदान चढ़ाऊँगा ताकि वे मेरी मदद
करें।”[1] मगर उन्होंने उसे और पूरे इस-
राएल को बरबाद कर दिया। **24** यही
नहीं, आहाज ने सच्चे परमेश्वर के भवन
की चीज़ें इकट्ठी कीं और उनके टुकड़े-
टुकड़े कर डाले,[2] यहोवा के भवन
के दरवाज़े बंद कर दिए[3] और यरू-
शलेम के हर कोने में अपने लिए वेदियाँ
खड़ी कर दीं। **25** उसने यहूदा के सभी
शहरों में ऊँची जगह बनायीं ताकि वहाँ
दूसरे देवताओं के लिए बलिदान चढ़ाया
जाए जिससे धुआँ उठे।[4] उसने अपने
पुरखों के परमेश्वर यहोवा का क्रोध भड़-
काया।

26 उसकी ज़िंदगी की बाकी कहानी,
उसके सभी कामों के बारे में शुरू से
लेकर आखिर तक का ब्यौरा यहूदा
और इसराएल के राजाओं की किताब
में लिखा है।[5] **27** फिर आहाज की
मौत हो गयी* और उसे यरूशलेम में दफ-
नाया गया। उसे इसराएल के राजाओं
की कब्र में नहीं दफनाया गया।[6] उसकी
जगह उसका बेटा हिजकियाह राजा बना।

29 हिजकियाह[7] जब राजा बना तब
वह 25 साल का था और उसने
यरूशलेम में रहकर 29 साल राज
किया। उसकी माँ का नाम अबियाह
था जो जकरयाह की बेटी थी।[8]
2 हिजकियाह यहोवा की नज़र में सही
काम करता रहा,[9] ठीक जैसे उसके पुरखे
दाविद ने किया था।[10] **3** अपने राज के
पहले साल के पहले महीने, उसने यहोवा
के भवन के दरवाज़े खोले और उनकी
मरम्मत की।[1] **4** फिर उसने याजकों
और लेवियों को भवन के पूरब के
चौक में इकट्ठा किया। **5** उसने उनसे
कहा, “लेवियो, मेरी बात सुनो। अब
तुम सब खुद को पवित्र करो[2] और
अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा के
भवन को पवित्र करो। और पवित्र
जगह से अशुद्ध चीज़ें निकालकर फेंक
दो।[3] **6** क्योंकि हमारे पिताओं ने पर-
मेश्वर से विश्वासघात किया और हमारे
परमेश्वर यहोवा की नज़रों में बुरा काम
किया।[4] उन्होंने उसे छोड़ दिया, यहोवा
के पवित्र डेरे से मुँह फेर लिया और
उसे पीठ दिखायी।[5] **7** उन्होंने भवन
के बरामदे के दरवाज़े भी बंद कर
दिए[6] और दीए बुझा दिए।[7] उन्होंने
पवित्र जगह में इसराएल के परमेश्वर
के लिए धूप जलाना[8] और होम-बलियाँ
चढ़ाना बंद कर दिया।[9] **8** इसलिए
यहूदा और यरूशलेम पर यहोवा का
क्रोध भड़क उठा[10] और जैसा कि तुम
देख सकते हो, उसने यहूदा और यरू-
शलेम का ऐसा हश्र किया कि उनकी बर-
बादी देखकर लोगों का दिल दहल गया,
वे दंग रह गए और उन्होंने उनका
मज़ाक बनाया।*[11] **9** हमारे बाप-दादा
तलवार से मारे गए,[12] हमारे बेटे-
बेटियों और हमारी पत्नियों को बंदी बना
लिया गया।[13] **10** अब यह मेरी दिली
तमन्ना है कि मैं इसराएल के परमेश्वर
यहोवा के साथ एक करार करूँ[14] ताकि
उसके क्रोध की आग हमसे दूर हो जाए।
11 मेरे बेटो, अब यह वक्त लापरवाही
बरतने* का नहीं है क्योंकि यहोवा ने

अध्य. 28
1 यिर्म 44:18
2 2रा 16:17
3 1रा 6:33, 34; 2इत 29:7
4 1रा 14:22, 23; 2रा 15:32, 35; 2इत 21:5, 11; 2इत 33:1, 3
5 2रा 16:19
6 2इत 21:16, 20; 2इत 33:20

अध्य. 29
7 यश 1:1; हो 1:1; मत 1:10
8 2रा 18:1, 2
9 2इत 31:20
10 1रा 15:5; 2रा 18:3

दूसरा कॉल.
1 1रा 6:33, 34; 2इत 28:24
2 1इत 15:11, 12
3 2रा 18:4
4 2इत 28:22, 23; यिर्म 44:21
5 यिर्म 2:27; यहे 8:16
6 1रा 6:33, 34
7 लैव 24:2
8 निर्ग 30:8
9 निर्ग 29:38
10 2इत 24:18
11 लैव 26:32; व्य 28:15, 25
12 लैव 26:14, 17
13 2इत 28:5-8
14 2इत 15:10-13

28:27 *शा., “अपने पुरखों के साथ सो गया।”

29:8 *शा., “सीटी बजायी।” **29:11** *या “आराम करने।”

तुम्हें इसलिए चुना है कि तुम उसके
सामने खड़े होकर उसकी सेवा करो[1] और
उसके लिए बलिदान चढ़ाओ ताकि उनका
धुआँ उठे।"[2]

12 तब ये सभी लेवी काम पर लग
गए: कहातियों[3] में से अमासै का बेटा
महत और अजरयाह का बेटा योएल,
मरारियों[4] में से अब्दी का बेटा कीश और
यहल्ले-लेल का बेटा अजरयाह, गेर-
शोनियों[5] में से जिम्मा का बेटा योआह
और योआह का बेटा अदन, **13** एली-
सापान के बेटों में से शिम्री और यूएल,
आसाप के बेटों[6] में से जकरयाह और
मत्तन्याह, **14** हेमान के बेटों[7] में से
यहीएल और शिमी और यदूतून के बेटों[8]
में से शमायाह और उज्जीएल। **15** इन
लेवियों ने अपने भाइयों को इकट्ठा किया।
फिर सबने खुद को पवित्र किया और वे
यहोवा के भवन को शुद्ध करने के लिए
आगे आए, ठीक जैसे राजा ने यहोवा
के कहने पर आज्ञा दी थी।[9] **16** फिर
याजक यहोवा के भवन को शुद्ध करने
के लिए उसके अंदर गए और उन्हें
यहोवा के मंदिर में जितनी भी अशुद्ध
चीज़ें मिलीं, वह सब बाहर यहोवा के
भवन के आँगन[10] में ले आए। फिर
लेवी वे चीज़ें उठाकर किदरोन घाटी[11] ले
गए। **17** इस तरह उन्होंने पहले महीने
के पहले दिन यहोवा के भवन को पवित्र
करने का काम शुरू किया और उसी
महीने के आठवें दिन वे भवन के बराम-
दे[12] तक पहुँच गए। उन्होंने आठ दिन
तक यहोवा के भवन को पवित्र किया
और पहले महीने के 16वें दिन यह
काम पूरा कर लिया।

18 इसके बाद उन्होंने राजा हिज-
कियाह के पास जाकर कहा, "हमने
यहोवा के पूरे भवन को शुद्ध कर दिया
है। होम-बलि की वेदी[1] और उसके साथ
इस्तेमाल होनेवाली सारी चीज़ें,[2] रोटियों
का ढेर* रखनेवाली मेज़[3] और उसके
साथ इस्तेमाल होनेवाली सारी चीज़ें शुद्ध
कर दी हैं। **19** और उन सारी चीज़ों
को तैयार करके पवित्र किया है[4] जिन्हें
राजा आहाज ने अपने राज के दौरान
परमेश्वर से विश्वासघात करके निकाल
दिया था।[5] वे चीज़ें अब यहोवा की वेदी
के सामने हैं।"

20 राजा हिजकियाह सुबह जल्दी
उठा और उसने शहर के हाकिमों को
इकट्ठा किया और वे यहोवा के भवन में
गए। **21** वे सात बैल, सात मेढ़े, सात
नर मेम्ने और सात बकरे ले आए
ताकि राज, पवित्र-स्थान और यहूदा की
खातिर उनकी पाप-बलि चढ़ा सकें।[6]
राजा ने हारूनवंशी याजकों से कहा कि
वे यहोवा की वेदी पर इन जानवरों की
बलि चढ़ाएँ। **22** उन्होंने बैल हलाल
किए[7] और याजकों ने उनका खून ले
जाकर वेदी पर छिड़का।[8] इसके बाद
उन्होंने मेढ़े हलाल किए और उनका खून
वेदी पर छिड़का, फिर नर मेम्ने हलाल
किए और उनका खून वेदी पर छिड़का।
23 फिर वे पाप-बलि के बकरों को
राजा और मंडली के सामने ले आए
और अपना हाथ उन जानवरों पर रखा।
24 याजकों ने पूरे इसराएल के पापों का
प्रायश्चित करने के लिए जानवर हलाल
किए और उनका खून वेदी पर छिड़ककर
पाप-बलि चढ़ायी क्योंकि राजा ने कहा
था कि होम-बलि और पाप-बलि पूरे इस-
राएल की खातिर चढ़ायी जाए।

25 इस दौरान राजा ने लेवियों को
आज्ञा दी कि वे झाँझ, तारोंवाले बाजे

29:18 * यानी नज़राने की रोटी।

अध्या. 29
1 गि 3:6; व्य 10:8
2 1इत 23:13
3 गि 4:2, 3; 1इत 23:12
4 1इत 23:21
5 1इत 23:7
6 1इत 15:16, 17; 1इत 25:1, 2
7 1इत 25:5
8 1इत 25:1
9 2इत 29:5
10 1रा 6:36
11 2रा 23:4, 6; 2इत 15:16; यूह 18:1
12 1रा 6:3; 1इत 28:11

दूसरा कॉल.
1 2इत 4:1
2 1रा 7:40
3 1रा 7:48
4 2इत 29:5
5 2इत 28:1, 2; 2इत 28:24
6 लैव 4:3; लैव 4:13, 14; गि 15:22-24
7 लैव 4:4
8 लैव 4:7, 18

और सुरमंडल हाथ में लिए यहोवा के
भवन में खड़े रहें,[1] ठीक उस क्रम में जो
दाविद, राजा के दर्शी गाद[2] और भविष्य-
वक्ता नातान[3] ने ठहराया था।[4] यहोवा
ने अपने भविष्यवक्ताओं के ज़रिए यह
आज्ञा दी थी। **26** इसलिए लेवी दाविद
के बनाए साज़ हाथ में लिए खड़े रहे और
याजक तुरहियाँ लिए खड़े रहे।[5]

27 फिर हिजकियाह ने आदेश दिया
कि वेदी पर होम-बलि चढ़ायी जाए।[6]
जब होम-बलि चढ़ाना शुरू हुआ, तो
यहोवा के लिए गीत गाया जाने लगा और
इसराएल के राजा दाविद के बनाए साज़ों
की धुन पर तुरहियाँ फूँकी जाने लगीं।
28 जब गीत गाया जा रहा था और तुर-
हियाँ फूँकी जा रही थी तो पूरी मंडली के
लोगों ने अपना सिर झुकाए रखा। ऐसा
तब तक होता रहा जब तक कि होम-बलि
चढ़ाने का काम पूरा न हुआ। **29** जैसे
ही उन्होंने बलि चढ़ाना पूरा किया,
राजा और उसके साथवाले सभी लोगों
ने मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर दंडवत
किया। **30** फिर राजा हिजकियाह और
हाकिमों ने लेवियों से कहा कि वे दाविद
और आसाप दर्शी के गीत गाकर यहोवा
की तारीफ करें।[7] इसलिए उन्होंने आनंद-
मगन होकर परमेश्वर की तारीफ की
और मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर दंड-
वत किया।

31 फिर हिजकियाह ने कहा, "तुम
अब यहोवा के लिए अलग किए गए
हो,* इसलिए यहोवा के भवन में बलि-
दान और धन्यवाद-बलियाँ ले आओ।"
तब पूरी मंडली बलिदान और धन्य-
वाद-बलियाँ लेकर आयी और हर कोई
जो अपनी इच्छा से देना चाहता था
वह होम-बलियाँ ले आया।[1] **32** मंडली
होम-बलि के लिए 70 बैल, 100 मेढ़े
और 200 नर मेम्ने ले आयी। यह सब
यहोवा के लिए होम-बलि चढ़ाने के लिए
था।[2] **33** और पवित्र बलि के लिए
600 बैल और 3,000 भेड़ें लायी गयीं।
34 मगर होम-बलि के इन सभी जानवरों
की खाल उतारने के लिए काफी याजक
नहीं थे, इसलिए उनके लेवी भाइयों ने
उनकी मदद की।[3] वे तब तक उनकी
मदद करते रहे जब तक काम पूरा नहीं हो
गया और याजकों ने खुद को पवित्र न कर
लिया।[4] याजकों से कहीं ज़्यादा लेवियों ने
खुद को पवित्र करने पर ध्यान दिया
था।* **35** इसके अलावा, होम-बलि के
लिए बहुत-से जानवर,[5] शांति-बलियों के
चरबीवाले हिस्से[6] और होम-बलि के साथ
बहुत-सा अर्घ चढ़ाया गया।[7] इस तरह
यहोवा के भवन में सेवाएँ फिर से शुरू की
गयीं।* **36** सच्चे परमेश्वर ने लोगों
की खातिर जो किया था, उसकी वजह से
हिजकियाह और लोगों ने बहुत खुशियाँ
मनायीं[8] क्योंकि यह सब इतनी जल्दी
हो गया था।

30 हिजकियाह ने पूरे इसराएल और
यहूदा में संदेश भिजवाया[9] और
एप्रैम और मनश्शे के इलाकों[10] को भी
चिट्ठियाँ भेजीं और उन सबसे कहा कि
वे इसराएल के परमेश्वर यहोवा के लिए
फसह मनाने यरूशलेम में यहोवा के भवन
आएँ।[11] **2** राजा, उसके हाकिमों और
यरूशलेम की पूरी मंडली ने फैसला किया
था कि फसह दूसरे महीने मनाया
जाएगा।[12] **3** वे पहले महीने[13] यह
त्योहार नहीं मना पाए थे क्योंकि बहुत-से

29:31 *शा., "अब तुमने अपना हाथ भर लिया है।"

29:34 *शा., "लेवी खुद को पवित्र करने में मन के सीधे-सच्चे थे।" **29:35** *या "सेवाओं की तैयारी की गयी।"

अध्य. 29
1 1इत 25:1, 6; 2इत 9:11
2 2शम 24:11, 12; 1इत 29:29
3 2शम 7:2; 2शम 12:1
4 1इत 28:12, 13; 2इत 8:12, 14
5 गि 10:8; 1इत 15:24
6 लैव 1:3, 4
7 2शम 23:1; 1इत 16:7

दूसरा कॉल.
1 लैव 1:3
2 1रा 3:4; 1रा 8:63; 1इत 29:21, 22
3 गि 8:19; 2इत 30:17; 2इत 35:10, 11
4 2इत 30:2, 3
5 2इत 29:32
6 लैव 3:1; लैव 3:14-16
7 गि 15:5
8 2इत 30:12

अध्य. 30
9 2इत 11:14, 16
10 2इत 34:1, 6, 7
11 निर्ग 12:43; लैव 23:5; व्य 16:2; 2इत 35:1
12 गि 9:10, 11
13 निर्ग 12:18

याजकों ने खुद को पवित्र नहीं किया
था,[1] न ही लोग यरूशलेम में इकट्ठा हुए
थे। 4 दूसरे महीने फसह मनाने का यह
इंतज़ाम राजा को और पूरी मंडली को
सही लगा। 5 इसलिए उन्होंने बेरशेबा
से दान[2] तक पूरे इसराएल में यह ऐलान
करने का फैसला किया कि लोग इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा के लिए फसह
मनाने यरूशलेम आएँ, क्योंकि इससे
पहले उनके पूरे समूह ने मिलकर
कानून के मुताबिक यह त्योहार नहीं
मनाया था।[3]

6 फिर दूत राजा और हाकिमों की
चिट्ठियाँ लेकर पूरे इसराएल और यहूदा
में गए, ठीक जैसे राजा ने उन्हें आज्ञा
दी थी। वे यह कहते गए, "इसराएल के
लोगो, अब्राहम, इसहाक और इसराएल
के परमेश्वर यहोवा के पास लौट आओ
ताकि वह तुम लोगों के पास लौट आए
जो अश्शूर के राजाओं के हाथ से बच
निकले हो।[4] 7 तुम अपने पुरखों की
तरह मत बनो, न ही अपने भाइयों की
तरह बनो, जिन्होंने अपने पुरखों के पर-
मेश्वर यहोवा से विश्वासघात किया था,
इसलिए परमेश्वर ने उनका ऐसा हश्र
किया कि देखनेवालों का दिल दहल उठा,
जैसा कि तुम देख रहे हो।[5] 8 अब तुम
अपने पुरखों की तरह ढीठ मत बनो।[6]
यहोवा के अधीन हो जाओ और उसके
पवित्र स्थान में आओ[7] जिसे उसने हमेशा
के लिए पवित्र किया है और अपने
परमेश्वर यहोवा की सेवा करो ताकि
उसके क्रोध की आग तुमसे दूर हो
जाए।[8] 9 जब तुम यहोवा के पास लौट
आओगे, तो तुम्हारे भाइयों और बेटों पर
वे लोग दया करेंगे जिन्होंने उन्हें बंदी बना
लिया है[9] और वे उन्हें इस देश में लौटने
देंगे[10] क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
करुणा से भरा और दयालु है।[1] अगर
तुम उसके पास लौटोगे तो वह तुमसे मुँह
नहीं फेरेगा।"[2]

10 दूत पूरे एप्रैम और मनश्शे प्रदेश
के हर शहर में गए,[3] यहाँ तक कि जबू-
लून भी गए, मगर लोग उनका मज़ाक
बनाने लगे और उनकी खिल्ली उड़ाने
लगे।[4] 11 फिर भी आशेर, मनश्शे
और जबूलून के कुछ लोगों ने खुद
को नम्र किया और यरूशलेम आए।[5]
12 साथ ही, सच्चे परमेश्वर की आशीष
यहूदा पर थी और उसने एक होकर*
राजा और हाकिमों की वह आज्ञा मानी
जो उन्होंने यहोवा के कहे मुताबिक
दी थी।

13 दूसरे महीने[6] लोगों की एक बड़ी
भीड़ बिन-खमीर की रोटी का त्योहार
मनाने यरूशलेम में इकट्ठी हुई।[7] यह
वाकई बहुत बड़ी भीड़ थी। 14 उन
सबने वे वेदियाँ निकाल दीं जो
यरूशलेम में थीं[8] और धूप की सारी
वेदियाँ भी निकाल दीं[9] और उन्हें ले
जाकर किदरोन घाटी में फेंक दिया।
15 इसके बाद उन्होंने दूसरे महीने के
14वें दिन फसह का जानवर हलाल
करके बलिदान किया। याजकों और
लेवियों ने शर्मिंदा महसूस किया, इसलिए
उन्होंने खुद को पवित्र किया और होम-
बलियाँ लेकर यहोवा के भवन में आए।
16 वे उन जगहों पर खड़े हुए जो उनके
लिए ठहरायी गयी थीं, ठीक जैसे सच्चे
परमेश्वर के सेवक मूसा के कानून में
बताया गया था। फिर याजकों ने लेवियों
के हाथ से खून लेकर वेदी पर छिड़का।[10]
17 मंडली में ऐसे कई लोग थे जिन्होंने
खुद को पवित्र नहीं किया था और

30:12 *शा., "उसने उन्हें एक मन देकर।"

अध्य. 30
1 2इत 29:34
2 न्या 18:29
3 2इत 35:18
4 2रा 15:29; 1इत 5:26; 2इत 28:20, 21
5 2इत 29:8, 9
6 निर्ग 32:9
7 व्य 12:5, 6; भज 132:13
8 2इत 29:10
9 1रा 8:49, 50
10 व्य 30:1-3

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 34:6; भज 86:5; मी 7:18
2 2इत 15:2; यश 55:7; याकू 4:8
3 2इत 30:1
4 2इत 36:15, 16
5 2इत 11:14, 16
6 गि 9:10, 11
7 लैव 23:6
8 2रा 18:22
9 2इत 28:24
10 लैव 1:5

लेवियों की ज़िम्मेदारी थी कि उन अशुद्ध
लोगों की खातिर फसह के जानवर हलाल
करें[1] और लोगों को यहोवा के लिए
पवित्र करें। 18 बहुत-से लोगों ने खुद
को शुद्ध नहीं किया था, खासकर एप्रैम,
मनश्शे,[2] इस्साकार और जबूलून के
लोगों ने। फिर भी उन्होंने नियम के
खिलाफ जाकर फसह का भोज खा
लिया था। इसलिए हिजकियाह ने उनकी
खातिर यह प्रार्थना की: "यहोवा, जो भला
है,[3] ऐसे हर इंसान को माफ कर दे
19 जिसने सच्चे परमेश्वर की, अपने
पुरखों के परमेश्वर यहोवा की खोज
करने के लिए अपने दिल को तैयार किया
है,[4] इसके बावजूद कि उसने पवित्रता के
नियम के मुताबिक खुद को पवित्र नहीं
किया।"[5] 20 यहोवा ने हिजकियाह की
प्रार्थना सुनी और लोगों को माफ कर
दिया।*

21 यरूशलेम में जो इसराएली थे
उन्होंने सात दिन तक बड़ी खुशी से[6] बिन-
खमीर की रोटी का त्योहार मनाया[7] और
हर दिन लेवी और याजक यहोवा के लिए
ज़ोर-ज़ोर से साज़ बजाते हुए यहोवा की
तारीफ करते रहे।[8] 22 इसके अलावा,
हिजकियाह ने उन सभी लेवियों से बात
की और उनकी हिम्मत बँधायी, जो सूझ-
बूझ से यहोवा की सेवा करते थे। और
उन्होंने सात दिन के त्योहार के दौरान
खाया-पीया,[9] शांति-बलियाँ चढ़ायीं[10]
और अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा का
शुक्रिया अदा किया।

23 इसके बाद, पूरी मंडली ने
फैसला किया कि वे सात दिन और
त्योहार मनाएँगे। इसलिए उन्होंने खुशी-
खुशी सात दिन और त्योहार मनाया।[11]

30:20 *शा., "चंगा किया।"

24 यहूदा के राजा हिजकियाह ने मंडली
के लिए 1,000 बैल और 7,000 भेड़ें
भेंट कीं और हाकिमों ने मंडली के
लिए 1,000 बैल और 10,000 भेड़ें
भेंट कीं।[1] बड़ी संख्या में याजकों ने खुद
को पवित्र किया।[2] 25 यहूदा की पूरी
मंडली, याजक, लेवी, इसराएल से आयी
पूरी मंडली[3] और इसराएल से आए पर-
देसी[4] और यहूदा में रहनेवाले परदेसी
खुशियाँ मनाते रहे। 26 यरूशलेम में
खूब जश्न मनाया गया क्योंकि इस-
राएल के राजा दाविद के बेटे सुलै-
मान के दिनों से लेकर अब तक यरू-
शलेम में ऐसा जश्न नहीं मनाया गया
था।[5] 27 आखिर में लेवी याजकों ने
उठकर लोगों को आशीर्वाद दिया।[6]
उनकी प्रार्थना परमेश्वर के पवित्र निवास
स्वर्ग तक पहुँची और उसने उनकी
प्रार्थना सुनी।

31 त्योहार के फौरन बाद वहाँ
मौजूद सभी इसराएली यहूदा के
शहरों में गए, साथ ही बिन्यामीन, एप्रैम
और मनश्शे के इलाकों[7] में भी गए और
उन्होंने पूजा-स्तंभ चूर-चूर कर दिए,[8]
पूजा-लाठें* काट डालीं[9] और ऊँची जगह
और वेदियाँ ढा दीं।[10] वे तब तक ये काम
करते रहे जब तक कि उन्होंने ये सारी
चीज़ें पूरी तरह मिटा न दीं। इसके बाद,
सभी इसराएली अपने-अपने शहर और
अपनी-अपनी जागीर में लौट गए।

2 फिर हिजकियाह ने याजकों और
लेवियों को उनके अपने-अपने दल के
मुताबिक सेवा के लिए ठहराया।[11] हर
याजक और लेवी को उसके लिए ठह-
रायी गयी सेवा सौंपी।[12] उनका काम था
होम-बलियाँ और शांति-बलियाँ चढ़ाना,

31:1 *शब्दावली देखें।

अध्य. 30
1 2इत 29:34
2 2इत 30:1
3 भज 86:5
4 2इत 19:2, 3; एज 7:10
5 गि 9:6, 10
6 व्य 12:5, 7; नहे 8:10
7 लैव 23:6
8 2इत 29:25
9 लैव 23:6
10 लैव 3:1
11 1रा 8:65

दूसरा कॉल.
1 2इत 35:7, 8
2 2इत 29:34
3 2इत 30:11, 18
4 निर्ग 12:49
5 1रा 8:65, 66
6 गि 6:23-26; व्य 10:8

अध्य. 31
7 2इत 30:1, 18
8 निर्ग 23:24
9 व्य 7:5; 2रा 18:1, 4; 2इत 14:2, 3; 2इत 34:1, 3
10 व्य 12:2; 2इत 23:16, 17
11 1इत 23:6; 1इत 24:1
12 2इत 8:14

भवन में सेवा करना और यहोवा के भवन
के आँगनों* के फाटकों के पास उसका
शुक्रिया अदा करना और उसकी तारीफ
करना।[1] 3 राजा ने अपनी जायदाद
का कुछ हिस्सा, यहोवा के कानून में
बतायी होम-बलियों के लिए,[2] सुबह और
शाम के चढ़ावे के लिए,[3] सब्त[4] और नए
चाँद के मौकों पर[5] और त्योहारों[6] में दी
जानेवाली होम-बलियों के लिए दिया।

4 इतना ही नहीं, राजा ने यरूशलेम
के लोगों को आज्ञा दी कि वे
याजकों और लेवियों को वह हिस्सा दें
जिस पर उनका हक है,[7] ताकि वे
यहोवा के कानून को सख्ती से मानें।*
5 राजा का यह आदेश पाते ही इस-
राएलियों ने अपनी उपज के पहले फल
में से यह सब बहुतायत में लाकर दिया:
अनाज, नयी दाख-मदिरा, तेल,[8] शहद
और खेत की बाकी उपज।[9] उन्होंने
हर चीज़ का दसवाँ हिस्सा लाकर दिया
और इस तरह उन्होंने दान में बहुत
सारी चीज़ें लाकर दीं।[10] 6 यहूदा के
शहरों में रहनेवाले इसराएल के लोग और
यहूदा के लोग गाय-बैलों और भेड़ों का
भी दसवाँ हिस्सा ले आए और उन पवित्र
चीज़ों का दसवाँ हिस्सा ले आए,[11] जो
उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा के लिए
पवित्र ठहरायी थीं। इस तरह दान की
गयी चीज़ों का ढेर लग गया। 7 उन्होंने
दान देना तीसरे महीने में[12] शुरू किया
था और वे सातवें महीने[13] तक देते रहे।
8 जब हिजकियाह और हाकिम आए
और वह ढेर देखा, तो उन्होंने यहोवा की
तारीफ की और उसकी प्रजा इसराएल को
आशीर्वाद दिया।

31:2 *शा., "की छावनियों।" 31:4 *या
"के लिए खुद को पूरी तरह लगा दें।"

9 जब हिजकियाह ने याजकों और
लेवियों से उस ढेर के बारे में पूछा,
10 तो सादोक के घराने के प्रधान याजक
अजरयाह ने कहा, "जब से लोग यहोवा
के भवन में दान लाकर देने लगे हैं,[1]
तब से लोगों को खाने को भरपूर चीज़ें
मिल रही हैं। इसके बाद भी इतना कुछ
बच गया है। यहोवा ने अपने लोगों को
आशीष दी है, तभी इतना कुछ बच
गया है।"[2]

11 तब हिजकियाह ने उनसे कहा कि
वे यहोवा के भवन में भंडार-घर*[3]
तैयार करें और उन्होंने तैयार किए।
12 लोगों के दान, दसवाँ हिस्सा[4] और
पवित्र चीज़ें लायी जा रही थीं। इन
सारी चीज़ों की निगरानी का ज़िम्मा लेवी
कोनन्याह को सौंपा गया और उसका
भाई शिमी दूसरे पद पर था। 13 राजा
हिजकियाह के आदेश पर कोनन्याह और
उसके भाई शिमी की मदद करने के
लिए इन सबको सहायक अधिकारी
चुना गया: यहीएल, अजज्याह, नहत,
असाहेल, यरीमोत, योजाबाद, एलीएल,
यिसमक्याह, महत और बनायाह। और
अजरयाह को सच्चे परमेश्वर के भवन
की निगरानी का ज़िम्मा सौंपा गया।
14 लेवी यिम्नाह के बेटे कोरे को, जो
पूरब के फाटक का पहरेदार था,[5] सच्चे
परमेश्वर के लिए दी गयीं स्वेच्छा-
बलियों[6] का ज़िम्मा सौंपा गया। वह
यहोवा के लिए भेंट की गयीं चीज़ों का
और उन चीज़ों का बँटवारा करता था[7]
जो बहुत पवित्र थीं।[8] 15 उसके निर्दे-
शन में अदन, मिन्यामीन, येशू, शमा-
याह, अमरयाह और शकन्याह याजकों के
शहरों[9] में काम करते थे। उन्हें भरोसेमंद

31:11 *या "भोजन के कमरे।"

अध्य. 31
1 1इत 23:13; 1इत 23:27-30
2 2इत 30:24
3 निर्ग 29:39
4 गि 28:9
5 गि 10:10
6 व्य 16:16
7 गि 18:21; नहे 10:38, 39
8 गि 18:12
9 निर्ग 22:29; निर्ग 23:19; नहे 10:37
10 नीत 3:9
11 लैव 27:30; व्य 14:28
12 लैव 23:16
13 लैव 23:24

दूसरा कॉल.
1 गि 18:8
2 मला 3:10
3 नहे 10:38, 39; नहे 12:44
4 लैव 27:30; व्य 14:28
5 1इत 26:17, 19
6 व्य 12:5, 6; व्य 16:10
7 गि 18:8
8 लैव 2:10; लैव 7:1
9 यह 21:19

जानकर यह पद सौंपा गया था ताकि
वे अलग-अलग दलों में काम करनेवाले
अपने भाइयों को चीज़ें बराबर बाँटें,[1]
फिर चाहे वे छोटे हों या बड़े। **16** इनके
अलावा, वे उन सब आदमियों को भी
ये चीज़ें देते थे जिनका नाम वंशावली
में लिखा था और जो अपने-अपने दल
की बारी के मुताबिक हर दिन यहोवा के
भवन में आकर सेवा करते थे। साथ ही
तीन साल और उससे ज़्यादा उम्र के
लड़कों को भी देते थे जिनका नाम वंशा-
वली में लिखा था।

17 वंशावली में याजकों का नाम
उनके पिताओं के घरानों के मुताबिक
लिखा गया था।[2] और 20 साल और
उससे ज़्यादा उम्रवाले लेवियों का नाम
भी उनके पिताओं के घरानों के मुता-
बिक[3] और उनके अलग-अलग सेवा-
दल के मुताबिक लिखा गया था।[4]
18 इस वंशावली में लेवियों के सभी
बच्चों, पत्नियों और बेटे-बेटियों का यानी
उनकी पूरी मंडली का नाम लिखा गया,
क्योंकि लेवियों ने पवित्र सेवा के लिए
खुद को अलग रखा था और उन्हें भरोसे-
मंद जानकर सेवा का पद सौंपा गया था।
19 वंशावली में हारूनवंशी याजकों का
नाम भी लिखा गया था, जो अपने
शहरों के आस-पास चरागाह के मैदानों
में रहते थे।[5] सभी शहरों में कुछ आद-
मियों को नाम लेकर चुना गया था ताकि
वे याजकों के परिवार के हर लड़के और
आदमी को, साथ ही लेवियों की वंशावली
में दर्ज़ सब लोगों को दान की चीज़ों में से
हिस्सा दें।

20 हिजकियाह ने यह इंतज़ाम पूरे
यहूदा में करवाया और वह ऐसे काम
करता रहा जो यहोवा की नज़रों में भले
और सही थे और वह अपने परमेश्वर
का विश्वासयोग्य बना रहा। **21** उसने
अपने परमेश्वर की खोज करने के लिए
जो भी काम हाथ में लिया, फिर चाहे वह
सच्चे परमेश्वर के भवन में सेवा से जुड़ा
हो[1] या परमेश्वर के कानून और उसकी
आज्ञा से जुड़ा हो, उसने उसे पूरे दिल से
किया और वह कामयाब रहा।

32 हिजकियाह ने जब विश्वासयोग्य
रहकर ये सारे काम किए,[2] तो
इसके बाद अश्शूर के राजा सनहेरीब ने
आकर यहूदा पर धावा बोल दिया।
उसने वहाँ किलेबंद शहरों में घुसकर उन
पर कब्ज़ा करने के लिए घेराबंदी की।[3]

2 जब हिजकियाह ने देखा कि सनहे-
रीब आ गया है और उसने यरू-
शलेम से युद्ध करने की ठान ली है
3 तो उसने अपने हाकिमों और योद्धाओं
से सलाह-मशविरा किया और फैसला
किया कि वह शहर के बाहर के
सोतों का पानी[4] बंद कर देगा। उन सबने
उसका साथ दिया। **4** बहुत-से लोगों
को इकट्ठा किया गया और उन्होंने सभी
सोते बंद कर दिए और नदी की वह धारा
रोक दी जो उस पूरे इलाके में बहती थी।
उन्होंने कहा, "हम नहीं चाहते कि जब
अश्शूर के राजा यहाँ आएँ तो उन्हें भरपूर
पानी मिले।"

5 इसके अलावा, हिजकियाह ने मज़-
बूत इरादे के साथ शहरपनाह का टूटा
हुआ पूरा हिस्सा बनाया, उस पर मीनारें
खड़ी कीं और बाहर एक और शहर-
पनाह बनायी। उसने दाविदपुर के टीले*
की मरम्मत की[5] और बहुत सारे हथियार
और ढालें बनायीं। **6** फिर उसने लोगों
पर सेनापति ठहराए और उन्हें शहर के

अध्य. 31
1 1इत 24:1
2 1इत 24:4
3 गि 4:2, 3
गि 8:24
1इत 23:24
4 1इत 23:6
5 लैव 25:33, 34
गि 35:2
यह 21:13

दूसरा कॉल.
1 2इत 29:35

अध्य. 32
2 2इत 31:20
3 2रा 18:7, 13
यश 36:1
4 2रा 20:20
5 2शम 5:9
1रा 9:24
1रा 11:27
2रा 12:20

32:5 *या "मिल्लो।" इस इब्रानी शब्द का
मतलब "भरना" है।

फाटक के पासवाले चौक में इकट्ठा किया। उसने यह कहकर उन सबकी हिम्मत बँधायी: 7 "तुम सब हिम्मत से काम लो और हौसला रखो। तुम अश्शूर के राजा और उसकी विशाल सेना से मत डरना, न ही खौफ खाना[1] क्योंकि उसके साथ जितने हैं उनसे कहीं ज़्यादा हमारे साथ हैं।[2] 8 उसे इंसानी ताकत पर भरोसा है, मगर हमारे साथ हमारा परमेश्वर यहोवा है। वह हमारी मदद करेगा और हमारी तरफ से युद्ध करेगा।"[3] यहूदा के राजा हिजकियाह के इन शब्दों से लोगों को बहुत हौसला मिला।[4]

9 इसके बाद, जब अश्शूर का राजा सनहेरीब अपनी ताकतवर सेना* के साथ लाकीश[5] में था तो उसने अपने सेवकों को यरूशलेम भेजा ताकि वे यहूदा के राजा हिजकियाह से और यहूदिया के उन सभी लोगों से जो यरूशलेम में थे,[6] यह कहें:

10 "अश्शूर के राजा सनहेरीब ने कहा है, 'तुम्हें किस बात पर इतना भरोसा है जो तुम अब भी यरूशलेम में हो, जबकि इसे घेर लिया गया है?[7] 11 हिजकियाह तुमसे कहता है, "हमारा परमेश्वर यहोवा हमें अश्शूर के राजा के हाथ से छुड़ाएगा।" क्या ऐसा कहकर वह तुम्हें गुमराह नहीं कर रहा है और भूखा-प्यासा नहीं मारना चाहता?[8] 12 क्योंकि उसी ने तो तुम्हारे परमेश्वर की* ऊँची जगह और वेदियाँ ढा दीं[9] और यहूदा और यरूशलेम के लोगों से कहा, "तुम्हें सिर्फ एक ही वेदी के आगे दंडवत करना चाहिए और उसी पर बलिदान चढ़ाना चाहिए ताकि उसका धुआँ उठे।"[10] 13 क्या तुम नहीं जानते कि मैंने और मेरे पुरखों ने दूसरे देशों का क्या हश्र किया है?[1] क्या उन राष्ट्रों के देवता उनके देशों को मेरे हाथ से छुड़ा पाए?[2] 14 जिन राष्ट्रों को मेरे पुरखों ने नाश कर डाला, क्या उनके देवताओं में से कोई भी अपने लोगों को मेरे हाथ से छुड़ा पाया था? तो फिर तुम्हारा परमेश्वर तुम लोगों को मेरे हाथ से कैसे छुड़ा लेगा?[3] 15 तुम लोग हिजकियाह की बातों में मत आओ, वह तुम्हें गुमराह कर रहा है![4] उस पर विश्वास मत करो क्योंकि किसी भी राष्ट्र या राज्य का कोई भी देवता अपने लोगों को मेरे और मेरे पुरखों के हाथ से नहीं छुड़ा पाया। फिर तुम्हारे परमेश्वर की हस्ती ही क्या है कि वह तुम्हें मेरे हाथ से छुड़ाए!'"[5]

16 सनहेरीब के सेवकों ने सच्चे परमेश्वर यहोवा और उसके सेवक हिजकियाह के खिलाफ और भी बहुत कुछ कहा। 17 सनहेरीब ने कुछ चिट्ठियाँ भी लिखीं[6] जिनमें उसने इसराएल के परमेश्वर यहोवा के बारे में अपमान की बातें कहीं।[7] उसने चिट्ठियों में परमेश्वर के खिलाफ यह लिखा, "जैसे दूसरे राष्ट्रों के देवता अपने लोगों को मेरे हाथ से नहीं छुड़ा पाए,[8] उसी तरह हिजकियाह का परमेश्वर भी अपने लोगों को मेरे हाथ से नहीं छुड़ा पाएगा।" 18 यरूशलेम के जो लोग शहरपनाह पर खड़े थे, उनसे सनहेरीब के सेवक ऊँची आवाज़ में यहूदियों की भाषा में बात करते रहे ताकि उनके अंदर डर और खौफ पैदा करके शहर पर कब्ज़ा कर लें।[9] 19 उन्होंने यरूशलेम के परमेश्वर के खिलाफ वही बातें कहीं जो उन्होंने दुनिया के बाकी देशों के उन देवताओं के खिलाफ कही थीं जो इंसान

अध्य. 32
1 2रा 19:6
2 व्य 31:6, 8; यह 1:6, 9; 2रा 6:16, 17; 2इत 20:15
3 गि 14:9; व्य 20:1, 4; यह 10:42; यिर्म 17:5
4 2इत 20:20
5 यश 37:8
6 2रा 18:17; यश 36:2
7 2रा 18:19; यश 36:4
8 2रा 18:29, 30; 2रा 19:10
9 2रा 18:1, 4; 2इत 31:1
10 2रा 18:22; यश 36:7

दूसरा कॉल.
1 2रा 15:29; 2रा 17:5; यश 37:12
2 2रा 18:33, 34; 2रा 19:17, 18
3 निर्ग 14:3; निर्ग 15:9
4 2रा 18:29
5 निर्ग 5:2; व्य 32:27; दान 3:14, 15
6 2रा 19:14
7 यश 37:29
8 2रा 17:6; 2रा 19:12
9 2रा 18:26, 28; यश 36:11, 13

32:9 *या "अपनी सेना की पूरी ताकत और शान।" **32:12** *शा., "उसकी।"

के हाथ के बने हैं। 20 मगर राजा हिज-
कियाह और आमोज का बेटा, भविष्य-
वक्ता यशायाह[1] इस बारे में प्रार्थना करते
रहे और मदद के लिए स्वर्ग की तरफ
पुकारते रहे।[2]

21 फिर यहोवा ने एक स्वर्गदूत को
भेजा जिसने अश्शूर के राजा की छावनी
में जाकर हर वीर योद्धा,[3] अगुवे और
सेनापति को मार डाला। नतीजा यह हुआ
कि सनहेरीब को अपमानित होकर अपने
देश लौटना पड़ा। बाद में वह अपने
देवता के मंदिर में गया और वहाँ उसके
अपने ही कुछ बेटों ने उसे तलवार
से मार डाला।[4] 22 इस तरह यहोवा
ने हिजकियाह और यरूशलेम के निवा-
सियों को अश्शूर के राजा सनहेरीब
और बाकी सबके हाथ से बचाया और
चारों तरफ के दुश्मनों से उन्हें राहत
दिलायी। 23 फिर कई लोग यहोवा के
लिए भेंट लेकर यरूशलेम आए और
यहूदा के राजा हिजकियाह को तोहफे में
बढ़िया-बढ़िया चीज़ें दीं।[5] इसके बाद से
सब राष्ट्र हिजकियाह का बहुत आदर
करने लगे।

24 उन दिनों हिजकियाह बीमार हो
गया। उसकी हालत इतनी खराब
हो गयी कि वह मरनेवाला था। उसने
यहोवा से प्रार्थना की[6] और परमेश्वर
ने उसकी सुनी और उसे एक निशानी
दी।[7] 25 मगर हिजकियाह के साथ
जो भलाई की गयी थी, उसकी उसने
कदर नहीं की क्योंकि उसका मन घमंड
से फूल गया था। इसलिए परमेश्वर का
क्रोध उस पर और यहूदा और यरूशलेम
पर भड़क उठा। 26 मगर हिजकियाह
ने अपने मन का घमंड दूर करके खुद को
नम्र किया[8] और यरूशलेम के लोगों ने भी
खुद को नम्र किया, इसलिए हिजकियाह
के दिनों में यहोवा का क्रोध उन पर नहीं
भड़का।[1]

27 हिजकियाह ने खूब सारी दौलत
और शोहरत हासिल की।[2] उसने
अपने लिए भंडार-घर बनाए[3] ताकि
उनमें सोना, चाँदी, कीमती पत्थर, बलसाँ
का तेल, ढालें और बाकी सभी मन-
भावनी चीज़ें रखे। 28 उसने अनाज,
नयी दाख-मदिरा और तेल जमा करने के
लिए भी भंडार-घर बनाए, साथ ही सब
किस्म के मवेशियों और भेड़-बकरियों के
लिए बाड़े बनाए। 29 उसने कई शहर
भी बनाए और बड़ी तादाद में भेड़-बक-
रियाँ और गाय-बैल इकट्ठा किए क्योंकि
परमेश्वर ने उसे बहुत दौलत दी थी।
30 हिजकियाह ने ही गीहोन[4] नदी का
ऊपरी सोता बंद कर दिया[5] और उसके
पानी का रुख ऐसा मोड़ दिया कि वह
सीधे दाविदपुर[6] के पश्चिम की तरफ
बहे। हिजकियाह अपने हर काम में
कामयाब रहा था। 31 मगर जब बैबि-
लोन के हाकिमों के दूतों को हिजकियाह
के देश में देखी गयी निशानी[7] के बारे में
पूछने के लिए उसके पास भेजा गया,[8] तो
सच्चे परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया ताकि
उसे परखकर जाने कि उसके दिल में
क्या है।[9]

32 हिजकियाह की ज़िंदगी की बाकी
कहानी और उसने अटल प्यार का सबूत
देते हुए जो काम किए,[10] उनका ब्यौरा
आमोज के बेटे यशायाह भविष्यवक्ता के
दर्शन के लेखनों में[11] और यहूदा और
इसराएल के राजाओं की किताब में लिखा
है।[12] 33 फिर हिजकियाह की मौत हो
गयी* और उसे उस चढ़ाई पर दफनाया

32:33 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।"

अध्य. 32
1 2रा 19:2, 20; यश 37:2
2 2रा 19:14, 15; 2इत 14:11
3 भज 76:5
4 2रा 19:35-37; यश 37:37, 38
5 1रा 4:21; 2इत 17:1, 5
6 2रा 20:1, 2; यश 38:1, 2
7 2रा 20:5, 9; 2इत 32:31; यश 38:8
8 यिर्म 26:18, 19

दूसरा कॉल.
1 2रा 20:19
2 2इत 1:11, 12; 2इत 17:1, 5
3 1रा 9:17-19
4 1रा 1:33, 45
5 2इत 32:4
6 2शम 5:9
7 2रा 20:8-11; यश 38:8
8 2रा 20:12; यश 39:1
9 उत 22:1; व्य 8:2; भज 7:9; भज 139:23
10 2इत 31:20, 21
11 यश 1:1
12 2रा 20:20

गया जो दाविद के बेटों के कब्रिस्तान की तरफ जाती है।[1] उसकी मौत पर पूरे यहूदा और यरूशलेम के लोगों ने उसका सम्मान किया। उसकी जगह उसका बेटा मनश्शे राजा बना।

33 मनश्शे[2] जब राजा बना तब वह 12 साल का था और उसने यरूशलेम में रहकर 55 साल राज किया।[3]

2 मनश्शे ने यहोवा की नज़र में बुरे काम किए। उसने उन राष्ट्रों के जैसे घिनौने काम किए जिन्हें यहोवा ने इसराएल के लोगों के सामने से खदेड़ दिया था।[4] **3** उसने वे ऊँची जगह फिर से बनवा दीं जो उसके पिता हिजकियाह ने ढा दी थीं।[5] उसने बाल देवताओं के लिए वेदियाँ खड़ी करवायीं और पूजा-लाठें* बनवायीं। वह आकाश की सारी सेना के आगे दंडवत करता था और उसकी पूजा करता था।[6] **4** उसने यहोवा के उस भवन में भी वेदियाँ खड़ी कर दीं[7] जिसके बारे में यहोवा ने कहा था, “यरूशलेम से मेरा नाम हमेशा जुड़ा रहेगा।”[8] **5** उसने यहोवा के भवन के दोनों आँगनों[9] में आकाश की सारी सेना के लिए वेदियाँ खड़ी कीं। **6** उसने ‘हिन्नोम के वंशजों की घाटी’[10] में अपने बेटों को आग में होम कर दिया।[11] वह जादू करता था,[12] ज्योतिषी का काम करता था, टोना-टोटका करता था और उसने देश में मरे हुओं से संपर्क करने का दावा करनेवालों और भविष्य बतानेवालों को ठहराया था।[13] उसने ऐसे काम करने में सारी हदें पार कर दीं जो यहोवा की नज़र में बुरे थे और उसका क्रोध भड़काया।

7 उसने जो मूरत तराशकर बनवायी थी उसे ले जाकर सच्चे परमेश्वर के भवन में रख दिया,[1] जिसके बारे में परमेश्वर ने दाविद और उसके बेटे सुलैमान से कहा था, “इस भवन और यरूशलेम के साथ मेरा नाम हमेशा जुड़ा रहेगा, जिन्हें मैंने इसराएल के सभी गोत्रों के इलाके में से चुना है।[2] **8** मैं इसराएलियों को इस देश से फिर कभी नहीं निकालूँगा जो मैंने उनके पुरखों को दिया था, बशर्ते वे मेरी सब आज्ञाओं को सख्ती से मानें, उस पूरे कानून को, सारे नियमों और न्याय-सिद्धांतों को मानें जो मैंने मूसा के ज़रिए दिए थे।” **9** मनश्शे यहूदा और यरूशलेम के लोगों को सही राह से दूर ले जाता रहा और उन राष्ट्रों से भी बढ़कर दुष्ट काम करवाता रहा, जिन्हें यहोवा ने इसराएलियों के सामने से मिटा दिया था।[3]

10 यहोवा मनश्शे और उसकी प्रजा से बात करता रहा, मगर उन्होंने बिलकुल ध्यान नहीं दिया।[4] **11** इसलिए यहोवा ने अश्शूर के राजा के सेनापतियों से उन पर हमला करवाया। उन्होंने मनश्शे को पकड़ लिया, उसे नकेल डाली* और ताँबे की दो बेड़ियों से जकड़कर बैबिलोन ले गए। **12** अपनी दुख की घड़ी में उसने अपने परमेश्वर यहोवा से रहम की भीख माँगी और अपने पुरखों के परमेश्वर के सामने खुद को बहुत नम्र किया। **13** वह परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा। परमेश्वर को उसका गिड़गिड़ाना देखकर उस पर तरस आया और उसने उसकी बिनती सुनकर उस पर रहम किया। परमेश्वर ने उसे यरूशलेम वापस लाकर उसका राज लौटा दिया।[5] तब मनश्शे ने जाना कि यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है।[6]

अध्य. 32
1 1रा 11:43

अध्य. 33
2 मत 1:10
3 2रा 21:1
4 2रा 21:2-6
5 2रा 18:1, 4
6 व्य 4:19; 2रा 23:5
7 2रा 16:10, 11
8 व्य 12:11; 2इत 6:6
9 1रा 6:36; 1रा 7:12
10 यह 15:8, 12; 2रा 23:10
11 2रा 16:1, 3
12 लैव 19:26
13 लैव 20:6; व्य 18:10, 11

दूसरा कॉल.
1 2रा 23:6
2 2रा 21:7-9; 2रा 23:27; 2इत 7:16
3 लैव 18:24; यह 24:8; 2रा 21:11, 16
4 2इत 36:15, 16
5 यश 1:18
6 दान 4:25

33:3 *शब्दावली देखें।

33:11 *या शायद, “को गड्‌ढों में पकड़ा।”

14 इसके बाद उसने दाविदपुर के लिए घाटी के गीहोन[1] के पश्‍चिम में एक बाहरी दीवार खड़ी की।[2] यह दीवार बहुत ऊँची थी। उसने यह दीवार दूर मछली फाटक[3] तक बनायी। वहाँ से यह दीवार शहर को घेरते हुए ओपेल[4] तक पहुँची। और उसने यहूदा के सभी किलेबंद शहरों में सेनापति ठहराए। **15** उसने पराए देवताओं की मूरतें, यहोवा के भवन में रखी मूरत[5] और वे सभी वेदियाँ निकाल दीं जो उसने यहोवा के भवन के पहाड़ पर और यरूशलेम में बनवायी थीं।[6] उसने ये सारी चीज़ें शहर के बाहर फिंकवा दीं। **16** फिर उसने यहोवा की वेदी तैयार की[7] और उस पर शांति-बलियाँ और धन्यवाद-बलियाँ चढ़ाने लगा।[8] उसने यहूदा के लोगों से कहा कि वे इस-राएल के परमेश्‍वर यहोवा की सेवा करें। **17** लोग अब भी ऊँची जगहों पर बलिदान चढ़ाते रहे मगर वे सिर्फ अपने परमेश्‍वर यहोवा के लिए ऐसा करते थे।

18 मनश्‍शे की ज़िंदगी की बाकी कहानी, उसने अपने परमेश्‍वर से जो प्रार्थना की और दर्शियों ने इसराएल के परमेश्‍वर यहोवा के नाम से उससे जो बातें कहीं, वह सब इसराएल के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखा है। **19** और उसने जो प्रार्थना की[9] और परमेश्‍वर ने जिस तरह उसकी बिनती सुनी और उसने खुद को नम्र करने से पहले क्या-क्या पाप किए, कैसे विश्‍वासघात किया[10] और कहाँ-कहाँ ऊँची जगह बनायीं, पूजा-लाठें खड़ी कीं[11] और खुदी हुई मूरतें रखीं, उन सबके बारे में दर्शियों के लेखनों में लिखा है। **20** फिर मनश्‍शे की मौत हो गयी* और उसे उसी के घर के पास दफनाया गया। उसकी जगह उसका बेटा आमोन राजा बना।[1]

21 जब आमोन[2] राजा बना तब वह 22 साल का था और उसने यरू-शलेम से यहूदा पर दो साल राज किया।[3] **22** वह अपने पिता मनश्‍शे की तरह यहोवा की नज़र में बुरे काम करता रहा।[4] आमोन ने उन सभी खुदी हुई मूरतों के आगे बलिदान चढ़ाए, जो उसके पिता मनश्‍शे ने बनवायी थीं[5] और वह उनकी सेवा करता रहा। **23** मगर उसने यहोवा के सामने खुद को नम्र नहीं किया,[6] जैसे उसके पिता मनश्‍शे ने खुद को नम्र किया था।[7] इसके बजाय, आमोन ने और भी बढ़-चढ़कर पाप किया। **24** बाद में उसके सेवकों ने उसके खिलाफ साज़िश रची[8] और उसी के महल में उसका कत्ल कर दिया। **25** मगर देश के लोगों ने उन सबको मार डाला जिन्होंने राजा आमोन के खिलाफ साज़िश की थी।[9] फिर उन्होंने आमोन की जगह उसके बेटे योशियाह[10] को राजा बनाया।

34

योशियाह[11] जब राजा बना तब वह आठ साल का था और उसने यरूशलेम में रहकर 31 साल राज किया।[12] **2** उसने यहोवा की नज़र में सही काम किए और वह अपने पुरखे दाविद के नक्शे-कदम पर चला। वह पर-मेश्‍वर की बतायी राह से न कभी दाएँ मुड़ा न बाएँ।

3 अपने राज के 8वें साल से जब वह एक लड़का ही था, वह अपने पुरखे दाविद के परमेश्‍वर की खोज करने

अध्य. 33
1 2इत 32:30
2 2शम 5:9; 2इत 32:2, 5
3 नहे 3:3
4 2इत 27:1, 3
5 2रा 21:1, 7
6 2रा 21:1, 4, 5
7 2इत 29:18
8 लैव 3:1; लैव 7:12
9 2इत 33:12, 13
10 2रा 21:2, 9
11 2रा 21:3, 7

दूसरा कॉल.
1 2रा 21:18, 19
2 मत 1:10
3 2रा 21:19-24
4 2इत 33:1, 2
5 2रा 21:1, 7
6 यिर्म 8:12
7 2इत 33:12, 13
8 2रा 12:20; 2इत 25:27
9 2इत 25:1, 3
10 2रा 21:25, 26

अध्य. 34
11 1रा 13:2; सप 1:1; मत 1:10
12 2रा 22:1, 2

33:20 *शा., "अपने पुरखों के साथ सो गया।"

लगा[1] और 12वें साल में उसने यहूदा और यरूशलेम को शुद्ध करना शुरू किया।[2] वह वहाँ की ऊँची जगह,[3] पूजा-लाठें* और खुदी[4] और ढली हुई मूरतें हटाने लगा। **4** और लोगों ने उसके सामने बाल देवताओं की वेदियाँ ढा दीं और उसने वेदियों के ऊपर के धूप-स्तंभ तोड़ डाले। उसने पूजा-लाठों और खुदी और ढली हुई मूरतों को भी चूर-चूर करके धूल बना दिया और वह धूल उन लोगों की कब्रों पर छिड़क दी जो उन मूरतों के आगे बलिदान चढ़ाते थे।[5] **5** उसने उनकी वेदियों पर पुजारियों की हड्डियाँ जला दीं।[6] इस तरह उसने यहूदा और यरूशलेम को शुद्ध किया।

6 उसने मनश्शे, एप्रैम,[7] शिमोन और नप्ताली तक के शहरों और उनके आस-पास के खंडहरों में **7** वेदियाँ ढा दीं और पूजा-लाठों और खुदी हुई मूरतों को चूर-चूर करके[8] धूल बना दिया। पूरे इसराएल देश में जितने भी धूप-स्तंभ थे, उन सबको उसने तोड़ दिया।[9] इसके बाद वह यरूशलेम लौट आया।

8 अपने राज के 18वें साल में जब वह देश और मंदिर* को शुद्ध कर चुका था, तब उसने अपने परमेश्वर यहोवा के भवन की मरम्मत करने के लिए असल्याह के बेटे शापान,[10] शहर के प्रधान मासेयाह और शाही इतिहासकार योआह को भेजा जो योआहाज का बेटा था।[11] **9** उन्होंने महायाजक हिलकियाह के पास जाकर उसे वह पैसा दिया जो परमेश्वर के भवन में लाया गया था। यह पैसा दरबान का काम करनेवाले लेवियों ने मनश्शे, एप्रैम और इसराएल के बाकी लोगों से,[1] साथ ही यहूदा, बिन्यामीन और यरूशलेम के निवासियों से इकट्ठा किया था। **10** उन्होंने यह पैसा उन आदमियों को दिया, जिन्हें यहोवा के भवन के काम की निगरानी सौंपी गयी है। फिर यहोवा के भवन में काम करनेवालों ने यह पैसा उसकी मरम्मत करने के लिए इस्तेमाल किया। **11** उन्होंने यह पैसा कारीगरों और राजगीरों को दिया ताकि वे इससे गढ़े हुए पत्थर और टेक के लिए लकड़ी खरीदें और शहतीरों से उन भवनों को बनाएँ, जिन्हें यहूदा के राजाओं ने उजड़ जाने दिया था।[2]

12 उन आदमियों ने मरम्मत का काम पूरी सच्चाई से किया।[3] उनके काम की देखरेख करने के लिए इन लेवियों को ठहराया गया: मरारियों[4] में से यहत और ओबद्याह और कहातियों[5] में से जकरयाह और मशुल्लाम। और उन सभी लेवियों को, जो कुशल संगीतकार थे,[6] **13** आम मज़दूरों* के अधिकारी ठहराया गया और वे उन सभी की निगरानी करनेवाले थे जो हर तरह की सेवा से जुड़े काम करते थे। कुछ लेवी सचिव थे, कुछ अधिकारी थे और कुछ पहरेदार।[7]

14 जब वे यहोवा के भवन में लाया पैसा निकाल रहे थे,[8] तो उसी दौरान याजक हिलकियाह को यहोवा के कानून की वह किताब[9] मिली जो मूसा के ज़रिए दी गयी थी।[10] **15** हिलकियाह ने राजसचिव शापान से कहा, "मुझे यहोवा के भवन में कानून की किताब मिल गयी है!" हिलकियाह ने वह किताब शापान को दी। **16** शापान ने वह किताब ले जाकर

34:3 *शब्दावली देखें। **34:8** *शा., "भवन।"

34:13 *या "बोझ ढोनेवालों।"

अध्य. 34

1 2इत 15:2
2 2रा 23:4, 14
3 2इत 33:17
4 2इत 33:21, 22
5 2रा 23:6
6 1रा 13:2; 2रा 23:16
7 2रा 23:19; 2इत 30:1
8 2रा 17:41
9 2इत 31:1
10 2रा 22:12
11 2रा 22:3-6

दूसरा कॉल.

1 2इत 30:11, 18
2 2रा 12:11, 12
3 2रा 12:15
4 1इत 23:6
5 2इत 20:19
6 1इत 25:1
7 2इत 8:14
8 2रा 22:4
9 व्य 17:18; व्य 31:24-26; यह 1:8; 2रा 22:8
10 लैव 26:46

राजा को दी और उससे कहा, “तेरे सेवक
हर वह काम कर रहे हैं जो उन्हें
सौंपा गया है। **17** उन्होंने यहोवा के
भवन का सारा पैसा निकालकर निग-
रानी करनेवालों और काम करनेवालों
को दिया है।” **18** राज-सचिव शापान
ने राजा को यह खबर भी दी, “याजक
हिलकियाह ने मुझे एक किताब दी है।”[1]
फिर शापान राजा को वह किताब पढ़कर
सुनाने लगा।[2]

19 जैसे ही राजा ने कानून में लिखी
बातें सुनीं, उसने अपने कपड़े फाड़े।[3]
20 फिर उसने हिलकियाह, शापान के
बेटे अहीकाम,[4] मीका के बेटे अब्दोन,
राज-सचिव शापान और अपने सेवक
असायाह को यह आदेश दियाः
21 “तुम लोग मेरी तरफ से और इस-
राएल और यहूदा में बचे हुए लोगों की
तरफ से जाओ और यह जो किताब मिली
है, इसमें लिखी बातों के बारे में यहोवा
से पूछो। हमारे पुरखों ने इस किताब में
लिखी यहोवा की आज्ञाओं का पालन नहीं
किया, इसमें जो लिखा है उसे नहीं माना,
इसलिए यहोवा के क्रोध का प्याला जो
हम पर उँडेला जाएगा वह बहुत भयानक
होगा।”[5]

22 तब हिलकियाह, राजा के भेजे
हुए आदमियों के साथ मिलकर भविष्य-
वक्तिन[6] हुल्दा के पास गया। भविष्य-
वक्तिन हुल्दा, शल्लूम की पत्नी थी
जो तिकवा का बेटा और हरहस का
पोता था। शल्लूम पोशाक-घर की देख-
रेख करनेवाला था। हुल्दा यरूशलेम के
‘नए हिस्से’ में रहती थी और वहीं योशि-
याह के भेजे हुए आदमियों ने उससे बात
की।[7] **23** हुल्दा ने उनसे कहा, “इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा ने कहा है,
‘जिस आदमी ने तुम्हें मेरे पास भेजा है,
उससे कहनाः **24** “यहोवा ने कहा है,
‘मैं इस जगह पर और यहाँ रहने-
वालों पर विपत्ति लाऊँगा।[1] उस किताब
में लिखे सारे शाप उन पर आ पड़ेंगे,[2]
जो यहूदा के राजा के सामने पढ़कर
सुनाए गए हैं। **25** उन्होंने मुझे छोड़
दिया है[3] और वे दूसरे देवताओं के
सामने बलिदान चढ़ाते हैं और अपने
हाथ की बनायी चीज़ों से मुझे गुस्सा
दिलाते हैं,[4] इसलिए मेरे क्रोध का प्याला
इस जगह पर उँडेला जाएगा और इसकी
आग नहीं बुझेगी।’”[5] **26** मगर तुम
यहूदा के राजा से, जिसने यहोवा की
मरज़ी जानने के लिए तुम्हें भेजा है,
कहना, “तूने जो बातें सुनी हैं[6] उनके
बारे में इसराएल का परमेश्वर यहोवा
कहता है, **27** ‘जब तूने सुना कि मैं इस
जगह और यहाँ रहनेवालों के साथ क्या
करनेवाला हूँ, तो इस बात ने तेरे
दिल पर गहरा असर किया और तूने
खुद को मेरे सामने नम्र किया और तू
अपने कपड़े फाड़कर मेरे सामने रोया।
इसलिए मैंने तेरी बिनती सुनी है।’[7]
यहोवा का यह ऐलान है। **28** ‘इस-
लिए तेरे जीते-जी मैं इस जगह
पर और यहाँ के रहनेवालों पर कहर
नहीं ढाऊँगा। तू शांति से मौत की नींद
सोएगा* और तुझे अपनी कब्र में दफना
दिया जाएगा।’”’”[8]

तब उन आदमियों ने जाकर यह संदेश
राजा को सुनाया। **29** इसलिए राजा ने
आदेश दिया और यहूदा और यरू-
शलेम के सभी मुखियाओं को बुलाया।[9]
30 इसके बाद राजा योशियाह, यहूदा के

अध्य. 34
1 2रा 22:8
2 व्य 17:18, 19
3 2रा 22:11-13
4 2रा 25:22 यिर्म 40:14
5 व्य 30:17, 18 व्य 31:16 व्य 31:24-26 यह 1:8
6 निर्ग 15:20 न्या 4:4 लूक 2:36 प्रेष 21:8, 9
7 2रा 22:14-20

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 35:17
2 लैव 26:16 व्य 28:15 व्य 30:17, 18 दान 9:11
3 व्य 28:20
4 2रा 21:1, 3, 6 2इत 28:1, 3
5 व्य 29:22, 23 यिर्म 7:20
6 2इत 34:19
7 2इत 32:26 2इत 33:11, 13
8 1रा 21:29 यश 39:8
9 2रा 23:1

34:28 *शा., “अपने पुरखों में जा मिलेगा।”

सभी आदमियों को, याजकों और लेवियों को और यरूशलेम के छोटे-बड़े सब लोगों को लेकर यहोवा के भवन में गया। फिर उसने सबको करार की पूरी किताब पढ़कर सुनायी जो यहोवा के भवन में मिली थी।[1] **31** राजा अपनी जगह पर खड़ा हुआ और उसने यहोवा के सामने यह करार किया*[2] कि हम सब यहोवा के पीछे चलेंगे और पूरे दिल और पूरी जान से[3] उसकी आज्ञाओं और विधियों पर चलेंगे, जो हिदायतें वह याद दिलाता है उन्हें मानेंगे और इस किताब में लिखी करार की बातों का हमेशा पालन करेंगे।[4] **32** फिर उसने यरूशलेम और बिन्यामीन के इलाके के सभी लोगों से हामी भरायी। और यरूशलेम के निवासियों ने अपने पुरखों के परमेश्वर के करार के मुताबिक काम किया।[5] **33** फिर योशियाह ने इसराएलियों के सभी इलाकों से सारी घिनौनी चीज़ें* निकाल दीं[6] और इसराएल के सब लोगों से उनके परमेश्वर यहोवा की सेवा करायी। जब तक वह ज़िंदा था तब तक वे अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा के पीछे चलने से नहीं हटे।

35 योशियाह ने यरूशलेम में यहोवा के लिए फसह मनाने[7] का इंतज़ाम किया और उन्होंने पहले महीने के 14वें दिन[8] फसह का बलि-पशु हलाल किया।[9] **2** उसने याजकों को उनके काम पर ठहराया और उन्हें बढ़ावा दिया कि वे यहोवा के भवन में अपनी सेवा में लगे रहें।[10] **3** फिर उसने लेवियों से, जो पूरे इसराएल में सिखाने का काम करते थे[11] और यहोवा के लिए पवित्र थे, कहा, "पवित्र संदूक को उस भवन में रखो जिसे इसराएल के राजा दाविद के बेटे सुलैमान ने बनाया था।[1] अब से तुम्हें संदूक को कंधों पर ढोकर ले जाने की ज़रूरत नहीं होगी।[2] अब तुम अपने परमेश्वर यहोवा और उसकी प्रजा इसराएल की सेवा करो। **4** तुम अपने-अपने पिता के घराने और अपने दल के मुताबिक सेवा के लिए खुद को तैयार करो, ठीक जैसे इसराएल के राजा दाविद और उसके बेटे सुलैमान ने लिखा था।[3] **5** तुम सब पवित्र जगह में अपने-अपने दल के मुताबिक इस तरह खड़े रहो कि हर परिवार की सेवा के लिए उसके साथ एक लेवी परिवार का एक दल रहे। **6** फसह का बलि-पशु हलाल करो,[4] खुद को पवित्र करो और अपने भाइयों के लिए तैयारी करो ताकि यहोवा ने मूसा के ज़रिए जो आज्ञा दी है उसका तुम पालन कर सको।"

7 योशियाह ने वहाँ हाज़िर सब लोगों को नर मेम्ने और बकरी के नर बच्चे दान में दिए ताकि वे फसह के लिए उनका बलिदान करें। उसने कुल मिलाकर 30,000 भेड़-बकरियाँ और 3,000 बैल दिए। राजा ने ये सारे जानवर अपने झुंड में से दिए।[5] **8** उसके हाकिमों ने भी लोगों, याजकों और लेवियों के लिए जानवर दान किए ताकि वे इनकी स्वेच्छा-बलि दे सकें। सच्चे परमेश्वर के भवन के अगुवे हिलकियाह,[6] जकरयाह और यहीएल ने याजकों को फसह के बलिदान के लिए 2,600 जानवर दिए, साथ ही 300 बैल भी दिए। **9** कोनन्याह और उसके भाई शमायाह और नतनेल ने और लेवियों के प्रधान हशब्याह, यीएल और योजाबाद ने फसह के बलिदान के लिए लेवियों को 5,000 जानवर दिए, साथ ही 500 बैल भी दिए।

34:31 *या "दोबारा करार किया।"
34:33 *या "मूरतें।"

अध्य. 34
1 2रा 23:2; 2इत 17:3, 9; नहे 8:3
2 एज 10:3
3 व्य 6:5
4 व्य 31:24-26; 2रा 22:8
5 2इत 30:1, 12; 2इत 33:1, 16
6 2रा 23:5

अध्य. 35
7 निर्ग 12:3-11; 2रा 23:21
8 लैव 23:5; व्य 16:1
9 निर्ग 12:21
10 2इत 23:18; 2इत 31:2
11 व्य 33:10; 2इत 17:8, 9; नहे 8:7, 8

दूसरा कॉल.
1 1रा 6:38; 2इत 5:7
2 गि 4:15; 1इत 23:25, 26
3 1इत 23:6; 2इत 8:14
4 निर्ग 12:21; 2इत 30:1, 15
5 2इत 30:24
6 2रा 23:4; 2इत 34:14

10 त्योहार के लिए तैयारियाँ पूरी हो गयीं और जैसे राजा ने आज्ञा दी थी, याजक अपनी-अपनी जगह खड़े हो गए और लेवी अपने-अपने दल के मुताबिक खड़े हो गए।[1] **11** लेवियों ने फसह के बलि-पशु हलाल किए[2] और याजकों ने उनके हाथ से खून लेकर वेदी पर छिड़का।[3] और लेवी जानवरों की खाल उतारते रहे।[4] **12** इसके बाद उन्होंने उन बाकी लोगों को देने के लिए होम-बलियाँ तैयार कीं, जिन्हें अपने पिताओं के कुलों के मुताबिक समूहों में बाँटा गया था ताकि मूसा की किताब में दी हिदायतों के मुताबिक ये बलिदान यहोवा को अर्पित किए जा सकें। उन्होंने बैलों के साथ भी ऐसा ही किया। **13** उन्होंने दस्तूर के मुताबिक फसह के बलि-पशु को आग में पकाया।*[5] पवित्र चढ़ावे को उन्होंने हंडों, गोल पेंदे की हंडियों और डोंगों में पकाया और उसे जल्दी से बाकी सभी लोगों के पास ले आए। **14** फिर उन्होंने अपने लिए और याजकों के लिए तैयारियाँ कीं क्योंकि हारूनवंशी याजक अँधेरा होने तक होम-बलियाँ और चरबीवाले हिस्से चढ़ाते रहे। लेवियों ने अपने लिए और हारूनवंशी याजकों के लिए तैयारियाँ कीं।

15 और आसाप के वंश के गायक[6] दाविद, आसाप, हेमान और राजा के दर्शी यदूतून की आज्ञा के मुताबिक[7] अपनी-अपनी जगह खड़े हुए और पहरेदार अलग-अलग फाटकों पर तैनात हुए।[8] उन्हें अपनी सेवा का काम नहीं छोड़ना पड़ा क्योंकि उनके लेवी भाइयों ने उनके लिए तैयारियाँ की थीं। **16** इस तरह उस दिन यहोवा के लिए सारी सेवाओं की तैयारियाँ की गयीं ताकि फसह मनाया जा सके[1] और यहोवा की वेदी पर होम-बलियाँ चढ़ायी जा सकें, ठीक जैसे राजा योशियाह ने आदेश दिया था।[2]

17 वहाँ हाज़िर इसराएलियों ने उस समय फसह मनाया और फिर सात दिन तक बिन-खमीर की रोटी का त्योहार मनाया।[3] **18** इसराएल में जैसा फसह मनाया गया, वैसा भविष्यवक्ता शमूएल के ज़माने से लेकर अब तक नहीं मनाया गया था। योशियाह, याजकों, लेवियों, वहाँ मौजूद पूरे यहूदा और इसराएल के सभी लोगों ने और यरूशलेम के निवासियों ने जैसा फसह मनाया वैसा इसराएल के किसी और राजा ने नहीं मनाया था।[4] **19** यह फसह योशियाह के राज के 18वें साल में मनाया गया।

20 जब यह सब पूरा हो गया और योशियाह मंदिर* को तैयार कर चुका, तो उसके बाद मिस्र का राजा निको[5] युद्ध करने फरात के पास कर्कमीश गया। और योशियाह उसका सामना करने निकला।[6] **21** तब निको ने अपने दूतों के हाथ योशियाह को यह संदेश भेजा: "हे यहूदा के राजा, तू क्यों मुझसे लड़ने आ रहा है? मैं तुझसे नहीं किसी और राष्ट्र से लड़ने जा रहा हूँ। परमेश्वर ने मुझे जल्दी जाने के लिए कहा है। तेरी भलाई इसी में है कि तू मुझसे मत लड़ क्योंकि परमेश्वर मेरे साथ है। उसका विरोध मत कर वरना वह तुझे बरबाद कर देगा।" **22** मगर योशियाह उसके रास्ते से नहीं हटा। उसने निको की बात नहीं मानी जो परमेश्वर की तरफ से थी। इसके बजाय वह भेस बदलकर[7] निको से लड़ने मगिद्दो के मैदान में गया।[8]

23 फिर तीरंदाज़ों ने तीरों से राजा योशियाह पर वार किया और राजा ने

अध्य. 35
1 1इत 23:6
2 निर्ग 12:3, 6
3 2इत 30:16
4 2इत 29:34
5 निर्ग 12:8; व्य 16:6, 7
6 1इत 16:37
7 1इत 16:41, 42; 1इत 23:5; 1इत 25:1, 2; 1इत 25:3
8 1इत 26:12, 13

दूसरा कॉल.
1 लैव 23:5
2 2रा 23:21
3 निर्ग 12:15; लैव 23:6; व्य 16:3; 2इत 30:1, 21
4 2रा 23:22, 23; 2इत 30:5, 26
5 यिर्म 46:2
6 2रा 23:29
7 1रा 22:30
8 न्या 1:27; न्या 5:19; जक 12:11; प्रक 16:16

35:13 *या शायद, "भूना।"

35:20 *शा., "भवन।"

अपने सेवकों से कहा, “मुझे यहाँ से ले
चलो, मैं बुरी तरह घायल हो गया हूँ।”
24 उसके सेवकों ने उसे रथ से उठाया
और उसके दूसरे रथ पर बिठाकर यरू-
शलेम ले आए। इस तरह योशियाह की
मौत हो गयी और उसे उसके पुरखों की
कब्र में दफनाया गया।[1] पूरे यहूदा और
यरूशलेम ने उसके लिए मातम मनाया।
25 यिर्मयाह[2] ने योशियाह के लिए राग
अलापा और सभी गायक-गायिकाएँ[3]
आज भी अपने शोकगीतों में योशियाह
का ज़िक्र करते हैं। फिर यह फैसला किया
गया कि ये शोकगीत इसराएल में गाए
जाएँ। इन गीतों को शोकगीतों में शामिल
किया गया है।

26 योशियाह की ज़िंदगी की बाकी
कहानी और उसने यहोवा के कानून
के मुताबिक अपने अटल प्यार का सबूत
देते हुए जो काम किए उनका ब्यौरा
27 और शुरू से लेकर आखिर तक
उसने जो-जो काम किए उनका ब्यौरा इस-
राएल और यहूदा के राजाओं की किताब
में लिखा है।[4]

36 फिर यहूदा के लोगों ने योशियाह
के बेटे यहोआहाज[5] को यरू-
शलेम में उसके पिता की जगह राजा
बनाया।[6] **2** यहोआहाज जब राजा बना
तब वह 23 साल का था और उसने यरू-
शलेम में रहकर तीन महीने राज किया।
3 मगर मिस्र के राजा ने उसे यरू-
शलेम में राजा के पद से हटा दिया
और देश पर 100 तोड़े* चाँदी और
एक तोड़े सोने का जुरमाना लगा दिया।[7]
4 और मिस्र के राजा ने यहोआहाज के
भाई एल्याकीम को यहूदा और यरू-
शलेम का राजा बना दिया और उसका
नाम बदलकर यहोयाकीम रख दिया।
मगर निको,[1] यहोयाकीम के भाई यहो-
आहाज को मिस्र ले गया।[2]

5 यहोयाकीम[3] जब राजा बना तब
वह 25 साल का था और उसने यरू-
शलेम से यहूदा पर 11 साल राज किया।
वह अपने परमेश्वर यहोवा की नज़र में
बुरे काम करता रहा।[4] **6** बैबिलोन के
राजा नबूकदनेस्सर[5] ने उस पर हमला
कर दिया ताकि उसे ताँबे की दो बेड़ियों से
जकड़कर बैबिलोन ले जाए।[6] **7** और
नबूकदनेस्सर यहोवा के भवन से कुछ
बरतन बैबिलोन ले गया और उन्हें वहाँ
अपने महल में रख लिया।[7] **8** यहो-
याकीम की ज़िंदगी की बाकी कहानी,
उसने जो-जो घिनौने काम किए और उसमें
जो बुराइयाँ पायी गयीं, उन सबका ब्यौरा
इसराएल और यहूदा के राजाओं की
किताब में लिखा है। उसकी जगह उसका
बेटा यहोयाकीन राजा बना।[8]

9 यहोयाकीन[9] जब राजा बना तब
वह 18 साल का था और उसने यरू-
शलेम से यहूदा पर तीन महीने, दस दिन
राज किया। वह यहोवा की नज़र में बुरे
काम करता रहा।[10] **10** साल की शुरू-
आत में* राजा नबूकदनेस्सर ने अपने
आदमियों को भेजा ताकि वे यहोयाकीन
को पकड़कर बैबिलोन ले आएँ,[11] साथ ही
यहोवा के भवन से कीमती चीज़ें ले
आएँ।[12] फिर उसने यहोयाकीन के चाचा
सिदकियाह को यहूदा और यरूशलेम का
राजा बनाया।[13]

11 सिदकियाह[14] जब राजा बना तब
वह 21 साल का था और उसने यरू-
शलेम में रहकर 11 साल राज किया।[15]

36:3 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

36:10 *शायद वसंत में।

अध्य. 35
1 2रा 23:30; 2इत 34:28
2 यिर्म 1:1
3 यिर्म 9:17, 20
4 2रा 23:28

अध्य. 36
5 1इत 3:15; यिर्म 22:11
6 2रा 23:30, 31
7 2रा 18:14; 2रा 23:33

दूसरा कॉल.
1 2रा 23:29; यिर्म 46:2
2 2रा 23:34; यिर्म 22:11, 12
3 यिर्म 26:20, 21; यिर्म 36:32
4 2रा 23:36, 37
5 2रा 24:1; 2रा 25:1; यिर्म 25:1
6 2रा 24:16; दान 1:1
7 एज 1:7; यिर्म 27:16; दान 1:2; दान 5:2
8 2रा 24:5, 6
9 यिर्म 22:24; मत 1:12
10 2रा 24:8, 9
11 2रा 24:10; यिर्म 29:1, 2; यहे 1:2
12 2रा 24:13; यिर्म 27:17, 18
13 2रा 24:17
14 यिर्म 37:1
15 2रा 24:18-20; यिर्म 52:1-3

12 वह अपने परमेश्‍वर यहोवा की नज़र
में बुरे काम करता रहा। उसने भविष्य-
वक्‍ता यिर्मयाह के सामने खुद को नम्र नहीं
किया,[1] जो यहोवा के आदेश पर बोलता
था। **13** सिदकियाह ने राजा नबूकद-
नेस्सर से भी बगावत की,[2] जिसने उसे
परमेश्‍वर के नाम से शपथ धरायी थी।
सिदकियाह ढीठ और कठोर बना रहा
और उसने इसराएल के परमेश्‍वर यहोवा
के पास लौटने से इनकार कर दिया।
14 याजकों के सभी प्रधानों और लोगों
ने भी परमेश्‍वर से विश्‍वासघात करने में
हद कर दी। उन्होंने वे सारे घिनौने
काम किए जो दूसरे राष्ट्र करते थे और
यहोवा के भवन को दूषित कर दिया,[3]
जिसे परमेश्‍वर ने यरूशलेम में पवित्र ठह-
राया था।

15 उनके पुरखों का परमेश्‍वर यहोवा
अपने दूत भेजकर उन्हें खबरदार करता
रहा, बार-बार आगाह करता रहा क्योंकि
उसके दिल में अपने लोगों और निवास
के लिए करुणा थी। **16** मगर वे सच्चे
परमेश्‍वर के दूतों का मज़ाक उड़ाते रहे,[4]
उसकी बातों को तुच्छ समझा[5] और उसके
भविष्यवक्‍ताओं की खिल्ली उड़ाते रहे।[6]
ऐसा वे तब तक करते रहे जब तक कि
यहोवा का क्रोध अपने लोगों पर भड़क न
उठा[7] और उनके चंगे होने की कोई गुंजा-
इश नहीं बची।

17 इसलिए परमेश्‍वर ने उन पर कस-
दियों के राजा से हमला कराया।[8] उस
राजा ने आकर उनके पवित्र-स्थान में ही
उनके जवानों को तलवार से मार डाला।[9]
उसने लड़कों, लड़कियों, बूढ़ों, बीमारों
सबको मार डाला, किसी पर भी तरस
नहीं खाया।[10] परमेश्‍वर ने सबकुछ उस
राजा के हाथ में कर दिया।[11] **18** वह
सच्चे परमेश्‍वर के भवन की सारी चीज़ें,
हर छोटी-बड़ी चीज़ बैबिलोन ले गया।
साथ ही यहोवा के भवन के खज़ाने
और राजा और उसके हाकिमों के खज़ाने
भी लूटकर ले गया।[1] **19** उसने सच्चे
परमेश्‍वर के भवन को जला दिया,[2]
यरूशलेम की शहरपनाह तोड़ डाली,[3]
उसकी सारी किलेबंद मीनारें जला दीं
और वहाँ की एक-एक कीमती चीज़
नाश कर दी।[4] **20** जो तलवार से
बच गए थे उन्हें वह बंदी बनाकर
बैबिलोन ले गया[5] और वे तब तक
उसके और उसके बेटों के गुलाम बने
रहे[6] जब तक कि फारस के राज्य*
का राज शुरू न हुआ।[7] **21** ऐसा इस-
लिए हुआ ताकि यहोवा की वह बात पूरी
हो जो उसने यिर्मयाह से कहलवायी थी[8]
और उन सारे सब्तों का कर्ज़ चुकाया जाए
जो देश ने तब तक नहीं मनाए थे।[9]
जितने समय देश उजाड़ पड़ा रहा उतने
समय यानी 70 साल के पूरा होने तक
देश ने सब्त मनाया।[10]

22 फारस के राजा कुसरू[11] के राज
के पहले साल में यहोवा ने उसके मन को
उभारा कि वह अपने पूरे राज्य में एक
ऐलान करवाए ताकि यहोवा ने यिर्मयाह
से जो बातें कहलवायी थीं[12] वे पूरी हों।
राजा कुसरू ने यह ऐलान दस्तावेज़ में
भी लिखवाया:[13] **23** "फारस के राजा
कुसरू ने कहा है, 'स्वर्ग के परमेश्‍वर
यहोवा ने धरती के सारे राज्य मेरी मुट्ठी में
कर दिए हैं[14] और मुझे यह हुक्म दिया है
कि मैं यहूदा के यरूशलेम में उसका भवन
बनवाऊँ।[15] इसलिए तुममें से जो कोई
उसके लोगों में से है, उसके साथ उसका
परमेश्‍वर यहोवा रहे और वह यरूशलेम
जाए।'"[16]

36:20 * या "के शाही घराने।"

अध्य. 36
1 यिर्म 21:1, 2; यिर्म 34:2; यिर्म 38:14, 24
2 2रा 24:20; यहे 17:12-15
3 2रा 16:11; यहे 8:10, 11
4 2इत 30:1, 10
5 यिर्म 5:12
6 यिर्म 20:7
7 भज 74:1
8 2रा 24:2
9 लैव 26:31; व्य 28:25; भज 79:2; यहे 9:7
10 विल 2:21
11 व्य 28:49-51

दूसरा कॉल.
1 2रा 20:16, 17; यश 39:6; यिर्म 27:19-22; यिर्म 52:17
2 भज 74:4-7
3 यिर्म 52:14
4 1रा 9:7; 2रा 25:9, 10; भज 79:1
5 2रा 25:21; भज 137:1
6 यिर्म 27:6, 7
7 एज 1:1-3
8 यिर्म 25:9
9 लैव 26:34
10 यिर्म 25:12; जक 1:12
11 यश 44:28; यश 45:1
12 यिर्म 29:14; यिर्म 32:42; यिर्म 33:10, 11
13 एज 1:1-4
14 दान 5:18
15 यश 44:28
16 एज 7:12, 13

एज्रा

सारांश

1 राजा कुसरू मंदिर दोबारा बनाने का फरमान देता है (1-4)
बैबिलोन से लौटने की तैयारियाँ (5-11)

2 लौटनेवालों की सूची (1-67)
मंदिर के सेवक (43-54)
सुलैमान के सेवकों के बेटे (55-57)
मंदिर के लिए खुशी से भेंट दी (68-70)

3 वेदी बनाना और बलिदान चढ़ाना (1-7)
मंदिर बनाने का काम शुरू हुआ (8, 9)
उसकी नींव डाली गयी (10-13)

4 मंदिर का काम रोकने की कोशिश (1-6)
दुश्मनों ने राजा अर्तक्षत्र से शिकायत की (7-16)
अर्तक्षत्र का जवाब (17-22)
मंदिर का काम ठप्प (23, 24)

5 यहूदी फिर से निर्माण शुरू करते हैं (1-5)
राजा दारा के लिए तत्तनै का खत (6-17)

6 दारा की ढूँढ़-ढाँढ़ और फरमान (1-12)
मंदिर बना और उसका उद्‌घाटन (13-18)
फसह मनाया गया (19-22)

7 एज्रा यरूशलेम आया (1-10)
एज्रा के लिए अर्तक्षत्र का खत (11-26)
एज्रा ने यहोवा की बड़ाई की (27, 28)

8 एज्रा के साथ लौटनेवालों की सूची (1-14)
सफर की तैयारियाँ (15-30)
बैबिलोन से निकलकर यरूशलेम पहुँचे (31-36)

9 इसराएली दूसरे देश के लोगों से शादी करते हैं (1-4)
एज्रा प्रार्थना में पाप कबूल करता है (5-15)

10 पत्नियों को वापस भेजने का करार (1-14)
पत्नियों को वापस भेज दिया (15-44)

1 फारस के राजा कुसरू के राज के
पहले साल में[1] यहोवा ने उसके मन
को उभारा कि वह अपने पूरे राज में एक
ऐलान करवाए ताकि यहोवा ने यिर्मयाह
से जो बातें कहलवायी थीं[2] वे पूरी हों।
राजा कुसरू ने यह ऐलान दस्तावेज़ में भी
लिखवाया:[3]
2 "फारस के राजा कुसरू ने कहा है,
'स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने धरती
के सारे राज्य मेरी मुट्ठी में कर दिए
हैं[4] और मुझे यह हुक्म दिया है कि मैं
यहूदा के यरूशलेम में उसका भवन बन-
वाऊँ।[5] **3** इसलिए तुममें से जो कोई
उसके लोगों में से है, उसके साथ उसका
परमेश्वर रहे और वह यहूदा के यरू-
शलेम जाकर इसराएल के परमेश्वर
यहोवा का भवन दोबारा खड़ा करे। वही
सच्चा परमेश्वर है जिसका भवन यरू-
शलेम में था।* **4** इस पूरे राज में जहाँ-
जहाँ ये लोग परदेसी बनकर रह रहे
हैं,[1] उनके पड़ोसी उनकी मदद करें।
उन्हें सोना-चाँदी, तरह-तरह का सामान
और मवेशी दें। वे उन्हें अपनी खुशी से
ऐसी चीज़ें भी दें, जो यरूशलेम में
सच्चे परमेश्वर के भवन में अर्पित की
जा सकें।'"[2]
5 तब यहूदा और बिन्यामीन के कुलों
के मुखिया, लेवी और याजक, जिस-जिस

अध्य. 1
1 यश 45:1
दान 10:1
2 यिर्म 25:12
यिर्म 29:14
यिर्म 33:10, 11
3 2इत 36:22, 23
4 दान 4:34, 35
5 यश 44:28

दूसरा कॉल.
1 2रा 17:6
यिर्म 9:16
2 निर्ग 35:21
1इत 29:9
एज 7:14-16

1:3 *या शायद, "जो यरूशलेम में है।"

के मन को सच्चे परमेश्वर ने उभारा, वे सब यरूशलेम जाने और यहोवा का भवन दोबारा बनाने की तैयारी करने लगे। **6** आस-पास के लोगों ने उन्हें सोने-चाँदी के बरतन, मवेशी, तरह-तरह का सामान और बेशकीमती चीज़ें देकर उनकी मदद की। वे अपनी खुशी से ऐसी चीज़ें भी लाए, जो परमेश्वर के भवन में अर्पित की जा सकें।

7 राजा कुसरू ने यहोवा के भवन के उन बरतनों को भी निकाला जिन्हें नबूकदनेस्सर उठा लाया था। नबूकदनेस्सर ने ये बरतन यरूशलेम से लाकर अपने देवता के मंदिर में रख लिए थे।[1] **8** फारस के राजा कुसरू ने खज़ानची मिथ्रदात से कहकर इन बरतनों को निकलवाया और इनकी एक सूची बनवाकर यहूदा के प्रधान शेशबस्सर* को दी।[2]

9 उन बरतनों की सूची यह है: सोने की 30 टोकरियाँ, चाँदी की 1,000 टोकरियाँ, 29 दूसरे पात्र, **10** सोने की 30 कटोरियाँ, चाँदी की 410 कटोरियाँ और 1,000 दूसरे बरतन। **11** सोने-चाँदी के इन बरतनों की कुल गिनती 5,400 थी। ये बरतन शेशबस्सर उस समय अपने साथ ले गया, जब बैबिलोन की बँधुआई से छूटे लोग[3] वापस यरूशलेम जा रहे थे।

2

ये लोग उनमें से हैं जिन्हें राजा नबूकदनेस्सर बंदी बनाकर बैबिलोन ले गया था[4] और जो छूटकर वापस यरूशलेम और यहूदा में अपने-अपने शहर लौटे।[5] पूरे प्रांत से ये लोग[6] **2** जरुबाबेल,[7] येशू,[8] नहेमायाह, सरायाह, रेलायाह, मोर्दकै, बिलशान, मिसपार, बिगवै, रहूम और बानाह के साथ वापस आए।

लौटनेवाले इसराएलियों की गिनती यह थी:[1] **3** परोश के बेटे* 2,172; **4** शपत्याह के बेटे 372; **5** आरह के बेटे[2] 775; **6** पहत-मोआब के घराने[3] से येशू और योआब के बेटे 2,812; **7** एलाम के बेटे[4] 1,254; **8** जत्तू के बेटे[5] 945; **9** जक्कै के बेटे 760; **10** बानी* के बेटे 642; **11** बेबई के बेटे 623; **12** अजगाद के बेटे 1,222; **13** अदोनीकाम के बेटे 666; **14** बिगवै के बेटे 2,056; **15** आदीन के बेटे 454; **16** हिजकियाह के घराने से आतेर के बेटे 98; **17** बेजै के बेटे 323; **18** योरा* के बेटे 112; **19** हाशूम के बेटे[6] 223; **20** गिब्बार* के बेटे 95; **21** बेतलेहेम के बेटे 123; **22** नतोपा के आदमी 56; **23** अनातोत[7] के आदमी 128; **24** अज़मावेत के बेटे 42; **25** किरयत-यारीम, कपीरा और बएरोत के बेटे 743; **26** रामाह और गेबा के बेटे[8] 621; **27** मिकमास के आदमी 122; **28** बेतेल और ऐ[9] के आदमी 223; **29** नबो के बेटे[10] 52; **30** मगबीश के बेटे 156; **31** एलाम नाम के एक दूसरे आदमी के बेटे 1,254; **32** हारीम के बेटे 320; **33** लोद, हादीद और ओनो के बेटे 725; **34** यरीहो के बेटे 345 **35** और सना के बेटे 3,630.

अध्य. 1

1 2रा 24:11, 13; 2इत 36:7, 18; एज 6:5; दान 1:1, 2; दान 5:2

2 एज 5:14, 16; हाग 1:1, 14; हाग 2:23

3 2रा 24:14, 15; 2इत 36:20

अध्य. 2

4 2रा 24:15, 16; 2रा 25:11; 2इत 36:20

5 एज 8:1

6 नहे 7:6, 7

7 एज 1:8, 11; हाग 1:14; मत 1:12

8 एज 3:8; एज 5:2; जक 3:1

दूसरा कॉल.

1 नहे 7:8-38

2 नहे 6:17, 18

3 एज 10:30, 44; नहे 3:11

4 एज 10:26, 44

5 एज 10:27, 44

6 एज 10:33, 44

7 यह 21:8, 18; यिर्म 1:1

8 यह 18:21, 24, 25

9 यह 7:2

10 एज 10:43, 44

1:8 *शायद यह जरुबाबेल है, जिसका ज़िक्र एज 2:2; 3:8 में हुआ है।

2:3 *इस अध्याय में "बेटे" का मतलब "वंशज" भी हो सकता है। और कुछ जगहों पर "बेटे" का मतलब "निवासी" भी हो सकता है। **2:10** *नहे 7:15 में इसे "बिन्नूई" कहा गया है। **2:18** *नहे 7:24 में इसे "हारीप" कहा गया है। **2:20** *नहे 7:25 में इसे "गिबोन" कहा गया है।

36 लौटनेवाले याजकों की गिनती यह थी:[1] येशू के घराने[2] से यदायाह[3] के बेटे 973; **37** इम्मेर के बेटे[4] 1,052; **38** पशहूर के बेटे[5] 1,247 **39** और हारीम के बेटे[6] 1,017.

40 लौटनेवाले लेवियों की गिनती यह थी:[7] होदव्याह के बेटों में से येशू और कदमीएल के बेटे[8] 74. **41** गायकों में,[9] आसाप के बेटे[10] 128. **42** पहरेदारों में,[11] शल्लूम के बेटे, आतेर के बेटे, तल्मोन[12] के बेटे, अक्कूब[13] के बेटे, हतीता के बेटे और शोबै के बेटे, कुल मिलाकर 139.

43 मंदिर के सेवकों* में से ये आदमी लौटे:[14] ज़ीहा के बेटे, हसूपा के बेटे, तब्बाओत के बेटे, **44** केरोस के बेटे, सीहा के बेटे, पादोन के बेटे, **45** लबाना के बेटे, हगाबा के बेटे, अक्कूब के बेटे, **46** हागाब के बेटे, शलमै के बेटे, हानान के बेटे, **47** गिद्देल के बेटे, गहर के बेटे, रायाह के बेटे, **48** रसीन के बेटे, नकोदा के बेटे, गज्जाम के बेटे, **49** उज्जा के बेटे, पासेह के बेटे, बेसै के बेटे, **50** असना के बेटे, मऊनियों के बेटे, नपीसीम के बेटे, **51** बकबूक के बेटे, हकूपा के बेटे, हरहूर के बेटे, **52** बसलूत के बेटे, महीदा के बेटे, हरशा के बेटे, **53** बरकोस के बेटे, सीसरा के बेटे, तेमह के बेटे, **54** नसीह के बेटे और हतीपा के बेटे।

55 सुलैमान के सेवकों के ये बेटे लौटे: सोतै के बेटे, सोपेरेत के बेटे, परूदा के बेटे,[15] **56** याला के बेटे, दरकोन के बेटे, गिद्देल के बेटे, **57** शपत्याह के बेटे, हत्तील के बेटे, पोकरेत-हसबायीम के बेटे और आमी के बेटे।

58 मंदिर के सेवकों* की और सुलैमान के सेवकों के बेटों की कुल गिनती 392 थी।

59 कुछ आदमी जो तेल-मेलह, तेल-हरशा, करूब, अद्दोन और इम्मेर से लौटे थे, वे यह साबित नहीं कर पाए कि वे इसराएली हैं और उनके पिता का कुल इसराएल से निकला है। वे थे,[1] **60** दलायाह के बेटे, तोब्याह के बेटे और नकोदा के बेटे 652. **61** और याजकों में से हबायाह के बेटे, हक्कोस के बेटे[2] और बरजिल्लै के बेटे। यह वही बरजिल्लै है जिसने गिलादी बरजिल्लै[3] की एक बेटी से शादी की थी और उनका नाम अपना लिया था। **62** इन लोगों ने अपनी वंशावली साबित करने के लिए दस्तावेज़ों में अपने घराने का नाम ढूँढ़ा, मगर उन्हें नहीं मिला। इसलिए याजकपद के लिए वे अयोग्य ठहरे।*[4] **63** राज्यपाल* ने उनसे कहा कि जब तक कोई याजक नहीं ठहराया जाता जो ऊरीम और तुम्मीम की मदद से इस मामले का पता लगा सके,[5] तब तक तुम सबसे पवित्र चीज़ों में से नहीं खा सकते।[6]

64 बँधुआई से लौटनेवाली पूरी मंडली की कुल गिनती 42,360 थी।[7] **65** इसके अलावा, उनके साथ लौटनेवाले दास-दासियों की गिनती 7,337 थी। और 200 गायक-गायिकाएँ उनके साथ थे। **66** यही नहीं, उनके पास 736 घोड़े, 245 खच्चर, **67** 435 ऊँट और 6,720 गधे थे।

68 ये सारे लोग यरूशलेम में यहोवा

2:43, 58 *या "नतीन लोगों।" शा., "दिए गए लोगों।"

2:62 *या "वे अशुद्ध ठहरे और उन्हें निकाल दिया।" **2:63** *या "तिरशाता।" यह किसी प्रांत के राज्यपाल को दिया एक फारसी खिताब है।

अध्य. 2
1 नहे 7:39-42
2 1इत 24:3, 11
3 1इत 9:2, 10; नहे 11:3, 10
4 1इत 24:3, 14; एज 10:20, 44
5 एज 10:22, 44
6 1इत 24:3, 8; एज 10:21, 44
7 नहे 7:43
8 एज 3:9; नहे 12:8, 24
9 नहे 7:44
10 1इत 15:16, 17; नहे 11:3, 17
11 नहे 7:45
12 1इत 9:2, 17; नहे 11:3, 19
13 नहे 12:25, 26
14 यह 9:3, 27; 1इत 9:2; नहे 3:26; नहे 7:46-56
15 नहे 7:57-60

दूसरा कॉल.
1 नहे 7:61-65
2 1इत 24:3, 10; नहे 3:21
3 2शम 17:27-29; 1रा 2:7
4 गि 3:10
5 निर्ग 28:30; गि 27:21; 1शम 28:6
6 लैव 2:3; लैव 6:26; गि 18:11
7 नहे 7:66-69; यश 10:21; यिर्म 23:3

के भवन की जगह पहुँचे। इनमें से कुछ
लोगों ने, जो अपने पिता के कुल के
मुखिया थे, सच्चे परमेश्‍वर के भवन के
लिए अपनी तरफ से भेंट दीं[1] ताकि
भवन उसी जगह खड़ा किया जा सके।[2]
69 वे जो कुछ दे सकते थे उन्होंने खज़ाने
में जमा करवा दिया। उन्होंने 61,000
द्राख्मा* सोना, 5,000 मीना# चाँदी[3]
और याजकों के लिए 100 पोशाकें
दीं। 70 याजक, लेवी, गायक, पहरे-
दार, मंदिर के सेवक* और बाकी लोग
अपने-अपने शहरों में बस गए। इस तरह
सभी इसराएली अपने-अपने शहरों में
रहने लगे।[4]

3 जब सातवाँ महीना[5] आया तब जो
इसराएली अपने-अपने शहरों में थे,
वे एक मन होकर यरूशलेम में इकट्ठा
हुए। 2 यहोसादाक के बेटे येशू,[6]
उसके साथी याजक, शालतीएल के बेटे
जरुबाबेल[7] और उसके भाइयों ने इस-
राएल के परमेश्‍वर की वेदी खड़ी की
ताकि उस पर होम-बलियाँ चढ़ाएँ, जैसा
सच्चे परमेश्‍वर के सेवक मूसा के कानून
में लिखा था।[8]

3 हालाँकि उन्हें आस-पास के देशों के
लोगों का डर था,[9] फिर भी उन्होंने वेदी
खड़ी की और वह भी उस जगह, जहाँ वह
पहले हुआ करती थी। तब से वे सुबह-
शाम उस वेदी पर यहोवा को होम-बलियाँ
चढ़ाने लगे।[10] 4 फिर उन्होंने छप्परों
का त्योहार मनाया ठीक जैसा कानून में
लिखा था।[1] इस दौरान उन्होंने हर दिन
उतनी होम-बलियाँ चढ़ायीं जितनी माँग
की गयी थी।[2] 5 इसके बाद वे निय-
मित तौर पर होम-बलियाँ चढ़ाने लगे।[3]
यही नहीं, वे नए चाँद के दिन पर और
साल के अलग-अलग वक्‍त में यहोवा के
ठहराए त्योहारों पर भी बलियाँ चढ़ाने
लगे।[4] और जो कोई यहोवा के लिए
स्वेच्छा-बलियाँ लाया उन्हें भी अर्पित
किया जाने लगा।[5] 6 सातवें महीने के
पहले दिन[6] से उन्होंने यहोवा के लिए
होम-बलियाँ चढ़ानी शुरू कीं, लेकिन
अभी तक यहोवा के मंदिर की नींव नहीं
डाली गयी थी।

7 उन्होंने पत्थर काटनेवालों[7] और
कारीगरों[8] को पैसे देकर काम पर रखा।
फारस के राजा कुसरू की इजाज़त से[9]
उन्होंने सीदोनियों और सोर के लोगों से
देवदार की लकड़ियाँ मँगवायीं, जिन्हें वे
समुंदर के रास्ते लबानोन से याफा तक
लाए।[10] बदले में इसराएलियों ने उन्हें
खाने-पीने की चीज़ें और तेल दिया।

8 यरूशलेम में जहाँ सच्चे परमेश्‍वर
का भवन हुआ करता था, वहाँ आने के
दूसरे साल के दूसरे महीने में, शाल-
तीएल के बेटे जरुबाबेल, यहोसादाक के
बेटे येशू और उनके बाकी भाइयों यानी
याजकों, लेवियों और बँधुआई से छूट-
कर आए लोगों ने[11] भवन बनाने का काम
शुरू किया। और जिन लेवियों की उम्र
20 या उससे ज़्यादा थी, उन्हें यहोवा के
भवन के काम की देखरेख के लिए ठह-
राया। 9 तब येशू, उसके बेटे और भाई
और कदमीएल और उसके बेटे आए, जो
यहूदा* के बेटे थे। वे सब मिलकर सच्चे

2:69 *माना जाता है कि द्राख्मा, सोने के फारसी सिक्के दर्कनोन के बराबर था जिसका वज़न 8.4 ग्रा. था। मगर यह यूनानी शास्त्र में बताया द्राख्मा नहीं है। अति. ख14 देखें। #इब्रानी शास्त्र में बताए एक मीना का वज़न 570 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। **2:70** *या "नतीन लोग।" शा., "दिए गए लोग।"

3:9 *एज 2:40 में इसे "होदव्याह" कहा गया है और नहे 7:43 में "होदवा।"

अध्य. 2
1 निर्ग 35:5, 1इत 29:5, नहे 7:70-72
2 2इत 3:1
3 एज 8:25
4 नहे 7:73

अध्य. 3
5 1रा 8:2
6 हाग 1:1
7 1इत 3:17, एज 1:7, 8, मत 1:12, लूक 3:23, 27
8 निर्ग 20:24, निर्ग 40:29
9 एज 4:4
10 गि 28:3, 4

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 23:16, लैव 23:34
2 निर्ग 29:38, गि 29:12, 13
3 निर्ग 29:39, 42
4 गि 10:10, व्य 16:16, भज 81:3
5 व्य 12:5, 6
6 गि 29:1
7 1रा 5:17
8 एज 5:8
9 एज 1:2, 3, एज 6:3, 4
10 यह 19:46, 48, 1इत 22:3, 4, 2इत 2:10, 16
11 नहे 7:6, 7

परमेश्‍वर के भवन के काम की देखरेख
करने लगे। हेनादाद के वंशजों[1] ने भी
अपने बेटों और भाइयों के साथ इस काम
में हाथ बँटाया। ये भी लेवी थे।

10 जब यहोवा का मंदिर बनाने-
वालों ने उसकी नींव डाली,[2] तब यहोवा
की बड़ाई करने के लिए याजक मंदिर
की पोशाक पहनकर और तुरहियाँ लेकर
आए[3] और लेवियों में से आसाप के
बेटे झाँझ लेकर आए। यह उस इंतज़ाम
के मुताबिक था, जो इसराएल के राजा
दाविद ने ठहराया था।[4] **11** वे बारी-
बारी गाने लगे।[5] वे यह कहकर यहोवा
का धन्यवाद देने और उसका गुण-
गान करने लगे, "क्योंकि वह भला है,
इसराएल के लिए उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।"[6] यहोवा के भवन की
नींव डाले जाने की खुशी में सब लोगों ने
ज़ोरदार आवाज़ में यहोवा की बड़ाई की।
12 याजकों, लेवियों और इसराएल के
कुलों के मुखियाओं में से कई बुज़ुर्ग
जिन्होंने पहलेवाला मंदिर देखा था,[7] इस
मंदिर की नींव देखकर रोने लगे। जबकि
बाकी लोग खुशी के मारे जयजयकार
करने लगे।[8] **13** उनका शोर इतना
ज़बरदस्त था कि वह दूर-दूर तक सुनायी
दे रहा था। लोगों के लिए यह फर्क करना
मुश्‍किल था कि वे खुशी के मारे चिल्ला
रहे हैं या दुख के मारे रो रहे हैं।

4 यहूदा और बिन्यामीन के दुश्‍मनों[9]
ने सुना कि बँधुआई से छूटकर आए
लोग,[10] इसराएल के परमेश्‍वर यहोवा
के लिए मंदिर खड़ा कर रहे हैं। **2** वे
फौरन जरुबाबेल और उन आदमियों के
पास गए जो अपने-अपने पिता के कुल के
मुखिया थे और कहने लगे, "इस काम में
हम तुम्हारा हाथ बँटाना चाहते हैं क्योंकि
हम भी उसी परमेश्‍वर की उपासना
करते हैं* जिसकी तुम करते हो।[1] हम
उस ज़माने से तुम्हारे परमेश्‍वर को बलि-
दान चढ़ाते आए हैं, जब अश्‍शूर का
राजा एसर-हद्दोन[2] हमें यहाँ लाया था।"[3]
3 मगर जरुबाबेल, येशू और इसराएल
के कुलों के मुखियाओं ने उनसे कहा,
"तुम हमारे साथ हमारे परमेश्‍वर का
भवन नहीं बनाओगे।[4] फारस के राजा
कुसरू ने इसराएल के परमेश्‍वर यहोवा
का भवन बनाने की जो आज्ञा दी है,[5]
उसे हम अकेले ही पूरा करेंगे।"

4 तब आस-पास के देशों के लोग
यहूदा के लोगों की हिम्मत तोड़ने लगे*
ताकि वे मायूस होकर मंदिर बनाने
का काम छोड़ दें।[6] **5** उन्होंने राज्य के
सलाहकारों को उनके खिलाफ काम करने
के लिए पैसे दिए। ये दुश्‍मन फारस के
राजा कुसरू के दिनों से लेकर फारस के
राजा दारा के दिनों तक,[7] यहूदियों की
योजनाएँ नाकाम करने की कोशिश करते
रहे।[8] **6** उन्होंने राजा अहश-वेरोश के
राज की शुरूआत में यहूदा और यरू-
शलेम के निवासियों के खिलाफ राजा
को एक खत लिखा। **7** और जब राजा
अर्तक्षत्र फारस पर राज कर रहा था, तब
बिशलाम, मिथ्रदात, ताबेल और उसके
साथियों ने उसे भी एक चिट्ठी लिखी।
उन्होंने उसका अनुवाद अरामी भाषा में
करवाया[9] और उसे अरामी अक्षरों में
लिखवाया।*

8 * राज्य के मुख्य अधिकारी रहूम
और शास्त्री शिमशै ने यरूशलेम के

4:2 *शा., "की खोज करते हैं।" **4:4** *शा., "के हाथ ढीले करने लगे।" **4:7** *या शायद, "इसे अरामी भाषा में लिखा गया और फिर इसका अनुवाद किया गया।" **4:8** *मूल पाठ में एज 4:8 से लेकर 6:18 तक का हिस्सा अरामी भाषा में लिखा गया था।

अध्य. 3
1 नहे 3:18
2 जक 4:9
3 गि 10:8
4 1इत 6:31, 32; 1इत 23:5; 1इत 25:1
5 निर्ग 15:21; नहे 12:24
6 1इत 16:34; 2इत 7:3
7 1रा 6:22; हाग 2:3
8 भज 126:1, 6; यश 35:10; जक 4:9

अध्य. 4
9 एज 4:6-8; नहे 4:7, 8
10 एज 2:1, 64

दूसरा कॉल.
1 2रा 17:33, 34
2 2रा 19:36, 37
3 2रा 17:24
4 नहे 2:19, 20; यूह 4:9, 22
5 2इत 36:23; एज 1:1-3; एज 6:3, 4
6 नहे 6:9
7 एज 4:24; एज 5:5; एज 6:1
8 नहे 6:10-12
9 2रा 18:26

खिलाफ राजा अर्तक्षत्र को यह चिट्ठी
लिखीः **9** (यह चिट्ठी इन लोगों की
तरफ से थीः मुख्य अधिकारी रहूम,
शास्त्री शिमशै और उनके बाकी साथी
यानी न्यायी, उप-राज्यपाल, मंत्री, एरेख[1]
के लोग, बैबिलोन के लोग, सूसा[2] के
रहनेवाले एलामी लोग[3] **10** और बाकी
राष्ट्रों के लोग, जिन्हें महान और गौरव-
शाली ओसनप्पर * ने बंदी बनाकर साम-
रिया के शहरों में बसाया था[4] और महा-
नदी के इस पार # रहनेवाले बाकी लोग।
11 उस चिट्ठी की एक नकल यह है)

"महानदी के इस पार रहनेवाले सेवकों
की तरफ से राजा अर्तक्षत्र के नाम।
12 हम राजा को बताना चाहते हैं कि
जो यहूदी तेरे यहाँ से यरूशलेम आए हैं,
वे दोबारा उस बगावती और दुष्ट शहर
को खड़ा कर रहे हैं। उसकी शहरपनाह
बनायी जा रही है[5] और नींव की मरम्मत
चल रही है। **13** राजा जान ले कि
अगर यह शहर खड़ा हो गया और उसकी
शहरपनाह तैयार हो गयी, तो ये यहूदी
न तो कर चुकाएँगे, न माल पर मह-
सूल देंगे[6] और न ही सड़क का महसूल
चुकाएँगे। इससे शाही खज़ाने को भारी
नुकसान होगा। **14** हम राजा का नमक
खाते हैं और कोई उसे नुकसान पहुँचाए
यह देखकर हम चुप नहीं रह सकते। इस-
लिए हमने यह खत लिखा है **15** ताकि
तू अपने से पहले के राजाओं * के दस्ता-
वेज़ों में छानबीन करे।[7] तब तुझे खुद
मालूम हो जाएगा कि यह एक बगावती
शहर है और राजाओं और प्रांतों के लिए
हमेशा से खतरा रहा है। पुराने ज़माने
से ही इसके लोग बगावत की आग भड़-
काते आए हैं और इसी वजह से इस शहर
का नाश हुआ था।[1] **16** राजा जान ले
कि अगर इसे दोबारा बनाया गया और
इसकी शहरपनाह तैयार हो गयी, तो
महानदी के इस पार का इलाका राजा के
हाथ से निकल जाएगा।"[2]

17 तब राजा ने मुख्य अधिकारी
रहूम, शास्त्री शिमशै और सामरिया में
उनके बाकी साथियों को और महानदी के
उस पार रहनेवाले बाकी लोगों को यह
पैगाम भेजाः

"सलाम! **18** तुम लोगों ने जो खत
भेजा था वह मुझे शब्द-ब-शब्द पढ़-
कर सुनाया गया।* **19** मेरे हुक्म पर
दस्तावेज़ों में छानबीन की गयी और यह
बात सामने आयी है कि पुराने ज़माने से
यह शहर राजाओं के खिलाफ सिर उठाता
आया है और विद्रोह और बगावत करता
आया है।[3] **20** ऐसे बहुत-से शक्ति-
शाली राजा भी थे जिन्होंने यरूशलेम और
महानदी के उस पार के पूरे इलाके पर
राज किया। और जिन्हें कर, माल पर
महसूल और सड़क का महसूल अदा
किया गया। **21** लेकिन अब इन आद-
मियों को हुक्म दो कि वे अपना काम रोक
दें और जब तक मैं न कहूँ, इस शहर को
दोबारा न बनाया जाए। **22** इस मामले
पर जल्द-से-जल्द कार्रवाई की जाए ताकि
राजा को और नुकसान न हो।"[4]

23 जब राजा अर्तक्षत्र का खत रहूम,
शास्त्री शिमशै और उनके साथियों के
सामने पढ़ा गया, तो वे फौरन यरूशलेम
गए और उन्होंने जबरन यहूदियों का काम
बंद करवा दिया। **24** तब यरूशलेम में
सच्चे परमेश्वर के भवन का काम रुक
गया और फारस के राजा दारा के राज के
दूसरे साल तक ठप्प पड़ा रहा।[5]

4:10 *यानी अश्शूरबनीपाल। #यानी फरात नदी के पश्चिम में। **4:15** *शा., "अपने पुरखों।"

4:18 *या शायद, "वह अनुवाद करके पढ़ा गया।"

अध्य. 4
1 उत 10:9, 10
2 नहे 1:1; एस 1:2; दान 8:2
3 उत 10:22; यश 11:11; यिर्म 49:35, 36
4 2रा 17:24
5 नहे 1:3
6 2रा 23:35; नहे 5:4
7 एस 2:23; एस 6:1

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 52:3
2 व्य 11:24
3 2रा 18:1, 7; 2रा 24:20; एज 4:15
4 एज 4:13
5 एज 5:5; एज 6:1; हाग 1:14, 15

5 फिर भविष्यवक्ता हाग्गै[1] और
भविष्यवक्ता जकरयाह[2] जो इद्दो[3]
का पोता था, यहूदा और यरूशलेम में
यहूदियों को परमेश्वर का संदेश सुनाने
लगे। वे इसराएल के उस परमेश्वर के
नाम से भविष्यवाणी करने लगे जो अपने
लोगों के साथ था। 2 तब शालतीएल
के बेटे जरुबाबेल[4] और यहोसादाक
के बेटे येशू[5] ने यरूशलेम में परमेश्वर
के भवन को एक बार फिर बनाना
शुरू किया।[6] इस काम में परमेश्वर के
भविष्यवक्ता उनके साथ थे और उनकी
हिम्मत बढ़ाते रहे।[7] 3 तब महानदी*
के इस पार के इलाके का राज्यपाल
तत्तनै और शतर-बोजनै अपने साथियों के
साथ उनके पास आए और पूछने लगे,
"किसके कहने पर तुमने यह काम शुरू
किया और यह भवन बना रहे हो?"
4 उन्होंने यह भी पूछा, "उन सबके नाम
बताओ जो यह इमारत खड़ी कर रहे हैं!"
5 मगर परमेश्वर की आँखें यहूदियों के
मुखियाओं पर लगी थीं[8] और दुश्मनों ने
उनका काम नहीं रोका। पर उन्होंने राजा
दारा को इसकी खबर भेजी और शाही
फरमान के आने तक इंतज़ार किया।

6 महानदी के इस पार के इलाके
के राज्यपाल तत्तनै ने और शतर-बोजनै
और उसके साथियों यानी महानदी के इस
पार के उप-राज्यपालों ने राजा दारा को
जो खत भेजा 7 उसमें यह लिखा था:

"राजा दारा सलामत रहे! 8 हम
राजा को खबर देना चाहते हैं कि जब
हम यहूदा के प्रांत गए, तो हमने देखा कि
वहाँ महान परमेश्वर का भवन बनाया जा
रहा है। उसमें बड़े-बड़े पत्थर लगाए जा
रहे हैं और लकड़ियाँ लगाकर उसकी
दीवारें खड़ी की जा रही हैं। लोग ज़ोर-
शोर से उसे बनाने में लगे हुए हैं जिस
वजह से यह काम तेज़ी से आगे बढ़ रहा
है। 9 हमने उनके मुखियाओं से पूछा,
'किसके कहने पर तुमने यह काम शुरू
किया और यह भवन बना रहे हो?'[1]
10 हमने उन लोगों के नाम भी पूछे जो
इस काम में अगुवाई कर रहे हैं ताकि तुझे
बता सकें।

11 जवाब में उन लोगों ने कहा, 'हम
स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर के सेवक
हैं। हम उसी भवन को दोबारा बना
रहे हैं, जिसे कई साल पहले इसराएल
के एक महान राजा ने खड़ा किया था।[2]
12 लेकिन जब हमारे पुरखों ने स्वर्ग के
परमेश्वर का क्रोध भड़काया,[3] तो उसने
उन्हें बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर के
हवाले कर दिया।[4] उस कसदी राजा ने
आकर इस भवन को तहस-नहस कर
दिया[5] और लोगों को बंदी बनाकर बैबि-
लोन ले गया।[6] 13 लेकिन जब राजा
कुसरू बैबिलोन का राजा बना, तो उसने
अपने राज के पहले साल में परमेश्वर
का भवन दोबारा बनाने का हुक्म दिया।[7]
14 यही नहीं, उसने सोने-चाँदी के वे बर-
तन निकलवाए जिन्हें नबूकदनेस्सर यरू-
शलेम के मंदिर से उठाकर बैबिलोन के
मंदिर में ले आया था।[8] कुसरू ने ये बर-
तन शेशबस्सर* नाम के आदमी के
हवाले किए[9] जिसे उसने राज्यपाल ठह-
राया था।[10] 15 उसने शेशबस्सर से
कहा, "ये बरतन यरूशलेम के मंदिर में
रखने के लिए वापस ले जा। और पर-
मेश्वर के भवन को उसी जगह बना जहाँ
वह पहले था।"[11] 16 फिर शेशबस्सर
यरूशलेम आया और उसने परमेश्वर के
भवन की नींव डाली।[12] तब से इस भवन

अध्य. 5
1 हाग 1:1
2 जक 1:1
3 नहे 12:1, 4
4 मत 1:12
5 जक 6:11
6 एज 3:2, 8
7 एज 6:14 हाग 2:4, 21 जक 4:7
8 एज 7:6, 28 एज 8:22

दूसरा कॉल.
1 एज 5:3, 4
2 1रा 7:51
3 व्य 31:17 2इत 34:24, 25
4 2रा 24:1 2रा 25:1
5 2रा 25:8, 9
6 2रा 25:11
7 एज 1:1-3
8 2रा 25:14, 15 2इत 36:7, 18
9 एज 1:8, 11
10 हाग 1:1, 14
11 एज 1:2, 7
12 एज 3:10 हाग 2:18 जक 4:9

5:3 *या "फरात नदी।"

5:14 *शायद यह जरुबाबेल है, जिसका ज़िक्र एज 2:2; 3:8 में हुआ है।

को बनाने का काम चल रहा है, मगर अब तक पूरा नहीं हुआ।’[1]

17 अब अगर राजा को यह ठीक लगे तो वह बैबिलोन के शाही खज़ाने में ढूँढ़-ढाँढ़ करवाए। अगर राजा कुसरू ने सचमुच यरूशलेम में परमेश्वर का भवन खड़ा करने का हुक्म दिया था,[2] तो वह फरमान ज़रूर वहाँ होगा। उसके बाद राजा का जो भी फैसला हो वह हमें बताया जाए।”

6 तब राजा दारा ने हुक्म दिया कि बैबिलोन के भंडार* में जहाँ कीमती चीज़ें रखी जाती हैं, ढूँढ़-ढाँढ़ की जाए। **2** खोज करने पर मादै प्रांत में एकबतना के किले में एक खर्रा बरामद हुआ, जिसके आधार पर यह फरमान निकाला गया:

3 “राजा कुसरू ने अपने राज के पहले साल में यरूशलेम में परमेश्वर के भवन के बारे में यह हुक्म दिया था:[3] ‘भवन की नींव डाली जाए और उसे दोबारा बनाया जाए ताकि वहाँ बलिदान चढ़ाए जा सकें। भवन 60 हाथ* ऊँचा और 60 हाथ चौड़ा हो।[4] **4** दीवारें खड़ी करते वक्त बड़े-बड़े पत्थरों के तीन रद्दे और मोटी लकड़ी का एक रद्दा डाला जाए।[5] इनका खर्च शाही खज़ाने से दिया जाए।[6] **5** और यरूशलेम में परमेश्वर के भवन से सोने-चाँदी के जितने बरतन नबूकदनेस्सर बैबिलोन ले आया था,[7] उन्हें वापस अपनी जगह यानी परमेश्वर के मंदिर में रखा जाए।’[8]

6 इसलिए महानदी* के उस पार रहनेवाले राज्यपाल तत्तनै और शतर-बोजनै और उनके साथियो यानी महानदी के उस पार के उप-राज्यपालो,[1] सुनो! उस जगह से दूर रहो। **7** परमेश्वर के भवन के काम में दखल मत दो। यहूदियों का राज्यपाल और उनके मुखिया भवन को दोबारा वहीं खड़ा करेंगे जहाँ वह पहले था। **8** मेरा यह भी हुक्म है कि परमेश्वर का भवन बनानेवाले इन मुखियाओं की मदद की जाए। महानदी के उस पार के इलाकों से जितना भी कर हमारे शाही खज़ाने[2] में जमा होता है, उसमें से फौरन इमारत का खर्च उन्हें दिया जाए ताकि उनका काम बिना रुके चलता रहे।[3] **9** और यरूशलेम में उनके याजक स्वर्ग के परमेश्वर को होम-बलि चढ़ाने के लिए बैल,[4] मेढ़ा,[5] मेम्ना[6] जो भी माँगें, वह उन्हें दिया जाए। इसके अलावा गेहूँ,[7] नमक,[8] दाख-मदिरा,[9] तेल[10] जो कुछ उन्हें चाहिए, वह हर दिन बिना नागा उन्हें दिया जाए **10** ताकि वे स्वर्ग के परमेश्वर को ऐसे चढ़ावे अर्पित करते रहें जिनसे वह खुश हो। और वे राजा और उसके बेटों की लंबी उम्र की दुआ माँगते रहें।[11] **11** मैं यह भी हुक्म देता हूँ, जो इस फरमान को नहीं मानेगा उसके घर से एक बल्ली उखाड़ी जाएगी और उसे उस पर लटका दिया जाएगा।* और इस अपराध के लिए उसके घर को हर आने-जानेवाले के लिए शौचालय# बना दिया जाएगा। **12** चाहे राजा हो या प्रजा, जो भी मेरा हुक्म तोड़कर यरूशलेम में परमेश्वर के भवन का नाश करेगा, परमेश्वर उसका सर्वनाश कर देगा, वही परमेश्वर जिसने इस भवन को

6:1 *शा., “दस्तावेज़ों के भवन।” **6:3** *करीब 26.7 मी. (87.6 फुट)। अति. ख14 देखें। **6:6** *या “फरात नदी।”

6:11 *या “और उसे घोंपकर लटका दिया जाएगा।” #या शायद, “कूड़े की जगह; गू-गोबर का ढेर।”

अध्य. 5
1 एज 4:23, 24
2 2इत 36:22, 23; एज 6:3, 4

अध्य. 6
3 2इत 36:22, 23; एज 1:1-3
4 1रा 6:2
5 एज 3:7; एज 5:8
6 एज 7:20; यश 49:23
7 2रा 25:13-15; 2इत 36:7, 18; दान 1:1, 2; दान 5:2
8 एज 1:8, 11

दूसरा कॉल.
1 एज 5:3, 6
2 एज 7:20; हाग 2:7, 8
3 एज 5:5
4 लैव 1:3, 5
5 लैव 1:10
6 गि 28:3
7 लैव 2:1
8 लैव 2:13
9 गि 15:5
10 निर्ग 27:20; लैव 2:4
11 एज 7:23

अपने नाम की महिमा के लिए चुना है।[1]
मैं, राजा दारा यह हुक्म जारी करता हूँ।
इस पर फौरन अमल किया जाए।”

13 तब महानदी के उस पार के राज्य-
पाल तत्तनै ने और शतर-बोजनै[2] और
उनके साथियों ने फौरन राजा दारा के
हुक्म पर अमल किया और उसकी एक-
एक बात मानी। **14** हाग्गै की भविष्य-
वाणियों और इद्दो के पोते जकरयाह की
भविष्यवाणियों से हिम्मत पाकर[3] यहू-
दियों के मुखियाओं ने भवन बनाना जारी
रखा और उसे बड़ी तेज़ी से करते रहे।[4]
उन्होंने मंदिर का काम पूरा कर लिया,
जिसका हुक्म इसराएल के परमेश्वर ने
उन्हें दिया था[5] और जिसका आदेश
फारस के राजा कुसरू,[6] दारा[7] और
अर्तक्षत्र* ने दिया था।[8] **15** इस तरह
मंदिर का काम अदार* महीने के तीसरे
दिन पूरा हुआ। यह राजा दारा के राज
का छठा साल था।

16 तब याजक, लेवी[9] और बाकी
जितने भी लोग बँधुआई से आए थे
यानी सब इसराएलियों ने खुशी-खुशी पर-
मेश्वर के भवन का उद्‌घाटन* किया।
17 इस मौके पर उन्होंने 100 बैल,
200 मेढ़े और 400 मेम्ने चढ़ाए। और
पूरे इसराएल के लिए 12 बकरे पाप-
बलि के तौर पर अर्पित किए, हर
गोत्र के लिए एक बकरा।[10] **18** इसके
अलावा, उन्होंने याजकों के दल बनाए
और लेवियों को समूहों में बाँटा और
उन्हें यरूशलेम में परमेश्वर की सेवा के
लिए ठहराया।[11] मूसा की किताब में जैसा
लिखा था वैसा ही किया गया।[12]

19 बँधुआई से छूटकर आए लोगों
ने पहले महीने के 14वें दिन फसह
का त्योहार मनाया।[1] **20** सभी याजकों
और लेवियों ने फसह मनाने के लिए
खुद को शुद्ध किया,[2] उनमें से एक भी
अशुद्ध हालत में नहीं था। उन्होंने बँधु-
आई से लौटे सब लोगों के लिए, अपने
साथी याजकों और अपने लिए फसह का
मेम्ना काटा। **21** तब बँधुआई से आए
इसराएलियों ने फसह का मेम्ना खाया।
उनके साथ उन लोगों ने भी खाया
जिन्होंने आस-पास के देशों के अशुद्ध
काम छोड़कर खुद को शुद्ध किया था
और इसराएल के परमेश्वर यहोवा की
उपासना करने* के लिए उनके साथ
हो लिए थे।[3] **22** उन सबने खुशी-
खुशी सात दिन तक बिन-खमीर की रोटी
का त्योहार भी मनाया[4] क्योंकि उन्हें ये
खुशियाँ यहोवा की वजह से मिली थीं।
इसराएल के परमेश्वर ने ही अश्शूर
के राजा* के मन को उभारा था कि
वह इसराएलियों पर मेहरबान हो[5] और
सच्चे परमेश्वर का भवन बनाने में उनकी
मदद करे।

7 इसके बाद, फारस के राजा अर्त-
क्षत्र[6] के राज में एज्रा*[7] नाम का
एक आदमी था। वह सरायाह[8] का
बेटा था, सरायाह अजरयाह का,
अजरयाह हिलकियाह[9] का, **2** हिल-
कियाह शल्लूम का, शल्लूम सादोक
का, सादोक अहीतूब का, **3** अहीतूब
अमरयाह का, अमरयाह अजरयाह[10]
का, अजरयाह मरायोत का, **4** मरायोत

6:14 *यानी अर्तक्षत्र प्रथम। यह एज 4:7 में बताया अर्तक्षत्र गौमाता नहीं है। **6:15** *अति. ख15 देखें। **6:16** *या “समर्पण।”

6:21 *शा., “की खोज करने।” **6:22** *फारस के राजा दारा प्रथम के लिए इस्तेमाल हुई उपाधि। उस वक्त वह उस इलाके पर राज कर रहा था जो पहले अश्शूरी साम्राज्य का इलाका था। **7:1** *मतलब “मदद।”

अध्य. 6
1 व्य 12:5, 6; 2इत 7:16
2 एज 5:6
3 एज 5:1, 2; हाग 1:12; जक 1:1, 7; जक 6:15
4 एज 3:8; एज 4:3
5 हाग 1:8
6 2इत 36:23; एज 1:2, 3; यश 44:28
7 एज 6:12
8 एज 7:12, 13
9 1इत 9:2; नहे 7:73
10 2इत 7:5
11 1इत 23:6
12 गि 3:6

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 12:2, 14; लैव 23:5; व्य 16:1; एस 3:7
2 निर्ग 30:19, 20; लैव 21:8; लैव 22:2, 3
3 निर्ग 12:48; गि 9:14
4 निर्ग 12:17; लैव 23:6
5 एज 7:27; नीत 21:1

अध्य. 7
6 नहे 2:1
7 नहे 8:2; नहे 12:26
8 1इत 6:14
9 2रा 22:8
10 2इत 31:10

जरहयाह का, जरहयाह उज्जी का,
उज्जी बुक्की का, 5 बुक्की अबीशू का,
अबीशू फिनेहास[1] का, फिनेहास एलिआ-
ज़र[2] का और एलिआज़र, प्रधान याजक
हारून का बेटा था।[3] 6 यही एज्रा बैबि-
लोन से आया था। वह एक नकल-
नवीस* था और इसराएल के परमेश्वर
यहोवा ने मूसा को जो कानून दिया था,
उसका अच्छा ज्ञान रखता था।#[4] उसका
परमेश्वर यहोवा उसके साथ था इसलिए
राजा के सामने उसने जो भी बिनती की,
राजा ने उसे पूरा किया।

7 राजा अर्तक्षत्र के राज के सातवें
साल में इसराएलियों, याजकों, लेवियों,[5]
गायकों,[6] पहरेदारों[7] और मंदिर के
सेवकों*[8] में से कुछ लोग एज्रा के साथ
यरूशलेम के लिए निकले। 8 एज्रा,
राजा अर्तक्षत्र के राज के सातवें साल
के पाँचवें महीने में यरूशलेम आया।
9 वह पहले महीने के पहले दिन बैबि-
लोन से चला था और पाँचवें महीने
के पहले दिन यरूशलेम पहुँचा। इस पूरे
सफर में उसका परमेश्वर उसके साथ
था।[9] 10 एज्रा ने अपने दिल को तैयार
किया* ताकि वह यहोवा के कानून का
अध्ययन करे, उसके मुताबिक चले[10]
और उसमें दिए नियम और न्याय की बातें
इसराएल को सिखाए।[11]

11 एज्रा जो एक याजक और नकल-
नवीस* था और यहोवा के नियमों और
आज्ञाओं की अच्छी समझ रखता था,#
उसे राजा अर्तक्षत्र से एक खत मिला,
जिसमें लिखा था:

7:6, 11, 12 *या "शास्त्री।" **7:6** #या "उसकी नकल तैयार करने में माहिर था।" **7:7** *या "नतीन लोगों।" शा., "दिए गए लोगों।" **7:10** *या "अपने मन में ठाना।" **7:11** #या "की नकल तैयार करता था।"

12 # "राजाओं के राजा अर्तक्षत्र[1] का
स्वर्ग के परमेश्वर के कानून के नकल-
नवीस,* याजक एज्रा के लिए यह
पैगाम है: तुझे पूरी शांति मिले! 13 मैं
यह फरमान जारी करता हूँ कि मेरे इलाके
में रहनेवाले जो भी इसराएली, याजक
और लेवी यरूशलेम जाना चाहते हैं, वे
तेरे साथ जा सकते हैं।[2] 14 राजा और
उसके सात सलाहकारों की तरफ से तुझे
यहूदा और यरूशलेम भेजा जा रहा है।
तू जाकर इस बात की छानबीन कर कि
तेरे पास परमेश्वर का जो कानून है, उसे
लोग मान रहे हैं या नहीं। 15 और जो
सोना-चाँदी राजा और उसके सलाहकारों
ने इसराएल के परमेश्वर के लिए खुशी-
खुशी दिया है, उसे तू यरूशलेम ले जा
जहाँ परमेश्वर का निवास है। 16 और
जो सोना-चाँदी तुझे पूरे बैबिलोन प्रांत से
मिलेगा, साथ ही वे सारी भेंट जो इस-
राएली और याजक यरूशलेम के मंदिर
के लिए अपनी मरज़ी से देंगे उसे भी
साथ ले जा।[3] 17 और वहाँ जाकर तू
फौरन इससे बैल,[4] मेढ़े,[5] मेम्ने[6] और
उनके साथ चढ़ाया जानेवाला अनाज का
चढ़ावा[7] और अर्घ[8] खरीदना। यह सब
अपने परमेश्वर के भवन की वेदी पर
चढ़ाना।

18 बचे हुए सोने-चाँदी का वही करना
जो तुझे और तेरे भाइयों को ठीक लगे
और जो तेरे परमेश्वर की मरज़ी के
मुताबिक हो। 19 अपने परमेश्वर के
भवन के लिए जो बरतन तुझे दिए जा
रहे हैं, यरूशलेम पहुँचकर तू उन्हें पर-
मेश्वर के सामने रख देना।[9] 20 इसके
अलावा, अगर तुझे परमेश्वर के भवन के

7:12 #मूल पाठ में एज 7:12 से लेकर 7:26 तक का हिस्सा अरामी भाषा में लिखा गया था।

अध्य. 7
1 गि 25:11, न्या 20:28
2 निर्ग 6:23, 25, गि 3:32, व्य 10:6
3 निर्ग 7:1, निर्ग 28:1
4 नहे 8:1, 4
5 एज 8:18, 19
6 1इत 6:31, 32
7 1इत 9:22-27
8 1इत 9:2, एज 8:20
9 एज 8:22
10 व्य 5:1, व्य 17:10
11 व्य 33:8, 10, मला 2:7

दूसरा कॉल.
1 एज 6:14, नहे 2:1
2 एज 1:2, 3
3 एज 1:5, 6, एज 8:25
4 लैव 1:3
5 लैव 1:10
6 गि 28:3
7 गि 15:4
8 गि 15:5
9 एज 8:30

लिए किसी और चीज़ की ज़रूरत हो, तो
उसका खर्च शाही खज़ाने से ले लेना।[1]
21 मैं राजा अर्तक्षत्र, महानदी* के
उस पार के सभी खज़ानचियों को यह
हुक्म देता हूँ कि स्वर्ग के परमेश्वर के
कानून का नकल-नवीस,# याजक एज्रा[2]
जो कुछ माँगे, वह सब उसे फौरन
दिया जाए। **22** उसे ये सब दिया जाए:
100 तोड़े* चाँदी, 100 कोर# गेहूँ,
100 बत△ दाख-मदिरा,[3] 100 बत
तेल[4] और जितना नमक[5] चाहिए उतना।
23 स्वर्ग के परमेश्वर ने अपने भवन के
लिए जो भी हुक्म दिया है, उसे जोश के
साथ पूरा किया जाए।[6] कहीं ऐसा न हो
कि स्वर्ग के परमेश्वर का क्रोध मेरे बेटों
और मेरे राज्य के लोगों पर भड़क उठे।[7]
24 मेरा यह भी हुक्म है कि किसी भी
याजक, लेवी, साज़ बजानेवाले,[8] पहरे-
दार, मंदिर के सेवक*[9] और परमेश्वर
के भवन के दूसरे सेवकों से न तो कर
लिया जाए, न माल पर महसूल[10] और न
ही सड़क का महसूल।
25 हे एज्रा! तू परमेश्वर से मिली
बुद्धि की मदद से महानदी के उस पार,
अधिकारी और न्यायी ठहराना कि वे उन
सब लोगों का न्याय करें, जो तेरे पर-
मेश्वर के नियम-कानून जानते हैं। मगर
जो ये नियम-कानून नहीं जानते उन्हें तू
सिखाना।[11] **26** अगर कोई तेरे पर-
मेश्वर का कानून और राजा का कानून
नहीं माने, तो उसे फौरन सज़ा देना। फिर

7:21 *या “फरात नदी।” #या “शास्त्री।”
7:22 *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें। #एक कोर 220 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। △एक बत 22 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।
7:24 *या “नतीन लोग।” शा., “दिए गए लोग।”

चाहे तू उस पर जुरमाना लगाए, उसे
जेल में डाले, देश-निकाला दे या मौत की
सज़ा।”
27 हमारे पुरखों के परमेश्वर यहोवा
की बड़ाई हो! उसी ने राजा के दिल में यह
बात डाली कि वह यरूशलेम में यहोवा के
भवन की शोभा बढ़ाए।[1] **28** परमेश्वर
ने अपने अटल प्यार का सबूत दिया है
क्योंकि उसी की वजह से राजा, उसके
सलाहकारों[2] और उसके बड़े-बड़े हाकिमों
की कृपा मुझ पर हुई है।[3] मेरा परमेश्वर
यहोवा मेरे साथ है, इसलिए मैंने हिम्मत
रखी और इसराएली अगुवों को इकट्ठा
किया कि वे मेरे साथ चलें।

8 राजा अर्तक्षत्र के राज में मेरे साथ
बैबिलोन से लौटनेवाले मुखियाओं
और उनके घरानों के नाम की सूची यह
है:[4] **2** फिनेहास के बेटों*[5] में से गेर-
शोम; ईतामार[6] के बेटों में से दानियेल;
दाविद के बेटों में से हत्तूश; **3** शकन्याह
और परोश के बेटों में से जकर-
याह और उसके साथ 150 आदमी
जिनके नाम सूची में हैं; **4** पहत-मोआब
के बेटों[7] में से जरहयाह का बेटा एल्यहो-
एनै और उसके साथ 200 आदमी;
5 जत्तू के बेटों[8] में से यहजीएल का बेटा
शकन्याह और उसके साथ 300 आदमी;
6 आदीन के बेटों[9] में से योनातान का
बेटा एबेद और उसके साथ 50 आदमी;
7 एलाम के बेटों[10] में से अतल्याह का
बेटा यशाया और उसके साथ 70
आदमी; **8** शपत्याह के बेटों[11] में से
मीकाएल का बेटा जबद्याह और उसके
साथ 80 आदमी; **9** योआब के बेटों में
से यहीएल का बेटा ओबद्याह और उसके
साथ 218 आदमी; **10** बानी के बेटों

8:2 *इस अध्याय में “बेटे” का मतलब “वंशज” भी हो सकता है।

अध्य. 7
1 एज 6:3, 4; एज 6:8
2 एज 7:6; नहे 8:2
3 गि 15:5
4 निर्ग 27:20; लैव 2:1
5 लैव 2:13
6 एज 1:2
7 एज 6:9, 10
8 1इत 15:16
9 1इत 9:2
10 नहे 5:4
11 नहे 8:2, 3

दूसरा कॉल.
1 एज 6:22; नीत 21:1; यश 60:13
2 एज 7:14
3 एज 9:9; नहे 1:11

अध्य. 8
4 एज 7:7
5 1इत 6:3, 4
6 निर्ग 6:23
7 एज 2:1, 6
8 एज 2:1, 8; एज 10:27, 44
9 एज 2:1, 15
10 एज 2:1, 7
11 एज 2:1, 4

में से योसिप्याह का बेटा शलोमीत और
उसके साथ 160 आदमी; **11** बेबई
के बेटों[1] में से जकरयाह, जो बेबई
का बेटा था और उसके साथ 28 आदमी;
12 अजगाद के बेटों[2] में से हक्का-
तान का बेटा योहानान और उसके
साथ 110 आदमी; **13** अदोनीकाम के
बचे हुए बेटे[3] यानी एलीपेलेत, यीएल
और शमायाह और उनके साथ 60
आदमी; **14** और बिगवै के बेटों[4] में से
ऊतै और जब्बूद और उनके साथ 70
आदमी।

15 मैंने इन आदमियों को उस नदी
के पास इकट्ठा किया जो अहवा की ओर
बहती थी।[5] हमने वहाँ तीन दिन तक
डेरा डाला। जब मैंने लोगों और याजकों
की जाँच-परख की तो मुझे एक भी
लेवी न मिला। **16** तब मैंने एली-
एज़ेर, अरीएल, शमायाह, एलनातान,
यारीब, एलनातान, नातान, जकरयाह
और मशुल्लाम को बुलवाया जो अगुवे
थे। मैंने योयारीब और एलनातान को भी
बुलवाया जो शिक्षक थे। **17** मैंने उन्हें
इद्दो के पास जाने का आदेश दिया जो
कासिप्या का अगुवा था। और इद्दो और
उसके भाइयों को, जो मंदिर के सेवक* थे
और कासिप्या में रहते हैं यह संदेश देने
को कहा कि हमारे परमेश्वर के भवन के
लिए सेवकों को लाओ। **18** हमारा पर-
मेश्वर हमारे साथ था इसलिए शेरेब्याह,[6]
उसके बेटों और भाइयों को लाया गया,
पूरे 18 आदमी। शेरेब्याह सूझ-बूझ से
काम करनेवाला आदमी था। वह इस-
राएल के बेटे लेवी और लेवी के पोते
महली के वंश[7] से था। **19** इसके
अलावा, हशब्याह को और मरारियों[8] में
से यशाया, उसके भाइयों और उनके बेटों
को भी लाया गया, पूरे 20 आदमी।
20 और मंदिर के सेवकों* में से 220
आदमी लाए गए, जिन्हें भवन में सेवा
करने के लिए चुना गया था। मंदिर
के सेवकों* को दाविद और हाकिमों ने
लेवियों की मदद के लिए रखा था।

21 फिर मैंने अहवा नदी के पास उप-
वास की घोषणा की ताकि हम अपने पर-
मेश्वर के सामने खुद को नम्र करें
और उससे बिनती करें कि वह सफर
में हमारे साथ रहे और हम अपने
बच्चों और सामान के साथ सही-सलामत
अपने देश पहुँचें। **22** रास्ते में दुश्मनों
से बचने के लिए राजा से सैनिक और
घुड़सवार माँगने में मुझे संकोच हो रहा
था क्योंकि मैंने राजा से कहा था, "हमारे
परमेश्वर का हाथ उन सब पर रहता
है जो उसकी खोज में रहते हैं।[1] मगर
जो उसे छोड़ देते हैं उसका क्रोध उन पर
भड़क उठता है और वह उनके खिलाफ
अपनी शक्ति दिखाता है।"[2] **23** इस-
लिए हमने उपवास किया और हिफा-
ज़त के लिए परमेश्वर से बिनती की और
उसने हमारी सुन ली।[3]

24 फिर मैंने याजकों के प्रधानों में से
12 को चुनकर अलग किया। शेरेब्याह,
हशब्याह[4] और उनके 10 भाइयों को।
25 मैंने उनके सामने वह सोना-चाँदी
और बरतन तौले जो राजा, उसके सलाह-
कारों, उसके हाकिमों और सभी इसराए-
लियों ने परमेश्वर के भवन के लिए दान
किए थे।[5] **26** मैंने यह सब तौलकर
उन्हें सौंपा: 650 तोड़े* चाँदी, चाँदी के
100 बरतन जिनकी कीमत 2 तोड़ों के

8:17 *या "नतीन लोग।" शा., "दिए गए लोग।"

8:20 *या "नतीन लोगों।" शा., "दिए गए लोगों।" **8:26** *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 8
1 एज 2:1, 11; एज 10:28, 44
2 एज 2:1, 12
3 नहे 7:6, 18
4 एज 2:1, 14
5 एज 8:31
6 एज 8:24, 25
7 गि 3:20
8 1इत 6:16

दूसरा कॉल.
1 2इत 16:9; एज 7:6; एज 7:28; जक 4:6
2 2इत 15:2
3 2इत 7:14; यिर्म 29:10, 12; यिर्म 50:4, 5
4 एज 8:18, 19
5 एज 7:14-16; एज 7:19

बराबर थी, 100 तोड़े सोना, **27** सोने की 20 कटोरियाँ जिनकी कीमत 1,000 दर्कनोन* के बराबर थी और दमकते लाल रंग के बढ़िया ताँबे के 2 बरतन, जो सोने जितने कीमती थे।

28 तब मैंने उनसे कहा, "तुम यहोवा की नज़र में पवित्र हो[1] और ये बरतन भी पवित्र हैं। और यह सोना-चाँदी तुम्हारे पुरखों के परमेश्वर यहोवा के लिए भेंट में दिया गया है। **29** इसलिए यरूशलेम पहुँचने तक इन्हें सँभालकर रखना। और वहाँ यहोवा के भवन के भंडार-घरों में याजकों और लेवियों के प्रधानों और इसराएली कुलों के हाकिमों के सामने इन्हें तौलकर दे देना।"[2] **30** तब याजकों और लेवियों ने सोना-चाँदी और उन बरतनों को लिया जो उन्हें तौलकर दिए गए थे ताकि उन्हें यरूशलेम में अपने परमेश्वर के भवन में ला सकें।

31 फिर पहले महीने[3] के 12वें दिन हमने अहवा नदी से अपना डेरा उठाया[4] और हम यरूशलेम की ओर चल दिए। हमारा परमेश्वर हमारे साथ था और पूरे सफर में वह दुश्मनों और घात लगानेवालों से हमारी हिफाज़त करता रहा। **32** यरूशलेम पहुँचने पर[5] हम तीन दिन वहाँ रहे। **33** चौथे दिन हम सोना-चाँदी और बरतन लेकर परमेश्वर के भवन में गए। वहाँ हमने इन्हें तौलकर उरीयाह के बेटे, याजक मरेमोत[6] के हवाले कर दिया।[7] मरेमोत के साथ, फिनेहास का बेटा एलिआज़र और लेवियों में से येशू का बेटा योजाबाद[8] और बिन्नूई[9] का बेटा नोअद्याह भी वहाँ मौजूद था। **34** सब चीज़ों को गिनकर और तौलकर उनका पूरा वज़न लिख लिया गया।

35 ये लोग जो बैबिलोन की बँधुआई से छूटकर वापस अपने देश आए थे, उन्होंने पूरे इसराएल की तरफ से इसराएल के परमेश्वर को इन जानवरों की होम-बलि चढ़ायी: 12 बैल,[1] 96 मेढ़े,[2] 77 मेम्ने और पाप-बलि के तौर पर 12 बकरे।[3] यह सब यहोवा के लिए होम-बलि थी।[4]

36 इसके बाद, हमने महानदी*[5] के इस पार रहनेवाले राजा के सूबेदारों और राज्यपालों को राजा का फरमान दिया।[6] उन्होंने लोगों की मदद की और सच्चे परमेश्वर के भवन के काम में सहयोग दिया।[7]

9 जब यह सारे काम पूरे हो चुके, तब हाकिमों ने मेरे पास आकर कहा, "इसराएल के लोगों, याजकों और लेवियों ने आस-पास के कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों, यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्रियों[8] और एमोरियों[9] से खुद को अलग नहीं रखा और न ही वे उनके घिनौने कामों से दूर रहे।[10] **2** उनमें से कुछ ने उनकी बेटियों से शादी की और अपने बेटों की शादी भी उन्हीं लोगों में करवायी।[11] इस वजह से यह पवित्र वंश*[12] आस-पास के देशों के लोगों के साथ घुल-मिल गया है।[13] हमारे कुछ हाकिम और अधिकारी# यह पाप करने में सबसे आगे रहे हैं।"

3 यह सुनते ही मैंने दुख के मारे अपने कपड़े और बिन आस्तीन का चोगा फाड़ा, अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोचे और सदमे में आकर वहीं ज़मीन पर बैठ गया। **4** तब वे लोग जो इसराएल के परमेश्वर की बातों का आदर करते थे,* मेरे

8:27 *दर्कनोन सोने का एक फारसी सिक्का था। अति. ख14 देखें।

8:36 *या "फरात नदी।" **9:2** *शा., "बीज।" #या "मातहत अधिकारी।" **9:4** *शा., "बातों के कारण थरथराते थे।"

अध्य. 8
1 लैव 21:6-8, यश 52:11
2 एज 7:19, एज 8:33
3 एस 3:7
4 एज 8:15, 21
5 एज 7:8
6 नहे 3:4, 21
7 एज 7:19, एज 8:29
8 नहे 8:7
9 नहे 12:1, 8

दूसरा कॉल.
1 लैव 1:3
2 लैव 1:10
3 लैव 22:18, 19
4 एज 7:17
5 उत 15:18
6 एज 7:21
7 एज 6:13

अध्य. 9
8 लैव 18:3
9 उत 15:16
10 लैव 20:23, व्य 12:29, 30
11 निर्ग 34:15, 16, एज 10:44
12 निर्ग 19:5, 6
13 नहे 13:1, 3

आस-पास इकट्ठा हुए। उन्हें भी अफसोस था कि बँधुआई से लौटे लोगों ने कितना बड़ा पाप किया है। मैं शाम को अनाज के चढ़ावे के वक्त[1] तक सदमे की हालत में बैठा रहा।

5 शाम को जब अनाज का चढ़ावा चढ़ाने का वक्त आया,[2] तो मैं उन्हीं कपड़ों और बिन आस्तीन के चोगे में शोक की हालत से उठा। मैं अपने पर-मेश्वर यहोवा के सामने घुटनों के बल गिरा और हाथ फैलाकर **6** मैंने उससे कहा, "हे मेरे परमेश्वर, मैं इतना शर्मिंदा और लज्जित हूँ कि तुझसे बात करने की मुझमें हिम्मत नहीं। क्योंकि हमारे गुनाह बहुत बढ़ गए हैं और हमारा दोष बढ़ते-बढ़ते आसमान तक पहुँच गया है।[3] **7** अपने पुरखों के ज़माने से लेकर आज तक हमने बहुत बुरे काम किए हैं।[4] हमारे गुनाहों की वजह से हमें, हमारे राजाओं और याजकों को दूसरे देश के राजाओं के हाथ कर दिया गया। उन्होंने हमें अपनी तलवार का कौर बनाया,[5] हमें बँधुआई में ले गए,[6] हमें पूरी तरह लूट लिया[7] और हमारा शर्मनाक हाल कर दिया। आज भी हमारा बुरा हाल है।[8] **8** लेकिन हे हमारे परमेश्वर यहोवा, कुछ समय से तूने हम पर दया की है और हमें पूरी तरह मिटने नहीं दिया बल्कि वापस यहाँ लाकर अपने निवास-स्थान में एक मह-फूज़ जगह* दी है।[9] तू हमारी आँखों में चमक ले आया है और इस गुलामी में तूने हमें राहत दी है। **9** इस हालत में भी[10] तूने हमें बेसहारा नहीं छोड़ा बल्कि अपने अटल प्यार का सबूत दिया और फारस के राजाओं को हम पर मेहरबान होने दिया।[11] तूने हमारी मदद की ताकि हम तेरा भवन बनाएँ[12] और उसके खंड-हरों को दोबारा खड़ा करें। तूने यहूदा और यरूशलेम में हमारे लिए चारों तरफ हिफाज़त की* दीवार खड़ी की है।

10 इतना सब होने के बाद भी, हे हमारे परमेश्वर, हमने तेरी आज्ञाओं को नहीं माना **11** जो तूने अपने सेवकों, अपने भविष्यवक्ताओं के ज़रिए हमें दी थीं और कहा था, 'जिस देश को तुम अपने अधिकार में करनेवाले हो वह एक अशुद्ध देश है क्योंकि वहाँ के लोग अशुद्ध हैं और उन्होंने घिनौने काम करके उसे दूषित कर दिया है। उन्होंने देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक उसे अशुद्ध कामों से भर दिया है।[1] **12** इसलिए तुम न तो अपनी बेटियों की शादी उनके बेटों से करवाना और न ही अपने बेटों की शादी उनकी बेटियों से।[2] तुम उनकी शांति और खुशहाली के लिए कुछ मत करना।[3] तभी तुम शक्तिशाली बनोगे और देश की बढ़िया उपज खाओगे और अपने बेटों को विरासत में यह देश दे सकोगे कि वह हमेशा उनका बना रहे।' **13** तूने हमें अपने बुरे कामों और पापों का सिला दिया है। मगर हम जितनी बड़ी सज़ा पाने के लायक थे, तूने हमें उससे कम ही सज़ा दी[4] और हमें छुड़ाया।[5] **14** अब क्या हम फिर तेरी आज्ञाएँ तोड़ दें और घिनौने काम करनेवालों के साथ रिश्तेदारी कर लें?[6] क्या ऐसा करने से तेरा क्रोध हम पर नहीं भड़क उठेगा और तू हमें नहीं मिटा देगा? तब तो हममें से कोई नहीं बचेगा। **15** हे इसराएल के परमेश्वर यहोवा, तू एक नेक परमेश्वर है[7] क्योंकि तूने हममें से कुछ लोगों को ज़िंदा रहने दिया है। देख! हम तेरे सामने दोषी खड़े हैं जबकि अपने अपराध के कारण हम तेरे सामने खड़े होने के लायक भी नहीं।"[8]

9:8 *शा., "एक खूँटी।"

9:9 *या "पत्थर की।"

अध्य. 9

1 निर्ग 29:41
2 गि 28:4, 5
3 दान 9:7
4 गि 32:14; 2इत 29:6
5 2रा 10:32; 2इत 36:17
6 2रा 17:22, 23; 2रा 25:6, 7
7 2रा 17:20
8 नहे 9:32
9 नहे 9:31; भज 138:7
10 नहे 9:36, 37
11 एज 1:1-3
12 एज 6:14; जक 4:9

दूसरा कॉल.

1 लैव 18:24; व्य 12:30, 31; व्य 18:9-11
2 निर्ग 23:32; निर्ग 34:15, 16; व्य 7:3, 4; यह 23:12, 13
3 व्य 23:3, 6
4 भज 103:8, 10; विल 3:22
5 भज 106:46
6 एज 9:1; नहे 13:23
7 नहे 9:33; दान 9:7
8 भज 130:3; भज 143:2

10 एज्रा सच्चे परमेश्‍वर के भवन के
सामने मुँह के बल पड़ा हुआ रो-
रोकर प्रार्थना कर रहा था[1] और अपने
लोगों के पाप कबूल कर रहा था। तब
इसराएली आदमी-औरतों और बच्चों की
एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठा हो गयी
और फूट-फूटकर रोने लगी। **2** एलाम
के बेटों*[2] में से यहीएल[3] के बेटे शकन्याह
ने एज्रा से कहा, "हमने आस-पास के देशों
की औरतों से शादी करके# अपने पर-
मेश्‍वर के साथ विश्‍वासघात किया है।[4]
मगर इसराएल के लिए अब भी उम्मीद
बाकी है। **3** हम अपने परमेश्‍वर के
साथ यह करार करना चाहते हैं[5] कि हम
अपनी-अपनी पत्नियों को वापस उनके
देश भेज देंगे। और उनके साथ-साथ बच्चों
को भी खुद से दूर कर देंगे। इस तरह
हम यहोवा के आदेशों को मानेंगे और
उन लोगों की सलाह पर चलेंगे जो पर-
मेश्‍वर की आज्ञाओं का गहरा आदर करते
हैं।*[6] जैसा कानून में कहा गया है हम
वैसा ही करेंगे। **4** हे एज्रा उठ क्योंकि
इस मामले को निपटाना तेरी ज़िम्मेदारी है
और हम तेरे साथ हैं। हिम्मत रख और इस
काम को पूरा कर।"

5 तब एज्रा उठा और उसने याजकों
के प्रधानों, लेवियों और सब इसराएलियों
को शपथ खिलायी कि जैसा उन्होंने कहा
है वैसा ही करें।[7] उन सबने शपथ खायी।
6 फिर एज्रा सच्चे परमेश्‍वर के भवन के
सामने से उठकर एल्याशीब के बेटे यहो-
हानान के भोजन के कमरे में गया।
लेकिन एज्रा ने वहाँ कुछ नहीं खाया-पीया
क्योंकि वह बँधुआई से आए अपने लोगों
के विश्‍वासघात पर शोक मना रहा था।[1]

7 तब पूरे यहूदा और यरूशलेम में
घोषणा करवायी गयी कि बँधुआई से
आए सभी लोग यरूशलेम में इकट्ठा हों।
8 अगर कोई हाकिमों और मुखियाओं का
यह फैसला नहीं मानेगा और तीन दिन के
अंदर नहीं आएगा, तो उसकी सारी चीज़ें
ज़ब्त कर ली जाएँगी और उसे बँधुआई से
आए लोगों की मंडली से बेदखल कर दिया
जाएगा।[2] **9** यहूदा और बिन्यामीन के
सभी आदमी तीन दिन के अंदर यरूशलेम
में इकट्ठा हो गए। नौवें महीने के 20वें
दिन सब लोग सच्चे परमेश्‍वर के भवन के
आँगन में बैठे हुए थे। मामला बड़ा संगीन
था इसलिए उनके हाथ-पैर काँप रहे थे।
ठंड के मारे भी उनकी कँपकँपी छूट रही
थी क्योंकि ज़ोरों की बारिश हो रही थी।

10 तब याजक एज्रा ने उनसे कहा,
"तुमने आस-पास के देशों की औरतों से
शादी करके परमेश्‍वर के साथ विश्‍वास-
घात किया है।[3] ऐसा करके तुमने इस-
राएल को और दोषी बना दिया है।
11 इसलिए अब अपने पुरखों के पर-
मेश्‍वर यहोवा के सामने अपने पाप मान
लो और उसकी मरज़ी के मुताबिक काम
करो। आस-पास के देशों के लोगों से खुद
को अलग करो और उन औरतों से भी
जिनसे तुमने शादी की है।"[4] **12** तब
पूरी मंडली ने ज़ोर से कहा, "जैसा तूने
कहा है हम वैसा ही करेंगे। **13** मगर
इस बारिश के मौसम में इतने सारे लोगों
का बाहर खड़े रहना मुश्‍किल है। और यह
मामला ऐसा नहीं कि इसे एक-दो दिन में
सुलझाया जा सके क्योंकि हममें से बहुतों
ने यह पाप किया है। **14** इसलिए पूरी
मंडली के बजाय हमारे हाकिमों को यहाँ
रहने दे।[5] और जिस-जिस ने आस-पास

अध्य. 10
1 एज 9:5, 6
2 एज 2:1, 7
3 एज 10:26, 44
4 एज 9:2
5 2रा 11:17; 2इत 29:10; 2इत 34:31
6 एज 9:4
7 नहे 10:28-30

दूसरा कॉल.
1 एज 9:3, 4; दान 9:3-5
2 एज 7:26
3 नहे 13:23
4 व्य 7:3, 4; नहे 13:3; 2कुर 6:17
5 एज 9:1

10:2 *इस अध्याय में "बेटे" का मत-लब "वंशज" भी हो सकता है। और कुछ जगहों पर "बेटे" का मतलब "निवासी" भी हो सकता है। #या "औरतों को अपने घरों में लाकर।" **10:3** *शा., "आज्ञाओं के कारण थरथराते हैं।"

के देशों की औरतों से शादी की है, वह एक तय वक्त पर अपने-अपने शहर के मुखिया और न्यायी के साथ आए। तभी इस मामले में परमेश्वर की जलजलाहट हमसे दूर होगी।”

15 लेकिन असाहेल के बेटे योनातान और तिकवा के बेटे यहजयाह ने इसका विरोध किया और मशुल्लाम और शब्बतै नाम के लेवियों[1] ने उनका साथ दिया। 16 मगर बँधुआई से छूटे लोगों ने वही किया जो तय किया गया था। दसवें महीने के पहले दिन याजक एज्रा ने मामले की जाँच के लिए इसराएल के उन आदमियों की बैठक बुलायी, जो अपने-अपने पिता के कुल के मुखिया थे और जिनके नाम लिखे हुए थे। 17 और पहले महीने के पहले दिन तक उन्होंने उन सभी आदमियों का मामला निपटा लिया, जिन्होंने आस-पास के देशों की औरतों से शादी की थी। 18 जाँच करने पर पता चला था कि याजकों के कुछ बेटों ने आस-पास के देशों की औरतों से शादी की थी।[2] वे थेः यहोसादाक के बेटे येशू[3] के भाइयों और बेटों में से मासेयाह, एलीएज़ेर, यारीब और गदल्याह। 19 लेकिन उन्होंने वादा किया कि वे अपनी पत्नियों को वापस उनके देश भेज देंगे। और क्योंकि वे दोषी थे उन्होंने यह भी कहा कि वे अपने पापों के प्रायश्चित के लिए झुंड से एक-एक मेढ़ा चढ़ाएँगे।[4]

20 पाप करनेवालों में ये भी थेः इम्मेर के बेटों[5] में से हनानी और जबद्याह; 21 हारीम के बेटों[6] में से मासेयाह, एलियाह, शमायाह, यहीएल और उज्जियाह; 22 पशहूर के बेटों[7] में से एल्योएनै, मासेयाह, इश्माएल, नतनेल, योजाबाद और एलिआसा। 23 और लेवियों में से योजाबाद, शिमी, केलायाह (यानी कलीता), पतहयाह, यहूदा और एलीएज़ेर। 24 गायकों में से एल्याशीब और पहरेदारों में से शल्लूम, तेलेम और ऊरी।

25 इसराएलियों में से ये थेः परोश के बेटों[1] में से रम्याह, यिज्जियाह, मल्कियाह, मियामीन, एलिआज़र, मल्कियाह और बनायाह। 26 एलाम के बेटों[2] में से मत्तन्याह, जकरयाह, यहीएल,[3] अब्दी, यरेमोत और एलियाह। 27 जत्तू के बेटों[4] में से एल्योएनै, एल्याशीब, मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद और अज़ीज़ा। 28 बेबई के बेटों[5] में से यहोहानान, हनन्याह, जब्बै और अतलै। 29 बानी के बेटों में से मशुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, याशूब, शाल और यरेमोत। 30 पहत-मोआब के बेटों[6] में से अदना, कलाल, बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई और मनश्शे। 31 हारीम के बेटों[7] में से एलीएज़ेर, यिश्शियाह, मल्कियाह,[8] शमायाह, शिमोन, 32 बिन्यामीन, मल्लूक और शमरयाह। 33 हाशूम के बेटों[9] में से मत्तनै, मत्तता, जाबाद, एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी। 34 बानी के बेटों में से मादै, अमराम, ऊएल, 35 बनायाह, बेदयाह, कलूही, 36 वन्याह, मरेमोत, एल्याशीब, 37 मत्तन्याह, मत्तनै और यासू। 38 बिन्नूई के बेटों में से शिमी, 39 शेलेम्याह, नातान, अदायाह, 40 मक्नदबै, शाशै, शारै, 41 अजरेल, शेलेम्याह, शमरयाह, 42 शल्लूम, अमरयाह और यूसुफ। 43 और नबो के बेटों में से यीएल, मतित्याह, जाबाद, जबीना, यद्दई, योएल और बनायाह। 44 इन सबने आस-पास के देशों की औरतों से शादी की थी[10] और अपने-अपने बीवी-बच्चों को वापस उनके देश भेज दिया।[11]

अध्य. 10

1 नहे 8:7; नहे 11:16
2 एज 9:1, 2; नहे 13:28; यहे 44:22; मला 2:7, 8
3 एज 2:1, 2; एज 3:2; जक 6:11
4 लैव 5:17, 18
5 1इत 24:3, 14; एज 2:1, 37
6 1इत 24:3, 8; एज 2:1, 39
7 एज 2:1, 38

दूसरा कॉल.

1 एज 2:1, 3; नहे 3:25
2 एज 2:1, 7; एज 8:1, 7
3 एज 10:2
4 एज 2:1, 8
5 एज 2:1, 11; एज 8:1, 11
6 एज 2:1, 6
7 एज 2:1, 32
8 नहे 3:11
9 एज 2:1, 19; नहे 8:4
10 व्य 7:3, 4
11 एज 10:16, 17

नहेमायाह

सारांश

1 यरूशलेम से खबर (1-3)
नहेमायाह की प्रार्थना (4-11)

2 नहेमायाह को यरूशलेम भेजा गया (1-10)
वह शहरपनाह का मुआयना करता है (11-20)

3 शहरपनाह का दोबारा बनना (1-32)

4 विरोध के बावजूद काम आगे बढ़ा (1-14)
हथियार लिए कारीगर काम जारी रखते हैं (15-23)

5 नहेमायाह ने अन्याय को रोका (1-13)
उसकी निस्वार्थ भावना (14-19)

6 निर्माण काम का विरोध जारी (1-14)
शहरपनाह 52 दिनों में तैयार (15-19)

7 शहर के फाटक और पहरेदार (1-4)
लौटनेवालों की सूची (5-69)
मंदिर के सेवक (46-56)
सुलैमान के सेवकों के बेटे (57-60)
काम के लिए दान (70-73)

8 कानून पढ़कर मतलब समझाना (1-12)
छप्परों का त्योहार मनाना (13-18)

9 लोग अपने पाप कबूल करते हैं (1-38)
यहोवा माफ करनेवाला परमेश्वर (17)

10 लोग कानून पर चलने के लिए राज़ी (1-39)
'हम परमेश्वर के भवन की देखरेख में लापरवाही नहीं करेंगे' (39)

11 यरूशलेम में लोगों को बसाया (1-36)

12 याजक और लेवी (1-26)
शहरपनाह का उद्घाटन (27-43)
मंदिर में सेवा के लिए दी मदद (44-47)

13 नहेमायाह ने और भी सुधार किए (1-31)
दसवाँ हिस्सा दिया जाए (10-13)
सब्त को अपवित्र न किया जाए (15-22)
परायी औरतों से शादी करने की निंदा की गयी (23-28)

1 ये बातें हकल्याह के बेटे नहेमा-
याह*[1] ने लिखीं: राजा# की हुकू-
मत के 20वें साल में, किसलेव△ नाम के
महीने में जब मैं शूशन⊠ नाम के किले□[2]
में था, **2** तब यहूदा से मेरा एक भाई
हनानी[3] और कुछ आदमी मेरे पास आए।
मैंने उन यहूदियों का हाल-चाल पूछा
जो बँधुआई से छूटकर वापस गए थे[4]
और यरूशलेम के बारे में भी पूछा।
3 उन्होंने बताया, “यहूदा प्रांत में रहने-
वालों का बुरा हाल है। लोग उनका
मज़ाक उड़ाते हैं, उनका अपमान करते
हैं।[1] यरूशलेम की शहरपनाह अब भी
टूटी पड़ी है[2] और उसके फाटक जो
आग में फूँक दिए गए थे, वे वैसे-के-वैसे
पड़े हैं।”[3]
4 यह सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा
और शोक मनाने लगा। कई दिनों तक
मैंने उपवास किया[4] और स्वर्ग के पर-
मेश्वर के सामने प्रार्थना की। **5** मैंने
कहा, “हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा,
तू महान और विस्मयकारी परमेश्वर है,
अपना करार निभाता है और जो तुझसे

1:1 *मतलब “याह दिलासा देता है।” #यानी अर्तक्षत्र। △अति. ख15 देखें। ⊠या “सूसा।” □या “महल।”

अध्य. 1
1 नहे 1:11, नहे 5:14, नहे 10:1
2 एस 1:2, एस 3:15, दान 8:2
3 नहे 7:2
4 यिर्म 52:30

दूसरा कॉल.
1 1रा 9:7, नहे 9:36, 37, भज 79:4
2 2रा 25:10
3 नहे 2:17, विल 1:4
4 2इत 20:3, एज 8:21

प्यार करते हैं और तेरी आज्ञाएँ मानते हैं, उन्हें तू अपने अटल प्यार का सबूत देता है।[1] 6 इसलिए तेरा यह सेवक तेरे लोगों के लिए दिन-रात तुझसे जो बिनती कर रहा है, उस पर कान लगा और उसकी तरफ ध्यान दे।[2] इसराएलियों ने तेरे खिलाफ पाप किया है और मैं उनके पाप तेरे सामने कबूल करता हूँ। हाँ, मैंने और मेरे पिता के घराने ने पाप किया है।[3] 7 हमने सचमुच तेरे खिलाफ दुष्ट काम किए हैं[4] और उन आज्ञाओं, कायदे-कानूनों और न्याय-सिद्धांतों को नहीं माना जो तूने अपने सेवक मूसा को दिए थे।[5]

8 हे परमेश्वर, ज़रा उस बात* को याद कर जो तूने अपने सेवक मूसा से कही थी, 'अगर तुम लोग मेरे साथ विश्वासघात करोगे, तो मैं तुम्हें देश-देश के लोगों में तितर-बितर कर दूँगा।[6] 9 लेकिन अगर तुम मेरी ओर फिरकर मेरी आज्ञाएँ मानोगे तो मैं तुम्हें इकट्ठा करूँगा। चाहे तुम धरती के कोने-कोने तक क्यों न बिखर गए हो, मैं तुम्हें उस जगह वापस ले आऊँगा[7] जो मैंने अपने नाम की महिमा के लिए चुनी है।'[8] 10 ये तेरे ही सेवक और तेरे ही लोग हैं जिन्हें तूने अपनी ताकत से, अपने शक्तिशाली हाथ से छुड़ाया था।[9] 11 इसलिए हे यहोवा, अपने इस सेवक की बिनती पर कान लगा और उन सेवकों की प्रार्थना भी सुन जिन्हें तेरे नाम का डर मानने से खुशी मिलती है। अपने इस सेवक को आज कामयाबी दे। और राजा का दिल पिघला दे ताकि वह मुझ पर दया करे।"[10]

उन दिनों मैं राजा का साकी था।[11]

1:8 * या "चेतावनी।"

अध्य. 1
1 व्य 7:9, दान 9:4
2 भज 88:1, लूक 18:7
3 2इत 29:6, एज 9:6
4 भज 106:6
5 लैव 27:34, गि 36:13, व्य 12:1, नहे 9:34
6 लैव 26:33, व्य 4:27, व्य 28:64
7 व्य 30:1-4
8 व्य 12:5, भज 132:13
9 लैव 25:42, व्य 5:15, व्य 9:26, 29
10 1रा 8:49, 50, एज 7:6, भज 106:46, नीत 21:1
11 नहे 2:1

दूसरा कॉल.

अध्य. 2
1 एज 7:1, नहे 13:6
2 नहे 1:1
3 नहे 1:11
4 नहे 1:2, 3
5 1शम 1:13
6 दान 9:25
7 नहे 1:11
8 नहे 5:14, नहे 13:6
9 यह 1:4, एज 5:3

2 अब राजा अर्तक्षत्र के राज[1] के 20वें साल में[2] नीसान* नाम का महीना आया। राजा के लिए दाख-मदिरा लायी गयी और हमेशा की तरह मैंने वह दाख-मदिरा उसे पेश की।[3] मैं राजा के सामने पहले कभी इतना उदास नहीं रहा। 2 इसलिए राजा ने मुझसे पूछा, "तू बीमार नहीं, फिर तेरे चेहरे पर उदासी क्यों छायी है? ज़रूर कोई बात तुझे अंदर-ही-अंदर खाए जा रही है।" यह सुनकर मैं बहुत घबरा गया।

3 मैंने राजा से कहा, "राजा की जय हो! जिस शहर में मेरे पुरखों को दफनाया गया था, जब वही उजाड़ पड़ा हो और उसके फाटक जलकर राख हो गए हों, तो भला मैं खुश कैसे रह सकता हूँ?"[4] 4 राजा ने मुझसे पूछा, "बता, तू क्या चाहता है?" उसी वक्त मैंने स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना की।[5] 5 फिर मैंने राजा से कहा, "अगर राजा को यह मंज़ूर हो और अगर वह अपने इस सेवक से खुश है, तो वह मुझे यहूदा जाने दे। मुझे उस शहर जाने दे, जहाँ मेरे पुरखों को दफनाया गया था ताकि मैं उसे दोबारा बना सकूँ।"[6] 6 तब राजा ने जिसके पास रानी भी बैठी हुई थी मुझसे कहा, "तेरा यह सफर कितने दिनों का होगा? और तू कब लौटेगा?" राजा मुझे भेजने के लिए तैयार हो गया[7] और मैंने उसे बताया कि मुझे लौटने में कितने दिन लगेंगे।[8]

7 मैंने राजा से एक और गुज़ारिश की, "हुज़ूर, मुझे महानदी के उस पार* के राज्यपालों के नाम खत दे[9] कि वे मुझे अपने इलाके से होकर जाने दें और मैं सही-सलामत यहूदा पहुँच सकूँ। 8 मुझे

2:1 * अति. ख15 देखें। 2:7 * यानी फरात नदी के पश्चिम में।

शाही बाग के रखवाले आसाप के नाम
भी एक खत दे ताकि वह मुझे लकड़ियाँ
ले जाने दे और मैं 'मंदिर के किले'[1] के
फाटक, शहरपनाह[2] और अपने रहने के
लिए घर बना सकूँ।" मेरा परमेश्‍वर मेरे
साथ था इसलिए राजा ने मुझे वे खत
दे दिए।[3]
9 जब मैं महानदी के उस पार पहुँचा,
तो मैंने वहाँ के राज्यपालों को राजा के
खत दिए। राजा ने मेरे साथ अपने सेना-
पतियों और घुड़सवारों को भी भेजा था।
10 बेत-होरोन के रहनेवाले सनबल्लत[4]
और अम्मोनी[5] अधिकारी* तोब्याह[6] ने
जब सुना कि इसराएल के लोगों की
मदद करने कोई आया है, तो वे गुस्से से
भर गए।
11 एक लंबा सफर तय करने के
बाद, मैं यरूशलेम पहुँचा और तीन दिन
तक वहीं रहा। **12** मैं रात में कुछ आद-
मियों को लेकर निकल पड़ा। मैंने किसी
को कुछ नहीं बताया कि मेरे परमेश्‍वर ने
यरूशलेम के बारे में मेरे मन में क्या बात
डाली है। सवारी के लिए हमारे पास एक
ही गधा था और उस पर मैं सवार था।
13 मैं रात को 'घाटी के फाटक'[7] से
शहर के बाहर निकला और अजगर
सोते* के सामने से होते हुए 'राख के
ढेर के फाटक'[8] पर पहुँचा। मैंने यरू-
शलेम की टूटी दीवारों का और राख हो
चुके उसके फाटकों का मुआयना किया।[9]
14 फिर मैं उस फाटक से होते हुए
गया जो सोता फाटक कहलाता है[10] और
'राजा के तालाब' की तरफ बढ़ा। वहाँ
मेरे गधे के निकलने के लिए जगह काफी
नहीं थी। **15** फिर भी मैं घाटी[11] के
रास्ते से ऊपर की तरफ बढ़ता गया और
रात-भर शहरपनाह का मुआयना करता
रहा। इसके बाद मैं वापस लौट आया
और 'घाटी के फाटक' से शहर के अंदर
आ गया।
16 अधिकारी*[1] नहीं जानते थे कि
मैं कहाँ गया था और क्या कर रहा
था। क्योंकि मैंने अब तक अधिकारियों,#
यहूदियों, याजकों, बड़े-बड़े लोगों और
मरम्मत का काम करनेवालों को कुछ नहीं
बताया था। **17** मुआयना करने के बाद
मैंने उन सबसे कहा, "तुम देख सकते हो
कि हमारी हालत कितनी बुरी है। यरू-
शलेम उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक
जलकर राख हो चुके हैं। आओ, हम
यरूशलेम की शहरपनाह को दोबारा खड़ा
करें ताकि लोग हमारा मज़ाक उड़ाना बंद
कर दें।" **18** फिर मैंने उन्हें बताया कि
कैसे मेरा परमेश्‍वर मेरे साथ था[2] और
राजा ने मुझसे क्या-क्या कहा।[3] यह सुन-
कर वे बोल उठे, "आओ, हम काम शुरू
करें।" इस बढ़िया काम के लिए उन्होंने
एक-दूसरे की हिम्मत बँधायी।[4]
19 जब इस बात की खबर बेत-होरोन
के रहनेवाले सनबल्लत, अम्मोनी[5] अधि-
कारी* तोब्याह[6] और अरब के रहनेवाले
गेशेम[7] को मिली, तो वे हमारी खिल्ली
उड़ाने लगे[8] और हमें नीचा दिखाने लगे।
वे कहने लगे, "यह क्या हो रहा है? क्या
तुम लोग राजा से बगावत कर रहे हो?"[9]
20 लेकिन मैंने कहा, "स्वर्ग का परमेश्‍वर
हमारे साथ है और वही हमें कामयाबी
देगा।[10] हम उसके सेवक हैं और हम यह
शहरपनाह बनाएँगे। लेकिन यरूशलेम में
तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं, कोई हक नहीं!
न ही तुमने यरूशलेम के लिए कुछ किया है
कि तुम्हें याद किया जाए।"[11]

2:10, 19 *शा., "कर्मचारी।" **2:13** *मुमकिन है कि यह एन-रोगेल का कुआँ था।

2:16 *या "मातहत अधिकारी।" #या "मातहत अधिकारियों।"

अध्य. 2
1 नहे 7:2
2 नहे 1:3
3 एज 7:6; एज 7:21
4 नहे 4:1; नहे 6:2
5 नहे 13:1
6 नहे 2:19; नहे 4:3; नहे 6:14; नहे 13:7
7 2इत 26:9
8 नहे 3:13
9 नहे 1:3; विल 1:4; विल 2:9
10 नहे 3:15; नहे 12:37
11 2शम 15:23; यूह 18:1

दूसरा कॉल.
1 नहे 4:14
2 एज 7:6, 28; नहे 2:7, 8
3 दान 9:25
4 हाग 1:14
5 नहे 13:1, 2
6 नहे 6:14
7 नहे 4:7; नहे 6:1, 2
8 भज 79:4
9 नहे 6:6
10 भज 127:1
11 एज 4:1-3

3 महायाजक एल्याशीब[1] और उसके
भाइयों ने, जो याजक थे, भेड़
फाटक[2] बनाने का काम शुरू किया।
उन्होंने उसे पवित्र ठहराया*[3] और उसके
दरवाज़े लगाए। उन्होंने हम्मेआ मीनार
और हननेल मीनार तक शहरपनाह
की मरम्मत की और उसे पवित्र
ठहराया।[4] 2 यरीहो के आदमियों[5] ने
शहरपनाह का अगला हिस्सा बनाया और
इमरी के बेटे जक्कूर ने उसके बाद का
हिस्सा।

3 हस्सनाह के बेटों ने मछली
फाटक[6] बनाया। उन्होंने लकड़ियों से
उसकी चौखट तैयार की[7] और उसमें
पल्ले, कुंडे और बेड़े लगाए। 4 आगे
की दीवार मरेमोत[8] ने बनायी जो उरी-
याह का बेटा था और उरीयाह हक्कोस
का बेटा था। उसके साथवाला हिस्सा
मशुल्लाम[9] ने बनाया जो बेरेक्याह
का बेटा था और बेरेक्याह मशेजबेल का
बेटा था। उसके बाद के हिस्से की मरम्मत
बाना के बेटे सादोक ने की। 5 वहाँ से
आगे की शहरपनाह तकोआ के रहने-
वालों[10] ने बनायी। लेकिन तकोआ के
बड़े-बड़े आदमियों को यह मंज़ूर नहीं था
कि वे अपने अधिकारियों के अधीन रह-
कर काम करें।*

6 पासेह के बेटे योयादा और बसोद-
याह के बेटे मशुल्लाम ने 'पुराने शहर के
फाटक'[11] की मरम्मत की। उन्होंने लक-
ड़ियों से उसकी चौखट तैयार की और
उसमें पल्ले, कुंडे और बेड़े लगाए।
7 उससे आगे के हिस्से की मरम्मत
गिबोनी[12] मलत्याह और मेरोनोत के
रहनेवाले यादोन ने की। गिबोन और
मिसपा[1] के ये आदमी महानदी*[2] के
इस पार के राज्यपाल के अधीन थे।
8 शहरपनाह के अगले हिस्से की मरम्मत
उज्जीएल नाम के एक सुनार ने की जो
हरहयाह का बेटा था। अगला हिस्सा
हनन्याह ने खड़ा किया जो खुशबूदार
तेल* बनानेवालों में से था। उन्होंने 'चौड़ी
शहरपनाह'[3] तक यरूशलेम में पक्की
सड़क बनायी।# 9 इससे आगे की
शहरपनाह पर रपायाह ने मरम्मत का
काम किया। वह हूर का बेटा और यरू-
शलेम के आधे ज़िले का हाकिम था।
10 हरुमप के बेटे यदायाह ने दीवार के
अगले हिस्से की मरम्मत की, जो उसके
घर के सामने पड़ता था। वहाँ से आगे
के हिस्से को हशबन्याह के बेटे हत्तूश ने
ठीक किया।

11 हारीम के बेटे[4] मल्कियाह और
पहत-मोआब के बेटे[5] हश्शूब ने शहर-
पनाह का एक दूसरा हिस्सा और
'तंदूरों की मीनार'[6] दोबारा खड़ी की।
12 इसके बाद का हिस्सा शल्लूम और
उसकी बेटियों ने बनाया। शल्लूम हल्लो-
हेश का बेटा और यरूशलेम के आधे
ज़िले का हाकिम था।

13 हानून ने जानोह के निवासियों[7]
के साथ मिलकर 'घाटी के फाटक'[8] की
मरम्मत की। उन्होंने इसमें पल्ले, कुंडे
और बेड़े लगाए। उन्होंने 1,000 हाथ*
की दूरी तक शहरपनाह भी बनायी,
जो 'राख के ढेर के फाटक' पर पहुँच-
ती थी।[9] 14 'राख के ढेर के फाटक'
की मरम्मत मल्कियाह ने की, जो रेकाब
का बेटा और बेत-हक्केरेम[10] ज़िले का

अध्य. 3
1 नहे 12:10; नहे 13:4, 28
2 यूह 5:2
3 नहे 12:30
4 नहे 12:38, 39; यिर्म 31:38; जक 14:10
5 एज 2:1, 34
6 2इत 33:1, 14; सप 1:10
7 नहे 2:7, 8
8 एज 8:33; नहे 3:21
9 नहे 3:30; नहे 6:17, 18
10 नहे 3:27; आम 1:1
11 नहे 12:38, 39
12 2शम 21:2

दूसरा कॉल.
1 यह 18:21, 26; 2इत 16:6; यिर्म 40:6
2 उत 15:18
3 नहे 12:38
4 एज 2:1, 32
5 एज 2:1, 6
6 नहे 12:38
7 यह 15:20, 34; नहे 11:25, 30
8 2इत 26:9
9 नहे 2:13
10 यिर्म 6:1

3:1 *या "परमेश्वर की सेवा के लिए अलग ठहराया।" **3:5** *या "मालिकों की सेवा का जुआ अपनी गरदन पर लें।"

3:7 *या "फरात नदी।" **3:8** *या "इत्र।" #या "में सिल बिछायी।" **3:13** *करीब 445 मी. (1,460 फुट)। अति. ख14 देखें।

हाकिम था। उसने उसके दरवाज़े खड़े किए और उसमें कुंडे और बेड़े लगाए।

15 मिसपा[1] ज़िले के हाकिम और कोलहोजे के बेटे शल्लून ने सोता फाटक[2] की मरम्मत की। उसने फाटक की छत बनायी, उसके दरवाज़े खड़े किए और उसमें कुंडे और बेड़े लगाए। उसने 'राजा के बाग'[3] के पास 'नहर के तालाब'[4] से लगी शहरपनाह भी खड़ी की और फिर दाविदपुर[5] से नीचे उतरनेवाली सीढ़ियों[6] तक इसे बनाया।

16 अगले हिस्से की मरम्मत नहेमायाह ने की, जो अजबूक का बेटा और बेत-सूर[7] के आधे ज़िले का हाकिम था। उसने उस शहरपनाह की मरम्मत की जो 'दाविद के कब्रिस्तान'*[8] के सामने से होकर खोदे गए तालाब[9] तक जाती थी और वहाँ से 'वीर योद्धाओं के भवन' पर पहुँचती थी।

17 शहरपनाह के आगे के हिस्सों की मरम्मत लेवियों ने की। इसका एक हिस्सा बानी के बेटे रहूम की निगरानी में बनाया गया। दूसरा हिस्सा, कीला[10] के आधे ज़िले के हाकिम हशब्याह ने अपने ज़िले की ओर से बनाया। **18** उसके बादवाला हिस्सा उनके भाइयों ने बव्वै की निगरानी में तैयार किया, जो हेनादाद का बेटा और कीला के आधे ज़िले का हाकिम था।

19 उसके बाद का हिस्सा येशू के बेटे[11] एजेर ने ठीक किया, जो मिसपा का हाकिम था। शहरपनाह का यह हिस्सा पुश्ते[12] के पास हथियार-घर तक जानेवाली चढ़ाई के सामने था।

20 पुश्ते से लेकर महायाजक एल्याशीब[1] के घर के द्वार के सामने तक का हिस्सा जब्बै[2] के बेटे बारूक ने पूरे ज़ोर-शोर से बनाया।

21 इसके बाद मरेमोत[3] ने एक और हिस्सा बनाया। वह उरीयाह का बेटा था और उरीयाह हक्कोस का बेटा था। उसने एल्याशीब के घर के द्वार से लेकर उसका घर जहाँ खत्म होता था, वहाँ तक की शहरपनाह बनायी।

22 अगले हिस्से पर यरदन ज़िले*[4] के याजकों ने काम किया। **23** बिन्यामीन और हश्शूब ने उसके आगे के हिस्से की मरम्मत की, जो उनके घर के सामने पड़ता था। उसके बाद के हिस्से पर अजरयाह ने काम किया, जो मासेयाह का बेटा था और मासेयाह अनन्याह का बेटा था। उसने अपने घर के पासवाली शहरपनाह की मरम्मत की। **24** वहाँ से आगे हेनादाद के बेटे बिन्नूई ने काम किया और पुश्ते[5] और शहरपनाह के मोड़ तक का हिस्सा बनाया।

25 इसके बाद ऊजै के बेटे पालाल ने शहरपनाह के आगे का हिस्सा बनाया। यह हिस्सा पुश्ते के सामने और राजभवन[6] में खड़ी मीनार के सामने था। यह ऊपरी मीनार 'पहरेदारों के आँगन'[7] में थी। शहरपनाह के आगे का हिस्सा परोश के बेटे[8] पदायाह ने खड़ा किया।

26 ओपेल में रहनेवाले मंदिर के सेवकों*[9] ने पूरब में पानी फाटक[10] के सामने तक और उभरी हुई मीनार तक शहरपनाह बनायी।

27 तकोआ के लोगों[11] ने शहरपनाह का एक और हिस्सा बनाया। उन्होंने

3:16 *ज़ाहिर है कि यह दाविद का और उसके बाद यहूदा के दूसरे राजाओं का कब्रिस्तान था।

3:22 *या शायद, "पासवाले ज़िले।"
3:26 *या "नतीन लोगों।" शा., "दिए गए लोगों।"

अध्य. 3
1 यह 18:21, 26
2 नहे 2:14; नहे 12:37
3 यिर्म 39:4
4 यश 22:9
5 2शम 5:7
6 नहे 12:37
7 यह 15:20, 58; 2इत 11:5-7
8 1रा 2:10; 2इत 16:13, 14
9 नहे 2:14
10 यह 15:20, 44
11 एज 2:1, 40
12 2इत 26:9; नहे 3:24

दूसरा कॉल.
1 नहे 3:1; नहे 13:4
2 एज 10:28, 44
3 एज 8:33
4 उत 13:10
5 नहे 3:19
6 2शम 5:11; नहे 12:37
7 यिर्म 37:21
8 एज 2:1, 3
9 यह 9:3, 27; 1इत 9:2; 2इत 27:1, 3; 2इत 33:1, 14; एज 2:43-54; एज 8:17, 20; नहे 11:21
10 नहे 8:1; नहे 12:37
11 नहे 3:5

उभरी हुई मीनार के सामने से लेकर
ओपेल की दीवार तक मरम्मत की।

28 घोड़ा फाटक[1] से ऊपर की शहर-
पनाह याजकों ने बनायी। हर याजक ने
शहरपनाह के उस हिस्से की मरम्मत की
जो उसके घर के सामने पड़ता था।

29 आगे का हिस्सा इम्मेर के बेटे
सादोक[2] ने बनाया। यह हिस्सा उसके घर
के सामने था।

उसके बाद का हिस्सा शकन्याह के बेटे
शमायाह ने बनाया, जो पूरब फाटक[3] का
रखवाला था।

30 शेलेम्याह के बेटे हनन्याह और
सालाप के छठे बेटे हानून ने शहरपनाह
के अगले हिस्से की मरम्मत की।

वहाँ से आगे का हिस्सा बेरेक्याह के
बेटे मशुल्लाम[4] ने बनाया, जो उसके बड़े
कमरे के सामने पड़ता था।

31 आगे की शहरपनाह सुनारों के
संघ के सदस्य मल्कियाह ने बनायी।
उसने निरीक्षण फाटक के पास मंदिर
के सेवकों*[5] और लेन-देन करनेवालों
के घर तक शहरपनाह खड़ी की। उसने
शहरपनाह के मोड़ पर बने ऊपरी कमरे
तक भी मरम्मत का काम किया।

32 फिर मोड़ पर बने ऊपरी कमरे से
लेकर भेड़ फाटक[6] तक का हिस्सा सुनारों
और लेन-देन करनेवालों ने बनाया।

4 जब सनबल्लत[7] ने सुना कि हम लोग
शहरपनाह की मरम्मत कर रहे हैं,
तो यह बात उसे रास नहीं आयी और
वह बहुत गुस्सा हुआ। वह हम यहू-
दियों का मज़ाक भी उड़ाने लगा। 2 वह
अपने भाइयों और सामरिया की सेना के
सामने कहने लगा, "ये कमज़ोर यहूदी
क्या कर रहे हैं? क्या वे अपने दम पर
शहरपनाह खड़ी कर लेंगे? और बलिदान
चढ़ाएँगे? क्या उनका काम एक ही दिन
में पूरा हो जाएगा? कहाँ से लाएँगे
पत्थर, क्या मलबे में पड़े जले पत्थर
लगाएँगे दीवारों में?"[1]

3 उसके पास खड़े अम्मोनी[2] तोब्याह[3]
ने कहा, "ये जो दीवार बना रहे हैं, उस
पर अगर एक लोमड़ी भी चढ़ जाए तो
यह आसानी से गिर जाएगी।"

4 तब मैंने प्रार्थना की, "हे हमारे पर-
मेश्वर, देख! ये लोग कैसे हमें नीचा दिखा
रहे हैं।[4] ऐसा हो कि जिस तरह ये हमारा
अपमान कर रहे हैं, उसी तरह इनका
भी अपमान हो।[5] और इन्हें बंदी बना-
कर पराए देश में ले जाया जाए, जैसे लूट
का माल ले जाया जाता है। 5 तू
इनके दोष को अनदेखा मत करना और
इनके पापों को मत मिटाना।[6] क्योंकि
इन्होंने शहरपनाह बनानेवालों का अप-
मान किया है।"

6 हम शहरपनाह की मरम्मत करते
रहे। वह जहाँ-जहाँ से टूटी थी, उसे हमने
फिर से बनाया। और बनाते-बनाते हमने
उसे आधी ऊँचाई तक खड़ा कर दिया।
लोग दिल लगाकर काम करते रहे।

7 जब सनबल्लत, तोब्याह,[7] अरबी
लोगों,[8] अम्मोनियों और अशदोदियों[9] ने
सुना कि यरूशलेम की शहरपनाह का
काम ज़ोर-शोर से चल रहा है और उसके
टूटे हुए हिस्से दोबारा बनाए जा रहे
हैं, तो वे बौखला उठे। 8 उन्होंने मिल-
कर साज़िश की कि वे यरूशलेम पर
हमला बोलेंगे और चारों तरफ खल-
बली मचा देंगे। 9 तब हमने अपने पर-
मेश्वर से प्रार्थना की और दुश्मनों से
बचने के लिए दिन-रात पहरा बिठा
दिया।

3:31 *या "नतीन लोगों।" शा., "दिए गए लोगों।"

अध्य. 3
1 यिर्म 31:40
2 नहे 13:13
3 1इत 9:17, 18
4 नहे 6:17, 18
5 नहे 3:26
6 नहे 3:1; यूह 5:2

अध्य. 4
7 नहे 2:10; नहे 6:1, 2; नहे 13:28

दूसरा कॉल.
1 नहे 4:10
2 नहे 13:1, 2
3 नहे 2:19
4 भज 123:3
5 भज 79:12
6 यिर्म 18:23
7 नहे 4:3
8 नहे 2:19
9 यह 13:2, 3; नहे 13:23

10 अब यहूदा के लोग कहने लगे, “शहरपनाह का काम करनेवाले* पस्त हो चुके हैं और अभी-भी बहुत सारा मलबा हटाना बाकी है। इन लोगों के बिना हम शहरपनाह का काम कभी पूरा नहीं कर पाएँगे।”

11 हमारे दुश्मन आपस में कह रहे थे, “इससे पहले कि वे हमें आते देख लें या समझ जाएँ कि हम क्या करनेवाले हैं, आओ हम उनके बीच घुसकर उन्हें मार डालें और उनका काम रोक दें।”

12 उनके आस-पास रहनेवाले यहूदी जब भी मरम्मत करने यरूशलेम आते, तो हमसे बार-बार* कहते, “दुश्मन चारों तरफ से हम पर हमला कर देंगे।”

13 इसलिए मैंने खुली जगहों पर और जहाँ शहरपनाह की दीवारें नीची थीं, वहाँ आदमी तैनात कर दिए। मैंने उनके परिवार के हिसाब से उन्हें खड़ा किया और उनके हाथ में तलवारें, बरछियाँ और तीर-कमान दिए। **14** जब मैंने देखा कि लोग डर रहे हैं, तो मैंने फौरन वहाँ के बड़े-बड़े लोगों, अधिकारियों* और बाकी लोगों से कहा,[1] “दुश्मनों से मत डरो।[2] अपने महान और विस्मयकारी परमेश्वर यहोवा[3] को याद रखो और अपने भाइयों, बेटे-बेटियों, पत्नियों और अपने घरों के लिए लड़ो।”

15 उधर दुश्मनों ने सुना कि हमें उनकी साज़िश का पता चल गया है और उन्होंने जान लिया कि सच्चे परमेश्वर ने उनकी चाल नाकाम कर दी है। इधर हम फिर से शहरपनाह बनाने में लग गए। **16** मगर उस दिन से मेरे आधे आदमी मरम्मत का काम करने लगे[4] और आधे आदमी बख्तर पहने और बरछी, ढाल और तीर-कमान लिए पहरा देने लगे। और हाकिम[1] मदद करने के लिए यहूदा के उन लोगों के पीछे खड़े रहे **17** जो शहरपनाह की मरम्मत कर रहे थे। बोझ ढोनेवाले एक हाथ से काम कर रहे थे और दूसरे हाथ में हथियार* पकड़े हुए थे। **18** शहरपनाह बनानेवाला हर आदमी कमर में तलवार बाँधे काम कर रहा था। और नरसिंगा फूँकनेवाला[2] आदमी मेरे साथ खड़ा था।

19 तब मैंने बड़े-बड़े लोगों, अधिकारियों* और बाकी लोगों से कहा, “अब भी बहुत काम बाकी है। हम शहरपनाह के अलग-अलग हिस्सों पर काम कर रहे हैं और इस वजह से एक-दूसरे से काफी दूर हैं। **20** इसलिए जब तुम नरसिंगे की आवाज़ सुनो, तो हमारे पास आकर इकट्ठा हो जाना। हमारी तरफ से हमारा परमेश्वर लड़ेगा।”[3]

21 हम हर दिन पौ फटने से लेकर रात को तारे निकलने तक काम करते रहे। हममें से आधे लोग शहरपनाह बना रहे थे और आधे लोग बरछी पकड़े पहरा दे रहे थे। **22** तब मैंने लोगों से कहा, “हर आदमी अपने सेवक के साथ यरूशलेम में ही रात गुज़ारे। वे रात-भर पहरा देंगे और दिन में काम करेंगे।” **23** इसलिए मैं, मेरे भाई, मेरे सेवक[4] और मेरे साथ रहनेवाले पहरेदार दिन-रात अपने कपड़े पहने रहे। हममें से हरेक अपने दाएँ हाथ में हथियार लिए तैयार रहता था।

5 फिर कुछ आदमी और उनकी पत्नियाँ अपने यहूदी भाइयों के खिलाफ बड़ी-बड़ी शिकायतें लेकर आए।[5] **2** उनमें से कुछ कहने लगे,

---

4:10 *या “बोझ ढोनेवाले।” 4:12 *शा., “दस बार।” 4:14, 19 *या “मातहत अधिकारियों।”

4:17 *या “भाला।”

अध्य. 4
1 नहे 13:17
2 गि 14:9; व्य 20:3; यह 1:9
3 व्य 7:21; व्य 10:17
4 नहे 5:16

दूसरा कॉल.
1 नहे 11:1
2 गि 10:9; 2इत 13:12
3 व्य 1:30; यह 23:10
4 नहे 13:19

अध्य. 5
5 व्य 15:9

“हमारा परिवार बड़ा है, हमारे कई बेटे-बेटियाँ हैं। ज़िंदा रहने के लिए हमें कम-से-कम अनाज तो चाहिए।” **3** कुछ और लोगों ने कहा, “हमें अपने खेत, अंगूरों के बाग और घर गिरवी रखने पड़ रहे हैं ताकि इस अकाल में हमें खाने को मिल सके।” **4** दूसरे यह शिकायत करने लगे, “हमें राजा को कर चुकाने के लिए अपने खेत और अंगूरों के बाग गिरवी रखकर उधार लेना पड़ रहा है।[1] **5** हम कोई पराए नहीं, उनके अपने भाई हैं। हमारे बच्चे उनके बच्चों की तरह हैं। फिर भी हमें अपने बेटे-बेटियों को उनकी गुलामी में देना पड़ रहा है। हमारी कुछ बेटियाँ तो पहले से उनकी गुलामी में हैं।[2] हम चाहकर भी कुछ नहीं कर सकते क्योंकि हमारे खेत और अंगूरों के बाग अब हमारे नहीं रहे।”

6 उनकी बातें और रोना-बिलखना सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया। **7** मैंने इन बातों पर बहुत सोचा और फिर यहूदियों के बड़े-बड़े लोगों और अधिकारियों* को फटकार लगायी। मैंने कहा, “यह मैं क्या सुन रहा हूँ, तुम अपने ही भाइयों से ब्याज खा रहे हो?”[3]

उनकी वजह से मैंने एक बड़ी सभा बुलायी। **8** मैंने उनसे कहा, “हमारे यहूदी भाई दूसरे राष्ट्रों के हाथ बिक चुके थे और हमसे जो कुछ बन पड़ा वह हमने किया और उन्हें छुड़ाया। लेकिन अब तुम अपने ही भाइयों को गुलामी में बेच रहे हो?[4] क्या उन्हें छुड़ाने के लिए हमें तुम्हें भी पैसे देने पड़ेंगे?” यह सुनकर वे बगलें झाँकने लगे और वहाँ चुप्पी छा गयी। **9** मैंने कहा, “यह तुम अच्छा नहीं कर रहे। तुम्हें परमेश्वर का डर मानना चाहिए[1] और ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे दुश्मन राष्ट्र हमारी खिल्ली उड़ाएँ। **10** इसलिए मेहरबानी करके ब्याज लेना बंद करो। मैं, मेरे भाई और मेरे सेवक भी अपने यहूदी भाइयों को बगैर ब्याज के पैसा और अनाज उधार दे रहे हैं।[2] **11** तुमसे बिनती है कि आज ही अपने भाइयों के खेत, अंगूर और जैतून के बाग और उनके घर उन्हें लौटा दो।[3] और ब्याज के तौर पर तुमने उनसे जो पैसा,* अनाज, नयी दाख-मदिरा और तेल लिया है, उसे भी वापस कर दो।”

12 उन आदमियों ने कहा, “हम उनका सबकुछ लौटा देंगे और उनसे कुछ नहीं माँगेंगे। जैसा तूने कहा है हम वैसा ही करेंगे।” तब मैंने याजकों को बुलाया और उन आदमियों से इसकी शपथ खिलवायी। **13** मैंने अपने बागे की ऊपरी तह झाड़कर कहा, “जो आदमी अपनी बात से मुकर जाएगा, सच्चा परमेश्वर उसे उसके घर और उसकी जायदाद से अलग कर देगा। इस तरह उसे झाड़ दिया जाएगा और वह कंगाल हो जाएगा।” यह सुनकर पूरी मंडली ने कहा “आमीन!”* फिर सबने यहोवा की बड़ाई की और लोगों ने जो-जो कहा था उसे पूरा किया।

14 राजा अर्तक्षत्र[4] ने अपने राज के 20वें साल में[5] मुझे यहूदा के इलाके का राज्यपाल बनाया था[6] और उसके राज के 32वें साल तक[7] मैं यहूदा का राज्यपाल रहा। मगर इन 12 सालों में मैंने और मेरे भाइयों ने कभी-भी यहूदियों से खाने का भत्ता नहीं माँगा, जो कि एक राज्यपाल

5:7 * या “मातहत अधिकारियों।”

5:11 * शा., “सौंवा भाग।” यानी हर महीने एक प्रतिशत ब्याज। **5:13** * या “ऐसा ही हो!”

अध्य. 5
1 व्य 28:15, 33; नहे 9:36, 37
2 निर्ग 21:7; व्य 15:12
3 निर्ग 22:25; व्य 23:19; भज 15:5; यहे 22:12
4 लैव 25:35; व्य 15:7, 8; यिर्म 34:8, 9

दूसरा कॉल.
1 लैव 25:36; नहे 5:15
2 यहे 18:5, 8
3 नहे 5:3
4 एज 8:1
5 नहे 2:1
6 नहे 10:1
7 नहे 13:6

का हक था।[1] **15** लेकिन मुझसे पहले जितने भी राज्यपाल रहे, उन सबने लोगों का जीना दूभर कर दिया था। वे अपने खाने और दाख-मदिरा के लिए उनसे हर दिन 40 शेकेल* चाँदी लेते थे। उनके सेवकों ने भी लोगों के साथ बहुत ज़्यादती की। जबकि मैंने ऐसा कुछ नहीं किया[2] क्योंकि मैं परमेश्वर का डर मानता था।[3]

16 यही नहीं, मैंने शहरपनाह बनाने में भी हाथ बँटाया और मेरे सेवकों ने भी इसे बनाने में मदद दी। लेकिन हमने किसी की ज़मीन नहीं ली।[4] **17** इसके बजाय, मेरे यहाँ 150 यहूदी और अधिकारी* और दूसरे राष्ट्रों से आए लोग खाना खाते थे। **18** हर दिन मेरे हुक्म पर* एक बैल, छः मोटी-ताज़ी भेड़ें और चिड़ियाँ पकायी जाती थीं। हर दसवें दिन तरह-तरह की दाख-मदिरा बहुतायत में पेश की जाती थी। मगर मैंने कभी-भी राज्यपाल को मिलनेवाला भत्ता नहीं माँगा क्योंकि लोग पहले से राजा की सेवा में पिसे जा रहे थे। **19** हे मेरे परमेश्वर, मैंने इन लोगों की खातिर जो काम किए हैं, उन्हें तू याद रखना और मुझ पर कृपा करना।*[5]

6 अब सनबल्लत, तोब्याह,[6] अरब के रहनेवाले गेशेम[7] और हमारे बाकी दुश्मनों को यह पता चला कि मैंने पूरी शहरपनाह बना ली है[8] और सारे टूटे हुए हिस्सों की मरम्मत कर दी है (हालाँकि उस समय तक मैंने फाटकों के पल्ले नहीं लगाए थे)।[9] **2** तब सनबल्लत और गेशेम ने तुरंत मुझे यह संदेश भेजा, "हम तुझसे मिलना चाहते हैं। क्यों न हम एक समय तय करें और ओनो[1] के मैदान में बसे एक गाँव में मिलें?" मगर उनका इरादा मुझे नुकसान पहुँचाने का था। **3** इसलिए मैंने अपने आदमी भेजकर उनसे कहा, "मैं बहुत ज़रूरी काम में लगा हूँ, मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकता। अगर मैं आया, तो यह काम रुक जाएगा।" **4** उन्होंने चार बार मुझे यही संदेश भिजवाया और हर बार मेरा वही जवाब था।

5 तब सनबल्लत ने पाँचवीं बार उसी संदेश के साथ अपना सेवक भेजा। उसके हाथ में एक खुली चिट्ठी थी। **6** उसमें लिखा था, "लोगों में यह चर्चा हो रही है और गेशेम[2] का भी कहना है कि तू और तेरे यहूदी लोग राजा से बगावत करने की सोच रहे हैं,[3] इसीलिए तू यह शहरपनाह बना रहा है। यह भी सुनने में आया है कि तू यहूदियों का राजा बनना चाहता है। **7** तूने अपने लिए भविष्यवक्ता भी ठहराए हैं, जो पूरे यरूशलेम में तेरे बारे में यह ऐलान कर रहे हैं, 'यहूदा में एक नया राजा आया है।' ये बातें राजा तक पहुँच ही जाएँगी। इसलिए आ, हम इस मामले पर बात करें और इसे सुलझाएँ।"

8 लेकिन मैंने उसे यह जवाब दिया, "जो कुछ तूने कहा वह सरासर झूठ है। ये सब तेरे मन की गढ़ी हुई बातें हैं।" **9** दरअसल यह हमें डराने के लिए किया गया था। उन्हें लगा कि अगर हमारे हाथ ढीले पड़ जाएँ, तो हमारा काम धरा-का-धरा रह जाएगा।[4] इसलिए हे परमेश्वर, मेरे हाथों को मज़बूत कर।[5]

10 फिर मैं शमायाह के घर गया जो दलायाह का बेटा और महेतबेल का पोता था। शमायाह अपने घर में छिपकर बैठा था। उसने मुझसे कहा, "दुश्मन तुझे

5:15 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। **5:17** *या "मातहत अधिकारी।" **5:18** *या "मेरे पैसों से।" **5:19** *या "और मेरा भला करना।"

अध्य. 5
1 1कुर 9:14, 15; 2थि 3:8
2 2कुर 11:9; 2कुर 12:14
3 नहे 5:9
4 प्रेष 20:33; 2कुर 12:17
5 नहे 13:14; भज 18:24; यश 38:3; मला 3:16

अध्य. 6
6 नहे 2:10; नहे 4:3
7 नहे 2:19; नहे 4:7
8 दान 9:25
9 नहे 3:1, 3

दूसरा कॉल.
1 1इत 8:12; नहे 11:31, 35
2 नहे 2:19
3 एज 4:14, 15
4 एज 4:4
5 भज 68:35; भज 138:3; यश 41:10

मारने आ रहे हैं। आ, हम तय करें कि
हम किस वक्त सच्चे परमेश्‍वर के भवन
में, मंदिर के अंदर मिलेंगे। हम मंदिर के
दरवाज़े बंद कर लेंगे और छिप जाएँगे।
देख! आज रात ही वे तुझे मारने आ
रहे हैं।” **11** लेकिन मैंने कहा, “क्या
मैं कोई डरपोक हूँ जो भागकर छिप
जाऊँ? और अगर मुझ जैसा आम आदमी
मंदिर के अंदर गया, तो क्या मारा नहीं
जाएगा?[1] नहीं! मैं मंदिर के अंदर नहीं
जाऊँगा।” **12** मैं समझ गया कि शमा-
याह परमेश्‍वर की तरफ से नहीं बोल
रहा है, वह तोब्याह और सनबल्लत[2] के
हाथ बिक चुका है। **13** उनके कहने पर
उसने मुझे डराने की कोशिश की और
मुझसे पाप करवाना चाहा ताकि दुश्‍मनों
को मेरे नाम पर कीचड़ उछालने और मुझ
पर दोष लगाने का मौका मिल जाए।

14 हे मेरे परमेश्‍वर, तुझसे बिनती है
कि तू तोब्याह[3] और सनबल्लत के
बुरे कामों को मत भूलना। और
भविष्यवक्‍तिन नोअद्याह और बाकी
भविष्यवक्‍ताओं ने बार-बार मुझे डराने
की जो कोशिश की, उसे भी मत भूलना।

15 एलूल* महीने के 25वें दिन
शहरपनाह बनकर तैयार हो गयी। उसे
बनाने में कुल 52 दिन लगे।

16 जब हमारे दुश्‍मनों और आस-पास
के देशों के लोगों को यह खबर मिली,
तो वे बहुत शर्मिंदा हुए।*[4] और वे जान
गए कि हमारे परमेश्‍वर की मदद से ही
हम यह काम पूरा कर पाए हैं। **17** उन
दिनों यहूदा के बड़े-बड़े लोग[5] तोब्याह
को बहुत-से खत लिखते थे और तोब्याह
भी उनकी चिट्ठियों का जवाब दिया करता
था। **18** कई यहूदियों ने तोब्याह का
साथ देने की कसम खायी हुई थी क्योंकि
वह आरह के बेटे[1] शकन्याह का दामाद
था। और तोब्याह के बेटे यहोहानान ने
भी बेरेक्याह के बेटे मशुल्लाम[2] की बेटी
से शादी की थी। **19** ये यहूदी हमेशा
मुझसे तोब्याह के बारे में अच्छी-अच्छी
बातें करते थे और मैं उनसे जो भी कहता
था उसकी खबर वे तुरंत तोब्याह को दे
देते थे। और फिर तोब्याह मुझे डराने के
लिए खत भेजता था।[3]

7 जैसे ही शहरपनाह बनकर तैयार
हुई,[4] मैंने उसके फाटकों में पल्ले
लगवाए।[5] इसके बाद मैंने पहरेदारों,[6]
गायकों[7] और लेवियों[8] को ठहराया कि
वे अपना-अपना काम करें। **2** फिर मैंने
अपने भाई हनानी[9] और किले[10] के
प्रधान हनन्याह को यरूशलेम की देखरेख
का ज़िम्मा सौंपा। मैंने हनन्याह को इस-
लिए चुना क्योंकि वह दूसरों से ज़्यादा
सच्चे परमेश्‍वर का डर मानता था[11] और
बहुत भरोसेमंद था। **3** मैंने उन्हें हुक्म
दिया, “दिन चढ़ने के बाद ही पहरेदार
फाटक खोलें और पहरेदारी खत्म करने
से पहले वे फाटक बंद करके उसके बेड़े
लगा दें। पहरा देने के लिए यरूशलेम के
निवासियों को ठहराओ। कुछ लोगों को
पहरे की चौकियों पर तैनात करो और
कुछ को उनके घरों के सामने।” **4** यरू-
शलेम एक बड़ा शहर था और दूर-दूर
तक फैला हुआ था। मगर उसमें सिर्फ
मुट्ठी-भर लोग रहते थे[12] और गिने-चुने
घर थे।

5 तब मेरे परमेश्‍वर ने मेरे मन
में यह बात डाली कि मैं बड़े-बड़े लोगों,
अधिकारियों* और बाकी लोगों को
इकट्ठा करूँ और उनकी वंशावलियों के
हिसाब से उनके नाम लिखूँ।[13] उस वक्‍त

अध्य. 6
1 गि 1:51
गि 18:7
2इत 26:18, 19
2 नहे 2:10
3 नहे 4:3, 4
4 नहे 4:7
भज 129:5
5 नहे 5:7

दूसरा कॉल.
1 एज 2:1, 5
2 नहे 3:4
3 नहे 6:9
नहे 6:10, 13

अध्य. 7
4 नहे 2:17
नहे 6:15
दान 9:25
5 नहे 3:1, 6, 13
6 1इत 26:1
एज 2:1, 42
7 1इत 9:33
एज 2:1, 41
8 एज 3:8
9 नहे 1:2
10 नहे 2:8
11 नहे 5:15
12 नहे 11:1
13 1इत 9:1
एज 2:59, 62

6:15 *अति. ख15 देखें। **6:16** *शा., “वे अपनी ही नज़रों में गिर गए।”

7:5 *या “मातहत अधिकारियों।”

मुझे वंशावली की किताब मिली, जिसमें
उन लोगों के नाम लिखे थे जो सबसे
पहले यरूशलेम लौटे थे। उस किताब में
लिखा थाः

6 “ये लोग उनमें से हैं जिन्हें बैबिलोन
का राजा नबूकदनेस्सर[1] बंदी बनाकर ले
गया था[2] और जो छूटकर वापस यरू-
शलेम और यहूदा में अपने-अपने शहर
लौटे। पूरे प्रांत से ये लोग[3] 7 जरुबा-
बेल,[4] येशू,[5] नहेमायाह, अजरयाह,*
राम्याह,# नहमानी, मोर्दकै, बिलशान,
मिसपेरेत,△ बिगवै, नीहुम⊠ और बानाह
के साथ वापस आए।

लौटनेवाले इसराएलियों की गिनती
यह थीः[6] 8 परोश के बेटे* 2,172;
9 शपत्याह के बेटे 372; 10 आरह
के बेटे[7] 652; 11 पहत-मोआब के
घराने[8] से येशू और योआब के बेटे[9]
2,818; 12 एलाम के बेटे[10] 1,254;
13 जत्तू के बेटे 845; 14 जक्कै के
बेटे 760; 15 बिन्नूई के बेटे 648;
16 बेबई के बेटे 628; 17 अजगाद
के बेटे 2,322; 18 अदोनीकाम के
बेटे 667; 19 बिगवै के बेटे 2,067;
20 आदीन के बेटे 655; 21 हिज-
कियाह के घराने से आतेर के बेटे 98;
22 हाशूम के बेटे 328; 23 बेजै के
बेटे 324; 24 हारीप के बेटे 112;
25 गिबोन के बेटे[11] 95; 26 बेत-
लेहेम और नतोपा के आदमी 188;
27 अनातोत[1] के आदमी 128;
28 बेत-अज़मावेत के आदमी 42;
29 किरयत-यारीम,[2] कपीरा और बए-
रोत[3] के आदमी 743; 30 रामाह
और गेबा[4] के आदमी 621; 31 मिक-
मास[5] के आदमी 122; 32 बेतेल[6]
और ऐ[7] के आदमी 123; 33 दूसरे
नबो के आदमी 52; 34 एलाम नाम
के एक दूसरे आदमी के बेटे 1,254;
35 हारीम के बेटे 320; 36 यरीहो
के बेटे 345; 37 लोद, हादीद और
ओनो[8] के बेटे 721 38 और सना के
बेटे 3,930.

39 लौटनेवाले याजकों की गिनती
यह थीः[9] येशू के घराने से यदायाह के
बेटे 973; 40 इम्मेर के बेटे 1,052;
41 पशहूर के बेटे[10] 1,247 42 और
हारीम के बेटे[11] 1,017.

43 लौटनेवाले लेवियों की गिनती यह
थीः[12] होदवा के बेटों में से येशू या
कदमीएल के बेटे[13] 74. 44 गायकों[14]
में, आसाप[15] के बेटे 148. 45 पहरे-
दारों[16] में, शल्लूम के बेटे, आतेर के बेटे,
तल्मोन के बेटे, अक्कूब[17] के बेटे, हतीता
के बेटे और शोबै के बेटे 138.

46 मंदिर के सेवकों* में से
ये आदमी लौटेः[18] ज़ीहा के बेटे, हसूपा
के बेटे, तब्बाओत के बेटे, 47 केरोस
के बेटे, सीआ* के बेटे, पादोन के
बेटे, 48 लबाना के बेटे, हगाबा के
बेटे, शलमै के बेटे, 49 हानान के बेटे,
गिद्देल के बेटे, गहर के बेटे, 50 रायाह
के बेटे, रसीन के बेटे, नकोदा के बेटे,
51 गज्जाम के बेटे, उज्जा के बेटे, पासेह
के बेटे, 52 बेसै के बेटे, मऊनियों के

7:7 *एज 2:2 में इसे “सरायाह” कहा गया है। #एज 2:2 में इसे “रेलायाह” कहा गया है। △एज 2:2 में इसे “मिसपार” कहा गया है। ⊠एज 2:2 में इसे “रहूम” कहा गया है। **7:8** *इस अध्याय में “बेटे” का मतलब “वंशज” भी हो सकता है। और कुछ जगहों पर “बेटे” का मतलब “निवासी” भी हो सकता है।

7:46 *या “नतीन लोगों।” शा., “दिए गए लोगों।” **7:47** *एज 2:44 में इसे “सीहा” कहा गया है।

अध्य. 7
1 2रा 25:1; दान 3:1
2 2रा 24:12, 14; 2इत 36:17, 20; यिर्म 39:9; यिर्म 52:15, 28
3 एज 2:1
4 एज 1:8, 11; जक 4:9; मत 1:12
5 एज 3:8; एज 5:2; हाग 1:14; जक 3:1
6 एज 2:2-35
7 नहे 6:17, 18
8 एज 10:30, 44
9 एज 8:1, 9
10 एज 10:26, 44
11 यह 11:19; 2शम 21:2; नहे 3:7

दूसरा कॉल.
1 यह 21:8, 18; यिर्म 1:1
2 1शम 7:2
3 यह 18:25, 28
4 यह 18:21, 24
5 1शम 13:5
6 1रा 12:32
7 यह 7:2
8 नहे 6:2; नहे 11:31, 35
9 एज 2:36-39
10 एज 10:22, 44
11 1इत 24:3, 8
12 एज 2:40
13 एज 3:9
14 1इत 25:7; एज 2:41
15 1इत 6:31, 39
16 एज 2:42; नहे 7:1
17 1इत 9:2, 17; नहे 11:19; नहे 12:25
18 यह 9:3, 27; 1इत 9:2; एज 2:43-54; एज 2:58

बेटे, नपीशीसिम* के बेटे, **53** बकबूक के बेटे, हक़ूपा के बेटे, हरहूर के बेटे, **54** बसलीत* के बेटे, महीदा के बेटे, हरशा के बेटे, **55** बरकोस के बेटे, सीसरा के बेटे, तेमह के बेटे, **56** नसीह के बेटे और हतीपा के बेटे।

57 सुलैमान के सेवकों के ये बेटे लौटे:[1] सोतै के बेटे, सोपेरेत के बेटे, परीदा* के बेटे, **58** याला के बेटे, दरकोन के बेटे, गिद्देल के बेटे, **59** शपत्याह के बेटे, हत्तील के बेटे, पोकरेत-हसबायीम के बेटे और आमोन* के बेटे। **60** मंदिर के सेवकों*[2] की और सुलैमान के सेवकों के बेटों की कुल गिनती 392 थी।

61 कुछ आदमी जो तेल-मेलह, तेल-हरशा, करूब, अद्दोन और इम्मेर से लौटे थे, वे यह साबित नहीं कर पाए कि वे इसराएली हैं और उनके पिता का कुल इसराएल से निकला है। वे थे,[3] **62** दलायाह के बेटे, तोब्याह के बेटे और नकोदा के बेटे 642. **63** और याजकों में से हबायाह के बेटे, हक्कोस के बेटे[4] और बरजिल्लै के बेटे। यह वही बरजिल्लै है जिसने गिलादी बरजिल्लै[5] की एक बेटी से शादी की थी और उनका नाम अपना लिया था। **64** इन लोगों ने अपनी वंशावली साबित करने के लिए दस्तावेज़ों में अपने घराने का नाम ढूँढ़ा, मगर उन्हें नहीं मिला। इसलिए याजकपद के लिए वे अयोग्य ठहरे।*[1] **65** राज्यपाल*[2] ने उनसे कहा कि जब तक कोई याजक नहीं ठहराया जाता जो ऊरीम और तुम्मीम की मदद से इस मामले का पता लगा सके,[3] तब तक तुम सबसे पवित्र चीज़ों में से मत खाना।[4]

66 बँधुआई से लौटनेवाली पूरी मंडली की कुल गिनती 42,360 थी।[5] **67** इसके अलावा, उनके साथ लौटनेवाले दास-दासियों[6] की गिनती 7,337 थी। और 245 गायक-गायिकाएँ उनके साथ थे।[7] **68** यही नहीं, उनके पास 736 घोड़े, 245 खच्चर, **69** 435 ऊँट और 6,720 गधे थे।

70 कुछ लोगों ने, जो अपने पिता के कुल के मुखिया थे, काम के लिए दान दिया।[8] राज्यपाल* ने खज़ाने में 1,000 द्राख्मा# सोना, 50 कटोरे और याजकों के लिए 530 पोशाकें दीं।[9] **71** और इसराएल के कुल के कुछ मुखियाओं ने 20,000 द्राख्मा सोना और 2,200 मीना* चाँदी दी। **72** बाकी लोगों ने 20,000 द्राख्मा सोना, 2,000 मीना चाँदी और याजकों के लिए 67 पोशाकें दीं।

73 तब याजक, लेवी, पहरेदार, गायक,[10] मंदिर के सेवक* और बाकी

7:52 *एज 2:50 में इसे “नपीसीम” कहा गया है। **7:54** *एज 2:52 में इसे “बसलूत” कहा गया है। **7:57** *एज 2:55 में इसे “परूदा” कहा गया है। **7:59** *एज 2:57 में इसे “आमी” कहा गया है। **7:60** *या “नतीन लोगों।” शा., “दिए गए लोगों।”

7:64 *या “वे अशुद्ध ठहरे और उन्हें निकाल दिया।” **7:65, 70** *या “तिरशाता।” यह किसी प्रांत के राज्यपाल को दिया एक फारसी खिताब है। **7:70** #माना जाता है कि द्राख्मा, सोने के फारसी सिक्के दर्कनोन के बराबर था जिसका वज़न 8.4 ग्रा. था। मगर यह यूनानी शास्त्र में बताया द्राख्मा नहीं है। अति. ख14 देखें। **7:71** *इब्रानी शास्त्र में बताए एक मीना का वज़न 570 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। **7:73** *या “नतीन लोग।” शा., “दिए गए लोग।”

अध्य. 7

1 एज 2:55-58, नहे 11:3
2 यह 9:3, 27, नहे 3:26
3 एज 2:59-63
4 1इत 24:3, 10, नहे 3:21
5 2शम 17:27-29, 2शम 19:31, 1रा 2:7

दूसरा कॉल.

1 गि 18:7
2 नहे 8:9, नहे 10:1
3 निर्ग 28:30, 1शम 28:6
4 लैव 2:3, गि 18:8, 9
5 एज 2:64-67
6 लैव 25:44
7 निर्ग 15:21, 1शम 18:6
8 एज 2:68, 69
9 लैव 6:10
10 नहे 7:1

लोग अपने-अपने शहरों में बस गए।[1]
इस तरह सातवें महीने[2] तक सभी इस-
राएली अपने-अपने शहरों में रहने
लगे।”[3]

8 फिर सब लोग एक मन होकर
पानी फाटक[4] के सामनेवाले चौक में
इकट्ठा हुए। उन्होंने नकल-नवीस* एज्रा[5]
को मूसा के कानून की किताब[6] लाने
को कहा, जिसमें इसराएलियों के लिए
यहोवा की आज्ञाएँ लिखी थीं।[7] 2 तब
याजक एज्रा कानून की किताब लेकर
मंडली के सामने आया।[8] वहाँ आदमी-
औरतों के अलावा ऐसे बच्चे भी थे, जो
बतायी जानेवाली बातें समझ सकते थे।
यह सातवें महीने का पहला दिन था।[9]
3 एज्रा ने पानी फाटक के सामनेवाले
चौक में सुबह से लेकर दोपहर तक
कानून की किताब पढ़कर सुनायी।[10]
और वहाँ इकट्ठा आदमी-औरतों और
बच्चों ने ध्यान से सुना।[11] 4 नकल-
नवीस* एज्रा लकड़ी के मंच पर खड़ा
था, जो खास इसी मौके के लिए बनाया
गया था। एज्रा के साथ उसके दायीं
तरफ मतित्याह, शमा, अनायाह, उरि-
याह, हिलकियाह और मासेयाह खड़े थे।
और बायीं तरफ पदायाह, मीशाएल,
मल्कियाह,[12] हाशूम, हश-बद्दाना, जकर-
याह और मशुल्लाम खड़े थे।

5 एज्रा एक ऊँची जगह पर खड़ा था,
जहाँ लोग उसे देख सकते थे। जब उसने
कानून की किताब खोली, तो सब-के-सब
खड़े हो गए। 6 वह सच्चे और महान
परमेश्वर यहोवा की बड़ाई करने लगा।
और सब लोग अपने हाथ ऊपर उठाकर
कहने लगे, “आमीन!”* “आमीन!”[13]
इसके बाद उन्होंने मुँह के बल गिरकर
यहोवा को दंडवत किया। 7 फिर
लेवियों में से येशू, बानी, शेरेब्याह,[1]
यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदियाह, मासे-
याह, कलीता, अजरयाह, योजाबाद,[2]
हानान और पलायाह लोगों को कानून में
लिखीं बातें समझाने लगे।[3] लोग खड़े-
खड़े उनकी बातें सुनते रहे। 8 लेवी
सच्चे परमेश्वर के कानून की किताब पढ़-
कर सुनाते रहे। वे उसमें लिखी बातें खुल-
कर समझाने और उनका मतलब बताने
लगे। इस तरह, पढ़ी जानेवाली बातों को
समझने में उन्होंने लोगों की मदद की।*[4]

9 फिर उस वक्त के राज्यपाल#
नहेमायाह, याजक और नकल-नवीस*
एज्रा[5] और लोगों को सिखानेवाले लेवियों
ने वहाँ मौजूद भीड़ से कहा, “यह
दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए
पवित्र है।[6] इसलिए न तो रोओ, न
ही शोक मनाओ।” उन्होंने ऐसा इसलिए
कहा क्योंकि लोग कानून में लिखी बातें
सुनकर रो रहे थे। 10 नहेमायाह ने
उनसे कहा, “जाओ और जाकर चिकना-
चिकना खाना खाओ और कुछ मीठा
पीओ। और उन लोगों को खाने की
चीज़ें भेजो[7] जिनके पास खाने को कुछ
नहीं है। यह दिन हमारे प्रभु के लिए
पवित्र है। दुखी मत हो क्योंकि जो खुशी
यहोवा देता है वह तुम्हारे लिए एक मज़-
बूत गढ़ है।”* 11 लेवी सब लोगों को
यह कहकर शांत करने लगे, “रोओ मत,
दुखी मत हो! क्योंकि यह दिन एक पवित्र
दिन है।” 12 तब सब लोग खाने-
पीने गए और उन्होंने दूसरों को भी

8:1, 4, 9 *या “शास्त्री।” **8:6** *या “ऐसा ही हो!”

8:8 *या “उन्होंने इस तरह पढ़ा कि सुनने-वालों को समझ में आए।” **8:9** #या “तिर-शाता।” यह किसी प्रांत के राज्यपाल को दिया एक फारसी खिताब है। **8:10** *या “वह तुम्हारी ताकत है।”

अध्य. 7
1 नहे 11:20
2 लैव 23:24, 27; 1रा 8:2; एज 3:1
3 एज 2:70

अध्य. 8
4 नहे 3:26; नहे 12:37
5 एज 7:6
6 व्य 31:9; यह 1:8
7 लैव 27:34
8 व्य 31:12; 2इत 17:8, 9; मला 2:7
9 लैव 23:24; 1रा 8:2
10 प्रेष 13:15; प्रेष 15:21
11 प्रेष 16:14; प्रेष 17:11
12 नहे 12:40, 42
13 व्य 27:26

दूसरा कॉल.
1 नहे 9:4
2 एज 8:33; नहे 11:16
3 व्य 33:8, 10
4 लूक 24:27; प्रेष 8:30, 31
5 एज 7:11
6 लैव 23:24
7 एस 9:19

खाने की चीज़ें भेजीं। उन्होंने बड़ी खुशियाँ
मनायीं[1] क्योंकि जो-जो बातें उन्हें पढ़कर
सुनायी गयी थीं, वे उनकी समझ में आ
गयी थीं।[2]

13 अगले दिन इसराएल के कुलों के
मुखिया, याजक और लेवी, कानून में
लिखी बातों की और ज़्यादा समझ पाने के
लिए नकल-नवीस* एज्रा के पास आए।
14 उन्होंने कानून में यह लिखा हुआ
पाया कि यहोवा ने मूसा के ज़रिए इसराए-
लियों को आज्ञा दी थी कि सातवें महीने
में जो त्योहार मनाया जाएगा, उस दौरान
उन्हें छप्परों में रहना है।[3] 15 और
सभी शहरों और पूरे यरूशलेम में यह
ऐलान करना है,[4] "पहाड़ी इलाके में
जाओ और जैतून, चीड़, मेंहदी और
खजूर के पेड़ की घनी डालियाँ तोड़कर
लाओ और दूसरे पेड़ों से भी घनी डालियाँ
तोड़कर लाओ। और उनसे छप्पर बनाओ
क्योंकि कानून में यही लिखा है।"

16 तब लोग जाकर घनी डालियाँ ले
आए और उन्होंने छप्पर बनाए। हरेक
ने अपने घर की छत पर और आँगन में
इसे खड़ा किया। साथ ही, सच्चे परमेश्वर
के भवन के आँगनों में,[5] पानी फाटक
के चौक में[6] और एप्रैम फाटक[7] के चौक
में भी छप्पर बनाए गए। 17 इस तरह,
बँधुआई से छूटकर आए लोगों की पूरी
मंडली ने छप्पर बनाए और उनमें रहने
लगे। नून के बेटे यहोशू[8] के दिनों से
लेकर आज तक, इसराएलियों ने इस
तरह छप्परों का त्योहार नहीं मनाया था।
इसलिए उन्होंने बड़ी खुशी के साथ इसे
मनाया।[9] 18 त्योहार के पहले दिन से
लेकर आखिरी दिन तक, हर रोज़ सच्चे
परमेश्वर के कानून की किताब पढ़ी
गयी।[10] लोगों ने सात दिन तक यह
त्योहार मनाया और आठवें दिन पवित्र
सभा रखी, ठीक जैसा कानून में बताया
गया था।[1]

9 सातवें महीने के 24वें दिन इस-
राएली इकट्ठा हुए और उन्होंने शोक
मनाया। उन्होंने टाट ओढ़ा, अपने सिर
पर धूल डाली और उपवास किया।[2]
2 तब जो लोग इसराएल के वंश से
थे उन्होंने खुद को परदेसियों से
अलग किया।[3] उन्होंने खड़े होकर
अपने पाप और अपने पुरखों के गुनाह
कबूल किए।[4] 3 वे जहाँ खड़े थे वहीं
खड़े रहे और उन्हें यहोवा के कानून की
किताब पढ़कर सुनायी गयी।[5] सुबह तीन
घंटे तक उनके सामने यह किताब पढ़ी
गयी और अगले तीन घंटे तक वे अपने
परमेश्वर यहोवा के सामने दंडवत करके
अपने पाप कबूल करते रहे।

4 तब येशू, बानी, कदमीएल, शबन-
याह, बुन्नी, शेरेब्याह,[6] बानी और कनेनी
उस मंच पर खड़े हुए,[7] जिसे लेवियों के
लिए तैयार किया गया था। और वे अपने
परमेश्वर यहोवा को ज़ोरदार आवाज़
में पुकारने लगे। 5 लेवियों में से येशू,
कदमीएल, बानी, हशबन्याह, शेरेब्याह,
होदियाह, शबनयाह और पतहयाह कहने
लगे, "अब उठो और अपने परमेश्वर
यहोवा की युग-युग तक* तारीफ करो![8]
हे परमेश्वर, तेरे नाम की जितनी भी
तारीफ और वाह-वाही की जाए, वह कम
है। फिर भी तू इन लोगों को अपने शान-
दार नाम की बड़ाई करने दे।

6 तू ही यहोवा है![9] तूने आकाश, हाँ,
ऊँचे-से-ऊँचा आकाश और उसकी पूरी
सेना बनायी है। धरती और जो कुछ उस
पर है, समुंदर और जो कुछ उसमें है,

8:13 * या "शास्त्री।"

9:5 * या "हमेशा से हमेशा तक।"

अध्य. 8
1 भज 126:1-3
2 नहे 8:8
3 लैव 23:34, 42; व्य 16:13, 16; यूह 7:2
4 लैव 23:4
5 1रा 6:36; 1रा 7:12; 2इत 4:9; 2इत 20:5
6 नहे 3:26; नहे 8:1, 3
7 2रा 14:13; नहे 12:38, 39
8 यह 1:1
9 व्य 16:14, 15
10 व्य 31:10-12

दूसरा कॉल.
1 लैव 23:34, 36

अध्य. 9
2 यह 7:6; यो 3:5, 6
3 एज 9:1, 2; नहे 13:3
4 लैव 26:40; एज 9:6; भज 106:6; दान 9:8
5 नहे 8:3, 8
6 नहे 8:7
7 नहे 8:4
8 यिर्म 33:10, 11
9 व्य 6:4

सबकुछ तूने रचा है। तू ही उनका जीवन
कायम रखता है। आकाश की सेनाएँ तेरे
आगे झुकती हैं। 7 तू ही सच्चा पर-
मेश्वर यहोवा है जिसने अब्राम को अपना
सेवक चुना,[1] उसे कसदियों के ऊर शहर
से निकालकर लाया[2] और उसका नाम
बदलकर अब्राहम रखा।[3] 8 तूने पाया
कि वह दिल से विश्वासयोग्य है,[4] इस-
लिए तूने उसके साथ एक करार किया कि
तू उसे और उसके वंश को कनानियों,
हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, यबूसियों
और गिरगाशियों का देश देगा।[5] तूने
अपना यह वादा पूरा किया क्योंकि तू
सच्चा है।

9 तूने मिस्र में हमारे पुरखों की दुख-
तकलीफें देखीं[6] और लाल सागर पर
उनकी दर्द-भरी पुकार सुनी। 10 तब
तूने फिरौन, उसके सेवकों और उसके
लोगों के सामने चिन्ह और चमत्कार
दिखाए[7] क्योंकि तू जानता था कि वे तेरे
लोगों पर अत्याचार कर रहे हैं।[8] ऐसा
करके तूने बड़ा नाम कमाया, जो आज भी
कायम है।[9] 11 तूने सागर को दो
हिस्सों में बाँट दिया ताकि तेरे लोग सूखी
ज़मीन पर चलकर उसे पार कर सकें।[10]
मगर उनका पीछा करनेवालों को तूने वहीं
डुबो दिया। वे सागर की गहराइयों में ऐसे
समा गए, जैसे तूफानी सागर में फेंका
गया पत्थर हों।[11] 12 दिन के वक्त
तूने बादल के खंभे से उन्हें राह दिखायी
और रात को आग के खंभे की रौशनी से
उन्हें रास्ता दिखाया।[12] 13 तू सीनै
पहाड़ पर उतरा[13] और तूने स्वर्ग से
उनसे बातें कीं।[14] तूने उन्हें अपने खरे
न्याय-सिद्धांत, भरोसेमंद कायदे-कानून,
बढ़िया-से-बढ़िया नियम और आज्ञाएँ
दीं।[15] 14 तूने उन्हें बताया कि वे तेरे
लिए पवित्र सब्त रखें।[16] तूने अपने
सेवक मूसा के ज़रिए उन्हें आज्ञाएँ, नियम
और कानून दिए। 15 जब वे भूखे थे
तो तूने उन्हें स्वर्ग से रोटी दी।[1] जब वे
प्यासे थे तो तूने उनके लिए चट्टान से पानी
निकाला।[2] तूने उन्हें आज्ञा दी कि वे उस
देश में कदम रखें और उस पर अधिकार
करें, जिसे देने की तूने शपथ खायी थी।

16 लेकिन हमारे पुरखे ढीठ और
गुस्ताख बन गए[3] और उन्होंने तेरी
आज्ञाओं पर कान नहीं लगाया।
17 उन्होंने तेरी सुनने से इनकार कर
दिया।[4] वे हैरान कर देनेवाले उन कामों
को भूल गए जो तूने उनके सामने किए
थे। वे इतने हठीले बन गए कि मिस्र की
गुलामी में लौट जाने के लिए उन्होंने एक
अगुवा ठहराया।[5] लेकिन तू ऐसा पर-
मेश्वर है जो माफ करने को तैयार रहता
है, तू करुणा करनेवाला और दयालु है,
क्रोध करने में धीमा और अटल प्यार
से भरपूर है,[6] इसलिए तूने उन्हें बे-
सहारा नहीं छोड़ा।[7] 18 तब भी नहीं
जब उन्होंने बछड़े की एक मूरत ढालकर
इसराएलियों से कहा, ‘यही तुम्हारा पर-
मेश्वर है जो तुम्हें मिस्र से बाहर ले आया
है।’[8] और उन्होंने बुरे-से-बुरा काम करके
तेरा अपमान किया। 19 उस वक्त भी
तूने उन पर बड़ी दया की और उन्हें
वीराने में अकेला नहीं छोड़ा।[9] बादल का
वह खंभा उनके पास से नहीं हटा जो
दिन के वक्त उन्हें राह दिखाता था और
न ही आग का वह खंभा हटा जो रात को
रौशनी देकर उन्हें रास्ता दिखाता था।[10]
20 तूने अपनी पवित्र शक्ति* उन्हें दी
ताकि वे समझ से काम ले सकें।[11] तूने
उन्हें मन्ना देना बंद नहीं किया[12] और जब
वे प्यासे थे तो तूने उन्हें पानी पिलाया।[13]
21 वीराने में 40 साल तक तू उन्हें

9:20 *या “भली पवित्र शक्ति।”

अध्य. 9
1 उत 12:1, 2
2 उत 11:31
3 उत 17:5
4 उत 22:10-12
5 उत 15:18
6 निर्ग 2:23-25, निर्ग 3:7
7 निर्ग 7:3, व्य 6:22
8 निर्ग 5:2
9 निर्ग 9:16
10 निर्ग 14:21, 22
11 निर्ग 15:1, 5, 10
12 निर्ग 13:21, निर्ग 14:19, 20
13 निर्ग 19:11
14 व्य 4:10, 36
15 व्य 4:8
16 निर्ग 16:29, निर्ग 20:8-11, व्य 5:12-14

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 16:4
2 निर्ग 17:6
3 गि 14:44, व्य 9:6
4 गि 14:11, 41
5 गि 14:1, 4
6 निर्ग 34:6, गि 14:18
7 व्य 4:31
8 निर्ग 32:1, 4
9 गि 14:19, 20
10 निर्ग 40:38, गि 9:15
11 गि 11:17, 25
12 निर्ग 16:14, 15
13 गि 20:8

खाना देता रहा।[1] उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं हुई। उनके कपड़े पुराने होकर नहीं फटे,[2] न ही उनके पैरों में सूजन आयी।

22 तूने राजाओं के राज्यों और उनके लोगों को इसराएलियों के अधीन कर दिया और उनकी ज़मीन इसराएलियों में बाँट दी।[3] इसलिए उन्होंने हेशबोन के राजा सीहोन के इलाके[4] को और बाशान के राजा ओग के इलाके को अपने कब्ज़े में कर लिया।[5] 23 तूने उनके बेटों को आसमान के तारों की तरह बेशुमार कर दिया।[6] फिर तू उन्हें उस देश में ले आया जिसके बारे में तूने उनके पुरखों से वादा किया था कि वे उस देश में कदम रखकर उसे अपने अधिकार में कर लेंगे।[7] 24 इसलिए उनके बेटों ने जाकर पूरे देश पर कब्ज़ा कर लिया[8] और तूने वहाँ रहनेवाले कनानियों को उनके अधीन कर दिया।[9] तूने उनके राजाओं और लोगों को इसराएलियों के हवाले कर दिया कि वे उनके साथ मनचाहा सलूक करें। 25 उन्होंने उनके किलेबंद शहर जीत लिए[10] और उपजाऊ ज़मीन[11] और उन घरों को ले लिया, जिनमें हर तरह की बेहतरीन चीज़ें थीं। उन्होंने खुदे हुए हौद, अंगूरों और जैतून के बाग और अनगिनत फलदार पेड़ों पर कब्ज़ा कर लिया।[12] वे जी-भरकर खाने-पीने लगे और फलने-फूलने लगे। तूने उन्हें कोई कमी नहीं होने दी, तेरी बड़ी भलाई की वजह से वे सुख से रहने लगे।

26 इस सबके बाद भी, उन्होंने तेरा कहा नहीं माना। वे तेरे खिलाफ हो गए[13] और उन्होंने तेरे कानून का तिरस्कार किया।* तेरे भविष्यवक्ताओं ने उन्हें समझाया कि वे तेरे पास लौट आएँ, मगर उन्होंने भविष्यवक्ताओं को ही मार डाला। उन्होंने बुरे-बुरे काम करके तेरा घोर अपमान किया।[1] 27 इसलिए तूने उन्हें दुश्मनों के हवाले कर दिया,[2] जो उन्हें सताते रहे।[3] मुसीबत की घड़ी में जब वे तुझसे फरियाद करने लगे, तब तूने स्वर्ग से उन पर ध्यान दिया। तुझे उन पर बड़ी दया आयी और तूने उनके पास कुछ आदमी भेजे कि वे उन्हें दुश्मनों से छुड़ाएँ।[4]

28 मगर जैसे ही उन्हें दुश्मनों से चैन मिला, वे दोबारा उन कामों में लग गए जो तेरी नज़र में बुरे थे।[5] और तूने फिर से उन्हें दुश्मनों के हाथ कर दिया जिन्होंने उन्हें बहुत सताया।[6] तब वे लौटकर तेरे पास आए और तुझसे मदद की भीख माँगने लगे।[7] तूने स्वर्ग से उनकी तरफ ध्यान दिया और तुझे उन पर बड़ी दया आयी। तू इसी तरह हर बार उन्हें छुड़ाता रहा।[8] 29 तू उन्हें बार-बार समझाता रहा कि वे तेरे पास लौट आएँ और तेरा कानून मानें। मगर उन्होंने अकड़ दिखायी और तेरी आज्ञाओं को मानने से साफ इनकार कर दिया।[9] उन्होंने तेरे उन नियमों को तोड़ दिया जिनका पालन करने से एक इंसान ज़िंदा रहता है।[10] उन्होंने तुझसे मुँह फेर लिया और वे ढीठ बन गए। उन्होंने तेरी एक न सुनी। 30 मगर तूने बरसों तक सब्र रखा[11] और भविष्यवक्ताओं को अपनी पवित्र शक्ति से उभारा कि वे उन्हें बार-बार चेतावनी दें। पर उन्होंने उनकी बात पर कान नहीं लगाया। आखिरकार, तूने उन्हें आस-पास के देशों के हवाले कर दिया।[12] 31 मगर तेरी दया इतनी महान है कि तूने उनका नाश नहीं किया,[13] न ही उन्हें लावारिस छोड़ा

अध्य. 9

1 निर्ग 16:35, गि 14:33, व्य 2:7
2 व्य 29:5
3 यह 11:23
4 गि 21:26
5 गि 21:23, 24, गि 21:33, 35, व्य 2:31
6 उत 15:1, 5
7 उत 12:7, उत 26:3
8 गि 14:29-31, यह 21:43
9 यह 18:1
10 व्य 3:4, 5
11 व्य 8:7-9
12 यह 24:13
13 व्य 31:20, व्य 32:15, न्या 2:12

दूसरा कॉल.

1 2रा 21:11, भज 106:38
2 न्या 2:14
3 व्य 31:17
4 न्या 2:18, न्या 3:9, 15, 1शम 12:11, 2रा 13:4, 5
5 न्या 2:19
6 न्या 4:1, 2, न्या 6:1
7 न्या 6:6
8 भज 106:43-45
9 2रा 17:13, 14, 2इत 24:19
10 लैव 18:5
11 रोम 10:21
12 2इत 36:15, 16, यश 42:24, यिर्म 40:2, 3
13 यहे 14:22

9:26 *शा., “तेरे कानून को पीठ के पीछे फेंक दिया।”

क्योंकि तू करुणा करनेवाला और दयालु
परमेश्वर है।[1]
32 हे महान, शक्तिशाली और
विस्मयकारी परमेश्वर, तू जो अपना
करार पूरा करता है और अपने अटल
प्यार का सबूत देता है,[2] तुझसे बिनती है
कि हमारे दुखों पर ध्यान दे, उन्हें हलका
मत समझ। अश्शूर के राजाओं के दिनों
से लेकर[3] अब तक हम, हमारे राजा,
हाकिम,[4] याजक,[5] भविष्यवक्ता[6] और
पुरखे, तेरे सभी लोग बहुत दुख झेलते
आए हैं। 33 मगर हम पर जो भी
बीती हम उसी के लायक थे, तूने हमारे
साथ कोई अन्याय नहीं किया। तू हमेशा
से वफादार रहा, दुष्टता तो हमने की।[7]
34 हमारे राजाओं, हाकिमों, याजकों
और पुरखों ने तेरा कानून नहीं माना।
और-तो-और, तूने उन्हें जो आज्ञाएँ दीं
और उन्हें खबरदार करने के लिए बार-
बार जो हिदायतें दीं, उन पर उन्होंने ध्यान
नहीं दिया। 35 तब भी नहीं जब देश
पर उनका राज था और वे उस बड़े और
उपजाऊ देश में रह रहे थे, जो तूने उन्हें
दिया था और जब वे तेरी अपार भलाई
का मज़ा ले रहे थे। उन्होंने तेरी सेवा
नहीं की[8] बल्कि वे बुरे-से-बुरा काम करते
रहे। 36 इसलिए देख, आज हम उसी
देश में गुलाम हैं[9] जो तूने हमारे पुरखों को
दिया था ताकि वे यहाँ की पैदावार और
बेहतरीन चीज़ों का मज़ा लें। 37 हमारे
पापों की वजह से हमारे देश की भरपूर
उपज वे राजा खा रहे हैं, जिनके अधीन
तूने हमें कर दिया है।[10] वे हम पर, हमारे
मवेशियों पर मनमाना राज करते हैं। हम
बहुत दुखी हैं।
38 इन सब बातों की वजह से आज
हम तुझसे एक करार करते हैं,[11] जिसे
हम लिखकर देंगे और जिस पर
हमारे हाकिम, लेवी और याजक
अपनी-अपनी मुहर लगाकर उसे पुख्ता
करेंगे।"[1]

10 ये उन लोगों के नाम हैं जिन्होंने
करार पर अपनी मुहर लगाकर
उसे पुख्ता किया:[2]
हकल्याह का बेटा* राज्यपाल#
नहेमायाह,
इसके अलावा सिदकियाह, 2 सरा-
याह, अजरयाह, यिर्मयाह, 3 पश-
हूर, अमरयाह, मल्कियाह, 4 हत्तूश,
शबनयाह, मल्लूक, 5 हारीम,[3] मरे-
मोत, ओबद्याह, 6 दानियेल,[4] गिन्न-
तोन, बारूक, 7 मशुल्लाम, अबियाह,
मियामीन, 8 माज्याह, बिलगै और
शमायाह। ये सभी याजक थे।
9 जिन लेवियों ने करार पर अपनी
मुहर लगायी उनके नाम ये हैं:
आजन्याह का बेटा येशू, बिन्नूई जो हेना-
दाद के बेटों में से था, कदमीएल,[5]
10 शबनयाह, होदियाह, कलीता, पला-
याह, हानान, 11 मिका, रहोब, हश-
ब्याह, 12 जक्कूर, शेरेब्याह,[6] शबन-
याह, 13 होदियाह, बानी और बनीनू।
14 जिन इसराएली मुखियाओं ने
करार पर अपनी मुहर लगायी उनके
नाम ये हैं: परोश, पहत-मोआब,[7]
एलाम, जत्तू, बानी, 15 बुन्नी, अज-
गाद, बेबई, 16 अदोनियाह, बिगवै,
आदीन, 17 आतेर, हिजकियाह,
अज्जूर, 18 होदियाह, हाशूम, बेजै,
19 हारीप, अनातोत, नेबै, 20 मग-
पीआश, मशुल्लाम, हेजीर, 21 मशे-
जबेल, सादोक, यद्दू, 22 पलत्याह,

10:1 *इस अध्याय में "बेटे" का मत-
लब "वंशज" भी हो सकता है। #या "तिर-
शाता।" यह किसी प्रांत के राज्यपाल को
दिया एक फारसी खिताब है।

अध्य. 9
1 निर्ग 34:6, व्य 4:31
2 व्य 7:9, दान 9:4
3 2रा 17:6
4 2रा 24:12, 14
5 यिर्म 34:18-20
6 विल 4:13, 14
7 दान 9:5
8 व्य 28:47, व्य 32:15
9 व्य 28:48, एज 9:9
10 व्य 28:15, 33, नहे 5:4
11 2रा 23:3, 2इत 15:12, एज 10:3

दूसरा कॉल.
1 नहे 10:28, 29

अध्य. 10
2 नहे 9:38
3 एज 2:1, 39
4 एज 8:1, 2
5 एज 3:9, नहे 12:8
6 नहे 12:24
7 नहे 7:6, 11

हानान, अनायाह, **23** होशेआ, हनन्याह, हश्शूब, **24** हल्लोहेश, पिलहा, शोबेक, **25** रहूम, हशबना, मासेयाह, **26** अहियाह, हानान, आनान, **27** मल्लूक, हारीम और बानाह।

28 बाकी लोग यानी याजक, लेवी, पहरेदार, गायक, मंदिर के सेवक* और वे लोग जिन्होंने सच्चे परमेश्वर का कानून मानने के लिए खुद को आस-पास के देश के लोगों से अलग किया था,[1] उन्होंने अपनी-अपनी पत्नियों और बेटे-बेटियों को साथ लिया। हाँ, हर कोई जो समझ सकता था# इकट्ठा हुआ। और उन्होंने **29** अपने भाइयों, अपने खास-खास आदमियों के साथ मिलकर शपथ खायी और कहा कि अगर हम इस शपथ को पूरा नहीं करेंगे तो हम पर शाप पड़े। उन्होंने शपथ खायी कि हम सच्चे परमेश्वर के कानून के मुताबिक चलेंगे, जो उसने अपने सेवक मूसा को दिया था। और हम अपने प्रभु यहोवा की हर आज्ञा, न्याय-सिद्धांत और नियम का करीबी से पालन करेंगे। **30** हम आस-पास के देशों के लोगों को न तो अपनी बेटियाँ देंगे न ही अपने बेटों के लिए उनकी बेटियाँ लेंगे।[2]

31 अगर सब्त के दिन या किसी और पवित्र दिन पर आस-पास के देश के लोग अपना माल और अनाज बेचने आएँ, तो हम उनसे कुछ नहीं खरीदेंगे।[3] हम सातवें साल में खेतों की उपज नहीं लेंगे[4] और किसी से कर्ज़ चुकाने की माँग नहीं करेंगे।[5]

32 हम यह भी वचन देते हैं कि हममें से हरेक अपने परमेश्वर के भवन* में होनेवाली उपासना के लिए हर साल एक-तिहाई शेकेल* देगा।[1] **33** इससे उन चीज़ों का खर्च उठाया जाएगा जो सब्त और नए चाँद के दिन चढ़ायी जाती हैं यानी रोटियों के दो ढेर,*[2] नियमित तौर पर चढ़ाया जानेवाला अनाज[3] और होम-बलियाँ।[4] इसके अलावा, साल के अलग-अलग वक्त पर मनाए जानेवाले त्योहारों,[5] पवित्र चीज़ों, इसराएल के प्रायश्चित के लिए पाप-बलियों[6] और परमेश्वर के भवन के बाकी कामों का खर्च भी इसी से उठाया जाएगा।

34 हमने यह भी तय किया है कि याजक, लेवी और बाकी लोग हमारे परमेश्वर के भवन के लिए लकड़ियाँ लाएँगे ताकि हमारे परमेश्वर यहोवा की वेदी पर आग जलती रहे, जैसा कि मूसा के कानून में लिखा है।[7] इसलिए हम चिट्ठियाँ डालकर तय करेंगे कि उन्हें अपने पिता के घराने के हिसाब से कब-कब लकड़ियाँ लानी हैं और वे हर साल उसी वक्त पर लकड़ियाँ लाएँगे। **35** हम वादा करते हैं कि हम हर साल अपनी ज़मीन की पहली उपज और हर तरह के फलदार पेड़ों के पहले फल यहोवा के भवन में लाएँगे।[8] **36** हम अपने पहलौठे बेटे, साथ ही अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहलौठे भी लाएँगे,[9] जैसा कानून में लिखा है। हम उन्हें परमेश्वर के भवन में सेवा करनेवाले याजकों के पास लाएँगे।[10] **37** हम अपने परमेश्वर के भवन के भंडारों में[11] याजकों के पास ये सब लाएँगे: पहली फसल का दरदरा कुटा हुआ अनाज,[12] हर तरह के पेड़ों के फल,[13] नयी दाख-मदिरा, तेल[14] और

10:28 *या "नतीन लोग।" शा., "दिए गए लोग।" #या शायद, "जिनकी समझने की उम्र थी।" **10:32** *या "मंदिर।"

10:32 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें। **10:33** *यानी नज़राने की रोटी।

अध्य. 10

1 नहे 8:1; नहे 9:2
2 निर्ग 34:15, 16; व्य 7:3, 4
3 निर्ग 12:16; निर्ग 20:10; गि 29:1, 12
4 निर्ग 23:10, 11; लैव 25:4, 5
5 व्य 15:1-3

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 30:13
2 लैव 24:5-7
3 निर्ग 29:40, 41
4 गि 28:9; गि 28:11-13; 1इत 23:31
5 व्य 16:16
6 लैव 16:15
7 लैव 1:7; लैव 6:12, 13
8 निर्ग 23:19; गि 18:8, 13; व्य 26:2
9 निर्ग 13:2; गि 18:15
10 गि 18:8, 11; 1कुर 9:13
11 2इत 31:11
12 गि 15:20
13 लैव 27:30
14 गि 18:8, 12; व्य 18:1, 4

दान। साथ ही, हम अपनी ज़मीन की उपज का दसवाँ हिस्सा लेवियों को देंगे,[1] जो हमारे उन सभी शहरों से दसवाँ हिस्सा इकट्ठा करते हैं जहाँ खेती-बाड़ी की जाती है।

38 जब लेवी दसवाँ हिस्सा इकट्ठा करें तब याजक यानी हारून का बेटा भी उनके साथ रहे। और लेवी अपने हिस्से में से दसवाँ हिस्सा परमेश्वर के भवन के लिए दें,[2] जिसे भंडार-घर के कमरों में रखा जाएगा। 39 इन्हीं कमरों में इसराए-लियों और लेवियों का दिया अनाज का दान, नयी दाख-मदिरा और तेल[3] जमा किया जाएगा।[4] ये वही कमरे हैं जहाँ पवित्र-स्थान के बरतन रखे जाते हैं और जहाँ सेवा करनेवाले याजक, पहरेदार और गायक आया-जाया करते थे। हमने ठान लिया है कि हम अपने परमेश्वर के भवन की देखरेख करने में कभी लापर-वाही नहीं करेंगे।[5]

11 इसराएलियों के हाकिम तो यरू-शलेम में रहते थे,[6] मगर बाकी लोग दूसरे शहरों में बसे हुए थे। इसलिए यह तय हुआ कि चिट्ठियाँ डाली जाएँगी[7] और हर दस घराने में से जिस एक घराने के नाम चिट्ठी निकलेगी, वह पवित्र शहर यरूशलेम आकर रहेगा और बचे हुए नौ घराने अपने ही शहरों में रहेंगे। 2 इसके अलावा, जो आदमी अपनी मरज़ी से यरूशलेम में रहने आए, लोगों ने उनकी तारीफ की।

3 ये यहूदा ज़िले के उन मुखियाओं के नाम हैं, जो यरूशलेम में आकर बस गए। (बाकी इसराएली, याजक, लेवी, मंदिर के सेवक *[8] और सुलैमान के सेवकों के बेटे *[1] यहूदा में अपने-अपने शहरों में ही रहे, जो उन्हें दिए गए थे।[2]

4 यरूशलेम में यहूदा और बिन्यामीन के कुछ लोग भी बसे हुए थे।) यहूदा के लोगों में से अतायाह आया। वह उज्जि-याह का बेटा था, उज्जियाह जकरयाह का, जकरयाह अमरयाह का, अमरयाह शपत्याह का और शपत्याह महल-लेल का बेटा था। ये लोग पेरेस के घराने से थे।[3] 5 अतायाह के अलावा मासेयाह भी आया। मासेयाह बारूक का बेटा था, बारूक कोलहोजे का, कोलहोजे हजा-याह का, हजायाह अदायाह का, अदायाह योयारीब का और योयारीब जकरयाह का बेटा था। जकरयाह, शेलह के खानदान से था। 6 पेरेस के बेटे जो यरूशलेम में रहने गए उनकी कुल गिनती 468 थी। वे सब शूरवीर थे।

7 बिन्यामीन के लोगों में से सल्लू[4] यरूशलेम आया। वह मशुल्लाम का बेटा था, मशुल्लाम योएद का, योएद पदायाह का, पदायाह कोलायाह का, कोलायाह मासेयाह का, मासेयाह ईतीएल का और ईतीएल यशाया का बेटा था। 8 सल्लू के अलावा, गब्बै और सल्लै भी आए, कुल 928 आदमी। 9 जिक्री का बेटा योएल उनकी निगरानी करता था और हस्सनूआ का बेटा यहूदा, शहर की देख-रेख करने में उसका मददगार था।

10 याजकों में से ये लोग यरू-शलेम आए: योयारीब का बेटा यदायाह, याकीन[5] 11 और सरायाह। सरायाह हिलकियाह का बेटा था, हिलकियाह मशुल्लाम का, मशुल्लाम सादोक का, सादोक मरायोत का और मरायोत अही-तूब[6] का बेटा था। अहीतूब सच्चे

11:3 *या "नतीन लोग।" शा., "दिए गए लोग।"

11:3 *इस अध्याय में "बेटे" का मतलब "वंशज" भी हो सकता है।

अध्य. 10
1 गि 18:21
2 गि 18:26
3 व्य 14:23
4 व्य 12:5, 6
5 नहे 13:10, 11

अध्य. 11
6 नहे 7:4
7 नीत 16:33
8 यह 9:3, 27; एज 8:17

दूसरा कॉल.
1 एज 2:58
2 एज 2:70
3 गि 26:20
4 1इत 9:3, 7
5 1इत 9:10-13
6 1इत 6:12

परमेश्वर के भवन* में एक अगुवा था।
12 उनके अलावा, उनके वे भाई भी यरू-
शलेम आए जो भवन में सेवा करते
थे, कुल मिलाकर 822 आदमी। उनके
साथ अदायाह भी आया जो यरोहाम का
बेटा था। यरोहाम पलल्याह का बेटा था,
पलल्याह अमसी का, अमसी जकरयाह
का, जकरयाह पशहूर[1] का और पश-
हूर मल्कियाह का बेटा था। **13** अदा-
याह के भाई भी यरूशलेम आए जो
अपने-अपने पिता के कुल के मुखिया थे,
सब मिलाकर 242 आदमी। अमशै भी
आया। वह अजरेल का बेटा था, अज-
रेल अहजै का, अहजै मशिल्लेमोत का
और मशिल्लेमोत इम्मेर का बेटा था।
14 अमशै के साथ उसके भाई भी यरू-
शलेम आए, जो बड़े ताकतवर और
दिलेर थे, कुल मिलाकर 128 आदमी।
उनकी निगरानी करनेवाला जब्दीएल था,
वह एक जाने-माने घराने से था।

15 लेवियों में से शमायाह[2] आया।
वह हश्शूब का बेटा था, हश्शूब अजरी-
काम का, अजरीकाम हशब्याह का और
हशब्याह बुन्नी का बेटा था। **16** शमा-
याह के अलावा, शब्बतै[3] और योजा-
बाद[4] भी आए जो लेवियों के मुखि-
याओं में से थे और सच्चे परमेश्वर के
भवन से जुड़े बाहरी कामों की देखरेख
करते थे। **17** उनके अलावा मत्तन्याह[5]
भी आया जो मीका का बेटा था, मीका
जब्दी का और जब्दी आसाप का बेटा
था।[6] मत्तन्याह संगीत-संचालक था और
प्रार्थना के वक्त बड़ाई के गीत में अगुवाई
करता था।[7] उसका मददगार बकबुक्याह
भी आया। अब्दा भी आया जो शम्मू का
बेटा था, शम्मू गालाल का और गालाल
यदूतून[8] का बेटा था। **18** पवित्र शहर
में रहने आए इन सभी लेवियों की कुल
गिनती 284 थी।

19 फाटकों के पहरेदारों में से
अक्कूब, तल्मोन[1] और उनके भाई आए,
कुल 172 आदमी।

20 बाकी इसराएली, याजक और
लेवी, यहूदा के दूसरे शहरों में रहे
जो उन्हें दिए गए थे।* **21** मंदिर के
सेवक *[2] ओपेल में रहते थे[3] और उनके
ऊपर ज़ीहा और गिश्पा को ठहराया
गया।

22 यरूशलेम में लेवियों की निग-
रानी करनेवाला उज्जी था। उज्जी बानी
का बेटा था, बानी हशब्याह का, हशब्याह
मत्तन्याह[4] का और मत्तन्याह मिका का
बेटा था। उज्जी, आसाप के गायकों
के घराने से था और सच्चे परमेश्वर के
भवन के काम की देखरेख करता था।
23 इन्हीं गायकों के बारे में यह शाही
फरमान जारी किया गया था[5] कि उन्हें हर
दिन के हिसाब से खाने-पीने की चीज़ें दी
जाएँ। **24** पतहयाह राजा का सलाह-
कार था* और लोगों से जुड़े मामलों
पर राजा को सलाह देता था। पतहयाह
मशेजबेल का बेटा था, मशेजबेल जेरह के
घराने से था और जेरह यहूदा का
बेटा था।

25 ये उन जगहों और देहातों के नाम
हैं जहाँ यहूदा के कुछ लोग रहते थे: किर-
यत-अरबा[6] और उसके आस-पास के
नगर, दीबोन और उसके आस-पास के
नगर, यकबसेल[7] और उसकी बस्तियाँ,
26 येशू, मोलादा,[8] बेत-पालेत,[9]
27 हसर-शूआल,[10] बेरशेबा और

11:11 *या "मंदिर।"

11:20 *या "जो उनकी विरासत थी।" **11:21** *या "नतीन लोग।" शा., "दिए गए लोग।" **11:24** *शा., "राजा का दायाँ हाथ था।"

अध्य. 11
1 यिर्म 21:1, 2; यिर्म 38:1
2 1इत 9:2, 14
3 एज 10:14, 15
4 एज 8:33; नहे 8:7
5 नहे 11:22; नहे 12:25
6 नहे 7:6, 44
7 1इत 16:4; 2इत 5:13
8 1इत 16:41, 42; 2इत 35:15

दूसरा कॉल.
1 1इत 9:2, 17; एज 2:1, 42; नहे 12:25
2 एज 2:1, 58
3 2इत 27:1, 3; नहे 3:26
4 1इत 9:2, 15
5 एज 6:3, 9; एज 7:21-24
6 उत 23:2; यह 14:15
7 यह 15:21; 2शम 23:20
8 यह 15:21, 26; यह 19:1, 2
9 यह 15:21, 27
10 यह 19:1, 3

उसके आस-पास के नगर, 28 सिक-
लग,[1] मकोना और उसके आस-पास के
नगर, 29 एन-रिम्मोन,[2] सोरा,[3] यर-
मूत, 30 जानोह,[4] अदुल्लाम और
उनकी बस्तियाँ, लाकीश[5] और उसके
देहात और अजेका[6] और उसके आस-
पास के नगर। वे लोग बेरशेबा से लेकर
हिन्नोम घाटी[7] तक बस गए।*

31 ये उन शहरों के नाम हैं जहाँ
बिन्यामीन के लोग रहते थेः
गेबा,[8] मिकमाश, अय्या, बेतेल[9] और
उसके आस-पास के नगर, 32 अना-
तोत,[10] नोब,[11] अनन्याह, 33 हासोर,
रामाह,[12] गित्तैम, 34 हादीद, सबो-
ईम, नबल्लत, 35 लोद, ओनो[13] और
कारीगरों की घाटी। 36 लेवियों के
कुछ दल जो पहले यहूदा के इलाके
में रहते थे, अब बिन्यामीन के इलाके में
आकर रहने लगे।

12 शालतीएल के बेटे* जरु-
बाबेल[14] और येशू[15] के साथ
बँधुआई से लौटे याजकों और
लेवियों के नाम ये हैंः सरायाह,
यिर्मयाह, एज्रा, 2 अमरयाह, मल्लूक,
हत्तूश, 3 शकन्याह, रहूम, मरेमोत,
4 इद्दो, गिन्नतोई, अबियाह, 5 मिया-
मीन, माद्याह, बिलगा, 6 शमायाह,
योयारीब, यदायाह, 7 सल्लू, आमोक,
हिलकियाह और यदायाह। ये लोग
येशू के दिनों में याजकों और अपने
भाइयों के मुखिया थे।

8 लेवियों में से येशू, बिन्नूई, कदमी-
एल,[16] शेरेब्याह, यहूदा और मत्तन्याह
लौटे।[17] मत्तन्याह और उसके भाई धन्य-
वाद के गीत गाने में अगुवाई करते
थे। 9 बकबुक्याह और उन्नी पहरा देने
का काम करने के लिए* अपने इन
भाइयों के सामने दूसरी तरफ खड़े होते
थे। 10 येशू योयाकीम का पिता था,
योयाकीम एल्याशीब[1] का, एल्याशीब
योयादा का,[2] 11 योयादा योनातान का
और योनातान यद्दू का पिता था।

12 योयाकीम के दिनों में ये याजक
अपने-अपने कुल के मुखिया थेः सरा-
याह[3] के कुल में मरायाह, यिर्मयाह के
कुल में हनन्याह, 13 एज्रा[4] के कुल में
मशुल्लाम, अमरयाह के कुल में यहो-
हानान, 14 मल्लूकी के कुल में योना-
तान, शबनयाह के कुल में यूसुफ,
15 हारीम के कुल[5] में अदना, मरा-
योत के कुल में हेलकै, 16 इद्दो
के कुल में जकरयाह, गिन्नतोन के
कुल में मशुल्लाम, 17 अबियाह[6] के
कुल में जिक्री, मिन्यामीन के कुल में
. . . ,* मोअद्याह के कुल में पिलतै,
18 बिलगा[7] के कुल में शम्मू, शमायाह
के कुल में यहोनातान, 19 योयारीब के
कुल में मत्तनै, यदायाह[8] के कुल में उज्जी,
20 सल्लै के कुल में कल्लै, आमोक के
कुल में एबेर, 21 हिलकियाह के कुल
में हशब्याह और यदायाह के कुल में
नतनेल।

22 ये वे लेवी और याजक हैं जो
अपने-अपने पिता के कुल के मुखिया
थे और जिनके नाम एल्याशीब, योयादा,
योहानान और यद्दू[9] के दिनों में यानी
फारस के राजा दारा की हुकूमत तक
लिखे गए थे।

23 जो लेवी अपने-अपने पिता के
कुल के मुखिया थे, उनके नाम इतिहास

अध्य. 11
1 यह 15:21, 31; यह 19:1, 5; 1शम 27:5, 6
2 यह 15:21, 32
3 यह 15:20, 33; यह 19:40, 41
4 यह 15:20, 34; नहे 3:13
5 यह 15:20, 39; यश 37:8
6 यह 15:20, 35
7 यह 15:8, 12; 2रा 23:10
8 यह 18:21, 24
9 उत 28:19; यह 18:11, 13
10 यह 21:8, 18
11 1शम 21:1
12 यह 18:21, 25
13 1इत 8:12; एज 2:1, 33

अध्य. 12
14 एज 1:8, 11; मत 1:12
15 जक 3:1
16 एज 2:1, 40; एज 3:9
17 1इत 9:2, 15; नहे 11:17; नहे 12:25

दूसरा कॉल.
1 नहे 3:1
2 नहे 13:28
3 नहे 11:3, 11
4 नहे 12:1
5 एज 2:1, 39
6 नहे 12:1, 4
7 नहे 12:1, 5
8 नहे 12:1, 6
9 नहे 12:10, 11

11:30 *या "तक डेरे डाले हुए थे।" **12:1** *इस अध्याय में "बेटे" का मतलब "वंशज" भी हो सकता है।

12:9 *या शायद, "उपासना के वक्त।" **12:17** *ज़ाहिर है कि इब्रानी पाठ में यहाँ कोई नाम नहीं है।

की किताब में लिखे गए। इस किताब में
एल्याशीब के बेटे योहानान के दिनों तक
की घटनाएँ लिखी गयी थीं। **24** उन
मुखियाओं के नाम थे: हशब्याह, शेरेब्याह
और कदमीएल का बेटा[1] येशू।[2]
उनके भाई उनके सामने दूसरी तरफ
खड़े होकर परमेश्वर की बड़ाई करते
और धन्यवाद के गीत गाते थे, ठीक
जैसा सच्चे परमेश्वर के सेवक दाविद
ने हिदायत दी थी।[3] पहरेदारों का एक
दल, दूसरे दल के सामने होता था।
25 मत्तन्याह,[4] बकबुक्याह, ओबद्याह,
मशुल्लाम, तल्मोन और अक्कूब[5] पहरे-
दार थे[6] और मंदिर के दरवाज़ों के
पास भंडारों पर पहरा देते थे। **26** वे
योयाकीम के दिनों में सेवा करते थे
जो येशू[7] का बेटा था और येशू योसा-
दाक का बेटा था। उन्होंने राज्यपाल नहे-
मायाह, साथ ही नकल-नवीस,* याजक
एज्रा[8] के दिनों में भी सेवा की।

27 यरूशलेम की शहरपनाह के उद्-
घाटन के लिए लेवियों को अपने-अपने
इलाके से ढूँढ़कर यरूशलेम लाया गया
ताकि वे झाँझ, तारोंवाले बाजे और सुर-
मंडल पर धन्यवाद के गीत गाएँ[9] और
बड़ी धूम-धाम से उद्घाटन किया जाए।
28 गायकों के बेटे* इन जगहों से इकट्ठा
किए गए: ज़िले से,# पूरे यरूशलेम
से, नतोपा के लोगों की बस्तियों[10] से,
29 बेत-गिलगाल[11] से, गेबा और
अज़मावेत[12] के देहातों से।[13] उन्हें जगह-
जगह से इसलिए इकट्ठा किया गया क्योंकि
वे यरूशलेम के इर्द-गिर्द बस्तियाँ बनाकर
रहते थे। **30** तब याजकों और लेवियों
ने पहले खुद को शुद्ध किया फिर लोगों
को।[1] उन्होंने फाटकों और शहरपनाह को
भी शुद्ध करके पवित्र ठहराया।[2]

31 फिर मैं यहूदा के हाकिमों को
शहरपनाह के ऊपर ले गया और मैंने
धन्यवाद के गीत गानेवाले दो बड़े दल
बनाए। और उनके पीछे-पीछे चलने के
लिए लोगों के दो समूह भी बनाए। एक
गायक-दल दाएँ हाथ पर 'राख के ढेर
के फाटक'[3] की तरफ बढ़ा। **32** उनके
पीछे-पीछे ये लोग चल रहे थे: होशा-
याह, यहूदा के हाकिमों में से आधे
लोग, **33** अजरयाह, एज्रा, मशुल्लाम,
34 यहूदा, बिन्यामीन, शमायाह और
यिर्मयाह। **35** उनके साथ याजकों के
कुछ बेटे भी थे जो हाथ में तुर-
हियाँ लिए हुए थे।[4] एक था जकरयाह,
जो योनातान का बेटा था। योनातान
शमायाह का बेटा था, शमायाह मत्तन्याह
का, मत्तन्याह मीकायाह का, मीकायाह
जक्कूर का और जक्कूर आसाप का बेटा
था।[5] **36** जकरयाह के साथ उसके
भाई शमायाह, अजरेल, मिललै, गिललै,
माऐ, नतनेल, यहूदा और हनानी भी
थे। वे सच्चे परमेश्वर के सेवक दाविद
के बाजे लिए हुए थे।[6] नकल-नवीस*
एज्रा[7] उनके आगे-आगे चल रहा था।
37 सोता फाटक[8] से आगे वे दाविदपुर[9]
की सीढ़ियों[10] को पार करते हुए शहर-
पनाह पर चलते रहे। शहरपनाह चढ़ाई
पर थी और वे 'दाविद के भवन' के ऊपर
से होते हुए पूरब में पानी फाटक[11] की
तरफ बढ़े।

38 धन्यवाद के गीत गानेवाला दूसरा
दल शहरपनाह पर उलटी दिशा में गया
और मैं बचे हुए लोगों के साथ उसके
पीछे-पीछे चला। यह दल 'तंदूरों की
मीनार'[12] पार करके 'चौड़ी शहर-
पनाह'[13] तक आया। **39** फिर यह दल

अध्य. 12

1 एज 2:1, 40
2 नहे 8:7
3 1इत 16:4; 1इत 23:28, 30
4 1इत 9:2, 15
5 1इत 9:17; एज 2:1, 42; नहे 11:1, 19
6 1इत 9:22-27
7 एज 3:2, 8
8 एज 7:1, 6
9 2इत 5:13; 2इत 7:6
10 1इत 2:54; 1इत 9:2, 16; नहे 7:6, 26
11 यह 15:7, 12
12 एज 2:1, 24
13 यह 21:8, 17; नहे 11:31

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 19:10
2 नहे 6:15; नहे 7:1
3 नहे 2:13; नहे 3:13
4 गि 10:2; 2इत 5:12
5 1इत 25:1, 2
6 1इत 23:5
7 नहे 8:4
8 नहे 2:14
9 2शम 5:7, 9
10 नहे 3:15
11 नहे 3:26; नहे 8:1
12 नहे 3:11
13 नहे 3:8

12:26, 36 *या "शास्त्री।" **12:28** *या "तालीम पाए हुए गायक।" #यानी यरदन ज़िले के आस-पास से।

एप्रैम फाटक,[1] ‘पुराने शहर के फाटक,’[2]
मछली फाटक,[3] हननेल मीनार[4] और
हम्मेआ मीनार को पार करते हुए भेड़
फाटक[5] पर निकला और ‘पहरेदारों के
फाटक’ पर आकर रुक गया।

40 कुछ वक्त बाद धन्यवाद के गीत
गानेवाले दोनों दल, सच्चे परमेश्वर के
भवन के सामने मिले और वहीं खड़े रहे।
और मैं अधिकारियों* में से आधे लोगों
के साथ वहाँ इकट्ठा हुआ। **41** वहाँ
याजक एल्याकीम, मासेयाह, मिन्यामीन,
मीकायाह, एल्योएनै, जकरयाह और
हनन्याह तुरही लिए खड़े थे। **42** मासे-
याह, शमायाह, एलिआज़र, उज्जी, यहो-
हानान, मल्कियाह, एलाम और एजेर भी
वहाँ थे। यिज्रयाह की निगरानी में गायकों
ने ज़ोरदार आवाज़ में गाना गया।

43 उस दिन उन्होंने ढेरों बलिदान
चढ़ाए और खुशियाँ मनायीं[6] क्योंकि
सच्चे परमेश्वर ने उन्हें इतनी खुशियाँ दीं
कि वे मगन हो गए। औरतें और बच्चे
भी फूले नहीं समा रहे थे।[7] यरूशलेम
में इस कदर खुशियाँ मनायी जा रही थीं
कि दूर-दूर तक इसकी आवाज़ सुनायी दे
रही थी।[8]

44 उस दिन कुछ आदमियों को
भंडार-घरों की देखरेख के लिए ठहराया
गया,[9] जहाँ लोगों से मिलनेवाले दान,[10]
पहली उपज[11] और दसवाँ हिस्सा इकट्ठा
किया जाता था।[12] इन आदमियों को
शहर के खेतों से उतनी उपज इकट्ठा करके
भंडार-घरों में जमा करनी थी, जितनी
मूसा के कानून में याजकों और लेवियों के
लिए ठहरायी गयी थी।[13] यहूदा के
लोगों ने इस माँग को खुशी-खुशी पूरा
किया क्योंकि याजक और लेवी सेवा कर
रहे थे। **45** याजक और लेवी परमेश्वर
की सेवा में अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी
निभाने लगे और चीज़ों को शुद्ध करके
उन्हें पवित्र ठहराने का काम भी करने
लगे। इसके अलावा, गायकों और पहरे-
दारों ने भी अपना-अपना काम सँभाला,
ठीक जैसे दाविद और उसके बेटे सुलै-
मान ने हिदायतें दी थीं। **46** बहुत
समय पहले दाविद और आसाप के
दिनों में गायकों के लिए संगीत-निर्दे-
शक हुआ करते थे। साथ ही, पर-
मेश्वर की बड़ाई करने और उसका धन्य-
वाद देने के लिए अलग-अलग गीत होते
थे।[1] **47** जरुबाबेल[2] के दिनों में और
नहेमायाह के दिनों में सभी इसराएली
हर दिन गायकों और पहरेदारों की ज़रू-
रत के हिसाब से उन्हें खाने-पीने की
चीज़ें देते थे।[3] वे लेवियों के लिए उनका
हिस्सा अलग रखते थे[4] और लेवी अपने
हिस्से में से हारून के वंशजों का हिस्सा
अलग रखते थे।

13 उस दिन लोगों को मूसा की
किताब से पढ़कर सुनाया गया।[5]
उसमें लिखा हुआ था कि कोई भी
अम्मोनी या मोआबी[6] सच्चे परमेश्वर
की मंडली का हिस्सा नहीं बन सकता।[7]
2 क्योंकि उन्होंने इसराएलियों को न तो
रोटी दी, न ही पानी। उलटा उन्हें शाप
देने के लिए उन्होंने बिलाम को पैसे
देकर बुलाया।[8] लेकिन हमारे परमेश्वर
ने उसके शाप को आशीर्वाद में बदल
दिया।[9] **3** जब लोगों ने कानून की ये
बातें सुनीं, तो वे फौरन अपने बीच से उन
लोगों को अलग करने लगे जो गैर-इस-
राएली* थे।[10]

12:40 *या “मातहत अधिकारियों।”

13:3 *कुछ लोग शायद इसराएली और गैर-इसराएली माँ-बाप से पैदा हुए थे।

अध्य. 12

1 2रा 14:13, नहे 8:16
2 नहे 3:6
3 2इत 33:14, नहे 3:3
4 यिर्म 31:38, जक 14:10
5 नहे 3:1, यूह 5:2
6 एज 6:16, 17
7 यिर्म 31:13
8 एज 3:10, 13
9 2इत 31:11
10 नहे 10:39
11 नहे 10:35-37
12 नहे 10:38, नहे 13:12, 13
13 निर्ग 34:26, गि 15:18, 19, गि 18:21, व्य 26:2

दूसरा कॉल.

1 1इत 25:1, 6
2 एज 3:2, हाग 1:12, लूक 3:23, 27
3 नहे 10:39, नहे 11:23
4 गि 18:21

अध्य. 13

5 व्य 31:11, नहे 8:2, 3, प्रेष 15:21
6 उत 19:36-38
7 व्य 23:3, 6
8 गि 22:4-6
9 गि 23:8, गि 24:10
10 एज 10:10, 11, नहे 9:1, 2

4 उन दिनों, याजक एल्याशीब[1]
हमारे परमेश्वर के भवन* के भंडारों
की देखरेख करता था।[2] वह तोब्याह[3]
का रिश्तेदार था। 5 उसने तोब्याह को
भंडार का एक बड़ा कमरा दे रखा था,
जिसमें पहले अनाज का चढ़ावा, लोबान
और बरतन रखे जाते थे। साथ ही जहाँ
लेवियों, गायकों और पहरेदारों के लिए
अनाज, नयी दाख-मदिरा और तेल का
दसवाँ हिस्सा[4] और याजकों के लिए दान
भी जमा किया जाता था।[5]

6 जब यह सब हुआ तब मैं यरूशलेम
में नहीं था क्योंकि बैबिलोन के राजा अर्त-
क्षत्र के राज[6] के 32वें साल में,[7] मैं
वापस उसके पास चला गया था। थोड़े
समय बाद मैंने राजा से यरूशलेम लौटने
के लिए कुछ दिनों की छुट्टी माँगी।
7 फिर जब मैं यरूशलेम आया तो मैंने
देखा कि एल्याशीब[8] ने सच्चे परमेश्वर के
भवन के आँगन में तोब्याह[9] को भंडार का
एक कमरा दिया हुआ है। एल्याशीब के
इस घिनौने काम पर 8 मुझे बहुत गुस्सा
आया। मैंने कमरे से तोब्याह का सारा
सामान निकालकर बाहर फेंक दिया।
9 इसके बाद मेरी आज्ञा पर भंडार के
कमरों को शुद्ध किया गया और मैंने सच्चे
परमेश्वर के भवन के बरतन, अनाज का
चढ़ावा और लोबान[10] वापस वहाँ रखवा
दिया।[11]

10 मुझे यह भी पता चला कि
लेवियों को उनका हिस्सा[12] नहीं दिया
जा रहा है,[13] इसलिए लेवी और गायक
अपनी सेवा छोड़कर खेतों में काम कर
रहे हैं।[14] 11 मैंने अधिकारियों* को
झिड़का,[15] "सच्चे परमेश्वर के भवन के
लिए ऐसी लापरवाही क्यों दिखायी जा
रही है?"[1] फिर मैंने उन सभी लेवियों को
इकट्ठा किया और उन्हें भवन में दोबारा
अपनी-अपनी सेवा के पद पर ठहराया।
12 तब यहूदा से सभी लोग अनाज, नयी
दाख-मदिरा और तेल का दसवाँ हिस्सा[2]
लाकर भंडारों में जमा करने लगे।[3]
13 मैंने उन भंडारों पर याजक शेलेम्याह,
नकल-नवीस* सादोक और लेवियों में
से पदायाह को अधिकारी ठहराया। और
उनकी मदद के लिए मैंने हानान को ठह-
राया, जो जक्कूर का बेटा और मत्तन्याह
का पोता था। ये सभी बड़े भरोसेमंद थे
और उन्हें अपने भाइयों को उनका हिस्सा
बाँटने की ज़िम्मेदारी दी गयी।

14 हे मेरे परमेश्वर, मेरा यह काम
याद रखना![4] तेरे भवन और उसमें
सेवा* करनेवालों के लिए मैंने अपने
अटल प्यार का जो सबूत दिया है,
उसे मत भूलना।[5]

15 उन दिनों मैंने देखा कि यहूदा में
लोग सब्त के दिन हौद में अंगूर रौंद रहे
हैं,[6] अनाज के गट्ठर गधों पर लाद रहे हैं।
साथ ही, दाख-मदिरा, अंगूर, अंजीर और
तरह-तरह का बोझ ढो-ढोकर यरूशलेम
ला रहे हैं।[7] मैंने उन्हें खबरदार किया कि
वे सब्त के दिन इन चीज़ों को न बेचें।*
16 यरूशलेम में रहनेवाले सोर के लोग
सब्त के दिन मछलियाँ और तरह-तरह
का माल शहर में लाकर यहूदियों को बेच
रहे थे।[8] 17 तब मैंने यहूदा के बड़े-बड़े
लोगों को झिड़का, "ये तुम क्या दुष्टता
कर रहे हो? सब्त के दिन को अपवित्र
कर रहे हो! 18 क्या तुम्हारे पुरखों ने
भी यही गलती नहीं की थी, जिस वजह

अध्य. 13
1 नहे 3:1
2 नहे 10:37, 38
3 नहे 2:10
4 गि 18:24; व्य 18:3, 4
5 नहे 12:44
6 एज 7:1; नहे 2:1
7 नहे 5:14
8 नहे 12:10
9 नहे 4:7
10 लैव 2:14, 15
11 नहे 10:39
12 नहे 10:37; नहे 12:47
13 मला 3:8
14 गि 35:2
15 एज 9:2

दूसरा कॉल.
1 नहे 10:39
2 लैव 27:30; गि 18:21
3 नहे 10:38, 39; मला 3:10
4 नहे 5:19
5 इब्र 6:10
6 निर्ग 20:10; निर्ग 34:21; निर्ग 35:2
7 यिर्म 17:21, 27
8 नहे 10:31

13:4 *या "मंदिर।" **13:11** *या "मातहत अधिकारियों।"

13:13 *या "शास्त्री।" **13:14** *या "उसकी देखरेख।" **13:15** *या शायद, "उस दिन उन्हें खबरदार किया कि वे इन चीज़ों को न बेचें।"

से परमेश्वर हम पर और इस शहर पर
मुसीबतें लाया था? अब तुम भी सब्त को
अपवित्र करके[1] इसराएल पर परमेश्वर
की जलजलाहट लाना चाहते हो?”

19 जैसे ही शहर के फाटकों पर
अँधेरा छाने लगा और सब्त का दिन शुरू
होनेवाला था, मैंने आज्ञा दी कि यरूशलेम
के फाटक बंद कर दिए जाएँ और तब
तक बंद रखे जाएँ, जब तक सब्त खत्म
नहीं हो जाता। मैंने वहाँ अपने कुछ
सेवक भी तैनात किए कि वे सब्त के दिन
किसी भी तरह का माल शहर के अंदर
न आने दें। 20 इसलिए लेन-देन करने-
वालों और तरह-तरह का माल बेचने-
वालों ने एक-दो बार यरूशलेम के बाहर
रात बितायी। 21 मैंने उन्हें खबरदार
किया और कहा, “तुम लोग क्यों पूरी-
पूरी रात शहरपनाह के सामने बैठे रहते
हो? अगर आइंदा तुम सब्त के दिन नज़र
आए, तो मुझे तुम्हारे साथ ज़बरदस्ती
करनी पड़ेगी।” इसके बाद से उन्होंने
सब्त के दिन आना बंद कर दिया।

22 मैंने लेवियों को आज्ञा दी कि वे
नियमित तौर पर खुद को शुद्ध करें और
सब्त के दिन को पवित्र रखने[2] के लिए
शहर के फाटकों पर पहरा दें। हे मेरे पर-
मेश्वर, मेरा यह काम भी तू याद रखना!
और मुझ पर रहम करना क्योंकि तू
अटल प्यार से भरपूर है।[3]

23 उन दिनों मुझे यह भी पता चला
कि कुछ यहूदियों ने अशदोदी,[4] अम्मोनी
और मोआबी[5] औरतों से शादी कर
ली है।*[6] 24 उनके आधे बच्चे अश-
दोदी भाषा और आधे बच्चे दूसरे देशों की
भाषाएँ बोलते थे, मगर उनमें से किसी को
यहूदी भाषा नहीं आती थी। 25 इस-
लिए मैंने उन यहूदियों को झिड़का और
ज़बरदस्त फटकार लगायी। मैंने उनमें से
कुछ को पिटवाया,[1] उनके सिर के बाल
नुचवाए और उनसे कहा, “परमेश्वर के
सामने शपथ खाओ कि तुम उनकी बेटियों
से शादी नहीं करोगे और न ही अपने
बेटे-बेटियों की शादी उनके बेटे-बेटियों
से करवाओगे।[2] 26 क्या इसी वजह
से इसराएल के राजा सुलैमान ने पाप नहीं
किया था? सारे राष्ट्रों में उसके जैसा राजा
कोई नहीं था।[3] परमेश्वर ने सुलैमान को
पूरे इसराएल पर राजा ठहराया क्योंकि
वह उससे प्यार करता था।[4] मगर दूसरे
देशों से आयी सुलैमान की पत्नियों ने उसे
बहका दिया और उससे पाप करवाया।[5]
27 और अब तुम भी दूसरे देशों की
औरतों से शादी करके अपने परमेश्वर
के साथ विश्वासघात कर रहे हो।[6] यह
कितनी घिनौनी बात है!”

28 महायाजक एल्याशीब[7] के बेटे
योयादा[8] के बेटों में से एक ने होरोन के
रहनेवाले सनबल्लत[9] की बेटी से शादी
कर ली थी इसलिए मैंने उसे अपने पास से
खदेड़ दिया।

29 हे मेरे परमेश्वर, तू उन लोगों
को मत भूलना क्योंकि उन्होंने याजकपद
दूषित किया है और याजकों और लेवियों
के साथ अपना करार तोड़ा है।[10]

30 इसके बाद मैंने उन्हें पराए लोगों
के हर बुरे असर से छुड़ाकर शुद्ध किया।
और सभी याजकों और लेवियों को उनके
अपने-अपने काम पर वापस ठहराया।[11]
31 मैंने यह इंतज़ाम भी किया कि पर-
मेश्वर के भवन में कब-कब लकड़ियाँ
लायी जाएँ[12] और फसल की पहली उपज
अर्पित की जाए।

हे मेरे परमेश्वर, मुझे याद रखना और
मुझ पर कृपा करना।*[13]

13:23 * या “को अपने घर ले आए।”

13:31 * या “और मेरा भला करना।”

अध्य. 13
1 निर्ग 20:8-10
2 व्य 5:12
3 नहे 5:19; नहे 13:14; नहे 13:30, 31
4 यह 13:2, 3
5 व्य 23:3, 4
6 एज 9:1, 2; एज 10:10; 2कुर 6:14

दूसरा कॉल.
1 व्य 25:2; एज 7:26
2 व्य 7:3, 4; नहे 10:30
3 1रा 3:12, 13; 2इत 9:22
4 2शम 12:24
5 1रा 11:1-5
6 एज 10:2
7 नहे 3:1; नहे 13:4
8 नहे 12:10
9 नहे 2:10; नहे 6:14
10 निर्ग 40:15; गि 25:11-13; मला 2:4
11 1इत 23:6; 1इत 25:1
12 नहे 10:34
13 नहे 5:19

एस्तेर

सारांश

1 शूशन में राजा अहश-वेरोश की दावत (1-9)
रानी वशती ने आने से इनकार किया (10-12)
राजा ने अपने ज्ञानियों से सलाह की (13-20)
राजा ने फरमान निकाला (21, 22)

2 नयी रानी की खोज (1-14)
एस्तेर, रानी बनी (15-20)
मोर्दकै ने साज़िश का परदाफाश किया (21-23)

3 राजा, हामान को ऊँचा उठाता है (1-4)
यहूदियों को मिटाने की हामान की साज़िश (5-15)

4 मोर्दकै मातम मनाता है (1-5)
वह एस्तेर से मदद माँगता है (6-17)

5 एस्तेर, राजा के सामने गयी (1-8)
हामान का गुस्सा और घमंड (9-14)

6 राजा, मोर्दकै को इज़्ज़त देता है (1-14)

7 एस्तेर ने हामान का परदाफाश किया (1-6क)
हामान को उसी काठ पर लटका दिया गया (6ख-10)

8 मोर्दकै को ऊँचा पद दिया गया (1, 2)
राजा से एस्तेर की बिनती (3-6)
राजा का दूसरा फरमान (7-14)
यहूदियों को मिली राहत और खुशी (15-17)

9 यहूदियों की जीत (1-19)
पूरीम के त्योहार की शुरूआत (20-32)

10 मोर्दकै को ऊँचा उठाना (1-3)

1 यह उन दिनों की बात है जब राजा
अहश-वेरोश* हिन्दुस्तान से लेकर
इथियोपिया# तक, 127 ज़िलों पर
राज कर रहा था।[1] **2** उस वक्त वह
शूशन*[2] नाम के किले# से राज कर
रहा था। **3** अपने राज के तीसरे साल
में उसने अपने सभी हाकिमों और सेवकों
के लिए एक शाही दावत रखी। फारस[3]
और मादै[4] के सेनापति, बड़े-बड़े अधि-
कारी और सभी ज़िलों के राज्यपाल उसके
सामने आए। **4** राजा उन्हें 180 दिन
तक अपने राज्य की सारी दौलत, ताकत
और शानो-शौकत दिखाता रहा। **5** इन
दिनों के पूरे होने पर, शूशन* नाम
के किले# में छोटे-बड़े जितने भी लोग
हाज़िर थे, उन सबके लिए राजा ने एक
दावत रखी△ जो सात दिन तक चली।
यह दावत राजा के महल के आँगन में
रखी गयी। **6** पूरा आँगन मलमल के
कपड़े, बढ़िया सूत और नीले रंग के परदों
से सजा था। परदों पर सूती फीते लगे थे
और इन फीतों को बैंजनी रंग की ऊनी
रस्सी में पिरोया गया था। यह रस्सी संग-
मरमर के खंभों पर जड़े चाँदी के छल्लों
से बँधी थी। फर्श नीललोहित पत्थरों,
सफेद और काले संगमरमर और मोतियों
से जड़ा था और उस पर सोने-चाँदी के
दीवान रखे थे।

अध्य. 1
1 एस 8:9; दान 6:1
2 एज 4:9; नहे 1:1; दान 8:2
3 एज 1:2
4 यश 21:2; यिर्म 51:11; दान 5:28

1:1 *माना जाता है कि यह क्षयर्ष प्रथम था, जो दारा महान (या दारा हिस्तासपिस) का बेटा था। #या "कूश।" **1:2, 5** *या "सूसा।" **1:2, 5** #या "महल।"

1:5 △आय. 3 और 5 में शायद एक ही दावत की बात की जा रही है।

7 मेहमानों को सोने के प्यालों में दाख-मदिरा पेश की गयी, हर प्याला अपने आप में अनोखा था। दाख-मदिरा पानी की तरह बह रही थी, इतनी दाख-मदिरा सिर्फ राजा ही दे सकता था। 8 दस्तूर के मुताबिक शराब पी जा रही थी लेकिन कोई किसी को पीने के लिए मजबूर नहीं कर रहा था,* क्योंकि राजा ने महल के अधिकारियों को हुक्म दिया था कि हर मेहमान को यह छूट दी जाए कि वह अपने हिसाब से पीए।

9 रानी वशती[1] ने भी राजा अहश-वेरोश के शाही भवन* में औरतों के लिए एक दावत रखी थी।

10 सातवें दिन जब राजा दाख-मदिरा पीकर बहुत खुश था, तो उसने अपने सात दरबारियों को यानी महूमान, बिजता, हरबोना,[2] बिगता, अबगता, जेतेर और करकस को एक हुक्म दिया। ये दर-बारी राजा की सेवा के लिए हर वक्त उसके सामने हाज़िर रहते थे। 11 राजा ने उन्हें यह कहकर रानी वशती के पास भेजा कि रानी अपनी शाही ओढ़नी पहनकर राजा के सामने आए ताकि सब लोग और हाकिम उसकी खूबसूरती निहार सकें। रानी सचमुच बहुत खूबसूरत थी। 12 लेकिन वह राजा के सामने आने से इनकार करती रही और उसने राजा का हुक्म नहीं माना जो दरबारी लाए थे। इस पर राजा को बहुत गुस्सा आया और उसका खून खौल उठा।

13 राजा ने अपने बड़े-बड़े ज्ञानियों से सलाह-मशविरा किया, जो बीते समय में हुई इस तरह की घटनाओं की अच्छी समझ रखते थे। (इस तरह राजा अपने मसले उन लोगों के सामने रखता था जो कानून और मुकदमों के अच्छे जानकार थे। 14 इनमें से राजा के सबसे करीबी सलाहकार थे करशना, शेतार, अदमाता, तरशीश, मेरेस, मर्सना और ममूकान। फारस और मादै के ये सात हाकिम[1] सबसे ऊँचे ओहदे पर थे और हर वक्त राजा के सामने हाज़िर रहते थे)। 15 राजा ने उनसे कहा, "रानी वशती ने राजा अहश-वेरोश का हुक्म नहीं माना जो उसके दरबारी उसके पास ले गए थे। अब बताओ, कानून के मुताबिक उसके साथ क्या किया जाए?"

16 तब ममूकान ने राजा और हाकिमों के सामने कहा, "रानी वशती ने सिर्फ राजा अहश-वेरोश के खिलाफ अप-राध नहीं किया[2] बल्कि सभी ज़िलों के हाकिमों और लोगों के खिलाफ अप-राध किया है। 17 क्योंकि कल जब यह बात सब औरतों में फैलेगी तो वे भी अपने-अपने पति को तुच्छ समझेंगी और कहेंगी, 'रानी वशती ने भी तो राजा अहश-वेरोश का हुक्म नहीं माना था और उसके सामने हाज़िर नहीं हुई थी।' 18 जब फारस और मादै के हाकिमों की पत्नियों को पता चलेगा कि रानी ने क्या किया है, तो वे भी अपने पतियों से वैसे ही बात करेंगी। और इस तरह वे अपने पतियों को नीचा दिखाएँगी और पतियों का क्रोध उन पर भड़क उठेगा। 19 इसलिए अगर हुज़ूर को यह मंज़ूर हो तो वह एक शाही फरमान निकाले कि रानी वशती फिर कभी राजा अहश-वेरोश के सामने न आए। और यह बात फारस और मादै के कानून में लिखी जाए ताकि उसे रद्द न किया जा सके।[3] और वशती की जगह राजा एक नयी रानी

1:8 *या "कोई रोक-टोक नहीं थी।" **1:9** *या "महल।"

अध्य. 1
1 एस 1:12; एस 2:1, 17
2 एस 7:9

दूसरा कॉल.
1 एज 7:14
2 एस 1:12
3 एस 8:8; दान 6:8

चुन ले जो वशती से कहीं अच्छी हो। 20 जब राजा का फरमान पूरे राज्य में सुनाया जाएगा, तो सभी औरतें अपने-अपने पति की इज़्ज़त करेंगी, फिर चाहे उनके पति किसी भी ओहदे पर क्यों न हों।”

21 ममूकान की यह सलाह राजा और उसके हाकिमों को पसंद आयी और राजा ने वैसा ही किया। 22 उसने अपने सभी ज़िलों में उनकी भाषा और लिपि में खत भिजवाए।[1] उसमें लिखा था कि हर आदमी जो अपने-अपने घर का मुखिया है, वह अपने परिवार पर अधिकार जताए और उसके घर में वही भाषा बोली जाए जो उसके अपने लोगों की भाषा है।

2 इस सबके बाद राजा अहश-वेरोश[2] का गुस्सा ठंडा हो गया। उसने याद किया कि वशती ने क्या किया था[3] और इसके लिए उसे क्या सज़ा सुनायी गयी थी।[4] 2 तब राजा के खास सेवकों ने उससे कहा, “राजा के लिए सुंदर, कुँवारी लड़कियाँ ढूँढ़ी जाएँ। 3 राजा इस काम के लिए अपने सभी ज़िलों में अधिकारी ठहराए।[5] वे खूबसूरत कुँवारी लड़कियों को इकट्ठा करें और उन्हें शूशन* नाम के किले# में औरतों के भवन△ में लाएँ। उन्हें राजा के खोजे और औरतों के रखवाले हेगे[6] की देखरेख में रखा जाए और खुशबूदार तेल से उनका रंग-रूप निखारा जाए।⊠ 4 उनमें से जो लड़की राजा के मन को भा जाए, उसे वशती की जगह रानी बनाया जाए।”[7] राजा को यह सुझाव पसंद आया और उसने ऐसा ही किया।

5 उन दिनों शूशन*[1] नाम के किले# में मोर्दकै[2] नाम का एक यहूदी आदमी था। वह याईर का बेटा था, याईर शिमी का और शिमी कीश का बेटा था जो बिन्यामीन गोत्र[3] से था 6 और जिसे* बैबिलोन का राजा नबूकदनेस्सर, यहूदा के राजा यकोन्याह#[4] के साथ यरूशलेम से बंदी बनाकर लाया था। 7 मोर्दकै ने अपनी चचेरी बहन हदस्सा* यानी एस्तेर की परवरिश की थी[5] क्योंकि वह अनाथ थी। उसके माता-पिता की मौत के बाद मोर्दकै ने उसे अपनी बेटी की तरह पाल-पोसकर बड़ा किया था। वह बहुत खूबसूरत थी और उसका रंग-रूप देखते ही बनता था। 8 जब राजा के हुक्म और उसके कानून का ऐलान किया गया और कई जवान लड़कियों को शूशन* नाम के किले# में इकट्ठा किया गया, तो एस्तेर भी वहाँ लायी गयी। और बाकी लड़कियों के साथ उसे शाही भवन# में औरतों के रखवाले हेगे की निगरानी में रखा गया।[6]

9 हेगे को एस्तेर इतनी अच्छी लगी कि उसने एस्तेर पर मेहरबानी* की। उसने फौरन हुक्म दिया कि एस्तेर की खूबसूरती निखारने# का इंतज़ाम किया जाए[7] और उसके खाने-पीने का खास ध्यान रखा जाए। उसने शाही भवन से सात सेविकाओं को एस्तेर की सेवा के लिए ठहराया। इतना ही नहीं, उसने एस्तेर और उसकी सेविकाओं को औरतों के भवन△ में सबसे बढ़िया जगह दी। 10 एस्तेर ने अपने लोगों या अपने

2:3, 5, 8 *या “सूसा।” **2:3, 5, 8** #या “महल।” **2:3, 9** △या “जनानखाने।” **2:3** ⊠या “उनकी मालिश की जाए।”

2:6 *यह या तो कीश हो सकता है या मोर्दकै। #2रा 24:8 में इसे यहोयाकीन कहा गया है। **2:7** *मतलब “मेंहदी।” **2:9** *या “अटल प्यार।” #या “की मालिश करने।”

अध्य. 1
1 एस 3:12, 14

अध्य. 2
2 एस 1:1
3 एस 1:12
4 एस 1:19
5 एस 8:9
6 एस 2:15
7 एस 1:19

दूसरा कॉल.
1 एज 4:9, नहे 1:1, एस 1:2, दान 8:2
2 एस 3:2, एस 10:3
3 उत 49:27, 1शम 9:21
4 2रा 24:14, 15, 1इत 3:16, 2इत 36:9, 10, यिर्म 22:28, यिर्म 24:1, यिर्म 37:1, यिर्म 52:31, मत 1:11
5 एस 2:15
6 एस 2:3
7 एस 2:12

रिश्तेदारों के बारे में किसी को नहीं
बताया[1] क्योंकि मोर्दकै[2] ने उससे कहा
था कि वह किसी से कुछ न कहे।[3]
11 मोर्दकै हर दिन औरतों के भवन*
के आँगन के आस-पास घूमता था ताकि
एस्तेर का हाल-चाल जान सके और यह
भी कि उसके साथ क्या हो रहा है।

12 सभी लड़कियों को बारी-बारी
राजा अहश-वेरोश के सामने जाना था।
मगर इससे पहले 12 महीने तक उनका
रंग-रूप निखारा गया।* छः महीने गंध-
रस के तेल से[4] और अगले छः महीने
बलसाँ के तेल से[5] और तरह-तरह
की चीज़ों से उनकी मालिश की गयी।
13 और जब किसी लड़की की बारी
आती कि वह औरतों के भवन* से शाही
भवन में राजा के सामने हाज़िर हो, तब
वह जो कुछ माँगती, उसे दिया जाता।
14 वह शाम को भवन में जाती थी और
सुबह उसे औरतों के दूसरे भवन* में भेज
दिया जाता। इस भवन की देखरेख राजा
का खोजा शाशगज करता था,[6] जो राजा
की उप-पत्नियों का रखवाला भी था।
भवन से लौटने के बाद वह लड़की दोबारा
राजा के सामने तब तक नहीं जा सकती
थी, जब तक कि राजा खुश होकर खुद
उसे नहीं बुलाता था।[7]

15 अब अबीहैल की बेटी और मोर्दकै
की चचेरी बहन एस्तेर की बारी आयी,
जिसे मोर्दकै ने अपनी बेटी की तरह
पाला था।[8] राजा के सामने जाने के
लिए लड़कियों के रखवाले, खोजे हेगे
ने एस्तेर को जो कुछ दिया, उससे
ज़्यादा एस्तेर ने कुछ नहीं माँगा। (जिस-
जिस ने एस्तेर को देखा, उन सबको वह
भा गयी।) **16** राजा अहश-वेरोश के
राज के सातवें साल में[1] तेबेत* नाम के
दसवें महीने में, एस्तेर को राजा के
सामने उसके शाही भवन में लाया गया।
17 राजा को एस्तेर भा गयी। वह उससे
बहुत खुश हुआ और बाकी सभी कुँवा-
रियों से ज़्यादा एस्तेर को चाहने* लगा।
उसने एस्तेर को शाही ओढ़नी पह-
नाकर वशती की जगह अपनी रानी बना
लिया।[2] **18** राजा ने एस्तेर की शान में
एक बड़ी दावत रखी और अपने सभी
हाकिमों और सेवकों को बुलाया। इस
मौके पर उसने ऐलान किया कि सभी
ज़िलों के कैदियों को रिहा किया जाए।*
इसके अलावा, वह अपनी शाही ठाट-
बाट के मुताबिक तोहफे देता रहा।

19 जब सभी कुँवारियों[3] को दूसरी
बार इकट्ठा किया गया, तब मोर्दकै राजा
के महल के फाटक पर बैठा हुआ था।
20 एस्तेर ने अपने रिश्तेदारों और अपने
लोगों के बारे में किसी को कुछ नहीं
बताया,[4] ठीक जैसा मोर्दकै ने उससे कहा
था। वह उसी तरह मोर्दकै की बात मानती
रही, जिस तरह वह उसकी देखरेख में
रहकर मानती थी।[5]

21 उन दिनों जब मोर्दकै राजा के
महल के फाटक पर बैठा करता था,*
तब राजा अहश-वेरोश के दरबारियों में
से दो पहरेदार, बिगतान और तेरेश
गुस्से से भड़क उठे और उन्होंने राजा
को जान से मारने# की साज़िश रची।
22 लेकिन मोर्दकै को उनकी साज़िश का
पता चल गया और उसने फौरन रानी

2:11, 13 *या "जनानखाने।" **2:12** *या "उनकी मालिश की गयी।" **2:14** *या "दूसरे जनानखाने।"

2:16 *अति. ख15 देखें। **2:17** *या "से अटल प्यार करने।" **2:18** *या "ज़िलों का महसूल माफ किया जाए।" इन शब्दों का ठीक-ठीक मतलब नहीं पता। **2:21** *या "महल में दरबारी था।" #शा., "राजा पर हाथ चलाने।"

अध्य. 2
1 एस 3:8
2 एस 2:7
3 एस 4:12-14
4 नीत 7:17, श्रेष 3:6
5 उत 43:11, 1रा 10:2, 2रा 20:13
6 एस 2:3
7 एस 4:11
8 एस 2:7

दूसरा कॉल.
1 एस 1:3
2 एस 1:19, एस 4:14
3 एस 2:3, 4
4 एस 2:5, 6, एस 3:8
5 एस 2:7, 10

एस्तेर को इसकी खबर दी। तब एस्तेर ने मोर्दकै की तरफ से* राजा को सबकुछ बता दिया। 23 मामले की जाँच की गयी और खबर पक्की निकली। बिगतान और तेरेश को काठ पर लटका दिया गया। ये सारी बातें उस ज़माने के इतिहास की किताब में राजा के सामने लिखी गयीं।[1]

3 कुछ समय बाद, राजा अहश-वेरोश ने अगागी[2] हम्मदाता के बेटे हामान को उसके साथी हाकिमों से ऊँचा पद दिया।[3] 2 महल के फाटक पर राजा के जितने भी सेवक थे, वे हामान के आगे झुकते थे और गिरकर उसे प्रणाम करते थे क्योंकि राजा का यही हुक्म था। लेकिन मोर्दकै ने हामान के आगे झुकने या गिरकर उसे प्रणाम करने से साफ इनकार कर दिया। 3 फाटक पर बैठनेवाले राजा के सेवकों ने मोर्दकै से पूछा, "तू राजा का हुक्म क्यों नहीं मानता?" 4 वे हर दिन उससे यही कहते रहे लेकिन मोर्दकै ने उनकी नहीं मानी। तब उन्होंने इस बारे में हामान को बताया। वे देखना चाहते थे कि मोर्दकै के इस व्यवहार को बरदाश्त किया जाएगा या नहीं[4] क्योंकि मोर्दकै ने उन्हें बताया था कि वह एक यहूदी है।[5]

5 जब हामान ने देखा कि मोर्दकै उसके आगे झुकने और गिरकर उसे प्रणाम करने से इनकार कर रहा है, तो वह गुस्से से भर गया।[6] 6 मगर उसे सिर्फ मोर्दकै को मारकर* चैन नहीं मिलता, क्योंकि उसे मोर्दकै के लोगों यानी यहूदियों के बारे में भी बताया गया था। इसलिए हामान कोई ऐसा रास्ता ढूँढ़ने लगा जिससे वह अहश-वेरोश के राज्य के सब इलाकों से यहूदियों को मिटा दे।

7 राजा अहश-वेरोश के राज के 12वें साल के नीसान* नाम के पहले महीने में,[1] हामान के आगे पूर (यानी चिट्ठी) डाली गयी[2] ताकि यह पता किया जा सके कि किस महीने और किस दिन उनका नाश किया जाए। चिट्ठी अदार* नाम के 12वें महीने की निकली।[3] 8 फिर हामान ने राजा अहश-वेरोश के पास जाकर कहा, "हुज़ूर के राज्य के सभी ज़िलों में[4] एक ऐसी जाति के लोग फैले हुए हैं,[5] जिनके कायदे-कानून बाकी लोगों से बिलकुल अलग हैं और जो राजा का कानून भी नहीं मानते। अगर उनका कुछ न किया गया तो राजा को भारी नुकसान हो सकता है। 9 राजा को अगर यह मंज़ूर हो तो उन्हें खत्म करने के लिए एक फरमान निकाला जाए। इसके लिए मैं अधिकारियों को 10,000 तोड़े* चाँदी दूँगा कि वे इन्हें शाही खज़ाने में जमा करें।"#

10 यह बात सुनकर राजा ने अपनी मुहरवाली अँगूठी उतारकर[6] अगागी[7] हम्मदाता के बेटे और यहूदियों के दुश्मन, हामान को दे दी।[8] 11 राजा ने उससे कहा, "मैं उन लोगों को तेरे हवाले करता हूँ और उनकी चाँदी भी तुझे देता हूँ। तुझे जैसा ठीक लगे उनके साथ वैसा कर।" 12 तब पहले महीने के 13वें दिन राजा के शास्त्रियों*[9] को बुलाया गया। उन्होंने राजा के सूबेदारों, अलग-अलग ज़िलों के

2:22 *शा., "के नाम से।" **3:6** *शा., "पर हाथ चलाकर।"

3:7 *अति. ख15 देखें। **3:9** *एक तोड़ा 34.2 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें। #या शायद, "यह काम करनेवालों के लिए मैं शाही खज़ाने में 10,000 तोड़े जमा करवाऊँगा।" **3:12** *या "सचिवों।"

अध्य. 2
1 एस 6:1, 2

अध्य. 3
2 निर्ग 17:16; गि 24:7; व्य 25:19; 1शम 15:8, 32
3 एस 1:14; एस 3:10; एस 8:7; एस 9:24
4 दान 6:13
5 एस 2:5
6 एस 5:9

दूसरा कॉल.
1 एस 1:3; एस 2:16
2 एस 9:24
3 एस 9:1
4 एस 1:1
5 व्य 4:27; नहे 1:8; यिर्म 50:17
6 उत 41:42
7 गि 24:7; 1शम 15:8, 32
8 एस 3:1; एस 8:2
9 एस 8:9

राज्यपालों और सभी लोगों के हाकिमों के
लिए हामान के सारे आदेश लिखे।[1] इसे
हर ज़िले में रहनेवाले लोगों की भाषा और
लिपि में लिखा गया। इसे राजा अहश-
वेरोश के नाम से जारी किया गया और
इस पर राजा की अँगूठी से मुहर लगायी
गयी।[2]

13 यह फरमान राजा के दूतों के हाथ
सभी ज़िलों में भेजा गया। उसमें हुक्म
दिया गया था कि 12वें महीने यानी
अदार महीने के 13वें दिन, सभी यहू-
दियों को जान से मार डाला जाए।[3] उनके
जितने भी जवान, बूढ़े, बच्चे, औरतें हैं,
सबका नाश किया जाए, उनका वजूद
मिटा दिया जाए और उनका सबकुछ लूट
लिया जाए।[4] 14 फरमान में लिखी इन
बातों को हर ज़िले में कानून समझकर
लागू किया जाना था। और लोगों में
इसका ऐलान किया जाना था ताकि वे
इस दिन के लिए तैयार हो जाएँ।
15 राजा के हुक्म पर उसके दूत तुरंत
इस कानून को अलग-अलग ज़िलों में ले
गए[5] और शूशन*[6] नाम के किले# में
रहनेवालों के लिए भी यही कानून जारी
हुआ। इससे शूशन* शहर में हाहाकार
मच गया, मगर राजा और हामान बैठकर
दाख-मदिरा पी रहे थे।

4 जैसे ही मोर्दकै[7] को इन बातों का
पता चला,[8] उसने मारे दुख के
अपने कपड़े फाड़े और टाट ओढ़कर खुद
पर राख डाली। वह शहर के बीचों-
बीच गया और फूट-फूटकर रोने लगा।
2 इसी हाल में वह राजा के महल के
फाटक पर आया। मगर वह फाटक के
अंदर नहीं गया क्योंकि किसी को भी टाट
ओढ़कर अंदर जाने की इजाज़त नहीं थी।
3 जिस-जिस ज़िले[1] में राजा का हुक्म
और फरमान सुनाया गया, वहाँ यहूदियों
में बड़ा मातम छा गया। वे रो-रोकर और
छाती पीट-पीटकर दुख मनाने लगे और
उपवास करने लगे।[2] कई यहूदी ज़मीन
पर टाट बिछाकर और राख डालकर उस
पर लेट गए।[3] 4 जब एस्तेर की सेवि-
काओं और खोजों ने आकर उसे खबर दी
तो रानी बेचैन हो उठी। उसने मोर्दकै के
लिए कपड़े भिजवाए ताकि वह टाट
उतारकर उन्हें पहन ले। मगर मोर्दकै ने
उन्हें लेने से इनकार कर दिया। 5 तब
एस्तेर ने राजा के खोजों में से हताक को
बुलाया, जिसे राजा ने एस्तेर की सेवा के
लिए ठहराया था। एस्तेर ने हताक को
हुक्म दिया कि वह जाकर मोर्दकै से पूछे
कि ऐसा क्या हुआ है जो वह टाट ओढ़े
बैठा है।

6 तब हताक राजा के महल के
फाटक से निकलकर सामने शहर के
चौक में मोर्दकै के पास गया। 7 मोर्दकै
ने हताक को बताया कि उस पर क्या
आफत टूट पड़ी है और हामान ने यहू-
दियों का सफाया करने के लिए शाही
खज़ाने में कितनी रकम देने[4] का वादा
किया है।[5] 8 उसने हताक को उस फर-
मान की नकल भी दी जो यहूदियों के
विनाश के लिए शूशन* में जारी किया
गया था।[6] हताक को यह फरमान एस्तेर
को दिखाकर उसे सारी बातें समझानी
थीं। मोर्दकै ने यह हिदायत भी दी[7] कि
एस्तेर सीधे राजा के सामने जाए और
अपने लोगों की खातिर उससे रहम की
भीख माँगे।

9 हताक ने लौटकर एस्तेर को वह
सारी बातें बतायीं जो मोर्दकै ने उससे

अध्य. 3
1 दान 6:8
2 एस 8:8; दान 6:17
3 एस 9:1
4 एस 8:11, 12
5 एस 8:14
6 एज 4:9; नहे 1:1; दान 8:2

अध्य. 4
7 एस 2:5
8 एस 3:8-11

दूसरा कॉल.
1 एस 1:1
2 2इत 20:3; एज 8:21
3 दान 9:3
4 एस 3:9
5 एस 3:8, 13
6 एस 3:14, 15
7 एस 2:20

3:15; 4:8 *या “सूसा।” 3:15 #या “महल।”

कही थीं। **10** एस्तेर ने उसे वापस
मोर्दकै[1] के पास भेजा और यह बोलने के
लिए कहा, **11** "राजा के सभी सेवक
और उसके ज़िले के लोग इस कानून
को अच्छी तरह जानते हैं कि अगर कोई
बिन बुलाए राजा से मिलने उसके भवन
के अंदरवाले आँगन में जाता है,[2] तो
उसकी एक ही सज़ा है, मौत! वह सिर्फ
तभी बच सकता है जब राजा उसकी
तरफ सोने का राजदंड बढ़ाए।[3] और मुझे
तो 30 दिन से राजा के पास नहीं बुलाया
गया है।"

12 जब एस्तेर का पैगाम मोर्दकै को
दिया गया, **13** तो उसने एस्तेर को
जवाब दिया, "यह मत सोच कि तू राजा
के घराने से है इसलिए तू बच जाएगी
और बाकी यहूदियों के साथ नहीं मारी
जाएगी। **14** अगर इस वक्त तू चुप
रही तो यहूदियों को कहीं-न-कहीं से
मदद और छुटकारा मिल जाएगा,[4] मगर
तू और तेरे पिता का घराना नाश हो
जाएगा। और क्या पता, तुझे इसी दिन के
लिए रानी बनाया गया हो?"[5]

15 तब एस्तेर ने मोर्दकै को यह संदेश
भेजा: **16** "जा और जाकर शूशन* में
जितने भी यहूदी हैं उन सबको इकट्ठा कर
और मेरे लिए उपवास कर।[6] तीन दिन
और तीन रात कोई कुछ न खाए-पीए।[7]
मैं भी अपनी सेविकाओं के साथ उप-
वास करूँगी। और बिन बुलाए राजा के
सामने जाऊँगी, जो कानून के खिलाफ है।
और अगर मैं मारी गयी, तो यही सही।"
17 तब मोर्दकै ने जाकर वैसा ही किया
जैसा एस्तेर ने कहा था।

5 तीसरे दिन[8] एस्तेर ने अपने शाही
कपड़े पहने और वह अंदरवाले
आँगन में आकर राजा के भवन के ठीक
सामने खड़ी हो गयी। उस वक्त राजा
अपने भवन* में राजगद्दी पर बैठा था,
जहाँ से वह भवन का द्वार साफ देख
सकता था। **2** अब राजा की नज़र रानी
एस्तेर पर पड़ी जो बाहर आँगन में खड़ी
थी। उसे देखते ही वह खुश हो गया और
उसके हाथ में जो सोने का राजदंड था
उसने एस्तेर की तरफ बढ़ा दिया।[1] तब
एस्तेर राजा के पास आयी और उसने
राजदंड के सिरे को छुआ।

3 राजा ने कहा, "क्या बात है रानी
एस्तेर? तुझे क्या चाहिए? अगर तू आधा
राज्य भी माँगे, तो वह भी तुझे दे दिया
जाएगा।" **4** एस्तेर ने कहा, "अगर
राजा को यह मंज़ूर हो, तो वह आज
मेरे यहाँ आए क्योंकि मैंने खास राजा के
लिए एक दावत रखी है। और वह अपने
साथ हामान को भी लाए।"[2] **5** राजा
ने अपने आदमियों से कहा, "जैसा रानी
एस्तेर चाहती है वैसा ही हो। जाओ,
हामान को फौरन बुला लाओ।" फिर
राजा और हामान, एस्तेर की दावत में
गए।

6 दाख-मदिरा की दावत के दौरान
राजा ने एस्तेर से कहा, "बता तेरी क्या
बिनती है? माँग तुझे क्या चाहिए? अगर
तू आधा राज्य भी माँगे, तो वह भी तुझे
दे दिया जाएगा।"[3] **7** एस्तेर ने कहा,
"राजा से मेरी बस यही बिनती है, यही
फरियाद है **8** कि अगर वह मुझसे खुश
है और सचमुच मेरी बिनती पूरी करना
चाहता है, तो कल वह हामान के साथ
एक और दावत में आए जो मैंने उनके
लिए रखी है। कल मैं राजा को बताऊँगी
कि मैं क्या चाहती हूँ।"

9 उस दिन दावत से लौटते वक्त
हामान बहुत खुश था, वह फूला नहीं

अध्य. 4
1 एस 2:5, 7
2 एस 5:1
3 एस 5:2; एस 8:4
4 1शम 12:22; यश 54:17
5 एस 2:17
6 2इत 20:3; एज 8:21
7 एस 5:1

अध्य. 5
8 एस 4:16

दूसरा कॉल.
1 एस 4:11; एस 8:4
2 एस 3:1, 10
3 एस 7:2

4:16 * या "सूसा।"

5:1 * या "महल।"

समा रहा था। मगर जैसे ही उसने महल के फाटक पर मोर्दकै को देखा, वह गुस्से से भर गया। क्योंकि मोर्दकै न तो उसके सामने खड़ा हुआ, न ही उसे देखकर डरा।[1] **10** हामान खून का घूँट पीकर रह गया और अपने घर लौट गया। उसने अपनी पत्नी जेरेश और अपने दोस्तों को बुलवाया।[2] **11** वह अपनी बेशुमार दौलत की शेखी बघारने लगा और डींगें मारने लगा कि उसके कितने सारे बेटे हैं[3] और कैसे राजा ने उसे ऊँचे पद पर ठहराकर बाकी हाकिमों और सेवकों से ज़्यादा सम्मान दिया है।[4]

12 हामान ने यह भी कहा, "जानते हो, रानी एस्तेर ने अपनी दावत में राजा के अलावा और किसे बुलाया था? मुझे![5] और कल रानी ने मुझे राजा के साथ एक और दावत पर बुलाया है।[6] **13** लेकिन जब तक वह यहूदी मोर्दकै महल के फाटक पर बैठा रहेगा, तब तक ये खुशियाँ मेरे लिए कोई मायने नहीं रखतीं।" **14** तब उसकी पत्नी जेरेश और उसके दोस्तों ने कहा, "एक काम कर, तू 50 हाथ* ऊँचा एक काठ खड़ा करवा। और सुबह राजा के पास जाकर उससे कह कि मोर्दकै को काठ पर लटका दिया जाए।[7] फिर खुशी-खुशी राजा के साथ दावत पर चला जा।" हामान को यह सलाह पसंद आयी और उसने एक काठ खड़ा करवाया।

6 उस रात राजा को नींद नहीं आ रही थी।* इसलिए उसने हुक्म दिया कि शाही किताब लायी जाए जिसमें बीते दिनों की घटनाएँ दर्ज़ हैं[8] और उसे पढ़कर सुनायी जाए। **2** उसमें लिखा था कि किस तरह मोर्दकै ने राजा अहश-वेरोश के दरबारियों में से दो पहरेदारों, बिग-ताना और तेरेश का परदाफाश किया था, जो राजा को जान से मारने* की साज़िश कर रहे थे।[1] **3** यह सुनकर राजा ने पूछा, "इसके लिए मोर्दकै को क्या इनाम दिया गया, क्या इज़्ज़त बख्शी गयी?" राजा के खास सेवकों ने कहा, "मोर्दकै के लिए कुछ नहीं किया गया।"

4 इसी दौरान हामान राजा के भवन* के बाहरवाले आँगन में आया।[2] वह यह गुज़ारिश लेकर आया था कि राजा, मोर्दकै को उस काठ पर लटका दे जो हामान ने मोर्दकै के लिए तैयार किया है।[3] राजा ने पूछा, "बाहर कौन है?" **5** राजा के सेवक ने कहा, "बाहर आँगन में हामान[4] खड़ा है।" राजा ने कहा, "उसे अंदर भेज दो।"

6 जब हामान अंदर आया तो राजा ने उससे पूछा, "अगर राजा किसी को इज़्ज़त देना चाहे, तो उस आदमी के लिए क्या किया जाना चाहिए?" हामान ने मन-ही-मन सोचा, "राजा मेरे अलावा और किसे इज़्ज़त देना चाहेगा?"[5] **7** उसने राजा से कहा, "जिस आदमी को राजा इज़्ज़त देना चाहता है **8** उसके लिए राजा की शाही पोशाक लायी जाए[6] और वह घोड़ा भी मँगवाया जाए, जिसका सिर शाही ठाट-बाट से सजा हो और जिस पर खुद राजा सवारी करता है। **9** फिर वह पोशाक और घोड़ा राजा के सबसे बड़े हाकिम को सौंपा जाए। और सेवक उस आदमी को यह पोशाक पहनाएँ और उसे राजा के घोड़े पर बिठाकर

5:14 *करीब 22.3 मी. (73 फुट)। अति. ख14 देखें। **6:1** *शा., "राजा की नींद उड़ गयी।"

6:2 *शा., "राजा पर हाथ चलाने।" **6:4** *या "महल।"

अध्या. 5
1 एस 3:2-5
2 एस 5:14, एस 6:13
3 एस 9:7-10
4 एस 3:1
5 एस 5:5
6 एस 5:8
7 एस 6:4, एस 7:9

अध्या. 6
8 एस 10:2

दूसरा कॉल.
1 एस 2:21, 23
2 एस 4:11
3 एस 5:14
4 एस 3:1
5 एस 3:2, एस 5:11
6 एस 8:15

शहर के चौक में घुमाएँ और उसके
आगे-आगे यह ऐलान करवाएँ, ‘जिस
आदमी को राजा इज़्ज़त देना चाहता है,
उसकी शान में यही किया जाता है!’”[1]
10 हामान की बात सुनकर राजा ने
कहा, “फौरन वह पोशाक और घोड़ा ले
और महल के फाटक पर बैठे उस यहूदी
मोर्दकै के साथ ऐसा ही कर। जो कुछ तूने
कहा है, उसकी एक-एक बात पूरी की
जाए।”

11 हामान ने शाही पोशाक और घोड़ा
लिया। उसने मोर्दकै[2] को वह पोशाक
पहनायी और उसे घोड़े पर बिठाकर शहर
के चौक में घुमाया और उसके आगे-
आगे यह ऐलान करवाया, “जिस आदमी
को राजा इज़्ज़त देना चाहता है, उसकी
शान में यही किया जाता है!” **12** इसके
बाद मोर्दकै राजा के महल के फाटक पर
लौट गया। लेकिन हामान शोक मनाते
हुए और सिर पर कपड़ा डाले हुए तेज़ी
से अपने घर चला गया। **13** हामान
ने अपनी पत्नी जेरेश और अपने सभी
दोस्तों को बताया कि उसके साथ क्या
हुआ।[3] तब उसके सलाहकारों और
उसकी पत्नी जेरेश ने उससे कहा, “जिस
मोर्दकै के आगे आज तुझे मुँह की
खानी पड़ी, अगर वह यहूदियों के वंश से
है तो याद रख, तू उससे कभी नहीं जीत
पाएगा। तेरी हार पक्की है।”

14 वे यह कह ही रहे थे कि तभी राजा
के दरबारी आए और फौरन हामान को
रानी एस्तेर की दावत में ले गए।[4]

7 राजा और हामान,[5] रानी एस्तेर की
दावत में आए। **2** दावत के दूसरे
दिन जब दाख-मदिरा पेश की गयी, तब
राजा ने फिर पूछा, “रानी एस्तेर, बता
तेरी क्या बिनती है? माँग तुझे क्या
चाहिए? अगर तू आधा राज्य भी माँगे,
तो वह भी तुझे दे दिया जाएगा।”[1]
3 रानी एस्तेर ने कहा, “अगर राजा
मुझसे खुश है और अगर राजा को
यह मंज़ूर हो, तो मेरी बस यही बिनती
है कि वह मेरी और मेरे लोगों[2] की जान
बचा ले **4** क्योंकि हमें खत्म करने और
हमारा वजूद मिटाने के लिए हमें बेच दिया
गया है।[3] अगर हमें गुलामी में बेचा जाता
तो मैं कुछ न कहती। लेकिन जब हमारे
विनाश से खुद राजा को नुकसान होगा
तो भला मैं चुप कैसे रह सकती हूँ? इस
आफत को रोकना ही होगा।”

5 यह सुनकर राजा अहश-वेरोश ने
रानी एस्तेर से पूछा, “किसने ऐसा करने
की जुर्रत की? कौन है वह गुस्ताख?”
6 एस्तेर ने कहा, “हमारे खिलाफ
साज़िश रचनेवाला, हमारा दुश्मन कोई
और नहीं, यह दुष्ट हामान है!”

यह सुनते ही हामान उनके सामने
थर-थर काँपने लगा। **7** राजा का खून
खौल उठा, वह दावत से उठकर बाहर
महल के बगीचे में चला गया। हामान
उठा और एस्तेर से अपनी जान की
भीख माँगने लगा क्योंकि वह समझ गया
कि अब राजा उसे नहीं छोड़ेगा। **8** जब
राजा महल के बगीचे से वापस दावत-
घर में आया, तो उसने देखा कि हामान,
रानी एस्तेर के दीवान पर गिरा जा रहा
है। राजा ने चिल्लाकर कहा, “अब यही
कसर बाकी रह गयी थी! मेरे ही घर में
रानी की इज़्ज़त पर हाथ डाल रहा है?”
राजा के कहने की देर थी कि हामान का
चेहरा कपड़े से ढक दिया गया। **9** तब
राजा के एक दरबारी हरबोना[4] ने कहा,
“हुज़ूर, जिस मोर्दकै की खबर से राजा
की जान बची थी,[5] हामान ने उसी के

अध्य. 6
1 उत 41:42, 43
2 एस 2:5, 6
3 एस 5:10, 14
4 एस 5:8

अध्य. 7
5 एस 3:1

दूसरा कॉल.
1 एस 5:3, 6
2 एस 2:5, 7
3 एस 3:8, 9
एस 3:13
एस 4:7, 8
4 एस 1:10
5 एस 6:2

लिए एक काठ तैयार करवाया है।[1] उसने 50 हाथ* ऊँचा यह काठ अपने घर के पास खड़ा करवाया है।" राजा ने हुक्म दिया, "उसी काठ पर लटका दो इसे!" 10 तब उन्होंने हामान को उसी काठ पर लटका दिया जो उसने मोर्दकै के लिए तैयार किया था। और राजा का क्रोध शांत हो गया।

8 उस दिन राजा अहश-वेरोश ने यहूदियों के दुश्मन हामान[2] का सबकुछ रानी एस्तेर को दे दिया।[3] और मोर्दकै को राजा के सामने लाया गया क्योंकि एस्तेर ने राजा को बताया था कि मोर्दकै से उसका क्या रिश्ता है।[4] 2 राजा ने मोर्दकै को अपनी मुहरवाली अँगूठी दी,[5] जो उसने हामान से वापस ले ली थी। और एस्तेर ने मोर्दकै को हामान की सारी चीज़ों पर अधिकार दिया।[6]

3 एस्तेर एक बार फिर राजा के पास गयी और उसके पैरों पर गिरकर रोने लगी। वह राजा के आगे गिड़गिड़ाने लगी कि राजा, अगागी हामान की साज़िश को नाकाम कर दे, जो यहूदियों की तबाही के लिए रची गयी थी।[7] 4 राजा ने एस्तेर की तरफ सोने का राजदंड बढ़ाया,[8] तब वह उठकर खड़ी हो गयी। 5 उसने राजा से कहा, "अगर राजा मुझसे खुश है और उसकी मेहरबानी मुझ पर है तो वह मेरी बिनती सुने। अगर राजा को यह ठीक लगे तो वह एक हुक्म निकलवाए और अगागी[9] हम्मदाता के बेटे हामान के खत को रद्द करवाए,[10] जिसमें उस मक्कार ने सभी ज़िलों के यहूदियों को मारने का आदेश दिया था। 6 हे राजा, जब मेरे अपने लोगों पर मुसीबत आनेवाली है, तो मैं कैसे चुप बैठ सकती हूँ? भला मैं अपनी आँखों के सामने अपने रिश्तेदारों को मरते कैसे देख सकती हूँ?"

7 यह सुनकर राजा अहश-वेरोश ने रानी एस्तेर और यहूदी मोर्दकै से कहा, "देखो! मैंने हामान को यहूदियों का सफाया करने* की साज़िश के लिए काठ पर लटका दिया[1] और उसका सबकुछ एस्तेर को दे दिया है।[2] 8 अब तुम्हें यहूदियों की हिफाज़त के लिए जो सही लगे, वही करो। मेरे नाम से एक फरमान निकालो और उस पर मेरी अँगूठी से मुहर लगाओ। क्योंकि जो फरमान राजा के नाम से जारी किया जाता है और जिस पर राजा की अँगूठी की मुहर होती है, उसे किसी भी हाल में रद्द नहीं किया जा सकता।"[3]

9 इसलिए सीवान* नाम के तीसरे महीने के 23वें दिन, राजा के शास्त्रियों# को बुलाया गया। और मोर्दकै ने यहूदियों, सूबेदारों,[4] राज्यपालों और हिन्दुस्तान से लेकर इथियोपिया तक, 127 ज़िलों के हाकिमों[5] के लिए जो-जो हुक्म दिया, उसे इन शास्त्रियों ने लिख लिया। यह फरमान सभी ज़िलों के लोगों को उनकी भाषा और लिपि में, यहाँ तक कि यहूदियों को भी उनकी भाषा और लिपि में लिखा गया।

10 मोर्दकै ने यह फरमान राजा अहश-वेरोश के नाम से लिखा और उस पर राजा की अँगूठी से मुहर लगायी।[6] फिर उसने दूतों को यह फरमान देकर भेजा। वे जगह-जगह इसे पहुँचाने के

7:9 *करीब 22.3 मी. (73 फुट)। अति. ख14 देखें।

8:7 *शा., "यहूदियों पर हाथ बढ़ाने।"
8:9 *अति. ख15 देखें। #या "सचिवों।"

अध्य. 7
1 एस 5:14

अध्य. 8
2 एस 3:8
एस 9:24
3 एस 5:11
4 एस 2:5, 7
5 उत 41:41, 42
एस 3:10
दान 6:17
6 दान 2:48
7 एस 3:9
एस 7:4
एस 9:24, 25
8 एस 4:11
9 निर्ग 17:16
गि 24:7
व्य 25:19
1शम 15:8, 33
10 एस 3:12, 14

दूसरा कॉल.
1 एस 7:10
2 एस 8:1
3 दान 6:8, 15
4 दान 6:1
5 एस 9:3
6 एस 8:2

लिए सरपट दौड़नेवाले घोड़ों पर निकल पड़े, जो शाही काम के लिए रखे गए थे। **11** फरमान में राजा ने अलग-अलग शहरों में रहनेवाले यहूदियों को हुक्म दिया कि वे अपनी जान बचाने के लिए एकजुट हो जाएँ। और अगर किसी राष्ट्र या ज़िले के लोग दल बनाकर उन पर हमला करें, तो वे उनको और उनके बीवी-बच्चों को मार डालें और उनका सबकुछ लूट लें।[1] **12** यह हुक्म राजा अहश-वेरोश के सभी ज़िलों में उसी दिन लागू किया जाना था यानी अदार* नाम के 12वें महीने की 13वीं तारीख को।[2] **13** फरमान में लिखी बातों को कानून समझकर सभी ज़िलों में लागू करना था और सब लोगों को पढ़कर सुनाना था ताकि उस दिन यहूदी अपने दुश्मनों से बदला लेने के लिए तैयार हो जाएँ।[3] **14** राजा का हुक्म मिलते ही उसके दूत तुरंत शाही घोड़ों पर निकल पड़े और इस कानून को जगह-जगह पहुँचाने लगे। शूशन*[4] नाम के किले# में भी यही कानून जारी किया गया।

15 अब मोर्दकै राजा के पास से चला गया। उसके सिर पर सोने का शानदार ताज था और वह शाही पोशाक पहने था, जो नीले धागे और सफेद धागे से बनी थी और उसके ऊपर वह बैंजनी ऊन का लबादा डाले हुए था।[5] शूशन* शहर में खुशियों की लहर दौड़ उठी। **16** यहूदियों को राहत* मिली, वे मगन होकर जश्न मनाने लगे और उनका आदर-सम्मान किया गया। **17** हर ज़िले में और हर शहर में, जहाँ-जहाँ राजा का कानून पहुँचा और उसका फरमान पढ़ा गया, वहाँ यहूदी खुशी से झूम उठे। उन्होंने दावतें रखीं और वे जश्न मनाने लगे। आस-पास के देशों के लोगों में यहूदियों का खौफ समा गया और उनमें से कई लोग यहूदी बन गए।[1]

9

अब अदार* नाम के 12वें महीने का 13वाँ दिन आया।[2] यह वही दिन था जब राजा का हुक्म और कानून लागू होना था[3] और दुश्मन भी आस लगाए बैठे थे कि वे यहूदियों पर जीत हासिल कर लेंगे। मगर उलटा यहूदियों ने उन सब पर जीत हासिल कर ली जो उनसे नफरत करते थे।[4] **2** उस दिन राजा अहश-वेरोश के सभी ज़िलों में[5] रहनेवाले यहूदी अपने-अपने शहर में इकट्ठा हुए और उन लोगों को मारने के लिए तैयार हो गए जो उन्हें खत्म करना चाहते थे। एक भी दुश्मन उनके सामने टिक न सका क्योंकि लोगों में यहूदियों का खौफ समा गया था।[6] **3** सभी ज़िलों के हाकिमों, सूबेदारों,[7] राज्यपालों और राजा का काम-काज सँभालनेवालों ने यहूदियों का साथ दिया क्योंकि वे मोर्दकै से डरने लगे थे। **4** मोर्दकै शाही भवन# का एक बड़ा अधिकारी बन गया।[8] जैसे-जैसे उसे और भी अधिकार मिलते गए, सभी ज़िलों में उसके चर्चे होने लगे।

5 उस दिन यहूदियों ने अपने सभी दुश्मनों को तलवार से मार डाला और उनका पूरी तरह सफाया कर दिया। उन्होंने अपने दुश्मनों के साथ वैसा ही सलूक किया जैसा उन्होंने चाहा।[9] **6** शूशन*[10] नाम के किले# में यहूदियों ने 500 आदमियों को मौत के घाट उतार दिया। **7** उन्होंने इन आदमियों को भी मार डालाः परशनदाता,

अध्य. 8
1 एस 9:5-10
2 एस 3:13; एस 9:1, 2; एस 9:16, 17
3 भज 149:6, 7
4 एज 4:9; नहे 1:1; एस 1:2; दान 8:2
5 एस 6:7, 8

दूसरा कॉल.
1 जक 8:23

अध्य. 9
2 एस 3:7; एस 8:11, 12
3 एस 3:13
4 व्य 32:36; 2शम 22:41
5 एस 1:1
6 एस 8:17
7 दान 6:1
8 एस 8:15
9 एस 8:11
10 एज 4:9; नहे 1:1; एस 1:2; दान 8:2

8:12; 9:1 *अति. ख15 देखें। **8:14, 15; 9:6** *या "सूसा।" **8:14; 9:4, 6** #या "महल।" **8:16** *शा., "रौशनी।"

दलपोन, अस्पाता, 8 पोराता, अदल्या,
अरीदाता, 9 परमश्ता, अरीसै, अरीदै
और वैजाता। 10 ये दस आदमी
हामान के बेटे थे, वही हामान जो हम्मदाता का बेटा और यहूदियों का दुश्मन था।[1] लेकिन अपने दुश्मनों को मारने के बाद यहूदियों ने लूट में उनकी कोई भी चीज़ नहीं ली।[2]

11 उस दिन शूशन* नाम के किले# में जितने लोग मारे गए उसकी खबर राजा को दी गयी।

12 राजा ने रानी एस्तेर से कहा, "शूशन* नाम के किले# में यहूदियों ने 500 आदमियों को और हामान के दस बेटों को मौत के घाट उतार दिया है। अगर यहाँ यह हाल है, तो बाकी ज़िलों में तो और भी लोग मारे गए होंगे![3] रानी एस्तेर माँग तुझे और क्या चाहिए? तेरी ख्वाहिश पूरी की जाएगी। तू बस हुक्म
दे।" 13 एस्तेर ने कहा, "अगर राजा को यह मंज़ूर हो[4] तो वह शूशन* में रहनेवाले यहूदियों को इजाज़त दे कि वे कल भी अपने दुश्मनों को मार सकें, ठीक जैसे राजा के फरमान पर उन्होंने आज मारा है।[5] राजा से मेरी यह भी बिनती है कि हामान के दस बेटों की लाशें
काठ पर लटकायी जाएँ।"[6] 14 राजा
ने हुक्म दिया कि एस्तेर ने जैसा कहा है वैसा ही किया जाए। तब शूशन* में एक कानून निकाला गया कि हामान के दस बेटों की लाशें लटकायी जाएँ और यहूदियों को एक और दिन की मोहलत दी जाए।

15 अदार महीने के 14वें दिन शूशन* में रहनेवाले यहूदी एक बार फिर इकट्ठा हुए।[1] उन्होंने वहाँ 300 आदमियों को मार डाला लेकिन लूट में उनकी कोई भी चीज़ नहीं ली।

16 राजा के बाकी ज़िलों में रहनेवाले यहूदी भी इकट्ठा हुए और अपनी जान बचाने के लिए लड़े।[2] उन्होंने अपने दुश्मनों का, उन 75,000 आदमियों का सफाया कर दिया[3] जो उनसे नफरत करते थे। मगर लूट में उनकी कोई
भी चीज़ नहीं ली। 17 यह अदार महीने
का 13वाँ दिन था। और 14वें दिन उन्होंने आराम किया, बड़ी-बड़ी दावतें रखीं और खुशियाँ मनायीं।

18 जो यहूदी शूशन* में थे, वे अपने दुश्मनों से लड़ने के लिए 13वें और 14वें दिन इकट्ठा हुए[4] और 15वें दिन उन्होंने आराम किया, बड़ी-बड़ी दावतें रखीं
और खुशियाँ मनायीं। 19 बाकी ज़िलों
के शहरों में रहनेवाले यहूदियों ने अदार महीने के 14वें दिन जश्न मनाया।[5] उन्होंने बड़ी-बड़ी दावतें रखीं, खुशियाँ मनायीं और एक-दूसरे को खाने-पीने की चीज़ें भेजीं।[6]

20 मोर्दकै[7] ने इन सारी घटनाओं को लिखा। और उसने राजा अहश-वेरोश के सभी ज़िलों में रहनेवाले यहूदियों को
खत भेजे। 21 खत में मोर्दकै ने यहूदियों को आदेश दिया कि वे अब से हर साल, अदार महीने के 14वें और 15वें
दिन त्योहार मनाया करें। 22 क्योंकि
इन दिनों में यहूदियों को अपने दुश्मनों से छुटकारा मिला और इसी महीने उनका गम खुशी में बदल गया, वे मातम मनाना[8] छोड़कर जश्न मनाने लगे। इसलिए यहूदी दोनों दिन बड़ी-बड़ी दावतें रखें, खुशियाँ मनाएँ, एक-दूसरे को खाने-पीने की चीज़ें भेजें और गरीबों में खैरात बाँटें।

9:11-15, 18 *या "सूसा।" **9:11, 12** #या "महल।"

अध्य. 9
1 एस 3:8, 10; एस 7:4-6
2 एस 8:11; एस 9:16
3 एस 9:16
4 एस 5:8; एस 7:3; एस 8:5
5 एस 8:11
6 एस 7:10

दूसरा कॉल.
1 एस 9:21, 22
2 एस 7:3
3 एस 8:13; भज 149:6, 7
4 एस 9:1, 2; एस 9:13, 15
5 भज 124:2, 6
6 नहे 8:10
7 एस 2:5, 6
8 एस 4:1-3

23 यहूदी इस जश्न को हर साल मनाने के लिए राज़ी हुए जिसकी शुरूआत खुद उन्होंने की थी। उन्होंने यह भी कहा कि मोर्दकै ने अपने खत में जो कुछ बताया है हम करेंगे। 24 अगागी[1] हम्मदाता के बेटे और यहूदियों के दुश्मन हामान[2] ने उनके खिलाफ साज़िश रची थी। उसने उनमें आतंक फैलाने और उनका सर्वनाश करने के लिए[3] पूर यानी चिट्ठी डाली थी[4] और उनके खात्मे का दिन तय किया था। 25 लेकिन फिर रानी एस्तेर राजा के सामने गयी और राजा ने यह हुक्म लिखवाया,[5] "हामान ने घिनौनी साज़िश रचकर यहूदियों पर जो मुसीबत लानी चाही,[6] वह मुसीबत खुद उसी के सिर आ पड़े।" तब हामान और उसके बेटों को काठ पर लटकाया गया।[7] 26 इस तरह पूर*[8] शब्द से इस त्योहार का नाम पूरीम पड़ा। खत में जो कुछ लिखा था और जो उन्होंने होते देखा और जो उन पर बीता, उनकी वजह से 27 यहूदियों ने ठान लिया कि अब से वे, उनके वंशज और उनके साथ जुड़नेवाले बाकी लोग[9] दोनों दिन यह त्योहार मनाएँगे। वे हर साल उसी तरीके से इसे मनाएँगे जैसा उन्हें खत में बताया गया है। 28 पूरीम का यह त्योहार हर ज़िले, हर शहर और हर परिवार में पीढ़ी-दर-पीढ़ी याद किया जाना और मनाया जाना था ताकि यहूदियों में यह दस्तूर हमेशा चलता रहे और इसकी याद उनके वंशजों के मन से कभी न मिटे।

29 फिर पूरीम के बारे में दूसरा खत लिखा गया और अबीहैल की बेटी रानी एस्तेर और यहूदी मोर्दकै को जो अधिकार दिया गया था, उस अधिकार से उन्होंने हुक्म दिया कि इस खत में लिखी बातों का पालन किया जाए। 30 यह खत राजा अहश-वेरोश के 127 ज़िलों[1] में सभी यहूदियों को भेजा गया। इसमें सच्ची और शांति की बातें लिखी हुई थीं 31 कि सभी यहूदी ठहराए गए दिनों में पूरीम का त्योहार मनाएँ, ठीक जैसे यहूदी मोर्दकै और रानी एस्तेर ने हुक्म दिया था।[2] और जैसा खुद यहूदियों ने भी ठाना था कि वे और उनके वंशज उन दिनों की याद में यह त्योहार मनाएँगे,[3] उपवास[4] और मिन्नतें करेंगे।[5] 32 पूरीम[6] के बारे में ये बातें एस्तेर के हुक्म से और भी पक्की हो गयीं और इन्हें एक किताब में लिखा गया।

10 राजा अहश-वेरोश ने अपने राज्य के सभी इलाकों और द्वीपों में रहनेवालों से जबरन मज़दूरी करवायी।

2 उसने जितने भी बड़े-बड़े काम किए उस बारे में और जिस तरह राजा ने मोर्दकै[7] को ऊँचा उठाया[8] उसकी एक-एक जानकारी, मादै और फारस[9] के राजाओं के इतिहास की किताब में दर्ज की गयी।[10] 3 पूरे राज्य में राजा अहश-वेरोश के बाद यहूदी मोर्दकै ही सबसे शक्तिशाली आदमी था। यहूदियों में उसका बड़ा नाम था और वे उसकी बहुत इज़्ज़त करते थे। मोर्दकै अपने लोगों की भलाई और उनके सभी वंशजों की सलामती के लिए काम करता रहा।*

9:26 *"पूर" का मतलब है "चिट्ठी।" इसका बहुवचन "पूरीम" यहूदियों के त्योहार के लिए इस्तेमाल होने लगा, जिसे वे अपने पवित्र कैलेंडर के मुताबिक 12वें महीने में मनाते थे। अति. ख15 देखें।

10:3 *शा., "से शांति की बातें करता रहा।"

अध्य. 9
1 निर्ग 17:16, गि 24:7, व्य 25:19, 1शम 15:8, 33
2 एस 3:1
3 एस 3:8, 9
4 एस 3:7
5 एस 8:10
6 एस 8:3
7 एस 5:14, एस 7:10, एस 9:14
8 एस 3:7
9 लैव 24:22, एस 8:17

दूसरा कॉल.
1 एस 1:1, एस 8:9
2 एस 9:20, 21
3 एस 9:27
4 2इत 20:3
5 एस 4:1
6 एस 9:26

अध्य. 10
7 एस 2:5, 6
8 एस 8:15, दान 2:48
9 एस 1:3, दान 6:15
10 एज 4:15, एस 6:1

अय्यूब

सारांश

1 निर्दोष अय्यूब; उसकी दौलत (1-5)
शैतान ने उसकी नीयत पर सवाल उठाया (6-12)
अय्यूब संपत्ति और बच्चे खो बैठा (13-19)
परमेश्वर को दोष नहीं दिया (20-22)

2 शैतान ने दोबारा सवाल उठाया (1-5)
शैतान को उसे पीड़ित करने दिया गया (6-8)
अय्यूब की पत्नी: "परमेश्वर की निंदा कर और मर जा!" (9, 10)
अय्यूब के तीन साथी आए (11-13)

3 अय्यूब ने अपने जन्म के दिन को कोसा (1-26)
पूछा, क्यों वह दुख झेल रहा है (20, 21)

4 एलीपज का पहला भाषण (1-21)
अय्यूब के निर्दोष होने का मज़ाक उड़ाया (7, 8)
एक साए का संदेश सुनाया (12-17)
"परमेश्वर को अपने सेवकों पर भरोसा नहीं" (18)

5 एलीपज का भाषण जारी (1-27)
'परमेश्वर बुद्धिमानों को उनकी चालाकी में फँसाता है' (13)
'परमेश्वर जो सीख दे, अय्यूब उसे न ठुकराए' (17)

6 अय्यूब का जवाब (1-30)
कहा, आवाज़ उठाना गलत नहीं (2-6)
उसे दिलासा देनेवाले दगाबाज़ (15-18)
"खरी बात कभी नहीं अखरती!" (25)

7 अय्यूब की बात जारी (1-21)
ज़िंदगी गुलामी से कम नहीं (1, 2)
"तूने क्यों मुझे अपना निशाना बनाया है?" (20)

8 बिलदद का पहला भाषण (1-22)
इशारा किया कि अय्यूब के बेटों ने पाप किया था (4)
'अगर तेरा मन साफ है, तो परमेश्वर तेरी रक्षा करेगा' (6)
इशारा किया कि अय्यूब भक्तिहीन है (13)

9 अय्यूब का जवाब (1-35)
अदना इंसान परमेश्वर से नहीं लड़ सकता (2-4)
'परमेश्वर के काम समझ से परे' (10)
उससे कोई बहस नहीं कर सकता (32)

10 अय्यूब की बात जारी (1-22)
'परमेश्वर क्यों मुझसे लड़ रहा है?' (2)
परमेश्वर और अय्यूब में फर्क (4-12)
'काश! मुझे थोड़ी राहत मिले' (20)

11 सोपर का पहला भाषण (1-20)
दोष लगाया कि अय्यूब बेकार की बातें करता है (2, 3)
अय्यूब से बुरे काम छोड़ने को कहा (14)

12 अय्यूब का जवाब (1-25)
"मैं किसी भी तरह तुमसे कम नहीं" (3)
'मैं मज़ाक बनकर रह गया हूँ' (4)
'परमेश्वर के पास बुद्धि है' (13)
वह न्यायियों और राजाओं से बढ़कर है (17, 18)

13 अय्यूब की बात जारी (1-28)
'मैं अपनी बात परमेश्वर से कहूँगा' (3)
'तुम सब निकम्मे वैद्य हो' (4)
"मैं जानता हूँ मैं बेगुनाह हूँ" (18)
'परमेश्वर ने क्यों मुझे दुश्मन समझा?' (24)

14 अय्यूब की बात जारी (1-22)
चार दिन की ज़िंदगी दुखों से भरी (1)
'एक पेड़ के लिए भी उम्मीद है' (7)
"काश! तू मुझे कब्र में छिपा ले" (13)
"अगर एक इंसान मर जाए, तो क्या वह फिर ज़िंदा हो सकता है?" (14)
परमेश्वर अपने हाथ की रचना देखने को तरसता है (15)

15 एलीपज का दूसरा भाषण (1-35)
कहा, अय्यूब में परमेश्‍वर का डर नहीं (4)
उसे गुस्ताख बताया (7-9)
“परमेश्‍वर को अपने स्वर्गदूतों पर विश्‍वास नहीं” (15)
‘दुष्ट दुखों से घिरा रहता है’ (20-24)

16 अय्यूब का जवाब (1-22)
‘दिलासा देना तो दूर, तुम मेरी तकलीफ बढ़ा रहे हो’ (2)
कहा, परमेश्‍वर ने मुझे निशाना बनाया (12)

17 अय्यूब की बात जारी (1-16)
‘ठट्ठा करनेवाले मुझे घेरे हैं’ (2)
‘परमेश्‍वर ने मेरा मज़ाक बना दिया है’ (6)
“कब्र मेरा घर बन जाएगी” (13)

18 बिलदद का दूसरा भाषण (1-21)
दुष्टों का अंजाम बताया (5-20)
इशारा किया कि अय्यूब परमेश्‍वर को नहीं जानता (21)

19 अय्यूब का जवाब (1-29)
“दोस्तों” की फटकार ठुकरायी (1-6)
कहा, सबने उसे छोड़ दिया (13-19)
“मेरा एक छुड़ानेवाला है” (25)

20 सोपर का दूसरा भाषण (1-29)
अपमानित महसूस किया (2, 3)
इशारा किया कि अय्यूब दुष्ट है (5)
कहा, अय्यूब को पाप करने में मज़ा आता है (12, 13)

21 अय्यूब का जवाब (1-34)
‘दुष्ट क्यों फलता-फूलता है?’ (7-13)
अपने ‘दिलासा देनेवालों’ को लताड़ा (27-34)

22 एलीपज का तीसरा भाषण (1-30)
‘इंसान परमेश्‍वर के किस काम का?’ (2, 3)
दोष लगाया कि अय्यूब लालची और अन्यायी है (6-9)
‘परमेश्‍वर के पास लौट आ और आबाद हो’ (23)

23 अय्यूब का जवाब (1-17)
परमेश्‍वर के सामने अपना मामला रखूँगा (1-7)
कहा, उसे परमेश्‍वर नहीं मिल रहा (8, 9)
‘मैं उसकी राह से नहीं भटका’ (11)

24 अय्यूब की बात जारी (1-25)
‘परमेश्‍वर ने एक समय क्यों नहीं ठहराया?’ (1)
कहा, परमेश्‍वर बुराई होने देता है (12)
पापियों को अंधकार पसंद (13-17)

25 बिलदद का तीसरा भाषण (1-6)
‘इंसान परमेश्‍वर के सामने निर्दोष कैसे हो सकता है?’ (4)
कहा, इंसान के निर्दोष होने का फायदा नहीं (5, 6)

26 अय्यूब का जवाब (1-14)
“क्या खूब मदद की है तूने कमज़ोरों की!” (1-4)
‘परमेश्‍वर पृथ्वी को बिना सहारे के लटकाए है’ (7)
“उसके कामों के छोर को छूने जैसा है” (14)

27 अय्यूब ने निर्दोष बने रहने की ठानी (1-23)
‘मैं निर्दोष बना रहूँगा’ (5)
भक्तिहीन के लिए आशा नहीं (8)
“तुम्हारी बातें खोखली क्यों हैं?” (12)
दुष्ट के पास कुछ नहीं बचता (13-23)

28 अय्यूब धरती के खज़ाने और बुद्धि में फर्क बताता है (1-28)
इंसान का खदान खोदना (1-11)
बुद्धि मोतियों से कहीं बढ़कर (18)
यहोवा का डर मानना सच्ची बुद्धि (28)

29 अय्यूब अच्छे दिनों को याद करता है (1-25)
शहर के फाटक पर इज़्ज़त थी (7-10)
न्याय के हक में काम किया (11-17)
सब उसकी सलाह मानते (21-23)

30 अय्यूब बदले हालात के बारे में बताता है (1-31)
निकम्मे लोग उसकी खिल्ली उड़ाते हैं (1-15)

लगता है कि परमेश्वर मदद नहीं कर रहा (20, 21)
'मेरी चमड़ी काली पड़ गयी है' (30)

31 अय्यूब ने निर्दोष होने की पैरवी की (1-40)
"अपनी आँखों के साथ करार किया" (1)
परमेश्वर मुझे तराज़ू में तौल (6)
मैं बदचलन नहीं (9-12)
मुझे पैसों से प्यार नहीं (24, 25)
मैं मूर्तिपूजा करनेवाला नहीं (26-28)

32 जवान एलीहू चर्चा में शामिल हुआ (1-22)
अय्यूब और उसके साथियों से गुस्सा (2, 3)
आदर दिखाया और दूसरों को पहले बोलने दिया (6, 7)
उम्र ही किसी को बुद्धिमान नहीं बनाती (9)
एलीहू बोलने के लिए बेताब (18-20)

33 अय्यूब ने खुद को सही ठहराया; एलीहू ने उसे सुधारा (1-33)
फिरौती मिल गयी (24)
जवानी का दमखम लौटेगा (25)

34 एलीहू परमेश्वर के न्याय और उसके कामों को सही ठहराता है (1-37)
अय्यूब कहता है, परमेश्वर ने मुझे इंसाफ नहीं दिया (5)
परमेश्वर कभी दुष्ट काम नहीं करता (10)
अय्यूब में ज्ञान नहीं (35)

35 एलीहू बताता है, अय्यूब की सोच गलत है (1-16)
अय्यूब ने कहा, वह परमेश्वर से ज़्यादा नेक है (2)
पाप से परमेश्वर का कुछ नहीं बिगड़ेगा (5, 6)
अय्यूब फैसले का इंतज़ार करे (14)

36 एलीहू ने परमेश्वर की महानता की तारीफ की (1-33)
आज्ञाकारी फलते-फूलते हैं; भक्तिहीन ठुकराए जाते हैं (11-13)
"सिखाने में उसके जैसा कोई नहीं" (22)
अय्यूब उसकी बड़ाई करे (24)
"परमेश्वर की महानता हमारी समझ से परे" (26)
बारिश और बिजली उसके काबू में (27-33)

37 प्राकृतिक शक्तियाँ परमेश्वर की महानता का सबूत (1-24)
वह इंसान के काम रोक सकता है (7)
परमेश्वर के लाजवाब काम देख (14)
परमेश्वर को समझना इंसान के बस के बाहर (23)
इंसान खुद को बुद्धिमान न समझे (24)

38 परमेश्वर सीख देता है कि इंसान कितना छोटा है (1-41)
'जब मैंने धरती बनायी तब तू कहाँ था?' (4-6)
परमेश्वर के बेटों ने जयजयकार की (7)
कुदरत के बारे में सवाल (8-32)
'आकाशमंडल में ठहराए नियम' (33)

39 जानवरों की सृष्टि दिखाती है कि इंसान कितना कम जानता है (1-30)
पहाड़ी बकरी और हिरनी (1-4)
जंगली गधा (5-8)
जंगली साँड़ (9-12)
शुतुरमुर्ग (13-18)
घोड़ा (19-25)
बाज़ और उकाब (26-30)

40 यहोवा ने और भी सवाल किए (1-24)
अय्यूब ने माना कि उसके पास कहने को कुछ नहीं (3-5)
"तू मेरे फैसले पर उँगली उठाएगा?" (8)
परमेश्वर ने बहेमोत की शक्ति के बारे में बताया (15-24)

41 परमेश्वर ने अद्भुत लिव्यातान के बारे में बताया (1-34)

42 अय्यूब ने यहोवा को जवाब दिया (1-6)
उसके तीन साथी दोषी ठहरे (7-9)
यहोवा ने अय्यूब की खुशहाली लौटा दी (10-17)
अय्यूब के बेटे-बेटियाँ (13-15)

1 ऊज़ नाम के देश में एक आदमी
रहता था। उसका नाम अय्यूब*
था।[1] वह एक सीधा-सच्चा इंसान था
जिसमें कोई दोष नहीं था।[2] वह पर-
मेश्‍वर का डर मानता और बुराई से
दूर रहता था।[3] **2** उसके सात बेटे और
तीन बेटियाँ थीं। **3** उसके पास 7,000
भेड़ें, 3,000 ऊँट, 1,000* गाय-बैल
और 500 गधियाँ थीं। उसके ढेर सारे
नौकर-चाकर भी थे। वह पूरब के रहने-
वालों में सबसे बड़ा आदमी था।

4 अय्यूब के सभी बेटे तय दिनों पर
अपने-अपने घर दावत रखते थे* और
अपनी तीनों बहनों को भी बुलाते थे।
5 जब दावतों का सिलसिला खत्म हो
जाता तब अय्यूब अपने बच्चों को बुलाता
ताकि उन्हें शुद्ध कर सके। फिर वह
सुबह-सुबह उठकर अपने हर बच्चे के
लिए होम-बलि चढ़ाता।[4] उसका कहना
था, “हो सकता है मेरे बच्चों ने कोई पाप
किया हो और अपने मन में परमेश्‍वर के
बारे में कुछ बुरा कहा हो।” अय्यूब हर
बार ऐसा ही करता था।[5]

6 अब वह दिन आया जब सच्चे पर-
मेश्‍वर के बेटे*[6] उसके सामने इकट्ठा
हुए।[7] शैतान#[8] भी उनके बीच यहोवा के
सामने आया।[9]

7 यहोवा ने शैतान से पूछा, “तू कहाँ
से आ रहा है?” शैतान ने यहोवा से कहा,
“धरती पर यहाँ-वहाँ घूमते हुए आ रहा
हूँ।”[10] **8** तब यहोवा ने शैतान से कहा,
“क्या तूने मेरे सेवक अय्यूब पर ध्यान
दिया? उसके जैसा धरती पर कोई नहीं।
वह एक सीधा-सच्चा इंसान है जिसमें कोई
दोष नहीं।[1] वह परमेश्‍वर का डर मानता
और बुराई से दूर रहता है।” **9** शैतान
ने यहोवा से कहा, “क्या अय्यूब यूँ ही तेरा
डर मानता है?[2] **10** क्या तूने उसकी,
उसके घर की और उसकी सब चीज़ों की
हिफाज़त के लिए चारों तरफ बाड़ा
नहीं बाँधा?[3] तूने उसके सब कामों पर
आशीष दी है[4] और उसके जानवरों की
तादाद इतनी बढ़ा दी है कि वे देश-भर
में फैल गए हैं। **11** लेकिन अब अपना
हाथ बढ़ा और उसका सबकुछ छीन ले।
फिर देख, वह कैसे तेरे मुँह पर तेरी
निंदा करता है!” **12** यहोवा ने शैतान
से कहा, “तो ठीक है, अय्यूब का जो कुछ
है वह मैं तेरे हाथ में देता हूँ। तुझे जो
करना है कर। मगर अय्यूब को कुछ मत
करना।” तब शैतान यहोवा के सामने से
चला गया।[5]

13 फिर जिस दिन अय्यूब के बेटे-
बेटियाँ अपने सबसे बड़े भाई के घर खाना
खा रहे थे और दाख-मदिरा पी रहे थे,[6]
14 उस दिन एक आदमी ने आकर
अय्यूब को खबर दी, “बैल खेत जोत
रहे थे और गधियाँ पास में चर रही थीं
15 कि अचानक सबाई लोगों ने हमला
बोल दिया और सारे जानवरों को लूटकर
ले गए। उन्होंने तेरे सेवकों को तलवार से
मार डाला। सिर्फ मैं बच निकला और तुझे
यह खबर देने आया हूँ।”

16 उसकी बात अभी पूरी भी नहीं
हुई थी कि एक दूसरा आदमी आया और
कहने लगा, “आसमान से परमेश्‍वर की
आग* गिरी और उसने तेरी भेड़ों और
तेरे सेवकों को जलाकर भस्म कर दिया।

1:1 *शायद इसका मतलब है, “दुश्‍मनी का शिकार।” **1:3** *शा., “500 जोड़ी।” **1:4** *या “अय्यूब का हर बेटा बारी-बारी से अपने घर दावत रखता था।” **1:6** *परमेश्‍वर के स्वर्गदूतों के लिए इस्तेमाल होनेवाला इब्रानी मुहावरा। #शब्दावली देखें।

1:16 *या शायद, “बिजली।”

अध्य. 1
1 यहे 14:14; याकू 5:10, 11
2 उत 6:9
3 अय 2:3
4 उत 8:20; उत 12:7, 8
5 उत 18:17, 19
6 उत 6:2; व्य 33:2; अय 38:7
7 1रा 22:19; भज 103:20; दान 7:13
8 जक 3:1; मत 4:1, 3; लूक 22:31; यूह 13:2; प्रक 12:9
9 अय 2:1-3
10 1पत 5:8

दूसरा कॉल.
1 उत 6:9
2 प्रक 12:10
3 उत 15:1; उत 31:7
4 उत 26:12
5 अय 2:7
6 अय 1:4

सिर्फ मैं बच निकला और तुझे यह खबर
देने आया हूँ।"
17 उसकी बात अभी पूरी भी नहीं हुई
थी कि एक और आदमी आया और कहने
लगा, "कसदी लोग[1] तीन दल बनाकर
आए और तेरे ऊँटों पर टूट पड़े और उन्हें
ले गए। उन्होंने तेरे सेवकों को तलवार से
मार डाला, सिर्फ मैं बच निकला और तुझे
यह खबर देने आया हूँ।"
18 उसकी बात अभी पूरी भी नहीं हुई
थी कि एक और आदमी आया और कहने
लगा, "तेरे बेटे-बेटियाँ अपने सबसे बड़े
भाई के घर खाना खा रहे थे और दाख-
मदिरा पी रहे थे। 19 तभी अचानक
वीराने से ज़ोरदार आँधी चली और घर के
चारों कोनों से ऐसी टकरायी कि पूरा घर
तेरे बच्चों पर गिर पड़ा और वे मर गए।
सिर्फ मैं बच निकला और तुझे यह खबर
देने आया हूँ।"
20 यह सुनते ही अय्यूब ने दुख
के मारे अपने कपड़े फाड़े और अपना
सिर मुँड़वाया। उसने ज़मीन पर गिरकर
21 कहा,

"मैं अपनी माँ के पेट से नंगा आया
और नंगा ही लौट जाऊँगा।[2]
यहोवा ने दिया था[3] और यहोवा ने
ले लिया।
यहोवा के नाम की बड़ाई होती
रहे।"

22 इतना सब होने पर भी अय्यूब ने कोई
पाप नहीं किया, न ही उसके साथ जो
बुरा हुआ उसके लिए परमेश्वर को दोष
दिया।

2 फिर वह दिन आया जब सच्चे पर-
मेश्वर के बेटे*[4] यहोवा के सामने

2:1 *परमेश्वर के स्वर्गदूतों के लिए इस्ते-
माल होनेवाला इब्रानी मुहावरा।

अध्य. 1
1 उत 11:28
2 उत 3:19
भज 49:17
सभ 5:15
सभ 12:7
1ती 6:7
3 सभ 5:19
याकू 1:17

अध्य. 2
4 उत 6:2
व्य 33:2
अय 38:7

दूसरा कॉल.
1 भज 103:20
दान 7:13
2 अय 1:6-8
3 1पत 5:8
4 उत 6:9
5 अय 1:11
6 अय 27:5
7 लैव 24:15, 16
अय 1:11, 12
प्रक 12:10
8 अय 30:30
9 यिर्म 6:26
10 अय 1:21

इकट्ठा हुए।[1] शैतान भी उनके बीच
यहोवा के सामने आया।[2]
2 यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहाँ
से आ रहा है?" शैतान ने यहोवा से कहा,
"धरती पर यहाँ-वहाँ घूमते हुए आ रहा
हूँ।"[3] 3 तब यहोवा ने शैतान से कहा,
"क्या तूने मेरे सेवक अय्यूब पर ध्यान
दिया? उसके जैसा धरती पर कोई नहीं।
वह एक सीधा-सच्चा इंसान है जिसमें कोई
दोष नहीं।[4] वह परमेश्वर का डर मानता
और बुराई से दूर रहता है। तूने मुझे
उकसाने की कोशिश की[5] कि मैं बिना
वजह उसे बरबाद कर दूँ। मगर देख,
वह अब भी निर्दोष बना हुआ है।"[6]
4 इस पर शैतान ने यहोवा से कहा,
"खाल के बदले खाल। इंसान अपनी
जान बचाने के लिए अपना सबकुछ दे
सकता है। 5 अब ज़रा अपना हाथ
बढ़ा और अय्यूब की हड्डी और शरीर को
छू। फिर देख, वह कैसे तेरे मुँह पर तेरी
निंदा करता है!"[7]
6 यहोवा ने शैतान से कहा, "तो
ठीक है, उसे मैं तेरे हाथ में देता हूँ,
तुझे जो करना है कर। लेकिन तुझे उसकी
जान लेने की इजाज़त नहीं।" 7 तब
शैतान यहोवा के सामने से चला गया।
शैतान ने अय्यूब को सिर से लेकर तलवों
तक दर्दनाक फोड़ों से पीड़ित किया।[8]
8 अय्यूब राख पर बैठ गया[9] और उसने
अपना शरीर खुजाने के लिए मिट्टी के टूटे
बरतन का एक टुकड़ा लिया।
9 आखिरकार उसकी पत्नी ने कहा,
"क्या तू अब भी निर्दोष बना रहेगा? पर-
मेश्वर की निंदा कर और मर जा!"
10 मगर अय्यूब ने उससे कहा, "तू क्यों
नासमझ औरतों की तरह बात कर रही
है? क्या हम सच्चे परमेश्वर से सिर्फ सुख
ही लें, दुख न लें?"[10] इतना सब होने पर

भी अय्यूब ने अपनी ज़बान से कोई पाप
नहीं किया।[1]
11 जब अय्यूब के तीन साथी तेमानी
एलीपज,[2] शूही[3] बिलदद[4] और नामाती
सोपर[5] ने सुना कि अय्यूब पर क्या-क्या
मुसीबतें आयी हैं, तब वे अपनी-अपनी
जगह से निकल पड़े। उन्होंने मिलकर तय
किया कि वे अय्यूब के पास जाकर
उससे हमदर्दी जताएँगे और उसे दिलासा
देंगे। 12 जब उन्होंने अय्यूब को दूर से
देखा तो उसे पहचान भी न पाए। मगर
जब उन्हें मालूम हुआ कि वह अय्यूब
है, तो वे ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। उन्होंने
अपने कपड़े फाड़े और आसमान में धूल
उड़ाते हुए अपने सिर पर धूल डाली।[6]
13 वे सात दिन और सात रात, उसके
पास ज़मीन पर बैठे रहे। मगर उन तीनों
में से किसी ने अय्यूब से कुछ नहीं कहा
क्योंकि वे देख सकते थे कि वह दुख से
बेहाल है।[7]

3 इसके बाद अय्यूब ने बोलना शुरू
किया। वह उस दिन को कोसने
लगा जिस दिन उसका जन्म हुआ था।[8]
2 अय्यूब ने कहा,

3 “काश! वह दिन मिट जाता जिस
दिन मैं पैदा हुआ,[9]
वह रात कभी न आती जब कहा
गया, ‘देखो, लड़का हुआ है!’
4 काश! वह दिन काली रात में बदल
जाता,
परमेश्वर आसमान से उस पर
ध्यान न देता,
उस दिन उजाला ही न होता।
5 काश! घुप अँधेरा* उसे निगल
जाता,
घनघोर घटा उस पर छा जाती,
आसमान का भयानक मंज़र देख
वह दिन सहम जाता।
6 काश! वह रात गुमनामी के अँधेरे में
कहीं खो जाती।[1]
साल के किसी भी दिन उसे याद न
किया जाता,
न ही महीनों में उसे गिना जाता।
7 काश! वह रात बाँझ हो जाती,
खुशियों की आवाज़ सुनायी न
देती।
8 हे दिनों को कोसनेवालो!
लिव्यातान*[2] को जगानेवालो!
उस दिन को कोसो जब मैं पैदा
हुआ।
9 काश! भोर के टिमटिमाते तारे बुझ
जाते,
सूरज की किरणों को वह देख न
पाता,
उजाले की आस में बैठे-बैठे वह
थक जाता।
10 क्यों उस दिन ने मेरी माँ की कोख
बंद नहीं कर दी?[3]
क्यों मुझे ये दुख-भरे दिन दिखाए?
11 हाय! मैं पैदा होते ही मर क्यों नहीं
गया?
माँ के पेट से निकलते ही मेरा दम
क्यों नहीं निकल गया?[4]
12 क्यों मुझे गोद में खिलाया गया?
क्यों मुझे दूध पिलाया गया?
13 नहीं तो आज मैं बेखबर पड़ा
रहता,[5]
गहरी नींद में चैन से सोया रहता,[6]
14 उन राजाओं, उन सलाहकारों के
साथ,

अध्य. 2
1 याकू 5:10, 11
2 अय 4:1; अय 15:1; अय 22:1; अय 42:7, 9
3 उत 25:1, 2
4 अय 8:1; अय 18:1; अय 25:1
5 अय 11:1; अय 20:1
6 यहे 27:30, 31
7 अय 16:6

अध्य. 3
8 यिर्म 20:14, 15
9 अय 10:18, 19; यिर्म 15:10

दूसरा कॉल.
1 अय 10:18, 19
2 अय 41:1, 10; भज 104:25, 26
3 अय 10:18
4 यिर्म 20:17, 18
5 सभ 9:5, 10
6 यूह 11:11

3:5 *या “अंधकार और मौत का साया।”

3:8 *माना जाता है कि यह मगरमच्छ या कोई बड़ा और ताकतवर समुद्री जीव था।

जिनकी बनायी इमारतें आज खंड-
हर हो चुकी हैं।*
15 उन राजकुमारों* के साथ जिनके
पास सोना था
और जिनके घर चाँदी से भरे थे।
16 काश, मैं गर्भ में बढ़ने से पहले ही
मिट जाता,
उस बच्चे-सा होता, जिसने कभी
उजाला न देखा हो।
17 कब्र में दुष्ट की भी तकलीफें खत्म
हो जाती हैं,
थका-माँदा इंसान भी राहत
पाता है।[1]
18 कैदियों को कब्र में चैन मिलता है,
काम लेनेवालों की घुड़कियाँ उन्हें
सुनायी नहीं देतीं।
19 वहाँ छोटे-बड़े सब बराबर हैं,[2]
गुलाम भी अपने मालिक से
आज़ाद है।
20 परमेश्वर क्यों दुखियारों को रौशनी
देता है?*
क्यों दुख से बेहाल लोगों[3] को ज़िंदा
रहने देता है?
21 जो मौत के लिए तरसते हैं, उन्हें
मौत क्यों नहीं आती?[4]
उन्हें छिपे खज़ाने से भी ज़्यादा
इसकी तलाश रहती है।
22 उसे पाकर वे खुश हो जाते हैं,
कब्र देखकर उनकी खुशी का
ठिकाना नहीं रहता।
23 परमेश्वर क्यों उस इंसान को
रौशनी दिखाता है,
जो राह भटक गया है और
जिसका रास्ता खुद परमेश्वर ने
रोका है?[1]
24 मैं हर निवाला आहें भरते हुए
लेता हूँ,[2]
बहते झरने की तरह कराहता
रहता हूँ।[3]
25 जिसका मुझे डर था, वही मेरे साथ
हुआ,
जिस बात से मैं घबराता था, वही
मेरे साथ घट गयी।
26 मेरा सुख-चैन छिन गया, मुझे कोई
आराम नहीं,
और मुसीबतें हैं कि मेरा पीछा ही
नहीं छोड़तीं।"

4 तब तेमानी एलीपज[4] ने अय्यूब से
कहा,
2 "अगर कोई तुझसे कुछ कहे तो
क्या तू सब्र खो देगा?
लेकिन मैं खुद को बोलने से नहीं
रोक सकता।
3 माना तूने सीख देकर बहुतों को
सुधारा है,
कमज़ोर हाथों को मज़बूत किया है।
4 अपनी बातों से लड़खड़ाते हुओं को
सँभाला है,
काँपते घुटनों को मज़बूत किया है।
5 पर अब जब तुझ पर आफत
आ पड़ी, तो कहाँ गया तेरा
साहस?*
तुझ पर कहर क्या टूटा, तू घबरा
गया?
6 अगर तू परमेश्वर की भक्ति करता
है, तो तुझे किस बात का डर?
क्या तुझे अपने निर्दोष[5] होने पर
भरोसा नहीं?

अध्य. 3
1 भज 146:4, सभ 9:10, यश 57:1, 2
2 अय 30:23, भज 49:10, 12, सभ 8:8, सभ 9:2
3 1शम 1:10, 2रा 4:27
4 गि 11:11, 15, 1रा 19:3, 4, अय 7:15, 16, यो 4:2, 3

दूसरा कॉल.
1 अय 12:14, अय 19:8
2 भज 102:9, 10
3 भज 22:1, भज 38:8

अध्य. 4
4 अय 2:11, अय 15:1, अय 22:1, अय 42:7, 9
5 अय 1:1

3:14 *या शायद, "जिन्होंने अपने लिए सुनसान जगह बनायीं।" **3:15** *या "ऊँचे ओहदे के दरबारियों।" **3:20** *या "को जीने देता है?"

4:5 *शा., "तू थक गया?"

7 ज़रा सोच, क्या कभी कोई बेकसूर
तबाह हुआ है?
कभी कोई सीधा-सच्चा इंसान
बरबाद हुआ है?
8 मैंने तो देखा है कि जो बुराई
जोतते हैं*
और मुसीबत बोते हैं, वे ही उसे
काटते हैं।
9 परमेश्वर एक फूँक मारता है
और वे मिट जाते हैं,
उसके क्रोध के भड़कने पर वे भस्म
हो जाते हैं।
10 शेर चाहे जितना दहाड़े, जवान शेर
चाहे जितना गरजे,
मगर ताकतवर शेरों के भी दाँत टूट
जाते हैं।
11 शिकार न मिलने पर वे भूखे मर
जाते हैं
और उनके बच्चे तितर-बितर हो
जाते हैं।
12 अब सुन! मुझे अकेले में एक बात
बतायी गयी,
उसकी फुसफुसाहट मेरे कानों में
पड़ी।
13 रात के उस पहर जब लोग गहरी
नींद में होते हैं,
मुझे एक ऐसा दर्शन मिला कि मेरी
नींद उड़ गयी।
14 मुझ पर इस कदर डर छा गया
कि मेरी हड्डियाँ काँपने लगीं।
15 एक साया* मेरे सामने से होकर
गुज़रा,
मेरे रोंगटे खड़े हो गए।
16 वह एक जगह जाकर ठहर गया,
मैं उसे पहचान न सका।
मेरी आँखों के सामने एक
परछाईं थी।
चारों तरफ सन्नाटा था, तभी मुझे
एक आवाज़ सुनायी दी,
17 'क्या नश्वर इंसान परमेश्वर से
बढ़कर नेक हो सकता है?
क्या कोई आदमी अपने बनानेवाले
से भी पवित्र हो सकता है?'
18 देख, परमेश्वर को अपने सेवकों पर
भरोसा नहीं,
वह तो अपने स्वर्गदूतों* में भी
गलतियाँ निकालता है,
19 तो फिर माटी के घरौंदे में रहनेवाले
की क्या बिसात,
जिसकी नींव धरती की धूल से
डाली गयी है,[1]
जिसे आसानी से मसला जा सकता
है मानो कोई पतंगा* हो।
20 सुबह से शाम तक, एक ही दिन में
वह खत्म हो जाता है,
हमेशा के लिए मिट जाता है और
किसी को पता भी नहीं चलता।
21 वह उस तंबू की तरह है जिसकी
रस्सियाँ खोल दी गयी हों,
वह बिन बुद्धि के ही मर जाता है।

5 ज़रा आवाज़ लगाकर देख!
क्या कोई है जो तुझे जवाब दे?
मदद के लिए तू किस स्वर्गदूत* को
पुकारेगा?
2 मन की कुढ़न, मूर्ख की जान ले
लेती है,
ईर्ष्या, नासमझ इंसान को मार
डालती है।
3 मैंने देखा है, मूर्ख फलता-फूलता है,
लेकिन अचानक उसके घर पर शाप
आ पड़ता है।

दूसरा कॉल.

अध्य. 4
1 उत 3:19

4:8 *या "बुराई करने की सोचते हैं।" 4:15 *या "अदृश्य शक्ति।" शब्दावली में "रुआख; नफ्मा" देखें।

4:18 *या "दूतों।" 4:19 *या "कपड़-कीड़ा।" 5:1 *शा., "पवित्र जन।"

4 उसके बेटों को कोई सुरक्षा नहीं
मिलती,
शहर के फाटक पर[1] उन्हें न्यायी
कुचलते हैं,
उनका बचानेवाला कोई नहीं।
5 भूखे लोग उस मूर्ख की फसल खा
जाते हैं,
कँटीली झाड़ियों के बीच से भी
उसकी फसल निकाल लेते हैं,
वे उसका और उसके बच्चों का सब-
कुछ हड़प लेते हैं।
6 अब ऐसा तो नहीं कि मुसीबतें मिट्टी
से पैदा हुई हों!
और दुख के अंकुर ज़मीन से
फूटे हों!
7 आग है तो चिंगारी उठेगी ही,
इंसान पैदा हुआ है तो उसकी
ज़िंदगी में दुख आएँगे ही।
8 मैं तेरी जगह होता तो परमेश्वर से
फरियाद करता,
अपना मामला उसके आगे पेश
करता।
9 उसके काम इतने महान हैं कि
हमारी समझ से परे हैं,
उसके लाजवाब कामों की कोई
गिनती नहीं।
10 धरती पर वह पानी बरसाता है,
खेतों को सींचता है।
11 वह दीन-दुखियों को ऊपर
उठाता है,
उदास मनवालों की हिफाज़त*
करता है।
12 वह धूर्त की चालें नाकाम कर
देता है,
जिससे उनके हाथ के काम सफल
नहीं होते।

5:11 *या "का उद्धार।"

अध्य. 5
1 नीत 22:22
आम 5:12

दूसरा कॉल.
1 1कुर 3:19

2 नीत 12:18

13 वह बुद्धिमानों को उन्हीं की चालाकी
में फँसा देता है,[1]
टेढ़े लोगों की साज़िश धरी-की-धरी
रह जाती है।
14 दिन के उजाले में अंधकार उन्हें आ
घेरता है,
भरी दोपहरी में वे ऐसे टटोलते हैं
मानो रात हो।
15 वह उनकी जीभ की धार से लोगों
को बचाता है,
वह गरीबों को ताकतवरों के चंगुल
से छुड़ाता है।
16 इसलिए दीन-दुखियों के लिए
उम्मीद है,
मगर बुराई करनेवालों के मुँह बंद
कर दिए जाएँगे।
17 सुखी है वह जिसे परमेश्वर डाँट
लगाता है!
इसलिए सर्वशक्तिमान तुझे सुधारने
के लिए जो सीख दे, उसे मत
ठुकरा।
18 क्योंकि जब वह चोट देता है तो पट्टी
भी बाँधता है,
जब वह मारता है तो अपने हाथों से
चंगा भी करता है।
19 वह एक-के-बाद-एक छः विपत्तियों
से तुझे बचाएगा,
सातवीं तो तुझे छू भी नहीं पाएगी।
20 अकाल के वक्त वह तुझे भूखों
मरने नहीं देगा,
मैदाने-जंग में तुझे तलवार की भेंट
चढ़ने नहीं देगा।
21 जब शब्दों के कोड़े बरसेंगे,[2] तो
तेरी हिफाज़त की जाएगी,
तबाही आने पर तू न घबराएगा।
22 विनाश और अकाल पर तू हँसेगा,
जंगली जानवरों से न डरेगा।

23 मैदान के पत्थर तुझे ठोकर नहीं
खिलाएँगे,*
मैदान के जंगली जानवर भी तेरे
साथ शांति से रहेंगे।
24 तुझे यकीन होगा कि तेरा तंबू
महफूज़ है,
अपने चरागाह को देखने पर तुझे
कोई कमी नज़र नहीं आएगी।
25 तेरा घर बच्चों से आबाद रहेगा,
तेरी आनेवाली पीढ़ियाँ मैदान की
घास की तरह फूले-फलेंगी।
26 जैसे पकी बालें खलिहान में लायी
जाने तक लहलहाती हैं,
वैसे ही कब्र में जाने तक तुझमें दम-
खम होगा।
27 हमने ये बातें परखी हैं और इन्हें
सच पाया है,
इसलिए इन्हें सुन और मान।"

6 तब अय्यूब ने कहा,
2 "काश! मेरी पीड़ा[1] को तौला
जाता,
मुसीबतों के साथ उसे तराज़ू में रखा
जाता,
3 तब वह समुंदर की रेत से भी भारी
होती।
इसलिए मेरे मुँह से बेसिर-पैर की
बातें निकली हैं।[2]
4 सर्वशक्तिमान ने ज़हरीले तीरों से
मुझे छलनी कर दिया है,
उनका ज़हर मेरी रग-रग में फैल
रहा है।
परमेश्वर का कहर मोरचा बाँधे मेरे
सामने खड़ा है।
5 अगर जंगली गधे[3] को घास मिले,
तो वह रेंकेगा क्यों?
बैल के आगे चारा हो, तो वह
रँभाएगा क्यों?
6 क्या बेस्वाद खाना, बिना नमक के
गले से नीचे उतरता है?
भला गुलखेर पौधे के रस में कोई
स्वाद होता है?
7 ऐसी चीज़ों को मैं हाथ तक नहीं
लगाना चाहता,
ये* मेरे लिए सड़े हुए खाने जैसी हैं!
8 काश! मेरी दुआ सुन ली जाए,
परमेश्वर मेरी आरज़ू पूरी कर दे,
9 मुझे मसल दे, अपना हाथ बढ़ाकर
मुझे खत्म कर दे।[1]
10 मुझे इसका कोई गम नहीं होगा,
दर्दनाक हाल में भी हँसकर मौत को
गले लगा लूँगा।
क्योंकि मैंने पवित्र परमेश्वर[2] की
बातों को कभी अनसुना नहीं
किया।
11 मुझमें अब और इंतज़ार करने की
हिम्मत नहीं।[3]
जीने के लिए जब कुछ रहा ही नहीं,
तो जीकर क्या करूँ?
12 मैं चट्टान जैसा मज़बूत नहीं,
न मेरा शरीर ताँबे का बना है!
13 देखो क्या हाल हो गया है मेरा,
मैं खुद की मदद नहीं कर सकता,
मेरा हर सहारा छिन गया है।
14 जो अपने साथी का वफादार
न रहे,*[4]
उसमें सर्वशक्तिमान का डर कहाँ![5]
15 मेरे भाई सर्दियों में बहनेवाली नदी
की तरह दगाबाज़ हैं,[6]
जो ज़रूरत की घड़ी में सूख जाती है।

5:23 *या "तेरे साथ करार (या समझौता) करेंगे।"

6:7 *शायद अय्यूब की तकलीफों की या उसके साथियों की दी सलाह की बात की गयी है। 6:14 *या "से अटल प्यार न करे।"

अध्य. 6
1 भज 31:9
2 सभ 7:7
याकू 3:2
3 अय 24:5

दूसरा कॉल.
1 गि 11:11, 15
1रा 19:3, 4
यो 4:3
2 लैव 19:2
हो 11:9
3 अय 7:6, 7
भज 103:15, 16
4 नीत 3:3
नीत 19:22
हो 6:6
जक 7:9
5 1यूह 3:17
6 अय 19:19
भज 38:11

16 पिघलती बर्फ से वह मटमैली हो
जाती है,
छिपी हिम के गलने से उमड़
पड़ती है,
17 मगर तपती गरमी में वह सूख जाती
है, खत्म हो जाती है,
चिलचिलाती धूप में वह अपना दम
तोड़ देती है।
18 वह बहते-बहते रेगिस्तान में
आती है
और गायब हो जाती है।
19 तेमा[1] से आनेवाले कारवाँ उसकी
राह तकते हैं,
शीबा[2] से आए मुसाफिर * उसके
इंतज़ार में रहते हैं।
20 उस पर भरोसा करके वे शर्मिंदा
होते हैं,
उनके हाथ सिर्फ निराशा लगती है।
21 उसी तरह तुम भी मेरी मुसीबतें
देखकर डर गए,
तुमने मुझसे किनारा कर लिया।[3]
22 क्या मैंने तुमसे कुछ माँगा?
क्या मैंने कहा, अपनी दौलत से मेरी
मदद करो?
23 क्या मैंने कहा, मुझे दुश्मनों के हाथ
से बचा लो?
ज़ालिमों के चंगुल से छुड़ा लो?
24 बताओ मैंने क्या किया है? मैं चुप-
चाप तुम्हारी सुनूँगा।[4]
मुझे समझाओ कि मुझसे कहाँ
भूल हुई!
25 खरी बात कभी नहीं अखरती![5]
मगर तुम क्या सोचकर मुझे डाँट
रहे हो?[6]
26 क्या तुम मेरी बातों में नुक्स
निकालना चाहते हो?
दुखी इंसान बहुत कुछ कह जाता
है,[1] मगर हवा उन बातों को उड़ा
ले जाती है।
27 तुम्हारा बस चले तो तुम एक
अनाथ पर भी चिट्ठी डाल दो,[2]
अपने दोस्त का सौदा करने से भी
पीछे न हटो![3]
28 अब ज़रा मुड़कर मेरी तरफ देखो,
क्योंकि मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूँगा।
29 मैं बिनती करता हूँ, एक बार फिर
सोचो,
मुझ पर दोष मत लगाओ,
मैं परमेश्वर की नज़र में अब भी
नेक हूँ।
30 क्या मैं कुछ गलत कह रहा हूँ?
क्या मुझे नहीं पता मुझ पर क्या
बीत रही है?

7 क्या नश्वर इंसान की ज़िंदगी किसी
गुलामी से कम है?
क्या उसके दिन, दिहाड़ी के मज़दूरों
जैसे नहीं?[4]
2 गुलाम की तरह वह छाँव के लिए
तरसता है,
मज़दूरों की तरह अपनी मज़दूरी
पाने का इंतज़ार करता है।[5]
3 तभी मेरे हिस्से में क्लेश से भरे
महीने जोड़ दिए गए हैं
और मेरे लिए दुख-भरी रातें
ठहरायी गयी हैं।[6]
4 जब मैं लेटता हूँ तो सोचता हूँ,
'न जाने सुबह कब होगी!'[7]
पर रात है कि कटती नहीं, भोर
तक मैं करवटें बदलता रहता हूँ।
5 मेरे पूरे शरीर में कीड़े पड़ चुके हैं,
जगह-जगह मिट्टी के लोंदे बन
गए हैं,[8]
फोड़ों की पपड़ी फट गयी है और
मवाद बहे जा रहा है।[9]

6:19 * या "सबाई लोगों के काफिले।"

अध्य. 6
1 यश 21:13, 14
2 अय 1:14, 15
3 भज 38:11
4 अय 32:11, 12
5 नीत 12:18
नीत 25:11
6 अय 16:2, 3
अय 21:34

दूसरा कॉल.
1 अय 10:1
2 अय 31:21, 22
मला 3:5
3 उत 37:28

अध्य. 7
4 अय 14:5, 6
भज 39:4
5 लैव 19:13
व्य 24:15
6 भज 6:6
7 अय 2:8
अय 30:17
8 अय 30:19
9 अय 30:30

6 मेरे दिन जुलाहे के करघे से भी तेज़ दौड़ रहे हैं,[1]
वे बिन आशा के यूँ ही खत्म हो जाएँगे।[2]
7 हे परमेश्वर ध्यान दे, मेरी ज़िंदगी पल-भर की है,*[3]
मेरी आँखें खुशियों# के लिए तरस जाएँगी।
8 जो आँखें मुझे देखती हैं, वे फिर मुझे न देखेंगी।
तेरी नज़रें मुझे ढूँढ़ेंगी, मगर मैं न मिलूँगा।[4]
9 जैसे बादल छँटकर गायब हो जाता है,
कब्र में जानेवाला भी वापस नहीं आता।[5]
10 वह फिर कभी अपने घर नहीं लौटता,
उसका अपना घर उसे बेगाना समझता है।[6]
11 इसलिए मैं चुप नहीं रहूँगा,
मेरे अंदर जितना दर्द छिपा है, उसे उँडेल दूँगा,
अपनी कड़वाहट उगल दूँगा।[7]
12 क्या मैं सागर हूँ? या कोई बड़ा समुद्री जीव हूँ,
जो तूने मुझ पर पहरा बिठाया है?
13 जब मैं सोचता हूँ, 'मेरा बिस्तर मुझे आराम पहुँचाएगा,
मेरा पलंग मेरे गम को हलका करेगा,'
14 तब तू मुझे सपने दिखाकर घबरा देता है,
दर्शन दिखाकर मेरे होश उड़ा देता है।
15 काश! मेरा दम घुट जाए,
जीने से अच्छा है कि मुझे मौत आ जाए।[1]
16 नफरत हो गयी है ज़िंदगी से,[2] मैं और जीना नहीं चाहता।
मुझे अकेला छोड़ दो, मेरी ज़िंदगी पल-भर की है।*[3]
17 नश्वर इंसान कौन है जो तू उसकी परवाह करे?
उसकी क्या औकात कि तू उस पर ध्यान दे?*[4]
18 तू क्यों हर सुबह उस पर नज़र रखता है?
और कदम-कदम पर उसे परखता है?[5]
19 तू कब तक मुझ पर टकटकी लगाए रहेगा?
क्या इतनी भी मोहलत न देगा कि मैं थूक निगल सकूँ?[6]
20 इंसान पर नज़र रखनेवाले![7] अगर मैंने पाप किया है, तो इससे तेरा क्या नुकसान हुआ है?
तूने क्यों मुझे अपना निशाना बनाया है?
क्या मैं तुझ पर बोझ बन गया हूँ?
21 मेरे अपराधों को माफ क्यों नहीं कर देता?
मेरे गुनाहों को भुला क्यों नहीं देता?
जल्द ही मैं मिट्टी में मिल जाऊँगा,[8]
तब ढूँढ़ने पर भी तुझे न मिलूँगा।"

8 तब शूही बिलदद[9] ने बोलना शुरू किया,
2 "तू कब तक ऐसी बातें करता रहेगा?[10]

7:7 *या "हवा है।" #शा., "कुछ अच्छा देखने।"

7:16 *शा., "बस एक साँस है।" 7:17 *शा., "पर मन लगाए?"

अध्या. 7
1 भज 102:11, भज 103:15, भज 144:4
2 अय 17:15
3 भज 89:47, सभ 2:11
4 अय 7:21, याकू 4:14
5 अय 10:21, अय 14:12, भज 78:39, सभ 9:10
6 भज 103:15, 16, भज 146:4, सभ 9:5
7 1शम 1:10, अय 10:1, नीत 14:10

दूसरा कॉल.
1 अय 3:20, 21
2 उत 27:46, 1रा 19:4, अय 10:1, यो 4:3
3 भज 62:9, भज 144:4, सभ 6:12
4 भज 8:4, भज 103:15, भज 144:3
5 अय 23:10
6 अय 14:6
7 अय 34:21, नीत 5:21, यिर्म 16:17, इब्र 4:13, 1पत 3:12
8 उत 3:19, भज 104:29, सभ 12:7

अध्या. 8
9 उत 25:1, 2, अय 18:1, अय 25:1, अय 42:9
10 अय 11:3

तेरी बातें एकदम खोखली हैं।*
3 क्या परमेश्वर न्याय का खून
करेगा?
क्या सर्वशक्तिमान, जो सही है वह
न करेगा?
4 हो सकता है तेरे बेटों ने उसके
खिलाफ पाप किया हो,
तभी तो उसने उन्हें अपने किए की
सज़ा भुगतने दी।
5 लेकिन अगर तू परमेश्वर को ढूँढ़े,[1]
सर्वशक्तिमान से दया की भीख
माँगे,
6 अगर तेरा मन साफ है, तू सीधा-
सच्चा है,[2]
तो वह तुझ पर ध्यान देगा,*
तेरी जगह तुझे वापस लौटा देगा।
7 भले ही आज तेरा यह हाल है,
मगर तेरा आनेवाला कल सुनहरा
होगा।[3]
8 ज़रा पुरानी पीढ़ी के लोगों से पूछ,
उनके पुरखों ने जो बातें मालूम कीं,
उन पर ध्यान दे।[4]
9 कल के पैदा हुए हम क्या जानते हैं,
हमारी ज़िंदगी भी छाया की तरह
गुज़र जाएगी।
10 क्या वे लोग तुझे नहीं सिखाएँगे,
जो बातें वे जानते हैं क्या तुझे नहीं
बताएँगे?*
11 क्या बिना दलदल के सरकंडा बढ़
सकता है?
क्या बगैर पानी के नरकट बढ़
सकता है?
12 चाहे उसमें फूल आ रहे हों, चाहे
उसे उखाड़ा न गया हो,

8:2 *या "तेज़ आँधी की तरह हैं।" 8:6 *या "तेरे लिए कदम उठाएगा।" 8:10 *शा., "क्या वे अपने मन से बात न निका-लेंगे?"

अध्य. 8
1 अय 5:8, 9
अय 11:13
अय 22:23
2 अय 1:8
3 अय 11:14, 17
4 अय 15:17, 18

दूसरा कॉल.
1 अय 5:3
2 अय 20:9
3 अय 20:5

लेकिन वह बाकी पौधों से पहले
मुरझा जाएगा।
13 परमेश्वर को भूलनेवाले का भी यही
हाल होता है,
भक्तिहीन की आशा मिट जाती है।
14 जिन चीज़ों पर उसे भरोसा है वे
खोखली निकलती हैं,
मकड़ी के कच्चे जाल की तरह,
15 जितना सहारा लेने की कोशिश
करो, वह टूटता जाता है,
उसे थामे रहने पर वह तार-तार हो
जाता है।
16 वह इंसान उस हरे-भरे पौधे
के समान है जिसे अच्छी धूप
मिलती है,
जिसकी शाखाएँ बगीचे में फैलती
जाती हैं,[1]
17 जो पत्थरों के बीच अपनी जड़ें
फैलाता है
और वहीं अपने लिए घर
ढूँढ़ता है।*
18 लेकिन जब उसे अपनी जगह से
उखाड़ दिया जाता है,
तो सींचनेवाली मिट्टी भी उसे पह-
चानने से इनकार कर देती है।[2]
19 इस तरह वह खत्म हो जाता है*[3]
और उसकी जगह दूसरे पौधे उगने
लगते हैं।
20 देख, परमेश्वर उन्हें नहीं ठुकराता,
जो निर्दोष बने रहते हैं
और न ही वह बुरे लोगों का हाथ
थामता है।
21 इसलिए वह तेरे चेहरे पर फिर से
हँसी ले आएगा
और तेरे होंठों पर जयजयकार।

8:17 *या "पत्थरों का घर देखता है।" 8:19 *या "उसकी राह मिट जाती है।"

22 तुझसे नफरत करनेवाले शर्मिंदा
किए जाएँगे
और दुष्टों का डेरा खाक में मिला
दिया जाएगा।"

9 अय्यूब ने जवाब दिया,
2 "मैं अच्छी तरह जानता हूँ,
परमेश्वर अन्यायी नहीं,
तो भला अदना इंसान
उसके सामने कैसे सही ठहर
सकता है?[1]
3 अगर कोई परमेश्वर से बहस
करना चाहे,*[2]
तो उसके हज़ार सवालों में से
एक का भी जवाब नहीं दे
पाएगा।
4 परमेश्वर बुद्धिमान* और बहुत
शक्तिशाली है।[3]
ऐसा कौन है जो उसके खिलाफ
जाकर सही-सलामत बच जाए?[4]
5 वह पहाड़ों को सरकाता* है और
किसी को पता भी नहीं चलता,
अपने क्रोध में उन्हें उलट-पुलट
देता है।
6 वह पृथ्वी को उसकी जगह से हिला
देता है,
उसके खंभे थर-थर काँप उठते हैं।[5]
7 वह सूरज को हुक्म देता है और वह
बुझ जाता है,
तारों को बंद कर देता है कि वे न
चमकें।[6]
8 अपने हाथों से आसमान की चादर
फैलाता है,[7]
समुंदर की ऊँची-ऊँची लहरों[8] पर
डग भरता है।
9 उसने अश,* केसिल# और किमा
नाम तारामंडल△ बनाए,[1]
दक्षिणी तारामंडल भी उसी की
कारीगरी है।
10 वह ऐसे महान काम करता है, जो
हमारी समझ से परे हैं,[2]
उसके लाजवाब कामों की कोई
गिनती नहीं।[3]
11 वह मेरे पास से गुज़र जाता है और
मैं उसे देख नहीं पाता,
मेरे सामने से निकल जाता है और
मैं उसे पहचान नहीं पाता।
12 अगर वह कुछ लेना चाहे, तो कौन
उसे रोक सकता है?
कौन उससे कह सकता है, 'यह तू
क्या कर रहा है?'[4]
13 परमेश्वर अपने क्रोध को नहीं
रोकेगा,[5]
राहाब*[6] के मददगारों को भी
उसके सामने झुकना पड़ेगा।
14 अगर ऐसा है तो जब मुझे उसे
जवाब देना होगा,
दलीलें पेश करनी होंगी, तो सोच-
समझकर बोलना होगा।
15 चाहे मैं सही भी क्यों न हूँ, तब भी
उसे पलटकर जवाब न दूँगा।[7]
मैं अपने न्यायी* के आगे सिर्फ दया
की भीख माँग सकता हूँ।
16 लेकिन अगर मैं उसे पुकारूँ तो क्या
वह मुझे जवाब देगा?
मुझे नहीं लगता वह मेरी
सुनेगा भी।

अध्य. 9
1 व्य 32:4; भज 143:1, 2; रोम 3:23
2 अय 40:2; रोम 9:20
3 अय 36:5; भज 104:24; यश 40:26; दान 2:20
4 नीत 14:16; नीत 28:14; यश 30:1; दान 5:18, 20; जक 7:12; रोम 2:5
5 भज 75:3
6 उत 1:16
7 उत 1:1; भज 33:6; यश 44:24
8 अय 38:8-11

दूसरा कॉल.
1 अय 38:31; आम 5:8
2 यश 40:28; रोम 11:33
3 भज 40:5
4 दान 4:35; रोम 9:20
5 व्य 32:22
6 अय 26:12
7 अय 10:15

9:3 *या "को कचहरी ले जाना चाहे।" **9:4** *शा., "दिल में बुद्धिमान।" **9:5** *शा., "हटाता।"

9:9 *शायद सप्तर्षि तारामंडल। सात तारों का मंडल। #शायद मृगशिरा तारामंडल। △शायद वृष तारामंडल में तारों का समूह, कृत्तिका। **9:13** *शायद एक बड़ा समुद्री जीव। **9:15** *या शायद, "मुद्दई।"

17 वह तो मुसीबतों का तूफान लाकर
मुझे तोड़ डालता है,
बिना कुछ कहे-सुने ज़ख्म-पर-ज़ख्म
देता है।[1]
18 वह मुझे साँस भी नहीं लेने देता,
पल-पल मुझ पर तकलीफें
लाता है।
19 अगर सवाल ताकत का है,
तो उसके जैसा शक्तिशाली
कोई नहीं,[2]
अगर सवाल न्याय का है,
तो वह खुद कहता है, 'कौन
मुझसे जवाब-तलब कर*
सकता है?'
20 चाहे मैं सही भी हूँ, तब भी मेरी
बातें मुझे गुनहगार ठहराएँगी,
चाहे मैं निर्दोष बना रहूँ, तो भी वह
मुझे दोषी* ठहराएगा।
21 अब तो मुझे भी शक होने लगा है
कि मैं निर्दोष हूँ या नहीं,
लानत है ऐसी ज़िंदगी पर!
22 बात तो एक ही है। इसलिए मैं
कहता हूँ,
'वह दुष्ट और निर्दोष दोनों का
नाश कर देता है।'
23 जब कोई सैलाब अचानक कई
ज़िंदगियाँ बहा ले जाता है,
तब वह मासूमों की बेबसी पर
हँसता है।
24 धरती दुष्ट के हाथ में कर दी
गयी है,[3]
उसने इंसाफ करनेवालों की आँखों
पर पट्टी बाँध दी है।
अगर यह उसने नहीं किया, तो फिर
किसने किया?

9:19 *शा., "मुझे अदालत का बुलावा दे।"
9:20 *शा., "टेढ़ा।"

अध्य. 9
1 अय 2:3
अय 34:5, 6
2 यश 40:28
3 1यूह 5:19

दूसरा कॉल.
1 अय 7:6
भज 90:10
याकू 4:14
2 अय 21:6
3 भज 73:13
4 यिर्म 2:22
मला 3:2
5 यश 45:9
रोम 9:20

25 मेरे दिन खबर पहुँचानेवाले से भी
तेज़ भाग रहे हैं,[1]
ऐसा एक भी दिन नहीं जब मैंने
खुशी देखी हो।
26 वे ऐसे उड़ जाते हैं मानो नर-
कट की नाव हवा से बातें कर
रही हो,
हाँ, उसी फुर्ती से, जिस फुर्ती
से उकाब अपने शिकार पर
झपटता है।
27 अगर मैं कहूँ, 'मैं अपना गम भुला
दूँगा,
चेहरे की उदासी मिटाकर खुश
रहूँगा,'
28 तो भी अपने दुखों की वजह से मुझे
डर सताएगा[2]
और मैं जानता हूँ तब भी तू मुझे
बेकसूर न मानेगा।
29 जब मुझे दोषी* ही ठहराया
जाना है,
तो खुद को निर्दोष साबित करने की
कोशिश क्यों करूँ?[3]
30 अगर मैं पिघलती बर्फ के साफ
पानी से नहा लूँ,
सज्जी* से अपने हाथ धो लूँ,[4]
31 तब भी तू मुझे कीचड़ से भरे गड्ढे
में डाल देगा
और मेरे कपड़े तक मुझसे घिन
करेंगे।
32 परमेश्वर कोई इंसान नहीं, जिससे
मैं बहसबाज़ी करूँ
और जिसे कचहरी में घसीटकर ले
जाऊँ।[5]
33 ऐसा कोई नहीं* जो हमारा मामला
सुलझा सके,

9:29 *शा., "दुष्ट।" 9:30 *एक तरह का साबुन। 9:33 *या "कोई बिचवई नहीं।"

न्यायी बनकर हमें फैसला
सुना सके।*
34 काश! परमेश्‍वर मुझे अपनी छड़ी से
मारना बंद कर दे,
मुझे डराना छोड़ दे,[1]
35 तब मैं बिना डरे उससे बात कर
सकूँगा,
वरना यूँ डरते-काँपते मेरे मुँह से
कुछ नहीं निकलेगा।

10 नफरत है मुझे अपनी
ज़िंदगी से![2]
अब मैं चुप नहीं रहूँगा, मन का
गुबार निकाल दूँगा,
अपनी सारी कड़वाहट उगल दूँगा।
2 परमेश्‍वर से कहूँगा, ‘मुझे दोषी मत
ठहरा।
बता, क्यों मुझसे लड़ रहा है?
3 मुझे सताकर, अपने हाथ की
रचना को दुतकारकर तुझे क्या
मिलेगा?[3]
दुष्ट की चालों से खुश होकर तुझे
क्या मिलेगा?
4 क्या तेरी आँखें इंसानों जैसी हैं?
क्या तू हम नश्‍वर इंसानों की तरह
देखता है?
5 क्या तेरी ज़िंदगी नश्‍वर इंसानों
जितनी है,
जिसे दिनों और सालों में गिना
जा सके?[4]
6 तू क्यों मेरे अंदर गलतियाँ ढूँढ़
रहा है?
क्यों मुझमें पाप खोज रहा है?[5]
7 तू जानता है मैं दोषी नहीं[6]
और कोई मुझे तेरे हाथ से नहीं बचा
सकता।[7]
8 तूने अपने हाथों से मुझे ढाला और
बनाया है,[1]
अब तू ही मुझे खत्म कर देना
चाहता है?
9 हे परमेश्‍वर याद कर, तूने मुझे
मिट्टी से रचा है,[2]
अब तू ही मुझे मिट्टी में मिला देना
चाहता है?[3]
10 क्या तूने मुझे मेरी माँ के गर्भ में नहीं
डाला
और मुझे आकार नहीं दिया?*
11 तूने मुझे माँस और खाल का ओढ़ना
पहनाया
और हड्डियों और नसों से मुझे
जोड़ा।[4]
12 यह जीवन तेरी ही देन है! तेरा प्यार
मेरे लिए अटल रहा,
तूने मेरा ध्यान रखा,[5] मेरी जान*
सलामत रखी।
13 लेकिन मन-ही-मन तूने मुझ पर
मुसीबतें लाने की सोची,*
मैं जानता हूँ यह सब तूने किया है।
14 जब मैं पाप करता हूँ, तो तू सब
देखता है[6]
और मेरे गुनाह माफ नहीं करता।
15 अगर मैं दोषी हूँ, तो धिक्कार है
मुझ पर!
लेकिन अगर मैं निर्दोष हूँ, तो
भी सिर उठाकर नहीं चल
पाऊँगा,[7]
इतना अपमान और तकलीफें जो
सही हैं मैंने![8]

9:33 *शा., “जो हम दोनों पर अपना हाथ रख सके।”

10:10 *शा., “क्या तूने मुझे दूध की तरह नहीं उँडेला? और पनीर की तरह नहीं बनाया?” **10:12** *या “साँसें।” **10:13** *शा., “और तूने ऐसी बातों को अपने मन में छिपा रखा।”

अध्य. 9
1 अय 13:21

अध्य. 10
2 गि 11:11, 15; 1रा 19:3, 4; अय 7:16; यो 4:3
3 अय 14:15; भज 138:8; यश 64:8
4 भज 90:2
5 अय 10:14
6 अय 1:8; भज 139:1
7 व्य 32:39

दूसरा कॉल.
1 भज 119:73; भज 139:13-16
2 उत 2:7; यश 45:9; यश 64:8; रोम 9:21
3 उत 3:19; भज 104:29; सभ 12:7
4 भज 139:15
5 भज 8:4
6 भज 139:1
7 अय 9:15
8 भज 119:153

16 अगर मैं घमंड करूँ, तो तू शेर की
तरह मुझ पर टूट पड़ेगा,[1]
एक बार फिर दिखा देगा कि तू
कितना ताकतवर है।
17 तू मेरे खिलाफ नए-नए गवाह खड़े
करता है,
तेरा क्रोध मुझ पर बढ़ता जा
रहा है,
तू मुझे दुख-पर-दुख दे रहा है।
18 क्यों तूने मुझे माँ की कोख से पैदा
होने दिया?[2]
अच्छा होता मैं वहीं मर जाता और
मुझे कोई न देख पाता।
19 तब मेरा होना, न होने के समान
होता!
माँ के गर्भ से मैं सीधे कब्र में
जाता।'
20 क्या मेरे दिन गिनती के नहीं रह
गए?[3]
काश! परमेश्वर मुझे अकेला
छोड़ दे,
अपनी नज़रें मुझसे फेर ले कि मुझे
थोड़ी राहत* मिले।[4]
21 क्योंकि बहुत जल्द मैं जानेवाला हूँ,
घोर अंधकार* के उस देश
में,[5] जहाँ से मैं वापस नहीं
आऊँगा,[6]
22 सूनी काली रातों का वह देश
जहाँ हाथ-को-हाथ नहीं सूझता,
जहाँ कोई व्यवस्था नहीं,
जहाँ दिन का उजाला भी घने अँधेरे
जैसा है।"

11 तब नामाती सोपर[7] ने कहा,
2 "तू क्या सोचता है, तू
बकबक करेगा और कोई कुछ
न कहेगा?
तेरे बहुत बोलने* से तू सही साबित
हो जाएगा?
3 क्या तेरी बेकार की बातें लोगों का
मुँह बंद कर सकती हैं?
दूसरों का मज़ाक
उड़ाकर[1] क्या तू अपमान से बच
सकता है?
4 तू कहता है, 'मैं जो सिखाता हूँ वह
सही है,[2]
मैं परमेश्वर की नज़र में
बेदाग हूँ।'[3]
5 काश! परमेश्वर अपना मुँह खोले
और बोलना शुरू करे,[4]
6 तो वह तेरे सामने बुद्धि के गहरे
रहस्य खोलेगा,
क्योंकि जब बुद्धि से काम लिया
जाता है, तो उसके कई फायदे
होते हैं।
और तब तुझे पता चलेगा कि तेरे
कई पाप उसने भुला दिए हैं!
7 क्या तू परमेश्वर की गहरी बातों
का पता लगा सकता है?
क्या तू सर्वशक्तिमान के बारे में
सबकुछ जान सकता है?
8 बुद्धि आसमान से भी ऊँची है,
क्या तू वहाँ पहुँच सकता है?
वह कब्र से भी गहरी है, क्या तू
वहाँ उतर सकता है?
9 वह तो धरती से भी विशाल है
और समुंदर से भी चौड़ी है।
10 अगर परमेश्वर किसी राह
चलते को पकड़कर अदालत ले
आए,
तो भला कौन उसे रोक सकता है?
11 क्योंकि वह मक्कार आदमी को
देखते ही पहचान लेता है,

अध्य. 10
1 यश 38:13
2 अय 3:11; यिर्म 20:18
3 अय 7:6; अय 14:1, 2; भज 39:5, 6; भज 103:15, 16
4 अय 9:27
5 अय 38:17; भज 88:12; सभ 9:10
6 अय 7:9; भज 115:17; यश 38:11

अध्य. 11
7 अय 20:1; अय 42:9

दूसरा कॉल.
1 अय 12:4
2 अय 6:10
3 अय 6:29; अय 10:7
4 अय 38:1

10:20 *या "खुशी।" 10:21 *या "अंधकार और मौत के साए।"

11:2 *या "डींगें हाँकने।"

वह उसके बुरे कामों को अनदेखा
नहीं करता।
12 एक जंगली गधा कभी इंसान को
जन्म नहीं दे सकता,*
उसी तरह मूर्ख कभी समझदार नहीं
बन सकता।
13 अगर तू अपने दिल को शुद्ध* करे,
परमेश्वर के आगे हाथ फैलाकर
गिड़गिड़ाए,
14 अगर तू गलत काम करना छोड़ दे
और तेरे डेरे में बुरे काम न हों,
15 तो तू निर्दोष ठहरेगा और उसको
अपना मुँह दिखा सकेगा,
तू उसके सामने थरथराएगा नहीं,
सीधा खड़ा रहेगा।
16 तू अपनी दुख-तकलीफें भूल
जाएगा,
वे तेरे ज़हन से ऐसे उतर जाएँगी,
जैसे पानी बह जाता है।
17 तेरी ज़िंदगी के दिन, भरी दोपहरी
से ज़्यादा रौशन होंगे
और रातें, सुबह की तरह
जगमगाएँगी।
18 तेरे पास आशा होगी और तू किसी
बात से न डरेगा,
जो कुछ तेरा है, तू उस पर
नज़र दौड़ाएगा और आराम
फरमाएगा।
19 तू इत्मीनान से लेटेगा, कोई तुझे
नहीं डराएगा।
तेरी मेहरबानी पाने के
लिए लोगों का ताँता लग
जाएगा।
20 मगर दुष्ट की आँखें धुँधली हो
जाएँगी,
उसे बचने का कोई रास्ता नहीं
दिखेगा।
मरने के सिवा उसके पास कोई
आशा नहीं होगी।"[1]

12 तब अय्यूब ने जवाब दिया,
2 "हाँ-हाँ, सारी बुद्धि तुम लोगों
को ही मिली है!
तुम मर गए तो इस दुनिया से बुद्धि
ही मिट जाएगी!
3 लेकिन मुझमें भी समझ है,
मैं किसी भी तरह तुमसे कम नहीं।
जो बातें तुमने कहीं, वह कौन नहीं
जानता?
4 मैं अपने साथियों के बीच मज़ाक
बनकर रह गया हूँ,[2]
मैं परमेश्वर से दुआ करता हूँ,
चाहता हूँ कि वह मेरी सुने।[3]
यह ज़माना मुझ जैसे नेक
और निर्दोष इंसान की खिल्ली
उड़ाता है।
5 बेफिक्र इंसान सोचता है बरबादी
उसे छू भी नहीं सकती,
यह सिर्फ उन पर आती है जिनके
कदम लड़खड़ा* जाते हैं।
6 लुटेरे अपने डेरों में चैन से
रहते हैं,[4]
जो परमेश्वर का क्रोध भड़काते हैं
वे उतने ही महफूज़ हैं[5]
जितने वे लोग, जो अपने देवता की
मूरतें लिए फिरते हैं।
7 लेकिन ज़रा जानवरों से पूछो, वे
तुमसे कहेंगे,
आसमान के पंछियों से पूछो, वे
तुम्हें बताएँगे,
8 धरती को ध्यान से देखो,* वह तुम्हें
समझाएगी,

11:12 *या "इंसान बनकर पैदा नहीं हो सकता।" **11:13** *या "तैयार।"

12:5 *या "फिसल।" **12:8** *या शायद, "धरती से बात करो।"

दूसरा कॉल.

अध्य. 11
1 अय 8:13, 14
अय 18:5, 14

अध्य. 12
2 अय 16:10
अय 17:2
अय 30:1
भज 22:7
इब्र 11:36
3 भज 91:15
मी 7:7
4 भज 37:35
भज 73:12
यिर्म 12:1
5 अय 21:7, 9

समुंदर की मछलियाँ भी तुम्हें
सिखाएँगी।
9 इनमें से ऐसा कौन है जो यह न
जानता हो
कि यहोवा ने ही उसे अपने हाथों से
रचा है?
10 हर किसी* की जान,
हर इंसान के जीवन की साँस उसी
के हाथ में है।[1]
11 जैसे जीभ से खाना चखा जाता है,
वैसे ही क्या कानों से बातों को नहीं
परखा जाता?[2]
12 क्या बुद्धि, बड़े-बूढ़ों में नहीं पायी
जाती?[3]
क्या समझ उनमें नहीं होती जिन्होंने
लंबी उम्र देखी है?
13 परमेश्वर के पास बुद्धि और
ताकत है,[4]
उसमें समझ है[5] और वह अपना
मकसद ठहराता है।
14 वह जिसे ढा दे, उसे खड़ा नहीं
किया जा सकता,[6]
वह जिसे बंद कर दे, उसे कोई
इंसान खोल नहीं सकता।
15 अगर वह पानी रोक दे, तो सूखा
पड़ जाए[7]
और अगर उसे छोड़ दे, तो धरती
ही डूब जाए।[8]
16 उसमें शक्ति है और वह ऐसी बुद्धि
देता है जो फायदेमंद होती है,[9]
गुमराह करनेवाले और
गुमराह होनेवाले, दोनों
उसके हाथ में हैं।
17 वह सलाहकारों से उनका सबकुछ
छीन लेता है*
और बड़े-बड़े न्यायियों को मूर्ख बना
देता है।[1]
18 वह उन बंधनों को खोल देता है,
जिन्हें राजाओं ने बाँधा है[2]
और उनकी कमर में कमरबंद कस
देता है।
19 धर्म के अगुवों को नंगे पाँव
चलाता है,[3]
जो सत्ता जमाए बैठे हैं, उन्हें गद्दी से
उतार देता है।[4]
20 वह भरोसेमंद सलाहकारों को चुप
करा देता है
और बुज़ुर्गों* से उनकी समझदारी
छीन लेता है।
21 वह रुतबेदार लोगों का अपमान
करवाता है,[5]
ताकतवरों को कमज़ोर बना
देता है।*
22 वह गहरे राज़ पर से परदा
उठाता है,[6]
घोर अंधकार को रौशनी में लाकर
खड़ा कर देता है।
23 वह राष्ट्रों को शक्तिशाली
बनने देता है, फिर उन्हें मिटा
देता है,
वह उन्हें बढ़ने देता है, फिर
उनके लोगों को बँधुआई में भेज
देता है।
24 वह अगुवों से समझ रखनेवाला मन
छीन लेता है,
उन्हें वीरानों में भटकाता है जहाँ
कोई रास्ता नहीं।[7]
25 घुप अँधेरे में वे टटोलते फिरते हैं,[8]
वह उनका हाल लड़खड़ाते
शराबियों जैसा बना देता है।[9]

अध्य. 12
1 गि 16:22; भज 104:30; सभ 12:7; यहे 18:4
2 अय 34:3
3 अय 32:6, 7
4 अय 9:4; दान 2:20
5 अय 36:5; भज 147:5; यश 40:14; यिर्म 10:12; रोम 11:34
6 यहू 7
7 उत 8:1; निर्ग 14:21; नहू 1:4
8 उत 6:17
9 रोम 1:20

दूसरा कॉल.
1 यश 29:14; यश 44:25
2 दान 2:21
3 यिर्म 14:18
4 लूक 1:52
5 भज 107:40
6 दान 2:22
7 भज 107:40
8 व्य 28:29
9 भज 107:27

12:10 *या "इंसान।" **12:17** *शा., "को नंगे पाँव चलाता है।"
12:20 *या "मुखियाओं।" **12:21** *शा., "के कमरबंद ढीले कर देता है।"

13 यह सब मैंने अपनी आँखों से
देखा है,
अपने कानों से सुना और
समझा है।
2 जितना तुम जानते हो, उतना मैं भी
जानता हूँ,
मैं किसी तरह तुमसे कम नहीं।
3 पर मैं अपनी बात तुमसे नहीं, सर्व-
शक्तिमान से कहूँगा,
उसके सामने अपनी सफाई पेश
करूँगा।[1]
4 तुम झूठ बोलकर मुझे बदनाम
करते हो,
तुम सब-के-सब निकम्मे वैद्य हो।[2]
5 समझदारी इसी में है कि तुम चुप
रहो,
अपने मुँह से एक शब्द भी न
निकालो।[3]
6 अब ज़रा मेरी दलीलें सुनो,
मैं जो कहूँगा, उस पर ध्यान दो।
7 परमेश्वर की तरफ से क्या तुम टेढ़ी
बातें कहोगे?
छल-कपट का सहारा लोगे?
8 सच्चे परमेश्वर का पक्ष लेकर मेरे
खिलाफ लड़ोगे?
उसकी वकालत करोगे?
9 अगर उसने तुम्हें जाँच लिया तब
क्या होगा?[4]
क्या तुम उसे झाँसा दे सकोगे, मानो
वह कोई नश्वर इंसान हो?
10 अगर तुम ढोंग करने की कोशिश
करो,
तो वह ज़रूर तुम्हें डाँटेगा।
11 क्या उसका गौरव देखकर तुम
आतंक से न भर जाओगे?
क्या उसका खौफ तुम पर नहीं छा
जाएगा?

अध्य. 13
1 अय 23:3, 4
अय 31:35
2 अय 16:2
3 नीत 17:28
याकू 1:19
4 भज 139:23
यिर्म 17:10

दूसरा कॉल.
1 अय 19:25
भज 23:4
2 निर्ग 15:2
भज 27:1
यश 12:2
3 अय 27:8
अय 36:13
यश 33:14

12 तुम लोगों के नीतिवचन* राख जैसे
भुरभुरे हैं,
तुम्हारी दलीलें# मिट्टी की ढाल
जैसी कमज़ोर हैं।
13 खामोश रहो और मुझे बोलने दो,
फिर मेरे साथ जो होगा, देखा
जाएगा।
14 मैं अपनी जान हथेली पर रखकर
घूमूँगा,
खुद को खतरे में डालूँगा,*
15 चाहे परमेश्वर मुझे मार डाले, तो
भी मैं इंतज़ार करूँगा[1]
कि अपनी सफाई में उसे दलीलें
दे सकूँ।
16 वह मुझे निर्दोष पाकर मेरा उद्धार
करेगा,[2]
वरना भक्तिहीन को वह अपने
सामने भी नहीं आने देता।[3]
17 मेरी बात पर कान लगाओ,
मेरा बयान ध्यान से सुनो।
18 अब मैं अपना मुकदमा लड़ने के
लिए तैयार हूँ,
मैं जानता हूँ मैं बेगुनाह हूँ।
19 कौन मुझसे बहसबाज़ी करेगा?
अगर मैं चुप रहा तो मैं मर
जाऊँगा।*
20 हे परमेश्वर, बस दो एहसान कर दे
मुझ पर,*
ताकि मुझे तुझसे छिपना न पड़े।
21 तू अपने हाथ से मुझे मारना
बंद कर दे

13:12 *या “यादगार नीतिवचन।” #शा., “ढालें।” **13:14** *शा., “अपना माँस दाँतों में दबाए फिरूँगा।” **13:19** *या शायद, “अगर कोई करे, तो मैं चुप रहूँगा और मर जाऊँगा।” **13:20** *शा., “बस ये दो बातें मेरे साथ मत कर।”

और अपने खौफ से मुझे न डरा।[1]
22 या तो तू बोल और मैं जवाब दूँगा,
या फिर मुझे बोलने दे और तू
जवाब दे।
23 मुझसे क्या गलती हुई है, क्या पाप
किया है मैंने?
मेरा अपराध तो बता, ऐसा क्या
हुआ है मुझसे?
24 क्यों मुझसे इस तरह मुँह फेरे
हुए है?[2]
क्यों मुझे अपना दुश्मन समझ
रहा है?[3]
25 हवा में उड़ते पत्ते को तू क्या
डराएगा?
तिनके के पीछे पड़कर तुझे क्या
मिलेगा?
26 तूने मुझ पर लगे एक-एक इलज़ाम
का हिसाब रखा है,
तू मेरी जवानी के पापों का लेखा
अब मुझसे ले रहा है।
27 तूने मेरे पैर काठ में कस दिए हैं,
तू मेरी हर हरकत पर नज़र
रखता है,
मेरे पैरों के निशान ढूँढ़-ढूँढ़कर मेरा
पीछा करता है।
28 इसलिए इंसान* खत्म होता जा
रहा है,
जैसे कोई चीज़ सड़ रही हो,
जैसे किसी कपड़े को कीड़ा# लग
गया हो।

14 इंसान जो औरत से पैदा
होता है,
उसकी ज़िंदगी बस चार दिन की
होती है[4] और वह भी दुखों से
भरी।[5]
2 वह फूल की तरह खिलकर मुरझा*
जाता है,[1]
छाया के समान तुरंत गायब हो
जाता है।[2]
3 तब भी तू उस पर नज़रें गढ़ाए
रहता है,
उसे* अदालत में घसीटकर ले
जाता है।[3]
4 क्या अशुद्ध इंसान से शुद्ध इंसान
पैदा हो सकता है?[4]
नहीं! बिलकुल नहीं।
5 अगर तूने उसके दिन तय किए हैं,
तो तू उसके महीनों की गिनती
जानता है।
तूने उसके लिए जो हद बाँधी है,
उसे वह पार नहीं कर सकता।[5]
6 उस पर से नज़र हटा ले कि वह
आराम कर सके,
जब तक वह दिहाड़ी के मज़दूर
की तरह अपना दिन पूरा न
कर ले।[6]
7 एक कटे हुए पेड़ के लिए भी
उम्मीद रहती है
कि उस पर फिर से कोपलें फूटेंगी,
नरम-नरम डालियाँ आएँगी।
8 चाहे उसकी जड़ें कितनी भी पुरानी
क्यों न हों,
चाहे उसका ठूँठ ज़मीन में पड़े-पड़े
सूख चुका हो,
9 पर पानी की एक बूँद मिलते ही
उसमें जान आ जाएगी,
एक नए पौधे की तरह उसमें टह-
नियाँ फूटने लगेंगी।
10 मगर जब एक इंसान मरता है,

13:28 *शा., "वह।" शायद अय्यूब की बात की गयी है। #या "कपड़-कीड़ा।"

14:2 *या शायद, "तोड़ दिया।" 14:3 *शा., "मुझे।"

अध्य. 13
1 अय 9:34, 35; अय 33:6, 7
2 भज 10:1; भज 13:1; भज 44:24
3 अय 16:9; अय 19:11; अय 33:8-11

अध्य. 14
4 भज 39:5, 6; याकू 4:14
5 उत 3:19; उत 47:9; भज 90:10; सभ 2:23

दूसरा कॉल.
1 भज 103:15, 16; यश 40:6; याकू 1:10, 11; 1पत 1:24
2 1इत 29:15; भज 102:11; भज 144:4
3 भज 143:2
4 उत 5:3; भज 51:5; रोम 5:12
5 भज 39:4
6 भज 39:13

तो उसकी शक्ति खत्म हो
जाती है।
जब वह दम तोड़ता है, तो उसका
अस्तित्व मिट जाता है।*[1]
11 जैसे समुंदर से पानी गायब हो
जाता है,
जैसे नदी खाली होकर सूख
जाती है,
12 वैसे ही इंसान मौत की नींद सो
जाता है और फिर नहीं उठता।[2]
जब तक आसमान बना रहेगा तब
तक उसकी आँखें नहीं खुलेंगी,
न ही गहरी नींद से उसे जगाया
जाएगा।[3]
13 काश! तू मुझे कब्र* में छिपा ले[4]
और तब तक छिपाए रखे जब तक
तेरा गुस्सा शांत न हो जाए।
काश! तू मेरे लिए एक वक्त ठह-
राए और मुझे याद करे।[5]
14 अगर एक इंसान मर जाए, तो क्या
वह फिर ज़िंदा हो सकता है?[6]
मैं अपनी जबरन सेवा के सारे दिन
इंतज़ार करूँगा,
जब तक कि मुझे छुटकारा नहीं
मिल जाता।[7]
15 तू मुझे पुकारेगा और मैं जवाब
दूँगा,[8]
अपने हाथ की रचना को देखने के
लिए तू तरसेगा।
16 पर अभी तू मेरे एक-एक कदम
गिन रहा है,
तेरी नज़र सिर्फ मेरे पापों पर
रहती है,
17 तूने मेरे अपराध थैली में मुहरबंद
कर दिए हैं,
मेरे गुनाहों को उसमें डालकर गोंद
लगा दिया है।
18 जिस तरह पहाड़ टूटकर चूर-चूर हो
जाते हैं,
चट्टानें अपनी जगह से खिसक
जाती हैं,
19 पानी की धार से पत्थर घिस
जाता है,
उसका तेज़ बहाव मिट्टी को बहा ले
जाता है,
उसी तरह, तू नश्वर इंसान की
आशा मिटा डालता है।
20 तू उस पर तब तक हावी होता है
जब तक वह मिट न जाए,[1]
तू उसका हुलिया बदलकर उसे दूर
भेज देता है।
21 चाहे उसके बेटों को आदर
दिया जाए या उन्हें पूछनेवाला
कोई न हो,
पर उसे कुछ खबर नहीं होती।[2]
22 वह सिर्फ तब तक दर्द महसूस
करता है जब तक वह ज़िंदा है,
उसे दुख का एहसास सिर्फ तब तक
होता है जब तक उसमें जान है।"

15 जवाब में तेमानी एलीपज[3] ने
कहा,
2 "एक बुद्धिमान इंसान क्या खोखली
दलीलें देगा?
अपना मन गलत विचारों* से
भरेगा?
3 सिर्फ शब्दों से फटकार लगाने का
कोई फायदा नहीं,
बड़ी-बड़ी बातें हाँकने से कुछ नहीं
होता।
4 तेरी वजह से परमेश्वर का डर
खत्म हो गया है,

अध्य. 14
1 सभ 3:19, 20
सभ 9:10
2 सभ 9:5
सभ 12:5
3 भज 13:3
यूह 11:11
प्रेष 7:59, 60
4 1शम 2:6
यश 57:1, 2
5 लूक 23:42
यूह 5:28, 29
इब्र 11:35
6 यूह 11:25
प्रेष 26:8
1कुर 15:12
प्रक 20:13
7 अय 19:25
8 दान 12:13
यूह 5:28, 29
यूह 11:43, 44

दूसरा कॉल.
1 सभ 8:8
यश 57:16
2 सभ 9:5, 6

अध्य. 15
3 अय 2:11
अय 4:1

14:10 *शा., "तो वह कहाँ रहा?" **14:13** *या "शीओल।" शब्दावली देखें।
15:2 *शा., "पूर्वी हवा।"

दूसरों ने परमेश्वर के बारे में
सोचना छोड़ दिया है।
5 तेरा गुनाह तुझे ऐसी बातें करना
सिखाता है
और तू छल की बातें बोलता है।
6 तेरी अपनी ज़बान तुझे दोषी
ठहराती है, मैं नहीं!
तेरे अपने होंठ तेरे खिलाफ गवाही
देते हैं।[1]
7 क्या इंसानों में तू ही सबसे पहले
पैदा हुआ था?
क्या तुझे पहाड़ों से भी पहले रचा
गया था?
8 क्या परमेश्वर तेरे सामने राज़ की
बातें करता है?
क्या सारी बुद्धि तेरे ही पास है?
9 तू ऐसा क्या जानता है जो हम नहीं
जानते?[2]
तुझमें ऐसी कौन-सी समझ है जो
हममें नहीं?
10 हमारे बीच पके बालवाले और
बड़े-बुज़ुर्ग हैं,[3]
जो उम्र में तेरे पिता से भी बड़े हैं।
11 परमेश्वर जो दिलासा देता है, क्या
वे तेरे लिए काफी नहीं?
और जिस नरमी से तुझसे बात की
गयी, उसका क्या?
12 तेरे दिल ने तुझे इतना ढीठ क्यों
बना दिया?
क्यों तेरी आँखें गुस्से से लाल हैं?
13 क्यों तू परमेश्वर को अपनी
नाराज़गी दिखा रहा है?
और अपने मुँह से ऐसे शब्द निकाल
रहा है?
14 अदना इंसान क्या है जो उसे शुद्ध
समझा जाए?
औरत से पैदा हुआ इंसान क्या है
जो उसे नेक माना जाए?[4]

15 देख! परमेश्वर को अपने स्वर्गदूतों*
पर विश्वास नहीं,
यहाँ तक कि स्वर्ग भी उसकी नज़र
में अपवित्र है![1]
16 तो वह एक नीच और भ्रष्ट इंसान
को पवित्र क्यों समझेगा,[2]
जो बुराई करने के लिए इस कदर
तरसता है जैसे प्यासा पानी के
लिए।
17 सुन, मैं तुझे बताता हूँ!
मैं समझाता हूँ कि मैंने क्या
देखा है।
18 वे बातें बताता हूँ जो बुद्धिमानों ने
अपने पुरखों से सुनी हैं,[3]
उन्होंने ये बातें छिपाकर नहीं रखीं।
19 उनके पुरखों को यह देश दिया
गया था
और कोई परदेसी उनके यहाँ से
होकर नहीं गया।
20 दुष्ट इंसान ज़िंदगी-भर दुखों से
घिरा रहता है,
जितने साल वह ज़ालिम जीता है,
उसे कहीं चैन नहीं मिलता।
21 डरावनी आवाज़ें उसके कानों में
गूँजती हैं,[4]
अमन के वक्त भी लुटेरे उस पर
हमला बोल देते हैं।
22 उसे नहीं लगता कि वह अंधकार से
बच पाएगा,[5]
उसकी मौत तय है, वह तलवार से
मारा जाएगा।
23 वह मारा-मारा फिरता है कि कहीं
तो खाने को रोटी मिले,
उसे मालूम है कि अंधकार का दिन
नज़दीक है।
24 दुख और चिंताएँ रह-रहकर डराती
हैं उसको,

अध्य. 15
1 अय 42:8
2 अय 13:2; अय 16:2
3 अय 32:6
4 अय 25:4

दूसरा कॉल.
1 अय 25:5, 6; अय 42:7
2 अय 4:18, 19
3 अय 8:8
4 अय 18:11; अय 20:25
5 अय 18:12

15:15 *शा., "पवित्र जनों।"

ऐसे टूट पड़ती हैं जैसे कोई राजा
दल-बल के साथ टूट पड़ता है।
25 वह अपना हाथ परमेश्वर के
खिलाफ उठाता है,
सर्वशक्तिमान से लड़ने की जुर्रत*
करता है।
26 वह बड़ी ढिठाई से उसे
ललकारता है,
मज़बूत* ढाल लिए उसकी तरफ
बढ़ा चला आता है।
27 उसके चेहरे पर चरबी चढ़ गयी है
और उसकी तोंद मोटी हो
गयी है।*
28 इसलिए वह जिन शहरों में बसा है,
वे उजाड़े जाएँगे,
जिन घरों में वह रहता है वे वीरान
हो जाएँगे,
उन्हें खंडहर बना दिया जाएगा।
29 वह न मालामाल होगा, न दौलत
बटोर पाएगा,
न ही देश-भर में फूले-फलेगा।
30 वह अंधकार से नहीं बच पाएगा,
उसकी डालियाँ आग की लपट से
झुलस जाएँगी,*
परमेश्वर की# ज़ोरदार फूँक से वह
खत्म हो जाएगा।[1]
31 वह व्यर्थ चीज़ों पर भरोसा रखकर
खुद को धोखे में न रखे,
क्योंकि उसे सिर्फ निराशा हाथ
लगेगी।
32 यह सब समय से पहले उसके साथ
होगा,

15:25 *या "से जीतने की कोशिश।" **15:26** *शा., "मोटी।" **15:27** *यहाँ मोटापा फलने-फूलने, चीज़ों का हद-से-ज़्यादा मज़ा लेने और घमंड की निशानी है। **15:30** *यानी बचने की कोई उम्मीद नहीं रहेगी। #शा., "उसके मुँह की।"

अध्य. 15
1 अय 4:9

दूसरा कॉल.
1 अय 22:15, 16
2 अय 8:11-13

अध्य. 16
3 अय 13:4, 5
अय 19:2, 3
4 भज 109:25
मत 27:39
5 नीत 27:9
मत 7:12
रोम 12:15
1पत 3:8
6 अय 2:13

उसकी डालियाँ कभी हरी-भरी नहीं
होंगी।[1]
33 वह अंगूर की उस बेल जैसा होगा,
जिसके फल पकने से पहले गिर
जाते हैं,
वह जैतून के उस पेड़ के समान
होगा जिसके फूल झड़ जाते हैं।
34 भक्तिहीनों की मंडली फूले-फलेगी
नहीं,[2]
घूस लेनेवालों के डेरे आग में भस्म
हो जाएँगे।
35 वे बुरी बातें गढ़ते हैं और दूसरों का
नुकसान करते हैं,
उनका मन धोखाधड़ी की बातें
रचता रहता है।"

16 अय्यूब ने कहा,
2 "इस तरह की बातें मैंने खूब
सुनी हैं,
दिलासा देना तो दूर, तुम सब मेरी
तकलीफ और बढ़ा रहे हो।[3]
3 क्या तुम्हारी खोखली बातें कभी
खत्म होंगी?
तुम मुझसे इस तरह बात क्यों कर
रहे हो?
4 अगर तुम मेरी जगह होते,
तो मैं भी इस तरह की बातें कर
सकता था,
लंबे-लंबे भाषण झाड़ सकता था,
सिर हिला-हिलाकर तुम्हारी खिल्ली
उड़ा सकता था।[4]
5 मगर मैं ऐसा नहीं करता
बल्कि अपने शब्दों से तुम्हें
हिम्मत देता,
अपनी बातों से तुम्हारा दुख हलका
करता।[5]
6 मेरा दर्द न तो बोलने से दूर हो
रहा है,[6]

न चुप रहने से कम हो रहा है।
7 अब तो परमेश्वर ने मेरी हिम्मत
तोड़ दी,[1]
मेरा घर-परिवार तबाह कर दिया।
8 उसने मुझे भी इस कदर दबोचा कि
मेरा शरीर कुम्हला गया
और मेरी हालत मेरे खिलाफ गवाही
दे रही है।
9 गुस्से में आकर उसने मुझे फाड़
डाला,
वह मुझसे दुश्मनी पाल रहा है,[2]
मुझे देखकर दाँत पीसता है,
मेरा दुश्मन मुझे आँखें दिखाता है।[3]
10 लोग मेरे खिलाफ अपना मुँह
खोलते हैं,[4]
थप्पड़ मारकर मेरी बेइज़्ज़ती
करते हैं,
भीड़ लगाकर मुझे घेर लेते हैं।[5]
11 परमेश्वर ने मुझे जवान लड़कों के
हवाले कर दिया,
मुझे खींचकर दुष्टों के हाथ कर
दिया।[6]
12 मैं चैन से जी रहा था, पर उसने मुझे
हिलाकर रख दिया,[7]
मेरी गरदन पकड़कर मुझे रौंद
डाला,
फिर खड़ा करके मुझे अपना
निशाना बनाया।
13 उसके तीरंदाज़ मुझे घेरे हुए हैं,[8]
वह मुझ पर बिलकुल तरस नहीं
खाता,
मेरे गुरदों को भेदता है,[9] मेरे पित्त
को ज़मीन पर उँडेल देता है।
14 मुझ पर वार-पे-वार करता है, मानो
शहरपनाह तोड़ रहा हो,
योद्धा की तरह मुझ पर टूट
पड़ता है।

अध्य. 16
1 अय 7:3
2 अय 10:16
3 अय 33:8-10
4 भज 22:13
5 भज 35:15
6 भज 27:12
7 अय 1:12, 17
8 अय 7:20
9 भज 73:21

दूसरा कॉल.
1 1रा 21:27
2रा 6:30
2 अय 30:19
भज 7:5
3 भज 6:6
भज 31:9
विल 1:16
4 उत 4:8, 10
भज 72:14
5 अय 12:4
6 भज 40:1
भज 142:2
7 अय 31:35
8 अय 7:9
अय 14:10
सभ 12:5

अध्य. 17
9 भज 88:3, 4
यश 38:10
10 भज 35:16
इब्र 11:36

15 मैंने टाट सीकर पहन लिया है,[1]
मैं इतना लाचार हूँ कि धूल में
बैठा हूँ।*[2]
16 रो-रोकर मेरा चेहरा लाल हो
गया है,[3]
मेरी आँखों में उदासी* है,
17 जबकि मैंने किसी का कुछ नहीं
बिगाड़ा
और मेरी प्रार्थनाएँ सच्ची और
निष्कपट हैं।
18 हे धरती, मेरे खून को मत ढकना,[4]
मेरे रोने की आवाज़ दबा न देना।
19 देखो! मेरा गवाह स्वर्ग में है,
मेरे पक्ष में बोलनेवाला ऊपर
बैठा है।
20 मेरे साथी मेरा मज़ाक उड़ाते हैं[5]
और मैं परमेश्वर के आगे आँसू
बहाता हूँ।*[6]
21 जैसे दो आदमियों के बीच मामला
सुलझाया जाता है,
वैसे ही कोई तो आए, जो मेरे और
परमेश्वर के बीच न्याय करे,[7]
22 क्योंकि समय बहुत कम रह गया है,
जल्द ही मैं उस राह पर चला
जाऊँगा, जहाँ से लौटकर नहीं
आऊँगा।[8]

17 मेरी हिम्मत टूट चुकी है, मेरे
दिन खत्म होनेवाले हैं,
कब्र मेरी राह देख रही है।[9]
2 ठट्ठा करनेवाले मुझे चारों ओर से
घेरे रहते हैं,[10]
मैं देखता* रहता हूँ कि वे मुझसे
कैसी दुश्मनी निकालते हैं।

16:15 *शा., "मैंने अपना सींग मिट्टी में गाड़ दिया है।" **16:16** *या "मौत का साया।" **16:20** *या शायद, "को ऐसे देखता हूँ मानो मेरी नींद उड़ गयी हो।" **17:2** *या "सोचता।"

3 हे परमेश्‍वर, मुझे छुड़ाने का ज़िम्मा
ले ले,*
तेरे सिवा कौन है जो हाथ मिलाकर
मदद देने का वादा करे?[1]
4 तूने उनका मन बंद कर दिया है,
उनमें ज़रा भी सूझ-बूझ नहीं[2]
और तू उन्हें ऊँचा नहीं उठाता।
5 ऐसा इंसान अपने दोस्तों में बाँटता
फिरता है,
जबकि उसके बच्चों की आँखें तरस-
ती रह जाती हैं।
6 परमेश्‍वर ने लोगों के बीच मेरा
मज़ाक* बना दिया है,[3]
मेरा यह हाल कर दिया है कि वे मेरे
मुँह पर थूकते हैं।[4]
7 दुख के मारे मेरी आँखें बुझी-बुझी-
सी हैं,[5]
मेरा अंग-अंग घुलता जा रहा है।
8 मेरा हाल देखकर सीधे-सच्चे लोग
दंग रह जाते हैं
और निर्दोष लोग, भक्‍तिहीन के
कारण गुस्से से भर जाते हैं।
9 लेकिन नेक इंसान अपनी राह पर
बना रहेगा,[6]
जो बेकसूर* है, वह ताकतवर
होता जाएगा।[7]
10 तुम सब आओ और फिर से दलीलें
देना शुरू करो
क्योंकि अब तक तुममें से किसी ने
बुद्धि की बातें नहीं कहीं।[8]
11 मेरे दिन खत्म हो चुके हैं,[9]
मैंने जो-जो सोचा था, मेरे जितने
अरमान थे, सब बिखर गए।[10]
12 मेरे साथी रात को दिन बताते हैं,
कहते हैं 'सवेरा होनेवाला है!'
पर मुझे तो अँधेरा ही नज़र
आता है।
13 अगर यूँ ही इंतज़ार करता रहा, तो
कब्र मेरा घर बन जाएगी,[1]
मुझे अँधेरे में अपना बिस्तर बिछाना
पड़ेगा।[2]
14 मैं गड्ढे*[3] से कहूँगा, 'तू मेरा
पिता है।'
कीड़ों से कहूँगा, 'तू मेरी माँ है और
तू मेरी बहन।'
15 ऐसे में मेरे लिए क्या आशा है?[4]
क्या किसी को मेरे लिए कोई उम्मीद
नज़र आती है?
16 वह* तो कब्र के बंद दरवाज़ों के
पीछे कैद हो जाएगी,
तब मैं और मेरी आशा मिट्टी में
मिल जाएँगे।"[5]

18 जवाब में शूही बिलदद[6] ने कहा,
2 "तू कब तक बोलता रहेगा?
थोड़ा तो समझ से काम ले, तभी
हमारी बातचीत का कोई फायदा
होगा।
3 क्या तू हमें जानवर समझता है?[7]
क्या हम तुझे बेवकूफ* नज़र
आते हैं?
4 अगर तू गुस्से में अपने चिथड़े-
चिथड़े कर ले,
तो क्या तेरे न होने से धरती सुन-
सान हो जाएगी?
चट्टान अपनी जगह से खिसक
जाएगी?
5 दुष्ट की शमा बुझ जाएगी,
उसकी जलती लौ ठंडी पड़
जाएगी।[8]

17:3 *या "मेरा ज़ामिन बन जा।" **17:6** *शा., "कहावत।" **17:9** *शा., "जिसके हाथ शुद्ध हैं।"

17:14 *या "कब्र।" **17:16** *यानी मेरी आशा। **18:3** *या शायद, "अशुद्ध।"

अध्य. 17
1 नीत 17:18
2 2शम 17:14 यश 6:10 मत 11:25
3 भज 69:11, 12
4 अय 30:9, 10
5 अय 16:16 भज 6:7 भज 31:9
6 भज 119:165
7 भज 24:3, 4 भज 84:5, 7
8 अय 6:29
9 अय 7:6 अय 9:25 यश 38:10
10 याकू 4:13, 14

दूसरा कॉल.
1 सभ 12:5, 7
2 अय 10:21, 22
3 भज 49:7, 9 भज 143:7
4 अय 7:6 अय 14:19 अय 19:10
5 उत 3:19 अय 3:19

अध्य. 18
6 अय 2:11 अय 8:1
7 भज 73:22
8 अय 8:13, 14 अय 11:20

6 उसके डेरे में फैला उजाला अंधकार
में बदल जाएगा,
उसके घर का चिराग बुझ जाएगा।
7 तेज़ी से बढ़नेवाले उसके कदम धीमे
पड़ जाएँगे,
उसकी साज़िश उसे बरबाद कर
देगी।[1]
8 वह बिछे हुए जाल की तरफ जाएगा
और उसके पैर उसमें उलझकर रह
जाएँगे।
9 फंदा उसकी एड़ी को जकड़ लेगा,
जाल उसको फाँस लेगा।[2]
10 ज़मीन पर उसके लिए रस्सी का
फंदा छिपाया गया है,
उसकी राह में जाल बिछाया
गया है।
11 चारों तरफ से खौफ उसे डराएगा,[3]
हाथ धोकर उसके पीछे पड़ा रहेगा।
12 उसकी ताकत धीरे-धीरे खत्म हो
जाएगी,
बरबादी[4] आने पर वह डगमगा
जाएगा।
13 उसकी चमड़ी को सबसे जानलेवा
बीमारी* खा जाएगी
और उसके हाथ-पैरों को गला
देगी।
14 जिस डेरे में वह महफूज़ रहता था,
उसे वहाँ से निकालकर,[5]
दर्दनाक मौत देने के लिए* ले जाया
जाएगा।
15 अजनबी* उसके डेरे पर कब्ज़ा
जमा लेंगे,
उसके घर पर गंधक छिड़क दी
जाएगी।[6]
16 ज़मीन में उसकी जड़ें सूख जाएँगी,
उसकी लहराती शाखाएँ मुरझा
जाएँगी।
17 धरती से उसकी यादें मिट जाएँगी,
गली-कूचों में उसका नाम नहीं लिया
जाएगा।*
18 उसे उजाले से अँधेरे में धकेल दिया
जाएगा,
दुनिया से खदेड़ दिया जाएगा।
19 उसके न तो बच्चे रहेंगे, न ही
आनेवाली पीढ़ियाँ,
जहाँ वह रहता था, वहाँ
उसका वंश चलानेवाला कोई
न बचेगा।
20 जिस दिन उसका नाश होगा,
पश्‍चिम के रहनेवालों का दिल दहल
जाएगा,
पूरब के लोगों के रोंगटे खड़े हो
जाएँगे।
21 बुरा करनेवाले के साथ यही
होता है,
जो परमेश्‍वर को नहीं जानता
उसकी यही गत होती है।"

19 जवाब में अय्यूब ने कहा,
2 "तुम कब तक मेरी जान
खाते रहोगे?[1]
अपने शब्दों से मुझे कुचलते
रहोगे?[2]
3 दसियों बार तुमने मेरी
बेइज़्ज़ती की!*
मेरे साथ बेदर्दी से पेश आकर
तुम्हें ज़रा भी शर्म नहीं आयी?[3]
4 अगर मैंने गलती की है,
तो मैं ही सज़ा भुगतूँगा।

अध्य. 18
1 अय 5:13
2 अय 5:5; अय 22:5, 10
3 अय 15:21; अय 20:25
4 अय 15:23
5 अय 11:20
6 व्य 29:22, 23

दूसरा कॉल.

अध्य. 19
1 भज 42:10
2 भज 55:21; नीत 12:18
3 नीत 18:24

18:13 *शा., "मौत का पहलौठा।" **18:14** *शा., "आतंक के राजा के पास।" **18:15** *शा., "जो उसके यहाँ का नहीं है।"

18:17 *शा., "उसका कोई नाम न होगा।"
19:3 *या "मुझे फटकारा।"

5 अगर तुम खुद को मुझसे बड़ा
दिखाने पर तुले हो
और दावा करते हो कि मुझे नीचा
दिखाकर तुमने सही किया,
6 तो जान लो, परमेश्वर ने ही मेरा
यह हाल किया है,
उसी ने मुझे धोखे से अपने जाल में
फँसाया है।
7 मैं चिल्लाता रहा, 'यह सरासर
ज़्यादती है!' पर मेरी एक न सुनी
गयी,[1]
मदद के लिए पुकारता रहा, पर
मुझे इंसाफ न मिला।[2]
8 मेरे रास्ते में उसने दीवार खड़ी कर
दी कि मैं आगे न जा सकूँ,
मेरी राहों को उसने अंधकार से भर
दिया।[3]
9 मुझसे मेरी मान-मर्यादा छीन ली,
मेरे सिर से ताज उतार लिया।
10 चारों तरफ से वह मुझे तोड़ता रहा
कि मैं खत्म हो जाऊँ,
मेरी उम्मीद को उसने पेड़ की तरह
उखाड़ फेंका।
11 उसका क्रोध मेरे खिलाफ भड़क
उठा है,
वह मुझे अपना दुश्मन मान
बैठा है।[4]
12 उसकी फौज ने मेरे खिलाफ आकर
मोरचा बाँधा है,
मेरे डेरे को हर तरफ से घेर
लिया है।
13 मेरे अपने भाइयों को उसने मुझसे
दूर कर दिया,
जान-पहचानवाले मुझसे अनजान
बन गए।[5]
14 मेरे करीबी साथी* मुझे छोड़कर
चले गए,
जिन्हें मैं अच्छी तरह जानता था,
वे मुझे भूल गए।[1]
15 मेरे ही घर के मेहमान[2] और
दासियाँ मुझे पराया समझने लगे,
मैं उनके लिए बेगाना बन गया हूँ।
16 मैं अपने नौकर को आवाज़ लगाता
हूँ पर वह कोई जवाब नहीं देता,
तब भी नहीं जब मैं उससे दया की
भीख माँगता हूँ।
17 मेरी पत्नी को मेरी साँसों से भी घिन
होने लगी है,[3]
मेरे सगे भाई मेरी दुर्गंध से दूर
भागने लगे हैं।
18 छोटे-छोटे बच्चे भी मुझे
दुतकारते हैं,
जब मैं खड़ा होता हूँ तो मुझे
चिढ़ाते हैं।
19 मेरे सभी जिगरी दोस्त मुझसे नफ-
रत करने लगे हैं,[4]
जिन-जिन से मैं प्यार करता था वे
मेरे खिलाफ हो गए हैं।[5]
20 मेरी चमड़ी हड्डियों से चिपक
गयी है,[6]
मैं मौत से बाल-बाल बचा हूँ।
21 मेरे साथियो, रहम करो मुझ पर,
रहम करो!
क्योंकि परमेश्वर का हाथ मुझ पर
उठा है।[7]
22 उसकी तरह तुम भी मुझे क्यों सता
रहे हो?[8]
क्यों मुझ पर वार-पे-वार कर
रहे हो?*[9]
23 काश! मेरे शब्द लिख दिए जाएँ,
किसी किताब में इन्हें दर्ज़ कर लिया
जाए।

19:14 *या "मेरे रिश्तेदार।"

19:22 *शा., "क्यों मेरे माँस से तृप्त नहीं हो?"

अध्य. 19
1 भज 22:2 हब 1:2
2 लूक 18:7
3 अय 3:23 भज 88:8
4 अय 13:24
5 भज 31:11 भज 69:8

दूसरा कॉल.
1 भज 38:11
2 अय 31:32
3 अय 2:9
4 अय 17:6 भज 88:8
5 भज 109:5
6 अय 30:30 भज 102:5
7 अय 1:10-12 भज 38:2
8 अय 2:9, 10
9 भज 69:26

24 काश! लोहे की कलम से इन्हें चट्टान
पर लिखा जाए,
सीसे से भरकर इन्हें अमर कर
दिया जाए।
25 मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरा
एक छुड़ानेवाला है,[1]
जो बाद में आएगा और धरती पर
खड़ा होगा।
26 मेरी चमड़ी गल गयी है,
फिर भी इस हाल में मैं परमेश्‍वर
को देखूँगा।
27 मैं खुद उसे देखूँगा,
हाँ, अपनी आँखों से, किसी दूसरे
की आँखों से नहीं।[2]
मगर अब मैं अंदर से पस्त हो
चुका हूँ।*
28 तुम मेरे बारे में कहते हो, 'हम कहाँ
इसे सता रहे हैं?'[3]
जैसे सारी समस्या की जड़ मैं ही हूँ।
29 अरे कुछ तो डरो! उसकी तलवार से
डरो,[4]
जो गुनहगारों को नहीं छोड़ती।
याद रखो, न्याय करनेवाला
कोई है।"[5]

20 नामाती सोपर[6] ने जवाब दिया,
2 "मेरे खयाल मुझे बेचैन कर
रहे हैं, बोलने को मजबूर कर
रहे हैं,
मेरे अंदर हलचल मची है, मैं चुप
नहीं रह सकता।
3 मैंने अपमान करनेवाली तेरी डाँट
सुनी है
और अब मेरी समझ तुझे इसका
जवाब देगी।
4 तुझे तो यह पता होना चाहिए,
जब से इंसान* की सृष्टि हुई है,
तब से यही होता आया है।[1]
5 दुष्ट चंद दिनों के लिए हँसी-ठहाके
मारता है,
भक्तिहीन पल-भर के लिए खुशियाँ
मनाता है।[2]
6 उसका घमंड चाहे आसमान तक
पहुँच जाए,
उसका सिर बादलों को छू ले,
7 तब भी वह अपने मल की तरह
हमेशा के लिए खाक हो जाएगा।
जो उस दुष्ट को देखा करते थे
पूछेंगे, 'कहाँ गया वह?'
8 वह सपनों की तरह उड़ जाएगा,
ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेगा,
रात में देखे ख्वाब की तरह गायब
हो जाएगा।
9 जो आँखें उसे देखा करती थीं, उसे
फिर कभी न देखेंगी,
उसका अपना घर उसे देखने के
लिए तरस जाएगा।[3]
10 उसकी औलाद गरीबों के रहमो-
करम पर जीएगी,
वह अपने ही हाथों से दूसरों की
दौलत लौटा देगा।[4]
11 उसकी हड्डियों में कभी जवानी का
दमखम हुआ करता था,
पर अब वह* उसी के साथ मिट्टी में
मिल जाएगा।
12 अगर बुराई उसके मुँह को मीठी
लगती है
और वह उसे जीभ के नीचे दबा
लेता है,
13 अगर वह उसे मुँह में ही रखता है,
चटकारे भर-भरके उसे खाता है,

अध्य. 19
1 अय 14:14, भज 19:14, भज 69:18, भज 103:2, 4, मत 20:28, मर 10:45
2 भज 17:15
3 भज 69:26
4 व्य 32:41
5 भज 58:11, मत 7:1, रोम 14:4, याकू 4:12

अध्य. 20
6 अय 2:11, अय 11:1

दूसरा कॉल.
1 अय 8:8
2 अय 8:13, 19, अय 21:28
3 अय 8:13, 18
4 अय 20:18

19:27 *या "मेरे गुरदों ने काम करना बंद कर दिया है।"

20:4 *या "आदम।" 20:11 *यानी उसका दमखम।

14 तो वह उसके पेट में जाकर खट्टी हो
जाएगी,
नाग के ज़हर की तरह ज़हरीली बन
जाएगी।
15 उसने जो दौलत निगली है, उसे वह
उगल देगा,
परमेश्वर उसके पेट से उसे निकाल
लेगा।
16 वह नाग का ज़हर चूसेगा,
ज़हरीले साँप के डसने से मर
जाएगा।
17 वह शहद और मक्खन की धाराएँ
फिर न देखेगा,
उसे वे नदियाँ फिर नज़र न
आएँगी।
18 अपनी धन-संपत्ति से उसे कोई खुशी
न मिलेगी,
उसका सुख भोगे बगैर उसे वह
वापस करनी पड़ेगी।*[1]
19 क्योंकि उसने गरीबों को कुचलकर
छोड़ दिया,
उस घर को हड़प लिया जो उसने
नहीं बनाया।
20 फिर भी उसे मन की शांति नहीं
मिलेगी,
उसकी दौलत उसे नहीं बचा
पाएगी।
21 अब उसके हड़पने के लिए और
कुछ नहीं बचा,
इसलिए उसकी खुशहाली भी चंद
रोज़ की रह जाएगी।
22 अमीरी के शिखर पर पहुँचते ही
चिंताएँ उसे आ घेरेंगी,
दुखों का पहाड़ उस पर टूट पड़ेगा।
23 वह अपना पेट भर ही रहा होगा
कि परमेश्वर* उस पर अपनी
जलजलाहट बरसा देगा,
इतनी कि उसकी अंतड़ियाँ उससे
भर जाएँगी।
24 जब वह लोहे के हथियार से बचकर
भाग रहा होगा,
तब ताँबे के धनुष से निकले तीर
उसे छलनी कर देंगे।
25 वह अपनी पीठ से उस तीर को
बाहर निकालेगा,
जिसकी चमकती नोंक उसके पित्ते
में जा घुसी है
और उस पर आतंक छा जाएगा।[1]
26 उसके खज़ाने को घोर अंधकार खा
जाएगा,
वह उस आग में भस्म हो जाएगा
जिसे किसी ने हवा न दी हो,
उसके डेरे में बचे हुओं पर आफत
आ पड़ेगी।
27 स्वर्ग उसके गुनाहों का खुलासा
करेगा,
धरती उसके खिलाफ गवाही देगी,
28 बाढ़ आकर उसका घर बहा ले
जाएगी।
हाँ, परमेश्वर के* क्रोध के दिन
एक बड़ा सैलाब आएगा।
29 दुष्टों को परमेश्वर की तरफ से
यही फल मिलेगा,
परमेश्वर ने उनके लिए यही विरा-
सत ठहरायी है।"

21 जवाब में अय्यूब ने कहा,
2 "मेरी बात ध्यान से सुनो,
इस तरह तुम मुझे दिलासा दोगे।
3 मैं क्या कहना चाहता हूँ पहले सुन
तो लो,

अध्य. 20
1 अय 20:10

दूसरा कॉल.
1 अय 15:21
अय 18:5, 11

20:18 *शा., "और वह उसे निगल नहीं पाएगा।"

20:23 *शा., "वह।" 20:28 *शा., "उसके।"

फिर जितनी खिल्ली उड़ानी है उड़ा
लेना।[1]
4 क्या मैं किसी इंसान के सामने
अपना दुखड़ा रो रहा हूँ?
अगर ऐसा होता तो मेरा सब्र कब
का टूट चुका होता।
5 मुझे गौर से देखो, तुम दंग रह
जाओगे,
अपने मुँह पर हाथ रख लोगे।
6 जो मुझ पर बीती, उसे सोचकर मैं
परेशान हो उठता हूँ,
मेरा शरीर थर-थर काँपने
लगता है।
7 ऐसा क्यों है कि दुष्ट लंबी उम्र
जीता है,[2]
सुख से रहता है, दौलतमंद* हो
जाता है?[3]
8 उसके बच्चे उसके सामने फलते-
फूलते हैं,
वह अपनी कई पीढ़ियाँ देखता है,
9 उसका घर महफ़ूज़ है, उसे कोई डर
नहीं सताता,[4]
परमेश्वर उसे अपनी छड़ी से सज़ा
नहीं देता।
10 उसके बैल, गायों को गाभिन
करते हैं
और उसकी गायें बच्चे जनती हैं,
एक का भी गर्भ नहीं गिरता।
11 उसके लड़के मस्ती में नाचते हैं,
ऐसे कूदते-फाँदते घर से
निकलते हैं, जैसे भेड़ों को खोल
दिया गया हो।
12 वह डफली और सुरमंडल पर
गाता है,
बाँसुरी की धुन पर खुशियाँ
मनाता है।[5]
13 उसकी ज़िंदगी मज़े में कटती है,
वह चैन से* कब्र में उतर जाता है।
14 वह सच्चे परमेश्वर से कहता है,
'मुझे अकेला छोड़ दे,
नहीं जानना मुझे तेरी राहों के
बारे में।[1]
15 सर्वशक्तिमान कौन है जो मैं उसकी
सेवा करूँ?[2]
उसके बारे में सीखकर मुझे क्या
फायदा?'[3]
16 मगर मैं जानता हूँ, दुष्ट की खुश-
हाली उसके बस में नहीं।[4]
उसकी सोच* उसी को मुबारक हो,
उससे मेरा कोई वास्ता नहीं।[5]
17 क्या कभी दुष्टों के दीपक बुझे हैं?[6]
क्या कभी उन पर आफत टूटी है?
क्या कभी परमेश्वर ने क्रोध में
उनका नाश किया है?
18 क्या कभी हवा उन्हें घास-फूस की
तरह उड़ा पायी है?
क्या कभी आँधी का झोंका उन्हें
भूसी की तरह उड़ा पाया है?
19 परमेश्वर उनके पाप की सज़ा
उनके बेटों के लिए भी रख
छोड़ता है।
काश! दुष्ट को पता चल जाए कि
परमेश्वर उसे उसकी दुष्टता का
सिला दे रहा है।[7]
20 ऐसा हो कि वह अपनी आँखों से
अपनी बरबादी देखे,
सर्वशक्तिमान के क्रोध का प्याला
पीए।[8]
21 जब दुष्ट की ज़िंदगी के महीने कम
कर दिए जाएँगे,
तो उसके बाद उसके बाल-बच्चों का
क्या होगा, उसे क्या चिंता![9]

अध्य. 21
1 अय 16:10, 20; अय 17:2; इब्र 11:36
2 हब 1:3, 13
3 अय 12:6; भज 37:7; भज 73:3; भज 73:12; यिर्म 12:1
4 भज 73:3, 5
5 यश 5:12; यश 22:13; आम 6:4, 5

दूसरा कॉल.
1 भज 10:4, 11; भज 73:3, 11
2 निर्ग 5:2; भज 10:4; हो 13:6
3 मला 3:14
4 लूक 12:19, 20
5 भज 1:1
6 नीत 13:9; नीत 20:20; नीत 24:20
7 भज 11:6; यश 26:11
8 भज 75:8; यश 51:17; यिर्म 25:15; प्रक 14:10
9 भज 55:23

21:7 *या "ताकतवर।"
21:13 *या "पल-भर में।" यानी दर्दनाक मौत नहीं मरता बल्कि तुरंत मर जाता है।
21:16 *या "सलाह; साज़िश।"

22 क्या कोई परमेश्‍वर को ज्ञान की
बातें सिखा सकता है?*[1]
वह तो बड़े-बड़ों का न्याय
करता है।[2]
23 ऐसा इंसान भी मर जाता है जिसमें
दमखम हो,[3]
जो बेफिक्र होकर चैन की ज़िंदगी
जी रहा हो,[4]
24 जिसकी जाँघें भरी-भरी हों,
जिसकी हड्डियों में जान हो।*
25 और ऐसा इंसान भी मर जाता है जो
दिन-रात आहें भरता है,
जिसने कभी कोई सुख नहीं देखा।
26 दोनों मिट्टी में मिल जाते हैं[5]
और दोनों को ही कीड़े ढक
लेते हैं।[6]
27 देखो, मैं खूब जानता हूँ तुम क्या
सोच रहे हो,
मुझ पर ज़्यादती करने* के लिए
तुम क्या साज़िश कर रहे हो।[7]
28 यही पूछते हो न तुम, 'बड़े-बड़े
लोगों का घर कहाँ रहा?
दुष्टों का डेरा कहाँ गया?'[8]
29 ज़रा मुसाफिरों से पूछकर देखो,
उनकी बातों* पर गौर करो,
30 तब तुम जानोगे, विपत्ति के दिन
दुष्ट को छोड़ दिया जाता है,
मुसीबत आने पर वह बच
निकलता है।
31 पर कौन दुष्ट के मुँह पर कहेगा कि
तेरे काम बुरे हैं?
कौन उसकी बुराइयों का बदला उसे
देगा?

21:22 *या "परमेश्‍वर को कुछ सिखा सकता है?" 21:24 *शा., "हड्डियाँ गूदे से भरी हों।" 21:27 *या शायद, "मुझे चोट पहुँचाने।" 21:29 *या "उनके सबूतों।"

अध्य. 21
1 यश 40:13, 14 रोम 11:34 1कुर 2:16
2 यश 40:23
3 भज 49:17 लूक 12:19, 20
4 भज 73:12, 19 मत 24:38, 39
5 अय 3:19 सभ 9:2
6 अय 24:20
7 भज 59:3
8 अय 20:5, 7

दूसरा कॉल.
1 अय 3:17
2 रोम 5:12
3 अय 16:2, 3

अध्य. 22
4 अय 2:11 अय 4:1
5 अय 15:14, 15
6 अय 2:3 अय 32:3
7 अय 1:8 अय 4:7
8 अय 31:19, 22

32 जब उसे दफनाने के लिए ले जाया
जाता है,
तब उसकी कब्र पर पहरा बिठाया
जाता है,
33 कब्र की मिट्टी भी उसके लिए मुला-
यम सेज बिछाती है,[1]
उससे पहले भी अनगिनत लोग
मिट्टी में मिल गए
और उसके बाद भी कई लोग मिल
जाएँगे।[2]
34 तो फिर क्यों मुझे बेकार में दिलासा
दे रहे हो,[3]
तुम्हारी बातों में झूठ और धोखे के
सिवा कुछ नहीं।"

22 जवाब में तेमानी एलीपज[4] ने
कहा,
2 "परमेश्‍वर की नज़र में इंसान का
क्या मोल?
अंदरूनी समझ रखनेवाला इंसान
उसके किस काम का?[5]
3 तेरे नेक होने से क्या सर्वशक्तिमान
को कोई फर्क पड़ेगा?*
तेरे निर्दोष बने रहने से उसे कोई
फायदा होगा?[6]
4 अगर तुझमें परमेश्‍वर के लिए
भक्ति है,
तो क्या वह तुझसे मुकदमा लड़ेगा?
तुझे सज़ा देगा?
5 तेरी दुष्टता बहुत बढ़ गयी है, इस-
लिए वह तेरे खिलाफ हो गया है।
क्या तेरे गुनाहों का कभी अंत
होगा?[7]
6 तू बेवजह अपने भाइयों की चीज़ें
गिरवी रख लेता है,
गरीबों* के कपड़े तक उतरवा
लेता है।[8]

22:3 *या "खुशी होगी?" 22:6 *शा., "नंगों।"

7 तू थके-माँदों को पानी नहीं पिलाता,
भूखों को रोटी नहीं खिलाता।[1]
8 तेरे जैसे ताकतवर लोगों ने ज़मीन
पर कब्ज़ा कर लिया है[2]
और वहाँ तेरे जैसे बड़े-बड़े लोगों
का ही बसेरा है।
9 तू विधवाओं को खाली हाथ लौटा
देता है,
अनाथों* को दुख देता है।#
10 इसीलिए तेरे चारों तरफ जाल
बिछे हैं,[3]
खौफ अचानक आकर तुझे डरा
देता है।
11 ऐसा अँधेरा छाया है कि तुझे कुछ
दिखायी नहीं देता,
बाढ़ का उफनता पानी तुझे अपने में
समा लेता है।
12 क्या परमेश्वर आसमान की बुलं-
दियों पर नहीं?
तारों को देख, वे कितनी ऊँचाई
पर हैं।
13 पर तू कहता है, 'परमेश्वर क्या
जानता है?
क्या वह घने बादलों के आर-पार
देखकर न्याय कर सकता है?
14 बादलों का परदा हमें उसकी नज़रों
से छिपा लेता है,
तभी वह आसमान के घेरे पर चलते
हुए हमें नहीं देख सकता।'
15 क्या तू उस डगर पर चलेगा,
जिस पर सदियों से दुष्ट चलते
आए हैं?
16 ऐसे लोग वक्त से पहले मर
जाते हैं,
बाढ़ का पानी* उनकी नींव बहा ले
जाता है।[4]
17 दुष्ट सच्चे परमेश्वर से कहते थे,
'हमें अकेला छोड़ दे!'
'सर्वशक्तिमान हमारा क्या कर
सकता है?'
18 मगर वही उनके घरों को अच्छी
चीज़ों से भरता है।
(उनकी इस घिनौनी सोच से मेरा
कोई वास्ता नहीं।)
19 नेक लोग दुष्टों के विनाश पर
खुशियाँ मनाएँगे,
निर्दोष लोग उनकी खिल्ली उड़ाते
हुए कहेंगे,
20 'हमारे विरोधी मारे गए,
उनका जो कुछ बचा था वह आग में
भस्म हो गया।'
21 इसलिए परमेश्वर को जान और तू
शांति से रहेगा,
तेरे साथ सबकुछ अच्छा होगा।
22 उसके मुँह से निकलनेवाले कायदे-
कानूनों को मान,
अपने दिल में उसकी बातें
संजोए रख।[1]
23 अगर तू सर्वशक्तिमान के पास
लौट आए,
तो तू फिर आबाद हो जाएगा।[2]
अगर तू अपने डेरे से बुराई
निकाल दे,
24 अपना सोना* धूल में फेंक दे,
ओपीर# का सोना[3] चट्टानी घाटियों
में डाल दे,
25 तो सर्वशक्तिमान तेरे लिए सोने
जैसा
और बढ़िया चाँदी जैसा बेशकीमती
ठहरेगा।

22:9 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।" #शा., "की बाँहें तोड़ देता है।" **22:16** *शा., "नदी।"

22:24 *या "अपने सोने के डले।" #यह जगह उम्दा किस्म के सोने के लिए मशहूर थी।

अध्य. 22
1 अय 31:17, 22
2 अय 31:25, 28
3 अय 18:5, 9
4 अय 4:18, 19

दूसरा कॉल.
1 अय 11:13
2 अय 8:5, 6
3 1रा 9:28
अय 28:16
भज 45:9
यश 13:12

26 तू सर्वशक्तिमान में खुशी पाएगा
और उसकी ओर अपना मुँह उठा सकेगा।
27 तू फरियाद करेगा और वह तेरी सुनेगा,
अपनी मन्नत को तू पूरा करेगा।
28 तू जो कुछ करने की ठानेगा, उसमें कामयाब होगा,
जिस राह पर तू चलेगा वह रौशन होगी।
29 अगर तू घमंड से भरी बातें करे, तो तुझे नीचा किया जाएगा,
परमेश्वर सिर्फ नम्र लोगों की हिफाज़त करता है।
30 उन्हें छुड़ाता है जो बेकसूर हैं,
इसलिए अगर तू निर्दोष है* तो वह तुझे ज़रूर छुड़ाएगा।"

23 तब अय्यूब ने जवाब दिया,
2 "आज भी मैं चुप नहीं रहूँगा, आवाज़ उठाऊँगा,[1]
आहें भरते-भरते मैं थक चुका हूँ।
3 काश! मुझे पता होता परमेश्वर कहाँ मिलेगा,[2]
तो मैं उसके निवास-स्थान में जाता।[3]
4 अपना मामला उसके सामने पेश करता,
अपनी सफाई में एक-के-बाद-एक दलीलें देता।
5 उसकी बातों को ध्यान से सुनता
और समझने की कोशिश करता।
6 क्या वह मुझसे लड़ने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देगा?
नहीं, नहीं, वह मेरी बात ज़रूर सुनेगा।[4]
7 तभी सीधा-सच्चा इंसान उसके साथ अपना मामला निपटा सकेगा।

इस तरह मेरा न्यायी मुझे हमेशा के लिए बाइज़्ज़त बरी कर देगा।
8 मगर जब मैं उसे ढूँढ़ने पूरब में जाता हूँ तो वह वहाँ नहीं मिलता,
पश्चिम में जाता हूँ तो वहाँ भी नहीं मिलता।
9 जब वह उत्तर में काम करता है तो मैं उसे नहीं देख पाता,
वह दक्षिण की ओर जाता है, तब भी वह मुझे नज़र नहीं आता।
10 पर वह अच्छी तरह जानता है, मैं किस राह पर चला हूँ।[1]
जब वह मुझे तपा लेगा, तब मैं खरे सोने जैसा हो जाऊँगा।[2]
11 मैं उसके नक्शे-कदम पर नज़दीकी से चला हूँ,
मेरे कदम उसकी राह से नहीं भटके।[3]
12 उसके मुँह से निकली हर आज्ञा का मैंने पालन किया है,
जितना करना चाहिए था,
उससे कहीं बढ़कर उसकी बात मानी है।[4]
13 एक बार जब वह ठान लेता है, तो कौन उसे रोक सकता है?[5]
जब उसे कुछ करना होता है, तो करके ही रहता है।[6]
14 मेरे साथ उसने जो-जो करने की ठानी है वह सब करेगा,
ऐसी बहुत-सी बातें हैं जो उसने सोच रखी हैं।
15 परमेश्वर के कारण मैं गहरी चिंता में हूँ,
उसके बारे में सोचकर मेरी श्रद्धा और बढ़ जाती है।
16 उसने मेरा मन कच्चा कर दिया है,
सर्वशक्तिमान ने मुझे डरा दिया है।

22:30 *शा., "तेरे हाथ शुद्ध हैं।"

अध्य. 23
1 अय 10:1
2 अय 13:3; अय 16:21
3 अय 31:37
4 भज 22:24; यश 57:16

दूसरा कॉल.
1 अय 1:8; भज 1:6; भज 139:1
2 अय 31:6; भज 17:3
3 भज 18:21; भज 44:18
4 भज 119:11, 127; यिर्म 15:16
5 रोम 9:19
6 गि 23:19; भज 135:6; यश 14:24; यश 46:10

17 चाहे मेरे चारों तरफ अँधेरा
छाया हो,
मेरा चेहरा घोर अंधकार से
ढका हो,
फिर भी मैं खामोश नहीं रहूँगा।

24 सर्वशक्तिमान ने एक समय
क्यों नहीं ठहराया?[1]
परमेश्वर को जाननेवाले उसका
दिन* क्यों नहीं देख पाते?
2 दुष्ट अपने पड़ोसी की ज़मीन का
सीमा-चिन्ह खिसकाते हैं,[2]
दूसरों की भेड़ें हाँककर अपने चरा-
गाह में ले जाते हैं।
3 वे अनाथ का गधा छीन ले जाते हैं,
विधवा का बैल ज़बरदस्ती गिरवी
रख लेते हैं।[3]
4 गरीब को रास्ता छोड़ने के लिए
मजबूर करते हैं,
वह बेबस इंसान उनसे छिपता
फिरता है।[4]
5 वह वीराने के जंगली गधे[5] की तरह
खाना ढूँढ़ता फिरता है,
अपने बच्चों का पेट भरने के लिए
रेगिस्तान छान मारता है।
6 उसे दूसरों के खेत में जाकर फसल
काटनी पड़ती है,*
दुष्टों के बाग से बचे हुए अंगूर
बीनने पड़ते हैं।
7 उसके पास कपड़े नहीं हैं, वह सारी
रात नंगा पड़ा रहता है,[6]
ठंड में भी उसके पास ओढ़ने के
लिए कुछ नहीं होता।
8 वह पहाड़ों पर होनेवाली बारिश में
भीग जाता है,
छिपने की जगह न मिलने पर
चट्टानों से लिपट जाता है।
9 अनाथ को उसकी माँ के सीने से
छीन लिया जाता है,[1]
गरीब के कपड़े तक गिरवी रख
लिए जाते हैं,[2]
10 वह नंगा लौटने के लिए मजबूर हो
जाता है,
अनाज के गट्ठर उठाता है मगर खुद
भूख से कुलबुलाता है।
11 वह खेतों* में मुंडेरों के बीच कड़ी
धूप में मज़दूरी करता है,#
अंगूर रौंदकर रस निकालता है,
मगर खुद एक बूँद के लिए तरस
जाता है।[3]
12 मरनेवालों का कराहना पूरे शहर में
गूँज रहा है,
बुरी तरह घायल लोग मदद के लिए
पुकार रहे हैं,[4]
मगर परमेश्वर को कोई फर्क नहीं
पड़ता।*
13 ऐसे भी लोग हैं जिन्हें उजाले से
नफरत है,[5]
वे उसकी राह को नकारते हैं
और उस पर चलना नहीं चाहते।
14 पौ फटते ही कातिल निकल
पड़ता है,
गरीब-मोहताजों का खून बहाता है[6]
और रात के अँधेरे में वह चोरी
करता है।
15 व्यभिचार करनेवाला शाम ढलने का
इंतज़ार करता है।[7]
कहता है, 'मुझे कोई नहीं देखेगा'[8]
और अपना चेहरा ढक लेता है।

24:1 *यानी उसके न्याय का दिन। 24:6 *या शायद, "उसे खेत में चारा काटना पड़ता है।"

24:11 *या "सीढ़ीदार खेतों।" #या शायद, "के बीच तेल पेरकर निकालता है।" 24:12 *या शायद, "परमेश्वर किसी को दोषी नहीं ठहराता।"

अध्य. 24
1 हब 1:2
2 व्य 19:14; व्य 27:17; नीत 23:10; हो 5:10
3 व्य 24:17
4 भज 109:16; नीत 22:16; यश 10:1, 2; याकू 5:4
5 यश 32:14; यिर्म 14:6
6 निर्ग 22:26, 27; व्य 24:13

दूसरा कॉल.
1 2रा 4:1
2 निर्ग 22:26, 27; व्य 24:13
3 यिर्म 22:13; याकू 5:4
4 सभ 4:1
5 यूह 3:19
6 भज 10:4, 8
7 नीत 7:8-10
8 2शम 12:9, 12; भज 94:3, 7; नीत 30:20

16 अँधेरा होते ही चोर घरों में सेंध
लगाता है
और सूरज उगते ही वह छिप
जाता है।
वह उजाले को जानता ही नहीं।[1]
17 सुबह की रौशनी दुष्ट को घोर अंध-
कार जान पड़ती है,
उसकी यारी उस अँधेरे से है जिससे
दूसरे खौफ खाते हैं।
18 मगर तेज़ पानी उसे बहा ले
जाएगा,*
उसकी ज़मीन पर शाप पड़ेगा,[2]
वह अपने अंगूरों के बाग में कभी
नहीं लौट पाएगा।
19 जैसे तपती गरमी और बंजर ज़मीन
बर्फीले पानी को सुखा देती है,
वैसे ही कब्र पापी को निगल
जाती है।[3]
20 उसकी माँ* उसे भूल जाएगी,
वह कीड़ों की दावत बन जाएगा,
सबकी यादों से मिट जाएगा,[4]
दुष्ट इंसान पेड़ की तरह टूटकर
गिर जाएगा।
21 वह बाँझ औरतों को अपना शिकार
बनाता है,
विधवाओं के साथ बदसलूकी
करता है।
22 ऐसे ज़ालिमों को परमेश्वर* अपनी
ताकत से खत्म कर देगा,
चाहे वे कितने ही ऊँचे उठें, उन्हें
अपनी ज़िंदगी का भरोसा नहीं
होगा।
23 दुष्टों को परमेश्वर* बेखौफ,
बेफिक्र जीने देता है,[5]
मगर उसकी आँखें उनके हर काम*
पर लगी रहती हैं।[1]
24 कुछ समय के लिए वे फलते-फूलते
हैं, फिर मुरझा जाते हैं,[2]
बाकी लोगों की तरह खत्म हो
जाते हैं,[3]
अनाज की बालों की तरह काट
दिए जाते हैं।
25 अब बताओ, कौन मुझे झूठा
साबित कर सकता है?
कौन मेरी बातों को काट
सकता है?"

25 जवाब में शूही बिलदद[4] ने कहा,
2 "राज करने का हक पर-
मेश्वर को है, उसके पास
ज़बरदस्त शक्ति है,
वह स्वर्ग* में शांति कायम
करता है।
3 क्या उसकी सेनाओं को कोई गिन
सकता है?
कौन है जिस पर उसकी रौशनी नहीं
चमकती?
4 तो फिर नश्वर इंसान उसके सामने
नेक कैसे हो सकता है?[5]
औरत से पैदा हुआ इंसान निर्दोष*
कैसे हो सकता है?[6]
5 जब उसे चाँद की चाँदनी फीकी
लगती है,
आसमान के तारों में दोष नज़र
आता है,
6 तो भला नश्वर इंसान जो एक
इल्ली है,
इंसान जो एक कीड़ा है,
उसके सामने कैसे शुद्ध ठहर
सकता है?"

अध्य. 24
1 यूह 3:20
2 व्य 28:15, 16
नीत 3:33
3 भज 49:13, 14
भज 55:15
लूक 12:20
4 नीत 10:7
सभ 8:10
सभ 9:5
5 सभ 8:11
यश 56:12
लूक 12:19

दूसरा कॉल.
1 भज 11:4
नीत 5:21
नीत 15:3
2 भज 37:10
भज 92:7
याकू 1:11
3 सभ 8:12, 13

अध्य. 25
4 अय 2:11
अय 8:1
5 अय 4:17, 18
अय 22:3
6 अय 15:14, 15

24:18 *शा., "वह पानी की सतह पर फुर्तीला है।" **24:20** *शा., "गर्भ।" **24:22, 23** *शा., "वह।"

24:23 *शा., "उनकी राहों।" **25:2** *शा., "ऊँची जगहों।" **25:4** *या "शुद्ध।"

26 तब अय्यूब ने कहा,
2 “क्या खूब मदद की है तूने
कमज़ोरों की!
जिनकी बाँहों में ताकत नहीं, उन्हें
क्या सँभाला है तूने![1]
3 नासमझों को जो सलाह दी, उसकी
तो दाद देनी पड़ेगी![2]
क्या अक्लमंदी* दिखायी है तूने!
4 किसे समझाने की कोशिश कर
रहा है तू?
किससे सीखकर आया है ये बातें?
5 मरे हुए थर-थर काँपते हैं,
वे समुंदर और उसके जीवों से भी
निचली जगह में हैं।
6 कब्र परमेश्वर के* सामने
बेपरदा है[3]
और विनाश की जगह# उसके
सामने खुली पड़ी है।
7 वह उत्तरी आकाश* को खाली
जगह पर ताने हुए है,[4]
पृथ्वी को बिना किसी सहारे के लट-
काए हुए है।
8 उसने बादलों को पानी से लबालब
भरा है,[5]
इतने भारी होने पर भी वे फटते
नहीं।
9 उसने बादलों को ऐसा फैलाया है
कि कोई उसकी राजगद्दी को देख
न सके।[6]
10 उसने पानी पर सीमा-रेखा*
खींची है,[7]
उजाले और अंधकार की सरहद
ठहरायी है।

11 उसकी फटकार से आसमान के खंभे
हिल जाते हैं,
वे डर के मारे काँपने लगते हैं।
12 वह अपनी ताकत से समुंदर में हल-
चल पैदा करता है,[1]
अपनी बुद्धि से विशाल समुद्री
जीव* के टुकड़े कर देता है।[2]
13 उसकी एक फूँक से आसमान साफ
हो जाता है,
वह भागते साँप को भी दबोचकर
मार डालता है।
14 देख! यह सब उसके कामों के छोर
को छूने जैसा है,[3]
उसकी फुसफुसाहट सुनने जैसा है,
तो फिर उसके भयानक गरजन को
कौन समझ पाएगा?”[4]

27 अय्यूब ने अपनी बात जारी
रखी,
2 “मुझे उस परमेश्वर के जीवन की
शपथ,
जिसने मुझे इंसाफ नहीं दिया,[5]
जिसने मेरे जी को दुखी किया,[6]
उसी सर्वशक्तिमान की शपथ
खाकर कहता हूँ,
3 जब तक मेरी साँसें चलती रहेंगी,
परमेश्वर से मिली जीवन की साँसें
मेरे नथनों में बनी रहेंगी,[7]
4 मैं अपने होंठों से कोई बुरी बात
नहीं कहूँगा,
अपनी ज़बान से कोई झूठी बात
नहीं बोलूँगा।
5 तुम लोगों को नेक मानने की मैं
सोच भी नहीं सकता,
मैंने ठान लिया है, मैं मरते दम तक
निर्दोष बना रहूँगा।[8]

26:3 *या “बुद्धि जिससे फायदा होता।” 26:6 *शा., “उसके।” #या “और अबद्दोन।” शब्दावली देखें। 26:7 *शा., “उत्तर दिशा।” 26:10 *या “क्षितिज।”

26:12 *शा., “राहाब।”

अध्य. 26
1 अय 16:2, 3
2 अय 12:2
अय 17:10
3 भज 139:8
इब्र 4:13
4 अय 9:8
भज 104:2
यश 42:5
5 नीत 30:4
सभ 11:3
6 भज 97:2
7 नीत 8:27
यिर्म 5:22

दूसरा कॉल.
1 भज 74:13
यश 51:15
2 अय 9:13
3 भज 92:5
सभ 3:11
यश 55:9
4 अय 37:5

अध्य. 27
5 अय 34:5
6 रूत 1:20
2रा 4:27
7 उत 2:7
यश 42:5
प्रेष 17:25
8 अय 22:1, 5
नीत 27:11

6 मैं अपनी नेकी को थामे रहूँगा, उसे
कभी नहीं छोड़ूँगा,[1]
जब तक मैं ज़िंदा हूँ मेरा मन मुझे
नहीं धिक्कारेगा।*
7 काश! मेरे दुश्मनों का हाल दुष्टों
जैसा हो,
मेरे हमलावरों का हश्र बुरे लोगों
जैसा हो,
8 क्योंकि जब परमेश्वर भक्तिहीन की
जान लेता है,[2]
उसे मिटा देता है, तो क्या उसके
लिए कोई आशा रह जाती है?
9 जब उस पर मुसीबतें आती हैं,
तो क्या परमेश्वर उसकी दुहाई
सुनता है?[3]
10 क्या ऐसा इंसान सर्वशक्तिमान में
खुशी पाता है?
क्या वह परमेश्वर को हर वक्त
पुकारता है?
11 मैं तुम्हें परमेश्वर की शक्ति के बारे
में* सिखाऊँगा,
सर्वशक्तिमान के बारे में तुमसे कुछ
नहीं छिपाऊँगा।
12 अगर तुम सबको सचमुच दर्शन
मिले हैं,
तो फिर तुम्हारी बातें खोखली
क्यों हैं?
13 परमेश्वर की तरफ से दुष्ट की
जागीर,[4]
सर्वशक्तिमान की तरफ से ज़ालिम
की विरासत यही है:
14 उसके चाहे कई बेटे हों फिर भी वे
तलवार से मारे जाएँगे[5]
और उसके वंशजों को खाने के
लाले पड़ेंगे।

अध्य. 27
1 अय 2:3
2 अय 13:15, 16; अय 36:13
3 अय 35:12; भज 18:37, 41; नीत 28:9; यिर्म 11:11; याकू 4:3
4 भज 11:6; सभ 8:13; मला 3:5
5 एस 9:7-10; हो 9:13

दूसरा कॉल.
1 नीत 13:22; नीत 28:8; सभ 2:26
2 यश 1:8; विल 2:6
3 भज 73:3, 19
4 मत 7:26, 27
5 भज 83:15
6 यश 10:3; आम 2:14

15 उसकी मौत के बाद उसके लोगों को
महामारी खा जाएगी,
उनकी विधवाएँ उनके लिए आँसू
नहीं बहाएँगी।
16 चाहे वह धूल के कणों के समान
चाँदी बटोर ले,
मिट्टी के ढेर की तरह बढ़िया कपड़ों
का अंबार लगा ले,
17 मगर उन कपड़ों को इकट्ठा करने
पर भी,
वह उन्हें पहन नहीं पाएगा, नेक
इंसान उन्हें पहनेगा[1]
और उसकी चाँदी निर्दोष लोग
आपस में बाँटेंगे।
18 उसका बनाया घर पतंगे के कोए
जैसा हलका
और पहरेदारों के छप्पर[2] जितना
कमज़ोर होगा।
19 भले ही सोते वक्त वह अमीर
हो, मगर उसके पास कुछ नहीं
बचेगा,
नींद से जागने पर वह कंगाल हो
चुका होगा।
20 डर का सैलाब उसे बहा ले जाएगा,
तूफान उसे रातों-रात उड़ा ले
जाएगा।[3]
21 पूर्वी हवा उसे उड़ा ले जाएगी, वह
कहीं नज़र नहीं आएगा,
हवा उसे अपनी जगह से उखाड़
फेंकेगी,[4]
22 बड़ी बेदर्दी से उस पर टूट पड़ेगी,[5]
उसकी मार से बचने की वह लाख
कोशिश करेगा,[6]
23 उसकी बुरी हालत देखकर हवा
तालियाँ पीटेगी,
अपनी जगह पर खड़े-खड़े सीटियाँ

27:6 *या "ताने नहीं मारेगा।" **27:11** *या शायद, "परमेश्वर के हाथ से।"

बजाएगी,[1] उसका मज़ाक
उड़ाएगी।*

28 चाँदी की खोज में खदान खोदी
जाती हैं
और ऐसी जगह होती हैं जहाँ
सोना* मिलता है,
2 लोहा ज़मीन से निकाला जाता है
और ताँबा चट्टानें पिघलाकर।[2]
3 कीमती धातु* की खोज में,
इंसान अँधेरे को चीरता हुआ
ज़मीन की गहराइयों में, घोर अंध-
कार में खोदता जाता है।
4 वह इंसान की बस्तियों से दूर सुरंग
बनाता है,
ऐसी सुनसान जगह जहाँ कोई
आता-जाता नहीं।
सुरंग में उतरकर वह रस्सियों पर
लटकते हुए काम करता है।
5 ऊपर धरती पर तो अनाज
उगता है,
मगर नीचे उथल-पुथल मची होती
है, मानो आग लगी हो।*
6 वहाँ चट्टानों में नीलम पाया जाता है,
धूल में सोने के कण मिलते हैं।
7 शिकारी पक्षी इस जगह का पता
तक नहीं जानते,
काली चील की पैनी नज़र भी वहाँ
का रास्ता नहीं ढूँढ़ पाती।
8 खूँखार जानवर वहाँ नज़र नहीं
आते,
जवान शेर वहाँ शिकार ढूँढ़ता नज़र
नहीं आता।

27:23 *या शायद, "वे तालियाँ पीटेंगे और अपनी जगह पर खड़े-खड़े सीटियाँ बजाकर उसका मज़ाक उड़ाएँगे।" 28:1 *या "कच्चा सोना।" 28:3 *शा., "पत्थर।" 28:5 *ज़ाहिर है कि यहाँ खदान में होनेवाले काम की बात की गयी है।

अध्य. 27
1 विल 2:15

अध्य. 28
2 व्य 8:7, 9

दूसरा कॉल.
1 2रा 20:20
2इत 32:30
2 नीत 2:6
याकू 1:5
3 अय 28:28
4 नीत 3:15
5 रोम 11:34
6 नीत 3:13, 14
7 यश 13:12
8 नीत 16:16

9 इंसान कड़ी चट्टानें* तोड़ता है,
पहाड़ों को उसकी नींव से उखाड़
देता है।
10 चट्टानों में पानी की सुरंग[1]
बनाता है,
उसकी नज़र हर कीमती चीज़ ढूँढ़
निकालती है।
11 वह नदी का पानी आने का हर
रास्ता बंद कर देता है,
धरती में दफन चीज़ों को बाहर
उजाले में लाता है।
12 लेकिन बुद्धि कहाँ मिलेगी?[2]
समझ का सोता कहाँ पाया जा
सकता है?[3]
13 कोई भी इंसान इसका मोल नहीं
जानता,[4]
न ही यह दुनिया* में कहीं पायी
जाती है।
14 गहरा सागर कहता है, 'वह मेरे
पास नहीं!'
समुंदर कहता है, 'वह मेरे पास भी
नहीं!'[5]
15 खरा सोना देकर भी उसे नहीं
खरीदा जा सकता,
चाँदी तौलकर देने पर भी उसे नहीं
पाया जा सकता।[6]
16 ओपीर का सोना[7] तो क्या,
बेशकीमती सुलेमानी पत्थर और
नीलम देकर भी उसे नहीं खरीदा
जा सकता।
17 सोना और काँच भी उसकी बराबरी
नहीं कर सकते,
तपाए हुए सोने का बरतन देकर
भी उसे हासिल नहीं किया जा
सकता।[8]

28:9 *शा., "चकमक पत्थर।" 28:13 *शा., "जीवितों के देश में।"

18 मूंगा और बिल्लौर तो उसके सामने
फीके पड़ जाते हैं,[1]
बुद्धि का मोल मोतियों से भरी थैली
से कहीं बढ़कर है।
19 कूश* का पुखराज[2] भी इसके
सामने कुछ नहीं,
खरे सोने से भी इसे नहीं खरीदा जा
सकता।
20 तो फिर बुद्धि कैसे पायी जा
सकती है?
समझ का सोता कहाँ पाया जा
सकता है?[3]
21 यह तो धरती के सभी जीवों से
छिपी हुई है,[4]
आकाश के परिंदे इसे नहीं देख
सकते।
22 मौत और विनाश कहते हैं,
'हमने सिर्फ उसके चर्चे सुने हैं।'
23 मगर परमेश्वर को पता है बुद्धि
कैसे पायी जा सकती है,
सिर्फ वही उसका ठिकाना
जानता है।[5]
24 वह तो धरती के कोने-कोने तक
देख सकता है,
अंबर के नीचे सब चीज़ों पर उसकी
नज़र है।[6]
25 उसने हवा को तेज़ चलना
सिखाया,*[7]
पानी को नापकर भरा,[8]
26 बारिश पड़ने के नियम ठहराए,[9]
गरजते बादलों के लिए बरसने का
रास्ता खोला,[10]
27 उसने बुद्धि देखी और उसके बारे में
समझाया,
उसकी नींव डाली और उसे परखा।
28 इसलिए परमेश्वर ने इंसान से कहा,
'देख! यहोवा का डर मानना ही
बुद्धि है,[1]
बुराई से मुँह फेर लेना ही समझ-
दारी है।'"[2]

29 अय्यूब ने अपनी बात जारी
रखी,
2 "काश! वह गुज़रा हुआ वक्त
वापस आ जाए,
वे दिन लौट आएँ जब परमेश्वर
मेरा ध्यान रखता था,
3 जब उसका दीपक मेरे ऊपर
चमकता था,
मेरी अँधेरी राहों को रौशन
करता था।[3]
4 जवानी के वे दिन भी क्या दिन थे!
मुझे अपने डेरे में परमेश्वर
की दोस्ती का सुख-भरा एह-
सास था,[4]
5 सर्वशक्तिमान मेरे साथ था,
मेरे बाल-बच्चे* मुझे घेरे रहते थे।
6 मेरे पैर मक्खन में डूबे रहते थे,
चट्टानें मेरे लिए तेल की धाराएँ
बहाती थीं।[5]
7 वे भी क्या दिन थे, जब मैं शहर के
फाटक[6] पर जाता था,
चौक में आकर अपनी जगह
लेता था।[7]
8 मुझे देखते ही जवान लड़के मेरे
लिए रास्ता छोड़ देते थे,*
बड़े-बुज़ुर्ग भी अपनी जगह से उठ
जाते और खड़े रहते थे।[8]
9 हाकिम बोलने से खुद को रोक
लेते थे,
मुँह पर अपना हाथ रख लेते थे।

28:19 *या "इथियोपिया।" 28:25 *शा., "हवा का वज़न ठहराया।"

29:5 *या "सेवक।" 29:8 *शा., "छिप जाते थे।"

अध्य. 28
1 नीत 8:11
नीत 20:15
2 निर्ग 28:15, 17
3 अय 28:12
4 सभ 8:17
1कुर 2:8, 11
5 याकू 1:5
6 नीत 15:3
जक 4:10
1पत 3:12
7 भज 148:8
सभ 1:6
8 अय 5:10
अय 26:8
अय 37:10
भज 135:7
नीत 30:4
यश 40:12
9 जक 10:1
10 अय 38:25

दूसरा कॉल.
1 व्य 4:6
भज 111:10
नीत 9:10
सभ 12:13
रोम 1:20
2 नीत 3:7

अध्य. 29
3 भज 18:28
भज 119:105
4 भज 25:14
नीत 3:32
5 व्य 32:13
व्य 33:24
6 रूत 4:1
नीत 31:23
7 नहे 8:1
8 लैव 19:32

10 बड़े-बड़े आदमी चुप हो जाते थे,
उनकी जीभ तालू से चिपक
जाती थी।
11 जो मेरी बातें सुनता, मेरी तारीफ
करते नहीं थकता था,
जो मुझे देखता, मेरी नेकनामी की
गवाही देता था।
12 क्योंकि गरीबों की फरियाद सुन मैं
उनकी मदद करता था,[1]
अनाथों और बेसहारों को मुसीबत
से छुड़ाता था।[2]
13 वे मुझे दुआएँ देते थे कि मैंने उन्हें
मिटने से बचाया,[3]
मेरी मदद पाकर विधवाओं का दिल
खुश हो जाता था।[4]
14 मैंने नेकी को अपना पहनावा
बनाया,
न्याय को अपना चोगा और अपनी
पगड़ी समझा।
15 मैं अंधों के लिए आँखें बना
और लँगड़ों के लिए पैर।
16 गरीबों के लिए मैं पिता समान था,[5]
अनजान लोगों के मुकदमे
जाँचता था।[6]
17 मैं बुरा करनेवालों का जबड़ा तोड़
देता था,[7]
उनके मुँह से शिकार को बचा
लेता था।
18 मैं कहता था, 'मेरे दिन बालू के
किनकों जैसे अनगिनत होंगे
और मैं अपने ही बसेरे में दम
तोड़ूँगा।[8]
19 मेरी जड़ें पानी के सोते तक फैलेंगी,
मेरी डालियाँ रात-भर ओस से भीगी
रहेंगी।
20 मेरी मान-मर्यादा सदा बनी रहेगी,
तीर चलाने के लिए मेरे बाज़ुओं में
हमेशा दम रहेगा।'

अध्य. 29
1 नीत 21:13
नीत 24:11
2 याकू 1:27
3 व्य 24:12, 13
4 व्य 10:17, 18
5 लूक 14:13
याकू 1:27
6 नीत 29:7
7 भज 58:6
नीत 30:14
8 उत 25:8
2रा 22:20

दूसरा कॉल.
1 अय 29:9
2 भज 72:6
नीत 16:15
3 अय 1:3
4 सभ 7:2

अध्य. 30
5 अय 12:4

21 लोग बड़े चाव से मेरी बातें सुनते,
खामोश रहकर मेरी सलाह का इंत-
ज़ार करते।[1]
22 मेरे कहने के बाद उनके पास कहने
को कुछ नहीं होता था,
मेरे एक-एक शब्द को वे रस लेकर
सुनते थे।*
23 जैसे कोई बरखा का इंतज़ार करता
है, वे मेरे बोलने का इंतज़ार
करते थे।
मेरे शब्दों को ऐसे पीते थे, जैसे
मुँह खोलकर वसंत की बौछार पी
रहे हों।[2]
24 जब मैं उन्हें देखकर मुस्कुराता तो
उन्हें यकीन नहीं होता था,
मेरे चेहरे की रौनक से उनका
हौसला बढ़ता था।*
25 उनका मुखिया होने के नाते मैं उन्हें
राह दिखाता,
उनके बीच ऐसे रहता था जैसे
कोई राजा अपनी फौज के बीच
रहता है[3]
और जैसे कोई मातम करनेवालों के
बीच रहकर दिलासा देता है।[4]

30

अब वे लोग ही मेरी हँसी
उड़ाते हैं,[5]
जो उम्र में मुझसे छोटे हैं,
जिनके पिताओं को मैं अपने कुत्तों
के साथ भी न रखूँ
कि वे मेरी भेड़ों की रखवाली करें।
2 उनके हाथ की ताकत मेरे किस
काम की?
उनका दमखम तो खत्म हो गया है,

29:22 *शा., "मेरे शब्द बारिश की बूँदों की तरह उनके कानों में पड़ते।" **29:24** *या शायद, "उन्होंने मेरे चेहरे की रौनक नहीं छीनी।"

3 भूख और तंगी से उनकी हालत
खस्ता है,
वीरान और उजाड़ हो चुकी
ज़मीन पर
वे धूल खाते फिरते हैं।
4 वे झुरमुटों से लोनी साग तोड़कर
खाते हैं,
झाड़ियों की जड़ों से अपना पेट
भरते हैं।
5 उन्हें बिरादरी से बाहर कर दिया
जाता है,[1]
लोग उन पर ऐसे चिल्लाते हैं,
जैसे चोर पर चिल्ला रहे हों।
6 तंग घाटियों की ढलान पर उनका
बसेरा है,
ज़मीन और चट्टानों में वे गड्‌ढे
खोदकर रहते हैं।
7 झाड़ियों के बीच से वे पुकार
लगाते हैं,
बिच्छू-बूटी के पौधों में सटकर
बैठते हैं।
8 मूर्ख और नीच की इन औलादों को
देश से भगा* दिया जाता है।
9 पर अब वे अपने गानों में भी मुझ
पर ताने कसते हैं,[2]
मज़ाक* बन गया हूँ मैं उनके
लिए![3]
10 वे मुझसे घिन करते हैं, दूर-दूर
रहते हैं,[4]
मेरे मुँह पर थूकने से भी नहीं
डरते।[5]
11 परमेश्वर ने ही मुझे निहत्था किया
है,* बेबस कर दिया है,
इसीलिए वे मेरे सामने बेलगाम हो
गए हैं।
12 झुंड बनाकर दायीं तरफ से मुझ पर
चढ़ आते हैं,
मुझे भागने पर मजबूर कर देते हैं,
फिर मुझे खत्म करने के लिए मेरे
रास्ते में मोरचा बाँधते हैं,
13 भागने के सारे रास्ते बंद कर देते हैं,
मेरी मुश्किलों को और बढ़ा
देते हैं,[1]
उन्हें रोकनेवाला* कोई नहीं।
14 वे मानो शहरपनाह की चौड़ी दरार
से घुस आते हैं,
मुसीबतों के साथ-साथ वे भी मुझ
पर टूट पड़ते हैं।
15 खौफ मुझे घेर लेता है,
मेरे मान-सम्मान को हवा में उड़ा
दिया जाता है।
मेरे बचने की सारी उम्मीदें बादल
की तरह गायब हो गयी हैं।
16 ज़िंदगी हाथ से फिसलती जा
रही है,[2]
दुख-भरे दिन[3] हाथ धोकर पीछे
पड़े हैं।
17 रात को मेरी हड्डियों में ऐसा
दर्द उठता है,[4] जैसे कोई उन्हें छेद
रहा हो
और दर्द है कि जाता नहीं।[5]
18 मेरे कपड़े को कसकर खींचा
गया है,*
गले पर इतना कस रहा है कि मेरा
दम घुट रहा है।
19 परमेश्वर ने मुझे कीचड़ में पटक
दिया है,
मैं धूल और राख हो गया हूँ।

अध्य. 30
1 उत 4:12; भज 109:10; दान 4:25
2 भज 69:12; विल 3:14
3 अय 17:6
4 अय 19:13
5 गि 12:14; व्य 25:9; यश 50:6; मत 27:30

दूसरा कॉल.
1 अय 16:2; भज 69:26
2 भज 22:14
3 अय 10:15
4 भज 6:2
5 अय 2:8, 13; अय 7:4

30:8 *शा., "मार-मारकर भगा।" **30:9** *शा., "कहावत।" **30:11** *शा., "मेरे धनुष की रस्सी ढीली कर दी है।"

30:13 *या शायद, "उनकी मदद करने-वाला।" **30:18** *या शायद, "घिनौनी बीमारी ने मेरा हुलिया बिगाड़ दिया है।"

20 मदद के लिए मैं तुझे पुकारता हूँ,
पर तू जवाब नहीं देता।[1]
जब मैं उठकर खड़ा होता हूँ तो तू
बस देखता रहता है।
21 तू मेरे खिलाफ हो गया है,[2]
तुझे ज़रा भी रहम नहीं आता,
मुझे मारने के लिए तू पूरा ज़ोर
लगा रहा है।
22 मुझे हवा के साथ उड़ा ले जाता है,
फिर तूफान में इधर-उधर
उछालता है।*
23 मैं जानता हूँ तू मुझे मौत की ओर
ले जा रहा है,
उस घर की तरफ, जहाँ एक दिन
हर किसी को जाना है।
24 मगर जो इंसान अंदर से टूट
चुका हो,*
जो मुसीबत में दुहाई दे रहा हो, उसे
कौन मारेगा?[3]
25 क्या मैंने दुखियारों* के लिए आँसू
नहीं बहाए?
क्या गरीबों के लिए मेरा मन दुखी
नहीं हुआ?[4]
26 मैंने अच्छे की आस लगायी पर मेरे
साथ बुरा हुआ,
उजाले का इंतज़ार किया पर अँधेरा
मिला।
27 मेरे अंदर उथल-पुथल मची है, ज़रा
भी चैन नहीं,
मुझ पर दुख-भरे दिन आ पड़े हैं।
28 मैं उदासी के अँधेरे में चल रहा हूँ[5]
और सवेरा नज़र नहीं आता,
मैं मंडली के बीच खड़ा मदद के
लिए भीख माँगता हूँ।

30:22 *या शायद, "फिर भयानक आँधी में मुझे घुला देता है।" 30:24 *शा., "जो मलबे का ढेर है।" 30:25 *या "मुश्किल दौर से गुज़रनेवालों।"

अध्य. 30
1 अय 19:7
भज 22:2
2 अय 7:20
अय 19:6
3 अय 13:25
4 नीत 14:21
नीत 14:31
नीत 19:17
5 भज 38:6
भज 42:9
भज 43:2

दूसरा कॉल.
1 मी 1:8
2 अय 7:5
विल 4:8

अध्य. 31
3 नीत 6:25, 26
मत 5:28
4 अय 31:9, 10
5 अय 20:26-29
भज 73:3, 18
नीत 10:29
6 उत 16:13
2इत 16:9
भज 139:3
नीत 5:21
यिर्म 32:19
7 भज 26:5
नीत 6:16, 18
8 1शम 2:3
9 अय 2:3
अय 27:5
भज 7:8

29 यह हाल हो गया है कि अब मैं
गीदड़ों का भाई
और शुतुरमुर्ग की बेटियों का साथी
बन गया हूँ।[1]
30 मेरी चमड़ी काली पड़कर उतर
गयी है,[2]
मेरी हड्डियाँ जल रही हैं।*
31 मेरे सुरमंडल पर सिर्फ मातम की
धुन बजती है,
मेरी बाँसुरी से सिर्फ रोने का सुर
निकलता है।

31 मैंने अपनी आँखों के साथ
करार किया है।[3]
फिर मैं किसी कुँवारी को गलत
नज़र से कैसे देख सकता हूँ?[4]
2 अगर मैं ऐसा करूँ, तो स्वर्ग के पर-
मेश्वर से मुझे क्या मिलेगा?
सर्वशक्तिमान जो ऊँचे पर विराज-
मान है, मेरे हिस्से में क्या देगा?
3 क्या दुष्टों पर विपत्ति नहीं आ
पड़ेगी?
क्या बुरे काम करनेवालों को मुसी-
बतें नहीं आ घेरेंगी?[5]
4 क्या परमेश्वर मेरे चालचलन को
नहीं देखता?[6]
मेरे एक-एक कदम को नहीं
गिनता?
5 क्या मैंने कभी झूठ का रास्ता अप-
नाया है?*
क्या धोखा देने के लिए मैंने फुर्ती से
कदम बढ़ाए हैं?[7]
6 परमेश्वर चाहे तो मुझे खरे तराज़ू में
तौल ले,[8]
वह जान जाएगा कि मुझमें ज़रा भी
दोष नहीं।[9]

30:30 *या शायद, "बुखार से जल रही हैं।" 31:5 *या शायद, "झूठे आदमियों के साथ चला हूँ?"

7 अगर मेरे पाँव सही राह से कभी
भटके हों,[1]
अगर मेरा दिल मेरी आँखों के बह-
कावे में आया हो,[2]
अगर बुरे काम करके मेरे हाथ
दूषित हुए हों,
8 तो ऐसा हो कि मैं बोऊँ और दूसरा
खाए,[3]
मैं लगाऊँ और दूसरा उसे उखाड़
फेंके।*
9 अगर पड़ोसी की पत्नी के लिए मेरा
दिल ललचाया हो[4]
और उसके दरवाज़े पर मैंने उसका
इंतज़ार किया हो,[5]
10 तो मेरी बीवी पराए मर्द के घर में
अनाज पीसे
और दूसरे आदमी उसके साथ
सोएँ,[6]
11 क्योंकि मेरी यह करतूत बहुत ही
शर्मनाक होगी,
ऐसा गुनाह होगा जिसके लिए मैं
न्यायियों से सज़ा पाने के लायक
ठहरूँगा।[7]
12 बदचलनी वह आग है जो मुझे भस्म
कर देगी,[8]
यहाँ तक कि मेरा सबकुछ जड़ से
खत्म कर देगी।*
13 अगर मेरे दास या दासी को मुझसे
कोई शिकायत* हो
और मैंने उसे अनसुना कर न्याय न
किया हो,
14 तो जब परमेश्वर मुझसे पूछेगा,* मैं
क्या जवाब दूँगा?
जब वह मुझसे हिसाब लेगा, मैं क्या
कहूँगा?[1]
15 जिसने मुझे कोख में रचा, क्या उसने
उन्हें भी नहीं रचा?[2]
क्या उसी ने हमें पैदा होने से पहले*
नहीं बनाया?[3]
16 गरीब के कुछ माँगने पर अगर मैंने
उसे न दिया हो,[4]
या मेरी वजह से विधवा की आँखों
में उदासी छायी हो,[5]
17 अगर मैंने अपने हिस्से का खाना
अकेले ही खा लिया हो
और अनाथों को न दिया हो,[6]
18 (लड़कपन से ही मैं इन अनाथों
के* लिए पिता जैसा रहा,
जब से मैंने होश सँभाला, तब
से# मैं विधवाओं को सहारा देता
आया हूँ।)
19 अगर मैंने किसी को बिन कपड़ों के
ठंड से मरते देखा हो,
या देखा हो कि गरीब के पास
ओढ़ने के लिए कुछ नहीं,[7]
20 अगर उसने मेरी भेड़ों के ऊन से
खुद को न गरमाया हो
और मुझे दुआएँ न दी हों,[8]
21 अगर शहर के फाटक[9] पर किसी
अनाथ को मेरी ज़रूरत थी,*
पर मैंने मुट्ठी भींचकर उसे धम-
काया हो,[10]
22 तो मेरी बाँह कंधे से उखड़ जाए,
मेरी कोहनी* टूट जाए,
23 क्योंकि मैं परमेश्वर से आनेवाली
विपत्ति से डरता हूँ,

अध्य. 31
1 व्य 11:16; यिर्म 10:23
2 गि 15:39; सभ 11:9; यहे 6:9; मत 5:29; 1यूह 2:16
3 लैव 26:16
4 अय 31:1; मत 5:28
5 अय 24:15
6 2शम 12:9, 11; यिर्म 8:10
7 उत 38:24; लैव 20:10; व्य 22:22
8 नीत 6:25-27; नीत 7:27

दूसरा कॉल.
1 नीत 22:22, 23; यश 10:1-3
2 अय 34:19; नीत 14:31; नीत 22:2; मला 2:10
3 भज 139:16
4 व्य 15:7, 8
5 व्य 10:18; नीत 28:27
6 यहे 18:5, 7; याकू 1:27; 1यूह 3:17
7 यश 58:7; लूक 3:11; याकू 2:15, 16
8 व्य 24:13
9 नीत 31:23
10 नीत 14:21

31:8 *या "मेरे वंशजों को उखाड़ दिया जाए।" **31:12** *या "उखाड़ फेंकेगी।" **31:13** *या "मुकदमा।" **31:14** *शा., "उठ खड़ा होगा।"

31:15 *शा., "गर्भ में।" **31:18** *शा., "उसके।" #शा., "माँ के गर्भ से।" **31:21** *या शायद, "जब मैंने देखा कि शहर के फाटक पर मेरा साथ देनेवाले बहुत हैं।" **31:22** *या "जोड़ से; बाज़ू की हड्डी।"

उसके गौरव के आगे मैं टिक न
सकूँगा।
24 अगर मैंने सोने पर भरोसा रखा हो,
या खरे सोने से कहा हो, ‘तू ही मुझे
हिफाज़त देगा।’[1]
25 अगर मुझे अपनी ढेर सारी
चीज़ों का,
अपनी बेशुमार दौलत[2] का
घमंड हो,[3]
26 अगर मैं सूरज को चमकता
देखकर,
चाँद को अपनी चाँदनी में नहाता
देखकर,[4]
27 मन-ही-मन लुभाया जाऊँ
कि उन्हें पूजने के लिए होंठों से
अपना हाथ चूम लूँ,[5]
28 तो यह एक गुनाह होगा,
क्योंकि मैं स्वर्ग के सच्चे पर-
मेश्वर का इनकार कर रहा
होऊँगा
और इसके लिए न्यायियों से सज़ा
पाने के लायक ठहरूँगा।
29 क्या मैं कभी अपने दुश्मनों की बर-
बादी पर खुश हुआ?[6]
उन्हें मुसीबत में देखकर क्या मैंने
कभी जश्न मनाया?
30 मैंने कभी उन्हें शाप नहीं दिया कि
उन्हें मौत आ जाए,
अपने मुँह से कभी ऐसा पाप नहीं
किया।[7]
31 क्या मेरे डेरे के आदमी यह नहीं
कहते,
‘ऐसा कोई नहीं जिसने अय्यूब के
यहाँ भरपेट* न खाया हो।’[8]
32 मुसाफिरों के लिए मेरे घर के दर-
वाज़े हमेशा खुले थे,

31:31 *शा., “भरपेट माँस।”

अध्य. 31
1 भज 49:6, 7
1ती 6:17
2 व्य 8:17, 18
3 एस 5:11
भज 62:10
नीत 11:28
4 व्य 4:19
5 व्य 11:16
6 नीत 17:5
नीत 24:17, 18
7 मत 5:44
रोम 12:14
8 उत 18:5
रोम 12:13

दूसरा कॉल.
1 उत 19:1, 3
इब्र 13:2
1पत 4:9
2 उत 3:8
नीत 28:13
प्रेष 5:8
3 अय 19:7
4 अय 13:22
5 याकू 5:4
6 1रा 21:15

कभी किसी अजनबी* को बाहर
रात नहीं गुज़ारनी पड़ी।[1]
33 क्या मैंने औरों की तरह कभी
अपने अपराधों पर परदा
डाला?[2]
अपने गुनाहों को अपने कपड़ों की
झोली में छिपाने की कोशिश की,
34 इस डर से कि सबको पता चल गया
तो क्या होगा?
समाज में कितनी थू-थू होगी,
घर से निकलना या किसी से कुछ
कहना मुश्किल हो जाएगा।
35 काश! कोई मेरी सुने।[3]
मैं कसम खाता हूँ,* मेरी एक-एक
बात सच है।
काश! सर्वशक्तिमान मुझे
जवाब दे।[4]
मेरा मुद्दई मेरे सारे दोष कागज़ात
पर लिख दे,
36 उन कागज़ात को मैं अपने कंधे पर
लिए फिरूँगा,
अपने सिर पर ताज बनाकर
रखूँगा।
37 हाकिम की तरह बेझिझक परमेश्वर
के सामने जाऊँगा,
उसे अपने एक-एक काम का हिसाब
दूँगा।
38 अगर मेरी ज़मीन शिकायत करे कि
मैंने उसे चुराया है,
अगर हल से बनी उसकी रेखाएँ
आँसू बहाएँ,
39 अगर मैंने उसकी उपज मुफ्त में
उड़ायी हो[5]
और ज़मीन के असली मालिकों को
आहें भरनी पड़ी हों,[6]

31:32 *या “परदेसी।” 31:35 *या “ये रहे मेरे हस्ताक्षर।”

40 तो उस ज़मीन में गेहूँ के बदले काँटे
उग आएँ,
जौ के बदले बदबूदार जंगली घास
बढ़ आए।"
इसी के साथ अय्यूब अपनी बात
खत्म करता है।

32 इन तीनों आदमियों ने जब देखा
कि अय्यूब को अपनी नेकी पर
पूरा यकीन है,*[1] तो उन्होंने उससे और
कुछ नहीं कहा। 2 मगर एलीहू तमतमा
उठा। वह बूज[2] वंशी बारकेल का बेटा
था, जो राम के घराने से था। उसे
अय्यूब पर इसलिए गुस्सा आया क्योंकि
उसने परमेश्वर को नहीं बल्कि खुद को
सही साबित करने की कोशिश की।[3]
3 उसे अय्यूब के तीन साथियों पर भी
बहुत गुस्सा आया क्योंकि वे अय्यूब
की बातों का सही-सही जवाब नहीं दे
पाए, उलटा उन्होंने परमेश्वर को दोषी
बताया।[4] 4 मगर एलीहू ने उन लोगों
को अपनी बात पूरी करने दी क्योंकि वे
उम्र में उससे बड़े थे।[5] वह अय्यूब से
अपनी बात कहने के लिए रुका रहा।
5 जब उसने देखा कि उन तीनों के पास
अय्यूब से कहने के लिए और कुछ नहीं
है, तो उसका क्रोध भड़क उठा। 6 और
बूज वंशी बारकेल के बेटे एलीहू ने
बोलना शुरू किया,

"उम्र में तुम सब मुझसे बड़े हो[6]
और मैं तुमसे छोटा हूँ,
इसलिए जब तुम बात कर रहे थे,
तो मैं बीच में नहीं बोला[7]
और जो बातें मुझे मालूम हैं मैंने
नहीं बतायीं।
7 मैंने सोचा बड़े-बुज़ुर्गों को ही
बोलने दूँ,
उम्रवालों को ही बुद्धि की बातें
कहने दूँ।
8 मगर लोगों को परमेश्वर की पवित्र
शक्ति से ही,
सर्वशक्तिमान की साँस से ही समझ
मिलती है।[1]
9 उम्र इंसान को खुद-ब-खुद बुद्धिमान
नहीं बना देती,
न ही बुढ़ापा अपने आप सही-गलत
का फर्क सिखाता है।[2]
10 इसलिए सुनो कि मैं क्या कहता हूँ,
जो बातें मुझे मालूम हैं मैं तुम्हें
बताऊँगा।
11 देखो, मैं तुम्हारी बातें सुनने के लिए
ठहरा रहा,
जब तुम तर्क कर रहे थे, तो मैं
सुनता रहा,[3]
जब तुम सोच रहे थे कि
आगे क्या कहें, तब भी मैं रुका
रहा।[4]
12 मैंने बड़े ध्यान से तुम्हारी बातें
सुनी हैं,
लेकिन तुममें से कोई भी
न अय्यूब को गलत साबित कर
पाया,
न उसकी दलीलें काट पाया।
13 अब यह मत कहना, 'हम बहुत
बुद्धिमान हैं,
अय्यूब को जो फटकार मिली है,
वह परमेश्वर की तरफ से है,
इंसान की तरफ से नहीं।'
14 जो बातें अय्यूब ने कहीं वे मेरे
खिलाफ नहीं कहीं,
इसलिए मैं तुम्हारी दलीलों का
सहारा लेकर उसे जवाब नहीं
दूँगा।
15 ये लोग घबराए हुए हैं, इनके पास
कोई जवाब नहीं।

32:1 *या "अपनी नज़र में निर्दोष है।"

अध्य. 32
1 अय 6:29
अय 27:6
2 उत 22:20, 21
3 अय 10:2, 3
4 निर्ग 20:7
अय 4:18-20
अय 22:2, 3
अय 25:5, 6
अय 42:8
5 लैव 19:32
6 अय 15:10
7 1ती 5:1
1पत 5:5

दूसरा कॉल.
1 1रा 3:12
1रा 4:29
अय 35:11
नीत 2:6
सभ 2:26
दान 1:17
मत 11:25
याकू 1:5
2 भज 119:100
सभ 4:13
3 याकू 1:19
4 नीत 15:28

कुछ नहीं बचा इनके पास
कहने को।
16 मैं इंतज़ार करता रहा कि ये लोग
कुछ कहेंगे,
मगर ये बुत बने खड़े हैं, इनके मुँह
से एक शब्द नहीं निकल रहा।
17 इसलिए अब मैं बोलूँगा
और बताऊँगा कि मुझे क्या
मालूम है।
18 मेरे पास कहने को बहुत कुछ है,
पवित्र शक्ति मुझे बोलने के लिए
मजबूर कर रही है।
19 मेरे मन में इतनी बातें भरी हैं कि
अब इन्हें रोकना मुश्किल है,
मानो दाख-मदिरा के उफनने से नयी
मशक फटने पर हो।[1]
20 मुझे बोलने दो, तभी मुझे चैन
पड़ेगा,
मैं मुँह खोलकर जवाब दूँगा।
21 मैं किसी की तरफदारी नहीं
करूँगा,[2]
न किसी इंसान की झूठी तारीफ
करूँगा,*
22 क्योंकि झूठी तारीफ करना मुझे
नहीं आता,
अगर मैं ऐसा करूँ, तो मेरा बनाने-
वाला मुझे फौरन मिटा देगा।

33 हे अय्यूब! तुझसे बिनती है कि
ध्यान से मेरी सुन,
मेरी एक-एक बात पर कान लगा।
2 देख! अब मैं चुप नहीं रह सकता,
मेरी ज़बान बोलने के लिए
बेचैन है।
3 मेरी बातें मेरे मन की सीधाई ज़ाहिर
करेंगी[3]
और जो मुझे मालूम है वह मैं सच-
सच बताऊँगा।
4 परमेश्वर ने अपनी पवित्र शक्ति से
मुझे रचा है,[1]
सर्वशक्तिमान की फूँक से मुझे
जीवन मिला है।[2]
5 अगर तू मेरी बातों का जवाब दे
सकता है, तो ज़रूर देना,
मेरे सामने अपनी दलीलें पेश
करना,
अपनी पैरवी करने के लिए तैयार
हो जा।
6 देख, सच्चे परमेश्वर के सामने मैं
तेरे जैसा हूँ,
मैं भी मिट्टी का बना हूँ।[3]
7 इसलिए तू मुझसे मत डर,
मेरी बातें इतनी भारी न होंगी कि
तुझे कुचल दें।
8 तूने अपने बारे में जो कहा,
वह सब मैंने सुना। तूने कहा,
9 'मैं बिलकुल शुद्ध हूँ, मैंने कोई अप-
राध नहीं किया,[4]
मैं बेदाग हूँ, मुझमें कोई दोष नहीं।[5]
10 फिर भी परमेश्वर बेवजह मेरे
खिलाफ हो गया है,
मुझे अपना दुश्मन समझ रहा है।[6]
11 उसने मेरे पैर काठ में कस दिए हैं,
वह मेरी हर हरकत पर नज़र
रखता है।'[7]
12 मगर तेरी यह बात गलत है,
मैं बताता हूँ कि सच क्या है:
परमेश्वर महान है, अदना इंसान से
बहुत महान।[8]
13 तू क्यों उसकी शिकायत कर
रहा है?[9]
क्या इसलिए कि उसने तेरी बातों
का जवाब नहीं दिया?[10]

32:21 *या "को इज़्ज़त देने के लिए उसे खिताब दूँगा।"

अध्य. 32
1 मत 9:17
2 लैव 19:15
नीत 24:23
याकू 3:17

अध्य. 33
3 मत 12:34
लूक 6:45

दूसरा कॉल.
1 भज 119:73
2 उत 2:7
सभ 12:7
प्रेष 17:25
3 उत 2:7
4 अय 10:7
अय 16:16, 17
अय 23:11
5 अय 29:14
6 अय 13:24
अय 16:9
अय 19:11
7 अय 13:27
अय 14:16
अय 31:4
8 अय 12:13
भज 8:4
यश 40:25
यश 55:9
9 यश 45:9
रोम 9:20
10 अय 13:24

14 परमेश्वर एक बार कहता है, दूसरी
बार कहता है,
मगर कोई उस पर ध्यान नहीं देता।
15 वह सपने में, हाँ, दर्शन में अपनी
बातें बताता है,[1]
रात के उस पहर जब लोग गहरी
नींद में,
अपने बिस्तर पर सोए होते हैं,
16 तब वह अपनी बातें उन पर ज़ाहिर
करता है,[2]
उनके अंदर अपनी हिदायतें
बिठाता है,*
17 ताकि इंसान बुरे काम करना
छोड़ दे[3]
और घमंड से दूर रहे।[4]
18 इस तरह परमेश्वर उसे कब्र* में
जाने से बचाता है,[5]
तलवार# को उसकी जान नहीं लेने
देता।
19 जब एक इंसान तकलीफों से गुज़र-
ता है,
बिस्तर पर पड़े-पड़े हड्डियों के दर्द
से कराहता है, तब वह सबक
सीखता है।
20 उसका जी रोटी से घिन करने
लगता है,
लज़ीज़ खाने से भी वह मुँह फेर
लेता है।[6]
21 उसका शरीर घुलता जाता है,
उसकी हड्डियाँ तक नज़र आने
लगती हैं।
22 वह धीरे-धीरे कब्र* की तरफ बढ़
रहा है,
लोग उसकी जान के प्यासे हैं।

अध्य. 33
1 गि 12:6
दान 4:5
2 अय 36:10
3 उत 20:6, 7
मत 27:19
4 दान 4:24, 25
5 उत 31:24
6 भज 107:17, 18

दूसरा कॉल.
1 अय 14:13
2 अय 19:25
मत 20:28
3 2रा 5:14
4 व्य 34:7
अय 42:16
भज 103:3-5
5 भज 30:8
6 2शम 12:13
भज 32:5
नीत 28:13
लूक 15:21
1यूह 1:9
7 भज 19:14
यश 38:17

23 अगर उसे एक दूत* मिल जाए,
हज़ार में से कोई एक मिल जाए जो
उसकी वकालत करे,
जो उसे बताए कि वह सीधा-सच्चा
इंसान कैसे बने,
24 तो परमेश्वर उस पर दया करेगा
और हुक्म देगा,
'उसे कब्र*[1] में जाने से बचा,
उसके लिए मुझे फिरौती मिल
गयी है।[2]
25 उसकी त्वचा बच्चे की त्वचा से भी
कोमल* हो जाएगी,[3]
उसकी जवानी का दमखम फिर
लौट आएगा।'[4]
26 वह परमेश्वर से मिन्नत करेगा[5] जो
उससे खुश होगा,
वह जयजयकार करते हुए पर-
मेश्वर के सामने आएगा
और परमेश्वर उस अदना इंसान
को फिर से अपनी नज़र में नेक
करार देगा।
27 वह इंसान सबसे कहेगा,*
'मैंने पाप किया है,[6] जो सही है उसे
करने से मैं चूक गया हूँ,
पर मुझे वह सज़ा नहीं दी गयी
जिसके मैं लायक था।#
28 परमेश्वर ने मुझे कब्र* में जाने से
बचा लिया,[7]
मैं उजाला देख पाऊँगा।'
29 परमेश्वर इंसान की खातिर
दो बार क्या, तीन बार ऐसा
करता है,
30 ताकि उसे कब्र* से वापस ला सके

33:16 *शा., "हिदायतों पर मुहर लगाता है।" **33:18, 22, 24, 28, 30** *या "गड्ढे।" **33:18** #या "भाले।"

33:23 *या "स्वर्गदूत।" **33:25** *या "स्वस्थ।" **33:27** *शा., "सबके सामने गाएगा।" #या शायद, "और इससे मुझे फायदा नहीं हुआ।"

और उसके जीवन की लौ
जलती रहे।[1]
31 हे अय्यूब! मेरी बात पर कान लगा,
खामोश रह और मुझे अपनी बात
पूरी कर लेने दे।
32 अगर तुझे कुछ कहना है तो बता,
बेझिझक बोल क्योंकि मैं तुझे
निर्दोष ठहराना चाहता हूँ।
33 लेकिन अगर तेरे पास कहने को
कुछ नहीं, तो खामोश रह और
मेरी सुन,
मैं तुझे बुद्धि की बातें सिखाऊँगा।"

34 एलीहू ने यह भी कहा,
2 "हे समझ रखनेवालो, मुझ
पर ध्यान दो!
हे ज्ञान रखनेवालो, मेरी बातें सुनो!
3 जैसे जीभ से खाना चखा जाता है,
वैसे ही कानों से बातों को परखा
जाता है।
4 तो आओ हम परखकर देखें कि
क्या सही है,
मिलकर जानें कि क्या अच्छा है।
5 अय्यूब का कहना है, 'मैं
निर्दोष हूँ,[2]
फिर भी परमेश्वर ने मुझे इंसाफ
नहीं दिया।[3]
6 क्या मैं झूठ बोलूँगा कि मुझे न्याय
मिलना चाहिए?
मैंने कोई अपराध नहीं किया,
तब भी मेरा ज़ख्म नहीं भर
रहा।'[4]
7 ऐसा कौन है जो अय्यूब की तरह,
निंदा की बातें ऐसे पीता है मानो
पानी पी रहा हो?
8 वह बुराई करनेवालों के साथ
रहता है,
दुष्टों के साथ मेल-जोल रखता है,[1]
9 इसलिए वह कहता है, 'परमेश्वर
को खुश करने के लिए
इंसान लाख जतन कर ले, पर कोई
फायदा नहीं।'[2]
10 हे समझ रखनेवालो, मेरी सुनो!
ऐसा हो ही नहीं सकता कि सच्चा
परमेश्वर दुष्ट काम करे,[3]
यह मुमकिन नहीं कि सर्वशक्तिमान
बुरे काम करे।[4]
11 परमेश्वर हर इंसान को उसके कामों
का फल देता है,[5]
जो जैसी चाल चलता है, उसे वैसा
ही अंजाम भुगतने देता है।
12 यकीनन परमेश्वर दुष्टता नहीं
करता,[6]
हाँ, सर्वशक्तिमान अन्याय नहीं
करता।[7]
13 परमेश्वर को पृथ्वी का ज़िम्मा
किसने सौंपा?
पूरी दुनिया पर अधिकार किसने
दिया?
14 अगर वह इंसानों पर ध्यान देकर
उनकी जीवन-शक्ति और साँसें
छीन ले,[8]
15 तो वे सब-के-सब खत्म हो जाएँगे
और मिट्टी में मिल जाएँगे।[9]
16 इसलिए अगर तुममें समझ है तो
कान लगाओ,
ध्यान से सुनो कि मैं क्या कहने जा
रहा हूँ,
17 जो न्याय से नफरत करता है, क्या
उसे राज करने का हक है?
या जो अधिकार रखता और सही
काम करता है, क्या तुम उसे
धिक्कारोगे?
18 क्या तुम राजा से कहोगे, 'तू किसी
काम का नहीं'?

अध्य. 33
1 भज 56:13

अध्य. 34
2 अय 29:14, अय 33:9
3 अय 27:2
4 अय 9:17, 18

दूसरा कॉल.
1 नीत 1:10, 15, नीत 4:14
2 अय 9:22-24, अय 35:3
3 उत 18:25, 2इत 19:7, भज 92:15
4 व्य 32:4, रोम 9:14, इब्र 6:10
5 1इत 28:9, भज 62:12, नीत 24:12, यिर्म 32:19, यहे 33:20, रोम 2:6, 2कुर 5:10, गल 6:7, 1पत 1:17, प्रक 22:12
6 याकू 1:13
7 भज 89:14, भज 97:2, भज 99:4, रोम 2:11
8 भज 104:29, सभ 12:7, यश 42:5, प्रेष 17:25
9 उत 3:19, भज 146:4, सभ 3:20

इज़्ज़तदार लोगों से कहोगे, 'तुम
दुष्ट हो'?[1]
19 परमेश्वर बड़े-बड़े हाकिमों का पक्ष
नहीं लेता,
वह अमीर-गरीब में कोई भेद नहीं
करता[2]
क्योंकि वे सब उसी के हाथ के
काम हैं।[3]
20 आधी रात को अचानक वे मर
जाते हैं,[4]
बुरी तरह थरथराकर दम तोड़
देते हैं,
शक्तिशाली लोग भी मिट जाते हैं,
लेकिन इंसान के हाथों नहीं।[5]
21 परमेश्वर इंसान के चालचलन को
देखता रहता है,[6]
उसके एक-एक कदम पर उसकी
नज़र रहती है।
22 ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ दुष्ट
उससे छिप सके,
अंधकार या घना साया भी उसे नहीं
छिपा सकता।[7]
23 किसी इंसान का न्याय करने
के लिए
परमेश्वर को पहले से कोई तारीख
नहीं देनी पड़ती,
24 वह सीधे ताकतवरों की ताकत तोड़
डालता है
और उनकी जगह दूसरों को बिठा
देता है,[8]
उसे पूछताछ नहीं करनी पड़ती
25 क्योंकि उसे सब पता है कि वे क्या
करते हैं, क्या नहीं।[9]
वह रातों-रात उनका तख्ता पलट
देता है और वे मिट जाते हैं।[10]
26 परमेश्वर सबके सामने
उन्हें उनकी दुष्टता की सज़ा
देता है।[11]
27 क्योंकि वे उसकी बात मानने से इन-
कार करते हैं,[1]
उसकी दिखायी राह को
ठुकराते हैं।[2]
28 गरीब को इतना मजबूर कर देते हैं
कि वह परमेश्वर के आगे रोता है
और परमेश्वर उस लाचार इंसान
का कराहना सुनता है।[3]
29 जब परमेश्वर चुप रहता है, तो
कौन उसे गलत ठहरा सकता है?
जब वह अपना मुँह फेर लेता है, तो
कौन उसे देख सकता है?
चाहे राष्ट्र हो या इंसान, वह दोनों
के साथ इसी तरह पेश आता है
30 ताकि कोई भक्तिहीन, मनमाना
राज न करे[4]
और लोगों के लिए फंदे न बिछाए।
31 क्या कोई परमेश्वर से कहेगा,
'मैंने कोई अपराध नहीं किया, फिर
भी मुझे सज़ा दी गयी।[5]
32 ऐसा क्या है जो मैं नहीं देख पा रहा,
मुझे बता,
अगर मैंने गलती की है, तो मैं उसे
नहीं दोहराऊँगा।'
33 तुझे उसका फैसला मंज़ूर नहीं,
तो अब उसे तेरी मरज़ी के
मुताबिक तेरा नुकसान भरना
पड़ेगा?
तू बड़ा जानकार है, तो तू ही बता
क्या किया जाए?
34 समझ रखनेवाले लोग मुझसे कहेंगे,
हाँ, हर वह बुद्धिमान आदमी जो
मेरी सुनता है यही कहेगा,
35 'अय्यूब ऐसी बातें बोल रहा है
जिसका उसे पूरा ज्ञान नहीं,[6]
उसकी बातें दिखा रही हैं कि उसमें
अंदरूनी समझ नहीं।'

अध्य. 34
1 निर्ग 22:28; सभ 8:2-4; सभ 10:20
2 व्य 10:17; 2इत 19:7; प्रेष 10:34; रोम 2:11; इफ 6:9
3 अय 31:13-15; नीत 22:2
4 निर्ग 12:29; भज 73:3, 19; दान 5:30; प्रेष 12:21-23
5 1शम 25:38
6 उत 6:5; 2इत 16:9; अय 31:4; नीत 5:21; नीत 15:3; यिर्म 16:17; यिर्म 32:19; 1पत 3:12
7 भज 139:11, 12; यश 29:15; यिर्म 23:24; आम 9:3; इब्र 4:13
8 यहे 21:26, 27; दान 2:21; दान 4:25
9 हो 7:2
10 1शम 4:17; दान 5:30
11 गि 12:10

दूसरा कॉल.
1 1शम 15:11
2 भज 28:5
3 निर्ग 22:22, 23; याकू 5:4
4 अय 13:16; अय 27:8
5 दान 9:7; रोम 3:23
6 अय 35:16; अय 38:2; अय 42:3

36 इसलिए अय्यूब को* पूरी तरह
परखा जाए,
वह दुष्ट लोगों की तरह बातें जो
कर रहा है।
37 वह पाप करने के साथ-साथ विद्रोह
कर रहा है,[1]
तालियाँ पीट-पीटकर मज़ाक उड़ा
रहा है
और सच्चे परमेश्वर के खिलाफ
ढेरों बातें कह रहा है।"[2]

35 फिर एलीहू ने यह कहा,
2 "क्या तुझे अपने सही होने
पर इतना यकीन है
कि तू कहता है, 'मैं परमेश्वर से भी
ज़्यादा नेक हूँ।'[3]
3 तू कहता है, 'मेरे निर्दोष बने रहने
से तुझे* क्या फर्क पड़ता है?
पाप न करके भला मुझे क्या फायदा
हुआ?'[4]
4 मैं तुझे इसका जवाब देता हूँ,
न सिर्फ तुझे बल्कि तेरे इन
साथियों[5] को भी।
5 ज़रा ऊपर आसमान की तरफ देख,
ऊँचे-ऊँचे बादलों पर गौर कर।[6]
6 अगर तू पाप करे, तो परमेश्वर का
क्या बिगड़ेगा?[7]
अगर तेरे अपराध बढ़ जाएँ, तो
उसे क्या नुकसान होगा?[8]
7 अगर तू अच्छे काम करे, तो उसका
क्या भला होगा?
तेरे कामों से उसे क्या मिलेगा?[9]
8 तेरी दुष्टता से सिर्फ लोगों को नुक-
सान पहुँचेगा
और तेरी अच्छाई से सिर्फ इंसानों
को फायदा होगा।
9 ज़ुल्म के बढ़ने पर इंसान फरियाद
करता है,
ताकतवरों की तानाशाही* से राहत
पाने के लिए वह गिड़गिड़ाता है,[1]
10 मगर कोई यह नहीं पूछता, 'मेरा
महान रचनाकार[2] कहाँ है?
परमेश्वर कहाँ है, जो रात में गाने
के लिए प्रेरित करता है?'[3]
11 वह धरती के जानवरों[4] से ज़्यादा
हमें सिखाता है[5]
और आकाश के पंछियों से ज़्यादा
हमें बुद्धिमान बनाता है।
12 लोग उससे फरियाद करते हैं,
मगर वह दुष्टों की नहीं सुनता[6]
क्योंकि वे घमंडी हैं।[7]
13 वह उनकी खोखली पुकार* पर
ध्यान नहीं देता,[8]
सर्वशक्तिमान उनकी बिनती नहीं
सुनता।
14 तेरी तो वह और भी नहीं सुनेगा
क्योंकि तेरी शिकायत है कि वह
तुझे अनदेखा कर रहा है।[9]
तेरा मुकदमा उसके सामने पेश कर
दिया गया है,
अब तू उसके फैसले का इंत-
ज़ार कर।[10]
15 उसने गुस्से में आकर तुझे सज़ा
नहीं दी
और तूने बिना सोचे-समझे जो
कहा, उसका हिसाब नहीं
लिया।[11]
16 इसलिए अय्यूब बेकार में अपना मुँह
खोलता है
और बहुत-सी बातें करता है,
जिसके बारे में उसे कुछ नहीं
पता।"[12]

अध्य. 34
1 अय 10:1
अय 19:6
2 अय 35:2

अध्य. 35
3 अय 10:7
अय 16:16, 17
अय 34:5
4 अय 9:22-24
अय 34:9
भज 73:13
5 अय 2:11
6 भज 68:34
7 नीत 8:36
नीत 9:12
8 नीत 19:3
9 रोम 11:35

दूसरा कॉल.
1 नीत 29:2
2 यश 51:12, 13
1पत 4:19
3 भज 42:8
भज 149:5
प्रेष 16:25
4 उत 1:26
5 भज 94:12
यश 48:17
6 भज 18:41
7 नीत 1:28, 29
1पत 5:5
8 नीत 15:29
यश 1:15
यिर्म 11:11
9 अय 9:11
10 भज 37:5
11 भज 103:10-12
12 अय 34:35
अय 38:2

34:36 *या शायद, "हे मेरे पिता, अय्यूब को।" **35:3** *शायद परमेश्वर की बात की गयी है।

35:9 *शा., "के बाज़ू।" **35:13** *या "उनके झूठ।"

36 एलीहू ने यह भी कहा,
2 “थोड़ा और सब्र रखो और
मेरी सुनो!
परमेश्वर के पक्ष में मुझे कुछ और
भी कहना है।
3 मैंने जो जानकारी हासिल की है,
वह सब बताऊँगा,
खुलेआम बताऊँगा कि मेरा बनाने-
वाला कितना नेक है।[1]
4 यकीन मानो, मेरी बातें झूठी नहीं,
यह सब मैंने उससे जाना है जिसके
पास पूरा ज्ञान है।[2]
5 हाँ, परमेश्वर से, जो ताकतवर है[3]
और किसी को नहीं ठुकराता,
वह गहरी समझ रखनेवाला पर-
मेश्वर है।
6 वह दुष्टों को ज़िंदा नहीं छोड़ता,[4]
मगर सताए हुओं को न्याय
दिलाता है।[5]
7 वह नेक लोगों से अपनी नज़र नहीं
हटाता,[6]
उन्हें राजाओं की तरह* राजगद्दी
पर बिठाता है[7]
और उन्हें सदा के लिए ऊँचा
करता है।
8 लेकिन अगर उन्हें बेड़ियों में जकड़
दिया जाता है
और दुख की रस्सियों से बाँध दिया
जाता है,
9 तो वह उन्हें बताता है कि उनका
कसूर क्या है,
घमंड में आकर उन्होंने क्या अपराध
किया है।
10 सुधारने के लिए वह उन्हें शिक्षा
देता है
और कहता है कि बुरे रास्ते से
पलटकर लौट आओ।[8]

11 अगर वे उसकी बात मानकर उसकी
सेवा करें,
तो उनके दिन खुशहाली में बीतेंगे,
उनकी ज़िंदगी के साल सुख से
कटेंगे।[1]
12 लेकिन अगर वे नहीं मानेंगे तो तल-
वार* से मारे जाएँगे,[2]
अज्ञानता की हालत में मर जाएँगे।
13 जो मन से भक्तिहीन हैं, वे नाराज़-
गी पालते हैं,
परमेश्वर उन्हें बाँध देता है,
फिर भी वे उससे मदद नहीं
माँगते।
14 वे नीच आदमियों*[3] के साथ
ज़िंदगी बिताते हैं#
और जवानी में ही मर जाते हैं।[4]
15 मगर परमेश्वर* मुसीबत के मारों
को छुड़ाता है,
सताए हुओं को अपनी हिदायतें
देता है।
16 वह तुझे संकट के मुँह से खींचकर[5]
एक खुली जगह ले आएगा, जहाँ
कोई बंदिश न होगी,[6]
तेरी मेज़ पर चिकना-चिकना भोजन
सजाकर तुझे दिलासा देगा।[7]
17 तुझे यह भी देखकर चैन मिलेगा कि
दुष्टों को सज़ा सुनायी गयी,[8]
उन्हें सज़ा दी गयी और इंसाफ
किया गया।
18 मगर ध्यान रख कि गुस्से में तू
उनका कुछ बुरा न कर बैठे*[9]
और मोटी रिश्वत तुझे बहका न दे।

36:7 *या शायद, “वह राजाओं को।”

36:12 *या “भाले।” **36:14** *शा., “मंदिरों में दूसरे आदमियों के साथ संभोग करनेवाले आदमी।” #या शायद, “ज़िंदगी खत्म कर देते हैं।” **36:15** *शा., “वह।” **36:18** *या “तू ताली बजा-बजाकर उनका मज़ाक न उड़ाए।”

अध्य. 36
1 व्य 32:4; भज 11:7; भज 139:14; दान 9:14; प्रक 15:3
2 1शम 2:3; अय 37:16
3 भज 24:8; भज 99:4; यिर्म 32:18
4 भज 9:17; भज 68:2; 2पत 2:9
5 भज 10:14; भज 140:12; नीत 22:22, 23
6 भज 33:18; भज 34:15
7 भज 78:70, 71; भज 113:7, 8; यश 9:7
8 यहे 18:30

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 26:13
2 अय 33:16-18; यश 1:19, 20; रोम 2:8
3 1रा 14:24
4 भज 55:23
5 यश 30:21
6 भज 18:19
7 यश 55:2
8 नीत 2:22; यिर्म 25:31
9 नीत 19:19; नीत 29:22

19 तू मदद के लिए चाहे कितनी ही
फरियाद कर ले,
कितने ही हाथ-पैर मार ले, मगर
क्या तू मुसीबत से बच पाएगा?[1]
20 तू रात के लिए मत तरस,
जब लोग अपनी-अपनी जगह से
गायब हो जाते हैं।
21 खबरदार रह कि तेरे कदम बुराई
की तरफ न बढ़ें,
दुख सहने के बजाय तू बुराई न
करने लगे।[2]
22 देख! परमेश्‍वर बड़ा शक्‍तिशाली है,
सिखाने में उसके जैसा कोई नहीं।
23 भला कौन उसे बता सकता है कि
किस राह पर चलना है?*[3]
या उससे कह सकता है, 'तूने जो
किया, गलत किया।'[4]
24 उसके कामों की बड़ाई करना मत
भूल,[5]
जिनकी तारीफ में लोग गीत
गाते हैं।[6]
25 उसके ये काम सब लोगों ने देखे हैं,
नश्‍वर इंसान दूर से उन्हें
निहारता है।
26 परमेश्‍वर की महानता हमारी समझ
से परे है,[7]
उसकी उम्र का कोई हिसाब नहीं
लगाया जा सकता।[8]
27 वह पानी को भाप बनाकर ऊपर
उठा ले जाता है,[9]
कोहरा फिर पानी की बूँदें बन
जाता है
28 और बादल इन्हें नीचे उँडेलते हैं,[10]
इंसान की बस्तियों पर जमकर पानी
बरसाते हैं।

36:23 *या शायद, "कौन उसकी राह में मीनमेख निकाल सकता है; लेखा ले सकता है?"

अध्य. 36
1 अय 34:20 भज 33:16 नीत 11:4
2 इब्र 11:24, 25
3 यश 40:14
4 अय 34:10 रोम 9:14
5 भज 92:5 भज 104:24
6 निर्ग 15:1
7 भज 145:3 भज 148:13 प्रक 15:3
8 भज 90:2 भज 102:25-27 1ती 1:17 इब्र 1:10-12
9 उत 2:6 आम 5:8
10 नीत 3:20 यश 55:10 यिर्म 14:22

दूसरा कॉल.
1 2शम 22:12
2 अय 37:3
3 प्रेष 14:17
4 2शम 22:15 भज 18:14 भज 144:6

अध्य. 37
5 अय 37:11 भज 97:4
6 अय 40:9 भज 29:3 भज 68:33

29 क्या कोई आसमान में फैले बादलों
को समझ सकता है?
उसके डेरे में होनेवाली गड़गड़ाहट
को जान सकता है?[1]
30 देख, वह कैसे बादलों में से
बिजली* चमकाता है[2]
और समुंदर की गहराइयों को
ढकता है।
31 इन्हीं से वह लोगों की ज़िंदगी
कायम रखता है,*
उन्हें बहुतायत में खाना देता है।[3]
32 वह बिजली को अपनी हथेली से
ढक लेता है,
जहाँ निशाना साधता है, वहीं उसे
गिराता है।[4]
33 बादलों का गरजन उसके आने की
खबर देता है,
यहाँ तक कि मवेशी भी बताते हैं
कि कौन* आ रहा है।

37 इस पर मेरा दिल काँप उठा
और ज़ोरों से धड़कने लगा।
2 परमेश्‍वर की आवाज़ की गड़गड़ा-
हट सुनो!
उसके मुँह से निकलनेवाले गरजन
पर ध्यान दो!
3 आसमान के नीचे चारों तरफ
उसकी गूँज सुनायी देती है,
वह धरती के कोने-कोने तक
बिजली चमकाता है।[5]
4 फिर कड़कड़ाने का भयानक शोर
होता है,
वह ज़ोरदार आवाज़ में
गरजता है।[6]
जब उसकी आवाज़ सुनायी देती है,

36:30 *शा., "उजियाला।" 36:31 *या शायद, "लोगों की पैरवी करता है।" 36:33 *या शायद, "क्या।"

तब बिजली लगातार चमकती
रहती है।
5 परमेश्‍वर अपना गरजन[1] बड़े ला-
जवाब ढंग से सुनाता है,
ऐसे बड़े-बड़े काम करता है जो
हमारी समझ से परे हैं।[2]
6 वह बर्फ से कहता है, 'धरती पर
गिर!'[3]
बारिश से कहता है, 'जमकर
बरस!'[4]
7 ऐसा करके वह इंसान के सारे काम
रोक देता है,*
ताकि अदना इंसान उसके अद्‌भुत
कामों को जान सके।
8 जंगली जानवर भी अपनी गुफाओं
में भाग जाते हैं,
दुबककर अपनी माँदों में बैठे
रहते हैं।
9 एक तरफ बवंडर अपने ठिकाने से
निकलता है,[5]
दूसरी तरफ उत्तर की हवाएँ कड़ाके
की ठंड लाती हैं।[6]
10 परमेश्‍वर की फूँक से पानी बर्फ बन
जाता है,[7]
दूर-दूर तक फैला पानी जम
जाता है।[8]
11 वह बादलों को पानी की बूँदों से
भरता है,
बिजली को बादलों में लहराता है।[9]
12 उसके इशारे पर बादल इधर से
उधर जाते हैं,
धरती पर उन्हें जो काम दिया जाता
है, उसे वे पूरा करते हैं,[10]
13 चाहे किसी को सज़ा देनी* हो,[11]

37:7 *शा., "हर इंसान के हाथ पर मुहर कर देता है।" 37:13 *शा., "छड़ी लगानी।"

अध्य. 37
1 2शम 22:14
2 सभ 3:11
प्रक 15:3
3 भज 147:16
4 आम 9:6
5 भज 104:3
6 नीत 25:23
7 भज 147:16
8 अय 38:29, 30
9 अय 37:3
10 भज 148:8
11 निर्ग 9:23
1शम 12:17, 18

दूसरा कॉल.
1 1रा 18:45
अय 36:29, 31
अय 38:25-27
याकू 5:17, 18
2 भज 111:2
भज 145:5
3 अय 36:29
4 अय 36:4
भज 18:30
भज 104:24
5 लूक 12:55
6 यश 44:24
7 रोम 11:34

ज़मीन को सींचना हो या किसी पर
कृपा* करनी हो,
जैसा परमेश्‍वर चाहता है वैसा हो
जाता है।[1]
14 हे अय्यूब सुन!
परमेश्‍वर के लाजवाब कामों पर
गौर कर![2]
15 क्या तू जानता है, वह बादलों को
कैसे काबू में रखता है?*
कैसे बादलों से बिजली
चमकाता है?
16 क्या तुझे पता है, आसमान में
बादल कैसे तैरते हैं?[3]
ये उसके अजूबे हैं जिसके पास सब
बातों का पूरा ज्ञान है।[4]
17 जब दक्षिण से हवा चलती है, तब
सन्‍नाटा क्यों छा जाता है?
बता, तेरे कपड़े गरम क्यों हो
जाते हैं?[5]
18 क्या तू परमेश्‍वर की तरह आकाश
को फैला सकता है?[6]
उसे धातु से ढले हुए आईने जितना
मज़बूत बना सकता है?
19 हम परमेश्‍वर से क्या कहें, तू ही
बता?
हमें तो कुछ नहीं पता, हम क्या
बताएँ।
20 क्या कोई उससे कह सकता है कि
मैं कुछ बताना चाहता हूँ?
या किसी को ऐसी कोई खास
बात पता है, जो उसे बतायी
जानी है?[7]
21 आसमान में चाहे कितना ही
उजाला हो,
मगर रौशनी* तब तक नहीं
दिखायी देती,

37:13 *या "अटल प्यार।" 37:15 *या "कैसे आज्ञा देता है?" 37:21 *यानी सूरज की।

जब तक हवा बादलों का परदा न
सरका दे।
22 उत्तर से जब सुनहरी किरणें छनकर
आती हैं,
तब परमेश्वर का वैभव[1] देखकर
सब विस्मय से भर जाते हैं।
23 सर्वशक्तिमान को समझना हमारे
बस के बाहर है।[2]
वह बहुत शक्तिशाली है,[3]
वह कभी अन्याय नहीं करता,[4]
न नेकी के अपने स्तरों को दर-
किनार करता है।[5]
24 इसलिए इंसान को उसका डर
मानना चाहिए,[6]
पर जो खुद को बुद्धिमान समझता
है, उससे वह खुश नहीं होता।"[7]

38 तब तूफान में से यहोवा की
आवाज़ सुनायी दी।[8] उसने
अय्यूब से कहा,
2 "यह कौन है जो बिना कुछ जाने
बात कर रहा है?
मेरी सलाह को तोड़-मरोड़कर बता
रहा है?[9]
3 हे इंसान, तैयार हो जा!
मैं तुझसे सवाल करूँगा और तू मुझे
बता।
4 जब मैंने धरती की नींव डाली तब
तू कहाँ था?[10]
अगर तू इस बारे में जानता है, तो
बता।
5 क्या तू जानता है पृथ्वी की नाप
किसने तय की?
किसने नापने की डोरी से इसकी
लंबाई-चौड़ाई नापी?
6 इसके पाये किसमें बिठाए गए?
इसके कोने का पत्थर किसने
रखा?[11]
7 जब भोर के तारे[1] खुशी से
झूम उठे,
परमेश्वर के सभी बेटों*[2] ने जय-
जयकार की, तब तू कहाँ था?
8 किसने समुंदर को रोकने के लिए
दरवाज़े लगाए?[3]
जब समुंदर गर्भ से निकला,
9 जब मैंने उसे बादलों के कपड़े पह-
नाए,
उसे काले घने बादलों में लपेटा,
10 उसकी हदें ठहरायीं,
उसमें पल्ले और बेड़े लगाए,[4]
11 उससे कहा, 'तू बस यहाँ तक आ
सकता है, इससे आगे नहीं।
तेरी ऊँची लहरें साहिल से टक-
राकर यहीं रुक जाएँगी,'[5] तब तू
कहाँ था?
12 क्या तूने कभी* सुबह को हुक्म
दिया, 'अपना उजाला फैला'?
या भोर से कहा, 'यहाँ से अपनी
छटा बिखेर'?[6]
13 क्या सुबह की किरणों को तूने
धरती के छोर तक भेजा
कि वे दुष्ट लोगों को खदेड़कर
भगा दें?[7]
14 किरणों से धरती ऐसे उभरती है,
जैसे मुहर के नीचे चिकनी मिट्टी,
धरती का रूप ऐसा नज़र आता है,
जैसे कपड़े की सजावट।
15 मगर यही सुबह दुष्ट से उसकी
रौशनी छीन लेती है,
जिन हाथों से वह दूसरों
पर ज़ुल्म ढाता है, वे तोड़
दिए जाते हैं।

38:7 *परमेश्वर के स्वर्गदूतों के लिए इस्ते-
माल होनेवाला इब्रानी मुहावरा। 38:12
*शा., "अपने दिनों में।"

अध्य. 37
1 1इत 16:27 भज 8:1
2 भज 145:3 सभ 3:11 रोम 11:33
3 1इत 29:11 अय 36:22 यश 40:26
4 व्य 32:4 भज 33:5 भज 37:28
5 भज 11:7 भज 71:19
6 भज 33:8 नीत 1:7 मत 10:28
7 नीत 3:7 मत 11:25 रोम 11:20 रोम 12:16 1कुर 1:26

अध्य. 38
8 निर्ग 19:16, 19 1रा 19:11
9 अय 42:3
10 उत 1:1 नहे 9:6 भज 136:6 नीत 8:29 इब्र 1:10
11 भज 104:5

दूसरा कॉल.
1 प्रक 22:16
2 उत 6:2 1रा 22:19 अय 1:6 अय 2:1 भज 89:6
3 भज 33:7 नीत 8:29
4 उत 1:9 यिर्म 5:22
5 नीत 8:29
6 उत 1:5 भज 74:16
7 अय 24:15 1थि 5:7

16 क्या तू समुंदर में उतरकर उसके
सोते तक गया है?
क्या तू बता सकता है, गहरे सागर
में क्या-कुछ पाया जाता है?[1]
17 क्या तू जान पाया है, मौत का दर-
वाज़ा[2] कहाँ है?
क्या तूने घोर अंधकार* का दर-
वाज़ा देखा है?[3]
18 क्या तूने धरती की हर जगह देखी
और समझी है?[4]
अगर तू यह सब जानता है तो
बता।
19 उजाले का बसेरा किधर है?[5]
अँधेरा कहाँ रहता है?
20 क्या तुझे उनके घर का रास्ता
मालूम है
कि उन्हें घर पहुँचा सके?
21 क्या तू इन चीज़ों के बनने से पहले
पैदा हुआ था?
क्या तू इतने सालों से वजूद में है
कि तुझे सब मालूम है?
22 क्या तू बर्फ के गोदामों में गया है?[6]
क्या तूने ओलों के उन भंडारों को
देखा है,[7]
23 जिन्हें मैंने विपत्ति के समय,
युद्ध और लड़ाई के दिन के लिए
बचा रखा है?[8]
24 क्या तू बता सकता है रौशनी* कैसे
फैलती है?
वह जगह कहाँ है जहाँ से पूरब की
हवा धरती पर चलती है?[9]
25 किसने तेज़ बारिश के लिए आस-
मान में नहर खोदी है?
गरजते बादलों के लिए बरसने का
रास्ता तैयार किया है?[10]

38:17 *या "मौत के साए।" 38:24 *या शायद, "बिजली।"

अध्य. 38
1 उत 1:2 भज 77:19
2 भज 9:13 मत 16:18
3 अय 10:21, 22
4 भज 74:17 भज 89:11
5 यश 45:7
6 अय 37:6
7 यह 10:11 यश 30:30
8 निर्ग 9:24 यहे 13:13
9 भज 135:7
10 अय 28:26

दूसरा कॉल.
1 भज 104:13 भज 107:35
2 भज 147:7, 8
3 1शम 12:18 यश 30:23 यिर्म 5:24
4 उत 27:28
5 भज 147:16
6 अय 37:10
7 आम 5:8
8 नीत 3:19 यिर्म 31:35 यिर्म 33:25

26 ताकि सुनसान, वीरान जगहों में
जहाँ कोई इंसान नहीं रहता,
बौछार हो,[1]
27 उजड़ी, बंजर ज़मीन की प्यास बुझे
और हरी-हरी घास उग आए।[2]
28 क्या बारिश का कोई पिता है?[3]
ओस की बूँदों को पैदा करनेवाला
कौन है?[4]
29 आसमान का पाला किसके गर्भ से
निकला है?
बर्फ ने किसकी कोख से जन्म
लिया है,[5]
30 जब पानी की सतह को जमाया गया
और गहरे सागर को मानो सफेद
पत्थर से ढक दिया गया?[6]
31 क्या तू किमा तारामंडल* में तारों
को बाँधे रख सकता है?
या केसिल तारामंडल# के बंधन
खोल सकता है?[7]
32 क्या तू किसी तारामंडल* को अपने
मौसम में चमका सकता है?
क्या तू अश तारामंडल#
और उसके बेटों को राह दिखा
सकता है?
33 क्या तू आकाशमंडल में ठहराए
नियमों को जानता है?[8]
क्या तू उन* नियमों को पृथ्वी पर
लागू करवा सकता है?
34 क्या तू ज़ोर से पुकारकर बादलों से
कह सकता है

38:31 *शायद वृष तारामंडल में तारों का समूह, कृत्तिका। #शायद मृगशिरा तारा-मंडल। 38:32 *शा., "मज्जरोत।" 2रा 23:5 में इससे मिलता-जुलता शब्द बहु-वचन में इस्तेमाल हुआ है, जो राशि के नक्षत्रों की तरफ इशारा करता है। #शायद सप्तर्षि तारामंडल। सात तारों का मंडल। 38:33 *या शायद, "उसके।"

कि वे तुझ पर जमकर बरसें?[1]
35 बिजली को आदेश दे सकता है कि
वह अपना काम करे?
क्या वह लौटकर तुझसे कहेगी, 'मैं
आ गयी'?
36 बादलों* में बुद्धि किसने डाली?[2]
आसमान में होनेवाले अजूबों को#
समझ किसने दी?[3]
37 कौन इतना बुद्धिमान है जो बादलों
को गिन सकता है?
कौन आसमान की गगरियाँ छलका
सकता है[4]
38 ताकि धूल कीचड़ बन जाए,
मिट्टी के लोंदे आपस में चिपक
जाएँ?
39 क्या तू शेर के लिए शिकार कर
सकता है,
जवान शेरों की भूख मिटा
सकता है,[5]
40 जब वे अपने ठिकानों पर घात में
बैठते हैं,
छिपने की जगहों पर शिकार की
ताक में रहते हैं?
41 कौवे को कौन खिलाता है?[6]
जब उसके बच्चे परमेश्वर से खाना
माँगते हैं
और भूख के मारे फुदकते हैं, तो
कौन उन्हें खाना देता है?

39 क्या तू जानता है पहाड़ी बकरी
कब जन्म देती है?[7]
क्या तूने कभी हिरनी को बच्चा
जनते देखा है?[8]
2 क्या तू गिन सकता है, वे कितने
महीने गाभिन रहती हैं?
या ठीक किस वक्त बच्चा देती हैं?
3 बच्चा देते वक्त वे झुक जाती हैं
और बच्चा हो जाने पर उन्हें प्रसव-
पीड़ा से राहत मिलती है।
4 उनके बच्चे खुले मैदानों में बढ़ते
और तगड़े होते जाते हैं,
फिर वे चले जाते हैं और लौटकर
नहीं आते।
5 किसने जंगली गधे* को खुला घूमने
दिया?[1]
किसने उसकी रस्सियों को खोल
दिया?
6 मैंने बंजर इलाके को उसका घर
बनाया,
नमकवाली ज़मीन उसके बसेरे के
लिए रखी।
7 शहर की चहल-पहल से उसे कोई
मतलब नहीं,
हाँकनेवाले की आवाज़ को वह
अनसुना कर देता है।
8 ज़रा-सी घास की तलाश में,
वह पहाड़ों को छान मारता है।
9 बता, क्या जंगली साँड़ तेरे लिए
काम करेगा?[2]
क्या वह तेरे तबेले* में रात
बिताएगा?
10 क्या तू उसे रस्सी से बाँधकर जुताई
करवा सकता है?
क्या वह घाटी में खेत जोतने* के
लिए तेरे पीछे-पीछे आएगा?
11 क्या तू उसकी ज़बरदस्त ताकत पर
भरोसा रख सकता है?
उससे अपने भारी काम करवा
सकता है?
12 क्या वह तेरे लिए फसल ढोएगा?
उसे उठाकर खलिहान तक लाएगा?

38:36 *या शायद, "इंसान।" #या शायद, "दिमाग को।"

39:5 *या "गोरखर।" 39:9 *या "चरनी।" 39:10 *या "हेंगा खींचने।"

अध्य. 38
1 जक 10:1
2 यिर्म 10:12
3 भज 136:5; नीत 3:20
4 यिर्म 10:13
5 भज 104:21; भज 145:15, 16; नहू 2:12
6 भज 147:9; मत 6:26; लूक 12:24

अध्य. 39
7 भज 104:18
8 भज 29:9

दूसरा कॉल.
1 अय 24:5; भज 104:10, 11
2 व्य 33:17

13 मादा शुतुरमुर्ग खुशी के मारे पंख
फड़फड़ाती है,
मगर क्या उसके पंख और डैने,
लगलग पक्षी[1] की तरह होते हैं?
14 वह अंडे देकर उन्हें ज़मीन में ही
रहने देती है
और वहीं धूल में उन्हें सेती है।
15 वह भूल जाती है कि कोई अंडों को
कुचल सकता है,
या जंगली जानवर उन्हें रौंद
सकता है।
16 वह अपने बच्चों के साथ कठोरता
करती है, मानो वे उसके हैं ही
नहीं।[2]
उसे कोई चिंता नहीं कि उन्हें पालने-
पोसने की उसकी मेहनत बेकार
जाएगी।
17 परमेश्वर ने उसे बुद्धि नहीं दी,
न ही उसमें समझ डाली।
18 मगर जब वह अपने पंख फड़फड़ा-
कर दौड़ती है,
तब घोड़े और उसके सवार पर
हँसती है।
19 क्या घोड़े में ताकत तूने भरी है?[3]
उसकी गरदन पर लहराता अयाल
क्या तूने दिया है?
20 क्या उसे टिड्डी की तरह छलाँग
लगाना तूने सिखाया है?
उसकी फुफकार से कँपकँपी छूट
जाती है।[4]
21 घाटी में वह टाप मारता है और
ज़ोर लगाकर उछलता है,[5]
युद्ध के मैदान की तरफ* सरपट
दौड़ पड़ता है।[6]
22 खौफ को सामने देख वह हँसता है,
किसी से नहीं डरता,[7]
तलवार देखकर पीछे नहीं हटता।
23 जब तरकश उससे लगकर खड़-
खड़ाता है,
जब सवार के भाले-बरछी
चमचमाते हैं,
24 तो वह उमंग से भर जाता है, हवा
से बातें करने लगता है,*
नरसिंगा फूँके जाने पर उसे रोकना
मुश्किल है,#
25 उसकी आवाज़ सुनकर वह ज़ोर से
हिनहिनाता है,
दूर से ही उसे युद्ध की खुशबू आ
जाती है,
सेनापतियों का चिल्लाना और युद्ध
की ललकार सुनायी पड़ती है।[1]
26 क्या बाज़ को आसमान में उड़ने की
समझ तूने दी है,
जो वह दक्षिण की तरफ अपने पंख
फैलाता है?
27 या क्या तेरे हुक्म पर उकाब उड़ान
भरता है,[2]
अपना घोंसला ऊँची जगहों पर
बनाता है,[3]
28 खड़ी चट्टान पर रात गुज़ारता है
और चट्टान की चोटी पर अपना
गढ़ बनाता है?
29 वहाँ से वह खाने की तलाश में,[4]
दूर-दूर तक अपनी नज़र
दौड़ाता है।
30 उसके चूज़े खून पीते हैं,
जहाँ लाश होती है वहीं वह पहुँच
जाता है।"[5]

40 यहोवा ने अय्यूब से यह भी कहा,
2 "कौन सर्वशक्तिमान में
गलती ढूँढ़कर उससे बहस
कर सकता है?[6]

39:21 *शा., "हथियारों का सामना करने।"

39:24 *शा., "ज़मीन को निगल जाता है।"
#या शायद, "उसे यकीन नहीं होता।"

अध्य. 39
1 भज 104:17, जक 5:9
2 विल 4:3
3 भज 147:10, यश 31:1
4 यिर्म 8:16
5 न्या 5:22, भज 32:9
6 नीत 21:31, यिर्म 46:9, यिर्म 47:3, हब 1:8
7 यश 5:28, यिर्म 8:6

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 46:4
2 नीत 23:5, यश 40:31
3 यिर्म 49:16, ओब 4
4 अय 9:26, यिर्म 49:22
5 मत 24:28

अध्य. 40
6 अय 33:12, 13, यश 45:9

कौन परमेश्‍वर को सुधारना
चाहता है? अगर कोई है, तो
जवाब दे।”[1]
3 तब अय्यूब ने यहोवा से कहा,
4 “मेरी क्या औकात?[2]
मैं तुझे क्या जवाब दूँ?
मैं मुँह पर हाथ रखकर चुप रहूँगा,[3]
5 मैंने एक बार कहा, दूसरी बार
कहा,
मगर अब कुछ न कहूँगा, अपने मुँह
से एक शब्द नहीं निकालूँगा।”
6 तब तूफान में से यहोवा की आवाज़
सुनायी दी। उसने अय्यूब से कहा,[4]
7 “हे इंसान, तैयार हो जा!
मैं तुझसे सवाल करूँगा और तू मुझे
बता।[5]
8 क्या तू मेरे फैसले पर उँगली
उठाएगा?
खुद को सही साबित करने के लिए
मुझे दोषी ठहराएगा?[6]
9 क्या तू सच्चे परमेश्‍वर जितना
शक्‍तिशाली है?[7]
क्या तू उसकी तरह गरज
सकता है?[8]
10 अगर हाँ, तो पूरी शान और ऐश्‍वर्य
से खुद को सँवार ले,
गौरव और वैभव की पोशाक
पहन ले।
11 अपने क्रोध की ज्वाला बरसा दे,
घमंडियों पर ध्यान दे और उन्हें
नीचा कर।
12 उन पर ध्यान दे और उनका घमंड
तोड़ दे,
जहाँ कहीं दुष्ट दिखें, उन्हें
कुचल दे।
13 उन सबको मिट्टी में गाड़ दे,
अँधेरी जगह में उन्हें* बाँध दे,
14 तब मैं भी मान लूँगा*
कि तेरा दायाँ हाथ तुझे बचा
सकता है।
15 ज़रा बहेमोत* को देख,
जैसे मैंने तुझे बनाया है उसे भी
बनाया है,
वह बैल की तरह घास खाता है।
16 उसके कूल्हों में ज़बरदस्त शक्‍ति है,
उसके पेट की माँस-पेशियों में गज़ब
की ताकत है।
17 वह अपनी पूँछ देवदार के पेड़ की
तरह कड़ी कर लेता है,
उसकी जाँघ की माँस-पेशियाँ मज़-
बूती से गुंथी हुई हैं।
18 उसकी हड्डियाँ, ताँबे की
नलियों जैसी
और उसके हाथ-पैर लोहे के छड़
जैसे मज़बूत हैं।
19 बड़े-बड़े जानवरों में परमेश्‍वर ने
उसे सबसे पहले बनाया,
सिर्फ उसका बनानेवाला ही उसे
तलवार से मार सकता है।
20 उसे खाना देने के लिए पूरा पहाड़
जुटा रहता है,
सारे जंगली जानवर वहीं आस-पास
खेलते-कूदते हैं।
21 वह कँटीली झाड़ियों* के नीचे
आराम फरमाता है,
दलदल में नरकटों के बीच रहता है,
22 कँटीली झाड़ियाँ भी उसे अपनी
छाँव में ले लेती हैं,
घाटी के पेड़* उसे घेरे रहते हैं।

अध्य. 40
1 अय 13:3; अय 23:3-5; अय 31:35
2 अय 42:5, 6
3 भज 39:9; नीत 30:32
4 अय 38:1
5 अय 38:3; अय 42:4
6 भज 51:4; रोम 3:4
7 निर्ग 15:6; भज 89:13; यश 40:26; 1कुर 10:22
8 अय 37:4; भज 29:3

40:13 *शा., “उनके चेहरे।” **40:14** *या “तुझे दाद दूँगा।” **40:15** *शायद दरियाई घोड़ा। **40:21** *शायद बेर की प्रजाति का पेड़। **40:22** *शा., “पहाड़ी पीपल।”

23 चाहे नदी में उफान आ जाए, वह
घबराता नहीं,
चाहे यरदन का पानी[1] उस पर चढ़
आए, वह बेफिक्र रहता है।
24 क्या कोई उसका सामना करके उसे
पकड़ सकता है?
या उसकी नाक में नकेल* डाल
सकता है?

41 क्या तू मछली पकड़नेवाले काँटे
से लिव्यातान*[2] को पकड़
सकता है?
या उसकी जीभ को रस्सी से कस
सकता है?
2 क्या तू उसकी नाक में नकेल* डाल
सकता है?
या उसके जबड़ों को काँटे से छेद
सकता है?
3 क्या वह तुझसे रहम की भीख
माँगेगा?
तुझसे मीठी-मीठी बातें करेगा?
4 उम्र-भर तेरी गुलामी करने के लिए
तुझसे करार करेगा?
5 क्या तू उसके साथ ऐसे खेलेगा,
जैसे चिड़िया से खेलता है?
या उसे बाँधकर रखेगा कि वह तेरी
बच्चियों का मन बहलाए?
6 क्या उसे पकड़नेवाले मछुवारे
उसका सौदा करेंगे?
उसे काटकर व्यापारियों में बाँटेंगे?
7 क्या तू मछली मारनेवाले भालों
से उसकी खाल छलनी कर
सकता है?[3]
या उसके सिर के आर-पार भाला
घुसा सकता है?
8 ज़रा उसे हाथ लगाकर तो देख!
ऐसी मुठभेड़ होगी कि ज़िंदगी-भर
याद रहेगी
और दोबारा तू यह गलती नहीं
करेगा।
9 उसे पकड़ने की आस रखना
बेकार है,
उसे देखते ही तेरे हाथ-पैर फूल
जाएँगे।
10 जब किसी में इतनी हिम्मत नहीं कि
उसे छेड़ सके,
तो मेरे खिलाफ खड़े होने की जुर्रत
कौन करेगा?[1]
11 कौन है जिसने मुझे कुछ दिया है,
जो मुझे लौटाना पड़े?[2]
आकाश के नीचे जो कुछ है, सब
मेरा है![3]
12 मैं बताता हूँ उसके हाथ-पैरों की
बनावट कैसी है,
उसमें कितनी ताकत है,
उसे किस खूबसूरती से
तराशा गया है।
13 कौन उसकी खाल निकाल
सकता है?
उसके मज़बूत जबड़ों के पास फटक
सकता है?
14 कौन उन्हें* खोलने का साहस कर
सकता है?
उसके दाँत देखकर कोई भी
काँप उठे।
15 उसकी पीठ ऐसी नज़र आती है,
मानो ढालें कतार में एक-दूसरे से
सटी हों।*

अध्य. 40
1 यह 3:15

अध्य. 41
2 भज 104:25, 26
3 अय 41:26

दूसरा कॉल.
1 2इत 20:6 दान 4:35 प्रेष 11:17 रोम 9:19
2 रोम 11:35
3 व्य 10:14 भज 24:1 भज 50:12 1कुर 10:26

40:24 *शा., “फंदा।” **41:1** *शायद मगरमच्छ। **41:2** *जल-बेंत से बनी रस्सी।

41:14 *शा., “मुँह के दरवाज़े।” **41:15** *या शायद, “उसे अपनी ढालों की कतार पर घमंड है।”

16 वे इस कदर आपस में जुड़ी होती हैं
कि उनके बीच हवा तक नहीं जा
सकती।
17 उनका जोड़ इतना मज़बूत होता है
कि उन्हें अलग नहीं किया जा
सकता।
18 उसकी नाक से तेज़ फुहार रौशनी
की तरह दमकती है,
उसकी आँखें, सुबह की किरणों
जैसी चमकती हैं।
19 उसके मुँह से बिजली कौंधती है,
चिंगारियाँ छूटती हैं।
20 उसके नथनों से ऐसा धुआँ
निकलता है,
जैसे आग की भट्ठी में घास जल
रही हो।
21 उसकी फूँक से मानो कोयले सुलग
उठते हैं,
उसके मुँह से आग की लपटें
उठती हैं।
22 उसकी गरदन में ज़बरदस्त
ताकत है,
डर उसके सामने से भाग खड़ा
होता है।
23 उसके पेट की परतें लोहे जितनी
सख्त होती हैं,
उन्हें हिलाना नामुमकिन है।
24 उसका दिल पत्थर की तरह मज़बूत
होता है,
हाँ, चक्की के निचले पाट जितना
मज़बूत।
25 जब वह हरकत में आता है,
तो अच्छे-अच्छे घबरा जाते हैं,
डर के मारे सुध-बुध खो बैठते हैं।
26 उस पर तलवार, भाले,
बरछी या तीर का कोई असर नहीं
होता।[1]

अध्य. 41
1 अय 41:7

दूसरा कॉल.
1 यश 41:15

अध्य. 42
2 उत 18:14
भज 135:6
यश 43:13
यश 55:10, 11
यिर्म 32:17
मर 10:27
लूक 18:27

27 वह लोहे को भूसा
और ताँबे को गली हुई लकड़ी
समझता है।
28 वह तीर से डरकर भागता नहीं
गोफन के पत्थरों का वार,
उस पर घास-फूस की बौछार है।
29 वह डंडे को घास-फूस समझता है,
बरछी से ललकारे जाने पर
हँसता है।
30 उसका पेट ठीकरे जैसा पैना
होता है,
कीचड़ पर वह ऐसे निशान छोड़
जाता है,
मानो दाँवने की पटिया चलायी
गयी हो।[1]
31 वह गहरे सागर में ऐसी
हलचल मचाता है, मानो हाँडी
उबल रही हो,
समुंदर में ऐसा उफान लाता है,
मानो हाँडी में खुशबूदार तेल
उफन रहा हो।
32 वह पानी में अपने
पीछे एक चमकीली लकीर छोड़
जाता है,
ऐसा लगता है कि सागर का सफेद
बाल निकल आया हो।
33 उसके जैसा पूरी धरती पर कोई
नहीं,
उसे इस तरह बनाया गया है कि वह
किसी से नहीं डरता।
34 वह बड़े-बड़े जानवरों को घूरता है,
जंगली जानवरों का वह
बादशाह है।”

42 तब अय्यूब ने यहोवा से कहा,
2 “अब मैं जान गया हूँ कि तू
सबकुछ कर सकता है,
ऐसा कोई काम नहीं जो तूने सोचा
हो और उसे पूरा न कर सके।[2]

3 तूने पूछा था, 'यह कौन है जो बिना
कुछ जाने मेरी सलाह को तोड़-
मरोड़ रहा है?'[1]
मैं ही वह इंसान हूँ जिसने बिना
सोचे-समझे बातें कीं,
उन अनोखी बातों के बारे में कहा,
जिन्हें मैं सही-सही नहीं जानता।[2]
4 तूने कहा था, 'अब ज़रा मेरी बात
पर ध्यान दे,
मैं तुझसे सवाल करूँगा और तू मुझे
बता।'[3]
5 आज तक मैंने तेरे बारे में सुना था,
पर अब तुझे देख भी लिया है।
6 इसलिए मैं अपने शब्द वापस
लेता हूँ,[4]
धूल और राख में बैठकर पश्चाताप
करता हूँ।"[5]

7 जब यहोवा अय्यूब से बात कर चुका तो यहोवा ने तेमानी एलीपज से कहा,

"तुझ पर और तेरे दोनों साथियों[6] पर मेरा क्रोध भड़क उठा है। क्योंकि तुम लोगों ने मेरे बारे में सच नहीं कहा[7] जबकि मेरे सेवक अय्यूब ने मेरे बारे में सच कहा। **8** अब सात बैल और सात मेढ़े ले और मेरे सेवक अय्यूब के पास जा। वहाँ तुम लोग अपने लिए होम-बलि चढ़ाना और मेरा सेवक अय्यूब तुम्हारे लिए प्रार्थना करेगा।[8] हालाँकि तुमने मेरे सेवक अय्यूब की तरह मेरे बारे में सच नहीं कहा, फिर भी उसकी बिनती सुनकर मैं तुम्हारी मूर्खता की सज़ा तुम्हें नहीं दूँगा।"

9 तब तेमानी एलीपज, शूही बिलदद और नामाती सोपर ने वही किया, जो यहोवा ने कहा था। और यहोवा ने अय्यूब की प्रार्थना कबूल की।

10 जब अय्यूब ने अपने साथियों के लिए प्रार्थना की,[1] तब यहोवा ने अय्यूब का सारा दुख दूर कर दिया[2] और उसकी खुशहाली लौटा दी।* अय्यूब के पास पहले जो कुछ था, यहोवा ने उसका दुगना उसे दिया।[3] **11** उसके सभी भाई-बहन और पुराने दोस्त[4] उसके घर उससे मिलने आए और उन्होंने उसके साथ खाना खाया। यहोवा की इजाज़त से उस पर जो भी मुसीबतें आयी थीं, उसके लिए उन्होंने अय्यूब से हमदर्दी जतायी और उसे दिलासा दिया। हरेक ने तोहफे में उसे चाँदी का एक टुकड़ा और सोने की एक बाली दी।

12 यहोवा ने अय्यूब को उसके पहले के दिनों से ज़्यादा आशीष दी।[5] उसके पास 14,000 भेड़ें, 6,000 ऊँट, 2,000* गाय-बैल और 1,000 गधियाँ हो गयीं।[6] **13** अय्यूब के सात बेटे और हुए। इसके अलावा, उसकी तीन और बेटियाँ हुईं।[7] **14** उसने पहली बेटी का नाम यमीमा, दूसरी का कसीआ और तीसरी का केरेन-हप्पूक रखा। **15** उनके जैसी खूबसूरत लड़कियाँ पूरे देश में कहीं न थीं। अय्यूब ने अपने बेटों के साथ-साथ अपनी बेटियों को भी जाय-दाद का हिस्सा दिया।

16 अय्यूब 140 साल और जीया। उसने अपने बच्चों और परपोतों को भी देखा, कुल मिलाकर उसने चार पीढ़ियाँ देखीं। **17** एक लंबी और खुशहाल ज़िंदगी जीने के बाद* अय्यूब की मौत हो गयी।

अध्य. 42
1 अय 38:2
2 भज 40:5; भज 139:6
3 अय 38:3; अय 40:7
4 अय 40:4
5 एज 9:6; भज 51:17
6 अय 2:11
7 अय 11:6; अय 15:14, 15; अय 22:2, 3
8 उत 20:17; याकू 5:15

दूसरा कॉल.
1 मत 6:14
2 अय 2:6, 7; याकू 5:11
3 उत 32:10; 1शम 2:7; 2इत 25:9; नीत 22:4; यश 61:7
4 अय 19:13
5 नीत 3:33; नीत 10:22; इब्र 11:6; याकू 5:11
6 अय 1:3
7 अय 1:1, 2

42:10 *शा., "तब यहोवा उसको बँधुआई से लौटा लाया।" **42:12** *शा., "1,000 जोड़ी।" **42:17** *शा., "बूढ़ा और पूरी उम्र का होकर।"

भजन

सारांश

1 दो राहों में फर्क
परमेश्वर का कानून पढ़ने से मिलती खुशी (2)
नेक लोग फलदार पेड़ जैसे (3)
दुष्ट भूसी जैसे (4)

2 यहोवा और उसका अभिषिक्त जन
यहोवा राष्ट्रों पर हँसता है (4)
वह राजा ठहराता है (6)
बेटे का सम्मान करो (12)

3 खतरे के बावजूद परमेश्वर पर भरोसा
'इतने दुश्मन कहाँ से आए?' (1)
"उद्धार करनेवाला यहोवा ही है" (8)

4 प्रार्थना जो परमेश्वर पर भरोसा दिखाती है
"गुस्से से भर जाओ, तो भी पाप मत करो" (4)
'मैं चैन से सोऊँगा' (8)

5 यहोवा, नेक लोगों की पनाह
वह दुष्टता से नफरत करता है (4, 5)
"मुझे अपनी नेक राह पर ले चल" (8)

6 परमेश्वर से कृपा की बिनती
मरे हुए उसकी तारीफ नहीं कर सकते (5)
परमेश्वर कृपा की बिनती सुनता है (9)

7 यहोवा सच्चा न्यायी है
'हे यहोवा, मेरा न्याय कर' (8)

8 परमेश्वर की महिमा और इंसान की गरिमा
"तेरा नाम क्या ही गौरवशाली है!" (1, 9)
"नश्वर इंसान है ही क्या?" (4)
उसे वैभव का ताज पहनाया (5)

9 परमेश्वर के आश्चर्य के कामों का बखान
यहोवा, एक ऊँचा गढ़ (9)
उसका नाम जानना, उस पर भरोसा रखना है (10)

10 यहोवा, बेसहारों का मददगार
दुष्ट कहता है, "कोई परमेश्वर नहीं" (4)
लाचार लोग यहोवा की ओर ताकते हैं (14)
"यहोवा युग-युग का राजा है" (16)

11 यहोवा की पनाह लेना
"यहोवा अपने पवित्र मंदिर में है" (4)
वह हिंसा से प्यार करनेवालों से नफरत करता है (5)

12 यहोवा कदम उठाता है
परमेश्वर की कही बातें शुद्ध हैं (6)

13 यहोवा से मिलनेवाले उद्धार के लिए तरसना
'हे यहोवा, कब तक?' (1, 2)
यहोवा ढेरों आशीषें देता है (6)

14 मूर्ख का ब्यौरा
"कोई यहोवा नहीं" (1)
"कोई भी भला काम नहीं करता" (3)

15 यहोवा के तंबू में कौन रह सकता है?
जो दिल में सच बोलता है (2)
दूसरों को बदनाम नहीं करता (3)
वादे निभाता है, फिर चाहे नुकसान सहना पड़े (4)

16 यहोवा, भलाई का सोता
"यहोवा मेरा भाग है" (5)
'रात को मेरे विचार मुझे सुधारते हैं' (7)
'यहोवा मेरे दायीं तरफ रहता है' (8)
"तू मुझे कब्र में नहीं छोड़ देगा" (10)

17 हिफाज़त के लिए प्रार्थना
"तूने मेरा दिल जाँचा" (3)
"अपने पंखों की छाँव तले" (8)

18 उद्धार के लिए परमेश्वर की तारीफ करना
"यहोवा मेरे लिए बड़ी चट्टान" है (2)
वफादार के साथ वफादारी निभाता है (25)
परमेश्वर का काम खरा है (30)
"तेरी नम्रता मुझे ऊँचा उठाती है" (35)

19 सृष्टि और कानून की गवाही
"आसमान परमेश्वर की महिमा बयान करता है" (1)

परमेश्वर का खरा कानून जान में जान डालता है (7)
"मुझसे अनजाने में जो पाप हुए हैं" (12)

20 परमेश्वर के अभिषिक्त राजा का उद्धार
कुछ रथों पर भरोसा करते हैं, 'मगर हम यहोवा का नाम पुकारते हैं' (7)

21 यहोवा पर भरोसा करनेवाले राजा पर आशीषें
राजा को लंबी उम्र दी गयी (4)
परमेश्वर के दुश्मनों की हार (8-12)

22 निराशा से उबरकर तारीफ करना
"तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (1)
वे "मेरे कपड़े के लिए चिट्ठियाँ डालते हैं" (18)
मंडली में परमेश्वर की तारीफ (22, 25)
सब परमेश्वर की उपासना करेंगे (27)

23 "यहोवा मेरा चरवाहा है"
"मुझे कोई कमी नहीं होगी" (1)
"वह मुझे तरो-ताज़ा करता है" (3)
"मेरा प्याला लबालब भरा है" (5)

24 गौरवशाली राजा फाटकों से दाखिल हुआ
'धरती यहोवा की है' (1)

25 मार्गदर्शन और माफी के लिए प्रार्थना
"मुझे अपने रास्ते सिखा" (4)
"यहोवा से गहरी दोस्ती" (14)
"मेरे सभी पाप माफ कर दे" (18)

26 निर्दोष चाल चलना
"हे यहोवा, मुझे परखकर देख" (2)
बुरी संगति से दूर रहना (4, 5)
'मैं वेदी के चारों तरफ घूमूँगा' (6)

27 यहोवा, मेरे जीवन का मज़बूत गढ़
परमेश्वर के मंदिर के लिए कदर (4)
यहोवा परवाह करता है, फिर चाहे माता-पिता न करें (10)
"यहोवा पर आशा रख" (14)

28 इस भजन के लेखक की प्रार्थना सुनी गयी
'यहोवा मेरी ताकत और ढाल है' (7)

29 यहोवा की दमदार आवाज़
पवित्र पोशाक पहने उपासना करो (2)
"गौरवशाली परमेश्वर गरज रहा है" (3)
वह अपने लोगों को ताकत देता है (11)

30 मातम जश्न में बदल गया
परमेश्वर की कृपा ज़िंदगी-भर बनी रहती है (5)

31 यहोवा की पनाह लेना
"मैं अपनी जान तेरे हवाले करता हूँ" (5)
'यहोवा, सच्चाई का परमेश्वर' (5)
परमेश्वर की अपार भलाई (19)

32 सुखी हैं वे जो माफी पाते हैं
'मैंने अपना पाप मान लिया' (5)
परमेश्वर तुझे अंदरूनी समझ देता है (8)

33 सृष्टिकर्ता की तारीफ करो
"उसके लिए एक नया गीत गाओ" (3)
यहोवा के वचन और उसकी साँस से सृष्टि हुई (6)
उसका राष्ट्र सुखी है (12)
उसकी नज़र अपने लोगों पर (18)

34 यहोवा अपने सेवकों को बचाता है
"आओ, हम मिलकर उसके नाम की बड़ाई करें" (3)
उसका स्वर्गदूत हिफाज़त करता है (7)
'परखकर देखो, यहोवा भला है' (8)
"उसकी एक भी हड्डी नहीं तोड़ी गयी" (20)

35 दुश्मनों से छुड़ाने की प्रार्थना
दुश्मन खदेड़ दिए जाएँ (5)
भीड़ में परमेश्वर की तारीफ (18)
बेवजह नफरत की गयी (19)

36 परमेश्वर का अटल प्यार अनमोल है
दुष्ट परमेश्वर से नहीं डरता (1)
परमेश्वर जीवन देनेवाला है (9)
'तेरी रौशनी से रौशनी मिलती है' (9)

37 यहोवा पर भरोसा रखनेवाले फले-फूलेंगे
बुरे लोगों की वजह से मत झुँझलाना (1)
"यहोवा में अपार खुशी पा" (4)
"अपना सबकुछ यहोवा पर छोड़ दे" (5)

“दीन लोग धरती के वारिस होंगे” (11)
नेक इंसान को रोटी की कमी नहीं होगी (25)
वे धरती पर हमेशा जीएँगे (29)

38 पश्चाताप करनेवाले की प्रार्थना
“मैं टूट चुका हूँ, यह दर्द बरदाश्त से बाहर है” (6)
यहोवा उनकी सुनता है जो उसका इंतज़ार करते हैं (15)
“पाप की वजह से मेरा मन बेचैन था” (18)

39 ज़िंदगी छोटी है
इंसान बस एक साँस है (5, 11)
“मेरे आँसुओं को अनदेखा न कर” (12)

40 बेजोड़ परमेश्वर का शुक्रिया अदा करना
परमेश्वर के बेशुमार कामों का बखान करना नामुमकिन (5)
बलिदान ही सबकुछ नहीं (6)
“तेरी मरज़ी पूरी करने में ही मेरी खुशी है” (8)

41 बिस्तर पर पड़े बीमार की प्रार्थना
परमेश्वर बीमार को सँभालता है (3)
जिगरी दोस्त ने दगा दी (9)

42 महान उद्धारकर्ता की तारीफ करना
परमेश्वर के लिए तरसना जैसे हिरन पानी के लिए तरसता है (1, 2)
“मेरे मन, तू क्यों इतना उदास है?” (5, 11)
“परमेश्वर का इंतज़ार कर” (5, 11)

43 परमेश्वर न्यायी बनकर छुड़ाता है
“अपनी रौशनी और सच्चाई मुझे दे” (3)
“मेरे मन, तू क्यों इतना उदास है?” (5)
“परमेश्वर का इंतज़ार कर” (5)

44 मदद के लिए प्रार्थना
“तूने ही हमें बचाया” (7)
‘उन भेड़ों जैसी जिन्हें हलाल किया जाएगा’ (22)
“हमारी मदद के लिए जल्दी उठ!” (26)

45 अभिषिक्त राजा की शादी
सुहावने बोल (2)
“परमेश्वर हमेशा-हमेशा के लिए तेरी राजगद्दी है” (6)
दुल्हन की खूबसूरती निहारने की चाह (11)
बेटे, सारी धरती पर हाकिम (16)

46 ‘परमेश्वर हमारी पनाह है’
उसके आश्चर्य के काम (8)
वह पूरी धरती से युद्ध मिटाएगा (9)

47 परमेश्वर, सारी धरती का राजा
“यहोवा विस्मयकारी परमेश्वर है” (2)
उसकी तारीफ में गीत गाओ (6, 7)

48 सिय्योन, महाराजाधिराज का नगर
सारी धरती के लिए हर्ष का कारण (2)
नगर और मीनारों को गौर से देखो (11-13)

49 दौलत पर भरोसा रखना बेवकूफी है
कोई इंसान दूसरे को छुड़ा नहीं सकता (7, 8)
परमेश्वर कब्र से छुड़ाता है (15)
दौलत मौत से नहीं बचा सकती (16, 17)

50 वफादार और दुष्ट का न्याय
बलिदान की बिना पर परमेश्वर के साथ करार (5)
“परमेश्वर खुद न्यायी है” (6)
सभी जानवर परमेश्वर के हैं (10, 11)
दुष्टों का परदाफाश (16-21)

51 पश्चाताप करनेवाले की प्रार्थना
गर्भ में पड़ने के समय से पापी (5)
“मेरा पाप दूर कर दे” (7)
“मेरे अंदर एक साफ दिल पैदा कर” (10)
कुचला दिल परमेश्वर को भाता है (17)

52 परमेश्वर के अटल प्यार पर भरोसा रखना
बुराई पर डींग मारनेवालों को चेतावनी (1-5)
भक्तिहीन लोगों का दौलत पर भरोसा (7)

53 मूर्खों का ब्यौरा
“कोई यहोवा नहीं” (1)
“कोई भी भला काम नहीं करता” (3)

54 दुश्मन से घिर जाने पर मदद की प्रार्थना
“परमेश्वर मेरा मददगार है” (4)

55 दोस्त के दगा देने पर प्रार्थना
करीबी दोस्त ने ताने मारे (12-14)
"सारा बोझ यहोवा पर डाल दे" (22)

56 सताए जाने पर प्रार्थना
"मुझे परमेश्वर पर भरोसा है" (4)
'मेरे आँसू अपनी मशक में भर ले' (8)
"इंसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?" (4, 11)

57 कृपा की बिनती
परमेश्वर के पंखों तले पनाह (1)
दुश्मन अपने ही जाल में फँस गए (6)

58 दुनिया का न्याय करनेवाला एक परमेश्वर है
दुष्टों को सज़ा देने की प्रार्थना (6-8)

59 परमेश्वर, एक ढाल और पनाह
'गद्दारों पर तरस न खा' (5)
'मैं तेरी ताकत का गुणगान करूँगा' (16)

60 परमेश्वर दुश्मनों को हराता है
इंसान पर आस लगाना बेकार (11)
"परमेश्वर से हमें ताकत मिलेगी" (12)

61 परमेश्वर, एक मज़बूत मीनार
'मैं तेरे तंबू में मेहमान बनकर रहूँगा' (4)

62 सही मायनों में उद्धार परमेश्वर दिलाता है
"मैं चुपचाप परमेश्वर का इंतज़ार करता हूँ" (1, 5)
'उसके आगे दिल खोलकर रख दो' (8)
इंसान बस एक साँस है (9)
दौलत पर भरोसा मत रखो (10)

63 परमेश्वर के लिए तरसना
"तेरा अटल प्यार जीवन से कहीं ज़्यादा अनमोल है" (3)
'उम्दा हिस्सा पाकर संतुष्ट' (5)
रात को परमेश्वर के बारे में मनन करना (6)
'मैं परमेश्वर से लिपटा रहता हूँ' (8)

64 छिपकर किए जानेवाले हमलों से बचाव
"परमेश्वर उन पर तीर चलाएगा" (7)

65 परमेश्वर धरती की देखभाल करता है
'प्रार्थना का सुननेवाला' (2)
'सुखी है वह जिसे तू चुनता है' (4)
परमेश्वर की भरपूर आशीषें (11)

66 परमेश्वर के विस्मयकारी काम
'आओ, परमेश्वर के काम देखो' (5)
'मैं सारी मन्नतें पूरी करूँगा' (13)
परमेश्वर प्रार्थना सुनता है (18-20)

67 धरती के कोने-कोने में रहनेवाले परमेश्वर का डर मानेंगे
उसकी राह के बारे में सब जानेंगे (2)
'सभी देशों के लोग उसकी तारीफ करें' (3, 5)
"परमेश्वर हमें आशीष देगा" (6, 7)

68 'परमेश्वर के दुश्मन तितर-बितर हो जाएँ'
"अनाथों का पिता" (5)
जो अकेले हैं उन्हें वह घर देता है (6)
औरतें खुशखबरी सुनाती हैं (11)
आदमियों के रूप में तोहफे (18)
यहोवा हर दिन हमारा बोझ ढोता है (19)

69 बचाव के लिए प्रार्थना
"तेरे भवन के लिए जोश की आग ने मुझे भस्म कर दिया है" (9)
"फौरन मेरी पुकार सुन ले" (17)
'उन्होंने मुझे सिरका दिया' (21)

70 फौरन मदद करने की बिनती
"मेरी खातिर जल्द कदम उठा" (5)

71 बुज़ुर्ग जनों का भरोसा
बचपन से परमेश्वर पर भरोसा (5)
"जब मेरी ताकत जवाब दे जाए" (9)
'बचपन से मुझे सिखाता आया है' (17)

72 परमेश्वर के ठहराए राजा के राज में शांति
"नेक जन फूले-फलेगा" (7)
प्रजा, एक सागर से दूसरे सागर तक (8)
ज़ुल्म से छुटकारा (14)
धरती पर बहुतायत में अनाज (16)
परमेश्वर के नाम की सदा तारीफ हो (19)

73 परमेश्वर की भक्ति करनेवाला दोबारा उसका नज़रिया अपनाता है

“मेरे कदम बहकने ही वाले थे” (2)
“सारा दिन मैं तड़पता रहता था” (14)
‘जब मैं परमेश्वर के भवन में गया’ (17)
दुष्ट फिसलनेवाली ज़मीन पर (18)
परमेश्वर के करीब जाना भला है (28)

74 प्रार्थना कि परमेश्वर अपने लोगों को याद करे
उसने जो उद्धार दिलाया उसे याद किया गया (12-17)
‘ध्यान दे, दुश्मन कैसे ताना कसते हैं’ (18)

75 परमेश्वर सच्चा न्याय करता है
दुष्ट, यहोवा का प्याला पीएँगे (8)

76 सिय्योन के दुश्मनों पर परमेश्वर की जीत
परमेश्वर दीनों को बचाता है (9)
दुश्मनों का घमंड चूर करेगा (12)

77 संकट की घड़ी में प्रार्थना
परमेश्वर के कामों पर मनन (11, 12)
‘क्या कोई तुझ जैसा महान है?’ (13)

78 परमेश्वर की परवाह; इसराएल में विश्वास की कमी
आनेवाली पीढ़ी को बताना (2-8)
“उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया” (22)
“स्वर्ग का अनाज” (24)
‘उन्होंने परमेश्वर का दिल दुखाया’ (41)
मिस्र से वादा किए हुए देश तक (43-55)
‘परमेश्वर को चुनौती देते रहे’ (56)

79 तब की प्रार्थना जब राष्ट्रों ने परमेश्वर के लोगों पर हमला किया
‘हम मज़ाक बन गए हैं’ (4)
‘अपने नाम की खातिर मदद कर’ (9)
‘हमारे पड़ोसियों को सात गुना बदला चुका’ (12)

80 इसराएल के चरवाहे से बहाली की प्रार्थना
“हे परमेश्वर, हमें बहाल कर दे” (3)
इसराएल, परमेश्वर के अंगूर की बेल (8-15)

81 आज्ञा मानने का बढ़ावा
पराए देवताओं की पूजा मत करो (9)
‘काश, तुम मेरी बात सुनते’ (13)

82 परमेश्वर से सच्चे न्याय की दुहाई
वह “ईश्वरों” के बीच न्याय करता है (1)
‘दीन-दुखियों की पैरवी करो’ (3)
“तुम सब ईश्वर हो” (6)

83 ऐसे वक्त पर प्रार्थना जब दुश्मनों से सामना हो
“हे परमेश्वर, तू क्यों चुप है?” (1)
दुश्मन, उखड़े हुए पौधे जैसे (13)
परमेश्वर का नाम यहोवा है (18)

84 परमेश्वर के महान डेरे के लिए तरसना
एक लेवी की पंछी बनने की चाह (3)
“तेरे आँगनों में एक दिन” (10)
‘परमेश्वर सूरज और ढाल है’ (11)

85 बहाली की प्रार्थना
परमेश्वर वफादार जनों से शांति की बातें करेगा (8)
अटल प्यार और वफादारी मिलेंगे (10)

86 यहोवा के समान कोई नहीं
वह माफ करने को तत्पर रहता है (5)
सब राष्ट्र यहोवा की उपासना करेंगे (9)
“मुझे अपनी राह के बारे में सिखा” (11)
“मेरे मन को एक कर” (11)

87 सिय्योन, सच्चे परमेश्वर की नगरी
जो सिय्योन में पैदा हुए (4-6)

88 मौत से बचाए रखने की प्रार्थना
‘मैं कब्र की दहलीज़ पर हूँ’ (3)
‘हर सुबह तुझसे प्रार्थना करता हूँ’ (13)

89 यहोवा के अटल प्यार के बारे में गाना
दाविद के साथ करार (3)
दाविद का वंश सदा बना रहेगा (4)
परमेश्वर का अभिषिक्त जन उसे “पिता” पुकारता है (26)
दाविद से किया करार पक्का है (34-37)
इंसान कब्र से बच नहीं सकता (48)

90 परमेश्वर युग-युग का है, पर इंसान चंद दिनों का
हज़ार साल ऐसे जैसे बीता हुआ कल (4)
इंसान 70-80 साल जीता है (10)
“हमें अपने दिन गिनना सिखा” (12)

91 परमेश्वर की गुप्त जगह में हिफाज़त
बहेलिए से बचाए गए (3)
परमेश्वर के पंखों तले पनाह (4)
हज़ार गिरेंगे पर तू सलामत रहेगा (7)
स्वर्गदूतों को हिफाज़त करने का हुक्म (11)

92 यहोवा सदा के लिए ऊँचा है
उसके महान काम और गहरे विचार (5)
'नेक जन पेड़ की तरह फलेगा-फूलेगा' (12)
बुज़ुर्ग फलते-फूलते रहेंगे (14)

93 यहोवा का वैभवशाली राज
"यहोवा राजा बना है!" (1)
'तू जो हिदायतें याद दिलाता है वे भरोसेमंद हैं' (5)

94 परमेश्वर से प्रार्थना कि वह बदला चुकाए
"दुष्ट कब तक आनंद मनाते रहेंगे?" (3)
सुखी है वह जिसे याह सुधारता है (12)
वह अपने लोगों को नहीं त्यागेगा (14)
'कानून की आड़ में मुसीबत खड़ी करना' (20)

95 सच्ची उपासना के साथ आज्ञा मानना
"आज अगर तुम उसकी आवाज़ सुनो" (7)
"अपना दिल कठोर मत करना" (8)
"ये मेरे विश्राम में दाखिल न होंगे" (11)

96 "यहोवा के लिए एक नया गीत गाओ"
वह सबसे ज़्यादा तारीफ के काबिल (4)
सभी देशों के देवता निकम्मे (5)
पवित्र पोशाक पहने उपासना करो (9)

97 यहोवा, दूसरे देवताओं से ऊँचा
"यहोवा राजा बना है!" (1)
उससे प्यार करो, बुराई से नफरत (10)
नेक लोगों के लिए रौशनी (11)

98 यहोवा, उद्धारकर्ता और सच्चा न्यायी
वह जो उद्धार दिलाता है, वह जग ज़ाहिर हुआ (2, 3)

99 यहोवा, पवित्र राजा
करूबों पर विराजमान (1)
वह माफ करता और सज़ा देता है (8)

100 सृष्टिकर्ता का शुक्रिया अदा करना
"खुशी-खुशी यहोवा की सेवा करो" (2)
"उसी ने हमें बनाया है" (3)

101 एक राजा निर्दोष चाल चलता है
'मैं घमंड बरदाश्त नहीं करूँगा' (5)
'मेरी आँखें विश्वासयोग्य लोगों पर लगी रहेंगी' (6)

102 एक सताए हुए इंसान की प्रार्थना
'मैं तनहा पंछी की तरह हूँ' (7)
'मेरे दिन घटती छाया जैसे हैं' (11)
"यहोवा सिय्योन को दोबारा बसाएगा" (16)
यहोवा सदा कायम रहता है (26, 27)

103 "मेरा मन यहोवा की तारीफ करे"
वह हमारे पापों को दूर फेंकता है (12)
पिता की तरह दया करता है (13)
याद रखता है कि हम मिट्टी ही हैं (14)
उसकी राजगद्दी; उसका राज (19)
स्वर्गदूत उसके वचन का पालन करते हैं (20)

104 सृष्टि के लिए परमेश्वर की तारीफ करना
धरती सदा बनी रहेगी (5)
इंसान के लिए दाख-मदिरा और रोटी (15)
"तेरे काम अनगिनत हैं!" (24)
'साँस ले ली जाती है, वे मर जाते हैं' (29)

105 यहोवा विश्वासयोग्य रहकर अपने लोगों की खातिर कदम उठाता है
वह अपना करार याद रखता है (8-10)
"मेरे अभिषिक्त जनों को हाथ मत लगाना" (15)
परमेश्वर, गुलाम बनाए यूसुफ का इस्तेमाल करता है (17-22)
मिस्र में परमेश्वर के चमत्कार (23-36)
इसराएल का निकलना (37-39)
परमेश्वर ने अब्राहम से किया वादा याद रखा (42)

106 इसराएल ने कदर नहीं की
जल्द ही परमेश्वर के काम भूल गए (13)
परमेश्वर के बजाय बैल की मूरत की महिमा की (19, 20)

उन्हें परमेश्वर के वादे पर विश्वास नहीं था (24)
वे बाल की उपासना करने लगे (28)
दुष्ट स्वर्गदूतों के लिए बच्चों की बलि की (37)

107 परमेश्वर के अजूबों के लिए उसका शुक्रिया अदा करो
वह उन्हें सही रास्ते से ले गया (7)
भूखे-प्यासों को संतुष्ट किया (9)
उन्हें अंधकार से बाहर लाया (14)
अपने वचन के ज़रिए उनकी बीमारी दूर की (20)
वह गरीबों को ज़ुल्म से बचाता है (41)

108 दुश्मन पर जीत दिलाने के लिए प्रार्थना
इंसान पर आस लगाना बेकार (12)
"परमेश्वर से हमें ताकत मिलेगी" (13)

109 एक दुखी आदमी की प्रार्थना
'उसका पद कोई और ले ले' (8)
परमेश्वर गरीब के पास खड़ा होगा (31)

110 मेल्कीसेदेक जैसा राजा और याजक
'अपने दुश्मनों के बीच राज कर' (2)
खुद को पेश करनेवाले जवान ओस की बूँदों जैसे हैं (3)

111 यहोवा के महान कामों के लिए उसकी तारीफ करना
उसका नाम पवित्र, विस्मयकारी (9)
यहोवा का डर मानना बुद्धिमानी है (10)

112 नेक इंसान यहोवा का डर मानता है
दिल खोलकर उधार देनेवाला फलेगा-फूलेगा (5)
"नेक जन को हमेशा याद किया जाएगा" (6)
दरियादिल इंसान गरीबों को देता है (9)

113 ऊँचे पर रहनेवाला यहोवा दीन जन को ऊपर उठाता है
उसके नाम की तारीफ सदा होती रहे (2)
वह नीचे झुकता है (6)

114 मिस्र से इसराएल का छुटकारा
सागर भाग गया (5)
पहाड़ मेढ़ों की तरह उछले (6)
चकमक चट्टान सोते में बदली (8)

115 सिर्फ परमेश्वर की महिमा की जानी चाहिए
बेजान मूरतें (4-8)
धरती इंसानों को दी गयी (16)
'मरे हुए याह की तारीफ नहीं करते' (17)

116 कदरदानी का गीत
'यहोवा की भलाई का बदला मैं कैसे चुकाऊँगा?' (12)
"मैं उद्धार का प्याला पीऊँगा" (13)
'यहोवा से मानी मन्नतें पूरी करूँगा' (14, 18)
वफादार जनों की मौत अनमोल है (15)

117 यहोवा की तारीफ करने के लिए सब राष्ट्रों को बुलावा
परमेश्वर का अटल प्यार महान है (2)

118 यहोवा की जीत के लिए उसका शुक्रिया अदा करना
'मैंने उसे पुकारा, उसने जवाब दिया' (5)
"यहोवा मेरी तरफ है" (6, 7)
ठुकराया गया पत्थर कोने का मुख्य पत्थर बन गया (22)
"जो यहोवा के नाम से आता है" (26)

119 परमेश्वर के अनमोल वचन के लिए कदर
'जवान कैसे साफ-सुथरी ज़िंदगी बिता सकते हैं?' (9)
"तू जो हिदायतें याद दिलाता है उनसे मैं लगाव रखता हूँ" (24)
"तेरा वचन मेरी आशा है" (74, 81, 114)
"मैं तेरे कानून से कितना प्यार करता हूँ!" (97)
"जितने लोग मुझे सिखाते हैं, उन सबसे ज़्यादा अंदरूनी समझ" (99)
"तेरा वचन मेरे पाँव के लिए एक दीपक है" (105)
"तेरे वचन का निचोड़ ही सच्चाई है" (160)

परमेश्वर के कानून से प्यार करनेवालों के लिए शांति (165)

120 एक परदेसी शांति के लिए तरसता है
‘मुझे छली ज़बान से बचा ले’ (2)
“मैं शांति चाहता हूँ” (7)

121 यहोवा अपने लोगों की हिफाज़त करता है
“मुझे मदद यहोवा से मिलती है” (2)
यहोवा कभी नहीं सोता (3, 4)

122 यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना
यहोवा के भवन में जाने की खुशी (1)
साथ जोड़कर एक किया गया शहर (3)

123 कृपा के लिए यहोवा की ओर ताकना
‘दासों की तरह हमारी आँखें यहोवा पर टिकी रहती हैं’ (2)
‘जितना अपमान सहना था, सह लिया’ (3)

124 “अगर यहोवा हमारे साथ न होता”
टूटे फंदे से बच निकलना (7)
“यहोवा के नाम से मदद मिलती है” (8)

125 यहोवा अपने लोगों की हिफाज़त करता है
“जैसे पहाड़ यरूशलेम को घेरे हुए हैं” (2)
“इसराएल पर शांति बनी रहे” (5)

126 सिय्योन की बहाली से खुशहाली
‘यहोवा ने बड़े-बड़े काम किए हैं’ (3)
रोनेवाला खुशी से जयजयकार करेगा (5, 6)

127 परमेश्वर के बगैर सबकुछ बेकार
“अगर घर को यहोवा न बनाए” (1)
बच्चे परमेश्वर से मिला इनाम हैं (3)

128 यहोवा का डर मानना सुख देता है
पत्नी, अंगूर की फलती-फूलती बेल (3)
‘तुझे यरूशलेम को फलता-फूलता देखने का मौका मिले’ (5)

129 हमला हुआ पर हरा न सके
सिय्योन से नफरत करनेवाले शर्मिंदा किए जाएँगे (5)

130 “मैं दुख की गहरी खाई से तुझे पुकारता हूँ”
‘अगर तू गुनाहों पर नज़र रखता’ (3)
यहोवा सच्ची माफी देता है (4)
“मैं यहोवा का बेसब्री से इंतज़ार करता हूँ” (6)

131 दूध छुड़ाए बच्चे की तरह संतुष्ट
बड़ी चीज़ों की ख्वाहिश न रखना (1)

132 दाविद और सिय्योन चुने गए
“अभिषिक्त जन को न ठुकरा” (10)
सिय्योन के याजकों को उद्धार की पोशाक पहनायी गयी (16)

133 एक होकर रहना
हारून के सिर पर उँडेला गया तेल जैसा है (2)
हेरमोन की ओस जैसा है (3)

134 रात के वक्त परमेश्वर की तारीफ करना
“पवित्रता से हाथ उठाकर प्रार्थना करो” (2)

135 याह की महानता के लिए उसकी तारीफ करो
मिस्र के खिलाफ चिन्ह और चमत्कार (8, 9)
“तेरा नाम सदा कायम रहता है” (13)
बेजान मूरतें (15-18)

136 यहोवा का अटल प्यार सदा बना रहता है
आकाश और धरती की रचना बड़ी कुशलता से की गयी (5, 6)
फिरौन लाल सागर में मर गया (15)
निराश लोगों पर परमेश्वर का ध्यान (23)
हरेक जीव के लिए खाना (25)

137 बैबिलोन की नदियों के किनारे
सिय्योन का कोई गीत नहीं गाया (3, 4)
बैबिलोन उजाड़ दिया जाएगा (8)

138 परमेश्वर महान है, फिर भी उसे परवाह है
‘तूने मेरी प्रार्थना का जवाब दिया’ (3)
‘खतरों से मुझे बचाया’ (7)

139 परमेश्वर अपने सेवकों को जानता है
उसकी पवित्र शक्ति से कोई नहीं बच सकता (7)
“तूने मुझे लाजवाब तरीके से बनाया है” (14)

‘मुझे तब देखा जब मैं एक भ्रूण था’ (16)
“मुझे उस राह पर ले चल जो सदा कायम रहेगी” (24)

140 यहोवा, शक्तिशाली उद्धारकर्ता
दुष्ट आदमी साँपों जैसे हैं (3)
खूँखार आदमी मार डाले जाएँगे (11)

141 हिफाज़त के लिए प्रार्थना
‘मेरी प्रार्थना धूप जैसी हो’ (2)
नेक जन की फटकार तेल जैसी (5)
दुष्ट अपने ही जाल में फँसेंगे (10)

142 सतानेवालों से बचाने के लिए प्रार्थना
“ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ मैं भाग सकूँ” (4)
“तू ही मेरा सबकुछ है” (5)

143 सूखी ज़मीन की तरह परमेश्वर के लिए प्यासा
‘तेरे कामों पर गहराई से सोचता हूँ’ (5)
“मुझे तेरी मरज़ी पूरी करना सिखा” (10)
‘तेरी पवित्र शक्ति भली है, वह मेरी अगुवाई करे’ (10)

144 जीत के लिए प्रार्थना
“नश्वर इंसान क्या है?” (3)
‘दुश्मन तितर-बितर हो जाएँ’ (6)
यहोवा के लोग सुखी हैं (15)

145 महान राजा परमेश्वर की तारीफ करना
“मैं तेरी महानता का ऐलान करूँगा” (6)
“यहोवा सबके साथ भला करता है” (9)
“वफादार लोग तेरी तारीफ करेंगे” (10)
उसका राज सदा कायम रहेगा (13)
मुट्ठी खोलकर सबकी इच्छा पूरी करेगा (16)

146 परमेश्वर पर भरोसा रखो, इंसानों पर नहीं
मरने पर इंसान के विचार मिट जाते हैं (4)
परमेश्वर झुके हुओं को उठाता है (8)

147 परमेश्वर के प्यार-भरे और शक्तिशाली कामों की तारीफ करना
वह टूटे मनवालों को चंगा करता है (3)
तारों को नाम से पुकारता है (4)
बर्फ को ऊन की तरह भेजता है (16)

148 सारी सृष्टि यहोवा की तारीफ करे
“स्वर्गदूतो, उसकी तारीफ करो” (2)
‘सूरज, चाँद, तारो, उसकी तारीफ करो’ (3)
जवान और बुज़ुर्ग परमेश्वर की तारीफ करें (12, 13)

149 परमेश्वर की जीत की तारीफ में एक गीत
वह अपने लोगों से खुश होता है (4)
सम्मान उसके वफादार लोगों का है (9)

150 हर जीव याह की तारीफ करे
हल्लिलूयाह! (1, 6)

पहली किताब
(भजन 1-41)

1 सुखी है वह इंसान जो दुष्टों की
सलाह पर नहीं चलता,
पापियों की राह पर खड़ा नहीं
होता,[1]
न ही हँसी-ठट्ठा करनेवालों के साथ
बैठता है।[2]
2 मगर वह यहोवा के कानून से खुशी
पाता है,[3]
दिन-रात उसका कानून धीमी
आवाज़ में पढ़ता है।*[1]
3 वह ऐसे पेड़ की तरह होगा
जो बहते पानी के पास लगाया
गया है,
जो समय पर फल देता है,

अध्य. 1
1 नीत 4:14
2 नीत 22:10
3 भज 19:7
भज 40:8
भज 112:1
मत 5:3
रोम 7:22
याकू 1:25

दूसरा कॉल.
1 यह 1:8
भज 119:97
1ती 4:15

1:2 *या “उसके कानून पर मनन करता है।”

जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं।
वह आदमी अपने हर काम में
कामयाब होगा।[1]
4 मगर दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते,
वे भूसी की तरह होते हैं जिसे हवा
उड़ा ले जाती है।
5 इसलिए दुष्ट न्याय के समय टिक
नहीं पाएँगे,[2]
पापी, नेक लोगों की मंडली में खड़े
नहीं रह पाएँगे।[3]
6 क्योंकि यहोवा नेक लोगों की राह
पर ध्यान देता है,[4]
मगर दुष्टों के रास्ते मिट जाएँगे।[5]

2 राष्ट्र क्यों गुस्से से उफन रहे हैं?
देश-देश के लोग क्यों खोखली
बात पर फुसफुसा रहे हैं?*[6]
2 धरती के राजा, यहोवा और उसके
अभिषिक्त जन*[7] के खिलाफ
खड़े होते हैं,
बड़े-बड़े अधिकारी मिलकर उनका
विरोध# करते हैं।[8]
3 वे कहते हैं, "आओ, हम उनकी
लगायी ज़ंजीरें तोड़ दें,
उनकी रस्सियाँ काट फेंकें!"
4 स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर उन
पर हँसेगा,
यहोवा उनका मज़ाक उड़ाएगा।
5 उस वक्त वह उन पर बरस पड़ेगा,
अपनी जलजलाहट से उन्हें घबरा
देगा।
6 वह उनसे कहेगा, "अपने पवित्र
पहाड़ सिय्योन[9] पर
मैंने अपने ठहराए राजा को
राजगद्दी पर बिठाया है।"[10]

2:1 *या "मनन कर रहे हैं?" 2:2 *या "उसके मसीह।" #या "आपस में सलाह।"

अध्य. 1

1 1इत 22:13 यिर्म 17:7, 8
2 मत 25:41
3 मला 3:18 मत 13:49, 50
4 भज 37:18 यिर्म 12:3 1पत 3:12
5 नीत 14:12

अध्य. 2

6 प्रेष 4:25-28
7 भज 89:20 यश 61:1
8 मत 27:1, 2 लूक 23:10, 11 प्रक 19:19
9 2शम 5:7 प्रक 14:1
10 भज 45:6 यहे 21:27 दान 7:13, 14 प्रक 19:16

दूसरा कॉल.

1 मत 3:16, 17 मर 1:9-11 रोम 1:4
2 प्रेष 13:33 इब्र 1:5 इब्र 5:5
3 भज 72:8 इब्र 1:2 प्रक 11:15
4 प्रक 12:5 प्रक 19:15
5 दान 2:44 प्रक 2:26, 27
6 फिल 2:9-11
7 यूह 3:36

अध्य. 3

8 2शम 15:14
9 2शम 15:12 2शम 16:15
10 2शम 12:11

7 मैं यहोवा के फरमान का ऐलान
करूँगा।
उसने मुझसे कहा है, "तू मेरा
बेटा है,[1]
आज मैं तेरा पिता बना हूँ।[2]
8 मुझसे माँग, मैं तुझे विरासत में
राष्ट्र दूँगा,
पूरी धरती को तेरी जागीर बना
दूँगा।[3]
9 तू लोहे के राजदंड से उन्हें तोड़
देगा,[4]
मिट्टी के बरतन की तरह चकनाचूर
कर देगा।"[5]
10 इसलिए राजाओ, अंदरूनी समझ से
काम लो,
धरती के न्यायियो, शिक्षा कबूल
करो।*
11 यहोवा का डर मानते हुए उसकी
सेवा करो,
उसका गहरा आदर करो और
आनंद मनाओ।
12 बेटे का सम्मान करो,*[6] वरना पर-
मेश्वर का# क्रोध भड़क उठेगा
और तुम ज़िंदगी की राह से मिट
जाओगे,[7]
क्योंकि उसका गुस्सा कभी-भी
भड़क सकता है।
सुखी हैं वे सब जो परमेश्वर की
पनाह लेते हैं।

दाविद का सुरीला गीत। यह गीत उस समय का है जब दाविद अपने बेटे अबशालोम से भाग रहा था।[8]

3 हे यहोवा, इतने सारे लोग मेरे
दुश्मन कैसे बन गए?[9]
मेरे खिलाफ उठनेवाले ये सब कहाँ
से आ गए?[10]

2:10 *या "खबरदार हो जाओ।" 2:12 *शा., "बेटे को चूमो।" #शा., "उसका।"

2 बहुत-से लोग मेरे बारे में कहते हैं,
"परमेश्वर उसे नहीं बचाएगा।"[1]
(*सेला*)*
3 मगर हे यहोवा, तू मेरे चारों तरफ
एक ढाल है,[2]
तू मेरी शान है,[3] तू ही मेरा सिर
ऊँचा उठाता है।[4]
4 मैं ज़ोर-ज़ोर से यहोवा को पुकारूँगा
और वह अपने पवित्र पहाड़ से मुझे
जवाब देगा।[5] (*सेला*)
5 मैं बेफिक्र लेटूँगा, चैन से सोऊँगा
और सही-सलामत उठूँगा,
क्योंकि यहोवा हरदम मेरा साथ
देता है।[6]
6 चाहे लाखों दुश्मन मुझे घेर लें,
फिर भी मैं नहीं डरूँगा।[7]
7 हे यहोवा, उठ! मेरे परमेश्वर, मुझे
बचा ले![8]
तू मेरे सभी दुश्मनों के जबड़े पर
मारेगा,
उन दुष्टों के दाँत तोड़ डालेगा।[9]
8 उद्धार करनेवाला यहोवा ही है।[10]
तेरी आशीष तेरे लोगों पर
रहती है। (*सेला*)

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायतः यह गीत तारोंवाले बाजे बजाकर गाया जाए।

4 हे मेरे नेक परमेश्वर,[11] जब मैं तुझे
पुकारूँ तो मुझे जवाब दे।
मुसीबतों से घिर जाऊँ तो मेरे लिए
कोई रास्ता निकाल।*
मुझ पर कृपा कर और मेरी
प्रार्थना सुन।
2 हे लोगो, तुम कब तक मेरा आदर
करने के बजाय अपमान करते
रहोगे,
बेकार की बातों से लगाव रखोगे,
झूठ के पीछे भागते रहोगे?
(*सेला*)
3 जान लो, यहोवा अपने वफादार
जन का खास खयाल रखेगा,*
जब मैं यहोवा को पुकारूँगा तो वह
मेरी सुनेगा।
4 अगर तुम गुस्से से भर जाओ, तो
भी पाप मत करो।[1]
बिस्तर पर लेटे मन-ही-मन सोचो
और शांत रहो। (*सेला*)
5 नेकी के बलिदान चढ़ाओ
और यहोवा पर भरोसा रखो।[2]
6 बहुत-से हैं जो कहते हैं, "कौन हमें
अच्छे दिन दिखाएगा?"
हे यहोवा, अपने मुख का प्रकाश
हम पर चमका।[3]
7 तूने मेरे दिल को उनसे ज़्यादा
खुशियाँ दी हैं,
जिनके पास भरपूर फसल और
नयी दाख-मदिरा है।
8 मैं बेफिक्र लेटूँगा, चैन से सोऊँगा,[4]
क्योंकि हे यहोवा, सिर्फ तू ही मुझे
महफूज़ रखता है।[5]

दाविद का सुरीला गीत।
नहिलोत* के लिए निर्देशक को हिदायत।

5 हे यहोवा, मेरी बातें सुन,[6]
मेरी आहों पर ध्यान दे।
2 मेरी मदद की पुकार सुन,
क्योंकि हे मेरे राजा, मेरे परमेश्वर,
मैं तुझी से प्रार्थना करता हूँ।
3 हे यहोवा, भोर को तू मेरी आवाज़
सुनेगा,[7]
भोर को मैं अपनी चिंता तुझे
बताऊँगा[8] और जवाब का
इंतज़ार करूँगा।

3:2; 5:उप *शब्दावली देखें। **4:1** *शा., "जगह चौड़ी कर।"

4:3 *या "का सम्मान करेगा; को खुद के लिए अलग रखेगा।"

अध्य. 3
1 2शम 16:7, 8
2 उत 15:1
3 यश 45:25
4 भज 27:6
5 2शम 15:25; भज 2:6
6 भज 4:8; नीत 3:24
7 2रा 6:15, 16; भज 27:3; रोम 8:31
8 1ती 4:10
9 2थि 1:6
10 भज 37:39; यश 43:11; प्रक 19:1

अध्य. 4
11 भज 11:7

दूसरा कॉल.
1 इफ 4:26
2 भज 37:3; भज 62:8; नीत 3:5; 1पत 4:19
3 गि 6:26; भज 80:7; नीत 16:15; 1पत 3:12
4 भज 3:5; नीत 3:24, 26
5 लैव 25:18

अध्य. 5
6 भज 65:2; 1पत 3:12
7 भज 55:16, 17
8 मर 1:35

4 क्योंकि तू ऐसा परमेश्वर नहीं जो
दुष्टता से खुश हो,[1]
जो बुरा है वह तेरे साथ नहीं रह
सकता।[2]
5 कोई भी मगरूर तेरे सामने खड़ा
नहीं रह सकता।
तू दुष्ट काम करनेवालों से नफरत
करता है,[3]
6 तू झूठ बोलनेवालों का नाश कर
देगा।[4]
यहोवा खूँखार और धोखेबाज़
लोगों* से घिन करता है।[5]
7 मगर मैं तेरे महान अटल प्यार[6]
की वजह से तेरे भवन में
आऊँगा,[7]
तेरे पवित्र मंदिर* की तरफ मुँह
करके श्रद्धा और भय से दंडवत
करूँगा।[8]
8 हे यहोवा, मेरे दुश्मनों की वजह
से तू मुझे अपनी नेक राह पर
ले चल,
उस राह पर आनेवाली हर बाधा
दूर कर।[9]
9 उनकी कोई भी बात भरोसे के
लायक नहीं,
उनका मन मैला है,
उनका गला एक खुली कब्र है,
उनकी जीभ चिकनी-चुपड़ी बातें
कहती है।[10]
10 मगर परमेश्वर उन्हें दोषी
ठहराएगा,
उनकी अपनी ही साज़िशें उन्हें
बरबाद कर देंगी।[11]
अपने अनगिनत अपराधों की वजह
से वे खदेड़ दिए जाएँ,
क्योंकि उन्होंने तुझसे बगावत
की है।
11 मगर तेरी पनाह में आनेवाले सभी
आनंद मनाएँगे,[1]
वे हमेशा खुशी से जयजयकार
करेंगे।
जो उन्हें चोट पहुँचाने आते हैं,
उनका रास्ता तू रोक देगा
और तेरे नाम से प्यार
करनेवाले तेरे कारण आनंद
मनाएँगे।
12 क्योंकि हे यहोवा, तू हर नेक जन
को आशीष देगा,
तेरी मंज़ूरी एक बड़ी ढाल की तरह
उनकी रक्षा करेगी।[2]

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायतः यह गीत शेमिनिथ* की धुन पर तारोंवाले बाजे बजाकर गाया जाए।

6 हे यहोवा, तू गुस्से में आकर मुझे न
फटकार,
न ही क्रोध से भरकर मुझे सुधार।[3]
2 हे यहोवा, मुझ पर कृपा* कर,
मैं कमज़ोर हो गया हूँ।
हे यहोवा, मुझे चंगा कर,[4] मेरी
हड्डियाँ काँप रही हैं।
3 हाँ, मैं बहुत परेशान हूँ।[5]
हे यहोवा, मैं तुझसे पूछता हूँ,
मैं कब तक यूँ ही तड़पता रहूँ?[6]
4 हे यहोवा, लौट आ और मुझे
छुड़ा ले,[7]
अपने अटल प्यार की खातिर मुझे
बचा ले।[8]
5 क्योंकि मौत के बाद कोई तेरी चर्चा
नहीं कर सकता।*
कब्र में कौन तेरी तारीफ करेगा?[9]

5:6 *या "खून बहानेवाले और धोखा देनेवाले आदमी।" 5:7 *या "पवित्र-स्थान।"

6:उप *शब्दावली देखें। 6:2 *या "दया।" 6:5 *या "तुझे याद नहीं कर सकता।"

अध्य. 5
1 भज 89:14; नीत 6:16-19; हब 1:13
2 भज 15:1-5; नीत 12:19
3 रोम 12:9; इब्र 1:9
4 नीत 20:19; यूह 8:44; कुल 3:9; प्रक 21:8
5 उत 9:6; भज 55:23; नीत 6:16, 17; 1पत 3:10
6 भज 69:13
7 1शम 3:3; 1इत 16:1
8 भज 28:2; भज 138:2
9 भज 25:4, 5; भज 27:11
10 नीत 29:5; रोम 3:13
11 2शम 15:31; 2शम 17:23; भज 7:14, 15

दूसरा कॉल.
1 भज 40:16
2 उत 15:1; भज 3:3

अध्य. 6
3 भज 38:1; यिर्म 10:24
4 भज 41:4; भज 103:2, 3
5 मत 26:38, 39
6 भज 13:1, 2
7 भज 50:15
8 भज 119:88; विल 3:22
9 भज 30:9; भज 115:17; सभ 9:5, 10

6 आहें भरते-भरते मैं पस्त हो
चुका हूँ।[1]
मैं पूरी रात अपना बिस्तर आँसुओं
से भिगोता हूँ,
आँसुओं के सैलाब में मेरा दीवान
डूब जाता है।[2]
7 मन की पीड़ा से मेरी आँखें कमज़ोर
हो गयी हैं,[3]
मुझे सतानेवालों की वजह से धुँधली
पड़ गयी हैं।*
8 अरे दुष्टो, तुम सब मुझसे दूर हो
जाओ,
क्योंकि यहोवा मेरा बिलखना ज़रूर
सुनेगा।[4]
9 यहोवा मेरी कृपा की बिनती
सुनेगा,[5]
यहोवा मेरी प्रार्थना स्वीकार करेगा।
10 मेरे सभी दुश्मन शर्मिंदा किए जाएँगे
और खौफ खाएँगे,
अचानक ही उनकी बेइज़्ज़ती होगी
और वे भाग जाएँगे।[6]

दाविद का शोकगीत। इसमें वह यहोवा से
उन बातों का ज़िक्र करता है जो
बिन्यामीन गोत्र के कूश ने कही थीं।

7 हे यहोवा मेरे परमेश्वर, मैंने तेरी
पनाह ली है।[7]
सतानेवालों से मुझे बचा ले,
मुझे छुड़ा ले।[8]
2 वरना वे शेर की तरह मेरी बोटी-
बोटी कर देंगे,[9]
मुझे उठा ले जाएँगे और मुझे
बचानेवाला कोई न होगा।
3 हे यहोवा मेरे परमेश्वर, अगर
गलती मेरी है,
मैंने कोई अन्याय किया है,
4 किसी की अच्छाई का बदला बुराई
से दिया है[10]
या दुश्मन को बेवजह लूटा है,*
5 तो तू दुश्मन को न रोक,
वह मेरा पीछा करके मुझे पकड़ ले,
मुझे ज़मीन पर रौंदकर मार डाले,
मेरी शान मिट्टी में मिला दे। (*सेला*)
6 हे यहोवा, उठ! अपना क्रोध दिखा,
मेरे झुँझलाए हुए दुश्मनों के
खिलाफ खड़ा हो,[1]
मेरी खातिर जाग और न्याय की
माँग कर।[2]
7 राष्ट्र तुझे घेर लें
और तू ऊँचे पर से उनके खिलाफ
कार्रवाई करेगा।
8 यहोवा देश-देश के लोगों को
फैसला सुनाएगा।[3]
हे यहोवा, मेरे नेक और निर्दोष
चालचलन के मुताबिक
मेरा न्याय कर।[4]
9 दुष्टों की करतूतों का अंत कर दे,
मगर नेक लोगों को महफूज़ रख,[5]
क्योंकि तू नेक परमेश्वर है,[6] जो
दिलों को और गहरी भावनाओं
को जाँचता है।*[7]
10 परमेश्वर मेरी ढाल है,[8] सीधे-सच्चे
मनवालों का उद्धारकर्ता है।[9]
11 परमेश्वर सच्चा न्यायी है,[10]
वह हर दिन दुष्टों को फैसला*
सुनाता है।
12 अगर कोई पश्चाताप न करे,[11]
तो परमेश्वर अपनी तलवार तेज़
करता है,[12]
अपनी कमान चढ़ाता है,[13]

अध्य. 6
1 भज 69:3
2 भज 39:12
3 भज 31:9
4 भज 3:4, भज 145:18, 19, इब्र 5:7
5 भज 31:22, भज 40:1, यो 2:2
6 भज 40:14, यिर्म 20:11

अध्य. 7
7 भज 18:2, नीत 18:10
8 यिर्म 15:15, 2कुर 4:9, 2पत 2:9
9 भज 10:9
10 नीत 17:13

दूसरा कॉल.
1 भज 3:7, भज 35:1
2 भज 103:6
3 उत 18:25, भज 9:7, 8
4 भज 18:20, भज 26:11, भज 41:12
5 भज 37:25
6 व्य 32:4, प्रक 15:3
7 1शम 16:7, 1इत 28:9, यिर्म 17:10, प्रक 2:23
8 उत 15:1, नीत 30:5
9 नीत 2:21
10 उत 18:25, भज 9:4, भज 98:9
11 यश 55:7
12 व्य 32:41
13 व्य 32:21, 23

6:7 *या "ये बूढ़ी हो गयी हैं।"

7:4 *या शायद, "जबकि मैंने उसे छोड़ दिया है जो बेवजह मेरा विरोध करता है।" 7:9 *या "दिलों और गुरदों को परखता है।" 7:11 *या "ज़बरदस्त तरीके से सज़ा।"

13 अपने घातक हथियार तैयार
करता है,
अपने जलते तीरों से निशाना
साधता है।[1]
14 उसे देख जिसकी कोख में दुष्टता
पलती है,
उसे फसाद का गर्भ ठहरता है, वह
झूठ को जन्म देता है।[2]
15 वह गड्ढा खोदकर उसे और गहरा
करता है,
मगर उस गड्ढे में वह खुद गिर
जाता है।[3]
16 उसने जो मुसीबत खड़ी की है वह
उसी के सिर पड़ेगी,[4]
उसने जो हिंसा की है वह खुद
उसका शिकार हो जाएगा।
17 मैं यहोवा के न्याय के लिए उसकी
तारीफ करूँगा,[5]
परम-प्रधान यहोवा[6] के नाम की
तारीफ में गीत गाऊँगा।*[7]

दाविद का सुरीला गीत। गित्तीत*
के सिलसिले में निर्देशक के लिए हिदायत।

8 हे यहोवा हमारे प्रभु, पूरी धरती पर
तेरा नाम क्या ही गौरवशाली है!
तूने अपना वैभव आसमान से भी
ऊँचे तक फैलाया है!*[8]
2 तूने अपने बैरियों की वजह से
नन्हे-मुन्नों और दूध-पीते बच्चों के
मुँह से[9] अपनी ताकत दिखायी है
ताकि दुश्मन और बदला लेनेवाले
को खामोश कर सके।
3 जब मैं आसमान को निहारता हूँ जो
तेरी हस्तकला है,
जब मैं चाँद-सितारों को देखता हूँ
जो तेरी रचना हैं,[10]
4 तो मैं सोच में पड़ जाता हूँ,
'नश्वर इंसान है ही क्या कि तू
उसका खयाल रखे?
इंसान है ही क्या कि तू उसकी
परवाह करे?'[1]
5 तूने उसे स्वर्गदूतों से कुछ कमतर
बनाया,*
उसे महिमा और वैभव का ताज
पहनाया।
6 उसे अपने हाथ की रचनाओं पर
अधिकार दिया,[2]
सबकुछ उसके पैरों तले कर दियाः
7 भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, जंगली
जानवर,[3]
8 आसमान के पंछी, समुंदर की
मछलियाँ,
पानी में तैरनेवाले सारे जीव।
9 हे यहोवा हमारे प्रभु, पूरी धरती पर
तेरा नाम क्या ही गौरवशाली है!

दाविद का सुरीला गीत। मूत-लब्बेन*
के सिलसिले में निर्देशक के लिए हिदायत।

א [*आलेफ*]

9 हे यहोवा, मैं पूरे दिल से तेरी
तारीफ करूँगा,
तेरे सभी आश्चर्य के कामों का
बखान करूँगा।[4]
2 मैं तेरे कारण मगन होऊँगा,
खुशियाँ मनाऊँगा,
हे परम-प्रधान परमेश्वर, मैं तेरे
नाम की तारीफ में गीत
गाऊँगा।*[5]

ב [*बेथ*]

3 जब मेरे दुश्मन भागेंगे,[6]
तो वे तेरे सामने लड़खड़ाकर गिर
पड़ेंगे और मिट जाएँगे।

अध्य. 7
1 व्य 32:42
2 याकू 1:15
3 एस 7:10; भज 10:2; भज 35:7, 8; भज 57:6; नीत 26:27
4 एस 9:24, 25
5 भज 35:28
6 दान 4:17
7 यश 25:1; इब्र 13:15; प्रक 15:4

अध्य. 8
8 1रा 8:27; भज 104:1; भज 148:13
9 मत 21:16; लूक 10:21; 1कुर 1:27
10 भज 19:1; भज 104:19; यश 40:26; रोम 1:20

दूसरा कॉल.
1 उत 1:29; उत 9:3; भज 144:3; मत 6:25, 30; यूह 3:16; प्रेष 14:17; इब्र 2:6-8
2 उत 1:26; उत 9:1, 2
3 उत 1:28; उत 9:3

अध्य. 9
4 1इत 16:12; 1इत 29:11; प्रक 4:11
5 भज 28:7
6 भज 56:9

7:17; 9:2 *या "संगीत बजाऊँगा।" **8:उप; 9:उप** *शब्दावली देखें। **8:1** *या शायद, "तेरे वैभव के चर्चे आसमान के ऊपर होते हैं!"

8:5 *या "उसे उनसे कमतर बनाया जो ईश्वर जैसे हैं।"

4 क्योंकि तू मेरी पैरवी करके मुझे
न्याय दिलाता है,
अपनी राजगद्दी पर बैठकर नेकी से
न्याय करता है।[1]

ג [गिमेल]

5 तूने राष्ट्रों को डाँट लगायी[2] और
दुष्टों का नाश किया,
उनका नाम हमेशा के लिए मिटा
दिया।
6 दुश्मन हमेशा के लिए तबाह
हो गए,
तूने उनके शहर उखाड़ फेंके हैं,
उन्हें कभी याद तक नहीं किया
जाएगा।[3]

ה [हे]

7 मगर यहोवा सदा विराजमान
रहेगा,[4]
उसने न्याय के लिए अपनी राजगद्दी
मज़बूती से कायम की है।[5]
8 वह सारे जगत* का न्याय नेकी से
करेगा,[6]
राष्ट्रों के मुकदमों का सही फैसला
सुनाएगा।[7]

ו [वाव]

9 यहोवा, सताए जानेवालों के लिए
ऊँचा गढ़ बन जाएगा,[8]
मुसीबत की घड़ी में ऊँचा गढ़ बन
जाएगा।[9]
10 तेरा नाम जाननेवाले तुझ पर
भरोसा रखेंगे,[10]
हे यहोवा, जो तेरी खोज करते हैं,
उन्हें तू कभी नहीं छोड़ेगा।[11]

ז [जैन]

11 यहोवा, जो सिय्योन में निवास
करता है, उसकी तारीफ में गीत
गाओ,
उसके कामों के बारे में देश-देश के
लोगों को बताओ।[1]
12 क्योंकि खून का बदला लेनेवाला
परमेश्वर उन्हें याद रखता है,[2]
वह पीड़ितों की पुकार नहीं
भूलेगा।[3]

ח [हेथ]

13 हे यहोवा, मुझ पर कृपा कर,
तू जो मुझे मौत के फाटकों से
उठाता है,[4]
मेरे दुख पर ध्यान दे जो दुश्मन मुझे
दे रहे हैं
14 ताकि मैं सिय्योन की बेटी के
फाटकों के पास
तेरे उन कामों का ऐलान करूँ जो
तारीफ के काबिल हैं,[5]
तू जो उद्धार दिलाता है उससे मगन
होऊँ।[6]

ט [टेथ]

15 राष्ट्रों ने जो गड्ढा खोदा था उसमें
वे खुद गिर पड़े,
उन्होंने जो जाल बिछाया था उसमें
उन्हीं के पैर फँस गए।[7]
16 यहोवा जो सज़ा देता है, वह
दिखाता है कि वह कैसा पर-
मेश्वर है।[8]
दुष्ट की कारस्तानी उसी के लिए
फंदा बन गयी है।[9]
हिग्गायोन।* (*सेला*)

י [योध]

17 दुष्ट कब्र में लौट जाएँगे,
परमेश्वर को भूलनेवाले सब राष्ट्र
वहीं जाएँगे।
18 मगर गरीब हमेशा भुलाए नहीं
जाएँगे,[10]
न ही दीनों की आशा पर पानी
फिरेगा।[11]

9:8 *या "उपजाऊ ज़मीन।"

9:16 *शब्दावली देखें।

अध्य. 9

1 भज 89:14, 1पत 2:23
2 व्य 9:4
3 व्य 25:19
4 भज 90:2, 1ती 1:17
5 रोम 14:10, प्रक 20:11
6 उत 18:25, भज 85:11, यश 26:9
7 भज 96:13, भज 98:9, प्रेष 17:31
8 भज 91:2
9 भज 46:1, भज 54:7
10 भज 91:14, नीत 18:10, यिर्म 16:21
11 2इत 20:12, भज 25:15, 2कुर 1:10

दूसरा कॉल.

1 भज 96:10, भज 107:19, 22, यश 12:3, 4
2 उत 4:9, 10, उत 9:5, व्य 32:43, 2रा 9:24, 26, 2रा 24:3, 4, लूक 11:49-51
3 निर्ग 3:7, भज 72:13, 14, लूक 18:7
4 भज 30:3, यश 38:9, 10, प्रक 1:17, 18
5 यिर्म 17:19, 20
6 भज 13:5, भज 20:5
7 व्य 32:35, नीत 5:22
8 निर्ग 14:4, यह 2:10, 2रा 19:19
9 नीत 26:27, यश 3:11
10 भज 12:5, भज 72:4
11 भज 10:17, मत 5:5

כ [*काफ*]

19 हे यहोवा, उठ! नश्वर इंसान का
ज़ोर चलने न दे।
तेरी मौजूदगी में राष्ट्रों को सज़ा
मिले।[1]
20 हे यहोवा, राष्ट्रों में खौफ समा दे,[2]
वे सिर्फ नश्वर इंसान हैं, यह उन्हें
जता दे। (*सेला*)

ל [*लामेध*]

10 हे यहोवा, तू क्यों दूर खड़ा
रहता है?
मुसीबत की घड़ी में क्यों छिप
जाता है?[3]
2 दुष्ट मगरूर होकर बेसहारे का
पीछा करता है,[4]
मगर वह अपनी ही साज़िशों में फँस
जाएगा।[5]
3 क्योंकि दुष्ट अपनी बुरी इच्छाओं
पर डींग मारता है,[6]
लालची को आशीर्वाद देता है।*

נ [*नून*]

वह यहोवा का अनादर करता है।
4 दुष्ट अपनी हेकड़ी की वजह से
परमेश्वर की खोज नहीं करता,
वह मन में यही कहता है, "कोई
परमेश्वर नहीं।"[7]
5 दुष्ट अपनी राह पर
फलता-फूलता है,[8]
मगर तेरे फैसले उसकी समझ से
परे हैं,[9]
वह अपने सभी बैरियों को तुच्छ
जानता है।
6 वह मन में कहता है, "मैं कभी
हिलाया नहीं जा सकता,*
मैं पीढ़ी-दर-पीढ़ी कभी मुसीबत का
मुँह नहीं देखूँगा।"[1]

פ [*पे*]

7 उसका मुँह शाप, झूठ और धम-
कियों से भरा रहता है,[2]
उसकी ज़बान फसाद खड़ी करती
और चोट पहुँचाती है।[3]
8 वह बस्तियों के पास घात लगाए
बैठता है,
छिपकर बेगुनाह पर हमला करता
है और उसे मार डालता है।[4]

ע [*ऐयिन*]

उसकी आँखें लाचार को ढूँढ़ती हैं
ताकि उसका शिकार करे।[5]
9 वह माँद* में छिपे शेर की तरह
इंतज़ार करता है[6]
ताकि मौका मिलते ही किसी बे-
सहारे को धर-दबोचे।
वह बेसहारे को जाल में फँसाकर
धर-दबोचता है।[7]
10 शिकार कुचल दिया जाता है, नीचे
गिरा दिया जाता है,
कई बेचारे उसके शिकंजे* में फँस
जाते हैं।
11 दुष्ट मन में कहता है, "परमेश्वर
भूल गया है।[8]
उसने अपना मुँह फेर लिया है।
वह कभी ध्यान नहीं देता।"[9]

ק [*कोफ*]

12 हे यहोवा, उठ![10] हे परमेश्वर,
अपना हाथ उठा![11]
बेसहारों को न भूल।[12]
13 आखिर दुष्ट क्यों परमेश्वर का
अनादर करता है?
वह मन में कहता है, "परमेश्वर
मुझसे लेखा नहीं लेगा।"

अध्य. 9

1 उत 18:25; भज 82:8
2 निर्ग 15:16; निर्ग 23:27

अध्य. 10

3 भज 13:1; भज 22:1; यिर्म 14:8
4 निर्ग 14:17
5 भज 7:14, 16; भज 37:7; नीत 5:22; नीत 26:27
6 निर्ग 15:9; हो 12:8
7 भज 14:1, 2; भज 53:1; सप 1:12
8 भज 37:35
9 यश 26:11; हो 14:9

दूसरा कॉल.

1 नीत 14:16; सभ 8:11
2 रोम 3:14
3 भज 7:14; भज 12:2; भज 55:21
4 नीत 1:10, 11
5 भज 17:9, 11
6 अय 38:39, 40; भज 17:12; भज 59:3
7 भज 140:5; यिर्म 5:26
8 सभ 8:11
9 भज 73:3, 11; भज 94:3, 7; यहे 8:12; यहे 9:9
10 भज 3:7
11 मी 5:9
12 भज 9:12; भज 35:10

10:3 *या शायद, "लालची खुद को आशीर्वाद देता है।" **10:6** *या "मैं डगमगा (या लड़खड़ा) नहीं सकता।"

10:9 *या "घनी झाड़ियों।" **10:10** *या "मज़बूत पंजों।"

ר [रेश]

14 मगर तू बेशक तकलीफें और
मुसीबतें देखता है।
तू ध्यान देता है और मामले अपने
हाथ में लेता है।[1]
लाचार लोग तेरी ओर ताकते हैं,[2]
अनाथों* का तू ही मददगार है।[3]

ש [शीन]

15 दुष्ट और बुरे आदमी का हाथ
तोड़ दे,[4]
उसकी दुष्टता का नामो-निशान
मिटा दे।
16 यहोवा युग-युग का राजा है।[5]
राष्ट्र धरती से मिट गए हैं।[6]

ת [ताव]

17 मगर हे यहोवा, तू दीनों की बिनती
सुनेगा।[7]
उनके दिलों को मज़बूत करेगा,[8]
उन पर पूरा ध्यान देगा।[9]
18 तू अनाथों और कुचले हुओं को
न्याय दिलाएगा[10]
ताकि धरती का नश्वर इंसान फिर
कभी उन्हें न डराए।[11]

दाविद की रचना। निर्देशक के लिए हिदायत।

11 मैंने यहोवा की पनाह ली है।[12]
फिर तुम मुझसे क्यों कहते हो,
"एक पंछी की तरह तुम सब अपने
पहाड़ पर भाग जाओ!
2 देखो, दुष्टों ने कैसे अपनी कमान
चढ़ा ली है,
तीर से निशाना साध लिया है
ताकि अँधेरे में छिपकर सीधे-सच्चे
मनवालों पर तीर चलाएँ।
3 जब नींव* ही ढा दी जाए,
तो नेक जन क्या कर सकता है?"

4 यहोवा अपने पवित्र मंदिर में है।[1]
यहोवा की राजगद्दी स्वर्ग में है।[2]
उसकी आँखें इंसानों को देखती हैं,
उसकी पैनी नज़र* उन्हें
जाँचती है।[3]
5 यहोवा नेक और दुष्ट, दोनों को
जाँचता है,[4]
हिंसा से प्यार करनेवाले से नफरत
करता है।[5]
6 वह दुष्टों पर फंदे* बरसाएगा,
उनके प्याले में आग, गंधक[6] और
झुलसानेवाली हवा होगी।
7 क्योंकि यहोवा नेक है,[7] वह नेक
कामों से प्यार करता है।[8]
सीधे-सच्चे लोग उसका मुख
देखेंगे।*[9]

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायतः
यह गीत शेमिनिथ* की धुन पर गाया जाए।

12 हे यहोवा, मुझे बचा ले क्योंकि
एक भी वफादार जन न रहा,
विश्वासयोग्य लोग दुनिया से मिट
गए हैं।
2 सब एक-दूसरे से झूठ बोलते हैं,
होंठों से चिकनी-चुपड़ी बातें करते
हैं, दोरंगे मन से बोलते हैं।[10]
3 यहोवा चिकनी-चुपड़ी बातें करने-
वाले होंठ काट डालेगा,
बड़ी-बड़ी डींगें मारनेवाली ज़बान
खींच लेगा।[11]
4 वे कहते हैं, "हम अपनी ज़बान से
जीत जाएँगे।
अपने होंठों से जो चाहे बोलेंगे,
किसकी जुर्रत कि हम पर हुक्म
चलाए?"[12]

10:14 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।" **11:3** *या "न्याय की नींव।"

11:4 *या "तेज़ चमकती आँखें।" **11:6** *या शायद, "जलते अंगारे।" **11:7** *या "उसकी कृपा पाएँगे।" **12:उप** *शब्दावली देखें।

अध्य. 10
1 2रा 9:26; 2इत 6:23
2 1पत 4:19
3 व्य 10:17, 18; भज 146:9; इब्र 13:6
4 अय 38:15
5 निर्ग 15:18; भज 145:13; यिर्म 10:10; दान 4:34; 1ती 1:17
6 भज 9:5; भज 44:2
7 भज 9:18
8 1इत 29:18, 19
9 नीत 15:8; 1पत 3:12
10 भज 72:4
11 यश 51:12

अध्य. 11
12 2इत 14:11; भज 7:1; भज 56:11

दूसरा कॉल.
1 मी 1:2; हब 2:20
2 2इत 20:6; भज 103:19; प्रक 4:2, 3
3 2इत 16:9; नीत 15:3; जक 4:10; इब्र 4:13
4 उत 6:5; उत 7:1
5 नीत 3:31; नीत 6:16, 17
6 उत 19:24; यहे 38:22
7 व्य 32:4
8 भज 146:8
9 अय 36:7; भज 34:15; 1पत 3:12

अध्य. 12
10 भज 28:3
11 निर्ग 15:9, 10; 1शम 2:3; यहे 28:2
12 भज 10:5

5 यहोवा कहता है, "पीड़ितों को
सताया जा रहा है,
गरीब आहें भर रहे हैं,[1]
इसलिए अब मैं कदम उठाऊँगा।
जो उन्हें तुच्छ समझते हैं, उनसे उन्हें
बचाऊँगा।"
6 यहोवा की कही बातें शुद्ध हैं,[2]
उस चाँदी की तरह जो मिट्टी की
भट्ठी* में तायी गयी है,
सात बार शुद्ध की गयी है।
7 हे यहोवा, तू दीन-दुखियों की रक्षा
करेगा,[3]
उनमें से हरेक को इस पीढ़ी से सदा
बचाए रखेगा।
8 दुष्ट सीना तानकर चलते हैं, उन्हें
रोकनेवाला कोई नहीं,
क्योंकि हर कहीं नीच कामों का
बोलबाला है।[4]

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

13 हे यहोवा, तू कब तक मुझे भूला
रहेगा? क्या सदा के लिए?
कब तक मुझसे मुँह फेरे रहेगा?[5]
2 कब तक मैं चिंताओं से घिरा
रहूँगा?
कब तक मेरा दिल हर दिन रोता
रहेगा?
कब तक मेरा दुश्मन मुझे दबाता
रहेगा?[6]
3 हे यहोवा, मेरे परमेश्वर,
ज़रा मेरी तरफ देख और मुझे
जवाब दे।
मेरी आँखों की चमक लौटा दे ताकि
मैं मौत की नींद न सो जाऊँ
4 और दुश्मन यह न कहे, "मैंने उसे
हरा दिया!"

12:6 *या शायद, "ज़मीन पर रखी गयी पिघलानेवाली भट्ठी।"

अध्य. 12
1 निर्ग 3:7
2 2शम 22:31 भज 19:8
3 1शम 2:9
4 सभ 8:11

अध्य. 13
5 अय 13:24 भज 6:3 भज 22:2
6 भज 22:7, 8

दूसरा कॉल.
1 भज 25:2 भज 35:19
2 भज 52:8 भज 147:11 1पत 5:6, 7
3 1शम 2:1
4 भज 116:7 भज 119:17

अध्य. 14
5 भज 10:4 यश 29:16
6 भज 53 रोम 3:10-12
7 2इत 16:9 भज 33:13-15 इब्र 11:6
8 सभ 7:29
9 निर्ग 15:16

ऐसा न हो कि मेरे गिरने पर
विरोधी जश्न मनाएँ।[1]
5 मुझे तो तेरे अटल प्यार पर पूरा
भरोसा है,[2]
तू जो उद्धार दिलाता है उससे मेरा
दिल मगन होगा।[3]
6 मैं यहोवा के लिए गीत गाऊँगा,
उसने मुझे ढेरों आशीषें दी हैं।*[4]

दाविद की रचना। निर्देशक के लिए हिदायत।

14 मूर्ख* मन में कहता है,
"कोई यहोवा नहीं।"[5]
ऐसे लोगों के काम भ्रष्ट और
घिनौने होते हैं,
कोई भी भला काम नहीं करता।[6]
2 मगर यहोवा स्वर्ग से इंसानों को
देखता है
कि क्या कोई अंदरूनी समझ रखने-
वाला है,
क्या कोई यहोवा की खोज करने-
वाला है।[7]
3 वे सब सही राह से हट गए हैं,[8]
सब-के-सब भ्रष्ट हो गए हैं।
कोई भी भला काम नहीं करता,
एक भी नहीं।
4 क्या गुनहगारों में से कोई भी समझ
नहीं रखता?
वे मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं
मानो रोटी हो।
वे यहोवा को नहीं पुकारते।
5 मगर उन सब पर खौफ छा
जाएगा,[9]
क्योंकि यहोवा नेक जनों की पीढ़ी
के साथ रहता है।
6 गुनहगारो, तुम दीन जन की योज-
नाएँ नाकाम करने की कोशिश
करते हो,

13:6 *या "उसने मेरे साथ भलाई की है।"
14:1 *या "नासमझ।"

मगर यहोवा उसकी पनाह है।[1]
7 इसराएल का उद्धार सिय्योन की
तरफ से हो![2]
जब यहोवा अपने लोगों को बँधु-
आई से लौटा ले आएगा,
तब याकूब खुशियाँ मनाए,
इसराएल जश्न मनाए।

दाविद का सुरीला गीत।

15 हे यहोवा, कौन तेरे तंबू में मेह-
मान बनकर रह सकता है?
कौन तेरे पवित्र पहाड़ पर निवास
कर सकता है?[3]
2 वही जो बेदाग ज़िंदगी जीता है,*[4]
हमेशा सही काम करता है[5]
और दिल में सच बोलता है।[6]
3 वह अपनी ज़बान से दूसरों को बद-
नाम नहीं करता,[7]
अपने पड़ोसी का कुछ बुरा नहीं
करता,[8]
न ही अपने दोस्तों का नाम खराब*
करता है।[9]
4 वह किसी तुच्छ इंसान से नाता नहीं
रखता,[10]
मगर यहोवा का डर माननेवालों का
सम्मान करता है।
वह अपना वादा निभाता है,*
फिर चाहे उसे नुकसान
सहना पड़े।[11]
5 वह ब्याज पर उधार नहीं देता,[12]
न किसी निर्दोष को दोषी ठहराने के
लिए रिश्वत लेता है।[13]
जो कोई ये सब करता है, उसे कभी
हिलाया नहीं जा सकता।*[14]

15:2 *या "निर्दोष चालचलन बनाए रखता है।" 15:3 *या "को शर्मिंदा।" 15:4 *शा., "अपनी शपथ पूरी करता है।" 15:5 *या "वह कभी नहीं डगमगाएगा (या लड़खड़ाएगा)।"

अध्य. 14
1 भज 9:9
भज 142:5
2 रोम 11:26, 27

अध्य. 15
3 भज 2:6
भज 24:3, 4
4 भज 1:1
5 यश 33:15, 16
प्रेष 10:34, 35
6 नीत 3:32
इफ 4:25
7 लैव 19:16
भज 101:5
नीत 20:19
8 नीत 14:21
रोम 12:17
9 निर्ग 23:1
10 एस 3:2
11 यह 9:18-20
न्या 11:34, 35
भज 50:14
मत 5:33
12 निर्ग 22:25
13 निर्ग 23:8
14 भज 16:7, 8
नीत 12:3
2पत 1:10

दूसरा कॉल.

अध्य. 16
1 भज 25:20
2 भज 119:63
3 व्य 8:19
भज 97:7
यो 2:8
4 निर्ग 23:13
यह 23:6, 7
5 भज 73:26
6 भज 23:5
7 भज 78:55
8 यश 48:17
9 भज 17:3
भज 26:2
10 भज 139:17, 18
11 भज 73:23
प्रेष 2:25-28

दाविद का मिकताम।*

16 हे परमेश्वर, मेरी रक्षा
कर क्योंकि मैंने तेरी पनाह
ली है।[1]
2 मैंने यहोवा से कहा, "हे यहोवा,
मेरा भला करनेवाला तू ही है।
3 धरती के पवित्र और गौरवशाली
लोग
मुझे बड़ी खुशी देते हैं।"[2]
4 जो दूसरे देवताओं के पीछे भागते
हैं, वे अपने दुख बढ़ाते जाते हैं।[3]
मैं कभी उनके साथ मिलकर खून
का अर्घ नहीं चढ़ाऊँगा,
न ही अपने होंठों से उन देवताओं
का नाम लूँगा।[4]
5 यहोवा मेरा भाग है, मुझे दिया गया
हिस्सा है,[5]
वही मेरा प्याला भरता है।[6]
तू मेरी विरासत की हिफाज़त
करता है।
6 मेरे हिस्से में कई मनभावनी जगह
आयी हैं।
मैं अपनी विरासत से वाकई
खुश हूँ।[7]
7 मैं यहोवा की तारीफ करूँगा जिसने
मुझे सलाह दी है।[8]
रात के वक्त भी मेरे मन की
गहराई में छिपे विचार* मुझे
सुधारते हैं।[9]
8 मैं हर पल यहोवा को अपनी नज़रों
के सामने रखता हूँ।[10]
वह मेरे दायीं तरफ रहता है,
इसलिए मैं कभी हिलाया नहीं जा
सकता।*[11]

16:उप *शब्दावली देखें। 16:7 *या "मेरी गहरी भावनाएँ।" शा., "मेरे गुरदे।" 16:8 *या "मैं डगमगा (या लड़खड़ा) नहीं सकता।"

9 मेरा दिल खुशियों से सराबोर है,
मेरे रोम-रोम* में खुशी की लहर
दौड़ रही है।
और मैं# महफ़ूज़ बसा रहता हूँ।
10 क्योंकि तू मुझे कब्र* में नहीं छोड़
देगा।[1]
तू अपने वफ़ादार जन को गड्ढे में
पड़े रहने नहीं देगा।#[2]
11 तू मुझे ज़िंदगी की राह
दिखाता है।[3]
तेरे सामने रहकर मुझे अपार सुख
मिलता है,[4]
तेरे दायीं तरफ रहना मुझे सदा
खुशी* देता है।

दाविद की प्रार्थना।

17 हे यहोवा, न्याय के लिए मेरी
दुहाई सुन,
मेरी मदद की पुकार पर ध्यान दे,
मैं बिना कपट के प्रार्थना कर रहा
हूँ, मेरी सुन ले।[5]
2 तू सही फैसला सुनाकर मुझे इंसाफ
दिलाए,[6]
तेरी आँखें देखें कि सही क्या है।
3 तूने मेरा दिल जाँचा, रात के वक्त
मुझे परखा,[7]
तूने मुझे शुद्ध किया है,[8]
तू पाएगा कि मैंने कोई साज़िश
नहीं की,
न ही अपने मुँह से कोई पाप किया।
4 जहाँ तक इंसान के कामों की
बात है,
मैं तेरे मुँह से निकले वचन मानकर
लुटेरों के रास्तों से दूर रहता हूँ।[9]

16:9 *शा., "मेरी महिमा।" #या "मेरा शरीर।" **16:10** *या "शीओल।" शब्दावली देखें। #शा., "गड्ढा नहीं देखने देगा।" या शायद, "सड़ने नहीं देगा।" **16:11** *या "सुख।"

अध्य. 16
1 भज 49:15
प्रेष 2:31
प्रेष 3:15
प्रक 1:17, 18
2 अय 14:13, 14
प्रेष 13:34-37
3 नीत 12:28
4 भज 21:6
मत 5:8

अध्य. 17
5 भज 145:18
6 भज 37:5, 6
7 भज 11:5
भज 16:7
1कुर 4:4
8 भज 26:2
मला 3:3
1पत 1:6, 7
9 भज 119:9

दूसरा कॉल.
1 भज 18:36
भज 94:18
भज 119:133
भज 121:3
2 भज 55:16
3 यश 37:17
4 भज 31:21
विल 3:22
5 व्य 32:9, 10
जक 2:8
6 रूत 2:12
भज 36:7
भज 57:1
7 1शम 24:11
भज 35:4
8 1शम 23:26
9 भज 7:6

5 मेरे कदमों को तेरी राहों पर बने
रहने दे
ताकि मेरे पाँव ठोकर न खाएँ।[1]
6 हे परमेश्वर, मैं तुझे पुकारता हूँ
क्योंकि तू मेरी सुनेगा।[2]
तू मेरी तरफ कान लगा।* मेरी
बिनती सुन।[3]
7 हे परमेश्वर, तू उनका
बचानेवाला है,
जो बागियों से भागकर तेरे दाएँ
हाथ के नीचे पनाह लेते हैं,
तू लाजवाब तरीके से अपने अटल
प्यार का सबूत दे।[4]
8 अपनी आँख की पुतली की तरह
मुझे सँभाले रख,[5]
अपने पंखों की छाँव तले मुझे
छिपा ले।[6]
9 दुष्टों से मेरी रक्षा कर जो मुझ पर
हमला करते हैं,
उन जानी दुश्मनों से जो मुझे घेर
लेते हैं।[7]
10 उन्होंने अपना दिल कठोर कर
लिया है,*
वे मगरूर होकर बड़ी-बड़ी बातें
करते हैं।
11 अब वे हमें घेर लेते हैं,[8]
इस ताक में रहते हैं कि कब मौका
मिले और हमें नीचे गिरा दें।*
12 वह एक शेर की तरह है जो शिकार
को फाड़ खाने के लिए बेताब है,
जवान शेर की तरह जो घात लगाए
बैठा है।
13 हे यहोवा, उठ! उसका मुकाबला
कर[9] और उसे चित कर दे,

17:6 *या "झुककर मेरी सुन।" **17:10** *या "वे अपनी ही चरबी से घिरे हैं।" **17:11** *या "हमें ज़मीन पर पटक दें।"

अपनी तलवार लेकर मुझे उस दुष्ट
से छुड़ा ले।
14 हे यहोवा, अपना हाथ बढ़ाकर मुझे
छुड़ा ले,
इस ज़माने* के लोगों से मुझे
छुड़ा ले, जो सिर्फ आज के लिए
जीते हैं,[1]
जिन्हें तू अपने भंडार से अच्छी
चीज़ें बहुतायत में देता है,[2]
जो अपने बहुत-से बेटों के लिए
विरासत छोड़ जाते हैं।
15 मगर मैं तो नेक बना रहूँगा ताकि
तेरा मुख देखूँ,
मेरी खुशी इसी में है कि उठकर तेरे
सामने खड़ा रह पाऊँ।*[3]

निर्देशक के लिए हिदायत। यहोवा के सेवक दाविद का गीत। यह गीत उसने यहोवा के लिए तब गाया जब यहोवा ने उसे सभी दुश्मनों और शाऊल के हाथ से छुड़ाया था:[4]

18 हे यहोवा, मेरी ताकत,[5]
मैं तुझसे गहरा लगाव
रखता हूँ।
2 यहोवा मेरे लिए बड़ी चट्टान और
मज़बूत गढ़ है, वही मेरा छुड़ाने-
वाला है।[6]
मेरा परमेश्वर मेरी चट्टान है[7]
जिसकी मैं पनाह लेता हूँ,
वह मेरी ढाल और मेरा उद्धार का
सींग* है, मेरा ऊँचा गढ़ है।[8]
3 मैं यहोवा को पुकारता हूँ जो तारीफ
के काबिल है
और मुझे दुश्मनों से बचाया
जाएगा।[9]
4 मौत के रस्सों ने मुझे कस लिया,[10]
निकम्मे आदमियों ने अचानक
आनेवाली बाढ़ की तरह मुझे डरा
दिया।[1]
5 कब्र के रस्सों ने मुझे घेर लिया,
मेरे सामने मौत के फंदे बिछाए
गए।[2]
6 मुसीबत में मैंने यहोवा को पुकारा,
मदद के लिए मैं अपने परमेश्वर को
पुकारता रहा।
अपने मंदिर से उसने मेरी सुनी,[3]
मेरी मदद की पुकार उसके कानों
तक पहुँची।[4]
7 तब धरती काँपने लगी, बुरी तरह
डोलने लगी,[5]
पहाड़ों की नींव हिल गयी,
उनमें भयानक हलचल हुई
क्योंकि उसका क्रोध भड़क
उठा था।[6]
8 उसके नथनों से धुआँ उठने लगा,
मुँह से भस्म करनेवाली आग
निकलने लगी,[7]
उसके पास से दहकते अंगारे बरसने
लगे।
9 नीचे उतरते वक्त उसने आसमान
झुका दिया,[8]
काली घटाएँ उसके पैरों तले आ
गयीं।[9]
10 वह एक करूब पर सवार होकर
उड़ता हुआ आया।[10]
वह एक स्वर्गदूत* के पंखों पर
सवार होकर तेज़ी से नीचे
आया।[11]
11 फिर उसने अंधकार को ओढ़
लिया,[12]
काली घनघोर घटाओं को अपना
मंडप बनाया।[13]

17:14 *या "दुनिया की व्यवस्था।" 17:15 *या "तेरा रूप देखूँ।" 18:2 *या "मेरा ताकतवर उद्धारकर्ता।" शब्दावली देखें।

18:10 *या "हवा।"

अध्य. 17
1 भज 73:12
2 मत 5:45
3 भज 65:4

अध्य. 18
4 2शम 22:1
5 भज 18:32, यश 12:2
6 भज 3:3, भज 37:39, 40, भज 40:17
7 व्य 32:4
8 उत 15:1, 2शम 22:2-4
9 भज 50:15
10 1शम 20:3, भज 116:3

दूसरा कॉल.
1 2शम 20:1, 2शम 22:5, 6, भज 22:16
2 सभ 9:12
3 भज 11:4
4 2शम 22:7, भज 10:17, भज 34:15, 1पत 3:12
5 न्या 5:4
6 2शम 22:8-16, भज 77:18
7 यश 30:27
8 भज 144:5, यश 64:1
9 2शम 22:10
10 भज 99:1
11 भज 104:3, इब्र 1:7
12 भज 97:2
13 अय 36:29

12 उसके सामने ऐसा तेज था कि
बादल फट गए,
उनसे ओले और धधकते अंगारे
बरसने लगे।
13 फिर स्वर्ग में यहोवा गरजने लगा,[1]
परम-प्रधान ने अपनी बुलंद आवाज़
सुनायी,[2]
तब ओले और धधकते अंगारे
बरसने लगे।
14 उसने तीर चलाकर उन्हें तितर-
बितर कर दिया,[3]
बिजली गिराकर उनमें खलबली
मचा दी।[4]
15 हे यहोवा, जब तूने डाँट लगायी
और तेरे नथनों से फुंकार
निकली,
तो नदियों के तल नज़र आने लगे,[5]
धरती की बुनियाद तक दिखने
लगी।[6]
16 उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे
थाम लिया,
गहरे पानी से खींचकर बाहर
निकाल लिया।[7]
17 उसने मुझे ताकतवर दुश्मन से
छुड़ाया,[8]
उन लोगों से जो मुझसे
नफरत करते थे, मुझसे ज़्यादा
ताकतवर थे।[9]
18 वे मेरी मुसीबत के दिन मुझ पर
टूट पड़े,[10]
लेकिन यहोवा मेरा सहारा था।
19 वह मुझे निकालकर एक महफूज़*
जगह ले आया,
उसने मुझे दुश्मनों से छुड़ाया क्योंकि
वह मुझसे खुश था।[11]

18:19 *या "खुली।"

अध्या. 18

1 1शम 2:10 1शम 7:10
2 2शम 22:14 भज 29:3
3 यश 30:30
4 अय 36:32 भज 144:6
5 भज 74:15 भज 106:9 भज 114:1, 3
6 निर्ग 15:8 2शम 22:16
7 2शम 22:17-20 भज 124:2-4
8 भज 3:7
9 भज 35:10
10 1शम 19:11 1शम 23:26
11 भज 149:4

दूसरा कॉल.

1 1शम 26:23 1रा 8:32
2 1शम 24:11 2शम 22:21-25 भज 24:3, 4
3 भज 84:11
4 2शम 22:24 नीत 14:16
5 यश 3:10 इब्र 11:6
6 2शम 22:25 नीत 5:21
7 भज 97:10
8 2शम 22:26-31 अय 34:11 यिर्म 32:19
9 मत 5:8
10 भज 125:5
11 अय 34:28
12 नीत 6:16, 17 यश 2:11 लूक 18:14

20 यहोवा मेरी नेकी के मुताबिक मुझे
फल देता है,[1]
मेरी बेगुनाही* के मुताबिक इनाम
देता है।[2]
21 क्योंकि मैं हमेशा यहोवा की राहों
पर चलता रहा,
मैंने अपने परमेश्वर से दूर जाने की
दुष्टता नहीं की।
22 उसके सभी न्याय-सिद्धांत मेरे
सामने हैं,
मैं कभी उसकी विधियों को नज़र-
अंदाज़ नहीं करूँगा।
23 मैं उसकी नज़रों में निर्दोष बना
रहूँगा,[3]
मैं हमेशा खुद को बुराई से दूर
रखूँगा।[4]
24 यहोवा मेरी नेकी के मुताबिक मुझे
फल दे,[5]
मेरी बेगुनाही के मुताबिक इनाम
दे जो उसने अपनी आँखों से
देखी है।[6]
25 जो वफादार रहता है उसके साथ तू
वफादारी निभाता है,[7]
जो सीधा है उसके साथ तू सीधाई से
पेश आता है,[8]
26 जो खुद को शुद्ध बनाए
रखता है उसे तू दिखाएगा
कि तू शुद्ध है,[9]
मगर जो टेढ़ी चाल चलता है
उसके साथ तू होशियारी से काम
लेता है।[10]
27 क्योंकि तू दीनों* को बचाता है,[11]
लेकिन मगरूरों को नीचे
गिराता है।#[12]

18:20 *शा., "मेरे हाथों की शुद्धता।"
18:27 *या "सताए हुओं।" #शा., "घमंड भरी आँखों को नीची करता है।"

28 हे यहोवा, तू ही मेरा दीपक
जलाता है,
मेरा परमेश्‍वर, जो मेरे अँधेरे को
उजाला करता है।[1]
29 तेरी मदद से मैं लुटेरे-दल का
मुकाबला कर सकता हूँ,[2]
परमेश्‍वर की ताकत से मैं दीवार
लाँघ सकता हूँ।[3]
30 सच्चे परमेश्‍वर का काम खरा* है,[4]
यहोवा का वचन पूरी तरह
शुद्ध है।[5]
वह उसकी पनाह लेनेवालों के लिए
एक ढाल है।[6]
31 यहोवा को छोड़ और कौन
परमेश्‍वर है?[7]
हमारे परमेश्‍वर के सिवा और कौन
चट्टान है?[8]
32 सच्चा परमेश्‍वर ही मुझे ताकत
देता है,[9]
वह मेरे लिए सीधी* राह
निकालेगा।[10]
33 वह मेरे पैरों को हिरन के पैरों जैसा
बनाता है,
मुझे ऊँची-ऊँची जगहों पर खड़ा
करता है।[11]
34 वह मेरे हाथों को युद्ध का कौशल
सिखाता है,
मेरे बाज़ू ताँबे की कमान मोड़
सकते हैं।
35 तू मुझे अपनी उद्धार की ढाल
देता है,[12]
तेरा दायाँ हाथ मुझे थाम लेता* है
और तेरी नम्रता मुझे ऊँचा
उठाती है।[13]

36 तू मेरे कदमों के लिए रास्ता चौड़ा
करता है,
मेरे पैर* नहीं फिसलेंगे।[1]
37 मैं अपने दुश्‍मनों का पीछा करूँगा
और उन्हें पकड़ लूँगा,
मैं उन्हें मिटाकर ही लौटूँगा।
38 मैं उन्हें ऐसे कुचल दूँगा कि वे उठ
नहीं पाएँगे,[2]
वे मेरे पैरों तले गिर जाएँगे।
39 तू मुझे ताकत देकर युद्ध के काबिल
बनाएगा,
मेरे दुश्‍मनों को मेरे कदमों के नीचे
कर देगा।[3]
40 तू मेरे दुश्‍मनों को मुझसे दूर भागने
पर मजबूर करेगा,*
मुझसे नफरत करनेवालों का मैं अंत
कर दूँगा।[4]
41 वे मदद के लिए पुकारते हैं, मगर
उन्हें बचानेवाला कोई नहीं,
वे यहोवा को भी पुकारते हैं, मगर
वह उन्हें जवाब नहीं देता।
42 मैं उन्हें कूटकर ऐसी धूल बना दूँगा
जिसे हवा उड़ा ले जाती है,
उन्हें गलियों के कीचड़ की तरह
बाहर फेंक दूँगा।
43 तू मुझे मेरे अपने लोगों के विरोध
से भी बचाएगा।[5]
मुझे राष्ट्रों का मुखिया बनाएगा।[6]
जिन लोगों को मैं जानता तक नहीं
वे मेरी सेवा करेंगे।[7]
44 परदेसी मेरे बारे में बस एक खबर
सुनकर मेरी आज्ञा मानेंगे,
डरते-काँपते मेरे सामने आएँगे।[8]
45 परदेसी हिम्मत हार जाएँगे,*

18:30, 32 *या "परिपूर्ण।" **18:35** *या "सँभालता।"

18:36 *या "टखने।" **18:40** *या "तू मुझे मेरे दुश्‍मनों की पीठ दे देगा।" **18:45** *या "मुरझा जाएँगे।"

अध्य. 18
1 भज 97:11 यश 42:16
2 2शम 5:19 इब्र 11:32-34
3 2शम 22:30 फिल 4:13
4 व्य 32:4 दान 4:37 प्रक 15:3
5 भज 12:6 भज 19:8
6 भज 18:2 भज 84:11
7 भज 86:8 यश 45:5
8 व्य 32:31 1शम 2:2 2शम 22:32-43
9 भज 84:5, 7
10 यश 26:7
11 हब 3:19
12 उत 15:1 व्य 33:29 भज 28:7
13 2शम 22:36 भज 113:6-8

दूसरा कॉल.
1 भज 17:5
2 भज 2:8, 9
3 भज 44:5
4 2शम 22:41 भज 34:21
5 1शम 30:6
6 2शम 8:3 भज 2:8
7 2शम 22:44-46
8 व्य 33:29

अपने किलों से थरथराते हुए बाहर
निकलेंगे।
46 यहोवा जीवित परमेश्वर है! मेरी
चट्टान की तारीफ हो![1]
मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर की
बड़ाई हो![2]
47 सच्चा परमेश्वर मेरी तरफ से
बदला लेता है,[3]
देश-देश के लोगों को मेरे अधीन
कर देता है।
48 वह मुझे भड़के हुए दुश्मनों से
छुड़ाता है।
तू मुझे मेरे हमलावरों से ऊँचा
उठाता है,[4]
मुझे ज़ुल्मी के हाथ से बचाता है।
49 इसीलिए हे यहोवा, मैं राष्ट्रों के
बीच तेरी महिमा करूँगा,[5]
तेरे नाम की तारीफ में गीत
गाऊँगा।*[6]
50 परमेश्वर शानदार तरीके से अपने
राजा का उद्धार करता है,*[7]
वह अपने अभिषिक्त जन से,[8]
दाविद और उसके वंश से सदा
प्यार# करता है।[9]

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

19 आसमान परमेश्वर की महिमा
बयान करता है,[10]
अंबर उसके हाथ की रचनाओं का
ऐलान करता है।[11]
2 दिन-भर उसकी तारीफ में उनके
बोल उमड़ते हैं,
रात को वे ज्ञान की बातें फैलाते हैं।
3 उनकी न कोई बोली है, न कोई
शब्द,
उनकी आवाज़ नहीं सुनायी देती।
4 फिर भी उनकी आवाज़* सारी
धरती पर गूँजती है,
उनका संदेश धरती# के कोने-कोने
तक पहुँचता है।[1]
परमेश्वर ने आकाश में सूरज के
लिए तंबू ताना है,
5 सूरज उस दूल्हे की तरह दमकता
है जो अपने कमरे से बाहर
आता है,
वह शूरवीर की तरह है जो दौड़
दौड़ने के लिए उमंग से भरा है।
6 वह आसमान के एक छोर से
उगता है
और चक्कर काटता हुआ दूसरे
छोर तक जाता है,[2]
कुछ भी ऐसा नहीं जिस तक उसकी
गरमी न पहुँचे।
7 यहोवा का कानून खरा* है,[3] जान
में जान डाल देता है।[4]
यहोवा जो हिदायत याद दिलाता है
वह भरोसेमंद है,[5]
जिन्हें कोई तजुरबा नहीं है उन्हें भी
बुद्धिमान बना देती है।[6]
8 यहोवा के आदेश नेक हैं, मन को
आनंद से भर देते हैं,[7]
यहोवा की आज्ञा शुद्ध है, आँखों में
चमक लाती है।[8]
9 यहोवा का डर[9] पवित्र है, सदा बना
रहता है।
यहोवा के फैसले सच्चे हैं, हर तरह
से सही हैं।[10]
10 वे सोने से भी ज़्यादा चाहने
लायक हैं,

अध्य. 18
1 व्य 32:4
2 निर्ग 15:2; 2शम 22:47-49
3 व्य 32:35; नहू 1:2; रोम 12:19
4 2शम 7:9; भज 59:1
5 व्य 32:43; भज 117:1; यश 11:10
6 2शम 22:50, 51; 1इत 16:9; रोम 15:9
7 भज 2:6; भज 144:10
8 2शम 7:15-17; 1रा 3:6
9 भज 89:20, 36; यश 9:7; लूक 1:32, 33; प्रक 5:5

अध्य. 19
10 भज 8:3, 4; यश 40:22; रोम 1:20
11 भज 150:1; प्रक 4:11

दूसरा कॉल.
1 रोम 10:18
2 भज 104:19
3 भज 119:72
4 भज 23:3
5 भज 119:111, 129
6 नीत 1:5; 2ती 3:15
7 2इत 24:9, 10
8 नीत 4:4; नीत 6:23; मत 6:22
9 व्य 10:12; नीत 1:7; मला 3:16
10 भज 119:137, 160; प्रक 16:7

18:49 *या "संगीत बजाऊँगा।" **18:50** *या "परमेश्वर अपने राजा के लिए बड़ी-बड़ी जीत दिलाता है।" #या "अटल प्यार।"

19:4 *या शायद, "नापने की डोरी।" #या "उपजाऊ ज़मीन।" **19:7** *या "परिपूर्ण।"

ढेर सारे शुद्ध* सोने से भी मन-
भावने।[1]
वे मधु से भी मधुर हैं,[2]
छत्ते से टपकते शहद से भी ज़्यादा
मीठे।
11 वे तेरे सेवक को आगाह करते हैं,[3]
उन्हें मानने से बड़ा इनाम
मिलता है।[4]
12 अपनी गलतियों का एहसास किसे
होता है?[5]
मुझसे अनजाने में जो पाप हुए
हैं उन्हें माफ करके मुझे निर्दोष
ठहरा।
13 अपने सेवक को गुस्ताखी करने से
रोक[6]
ताकि यह फितरत मुझ पर हावी न
हो जाए।[7]
तब मैं घोर पाप* करने से बचा
रहूँगा
और निर्दोष बना रहूँगा।[8]
14 हे यहोवा, मेरी चट्टान[9] और मेरे
छुड़ानेवाले,[10]
मेरे मुँह की बातें और मन के विचार
हमेशा तुझे भाएँ।[11]

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

20 मुसीबत के दिन यहोवा तेरी
प्रार्थना का जवाब दे।
याकूब के परमेश्वर का नाम तेरी
हिफाज़त करे।[12]
2 वह पवित्र जगह से तेरी
मदद करे,[13]
सिय्योन से तुझे सँभाले।[14]
3 वह तेरी सभी भेंट याद करे,
तेरी होम-बलि खुशी से स्वीकार
करे।* (*सेला*)
4 वह तेरे दिल की मुरादें पूरी करे,[1]
तेरी सारी योजनाएँ* सफल करे।
5 तू जो उद्धार दिलाता है उसकी
वजह से हम खुशी से जयजयकार
करेंगे,[2]
अपने परमेश्वर के नाम की महिमा
करेंगे।[3]
यहोवा तेरी सभी गुज़ारिशें
पूरी करे।
6 अब मैं जान गया हूँ कि
यहोवा अपने अभिषिक्त जन को
बचाता है।[4]
अपने पवित्र स्वर्ग से उसकी प्रार्थना
का जवाब देता है,
अपने शक्तिशाली दाएँ हाथ से
उसका उद्धार करता है।*[5]
7 कुछ लोग रथों पर भरोसा करते हैं
तो कुछ घोड़ों पर,[6]
मगर हम अपने परमेश्वर यहोवा
का नाम पुकारते हैं।[7]
8 वे हार गए हैं, गिर गए हैं,
मगर हम उठ गए हैं, हमें बहाल
किया गया है।[8]
9 हे यहोवा, राजा को बचा ले![9]
जब हम मदद के लिए पुकारेंगे तो
वह हमें जवाब देगा।[10]

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

21 हे यहोवा, तेरी ताकत पर राजा
खुशी मनाता है,[11]
तू जो उद्धार दिलाता है उससे वह
बाग-बाग हो जाता है![12]
2 तूने उसके दिल की मुराद
पूरी की,[13]
उसके होंठों की गुज़ारिश नहीं
ठुकरायी। (*सेला*)

19:10 *या "ताए हुए।" **19:13** *या "भारी अपराध।" **20:3** *शा., "होम-बलि को चरबी माने।"

20:4 *या "तेरा मकसद।" **20:6** *या "उसको जीत दिलाता है।"

अध्य. 19
1 भज 119:127 नीत 8:10
2 भज 119:103 नीत 16:24
3 भज 119:11
4 भज 119:165
5 1कुर 4:4
6 उत 20:6 व्य 17:12 1शम 15:23 2शम 6:7 2इत 26:16-18
7 भज 119:133
8 यश 38:3
9 भज 18:2
10 अय 19:25 यश 43:14
11 भज 49:3 भज 51:15 भज 143:5 फिल 4:8

अध्य. 20
12 भज 9:10 नीत 18:10
13 2इत 20:8, 9
14 2शम 5:7 भज 50:2 भज 134:3

दूसरा कॉल.
1 भज 21:1, 2
2 भज 59:16
3 1शम 17:45
4 भज 2:2, 4
5 भज 17:7
6 भज 33:17 यश 31:1
7 2इत 14:11 2इत 20:12 2इत 32:8
8 न्या 5:31 भज 125:1
9 भज 18:50
10 भज 44:4

अध्य. 21
11 भज 63:11
12 भज 28:7
13 भज 2:8 भज 20:4

3 तू बेशुमार आशीषों के साथ उससे
मिलता है,
उसके सिर पर शुद्ध* सोने का ताज
रखता है।[1]
4 उसने तुझसे ज़िंदगी माँगी और तूने
उसे दी,[2]
तूने उसे लंबी उम्र दी, हमेशा-हमेशा
की ज़िंदगी।
5 तू जो उद्धार दिलाता उससे वह बड़ा
सम्मान पाता है।[3]
तू उसे गरिमा और वैभव देता है।
6 तूने तय किया है कि वह सदा
आशीषें पाता रहे,[4]
तू उसे खुशी देता है क्योंकि तू
उसके साथ रहता है।[5]
7 क्योंकि राजा यहोवा पर भरोसा
करता है,[6]
परम-प्रधान के अटल प्यार के
कारण उसे कभी नहीं हिलाया जा
सकता।*[7]
8 तेरा हाथ तेरे सभी दुश्मनों को
पकड़ लेगा,
तेरा दायाँ हाथ तुझसे नफरत करने-
वालों को पकड़ लेगा।
9 तू जाँच के समय उन्हें दहकता तंदूर
बना देगा,
यहोवा क्रोध में आकर उन्हें निगल
जाएगा और आग उन्हें भस्म कर
देगी।[8]
10 तू उनके वंशजों* को धरती से नाश
कर देगा,
उनकी संतान को इंसानों के बीच से
मिटा देगा।
11 क्योंकि उन्होंने तेरा नुकसान करना
चाहा,[9]
तेरे खिलाफ साज़िशें रची हैं, मगर
वे कामयाब नहीं होंगे।[1]
12 तू उन* पर तीर-कमान से निशाना
साधेगा,
वे पीठ दिखाकर भाग जाएँगे।[2]
13 हे यहोवा, उठ! अपनी ताकत
दिखा।
हम तेरी महाशक्ति की तारीफ में
गीत गाएँगे।*

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायतः
"भोर की हिरनी"* के मुताबिक।

22 हे मेरे परमेश्वर, मेरे पर-
मेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़
दिया?[3]
तू क्यों मुझे बचाने नहीं आता?
क्यों मेरी दर्द-भरी पुकार नहीं
सुनता?[4]
2 मेरे परमेश्वर, मैं सारा दिन तुझे
पुकारता हूँ,
रात-भर कराहता हूँ, पर तू कोई
जवाब नहीं देता।[5]
3 मगर तू पवित्र है,[6]
इसराएल की तारीफों से घिरा
हुआ है।*
4 हमारे पुरखों ने तुझ पर भरोसा
रखा था,[7]
तुझी पर भरोसा रखा और तू उन्हें
छुड़ाता रहा।[8]
5 उन्होंने तुझे पुकारा और तूने उन्हें
बचाया,
उन्होंने तुझ पर भरोसा किया और
वे निराश नहीं हुए।*[9]

अध्य. 21
1 2शम 12:30
2 भज 13:3 भज 61:6
3 2शम 7:8, 9
4 भज 72:17
5 भज 16:11 भज 45:7
6 1शम 30:6
7 भज 16:8
8 व्य 32:22 भज 110:5 मला 4:1
9 भज 34:16

दूसरा कॉल.
1 भज 2:1
2 भज 9:3 भज 56:9

अध्य. 22
3 भज 22:16 मत 27:46 मर 15:34
4 इब्र 5:7
5 भज 42:3
6 यश 6:3 1पत 1:15
7 उत 15:1, 6
8 निर्ग 14:13 इब्र 11:32-34
9 भज 25:2 भज 99:6 रोम 10:11

21:3 *या "ताए हुए।" **21:7** *या "वह कभी नहीं डगमगाएगा (या लड़खड़ाएगा)।" **21:10** *शा., "फलों।"

21:12 *शा., "उनके मुँह।" **21:13** *शा., "के बारे में गाएँगे और संगीत बजाएँगे।" **22:उप** *शायद यह कोई धुन या संगीत-शैली थी। **22:3** *या "तारीफों की राज-गद्दी के बीच (या पर) विराजमान है।" **22:5** *या "उन्हें शर्मिंदा नहीं किया गया।"

6 मगर लोग मुझे नीचा देखते हैं,
तुच्छ समझते हैं,[1]
मैं उनकी नज़र में इंसान नहीं,
कीड़ा हूँ।
7 मुझे देखनेवाले सभी मेरा मज़ाक
बनाते हैं,[2]
मेरी खिल्ली उड़ाते हैं, सिर हिलाकर
मुझ पर हँसते[3] और कहते हैं:
8 "इसने खुद को यहोवा के हवाले
कर दिया, वही इसे छुड़ाए!
वही इसे बचाए, यह परमेश्वर को
इतना प्यारा जो है!"[4]
9 तूने ही मुझे माँ की कोख से बाहर
निकाला,[5]
मुझे माँ की बाहों में सुरक्षा का एह-
सास दिलाया।
10 मुझे पैदा होते ही देखभाल के लिए
तुझे सौंपा गया।
जब मैं माँ की कोख में था, तभी से
तू मेरा परमेश्वर है।
11 मुझ पर संकट आनेवाला है, तू
मुझसे दूर न रह,[6]
मेरा और कोई मददगार नहीं है।[7]
12 बहुत-से बैलों ने मुझे घेर लिया है,[8]
बाशान के मोटे-तगड़े बैलों ने मुझे
घेर लिया है।[9]
13 दुश्मन मुझ पर मुँह फाड़े हुए हैं,[10]
गरजते शेर की तरह, जो
अपने शिकार की बोटी-बोटी
कर देता है।[11]
14 मुझे पानी की तरह उँडेल दिया
गया है,
मेरी हड्डियों के जोड़ खुल गए हैं।
मेरा दिल मोम बन गया है,[12]
अंदर-ही-अंदर पिघल गया है।[13]
15 मेरी ताकत ठीकरे की तरह सूख
गयी है,[14]
मेरी जीभ तालू से चिपक गयी है,[1]
तू मुझे मारकर मिट्टी में मिला
देता है।[2]
16 दुश्मनों ने कुत्तों की तरह मुझे घेर
लिया है,[3]
दुष्टों की टोली मुझे धर-दबोचने
पर है,[4]
वे शेर की तरह मेरे हाथ-पैर पर
झपट पड़े हैं।[5]
17 मैं अपनी सारी हड्डियाँ गिन
सकता हूँ,[6]
वे मुझे ताकते रहते हैं, मुझे
घूरते हैं।
18 वे मेरी पोशाक आपस में बाँटते हैं,
मेरे कपड़े के लिए चिट्ठियाँ
डालते हैं।[7]
19 मगर हे यहोवा, तू मुझसे और दूर
न रह,[8]
तू मेरी ताकत है, मेरी मदद के लिए
जल्दी आ।[9]
20 मुझे तलवार से बचा ले,
कुत्तों के पंजों* से
मेरे अनमोल जीवन# की
रक्षा कर।[10]
21 मुझे शेर के मुँह से और जंगली
बैलों के सींगों से बचा ले,[11]
मुझे जवाब दे और बचा ले।
22 मैं अपने भाइयों में तेरे नाम का
ऐलान करूँगा,[12]
मंडली के बीच तेरी तारीफ
करूँगा।[13]
23 यहोवा का डर माननेवालो, उसकी
तारीफ करो!
याकूब के वंशजो, उसकी महिमा
करो![14]

अध्य. 22
1 भज 31:11 यश 53:3
2 भज 35:16
3 भज 109:25
4 मत 27:41-43 लूक 23:35, 36
5 भज 71:6 भज 139:16
6 भज 10:1
7 लूक 23:46 इब्र 5:7
8 भज 68:30
9 यहे 39:18
10 मत 26:4
11 भज 57:4 1पत 5:8
12 लूक 22:44 यूह 12:27
13 मत 26:38 मर 14:33
14 नीत 17:22

दूसरा कॉल.
1 यूह 19:28
2 यश 53:12 1कुर 15:3, 4
3 भज 59:5, 6 लूक 22:63
4 भज 86:14
5 मत 27:35 यूह 20:25
6 भज 34:20 यूह 19:36
7 मर 15:24 लूक 23:34 यूह 19:23, 24
8 भज 10:1
9 भज 40:13
10 भज 22:16
11 भज 35:17
12 यूह 17:6
13 भज 40:9 इब्र 2:11, 12
14 भज 50:23

22:20 *शा., "हाथ।" #शा., "मेरे अकेले।" यहाँ उसके जीवन की बात की गयी है।

इसराएल के वंशजो, उसकी श्रद्धा
करो।
24 क्योंकि उसने ज़ुल्म सहनेवाले का
दुख नज़रअंदाज़ नहीं किया,
उससे घिन नहीं की,[1]
परमेश्‍वर ने उससे अपना मुँह नहीं
फेरा।[2]
जब उसने मदद के लिए उसे पुकारा
तो उसने सुना।[3]
25 मैं बड़ी मंडली में तेरी तारीफ
करूँगा,[4]
तेरा डर माननेवालों के सामने
अपनी मन्‍नतें पूरी करूँगा।
26 दीन लोग खाकर संतुष्ट होंगे,[5]
यहोवा की खोज करनेवाले उसकी
तारीफ करेंगे।[6]
तू हमेशा की ज़िंदगी का आनंद
लेता रहे।*
27 धरती का कोना-कोना यहोवा
को याद करेगा, उसकी तरफ
मुड़ेगा।
राष्ट्रों के सभी परिवार तेरे सामने
झुककर दंडवत करेंगे।[7]
28 क्योंकि राज करने का अधिकार
यहोवा का है,[8]
वह सब राष्ट्रों पर राज करता है।
29 धरती के सभी रईस* खाएँगे-पीएँगे
और उसे दंडवत करेंगे,
वे सभी जो मिट्टी में मिल जाते हैं
उसके आगे घुटने टेकेंगे,
उनमें से कोई अपनी जान नहीं बचा
सकता।
30 उनके वंशज उसकी सेवा करेंगे,
आनेवाली पीढ़ी को यहोवा के बारे
में बताया जाएगा।

22:26 *शा., "तेरा दिल सदा जीए।"
22:29 *शा., "मोटे लोग।"

अध्य. 22
1 भज 34:6
भज 69:33
2 गि 6:25
3 इब्र 5:7
4 भज 35:18
भज 40:10
भज 111:1
5 भज 37:11
यश 65:13
6 सप 2:3
7 उत 22:18
प्रक 7:9
प्रक 15:4
8 1इत 29:11
प्रक 11:17

दूसरा कॉल.

अध्य. 23
1 भज 80:1
यिर्म 23:3
यहे 34:12
1पत 2:25
2 भज 34:9
भज 84:11
मत 6:33
फिल 4:19
इब्र 13:5
3 यहे 34:13, 14
4 भज 19:7
भज 51:12
5 भज 31:3
6 अय 38:17
7 भज 3:6
भज 27:1
यश 41:10
8 यश 43:2
रोम 8:31
9 भज 22:26
भज 31:19
10 लूक 7:46
याकू 5:14
11 भज 16:5
12 भज 103:17
13 भज 15:1-5
भज 27:4
भज 65:4
भज 122:1

अध्य. 24
14 1इत 29:11
अय 41:11
1कुर 10:26

31 वे आएँगे और उसकी नेकी के बारे
में बताएँगे।
आनेवाली नसल को उसके कामों के
बारे में बताएँगे।

दाविद का सुरीला गीत।

23 यहोवा मेरा चरवाहा है।[1]
मुझे कोई कमी नहीं होगी।[2]
2 वह मुझे हरे-भरे चरागाहों में
बिठाता है,
झील के किनारे आराम की जगह*
ले चलता है।[3]
3 वह मुझे तरो-ताज़ा करता है।[4]
अपने नाम की खातिर नेकी की
डगर पर ले चलता है।[5]
4 चाहे मैं काली अँधेरी घाटी से
गुज़रूँ,[6]
तो भी मुझे कोई डर नहीं,[7]
क्योंकि तू मेरे साथ रहता है,[8]
तेरी छड़ी और लाठी मुझे हिम्मत*
देती है।
5 तू मेरे दुश्‍मनों के सामने मेरे लिए
मेज़ सजाता है।[9]
मेरे सिर पर तेल डालकर मुझे
ताज़गी देता है,*[10]
मेरा प्याला लबालब भरा है।[11]
6 बेशक, भलाई और अटल प्यार
ज़िंदगी-भर मेरे साथ रहेंगे[12]
और मैं सारी उम्र यहोवा के भवन में
निवास करूँगा।[13]

दाविद का सुरीला गीत।

24 धरती और उसकी हर चीज़
यहोवा की है,[14]
उपजाऊ ज़मीन और इस पर रहने-
वाले उसके हैं।

23:2 *या शायद, "शांत जल के सोतों के पास।" **23:4** *या "दिलासा।" **23:5** *या "तेल मलता है।"

2 उसने धरती की पक्की बुनियाद
समुंदरों पर डाली,[1]
उसे नदियों पर मज़बूती से कायम
किया।
3 यहोवा के पहाड़ पर कौन चढ़
सकता है?[2]
कौन उसकी पवित्र जगह में खड़ा हो
सकता है?
4 वही जो बेगुनाह है और जिसका
दिल साफ है,[3]
जिसने मेरे जीवन* की झूठी शपथ
नहीं खायी,
न ही शपथ खाकर छल किया।[4]
5 ऐसा इंसान यहोवा से आशीषें
पाएगा,[5]
उद्धार करनेवाले अपने परमेश्वर
की नज़र में नेक बना रहेगा।[6]
6 परमेश्वर की खोज करनेवालों की
पीढ़ी यही है,
हे याकूब के परमेश्वर, ये ही वे
लोग हैं जो तेरी मंज़ूरी पाना
चाहते हैं। (*सेला*)
7 हे फाटको, ऊँचे हो जाओ,[7]
मुद्दतों से खड़े दरवाज़ो, खुल
जाओ*
ताकि गौरवशाली राजा दाखिल
हो सके![8]
8 यह गौरवशाली राजा कौन है?
यह यहोवा है, शक्तिशाली और
ताकतवर परमेश्वर,[9]
यह यहोवा है, एक वीर योद्धा
जिसका कोई सानी नहीं।[10]
9 हे फाटको, ऊँचे हो जाओ,[11]
मुद्दतों से खड़े दरवाज़ो, खुल जाओ
ताकि गौरवशाली राजा दाखिल
हो सके!
10 यह गौरवशाली राजा कौन है?
सेनाओं का परमेश्वर यहोवा ही
गौरवशाली राजा है।[1] (*सेला*)

दाविद की रचना।

א [*आलेफ*]

25 हे यहोवा, मैं तेरी ओर
मुड़ता हूँ।

ב [*बेथ*]

2 मेरे परमेश्वर, मुझे तुझ पर
भरोसा है,[2]
तू मुझे शर्मिंदा न होने दे।[3]
मेरे दुश्मनों को मेरी तकलीफों पर
हँसने न दे।[4]

ג [*गिमेल*]

3 बेशक, तुझ पर आशा रखनेवाला
कोई भी शर्मिंदा नहीं होगा,[5]
मगर जो बेवजह दगा देते हैं वे
शर्मिंदा होंगे।[6]

ד [*दालथ*]

4 हे यहोवा, मुझे अपनी राहें दिखा,[7]
मुझे अपने रास्ते सिखा।[8]

ה [*हे*]

5 अपनी सच्चाई की राह पर मुझे
चला और मुझे सिखा,[9]
क्योंकि तू मेरा उद्धार करनेवाला
परमेश्वर है।

ו [*वाव*]

मैं पूरा दिन तुझ पर ही आशा
रखता हूँ।

ז [*जैन*]

6 हे यहोवा, अपनी दया और अपना
अटल प्यार याद कर,[10]
जो तू हमेशा से दिखाता
आया है।*[11]

अध्य. 24
1 उत 1:9; अय 38:11; भज 136:6; यिर्म 5:22
2 भज 15:1-5
3 2शम 22:21; यश 33:15, 16; मत 5:8
4 भज 34:12, 13; मला 3:5
5 भज 128:1-5
6 यश 12:2
7 भज 118:19; भज 122:2
8 2शम 6:15; भज 48:1-3
9 भज 93:1
10 निर्ग 15:3; 1शम 17:47; 2इत 20:15; यश 42:13
11 भज 118:19

दूसरा कॉल.
1 1इत 29:11

अध्य. 25
2 यश 26:3
3 रोम 10:11
4 भज 41:11
5 भज 69:6
6 भज 31:17
7 निर्ग 33:13; भज 86:11; भज 143:8
8 भज 27:11
9 भज 43:3
10 निर्ग 34:6; यश 55:3
11 भज 103:17; भज 136:1

24:4 *यहाँ यहोवा के जीवन की बात की गयी है जिसकी इंसान शपथ खाता है। **24:7** *या "ऊपर उठो।"

25:6 *या "जो पुराने ज़माने से है।"

ח [हेथ]

7 मैंने जवानी में जो पाप और अप-
राध किए, उन्हें याद न कर।
हे यहोवा, अपने अटल प्यार के
मुताबिक,
अपनी भलाई के कारण मुझे
याद कर।[1]

ט [टेथ]

8 यहोवा भला और सीधा-सच्चा है।[2]
इसलिए वह पापियों को जीने की
राह सिखाता है।[3]

י [योध]

9 जो सही है उसके बारे में* वह दीनों
को निर्देश देगा,[4]
उन्हें अपनी राह पर चलना
सिखाएगा।[5]

כ [काफ]

10 जो यहोवा का करार मानते हैं,[6]
उसके याद दिलाने पर उसकी
सुनते हैं,[7]
उनसे वह प्यार* करता है, उनका
विश्वासयोग्य बना रहता है।

ל [लामेध]

11 माना कि मैंने बड़ा पाप किया है,
फिर भी हे यहोवा, अपने नाम की
खातिर मुझे माफ कर दे।[8]

מ [मेम]

12 यहोवा का डर माननेवाला इंसान
कौन है?[9]
उसे परमेश्वर सिखाएगा कि
कौन-सा रास्ता चुनना है।[10]

נ [नून]

13 ऐसा इंसान भलाई का आनंद
उठाएगा,[11]
उसके वंशजों का धरती पर अधि-
कार होगा।[12]

ס [सामेख]

14 यहोवा से गहरी दोस्ती सिर्फ वे
कर सकते हैं जो उसका डर
मानते हैं,[1]
वह अपने करार के बारे में उन्हें
बताता है।[2]

ע [ऐयिन]

15 मेरी आँखें हर पल यहोवा की तरफ
लगी रहती हैं,[3]
क्योंकि वह मेरे पैरों को जाल से
छुड़ाएगा।[4]

פ [पे]

16 मेरी तरफ मुड़, मुझ पर कृपा कर,
मैं अकेला और बेसहारा हूँ।

צ [सादे]

17 मेरे मन की पीड़ाएँ बढ़ गयी हैं,[5]
मुझे दिल की तड़प से राहत दे।

ר [रेश]

18 मेरी तकलीफें और मुसीबतें देख[6]
और मेरे सभी पाप माफ कर दे।[7]
19 देख, मेरे दुश्मन कैसे बेशुमार हो
गए हैं,
नफरत के मारे मुझे सताना
चाहते हैं।

ש [शीन]

20 मुझे बचा ले, मेरी जान की
हिफाज़त कर।[8]
मुझे शर्मिंदा न होने दे क्योंकि मैंने
तेरी पनाह ली है।

ת [ताव]

21 मेरा निर्दोष और सीधा चालचलन
मेरी हिफाज़त करे,[9]
क्योंकि मैंने तुझी पर आशा
रखी है।[10]
22 हे परमेश्वर, इसराएल
को उसकी सारी मुसीबतों से
छुड़ा ले।

25:9 *शा., "न्याय के बारे में।" 25:10 *या "अटल प्यार।"

अध्या. 25
1 निर्ग 33:19, भज 6:4, भज 27:13, भज 51:1
2 भज 92:15, भज 119:68, भज 145:9, प्रेष 14:17
3 भज 119:33, यश 30:20, मी 4:2
4 सप 2:3
5 भज 32:8
6 व्य 29:1
7 भज 19:7
8 भज 31:3, भज 79:9, भज 109:21, भज 143:11, यहे 36:22, दान 9:19, मत 6:9
9 भज 111:10
10 भज 37:23
11 भज 31:19
12 भज 37:11

दूसरा कॉल.
1 नीत 3:32, यूह 15:15
2 उत 18:17, उत 22:17, आम 3:7
3 भज 141:8
4 भज 91:3, भज 124:6-8
5 भज 73:21
6 2शम 16:12
7 भज 32:5, भज 51:9
8 भज 17:8, भज 121:7
9 भज 41:12
10 भज 37:34

दाविद की रचना।

26 हे यहोवा, मेरा न्याय कर
क्योंकि मैं निर्दोष चाल
चलता हूँ,[1]
यहोवा पर मेरा भरोसा अटल है।[2]
2 हे यहोवा, मुझे परखकर देख, मुझे
कसौटी पर कस,
मेरे दिल को और गहराई में छिपे
विचारों* को शुद्ध कर।[3]
3 क्योंकि तेरा अटल प्यार हमेशा मेरे
सामने रहता है
और मैं तेरी सच्चाई की राह पर
चलता हूँ।[4]
4 मैं छल करनेवालों से मेल-जोल नहीं
रखता,*[5]
अपनी असलियत छिपानेवालों से
दूर रहता हूँ।#
5 मुझे बुरे लोगों की टोली से
नफरत है,[6]
मैं दुष्टों से मेल-जोल रखने* से
इनकार करता हूँ।[7]
6 हे यहोवा, मैं अपने हाथ धोकर खुद
को बेगुनाह साबित करूँगा
और तेरी वेदी के चारों तरफ घूमूँगा
7 ताकि मैं ऊँची आवाज़ में तेरा
शुक्रिया अदा करूँ,[8]
तेरे सभी आश्चर्य के कामों का
ऐलान करूँ।
8 हे यहोवा, मुझे तेरा भवन
बहुत प्यारा है जहाँ तू निवास
करता है,[9]
जहाँ तेरी महिमा छायी रहती है।[10]
9 पापियों के साथ मेरा भी सफाया न
कर देना,[11]
न ही खूँखार लोगों* के साथ मेरी
जान ले लेना,
10 जिनके हाथ नीच कामों में लगे
रहते हैं,
जिनका दायाँ हाथ रिश्वत से भरा
रहता है।
11 मगर मैंने तो ठाना है कि मैं निर्दोष
चाल चलूँगा।
मुझे छुड़ा ले और मुझ पर
कृपा कर।
12 मैं समतल ज़मीन पर खड़ा हूँ,[1]
मैं बड़ी मंडली* में यहोवा की
तारीफ करूँगा।[2]

दाविद की रचना।

27 यहोवा मेरा प्रकाश[3] और मेरा
उद्धारकर्ता है।
फिर मुझे डर किसका?[4]
यहोवा मेरे जीवन का मज़बूत
गढ़ है।[5]
फिर मैं किसी से क्यों खौफ खाऊँ?
2 दुष्ट मुझे फाड़ खाने के लिए मुझ
पर टूट पड़े,[6]
मगर मेरे बैरी और दुश्मन खुद
लड़खड़ाकर गिर पड़े।
3 चाहे कोई सेना मेरे खिलाफ छावनी
डाले,
तब भी मेरा दिल नहीं डरेगा।[7]
चाहे मेरे खिलाफ युद्ध छिड़ जाए,
तब भी मेरा भरोसा अटल रहेगा।
4 मैंने यहोवा से सिर्फ एक चीज़
माँगी है,
यही मेरी दिली तमन्ना है
कि मैं सारी ज़िंदगी यहोवा के भवन
में निवास करूँ[8]

26:2 *या "मेरी गहरी भावनाओं।" शा., "मेरे गुरदों।" 26:4 *शा., "के साथ नहीं बैठता।" #या "कपटियों से नहीं मिलता-जुलता।" 26:5 *शा., "के साथ बैठने।"

26:9 *या "खून बहानेवालों।" 26:12 *शा., "मैं सभाओं।"

अध्य. 26
1 2रा 20:3
2 भज 21:7
3 भज 17:3 भज 66:10
4 भज 43:3 भज 86:11
5 यिर्म 15:17
6 भज 139:21
7 भज 1:1
8 भज 50:23 भज 95:2
9 1शम 3:3 1इत 16:1 भज 27:4
10 भज 63:2
11 1शम 25:29

दूसरा कॉल.
1 1शम 2:9 नीत 10:9
2 भज 111:1

अध्य. 27
3 भज 36:9 भज 43:3 भज 119:105
4 भज 23:4 रोम 8:31 इब्र 13:6
5 भज 62:6 यश 12:2
6 भज 22:16
7 2इत 20:15 2इत 32:7 भज 3:6
8 भज 23:6 भज 65:4

ताकि यहोवा की मनोहरता
निहार सकूँ
और उसके मंदिर* को एहसान-भरे
दिल से# देखता रहूँ।[1]
5 क्योंकि संकट के दिन वह मुझे
अपने आसरे में छिपा लेगा,[2]
अपनी गुप्त जगह में, अपने तंबू में
छिपा लेगा,[3]
वह मुझे ऊँची चट्टान पर चढ़ा
देगा।[4]
6 अब मेरा सिर दुश्मनों से ऊँचा हो
गया है जो मुझे घेरे हुए हैं,
मैं परमेश्वर के तंबू में खुशी से
जयजयकार करते हुए बलिदान
चढ़ाऊँगा,
यहोवा की तारीफ में गीत
गाऊँगा।*
7 हे यहोवा, जब मैं पुकारूँ तो मेरी
सुनना,[5]
मुझ पर कृपा करना और मुझे
जवाब देना।[6]
8 मेरे मन ने कहा है कि तूने यह
आज्ञा दी है,
"मेरी मंज़ूरी पाने के लिए मेहनत
करता रह।"
हे यहोवा, मैंने तेरी मंज़ूरी पाने की
ठान ली है।[7]
9 मुझसे मुँह न फेर लेना,[8]
न ही गुस्से में आकर अपने सेवक
को ठुकरा देना।
तू मेरा मददगार है,[9]
मेरा उद्धार करनेवाले परमेश्वर,
मुझे त्याग न देना, मुझे छोड़
न देना।
10 चाहे मेरे माता-पिता मुझे छोड़ दें,[1]
फिर भी यहोवा मुझे अपना लेगा।[2]
11 हे यहोवा, मुझे अपनी राह सिखा,[3]
दुश्मनों से बचाने के लिए मुझे
सीधाई की राह पर ले चल।
12 मुझे मेरे बैरियों के हवाले न कर,[4]
क्योंकि मेरे खिलाफ झूठे गवाह उठ
खड़े हुए हैं,[5]
वे मुझे मारने-पीटने की धमकी
देते हैं।
13 अगर मुझे विश्वास न होता कि
यहोवा मेरे जीते-जी* भलाई
करेगा,
तो न जाने मेरा क्या होता!#[6]
14 यहोवा पर आशा रख,[7]
हिम्मत से काम ले, अपना दिल
मज़बूत रख।[8]
हाँ, यहोवा पर आशा रख।

दाविद की रचना।

28 हे यहोवा, मेरी चट्टान, मैं तुझे
ही पुकारता रहता हूँ,[9]
मेरी प्रार्थना अनसुनी न कर।
अगर तू चुप रहेगा,
तो मेरी हालत गड्ढे* में जानेवालों
की तरह हो जाएगी[10]
2 जब मैं मदद के लिए पुकारूँ,
तेरे पवित्र-स्थान के भीतरी कमरे
की तरफ अपने हाथ उठाऊँ,[11]
तो तू मेरी दुहाई सुनना।
3 तू दुष्टों के साथ मुझे घसीट न ले
जाना,
जो नुकसान पहुँचानेवाले काम
करते हैं,[12]

27:4 *या "पवित्र-स्थान।" #या "ध्यान करते हुए।" **27:6** *या "संगीत बजाऊँगा।"

27:13 *शा., "जीवितों के देश में।" #या शायद, "बेशक, मुझे विश्वास है कि मैं जीते-जी यहोवा की भलाई देखूँगा।" **28:1** *या "कब्र।"

अध्य. 27
1 1शम 3:3; 1इत 16:1; भज 26:8
2 भज 32:7; भज 57:1; सप 2:3
3 भज 61:4
4 भज 40:2
5 भज 130:2
6 भज 4:1; भज 5:2
7 भज 63:1; भज 105:4; सप 2:3
8 भज 69:17; भज 143:7
9 भज 46:1

दूसरा कॉल.
1 भज 69:8
2 यश 49:15
3 भज 25:4; भज 86:11; यश 30:20; यश 54:13
4 भज 31:8; भज 41:2; भज 41:11
5 मत 26:59-61
6 अय 33:28-30
7 भज 25:3; भज 62:5
8 यश 40:31

अध्य. 28
9 व्य 32:4; यश 26:4
10 अय 33:28
11 भज 5:7
12 गि 16:25, 26; भज 26:9

अपने संगी से शांति की बातें करते
हैं, मगर उनके दिल में मैल भरा
होता है।[1]
4 उन्हें उनकी करनी का फल दे,[2]
उनके बुरे कामों का सिला दे।
उनके किए की सज़ा उन्हें दे,
उन्होंने जो किया है उसका बदला
उन्हें दे।[3]
5 क्योंकि वे न यहोवा के कामों पर,
न ही उसके हाथ के कामों पर ध्यान
देते हैं।[4]
वह उन्हें ढा देगा और दोबारा खड़ा
नहीं करेगा।
6 यहोवा की तारीफ हो,
क्योंकि उसने मेरी मदद की पुकार
सुनी है।
7 यहोवा मेरी ताकत[5] और मेरी
ढाल है।[6]
मेरा दिल उसी पर भरोसा
करता है।[7]
मुझे उससे मदद मिली है और मेरा
दिल मगन है,
इसलिए मैं अपने गीत में उसकी
तारीफ करूँगा।
8 यहोवा अपने लोगों की ताकत है,
वह एक मज़बूत गढ़ है, अपने
अभिषिक्त जन को शानदार
तरीके से बचाता है।[8]
9 अपने लोगों को बचा ले, अपनी
विरासत को आशीष दे।[9]
उनका चरवाहा बन जा और सदा
उन्हें अपनी गोद में लिए रह।[10]

दाविद का सुरीला गीत।

29 हे शूरवीरों के बेटो, यहोवा का
आदर करो,
यहोवा का आदर करो क्योंकि
वह महिमा और ताकत से भर-
पूर है।[11]
2 यहोवा का नाम जितनी
महिमा का हकदार है उतनी
महिमा उसे दो।
पवित्र पोशाक पहने* यहोवा को
दंडवत करो।#
3 यहोवा की आवाज़ बादलों* के
ऊपर सुनायी दे रही है,
गौरवशाली परमेश्वर गरज
रहा है।[1]
यहोवा घने बादलों के ऊपर है।[2]
4 यहोवा की आवाज़ क्या ही
दमदार है![3]
यहोवा की आवाज़ क्या ही ला-
जवाब है!
5 यहोवा की आवाज़ से देवदार टूट-
कर गिर जाते हैं,
हाँ, यहोवा लबानोन के देवदारों के
टुकड़े-टुकड़े कर देता है।[4]
6 वह लबानोन* को एक बछड़े की
तरह
और सिरयोन[5] को एक जंगली बैल
की तरह कुदाता है।
7 यहोवा की आवाज़ के साथ आग के
शोले भड़क उठते हैं,[6]
8 यहोवा की आवाज़ से वीराना काँप
उठता है,[7]
यहोवा कादेश के वीराने[8] को कँपा
देता है।
9 यहोवा की आवाज़ से गाभिन हिरनी
दहल जाती है,
उसका बच्चा निकल पड़ता है,
जंगल-के-जंगल उजड़ जाते हैं।[9]
उसके मंदिर में सब कहते हैं, "पर-
मेश्वर की महिमा हो!"

29:2 *या शायद, "उसकी पवित्रता के वैभव की वजह से।" #या "की उपासना करो।" **29:3** *शा., "पानी।" **29:6** *ज़ाहिर है, लबानोन पर्वतमाला।

अध्या. 28
1 भज 62:4
2 भज 59:12; यिर्म 18:22
3 भज 62:12; 2थि 1:6
4 अय 34:26, 27; यश 5:12
5 यश 12:2
6 उत 15:1; 2शम 22:3; भज 3:3
7 भज 56:4
8 1शम 16:13; 2शम 22:3; भज 20:6
9 व्य 9:29
10 यश 40:11

अध्या. 29
11 1इत 16:28, 29

दूसरा कॉल.
1 1शम 7:10; भज 18:13
2 भज 104:3
3 अय 26:11; अय 40:9
4 यश 2:12, 13
5 व्य 3:8, 9
6 निर्ग 19:18; भज 77:18
7 यश 13:13; इब्र 12:26
8 गि 13:26
9 यश 10:17, 18; यहे 20:47

10 यहोवा जलप्रलय* के ऊपर विराजमान है,[1]
यहोवा सदा राजा की हैसियत से विराजमान रहता है।[2]
11 यहोवा अपने लोगों को ताकत देगा।[3]
यहोवा अपने लोगों को शांति की आशीष देगा।[4]

दाविद का सुरीला गीत। नए घर के उद्‌घाटन का गीत।

30 हे यहोवा, मैं तेरी बड़ाई करूँगा क्योंकि तूने मुझे ऊपर निकाला है,*
तूने मेरे दुश्मनों को मुझ पर हँसने का मौका नहीं दिया।[5]
2 हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, मैंने तुझे मदद के लिए पुकारा और तूने मुझे चंगा किया।[6]
3 हे यहोवा, तूने मुझे कब्र में से ऊपर निकाला,[7]
मेरी जान सलामत रखी, मुझे गड्ढे* में गिरने से बचाया।[8]
4 यहोवा के वफादार लोगो, उसकी तारीफ में गीत गाओ,*[9]
उसके पवित्र नाम# की तारीफ करो,[10]
5 क्योंकि उसका क्रोध पल-भर का होता है,[11]
जबकि उसकी कृपा* ज़िंदगी-भर बनी रहती है।[12]
साँझ को भले ही रोना पड़े,
पर सवेरे खुशी से जयजयकार होगी।[13]
6 जब मुझे कोई परेशानी नहीं थी तब मैंने कहा,
"मैं कभी हिलाया नहीं जा सकता।"*
7 हे यहोवा, जब तू मुझसे खुश था* तब तूने मुझे पहाड़ जैसा मज़बूत किया।[1]
मगर जब तूने मुझसे मुँह फेर लिया तो मैं बहुत डर गया।[2]
8 हे यहोवा, मैं तुझी को पुकारता रहा,[3]
मैं यहोवा से कृपा की बिनती करता रहा।
9 क्या मेरे मरने# से, गड्ढे* में जाने से कोई फायदा होगा?[4]
क्या मिट्टी तेरी तारीफ करेगी?[5] तेरी वफादारी का बखान करेगी?[6]
10 हे यहोवा, मेरी दुआ सुन, मुझ पर कृपा कर।[7]
हे यहोवा, मेरा मददगार बन जा।[8]
11 तूने मेरा मातम खुशियों* में बदल दिया,
मेरा टाट उतारकर मुझे जश्न का ओढ़ना ओढ़ाया
12 ताकि मैं* तेरी तारीफ में गीत गाऊँ और चुप न रहूँ।
हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, मैं सदा तेरी तारीफ करता रहूँगा।

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

31 हे यहोवा, मैंने तेरी पनाह ली है।[9]
मुझे कभी शर्मिंदा न होने दे।[10]

29:10 *या "आसमान में फैले महासागर।" 30:1 *या "खींच निकाला।" 30:3, 9 *या "कब्र।" 30:4 *या "संगीत बजाओ।" #शा., "उसकी पवित्रता की यादगार।" 30:5 *या "मंज़ूरी।" 30:6 *या "मैं डगमगा (या लड़खड़ा) नहीं सकता।" 30:7 *या "तेरी मंज़ूरी मुझ पर थी।" 30:9 #शा., "खून।" 30:11 *शा., "नाच।" 30:12 *या "मेरी महिमा।"

अध्य. 29
1 अय 38:25
2 1ती 1:17
3 यश 40:29
4 भज 72:7

अध्य. 30
5 भज 25:2; भज 41:11
6 2रा 20:5; भज 6:2; भज 103:3
7 भज 86:13
8 भज 16:10; भज 28:1; यश 38:17; यो 2:6
9 भज 32:11
10 निर्ग 3:15
11 यश 12:1
12 यश 54:8
13 भज 126:5

दूसरा कॉल.
1 2शम 5:12; भज 89:17
2 भज 10:1; भज 143:7
3 भज 34:6; भज 77:1
4 भज 28:1
5 भज 6:5; भज 115:17; सभ 9:10
6 भज 88:11; यश 38:18
7 भज 143:1
8 भज 28:7

अध्य. 31
9 भज 18:2
10 भज 22:4, 5; रोम 10:11

अपनी नेकी के कारण मुझे
छुड़ा ले।[1]
2 मेरी तरफ कान लगा।*
मुझे छुड़ाने के लिए फौरन आ।[2]
मेरे लिए पहाड़ पर खड़ा मज़बूत
गढ़ बन जा,
मुझे बचाने के लिए एक महफूज़
किला बन जा।[3]
3 क्योंकि तू मेरे लिए बड़ी चट्टान और
मज़बूत गढ़ है,[4]
अपने नाम की खातिर[5] तू मेरी
अगुवाई करेगा, मुझे रास्ता
दिखाएगा।[6]
4 तू मुझे उस जाल से छुड़ा जो दुश्मनों
ने चुपके से बिछाया है,[7]
क्योंकि तू मेरा किला है।[8]
5 मैं अपनी जान तेरे हवाले
करता हूँ।[9]
हे यहोवा, सच्चाई के परमेश्वर,*[10]
तूने मुझे छुड़ाया है।
6 मैं उनसे नफरत करता हूँ जो बेकार
और निकम्मी मूरतों को पूजते हैं,
मगर मैं यहोवा पर भरोसा
करता हूँ।
7 मैं तेरे अटल प्यार के कारण बहुत
मगन होऊँगा,
क्योंकि तूने मेरा दुख देखा है,[11]
तू मेरे मन की पीड़ा जानता है।
8 तूने मुझे दुश्मनों के हवाले नहीं
किया,
बल्कि तू मुझे एक महफूज़* जगह
खड़ा करता है।
9 हे यहोवा, मुझ पर रहम कर, मैं
मुसीबत में हूँ।

31:2 *या "झुककर मेरी सुन।" 31:5 *या "विश्वासयोग्य परमेश्वर।" 31:8 *या "खुली।"

अध्य. 31
1 भज 143:1
2 भज 40:17 भज 70:1 भज 71:2
3 2शम 22:3 भज 18:2
4 2शम 22:2
5 भज 25:11 यिर्म 14:7
6 भज 23:3
7 भज 91:3 मत 6:13
8 नीत 18:10
9 लूक 23:46 प्रेष 7:59
10 व्य 32:4
11 भज 9:13

दूसरा कॉल.
1 भज 6:7
2 भज 22:14
3 नीत 15:13
4 भज 71:9
5 भज 32:3 भज 102:3, 5
6 भज 22:6 भज 42:10 भज 102:8
7 भज 38:11
8 यिर्म 20:10
9 भज 57:4
10 भज 56:4
11 भज 43:5
12 भज 142:6
13 गि 6:25

घोर चिंता से मेरी आँखें कमज़ोर
हो गयी हैं,[1] पूरा शरीर सूख
गया है।[2]
10 गम से मेरी ज़िंदगी आधी हो
गयी है,[3]
कराहते-कराहते मेरी उम्र घट
गयी है।[4]
मेरे गुनाह की वजह से मेरी ताकत
मिट रही है,
मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो रही हैं।[5]
11 मेरे सभी बैरी, खासकर मेरे पड़ोसी
मुझे तुच्छ समझते हैं।[6]
मेरे जान-पहचानवाले मुझसे
डरते हैं,
मुझे बाहर देखते ही मुझसे दूर
भागते हैं।[7]
12 उन्होंने मुझे अपने दिल* से निकाल
दिया है,
मुझे भुला दिया है मानो मेरी मौत हो
गयी हो,
मैं एक टूटे घड़े जैसा बन गया हूँ।
13 मैं अपने बारे में अफवाहें सुनता हूँ,
आतंक से घिरा रहता हूँ।[8]
वे सब मेरे खिलाफ दल बाँधते हैं,
मेरी जान लेने की साज़िश
रचते हैं।[9]
14 मगर हे यहोवा, मैं तुझ पर भरोसा
करता हूँ।[10]
मैं ऐलान करता हूँ, "तू मेरा पर-
मेश्वर है।"[11]
15 मेरी ज़िंदगी* तेरे हाथ में है।
मुझे मेरे दुश्मनों और सतानेवालों के
हाथ से छुड़ा।[12]
16 अपने सेवक पर अपने मुख का
प्रकाश चमका।[13]

31:12 *या "दिमाग।" 31:15 *शा., "मेरा समय।"

अपने अटल प्यार के कारण मुझे
बचा ले।
17 हे यहोवा, मैं तुझे पुकारूँगा, मुझे
शर्मिंदा न होना पड़े।[1]
दुष्ट शर्मिंदा हों,[2] कब्र में खामोश
कर दिए जाएँ।[3]
18 झूठ बोलनेवाले मुँह बंद कर दिए
जाएँ,[4]
जो मगरूर होकर, घमंड और नफ-
रत से भरकर
नेक जन के खिलाफ बोलते हैं।
19 हे परमेश्‍वर, तेरी भलाई अपार है![5]
यह तूने उनके लिए रख छोड़ी है जो
तेरा डर मानते हैं[6]
और जो तेरी पनाह लेते हैं,
उनके साथ तूने सबके देखते
भलाई की है।[7]
20 तू उन्हें लोगों की साज़िशों से बचाने
के लिए
अपनी मौजूदगी की गुप्त जगह
छिपाए रखेगा,[8]
उन्हें चुभनेवाली बातों के वार से
बचाने के लिए
अपने आसरे में छिपा लेगा।[9]
21 यहोवा की तारीफ हो क्योंकि जब मैं
सेना से घिरे शहर में था,[10]
तब उसने मुझे अपने अटल प्यार
का लाजवाब तरीके से सबूत
दिया था।[11]
22 मैं तो बिलकुल घबरा गया था,
मुझे लगा, "अब वे मुझे ज़रूर मिटा
देंगे।"[12]
मगर जब मैंने दुहाई दी तो तूने मेरी
सुनी।[13]
23 यहोवा के सभी वफादार लोगो,
उससे प्यार करो![14]
यहोवा विश्‍वासयोग्य लोगों की
हिफाज़त करता है,[15]

अध्य. 31

1 भज 25:2, यश 50:7
2 नहे 6:16, यश 41:11, यिर्म 20:11
3 1शम 2:9
4 भज 12:3, भज 63:11
5 भज 73:1, यश 63:7
6 यश 64:4, 1कुर 2:9
7 भज 126:2, यश 26:12
8 भज 27:5, भज 32:7
9 भज 64:2, 3
10 1शम 23:7
11 भज 17:7
12 यो 2:4
13 2इत 33:13, भज 6:9, नीत 15:29, इब्र 5:7
14 व्य 10:12
15 1शम 2:9, भज 145:20

दूसरा कॉल.

1 2शम 22:28, यश 2:11, याकू 4:6
2 भज 62:1, विल 3:20, 21, मी 7:7
3 यश 35:4

अध्य. 32

4 यश 1:18, प्रेष 3:19
5 रोम 4:7, 8
6 नीत 28:13
7 भज 38:2
8 भज 38:18, भज 51:4, 1यूह 1:9
9 लैव 5:5, भज 41:4
10 2शम 12:13, भज 86:5, भज 103:3, यश 44:22
11 भज 65:2, 3, भज 69:13, यश 55:6

मगर जो मगरूर है उसे कड़ी-से-
कड़ी सज़ा देता है।[1]
24 यहोवा पर आस लगानेवालो,[2]
तुम सब हिम्मत से काम लो,
तुम्हारा दिल मज़बूत रहे।[3]

दाविद की रचना। मश्‍कील।*

32 सुखी है वह इंसान जिसका
अपराध माफ किया गया है,
जिसका पाप ढाँप दिया
गया है।*[4]
2 सुखी है वह इंसान जिसे यहोवा
दोषी नहीं ठहराता,[5]
जिसके मन में कपट नहीं होता।
3 जब मैं चुप रहा तो मैं दिन-भर
कराहता रहा जिससे मेरी हड्डियाँ
गलने लगीं।[6]
4 क्योंकि दिन-रात तेरा हाथ* मुझ
पर भारी था।[7]
मेरा दमखम ऐसे खत्म हो गया#
जैसे गरमियों की कड़ी धूप से
पानी सूख जाता है। (*सेला*)
5 आखिरकार, मैंने तेरे सामने अपना
पाप मान लिया,
मैंने अपना गुनाह और नहीं
छिपाया।[8]
मैंने कहा, "मैं यहोवा के सामने
अपने अपराध मान लूँगा।"[9]
तब तूने मेरे पाप, मेरे गुनाह माफ
कर दिए।[10] (*सेला*)
6 इसीलिए जब तक तुझे पाना मुम-
किन है,
तब तक हर वफादार जन तुझसे
प्रार्थना करेगा।[11]

32:उप *शब्दावली देखें। **32:1** *या "माफ किया गया है।" **32:4** *या "तेरी नाराज़गी।" #या "मेरे जीवन की नमी ऐसे खत्म हो गयी।"

फिर सैलाब भी उस तक नहीं पहुँ-
चेगा।
7 तू मेरे लिए छिपने की जगह है,
तू मुसीबत से मेरी हिफाज़त
करेगा।[1]
तू मुझे छुड़ाकर मेरे चारों ओर
खुशियों का समाँ बाँध देगा।[2]
(*सेला*)
8 तूने कहा है, "मैं तुझे अंदरूनी
समझ दूँगा,
उस राह पर चलना सिखाऊँगा जिस
पर तुझे चलना चाहिए।[3]
मैं तुझ पर हर पल नज़र रखकर
तुझे सलाह दूँगा।[4]
9 तू घोड़े या खच्चर की तरह न
बनना जिसमें समझ नहीं होती,[5]
जिसकी उमंग को लगाम या रस्सी
से काबू करना पड़ता है,
तभी वह तेरे पास आएगा।"
10 दुष्ट की तकलीफें बेहिसाब होती हैं,
मगर यहोवा पर भरोसा
रखनेवाला उसके अटल प्यार से
घिरा रहता है।[6]
11 नेक लोगो, यहोवा के कारण मगन
हो, आनंद मनाओ,
सीधे-सच्चे मनवालो, सब खुशी से
जयजयकार करो।

33 नेक लोगो, यहोवा के कारण
खुशी से जयजयकार करो।[7]
यह सही है कि सीधे-सच्चे लोग
उसकी तारीफ करें।
2 सुरमंडल बजाकर यहोवा का
शुक्रिया अदा करो,
दस तारोंवाला बाजा बजाकर
उसकी तारीफ में गीत गाओ।*
3 उसके लिए एक नया गीत गाओ,[8]
कुशलता से तारोंवाले बाजे बजाओ
और आनंद से जयजयकार करो।
4 क्योंकि यहोवा का वचन सच्चा है,[1]
उसका हर काम दिखाता है कि वह
भरोसेमंद है।
5 उसे नेकी और न्याय से प्यार है।[2]
धरती यहोवा के अटल प्यार से
भरपूर है।[3]
6 यहोवा के वचन से आकाश की
रचना हुई,[4]
उसमें जो कुछ है वह* उसके मुँह
की साँस से बनाया गया।
7 वह समुंदर का पानी ऐसे रोके
रखता है मानो उस पर बाँध
बाँधा हो,[5]
उफनते पानी को भंडारों में जमा
करता है।
8 सारी धरती यहोवा का डर माने।[6]
सारे जगत के लोग उसके लिए
श्रद्धा रखें।
9 क्योंकि उसने कहा और वह वजूद
में आया,[7]
उसने हुक्म दिया और वह मज़बूती
से कायम हुआ।[8]
10 यहोवा ने राष्ट्रों की साज़िशें*
नाकाम कर दीं,[9]
देश-देश के लोगों की योजनाओं#
पर पानी फेर दिया।[10]
11 मगर यहोवा के फैसले* सदा अटल
रहेंगे,[11]
उसके मन के विचार पीढ़ी-दर-पीढ़ी
बने रहेंगे।
12 सुखी है वह राष्ट्र जिसका परमेश्वर
यहोवा है,[12]

33:2 *या "संगीत बजाओ।"

33:6 *शा., "उसकी सारी सेनाएँ।" 33:10, 11 *या "मकसद।" 33:10 #या "के विचारों।"

अध्य. 32
1 भज 9:9
2 निर्ग 15:1; 2शम 22:1
3 भज 86:11
4 नीत 3:6
5 नीत 26:3; यिर्म 8:6
6 भज 34:8; नीत 13:21; नीत 16:20

अध्य. 33
7 फिल 4:4
8 भज 40:3; भज 98:1; भज 149:1; यश 42:10; प्रक 5:9

दूसरा कॉल.
1 भज 12:6
2 अय 37:23; भज 11:7; भज 45:7
3 भज 145:16; प्रेष 14:17
4 इब्र 11:3
5 उत 1:9; अय 38:8-11; नीत 8:29; यिर्म 5:22
6 प्रक 14:7
7 भज 148:4, 5
8 भज 119:90
9 यश 8:10; यश 19:3
10 भज 21:8, 11
11 नीत 19:21; यश 46:10
12 व्य 33:29

वे लोग जिनको उसने अपनी जागीर
चुना है।[1]
13 यहोवा स्वर्ग से नीचे देखता है,
उसकी नज़र सब इंसानों पर
रहती है।[2]
14 वह अपने निवास से धरती के लोगों
को गौर से देखता है।
15 वही सबके दिलों को ढालता है,
उनका हर काम जाँचता है।[3]
16 कोई भी राजा अपनी विशाल सेना
के बल पर नहीं बचता,[4]
न ही शूरवीर अपनी ज़बरदस्त
ताकत के दम पर बचता है।[5]
17 उद्धार* के लिए घोड़े पर आस
लगाना धोखा है,[6]
बहुत बलवान होकर भी वह बचा
नहीं सकता।
18 देखो! जो यहोवा का डर मानते हैं
और उसके अटल प्यार के भरोसे
रहते हैं,
उन पर उसकी नज़र बनी रहती है[7]
19 ताकि उन्हें मौत से छुड़ाए
और अकाल के वक्त उन्हें ज़िंदा
रखे।[8]
20 हम यहोवा पर उम्मीद लगाए
हुए हैं।
वही हमारा मददगार और हमारी
ढाल है।[9]
21 उसके कारण हमारा दिल बाग-बाग
हो जाता है,
क्योंकि हम उसके पवित्र नाम पर
भरोसा करते हैं।[10]
22 हे यहोवा, हमने तुझ पर आस
लगायी है,[11]
इसलिए तेरा अटल प्यार हम पर
बना रहे।[12]

33:17 *या "जीत।"

अध्य. 33
1 भज 65:4; भज 135:4; 1पत 2:9
2 भज 11:4; भज 14:2; नीत 15:3; इब्र 4:13
3 1इत 28:9; अय 34:21; नीत 24:12
4 यह 11:6
5 2इत 32:21; भज 44:4, 5
6 2रा 7:6, 7; भज 20:7; नीत 21:31; यश 31:1
7 अय 36:7; भज 34:15
8 यश 33:15, 16
9 व्य 33:29
10 भज 28:7; नीत 18:10
11 मी 7:7
12 भज 32:10

दूसरा कॉल.

अध्य. 34
1 1शम 21:12, 13
2 यिर्म 9:24; 1कुर 1:31
3 भज 35:27
4 इब्र 5:7
5 भज 18:48
6 2शम 22:1
7 2रा 6:17; भज 91:11; मत 18:10; इब्र 1:7, 14
8 2रा 19:35; दान 6:22; प्रेष 5:18, 19; प्रेष 12:11

दाविद का यह गीत उस समय का है जब दाविद ने अबीमेलेक के सामने पागल होने का ढोंग किया था[1] और अबीमेलेक ने उसे भगा दिया था।

א [*आलेफ*]

34 मैं हर समय यहोवा की तारीफ
करूँगा,
उसकी तारीफ के बोल हमेशा मेरे
होंठों पर होंगे।

ב [*बेथ*]

2 मैं यहोवा पर गर्व करूँगा,[2]
दीन लोग यह सुनकर आनंद
मनाएँगे।

ג [*गिमेल*]

3 मेरे साथ मिलकर यहोवा की महिमा
करो,[3]
आओ, हम मिलकर उसके नाम की
बड़ाई करें।

ד [*दालथ*]

4 मैंने यहोवा से सलाह माँगी और
उसने मुझे जवाब दिया।[4]
उसने मेरा सारा डर दूर कर
दिया।[5]

ה [*हे*]

5 उस पर आस लगानेवालों का चेहरा
दमक उठा,
उन्हें कभी शर्मिंदा नहीं किया जा
सकता।

ז [*जैन*]

6 इस दुखी इंसान ने यहोवा को
पुकारा और उसने सुना।
परमेश्वर ने उसे सारी मुसीबतों से
बचाया।[6]

ח [*हेथ*]

7 जो यहोवा का डर मानते हैं
उसका स्वर्गदूत उनकी हिफाज़त
करता है*[7]
और उन्हें छुड़ाता है।[8]

34:7 *या "उनके चारों तरफ छावनी डालता है।"

ט [टेथ]

8 परखकर देखो कि यहोवा कितना
भला है,[1]
सुखी है वह इंसान जो उसकी पनाह
में आता है।

י [योध]

9 यहोवा के सब पवित्र लोगो, उसका
डर मानो,
क्योंकि उसका डर माननेवालों को
कोई कमी नहीं होती।[2]

כ [काफ]

10 जवान ताकतवर शेर भी भूख से
आधे हो गए हैं,
मगर यहोवा की खोज करनेवालों
को अच्छी चीज़ की कमी नहीं
होगी।[3]

ל [लामेध]

11 आओ मेरे बेटो, मेरी सुनो,
मैं तुम्हें यहोवा का डर मानना
सिखाऊँगा।[4]

מ [मेम]

12 तुममें से कौन खुशहाल ज़िंदगी
चाहता है?
कौन लंबी उम्र पाना चाहता है?[5]

נ [नून]

13 तो फिर अपनी जीभ को बुराई
करने से,[6]
अपने होंठों को छल की बातें कहने
से रोको।[7]

ס [सामेख]

14 बुराई से दूर हो जाओ और भले
काम करो,[8]
शांति कायम करने की खोज करो
और उसमें लगे रहो।[9]

ע [ऐयिन]

15 यहोवा की आँखें नेक लोगों पर
लगी रहती हैं[10]
और उसके कान उनकी मदद की
पुकार सुनते हैं।[11]

פ [पे]

16 मगर यहोवा बुरे काम करनेवालों के
खिलाफ हो जाता है
ताकि धरती से उनकी याद पूरी
तरह मिटा दे।[1]

צ [सादे]

17 नेक लोगों ने यहोवा की दुहाई दी
और उसने सुनी,[2]
उसने उन्हें सारी मुसीबतों से
छुड़ाया।[3]

ק [कोफ]

18 यहोवा टूटे मनवालों के करीब
रहता है,[4]
वह उन्हें बचाता है जिनका मन
कुचला हुआ है।*[5]

ר [रेश]

19 नेक जन पर बहुत-सी विपत्तियाँ तो
आती हैं,[6]
मगर यहोवा उसे उन सबसे
छुड़ाता है।[7]

ש [शीन]

20 वह उसकी सारी हड्डियों की हिफा-
ज़त करता है,
उसकी एक भी हड्डी नहीं तोड़ी
गयी।[8]

ת [ताव]

21 दुष्ट पर मुसीबत मौत ले आएगी,
नेक जनों से नफरत करनेवाले दोषी
ठहराए जाएँगे।
22 यहोवा अपने सेवकों की जान
बचाता है,
उसकी पनाह लेनेवाला कोई भी
दोषी नहीं ठहरेगा।[9]

दाविद की रचना।

35 हे यहोवा, मेरे विरोधियों से मेरा
मुकदमा लड़,[10]
उनसे लड़ जो मुझसे लड़ते हैं।[11]

34:18 * या "जो निराश हैं।"

अध्य. 34

1 1पत 2:3
2 भज 23:1; फिल 4:19
3 भज 23:6; भज 84:11
4 अय 28:28; नीत 1:7; नीत 8:13
5 व्य 6:1, 2; व्य 30:19, 20; 1पत 3:10-12
6 याकू 1:26; याकू 3:8
7 नीत 12:19; नीत 15:4; 1पत 2:1
8 भज 37:27; भज 97:10; आम 5:15; रोम 12:9
9 मत 5:9; इब्र 12:14
10 अय 36:7; भज 33:18
11 भज 18:6; यश 59:1

दूसरा कॉल.

1 भज 37:10; नीत 10:7
2 भज 145:18, 19
3 2इत 32:22; प्रेष 12:11
4 भज 147:3; यश 61:1
5 भज 51:17; यश 57:15; यश 66:2
6 नीत 24:16; 2ती 3:12
7 दान 6:21, 22; 1कुर 10:13
8 यूह 19:36
9 भज 84:11

अध्य. 35

10 1शम 24:15
11 भज 3:7

2 अपनी छोटी ढाल* और बड़ी ढाल
उठा[1]
और मेरी रक्षा करने आ।[2]
3 अपना भाला और अपनी कुल्हाड़ी
लेकर मेरा पीछा करनेवालों का
सामना कर।[3]
मुझसे कह, "मैं तेरा उद्धार-
कर्ता हूँ।"[4]
4 जो मेरी जान लेने पर तुले हैं,
वे शर्मिंदा और बेइज़्ज़त किए
जाएँ।[5]
जो मुझे नाश करने के लिए साज़िशें
रचते हैं, वे बेइज़्ज़त होकर भाग
जाएँ।
5 वे भूसी की तरह हो जाएँ जिसे हवा
उड़ा ले जाती है,
यहोवा का स्वर्गदूत उन्हें दूर
खदेड़ दे।[6]
6 जब यहोवा का स्वर्गदूत उनका
पीछा करे,
तो उनका रास्ता अँधेरा और
फिसलन-भरा हो जाए।
7 क्योंकि उन्होंने बेवजह मेरे लिए
जाल बिछाया है,
बेवजह मेरे लिए गड्ढा खोदा है।
8 मुसीबत उन पर अचानक आ पड़े,
वे अपने ही बिछाए जाल में फँस
जाएँ,
अपने ही खोदे गड्ढे में गिरकर
नाश हो जाएँ।[7]
9 मगर मैं यहोवा के कारण मगन
होऊँगा,
वह जो उद्धार दिलाता उससे आनंद
मनाऊँगा।
10 मेरा रोम-रोम कहेगा,
"हे यहोवा, तुझ जैसा कौन है?
तू बेसहारे को ताकतवरों से
बचाता है,[1]
बेसहारे और गरीब को लुटेरों के
हाथ से छुड़ाता है।"[2]
11 ऐसे गवाह सामने आए हैं जिन्होंने
मेरा बुरा करने की ठान ली है,[3]
वे मुझसे ऐसी बातें पूछते हैं जो मैं
नहीं जानता।
12 वे मेरी अच्छाई का बदला बुराई से
देते हैं,[4]
मेरे मन को शोकित करते हैं।
13 मगर जब वे बीमार थे तब मैंने टाट
ओढ़ा था,
उपवास करके खुद को दुख
दिया था
और जब मेरी प्रार्थना का कोई
जवाब नहीं मिलता,*
14 तो मैं मातम मनाते हुए फिरता,
मानो मैंने अपना दोस्त या भाई
खो दिया हो,
अपनी माँ के लिए मातम मनानेवाले
की तरह मैं दुख से झुक गया।
15 मगर जब मैं गिर पड़ा तो वे खुश
हुए और इकट्ठा हो गए,
वे घात लगाकर मुझ पर हमला
करने के लिए इकट्ठा हो गए,
उन्होंने मुझे तार-तार कर दिया और
चुप नहीं रहे।
16 भक्तिहीन लोग मुझे तुच्छ समझ-
कर* मेरी खिल्ली उड़ाते हैं,
मुझ पर गुस्से से दाँत पीसते हैं।[5]
17 हे यहोवा, तू कब तक यूँ ही देखता
रहेगा?[6]
उनके हमलों से मुझे बचा ले,[7]

अध्य. 35
1 निर्ग 15:3
2 यश 42:13
3 1शम 23:26
4 यश 12:2
5 यिर्म 17:18
6 निर्ग 14:19, 20
यश 37:36
7 भज 57:6
भज 141:10

दूसरा कॉल.
1 भज 18:17
2 भज 40:17
नीत 22:22, 23
3 भज 27:12
मत 26:59
4 1शम 19:4, 5
1शम 20:33
यिर्म 18:20
5 भज 37:12
6 हब 1:13
7 भज 142:6

35:2 *ये ढालें अकसर तीरंदाज़ ढोते थे।

35:13 *या "प्रार्थना मेरी गोद में लौट आती।" 35:16 *या शायद, "लोग एक टिकिया के लिए।"

जवान शेरों से मेरे अनमोल जीवन*
की रक्षा कर।[1]
18 तब मैं बड़ी मंडली में तेरा शुक्रिया
अदा करूँगा,[2]
लोगों की भीड़ में तेरी तारीफ
करूँगा।
19 मुझसे बेवजह दुश्मनी करनेवालों
को मुझ पर हँसने न दे,
मुझसे बेवजह नफरत करनेवालों[3]
को बुरे इरादे से एक-दूसरे को
आँख मारने न दे।[4]
20 क्योंकि वे शांति की बातें नहीं करते
बल्कि जो देश में शांति से रहते
हैं, उनके खिलाफ चालाकी से
साज़िश रचते हैं।[5]
21 वे गला फाड़-फाड़कर मुझ पर दोष
लगाते हैं,
वे कहते हैं, "अच्छा हुआ! जैसा
हमने सोचा था वैसा ही हो गया!"
22 हे यहोवा, तूने यह देखा है। तू चुप
न रह।[6]
हे यहोवा, मुझसे दूर न रह।[7]
23 जाग! मेरे बचाव के लिए उठ,
मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी तरफ से
पैरवी कर।
24 हे यहोवा, मेरे परमेश्वर,
अपनी नेकी के मुताबिक मेरा
न्याय कर,[8]
उन्हें मुझ पर हँसने का मौका न दे।
25 वे खुद से कभी यह कहने न पाएँ,
"अरे वाह! हमने जो चाहा वही
हुआ!"
वे मेरे बारे में यह कभी कहने
न पाएँ, "हमने उसे निगल
लिया।"[9]

35:17 *शा., "मेरे अकेले।" यहाँ उसके जीवन की बात की गयी है।

अध्य. 35
1 भज 22:20
भज 57:4
2 भज 22:22
3 भज 69:4
यूह 15:24, 25
4 नीत 6:12, 13
5 भज 31:13
यिर्म 11:19
मत 26:4
6 भज 28:1
7 भज 10:1
भज 71:12
8 भज 26:1
भज 96:13
9 भज 41:1, 2

दूसरा कॉल.
1 भज 84:11
भज 149:4
2 भज 51:14
3 भज 71:24

अध्य. 36
4 रोम 3:18
5 व्य 29:19, 20
6 भज 103:11

26 मेरी बरबादी पर हँसनेवाले सभी
शर्मिंदा और बेइज़्ज़त किए जाएँ।
मुझे नीचा दिखानेवाले शर्म और
अपमान से ओढ़े जाएँ।
27 मगर मेरी नेकी से खुश होनेवाले
आनंद से जयजयकार करें,
वे लगातार कहते रहें, "यहोवा की
महिमा हो,
जो अपने सेवक की शांति देखकर
खुश होता है।"[1]
28 तब मेरी जीभ तेरी नेकी का बखान
करेगी*[2]
और दिन-भर तेरी तारीफ करेगी।[3]

यहोवा के सेवक दाविद की रचना।
निर्देशक के लिए हिदायत।

36 अपराध, दुष्ट के दिल की गह-
राई में उससे बोलता है,
दुष्ट की आँखों में परमेश्वर का
ज़रा भी डर नहीं।[4]
2 वह अपनी नज़रों में खुद को इतना
ऊँचा उठा लेता है
कि अपनी गलती देख नहीं पाता
और उससे नफरत नहीं करता।[5]
3 उसके मुँह से नुकसान पहुँचानेवाली
और छल की बातें निकलती हैं,
उसमें ज़रा भी अंदरूनी समझ नहीं
कि वह भला काम करे।
4 बिस्तर पर लेटे हुए भी वह साज़िशें
रचता है।
वह ऐसे रास्ते पर चलने में अड़
जाता है जो सही नहीं है,
वह बुराई को नहीं ठुकराता।
5 हे यहोवा, तेरा अटल प्यार आस-
मान तक पहुँचता है,[6]
तेरी वफादारी बादलों तक
पहुँचती है।

35:28 *या "पर मनन करेगी।"

6 तेरी नेकी बड़े-बड़े, ऊँचे पहाड़ों*
जैसी है,[1]
तेरे न्याय-सिद्धांत विशाल गहरे
सागर जैसे हैं।[2]
हे यहोवा, तू इंसान और जानवर,
दोनों को सलामत रखता# है।[3]
7 हे परमेश्वर, तेरा अटल प्यार क्या
ही अनमोल है![4]
तेरे पंखों की छाँव तले इंसान पनाह
लेते हैं।[5]
8 वे तेरे भवन की भरपूरी* से जी-
भरकर पीते हैं,[6]
तू अपनी अच्छाई की उमड़ती नदी
से उन्हें पिलाता है।[7]
9 तू ही जीवन देनेवाला है,[8]
तेरी रौशनी से हमें रौशनी
मिलती है।[9]
10 जो तुझे जानते हैं उनसे प्यार*
करता रह,[10]
सीधे-सच्चे मनवालों के साथ नेकी
करता रह।[11]
11 मगरूर को मौका न दे कि वह पैरों
से मुझे रौंद डाले,
न ही दुष्ट को अवसर दे कि वह
हाथों से मुझे खदेड़ दे।
12 देख, गुनाह करनेवाले गिर गए हैं,
उन्हें चित कर दिया गया है, वे उठ
नहीं सकते।[12]

दाविद की रचना।

א [आलेफ]

37 बुरे लोगों की वजह से मत
झुँझलाना,*
न ही गुनहगारों से जलना।[13]
2 वे घास की तरह जल्द ही मुरझा
जाएँगे,[1]
हरी घास की तरह सूख जाएँगे।

ב [बेथ]

3 यहोवा पर भरोसा रख और भले
काम कर,[2]
धरती पर* बसा रह और अपने
हर काम में विश्वासयोग्य रह।[3]
4 यहोवा में अपार खुशी पा*
और वह तेरे दिल की मुरादें पूरी
करेगा।

ג [गिमेल]

5 अपना सबकुछ यहोवा पर छोड़ दे,[4]
उस पर भरोसा रख, वह तेरी
खातिर कदम उठाएगा।[5]
6 वह तेरी नेकी सुबह के उजाले की
तरह,
तेरा न्याय भरी दोपहरी की धूप की
तरह चमकाएगा।

ד [दालथ]

7 यहोवा के सामने खामोश रहना[6]
और सब्र से उसका इंतज़ार करना,
ऐसे आदमी को देखकर मत झुँझ-
लाना
जो अपनी चालों में कामयाब
होता है।[7]

ה [हे]

8 गुस्सा करना छोड़ दे, क्रोध
त्याग दे,[8]
झुँझलाना मत और बुराई में मत
लग जाना।*
9 क्योंकि बुरे लोगों का नाश कर
दिया जाएगा,[9]

अध्या. 36
1 भज 71:19
2 रोम 11:33
3 भज 145:9; 1ती 4:10
4 मी 7:18
5 रूत 2:12; भज 17:8; भज 91:4
6 भज 65:4
7 भज 16:11
8 अय 33:4; यिर्म 2:13; प्रेष 17:28; प्रक 4:11
9 भज 27:1; भज 43:3; याकू 1:17; 1पत 2:9
10 भज 103:17
11 भज 7:10; भज 97:11
12 भज 1:5

अध्या. 37
13 भज 73:3; नीत 23:17

दूसरा कॉल.
1 भज 73:12, 19
2 यश 1:17; इब्र 13:16
3 नीत 28:20
4 भज 55:22; नीत 16:3
5 मत 6:33; फिल 4:6; 1पत 5:6, 7
6 भज 62:1; विल 3:26
7 अय 21:7; भज 73:3; यिर्म 12:1
8 नीत 14:29; इफ 4:26
9 भज 55:23

36:6 *शा., "तेरी नेकी परमेश्वर के पहाड़ों।" #या "बचाता।" **36:8** *शा., "चरबी।" **36:10** *या "अटल प्यार।" **37:1** *या "गुस्से से मत भड़कना।"

37:3 *या "देश में।" **37:4** *या "सबसे ज़्यादा खुशी पा।" **37:8** *या शायद, "झुँझलाना मत क्योंकि इससे सिर्फ नुक-सान होगा।"

मगर यहोवा पर आशा रखनेवाले
धरती के वारिस होंगे।[1]

ו [*वाव*]

10 बस थोड़े ही समय बाद
दुष्टों का नामो-निशान मिट
जाएगा,[2]
तू उन्हें वहाँ ढूँढ़ेगा जहाँ वे होते थे,
मगर वे नहीं होंगे।[3]
11 मगर दीन लोग धरती के वारिस
होंगे[4]
और बड़ी शांति के कारण अपार
खुशी पाएँगे।[5]

ז [*जैन*]

12 दुष्ट, नेक इंसान के खिलाफ
साज़िश रचता है,[6]
उस पर गुस्से से दाँत पीसता है।
13 मगर यहोवा दुष्ट पर हँसेगा,
क्योंकि वह जानता है कि
उसके मिटने का दिन ज़रूर
आएगा।[7]

ח [*हेथ*]

14 दुष्ट तलवार खींचते और कमान
चढ़ाते हैं
ताकि सताए हुओं को और गरीबों
को गिराएँ
और सीधी चाल चलनेवालों को मार
डालें।
15 मगर उनकी तलवार उन्हीं का दिल
चीर देगी,[8]
उनकी कमान तोड़ दी जाएगी।

ט [*टेथ*]

16 एक नेक इंसान के पास जो थोड़ा है,
वह कई दुष्टों की कुल संपत्ति से
बढ़कर है।[9]
17 क्योंकि दुष्टों के हाथ तोड़ दिए
जाएँगे,
मगर नेक जन को यहोवा थाम
लेगा।

अध्य. 37

1 भज 25:12, 13; भज 37:29; मत 5:5; 2पत 2:9
2 अय 24:24
3 1शम 25:39; भज 52:4, 5
4 यश 45:18; मत 5:5; प्रक 21:3
5 भज 72:7; भज 119:165; यश 48:18
6 1शम 18:21, 25
7 1शम 26:9, 10
8 2शम 17:23; एस 7:10; भज 7:15
9 नीत 16:8; नीत 30:8, 9; 1ती 6:6

दूसरा कॉल.

1 भज 16:11
2 नीत 10:7
3 व्य 15:11; अय 31:16, 22; भज 112:9; नीत 19:17
4 भज 37:9
5 नीत 11:20
6 नीत 16:9
7 भज 34:19; नीत 24:16
8 भज 91:11, 12

י [*योध*]

18 यहोवा जानता है कि निर्दोष लोग
किन हालात से गुज़रते हैं,*
उनकी विरासत हमेशा तक बनी
रहेगी।[1]
19 संकट के समय उन्हें शर्मिंदा नहीं
किया जाएगा,
अकाल के समय उनके पास भरपूर
खाना होगा।

כ [*काफ*]

20 मगर दुष्ट मिट जाएँगे,[2]
यहोवा के दुश्मन चरागाह की
खूबसूरत हरियाली की तरह
और धुएँ की तरह गायब हो
जाएँगे।

ל [*लामेध*]

21 दुष्ट उधार लेता है पर लौटाता
नहीं,
मगर नेक जन दरियादिल होता है*
और उदारता से देता है।[3]
22 परमेश्वर जिन्हें आशीष देता है वे
धरती के वारिस होंगे,
मगर वह जिन्हें शाप देता है वे नाश
कर दिए जाएँगे।[4]

מ [*मेम*]

23 जब यहोवा एक आदमी के चाल-
चलन से खुश होता है,[5]
तो उसके कदमों को राह
दिखाता है।*[6]
24 चाहे उसे ठोकर लगे, तो भी वह
चित नहीं होगा,[7]
क्योंकि यहोवा हाथ से* उसे थामे
रहता है।[8]

37:18 *शा., "यहोवा निर्दोष लोगों के दिन जानता है।" **37:21** *या "कृपा करता है।" **37:23** *या "मज़बूत करता है।" **37:24** *या "अपने हाथ से।"

נ [नून]

25 अपनी जवानी से लेकर बुढ़ापे तक
न तो मैंने कभी किसी नेक इंसान
को त्यागा हुआ,[1]
न ही उसकी औलाद को रोटी* के
लिए भीख माँगते हुए देखा।[2]
26 नेक जन हमेशा खुले हाथ उधार
देता है,[3]
उसके बच्चों को आशीषें मिलनी
तय हैं।

ס [सामेख]

27 तू बुराई छोड़ दे और भले
काम कर,[4]
तब तू सदा बना रहेगा।
28 क्योंकि यहोवा न्याय से प्यार
करता है,
वह अपने वफादार सेवकों को कभी
नहीं त्यागेगा।[5]

ע [ऐयिन]

वह हमेशा उनकी हिफाज़त
करेगा,[6]
मगर दुष्ट के वंशज मिटा दिए
जाएँगे।[7]
29 नेक लोग धरती के वारिस होंगे[8]
और उस पर हमेशा की ज़िंदगी
जीएँगे।[9]

פ [पे]

30 नेक इंसान का मुँह बुद्धि की बातें
सिखाता है,*
उसकी ज़बान न्याय की बातें
करती है।[10]
31 उसके परमेश्वर का कानून उसके
दिल में बसा है,[11]
उसके कदम कभी नहीं
डगमगाएँगे।[12]

37:25 *या "खाने।" 37:30 *या "मुँह धीमी आवाज़ में बुद्धि की बातें करता है।"

अध्य. 37

1 भज 94:14 मत 6:33 इब्र 13:5
2 व्य 24:19 भज 145:15 नीत 10:3
3 व्य 15:7, 8 भज 112:5
4 भज 34:14 यश 1:17
5 2शम 22:26
6 भज 97:10 नीत 2:7, 8
7 नीत 2:22
8 व्य 30:20 भज 37:9 नीत 2:21 मत 5:5
9 मत 25:46 प्रक 21:3, 4
10 मत 12:35 इफ 4:29 कुल 4:6
11 व्य 6:6 भज 40:8
12 भज 121:3

दूसरा कॉल.

1 2पत 2:9
2 भज 109:31
3 भज 37:22
4 भज 52:5, 6
5 एस 5:11 अय 21:7
6 निर्ग 15:9, 10
7 भज 37:10
8 अय 1:1
9 अय 42:12, 16
10 भज 1:4 नीत 10:7 2पत 2:9
11 यश 12:2
12 भज 9:9 यश 33:2

צ [सादे]

32 दुष्ट, नेक जन पर नज़र रखता है,
उसे मार डालने की फिराक में
रहता है।
33 मगर यहोवा नेक जन को दुष्ट के
हाथ में नहीं छोड़ेगा,[1]
न ही मुकदमे में उसे दोषी
ठहराएगा।[2]

ק [कोफ]

34 यहोवा पर आशा रख और उसकी
राह पर चल,
वह तुझे ऊँचा उठाकर धरती का
वारिस बना देगा।
जब दुष्टों का नाश किया जाएगा,[3]
तब तू देखेगा।[4]

ר [रेश]

35 मैंने एक बेरहम और दुष्ट आदमी
को देखा,
वह उस पेड़ की तरह फल-फूल रहा
था जो अपनी मिट्टी में लगा है।[5]
36 मगर अचानक वह मर गया और
मिट गया,[6]
मैं उसे ढूँढ़ता रहा, मगर वह कहीं
नहीं मिला।[7]

ש [शीन]

37 निर्दोष इंसान* को ध्यान से देख,
सीधे-सच्चे इंसान[8] पर गौर कर,
क्योंकि भविष्य में वह चैन की
ज़िंदगी जीएगा।[9]
38 मगर सभी अपराधी नाश किए
जाएँगे,
दुष्टों का कोई भविष्य नहीं होगा।[10]

ת [ताव]

39 नेक लोगों का उद्धार यहोवा की
ओर से होगा,[11]
मुसीबत की घड़ी में वह उनका
किला होगा।[12]

37:37 *या "निर्दोष चाल चलनेवाले।"

40 यहोवा उन्हें मदद देगा और
छुड़ाएगा।[1]
वह दुष्ट के हाथ से उन्हें छुड़ाएगा
और बचाएगा,
क्योंकि वे उसकी पनाह लेते हैं।[2]

यादगार के लिए दाविद का सुरीला गीत।

38 हे यहोवा, तू गुस्से में आकर
मुझे न फटकार,
न ही क्रोध से भरकर मुझे सुधार।[3]
2 तेरे तीरों ने मुझे अंदर तक भेद
दिया है,
तेरा हाथ मुझ पर भारी है।[4]
3 तेरे क्रोध की वजह से मेरा सारा
शरीर रोगी है।*
मेरे पाप की वजह से मेरी हड्डियों में
चैन नहीं।[5]
4 क्योंकि मेरे गुनाहों का ढेर मेरे सिर
से भी ऊँचा हो गया है,[6]
इतना भारी बोझ कि मुझसे सहा
नहीं जाता।
5 मेरी मूर्खता के कारण मेरे घाव सड़
गए हैं,
उनसे बदबू आती है।
6 मैं टूट चुका हूँ, यह दर्द बरदाश्त से
बाहर है,
मैं सारा दिन मायूसी में डूबा
रहता हूँ।
7 मेरे अंदर मानो आग लगी है,*
मेरा सारा शरीर रोगी है।[7]
8 मैं सुन्न हो गया हूँ, बिलकुल चूर हो
गया हूँ,
मन की बेचैनी के मारे ज़ोर-ज़ोर से
कराहता रहता हूँ।
9 हे यहोवा, तू मेरी सारी इच्छाएँ
जानता है,
मेरा आहें भरना तुझसे छिपा
नहीं है।
10 मेरी धड़कन तेज़ है, ताकत जवाब
दे गयी है,
आँखों की रौशनी चली गयी है।[1]
11 मुझे ज़ख्मों से भरा देखकर मेरे
दोस्त और साथी मुझसे किनारा
कर लेते हैं,
जो कभी मेरे करीब थे वे अब मुझसे
दूर रहते हैं।
12 मेरे जानी दुश्मन मेरे लिए फंदे
बिछाते हैं,
मेरा बुरा चाहनेवाले मुझे बरबाद
करने की बातें करते हैं,[2]
वे दिन-भर मुझे छलने की तरकीबें
बुनते रहते हैं।
13 मैं उनकी बातें अनसुनी कर देता हूँ
मानो बधिर हूँ,[3]
मैं कुछ नहीं बोलता मानो गूँगा हूँ।[4]
14 मैं ऐसे आदमी की तरह हो गया हूँ
जो सुन नहीं सकता,
न ही अपनी सफाई में कुछ कह
सकता है।
15 क्योंकि हे यहोवा, मैंने तेरा इंतज़ार
किया[5]
और हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, तूने
मेरी सुन ली।[6]
16 मैंने कहा था, "अगर मेरा पैर
फिसल जाए
तो वे मुझ पर न हँसें या घमंड से न
फूलें।"
17 क्योंकि मैं बस गिरने ही वाला था
और हर वक्त दर्द से तड़प
रहा था।[7]
18 मैंने अपना गुनाह कबूल कर
लिया,[8]
पाप की वजह से मेरा मन
बेचैन था।[9]

38:3 *शा., "मेरे शरीर का कोई भी हिस्सा स्वस्थ नहीं है।" 38:7 *शा., "मेरी पूरी कमर जल रही है।"

अध्य. 37
1 यश 46:4; 1कुर 10:13
2 भज 22:4; दान 3:17; दान 6:23

अध्य. 38
3 यिर्म 10:24
4 भज 32:4
5 भज 6:2; भज 41:4; भज 51:8
6 एज 9:6; भज 40:12
7 भज 38:3

दूसरा कॉल.
1 भज 6:7
2 2शम 16:7; भज 62:4
3 2शम 16:11
4 भज 39:2, 9
5 2शम 16:12; भज 123:2
6 भज 138:3
7 भज 77:2
8 भज 32:5
9 भज 51:3

19 मगर मेरे दुश्मन फुर्तीले और
ताकतवर हैं,*
मुझसे बेवजह नफरत करनेवाले बे-
शुमार हो गए हैं।
20 उन्होंने मेरी अच्छाई का सिला बुराई
से दिया,
वे मेरा विरोध करते रहे क्योंकि
मैं भले काम करने का जतन
करता था।
21 हे यहोवा, मुझे छोड़ न देना।
हे परमेश्वर, मुझसे दूर न रहना।[1]
22 हे यहोवा, मेरे उद्धारकर्ता,[2]
मेरी मदद के लिए जल्दी आना।

दाविद का सुरीला गीत।
निर्देशक के लिए हिदायतः यदूतून*[3] का।

39 मैंने कहा, "मैं बहुत सावधानी
बरतूँगा
ताकि अपनी जीभ से पाप न कर
बैठूँ।[4]
जब तक कोई दुष्ट मेरे सामने रहेगा
तब तक मैं अपने मुँह पर मुसका*
बाँधे रहूँगा।"[5]
2 मैं गूँगा हो गया, कुछ नहीं बोला,[6]
अच्छी बातें कहने के लिए भी मैंने
मुँह नहीं खोला,
मगर मेरा दर्द सहन से बाहर था।*
3 मेरा दिल सुलगने लगा,
मैं गहराई से सोचता रहा* और
आग जलती रही।
फिर मैं बोल उठा,
4 "हे यहोवा, मुझे बता कि मेरा अंत
कब होगा,
मेरे और कितने दिन रह गए हैं[1]
ताकि मैं जानूँ कि मेरी ज़िंदगी
कितनी छोटी है।*
5 वाकई, तूने मुझे पल-भर की
ज़िंदगी दी है,*[2]
मेरा जीवनकाल तेरे सामने कुछ भी
नहीं।[3]
सच, हर इंसान बस एक साँस है,
फिर चाहे वह कितना ही
सुरक्षित क्यों न दिखायी पड़े।[4]
(*सेला*)
6 सच, हर इंसान एक परछाईं
जैसा है।
वह बेकार में दौड़-धूप* करता है।
दौलत का अंबार लगाता है, मगर
नहीं जानता कि कौन उसका मज़ा
लेगा।[5]
7 इसलिए हे यहोवा, मैं किस पर
आशा रखूँ?
तू ही मेरी आशा है।
8 मुझे मेरे सब अपराधों से छुड़ा ले।[6]
मूर्खों को मेरी खिल्ली उड़ाने का
मौका न दे।
9 मैं खामोश ही रहा, मैंने अपना मुँह
नहीं खोला[7]
क्योंकि यह तूने किया है।[8]
10 तूने मुझ पर जो कहर ढाया, उसे
हटा दे।
मैं तेरे हाथ की मार सहते-सहते
पस्त हो गया हूँ।
11 तू आदमी को उसके किए की सज़ा
देकर सुधारता है,[9]
वह जिन चीज़ों को खज़ाने की तरह
सँभालकर रखता है,

अध्य. 38
1 भज 22:11, भज 35:22
2 भज 27:1, भज 62:2, यश 12:2

अध्य. 39
3 1इत 16:41, 1इत 25:1
4 नीत 18:21
5 भज 141:3
6 भज 38:13, मत 27:12, 1पत 2:23

दूसरा कॉल.
1 भज 90:12
2 भज 90:9, याकू 4:14
3 भज 90:4
4 भज 62:9, भज 144:4
5 भज 49:10, सभ 2:18, 19, सभ 4:8, लूक 12:19, 20
6 भज 25:11, मी 7:19
7 अय 40:4, भज 38:13
8 2शम 16:10
9 भज 90:8

38:19 *या शायद, "मगर मुझसे बेवजह दुश्मनी करनेवाले बहुत हैं।" **39:उप** *शब्दावली देखें। **39:1** *यानी जानवरों के मुँह पर बाँधी जानेवाली जाली। **39:2** *या "बढ़ गया।" **39:3** *या "मैं आहें भरता रहा।"

39:4 *या "कि मैं पल-भर का हूँ।" **39:5** *शा., "तूने मेरे दिन बित्ते-भर बनाए हैं।" **39:6** *शा., "शोर।"

उन्हें तू मिटा देता है जैसे कपड़-
कीड़ा कपड़ा चट कर जाता है।
सच, हर इंसान बस एक साँस है।[1]
(*सेला*)
12 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन,
मेरी मदद की पुकार पर ध्यान दे।[2]
मेरे आँसुओं को अनदेखा न कर।
क्योंकि मैं तेरी नज़र में बस एक
परदेसी हूँ,[3]
एक मुसाफिर,* जैसे मेरे सभी
बाप-दादे थे।[4]
13 अपनी क्रोध-भरी नज़रें मुझसे फेर
ले ताकि मेरी खुशी लौट आए,
इससे पहले कि मैं मरकर मिट
जाऊँ।"

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

40 मैंने दिल से यहोवा पर आस
लगायी*
और उसने मेरी प्रार्थना पर कान
लगाया,# मेरी दुहाई सुनी।[5]
2 उसने मुझे गहरी खाई से ऊपर खींच
लिया,
जहाँ पानी की तेज़ गड़गड़ाहट थी,
मुझे दलदल से बाहर निकाला
और एक चट्टान पर खड़ा किया,
उसने मेरे पैरों को मज़बूती से
टिकाया।
3 फिर उसने मेरी ज़बान पर एक नए
गीत के बोल डाले,[6]
हमारे परमेश्वर की तारीफ का
गीत।
यह सब देखकर लोग श्रद्धा से भर
जाएँगे
और यहोवा पर भरोसा रखेंगे।
4 सुखी है वह इंसान जो यहोवा पर
भरोसा रखता है
और उन पर आस नहीं लगाता जो
गुस्ताख और झूठे हैं।
5 हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, तूने हमारी
खातिर
कितने आश्चर्य के कामों और मक-
सदों को अंजाम दिया है।[1]
तेरा कोई सानी नहीं।[2]
अगर मैं उनका बखान करना चाहूँ,
तो वे इतने बेशुमार हैं कि उनका
बखान करना नामुमकिन होगा![3]
6 तूने बलिदान और चढ़ावा नहीं
चाहा,*[4]
मगर तूने मेरे कान खोल दिए ताकि
मैं सुनूँ।[5]
तूने न होम-बलियाँ माँगीं, न पाप-
बलियाँ।[6]
7 तब मैंने कहा, "देख, मैं आया हूँ।
खर्रे* में मेरे बारे में लिखा है।[7]
8 हे मेरे परमेश्वर, तेरी मरज़ी पूरी
करने में ही मेरी खुशी है,*[8]
तेरा कानून मेरे दिल की गहराई में
बसा है।[9]
9 मैं तेरी नेकी की खुशखबरी बड़ी
मंडली में सुनाता हूँ।[10]
देख! मैं इस बारे में बोलने से खुद
को रोकता नहीं,[11]
हे यहोवा, तू यह अच्छी तरह
जानता है।
10 मैं तेरी नेकी की बातें अपने दिल में
दबाकर नहीं रखता,
मैं तेरी वफादारी का और तेरी
तरफ से मिलनेवाले उद्धार का
ऐलान करता हूँ।

अध्य. 39
1 भज 39:5; भज 102:11
2 भज 28:1
3 लैव 25:23; 1इत 29:15
4 इब्र 11:13

अध्य. 40
5 भज 34:15
6 भज 33:3; भज 98:1

दूसरा कॉल.
1 प्रक 15:3
2 निर्ग 15:11
3 भज 139:17, 18
4 1शम 15:22; भज 51:16, 17; हो 6:6
5 यश 50:5
6 इब्र 10:5-9
7 लूक 24:44
8 यूह 4:34
9 भज 37:31; रोम 7:22
10 भज 22:22
11 इब्र 13:15

39:12 *या "एक प्रवासी।" **40:1** *या "मैंने सब्र से यहोवा का इंतज़ार किया।" #या "वह मेरी प्रार्थना सुनने के लिए झुका।"

40:6 *या "तू चढ़ावे से खुश नहीं हुआ।" **40:7** *शा., "किताब के खर्रे।" **40:8** *या "पूरी करना ही मेरी इच्छा है।"

मैं तेरा अटल प्यार और तेरी
सच्चाई बड़ी मंडली से नहीं
छिपाता।”[1]
11 हे यहोवा, मुझ पर दया करने से
पीछे न हट।
तेरा अटल प्यार और तेरी
सच्चाई हरदम मेरी हिफाज़त
करती रहे।[2]
12 मुझे इतनी विपत्तियों ने आ घेरा है
कि उनका कोई हिसाब नहीं,[3]
मेरे गुनाह इतने हैं कि मैं देख नहीं
सकता कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।[4]
उनकी गिनती मेरे सिर के बालों से
कहीं ज़्यादा है,
अब मैं हिम्मत हार चुका हूँ।
13 हे यहोवा, मुझ पर दया कर, मुझे
बचा ले,[5]
हे यहोवा, मेरी मदद के लिए
जल्दी आ।[6]
14 जितने लोग मेरी जान के पीछे
पड़े हैं,
वे सब शर्मिंदा और अपमानित किए
जाएँ।
जो मुझे संकटों से घिरा देखकर
मज़ा लेते हैं,
वे बेइज़्ज़त होकर भाग जाएँ।
15 जो मुझ पर हँसते और कहते हैं,
“अच्छा हुआ! अच्छा हुआ!”
वे खुद शर्मिंदा हो जाएँ और
अपनी हालत पर हक्के-बक्के रह
जाएँ।
16 मगर जो तेरी खोज करते हैं[7]
वे तेरे कारण मगन हों और आनंद
मनाएँ,[8]
उद्धार के लिए तुझ पर आस
लगानेवाले हमेशा कहें,
“यहोवा की महिमा हो।”[9]

अध्य. 40
1 इब्र 2:12
2 भज 61:6, 7
3 भज 71:20
4 भज 38:4
5 भज 25:17
6 भज 38:22; भज 70:1-5
7 व्य 4:29
8 भज 13:5
9 भज 35:27

दूसरा कॉल.
1 भज 54:4; यश 50:7; इब्र 13:6
2 भज 143:7

अध्य. 41
3 व्य 15:7, 8; भज 112:9; नीत 14:21; नीत 22:9
4 मत 5:7
5 2पत 2:9
6 2रा 20:5; भज 103:3
7 भज 32:5; भज 38:3; नीत 28:13
8 भज 51:1
9 भज 6:2; भज 147:3

17 हे यहोवा, मुझ पर ध्यान दे,
मैं बेसहारा और गरीब हूँ।
तू ही मेरा मददगार और छुड़ाने-
वाला है।[1]
हे मेरे परमेश्वर, तू देर न कर।[2]

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

41 सुखी है वह इंसान जो
दीन-दुखियों का लिहाज़
करता है,[3]
यहोवा उसे संकट के दिन छुड़ाएगा।
2 यहोवा उसकी हिफाज़त करेगा और
उसकी जान सलामत रखेगा।
उसे धरती पर सुखी इंसान माना
जाएगा,[4]
परमेश्वर उसे कभी उसके दुश्मनों
की मरज़ी* पर नहीं छोड़ेगा।[5]
3 जब वह बिस्तर पर बीमार पड़ा
होगा तब यहोवा उसे सँभालेगा,[6]
बीमारी के दिनों में परमेश्वर उसकी
देखभाल करेगा।
4 मैंने कहा था, “हे यहोवा, मैंने तेरे
खिलाफ पाप किया है।[7]
मुझ पर कृपा कर,[8] मेरी बीमारी
दूर कर दे।”[9]
5 मगर दुश्मन मेरे बारे में बुरी बातें
करते हैं,
“यह कब मरेगा? इसका नाम कब
मिटेगा?”
6 जब उनमें से कोई मुझे देखने आता
है, तो वह झूठ बोलने के इरादे से
आता है।
वह मेरी बुराई करने के लिए
कुछ-न-कुछ ढूँढ़ लेता है,
फिर जाकर उसे दूर-दूर तक फैला
देता है।

41:2 *या “इच्छा।”

7 मुझसे नफरत करनेवाले सभी
आपस में फुसफुसाते हैं,
मेरे खिलाफ साज़िश रचते हैं।
8 वे कहते हैं, "उसे कोई खतरनाक
बीमारी लग गयी है,
वह गिर गया है, अब कभी नहीं
उठ पाएगा।"[1]
9 मेरा जिगरी दोस्त भी, जिस पर मैं
भरोसा करता था,[2]
जो मेरी रोटी खाया करता था,
मेरे खिलाफ हो गया है।*[3]
10 मगर हे यहोवा, तू मुझ
पर कृपा कर और मुझे
ऊपर उठा
ताकि मैं उन्हें उनके किए की सज़ा
दे सकूँ।
11 जब मेरे दुश्मन मुझसे जीत नहीं
पाएँगे,[1]
तो मैं जान जाऊँगा कि तू मुझसे
खुश है।
12 मेरे निर्दोष चालचलन की वजह से
तू मुझे ऊँचा उठाता है,[2]
तू मुझे अपनी नज़रों के सामने सदा
बनाए रखेगा।[3]
13 इसराएल के परमेश्वर यहोवा
की युग-युग तक* तारीफ
होती रहे।[4]
आमीन, आमीन।

41:9 *शा., "मेरे खिलाफ एड़ी उठाए है।"

41:13 *या "हमेशा से हमेशा तक।"

अध्या. 41
1 भज 3:2; भज 71:10, 11
2 2शम 15:12; अय 19:19; भज 55:12, 13
3 मर 14:18; यूह 13:18; यूह 13:26

दूसरा कॉल.
1 भज 31:8; यिर्म 20:13
2 भज 25:21; नीत 2:7
3 भज 34:15
4 1इत 16:36; 1इत 29:10

दूसरी किताब
(भजन 42-72)

कोरह[1] के वंशजों का मश्कील।*
निर्देशक के लिए हिदायत।

42 जैसे एक हिरन पानी के लिए
तरसता है,
वैसे ही हे परमेश्वर, मैं तेरे लिए
तरसता हूँ।
2 मेरा मन परमेश्वर का, जीवित पर-
मेश्वर का प्यासा है।[2]
जाने वह दिन कब आएगा जब मैं
परमेश्वर के सामने जा पाऊँगा।[3]
3 दिन-रात मेरे आँसू ही मेरा खाना हैं,
सारा दिन लोग मुझे ताने मारते हैं:
"कहाँ गया तेरा परमेश्वर?"[4]
4 मैं ये सब याद करता हूँ, अपने
दिल की सारी बातें बताता हूँ,*
वह भी क्या दिन थे जब मैं उमड़ती
भीड़ के साथ चलता था,
उसके आगे-आगे पूरी गंभीरता से*
चलता हुआ परमेश्वर के भवन
की तरफ बढ़ता था,
हाँ, वह भीड़ जो कदरदानी के गीत
गाती हुई,
जयजयकार करती हुई त्योहार
मनाती थी।[1]
5 मेरे मन, तू क्यों इतना उदास है?[2]
तेरे अंदर यह तूफान क्यों मचा है?
परमेश्वर का इंतज़ार कर,[3]
क्योंकि मैं उसकी तारीफ करता
रहूँगा
कि वह मेरा महान उद्धारकर्ता है।[4]
6 मेरे परमेश्वर, मेरा मन बहुत
उदास है।[5]
इसीलिए मैं यरदन के इलाके से,
हेरमोन की चोटियों से,

42:उप *शब्दावली देखें। 42:4 *शा., "अपनी जान उँडेलता हूँ।"

42:4 *या "धीरे-धीरे।"

अध्या. 42
1 2इत 20:19
2 भज 63:1
3 भज 27:4; भज 84:2
4 भज 3:2; भज 42:10; भज 79:10

दूसरा कॉल.
1 व्य 16:14, 16; 2इत 30:23, 24
2 भज 55:4; मर 14:34
3 भज 37:7; विल 3:24; मी 7:7
4 भज 43:5
5 भज 22:1; यूह 12:27

मिसार पहाड़* से तुझे याद
करता हूँ।[1]
7 तेरे झरने की ज़ोरदार झरझर पर
गहरा सागर गहरे सागर को
आवाज़ लगाता है।
मैं तेरी उफनती लहरों में डूब
गया हूँ।[2]
8 दिन में यहोवा मुझ पर अटल प्यार
ज़ाहिर करेगा,
रात को उसका गीत मेरे होंठों पर
होगा,
मैं अपने परमेश्वर से प्रार्थना करूँगा
जो मुझे जीवन देता है।[3]
9 मैं परमेश्वर से, अपनी बड़ी चट्टान
से कहूँगा,
"तूने मुझे क्यों भुला दिया है?[4]
दुश्मन के ज़ुल्मों की वजह से मुझे
क्यों सारा वक्त उदास रहना
पड़ता है?"[5]
10 दुश्मन मेरे खून के प्यासे हैं,* मुझे
ताना मारते हैं,
सारा दिन मुझे ताना मारते हैं,
"कहाँ गया तेरा परमेश्वर?"[6]
11 मेरे मन, तू क्यों इतना उदास है?
तेरे अंदर यह तूफान क्यों मचा है?
परमेश्वर का इंतज़ार कर,[7]
क्योंकि मैं उसकी तारीफ करता
रहूँगा
कि वह मेरा महान उद्धारकर्ता और
मेरा परमेश्वर है।[8]

43 हे परमेश्वर, मेरा न्याय कर,[9]
विश्वासघाती राष्ट्र से मेरा
मुकदमा लड़।[10]
धोखेबाज़ और अन्याय करनेवाले
आदमी से मुझे छुड़ा।

2 क्योंकि तू ही मेरा परमेश्वर है, मेरा
किला है।[1]
तूने क्यों मुझे अपने सामने से दूर
कर दिया है?
दुश्मन के ज़ुल्मों की वजह से मुझे
क्यों सारा वक्त उदास रहना
पड़ता है?[2]
3 अपनी रौशनी और सच्चाई
मुझे दे।[3]
वे मुझे राह दिखाएँ,[4]
तेरे पवित्र पहाड़ और तेरे महान डेरे
के पास ले जाएँ।[5]
4 तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास
जाऊँगा,[6]
अपने परमेश्वर के पास, जो मुझे
बहुत खुशी देता है।
हे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, मैं
सुरमंडल[7] बजाकर तेरी तारीफ
करूँगा।
5 मेरे मन, तू क्यों इतना उदास है?
तेरे अंदर यह तूफान क्यों मचा है?
परमेश्वर का इंतज़ार कर,[8]
क्योंकि मैं उसकी तारीफ करता
रहूँगा
कि वह मेरा महान उद्धारकर्ता और
मेरा परमेश्वर है।[9]

कोरह के वंशजों[10] की रचना।
निर्देशक के लिए हिदायत। मश्कील।*

44 हे परमेश्वर, हमारे कानों ने तेरे
बारे में सुना है,
तेरे कामों का ब्यौरा पुरखों की
ज़बानी सुना है,[11]
जो तूने उनके दिनों में किए थे,
हाँ, मुद्दतों पहले किए थे।
2 अपने हाथ से तूने दूसरी जातियों
को भगाया[12]

अध्य. 42
1 यो 2:7
2 भज 88:7
3 भज 27:1
4 भज 13:1
5 भज 38:6; भज 43:2
6 भज 3:2; भज 42:3; भज 79:10
7 भज 37:7
8 भज 42:5; भज 43:5

अध्य. 43
9 भज 26:1; भज 35:24
10 भज 35:1; नीत 22:22, 23

दूसरा कॉल.
1 भज 28:7; भज 140:7
2 भज 42:9
3 भज 40:11; नीत 6:23
4 भज 5:8; भज 27:11; भज 143:10
5 1इत 16:1; भज 78:68, 69
6 भज 84:3
7 2शम 6:5
8 भज 37:7
9 भज 42:5, 11

अध्य. 44
10 2इत 20:19
11 निर्ग 13:14; गि 21:14; न्या 6:13
12 व्य 7:1

42:6 *या "छोटे पहाड़।" **42:10** *या शायद, "मानो मेरी हड्डियाँ चूर-चूर करते हों।"

44:उप *शब्दावली देखें।

और उनके देश में हमारे पुरखों को
बसाया।[1]
तूने जातियों को कुचल दिया, उन्हें
खदेड़ दिया।[2]
3 हमारे पुरखों ने अपनी तलवार के
दम पर देश पर अधिकार नहीं
पाया,[3]
न ही अपने बलबूते जीत
हासिल की।[4]
यह इसलिए हुआ क्योंकि तूने अपने
दाएँ हाथ की शक्ति दिखायी,[5]
तेरे मुख का प्रकाश उन पर चमका,
तू उनसे खुश था।[6]
4 हे परमेश्वर, तू मेरा राजा है,[7]
आज्ञा दे कि याकूब को पूरी जीत
मिले।*
5 तेरी ताकत से हम अपने बैरियों को
भगा देंगे,[8]
तेरे नाम से अपने विरोधियों को
रौंद डालेंगे।[9]
6 क्योंकि मैं अपनी कमान पर भरोसा
नहीं रखता,
मेरी तलवार मुझे नहीं बचा
सकती।[10]
7 हमारे बैरियों से तूने ही हमें
बचाया,[11]
हमसे नफरत करनेवालों को तूने
नीचा दिखाया।
8 दिन-भर हम परमेश्वर की तारीफ
करेंगे,
सदा तेरे नाम की तारीफ करेंगे।
(*सेला*)
9 मगर अब तूने हमें त्याग दिया,
हमें नीचा दिखाया,
तू हमारी सेनाओं के साथ नहीं
आता।

44:4 *या “याकूब को शानदार उद्धार दिला।”

अध्य. 44
1 निर्ग 15:17 भज 78:55 भज 80:8, 9
2 यह 10:5, 11 भज 135:10, 11
3 व्य 4:38 यह 24:12
4 1शम 12:22
5 यश 63:11-13
6 व्य 7:7, 8
7 भज 74:12 यश 33:22
8 भज 18:39 फिल 4:13
9 भज 60:12
10 1शम 17:45 भज 20:7 भज 33:16
11 यह 24:8

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:15, 25
2 व्य 28:64
3 व्य 32:30
4 व्य 28:37 2इत 7:20
5 निर्ग 34:10

10 तू हमें दुश्मन को पीठ
दिखाकर भागने पर मजबूर
करता है,[1]
हमसे नफरत करनेवाले जो चाहे
हमसे लूट लेते हैं।
11 तूने हमें दुश्मनों के हवाले कर दिया
कि वे हमें भेड़ों की तरह खा
जाएँ,
तूने हमें दूसरे देशों में तितर-बितर
कर दिया।[2]
12 तू अपने लोगों को बिना दाम बेच
देता है[3]
तू उनको बेचकर* कोई मुनाफा
नहीं कमाता।
13 तूने हमें पड़ोसियों के बीच बदनाम
होने दिया,
आस-पास के सब लोग हमारा
मज़ाक बनाते हैं, हमारी खिल्ली
उड़ाते हैं।
14 तूने हमें राष्ट्रों के सामने तमाशा*
बना दिया है,[4]
देश-देश के लोग सिर हिलाकर हम
पर हँसते हैं।
15 सारा दिन मुझे बेइज़्ज़त किया
जाता है,
अब मुझसे यह अपमान सहा नहीं
जाता,
16 क्योंकि दुश्मन मुझसे बदला लेते हैं,
मुझे ताने मारते हैं, बेइज़्ज़त
करते हैं।
17 इतना कुछ होने पर भी हम तुझे
नहीं भूले,
न ही हमने तेरा करार तोड़ा है।[5]
18 हमारा मन बहककर तुझसे दूर नहीं
गया,

44:12 *या “उनकी कीमत से।” **44:14** *शा., “कहावत।”

न ही हमारे कदम तेरी राह से
भटके।
19 मगर तूने हमें वहाँ कुचल दिया जहाँ
गीदड़ रहते हैं,
तूने घोर अंधकार से हमें ढक
दिया।
20 अगर हम अपने परमेश्वर का नाम
भुला दें,
या किसी पराए देवता के सामने
हाथ फैलाकर दुआ करें,
21 तो क्या परमेश्वर को इसका पता
नहीं चल जाएगा?
वह तो दिल का हर राज़
जानता है।[1]
22 तेरी खातिर हम दिन-भर मौत का
सामना करते हैं,
हमारी हालत उन भेड़ों जैसी है
जिन्हें हलाल किया जाएगा।[2]
23 हे यहोवा, जाग! तू क्यों सो
रहा है?[3]
उठ! हमें सदा के लिए त्याग न दे।[4]
24 तूने क्यों हमसे मुँह फेर लिया है?
हम जो दुख और अत्याचार सहते
हैं, उन्हें तू क्यों भूल गया है?
25 हमें ज़मीन पर पटक दिया गया है,
हम औंधे मुँह पड़े हैं।[5]
26 हमारी मदद के लिए जल्दी उठ![6]
अपने अटल प्यार के कारण हमें
छुड़ा ले।[7]

कोरह के वंशजों[8] की रचना। निर्देशक के लिए हिदायतः "सोसन के फूलों" के मुताबिक। मश्कील।* एक प्यार का गीत।

45 एक मनभावनी बात से मेरे दिल
में उमंग जागी है।
मेरा गीत* एक राजा के
बारे में है।[9]
मेरी ज़बान एक हुनरमंद
नकल-नवीस*[1] की कलम[2]
बन जाए।
2 हे राजा, इंसानों में तेरे जैसा सुंदर-
सजीला और कोई नहीं।
तेरे होंठों से सुहावने बोल
उमड़ते हैं![3]
इसीलिए परमेश्वर ने तुझे सदा के
लिए आशीष दी है।[4]
3 हे वीर योद्धा,[5] अपनी तलवार
कमर पर कस ले,[6]
गौरव और वैभव[7] का लिबास
पहन ले।
4 पूरे वैभव से सवार होकर जीत*
हासिल करता जा,[8]
सच्चाई, नम्रता और नेकी की
खातिर जंग लड़[9]
और तेरा दायाँ हाथ विस्मयकारी
काम करेगा।#
5 तेरे तीर तेज़ हैं, दुश्मनों के दिलों
को भेद देते हैं,[10]
देश-देश के लोग तेरे आगे गिर
पड़ते हैं।[11]
6 परमेश्वर हमेशा-हमेशा के लिए
तेरी राजगद्दी है,[12]
तेरा राजदंड सीधाई* का
राजदंड है।[13]
7 तूने नेकी से प्यार किया[14] और
दुष्टता से नफरत की,[15]
इसीलिए परमेश्वर ने, हाँ, तेरे पर-
मेश्वर ने तेरे साथियों से बढ़कर
हर्ष के तेल से तेरा अभिषेक
किया।[16]
8 तेरा पूरा लिबास गंधरस,

अध्य. 44
1 भज 139:1 सभ 12:14 यिर्म 17:10
2 रोम 8:36
3 भज 7:6 भज 78:65, 66
4 अय 13:24 भज 13:1 भज 88:14
5 भज 119:25
6 भज 33:20
7 भज 130:7

अध्य. 45
8 2इत 20:19
9 भज 2:6

दूसरा कॉल.
1 2शम 23:2 एज 7:6
2 यश 8:1
3 यूह 7:46
4 भज 72:17
5 यश 9:6
6 प्रक 1:16 प्रक 19:15
7 इब्र 1:3
8 प्रक 6:2
9 प्रक 19:11
10 प्रक 17:14 प्रक 19:19
11 भज 2:9 2थि 1:7, 8
12 भज 89:29, 36
13 यश 11:4 यिर्म 33:15 इब्र 1:8, 9
14 इब्र 7:26
15 मत 7:23
16 भज 21:6 यश 61:1 प्रेष 10:38

45:उप *शब्दावली देखें। **45:1** *शा., "मेरी रचनाएँ।"

45:1 *या "शास्त्री।" **45:4** *या "कामयाबी।" #शा., "तुझे विस्मयकारी काम सिखाएगा।" **45:6** *या "न्याय।"

अगर और तज की खुशबू से
महकता है,
हाथी-दाँत से सजे आलीशान महल
का मधुर संगीत तेरे दिल को
बाग-बाग कर देता है।
9 तेरी रुतबेदार औरतों में राजाओं
की बेटियाँ भी हैं,
तेरे दायीं तरफ रानी ओपीर के
सोने के गहनों से सजी खड़ी है।[1]
10 मेरी बेटी सुन, मेरी तरफ कान
लगाना और मेरी बात पर ध्यान
देना,
अपने लोगों और अपने पिता के
घर को भूल जाना।
11 राजा को तेरी खूबसूरती निहारने
की चाह होगी,
वह तेरा मालिक है, इसलिए तू सिर
झुकाकर उसे प्रणाम करना।
12 सोर की बेटी तेरे लिए तोहफा
लेकर आएगी,
बड़े-बड़े रईस तेरी रज़ामंदी पाना
चाहेंगे।
13 महल में राजा की बेटी की आभा
ऐसी है कि निगाहें थम जाएँ।
उसकी पोशाक पर सोने की
कढ़ाई है।
14 वह बुनी हुई शानदार पोशाक*
पहने राजा के पास लायी
जाएगी।
उसके पीछे-पीछे उसकी कुँवारी सहे-
लियाँ भी राजा के पास लायी
जाएँगी।
15 उन्हें खुशियाँ और जश्न मनाते हुए
लाया जाएगा,
वे राजा के महल में कदम रखेंगे।
16 तेरे बेटे तेरे पुरखों की जगह लेंगे।

45:14 *या शायद, "कढ़ाईदार चोगा।"

तू उन्हें सारी धरती पर हाकिम ठह-
राएगा।[1]
17 मैं तेरा नाम पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोगों
को बताता रहूँगा।[2]
इसलिए देश-देश के लोग युग-युग
तक तेरी बड़ाई करते रहेंगे।

कोरह के वंशजों[3] का गीत।
निर्देशक के लिए हिदायतः
अलामोत की शैली* के मुताबिक।

46 परमेश्वर हमारी पनाह और
ताकत है,[4]
बुरे वक्त में आसानी से मिलनेवाली
मदद है।[5]
2 इसलिए हम नहीं डरेंगे, चाहे धरती
उलट-पुलट हो जाए,
चाहे पहाड़ टूटकर समुंदर की गह-
राई में समा जाएँ,[6]
3 चाहे समुंदर गरजे और उछल-
उछलकर फेन उठाए,[7]
चाहे उसकी खलबली से पहाड़ बुरी
तरह डोलें। (*सेला*)
4 एक नदी है जिसकी धाराओं से पर-
मेश्वर का नगर,
परम-प्रधान का महान पवित्र डेरा
खुशी से झूम उठता है।[8]
5 उस नगर में परमेश्वर मौजूद है,[9]
इसलिए उसे ढाया नहीं जा
सकता।
पौ फटते ही परमेश्वर उसकी मदद
करने आएगा।[10]
6 राष्ट्र भड़के हुए थे, राज्य उलट
दिए गए,
परमेश्वर ने आवाज़ बुलंद की और
धरती पिघल गयी।[11]
7 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा हमारे
संग है,[12]

46:उप *शब्दावली देखें।

अध्य. 45
1 यश 13:12

दूसरा कॉल.
1 यश 32:1
2 भज 72:17

अध्य. 46
3 2इत 20:19
4 नीत 14:26; यश 25:4
5 व्य 4:7; भज 145:18, 19; नहू 1:7
6 यश 54:10
7 भज 93:4; यिर्म 5:22
8 2इत 6:6
9 व्य 23:14; भज 132:13; यश 12:6
10 निर्ग 14:24
11 यह 2:24
12 यह 1:9; यिर्म 1:19; रोम 8:31

याकूब का परमेश्‍वर हमारा ऊँचा
गढ़ है। (*सेला*)
8 आओ, अपनी आँखों से यहोवा के
काम देखो,
धरती पर उसने कैसे-कैसे आश्‍चर्य
के काम किए हैं।
9 धरती के कोने-कोने से वह युद्धों को
मिटा देता है।[1]
तीर-कमान तोड़ डालता है, भाले
चूर-चूर कर देता है,
युद्ध-रथों* को आग में भस्म कर
देता है।
10 उसने कहा, "हार मान लो और
जान लो कि मैं ही परमेश्‍वर हूँ।
राष्ट्रों में मेरी बड़ाई की जाएगी,[2]
सारी धरती पर मेरी बड़ाई की
जाएगी।"[3]
11 सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा हमारे
संग है,[4]
याकूब का परमेश्‍वर हमारा ऊँचा
गढ़ है।[5] (*सेला*)

कोरह के वंशजों[6] का सुरीला गीत।
निर्देशक के लिए हिदायत।

47 देश-देश के लोगो, तुम सब
तालियाँ बजाओ।
जीत का जश्‍न मनाओ और खुशी
से परमेश्‍वर की जयजयकार
करो।
2 क्योंकि परम-प्रधान यहोवा विस्मय-
कारी परमेश्‍वर है,[7]
सारी धरती का वह महाराजा है।[8]
3 वह देश-देश के लोगों को हमारे
अधीन कर देता है,
राष्ट्रों को हमारे पैरों तले कर
देता है।[9]
4 वह हमारे लिए विरासत
चुनता है,[10]
वह देश जिस पर उसके प्यारे
याकूब को बहुत गर्व है।[1] (*सेला*)
5 जब परमेश्‍वर की खुशी से जयजय-
कार हो रही थी तब वह ऊपर
चढ़ा,
जब नरसिंगे* की आवाज़
गूँज रही थी तब यहोवा ऊपर
चढ़ा।
6 परमेश्‍वर की तारीफ में गीत
गाओ,* उसकी तारीफ में गीत
गाओ।
हमारे राजा की तारीफ में गीत
गाओ, उसकी तारीफ में गीत
गाओ।
7 क्योंकि परमेश्‍वर पूरी धरती का
राजा है,[2]
उसकी तारीफ में गीत गाओ
और अंदरूनी समझ से काम लो।
8 परमेश्‍वर सब राष्ट्रों का राजा बन
गया है।[3]
वह अपनी पवित्र राजगद्दी पर
बैठा है।
9 देश-देश के लोगों के अगुवे इकट्ठा
हुए हैं,
अब्राहम के परमेश्‍वर की प्रजा के
साथ हो लिए हैं।
क्योंकि धरती के सभी शासक*
परमेश्‍वर के हैं।
वह ऊँचा किया गया है।[4]

कोरह के वंशजों[5] का सुरीला गीत।

48 हमारे परमेश्‍वर के नगर में,
अपने पवित्र पहाड़ पर,
यहोवा महान है, सबसे ज़्यादा
तारीफ के काबिल है।

अध्य. 46
1 यश 11:9, मी 4:3
2 यश 2:11
3 1इत 29:11
4 2इत 20:17
5 भज 48:3, भज 125:2

अध्य. 47
6 2इत 20:19
7 भज 76:12
8 भज 22:28
9 व्य 33:29
10 व्य 9:5

दूसरा कॉल.
1 व्य 7:6, मला 1:2
2 यिर्म 10:7, जक 14:9
3 1इत 16:31, भज 96:10, भज 97:1, प्रक 19:6
4 भज 97:9

अध्य. 48
5 2इत 20:19

46:9 *या शायद, "ढालों।"

47:5 *या "मेढ़े के सींग; तुरही।" **47:6** *या "संगीत बजाओ।" **47:9** *शा., "ढालें।"

2 दूर उत्तर में शान से खड़ा सिय्योन
पहाड़ है,
यह महाराजाधिराज का नगर है,[1]
आसमान छूता यह नगर क्या ही
सुंदर है!
सारी धरती के लिए हर्ष का
कारण है।[2]
3 उसकी मज़बूत मीनारों में
परमेश्वर ने ज़ाहिर किया है कि वह
ऊँचा गढ़ है।[3]
4 क्योंकि देखो! राजा इकट्ठा हुए हैं,*
एकजुट होकर आगे बढ़े हैं।
5 वे यह नगर देखकर दंग रह गए।
उनमें खौफ छा जाएगा, मारे डर के
वे भाग गए।
6 वहाँ वे थर-थर काँपने लगे,
बच्चा जनती औरत की तरह तड़प-
ने लगे।
7 पूरब की तेज़ आँधी से तू तरशीश
के जहाज़ों को तहस-नहस कर
देता है।
8 जो हमने सुना था वह अब अपनी
आँखों से देखा है,
सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के
नगर में, हमारे परमेश्वर के नगर
में देखा है।
परमेश्वर इस नगर को सदा तक
मज़बूती से कायम रखेगा।[4]
(*सेला*)
9 हे परमेश्वर, तेरे मंदिर के भीतर
हम तेरे अटल प्यार पर गहराई से
सोचते हैं।[5]
10 हे परमेश्वर, तेरे नाम की तरह
तेरी तारीफ धरती के छोर तक गूँज
रही है।[6]
तेरा दायाँ हाथ नेकी से भरा है।[7]
11 तेरे न्याय-सिद्धांतों के कारण
सिय्योन पहाड़[1] आनंद-मगन हो,
यहूदा के कसबों* में खुशियों की
बहार हो।[2]
12 सिय्योन के चारों तरफ घूम-घूमकर
देखो,
उसकी मीनारों की गिनती करो।[3]
13 उसकी सुरक्षा की ढलानों* पर मन
लगाओ।[4]
उसकी मज़बूत मीनारों को गौर
से देखो
ताकि आनेवाली पीढ़ियों को उसकी
दास्तान सुना सको।
14 क्योंकि यही परमेश्वर हमारे लिए
युग-युग का परमेश्वर है।[5]
सदा तक* वही हमें राह
दिखाएगा।[6]

कोरह के वंशजों[7] का सुरीला गीत।
निर्देशक के लिए हिदायत।

49 देश-देश के लोगो, सुनो।
दुनिया* के सब लोगो,
ध्यान दो,
2 क्या छोटे, क्या बड़े,
क्या अमीर, क्या गरीब, सब गौर से
सुनो।
3 मेरे मुँह से बुद्धि की बातें निकलेंगी,
मेरा दिल समझ की बातों पर मनन
करेगा।[8]
4 मैं एक नीतिवचन पर ध्यान दूँगा,
सुरमंडल बजाकर अपनी पहेली का
मतलब खुलकर समझाऊँगा।
5 जब मैं मुश्किल दौर से गुज़रूँ तो
क्यों घबराऊँ?[9]
जब मैं उन लोगों की बुराई से घिर

48:4 *या "पहले से तय करके मिले हैं।"

48:11 *शा., "बेटियों।" 48:13 *या "मज़बूत शहरपनाह।" 48:14 *या शायद, "हमारी मौत तक।" 49:1 *या "दुनिया की व्यवस्था।"

अध्य. 48
1 भज 47:8; भज 135:21; मत 5:34, 35
2 विल 2:15
3 भज 125:1
4 भज 87:5; यश 2:2; मी 4:1
5 भज 26:3; भज 40:10; भज 63:3
6 भज 113:3
7 भज 17:7; भज 60:5; भज 98:2

दूसरा कॉल.
1 भज 78:68
2 भज 97:8
3 नहे 12:38, 39
4 यश 26:1
5 भज 31:14
6 यश 58:11

अध्य. 49
7 2इत 20:19
8 भज 143:5
9 भज 27:1

जाऊँ जो मुझे गिराना चाहते हैं
तो क्यों डरूँ?
6 जो अपने धन पर भरोसा
रखते हैं,[1]
अपनी दौलत के अंबार पर शेखी
मारते हैं,[2]
7 उनमें से कोई भी अपने भाई को
हरगिज़ नहीं छुड़ा सकता,
न ही उसके लिए परमेश्वर को
फिरौती दे सकता है[3]
8 (उनकी जान की फिरौती* की
कीमत इतनी ज़्यादा है
कि वे उसे कभी नहीं चुका सकते)
9 कि उसका भाई गड्ढे* में जाने से
बचे और हमेशा जीता रहे।[4]
10 वे देखते हैं कि जैसे मूर्ख और ना-
समझ मिट जाते हैं,
वैसे ही अक्लमंद लोग भी मरते हैं[5]
और उन्हें अपनी दौलत दूसरों के
लिए छोड़नी पड़ती है।[6]
11 उनकी दिली तमन्ना है कि उनके घर
हमेशा टिके रहें,
उनके तंबू पीढ़ी-दर-पीढ़ी खड़े रहें।
वे अपनी जायदाद का नाम अपने
नाम पर रखते हैं।
12 मगर इंसान का चाहे कितना ही
मान-सम्मान क्यों न हो, वह
हमेशा जीता न रहेगा,[7]
वह जानवरों से कुछ बढ़कर नहीं
जो मिट जाते हैं।[8]
13 मूर्खों का यही अंजाम होता है[9]
और उनके रंग-ढंग अपनानेवालों
और उनकी खोखली बातों से
मज़ा लेनेवालों का भी यही हश्र
होता है। (*सेला*)

49:8 *या "उन्हें छुड़ाने।" 49:9 *या "कब्र।"

अध्य. 49
1 व्य 8:17, 18; नीत 18:11
2 यिर्म 9:23; 1ती 6:17
3 नीत 11:4; मत 16:26
4 भज 89:48
5 सभ 2:16; रोम 5:12
6 भज 39:6; नीत 11:4; नीत 23:4; सभ 2:18; लूक 12:19, 20
7 भज 39:5; याकू 1:11
8 भज 49:20
9 लूक 12:19, 20

दूसरा कॉल.
1 मला 4:3
2 भज 39:11
3 1शम 2:6; अय 7:9
4 अय 24:19
5 अय 33:28; भज 16:10; भज 30:3; भज 86:13
6 अय 1:21; सभ 5:15; 1ती 6:17
7 यश 10:3
8 लूक 12:19
9 नीत 14:20
10 भज 49:12

अध्य. 50
11 1इत 25:1
12 भज 95:3

14 जैसे भेड़ों को हलाल के लिए भेजा
जाता है, वैसे ही उन्हें कब्र भेज
दिया जाएगा।
मौत उन्हें हाँकती हुई ले जाएगी,
नया सवेरा होने पर सीधे-सच्चे लोग
उन पर राज करेंगे,[1]
उनका नामो-निशान मिट जाएगा,[2]
कोई महल नहीं,[3] कब्र ही उनका
ठिकाना होगी।[4]
15 मगर मुझे तो परमेश्वर कब्र की
गिरफ्त से छुड़ा लेगा,[5]
क्योंकि वह मुझे थाम लेगा। (*सेला*)
16 किसी आदमी को मालामाल होते
देख डरना मत,
उसके घर का वैभव बढ़ता देख
घबराना मत,
17 क्योंकि मरने के बाद वह अपने
साथ कुछ नहीं ले जा सकता,[6]
उसका ठाट-बाट उसके साथ नहीं
जाएगा।[7]
18 सारी ज़िंदगी वह खुद पर गुमान
करता है।[8]
(जब तेरे पास दौलत होती है, तो
लोग तेरी वाह-वाही करते हैं।)[9]
19 मगर आखिर में वह अपने पुरखों
की तरह मर जाता है।
वे फिर कभी उजाला नहीं देखेंगे।
20 जो इंसान यह बात नहीं समझता,
उसका चाहे कितना ही
सम्मान हो,[10]
वह जानवरों से कुछ बढ़कर नहीं
जो मिट जाते हैं।

आसाप[11] का सुरीला गीत।

50 सब ईश्वरों से महान परमेश्वर
यहोवा[12] ने कहा है,
पूरब से पश्चिम तक*

50:1 *या "सूरज के उगने से डूबने तक।"

पूरी धरती को आने का आदेश
दिया है।
2 परमेश्‍वर सिय्योन से, जिसकी खूब-
सूरती बेमिसाल* है,[1] अपना तेज
चमकाता है।
3 हमारा परमेश्‍वर ज़रूर आएगा और
वह चुप न रहेगा।[2]
उसके सामने भस्म करनेवाली
आग है,[3]
उसके चारों तरफ ज़ोरदार आँधी
चलती है।[4]
4 उसने आकाश और धरती को आने
का आदेश दिया है[5]
ताकि जब वह अपने लोगों का
न्याय करे[6] तो वे गवाह ठहरें:
5 "मेरे वफादार लोगों को मेरे पास
इकट्ठा करो,
जिन्होंने बलिदान की बिना पर मेरे
साथ एक करार किया है।"[7]
6 आकाश, परमेश्‍वर की नेकी का
ऐलान करता है,
क्योंकि परमेश्‍वर खुद न्यायी है।[8]
(*सेला*)
7 "हे मेरी प्रजा, मैं जो कहने जा रहा
हूँ उसे सुन,
हे इसराएल, मैं तेरे खिलाफ गवाही
दूँगा।[9]
मैं परमेश्‍वर हूँ, तेरा परमेश्‍वर।[10]
8 मैं तेरे बलिदानों की वजह से तुझे
नहीं फटकारता,
न ही तेरी होम-बलियों की वजह से,
जो तू मेरे सामने नियमित तौर
पर चढ़ाता है।[11]
9 मुझे न तो तेरे घर का बैल चाहिए,
न तेरे बाड़े के बकरे।[12]
10 क्योंकि जंगल का हर जानवर
मेरा है,
हज़ारों पहाड़ों पर रहनेवाले पशु भी
मेरे हैं।[1]
11 मैं पहाड़ों के हर पंछी के बारे में
जानता हूँ,[2]
मैदान के अनगिनत जीव-जंतु
मेरे हैं।
12 अगर मैं भूखा होता, तो भी तुझसे
नहीं कहता,
क्योंकि उपजाऊ ज़मीन और उसकी
हर चीज़ मेरी है।[3]
13 मैं क्या बैलों का गोश्‍त खाऊँगा?
बकरों का खून पीऊँगा?[4]
14 परमेश्‍वर को धन्यवाद दे, यह तेरा
बलिदान होगा[5]
और परम-प्रधान से मानी मन्‍नतें
पूरी कर।[6]
15 मुसीबत की घड़ी में मुझे पुकार,[7]
मैं तुझे छुड़ाऊँगा और तू मेरी
महिमा करेगा।"[8]
16 मगर परमेश्‍वर दुष्ट से कहेगा,
"तुझे मेरे नियमों के बारे में बताने
या मेरे करार[9] के बारे में बात करने
का क्या हक है?[10]
17 तू तो शिक्षा* से नफरत करता है,
बार-बार मेरी सलाह ठुकरा
देता है।[11]
18 जब तू किसी चोर को देखता है तो
उसे सही ठहराता है,*[12]
तू बदचलन लोगों से मेल-जोल
रखता है।
19 तू अपने मुँह से बुरी बातें
फैलाता है,
तेरी जीभ हमेशा छल की बातें
कहती है।[13]

50:2 *या "परिपूर्ण।"

50:17 *या "हिदायत।" 50:18 *या शायद, "उससे मिल जाता है।"

अध्य. 50
1 भज 48:2; विल 2:15
2 यश 65:6
3 निर्ग 19:18; दान 7:9, 10; इब्र 12:29
4 भज 97:3, 4
5 व्य 30:19; व्य 32:1; यश 1:2
6 मी 6:2
7 निर्ग 24:8
8 भज 75:7
9 नहे 9:30; भज 81:8
10 निर्ग 20:2
11 1शम 15:22; यश 1:11; यिर्म 7:22, 23; हो 6:6
12 मी 6:7

दूसरा कॉल.
1 1इत 29:14; प्रेष 17:24
2 अय 38:41
3 व्य 10:14; अय 41:11; 1कुर 10:26
4 मी 6:6-8
5 भज 69:30, 31; नीत 21:3; हो 6:6; इब्र 13:15
6 व्य 23:21; भज 76:11; सभ 5:4
7 2इत 33:12, 13; भज 91:15
8 भज 22:21-23; भज 50:23
9 व्य 31:20; इब्र 8:9
10 यिर्म 7:4; मत 7:22, 23; रोम 2:21
11 नहे 9:26; यश 5:24
12 यश 5:22, 23
13 यिर्म 9:5

20 तू बैठकर अपने ही भाई के
खिलाफ बोलता है,[1]
अपने सगे भाई की खामियाँ दूसरों
को बताता है।*
21 जब तूने ये काम किए तो मैं
चुप रहा
और तूने सोच लिया कि मैं भी तेरे
जैसा हूँ।
मगर अब मैं तुझे सुधारने के लिए
फटकारूँगा,
तुझ पर मुकदमा करूँगा।[2]
22 परमेश्‍वर को भूलनेवालो, ज़रा इस
बात पर गौर करो,[3]
वरना मैं तुम्हारी बोटी-बोटी कर
दूँगा और तुम्हें बचानेवाला कोई
न होगा।
23 जब कोई मुझे धन्यवाद देता है,
जो कि उसका बलिदान है,
तो वह मेरी महिमा करता है।[4]
जो मज़बूत इरादे से सही राह पर
चलता रहता है,
उसका मैं उद्धार करूँगा।"[5]

निर्देशक के लिए हिदायत। दाविद का यह सुरीला गीत उस समय का है जब उसने बतशेबा[6] के साथ संबंध रखकर पाप किया था और उसके बाद भविष्यवक्ता नातान उसके पास आया था।

51 हे परमेश्‍वर, अपने अटल प्यार
के मुताबिक मुझ पर
रहम कर।[7]
अपनी बड़ी दया के मुताबिक मेरे
अपराध मिटा दे।[8]
2 मेरा दोष पूरी तरह धो दे,[9]
मेरे पाप दूर करके मुझे शुद्ध
कर दे।[10]
3 क्योंकि मुझे अपने अपराधों का
पूरा-पूरा एहसास है,
मेरा पाप हमेशा मेरे सामने*
रहता है।[1]
4 मैंने तेरे खिलाफ, हाँ, सबसे बढ़कर
तेरे खिलाफ* पाप किया है,[2]
मैंने तेरी नज़र में बुरा काम
किया है।[3]
इसलिए तू जो बोलता है वह
सही है,
तेरा न्याय सच्चा है।[4]
5 देख! मैं जन्म से ही पाप का
दोषी हूँ,
जब मैं माँ के गर्भ में पड़ा तब से
मुझमें पाप है।*[5]
6 देख! तू ऐसे इंसान से खुश होता है
जो दिल का सच्चा है,[6]
मेरे मन को सच्ची बुद्धि की बातें
सिखा।
7 मरुए से पानी छिड़ककर मेरा पाप
दूर कर दे ताकि मैं शुद्ध हो
जाऊँ,[7]
मुझे धोकर साफ कर दे ताकि मैं
बर्फ से भी उजला हो जाऊँ।[8]
8 मुझे खुशियाँ और जश्‍न मनाने की
आवाज़ सुनने दे
ताकि जो हड्डियाँ तूने चकनाचूर
कर दी हैं, उनमें उमंग भर
जाए।[9]
9 तू मेरे पापों से अपना मुँह फेर ले,[10]
मेरे सारे गुनाह पोंछकर मिटा दे।[11]
10 हे परमेश्‍वर, मेरे अंदर एक साफ
दिल पैदा कर,[12]
मन का एक नया रुझान[13] दे कि मैं
अटल बना रहूँ।
11 तू मुझे अपने सामने से दूर न कर,

50:20 *या "को बदनाम करता है।"

51:3 *या "मेरे मन में।" 51:4 *शा., "सिर्फ तेरे खिलाफ।" 51:5 *या "पाप में मेरी माँ ने मुझे गर्भ में धारण किया था।"

अध्य. 50
1 लैव 19:16
2 भज 50:4; सभ 12:14
3 भज 9:17; यिर्म 2:32; हो 4:6
4 1थि 5:18; इब्र 13:15
5 मी 6:8

अध्य. 51
6 2शम 11:3
7 गि 14:18; भज 25:7; भज 41:4
8 भज 103:13; नीत 28:13; यश 43:25; यश 44:22
9 यश 1:18; 1कुर 6:11
10 इब्र 9:13, 14; 1यूह 1:7

दूसरा कॉल.
1 भज 32:5; भज 40:12
2 उत 39:9; 2शम 12:13
3 2शम 12:9; भज 38:18
4 रोम 3:4
5 अय 14:4; रोम 3:23; रोम 5:12
6 1शम 16:7; 2रा 20:3; 1इत 29:17
7 लैव 14:3, 4; इब्र 9:13, 14
8 यश 1:18
9 भज 6:2; भज 38:3; यश 57:15
10 भज 103:12; यश 38:17
11 मी 7:19
12 यिर्म 32:39
13 यहे 11:19; इफ 4:23

मुझ पर से अपनी पवित्र शक्ति न
हटा।
12 तूने मेरा उद्धार करके मुझे जो
खुशियाँ दी थीं वे मुझे लौटा दे,[1]
मेरे अंदर ऐसी इच्छा जगा कि मैं
तेरी आज्ञा मानूँ।
13 मैं अपराधियों को तेरी राहों के बारे
में सिखाऊँगा[2]
ताकि वे पापी तेरे पास लौट आएँ।
14 हे परमेश्‍वर, मेरे उद्धारकर्ता
परमेश्‍वर,[3] खून का दोष मुझ
पर से मिटा दे[4]
ताकि मेरी जीभ खुशी-खुशी तेरी
नेकी का ऐलान करे।[5]
15 हे यहोवा, मुझे बोलने की
इजाज़त दे
ताकि मैं तेरी तारीफ करूँ।[6]
16 तू कोई बलिदान नहीं चाहता वरना
मैं ज़रूर चढ़ाता,[7]
तू पूरी होम-बलि से खुश नहीं
होता।[8]
17 टूटा मन ऐसा बलिदान है जो पर-
मेश्‍वर को भाता है,
हे परमेश्‍वर, तू टूटे और
कुचले हुए दिल को नहीं
ठुकराएगा।*[9]
18 अपनी कृपा दिखाकर सिय्योन का
भला कर,
यरूशलेम की शहरपनाह को मज़-
बूत कर।
19 तब तू नेकी के बलिदानों से,
होम-बलियों और पूरे चढ़ावे से खुश
होगा,
तब तेरी वेदी पर बैल अर्पित किए
जाएँगे।[10]

51:17 * या "तुच्छ नहीं समझेगा।"

निर्देशक के लिए हिदायत। मश्‍कील।*
दाविद का यह गीत उस समय का है जब एदोमी
दोएग शाऊल को बता देता है कि दाविद
अहीमेलेक[1] के घर गया था।

52 अरे दुष्ट, तू क्यों अपने बुरे
कामों पर डींग मारता है?[2]
क्या तू जानता नहीं, परमेश्‍वर
का अटल प्यार दिन-भर कायम
रहता है?[3]
2 तेरी ज़बान उस्तरे जैसी तेज़ है,[4]
जो बुरा करने की साज़िशें रचती है,
छल की बातें गढ़ती है।[5]
3 तू अच्छाई से नहीं बुराई से प्यार
करता है,
तुझे सच के बजाय झूठ बोलना रास
आता है। (*सेला*)
4 हे छली ज़बान,
तू नुकसान करनेवाली हर बात
पसंद करती है!
5 इसलिए परमेश्‍वर तुझे गिराकर
हमेशा के लिए नाश कर देगा,[6]
तुझे झपटकर पकड़ लेगा और तंबू
से बाहर घसीट लाएगा,[7]
दुनिया* से तुझे जड़ से उखाड़
देगा।[8] (*सेला*)
6 नेक लोग यह देखेंगे और श्रद्धा से
भर जाएँगे,[9]
वे यह कहकर उस दुष्ट पर
हँसेंगे:[10]
7 "देखो इस आदमी को, जिसने पर-
मेश्‍वर की पनाह नहीं ली*[11]
बल्कि अपनी बेशुमार दौलत पर
भरोसा किया,[12]
अपनी साज़िशों का सहारा#
लिया।"

52:उप *शब्दावली देखें। 52:5 *शा., "जीवितों के देश।" 52:7 *या "को अपना गढ़ नहीं बनाया।" #या "आसरा।"

अध्य. 51
1 भज 21:1
2 प्रेष 2:38
3 भज 38:22; यश 12:2; प्रक 7:10
4 उत 9:6
5 नहे 9:33; भज 35:28; भज 59:16; दान 9:7
6 भज 34:1; भज 109:30; इब्र 13:15
7 नीत 21:3
8 1शम 15:22; भज 40:6; हो 6:6
9 2रा 22:18, 19; 2इत 33:13; भज 22:24; भज 34:18; नीत 28:13; यश 57:15; लूक 15:22-24; लूक 18:13, 14
10 हो 14:2

दूसरा कॉल.

अध्य. 52
1 1शम 22:9
2 1शम 21:7; भज 94:3, 4
3 भज 103:17
4 भज 57:4; भज 59:7
5 1शम 22:9, 18; भज 109:2
6 नीत 12:19; नीत 19:9
7 भज 37:9
8 नीत 2:22
9 भज 37:34
10 भज 58:10
11 यिर्म 17:5
12 भज 49:6, 7; नीत 11:28

8 मगर मैं परमेश्वर के भवन में
फलते-फूलते जैतून पेड़ जैसा
होऊँगा,
मैंने परमेश्वर के अटल प्यार
पर भरोसा रखा है[1] और सदा
रखूँगा।
9 मैं सदा तेरी तारीफ करूँगा क्योंकि
तूने कदम उठाया है,[2]
तेरे वफादार जनों के सामने
मैं तेरे नाम पर आशा रखूँगा[3]
क्योंकि वह भला है।

दाविद की रचना। निर्देशक के लिए हिदायतः
महलत की शैली* में। मश्कील।*

53 मूर्ख* मन में कहता है, "कोई
यहोवा नहीं।"[4]
ऐसे लोगों के काम बुरे होते हैं, भ्रष्ट
और घिनौने होते हैं,
कोई भी भला काम नहीं करता।[5]
2 मगर परमेश्वर स्वर्ग से इंसानों को
देखता है[6]
कि क्या कोई अंदरूनी समझ रखने-
वाला है,
क्या कोई यहोवा की खोज करने-
वाला है।[7]
3 वे सब भटक गए हैं,
सब-के-सब भ्रष्ट हो गए हैं।
कोई भी भला काम नहीं करता,
एक भी नहीं।[8]
4 क्या गुनहगारों में से कोई भी समझ
नहीं रखता?
वे मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं
मानो रोटी हो।
वे यहोवा को नहीं पुकारते।[9]
5 मगर उन सब पर खौफ छा जाएगा,
ऐसा आतंक जो उन्होंने पहले कभी
महसूस नहीं किया,*
क्योंकि परमेश्वर तेरे हमलावरों#
की हड्डियाँ बिखरा देगा।
तू उन्हें शर्मिंदा करेगा
क्योंकि यहोवा ने उन्हें ठुकरा
दिया है।
6 इसराएल का उद्धार सिय्योन की
तरफ से हो![1]
जब यहोवा अपने लोगों को बँधु-
आई से लौटा ले आएगा,
तब याकूब खुशियाँ मनाए, इस-
राएल जश्न मनाए।

निर्देशक के लिए हिदायतः यह गीत तारोंवाले बाजे
बजाकर गाया जाए। मश्कील।* दाविद का यह गीत
उस समय का है जब ज़ीफ के लोगों ने शाऊल के
पास जाकर उसे खबर दी थी कि
दाविद उनके इलाके में छिपा हुआ है।[2]

54 हे परमेश्वर, अपने नाम से मुझे
बचा ले,[3]
अपनी ताकत से मेरी पैरवी कर।[4]
2 हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन,[5]
मेरी बिनती पर ध्यान दे।
3 क्योंकि बेगाने मेरे खिलाफ उठ खड़े
हुए हैं,
बेरहम आदमी मेरी जान के पीछे
पड़े हैं।[6]
वे परमेश्वर की कोई कदर नहीं
करते।*[7] (*सेला*)
4 देख! परमेश्वर मेरा मददगार है,[8]
यहोवा उन लोगों के संग है जो मेरा
साथ देते हैं।
5 वह मेरे दुश्मनों की बुराई को उन्हीं
पर लौटा देगा।[9]

अध्य. 52
1 भज 13:5; भज 147:11
2 भज 50:15
3 भज 27:14; भज 123:2; नीत 18:10

अध्य. 53
4 भज 10:4; रोम 1:21
5 भज 14:1-7; रोम 3:10
6 भज 11:4; भज 33:13-15; यिर्म 16:17; यिर्म 23:24
7 1इत 28:9; 2इत 15:2; 2इत 19:1, 3; यश 55:6; 1पत 3:12
8 सभ 7:20; रोम 3:12
9 अय 21:7, 14

दूसरा कॉल.
1 यश 12:6

अध्य. 54
2 1शम 23:19; 1शम 26:1
3 भज 20:1; भज 79:9; नीत 18:10
4 भज 43:1
5 भज 13:3; भज 65:2
6 भज 22:16; भज 59:3
7 भज 36:1
8 1इत 12:18; इब्र 13:6
9 रोम 12:19

53:उप; 54:उप *शब्दावली देखें। **53:1** *या "नासमझ।"

53:5 *या शायद, "वहाँ जहाँ डरने की कोई वजह नहीं थी।" #शा., "तेरे खिलाफ छावनी डालनेवालों।" **54:3** *या "वे परमेश्वर को अपने सामने नहीं रखते।"

हे परमेश्‍वर, उनका अंत कर दे
क्योंकि तू विश्‍वासयोग्य है।[1]
6 मैं अपनी इच्छा से तेरे लिए बलि-
दान चढ़ाऊँगा।[2]
हे यहोवा, मैं तेरे नाम की तारीफ
करूँगा क्योंकि वह भला है।[3]
7 क्योंकि तू मुझे हर संकट से
बचाता है[4]
और मैं अपने दुश्‍मनों की हार
देखूँगा।[5]

दाविद की रचना। निर्देशक के लिए हिदायतः यह गीत तारोंवाले बाजे बजाकर गाया जाए। मश्‍कील।*

55 हे परमेश्‍वर, मेरी प्रार्थना सुन,[6]
मेरी दया की बिनती अनसुनी न
कर।*[7]
2 मुझ पर ध्यान दे और मुझे
जवाब दे,[8]
मैं चिंता के मारे बेचैन हूँ,[9]
दुख से बेहाल हूँ,
3 क्योंकि दुश्‍मन चुभनेवाली बातें
कहते हैं,
दुष्ट मुझ पर दबाव डालते हैं।
एक-के-बाद-एक मुसीबत खड़ी
करते हैं।
वे गुस्से से भरे हुए हैं और मन में
दुश्‍मनी पालते हैं।[10]
4 मेरा दिल दर्द से तड़प रहा है,[11]
मौत का डर मुझ पर हावी हो
गया है।[12]
5 मैं डर से काँप रहा हूँ, थरथरा
रहा हूँ।
6 रह-रहकर एक ही खयाल आता है,
"काश, फाख्ते की तरह मेरे भी पर
होते!
मैं उड़कर किसी महफ़ूज़ जगह जा
बसता।
7 मैं कहीं दूर भाग जाता।[1]
किसी वीराने में बसेरा करता।[2]
(*सेला*)
8 मैं इस तेज़ आँधी और भयानक
तूफान से बचकर
किसी महफ़ूज़ जगह भाग जाता।"
9 हे यहोवा, उन्हें उलझन में डाल दे,
उनकी चालें नाकाम कर दे,*[3]
क्योंकि मैंने शहर में खून-खराबा
और झगड़े देखे हैं।
10 रात-दिन वे शहरपनाह के ऊपर
घूमते रहते हैं,
शहर में नफरत फैली है, दंगे हो
रहे हैं।[4]
11 बीच शहर में तबाही है,
ज़ुल्म और छल उसके चौक से कभी
दूर नहीं होते।[5]
12 मुझ पर ताना कसनेवाला अगर मेरा
दुश्‍मन होता,[6]
तो मैं किसी तरह सह लेता।
मेरे खिलाफ उठनेवाला अगर मेरा
बैरी होता,
तो मैं उससे छिप जाता।
13 मगर वह तो तू है, मेरे जैसा
आदमी,*[7]
मेरा अपना साथी जिसे मैं अच्छी
तरह जानता हूँ।[8]
14 हमने दोस्ती के कितने मीठे पल
बिताए थे,
भीड़ के साथ हम परमेश्‍वर के
भवन में जाया करते थे।

अध्य. 54
1 भज 143:12
2 भज 50:14; इब्र 13:15
3 भज 7:17; भज 52:9
4 2शम 4:9; भज 34:19; भज 37:39
5 भज 37:34; भज 59:10

अध्य. 55
6 1पत 3:12
7 भज 28:2; भज 143:7
8 भज 17:1
9 यश 38:14
10 2शम 16:5-7
11 भज 69:29
12 भज 18:4; भज 116:3; यश 38:10

दूसरा कॉल.
1 2शम 15:14
2 1शम 23:14
3 2शम 15:31; 2शम 17:7
4 2शम 17:1
5 भज 109:2
6 भज 41:9; मत 26:21; यूह 13:18
7 2शम 15:12; 2शम 16:23
8 लूक 22:21; लूक 22:48

55:उप *शब्दावली देखें। **55:1** *या "जब मैं मदद के लिए प्रार्थना करूँ तो तू छिप न जाना।"

55:9 *या "उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दे।" **55:13** *या "मेरी बराबरी का आदमी।"

15 मेरे दुश्मनों पर मुसीबत टूट पड़े![1]
वे ज़िंदा ही कब्र में चले जाएँ,
क्योंकि उनके बीच और उनके अंदर
बुराई बसी है।
16 मगर मैं तो यहोवा को पुकारूँगा
और वह मुझे बचाएगा।[2]
17 शाम, सुबह, दोपहर, हर वक्त
मैं चिंता में डूबा कराहता
रहता हूँ*[3]
और परमेश्वर मेरी सुनता है।[4]
18 मुझसे लड़नेवाले बेहिसाब हैं,
मगर परमेश्वर मुझे उनसे
छुड़ाएगा और मेरे मन को चैन
देगा।[5]
19 परमेश्वर, जो युग-युग से अपनी
राजगद्दी पर विराजमान है,[6]
मेरी दुहाई सुनेगा और उनके
खिलाफ कार्रवाई करेगा।[7]
(*सेला*)
उन्हें बदलना गवारा नहीं,
वे परमेश्वर का डर नहीं मानते।[8]
20 उसने* अपने ही दोस्तों पर हमला
किया,[9]
उसने अपना करार तोड़ दिया।[10]
21 उसकी बातें मक्खन से भी
चिकनी हैं,[11]
मगर उसके दिल में फसाद भरा है।
उसके बोल तेल से भी चिकने हैं,
मगर पैनी तलवार की तरह
काटते हैं।[12]
22 अपना सारा बोझ यहोवा पर
डाल दे,[13]
वह तुझे सँभालेगा।[14]
वह नेक जन को कभी गिरने* नहीं
देगा।[1]
23 मगर हे परमेश्वर, तू उन दुष्टों को
गहरी खाई में गिरा देगा।[2]
वे खून के दोषी और धोखेबाज़ हैं,
वे आधी ज़िंदगी भी नहीं जी
पाएँगे,[3]
मगर मैं तो तुझ पर भरोसा रखूँगा।

दाविद की रचना। निर्देशक के लिए हिदायतः
"दूर की मौन फाख्ता" के मुताबिक। मिकताम।*
यह गीत उस समय का है जब गत में पलिश्तियों ने
दाविद को पकड़ लिया था।[4]

56 हे परमेश्वर, मुझ पर कृपा कर,
नश्वर इंसान मुझ पर हमला
कर रहा है।*
सारा दिन वे मुझसे लड़ते हैं, मुझ
पर ज़ुल्म ढाते हैं।
2 मेरे दुश्मन दिन-भर मुझे काटने को
दौड़ते हैं।
बहुत-से लोग घमंड से भरकर
मुझसे लड़ते हैं।
3 जब मुझे डर लगता है[5] तो मैं तुझ
पर भरोसा रखता हूँ।[6]
4 मुझे परमेश्वर पर भरोसा है जिसके
वचन की मैं तारीफ करता हूँ।
मुझे परमेश्वर पर भरोसा है, मैं नहीं
डरता।
अदना इंसान मेरा क्या बिगाड़
सकता है?[7]
5 सारा दिन वे मेरे लिए आफत खड़ी
करते हैं,
बस मेरा बुरा करने की ही
सोचते हैं।[8]
6 मुझ पर हमला करने के लिए घात
लगाते हैं,

अध्य. 55
1 2शम 17:23; 2शम 18:14; भज 109:15; मत 27:3, 5; प्रेष 1:16, 18
2 भज 91:15
3 भज 119:147; दान 6:10
4 भज 5:3
5 2इत 32:7; भज 3:6
6 व्य 33:27; भज 90:2
7 भज 143:12
8 भज 36:1
9 2शम 15:12
10 2शम 5:3; सभ 8:2
11 2शम 16:23
12 भज 28:3; भज 62:4
13 भज 43:5; 1पत 5:6, 7
14 भज 37:5; भज 68:19; फिल 4:6, 7

दूसरा कॉल.
1 भज 37:23, 24; भज 62:2; भज 121:3
2 भज 55:15
3 भज 5:6; नीत 10:27

अध्य. 56
4 1शम 21:10
5 1शम 21:12
6 भज 18:2
7 भज 27:1; भज 56:10, 11; रोम 8:31; इब्र 13:6
8 यिर्म 18:18

55:17 *या "डूबा शोर मचाता हूँ।" **55:20** *यानी वह जो पहले उसका दोस्त था और जिसका ज़िक्र आय. 13 और 14 में किया गया है।

55:22 *या "डगमगाने; लड़खड़ाने।" **56:उप** *शब्दावली देखें। **56:1** *या "मुझे काटने को दौड़ रहा है।"

मेरे हर कदम पर नज़र रखते हैं[1]
ताकि मौका मिलते ही मेरी
जान ले लें।[2]
7 हे परमेश्‍वर, उनकी दुष्टता के
कारण उन्हें ठुकरा दे।
अपना क्रोध भड़काकर उन राष्ट्रों
को गिरा दे।[3]
8 तू मेरे दर-दर भटकने का हिसाब
रखता है।[4]
दया करके मेरे आँसुओं को अपनी
मशक में भर ले।[5]
उनका हिसाब तेरी किताब में
लिखा है।[6]
9 जिस दिन मैं तुझे मदद के लिए
पुकारूँगा, मेरे दुश्‍मन भाग खड़े
होंगे।[7]
मुझे पूरा यकीन है कि परमेश्‍वर
मेरी तरफ है।[8]
10 मुझे परमेश्‍वर पर भरोसा है
जिसके वचन की मैं तारीफ
करता हूँ,
मुझे यहोवा पर भरोसा है जिसके
वचन की मैं तारीफ करता हूँ,
11 मुझे परमेश्‍वर पर भरोसा है, मैं नहीं
डरता।[9]
अदना इंसान मेरा क्या बिगाड़
सकता है?[10]
12 हे परमेश्‍वर, तुझसे मानी मन्‍नतें
पूरी करना मेरा फर्ज़ है,[11]
मैं तेरा शुक्रिया अदा करूँगा।[12]
13 क्योंकि तूने मुझे मौत के मुँह से
छुड़ाया है,[13]
मेरे पैरों को ठोकर खाने से
बचाया है[14]
ताकि मैं जीता रहूँ और परमेश्‍वर
की सेवा करता रहूँ।*[15]

56:13 * शा., "के सामने चलता रहूँ।"

अध्य. 56
1 लूक 20:20
2 भज 59:3
भज 71:10
3 यिर्म 18:23
4 1शम 27:1
5 भज 39:12
6 मला 3:16
7 भज 18:40
8 रोम 8:31
9 भज 27:1
10 भज 56:4
यश 51:7, 12
11 गि 30:2
सभ 5:4
12 भज 50:23
13 2कुर 1:10
14 भज 94:18
भज 116:8
15 अय 33:29, 30

दूसरा कॉल.

अध्य. 57
1 1शम 22:1
1शम 24:3
भज 142:उप
2 भज 18:2
3 रूत 2:12
भज 17:8
4 भज 144:7
प्रेष 12:11
5 भज 40:11
भज 61:7
6 भज 22:13
भज 35:17
7 भज 52:2
भज 64:3
नीत 25:18
8 भज 57:11
भज 108:5
9 भज 35:7
10 भज 42:6
11 1शम 24:4
नीत 26:27

दाविद की रचना। निर्देशक के लिए हिदायतः
"नाश न होने दे" के मुताबिक। मिकताम।*
यह गीत उस समय का है जब दाविद शाऊल से
भागकर गुफा में जा छिपा था।[1]

57 हे परमेश्‍वर, मुझ पर कृपा कर,
कृपा कर,
क्योंकि मैं तेरी पनाह में आया हूँ,[2]
जब तक मुसीबतें टल नहीं जातीं,
मैं तेरे पंखों की छाँव तले पनाह
लूँगा।[3]
2 मैं परम-प्रधान परमेश्‍वर को
पुकारता हूँ,
सच्चे परमेश्‍वर को, जो मेरी मुसी-
बतों का अंत कर देता है।
3 वह स्वर्ग से मेरी मदद करेगा, मुझे
बचाएगा।[4]
वह उसे नाकाम कर देगा जो मुझे
काटने को दौड़ता है। (*सेला*)
परमेश्‍वर अपने अटल प्यार और
वफादारी का सबूत देगा।[5]
4 मैं शेरों से घिरा हुआ हूँ,[6]
मुझे ऐसे आदमियों के बीच लेटना
पड़ता है जो मुझे फाड़ खाना
चाहते हैं,
जिनके दाँत भाले और तीर हैं,
जिनकी जीभ तेज़ तलवार है।[7]
5 हे परमेश्‍वर, तेरी महिमा आसमान
के ऊपर हो,
तेरा वैभव पूरी धरती के ऊपर फैल
जाए।[8]
6 दुश्‍मनों ने मेरे पैरों के लिए जाल
बिछाया है,[9]
मैं दुखों के बोझ से झुक गया हूँ।[10]
उन्होंने मुझे गिराने के लिए गड्‌ढा
खोदा,
मगर खुद उसमें गिर पड़े।[11] (*सेला*)

57:उप * शब्दावली देखें।

7 हे परमेश्वर, मेरा दिल अटल है,[1]
मेरा दिल अटल है।
मैं गीत गाऊँगा, संगीत बजाऊँगा।
8 हे मेरे मन, जाग!
हे तारोंवाले बाजे और सुरमंडल,
तुम भी जागो!
मैं भोर को जगाऊँगा।[2]
9 हे यहोवा, मैं देश-देश के लोगों के
बीच तेरी तारीफ करूँगा,[3]
राष्ट्रों के बीच तेरी तारीफ में गीत
गाऊँगा।*[4]
10 क्योंकि तेरा अटल प्यार क्या ही
महान है,
आसमान जितना ऊँचा है,[5]
तेरी वफादारी आकाश की बुलंदियाँ
छूती है।
11 हे परमेश्वर, तेरी महिमा आसमान
के ऊपर हो,
तेरा वैभव पूरी धरती के ऊपर फैल
जाए।[6]

दाविद की रचना।
निर्देशक के लिए हिदायतः
"नाश न होने दे" के मुताबिक। मिकताम।*

58 हे आदमियो, इस तरह चुप
बैठकर क्या तुम नेकी के बारे
में बोल सकोगे?[7]
क्या तुम सच्चाई से न्याय कर
सकोगे?[8]
2 तुम तो अपने दिलों में बुराई
गढ़ते हो,[9]
देश का कोना-कोना खून-खराबे से
भर देते हो।[10]
3 दुष्ट लोग जन्म से ही भटके हुए*
होते हैं,
पैदाइश से ही टेढ़ी चाल चलते हैं,
झूठे हैं।
4 उनकी बातें साँप के ज़हर की
तरह हैं,[1]
वे उस नाग की तरह बहरे हो गए हैं
जो सुनना नहीं चाहता।
5 वह अब सपेरों की आवाज़ नहीं
सुनेगा,
फिर चाहे वे कितनी ही चालाकी से
मंत्र फूँकें।
6 हे परमेश्वर, उनके मुँह के सारे दाँत
तोड़ दे!
हे यहोवा, उन शेरों के जबड़े
तोड़ दे!
7 वे ऐसे गायब हो जाएँ जैसे पानी
बहकर गायब हो जाता है।
परमेश्वर अपनी कमान
चढ़ाए और तीर चलाकर
उन्हें ढेर कर दे।
8 वे घोंघे जैसे हो जाएँ जो रेंगते-रेंगते
घुलकर नाश हो जाता है,
वे उस बच्चे जैसे हो जाएँ जो
कोख में ही मर जाता है और
कभी सूरज की रौशनी नहीं देख
पाता।
9 इससे पहले कि तुम्हारी हाँडियों
को कँटीली लकड़ियों की
आँच लगे
परमेश्वर उन हरी और जलती
लकड़ियों को ऐसे उड़ा ले जाएगा
जैसे आँधी उड़ा ले जाती है।[2]
10 परमेश्वर को बदला लेते देख नेक
जन खुशियाँ मनाएगा।[3]
नेक जन के पाँव दुष्टों के खून से
लथपथ हो जाएँगे।[4]
11 तब लोग कहेंगे, "नेक इंसान को
ज़रूर इनाम मिलता है[5]
दुनिया का न्याय करनेवाला एक
परमेश्वर ज़रूर है।"[6]

अध्य. 57
1 भज 112:7
2 भज 108:2-5
3 भज 9:11; भज 145:11, 12
4 रोम 15:9
5 भज 36:5; भज 103:11
6 भज 8:1; भज 57:5; भज 108:5

अध्य. 58
7 2इत 19:6
8 भज 82:2
9 सभ 3:16; मी 3:9
10 सभ 5:8; यश 10:1, 2

दूसरा कॉल.
1 भज 140:3; याकू 3:8
2 नीत 10:25; यिर्म 23:19
3 भज 52:5, 6; भज 64:10; यहे 25:17; प्रक 18:20
4 नीत 21:18
5 यश 3:10
6 भज 9:16; भज 98:9

57:9 *या "संगीत बजाऊँगा।" **58:उप** *शब्दावली देखें। **58:3** *या "भ्रष्ट।"

दाविद की रचना। निर्देशक के लिए हिदायतः
“नाश न होने दे” के मुताबिक। मिकताम।*
यह गीत उस समय का है जब शाऊल ने अपने
आदमियों को दाविद के घर पर नज़र रखने भेजा था
ताकि वे उसे मार डालें।[1]

59 हे मेरे परमेश्वर, मुझे दुश्मनों से
छुड़ा ले,[2]
हमलावरों से बचा ले।[3]
2 मुझे दुष्ट काम करनेवालों से
छुड़ा ले,
खूँखार* आदमियों से बचा ले।
3 देख! वे मेरे लिए घात लगाए
बैठे हैं,[4]
ताकतवर आदमी मुझ पर हमला
करते हैं,
जबकि हे यहोवा, मैंने न बगावत
की है, न कोई पाप किया है।[5]
4 मैंने कुछ बुरा नहीं किया, फिर भी
वे मुझ पर हमला करने दौड़े चले
आते हैं।
मेरी पुकार सुनकर उठ और देख।
5 क्योंकि हे सेनाओं के
परमेश्वर यहोवा, तू इसराएल का
परमेश्वर है।[6]
उठकर सब राष्ट्रों पर ध्यान दे।
गद्दारी करनेवाले दुष्टों पर ज़रा भी
तरस न खा।[7] (*सेला*)
6 वे हर शाम लौट आते हैं,[8]
कुत्तों की तरह गुर्राते* हैं,[9]
शिकार पकड़ने दबे पाँव सारा
शहर घूमते हैं।[10]
7 देख, उनका मुँह कैसी बातें
उगलता है,
उनके होंठ तलवार जैसे हैं,[11]
क्योंकि वे कहते हैं, “कौन
सुनता है?”[12]

8 मगर हे यहोवा, तू उन पर हँसेगा,[1]
सब राष्ट्रों का मज़ाक उड़ाएगा।[2]
9 हे मेरी ताकत, मैं तेरी राह तकूँगा,[3]
क्योंकि हे परमेश्वर, तू मेरा ऊँचा
गढ़ है।[4]
10 मुझ पर अटल प्यार ज़ाहिर करने-
वाला परमेश्वर मेरी मदद के
लिए आएगा,[5]
वह मुझे अपने दुश्मनों की हार
दिखाएगा।[6]
11 उन्हें मार न डाल ताकि मेरे लोग
भूल न जाएँ।
अपनी शक्ति से उन्हें दर-दर
भटकने पर मजबूर कर,
हे यहोवा, हमारी ढाल, तू उन्हें
गिरा दे।[7]
12 वे अपने मुँह से, अपने होंठों से पाप
करते हैं।
वे अपने ही घमंड में फँस जाएँ,[8]
क्योंकि वे शाप देते हैं और छल की
बातें करते हैं।
13 तू क्रोध से भरकर उनका नाश कर
देना,[9]
उनका नाश कर देना ताकि वे मिट
जाएँ,
उन्हें जता देना कि परमेश्वर याकूब
पर और धरती के छोर तक राज
करता है।[10] (*सेला*)
14 लौटने दे उन्हें शाम को,
कुत्तों की तरह गुर्राने* दे,
शिकार पकड़ने दबे पाँव सारा
शहर घूमने दे।[11]
15 उनका ऐसा हाल कर दे कि वे एक
निवाले के लिए दर-दर भटकें,[12]
उन्हें न भरपेट खाना मिले, न सिर
छिपाने की जगह।

अध्य. 59
1 1शम 19:11
2 1शम 19:12 भज 18:48 भज 71:4
3 भज 12:5 भज 91:14
4 1शम 19:1 भज 10:9 भज 71:10
5 1शम 24:11 1शम 26:18 भज 69:4
6 व्य 33:29
7 नीत 2:22
8 1शम 19:11
9 भज 22:16
10 भज 59:14
11 भज 57:4 भज 64:3
12 भज 10:4, 11 भज 73:3, 11

दूसरा कॉल.
1 भज 37:12, 13
2 भज 33:10
3 भज 27:1 भज 46:1
4 भज 9:9 भज 62:2
5 भज 6:4
6 भज 54:7
7 उत 15:1 व्य 33:29 भज 3:3
8 भज 64:8 नीत 12:13 नीत 16:18
9 भज 7:9
10 1शम 17:46 भज 9:16 भज 83:17, 18
11 भज 59:6
12 भज 109:2, 10

59:उप *शब्दावली देखें। **59:2** *या “खून के प्यासे।” **59:6** *या “भौंकते।”

59:14 *या “भौंकने।”

16 मगर मैं तो तेरी ताकत का गुणगान
करूँगा,[1]
सुबह मैं तेरे अटल प्यार का खुशी-
खुशी बखान करूँगा।
क्योंकि तू मेरा ऊँचा गढ़ है,[2]
मेरे लिए ऐसी जगह है जहाँ मैं
मुसीबत की घड़ी में भागकर जा
सकता हूँ।[3]
17 हे मेरी ताकत, मैं तेरी तारीफ में
गीत गाऊँगा,*[4]
क्योंकि परमेश्वर मेरा ऊँचा गढ़
है, मुझसे प्यार# करनेवाला पर-
मेश्वर है।[5]

दाविद की रचना। निर्देशक के लिए हिदायतः "यादगार का सोसन" के मुताबिक। मिकताम।* सिखाने के लिए। यह गीत उस समय का है जब दाविद ने अरम-नहरैम और अराम-सोबा की सेना से युद्ध किया था और योआब ने लौटकर नमक घाटी[6] में 12,000 एदोमियों को मार गिराया था।

60 हे परमेश्वर, तूने हमें ठुकरा
दिया, हमारी मोरचाबंदी
तोड़ दी,[7]
तू हमसे नाराज़ था मगर अब हमें
दोबारा अपना ले!
2 तूने धरती को कँपकँपा दिया,
ज़मीन चीर दी।
अब इसकी दरारें भर दे क्योंकि यह
गिरनेवाली है।
3 तूने अपने लोगों को मुसीबतें झेलने
पर मजबूर किया।
हमें ऐसी दाख-मदिरा पिलायी कि
हम लड़खड़ाने लगे।[8]
4 जो तेरा डर मानते हैं उन्हें
इशारा दे*
कि वे भाग जाएँ और तीर से बच
जाएँ। (*सेला*)
5 अपने दाएँ हाथ से हमें बचा ले,
हमारी सुन ले
ताकि जिन्हें तू प्यार करता है वे
छुड़ाए जाएँ।[1]
6 परमेश्वर अपनी पवित्रता के
कारण* कहता है,
"मैं मगन होऊँगा, विरासत में
शेकेम दूँगा,[2]
सुक्कोत घाटी नापकर दूँगा।[3]
7 मनश्शे मेरा है, गिलाद भी मेरा है,[4]
एप्रैम मेरे सिर का टोप है,
यहूदा मेरे लिए हाकिम की
लाठी है।[5]
8 मोआब मेरा हाथ-पैर धोने का बर-
तन है।[6]
एदोम पर मैं अपना जूता फेंकूँगा।[7]
पलिश्त को जीतकर मैं जश्न
मनाऊँगा।"[8]
9 कौन मुझे उस घिरे हुए* शहर तक
ले जाएगा?
कौन मुझे दूर एदोम तक ले
जाएगा?[9]
10 हे हमारे परमेश्वर, तू ही हमें वहाँ
ले जाएगा।
मगर तूने तो हमें ठुकरा दिया है,
तू अब युद्ध में हमारी सेना के साथ
नहीं जाता।[10]
11 हम संकट में हैं, हमारी मदद कर,
क्योंकि उद्धार के लिए इंसान पर
आस लगाना बेकार है।[11]
12 परमेश्वर से हमें ताकत मिलेगी,[12]
वह हमारे बैरियों को रौंद
डालेगा।[13]

59:17 *या "संगीत बजाऊँगा।" #या "अटल प्यार।" **60:उप** *शब्दावली देखें। **60:4** *या शायद, "उन्हें तूने इशारा दिया है।"

60:6 *या शायद, "अपनी पवित्र जगह में।"
60:9 *या शायद, "किलेबंद।"

अध्य. 59
1 अय 37:23; भज 21:13; भज 145:10-12
2 1शम 17:37; भज 61:3
3 नीत 18:10
4 यश 12:2
5 भज 59:10

अध्य. 60
6 2शम 8:13; 1इत 18:3
7 भज 60:10
8 यश 51:17

दूसरा कॉल.
1 भज 18:35; भज 21:8; भज 108:6; भज 118:15; यश 41:10
2 उत 12:6, 7
3 यह 13:27, 28; भज 108:7-9
4 यह 13:29-31
5 उत 49:10
6 गि 24:17; 2शम 8:2
7 गि 24:18; 2शम 8:14
8 2शम 8:1
9 2शम 8:14; भज 108:10-13
10 व्य 1:42; व्य 20:4; यह 7:12
11 भज 62:9; भज 118:8; भज 146:3
12 भज 18:32
13 2शम 10:12; भज 44:5

दाविद की रचना। निर्देशक के लिए हिदायतः यह गीत तारोंवाले बाजे बजाकर गाया जाए।

61 हे परमेश्वर, मेरी मदद की
पुकार सुन।
मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे।[1]
2 जब मेरा दिल दुख से बेहाल* हो,
तब मैं तुझे पुकारूँगा,
फिर चाहे मैं धरती के छोर पर क्यों
न होऊँ।[2]
तू मुझे एक ऊँची चट्टान पर ले
जाना।[3]
3 क्योंकि तू मेरा गढ़ है,
एक मज़बूत मीनार है
जो दुश्मन से मेरी हिफाज़त
करती है।[4]
4 मैं तेरे तंबू में सदा तक मेहमान बन-
कर रहूँगा,[5]
तेरे पंखों की आड़ में पनाह लूँगा।[6]
(*सेला*)
5 क्योंकि हे परमेश्वर, तूने मेरी
मन्नतें सुनी हैं।
मुझे वह विरासत दी है जो तेरे नाम
का डर माननेवालों के लिए है।[7]
6 तू राजा की उम्र बढ़ाएगा,[8]
वह पीढ़ी-पीढ़ी तक जीता रहेगा।
7 वह तेरे सामने सदा तक विराजमान
रहेगा,*[9]
हे परमेश्वर, तेरा अटल प्यार
और वफादारी उसकी हिफाज़त
करे।#[10]
8 तब मैं रोज़-ब-रोज़ अपनी मन्नतें
पूरी करूँगा[11]
और सदा तक तेरे नाम की तारीफ
में गीत गाऊँगा।*[12]

61:2 *या "कमज़ोर।" **61:7** *या "निवास करेगा।" #या "उसकी हिफाज़त के लिए अटल प्यार और वफादारी को ठहरा।" **61:8** *या "संगीत बजाऊँगा।"

अध्य. 61
1 भज 5:2
भज 17:1
भज 28:2
भज 55:1
2 यो 2:2
3 भज 27:5
भज 40:2
4 1शम 17:45
भज 18:2
नीत 18:10
5 भज 23:6
भज 27:4
6 भज 63:7
7 भज 115:13
8 भज 18:50
भज 21:1, 4
9 2शम 7:16, 17
भज 41:12
10 भज 40:11
भज 143:12
नीत 20:28
11 भज 65:1
भज 66:13
सभ 5:4
12 भज 146:2

दूसरा कॉल.

अध्य. 62
1 भज 37:39
भज 68:19
यश 12:2
2 भज 18:2
3 भज 37:23, 24
2कुर 4:8, 9
4 भज 38:12
5 भज 5:9
भज 28:3
भज 55:21
6 भज 43:5
मी 7:7
7 भज 62:1, 2
भज 71:5
8 भज 16:8
नीत 10:30
9 भज 95:1
यश 26:4

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायतः यदूतून* का।

62 मैं चुपचाप परमेश्वर का इंत-
ज़ार करता हूँ।
वही मेरा उद्धारकर्ता है।[1]
2 वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है,
मेरा ऊँचा गढ़ है,[2]
मैं कभी इस कदर हिलाया नहीं जा
सकता कि गिर जाऊँ।[3]
3 तुम एक इंसान को मार डालने के
लिए कब तक उस पर वार करते
रहोगे?[4]
तुम सब-के-सब खतरनाक हो, उस
दीवार की तरह जो झुकी हुई है,
पत्थर की उस दीवार की तरह जो
बस ढहनेवाली है।*
4 वे उसे ऊँचे पद* से गिराने के लिए
आपस में मशविरा करते हैं,
उन्हें झूठ बोलने में मज़ा आता है।
मुँह से तो वे आशीर्वाद देते हैं, पर
मन-ही-मन शाप देते हैं।[5] (*सेला*)
5 मैं चुपचाप परमेश्वर का इंतज़ार
करता हूँ,[6]
क्योंकि उसी से मेरी आशा
बँधी है।[7]
6 वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है,
मेरा ऊँचा गढ़ है,
मुझे कभी हिलाया नहीं जा
सकता।[8]
7 मेरा उद्धार और मेरा वैभव पर-
मेश्वर की ही बदौलत है।
परमेश्वर मेरी मज़बूत चट्टान है,
मेरा गढ़ है।[9]

62:उप *शब्दावली देखें। **62:3** *या शायद, "तुम सब, मानो वह एक झुकी हुई दीवार हो, पत्थर की ऐसी दीवार जो बस ढहनेवाली है।" **62:4** *या "उसकी गरिमा।"

8 लोगो, हमेशा उस पर भरोसा रखो।
उसके आगे अपना दिल खोलकर
रख दो।[1]
परमेश्वर हमारी पनाह है।[2] (*सेला*)
9 इंसान बस एक साँस हैं,
वे बस धोखा हैं।[3]
अगर उन सबको एक-साथ तौला
जाए, तो भी वे साँस से हलके
निकलेंगे।[4]
10 इस गलतफहमी में मत रहो
कि धोखाधड़ी से तुम कामयाब
होगे,
या लूट-खसोट से तुम्हें फायदा
होगा।
अगर तुम्हारी दौलत बढ़ने लगे,
तो अपना मन उसी पर मत
लगाना।[5]
11 मैंने एक बार नहीं, दो बार पर-
मेश्वर को यह कहते सुना,
"ताकत परमेश्वर ही की है।"[6]
12 हे यहोवा, अटल प्यार भी तेरा है,[7]
क्योंकि तू हरेक को उसके कामों के
मुताबिक फल देता है।[8]

दाविद का सुरीला गीत। यह गीत उस समय का है जब दाविद यहूदा के वीराने में था।[9]

63 हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर
है, मैं तुझे ढूँढ़ता रहता हूँ।[10]
मैं तेरे लिए प्यासा हूँ।[11]
इस सूखी तपती ज़मीन पर, जहाँ
एक बूँद पानी भी नहीं,
मैं तेरे लिए इतना तरस रहा हूँ कि
बेहोश होने पर हूँ।[12]
2 जब मैंने तुझे पवित्र जगह में
देखा था,
तब मैंने तेरी ताकत और महिमा की
झलक पायी थी।[13]
3 तेरा अटल प्यार जीवन से कहीं
ज़्यादा अनमोल है,[14]
इसलिए मेरे होंठ तेरी महिमा
करेंगे।[1]
4 मैं सारी ज़िंदगी तेरी तारीफ करूँगा,
हाथ उठाकर तेरा नाम पुकारूँगा।
5 मैं उम्दा और सबसे बढ़िया हिस्सा
पाकर* संतुष्ट हूँ।
इसलिए मेरे होंठ खुशी से तेरी
तारीफ करेंगे।[2]
6 मैं बिस्तर पर लेटे तुझे याद
करता हूँ,
रात के पहर तेरे बारे में मनन
करता हूँ।[3]
7 क्योंकि तू मेरा मददगार है,[4]
मैं तेरे पंखों की छाँव तले खुशी से
जयजयकार करता हूँ।[5]
8 मैं तुझसे लिपटा रहता हूँ,
तेरा दायाँ हाथ मुझे थामे रहता है।[6]
9 मगर जो मेरी जान के पीछे पड़े हैं,
वे धरती की गहराइयों में समा
जाएँगे।
10 वे तलवार के हवाले कर दिए
जाएँगे,
गीदड़ों* का निवाला बन जाएँगे।
11 मगर राजा परमेश्वर के कारण
मगन होगा।
जो कोई परमेश्वर की शपथ खाता
है, वह खुशियाँ मनाएगा,*
क्योंकि झूठ बोलनेवालों का मुँह बंद
कर दिया जाएगा।

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

64 हे परमेश्वर, जब मैं मिन्नत
करूँ तो मेरी सुन।[7]
दुश्मन के खतरनाक हमलों से मेरी
जान बचा।

अध्य. 62
1 1शम 1:15
2 नीत 14:26
3 भज 60:11
4 यश 40:15
5 व्य 6:10-12, अय 31:24, 28, नीत 11:4, 28, नीत 23:4, 5, मत 6:19, 24, मर 8:36, लूक 12:15, 1ती 6:17, 1यूह 2:16
6 अय 9:4, नहू 1:3, प्रक 19:1
7 भज 36:7, भज 86:15, मी 7:18
8 अय 34:11, नीत 24:12, रोम 2:6, 2कुर 5:10, गल 6:7, 2ती 4:14, प्रक 20:12, 13, प्रक 22:12

अध्य. 63
9 1शम 23:14
10 यश 26:9
11 भज 42:2
12 भज 63:उप, भज 143:6
13 1इत 16:28, भज 96:6
14 भज 30:5, भज 100:5

दूसरा कॉल.
1 भज 66:16, 17
2 भज 71:23, भज 135:3
3 भज 119:55, 148
4 1शम 17:37
5 भज 5:11, भज 57:1, भज 61:4
6 यश 41:10

अध्य. 64
7 भज 55:1

63:5 *शा., "मैं मानो चरबी और चिकने भोजन से।" **63:10** *या "लोमड़ियों।" **63:11** *या "गर्व करेगा।"

2 दुष्टों की खुफिया तरकीबों से,[1]
बुराई करनेवालों की भीड़ से मेरी
रक्षा कर।
3 वे अपनी जीभ तलवार की तरह
तेज़ करते हैं,
कड़वे शब्दों के तीरों से निशाना
साधते हैं
4 ताकि छिपकर निर्दोष पर वार करें।
वे बेधड़क होकर उस पर अचानक
तीर चलाते हैं।
5 वे अपने बुरे इरादे पर अड़े
रहते हैं,*
आपस में चर्चा करते हैं कि अपने
फंदे कैसे छिपाएँ।
वे कहते हैं, "इन फंदों पर किसकी
नज़र जाएगी?"[2]
6 वे गुनाह करने के नए-नए तरीके
खोजते हैं,
बड़ी चालाकी से जाल बिछाने की
तरकीबें बुनते हैं,[3]
उनके दिल के विचार समझना ना-
मुमकिन है।
7 मगर परमेश्वर उन पर तीर
चलाएगा,[4]
वे अचानक घायल हो जाएँगे।
8 उनकी जीभ ही उनके गिरने की
वजह बनेगी[5]
देखनेवाले सभी हैरत से सिर
हिलाएँगे।
9 तब सभी आदमी घबरा जाएँगे,
परमेश्वर ने जो किया है उसका
ऐलान करेंगे,
वे उसके कामों की अंदरूनी समझ
हासिल करेंगे।[6]
10 नेक जन यहोवा के कारण आनंद
मनाएगा और उसकी पनाह
लेगा,[1]
सीधे-सच्चे मनवाले सब मगन
होंगे।*

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

65 हे परमेश्वर, सिय्योन में तारीफ
के बोल तेरी राह तकते हैं,[2]
तुझसे मानी मन्नतें हम पूरी
करेंगे।[3]
2 हे प्रार्थना के सुननेवाले, सब किस्म
के लोग तेरे पास आएँगे।[4]
3 मैं अपने गुनाहों का दोष सह नहीं
पा रहा हूँ,[5]
मगर तू हमारे अपराधों को ढाँप
देता है।[6]
4 सुखी है वह जिसे तू चुनता और
अपने पास लाता है
कि वह तेरे आँगनों में
निवास करे।[7]
हम तेरे भवन की,[8] तेरे पवित्र
मंदिर* की अच्छी चीज़ों से
संतुष्ट होंगे।[9]
5 हे परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता,
तू हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देगा
और नेकी की खातिर विस्मय-
कारी काम करेगा,[10]
तू धरती के कोने-कोने तक बसने-
वालों का,
सागर के पार दूर-दूर तक रहने-
वालों का भरोसा है।[11]
6 तूने अपनी शक्ति से पहाड़ों को
मज़बूती से कायम किया है,
तूने महाशक्ति धारण की है।[12]
7 तूफानी समुंदर को, साहिल से
टकराती लहरों को तू शांत कर
देता है,[13]

64:5 *या "वे बुरा करने के लिए एक-दूसरे को उकसाते हैं।"

64:10 *या "गर्व करेंगे।" 65:4 *या "पवित्र-स्थान।"

अध्य. 64
1 भज 56:6; भज 109:2
2 भज 10:4, 11; भज 59:7
3 भज 140:5
4 भज 7:11, 12
5 नीत 12:13; नीत 18:7
6 भज 107:40, 43

दूसरा कॉल.
1 भज 58:10; भज 68:2, 3

अध्य. 65
2 भज 76:2
3 भज 116:18; सभ 5:4
4 भज 145:18; प्रेष 10:31; 1यूह 5:14
5 भज 40:12; रोम 7:23, 24; गल 5:17
6 भज 51:2; यश 1:18; 1यूह 1:7
7 भज 15:1-5; भज 27:4; भज 84:1-4; भज 84:10
8 भज 36:7, 8
9 1शम 3:3; 1इत 16:1
10 व्य 10:21; प्रक 15:3
11 भज 22:27
12 भज 93:1
13 भज 89:9; भज 107:29

होहल्ला मचाते राष्ट्रों को खामोश
कर देता है।[1]
8 दूर-दराज़ इलाकों के लोग तेरे चिन्ह
देखकर दंग रह जाएँगे,[2]
उदयाचल से अस्ताचल तक रहने-
वालों को तू ऐसी खुशी देगा कि
वे जयजयकार करेंगे।
9 तू धरती की देखभाल करता है,
उसे बहुत उपजाऊ बनाता और
भरपूर फसल उगाता है।[3]
तेरी नदी उमड़ती रहती है,
तूने धरती को इस तरह तैयार
किया है
कि तू लोगों को अनाज दे सके।[4]
10 तू इसके कूँड़ों में पानी भरता
है, जुती हुई ज़मीन* समतल
करता है,
तू पानी बरसाकर मिट्टी नरम करता
है और उसकी पैदावार पर
आशीष देता है।[5]
11 तू पूरे साल को आशीषों का ताज
पहनाता है,
तेरी हर डगर पर खुशहाली-ही-
खुशहाली है।*[6]
12 वीराने के चरागाहों में खूब
हरियाली है,[7]
पहाड़ियों ने खुशी का ओढ़ना
ओढ़ा है।[8]
13 चरागाहों में भेड़-बकरियों के झुंड-
के-झुंड फैले हैं,
वादियों में लहलहाती फसलों का
कालीन बिछा है।[9]
वे जीत का जश्न मनाते हैं, हाँ, गीत
गाते हैं।[10]

65:10 *या "उठी हुई मिट्टी।" 65:11 *शा., "चिकनाई टपकती है।"

अध्य. 65
1 यश 17:12, 13 यश 57:20
2 भज 66:3
3 व्य 11:11, 12 प्रेष 14:17
4 भज 104:14, 15
5 भज 147:7, 8
6 उत 27:28 व्य 33:16 मला 3:10
7 यश 35:1
8 यश 55:12
9 यश 30:23
10 प्रेष 14:17

दूसरा कॉल.

अध्य. 66
1 भज 98:4
2 भज 72:19 प्रक 4:11
3 निर्ग 15:16 भज 76:12 यश 2:19 यिर्म 10:10
4 भज 81:15
5 भज 22:27 मला 1:11
6 यश 42:10 प्रक 15:4
7 भज 46:8 सप 2:11
8 निर्ग 14:21, 22
9 यह 3:15, 16
10 निर्ग 15:1
11 दान 4:34 1ती 1:17
12 भज 11:4 नीत 15:3 इब्र 4:13
13 यश 37:29
14 व्य 32:43 रोम 15:10

निर्देशक के लिए हिदायत। एक सुरीला गीत।

66 धरती के सब लोगो, परमेश्वर
की जयजयकार करो![1]
2 उसके गौरवशाली नाम की तारीफ
में गीत गाओ।*
उसकी बढ़-चढ़कर महिमा करो।[2]
3 परमेश्वर से कहो, "तेरे काम क्या
ही विस्मयकारी हैं![3]
तेरी महाशक्ति देखकर दुश्मन तेरे
सामने दुबक जाएँगे।[4]
4 धरती के सब लोग तुझे दंडवत
करेंगे,[5]
तेरी तारीफ में गीत गाएँगे,
तेरे नाम की तारीफ में गीत
गाएँगे।"[6] (*सेला*)
5 आओ, आकर तुम सब परमेश्वर
के काम देखो,
इंसानों की खातिर उसने क्या ही
विस्मयकारी काम किए हैं![7]
6 कभी समुंदर को सूखी ज़मीन बना
दिया,[8]
तो कभी नदी के बीच से रास्ता
निकाला
जिस पर चलकर हम पार उतर
गए।[9]
परमेश्वर के कारण हम वहाँ
आनंद-मगन हुए।[10]
7 वह अपनी ताकत से सदा राज
करता है।[11]
राष्ट्रों पर नज़र रखता है।[12]
जो हठीले हैं वे खुद को बहुत ऊँचा
न उठाएँ।[13] (*सेला*)
8 देश-देश के लोगो, हमारे परमेश्वर
की तारीफ करो,[14]
उसकी तारीफ चारों तरफ
गूँज उठे।

66:2 *या "संगीत बजाओ।"

9 वह हमारी जान सलामत रखता है,[1]
हमारे कदमों को लड़खड़ाने* नहीं
देता।[2]
10 हे परमेश्‍वर, तूने हमें जाँचा,[3]
चाँदी की तरह हमें शुद्ध किया।
11 तूने हमें अपने जाल में फँसा लिया,
हम पर दुखों का ऐसा भारी बोझ
लादा कि हम दब गए।
12 तूने नश्‍वर इंसान को हमारे* ऊपर
से सवारी करने दिया,
हम आग और पानी से गुज़रे,
इसके बाद तू हमें एक महफूज़
जगह ले आया।
13 मैं पूरी होम-बलियाँ लेकर तेरे भवन
में आऊँगा,[4]
वे सारी मन्‍नतें पूरी करूँगा,[5]
14 जो मैंने मुसीबत के वक्‍त तुझसे
मानी थीं,[6]
वे वादे निभाऊँगा जो मैंने संकट के
वक्‍त किए थे।
15 मैं तुझे मोटे-ताज़े जानवरों की होम-
बलियाँ चढ़ाऊँगा,
मेढ़ों का बलिदान करूँगा ताकि
उनका धुआँ उठे।
मैं बकरे और बैल अर्पित करूँगा।
(*सेला*)
16 परमेश्‍वर का डर माननेवालो, तुम
सब आओ और सुनो,
मैं तुम्हें बताऊँगा कि उसने मेरे लिए
क्या-क्या किया।[7]
17 मैंने अपने मुँह से उसे पुकारा,
अपनी जीभ से उसकी महिमा की।
18 अगर मैंने दिल में कोई बुराई पनपने
दी होती,
तो यहोवा मेरी नहीं सुनता।[8]
19 मगर परमेश्‍वर ने मेरी सुनी है,[1]
उसने मेरी प्रार्थना पर ध्यान
दिया है।[2]
20 परमेश्‍वर की बड़ाई हो जिसने मेरी
प्रार्थना नहीं ठुकरायी,
न ही अपने अटल प्यार से मुझे दूर
रखा।

एक सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायतः
यह गीत तारोंवाले बाजे बजाकर गाया जाए।

67 परमेश्‍वर हम पर कृपा करेगा
और हमें आशीष देगा,
अपने मुख का प्रकाश हम पर चम-
काएगा[3] (*सेला*)
2 ताकि सारा जग तेरी राह के बारे में
जाने,[4]
तू जो उद्धार दिलाता है उसके बारे
में सब राष्ट्र जानें।[5]
3 हे परमेश्‍वर, देश-देश के लोग तेरी
तारीफ करें,
सभी देशों के लोग तेरी
तारीफ करें।
4 राष्ट्र आनंद मनाएँ और खुशी से
जयजयकार करें,[6]
क्योंकि तू बिना तरफदारी किए
उनका न्याय करेगा।[7]
तू धरती के राष्ट्रों को राह
दिखाएगा। (*सेला*)
5 हे परमेश्‍वर, देश-देश के लोग तेरी
तारीफ करें,
सभी देशों के लोग तेरी
तारीफ करें।
6 धरती अपनी उपज देगी,[8]
परमेश्‍वर, हमारा परमेश्‍वर हमें
आशीष देगा।[9]
7 परमेश्‍वर हमें आशीष देगा
और धरती के कोने-कोने में रहने-
वाले उसका डर मानेंगे।*[10]

66:9 *या "डगमगाने।" **66:12** *शा., "हमारे सिर के।"

67:7 *या "आदर करेंगे।"

अध्य. 66
1 1शम 25:29
2 1शम 2:9; भज 121:3
3 व्य 8:2
4 गि 15:3
5 भज 56:12; भज 116:14; सभ 5:4, 5
6 गि 30:2; न्या 11:35
7 भज 22:24
8 अय 27:8, 9; नीत 15:29; नीत 28:9; यश 1:15; यूह 9:31

दूसरा कॉल.
1 भज 34:6; भज 65:2; भज 116:1; 1यूह 3:22
2 इब्र 5:7

अध्य. 67
3 गि 6:25; नीत 16:15
4 रोम 10:18; कुल 1:23
5 भज 98:2; यश 49:6; लूक 2:30, 31; प्रेष 28:28; तीत 2:11
6 यश 42:10
7 भज 9:8; भज 96:10; भज 98:9; रोम 2:5
8 लैव 26:4; भज 85:12; यश 30:23; यहे 34:27
9 उत 17:7
10 भज 22:27; प्रक 15:4

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

68 परमेश्वर उठे, उसके दुश्मन
तितर-बितर हो जाएँ,
उससे नफरत करनेवाले उसके
सामने से भाग जाएँ।[1]
2 जैसे धुआँ उड़ाया जाता है, वैसे ही
तू उन्हें उड़ा दे,
जैसे मोम आग के सामने पिघल
जाता है,
वैसे ही दुष्ट परमेश्वर के सामने
मिट जाएँ।[2]
3 मगर नेक लोग आनंद मनाएँ,[3]
परमेश्वर के सामने फूले न समाएँ,
वे खुशी से झूम उठें।
4 परमेश्वर के लिए गीत गाओ,
उसके नाम की तारीफ में गीत
गाओ।*[4]
उस परमेश्वर के लिए गाओ
जिसकी सवारी वीरानों से गुज़र-
ती है।#
उसका नाम याह△ है![5] उसके आगे
आनंद मनाओ!
5 परमेश्वर जो अपने पवित्र निवास
में है,[6]
अनाथों* का पिता और विधवाओं
का रखवाला# है।[7]
6 जो अकेले हैं उन्हें रहने को घर
देता है[8]
कैदियों को रिहा करके खुशहाली
देता है।[9]
मगर जो ढीठ* हैं उन्हें सूखे देश में
रहना पड़ेगा।[10]
7 हे परमेश्वर, जब तू अपने लोगों को
राह दिखाता हुआ चला,[1]
वीराने से होकर गुज़रा, (*सेला*)
8 तो तेरे सामने धरती डोलने लगी,[2]
आसमान पानी बरसाने* लगा,
इसराएल के परमेश्वर के सामने
यह सीनै पहाड़ काँपने लगा।[3]
9 हे परमेश्वर, तूने पानी की
बौछार की,
अपने थके-हारे लोगों* में नया
जोश भर दिया।
10 उन्होंने तेरी छावनी में बसेरा
किया,[4]
हे परमेश्वर, तूने गरीबों की ज़रूरतें
पूरी करके अपनी भलाई का
सबूत दिया।
11 यहोवा हुक्म देता है,
खुशखबरी सुनानेवाली औरतों की
एक बड़ी सेना है।[5]
12 राजा अपनी सेनाओं को लेकर भाग
जाते हैं![6] हाँ, वे भाग जाते हैं!
घर में रहनेवाली औरतों को भी लूट
का हिस्सा मिलता है।[7]
13 तुम आदमियों को भले ही अलावों*
के पास लेटना पड़ा,
मगर वहाँ तुम्हें ऐसी फाख्ता मिलेगी
जिसके पर चाँदी के और डैने
शुद्ध# सोने के होंगे।
14 जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने
उसके राजाओं को तितर-बितर
कर दिया,[8]
तो ज़लमोन पहाड़ में बर्फबारी होने
लगी।*

अध्य. 68
1 गि 10:35; भज 21:8
2 नहू 1:6
3 भज 32:11
4 यश 12:4
5 निर्ग 6:3
6 यश 57:15
7 निर्ग 22:22-24; व्य 10:17, 18; भज 10:14; भज 146:9
8 भज 113:9
9 यश 61:1
10 व्य 28:15, 23; भज 107:33, 34

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 13:21
2 भज 114:1, 4; इब्र 12:26
3 निर्ग 19:18; न्या 5:4, 5
4 गि 10:34
5 निर्ग 15:20; न्या 5:1; न्या 11:34; 1शम 18:6
6 गि 31:25-27; यह 10:12, 16; यह 12:7; न्या 5:19
7 गि 31:27; 1शम 30:23-25
8 गि 21:3; यह 10:5, 10

68:4 *या "संगीत बजाओ।" #या शायद, "जो बादलों पर सवारी करता है।" △"याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। **68:5** *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।" #शा., "न्यायी।" **68:6** *या "बागी।"

68:8 *शा., "टपकने।" **68:9** *शा., "अपनी विरासत।" **68:13** *या शायद, "भेड़शालाओं।" #या "पीले-हरे रंग के।" **68:14** *या "तो यह ऐसा था मानो ज़लमोन में बर्फ पड़ी।"

15 बाशान पहाड़[1] परमेश्वर का
पहाड़* है,
यह कई चोटियोंवाला पहाड़ है।
16 हे चोटियोंवाले पहाड़, तू क्यों उस
पहाड़ को जलन से देखता है
जिसे परमेश्वर ने अपना निवास
चुना है?*[2]
बेशक उसी पहाड़ पर यहोवा सदा
निवास करेगा।[3]
17 परमेश्वर के युद्ध-रथों की गिनती
हज़ारों-लाखों में है।[4]
यहोवा सीनै पहाड़ से पवित्र जगह
में आया है।[5]
18 हे याह, हे परमेश्वर, तू ऊँचे
पर चढ़ा[6]
और बंदियों को ले गया,
आदमियों के रूप में तोहफे ले
गया,[7]
हाँ, ढीठ लोगों[8] को भी ले गया
ताकि तू उनके बीच निवास करे।
19 यहोवा की तारीफ हो जो हर दिन
हमारा बोझ ढोता है,[9]
वह सच्चा परमेश्वर है, हमारा
उद्धारकर्ता। (*सेला*)
20 सच्चा परमेश्वर हमें बचानेवाला
परमेश्वर है,[10]
सारे जहान का मालिक यहोवा मौत
से बचाता है।[11]
21 हाँ, परमेश्वर अपने दुश्मनों का
सिर चूर-चूर कर देगा,
जो पाप करने से बाज़ नहीं
आते।*[12]
22 यहोवा ने कहा है, "मैं उन्हें बाशान
से वापस लाऊँगा,[13]
समुंदर की गहराइयों से निकाल
लाऊँगा
23 ताकि उन दुश्मनों के खून से तुम्हारे
पैर लथपथ हो जाएँ[1]
और तुम्हारे कुत्ते उनका खून
चाटें।"
24 हे परमेश्वर, वे तेरी जीत का जुलूस
देखते हैं,
मेरे परमेश्वर का, मेरे राजा का
जुलूस देखते हैं जो पवित्र जगह
की तरफ बढ़ता है।[2]
25 गायक सबसे आगे होते हैं,
उनके पीछे तारोंवाले बाजे बजाते
संगीतकार होते हैं,[3]
दोनों दलों के बीच डफली बजाती
जवान औरतें चलती हैं।[4]
26 जहाँ लोगों की भीड़ जमा
है, वहाँ* परमेश्वर की
तारीफ करो,
इसराएल के सोते से निकले
हुए लोगो, यहोवा की तारीफ
करो।[5]
27 वहाँ सबसे छोटा गोत्र बिन्यामीन[6]
उन्हें अपने अधीन कर रहा है,
साथ ही यहूदा के हाकिम और
उनके लोगों की भीड़,
जबूलून के हाकिम और नप्ताली
के हाकिम भी उन्हें अपने अधीन
कर रहे हैं।
28 तेरे परमेश्वर ने तय किया है कि तू
ताकतवर होगा।
हे परमेश्वर, जैसे तूने हमारी
खातिर ताकत दिखायी थी,
वैसे अब भी दिखा।[7]
29 यरूशलेम में तेरे मंदिर के कारण[8]
राजा तुझे तोहफे लाकर देंगे।[9]

68:15 *या "एक विशाल पहाड़।" 68:16 *या "अपने निवास के लिए चाहा है?" 68:21 *या "पाप की राह पर चलते हैं।"

68:26 *शा., "बड़ी सभाओं में।"

अध्य. 68

1 गि 21:33
व्य 3:8, 10
2 1इत 11:5
भज 48:2, 3
भज 132:13
3 व्य 12:5, 6
1रा 9:3
इब्र 12:22
4 2रा 6:16, 17
मत 26:53
5 निर्ग 19:23
व्य 33:2
6 2शम 5:7
7 इफ 4:8, 11
8 व्य 2:36
व्य 7:22
9 भज 55:22
1पत 5:6, 7
10 यश 12:2
यश 45:17
11 व्य 32:39
12 भज 55:23
यहे 18:26
13 गि 21:33

दूसरा कॉल.

1 भज 58:10
2 1इत 15:25, 28
भज 24:7
3 1इत 15:16
भज 87:7
भज 150:3
4 न्या 11:34
1शम 18:6
5 भज 95:6
यश 44:2
6 उत 49:27
1शम 9:21
7 भज 138:8
8 1रा 6:1
1इत 16:1
एज 5:14
9 1रा 10:10
2इत 32:23
भज 72:10

30 नरकटों में रहनेवाले जंगली जानवरों को
और बैलों के झुंड[1] और उनके बछड़ों को तब तक डाँट,
जब तक कि देश-देश के लोग चाँदी के टुकड़े लाकर तुझे दंडवत नहीं करते।*
तू उन लोगों को तितर-बितर कर देता है जिन्हें युद्ध करने में मज़ा आता है।
31 मिस्र से काँसे की चीज़ें लायी जाएँगी,*[2]
कूश बड़ी फुर्ती से परमेश्वर के लिए भेंट लाएगा।
32 धरती के राज्यो, परमेश्वर के लिए गीत गाओ,[3]
यहोवा की तारीफ में गीत गाओ,*
(*सेला*)
33 उसके लिए, जो मुद्दतों से कायम ऊँचे आसमानों पर सवार है,[4]
सुनो! उसकी आवाज़ क्या ही बुलंद है! देखो, कैसे गरज रही है!
34 कबूल करो कि परमेश्वर में ताकत है।[5]
उसका प्रताप इसराएल पर छाया है,
उसकी ताकत आसमान में है।
35 अपने शानदार भवन से निकलता परमेश्वर क्या ही विस्मयकारी दिखायी पड़ता है।[6]
वह इसराएल का परमेश्वर है,
जो अपनी प्रजा को ताकत और शक्ति देता है।[7]
परमेश्वर की तारीफ हो।

68:30 *या शायद, "टुकड़े रौंद नहीं देते।"
68:31 *या शायद, "से राजदूत आएँगे।"
68:32 *या "संगीत बजाओ।"

दाविद की रचना। निर्देशक के लिए हिदायतः "सोसन के फूलों" के मुताबिक।

69 हे परमेश्वर, मुझे बचा ले
क्योंकि मैं पानी में डूबा जा रहा हूँ।[1]
2 मैं गहरे दलदल में धँस गया हूँ जहाँ ठोस ज़मीन नहीं है।[2]
मैं गहरे पानी में डूब रहा हूँ,
तेज़ धारा मुझे बहा ले जा रही है।[3]
3 मदद की पुकार लगाते-लगाते मैं पस्त हो गया हूँ,[4]
मेरा गला बैठ गया है।
अपने परमेश्वर की राह देखते-देखते मेरी आँखें पथरा गयी हैं।[5]
4 जो मुझसे बेवजह नफरत करते हैं,[6]
उनकी गिनती मेरे सिर के बालों से कहीं ज़्यादा है।
मेरे कपटी दुश्मन* जो मुझे मिटाने पर तुले हैं,
उनकी गिनती बेशुमार हो गयी है।
मैंने जो चुराया नहीं वह भी मुझे देना पड़ा।
5 हे परमेश्वर, तू मेरी मूर्खता अच्छी तरह जानता है,
मेरा दोष तुझसे छिपा नहीं है।
6 हे सारे जहान के मालिक, सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
तुझ पर आशा रखनेवालों को मेरी वजह से शर्मिंदा न होना पड़े।
हे इसराएल के परमेश्वर, तेरी खोज करनेवालों को मेरी वजह से बेइज़्ज़त न होना पड़े।
7 मैं तेरी खातिर बदनामी झेल रहा हूँ,[7]
मुझे बुरी तरह शर्मिंदा किया गया है।[8]

69:4 *या "बेवजह मुझसे दुश्मनी करनेवाले।"

अध्य. 68
1 यहे 39:18
2 यश 45:14 यश 60:5
3 व्य 32:43
4 भज 104:3
5 भज 96:7
6 भज 47:2 भज 66:5
7 भज 29:11 यश 40:29-31

दूसरा कॉल.

अध्य. 69
1 भज 144:7 विल 3:54 यो 2:5
2 भज 40:2
3 भज 32:6 यो 2:3
4 भज 22:2
5 भज 119:82 भज 119:123 यश 38:14
6 लूक 23:22 यूह 15:24, 25
7 भज 22:6 यिर्म 15:15
8 यश 50:6 मत 26:67 मत 27:29

8 मैं अपने भाइयों के लिए अजनबी
हो गया हूँ,
अपने सगे भाइयों के लिए पराया
हो गया हूँ।[1]
9 तेरे भवन के लिए जोश की आग ने
मुझे भस्म कर दिया है,[2]
जो तेरी निंदा करते हैं, उनकी निंदा-
भरी बातें मुझ पर आ पड़ी हैं।[3]
10 जब मैंने उपवास करके खुद को दीन
किया*
तो मेरा अपमान किया गया।
11 जब मैंने टाट ओढ़ा,
तो मेरी खिल्ली उड़ायी गयी।*
12 शहर के फाटक पर बैठनेवाले मेरे
बारे में बात करते हैं,
शराबी मेरे बारे में गीत बनाते हैं।
13 मगर हे यहोवा, तू सही वक्त पर
मेरी प्रार्थना कबूल करना।[4]
हे परमेश्‍वर, तू अटल प्यार से भर-
पूर है और सच्चा उद्धारकर्ता है,
इसलिए मेरी प्रार्थना का जवाब दे।[5]
14 मुझे दलदल से निकाल ले
ताकि मैं अंदर धँस न जाऊँ।
मुझसे नफरत करनेवालों से मुझे
छुड़ा ले,
गहरे पानी में डूबने से मुझे
बचा ले।[6]
15 तेज़ धाराओं को मुझे बहाकर ले
जाने न दे,[7]
गहरे पानी को मुझे निगलने न दे,
कुएँ* को मुझे अपने अंदर खींचने
न दे।[8]
16 हे यहोवा, मुझे जवाब दे क्योंकि
तेरा अटल प्यार बहुत गहरा है।[9]
तू बड़ा दयालु है, मुझ पर
ध्यान दे,[1]
17 अपने सेवक से मुँह न फेर।[2]
मैं बड़े संकट में हूँ, फौरन मेरी
पुकार सुन ले।[3]
18 मेरे पास आ, मुझे छुड़ा ले,
दुश्‍मनों से मुझे बचा ले।
19 तू जानता है कि मुझे कैसे बदनाम
किया गया है,
मुझे शर्मिंदा और बेइज़्ज़त किया
गया है।[4]
तू मेरे सब दुश्‍मनों को देखता है।
20 घोर अपमान सहते-सहते मेरा दिल
टूट गया है, अब यह घाव भर
नहीं सकता।*
मैंने हमदर्दी की उम्मीद लगायी मगर
कहीं न मिली,[5]
दिलासा देनेवालों की आस लगायी
पर कोई न मिला।[6]
21 उन्होंने मुझे खाने के नाम पर
ज़हर* दिया,[7]
प्यास बुझाने के लिए सिरका
दिया।[8]
22 उनकी मेज़ उनके लिए फंदा बन
जाए,
उनकी खुशहाली उनके लिए जाल
बन जाए।[9]
23 उनकी आँखों के आगे अँधेरा छा
जाए ताकि वे देख न सकें,
उनके पैर* हमेशा कँपकँपाते रहें।
24 उन पर अपनी जलजलाहट*
उँडेल दे,
तेरे क्रोध की आग उन्हें भस्म
कर दे।[10]

69:10 *या शायद, "जब मैंने रो-रोकर उपवास किया।" 69:11 *शा., "मैं उनके लिए एक कहावत बन गया।" 69:15 *या "गड्ढे।"

69:20 *या "अब मेरे लिए कोई उम्मीद नहीं बची।" 69:21 *या "एक ज़हरीला पौधा।" 69:23 *या "कमर।" 69:24 *या "अपना क्रोध।"

अध्य. 69
1 अय 19:13, भज 31:11, यूह 1:11, यूह 7:5
2 1रा 19:10, भज 119:139, मत 21:12, 13, मर 11:15-17, यूह 2:13-17
3 रोम 15:3
4 यश 49:8, इब्र 5:7
5 भज 68:20
6 भज 144:7
7 भज 69:2
8 भज 16:10
9 भज 63:3, भज 109:21

दूसरा कॉल.
1 भज 25:16
2 भज 27:9, भज 102:2
3 भज 31:9, भज 40:13
4 भज 22:6
5 भज 142:4
6 अय 19:14
7 मत 27:34, मर 15:23
8 मत 27:48, मर 15:36, लूक 23:36, यूह 19:29
9 रोम 11:9, 10
10 भज 21:9

25 उनकी छावनी* उजड़ जाए,
उनके तंबू सुनसान हो जाएँ।[1]
26 क्योंकि वे उसका पीछा करते हैं
जिसे तूने मारा है,
उनके दुखों के बारे में गपशप करते
हैं जिन्हें तूने घायल किया है।
27 उनका दोष और बढ़ा दे
और वे तेरी नज़र में नेक न माने
जाएँ।
28 जीवन की किताब से उनका नाम
मिटा दिया जाए,[2]
उनका नाम नेक लोगों के साथ न
लिखा जाए।[3]
29 मैं सताया जा रहा हूँ, दर्द से
बेहाल हूँ।[4]
हे परमेश्वर, तुझमें उद्धार करने की
शक्ति है, मेरी रक्षा कर।
30 मैं परमेश्वर के नाम की तारीफ में
गीत गाऊँगा,
उसका शुक्रिया अदा करते हुए
उसकी महिमा करूँगा।
31 यह यहोवा को बैल के बलिदान से
ज़्यादा भाएगा,
सींग और खुरवाले बैल के बलिदान
से ज़्यादा।[5]
32 दीन लोग इसे देखेंगे और आनंद
मनाएँगे।
परमेश्वर की खोज करनेवालो,
तुम्हारे दिल फिर से मज़बूत हो
जाएँ।
33 क्योंकि यहोवा गरीबों की
सुनता है,[6]
अपने लोगों को जो बंदी हैं, तुच्छ
नहीं समझेगा।[7]
34 धरती और अंबर उसकी
तारीफ करें,[8]

अध्य. 69
1 प्रेष 1:20
2 निर्ग 32:33
3 फिल 4:3
प्रक 3:5
प्रक 13:8
4 भज 109:22
5 भज 50:13-15
हो 14:2
6 भज 10:17
भज 102:17
यश 66:2
7 भज 146:7
यश 61:1
लूक 4:18
8 भज 96:11
यश 49:13

दूसरा कॉल.
1 भज 51:18
2 यश 61:9
यश 66:22
3 भज 91:14
याकू 1:12

अध्य. 70
4 भज 40:13-17
5 भज 5:11
विल 3:25
6 भज 109:22
7 भज 141:1

समुंदर और उसमें तैरती हर चीज़
उसकी तारीफ करे।
35 क्योंकि परमेश्वर सिय्योन को
बचाएगा[1]
और यहूदा के शहरों को फिर
बसाएगा,
वे वहाँ बसेंगे और उस पर* अधि-
कार पाएँगे।
36 उसके सेवकों के वंशज उसके
वारिस होंगे,[2]
उसके नाम से प्यार करनेवाले उसमें
बसेंगे।[3]

निर्देशक के लिए हिदायत।
यादगार के लिए दाविद का गीत।

70 हे परमेश्वर, मुझे बचा ले,
हे यहोवा, मेरी मदद के लिए
जल्दी आ।[4]
2 जो मेरी जान के पीछे पड़े हैं,
वे शर्मिंदा और अपमानित किए
जाएँ।
जो मुझे संकटों से घिरा देखकर
मज़ा लेते हैं,
वे बेइज़्ज़त होकर भाग जाएँ।
3 जो मुझ पर हँसते और कहते हैं,
"अच्छा हुआ! अच्छा हुआ!"
उन्हें शर्मिंदा करके वापस भगा दिया
जाए।
4 मगर जो तेरी खोज करते हैं,
वे तेरे कारण मगन हों और आनंद
मनाएँ,[5]
उद्धार के लिए तुझ पर आस
लगानेवाले हमेशा कहें,
"परमेश्वर की महिमा हो!"
5 हे परमेश्वर, मैं बेसहारा और
गरीब हूँ,[6]
मेरी खातिर जल्द कदम उठा,[7]

69:25 *या "दीवारों से घिरी छावनी।"

69:35 *यानी देश पर।

तू ही मेरा मददगार और छुड़ाने-
वाला है।[1]
हे यहोवा, तू देर न कर।[2]

71 हे यहोवा, मैंने तेरी पनाह
ली है।
मुझे कभी शर्मिंदा न होना पड़े।[3]
2 तू नेक परमेश्‍वर है, मुझे बचा ले,
मुझे छुड़ा ले।
मेरी तरफ कान लगा* और मुझे
बचा ले।[4]
3 मेरे लिए ऐसा किला बन जा जो
चट्टान पर खड़ा हो,
जहाँ मैं कभी-भी भागकर जा सकूँ।
मुझे बचाने का हुक्म दे,
क्योंकि तू मेरे लिए बड़ी चट्टान और
गढ़ है।[5]
4 हे मेरे परमेश्‍वर, मुझे दुष्ट के
हाथ से,[6]
अन्याय करनेवाले अत्याचारी के
चंगुल से छुड़ा ले।
5 क्योंकि हे सारे जहान के मालिक
यहोवा, तू ही मेरी आशा है,
मैं बचपन से तुझ पर भरोसा करता
आया हूँ।[7]
6 जन्म से मैं तुझ पर निर्भर रहा हूँ,
तूने ही मुझे माँ की कोख से
निकाला।[8]
मैं हमेशा तेरी तारीफ करता हूँ।
7 मेरे साथ जो हुआ है वह बहुतों के
लिए एक करिश्मा है,
मगर तू मेरा मज़बूत गढ़ है।
8 मेरे होंठों पर तेरे लिए तारीफ-ही-
तारीफ है,[9]
सारा दिन मैं तेरे वैभव का बखान
करता हूँ।
9 जब मेरी उम्र ढल जाए तो तू मुझे
दरकिनार न कर देना,[10]

71:2 * या "झुककर मेरी सुन।"

अध्य. 70
1 भज 18:2
2 भज 13:3

अध्य. 71
3 भज 25:2
भज 31:1-3
यश 45:17
यिर्म 17:18
4 भज 34:15
5 2शम 22:2, 3
भज 18:2
भज 144:2
6 भज 17:8, 9
भज 59:1
भज 140:4
मत 6:13
7 1शम 17:45
यिर्म 17:7
8 भज 22:9, 10
भज 139:16
यश 46:3
9 भज 51:15
इब्र 13:15
10 भज 92:14

दूसरा कॉल.
1 भज 73:26
सभ 12:3
2 2शम 17:1, 2
3 भज 3:2
भज 42:10
मत 27:42, 43
4 भज 22:11
भज 35:22
भज 38:21, 22
5 2शम 17:23
6 भज 109:29
7 भज 35:28
भज 40:9
8 भज 40:5
9 भज 71:5

जब मेरी ताकत जवाब दे जाए तो
मुझे त्याग न देना।[1]
10 मेरे दुश्‍मन मेरे खिलाफ बोलते हैं,
जो मेरी जान के पीछे पड़े हैं, वे
मिलकर साज़िश रचते हैं,[2]
11 वे कहते हैं, "परमेश्‍वर ने उसे छोड़
दिया है।
उसे बचानेवाला कोई नहीं, उसका
पीछा करो, उसे पकड़ लो।"[3]
12 हे परमेश्‍वर, तू अब मुझसे दूर
न रह।
हे मेरे परमेश्‍वर, मेरी मदद के लिए
जल्दी आ।[4]
13 जो मेरा विरोध करते हैं,
वे शर्मिंदा किए जाएँ, नाश हो
जाएँ।[5]
जो मुझे बरबाद करने पर तुले हैं,
वे अपमान और बेइज़्ज़ती से ढक
जाएँ।[6]
14 मगर मैं तो तेरी राह तकता रहूँगा,
मैं और भी ज़्यादा तेरी तारीफ
करूँगा।
15 मैं तेरे नेक कामों का बखान
करूँगा,[7]
तू जो उद्धार दिलाता है उसका सारा
दिन बखान करूँगा,
इसके बावजूद कि वे इतने हैं कि
उन्हें समझना* मेरे बस में नहीं।[8]
16 हे सारे जहान के मालिक यहोवा,
मैं आकर तेरे शक्‍तिशाली काम
बयान करूँगा
और तेरी नेकी के बारे में
बताऊँगा, हाँ, सिर्फ तेरी नेकी के
बारे में।
17 हे परमेश्‍वर, मेरे बचपन से तू मुझे
सिखाता आया है[9]

71:15 * या "गिनना।"

और मैं आज तक तेरे आश्चर्य के
कामों का ऐलान कर रहा हूँ।[1]
18 हे परमेश्वर, जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ
और मेरे बाल पक जाएँ, तब भी
तू मुझे त्याग न देना,[2]
मुझे अगली पीढ़ी को तेरी शक्ति*
के बारे में,
आनेवाली नसल को तेरी महाशक्ति
के बारे में सुनाने का मौका
देना।[3]
19 हे परमेश्वर, तेरी नेकी कितनी
महान है,[4]
हे परमेश्वर, तूने क्या ही बड़े-बड़े
काम किए हैं,
तेरा कोई सानी नहीं![5]
20 तूने भले ही मुझ पर कई मुसीबतें
और विपत्तियाँ आने दी हैं[6]
मगर अब तू मुझमें नयी जान
फूँक दे,
धरती की गहराइयों* से मुझे ऊपर
निकाल ले।[7]
21 मेरी महानता और बढ़ा दे,
मुझे घेरकर मेरी रक्षा कर और मुझे
दिलासा दे।
22 तब हे परमेश्वर, मैं तेरी वफादारी
के कारण
तारोंवाला बाजा बजाकर तेरी
तारीफ करूँगा,*[8]
हे इसराएल के पवित्र परमेश्वर,
मैं सुरमंडल बजाकर तेरी तारीफ में
गीत गाऊँगा।
23 मेरे होंठ तेरी तारीफ में गीत गाएँगे,
खुशी से जयजयकार करेंगे,[9]
क्योंकि तूने मेरी जान बचायी है।[10]

71:18 *शा., "तेरे बाज़ू।" **71:20** *या "गहरे पानी।" **71:22** *या "तेरे लिए संगीत बजाऊँगा।"

अध्या. 71
1 2शम 22:1; 1इत 16:4; भज 9:1
2 भज 37:25; भज 71:9
3 निर्ग 13:8; 1इत 29:10, 11; भज 78:2-4
4 भज 36:6
5 निर्ग 15:11; भज 86:8; भज 89:6; यिर्म 10:7
6 2शम 12:10, 11
7 भज 40:2; भज 86:13
8 भज 25:10; भज 108:4; भज 146:6
9 भज 63:5; भज 104:33
10 2शम 4:9; भज 103:4

दूसरा कॉल.
1 भज 71:8
2 भज 71:13

अध्या. 72
3 1इत 22:11, 12; 1इत 29:19; यिर्म 23:5
4 1रा 3:9, 28
5 यश 11:4
6 भज 89:36, 37; लूक 1:32, 33; प्रक 11:15
7 2शम 23:3, 4; नीत 16:15; नीत 19:12
8 यश 61:11
9 1रा 4:25; 1इत 22:9; यश 2:4; यश 9:6
10 निर्ग 23:31; 1रा 4:21; भज 2:8; भज 22:27, 28; दान 2:35; जक 9:10

24 सारा दिन मेरी जीभ तेरी नेकी का
बखान करेगी,*[1]
क्योंकि जो मुझे नाश करने पर तुले
हैं, वे शर्मिंदा और बेइज़्ज़त किए
जाएँगे।[2]

सुलैमान के बारे में।

72 हे परमेश्वर, राजा को अपने
न्याय-सिद्धांत बता,
राजा के बेटे को अपनी नेकी के
बारे में सिखा।[3]
2 वह तेरे लोगों की पैरवी नेकी
से करे,
तेरे दीन लोगों को न्याय दिलाए।[4]
3 पहाड़, लोगों के लिए शांति लाएँ,
पहाड़ियाँ नेकी लाएँ।
4 लोगों में जो दीन हैं राजा उनकी
पैरवी* करे,
गरीबों के बच्चों को बचाए,
मगर धोखेबाज़ को कुचल दे।[5]
5 जब तक सूरज रहेगा,
जब तक चाँद बना रहेगा,
तब तक लोग तेरा डर मानेंगे,
पीढ़ी-पीढ़ी तक तेरा डर मानेंगे।[6]
6 राजा पानी की बौछार जैसा होगा
जो कटी घास पर पड़ती है,
उस झड़ी की तरह होगा जो धरती
को सींचती है।[7]
7 उसके दिनों में नेक जन फूले-
फलेगा,[8]
जब तक चाँद बना रहेगा, तब तक
हर तरफ शांति रहेगी।[9]
8 उसकी प्रजा* एक सागर से दूसरे
सागर तक,
महानदी# से धरती के छोर तक
फैली होगी।[10]

71:24 *या "पर मनन करेगी।" **72:4** *शा., "उनका न्याय।" **72:8** *या "उसका राज।" #यानी फरात नदी।

9 रेगिस्तान के बाशिंदे उसे प्रणाम
करेंगे,
उसके दुश्मन धूल चाटेंगे।[1]
10 तरशीश और द्वीपों के राजा उसे
नज़राना देंगे,[2]
शीबा और सबा के राजा उसे तोहफे
देंगे।[3]
11 सभी राजा उसे प्रणाम करेंगे,
सारे राष्ट्र उसकी सेवा करेंगे।
12 वह दुहाई देनेवाले गरीबों को
बचाएगा,
दीन-दुखियों और उनको
छुड़ाएगा जिनका कोई मददगार
नहीं।
13 वह दीन-दुखियों और गरीबों पर
तरस खाएगा,
गरीबों की जान बचाएगा।
14 वह उन्हें अत्याचार और ज़ुल्म से
छुड़ाएगा,
उनका खून उसकी नज़र में अनमोल
ठहरेगा।
15 राजा की उम्र लंबी हो, उसे शीबा
का सोना दिया जाए।[4]
उसके लिए लगातार दुआएँ की
जाएँ,
सारा दिन उसे आशीर्वाद दिया
जाए।
16 धरती पर बहुतायत में अनाज
होगा,[1]
पहाड़ों की चोटियों पर अनाज की
भरमार होगी।
राजा की फसल लबानोन के पेड़ों
की तरह भरपूर होगी,[2]
शहरों के लोग ज़मीन की घास की
तरह खूब बढ़ेंगे।[3]
17 उसका नाम सदा-सर्वदा बना रहे,[4]
जब तक सूरज रहेगा तब तक
उसका नाम फैलता जाए,
उसके ज़रिए लोग आशीषें पाएँ,*[5]
देश-देश के लोग उसे सुखी कहें।
18 इसराएल के परमेश्वर यहोवा की
तारीफ हो,[6]
उसके जैसा करिश्मा करनेवाला
कोई नहीं।[7]
19 उसके गौरवशाली नाम की सदा
तारीफ होती रहे,[8]
उसकी महिमा से पूरी धरती भर
जाए।[9]
आमीन, आमीन।
20 यहाँ यिशै के बेटे दाविद की प्रार्थ-
नाएँ खत्म होती हैं।[10]

अध्य. 72
1 भज 2:9, भज 110:1
2 1रा 4:21
3 1रा 10:1, 2
4 1रा 10:10

दूसरा कॉल.
1 यश 30:23
2 यश 35:1, 2
3 1रा 4:20
4 भज 45:17, भज 89:35, 36
5 उत 22:18, गल 3:14
6 1इत 29:10
7 निर्ग 15:11
8 प्रक 5:13
9 गि 14:21, हब 2:14
10 1शम 17:58

72:17 *इसका यह मतलब हो सकता है कि आशीष पाने के लिए उन्हें भी कुछ कदम उठाने होंगे।

तीसरी किताब
(भजन 73-89)

आसाप[1] का सुरीला गीत।

73 परमेश्वर वाकई इसराएल का,
शुद्ध मनवालों का भला
करता है।[2]
2 मगर मेरे कदम बहकने ही वाले थे,
मेरे पैर फिसलने ही वाले थे।[3]
3 क्योंकि जब मैंने दुष्टों को चैन से
जीते देखा,
तो मैं उन मगरूरों* से जलने
लगा था।[1]
4 वे हट्टे-कट्टे और मज़बूत हैं।*
उनकी मौत भी दर्दनाक नहीं
होती।[2]

अध्य. 73
1 2इत 35:15
2 भज 84:11, मत 5:8
3 भज 94:18

दूसरा कॉल.
1 अय 21:7, यिर्म 12:1
2 सभ 7:15

73:3 *या "डींग मारनेवालों।" 73:4 *या "उनकी तोंद बड़ी है।"

5 उन्हें ज़िंदगी में कोई गम नहीं, जैसे
औरों को है।[1]
वे मुसीबत की मार नहीं सहते, जैसे
दूसरे सहते हैं।[2]
6 इसलिए घमंड उनके गले का
हार है,[3]
हिंसा उनके तन का लिबास है।
7 रईसी* से उनकी आँखें मोटी हो
जाती हैं,
उन्हें अपनी साज़िशों में उम्मीद से
बढ़कर कामयाबी मिलती है।
8 वे दूसरों को नीचा दिखाते हैं, बुरी-
बुरी बातें कहते हैं,[4]
मगरूर होकर उन्हें
डराते-धमकाते हैं।[5]
9 वे ऐसे बात करते हैं मानो आसमान
में हों,
धरती पर उनकी ज़बान बड़ी-बड़ी
डींगें हाँकती है।
10 इसलिए उसके लोग उनकी तरफ हो
जाते हैं,
उनका उमड़ता पानी पीते हैं।
11 वे कहते हैं, "क्या परमेश्वर यह सब
जानता है?[6]
क्या परम-प्रधान परमेश्वर को
वाकई इसकी जानकारी है?"
12 इन दुष्टों को ही सबकुछ आराम से
मिल जाता है।[7]
वे दौलत का अंबार लगाते
जाते हैं।[8]
13 मैंने बेकार ही अपना मन शुद्ध
बनाए रखा,
अपनी बेगुनाही साबित करने के
लिए अपने हाथ धोए।[9]
14 सारा दिन मैं तड़पता रहता था,[10]
हर सुबह मुझे फटकारा
जाता था।[11]

73:7 *शा., "चरबी।"

अध्य. 73
1 अय 12:6
अय 21:7, 9
2 यिर्म 12:1
3 अय 21:14, 15
4 भज 53:1
5 1रा 21:7
6 भज 10:4, 11
भज 94:3, 7
यहे 8:12
सप 1:12
7 भज 37:35
8 भज 17:14
9 अय 34:7, 9
अय 35:3
10 भज 34:19
11 अय 7:17, 18

दूसरा कॉल.
1 भज 35:6, 7
यिर्म 23:11,
12
2 भज 37:10,
20
भज 55:23
नीत 3:33
3 अय 21:23
भज 37:1, 2
यश 30:13
4 भज 73:3
5 भज 16:8
भज 63:8
यश 41:10
6 भज 25:9
भज 32:8
भज 37:23
भज 143:10
नीत 3:6
7 भज 37:34

15 लेकिन अगर मैं अपना दुखड़ा रोता,
तो मैं तेरे लोगों* के साथ गद्दारी
करता।
16 जब मैंने इन हालात को समझने की
कोशिश की,
तो मैं परेशान हो उठा।
17 मेरी यह उलझन तब दूर हुई जब
मैं परमेश्वर के शानदार भवन में
गया
और मैंने उन दुष्टों के अंजाम के
बारे में सोचा।
18 बेशक, तू उन्हें फिसलनेवाली ज़मीन
पर खड़ा करता है।[1]
तू उन्हें गिरा देता है ताकि वे बर-
बाद हो जाएँ।[2]
19 वे कैसे अचानक नाश हो जाते हैं![3]
अचानक ही उनका बुरी तरह अंत
हो जाता है!
20 जैसे कोई नींद से जागने के बाद
सपना याद नहीं रखता
वैसे ही हे यहोवा, जब तू उठेगा तो
उनकी छवि भुला देगा।*
21 मेरा जी खट्टा हो गया था,[4]
मेरे अंदर तेज़ दर्द उठता था।
22 मैं अपनी बुद्धि और समझ खो
बैठा था,
तेरे सामने निर्बुद्धि जानवर जैसा हो
गया था।
23 मगर अब मैं हरदम तेरे साथ
रहता हूँ,
तूने मेरा दायाँ हाथ थाम लिया है।[5]
24 तू मुझे सलाह देकर राह
दिखाता है,[6]
बाद में तू मुझे सम्मान दिलाएगा।[7]

73:15 *शा., "तेरे बेटों की पीढ़ी।" 73:20 *शा., "को तुच्छ समझेगा।"

25 तेरे सिवा स्वर्ग में मेरा और
कौन है?
तू मेरे साथ है तो मुझे धरती पर
और किसी की ज़रूरत नहीं।[1]
26 चाहे मेरा तन और मन कमज़ोर
होता जाए,
मगर परमेश्वर वह चट्टान है जो मेरे
दिल को मज़बूती देता है,
वही सदा के लिए मेरा भाग है।[2]
27 जो तुझसे दूरी बनाए रखते हैं उन्हें
तू ज़रूर नाश कर देगा।
जो भी तुझसे बेवफाई करके* तुझे
छोड़ देता है उसका तू अंत कर
देगा।[3]
28 मगर मेरे लिए परमेश्वर के करीब
जाना भला है।[4]
मैंने सारे जहान के मालिक यहोवा
की पनाह ली है
ताकि उसके सभी कामों का
ऐलान करूँ।[5]

आसाप की रचना।[6] मश्कील।*

74 हे परमेश्वर, तूने क्यों हमें सदा
के लिए ठुकरा दिया है?[7]
तेरे चरागाह की भेड़ों पर क्यों तेरा
क्रोध भड़का हुआ है?*[8]
2 उन लोगों* को याद कर जिन्हें तूने
लंबे अरसे पहले अपनी जागीर
बनाया था,[9]
उस गोत्र को याद कर जिसे तूने
इसलिए छुड़ाया कि वह तेरी
विरासत बने।[10]
सिय्योन पहाड़ को याद कर जहाँ तू
निवास करता था।[11]
3 उन जगहों की तरफ कदम बढ़ा जो
पूरी तरह नाश की गयी हैं,[1]
दुश्मन ने पवित्र जगह की हर चीज़
तहस-नहस कर दी है।[2]
4 तेरे बैरी तेरी उपासना की जगह
गरजे।[3]
वहाँ उन्होंने अपने झंडे गाड़ दिए।
5 उन्होंने ऐसी तबाही मचायी जैसे
कोई घने जंगल में पेड़ों पर
कुल्हाड़ी चलाता है।
6 उन्होंने कुल्हाड़ियों और लोहे की
सलाखों से भवन की सारी
नक्काशियाँ[4] तोड़ दीं।
7 उन्होंने तेरे भवन में आग
लगा दी।[5]
जो पवित्र डेरा तेरे नाम से जाना
जाता है उसे दूषित कर दिया,
खाक में मिला दिया।
8 उन्होंने और उनकी औलाद ने मन-
ही-मन कहाः
"इस देश में परमेश्वर की
उपासना की सारी जगह जला दी
जाएँ।"
9 हमें कोई निशानी नज़र नहीं आती,
एक भी भविष्यवक्ता नहीं रहा,
हममें से कोई नहीं जानता कि ऐसा
कब तक चलता रहेगा।
10 हे परमेश्वर, दुश्मन कब तक तुझे
ताना मारता रहेगा?[6]
क्या बैरी सदा तक तेरे नाम का
अनादर करता रहेगा?[7]
11 तू क्यों अपना दायाँ हाथ रोके
हुए है?[8]
अपना हाथ बगल* से निकाल और
उन्हें खत्म कर दे।
12 मेरे परमेश्वर, तू मुद्दतों से मेरा
राजा है,

73:27 *या "बदचलन की तरह पेश आकर।" **74:उप** *शब्दावली देखें। **74:1** *शा., "के खिलाफ तेरे क्रोध की आग का धुआँ क्यों उठ रहा है?" **74:2** *शा., "अपनी मंडली।"

74:11 *या "अपने कपड़े की तह।"

अध्य. 73
1 भज 42:2; भज 84:2; यश 26:9
2 भज 16:5; विल 3:24
3 गि 15:39; याकू 4:4
4 भज 65:4; याकू 4:8
5 भज 118:17

अध्य. 74
6 1इत 25:1; 2इत 35:15
7 विल 5:20
8 व्य 29:19, 20; भज 100:3
9 व्य 9:29
10 व्य 4:20; व्य 32:9
11 भज 48:2; भज 132:13

दूसरा कॉल.
1 दान 9:17
2 भज 79:1
3 विल 2:7
4 1रा 6:18, 35
5 2रा 25:9; यश 64:11
6 भज 13:2; भज 79:4
7 यहे 36:23
8 भज 44:23; यश 64:12; विल 2:3

तू ही धरती पर उद्धार दिलाता है।[1]
13 तूने अपनी ताकत से समुंदर में हल-
चल मचा दी,[2]
समुंदर के विशाल जीवों का सिर
कुचल दिया।
14 तूने लिव्यातान* के सिर कुचल
दिए।
उसे रेगिस्तान के लोगों को खाने के
लिए दे दिया।
15 तूने पानी के सोतों और धाराओं के
मुँह खोल दिए,[3]
सदा बहती नदियों को सुखा दिया।[4]
16 दिन पर भी तेरा अधिकार है और
रात पर भी।
तूने ज्योति बनायी, हाँ, सूरज की
रचना की।[5]
17 तूने धरती की सारी हदें ठहरायीं,[6]
सर्दी और गरमी का मौसम
बनाया।[7]
18 हे यहोवा, ध्यान दे कि दुश्मन तुझ
पर कैसे ताना कसते हैं,
मूर्ख कैसे तेरे नाम का अनादर
करते हैं।[8]
19 अपनी फाख्ते की जान जंगली जान-
वरों के हवाले न कर दे।
अपने पीड़ित लोगों को हमेशा के
लिए न भुला दे।
20 हमारे साथ किया करार याद कर,
क्योंकि धरती की अँधेरी जगह
दरिंदों का अड्डा बन गयी हैं।
21 कुचले हुए निराश होकर न लौटें,[9]
दीन-दुखी और गरीब तेरे नाम की
तारीफ करें।[10]
22 हे परमेश्वर, उठ अपने मुकदमे की
पैरवी कर।
ध्यान दे कि मूर्ख कैसे सारा दिन
तुझ पर ताना कसते हैं।[1]
23 तेरे दुश्मन जो कहते हैं उसे न भूल।
तेरे खिलाफ उठनेवालों का होहल्ला
आसमान तक बढ़ता जा रहा है।

आसाप[2] का गीत। निर्देशक के लिए हिदायतः
"नाश न होने दे" धुन के मुताबिक।

75 हे परमेश्वर, हम तेरा धन्यवाद
करते हैं, हाँ, तेरा धन्यवाद
करते हैं,
तेरा नाम करीब है[3]
और लोग तेरे आश्चर्य के कामों का
ऐलान करते हैं।
2 तू कहता है, "जब मैं समय तय
करता हूँ,
तब मैं बिना तरफदारी किए न्याय
करता हूँ।
3 जब धरती और उसके सारे निवासी
डर के मारे पिघल गए,
तब मैंने ही उसके खंभों को मज़बूत
बनाए रखा।" (*सेला*)
4 मैं शेखीबाज़ों से कहता हूँ, "शेखी
मत मारो,"
दुष्टों से कहता हूँ, "अपनी ताकत
पर मत इतराओ।*
5 अपनी ताकत पर इतना मत इत-
राओ,*
न ही अकड़कर बोलो।
6 क्योंकि सम्मान पूरब, पश्चिम या
दक्षिण से नहीं मिलता।
7 परमेश्वर न्यायी है।[4]
वही है जो किसी को ऊँचा उठाता
तो किसी को नीचे गिराता है।[5]
8 यहोवा के हाथ में एक प्याला है,[6]

अध्य. 74
1 निर्ग 15:2; यश 33:22
2 निर्ग 14:21; नहे 9:10, 11
3 यश 48:21
4 यह 3:13
5 उत 1:3, 5; भज 136:7, 8
6 प्रेष 17:26
7 उत 8:22
8 यश 52:5
9 भज 12:5
10 एज 3:11

दूसरा कॉल.
1 भज 89:50, 51; यश 52:5

अध्य. 75
2 2इत 35:15
3 यश 30:27
4 भज 50:6; भज 58:11
5 1शम 2:7; दान 2:21; दान 4:17; लूक 1:52
6 भज 11:5, 6

74:14 *शब्दावली देखें।

75:4 *शा., "अपना सींग ऊँचा मत करो।"
75:5 *शा., "अपना सींग बहुत ऊँचा मत करो।"

उसमें दाख-मदिरा उफन रही है,
उसमें मसाला मिला है।
वह उसे ज़रूर उँडेल देगा
और धरती के सभी दुष्ट
उसे पीएँगे, उसका तलछट तक
पीएँगे।"[1]
9 मगर मैं सदा तक उसका ऐलान
करता रहूँगा,
याकूब के परमेश्वर की तारीफ में
गीत गाऊँगा।*
10 क्योंकि वह कहता है, "मैं दुष्टों की
सारी ताकत मिटा दूँगा,*
जबकि नेक जनों की ताकत और
बढ़ायी जाएगी।"#

आसाप[2] का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायतः यह गीत तारोंवाले बाजे बजाकर गाया जाए।

76 परमेश्वर को सारा यहूदा
जानता है,[3]
उसका नाम इसराएल में महान है।[4]
2 उसका आवास शालेम[5] में है,
उसका निवास सिय्योन में है।[6]
3 वहाँ उसने जलते तीर तोड़ डाले,
ढाल, तलवार और युद्ध के सारे
हथियार तोड़ डाले।[7] (*सेला*)
4 हे परमेश्वर, तू तेज़ चमकता है,*
तू शिकार के पहाड़ों से कहीं ज़्यादा
वैभवशाली है।
5 शेरदिलवाले लूट लिए गए।[8]
सारे योद्धा मौत की नींद सो गए,
क्योंकि वे मुकाबला नहीं
कर सके।[9]
6 हे याकूब के परमेश्वर, जब तूने
डाँट लगायी,
तो घोड़ा और सारथी, दोनों मौत
की नींद सो गए।[1]
7 तू ही अकेला विस्मयकारी है,[2]
तेरे ज़बरदस्त क्रोध के आगे भला
कौन टिक सकता है?[3]
8 स्वर्ग से तूने सज़ा सुनायी।[4]
धरती उस समय डर गयी और
चुप थी,[5]
9 जब तू सज़ा देने और धरती के सब
दीनों को बचाने के लिए उठा।[6]
(*सेला*)
10 आदमी का गुस्से से भड़कना तेरी
तारीफ की वजह बनेगा,[7]
उसके गुस्से की आखिरी चिंगारी से
भी तू अपनी महिमा कराएगा।
11 अपने परमेश्वर यहोवा से मन्नतें
मानो
और उन्हें पूरा करो,[8]
जो उसके चारों तरफ मौजूद हैं,
वे सब उसका डर मानते हुए तोहफे
लाएँ।[9]
12 वह हाकिमों का घमंड चूर कर देगा,
धरती के राजाओं के दिलों में डर
पैदा करेगा।

आसाप[10] का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायतः यदूतून* पर।

77 मैं ज़ोर-ज़ोर से परमेश्वर को
पुकारूँगा,
परमेश्वर को पुकारूँगा और वह
मेरी सुनेगा।[11]
2 मुसीबत के दिन मैं यहोवा की खोज
करता हूँ।[12]
रात को मेरे हाथ बिना थके उसकी
तरफ फैले रहते हैं।
फिर भी मेरे मन को दिलासा नहीं
मिलता।

75:9 *या "संगीत बजाऊँगा।" **75:10** *शा., "के सारे सींग काट डालूँगा।" #शा., "के सींग ऊँचे किए जाएँगे।" **76:4** *या "तू रौशनी से घिरा हुआ है।"

77:उप *शब्दावली देखें।

अध्य. 75
1 अय 21:19, 20
यिर्म 25:15, 28
यिर्म 49:12
प्रक 14:9, 10
प्रक 16:19
प्रक 18:6

अध्य. 76
2 2इत 35:15
3 भज 48:1, 3
4 2इत 2:5
5 उत 14:18
6 भज 74:2
भज 132:13
भज 135:21
7 2इत 32:21
भज 46:9
8 लूक 1:51
9 यश 31:8
यश 37:36

दूसरा कॉल.
1 नहू 2:13
2 भज 89:7
3 यिर्म 10:10
नहू 1:6
4 1रा 8:49
5 2इत 20:29
भज 2:4, 5
6 भज 147:6
नीत 3:34
सप 2:3
7 नीत 16:4
दान 3:19, 28
8 गि 30:2
9 2इत 32:23
भज 89:7

अध्य. 77
10 2इत 35:15
11 भज 34:6
नीत 15:29
12 भज 18:6
भज 50:15

3 परमेश्वर को याद करके मैं
कराहता हूँ,[1]
मेरा मन बहुत बेचैन है, मेरी ताकत
जवाब दे गयी है।[2] (*सेला*)
4 तू मेरी पलकों को झपकने नहीं
देता,
मैं दुख से बेहाल हूँ, मुझसे कुछ
कहते नहीं बनता।
5 मैं पुराने दिन याद करता हूँ[3]
गुज़रे ज़माने के बारे में सोचता हूँ।
6 रात के दौरान मैं अपना गीत* याद
करता हूँ।[4]
मैं इन सवालों पर दिल से विचार
करता हूँ,[5]
अच्छी तरह खोजबीन करके जवाब
तलाशता हूँ:
7 क्या यहोवा ने हमें सदा के लिए
त्याग दिया है?[6]
क्या वह फिर कभी हम पर कृपा
नहीं करेगा?[7]
8 क्या उसका अटल प्यार सदा के
लिए मिट गया है?
क्या उसका वादा कभी नहीं पूरा
होगा?
9 क्या परमेश्वर हम पर कृपा करना
भूल गया है?[8]
क्या उसने गुस्से में आकर दया
करना छोड़ दिया है? (*सेला*)
10 क्या मुझे बार-बार कहना
पड़ेगा, "मुझे यह बात बहुत तड़-
पाती* है[9]
कि परम-प्रधान परमेश्वर ने
हमसे अपना दायाँ हाथ खींच
लिया है"?
11 हे याह, मैं तेरे काम याद करूँगा,
गुज़रे ज़माने में किए तेरे आश्चर्य
के काम याद करूँगा।
12 मैं तेरे सभी कामों पर मनन करूँगा,
उन पर गहराई से सोचूँगा।[1]
13 हे परमेश्वर, तेरी राहें पवित्र हैं।
हे परमेश्वर, क्या कोई ईश्वर है जो
तुझ जैसा महान हो?[2]
14 तू ही सच्चा परमेश्वर है जो
आश्चर्य के काम करता है।[3]
तूने देश-देश के लोगों पर अपनी
ताकत ज़ाहिर की है।[4]
15 अपनी शक्ति* से तूने अपने लोगों
को छुड़ाया,[5]
याकूब और यूसुफ के वंशजों को
बचाया। (*सेला*)
16 हे परमेश्वर, समुंदर ने तुझे देखा,
उसने तुझे देखा और डर गया।[6]
गहरे सागर में खलबली मच गयी।
17 बादल बरसने लगे,
घनघोर घटाओं से घिरा आसमान
गरजने लगा।
तेरे बिजली के तीर इधर-उधर
चलने लगे।[7]
18 तेरा गरजना[8] रथ के पहियों की
तेज़ घड़घड़ाहट जैसा था,
बिजली के कौंधने से सारा जग*
रौशन हो गया,[9]
ज़मीन काँप उठी, डोलने लगी।[10]
19 तेरा रास्ता समुंदर से होकर
गुज़रा,[11]
तेरी डगर गहरे सागर के बीच से
गुज़री,
मगर तेरे पैरों के निशान कहीं न
मिले।

अध्य. 77
1 भज 42:5
2 भज 143:4
3 भज 143:5; यश 51:9
4 भज 42:8
5 भज 77:12
6 भज 74:1
7 भज 79:5
8 यश 49:14; यश 63:15
9 भज 31:22

दूसरा कॉल.
1 1इत 16:9; भज 143:5
2 निर्ग 15:11; भज 89:8
3 भज 72:18; प्रक 15:3
4 निर्ग 9:16; यश 52:10; दान 3:29; दान 6:26, 27
5 निर्ग 6:6; व्य 9:29
6 निर्ग 14:21; यह 3:16; भज 114:1-3
7 2शम 22:15; भज 144:6
8 भज 29:3
9 भज 97:4
10 निर्ग 19:18; 2शम 22:8
11 नहे 9:10, 11; हब 3:15

77:6 *या "तारोंवाले बाजे पर बजाया संगीत।" **77:10** *या "भेदती।"

77:15 *शा., "अपने बाज़ू।" **77:18** *या "उपजाऊ ज़मीन।"

20 तू अपने लोगों को भेड़ों के झुंड की
तरह ले चला[1]
मूसा और हारून के ज़रिए उन्हें ले
चला।[2]

आसाप की रचना।[3] मश्कील।*

78 मेरे लोगो, मेरा कानून* सुनो,
मैं जो कहता हूँ उस पर कान
लगाओ।
2 मैं तुम्हें नीतिवचन सुनाऊँगा,
पुराने ज़माने की पहेलियाँ
बताऊँगा।[4]
3 जो बातें हमने सुनी और जानी हैं,
हमारे पुरखों ने हमें बतायी हैं,[5]
4 वे हम उनके वंशजों से नहीं
छिपाएँगे।
हम आनेवाली पीढ़ी को
यहोवा के लाजवाब कामों और
उसकी ताकत के,
उसके आश्चर्य के कामों के किस्से
सुनाएँगे।[6]
5 उसने याकूब को याद दिलाने के
लिए हिदायत दी,
इसराएल में एक कानून ठहराया,
हमारे पुरखों को आज्ञा दी
कि ये बातें अपने बच्चों को बताएँ[7]
6 ताकि अगली पीढ़ी,
आनेवाली नसल इन बातों को
जाने।[8]
फिर वे भी अपने बच्चों को ये सब
बताएँगे।[9]
7 तब अगली पीढ़ी के लोग परमेश्वर
पर भरोसा करेंगे।
वे परमेश्वर के काम नहीं भूलेंगे[10]
बल्कि उसकी आज्ञाएँ मानेंगे।[11]

अध्य. 77
1 निर्ग 13:21
भज 78:52
2 यश 63:11
प्रेष 7:35, 36

अध्य. 78
3 1इत 25:1
4 नीत 1:5, 6
मत 13:34, 35
5 निर्ग 13:8
भज 44:1
6 व्य 4:9
व्य 6:6, 7
व्य 6:21
व्य 11:18, 19
यह 4:6, 7
भज 98:1
यश 63:7
7 उत 18:19
व्य 6:6, 7
8 भज 71:17, 18
भज 102:18
9 व्य 4:10
10 व्य 4:9
भज 103:2
11 व्य 5:29

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 32:9
व्य 1:43
व्य 31:27
2रा 17:13, 14
यहे 20:18
प्रेष 7:51
2 भज 81:11, 12
यिर्म 7:24-26
3 व्य 31:16
4 2इत 13:8, 9
नहे 9:26
5 व्य 32:18
2इत 13:12
यिर्म 2:32
6 भज 106:21, 22
7 गि 13:22
8 व्य 4:34
नहे 9:10
9 निर्ग 14:21, 22
निर्ग 15:8
10 निर्ग 13:21
निर्ग 14:20, 24
11 निर्ग 17:6
गि 20:11
भज 105:41
यश 48:21
1कुर 10:4

8 वे अपने पुरखों की तरह नहीं
बनेंगे,
जिनकी पीढ़ी हठीली और बगा-
वती थी,[1]
उनका मन डाँवाँडोल रहता था,*[2]
वे परमेश्वर के विश्वासयोग्य
नहीं रहे।
9 एप्रैमी लोग तीर-कमान से लैस थे,
मगर युद्ध के दिन पीठ दिखाकर
भाग गए।
10 उन्होंने परमेश्वर का करार नहीं
माना,[3]
उसके कानून पर चलने से इनकार
कर दिया।[4]
11 वे यह भी भूल गए कि उसने क्या-
क्या काम किए थे,[5]
उन्हें कैसे-कैसे आश्चर्य के काम
दिखाए थे।[6]
12 उसने मिस्र देश में, सोअन के
इलाके में,[7]
उनके पुरखों की आँखों के सामने
लाजवाब काम किए थे।[8]
13 उसने समुंदर को चीर दिया था कि
वे पार कर सकें
पानी को ऐसे खड़ा कर दिया जैसे
बाँध बाँधा गया हो।*[9]
14 वह उन्हें दिन में बादल से
और सारी रात आग की रौशनी से
रास्ता दिखाता।[10]
15 वह वीराने में चट्टानों को चीर देता,
उन्हें समुंदर जितना भरपूर
पानी देता
ताकि वे जी-भरकर पी सकें।[11]
16 उसने बड़ी चट्टान से पानी की
धाराएँ निकालीं,

78:उप *शब्दावली देखें। **78:1** *या "मेरी हिदायत।" **78:8** *शा., "तैयार नहीं था।" **78:13** *या "जैसे दीवार खड़ी की गयी हो।"

वे नदियों की तरह बहने लगीं।[1]
17 फिर भी, वे वीराने में परम-प्रधान
परमेश्वर से बगावत करते रहे,
ऐसा करके वे उसके खिलाफ पाप
करते रहे।[2]
18 उन्होंने उस खाने की माँग की
जिसकी वे ज़बरदस्त लालसा कर
रहे थे,
ऐसा करके उन्होंने अपने दिल में
परमेश्वर को चुनौती दी।*[3]
19 वे परमेश्वर के खिलाफ कुड़-
कुड़ाने लगे,
"क्या इस वीराने में परमेश्वर हमारे
लिए मेज़ लगा सकता है?"[4]
20 परमेश्वर ने ही चट्टान को मारा था
जिससे पानी की धाराएँ फूट
निकलीं और नदियाँ उमड़ने
लगीं![5]
फिर भी वे कहने लगे, "क्या वह
हमें रोटी भी दे सकता है?
अपने लोगों को गोश्त खिला
सकता है?"[6]
21 जब यहोवा ने यह सुना तो वह
क्रोध से भर गया,[7]
उसने याकूब पर आग बरसायी,[8]
वह इसराएल पर भड़क उठा[9]
22 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर
विश्वास नहीं किया,[10]
यह भरोसा नहीं किया कि
वह उनका उद्धार करने के
काबिल है।
23 इसलिए परमेश्वर ने बादलों से घिरे
आसमान को हुक्म दिया,
आकाश के द्वार खोल दिए।
24 वह उनके खाने के लिए मन्ना बर-
साता रहा,

78:18 *शा., "की परीक्षा ली।"

अध्य. 78
1 व्य 8:14, 15
2 व्य 9:21, 22
भज 95:8
इब्र 3:16
3 भज 106:14
4 निर्ग 16:8
5 निर्ग 17:6
6 निर्ग 16:3
7 गि 11:10
8 इब्र 12:29
9 गि 11:1
10 भज 106:24
इब्र 3:10
यहू 5

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 16:14, 35
निर्ग 16:31, 32
गि 11:7
व्य 8:3
यूह 6:31
1कुर 10:2, 3
2 भज 103:20
3 निर्ग 16:12
4 गि 11:31-34
5 गि 11:19, 20
6 गि 11:10
7 गि 11:34
8 गि 14:2-4
गि 25:3
1कुर 10:8-10
9 निर्ग 16:15
व्य 8:14, 15
10 गि 14:29, 35
व्य 2:14

उसने उन्हें स्वर्ग का अनाज दिया।[1]
25 इंसानों ने शूरवीरों*[2] की रोटी
खायी,
उसने इतना दिया कि वे जी-भरकर
खा सकें।[3]
26 उसने आकाश में पूरब की हवा
चलायी,
अपनी शक्ति से दक्षिण की तेज़
हवा बहायी।[4]
27 उसने उन पर गोश्त की ऐसी बौछार
की जैसे ढेर सारी धूल हो,
बेशुमार पक्षी भेजे मानो समुंदर
किनारे की बालू हो।
28 उसने पक्षियों को अपनी छावनी के
बीचों-बीच गिराया,
अपने तंबुओं के चारों ओर
गिराया।
29 लोगों ने गोश्त खाया, ठूँस-ठूँसकर
खाया,
उन्होंने जो चाहा था उसने उन्हें
दिया।[5]
30 मगर उनका मन और ललचाने लगा
और खाना उनके मुँह में ही था
31 कि परमेश्वर का क्रोध उन पर
भड़क उठा।[6]
उसने उनके ताकतवर आदमियों को
मार डाला,[7]
इसराएल के जवानों को ढेर कर
दिया।
32 फिर भी वे और ज़्यादा पाप
करते रहे,[8]
उन्होंने उसके आश्चर्य के कामों पर
विश्वास नहीं किया।[9]
33 उसने उनकी ज़िंदगी के दिन
ऐसे खत्म कर दिए मानो
साँस हों,[10]

78:25 *या "स्वर्गदूतों।"

अचानक खौफ फैलाकर उनके साल
मिटा दिए।
34 मगर जब भी वह उनका घात करता
वे उसकी खोज करने लगते,[1]
वे फिरकर परमेश्‍वर को ढूँढ़ने
लगते,
35 यह याद करके कि परमेश्‍वर उनकी
चट्टान था,[2]
परम-प्रधान परमेश्‍वर उनका
छुड़ानेवाला* था।[3]
36 मगर उन्होंने मुँह से उसे धोखा देने
की कोशिश की,
अपनी जीभ से उससे झूठ बोला।
37 उनका दिल उसकी तरफ अटल
नहीं बना रहा,[4]
वे उसका करार मानने में विश्‍वास-
योग्य नहीं रहे।[5]
38 मगर परमेश्‍वर दयालु था,[6]
वह उनके गुनाह माफ कर* देता
था, उन्हें नाश नहीं करता था।[7]
वह अकसर अपना गुस्सा रोक
लेता था,[8]
उन पर सारा क्रोध नहीं प्रकट
करता था।
39 क्योंकि उसे ध्यान था कि वे अदना
इंसान हैं,[9]
हवा का एक झोंका हैं जो एक बार
बह जाए तो लौटता नहीं।*
40 कितनी ही बार उन्होंने वीराने में
उससे बगावत की,[10]
रेगिस्तान में उसे दुख पहुँचाया![11]
41 उन्होंने बार-बार परमेश्‍वर की
परीक्षा ली,[12]
इसराएल के पवित्र परमेश्‍वर का
दिल दुखाया।
42 वे उसकी शक्‍ति* भूल गए,
वह दिन भूल गए जब उसने उन्हें
दुश्‍मन से छुड़ाया था,[1]
43 कैसे उसने मिस्र में चिन्ह
दिखाए थे,[2]
सोअन प्रदेश में करिश्‍मे किए थे,
44 कैसे उसने नील नदी की नहरों का
पानी खून में बदल दिया था[3]
और वे अपनी नदियों से पी न
सके थे।
45 उसने खून चूसनेवाली मक्खियाँ
भेजीं ताकि उन्हें काट खाएँ[4]
और मेंढक भेजे ताकि उन्हें बरबाद
कर दें।[5]
46 उसने उनकी फसलें भूखी टिड्डियों के
हवाले कर दी थीं,
उनकी मेहनत का फल दलवाली
टिड्डियों को दे दिया।[6]
47 उसने ओले बरसाकर उनके अंगूरों
के बाग नाश कर दिए,[7]
गूलर के पेड़ तहस-नहस कर डाले।
48 उसने उनके बोझ ढोनेवाले जानवरों
को ओलों से नाश कर दिया,[8]
बिजली गिराकर* उनके मवेशियों
को खत्म कर दिया।
49 उसने उन पर गुस्से की आग भड़-
कायी
क्रोध, जलजलाहट और संकट ले
आया,
कहर ढाने के लिए स्वर्गदूतों के
दल भेजे।
50 उसने अपने गुस्से के लिए रास्ता
बनाया,

अध्य. 78
1 गि 21:7; न्या 4:3
2 व्य 32:4
3 निर्ग 6:6
4 भज 95:10; इब्र 3:10
5 व्य 31:20; यिर्म 31:32
6 निर्ग 34:6; गि 14:18; नहे 9:31
7 गि 14:19, 20; यिर्म 30:11; विल 3:22
8 नहे 9:27; यश 48:9; यहे 20:9
9 भज 103:14
10 गि 14:11
11 यश 63:10; इफ 4:30; इब्र 3:16
12 गि 14:22; व्य 6:16; भज 95:8, 9

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 14:30
2 व्य 4:34; नहे 9:10; भज 105:27-36
3 निर्ग 7:19
4 निर्ग 8:24
5 निर्ग 8:6
6 निर्ग 10:14, 15
7 निर्ग 9:23
8 निर्ग 9:25

78:35 *या “उनकी तरफ से बदला लेने-वाला।” **78:38** *शा., “ढाँप।” **78:39** *या शायद, “जीवन-शक्‍ति चली जाती है और वापस नहीं आती।”

78:42 *शा., “उसका हाथ।” **78:48** *या शायद, “तपते बुखार से।”

उन्हें मौत से बचाया
और उन्हें महामारी के हवाले कर
दिया।
51 आखिर में उसने मिस्र के सभी पह-
लौठों को मार डाला,[1]
हाम के तंबुओं में उनकी शक्ति*
की पहली निशानी मिटा दी।
52 फिर वह अपने लोगों को भेड़ों की
तरह निकाल लाया,[2]
वीराने में उन्हें रास्ता दिखाता गया
जैसे चरवाहा झुंड को रास्ता
दिखाता है।
53 वह उन्हें हर खतरे से बचाता हुआ
ले चला,
इसलिए उन्हें कोई डर नहीं था,[3]
समुंदर उनके दुश्मनों को निगल
गया।[4]
54 वह उन्हें अपने पवित्र देश ले
आया,[5]
इस पहाड़ी इलाके में, जो उसके
दाएँ हाथ ने हासिल किया था।[6]
55 उसने उनके सामने से जातियों को
खदेड़ दिया,[7]
नापने की डोरी से विरासत की
ज़मीन उनमें बाँट दी,[8]
इसराएल के गोत्रों को रहने के लिए
घर दिया।[9]
56 मगर वे परम-प्रधान परमेश्वर को
चुनौती देने* से बाज़ नहीं आए,
उससे बगावत करते रहे,[10]
उसके याद दिलाने पर भी कोई
ध्यान नहीं दिया।[11]
57 वे भी परमेश्वर से फिर गए और
अपने पुरखों की तरह गद्दार
निकले,[12]
ढीली कमान की तरह भरोसे के
लायक नहीं थे।[1]
58 वे कई ऊँची जगह बनाकर उसे
गुस्सा दिलाते रहे,[2]
अपनी गढ़ी हुई मूरतों से उसे भड़-
काते रहे।[3]
59 यह सब देखकर परमेश्वर क्रोध से
भर गया,[4]
उसने इसराएल को पूरी तरह ठुकरा
दिया।
60 आखिरकार उसने शीलो का पवित्र
डेरा[5] छोड़ दिया,
वह तंबू छोड़ दिया जिसमें वास
करके वह इंसानों के बीच
रहता था।[6]
61 उसने अपनी ताकत की निशानी को
बँधुआई में जाने दिया,
अपना वैभव बैरी के हाथ में जाने
दिया।[7]
62 उसने अपने लोगों को तलवार के
हवाले कर दिया,[8]
वह अपनी विरासत के खिलाफ
गुस्से से भर गया।
63 उसके जवानों को आग ने भस्म कर
दिया,
उसकी कुँवारियों के लिए शादी के
गीत नहीं गाए गए।
64 उसके याजक तलवार से मारे गए,[9]
उनकी विधवाएँ नहीं रोयीं।[10]
65 तब यहोवा ऐसे उठा जैसे नींद से
जागा हो,[11]
जैसे कोई सूरमा[12] दाख-मदिरा के
नशे से होश में आया हो।
66 उसने अपने दुश्मनों को वापस
खदेड़ दिया,[13]
उन्हें हमेशा के लिए शर्मिंदा कर
दिया।

78:51 * या "संतान पैदा करने की शक्ति।"
78:56 * शा., "की परीक्षा लेने।"

अध्य. 78
1 निर्ग 12:29 भज 105:36
2 भज 77:20 भज 105:37
3 निर्ग 14:20 इब्र 11:29
4 निर्ग 14:27 निर्ग 15:10
5 निर्ग 15:17
6 भज 44:3
7 यह 24:12 भज 44:2
8 यह 13:7
9 नहे 9:24, 25
10 व्य 31:16 व्य 32:15 न्या 2:11 2शम 20:1 नहे 9:26
11 2रा 17:15 यिर्म 44:23
12 व्य 9:7 न्या 3:6

दूसरा कॉल.
1 हो 7:16
2 व्य 12:2 न्या 2:2 यहे 20:28
3 न्या 2:12 1शम 7:3
4 न्या 2:20
5 यह 18:1 1शम 4:11
6 यिर्म 7:12
7 1शम 4:21 1शम 5:1
8 1शम 4:2, 10
9 1शम 2:33, 34 1शम 4:11
10 1शम 4:19
11 भज 44:23
12 यश 42:13
13 1शम 5:6

67 उसने यूसुफ का तंबू ठुकरा दिया,
एप्रैम गोत्र को नहीं चुना।
68 मगर उसने यहूदा गोत्र को चुना,[1]
सिय्योन पहाड़ को चुना जो उसे
बहुत प्यारा है।[2]
69 उसने अपने पवित्र-स्थान को आस-
मान की तरह हमेशा के लिए
कायम किया,[3]
धरती की तरह सदा के लिए मज़-
बूती से कायम किया।[4]
70 उसने अपने सेवक दाविद को
चुना,[5]
उसे भेड़ों के बाड़े से ले आया।[6]
71 जो दूध पिलाती भेड़ों की देखभाल
करता था,
उसे याकूब का, अपने लोगों का
चरवाहा ठहराया,[7]
अपनी विरासत इसराएल का चर-
वाहा ठहराया।[8]
72 दाविद ने निर्दोष मन से उनकी
चरवाही की,[9]
अपने काबिल हाथों से उनकी अगु-
वाई की।[10]

आसाप का सुरीला गीत।[11]

79 हे परमेश्वर, दूसरे राष्ट्रों ने तेरी
विरासत[12] पर हमला कर
दिया है,
उन्होंने तेरे पवित्र मंदिर को दूषित
कर दिया है,[13]
यरूशलेम को खंडहर बना
दिया है।[14]
2 उन्होंने तेरे सेवकों की
लाशें आकाश के पक्षियों को
खिला दी हैं,
तेरे वफादार जनों का माँस
धरती के जंगली जानवरों को दे
दिया है।[15]
3 उन्होंने उनका खून पूरे यरूशलेम में
पानी की तरह बहा दिया है,
उनकी लाशें दफनानेवाला कोई न
रहा।[1]
4 हम अपने पड़ोसियों के लिए मज़ाक
बन गए हैं,[2]
आस-पास के लोग हम पर हँसते हैं,
हमारी खिल्ली उड़ाते हैं।
5 हे यहोवा, तू कब तक हमसे भड़का
रहेगा?
क्या सदा के लिए?[3]
कब तक तेरे गुस्से की आग
धधकती रहेगी?[4]
6 तू अपने क्रोध का प्याला उन
राष्ट्रों पर उँडेल दे जो तुझे नहीं
जानते,
उन राज्यों पर जो तेरा नाम नहीं
पुकारते।[5]
7 क्योंकि उन्होंने याकूब को निगल
लिया है,
उसके देश को उजाड़ दिया है।[6]
8 हमारे पुरखों के गुनाहों के लिए हमें
जवाबदेह न ठहरा।[7]
हम पर दया करने में देर न कर,[8]
क्योंकि हमें बिलकुल नीचे गिरा
दिया गया है।
9 हे परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता,[9]
अपने गौरवशाली नाम की खातिर
हमारी मदद कर,
अपने नाम की खातिर हमें छुड़ा ले
और हमारे पाप माफ कर दे।*[10]
10 राष्ट्रों को क्यों यह कहने का
मौका मिले, "कहाँ गया इनका
परमेश्वर?"[11]
हमारी आँखों के सामने राष्ट्रों को
जता दे

79:9 *शा., "ढाँप दे।"

अध्य. 78
1 उत 49:10
2 भज 87:2
भज 132:13
भज 135:21
3 भज 76:2
4 भज 104:5
भज 119:90
सभ 1:4
5 1शम 16:12, 13
6 1शम 17:15
7 2शम 7:8
8 2शम 6:21
9 2शम 8:15
1रा 3:6
1रा 9:4
1रा 15:5
10 1शम 18:14

अध्य. 79
11 1इत 25:1
12 निर्ग 15:17
13 2रा 24:12, 13
भज 74:3, 7
विल 1:10
14 2रा 25:9, 10
2इत 36:17-19
यिर्म 52:13
15 यिर्म 7:33
यिर्म 15:3
यिर्म 34:20

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 14:16
यिर्म 16:4
2 व्य 28:37
यहे 36:4
3 भज 74:1
भज 85:5
यश 64:9
4 सप 1:18
5 यिर्म 10:25
6 2इत 36:20, 21
7 नहे 9:34
8 भज 69:17
विल 3:22
9 1इत 16:35
10 यह 7:9
1शम 12:22
2इत 14:11
भज 115:1, 2
यश 48:9
यिर्म 14:7
11 योए 2:17

कि तूने अपने सेवकों के खून का
बदला लिया है।[1]
11 तू कैदियों का कराहना सुने।[2]
अपनी महाशक्ति* से उन्हें बचा
ले# जिन्हें मौत की सज़ा सुनायी
गयी है।[3]
12 हे यहोवा, हमारे पड़ोसियों ने तुझ
पर जो ताने कसे हैं,[4]
उनका सात गुना बदला उन्हें
चुका।[5]
13 तब हम जो तेरी प्रजा हैं, तेरे चरा-
गाह की भेड़ें हैं,[6]
सदा तक तेरा शुक्रिया अदा करते
रहेंगे,
पीढ़ी-दर-पीढ़ी तेरी तारीफ करते
रहेंगे।[7]

आसाप का सुरीला गीत।[8] निर्देशक के लिए हिदायत: "सोसन के फूलों" के मुताबिक। यादगार के लिए।

80 हे इसराएल के चरवाहे,
तू जो यूसुफ को भेड़ों के
झुंड की तरह राह दिखाता
है,[9] सुन।
तू जो करूबों पर* विराजमान है,[10]
अपनी रौशनी चमका।#
2 एप्रैम, बिन्यामीन और मनश्शे के
सामने
अपनी महाशक्ति दिखा,[11]
आकर हमें बचा ले।[12]
3 हे परमेश्वर, हमें बहाल कर दे,[13]
अपने मुख का प्रकाश हम
पर चमका ताकि हम बचाए
जाएँ।[14]
4 सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
तू कब तक अपने लोगों से
भड़का रहेगा?
कब तक उनकी प्रार्थनाएँ अनसुनी
करता रहेगा?[1]
5 तू उन्हें आँसुओं की रोटी
खिलाता है,
आँसुओं का सैलाब पिलाता है।
6 तूने ऐसा किया कि पड़ोसी हमारे
लिए आपस में लड़ते हैं,
हमारे दुश्मन हमारी हँसी
उड़ाते हैं।[2]
7 हे सेनाओं के परमेश्वर, हमें बहाल
कर दे,
अपने मुख का प्रकाश हम पर
चमका ताकि हम बचाए जाएँ।[3]
8 तू अपने लोगों को मिस्र से ऐसे
निकाल लाया था जैसे वे अंगूर
की बेल हों।[4]
तूने जातियों को खदेड़कर उनकी
जगह उस बेल को लगाया।[5]
9 तूने उस बेल के लिए जगह
साफ की,
बेल ने जड़ पकड़ी और पूरे देश में
फैल गयी।[6]
10 उसकी छाया से पहाड़ ढक गए,
उसकी शाखाओं से परमेश्वर के
देवदार ढक गए।
11 उसकी शाखाएँ दूर समुंदर तक फैल
गयीं,
टहनियाँ महानदी* तक पहुँच
गयीं।[7]
12 तूने अंगूरों के बाग के पत्थर के
बाड़े क्यों गिरा दिए?[8]
आने-जानेवाले सभी उसके अंगूर
तोड़ लेते हैं।[9]
13 जंगली सूअर उसे बरबाद करते हैं,
मैदान के जंगली जानवर उसे खा
जाते हैं।[10]

79:11 *शा., "अपने बाज़ू।" #या शायद, "रिहा कर दे।" **80:1** *या शायद, "के बीच।" #या "अपना तेज दिखा।"

80:11 *यानी फरात नदी।

अध्य. 79
1 यिर्म 51:35, यहे 36:23
2 निर्ग 2:23, यश 42:6, 7
3 भज 102:19, 20
4 भज 74:18
5 यिर्म 12:14
6 भज 74:1, भज 95:7, भज 100:3
7 भज 145:4, यश 43:21

अध्य. 80
8 1इत 25:1
9 भज 77:20, यश 40:11, यिर्म 31:10, यहे 34:12, 1पत 2:25
10 निर्ग 25:20, 22, 1शम 4:4
11 यश 42:13
12 यश 25:9
13 भज 85:4, विल 5:21
14 गि 6:25, भज 67:1, 2

दूसरा कॉल.
1 भज 74:1, भज 85:5, विल 3:44
2 भज 44:13, भज 79:4
3 भज 80:3, 19
4 यश 5:7
5 भज 44:2, भज 78:55, यिर्म 2:21
6 निर्ग 23:28, 30, यह 24:12, 13, 1रा 4:25
7 उत 15:18, निर्ग 23:31, 1रा 4:21, भज 72:8
8 यश 5:5
9 नहू 2:2
10 2रा 18:9, 2रा 24:1, 2रा 25:1, 2इत 32:1, यिर्म 39:1

14 हे सेनाओं के परमेश्वर, तुझसे
बिनती है कि लौट आ।
स्वर्ग से नीचे देख!
इस बेल की देखभाल कर,[1]
15 इस तने* की, जिसे तूने अपने दाएँ
हाथ से लगाया था,[2]
उस बेटे# को देख जिसे तूने अपने
लिए मज़बूत किया था।[3]
16 उसे काट डाला गया है, जला दिया
गया है,[4]
तेरी डाँट से वे नाश हो जाते हैं।
17 तेरा हाथ उस आदमी को थाम ले
जो तेरे दायीं तरफ है,
इंसान के बेटे को थाम ले जिसे तूने
अपने लिए मज़बूत किया है।[5]
18 तब हम तुझसे मुँह न फेरेंगे।
हमें मरने से बचा ले ताकि हम तेरा
नाम पुकारें।
19 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हमें
बहाल कर दे,
अपने मुख का प्रकाश हम पर
चमका ताकि हम बचाए जाएँ।[6]

आसाप की रचना।[7] गित्तीत* के सिलसिले में
निर्देशक के लिए हिदायत।

81 परमेश्वर हमारी ताकत है,[8]
खुशी से उसकी जयजयकार
करो।
याकूब के परमेश्वर के लिए जीत
के नारे लगाओ।
2 संगीत शुरू करो, डफली बजाओ,
तारोंवाले बाजे के साथ मधुर बजने-
वाला सुरमंडल बजाओ।
3 नए चाँद के मौके पर
और पूरे चाँद के अवसर पर,
हमारे त्योहार के दिन[9] नरसिंगा
फूँको।[10]
4 क्योंकि यह इसराएल के लिए
आदेश है,
याकूब के परमेश्वर का हुक्म है।[1]
5 जब परमेश्वर मिस्र के खिलाफ
उठा,[2]
तब उसने यूसुफ के लिए उसे याद
दिलानेवाली हिदायत ठहरायी।[3]
मैंने एक आवाज़* सुनी मगर उसे
पहचाना नहीं:
6 "मैंने उसके कंधे से बोझ उतार
दिया,[4]
उसके हाथों को टोकरी ढोने से छुट-
कारा मिला।
7 संकट के दिन तूने मुझे पुकारा और
मैंने तुझे छुड़ाया,[5]
गरजते बादलों में* से तुझे जवाब
दिया।[6]
मरीबा# के सोते के पास तुझे
परखा।[7] (*सेला*)
8 हे मेरी प्रजा सुन, मैं तेरे खिलाफ
गवाही दूँगा।
हे इसराएल काश! तू मेरी बात
सुनता![8]
9 तेरे बीच कोई पराया देवता नहीं
होगा,
तू दूसरे देश के किसी देवता के
आगे दंडवत नहीं करेगा।[9]
10 मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूँ,
मैं तुझे मिस्र से निकाल लाया था।[10]
अपना मुँह पूरा खोल, मैं उसे भर
दूँगा।[11]
11 मगर मेरे लोगों ने मेरी एक न सुनी,
इसराएल मेरे अधीन न रहा।[12]
12 इसलिए मैंने उन्हें अपने ढीठ मन

अध्या. 80
1 यश 63:15
2 यश 5:7; यिर्म 2:21
3 निर्ग 4:22; यश 49:5
4 भज 79:5; यिर्म 52:12, 13
5 भज 89:20, 21
6 भज 80:7

अध्या. 81
7 1इत 25:1
8 भज 28:8
9 निर्ग 23:16; गि 10:10
10 गि 29:1

दूसरा कॉल.
1 लैव 23:23, 24
2 निर्ग 12:12
3 निर्ग 12:14
4 निर्ग 1:13, 14; निर्ग 6:6
5 निर्ग 14:10, 13; भज 91:15
6 निर्ग 19:16, 19
7 निर्ग 17:6, 7
8 निर्ग 15:26
9 निर्ग 20:2-5; व्य 6:13, 14
10 व्य 5:6
11 व्य 32:13, 14
12 निर्ग 32:1; व्य 32:15

80:15 *या "अंगूर की बेल के खास तने।" #या "शाखा।" **81:उप** *शब्दावली देखें।

81:5 *या "भाषा।" **81:7** *शा., "गर-जन की गुप्त जगह।" #मतलब "झगड़ा करना।"

के मुताबिक चलने के लिए छोड़
दिया।
उन्होंने वही किया जो उन्हें सही
लगा।*[1]
13 काश, मेरे लोग मेरी बात सुनते![2]
काश, इसराएल मेरी राहों पर
चलता![3]
14 तब मैं उनके दुश्मनों को फौरन हरा
देता,
उनके बैरियों को धूल चटा देता।[4]
15 यहोवा से नफरत करनेवाले उसके
सामने दुबक जाएँगे,
वे हमेशा सज़ा भुगतते रहेंगे।
16 मगर तुझे* वह सबसे बढ़िया गेहूँ
खिलाएगा[5]
और चट्टान से निकलनेवाला शहद
खिलाकर तुझे संतुष्ट करेगा।"[6]

आसाप का सुरीला गीत।[7]

82 परमेश्वर अपनी सभा में खड़ा
होता है,[8]
ईश्वरों के बीच* वह न्याय करता
है[9] और कहता है,
2 "तुम कब तक अन्याय करते
रहोगे?[10]
कब तक दुष्टों की तरफदारी करते
रहोगे?[11] (*सेला*)
3 दीन-दुखियों और अनाथों* की
पैरवी# करो।[12]
लाचार और बेसहारा लोगों को
न्याय दिलाओ।[13]
4 दीन-दुखियों और गरीबों को
बचाओ,
उन्हें दुष्टों के हाथों से छुड़ाओ।"
5 ये न्यायी न तो कुछ जानते हैं,
न कुछ समझते हैं,[1]
वे अंधकार में भटक रहे हैं,
पृथ्वी की पूरी बुनियाद हिलायी जा
रही है।[2]
6 "मैंने कहा, 'तुम सब ईश्वर* हो,[3]
परम-प्रधान परमेश्वर के बेटे हो।
7 फिर भी दूसरे इंसानों की तरह
तुम्हारी भी मौत होगी,[4]
दूसरे हाकिमों की तरह तुम भी गिर
जाओगे!'"[5]
8 हे परमेश्वर उठ, दुनिया का
इंसाफ कर,[6]
क्योंकि सब राष्ट्र तेरे हैं।

आसाप[7] का सुरीला गीत।

83 हे परमेश्वर, तू क्यों चुप है?[8]
हे शक्तिशाली परमेश्वर,
कुछ तो बोल,* कुछ कदम
उठा।
2 देख! तेरे दुश्मन होहल्ला मचा
रहे हैं,[9]
तुझसे नफरत करनेवाले हेकड़ी से
पेश आते हैं।*
3 वे धूर्त तरीके से, चोरी-छिपे तेरे
लोगों के खिलाफ साज़िशें कर
रहे हैं,
तेरे अज़ीज़ लोगों* के खिलाफ
चाल चल रहे हैं।
4 वे कहते हैं, "आओ, हम इस पूरे
राष्ट्र को नाश कर दें[10]
ताकि इसराएल का नाम हमेशा के
लिए भुला दिया जाए।"

81:12 *शा., "वे अपनी ही साज़िशों के मुताबिक चले।" **81:16** *शा., "उसे" यानी परमेश्वर के लोगों को। **82:1** *या "जो ईश्वर जैसे हैं उनके बीच।" **82:3** *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।" #या "का न्याय।"

82:6 *या "ईश्वर जैसे।" **83:1** *या "मौन मत रह।" **83:2** *या "सिर उठाते हैं।" **83:3** *शा., "छिपाए गए लोगों।"

अध्य. 81
1 यिर्म 7:23, 24 यिर्म 11:7, 8 मी 6:16
2 व्य 32:29
3 व्य 5:29 यश 48:17, 18
4 गि 14:9
5 भज 147:14
6 व्य 32:13, 14

अध्य. 82
7 1इत 25:1
8 2इत 19:6
9 निर्ग 18:21, 22 भज 82:6 यूह 10:34, 35
10 लैव 19:15 सभ 5:8
11 व्य 1:16, 17 2इत 19:7 नीत 18:5
12 व्य 24:17
13 यिर्म 22:3

दूसरा कॉल.
1 मी 3:1
2 भज 11:3 नीत 29:4
3 यूह 10:34, 35 1कुर 8:5
4 भज 49:12
5 भज 146:3, 4
6 भज 96:13

अध्य. 83
7 2इत 20:14
8 भज 28:1
9 भज 2:1, 2
10 निर्ग 1:8-10 2इत 20:1 एस 3:6

5 वे सब एकमत होकर तरकीबें
बुनते हैं,*
उन्होंने तेरे खिलाफ आपस में संधि
की है#[1]—
6 एदोम और इश्माएलियों के तंबू,
मोआब[2] और हगरी लोग,[3]
7 गबाल और अम्मोन[4] और
अमालेक,
पलिश्त[5] और सोर के लोग।[6]
8 अश्शूर[7] भी उनसे मिल गया है,
वे लूत के बेटों[8] का साथ देते हैं।
(*सेला*)
9 तू उनका वही हश्र कर जो तूने
मिद्यान का किया था,[9]
कीशोन नदी* के पास सीसरा और
याबीन का किया था।[10]
10 उन्हें एन्दोर में नाश कर दिया
गया था,[11]
वे ज़मीन की खाद बन गए थे।
11 उनके रुतबेदार लोगों का वही हाल
कर जो ओरेब और ज़ाएब का
हुआ था,[12]
उनके हाकिमों* के साथ वही कर
जो जेबह और सलमुन्ना के साथ
हुआ था,[13]
12 क्योंकि उन्होंने कहा है, "चलो, हम
उस देश पर कब्ज़ा कर लें जहाँ
परमेश्वर निवास करता है।"
13 हे मेरे परमेश्वर, उन्हें उखड़े हुए
पौधे जैसा कर दे जो यहाँ-वहाँ
उड़ाया जाता है,[14]
सूखी घास जैसा कर दे जिसे हवा
इधर से उधर उड़ाती है।
14 जैसे आग जंगल को भस्म कर
देती है,
शोला पहाड़ों को जला देता है,[1]
15 वैसे ही तू तेज़ आँधी चलाकर
उनका पीछा कर,[2]
तूफान लाकर उनमें खौफ
फैला दे।[3]
16 उनका मुँह अपमान से ढाँप दे
ताकि हे यहोवा, वे तेरे नाम की
खोज करें।
17 वे हमेशा के लिए शर्मिंदा किए जाएँ
और खौफ में रहें,
वे बेइज़्ज़त किए जाएँ और नाश हो
जाएँ,
18 लोग जानें कि सिर्फ तू जिसका नाम
यहोवा है,[4]
सारी धरती के ऊपर
परम-प्रधान है।[5]

कोरह के वंशजों का सुरीला गीत।[6] गित्तीत* के सिलसिले में निर्देशक के लिए हिदायत।

84 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
तेरा महान डेरा कितना
प्यारा है![7]
2 मेरा मन यहोवा के आँगनों में जाने
के लिए तरस रहा है,
आस लगाते-लगाते मैं पस्त हो
गया हूँ।[8]
मेरा तन और मन खुशी से
जीवित परमेश्वर की जयजयकार
करता है।
3 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
मेरे राजा और मेरे परमेश्वर,
देख! पंछी तेरी महान वेदी के पास
आशियाना बनाता है,
अबाबील अपना घोंसला बनाती है,
जहाँ वह अपने बच्चों की देखभाल
करती है!

अध्या. 83
1 2शम 10:6 यश 7:2, 5
2 2इत 20:1, 10
3 1इत 5:10
4 यिर्म 49:2
5 निर्ग 15:14 भज 60:8
6 आम 1:9
7 2रा 17:5
8 उत 19:36-38 व्य 2:9
9 न्या 8:10, 12
10 न्या 4:2, 7, 15
11 यह 17:11
12 न्या 7:25
13 न्या 8:21
14 यश 17:13

दूसरा कॉल.
1 भज 144:5 नहू 1:6
2 यश 30:30
3 भज 11:6
4 निर्ग 6:3 भज 68:4 यश 42:8 यश 54:5
5 भज 59:13 भज 92:8 दान 4:17

अध्या. 84
6 2इत 20:19
7 भज 27:4 भज 43:3 भज 46:4
8 भज 42:1, 2 भज 63:1, 2

83:5 *शा., "वे एक मन होकर सलाह-मशविरा करते हैं।" #या "करार किया है।" **83:9** *या "घाटी।" **83:11** *या "अगुवों।"

84:उप *शब्दावली देखें।

4 सुखी हैं वे जो तेरे भवन में निवास
करते हैं![1]
वे लगातार तेरी तारीफ करते हैं।[2]
(*सेला*)
5 सुखी हैं वे जो तुझसे ताकत
पाते हैं,[3]
जिनका मन तेरे भवन को जाने-
वाली राहों पर लगा है।
6 जब वे बाका घाटी* से होकर
गुज़रते हैं,
तो वे उसे सोतों का इलाका
समझते हैं
और शुरू की बारिश उसे आशीषों
का ओढ़ना ओढ़ाती है।#
7 वे चलते जाते हैं, उनका दमखम
बढ़ता ही रहता है,[4]
हर कोई सिय्योन में परमेश्वर के
सामने हाज़िर होता है।
8 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मेरी
प्रार्थना सुन,
हे याकूब के परमेश्वर, मेरी दुआ
सुन। (*सेला*)
9 हे हमारी ढाल[5] और हमारे पर-
मेश्वर,*
अपने अभिषिक्त के चेहरे पर नज़र
डाल।[6]
10 क्योंकि तेरे आँगनों में एक दिन
बिताना, कहीं और हज़ार दिन
बिताने से कहीं बेहतर है![7]
दुष्टों के तंबुओं में निवास करने के
बजाय
अपने परमेश्वर के भवन की दह-
लीज़ पर खड़ा रहना मुझे ज़्यादा
पसंद है।
11 क्योंकि यहोवा परमेश्वर
हमारा सूरज[1] और हमारी
ढाल है,[2]
वह हम पर कृपा करता है, हमारा
सम्मान बढ़ाता है।
जो निर्दोष चाल चलते हैं,
उन्हें यहोवा कोई भी अच्छी चीज़
देने से पीछे नहीं हटेगा।[3]
12 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
सुखी है वह इंसान जो तुझ पर
भरोसा रखता है।[4]

कोरह के वंशजों का सुरीला गीत।[5]
निर्देशक के लिए हिदायत।

85 हे यहोवा, तूने अपने देश पर
कृपा की है,[6]
तू याकूब की संतानों को बँधुआई से
वापस ले आया।[7]
2 तूने अपने लोगों का गुनाह माफ
किया है,
उनके सारे पाप माफ कर दिए।*[8]
(*सेला*)
3 तूने अपना क्रोध प्रकट करने से खुद
को रोक लिया,
अपने गुस्से की जलजलाहट शांत
कर दी।[9]
4 हे परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता, हमें
बहाल कर दे,*
हमसे नाराज़ होना छोड़ दे।[10]
5 क्या तू हमेशा के लिए हम पर
भड़का रहेगा?[11]
क्या तू पीढ़ी-पीढ़ी तक गुस्सा करता
रहेगा?
6 क्या तू हममें दोबारा जान नहीं
फूँकेगा
ताकि तेरे लोग तेरे कारण आनंद
मनाएँ?[12]

84:6 *या "बाका झाड़ियों की घाटी।" #या शायद, "शिक्षक आशीषों का ओढ़ना ओढ़ता है।" **84:9** *या शायद, "हे परमेश्वर, हमारी ढाल देख।"

85:2 *शा., "ढाँप दिए।" **85:4** *या "हमें वापस इकट्ठा कर ले।"

अध्य. 84
1 भज 23:6; भज 65:4
2 1इत 25:7; भज 150:1
3 भज 28:7
4 भज 18:32; यश 40:29-31; हब 3:19
5 उत 15:1
6 1शम 2:10
7 भज 26:8; भज 27:4; भज 43:3, 4

दूसरा कॉल.
1 भज 27:1; यश 60:19, 20
2 व्य 33:29; 2शम 22:3; भज 144:2
3 भज 34:9; भज 37:18
4 भज 146:5; यिर्म 17:7

अध्य. 85
5 2इत 20:19
6 लैव 26:42; योए 2:18
7 एज 2:1; यिर्म 30:18; यहे 39:25
8 यिर्म 50:20; मी 7:18
9 भज 103:9; यश 12:1
10 भज 80:3, 4
11 भज 74:1; भज 79:5
12 एज 3:11; यिर्म 33:10, 11

7 हे यहोवा, हमें अपने अटल प्यार
का सबूत दे,[1]
हमारा उद्धार कर।
8 सच्चा परमेश्वर यहोवा जो कहता
है, मैं सुनूँगा,
क्योंकि वह अपने लोगों से, अपने
वफादार जनों से शांति की बातें
करेगा,[2]
मगर ऐसा न हो कि वे पहले
की तरह खुद पर हद-से-ज़्यादा
भरोसा करें।[3]
9 परमेश्वर उन लोगों को बचाने के
लिए तैयार रहता है जो उसका
डर मानते हैं[4]
ताकि हमारे देश पर उसकी महिमा
छायी रहे।
10 अटल प्यार और वफादारी एक-
दूसरे से मिलेंगे,
नेकी और शांति एक-दूसरे को
चूमेंगी।[5]
11 धरती से वफादारी के अंकुर फूटेंगे
और आसमान से नेकी चमकेगी।[6]
12 बेशक, यहोवा हमें अच्छी चीज़ें*
देगा,[7]
हमारी ज़मीन अपनी उपज देगी।[8]
13 नेकी परमेश्वर के सामने चलेगी,[9]
उसके कदमों के लिए रास्ता
बनाएगी।

दाविद की प्रार्थना।

86 हे यहोवा, मेरी तरफ कान
लगा* और मुझे जवाब दे,
क्योंकि मैं सताया हुआ और
गरीब हूँ।[10]
2 मेरी जान की हिफाज़त कर क्योंकि
मैं वफादार हूँ।[11]
अपने सेवक को बचा ले जो तुझ
पर भरोसा रखता है,
क्योंकि तू मेरा परमेश्वर है।[1]
3 हे यहोवा, मुझ पर कृपा कर,[2]
मैं सारा दिन तुझे पुकारता
रहता हूँ।[3]
4 अपने सेवक को खुशियाँ दे,
क्योंकि हे यहोवा, मैं तेरी ओर रुख
करता हूँ।
5 हे यहोवा, तू भला है[4] और माफ
करने को तत्पर रहता है,[5]
तू उन सबके लिए अटल प्यार से
भरपूर है जो तुझे पुकारते हैं।[6]
6 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन,
मेरी मदद की पुकार पर ध्यान दे।[7]
7 संकट के दिन मैं तुझे पुकारता हूँ,[8]
क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि तू
जवाब देगा।[9]
8 हे यहोवा, ईश्वरों में तेरे समान कोई
नहीं,[10]
तूने जो काम किए हैं वे
बेमिसाल हैं।[11]
9 हे यहोवा, सब राष्ट्र, जो तेरे हाथ
की रचना हैं,
तेरे पास आएँगे और तेरे सामने
दंडवत करेंगे,[12]
तेरे नाम की महिमा करेंगे।[13]
10 क्योंकि तू महान है और आश्चर्य के
काम करता है,[14]
तू ही अकेला परमेश्वर है।[15]
11 हे यहोवा, मुझे अपनी राह के बारे
में सिखा।[16]
मैं तेरी सच्चाई की राह पर
चलूँगा।[17]
मेरे मन को एक कर* कि मैं तेरे
नाम का डर मानूँ।[18]

85:12 *या "खुशहाली।" 86:1 *या "झुककर मेरी सुन।"

86:11 *या "मुझे ऐसा दिल दे जो बँटा हुआ न हो।"

अध्य. 85
1 विल 3:22
2 यश 57:19
3 व्य 8:17, 18; भज 78:7
4 यश 46:13
5 भज 72:3; यश 32:17
6 यश 26:9; यश 45:8
7 भज 84:11; याकू 1:17
8 लैव 26:4; भज 67:6; यश 25:6; यश 30:23
9 भज 89:14

अध्य. 86
10 भज 34:6; यश 66:2
11 भज 37:28

दूसरा कॉल.
1 2इत 16:9
2 भज 57:1
3 भज 25:5
4 भज 25:8; भज 145:9; लूक 18:19
5 यश 55:7; मी 7:18
6 भज 130:7
7 भज 17:1
8 भज 18:6
9 भज 116:1
10 निर्ग 15:11; भज 96:5; 1कुर 8:5, 6
11 व्य 3:24; भज 104:24
12 यश 2:2, 3; जक 14:9; प्रक 7:9, 10
13 प्रक 15:4
14 भज 72:18; दान 6:27
15 व्य 6:4; भज 83:18; यश 44:6; 1कुर 8:4
16 भज 27:11; भज 119:33; भज 143:8; यश 54:13
17 भज 43:3
18 सभ 12:13; यिर्म 32:39

12 हे यहोवा, मेरे परमेश्वर,
मैं पूरे दिल से[1] तेरी तारीफ करता हूँ
और सदा तक तेरे नाम की महिमा करूँगा।
13 क्योंकि मेरे लिए तेरा अटल प्यार महान है,
तूने मुझे कब्र की गहराइयों में जाने से बचाया है।[2]
14 हे परमेश्वर, गुस्ताख लोग मेरे खिलाफ खड़े हुए हैं,[3]
बेरहम आदमियों की टोली मेरी जान के पीछे पड़ी है,
वे तेरी बिलकुल कदर नहीं करते।*[4]
15 मगर हे यहोवा, तू दयालु
और करुणा करनेवाला परमेश्वर है,
तू क्रोध करने में धीमा, अटल प्यार से भरपूर और विश्वासयोग्य* है।[5]
16 मुझ पर ध्यान दे और कृपा कर।[6]
अपने सेवक को ताकत दे,[7]
अपनी दासी के बेटे को बचा ले।
17 मुझे अपनी भलाई का चिन्ह दिखा*
ताकि मुझसे नफरत करनेवाले यह देखकर शर्मिंदा हो जाएँ।
क्योंकि हे यहोवा, तू मेरा मददगार है और मुझे दिलासा देनेवाला है।

कोरह के वंशजों का सुरीला गीत।[8]

87 परमेश्वर की नगरी की बुनियाद पवित्र पहाड़ों पर है।[9]
2 यहोवा याकूब के सभी तंबुओं से ज़्यादा
सिय्योन के फाटकों से लगाव रखता है।[1]
3 हे सच्चे परमेश्वर की नगरी,[2] लोग तेरी तारीफ में कितनी बढ़िया बातें कह रहे हैं। (*सेला*)
4 मैं राहाब[3] और बैबिलोन को उनमें गिनूँगा जो मुझे जानते हैं,*
कूश के साथ पलिश्त और सोर को देखो,
मैं इनमें से हरेक के बारे में कहूँगा,
"यह वहाँ पैदा हुआ था।"
5 और सिय्योन के बारे में कहा जाएगा:
"हर कोई इस नगरी में पैदा हुआ था।"
परम-प्रधान परमेश्वर उसे मज़बूती से कायम करेगा।
6 जब यहोवा देश-देश के लोगों के नाम लिखेगा तब वह ऐलान करेगा,
"यह वहाँ पैदा हुआ था।" (*सेला*)
7 गानेवाले[4] और घेरा बनाकर नाचनेवाले,[5] सभी कहेंगे,
"मेरे सब सोते तुझसे ही निकलते हैं।"*[6]

कोरह के वंशजों का सुरीला गीत।[7]
निर्देशक के लिए हिदायत: यह गीत बारी-बारी से महलत की शैली* में गाया जाए। जेरह के वंशज हेमान[8] का मश्कील।*

88 हे यहोवा, मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर,[9]
दिन को मैं तुझे पुकारता हूँ,
रात को भी मैं तेरे सामने आता हूँ।[10]
2 मेरी प्रार्थना तेरे पास पहुँचे,[11]

अध्या. 86
1 मत 22:37
2 अय 33:28; भज 56:13; भज 116:8
3 2शम 15:12
4 भज 10:4; भज 54:3
5 निर्ग 34:6; नहे 9:17; यो 4:2
6 भज 25:16
7 भज 28:7

अध्या. 87
8 2इत 20:19
9 भज 48:1

दूसरा कॉल.
1 भज 78:68; भज 132:13
2 भज 48:2; यश 60:14
3 भज 89:10; यश 30:7
4 1इत 15:16
5 भज 150:4
6 भज 46:4

अध्या. 88
7 2इत 20:19
8 1रा 4:30, 31; 1इत 2:6
9 भज 27:9; यश 12:2
10 भज 22:2
11 1रा 8:30

86:14 *या "उन्होंने तुझे अपने सामने नहीं रखा।" 86:15 *या "सच्चा।" 86:17 *या "सबूत दे।"

87:4 *या "कबूल करते हैं।" 87:7 *या "तू मेरे लिए सब चीज़ों का सोता है।" 88:उप *शब्दावली देखें।

मेरी मदद की पुकार पर कान
लगा।*[1]
3 क्योंकि मैं पीड़ा से भरा हुआ हूँ,[2]
मैं कब्र की दहलीज़ तक पहुँच
गया हूँ।[3]
4 मुझे अभी से उनमें गिना जा रहा
है जो जल्द ही गड्ढे* में जाने-
वाले हैं,[4]
मैं बिलकुल लाचार हो गया हूँ,#[5]
5 मुझे मुरदों के बीच छोड़ दिया
गया है,
मैं उनके जैसा हो गया हूँ जो घात
होकर कब्र में पड़े हैं,
जिन्हें अब तू याद नहीं करता,
जिन पर अब तेरा साया* नहीं
रहा।
6 तूने मुझे गहरी खाई में फेंक
दिया है,
उस बड़े अथाह-कुंड में, जहाँ अँधेरा
ही अँधेरा है।
7 तेरे क्रोध के बोझ से मैं दबा जा
रहा हूँ,[6]
तूने अपनी विनाशकारी लहरों से
मुझे घेर लिया है। (*सेला*)
8 तूने मेरे जान-पहचानवालों को
मुझसे दूर भगा दिया है,[7]
मुझे उनकी नज़र में घिनौना बना
दिया है।
मैं फँस गया हूँ, निकलने का कोई
रास्ता नहीं।
9 पीड़ा से मेरी आँखें धुँधली पड़
गयी हैं।[8]
हे यहोवा, मैं सारा दिन तुझे पुकार-
ता रहता हूँ,[9]

हाथ फैलाकर दुआ करता हूँ।
10 क्या तू मरे हुओं की खातिर करिश्मे
करेगा?
क्या मुरदे उठकर तेरी तारीफ कर
सकते हैं?[1] (*सेला*)
11 क्या कब्र में तेरे अटल प्यार का
और विनाश की जगह* तेरी
वफादारी का बखान किया
जाएगा?
12 क्या तेरे आश्चर्य के काम, अंधकार
की जगह
या तेरी नेकी अज्ञानता की जगह
जानी जाएगी?[2]
13 फिर भी हे यहोवा, मैं मदद के लिए
तुझे पुकारता हूँ,[3]
हर सुबह अपनी प्रार्थना तेरे सामने
रखता हूँ।[4]
14 हे यहोवा, तू क्यों मुझे ठुकरा
देता है?[5]
क्यों मुझसे अपना मुँह फेर
लेता है?[6]
15 बचपन से ही मैं दुख झेलता आया
हूँ, मौत से जूझता रहा हूँ,[7]
तू मुझ पर भयानक विपत्तियाँ आने
देता है,
उन्हें सहते-सहते मैं बेजान हो
गया हूँ।
16 तेरे क्रोध की लपटों ने मुझे घेर
लिया है।[8]
तेरा खौफ मुझे खाए जा रहा है।
17 तेरा खौफ मुझे सारा दिन समुंदर की
लहरों की तरह घेरे रहता है,
चारों तरफ से* मुझ पर हावी हो
जाता है।

88:2 *या "झुककर मेरी मदद की पुकार सुन।" **88:4** *या "कब्र।" #या "मैं ऐसे आदमी की तरह बन गया हूँ जिसमें ताकत नहीं है।" **88:5** *शा., "हाथ।"

88:11 *या "और अबद्दोन में।" शब्दावली देखें। **88:17** *या शायद, "अचानक।"

अध्य. 88
1 भज 141:1
2 भज 71:20
3 यश 38:10
4 भज 143:7
5 भज 31:12
6 भज 90:7; भज 102:10
7 अय 19:13, 19; भज 31:11; भज 142:4
8 अय 17:7; भज 42:3; विल 3:49
9 भज 55:17

दूसरा कॉल.
1 अय 14:14; भज 115:17; यश 38:18
2 सभ 2:16; सभ 8:10; सभ 9:5
3 भज 46:1
4 भज 55:17; भज 119:147
5 भज 43:2
6 अय 13:24; भज 13:1
7 अय 17:1
8 भज 102:10

18 तूने मेरे दोस्तों और साथियों को
मुझसे बहुत दूर भगा दिया है,[1]
अब अँधेरा ही मेरा साथी है।

जेरह के वंशज एतान[2] की रचना। मश्कील।*

89 यहोवा ने अटल प्यार की वजह
से जो उपकार किए हैं, मैं
सदा उनके गीत गाऊँगा।
मैं आनेवाली सभी पीढ़ियों को
बताऊँगा कि तू कितना
विश्वासयोग्य है।
2 क्योंकि मैंने कहा, "अटल प्यार
सदा बना रहेगा[3]
और तूने स्वर्ग में अपनी वफादारी
मज़बूती से कायम की है।"
3 तूने कहा है, "मैंने अपने चुने
हुए जन के साथ एक करार
किया है,[4]
अपने सेवक दाविद से शपथ खाकर
कहा,[5]
4 'मैं तेरा वंश[6] सदा तक बनाए
रखूँगा
और तेरी राजगद्दी पीढ़ी-पीढ़ी तक
कायम रखूँगा।'"[7] (*सेला*)
5 हे यहोवा, स्वर्ग तेरे लाजवाब कामों
की बड़ाई करता है,
हाँ, पवित्र जनों की मंडली तेरी
वफादारी की तारीफ करती है।
6 क्योंकि आसमान में ऐसा कौन है जो
यहोवा के समान हो?[8]
परमेश्वर के बेटों[9] में ऐसा कौन है
जो यहोवा जैसा हो?
7 पवित्र जनों की सभा में परमेश्वर
की गहरी श्रद्धा की जाती है,[10]
वह उन सबके लिए वैभवशाली
और विस्मयकारी है जो उसके
चारों तरफ मौजूद हैं।[11]

8 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
हे याह, तेरे जैसा शक्तिशाली
कौन है?[1]
तू पूरी तरह विश्वासयोग्य है।[2]
9 तूफानी समुंदर को तू काबू में
रखता है,[3]
जब उसकी लहरें उफनती हैं तो तू
उन्हें शांत करता है।[4]
10 तूने राहाब[5] को घात किए हुए की
तरह कुचल दिया।[6]
अपने ताकतवर बाज़ू से दुश्मनों को
तितर-बितर कर दिया।[7]
11 आकाश तेरा है, धरती भी तेरी है,[8]
यह उपजाऊ ज़मीन और उसमें
पायी जानेवाली सारी चीज़ें[9] तूने
ही रची हैं।
12 उत्तर और दक्षिण को तूने सिरजा,
ताबोर[10] और हेरमोन पहाड़[11]
खुशी-खुशी तेरे नाम की तारीफ
करते हैं।
13 तेरा बाज़ू शक्तिशाली है,[12]
तेरा हाथ मज़बूत है,[13]
तेरा दायाँ हाथ ऊँचा किया
गया है।[14]
14 नेकी और न्याय तेरी राजगद्दी की
बुनियाद हैं।[15]
अटल प्यार और वफादारी तेरे
सामने हाज़िर रहते हैं।[16]
15 सुखी हैं वे लोग जो खुशी से तेरी
जयजयकार करते हैं।[17]
हे यहोवा, वे तेरे मुख के प्रकाश में
चलते हैं।
16 तेरे नाम के कारण वे सारा दिन
आनंद मनाते हैं,
तेरी नेकी के ज़रिए वे ऊँचे उठाए
जाते हैं।
17 क्योंकि तू उनकी ताकत की
शान है,[18]

89:उप *शब्दावली देखें।

अध्या. 88
1 अय 19:13; भज 31:11; भज 38:11; भज 142:4

अध्या. 89
2 1रा 4:30, 31; 1इत 2:6
3 1इत 16:41; यश 54:10
4 2शम 7:8; 1रा 8:16; लूक 1:32, 33
5 भज 132:11; यहे 34:23; हो 3:5; यूह 7:42
6 1इत 17:11; प्रक 22:16
7 2शम 7:12, 13; इब्र 1:8
8 भज 40:5; भज 71:19
9 अय 38:7
10 यश 6:2, 3
11 दान 7:9, 10

दूसरा कॉल.
1 1शम 2:2; भज 84:12
2 व्य 32:4
3 यिर्म 31:35
4 भज 65:7; भज 107:29
5 यश 30:7
6 निर्ग 14:26; निर्ग 15:4
7 निर्ग 3:20; व्य 4:34; लूक 1:51
8 1कुर 10:26
9 1इत 29:11; भज 50:12
10 यह 19:22, 23
11 व्य 3:8; यह 12:1
12 निर्ग 6:6
13 निर्ग 13:3
14 भज 44:3
15 व्य 32:4; भज 71:19; प्रक 15:3
16 निर्ग 34:6; यिर्म 9:24
17 गि 10:10; भज 98:6
18 भज 28:7

तेरी मंज़ूरी से हमारी ताकत बढ़ती जाती है।*[1]
18 हमारी ढाल यहोवा की दी हुई है,
हमारा राजा इसराएल के पवित्र परमेश्‍वर का ठहराया हुआ है।[2]
19 उस वक्‍त तूने एक दर्शन में अपने वफादार जनों से कहा था,
"मैंने एक शूरवीर को ताकत दी है,[3]
मैंने लोगों में से एक चुने हुए जन को ऊँचा उठाया है।[4]
20 मैंने अपने सेवक दाविद को पाया,[5]
अपने पवित्र तेल से उसका अभि-षेक किया।[6]
21 मेरा हाथ उसे थामे रहेगा,[7]
मेरे बाज़ू उसे मज़बूत करेंगे।
22 कोई भी दुश्‍मन उससे कर नहीं वसूलेगा,
कोई दुष्ट उसे नहीं सताएगा।[8]
23 मैं उसके सामने उसके दुश्‍मनों को कुचल दूँगा,[9]
उससे नफरत करनेवालों को मार डालूँगा।[10]
24 मेरा अटल प्यार और मेरी वफादारी उसके साथ है,[11]
मेरे नाम के कारण उसकी ताकत बढ़ती जाएगी।*
25 मैं समुंदर को उसके हाथ के नीचे* कर दूँगा,
नदियों को उसके दाएँ हाथ के नीचे कर दूँगा।[12]
26 वह पुकारकर मुझसे कहेगा, 'तू मेरा पिता है,
मेरा परमेश्‍वर और मेरे उद्धार की चट्टान है।'[1]
27 मैं उसे अपना पहलौठा मानूँगा,[2]
धरती के सभी राजाओं से महान करूँगा।[3]
28 मैं उससे सदा प्यार* करता रहूँगा,[4]
उसके साथ किया मेरा करार कभी नहीं टूटेगा।[5]
29 मैं उसका वंश सदा तक बनाए रखूँगा,
उसकी राजगद्दी स्वर्ग की तरह हमेशा कायम रखूँगा।[6]
30 अगर उसके बेटे मेरा कानून मानना छोड़ दें,
मेरे आदेशों* के मुताबिक न चलें,
31 अगर वे मेरी विधियों के खिलाफ जाएँ
और मेरी आज्ञाएँ न मानें,
32 तो मैं उनकी बगावत की वजह से उन्हें छड़ी से मारूँगा,[7]
उनके गुनाह की वजह से उन्हें कोड़े लगाऊँगा।
33 मगर मैं उससे प्यार* करना कभी नहीं छोड़ूँगा,[8]
न ही अपने वादे से मुकरकर झूठा साबित होऊँगा।#
34 मैं अपना करार नहीं तोड़ूँगा,[9]
न ही अपनी ज़बान बदलूँगा।[10]
35 अपनी पवित्रता की शपथ खाकर जब मैंने दाविद से एक बार कह दिया,
तो मैं उससे कभी झूठ नहीं बोलूँगा।[11]

अध्य. 89
1 1शम 2:10
2 भज 2:6
3 1शम 18:14
4 2शम 7:8
5 प्रेष 13:22
6 1शम 16:12, 13; प्रेष 10:38
7 भज 80:17; यश 42:1
8 1इत 17:9
9 2शम 3:1; 2शम 7:9
10 भज 110:1
11 2शम 7:15; 1इत 17:13; प्रेष 13:34
12 1रा 4:21; भज 72:8

दूसरा कॉल.
1 2शम 22:47; भज 18:2
2 भज 2:7; इब्र 1:5
3 1ती 6:15; प्रक 1:5; प्रक 19:16
4 प्रेष 13:34
5 2शम 23:5; भज 89:34
6 यश 9:7; यिर्म 33:17; इब्र 1:8
7 2शम 7:14; 1रा 11:14, 31
8 2शम 7:15; 1रा 11:32, 36
9 यिर्म 33:20, 21
10 याकू 1:17
11 गि 23:19; भज 132:11

89:17 *शा., "हमारा सींग ऊँचा किया जाता है।" **89:24** *शा., "उसका सींग ऊँचा किया जाएगा।" **89:25** *या "अधि-कार में।"

89:28, 33 *या "अटल प्यार।" **89:30** *या "न्याय-सिद्धांतों।" **89:33** #शा., "न ही विश्‍वासयोग्य रहना छोड़कर झूठा ठह-रूँगा।"

36 उसका वंश* सदा बना रहेगा,[1]
उसकी राजगद्दी मेरे सामने सूरज
की तरह सदा कायम रहेगी।[2]
37 वह चाँद की तरह सदा तक मज़-
बूती से कायम रहेगी,
जो आसमान में एक विश्वासयोग्य
गवाह जैसा है।" (*सेला*)
38 मगर तूने अपने अभिषिक्त जन को
अपनी नज़रों से दूर कर दिया,
उसे ठुकरा दिया,[3]
तेरे गुस्से की जलजलाहट उस पर
भड़की हुई है।
39 तूने अपने सेवक के साथ किए
करार को तुच्छ समझा,
उसका ताज ज़मीन पर पटककर
दूषित कर दिया।
40 तूने उसकी पत्थर की सारी दीवारें*
ढा दीं,
उसके गढ़ ढाकर खंडहर बना दिए।
41 उसके पास से गुज़रनेवालों ने उसे
लूट लिया,
उसके पड़ोसी उसे बदनाम
करते हैं।[4]
42 तूने उसके बैरियों को जीत
दिलायी,*[5]
उसके सभी दुश्मनों को खुशियाँ
मनाने का मौका दिया।
43 तूने उसकी तलवार का विरोध
किया,
तूने युद्ध में उसके पैर जमने नहीं
दिए।
44 तूने उसकी शानो-शौकत मिटा दी,
उसकी राजगद्दी ज़मीन पर
पटक दी।

89:36 *शा., "बीज।" 89:40 *या "उसके पत्थर के शरण-स्थानों।" 89:42 *शा., "का दायाँ हाथ ऊपर उठाया।"

अध्य. 89
1 2शम 7:16, 17 भज 72:17 यश 11:1 यिर्म 23:5 यूह 12:34 प्रक 22:16
2 दान 7:14 लूक 1:32, 33
3 1इत 28:9
4 व्य 28:37
5 व्य 28:25

दूसरा कॉल.
1 भज 13:1
2 अय 7:7 भज 39:5
3 अय 30:23 भज 49:7, 9
4 2शम 7:12-15 भज 132:11 यश 55:3
5 भज 41:13 भज 72:18

45 तूने उस पर वक्त से पहले ही
बुढ़ापा आने दिया,
तूने उसे शर्म से ढाँप दिया।
(*सेला*)
46 हे यहोवा, तू कब तक अपना
मुँह फेरे रहेगा? क्या सदा के
लिए?[1]
क्या तेरे क्रोध की आग इसी तरह
भड़कती रहेगी?
47 ध्यान दे कि मेरी ज़िंदगी कितनी
छोटी है![2]
क्या तूने सब इंसानों को बिना मक-
सद के रचा था?
48 क्या कोई ऐसा इंसान है जो कभी
मौत न देखे?[3]
क्या वह कब्र की गिरफ्त से खुद को
बचा सकता है? (*सेला*)
49 हे यहोवा, तूने अटल प्यार की
वजह से गुज़रे दिनों में जो काम
किए थे वे कहाँ गए,
जिनके बारे में तूने अपनी वफादारी
की वजह से दाविद से शपथ
खायी थी?[4]
50 हे यहोवा, ध्यान दे कि
तेरे सेवकों पर कैसे ताने
कसे जाते हैं,
कैसे मुझे सभी देशों के लोगों के
ताने सहने* पड़ते हैं,
51 हे यहोवा देख, कैसे तेरे दुश्मनों ने
तेरे अभिषिक्त जन की बेइज़्ज़ती
की है,
कैसे उन्होंने उसके हर काम की
निंदा की है।
52 यहोवा की सदा तारीफ होती रहे।
आमीन। आमीन।[5]

89:50 *शा., "ताने अपनी गोद में लिए रहने।"

चौथी किताब
(भजन 90-106)

सच्चे परमेश्‍वर के सेवक
मूसा[1] की प्रार्थना।

90 हे यहोवा, पीढ़ी-पीढ़ी से
तू हमारा निवास-स्थान*
रहा है।[2]
2 इससे पहले कि पहाड़ पैदा हुए,
या तू पृथ्वी और उपजाऊ ज़मीन
को वजूद में लाया,*[3] तू ही
परमेश्‍वर था।
हाँ, तू हमेशा से परमेश्‍वर रहा है
और हमेशा रहेगा।[4]
3 तू नश्‍वर इंसान को मिट्टी में लौटा
देता है,
तू कहता है, "इंसानो, मिट्टी में लौट
जाओ।"[5]
4 तेरी नज़र में हज़ार साल ऐसे हैं
जैसे बीता हुआ कल हो,[6]
जैसे रात का बस एक पहर हो।
5 तू एक ही झटके में उनका सफाया
कर देता है,[7]
उनकी ज़िंदगी नींद के चंद लमहों
की तरह बन जाती है,
वे भोर को उगनेवाली हरी घास जैसे
होते हैं।[8]
6 सुबह वह लहलहाती और बढ़ती है,
पर शाम होते-होते मुरझाकर सूख
जाती है।[9]
7 क्योंकि तेरे क्रोध की आग से हम
भस्म हो जाते हैं,[10]
तेरी जलजलाहट देखकर हम दहल
जाते हैं।
8 तू हमारे गुनाहों को अपने सामने
रखता है,*[11]
तेरे मुख के प्रकाश से हमारे राज़
खुल जाते हैं।[1]
9 तेरे क्रोध के कारण हमारे दिन घटते
जाते हैं,*
हमारी ज़िंदगी के साल एक आह
की तरह बीत जाते हैं।
10 हमारी उम्र 70 साल की होती है,
अगर किसी में ज़्यादा दमखम हो
तो* 80 साल की होती है।[2]
पर ये साल भी दुख और मुसीबतों
से भरे होते हैं,
ये जल्दी बीत जाते हैं और हम
गायब हो जाते हैं।[3]
11 तेरी जलजलाहट की इंतिहा कौन
जान सकता है?
तेरा क्रोध भयानक है, इसलिए हम
तेरा बहुत डर मानते हैं।[4]
12 हमें अपने दिन गिनना सिखा[5]
ताकि हम बुद्धि से भरा दिल
पा सकें।
13 हे यहोवा, हमारे पास लौट आ![6]
ऐसा कब तक चलेगा?[7]
अपने सेवकों पर तरस खा।[8]
14 भोर को अपने अटल प्यार से हमें
संतुष्ट कर[9]
ताकि हम ज़िंदगी के सारे दिन
मगन रहें और खुशी से जयजय-
कार करें।[10]
15 तूने जितने दिन हमें दुख दिए उतने
दिन खुशियाँ दे,[11]
जितने साल हमने कहर सहा उतने
साल खुशियाँ दे।[12]

90:1 *या शायद, "हमारी पनाह।" **90:2** *या "मानो प्रसव-पीड़ा सहकर जन्म दिया।" **90:8** *या "तू हमारे गुनाह जानता है।"

90:9 *या "हमारी ज़िंदगी घटती जाती है।" **90:10** *या "खास दमखम की वजह से।"

अध्य. 90
1 व्य 33:1
2 व्य 33:27
भज 91:1
3 यिर्म 10:12
4 भज 93:2
यश 40:28
हब 1:12
1ती 1:17
प्रक 1:8
प्रक 15:3
5 उत 3:19
भज 104:29
भज 146:3, 4
सभ 3:20
सभ 12:7
6 2पत 3:8
7 अय 9:25
8 भज 103:15
1पत 1:24
9 अय 14:2
10 गि 17:12, 13
व्य 32:22
11 यिर्म 16:17

दूसरा कॉल.
1 नीत 24:12
इब्र 4:13
2 2शम 19:34, 35
3 अय 14:10
भज 78:39
लूक 12:20
याकू 4:13, 14
4 यश 33:14
लूक 12:5
5 भज 39:4
6 भज 6:4
7 भज 89:46
8 व्य 32:36
भज 135:14
9 भज 36:7
भज 51:1
भज 63:3
भज 85:7
10 भज 149:2
11 भज 30:5
12 व्य 2:14

16 तेरे सेवक तेरे काम देखें,
उनके वंशज तेरा वैभव देखें।[1]
17 हमारे परमेश्वर यहोवा की कृपा हम पर बनी रहे।
तू हमारे हाथों की मेहनत सफल करे।*
हाँ, हमारे हाथों की मेहनत सफल करे।*[2]

91 जो कोई परम-प्रधान की गुप्त जगह में निवास करता है,[3]
वह सर्वशक्तिमान के साए में बसेरा करेगा।[4]
2 मैं यहोवा से कहूँगा, "तू मेरी पनाह और मेरा मज़बूत गढ़ है,[5]
मेरा परमेश्वर जिस पर मैं भरोसा करता हूँ।"[6]
3 वह तुझे बहेलिए के फंदे से,
जानलेवा महामारी से बचाएगा।
4 वह अपने डैनों से तुझे ढाँप लेगा*
और उसके पंखों तले तू पनाह लेगा।[7]
उसकी वफ़ादारी[8] एक बड़ी ढाल[9] और सुरक्षा-दीवार ठहरेगी।
5 तुझे रात का खौफ नहीं सताएगा,[10]
न ही तू दिन में चलनेवाले तीरों से घबराएगा,[11]
6 न तो तुझे अँधेरे में पीछा करनेवाली महामारी का डर होगा,
न ही दिन-दोपहरी होनेवाली तबाही का डर होगा।
7 तेरे एक तरफ हज़ार लोग ढेर हो जाएँगे
और दायीं तरफ दस हज़ार गिर पड़ेंगे
मगर कोई खतरा तेरे पास तक नहीं फटकेगा।[1]
8 तू सिर्फ अपनी आँखों से यह सब देखेगा,
दुष्टों को सज़ा पाते देखेगा।
9 तूने कहा है, "यहोवा मेरी पनाह है,"
तूने परम-प्रधान को अपना निवास* बनाया है,[2]
10 इसलिए तुझ पर कोई संकट नहीं आएगा,[3]
कोई कहर तेरे तंबू के पास तक नहीं फटकेगा।
11 क्योंकि परमेश्वर तेरे बारे में अपने स्वर्गदूतों[4] को हुक्म देगा
कि तेरी सब राहों में वे तेरी हिफाज़त करें।[5]
12 वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे[6]
ताकि तेरा पैर किसी पत्थर से चोट न खाए।[7]
13 तू शेर और नाग को कुचल देगा,
जवान शेर और बड़े साँप को पैरों से रौंद डालेगा।[8]
14 परमेश्वर ने कहा है, "वह मुझसे गहरा लगाव रखता है,* इसलिए मैं उसे बचाऊँगा।[9]
मैं उसकी रक्षा करूँगा क्योंकि वह मेरा नाम जानता है।#[10]
15 वह मुझे पुकारेगा और मैं उसे जवाब दूँगा।[11]
मैं संकट के समय उसके साथ रहूँगा।[12]
मैं उसे बचाऊँगा और सम्मान दिलाऊँगा।

अध्य. 90
1 गि 14:31, यह 23:14
2 भज 127:1, नीत 16:3, यश 26:12, 1कुर 3:7

अध्य. 91
3 भज 27:5, भज 31:20, भज 32:7
4 भज 57:1
5 भज 18:2, नीत 18:10
6 नीत 3:5
7 निर्ग 19:4, व्य 32:11, रूत 2:12
8 भज 57:3, भज 86:15
9 उत 15:1, भज 84:11
10 भज 121:4, 6, यश 60:2
11 भज 64:2, 3, यश 54:17

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 12:13
2 भज 71:3, भज 90:1
3 नीत 12:21
4 2रा 6:17, भज 34:7, मत 18:10
5 निर्ग 23:20, इब्र 1:7, 14
6 यश 63:9
7 भज 37:24, मत 4:6, लूक 4:10, 11
8 लूक 10:19
9 भज 18:2
10 भज 9:10, नीत 18:10
11 रोम 10:13, इब्र 5:7
12 भज 138:7, यश 43:2

90:17 *या "मेहनत मज़बूती से कायम करे।" **91:4** *या "तेरे पास आने का रास्ता रोक देगा।"

91:9 *या शायद, "किला; पनाह।" **91:14** *शा., "जुड़ गया है।" #या "नाम कबूल करता है।"

16 मैं उसे लंबी उम्र देकर संतुष्ट
करूँगा,[1]
उसे उद्धार करने की अपनी शक्ति
दिखाऊँगा।"[2]

सब्त के दिन के लिए सुरीला गीत।

92 हे यहोवा, यह सही है कि तेरा
शुक्रिया अदा किया जाए[3]
हे परम-प्रधान, तेरे नाम की तारीफ
में गीत गाए जाएँ,*
2 भोर को तेरे अटल प्यार का[4]
और हर रात तेरी वफ़ादारी का
3 दस तारोंवाले बाजे, इसराज
और सुरमंडल की सुरीली धुन पर
ऐलान किया जाए[5]
4 क्योंकि हे यहोवा, तूने अपने कामों
से मुझे मगन किया है।
तेरे हाथ के कामों के कारण मैं
खुशी से जयजयकार करता हूँ।
5 हे यहोवा, तेरे काम कितने
महान हैं![6]
तेरे विचार कितने गहरे हैं![7]
6 कोई भी निर्बुद्धि उन्हें नहीं जान
सकता,
कोई भी मूर्ख यह बात नहीं समझ
सकता:[8]
7 जब दुष्ट जंगली पौधों* की तरह
बढ़ते हैं
और सभी गुनहगार
फलते-फूलते हैं,
तो यह इसलिए होता है कि वे
हमेशा के लिए मिटा दिए जाएँ।[9]
8 मगर हे यहोवा, तू सदा के लिए
ऊँचा है।
9 हे यहोवा, तू अपने दुश्मनों की हार
देख,
देख कि वे कैसे नाश हो जाएँगे,
सभी गुनहगार तितर-बितर हो
जाएँगे।[1]
10 मगर तू मेरा बल बढ़ाकर मुझे
जंगली बैल जैसा ताकतवर
बनाएगा,*
मैं अपनी त्वचा पर ताज़ा तेल मल-
कर उसे नमी दूँगा।[2]
11 मेरी आँखें मेरे दुश्मनों की हार
देखेंगी,[3]
मेरे कान उन दुष्टों के गिरने की
खबर सुनेंगे जो मुझ पर हमला
करते हैं।
12 मगर नेक जन खजूर के पेड़ की
तरह फलेगा-फूलेगा
और लबानोन के देवदार की तरह
खूब बढ़ेगा।[4]
13 वे यहोवा के भवन में लगाए गए हैं,
वे हमारे परमेश्वर के आँगनों[5] में
फलते-फूलते हैं।
14 ढलती उम्र में* भी वे
फलेंगे-फूलेंगे,[6]
जोशीले और ताज़ादम बने रहेंगे,[7]
15 यह ऐलान करते रहेंगे कि यहोवा
सीधा-सच्चा है।
वह मेरी चट्टान है[8] जिसमें कोई
बुराई नहीं।

93 यहोवा राजा बना है![9]
वह वैभव का लिबास पहने है,
यहोवा ने ताकत धारण की है,
कमर-पट्टी की तरह उसे पहने
हुए है।
पृथ्वी* की बुनियाद मज़बूती से
कायम की गयी है,

92:1 *या "संगीत बजाया जाए।" 92:7 *या "घास।"

92:10 *शा., "तू मेरे सींग को जंगली बैल के सींग की तरह ऊँचा करेगा।" 92:14 *या "बाल पक जाने पर।" 93:1 *या "उपजाऊ ज़मीन।"

अध्य. 91
1 भज 21:1, 4; नीत 3:1, 2
2 यश 45:17

अध्य. 92
3 भज 50:23
4 यश 63:7
5 1इत 15:16; 1इत 25:6; 2इत 29:25
6 भज 40:5; भज 145:4; सभ 3:11; प्रक 15:3
7 अय 26:14; रोम 11:33
8 भज 14:1; 1कुर 2:14
9 भज 37:35, 38; यिर्म 12:1-3

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:7; भज 68:1
2 भज 23:5
3 भज 37:34
4 भज 52:8; यश 61:3; यश 65:22
5 भज 100:4
6 भज 71:18; नीत 16:31; यश 40:31; यश 46:4
7 यिर्म 17:7, 8
8 व्य 32:4

अध्य. 93
9 भज 96:10; भज 97:1; यश 52:7; प्रक 11:17; प्रक 19:6

यह हिलायी नहीं जा सकती।*
2 तेरी राजगद्दी मुद्दतों पहले मज़बूती
से कायम की गयी थी,[1]
तू हमेशा से रहा है।[2]
3 हे यहोवा, नदियाँ उफन रही हैं,
नदियाँ उफन रही हैं, गरज रही हैं,
नदियाँ लगातार उफन रही हैं, ज़ोर
से गड़गड़ा रही हैं।
4 ऊँचे पर विराजमान यहोवा
प्रतापी है,
गहरे सागर के गरजन से भी ज़्यादा
शक्तिशाली है,[3]
किनारों से टकराती ऊँची-ऊँची
लहरों से भी ताकतवर है।[4]
5 तू जो हिदायतें याद दिलाता है वे
पूरी तरह भरोसेमंद हैं[5]
हे यहोवा, पवित्रता तेरे भवन को
सदा के लिए शोभा देती है।[6]

94 हे बदला लेनेवाले परमेश्वर
यहोवा,[7]
हे बदला लेनेवाले परमेश्वर, अपनी
रौशनी चमका!
2 हे पृथ्वी के न्यायी, उठ।[8]
मगरूरों को सज़ा दे, जिसके वे
लायक हैं।[9]
3 हे यहोवा, दुष्ट कब तक आनंद
मनाते रहेंगे,
कब तक?[10]
4 वे बड़बड़ाते रहते हैं, हेकड़ी से भरी
बातें करते हैं,
सारे गुनहगार अपने बारे में शेखी
बघारते हैं।
5 हे यहोवा, वे तेरे लोगों को कुचल
देते हैं,[11]
तेरी विरासत पर ज़ुल्म ढाते हैं।
6 वे विधवा और परदेसी का खून कर
देते हैं,
अनाथों* को मार डालते हैं।
7 उनका कहना है, "याह नहीं
देखता,[1]
याकूब का परमेश्वर इस पर ध्यान
नहीं देता।"[2]
8 निर्बुद्धि लोगो, इस बात को समझो,
मूर्खो, तुम कब अंदरूनी समझ से
काम लोगे?[3]
9 जिस परमेश्वर ने कान बनाया है,
क्या वह सुन नहीं सकता?
जिस परमेश्वर ने आँख रची, क्या
वह देख नहीं सकता?[4]
10 जो परमेश्वर राष्ट्रों को सुधारता
है, क्या वह तुम्हें फटकार नहीं
सकता?[5]
वही परमेश्वर लोगों को ज्ञान
देता है![6]
11 यहोवा इंसानों के विचार जानता है
कि वे बस एक साँस हैं।[7]
12 हे याह, सुखी है वह इंसान जिसे तू
सुधारता है,[8]
जिसे तू अपने कानून से
सिखाता है[9]
13 ताकि तू उसे संकट के दिनों में चैन
देता रहे,
जब तक कि दुष्टों के लिए गड्ढा
नहीं खोदा जाता।[10]
14 यहोवा अपने लोगों को नहीं
त्यागेगा,[11]
अपनी विरासत को नहीं छोड़ेगा।[12]
15 क्योंकि एक बार फिर नेकी से
फैसला सुनाया जाएगा

93:1 *या "लड़खड़ा नहीं सकती।"

94:6 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।"

अध्य. 93
1 भज 145:13
2 भज 90:2
3 भज 65:7
4 भज 8:1; भज 76:4
5 भज 19:7; भज 119:111
6 यहे 43:12; 1पत 1:16

अध्य. 94
7 व्य 32:35; नहू 1:2; रोम 12:19
8 उत 18:25; प्रेष 17:31
9 भज 31:23
10 भज 73:3; भज 74:10
11 भज 14:4

दूसरा कॉल.
1 भज 59:2, 7; यहे 8:12
2 भज 10:4, 11; भज 73:3, 11; यश 29:15
3 नीत 1:22
4 भज 34:15
5 भज 9:5; यश 10:12
6 भज 25:8; यश 28:26; यूह 6:45
7 1कुर 3:20
8 भज 119:71; नीत 3:11; 1कुर 11:32; इब्र 12:5, 6
9 भज 19:8
10 भज 55:23; 2पत 2:9
11 1शम 12:22; भज 37:28; इब्र 13:5
12 व्य 32:9

और सीधे-सच्चे मनवाले उस फैसले
को मानेंगे।
16 कौन मेरी खातिर दुष्टों के खिलाफ
उठेगा?
कौन मेरी खातिर गुनहगारों के
खिलाफ खड़ा होगा?
17 अगर यहोवा मेरा मददगार न होता,
तो मैं पल-भर में मिट गया
होता।*[1]
18 जब मैंने कहा, "मेरा पैर फिसल
रहा है,"
तब हे यहोवा, तेरा अटल प्यार मुझे
सँभाले रहा।[2]
19 जब चिंताएँ* मुझ पर हावी हो
गयीं,#
तब तूने मुझे दिलासा दिया, सुकून
दिया।[3]
20 क्या भ्रष्टाचार की राजगद्दी* तेरे
साथ साझेदारी कर सकती है
जो कानून की आड़ में# मुसीबत
खड़ी करती है?[4]
21 वे नेक जन पर वहशियाना हमले
करते हैं[5]
और बेगुनाह को मौत की सज़ा
सुनाते हैं।[6]
22 मगर यहोवा मेरे लिए एक ऊँचा
गढ़ बन जाएगा,
मेरा परमेश्वर मुझे पनाह देनेवाली
चट्टान है।[7]
23 वह उन्हीं के दुष्ट कामों में उन्हें
फँसा देगा[8]
उन्हीं के बुरे कामों के ज़रिए उनका
सफाया कर देगा।
हमारा परमेश्वर यहोवा उनका
सफाया कर देगा।[1]

95 आओ, हम खुशी से यहोवा की
जयजयकार करें!
अपने उद्धार की चट्टान के लिए
जीत के नारे लगाएँ।[2]
2 आओ, हम उसकी मौजूदगी में*
जाएँ, उसका धन्यवाद करें,[3]
उसके लिए गीत गाएँ, जीत के नारे
लगाएँ।
3 क्योंकि यहोवा महान परमेश्वर है,
सभी देवताओं से भी बड़ा महान
राजा है।[4]
4 पृथ्वी की गहराइयाँ उसके हाथ
में हैं,
पहाड़ों की चोटियाँ उसी की हैं।[5]
5 उसका बनाया सागर उसी का है,[6]
सूखी ज़मीन उसने अपने हाथों से
बनायी।[7]
6 आओ हम उसकी उपासना करें, उसे
दंडवत करें,
अपने बनानेवाले यहोवा के सामने
घुटने टेकें।[8]
7 क्योंकि वह हमारा परमेश्वर है
और हम उसके लोग हैं जिनकी वह
चरवाही करता है,
हम उसकी भेड़ें हैं जिनकी वह देख-
भाल करता है।*[9]
आज अगर तुम उसकी आवाज़
सुनो,[10]
8 तो अपना दिल कठोर मत करना,
जैसे तुम्हारे पुरखों ने मरीबा* में
किया था,[11]

अध्य. 94
1 भज 124:2, 3; 2कुर 1:10
2 1शम 2:9; भज 37:24; भज 121:3; विल 3:22
3 भज 86:17; फिल 4:6, 7
4 यश 10:1; दान 6:7; प्रेष 5:27, 28
5 भज 59:3
6 1रा 21:13
7 भज 18:2
8 नीत 5:22; 2थि 1:6

दूसरा कॉल.
1 1शम 26:9, 10

अध्य. 95
2 2शम 22:47
3 भज 50:23; भज 100:4
4 निर्ग 18:11; यिर्म 10:10; 1कुर 8:5, 6
5 आम 4:13; आम 9:3
6 यिर्म 5:22
7 उत 1:9, 10
8 भज 100:3; मत 4:10; प्रक 14:7
9 भज 23:1; यश 40:11
10 इब्र 3:7-11; इब्र 4:7
11 इब्र 3:15

94:17 *शा., "में खामोशी में निवास करता।" **94:19** *या "परेशान करने-वाले विचार।" #या "मेरे अंदर बढ़ गयीं।" **94:20** *या "शासक; न्यायी।" #या "फर-मान जारी करके।"

95:2 *शा., "उसके मुख के सामने।" **95:7** *शा., "हम उसके हाथ की भेड़ें हैं।" **95:8** *मतलब "झगड़ा करना।"

वीराने में मस्सा* के दिन
किया था।[1]
9 उन्होंने मेरी परीक्षा ली थी,[2]
मुझे चुनौती दी थी, इसके बाव-
जूद कि उन्होंने मेरे काम
देखे थे।[3]
10 मैं 40 साल उस पीढ़ी से घिन
करता रहा और मैंने कहा,
"ये ऐसे लोग हैं जिनका दिल हमेशा
भटक जाता है,
इन्होंने मेरी राहों को नहीं जाना।"
11 इसलिए मैंने क्रोध में आकर शपथ
खायी,
"ये मेरे विश्राम में दाखिल न
होंगे।"[4]

96 यहोवा के लिए एक नया गीत
गाओ।[5]
सारी धरती के लोगो, यहोवा के
लिए गीत गाओ![6]
2 यहोवा के लिए गीत गाओ, उसके
नाम की तारीफ करो।
वह जो उद्धार दिलाता है,
उसकी खुशखबरी रोज़-ब-रोज़
सुनाओ।[7]
3 राष्ट्रों में उसकी महिमा का ऐलान
करो,
देश-देश के लोगों में उसके अजूबों
का ऐलान करो।[8]
4 यहोवा महान है, सबसे ज़्यादा
तारीफ के काबिल है।
सभी देवताओं से बढ़कर विस्मय-
कारी है।
5 देश-देश के लोगों के सभी देवता
निकम्मे हैं,[9]
मगर यहोवा ने ही आकाश
बनाया।[10]

95:8 *मतलब "परीक्षा लेना; आज़माइश।"

अध्य. 95
1 निर्ग 17:7
2 भज 78:18; 1कुर 10:9
3 गि 14:22, 23
4 उत 2:3; गि 14:22, 23; इब्र 4:3

अध्य. 96
5 भज 33:3; भज 40:3; भज 98:1; भज 149:1; यश 42:10
6 1इत 16:23-25; भज 66:4
7 भज 40:10; भज 71:15; यश 52:7
8 मत 28:19; 1पत 2:9; प्रक 14:6
9 भज 97:7; यश 44:10
10 1इत 16:26; 1कुर 8:4

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 24:9, 10; यश 6:1-3; यहे 1:27, 28; प्रक 4:2, 3
2 1इत 16:27; 1इत 29:11
3 1इत 16:28-33; भज 29:1
4 भज 29:2; भज 72:19
5 भज 93:1; भज 97:1; प्रक 11:15; प्रक 19:6
6 भज 67:4; भज 98:9
7 भज 98:7
8 भज 65:13
9 1इत 16:33

6 उसके सामने प्रताप* और
वैभव है,[1]
उसके पवित्र-स्थान में शक्ति और
सौंदर्य है।[2]
7 देश-देश के सभी घरानो, यहोवा का
आदर करो,
यहोवा का आदर करो क्योंकि
वह महिमा और ताकत से भर-
पूर है।[3]
8 यहोवा का नाम जितनी महिमा
का हकदार है उतनी महिमा
उसे दो,[4]
भेंट लेकर उसके आँगनों में आओ।
9 पवित्र पोशाक पहने* यहोवा को
दंडवत# करो,
सारी धरती के लोगो, उसके सामने
थर-थर काँपो!
10 राष्ट्रों में ऐलान करो, "यहोवा राजा
बना है![5]
पृथ्वी* मज़बूती से कायम की
गयी है, यह हिलायी नहीं जा
सकती।
परमेश्वर बिना तरफदारी किए
देश-देश के लोगों का न्याय#
करेगा।"[6]
11 आसमान मगन हो, धरती आनंद
मनाए,
समुंदर और उसमें जो भी है, खुशी
से गरजें।[7]
12 मैदान और उनमें जो भी है, खुशियाँ
मनाएँ।[8]
जंगल के सारे पेड़ भी खुशी से जय-
जयकार करें,[9]

96:6 *या "गरिमा।" 96:9 *या शायद, "उसकी पवित्रता के वैभव की वजह से।" #या "की उपासना।" 96:10 *या "उपजाऊ ज़मीन।" #या "की पैरवी।"

13 यहोवा के सामने जयजयकार करें
क्योंकि वह आ रहा है,*
धरती का न्याय करने आ रहा है।
वह सारे जगत# का न्याय नेकी से
करेगा,[1]
देश-देश के लोगों का न्याय सच्चाई
से करेगा।[2]

97 यहोवा राजा बना है![3]
धरती खुशियाँ मनाए।[4]
सभी द्वीप आनंद-मगन हों।[5]
2 वह काले घने बादलों से घिरा
हुआ है,[6]
नेकी और न्याय उसकी राजगद्दी की
बुनियाद है।[7]
3 उसके आगे-आगे आग चलती है,[8]
हर तरफ से उसके बैरियों को भस्म
कर देती है।[9]
4 उसकी बिजलियों की चमक से
धरती रौशन हो जाती है,
यह देखकर पृथ्वी थरथराने
लगती है।[10]
5 यहोवा के सामने, पूरी धरती के
मालिक के सामने,
पहाड़ मोम की तरह पिघल
जाते हैं।[11]
6 आकाश उसकी नेकी का ऐलान
करता है
और देश-देश के लोग उसकी
महिमा देखते हैं।[12]
7 वे सभी जो ढली हुई मूरतों को
पूजते हैं,
अपने निकम्मे देवताओं पर शेखी
मारते हैं, शर्मिंदा किए जाएँ।[13]
सभी देवताओ, उसे दंडवत*
करो।[14]
8 हे यहोवा, तेरे फैसलों के बारे में
सिय्योन सुनता है और बाग-बाग हो
जाता है,[1]
यहूदा के कसबे* खुशियाँ
मनाते हैं।[2]
9 क्योंकि हे यहोवा, तू सारी पृथ्वी
पर परम-प्रधान है,
तू सभी देवताओं से कहीं ज़्यादा
ऊँचा किया गया है।[3]
10 यहोवा से प्यार करनेवालो,
बुराई से नफरत करो।[4]
वह अपने वफादार लोगों की जान
की हिफाज़त करता है,[5]
उन्हें दुष्टों के हाथ* से छुड़ाता है।[6]
11 नेक लोगों के लिए तेज़ रौशनी
चमक उठी है,[7]
सीधे-सच्चे मनवालों के लिए
खुशियों की बहार आयी है।
12 नेक लोगो, यहोवा के कारण आनंद
मनाओ,
उसके पवित्र नाम* की तारीफ
करो।

एक सुरीला गीत।

98 यहोवा के लिए एक नया गीत
गाओ,[8]
क्योंकि उसने आश्चर्य के काम
किए हैं।[9]
उसके दाएँ हाथ ने, उसके पवित्र
बाज़ू ने उद्धार दिलाया है।*[10]
2 यहोवा ने दिखाया है कि वह कैसे
उद्धार करता है,[11]
उसने राष्ट्रों के सामने अपनी नेकी
साबित की है।[12]

अध्य. 96
1 उत 18:25
भज 9:8
प्रेष 17:31
2पत 3:7
2 व्य 32:4

अध्य. 97
3 प्रक 11:16, 17
प्रक 19:6
4 यश 49:13
5 यश 60:9
6 निर्ग 20:21
7 भज 99:4
8 भज 50:3
दान 7:9, 10
9 नहू 1:2, 6
मला 4:1
10 निर्ग 19:16, 18
भज 77:18
भज 104:32
11 न्या 5:5
नहू 1:5
हब 3:6
12 हब 2:14
13 यश 37:19
यिर्म 10:14
14 निर्ग 12:12
निर्ग 18:11

दूसरा कॉल.
1 यश 51:3
2 भज 48:11
3 यश 44:8
4 भज 34:14
भज 101:3
भज 119:104
रोम 12:9
इब्र 1:9
5 भज 37:28
भज 145:20
6 दान 3:28
मत 6:13
7 भज 112:4
नीत 4:18
यश 30:26
मी 7:9

अध्य. 98
8 भज 33:3
भज 149:1
यश 42:10
9 निर्ग 15:11
भज 111:2
10 निर्ग 15:6
यश 52:10
यश 59:16
यश 63:5
11 लूक 2:30, 31
12 यश 5:16

96:13 *या "आ गया है।" #या "उपजाऊ ज़मीन।" **97:7** *या "उसकी उपासना।" **97:8** *या "की बेटियाँ।" **97:10** *या "की ताकत।" **97:12** *शा., "उसकी पवित्रता की यादगार।" **98:1** *या "उसे जीत दिलायी है।"

3 उसने अपना यह वादा याद रखा है
कि वह इसराएल के घराने से
प्यार* करेगा,
उसका विश्‍वासयोग्य बना रहेगा।[1]
हमारा परमेश्‍वर जो उद्धार
दिलाता है, उसे# पूरी धरती ने
देखा है।[2]
4 सारी धरती के लोगो, यहोवा के
लिए जीत के नारे लगाओ।
खुशी से भर जाओ, जयजयकार
करो, तारीफ के गीत गाओ।*[3]
5 सुरमंडल बजाकर यहोवा की
तारीफ में गीत गाओ,*
सुरमंडल बजाकर, सुरीले गीत
गाकर उसकी तारीफ करो।
6 तुरहियाँ और नरसिंगा फूँको,[4]
राजा यहोवा के सामने जीत के नारे
लगाओ।
7 समुंदर और उसमें जो भी है, खुशी
से गरजें,
धरती* और उस पर रहनेवाले
खुशी से जयजयकार करें।
8 नदियाँ ताली बजाएँ।
पहाड़ मिलकर खुशी से जयजय-
कार करें,[5]
9 यहोवा के सामने जयजयकार करें,
क्योंकि वह धरती का न्याय करने
आ रहा है।#
वह सारे जगत* का न्याय नेकी से
करेगा,[6]
बिना तरफदारी किए देश-देश के
लोगों का न्याय करेगा।[7]

98:3 *या "अटल प्यार।" #या "हमारे परमेश्‍वर की जीत को।" 98:4, 5 *या "संगीत बजाओ।" 98:7, 9 *या "उपजाऊ ज़मीन।" 98:9 #या "आ गया है।"

अध्य. 98
1 लैव 26:42; लूक 1:54, 55
2 यश 49:6; प्रेष 28:28; रोम 10:18
3 भज 47:1; भज 67:4
4 गि 10:10; 1इत 15:28; 2इत 29:27
5 यश 44:23
6 भज 9:8; प्रेष 17:31
7 भज 67:4; भज 96:10; रोम 2:6

दूसरा कॉल.

अध्य. 99
1 भज 93:1; प्रक 11:17
2 निर्ग 25:22
3 भज 83:18
4 भज 8:1; भज 148:13; प्रक 15:4
5 अय 36:6
6 व्य 10:17, 18; यिर्म 9:24
7 निर्ग 15:2
8 1इत 28:2; भज 132:7
9 लैव 19:2
10 निर्ग 24:6; गि 14:19, 20
11 1शम 7:9
12 निर्ग 15:24, 25; 1शम 15:10
13 निर्ग 19:9
14 निर्ग 40:16; 1शम 12:3
15 व्य 9:19

99

यहोवा राजा बना है।[1] देश-देश
के लोग थरथराएँ।
वह करूबों पर* विराजमान है।[2]
धरती काँप उठे।
2 यहोवा सिय्योन में महान है,
देश-देश के लोगों के ऊपर
प्रधान है।[3]
3 वे सब तेरे महान नाम की
तारीफ करें,[4]
क्योंकि तेरा नाम विस्मयकारी और
पवित्र है।
4 वह एक शक्‍तिशाली राजा है जो
न्याय से प्यार करता है।[5]
तूने सीधाई को मज़बूती से कायम
किया है।
याकूब में न्याय और नेकी को लागू
किया है।[6]
5 हमारे परमेश्‍वर यहोवा की खूब
बड़ाई करो,[7]
उसके पाँवों की चौकी के आगे
झुको,*[8]
वह पवित्र है।[9]
6 मूसा और हारून उसके याजकों
में से थे।[10]
शमूएल उसका नाम पुकारनेवालों में
से था।[11]
वे यहोवा को पुकारते और वह उन्हें
जवाब देता।[12]
7 वह बादल के खंभे में से उनसे बात
करता।[13]
उसने जो हिदायतें याद दिलायीं
और जो आदेश दिए, उन्हें वे
मानते थे।[14]
8 हे यहोवा, हमारे परमेश्‍वर, तू उन्हें
जवाब देता था।[15]

99:1 *या शायद, "के बीच।" 99:5 *या "उपासना करो।"

तू ऐसा परमेश्वर था जो उन्हें माफ
करता था,[1]
मगर उन्हें बुरे कामों की सज़ा भी
देता था।*[2]
9 हमारे परमेश्वर यहोवा की खूब
बड़ाई करो,[3]
उसके पवित्र पहाड़[4] के आगे दंड-
वत* करो,
क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा
पवित्र है।[5]

धन्यवाद देने के लिए एक सुरीला गीत।

100 सारी धरती के लोगो,
यहोवा के लिए जीत के
नारे लगाओ।[6]
2 खुशी-खुशी यहोवा की सेवा करो।[7]
खुशी से जयजयकार करते हुए
उसके सामने आओ।
3 जान लो* कि यहोवा ही
परमेश्वर है।[8]
उसी ने हमें बनाया है और हम
उसके हैं।#[9]
हम उसके लोग हैं, उसके चरागाह
की भेड़ें हैं।[10]
4 शुक्रिया अदा करते हुए उसके
फाटकों से अंदर आओ,[11]
उसकी तारीफ करते हुए उसके
आँगनों में आओ।[12]
उसका शुक्रिया अदा करो, उसके
नाम की तारीफ करो।[13]
5 क्योंकि यहोवा भला है,[14]
उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है
और वह पीढ़ी-पीढ़ी तक विश्वास-
योग्य रहता है।[15]

दाविद का सुरीला गीत।

101 मैं अटल प्यार और न्याय
के बारे में गीत गाऊँगा।
हे यहोवा, मैं तेरी तारीफ में गीत
गाऊँगा।*
2 मैं सूझ-बूझ से काम लूँगा और
निर्दोष बना रहूँगा।
तू कब मेरे पास आएगा?
मैं अपने घर के अंदर भी निर्दोष
मन से सही चाल चलूँगा।[1]
3 मैं अपनी आँखों के सामने कोई
बेकार की* चीज़ नहीं रखूँगा।
मैं उन लोगों के कामों से नफरत
करता हूँ जो सही राह से भटक
जाते हैं।[2]
मैं उनसे कोई नाता नहीं रखूँगा।#
4 मैं टेढ़े मनवाले से दूर रहता हूँ,
मैं बुराई स्वीकार नहीं करूँगा।*
5 जो कोई चोरी-छिपे अपने पड़ोसी
को बदनाम करता है,[3]
उसे मैं खामोश कर दूँगा।*
घमंड से चढ़ी आँखें और
मगरूर दिल
मैं बरदाश्त नहीं करूँगा।
6 मेरी आँखें धरती के विश्वासयोग्य
लोगों पर लगी रहेंगी
ताकि वे मेरे साथ निवास करें।
जो निर्दोष चाल चलता है वह मेरी
सेवा करेगा।
7 कोई भी धोखेबाज़ मेरे घर में नहीं
रहेगा,
न कोई झूठा मेरी मौजूदगी में*
खड़ा रहेगा।

अध्य. 99
1 मी 7:18
2 निर्ग 34:6, 7
3 निर्ग 15:2
4 भज 2:6
5 1शम 2:2
यश 6:3

अध्य. 100
6 भज 95:1, 2
भज 98:4
7 व्य 12:12
नहे 8:10
8 व्य 6:4
9 भज 149:2
10 भज 95:6, 7
यहे 34:31
1पत 2:25
11 भज 50:23
भज 66:13
भज 122:1, 2
12 भज 65:4
13 भज 96:2
इब्र 13:15
14 भज 86:5
लूक 18:19
15 निर्ग 34:6, 7
व्य 7:9
भज 98:3

दूसरा कॉल.

अध्य. 101
1 1रा 9:4
भज 78:70, 72
2 भज 97:10
3 नीत 20:19

99:8 *शा., “का बदला चुकाता था।” **99:9** *या “उपासना।” **100:3** *या “कबूल करो।” #या शायद, “न कि हमने खुद को।”

101:1 *या “संगीत बजाऊँगा।” **101:3** *या “निकम्मी।” #या “उनके काम मुझसे नहीं लगे रहते।” **101:4** *शा., “को नहीं जानूँगा।” **101:5** *या “मिटा दूँगा।” **101:7** *शा., “मेरी आँखों के सामने।”

8 हर सुबह मैं धरती के सभी दुष्टों
को खामोश कर दूँगा*
ताकि यहोवा के नगर से सभी
गुनहगारों को मिटा दूँ।[1]

एक सताए हुए इंसान की उस समय की प्रार्थना जब वह दुख से बेहाल होता है* और अपनी सारी चिंताएँ यहोवा को बताता है।[2]

102 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना
सुन,[3]
मेरी मदद की पुकार तेरे पास
पहुँचे।[4]
2 मैं बड़ी मुसीबत में हूँ, मुझसे मुँह
न फेर।[5]
मेरी तरफ कान लगा,*
जब मैं पुकारूँ तो फौरन
जवाब दे।[6]
3 क्योंकि मेरी ज़िंदगी के दिन धुएँ की
तरह गायब हो रहे हैं,
मेरी हड्डियाँ मानो भट्ठी की तरह जल
रही हैं।[7]
4 मेरे दिल का हाल उस घास जैसा है,
जो धूप की मार से मुरझा गयी है,[8]
मेरी भूख मर गयी है।
5 मैं ज़ोर-ज़ोर से कराहता रहता हूँ,[9]
इसलिए मेरी चमड़ी हड्डियों से
चिपक गयी है।[10]
6 मैं वीराने के हवासिल जैसा दिख
रहा हूँ,
मैं खंडहरों में रहनेवाले छोटे उल्लू
जैसा बन गया हूँ।
7 मैं लेटे-लेटे जागता रहता हूँ,*
मैं उस पंछी की तरह हूँ जो छत पर
तनहा बैठा रहता है।[11]
8 मेरे दुश्मन सारा दिन मुझे ताना
मारते हैं।[1]
मेरी खिल्ली उड़ानेवाले* मेरा नाम
लेकर शाप देते हैं।
9 राख मेरी रोटी है,[2]
मैं आँसू मिला पानी पीता हूँ।[3]
10 क्योंकि तेरा क्रोध और तेरी जल-
जलाहट मुझ पर भड़की है,
तूने मुझे उठाकर फेंक दिया है।
11 मेरी ज़िंदगी के दिन घटती* छाया
जैसे हो गए हैं[4]
और मैं घास की तरह मुरझा
रहा हूँ।[5]
12 मगर हे यहोवा, तू सदा बना
रहता है,[6]
तेरा यश* पीढ़ी-पीढ़ी तक कायम
रहेगा।[7]
13 बेशक तू उठेगा और सिय्योन पर
दया करेगा,[8]
क्योंकि वह घड़ी आ गयी है कि तू
उस पर कृपा करे,[9]
तय वक्त आ चुका है।[10]
14 तेरे सेवकों को उसके पत्थरों से
खुशी मिलती है[11]
और वे उसकी धूल तक से लगाव
रखते हैं।[12]
15 राष्ट्र यहोवा के नाम का डर मानेंगे,
धरती के सभी राजा तेरी महिमा
देखकर तेरा डर मानेंगे।[13]
16 क्योंकि यहोवा सिय्योन को दोबारा
बसाएगा,[14]
वह पूरी महिमा के साथ प्रकट
होगा।[15]
17 वह बेसहारा लोगों की प्रार्थना पर
ध्यान देगा,[16]

101:8 *या "मिटा दूँगा।" **102:उप** *या "वह कमज़ोर होता है।" **102:2** *या "झुककर मेरी सुन।" **102:7** *या शायद, "मैं सूखकर काँटा हो गया हूँ।"

102:8 *या "मुझे बेवकूफ बनानेवाले।" **102:11** *या "बढ़ती।" **102:12** *या "नाम।" शा., "तेरी यादगार।"

अध्य. 101
1 नीत 20:8

अध्य. 102
2 भज 61:2, भज 142:2
3 भज 55:1, दान 9:17
4 निर्ग 2:23
5 भज 27:9, विल 1:20
6 भज 143:7, यश 65:24
7 विल 1:13
8 भज 143:4
9 भज 6:6, भज 38:8
10 अय 19:20, नीत 17:22
11 भज 38:11

दूसरा कॉल.
1 भज 31:11, भज 74:10, भज 79:4
2 विल 3:15
3 भज 80:5
4 भज 39:5
5 अय 14:1, 2, भज 102:4
6 भज 90:2
7 निर्ग 3:15
8 यश 49:15
9 यश 60:10
10 एज 1:1, 2, यश 40:2, दान 9:2
11 नहे 2:3, भज 137:5
12 भज 79:1
13 यश 60:3, जक 8:22
14 भज 147:2, यिर्म 33:7
15 यश 60:1
16 दान 9:20, 21

उनकी प्रार्थना को तुच्छ नहीं
जानेगा।[1]
18 यह बात आनेवाली पीढ़ी के लिए
लिखी गयी है[2]
ताकि वह राष्ट्र जो पैदा होगा,*
याह की तारीफ करे।
19 वह अपने ऊँचे पवित्र-स्थान से नीचे
देखता है,[3]
यहोवा स्वर्ग से धरती पर नज़र
डालता है
20 ताकि कैदियों का कराहना सुने,[4]
जिन्हें मौत की सज़ा सुनायी गयी है,
उन्हें छुड़ाए।[5]
21 इससे सिय्योन में यहोवा के नाम का
ऐलान किया जाएगा[6]
यरूशलेम में उसकी तारीफ की
जाएगी,
22 जब देश-देश और राज्य-राज्य
के लोग
यहोवा की सेवा करने के लिए
इकट्ठा होंगे।[7]
23 उसने वक्त से पहले ही मेरी ताकत
छीन ली,
मेरे दिन घटा दिए।
24 मैंने कहा, "हे मेरे परमेश्वर,
तू जिसका वजूद पीढ़ी-पीढ़ी तक
कायम रहता है,[8]
मुझे मिटा न देना, अभी तो मैंने
आधी उम्र ही जी है।
25 मुद्दतों पहले तूने पृथ्वी की बुनियाद
डाली थी,
आकाश तेरे हाथ की रचना है।[9]
26 वे तो नाश हो जाएँगे, मगर तू सदा
कायम रहेगा।
एक कपड़े की तरह वे सब पुराने हो
जाएँगे,
एक कपड़े की तरह तू उन्हें बदल
देगा और वे मिट जाएँगे।
27 मगर तू हमेशा से जैसा था वैसा
ही है,
तेरी उम्र के साल कभी खत्म न
होंगे।[1]
28 तेरे सेवकों के बच्चे महफूज़ बसे
रहेंगे,
उनकी संतान तेरे सामने बनी
रहेगी।"[2]

दाविद की रचना।

103 मेरा मन यहोवा की
तारीफ करे,
मेरा रोम-रोम उसके पवित्र नाम की
तारीफ करे।
2 मेरा मन यहोवा की तारीफ करे,
उसके सारे काम मैं कभी नहीं
भूलूँगा।[3]
3 वह मेरे सारे गुनाह माफ करता है,[4]
मेरी सभी बीमारियाँ दूर करता है।[5]
4 वह मुझे गड्ढे* से निकालकर मेरी
जान बचाता है,[6]
मुझे अपने अटल प्यार और दया
का ताज पहनाता है।[7]
5 वह ज़िंदगी-भर मुझे अच्छी चीज़ों से
संतुष्ट करता है[8]
ताकि मुझमें उकाब जैसी जवानी
और दमखम बना रहे।[9]
6 सभी सताए हुओं की खातिर
यहोवा नेक काम करता है, उन्हें
न्याय दिलाता है।[10]
7 उसने मूसा को अपनी राहें
बतायी थीं,[11]
इसराएलियों पर अपने काम ज़ाहिर
किए थे।[12]

102:18 *शा., "जो सिरजा जाएगा।"

103:4 *या "कब्र।"

अध्य. 102
1 भज 22:24
2 भज 78:4 रोम 15:4
3 2इत 16:9
4 निर्ग 3:7 यश 61:1
5 2इत 33:12, 13 भज 79:11
6 भज 9:13, 14 भज 22:22 यश 51:11
7 यश 11:10 यश 49:22 यश 60:3
8 भज 90:2 हब 1:12 प्रक 1:8
9 भज 8:3 यश 48:13 इब्र 1:10-12

दूसरा कॉल.
1 अय 36:26 मला 3:6 याकू 1:17
2 यश 66:22

अध्य. 103
3 व्य 8:2 भज 105:5
4 2शम 12:13 यश 43:25
5 निर्ग 15:26 भज 41:3 भज 147:3 यश 33:24 याकू 5:15 प्रक 21:4
6 भज 56:13
7 मी 7:18
8 भज 23:5 भज 65:4
9 भज 51:12 यश 40:31
10 भज 9:8 भज 12:5 नीत 22:22, 23 याकू 5:4
11 निर्ग 24:4 गि 12:8
12 भज 147:19

8 यहोवा दयालु और करुणा से
भरा है,[1]
क्रोध करने में धीमा और अटल
प्यार से भरपूर है।[2]
9 वह हमेशा खामियाँ नहीं ढूँढ़ता
रहेगा,[3]
न ही सदा नाराज़गी पाले रहेगा।[4]
10 उसने हमारे पापों के मुताबिक हमारे
साथ सलूक नहीं किया,[5]
न ही हमारे गुनाहों के मुताबिक हमें
सज़ा दी।[6]
11 क्योंकि आकाश धरती से जितना
ऊँचा है,
उसका डर माननेवालों के लिए
उसका अटल प्यार उतना ही
महान है।[7]
12 पूरब पश्चिम से जितना दूर है,
उसने हमारे अपराधों को हमसे
उतना ही दूर फेंक दिया है।[8]
13 जैसे एक पिता अपने बच्चों पर दया
करता है,
वैसे ही यहोवा ने उन पर
दया दिखायी है जो उसका डर
मानते हैं।[9]
14 क्योंकि वह हमारी रचना अच्छी
तरह जानता है,[10]
वह याद रखता है कि हम मिट्टी
ही हैं।[11]
15 जहाँ तक नश्वर इंसान की बात है,
उसका वजूद घास की तरह है,[12]
वह मैदान के फूल की तरह
खिलता है।[13]
16 मगर जब तेज़ हवा चलती है, तो
वह नाश हो जाता है,
मानो वह कभी था ही नहीं।*
17 लेकिन यहोवा का अटल प्यार युग-
युग तक* बना रहता है,
उनके लिए बना रहता है जो उसका
डर मानते हैं,[1]
उसकी नेकी उनके बच्चों के बच्चों
के लिए सदा बनी रहेगी,[2]
18 उनके लिए जो उसका करार
मानते हैं[3]
और जो उसके आदेश सख्ती से
मानते हैं।
19 यहोवा ने स्वर्ग में अपनी राजगद्दी
मज़बूती से कायम की है,[4]
उसका राज हर चीज़ पर है।[5]
20 सभी स्वर्गदूतो,[6] तुम जो शक्ति-
शाली हो,
उसकी आज्ञा मानकर उसके वचन
का पालन करते हो,[7]
यहोवा की तारीफ करो।
21 उसकी सारी सेनाओ,
उसकी मरज़ी पूरी करनेवाले
सेवको,[8] यहोवा की तारीफ
करो।[9]
22 हे सारी सृष्टि,
उसके राज्य के कोने-कोने में यहोवा
की तारीफ कर।
मेरा रोम-रोम यहोवा की
तारीफ करे।

104
मेरा मन यहोवा की
तारीफ करे।[10]
हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, तू बहुत
महान है।[11]
तू प्रताप* और वैभव का लिबास
पहने हुए है।[12]
2 तू रौशनी का ओढ़ना ओढ़े
हुए है,[13]

अध्य. 103
1 यश 55:7
याकू 5:11
2 निर्ग 34:6
योए 2:13
यो 4:2
3 भज 30:5
4 यश 57:16
5 नहे 9:31
6 एज 9:13
भज 130:3
यश 55:7
7 भज 103:17
यश 55:9
8 लैव 16:21, 22
यश 43:25
यिर्म 31:34
9 भज 78:38
यश 49:15
मला 3:17
याकू 5:15
10 भज 78:39
11 उत 2:7
12 भज 90:5, 6
1पत 1:24
13 अय 14:1, 2

दूसरा कॉल.
1 लूक 1:50
2 निर्ग 20:6
3 निर्ग 19:5
व्य 7:9
भज 25:10
4 2इत 20:6
यश 66:1
5 भज 47:2
भज 145:13
दान 4:25
6 दान 7:10
7 2रा 19:35
लूक 1:19
8 मत 13:41
इब्र 1:7
9 1रा 22:19
भज 148:2
लूक 2:13, 14

अध्य. 104
10 भज 103:1
11 भज 86:10
12 1इत 16:27
यहे 1:27, 28
दान 7:9
13 याकू 1:17
1यूह 1:5

103:16 *शा., "और उसकी जगह उसे और नहीं जानती।"

103:17 *या "हमेशा से हमेशा तक।"
104:1 *या "गरिमा।"

तूने आकाश को तंबू की तरह
ताना है।[1]
3 वह ऊपर के पानी में* शहतीरों से
ऊपरी कोठरियाँ बनाता है,[2]
बादलों को अपना रथ बनाता है,[3]
पवन के पंखों पर सवारी
करता है।[4]
4 वह अपने स्वर्गदूतों को ताकतवर
बनाता है,
अपने सेवकों को भस्म करनेवाली
आग बनाता है।[5]
5 उसने धरती को उसकी बुनियाद पर
कायम किया है,[6]
यह अपनी जगह से कभी हिलायी
नहीं जाएगी,* सदा तक बनी
रहेगी।[7]
6 तूने धरती को गहरे पानी से ऐसे
ढाँप दिया मानो चादर हो।[8]
पानी ने पहाड़ों को ढक लिया।
7 तेरी डाँट सुनते ही वह भाग गया,[9]
तेरे गरजन से वह घबराकर भाग
गया,
8 उस जगह चला गया जो तूने उसके
लिए तय की।
पहाड़ उभरकर आए[10] और
घाटियाँ नीचे धँस गयीं।
9 तूने पानी के लिए एक हद बाँध दी
ताकि वह उसे पार न करे[11]
और फिर कभी धरती को न ढके।
10 वह सोतों का पानी घाटियों में
भेजता है,
पानी पहाड़ों के बीच बहता है।
11 उससे मैदान के सभी जंगली जान-
वरों को पानी मिलता है,
जंगली गधे अपनी प्यास बुझाते हैं।

104:3 *शा., "वह पानी में।" 104:5 *या "नहीं डगमगाएगी।"

अध्य. 104
1 यश 40:22
2 भज 18:11 आम 9:6
3 व्य 33:26 यश 19:1
4 2शम 22:11 अय 38:1
5 यहे 1:13 इब्र 1:7, 14
6 अय 38:4, 6 भज 24:1, 2
7 सभ 1:4
8 उत 1:2
9 उत 1:9
10 नीत 8:25
11 अय 38:8-10 भज 33:7 नीत 8:29 यिर्म 5:22

दूसरा कॉल.
1 अय 38:37 भज 147:8 यिर्म 10:13 आम 9:6 मत 5:45
2 भज 65:9 प्रेष 14:17
3 उत 1:29, 30 उत 9:3
4 सभ 9:7
5 सभ 10:19
6 यिर्म 8:7
7 अय 39:1
8 नीत 30:26
9 उत 1:16 भज 19:6 यिर्म 31:35
10 उत 1:5 भज 74:16 यश 45:7
11 आम 3:4

12 पानी के पास आकाश के पंछी
बसेरा करते हैं,
घनी डालियों पर बैठे गीत गाते हैं।
13 वह अपनी ऊपरी कोठरियों से
पहाड़ों को सींचता है।[1]
तेरी मेहनत के फल से धरती भर
गयी है।[2]
14 वह मवेशियों के लिए घास
और इंसानों के इस्तेमाल के लिए
पेड़-पौधे उगाता है[3]
ताकि ज़मीन से खाने की चीज़ें
उपजें,
15 दाख-मदिरा मिले जिससे इंसान का
दिल मगन होता है,[4]
तेल मिले जिससे उसका चेहरा
चमक उठता है,
रोटी मिले जिससे नश्वर इंसान का
दिल मज़बूत बना रहता है।[5]
16 यहोवा के पेड़ों को,
उसके लगाए लबानोन के देवदारों
को भरपूर पानी मिलता है
17 जिन पर पंछी घोंसला बनाते हैं।
लगलग[6] का बसेरा सनोवर के पेड़ों
पर है।
18 ऊँचे-ऊँचे पहाड़, पहाड़ी बकरियों
के लिए हैं,[7]
बड़ी-बड़ी चट्टानें, चट्टानी बिज्जुओं
के लिए पनाह हैं।[8]
19 उसने चाँद को समय ठहराने के
लिए बनाया,
सूरज अपने ढलने का वक्त बखूबी
जानता है।[9]
20 तू अँधेरा लाता है और रात हो
जाती है,[10]
तब जंगल के सारे जानवर घूमते-
फिरते हैं।
21 जवान शेर शिकार के लिए
दहाड़ते हैं[11]

और परमेश्‍वर से खाना माँगते हैं।[1]
22 जब सूरज उगता है
तो वे माँद में लौट जाते हैं और लेट जाते हैं।
23 इंसान काम पर जाता है
और शाम तक मशक्कत करता है।
24 हे यहोवा, तेरे काम अनगिनत हैं![2]
तूने ये सब अपनी बुद्धि से बनाया है,[3]
धरती तेरी बनायी चीज़ों से भरपूर है।
25 समुंदर विशाल है, दूर-दूर तक फैला है,
छोटे-बड़े अनगिनत जीव-जंतुओं के झुंडों से भरा है।[4]
26 उसमें जहाज़ आते-जाते हैं
और तेरा बनाया लिव्यातान*[5] खेलता है।
27 ये सब तेरी ओर ताकते हैं
कि तू उन्हें वक्‍त पर खाना दे।[6]
28 तू उन्हें जो देता है, उसे वे बटोरते हैं।[7]
जब तू मुट्ठी खोलकर देता है
तो वे अच्छी चीज़ों से संतुष्ट होते हैं।[8]
29 जब तू उनसे अपना मुँह फेर लेता है
तो वे बेचैन हो जाते हैं।
जब तू उनकी साँस* ले लेता है
तो वे मर जाते हैं, मिट्टी में लौट जाते हैं।[9]
30 जब तू अपनी पवित्र शक्‍ति भेजता है तो उनकी सृष्टि होती है,[10]
तू धरती को नया-सा कर देता है।
31 यहोवा की महिमा सदा बनी रहेगी।

104:26 *शब्दावली देखें। 104:29 *शब्दावली में "रुआख; नफ्मा" देखें।

अध्य. 104
1 भज 147:9
2 नहे 9:6
3 नीत 3:19; यिर्म 10:12
4 उत 1:21
5 अय 41:1
6 भज 136:25; भज 145:15; भज 147:9; मत 6:26
7 लूक 12:24
8 भज 107:9; भज 145:16
9 उत 3:19; अय 34:14, 15; भज 146:3, 4; सभ 3:19, 20; सभ 12:7
10 अय 33:4; प्रेष 17:28

दूसरा कॉल.
1 उत 1:31
2 निर्ग 19:18
3 भज 13:6
4 भज 146:2
5 भज 37:10, 38; नीत 2:22

अध्य. 105
6 भज 136:1
7 1इत 16:8-13; भज 96:3; भज 145:11, 12; यश 12:4
8 भज 77:12; भज 119:27
9 यिर्म 9:24
10 भज 119:2
11 आम 5:4; सप 2:3

यहोवा अपने कामों से खुश होगा।[1]
32 वह धरती पर नज़र डालता है और वह काँप उठती है,
वह पहाड़ों को छूता है और उनसे धुआँ निकलता है।[2]
33 मैं सारी ज़िंदगी यहोवा के लिए गीत गाऊँगा,[3]
जब तक मैं ज़िंदा रहूँगा, अपने परमेश्‍वर की तारीफ में गीत गाऊँगा।*[4]
34 मेरे विचार उसे भाएँ।*
मैं यहोवा के कारण मगन होऊँगा।
35 पापी धरती से गायब हो जाएँगे,
फिर कभी दुष्ट नहीं रहेंगे।[5]
मेरा मन यहोवा की तारीफ करे।
याह की तारीफ करो!*

105 यहोवा का शुक्रिया अदा करो,[6] उसका नाम पुकारो,
उसके कामों के बारे में देश-देश के लोगों को बताओ![7]
2 उसके लिए गीत गाओ, उसकी तारीफ में गीत गाओ,*
उसके सभी आश्‍चर्य के कामों पर गहराई से सोचो।#[8]
3 गर्व से उसके पवित्र नाम का बखान करो।[9]
यहोवा की खोज करनेवालों का दिल मगन हो।[10]
4 यहोवा और उससे मिलनेवाली ताकत की खोज करो।[11]

104:33 *या "संगीत बजाऊँगा।" 104:34 *या शायद, "मैं उसके बारे में जो मनन करता हूँ वह मनभावना हो।" 104:35 *या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। 105:2 *या "संगीत बजाओ।" #या शायद, "के बारे में बताओ।"

उसकी मंज़ूरी पाने की कोशिश
करो।
5 उसने जो आश्चर्य के काम और
चमत्कार किए,
जो फैसले सुनाए उन्हें याद करो,[1]
6 तुम जो उसके सेवक अब्राहम का
वंश हो,[2]
याकूब के बेटे और उसके चुने हुए
लोग हो,[3] उन्हें याद करो।
7 वह हमारा परमेश्वर यहोवा है।[4]
उसके किए फैसले सारी धरती पर
लागू हैं।[5]
8 वह अपना करार सदा तक याद
रखता है,[6]
वह वादा जो उसने हज़ारों पीढ़ियों
के लिए किया है,*[7]
9 वह करार जो उसने अब्राहम से
किया था,[8]
वह शपथ जो उसने इसहाक से
खायी थी[9]
10 और जिसे याकूब के लिए एक
आदेश
और इसराएल के लिए सदा का
करार बना दिया था
11 और कहा था, "मैं तुम्हें कनान देश
दूँगा[10]
ताकि यह तुम्हारी तय विरासत
हो।"[11]
12 यह उसने तब कहा था जब वे
गिनती में कम थे,[12]
हाँ, वे बहुत कम थे और उस देश में
परदेसी थे।[13]
13 वे एक देश से दूसरे देश में,
एक राज्य से दूसरे राज्य में
जाते थे।[14]

105:8 *शा., "उस वचन को, जो उसने हज़ारों पीढ़ियों के लिए ठहराया है।"

अध्य. 105
1 व्य 7:18, 19
2 निर्ग 3:6
3 निर्ग 19:5, 6
यश 41:8
4 निर्ग 20:2
भज 100:3
5 1इत 16:14-18
यश 26:9
प्रक 15:4
6 नहे 1:5
7 व्य 7:9
लूक 1:72, 73
8 उत 17:1, 2
उत 22:15-18
9 उत 26:3
10 उत 12:7
उत 13:14, 15
उत 15:18
उत 26:3
उत 28:13
11 भज 78:55
12 उत 34:30
13 उत 17:8
उत 23:4
1इत 16:19-22
प्रेष 7:4, 5
14 उत 20:1
उत 46:6

दूसरा कॉल.
1 उत 31:7, 42
2 उत 12:17
उत 20:2, 3
3 उत 26:9, 11
4 उत 41:30, 54
उत 42:5
प्रेष 7:11
5 उत 37:28, 36
उत 45:4, 5
उत 50:20
6 उत 39:20
7 प्रेष 7:10
8 उत 41:14
9 उत 41:39-41
उत 41:48
उत 45:8

14 उसने किसी इंसान को उन्हें सताने
नहीं दिया,[1]
इसके बजाय, उनकी खातिर
राजाओं को फटकारा,[2]
15 उनसे कहा, "मेरे अभिषिक्त जनों
को हाथ मत लगाना,
मेरे भविष्यवक्ताओं के साथ कुछ
बुरा न करना।"[3]
16 उसने देश में अकाल भेजा,[4]
वहाँ रोटी का मिलना बंद करा
दिया।*
17 उसने उनसे पहले एक आदमी
भेजा,
यूसुफ को भेजा जिसे गुलाम होने के
लिए बेचा गया था।[5]
18 उन्होंने तब तक उसके पैरों में
बेड़ियाँ डालीं,*[6]
उसकी गरदन में लोहे की ज़ंजीरें
डालीं,
19 जब तक कि परमेश्वर की बात सच
साबित न हुई,[7]
यहोवा की कही बात ने ही उसे शुद्ध
किया।
20 राजा ने उसे रिहा करने का आदेश
भेजा,[8]
देश-देश के लोगों के शासक ने उसे
आज़ाद कर दिया।
21 राजा ने उसे अपने घराने का
मालिक बनाया,
अपनी सारी जायदाद का अधिकारी
ठहराया[9]
22 ताकि वह अपनी इच्छा के मुताबिक

105:16 *शा., "रोटी का हर छड़ तोड़ दिया।" शायद यहाँ रोटी लटकानेवाले छड़ों की बात की गयी है। 105:18 *शा., "डालकर उसे दुख दिया।"

उसके हाकिमों पर पूरा अधि-
कार रखे*
और उसके बुज़ुर्गों को बुद्धि की
बातें सिखाए।[1]
23 फिर इसराएल मिस्र आया,[2]
याकूब हाम के देश में परदेसी बन-
कर रहा।
24 परमेश्‍वर ने अपने लोगों की गिनती
खूब बढ़ायी,[3]
उसने उन्हें दुश्‍मनों से ज़्यादा ताकत-
वर बनाया।[4]
25 उसने दुश्‍मनों के दिलों को बदलने
दिया
ताकि वे उसके लोगों से
नफरत करें,
उसके सेवकों के खिलाफ
साज़िश रचें।[5]
26 उसने अपने सेवक मूसा को भेजा,[6]
अपने चुने हुए जन हारून को भी
भेजा।[7]
27 उन्होंने उनके बीच उसके चिन्ह
दिखाए,
हाम के देश में उसके चमत्कार
दिखाए।[8]
28 उसने अंधकार भेजा और देश पर
अँधेरा छा गया,[9]
उन्होंने उसकी आज्ञा के खिलाफ
बगावत नहीं की।
29 उसने उनका पानी खून में बदल
दिया
और उनकी मछलियाँ मार डालीं।[10]
30 उनका देश मेंढकों से भर गया,[11]
शाही कोठरियों में भी मेंढक-ही-
मेंढक थे।
31 उसने खून चूसनेवाली मक्खियों
को उन पर हमला करने की
आज्ञा दी,

105:22 *शा., "को बाँध दे।"

अध्य. 105
1 उत 41:33, 38
2 उत 46:4, 6
3 निर्ग 1:7
प्रेष 7:17
4 निर्ग 1:8, 9
5 निर्ग 1:10
प्रेष 7:18, 19
6 निर्ग 3:10
निर्ग 4:12
निर्ग 6:11
7 निर्ग 4:14
निर्ग 7:1
8 नहे 9:10
भज 78:43-51
9 निर्ग 10:22, 23
10 निर्ग 7:20, 21
11 निर्ग 8:6

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 8:17, 24
2 निर्ग 9:23-26
3 निर्ग 10:13-15
4 निर्ग 12:29
5 उत 15:13, 14
निर्ग 3:22
निर्ग 12:35, 36
6 निर्ग 12:33
7 निर्ग 14:19, 20
8 निर्ग 13:21

मच्छरों को उनके इलाके पर धावा
बोलने का हुक्म दिया।[1]
32 उसने उन पर पानी के बदले ओले
बरसाए
और उनके देश पर बिजली
गिरायी।*[2]
33 उनके अंगूरों के बाग और अंजीर
के पेड़ नाश कर दिए,
उनके इलाके के पेड़ तहस-नहस
कर दिए।
34 उसने कहा कि टिड्डियाँ उन पर
हमला करें,
टिड्डियों के अनगिनत बच्चे
हमला करें।[3]
35 वे उनके देश के सारे पेड़-पौधे चट
कर गयीं,
ज़मीन की सारी उपज चट कर
गयीं।
36 फिर उसने उनके देश के हर पह-
लौठे को मार डाला,[4]
उनकी शक्ति* की पहली निशानी
मिटा दी।
37 वह अपने लोगों को सोने-चाँदी के
साथ निकाल लाया,[5]
उसके गोत्रों में से कोई भी लड़खड़ा-
कर नहीं गिरा।
38 जब उन्होंने देश छोड़ा तो मिस्र खुश
हुआ,
क्योंकि इसराएल का* खौफ उस
पर छा गया था।[6]
39 उसने एक बादल की आड़ से उन्हें
छिपा लिया[7]
और रात के वक्त आग से उन्हें
रौशनी दी।[8]

105:32 *या "आग की लपटें गिरायीं।" 105:36 *या "संतान पैदा करने की शक्ति।" 105:38 *शा., "उनका।"

40 उनके माँगने पर वह बटेर ले
आया,[1]
स्वर्ग से रोटी भेजकर उन्हें संतुष्ट
करता रहा।[2]
41 उसने एक चट्टान चीरी और पानी
की धारा फूट निकली,[3]
पानी वीराने में ऐसे बहने लगा जैसे
कोई नदी हो।[4]
42 उसने वह पवित्र वादा याद रखा
जो उसने अपने सेवक अब्राहम से
किया था।[5]
43 इसलिए वह अपने लोगों को बाहर
ले आया, वे जश्न मनाते हुए
निकले,[6]
अपने चुने हुओं को बाहर ले आया,
वे खुशी से जयजयकार करते हुए
निकले।
44 उसने उन्हें दूसरी जातियों के इलाके
दे दिए,[7]
उन्होंने विरासत में वह पाया
जो दूसरे देशों की मेहनत का
फल था[8]
45 ताकि वे उसके आदेशों का
पालन करें[9]
और उसके कानून मानें।
याह की तारीफ करो!*

106 याह की तारीफ करो!*
यहोवा का शुक्रिया
अदा करो क्योंकि वह
भला है,[10]
उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।[11]
2 कौन यहोवा के शक्तिशाली
कामों का पूरी तरह ऐलान कर
सकता है?
कौन उसके सभी कामों का बखान
कर सकता है जो तारीफ के
काबिल हैं?[1]
3 सुखी हैं वे जो सही काम करते हैं,[2]
हमेशा नेक काम करते हैं।
4 हे यहोवा, जब तू अपने लोगों पर
कृपा करे* तो मुझे याद करना।[3]
मेरा खयाल रखना और मुझे
बचा लेना
5 ताकि तू अपने चुने हुओं[4] के साथ
जो भलाई करता है, उसका मैं
आनंद उठाऊँ,
तेरे राष्ट्र के साथ मिलकर खुशियाँ
मनाऊँ,
तेरी विरासत के साथ मिलकर गर्व
से तेरी तारीफ करूँ।
6 हमने भी अपने पुरखों की तरह पाप
किया है,[5]
हमने गलत किया है, दुष्टता
की है।[6]
7 मिस्र में हमारे पुरखों ने तेरे आश्चर्य
के कामों की कदर नहीं की।*
तेरा भरपूर अटल प्यार याद
नहीं रखा
और लाल सागर के पास बगा-
वत की।[7]
8 मगर उसने अपने नाम की खातिर
उन्हें बचाया[8]
ताकि अपनी महाशक्ति दिखाए।[9]
9 उसने लाल सागर को डाँटा और
वह सूख गया,
वह उन्हें उसकी गहराइयों से ले
गया मानो वह रेगिस्तान* हो,[10]
10 उसने उन्हें दुश्मन के हाथ से
बचाया,[11]

105:45; 106:1 *या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है।

106:4 *या "को मंज़ूरी दे।" 106:7 *या "के मायने नहीं समझे।" 106:9 *या "वीराना।"

अध्य. 105
1 भज 78:27
2 निर्ग 16:12-15 भज 78:24
3 निर्ग 17:6 1कुर 10:1, 4
4 भज 78:15, 16
5 उत 12:7 उत 15:13, 14 निर्ग 2:24 व्य 9:5
6 गि 33:3
7 यह 11:23 यह 21:43 नहे 9:22 भज 78:55 प्रेष 13:19
8 व्य 6:10, 11 यह 5:11, 12
9 व्य 4:40

अध्य. 106
10 लूक 18:19
11 1इत 16:34 एज 3:11 भज 103:17 भज 107:1

दूसरा कॉल.
1 भज 40:5
2 भज 15:1, 2 यश 64:5
3 नहे 5:19 भज 51:18 भज 119:132
4 निर्ग 19:5
5 नहे 9:16 भज 78:8
6 एज 9:6 दान 9:5
7 निर्ग 14:11, 12
8 भज 143:11 यहे 20:14
9 निर्ग 9:16 रोम 9:17
10 निर्ग 14:21, 22
11 निर्ग 14:30

बैरी के हाथ से छुड़ा लिया।[1]
11 समुंदर ने उनके दुश्मनों को डुबा
दिया,
उनमें से एक भी ज़िंदा नहीं बचा।[2]
12 तब उन्होंने उसके वादे पर विश्वास
किया,[3]
वे उसकी तारीफ में गीत गाने
लगे।[4]
13 मगर फिर वे जल्द ही उसके काम
भूल गए,[5]
उन्होंने उसके निर्देशों का इंतज़ार
नहीं किया।
14 वीराने में वे अपनी स्वार्थी इच्छाओं
के आगे झुक गए,[6]
सूखे इलाके में उन्होंने परमेश्वर की
परीक्षा ली।[7]
15 उन्होंने जो माँगा, वह उसने दिया,
मगर फिर उन्हें बीमारी से ऐसा
मारा कि वे नाश हो गए।[8]
16 छावनी में वे मूसा से जलने लगे
और यहोवा के पवित्र जन[9]
हारून[10] से जलने लगे।
17 फिर धरती ने मुँह खोला और
दातान को निगल लिया
और अबीराम के दल को अपने
अंदर समेट लिया।[11]
18 उनकी टोली में आग भड़क उठी,
एक ज्वाला ने दुष्टों को भस्म कर
दिया।[12]
19 उन्होंने होरेब में एक बछड़ा बनाया,
धातु की मूरत* के आगे दंडवत
किया।[13]
20 उन्होंने मेरी महिमा करने के बजाय,
घास खानेवाले बैल की मूरत की
महिमा की।[14]

106:19 *या "ढली हुई मूरत।"

अध्य. 106
1 यश 49:26
2 निर्ग 14:13, 28
3 निर्ग 14:31
4 निर्ग 15:1
5 निर्ग 15:24; निर्ग 16:2, 3; निर्ग 17:7
6 गि 11:4; व्य 9:22; 1कुर 10:6
7 निर्ग 17:2; भज 78:18; 1कुर 10:9; इब्र 3:8, 9
8 गि 11:31, 33; भज 78:29-31
9 लैव 21:8; गि 16:5-7
10 गि 16:3
11 गि 16:27, 32
12 गि 16:35
13 निर्ग 32:4; व्य 9:12
14 निर्ग 20:4

दूसरा कॉल.
1 व्य 32:18
2 व्य 4:34
3 भज 78:51
4 निर्ग 14:25
5 निर्ग 32:10, 11; व्य 9:14, 19
6 गि 13:32; व्य 8:7-9
7 गि 14:11
8 गि 14:2; व्य 1:27
9 गि 14:22, 23
10 गि 14:28, 29; इब्र 3:11
11 लैव 26:33; व्य 4:27
12 गि 25:3; हो 9:10

21 वे अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को
भूल गए,[1]
जिसने मिस्र में बड़े-बड़े काम
किए थे,[2]
22 हाम के देश में आश्चर्य के काम
किए थे,[3]
लाल सागर के पास विस्मयकारी
काम किए थे।[4]
23 वह उन्हें मिटाने की आज्ञा देने ही
वाला था
कि तभी उसके चुने हुए जन मूसा ने
उससे फरियाद की*
कि वह अपनी जलजलाहट शांत
करे जो उन्हें नाश कर
सकती थी।[5]
24 फिर उन्होंने मनभावने देश को तुच्छ
समझा,[6]
उन्हें उसके वादे पर बिलकुल
विश्वास नहीं था।[7]
25 वे अपने तंबुओं में कुड़कुड़ाते रहे,[8]
उन्होंने यहोवा की बात नहीं मानी।[9]
26 इसलिए उसने अपना हाथ उठाकर
शपथ खायी
कि वह उन्हें वीराने में ढेर कर
देगा,[10]
27 उनके वंशजों को दूसरी जातियों के
बीच ढेर कर देगा,
अलग-अलग देशों में तितर-बितर
कर देगा।[11]
28 फिर वे पोर के बाल की उपासना में
शामिल हो गए*[12]
और मुरदों को अर्पित बलिदान#
खाने लगे।

106:23 *शा., "उसके सामने दरार में खड़ा हुआ।" 106:28 *या "से खुद को जोड़ लिया।" #यानी ऐसे बलिदान जो मरे हुओं को या फिर बेजान मूरतों को चढ़ाए गए थे।

29 उन्होंने अपने कामों से उसका क्रोध
भड़काया[1]
और उनके बीच एक महामारी फैल
गयी।[2]
30 मगर जब फिनेहास ने आगे बढ़कर
कदम उठाया,
तो महामारी थम गयी।[3]
31 इस वजह से उसे नेक समझा गया,
पीढ़ी-पीढ़ी के लिए उसे नेक समझा
गया।[4]
32 उन्होंने मरीबा* के सोते के पास
परमेश्वर का क्रोध भड़काया,
उनकी वजह से मूसा के साथ बहुत
बुरा हुआ।[5]
33 उन्होंने मूसा के मन में कड़वाहट
भर दी
और वह बिना सोचे-समझे बोल
पड़ा।[6]
34 उन्होंने दूसरी जातियों को नहीं
मिटाया,[7]
जबकि यहोवा ने उन्हें आज्ञा
दी थी।[8]
35 इसके बजाय, वे उन जातियों से
घुल-मिल गए[9]
और उनके तौर-तरीके अपना
लिए।*[10]
36 वे उनकी मूरतों की सेवा
करते रहे[11]
और ये उनके लिए फंदा बन
गयीं।[12]
37 वे दुष्ट स्वर्गदूतों के लिए अपने
बेटे-बेटियों का बलिदान
चढ़ाते थे।[13]
38 वे मासूमों का खून बहाते रहे,[14]
अपने ही बेटे-बेटियों का खून
बहाते रहे,
जिन्हें वे कनान की मूरतों को बलि-
दान चढ़ाते थे[1]
और सारा देश उनके बहाए खून से
दूषित हो गया।
39 वे अपने कामों की वजह से अशुद्ध
हो गए,
ऐसे काम करके उन्होंने परमेश्वर के
साथ विश्वासघात किया।*[2]
40 तब यहोवा का क्रोध अपने लोगों
पर भड़क उठा,
उसे अपनी विरासत से घिन होने
लगी।
41 वह बार-बार उन्हें दूसरे राष्ट्रों के
हवाले करता रहा[3]
ताकि उनसे नफरत करनेवाले उन
पर राज करें।[4]
42 उनके दुश्मनों ने उन पर ज़ुल्म
किया,
उनकी ताकत के आगे उन्हें झुकना
पड़ा।*
43 कितनी ही बार उसने उन्हें
छुड़ाया था,[5]
मगर हर बार वे उससे बगावत
करते, उसकी आज्ञा तोड़ते,[6]
उनके गुनाहों की वजह से उन्हें
नीचा किया जाता।[7]
44 मगर वह उन्हें संकट में पड़ा
देखता[8]
और उनकी मदद की पुकार
सुनता।[9]
45 उनकी खातिर वह अपना करार
याद करता,

106:32 *मतलब "झगड़ा करना।" **106:35** *या "सीख लिए।"

106:39 *या "उन्होंने वेश्याओं जैसी बदचलनी की।" **106:42** *शा., "वे उनके हाथ तले दब गए।"

अध्य. 106
1 गि 25:6; व्य 32:16
2 गि 25:9; 1कुर 10:8
3 गि 25:7, 8
4 गि 25:11-13
5 गि 20:2, 12; गि 27:13, 14
6 गि 20:10
7 यह 16:10; यह 17:12; न्या 1:21
8 गि 33:52; व्य 7:1, 2
9 यह 15:63; न्या 1:33
10 यश 2:6
11 न्या 2:11, 12; 2रा 17:12
12 निर्ग 23:32, 33
13 व्य 12:31; 2रा 16:1, 3; 2रा 17:17, 18; यिर्म 7:30, 31; 1कुर 10:20
14 2रा 21:16

दूसरा कॉल.
1 यहे 16:20
2 यिर्म 3:9
3 व्य 32:30; न्या 3:8
4 न्या 10:6-8
5 न्या 10:11, 12; 1शम 12:11
6 न्या 4:1
7 न्या 6:1-5
8 न्या 2:18
9 न्या 3:9

उसका महान* अटल प्यार उसे
उभारता और वह उन पर तरस
खाता।#[1]
46 जो उन्हें बंदी बना लेते थे,
उन्हें वह उभारता कि वे उन पर
तरस खाएँ।[2]
47 हे यहोवा, हमारे परमेश्वर, हमें
बचा ले[3]
और राष्ट्रों के बीच से हमें इकट्ठा
कर ले[4]

106:45 *या "भरपूर।" #या "पछतावा महसूस करता।"

ताकि हम तेरे पवित्र नाम की
तारीफ करें
और तेरी तारीफ करने में बहुत
खुशी पाएँ।[1]
48 इसराएल के परमेश्वर यहोवा
की युग-युग तक* तारीफ
होती रहे।[2]
और सब लोग कहें, "आमीन!"#
याह की तारीफ करो!△

106:48 *या "हमेशा से हमेशा तक।" #या "ऐसा ही हो!" △या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है।

अध्य. 106
1 निर्ग 34:6; व्य 32:36; यश 63:7; विल 3:32; योए 2:13
2 एज 9:9
3 भज 79:9
4 यिर्म 32:37

दूसरा कॉल.
1 1इत 16:35
2 1इत 29:10; भज 41:13; लूक 1:68

पाँचवीं किताब
(भजन 107-150)

107 यहोवा का शुक्रिया
अदा करो क्योंकि वह
भला है,[1]
उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।[2]
2 जिन्हें यहोवा ने छुड़ाया है,* वे
यही कहें,
जिन्हें उसने दुश्मन के हाथ# से
छुड़ाया है,[3]
3 देश-देश से इकट्ठा किया है,[4]
पूरब से, पश्चिम से,* उत्तर से और
दक्षिण से, वे ऐसा ही कहें।[5]
4 वे वीराने में, जंगल में भटकते-
फिरते रहे,
उन्हें किसी शहर का रास्ता न मिला
कि वे जाकर बस जाते।
5 वे भूखे-प्यासे थे,
थक-हारकर पस्त हो चुके थे।

107:2 *या "वापस खरीद लिया है।" #या "की ताकत।" **107:3** *या "उदयाचल और अस्ताचल से।"

6 संकट में वे यहोवा को पुकार-
ते रहे,[1]
उसने उन्हें बदहाली से बाहर
निकाला।[2]
7 वह उन्हें सही रास्ते से ले गया[3]
कि वे एक ऐसे शहर पहुँचें जहाँ वे
बस जाएँ।[4]
8 यहोवा के अटल प्यार के लिए,
इंसानों की खातिर उसके आश्चर्य
के कामों के लिए[5]
लोग उसका शुक्रिया अदा करें।[6]
9 क्योंकि उसने प्यासों की प्यास
बुझायी,
भूखों को अच्छी चीज़ें खिलाकर
संतुष्ट किया।[7]
10 कुछ लोग घोर अंधकार में जी
रहे थे,
कैदी लोहे की ज़ंजीरों में जकड़े दुख
झेल रहे थे।
11 वे परमेश्वर के वचन के खिलाफ
गए थे,
उन्होंने परम-प्रधान की सलाह को
तुच्छ जाना था।[8]

अध्य. 107
1 लूक 18:19
2 1इत 16:34; भज 103:17
3 यश 35:10; यिर्म 15:21; मी 4:10
4 भज 106:47; यिर्म 29:14
5 यश 43:5, 6; यिर्म 31:8

दूसरा कॉल.
1 हो 5:14, 15
2 यश 41:17
3 यश 30:21
4 नहे 11:3
5 भज 40:5
6 1इत 16:8
7 भज 34:10; यश 55:2; लूक 1:53
8 भज 106:43; विल 3:42

12 इसलिए उसने उन पर तकलीफें
लाकर उनके दिलों को दीन
किया,[1]
वे लड़खड़ाकर गिर पड़े, उनकी
मदद करनेवाला कोई न था।
13 संकट में उन्होंने मदद के लिए
यहोवा को पुकारा,
उसने उन्हें बदहाली से छुड़ाया।
14 वह उन्हें घोर अंधकार से बाहर ले
आया,
उनकी बेड़ियाँ तोड़ दीं।[2]
15 यहोवा के अटल प्यार के लिए,[3]
इंसानों की खातिर उसके आश्चर्य
के कामों के लिए
लोग उसका शुक्रिया अदा करें।
16 उसने ताँबे के फाटक तोड़ डाले,
लोहे के बेड़ों के टुकड़े-टुकड़े कर
दिए।[4]
17 जो मूर्ख थे उन्हें दुख झेलना पड़ा,[5]
अपने अपराधों और गुनाहों की
वजह से दुख झेलना पड़ा।[6]
18 उनकी भूख मर गयी,
वे कब्र के दरवाज़ों तक पहुँच गए।
19 वे संकट में मदद के लिए यहोवा को
पुकारते,
वह उन्हें बदहाली से छुड़ाता।
20 वह अपने वचन के ज़रिए उनकी
बीमारी दूर करता,[7]
उन्हें उन गड्ढों से बाहर निकालता
जहाँ वे फँस गए थे।
21 यहोवा के अटल प्यार के लिए,
इंसानों की खातिर उसके आश्चर्य
के कामों के लिए
लोग उसका शुक्रिया अदा करें।
22 वे उसके लिए धन्यवाद-बलि
चढ़ाएँ,[8]
खुशी से जयजयकार करते हुए
उसके कामों का ऐलान करें।

अध्य. 107
1 लैव 26:21
2 भज 68:6
भज 146:7
यश 49:8, 9
यश 61:1
3 विल 3:22
4 यश 45:1, 2
5 यिर्म 2:19
6 विल 3:39
7 भज 147:3
8 लैव 7:12
भज 50:14

दूसरा कॉल.
1 2इत 9:21
यहे 27:9
2 उत 1:21
भज 104:25
3 भज 135:7
यिर्म 10:13
यो 1:4
4 यो 1:4, 13
5 यो 1:14
6 भज 65:7
भज 89:9
यो 1:15
7 भज 105:5
8 भज 111:1

23 जो जहाज़ों से समुंदर पर सफर
करते हैं,
विशाल सागर से होकर व्यापार का
माल लाते-ले जाते हैं,[1]
24 उन्होंने यहोवा के काम देखे हैं,
वे खूबसूरत चीज़ें देखी हैं जो उसने
समुंदर में रची हैं[2]
25 कि उसके हुक्म पर कैसे आँधी
चलती है[3]
और सागर की लहरों को
उठाती है।
26 वे आसमान की ऊँचाई तक
उठते हैं,
समुंदर की गहराइयों में डूब
जाते हैं।
खतरा मँडराता देखकर उनकी
हिम्मत टूट जाती है।
27 वे एक मतवाले की तरह लड़खड़ाते
हैं, गिरते-पड़ते हैं,
उनका सारा हुनर बेकार हो
जाता है।[4]
28 तब वे संकट में यहोवा को
पुकारते हैं[5]
और वह उन्हें बदहाली से
छुड़ाता है।
29 वह आँधी को शांत कर देता है,
समुंदर की लहरें खामोश हो
जाती हैं।[6]
30 लहरों का थमना देखकर वे खुश
होते हैं,
वह उन्हें उनके मनचाहे बंदरगाह
पर ले जाता है।
31 यहोवा के अटल प्यार के लिए,
इंसानों की खातिर उसके आश्चर्य
के कामों के लिए[7]
लोग उसका शुक्रिया अदा करें।
32 वे लोगों की मंडली में उसे ऊँचा
उठाएँ,[8]

बुज़ुर्गों की सभा* में उसकी
तारीफ करें।
33 वह नदियों को रेगिस्तान में बदल
देता है,
पानी के सोतों को सूखी ज़मीन में[1]
34 और उपजाऊ ज़मीन को नमकवाली
ज़मीन में बदल देता है,[2]
वहाँ के रहनेवालों की दुष्टता की
वजह से वह ऐसा करता है।
35 वह रेगिस्तान को नरकटोंवाले
तालाब में
और सूखी ज़मीन को पानी के सोतों
में बदल देता है।[3]
36 वह भूखों को वहाँ बसाता है[4]
ताकि वे शहर बसाकर उसमें
रह सकें।[5]
37 वे खेत बोते हैं और अंगूरों के बाग
लगाते हैं,[6]
जहाँ बढ़िया फसलें होती हैं।[7]
38 वह उन्हें आशीष देता है और
उनकी गिनती खूब बढ़ती है,
वह उनके मवेशियों की गिनती
घटने नहीं देता।[8]
39 मगर ज़ुल्म, कहर और दुख की
वजह से
दोबारा उनकी गिनती कम हो जाती
है और वे बेइज़्ज़त किए जाते हैं।
40 वह रुतबेदार लोगों का अपमान
करवाता है,
उन्हें वीरानों में भटकाता है जहाँ
कोई रास्ता नहीं।[9]
41 मगर वह गरीबों को ज़ुल्म से
बचाता है,*[10]
उनके परिवार को भेड़ों के झुंड की
तरह बढ़ाता है।
42 यह देखकर सीधे-सच्चे लोग आनंद-
मगन होते हैं,[1]
मगर सभी दुष्ट अपना मुँह बंद कर
लेते हैं।[2]
43 जो कोई बुद्धिमान है, वह इन बातों
पर ध्यान देगा,[3]
यहोवा के अटल प्यार के कामों पर
गौर से सोचेगा।[4]

दाविद का सुरीला गीत।

108 हे परमेश्वर, मेरा दिल
अटल है।
मैं तेरे लिए दिलो-जान से गीत
गाऊँगा, संगीत बजाऊँगा।[5]
2 हे तारोंवाले बाजे, जाग,
हे सुरमंडल, तू भी जाग।[6]
मैं भोर को जगाऊँगा।
3 हे यहोवा, मैं देश-देश के लोगों के
बीच तेरी तारीफ करूँगा,
राष्ट्रों के बीच तेरी तारीफ में गीत
गाऊँगा।*
4 क्योंकि तेरा अटल प्यार क्या ही
महान है,
आसमान जितना ऊँचा है,[7]
तेरी वफादारी आकाश की बुलंदियाँ
छूती है।
5 हे परमेश्वर, तेरी महिमा आसमान
के ऊपर हो,
तेरा वैभव पूरी धरती पर फैल
जाए।[8]
6 अपने दाएँ हाथ से हमें बचा ले, मेरी
सुन ले
ताकि जिन्हें तू प्यार करता है वे
छुड़ाए जाएँ।[9]
7 परमेश्वर अपनी पवित्रता के
कारण* कहता है,

अध्य. 107
1 1रा 17:1, 7; यश 42:15; आम 4:7
2 उत 13:10; व्य 29:22, 23
3 2रा 3:17; यश 35:7; यश 41:18
4 भज 146:7; लूक 1:53
5 भज 107:7
6 यश 65:21
7 प्रेष 14:17
8 व्य 7:13, 14
9 अय 12:21, 24
10 1शम 2:8

दूसरा कॉल.
1 भज 58:10
2 निर्ग 11:7; भज 63:11
3 भज 64:9; हो 14:9
4 भज 77:12; भज 143:5; यिर्म 9:24

अध्य. 108
5 भज 57:7-11; भज 104:33
6 भज 81:2
7 भज 36:5; भज 103:11
8 भज 8:1; भज 57:5, 11
9 भज 20:6; भज 60:5

107:32 *शा., "बैठक।" **107:41** *या "ऊँचे पर रखता है," यानी पहुँच से बाहर। **108:3** *या "संगीत बजाऊँगा।" **108:7** *या शायद, "अपनी पवित्र जगह में।"

"मैं मगन होऊँगा, विरासत में
शेकेम[1] दूँगा,
सुक्कोत घाटी नापकर दूँगा।[2]
8 मनश्शे मेरा है, गिलाद[3] भी मेरा है,
एप्रैम मेरे सिर का टोप है,[4]
यहूदा मेरे लिए हाकिम की
लाठी है।[5]
9 मोआब मेरा हाथ-पैर धोने का बर-
तन है।[6]
एदोम पर मैं अपना जूता फेंकूँगा।[7]
पलिश्‍त को जीतकर मैं जश्‍न
मनाऊँगा।"[8]
10 कौन मुझे उस किलेबंद शहर तक ले
जाएगा?
कौन मुझे दूर एदोम तक ले
जाएगा?[9]
11 हे हमारे परमेश्‍वर, तू ही हमें वहाँ
ले जाएगा।
मगर तूने तो हमें ठुकरा दिया है,
तू अब युद्ध में हमारी सेना के साथ
नहीं जाता।[10]
12 हम संकट में हैं, हमारी मदद कर,[11]
क्योंकि उद्धार के लिए इंसान पर
आस लगाना बेकार है।[12]
13 परमेश्‍वर से हमें ताकत मिलेगी,[13]
वह हमारे बैरियों को रौंद
डालेगा।[14]

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

109 हे परमेश्‍वर, जिसकी मैं
तारीफ करता हूँ,[15] तू
और चुप न रह।
2 क्योंकि दुष्ट और धोखेबाज़ मेरे
खिलाफ बोलते हैं,
अपनी ज़बान से मेरे बारे में झूठी
बातें कहते हैं।[16]
3 वे मुझे घेर लेते हैं, चुभनेवाली बातें
कहते हैं,
बेवजह मुझ पर हमला करते हैं।[1]
4 मेरे प्यार के बदले मेरा विरोध
करते हैं,[2]
मगर मैं प्रार्थना करने में लगा
रहता हूँ।
5 वे मेरी अच्छाई का बदला बुराई से
देते हैं,[3]
मेरे प्यार के बदले मुझसे नफरत
करते हैं।[4]
6 उस पर किसी दुष्ट को ठहरा,
उसके दाएँ हाथ एक विरोधी*
खड़ा रहे।
7 जब उसका न्याय होगा तो वह
दोषी* पाया जाए,
उसकी प्रार्थना भी एक पाप मानी
जाए।[5]
8 उसकी ज़िंदगी के दिन घट जाएँ,[6]
उसका निगरानी का पद कोई
और ले ले।[7]
9 उसके बच्चों* पर से पिता का साया
उठ जाए
और उसकी पत्नी विधवा हो जाए।
10 उसके बच्चे* भिखारी बनकर
भटकते फिरें,
अपने उजड़े हुए घरों से निकलकर
टुकड़े तलाशते रहें।
11 उसका लेनदार उसका सबकुछ ज़ब्त
कर ले,*
पराए उसकी जायदाद लूट लें।
12 कोई भी उस पर कृपा* न करे,
उसकी मौत के बाद उसके बच्चों पर
दया न करे।
13 उसके वंशज काट डाले जाएँ,[8]

109:6 *या "इलज़ाम लगानेवाला।" **109:7** *या "दुष्ट।" **109:9** *शा., "बेटों।" **109:10** *शा., "बेटे।" **109:11** *या "सूदखोर उसके लिए जाल बिछाएँ।" **109:12** *या "अटल प्यार।"

अध्य. 108
1 यह 17:7
2 उत 33:17 भज 60:6-8
3 यह 13:8, 11
4 व्य 33:17
5 उत 49:10
6 2शम 8:2
7 गि 24:18 2शम 8:14
8 2शम 8:1
9 भज 60:9-12
10 व्य 23:14
11 भज 18:6
12 भज 118:8 भज 146:3, 4
13 1शम 2:4 2शम 22:40 यश 40:29-31
14 भज 44:5

अध्य. 109
15 भज 33:1
16 2शम 15:2, 3 भज 31:18

दूसरा कॉल.
1 2शम 15:12 2शम 16:5-7 भज 69:4
2 2शम 13:39
3 भज 35:11, 12 भज 38:19, 20
4 भज 55:12-14
5 यश 1:15 मी 3:4
6 भज 55:23 मत 27:5
7 प्रेष 1:16-20
8 भज 37:28

उनका नाम एक ही पीढ़ी में मिटा
दिया जाए।
14 उसके पुरखों का गुनाह यहोवा
याद रखे[1]
और उसकी माँ का पाप कभी न
मिटाया जाए।
15 उन्होंने जो किया है उसे यहोवा हर
पल याद रखे,
वह धरती से उनकी याद हमेशा के
लिए मिटा दे।[2]
16 क्योंकि दूसरों पर कृपा* करना उसे
याद नहीं रहा,[3]
इसके बजाय, वह ज़ुल्म सहनेवाले,
गरीब और टूटे मनवाले का पीछा
करता रहा[4]
ताकि उसे मार डाले।[5]
17 दूसरों को शाप देने में उसे खुशी
मिलती थी,
इसलिए अब उसी पर शाप आ
पड़ा है,
उसने दूसरों को आशीर्वाद देना नहीं
चाहा,
इसलिए उसे कोई आशीष नहीं
मिली।
18 उसे मानो शाप की पोशाक पहनायी
गयी।
शाप उसके शरीर में ऐसे उँडेला
गया जैसे पानी हो,
उसकी हड्डियों में ऐसे उँडेला गया
जैसे तेल हो।
19 उस पर पड़े शाप पोशाक जैसे हों
जिसे वह पहने रहता है,[6]
कमर-पट्टी जैसे हों जिसे वह हरदम
कसे रहता है।
20 यहोवा उन्हें यही सिला देता है जो
मेरा विरोध करते हैं,[7]
मेरे बारे में बुरी बातें कहते हैं।

109:16 *या "अटल प्यार।"

अध्य. 109
1 2शम 3:28, 29
2शम 21:1
2 भज 34:16
3 याकू 2:13
4 भज 10:2
5 2शम 16:11
2शम 17:1, 2
भज 37:32
6 भज 109:29
7 2शम 17:23

दूसरा कॉल.
1 भज 25:11
भज 31:3
2 भज 36:7
भज 69:16
भज 86:5
3 भज 40:17
4 भज 102:4
5 भज 31:11
6 भज 22:7
मत 27:39
7 भज 35:26

21 मगर हे सारे जहान के मालिक
यहोवा,
अपने नाम की खातिर मेरी तरफ से
कार्रवाई कर।[1]
मुझे छुड़ा ले क्योंकि तेरा अटल
प्यार भला है।[2]
22 मैं बेसहारा और गरीब हूँ,[3]
मेरा दिल छलनी हो गया है।[4]
23 मैं घटती छाया की तरह गायब हो
रहा हूँ,
एक टिड्डी की तरह मुझे झटक दिया
गया है।
24 उपवास करते-करते मेरे घुटने
जवाब दे गए हैं,
मैं दुबला हो गया हूँ, सूखता जा
रहा हूँ।*
25 वे मुझ पर ताना कसते हैं,[5]
मुझे देखकर सिर हिलाते हैं।[6]
26 हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, मेरी
मदद कर,
अपने अटल प्यार की वजह से मुझे
बचा ले।
27 वे जान जाएँ कि यह तूने अपने
हाथ से किया है,
कि हे यहोवा, यह तूने ही किया है।
28 वे भले ही शाप दें, मगर तू
आशीष दे।
जब वे मेरे खिलाफ उठें तो वे
शर्मिंदा किए जाएँ,
मगर तेरा सेवक आनंद मनाए।
29 मेरा विरोध करनेवालों को अपमान
की पोशाक पहनायी जाए,
उन्हें शर्म का ओढ़ना ओढ़ाया
जाए।[7]
30 मैं अपने मुँह से पूरे जोश के साथ
यहोवा की तारीफ करूँगा,

109:24 *शा., "मेरा शरीर बिना चरबी (या तेल) के दुबला हो गया है।"

बहुत-से लोगों के सामने उसकी
तारीफ करूँगा।[1]
31 क्योंकि वह गरीब के दाएँ हाथ खड़ा
होगा
ताकि उसे उन लोगों से बचाए जो
उसे दोषी ठहराते हैं।

दाविद का सुरीला गीत।

110 यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा,
"तू तब तक मेरे दाएँ
हाथ बैठ,[2]
जब तक कि मैं तेरे दुश्मनों को तेरे
पाँवों की चौकी न बना दूँ।"[3]
2 यहोवा तेरी ताकत का राजदंड
सिय्योन से बढ़ाएगा
और कहेगा, "अपने दुश्मनों के
बीच जा, उन पर जीत हासिल
करता जा।"[4]
3 जिस दिन तू अपनी सेना को लेकर
युद्ध में जाएगा,*
उस दिन तेरे लोग अपनी इच्छा से
खुद को पेश करेंगे।
तेरे साथ तेरे जवानों का दल होगा,
जिसमें पवित्रता का तेज
चमकता है।
वे ओस की बूँदों के समान हैं,
जो भोर के गर्भ से पैदा होती हैं।
4 यहोवा ने शपथ खाकर यह वादा
किया है और जो उसने सोचा है
उसे नहीं बदलेगा,*
"तू मेल्कीसेदेक जैसा याजक है
और तू हमेशा-हमेशा के लिए
याजक रहेगा!"[5]
5 यहोवा तेरे दाएँ हाथ होगा,[6]
वह अपने क्रोध के दिन राजाओं को
कुचल देगा।[7]
6 वह राष्ट्रों का न्याय करके उन्हें
सज़ा देगा,[1]
देश को लाशों से भर देगा।[2]
एक विशाल देश* के प्रधान को
कुचल देगा।
7 वह* रास्ते के किनारे बहती धारा
से पानी पीएगा,
इसलिए वह अपना सिर ऊँचा
उठाएगा।

111 याह की तारीफ करो!*[3]
א [आलेफ]
मैं सीधे-सच्चे लोगों की सभा में
और मंडली में
ב [बेथ]
पूरे दिल से यहोवा की तारीफ
करूँगा।[4]
ג [गिमेल]
2 यहोवा के काम महान हैं,[5]
ד [दालथ]
जो उनसे खुशी पाते हैं, वे सब
उनकी जाँच करते हैं।[6]
ה [हे]
3 उसके काम गौरवशाली और ला-
जवाब हैं,
ו [वाव]
उसकी नेकी सदा बनी रहती है।[7]
ז [जैन]
4 वह अपने आश्चर्य के कामों को
यादगार बनाता है।[8]
ח [हेथ]
यहोवा करुणा से भरा और
दयालु है।[9]
ט [टेथ]
5 जो उसका डर मानते हैं, उन्हें वह
खाना देता है।[10]

110:3 *या "जिस दिन तेरी सेना तैयार होती है।" 110:4 *या "उसे पछतावा महसूस नहीं होगा।"

110:6 *या "पूरी धरती।" 110:7 *यह वही है जिसे आय. 1 में 'मेरा प्रभु' बताया गया है। 111:1 *या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है।

अध्य. 109
1 भज 22:22

अध्य. 110
2 रोम 8:34, इफ 1:20, इब्र 8:1, इब्र 12:2
3 मत 22:43, 44, मर 12:36, लूक 20:42, 43, प्रेष 2:34, 35, 1कुर 15:25, इब्र 1:3, 13, इब्र 10:12, 13
4 भज 2:8, 9, भज 45:4, 5, मत 28:18, प्रक 6:2, प्रक 12:5, प्रक 19:11, 15
5 उत 14:18, इब्र 5:5, 6, इब्र 6:19, 20, इब्र 7:3, 11, इब्र 7:21, 28
6 भज 16:8
7 भज 2:2, रोम 2:5, प्रक 11:18, प्रक 19:19

दूसरा कॉल.
1 भज 79:6
2 यिर्म 25:31-33

अध्य. 111
3 भज 68:4, भज 113:1, प्रक 19:1
4 भज 9:1
5 भज 98:1, भज 139:14, प्रक 15:3
6 भज 77:12, भज 143:5
7 भज 103:17
8 व्य 31:19, यह 4:5-7
9 निर्ग 34:6, याकू 5:11
10 भज 37:25, मत 6:33

י [*योध*]
वह सदा अपना करार याद
रखता है।[1]
כ [*काफ*]
6 उसने अपने लोगों को दूसरी
जातियों की विरासत दी है,[2]
ל [*लामेध*]
ऐसा करके उसने अपने शक्ति-
शाली काम अपने लोगों को
दिखाए हैं।
מ [*मेम*]
7 उसके हाथ के काम सच्चे और
न्याय के हैं,[3]
נ [*नून*]
उसके सभी आदेश भरोसेमंद हैं।[4]
ס [*सामेख*]
8 वे हमेशा भरोसेमंद* होते हैं, आज
भी हैं और सदा तक भरोसेमंद
रहेंगे,
ע [*ऐयिन*]
उनकी बुनियाद सच्चाई और
नेकी है।[5]
פ [*पे*]
9 उसने अपने लोगों को छुटकारा
दिलाया है।[6]
צ [*सादे*]
उसने आज्ञा दी है कि उसका करार
सदा कायम रहे।
ק [*कोफ*]
उसका नाम पवित्र और विस्मय-
कारी है।[7]
ר [*रेश*]
10 यहोवा का डर मानना बुद्धि की
शुरूआत है।[8]
שׁ [*सीन*]
उसके आदेशों को माननेवाले सभी
अंदरूनी समझ दिखाते हैं।[9]
ת [*ताव*]
उसकी तारीफ सदा तक होती
रहती है।

112

याह की तारीफ करो!*[1]
א [*आलेफ*]
सुखी है वह इंसान जो यहोवा का
डर मानता है,[2]
ב [*बेथ*]
जो उसकी आज्ञाओं से बड़ी खुशी
पाता है।[3]
ג [*गिमेल*]
2 उसके वंशज धरती पर ताकतवर
होंगे,
ד [*दालथ*]
सीधे-सच्चे लोगों की पीढ़ी आशीष
पाएगी।[4]
ה [*हे*]
3 उसके घर में धन-दौलत है
ו [*वाव*]
और उसकी नेकी हमेशा बनी
रहती है।
ז [*जैन*]
4 वह सीधे-सच्चे लोगों के लिए अँधेरे
में चमकती रौशनी है।[5]
ח [*हेथ*]
वह करुणा से भरा है, दयालु[6] और
नेक है।
ט [*टेथ*]
5 जो आदमी दिल खोलकर
उधार देता है उसके साथ अच्छा
होता है।[7]
י [*योध*]
वह अपना सारा काम न्याय से
करता है।
כ [*काफ*]
6 उसे कभी हिलाया नहीं जा
सकता।[8]

अध्य. 111
1 भज 89:34; भज 105:8
2 भज 44:2; भज 105:44
3 व्य 32:4
4 भज 19:8; यश 55:10, 11
5 भज 19:9
6 निर्ग 15:13; लूक 1:68; प्रक 7:10
7 भज 89:7; यश 6:2, 3; लूक 1:49; प्रक 4:8
8 अय 28:28; नीत 1:7; सभ 12:13
9 व्य 4:6; यह 1:7, 8; 1रा 2:3; भज 119:100; 2ती 3:14, 15

दूसरा कॉल.

अध्य. 112
1 निर्ग 15:2; प्रक 19:1
2 भज 111:10
3 भज 1:1, 2; भज 40:8
4 भज 25:12, 13; भज 37:25, 26
5 भज 97:11; 1पत 2:9
6 लूक 6:36; इफ 4:32
7 व्य 15:7, 8; भज 41:1; नीत 19:17; लूक 6:34, 35; प्रेष 20:35; इब्र 13:16
8 भज 15:5; भज 125:1

111:8 *या "पक्के सबूतों पर आधारित।"

112:1 *या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है।

ל [लामेध]
नेक जन को हमेशा याद किया
जाएगा।[1]
מ [मेम]
7 वह बुरी खबर से नहीं डरेगा।[2]
נ [नून]
उसका दिल अटल रहता है, यहोवा
पर भरोसा रखता है।[3]
ס [सामेख]
8 उसका दिल मज़बूत* रहता है, वह
नहीं डरता।[4]
ע [ऐयिन]
आखिर में वह अपने दुश्मनों की
हार देखेगा।[5]
פ [पे]
9 उसने बढ़-चढ़कर* बाँटा है, गरीबों
को दिया है।[6]
צ [सादे]
उसकी नेकी हमेशा बनी रहती है।[7]
ק [कोफ]
उसकी ताकत# सम्मान के साथ
बढ़ती जाएगी।
ר [रेश]
10 दुष्ट यह देखकर परेशान हो
जाएगा।
ש [शीन]
वह दाँत पीसेगा और मिट जाएगा।
ת [ताव]
दुष्ट की इच्छाएँ कभी पूरी न
होंगी।[8]

113 याह की तारीफ करो!*
यहोवा के सेवको, उसकी
तारीफ करो,
यहोवा के नाम की तारीफ करो।
2 यहोवा के नाम की तारीफ हो,
आज भी हो और सदा होती रहे।[1]
3 पूरब से पश्चिम तक
यहोवा के नाम की तारीफ की
जाए।[2]
4 यहोवा सब राष्ट्रों से ऊँचा है,[3]
वह आसमान से भी ज़्यादा महिमा
से भरा है।[4]
5 हमारे परमेश्वर यहोवा जैसा
कौन है,[5]
जो ऊँचे पर निवास करता* है?
6 वह आसमान और धरती को देखने
के लिए नीचे झुकता है,[6]
7 दीन जन को धूल में से उठाता है।
गरीब को राख के ढेर* से
उठाता है[7]
8 ताकि उसे रुतबेदार लोगों के साथ
बिठाए,
अपनी प्रजा के रुतबेदार लोगों के
साथ बिठाए।
9 वह बाँझ को औलाद# का सुख
देता है,
उसका घर आबाद करता है।[8]
याह की तारीफ करो!*

114 जब इसराएल मिस्र से बाहर
निकला,[9]
याकूब का घराना दूसरी भाषा
बोलनेवालों के बीच से निकला,
2 तब यहूदा उसका पवित्र-स्थान बना,
इसराएल उसका राज्य बना।[10]
3 यह देखकर सागर भाग गया,[11]
यरदन उलटी दिशा बहने लगी।[12]
4 पहाड़ मेढ़ों की तरह उछलने लगे,[13]

अध्य. 112
1 नहे 5:19
नीत 10:7
2 भज 27:1
नीत 3:25
3 भज 62:8
यश 26:3
4 नीत 28:1
5 भज 59:10
6 व्य 15:11
नीत 11:24
नीत 19:17
7 व्य 24:12, 13
2कुर 9:9
इब्र 6:10
8 नीत 11:7

दूसरा कॉल.

अध्य. 113
1 1इत 16:36
1इत 29:10
भज 106:48
2 भज 72:19
भज 86:9
यश 59:19
मला 1:11
3 भज 97:9
भज 99:2
4 1रा 8:27
5 निर्ग 15:11
6 भज 18:35
भज 138:6
यश 57:15
यश 66:2
7 1शम 2:7
8 1शम 2:5
यश 54:1

अध्य. 114
9 निर्ग 12:41
10 निर्ग 6:7
निर्ग 19:6
व्य 32:9
11 निर्ग 14:21
12 यह 3:16
13 निर्ग 19:18
न्या 5:4

112:8 *या "अटल; दृढ़।" **112:9** *या "उदारता से।" #शा., "सींग।" **113:1, 9** *या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है।

113:5 *या "विराजमान।" **113:7** *या शायद, "कूड़े की जगह।" **113:9** #शा., "बेटों।"

पहाड़ियाँ मेम्नों की तरह उछलने
लगीं।
5 हे सागर, तू क्यों भागा?[1]
हे यरदन, तू क्यों उलटी दिशा बहने
लगी?[2]
6 हे पहाड़ो, तुम क्यों मेढ़ों की तरह
उछले?
हे पहाड़ियो, तुम क्यों मेम्नों की
तरह उछलीं?
7 हे धरती, प्रभु के कारण थर-थर
काँप,
याक़ूब के परमेश्वर के कारण
काँप,[3]
8 जो चट्टान को नरकटोंवाले तालाब
में बदल देता है,
चकमक चट्टान को पानी के सोतों में
बदल देता है।[4]

115 हे यहोवा, हमारी नहीं, हाँ
हमारी नहीं*
बल्कि अपने नाम की महिमा कर,[5]
अपने अटल प्यार और अपनी
वफ़ादारी के कारण ऐसा कर।[6]
2 राष्ट्रों को यह कहने का मौका
क्यों मिले:
"कहाँ गया उनका परमेश्वर?"[7]
3 हमारा परमेश्वर स्वर्ग में है,
वह वही करता है जो उसे भाता है।
4 उनकी मूरतें सोने-चाँदी की बनी हैं,
इंसान के हाथ की कारीगरी हैं।[8]
5 उनका मुँह तो है पर वे बोल नहीं
सकतीं,[9]
आँखें हैं पर देख नहीं सकतीं,
6 कान हैं पर सुन नहीं सकतीं,
नाक है पर सूँघ नहीं सकतीं,
7 हाथ हैं पर छू नहीं सकतीं,
पैर हैं पर चल नहीं सकतीं,[1]
उनके गले से कोई आवाज़ नहीं
निकलती।[2]
8 उनके बनानेवाले और उन पर
भरोसा रखनेवाले,
दोनों उनकी तरह हो जाएँगे।[3]
9 हे इसराएल, यहोवा पर
भरोसा रख[4]
—वह उनका मददगार और उनकी
ढाल है।[5]
10 हे हारून के घराने,[6] यहोवा पर
भरोसा रख
—वह उनका मददगार और उनकी
ढाल है।
11 यहोवा का डर माननेवालो, यहोवा
पर भरोसा रखो[7]
—वह उनका मददगार और उनकी
ढाल है।[8]
12 यहोवा हमें याद रखता है और हमें
आशीष देगा,
वह इसराएल के घराने को आशीष
देगा,[9]
वह हारून के घराने को आशीष
देगा।
13 जो यहोवा का डर मानते हैं उन्हें वह
आशीष देगा,
छोटे और बड़े, सभी को आशीष
देगा।
14 यहोवा तुम्हारी गिनती बढ़ाएगा,
तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों* की
गिनती बढ़ाएगा।[10]
15 यहोवा तुम्हें आशीष दे,[11]
जो आकाश और धरती का बनाने-
वाला है।[12]
16 स्वर्ग तो यहोवा का है,[13]
मगर धरती उसने इंसानों को
दी है।[14]

अध्य. 114
1 निर्ग 15:8
2 यह 4:23
3 1इत 16:29, 30
4 निर्ग 17:6; गि 20:11; व्य 8:14, 15; भज 107:35

अध्य. 115
5 यश 48:11; यूह 12:28
6 भज 138:2
7 निर्ग 32:12; गि 14:15, 16; व्य 32:26, 27; भज 79:10
8 भज 135:15-18; यश 40:19; यश 46:6; यिर्म 10:3, 4; यिर्म 10:8, 9; प्रेष 19:26; 1कुर 10:19
9 हब 2:19

दूसरा कॉल.
1 1शम 5:3; यश 46:7
2 हब 2:18
3 भज 97:7; यश 44:9
4 नीत 3:5
5 व्य 33:29; भज 33:20
6 निर्ग 28:1
7 नीत 16:20
8 भज 84:11
9 उत 12:2
10 उत 13:16
11 भज 3:8
12 भज 96:5
13 यश 66:1
14 उत 1:28; भज 37:29; यश 45:18; प्रेष 17:26

115:1 *या "हमारा कुछ नहीं, हे यहोवा, हमारा कुछ नहीं।"

115:14 *शा., "बेटों।"

17 जो मर गए हैं वे याह की तारीफ
नहीं करते,[1]
न ही वे करते हैं जो मौत की
खामोशी में चले गए हैं।[2]
18 मगर हम याह की तारीफ करेंगे,
अब से लेकर हमेशा-हमेशा तक।
याह की तारीफ करो!*

116 मैं यहोवा से प्यार करता हूँ,
क्योंकि वह मेरी आवाज़
सुनता है,*
मेरी मदद की पुकार सुनता है।[3]
2 वह मेरी तरफ अपना कान
लगाता है,*[4]
जब तक मैं ज़िंदा हूँ, उसे पुकारूँगा।
3 मौत के रस्सों ने मुझे कस लिया था,
कब्र ने मुझे जकड़ लिया था।[5]
दुख और पीड़ा मुझ पर हावी हो
गयी थी।[6]
4 मगर मैंने यहोवा का नाम पुकारा:[7]
"हे यहोवा, मुझे छुड़ा ले!"
5 यहोवा करुणा से भरा और
नेक है,[8]
हमारा परमेश्वर दयालु है।[9]
6 यहोवा उनकी रक्षा करता है जिन्हें
कोई तजुरबा नहीं है।[10]
मैं दुख से बेहाल था, उसने मुझे
बचाया।
7 मेरे जी को फिर से चैन मिले,
क्योंकि यहोवा ने मुझ पर कृपा
की है।
8 तूने मुझे मौत से छुड़ाया,
मेरी आँखों में आँसू नहीं आने दिए,
मेरे पैरों को ठोकर नहीं लगने दी।[1]
9 मैं जब तक ज़िंदा हूँ,* यहोवा के
सामने चलता रहूँगा।
10 मुझे विश्वास था, तभी मैंने कहा,[2]
इसके बावजूद कि मुझे बहुत सताया
गया।
11 मैं बहुत घबरा गया था,
मैंने कहा, "हर आदमी झूठा है।"[3]
12 यहोवा ने मेरे साथ जितनी भी
भलाई की है,
उसका बदला मैं कैसे चुकाऊँगा?
13 मैं उद्धार का प्याला पीऊँगा,
यहोवा का नाम पुकारूँगा।
14 मैंने यहोवा से जो मन्नतें मानी हैं,
वे उसके सब लोगों के देखते पूरी
करूँगा।[4]
15 यहोवा की नज़र में उसके
वफादार जनों की मौत बहुत
अनमोल* है।[5]
16 हे यहोवा, मैं तुझसे गिड़गिड़ाकर
मिन्नत करता हूँ
क्योंकि मैं तेरा सेवक हूँ।
तेरा सेवक हूँ, तेरी दासी का
बेटा हूँ।
तूने मुझे बेड़ियों से आज़ाद
किया है।[6]
17 मैं तुझे धन्यवाद-बलि चढ़ाऊँगा,[7]
यहोवा का नाम पुकारूँगा।
18 मैंने यहोवा से जो मन्नतें मानी हैं,[8]
वे उसके सब लोगों के देखते पूरी
करूँगा,[9]
19 मैं यहोवा के भवन के आँगनों में,[10]
हे यरूशलेम, तेरे बीच यह सब
करूँगा।
याह की तारीफ करो!*[11]

अध्य. 115
1 भज 6:5; सभ 9:5
2 भज 31:17

अध्य. 116
3 भज 18:6
4 भज 34:15
5 यश 38:10
6 भज 18:4; भज 38:6
7 भज 34:6; रोम 10:13
8 व्य 32:4
9 निर्ग 34:6; नहे 9:17; दान 9:9
10 भज 19:7

दूसरा कॉल.
1 भज 56:13; भज 94:18
2 2कुर 4:13
3 रोम 3:4
4 भज 22:25; यो 2:9
5 1शम 25:29; अय 1:12; भज 91:14; जक 2:8; 2पत 2:9
6 भज 107:14
7 लैव 7:12; भज 50:23
8 भज 22:25; भज 76:11
9 भज 116:14
10 भज 96:8
11 प्रक 19:1

115:18; 116:19 *या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। **116:1** *या शायद, "मैं प्यार करता हूँ क्योंकि यहोवा सुनता है।" **116:2** *या "झुककर मेरी सुनता है।"

116:9 *शा., "मैं जीवितों के देश में।" **116:15** *या "गंभीर बात।"

117 सब राष्ट्रो, यहोवा की
तारीफ करो,[1]
देश-देश के लोगो,* उसकी महिमा
करो।[2]
2 क्योंकि हमारी खातिर उसका अटल
प्यार बहुत महान है[3]
यहोवा सदा तक विश्वासयोग्य
रहता है।[4]
याह की तारीफ करो!*[5]

118 यहोवा का शुक्रिया
अदा करो क्योंकि वह
भला है,[6]
उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।
2 इसराएल अब कहे,
"उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।"
3 हारून के घराने के लोग अब कहें,
"उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।"
4 यहोवा का डर माननेवाले अब कहें,
"उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।"
5 मैंने संकट में याह* को पुकारा,
याह ने मुझे जवाब दिया और एक
महफूज़# जगह ले आया।[7]
6 यहोवा मेरी तरफ है, मैं नहीं
डरूँगा।[8]
इंसान मेरा क्या कर सकता है?[9]
7 यहोवा मेरी तरफ है, मेरा मदद-
गार है,*[10]
जो मुझसे नफरत करते हैं, मैं
उनकी हार देखूँगा।[1]
8 यहोवा की पनाह लेना बेहतर है,
बजाय इसके कि इंसानों पर
भरोसा करें।[2]
9 यहोवा की पनाह लेना बेहतर है,
बजाय इसके कि हाकिमों पर
भरोसा करें।[3]
10 सब राष्ट्रों ने मुझे घेर लिया,
मगर मैंने यहोवा के नाम से सबको
भगा दिया।[4]
11 उन्होंने मुझे घेर लिया, हाँ, मैं पूरी
तरह से घिर चुका था,
मगर मैंने यहोवा के नाम से सबको
भगा दिया।
12 उन्होंने मधुमक्खियों की तरह मुझे
घेर लिया,
मगर वे जल्द मिट गए,
जैसे आग लगने पर कँटीली
झाड़ियाँ भस्म हो जाती हैं।
मैंने यहोवा के नाम से सबको भगा
दिया।[5]
13 मुझे गिराने के लिए ज़ोर का धक्का
दिया गया,*
मगर यहोवा ने मेरी मदद की।
14 याह मेरा आसरा है, मेरी ताकत है,
वह मेरा उद्धारकर्ता बन गया है।[6]
15 नेक जनों का उद्धार हुआ है,*
इसलिए उनके तंबुओं से खुशी की
जयजयकार सुनायी दे रही है।
यहोवा का दायाँ हाथ अपनी ताकत
दिखा रहा है।[7]
16 यहोवा का दायाँ हाथ ऊँचा उठा है,
यहोवा का दायाँ हाथ अपनी ताकत
दिखा रहा है।[8]

117:1 *या "कुलो।" **117:2** *या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। **118:5** *"याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। #या "खुली।" **118:7** *या शायद, "यहोवा मेरी तरफ मेरी मदद करनेवालों के साथ है।"

118:13 *या शायद, "तूने मुझे ज़ोर का धक्का दिया।" **118:15** *या "की जीत हुई है।"

अध्य. 117
1 प्रक 7:9, 10
2 रोम 15:11
3 विल 3:22
4 भज 25:10, भज 91:4, भज 100:5
5 भज 111:1

अध्य. 118
6 मत 19:17
7 भज 18:19
8 भज 27:1
9 यश 51:12, रोम 8:31, इब्र 13:6
10 मत 26:52, 53

दूसरा कॉल.
1 भज 54:7
2 भज 40:4, भज 146:3, 4, यिर्म 17:5
3 यहे 29:6, 7
4 2इत 20:15, 17
5 2इत 14:11
6 निर्ग 15:2, भज 18:2, यश 12:2
7 भज 89:13, यश 63:12
8 निर्ग 15:6, यश 40:26

17 मुझे मरना मंज़ूर नहीं, मैं जीऊँगा
ताकि याह के कामों का
ऐलान करूँ।[1]
18 याह ने मुझे कड़ी फटकार लगायी,[2]
मगर मुझे मौत के हवाले नहीं
किया।[3]
19 मेरे लिए नेकी के फाटक खोल दो,[4]
मैं उनमें दाखिल होऊँगा और याह
की तारीफ करूँगा।
20 यह यहोवा का फाटक है।
नेक जन इसमें से दाखिल होंगे।[5]
21 मैं तेरी तारीफ करूँगा क्योंकि तूने
मुझे जवाब दिया[6]
और तू मेरा उद्धारकर्ता बन गया।
22 जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने
ठुकरा दिया,
वही कोने का मुख्य पत्थर बन
गया है।[7]
23 यह यहोवा की तरफ से हुआ है[8]
और हमारी नज़र में लाजवाब है।[9]
24 यह यहोवा का ठहराया हुआ
दिन है,
इसके कारण हम खुशियाँ मनाएँगे,
आनंद-मगन होंगे।
25 हे यहोवा, हमें बचा ले, हमारा गिड़-
गिड़ाना सुन ले!
हे यहोवा, हमें जीत दिला, हमारी
बिनती सुन ले!
26 धन्य है वह जो यहोवा के नाम से
आता है।[10]
हम यहोवा के भवन से तुम लोगों
को आशीर्वाद देते हैं।
27 यहोवा परमेश्वर है,
वह हमें रौशनी देता है।[11]
हाथों में डालियाँ लिए
त्योहार के जुलूस में शामिल
हो जाओ,[12]
वेदी के सींगों[1] तक चलो।
28 तू मेरा परमेश्वर है, मैं तेरी
तारीफ करूँगा,
मेरे परमेश्वर, मैं तेरी बड़ाई
करूँगा।[2]
29 यहोवा का शुक्रिया अदा करो[3]
क्योंकि वह भला है,
उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।[4]

א [*आलेफ*]

119 सुखी हैं वे जो निर्दोष चाल
चलते हैं,
जो यहोवा के कानून पर
चलते हैं।[5]
2 सुखी हैं वे जो उसके याद दिलाने
पर हिदायतें मानते हैं,[6]
जो पूरे दिल से उसकी खोज
करते हैं।[7]
3 वे कोई भी बुरा काम करने की
आदत नहीं बनाते,
वे उसकी राहों पर चलते हैं।[8]
4 तूने आज्ञा दी है कि तेरे आदेश
सख्ती से माने जाएँ।[9]
5 मैं यही चाहता हूँ कि मैं अटल
बना रहूँ*[10]
ताकि तेरी विधियों का पालन
करता रहूँ!
6 फिर मैं तेरी सभी आज्ञाओं पर
गौर करूँगा
और शर्मिंदा नहीं किया
जाऊँगा।[11]
7 जब मैं तेरे नेक फैसलों के बारे में
सीखूँगा,
तो मैं सीधे-सच्चे मन से तेरी
तारीफ करूँगा।

अध्य. 118
1 भज 6:5; भज 71:17
2 भज 66:10; भज 94:12
3 भज 16:10
4 यश 26:2; प्रक 22:14
5 भज 24:3, 4
6 भज 116:1
7 यश 28:16; लूक 20:17; प्रेष 4:11; 1कुर 3:11; इफ 2:19, 20; 1पत 2:4-7
8 प्रेष 5:31
9 मर 12:10, 11
10 मत 21:7-9; मत 23:39; मर 11:7-10; लूक 19:37, 38
11 भज 18:28; 1पत 2:9
12 लैव 23:34; भज 42:4

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 27:2
2 निर्ग 15:2; यश 25:1
3 भज 50:23
4 एज 3:11; भज 118:1

अध्य. 119
5 2रा 20:3; याकू 1:25
6 भज 19:7
7 2इत 31:20, 21
8 यश 38:3
9 व्य 5:33; यिर्म 7:23; याकू 2:10
10 भज 51:10
11 भज 119:80

119:5 *शा., "काश! मेरी राहें मज़बूती से कायम होतीं।"

8 मैं तेरे नियमों को मानूँगा।
तू मुझे कभी पूरी तरह छोड़ न
देना।

ב [*बेथ*]

9 एक जवान कैसे साफ-सुथरी
ज़िंदगी बिता सकता है?
तेरे वचन के मुताबिक सावधानी
बरतकर।[1]
10 मैं पूरे दिल से तेरी खोज
करता हूँ।
तू मुझे अपनी आज्ञाओं से भटकने
न देना।[2]
11 मैं तेरी बातें दिल में संजोए
रखता हूँ[3]
ताकि तेरे खिलाफ पाप न करूँ।[4]
12 हे यहोवा, तेरी तारीफ होती रहे,
तू मुझे अपने नियम सिखा।
13 मैं अपने होंठों से तेरे सुनाए सभी
फैसलों का ऐलान करता हूँ।
14 तू जो हिदायतें याद दिलाता है
उनसे मुझे खुशी मिलती है,[5]
कीमती-से-कीमती चीज़ों से बढ़कर
खुशी मिलती है।[6]
15 मैं तेरे आदेशों के बारे में गहराई
से सोचूँगा*[7]
और तेरी राहों का ध्यान रखूँगा।[8]
16 मैं तेरी विधियों से लगाव
रखता हूँ।
मैं तेरा वचन नहीं भूलूँगा।[9]

ג [*गिमेल*]

17 अपने सेवक के साथ भलाई कर
ताकि मैं जीता रहूँ और तेरे वचन
का पालन करूँ।[10]
18 मेरी आँखें खोल दे
ताकि मैं तेरे कानून की लाजवाब
बातें साफ देख सकूँ।
19 मैं देश में बस एक परदेसी हूँ।[11]

119:15 *या "का अध्ययन करूँगा।"

अध्य. 119
1 नीत 6:20, 22
2 भज 25:5
3 भज 112:1
4 भज 19:13; भज 37:31
5 यिर्म 15:16
6 भज 19:8, 10; भज 119:72
7 भज 119:93; भज 119:100
8 भज 25:10
9 याकू 1:23-25
10 यश 38:20
11 1इत 29:15

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:15
2 भज 119:14; भज 119:168
3 व्य 17:18-20; भज 119:105; 2ती 3:16, 17
4 भज 22:15
5 भज 119:154; भज 143:11
6 भज 86:11
7 भज 145:5

मुझसे अपनी आज्ञाएँ न छिपा।
20 मैं तेरे न्याय-सिद्धांतों के लिए हर
वक्त तरसता हूँ,
मेरे अंदर यह धुन समायी
रहती है।
21 तू गुस्ताखों को डाँट लगाता है,
उन शापित लोगों को, जो तेरी
आज्ञाओं से भटक जाते हैं।[1]
22 मेरी बदनामी और मेरा अपमान
दूर कर दे,
क्योंकि मैंने वे हिदायतें मानी हैं जो
तू याद दिलाता है।
23 जब हाकिम साथ बैठकर मेरे
खिलाफ बोलते हैं,
तब भी तेरा यह सेवक तेरे
नियमों के बारे में गहराई से
सोचता है।*
24 तू जो हिदायतें याद दिलाता है
उनसे मैं लगाव रखता हूँ,[2]
ये मेरे लिए सलाहकार हैं।[3]

ד [*दालथ*]

25 मैं धूल में पड़ा हूँ।[4]
अपने वचन के मुताबिक मेरी जान
की हिफाज़त कर।[5]
26 मैंने अपने सभी कामों के बारे
में तुझे बताया और तूने मुझे
जवाब दिया,
तू मुझे अपने नियम सिखा।[6]
27 मुझे अपने आदेशों का मतलब*
समझा
ताकि मैं तेरे आश्चर्य के कामों के
बारे में गहराई से सोचूँ।#[7]
28 दुख के मारे मेरी नींद उड़ गयी है।
अपने वचन के मुताबिक मुझे मज़-
बूत कर।

119:23 *या "का अध्ययन करता है।"
119:27 *शा., "मार्ग।" #या "का अध्ययन करूँ।"

29 छल-कपट के रास्ते से मुझे
दूर रख[1]
और अपना कानून देकर मुझ पर
कृपा कर।
30 मैंने वफादारी की राह चुनी है।[2]
मैं यह बात समझता हूँ कि तेरे
फैसले सही हैं।
31 तू जो हिदायतें याद दिलाता है
उनसे मैं लिपटा रहता हूँ।[3]
हे यहोवा, मुझे निराश[*] न
होने दे।[4]
32 मैं तेरी आज्ञाओं की राह पर पूरे
जोश से चलूँगा,[*]
क्योंकि तूने मेरे दिल में उसके
लिए जगह बनायी है।[#]

ה [*हे*]

33 हे यहोवा, तू अपने नियमों की
राह मुझे सिखा,[5]
मैं अंत तक उस राह पर चलता
रहूँगा।[6]
34 मुझे समझ दे ताकि मैं तेरे कानून
का पालन करूँ
और पूरे दिल से उस पर
चलता रहूँ।
35 अपनी आज्ञाओं की डगर पर मुझे
ले चल,[7]
क्योंकि मुझे उससे खुशी
मिलती है।
36 तू जो हिदायतें याद दिलाता है
उनकी तरफ मेरे मन को झुका,
इसे बेईमानी की कमाई[*] की तरफ
झुकने न दे।[8]
37 मेरी आँखों को बेकार की चीज़ों से
फेर दे,[9]
मुझे अपनी राह पर ले चल ताकि
मेरी जान की हिफाज़त हो।
38 तू अपने सेवक से किया वादा
निभा[*]
ताकि तेरा डर माना जाए।[#]
39 मेरी बदनामी दूर कर जिससे मैं
डरता हूँ,
क्योंकि तेरे फैसले सही हैं।[1]
40 देख, मैं तेरे आदेशों के लिए
कितना तरसता हूँ।
अपनी नेकी की वजह से मेरी जान
की हिफाज़त कर।

ו [*वाव*]

41 हे यहोवा, तू अपने वादे के[*]
मुताबिक
मुझसे प्यार[#] करे,[2] मेरा
उद्धार करे,
42 तब मैं उसे जवाब दूँगा जो मुझ पर
ताना कसता है,
क्योंकि मैं तेरे वचन पर भरोसा
रखता हूँ।
43 मेरे मुँह से सच्चाई का वचन पूरी
तरह हटा न देना,
क्योंकि मैं तेरे फैसलों की आस
लगाता हूँ।[*]
44 मैं हमेशा तेरे कानून का पालन
करूँगा,
सदा तक उसे मानूँगा।[3]
45 मैं एक महफूज़[*] जगह चला-फिरा
करूँगा,[4]
क्योंकि मैं तेरे आदेशों की खोज
करता हूँ।

119:31 [*]या "शर्मिंदा।" **119:32** [*]शा., "पर दौड़ूँगा।" [#]या शायद, "तू मेरे दिल को भरोसा दिलाएगा।" **119:36** [*]या "मुनाफे।"

119:38 [*]या "तू अपनी कही बात पूरी कर।" [#]या शायद, "जो तेरा डर माननेवालों से किया जाता है।" **119:41** [*]या "अपने कहे।" [#]या "अटल प्यार।" **119:43** [*]या "का इंतज़ार करता हूँ।" **119:45** [*]या "खुली।"

अध्य. 119
1 भज 141:4; नीत 30:8
2 यह 24:15
3 भज 19:7
4 भज 25:20; भज 119:80
5 यश 48:17; यूह 6:45; याकू 1:5
6 भज 119:112
7 भज 23:3
8 लूक 12:15; 1ती 6:10; इब्र 13:5
9 गि 15:39; नीत 4:25; नीत 23:4, 5

दूसरा कॉल.
1 भज 19:9; भज 119:75
2 भज 51:1; भज 90:14; भज 119:76
3 भज 119:33
4 भज 118:5

46 तू जो हिदायतें याद दिलाता है, वे
मैं राजाओं के सामने बताऊँगा
और शर्मिंदा महसूस नहीं
करूँगा।[1]
47 मैं तेरी आज्ञाओं से लगाव
रखता हूँ,
हाँ, मैं उनसे प्यार करता हूँ।[2]
48 मैं हाथ उठाकर तुझसे प्रार्थना
करूँगा,
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं से प्यार
करता हूँ[3]
और मैं तेरे नियमों के बारे में गह-
राई से सोचूँगा।*[4]

ז [जैन]

49 अपने सेवक से किया वादा
याद कर,
जिसके ज़रिए तू मुझे आशा
देता है।*
50 दुख-तकलीफों में यही मुझे
दिलासा देता है,[5]
क्योंकि तेरी बातों ने मेरी जान की
हिफाज़त की है।
51 गुस्ताख लोग बढ़-चढ़कर मेरी
खिल्ली उड़ाते हैं,
मगर मैं तेरे कानून की राह से दूर
नहीं जाता।[6]
52 हे यहोवा, मैं अतीत के तेरे फैसले
याद करता हूँ[7]
और उनसे दिलासा पाता हूँ।[8]
53 मैं गुस्से की आग से धधक रहा हूँ,
उन दुष्टों की वजह से जो तेरा
कानून मानना छोड़ देते हैं।[9]
54 मैं जहाँ कहीं रहूँ,* तेरी विधियाँ
मेरे लिए गीत हैं।
55 हे यहोवा, रात के वक्त मैं तेरा
नाम याद करता हूँ[1]
ताकि तेरे कानून पर चलता रहूँ।
56 यह हमेशा से मेरी आदत रही है,
क्योंकि मैंने तेरे आदेशों का पालन
किया है।

ח [हेथ]

57 यहोवा मेरा भाग है,[2]
मैंने तेरे वचनों को मानने का वादा
किया है।[3]
58 मैं पूरे दिल से तुझसे फरियाद
करता हूँ,[4]
अपने वादे के* मुताबिक मुझ पर
कृपा कर।[5]
59 मैंने अपने तौर-तरीकों को
जाँचा है
ताकि तू जो हिदायतें याद दिलाता
है उन्हें दोबारा मानूँ।[6]
60 मैं तेरी आज्ञाएँ फुर्ती से मानता हूँ,
देर नहीं करता।[7]
61 दुष्ट के रस्से मुझे जकड़ लेते हैं,
मगर मैं तेरा कानून नहीं भूलता।[8]
62 मैं तेरे नेक फैसलों के लिए
आधी रात को उठकर तेरा
शुक्रिया अदा करता हूँ।[9]
63 मैं उन सबका दोस्त हूँ जो तेरा डर
मानते हैं,
जो तेरे आदेशों का पालन
करते हैं।[10]
64 हे यहोवा, तेरे अटल प्यार से
धरती भर गयी है,[11]
तू मुझे अपने नियम सिखा।

ט [टेथ]

65 हे यहोवा, तूने अपने वचन के
मुताबिक
अपने सेवक के साथ भलाई
की है।

119:48 *या "का अध्ययन करूँगा।" **119:49** *या "जिसके लिए तूने मुझे इंतज़ार करवाया।" **119:54** *या "उस घर में, जहाँ मैं एक परदेसी की तरह रहता हूँ।"

119:58 *या "अपने कहे।"

अध्य. 119
1 रोम 1:16
2 अय 23:12; भज 119:174; रोम 7:22
3 भज 119:127
4 भज 119:23; भज 119:71
5 भज 94:19; रोम 15:4
6 भज 119:157
7 गि 16:5; व्य 1:35, 36; व्य 4:3
8 रोम 15:4
9 भज 119:158; भज 139:21; नीत 28:4

दूसरा कॉल.
1 भज 63:6; यश 26:9
2 भज 16:5
3 निर्ग 19:8
4 भज 51:17
5 भज 57:1
6 भज 119:101; इफ 5:15
7 2इत 29:1, 3
8 1शम 26:8, 9; 2इत 29:1, 2
9 भज 42:8
10 नीत 13:20
11 भज 33:5; भज 104:13

66 मुझे समझदारी से काम लेना और
ज्ञान की बातें सिखा,[1]
क्योंकि मैंने तेरी आज्ञाओं पर
भरोसा रखा है।
67 सताए जाने से पहले मैं भटक
जाया करता था,*
मगर अब मैं तेरी बातें
मानता हूँ।[2]
68 तू भला है,[3] तेरे काम भले हैं।
तू मुझे अपने नियम सिखा।[4]
69 गुस्ताख लोग झूठे इलज़ाम लगा-
कर मुझे बदनाम करते हैं,
मगर मैं पूरे दिल से तेरे आदेशों
का पालन करता हूँ।
70 उनका दिल कठोर है,*[5]
मगर मैं तेरे कानून से लगाव
रखता हूँ।[6]
71 मुझे जो दुख दिया गया वह मेरे
अच्छे के लिए ही था,[7]
इसलिए मैं तेरे नियम सीख पाया।
72 तेरा सुनाया हुआ कानून मेरे लिए
अच्छा है,[8]
सोने-चाँदी के हज़ारों टुकड़ों से
कहीं बढ़कर है।[9]

י [*योध*]

73 तेरे हाथों ने मुझे बनाया, मेरी
रचना की,
मुझे समझ दे ताकि मैं तेरी आज्ञाएँ
सीखूँ।[10]
74 तेरा डर माननेवाले मुझे देखते हैं
और मगन होते हैं,
क्योंकि तेरा वचन मेरी
आशा है।*[11]
75 हे यहोवा, मैं जानता हूँ कि तेरे
फैसले सही हैं[1]
और तूने अपनी वफादारी की
वजह से मुझे दुख दिया है।[2]
76 तू अपने अटल प्यार[3] से मुझे
दिलासा दे,
ठीक जैसे तूने अपने सेवक से
वादा किया है।*
77 मुझ पर दया कर ताकि मैं
जीता रहूँ,[4]
क्योंकि मैं तेरे कानून से लगाव
रखता हूँ।[5]
78 गुस्ताख लोग शर्मिंदा किए जाएँ,
क्योंकि वे बेवजह* मेरे साथ बुरा
करते हैं।
मगर मैं तेरे आदेशों के बारे में
गहराई से सोचूँगा।#[6]
79 जो तेरा डर मानते हैं
और उन हिदायतों को जानते हैं
जो तू याद दिलाता है,
वे मेरे पास लौट आएँ।
80 तेरे नियम मानने में मेरा दिल
निर्दोष पाया जाए[7]
ताकि मैं शर्मिंदा न किया जाऊँ।[8]

כ [*काफ*]

81 तेरी तरफ से मिलनेवाले उद्धार के
लिए मैं तरस रहा हूँ,[9]
क्योंकि तेरा वचन मेरी
आशा है।*
82 मेरी आँखें तेरी बातों के लिए
तरसती हैं[10]
और मैं कहता हूँ, "तू मुझे कब
दिलासा देगा?"[11]
83 मैं धुएँ में सिकुड़ी मशक जैसा हो
गया हूँ,

119:67 *या "मैं अनजाने में पाप करता था।" **119:70** *शा., "चरबी की तरह मोटा हो गया है।" **119:74, 81** *या "मैं तेरे वचन का इंतज़ार करता हूँ।"

119:76 *या "कहा है।" **119:78** *या शायद, "झूठ बोलकर।" #या "का अध्ययन करूँगा।"

अध्य. 119
1 1रा 3:9; भज 94:10; दान 2:21; फिल 1:9
2 भज 119:11
3 भज 86:5; मर 10:18
4 यश 48:17
5 यश 6:10
6 भज 40:8; रोम 7:22
7 1कुर 11:32; इब्र 12:9-11
8 व्य 17:18, 19
9 भज 19:7, 10; नीत 3:13-15
10 1इत 22:12; अय 32:8
11 भज 119:147

दूसरा कॉल.
1 भज 119:160
2 व्य 32:4; इब्र 12:11
3 निर्ग 34:6; भज 86:5
4 भज 51:1; भज 103:13; भज 119:116; दान 9:18; लूक 1:50
5 रोम 7:22
6 भज 119:45
7 1रा 8:58
8 भज 119:5, 6; 1यूह 2:28
9 मी 7:7
10 भज 69:3
11 भज 86:17; भज 102:2

फिर भी मैं तेरे नियम नहीं
भूलता।[1]
84 तेरे सेवक को और कितने दिन
इंतज़ार करना होगा?
मेरे सतानेवालों को तू कब सज़ा
देगा?[2]
85 गुस्ताख लोग, जो तेरे कानून को
तुच्छ समझते हैं,
मेरे लिए गड्ढे खोदते हैं।
86 तेरी सारी आज्ञाएँ भरोसेमंद हैं।
लोग बेवजह मुझे सताते हैं, मेरी
मदद कर![3]
87 उन्होंने मुझे धरती से मानो मिटा
ही दिया,
मगर मैंने तेरे आदेश नहीं छोड़े।
88 अपने अटल प्यार की वजह से
मेरी जान की हिफाज़त कर
ताकि तू जो हिदायतें याद दिलाता
है उन्हें मैं मानूँ।

ל [*लामेध*]

89 हे यहोवा, तेरा वचन सदा तक
स्वर्ग में कायम रहेगा।[4]
90 तू पीढ़ी-पीढ़ी तक विश्वासयोग्य
बना रहेगा।[5]
तूने धरती को मज़बूती से कायम
किया है, इसलिए यह अब तक
टिकी है।[6]
91 वे* तेरे न्याय-सिद्धांतों की वजह
से आज तक बने हैं,
क्योंकि वे सब तेरे सेवक हैं।
92 अगर मुझे तेरे कानून से लगाव न
होता,
तो मैं दुख झेलते-झेलते मिट चुका
होता।[7]
93 मैं तेरे आदेश कभी नहीं भूलूँगा,
क्योंकि उनके ज़रिए तूने मेरी जान
की हिफाज़त की है।[1]
94 मैं तेरा हूँ, मुझे बचा ले,[2]
क्योंकि मैंने तेरे आदेशों की खोज
की है।[3]
95 दुष्ट मुझे नाश करने की ताक में
रहते हैं,
मगर मैं उन हिदायतों पर
पूरा ध्यान देता हूँ जो तू याद
दिलाता है।
96 मैंने सब खरी* बातों की एक
सीमा देखी है,
मगर तेरी आज्ञा की कोई सीमा
नहीं।#

מ [*मेम*]

97 मैं तेरे कानून से कितना प्यार
करता हूँ![4]
सारा दिन उस पर गहराई से
सोचता हूँ।*[5]
98 तेरी आज्ञा मुझे मेरे दुश्मनों से
ज़्यादा बुद्धिमान बनाती है,[6]
क्योंकि यह हमेशा मेरे साथ
रहती है।
99 जितने लोग मुझे सिखाते हैं, उन
सबसे ज़्यादा अंदरूनी समझ
मुझमें है,[7]
क्योंकि तू जो हिदायतें याद
दिलाता है उनके बारे में मैं गह-
राई से सोचता हूँ।*
100 मैं बुज़ुर्गों से ज़्यादा समझ से काम
लेता हूँ,
क्योंकि मैं तेरे आदेशों का पालन
करता हूँ।

119:91 *यानी उसकी सृष्टि के सारे काम।

119:96 *या "परिपूर्ण।" #शा., "बहुत चौड़ी है।" **119:97** *या "उसका अध्ययन करता हूँ।" **119:99** *या "उनका मैं अध्ययन करता हूँ।"

अध्य. 119
1 भज 119:61, भज 119:176
2 भज 7:6, प्रक 6:9, 10
3 भज 142:6
4 भज 89:2, भज 119:152
5 व्य 7:9
6 भज 104:5, सभ 1:4
7 नीत 6:23, मत 4:4

दूसरा कॉल.
1 लैव 18:5, व्य 30:16, यूह 6:63, रोम 10:5
2 भज 86:2, यश 41:10
3 भज 119:15
4 भज 40:8
5 भज 1:2
6 भज 19:7, नीत 2:6, नीत 10:8
7 मत 11:25, लूक 2:46, 47

101 मैं किसी भी बुरे रास्ते पर चलने से
इनकार करता हूँ[1]
ताकि मैं तेरे वचन पर चलता रहूँ।
102 मैं तेरे न्याय-सिद्धांतों से हटकर
दूर नहीं जाता,
क्योंकि तूने मुझे सिखाया है।
103 तेरी बातें मेरी जीभ को मीठी
लगती हैं,
मेरे मुँह को शहद से भी मीठी
लगती हैं![2]
104 तेरे आदेशों की वजह से मैं समझ
से काम लेता हूँ।[3]
इसीलिए मैं हर झूठी राह से नफ-
रत करता हूँ।[4]

נ [नून]

105 तेरा वचन मेरे पाँव के लिए एक
दीपक है,
मेरी राह के लिए रौशनी है।[5]
106 मैंने शपथ खाकर वादा किया है
कि तेरे नेक फैसलों को मानूँगा
और मैं इसे ज़रूर पूरा करूँगा।
107 मुझे बहुत दुख दिया गया है।[6]
हे यहोवा, अपने वचन के
मुताबिक मेरी जान की
हिफाज़त कर।[7]
108 हे यहोवा, तुझसे बिनती है
कि तू तारीफ की मेरी स्वेच्छा-
बलियों* से खुश हो[8]
और मुझे अपने न्याय-सिद्धांत
सिखा।[9]
109 मेरी ज़िंदगी हर पल खतरे में है,
फिर भी मैं तेरा कानून नहीं
भूला हूँ।[10]
110 दुष्टों ने मेरे लिए फंदा बिछाया है,
मगर मैं तेरे आदेशों से नहीं
भटका हूँ।[1]
111 तू जो हिदायतें याद दिलाता है,
उन्हें मैं हमेशा की जागीर*
मानता हूँ,
क्योंकि इनसे मेरे दिल को खुशी
मिलती है।[2]
112 मैंने ठान लिया है,*
मैं सारी ज़िंदगी तेरे नियम मानूँगा,
आखिरी साँस तक मानता रहूँगा।

ס [सामेख]

113 मैं आधे-अधूरे मनवालों से* नफ-
रत करता हूँ,[3]
मगर मैं तेरे कानून से प्यार
करता हूँ।[4]
114 तू मेरा आसरा है, मेरी ढाल है,[5]
क्योंकि तेरा वचन मेरी
आशा है।*[6]
115 बुरे लोगो, मुझसे दूर रहो[7]
ताकि मैं अपने परमेश्वर की
आज्ञाएँ मानूँ।
116 तू अपने वादे के* मुताबिक मुझे
सहारा दे[8]
ताकि मैं जीता रहूँ।
मेरी आशा को निराशा में न
बदलने दे।#[9]
117 मुझे सहारा दे ताकि मैं बच
जाऊँ,[10]
तब मैं तेरे नियमों पर हमेशा ध्यान
करूँगा।[11]

119:108 *शा., "मेरे मुँह की स्वेच्छा-बलियों।"

119:111 *या "सदा की विरासत।" **119:112** *शा., "अपना मन झुकाया है।" **119:113** *या "जिन आदमियों का दिल बँटा हुआ है उनसे मैं।" **119:114** *या "मैं तेरे वचन का इंतज़ार करता हूँ।" **119:116** *या "अपने कहे।" #या "शर्मिंदा न होने दे।"

अध्य. 119
1 भज 18:23, भज 119:59
2 भज 19:7, 10, नीत 24:13, 14
3 भज 119:100
4 भज 97:10, भज 101:3, नीत 8:13, नीत 13:5, रोम 12:9
5 भज 43:3, नीत 6:23, यश 51:4, रोम 15:4, 2ती 3:16, 17, 2पत 1:19
6 भज 34:19
7 भज 119:88, भज 143:11
8 भज 50:23, हो 14:2, इब्र 13:15
9 व्य 33:10, यश 48:17
10 भज 119:61

दूसरा कॉल.
1 भज 119:87
2 भज 19:8, भज 119:129, यिर्म 15:16
3 1रा 18:21, प्रक 3:16
4 भज 40:8, भज 119:97
5 भज 32:7, भज 91:2
6 भज 130:5
7 भज 26:5
8 यश 41:10
9 भज 25:2, रोम 10:11
10 यश 41:13
11 यह 1:8, भज 119:48

118 तू उन सबको ठुकरा देता है जो
तेरे नियमों से भटक जाते हैं,[1]
क्योंकि वे झूठे हैं, धोखेबाज़ हैं।
119 तू धरती के सब दुष्टों को निकाल
फेंकता है,
मानो वे धातु-मल हों जो किसी
काम का नहीं होता,[2]
इसलिए तू जो हिदायतें
याद दिलाता है उनसे मैं प्यार
करता हूँ।
120 तेरे खौफ से मेरा शरीर काँप
उठता है,
तेरे फैसलों से मैं डरता हूँ।

ע [ऐयिन]

121 मैंने न्याय और नेकी की है।
मुझे उनके हवाले न कर जो मुझ
पर ज़ुल्म ढाते हैं!
122 अपने सेवक को सलामती का
यकीन दिला,
गुस्ताख लोगों को मुझ पर ज़ुल्म
ढाने न दे।
123 तेरी तरफ से मिलनेवाले उद्धार
और तेरे नेक वादे* के लिए
आस लगाते-लगाते
मेरी आँखें थक गयी हैं।[3]
124 अपने सेवक को अपने अटल
प्यार का सबूत दे,[4]
तू मुझे अपने नियम सिखा।[5]
125 मैं तेरा सेवक हूँ, मुझे समझ दे[6]
ताकि उन हिदायतों को जान सकूँ
जो तू याद दिलाता है।
126 यहोवा के कार्रवाई करने का समय
आ गया है,[7]
क्योंकि उन्होंने तेरा कानून
तोड़ा है।
127 इसीलिए मैं तेरी आज्ञाओं से प्यार
करता हूँ,
सोने से ज़्यादा, हाँ, शुद्ध* सोने से
भी ज़्यादा प्यार करता हूँ।[1]
128 इसलिए मैं तेरी हर हिदायत* को
सही मानता हूँ,[2]
हर झूठी राह से नफरत
करता हूँ।[3]

פ [पे]

129 तू जो हिदायतें याद दिलाता है वे
लाजवाब हैं।
इसीलिए मैं उनका पालन
करता हूँ।
130 तेरे वचनों के खुलने से रौशनी
मिलती है,[4]
जिन्हें तजुरबा नहीं उन्हें समझ
मिलती है।[5]
131 मैं मुँह खोलकर आह भरता* हूँ,
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के लिए
तरसता हूँ।[6]
132 तेरे नाम से प्यार करनेवालों के
साथ जिस तरह पेश आना तेरा
नियम है,
उसके मुताबिक मेरी तरफ मुड़,
मुझ पर कृपा कर।[7]
133 तू अपनी कही बात के मुताबिक
मेरे कदमों को राह दिखा,*
किसी भी तरह की दुष्टता को
मुझ पर अधिकार न करने दे।[8]
134 ज़ुल्म करनेवालों से मुझे छुड़ा ले,
तब मैं तेरे आदेशों पर चलता
रहूँगा।
135 तू अपने सेवक पर अपने मुख का
प्रकाश चमका*[9]
और मुझे अपने नियम सिखा।

119:123 *या "तेरी कही नेक बात।"

119:127 *या "ताए हुए।" 119:128 *या "तेरे हर आदेश।" 119:131 *शा., "हाँफता।" 119:133 *या "दृढ़ कर।" 119:135 *या "को देखकर मुस्कुरा।"

अध्य. 119
1 1इत 28:9; भज 95:10
2 नीत 2:22; नीत 25:4, 5; यहे 22:18
3 भज 69:3; भज 119:81; भज 143:7
4 भज 69:16
5 भज 143:10
6 भज 119:34; 2ती 2:7; याकू 1:5
7 भज 9:19; यिर्म 18:23

दूसरा कॉल.
1 भज 19:9, 10; भज 119:72; नीत 3:13, 14
2 भज 19:8
3 भज 119:104
4 भज 119:105; नीत 6:23; 2कुर 4:6; 2पत 1:19
5 भज 19:7; नीत 1:1, 4; 2ती 3:15
6 भज 42:1; 1पत 2:2
7 1शम 1:10, 11; 2शम 16:11, 12; यश 38:9, 20; इब्र 6:10
8 भज 19:13; रोम 6:12
9 गि 6:25; भज 4:6

136 मेरी आँखों से आँसुओं की धारा
बहती है,
क्योंकि लोग तेरा कानून नहीं
मानते।[1]

צ [सादे]

137 हे यहोवा, तू नेक है[2]
और तेरे फैसले सही होते हैं।[3]
138 तू जो हिदायतें याद दिलाता है वे
नेक हैं,
पूरी तरह भरोसेमंद हैं।
139 मेरे जोश की आग मुझे भस्म कर
देती है,[4]
क्योंकि मेरे बैरी तेरे वचन भूल
गए हैं।
140 तेरी बातें पूरी तरह शुद्ध हैं[5]
और तेरा सेवक उनसे प्यार
करता है।[6]
141 मैं न के बराबर हूँ, तुच्छ हूँ,[7]
फिर भी मैं तेरे आदेश नहीं
भूला हूँ।
142 तेरी नेकी सदा की है[8]
और तेरा कानून सच्चा है।[9]
143 मुसीबतों और मुश्किलों के दौर
में भी
मैं तेरी आज्ञाओं से लगाव
रखता हूँ।
144 तू जो हिदायतें याद दिलाता है वे
सदा नेक होती हैं।
मुझे समझ दे[10] ताकि मैं
जीता रहूँ।

ק [कोफ]

145 हे यहोवा, मैं पूरे दिल से तुझे
पुकारता हूँ, मुझे जवाब दे।
मैं तेरे नियमों का पालन करूँगा।
146 मैं तुझे पुकारता हूँ, मुझे बचा ले!
तू जो हिदायतें याद दिलाता है
उन्हें मैं मानूँगा।

अध्य. 119
1 यहे 9:4
2पत 2:7, 8
2 व्य 32:4
3 प्रक 16:5, 7
4 2रा 10:16
भज 69:9
यूह 2:17
5 भज 12:6
भज 119:160
6 भज 119:97
7 भज 22:6, 7
8 भज 36:6
9 निर्ग 34:6
भज 119:160
यूह 17:17
10 भज 119:34

दूसरा कॉल.
1 भज 5:3
भज 88:13
मर 1:35
2 भज 63:6
लूक 6:12
3 भज 51:1
यश 63:7
4 व्य 4:7
भज 46:1
भज 145:18
5 भज 19:9
यूह 17:17
6 भज 119:144
सभ 3:14
7 भज 9:13
8 1शम 24:15
भज 43:1

147 मैं भोर से पहले ही* जाग गया
ताकि मदद के लिए पुकारूँ,[1]
क्योंकि तेरे वचन मेरी आशा हैं।#
148 रात के पहरों से पहले मेरी आँखें
खुल जाती हैं
ताकि मैं तेरी बातों के बारे में गह-
राई से सोचूँ।*[2]
149 अपने अटल प्यार की वजह से
मेरी आवाज़ सुन।[3]
हे यहोवा, अपने न्याय के
मुताबिक मेरी जान की हिफा-
ज़त कर।
150 जो शर्मनाक* काम करते हैं वे
मेरे पास आते हैं,
वे तेरे कानून से कोसों दूर हैं।
151 हे यहोवा, तू मेरे करीब है[4]
और तेरी सारी आज्ञाएँ
सच्ची हैं।[5]
152 तू जो हिदायतें याद दिलाता है
उनके बारे में मैंने बहुत पहले
सीखा था,
जिन्हें तूने इसलिए कायम किया
कि वे सदा बनी रहें।[6]

ר [रेश]

153 मेरी तकलीफों पर नज़र कर और
मुझे छुड़ा ले,[7]
क्योंकि मैं तेरा कानून नहीं
भूला हूँ।
154 मेरी पैरवी कर* और मुझे
छुड़ा ले,[8]
अपने वादे के# मुताबिक मेरी
जान की हिफाज़त कर।

119:147 *या "सुबह के झुटपुटे के समय।" #या "मैं तेरे वचनों का इंतज़ार करता हूँ।" **119:148** *या "का अध्ययन करूँ।" **119:150** *या "अश्लील।" **119:154** *या "मेरा मुकदमा लड़।" #या "अपने कहे।"

155 उद्धार दुष्टों से कोसों दूर है,
क्योंकि उन्होंने तेरे नियमों की
खोज नहीं की।[1]
156 हे यहोवा, तू बड़ा दयालु है।[2]
अपने न्याय के मुताबिक मेरी जान
की हिफाज़त कर।
157 मेरे सतानेवाले और मेरे बैरी बे-
हिसाब हैं,[3]
फिर भी मैं उन हिदायतों से नहीं
भटका जो तू याद दिलाता है।
158 विश्‍वासघाती लोगों को देखकर
मुझे घिन आती है,
क्योंकि वे तेरी बातों पर नहीं
चलते।[4]
159 देख, मैं तेरे आदेशों से कितना
प्यार करता हूँ!
हे यहोवा, अपने अटल प्यार की
वजह से मेरी जान की हिफा-
ज़त कर।[5]
160 तेरे वचन का निचोड़ ही
सच्चाई है[6]
और तेरे सभी नेक फैसले सदा
तक कायम रहेंगे।

ש [*सीन*] या [*शीन*]

161 हाकिम बेवजह मुझे सताते हैं,[7]
मगर मेरे दिल में तेरे वचनों के
लिए श्रद्धा है।[8]
162 मैं तेरी बातों पर ऐसे मगन
होता हूँ,[9]
जैसे कोई लूट का ढेर सारा माल
पाकर मगन होता है।
163 मैं झूठ से नफरत करता हूँ, घिन
करता हूँ,[10]
मगर तेरे कानून से प्यार
करता हूँ।[11]
164 तेरे नेक फैसलों की वजह से
मैं दिन में सात बार तेरी तारीफ
करता हूँ।

अध्या. 119
1 2रा 17:15, 18; भज 73:27; नीत 15:29
2 1इत 21:13; भज 86:15; यश 55:7; 2कुर 1:3; याकू 5:11
3 भज 25:19
4 भज 139:21
5 भज 119:40, 88; विल 3:22
6 2शम 7:28; भज 12:6; यूह 17:17
7 भज 119:23
8 2रा 22:19
9 यिर्म 15:16
10 भज 101:7; भज 119:29, 104
11 भज 1:2

दूसरा कॉल.
1 भज 1:2, 3; नीत 3:1, 2; यश 32:17; यश 48:18
2 भज 1:2; भज 40:8; रोम 7:22
3 भज 139:3; नीत 5:21; नीत 15:11; इब्र 4:13
4 भज 18:6
5 1इत 22:12; नीत 2:3, 5
6 भज 63:5; भज 71:17; भज 145:7
7 भज 40:9
8 भज 60:5
9 व्य 30:19; यह 24:15, 22

165 भरपूर शांति उन्हें मिलती है जो
तेरे कानून से प्यार करते हैं,[1]
कोई भी बात उन्हें ठोकर नहीं
खिला सकती।*
166 हे यहोवा, मैं उद्धार पाने की आशा
तुझसे रखता हूँ
और तेरी आज्ञाओं का पालन
करता हूँ।
167 तू जो हिदायतें याद दिलाता है
उन्हें मैं मानता हूँ,
दिलो-जान से प्यार करता हूँ।[2]
168 तू जो आदेश देता है और जो
हिदायतें याद दिलाता है उन्हें मैं
मानता हूँ,
क्योंकि मैं जो भी करता हूँ उसे तू
अच्छी तरह जानता है।[3]

ת [*ताव*]

169 हे यहोवा, मेरी मदद की पुकार
तेरे पास पहुँचे।[4]
अपने वचन के मुताबिक मुझे
समझा।[5]
170 मेरी कृपा की बिनती तेरे सामने
पहुँचे।
तू अपने वादे के* मुताबिक मुझे
बचा ले।
171 मेरे होंठों पर तेरी तारीफ के बोल
उमड़ते रहें,[6]
क्योंकि तू मुझे अपने नियम
सिखाता है।
172 मेरी जीभ तेरी बातों के बारे में
गीत गाए,[7]
क्योंकि तेरी सारी आज्ञाएँ नेक हैं।
173 तेरा हाथ मेरी मदद के लिए हमेशा
तैयार रहे,[8]
क्योंकि मैंने तेरे आदेशों को मानने
का चुनाव किया है।[9]

119:165 *या "उनके लिए कोई ठोकर का पत्थर नहीं है।" **119:170** *या "अपने कहे।"

174 हे यहोवा, तेरी तरफ से
मिलनेवाले उद्धार के लिए मैं
तरसता हूँ
और तेरे कानून से लगाव
रखता हूँ।[1]
175 मेरी जान सलामत रख ताकि मैं
तेरी तारीफ करूँ,[2]
तेरे न्याय-सिद्धांत मेरी मदद करें।
176 मैं एक खोयी हुई भेड़ की तरह
भटक गया हूँ।[3]
तू अपने सेवक को खोज,
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाएँ नहीं
भूला हूँ।[4]

चढ़ाई का गीत।*

120 मुसीबत में मैंने यहोवा को
पुकारा[5]
और उसने मुझे जवाब दिया।[6]
2 हे यहोवा, मुझे झूठ बोलनेवाले
होंठों से
और छली ज़बान से बचा ले।
3 हे छली ज़बान, तू जानती है कि
परमेश्वर तेरे साथ क्या करेगा?
तुझे क्या सज़ा देगा?[7]
4 वह तुझ पर एक योद्धा के नुकीले
तीरों[8] से,
झाड़ियों के जलते अंगारों[9] से वार
करेगा।
5 हाय मुझ पर,
मुझे मेशेक[10] में परदेसी बनकर
रहना पड़ा है!
केदार के डेरों[11] में बसना पड़ा है!
6 शांति के दुश्मनों के बीच
रहते हुए[12]
मुझे एक ज़माना हो गया है।
7 मैं शांति चाहता हूँ, मगर जब मैं
बोलता हूँ
तो वे लड़ाई के लिए उतारू हो
जाते हैं।

चढ़ाई का गीत।

121 मैं पहाड़ों[1] की तरफ अपनी
नज़रें उठाता हूँ।
मुझे कहाँ से मदद मिलेगी?
2 मुझे मदद यहोवा से मिलती है,[2]
जो आकाश और धरती का बनाने-
वाला है।
3 वह तेरा पैर कभी फिसलने* न
देगा।[3]
तेरी हिफाज़त करनेवाला परमेश्वर
कभी नहीं ऊँघेगा।
4 देख! इसराएल की हिफाज़त करने-
वाला परमेश्वर
न कभी ऊँघेगा, न कभी सोएगा।[4]
5 यहोवा तेरी हिफाज़त कर रहा है।
यहोवा तेरे दायीं तरफ रहकर[5] तुझे
आड़ देता है।[6]
6 न दिन को सूरज,
न रात को चाँद तुझ पर वार
करेगा।[7]
7 यहोवा तुझे हर खतरे से बचाएगा,[8]
वह तेरी जान की हिफाज़त
करेगा।[9]
8 यहोवा तेरे हर काम में* तेरी हिफा-
ज़त करेगा,
अब से सदा तक करता रहेगा।

दाविद की रचना। चढ़ाई का गीत।

122 मैं बहुत खुश हुआ जब
लोगों ने मुझसे कहा,
"आओ हम यहोवा के भवन
चलें।"[10]
2 हे यरूशलेम, हमने तेरे यहाँ कदम
रखा है,

120:उप *शब्दावली देखें।

121:3 *या "लड़खड़ाने।" 121:8 *शा., "तेरे बाहर जाने और अंदर आने में।"

अध्य. 119
1 भज 1:2
2 भज 9:13, 14; यश 38:19
3 भज 95:7; लूक 15:4; 1पत 2:25
4 सभ 12:13

अध्य. 120
5 भज 18:6
6 भज 50:15; यो 2:1, 2
7 नीत 12:22
8 भज 7:13
9 भज 140:10
10 उत 10:2
11 यिर्म 49:28
12 भज 57:4

दूसरा कॉल.

अध्य. 121
1 भज 125:2
2 भज 46:1; यश 41:13; यिर्म 20:11; इब्र 13:6
3 भज 91:11, 12; नीत 3:26
4 यश 27:3; यश 40:28
5 भज 16:8; भज 109:31
6 भज 91:1; यश 25:4
7 भज 91:5, 6; यश 49:10; प्रक 7:16
8 भज 91:10; नीत 12:21
9 भज 97:10; भज 145:20

अध्य. 122
10 2शम 6:15; भज 27:4; भज 42:4; भज 84:10

अब हम तेरे फाटकों के अंदर
खड़े हैं।[1]
3 यरूशलेम ऐसे शहर की तरह
बना है
जिसे साथ जोड़कर एक किया
गया है।[2]
4 सारे गोत्र वहाँ ऊपर गए हैं,
इसराएल को दिए नियम के
मुताबिक
याह* के गोत्र वहाँ गए हैं
ताकि यहोवा के नाम की
तारीफ करें।[3]
5 क्योंकि वहाँ न्याय के लिए राज-
गद्दी,
दाविद के घराने की राजगद्दी खड़ी
की गयी थी।[4]
6 यरूशलेम की शांति के लिए दुआ
करो।[5]
हे नगरी, तुझसे प्यार करनेवाले
महफूज़ रहेंगे।
7 तेरी सुरक्षा की ढलानों* के भीतर
शांति बनी रहे,
तेरी मज़बूत मीनारों में सुरक्षा रहे।
8 अपने भाइयों और साथियों की
खातिर मैं कहूँगा,
"तेरे यहाँ शांति रहे।"
9 हमारे परमेश्वर यहोवा के भवन[6]
की खातिर
मैं तेरी खुशहाली की कामना
करूँगा।

चढ़ाई का गीत।

123 मैं तेरी ओर नज़रें
उठाता हूँ,[7]
तेरी ओर, जो स्वर्ग में
विराजमान है।

122:4 *"याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। 122:7 *या "मज़बूत शहरपनाह।"

अध्य. 122
1 2इत 6:6 भज 84:7 भज 100:4
2 2शम 5:9
3 निर्ग 23:17 व्य 12:5, 6
4 व्य 17:8, 9 2शम 7:16 1रा 10:18 1इत 29:23 2इत 19:8
5 भज 51:18
6 1इत 29:3 भज 26:8 भज 69:9

अध्य. 123
7 भज 25:15 भज 121:1

दूसरा कॉल.
1 भज 119:82 भज 130:6
2 विल 3:25 मी 7:7
3 नहे 4:4 भज 44:13

अध्य. 124
4 भज 46:7 रोम 8:31 इब्र 13:6
5 भज 54:4 भज 118:6
6 भज 3:1 भज 22:16
7 भज 56:1
8 भज 27:2
9 भज 18:4

2 जैसे दासों की आँखें अपने मालिक
के हाथ पर लगी रहती हैं,
जैसे एक दासी की आँखें
अपनी मालकिन के हाथ पर लगी
रहती हैं,
वैसे ही हमारी आँखें हमारे परमेश्वर
यहोवा पर टिकी रहती हैं,[1]
तब तक जब तक कि वह हम पर
कृपा न करे।[2]
3 हम पर कृपा कर, हे यहोवा, हम
पर कृपा कर,
हमें जितना अपमान सहना था
उतना हमने सह लिया है।[3]
4 जिन्हें खुद पर कुछ ज़्यादा ही
भरोसा है,
उनके जितने ताने सहने थे उतने
हमने सह लिए हैं,
मगरूरों के हाथों जितना
अपमान सहना था, उतना
सह लिया है।

दाविद की रचना। चढ़ाई का गीत।

124 "अगर यहोवा हमारे साथ न
होता,"[4]
इसराएल अब कहे,
2 "अगर यहोवा हमारे साथ न
होता,[5]
तो जब लोगों ने हम पर हमला
किया,[6]
3 जब उनके गुस्से की आग हम पर
भड़की,[7]
तब वे हमें ज़िंदा ही निगल चुके
होते।[8]
4 तब उमड़ता पानी हमें बहा ले गया
होता,
नदी हम पर चढ़ आती।[9]
5 उफनते पानी ने हमें डुबा लिया
होता।

6 यहोवा की तारीफ हो,
क्योंकि उसने हमें दुश्मनों के हवाले नहीं किया
कि वे अपने दाँतों से हमें फाड़ खाएँ।
7 हम ऐसी चिड़िया की तरह हैं
जो बहेलिए के फंदे से बच निकली है[1]
फंदा तोड़ दिया गया
और हम बच निकले।[2]
8 हमें यहोवा के नाम से मदद मिलती है,[3]
जो आकाश और धरती का बनानेवाला है।"

चढ़ाई का गीत।

125 जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं,[4]
वे सिय्योन पहाड़ की तरह हैं, जो हिलाया नहीं जा सकता,
मगर सदा कायम रहता है।[5]
2 जैसे पहाड़ यरूशलेम को घेरे हुए हैं,[6]
वैसे ही यहोवा अपने लोगों को घेरे रहेगा,[7]
अब से लेकर हमेशा-हमेशा तक।
3 नेक लोगों के हिस्से की ज़मीन पर
दुष्टता का राजदंड राज नहीं करता रहेगा[8]
ताकि नेक लोग बुराई की तरफ न फिरें।*[9]
4 हे यहोवा, भले लोगों का
और सीधे-सच्चे मनवालों का भला कर।[10]
5 मगर जो सीधी राह से हटकर टेढ़ी राहों पर चलते हैं,
उन्हें यहोवा गुनहगारों के साथ निकाल देगा।[1]
इसराएल पर शांति बनी रहे।

चढ़ाई का गीत।

126 जब यहोवा सिय्योन के लोगों को इकट्ठा करके बँधुआई से लौटा ले आया,[2]
तो हमें ऐसा लगा कि हम सपना देख रहे हैं।
2 तब हम खिलखिलाकर हँसने लगे,
खुशी से जयजयकार करने लगे।[3]
तब राष्ट्रों के लोग एक-दूसरे से कहने लगे,
"यहोवा ने उनकी खातिर बड़े-बड़े काम किए हैं।"[4]
3 यहोवा ने हमारी खातिर बड़े-बड़े काम किए हैं,[5]
इसलिए हम खुशी से फूले नहीं समा रहे।
4 हे यहोवा, हमारे लोगों को इकट्ठा करके बँधुआई से लौटा ले आ,*
नेगेब की धाराओं# की तरह उन्हें वापस ले आ।
5 जो आँसू बहाते हुए बीज बो रहे हैं,
वे खुशी से जयजयकार करते हुए कटाई करेंगे।
6 जो अपने बीज की थैली लेकर रोते हुए भी खेत जाता है,
वह यकीनन खुशी से जयजयकार करता हुआ लौटेगा,[6]
हाथ में अपने पूले लिए लौटेगा।[7]

125:3 *या "अपने हाथ न बढ़ाएँ।"

126:4 *या "बँधुआई से निकालकर बहाल कर।" #या "दक्षिण की घाटियों।"

अध्य. 124
1 1शम 23:26-28; 2शम 17:21, 22
2 भज 25:15; भज 91:3
3 नीत 18:10

अध्य. 125
4 यिर्म 17:7
5 1रा 8:12, 13; भज 48:2; भज 132:13, 14
6 1रा 11:7; प्रेष 1:12
7 भज 34:7; यश 31:5; जक 2:4, 5
8 यश 14:5
9 सभ 7:7
10 भज 36:10; भज 51:18; भज 73:1

दूसरा कॉल.
1 1इत 10:13; भज 53:5; यश 59:8

अध्य. 126
2 एज 1:2, 3; भज 85:1
3 एज 3:11; भज 106:47; यश 49:13; यिर्म 31:12
4 यह 2:9, 10; नहे 6:15, 16
5 एज 7:27, 28; यश 11:11
6 भज 30:5; यश 61:1-3
7 यश 9:3

सुलैमान की रचना। चढ़ाई का गीत।

127 अगर घर को यहोवा न बनाए,
तो उसके कारीगरों की कड़ी मेहनत बेकार है।[1]
अगर शहर की हिफाज़त यहोवा न करे,[2]
तो उसके पहरेदार का जागते रहना बेकार है।
2 अगर परमेश्वर की आशीष न हो,
तो तुम्हारा सुबह तड़के उठना,
देर रात तक जागना,
खाने के लिए कड़ी मज़दूरी करना बेकार है।
क्योंकि वह जिनसे प्यार करता है,
उनकी देखभाल करता है
और उन्हें अच्छी नींद देता है।[3]
3 देखो! लड़के* यहोवा से मिली विरासत हैं,[4]
गर्भ का फल उससे मिला इनाम है।[5]
4 जैसे वीर के हाथ में तीर होते हैं,
वैसे जवान आदमी के बेटे होते हैं।[6]
5 सुखी है वह आदमी जो अपना तरकश तीरों से भरता है।[7]
वे शर्मिंदा नहीं किए जाएँगे,
क्योंकि वे शहर के फाटक पर दुश्मनों को जवाब देंगे।

चढ़ाई का गीत।

128 सुखी है हर कोई जो यहोवा का डर मानता है,[8]
उसकी राहों पर चलता है।[9]
2 तू अपने हाथों की मेहनत का फल खाएगा,
तू सुखी रहेगा और खुशहाली का आनंद उठाएगा।[10]
3 तेरी पत्नी तेरे घर के अंदर अंगूर की फलती-फूलती बेल जैसी होगी,[1]
तेरे बेटे तेरी मेज़ के चारों तरफ जैतून के अंकुर जैसे होंगे।
4 देख! यहोवा का डर माननेवाला आदमी
इसी तरह आशीष पाएगा।[2]
5 यहोवा तुझे सिय्योन से आशीष देगा।
तुझे सारी ज़िंदगी यरूशलेम को फलता-फूलता देखने का मौका मिले,[3]
6 तुझे बेटों के बेटों को भी देखने का मौका मिले।
इसराएल में शांति बनी रहे।

चढ़ाई का गीत।

129 "मेरे बचपन से मेरे दुश्मन लगातार मुझ पर हमला करते रहे,"[4]
इसराएल अब कहे,
2 "मेरे बचपन से मेरे दुश्मन लगातार मुझ पर हमला करते रहे,[5]
मगर वे मुझे हरा न सके।[6]
3 हल जोतनेवालों ने मेरी पीठ पर हल जोता,[7]
उन्होंने हल की लंबी-लंबी रेखाएँ बनायीं।"
4 मगर यहोवा नेक है,[8]
उसने दुष्ट के बाँधे रस्से काट डाले।[9]
5 सिय्योन से नफरत करनेवाले सभी शर्मिंदा किए जाएँगे,
वे बेइज़्ज़त होकर भाग जाएँगे।[10]
6 वे छत पर उगनेवाली घास जैसे हो जाएँगे,
जो उखाड़े जाने से पहले ही मुरझा जाती है,

127:3 *या "बच्चे।"

अध्य. 127
1 नीत 3:6, नीत 10:22, नीत 16:3
2 यश 27:3
3 भज 3:5, सभ 5:12
4 उत 33:4, 5, उत 48:3, 4, 1शम 2:21
5 उत 41:51, 52, लैव 26:9, अय 42:12, 13, भज 128:3
6 नीत 17:6
7 उत 50:23

अध्य. 128
8 भज 112:1, इब्र 5:7
9 भज 119:1, मी 6:8
10 सभ 5:18, यश 65:22

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 23:26, भज 127:3
2 भज 127:4, 5
3 भज 122:6, यश 33:20

अध्य. 129
4 निर्ग 5:6, 9
5 विल 1:3
6 भज 118:13, भज 125:3
7 भज 66:12, यश 51:23
8 एज 9:15, नहे 9:33
9 भज 124:7
10 नहे 4:4, नहे 6:15, 16, एस 6:13, एस 9:5, भज 137:7, जक 12:3

7 जिससे न कटाई करनेवाला अपनी
मुट्ठी भरता है,
न ही पूले इकट्ठा करनेवाला अपनी
बाहें भरता है।
8 आने-जानेवाले यह नहीं कहेंगे,
"यहोवा की आशीष तुझ पर हो,
हम यहोवा के नाम से तुझे
आशीर्वाद देते हैं।"

चढ़ाई का गीत।

130 हे यहोवा, मैं दुख की
गहरी खाई से तुझे पुकार-
ता हूँ।[1]
2 हे यहोवा, मेरी आवाज़ सुन।
तू मेरी मदद की पुकार पर कान
लगाए।
3 हे याह,* अगर तू हमारे गुनाहों पर
ही नज़र रखता,#
तो हे यहोवा, तेरे सामने कौन खड़ा
रह सकता?[2]
4 तू सच्ची माफी देता है[3]
ताकि तेरी श्रद्धा की जाए।*[4]
5 मैं यहोवा पर आशा रखता हूँ,
मेरा रोम-रोम उस पर आशा
रखता है,
मैं उसके वचन का इंतज़ार
करता हूँ।
6 मैं यहोवा का बेसब्री से इंतज़ार
करता हूँ,[5]
पहरेदार सुबह होने का जितना इंत-
ज़ार करते हैं,
उससे कहीं ज़्यादा मैं इंतज़ार
करता हूँ।[6]
7 इसराएल यहोवा का इंतज़ार करे,
क्योंकि यहोवा वफादार है, सदा
प्यार करता है[7]
और वह छुड़ाने की महाशक्ति
रखता है।
8 वह इसराएल को उसके सभी
गुनाहों से छुड़ाएगा।

दाविद की रचना। चढ़ाई का गीत।

131 हे यहोवा, मेरा दिल मगरूर
नहीं,
न ही मेरी आँखें घमंड से चढ़ी हैं।[1]
न मैं बड़ी-बड़ी चीज़ों की ख्वाहिश
रखता हूँ,[2]
न ही उन चीज़ों की लालसा करता
हूँ, जिन्हें पाना मेरे लिए मुमकिन
नहीं।
2 मैंने बेशक अपने जी को शांत
किया है,
अपने मन को चुप कराया है,[3]
अब यह दूध छुड़ाए हुए बच्चे की
तरह है जो अपनी माँ के पास
शांत है।
मैं एक दूध छुड़ाए बच्चे की तरह
संतुष्ट हूँ।
3 इसराएल यहोवा का इंतज़ार करे,[4]
अब से लेकर हमेशा-हमेशा तक।

चढ़ाई का गीत।

132 हे यहोवा, दाविद को
याद कर,
उसके सारे दुखों को याद कर,[5]
2 कैसे उसने यहोवा से शपथ
खायी थी,
याकूब के शक्तिशाली परमेश्वर से
वादा किया था,[6]
3 "मैं तब तक अपने तंबू, अपने घर[7]
नहीं जाऊँगा,
अपने दीवान पर, अपने बिस्तर पर
नहीं लेटूँगा,
4 अपनी आँखों में नींद न आने दूँगा,
न ही पलकें झपकने दूँगा,

130:3 *"याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। #या "का हिसाब रखता।" **130:4** *शा., "तेरा डर माना जाए।"

अध्य. 130
1 विल 3:55
यो 2:1, 2
2 भज 38:4
भज 103:14
भज 143:1, 2
यश 55:7
दान 9:18
रोम 3:20
तीत 3:5
3 निर्ग 34:6, 7
भज 25:11
4 यिर्म 33:8, 9
5 मी 7:7
6 भज 119:147
7 भज 86:5

दूसरा कॉल.

अध्य. 131
1 भज 78:70
भज 138:6
2 1शम 18:23
3 1शम 30:6
भज 62:1
यश 30:15
विल 3:26
4 भज 130:7
मी 7:7

अध्य. 132
5 1शम 20:1
6 2शम 7:2, 3
7 2शम 5:11

5 जब तक कि मैं यहोवा के लिए एक
जगह,
याकूब के शक्तिशाली परमेश्वर के
लिए एक बढ़िया निवास* नहीं
ढूँढ़ लेता।"[1]
6 देख, हमने इस बारे में एप्राता[2] में
सुना था,
हमने इसे जंगल में पाया था।[3]
7 चलो हम उसके निवास* के अंदर
जाएँ,[4]
उसके पाँवों की चौकी के
आगे झुकें।[5]
8 हे यहोवा, उठ! अपने विश्राम की
जगह आ,[6]
तू और तेरा संदूक आए जो तेरी
ताकत की निशानी है।[7]
9 तेरे याजक नेकी की पोशाक पहने
हुए हों
और तेरे वफादार लोग खुशी से
जयजयकार करें।
10 अपने सेवक दाविद की खातिर
अपने अभिषिक्त जन को न
ठुकरा।*[8]
11 यहोवा ने दाविद से शपथ खायी है,
वह अपने इस वादे से हरगिज़ नहीं
मुकरेगाः
"मैं तेरे वंशजों में से एक को
तेरी राजगद्दी पर बिठाऊँगा।[9]
12 अगर तेरे बेटे मेरा करार मानेंगे,
उन हिदायतों को मानेंगे जो मैं याद
दिलाकर सिखाता हूँ,[10]
तो उनके बेटे भी तेरी राजगद्दी पर
सदा बैठेंगे।"[11]

132:5 *या "एक शानदार डेरा।" 132:7 *या "शानदार डेरे।" 132:10 *शा., "का मुँह न फेर दे।"

अध्य. 132
1 2शम 7:2
1रा 8:17
1इत 15:3, 12
प्रेष 7:45, 46
2 1शम 17:12
3 1शम 7:1
1इत 13:6
4 भज 43:3
5 1इत 28:2
भज 5:7
6 गि 10:35
2शम 6:17
7 2इत 6:41, 42
8 1रा 15:4
2रा 19:34
9 1रा 8:25
भज 89:3, 4
भज 89:20, 36
यश 9:7
यिर्म 33:20, 21
मत 9:27
लूक 1:69
प्रेष 2:30, 31
प्रेष 13:22, 23
10 1इत 29:19
11 2शम 7:12, 16
1इत 17:11, 12
भज 89:20, 29

दूसरा कॉल.
1 भज 48:2, 3
भज 78:68
इब्र 12:22
2 भज 87:2
3 भज 46:5
यश 24:23
4 भज 22:26
भज 147:12, 14
5 भज 149:4
6 भज 132:8, 9
7 1रा 11:36
1रा 15:4
2इत 21:7
8 भज 2:6
भज 72:8
यश 9:6
प्रक 11:15

अध्य. 133
9 उत 13:8
यूह 13:35
कुल 3:14
इब्र 13:1
10 नीत 27:9
11 निर्ग 29:4, 7

13 क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को
चुना है,[1]
उसे अपना निवास बनाना चाहा[2]
और कहाः
14 "यह सदा के लिए मेरे विश्राम की
जगह होगी,
मैं यहाँ निवास करूँगा[3] क्योंकि मैं
यही चाहता हूँ।
15 मैं इसे खाने-पीने की भरपूर चीज़ें
देकर आशीष दूँगा,
मैं इसके गरीबों को रोटी देकर
संतुष्ट करूँगा।[4]
16 मैं इसके याजकों को उद्धार की
पोशाक पहनाऊँगा[5]
और इसके वफादार लोग खुशी से
जयजयकार करेंगे।[6]
17 यहाँ मैं दाविद की ताकत*
बढ़ाऊँगा।
मैंने अपने अभिषिक्त जन के लिए
एक दीया तैयार किया है।[7]
18 मैं उसके दुश्मनों को शर्म का
ओढ़ना ओढाऊँगा,
मगर उसके सिर का ताज चमकता
रहेगा।"[8]

दाविद की रचना। चढ़ाई का गीत।

133 देखो! भाइयों का एक होकर
रहना[9]
क्या ही भली और मनभावनी
बात है!
2 यह उस बढ़िया तेल जैसा है
जो हारून के सिर पर उँडेला
गया,[10]
वह उसकी दाढ़ी से बहता हुआ[11]
उसकी पोशाक के गले तक गया।

132:17 *शा., "का सींग।"

3 यह हेरमोन[1] की ओस जैसा है
जो सिय्योन के पहाड़ों[2] पर
पड़ती है।
यहोवा ने आज्ञा दी है कि वहाँ
उसकी आशीष हो,
हमेशा की ज़िंदगी की आशीष हो।

चढ़ाई का गीत।

134 यहोवा की तारीफ करो,
यहोवा के सभी सेवको,[3]
तुम जो यहोवा के भवन में रात के
वक्त उसकी सेवा करते हो,
उसकी तारीफ करो।[4]
2 पवित्रता से* हाथ उठाकर
प्रार्थना करो[5]
और यहोवा की तारीफ करो।
3 यहोवा, जो आकाश और धरती का
बनानेवाला है,
तुझे सिय्योन से आशीष दे।

135 याह की तारीफ करो!*
यहोवा के नाम की तारीफ
करो,
यहोवा के सेवको, उसकी तारीफ
करो,[6]
2 तुम जो यहोवा के भवन में,
हमारे परमेश्वर के भवन के आँगनों
में खड़े रहते हो,
उसकी तारीफ करो।[7]
3 याह की तारीफ करो क्योंकि यहोवा
भला है।[8]
उसके नाम की तारीफ में गीत
गाओ* क्योंकि उसका नाम मन-
भावना है।
4 याह ने अपने लिए याकूब को
चुना है,

134:2 *या शायद, "पवित्र-स्थान में।" 135:1 *या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। 135:3 *या "संगीत बजाओ।"

अध्य. 133
1 व्य 3:8, 9; 1इत 5:23
2 भज 125:2

अध्य. 134
3 प्रक 19:5
4 1इत 9:33; 1इत 23:27, 30; लूक 2:37; प्रक 7:15
5 भज 28:2; भज 141:2

अध्य. 135
6 भज 113:1; प्रक 19:5
7 भज 96:8; भज 116:19
8 भज 119:68; मत 19:17

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 19:5; व्य 7:6
2 व्य 10:17; भज 97:9
3 भज 115:3; यश 46:10
4 निर्ग 14:21; गि 11:31; यिर्म 10:13; यिर्म 51:16; यो 1:4
5 निर्ग 12:12, 29
6 निर्ग 7:20; निर्ग 8:6, 17; निर्ग 9:6, 10; निर्ग 9:23; निर्ग 10:12, 21
7 भज 136:15
8 भज 44:2
9 यह 12:7, 8
10 गि 21:23, 24
11 गि 21:33-35
12 यह 11:23

इसराएल को अपनी खास जागीर*
बनाया है।[1]
5 मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यहोवा
महान है,
हमारा प्रभु सभी देवताओं से कहीं
ज़्यादा महान है।[2]
6 आकाश में, धरती पर, समुंदर और
उसकी सारी गहराइयों में,
यहोवा जो भी चाहता है वह
करता है।[3]
7 वह धरती के कोने-कोने से बादलों*
को ऊपर उठाता है,
बारिश के लिए बिजली# बनाता है,
अपने भंडारों से आँधी चलाता है।[4]
8 उसने मिस्र के पहलौठों को मार
डाला,
इंसान और जानवर, दोनों के
पहलौठों को मार डाला।[5]
9 हे मिस्र, उसने तेरे यहाँ चिन्ह और
चमत्कार किए,[6]
फिरौन और उसके सभी सेवकों के
खिलाफ किए।[7]
10 उसने कई जातियों को मिटा दिया[8]
और ताकतवर राजाओं को मार
डाला:[9]
11 एमोरियों के राजा सीहोन को,[10]
बाशान के राजा ओग को मार
डाला,[11]
उसने कनान के सभी राज्यों को हरा
दिया।
12 उसने उनका देश विरासत में दे
दिया,
अपनी प्रजा इसराएल को विरासत
में दे दिया।[12]
13 हे यहोवा, तेरा नाम सदा कायम
रहता है।

135:4 *या "अनमोल जायदाद।" 135:7 *या "भाप।" #या शायद, "झरोखे।"

हे यहोवा, तेरा यश* पीढ़ी-पीढ़ी
तक कायम रहता है।[1]
14 यहोवा अपने लोगों की पैरवी
करेगा,[2]
अपने सेवकों पर तरस खाएगा।[3]
15 राष्ट्रों की मूरतें सोने-चाँदी की
बनी हैं,
इंसान के हाथ की कारीगरी हैं।[4]
16 उनका मुँह तो है पर वे बोल नहीं
सकतीं,[5]
आँखें हैं पर देख नहीं सकतीं,
17 कान हैं पर सुन नहीं सकतीं,
उनके मुँह में कोई साँस नहीं है।[6]
18 उनके बनानेवाले और उन पर
भरोसा रखनेवाले,
दोनों उनकी तरह हो जाएँगे।[7]
19 हे इसराएल के घराने, यहोवा की
तारीफ कर।
हे हारून के घराने, यहोवा की
तारीफ कर।
20 हे लेवी के घराने, यहोवा की
तारीफ कर।[8]
यहोवा का डर माननेवालो, यहोवा
की तारीफ करो।
21 यहोवा जो यरूशलेम में निवास
करता है,[9]
उसकी सिय्योन से तारीफ हो।[10]
याह की तारीफ करो![11]

136 यहोवा का शुक्रिया
अदा करो क्योंकि वह
भला है,[12]
उसका अटल प्यार सदा बना
रहता है।[13]
2 वह सब ईश्वरों से महान
ईश्वर है,[14] उसका शुक्रिया अदा
करो,
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
3 वह सब प्रभुओं से महान प्रभु है,
उसका शुक्रिया अदा करो,
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
4 वही अकेला बड़े-बड़े अजूबे
करता है,[1]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।[2]
5 उसने बड़ी कुशलता* से आकाश
की रचना की,[3]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
6 उसने धरती को पानी के ऊपर
फैलाया,[4]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
7 उसने बड़ी-बड़ी ज्योतियाँ बनायीं,[5]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है,
8 उसने दिन पर अधिकार रखने के
लिए सूरज बनाया,[6]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है,
9 रात पर अधिकार रखने के लिए
चाँद-सितारे बनाए,[7]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
10 उसने मिस्र के पहलौठों को मार
डाला,[8]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
11 वह इसराएल को उनके बीच से
निकाल लाया,[9]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है,

135:13 *या "नाम।" शा., "तेरी याद-
गार।"

136:5 *या "समझ।"

अध्य. 135
1 निर्ग 3:15
भज 102:12
2 निर्ग 14:31
3 व्य 32:36
4 भज 115:4-8
यश 46:6
प्रेष 17:29
1कुर 10:19
5 हब 2:19
6 यिर्म 10:14
7 भज 97:7
यश 44:9
8 व्य 10:8
9 यिर्म 3:17
10 भज 48:1
भज 132:13
11 प्रक 19:6

अध्य. 136
12 लूक 18:19
13 2इत 7:3
2इत 20:21
भज 106:1
भज 107:1
14 भज 97:9
दान 2:47

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 15:11
प्रक 15:3
2 भज 103:17
3 अय 38:36
नीत 3:19, 20
4 उत 1:9
भज 24:1, 2
5 उत 1:14
6 उत 1:16
यिर्म 31:35
7 भज 8:3
8 निर्ग 12:29
9 निर्ग 12:51

12 अपना शक्तिशाली हाथ बढ़ाकर
उसे निकाल लाया,[1]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
13 उसने लाल सागर को दो हिस्सों में
बाँट दिया,[2]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
14 उसने इसराएल को उसके बीच से
पार कराया,[3]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
15 उसने फिरौन और उसकी सेना को
लाल सागर में झटक दिया,[4]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
16 वह अपने लोगों को वीराने में रास्ता
दिखाता ले गया,[5]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
17 उसने बड़े-बड़े राजाओं को मार
डाला,[6]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
18 उसने ताकतवर राजाओं को मार
डाला,
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है,
19 एमोरियों के राजा सीहोन को मार
डाला,[7]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है,
20 बाशान के राजा ओग को भी मार
डाला,[8]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
21 उसने उनका देश विरासत में दे
दिया,[9]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है,
22 अपने सेवक इसराएल को विरासत
में दे दिया,
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
23 जब हम निराश थे तब उसने हम
पर ध्यान दिया,[1]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।[2]
24 वह हमें बैरियों से छुड़ाता रहा,[3]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
25 वह हरेक जीव को खाना देता है,[4]
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।
26 स्वर्ग के परमेश्वर का शुक्रिया अदा
करो,
क्योंकि उसका अटल प्यार सदा
बना रहता है।

137 हम बैबिलोन की नदियों के
किनारे[5] बैठा करते थे।
सिय्योन को याद करके रो
पड़ते थे।[6]
2 उसके * यहाँ के पहाड़ी पीपल पर
हम अपने तारोंवाले बाजे लट-
काते थे।[7]
3 हमें बंदी बनानेवालों ने वहाँ हमसे
एक गीत गाने को कहा,[8]
हमारी खिल्ली उड़ानेवालों ने
मन-बहलाव के लिए हमसे कहा,
“हमारे लिए सिय्योन का कोई गीत
गाओ।”
4 हम परायी ज़मीन पर यहोवा का
गीत कैसे गा सकते हैं?
5 हे यरूशलेम, अगर मैं तुझे भूल
जाऊँ,

अध्या. 136
1 निर्ग 13:14
2 निर्ग 14:21
3 निर्ग 14:29
4 निर्ग 14:27, 28
5 निर्ग 13:18 निर्ग 15:22
6 यह 12:7, 8
7 गि 21:21-24
8 गि 21:33-35
9 गि 32:33

दूसरा कॉल.
1 व्य 32:36
2 नहे 9:32
3 न्या 3:9 न्या 6:9
4 भज 145:15 भज 147:9

अध्या. 137
5 यिर्म 51:13 यहे 3:15 दान 10:4
6 दान 9:2, 3
7 यश 24:8
8 भज 123:4

137:2 * यहाँ बैबिलोन की बात की गयी है।

तो मेरा दायाँ हाथ हर काम भूल
जाए।*[1]
6 अगर मैं तुझे याद न करूँ,
यरूशलेम को अपनी खुशी की
सबसे बड़ी वजह न समझूँ,[2]
तो मेरी जीभ तालू से चिपक जाए।
7 हे यहोवा, याद कर
कि जब यरूशलेम गिरा तो एदो-
मियों ने कहा था,
"ढा दो इसे! इसकी बुनियाद तक
ढा दो!"[3]
8 हे बैबिलोन की बेटी, तुझे बहुत
जल्द उजाड़ दिया जाएगा,[4]
क्या ही खुश होगा वह जो तेरे साथ
वैसा ही सलूक करेगा,
जैसा तूने हमारे साथ किया था।[5]
9 क्या ही खुश होगा वह जो तुझसे
तेरे बच्चे छीन लेगा,
उन्हें चट्टानों पर पटक देगा।[6]

दाविद की रचना।

138 मैं पूरे दिल से तेरी तारीफ
करूँगा,[7]
दूसरे देवताओं के सामने तेरी
तारीफ में गीत गाऊँगा।*
2 मैं तेरे पवित्र मंदिर* की तरफ मुँह
करके दंडवत करूँगा,[8]
तेरे अटल प्यार और तेरी वफादारी
की वजह से
तेरे नाम की बड़ाई करूँगा,[9]
तूने अपने वचन और अपने नाम
को बाकी सब चीज़ों से महान
किया है।#

137:5 *या शायद, "मुरझा जाए।" 138:1 *या शायद, "दूसरे देवताओं के विरोध में, मैं तेरे लिए संगीत बजाऊँगा।" 138:2 *या "पवित्र-स्थान।" #या शायद, "तूने अपने नाम से बढ़कर अपने वचन को महान किया है।"

अध्या. 137
1 नहे 2:3; भज 84:2; भज 102:13, 14; यश 62:1; यिर्म 51:50
2 भज 122:1
3 यिर्म 49:7; विल 4:22; यहे 25:12; ओब 10-13
4 यश 47:1; यिर्म 25:12; यिर्म 50:2
5 यिर्म 50:29; प्रक 18:6
6 यश 13:1, 16

अध्या. 138
7 भज 9:1
8 1शम 3:3; 1इत 16:1; भज 28:2
9 यूह 17:6

दूसरा कॉल.
1 भज 18:6
2 भज 29:11; यश 12:2; यश 41:10
3 भज 102:15; यश 60:3
4 1रा 8:10, 11
5 1शम 2:8; भज 113:6-8; यश 57:15
6 याकू 4:6; 1पत 5:5
7 भज 71:20
8 भज 103:17
9 अय 14:15; भज 71:18

अध्या. 139
10 1शम 16:6, 7; 1इत 28:9; भज 17:3; भज 139:23; यिर्म 20:12
11 उत 16:13
12 भज 94:11

3 जिस दिन मैंने तुझे पुकारा तूने मुझे
जवाब दिया,[1]
मुझे हिम्मत दी, मुझे मज़बूत
किया।[2]
4 हे यहोवा, धरती के सभी राजा तेरी
तारीफ करेंगे,[3]
क्योंकि वे तेरे वादों के बारे में सुन
चुके होंगे।
5 वे यहोवा की राहों के बारे में गीत
गाएँगे,
क्योंकि यहोवा की महिमा
अपार है।[4]
6 यहोवा ऊँचे पर निवास करता है,
फिर भी वह नम्र लोगों पर गौर
करता है,[5]
मगर मगरूरों को सिर्फ दूर से
जानता है।[6]
7 जब मैं खतरों से गुज़रूँ, तब
भी तू मेरी जान की हिफाज़त
करेगा।[7]
मेरे भड़के हुए दुश्मनों के खिलाफ
तू अपना हाथ बढ़ाएगा,
तेरा दायाँ हाथ मुझे बचा लेगा।
8 यहोवा मेरी खातिर सारा काम पूरा
करेगा।
हे यहोवा, तेरा अटल प्यार सदा
बना रहता है,[8]
तू अपने हाथ की रचनाओं को छोड़
न देना।[9]

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

139 हे यहोवा, तूने मुझे जाँचा है,
तू मुझे जानता है।[10]
2 तू मेरा उठना-बैठना जानता है,[11]
तू मेरे विचारों को दूर से ही जान
लेता है।[12]
3 मैं चाहे चलूँ या लेटूँ, तू मुझ पर
गौर करता है,

तू मेरे पूरे चालचलन से
वाकिफ है।[1]
4 इससे पहले कि मेरी जीभ एक भी
शब्द कहे,
हे यहोवा, तू जान लेता है।[2]
5 तू मुझे आगे और पीछे से घेरे
रहता है,
तू अपना हाथ मुझ पर रखता है।
6 तू मुझे कितनी बारीकी से
जानता है,
यह समझना मेरे बस के बाहर है।*
यह मेरी पहुँच से बाहर है।#[3]
7 मैं तेरी पवित्र शक्ति से बचकर
कहाँ जा सकता हूँ?
तेरे सामने से भागकर कहाँ जा
सकता हूँ?[4]
8 अगर मैं ऊपर आकाश पर चढ़
जाऊँ, तो तू वहाँ रहेगा,
अगर मैं अपना बिस्तर नीचे कब्र में
लगाऊँ, तो तू वहाँ भी रहेगा।[5]
9 अगर मैं भोर के पंख लगाकर
उड़ जाऊँ
कि जाकर दूर समुंदर के पास बस
जाऊँ,
10 तो वहाँ भी तू अपने हाथ से मेरी
अगुवाई करेगा,
तेरा दायाँ हाथ मुझे थाम लेगा।[6]
11 अगर मैं कहूँ, "बेशक, अँधेरा मुझे
छिपा लेगा!"
तो मेरे चारों ओर रात का अँधेरा
उजाला हो जाएगा।
12 अँधेरा तेरे लिए अँधेरा नहीं होगा,
रात का अँधेरा तेरे लिए दिन की
तेज़ रौशनी जैसा होगा,[7]
अँधेरा तेरे लिए उजाले के
बराबर है।[1]
13 तूने मेरे गुरदे बनाए,
तूने मुझे माँ की कोख में
आड़ दी।*[2]
14 मैं तेरी तारीफ करता हूँ क्योंकि
तूने मुझे लाजवाब तरीके से
बनाया है,[3]
यह देखकर मैं विस्मय से भर
जाता हूँ।
तेरे काम बेजोड़ हैं,[4] यह मैं अच्छी
तरह जानता हूँ।
15 जब मुझे गुप्त में बनाया जा रहा था,
मुझे मानो धरती की गहराइयों में
बुना जा रहा था,
तब मेरी हड्डियाँ तुझसे छिपी
न थीं।[5]
16 तेरी आँखों ने मुझे तभी देखा था
जब मैं बस एक भ्रूण था,
इससे पहले कि उसके सारे अंग
बनते,
उनके बारे में तेरी किताब में
लिखा था
कि कब उनकी रचना होगी।
17 इसलिए तेरे विचार मेरे लिए क्या
ही अनमोल हैं![6]
हे परमेश्वर, तेरे विचार
अनगिनत हैं![7]
18 अगर मैं उन्हें गिनने की कोशिश
करूँ, तो वे बालू के किनकों से
ज़्यादा होंगे।[8]
जब मैं जाग उठता हूँ, तब भी तेरे
संग होता हूँ।*[9]
19 हे परमेश्वर, काश तू दुष्टों को मार
डालता![10]

अध्य. 139
1 उत 28:15 2शम 8:14 अय 31:4 भज 121:8 नीत 5:21
2 इब्र 4:12
3 अय 26:14 अय 42:3 भज 40:5 रोम 11:33
4 यो 1:3
5 अय 26:6 नीत 15:11
6 भज 63:8 भज 73:23 यश 41:13
7 दान 2:22

दूसरा कॉल.
1 इब्र 4:13
2 भज 22:9 भज 71:6 यिर्म 1:5
3 उत 1:26
4 भज 19:1 भज 104:24 भज 111:2 प्रक 15:3
5 अय 10:10, 11
6 यश 55:9
7 रोम 11:33
8 भज 40:5
9 भज 63:6
10 भज 5:6

139:6 *या "यह मेरे लिए बहुत हैरानी की बात है।" #या "यह मैं जान भी नहीं सकता।"

139:13 *या शायद, "में बुना।" **139:18** *या शायद, "तब भी उन्हें गिन रहा होता।"

तब वे खूँखार आदमी* मुझसे दूर
चले जाते,
20 जो बुरे इरादे से* तेरे खिलाफ बातें
करते हैं।
वे तेरे बैरी हैं जो तेरे नाम का गलत
इस्तेमाल करते हैं।[1]
21 हे यहोवा, क्या मैं उनसे नफरत
नहीं करता जो तुझसे नफरत
करते हैं?[2]
क्या मैं उनसे घिन नहीं करता जो
तुझसे बगावत करते हैं?[3]
22 मेरे दिल में उनके लिए बस
नफरत है,[4]
वे मेरे कट्टर दुश्मन बन गए हैं।
23 हे परमेश्वर, मुझे जाँच और मेरे
दिल को जान।[5]
मुझे परख और मेरे मन की
चिंताओं* को जान ले।[6]
24 देख कि मुझमें कुछ ऐसा तो नहीं जो
मुझे बुरी राह पर ले जाए,[7]
मुझे उस राह पर ले चल[8] जो सदा
कायम रहेगी।

दाविद का सुरीला गीत। निर्देशक के लिए हिदायत।

140 हे यहोवा, मुझे बुरे लोगों से
छुड़ा ले,
खूँखार आदमियों से मेरी हिफा-
ज़त कर,[9]
2 जो अपने दिलों में साज़िशें
रचते हैं,[10]
सारा दिन झगड़ा खड़ा करते हैं।
3 उन्होंने अपनी ज़बान साँप की जीभ
जैसी तेज़ कर रखी है,[11]
उनके होंठों के पीछे साँपों का ज़हर
है।[12] (*सेला*)

139:19 *या "खून के दोषी आदमी।"
139:20 *या "अपने ही खयाल से।"
139:23 *या "और परेशान करनेवाले विचारों।"

अध्य. 139
1 निर्ग 20:7
2 2इत 19:2
2कुर 6:14
3 भज 119:158
4 भज 101:3
5 यिर्म 20:12
6 भज 94:19
7 भज 17:3
8 भज 5:8
भज 143:8
भज 143:10

अध्य. 140
9 भज 18:48
भज 59:1
10 भज 64:2, 6
11 भज 52:1, 2
भज 58:3, 4
12 रोम 3:13
याकू 3:8

दूसरा कॉल.
1 भज 17:8
भज 36:11
भज 71:4
2 भज 10:9
3 यिर्म 18:22
4 भज 28:2
भज 55:1
5 1शम 17:37
6 2शम 15:31
भज 27:12
7 भज 7:16
नीत 12:13
8 भज 11:5, 6
9 भज 55:23
10 भज 12:3

4 हे यहोवा, मुझे दुष्टों के हाथों में
पड़ने से बचा,[1]
खूँखार आदमियों से मेरी
हिफाज़त कर,
जो मुझे गिराने की साज़िश
करते हैं।
5 मगरूर लोग मेरे लिए फंदा
लगाते हैं,
रास्ते के किनारे रस्सों का जाल
बिछाते हैं।[2]
वे मेरे लिए जाल बिछाते हैं।[3]
(*सेला*)
6 मैं यहोवा से कहता हूँ, "तू मेरा पर-
मेश्वर है।
हे यहोवा, मेरी मदद की पुकार
सुन।"[4]
7 हे यहोवा, सारे जहान के मालिक,
मेरे शक्तिशाली उद्धारकर्ता,
तू युद्ध के दिन मेरे सिर को आड़
देता है।[5]
8 हे यहोवा, दुष्टों की इच्छाएँ पूरी
मत कर।
उनकी चालें कामयाब न होने दे
ताकि वे घमंड से भर न जाएँ।[6]
(*सेला*)
9 मुझे घेरनेवाले मेरे बारे में जो बुरा
कहते हैं,
वह उन्हीं के सिर पड़े।[7]
10 उन पर जलते अंगारे बरसें।[8]
वे आग में झोंक दिए जाएँ,
गहरी खाइयों*[9] में गिरा दिए जाएँ
ताकि फिर कभी न उठ सकें।
11 दूसरों को बदनाम करनेवालों
को धरती पर* कहीं जगह
न मिले।[10]

140:10 *या "पानी से भरे गड्ढों।"
140:11 *या "देश में।"

मुसीबत खूँखार आदमियों का पीछा
करे और उन्हें मार डाले।
12 मैं जानता हूँ कि यहोवा दीन लोगों
की पैरवी करेगा
और गरीबों को न्याय दिलाएगा।[1]
13 नेक लोग बेशक तेरे नाम की
तारीफ करेंगे,
सीधे-सच्चे लोग तेरे सामने* बसे
रहेंगे।[2]

दाविद का सुरीला गीत।

141 हे यहोवा, मैं तुझे
पुकारता हूँ।[3]
मेरी मदद के लिए जल्दी आ।[4]
जब मैं तुझे पुकारूँ तो मुझ पर
ध्यान दे।[5]
2 तेरे सामने मेरी प्रार्थना तैयार किए
हुए धूप जैसी हो,[6]
मेरे उठाए हुए हाथ शाम के अनाज
के चढ़ावे जैसे हों।[7]
3 हे यहोवा, मेरे मुँह पर एक पहरेदार
ठहरा,
मेरे होंठों के द्वार पर पहरा बिठा।[8]
4 मेरे दिल को किसी भी बुरी बात की
तरफ झुकने न दे[9]
ताकि मैं बुरे लोगों के दुष्ट कामों का
हिस्सेदार न बनूँ,
मैं कभी उनके लज़ीज़ खाने का मज़ा
न लूँ।
5 अगर नेक जन मुझे मारे,
तो यह उसका अटल प्यार
होगा,[10]
अगर वह मुझे फटकारे, तो यह मेरे
सिर पर तेल जैसा होगा,[11]
जिसे मेरा सिर कभी नहीं ठुक-
राएगा।[12]
मैं नेक जन की मुसीबतों में भी
उसके लिए प्रार्थना करता रहूँगा।
6 चाहे उनके न्यायी खड़ी चट्टान से
नीचे गिरा दिए जाएँ,
फिर भी लोग मेरी बातों पर ध्यान
देंगे क्योंकि ये मनभावनी हैं।
7 जैसे किसी के हल चलाने पर मिट्टी
के ढेले फूटकर बिखर जाते हैं,
वैसे ही हमारी हड्डियाँ कब्र के मुँह
पर बिखरा दी गयी हैं।
8 मगर हे सारे जहान के
मालिक यहोवा, मेरी आँखें तेरी
ओर लगी हैं।[1]
मैंने तेरी पनाह ली है।
मेरी जान न लेना।
9 उन्होंने मेरे लिए जो जाल बिछाया है
उसके चंगुल से मुझे बचा,
बुरे काम करनेवालों के फंदों से मुझे
बचा।
10 सारे दुष्ट अपने ही बिछाए जाल में
फँस जाएँगे,[2]
जबकि मैं सही सलामत पार निकल
जाऊँगा।

मश्कील।* दाविद का यह गीत उस समय का है जब
वह एक गुफा में था।[3] एक प्रार्थना।

142 मैं मदद के लिए यहोवा को
पुकारता हूँ[4]
मैं दया के लिए यहोवा से गिड़-
गिड़ाता हूँ।
2 उसे अपनी सारी चिंताएँ खुलकर
बताता हूँ,
अपने मन की पीड़ा बताता हूँ।[5]
3 जब मेरी ताकत जवाब दे जाती है,
तब तू मेरी राह पर नज़र
रखता है।[6]
मैं जिस रास्ते पर चलता हूँ,
वहाँ मेरे दुश्मन मेरे लिए फंदा
छिपाते हैं।

अध्य. 140
1 भज 10:17, 18
भज 22:24
2 भज 23:6

अध्य. 141
3 भज 31:17
4 भज 40:13
भज 70:5
5 भज 39:12
6 निर्ग 30:34-36
लूक 1:9, 10
प्रक 5:8
प्रक 8:3, 4
7 निर्ग 29:41
8 नीत 13:3
नीत 21:23
याकू 1:26
9 1रा 8:58
भज 119:36
10 2शम 12:7, 9
नीत 17:10
गल 6:1
11 नीत 6:23
याकू 5:14
12 नीत 9:8
नीत 19:25
नीत 25:12

दूसरा कॉल.
1 2इत 20:12
भज 25:15
2 एस 7:10
भज 7:14, 15
भज 9:15
भज 57:6

अध्य. 142
3 1शम 22:1
1शम 24:3
इब्र 11:32, 38
4 भज 28:2
भज 141:1
5 भज 18:6
यो 2:7
मत 26:38, 39
मर 15:34
इब्र 5:7
6 भज 139:3

140:13 *या "तेरी मौजूदगी में।"

142:उप *शब्दावली देखें।

4 मेरे दायीं तरफ देख,
कोई मेरी परवाह नहीं करता।*[1]
ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ मैं
भाग सकूँ,[2]
मेरी फिक्र करनेवाला कोई नहीं।
5 हे यहोवा, मैं मदद के लिए तुझे
पुकारता हूँ।
मैं कहता हूँ, "तू मेरी पनाह है,[3]
मेरे जीते जी* तू ही मेरा
सबकुछ# है।"
6 मेरी मदद की पुकार पर ध्यान दे,
क्योंकि मैं बड़ी मुसीबत में हूँ।
मुझ पर ज़ुल्म करनेवालों से मुझे
छुड़ा ले,[4]
क्योंकि वे मुझसे ज़्यादा
ताकतवर हैं।
7 मुझे इस काल-कोठरी से बाहर
निकाल
ताकि मैं तेरे नाम की तारीफ करूँ।
नेक लोग मेरे चारों तरफ इकट्ठा हों
क्योंकि तू मेरे साथ कृपा से पेश
आता है।

दाविद का सुरीला गीत।

143 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना
सुन,[5]
मेरी मदद की पुकार सुन।
तू विश्वासयोग्य और नेक है, इस-
लिए मुझे जवाब दे।
2 अपने सेवक पर मुकदमा न चला,
क्योंकि कोई भी इंसान तेरे सामने
नेक नहीं ठहर सकता।[6]
3 दुश्मन मेरा पीछा कर रहा है,
उसने मुझे ज़मीन पर रौंदकर मेरी
जान ले ली।
मुझे अँधेरे में डाल दिया,
उन लोगों की तरह जिन्हें मरे अरसा
हो गया है।
4 मेरी ताकत जवाब दे रही है,[1]
मेरा मन सुन्न हो गया है।[2]
5 मैं गुज़रे दिन याद करता हूँ,
तेरे सब कामों पर मनन करता हूँ,[3]
तेरे हाथ के काम पर गहराई से
सोचता हूँ।*
6 मैं तेरे सामने अपने हाथ फैलाता हूँ,
जैसे सूखी ज़मीन बारिश की
प्यासी होती है, वैसे ही मैं तेरा
प्यासा हूँ।[4] (*सेला*)
7 हे यहोवा, मुझे जल्द जवाब दे,[5]
मेरी ताकत मिट चुकी है।[6]
मुझसे अपना मुँह न फेर,[7]
वरना मैं गड्ढे* में जानेवालों की
तरह बन जाऊँगा।[8]
8 मुझे भोर को अपने अटल प्यार के
बारे में सुना,
क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा
रखता हूँ।
मुझे वह रास्ता दिखा जिस पर मुझे
चलना चाहिए,[9]
क्योंकि मैं तेरी तरफ मुड़ता हूँ।
9 हे यहोवा, मुझे दुश्मनों से छुड़ा ले।
मैं बचाव के लिए तेरी आस
लगाता हूँ।[10]
10 मुझे तेरी मरज़ी पूरी करना
सिखा,[11]
क्योंकि तू मेरा परमेश्वर है।
तेरी पवित्र शक्ति भली है,
वह समतल ज़मीन* में मेरी अगु-
वाई करे।

अध्य. 142
1 भज 31:11
भज 69:20
2 1शम 23:11
3 नीत 18:10
4 1शम 20:33
1शम 23:26
1शम 25:29

अध्य. 143
5 भज 65:2
6 अय 9:2
भज 130:3
सभ 7:20
रोम 3:20
गल 2:16
1यूह 1:10

दूसरा कॉल.
1 भज 142:3
2 भज 102:4
3 भज 77:5, 6
भज 77:11, 12
भज 111:2, 3
4 भज 63:1
5 भज 40:13
भज 70:5
6 भज 142:3
7 भज 27:9
8 भज 28:1
9 भज 5:8
नीत 3:6
10 भज 59:1
भज 61:3, 4
भज 91:1
11 भज 25:4

142:4 *शा., "कोई मुझे नहीं पहचानता।" **142:5** *शा., "जीवितों के देश में।" #शा., "भाग।"

143:5 *या "का अध्ययन करता हूँ।" **143:7** *या "कब्र।" **143:10** *या "सीधाई के देश।"

11 हे यहोवा, अपने नाम की खातिर
मेरी जान की हिफाज़त कर।
अपनी नेकी की वजह से मुझे संकट
से छुड़ा ले।[1]
12 अपने अटल प्यार की वजह से मेरे
दुश्मनों का अंत कर दे,[2]
मुझे सतानेवालों का नाश कर दे,[3]
क्योंकि मैं तेरा सेवक हूँ।[4]

दाविद की रचना।

144 मेरी चट्टान[5] यहोवा की
तारीफ हो,
जो मेरे हाथों को युद्ध का कौशल
सिखाता है,
मेरी उँगलियों को लड़ने की तालीम
देता है।[6]
2 वह मुझसे प्यार* करता है,
वह मेरा मज़बूत गढ़ है,
मेरा ऊँचा गढ़ और मेरा
छुड़ानेवाला है,
वह मेरी ढाल है और उसी में मैंने
आसरा लिया है,[7]
वही है जो देश-देश के लोगों को मेरे
अधीन कर देता है।[8]
3 हे यहोवा, इंसान क्या है कि तू उस
पर गौर करे?
नश्वर इंसान क्या है कि तू उस पर
ध्यान दे?[9]
4 इंसान की ज़िंदगी बस एक
साँस है,[10]
उसके दिन ढलती छाया के
समान हैं।[11]
5 हे यहोवा, तू अपने आसमान को
नीचा करके* उतर आ,[12]
पहाड़ों को छू ताकि उनसे धुआँ
निकले।[13]
6 बिजली चमकाकर दुश्मनों को
तितर-बितर कर दे,[1]
अपने तीर चलाकर उनमें खलबली
मचा दे।[2]
7 ऊपर से अपने हाथ बढ़ा,
मुझे उफनते पानी से निकाल ले,
परदेसियों के हाथ* से मुझे
छुड़ा ले,[3]
8 जो अपने मुँह से झूठ बोलते हैं,
अपना दायाँ हाथ उठाकर झूठी
शपथ खाते हैं।*
9 हे परमेश्वर, मैं तेरे लिए एक नया
गीत गाऊँगा।[4]
दस तारोंवाले बाजे की धुन पर तेरी
तारीफ में गीत गाऊँगा,*
10 क्योंकि तू राजाओं को जीत
दिलाता है,*[5]
अपने सेवक दाविद को तलवार की
मार से बचाता है।[6]
11 मुझे परदेसियों के हाथ से छुड़ाकर
बचा ले,
जो अपने मुँह से झूठ बोलते हैं,
अपना दायाँ हाथ उठाकर झूठी
शपथ खाते हैं।
12 तब हमारे बेटे उन छोटे पौधों की
तरह होंगे जो जल्दी बढ़ते हैं,
हमारी बेटियाँ महल के कोने में
खड़े नक्काशीदार खंभों की तरह
होंगी।
13 हमारे भंडार हर तरह की उपज से
भरे रहेंगे,
हमारे मैदानों में हमारे जानवरों के
झुंड हज़ार गुना बढ़ते जाएँगे,

अध्य. 143
1 भज 31:1
2 1शम 25:29; 1शम 26:9, 10
3 1शम 24:12
4 भज 89:20

अध्य. 144
5 व्य 32:4
6 2शम 22:35; भज 18:2, 34
7 2शम 22:2, 3
8 भज 18:47
9 भज 8:4; इब्र 2:6
10 भज 39:5
11 1इत 29:15; अय 14:1, 2
12 भज 18:9
13 निर्ग 19:18

दूसरा कॉल.
1 अय 36:32
2 2शम 22:15
3 2शम 22:17, 18; भज 18:16, 17; भज 54:3
4 भज 33:3; भज 40:3; भज 96:1; यश 42:10; प्रक 5:9; प्रक 14:3
5 2शम 5:19; भज 18:50
6 1शम 17:45, 46; 2शम 21:15, 17

144:2 *या "अटल प्यार।" **144:5** *या "झुकाकर।"

144:7 *या "चंगुल।" **144:8** *शा., "उनका दायाँ हाथ झूठ का दायाँ हाथ है।" **144:9** *या "संगीत बजाऊँगा।" **144:10** *या "का उद्धार करता है।"

हज़ारों-लाखों गुना बढ़ते जाएँगे।
14 हमारी गाभिन गायों के साथ कुछ
बुरा नहीं होगा,
उनका गर्भ नहीं गिरेगा,
हमारे चौक में किसी तरह का रोना-
पीटना नहीं होगा।
15 सुखी हैं वे लोग जो इस तरह खुश-
हाल होंगे!
सुखी हैं वे लोग जिनका परमेश्वर
यहोवा है![1]

दाविद का रचा हुआ तारीफ का गीत।

א [*आलेफ*]

145 हे मेरे परमेश्वर, मेरे
राजा, मैं तेरी बड़ाई
करूँगा,[2]
सदा तक तेरे नाम की तारीफ
करूँगा।[3]

ב [*बेथ*]

2 मैं सारा दिन तेरी तारीफ करूँगा,[4]
सदा तक तेरे नाम की तारीफ
करूँगा।[5]

ג [*गिमेल*]

3 यहोवा महान है, सबसे ज़्यादा
तारीफ के काबिल है,[6]
उसकी महानता हमारी समझ से
परे है।[7]

ד [*दालथ*]

4 पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोग तेरे कामों की
तारीफ करेंगे,
तेरे शक्तिशाली कामों का बखान
किया करेंगे।[8]

ה [*हे*]

5 वे तेरी महिमा, तेरे प्रताप
और वैभव के बारे में
बताएँगे[9]
और मैं तेरे आश्चर्य के कामों पर
मनन करूँगा।

ו [*वाव*]

6 वे तेरे विस्मयकारी कामों* के बारे
में बताएँगे
और मैं तेरी महानता का ऐलान
करूँगा।

ז [*जैन*]

7 वे तेरी अपार भलाई याद करके
बड़े जोश से उसकी चर्चा करेंगे,[1]
तेरी नेकी के कारण खुशी से जय-
जयकार करेंगे।[2]

ח [*हेथ*]

8 यहोवा करुणा से भरा और
दयालु है,[3]
क्रोध करने में धीमा और अटल
प्यार से भरपूर है।[4]

ט [*टेथ*]

9 यहोवा सबके साथ भला करता है,[5]
उसकी दया उसके सब कामों में
दिखायी देती है।

י [*योध*]

10 हे यहोवा, तेरे सब काम तेरी महिमा
करेंगे,[6]
तेरे वफादार लोग तेरी तारीफ
करेंगे।[7]

כ [*काफ*]

11 वे तेरे राज के ऐश्वर्य का ऐलान
करेंगे[8]
और तेरी महाशक्ति का बखान
करेंगे,[9]

ל [*लामेध*]

12 ताकि लोग तेरे शक्तिशाली कामों
और तेरे राज के ऐश्वर्य और
वैभव[10] के बारे में जानें।[11]

מ [*मेम*]

13 तेरा राज सदा तक कायम रहने-
वाला राज है,

145:6 * या "तेरी शक्ति।"

अध्य. 144
1 भज 33:12
भज 37:9
भज 37:37
भज 146:5

अध्य. 145
2 यश 33:22
प्रक 11:17
3 1इत 29:10
4 भज 119:164
5 भज 146:2
6 भज 150:2
रोम 1:20
प्रक 15:3
7 अय 26:14
भज 139:6
रोम 11:33
8 निर्ग 12:26, 27
9 भज 8:1

दूसरा कॉल.
1 1रा 8:66
भज 13:6
भज 31:19
यश 63:7
यिर्म 31:12
2 भज 51:14
प्रक 15:3
3 2इत 30:9
इफ 2:4
4 निर्ग 34:6
नहे 9:17
5 भज 25:8
नहू 1:7
मत 5:44, 45
प्रेष 14:17
याकू 1:17
6 भज 19:1
7 भज 30:4
इब्र 13:15
8 लूक 10:8, 9
9 व्य 3:24
1इत 29:11
प्रक 15:3
10 भज 103:19
11 भज 98:1

तेरा राज पीढ़ी-पीढ़ी तक बना
रहेगा।[1]

ס [सामेख]

14 यहोवा गिरनेवाले सभी लोगों को
संँभालता है[2]
और उन सबको उठाता है जो झुक
गए हैं।[3]

ע [ऐयिन]

15 सबकी आँखें उम्मीद से तेरी ओर
लगी रहती हैं,
तू उन्हें वक्त पर खाना देता है।[4]

פ [पे]

16 तू अपनी मुट्ठी खोलकर
हरेक जीव की इच्छा पूरी
करता है।[5]

צ [सादे]

17 यहोवा हर काम में नेक है,[6]
वह हर काम वफादारी से
करता है।[7]

ק [कोफ]

18 यहोवा उन सबके करीब रहता है
जो उसे पुकारते हैं,[8]
जो सच्चे दिल* से उसे
पुकारते हैं।[9]

ר [रेश]

19 वह उन सबकी इच्छा पूरी करता है
जो उसका डर मानते हैं,[10]
वह उनकी मदद की पुकार सुनता है
और उन्हें छुड़ाता है।[11]

ש [शीन]

20 यहोवा उन सबकी हिफाज़त करता
है जो उससे प्यार करते हैं,[12]
मगर सभी दुष्टों को वह मिटा
देगा।[13]

ת [ताव]

21 मैं अपने मुँह से यहोवा की तारीफ
करूँगा,[14]
हरेक जीव सदा तक उसके पवित्र
नाम की तारीफ करे।[1]

146

याह की तारीफ करो!*[2]
मेरा रोम-रोम यहोवा की
तारीफ करे।[3]

2 मैं सारी ज़िंदगी यहोवा की तारीफ
करूँगा,
जब तक मैं ज़िंदा रहूँगा, अपने
परमेश्वर की तारीफ में गीत
गाऊँगा।*

3 बड़े-बड़े अधिकारियों* पर भरोसा
मत रखना,
न ही किसी और इंसान पर, जो
उद्धार नहीं दिला सकता।[4]

4 उसकी भी साँस* निकल जाती है
और वह मिट्टी में मिल जाता है,[5]
उसी दिन उसके सारे विचार मिट
जाते हैं।[6]

5 सुखी है वह जिसका मददगार
याकूब का परमेश्वर है,[7]
जो अपने परमेश्वर यहोवा पर
आशा रखता है।[8]

6 उस परमेश्वर पर जो आकाश,
धरती,
समुंदर और उनमें जो कुछ है,
सबका बनानेवाला है,[9]
जो हमेशा विश्वासयोग्य
रहता है।[10]

7 वह धोखा खाए हुओं को न्याय
दिलाता है,
भूखों को रोटी देता है।[11]
यहोवा कैदियों* को छुड़ाता है।[12]

अध्य. 145

1 भज 146:10; 1ती 1:17
2 भज 37:23, 24; भज 94:18
3 भज 146:8
4 उत 1:30; भज 136:25
5 भज 104:27, 28; भज 107:9; भज 132:14, 15
6 उत 18:25; व्य 32:4
7 भज 18:25; प्रक 15:3, 4
8 भज 34:18; याकू 4:8
9 भज 17:1
10 भज 34:9
11 भज 37:39, 40; भज 50:15
12 भज 31:23; भज 97:10
13 नीत 2:22
14 भज 34:1; भज 51:15

दूसरा कॉल.

1 भज 117:1; भज 150:6

अध्य. 146

2 प्रक 19:6
3 भज 103:1
4 भज 62:9; भज 118:8, 9; यश 2:22; यिर्म 17:5
5 उत 3:19; भज 104:29; सभ 3:20; सभ 12:7
6 सभ 9:5, 10; यश 38:18
7 भज 46:7
8 भज 71:5; यिर्म 17:7
9 प्रेष 4:24; प्रक 14:7
10 व्य 7:9
11 भज 107:9; भज 145:16
12 भज 107:14; भज 142:7

145:18 *या "सच्चाई।"

146:1 *या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। **146:2** *या "संगीत बजाऊँगा।" **146:3** *या "हाकिमों।" **146:4** *शब्दावली में "रुआख; नफ्मा" देखें। **146:7** *शा., "बंदियों।"

8 यहोवा अंधों की आँखें खोलता है,[1]
यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा
करता है,[2]
यहोवा नेक लोगों से प्यार
करता है।
9 यहोवा परदेसियों की रक्षा करता है,
अनाथ* और विधवा की देखभाल
करता है,[3]
मगर दुष्ट की चालें नाकाम कर
देता है।#[4]
10 यहोवा सदा के लिए राजा बना
रहेगा,[5]
हे सिय्योन, तेरा परमेश्वर
पीढ़ी-पीढ़ी तक राजा बना
रहेगा।
याह की तारीफ करो!*

147 याह की तारीफ करो!*
हमारे परमेश्वर की तारीफ
में गीत गाना# कितना
अच्छा है,
उसकी तारीफ करना कितना मन-
भावना और सही है![6]
2 यहोवा यरूशलेम को बनाता है,[7]
इसराएल के बिखरे लोगों को इकट्ठा
करता है।[8]
3 वह टूटे मनवालों को चंगा करता है,
उनके घावों पर पट्टी बाँधता है।
4 वह तारों की गिनती करता है,
उनमें से हरेक को नाम से
पुकारता है।[9]
5 हमारा प्रभु महान है, महाशक्ति-
शाली है,[10]
उसकी समझ की कोई सीमा नहीं।[1]
6 यहोवा दीन लोगों को उठाता है,[2]
मगर दुष्टों को ज़मीन पर पटक
देता है।
7 यहोवा का शुक्रिया अदा करते हुए
उसके लिए गीत गाओ,
सुरमंडल बजाकर हमारे परमेश्वर
की तारीफ में गीत गाओ,
8 जो आसमान को बादलों से
ढाँपता है,
धरती पर पानी बरसाता है,[3]
पहाड़ों पर घास उगाता है।[4]
9 वह जानवरों को खाना देता है,[5]
कौवे के बच्चों को भी देता है, जो
खाना माँगते हैं।[6]
10 वह घोड़े की ताकत से खुश नहीं
होता,[7]
न ही आदमी के मज़बूत पैर उसकी
नज़र में कुछ हैं।[8]
11 यहोवा उनसे खुश होता है जो
उसका डर मानते हैं,[9]
जो उसके अटल प्यार की आस
लगाते हैं।[10]
12 हे यरूशलेम, यहोवा की
महिमा कर।
हे सिय्योन, अपने परमेश्वर की
तारीफ कर।
13 वह तेरी नगरी के फाटकों के बेड़े
मज़बूत करता है,
वह तेरे बेटों को आशीष देता है।
14 वह तेरे इलाके में शांति लाता है,[11]
तुझे बढ़िया-से-बढ़िया गेहूँ देकर
संतुष्ट करता है।[12]
15 वह धरती पर अपनी आज्ञा
भेजता है,
उसका वचन फुर्ती से भागकर
जाता है।

146:9 *या "जिसके पिता की मौत हो गयी है।" #या "दुष्ट की राह टेढ़ी-मेढ़ी कर देता है।" **146:10; 147:1** *या "हल्लिलू-याह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। **147:1** #या "संगीत बजाना।"

अध्य. 146
1 यश 29:18 यश 35:5
2 भज 145:14 2कुर 7:6
3 व्य 10:18 भज 68:5
4 भज 145:20
5 निर्ग 15:18 दान 6:26 प्रक 11:15

अध्य. 147
6 भज 135:3
7 भज 102:16
8 व्य 30:1-3 यहे 36:24
9 यश 40:26
10 नहू 1:3

दूसरा कॉल.
1 यश 40:28 रोम 11:33
2 भज 37:11
3 1रा 18:45 यिर्म 14:22 मत 5:45
4 अय 38:25-27 यश 30:23
5 भज 136:25
6 अय 38:41 लूक 12:24
7 यश 31:1 हो 1:7
8 1शम 16:7
9 मला 3:16
10 भज 33:18
11 लैव 26:6 यश 60:17
12 व्य 8:7, 8 भज 132:14, 15

16 वह बर्फ को ऊन की तरह
भेजता है,[1]
पाले को राख की तरह
बिखराता है।[2]
17 वह ओलों* को रोटी के टुकड़ों की
तरह गिराता है।[3]
उसकी भेजी ठंड कौन सह
सकता है?[4]
18 वह अपना वचन भेजता है और वे
पिघल जाते हैं।
वह तेज़ हवा चलाता है[5] और पानी
बहने लगता है।
19 वह अपना वचन याकूब को
सुनाता है,
अपने नियम और न्याय-सिद्धांत
इसराएल को सुनाता है।[6]
20 ऐसा उसने किसी और राष्ट्र के साथ
नहीं किया,[7]
दूसरे राष्ट्र उसके न्याय-सिद्धांतों के
बारे में कुछ नहीं जानते।
याह की तारीफ करो!*[8]

148 याह की तारीफ करो!*
स्वर्ग से यहोवा की तारीफ
करो,[9]
ऊँची जगहों में उसकी तारीफ करो।
2 उसके सब स्वर्गदूतो, उसकी तारीफ
करो।[10]
उसकी सारी सेनाओ, उसकी तारीफ
करो।[11]
3 सूरज और चाँद, उसकी तारीफ
करो।
चमकते तारो, तुम सब उसकी
तारीफ करो।[12]
4 हे सबसे ऊँचे आसमान और उनके
ऊपर ठहरे पानी,
उसकी तारीफ करो।
5 वे यहोवा के नाम की तारीफ करें,
क्योंकि उसके हुक्म देने पर उनकी
सृष्टि हुई थी।[1]
6 वह उन्हें सदा के लिए कायम
रखता है,[2]
उसने एक फरमान जारी किया जो
कभी रद्द नहीं होगा।[3]
7 धरती से यहोवा की तारीफ करो,
गहरे समुंदरो और उनके विशाल
जीवो,
8 बिजली और ओलो, बर्फ और
काली घटाओ,
उसका हुक्म माननेवाली आँधियो,[4]
9 पहाड़ो और सब पहाड़ियो,[5]
फलदार पेड़ो और सब देवदारो,[6]
10 जंगली जानवरो[7] और सब पालतू
जानवरो,
रेंगनेवाले जीवो और पंछियो,
11 धरती के राजाओ और सब राष्ट्रो,
धरती के हाकिमो और सब
न्यायियो,[8]
12 जवान लड़को और जवान लड़-
कियो,*
बुज़ुर्ग आदमियो और जवानो,
सब मिलकर उसकी तारीफ
करो।
13 वे सब यहोवा के नाम की
तारीफ करें,
क्योंकि सिर्फ उसी का नाम सबसे
ऊँचा और महान है।[9]
उसका प्रताप धरती और आकाश
के ऊपर फैला है।[10]

अध्य. 147
1 अय 37:6
2 अय 38:29
3 यह 10:11
4 अय 37:10
5 भज 148:8
6 व्य 4:5
7 निर्ग 19:5
निर्ग 31:16, 17
व्य 4:8
1इत 17:21
रोम 3:1, 2
8 प्रक 19:6

अध्य. 148
9 भज 89:5
10 भज 103:20
लूक 2:13
11 यिर्म 32:18
यहू 14
12 भज 19:1

दूसरा कॉल.
1 भज 33:6
2 भज 89:37
3 भज 119:91
यिर्म 31:35, 36
यिर्म 33:25
4 निर्ग 9:23
भज 107:25
यश 30:30
5 भज 98:8
6 1इत 16:33
यश 44:23
7 यश 43:20
8 भज 2:10, 11
9 भज 8:1
यश 12:4
10 1रा 8:27
1इत 29:11

147:17 *या "बर्फ।" **147:20; 148:1** *या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है।

148:12 *शा., "कुँवारियो।"

14 वह अपने लोगों की ताकत
बढ़ाएगा*
ताकि उसके सभी वफादार लोग,
उसके सबसे अज़ीज़ इसराएली लोग
सम्मान पाएँ।
याह की तारीफ करो!#

149 याह की तारीफ करो!#
यहोवा के लिए एक नया
गीत गाओ,[1]
वफादार लोगों की मंडली में उसकी
तारीफ करो।[2]
2 इसराएल अपने महान रचनाकार के
कारण खुशियाँ मनाए,[3]
सिय्योन के बेटे अपने राजा के
कारण जश्‍न मनाएँ।
3 वे नाचते हुए उसके नाम की
तारीफ करें,[4]
डफली और सुरमंडल बजाकर
उसकी तारीफ में गीत गाएँ।*[5]
4 यहोवा अपने लोगों से खुश
होता है।[6]
वह दीन स्वभाव के लोगों
का उद्धार करके उनकी शोभा
बढ़ाता है।[7]
5 वफादार लोग सम्मान पाने के
कारण मगन हों,
वे अपने बिस्तर पर लेटे खुशी से
जयजयकार करें।[8]
6 उनके होंठ परमेश्‍वर की तारीफ में
गीत गाएँ
और वे अपने हाथ में दोधारी तल-
वार लें

7 ताकि राष्ट्रों को उनका बदला
चुकाएँ,
देश-देश के लोगों को सज़ा दें,
8 उनके राजाओं को ज़ंजीरों में
जकड़ दें,
उनके बड़े-बड़े लोगों को लोहे की
बेड़ियाँ पहना दें,
9 उन्हें वह सज़ा दें जो उनके लिए
लिखी गयी है।[1]
यह सम्मान उसके सभी वफादार
लोगों का है।
याह की तारीफ करो!#

150 याह की तारीफ करो!#[2]
परमेश्‍वर की पवित्र जगह में
उसकी तारीफ करो।[3]
आसमान में उसकी तारीफ करो
जो उसकी ताकत की गवाही
देता है।[4]
2 उसके शक्‍तिशाली कामों के लिए
उसकी तारीफ करो।[5]
उसकी अपार महानता के लिए
उसकी तारीफ करो।[6]
3 नरसिंगा फूँकते हुए[7] उसकी तारीफ
करो।
तारोंवाला बाजा और सुरमंडल
बजाते हुए[8] उसकी तारीफ करो।
4 डफली बजाते[9] और घेरा बनाकर
नाचते हुए उसकी तारीफ करो।
तारोंवाले बाजे और बाँसुरी बजाते
हुए[10] उसकी तारीफ करो।[11]
5 झाँझ की झनझनाहट के साथ
उसकी तारीफ करो।
झाँझ की झंकार के साथ उसकी
तारीफ करो।[12]
6 साँस लेनेवाला हर जीव याह की
तारीफ करे।
याह की तारीफ करो!#[13]

अध्य. 149
1 भज 33:3, भज 96:1, यश 42:10, प्रक 5:9
2 भज 22:22
3 भज 100:3, यश 54:5
4 न्या 11:34
5 निर्ग 15:20, भज 150:4
6 भज 84:11
7 भज 132:16, यश 61:10
8 भज 63:6

दूसरा कॉल.
1 व्य 7:1

अध्य. 150
2 प्रक 19:6
3 भज 116:19
4 भज 19:1
5 भज 107:15, प्रक 15:3
6 व्य 3:24, भज 145:3
7 भज 81:3
8 1इत 15:28
9 निर्ग 15:20
10 1शम 10:5
11 भज 92:1, 3, भज 144:9
12 2शम 6:5, 1इत 15:19, 1इत 16:5
13 प्रक 5:13

148:14 *शा., "का सींग ऊँचा करेगा।" **148:14; 149:1, 9; 150:1, 6** #या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। **149:3** *या "संगीत बजाएँ।"

नीतिवचन

सारांश

1 नीतिवचन का मकसद (1-7)
बुरी संगति के खतरे (8-19)
सच्ची बुद्धि सरेआम पुकारती है (20-33)

2 बुद्धि का मोल (1-22)
इसे छिपे हुए खज़ाने की तरह खोज (4)
सोचने की शक्ति एक हिफाज़त है (11)
बदचलनी तबाही लाती है (16-19)

3 बुद्धिमान बन, यहोवा पर भरोसा रख (1-12)
अनमोल चीज़ों से यहोवा का सम्मान कर (9)
बुद्धि खुशी देती है (13-18)
बुद्धि सुरक्षा देती है (19-26)
दूसरों के साथ सही व्यवहार (27-35)
भला कर सकता है, तो कर (27)

4 पिता की बुद्धि-भरी हिदायतें (1-27)
सबसे बढ़कर बुद्धि हासिल कर (7)
दुष्टों की राह से दूर रह (14, 15)
नेक की राह रौशन होती जाती है (18)
"अपने दिल की हिफाज़त कर" (23)

5 बदचलन औरतों से खबरदार (1-14)
अपनी पत्नी के साथ खुश रह (15-23)

6 दूसरों का ज़ामिन बनने से बच (1-5)
"हे आलसी, चींटी के पास जा" (6-11)
निकम्मा और दुष्ट इंसान (12-15)
यहोवा को सात चीज़ों से नफरत है (16-19)
बुरी औरत से बच (20-35)

7 परमेश्वर की आज्ञाएँ मान और जीवित रह (1-5)
नादान जवान का बहकना (6-27)
"जैसे बैल हलाल होने जा रहा हो" (22)

8 बुद्धि कहती है (1-36)
'मैं परमेश्वर की पहली कारीगरी हूँ' (22)
"कुशल कारीगर की तरह उसके साथ थी" (30)
'इंसानों से मुझे लगाव था' (31)

9 सच्ची बुद्धि का न्यौता (1-12)
मेरी बदौलत तू बहुत दिन जीएगा (11)
मूर्ख औरत का न्यौता (13-18)
"चोरी का पानी मीठा होता है!" (17)

सुलैमान के नीतिवचन (10:1–24:34)

10 बुद्धिमान बेटा पिता को खुशी देता है (1)
मेहनती हाथ अमीर बनाते हैं (4)
बहुत बोलने पर गलतियाँ होती हैं (19)
यहोवा की आशीष अमीर बनाती है (22)
यहोवा का डर ज़िंदगी बढ़ाता है (27)

11 मर्यादा में रहनेवाला बुद्धिमान है (2)
भक्तिहीन दूसरों को तबाह करता है (9)
"बहुतों की सलाह से कामयाबी" (14)
दरियादिल फलता-फूलता है (25)
दौलत पर भरोसा रखनेवाला मिटेगा (28)

12 डाँट से नफरत करनेवाला नासमझ है (1)
"बिना सोचे-समझे बोलना, तलवार से वार करना है" (18)
शांति को बढ़ावा देने से खुशी मिलेगी (20)
झूठ बोलनेवाले होंठ से यहोवा को घिन है (22)
चिंताओं से मन दब जाता है (25)

13 सलाह करनेवाला बुद्धिमान है (10)
उम्मीद पूरी होने में देर, तो मन उदास (12)
विश्वासयोग्य दूत फायदा पहुँचाता है (17)
बुद्धिमानों का साथी बुद्धिमान बनेगा (20)
सुधारना, प्यार का सबूत है (24)

14 इंसान अपने दिल का दर्द जानता है (10)
सही लगनेवाला रास्ता मौत ला सकता है (12)
नादान हर बात पर यकीन करता है (15)
अमीर के कई दोस्त होते हैं (20)
शांत मन से शरीर भला-चंगा रहता है (30)

15 नरमी से जवाब देना क्रोध शांत करता है (1)
यहोवा की आँखें हर जगह लगी हैं (3)
वह सीधे इंसान की प्रार्थना से खुश होता है (8)

सलाह न करने से योजनाएँ नाकाम (22)
जवाब देने से पहले मन में सोच (28)

16 यहोवा इरादे जाँचता है (2)
अपने काम यहोवा को सौंप दे (3)
सच्चे पलड़े यहोवा की तरफ से हैं (11)
विनाश से पहले घमंड (18)
पके बाल खूबसूरत ताज हैं (31)

17 अच्छाई का बदला बुराई से मत चुका (13)
झगड़ा बढ़ने से पहले निकल जा (14)
सच्चा दोस्त हर समय प्यार करता है (17)
"दिल का खुश रहना बढ़िया दवा है" (22)
समझवाला सँभलकर बोलता है (27)

18 खुद को अलग करना मूर्खता और स्वार्थ है (1)
यहोवा का नाम मज़बूत मीनार है (10)
दौलत झूठी हिफाज़त है (11)
दोनों पक्षों की सुनना बुद्धिमानी है (17)
दोस्त भाई से बढ़कर वफा निभाता है (24)

19 अंदरूनी समझ, गुस्सा शांत करती है (11)
झगड़ालू पत्नी टपकती छत जैसी है (13)
सूझ-बूझवाली पत्नी यहोवा से मिलती है (14)
जब तक उम्मीद है, बच्चे को सिखा (18)
सलाह को सुनना बुद्धिमानी है (20)

20 दाख-मदिरा हँसी उड़ाती है (1)
आलसी सर्दियों में जुताई नहीं करता (4)
इंसान के विचार गहरे पानी की तरह हैं (5)
उतावली में मन्नत मत मान (25)
जवानों की शान उनकी ताकत है (29)

21 राजा का मन यहोवा मोड़ता है (1)
न्याय करना बलिदान चढ़ाने से बेहतर (3)
मेहनत से सफलता मिलती है (5)
जो दीन जन की नहीं सुनता, उसकी भी नहीं सुनी जाएगी (13)
यहोवा के खिलाफ कोई बुद्धि नहीं टिकती (30)

22 अच्छा नाम बेशुमार दौलत से बढ़कर है (1)
बचपन की सीख जीवन-भर याद रहेगी (6)
आलसी डरता है कि बाहर शेर है (13)
शिक्षा से मूर्खता दूर होती है (15)
काम में माहिर आदमी, राजाओं की सेवा करता है (29)

23 सोच-समझकर न्यौता कबूल कर (2)
पैसे के पीछे मत भाग (4)
पैसा पंख लगाकर उड़ जाएगा (5)
बहुत ज़्यादा पीनेवालों जैसा मत बन (20)
शराब साँप की तरह डसेगी (32)

24 बुरे लोगों से ईर्ष्या मत कर (1)
बुद्धि से घर बनता है (3)
नेक जन चाहे गिरे, वह उठ खड़ा होगा (16)
बदला मत ले (29)
झपकी लेने से गरीबी टूट पड़ती है (33, 34)

सुलैमान के नीतिवचन, जिनकी नकल हिजकियाह के आदमियों ने तैयार की (25:1–29:27)

25 राज़ की बात मत खोल (9)
सोच-समझकर कहे गए शब्द (11)
दूसरों के घर बार-बार मत जा (17)
दुश्मन के सिर पर अंगारों का ढेर लगाना (21, 22)
अच्छी खबर ठंडे पानी जैसी है (25)

26 आलसी का ब्यौरा (13-16)
दूसरों के झगड़े से दूर रह (17)
किसी का मज़ाक मत बना (18, 19)
लकड़ी नहीं तो आग नहीं (20, 21)
बदनाम करनेवाले की बातें लज़ीज़ खाने जैसी (22)

27 दोस्त की डाँट फायदेमंद है (5, 6)
मेरे बेटे, मेरा दिल खुश कर (11)
लोहा लोहे को तेज़ करता है (17)
अपने झुंड को जान (23)
दौलत हमेशा नहीं रहती (24)

28 बात न माननेवाले की प्रार्थना घिनौनी है (9)
अपराध माननेवाले पर दया की जाती है (13)
रातों-रात अमीर बननेवाला निर्दोष नहीं रहता (20)

चिकनी-चुपड़ी बातों से डाँट अच्छी (23)
दरियादिल को कोई कमी नहीं (27)

29 बच्चे पर रोक न हो तो वह शर्मिंदा करेगा (15)
मार्गदर्शन नहीं, लोग करें मनमानी (18)
गुस्सैल इंसान झगड़े पैदा करता है (22)
नम्र इंसान आदर पाएगा (23)
इंसान का डर एक फंदा है (25)

आगूर का संदेश (1-33)

30 मुझे न गरीबी दे, न अमीरी (8)
चीज़ें जो तृप्त नहीं होतीं (15, 16)
बातें जो समझ से बाहर हैं (18, 19)
बदचलन औरत (20)
सहज बुद्धिवाले जंतु (24)

राजा लमूएल की बातें (1-31)

31 अच्छी पत्नी कौन पा सकता है? (10)
कामकाजी और मेहनती (17)
भली बातें कहती है (26)
बच्चों और पति से तारीफ पाती है (28)
आकर्षण, खूबसूरती पल-भर की (30)

---

1 दाविद के बेटे और इसराएल के राजा, सुलैमान[1] के नीतिवचन,[2]

2 जिनसे इंसान बुद्धि[3] और शिक्षा पाएगा,
बुद्धि की बातें समझेगा,
3 ऐसी शिक्षा पाएगा[4] जो उसे अंदरूनी समझ देगी,
नेकी[5] और सीधाई से चलने और सही फैसले लेने*[6] में उसे मदद देगी।
4 ये नादानों को होशियार बनाएँगे,[7]
जवानों को ज्ञान और सोचने-परखने की शक्ति देंगे।[8]
5 बुद्धिमान सुनकर और ज़्यादा सीखेगा,[9]
समझ रखनेवाला, सही मार्गदर्शन* पाएगा[10]
6 ताकि नीतिवचन और मिसालें* समझ सके,
बुद्धिमानों की बातें और उनकी पहेलियाँ बूझ सके।[11]
7 यहोवा का डर मानना,* ज्ञान पाने की शुरूआत है।[1]
मूर्ख ही बुद्धि और शिक्षा को तुच्छ समझता है।[2]
8 हे मेरे बेटे, अपने पिता की शिक्षा पर ध्यान दे[3]
और अपनी माँ से मिलनेवाली सीख को मत ठुकरा।[4]
9 उनकी बातें तेरे सिर पर खूबसूरत ताज[5]
और तेरे गले का कीमती हार बनेंगी।[6]
10 हे मेरे बेटे, उन पापियों की बातों में न आना, जो तुझे फुसलाते हैं[7]
11 और कहते हैं, "आ, हमारे साथ चल!
खून करने के लिए हम घात लगाएँगे,
छिपकर मासूमों पर हमला करेंगे।
12 उन्हें निगल जाएँगे जैसे कब्र ज़िंदा लोगों को निगल जाती है,
हाँ, साबुत निगल जाएँगे।
13 उनकी सारी कीमती चीज़ें छीन लेंगे,

1:3 *या "और न्याय करने।" 1:5 *या "बुद्धि-भरी सलाह।" 1:6 *या "सोच में डालनेवाली कहावतें।"

1:7 *या "के लिए गहरी श्रद्धा।"

अध्य. 1
1 2शम 12:24; 1रा 2:12
2 1रा 4:29, 32; सभ 12:9
3 नीत 8:11
4 नीत 3:11, 12
5 इब्र 12:11
6 1रा 3:28
7 नीत 15:5
8 नीत 2:11; नीत 3:21; नीत 8:12
9 नीत 9:9
10 1शम 25:32, 33; नीत 24:6
11 सभ 12:11

दूसरा कॉल.
1 अय 28:28; नीत 9:10
2 नीत 5:12, 13; नीत 18:2
3 व्य 6:6, 7; इफ 6:4; इब्र 12:9
4 लैव 19:3; नीत 31:26; 2ती 1:5
5 नीत 4:7, 9
6 नीत 3:21, 22
7 उत 39:7, 8; व्य 13:6-8

लूट के माल से अपना घर भर
लेंगे।
14 हमारे साथ चल तो सही,
चोरी का माल हम बराबर बाँट
लेंगे।"*
15 हे मेरे बेटे, उनके पीछे मत जाना,
उनकी राहों से दूर रहना।[1]
16 क्योंकि उनके पैर बुराई करने को
दौड़ते हैं,
वे लोग खून बहाने के लिए फुर्ती
करते हैं।[2]
17 चिड़िया की आँखों के सामने जाल
बिछाना बेकार है,
18 इसीलिए दुष्ट, खून करने के लिए
घात लगाते हैं
लोगों की जान लेने के लिए छिपकर
बैठते हैं।
19 बेईमानी की कमाई करनेवाले यही
रास्ता अपनाते हैं
और इस तरह वे अपनी जान गँवा
बैठते हैं।[3]
20 सच्ची बुद्धि[4] सड़कों पर
पुकारती है,[5]
चौराहों पर उसकी आवाज़
गूँजती है,[6]
21 चहल-पहलवाले नुक्कड़ पर वह
आवाज़ लगाती है,
शहर के फाटकों पर कहती है,[7]
22 "ऐ नादानो, तुम कब तक नादानी
से लिपटे रहोगे?
ऐ खिल्ली उड़ानेवालो, तुम कब तक
खिल्ली उड़ाने का मज़ा लोगे?
ऐ मूर्खो, तुम कब तक ज्ञान से नफ-
रत करोगे?[8]
23 मेरी डाँट सुनकर सुधरो,*[9]

तब मेरे सोते तुम्हारे लिए फूट पड़ेंगे
और मैं तुम्हें अपनी बातें
बताऊँगी।[1]
24 मैंने बार-बार पुकारा पर तुमने
सुनने से इनकार कर दिया,
मैंने हाथ से इशारा किया, मगर
किसी ने ध्यान नहीं दिया,[2]
25 मेरी सलाह को तुम अनसुना
करते रहे,
जब मैंने डाँट लगाकर तुम्हें
सुधारना चाहा,
तो तुमने इसे ठुकरा दिया,
26 इसलिए जब विपत्ति तुम पर टूट
पड़ेगी तो मैं हँसूँगी,
जिसका तुम्हें डर है, जब वह तुम
पर आ पड़ेगा तो मैं मज़ाक
उड़ाऊँगी।[3]
27 जब वह डर तूफान की तरह तुम
पर छा जाएगा,
विपत्ति ज़ोरदार आँधी की तरह तुम
पर टूट पड़ेगी,
संकट और मुसीबतें तुम्हें आ घेरेंगी,
तब मैं हँसूँगी।
28 उस वक्त वे रह-रहकर मुझे पुका-
रेंगे, मगर मैं कोई जवाब नहीं
दूँगी,
मुझे यहाँ-वहाँ ढूँढ़ेंगे मगर मैं न
मिलूँगी[4]
29 क्योंकि उन्होंने ज्ञान से नफ-
रत की,[5]
यहोवा का डर मानना उन्हें रास
नहीं आया।[6]
30 उन्होंने मेरी सलाह ठुकरा दी,
जब-जब मैंने डाँट लगायी, उन्होंने
इसकी कदर नहीं की।
31 इसलिए वे अपने कामों का फल
पाएँगे,[7]

1:14 *या "हम सबकी एक ही थैली (या बटुआ) होगी।" **1:23** *या "लौट आओ।"

अध्य. 1
1 नीत 4:14; नीत 13:20; 1कुर 15:33
2 नीत 6:16-18; रोम 3:15
3 नीत 15:27
4 रोम 16:27; 1कुर 1:20; याकू 3:17
5 मत 10:27
6 नीत 8:1-3; नीत 9:1, 3
7 यूह 18:20; प्रेष 20:20
8 नीत 5:12, 13; यूह 3:20
9 भज 141:5; प्रक 3:19

दूसरा कॉल.
1 यश 54:13
2 यश 65:12
3 न्या 10:13, 14
4 विल 3:44
5 हो 4:6
6 न्या 5:8
7 यिर्म 6:19; गल 6:7

अपनी साज़िशों का पूरा-पूरा अंजाम
भुगतेंगे।*
32 मुझसे मुँह मोड़कर नादान अपनी
जान गँवा बैठता है,
मूर्खों का बेफिक्र रवैया उन्हें तबाह
कर देता है।
33 लेकिन जो मेरी सुनता है वह बेखौफ
जीएगा,[1]
उसे विपत्ति का डर नहीं
सताएगा।"[2]

2 हे मेरे बेटे, अगर तू मेरी बातों को
माने,
मेरी आज्ञाओं को खज़ाने की तरह
सँभालकर रखे,[3]
2 बुद्धि की बातों पर कान लगाए,[4]
पैनी समझ की बातों पर मन
लगाए,[5]
3 अगर तू समझ को पुकारे,[6]
पैनी समझ को ज़ोर-ज़ोर से आवाज़
लगाए,[7]
4 अगर तू इन्हें चाँदी की तरह
ढूँढ़ता रहे,[8]
छिपे हुए खज़ाने की तरह
खोजता रहे,[9]
5 तब तू समझेगा कि यहोवा का डर
मानना क्या होता है[10]
और तुझे परमेश्वर का ज्ञान हासिल
होगा।[11]
6 क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है,[12]
ज्ञान और पैनी समझ उसी के मुँह से
निकलते हैं,
7 उसके पास ऐसी बुद्धि का भंडार
है, जिससे सीधे लोगों को फायदा
होता है।
निर्दोष चाल चलनेवालों के लिए वह
ढाल है।[13]
8 वह न्याय की राहों पर नज़र
रखता है
और अपने वफादार लोगों के मार्ग
की हिफाज़त करता है।[1]
9 तू यह भी समझेगा कि नेकी, न्याय
और सीधाई क्या है,
हाँ, तू सब भली राहें जान पाएगा।[2]
10 जब बुद्धि तेरे दिल में उतरेगी[3]
और ज्ञान तेरे जी* को भाने
लगेगा,[4]
11 जब सोचने-परखने की शक्ति तुझ
पर नज़र रखेगी[5]
और पैनी समझ तेरी हिफाज़त
करेगी,
12 तब तू गलत रास्ते पर जाने से
बचेगा,
उन आदमियों से दूर रहेगा जो टेढ़ी
बातें कहते हैं,[6]
13 जो अँधेरी राहों पर चलने के लिए[7]
सीधाई का रास्ता छोड़ देते हैं,
14 जिन्हें बुरे काम करने में मज़ा
आता है,
गंदी और घिनौनी बातें जिन्हें उमंग
से भर देती हैं,
15 जिनकी राहें टेढ़ी हैं
और जिनके सारे काम कपट से
भरे हैं।
16 बुद्धि तुझे नीच* औरत से
बचाएगी,
बदचलन# औरत की चिकनी-
चुपड़ी बातों से बचाएगी,[8]
17 जिसने अपनी जवानी के करीबी
साथी* को छोड़ दिया[9]
और अपने परमेश्वर का करार
भूल गयी।

अध्य. 1
1 यश 48:18
2 2रा 6:15, 16; यश 26:3; 2पत 2:9

अध्य. 2
3 व्य 6:6, 8
4 नीत 1:5
5 इब्र 5:14
6 1रा 3:11, 12; नीत 9:10; 2ती 2:7
7 फिल 1:9
8 भज 19:9, 10
9 अय 28:15-18
10 अय 28:28; नीत 8:13; यिर्म 32:40
11 यिर्म 9:24; 1यूह 5:20
12 निर्ग 31:2, 3; 1रा 4:29; 2ती 3:16, 17; याकू 3:17
13 भज 41:12; नीत 28:18

दूसरा कॉल.
1 भज 97:10
2 सभ 12:13; मी 6:8; मत 22:37-40
3 भज 119:111
4 प्रेष 17:11
5 सभ 7:12
6 नीत 8:13
7 यूह 3:19
8 उत 39:10-12; नीत 6:23, 24; नीत 7:4, 5
9 उत 2:24; नीत 5:18

1:31 *या "से अघा जाएँगे।"

2:10 *शब्दावली में "जीवन" देखें। 2:16 *शा., "परायी।" #शा., "परदेसी।" 2:17 *या "के पति।"

18 उसके घर जाना, मौत के मुँह में
जाना है,
उसकी डगर कब्र की ओर ले
जाती है।[1]
19 उसके साथ संबंध रखनेवाला कभी
लौटकर नहीं आएगा,
न ज़िंदगी की राह पर फिर कभी
चल पाएगा।[2]
20 इसलिए अच्छे लोगों की राह
पर चल,
नेक जनों के रास्ते पर बना रह,[3]
21 क्योंकि सिर्फ सीधे-सच्चे लोग धरती
पर बसेंगे,
निर्दोष लोग ही इस पर रहेंगे,[4]
22 मगर दुष्टों को धरती से मिटा दिया
जाएगा[5]
और विश्वासघातियों को उखाड़
दिया जाएगा।[6]

3 हे मेरे बेटे, मेरी सिखायी बातों को
मत भूलना
और मेरी आज्ञाओं को पूरे दिल से
मानना।
2 तब तेरी ज़िंदगी में बहुत-से दिन
जुड़ जाएँगे
और सालों तक तू चैन से जीएगा।[7]
3 अटल प्यार और सच्चाई को अपने
से दूर मत करना,[8]
उन्हें अपने गले का हार बनाना
और अपने दिल की पटिया पर
लिखना,[9]
4 तब परमेश्वर और इंसान तुझसे
खुश होंगे
और कबूल करेंगे कि तुझमें अंद-
रूनी समझ है।[10]
5 तू अपनी समझ का सहारा न
लेना,[11]
बल्कि पूरे दिल से यहोवा पर
भरोसा रखना,[12]
6 उसी को ध्यान में रखकर सब काम
करना,[1]
तब वह तुझे सही राह
दिखाएगा।*[2]
7 खुद को बड़ा बुद्धिमान न समझना,[3]
यहोवा का डर मानना और बुराई से
दूर रहना।
8 ऐसा करने से तेरा शरीर भला-चंगा
रहेगा
और तेरी हड्डियों को ताज़गी
मिलेगी।
9 अपनी अनमोल चीज़ें देकर यहोवा
का सम्मान करना,[4]
अपनी उपज* का पहला फल#
चढ़ाकर उसका आदर करना,[5]
10 तब तेरे भंडार खूब भरे रहेंगे[6]
और तेरे हौद नयी दाख-मदिरा से
उमड़ते रहेंगे।
11 हे मेरे बेटे, यहोवा की शिक्षा मत
ठुकराना,[7]
उसकी डाँट से नफरत न करना,[8]
12 क्योंकि यहोवा जिससे प्यार करता
है उसको डाँटता भी है,[9]
जैसे पिता उस बेटे को डाँटता है
जिसे वह बेहद चाहता है।[10]
13 सुखी है वह इंसान जो बुद्धि हासिल
करता है,[11]
सुखी है वह जो पैनी समझ को ढूँढ़
लेता है।
14 बुद्धि पाना चाँदी पाने से बेहतर है,
इसे हासिल करना,* सोना हासिल
करने से बढ़कर है।[12]
15 यह मूंगों* से भी कीमती है,

3:6 *शा., "तेरा रास्ता सीधा करेगा।" **3:9** *या "कमाई।" #या "का सबसे बढ़िया हिस्सा।" **3:14** *या "इसे मुनाफे में हासिल करना।" **3:15** *शब्दावली देखें।

अध्य. 2
1 नीत 5:3, 5
नीत 5:20, 23
नीत 9:16-18
इफ 5:5
2 सभ 7:26
प्रक 22:15
3 नीत 13:20
4 भज 37:11, 29
5 भज 104:35
नीत 10:7
मत 25:46
6 व्य 28:45, 63

अध्य. 3
7 व्य 5:16
8 हो 12:6
9 व्य 6:6, 8
10 2कुर 8:21
11 नीत 28:26
यिर्म 10:23
1कुर 3:18
12 यश 26:4
यिर्म 17:7

दूसरा कॉल.
1 1शम 23:2, 4
नहे 1:11
फिल 4:6
2 यह 1:7
भज 25:9
याकू 1:5
3 नीत 26:12
रोम 12:16
4 गि 31:50
व्य 16:16
लूक 16:9
1ती 6:18
5 निर्ग 23:19
6 2इत 31:10
मला 3:10
7 नीत 15:32
इब्र 12:5, 6
8 भज 94:12
9 प्रक 3:19
10 व्य 8:5
इब्र 12:7, 9
11 सभ 7:12
12 अय 28:15, 18

इसके सामने हर वह चीज़ फीकी है,
जिसे पाने की तू चाहत रखता है।
16 यह अपने दाएँ हाथ से लंबी ज़िंदगी देती है
और बाएँ हाथ से धन-दौलत और सम्मान।
17 इसकी राह पर चलने से खुशियाँ मिलती हैं,
इसके सभी रास्ते शांति की ओर ले जाते हैं।[1]
18 जो बुद्धि को थामते हैं, उनके लिए यह जीवन का पेड़ है,
जो इसे थामे रहते हैं, वे सुखी माने जाएँगे।[2]
19 यहोवा ने बुद्धि से पृथ्वी की नींव डाली,[3]
पैनी समझ से आकाश को मज़बूती से ताना।[4]
20 उसके ज्ञान से गहरा पानी फट पड़ा
और आसमान से हलकी फुहार होने लगी।[5]
21 हे मेरे बेटे, इन्हें* भूल न जाना,
जो बुद्धि तुझे फायदा पहुँचाती है उसे सँभालकर रखना
और अपनी सोचने-परखने की शक्ति गँवा न देना।
22 ये तुझे ज़िंदगी देंगी,
तेरे गले का खूबसूरत हार बनेंगी,
23 तू अपनी डगर पर महफूज़ रहेगा
और तेरे पैर कभी ठोकर नहीं खाएँगे।[6]
24 जब तू लेटेगा तो तुझे कोई डर न सताएगा,[7]
अपने बिस्तर पर तुझे मीठी नींद आएगी।[8]
25 अचानक आनेवाली आफत से तू न डरेगा,[1]
न दुष्टों पर आनेवाले तूफान से खौफ खाएगा,[2]
26 क्योंकि तेरा भरोसा यहोवा पर होगा,[3]
वह तेरे पैरों को किसी फंदे में नहीं फँसने देगा।[4]
27 जिनका भला करना चाहिए,*
अगर उनका भला करना तेरे बस में हो तो पीछे मत हटना।[5]
28 अगर तू अपने पड़ोसी को अभी कुछ दे सकता है,
तो उससे यह मत कहना, "कल आना, कल मैं तुझे दूँगा।"
29 अगर तेरा पड़ोसी तुझ पर भरोसा करता है,
तो उसके खिलाफ साज़िश मत रचना।[6]
30 अगर किसी आदमी ने तेरा कुछ नहीं बिगाड़ा,
तो उससे बेवजह मत उलझना।[7]
31 खूँखार इंसान से ईर्ष्या मत करना,[8]
न उसकी राह पर चलना,
32 क्योंकि यहोवा कपटी लोगों से नफ-रत करता है,[9]
मगर सीधे-सच्चे लोगों से गहरी दोस्ती रखता है।[10]
33 दुष्ट के घर पर यहोवा का शाप पड़ता है,[11]
लेकिन नेक इंसान के घर पर वह आशीषें देता है।[12]
34 खिल्ली उड़ानेवालों की वह खिल्ली उड़ाता है,[13]
लेकिन दीन लोगों पर वह मेहरबान होता है।[14]

3:21 *ज़ाहिर है कि यहाँ परमेश्वर के उन गुणों की बात की गयी है, जो पिछली आयतों में बताए गए हैं।

3:27 *या "जिनका भला करना तेरा फर्ज़ है।"

अध्य. 3
1 फिल 4:9
2 भज 1:1, 2
3 भज 104:24
4 नीत 8:27; यिर्म 10:12
5 अय 36:27; अय 38:37; यिर्म 10:13
6 यश 26:7
7 भज 3:5; नीत 6:22
8 सभ 5:12

दूसरा कॉल.
1 भज 27:1
2 भज 73:12, 19
3 नीत 10:29; नीत 28:1
4 भज 91:14
5 व्य 15:7, 8; नीत 28:27; याकू 2:15, 16
6 नीत 6:16, 18
7 नीत 18:6; नीत 20:3; रोम 12:18
8 भज 37:1; नीत 23:17
9 नीत 6:16, 17
10 भज 15:1, 2; भज 24:3, 4; भज 25:14
11 व्य 28:15; यह 7:24, 25; एस 9:24, 25
12 अय 42:12, 13; भज 37:25
13 नीत 19:29
14 भज 37:11; भज 138:6; यश 57:15; याकू 4:6

35 बुद्धिमान को इज़्ज़त मिलती है,
लेकिन मूर्ख ऐसी बातों पर घमंड करता है,
जिनसे उसका अपमान होता है।[1]

4 हे मेरे बेटे, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा,[2]
उस पर ध्यान दे कि तुझे समझ मिले।
2 मैं तुझे बढ़िया बातें सिखाऊँगा,
मेरी सिखायी बातों को मत छोड़ना।[3]
3 मैं अपने पिता का आज्ञाकारी बेटा था,[4]
अपनी माँ का दुलारा था।[5]
4 मेरे पिता ने यह कहकर मुझे सिखाया,
“मेरी बातों को अपने दिल में थामे रख,[6]
मेरी आज्ञाओं को मान, तब तू लंबी उम्र जीएगा।[7]
5 बुद्धि हासिल कर, समझ हासिल कर,[8]
मेरी बातों को भूल न जाना, उनसे मुँह मत फेरना।
6 बुद्धि को मत छोड़ना, वह तेरी हिफाज़त करेगी,
उससे प्यार करना, वह तेरी रक्षा करेगी।
7 बुद्धि हासिल कर क्योंकि यह सबसे ज़रूरी है,[9]
तू जो कुछ हासिल करे, उसके साथ समझ भी हासिल करना।[10]
8 बुद्धि को अनमोल जान, वह तुझे ऊँचा उठाएगी,[11]
उसे गले लगा, वह तेरा मान बढ़ाएगी।[12]
9 वह तेरे सिर पर फूलों का ताज सजाएगी,

अध्य. 3
1 एस 6:11, 12 नीत 12:8

अध्य. 4
2 व्य 6:6, 7 नीत 19:20 इफ 6:1
3 1इत 28:9
4 1रा 2:12
5 1रा 1:16-21
6 व्य 4:9
7 लैव 18:5
8 नहे 8:3, 8 नीत 9:10
9 सभ 7:12
10 नीत 15:14 मत 13:23 इब्र 5:14
11 दान 1:17, 20
12 1रा 4:29

दूसरा कॉल.
1 व्य 5:16
2 1रा 4:29
3 यश 26:7
4 नीत 8:10 इब्र 2:1 इब्र 12:5, 6
5 व्य 32:45-47 इब्र 12:11
6 भज 1:1 1कुर 15:33
7 आम 5:15 इफ 5:11
8 नीत 5:3, 8 1थि 5:22
9 2शम 23:3, 4 भज 119:105 1कुर 13:12 2कुर 4:6 2पत 1:19

खूबसूरत ताज पहनाकर तेरी शोभा बढ़ाएगी।”
10 हे मेरे बेटे, मेरी बातें सुन और उन्हें मान,
तब तू बहुत साल जीएगा।[1]
11 मैं तुझे बुद्धि की राह पर चलना सिखाऊँगा,[2]
सीधाई की डगर पर ले चलूँगा।[3]
12 जब तू चलेगा तो कोई बाधा तुझे नहीं रोकेगी,
जब तू दौड़ेगा तो तू ठोकर खाकर नहीं गिरेगा।
13 तुझे जो शिक्षा मिले उसे पकड़े रहना, जाने मत देना,[4]
उसी पर तेरी ज़िंदगी टिकी है, उसे सँभालकर रखना।[5]
14 दुष्टों की राह मत पकड़ना,
बुरे लोगों के रास्ते पर न जाना।[6]
15 उससे दूर रहना, उस तरफ मत जाना,[7]
अपना मुँह फेर लेना और आगे बढ़ जाना।[8]
16 क्योंकि दुष्ट को बुराई करे बिना नींद नहीं आती,
जब तक वे किसी को बरबाद न कर दें, वे चैन से नहीं सोते।
17 वे दुष्टता की रोटी खाते हैं,
हिंसा से मिली दाख-मदिरा पीते हैं।
18 मगर नेक जनों की राह सुबह की रौशनी जैसी है,
जिसका तेज, दिन चढ़ने के साथ-साथ बढ़ता जाता है।[9]
19 दुष्टों की राह में अँधेरा-ही-अँधेरा है,
वे नहीं जानते कि उन्हें किससे ठोकर लगती है।
20 हे मेरे बेटे, मेरी बातों पर ध्यान दे,
इन पर कान लगा।

21 इन्हें अपनी आँखों से ओझल मत
होने दे,
इन्हें अपने दिल में संजोए रख।[1]
22 जो इन्हें ढूँढ़ लेता है उसे ज़िंदगी
मिल जाती है[2]
और उसका पूरा शरीर भला-चंगा
रहता है।
23 सब चीज़ों से बढ़कर अपने दिल की
हिफाज़त कर,[3]
क्योंकि जीवन के सोते इसी से
निकलते हैं।
24 अपने मुँह से टेढ़ी-मेढ़ी बातें न
निकाल,[4]
अपनी ज़बान पर छल-कपट की
बातें न ला।
25 अपनी आँखें सामने की ओर
लगाए रख,
हाँ, अपनी नज़रें आगे की तरफ
टिकाए रख।[5]
26 अपनी राहों को समतल कर,*[6]
तब तेरी सब राहें कामयाब होंगी।
27 तू न दाएँ मुड़ना न बाएँ,[7]
बुराई के रास्ते पर कदम रखने से
दूर रहना।

5 हे मेरे बेटे, मेरी बुद्धि-भरी बातों पर
ध्यान दे,
मैं पैनी समझ के बारे में जो
सिखाऊँ, उस पर कान लगा।[8]
2 तब तू अपनी सोचने-परखने की
शक्ति की रक्षा कर सकेगा
और तेरे मुँह से हमेशा सच्चे ज्ञान
की बातें निकलेंगी।[9]
3 बदचलन* औरत की बातें# शहद
जैसी मीठी[10]
और तेल से भी चिकनी होती हैं,[11]
4 लेकिन आखिर में वह नागदौने
जैसी कड़वी निकलती हैं[1]
और दोधारी तलवार की तरह चोट
पहुँचाती हैं।[2]
5 उसके पैर मौत की तरफ बढ़ते हैं,
उसके कदम सीधे कब्र की ओर ले
जाते हैं।
6 जीवन की राह के बारे में वह ज़रा
भी नहीं सोचती,
अपनी राह पर वह भटक रही है
और नहीं जानती कि यह उसे
किधर ले जाएगी।
7 हे मेरे बेटो, मेरी सुनो,
मैं जो कहूँ, उसे अनसुना मत
करना।
8 उस औरत से कोसों दूर रहना,
उसकी दहलीज़ के पास भी न
जाना।[3]
9 कहीं ऐसा न हो कि तू अपना मान-
सम्मान खो बैठे[4]
और सारी ज़िंदगी तुझे दुख में
काटनी पड़े,[5]
10 या पराए तेरी कमाई से अपना
पेट भरें[6]
और जो कुछ तूने मेहनत से जोड़ा
है, वह दूसरों के घर चला जाए।
11 अगर ऐसा हुआ तो जीवन के
आखिरी समय में,
जब तेरी ताकत और शरीर जवाब
देने लगेंगे, तब तू कराहेगा[7]
12 और कहेगा, "मैंने शिक्षा से नफरत
क्यों की?
क्यों मेरे मन ने डाँट को स्वीकार
नहीं किया?
13 मैंने अपने शिक्षकों की बात क्यों
नहीं सुनी?
क्यों अपने सिखानेवालों पर ध्यान
नहीं दिया?

अध्य. 4
1 भज 40:8; नीत 2:1
2 1ती 4:8
3 यिर्म 17:9; मर 7:21-23; इफ 6:14
4 1पत 2:1
5 मत 6:22
6 इफ 5:15
7 व्य 12:32; यह 1:7

अध्य. 5
8 1रा 4:29; याकू 1:19
9 नीत 15:7
10 नीत 7:14-21
11 नीत 9:16, 17

दूसरा कॉल.
1 सभ 7:26
2 नीत 6:32, 33
3 नीत 9:14, 15
4 नीत 29:3
5 नीत 6:33-35; नीत 7:23
6 नीत 31:3; लूक 15:30
7 नीत 7:22, 23

4:26 *या शायद, "पर अच्छे-से गौर कर।"
5:3 *शा., "परायी।" #शा., "के होंठ।"

14 तभी पूरी मंडली के सामने,*
मैं विनाश की कगार पर
खड़ा हूँ।”[1]
15 अपने ही कुंड से पानी पी,
अपने ही कुएँ का ताज़ा*
पानी पी।[2]
16 क्यों तेरे सोते घर के बाहर
और तेरी पानी की धाराएँ चौक में
बह जाएँ?[3]
17 ये सिर्फ तेरे लिए रहें,
किसी पराए के लिए नहीं।[4]
18 तेरे पानी के सोते पर आशीष हो,
अपनी जवानी की पत्नी के साथ
खुश रह।[5]
19 वह तो तेरी प्यारी हिरनी है, मन
मोह लेनेवाली पहाड़ी बकरी है।[6]
उसके स्तन हमेशा तुझे संतुष्ट रखें,
तू हमेशा उसके प्यार में डूबा रहे।[7]
20 हे मेरे बेटे, फिर तू क्यों किसी
परायी औरत पर मोहित हो?
क्यों एक बदचलन* औरत को
अपने सीने से लगाए?[8]
21 इंसान की राहें यहोवा की आँखों से
छिपी नहीं हैं,
वह उसके हर कदम को
जाँचता है।[9]
22 दुष्ट के गुनाह उसी के लिए फंदा
बन जाते हैं,
वह अपने ही पाप की रस्सियों में
कसकर रह जाता है,[10]
23 अपनी बड़ी मूर्खता के कारण
भटकता फिरता है,
शिक्षा कबूल न करने से वह मर
जाएगा।

5:14 *शा., “सभा और मंडली के बीच।” **5:15** *या “बहता।” **5:20** *शा., “परदेसी।”

अध्य. 5
1 नीत 6:27-29
2 1कुर 7:3; इब्र 13:4
3 नीत 5:20
4 उत 2:24
5 व्य 24:5; सभ 9:9
6 श्रेष 2:9
7 उत 26:8; उत 29:20; श्रेष 8:6
8 नीत 22:14
9 2इत 16:9; भज 11:4; भज 17:3; यिर्म 17:10; इब्र 4:13
10 भज 7:14-16; गल 6:7

दूसरा कॉल.

अध्य. 6
1 नीत 17:18
2 नीत 11:15; नीत 20:16
3 नीत 18:7
4 मत 5:25
5 नीत 10:26; नीत 26:13-15
6 नीत 30:24, 25
7 नीत 20:13; नीत 24:33, 34; सभ 4:5

6 हे मेरे बेटे, अगर तूने किसी
का कर्ज़ चुकाने का ज़िम्मा
लिया है,*[1]
अगर तूने किसी पराए से हाथ
मिलाया है,#[2]
2 अगर तू वचन देकर फँस गया है,
ज़बान देकर बँध गया है,[3]
3 तो हे मेरे बेटे, खुद को छुड़ाने के
लिए ऐसा कर:
नम्र होकर उस आदमी के पास जा
और उसके आगे गिड़गिड़ा,
क्योंकि तू उसके हाथ में पड़
चुका है।[4]
4 अपनी आँखों में नींद न आने दे,
अपनी पलकों को झपकी न लेने दे,
5 खुद को छुड़ा ले, जैसे चिकारा खुद
को शिकारी की पकड़ से
और पंछी खुद को बहेलिए के हाथ
से छुड़ाता है।
6 हे आलसी,[5] चींटी के पास जा,
उसके तौर-तरीके देख और बुद्धि-
मान बन।
7 उसका न तो सेनापति होता है,
न कोई अधिकारी, न ही शासक,
8 फिर भी वह गरमियों में अपने खाने
का इंतज़ाम करती है,[6]
कटनी के समय खाने की चीज़ें
बटोरती है।
9 हे आलसी, तू कब तक पड़ा रहेगा?
नींद से कब जागेगा?
10 थोड़ी देर और सो ले, एक और
झपकी ले ले,
हाथ बाँधकर थोड़ा सुस्ता ले,[7]
11 तब गरीबी, लुटेरे की तरह तुझ पर
टूट पड़ेगी,

6:1 *शा., “तू किसी का ज़ामिन बना है।” #यानी उसकी मदद करने का वादा किया है।

तंगी, हथियारबंद आदमी की तरह
हमला बोल देगी।[1]
12 निकम्मा और दुष्ट इंसान टेढ़ी-मेढ़ी
बातें करता है,[2]
13 बुरे इरादे से आँख मारता है,[3]
पैरों और उँगलियों से इशारे
करता है।
14 उसका मन कपट से भरा है,
वह हमेशा बुरा करने की तरकीबें
बुनता है[4] और जहाँ जाता है
झगड़े लगाता है।[5]
15 इसलिए उस पर अचानक विपत्ति
आ पड़ेगी,
पल-भर में उसका ऐसा नाश होगा
कि बचने की उम्मीद न होगी।[6]
16 छः चीज़ें हैं जिनसे यहोवा नफरत
करता है,
हाँ, सात चीज़ें हैं जिनसे वह घिन
करता है:
17 घमंड से चढ़ी आँखें,[7]
झूठ बोलनेवाली जीभ,[8]
बेगुनाहों का खून करनेवाले हाथ,[9]
18 साज़िश रचनेवाला दिल,[10]
बुराई की तरफ दौड़नेवाले पैर,
19 बात-बात पर झूठ बोलनेवाला
गवाह[11]
और भाइयों में फूट डालनेवाला
आदमी।[12]
20 हे मेरे बेटे, अपने पिता की
आज्ञाओं को मान,
अपनी माँ से मिलनेवाली सीख को
मत ठुकरा।[13]
21 इन्हें अपने दिल में बिठा,
अपने गले में बाँध।
22 जब तू चलेगा तो ये तेरी अगुवाई
करेंगी,
जब तू लेटेगा तो तुझ पर पहरा
देंगी,
जब तू जागेगा तो तुझसे बातें
करेंगी।*
23 ये आज्ञाएँ तेरे लिए दीपक हैं,[1]
ये कानून तेरे लिए रौशनी हैं[2]
और तुझे सुधारने* के लिए दी
गयी डाँट जीवन की ओर ले
जाएगी।[3]
24 ये बुरी औरत से तेरी हिफाज़त
करेंगी,[4]
बदचलन* औरत की चिकनी-
चुपड़ी बातों से तुझे बचाएँगी।[5]
25 उसकी खूबसूरती देखकर दिल में
उसकी लालसा न करना[6]
या जब वह सुंदर आँखों से लुभाए
तो बहक न जाना,
26 क्योंकि वेश्‍या के पीछे जाकर इंसान
रोटी का मोहताज हो जाता है,[7]
मगर दूसरे की पत्नी के पीछे जाकर
वह अपना अनमोल जीवन ही
गँवा बैठता है।
27 क्या ऐसा हो सकता है कि एक
आदमी अपने सीने पर आग रखे
और उसके कपड़े न जलें?[8]
28 या एक आदमी जलते अंगारों पर
चले और उसके पैर न झुलसें?
29 दूसरे की पत्नी के साथ
संबंध रखनेवाले का भी यही हाल
होता है,
उस औरत को छूनेवाला सज़ा से
नहीं बचेगा।[9]
30 लोग उस चोर को नहीं धिक्कारते,
जो अपनी भूख मिटाने के लिए
चोरी करता है,
31 फिर भी पकड़े जाने पर उसे सात
गुना मुआवज़ा भरना पड़ता है,

अध्य. 6

1 नीत 13:4, नीत 20:4, नीत 24:30-34
2 नीत 16:27, याकू 3:6
3 नीत 10:10, नीत 16:30
4 भज 36:1, 4, यश 32:7, मी 2:1
5 नीत 16:28, रोम 16:17
6 भज 73:12, 18
7 भज 101:5, नीत 8:13, नीत 16:5
8 नीत 12:22, प्रक 21:8
9 उत 4:8, 10, गि 35:31, व्य 27:25
10 नीत 11:20, जक 8:17, मला 2:16
11 निर्ग 23:1
12 लैव 19:16, गल 5:20, 21, याकू 3:14, 15
13 व्य 21:18, 21, इफ 6:1

दूसरा कॉल.

1 भज 119:105
2 यश 51:4
3 नीत 4:13, इब्र 12:11
4 सभ 7:26
5 नीत 5:3, नीत 7:4, 5
6 मत 5:28, याकू 1:14, 15
7 नीत 29:3, लूक 15:16, 30
8 गल 6:7
9 2शम 11:4, 2शम 12:10, 11, नीत 6:32-35, इब्र 13:4

6:22 *या "तुझे सिखाएँगी।" **6:23** *या "शिक्षा देने।" **6:24** *शा., "परदेसी।"

जो कुछ उसके घर में है, उसे देना
पड़ता है।[1]

32 व्यभिचार करनेवाले में समझ ही
नहीं होती,*
वह खुद पर बरबादी लाता है,[2]

33 दर्द और अपमान के सिवा उसे कुछ
नहीं मिलता,[3]
उसकी बदनामी दूर नहीं होगी।[4]

34 क्योंकि जलन एक पति का क्रोध
भड़काती है,
जब वह बदला लेगा तो कोई रहम
नहीं करेगा,[5]

35 कोई मुआवज़ा* कबूल नहीं करेगा,
तू उसे कितना ही बड़ा तोहफा दे,
उसका गुस्सा शांत नहीं होगा।

7 हे मेरे बेटे, मेरी बातों को मान,
मेरी आज्ञाओं को अनमोल जानकर
संजोए रख।[6]

2 मेरी आज्ञाओं पर चल और
जीवित रह,[7]
मेरी सिखायी बातों को आँख की
पुतली की तरह सँभाल।

3 इन्हें अपनी उँगलियों में बाँध ले,
अपने दिल की पटिया पर
लिख ले।[8]

4 बुद्धि से कह, "तू मेरी बहन है,"
समझ से कह, "तू मेरी सगी है"

5 ताकि नीच* औरत से तेरी हिफा-
ज़त हो,[9]
बदचलन# औरत और उसकी
चिकनी-चुपड़ी बातों से तू
बचा रहे।[10]

6 एक बार मैं अपने घर की खिड़की
पर खड़ा,
जालीदार झरोखे से नीचे देख
रहा था।

7 तब मैंने कई नादानों को देखा,
उस भीड़ में मेरी नज़र एक जवान
पर पड़ी,
जिसमें बिलकुल समझ नहीं थी।[1]

8 वह उस सड़क पर चला जा
रहा था,
जिसके मोड़ पर वह औरत
रहती थी,
वह तेज़ कदमों से उसके घर की
तरफ बढ़ने लगा।

9 यह कुछ शाम का वक्त था, दिन
ढल चुका था,[2]
अँधेरा घिरने लगा था और रात
होने को थी।

10 तभी मैंने देखा, एक औरत उस
नौजवान से मिली,
वह वेश्या जैसे* कपड़े पहने थी,[3]
उसके दिल में कपट भरा था।

11 उसमें कोई शर्म-हया नहीं थी,
वह अपने मन की करती थी।[4]
उसके पैर घर पर नहीं टिकते थे,

12 कभी घर के बाहर तो कभी चौक
पर नज़र आती,
हर नुक्कड़ पर शिकार की तलाश
में रहती।[5]

13 उसने उस जवान को पकड़कर चूमा
और बेहयाई से कहने लगी,

14 "मैंने शांति-बलि चढ़ायी है,[6]
आज अपनी मन्नत पूरी की है,

15 इसलिए मैं तुझसे मिलने आयी हूँ,
मैं तुझे ही ढूँढ़ रही थी और तू मुझे
मिल गया।

16 मैंने अपना बिस्तर मलमल की
चादर से,

6:32 *शा., "में दिल नहीं होता।" 6:35 *या "फिरौती।" 7:5 *शा., "परायी।" #शा., "परदेसी।"

7:10 *या "वेश्या के।"

अध्य. 6
1 निर्ग 22:1, 4
2 नीत 2:18, 19; नीत 5:20, 23; मला 3:5; 1कुर 6:9, 10; इब्र 13:4
3 नीत 5:8, 9
4 1रा 15:5; 1इत 5:1; मत 1:6
5 उत 39:19, 20

अध्य. 7
6 नीत 10:14
7 लैव 18:5; व्य 5:16; यश 55:3; यूह 12:50
8 नीत 2:10, 11
9 नीत 23:27, 28
10 नीत 2:11, 16; नीत 5:3; नीत 6:23, 24

दूसरा कॉल.
1 नीत 6:32; नीत 9:16, 17
2 अय 24:15
3 यिर्म 4:30
4 नीत 9:13-18
5 नीत 23:27, 28
6 लैव 19:5

मिस्र की रंग-बिरंगी चादर से
सजाया है,[1]
17 उस पर गंधरस, अगर और दाल-
चीनी छिड़की है।[2]
18 आ! हम एक-दूसरे के प्यार में खो
जाएँ,
सुबह तक प्यार का जाम पीते रहें।
19 मेरा पति भी घर पर नहीं है,
वह लंबे सफर पर गया है
20 और अपने साथ पैसों की थैली ले
गया है,
पूरे चाँद के निकलने तक वह नहीं
लौटेगा।”
21 वह अपनी लच्छेदार बातों में उसे
फँसा लेती है,[3]
मीठी-मीठी बातों से उसे फुसला
लेती है।
22 फिर क्या, वह नौजवान फौरन
उसके पीछे चल देता है,
जैसे बैल हलाल होने जा रहा हो,
जैसे मूर्ख अपने पैर काठ* में कस-
वाने जा रहा हो।[4]
23 अंत में एक तीर उसके कलेजे को
भेद देगा,
उसका हाल उस पक्षी जैसा होगा,
जो तेज़ी से जाल की तरफ उड़ता है
और नहीं जानता कि अपनी जान
गँवा बैठेगा।[5]
24 इसलिए मेरे बेटो, मेरी सुनो,
मैं जो कह रहा हूँ, उस पर
ध्यान दो।
25 तेरा दिल तुझे उस औरत के पीछे
जाने के लिए बहका न दे,
तू भटककर उसकी राहों पर मत
जाना।[6]
26 उसने कई लोगों को अपना शिकार
बनाया है,[1]
उसके हाथों बेहिसाब लोग
मारे गए।[2]
27 उसका घर कब्र में ले जाता है,
मौत की काल-कोठरी में
पहुँचाता है।

8 देख, बुद्धि आवाज़ लगा रही है,
पैनी समझ ज़ोर-ज़ोर से पुकार
रही है।[3]
2 वह सड़क किनारे ऊँची जगहों पर[4]
और चौराहों पर खड़ी होकर,
3 शहर के फाटकों के पास,
द्वार पर खड़ी होकर ऊँची आवाज़
में कहती है,[5]
4 “हे लोगो, मेरी सुनो,
मैं तुम सबसे* कह रही हूँ।
5 हे नादानो, होशियारी से काम लेना
सीखो,[6]
हे मूर्खो, समझ रखनेवाला मन
हासिल करो।
6 मेरी सुनो क्योंकि मैं ज़रूरी बातें
बता रही हूँ,
मैं जो कहूँगी सही कहूँगी।
7 मैं सच्चाई की बातें धीमे-धीमे
बोलती हूँ,
मेरे होंठ दुष्ट बातों से घिन
करते हैं।
8 मेरी कही सारी बातें नेकी की हैं,
उनमें कोई छल-कपट या उलट-फेर
नहीं।
9 समझ रखनेवाले ये बातें साफ-साफ
समझ जाते हैं,
ज्ञान पानेवालों को ये सीधी और
सच्ची लगती हैं।

7:22 *या “बेड़ियों।”

8:4 *शा., “तुम आदमियों से।”

अध्य. 7
1 यहे 27:7
2 श्रेष 3:6
श्रेष 4:14
3 नीत 5:3
4 1कुर 6:18
5 नीत 5:8-11
6 नीत 5:8

दूसरा कॉल.
1 सभ 7:26
2 1कुर 10:8

अध्य. 8
3 नीत 1:20, 21
4 मत 10:27
5 प्रेष 20:20
6 भज 19:7

10 चाँदी को नहीं, मेरी शिक्षा को
चुन लो,
बढ़िया सोने को नहीं, मेरे ज्ञान को
ले लो,[1]
11 क्योंकि बुद्धि का मोल मूंगों* से
बढ़कर है,
सारी कीमती चीज़ें भी इसकी
बराबरी नहीं कर सकतीं।
12 मैं बुद्धि, होशियारी के संग बसेरा
करती हूँ,
मैंने ज्ञान और सोचने-परखने की
शक्ति पायी है।[2]
13 यहोवा का डर मानना, बुराई से
नफरत करना है।[3]
गुरूर, घमंड,[4] बुरी राह और झूठी
ज़बान से मुझे नफरत है।[5]
14 मेरे पास बढ़िया सलाह है
और ऐसी बुद्धि है जो फायदा पहुँ-
चाती है,[6]
मेरे पास समझ[7] और ताकत
भी है।[8]
15 मेरी मदद से राजा हुकूमत करते हैं,
शासक नेकी के कानून ठहराते हैं।[9]
16 मेरी मदद से हाकिम राज करते हैं,
ऊँचे अधिकारी सच्चाई से न्याय
करते हैं।
17 जो मुझसे प्यार करते हैं, उनसे मैं
प्यार करती हूँ,
जो मुझे ढूँढ़ते हैं, वे मुझे पा
लेते हैं।[10]
18 मेरे पास धन और आदर है,
कभी न मिटनेवाली दौलत और
नेकी है।
19 मेरे दिए तोहफे सोने से, हाँ, शुद्ध
सोने से बढ़कर हैं,
मैं जो देती हूँ वह बढ़िया चाँदी से
अच्छा है।[1]
20 मैं नेकी की राह पर चलती हूँ,
इंसाफ की डगर के बीचों-बीच
जाती हूँ।
21 जो मुझसे प्यार करते हैं,
उन्हें सच्ची दौलत से मालामाल
करती हूँ,
उनके भंडारों को भर देती हूँ।
22 यहोवा ने मुझे बहुत पहले रचा,
उसने सृष्टि की शुरूआत
मुझसे की,[2]
मैं उसकी सबसे पहली कारी-
गरी थी।[3]
23 बहुत समय पहले, पृथ्वी की रचना
से भी पहले,
शुरू में मुझे अपनी जगह दी गयी।[4]
24 जब मैं पैदा हुई* तब न तो गहरा
सागर था,[5]
न उमड़ते पानी के सोते।
25 पहाड़ों को अपनी जगह स्थिर करने
से पहले,
पहाड़ियों से भी पहले, मुझे रचा
गया।
26 उस वक्त उसने न तो धरती न
इसके मैदान,
न ही मिट्टी का पहला ढेला
बनाया था।
27 जब उसने आसमान को ताना,[6]
पानी पर सीमा-रेखा* खींची[7] तब
मैं वहीं थी।
28 जब उसने ऊपर बादल ठहराए,*
गहरे सागर में सोते बनाए,
29 जब उसने समुंदर की हद ठहरायी

8:11 *शब्दावली देखें।

8:24 *या "जब प्रसव-पीड़ा के साथ मुझे पैदा किया गया।" 8:27 *या "क्षितिज।" 8:28 *शा., "स्थिर किए।"

अध्य. 8

1 भज 19:9, 10; भज 119:72, 127; नीत 3:13-15
2 नीत 2:11; नीत 5:1, 2
3 भज 97:10; भज 101:3; नीत 16:6; रोम 12:9
4 भज 101:5; 1पत 5:5
5 नीत 4:24
6 नीत 2:7
7 नीत 4:7
8 नीत 24:5
9 भज 72:1
10 नीत 2:4, 5

दूसरा कॉल.

1 नीत 3:13, 14
2 यूह 1:1-3, 14
3 कुल 1:15-17
4 मी 5:2; यूह 8:58; यूह 17:5
5 उत 1:2
6 भज 33:6; यिर्म 10:12
7 उत 1:6, 7; अय 26:10

कि वह उसका हुक्म न तोड़े,[1]
जब उसने धरती की नींव रखी,
30 तब मैं एक कुशल कारीगर की
तरह उसके साथ थी।[2]
उसे हर दिन मुझसे बहुत खुशी
मिलती थी[3]
और मैं हर वक्त उसके सामने मगन
रहती थी।[4]
31 जब मैंने इंसानों के रहने के लिए
धरती देखी,
तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा।
इंसानों से मुझे गहरा लगाव था।
32 अब हे मेरे बेटो, मेरी सुनो!
क्योंकि जो मेरी सुनता है और मेरी
राह पर चलता है,
वह खुश रहता है।
33 शिक्षा को कबूल करो[5] और बुद्धि-
मान बनो,
उसे लेने से इनकार मत करो।
34 सुखी है वह इंसान जो मेरी
सुनता है,
जो हर दिन मेरे दरवाज़े पर सुबह-
सुबह आता है,
चौखट के पास खड़ा मेरा इंतज़ार
करता है।
35 क्योंकि जो मुझे ढूँढ़ लेता है, वह
जीवन पाता है[6]
और उसे यहोवा की मंज़ूरी
मिलती है।
36 मगर जो मुझे अनदेखा करता है,
वह खुद को चोट पहुँचाता है,
जो मुझसे नफरत करता है उसे मौत
ज़्यादा प्यारी है।"[7]

9 सच्ची बुद्धि ने अपना घर बनाया है,
तराशे हुए सात खंभों पर इसे खड़ा
किया है।
2 उसने गोश्त बनाकर रखा है,*

9:2 *शा., "अपना जानवर काटा है।"

अध्य. 8
1 अय 38:8-11, भज 33:7, भज 104:6-9, यिर्म 5:22
2 उत 1:26, यूह 1:1, 3, यूह 17:5, कुल 1:15, 16
3 यश 42:1, मत 3:17
4 अय 38:7
5 नीत 3:11, नीत 4:13, इब्र 12:7, 9
6 नीत 13:14
7 नीत 5:23

दूसरा कॉल.

अध्य. 9
1 नीत 1:20-22
2 भज 119:130
3 नीत 4:5, नीत 13:20
4 नीत 15:12
5 1रा 21:20, 21, 1रा 22:8, 2इत 25:15, 16, मत 7:6
6 भज 141:5, नीत 27:6, नीत 28:23
7 नीत 1:5, नीत 15:31, नीत 17:10, नीत 25:12
8 भज 111:10
9 1इत 28:9, मत 11:27, यूह 17:3
10 व्य 6:1, 2, नीत 8:35, नीत 10:27

दाख-मदिरा का स्वाद बढ़ाया है,
खाने की मेज़ सजायी है।
3 उसने अपनी दासियों को भेजा है
कि वे जाकर शहर की ऊँची जगहों
से यह पुकारें,[1]
4 "जो नादान हैं, वे इधर आएँ।"
जिनमें समझ नहीं, उनसे वह
कहती है,
5 "आओ और मेरे यहाँ रोटी खाओ,
आकर दाख-मदिरा पीओ जिसका
मैंने स्वाद बढ़ाया है।
6 अपनी नादानी* छोड़ो तो तुम
जीवित रहोगे,[2]
समझ की राह पर सीधे चलते
जाओ।"[3]
7 जो खिल्ली उड़ानेवाले को सुधारता
है, वह अपनी ही बेइज़्ज़ती
कराता है,[4]
जो दुष्ट को डाँट लगाता है वह खुद
चोट खाता है।
8 खिल्ली उड़ानेवाले को मत डाँट, वह
तुझसे नफरत करेगा,[5]
बुद्धिमान को डाँट, वह तुझसे प्यार
करेगा।[6]
9 बुद्धिमान को समझा, वह और
बुद्धिमान बनेगा,[7]
नेक इंसान को सिखा, वह सीखकर
अपना ज्ञान बढ़ाएगा।
10 यहोवा का डर मानना बुद्धि की
शुरूआत है,[8]
परम-पवित्र परमेश्वर के बारे
में जानना,[9] समझ हासिल
करना है।
11 मेरी बदौलत तेरी ज़िंदगी में बहुत-से
दिन जुड़ जाएँगे[10]
और तू सालों-साल जीएगा।

9:6 *या "नादानों को।"

12 अगर तू बुद्धिमान बने तो तेरा ही
भला होगा,
लेकिन अगर तू खिल्ली उड़ाए, तो
तू ही अंजाम भुगतेगा।
13 मूर्ख औरत बकबक तो करती है,[1]
मगर जानती कुछ नहीं, बिना जाने
बोलती रहती है।
14 वह शहर की ऊँची-ऊँची जगह पर,
अपने घर के सामने बैठी,[2]
15 आने-जानेवालों को आवाज़
लगाती है,
अपने रास्ते पर सीधे जा रहे लोगों
से कहती है,
16 "जो नादान हैं, वे इधर आएँ।"
जिनमें समझ नहीं, उनसे वह
कहती है,[3]
17 "चोरी का पानी मीठा होता है!
लुक-छिपकर खाने का मज़ा ही कुछ
और है!"[4]
18 लेकिन उनको नहीं पता कि उसका
घर मुरदों का घर है
और उसके मेहमान कब्र की गह-
राइयों में पड़े हैं।[5]

10 सुलैमान के नीतिवचन।[6]
बुद्धिमान बेटा अपने पिता को
खुशी देता है,[7]
लेकिन मूर्ख अपनी माँ को दुख
देता है।
2 दुष्टता से कमाई दौलत किसी काम
नहीं आती,
नेकी ही एक इंसान को मौत से
बचाती है।[8]
3 यहोवा नेक इंसान को भूखों मरने
नहीं देता,[9]
मगर दुष्ट की लालसाओं पर पानी
फेर देता है।
4 आलसी हाथ इंसान को गरीब
बनाते हैं,[10]
मगर मेहनती हाथ उसे अमीर
बनाते हैं।[1]
5 जो बेटा गरमियों में फसल
बटोरता है, वह अंदरूनी समझ
दिखाता है,
लेकिन जो बेटा कटाई के समय
गहरी नींद सोता है, उसे शर्मिंदा
होना पड़ता है।[2]
6 नेक जन के सिर पर आशीषों की
बौछार होती है,[3]
लेकिन दुष्ट की बातों में हिंसा छिपी
होती है।
7 नेक जन को याद करके * दुआएँ
दी जाती हैं,[4]
लेकिन दुष्ट का नाम मिट
जाता है।[5]
8 जो बुद्धिमान है वह आदेश
मानता है,[6]
लेकिन जो मूर्खता की बातें करता
है, वह तबाह होता है।[7]
9 निर्दोष चाल चलनेवाला महफूज़
रहता है,[8]
मगर टेढ़ी चाल चलनेवाला पकड़ा
जाता है।[9]
10 जो धोखा देने के लिए आँख मारता
है, वह दुख पहुँचाता है[10]
और जो मूर्खता की बातें करता है,
वह कुचला जाता है।[11]
11 नेक जन की बातें जीवन का
सोता है,[12]
लेकिन दुष्ट की बातों में हिंसा छिपी
होती है।[13]
12 नफरत झगड़े पैदा करती है,
लेकिन प्यार सारे अपराधों को ढक
देता है।[14]

10:7 * या "के अच्छे नाम के लिए।"

अध्य. 9
1 नीत 7:10, 11
2 नीत 23:27, 28
3 नीत 6:32
4 नीत 7:18, 19
5 नीत 2:18, 19; नीत 7:23, 26; नीत 23:27, 28

अध्य. 10
6 नीत 1:1
7 नीत 13:1; नीत 27:11
8 नीत 11:4
9 भज 33:18, 19; भज 37:25; मत 6:33
10 नीत 20:4; सभ 10:18

दूसरा कॉल.
1 नीत 12:24; नीत 13:4; नीत 21:5
2 नीत 6:6, 9
3 निर्ग 23:25; नीत 28:20
4 भज 112:6; सभ 7:1
5 भज 9:5
6 व्य 4:6; भज 19:7; भज 119:34; भज 119:100
7 नीत 18:6
8 भज 25:21
9 1ती 5:24
10 नीत 6:12, 13
11 नीत 18:21
12 नीत 11:30
13 मत 12:35; याकू 3:5
14 नीत 17:9; 1कुर 13:4, 7; 1पत 4:8

13 पैनी समझ रखनेवाले के होंठों पर
बुद्धि पायी जाती है,[1]
लेकिन जिसमें समझ नहीं उसकी
पीठ पर छड़ी पड़ती है।[2]
14 बुद्धिमान अपने ज्ञान का भंडार
भरता रहता है,[3]
मगर मूर्ख अपनी बातों से बरबादी
लाता है।[4]
15 रईस की दौलत उसके लिए किलेबंद
शहर है।
गरीब की गरीबी उसे बरबाद कर
देती है।[5]
16 नेक जन के काम जीवन की ओर ले
जाते हैं,
लेकिन दुष्ट की कमाई पाप की
ओर ले जाती है।[6]
17 जो शिक्षा कबूल करता है वह दूसरों
को जीवन की राह दिखाता है,*
लेकिन जो डाँट को अनसुना
करता है, वह दूसरों को गुमराह
करता है।
18 जो नफरत छिपाए रखता है, वह
झूठ बोलता है[7]
और जो दूसरों को बदनाम करने
के लिए बातें* फैलाता है, वह
मूर्ख है।
19 जहाँ बहुत बातें होती हैं, वहाँ अप-
राध भी होता है,[8]
लेकिन जो ज़बान पर काबू
रखता है, वह सूझ-बूझ से काम
लेता है।[9]
20 नेक जन की बातें बढ़िया चाँदी
जैसी हैं,[10]
मगर दुष्ट की सोच* का कोई मोल
नहीं।

10:17 *या शायद, "वह जीवन की राह पर है।" 10:18 *या "अफवाहें।" 10:20 *शा., "के मन।"

अध्य. 10
1 यश 50:4
2 नीत 26:3
3 नीत 9:9
4 नीत 13:3; नीत 18:7
5 नीत 19:7; नीत 30:8, 9; सभ 7:12
6 मत 7:17
7 1शम 18:17, 21
8 सभ 5:2
9 भज 39:1; नीत 17:27; नीत 21:23; याकू 1:19
10 नीत 12:18; नीत 16:13

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 3:15
2 हो 4:6
3 व्य 8:17, 18; भज 37:22; 1ती 6:6
4 नीत 2:10, 11; नीत 14:9; नीत 15:21
5 भज 37:4; 1यूह 5:14
6 भज 37:10
7 मत 7:24, 25
8 भज 91:15, 16
9 भज 55:23
10 भज 16:9; रोम 12:12
11 नीत 11:7
12 नीत 18:10; यश 40:31

21 नेक जन की बातें बहुतों को पोषण
देती हैं,*[1]
लेकिन मूर्ख, समझ न होने की
वजह से मर जाता है।[2]
22 यहोवा की आशीष ही एक इंसान
को अमीर बनाती है[3]
और वह उसके साथ कोई दर्द*
नहीं देता।
23 मूर्ख के लिए शर्मनाक काम एक
खेल है,
लेकिन पैनी समझ रखनेवाला बुद्धि
की खोज में रहता है।[4]
24 दुष्ट को जिस बात का डर होता है,
वही उस पर आ पड़ती है,
लेकिन नेक जन की ख्वाहिश पूरी
की जाती है।[5]
25 दुष्ट, तूफान आने पर मिट
जाता है,[6]
लेकिन नेक जन मज़बूत नींव की
तरह टिका रहता है।[7]
26 आलसी अपने मालिक* के लिए
ऐसा है,
जैसे दाँतों के लिए सिरका और
आँखों के लिए धुआँ।
27 यहोवा का डर मानना ज़िंदगी के
दिन बढ़ाता है,[8]
लेकिन दुष्ट की ज़िंदगी के साल
घटा दिए जाएँगे।[9]
28 नेक जन की उम्मीदें* उसे खुशी
देती हैं,[10]
लेकिन दुष्ट की आशा खाक में मिल
जाती है।[11]
29 यहोवा की राह निर्दोष लोगों के
लिए एक मज़बूत गढ़ है,[12]

10:21 *या "को राह दिखाती हैं।" 10:22 *या "दुख; मुश्किल।" 10:26 *या "भेजनेवाले।" 10:28 *या "आशा।"

मगर बुरे काम करनेवालों के लिए
यह विनाश साबित होती है।[1]
30 नेक जन सदा अटल रहेगा,[2]
जबकि दुष्ट जन धरती पर फिर
कभी नहीं बसेगा।[3]
31 नेक जन के मुँह से बुद्धि की बातें
निकलती हैं,
लेकिन छल करनेवाली ज़बान काट
दी जाएगी।
32 नेक जन के होंठ मनभावनी बातें
कहना जानते हैं,
मगर दुष्ट के मुँह से छल की बातें
निकलती हैं।

11 बेईमानी के तराज़ू से यहोवा
घिन करता है,
लेकिन वह सही* बाट-पत्थर से
खुश होता है।[4]
2 जो गुस्ताखी करता है* उसे अप-
मान सहना पड़ता है,[5]
लेकिन जो अपनी मर्यादा में रहता है
वह बुद्धिमान है।[6]
3 सीधे-सच्चे इंसान का निर्दोष चाल-
चलन उसे राह दिखाएगा,[7]
मगर छल-कपट करनेवाले का
कपट खुद उसका नाश कर
देगा।[8]
4 क्रोध के दिन धन-दौलत किसी काम
नहीं आएगी,[9]
सिर्फ नेकी एक इंसान को मौत से
बचाएगी।[10]
5 निर्दोष इंसान की नेकी उसकी राह
को सीधा करती है,
मगर दुष्ट की दुष्टता उसका नाश
कर देती है।[11]
6 सीधे-सच्चे इंसान की नेकी उसे
बचाएगी,[12]
मगर धोखा देनेवाले की
लालसा उसके लिए फंदा बन
जाएगी।[1]
7 जब दुष्ट मरता है, तो उसकी
आशाएँ मिट जाती हैं,
अपनी ताकत पर उसे जो भरोसा
था, वह भी टूट जाता है।[2]
8 नेक जन को मुसीबत से छुड़ाया
जाता है,
उसकी जगह दुष्ट मुसीबत में पड़
जाता है।[3]
9 भक्तिहीन* अपनी बातों से अपने
पड़ोसी को तबाह कर देता है,
लेकिन नेक इंसान ज्ञान की वजह से
बच जाते हैं।[4]
10 नेक जन की अच्छाई से पूरा शहर
मगन होता है
और जब दुष्ट मरता है, तो खुशियों
की गूँज सुनायी देती है।[5]
11 सीधे-सच्चे इंसान की दुआएँ शहर
को ऊँचा उठाती हैं,[6]
लेकिन दुष्ट की बातें शहर को ढा
देती हैं।[7]
12 जिसमें समझ नहीं होती वह अपने
पड़ोसी को नीचा दिखाता है,
लेकिन जिसमें पैनी समझ होती है
वह चुप रहता है।[8]
13 दूसरों को बदनाम करनेवाला उनका
राज़ बताता फिरता है,[9]
लेकिन भरोसेमंद इंसान राज़ को
राज़ ही रखता है।*
14 अगर सही मार्गदर्शन* न हो तो
लोग दुख उठाते हैं,

अध्य. 10
1 रोम 2:6-8
2 भज 16:8
3 भज 37:9

अध्य. 11
4 लैव 19:36
5 नीत 16:18; लूक 14:8, 9
6 मी 6:8; 1पत 5:5
7 भज 26:1; नीत 13:6
8 नीत 28:18
9 यहे 7:19; मत 16:26
10 उत 7:1
11 2शम 17:23; एस 7:10; नीत 5:22
12 यिर्म 39:18

दूसरा कॉल.
1 नीत 1:32
2 निर्ग 15:9, 10; लूक 12:18-20
3 एस 7:9; नीत 21:18; दान 6:23, 24
4 नीत 2:10-12
5 निर्ग 15:20, 21; एस 9:19, 22
6 नीत 14:34
7 याकू 3:6
8 नीत 17:27; 1पत 2:23
9 लैव 19:16; नीत 20:19; नीत 26:22

11:1 *शा., "पूरे।" **11:2** *या "अपनी हद भूल जाता है।"

11:9 *या "परमेश्वर से बगावत करने-वाला।" **11:13** *शा., "बात को छिपाए रखता है।" **11:14** *या "बुद्धि-भरी सलाह।"

लेकिन बहुतों की सलाह से काम-
याबी* मिलती है।[1]
15 जो अजनबी का कर्ज़ चुकाने का
ज़िम्मा लेता है,* वह मुसीबत में
पड़ता है,[2]
मगर जो हाथ मिलाकर वादा
करने से दूर रहता है,# वह बच
जाता है।
16 मन को भानेवाली औरत सम्मान
पाती है,[3]
लेकिन ज़ालिम आदमी धन-दौलत
लूटते हैं।
17 कृपा* करनेवाला अपना ही भला
करता है,[4]
लेकिन बेरहम इंसान खुद पर
आफत# लाता है।[5]
18 दुष्ट की कमाई खोखली
निकलती है,[6]
मगर नेकी बोनेवाले को सच्चा फल
मिलता है।[7]
19 जो नेकी की राह पर बना रहता है
उसे जीवन मिलेगा,[8]
मगर जो बुराई के पीछे भागता है
उसे मौत मिलेगी।
20 टेढ़े मनवालों से यहोवा घिन
करता है,[9]
मगर सीधी चाल चलनेवालों से वह
खुश होता है।[10]
21 यकीन रख, दुष्ट सज़ा से नहीं
बचेगा,[11]
मगर नेक जन की संतान बच
निकलेगी।
22 जो औरत सुंदर है मगर समझ से
काम नहीं लेती,
वह ऐसी है जैसे सूअर की नाक में
सोने की नथ।
23 नेक इंसान की चाहत का उसे अच्छा
फल मिलता है,[1]
मगर दुष्ट की आशा परमेश्वर का
क्रोध भड़काती है।
24 जो दिल खोलकर देता* है, उसके
पास और ज़्यादा आ जाता है[2]
और जो उतना भी नहीं देता जितना
उसे देना चाहिए, वह कंगाल हो
जाता है।[3]
25 दरियादिल इंसान फलता-
फूलता है,[4]
जो दूसरों को ताज़गी पहुँचाता है*
उसे खुद ताज़गी मिलती है।[5]
26 अनाज के जमाखोरों को लोग
कोसते हैं,
मगर इसे बेचनेवालों को दुआएँ
देते हैं।
27 जो भलाई करने की ताक में रहता
है वह मंज़ूरी पाना चाहता है,[6]
लेकिन जो बुराई करने की ताक
में रहता है, बुराई उसी पर आ
पड़ती है।[7]
28 अपनी दौलत पर भरोसा रखनेवाला
मिट जाता है,[8]
मगर नेक जन हरे-हरे पत्तों की
तरह लहलहाता है।[9]
29 जो अपने परिवार पर आफत#
लाता है, उसके हाथ कुछ नहीं*
लगेगा[10]
और मूर्ख, बुद्धिमान का नौकर बन-
कर उसकी सेवा करेगा।
30 नेक इंसान का फल जीवन का
पेड़ है[11]

11:14 *या "उद्धार।" **11:15** *या "का ज़ामिन बनता है।" #शा., "से नफरत करता है।" **11:17** *या "अटल प्यार।" **11:17, 29** #या "अपमान।"

11:24 *शा., "जो छितराता।" **11:25** *शा., "को खूब सींचता है।" **11:29** *शा., "हवा।"

अध्य. 11
1 नीत 15:22; नीत 20:18; नीत 24:6
2 नीत 6:1, 5; नीत 20:16
3 1शम 25:39; 1पत 3:3, 4
4 लूक 6:38
5 याकू 5:3, 4
6 अय 27:13, 14
7 गल 6:7, 8
8 प्रेष 10:34, 35; प्रक 2:10
9 भज 18:26; नीत 3:32
10 भज 51:6; नीत 15:8
11 सभ 8:13; यहे 18:4

दूसरा कॉल.
1 यश 26:9; मत 5:6
2 व्य 15:10; नीत 19:17; सभ 11:1, 2
3 हाग 1:6
4 प्रेष 20:35; 2कुर 9:6
5 लूक 6:38
6 नीत 12:2
7 एस 7:10; भज 10:2
8 अय 31:24, 28; भज 52:5, 7
9 भज 1:2, 3; भज 52:8
10 यह 7:15
11 नीत 15:4

और दूसरों को सही काम के
लिए कायल करनेवाला, बुद्धि-
मान है।[1]
31 अगर नेक जन को धरती पर अपने
कामों का फल मिलेगा,
तो दुष्ट और पापियों को और
भी बढ़कर अपने कामों का फल
मिलेगा।[2]

12 जो शिक्षा से प्यार करता है, वह
ज्ञान से प्यार करता है,[3]
मगर जो डाँट से नफरत करता है
वह नासमझ है।[4]
2 भले इंसान से यहोवा खुश होता है,
लेकिन साज़िश रचनेवाले को वह
धिक्कारता है।[5]
3 दुष्टता करके कोई भी टिक नहीं
सकता,[6]
लेकिन नेक जन कभी उखाड़ा नहीं
जाएगा।
4 एक अच्छी पत्नी अपने पति के
सिर का ताज है,[7]
लेकिन जो उसे शर्मिंदा करती है,
वह मानो उसकी हड्डियाँ गला
देती है।[8]
5 नेक इंसान की सोच सीधी होती है,
लेकिन दुष्ट की सलाह कपट से
भरी होती है।
6 दुष्ट की बातें जानलेवा फंदा
होती हैं,*[9]
लेकिन सीधे-सच्चे इंसान की ज़बान
बचाती है।[10]
7 जब दुष्टों का विनाश होता है, तो वे
फिर दिखायी नहीं देते,
लेकिन नेक जन का घर खड़ा
रहता है।[11]
8 सूझ-बूझ से बोलनेवाले की तारीफ
की जाती है,[1]
लेकिन जिसका मन टेढ़ा होता है,
उसका अनादर किया जाता है।[2]
9 एक मामूली इंसान जिसके पास
सिर्फ एक नौकर है,
वह उस डींगमार से अच्छा है जो
रोटी के लिए तरसता है।[3]
10 नेक जन अपने पालतू जानवरों का
खयाल रखता है,[4]
लेकिन दुष्ट की दया भी बेरहम
होती है।
11 अपनी ज़मीन को जोतनेवाला जी-
भरकर खाता है,[5]
लेकिन जो बेकार की बातों के पीछे
जाता है उसमें समझ नहीं।
12 दुष्ट, बुरे लोगों की लूट का लालच
करता है,
लेकिन नेक जन की जड़ें मज़बूत
होती हैं और वह बढ़िया फल
देता है।
13 बुरा इंसान अपनी ही बुरी बातों के
जाल में फँस जाता है,[6]
लेकिन नेक जन मुसीबतों से बच
जाता है।
14 इंसान के मुँह की बातों से उसका
भला हो सकता है[7]
और वह जो करता है उसका फल
उसे मिलता है।
15 मूर्ख को अपनी चाल सीधी
लगती है,[8]
लेकिन बुद्धिमान वही है जो सलाह
कबूल करता है।[9]
16 मूर्ख बड़ी जल्दी* झुँझला
उठता है,[10]

12:6 *शा., "खून करने के लिए घात में बैठती हैं।"

12:16 *या "उसी दिन।"

अध्य. 11
1 1कुर 9:20-22, याकू 5:19, 20
2 यहे 18:24, 2थि 1:6, 1पत 4:18

अध्य. 12
3 नीत 4:13
4 भज 32:9
5 व्य 25:1, 1रा 8:31, 32
6 भज 37:10, 38
7 नीत 18:22, नीत 19:14
8 1रा 21:25
9 2शम 17:1, 2
10 एस 7:3, 4, नीत 14:3
11 नीत 24:3, मत 7:24, 25

दूसरा कॉल.
1 उत 41:39, 1शम 16:18
2 1शम 25:14, 17, मत 27:3, 4
3 नीत 13:7
4 उत 33:12-14, निर्ग 23:12, व्य 22:4, 10, व्य 25:4, यो 4:11
5 नीत 28:19, इफ 4:28
6 1रा 2:23, 24, भज 5:6, सभ 5:6
7 नीत 13:2, नीत 18:20
8 नीत 3:7, नीत 26:12
9 नीत 1:5
10 नीत 29:11

मगर होशियार इंसान बेइज़्ज़ती को
अनदेखा करता* है।
17 विश्वासयोग्य गवाह सच*
बोलता है,
लेकिन झूठा गवाह छल-कपट की
बातें कहता है।
18 बिना सोचे-समझे बोलना, तलवार
से वार करना है,
लेकिन बुद्धिमान की बातें मरहम का
काम* करती हैं।[1]
19 सच बोलनेवाले होंठ हमेशा कायम
रहेंगे,[2]
मगर झूठ बोलनेवाली जीभ पल-भर
की होती है।[3]
20 साज़िश रचनेवाले के दिल में कपट
होता है,
लेकिन शांति को बढ़ावा* देनेवाला
खुश रहता है।[4]
21 दुष्ट की ज़िंदगी मुसीबतों से भर
जाएगी,[5]
मगर नेक जन पर कोई आँच नहीं
आएगी।[6]
22 झूठ बोलनेवाले होंठ से यहोवा घिन
करता है,[7]
लेकिन जो सच्चाई से काम करते हैं
उनसे वह खुश होता है।
23 होशियार आदमी अपने ज्ञान को
छिपाए रखता है,
लेकिन मूर्ख अपने मन की मूर्खता
उगल देता है।[8]
24 मेहनती इंसान राज करेगा,[9]
लेकिन आलसी दूसरों की गुलामी
करेगा।[10]
25 चिंताओं के बोझ से मन दब
जाता है,[1]
लेकिन अच्छी बात से मन खुश हो
जाता है।[2]
26 नेक जन अपने चरागाह को गौर से
देखता है,
लेकिन दुष्टों की राह उन्हें भटका
देती है।
27 आलसी अपने शिकार का पीछा
नहीं करता,[3]
मगर मेहनत एक इंसान का बेश-
कीमती खज़ाना है।
28 नेकी का रास्ता जीवन की ओर ले
जाता है,[4]
उसकी राह में मौत है ही नहीं।

13 बुद्धिमान बेटा अपने पिता की
शिक्षा कबूल करता है,[5]
लेकिन हँसी-ठट्ठा करनेवाला फट-
कार* पर कान नहीं लगाता।[6]
2 इंसान अपने मुँह की बातों की वजह
से अच्छा खाता है,[7]
लेकिन धोखेबाज़ का जी हिंसा के
लिए उतावला रहता है।
3 जो ज़बान पर काबू रखता है वह
अपनी जान बचाता है,[8]
मगर जो अपना मुँह बंद नहीं रखता
वह खुद को बरबाद करता है।[9]
4 आलसी के पास कुछ नहीं होता,
वह सिर्फ लालसा करता है,[10]
लेकिन मेहनती पूरी तरह तृप्त
होता है।[11]
5 नेक इंसान झूठ से नफरत
करता है,[12]
लेकिन दुष्ट अपनी हरकतों से
शर्मिंदा और बेइज़्ज़त होता है।

अध्य. 12
1 नीत 16:24
2 1पत 3:10
3 नीत 19:9; प्रेष 5:3, 5
4 मत 5:9
5 नीत 1:30, 31; यश 48:22
6 भज 91:9, 10
7 भज 5:6; नीत 6:16, 17; प्रक 21:8
8 नीत 10:19
9 उत 39:4; 1रा 11:28
10 नीत 19:15

दूसरा कॉल.
1 भज 38:6; नीत 13:12; नीत 15:13
2 नीत 16:24; यश 50:4
3 नीत 26:13-15
4 भज 37:27; नीत 10:7; हब 2:4

अध्य. 13
5 इब्र 12:7, 9
6 1शम 2:22-25; नीत 9:7
7 नीत 12:14; नीत 18:20
8 भज 39:1; भज 141:3; नीत 21:23
9 नीत 10:19; मत 12:36
10 नीत 26:13-15
11 नीत 10:4; नीत 12:24
12 भज 119:163; नीत 8:13; इफ 4:25

12:16 *शा., "को ढक देता।" **12:17** *शा., "नेकी की बातें।" **12:18** *या "चंगा।" **12:20** *शा., "शांति की सलाह।"

13:1 *या "सुधार।"

6 नेकी, सीधी चाल चलनेवालों की
हिफाज़त करती है,[1]
लेकिन दुष्टता, पापियों को बरबाद
कर देती है।
7 कोई अपने को अमीर बताता है
जबकि उसके पास कुछ नहीं,[2]
कोई अपने को गरीब बताता
है जबकि उसके पास बहुत
दौलत है।
8 रईस अपनी जान की फिरौती में
अपनी दौलत देता है,[3]
मगर गरीब को ऐसा कोई डर नहीं
सताता।*[4]
9 नेक जन की रौशनी तेज़
चमकती है,*[5]
लेकिन दुष्टों का दीपक बुझ
जाएगा।[6]
10 इंसान की गुस्ताखी से झगड़े पैदा
होते हैं,[7]
लेकिन बुद्धिमान वही है जो सलाह-
मशविरा करता है।[8]
11 रातों-रात कमायी गयी दौलत घटती
जाएगी,[9]
लेकिन जो थोड़ा-थोड़ा करके जमा
करता है, उसकी दौलत बढ़ती
जाएगी।
12 जब उम्मीद* पूरी होने में देर होती
है, तो मन उदास हो जाता है,[10]
मगर जब मन की आरज़ू पूरी
होती है, तो मानो यह जीवन का
पेड़ है।[11]
13 जो हिदायत* को तुच्छ समझता है,
उसे सज़ा भुगतनी होगी,[12]
लेकिन जो आज्ञा का आदर करता
है उसे इनाम मिलेगा।[13]
14 बुद्धिमान की सिखायी बातें जीवन
का सोता है,[1]
ये मौत के फंदे में फँसने से
बचाती हैं।
15 अंदरूनी समझ रखनेवाला दूसरों
की मंज़ूरी पाता है,
लेकिन कपटी की राह दुखों से भरी
होती है।
16 होशियार अपने कामों से ज्ञान का
सबूत देता है,[2]
लेकिन मूर्ख अपनी मूर्खता दिखा
देता है।[3]
17 दुष्ट दूत खुद पर मुसीबत लाता है,[4]
मगर विश्वासयोग्य दूत फायदा
पहुँचाता है।[5]
18 शिक्षा ठुकरानेवाला कंगाल हो जाता
है और अपमान सहता है,
मगर जो डाँट* कबूल करता है वह
आदर पाता है।[6]
19 आरज़ू पूरी होने पर जी खुश हो
जाता है,[7]
लेकिन मूर्ख को बुराई छोड़ना रास
नहीं आता।[8]
20 बुद्धिमानों के साथ रहनेवाला बुद्धि-
मान बनेगा,[9]
लेकिन मूर्खों के साथ मेल-जोल
रखनेवाला बरबाद हो जाएगा।[10]
21 आफत पापियों का पीछा
करती है,[11]
मगर खुशहाली नेक जन का इनाम
बनती है।[12]
22 भला इंसान अपने नाती-पोतों के
लिए विरासत छोड़ जाता है,
मगर पापी की दौलत नेक जन के
लिए रखी जाएगी।[13]

अध्य. 13
1 भज 25:21
2 नीत 12:9
3 यिर्म 41:8
4 यिर्म 39:10
5 भज 97:11
6 नीत 24:20
7 न्या 8:1
8 नीत 11:2; नीत 24:6; प्रेष 15:5, 6
9 नीत 28:8; यिर्म 17:11
10 भज 143:7
11 उत 21:5-7; लूक 2:29, 30
12 2इत 36:15, 16
13 भज 19:8, 11; नीत 13:18

दूसरा कॉल.
1 नीत 24:14
2 नीत 14:15
3 1शम 25:25
4 2शम 4:9, 10
5 नीत 25:25
6 भज 141:5; नीत 15:32; इब्र 12:11
7 1रा 1:47, 48
8 आम 5:10
9 प्रेष 4:13
10 उत 34:1, 2
11 व्य 28:20
12 रोम 2:9, 10
13 व्य 6:10, 11

13:8 *शा., "कोई फटकार नहीं सुनता।" **13:9** *शा., "खुशियाँ मनाती है।" **13:12** *या "आशा।" **13:13** *या "वचन।"

13:18 *या "जो सुधार के लिए दी गयी सलाह।"

23 गरीब के जोते गए खेत में भरपूर
फसल पैदा होती है,
लेकिन अन्याय उसे* बरबाद कर
देता है।
24 जो अपने बेटे पर छड़ी*
नहीं चलाता, वह उससे नफरत
करता है,[1]
मगर जो उससे प्यार करता है,
वह उसे सुधारने से पीछे नहीं
हटता।#[2]
25 नेक जन जी-भरकर खाता है,[3]
मगर दुष्ट भूखे पेट रह जाता है।[4]

14 जो औरत सचमुच में बुद्धिमान
है वह अपना घर बनाती है,[5]
मगर मूर्ख अपने ही हाथों से उसे
उजाड़ देती है।
2 सीधाई की राह पर चलनेवाला
यहोवा का डर मानता है,
लेकिन टेढ़ी चाल चलनेवाला पर-
मेश्वर को तुच्छ जानता है।
3 मूर्ख की घमंड से भरी बातें छड़ी की
मार जैसी हैं,
लेकिन बुद्धिमान के होंठ हिफाज़त
देते हैं।
4 जहाँ गाय-बैल नहीं होते, वहाँ चरनी
साफ रहती है,
लेकिन बैल की ताकत से बहुत
पैदावार होती है।
5 विश्वासयोग्य गवाह झूठ नहीं
बोलता,
लेकिन झूठा गवाह बात-बात पर
झूठ बोलता है।[6]
6 हँसी उड़ानेवाला बुद्धि को ढूँढ़ता है
पर उसे नहीं पाता,
लेकिन समझ रखनेवाले को ज्ञान
आसानी से मिल जाता है।[1]
7 मूर्ख से दूर रह,
उसकी बातों से तुझे कोई ज्ञान नहीं
मिलेगा।[2]
8 होशियार इंसान की बुद्धि
उसे बताती है कि वह किस राह
पर है,
लेकिन मूर्ख अपनी मूर्खता से धोखा
खाता है।*[3]
9 मूर्ख अपनी गलती को* हँसी में
उड़ा देता है,[4]
लेकिन सीधे-सच्चे लोग सुलह करने
के लिए तैयार रहते हैं।#
10 एक इंसान ही अपने दिल का दर्द
जानता है
और उसकी खुशी को कोई दूसरा
नहीं समझ सकता।
11 दुष्ट का घर बरबाद हो जाएगा,[5]
लेकिन सीधे-सच्चे लोगों का डेरा
आबाद रहेगा।
12 ऐसा भी रास्ता है जो इंसान को सही
लगता है,[6]
मगर आखिर में वह उसे मौत की
तरफ ले जाता है।[7]
13 हँसी के पीछे भी दिल का गम छिपा
हो सकता है
और मौज-मस्ती दुख में बदल
सकती है।
14 जिसका दिल परमेश्वर से दूर हो
गया है वह अपने कामों का फल
भोगेगा,[8]
लेकिन अच्छे इंसान को अपने कामों
का बढ़िया फल मिलेगा।[9]

13:23 *या "गरीब को।" **13:24** *या "शिक्षा; सज़ा।" #या शायद, "उसे तुरंत सुधारता है।"

14:8 *या शायद, "से दूसरों को धोखा देता है।" **14:9** *या "गलती सुधारने को।" #या "लोगों के बीच अच्छी भावना होती है।"

अध्य. 13
1 1शम 3:12, 13; 1रा 1:5, 6; नीत 29:15
2 व्य 6:6, 7; नीत 19:18; नीत 22:15; इफ 6:4; इब्र 12:6
3 भज 34:10; भज 37:25
4 यश 65:13

अध्य. 14
5 नीत 24:3; नीत 31:26
6 नीत 6:16, 19; नीत 19:5

दूसरा कॉल.
1 नीत 18:15
2 नीत 13:20
3 नीत 14:12
4 नीत 10:23; नीत 30:20
5 नीत 21:12
6 नीत 30:12
7 नीत 16:25
8 नीत 1:32
9 गल 6:7, 8

15 नादान हर बात पर आँख मूँदकर
यकीन करता है,
लेकिन होशियार इंसान हर कदम
सोच-समझकर उठाता है।[1]
16 बुद्धिमान सतर्क रहता है और बुराई
से मुँह फेर लेता है,
लेकिन मूर्ख बेफिक्र होता है*
और खुद पर ज़्यादा ही भरोसा
करता है।
17 जो फौरन भड़क उठता है, वह
मूर्खता का काम करता है,[2]
मगर जो रुककर सोचता है* उससे
नफरत की जाती है।
18 नादान को सिर्फ मूर्खता मिलेगी,
लेकिन होशियार को ज्ञान का ताज
पहनाया जाएगा।[3]
19 बुरे लोगों को अच्छे लोगों के आगे
झुकना पड़ेगा
और दुष्ट को नेक के फाटकों के
सामने झुकना होगा।
20 गरीब से उसके अपने भी नफरत
करते हैं,[4]
लेकिन अमीर के कई दोस्त
होते हैं।[5]
21 जो दूसरों को तुच्छ समझता है वह
पाप करता है,
लेकिन जो गरीब पर दया करता है
वह सुखी है।[6]
22 जो साज़िश करता है क्या वह सही
राह से भटक नहीं जाएगा?
लेकिन जो भला करना चाहता है,
उससे अटल प्यार और वफादारी
निभायी जाएगी।[7]
23 मेहनत के हर काम से फायदा
होता है,
मगर जो सिर्फ बातें करना जानता
है वह कंगाल हो जाता है।[1]
24 बुद्धिमान की दौलत उसके सिर का
ताज है,
लेकिन मूर्ख के काम मूर्खता के ही
होते हैं।[2]
25 सच्चा गवाह जान बचाता है,
लेकिन धोखेबाज़ बात-बात पर झूठ
बोलता है।
26 जो यहोवा का डर मानता है, वह
उस पर पूरा भरोसा रखता है[3]
और उसके बच्चों को भी पनाह
मिलेगी।[4]
27 यहोवा का डर मानना जीवन का
सोता है,
यह मौत के फंदे में फँसने से
बचाता है।
28 बड़ी प्रजा राजा की शान है,[5]
लेकिन जहाँ प्रजा नहीं, वहाँ शासक
बरबाद हो जाता है।
29 जो क्रोध करने में धीमा है वह पैनी
समझ से मालामाल है,[6]
लेकिन जो उतावली करता है वह
अपनी मूर्खता दिखाता है।[7]
30 शांत मन से शरीर भला-चंगा
रहता है,
लेकिन जलन हड्डियों को गला
देती है।[8]
31 जो दीन-दुखियों को ठगता है, वह
उनके बनानेवाले का अपमान
करता है,[9]
लेकिन जो गरीब पर दया करता
है वह परमेश्‍वर की महिमा
करता है।[10]
32 दुष्ट के बुरे काम उसे ले डूबेंगे,
लेकिन नेक जन अपनी निर्दोष चाल
की वजह से शरण पाएगा।[11]

14:16 *या “भड़क उठता है।” **14:17** *या “मगर जिसके पास सोचने-परखने की शक्ति है।”

अध्य. 14
1 नहे 6:2, 3; नीत 27:12
2 नीत 12:16; नीत 16:32
3 नीत 4:7-9
4 नीत 19:7
5 नीत 19:4
6 भज 41:1; नीत 19:17; यश 58:7, 8
7 अय 42:10; भज 25:10

दूसरा कॉल.
1 नीत 28:19
2 नीत 27:22
3 भज 34:9; रोम 8:31
4 नीत 18:10; यिर्म 15:11
5 1रा 4:21
6 नीत 17:27; याकू 1:19
7 नीत 25:28; नीत 29:11; सभ 7:9
8 उत 37:3, 4; 1शम 18:8, 9
9 व्य 24:14, 15; भज 12:5
10 मत 19:21
11 नीत 2:7; नीत 10:9

33 समझदार के मन में बुद्धि चुपचाप
बसी रहती है,[1]
लेकिन मूर्ख अपनी बुद्धि जताने के
लिए उतावला रहता है।
34 नेकी एक देश को ऊँचा उठाती है,[2]
लेकिन पाप लोगों पर बदनामी
लाता है।
35 जो सेवक अंदरूनी समझ दिखाता
है, राजा उससे खुश होता है,[3]
मगर जो शर्मनाक काम करता है,
राजा उस पर भड़क उठता है।[4]

15 नरमी से जवाब देने पर क्रोध
शांत हो जाता है,[5]
लेकिन चुभनेवाली बात से गुस्सा
भड़क उठता है।[6]
2 बुद्धिमान जो अच्छी बातें जानता है
उन्हें ज़बान पर लाता है,[7]
मगर मूर्ख अपने मुँह से मूर्खता की
बातें उगलता है।
3 यहोवा की आँखें हर जगह लगी
रहती हैं,
अच्छे-बुरे दोनों को देखती
रहती हैं।[8]
4 शांति देनेवाली* ज़बान जीवन का
पेड़ है,[9]
मगर टेढ़ी बातें मन को कुचल
देती हैं।
5 मूर्ख अपने पिता की शिक्षा को तुच्छ
जानता है,[10]
मगर होशियार इंसान डाँट* को
कबूल करता है।[11]
6 नेक जन का घर खज़ाने से भरा
रहता है,
मगर दुष्ट की कमाई उस पर
आफत लाती है।[12]
7 बुद्धिमान के होंठ ज्ञान फैलाते हैं,[1]
मगर मूर्ख का मन ऐसा करने की
नहीं सोचता।[2]
8 दुष्ट के बलिदान से यहोवा घिन
करता है,[3]
मगर सीधे-सच्चे इंसान की प्रार्थना
से वह खुश होता है।[4]
9 यहोवा को दुष्ट की चाल से
घृणा है,[5]
मगर नेकी का पीछा करनेवाले से
वह प्यार करता है।[6]
10 सही राह छोड़नेवाले को शिक्षा
बुरी* लगती है[7]
और डाँट से नफरत करनेवाला
अपनी जान गँवा बैठता है।[8]
11 जब कब्र* और विनाश की जगह#
यहोवा से नहीं छिपी,[9]
तो फिर इंसान का दिल उससे कैसे
छिपा रह सकता है![10]
12 हँसी उड़ानेवाले को वह इंसान पसंद
नहीं जो उसे सुधारता* है,[11]
वह बुद्धिमान से कोई सलाह नहीं
लेता।[12]
13 जब दिल खुश हो तो चेहरा खिल
उठता है,
लेकिन जब मन दुखी हो, तो
यह इंसान को अंदर से तोड़
देता है।[13]
14 समझ रखनेवाला मन पूरी बात
जानने की कोशिश करता है,[14]
मगर मूर्ख अपना मुँह मूर्खता से
भरता है।[15]
15 दुखी इंसान के लिए सब दिन बुरे
होते हैं,[16]

15:4 *या "चंगा करनेवाली।" **15:5** *या "सुधार के लिए दी गयी सलाह।"

15:10 *या "कठोर।" **15:11** *या "शीओल।" शब्दावली देखें। #या "और अबद्दोन।" शब्दावली देखें। **15:12** *या "डाँटता।"

अध्य. 14
1 नीत 15:28
2 व्य 4:6
3 2शम 15:32-34
नीत 22:29
4 1रा 2:44, 46

अध्य. 15
5 न्या 8:2, 3
1शम 25:32, 33
नीत 25:15
6 1रा 12:14, 16
7 नीत 16:23
यश 50:4
8 2इत 16:9
भज 11:4
इब्र 4:13
9 नीत 12:18
नीत 16:24
नीत 17:27
10 1शम 2:22-25
11 भज 141:5
नीत 13:1
इब्र 12:11
12 याकू 5:3, 4

दूसरा कॉल.
1 भज 37:30
मत 10:27
2 मत 12:34, 35
3 यश 1:11
4 याकू 5:16
1पत 3:12
1यूह 3:21, 22
5 भज 146:9
6 यश 26:7
7 1रा 18:17, 18
8 लैव 26:21
नीत 1:32
9 भज 139:8
10 यिर्म 17:10
इब्र 4:13
11 नीत 9:7
यूह 3:20
यूह 7:7
12 2इत 18:6, 7
13 नीत 12:25
नीत 17:22
14 भज 119:97
प्रेष 17:11
15 यश 30:9, 10
16 अय 3:11

मगर जिसका मन खुश रहता है,
उसके लिए तो हर दिन
दावत है।[1]
16 बहुत दौलत होने और चिंता में डूबे
रहने से अच्छा है,[2]
कम में गुज़ारा करना और यहोवा
का डर मानना।[3]
17 जिस घर में नफरत हो वहाँ दावत*
उड़ाने से अच्छा है,
उस घर में सादा खाना# खाना जहाँ
प्यार हो।[4]
18 गरम मिज़ाजवाला झगड़ा
बढ़ाता है,[5]
मगर जो क्रोध करने में धीमा है वह
झगड़ा शांत करता है।[6]
19 आलसी की राह काँटों के बाड़े जैसी
होती है,[7]
मगर सीधे लोगों की राह राजमार्ग
जैसी होती है।[8]
20 बुद्धिमान बेटा अपने पिता को खुश
करता है,[9]
मगर मूर्ख अपनी माँ को तुच्छ
जानता है।[10]
21 जिसमें समझ ही नहीं उसे मूर्खता से
खुशी मिलती है,[11]
मगर पैनी समझ रखनेवाला सीधी
राह पर बढ़ता जाता है।[12]
22 सलाह-मशविरा न करने से योज-
नाएँ नाकाम हो जाती हैं,
लेकिन बहुतों की सलाह से काम-
याबी मिलती है।[13]
23 सही जवाब देने पर एक इंसान खुश
हो जाता है[14]
और सही वक्त पर कही गयी बात
क्या खूब होती है![15]

15:17 *शा., "मोटा-ताज़ा बैल।" #शा., "थोड़ी-सी साग-सब्ज़ी।"

अध्य. 15
1 प्रेष 16:23-25
2 नीत 15:17
3 भज 37:16
4 भज 133:1; नीत 17:1
5 नीत 10:12
6 उत 13:8, 9; 1शम 25:23, 24; नीत 25:15; याकू 1:19
7 नीत 26:13-15
8 यश 30:21
9 नीत 27:11
10 नीत 23:22; नीत 30:17
11 नीत 26:18, 19; सभ 7:4
12 नीत 10:23; इफ 5:15, 16; याकू 3:13
13 नीत 20:18
14 इफ 4:29
15 1शम 25:32, 33; नीत 25:11

दूसरा कॉल.
1 मत 7:13, 14
2 नीत 8:35, 36
3 लूक 18:14
4 भज 146:9
5 नीत 6:16, 18
6 भज 19:14
7 व्य 16:19; 1शम 8:1, 3; नीत 1:19
8 यश 33:15, 16
9 नीत 16:23
10 भज 34:15, 16; भज 138:6; भज 145:19; यूह 9:31
11 नीत 16:24; नीत 25:25
12 नीत 9:8; नीत 19:20
13 नीत 5:12, 14; इब्र 12:25

24 अंदरूनी समझ रखनेवाले को
जीवन की राह ऊपर-ऊपर से ले
जाती है,[1]
ताकि वह नीचे कब्र में जाने से
बचा रहे।[2]
25 यहोवा घमंडी का घर ढा देगा,[3]
मगर विधवा की ज़मीन* की हिफा-
ज़त करेगा।[4]
26 दुष्ट की साज़िशों से यहोवा को
घिन है,[5]
मगर मनभावनी बातें उसकी नज़रों
में शुद्ध हैं।[6]
27 बेईमानी से कमानेवाला
अपने ही परिवार पर आफत*
लाता है,[7]
मगर जिसे घूस लेने से नफरत है
वह जीवित रहेगा।[8]
28 नेक इंसान जवाब देने से पहले मन
में सोचता है,*[9]
मगर दुष्ट अपने मुँह से बुरी-बुरी
बातें उगलता है।
29 यहोवा दुष्ट से दूर रहता है,
मगर वह नेक जन की प्रार्थना
सुनता है।[10]
30 आँखों में चमक देखकर दिल झूम
उठता है
और अच्छी खबर हड्डियों में जान
फूँक देती है।[11]
31 जो जीवन देनेवाली डाँट सुनता है,
उसकी गिनती बुद्धिमानों में
होती है।[12]
32 जो शिक्षा को ठुकराता है,
वह अपने जीवन को तुच्छ
समझता है,[13]

15:25 *शा., "की सीमा।" 15:27 *या "अपमान।" 15:28 *या "ध्यान से सोचता है कि किस तरह जवाब दूँ।"

लेकिन जो डाँट सुनकर सुधर जाता है, वह समझ हासिल करता है।[1]
33 यहोवा का डर मानना, बुद्धि से काम लेना सिखाता है[2]
और नम्र होने पर आदर मिलता है।[3]

16 इंसान अपने मन के विचारों को तैयार तो करता है,
मगर वह जो जवाब देता है, वह* यहोवा की तरफ से होता है।[4]
2 इंसान को अपनी सभी राहें सही* लगती हैं,[5]
लेकिन यहोवा इरादों# को जाँचता है।[6]
3 तू जो कुछ करे उसे यहोवा को सौंप दे,[7]
तब तेरी योजनाएँ सफल होंगी।
4 यहोवा हर काम इस तरह करता है कि उसका मकसद पूरा हो,
उसने दुष्ट को भी विनाश के दिन के लिए इसीलिए रखा है।[8]
5 जिसके मन में घमंड है, वह यहोवा की नज़र में घिनौना है।[9]
यकीन रख, वह बिना सज़ा पाए नहीं रहेगा।
6 अटल प्यार और वफादारी से* पापों का प्रायश्चित होता है[10]
और यहोवा का डर मानने से इंसान बुराई से मुँह फेर लेता है।[11]
7 जब यहोवा किसी इंसान की राह से खुश होता है,
तब वह उसके दुश्मनों को भी उसके साथ शांति से रहने देता है।[12]
8 अन्याय करके अमीर बनने से अच्छा है,
नेकी की राह पर चलकर कम में गुज़ारा करना।[1]
9 एक आदमी अपने मन में योजना तो बनाता है,
लेकिन यहोवा ही उसके कदमों को राह दिखाता है।[2]
10 राजा के होंठों पर परमेश्वर का फैसला होना चाहिए,[3]
वह न्याय करने से कभी न चूके।[4]
11 सच्चे तराज़ू के काँटे और पलड़े यहोवा के हैं,
थैली में रखे सभी बाट-पत्थर उसी की तरफ से हैं।[5]
12 दुष्ट कामों से राजाओं को घिन होती है,[6]
क्योंकि उनकी गद्दी नेकी से कायम रहती है।[7]
13 सच्ची बातें राजाओं को खुश करती हैं,
उन्हें वे लोग पसंद हैं जो सीधी-सच्ची बात कहते हैं।[8]
14 राजा का क्रोध मौत का दूत बन जाता है,[9]
लेकिन बुद्धिमान उसका क्रोध शांत करना* जानता है।[10]
15 राजा के चेहरे की चमक में ज़िंदगी है,
उसकी मेहरबानी वसंत में बरसते बादल जैसी है।[11]
16 बुद्धि सोना हासिल करने से
और समझ चाँदी हासिल करने से कहीं बढ़कर है।[12]
17 सीधे-सच्चे लोगों की राह उन्हें बुराई से दूर रखती है,

16:1 *या "मगर सही जवाब।" **16:2** *शा., "पवित्र।" #या "मन।" **16:6** *इब्रानी पाठ के मुताबिक यह परमेश्वर का अटल प्यार और वफादारी भी हो सकती है।

16:14 *या "उसके क्रोध से बचना।"

अध्य. 15
1 नीत 13:18; मत 7:24, 25
2 भज 111:10
3 नीत 18:12; याकू 4:10

अध्य. 16
4 यिर्म 1:9; लूक 12:11, 12
5 1शम 15:13, 14; भज 36:1, 2; नीत 21:2; यिर्म 17:9
6 1शम 16:6, 7; नीत 24:12
7 भज 37:5; फिल 4:6, 7
8 निर्ग 14:4; रोम 9:21
9 नीत 6:16, 17; नीत 8:13; नीत 21:4
10 प्रेष 3:19
11 नहे 5:8, 9; 2कुर 7:1
12 उत 31:24; निर्ग 34:24

दूसरा कॉल.
1 भज 37:16; यिर्म 17:11; 1ती 6:6
2 नीत 16:1; यिर्म 10:23
3 व्य 17:18, 19; 1रा 3:28
4 भज 72:1, 14
5 लैव 19:36; नीत 11:1
6 नीत 20:26
7 नीत 29:14; प्रक 19:11
8 भज 101:6
9 1शम 22:17, 18; 1रा 2:29
10 सभ 10:4
11 भज 72:1, 6
12 नीत 4:7; सभ 7:12

जो अपनी राह की रक्षा करता है,
वह अपनी जान बचाता है।[1]
18 विनाश से पहले घमंड
और ठोकर खाने से पहले अहंकार
होता है।[2]
19 घमंडियों के साथ लूट बाँटने से
अच्छा है,
दीन लोगों के बीच नम्र बने रहना।[3]
20 जो अंदरूनी समझ दिखाता है उसे
कामयाबी मिलती है
और जो यहोवा पर भरोसा रखता
है वह सुखी है।
21 जिसके पास बुद्धि* है, कहा जाएगा
कि उसमें समझ है[4]
और जो मीठे# बोल बोलता है वह
कायल कर पाता है।[5]
22 जिसमें अंदरूनी समझ है उसके
लिए यह जीवन का सोता है,
मगर मूर्ख को अपनी मूर्खता से ही
सज़ा मिलती है।
23 बुद्धिमान का मन उसे अंदरूनी
समझ की बातें कहने[6]
और दूसरों को कायल करने के
लिए उभारता है।
24 मनभावनी बातें छत्ते के शहद जैसी
होती हैं,
जो मन को* मीठी लगती हैं और
हड्डियों को दुरुस्त करती हैं।[7]
25 ऐसा भी रास्ता है जो इंसान को सही
लगता है,
मगर आखिर में वह उसे मौत की
तरफ ले जाता है।[8]
26 एक मज़दूर का पेट उसससे मेहनत
करवाता है,

16:21 *शा., "जो दिल में बुद्धिमान।" #या "मन को भानेवाले।" 16:24 *या "जो खाने पर।"

अध्य. 16
1 नीत 10:9
2 नीत 11:2 दान 4:30-32
3 यश 57:15
4 नीत 4:7
5 लूक 4:22 कुल 4:6
6 नीत 22:17, 18 मत 12:35
7 नीत 4:20-22 नीत 12:18
8 नीत 14:12 मत 7:22, 23

दूसरा कॉल.
1 सभ 6:7
2 नीत 6:12, 14
3 याकू 3:6
4 याकू 3:16
5 उत 3:1 1शम 24:9 रोम 16:17
6 लैव 19:32 अय 32:7 नीत 20:29
7 भज 92:12-14
8 नीत 14:29 याकू 1:19
9 नीत 25:28
10 गि 26:55 नीत 18:18
11 1शम 14:41, 42 प्रेष 1:24, 26

अध्य. 17
12 भज 37:16 नीत 15:16, 17 नीत 21:9, 19

उसकी भूख* उसे काम करने पर
मजबूर कर देती है।[1]
27 निकम्मा आदमी खोद-खोदकर बुरी
बातें पूछता है,[2]
उसकी ज़बान झुलसानेवाली आग
जैसी होती है।[3]
28 आग लगानेवाला* झगड़े
करवाता है[4]
और बदनाम करनेवाला जिगरी
दोस्तों में फूट डाल देता है।[5]
29 खूँखार आदमी अपने पड़ोसी को
बहकाकर
उसे बुरे रास्ते पर ले जाता है।
30 वह साज़िश रचते हुए आँख
मारता है,
बुरे काम करते वक्त
मुस्कुराता है।*
31 पके बाल एक इंसान का खूबसूरत*
ताज हैं,[6]
बशर्ते वह नेकी की राह पर
चला हो।[7]
32 क्रोध करने में धीमा इंसान,[8] वीर
योद्धा से अच्छा है
और अपने गुस्से* पर काबू रखने-
वाला, शहर जीतनेवाले से।[9]
33 झोली में चिट्ठियाँ डाली तो
जाती हैं,[10]
मगर उससे निकला हर फैसला
यहोवा की तरफ से होता है।[11]

17 जहाँ झगड़े हों वहाँ बड़ी दावत*
उड़ाने से अच्छा है,
जहाँ चैन हो वहाँ सूखी रोटी
खाना।[12]

16:26 *शा., "उसका मुँह।" 16:28 *या "साज़िश रचनेवाला।" 16:30 *शा., "होंठ दबाता है।" 16:31 *या "शान-दार।" 16:32 *शा., "मन।" 17:1 *शा., "बलि के जानवर।"

2 अंदरूनी समझ रखनेवाला नौकर,
उस बेटे पर राज करेगा, जो शर्म-
नाक काम करता है
और उसकी जायदाद का हिस्सेदार
बनेगा मानो वह उसका भाई हो।
3 चाँदी के लिए कुठाली* और सोने
के लिए भट्ठी होती है,[1]
मगर दिलों का जाँचनेवाला
यहोवा है।[2]
4 दुष्ट, चोट पहुँचानेवाली बातों पर
कान लगाता है
और मक्कार, बुरी बातों पर ध्यान
देता है।[3]
5 जो गरीब का मज़ाक उड़ाता है,
वह उसके बनानेवाले का अपमान
करता है।[4]
और जो दूसरों की बरबादी पर
हँसता है, वह सज़ा से नहीं
बचेगा।[5]
6 बूढ़ों का ताज उनके नाती-पोते
होते हैं
और बेटों* को अपने पिता# पर
गर्व होता है।
7 जब अच्छी* बातें कहना मूर्ख को
शोभा नहीं देता,[6]
तो फिर झूठी बातें कहना शासक
को कैसे शोभा देगा![7]
8 तोहफा, अपने मालिक के लिए
अनमोल रत्न है,*[8]
जो कुछ वह करता है उसमें काम-
याब होता है।[9]
9 जो अपराध माफ करता* है, वह
प्यार की खोज में रहता है,[10]
लेकिन जो एक ही बात पर अड़
जाता है, वह जिगरी दोस्तों में
फूट डाल देता है।[1]
10 समझदार के लिए एक फटकार ही
काफी होती है,[2]
जबकि मूर्ख सौ डंडे खाकर भी नहीं
सुधरता।[3]
11 बुरा इंसान सिर्फ बगावत करने की
सोचता है,
इसलिए उसे सज़ा देने के लिए जो
दूत भेजा जाएगा, वह कोई रहम
नहीं करेगा।[4]
12 अपनी मूर्खता में डूबे मूर्ख का
सामना करने से अच्छा है,
उस रीछनी का सामना करना
जिसके बच्चे छीन लिए गए हों।[5]
13 जो अच्छाई का बदला बुराई से
चुकाता है,
उसके घर से मुसीबत नहीं टलेगी।[6]
14 झगड़ा शुरू होना बाँध को खोलने*
जैसा है,
इससे पहले कि झगड़ा बढ़े वहाँ से
निकल जा।[7]
15 दुष्ट को निर्दोष ठहरानेवाले और
नेक को दोषी ठहरानेवाले,[8]
दोनों से यहोवा घिन करता है।
16 अगर मूर्ख के पास बुद्धि हासिल
करने का ज़रिया हो,
मगर मन में इच्छा न हो,* तो क्या
फायदा![9]
17 सच्चा दोस्त हर समय प्यार
करता है[10]
और मुसीबत की घड़ी में भाई बन
जाता है।[11]
18 जिसमें समझ नहीं, वह समझौते में
हाथ मिलाता है

अध्य. 17
1 नीत 27:21
2 भज 26:2; नीत 21:2; नीत 24:12
3 यिर्म 5:31
4 नीत 14:31
5 नीत 24:17; ओब 12
6 नीत 26:7
7 नीत 16:10
8 उत 32:20; 2शम 16:1
9 1शम 25:18, 35; नीत 18:16; नीत 19:6
10 नीत 10:12; 1पत 4:8

दूसरा कॉल.
1 नीत 16:28
2 भज 141:5; नीत 9:8
3 नीत 27:22
4 2शम 18:15; 2शम 20:1, 22; 1रा 2:22, 24
5 नीत 27:3
6 2शम 12:8-10
7 उत 13:8, 9; नीत 25:8; मत 5:39; रोम 12:18
8 निर्ग 23:7; 1रा 21:13; यश 5:22, 23
9 नीत 1:22; रोम 1:20, 21
10 नीत 18:24; यूह 15:13
11 रूत 1:16, 17; 1शम 19:2

17:3 *मिट्टी की हाँडी, जिसमें चाँदी को गलाकर शुद्ध किया जाता था। **17:6** *या "बच्चों।" #या "माँ-बाप।" **17:7** *या "सीधी-सच्ची।" **17:8** *या "वह रत्न है जिससे उसके मालिक को फायदा होता है।" **17:9** *शा., "को ढक देता।"

17:14 *शा., "पानी छोड़ने।" **17:16** *या "उसमें समझ ही न हो।"

और अपने पड़ोसी के सामने दूसरों
का ज़िम्मा लेता है।*[1]
19 जिसे झगड़ा करने में मज़ा आता है,
उसे अपराध करना पसंद है,[2]
जो अपना फाटक ऊँचा करता है,
वह मुसीबत को दावत देता है।[3]
20 टेढ़े मनवालों को कामयाबी नहीं
मिलेगी,[4]
छल की बातें करनेवाले बरबाद हो
जाएँगे।
21 मूर्ख को जन्म देनेवाला पिता दुख
झेलेगा,
नासमझ बेटे के पिता को कोई खुशी
नहीं मिलेगी।[5]
22 दिल का खुश रहना बढ़िया
दवा है,[6]
मगर मन की उदासी सारी ताकत
चूस लेती है।*[7]
23 दुष्ट, न्याय का खून करने के लिए
चोरी-छिपे घूस* लेता है।[8]
24 बुद्धि, समझदार इंसान के सामने
होती है,
मगर मूर्ख की नज़रें इसे धरती
के कोने-कोने तक ढूँढ़ती
फिरती हैं।[9]
25 मूर्ख बेटा अपने पिता को दुख
देता है,
अपनी जन्म देनेवाली माँ का दिल
दुखाता है।[10]
26 नेक जन को सज़ा देना* गलत है,
शरीफ लोगों को कोड़े लगाना सही
नहीं।
27 जिसमें सच्चा ज्ञान होता है, वह
सँभलकर बोलता है,[11]
जिसमें समझ होती है, वह शांत
रहता है।*[1]
28 मूर्ख भी जब चुप रहता है, तो उसे
बुद्धिमान समझा जाता है,
जो अपने होंठ सी लेता है, उसे
समझदार माना जाता है।

18 खुद को दूसरों से अलग करने-
वाला अपने स्वार्थ के पीछे
भागता है
और ऐसी बुद्धि को ठुकरा देता* है,
जो उसे फायदा पहुँचा सकती है।
2 मूर्ख को समझ की बातें अच्छी नहीं
लगतीं,
उसे तो बस अपने मन की कहना
पसंद है।[2]
3 जहाँ दुष्ट होता है वहाँ तिरस्कार भी
होता है
और अपमान के साथ-साथ बदनामी
भी होती है।[3]
4 इंसान के मुँह की बातें गहरे पानी
की तरह होती हैं,[4]
बुद्धि का सोता नदी की तरह
उमड़ता रहता है।
5 दुष्ट का पक्ष लेना सही नहीं[5]
और नेक को इंसाफ न देना
गलत है।[6]
6 मूर्ख की बातें झगड़े पैदा करती हैं,[7]
वह अपनी ही ज़बान की वजह से
पिटता है।[8]
7 मूर्ख की ज़बान उसे तबाह कर
डालती है,[9]
उसके होंठ उसकी जान के लिए
फंदा बन जाते हैं।
8 बदनाम करनेवाले की बातें लज़ीज़
खाने की तरह होती हैं,[10]

17:18 *या "का ज़ामिन बनता है।"
17:22 *या "हड्डियाँ सुखा देती है।"
17:23 *शा., "सीने से निकली घूस।"
17:26 *या "पर जुरमाना लगाना।"
17:27 *शा., "उसका मन शांत रहता है।"
18:1 *या "को तुच्छ समझता।"

अध्य. 17
1 नीत 11:15, नीत 22:26, 27
2 याकू 3:16
3 2शम 15:2-4
4 भज 18:26, नीत 6:14, 15
5 1शम 2:22-25, 1शम 8:1-3, 2शम 15:14
6 नीत 12:25, नीत 15:13
7 नीत 18:14
8 निर्ग 23:8
9 सभ 2:14
10 नीत 15:20
11 नीत 10:19, याकू 1:19

दूसरा कॉल.
1 नीत 15:4, सभ 9:17, याकू 3:13

अध्य. 18
2 नीत 10:19
3 नीत 11:2
4 नीत 10:11
5 व्य 1:16, 17, नीत 28:21
6 1रा 21:9, 10
7 नीत 13:10
8 नीत 19:19
9 नीत 13:3
10 लैव 19:16

जिसे निगलकर सीधे पेट में डाला
जाता है।[1]
9 कामचोर और तबाही मचानेवाला,
दोनों भाई-भाई हैं।[2]
10 यहोवा का नाम एक मज़बूत
मीनार है,[3]
जिसमें भागकर नेक जन हिफाज़त
पाता है।*[4]
11 रईस की दौलत उसके लिए किलेबंद
शहर है,
मन-ही-मन वह सोचता है यह
शहरपनाह उसे बचाएगी।[5]
12 विपत्ति से पहले मन में घमंड[6]
और आदर से पहले नम्रता
होती है।[7]
13 जो सुनने से पहले ही जवाब देता है,
वह मूर्खता का काम करता है और
अपनी बेइज़्ज़ती कराता है।[8]
14 इंसान की हिम्मत उसे बीमारी में भी
सँभाल सकती है,[9]
लेकिन कुचले हुए मन को कौन
सँभाल सकता है?[10]
15 समझदार अपने मन में ज्ञान की
बातें भरता है[11]
और बुद्धिमान के कान ज्ञान की
बातों की ओर लगे रहते हैं।
16 तोहफा एक इंसान के लिए रास्ता
खोल देता है[12]
और उसे बड़े-बड़े लोगों के सामने
ले जाता है।
17 जो मुकदमे में पहले बोलता है,
उसकी बातें सही लगती हैं,[13]
मगर जब दूसरा पक्ष सवाल-जवाब
करता है, तब हकीकत सामने
आती है।[14]
18 चिट्ठियाँ डालने से झगड़ा खत्म हो
जाता है[1]
और दो कट्टर विरोधियों के बीच
फैसला किया जाता है।
19 नाराज़ भाई को मनाना, मज़बूत
शहर को जीतने से कहीं ज़्यादा
मुश्किल है[2]
और झगड़े किले के बंद दरवाज़े*
जैसे होते हैं।[3]
20 इंसान अपने मुँह की बातों से अपना
पेट भरता है[4]
और अपने होंठों की उपज से तृप्त
होता है।
21 ज़िंदगी और मौत ज़बान के बस
में है,[5]
एक इंसान जैसी बातें करना पसंद
करता है, उसे वैसा ही फल
मिलता है।[6]
22 जिसने अच्छी पत्नी पा ली, उसने
कुछ अनमोल पा लिया[7]
और उसे यहोवा की मंज़ूरी*
मिलती है।[8]
23 गरीब मदद के लिए गिड़गिड़ाता है,
मगर रईस उसे रुखाई से जवाब
देता है।
24 ऐसे भी साथी होते हैं, जो एक-दूसरे
को बरबाद करने के लिए तैयार
रहते हैं,[9]
मगर ऐसा भी दोस्त होता है,
जो भाई से बढ़कर वफा
निभाता है।[10]

19 गरीब होना और निर्दोष चाल
चलना,[11]
मूर्ख होने और झूठ बोलने से
अच्छा है।[12]

अध्य. 18
1 नीत 26:22
2 नीत 10:4
3 1शम 17:45, 46; भज 20:1
4 भज 18:2; भज 91:14
5 भज 49:6, 7; नीत 11:4; यिर्म 9:23; लूक 12:19-21
6 नीत 11:2; दान 5:23, 30; प्रेष 12:21-23
7 नीत 22:4; 1पत 5:5
8 नीत 25:8
9 अय 1:21; 2कुर 4:16; 2कुर 12:10
10 नीत 17:22
11 1रा 3:7-9; नीत 9:9
12 उत 43:11; नीत 17:8
13 2शम 16:3, 4
14 2शम 19:25-27; नीत 25:8

दूसरा कॉल.
1 यह 14:1, 2; नहे 11:1; नीत 16:33
2 उत 27:41; 2शम 13:22
3 2शम 14:28; प्रेष 15:37-39
4 नीत 12:14; नीत 13:2
5 मत 15:18; इफ 4:29; याकू 3:6, 9
6 सभ 10:12
7 नीत 31:10
8 नीत 19:14; सभ 9:9
9 2शम 15:31; मत 26:49
10 1शम 19:2, 4; नीत 17:17

अध्य. 19
11 नीत 15:16; याकू 2:5
12 नीत 28:6

18:10 *शा., "को ऊँचा उठाया जाता है," यानी वह सुरक्षित है और उस तक कोई नहीं पहुँच सकता।

18:19 *शा., "के बेड़े।" **18:22** *या "की कृपा।"

2 बिना ज्ञान के रहना अच्छा नहीं[1]
और जल्दबाज़ी में काम करनेवाला* पाप करता है।
3 इंसान अपनी मूर्खता की वजह से गलत कदम उठाता है,
फिर उसका मन यहोवा पर भड़क उठता है।
4 अमीर के कई दोस्त होते हैं,
लेकिन गरीब का अगर कोई दोस्त हो,
तो वह भी उसे छोड़कर चला जाता है।[2]
5 झूठा गवाह अपनी सज़ा ज़रूर पाएगा[3]
और बात-बात पर झूठ बोलनेवाला नहीं बचेगा।[4]
6 बड़े-बड़े* लोगों की मेहरबानी सभी पाना चाहते हैं
और तोहफे देनेवाले का हर कोई दोस्त बनना चाहता है।
7 जब गरीब के सब भाई उससे नफ-रत करते हों,[5]
तो फिर उसके दोस्त उससे किनारा क्यों नहीं करेंगे?[6]
वह अपनी फरियाद लिए उनके पीछे-पीछे जाता है,
मगर कोई उसकी नहीं सुनता।
8 जो समझ हासिल करता है वह खुद से प्यार करता है,[7]
जो पैनी समझ को अनमोल जानता है* उसे कामयाबी मिलती है।[8]
9 झूठा गवाह अपनी सज़ा ज़रूर पाएगा
और बात-बात पर झूठ बोलनेवाले का नाश हो जाएगा।[9]

19:2 *शा., "उतावली से दौड़नेवाला।" 19:6 *या "दरियादिल।" 19:8 *या "को सँभालकर रखता है।"

अध्य. 19
1 रोम 10:2
2 नीत 14:20
3 व्य 19:18, 19
4 नीत 19:9
5 नीत 14:20
6 सभ 9:14, 15 याकू 2:2, 3
7 नीत 15:32
8 नीत 2:2, 5
9 नीत 19:5 प्रक 21:8

दूसरा कॉल.
1 2शम 3:24 2शम 3:38, 39 नीत 30:21, 22 सभ 10:7
2 नीत 14:29 नीत 16:32 याकू 1:19
3 उत 50:19-21 मत 18:21, 22 इफ 4:32
4 नीत 16:14 नीत 20:2 दान 2:12
5 2शम 16:21, 22
6 नीत 21:9, 19 नीत 27:15
7 उत 24:14 नीत 18:22 नीत 31:10
8 नीत 23:21 नीत 24:33, 34 2थि 3:10
9 नीत 16:17
10 नीत 15:32
11 व्य 15:7, 8 भज 37:25, 26 इब्र 13:16
12 नीत 11:24 मत 5:7 इब्र 6:10
13 नीत 13:24 नीत 22:6, 15
14 1शम 3:12, 13

10 मूर्ख का ठाट-बाट से रहना शोभा नहीं देता,
तो फिर नौकर का हाकिमों पर राज करना कैसे शोभा देगा?[1]
11 इंसान की अंदरूनी समझ उसे गुस्सा करने से रोकती है[2]
और ठेस पहुँचने पर उसे अनदेखा करना उसकी खूबी है।[3]
12 राजा का क्रोध शेर की दहाड़ जैसा है,[4]
मगर उसकी दया घास पर ओस के समान है।
13 मूर्ख बेटा अपने पिता पर मुसीबत लाता है[5]
और झगड़ालू* पत्नी टपकती छत जैसी होती है।[6]
14 घर और दौलत पिता से विरासत में मिलती है,
लेकिन सूझ-बूझ से काम लेनेवाली पत्नी यहोवा से मिलती है।[7]
15 आलस, गहरी नींद सुला देता है
और सुस्त इंसान भूखा रह जाता है।[8]
16 जो आज्ञा मानता है, उसकी जान सलामत रहती है,[9]
मगर जो बेपरवाह जीता है, वह अपनी जान खो देता है।[10]
17 जो गरीब पर दया करता है, वह यहोवा को उधार देता है[11]
और परमेश्वर इस उपकार का उसे इनाम* देगा।[12]
18 जब तक तेरे बेटे के सुधरने की उम्मीद है उसे सिखा,[13]
उसकी मौत के लिए ज़िम्मेदार मत बन।*[14]

19:13 *या "जान खानेवाली।" 19:17 *या "बदला।" 19:18 *या "की इच्छा मत कर।"

19 गरम मिज़ाजवाले को सज़ा भुगतनी पड़ेगी,
अगर तू उसे एक बार बचाए, तो बार-बार बचाना पड़ेगा।[1]
20 सलाह को सुन और शिक्षा कबूल कर,[2]
ताकि तू आगे चलकर बुद्धि-मान बने।[3]
21 इंसान अपने दिल में बहुत-सी योजनाएँ बनाता है,
मगर यहोवा जो ठान लेता है,* वह हर हाल में पूरा होता है।[4]
22 इंसान का अटल प्यार[5] मन को भा जाता है
और झूठे आदमी से अच्छा गरीब आदमी होता है।
23 यहोवा का डर मानना जीवन की ओर ले जाता है,[6]
जिसमें यह डर है वह चैन से जीता है,
उस पर कोई आँच नहीं आती।[7]
24 आलसी, दावत के बरतन में हाथ तो डालता है,
लेकिन खाना मुँह तक लाने की तकलीफ नहीं उठाता।[8]
25 हँसी उड़ानेवाले को मार![9] यह देख-कर नासमझ होशियार बनेगा।[10]
समझदार को डाँट, वह और भी सीखेगा।[11]
26 जो बेटा पिता के साथ बुरा सलूक करता है और माँ को भगा देता है,
वह शर्मिंदगी और बदनामी लाता है।[12]
27 हे मेरे बेटे, अगर तू शिक्षा पर कान लगाना छोड़ दे,
तो तू ज्ञान की बातों पर चलने से भटक जाएगा।
28 निकम्मा गवाह इंसाफ की हँसी उड़ाता है,[1]
दुष्ट जन बुराई का मज़ा ऐसे लेता है जैसे खाना निगल रहा हो।[2]
29 हँसी उड़ानेवाले के लिए सज़ा तय है[3]
और मूर्ख की पीठ के लिए छड़ी तैयार है।[4]

20 दाख-मदिरा हँसी उड़ाती है[5] और शराब हंगामा मचाती है,[6]
इनसे बहकनेवाला बुद्धिमान नहीं।[7]
2 राजा का आतंक शेर की दहाड़ जैसा है,[8]
उसे गुस्सा दिलानेवाला अपनी जान जोखिम में डालता है।[9]
3 जो झगड़ा करने से दूर रहता है, उसके लिए यह आदर की बात है,[10]
लेकिन मूर्ख झगड़े में उलझता है।[11]
4 आलसी सर्दियों में जुताई नहीं करता,
तभी कटाई के समय उसके पास कुछ नहीं होता
और वह भीख माँगता फिरता है।*[12]
5 इंसान के दिल के विचार* गहरे पानी की तरह हैं,
मगर पैनी समझ रखनेवाला इसे खींच निकालता है।
6 कई लोग अपने अटल प्यार का दम भरते हैं,

19:21 *या "जो मकसद ठहराता है।"

20:4 *या शायद, "कटाई के समय ढूँढ़ने पर भी उसे कुछ नहीं मिलता।" 20:5 *या "इरादे।"

अध्य. 19
1 1शम 24:16-18; 1शम 26:21
2 नीत 4:13
3 व्य 8:14, 16; इब्र 12:7, 11
4 उत 11:6, 7; उत 50:19, 20; नीत 21:30; दान 4:35; प्रेष 5:38, 39
5 मी 6:8
6 नीत 14:27; मला 3:16
7 नीत 12:21
8 नीत 6:9-11; नीत 15:19; नीत 24:30, 31; नीत 26:14, 15
9 व्य 25:2
10 नीत 15:5
11 नीत 9:9; नीत 21:11
12 निर्ग 20:12; लैव 20:9; नीत 20:20; नीत 30:17

दूसरा कॉल.
1 1रा 21:9, 10
2 नीत 4:16, 17
3 नीत 9:12
4 नीत 10:13; नीत 26:3

अध्य. 20
5 उत 9:20, 21; नीत 23:29-35
6 यश 28:7
7 1कुर 6:10; गल 5:21; इफ 5:18
8 नीत 19:12; सभ 10:4
9 1रा 2:22-24
10 नीत 14:29; 2ती 2:23
11 नीत 18:6; सभ 7:9
12 नीत 6:10, 11; 2थि 3:10

मगर सच्चा इंसान बड़ी मुश्किल से
मिलता है।
7 नेक जन अपना चालचलन निर्दोष
बनाए रखता है,[1]
उसकी आनेवाली संतान* सुखी
रहेगी।[2]
8 जब राजा न्याय करने राजगद्दी पर
बैठता है,[3]
तो एक ही नज़र में सारी बुराई छाँट
लेता है।[4]
9 कौन कह सकता है, "मैंने अपना
मन शुद्ध कर लिया,[5]
मेरे पाप धुल गए"?[6]
10 बेईमानी का बाट-पत्थर और झूठा
पैमाना,*
दोनों से यहोवा घिन करता है।[7]
11 बच्चा* भी अपने कामों से दिखा
देता है
कि वह सीधी और सही चाल चल
रहा है या नहीं।[8]
12 सुनने के लिए कान और देखने के
लिए आँख,
दोनों यहोवा ने बनाए हैं।[9]
13 नींद से प्यार मत कर, वरना तू
कंगाल हो जाएगा,[10]
अपनी आँखें खुली रख तब तू भर-
पेट खाएगा।[11]
14 खरीदार कहता है, "चीज़ रद्दी है,
एकदम रद्दी!"
मगर वहाँ से चले जाने के
बाद अपने सौदे पर शेखी
मारता है।[12]
15 सोना और मूंगे* कीमती होते हैं,
पर उनसे भी कीमती हैं ज्ञान से भरे
होंठ।[1]
16 उस आदमी के कपड़े गिरवी रख ले,
जो किसी अजनबी का ज़ामिन
बना है[2]
और अगर उसने बदचलन*
औरत की वजह से अपनी चीज़
गिरवी रखी है, तो उसे वापस
मत कर।[3]
17 छल की रोटी एक इंसान को
स्वादिष्ट लगती है,
लेकिन बाद में उसका मुँह कंकड़-
पत्थर से भर जाता है।[4]
18 सलाह-मशविरा करने से योजनाएँ
सफल* होती हैं,[5]
सही मार्गदर्शन# लेकर अपनी
जंग लड़।[6]
19 जो दूसरों को बदनाम करना
चाहता है, वह उनके राज़ बताता
फिरता है,[7]
जिसे गप्पे लड़ाना पसंद है उससे
दोस्ती मत रख।
20 जो अपने माँ-बाप को कोसता है,
अँधेरा होने पर उसका दीपक बुझ
जाएगा।[8]
21 चाहे एक इंसान लालच करके जाय-
दाद पा भी ले,
फिर भी अंत में उसे कोई आशीष
नहीं मिलेगी।[9]
22 यह मत कह, "मैं इस बुराई का
बदला लूँगा।"[10]
यहोवा पर भरोसा रख,[11] वह तेरी
रक्षा करेगा।[12]
23 बेईमानी के बाट-पत्थर* से यहोवा
घिन करता है,

अध्य. 20
1 अय 1:1; लूक 1:5, 6
2 भज 37:25, 26
3 1रा 7:7
4 1रा 3:28; भज 72:1, 4; नीत 16:12
5 अय 14:4
6 भज 51:5; सभ 7:20; याकू 3:2
7 नीत 11:1; आम 8:5; मी 6:11
8 नीत 22:15
9 निर्ग 4:11
10 नीत 10:4
11 नीत 12:11
12 लैव 19:13; नीत 21:6

दूसरा कॉल.
1 नीत 3:13-15
2 नीत 11:15
3 नीत 27:13
4 नीत 6:30, 31
5 नीत 15:22
6 नीत 11:14; नीत 24:6; लूक 14:31, 32
7 लैव 19:16; नीत 11:13; नीत 25:9, 23
8 निर्ग 20:12; लैव 20:9; नीत 19:26
9 नीत 28:8, 20; 1ती 6:9, 10
10 व्य 32:35; नीत 24:29; मत 5:38, 39; रोम 12:17, 19; 1थि 5:15
11 भज 37:34
12 भज 34:7; 1पत 4:19

20:7 *शा., "बेटे।" **20:10** *या "दो अलग-अलग बाट-पत्थर और दो अलग-अलग माप के पैमाने।" **20:11** *या "लड़का।" **20:15** *शब्दावली देखें।

20:16 *शा., "परदेसी।" **20:18** *या "पक्की।" #या "बुद्धि-भरी सलाह।" **20:23** *या "दो अलग-अलग बाट-पत्थर।"

तराज़ू में हेरा-फेरी करना सही
नहीं।

24 यहोवा ही एक आदमी के कदमों को
राह दिखाता है,[1]
वरना उसे कहाँ पता किस राह
जाना है।

25 उतावली में आकर मन्‍नत मानना
और किसी चीज़ को अर्पित
करना,[2]
फिर बाद में उस पर सोच-विचार
करना एक फंदा है।[3]

26 बुद्धिमान राजा दुष्टों को छाँटकर
अलग करता है[4]
और उन पर दाँवने का पहिया
चलाता है।[5]

27 इंसान की साँस यहोवा के लिए
दीपक है,
जो अंदर के इंसान पर रौशनी
डालता है।

28 अटल प्यार और सच्चाई से राजा
की हिफाज़त होती है,[6]
अटल प्यार से उसकी राजगद्दी
कायम रहती है।[7]

29 जवानों की शान उनकी ताकत है[8]
और बुज़ुर्गों की शोभा उनके सफेद
बाल।[9]

30 चोट और घाव बुराई दूर करते हैं[10]
और मार इंसान को अंदर से शुद्ध
करती है।

21 राजा का मन यहोवा के हाथ
में पानी की धारा के
समान है,[11]
वह जहाँ चाहता है उसे मोड़
देता है।[12]

2 इंसान को अपनी सभी राहें सही
लगती हैं,[13]
लेकिन यहोवा दिलों* को
जाँचता है।[1]

3 यहोवा को बलिदानों से ज़्यादा,
उन कामों से खुशी मिलती है,
जो सही हैं और न्याय के मुता-
बिक हैं।[2]

4 घमंड से चढ़ी आँखें और मगरूर
दिल पाप हैं,
जो दीपक की तरह दुष्ट को राह
दिखाते हैं।[3]

5 मेहनती की योजनाएँ ज़रूर सफल*
होंगी,[4]
लेकिन जल्दबाज़ी करनेवाले पर
गरीबी छा जाएगी।[5]

6 झूठ बोलकर बटोरी गयी दौलत,
कोहरे की तरह गायब हो जाती है,
ऐसी दौलत मौत का फंदा साबित
होती है।*[6]

7 दुष्टों की हिंसा उन्हीं का सफाया
कर देती है,[7]
क्योंकि वे न्याय करने से इनकार
करते हैं।

8 जो दोषी होता है, उसकी राह टेढ़ी-
मेढ़ी होती है,
मगर जो निर्दोष होता है,
उसके काम सीधाई के होते हैं।[8]

9 झगड़ालू* पत्नी के साथ घर में
रहने से अच्छा है,
छत पर अकेले एक कोने में
रहना।[9]

10 दुष्ट जन बुरे काम करने के लिए
बेचैन रहता है,[10]

21:2 *या "इरादों।" **21:5** *या "फायदे-मंद।" **21:6** *या शायद, "उनके लिए कोहरे की तरह गायब हो जाती है जो मौत ढूँढ़ते हैं।" **21:9** *या "जान खानेवाली।"

अध्य. 20
1 भज 37:23
यिर्म 10:23
2 लैव 27:9
3 गि 30:2
सभ 5:4, 6
मत 5:33
4 भज 101:8
5 यश 28:27
6 भज 61:6, 7
7 भज 21:7
8 सभ 11:9
9 लैव 19:32
नीत 16:31
10 भज 119:71

अध्य. 21
11 निर्ग 14:4
एज 7:27
12 नहे 2:7, 8
यश 44:28
प्रक 17:17
13 भज 36:1, 2
नीत 16:2

दूसरा कॉल.
1 1शम 16:6, 7
नीत 24:12
यिर्म 17:10
2 1शम 15:22, 23
हो 6:6
मी 6:7, 8
मत 12:7
3 भज 10:4
4 नीत 13:4
5 नीत 14:29
6 नीत 1:19
नीत 20:21
7 भज 7:14-16
8 भज 37:37
नीत 16:17
1पत 1:22
9 नीत 17:1
नीत 21:19
नीत 25:24
नीत 27:15
10 उत 6:5
भज 36:1, 4

वह दूसरों पर कोई दया नहीं
करता।[1]
11 हँसी उड़ानेवाले को जब सज़ा
मिलती है, तो नादान बुद्धि
हासिल करता है
और अगर बुद्धिमान को अंदरूनी
समझ मिल जाए, तो वह ज्ञान
हासिल करता है।*[2]
12 नेक परमेश्‍वर, दुष्ट के घर पर
ध्यान देता है
और दुष्ट को गिराकर उसका नाश
कर देता है।[3]
13 जो दीन जन की दुहाई सुनकर कान
बंद कर लेता है,
उसकी दुहाई भी नहीं सुनी
जाएगी।[4]
14 चोरी-छिपे दिया गया तोहफा गुस्सा
ठंडा कर देता है,[5]
चुपके से दी गयी घूस क्रोध शांत
कर देती है।
15 नेक जन को न्याय करने से खुशी
मिलती है,[6]
लेकिन दुष्ट काम करनेवालों को
न्याय बुरा लगता है।
16 जो इंसान अंदरूनी समझ की राह से
भटक जाता है,
उसे मरे हुओं के साथ ठिकाना
मिलता है।[7]
17 जिसे मौज-मस्ती से प्यार है, वह
कंगाल हो जाएगा,[8]
जिसे तेल और दाख-मदिरा से प्यार
है, वह अमीर नहीं होगा।
18 नेक जन के लिए दुष्ट को फिरौती
में दिया जाता है
और सीधे-सच्चे इंसान के लिए
कपटी को दिया जाता है।[9]
19 झगड़ालू* और चिड़चिड़ी पत्नी के
साथ रहने से अच्छा है,
वीराने में जाकर रहना।[1]
20 बुद्धिमान के घर में बेशकीमती
खज़ाना और तेल मिलता है,[2]
लेकिन मूर्ख के पास जो कुछ होता
है उसे वह लुटा देता है।[3]
21 जो कोई नेकी और अटल प्यार का
पीछा करता है,
वह जीवन, नेकी और आदर
पाता है।[4]
22 बुद्धिमान इंसान योद्धाओं के शहर
को जीत लेता है*
और जिस ताकत पर वे भरोसा
रखते हैं उसे तोड़ देता है।[5]
23 जो अपने मुँह और ज़बान पर काबू
रखता है,
वह खुद को मुसीबत से बचाता है।[6]
24 जो उतावली में आकर अपनी
मर्यादा लाँघता है,
वह गुस्ताख, घमंडी और डींगमार
कहलाता है।[7]
25 आलसी अपने हाथ से काम नहीं
करना चाहता,
इसलिए उसकी लालसाएँ उसकी
जान ले लेंगी।[8]
26 वह दिन-भर कुछ-न-कुछ पाने का
लालच करता है,
लेकिन नेक जन देता रहता है और
अपने पास कुछ नहीं रखता।[9]
27 दुष्ट के बलिदान घिनौने होते हैं[10]
और अगर इसे बुरे इरादे से*
चढ़ाया जाए,
तो यह और भी कितना घिनौना
होगा!

अध्य. 21
1 1शम 25:10, 11
2 नीत 9:9; नीत 19:25
3 उत 19:29; भज 37:10, 20; 2पत 2:4; 2पत 3:5, 6
4 व्य 15:9; नीत 28:27; याकू 5:4
5 नीत 18:16
6 भज 106:3
7 याकू 1:15; 2पत 2:21
8 सभ 7:4; लूक 15:13, 14
9 एस 7:10

दूसरा कॉल.
1 नीत 17:1; नीत 21:9; नीत 25:24; नीत 27:15
2 नीत 15:6; सभ 5:19
3 लूक 15:13, 14
4 नीत 15:9; नीत 22:4; मत 5:6; रोम 2:6, 7
5 सभ 7:19; 2कुर 10:4
6 भज 141:3; नीत 10:19; सभ 10:20
7 गि 14:44; एस 6:4
8 नीत 6:6-11; नीत 13:4; नीत 19:24
9 भज 37:25, 26; भज 112:9; लूक 6:30
10 1शम 15:22, 23; नीत 15:8; यश 1:11

21:11 *या "वह जान जाता है कि उसे क्या करना है।"

21:19 *या "जान खानेवाली।" **21:22** *शा., "शहर पर चढ़ जाता है।" **21:27** *या "इसे शर्मनाक बरताव के साथ।"

28 झूठे गवाह का नाश हो जाएगा,[1]
लेकिन जो ध्यान से सुनता है वह
अच्छी गवाही देगा।
29 दुष्ट के चेहरे पर विश्वास
झलकता है,[2]
लेकिन सीधे-सच्चे इंसान की राह ही
सही होती है।*[3]
30 यहोवा के खिलाफ न तो कोई बुद्धि,
न कोई पैनी समझ और न ही
कोई सलाह टिक सकती है।[4]
31 युद्ध के दिन के लिए घोड़ा तैयार
किया जाता है,[5]
मगर उद्धार यहोवा ही दिलाता है।[6]

22 एक अच्छा नाम बेशुमार दौलत
से बढ़कर है[7]
और आदर* पाना सोना-चाँदी पाने
से कहीं अच्छा है।
2 अमीर और गरीब में एक बात
मिलती-जुलती है,*
दोनों को यहोवा ने रचा है।[8]
3 होशियार इंसान खतरा देखकर छिप
जाता है,
मगर नादान बढ़ता जाता है और
अंजाम* भुगतता है।
4 नम्र होने और यहोवा का डर
मानने से,
दौलत, आदर और जीवन
मिलता है।[9]
5 टेढ़े इंसान की राह में काँटे और
फंदे बिछे होते हैं,
लेकिन जिसे अपनी जान प्यारी है
वह इनसे दूर रहता है।[10]
6 लड़के* को उस राह पर चलना
सिखा, जिस पर उसे चलना
चाहिए[1]
और वह बुढ़ापे में भी उससे नहीं
हटेगा।[2]
7 अमीर, गरीब पर राज करता है
और उधार लेनेवाला, उधार देने-
वाले का गुलाम होता है।[3]
8 जो बुराई बोता है वह विपत्ति की
फसल काटेगा[4]
और जिस छड़ी से वह कहर ढाता
है वह टूट जाएगी।[5]
9 दरियादिल इंसान पर आशीषें
बरसेंगी,
क्योंकि वह गरीबों के साथ अपना
खाना बाँटता है।[6]
10 ठट्ठा करनेवाले को भगा दे, तब
झगड़ा मिट जाएगा,
बहसबाज़ी* और अपमान का अंत
हो जाएगा।
11 जिसकी बोली मनभावनी है और
जिसे साफ दिल पसंद है,
राजा उसका दोस्त होता है।[7]
12 यहोवा, बुद्धि* से काम लेनेवालों
की हिफाज़त करता है,
लेकिन छल-कपट करनेवाले की
बातें उलट देता है।[8]
13 आलसी कहता है, "बाहर शेर है!
अगर मैं चौक पर गया तो पक्का
मारा जाऊँगा।"[9]
14 बदचलन* औरत का मुँह गहरी
खाई है[10]
और यहोवा जिसे धिक्कारता है वह
उसमें जा गिरेगा।
15 लड़के* के मन में मूर्खता बसी
होती है,[11]

21:29 *या "अपनी राह पक्की करता है।" 22:1 *शा., "मंज़ूरी।" 22:2 *शा., "एक-दूसरे से मिलते हैं।" 22:3 *या "सज़ा।" 22:6, 15 *या "बच्चे; जवान।"

22:10 *या "मुकदमे।" 22:12 *शा., "ज्ञान।" 22:14 *शा., "परायी।"

अध्य. 21
1 व्य 19:18, 19; नीत 19:5
2 नीत 28:14; नीत 29:1
3 नीत 11:5
4 गि 23:7, 8; नीत 19:21; प्रेष 5:38, 39
5 भज 20:7; भज 33:17; यश 31:1
6 2इत 20:15, 17; भज 68:20; प्रक 7:10

अध्य. 22
7 सभ 7:1
8 प्रेष 17:26
9 भज 34:9; नीत 18:12
10 नीत 4:14, 15

दूसरा कॉल.
1 उत 18:19; व्य 6:6, 7; इफ 6:4
2 2ती 3:14, 15
3 2रा 4:1; मत 18:25
4 गल 6:7, 8
5 भज 125:3
6 व्य 15:7, 8; नीत 11:25; इब्र 6:10
7 भज 45:2; नीत 16:13; मत 5:8
8 प्रेष 13:8-10
9 नीत 26:13-15
10 नीत 5:3; सभ 7:26
11 उत 8:21

लेकिन शिक्षा की छड़ी उसे दूर कर
देगी।[1]
16 जो गरीब को लूटकर अपने भंडार
भरता है[2]
और जो अमीर को तोहफे देता है,
वे दोनों ही गरीब हो जाएँगे।
17 बुद्धिमान की बातों पर कान लगा[3]
ताकि तू मेरी सिखायी बातों पर पूरे
दिल से चल सके।[4]
18 इन्हें संजोए रख, तब तुझे खुशी
मिलेगी[5]
और ये हमेशा तेरे होंठों पर बनी
रहेंगी।[6]
19 मैंने आज ये बातें तुझे बतायी हैं
ताकि तेरा भरोसा यहोवा पर हो।
20 मैंने पहले भी बहुत-सी सलाह
और ज्ञान की बातें तुझे लिखी थीं
21 कि तू सच्ची और भरोसेमंद
बातें सीखे
और अपने भेजनेवाले के पास सही-
सही जानकारी ले जाए।
22 गरीब को गरीब जानकर मत लूट,[7]
शहर के फाटक पर दीन-दुखियों को
मत कुचल।[8]
23 क्योंकि खुद यहोवा उनका मुकदमा
लड़ेगा[9]
और जो उन्हें लूटते हैं उन्हें ज़िंदा
नहीं छोड़ेगा।
24 गरम मिज़ाजवाले के साथ मत रह
और जो बात-बात पर भड़क उठता
है उससे दोस्ती मत रख,
25 कहीं ऐसा न हो कि तू उसके जैसी
चाल चलने लगे
और यह तेरे लिए फंदा
साबित हो।[10]
26 उन लोगों जैसा मत बन, जो हाथ
मिलाकर
दूसरों का कर्ज़ चुकाने का ज़िम्मा
लेते हैं।*[1]
27 क्योंकि अगर तेरे पास चुकाने के
लिए कुछ न हो,
तो तेरा बिस्तर भी तुझसे छीन
लिया जाएगा।
28 बरसों पहले जो सीमा-चिन्ह
तेरे पुरखों ने ठहराया था, उसे मत
खिसकाना।[2]
29 क्या तूने ऐसे आदमी को देखा है जो
अपने काम में माहिर है?
वह किसी मामूली इंसान के सामने
नहीं,
राजा-महाराजाओं के सामने खड़ा
होगा।[3]

23 जब तू राजा के साथ खाने बैठे,
तो ध्यान रख, तू किस तरह
खाता है।
2 अगर तेरा मन ठूँसकर खाने
को करे,
तो खुद पर काबू रख।*
3 उसके लज़ीज़ खाने की लालसा
मत कर,
कहीं तू उससे धोखा न खा जाए।
4 पैसे के पीछे इतना मत भाग कि तू
थककर चूर हो जाए,[4]
ज़रा रुक और समझदारी से
काम ले।*
5 क्या तू ऐसी चीज़ पर आँख लगाए-
गा जो नहीं रहेगी?[5]
पैसा तो पंख लगाकर उकाब की
तरह आसमान में उड़ जाता है।[6]
6 कंजूस के यहाँ खाना मत खाना,

22:26 *या "दूसरों का ज़ामिन बनते हैं।"
23:2 *शा., "अपने गले पर छुरी रख।"
23:4 *या शायद, "अपनी समझ से काम लेना बंद कर।"

अध्य. 22
1 नीत 13:24 नीत 19:18
2 भज 12:5 नीत 14:31
3 नीत 13:20
4 नीत 15:14
5 नीत 2:10 नीत 24:14
6 नीत 15:7
7 नीत 23:10
8 निर्ग 23:6 आम 5:12
9 1शम 24:12 भज 12:5
10 नीत 13:20

दूसरा कॉल.
1 नीत 6:1-3
2 व्य 19:14 नीत 23:10 हो 5:10
3 1शम 16:18, 19 1रा 7:13, 14

अध्य. 23
4 नीत 28:20 यूह 6:27 1ती 6:9, 10
5 1यूह 2:16, 17
6 नीत 27:24

उसके लज़ीज़ खाने की लालसा मत
करना।
7 वह कहता तो है "खाओ-पीओ,"
मगर दिल से नहीं कहता,*
वह दाने-दाने का हिसाब रखता है।
8 तूने उसके यहाँ जो खाया होगा उसे
तू उगल देगा,
जितनी भी तारीफ की होगी, सब
बेकार जाएँगी।
9 मूर्ख को बुद्धि की बातें मत सुना,[1]
वह तेरी बातों को तुच्छ समझेगा।[2]
10 बरसों पहले लगाए गए सीमा-चिन्ह
मत खिसकाना,[3]
न ही अनाथों* की ज़मीन हड़पना।
11 क्योंकि उन्हें बचानेवाला* बहुत
ताकतवर है,
वही तेरे खिलाफ उनका मुकदमा
लड़ेगा।[4]
12 शिक्षा पर अपना मन लगा
और सिखायी जानेवाली बातों पर
कान दे।
13 अपने लड़के* को सिखाने से पीछे
मत हट,[5]
अगर तू उसे छड़ी भी मारे तो वह
मरेगा नहीं।
14 छड़ी चलाने से
तू उसे कब्र में जाने से बचा लेगा।
15 हे मेरे बेटे, अगर तू* बुद्धि-
मान बने,
तो मेरा दिल खुशी से भर जाएगा।[6]
16 जब तेरे होंठ सच्ची बात बोलेंगे,
तो मैं अंदर-ही-अंदर* खुशी से झूम
उठूँगा।
17 तेरा दिल पापियों से ईर्ष्या न करे,[1]
बल्कि हर वक्त यहोवा का डर
माने,[2]
18 तब तेरा भविष्य सुनहरा होगा[3]
और तेरी आशा नहीं मिटेगी।
19 हे मेरे बेटे, सुन और बुद्धिमान बन,
अपने दिल को सही राह पर
ले चल।
20 उनके जैसा मत बन जो बहुत दाख-
मदिरा पीते हैं[4]
और ठूँस-ठूँसकर गोश्त खाते हैं।[5]
21 क्योंकि पेटू और पियक्कड़ कंगाल
हो जाएँगे,[6]
उनकी नींद उन्हें चिथड़े पहनाएगी।
22 अपने जन्म देनेवाले पिता की सुन
और जब तेरी माँ बूढ़ी हो जाए तो
उसे तुच्छ मत जान।[7]
23 सच्चाई को खरीद ले,* उसे कभी
मत बेचना,[8]
बुद्धि, शिक्षा और समझ को भी
खरीद ले।[9]
24 नेक जन के पिता को कितनी खुशी
मिलती है
और बुद्धिमान का पिता उसके
कारण कितना मगन होता है।
25 तेरे माता-पिता बेहद खुश होंगे
और तुझे जन्म देनेवाली फूली न
समाएगी।
26 हे मेरे बेटे, दिल लगाकर मेरी
बातें सुन
और मेरी राहों पर चलने में तुझे
खुशी मिले।[10]
27 वेश्या तो गहरी खाई है

23:7 *शा., "उसका मन तुझसे लगा नहीं।" 23:10 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।" 23:11 *शा., "छुड़ाने-वाला" यानी परमेश्वर। 23:13 *या "बच्चे; जवान।" 23:15 *शा., "तेरा दिल।"

23:16 *शा., "मेरे गुरदे।" 23:23 *या "को हासिल कर।"

अध्य. 23
1 नीत 9:7, नीत 26:4
2 मत 7:6
3 व्य 19:14, नीत 22:28
4 निर्ग 22:22, 23, भज 10:14
5 नीत 13:24, नीत 19:18, इफ 6:4
6 नीत 27:11, 3यूह 4

दूसरा कॉल.
1 भज 37:1
2 भज 111:10, 2कुर 7:1
3 भज 37:37, नीत 24:14
4 नीत 20:1, यश 5:11, रोम 13:13, 1पत 4:3
5 नीत 28:7, 1कुर 10:31
6 व्य 21:20, 21, नीत 21:17
7 निर्ग 20:12, निर्ग 21:17, मत 15:5, 6, इफ 6:1
8 फिल 3:7, 8
9 नीत 4:5, नीत 16:16
10 भज 107:43

और बदचलन* औरत सँकरा
कुआँ।[1]
28 वह लुटेरे की तरह घात लगाकर
बैठती है,[2]
बहुत-से आदमियों से विश्‍वासघात
कराती है।
29 कौन हाय-हाय करता है? कौन
दुखी है?
कौन लड़ता-झगड़ता और शिकायतें
करता है?
किसे बेवजह चोट लगती है?
किसकी आँखें लाल रहती हैं?
30 वही जो देर तक दाख-मदिरा
पीता है[3]
और ऐसी मदिरा ढूँढ़ता है* जो
नशा बढ़ाती है।
31 दाख-मदिरा के लाल रंग को
मत देख,
जो प्याले में चमचमाती है और बड़े
आराम से गले से उतरती है।
32 आखिर में वह साँप की तरह
डसती है
और ज़हरीले साँप की तरह ज़हर
उगलती है।
33 तेरी आँखें अजीबो-गरीब चीज़ें
देखेंगी,
तेरा मन उलटी-सीधी बातें
बोलेगा।[4]
34 तुझे लगेगा जैसे तू बीच समुंदर में
पड़ा है,
जहाज़ के मस्तूल की चोटी पर
सोया हुआ है।
35 तू कहेगा, “उन्होंने मुझे मारा? मुझे
तो कोई दर्द नहीं हुआ।
उन्होंने मुझे पीटा? मुझे तो कुछ
पता नहीं चला।

अध्य. 23
1 नीत 22:14
2 नीत 7:10, 12; सभ 7:26
3 नीत 20:1; इफ 5:18
4 हो 4:11

दूसरा कॉल.
1 उत 19:33

अध्य. 24
2 भज 26:5; नीत 1:10
3 नीत 9:1; नीत 14:1
4 1रा 10:23; नीत 15:6
5 नीत 8:14; नीत 21:22
6 नीत 20:18; लूक 14:31, 32
7 नीत 11:14; नीत 13:10; नीत 15:22; प्रेष 15:5, 6
8 नीत 14:6; 1कुर 2:14
9 नीत 6:12-14

मुझे कब होश आएगा[1]
कि मैं एक और जाम पीऊँ?”*

24 बुरे लोगों से ईर्ष्या मत कर
और उनकी दोस्ती के लिए मत
तरस।[2]
2 क्योंकि उनका मन हिंसा करने की
सोचता रहता है
और उनके होंठ दुख देने की बातें
करते हैं।
3 बुद्धि से घर* बनता है[3]
और पैनी समझ से यह कायम
रहता है।
4 ज्ञान की बदौलत इसके कमरे
तरह-तरह की कीमती और मन-
भावनी चीज़ों से भरे रहते हैं।[4]
5 बुद्धिमान इंसान के पास ताकत
होती है,[5]
ज्ञान से वह और भी ताकत हासिल
कर लेता है।
6 सही मार्गदर्शन* लेकर अपनी
जंग लड़,[6]
बहुतों की सलाह से तू जीत#
हासिल कर पाएगा।[7]
7 सच्ची बुद्धि मूर्ख की पहुँच से
बाहर है,[8]
उसके पास शहर के फाटक पर
कहने को कुछ नहीं होता।
8 जो बुराई करने के लिए साज़िश
करता है,
कहा जाएगा कि वह साज़िश करने
में उस्ताद है।[9]
9 मूर्ख की योजनाएँ* पाप की ओर ले
जाती हैं,

23:27 *शा., “परदेसी।” **23:30** *या “ऐसी मदिरा पीने के लिए इकट्ठा होता है।”

23:35 *या “मैं फिर इसे ढूँढ़ूँ?” **24:3** *या “घर-परिवार।” **24:6** *या “बुद्धि-भरी सलाह।” #या “कामयाबी; उद्धार।” **24:9** *या “मूर्खता-भरी योजनाएँ।”

हँसी-ठट्ठा करनेवालों से लोग घिन
करते हैं।[1]
10 मुश्किल* घड़ी में अगर तू निराश
हो जाए,
तो तुझमें बहुत कम ताकत रह
जाएगी।
11 जिन्हें मौत की तरफ ले जाया जा
रहा है उन्हें बचा ले,
जो विनाश की कगार पर हैं, उन्हें
गिरने से रोक ले।[2]
12 अगर तू कहे, "मुझे इस बारे में कुछ
नहीं पता,"
तो क्या दिलों* का जाँचनेवाला यह
भाँप न लेगा?[3]
तुझ पर नज़र रखनेवाला सब
जानता है,
वह हरेक को उसके कामों का फल
देगा।[4]
13 हे मेरे बेटे, शहद खा क्योंकि यह
बहुत अच्छा है,
छत्ते का शहद खाने में बड़ा मीठा
लगता है।
14 इसी तरह, बुद्धि भी तेरे लिए
अच्छी है,*[5]
अगर तू इसे पा ले तो तेरा भविष्य
सुनहरा होगा
और तेरी आशा नहीं मिटेगी।[6]
15 दुष्टों की तरह नेक जन के घर पर
घात मत लगा,
उसके आशियाने को मत उजाड़।
16 नेक जन चाहे सात बार गिरे, तब
भी उठ खड़ा होगा,[7]
लेकिन अगर दुष्ट मुसीबत की
वजह से ठोकर खाए, तो वह नहीं
उठेगा।[8]
17 जब तेरा दुश्मन गिरे तब खुश
मत हो
और जब वह ठोकर खाकर उठ न
पाए,
तो तेरा मन खुशी से फूल न उठे।[1]
18 नहीं तो यहोवा यह देखकर
नाराज़ होगा
और अपना कहर उस* पर से
हटा लेगा।[2]
19 बुरे लोगों को देखकर मत कुढ़
और न ही दुष्टों से ईर्ष्या कर,
20 क्योंकि बुराई करनेवालों का कोई
भविष्य नहीं,[3]
दुष्टों का दीपक बुझा दिया
जाएगा।[4]
21 हे मेरे बेटे, यहोवा और राजा का
डर मान,[5]
बगावत करनेवालों से दोस्ती
मत कर,[6]
22 क्योंकि उन पर अचानक विपत्ति आ
पड़ेगी।[7]
और कौन जाने वे दोनों* उन पर
कैसी विपत्ति लाएँ![8]
23 बुद्धिमानों ने भी कहा है:
न्याय करते वक्त किसी का पक्ष
लेना अच्छा नहीं।[9]
24 जो दुष्ट से कहता है,
"तू नेक है,"[10]
देश-देश के लोग उसे शाप देंगे और
राष्ट्र उसे धिक्कारेंगे।
25 लेकिन जो दुष्ट को डाँटता है,
उसका भला होगा,[11]
उसे बढ़िया-बढ़िया आशीषें
मिलेंगी।[12]

24:10 *या "दुख की।" 24:12 *या "इरादों।" 24:14 *या "तुझे मीठी लगेगी।"

24:18 *यानी दुश्मन। 24:22 *यानी यहोवा और राजा।

अध्य. 24
1 नीत 22:10
2 भज 82:4
3 नीत 5:21; नीत 17:3; नीत 21:2
4 भज 62:12; मत 16:27; रोम 2:5, 6
5 भज 19:9, 10; भज 119:103
6 नीत 23:18
7 भज 34:19; 2कुर 1:10
8 1शम 26:9, 10; एस 7:10

दूसरा कॉल.
1 अय 31:29; नीत 17:5; नीत 25:21, 22
2 यहे 26:2, 3; जक 1:15
3 भज 73:18, 27; नीत 10:7
4 नीत 13:9
5 1शम 24:6, 7; 1पत 2:17
6 2शम 15:12
7 गि 16:2, 31
8 नीत 20:2
9 लैव 19:15; व्य 1:16, 17; व्य 16:19; 2इत 19:7; 1ती 5:21
10 नीत 17:15
11 लैव 19:17; 1ती 5:20
12 नीत 28:23

26 जो सच-सच बोलता है लोग उसका आदर करते हैं।*[1]
27 पहले बाहर के कामों की योजना बना और अपना खेत तैयार कर,
फिर अपना घर* बना।
28 बिना सबूत के अपने पड़ोसी के खिलाफ गवाही मत देना,[2]
दूसरों को धोखा देने के लिए झूठी बातें मत बोलना।[3]
29 यह मत कहना, "जैसा उसने मेरे साथ किया, मैं भी उसके साथ वैसा ही करूँगा।
गिन-गिनकर बदला लूँगा।"[4]
30 मैं आलसी[5] के खेत के पास से जा रहा था,
उस इंसान के अंगूरों के बाग से, जिसमें समझ ही नहीं।
31 तब मैंने देखा वहाँ जंगली पौधे उग आए हैं,
ज़मीन बिच्छू-बूटी के पौधों से भर चुकी है
और पत्थर की दीवार टूटी पड़ी है।[6]
32 यह देखकर मैंने मन में गाँठ बाँध ली,
हाँ, मैंने देखकर यह सबक सीखा:*
33 थोड़ी देर और सो ले, एक और झपकी ले ले,
हाथ बाँधकर थोड़ा सुस्ता ले,
34 तब गरीबी, लुटेरे की तरह तुझ पर टूट पड़ेगी,
तंगी, हथियारबंद आदमी की तरह हमला बोल देगी।[7]

24:26 *शा., "उसके होंठ चूमते हैं।" या शायद, "जो सीधे-सीधे बोलता है वह मानो चुंबन देता है।" **24:27** *या "घर-परिवार।" **24:32** *शा., "शिक्षा ली।"

अध्य. 24
1 नीत 27:5
2 निर्ग 20:16
3 इफ 4:25
4 नीत 20:22 रोम 12:17, 19 1थि 5:15
5 नीत 6:10, 11
6 नीत 20:4 नीत 22:13 सभ 10:18
7 नीत 10:4 नीत 23:21

दूसरा कॉल.

अध्य. 25
1 1रा 4:29, 32 सभ 12:9
2 2इत 29:1
3 व्य 29:29 रोम 11:33
4 नीत 17:3
5 1रा 2:44, 46 नीत 20:28 नीत 29:14
6 नीत 27:2
7 भज 131:1
8 लूक 14:8-10 1पत 5:5
9 नीत 18:17 मत 5:25
10 मत 18:15

25

ये भी सुलैमान के नीतिवचन हैं।[1] यहूदा के राजा हिजकियाह[2] के आदमियों ने इनकी नकल तैयार की थी:*

2 परमेश्वर की शान इसमें है कि वह किसी बात को राज़ रखे[3]
और राजाओं की शान इसमें है कि वे मामले की छानबीन करें।
3 जैसे आकाश की ऊँचाई और धरती की गहराई जानना नामुमकिन है,
वैसे ही राजाओं के दिल में क्या है, यह जानना मुमकिन नहीं।
4 पिघलायी हुई चाँदी से मैल दूर कर,
तब वह पूरी तरह शुद्ध हो जाएगी।[4]
5 राजा के सामने से दुष्टों को निकाल दे,
तब नेकी से उसकी राजगद्दी कायम रहेगी।[5]
6 राजा के सामने अपनी बड़ाई मत कर,[6]
न ही बड़े-बड़े लोगों के बीच जगह ले,[7]
7 किसी रुतबेदार आदमी के सामने राजा तुझे बेइज़्ज़त करे,
इससे तो अच्छा है कि वह खुद तुझसे कहे, "यहाँ ऊपर आकर बैठ।"[8]
8 अपने पड़ोसी से मुकदमा लड़ने में जल्दबाज़ी मत कर,
अगर उसने तुझे गलत साबित कर दिया, तब तू क्या करेगा?[9]
9 अपने पड़ोसी के सामने अपने मुकदमे की पैरवी कर,[10]

25:1 *या "इन्हें इकट्ठा किया और इनकी नकल तैयार की थी।"

लेकिन जो राज़ की बात तुझे
बतायी गयी है, उसे मत खोल,*[1]
10 कहीं तू कोई झूठी बात* न फैला
दे, जिसे वापस न लिया जा सके
और सुननेवाला तुझे शर्मिंदा करे।
11 जैसे चाँदी की नक्काशीदार टोकरी
में सोने के सेब,
वैसे ही सही वक्त पर कही गयी
बात होती है।[2]
12 जैसे सोने की बाली और बढ़िया
सोने के ज़ेवर अच्छे लगते हैं,
वैसे ही बुद्धिमान की डाँट उस कान
को अच्छी लगती है जो उसे
सुनता है।[3]
13 जैसे कटाई के वक्त बर्फ का ठंडा
पानी तरो-ताज़ा करता है,
वैसे ही विश्वासयोग्य दूत अपने
मालिक को ताज़गी पहुँचाता है।[4]
14 जो आदमी तोहफा देने की शेखी
मारता है पर देता नहीं,*
वह उस हवा और बादल की तरह
है जो बारिश नहीं लाते।[5]
15 सब्र से काम लेकर सेनापति को
कायल किया जा सकता है,
कोमल बातें हड्डी को भी तोड़
देती हैं।[6]
16 अगर तुझे शहद मिले तो उतना ही
खा जितना तुझे चाहिए,
क्योंकि ज़्यादा खाने से तू उलटी कर
देगा।[7]
17 किसी के घर बार-बार मत जा,
कहीं वह तंग आकर तुझसे नफरत
न करने लगे।

25:9 *या "दूसरों के राज़ मत खोल।" 25:10 *या "तू दूसरों को बदनाम करने के लिए अफवाह।" 25:14 *शा., "जो झूठ-मूठ का तोहफा देने की शेखी मारता है।"

अध्य. 25
1 नीत 11:13
2 नीत 15:23 यश 50:4
3 भज 141:5 नीत 1:8, 9 नीत 9:8
4 नीत 13:17
5 मत 5:37
6 उत 32:4, 5 नीत 15:1
7 नीत 25:27

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:16
2 भज 137:3, 4
3 निर्ग 23:5 2रा 6:21, 22 नीत 24:17 मत 5:44
4 रोम 12:20
5 भज 101:5
6 नीत 21:9, 19 नीत 27:15
7 नीत 15:30 यश 52:7

18 जो आदमी अपने पड़ोसी के
खिलाफ झूठी गवाही देता है,
वह युद्ध के लट्ठ, तलवार और
नुकीले तीर जैसा है।[1]
19 जो भरोसे के लायक नहीं होता,*
उस पर मुसीबत के वक्त आस
लगाना,
टूटे दाँत या लँगड़ाते पैर पर आस
लगाने जैसा है।
20 उदास मनवाले को गाना सुनाना
ऐसा है,
मानो ठंड में कपड़े उतारना
और खार* पर सिरका डालना।[2]
21 अगर तेरा दुश्मन भूखा हो तो उसे
रोटी खिला,
अगर वह प्यासा हो तो उसे पानी
पिला,[3]
22 तब तू उसके सिर पर अंगारों का
ढेर लगाएगा*[4]
और यहोवा तुझे इसका इनाम
देगा।
23 उत्तर से आनेवाली हवा मूसलाधार
बारिश लाती है
और गप्पे लड़ानेवाले की ज़बान
चेहरे पर क्रोध लाती है।[5]
24 झगड़ालू* पत्नी के साथ घर में
रहने से अच्छा है,
छत पर अकेले एक कोने में
रहना।[6]
25 जैसे थके-माँदे के लिए ठंडा पानी,
वैसे ही दूर देश से आयी अच्छी
खबर होती है।[7]

25:19 *या शायद, "जो धोखेबाज़ है।" 25:20 *या "सोडा।" 25:22 *यानी उसके सख्त दिल को पिघलाना और उसका गुस्सा शांत करना। 25:24 *या "जान खानेवाली।"

26 नेक इंसान जब दुष्ट से समझौता
कर लेता है,
तो वह मटमैले पानी के सोते और
गंदे कुएँ जैसा बन जाता है।
27 ज़्यादा शहद खाना अच्छा नहीं,[1]
न ही अपनी वाह-वाही करवाना
आदर की बात है।[2]
28 जो अपने गुस्से पर काबू नहीं रख
सकता,
वह उस शहर की तरह है जिसकी
शहरपनाह टूटी पड़ी है।[3]

26 जैसे गरमियों में बर्फ और
कटाई में पानी बरसना
अखरता है,
वैसे ही मूर्ख को आदर मिले, यह
शोभा नहीं देता।[4]
2 जैसे पक्षी और अबाबील चिड़िया के
उड़ने की कोई वजह होती है,
वैसे ही शाप लगने की कोई-न-कोई
वजह होती है।*
3 घोड़े के लिए चाबुक, गधे के लिए
लगाम[5]
और मूर्ख की पीठ के लिए छड़ी
होती है।[6]
4 मूर्ख को उसकी मूर्खता के हिसाब से
जवाब मत दे,
वरना तुझमें और उसमें क्या फर्क
रह जाएगा।*
5 मूर्ख को उसकी मूर्खता के हिसाब से
जवाब दे,
ताकि वह खुद को बुद्धिमान न
समझे।[7]
6 जो मूर्ख को कोई काम सौंपता है,

26:2 *या शायद, "बेवजह दिया शाप नहीं लगता।" 26:4 *या "ताकि तू उसके समान न बन जाए।"

अध्य. 25

1 नीत 25:16

2 नीत 27:2
यूह 5:44
फिल 2:3

3 1शम 20:33
नीत 16:32
नीत 22:24, 25
नीत 29:11

अध्य. 26

4 नीत 30:21, 22
सभ 10:7

5 भज 32:9

6 नीत 27:22

7 मत 21:23-25

दूसरा कॉल.

1 नीत 17:7

2 नीत 19:10
नीत 26:1

3 2पत 2:22

4 नीत 12:15
1कुर 3:18
1कुर 8:2

5 नीत 22:13

6 नीत 6:9
नीत 19:15
नीत 24:33, 34

7 नीत 19:24

वह अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी
मारता है।*
7 जैसे लँगड़े की टाँगें बेकार होती हैं,
वैसे ही मूर्ख का कहा नीतिवचन
होता है।[1]
8 मूर्ख की बड़ाई करना,
मानो गोफन में पत्थर बाँधकर
रखना है।[2]
9 मूर्ख के मुँह में नीतिवचन,
पियक्कड़ के हाथ में कँटीली झाड़ी
जैसा है।
10 जो मूर्ख या राह चलते आदमी को
काम पर लगाता है,
वह उस तीरंदाज़ जैसा है जो अंधा-
धुंध तीर चलाता है।*
11 जैसे कुत्ता अपनी उलटी चाटने
लौटता है,
वैसे ही मूर्ख अपने मूर्खता के काम
दोहराता है।[3]
12 क्या तूने ऐसा आदमी देखा है, जो
अपनी नज़र में बुद्धिमान है?[4]
उससे ज़्यादा तो मूर्ख के सुधरने की
गुंजाइश है।
13 आलसी कहता है, "सड़क पर
शेर है!
चौक पर जवान शेर घूम रहा है।"[5]
14 जिस तरह दरवाज़ा कब्ज़ों* पर
झूलता है,
उसी तरह आलसी, बिस्तर पर कर-
वटें लेता है।[6]
15 आलसी, दावत के बरतन में हाथ
तो डालता है,
लेकिन खाना मुँह तक लाना उसे
थकाऊ लगता है।[7]

26:6 *शा., "अपने पैर को चोट पहुँचाता है और हिंसा पीता है।" 26:10 *या "जो सबको घायल करता है।" 26:14 *या "चूल।"

16 आलसी सोचता है कि वह उन सातों
से बुद्धिमान है,
जिन्होंने सोच-समझकर जवाब
दिया।
17 जो राह चलते किसी का झगड़ा
देखकर भड़क उठता है,*
वह उस आदमी के समान है, जो
कुत्ते को कान से पकड़ता है।[1]
18 जैसा एक सनकी जलते अंगारे और
मौत के तीर फेंकता है,
19 वैसा ही वह आदमी है जो अपने
साथी को छलकर कहता है, "मैं
तो मज़ाक कर रहा था!"[2]
20 जहाँ लकड़ी नहीं, वहाँ आग बुझ
जाती है,
जहाँ बदनाम करनेवाला नहीं, वहाँ
झगड़ा शांत हो जाता है।[3]
21 जैसे कोयला अंगारों को और
लकड़ी आग को भड़काती है,
वैसे ही झगड़ालू इंसान झगड़ा
बढ़ाता है।[4]
22 बदनाम करनेवाले की बातें लज़ीज़
खाने की तरह होती हैं,
जिसे निगलकर सीधे पेट में डाला
जाता है।[5]
23 जैसे ठीकरे पर चाँदी का पानी
चढ़ा हो,
वैसे ही दुष्ट के दिल से निकली
प्यारी बातें होती हैं।[6]
24 दूसरों से नफरत करनेवाला अच्छी-
अच्छी बातें तो करता है,
लेकिन उसके अंदर कपट भरा
होता है।
25 उसकी मीठी-मीठी बातों में मत
आना,
क्योंकि उसके दिल में सात घिनौनी
बातें हैं।*
26 वह छल करके अपनी नफरत छिपा
भी ले,
तो भी मंडली के सामने उसकी
बुराई का परदाफाश होगा।
27 जो गड्ढा खोदता है वह खुद उसमें
जा गिरता है,
जो पत्थर लुढ़काता है, वह पत्थर
खुद उस पर लुढ़क आता है।[1]
28 झूठी ज़बान उससे नफरत करती है,
जिसे वह कुचल देती है
और चापलूसी करनेवाला मुँह
तबाही लाता है।[2]

27 कल के बारे में शेखी मत
मार कि मैं यह करूँगा, वह
करूँगा
क्योंकि तू नहीं जानता कि कल क्या
होगा।[3]
2 अपने मुँह से अपनी तारीफ मत
कर, दूसरे तेरी तारीफ करें,
तेरे अपने होंठ नहीं बल्कि किसी
और के होंठ तेरी बड़ाई करें।[4]
3 पत्थर भारी होता है और बालू
वज़नदार,
मगर मूर्ख का चिढ़ दिलाना इनसे
भी भारी लगता है।[5]
4 क्रोध बेरहम है और गुस्सा एक
सैलाब,
मगर जलन के आगे कौन टिक
सकता है?[6]
5 खुलकर दी गयी डाँट,
छिपे हुए प्यार से कहीं अच्छी है।[7]
6 दुश्मन बहुत* चुंबन देता है,

अध्य. 26
1 1थि 4:11, 1पत 4:15
2 नीत 15:21
3 नीत 22:10, याकू 3:6
4 नीत 3:30, नीत 16:28, नीत 17:14
5 नीत 18:8
6 2शम 20:9, 10

दूसरा कॉल.
1 एस 7:10, भज 9:15, नीत 28:10, सभ 10:8
2 नीत 29:5

अध्य. 27
3 लूक 12:19, 20, याकू 4:13, 14
4 नीत 25:27, यिर्म 9:23, 2कुर 10:18
5 1शम 25:25
6 उत 37:9-11, नीत 14:30, प्रेष 17:5
7 लैव 19:17, मत 18:15

26:17 *या शायद, "के झगड़े में पड़ता है।"

26:25 *या "उसका दिल पूरी तरह घिनौना है।" **27:6** *या शायद, "दिखा-वटी; झूठा।"

मगर सच्चा दोस्त डाँट लगाने से
पीछे नहीं हटता।[1]
7 जिसका पेट भरा हो वह छत्ते का
शहद भी नहीं खाता,
लेकिन जिसे भूख लगी हो उसे
कड़वी चीज़ भी मीठी लगती है।
8 जो आदमी अपना घर छोड़कर
भटकता फिरता है,
वह उस पंछी जैसा है, जो
अपना घोंसला छोड़कर उड़ता
फिरता है।
9 जैसे तेल और खुशबूदार धूप से
दिल खुश हो जाता है,
वैसे ही दोस्त की सीधी-सच्ची
सलाह से मन खुश हो जाता है।[2]
10 अपने दोस्त या अपने पिता के दोस्त
का साथ मत छोड़ना
और मुसीबत में अपने सगे भाई के
घर न जाना,
पास रहनेवाला दोस्त, दूर रहनेवाले
भाई से अच्छा है।[3]
11 हे मेरे बेटे, बुद्धिमान बन और मेरा
दिल खुश कर,[4]
ताकि मैं उसे जवाब दे सकूँ जो मुझे
ताने मारता है।[5]
12 होशियार इंसान खतरा देखकर छिप
जाता है,[6]
मगर नादान बढ़ता जाता है और
अंजाम* भुगतता है।
13 उस आदमी के कपड़े गिरवी रख ले,
जो किसी अजनबी का ज़ामिन
बना है
और अगर उसने बदचलन*
औरत की वजह से अपनी चीज़
गिरवी रखी है, तो उसे वापस
मत कर।[7]

27:12 *या "सज़ा।" 27:13 *या "पर-देसी।"

अध्य. 27
1 2शम 12:7, 9; भज 141:5; प्रक 3:19
2 1शम 23:16; नीत 15:23; नीत 16:24
3 नीत 17:17; नीत 18:24
4 नीत 10:1; नीत 23:15; 2यूह 4
5 अय 1:8, 9
6 नीत 18:10; यश 26:20; इब्र 11:7
7 नीत 20:16

दूसरा कॉल.
1 नीत 21:9, 19
2 1शम 23:16; इब्र 10:24, 25
3 नीत 13:4
4 उत 39:2; नीत 17:2
5 नीत 30:15, 16
6 नीत 17:3

14 अगर कोई सुबह-सुबह
चिल्लाकर अपने साथी को
आशीर्वाद देता है,
तो ऐसा आशीर्वाद शाप माना
जाएगा।
15 झगड़ालू* पत्नी, बारिश में टपकती
छत जैसी होती है,[1]
16 जो उसे रोक सकता है, वह हवा को
भी रोक सकता है
और दायीं मुट्ठी में तेल पकड़
सकता है।
17 जैसे लोहा लोहे को तेज़ करता है,
वैसे ही एक दोस्त दूसरे दोस्त को*
निखारता है।[2]
18 जो अंजीर के पेड़ की देखरेख
करता है, वह उसका फल
खाएगा[3]
और जो अपने मालिक का खयाल
रखता है वह इज़्ज़त पाएगा।[4]
19 जैसे कोई पानी में अपना चेहरा देख
पाता है,
वैसे ही एक इंसान दूसरे के मन में
अपना मन देख पाता है।
20 कब्र और विनाश की जगह* कभी
संतुष्ट नहीं होती,[5]
न ही आँखों की चाहत कभी खत्म
होती है।
21 जैसे चाँदी के लिए कुठाली* और
सोने के लिए भट्ठी होती है,[6]
वैसे ही इंसान की परख उसे मिलने-
वाली तारीफ से होती है।
22 चाहे मूर्ख को अनाज की तरह

27:15 *या "जान खानेवाली।" 27:17 *शा., "दोस्त के चेहरे को।" 27:20 *या "और अबद्दोन।" शब्दावली देखें। 27:21 *मिट्टी की हाँडी, जिसमें चाँदी को गलाकर शुद्ध किया जाता था।

ओखली में डालकर मूसल से कूटा
जाए,
तब भी उसकी मूर्खता नहीं जाएगी।
23 अपने झुंड का हाल तुझे अच्छी
तरह मालूम हो,
अपनी हर भेड़ का तू अच्छा खयाल
रख।*[1]
24 क्योंकि दौलत हमेशा नहीं रहती,[2]
न ही मुकुट पीढ़ी-पीढ़ी तक
टिकता है।
25 जब हरी घास सूख जाती है, तो
नयी घास आती है
और पहाड़ों से हरियाली इकट्ठी की
जाती है।
26 भेड़ के बच्चों के ऊन से तुझे कपड़े
मिलेंगे
और बकरियों के दाम से तू खेत
खरीदेगा।
27 बकरियाँ तुझे इतना दूध देंगी कि तू,
तेरा पूरा घराना और तेरी
दासियाँ जी-भरकर पीएँगे।

28 दुष्ट का कोई पीछा न भी करे,
तो भी वह भागता रहता है,
लेकिन नेक जन शेर की तरह
बेखौफ रहता है।[3]
2 जिस देश में कायदे-कानून तोड़े
जाते हैं,* वहाँ हाकिम बदलते
रहते हैं,[4]
मगर जिस हाकिम के# सलाहकार
में पैनी समझ और ज्ञान है,
उसका राज बना रहता है।[5]
3 जो गरीब किसी दीन-दुखी को
ठगता है,[6]
वह उस तेज़ बारिश के समान है,
जो सारा अनाज बहा ले
जाती है।
4 कानून न माननेवाले जब किसी दुष्ट
की बड़ाई करते हैं,
तो कानून माननेवाले उनके खिलाफ
भड़क उठते हैं।[1]
5 बुरे लोग नहीं समझते कि क्या सही
है, क्या गलत,
लेकिन जो यहोवा की खोज में रहते
हैं वे सब समझते हैं।[2]
6 जो गरीब निर्दोष चाल चलता है,
वह उस अमीर से कहीं अच्छा है,
जो बेईमानी करता है।[3]
7 समझदार बेटा नियम-कानून
मानता है,
लेकिन पेटू से दोस्ती
रखनेवाला अपने पिता का अप-
मान करता है।[4]
8 जो ब्याज लेकर और बेईमानी से
दौलत बटोरता है,[5]
वह उस आदमी के लिए बटोर
रहा है,
जो गरीबों पर मेहरबानी
करता है।[6]
9 जो परमेश्वर का कानून मानने से
इनकार करता है,
उसकी प्रार्थना तक घिनौनी है।[7]
10 जो सीधे इंसान को बहकाकर बुरी
राह पर ले जाता है, वह अपने ही
खोदे हुए गड्ढे में जा गिरेगा,[8]
लेकिन जो निर्दोष चाल चलता है
उसे अच्छा फल मिलेगा।[9]
11 अमीर खुद को बड़ा बुद्धिमान
समझता है,[10]
लेकिन पैनी समझ रखनेवाला
गरीब, उसकी असलियत भाँप
लेता है।[11]
12 नेक जन की जीत पर जश्न मनाया
जाता है,

27:23 *या "पर ध्यान दे।" **28:2** *या "बगावत होती है।" #शा., "जिसके।"

अध्य. 27
1 कुल 3:23
2 नीत 23:4, 5; 1ती 6:17

अध्य. 28
3 दान 3:16, 17; प्रेष 4:13
4 1रा 16:8, 15; 1रा 16:22
5 दान 4:27
6 नीत 14:31

दूसरा कॉल.
1 गि 25:6-8; 1शम 15:22, 23; इफ 5:11
2 भज 25:14; मर 4:11, 12; याकू 1:5
3 नीत 16:8; नीत 19:1
4 नीत 23:20; 1कुर 15:33
5 व्य 23:19
6 नीत 13:22; नीत 19:17
7 भज 66:18; नीत 15:29; यश 1:15
8 भज 7:14-16
9 व्य 7:12; भज 37:11, 18; भज 84:11
10 नीत 18:11
11 मर 10:21

लेकिन दुष्ट के सत्ता में आने पर
लोग छिपते फिरते हैं।[1]
13 जो अपने अपराध छिपाए रखता है
वह सफल नहीं होगा,[2]
लेकिन जो इन्हें मान लेता है और
दोहराता नहीं, उस पर दया की
जाएगी।[3]
14 सुखी है वह इंसान जो हमेशा
चौकन्ना रहता है,*
मगर जो अपने दिल को ढीठ बना
लेता है उस पर विपत्ति टूट
पड़ेगी।[4]
15 दीन-दुखियों पर राज करनेवाला
दुष्ट,
मानो दहाड़ता हुआ शेर और हमला
करनेवाला भालू है।[5]
16 जिस अगुवे में पैनी समझ नहीं,
वह ताकत का गलत इस्तेमाल
करता है,[6]
लेकिन जो बेईमानी की कमाई से
नफरत करता है, उसकी उम्र
लंबी होती है।[7]
17 जो किसी के खून का दोषी है, वह
मरने तक* भागता रहेगा,[8]
कोई उसकी मदद न करे।
18 निर्दोष चाल चलनेवाले बचाए
जाएँगे,[9]
लेकिन टेढ़ी चाल चलनेवाले अचा-
नक गिर पड़ेंगे।[10]
19 जो अपना खेत जोतता है उसके
पास रोटी की भरमार होगी,
लेकिन जो बेकार के कामों में लगा
रहता है उसके पास गरीबी की
भरमार होगी।[11]
20 सच्चा आदमी ढेरों आशीषें
पाएगा,[12]
लेकिन जो रातों-रात अमीर बनना
चाहता है वह निर्दोष नहीं रह
पाएगा।[1]
21 पक्षपात करना सही नहीं,[2]
फिर भी रोटी के एक टुकड़े के
लिए इंसान यह गलत काम कर
जाता है।
22 ईर्ष्या करनेवाला* दौलत के पीछे
भागता है,
लेकिन नहीं जानता कि गरीबी उसे
आ घेरेगी।
23 डाँट लगानेवाला[3] आखिर में
उस आदमी से ज़्यादा प्यारा हो
जाता है,[4]
जो चिकनी-चुपड़ी बातें करता है।
24 जो अपने माँ-बाप को लूटकर
कहता है, "मैंने कुछ गलत नहीं
किया,"[5]
वह तबाही मचानेवाले का
साझेदार है।[6]
25 लालची* आदमी झगड़े पैदा
करता है,
लेकिन यहोवा पर भरोसा रखने-
वाला फलता-फूलता है।[7]
26 जो अपने दिल पर भरोसा रखता है
वह मूर्ख है,[8]
लेकिन जो बुद्धि की राह पर चलता
है वह बचाया जाएगा।[9]
27 जो गरीबों को देता है उसे किसी
बात की कमी न होगी,[10]
लेकिन जो उन्हें देखकर आँख मूँद
लेता है, उसे बहुत शाप मिलेंगे।
28 दुष्ट जब सत्ता में आता है तो लोग
छिप जाते हैं,

28:14 *या "परमेश्वर का डर मानता है।"
28:17 *या "कब्र में जाने तक।"
28:22 *या "लालची।" 28:25 *या शायद, "घमंडी।"

अध्य. 28
1 1रा 17:1-3, नीत 29:2
2 1शम 15:13-15
3 2शम 12:13, 2इत 33:12, 13, भज 32:3, 5, भज 51:1
4 निर्ग 7:22, नहे 9:29, नीत 29:1, यिर्म 16:12, 13
5 सप 3:3, मत 2:16
6 नहे 5:15, आम 4:1
7 यश 33:15, 16
8 उत 9:6, 1रा 21:19, मत 27:3-5
9 भज 25:21
10 भज 73:12, 18, 1थि 5:3, प्रक 3:3
11 नीत 23:21, लूक 15:13, 14
12 1शम 18:5, नहे 7:2, भज 101:6

दूसरा कॉल.
1 2रा 5:20-22, यिर्म 17:11, 1ती 6:9
2 लैव 19:15, नीत 18:5, याकू 2:1
3 2शम 12:7, 9, गल 2:11
4 भज 141:5, नीत 27:6
5 मर 7:10, 11
6 नीत 19:26
7 1रा 3:11-13
8 नीत 3:5, यिर्म 17:9
9 अय 28:28
10 व्य 15:7, 10, भज 41:1, नीत 19:17, इब्र 13:16

लेकिन जब उसका विनाश हो जाता
है तब नेक जन बढ़ने लगते हैं।[1]

29 बार-बार डाँट खाने पर भी जो
ढीठ बना रहता है,[2]
उसका अचानक ऐसा नाश होगा कि
बचने की कोई उम्मीद न होगी।[3]
2 जब नेक लोगों का बोलबाला होता
है तो लोग खुशियाँ मनाते हैं,
मगर जब दुष्ट का राज होता है तो
लोग आहें भरते हैं।[4]
3 बुद्धि से प्यार करनेवाला, अपने
पिता का दिल खुश करता है,[5]
लेकिन वेश्याओं से दोस्ती
रखनेवाला अपनी दौलत लुटा
देता है।[6]
4 जो राजा इंसाफ करता है वह देश-
भर में शांति लाता है,[7]
लेकिन जो रिश्वत लेता है वह पूरे
देश को तबाह कर देता है।
5 जो दूसरे की झूठी तारीफ करता है,
वह उसके पैरों के लिए जाल
बिछाता है।[8]
6 बुरा इंसान अपने ही अपराधों के
जाल में फँस जाता है,[9]
लेकिन नेक जन खुशी के मारे
चिल्लाता और झूमता है।[10]
7 नेक जन को फिक्र रहती है कि
गरीब को उसका कानूनी हक
मिले,[11]
मगर दुष्ट को इसकी कोई फिक्र
नहीं होती।[12]
8 शेखी मारनेवाला, नगर में आग
लगाता है,[13]
लेकिन बुद्धिमान इंसान गुस्सा ठंडा
करता है।[14]
9 जब बुद्धिमान किसी मूर्ख पर मुकद-
मा चलाता है,
तो मूर्ख गला फाड़कर चिल्लाता है,
मज़ाक उड़ाता है
और बुद्धिमान का चैन छिन
जाता है।[1]
10 जो खून के प्यासे होते हैं, वे निर्दोष
लोगों से नफरत करते हैं[2]
और सीधे-सच्चे लोगों की जान
लेने* की ताक में रहते हैं।
11 मूर्ख अपने मन की सारी भड़ास
निकाल देता है,[3]
मगर बुद्धिमान खुद पर काबू रखता
है और शांत रहता है।[4]
12 जो शासक झूठ पर कान लगाता है,
उसके सारे नौकर दुष्ट हो
जाते हैं।[5]
13 गरीब और ज़ुल्म करनेवाले में एक
बात मिलती-जुलती है,
दोनों की आँखों को यहोवा ने
रौशनी दी है।*
14 अगर राजा गरीबों का सच्चा
न्याय करे,[6]
तो उसकी राजगद्दी हमेशा सलामत
रहेगी।[7]
15 छड़ी* और डाँट से बच्चा बुद्धिमान
बनता है,[8]
लेकिन जिस पर रोक-टोक नहीं
लगायी जाती,
वह अपनी माँ को शर्मिंदा करता है।
16 जब दुष्ट बढ़ते हैं तो अपराध भी
बढ़ता है,
लेकिन नेक जन उनकी बरबादी
देखेंगे।[9]
17 अपने बेटे को शिक्षा दे,
तो वह तुझे सुकून पहुँचाएगा

अध्य. 28
1 एस 8:17

अध्य. 29
2 निर्ग 11:10; 2इत 36:11-13
3 1शम 2:22-25; 2इत 36:15, 16
4 एस 3:13, 15
5 नीत 27:11
6 नीत 5:8-10; नीत 6:26; लूक 15:13, 14
7 2शम 8:15; भज 89:14; यश 9:7
8 नीत 26:28; रोम 16:18
9 नीत 5:22
10 भज 97:11
11 भज 41:1
12 यिर्म 5:28
13 याकू 3:6
14 प्रेष 19:29, 35

दूसरा कॉल.
1 नीत 26:4
2 उत 27:41; 1शम 20:31; 1यूह 3:11, 12
3 नीत 12:16; नीत 25:28
4 नीत 14:29
5 1रा 21:8-11; यिर्म 38:4, 5
6 भज 72:1, 2
7 नीत 20:28; नीत 25:5; यश 9:7
8 नीत 22:6; नीत 22:15; नीत 23:13; इफ 6:4
9 भज 37:34; प्रक 18:20

29:10 *या शायद, "मगर सीधे-सच्चे लोग अपनी जान बचाने।" **29:13** *यानी उसने उन्हें जीवन दिया है। **29:15** *या "शिक्षा; सज़ा।"

और तेरे जी को बहुत खुशी देगा।[1]
18 जहाँ परमेश्‍वर का मार्गदर्शन* नहीं
वहाँ लोग मनमानी करते हैं,[2]
लेकिन जो उसका कानून मानते हैं
वे सुखी रहते हैं।[3]
19 एक नौकर को बातों से नहीं सुधारा
जा सकता,
क्योंकि सबकुछ समझते हुए भी वह
बात नहीं मानता।[4]
20 क्या तूने ऐसे इंसान को देखा है जो
बोलने में उतावली करता है?[5]
उससे ज़्यादा तो मूर्ख के सुधरने की
गुंजाइश है।[6]
21 अगर एक नौकर को बचपन से
सिर पर चढ़ाया जाए,
तो आगे चलकर वह एहसान-
फरामोश निकलेगा।
22 गुस्सैल इंसान झगड़े पैदा
करता है,[7]
जो बात-बात पर भड़क उठता है
वह बहुत-से अपराध कर
बैठता है।[8]
23 इंसान का घमंड उसे नीचा करेगा,[9]
लेकिन जो दिल से नम्र है वह आदर
पाएगा।[10]
24 चोर का साथी अपनी जान का
दुश्‍मन बन बैठता है,
क्योंकि जब उसे गवाही देने बुलाया
जाता है, तब* वह अपना मुँह
नहीं खोलता।[11]
25 इंसान का डर एक फंदा है,[12]
लेकिन जो यहोवा पर भरोसा रखता
है उसकी हिफाज़त होती है।[13]

29:18 *या "जहाँ भविष्यवक्ताओं को दिया दर्शन; परमेश्‍वर का संदेश।" 29:24 *या "वह शपथ सुनता है कि गवाही न देनेवाले पर शाप पड़ेगा, फिर भी।"

अध्य. 29
1 इब्र 12:11
2 हो 4:6
3 नीत 19:16; यूह 13:17; याकू 1:25
4 नीत 26:3
5 सभ 5:2; याकू 1:19
6 नीत 14:29; नीत 21:5
7 नीत 15:18
8 1शम 18:8, 9; याकू 3:16
9 एस 6:6, 10; याकू 4:6
10 नीत 18:12; मत 18:4; फिल 2:8, 9
11 लैव 5:1
12 मत 10:28; मत 26:75
13 2इत 14:11; नीत 18:10

दूसरा कॉल.
1 भज 62:12; लूक 18:6, 7
2 भज 119:115; भज 139:21
3 यूह 7:7; 1यूह 3:13

अध्य. 30
4 अय 42:3
5 यूह 3:13
6 यश 40:12
7 अय 38:4
8 भज 12:6
9 उत 15:1; 2शम 22:31; भज 84:11
10 व्य 4:2; प्रक 22:18

26 बहुत-से लोग शासक के पास
आना* चाहते हैं,
मगर इंसाफ यहोवा से ही
मिलता है।[1]
27 नेक इंसान की नज़र में अन्याय
करनेवाला घिनौना है,[2]
लेकिन दुष्ट की नज़र में सीधी चाल
चलनेवाला घिनौना है।[3]

30 याके के बेटे आगूर की तरफ से
ज़रूरी संदेश। यह संदेश ईती-
एल और ऊकल के लिए है।
2 मैं सबसे बड़ा अज्ञानी हूँ,[4]
लोगों में जो समझ होनी चाहिए, वह
मुझमें नहीं।
3 मैं नहीं कहता कि मैं बुद्धिमान हूँ।
जितना ज्ञान परम-पवित्र परमेश्‍वर
को है, वह मुझमें कहाँ!
4 ऐसा कौन है जो स्वर्ग पर चढ़ा हो,
फिर धरती पर उतरा हो?[5]
किसने हवा को अपनी दोनों मुट्ठियों
में बंद किया है?
किसने पानी को अपने कपड़ों में
लपेटा है?[6]
किसने पृथ्वी के चारों कोने
ठहराए हैं?[7]
अगर तुझे उसका और उसके बेटे
का नाम पता है तो बता।
5 परमेश्‍वर का हर वचन पूरी तरह
शुद्ध है,[8]
वह उनके लिए ढाल है जो उसमें
पनाह लेते हैं।[9]
6 तू उसकी बातों में कुछ न जोड़,[10]
वरना वह तुझे खूब डाँटेगा
और तू झूठा ठहरेगा।
7 हे परमेश्‍वर, मुझे और कुछ नहीं
चाहिए,

29:26 *या शायद, "की मेहरबानी पाना।"

बस मेरे जीते-जी ये दो चीज़ें कर दे,
8 छल-कपट और झूठ को मेरे सामने से दूर कर दे[1]
और मुझे न गरीबी दे, न अमीरी।
मुझे बस मेरे हिस्से का खाना दे,[2]
9 ऐसा न हो कि मेरे पास बहुत हो जाए और मैं तुझसे मुकरकर कहूँ, "यहोवा कौन है?"[3]
या मैं गरीब हो जाऊँ और चोरी करके अपने परमेश्वर का नाम बदनाम करूँ।
10 मालिक से उसके नौकर की चुगली न करना,
कहीं ऐसा न हो कि वह तुझे कोसे और तू दोषी ठहरे।[4]
11 ऐसी भी पीढ़ी है जो अपने पिता को बददुआएँ देती है
और अपनी माँ के लिए उनके मुँह से दुआएँ नहीं निकलतीं।[5]
12 ऐसी भी पीढ़ी है जो खुद को पवित्र मानती है,[6]
लेकिन अपनी गंदगी* से शुद्ध नहीं की गयी।
13 ऐसी भी पीढ़ी है जिसकी आँखें घमंड से चढ़ी हैं,
जिसकी आँखें अहंकार से भरी हैं।[7]
14 ऐसी भी पीढ़ी है जिसके दाँत तल-वार जैसे
और जबड़े छुरे जैसे हैं।
वह धरती के दीन-दुखियों
और गरीबों को फाड़ खाती है।[8]
15 जोंक की दो बेटियाँ हैं जो "दे दो, दे दो" चिल्लाती हैं।
तीन चीज़ें हैं जो कभी तृप्त नहीं होतीं,
बल्कि चार हैं, जो कभी नहीं कहतीं "बस हुआ!"
16 कब्र,*[1] सूनी कोख,
पानी की प्यासी धरती
और आग जो कभी "बस" नहीं कहती।
17 जो अपने पिता का तिरस्कार करता है
और अपनी माँ की आज्ञा को तुच्छ जानता है,[2]
उसकी आँखें घाटी के कौवे और उकाब के बच्चे नोंच खाएँगे।[3]
18 तीन बातें हैं जो मेरी समझ से बाहर हैं,
हाँ, चार बातें हैं जिन्हें मैं नहीं समझ पायाः
19 आसमान में उड़ते उकाब की राह,
चट्टान पर साँप की चाल,
खुले समुंदर में जहाज़ का मार्ग
और लड़के का लड़की से व्यवहार।
20 बदचलन औरत ऐसी होती हैः
वह खा-पीकर अपना मुँह पोंछती है
और कहती है, "मैंने कुछ गलत नहीं किया।"[4]
21 तीन चीज़ें ऐसी हैं जिनसे धरती काँप उठती है,
बल्कि चार चीज़ें हैं जो वह बरदाश्त नहीं कर सकतीः
22 गुलाम का राजा बनना,[5]
मूर्ख के पास ढेर सारा खाना होना,
23 उस औरत की शादी होना जिससे सब नफरत करते हैं
और नौकरानी का अपनी मालकिन की जगह लेना।[6]
24 धरती पर ये चार जंतु बहुत छोटे हैं,

30:12 *शा., "अपने मल।"

30:16 *या "शीओल।" शब्दावली देखें।

अध्या. 30
1 नीत 12:22
2 मत 6:11; 1ती 6:8
3 व्य 6:10-12
4 दान 6:24
5 लैव 20:9; नीत 19:26; मर 7:10, 11
6 भज 36:1, 2; यश 65:5; 1यूह 1:8
7 भज 101:5; नीत 6:16, 17
8 भज 14:4; नीत 22:16; यश 32:7

दूसरा कॉल.
1 नीत 27:20
2 नीत 23:22
3 लैव 20:9; व्य 21:18, 21; नीत 20:20
4 नीत 7:10, 11
5 नीत 19:10; सभ 10:7; यश 3:4
6 उत 16:5

लेकिन उनमें सहज बुद्धि
होती है:*[1]
25 चींटियाँ ताकतवर नहीं होतीं,
फिर भी गरमियों में अपना खाना
बटोरती हैं।[2]
26 चट्टानी बिज्जू[3] बलवान नहीं होता,
फिर भी चट्टानों में अपना घर
बनाता है।[4]
27 टिड्डियों[5] का कोई राजा नहीं होता,
फिर भी वे मोरचा बाँधकर आगे
बढ़ती हैं।[6]
28 घरेलू छिपकली[7] पंजों के सहारे
चिपकी रहती है
और राजा के महल में पायी
जाती है।
29 तीन जीव ऐसे हैं जो बड़ी ठाट से
चलते हैं,
बल्कि चार हैं, जिनकी चाल में शान
नज़र आती है:
30 शेर, जो जानवरों में सबसे शक्ति-
शाली है
और किसी के डर से पीछे नहीं
हटता।[8]
31 शिकारी कुत्ता, बकरा
और अपनी सेना के आगे-आगे
चलनेवाला राजा।
32 अगर तूने खुद को ऊँचा उठाने की
मूर्खता की है,[9]
या ऐसा करने की साज़िश की है,
तो अपने मुँह पर हाथ रखकर
चुप रह।[10]
33 क्योंकि जैसे दूध मथने से मक्खन
निकलता है
और नाक मरोड़ने से खून बहता है,
वैसे ही गुस्सा भड़काने से झगड़े
पैदा होते हैं।[11]

30:24 * या "बहुत बुद्धि होती है।"

अध्य. 30
1 अय 35:11
2 नीत 6:6-8
3 लैव 11:5
4 भज 104:18
5 निर्ग 10:14; योए 1:4
6 योए 2:7
7 लैव 11:29, 30
8 गि 23:24; यश 31:4
9 नीत 26:12
10 नीत 27:2
11 नीत 26:21

दूसरा कॉल.

अध्य. 31
1 नीत 1:8; 2ती 1:5
2 1शम 1:11, 28
3 हो 4:11
4 व्य 17:15, 17; 1रा 11:1-3; नहे 13:26
5 सभ 10:17; यश 28:7
6 भज 104:15; मत 27:34
7 यिर्म 16:7
8 भज 82:4
9 व्य 1:16, 17; 2शम 8:15; भज 72:1, 2; यश 11:4

31 ये ज़रूरी बातें राजा लमूएल
की हैं, जो उसकी माँ ने उसे
सिखायी थीं:[1]
2 हे मेरे बेटे, मैं तुझे क्या सिखाऊँ?
हे मेरी कोख से जन्म लेनेवाले, मैं
तुझे क्या बताऊँ?
जिस बेटे के लिए मैंने मन्नत
मानी,[2] उससे मैं क्या कहूँ?
3 अपना दमखम औरतों पर बरबाद
मत करना,[3]
न उस राह जाना जिस पर चलकर
कई राजा तबाह हुए हैं।[4]
4 हे लमूएल, दाख-मदिरा पीना
राजाओं को शोभा नहीं देता,
न ही शासकों का यह कहना जँचता
है, "मेरा जाम कहाँ है?"[5]
5 क्योंकि पीने के बाद वे कायदे-
कानून भूल जाते हैं
और दीन-दुखियों को उनका हक
नहीं देते।
6 जो मरनेवाला है, उसे शराब
पिला,[6]
जो दुख से बेहाल है, उसे दाख-
मदिरा दे,[7]
7 ताकि पीकर वह अपनी गरीबी याद
न करे
और अपना दुख भूल जाए।
8 उनकी तरफ से बोल जो बोल नहीं
सकते,
उनके हक के लिए लड़ जो मौत की
कगार पर खड़े हैं।[8]
9 चुप मत रहना पर सच्चा न्याय
करना,
दीन-दुखियों और गरीबों को उनका
हक दिलाना।*[9]

31:9 * या "की पैरवी करना।"

א [*आलेफ*]
10 एक अच्छी पत्नी कौन पा सकता है?[1]
उसका मोल मूंगों* से भी बढ़कर है।

ב [*बेथ*]
11 उसका पति पूरे दिल से उस पर भरोसा करता है
और उसके पति को किसी चीज़ की कमी नहीं होती।

ג [*गिमेल*]
12 वह कभी अपने पति का बुरा नहीं करती,
बल्कि जीवन-भर उसका भला करती है।

ד [*दालथ*]
13 वह मलमल का कपड़ा और ऊन ढूँढ़कर लाती है
और खुशी-खुशी अपने हाथों से काम करती है।[2]

ה [*हे*]
14 सौदागरों के जहाज़ की तरह[3]
वह दूर-दूर से खाने-पीने की चीज़ें लाती है।

ו [*वाव*]
15 पौ फटने से पहले वह उठ जाती है,
अपने घराने के लिए खाना तैयार करती है,
अपनी नौकरानियों को भी उनके हिस्से का खाना देती है।[4]

ז [*जैन*]
16 वह ज़मीन खरीदने की सोचती है
और उसे खरीद लेती है
और मेहनत से* अंगूरों का बाग लगाती है।

ח [*हेथ*]
17 भारी-भारी कामों के लिए वह अपनी कमर कसती है,[1]
मेहनत करने के लिए अपने हाथों को मज़बूत करती है।

ט [*टेथ*]
18 वह लेन-देन में मुनाफे का ध्यान रखती है,
उसके घर का दीया रात को भी जलता रहता है।

י [*योध*]
19 वह एक हाथ से तकुआ पकड़ती है
और दूसरे हाथ से तकली चलाती है।*[2]

כ [*काफ*]
20 वह दीन-दुखियों की तरफ मदद का हाथ बढ़ाती है
और गरीबों के लिए अपनी मुट्ठी खोलती है।[3]

ל [*लामेध*]
21 बर्फ पड़ने पर उसे अपने घरवालों की फिक्र नहीं होती,
क्योंकि सब-के-सब गरम* कपड़े पहने होते हैं।

מ [*मेम*]
22 वह खुद अपने हाथों से चादरें बनाती है,
वह मलमल और बैंजनी ऊन के कपड़े पहनती है।

נ [*नून*]
23 उसके पति को शहर के फाटक पर सब जानते हैं,[4]
वह इलाके के मुखियाओं के साथ वहीं बैठता है।

अध्य. 31
1 रूत 3:10, 11; नीत 12:4; नीत 19:14
2 1शम 2:18, 19; तीत 2:3-5
3 2इत 9:21
4 1ती 5:9, 10

दूसरा कॉल.
1 उत 24:15, 20
2 निर्ग 35:25
3 1शम 25:18; नीत 19:17; 1ती 2:10; इब्र 13:16
4 रूत 4:1; अय 29:7, 8

31:10 *शब्दावली देखें। **31:16** *या "अपनी कमाई से।" शा., "मेहनत के फल से।"

31:19 *तकुआ और तकली ऐसी डंडियाँ होती थीं, जिनकी मदद से धागा लपेटा या बनाया जाता था। **31:21** *शा., "दो-दो।"

ס [सामेख]

24 वह मलमल के कुरते* सिलकर
बेचती है
और व्यापारियों को थोक में कमर-
बंद देती है।

ע [ऐयिन]

25 ताकत और वैभव उसका
पहनावा है,
वह आनेवाले कल से नहीं डरती।*

פ [पे]

26 उसके मुँह से हमेशा बुद्धि की बातें
निकलती हैं,[1]
अपनी ज़बान से भली बातें कहना*
उसका उसूल है।

צ [सादे]

27 वह अपने घरबार का ध्यान
रखती है
और आलस की रोटी नहीं खाती।[1]

ק [कोफ]

28 उसके बच्चे खड़े होकर उसकी
तारीफ करते हैं,
उसका पति भी उठकर उसके गुण
गाता है।

ר [रेश]

29 अच्छी औरतें तो बहुत हैं,
मगर तू उन सबसे बढ़कर है।

ש [शीन]

30 आकर्षण झूठा हो सकता है और
खूबसूरती पल-भर की,*[2]
मगर जो औरत यहोवा का डर
मानती है वह तारीफ पाएगी।[3]

ת [ताव]

31 उसकी मेहनत का उसे इनाम दे*[4]
और उसके काम शहर के फाटक
पर उसकी वाह-वाही करें।[5]

अध्य. 31

1 न्या 13:22, 23; 1शम 25:30, 31; एस 5:8; तीत 2:3

दूसरा कॉल.

1 नीत 14:1; 1ती 5:9, 10; तीत 2:3-5

2 2रा 9:30; एस 1:10-12; नीत 6:25, 26

3 उत 24:60; न्या 5:7; 1पत 3:3, 4

4 रूत 3:10, 11

5 रोम 16:1, 2

31:24 *या "अंदर पहने जानेवाले कपड़े।" **31:25** *या "पर हँसती है।" **31:26** *या "प्यार से सिखाना; अटल प्यार का नियम।"

31:30 *या "खोखली।" **31:31** *शा., "उसके हाथों के फल में से उसे दे।"

सभोपदेशक

सारांश

1 सबकुछ व्यर्थ है (1-11)
- पृथ्वी हमेशा कायम रहती है (4)
- प्राकृतिक चक्र चलते रहते हैं (5-7)
- दुनिया में कुछ भी नया नहीं होता (9)

इंसान की बुद्धि सीमित है (12-18)
- हवा को पकड़ने जैसा है (14)

2 सुलैमान के कामों पर एक नज़र (1-11)

इंसान की बुद्धि की एक सीमा है (12-16)

कड़ी मेहनत व्यर्थ होती है (17-23)

खाओ-पीओ और मेहनत करो (24-26)

3 हर चीज़ का एक समय होता है (1-8)

खुशहाल ज़िंदगी परमेश्वर की देन (9-15)
- इंसान में हमेशा तक जीने का विचार (11)

परमेश्वर सच्चाई से न्याय करता है (16, 17)

आखिर में इंसान और जानवर, दोनों मर जाते हैं (18-22)
- सब मिट्टी में मिल जाते हैं (20)

4 ज़ुल्म मौत से बदतर है (1-3)

काम के बारे में सही नज़रिया (4-6)

दोस्त की अहमियत (7-12)

1 दाविद के बेटे, यरूशलेम के राजा,[1]
उपदेशक*[2] के वचन:
2 वह कहता है, "व्यर्थ है! व्यर्थ है!
सबकुछ व्यर्थ है!"[3]
3 दुनिया में* इंसान कड़ी मेहनत
करता है,
लेकिन अपनी मेहनत का उसे क्या
मिलता है?[4]
4 एक पीढ़ी जाती है और दूसरी पीढ़ी
आती है,
लेकिन पृथ्वी हमेशा कायम
रहती है।[1]
5 सूरज उगता है और फिर डूबता है,
भागा-भागा वहीं लौट जाता है जहाँ
से उसे दोबारा उगना है।[2]
6 हवा दक्षिण में बहती है फिर घूमकर
उत्तर में आती है,
इस तरह वह चक्कर काटती
रहती है।
7 सारी नदियाँ* सागर में जा

अध्या. 1
1 1रा 2:12; 2इत 9:30
2 1रा 8:1, 22
3 भज 39:5; रोम 8:20
4 सभ 2:11; मत 16:26; यूह 6:27

दूसरा कॉल.
1 भज 78:69; भज 104:5; भज 119:90
2 उत 8:22; भज 19:6

1:1 *या "सभा बुलानेवाले; लोगों को इकट्ठा करनेवाले।" **1:3** *शा., "सूरज के नीचे।"
1:7 *या "सर्दियों में बहनेवाली या किसी और मौसम में बहनेवाली नदियाँ।"

मिलती हैं, फिर भी सागर नहीं
भरता,[1]
नदियाँ वापस अपनी जगह लौट
जाती हैं और फिर से बहने
लगती हैं।[2]
8 सब बातें थका देनेवाली हैं,
इनका बखान कोई नहीं कर सकता,
इन्हें देखकर आँखें नहीं भरतीं,
इनके बारे में सुनकर कान नहीं
थकते।
9 जो हो चुका है वह फिर होगा,
जो किया जा चुका है वह फिर
किया जाएगा,
दुनिया में* कुछ भी नया नहीं
होता।[3]
10 क्या ऐसा कुछ है जिसके बारे में
कहा जा सके, "देखो! यह कुछ
नया है"?
वह तो बरसों पहले वजूद में था,
हमारे ज़माने से भी पहले
मौजूद था।
11 बीते समय के लोगों को कोई याद
नहीं रखता,
न ही उनके बाद आनेवालों को कोई
याद रखेगा
और न ही उन्हें आनेवाली पीढ़ियाँ
याद रखेंगी।[4]

12 मैं उपदेशक, यरूशलेम से इस-
राएल पर राज करता हूँ।[5] 13 आस-
मान के नीचे जो कुछ होता है, उसका
अध्ययन करने और बुद्धि से उसकी
खोज करने में मैंने जी-जान लगा दी।[6]
यह बड़ा दुख देनेवाला काम है जो पर-
मेश्वर ने इंसानों को दिया है और जिसमें
वे लगे रहते हैं।

1:9 *शा., "सूरज के नीचे।"

अध्य. 1
1 अय 38:8, 10
2 अय 36:27, 28 यश 55:10 आम 5:8
3 उत 8:22 सभ 1:4
4 सभ 2:16 सभ 9:5 यश 40:6
5 1रा 11:42 सभ 1:1
6 1रा 4:29, 30 सभ 8:16

दूसरा कॉल.
1 भज 39:5, 6 सभ 2:11, 18 सभ 2:26 लूक 12:15
2 सभ 2:9
3 1रा 3:28 1रा 4:29-31 2इत 1:10-12
4 सभ 2:2, 3 सभ 2:12 सभ 7:25
5 सभ 2:15 सभ 12:12

अध्य. 2
6 भज 104:15 सभ 10:19

14 जब मैंने वे सारे काम देखे जो सूरज
के नीचे किए जाते हैं,
तो क्या देखा, सबकुछ व्यर्थ है और
हवा को पकड़ने जैसा है।[1]
15 जो टेढ़ा है उसे सीधा नहीं किया जा
सकता
और जो है ही नहीं, उसे गिना नहीं
जा सकता।

16 फिर मैंने मन-ही-मन कहा, "मैंने
बहुत बुद्धि हासिल की है। मुझसे पहले
यरूशलेम में शायद ही किसी ने इतनी
बुद्धि पायी हो।[2] ज्ञान और बुद्धि से काम
लेना मैंने अच्छी तरह सीख लिया है।"[3]
17 मैंने बुद्धि, पागलपन और मूर्खता को
जानने में जी-जान लगा दी[4] और पाया
कि यह भी हवा को पकड़ने जैसा है।
18 जितनी ज़्यादा बुद्धि हासिल करो,
उतनी ही निराशा होती है।
इसलिए जो अपना ज्ञान बढ़ाता है,
वह अपना दुख भी बढ़ाता है।[5]

2 मैंने मन-ही-मन कहा, "चल मौज-
मस्ती करें,* देखें तो सही इससे कुछ
फायदा होता है या नहीं।" मगर मैंने पाया
कि यह भी व्यर्थ है।
2 मैंने कहा, "हँसी-ठहाके लगाना तो
पागलपन है।"
मैंने खुद से पूछा, "मौज-मस्ती
करने* का क्या फायदा?"

3 मैंने सोचा, दाख-मदिरा का भी
मज़ा लेकर देख लूँ।[6] मगर मैंने अपना
होश-हवास नहीं खोया। मैंने मूर्खता को
भी गले लगाया। मैं जानना चाहता था कि
आसमान के नीचे चंद दिनों की ज़िंदगी
जीनेवाले इंसान के लिए क्या करना सबसे
अच्छा होगा। 4 मैंने बड़े-बड़े काम

2:1 *या "खुशियाँ मनाएँ।" 2:2 *या
"खुशी मनाने।"

किए:[1] अपने लिए घर बनाए,[2] अंगूरों के
बाग लगाए,[3] 5 बड़े-बड़े बाग-बगीचे
लगाए और वहाँ हर किस्म के फलदार
पेड़ उगाए। 6 मैंने पानी के कुंड बन-
वाए कि मेरे बाग* के नए-नए पेड़
सींचे जाएँ। 7 मैंने दास-दासियाँ रखे,[4]
मेरे यहाँ ऐसे दास भी थे जो मेरे घर
में पैदा हुए थे। मेरे पास गाय-बैल,
भेड़-बकरियाँ, इतने सारे मवेशी हो गए[5]
जितने यरूशलेम में मुझसे पहले किसी
राजा के पास नहीं थे। 8 मैंने अपने
लिए इतना सोना-चाँदी इकट्ठा किया,[6]
जितना राजाओं के खज़ाने और ज़िले
के खज़ाने में होता है।[7] मैंने अपने लिए
गायक-गायिकाएँ रखे। इसके अलावा,
मैंने औरत हाँ, कई औरतों का साथ भी
पाया जिनसे आदमियों का दिल खुश होता
है। 9 इस तरह मैं महान बन गया। मेरे
पास वह सबकुछ था जो मुझसे पहले यरू-
शलेम में किसी के पास नहीं हुआ।[8] तब
भी मेरी बुद्धि भ्रष्ट नहीं हुई।

10 मेरी आँखों ने जो देखा और चाहा
उसे मैंने पा लिया।[9] किसी भी तरह का
सुख लेने* से मैंने अपने मन को नहीं
रोका और मैं अपनी मेहनत के सारे कामों
से भी खुश था। यह सब मेरी मेहनत का
इनाम था।[10] 11 लेकिन जब मैंने अपने
सब कामों और उसके पीछे लगी मेह-
नत[11] के बारे में सोचा, तो यही पाया कि
सब व्यर्थ है और हवा को पकड़ने जैसा
है।[12] दुनिया में* कुछ भी करने का
फायदा नहीं।[13]

12 फिर मैंने बुद्धि, पागलपन और
मूर्खता आज़माकर देखी।[14] (जब राजा
ने सब आज़मा लिया है, तो उसके
बाद आनेवाला आदमी क्या कर सकता
है? वही जो पहले किया जा चुका है।)
13 और मैंने क्या देखा कि जैसे अँधेरे से
ज़्यादा रौशनी अच्छी है, वैसे ही मूर्खता से
ज़्यादा बुद्धि अच्छी है।[1]

14 बुद्धिमान साफ देख सकता है कि
वह किस राह जा रहा है,*[2] लेकिन
मूर्ख अंधकार में भटकता है।[3] मैं यह
भी समझ गया कि उन दोनों का एक
ही अंजाम होता है।[4] 15 मैंने मन-ही-
मन कहा, "मूर्ख के साथ जो होता है
वह मेरे साथ भी होगा।"[5] तो फिर मैंने
इतनी बुद्धि हासिल क्यों की? मैंने मन में
कहा, "यह भी व्यर्थ है।" 16 क्योंकि न
तो बुद्धिमान को याद रखा जाता है, न ही
मूर्ख को।[6] आखिर में सबको भुला दिया
जाएगा। और बुद्धिमान का क्या अंजाम
होगा? जैसे मूर्ख मरता है, वह भी मर
जाएगा।[7]

17 मैं जीवन से नफरत करने लगा[8]
क्योंकि सूरज के नीचे जो कुछ किया जाता
है वह देखकर मुझे बहुत दुख हुआ।
सबकुछ व्यर्थ है[9] और हवा को पकड़ने
जैसा है।[10] 18 मुझे उन चीज़ों से नफ-
रत होने लगी जिनके लिए मैंने दुनिया
में* खूब मेहनत की।[11] क्योंकि मेरा सब-
कुछ उस आदमी का हो जाएगा जो मेरे
बाद आएगा।[12] 19 और कौन जाने
वह बुद्धिमान होगा या मूर्ख?[13] फिर
भी वह उन चीज़ों का मालिक बन
जाएगा, जो मैंने दुनिया में* बड़े जतन
से और बुद्धि से हासिल की हैं। यह भी
व्यर्थ है। 20 मैं मन-ही-मन निराश हो
गया कि क्यों मैंने दुनिया में* इन चीज़ों
के लिए इतनी मेहनत की। 21 एक
आदमी अपनी बुद्धि, ज्ञान और हुनर के
दम पर कड़ी मेहनत तो करता है, मगर

2:6 *या "जंगल।" 2:10 *या "की खुशी मनाने।" 2:11, 18-20 *शा., "सूरज के नीचे।"

2:14 *शा., "बुद्धिमान के सिर में आँखें रहती हैं।"

अध्य. 2
1 1रा 9:17-19; 2इत 9:15, 16
2 1रा 7:1, 8
3 1रा 4:25; श्रेष 8:11
4 1शम 8:10, 13; 1रा 9:22
5 1रा 4:22, 23
6 1रा 9:14, 28; 1रा 10:10; 2इत 1:15
7 1रा 10:14, 15; 2इत 9:13, 14
8 1रा 3:13; 1रा 10:23
9 सभ 11:9
10 सभ 3:22; सभ 5:18; सभ 9:9
11 1रा 7:1
12 भज 49:10; सभ 1:14; सभ 2:16; 1ती 6:7
13 सभ 1:3; सभ 2:17
14 सभ 1:17; सभ 7:25

दूसरा कॉल.
1 नीत 4:7; सभ 7:11, 12
2 नीत 4:25
3 नीत 14:8; नीत 17:24; यूह 3:19; 1यूह 2:11
4 सभ 3:19, 20; सभ 9:2, 3; सभ 9:11
5 भज 49:10
6 निर्ग 1:8; सभ 1:11
7 सभ 6:8; रोम 5:12
8 1रा 19:2, 4; यिर्म 20:17, 18
9 अय 7:6; सभ 2:21; रोम 8:20
10 सभ 1:14; सभ 5:16
11 सभ 2:4-8
12 भज 39:6; लूक 12:20
13 1रा 12:6, 8; 2इत 12:1, 9

उसे अपना सबकुछ ऐसे आदमी को देना
पड़ता है जिसने उसके लिए कोई मेहनत
नहीं की।[1] यह भी व्यर्थ है और बड़े दुख
की बात है।

22 उस इंसान को क्या मिलता है जिस
पर दुनिया में* कुछ हासिल करने का
जुनून सवार हो और जिसके लिए वह जी-
जान लगा दे?[2] 23 दुख और दर्द के
सिवा उसे कुछ नहीं मिलता।[3] रात को भी
उसके मन को चैन नहीं पड़ता।[4] यह भी
व्यर्थ है।

24 इंसान के लिए इससे अच्छा और
क्या हो सकता है कि वह खाए-पीए और
अपनी मेहनत से खुशी पाए![5] मैं जान
गया कि यह भी सच्चे परमेश्वर की देन
है।[6] 25 मुझे देखो, भला मुझसे अच्छा
कौन खाता-पीता है?[7]

26 जो इंसान परमेश्वर को खुश
करता है उसे वह बुद्धि, ज्ञान और खुशी
देता है।[8] लेकिन पापी को वह बटोरने का
काम देता है ताकि उसकी बटोरी हुई चीज़ें
उस इंसान को मिलें, जो सच्चे परमेश्वर
को खुश करता है।[9] यह भी व्यर्थ है और
हवा को पकड़ने जैसा है।

3 हर चीज़ का एक समय होता है,
आसमान के नीचे हरेक काम का
एक समय होता है:
2 जन्म लेने का समय* और मरने का
समय,
बोने का समय और बोए हुए को
उखाड़ने का समय,
3 मार डालने का समय और चंगा
करने का समय,
ढा देने का समय और बनाने का
समय,
4 रोने का समय और हँसने का समय,
छाती पीटने का समय और नाचने
का समय,
5 पत्थर फेंकने का समय और पत्थरों
को बटोरने का समय,
गले लगाने का समय और गले
लगाने से दूर रहने का समय,
6 ढूँढ़ने का समय और खोया हुआ
मानकर छोड़ देने का समय,
रखने का समय और फेंकने का
समय,
7 फाड़ने का समय[1] और सिलने का
समय,
चुप रहने का समय[2] और बोलने
का समय,[3]
8 प्यार करने का समय और नफरत
करने का समय,[4]
युद्ध का समय और शांति का
समय।

9 एक कामकाजी इंसान को अपनी
सारी मेहनत से क्या मिलता है?[5]
10 मैंने वे सारे काम देखे जो परमेश्वर ने
इंसानों को दिए हैं कि वे उनमें लगे रहें।
11 परमेश्वर ने हर चीज़ को ऐसा बनाया
है कि वह अपने समय पर सुंदर* लगती
है।[6] उसने इंसान के मन में हमेशा तक
जीने का विचार भी डाला है। फिर भी वह
सच्चे परमेश्वर के कामों को पूरी तरह#
नहीं जान सकता।

12 मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि
इंसान के लिए इससे अच्छा और कुछ नहीं
कि वह ज़िंदगी में खुश रहे और अच्छे
काम करे।[7] 13 साथ ही, वह खाए-
पीए और अपनी मेहनत के सब कामों से
खुशी पाए। यह परमेश्वर की देन है।[8]

2:22 *शा., "सूरज के नीचे।" **3:2** *या "जन्म देने का समय।"

3:11 *या "व्यवस्थित; उचित; सही।" #शा., "को शुरू से लेकर आखिर तक।"

अध्य. 2
1 सभ 2:18, सभ 5:15, 16
2 सभ 1:3, सभ 3:9
3 अय 14:1, 2, लूक 12:29
4 उत 31:40,41
5 व्य 12:18, सभ 3:22, सभ 8:15, प्रेष 14:17
6 सभ 3:12, 13, सभ 5:18, 19
7 1रा 4:7, 1रा 4:22, 23, 1रा 10:4, 5, 1रा 10:21
8 1शम 18:14, नीत 3:32, 33, यश 3:10
9 व्य 6:10, 11, नीत 13:22, नीत 28:8

दूसरा कॉल.

अध्य. 3
1 2शम 3:31
2 भज 39:1
3 1शम 19:4, 1शम 25:23, 24, एस 4:13, 14, भज 145:11, नीत 9:8
4 भज 139:21, रोम 12:9
5 सभ 1:3, सभ 5:15, 16
6 उत 1:31, रोम 1:20
7 भज 37:3, 1थि 5:15
8 सभ 5:18, 19, यश 65:21, 22

14 मैं जान गया हूँ कि सच्चे परमेश्‍वर ने जो कुछ बनाया है वह हमेशा कायम रहेगा। इसमें न कुछ जोड़ा जा सकता है, न कुछ घटाया जा सकता है। सच्चे परमेश्‍वर ने सारी चीज़ें इस तरह बनायी हैं कि लोग उसका डर मानें।[1]

15 जो कुछ होता है, वह पहले भी हो चुका है और जो होनेवाला है वह भी हो चुका है।[2] लेकिन सच्चा परमेश्‍वर उसे ढूँढ़ता है जिसका पीछा किया जा रहा है।*

16 मैंने दुनिया में* यह भी देखाः न्याय की जगह दुष्टता की जाती है और नेकी की जगह बुराई।[3] **17** मैंने अपने मन में कहा, "सच्चा परमेश्‍वर नेक और दुष्ट दोनों का न्याय करेगा[4] क्योंकि हर बात और हर काम का एक समय होता है।"

18 मैंने अपने दिल में यह भी कहा कि सच्चा परमेश्‍वर इंसान को परखेगा और उन्हें दिखा देगा कि इंसान जानवरों जैसे हैं **19** क्योंकि इंसानों और जानवरों का एक ही अंजाम होता है।[5] जैसे जानवर मरता है वैसे ही इंसान भी मर जाता है। दोनों में जीवन की साँसें हैं।[6] इंसान, जानवर से बढ़कर नहीं। इसलिए सबकुछ व्यर्थ है। **20** सब एक ही जगह जाते हैं।[7] उन्हें मिट्टी से बनाया गया है[8] और वे मिट्टी में मिल जाते हैं।[9] **21** कौन जानता है कि इंसान की जीवन-शक्‍ति ऊपर जाती है और जानवर की नीचे ज़मीन में?[10] **22** मैंने यही पाया कि इंसान के लिए इससे अच्छा और कुछ नहीं कि वह अपने काम से खुशी पाए[11] क्योंकि यही उसका इनाम है। वरना कौन उसे दिखा सकता है कि उसके जाने के बाद क्या होगा?[12]

3:15 *या शायद, "जो बीत चुका है।"
3:16; 4:1, 3, 7 *शा., "सूरज के नीचे।"

अध्य. 3

1 यिर्म 10:7
प्रक 15:4
2 सभ 1:9
3 भज 82:2
भज 94:16,21
4 सभ 12:14
प्रेष 17:31
रोम 2:5, 6
5 अय 14:10
भज 39:5
भज 89:48
6 उत 7:22
भज 104:29
सभ 12:7
7 सभ 9:10
8 उत 2:7, 19
9 उत 3:19
अय 10:9
10 भज 146:3, 4
सभ 3:19
सभ 9:10
11 व्य 12:7
सभ 5:18
12 अय 14:21
सभ 6:12

दूसरा कॉल.

अध्य. 4

1 भज 69:20
भज 142:4
2 अय 3:17
सभ 2:17
3 यिर्म 20:18
4 सभ 1:14
5 गल 5:26
6 नीत 6:10, 11
नीत 20:4
7 भज 37:16
नीत 15:16
नीत 16:8
नीत 17:1
8 नीत 27:20
सभ 5:10
9 भज 39:6
लूक 12:18-20
10 सभ 2:22, 23

4

एक बार फिर मैंने उन सब ज़ुल्मों पर ध्यान दिया जो इस दुनिया में* हो रहे हैं। और मैंने क्या देखा, ज़ुल्म सहनेवाले आँसू बहा रहे हैं और उन्हें दिलासा देनेवाला कोई नहीं।[1] ज़ुल्म करनेवाले ताकतवर हैं इसलिए कोई उन दुखियों को दिलासा नहीं देता। **2** यह देखकर मैंने सोचा, ज़िंदा लोगों से अच्छे तो मरे हुए हैं।[2] **3** और इन दोनों से बेहतर तो वह इंसान है, जो अब तक पैदा ही नहीं हुआ[3] और जिसने दुनिया में* हो रहे बुरे काम नहीं देखे।[4]

4 मैंने देखा है कि दूसरों से आगे निकलने की धुन में एक इंसान खूब मेहनत करता है और बड़ी महारत से अपना काम करता है।[5] मगर यह भी व्यर्थ है और हवा को पकड़ने जैसा है।

5 मूर्ख हाथ-पर-हाथ धरे बैठा रहता है और खुद को बरबाद कर देता है।*[6]

6 थोड़ा-सा आराम करना,* बहुत ज़्यादा काम करने# और हवा के पीछे भागने से कहीं अच्छा है।[7]

7 मैंने दुनिया में* एक और व्यर्थ बात देखीः **8** एक आदमी है जो बिलकुल अकेला है। उसका न तो कोई दोस्त है, न बेटा, न भाई। वह दिन-रात मेहनत करता है। उसके पास खूब दौलत है, फिर भी उसकी आँखें तृप्त नहीं होतीं।[8] मगर क्या वह अपने आपसे पूछता है, 'आखिर मैं किसके लिए इतनी मेहनत कर रहा हूँ? किसके लिए खुद को अच्छी-अच्छी चीज़ों से दूर रख रहा हूँ?'[9] यह भी व्यर्थ है और बड़ा दुख देनेवाला काम है।[10]

4:5 *शा., "और अपना माँस खाता है।"
4:6 *शा., "एक मुट्ठी आराम।" #शा., "दो मुट्ठी कड़ी मेहनत।"

9 एक से भले दो हैं[1] क्योंकि उनकी
मेहनत का उन्हें अच्छा फल* मिलता है।
10 अगर उनमें से एक गिर जाए, तो
उसका साथी उसे उठा लेगा। लेकिन जो
अकेला है उसे गिरने पर कौन उठाएगा?
11 अगर दो साथ लेटें तो वे गरम
रहेंगे। लेकिन जो अकेला है वह कैसे
गरम रहेगा? 12 एक अकेले को कोई
भी दबोच सकता है, लेकिन अगर दो जन
साथ हों तो वे मिलकर उसका सामना कर
सकेंगे। और जो डोरी तीन धागों से बटी
हो वह आसानी से* नहीं टूटती।
13 गरीब मगर बुद्धिमान लड़का, उस
बूढ़े और मूर्ख राजा से कहीं अच्छा है,[2]
जो अब किसी की सलाह नहीं मानता।[3]
14 क्योंकि वह* जेल से निकलकर राजा
बन जाता है,[4] फिर चाहे वह उसके राज
में गरीब ही क्यों न पैदा हुआ हो।[5]
15 मैंने दुनिया के* सब लोगों पर गौर
किया और यह भी देखा कि उस जवान
लड़के के साथ क्या होता है जिसने राजा
की जगह ली। 16 भले ही उसका साथ
देनेवालों की कमी नहीं, मगर आगे चल-
कर जो लोग आएँगे, वे उससे खुश नहीं
होंगे।[6] यह भी व्यर्थ है और हवा को
पकड़ने जैसा है।

5 जब तू सच्चे परमेश्वर के घर जाए
तो ध्यान रख कि तू कैसी चाल
चलता है।[7] तू मूर्ख की तरह वहाँ बलि-
दान चढ़ाने के लिए[8] नहीं बल्कि सुनने के
लिए जा।[9] क्योंकि मूर्ख नहीं जानता कि
वह जो कर रहा है वह बुरा है।
2 बोलने में जल्दबाज़ी मत कर, न
सच्चे परमेश्वर के सामने जो मन में आए
वह कह दे।[1] क्योंकि सच्चा परमेश्वर
स्वर्ग में है और तू धरती पर। इसलिए
तेरे शब्द थोड़े ही हों।[2] 3 जब ढेर सारी
चिंताएँ* हों, तो लोग सपने देखने लगते
हैं।[3] और जब मूर्ख बकबक करता है, तो
उसकी बातों में मूर्खता नज़र आती है।[4]
4 जब-जब तू परमेश्वर से मन्नत माने,
उसे पूरा करने में देर न करना[5] क्योंकि
वह मूर्ख से खुश नहीं होता, जो अपनी
मन्नत पूरी नहीं करता।[6] तू जो भी मन्नत
माने उसे पूरा करना।[7] 5 मन्नत मान-
कर उसे पूरा न करने से तो अच्छा है
कि तू मन्नत ही न माने।[8] 6 ऐसा न
हो कि तेरा मुँह तुझसे पाप करवाए[9]
और तू स्वर्गदूत* के सामने कहे कि
मुझसे भूल हो गयी।[10] भला तू अपनी
बात से सच्चे परमेश्वर को क्यों क्रोध
दिलाए और क्यों उसे तेरे काम बिगाड़-
ने पड़ें?[11] 7 जब ढेर सारी चिंताएँ हों,
तो लोग सपने देखने लगते हैं।[12] वैसे
ही बहुत-सी बातें बोली जाएँ, तो वे व्यर्थ
ठहरती हैं। लेकिन तू सच्चे परमेश्वर का
डर मान।[13]
8 अगर तू अपने ज़िले में किसी ऊँचे
अधिकारी को गरीबों पर ज़ुल्म करते देखे
और न्याय और सच्चाई का खून करते
देखे, तो हैरान मत होना।[14] क्योंकि
उसके ऊपर भी कोई है जो उसे देख रहा
है। और बड़े-बड़े अधिकारियों के ऊपर
भी उनसे बड़े अधिकारी होते हैं।
9 ज़मीन से मिलनेवाला मुनाफा इन
लोगों में बाँटा जाता है, यहाँ तक कि राजा
की ज़रूरतें भी उसी खेत की उपज से पूरी
की जाती हैं।[15]
10 जिसे चाँदी से प्यार है उसका मन
चाँदी से नहीं भरता, वैसे ही दौलत से

4:9 *या "ज़्यादा फायदा।" 4:12 *या "जल्दी।" 4:14 *शायद यहाँ उस बुद्धिमान लड़के की बात की गयी है। 4:15 *शा., "सूरज के नीचे।"

5:3 *या "ढेर सारे काम।" 5:6 *या "दूत।"

अध्य. 4
1 उत 2:18; नीत 27:17
2 नीत 19:1; नीत 28:6, 16
3 1रा 22:8; 2इत 25:15, 16
4 उत 41:14, 40
5 2शम 7:8; अय 5:11
6 2शम 20:1

अध्य. 5
7 भज 15:1, 2
8 1शम 13:12, 13; 1शम 15:22; नीत 21:27; यश 1:13; हो 6:6
9 व्य 31:12; प्रेष 17:11

दूसरा कॉल.
1 गि 30:2; 1शम 14:24
2 नीत 10:19
3 मत 6:25, 34; लूक 12:18-20
4 नीत 10:19; नीत 15:2
5 व्य 23:21; भज 76:11; मत 5:33
6 सभ 10:12
7 गि 30:2; भज 66:13
8 व्य 23:22; नीत 20:25
9 न्या 11:35
10 लैव 5:4
11 भज 127:1; हाग 1:11
12 सभ 5:3
13 सभ 12:13
14 सभ 3:16
15 1शम 8:11, 12; 1रा 4:7; 2इत 26:9, 10; प्रेष 8:11

प्यार करनेवाले का मन अपनी कमाई से
नहीं भरता।[1] यह भी व्यर्थ है।[2]

11 जब अच्छी चीज़ें बढ़ती हैं तो उसे
खानेवाले भी बढ़ जाते हैं।[3] लेकिन उसके
मालिक को कोई फायदा नहीं होता, वह
बस देखता रह जाता है।[4]

12 मज़दूरी करनेवाले को मीठी नींद
आती है फिर चाहे उसे थोड़ा खाने को
मिले या ज़्यादा। लेकिन रईस की बेशुमार
दौलत उसे सोने नहीं देती।

13 दुनिया में* मैंने एक ऐसी बात
देखी जो बड़ा दुख पहुँचाती है: जमा
की गयी दौलत अपने ही मालिक के
लिए मुसीबत बन जाती है। **14** गलत
योजना में उसका सारा पैसा डूब जाता है
और जब उसे बेटा होता है, तो उसे देने के
लिए उसके पास कुछ नहीं बचता।[5]

15 इंसान अपनी माँ के पेट से नंगा
आया है और नंगा ही चला जाएगा।[6]
जिन चीज़ों के लिए उसने कड़ी मेहनत
की, उनमें से कुछ भी अपने साथ नहीं ले
जाएगा।[7]

16 एक और बात है जो बड़ा दुख
पहुँचाती है: इंसान जैसे आता है वैसे ही
चला जाता है। तो फिर कड़ी मेहनत करने
और हवा को पकड़ने की कोशिश करने
का क्या फायदा?[8] **17** यही नहीं, वह
हर दिन मानो अँधेरे में खाता है। ज़िंदगी-
भर कुढ़ता रहता है, गुस्सा करता है और
बीमार रहता है।[9]

18 मैंने जिस बात को सही और
अच्छा पाया वह यह है कि सच्चे परमेश्वर
ने इंसान को जो ज़िंदगी दी है, उसमें वह
खाए-पीए और धरती पर* अपनी सारी
मेहनत से खुशी पाए।[10] क्योंकि यही
उसका इनाम है।[11] **19** इतना ही नहीं,
अगर सच्चे परमेश्वर ने इंसान को धन-
दौलत देने[1] के साथ-साथ उसका मज़ा
लेने के काबिल बनाया है, तो वह उन
चीज़ों का मज़ा ले और अपनी मेह-
नत से खुशी पाए। यह परमेश्वर की
देन है।[2] **20** उसकी ज़िंदगी के दिन ऐसे
बीत जाएँगे कि उसे पता भी नहीं चलेगा*
क्योंकि सच्चा परमेश्वर उसका ध्यान
उन बातों पर लगाए रखेगा, जो उसके
दिल को खुशी देती हैं।[3]

6 दुनिया में* एक और बात है जो
दुख पहुँचाती है और जो इंसानों में
अकसर देखी जाती है: **2** इंसान जितनी
धन-दौलत और मान-मर्यादा चाहता है,
सच्चा परमेश्वर उसे वह सब देता है।
फिर भी सच्चा परमेश्वर उन चीज़ों का
मज़ा उसे नहीं, किसी पराए को लेने देता
है। यह व्यर्थ है और बड़े दुख की
बात है। **3** अगर एक आदमी के 100
बच्चे हों और वह बुढ़ापे तक एक लंबी
उम्र जीए, फिर भी कब्र में जाने से पहले
अपनी अच्छी चीज़ों का मज़ा न ले, तो
मेरा मानना है कि उससे अच्छा वह बच्चा
है जो मरा हुआ पैदा होता है।[4] **4** वह
बच्चा बेकार ही दुनिया में आया और
चला गया और बेनाम ही अँधेरे में खो
गया। **5** भले ही उसने सूरज की रौशनी
नहीं देखी, न ही वह कुछ जान पाया, फिर
भी वह उस आदमी से कहीं अच्छा है।*[5]
6 अगर एक इंसान 2,000 साल जीकर
भी ज़िंदगी का मज़ा न ले सके, तो क्या
फायदा? क्या सब-के-सब एक ही जगह
नहीं जाते?[6]

7 इंसान जो मेहनत करता है उससे
उसका सिर्फ पेट भरता है,[7] जी नहीं

अध्य. 5
1 सभ 4:8
2 मत 6:24; लूक 12:15; 1ती 6:10
3 1रा 4:22, 23
4 नीत 23:4, 5; 1यूह 2:16
5 नीत 23:4, 5; मत 6:19
6 अय 1:21
7 भज 49:17; लूक 12:20; 1ती 6:7
8 मत 16:26; यूह 6:27
9 1ती 6:10
10 1रा 4:20
11 सभ 2:24; सभ 3:22; यश 65:21, 22

दूसरा कॉल.
1 1रा 3:12, 13; अय 42:12
2 व्य 8:10; सभ 3:12, 13; 1ती 6:17; याकू 1:17
3 व्य 28:8; भज 4:7

अध्य. 6
4 सभ 4:2, 3
5 अय 3:11, 13; अय 14:1
6 अय 30:23; सभ 3:20; रोम 5:12
7 उत 3:19; नीत 16:26

5:13, 18; 6:1 *शा., "सूरज के नीचे।"

5:20 *या "याद भी नहीं रहेगा।" **6:5** *शा., "उसे उस आदमी से ज़्यादा चैन है।"

भरता। 8 अगर ऐसा है तो बुद्धिमान
किस मायने में मूर्ख से बढ़कर हुआ?[1] या
अगर गरीब को थोड़े में गुज़ारा करना*
आता है, तो उसे भी क्या फायदा हुआ?
9 इसलिए जो आँखों के सामने है उसका
मज़ा ले, न कि अपनी इच्छाओं के पीछे
भाग। क्योंकि यह भी व्यर्थ है और हवा
को पकड़ने जैसा है।

10 जो कुछ वजूद में है उसका नाम
पहले ही रखा जा चुका है। और यह भी
पता चल गया है कि इंसान क्या है। वह
उससे नहीं लड़ सकता* जो उससे ज़्यादा
शक्तिशाली है। 11 जितनी ज़्यादा
बातें* होती हैं, वे उतनी ही व्यर्थ होती
हैं और इससे इंसान को कोई फायदा नहीं
होता। 12 कौन जानता है कि इंसान के
लिए ज़िंदगी में क्या करना सबसे अच्छा
है? क्योंकि उसकी छोटी-सी ज़िंदगी व्यर्थ
है और छाया के समान गुज़र जाती है।[2]
कौन उसे बता सकता है कि उसके जाने के
बाद दुनिया में* क्या होगा?

7 एक अच्छा नाम बढ़िया तेल से भी
अच्छा है[3] और मौत का दिन जन्म
के दिन से बेहतर है। 2 दावतवाले घर
में जाने से अच्छा है मातमवाले घर में
जाना।[4] क्योंकि मौत हर इंसान का अंत
है और ज़िंदा लोगों को यह बात याद
रखनी चाहिए। 3 हँसने से अच्छा है
दुख मनाना[5] क्योंकि चेहरे की उदासी मन
को सुधारती है।[6] 4 बुद्धिमान का मन
मातमवाले घर में लगा रहता है, मगर
मूर्ख का मन मौज-मस्तीवाले घर में लगा
रहता है।[7]

5 मूर्ख के गीत सुनने से अच्छा है
बुद्धिमान की फटकार सुनना।[1] 6 जैसे
हाँडी के नीचे जलते काँटों का चटकना,
वैसे ही मूर्ख का हँसना होता है।[2] यह भी
व्यर्थ है। 7 ज़ुल्म, बुद्धिमान इंसान को
बावला कर देता है और रिश्वत, मन को
भ्रष्ट कर देती है।[3]

8 किसी बात का अंत उसकी शुरू-
आत से अच्छा होता है। सब्र से काम लेना
घमंड करने से अच्छा है।[4] 9 किसी
बात का जल्दी बुरा मत मान[5] क्योंकि मूर्ख
ही जल्दी बुरा मानता है।*[6]

10 यह मत कहना, "इन दिनों से
अच्छे तो बीते हुए दिन थे।" क्योंकि ऐसा
कहकर तू बुद्धिमानी से काम नहीं ले
रहा।[7]

11 बुद्धि के साथ-साथ विरासत
मिलना अच्छी बात है। बुद्धि उन सभी को
फायदा पहुँचाती है जो दिन की रौशनी
देखते हैं।* 12 क्योंकि जिस तरह पैसा
हिफाज़त करता है,[8] उसी तरह बुद्धि भी
कई चीज़ों से हिफाज़त करती है।[9]
मगर ज्ञान और बुद्धि इस मायने में बढ़-
कर हैं कि वे अपने मालिक की जान
बचाते हैं।[10]

13 सच्चे परमेश्वर के काम पर ध्यान
दे। क्योंकि जिन चीज़ों को परमेश्वर
ने टेढ़ा किया है उन्हें कौन सीधा कर
सकता है?[11] 14 जब दिन अच्छा बीते
तो तू भी अच्छाई कर।[12] लेकिन मुसी-
बत* के दिन यह समझ ले कि पर-
मेश्वर ने अच्छे और बुरे दोनों दिनों को
रहने दिया है[13] ताकि इंसान कभी न जान
सके कि आनेवाले दिनों में क्या होने-
वाला है।[14]

6:8 *शा., "ज़िंदा लोगों के सामने चलना।" **6:10** *या "अपनी पैरवी नहीं कर सकता।" **6:11** *या शायद, "चीज़ें।" **6:12** *शा., "सूरज के नीचे।"

7:9 *शा., "बुरा मानना मूर्ख के सीने में रहता है।" या शायद, "बुरा मानना मूर्खों की निशानी है।" **7:11** *यानी जो ज़िंदा हैं। **7:14** *या "दुख।"

अध्य. 6

1 भज 49:10; सभ 2:15, 16
2 1इत 29:15; अय 8:9; अय 14:1, 2; भज 102:11

अध्य. 7

3 नीत 10:7; नीत 22:1; यश 56:5; लूक 10:20
4 यश 5:11, 12
5 भज 119:71; लूक 6:21
6 2कुर 7:10; इब्र 12:11
7 1शम 25:36; नीत 21:17

दूसरा कॉल.

1 भज 141:5; नीत 15:31
2 सभ 2:2
3 निर्ग 23:8; व्य 16:19; 1शम 8:1-3; नीत 17:23
4 नीत 13:10; याकू 5:10; 1पत 5:5
5 नीत 16:32; याकू 1:19
6 उत 4:5; एस 5:9; नीत 14:17, 29; नीत 29:11
7 लूक 9:62
8 नीत 10:15
9 नीत 4:5, 6
10 नीत 3:13, 18; नीत 8:35; नीत 9:11
11 अय 9:12; यश 14:27
12 याकू 5:13
13 अय 2:10; यश 45:7
14 नीत 27:1; सभ 9:11; याकू 4:13, 14

15 मैंने अपनी छोटी-सी* ज़िंदगी[1] में सबकुछ देखा है। नेक इंसान नेकी करके भी मिट जाता है,[2] जबकि दुष्ट बुरा करके भी लंबी उम्र जीता है।[3]

16 खुद को दूसरों से नेक मत समझ,[4] न ही अपने को बड़ा बुद्धिमान दिखा।[5] तू क्यों खुद पर विनाश लाना चाहता है?[6] **17** न बहुत ज़्यादा बुराई कर, न ही मूर्ख बन।[7] आखिर तू वक्त से पहले क्यों मरना चाहता है?[8] **18** तेरे लिए अच्छा है कि तू पहली चेतावनी* को पकड़े रहे और दूसरी# को भी हाथ से जाने न दे[9] क्योंकि परमेश्वर का डर माननेवाला दोनों को मानेगा।

19 बुद्धि एक समझदार इंसान को ताकतवर बनाती है, शहर के दस बलवान आदमियों से भी ताकतवर।[10] **20** धरती पर ऐसा कोई नेक इंसान नहीं, जो हमेशा अच्छे काम करता है और कभी पाप नहीं करता।[11]

21 लोगों की हर बात दिल पर मत ले,[12] वरना तू अपने नौकर को तेरी बुराई करते* सुनेगा **22** क्योंकि तेरा दिल अच्छी तरह जानता है कि तूने भी न जाने कितनी बार दूसरों को बुरा-भला कहा है।[13]

23 मैंने इन सारी बातों को बुद्धि से परखा। मैंने कहा, "मैं बुद्धिमान बनूँगा," लेकिन यह मेरी पहुँच से बाहर है। **24** जो कुछ हुआ है उसे समझना मेरे बस में नहीं। ये बातें बहुत गहरी हैं, कौन इन्हें समझ सकता है?[14] **25** मैंने बुद्धि की खोज करने और उसे जानने-परखने में अपना मन लगाया। मैं जानना चाहता था कि जो कुछ होता है वह क्यों होता है। मैं समझना चाहता था कि आखिर मूर्खता बुरी क्यों है और पागलपन मूर्खता क्यों है।[1] **26** तब मैंने जाना कि एक ऐसी औरत है जो मौत से भी ज़्यादा दुख देती है। वह शिकारी के जाल के समान है, उसका दिल मछली पकड़नेवाले बड़े जाल जैसा है और उसके हाथ बेड़ियों की तरह हैं। ऐसी औरत से बचनेवाला, सच्चे परमेश्वर को खुश करता है।[2] लेकिन जो उसके जाल में फँस जाता है, वह पाप कर बैठता है।[3]

27 उपदेशक[4] कहता है, "देख, मैंने यह पाया। मैंने एक-के-बाद-एक कई चीज़ों की छानबीन की कि किसी नतीजे पर पहुँचूँ, **28** मगर बहुत खोज करने के बाद भी मैं किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाया। मुझे 1,000 लोगों में सिर्फ एक सीधा-सच्चा आदमी मिला, लेकिन उनमें एक भी सीधी-सच्ची औरत नहीं मिली। **29** मैंने सिर्फ यही पायाः सच्चे परमेश्वर ने इंसान को सीधा बनाया था,[5] लेकिन वह अपनी सोच के मुताबिक चलने लगा।"[6]

8 कौन है जो बुद्धिमान इंसान जैसा है? कौन है जो समस्या का हल* जानता है? बुद्धि के कारण इंसान का चेहरा चमक उठता है और उसके चेहरे पर कठोरता की जगह खुशी छा जाती है।

2 मैं कहता हूँ, "राजा का हुक्म मान[7] क्योंकि तूने परमेश्वर के सामने शपथ खायी थी।[8] **3** उतावली में आकर तू राजा के सामने से चले न जाना,[9] न किसी बुरे काम में उलझना।[10] राजा जो चाहता है वह करता है। **4** उसकी बात पत्थर की लकीर है।[11] कौन उससे कह सकता है, 'यह तू क्या कर रहा है?'"

7:15 * या "व्यर्थ।" **7:18** * यानी आय. 16 में दी चेतावनी। # यानी आय. 17 में दी चेतावनी। **7:21** * शा., "तुझे शाप देते।"

8:1 * या "किसी बात का मतलब।"

अध्य. 7

1 भज 39:5
2 उत 4:8; 1शम 22:18
3 अय 21:7; भज 73:12
4 यश 65:5; मत 6:1; रोम 10:3; रोम 14:10
5 नीत 3:7; रोम 12:3
6 नीत 16:18
7 भज 14:1; नीत 14:9
8 भज 55:23; नीत 10:27
9 फिल 4:5
10 नीत 21:22; नीत 24:5
11 2इत 6:36; भज 51:5; रोम 3:23; 1यूह 1:8
12 1शम 24:9
13 याकू 3:2, 8, 9
14 भज 36:6; भज 139:6; यश 55:9; रोम 11:33

दूसरा कॉल.

1 सभ 1:17; सभ 2:12
2 उत 39:7-9
3 नीत 5:3, 14; नीत 7:22, 23; नीत 22:14
4 सभ 1:1
5 उत 1:26, 31
6 उत 3:6; उत 6:12; व्य 32:5

अध्य. 8

7 नीत 24:21, 22; रोम 13:1; तीत 3:1; 1पत 2:13
8 2शम 5:3
9 सभ 10:4
10 1रा 1:5, 7; नीत 20:2
11 1रा 2:24, 25

5 जो आज्ञा मानता है उसके साथ कुछ
बुरा नहीं होगा।[1] और बुद्धिमान का मन
जानता है कि किसी चीज़ को करने का
सही वक्त और तरीका क्या है।[2]
6 क्योंकि इंसान की ज़िंदगी में बहुत-से
दुख हैं और उनसे निपटने का एक सही
वक्त और तरीका होता है।[3] 7 अगर
कोई नहीं जानता कि आगे क्या घटेगा, तो
कौन बता सकता है वह कैसे घटेगा?

8 जैसे एक इंसान का अपनी जीवन-
शक्ति पर कोई बस नहीं, वैसे ही मौत
के दिन पर उसका कोई बस नहीं।[4] जिस
तरह युद्ध के समय सैनिक को अपनी सेवा
से मुक्ति नहीं मिलती, उसी तरह दुष्ट की
दुष्टता उसे मुक्ति नहीं देती।*

9 यह सब मैंने देखा है। मैंने दुनिया
में* होनेवाले सब कामों पर ध्यान दिया
और देखा कि इस दौरान इंसान,
इंसान पर हुक्म चलाकर सिर्फ तक-
लीफें# लाया है।[5] 10 मैंने उन दुष्टों
को दफन होते देखा है जो पवित्र जगह
में आया-जाया करते थे। और जिस शहर
में उन्होंने बुरे काम किए थे, वहाँ के लोगों
की यादों से वे जल्द मिट गए।[6] यह भी
व्यर्थ है।

11 जब बुरे कामों की सज़ा जल्दी नहीं
मिलती,[7] तो इंसान का मन बुराई करने
के लिए और भी ढीठ बन जाता है।[8]
12 चाहे पापी 100 बार पाप करके
बहुत दिनों तक जीए, पर मैं जानता
हूँ कि आखिर में सच्चे परमेश्वर का डर
माननेवाले का ही भला होता है क्योंकि
उसमें परमेश्वर के लिए सच्ची श्रद्धा है।[9]
13 लेकिन दुष्ट का भला नहीं होगा,[10] न
ही वह अपनी ज़िंदगी के दिन बढ़ा पाएगा
जो छाया के समान बीत जाते हैं।[1] क्योंकि
वह परमेश्वर का डर नहीं मानता।

14 एक और बात है जो मैंने धरती
पर होते देखी और जो एकदम व्यर्थ* है:
नेक लोगों के साथ ऐसा बरताव किया
जाता है मानो उन्होंने दुष्ट काम किए हों[2]
और दुष्टों के साथ ऐसा बरताव किया
जाता है मानो उन्होंने नेक काम किए
हों।[3] मेरा मानना है कि यह भी व्यर्थ है।

15 इसलिए मैं कहता हूँ, खुशियाँ
मनाओ[4] क्योंकि दुनिया में* इंसान के
लिए इससे अच्छा और कुछ नहीं कि वह
खाए-पीए और खुशी मनाए। सच्चे पर-
मेश्वर ने सूरज के नीचे उसे जो ज़िंदगी दी
है उसमें खुशियाँ मनाने के साथ-साथ वह
कड़ी मेहनत भी करे।[5]

16 मैंने मन में ठाना था कि मैं बुद्धि
हासिल करूँगा और दुनिया में होने-
वाले हर काम को देखूँगा।[6] इसके लिए
मैं दिन-रात जागता रहा।* 17 जब
मैंने सच्चे परमेश्वर के सब कामों पर
गौर किया, तो मैं जान गया कि इंसान
दुनिया में* होनेवाले कामों को पूरी तरह
नहीं समझ सकता।[7] वह चाहे जितनी
भी कोशिश करे, इन्हें नहीं जान सकता।
वह अपने आपको कितना ही बुद्धिमान
बताए, वह इन्हें सही मायने में नहीं समझ
सकता।[8]

9 जब मैंने इन बातों पर सोचा तो मैं इस
नतीजे पर पहुँचा कि नेक इंसान और
बुद्धिमान इंसान और उन दोनों के काम,
सच्चे परमेश्वर के हाथ में हैं।[9] इंसान बे-
खबर है कि उससे पहले लोगों में कितना
प्यार और कितनी नफरत हुआ करती

अध्य. 8
1 रोम 13:5; 1पत 3:13
2 1शम 24:12, 13; 1शम 26:8-10; भज 37:7
3 सभ 3:17
4 भज 89:48
5 निर्ग 1:13, 14; मी 7:3
6 नीत 10:7
7 भज 10:4, 6
8 1शम 2:22, 23
9 भज 34:9; भज 103:13; भज 112:1; यश 3:10; 2पत 2:9
10 भज 37:10; यश 57:21

दूसरा कॉल.
1 अय 24:24
2 सभ 7:15
3 भज 37:7; भज 73:12
4 भज 100:2
5 सभ 2:24; सभ 3:12, 13
6 सभ 1:13; सभ 7:25
7 सभ 3:11; रोम 11:33
8 अय 28:12; सभ 7:24; सभ 11:5

अध्य. 9
9 व्य 33:3; 1शम 2:9; भज 37:5

8:8 *या शायद, "उसे नहीं बचा सकती।" **8:9, 15, 17** *शा., "सूरज के नीचे।" **8:9** #या "नुकसान।"

8:14 *या "निराश कर देनेवाली।" **8:16** *या शायद, "मैंने देखा, लोग न दिन में सोते हैं न रात में।"

थी। 2 सब लोगों का एक ही अंजाम होता है,[1] फिर चाहे वे नेक हों या दुष्ट,[2] अच्छे और पवित्र हों या अपवित्र, बलिदान चढ़ानेवाले हों या बलिदान न चढ़ानेवाले। अच्छे इंसान और पापी इंसान दोनों की एक ही दशा होती है। बिना सोचे-समझे शपथ खानेवाले का और सोच-समझकर शपथ खानेवाले का भी वही हाल होता है। **3** दुनिया में* होनेवाली यह बात बहुत दुख देती है कि सब इंसानों का एक ही अंजाम होता है,[3] इसलिए उनके दिल में बुराई भरी रहती है। ज़िंदगी-भर उनके दिल में पागलपन छाया रहता है और फिर वे मर जाते हैं।#

4 जब तक एक इंसान ज़िंदा है, तब तक उसके लिए उम्मीद है क्योंकि एक ज़िंदा कुत्ता मरे हुए शेर से अच्छा है।[4] 5 जो ज़िंदा हैं वे जानते हैं कि वे मरेंगे,[5] लेकिन मरे हुए कुछ नहीं जानते।[6] और न ही उन्हें आगे कोई इनाम* मिलता है क्योंकि उन्हें और याद नहीं किया जाता।[7] 6 उनका प्यार, उनकी नफरत, उनकी जलन मिट चुकी है और दुनिया में* जो कुछ किया जाता है उसमें अब उनका कोई हाथ नहीं।[8]

7 जा! मगन होकर अपना खाना खा और खुशी-खुशी दाख-मदिरा पी[9] क्योंकि सच्चा परमेश्वर तेरे कामों से खुश है।[10] 8 तेरे कपड़े हमेशा सफेद रहें* और अपने सिर पर तेल मलना मत भूल।[11] 9 अपनी प्यारी पत्नी के साथ अपनी छोटी-सी* ज़िंदगी का मज़ा ले।[12] हाँ, जो छोटी-सी* ज़िंदगी परमेश्वर ने तुझे दी है उसमें ऐसा ही कर क्योंकि जीवन में तेरा यही हिस्सा है और सूरज के नीचे तेरी कड़ी मेहनत का यही इनाम है।[1] **10** तू जो भी करे उसे जी-जान से कर क्योंकि कब्र* में जहाँ तू जानेवाला है वहाँ न कोई काम है, न सोच-विचार, न ज्ञान, न ही बुद्धि।[2]

11 मैंने दुनिया में* यह भी देखा है कि न तो सबसे तेज़ दौड़नेवाला दौड़ में हमेशा जीतता है, न वीर योद्धा लड़ाई में हमेशा जीतता है,[3] न बुद्धिमान के पास हमेशा खाने को होता है, न अक्लमंद के पास हमेशा दौलत होती है[4] और न ही ज्ञानी हमेशा कामयाब होता है।[5] क्योंकि मुसीबत की घड़ी किसी पर भी आ सकती है और हादसा किसी के साथ भी हो सकता है। 12 कोई इंसान नहीं जानता कि उसका समय कब आएगा।[6] जैसे मछली अचानक जाल में जा फँसती है और परिंदा फंदे में, वैसे ही इंसान पर अचानक विपत्ति* का समय आ पड़ता है और वह उसमें फँस जाता है।

13 मैंने सूरज के नीचे बुद्धि के बारे में एक और बात गौर की और उसने मुझ पर गहरी छाप छोड़ी। मैंने देखा: 14 एक छोटा-सा शहर था जिसमें बहुत कम आदमी रहते थे। एक ताकतवर राजा उस शहर के खिलाफ आया और उसने चारों तरफ से उसकी घेराबंदी की। 15 शहर में एक गरीब मगर बुद्धिमान आदमी था और उसने अपनी बुद्धि से पूरे शहर को बचा लिया। मगर उस गरीब को सब भूल गए।[7] 16 तब मैंने अपने आपसे कहा, 'बुद्धि ताकत से कहीं अच्छी है,[8] फिर भी एक गरीब की बुद्धि को तुच्छ समझा

9:3, 6, 11 *शा., "सूरज के नीचे।" **9:3** #शा., "और इसके बाद वे मरे हुओं में जा मिलते हैं।" **9:5** *या "मज़दूरी।" **9:8** *यानी उजले कपड़े, जो मातम की नहीं बल्कि खुशी की निशानी थे। **9:9** *या "व्यर्थ।"

9:10 *या "शीओल।" शब्दावली देखें। **9:12** *या "मुसीबत।"

अध्य. 9
1 सभ 5:15
2 सभ 8:10
3 अय 3:17-19, सभ 2:15
4 यश 38:19
5 उत 3:19, रोम 5:12
6 भज 88:10, भज 115:17, भज 146:4, यश 38:18, यूह 11:11
7 अय 7:9, 10, सभ 2:16
8 सभ 9:10
9 व्य 12:7, भज 104:15, सभ 2:24
10 व्य 16:15, प्रेष 14:17
11 दान 10:2, 3
12 नीत 5:18

दूसरा कॉल.
1 सभ 5:18
2 भज 115:17, भज 146:3, 4, यश 38:18
3 1शम 17:50, भज 33:16
4 सभ 2:15
5 2शम 17:23
6 सभ 8:8, याकू 4:13, 14
7 सभ 9:11
8 नीत 21:22, नीत 24:5, सभ 7:12, 19, सभ 9:18

जाता है और कोई उसकी बात नहीं
मानता।’[1]
17 मूर्खों पर राज करनेवाले की चीख
सुनने से अच्छा है, बुद्धिमान की सुनना जो
अपनी बात शांति से कहता है।
18 बुद्धि, युद्ध के हथियारों से अच्छी
है। लेकिन अच्छे कामों को बिगाड़ने के
लिए एक ही गुनहगार काफी होता है।[2]
10 जैसे मरी हुई मक्खियाँ खुशबूदार
तेल* को सड़ा देती हैं, बदबूदार
बना देती हैं, वैसे ही ज़रा-सी बेवकूफी
एक इज़्ज़तदार और समझदार इंसान का
नाम खराब कर देती है।[3]
2 बुद्धिमान का दिल उसे सही राह
पर ले चलता है, लेकिन मूर्ख का दिल
उसे बुरी राह पर ले जाता है।[4] 3 मूर्ख
चाहे जो भी राह ले, उसमें समझ ही नहीं
होती[5] और वह सबको जता देता है कि
वह मूर्ख है।[6]
4 अगर कभी राजा का गुस्सा तुझ
पर भड़के, तो अपनी जगह मत छोड़ना[7]
क्योंकि शांत रहने से बड़े-बड़े पाप रोके
जा सकते हैं।[8]
5 दुनिया में* मैंने यह होते देखा जो
बड़े दुख की बात है और इस तरह
की गलती अधिकार रखनेवाले करते हैं:[9]
6 मूर्ख को ऊँची-ऊँची पदवी दी जाती है
जबकि काबिल* इंसान छोटे ओहदे पर
ही रह जाता है।
7 मैंने देखा है कि नौकर घोड़े पर
सवार होते हैं जबकि हाकिम नौकर-
चाकरों की तरह पैदल चलते हैं।[10]
8 जो गड्ढा खोदता है वह गड्ढे में
गिर सकता है[11] और जो पत्थर की
दीवार तोड़ता है उसे साँप डस सकता है।
9 जो खदान में पत्थर काटता है उसे
पत्थर से चोट लग सकती है और जो
लकड़ी चीरता है उसे लकड़ी से चोट लग
सकती है।*
10 अगर कुल्हाड़ी की धार घिस
चुकी है और उसे तेज़ न किया जाए,
तो चलानेवाले को बहुत ज़ोर लगाना
पड़ेगा। मगर बुद्धि से काम लेने पर काम-
याबी मिलती है।
11 साँप को वश में करने से पहले
अगर वह सपेरे को काट ले, तो सपेरा*
होने का क्या फायदा?
12 बुद्धिमान की बातें मन मोह लेती
हैं,[1] मगर मूर्ख के होंठ उसे बरबाद कर
देते हैं।[2] 13 मूर्ख मूर्खता की बातों से
शुरूआत करता है[3] और पागलपन की
बातों से अंत करता है, जिससे मुसी-
बत खड़ी हो जाती है। 14 फिर भी वह
बोलने से बाज़ नहीं आता।[4]
इंसान नहीं जानता कि आगे क्या होगा
और कौन उसे बता सकता है कि उसके
जाने के बाद क्या होगा?[5]
15 मूर्ख की मेहनत उसे थका देती है
क्योंकि उसे यह तक नहीं पता कि शहर
जाने का रास्ता कौन-सा है।
16 उस देश का क्या होगा जिसका
राजा एक लड़का ही है[6] और जिसके
हाकिम सुबह से दावतें उड़ाते हैं!
17 मगर उस देश का कितना भला होगा
जिसका राजा शाही घराने से है। और
जिसके हाकिम समय पर खाते-पीते हैं,
वह भी धुत्त होने के लिए नहीं बल्कि
ताकत पाने के लिए।[7]
18 बहुत आलस करने से छत धँसती
जाती है और हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहने
से घर चूने लगता है।[8]

अध्य. 9
1 मर 6:3; 1कुर 2:8
2 यह 22:20; 1कुर 5:6; इब्र 12:15

अध्य. 10
3 गि 20:10, 12; 2शम 12:9-11
4 नीत 14:8; नीत 17:16
5 नीत 10:23
6 नीत 13:16; नीत 18:7
7 सभ 8:2, 3
8 1शम 25:23, 24; नीत 25:15
9 1शम 26:21; 1रा 12:13, 14
10 नीत 30:21-23
11 नीत 26:27

दूसरा कॉल.
1 1रा 10:6, 8; भज 37:30; लूक 4:22; इफ 4:29
2 भज 64:2, 8; नीत 10:14,21; नीत 14:3
3 1शम 25:10, 11
4 नीत 10:19; नीत 15:2
5 नीत 27:1; सभ 6:12; याकू 4:13, 14
6 2इत 13:7; 2इत 36:9
7 नीत 31:4, 5
8 नीत 21:25; नीत 24:33, 34

10:1 *शा., “इत्र बनानेवाले के तेल।” **10:5** *शा., “सूरज के नीचे।” **10:6** *शा., “अमीर।”

10:9 *या शायद, “उसे सावधानी बरतनी चाहिए।” **10:11** *शा., “मंत्र पढ़नेवाला।”

19 रोटी* चेहरे पर हँसी ले आती है और दाख-मदिरा ज़िंदगी में रस भर देती है।[1] मगर पैसा हर ज़रूरत पूरी कर सकता है।[2]

20 अपने मन में* भी राजा को मत कोसना#[3] और न अपने कमरे में जब तू अकेला हो, किसी दौलतमंद को कोसना। क्या पता कोई चिड़िया वह बात उन तक पहुँचा दे या कोई उड़नेवाला जीव उनके सामने तेरी बात दोहरा दे।

11 अपनी रोटी नदी में डाल दे[4] और बहुत दिनों बाद वह तुझे दोबारा मिलेगी।[5] 2 जो तेरे पास है उसमें से कुछ, सात लोगों में बल्कि आठ लोगों में बाँट दे[6] क्योंकि तू नहीं जानता कि धरती पर क्या मुसीबत आनेवाली है।

3 अगर बादल पानी से भरे हों तो वे धरती पर बरसेंगे ही। और पेड़ चाहे उत्तर में गिरे या दक्षिण में, वह जहाँ गिरेगा वहीं पड़ा रहेगा।

4 जो हवा का रुख देखता है वह बीज नहीं बोएगा और जो बादलों को ताकता है वह फसल नहीं काटेगा।[7]

5 जैसे तू यह नहीं जानता कि माँ के पेट में बच्चे की हड्डियाँ कैसे बनती हैं,*[8] वैसे ही तू सच्चे परमेश्वर का काम नहीं जानता जो सबकुछ करता है।[9]

6 सुबह अपना बीज बो और शाम तक अपना हाथ मत रोक[10] क्योंकि तू नहीं जानता कौन-सा बीज उगेगा, यहाँ वाला या वहाँ वाला, या फिर दोनों उगेंगे।

7 उजाला अच्छा लगता है और सूरज की रौशनी आँखों को सुख देती है। 8 अगर एक इंसान कई साल जीए, तो उसे हर दिन का मज़ा लेना चाहिए।[1] मगर उसे याद रखना चाहिए कि जब विपत्ति के दिन आएँगे, तो वे लंबे समय तक चलेंगे। और आनेवाले वे दिन व्यर्थ हैं।[2]

9 हे नौजवान, अपनी जवानी में खुशियाँ मना और जवानी के दिनों में तेरा दिल खुश रहे। अपने दिल की सुन और तेरी आँखें तुझे जिधर ले जाएँ, उधर जा। मगर जान ले कि सच्चा परमेश्वर तेरे सभी कामों का तुझसे हिसाब लेगा।*[3] 10 इसलिए अपने दिल से दुख देनेवाली बातें निकाल फेंक और अपने शरीर से नुकसान पहुँचानेवाली बातें दूर कर। क्योंकि लड़कपन और जवानी दोनों व्यर्थ हैं।[4]

12 इसलिए अपनी जवानी के दिनों में अपने महान सृष्टिकर्ता को याद रख,[5] इससे पहले कि विपत्ति के दिन और वे साल आएँ[6] जब तू कहे: "मैं ज़िंदगी से ऊब गया हूँ"; 2 इससे पहले कि सूरज, चाँद और तारों की रौशनी बुझ जाए[7] और मूसलाधार बारिश के बाद* बादल फिर घिर आएँ; 3 इससे पहले कि घर के पहरेदार काँपने लगें, हट्टे-कट्टे आदमी सीधे न खड़े रह सकें, चक्की पीसनेवाली औरतें कम हो जाएँ और पीसना बंद कर दें और खिड़की से झाँकनेवाली औरतों के सामने अँधेरा छा जाए;[8] 4 इससे पहले कि सड़क की तरफ खुलनेवाले दरवाज़े बंद हो जाएँ, चक्की की आवाज़ धीमी पड़ जाए,

---

10:19 *या "खाना।" **10:20** *या शायद, "अपने बिस्तर पर।" #या "को शाप मत देना।" **11:5** *इब्रानी में यहाँ बताया गया है कि एक अजन्मे बच्चे की हड्डियों में किस तरह जीवन-शक्ति या परमेश्वर की पवित्र शक्ति काम करती है।

11:9 *या "तेरा न्याय करेगा।" **12:2** *या शायद, "के साथ।"

अध्य. 10
1 भज 104:15, सभ 9:7
2 सभ 7:12
3 निर्ग 22:28

अध्य. 11
4 नीत 22:9
5 व्य 15:10, 11; नीत 19:17; लूक 14:13, 14; इब्र 6:10
6 भज 37:21; लूक 6:38; 2कुर 9:7; 1ती 6:18
7 नीत 20:4
8 भज 139:15
9 अय 26:14; भज 40:5; सभ 8:17; रोम 11:33
10 सभ 9:10; 2कुर 9:6; कुल 3:23

दूसरा कॉल.
1 सभ 5:18; सभ 8:15
2 सभ 12:1
3 सभ 3:17; सभ 12:14; रोम 2:6
4 भज 25:7; 2ती 2:22

अध्य. 12
5 भज 71:17; भज 148:7, 12; लूक 2:48, 49; 2ती 3:15
6 भज 90:10
7 1शम 4:15
8 उत 48:10

चिड़िया के चहकने से नींद खुल जाए,
बेटियों के गाने का स्वर मंद पड़ने
लगे,[1] 5 ऊँचाई से डर लगने लगे
और सड़क पर चलने का खतरा सताने
लगे। इससे पहले कि बादाम के पेड़
पर फूल खिलें,[2] टिड्डा घिसटते हुए चले,
कबरा फट जाए* और इंसान अपने
सदा के घर की तरफ जाए[3] और मातम
मनानेवाले सड़कों पर घूमें;[4] 6 इससे
पहले कि चाँदी का तार टूट जाए,
सोने का कटोरा फूट जाए, सोते के पास
रखा घड़ा चूर-चूर हो जाए और कुएँ
पर लगी चरखी टूट जाए। 7 तब मिट्टी
जिस ज़मीन से आयी थी, वापस उसी
में मिल जाएगी।[5] और जो जीवन-शक्ति
सच्चे परमेश्वर ने दी थी, वह उसके पास
लौट जाएगी।[6]

8 उपदेशक[7] कहता है, "व्यर्थ है!
सबकुछ व्यर्थ है!"[8]

9 उपदेशक ने न सिर्फ बुद्धि हासिल
की बल्कि वह जो बातें जानता था, उन्हें
वह दूसरों को लगातार सिखाता रहा।[9]

12:5 *या "भूख बढ़ानेवाला फल किसी
काम न आए।"

अध्य. 12
1 2शम 19:34, 35
2 नीत 16:31
3 अय 30:23
सभ 9:10
4 उत 50:7, 10
5 उत 3:19
भज 146:4
6 उत 2:7
अय 27:3
अय 34:14, 15
भज 104:29
यश 42:5
7 1रा 8:1
8 सभ 1:2, 14
9 1रा 10:1, 3
1रा 10:6, 8

दूसरा कॉल.
1 1रा 4:29, 32
नीत 1:1
2 नीत 16:24
नीत 25:11
3 प्रेष 2:37
इब्र 4:12
4 सभ 1:18
5 अय 28:28
भज 111:10
नीत 1:7
6 1यूह 5:3
7 व्य 6:1, 2
व्य 10:12
8 भज 62:12
सभ 11:9
मत 12:36, 37
प्रेष 17:31
2कुर 5:10
1ती 5:24

यही नहीं, उसने कई नीतिवचनों को
तैयार करने के लिए* गहराई से सोचा
और काफी खोजबीन की।[1] 10 उप-
देशक ने मनभावने शब्द[2] ढूँढ़ने और
सच्चाई की बातें सही-सही लिखने में
बहुत मेहनत की।

11 बुद्धिमानों की बातें अंकुश की
तरह हैं[3] और उनकी कहावतें मज़बूती
से ठोंकी गयी कीलों जैसी हैं। क्योंकि ये
एक ही चरवाहे की तरफ से हैं। 12 हे
मेरे बेटे, इन बातों के अलावा अगर तुझे
कोई और बात बतायी जाए तो खबरदार
रहना। क्योंकि किताबों के लिखे जाने
का कोई अंत नहीं और इन्हें बहुत ज़्यादा
पढ़ना इंसान को थका देता है।[4]

13 सारी बातें सुनी गयीं और अंत में
निचोड़ यह है: सच्चे परमेश्वर का डर
मान*[5] और उसकी आज्ञाओं पर चल,[6]
यही इंसान का फर्ज़ है।[7] 14 क्योंकि
सच्चा परमेश्वर सब कामों को परखेगा
कि वे अच्छे हैं या बुरे, उन कामों को भी
जो औरों से छिपे हुए हैं।[8]

12:9 *या "को क्रम से बिठाने के लिए।"
12:13 *या "का गहरा आदर कर।"

श्रेष्ठगीत

सारांश

राजा सुलैमान की छावनी
में शूलेम्मिन लड़की (1:1–3:5)

1 गीतों में सबसे सुंदर गीत (1)
जवान लड़की (2-7)
यरूशलेम की बेटियाँ (8)
राजा (9-11)
'हम तेरे लिए सोने के गहने बनवाएँगे' (11)
जवान लड़की (12-14)
"मेरा साजन महकते गंधरस की पोटली
जैसा है" (13)
चरवाहा (15)
'मेरी सजनी, तू खूबसूरत है'

जवान लड़की (16, 17)
"मेरे साजन, तू भी सुंदर है" (16)

2 जवान लड़की (1)
'मैं जंगली फूल हूँ'
चरवाहा (2)
'मेरी सजनी सोसन का फूल है'
जवान लड़की (3-14)
'जब तक प्यार खुद न जागे, उसे मत जगाओ' (7)
चरवाहे की बातों का हवाला (10ख-14)
"मेरी सुंदरी, चल, मेरे साथ चल!" (10ख, 13)
जवान लड़की के भाई (15)
'जा, लोमड़ियों को पकड़'
जवान लड़की (16, 17)
"मेरा साजन मेरा है और मैं उसकी हूँ" (16)

3 जवान लड़की (1-5)
"मैं अपने प्यार को याद करने लगी" (1)

शूलेम्मिन लड़की यरूशलेम में (3:6–8:4)

3 सिय्योन की बेटियाँ (6-11)
सुलैमान के कारवें का बखान

4 चरवाहा (1-5)
'मेरी सजनी, तू खूबसूरत है' (1)
जवान लड़की (6)
चरवाहा (7-16क)
"मेरी दुल्हन, तूने मेरा दिल चुरा लिया" (9)
जवान लड़की (16ख)

5 चरवाहा (1क)
यरूशलेम की औरतें (1ख)
"प्यार में मदहोश हो जाओ"
जवान लड़की (2-8)
अपना सपना बताती है
यरूशलेम की बेटियाँ (9)
"तेरे साजन में ऐसी क्या बात है जो दूसरों में नहीं?"
जवान लड़की (10-16)
"दस हज़ार आदमियों में भी वह सबसे अलग दिखता है" (10)

6 यरूशलेम की बेटियाँ (1)
जवान लड़की (2, 3)
"मेरा साजन मेरा है और मैं अपने साजन की हूँ" (3)
राजा (4-10)
'तू तिरसा जैसी सुंदर है' (4)
औरतों की बातें (10)
जवान लड़की (11, 12)
राजा (और बाकी लोग) (13क)
जवान लड़की (13ख)
राजा (और बाकी लोग) (13ग)

7 राजा (1-9क)
'मेरी जान, तू मन मोह लेनेवाली है' (6)
जवान लड़की (9ख-13)
"मैं बस अपने साजन की हूँ और वह भी मेरे लिए तड़पता है" (10)

8 जवान लड़की (1-4)
"काश! तू मेरे भाई जैसा होता" (1)

शूलेम्मिन लड़की लौट आयी, वह वफादार निकली (8:5-14)

8 जवान लड़की के भाई (5क)
'यह कौन है जो अपने साजन की बाँहों में बाहें डाली है?'
जवान लड़की (5ख-7)
'प्यार में मौत की तरह ताकत है' (6)
जवान लड़की के भाई (8, 9)
"अगर वह एक दीवार होगी, . . . लेकिन अगर वह एक दरवाज़ा होगी, . . ." (9)
जवान लड़की (10-12)
"मैं एक दीवार हूँ" (10)
चरवाहा (13)
'मैं तेरी आवाज़ सुनना चाहता हूँ'
जवान लड़की (14)
'चिकारे की तरह फुर्ती कर'

1 गीतों में सबसे सुंदर गीत, जिसे सुलैमान ने लिखा।[1]

2 "अपने होंठों से मुझे चूम ले,
क्योंकि तेरा प्यार* दाख-मदिरा से भी अच्छा है।[2]
3 तेरे इत्र की महक कितनी मीठी लगती है,[3]
तेरा नाम खुशबूदार तेल जैसा है[4]
जो सिर पर उँडेला गया है,
तभी तो लड़कियाँ तुझ पर फिदा हैं।
4 राजा मुझे अपने अंदरवाले कमरे में ले आया है!
मुझे यहाँ से ले जा,* हम कहीं दूर भाग चलेंगे,
साथ मिलकर खुशियाँ मनाएँगे,
तेरे प्यार# की बातें करेंगे,△ वह प्यार जो दाख-मदिरा से भी अच्छा है।
तभी तो वे⊠ तुझ पर फिदा हैं।
5 हे यरूशलेम की बेटियो,
मैं केदार के तंबुओं[5] की तरह साँवली* हूँ,
पर सुलैमान के तंबू के कपड़े[6] की तरह सलोनी हूँ।
6 मेरे साँवलेपन को यूँ घूर-घूर के न देखो,
सूरज ने मुझे झुलसा दिया है।
दरअसल मेरे भाई मुझसे नाराज़ थे,
उन्होंने मुझे अंगूरों के बाग की रखवाली का काम दिया था,
इसलिए मैं अपने बाग का ध्यान नहीं रख पायी।
7 ओ मेरे सनम, मुझे बता,
तू अपनी भेड़-बकरियाँ कहाँ चराने जाता है?[1]
भरी दोपहरी में उन्हें कहाँ बिठाता है?
बता ताकि मैं तेरे साथियों के झुंड के बीच,
मातम का ओढ़ना पहने भटकती न फिरूँ।"
8 "ऐ लड़कियों में सबसे खूबसूरत लड़की,
तू उसे ढूँढ़ना चाहती है तो जा,
उसके झुंड के पैरों के निशान के पीछे-पीछे जा
और चरवाहों के तंबू के पास अपनी नन्हीं बकरियाँ चरा।"
9 "ऐ मेरी जान, तेरी तारीफ में मैं क्या कहूँ!
तू उस* सुंदर घोड़ी जैसी है,
जो फिरौन के रथ की शान बढ़ाती है।[2]
10 तेरे गाल गहनों में* कितने सुंदर दिखते हैं
और तेरा गला मोतियों की माला में क्या खूब लगता है!
11 हम तेरे लिए सोने के गहने,*
चाँदी से जड़े गहने बनवाएँगे।"
12 "राजा अपनी मेज़ के सामने बैठा है
और मेरे इत्र*[3] की खुशबू मेरे सनम को बुला रही है।
13 मेरा साजन महकते गंधरस की पोटली जैसा है,[4]
जो रात-भर मेरी छाती से लिपटी रहती है।

अध्य. 1
1 1रा 4:29, 32
2 श्रेष 4:10
3 नीत 27:9; सभ 9:8; श्रेष 5:5
4 सभ 7:1
5 भज 120:5; यहे 27:21
6 निर्ग 36:14

दूसरा कॉल.
1 श्रेष 6:3
2 1रा 10:28; 2इत 1:16, 17; श्रेष 6:4
3 श्रेष 4:13, 14
4 निर्ग 30:23, 25; एस 2:12; भज 45:8; श्रेष 4:6; श्रेष 5:13

1:2 *या "प्यार जताना।" **1:4** *शा., "मुझे खींच ले।" #या "प्यार जताने।" △या "की तारीफ करेंगे।" ⊠यानी लड़कियाँ। **1:5** *शा., "काली।"

1:9 *या "मेरी।" **1:10** *या शायद, "लटों के बीच।" **1:11** *या "का ताज।" **1:12** *शा., "जटामाँसी।"

14 मेरा साजन मेरे लिए मेंहदी के गुच्छे
जैसा है,[1]
एनगदी[2] के अंगूरों के बाग में लगी
मेंहदी जैसा।"
15 "ओ मेरी सजनी, तू कितनी खूब-
सूरत है,
तेरी खूबसूरती का जवाब नहीं!
फाख्ते जैसी तेरी आँखें कितनी
प्यारी हैं।"[3]
16 "ओ मेरे साजन, तू भी सुंदर*
है और तेरा साथ मुझे प्यारा
लगता है।[4]
देख, ये हरे-हरे पत्ते हमारी सेज हैं,
17 सनोवर के ये पेड़ हमारे घर* की
छत हैं
और देवदार के पेड़ उसकी
बल्लियाँ हैं।

2 मैं मैदानों में उगनेवाला जंगली
फूल* हूँ,
हाँ, घाटियों का एक मामूली
फूल# हूँ।"[5]
2 "सब लड़कियों में मेरी सजनी
ऐसी है,
जैसे काँटों में खिला सोसन# का
फूल।"
3 "जवान लड़कों में मेरा साजन
ऐसा है,
जैसे जंगल के पेड़ों में सेब का पेड़।
उसकी छाँव में कितना सुख
मिलता है,
उसके फल कितने रसीले हैं।
4 वह मुझे दावतवाले घर में ले आया
और उसने मुझ पर प्यार का झंडा
फहराया।

1:16 *या "सजीला।" **1:17** *या "शान-
दार घर।" **2:1** *शा., "केसर।" **2:1, 2**
#या "लिली।"

अध्य. 1
1 श्रेष 4:13
2 यह 15:20, 62
1शम 23:29
2इत 20:2
3 श्रेष 4:1
श्रेष 5:2
4 श्रेष 5:10

अध्य. 2
5 श्रेष 2:16

दूसरा कॉल.
1 1शम 30:11,
12
2 श्रेष 8:3
3 2शम 2:18
4 श्रेष 3:5
श्रेष 8:4
5 श्रेष 2:17
श्रेष 8:14
6 श्रेष 6:11
7 यश 18:5
यूह 15:2
8 यिर्म 8:7
9 यश 28:4
नहू 3:12

5 मुझे किशमिश की टिकिया दो कि मैं
तरो-ताज़ा हो जाऊँ,[1]
सेब खिलाओ कि मुझे ताकत मिले,
क्योंकि मैं उसके प्यार में दीवानी हो
गयी हूँ।
6 उसका बायाँ हाथ मेरे सिर के
नीचे है
और दाएँ हाथ से उसने मुझे बाँहों में
भर लिया है।[2]
7 हे यरूशलेम की बेटियो,
तुम्हें चिकारे[3] और मैदान की हिर-
नियों की कसम,
जब तक प्यार खुद मेरे अंदर न
जागे, तुम उसे जगाने की कोशिश
नहीं करोगी।[4]
8 मेरा साजन आ रहा है! मुझे उसकी
आवाज़ सुनायी दे रही है!
वह देखो, वह रहा!
कैसे पहाड़ों पर चढ़ता हुआ,
पहाड़ियों को फाँदता हुआ
चला आ रहा है!
9 मेरा साजन चिकारे जैसा, जवान
हिरन जैसा है।[5]
देखो, वह दीवार के पीछे खड़ा है,
खिड़की से झाँक रहा है,
झरोखे से ताक रहा है।
10 मेरा साजन मुझे बुला रहा है,
'ओ मेरी सजनी, मेरी सुंदरी,
चल, मेरे साथ चल!
11 देख, ठंड* का मौसम बीत गया,
बादल बरसकर चले गए।
12 चारों तरफ फूल खिले हैं,[6]
छँटाई का वक्त आ गया है,[7]
जगह-जगह फाख्ते का मधुर गीत
सुनायी दे रहा है।[8]
13 अंजीर की पहली फसल पक
चुकी है,[9]

2:11 *या "बरसात।"

अंगूर की बेलों पर फूल खिल
आए हैं,
पूरा समाँ महक रहा है।
ओ मेरी सजनी, मेरी सुंदरी,
चल, मेरे साथ चल!
14 ओ मेरी फाख्ता, चट्टानों में छिपी
मत रह,[1]
खड़ी चट्टानों की दरार से बाहर आ,
अपनी मीठी आवाज़ मुझे सुना,[2]
अपना खूबसूरत चेहरा दिखा।'"[3]
15 "जा, छोटी-छोटी लोमड़ियाँ पकड़,
कहीं वे हमारे अंगूरों के बाग तहस-
नहस न कर दें,
अभी-अभी तो उनमें फूल आए हैं।"
16 "मेरा साजन मेरा है और मैं
उसकी हूँ।[4]
वह मैदान में भेड़ें चरा रहा है[5] जहाँ
सोसन* के फूल खिले हैं।[6]
17 इससे पहले कि ठंडी-ठंडी हवा बहने
लगे और छाया गायब होने लगे,
लौट आ मेरे साजन, लौट आ।
हमारे बीच खड़े इन पहाड़ों* को
फाँदकर जल्दी आ,
चिकारे की तरह,[7] जवान हिरन की
तरह चला आ।[8]

3 रात में बिस्तर पर लेटे-लेटे,
मैं अपने प्यार को याद करने
लगी।[9]
मैं उसके लिए तड़प उठी, लेकिन
वह मेरे पास नहीं था।[10]
2 मैं जाकर उसे ढूँढ़ूँगी,
उसकी तलाश में गली-कूचे, चौराहे,
पूरा शहर छान मारूँगी।
मैंने अपने प्यार को बहुत ढूँढ़ा, पर
वह मुझे नहीं मिला।
3 रास्ते में मुझे शहर के पहरेदार मिले
जो गश्त लगा रहे थे।[1]
मैंने पूछा, 'क्या तुमने मेरे साजन
को कहीं देखा है?'
4 मैं उनसे थोड़ी ही दूर गयी थी
कि तभी वह मुझे मिल गया और मैं
उससे लिपट गयी।
मैंने उसे तब तक नहीं जाने दिया,
जब तक मैं उसे अपनी माँ के घर,
अपनी जन्म देनेवाली के कमरे* में
न ले आयी।[2]
5 हे यरूशलेम की बेटियो,
तुम्हें चिकारे और मैदान की हिर-
नियों की कसम,
जब तक प्यार खुद मेरे अंदर न
जागे, तुम उसे जगाने की कोशिश
नहीं करोगी।"[3]
6 "वीराने से धुएँ के खंभे जैसा यह
क्या आ रहा है?
क्या है यह जिससे गंधरस, लोबान
और व्यापारी की हर खुशबूदार
बुकनी की महक आ रही है?"[4]
7 "यह तो सुलैमान का आसन है!
देखो, इसराएल के योद्धाओं में से
60 वीर योद्धा उसके साथ चले
आ रहे हैं।[5]
8 सब-के-सब तलवार लिए हैं,
युद्ध की कला में माहिर हैं,
हरेक की कमर पर तलवार बँधी है
कि रात में किसी भी खतरे का
सामना कर सके।"
9 "यह राजा सुलैमान की पालकी है,
जो उसने लबानोन की लकड़ियों से
बनवायी है।[6]
10 इसके खंभे चाँदी के,
इसकी टेक सोने की है

2:16 *या "लिली।" 2:17 *या शायद, "पहाड़ों के दर्रों।" या "बेतेर के पहाड़ों।"

3:4 *या "अंदरवाले कमरे।"

अध्य. 2
1 श्रेष 5:2, यिर्म 48:28
2 श्रेष 8:13
3 श्रेष 1:5, श्रेष 6:10
4 श्रेष 7:10
5 श्रेष 1:7
6 श्रेष 2:1, श्रेष 6:3
7 2शम 2:18
8 श्रेष 2:9, श्रेष 8:14

अध्य. 3
9 श्रेष 1:7
10 श्रेष 5:6

दूसरा कॉल.
1 श्रेष 5:7
2 श्रेष 8:2
3 श्रेष 2:7, श्रेष 8:4
4 निर्ग 30:23, 24, निर्ग 30:34
5 1रा 9:22
6 1रा 5:8, 9

और इसकी गद्दी बैंजनी ऊन से
बनी है।
यरूशलेम की बेटियों ने बड़े प्यार से
इसे अंदर से सजाया है।"
11 "सिय्योन की बेटियो, जाओ!
जाकर राजा सुलैमान को देखो!
उसने वह ताज* पहना है,
जो उसकी माँ[1] ने उसकी शादी पर
बनवाया था,
हाँ, उस दिन जिस दिन राजा का
दिल बहुत खुश था।"

4 "ओ मेरी सजनी, तू कितनी
खूबसूरत है,
तेरी खूबसूरती का जवाब नहीं!
घूँघट से झाँकती तेरी आँखें फाख्ते
जैसी हैं।
तेरी ज़ुल्फें गिलाद के पहाड़ों
से उतरती बकरियों के झुंड
जैसी हैं।[2]
2 तेरे दाँत उन उजली भेड़ों के
समान हैं,
जिनका ऊन अभी-अभी कतरा
गया है
और जो नहाकर पानी से बाहर
आयी हैं।
सब-के-सब सीध में खड़े हैं, हरेक
का जोड़ीदार है,
उनमें से कोई भी छूटा नहीं है।
3 तेरे होंठ सुर्ख लाल धागे जैसे हैं,
तेरी बातें मन को मीठी लगती हैं,
घूँघट में तेरे गालों* की चमक,
अनार की फाँक जैसी है।
4 तेरी गरदन[3] दाविद की सुंदर
मीनार जैसी है,[4]
जो पत्थरों के रद्दे लगाकर खड़ी की
गयी है,
उस पर हज़ार ढालें, हाँ, योद्धाओं
की गोल-गोल ढालें सजी हैं।[1]
5 तेरे स्तन हिरन के दो बच्चों जैसे हैं,
हाँ, चिकारे के जुड़वाँ बच्चों जैसे,[2]
जो सोसन* के फूलों के बीच
चरते हैं।"
6 "इससे पहले कि ठंडी-ठंडी हवा
बहने लगे और छाया गायब
होने लगे,
मैं गंधरस के पहाड़ की ओर,
लोबान की पहाड़ी की ओर चली
जाऊँगी।"[3]
7 "ओ मेरी सजनी, तू सिर से पाँव
तक खूबसूरत है,[4]
तुझमें कोई दोष नहीं।
8 आ मेरी दुल्हन, मेरे साथ चल,
हम लबानोन से कहीं दूर चले
जाएँ।[5]
हम अमाना* की चोटी से उतरकर,
सनीर से, हाँ, हेरमोन की ऊँचाई
से[6] उतरकर,
शेरों की माँद और चीतों के पहाड़ों
से दूर चले जाएँ।
9 हे मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तूने मेरा
दिल चुरा लिया,[7]
तेरी एक ही नज़र ने इस दिल को
दीवाना बना दिया।
तेरे गले के हार की एक झलक ही
मेरी धड़कनें तेज़ कर देती है।
10 हे मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तेरा
प्यार* लाजवाब है,[8]
तेरा प्यार* दाख-मदिरा से ज़्यादा
चाहने लायक है,[9]
तेरे इत्र की महक हर किस्म की
खुशबू से बढ़कर है।[10]

3:11 *या "फूलों का ताज।" 4:3 *या "कनपटियों।"

4:5 *या "लिली।" 4:8 *या "पूर्वी लबानोन पर्वतमाला।" 4:10 *या "प्यार जताना।"

अध्य. 3
1 2शम 12:24; नीत 4:3

अध्य. 4
2 गि 32:1; व्य 3:12; श्रेष 6:5-7
3 श्रेष 1:10
4 नहे 3:25; श्रेष 7:4

दूसरा कॉल.
1 2शम 8:7; 2रा 11:10
2 श्रेष 7:3
3 सभ 2:5
4 श्रेष 4:1
5 व्य 3:25
6 व्य 3:8, 9; भज 133:3
7 नीत 5:18, 19
8 श्रेष 7:12
9 श्रेष 1:2, 4
10 एस 2:12; श्रेष 1:12

11 हे मेरी दुल्हन, तेरे होंठों से छत्ते का
शहद टपकता है,[1]
तेरी जीभ के नीचे दूध और शहद
रहता है।[2]
तेरे कपड़ों की खुशबू लबानोन की
खुशबू जैसी है।
12 मेरी बहन एक बंद बगिया जैसी है,
मेरी दुल्हन, बंद बगिया और ढके
हुए सोते जैसी है।
13 तेरी डालियाँ* अनार का बाग हैं,
जहाँ अच्छे-अच्छे फल लगे हैं,
जहाँ मेंहदी और जटामाँसी के पौधे,
14 हाँ, जटामाँसी,[3] केसर, वच,*[4]
दालचीनी,[5]
लोबान के अलग-अलग पेड़, गंध-
रस, अगर[6]
और बढ़िया किस्म के खुशबूदार
पौधे लगे हैं।
15 तू बगिया का झरना है, ताज़े पानी
का कुआँ है,
लबानोन से बहनेवाली धारा है।[7]
16 हे उत्तर की हवा उठ!
हे दक्षिण की हवा आ!
हौले-हौले मेरी बगिया से होकर जा
कि इसकी महक चारों तरफ फैल
जाए।"
"मेरा साजन अपनी बगिया में आए
और बढ़िया-बढ़िया फल खाए।"

5 "मेरी बहन, मेरी दुल्हन,
देख, मैं अपनी बगिया में आ
गया हूँ।[8]
मैंने अपना गंधरस और अपने
खुशबूदार पौधे ले लिए हैं,[9]
मधुमक्खी का छत्ता और उसका
शहद खा लिया है,
अपनी दाख-मदिरा और दूध पी
लिया है।"[1]
"ऐ प्यारे दोस्तो, जी-भरकर खाओ-
पीओ!
एक-दूसरे के प्यार में मदहोश हो
जाओ।"[2]
2 "मैं सो रही थी पर मेरा मन जाग
रहा था।[3]
तभी मेरे साजन के दस्तक देने की
आवाज़ आयी!
'ओ मेरी बहन, मेरी सजनी,
मेरी फाख्ता, मेरी बेदाग महबूबा,
मेरे लिए दरवाज़ा खोल!
ओस से मेरा सिर भीगा हुआ है,
रात की नमी से मेरी लटें तर हैं।'[4]
3 मैं कपड़े बदल चुकी हूँ,
अब इन्हें फिर कैसे पहनूँ?
मैं अपने पैर धो चुकी हूँ,
अब इन्हें फिर मैला कैसे करूँ?
4 मेरे साजन ने दरवाज़े के छेद से
अपना हाथ वापस खींच लिया।
मेरा दिल उससे मिलने के लिए
तड़प उठा!
5 मैं अपने साजन के लिए दरवाज़ा
खोलने उठी,
मेरे हाथों से गंधरस टपक रहा था,
मेरी उँगलियाँ गंधरस के तेल से
तर थीं,
और दरवाज़े की चिटकनी उससे
चिपचिपी हो गयी।
6 मैंने अपने साजन के लिए दरवाज़ा
खोला,
पर वह वहाँ नहीं था, वह जा
चुका था,
उसके जाने का मुझे बहुत दुख
हुआ।*

अध्य. 4
1 नीत 16:24
2 श्रेष 5:1
3 यूह 12:3
4 यश 43:24
5 नीत 7:17
6 भज 45:8
7 यिर्म 18:14

अध्य. 5
8 श्रेष 4:16
9 श्रेष 4:13, 14

दूसरा कॉल.
1 श्रेष 4:11
2 श्रेष 1:2
3 श्रेष 3:1
4 लूक 2:8

4:13 *या शायद, "त्वचा।" **4:14** *एक खुशबूदार नरकट।

5:6 *या शायद, "जब वह बोला, तो मेरी जान ही निकल गयी।"

मैंने उसे बहुत ढूँढ़ा, पर वह न
मिला,[1]
आवाज़ लगायी, पर कोई जवाब
नहीं आया।
7 रास्ते में मुझे शहर के पहरेदार मिले
जो गश्त लगा रहे थे।
उन्होंने मुझे मारा, मुझे घायल
किया,
शहरपनाह के उन पहरेदारों ने मेरा
ओढ़ना छीन लिया।
8 हे यरूशलेम की बेटियो, कसम
खाओ,
अगर मेरा साजन तुम्हें कहीं मिले,
तो तुम उससे कहोगी
कि मैं उसके प्यार में दीवानी हूँ।"
9 "ऐ लड़कियों में सबसे खूबसूरत
लड़की,
बता, तेरे साजन में ऐसी क्या बात
है जो दूसरों में नहीं?
उसमें ऐसा क्या है जो तू हमें यह
शपथ खिला रही है?"
10 "मेरा साजन सुंदर-सजीला है,
उसका रंग गुलाबी है,
दस हज़ार आदमियों में भी वह
सबसे अलग दिखता है।
11 उसका सिर सोने जैसा है, खरे सोने
जैसा,
उसकी लटें खजूर की डाली की
तरह लहराती हैं,*
उसके बालों का रंग कौवे जैसा
काला है।
12 उसकी आँखें ऐसी हैं,
जैसे नदी किनारे बैठी फाख्ता दूध में
नहा रही हो
और मानो तालाब* के किनारे
बैठी हो।

अध्य. 5
1 श्रेष 3:1, 3

दूसरा कॉल.
1 श्रेष 6:2
2 श्रेष 1:13
3 भज 92:12
4 श्रेष 2:3

अध्य. 6
5 श्रेष 1:7
श्रेष 2:16
6 श्रेष 7:10

13 उसके गाल खुशबूदार पौधों की
सेज हैं,[1]
सुगंधित जड़ी-बूटियों के ढेर की
तरह महकते हैं।
उसके होंठ सोसन* के फूल हैं,
उनसे गंधरस का तेल टपकता है।[2]
14 उसकी गोल-गोल उँगलियाँ सोने
जैसी हैं,
जिनके छोर पर करकेटक रत्न
जड़े हैं।
पेट चमचमाते हाथी-दाँत जैसा है
जिसमें नीलम जड़े हैं।
15 उसके पैर संगमरमर के खंभे
जैसे हैं, जिन्हें बढ़िया सोने की
चौकियों में बिठाया गया है।
उसका रूप लबानोन-सा
दिलकश है,
उसका कद ऊँचे-ऊँचे देवदारों
जैसा है।[3]
16 उसके होंठों में गज़ब की मिठास है,
उसका हर अंदाज़ मन मोह
लेता है।[4]
यरूशलेम की बेटियो, मेरा साजन
ऐसा ही है,
हाँ, ऐसा है मेरा महबूब।"

6 "ऐ लड़कियों में सबसे खूबसूरत
लड़की,
तेरा साजन कहाँ गया?
वह किस रास्ते गया है?
चलो, हम मिलकर उसे ढूँढ़ें।"
2 "मेरा साजन नीचे अपनी बगिया में,
खुशबूदार पौधों की सेज की तरफ
गया है।
वहाँ वह अपनी भेड़ें चरा रहा है
और सोसन* के फूल चुन रहा है।[5]
3 मेरा साजन मेरा है और मैं अपने
साजन की हूँ।[6]

5:11 *या शायद, "खजूर के गुच्छे की तरह हैं।" 5:12 *या शायद, "फव्वारे।"

5:13; 6:2 *या "लिली।"

वह मैदान में भेड़ें चरा रहा है जहाँ
सोसन* के फूल खिले हैं।"[1]
4 "ऐ मेरी जान,[2] तू तिरसा*[3]
जैसी सुंदर
और यरूशलेम जैसी प्यारी है,[4]
तू झंडे फहराती हुई सेना जैसी है,
जिसे देखकर किसी के भी होश
उड़ जाएँ।[5]
5 मुझ पर से अपनी नज़र[6] हटा ले,
यह मुझे बेकरार कर देती है।
तेरी ज़ुल्फें गिलाद के पहाड़ों
से उतरती बकरियों के झुंड
जैसी हैं।[7]
6 तेरे दाँत उन उजली भेड़ों के
समान हैं,
जो नहाकर पानी से बाहर
आयी हैं।
सब-के-सब सीध में खड़े हैं, हरेक
का जोड़ीदार है,
उनमें से कोई भी छूटा नहीं है।
7 घूँघट में तेरे गालों* की चमक,
अनार की फाँक जैसी है।
8 60 रानियों, 80 उप-पत्नियों
और बेहिसाब जवान लड़कियों में,[8]
9 वही मेरी फाख्ता,[9] मेरी बेदाग
महबूबा है,
वह अपनी माँ की सबसे प्यारी
बिटिया,
अपनी जन्म देनेवाली की
लाडली है।
उसे देखकर लड़कियाँ उसे धन्य
कहती हैं,
रानियाँ और उप-पत्नियाँ उसकी
तारीफ करती हैं।
10 'यह कौन है जो सुबह की छटा
बिखेर रही है,
पूनम के चाँद-सी खिल रही है,
सूरज की तरह उजली है?
यह कौन है जो झंडे फहराती हुई
सेना जैसी है,
जिसे देखकर किसी के भी होश उड़
जाएँ?'"[1]
11 "मैं नीचे फलों के बाग में गयी[2]
कि देखूँ, घाटी के पेड़ों पर फूल-पत्ते
आए हैं या नहीं,
अंगूर की बेलों पर कोपलें
और अनार के पेड़ों पर फूल खिले
हैं या नहीं।
12 इन्हें देखने की मेरी ख्वाहिश,
कब मुझे अपने भले लोगों के शाही
रथ की ओर ले गयी,
मुझे पता ही नहीं चला।"
13 "हे शूलेम्मिन, लौट आ!
लौट आ कि हम तुझे जी-भरकर
देख सकें!"
"भला इस शूलेम्मिन में तुम्हें ऐसा
क्या नज़र आया?"[3]
"वह ऐसी है जैसे महनैम* का
नाच हो।"

7 "ऐ भली लड़की,
जूतियों में तेरे ये पाँव कितने
हसीन हैं!
तेरी सुडौल जाँघें गहनों जैसी
सुंदर हैं,
मानो किसी कारीगर ने इन्हें
तराशा हो।
2 तेरी नाभि गोल कटोरे जैसी है,
यह हमेशा मसालेवाली दाख-मदिरा
से छलकती रहे।
तेरा पेट ऐसा है मानो गेहूँ का ढेर
लगा हो,
जिसके इर्द-गिर्द सोसन* के फूल
बिछे हों।

6:3; 7:2 *या "लिली।" 6:4 *या "मन-भावनी नगरी।" 6:7 *या "कनपटियों।"

6:13 *या "दो डेरों।"

अध्य. 6
1 श्रेष 2:16
2 श्रेष 1:9
3 1रा 14:17
1रा 15:33
4 भज 48:2
5 श्रेष 6:10
6 श्रेष 1:15
श्रेष 4:9
श्रेष 7:4
7 श्रेष 4:1-3
8 1रा 11:1
9 श्रेष 2:14

दूसरा कॉल.
1 श्रेष 6:4
2 सभ 2:5
3 श्रेष 1:6

3 तेरे स्तन हिरन के दो बच्चों जैसे हैं,
हाँ, चिकारे के जुड़वाँ बच्चों जैसे।[1]
4 तेरी गरदन[2] हाथी-दाँत से बनी
मीनार है,[3]
तेरी आँखें[4] हेशबोन[5] की झील
जैसी हैं,
जो बत-रब्बीम के फाटक के
पास है।
तेरी नाक लबानोन की मीनार
जैसी है,
जो दमिश्‍क की ओर मुँह किए है।
5 तेरे सिर की शोभा करमेल जैसी,[6]
तेरी* लटें[7] बैंजनी ऊन जैसी हैं,[8]
तेरी लहराती ज़ुल्फों पर राजा
फिदा है।#
6 ऐ मेरी जान, तू कितनी सुंदर है,
मन मोह लेनेवाली है,
तू मुझे बहुत खुशी देती है!
7 तेरी कद-काठी खजूर के पेड़
जैसी है
और तेरे स्तन खजूर के
गुच्छे जैसे।[9]
8 मैंने कहा, 'मैं खजूर के पेड़ पर
चढ़ूँगा
और उसके फल तोड़ूँगा।'
तेरे स्तन अंगूर के गुच्छों की तरह
बने रहें,
तेरी साँसें सेब की तरह महकती रहें
9 और तेरा मुँह बढ़िया दाख-मदिरा से
छलकता रहे।"
"यह मेरे साजन के होंठों को
छूती हुई,
उसके गले से आहिस्ता-आहिस्ता
नीचे उतरे।
10 मैं बस अपने साजन की हूँ[10]
और वह भी मेरे लिए तड़पता है।

7:5 *शा., "तेरे सिर की।" #या "में राजा कैद हो गया है।"

अध्य. 7
1 श्रेष 4:5
2 श्रेष 1:10
3 श्रेष 4:4
4 श्रेष 4:1
5 गि 21:25; यह 21:8, 39
6 यश 35:2
7 श्रेष 6:5
8 एस 8:15
9 श्रेष 7:3; श्रेष 8:10
10 श्रेष 2:16; श्रेष 6:3

दूसरा कॉल.
1 श्रेष 1:14
2 श्रेष 2:13
3 श्रेष 6:11
4 श्रेष 1:2; श्रेष 4:10
5 उत 30:14
6 श्रेष 4:16

अध्य. 8
7 श्रेष 1:2
8 श्रेष 3:4
9 श्रेष 2:6

11 ओ मेरे साजन, आ जा,
आ, हम बाहर मैदानों में चलें,
मेंहदी की झाड़ियों[1] के बीच बैठें।
12 सवेरे-सवेरे अंगूरों के बाग में चलें,
देखें कि उसकी बेलों पर कोपलें
आयी हैं या नहीं,
उस पर फूल खिले हैं[2] या नहीं,
अनार की डालियों पर कलियाँ फूटी
हैं या नहीं।[3]
वहाँ मैं तुझको अपना प्यार
जताऊँगी।[4]
13 दूदाफल[5] से समाँ महक रहा है,
हमारे दरवाज़े पर हर किस्म के
बढ़िया-बढ़िया फल हैं।[6]
ओ मेरे साजन, मैंने तेरे लिए ताज़े
और सुखाए गए* फल सँभालकर
रखे हैं।

8 काश! तू मेरे भाई जैसा होता,
काश! तूने मेरी ही माँ का दूध
पीया होता,
फिर तो बाहर मिलने पर मैं तुझे
चूम लेती[7]
और कोई मुझे नीची नज़रों से न
देखता।
2 मैं तुझे अपनी माँ के घर ले जाती,[8]
उसके घर, जिसने मुझे शिक्षा दी।
मैं तुझे मसालेवाली दाख-मदिरा
देती,
अनार का ताज़ा रस पिलाती।
3 उसका बायाँ हाथ मेरे सिर के नीचे
होता
और दाएँ हाथ से वह मुझे बाँहों में
भर लेता।[9]
4 हे यरूशलेम की बेटियो, कसम
खाओ,
जब तक प्यार खुद मेरे अंदर न

7:13 *शा., "पुराने।"

जागे, तुम उसे जगाने की कोशिश
नहीं करोगी।"[1]
5 "यह कौन है जो अपने साजन की
बाँहों में बाँहें डाले वीराने से चली
आ रही है?"
"सेब के पेड़ के नीचे मैंने तुझे
जगाया था,
उसी जगह जहाँ तेरी माँ को प्रसव-
पीड़ा उठी थी
और जहाँ उस पीड़ा में उसने तुझे
जन्म दिया था।
6 मुझे मुहर की तरह अपने दिल पर
लगा ले,
अपने बाज़ू पर मुझे मुहर कर ले।
क्योंकि प्यार में मौत की तरह
ज़बरदस्त ताकत होती है,[2]
सच्ची वफा* कब्र# की तरह किसी
के आगे नहीं झुकती।
इसकी लपटें धधकती आग की
लपटें हैं,
हाँ, याह△ की लपटें हैं।[3]
7 न उफनती लहरें प्यार को बुझा
सकती हैं,[4]
न नदियाँ इसे बहाकर ले जा
सकती हैं।[5]
अगर कोई अपनी सारी दौलत
देकर इसे खरीदना चाहे,
तो भी वह दौलत* ठुकरा दी
जाएगी।"
8 "हमारी एक छोटी बहन है,[6]
उसकी छाती अभी तक उभरी
नहीं है।
जिस दिन कोई उसका हाथ माँगने
आएगा,

8:6 *शा., "सच्ची भक्ति।" #या "शीओल।" शब्दावली देखें। △"याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। **8:7** *या शायद, "वह आदमी।"

अध्य. 8
1 श्रेष 2:7
श्रेष 3:5
2 यूह 15:13
इफ 5:25
प्रक 12:11
3 व्य 4:24
1यूह 4:8
4 1कुर 13:8, 13
5 रोम 8:38, 39
6 श्रेष 1:6

दूसरा कॉल.
1 सभ 2:4
2 श्रेष 1:6
श्रेष 6:11
3 श्रेष 2:14
4 श्रेष 2:9, 17

उस दिन हम अपनी बहन के लिए
क्या करेंगे?"
9 "अगर वह एक दीवार होगी,
तो हम उसकी मुँडेर को चाँदी से
सजाएँगे।
लेकिन अगर वह एक दरवाज़ा
होगी,
तो हम देवदार का तख्ता ठोंककर
उसे बंद कर देंगे।"
10 "मैं एक दीवार हूँ
और मेरे स्तन मीनारों के समान हैं।
इसलिए मेरा साजन देख सकता है
कि मुझे मन का सुकून है।
11 बाल-हमोन में सुलैमान का अंगूरों
का बाग है,[1]
जिसकी देखभाल का ज़िम्मा उसने
रखवालों को दिया है
और हर रखवाला फलों के लिए
उसे चाँदी के एक हज़ार टुकड़े
देता है।
12 ऐ सुलैमान, तेरे चाँदी के हज़ार
टुकड़े* तुझे मुबारक,
तेरे रखवालों को उनकी मेहनत के
दो सौ टुकड़े मुबारक,
पर मैं अपने अंगूरों के बाग से
खुश हूँ।"
13 "ऐ बागों में रहनेवाली,[2]
मेरे साथी तेरी आवाज़ सुनना
चाहते हैं,
मैं भी तेरी आवाज़ सुनना
चाहता हूँ।"[3]
14 "मेरे साजन, जल्दी आ,
चिकारे की तरह, जवान हिरन की
तरह फुर्ती कर,[4]
खुशबूदार पौधों के पहाड़ों को
फाँदते हुए चला आ।"

8:12 *शा., "तेरे हज़ार।"

यशायाह

सारांश

1 पिता और उसके बागी बेटे (1-9)
दिखावे की उपासना से यहोवा को नफरत (10-17)
'आओ हम मामला सुलझा लें' (18-20)
सिय्योन दोबारा विश्वासयोग्य नगरी बनेगी (21-31)

2 यहोवा का पर्वत ऊँचा किया जाएगा (1-5)
तलवारों को हल के फाल बनाएँगे (4)
यहोवा का दिन घमंडियों को नीचा करेगा (6-22)

3 यहूदा के अगुवे गुमराह करते हैं (1-15)
सिय्योन की बेटियों को मिलेगी सज़ा (16-26)

4 सात औरतों के लिए एक आदमी (1)
जो चीज़ यहोवा उगाएगा शानदार दिखेगी (2-6)

5 यहोवा के अंगूरों के बाग पर गीत (1-7)
यहोवा के बाग पर आनेवाली आफतें (8-24)
परमेश्वर का क्रोध भड़का (25-30)

6 दर्शन जिसमें यहोवा अपने मंदिर में है (1-4)
"यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है" (3)
यशायाह के होंठ शुद्ध किए गए (5-7)
यशायाह को भेजा गया (8-10)
"मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज!" (8)
"हे यहोवा, ऐसा कब तक रहेगा?" (11-13)

7 राजा आहाज के लिए संदेश (1-9)
शार-याशूब (3)
इम्मानुएल निशानी ठहरेगा (10-17)
विश्वासघात के अंजाम (18-25)

8 अश्शूर धावा बोलने आ रहा है (1-8)
महेर-शालाल-हाश-बज़ (1-4)
मत डरो—"परमेश्वर हमारे साथ है!" (9-17)
यशायाह और उसके बच्चे चिन्ह ठहरे (18)
कानून में ढूँढ़ो, दुष्ट स्वर्गदूतों से मत पूछो (19-22)

9 गलील देश में तेज़ रौशनी चमकी (1-7)
'शांति के शासक' का जन्म (6, 7)
इसराएल पर परमेश्वर का हाथ उठा (8-21)

10 इसराएल पर परमेश्वर का हाथ उठा (1-4)
अश्शूर—परमेश्वर के क्रोध की छड़ी (5-11)
अश्शूर को सुनायी सज़ा (12-19)
याकूब के बचे हुए लौटेंगे (20-27)
परमेश्वर अश्शूर को सज़ा देगा (28-34)

11 यिशै की टहनी नेकी से राज करेगी (1-10)
भेड़िया, मेम्ने के साथ बैठेगा (6)
पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से भर जाएगी (9)
बचे हुए लोगों की बहाली (11-16)

12 धन्यवाद का गीत (1-6)
"याह यहोवा मेरी ताकत है" (2)

13 बैबिलोन के खिलाफ संदेश (1-22)
यहोवा का दिन करीब है! (6)
मादी, बैबिलोन को हरा देंगे (17)
बैबिलोन फिर नहीं बसेगी (20)

14 इसराएल अपने देश में बसेगा (1, 2)
बैबिलोन के राजा पर कसा ताना (3-23)
चमकता तारा आसमान से गिरेगा (12)
यहोवा का हाथ अश्शूर को कुचल देगा (24-27)
पलिश्त के खिलाफ संदेश (28-32)

15 मोआब के खिलाफ संदेश (1-9)

16 मोआब को संदेश सुनाना जारी (1-14)

17 दमिश्क के खिलाफ संदेश (1-11)
राष्ट्रों को यहोवा फटकारेगा (12-14)

18 इथियोपिया के खिलाफ संदेश (1-7)

19 मिस्र के खिलाफ संदेश (1-15)
मिस्र यहोवा को जान जाएगा (16-25)
मिस्र में यहोवा के लिए एक वेदी (19)

20 मिस्र और इथियोपिया के खिलाफ निशानी (1-6)

21 समुद्री वीराने के खिलाफ संदेश (1-10)
पहरे की मीनार पर पहरा देना (8)
"बैबिलोन नगरी गिर पड़ी!" (9)
दूमा और रेगिस्तान के खिलाफ संदेश (11-17)
"पहरेदार! रात कब खत्म होगी?" (11)

22 दर्शन की घाटी के लिए संदेश (1-14)
प्रबंधक शेबना की जगह एल्याकीम चुना गया (15-25)
लाक्षणिक खूँटी (23-25)

23 सोर के खिलाफ संदेश (1-18)

24 यहोवा देश को खाली कर देगा (1-23)
यहोवा सिय्योन का राजा (23)

25 परमेश्वर के लोगों पर ढेरों आशीषें (1-12)
यहोवा की दावत में उम्दा दाख-मदिरा (6)
मौत नहीं रहेगी (8)

26 भरोसे और उद्धार का गीत (1-21)
याह यहोवा सदा कायम रहनेवाली चट्टान (4)
धरती के लोग नेकी सीखेंगे (9)
'तेरे जो मर गए हैं उठेंगे' (19)
अंदरवाले कमरे में जाकर छिप जाओ (20)

27 लिव्यातान को यहोवा ने मार डाला (1)
गीत जिसमें इसराएल अंगूरों का बाग है (2-13)

28 धिक्कार है एप्रैम के शराबियों पर! (1-6)
यहूदा के याजक और भविष्यवक्ता लड़खड़ाते हैं (7-13)
"मौत के साथ करार" (14-22)
सिय्योन में कीमती कोने का पत्थर (16)
यहोवा का अनोखा काम (21)
कैसे यहोवा बुद्धिमानी से सुधारता है (23-29)

29 धिक्कार है अरीएल पर! (1-16)
सिर्फ होंठों से आदर करना गलत है (13)
बहरे सुनेंगे; अंधे देखेंगे (17-24)

30 मिस्र की मदद बेकार है (1-7)
लोग भविष्यवक्ताओं का संदेश ठुकराते हैं (8-14)
भरोसा रखने से हिम्मत मिलेगी (15-17)
यहोवा ने अपने लोगों पर दया की (18-26)
यहोवा महान उपदेशक (20)
"राह यही है" (21)
यहोवा अश्शूर को सज़ा देगा (27-33)

31 सच्ची मदद परमेश्वर से, इंसानों से नहीं (1-9)
मिस्र के घोड़े हाड़-माँस के हैं (3)

32 राजा और हाकिम सच्चे न्याय से शासन करेंगे (1-8)
बेफिक्र औरतों को मिली चेतावनी (9-14)
पवित्र शक्ति उँडेले जाने पर आशीषें (15-20)

33 नेक जनों के लिए आशा और इंसाफ (1-24)
यहोवा न्यायी, कानून देनेवाला और राजा है (22)
कोई नहीं कहेगा, "मैं बीमार हूँ" (24)

34 यहोवा राष्ट्रों से बदला लेगा (1-4)
एदोम उजड़ जाएगा (5-17)

35 धरती फिर से सुंदर हो जाएगी (1-7)
अंधे देखेंगे; बहरे सुनेंगे (5)
छुड़ाए गए लोगों के लिए पवित्र मार्ग (8-10)

36 यहूदा पर सनहेरीब का हमला (1-3)
रबशाके यहोवा पर ताना कसता है (4-22)

37 हिजकियाह यशायाह के ज़रिए परमेश्वर से मदद माँगता है (1-7)
सनहेरीब यरूशलेम को धमकाता है (8-13)
हिजकियाह की प्रार्थना (14-20)
परमेश्वर का जवाब (21-35)
स्वर्गदूत ने 1,85,000 अश्शूरियों को मार डाला (36-38)

38 हिजकियाह की बीमारी; उसका ठीक होना (1-22)
धन्यवाद का गीत (10-20)

39 बैबिलोन से आए दूत (1-8)

40 परमेश्वर के लोगों को दिलासा (1-11)
वीराने में कोई पुकार रहा है (3-5)
परमेश्वर की महानता (12-31)
राष्ट्र, पानी की एक बूँद (15)

परमेश्‍वर “पृथ्वी के घेरे” पर विराजमान (22)
हर तारे को नाम से पुकारता है (26)
परमेश्‍वर कभी थकता नहीं (28)
यहोवा पर भरोसा रखने से नयी ताकत मिलती है (29-31)

41 जीत पानेवाला पूरब से उभरा (1-7)
इसराएल को परमेश्‍वर का सेवक चुनना (8-20)
‘मेरा दोस्त अब्राहम’ (8)
दूसरे ईश्‍वरों को दी चुनौती (21-29)

42 परमेश्‍वर का सेवक; उसका काम (1-9)
‘यहोवा मेरा नाम है’ (8)
यहोवा की तारीफ में नया गीत (10-17)
इसराएल अंधा और बहरा है (18-25)

43 यहोवा लोगों को दोबारा इकट्ठा करेगा (1-7)
देवताओं पर मुकदमा (8-13)
“तुम मेरे साक्षी हो” (10, 12)
बैबिलोन से रिहाई (14-21)
“हम एक-दूसरे से मुकदमा लड़ेंगे” (22-28)

44 परमेश्‍वर के चुने हुओं पर आशीषें (1-5)
यहोवा को छोड़ कोई परमेश्‍वर नहीं (6-8)
इंसान की बनायी मूरतें व्यर्थ (9-20)
यहोवा, इसराएल का छुड़ानेवाला (21-23)
कुसरू के हाथों बहाली (24-28)

45 बैबिलोन को जीतने के लिए कुसरू का अभिषेक (1-8)
मिट्टी कुम्हार से बहस नहीं कर सकती (9-13)
बाकी राष्ट्र इसराएल का आदर करेंगे (14-17)
सृष्टि और भविष्यवाणियाँ दिखाती हैं कि परमेश्‍वर भरोसेमंद है (18-25)
पृथ्वी को बसने के लिए रचा (18)

46 बैबिलोन के देवता; इसराएल का परमेश्‍वर (1-13)
यहोवा भविष्य की बातें बताता है (10)
पूरब से एक शिकारी पक्षी (11)

47 बैबिलोन का गिरना (1-15)
ज्योतिषियों का परदाफाश (13-15)

48 इसराएल को फटकारना; शुद्ध करना (1-11)
यहोवा बैबिलोन के खिलाफ उठेगा (12-16क)
परमेश्‍वर की शिक्षा फायदेमंद (16ख-19)
“बैबिलोन से निकल जाओ!” (20-22)

49 यहोवा के सेवक का काम (1-12)
राष्ट्रों के लिए रौशनी (6)
इसराएल को दिलासा (13-26)

50 इसराएल के पाप से आयी मुसीबतें (1-3)
यहोवा का आज्ञाकारी सेवक (4-11)
सीखनेवालों की ज़बान और कान (4)

51 सिय्योन फिर से अदन के बाग जैसी (1-8)
सिय्योन के बनानेवाले से मिला दिलासा (9-16)
यहोवा के क्रोध का प्याला (17-23)

52 जाग सिय्योन जाग! (1-12)
खुशखबरी लानेवालों के सुंदर पाँव (7)
सिय्योन के पहरेदारों ने जयजयकार की (8)
यहोवा के बरतन उठानेवाले शुद्ध हों (11)
यहोवा का सेवक महान किया जाएगा (13-15)
बिगड़ा हुआ रूप (14)

53 यहोवा के सेवक का दुख; उसकी मौत; उसे दफनाना (1-12)
उसे तुच्छ जाना; किनारा किया (3)
उसने बीमारी और दर्द ले लिया (4)
“भेड़ की तरह बलि होने के लिए” (7)
वह बहुतों का पाप उठा ले गया (12)

54 बाँझ सिय्योन के कई बेटे होंगे (1-17)
यहोवा, सिय्योन का पति (5)
सिय्योन के बेटे यहोवा के सिखाए हुए होंगे (13)
सिय्योन पर उठे हथियार नाकाम होंगे (17)

55 मुफ्त में खाने-पीने का न्यौता (1-5)
यहोवा और उसके भरोसेमंद वचन की खोज करो (6-13)
परमेश्‍वर की राहें इंसान की राहों से ऊँची (8, 9)
परमेश्‍वर का वचन ज़रूर पूरा होगा (10, 11)

---

1 यहूदा और यरूशलेम के बारे में यशायाह* का दर्शन।[1] आमोज के बेटे यशायाह ने यह दर्शन यहूदा के राजा उज्जियाह,[2] योताम,[3] आहाज[4] और हिजकियाह[5] के दिनों में देखा था।[6]

2 हे आकाश सुन, हे पृथ्वी कान
लगा![7]
यहोवा कहता है,
"जिन बेटों को मैंने पाल-पोसकर
बड़ा किया,[8]
वे मेरे ही खिलाफ हो गए।[9]

3 बैल अपने मालिक को पहचानता है
और गधा अपने मालिक की
चरनी को,
लेकिन इसराएल मुझे* नहीं पह-
चानता,[1]
मेरे अपने लोग समझ से काम नहीं
लेते।"

4 हे पापी राष्ट्र, धिक्कार है
तुझ पर![2]
हे बुरे काम से लदे हुए लोगो,
हे भ्रष्ट बच्चो और दुष्टों की टोली,
धिक्कार है तुम पर!

1:1 *मतलब "यहोवा उद्धार है।"

1:3 *या "अपने मालिक को।"

अध्य. 1
1 2इत 32:32
2 2इत 26:22 यश 6:1
3 2इत 27:1, 2
4 2इत 28:1
5 2इत 29:1, 2 2इत 32:20
6 मत 1:9
7 भज 50:4
8 व्य 1:31
9 व्य 4:25, 26 यहे 20:8

दूसरा कॉल.
1 हो 4:6
2 दान 9:11

तुमने यहोवा को छोड़ दिया है,[1]
इसराएल के पवित्र परमेश्‍वर का
अपमान किया है,
उससे मुँह फेर लिया है।
5 तुम बगावत करने से बाज़ नहीं
आते,
अब मैं तुम्हें और कहाँ मारूँ?[2]
तुम्हारा पूरा सिर घाव से भरा है
और दिल पूरी तरह बीमार है।[3]
6 सिर से पाँव तक ऐसी एक
भी जगह नहीं जहाँ तुम्हें चोट न
लगी हो।
जगह-जगह ज़ख्म, चोट और सड़े
हुए घाव हैं,
न तो उनका मवाद निकाला गया,*
न उन पर पट्टी बाँधी गयी
और न ही तेल लगाकर उन्हें नरम
किया गया।[4]
7 तुम्हारा देश उजाड़ दिया गया है,
तुम्हारे शहर जला दिए गए हैं,
परदेसी तुम्हारे सामने तुम्हारी फसल
खा रहे हैं।[5]
देश वीरान हो गया है जैसे दुश्‍मनों
ने इसे तबाह कर दिया हो।[6]
8 सिय्योन शहर को ऐसा छोड़ दिया
गया है मानो वह अंगूरों के बाग
का छप्पर,
खीरे के खेत में झोंपड़ी
और सेना से घिरा हुआ शहर हो।[7]
9 अगर सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा
ने हममें से कुछ को रहने न दिया
होता,
तो हम सदोम की तरह बन गए
होते,
हमारा हाल अमोरा जैसा हो गया
होता।[8]

10 हे सदोम के तानाशाहो,* यहोवा का
संदेश सुनो![1]
हे अमोरा के लोगो,[2] हमारे
परमेश्‍वर के कानून# पर
ध्यान दो!
11 यहोवा कहता है, "तुम्हारे ढेरों
बलिदान मेरे किस काम के?[3]
मेढ़ों की होम-बलि[4] और मोटे-ताज़े
जानवरों की चरबी[5] से मैं उकता
चुका हूँ,
अब मुझे तुम्हारे बैलों और भेड़-
बकरियों[6] के खून[7] से कोई खुशी
नहीं मिलती।
12 तुमसे किसने कहा कि मेरे सामने
आओ,[8]
मेरे आँगनों को यूँ रौंदो?[9]
13 तुम अनाज का अपना व्यर्थ चढ़ावा
लाना बंद करो!
तुम्हारा धूप जलाना मुझे घिनौना
लगता है।[10]
तुम नया चाँद[11] और सब्त
मनाते हो[12] और पवित्र सभाएँ
रखते हो।[13]
लेकिन मुझसे यह बरदाश्‍त
नहीं होता कि खास सभाएँ रखने
के साथ-साथ तुम जादू-टोना
करो।[14]
14 मुझे तुम्हारे नए चाँद के दिनों और
त्योहारों से नफरत है,
ये मुझे बोझ लगने लगे हैं, इन्हें
ढोते-ढोते मैं थक गया हूँ।
15 जब तुम मेरे आगे हाथ फैलाओगे,
तो मैं अपनी आँखें फेर लूँगा।[15]
तुम चाहे जितनी भी प्रार्थना
कर लो,[16]

1:6 *शा., "घाव दबाए गए।"

1:10 *या "के शासको।" #या "की शिक्षा।"

अध्य. 1
1 व्य 31:16; यिर्म 2:5
2 यिर्म 5:3
3 नहे 9:34, 35; दान 9:8
4 लूक 10:34
5 व्य 28:33, 63
6 2रा 18:11
7 2रा 18:13, 14; यश 8:7, 8
8 उत 19:24, 25; व्य 29:22, 23; रोम 9:29

दूसरा कॉल.
1 उत 13:13; यश 3:8, 9
2 व्य 32:32; यहू 7
3 1शम 15:22; नीत 15:8; हो 6:6; मी 6:7
4 निर्ग 29:38
5 लैव 3:14-16
6 लैव 16:5
7 लैव 4:18, 21; लैव 17:11
8 व्य 16:16
9 सभ 5:1; मला 1:8
10 नीत 21:27; यहे 8:11, 12
11 गि 28:11
12 निर्ग 31:13
13 लैव 23:2
14 लैव 19:26
15 नीत 15:29
16 मत 6:7

मैं तुम्हारी एक न सुनूँगा,[1]
क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से रंगे हैं।[2]
16 खुद को धोओ और शुद्ध करो,[3]
मेरे सामने से अपने दुष्ट काम दूर करो,
बुराई करना बंद करो।[4]
17 भलाई करना सीखो, न्याय करो,[5]
ज़ुल्म करनेवालों को सुधारो,
अनाथों* के हक के लिए लड़ो
और विधवाओं को इंसाफ दिलाओ।"[6]
18 यहोवा कहता है, "आओ हम आपस में मामला सुलझा लें,[7]
चाहे तुम्हारे पाप सुर्ख लाल रंग के हों,
तो भी वे बर्फ के समान सफेद हो जाएँगे।[8]
चाहे वे गहरे लाल रंग के हों,
तो भी वे ऊन की तरह उजले बन जाएँगे।
19 अगर तुम मेरी बात मानने को राज़ी हो,
तो तुम देश की बढ़िया-बढ़िया चीज़ें खाओगे।[9]
20 लेकिन अगर तुम नहीं मानोगे और मेरे खिलाफ हो जाओगे,
तो तुम तलवार की भेंट चढ़ जाओगे।[10]
यह बात यहोवा ने कही है।"
21 देखो, यह विश्वासयोग्य नगरी[11] कैसी वेश्या बन गयी है![12]
जिस नगरी में न्याय का बोलबाला था,[13]
नेकी का बसेरा था,[14]
अब वहाँ हत्यारे रहते हैं।[15]
22 तुम्हारी चाँदी, धातु का मैल बन गयी है,[1]
तुम्हारी शराब* में पानी मिल गया है।
23 तुम्हारे हाकिम अड़ियल हैं और चोरों से मिले हुए हैं,[2]
सब-के-सब घूस खाते हैं, तोहफे के पीछे भागते हैं,[3]
अनाथों को न्याय नहीं देते
और विधवाओं के मुकदमे की सुनवाई नहीं करते।[4]
24 इसलिए सच्चा प्रभु, सेनाओं का परमेश्वर यहोवा,
इसराएल का शक्तिशाली परमेश्वर ऐलान करता है,
"अब मैं अपने दुश्मनों को खदेड़ूँगा,
अपने बैरियों से बदला लूँगा।[5]
25 मैं तुम्हारे खिलाफ अपना हाथ उठाऊँगा
और जैसे चाँदी को पिघलाकर उसका मैल सज्जी* से दूर किया जाता है,
वैसे ही मैं तुम्हारी सारी अशुद्धता दूर करूँगा।[6]
26 फिर मैं पहले की तरह,
तुम पर न्यायी और सलाहकार ठहराऊँगा।[7]
इसके बाद तुम नेक नगरी
और विश्वासयोग्य नगरी कहलाओगे।[8]
27 सिय्योन न्याय के दम पर छुड़ायी जाएगी[9]
और उसके लौटनेवाले लोग नेकी से छुड़ाए जाएँगे।
28 मगर बागियों और पापियों का एक-साथ नाश हो जाएगा[10]

1:17 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।"

1:22 *या "गेहूँ से बनी शराब।" 1:25 *एक तरह का साबुन।

अध्य. 1
1 नीत 28:9 यश 59:2 विल 3:44
2 मी 3:2-4
3 यिर्म 4:14
4 यश 55:7
5 मी 6:8
6 व्य 10:18 यिर्म 22:3
7 मी 6:2 याकू 4:8
8 भज 51:7 यश 44:22 मी 7:19
9 व्य 28:1, 2 योए 2:19
10 लैव 26:33 नीत 29:1
11 भज 48:2
12 यिर्म 2:20
13 2शम 8:15 1रा 3:28
14 2इत 19:9, 10
15 मी 3:1-3 लूक 13:34

दूसरा कॉल.
1 यहे 22:18
2 यश 3:14 मी 3:9-11
3 निर्ग 23:8
4 निर्ग 22:22 यिर्म 5:28
5 यहे 5:13
6 यिर्म 6:29, 30 यिर्म 9:7 मला 3:3
7 गि 12:3 1शम 12:1, 3 यश 32:1 यहे 34:23
8 यश 62:1
9 यिर्म 31:11
10 यहे 20:38

और यहोवा को छोड़ देनेवालों का
अंत हो जाएगा।[1]
29 जो ऊँचे-ऊँचे पेड़ तुम्हें प्यारे थे,
उनकी वजह से तुम्हें शर्मिंदा होना
पड़ेगा।[2]
अपने चुने हुए बगीचों* की वजह
से तुम्हें बेइज़्ज़त होना पड़ेगा।[3]
30 तुम उस बड़े पेड़ जैसे बन जाओगे
जिसके पत्ते मुरझा रहे हैं,[4]
उस बगीचे के समान हो जाओगे
जिसमें पानी नहीं।
31 ताकतवर आदमी अलसी के धागे
जैसा बन जाएगा
और उसके काम चिंगारी जैसे हो
जाएँगे,
दोनों एक साथ जलेंगे,
उन्हें बुझानेवाला कोई न होगा।"

2 आमोज के बेटे यशायाह ने यहूदा
और यरूशलेम के बारे में यह दर्शन
देखा:[5]

2 आखिरी दिनों में,
यहोवा के भवन का पर्वत,
सब पहाड़ों के ऊपर बुलंद किया
जाएगा[6]
और सभी पहाड़ियों से ऊँचा किया
जाएगा।
राष्ट्रों के लोग धारा के समान
उसकी ओर आएँगे,[7]
3 देश-देश के लोग आएँगे और
कहेंगे,
"आओ हम यहोवा के पर्वत
पर चढ़ें,
याकूब के परमेश्वर के भवन की
ओर जाएँ।[8]
वह हमें अपने मार्ग सिखाएगा
और हम उसकी राहों पर चलेंगे।"[1]
क्योंकि सिय्योन से कानून* दिया
जाएगा
और यरूशलेम से यहोवा का
वचन।[2]
4 वह राष्ट्रों को अपने फैसले
सुनाएगा,
देश-देश के लोगों के मामले सुल-
झाएगा।
वे अपनी तलवारें पीटकर हल के
फाल
और अपने भालों को हँसिया
बनाएँगे।[3]
एक देश दूसरे देश पर फिर तल-
वार नहीं चलाएगा
और न लोग फिर कभी युद्ध करना
सीखेंगे।[4]
5 हे याकूब के घराने,
आ, हम यहोवा की रौशनी में
चलें।[5]
6 हे परमेश्वर, तूने अपने लोगों
को, याकूब के घराने को त्याग
दिया है,[6]
क्योंकि उन्होंने पूरब देश की कई
बातें अपना ली हैं,
वे पलिश्तियों की तरह जादू-टोना
करने लगे हैं[7]
और उनका देश परदेसियों* से भर
गया है।
7 उनके पास ढेर सारा सोना-चाँदी है,
उन्हें दौलत की कोई कमी नहीं।
उनके देश में ढेर सारे घोड़े हैं,
उन्हें रथों की कोई कमी नहीं।[8]
8 उनका देश निकम्मी मूरतों से भरा
पड़ा है,[9]

1:29 *ज़ाहिर है कि ये पेड़ और बगीचे मूर्तिपूजा से जुड़े हैं।

2:3 *या "शिक्षा।" **2:6** *शा., "परदेसियों के बच्चों।"

अध्या. 1
1 1रा 9:6, 7
2 यहे 6:13
3 यश 65:3; यश 66:17
4 यिर्म 17:5, 6

अध्या. 2
5 यश 1:1
6 जक 8:3
7 भज 72:1, 8; भज 86:9; मी 4:1-3; हाग 2:7; प्रेष 10:34, 35
8 जक 8:23

दूसरा कॉल.
1 यश 54:13
2 यश 51:4
3 भज 46:9
4 भज 72:7; यश 60:18; मत 26:52
5 यश 60:19, 20
6 व्य 31:16, 17
7 व्य 18:10
8 व्य 17:15, 16
9 2इत 28:1, 2; 2इत 33:1, 7

वे अपने ही हाथ की कारीगरी के
आगे झुकते हैं
हाँ, उन मूरतों के आगे जिन्हें उनकी
उँगलियों ने ढाला है।
9 इस तरह वे खुद को नीचा करते हैं,
अपनी बेइज़्ज़ती कराते हैं,
तू उन्हें माफ मत करना!
10 जब यहोवा पूरे वैभव के साथ
आएगा[1]
और अपना खौफ फैलाएगा,
तो चट्टानों में चले जाना, खुद को
धूल में छिपा लेना।
11 तब घमंड से चढ़ी आँखें नीची की
जाएँगी,
इंसान का गुरूर तोड़ दिया जाएगा,
उस दिन सिर्फ यहोवा को ऊँचा
किया जाएगा,
12 क्योंकि वह सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा का दिन होगा।[2]
वह दिन घमंडियों और अहं-
कारियों पर,
रुतबेदार और मामूली इंसानों पर,
सब लोगों पर आ पड़ेगा।[3]
13 लबानोन के ऊँचे-ऊँचे देवदारों पर
और बाशान के बाँज के पेड़ों पर,
14 आसमान छूते पहाड़ों पर
और ऊँची-ऊँची पहाड़ियों पर,
15 बड़ी-बड़ी मीनारों और मज़बूत
शहरपनाहों पर,
16 तरशीश के सभी जहाज़ों पर[4]
और सुंदर-सुंदर नाव पर वह दिन
आ पड़ेगा।
17 तब इंसान की सारी हेकड़ी खत्म हो
जाएगी,
उसका घमंड चूर-चूर कर दिया
जाएगा,
उस दिन सिर्फ यहोवा को ऊँचा
किया जाएगा।

अध्य. 2
1 निर्ग 20:18
2 सप 1:4, 7
3 यश 66:16
4 1रा 10:22
यहे 27:25

दूसरा कॉल.
1 यश 27:9
2 यश 2:10
2थि 1:9
प्रक 6:15
3 यश 30:22
यश 31:7

अध्य. 3
4 लैव 26:26
व्य 28:49, 51
यिर्म 37:21
यहे 4:16

18 निकम्मे देवताओं का नामो-निशान
मिटा दिया जाएगा।[1]
19 जब यहोवा पूरे वैभव के साथ
आएगा
और अपना खौफ फैलाएगा,
जब वह धरती को आतंक से कँप-
कँपाएगा,
तब लोग गुफाओं और चट्टानों में
चले जाएँगे,
गड्ढे खोदकर उसमें घुस जाएँगे।[2]
20 उस दिन लोग अपने सोने-चाँदी की
निकम्मी मूरतों को,
जो उन्होंने दंडवत करने के लिए
बनायी थीं,
छछूँदरों और चमगादड़ों के आगे
फेंक देंगे[3]
21 और छिपने के लिए चट्टानों
की खोह
और दरारों में घुस जाएँगे,
क्योंकि यहोवा पूरे वैभव के साथ
आएगा
और अपना खौफ फैलाएगा,
वह धरती को आतंक से कँप-
कँपाएगा।
22 इसलिए भलाई इसी में है कि अदना
इंसान पर भरोसा रखना बंद
करो,
जो बस नथनों की साँस है।
इंसान है ही क्या जो उस पर ध्यान
दिया जाए?

3 देख! सच्चा प्रभु, सेनाओं का पर-
मेश्वर यहोवा,
यरूशलेम और यहूदा से उनका हर
सहारा छीन लेगा।
उनकी रोटी-पानी ले लेगा,[4]
2 उनके शक्तिशाली आदमियों और
योद्धाओं को,

न्यायियों और भविष्यवक्ताओं
को,[1] ज्योतिषियों और मुखि-
याओं को,
3 50 आदमियों के प्रधानों को,[2]
ऊँचे अधिकारियों और सलाह-
कारों को,
माहिर जादूगरों और सपेरों[3] को
उनसे छीन लेगा।
4 मैं लड़कों को उन पर हाकिम ठह-
राऊँगा
और उन पर ऐसा शासक
राज करेगा जो डाँवाँडोल होता
रहता है।
5 लोग एक-दूसरे पर ज़्यादती करेंगे,
हर कोई अपने साथी पर ज़ुल्म
ढाएगा,[4]
लड़का बड़े-बूढ़ों पर हाथ उठाएगा
और नीच इंसान इज़्ज़तदार का
अपमान करेगा।[5]
6 हर कोई अपने पिता के घर में
अपने भाई को पकड़कर कहेगा,
"तेरे पास तो चोगा है, आ हमारा
राजा बन जा,
खंडहरों के इस ढेर पर राज कर।"
7 लेकिन वह नहीं मानेगा और
कहेगा,
"मैं तुम्हारी मरहम-पट्टी* करनेवाला
नहीं बन सकता,
मुझे खुद खाने-पहनने के लाले
पड़े हैं!
मुझे नहीं बनना किसी का राजा।"
8 यरूशलेम डगमगा गया है, यहूदा
गिर गया है,
क्योंकि उनकी बातें और उनके काम
यहोवा के खिलाफ हैं,
महिमावान परमेश्वर* के सामने
उन्होंने उसकी आज्ञा तोड़ी है।[1]
9 उनके चेहरे के भाव उनके खिलाफ
गवाही देते हैं,
वे सदोम के लोगों की तरह अपने
पापों का ढिंढोरा पीटते हैं,[2]
इन्हें छिपाने की कोशिश नहीं
करते।
धिक्कार है उन पर! वे खुद पर बर-
बादी जो ला रहे हैं।
10 नेक जनों से कह कि उनका भला
होगा,
उन्हें अपने कामों का अच्छा फल
मिलेगा।[3]
11 मगर दुष्टों का बुरा हाल होगा,
उन पर विपत्ति आ पड़ेगी,
क्योंकि जैसा उन्होंने दूसरों के साथ
किया, उनके साथ भी वैसा ही
होगा।
12 जहाँ तक मेरे लोगों की बात है,
उनसे काम करानेवाले बहुत
बेरहम हैं,
मेरे लोगों पर औरतें राज करती हैं।
हे मेरे लोगो, तुम्हारे अगुवे तुम्हें
गुमराह कर रहे हैं,
उन्होंने तुम्हारे लिए सही
राह पहचानना मुश्किल कर
दिया है।[4]
13 यहोवा देश-देश के लोगों से
हिसाब लेने
और अपना फैसला सुनाने के लिए
खड़ा हो गया है।
14 यहोवा अपने लोगों के मुखियाओं
और हाकिमों को सज़ा सुनाएगा।
वह उनसे कहेगा,

अध्य. 3
1 यहे 13:9
2 निर्ग 18:21
3 व्य 18:10, 12; यश 8:19
4 यिर्म 9:4, 5; मी 3:2, 3
5 लैव 19:32

दूसरा कॉल.
1 2इत 33:1, 6; यहे 9:9
2 उत 18:20; यश 1:10; यहू 7
3 सभ 8:12; सप 2:3
4 यिर्म 5:31; हब 1:4

3:7 * या "तुम्हें चंगा।"

3:8 * शा., "महिमा से भरी उसकी आँखों।"

“तुमने अंगूरों का बाग जलाकर
राख कर दिया
और गरीबों को लूटकर अपने घर
भरे।”[1]
15 सारे जहान का मालिक, सेनाओं का
परमेश्‍वर यहोवा यह भी कहेगा,
“मेरे लोगों को कुचलने की तुम्हारी
हिम्मत कैसे हुई!
गरीबों का मुँह धूल में रगड़ने की
तुमने जुर्रत कैसे की!”[2]
16 यहोवा कहता है, “सिय्योन की
बेटियों में कितना घमंड है,
वे सिर उठाए चलती हैं, आँखें मट-
काती हैं,
पायल से छम-छम करती हुईं,
ठुमक-ठुमक कर चलती हैं।
17 इसलिए यहोवा सिय्योन की बेटियों
का सिर पपड़ीदार घाव से भर
देगा,
यहोवा उन्हें गंजा कर देगा।[3]
18 उस दिन यहोवा उनके सिंगार की ये
चीज़ें छीन लेगा:
उनकी पाजेब, माथे की लड़ी,
चंद्रहार,[4]
19 झुमके, कंगन, घूँघट,
20 ओढ़नी, पायल, सीनाबंद,
इत्रदान, तावीज़,*
21 अँगूठी, नथ,
22 कीमती कपड़े, कोटी, शाल,
बटुआ,
23 हाथ का आईना,[5] मलमल की
कुरती,*
पगड़ी और घूँघट।
24 बलसाँ के तेल[6] की खुशबू की
जगह उनसे बदबू आएगी,
उनकी कमर पर कमरबंद की जगह
रस्सी बँधी होगी,
सजे-सँवरे बालों की जगह गंजापन
होगा,[1]
कीमती कपड़ों की जगह वे टाट
पहनेंगी,[2]
खूबसूरती की जगह उन पर गुलामी
का निशान होगा।
25 हे सिय्योन, तेरे आदमी तलवार की
भेंट चढ़ जाएँगे,
तेरे योद्धा युद्ध में मारे जाएँगे।[3]
26 सिय्योन के फाटक रोएँगे और
मातम मनाएँगे,[4]
यह नगरी लुटी-पिटी, ज़मीन पर
बैठी रहेगी।”[5]

4 उस दिन सात औरतें एक आदमी को
पकड़कर[6] कहेंगी,
“हम अपने खाने-पीने का इंतज़ाम
खुद कर लेंगे,
अपने लिए कपड़े-लत्ते भी जुटा
लेंगे,
बस हमें अपनाकर अपना नाम दे दे
ताकि हमारी बदनामी* दूर हो
जाए।”[7]

2 उस दिन हर वह चीज़ जो यहोवा
उगाएगा, सुंदर और शानदार दिखेगी।
और देश की उपज इसराएल के बचे
हुओं के लिए उनकी शोभा और गौरव
ठहरेगी।[8] 3 सिय्योन के बचे हुए लोग
और यरूशलेम के बचे-खुचे लोग, हाँ,
वे सब जिनके नाम यरूशलेम में रहने के
लिए लिखे गए थे,[9] पवित्र कहलाएँगे।
4 यहोवा यरूशलेम पर अपना क्रोध
दिखाएगा और उसका न्याय करेगा। इस
तरह वह सिय्योन की बेटियों की गंदगी*

3:20 *या “सुंदर सीपी का तावीज़।”
3:23 *या “अंदर पहने जानेवाले कपड़े।”

4:1 *यानी शादी न होने और माँ न बनने का कलंक। 4:4 *शा., “का मल।”

अध्या. 3
1 यश 1:23 यिर्म 5:26-28 मी 2:1, 2 मी 6:10
2 मी 3:2, 3
3 यश 3:24
4 न्या 8:26
5 निर्ग 38:8
6 एस 2:12

दूसरा कॉल.
1 मी 1:16
2 विल 2:10
3 विल 2:21
4 विल 1:4
5 विल 2:10

अध्या. 4
6 यश 3:25
7 उत 30:22, 23 लूक 1:24, 25
8 यश 30:23 योए 3:18 जक 9:17
9 निर्ग 32:32, 33

धो डालेगा[1] और यरूशलेम से खून-
खराबा मिटा देगा।[2] 5 यहोवा यह भी
करेगा: दिन के वक्त वह पूरे सिय्योन
पहाड़ और सभावाले इलाके को बादल
और धुएँ से ढक देगा और रात के
वक्त जलती हुई आग से रौशन करेगा।[3]
इस शानदार देश पर सुरक्षा छायी रहेगी।
6 वहाँ एक छप्पर भी होगा जो दिन की
तपती धूप में छाँव देगा[4] और तूफान
और बरसात से बचने के लिए आड़ ठह-
रेगा।[5]

5 मैं अपने अज़ीज़ के लिए एक गीत
गाऊँगा,
यह गीत उसके और उसके अंगूरों
के बाग के बारे में है।[6]
मेरे अज़ीज़ का बाग फलती-फूलती
पहाड़ियों की ढलान पर था।
2 उसने ज़मीन की खुदाई की,
उसमें से कंकड़-पत्थर निकाले,
बढ़िया लाल अंगूरों की कलम
लगायी,
बाग के बीचों-बीच एक मीनार
बनायी
और अंगूर रौंदने का हौद भी
खोदा।[7]
फिर बढ़िया अंगूर लगने का इंत-
ज़ार करने लगा,
मगर बेलों पर जंगली अंगूर उग
आए।[8]
3 इसलिए उसने कहा, “हे यरूशलेम
के रहनेवालो! हे यहूदा के लोगो!
अब तुम्हीं मेरे और मेरे अंगूरों के
बाग के बीच फैसला करो।[9]
4 मैंने अपने बाग के लिए क्या-कुछ
नहीं किया।[10]
फिर ऐसा क्यों हुआ कि जब मैंने
अच्छे अंगूरों की उम्मीद की,
तो मुझे जंगली अंगूर मिले?
5 अब मैं तुम्हें बताता हूँ
कि मैं अपने अंगूरों के बाग के साथ
क्या करूँगा:
मैं इसका काँटेदार बाड़ा निकाल
दूँगा
और बाग को जला दिया जाएगा।[1]
मैं पत्थरों की दीवार ढा दूँगा
और बाग को रौंद दिया जाएगा।
6 मैं इसे बंजर बना दूँगा,[2]
इसकी कभी छँटाई नहीं की जाएगी,
न ही इसमें कुदाल चलाया जाएगा,
पूरा बाग कँटीली झाड़ियों और
जंगली पौधों से भर जाएगा।[3]
मैं बादलों को हुक्म दूँगा कि इस पर
न बरसें।[4]
7 मैं सेनाओं का परमेश्वर यहोवा हूँ
और इसराएल मेरे अंगूरों का
बाग है।[5]
यहूदा के आदमी इसकी बेल हैं
जिनसे मुझे खास लगाव था।
मैंने उनसे न्याय की उम्मीद की थी,[6]
मगर चारों तरफ अन्याय का बोल-
बाला है,
मैंने सोचा था वे नेकी से चलेंगे,
मगर जहाँ देखो वहाँ दुख-भरी
पुकार सुनायी दे रही है।”[7]
8 धिक्कार है उन पर,
जो घर से घर मिलाते जाते हैं[8]
और अपने खेत ऐसे बढ़ाते जाते
हैं[9] कि कोई ज़मीन नहीं बचती,
पूरे इलाके पर अकेले मालिक बन
बैठते हैं।
9 सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की यह
शपथ मेरे कानों में गूँज उठी,
बहुत-से घर सुनसान और उजाड़ हो
जाएँगे,

अध्य. 4
1 यहे 36:25
2 यहे 22:20-22
3 निर्ग 13:21; गि 9:15; जक 2:4, 5
4 भज 121:5
5 यश 25:4

अध्य. 5
6 भज 80:8; यश 5:7; यिर्म 2:21; लूक 20:9
7 मत 21:33; मर 12:1
8 हो 10:1
9 मी 6:2
10 2इत 36:15; यहे 24:13

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:31, 33; नहे 2:3; भज 79:1
2 व्य 29:22, 23; यिर्म 25:11; यिर्म 45:4
3 यश 32:13
4 व्य 11:16, 17
5 भज 80:8; यिर्म 12:10
6 मी 6:8
7 व्य 15:9
8 मी 2:1, 2
9 1रा 21:15, 16

इन आलीशान घरों की हालत
देखकर,
लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएँगे।[1]
10 दस एकड़* के बाग से सिर्फ बत-
भर# अंगूर मिलेंगे,
होमेर-भर# बीज से सिर्फ एक
एपा# अनाज मिलेगा।[2]
11 धिक्कार है उन पर जो सुबह-सुबह
उठकर शराब पीते हैं[3]
और शाम को देर तक दाख-मदिरा
पीते रहते हैं, जब तक कि धुत्त न
हो जाएँ।
12 उनकी दावतों में सुरमंडल, तारों-
वाला बाजा,
डफली और बाँसुरी बजायी जाती
है, दाख-मदिरा पी जाती है,
लेकिन वे यहोवा के कामों पर गौर
नहीं करते,
उसके हाथ के कामों पर कोई ध्यान
नहीं देते।
13 मेरे लोगों ने मुझे नहीं जाना,[4]
इसलिए उन्हें बंदी बनाकर ले जाया
जाएगा।
उनके इज़्ज़तदार आदमी भूख से
बेहाल हो जाएँगे[5]
और उनके सब लोग प्यास के मारे
तड़पेंगे।
14 कब्र ने जगह बनायी है,
वह मुँह फाड़े खड़ी है[6] कि कब
यरूशलेम के बड़े-बड़े लोगों,*
हुल्लड़ मचानेवालों और मौज-मस्ती
करनेवालों को निगल जाए।
15 तब इंसान को झुकना पड़ेगा,
इंसान को बेइज़्ज़त किया जाएगा,
घमंड से चढ़ी उसकी आँखें नीची की
जाएँगी।
16 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा सज़ा
देकर* खुद को ऊँचा करेगा,
सच्चा और पवित्र परमेश्वर[1] अपनी
नेकी[2] के कारण पवित्र ठहरेगा।
17 मेम्ने वीरान जगहों पर ऐसे चरेंगे
मानो उनका अपना मैदान हो।
जो जगह मोटे-ताज़े जानवरों का
पेट भरती थीं, अब परदेसियों का
पेट भरेंगी।
18 धिक्कार है उन पर,
जो अपने दोष को कपट की
डोरी से
और अपने पाप को बैल-गाड़ी के
रस्से से खींचते हैं
19 और जो कहते हैं, "परमेश्वर ज़रा
फुर्ती करे,
फटाफट अपना काम करे कि हम
उसका काम देखें।
इसराएल का पवित्र परमेश्वर
अपना मकसद* जल्दी पूरा करे
ताकि हम इसे जान सकें।"[3]
20 धिक्कार है उन पर,
जो अच्छे को बुरा और बुरे को
अच्छा कहते हैं,[4]
जो अंधकार को रौशनी और
रौशनी को अंधकार बताते हैं,
जो कड़वे को मीठा और मीठे को
कड़वा कहते हैं।
21 धिक्कार है उन पर,
जो अपनी ही नज़र में बुद्धिमान हैं
और जो समझते हैं कि उनमें बहुत
सूझ-बूझ है।[5]
22 धिक्कार है उन पर,

5:10 *शा., "दस बित्ता।" #अति. ख14 देखें। 5:14 *शा., "की शान।"

5:16 *या "न्याय करके।" 5:19 *या "फैसला; इरादा।"

अध्य. 5

1 2इत 36:20, 21; यश 27:10
2 व्य 28:15, 17; योए 1:17
3 लूक 21:34; रोम 13:13
4 यश 27:11; यिर्म 8:7; हो 4:6
5 विल 4:9
6 व्य 28:63

दूसरा कॉल.

1 यश 6:3; प्रक 4:8
2 व्य 32:4
3 यिर्म 5:12; यिर्म 17:15; यहे 12:22
4 नीत 17:15; मला 2:17
5 नीत 3:7; रोम 12:16

जो छककर दाख-मदिरा पीते हैं,
जो शराब में मसाला मिलाने में
उस्ताद हैं,[1]
23 जो घूस खाकर दुष्ट को बरी कर
देते हैं[2]
और जो नेक जन को इंसाफ नहीं
दिलाते।[3]
24 इसलिए जैसे आग में घास-फूस
भस्म हो जाती है,
लपटों से सूखी घास झुलस जाती है,
वैसे ही वे भी खत्म हो जाएँगे,
उनकी जड़ें सड़ जाएँगी,
उनके फूल धूल की तरह उड़
जाएँगे,
क्योंकि उन्होंने सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा का कानून* ठुकराया है
और इसराएल के पवित्र परमेश्वर
की बातों का अनादर किया है।[4]
25 इस वजह से यहोवा का क्रोध अपने
लोगों पर भड़क उठा है,
वह अपना हाथ बढ़ाकर उन्हें
मारेगा।[5]
तब पहाड़ काँप उठेंगे,
उनकी लाशें कूड़े की तरह गलियों
में पड़ी रहेंगी,[6]
फिर भी उसका क्रोध शांत नहीं
होगा,
उन्हें मारने के लिए वह अपना हाथ
बढ़ाए रखेगा।
26 उसने झंडा खड़ा करके दूर के एक
राष्ट्र को बुलाया है,[7]
सीटी बजाकर पृथ्वी के छोर से उन
लोगों को बुलाया है।[8]
देखो, वे तेज़ी से आ रहे हैं![9]
27 न तो वे थके-माँदे हैं, न उनके कदम
लड़खड़ा रहे हैं,
न कोई ऊँघ रहा है न कोई सो
रहा है,
किसी का भी कमरबंद ढीला
नहीं है,
न ही उनकी जूतियों के फीते
टूटे हैं।
28 उनके तीर पैने हैं
और उनके कमान तने हुए हैं।
उनके घोड़ों के खुर चकमक पत्थर
जैसे सख्त हैं
और उनके रथ के पहियों में तूफान
की तेज़ी है।[1]
29 वे शेर की तरह गरजते हैं,
जवान शेर की तरह दहाड़ते हैं।[2]
वे गुर्राते हुए अपने शिकार पर
झपट पड़ेंगे और उसे उठा ले
जाएँगे,
कोई उसे उनके हाथ से नहीं छुड़ा
सकेगा।
30 उस दिन वे अपने शिकार पर
समुंदर के गरजन की तरह गर-
जेंगे।[3]
जो कोई उस देश को देखेगा,
उसे अंधकार और संकट दिखायी
देगा।
घने बादलों के छाने से सूरज भी
बुझ जाएगा।[4]

6 जिस साल राजा उज्जियाह की मौत
हुई,[5] मैंने एक दर्शन देखा। मैंने
यहोवा को एक बहुत ही ऊँची राज-
गद्दी पर बैठे देखा।[6] उसके कपड़े के घेरे
से पूरा मंदिर भरा हुआ था। 2 उसके
आस-पास साराप खड़े थे। उनके छः पंख
थे, दो से वे अपना चेहरा ढके हुए थे, दो
से पाँव और दो से वे उड़ रहे थे।
3 साराप एक-दूसरे को पुकार-
पुकारकर कह रहे थे,

5:24 * या "शिक्षा।"

अध्य. 5
1 नीत 23:20 नीत 31:4, 5
2 व्य 16:19 यश 1:23 मी 3:11
3 1रा 21:13 नीत 17:15
4 व्य 31:20 2रा 17:13, 14 नहे 9:26 यश 1:4
5 व्य 31:16, 17 2इत 36:15, 16 विल 2:2
6 यिर्म 16:4
7 यिर्म 52:4
8 व्य 28:49, 50 यिर्म 5:15
9 यिर्म 4:13

दूसरा कॉल.
1 हब 1:8
2 यिर्म 50:17
3 यिर्म 6:23
4 यिर्म 4:23

अध्य. 6
5 2इत 26:23
6 1रा 22:19 दान 7:9

“सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा
पवित्र, पवित्र, पवित्र है।[1]
सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भर
गयी है।”

4 उनकी गूँज से* दरवाज़ों की चूल
हिल उठी और पूरा घर धुएँ से भर
गया।[2]

5 यह देखकर मैंने कहा, “हाय! अब
मैं ज़िंदा नहीं बचूँगा,
क्योंकि मेरे होंठ अशुद्ध हैं,
मैं अशुद्ध होंठवाले इंसानों के बीच
रहता हूँ[3]
और मैंने सेनाओं के परमेश्‍वर
और महाराजाधिराज यहोवा को
देख लिया है।”

6 तभी एक साराप उड़ता हुआ मेरे
पास आया। वह चिमटे में एक अंगारा
लिए हुए था,[4] जो उसने वेदी से उठाया
था।[5] 7 उसने अंगारे से मेरे मुँह को
छूकर कहा,

“देख, इसने तेरे होंठों को छू लिया,
तेरे अपराध दूर हो गए,
तेरे पाप माफ किए गए।”*

8 फिर मैंने यहोवा को यह कहते
सुना, “मैं किसे भेजूँ? कौन हमारी[6] तरफ
से जाएगा?” मैंने कहा, “मैं यहाँ हूँ! मुझे
भेज!”[7]

9 तब परमेश्‍वर ने कहा,
“जा! और उन लोगों से कह,
‘तुम बार-बार सुनोगे, फिर भी न
समझोगे,
बार-बार देखोगे, फिर भी न
सीखोगे।’[8]
10 उन लोगों का मन सुन्‍न कर दे,[9]
उनके कान बहरे कर दे,[10]

6:4 *शा., “पुकारनेवाले की आवाज़ से।”
6:7 *या “का प्रायश्‍चित हो चुका है।”

अध्य. 6
1 निर्ग 15:11
प्रक 4:8
2 प्रक 15:8
3 यश 29:13
4 यहे 10:2
5 प्रक 8:5
6 उत 1:26
यूह 1:1, 2
यूह 12:41
7 भज 110:3
मत 4:19, 20
8 यिर्म 5:21
मत 13:14
लूक 8:9, 10
प्रेष 28:25, 26
9 यहे 3:7
10 यिर्म 6:10
यूह 3:20

दूसरा कॉल.
1 मत 13:15
प्रेष 28:27
2 2इत 36:20, 21
यश 3:26
यश 24:1
3 2रा 25:11

अध्य. 7
4 2रा 16:1, 2
5 2रा 15:37
2इत 28:6
6 2रा 16:5

उनकी आँखें बंद कर दे
कि आँखें होते हुए भी वे देख
न सकें,
कान होते हुए भी सुन न सकें,
उनका मन बातों को समझ न सके
और वे पलटकर लौट न आएँ और
चंगे हो जाएँ।”[1]

11 तब मैंने पूछा, “हे यहोवा, ऐसा
कब तक रहेगा?”

उसने कहा, “जब तक शहर खंडहर
न हो जाएँ और कोई निवासी
न बचे,
जब तक सारे घर खाली न हो जाएँ,
जब तक पूरा देश तहस-नहस
होकर उजड़ न जाए,[2]
12 जब तक यहोवा लोगों को खदेड़कर
दूर न भगा दे[3]
और सारे देश में सन्‍नाटा न छा
जाए।

13 मगर इसराएल के लोगों का
दसवाँ हिस्सा बच जाएगा। उन्हें एक बड़े
पेड़ और बाँज पेड़ की तरह काटकर फिर
से आग में झोंक दिया जाएगा। मगर सिर्फ
ठूँठ रह जाएगा। पवित्र वंश ही वह ठूँठ
होगा।”

7 उन दिनों योताम का बेटा और
उज्जियाह का पोता आहाज, यहूदा
का राजा था।[4] उस वक्‍त सीरिया का
राजा रसीन और इसराएल का राजा
पेकह,[5] जो रमल्याह का बेटा था यरू-
शलेम से लड़ने आए। लेकिन वह* उसे
अपने कब्ज़े में नहीं कर पाया।[6] 2 जब
वे चढ़ाई करने आए थे तो दाविद के
घराने को यह खबर दी गयी, “एप्रैम* के
साथ सीरिया भी मिल गया है।”

7:1 *या शायद, “वे।” 7:2 *यानी इस-
राएल।

यह सुनते ही आहाज और उसके लोगों का दिल ऐसा काँप उठा, जैसे जंगल के पेड़ आँधी में काँप उठते हैं।

3 तब यहोवा ने यशायाह से कहा, “ज़रा अपने बेटे शार-याशूब*[1] को लेकर आहाज के पास जा। वह तुझे ऊपरवाले तालाब की नहर के छोर पर मिलेगा,[2] जो धोबी के मैदान की तरफ जानेवाले राजमार्ग के पास है। **4** उससे कहना, ‘घबरा मत! सीरिया के राजा रसीन और रमल्याह के बेटे[3] के धधकते क्रोध को देखकर खौफ न खा, न हिम्मत हार। क्योंकि वे दोनों जलती लकड़ियाँ हैं, जो बस बुझने पर हैं। **5** सीरिया, एप्रैम और रमल्याह के बेटे ने मिलकर तेरे खिलाफ साज़िश रची है और कहा है, **6** “आओ हम यहूदा पर धावा बोल दें और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दें।* और ताबेल के बेटे को वहाँ का राजा बनाएँ।”[4]

7 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है,

“ऐसा कभी नहीं होगा!
उनकी साज़िश कभी कामयाब नहीं
होगी।
8 सीरिया का सिर दमिश्क है
और दमिश्क का सिर रसीन है।
65 साल के अंदर एप्रैम तहस-नहस
हो जाएगा,
उसके लोगों का वजूद मिट
जाएगा।[5]
9 एप्रैम का सिर सामरिया है[6]
और सामरिया का सिर रमल्याह का
बेटा है।[7]
जब तक तुम लोगों में मज़बूत
विश्वास न हो,
तुम मज़बूती से खड़े नहीं रह
पाओगे।”’”

10 यहोवा ने आहाज से यह भी कहा, **11** “माँग, तुझे अपने परमेश्वर यहोवा से क्या निशानी चाहिए।[1] चाहे वह कब्र जितनी गहरी हो या आसमान जितनी ऊँची, मैं वह निशानी तुझे ज़रूर दूँगा।” **12** लेकिन आहाज ने कहा, “नहीं, मैं कोई निशानी नहीं माँगूँगा। मैं यहोवा को नहीं परखना चाहता।”

13 तब यशायाह ने कहा, “ऐ दाविद के घराने, सुन! क्या इंसानों के सब्र की परीक्षा लेकर तेरा जी नहीं भरा, जो तू परमेश्वर के सब्र की परीक्षा लेना चाहता है?[2] **14** अब यहोवा खुद तुझे एक निशानी देगा। देख! एक लड़की गर्भवती होगी और एक बेटे को जन्म देगी।[3] वह उसका नाम इम्मानुएल* रखेगी।[4] **15** इससे पहले कि वह लड़का बुराई को ठुकराना और अच्छाई को अपनाना सीखे, वह सिर्फ मक्खन और शहद खाएगा क्योंकि खाने को और कुछ नहीं होगा। **16** और जब तक वह लड़का बुराई को ठुकराना और अच्छाई को अपनाना सीखेगा, इन दोनों राजाओं के देश पूरी तरह खंडहर बन चुके होंगे,[5] वही राजा जिनसे तू डर रहा है। **17** यहोवा तुझे, तेरे पिता के घराने को और तेरे लोगों को ऐसा दिन दिखाएगा, जो तुमने तब से नहीं देखा जब से एप्रैम, यहूदा से अलग हुआ है।[6] वह तुम्हारे खिलाफ अश्शूर के राजा को भेजेगा।[7]

18 उस दिन यहोवा सीटी बजाकर दूर मिस्र में नील की धाराओं से मक्खियों को और अश्शूर से मधुमक्खियों को बुलाएगा। **19** वे सब-की-सब आकर

7:3 *मतलब “सिर्फ बचे हुए लोग लौटेंगे।”
7:6 *या शायद, “उसे घबरा दें।”
7:14 *मतलब “परमेश्वर हमारे साथ है।”

अध्य. 7
1 यश 8:18
2 2रा 18:17
3 2रा 15:30; यश 8:6, 7
4 2रा 16:5
5 2रा 17:6; हो 1:6
6 1रा 16:23, 24
7 2रा 15:27

दूसरा कॉल.
1 न्या 6:36, 37; यश 37:30; यश 38:7, 8
2 2इत 36:15, 16
3 यश 9:6; यूह 1:14; 1ती 3:16
4 मत 1:23; लूक 1:30-35
5 2रा 15:29; 2रा 16:8, 9; यश 8:3, 4; यश 17:1
6 1रा 12:20
7 2रा 18:13, 14; 2इत 28:19, 20; यश 36:1

गहरी घाटियों, चट्टान की दरारों, कँटीली
झाड़ियों और पानीवाली जगहों पर छा
जाएँगी।

20 उस दिन यहोवा महानदी* के
इलाके के अश्शूर के राजा से, हाँ, उस
भाड़े के उस्तरे से[1] सिर और पाँव के बाल
और दाढ़ी को सफाचट कर देगा।

21 उस दिन एक आदमी के पास
अपने मवेशियों में से एक गाय और दो
भेड़ें बचेंगी। 22 उसके पास सिर्फ दूध
होगा इसलिए वह मक्खन खाएगा और
देश के बचे हुए लोगों के पास भी शहद
और मक्खन के सिवा कुछ नहीं होगा।

23 उस दिन जहाँ कहीं अंगूर की
1,000 बेलें होती थीं, जिनकी कीमत
चाँदी के 1,000 टुकड़े थी, वहाँ सिर्फ
कँटीली झाड़ियाँ और जंगली पौधे उगेंगे।
24 पूरा इलाका कँटीली झाड़ियों और
जंगली पौधों से भर जाएगा। वहाँ जाने के
लिए लोगों को तीर-कमान लेकर चलना
पड़ेगा। 25 और जिन पहाड़ों पर एक
वक्त कुदाल से सफाई की जाती थी, अब
वहाँ कँटीली झाड़ियों और जंगली पौधों
के डर से तू नहीं जाएगा। वह बैलों और
भेड़ों के चरने की जगह बन जाएगी।"

8 यहोवा ने मुझसे कहा, "एक बड़ी
तख्ती ले[2] और उस पर एक मामूली
कलम* से लिख, 'महेर-शालाल-हाश-
बज़।'# 2 और याजक उरियाह[3] और
जेबेरेक्याह का बेटा जकरयाह जो सच्चे
गवाह हैं, उनसे कह कि वे इस बात की
गवाही लिखकर दें।"

3 फिर मैंने अपनी पत्नी के साथ
संबंध रखे* जो भविष्यवक्तिन थी। वह
गर्भवती हुई और उसने एक बेटे
को जन्म दिया।[1] तब यहोवा ने मुझसे
कहा, "इसका नाम महेर-शालाल-हाश-
बज़ रख 4 क्योंकि इससे पहले कि यह
लड़का 'माँ' और 'पिताजी' बोलना सीखे,
दमिश्क की दौलत और सामरिया के लूट
का माल ले लिया जाएगा और अश्शूर के
राजा के सामने लाया जाएगा।"[2]

5 यहोवा ने मुझसे यह भी कहा,

6 "इन लोगों ने शीलोह* के बहते
पानी को ठुकराया है[3]
और ये रमल्याह के बेटे और रसीन
से खुश हैं।[4]
7 इसलिए देख! यहोवा उनके खिलाफ
महानदी* का विशाल और शक्ति-
शाली पानी ले आएगा,
हाँ, अश्शूर का राजा[5] पूरी ताकत
के साथ उनसे लड़ने आएगा।
वह आकर उनके नदी-नालों को भर
देगा,
तटों के ऊपर बहने लगेगा।
8 वह यहूदा को भी अपनी चपेट में ले
लेगा
और उसे गले तक डुबा देगा।[6]
हे इम्मानुएल!*[7]
तेरा पूरा देश उसके पंख फैलाने से
ढक जाएगा।"
9 हे लोगो, उन्हें चोट पहुँचाकर तो
देखो! तुम्हें चूर-चूर कर दिया
जाएगा।
हे पृथ्वी के दूर देश के लोगो, सुनो!
युद्ध के लिए अपनी कमर कस
लो, मगर तुम्हें चूर-चूर कर दिया
जाएगा![8]

7:20; 8:7 *यानी फरात नदी। **8:1** *शा., "नश्वर इंसान की कलम।" #शायद इसका मतलब है, "लूट के माल की तरफ फुर्ती से जाना, उसे बटोरने के लिए फौरन आना।"

8:3 *शा., "के पास गया।" **8:6** *यह एक नहर थी। **8:8** *यश 7:14 देखें।

अध्य. 7
1 2रा 16:7

अध्य. 8
2 यश 30:8
3 2रा 16:10

दूसरा कॉल.
1 यश 8:18
2 2रा 15:29; 2रा 16:8, 9; 2रा 17:6; यश 7:16; यश 17:1
3 2रा 17:16; यिर्म 17:13
4 यश 7:1
5 2रा 17:5; 2रा 18:9
6 2इत 28:19, 20; यश 7:17, 20; यश 10:28-32
7 यश 7:14; मत 1:23
8 2इत 32:21

युद्ध के लिए अपनी कमर कस
लो, मगर तुम्हें चूर-चूर कर दिया
जाएगा!
10 जो योजना बनानी है बना लो, मगर
वह नाकाम हो जाएगी,
जो कहना है कह लो, मगर वह पूरा
नहीं होगा,
क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है!*[1]

11 यहोवा का शक्तिशाली हाथ मुझ पर था और उसने मुझे खबरदार किया कि मैं इन लोगों की राह न चलूँ। उसने कहा,

12 "जब ये लोग कहें, 'आओ हम
साज़िश रचें!'
तो तुम मत कहना, 'हाँ-हाँ चलो
साज़िश रचें।'
जिससे वे डरते हैं उससे तुम मत
डरना, न उससे खौफ खाना।
13 याद रखो, सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा पवित्र है,[2]
वही है जिसका तुम्हें डर मानना
चाहिए,
जिससे तुम्हें खौफ खाना चाहिए।"[3]
14 वह पनाह साबित होगा,
लेकिन इसराएल के दोनों घरानों के
लिए,
वह ऐसा पत्थर होगा जिससे वे
ठोकर खाएँगे,
ऐसी चट्टान होगा जिससे वे
टकराएँगे।[4]
यरूशलेम के रहनेवालों के लिए,
वह फंदा और जाल बनेगा।
15 कई लोग ठोकर खाएँगे, गिरेंगे,
ज़ख्मी होंगे,
फँस जाएँगे और पकड़े जाएँगे।

8:10 *"परमेश्वर हमारे साथ है," इन शब्दों का इब्रानी शब्द है, *इम्मानुएल।* यश 7:14; 8:8 देखें।

अध्य. 8
1 व्य 20:1
भज 44:3
2 लैव 10:3
लैव 22:32
3 सभ 12:13
मत 10:28
4 मत 21:42, 44
लूक 20:17, 18
रोम 9:31-33
1कुर 1:23
1पत 2:7, 8

दूसरा कॉल.
1 भज 33:20
2 व्य 31:16, 17
मी 3:4
3 इब्र 2:13
4 यश 7:14, 16
यश 8:3, 4
5 लैव 20:6
व्य 18:10, 11
भज 146:4
सभ 9:5, 10
6 नीत 4:19
7 व्य 28:15, 48

16 उस खर्रे को लपेट लो जिस पर
संदेश लिखा है,
मेरे चेलों के बीच कानून* को मुहर-
बंद कर दो!

17 मैं यहोवा पर उम्मीद लगाए
रखूँगा,*[1] जो याकूब के घराने से मुँह फेरे हुए है।[2] और मैं उस पर आस लगाए रखूँगा।

18 देखो, मैं और मेरे ये बच्चे जो
यहोवा ने मुझे दिए हैं,[3] इसराएल के लिए चिन्ह और चमत्कार ठहरे हैं।[4] ये चिन्ह और चमत्कार सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की तरफ से हैं जो सिय्योन पर्वत पर रहता है।

19 अगर वे तुमसे कहें, "उनके पास
जाओ जो मरे हुओं से संपर्क करने का दावा करते हैं या जो भविष्य बताते हैं, हाँ, जो चहचहाते और बुदबुदाते हैं, उनसे पूछताछ करो," तो क्या तुम ऐसा करोगे? क्या ज़िंदा लोगों के लिए, मरे हुओं से बात करना सही है?[5] क्या एक इंसान को अपने परमेश्वर के पास जाकर पूछताछ
नहीं करनी चाहिए? 20 हाँ! परमेश्वर
की लिखी बातों में और उसके कानून में ही खोजबीन की जानी चाहिए।

जो इनके मुताबिक बातें नहीं करते, उनके पास कोई रौशनी* नहीं।[6]
21 जहाँ देखो वहाँ लोग दुखी होंगे, भूख
से बिलख रहे होंगे।[7] भूख और गुस्से में वे अपने राजा को बददुआएँ देंगे और ऊपर आसमान की तरफ देखकर परमेश्वर को
कोसेंगे। 22 जब वे धरती पर नज़र
डालेंगे तो उन्हें रौशनी की कोई किरण नहीं दिखेगी। चारों तरफ नज़र आएगा तो सिर्फ दुख, धुँधलापन, अंधकार और मुश्किलें।

8:16 *या "शिक्षा।" 8:17 *या "बेसब्री से इंतज़ार करूँगा।" 8:20 *शा., "सुबह।"

9 लेकिन यह अंधकार वैसा नहीं होगा जैसा उस वक्त था जब देश पर मुसीबत आयी थी, जब बीते समय में जबूलून के देश और नप्ताली के देश को नीचा दिखाया गया था।[1] मगर बाद में परमेश्वर उस देश का मान बढ़ाएगा, जो समुंदर के रास्ते पर और यरदन के इलाके में आता है और गैर-यहूदियों का गलील कहलाता है।

2 अंधकार में चलनेवालों ने तेज़
रौशनी देखी है,
जिस देश में घुप अँधेरा छाया था,
वहाँ के रहनेवालों पर रौशनी
चमकी है।[2]
3 तूने उस राष्ट्र के लोगों की गिनती
बढ़ायी है,
तूने उन्हें बहुत खुशियाँ दी हैं।
वे तेरे सामने ऐसे मगन हैं, जैसे
कटाई के समय
और लूट का माल बाँटते समय
लोग मगन होते हैं,
4 क्योंकि तूने उनके बोझ के जुए को,
उनके कंधों पर रखे छड़ को,
उनसे काम लेनेवाले जल्लादों की
लाठी को तोड़ दिया है,
जैसा तूने मिद्यानियों के दिनों में
किया था।[3]
5 ज़मीन को हिलाकर रख देनेवाले
फौजी जूते
और खून से सने कपड़े आग में
भस्म कर दिए जाएँगे।
6 हमारे लिए एक लड़का पैदा
हुआ है,[4]
हमें एक बेटा दिया गया है,
उसे राज करने का अधिकार*
सौंपा जाएगा,#[5]
उसे* बेजोड़ सलाहकार,[1] शक्तिशाली ईश्वर,[2] युग-युग का पिता
और शांति का शासक कहा
जाएगा।
7 उसकी हुकूमत* बढ़ती जाएगी
और शांति का अंत नहीं होगा।[3]
वह अपने राज में दाविद की राजगद्दी पर बैठेगा,[4]
वह अपना राज मज़बूती से कायम
करेगा,[5]
वह अब से हमेशा तक
न्याय और नेकी से उसे सँभाले
रहेगा।[6]
सेनाओं का परमेश्वर यहोवा अपने
जोश के कारण ऐसा ज़रूर
करेगा।
8 यहोवा ने याकूब के खिलाफ पैगाम
भेजा है,
इसराएल के खिलाफ संदेश
भेजा है[7]
9 और यह बात एप्रैम और सामरिया
के रहनेवाले,
हाँ, सब लोग जान लेंगे,
जो घमंड में चूर होकर और दिल
की ढिठाई से कहते हैं,
10 "कच्ची ईंटों का घर गिर गया तो
क्या हुआ,
हम तराशे हुए पत्थरों से इसकी
दीवार खड़ी करेंगे।[8]
गूलर के पेड़ काट डाले गए तो क्या
हुआ,
हम उनकी जगह देवदार के पेड़
लगाएँगे।"
11 यहोवा रसीन के दुश्मनों को उसके
खिलाफ खड़ा करेगा
और इसराएल के दुश्मनों को हमला
करने के लिए उभारेगा।

9:6, 7 *या "सरकार।" 9:6 #शा., "उसके कंधों पर होगा।"

9:6 *शा., "उसका नाम।"

अध्य. 9
1 2रा 15:29
2 मत 4:13-16; लूक 1:78, 79; लूक 2:30-32; यूह 1:9; यूह 8:12
3 न्या 8:12, 28; यश 10:26, 27
4 लूक 1:35; लूक 2:11
5 उत 49:10; भज 2:6; जक 6:13; लूक 22:29; प्रक 19:16

दूसरा कॉल.
1 यश 11:2; मत 7:28, 29; मत 12:42
2 भज 45:3; यूह 1:18
3 भज 72:1, 7; दान 2:44
4 लूक 1:32, 33
5 2शम 7:16, 17; प्रक 11:15
6 भज 45:6; यश 32:1; यश 42:1; यिर्म 23:5; मत 12:18; इब्र 1:8
7 2रा 17:6
8 आम 5:11

12 पूरब से सीरिया और पश्चिम से
पलिश्ती आएँगे,[1]
वे मुँह फाड़े इसराएल पर टूट पड़ेंगे
और उसे खा जाएँगे।[2]
फिर भी परमेश्वर का क्रोध शांत
नहीं होगा,
उसे मारने के लिए वह अपना हाथ
बढ़ाए रखेगा,[3]
13 क्योंकि ये लोग अपने मारनेवाले के
पास नहीं लौट रहे,
सेनाओं के परमेश्वर यहोवा को
नहीं ढूँढ़ रहे।[4]
14 इसलिए यहोवा एक ही दिन में इस-
राएल का सिर और दुम,
उसकी टहनी और लंबी-लंबी घास*
काट देगा।[5]
15 मुखिया और इज़्ज़तदार लोग उसका
सिर हैं
और झूठी बातें सिखानेवाले
भविष्यवक्ता उसकी दुम।[6]
16 उसके अगुवे लोगों को गलत राह
पर ले जाते हैं
और उनके पीछे चलनेवाले
उलझन में हैं।
17 यहोवा उनके जवान आदमियों से
खुश नहीं होगा,
अनाथों* और विधवाओं पर कोई
रहम नहीं करेगा,
क्योंकि सब-के-सब दुष्ट हो गए हैं,
उन्होंने परमेश्वर से मुँह मोड़
लिया है,[7]
जिसे देखो, वह बेसिर-पैर की बातें
करता है।
यही वजह है कि परमेश्वर का क्रोध
शांत नहीं होगा,
बल्कि उन्हें मारने के लिए वह
अपना हाथ बढ़ाए रखेगा।[1]
18 दुष्टता धधकती आग की तरह है,
जो कँटीली झाड़ियों और जंगली
पौधों को भस्म कर देती है,
जंगल की घनी झाड़ियों में आग
लगा देती है,
जिसका धुआँ आसमान की तरफ
उठने लगता है।
19 सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
के क्रोध ने पूरे देश में आग लगा
दी है।
लोगों को ईंधन की तरह इस आग
में डाला जाएगा,
ऐसा हाल होगा कि भाई, भाई को
नहीं छोड़ेगा।
20 वे अपने दायीं तरफ माँस का टुकड़ा
काटकर खाएँगे,
फिर भी भूखे रह जाएँगे।
अपने बायीं तरफ माँस का टुकड़ा
नोचेंगे,
फिर भी उनका पेट नहीं भरेगा।
हर कोई अपने ही हाथ का माँस
काटकर खाएगा।
21 मनश्शे एप्रैम को उजाड़ेगा
और एप्रैम मनश्शे को।
मगर वे दोनों मिलकर यहूदा से
लड़ेंगे।[2]
यही वजह है कि परमेश्वर का क्रोध
शांत नहीं होगा,
बल्कि उन्हें मारने के लिए वह
अपना हाथ बढ़ाए रखेगा।[3]

10

धिक्कार है उन पर जो ऐसे
नियम बनाते हैं,
जिनसे दूसरों का नुकसान होता है,[4]
ऐसे आदेश जारी करते हैं,
जिनसे लोगों का जीना दूभर हो
जाता है।

9:14 *या शायद, "खजूर की डाली और नरकट।" 9:17 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।"

अध्य. 9
1 2इत 28:18
2 व्य 31:17
3 यश 5:25
यश 10:4
4 2रा 17:13, 14
हो 7:10
आम 4:6
आम 5:6
5 2रा 17:6
हो 10:15
6 व्य 13:1-3
7 व्य 4:25, 26

दूसरा कॉल.
1 यश 5:25
2 2इत 28:6
3 यश 5:25

अध्य. 10
4 लैव 19:15
व्य 1:16, 17

2 ऐसे में गरीब इंसाफ के लिए फरि-
याद नहीं कर पाता,
मेरे दीन-दुखियों को उनका हक नहीं
मिल पाता।[1]
वे विधवाओं और अनाथों* को लूट
का माल समझते हैं।[2]
3 उस दिन तुम क्या करोगे, जिस दिन
तुमसे हिसाब लिया जाएगा?*[3]
जब दूर से तुम पर विनाश आ
पड़ेगा,[4]
तब मदद माँगने किसके पास
भागोगे?[5]
अपनी दौलत# कहाँ छोड़ जाओगे?
4 तुम्हारे आगे कोई रास्ता नहीं
बचेगा,
या तो तुम कैदियों के बीच दुबककर
बैठे होगे या लाशों के ढेर में मरे
पड़े होगे।
फिर भी परमेश्वर का क्रोध शांत
नहीं होगा,
बल्कि तुम्हें मारने के लिए वह
अपना हाथ बढ़ाए रखेगा।[6]
5 "देखो, वह रहा अश्शूर![7]
वह मेरे क्रोध की छड़ी है,[8]
उसके हाथ में वह लाठी है जिससे मैं
अपनी जलजलाहट दिखाऊँगा।
6 मैं उसे उस राष्ट्र के खिलाफ भेजूँगा
जिसने मुझसे मुँह मोड़ लिया है,[9]
उन लोगों के खिलाफ जिन्होंने मेरा
क्रोध भड़काया है।
मैं उसे हुक्म दूँगा कि वह उन्हें पूरी
तरह लूट ले,
उन्हें ऐसे रौंद दे जैसे गली का
कीचड़ रौंदा जाता है।[10]
7 लेकिन उसका झुकाव किसी और
बात की तरफ होगा,
उसके मन में कुछ और ही चल रहा
होगा।
वह देश को मिटा देना चाहता है
और कुछ देशों को नहीं बल्कि कई
देशों को तबाह करना चाहता है।
8 क्योंकि वह कहता है,
'ये सब-के-सब हाकिम जो मेरे
अधीन हैं, पहले राजा हुआ
करते थे।[1]
9 क्या कलनो,[2] कर्कमीश[3] की तरह
नहीं?
क्या हमात,[4] अरपाद की तरह
नहीं?[5]
क्या सामरिया,[6] दमिश्क की तरह
नहीं?[7]
10 मैंने ऐसे राज्यों को मुट्ठी में किया है
जहाँ निकम्मे देवता पूजे जाते थे,
जहाँ यरूशलेम और सामरिया से
ज़्यादा देवताओं की मूरतें थीं।[8]
11 जो हाल मैंने सामरिया और उसके
निकम्मे देवताओं का किया,
क्या वही हाल मैं यरूशलेम और
उसकी मूरतों का नहीं कर
सकता?'[9]

12 जब यहोवा सिय्योन पहाड़ और
यरूशलेम में अपना सब काम पूरा कर
लेगा, तब वह* अश्शूर के राजा को
उसके मन की ढिठाई और घमंड
से चढ़ी आँखों के लिए सज़ा देगा।[10]
13 क्योंकि अश्शूर ने कहा था,
'मैं अपनी ताकत के दम पर,
अपनी बुद्धि के बल पर यह सब
करूँगा क्योंकि मैं बुद्धिमान हूँ।
मैं देश-देश की सीमाएँ तोड़ दूँगा,[11]
उनका खज़ाना लूट लूँगा,[12]

10:2 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।" 10:3 *या "सज़ा दी जाएगी?" #या "शान।"

10:12 *शा., "मैं।"

अध्य. 10
1 आम 2:7, 8
2 व्य 27:19
याकू 1:27
3 हो 9:7
4 व्य 28:49, 50
5 हो 5:13
6 यश 5:25
यश 9:12
7 उत 10:9, 11
8 2रा 17:3
यश 8:3, 4
यश 10:24
9 2रा 17:6
10 व्य 28:45, 63
2रा 17:22, 23

दूसरा कॉल.
1 2रा 18:19, 24
2 आम 6:2
3 2इत 35:20
4 2रा 17:24
5 2रा 19:11, 13
6 2रा 17:5
2रा 18:9, 10
7 2रा 16:8, 9
8 2रा 19:17, 18
9 2रा 18:33, 34
2इत 32:16, 19
10 2रा 18:19
2रा 18:28, 35
11 2रा 15:29
2रा 17:6
2रा 18:11
1इत 5:26
12 2रा 16:8
2रा 18:16

एक शूरवीर की तरह उनके निवा-
सियों को अपने अधीन कर
लूँगा।[1]
14 जैसे एक आदमी घोंसले में हाथ
डालकर अंडे निकाल लेता है,
वैसे ही मैं देश-देश के लोगों से
उनकी दौलत छीन लूँगा।
जिस तरह कोई लावारिस अंडों को
बटोर लेता है,
उसी तरह मैं पूरी पृथ्वी को बटोर
लूँगा!
कोई पंख फड़फड़ाने, चोंच खोलने
या चीं-चीं करने की जुर्रत भी
नहीं करेगा।'"
15 क्या कुल्हाड़ी अपने चलानेवाले से
बड़ी हो सकती है?
क्या आरा खुद को अपने काटने-
वाले से बड़ा बता सकता है?
क्या लाठी[2] अपने चलानेवाले को
चला सकती है?
या छड़ी उसे घुमा सकती है जो उसे
लिए-लिए फिरता है?
16 इसलिए सच्चा प्रभु, सेनाओं का
परमेश्वर यहोवा,
उसके* हट्टे-कट्टे लोगों को पीड़ित
करके दुबला बना देगा,[3]
वह उसकी शान को आग में जला-
कर राख कर देगा।[4]
17 'इसराएल की रौशनी'[5] आग बन
जाएगी,[6]
पवित्र परमेश्वर आग की लपटों की
तरह धधक उठेगा,
एक ही दिन में उसके जंगली पौधे
और कँटीली झाड़ियाँ भस्म हो
जाएँगी।
18 परमेश्वर उसके जंगल और फलों
के बाग की शान मिट्टी में मिला
देगा,
वह हाल कर देगा मानो किसी रोगी
का शरीर घुलता जा रहा हो।[1]
19 उसके जंगल में इतने कम पेड़ रह
जाएँगे
कि बच्चा भी उन्हें गिन लेगा।
20 उस दिन इसराएल में जो लोग ज़िंदा
बचेंगे,
याकूब के घराने के बचे हुए लोग,
फिर कभी उसका सहारा नहीं लेंगे
जिसने उन्हें मारा था।[2]
इसके बजाय, वे सच्चे मन
से इसराएल के पवित्र पर-
मेश्वर का,
हाँ, यहोवा का सहारा लेंगे।
21 सिर्फ कुछ ही लोग, याकूब के बचे
हुए लोग ही,
शक्तिशाली परमेश्वर के पास
लौटेंगे।[3]
22 हे इसराएल, चाहे तेरे लोग
समुंदर की बालू के किनकों जैसे
अनगिनत हों,
मगर उनमें से सिर्फ मुट्ठी-भर*
लौटेंगे।[4]
परमेश्वर ने तुम्हारा विनाश तय
कर दिया है[5]
और जल्द ही उसका दंड# तुम पर
आ पड़ेगा।[6]
23 सारे जहान का मालिक और
सेनाओं का परमेश्वर यहोवा,
जो विनाश लानेवाला है वह पूरे देश
पर आ पड़ेगा।[7]

10:16 *यानी "अश्शूर के," जिसका ज़िक्र आय. 5 और 24 में आता है।

10:22 *या "बचे हुए लोग।" #या "न्याय।"

अध्य. 10
1 2रा 18:19, 25
2 यश 10:5
3 2इत 32:21
4 यश 30:30, 31
5 भज 84:11
6 यश 9:5
यश 30:27
यश 31:8, 9
नहू 1:6

दूसरा कॉल.
1 यश 37:36
2 2इत 28:20, 21
हो 5:13
हो 14:3
3 यश 65:9
हो 1:10, 11
4 यश 1:9
5 यश 28:22
6 रोम 9:27, 28
7 व्य 28:45, 63

24 इसलिए सारे जहान का मालिक
और सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा कहता
है, “हे सिय्योन में रहनेवाले मेरे लोगो,
अश्‍शूर से मत डरो जो मिस्र की तरह तुम
पर छड़ी उठाता है[1] और लाठी चलाता
है।[2] 25 क्योंकि थोड़ी देर में मेरी
जलजलाहट शांत हो जाएगी। फिर मेरा
क्रोध उस पर भड़क उठेगा और उसका
विनाश कर देगा।[3] 26 सेनाओं का
परमेश्‍वर यहोवा उसे कोड़ों से मारेगा,[4]
जैसे उसने ओरेब की चट्टान के पास मिद्या-
नियों को मारा था।[5] वह अपनी लाठी
समुंदर के ऊपर उठाएगा, जैसे उसने मिस्र
के खिलाफ उठायी थी।[6]

27 उस दिन अश्‍शूर के राजा का बोझ
तेरे कंधों से,
उसका जुआ तेरी गरदन से उठा
लिया जाएगा[7]
और तेल के कारण वह जुआ तोड़
दिया जाएगा।”[8]

28 उसने अय्यात[9] पर हमला कर
दिया है,
वह मिगरोन से होकर गया है,
मिकमाश[10] में उसने अपना सामान
छोड़ा है,

29 उसने नदी का घाट पार करके
गेबा[11] में रात गुज़ारी है,
रामाह थर-थर काँप रहा है
और शाऊल का शहर गिबा[12] भाग
खड़ा हुआ।[13]

30 हे गल्लीम की बेटी,
चीख-चीखकर रो!
हे लैशा, ध्यान दे!
ऐ अनातोत,[14] दुख से चिल्ला!

31 मदमेना भाग गया है,
गेबीम के रहनेवालों ने कहीं और
पनाह ले ली है।

32 आज के दिन वह नोब[1] में रुकेगा।
वह सिय्योन की बेटी के पहाड़ को,
यरूशलेम की पहाड़ी को घूँसा
दिखाकर धमकी देगा।

33 देखो, सच्चा प्रभु, सेनाओं का पर-
मेश्‍वर यहोवा,
इस तरह टहनियाँ काटेगा कि भयं-
कर शोर मचेगा।[2]
वह लंबे-लंबे पेड़ों को काटकर गिरा
देगा,
जो ऊँचे हैं उन्हें नीचा करेगा।

34 जंगल की घनी झाड़ियों को कुल्हाड़ी
से काट डालेगा,
लबानोन एक शूरवीर के हाथों
गिराया जाएगा।

11 यिशै के ठूँठ से एक टहनी
उगेगी,[3]
उसकी जड़ों से एक अंकुर फूटेगा[4]
जो फलेगा-फूलेगा।

2 उस पर यहोवा की पवित्र शक्‍ति
छायी रहेगी,[5]
इसलिए वह बुद्धिमान होगा,[6] उसमें
बड़ी समझ होगी,
वह बढ़िया सलाह देगा, शक्‍तिशाली
और बहुत ज्ञानी होगा[7]
और वह यहोवा का डर मानेगा।

3 यहोवा का डर मानने में उसे खुशी
मिलेगी,[8]
वह मुँह देखा न्याय नहीं करेगा
और न सुनी-सुनायी बातों के
आधार पर डाँट लगाएगा।[9]

4 वह सच्चाई* से गरीबों का न्याय
करेगा,
सीधाई से डाँट लगाएगा कि पृथ्वी
के दीन लोगों का भला हो।

अध्य. 10

1 2रा 18:13 यश 10:5
2 निर्ग 14:3, 9
3 2रा 19:35
4 2इत 32:21 यश 30:32 नहू 3:7
5 न्या 7:25 न्या 8:21 भज 83:11
6 निर्ग 14:21, 27
7 यश 9:4 यश 14:25 नहू 1:13
8 2रा 19:35 यश 37:35, 36
9 यह 7:2
10 1शम 13:2 1शम 14:31
11 यह 21:8, 17 2इत 16:6
12 न्या 20:13
13 हो 5:8
14 यह 21:8, 18 यिर्म 1:1

दूसरा कॉल.

1 1शम 22:18, 19
2 2इत 32:21 यश 37:36

अध्य. 11

3 रूत 4:17 1शम 17:58 भज 132:11 यश 53:2 मत 1:1, 6 लूक 3:23, 32 प्रेष 13:22, 23 रोम 15:12 प्रक 5:5 प्रक 22:16
4 यिर्म 23:5 यिर्म 33:15 जक 3:8 जक 6:12
5 यश 42:1 यूह 1:32 प्रेष 10:38
6 लूक 2:52
7 यश 9:6
8 इब्र 5:7
9 यूह 7:24 यूह 8:16

11:4 *या “नेकी।”

अपने मुँह की छड़ी से वह धरती को
मारेगा,[1]
अपनी फूँक से* दुष्टों को खत्म कर
देगा।[2]
5 वह कमर पर नेकी का कमरबंद
कसेगा
और सच्चाई का पट्टा बाँधेगा।[3]
6 भेड़िया, मेम्ने के साथ बैठेगा,[4]
चीता, बकरी के बच्चे के साथ
लेटेगा,
बछड़ा, शेर और मोटा-ताज़ा बैल*
मिल-जुलकर रहेंगे#[5]
और एक छोटा लड़का उनकी अगु-
वाई करेगा।
7 गाय और रीछनी एक-साथ चरेंगी
और उनके बच्चे साथ-साथ बैठेंगे,
शेर, बैल के समान घास-फूस
खाएगा।[6]
8 दूध पीता बच्चा नाग के बिल के
पास खेलेगा
और दूध छुड़ाया हुआ बच्चा ज़ह-
रीले साँप के बिल में हाथ
डालेगा।
9 मेरे सारे पवित्र पर्वत पर
वे न किसी को चोट पहुँचाएँगे,[7] न
तबाही मचाएँगे,[8]
क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से
ऐसी भर जाएगी,
जैसे समुंदर पानी से भरा
रहता है।[9]
10 उस दिन यिशै की जड़,[10] झंडे की
तरह खड़ी होगी
और देश-देश के लोगों को
बुलाएगी,[11]
सब राष्ट्र सलाह लेने उसके पास
आएँगे*[1]
और उसका निवास महिमा से भर
जाएगा।

11 उस दिन यहोवा एक बार फिर
अपना हाथ बढ़ाएगा और अपने बचे
हुए लोगों को वापस ले आएगा।
वह अश्शूर,[2] मिस्र,[3] पत्रोस,[4] कूश,*[5]
एलाम,[6] शिनार,# हमात और समुंदर के
द्वीपों से अपने लोगों को इकट्ठा करेगा।[7]
12 वह राष्ट्रों के लिए एक झंडा खड़ा
करेगा और इसराएल के बिखरे हुए
लोगों को इकट्ठा करेगा।[8] और धरती के
चारों कोनों में तितर-बितर हुए यहूदा के
लोगों को वापस ले आएगा।[9]

13 तब एप्रैम की जलन खत्म हो
जाएगी[10]
और यहूदा को सतानेवाले मिट
जाएँगे।
एप्रैम फिर यहूदा से जलन नहीं
रखेगा,
न यहूदा एप्रैम से दुश्मनी निका-
लेगा।[11]
14 वे मिलकर पश्चिम में पलिश्तियों
की ढलान* पर झपट्टा मारेंगे
और पूरब के लोगों को लूट लेंगे।
वे एदोम और मोआब को
दबोचने के लिए अपना हाथ
बढ़ाएँगे[12]
और अम्मोन को अपने अधीन कर
लेंगे।[13]
15 यहोवा मिस्र में समुंदर की खाड़ी को
दो हिस्सों में बाँट देगा*[14]

11:4 *या "हुक्म देकर।" **11:6** *शा., "पाला-पोसा जानवर।" #या शायद, "बछड़ा और शेर साथ-साथ चरेंगे।"

11:10 *या "राष्ट्र उसे ढूँढ़ेंगे।" **11:11** *या "इथियोपिया।" #यानी बैबिलोनिया। **11:14** *शा., "के कंधे।" **11:15** *या शायद, "को सुखा देगा।"

अध्य. 11
1 भज 2:9, भज 110:2, प्रक 19:11, 15
2 2थि 2:8
3 प्रक 3:14
4 यश 65:25
5 यहे 34:25
6 हो 2:18
7 यश 2:4, यश 35:9, यश 60:18, मी 4:4
8 यश 51:3, यश 56:7, यश 65:25
9 भज 22:27, हब 2:14
10 रोम 15:12, प्रक 22:16
11 उत 49:10, यश 49:22, यश 62:10

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 11:18, प्रेष 28:28
2 यश 11:16
3 यश 27:13, यिर्म 44:28, मी 7:12
4 यिर्म 44:15
5 सप 3:10
6 दान 8:2
7 यश 66:19
8 एज 1:2, 3, यश 49:22, यश 62:10
9 भज 147:2, यश 66:20
10 2इत 30:1, 10, यिर्म 31:6
11 यिर्म 3:18, यहे 37:16, 19, हो 1:11
12 यश 25:10, आम 9:11, 12, ओब 18
13 यिर्म 49:2
14 निर्ग 14:22

और महानदी*[1] पर अपना हाथ
उठाएगा।
अपनी साँसों की गरमी# से वह
नदी की सात धाराओं को
मारेगा△
और लोग जूतियाँ पहने उसे पार
कर लेंगे।
16 वह अपने बचे हुओं के लिए अश्शूर
से ऐसा राजमार्ग निकालेगा,[2]
जैसा उसने तब निकाला था जब
इसराएल मिस्र से लौटा था।

12 उस दिन तू यह ज़रूर कहेगा,
"हे यहोवा, तेरा लाख-लाख
शुक्रिया!
भले ही तेरा क्रोध मुझ पर भड़क
उठा था,
पर अब तेरा क्रोध थम गया है और
तूने मुझे दिलासा दिया है।[3]
2 देखो, परमेश्वर मेरा
उद्धारकर्ता है,[4]
मैं उस पर भरोसा रखूँगा और मुझे
कोई डर नहीं सताएगा।[5]
याह* यहोवा मेरी ताकत है, मेरा
बल है,
वही मेरा उद्धारकर्ता है।"[6]
3 तुम खुशी-खुशी उद्धार के सोतों से
पानी भरोगे।[7]
4 उस दिन तुम कहोगे,
"यहोवा का शुक्रिया अदा करो,
उसका नाम पुकारो,
उसके कामों के बारे में देश-देश के
लोगों को बताओ![8]
ऐलान करो कि उसका नाम कितना
महान है।[9]
5 यहोवा की तारीफ में गीत
गाओ*[1] क्योंकि उसने शानदार
काम किए हैं,[2]
यह खबर पूरी दुनिया में फैलाओ।
6 हे सिय्योन की रहनेवाली,* खुशी
के मारे जयजयकार कर,
क्योंकि तेरे बीच इसराएल का
पवित्र परमेश्वर महान है।"

13 आमोज के बेटे यशायाह[3] ने एक
दर्शन देखा, जिसमें बैबिलोन के
खिलाफ यह संदेश सुनाया गया:[4]
2 "वीरान पहाड़ पर झंडा खड़ा
करो,[5]
आवाज़ लगाओ और हाथ दिखाकर
सैनिकों को बुलाओ
कि वे बड़े-बड़े लोगों के फाटकों से
घुस आएँ।
3 मैंने जिन्हें ठहराया है[6] उन्हें* मैंने
हुक्म दिया है,
अपने योद्धाओं को इकट्ठा किया है
कि वे मेरा क्रोध उँडेलें,
इस पर वे घमंड से फूल उठे और
बड़े खुश हुए।
4 सुनो! पहाड़ों से लोगों की आवाज़
आ रही है,
ऐसा लगता है भीड़-की-भीड़ जमा
हो रही है।
राज्यों के इकट्ठा होने का शोर हो
रहा है,
हाँ, राष्ट्रों के जमा होने का कोला-
हल सुनायी दे रहा है।[7]
सेनाओं का परमेश्वर यहोवा युद्ध
के लिए अपनी सेना तैयार कर
रहा है।[8]

11:15 *यानी फरात नदी। #या "पवित्र शक्ति।" △या शायद, "को सात धाराओं में बाँट देगा।" **12:2** *"याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है।

12:5 *या "संगीत बजाओ।" **12:6** *यहाँ सिय्योन के लोगों को एक औरत बताया गया है। **13:3** *शा., "मेरे अलग किए गए लोगों को।"

अध्य. 11
1 उत 15:18
2 एज 1:2, 3; यश 19:23; यश 27:13; यश 35:8; यश 40:3; यश 57:14; यिर्म 31:21

अध्य. 12
3 व्य 30:3; भज 30:5; भज 85:1; भज 126:1; यश 40:2; यश 66:13
4 यश 45:17
5 यश 26:4
6 भज 118:14; हो 1:7
7 यश 49:10
8 1इत 16:8; भज 105:1, 2
9 निर्ग 15:2

दूसरा कॉल.
1 भज 149:3
2 भज 98:1

अध्य. 13
3 यश 1:1
4 यिर्म 25:12; यिर्म 50:1-3; प्रक 18:2
5 यिर्म 51:12; यिर्म 51:27, 28
6 यश 45:1
7 दान 5:28
8 यिर्म 50:15

5 वे दूर देश से, हाँ, आकाश के छोर
से चले आ रहे हैं,[1]
यहोवा और उसके क्रोध के
हथियार पूरी धरती को उजाड़ने
आ रहे हैं।[2]
6 ज़ोर-ज़ोर से रोओ क्योंकि यहोवा
का दिन करीब है!
वह दिन सर्वशक्तिमान की तरफ से
विनाश का दिन होगा।[3]
7 इस कारण सबके हाथ ढीले पड़
जाएँगे,
हर किसी का दिल काँप उठेगा,[4]
8 लोग सुध-बुध खो बैठेंगे,[5]
उनके पेट में मरोड़ उठेगी, वे दर्द से
छटपटाएँगे,
मानो किसी गर्भवती को प्रसव-पीड़ा
उठी हो।
वे हक्के-बक्के होकर एक-दूसरे का
मुँह ताकेंगे,
उनके चेहरे पर डर और चिंता छा
जाएगी।
9 देखो, यहोवा का दिन आ रहा है!
यह दिन क्रोध और जलजलाहट के
साथ आएगा,
यह दिन किसी पर रहम नहीं
खाएगा,
देश का वह हाल करेगा कि
देखनेवालों के होश उड़ जाएँगे।[6]
वह पापियों को उसमें से मिटा देगा।
10 आसमान के तारे और
तारामंडल,*[7]
अपनी रौशनी देना बंद कर देंगे।
उगता सूरज उजाला नहीं देगा,
न चाँद अपनी चाँदनी बिखेरेगा।

11 मैं धरती के रहनेवालों को उनकी
बुराई का सिला दूँगा[1]
और दुष्टों को उनके गुनाहों की
सज़ा दूँगा।
मैं गुस्ताख लोगों का घमंड तोड़ दूँगा
और तानाशाहों का गुरूर तोड़
दूँगा।[2]
12 मैं नश्वर इंसान को शुद्ध सोने से
ज़्यादा,
हाँ, ओपीर के सोने[3] से ज़्यादा
दुर्लभ बना दूँगा।[4]
13 यही वजह है कि मैं, सेनाओं का
परमेश्वर यहोवा,
आसमान को कँपकँपा दूँगा और
क्रोध के दिन अपनी जलजलाहट
लाकर,
धरती को उसकी जगह से हिला
दूँगा।[5]
14 हर कोई अपने लोगों के पास लौट
जाएगा
और अपने देश भाग खड़ा होगा,[6]
जैसे चिकारा अपनी जान बचाकर
भागता है
और भेड़-बकरियाँ बिन चरवाहे के
तितर-बितर हो जाती हैं।
15 जो कोई मिलेगा उसे भेद दिया
जाएगा,
जो पकड़ा जाएगा वह तलवार से
मारा जाएगा।[7]
16 उनकी आँखों के सामने उनके बच्चों
को पटक-पटककर मार डाला
जाएगा।[8]
उनके घर लूट लिए जाएँगे,
उनकी पत्नियों का बलात्कार किया
जाएगा।
17 मैं उनके खिलाफ मादियों को
लाऊँगा,[9]

अध्य. 13
1 यिर्म 50:9 यिर्म 51:28
2 यिर्म 51:11
3 यश 13:18 यिर्म 50:13
4 यिर्म 50:43
5 दान 5:6
6 यिर्म 50:23, 29
7 अय 9:9 अय 38:31 आम 5:8

दूसरा कॉल.
1 भज 137:8 यिर्म 51:37 प्रक 18:2
2 यिर्म 50:29 दान 5:22, 23
3 1रा 10:11
4 यिर्म 50:30 यिर्म 51:3, 4
5 यिर्म 51:29
6 यिर्म 50:16
7 यिर्म 51:3, 4
8 भज 137:8, 9
9 यश 21:2 यिर्म 50:9 यिर्म 51:11 दान 5:30, 31

13:10 *शा., "और केसिल।" यहाँ शायद मृगशिरा और उसके आस-पास के तारा-मंडल की बात की गयी है।

जिनकी नज़रों में चाँदी का कोई
मोल नहीं,
जिन्हें सोने से कोई लगाव नहीं।
18 वे अपने धनुष से जवानों के टुकड़े-
टुकड़े कर देंगे,[1]
बच्चों पर कोई रहम नहीं करेंगे,
गर्भ के फल पर कोई तरस नहीं
खाएँगे।
19 बैबिलोन नगरी, जो राज्यों में सबसे
शानदार नगरी है,[2]
जो कसदियों की शोभा और उनका
घमंड है,[3]
उसका वह हाल होगा जो सदोम
और अमोरा का तब हुआ था,
जब परमेश्वर ने उनका नाश
किया था।[4]
20 वह नगरी फिर कभी नहीं बसेगी,
पीढ़ी-पीढ़ी तक उसमें कोई आकर
नहीं रहेगा,[5]
अरब का कोई आदमी वहाँ अपना
तंबू नहीं गाड़ेगा
और न कोई चरवाहा अपने झुंड को
वहाँ ले जाएगा।
21 वह रेगिस्तान के जंगली जानवरों
का बसेरा बन जाएगी,
वहाँ के घर, उल्लुओं* का ठिकाना
बन जाएँगे,
वहाँ शुतुरमुर्ग रहा करेंगे[6]
और जंगली बकरे कूदेंगे-फाँदेंगे।
22 उसकी मीनारों में जानवर चिल्लाया
करेंगे
और उसके आलीशान महलों में
सियार हुआँ-हुआँ करेंगे।
उसका वक्त पास आ गया है,
उसे और मोहलत नहीं दी
जाएगी।"[7]

अध्य. 13

1 यिर्म 50:14
2 यश 47:5; दान 4:30
3 यश 47:1
4 उत 19:24, 25; यिर्म 50:40
5 यिर्म 50:3, 13; यिर्म 51:29, 37; प्रक 18:21
6 प्रक 18:2
7 यिर्म 51:33

दूसरा कॉल.

अध्य. 14

1 लैव 26:42
2 जक 1:17
3 व्य 30:1-3; यश 66:20; यिर्म 24:6; यहे 36:24
4 यश 56:6, 7; यश 60:3; जक 8:22, 23
5 यश 61:5; जक 2:8, 9
6 एज 3:1; एज 9:8; यिर्म 30:10
7 यिर्म 50:23
8 भज 125:3
9 2इत 36:17; यिर्म 50:17
10 हब 1:6; जक 1:15
11 भज 126:2; यश 49:13; यिर्म 51:48; प्रक 18:20

14 यहोवा याकूब पर दया करेगा[1]
और एक बार फिर इसराएल
को चुन लेगा।[2] परमेश्वर उन्हें अपने
देश में बसाएगा।*[3] परदेसी भी उनके
साथ हो लेंगे और याकूब के घराने से
जुड़ जाएँगे।[4] 2 दूसरे देश के लोग उन्हें
वापस उनके वतन ले आएँगे। और इस-
राएल का घराना यहोवा के देश में
उन लोगों को दास-दासी बना लेगा।[5]
वे अपने बंदी बनानेवालों को बंदी बना
लेंगे और जिन्होंने उनसे जबरन काम
लिया था, उन्हें वे अपने अधीन कर लेंगे।
3 जिस दिन यहोवा तेरा दुख-दर्द
और तेरी बेचैनी दूर करेगा और कड़ी
गुलामी से तुझे राहत दिलाएगा, उस दिन
तू[6] 4 बैबिलोन के राजा पर यह ताना
कसेगा,

"यह क्या, दूसरों से गुलामी कराने-
वाला खुद खत्म हो गया!
उसके ज़ुल्मों का अंत हो गया![7]
5 यहोवा ने उस दुष्ट की छड़ी तोड़
डाली,
उन शासकों की लाठी के टुकड़े-
टुकड़े कर दिए,[8]
6 जो गुस्से में देश-देश के लोगों पर
अंधाधुंध वार कर रहे थे,[9]
राष्ट्रों को जीतने के लिए
एक-के-बाद-एक ज़ुल्म कर
रहे थे।[10]
7 अब पूरी पृथ्वी को चैन मिला है,
हर तरफ शांति है,
लोग खुशी के मारे चिल्ला रहे हैं।[11]
8 सनोवर के पेड़ और लबानोन के
देवदार भी,
तेरा हाल देखकर फूले नहीं
समा रहे।

13:21 *शा., "घुग्घुओं।"

14:1 *या "चैन देगा।"

वे कहते हैं, 'अच्छा हुआ तुझे गिरा
दिया गया,
अब हमें काटने कोई लकड़हारा
नहीं आता।'
9 नीचे कब्र में हलचल मची है,
सब तुझे देखना चाहते हैं।
कब्र मुरदों को नींद से उठाती है,
धरती के सब ज़ालिम अगुवों* को
जगाती है,
सब राष्ट्र के राजाओं को
अपनी-अपनी राजगद्दी से खड़ा
करती है।
10 वे सब-के-सब तुझसे कहते हैं,
'तेरा हाल भी हमारे जैसा हो गया!
भला तू कब से हमारी तरह कम-
ज़ोर बन गया?
11 देख! कब्र* में तेरा घमंड चूर-चूर हो
गया,
तेरे तारोंवाले बाजे खामोश हो
गए।[1]
अब तो तू कीड़ों से सजे बिस्तर पर
सोएगा,
केंचुओं की चादर ओढ़ेगा।'
12 हे चमकते तारे, हे सुबह के बेटे,
तू आसमान से कैसे गिर पड़ा?
हे राष्ट्रों को धूल चटानेवाले,[2]
तू कैसे कटकर गिर गया?
13 तूने मन-ही-मन कहा था, 'मैं
आकाश पर चढ़ूँगा,[3]
अपनी राजगद्दी परमेश्वर के तारों
से भी ऊँची करूँगा।[4]
मैं उत्तर के दूर के इलाके में,
सभा के पर्वत पर बैठूँगा।[5]
14 मैं बादलों से भी ऊपर चढ़ जाऊँगा,
खुद को परम-प्रधान परमेश्वर जैसा
बनाऊँगा।'
15 लेकिन तुझे नीचा किया गया,
तू कब्र* में, हाँ, सबसे गहरे गड्ढे
में जा गिरा।
16 देखनेवाले तुझे घूर-घूरकर देखते हैं,
वे पास आकर तुझे देखते हैं और
कहते हैं,
'क्या यह वही आदमी है जिसके
सामने पूरी धरती काँपती थी,
जिसके खौफ से राज्य थरथरा
उठते थे?[1]
17 क्या यह वही है जिसने धरती को
वीरान कर दिया,
उसके शहरों को ढा दिया[2]
और अपने कैदियों को रिहा नहीं
किया?'[3]
18 दूसरे राष्ट्र के राजाओं को,
हाँ, उन सभी को पूरी इज़्ज़त के
साथ
अपनी-अपनी कब्र* में दफनाया
गया।
19 लेकिन तुझे नहीं दफनाया गया,
तुझे एक सड़ी डाल की तरह फेंक
दिया गया,
तेरी लाश उन लोगों की लाशों
के ढेर में दबी है, जो तलवार से
मारे गए
और जिन्हें गड्ढे में पत्थरों के बीच
फेंक दिया गया।
तू पैरों तले रौंदी गयी लाश जैसा हो
गया है।
20 तुझे राजाओं के साथ कब्र में नहीं
दफनाया जाएगा,
क्योंकि तूने खुद अपना देश
उजाड़ा है

14:9 *शा., "सब बकरों।" **14:11, 15** *या "शीओल।" शब्दावली देखें।

14:18 *शा., "घर।"

अध्य. 14
1 प्रक 18:22
2 2इत 36:17, यिर्म 51:7, यहे 29:19, दान 5:18, 19
3 यश 47:7, दान 4:30
4 दान 5:22, 23
5 भज 48:1, 2

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 51:25
2 2रा 25:21, यश 64:10
3 2रा 24:12, 14, 2रा 25:11

और अपने लोगों की जान ली है।
दुष्ट की औलादों का नाम फिर
कभी नहीं लिया जाएगा।
21 उनके बाप-दादा पाप के दोषी थे,
इसलिए जाओ, बेटों को मार डालने
के लिए एक जगह तैयार करो,
कहीं वे बगावत करके पृथ्वी पर
कब्ज़ा न कर लें
और जगह-जगह अपने शहर न
बसा लें।"

22 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
ऐलान करता है, "मैं बैबिलोन के खिलाफ
उठूँगा।"[1]
यहोवा कहता है, "मैं बैबिलोन का नाम
खाक में मिला दूँगा। उसके बचे हुए लोगों,
उसकी संतान और आनेवाली पीढ़ियों का
नामो-निशान मिटा दूँगा।"[2]
23 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
ऐलान करता है, "मैं उसे साहियों का
अड्डा बना दूँगा। उसके पूरे इलाके को
दलदल में बदल दूँगा। मैं विनाश की झाड़ू
से उसे झाड़ दूँगा।"[3]

24 सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने
शपथ खायी है,
"जैसा मैंने सोचा है वैसा ही होगा,
जो मैंने ठाना है वह पूरा होकर ही
रहेगा।
25 मैं अपने देश में अश्शूर को कुचल
दूँगा
और अपने पहाड़ों पर उसे रौंद
डालूँगा।[4]
उसका जुआ अपने लोगों पर से
हटा दूँगा
और उसका बोझ उनके कंधों से
उतार फेंकूँगा।"[5]
26 पूरी पृथ्वी के खिलाफ मैंने यही
ठाना है
और सब राष्ट्रों के खिलाफ अपना
हाथ बढ़ाया है।
27 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा जो
ठान लेता है,
उसे कौन नाकाम कर सकता है?[1]
जब वह अपना हाथ बढ़ाता है,
तो कौन उसे रोक सकता है?[2]
28 जिस साल राजा आहाज की मौत
हुई,[3] उस साल परमेश्वर ने यह
संदेश दिया:
29 "हे पलिश्त, खुश मत हो कि तुझे
मारनेवाले की लाठी टूट गयी।
क्योंकि साँप की जड़[4] से एक ज़ह-
रीला साँप निकलेगा[5]
और उसका वंश ऐसा विषैला साँप
होगा जिसमें बिजली की सी फुर्ती
होगी।
30 दीन-दुखियों के पहलौठे जी-भरकर
खाएँगे
और गरीब बेखौफ जीएँगे,
मगर तेरे लोगों* को मैं अकाल से
मार डालूँगा
और तेरे बचे हुओं की जान ले
लूँगा।[6]
31 हे शहर, मातम मना! हे शहर के
फाटको, ज़ोर-ज़ोर से रोओ!
हे पलिश्त के लोगो, तुम हिम्मत
हार बैठोगे,
क्योंकि देखो, उत्तर से एक धुआँ
तुम्हारी तरफ बढ़ रहा है,
दुश्मन सेना एक-साथ आ रही
है,एक भी सैनिक पीछे नहीं है।"
32 वे राष्ट्र के दूतों को क्या जवाब
देंगे?
यही कि यहोवा ने सिय्योन की नींव
डाली है[7]

अध्य. 14
1 यश 43:14; यिर्म 50:25; यिर्म 51:56
2 यिर्म 51:62
3 यश 13:1, 21; यिर्म 50:35, 39; प्रक 18:2
4 2इत 32:21, 22; यश 30:31; यश 31:8; यश 37:36, 37
5 यश 10:24

दूसरा कॉल.
1 भज 33:11; नीत 19:21; नीत 21:30; यश 46:11
2 2इत 20:5, 6; यश 43:13
3 2रा 16:20; 2इत 28:27
4 2इत 26:3, 6
5 2रा 18:1, 8
6 यिर्म 47:1; यहे 25:16; योए 3:4; आम 1:6-8; सप 2:4; जक 9:5
7 भज 48:1-3; भज 87:1, 2; भज 132:13, 14

14:30 *शा., "तेरी जड़।"

और उसके दीन जन सिय्योन में
पनाह लेंगे।

15 मोआब के खिलाफ यह संदेश सुनाया गया:[1]
‘मोआब का आर’ खामोश कर
दिया जाएगा,
क्योंकि एक ही रात में वह तबाह हो
जाएगा।[2]
‘मोआब का कीर’ खामोश कर
दिया जाएगा,
क्योंकि एक ही रात में वह तबाह हो
जाएगा।[3]
2 वह मातम मनाने ऊपर मंदिर* में
और दीबोन जाएगा,[4]
ऊँची जगहों में जाकर फूट-फूटकर
रोएगा,
नबो और मेदबा[5] के लिए मोआब
शोक मनाएगा,[6]
सबका सिर मूँड़ा जाएगा[7] और
सबकी दाढ़ी काटी जाएगी।[8]
3 उसकी गलियों में लोग टाट ओढ़े
नज़र आएँगे,
अपने घरों की छत पर और शहर
के चौक में,
वे ज़ोर-ज़ोर से रोएँगे और रोते-रोते
ज़मीन पर गिर पड़ेंगे।[9]
4 हेशबोन और एलाले[10] ज़ोर-ज़ोर से
रोएँगे,
उनकी आवाज़ दूर यहस[11] तक
सुनायी देगी।
मोआब के सैनिक चिल्लाते रहेंगे,
मोआब थर-थर काँप उठेगा।
5 मेरा दिल मोआब के लिए रो
पड़ेगा।
उसके भगोड़े दूर सोआर[12] और
एगलत-शलिशीयाह[1] तक भाग
जाएँगे।
वे लूहीत की चढ़ाई पर चढ़ते हुए
आँसू बहाएँगे,
होरोनैम जाते हुए इस तबाही पर
रोएँगे।[2]
6 क्योंकि निमरीम का सारा पानी सूख
जाएगा,
हरी-हरी घास झुलस जाएगी,
सारी हरियाली खत्म हो जाएगी,
कुछ नहीं बचेगा।
7 इसलिए लोग अपना बचा-खुचा
सामान और दौलत समेटकर,
पेड़ों* की घाटी के उस पार चले
जाएँगे।
8 मोआब का चप्पा-चप्पा रोने के शोर
से गूँज उठेगा,[3]
यह हाहाकार एगलैम तक सुनायी
देगा,
बेर-एलीम तक रोने-बिलखने की
आवाज़ आएगी।
9 दीमोन की नदियाँ खून से लाल हो
जाएँगी।
मैं दीमोन पर एक और मुसीबत
लाऊँगा:
मोआब के जो लोग ज़िंदा बच निक-
लेंगे
और जो देश में रह जाएँगे, उनके
यहाँ एक शेर भेजूँगा।[4]

16 देश के शासक को एक मेढ़ा
भेजो,
उस मेढ़े को सेला से लो और वीराने
के रास्ते से होते हुए,
उसे सिय्योन की बेटी के पहाड़ पर
पहुँचाओ।

15:2 * शा., “घर।”

15:7 * शा., “पहाड़ी पीपल।”

अध्य. 15
1 यिर्म 9:25, 26; यहे 25:11
2 गि 21:28; व्य 2:9
3 2रा 3:24, 25; यिर्म 48:31
4 यिर्म 48:18
5 गि 21:30; यह 13:15-17
6 यिर्म 48:1
7 व्य 14:1
8 यिर्म 48:36, 37
9 यिर्म 48:38
10 गि 32:37; यश 16:9
11 न्या 11:20
12 उत 13:10

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 48:34
2 यिर्म 48:3, 5
3 यिर्म 48:20
4 2रा 17:25, 26

2 अरनोन के घाट पर मोआब के
लोग ऐसे दिखेंगे,[1]
जैसे किसी चिड़िया को उसके घोंसले
से भगा दिया हो।[2]
3 "सलाह दो, फैसले को अंजाम दो,
भरी दोपहरी में छाँव बनकर हिफा-
ज़त दो,
ऐसी छाँव जो रात के अँधेरे जितनी
घनी हो।
तितर-बितर हुए लोगों को छिपा
लो, भागनेवालों को दुश्मनों के
हवाले मत करो।
4 हे मोआब, तू तितर-बितर हुए मेरे
लोगों को अपने बीच रहने दे,
उनके लिए छिपने की जगह बन
जा कि वे नाश करनेवाले से बच
जाएँ।[3]
ज़ुल्म ढानेवाले का नाश हो जाएगा,
तबाही का अंत हो जाएगा,
दूसरों को कुचलनेवाले धरती से
मिट जाएँगे।
5 इसके बाद एक राजगद्दी कायम की
जाएगी, जिसकी बुनियाद अटल
प्यार होगी।
दाविद के तंबू में जो उस राजगद्दी
पर बैठेगा वह विश्वासयोग्य
होगा,[4]
वह सच्चा न्याय करेगा और नेक
काम करने के लिए तत्पर
रहेगा।"[5]
6 हमने मोआब के घमंड के बारे में
सुना है, वह बड़ा मगरूर है,[6]
हमने उसकी हेकड़ी, उसके
घमंड और गुस्से के बारे में
सुना है,[7]
लेकिन उसकी बड़ी-बड़ी बातें
खोखली निकलेंगी।

अध्य. 16
1 गि 21:13
2 यिर्म 48:19
3 यिर्म 48:8, 42
4 2शम 7:16, 17
5 भज 45:6
भज 72:1, 2
यश 9:6, 7
यश 32:1
यिर्म 23:5
6 यिर्म 48:26, 29
सप 2:9, 10
7 आम 2:1

दूसरा कॉल.
1 यश 15:2
यिर्म 48:20
2 2रा 3:24, 25
3 यह 13:15, 17
4 गि 32:37, 38
यह 13:15, 19
5 यह 13:24, 25
यिर्म 48:32
6 यश 15:4
यिर्म 48:34
7 यिर्म 48:33
8 सप 2:9

7 मोआब अपनी तबाही पर रोएगा,
वहाँ के सभी निवासी ज़ोर-ज़ोर से
रोएँगे,[1]
मार खानेवाले लोग कीर-हरासत
की किशमिश की टिकियों को
याद करके आहें भरेंगे।[2]
8 हेशबोन[3] के सीढ़ीनुमा खेत सूख
गए,
राष्ट्रों के शासकों ने सिबमा[4] की
बेलों को,
उसकी लाल-लाल बेलों* को रौंद
डाला,
जो याजेर तक पहुँच चुकी थीं,[5]
वीराने तक बढ़ गयी थीं।
उसकी डालियाँ दूर समुंदर तक फैल
गयी थीं।
9 इसलिए जैसे मैं याजेर की बेलों के
लिए रोया, सिबमा की बेलों के
लिए भी रोऊँगा।
हे हेशबोन और एलाले, मैं तुम्हें
अपने आँसुओं से भिगो दूँगा,[6]
क्योंकि तुम्हारे यहाँ गरमियों की
फसल का शोर, फलों की कटाई
का शोर बंद हो गया।*
10 बागों से खुशियों और जश्न का
माहौल छीन लिया गया,
अंगूरों के बाग में कोई गीत नहीं
गा रहा, कोई खुशी से नहीं झूम
रहा,[7]
दाख-मदिरा के लिए हौद में अंगूर
नहीं रौंदे जा रहे,
क्योंकि मैंने उनका शोर-शराबा बंद
कर दिया।[8]

16:8 *या "लाल-लाल अंगूरों से लदी बेलों।" **16:9** *या शायद, "गरमियों की फसल और फलों की कटाई के वक्त तुम्हारे यहाँ युद्ध की ललकार सुनायी दे रही है।"

11 इसलिए मेरा मन मोआब के लिए
तड़प उठा,[1]
मैं अंदर-ही-अंदर कीर-हरासत के
लिए तड़प उठा,
मानो किसी ने सुरमंडल के तार छेड़
दिए हों।[2]

12 मोआब चाहे ऊँची जगहों पर
जाकर खुद को थका दे, चाहे अपने
पवित्र-स्थान में जाकर दुआएँ माँगे, फिर
भी उसकी नहीं सुनी जाएगी।[3]
13 मोआब के बारे में यह संदेश
यहोवा ने पहले ही दे दिया था। 14 अब
यहोवा कहता है, "ठीक तीन साल के
अंदर* मोआब की शान धूल में मिल
जाएगी। चारों तरफ हाहाकार मचेगा।
उसमें बस गिने-चुने लोग रह जाएँगे, जो
न के बराबर होंगे।"[4]

17 दमिश्क के खिलाफ यह संदेश
सुनाया गया:[5]

"देखो, दमिश्क शहर मिट जाएगा,
मलबे का ढेर बन जाएगा।[6]
2 अरोएर[7] के शहर सुनसान हो
जाएँगे,
वहाँ सिर्फ भेड़-बकरियाँ नज़र
आएँगी
और उन्हें कोई नहीं डराएगा।
3 एप्रैम के किलेबंद शहर मिट
जाएँगे,[8]
दमिश्क का राज्य खाक हो
जाएगा।[9]
सीरिया के बचे हुओं की शान ऐसे
गायब हो जाएगी,
जैसे इसराएलियों की गायब हुई
थी।" यह ऐलान सेनाओं के पर-
मेश्वर यहोवा ने किया है।
4 "उस दिन याकूब की शान घट
जाएगी,
उसका हट्टा-कट्टा* शरीर दुबला हो
जाएगा।
5 वह रपाई घाटी[1] के उस खेत जैसा
दिखेगा,
जिसकी कटाई हो चुकी है,
जहाँ बीनने के लिए कुछ ही बालें
रह गयी हैं।
6 वह जैतून के पेड़ जैसा दिखेगा जिसे
झाड़ दिया गया है,
जिस पर थोड़े ही फल बचे हैं,
बस दो-तीन पके जैतून सबसे ऊँची
डाली पर हैं,
सिर्फ चार-पाँच फल डालियों पर
लटके हैं।"[2] यह ऐलान इसराएल
के परमेश्वर यहोवा ने किया है।

7 उस दिन इंसान अपने बनानेवाले
की ओर ताकेगा और उसकी आँखें इस-
राएल के पवित्र परमेश्वर की तरफ लगी
रहेंगी। 8 वह अपनी बनायी वेदियों की
ओर नहीं देखेगा,[3] न उन पूजा-लाठों*
या धूप-स्तंभों की ओर देखेगा जिन्हें उसने
अपने हाथ से बनाया था।

9 उस दिन उसके किलेबंद शहरों का
हाल,
जंगल की उस बस्ती जैसा हो
जाएगा जो वीरान हो गयी है,[4]
उस टहनी जैसा हो जाएगा, जिसे
इसराएलियों के आगे फेंक दिया
गया हो।
सब वीरान हो जाएगा।
10 तू* अपने उद्धारकर्ता, अपने पर-
मेश्वर को भूल गयी है,[5]

अध्य. 16
1 यश 15:5; यिर्म 48:36
2 यश 15:1
3 यिर्म 48:7, 35
4 यश 25:10; यिर्म 48:46, 47; सप 2:9

अध्य. 17
5 यिर्म 49:23; जक 9:1
6 2रा 16:8, 9; यश 8:4; आम 1:5
7 गि 32:34; यह 13:15, 16; 2रा 10:32, 33
8 2रा 17:6; यश 7:8; यश 28:1, 2; हो 5:14
9 2रा 16:8, 9

दूसरा कॉल.
1 यह 15:8, 12; यह 18:11, 16
2 व्य 4:27; व्य 24:20
3 2इत 31:1; हो 8:6, 11
4 हो 10:14; आम 3:11
5 भज 50:22; हो 8:14

16:14 *शा., "तीन साल, जैसे मज़दूरों के होते हैं।" मज़दूरी का समय पहले से तय होता था, एक भी दिन घटाया-बढ़ाया नहीं जाता था।

17:4 *शा., "मोटा।" **17:8** *शब्दावली देखें। **17:10** *यानी यरूशलेम नगरी।

तूने अपनी चट्टान[1] को, अपने गढ़
को याद नहीं रखा,
इसलिए तू पेड़-पौधों के सुंदर-
सुंदर* बाग लगाती है
और उनमें पराए# की टहनियाँ
रोपती है।
11 चाहे तू उस दिन सावधानी से बाग
के चारों तरफ बाड़ा बाँधे
और सुबह ही बीजों से अंकुर फूट
निकलें,
तब भी तेरी बीमारी और दर्द के
दिन तेरी फसल तेरे हाथ से
निकल जाएगी।[2]
12 सुन! देश-देश के लोगों का होहल्ला
सुनायी दे रहा है,
तूफानी समुंदर की तरह वे हाहाकार
मचा रहे हैं,
राष्ट्रों का कोलाहल सुनायी पड़
रहा है,
मानो ऊँची-ऊँची लहरें गरज
रही हों।
13 ये राष्ट्र ऐसे गरजेंगे मानो समुंदर
गरज रहा हो।
वह उन्हें फटकारेगा और वे ऐसे दूर
भाग जाएँगे,
जैसे तेज़ हवा पहाड़ से भूसा उड़ा ले
जाती है,
जैसे आँधी उखड़ी हुई कँटीली झाड़ी
उड़ा ले जाती है।
14 शाम को आतंक छा जाएगा,
सुबह होते-होते कोई नहीं बचेगा,
जो हमें लूटते हैं, उनके हिस्से में
यही आएगा,
जो हमें उजाड़ते हैं, उनको यही भाग
मिलेगा।

17:10 *या "मनभावने।" #या "पराए देवता।"

अध्य. 17
1 व्य 32:4
2शम 22:32
2 व्य 28:30
हो 8:7

दूसरा कॉल.

अध्य. 18
1 यश 20:3, 4
यहे 30:4
2 2इत 12:2, 3
2इत 14:9
2इत 16:8

18 कीड़ों से भिनभिनाते देश पर
धिक्कार है!
इथियोपिया की नदियों के पास बसे
उस देश पर धिक्कार है![1]
2 वह अपने दूतों को समुंदर के रास्ते,
सरकंडे की नाव में पानी के
उस पार भेजता है और उनसे
कहता है,
"हे फुर्तीले दूतो, उस राष्ट्र के पास
जाओ,
जिसके लोग ऊँचे कदवाले और
चिकनी चमड़ीवाले हैं,
जिनसे हर कोई डरता है।[2]
उस राष्ट्र के पास जाओ जो बहुत
शक्तिशाली है
और जीत-पर-जीत हासिल कर
रहा है,
जिसके देश को नदियाँ बहा ले
गयी हैं।"
3 हे देश-देश के लोगो, हे पृथ्वी के
निवासियो,
तुम जो देखोगे वह पहाड़ों पर लह-
राते झंडे जैसा होगा,
तुम जो सुनोगे वह नरसिंगे की
आवाज़ जैसा होगा,
4 क्योंकि यहोवा ने मुझसे कहा है,
"मैं अपने निवास की जगह को*
चुपचाप देखता रहूँगा,
मानो दिन में चिलचिलाती धूप पड़
रही हो,
अंगूरों की कटाई के गरम मौसम में
ओस पड़ रही हो।
5 फूल पूरी तरह खिल जाएँगे और
अंगूर पकने लगेंगे,
मगर इससे पहले कि कटनी का
समय आए,

18:4 *या शायद, "से।"

उसकी डालियाँ दराँती से काट दी
जाएँगी,
उसकी बेलें काटकर फेंक दी
जाएँगी।
6 वे पहाड़ के शिकारी पक्षियों के
लिए,
धरती के जंगली जानवरों के लिए
छोड़ दी जाएँगी।
पूरी गरमी शिकारी पक्षी उन्हें खाते
रहेंगे,
कटनी के पूरे मौसम में जंगली
जानवर उनसे अपना पेट भरेंगे।
7 उस वक्त सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा के लिए एक तोहफा लाया
जाएगा,
उस राष्ट्र से, जिसके लोग
ऊँचे कदवाले और चिकनी
चमड़ीवाले हैं,
जिनसे हर कोई डरता है,
वही राष्ट्र जो बहुत शक्तिशाली है
और जीत-पर-जीत हासिल कर
रहा है,
जिसके देश को नदियाँ बहा ले
गयी हैं।
वह तोहफा सिय्योन पहाड़ पर लाया
जाएगा,
हाँ, उस जगह, जो सेनाओं के पर-
मेश्वर यहोवा के नाम से जानी
जाती है।”[1]

19 मिस्र के खिलाफ यह संदेश
सुनाया गया:[2]
देखो! यहोवा बादलों पर सवार
होकर तेज़ी से मिस्र आ रहा है,
मिस्र के निकम्मे देवता उसके सामने
थर-थर काँपेंगे[3]
और मिस्र के लोगों का दिल दहल
उठेगा।

2 “मैं मिस्रियों को एक-दूसरे के
खिलाफ भड़काऊँगा,
वे एक-दूसरे से लड़ेंगे,
भाई भाई से, पड़ोसी पड़ोसी से,
शहर शहर से और एक राज्य दूसरे
राज्य से।
3 मिस्रियों की मति मारी जाएगी,
मैं उनकी योजनाएँ नाकाम कर
दूँगा।[1]
वे निकम्मे देवताओं, टोना-टोटका
करनेवालों,
मरे हुओं से संपर्क करनेवालों और
ज्योतिषियों से पूछताछ करेंगे।[2]
4 मैं मिस्र को एक बेरहम मालिक के
हवाले कर दूँगा,
एक ज़ालिम राजा उस पर राज
करेगा।”[3] यह ऐलान सच्चे प्रभु
और सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
ने किया है।
5 समुंदर का पानी सूख जाएगा,
नदी का पानी सूखकर खाली हो
जाएगा।[4]
6 नदियाँ बदबू मारेंगी,
मिस्र में नील की नहरें पतली होते-
होते सूख जाएँगी,
नरकट और पानी के पौधे सड़
जाएँगे।[5]
7 नील नदी के किनारे, उसके मुहाने
पर सारी हरियाली
और आस-पास के सारे खेत[6] सूख
जाएँगे,[7]
हवा उन्हें यहाँ-वहाँ उड़ा ले जाएगी,
कुछ नहीं बचेगा।
8 मछुवारे शोक मनाएँगे,
नील नदी में काँटा डालनेवाले दुख
मनाएँगे,
पानी पर जाल फेंकनेवालों की
गिनती कम हो जाएगी।

अध्य. 18
1 यश 8:18
यश 24:23

अध्य. 19
2 यिर्म 25:17, 19
यहे 29:2
योए 3:19
3 निर्ग 12:12
यिर्म 43:12
यिर्म 46:25
यहे 30:13

दूसरा कॉल.
1 यश 19:11, 13
2 यश 8:19
प्रेष 16:16
प्रक 18:23
3 यश 20:3, 4
यिर्म 46:25, 26
यहे 29:19
4 यहे 30:12
जक 10:11
5 निर्ग 2:3
6 व्य 11:10
7 यहे 29:10

9 बढ़िया अलसी के धागे से काम
करनेवाले,[1]
करघे पर सफेद कपड़ा बुननेवाले
शर्मिंदा किए जाएँगे।
10 मिस्र के जुलाहे मायूस हो जाएँगे,
दिहाड़ी के सब मज़दूर दुख
मनाएँगे।
11 सोअन[2] के हाकिम मूर्ख हैं,
फिरौन के बुद्धिमान सलाहकार भी
मूर्खता-भरी सलाह देते हैं।[3]
ऐसे में तुम फिरौन से कैसे कह
सकते हो,
"हम बुद्धिमानों के बच्चे हैं,
प्राचीन समय के राजाओं के
वंशज हैं"?
12 हे फिरौन, तेरे बुद्धिमान सलाहकार
कहाँ गए?[4]
अगर वे जानते हैं कि सेनाओं के
परमेश्वर यहोवा ने मिस्र के बारे
में क्या ठाना है, तो उनसे कह कि
तुझे बताएँ।
13 सोअन के हाकिमों ने मूर्खता का
काम किया है,
नोप* के हाकिमों[5] ने खुद को धोखे
में रखा है,
मिस्र के गोत्र के मुखियाओं ने मिस्र
को गुमराह कर दिया है।
14 यहोवा ने मिस्र के मन को उलझन
में डाल दिया है,[6]
उसके अगुवे हर काम में उसे ऐसे
गुमराह कर रहे हैं
कि वह शराबी की तरह अपनी ही
उलटी में लड़खड़ा रहा है।
15 मिस्र कुछ नहीं कर पाएगा,
न उसका सिर, न उसकी दुम,
न उसकी टहनी, न ही लंबी-लंबी
घास* कुछ कर पाएगी।

16 उस दिन मिस्र के लोग औरतों के
समान हो जाएँगे। वे थर-थर काँपेंगे और
खौफ खाएँगे क्योंकि सेनाओं का पर-
मेश्वर यहोवा उनके खिलाफ अपना हाथ
बढ़ाएगा।[1] 17 मिस्र, यहूदा से खौफ
खाएगा। उसका नाम सुनते ही मिस्रियों
की जान सूख जाएगी क्योंकि सेनाओं के
परमेश्वर यहोवा ने उनके खिलाफ फैसला
सुना दिया है।[2]

18 उस दिन मिस्र में पाँच शहर
ऐसे होंगे जहाँ कनान की भाषा बोली
जाएगी।[3] वे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
से वफा निभाने की कसम खाएँगे। उनमें
से एक शहर ढा देनेवाला शहर कह-
लाएगा।

19 उस दिन मिस्र के बीचों-बीच
यहोवा के लिए एक वेदी होगी और
मिस्र की सरहद पर यहोवा के लिए
एक खंभा होगा। 20 ये इस बात की
निशानी ठहरेंगे कि लोग सेनाओं के पर-
मेश्वर यहोवा को याद रखें। अत्याचारि-
यों के ज़ुल्म सहते हुए जब वे यहोवा से
फरियाद करेंगे, तो परमेश्वर एक उद्धार-
कर्ता भेजेगा जो बहुत महान होगा और
उन्हें मुसीबतों से बचाएगा। 21 उस
दिन यहोवा खुद को मिस्रियों पर प्रकट
करेगा और वे यहोवा को जान जाएँगे।
वे यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाएँगे, भेंट
लाएँगे, उससे मन्नत मानेंगे और अपनी
मन्नत पूरी करेंगे। 22 यहोवा मिस्र को
सज़ा देगा,[4] वह उसे मारेगा और चंगा
करेगा। वे यहोवा के पास लौट आएँगे
और परमेश्वर उनकी बिनती सुनकर उन्हें
चंगा करेगा।

19:13 *या "मेम्फिस।"

19:15 *या शायद, "न खजूर की डाली, न ही नरकट।"

अध्य. 19
1 निर्ग 9:25, 31; नीत 7:16
2 भज 78:12; यहे 30:14
3 यश 44:25
4 उत 41:8; 1रा 4:30; प्रेष 7:22
5 यिर्म 46:14; यहे 30:13
6 अय 12:20, 24; यश 19:3

दूसरा कॉल.
1 यश 11:15
2 यश 20:3, 4; यिर्म 25:17, 19; यिर्म 43:10, 11; यहे 29:6
3 यिर्म 43:4, 7; यिर्म 44:1
4 यश 19:1; यिर्म 46:13

23 उस दिन मिस्र से एक राजमार्ग[1]
अश्शूर को जाएगा। तब अश्शूरी, मिस्र
आएँगे और मिस्री, अश्शूर जाएँगे। मिस्र,
अश्शूर के साथ मिलकर परमेश्वर की
सेवा करेगा। 24 उस दिन इसराएल भी
मिस्र और अश्शूर से जा मिलेगा[2] और
पूरी धरती के लिए एक आशीष ठह-
रेगा। 25 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
उन्हें आशीष देगा और कहेगा, “हे मिस्र,
हे मेरे लोगो, तुम धन्य हो। हे अश्शूर, मेरे
हाथ के काम और हे इसराएल, मेरी विरा-
सत, तुम धन्य हो।”[3]

20 जिस साल अश्शूर के राजा सर-
गोन ने तरतान* को अशदोद[4]
भेजा, उसी साल तरतान ने अशदोद से
युद्ध करके उस पर कब्ज़ा कर लिया।[5]
2 उस वक्त यहोवा ने आमोज के बेटे
यशायाह से कहा,[6] “जा, जाकर अपनी
कमर से टाट और अपने पैरों से जूतियाँ
उतार।” यशायाह ने वैसा ही किया। वह
नंगे बदन और नंगे पैर घूमता रहा।

3 फिर यहोवा ने कहा, “मेरा सेवक
यशायाह तीन साल तक नंगे बदन और
नंगे पैर घूमता रहा। यह इस बात की
निशानी[7] और चेतावनी है कि मिस्र और
इथियोपिया के साथ क्या होनेवाला है।[8]
4 अश्शूर का राजा आकर मिस्र और
इथियोपिया के लोगों को बंदी बनाएगा।[9]
वह जवान-बूढ़े सब आदमियों के कपड़े
उतरवाकर उन्हें नंगे बदन और नंगे पैर ले
जाएगा, उनके नितंब खुले होंगे। हाँ, मिस्र
का अपमान* किया जाएगा। 5 जिन
लोगों ने इथियोपिया पर आस लगायी थी
और जिन्हें मिस्र की शान पर नाज़ था,*
वे उनका हाल देखकर शर्मिंदा होंगे और
खौफ खाएँगे। 6 समुंदर किनारे बसे ये
लोग उस दिन कहेंगे, ‘देखो! जिन पर
हमने आस लगायी थी और अश्शूर के
राजा से बचने के लिए जिनकी पनाह ली
थी, उनका क्या हश्र हो गया! अब हमें
कौन बचाएगा?’”

21 समुद्री वीराने* के खिलाफ यह
संदेश सुनाया गया:[1]

देखो! वीराने से, उस डरावने
देश से,
ऐसा विनाश आ रहा है, जैसे दक्षिण
से आँधी आती है।[2]
2 मुझे एक भयानक दर्शन दिखाया
गया:
दगाबाज़ नगरी दगा दे रही है,
नाश करनेवाली नगरी नाश कर
रही है।
हे एलाम, उस पर चढ़ाई कर! हे
मादै, उसे घेर ले![3]
उस नगरी ने जो-जो दुख दिए हैं,
उन्हें मैं दूर कर दूँगा।[4]
3 यह दर्शन देखकर मैं दर्द से छट-
पटाने लगा हूँ,*[5]
मुझे ऐसी पीड़ा हो रही है,
जैसे बच्चा जननेवाली औरत को
होती है।
मैं इतना दुखी हो गया हूँ कि कुछ
सुनायी नहीं देता,
इतना घबरा गया हूँ कि कुछ
दिखायी नहीं देता।
4 मेरा दिल ज़ोरों से धड़क रहा है, मैं
थर-थर काँप रहा हूँ,
शाम के जिस पहर का मुझे इंतज़ार

अध्या. 19
1 यश 11:16
यश 35:8
यश 40:3
2 जक 2:11
3 व्य 32:9
भज 115:12
यश 61:9

अध्या. 20
4 यह 13:2, 3
5 आम 1:8
6 यश 1:1
7 यश 8:18
8 यश 18:1
यश 19:1
9 यश 19:4

दूसरा कॉल.

अध्या. 21
1 यश 13:1, 20
2 यश 13:4, 18
3 यिर्म 51:11, 28
दान 5:28, 30
4 भज 137:1
यश 14:4, 7
यश 35:10
5 हब 3:16

20:1 *या “सेनापति।” **20:4** *शा., “को नंगा।” **20:5** *या “जो मिस्र की सुंदरता देखकर खुश होते थे।”

21:1 *ज़ाहिर है कि यहाँ प्राचीन बैबिलोनिया के इलाके की बात की गयी है। **21:3** *शा., “मेरी कमर दर्द से भर गयी है।”

रहता था, अब उसी से डर लगने
लगा है।
5 मेज़ सजा दो, बैठने का इंतज़ाम
करो, खाओ-पीओ![1]
हे हाकिमो, उठो! ढाल का अभिषेक
करो।*
6 यहोवा ने मुझसे कहा,
"जा, जाकर एक पहरेदार तैनात
कर कि वह जो कुछ देखे उसकी
खबर तुझे दे।"
7 उसने क्या देखा,
एक युद्ध-रथ जिसे दो घोड़े तेज़ी से
दौड़ा रहे थे,
एक और युद्ध-रथ जिसे गधे दौड़ा
रहे थे,
एक और युद्ध-रथ जिसे ऊँट भगा
रहे थे।
वह ध्यान से उन्हें देखता रहा, उन
पर टकटकी लगाए रहा।
8 फिर उसने शेर की तरह गरजकर
कहा,
"हे यहोवा, मैं हर दिन पहरे की
मीनार पर पहरा देता हूँ,
हर रात पहरे की चौकी पर तैनात
रहता हूँ।[2]
9 और मैंने क्या देखा,
दो घोड़ोंवाला रथ आ रहा है जिस
पर सैनिक सवार हैं।"[3]
फिर उसने चिल्लाकर कहा,
"गिर पड़ी! बैबिलोन नगरी गिर
पड़ी![4]
उसके देवताओं की खुदी हुई सब
मूरतें चकनाचूर हो गयीं!"[5]
10 हे मेरे रौंदे गए* लोगो,
हे मेरे खलिहान का अनाज,[6]
मैंने इसराएल के परमेश्वर, सेनाओं
के परमेश्वर यहोवा से जो सुना,
वह तुम्हें बता दिया।
11 दूमा* के खिलाफ यह संदेश
सुनाया गयाः
कोई सेईर से मुझे आवाज़ लगा
रहा है,[1]
"पहरेदार! रात कब खत्म होगी?
पहरेदार! रात कब खत्म होगी?"
12 पहरेदार ने जवाब दिया,
"सुबह बस होनेवाली है और फिर
रात हो जाएगी।
अगर तुम कुछ और पूछना चाहते
हो तो पूछो।
दोबारा आना!"
13 रेगिस्तान* के खिलाफ यह संदेश
सुनाया गयाः
हे ददान के कारवाँ,
तुम रेगिस्तान में झाड़ियों के पास#
रात काटोगे।[2]
14 हे तेमा के रहनेवालो,[3]
प्यासे लोगों के लिए पानी लाओ,
भागनेवालों के लिए रोटी लाओ।
15 क्योंकि वे तलवार से, खिंची हुई
तलवार से भाग रहे हैं,
वे तने हुए कमान से और घमासान
युद्ध से भाग रहे हैं।
16 यहोवा ने मुझसे कहा, "ठीक एक
साल के अंदर* केदार की सारी शान[4]
मिट जाएगी। 17 उसके योद्धाओं में
बहुत कम तीरंदाज़ बचेंगे क्योंकि यह

अध्य. 21
1 दान 5:1
2 यहे 3:17; हब 2:1
3 यिर्म 50:3, 9; यिर्म 51:27, 28
4 यश 13:19; यश 14:4; यश 45:1; यिर्म 51:8; दान 5:28, 30; प्रक 14:8; प्रक 18:2
5 यिर्म 50:2; यिर्म 51:44, 52
6 1रा 8:46

दूसरा कॉल.
1 उत 32:3; व्य 2:8; भज 137:7
2 यिर्म 25:17, 23
3 अय 6:19; यिर्म 25:17, 23
4 उत 25:13; भज 120:5; श्रेष 1:5; यश 42:11; यिर्म 49:28; यहे 27:21

21:5 *या "पर तेल मलो।" 21:10 *शा., "दाँवे गए।"

21:11 *मतलब "सन्नाटा।" 21:13 *या "पठार; बंजर इलाके।" #शा., "जंगल में।" 21:16 *शा., "एक साल, जैसे मज़दूरों के होते हैं।" मज़दूरी का समय पहले से तय होता था, एक भी दिन घटाया-बढ़ाया नहीं जाता था।

बात इसराएल के परमेश्वर यहोवा ने कही है।”

22 दर्शन की घाटी* के लिए संदेश:[1]

तुझे क्या हुआ कि तेरे सब लोग
छत पर चढ़े हुए हैं?
2 तेरे यहाँ खलबली मची हुई है,
हाँ, पूरी नगरी में शोर हो रहा है,
खुशियाँ मनायी जा रही हैं।
तेरे जितने लोग मारे गए,
वे न तो तलवार से मारे गए, न ही
युद्ध में।[2]
3 तेरे सभी तानाशाह भाग खड़े हुए,[3]
बिना तीर-कमान चलाए उन्हें बंदी
बना लिया गया।
और जो लोग भागकर दूर निकल
गए थे,
उन्हें भी बंदी बना लिया गया।[4]
4 इसलिए मैंने कहा, “अपनी आँखें
मुझसे फेर लो
कि मैं फूट-फूटकर रोऊँ।[5]
मेरे लोगों के विनाश पर मुझे
दिलासा देने की कोशिश मत
करो।[6]
5 सारे जहान के मालिक और सेनाओं
के परमेश्वर यहोवा की तरफ से,
यह दिन दर्शन की घाटी के लिए,
गड़बड़ी, हार और आतंक का
दिन है।[7]
शहरपनाह तोड़ी जा रही है[8]
और उनकी पुकार पहाड़ तक
सुनायी दे रही है।
6 एलाम[9] ने तरकश हाथ में ले
लिया है,
वह रथों और घुड़सवारों* के साथ
आ रहा है।
कीर[1] ने अपनी ढाल तैयार कर
ली# है।
7 अब तेरी अच्छी-अच्छी घाटियाँ
युद्ध-रथों से भर जाएँगी,
घुड़सवार* फाटक के सामने
अपनी-अपनी जगह तैनात हो
जाएँगे।
8 यहूदा का परदा* हटा दिया
जाएगा।

उस दिन तू वन भवन[2] के हथियार-घर
पर आस लगाएगा। 9 तू दाविदपुर की
शहरपनाह में जगह-जगह पड़ी दरारों[3]
का मुआयना करेगा और निचले तालाब[4]
में पानी जमा करेगा। 10 तू यरूशलेम
के घरों को गिनेगा और शहरपनाह मज़-
बूत करने के लिए घरों को ढा देगा।
11 पुराने तालाब का पानी जमा करने
के लिए तू दोनों शहरपनाहों के बीच एक
कुंड बनाएगा। तू यह सब करेगा लेकिन
अपने महान परमेश्वर की ओर नहीं
देखेगा, जिसने यह कहर ढाने का फैसला
बहुत पहले कर लिया था।

12 उस दिन सारे जहान के मालिक
और सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने
तुम्हें रोने
और मातम मनाने के लिए कहा,[5]
अपने सिर मुँड़वाने और टाट पहन-
ने के लिए कहा।
13 लेकिन तुमने जश्न और खुशियाँ
मनायीं,
भेड़ें और गाय-बैल काटे,
गोश्त खाया, दाख-मदिरा पी[6] और
कहा,

22:1 *ज़ाहिर है कि यहाँ यरूशलेम की बात की गयी है।

22:6 *या “घोड़ों।” #शा., “का कवच उतार लिया।” 22:7 *या “घोड़े।” 22:8 *या “हिफाज़त।”

अध्या. 22
1 यिर्म 6:6
2 यश 3:1; यिर्म 38:2; विल 4:9
3 2रा 25:4, 5
4 2रा 25:11
5 यिर्म 4:19; यिर्म 8:18, 19; यिर्म 9:1
6 मी 1:8, 9
7 मी 7:4
8 2रा 25:10; नहे 1:3
9 उत 10:22

दूसरा कॉल.
1 2रा 16:9
2 1रा 7:1, 2
3 2रा 25:9, 10; यिर्म 52:7
4 नहे 3:15
5 योए 2:17
6 यश 5:12; यश 56:12; आम 6:1, 4; लूक 17:27; याकू 5:5

‘आओ हम खाएँ-पीएँ क्योंकि कल
तो मरना ही है।’”[1]

14 तब सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा
ने मेरे कानों में कहा, “सारे जहान के
मालिक और सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा
का कहना है, ‘तुम लोगों के जीते-जी
तुम्हारे इस पाप का कभी प्रायश्‍चित नहीं
होगा।’”[2]

15 सारे जहान का मालिक और
सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा कहता है,
“जा! महल के प्रबंधक शेबना[3] के पास
जा और उससे कह, 16 ‘तू यहाँ क्या
कर रहा है? तेरा यहाँ कौन है जो तू अपने
लिए कब्र तराश रहा है?’ वह अपने लिए
ऊँची जगह पर कब्र तैयार कर रहा है,
चट्टानों में विश्राम की जगह* खुदवा रहा
है। 17 ‘हे आदमी, देख! यहोवा तुझे
दबोचेगा और ज़ोर से तुझे पटक देगा।
18 वह तुझे कसकर लपेटेगा और गेंद
की तरह खुले मैदान में दूर फेंक देगा।
वहीं तू मरेगा। तेरे शानदार रथ भी वहीं
पड़े रहेंगे, जिससे तेरे मालिक का घराना
अपमानित होगा। 19 मैं तुझसे तेरी
पदवी छीन लूँगा और तुझे तेरे ओहदे से
गिरा दूँगा।

20 उस दिन मैं अपने सेवक एल्या-
कीम[4] को बुलाऊँगा, जो हिलकियाह का
बेटा है। 21 मैं उसे तेरी पोशाक पह-
नाऊँगा, तेरी कमर-पट्टी उसकी कमर
पर कसकर बाँधूँगा[5] और तेरा अधिकार
उसके हाथ कर दूँगा। वह यरूशलेम के
रहनेवालों और यहूदा के घराने का पिता
बनेगा। 22 मैं दाविद के घराने की
चाबी[6] उसके कंधे पर रखूँगा। वह जो
खोलेगा उसे कोई बंद नहीं कर पाएगा
और वह जो बंद करेगा उसे कोई खोल

22:16 *शा., “रहने की जगह।”

अध्य. 22
1 1कुर 15:32
2 लैव 26:31; यश 1:11; यिर्म 15:1; यहे 24:13
3 2रा 18:37; 2रा 19:2
4 2रा 18:26, 37
5 उत 41:41, 42; एस 8:15
6 प्रक 3:7

दूसरा कॉल.
1 यश 22:15, 17

अध्य. 23
2 यिर्म 25:17, 22; यिर्म 47:4; यहे 26:3; यहे 27:2; योए 3:4; आम 1:9, 10; जक 9:3, 4
3 2इत 9:21; यहे 27:25
4 उत 10:2, 4; यिर्म 2:10; यहे 27:6
5 उत 10:15; यहे 27:8
6 यिर्म 2:18
7 यहे 27:32, 33; यहे 28:4

नहीं पाएगा। 23 मैं उसे खूँटी की तरह
एक मज़बूत जगह ठोंक दूँगा। वह अपने
पिता के घराने के लिए आदर की राज-
गद्दी बन जाएगा। 24 और उसके पिता
के घराने की सारी शान* उस पर टँगी
होगी। जिस तरह सभी छोटे बरतन,
कटोरे और बड़े-बड़े मटके खूँटी के सहारे
टँगे होते हैं, वैसे ही उसके बच्चे# और
वंशज उसके सहारे रहेंगे।’

25 सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा
ऐलान करता है, ‘उस दिन जो खूँटी
मज़बूत जगह ठोंकी गयी है, वह
निकाल दी जाएगी।[1] उसे निकालकर
फेंक दिया जाएगा और उस पर जो-जो
चीज़ें टँगी हैं वे गिरकर खत्म हो जाएँगी
क्योंकि यहोवा ने खुद यह बात कही है।’”

23 सोर के लिए यह संदेश दिया
गया:[2]

तरशीश के जहाज़ो,[3] ज़ोर-ज़ोर से
रोओ!
बंदरगाह तबाह हो गया है, जहाज़ों
के टिकने की जगह नहीं रही।
यह खबर उन्हें कित्तीम देश[4] में दी
गयी।
2 समुंदर किनारे रहनेवालो, चुप हो
जाओ,
सीदोन[5] के सौदागरों ने समुंदर से
आते हुए उन्हें मालामाल किया।
3 शीहोर*[6] का अनाज समुंदर के
रास्ते पहुँचाया,
उन्होंने नील की फसल देकर राष्ट्रों
से मुनाफा कमाया,
सोर को आमदनी दी।[7]
4 हे सीदोन, हे समुंदर के मज़बूत गढ़,
शर्मिंदा हो क्योंकि समुंदर ने
कहा है,

22:24 *शा., “वज़न।” #या “शाखाएँ।”
23:3 *यानी नील नदी की धारा।

"मुझे कभी प्रसव-पीड़ा नहीं उठी, न मैंने किसी को जन्म दिया,
मैंने न तो लड़कों को पाला-पोसा, न लड़कियों को।"[1]
5 जब लोग सोर के बारे में सुनेंगे तो बेचैन हो उठेंगे,
जैसे मिस्र की खबर सुनकर हुए थे।[2]
6 समुंदर किनारे रहनेवालो, उस पार तरशीश भाग जाओ!
और ज़ोर-ज़ोर से रोओ!
7 क्या यही वह नगरी है जो बरसों से, पुराने ज़माने से खुशियाँ मना रही थी?
जिसने दूर-दूर के देशों में अपने पैर जमाए थे?
8 सोर नगरी, जिसने दूसरों को ताज पहनाया,
जिसके सौदागर बड़े-बड़े हाकिम थे,
जिसके लेन-देन करनेवालों की पूरी धरती पर इज़्ज़त थी,[3]
उस नगरी के खिलाफ किसने यह सब करने की ठानी?
9 सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने यह ठाना है
कि उसकी खूबसूरती और उसका घमंड मिट्टी में मिला दे,
जिन लोगों को पूरी धरती पर इज़्ज़त दी जाती थी, उन्हें शर्मिंदा कर दे।[4]
10 हे तरशीश की बेटी, नील नदी की तरह अपने देश में फैल जा,
क्योंकि अब यहाँ जहाज़ों के लिए कोई जगह* नहीं।[5]
11 परमेश्वर ने अपना हाथ समुंदर पर बढ़ाया,
उसने राज्यों को हिलाकर रख दिया,
यहोवा ने फीनीके के मज़बूत गढ़ों को नाश करने का हुक्म दिया।[1]
12 उसने कहा, "हे सतायी हुई सीदोन की कुँवारी बेटी,
अब तू और खुशियाँ नहीं मनाएगी।[2]
उठ! समुंदर पार करके कित्तीम[3] जा!
पर वहाँ भी तुझे चैन नहीं मिलेगा।"
13 देख! वे अश्शूरी[4] नहीं, कसदी[5] थे,
जिन्होंने इस नगरी को जंगली जानवरों का अड्डा बना दिया,
जिन्होंने मीनारें खड़ी करके उसकी घेराबंदी की,
उसकी मज़बूत मीनारें गिरा दीं,[6]
पूरी नगरी को खाक में मिला दिया।
14 हे तरशीश के जहाज़ो, ज़ोर-ज़ोर से रोओ!
क्योंकि तुम्हारा मज़बूत गढ़ नाश हो गया है![7]

15 उस दिन सोर को 70 साल के
लिए भुला दिया जाएगा,[8] हाँ, उतने सालों
के लिए जितने साल* एक राजा राज
करता है। 70 साल के आखिर में सोर
उस वेश्या जैसी हो जाएगी, जिसके बारे में
यह गीत गाया जाता है,

16 "हे भुला दी गयी वेश्या,
सुरमंडल उठा और पूरे शहर का चक्कर लगा,
सुरमंडल पर मधुर राग बजा,
ढेर सारे गीत गा कि लोग तुझे फिर याद करें।"

17 70 साल के आखिर में यहोवा

23:10 *या शायद, "बंदरगाह।"

23:15 *शा., "दिन।"

अध्य. 23
1 यिर्म 47:4
2 यश 19:1, 16; यहे 27:35; यहे 28:19
3 यहे 28:2
4 दान 4:37; याकू 4:6
5 यश 23:1; यहे 26:14, 17

दूसरा कॉल.
1 यहे 26:5, 15
2 यहे 26:13
3 यहे 27:6
4 यश 10:12; नहू 3:18; सप 2:13
5 यश 13:19; हब 1:6
6 यहे 26:8, 9
7 यश 23:1
8 यिर्म 25:8, 11; यिर्म 27:3, 6

सोर नगरी पर ध्यान देगा। वह दोबारा
वेश्या की तरह कमाने लगेगी और
धरती के सभी राज्यों के साथ बदचलनी
करेगी। 18 लेकिन उसकी कमाई और
मुनाफा यहोवा के लिए पवित्र ठह-
रेगा। इसे न जमा किया जाएगा, न
बचाकर रखा जाएगा क्योंकि यह कमाई
यहोवा के लोगों के लिए होगी। वे इससे
जी-भरकर खाएँगे और शानदार कपड़े
पहनेंगे।[1]

24 देख! यहोवा देश* को खाली
कर रहा है, उसे वीरान बना
रहा है।[2]
वह उसे उलट देगा[3] और उसके
निवासियों को तितर-बितर कर
देगा।[4]
2 किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा,
न लोगों को न याजक को,
न नौकर को न मालिक को,
न नौकरानी को न मालकिन को,
न खरीदनेवाले को न
बेचनेवाले को,
न उधार देनेवाले को न उधार
लेनेवाले को,
और न देनदार को न लेनदार को।[5]
3 देश पूरी तरह खाली कर दिया
जाएगा,
उसे पूरी तरह लूट लिया जाएगा।[6]
यह बात यहोवा ने कही है।
4 देश मातम मनाएगा*[7] और घुलता
जाएगा,
उपजाऊ ज़मीन धीरे-धीरे सूख
जाएगी और मिट जाएगी।
देश के बड़े-बड़े लोगों की गिनती
घट जाएगी।
5 उसके निवासियों ने उसे दूषित कर
दिया है,[1]
उन्होंने कानून का उल्लंघन किया
है,[2] नियम बदल दिए हैं[3]
और हमेशा तक कायम रहनेवाला*
करार तोड़ दिया है।[4]
6 इसलिए पूरे देश को शाप खा
जाएगा[5]
और उसमें रहनेवाले दोषी ठहरेंगे।
इसलिए देश के निवासी घटते
जाएँगे
और इक्का-दुक्का लोग ही रह
जाएँगे।[6]
7 नयी दाख-मदिरा शोक मना
रही है,* अंगूर की बेलें मुरझा
रही हैं[7]
और जिनका दिल खुश था वे आहें
भर रहे हैं।[8]
8 डफली पर खुशी की धुन बजना बंद
हो गयी है,
मौज-मस्ती करनेवालों का शोर
खत्म हो गया है,
सुरमंडल से खुशी का सुर सुनायी
नहीं दे रहा।[9]
9 दाख-मदिरा पीते वक्त कोई गीत
नहीं गाया जा रहा,
शराब पीनेवालों को शराब कड़वी
लग रही है।
10 तबाह किया गया शहर वीरान हो
गया है,[10]
घर ऐसे बंद पड़े हैं कि कोई अंदर
नहीं जा सकता।
11 लोग सड़कों पर दाख-मदिरा के
लिए चिल्ला रहे हैं।
जश्न का कहीं नामो-निशान नहीं,

24:1 *या "धरती।" 24:4 *या शायद, "सूख जाएगा।"

24:5 *या "प्राचीन।" 24:7 *या शायद, "सूख रही है।"

अध्य. 23
1 यश 60:5

अध्य. 24
2 यश 5:5; यिर्म 4:6; यहे 6:6
3 2रा 21:13
4 व्य 28:63, 64; नहे 1:8; यिर्म 9:16
5 यहे 7:12, 13
6 लैव 26:31; व्य 29:28
7 यिर्म 4:28; विल 1:4

दूसरा कॉल.
1 लैव 18:24; गि 35:33, 34; 2इत 33:9; यिर्म 3:1; यिर्म 23:10, 11; विल 4:13
2 2रा 22:13; दान 9:5
3 मी 3:11
4 निर्ग 19:3, 5; निर्ग 24:7; यिर्म 31:32; यिर्म 34:18-20
5 लैव 26:15, 16
6 व्य 4:27; व्य 28:15, 62
7 यिर्म 8:13; योए 1:10
8 यश 32:12
9 यिर्म 7:34
10 2रा 25:8-10

पूरे देश से खुशी गायब हो
चुकी है।[1]
12 शहर उजाड़ पड़ा है, उसके फाटकों
को तोड़कर
उन्हें मलबे का ढेर बना दिया
गया है।[2]
13 देश-देश के लोगों के बीच मेरे लोग
ऐसे होंगे,
जैसे जैतून के पेड़ को झाड़ने पर
उसमें कुछ ही फल बचे हों,[3]
जैसे अंगूर की कटाई के बाद
बीनने के लिए थोड़े ही अंगूर रह
गए हों।[4]
14 वे ऊँची आवाज़ में पुकारेंगे,
खुशी के मारे चिल्लाएँगे,
पश्चिम* से यहोवा के प्रताप का
ऐलान करेंगे।[5]
15 वे पूरब* में यहोवा की बड़ाई
करेंगे,[6]
समुंदर के द्वीपों में इसराएल के पर-
मेश्वर यहोवा के नाम की बड़ाई
करेंगे।[7]
16 पृथ्वी के कोने-कोने में ये गीत गाए
जाएँगे:
"उस नेक परमेश्वर की महिमा
हो!"[8]
लेकिन मैं कहता हूँ, "मैं घुलता जा
रहा हूँ! मैं घुलता जा रहा हूँ!
हाय! दगाबाज़ दगा दे रहा है,
दगा-पर-दगा दे रहा है।"[9]
17 हे देश के निवासी! आतंक,
गड्ढा और फंदा तेरा इंतज़ार
कर रहे हैं।[10]
18 आतंक का शोर सुनकर जो कोई
भागेगा वह गड्ढे में जा गिरेगा,
गड्ढे से निकलकर जो ऊपर
आएगा वह फंदे में फँस जाएगा,[1]
क्योंकि आकाश के झरोखे खुल
जाएँगे,
धरती की नींव हिल जाएगी।
19 ज़मीन डोल उठेगी, फट जाएगी,
बुरी तरह काँपने लगेगी।[2]
20 वह शराबी की तरह लड़खड़ाएगी,
ऐसे झूमेगी जैसे झोपड़ी आँधी में
थपेड़े खा रही हो।
वह अपने अपराध के बोझ से गिर
जाएगी[3]
और फिर खड़ी नहीं हो पाएगी।
21 उस दिन यहोवा ऊपर आकाश
की सेना
और नीचे पृथ्वी के राजाओं के
खिलाफ कदम उठाएगा।
22 उन्हें इकट्ठा किया जाएगा,
जैसे कैदियों को गड्ढे में इकट्ठा
किया जाता है।
उन्हें काल-कोठरी में बंद कर दिया
जाएगा
और कई दिनों बाद उनसे हिसाब
लिया जाएगा।
23 पूनम की चाँदनी फीकी पड़ जाएगी,
चमकता सूरज भी शर्मसार हो
जाएगा,[4]
क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा, सिय्योन पहाड़ पर और
यरूशलेम में राजा बना है।[5]
वह अपने लोगों के मुखियाओं के
सामने पूरी महिमा के साथ राज
करेगा।[6]

25 हे यहोवा, तू ही मेरा
परमेश्वर है,
मैं तेरी बड़ाई करता हूँ, तेरे नाम की
तारीफ करता हूँ,

24:14 *या "समुंदर।" 24:15 *या "उजाले के इलाके।"

अध्या. 24
1 विल 5:15
2 यश 32:14; यिर्म 9:11; विल 1:4; विल 2:8, 9
3 व्य 24:20
4 यिर्म 6:9; यहे 6:8
5 यश 40:9; यिर्म 31:12; यिर्म 33:10, 11
6 यश 43:5
7 यश 11:11; यश 60:9
8 निर्ग 15:11; एज 9:15; भज 145:7; प्रक 15:3
9 यिर्म 9:2, 3
10 यिर्म 8:3; यहे 14:21

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 48:44
2 यिर्म 4:24
3 2रा 21:16; 2इत 36:15, 16; यिर्म 14:20
4 प्रक 21:23
5 भज 97:1; भज 132:13; यश 12:6; योए 3:17; मी 4:7; जक 2:10; प्रक 11:17
6 1रा 8:11

क्योंकि तूने लाजवाब काम
किए हैं।[1]
बहुत समय पहले ही तूने ठान लिया
था कि तू क्या करेगा,[2]
तूने दिखा दिया कि तू विश्वासयोग्य
और भरोसेमंद है।[3]
2 तूने शहर को पत्थरों का ढेर बना
दिया,
गढ़वाले नगर को खंडहर में बदल
दिया,
परदेसियों का फौलादी किला ढा
दिया।
यह शहर फिर कभी नहीं बनाया
जाएगा।
3 इसलिए शक्तिशाली लोग तेरी
महिमा करेंगे,
खूँखार राष्ट्रों का शहर तुझसे खौफ
खाएगा।[4]
4 जब ज़ालिमों का कहर ऐसे टूट
पड़ता है,
जैसे दीवार पर तेज़ बौछार
पड़ती है,
तब तू दीन-दुखियों का मज़बूत गढ़
ठहरता है,[5]
मुसीबत की घड़ी में गरीबों का मज़-
बूत गढ़ बनता है।
तू आँधी-तूफान में पनाह है,
चिलचिलाती धूप में छाँव है।[6]
5 तू अजनबियों का कोलाहल ऐसे
शांत कर देता है,
जैसे तू झुलसती धरती की गरमी
दूर करता है।
ज़ालिमों के गाने की आवाज़ ऐसे
दबा देता है,
जैसे बादलों के छाने से भीषण
गरमी कम हो जाती है।
6 इस पहाड़ पर[7] सेनाओं का पर-
मेश्वर यहोवा,
देश-देश के सब लोगों के लिए ऐसी
दावत रखेगा,
जहाँ चिकना-चिकना खाना होगा,[1]
उम्दा किस्म की दाख-मदिरा
मिलेगी,
ऐसा चिकना खाना जिसमें गूदेवाली
हड्डियाँ परोसी जाएँगी,
ऐसी बेहतरीन दाख-मदिरा जो छनी
हुई होगी।
7 परमेश्वर पहाड़ से वह चादर हटा
देगा जो देश-देश के लोगों को
ढके है,
वह परदा* निकाल फेंकेगा जो सब
राष्ट्रों पर पड़ा है।
8 वह मौत को हमेशा के लिए निगल
जाएगा,*[2]
सारे जहान का मालिक यहोवा हर
इंसान के आँसू पोंछ देगा[3]
और पूरी धरती से अपने लोगों की
बदनामी दूर करेगा।
यह बात खुद यहोवा ने कही है।
9 उस दिन लोग कहेंगे,
"देखो, यही हमारा परमेश्वर है![4]
उस पर हमने आस लगायी[5]
और उसने हमें बचाया है।[6]
हाँ, वह यहोवा है!
उसी पर हमने आस लगायी।
आओ हम मगन हों और
खुशियाँ मनाएँ क्योंकि उसने हमें
बचाया है।"[7]
10 यहोवा का हाथ इस पहाड़ पर बना
रहेगा[8]
और वह मोआब को उसकी जगह
पर ऐसे रौंद देगा,[9]
जैसे भूसा, गोबर के ढेर में रौंदा
जाता है।

25:7 *या "घूँघट।" 25:8 *या "मिटा देगा।"

अध्य. 25
1 भज 40:5, भज 98:1, भज 107:8, भज 145:1, 4
2 भज 33:11
3 व्य 32:4, नहे 9:33
4 भज 46:10, भज 66:3, यहे 38:23
5 भज 46:1, नहू 1:7, सप 3:12
6 भज 91:1, भज 121:5-7, यश 49:10
7 यश 11:9, यश 65:25

दूसरा कॉल.
1 भज 72:16, भज 85:11, 12, यिर्म 31:12
2 हो 13:14, 1कुर 15:54, 2ती 1:10, प्रक 20:14
3 यश 35:10, प्रक 7:17, प्रक 21:4
4 यश 25:1
5 भज 37:34, भज 146:5
6 मी 7:7
7 भज 20:5, सप 3:14, 15
8 भज 132:13, 14, यश 12:6
9 यश 15:1, सप 2:9

11 परमेश्वर अपना हाथ बढ़ाकर
मोआब को ऐसे मारेगा,
जैसे एक तैराक पानी में तैरते वक्त
हाथ मारता है।
वह अपने कुशल हाथ मोआब पर
ऐसे चलाएगा
कि उसकी सारी हेकड़ी निकल
जाएगी।[1]
12 तेरे* किलेबंद शहर और तेरी
ऊँची-ऊँची शहरपनाह को वह ढा
देगा,
तेरे शहर को ज़मीन पर पटक देगा,
उसे मिट्टी में मिला देगा।

26 उस दिन यहूदा देश में यह गीत
गाया जाएगा:[2]
"हमारा शहर बहुत मज़बूत है।[3]
जो उद्धार परमेश्वर दिलाता है,
वह इसकी शहरपनाह और सुरक्षा
की ढलान है।[4]
2 इसके फाटक खोलो[5] कि नेक राष्ट्र
अंदर आ सके,
वह राष्ट्र जो अपने कामों में
विश्वासयोग्य है।
3 तू उन्हें सलामत रखेगा जो पूरी
तरह तुझ पर निर्भर हैं,*
तू पल-पल उन्हें शांति देगा,[6]
क्योंकि वे तुझ पर भरोसा
रखते हैं।[7]
4 हमेशा यहोवा पर भरोसा रखो,[8]
क्योंकि याह* यहोवा सदा कायम
रहनेवाली चट्टान है।[9]
5 जो नगरी ऊँचाई पर खड़ी घमंड से
इतरा रही थी,

25:12 *ज़ाहिर है, यह बात मोआब से कही गयी है। 26:3 *या शायद, "जिनका मन हिलाया नहीं जा सकता।" 26:4 *"याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है।

अध्य. 25
1 यिर्म 48:29
याकू 4:6

अध्य. 26
2 निर्ग 15:1
2शम 22:1
यश 12:5
यिर्म 33:10, 11
3 भज 48:2, 12
4 यश 60:18
जक 2:4, 5
5 यश 60:11
6 भज 119:165
यश 54:13
फिल 4:6, 7
7 भज 9:10
यिर्म 17:7
8 2इत 20:20
भज 62:8
नीत 3:5
9 व्य 32:4, 31

दूसरा कॉल.
1 भज 63:6
भज 119:62
लूक 6:12
2 भज 9:8
भज 58:10, 11
भज 85:11, 13
भज 96:13
भज 97:2
यश 61:11
3 भज 106:43
4 यिर्म 2:7
हो 11:7
5 भज 28:5
यश 5:12
6 यश 6:9

परमेश्वर ने उसका गुरूर तोड़
दिया,
उसे नीचे गिरा दिया,
उसे ज़मीन पर धूल में गिरा दिया।
6 वह पैरों तले रौंदी जाएगी,
दीन-दुखी और सताए हुए लोग उसे
कुचल देंगे।"
7 नेक जन की राह, सीधाई की राह*
होती है।
हे परमेश्वर, तू सीधा-सच्चा है,
इसलिए तू नेक जन की राह को
समतल करेगा।
8 हे यहोवा, हमने तुझ पर आस
लगायी है
कि हम तेरे न्याय की राह पर
चल सकें।
तेरे लिए और तेरे नाम के लिए*
हम तड़प उठते हैं।
9 रात को मेरा रोम-रोम तेरे लिए
तरसता है,
मेरा मन तुझे ढूँढ़ता फिरता है।[1]
जब तू धरती का न्याय करता है,
तो लोग सीखते हैं कि नेकी क्या
होती है।[2]
10 लेकिन अगर दुष्ट पर दया भी की
जाए,
तब भी वह नेकी करना नहीं
सीखेगा,[3]
सीधाई के देश में भी वह दुष्ट काम
करेगा[4]
और यहोवा का गौरव नहीं देख
पाएगा।[5]
11 हे यहोवा, तेरा हाथ उन पर उठा
हुआ है, फिर भी वे नहीं देखते।[6]

26:7 *या "समतल।" 26:8 *यानी परमेश्वर और उसके नाम को याद करने, उसका ऐलान करने के लिए।

वे यह देखकर शर्मिंदा होंगे कि तुझे
अपने लोगों के लिए कैसी धुन है,
हाँ, तेरी यही आग तेरे दुश्मनों को
भस्म कर देगी।
12 हे यहोवा, तू हमें शांति देगा,[1]
क्योंकि हम जो कुछ कर पाए,
तेरी वजह से कर पाए।
13 हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तेरे
अलावा हम पर दूसरे मालिकों ने
भी राज किया,[2]
मगर हम सिर्फ तेरे नाम की तारीफ
करेंगे।[3]
14 वे तो मर गए हैं और फिर ज़िंदा
नहीं होंगे,
कब्र में बेजान पड़े हैं, वे नहीं
उठेंगे,[4]
तूने उनके खिलाफ कदम जो
उठाया था,
उन्हें नाश करने, उनका नामो-
निशान मिटाने की जो ठानी थी।
15 हे यहोवा, तूने राष्ट्र के लोगों की
गिनती बढ़ायी है,
हाँ, तूने उनकी गिनती बढ़ायी है,
तूने अपनी महिमा की है,[5]
राष्ट्र की सरहदें चारों तरफ
फैलायी हैं।[6]
16 हे यहोवा, दुख में वे तेरी तरफ मुड़े,
जब तूने उन्हें सुधारने के लिए सज़ा
दी, तो दबी आवाज़ में उन्होंने
प्रार्थना की,
तेरे सामने अपना दिल खोलकर
रख दिया।[7]
17 हे यहोवा, तेरी वजह से हमारा यह
हाल है,
हम उस गर्भवती के जैसे हो गए हैं,
जिसे प्रसव-पीड़ा उठी है
और जो दर्द से तड़प रही है, चीख
रही है।
18 भले ही हम गर्भवती के समान थे,
हमें प्रसव-पीड़ा भी उठी,
मगर हमने सिर्फ हवा को जन्म
दिया।
हम देश को बचा नहीं पाए,
उसे आबाद करने के लिए कोई पैदा
नहीं हुआ।
19 परमेश्वर कहता है, "तेरे जो लोग
मर गए हैं, वे उठ खड़े होंगे,
मेरे लोगों की लाशों* में जान आ
जाएगी।[1]
तुम जो मिट्टी में जा बसे हो,[2] जागो!
खुशी से जयजयकार करो!
तेरी ओस सुबह की ओस# जैसी है!
कब्र में पड़े बेजान लोगों को धरती
लौटा देगी कि वे ज़िंदा किए
जाएँ।
20 हे मेरे लोगो, अपने-अपने अंदरवाले
कमरे में जाओ
और दरवाज़ा बंद कर लो।[3]
थोड़ी देर के लिए छिप जाओ,
जब तक कि मेरी जलजलाहट शांत
नहीं हो जाती।[4]
21 देखो! मैं यहोवा अपनी जगह से आ
रहा हूँ
कि उस देश के निवासियों से उनके
गुनाहों का हिसाब लूँ।
देश में जितना खून बहाया गया,
वह खुलकर सामने आएगा,
वहाँ मारे गए लोगों को नहीं
छिपाया जाएगा।"

27 उस दिन यहोवा अपनी पैनी
और डरावनी तलवार से,[5]
फुर्तीले लिव्यातान* पर वार
करेगा,

अध्य. 26
1 यश 57:19 यिर्म 33:6, 7
2 2इत 12:7, 8
3 2ती 2:19
4 यिर्म 51:39
5 यश 60:21
6 1रा 4:21
7 भज 78:34, 35 हो 5:15

दूसरा कॉल.
1 यश 25:8 हो 13:14 मर 12:26 यूह 5:28, 29 यूह 11:24, 25 प्रेष 24:15 1कुर 15:21 1थि 4:14 प्रक 20:12, 13
2 उत 3:19
3 उत 7:15, 16 निर्ग 12:22, 23 नीत 18:10
4 भज 27:5 भज 91:4

अध्य. 27
5 व्य 32:41 यिर्म 47:6

26:19 *शा., "मेरे मुरदे।" #या शायद, "जड़ी-बूटियों (गुलखेर) पर पड़ी ओस।"
27:1 *शब्दावली देखें।

उस बलखाते साँप लिव्यातान पर
वार करेगा,
वह समुंदर में रहनेवाले उस बड़े
जंतु को मार डालेगा।
2 उस दिन इस औरत* के लिए तुम
यह गीत गानाः
“अंगूरों की बगिया में दाख-मदिरा
बन रही है!#[1]
3 यहोवा कहता है, ‘मैं बगिया की
हिफाज़त कर रहा हूँ,[2]
मैं हर वक्त उसमें पानी डालता हूँ,[3]
दिन-रात उसकी रक्षा करता हूँ
कि कोई उसे नुकसान न पहुँचाए।[4]
4 मैं अब उससे गुस्सा नहीं हूँ।[5]
अगर कोई मेरी बगिया में
कँटीली झाड़ियाँ और जंगली पौधे
बोएगा,
तो मैं उससे लड़ूँगा और
उसी वक्त उन्हें कुचल दूँगा,
भस्म कर दूँगा।
5 अगर वह नहीं चाहता कि ऐसा हो,
तो उससे कह
कि वह मेरे मज़बूत गढ़ में आए
और मेरे साथ शांति कायम करे,
हाँ, वह आकर शांति कायम
करे।’”
6 आनेवाले दिनों में याकूब जड़
पकड़ेगा,
इसराएल में फूल खिलेंगे और
कोपलें निकलेंगी,[6]
उसकी पैदावार से धरती भर
जाएगी।[7]
7 उसे जिस सख्ती से मारा गया,

27:2 *ज़ाहिर है कि यहाँ इसराएल की बात की गयी है, जिसे एक औरत बताया गया है और जिसकी तुलना अंगूरों के बाग से की गयी है। #या “दाख-मदिरा में झाग उठ रहा है।”

अध्य. 27
1 भज 80:8; यश 5:1; यिर्म 2:21
2 व्य 33:29
3 यश 35:6; यश 41:18; यश 58:11
4 भज 121:4; यश 46:3, 4
5 भज 85:2, 3; यश 12:1
6 यहे 39:25; हो 14:5
7 यश 60:21, 22; यिर्म 30:18, 19

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 4:11; यहे 13:13
2 यश 4:4; यश 48:10
3 मी 5:13, 14
4 यश 6:11, 12; यिर्म 26:18; विल 2:5; यहे 36:4
5 यश 32:14
6 व्य 32:28; यश 1:3; यिर्म 4:22; हो 4:6
7 2इत 36:15, 16; यहे 9:9, 10

क्या उतनी सख्ती से मारना
चाहिए था?
उसे जैसी मौत मिली, क्या ऐसी मौत
मिलनी चाहिए थी?
8 तू उस नगरी का सामना करेगा,
चिल्लाकर उसे दूर भगा देगा।
तू मानो पूर्वी हवा के तेज़ झोंके से
उसे उड़ा देगा।[1]
9 इस तरह याकूब के पापों का प्राय-
श्चित होगा,[2]
जब उसके पाप दूर किए जाएँगे तो
उसका फल यह होगाः
वह* वेदी के सब पत्थरों को
चूना पत्थर की तरह चूर-चूर कर
देगा।
एक भी पूजा-लाठ# या धूप-स्तंभ
नहीं बचेगा।[3]
10 उस किलेबंद नगरी को छोड़ दिया
जाएगा,
उसके चरागाह, वीराने की तरह
सुनसान हो जाएँगे।[4]
वहाँ बछड़ा चरेगा और आराम
करेगा,
वह उसकी सारी टहनियाँ चट कर
जाएगा।[5]
11 जब उस नगरी की टहनियाँ सूख
जाएँगी,
तो औरतें आकर उन्हें तोड़ लेंगी
और उनसे आग जलाएँगी।
उन लोगों में कोई समझ नहीं,[6]
इसलिए उनका बनानेवाला उन पर
दया नहीं करेगा,
उन्हें रचनेवाला उन पर कोई रहम
नहीं खाएगा।[7]
12 हे इसराएल के लोगो, जैसे कोई

27:9 *ज़ाहिर है, यहोवा। #शब्दावली देखें।

पेड़ से एक-एक फल तोड़कर उन्हें इकट्ठा
करता है, यहोवा भी महानदी* से लेकर
मिस्र घाटी#[1] तक के इलाकों से तुम्हें
इकट्ठा करेगा।[2] 13 उस दिन ज़ोर से
नरसिंगा फूँका जाएगा[3] और जो अश्शूर
में मर-मरके जी रहे थे[4] और जो मिस्र में
तितर-बितर हो गए थे,[5] वे यरूशलेम के
पवित्र पहाड़ पर आएँगे और यहोवा के
आगे दंडवत करेंगे।[6]

28 धिक्कार है एप्रैम के शराबियों
पर, उनके घमंडी मुकुट*
पर![7]
धिक्कार है उनके खूबसूरत फूलों के
ताज पर जो मुरझा रहा है,
जो उस उपजाऊ घाटी के सिर पर
सजा है, जहाँ लोग दाख-मदिरा
के नशे में धुत्त हैं।
2 देखो, यहोवा एक ताकतवर सूरमा
भेजेगा,
जो ओलों की ज़बरदस्त बारिश
और तबाही मचानेवाली आँधी
की तरह आएगा,
तूफान और भयंकर बाढ़ की तरह
आएगा
और उस मुकुट को धरती पर ज़ोर
से पटक देगा।
3 एप्रैम के शराबी जिस मुकुट पर
घमंड करते हैं,
उसे पैरों तले रौंदा जाएगा।[8]
4 उपजाऊ घाटी के सिर पर सजे,
खूबसूरत फूलों के मुरझाते ताज का
वही हाल होगा,
जो गरमियों से पहले अंजीर की
पहली फसल का होता है,

27:12 *यानी फरात नदी। #शब्दावली देखें। 28:1 *ज़ाहिर है कि यहाँ राजधानी सामरिया की बात की गयी है।

जो कोई उसे देखता है उसे तोड़कर
तुरंत निगल जाता है।

5 उस दिन सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा अपने बचे हुए लोगों के लिए
शानदार मुकुट और फूलों का खूब-
सूरत ताज बनेगा।[1] 6 जो न्याय करने
बैठते हैं, उन्हें वह न्याय करने की
समझ* देगा और जो फाटक पर हमला-
वरों का सामना करते हैं, उन्हें लड़ने की
ताकत देगा।[2]

7 याजक और भविष्यवक्ता भी दाख-
मदिरा पीकर बहक गए हैं,
वे शराब के नशे में लड़खड़ाते हैं,
हाँ, वे शराब पीकर बहक गए हैं,
दाख-मदिरा से उनका दिमाग फिर
गया है,
शराब की वजह से वे
लड़खड़ाते हैं।
उनके दर्शनों ने उन्हें भटका
दिया है,
वे सही फैसले नहीं ले पा रहे।[3]
8 उनकी मेज़ गंदगी से सनी हुई है,
हर तरफ उलटी-ही-उलटी है।
9 वे कहते हैं, "वह किसे सिखाने
चला है?
किसे अपना संदेश समझाना
चाहता है?
क्या हम कोई बच्चे हैं जिनका दूध
अभी-अभी छुड़ाया गया है?
जिन्हें अपनी माँ की छाती से अभी-
अभी हटाया गया है?
10 जब देखो बस यही रट लगाए
रहता है,
'आदेश पर आदेश, आदेश पर
आदेश!

28:6 *या "शक्ति।"

अध्य. 27

1 गि 34:2, 5

2 व्य 30:3; नहे 1:9; यश 11:11, 12; आम 9:14

3 यश 49:22; यश 62:10

4 2रा 17:6; यश 11:16; हो 9:3

5 यिर्म 43:4, 7; जक 10:10

6 यश 2:3; यश 25:6; यश 52:1; यिर्म 3:17

अध्य. 28

7 यश 7:2

8 2रा 17:6; यश 17:3

दूसरा कॉल.

1 यश 11:16

2 भज 18:34; भज 68:35

3 2रा 16:10, 11; यिर्म 5:31

नियम* पर नियम, नियम पर
नियम![1]
थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ।'"
11 इसलिए परमेश्वर लड़खड़ाती
ज़बानवालों और विदेशी भाषा बोलने-
वालों के ज़रिए उन लोगों से बात
करेगा।[2] 12 उसने एक बार उनसे
कहा था, "यह आराम करने की जगह है।
थके-माँदों को यहाँ आराम करने दे कि वे
तरो-ताज़ा हो जाएँ।" मगर उन्होंने एक
न सुनी।[3] 13 तब यहोवा फिर से उन्हें
कहेगा,

"आदेश पर आदेश, आदेश पर
आदेश!
नियम* पर नियम, नियम पर
नियम![4]
थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ।"
मगर वे उसकी नहीं सुनेंगे
और पीछे की तरफ धड़ाम से गिर
पड़ेंगे,
वे घायल हो जाएँगे और फँसकर
पकड़े जाएँगे।[5]

14 हे डींगें मारनेवालो, हे यरूशलेम के
लोगों के शासको,
यहोवा का वचन सुनो!

15 तुम लोग कहते हो,
"हमने मौत के साथ करार
किया है,[6]
कब्र के साथ साझेदारी की है।*
इसलिए जब अचानक पानी का
सैलाब आएगा,
तो हम तक नहीं पहुँचेगा,
क्योंकि हमने झूठ को अपनी पनाह
बनाया है
और कपट में शरण ली है।"[1]

16 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है,
"मैं सिय्योन में परखे हुए पत्थर की
नींव डाल रहा हूँ,[2]
उस कीमती कोने के पत्थर[3] को
नींव में बिठा रहा हूँ।[4]
जो कोई उस पर विश्वास करता है
वह नहीं घबराएगा।[5]

17 मैं न्याय को नापने की डोरी[6]
और नेकी को साहुल* बनाऊँगा।[7]
ओलों की बारिश झूठ की उनकी
पनाह को ढा देगी,
बाढ़ उनके छिपने की जगह को बहा
ले जाएगी।

18 मौत के साथ तुम्हारा करार रद्द हो
जाएगा,
कब्र के साथ तुम्हारी साझेदारी नहीं
रहेगी।[8]
जब अचानक पानी का सैलाब
आएगा,
तो तुम तहस-नहस हो जाओगे।

19 जब-जब वह आएगा,
तुम्हें बहा ले जाएगा।[9]
हर सुबह आएगा,
चाहे दिन हो या रात, वह नहीं
रुकेगा।
खौफ खाकर ही वे समझेंगे कि वह
संदेश क्या है।"*

20 पलंग पैर फैलाने के लिए छोटा पड़
जाएगा
और चादर ओढ़ने के लिए छोटी
पड़ जाएगी।

21 यहोवा उठ खड़ा होगा जैसे वह
परासीम पहाड़ पर उठा था,

अध्य. 28
1 2रा 21:13; यश 28:17; विल 2:8
2 व्य 28:49, 50; यिर्म 5:15; 1कुर 14:21
3 भज 81:10, 11
4 यश 28:17
5 2इत 36:15, 16; यश 8:14, 15
6 यश 28:18

दूसरा कॉल.
1 यश 30:9, 10
2 भज 118:22
3 मत 21:42; मर 12:10; लूक 20:17; प्रेष 4:11
4 इफ 2:19, 20
5 रोम 9:33; रोम 10:11; 1पत 2:4, 6
6 2रा 21:13
7 यिर्म 11:20
8 यश 28:15
9 यश 24:1

28:10, 13 *शा., "नापने की डोरी।" **28:15** *या शायद, "के साथ दर्शन देखा है।"

28:17 *दीवार वगैरह की सीध नापने का औज़ार। **28:19** *या शायद, "जब वे सम-झेंगे तो उन पर खौफ छा जाएगा।"

वह कदम उठाएगा जैसे उसने
गिबोन के पासवाली घाटी में
उठाया था,[1]
ताकि वह अपना काम, अपना
निराला काम पूरा करे,
ताकि वह अपना काम, अपना
अनोखा काम पूरा करे![2]
22 ठट्ठा मत उड़ाओ,[3] नहीं तो तुम्हारे
बंधन और कस दिए जाएँगे,
क्योंकि मैंने सारे जहान के मालिक
और सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
से सुना है
कि उसने पूरे देश* का नाश करने
की ठान ली है।[4]
23 मेरी बात पर कान लगाओ,
ध्यान से सुनो मैं क्या कह रहा हूँ।
24 क्या खेत जोतनेवाला, बीज बोने के
लिए पूरे दिन हल चलाता है?
क्या वह सारा वक्त मिट्टी के ढेले
तोड़ने और पटेला चलाने में लगा
देता है? नहीं![5]
25 खेत समतल करने के बाद,
वह कलौंजी और जीरे के बीज
छितराता है,
गेहूँ, ज्वार और जौ अपनी-अपनी
जगह बोता है
और खेत के किनारे-किनारे कठिया
गेहूँ[6] लगाता है।
26 परमेश्वर इंसान को सही राह पर
चलना सिखाता है,*
उसका परमेश्वर उसे हिदायतें
देता है।[7]
27 कलौंजी दाँवने की पटिया[8] से नहीं
दाँवी जाती
और जीरा गाड़ी के चक्के से नहीं
दाँवा जाता,

28:22 *या "पूरी धरती।" 28:26 *या "को सुधारता है; सज़ा देता है।"

अध्य. 28
1 यह 10:8-14 2शम 5:20 1इत 14:10-16
2 विल 2:15 हब 1:5-7
3 2इत 36:15, 16 यिर्म 20:7
4 यश 10:23 यश 24:1
5 भज 30:5 भज 103:9 मी 7:18
6 निर्ग 9:31, 32 यहे 4:9
7 भज 119:71
8 यश 41:15 आम 1:3

दूसरा कॉल.
1 भज 103:9 यश 21:10 मी 7:18
2 लैव 26:44 यिर्म 10:24
3 भज 40:5 यिर्म 32:19 रोम 11:33

अध्य. 29
4 2शम 5:7, 9
5 व्य 16:16
6 व्य 28:53-55
7 यश 51:19 विल 1:4
8 यिर्म 15:14 सप 1:7
9 2रा 24:11 2रा 25:1

बल्कि कलौंजी डंडे से
और जीरा लाठी से झाड़ा जाता है।
28 जिस अनाज से रोटी बनती है,
उसे दाँवा तो जाता है मगर लगातार
नहीं।[1]
और जब घोड़े से लगे छोटे-छोटे
पहिए उस पर चलाए जाते हैं,
तो उन्हें इतना नहीं चलाया जाता
कि अनाज कुचल जाए।[2]
29 ये बातें भी सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा की तरफ से हैं,
जिसका मकसद बेजोड़ है
और जो अपने हर काम में सफल
होता है।*[3]

29 "धिक्कार है अरीएल* पर,
हाँ, उस नगरी पर जहाँ दाविद
का डेरा था।[4]
त्योहारों का उसका सिलसिला[5]
जारी रहे,
साल-दर-साल यह चलता रहे।
2 मगर मैं अरीएल पर आफत
लाऊँगा,[6]
हर तरफ मातम और विलाप
होगा,[7]
मेरे लिए यह नगरी वेदी का अग्नि-
कुंड बन जाएगी।[8]
3 मैं तेरे चारों तरफ मोरचा बाँधूँगा,
नुकीले लट्ठों का बाड़ा बनाऊँगा,
हर तरफ से तेरी घेराबंदी करूँगा।[9]
4 तुझे नीचे ज़मीन पर पटक दिया
जाएगा,

28:29 *या "और जिसकी फायदा पहुँचानेवाली बुद्धि महान है।" 29:1 *शायद इसका मतलब है, "परमेश्वर की वेदी का अग्नि-कुंड।" ज़ाहिर है कि यहाँ यरूशलेम की बात की गयी है।

तू वहाँ से बोलेगी, मगर तेरी
आवाज़ धूल में दबी रह जाएगी।
ज़मीन से तेरी आवाज़ ऐसी
लगेगी,[1]
मानो कोई मरे हुओं से संपर्क करने-
वाला बोल रहा हो।
तेरी चहचहाहट मिट्टी से सुनायी
देगी।
5 तेरे दुश्मनों* की भीड़ धूल बन
जाएगी,[2]
ज़ालिमों की भीड़ भूसे की तरह उड़
जाएगी,[3]
यह सब अचानक पलक झपकते ही
होगा![4]
6 मैं, सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
तुझे छुड़ाने के लिए कदम
उठाऊँगा,
उस वक्त बादल गरजेंगे, भूकंप
होगा, भयानक शोर सुनायी देगा,
ज़ोरदार आँधी-तूफान चलेगा और
भस्म करनेवाली आग की लपटें
उठेंगी।"[5]
7 तब राष्ट्रों की जो भीड़ अरीएल से
युद्ध करेगी,[6]
जो लोग उससे लड़ेंगे,
उस पर हमला करने के लिए मीनारें
खड़ी करेंगे,
उस पर मुसीबतें लाएँगे,
वे सब एक सपना बनकर रह
जाएँगे, रात में देखा गया सपना।
8 यह ऐसा होगा मानो कोई भूखा
इंसान सपने में खाना खा रहा हो,
मगर जागने पर उसका पेट खाली
ही है।
जैसे कोई प्यासा सपने में पानी पी
रहा हो,
मगर नींद खुलने पर वह प्यासा
और थका-माँदा ही है।
यही हाल राष्ट्रों की उस भीड़ का
होगा,
जो सिय्योन पहाड़ से लड़ेगी।[1]
9 दंग रह जाओ, हैरत में पड़ जाओ,[2]
इस कदर अंधे हो जाओ कि तुम्हें
कुछ दिखायी न दे।[3]
वे नशे में हैं मगर दाख-मदिरा के
नशे में नहीं,
वे लड़खड़ा रहे हैं, मगर शराब
पीकर नहीं।
10 यहोवा ने तुम लोगों को मानो गहरी
नींद में डाल दिया है,[4]
उसने तुम्हारी आँखों को, हाँ,
भविष्यवक्ताओं को अंधा कर
दिया है,[5]
उसने तुम्हारी अक्ल पर, हाँ,
दर्शियों पर परदा डाल दिया है।[6]

11 हर दर्शन तुम्हारे लिए मुहर-
बंद किताब जैसा है।[7] जब किसी पढ़े-
लिखे को यह किताब देकर कहा जाएगा,
"ज़रा इसे ज़ोर से पढ़ना," तो वह कहेगा,
"मैं कैसे पढ़ूँ, यह तो मुहरबंद है।"
12 और जब इसे किसी अनपढ़ को देकर
कहा जाएगा, "ज़रा पढ़ना इसे," तो वह
कहेगा, "मुझे पढ़ना नहीं आता।"

13 यहोवा कहता है, "ये लोग अपने
मुँह और होंठों से तो मेरा आदर
करते हैं,[8]
मगर इनका दिल मुझसे कोसों दूर
रहता है।
वे कहने को तो मेरा डर मानते हैं,
मगर इंसानों की आज्ञाओं पर
चलते हैं।[9]
14 इसलिए मैं एक बार फिर इन लोगों
के साथ कुछ अनोखा करूँगा,[10]

अध्य. 29
1 यश 51:23
2 यश 13:19; यश 14:22; यश 21:9
3 यश 13:11; यश 17:13
4 यश 47:9; यश 48:3
5 1शम 2:10; यिर्म 50:25; नहू 1:3
6 यिर्म 25:12, 14

दूसरा कॉल.
1 यश 10:12; यिर्म 51:24
2 हब 1:5
3 यश 6:9
4 यश 6:10; रोम 11:8
5 यिर्म 14:14; यिर्म 27:15
6 मी 3:7
7 यश 8:16
8 यश 48:1; यिर्म 5:2
9 मत 15:7-9; मर 7:6-8
10 यश 28:21; हब 1:5

29:5 *शा., "परदेसियों।"

एक-से-एक अद्‌भुत काम करूँगा।
तब उनके बुद्धिमानों की बुद्धि खत्म
हो जाएगी,
उनके समझदारों की समझ गायब
हो जाएगी।"[1]
15 धिक्कार है उन पर, जो यहोवा से
अपनी योजनाएँ छिपाने के लिए
क्या-कुछ नहीं करते।[2]
वे अँधेरी जगहों में छिपकर काम
करते हैं
और कहते हैं, "हमें कौन देख
रहा है?
किसे पता हम क्या कर रहे हैं?"[3]
16 तुम लोग कितने टेढ़े हो!*
क्या मिट्टी कुम्हार के बराबर हो
सकती है?[4]
क्या बनी हुई चीज़ अपने बनानेवाले
के बारे में कह सकती है,
"उसने मुझे नहीं बनाया"?[5]
या रची गयी चीज़ अपने रचनेवाले
के बारे में कह सकती है,
"उसमें कुछ समझ नहीं"?[6]
17 कुछ ही देर में लबानोन फलों का
बाग बन जाएगा,[7]
फिर यह बाग हरा-भरा जंगल बन
जाएगा।[8]
18 उस दिन बहरे भी उस किताब की
बातें सुनेंगे,
अंधों की आँखों के सामने से
धुँधलापन और अंधकार दूर हो
जाएगा।[9]
19 दीन जन यहोवा के कारण फूले नहीं
समाएँगे
और गरीब, इसराएल के पवित्र
परमेश्वर के कारण खुशियाँ
मनाएँगे।[10]

29:16 *या "कैसी टेढ़ी-मेढ़ी बातें करते हो!"

अध्य. 29
1 यिर्म 8:9, 1कुर 1:19
2 यश 30:1
3 यहे 8:12
4 यश 64:8
5 यिर्म 18:6
6 रोम 9:20, 21
7 यश 35:1, यश 41:19
8 यश 32:14, 15
9 यश 35:5, यश 42:16
10 यश 41:16

दूसरा कॉल.
1 मी 2:1
2 आम 5:10
3 यहे 13:19
4 नहे 9:7, मी 7:20
5 योए 2:27
6 यश 45:11
7 यश 8:13, हो 3:5

अध्य. 30
8 यश 1:2, यश 63:10, यश 65:2
9 यश 29:15

20 क्योंकि ज़ालिम नहीं रहेगा,
शेखी बघारनेवाला खत्म हो जाएगा
और दूसरों को नुकसान पहुँचाने
की ताक में रहनेवाला मिट
जाएगा।[1]
21 वे सभी मिट जाएँगे जो झूठ
बोलकर दूसरों को दोषी ठह-
राते हैं,
जो शहर के फाटक पर
न्याय के रखवाले के लिए फंदा
बिछाते हैं[2]
और खोखली दलीलें देते हैं
ताकि नेक जन को इंसाफ न
मिले।[3]
22 अब्राहम का छुड़ानेवाला यहोवा,[4]
अब याकूब के घराने से कहता है,
"याकूब फिर कभी शर्मिंदा नहीं
होगा,
उसका सिर नहीं झुकेगा।*[5]
23 क्योंकि जब वह अपने बच्चों को,
जो मेरे हाथ की कारीगरी हैं,[6]
अपने आस-पास देखेगा,
तो उनके साथ मिलकर मेरे नाम का
आदर करेगा,
हाँ, वे याकूब के पवित्र परमेश्वर
का आदर करेंगे
और इसराएल के परमेश्वर के लिए
श्रद्धा से भर जाएँगे।[7]
24 जिनके मन भटक गए थे वे समझ
हासिल करेंगे
और जो शिकायत करते थे वे
सीखने को तैयार होंगे।"

30 यहोवा कहता है, "धिक्कार है
उन ज़िद्दी बेटों पर,[8]
वे ऐसी योजनाओं को अंजाम देते हैं
जो मेरी तरफ से नहीं,[9]

29:22 *यानी शर्म और निराशा से।

ऐसी संधि करते हैं* जो मेरी
मरज़ी# के खिलाफ है
और जो पाप-पर-पाप करते जा
रहे हैं।
2 वे मुझसे बिना पूछे[1] मिस्र के पास
जाते हैं[2]
कि फिरौन की हिफाज़त पाएँ
और मिस्र के साए में शरण लें।
3 मगर फिरौन की हिफाज़त
तुम्हारे लिए लज्जा का कारण
ठहरेगी,
मिस्र का साया तुम्हारे लिए अपमान
का कारण बनेगा।[3]
4 हाकिम सोअन में हैं,[4]
दूत हानेस तक पहुँच गए हैं।
5 इसराएलियों को शर्मिंदा होना
पड़ेगा,
क्योंकि मिस्रियों से उन्हें कोई फायदा
नहीं होगा,
उन्हें कोई मदद, कोई लाभ नहीं
मिलेगा,
उलटा वे उन्हें शर्मिंदा और बेइज़्ज़त
करके छोड़ेंगे।"[5]

6 दक्षिण जानेवाले जानवरों के
खिलाफ यह संदेश सुनाया गया:
गधों की पीठ पर दौलत लादकर,
ऊँट की कूबड़ पर तोहफे लेकर,
ये दूत, दुख और मुसीबतों के
इलाके से गुज़रते हैं,
उस इलाके से जहाँ शेर, गरजते शेर
रहते हैं,
जहाँ ज़हरीले साँप और ऐसे विषैले
साँप भी रहते हैं, जिनमें बिजली
की सी फुर्ती है।
मगर ये तोहफे और दौलत किसी
काम नहीं आएँगे।
7 मिस्र की मदद बेकार साबित
होगी,[1]
इसीलिए मैंने उसके बारे में कहा,
"वह राहाब* है,[2] मगर किसी
काम की नहीं।"
8 "अब जाओ, ये बातें उनके सामने
एक तख्ती पर लिखो,
किसी किताब में दर्ज़ करो[3]
ताकि आनेवाले समय में ये हमेशा
के लिए गवाह ठहरें।[4]
9 क्योंकि ये बगावती लोग हैं,[5] धोखा
देनेवाले बेटे हैं,[6]
ऐसे बेटे हैं जो मुझ यहोवा का
कानून* सुनना ही नहीं चाहते।[7]
10 ये दर्शियों से कहते हैं, 'दर्शन मत
देखो!'
भविष्यवक्ताओं से कहते हैं, 'मत
करो हमारे बारे में सच्ची भविष्य-
वाणियाँ![8]
हमसे मीठी-मीठी बातें करो, गुमराह
करनेवाले दर्शन देखो।[9]
11 सही रास्ते से हट जाओ, उस राह
को छोड़ दो,
इसराएल के पवित्र परमेश्वर के
बारे में हमसे और कुछ मत
कहो।'"[10]
12 अब सुनो कि इसराएल का पवित्र
परमेश्वर क्या कहता है,
"तुमने मेरा वचन ठुकरा दिया,[11]
कपट और धोखे पर भरोसा किया,
उन्हीं पर आस लगायी,[12]
13 इसलिए तुम्हारा यह गुनाह ऐसी
दीवार जैसा हो गया है जिसमें
दरारें पड़ चुकी हैं,

30:1 *शा., "अर्घ उँडेलते हैं," ज़ाहिर है कि यहाँ करार करने की बात की गयी है। #शा., "मेरी पवित्र शक्ति।"

30:7 *शब्दावली देखें। **30:9** *या "की शिक्षा।"

अध्य. 30
1 गि 27:21
1रा 22:7
2 यश 31:1
यहे 29:6
3 यिर्म 17:5
4 यश 19:11
यहे 30:14
5 यश 31:3
यिर्म 2:36

दूसरा कॉल.
1 यश 31:1
यिर्म 37:7, 8
2 भज 87:4
भज 89:10
3 यश 8:1
यिर्म 36:2
4 रोम 15:4
5 व्य 31:27
यश 1:4
यिर्म 44:3
6 यश 59:3
यिर्म 9:3
7 2इत 33:10
2इत 36:15, 16
नहे 9:29
यिर्म 7:13
8 2इत 16:10
2इत 18:7
यिर्म 11:21
यिर्म 26:11
9 यिर्म 23:16, 17
यहे 13:7
मी 2:11
10 आम 7:13, 16
11 आम 2:4, 5
12 यिर्म 13:25
मी 3:11

ऐसी फूली हुई दीवार जैसा, जो
कभी-भी गिर सकती है,
वह अचानक पल-भर में धड़ाम से
गिर जाएगी।
14 वह कुम्हार के बड़े मटके की तरह
फूट जाएगा,
पूरी तरह चकनाचूर हो जाएगा,
उसका एक भी टुकड़ा नहीं
बचेगा,
जिससे आग से जलता अंगारा
उठाया जा सके,
या गड्ढे* से पानी निकाला जा
सके।”
15 सारे जहान का मालिक, इसराएल
का पवित्र परमेश्‍वर यहोवा
कहता है,
“मेरे पास लौट आओ और खामोश
बैठे रहो, तब तुम्हें हिफाज़त
मिलेगी,
शांत रहो और मुझ पर
भरोसा करो, तब तुम्हें हिम्मत
मिलेगी।”[1]
मगर तुम्हें यह मंज़ूर नहीं था।[2]
16 उलटा तुमने कहा, “नहीं, हम घोड़ों
पर भागेंगे!”
भागना तो तुम्हें पड़ेगा।
तुमने कहा, “हम तेज़ घोड़ों पर
सवार होकर बच निकलेंगे!”[3]
पर तुम्हारा पीछा करनेवाले तुमसे
भी तेज़ होंगे।[4]
17 सिर्फ एक के धमकाने से तुम्हारे
हज़ार लोग काँप उठेंगे,[5]
पाँच की ललकार सुनकर तो तुम
भाग खड़े होगे।
तुममें से जो बच जाएँगे वे पहाड़
की चोटी पर अकेले मस्तूल जैसे
होंगे,

30:14 *या शायद, “हौद।”

हाँ, पहाड़ी पर लहराते अकेले झंडे
जैसे।[1]
18 मगर यहोवा इंतज़ार* कर रहा है
कि कब तुम पर रहम करे,[2]
वह दया करने के लिए ज़रूर कदम
उठाएगा,[3]
क्योंकि यहोवा न्याय का
परमेश्‍वर है।[4]
सुखी हैं वे जो उस पर उम्मीद
लगाए रहते हैं।#[5]

19 जब लोग सिय्योन में, यरूशलेम में
रहेंगे[6] तो तू बिलकुल नहीं रोएगा।[7] जैसे
ही तू परमेश्‍वर को पुकारेगा वह तुझ पर
रहम खाएगा और तेरे दुहाई देते ही वह
तेरी सुनेगा।[8]
20 भले ही यहोवा तुझे
मुसीबत की रोटी खिलाएगा और दुख का
पानी पिलाएगा,[9] मगर तेरा महान उप-
देशक तुझसे अब और छिपा न रहेगा।
तू अपने महान उपदेशक को अपनी
आँखों से देखेगा।[10]
21 और अगर
कभी तू सही राह से भटककर दाएँ या
बाएँ मुड़े, तो तेरे कानों में पीछे से यह
आवाज़ आएगी, “राह यही है,[11] इसी पर
चल।”[12]

22 तू अपनी खुदी हुई मूरतों को और
ढली हुई मूरतों को अशुद्ध करेगा जिन
पर सोना-चाँदी मढ़ा है।[13] तू उन्हें ऐसे
फेंक देगा जैसे माहवारी का कपड़ा फेंका
जाता है और कहेगा, “दूर हो जा।”*[14]
23 परमेश्‍वर तेरे लगाए बीजों को सींचने
के लिए बारिश लाएगा।[15] तेरे खेतों में
खूब फसल होगी और भरपूर उपज पैदा
होगी।[16] उस दिन तेरे मवेशी बड़े-बड़े
चरागाह में चरेंगे।[17]
24 खेती के काम

30:18 *या “सब्र के साथ इंतज़ार।” #या “उसका बेसब्री से इंतज़ार करते हैं।”
30:22 *या शायद, “और उन्हें गंदी चीज़ कहेगा।”

अध्य. 30

1 1इत 5:20; 2इत 16:8; यश 26:3
2 मत 23:37; प्रेष 7:51
3 यश 31:1, 3
4 व्य 28:49, 50; यिर्म 4:13; विल 4:19; हब 1:6, 8
5 लैव 26:36; व्य 32:30

दूसरा कॉल.

1 यहे 12:16
2 निर्ग 34:6; यहे 36:9, 10
3 भज 102:13; रोम 9:15
4 भज 99:4; यिर्म 10:24
5 यिर्म 17:7
6 नहे 11:1; यश 44:28; यश 62:1; यिर्म 31:6; जक 1:17
7 नहे 12:27; यश 61:3
8 यिर्म 29:11, 12
9 लैव 26:26; भज 80:5
10 अय 36:22; भज 32:8; भज 71:17; भज 119:102
11 भज 25:8, 9
12 व्य 5:32; यह 1:7, 8; नीत 4:27
13 निर्ग 32:4; व्य 7:5, 25; न्या 17:3, 4
14 हो 14:8; जक 13:2
15 भज 65:9; जक 10:1
16 हो 2:21, 22
17 यश 65:10

आनेवाले गाय-बैल और गधे ऐसा बढ़िया
चारा* खाएँगे, जिसे बेलचे और काँटे से
फटका गया हो। 25 जिस दिन ऊँची-
ऊँची मीनारें गिरेंगी और बड़ी तादाद
में मार-काट मचेगी, उस दिन ऊँचे-
ऊँचे पहाड़ों और पहाड़ियों पर नहरें
और नदियाँ बहेंगी।[1] 26 जिस दिन
यहोवा अपने घायल लोगों की मरहम-
पट्टी करेगा,*[2] जो गहरे घाव उसने दिए
थे उनको भरेगा,[3] उस दिन पूनम का चाँद
ऐसे चमकेगा मानो सूरज चमक रहा हो।
और सूरज सात गुना रौशनी देगा[4] मानो
सात दिनों की रौशनी एक-साथ चमका
रहा हो।

27 देखो, यहोवा* दूर से आ रहा है,
वह अपनी जलजलाहट और घने
बादलों के साथ आ रहा है।
उसके होंठ क्रोध से भरे हुए हैं,
उसकी ज़बान भस्म करनेवाली
आग है।[5]

28 उसकी ज़ोरदार शक्ति* उमड़ती
बाढ़ जैसी है, जिसका पानी गले
तक पहुँच गया है।
वह राष्ट्रों को विनाश के छलने में
हिलाएगा
और देश-देश के लोगों के मुँह में
लगाम लगाएगा[6] कि उन्हें नाश
की ओर ले जाए।

29 लेकिन तुम ऐसे गीत गाओगे,
जैसे त्योहार की तैयारी करते
वक्त* रात में गाया जाता है।[7]
तुम्हारा दिल खुशी से ऐसे झूम
उठेगा,
मानो कोई बाँसुरी बजाते हुए*
यहोवा के पर्वत की ओर, 'इस-
राएल की चट्टान'[1] के पास जा
रहा हो।

30 उस वक्त यहोवा अपनी ज़ोरदार
आवाज़[2] सुनाएगा,
वह जलजलाहट,[3] भस्म करनेवाली
आग,[4] फटते बादल,[5]
आँधी-तूफान और ओलों से[6]
अपने बाज़ुओं की ताकत
दिखाएगा।[7]

31 यहोवा की आवाज़ सुनकर अश्शूर
में आतंक छा जाएगा,[8]
वह अश्शूर को छड़ी से मारेगा।[9]

32 यहोवा जब उसके खिलाफ युद्ध में
अपना हाथ बढ़ाएगा,
उस पर सज़ा की छड़ी चलाएगा,[10]
तो उसके हर वार पर डफली और
सुरमंडल बजेंगे।[11]

33 अश्शूर की तोपेत*[12] पहले से
तैयार है,
उसके राजा के लिए भी यह
तैयार है।[13]
परमेश्वर ने लकड़ियों का ढेर
लगाने के लिए उसे गहरा और
चौड़ा किया है,
वहाँ बहुत-सी लकड़ियाँ और
आग है।
यहोवा की साँस गंधक की धारा के
समान है,
वही उस ढेर को सुलगाएगी।

30:24 *जिसमें खट्टा साग मिला हो। **30:26** *या "अपने लोगों की टूटी हड्डी जोड़ेगा।" **30:27** *शा., "यहोवा का नाम।" **30:28** *या "उसकी फूँक।" **30:29** *या "के लिए खुद को शुद्ध करते वक्त।"

30:29 *या "की धुन सुनते हुए।" **30:33** *इस आयत में "तोपेत" एक लाक्षणिक जगह है जहाँ आग जलती है। यह विनाश की निशानी है।

अध्य. 30

1 यश 41:18; यश 44:3
2 विल 2:13
3 यिर्म 33:6; आम 9:11
4 यश 60:20; प्रक 21:23; प्रक 22:5
5 यश 10:17; नहू 1:6; सप 3:8
6 2रा 19:28; भज 32:9
7 व्य 16:14; भज 42:4; यिर्म 33:10, 11

दूसरा कॉल.

1 व्य 32:4; यश 26:4
2 भज 29:3, 4
3 नहू 1:2
4 भज 18:13
5 न्या 5:4
6 यह 10:11
7 निर्ग 15:16; भज 98:1
8 यश 37:36
9 यश 10:12
10 यश 10:24, 26
11 निर्ग 15:20; न्या 11:34
12 2रा 23:10; यिर्म 7:32
13 यश 37:37, 38; यहे 32:22

31 धिक्कार है उन पर जो मदद के
लिए मिस्र के पास जाते हैं,[1]
जो घोड़ों पर भरोसा रखते हैं,[2]
जो युद्ध-रथों की भरमार देखकर,
जंगी घोड़ों* की ताकत देखकर उन
पर आस लगाते हैं,
मगर इसराएल के पवित्र परमेश्‍वर
की ओर नहीं ताकते,
यहोवा की खोज नहीं करते।
2 पर वह भी बुद्धिमान है।
वह विपत्ति लाएगा, अपनी बात से
मुकरेगा नहीं।
वह दुष्टों के घर के खिलाफ उठेगा
और उन लोगों के खिलाफ भी जो
गुनहगारों की मदद करते हैं।[3]
3 मिस्र के लोग परमेश्‍वर नहीं
इंसान हैं,
उनके घोड़े कोई अनदेखी शक्‍ति
नहीं हाड़-माँस के हैं।[4]
जब यहोवा अपना हाथ बढ़ाएगा,
तो मदद देनेवाले लड़खड़ा जाएँगे
और मदद लेनेवाले गिर पड़ेंगे,
दोनों का एक-साथ नाश हो
जाएगा।
4 यहोवा ने मुझसे कहा,
"एक शेर, शक्‍तिशाली शेर अपने
शिकार की रखवाली करते हुए
दहाड़ता है
और जब उसे भगाने के लिए चर-
वाहों का झुंड बुलाया जाता है,
तो उनकी ललकार सुनकर वह नहीं
डरता,
उनके शोर से पीछे नहीं हटता,
वैसे ही सेनाओं का परमेश्‍वर
यहोवा,
सिय्योन पहाड़ और उसकी पहाड़ी
की खातिर युद्ध करने नीचे
उतरेगा।
5 सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा पक्षी
की तरह फुर्ती से आकर यरू-
शलेम को बचाएगा।[1]
वह उसकी हिफाज़त करेगा और
उसे बचाएगा,
उसे खतरों से महफूज़ रखेगा और
उसे छुड़ा लेगा।"
6 "हे इसराएल के लोगो, उस पर-
मेश्‍वर के पास लौट आओ जिसके
खिलाफ तुमने बड़ी बेशर्मी से बगावत
की।[2]
7 उस दिन हर कोई सोने-चाँदी
के अपने निकम्मे देवताओं को ठुकरा
देगा, जिन्हें तुमने अपने हाथों से बनाकर
पाप किया था।
8 अश्‍शूरी तलवार से मारे जाएँगे,
मगर किसी इंसान की तलवार से
नहीं,
वे उस तलवार का कौर बनेंगे जो
इंसान की नहीं।[3]
अश्‍शूरी उस तलवार से डरकर
भागेंगे
और उनके जवानों से जबरन मज़-
दूरी करवायी जाएगी।
9 डर के मारे उसकी चट्टान गायब हो
जाएगी
और झंडा देखकर उसके हाकिम
थर-थर काँप उठेंगे।"
यह ऐलान यहोवा ने किया है,
जिसकी ज्योति* सिय्योन में है,
जिसकी भट्ठी यरूशलेम में है।

32 देखो! राजा[4] नेकी से राज
करेगा[5]
और हाकिम न्याय से शासन करेंगे।

31:1 *या "घुड़सवारों।"

31:9 *या "आग।"

अध्य. 31
1 यश 30:2
2 व्य 17:15, 16
3 यहे 29:6, 7
4 भज 33:17 नीत 21:31

दूसरा कॉल.
1 व्य 32:11, 12 भज 91:4
2 यश 55:7 योए 2:12
3 2रा 19:35 2इत 32:21 यश 37:36

अध्य. 32
4 उत 49:10 भज 2:6 लूक 1:32, 33 यूह 1:49
5 भज 45:6 भज 72:1 यश 9:7 यश 11:4, 5 यिर्म 23:5 जक 9:9 इब्र 1:9 प्रक 19:11

2 हर हाकिम मानो आँधी से छिपने
की जगह होगा,
तेज़ बारिश में मिलनेवाली पनाह
होगा,
सूखे देश में पानी की धारा होगा[1]
और तपते देश में बड़ी चट्टान की
छाया होगा।
3 तब देखनेवालों की आँखें फिर कभी
बंद नहीं होंगी
और सुननेवालों के कान ध्यान से
सुनेंगे।
4 उतावली करनेवाला मन ज्ञान की
बातों पर गहराई से सोचेगा
और हकलानेवाली ज़बान बिना
लड़खड़ाए साफ-साफ बोलेगी।[2]
5 मूर्ख को अब से दरियादिल नहीं
कहा जाएगा
और जो उसूलों पर नहीं चलता उसे
भला नहीं कहा जाएगा।
6 मूर्ख बेकार की बातें करता है
और अपने मन में साज़िशें
रचता है,[3]
ताकि दूसरों को यहोवा के
खिलाफ कर दे,* उसके बारे में
झूठी बातें कहे,
ताकि भूखा भूखे पेट रह जाए
और प्यासा पानी के लिए तरस
जाए।
7 जो आदमी उसूलों पर नहीं चलता,
उसके तरीके बुरे होते हैं।[4]
वह शर्मनाक काम को बढ़ावा
देता है,
अपनी झूठी बातों से दुखियारों को
बरबाद कर देता है,[5]
उस गरीब को भी जो सच
बोलता है।

32:6 *या "ताकि अपने काम से परमेश्वर का अनादर करे।"

अध्य. 32
1 यश 35:6
2 यश 35:6
3 मी 2:1
4 यिर्म 5:26
मी 7:3
5 1रा 21:9, 10

दूसरा कॉल.
1 यश 3:16
2 विल 2:12
सप 1:13
3 यश 3:24
4 यश 22:2
विल 2:15
5 2रा 25:9, 10
6 2इत 27:1, 3
नहे 3:26

8 लेकिन दरियादिल इंसान देने की
सिर्फ ख्वाहिश नहीं रखता,
वह दिल खोलकर देता भी
रहता है।*
9 "हे बेफिक्र औरतो, उठो! मेरी बात
सुनो!
हे मस्ती में डूबी बेटियो,[1] मेरी बातों
पर ध्यान दो!
10 तुम जो आज बेफिक्र बैठी हो, साल-
भर बाद काँपने लगोगी,
क्योंकि अंगूर की कटाई खत्म हो
जाएगी और तुम्हारे हाथ कुछ
नहीं लगेगा।[2]
11 हे बेफिक्र औरतो, डर के मारे
काँपो!
हे मस्ती में डूबी बेटियो, थर-थर
काँपो!
अपने कपड़े उतारो और कमर पर
टाट बाँध लो।[3]
12 छाती पीट-पीटकर शोक मनाओ!
लहलहाते खेतों और अंगूरों के
फलते-फूलते बागों को देखकर
शोक मनाओ,
13 क्योंकि मेरे लोगों की ज़मीन काँटों
और कँटीली झाड़ियों से भर
जाएगी,
जिन घरों में खुशियाँ मनायी
जाती थीं,
हाँ, खुशियों के उस शहर में झाड़ियाँ
उग आएँगी।[4]
14 उसकी मज़बूत मीनार खाली हो
जाएगी,
चहल-पहलवाले शहर में खामोशी
छा जाएगी,[5]
ओपेल[6] और पहरे की मीनार
हमेशा के लिए वीरान हो जाएगी,

32:8 *या "भले कामों में लगा भी रहता है।"

जंगली गधे यहाँ मज़े करेंगे
और भेड़-बकरियाँ यहाँ चरेंगी।[1]
15 लेकिन फिर परमेश्‍वर हम पर
अपनी पवित्र शक्‍ति उँडेलेगा[2]
और वीराना, फलों का बाग बन
जाएगा,
फिर यह बाग हरा-भरा जंगल बन
जाएगा।[3]
16 तब उस वीराने में न्याय का बोल-
बाला होगा,
फलों के उस बाग में नेकी का बसेरा
होगा।[4]
17 सच्ची नेकी की बदौलत हर तरफ
शांति होगी,[5]
सच्ची नेकी से सुकून और हिफा-
ज़त मिलेगी जो कभी नहीं
मिटेगी।[6]
18 मेरे लोग ऐसी जगह रहेंगे, जहाँ
अमन-चैन होगा,
हाँ, ऐसे बसेरों में, जहाँ वे सुखी
और महफूज़ रहेंगे।[7]
19 मगर ओले गिरने से जंगल का नाश
हो जाएगा
और शहर पूरी तरह खाक में मिल
जाएगा।
20 सुखी हो तुम जो नदी के पास बीज
बोते हो
और अपना बैल और गधा खुला
छोड़ते हो।"[8]

33 हे नाश करनेवाले, तू जिसका
नाश नहीं किया गया,[9]
हे विश्‍वासघाती, तू जिसके साथ
विश्‍वासघात नहीं किया गया,
धिक्कार है तुझ* पर! जब तू नाश
करना बंद कर देगा, तब तेरा
नाश किया जाएगा,[10]
जब तू विश्‍वासघात करना बंद कर
देगा, तब तेरे साथ विश्‍वासघात
होगा।
2 हे यहोवा, हम पर दया कर![1]
हमारी आशा तुझ पर लगी है।
हर सुबह हमारी ताकत* बन,[2]
हाँ, मुसीबत के वक्‍त हमारा उद्धार-
कर्ता बन जा।[3]
3 तेरा गरजन सुनकर देश-देश के
लोग भाग खड़े होते हैं,
तेरे उठते ही राष्ट्र तितर-बितर हो
जाते हैं।[4]
4 जैसे भूखी टिड्डियाँ आकर पूरे देश
पर टूट पड़ती हैं,
वैसे ही दूसरे आकर तुम्हारे लूट के
माल पर टूट पड़ेंगे
और टिड्डियों के झुंड की तरह उसे
पूरी तरह चट कर जाएँगे।
5 यहोवा को ऊँचा किया जाएगा,
क्योंकि वह ऊँचे पर विराजमान है।
वह सिय्योन को न्याय और नेकी से
भर देगा।
6 उन दिनों* वह मज़बूती देगा,
बड़े पैमाने पर उद्धार,[5] बुद्धि, ज्ञान
और यहोवा का डर देगा।[6]
यही तुम्हारा खज़ाना होगा।#
7 देखो! उनके* शूरवीर सड़कों पर
दुख के मारे चिल्ला रहे हैं,
शांति का संदेश ले जानेवाले दूत
फूट-फूटकर रो रहे हैं।
8 राजमार्ग सुनसान पड़े हैं,
रास्तों पर कोई राहगीर नज़र नहीं
आ रहा।

अध्य. 32
1 यश 27:10
2 यश 44:3
3 यश 29:17; यश 35:1, 2
4 यश 42:1, 4; यश 60:21
5 भज 119:165; यश 55:12
6 यहे 37:26; मी 4:3, 4
7 यश 60:18; यश 65:22; यिर्म 23:6; यहे 34:25; हो 2:18
8 यश 30:23, 24

अध्य. 33
9 2रा 18:13; यश 10:5
10 यश 10:12; नहू 3:7

दूसरा कॉल.
1 भज 123:2
2 भज 44:3; यश 52:10
3 भज 46:1; नहू 1:7
4 भज 46:6; भज 68:1; यश 17:13
5 भज 27:1
6 नीत 19:23

33:1 *यहाँ अश्‍शूर की बात की गयी है।

33:2 *शा., "बाज़ू।" 33:6 *शा., "तुम्हारे दिनों में।" #या शायद, "यही परमेश्‍वर का दिया खज़ाना होगा।" 33:7 *ज़ाहिर है, यहूदा के।

उसने* करार तोड़ दिया है,
उसने शहरों को ठुकरा दिया है,
उसकी नज़र में इंसान कुछ भी नहीं।[1]
9 देश शोक मना रहा है* और मुरझा रहा है,
लबानोन शर्मिंदा है,[2] वह सड़ता जा रहा है,
शारोन के मैदान रेगिस्तान बन गए हैं,
बाशान और करमेल के पत्ते झड़ रहे हैं।[3]
10 यहोवा कहता है, "अब मैं उठूँगा,
खुद को ऊँचा करूँगा,[4] अपनी महिमा करूँगा।
11 तुम्हारी कोख में सूखी घास पलेगी
और तुम भूसे को जन्म दोगे,
तुम्हारे मन का झुकाव आग की तरह तुम्हें भस्म कर देगा।[5]
12 देश-देश के लोग जले हुए चूने की तरह हो जाएँगे,
उन्हें कँटीली झाड़ियों की तरह काटकर आग में झोंक दिया जाएगा।[6]
13 हे दूर-दूर के इलाकों में रहनेवालो,
सुनो मैं क्या करनेवाला हूँ!
हे आस-पास के रहनेवालो, मेरी ताकत पहचानो!
14 सिय्योन में गुनहगार घबराए हुए हैं,[7]
परमेश्वर से मुँह मोड़नेवाले थर-थर काँप रहे हैं।
वे एक-दूसरे से कहते हैं,
'भस्म करनेवाली आग के सामने कौन टिक सकता है?[8]
कभी न बुझनेवाली लपटों के आगे कौन खड़ा रह सकता है?'
15 जो नेकी की राह पर बना रहता है,[1]
जो सीधी-सच्ची बातें बोलता है,[2]
जो धोखाधड़ी और बेईमानी की कमाई ठुकराता है,
जो रिश्वत पर झपटने के बजाय अपना हाथ रोक लेता है,[3]
जो खून-खराबा करने की साज़िश सुनकर कान बंद कर लेता है,
जो बुराई देखने से अपनी आँखें मूँद लेता है,
16 ऐसा इंसान ऊँची जगहों पर रहेगा,
चट्टान पर बना मज़बूत* गढ़ उसकी पनाह होगा,
उसे रोटी मिलती रहेगी
और कभी पानी की कमी न होगी।"[4]
17 तुम्हारी आँखें राजा को उसकी पूरी शान में देखेंगी
और देश को दूर से निहारेंगी।
18 तुम मन में उस खौफनाक वक्त को याद करते* हुए कहोगे,
"शास्त्री कहाँ गया?
कर देनेवाला कहाँ गया?[5]
मीनारों को गिननेवाला कहाँ गया?"
19 तुम उन घमंडियों को फिर कभी न देखोगे,
हाँ, उन लोगों को जिनकी अजीबो-गरीब ज़बान तुम नहीं समझते,
जिनकी भाषा समझ से परे है।[6]
20 सिय्योन को देख! उस शहर को

33:8 *यहाँ दुश्मन की बात की गयी है। 33:9 *या शायद, "सूख गया है।"

33:16 *या "ऊँचा।" 33:18 *या "के बारे में गहराई से सोचते।"

अध्य. 33
1 2रा 18:19, 20
2 यश 37:24
3 नहू 1:4
4 भज 46:10
5 यश 5:24
6 यश 9:18
7 व्य 28:66, 67
8 व्य 32:22 नहू 1:6 इब्र 12:29

दूसरा कॉल.
1 यहे 18:17
2 1इत 29:17
3 निर्ग 23:8 व्य 16:19
4 1रा 19:5, 6 भज 34:9, 10 यश 65:13
5 2रा 15:19
6 व्य 28:49, 50 यश 28:11 यिर्म 5:15

देख, जहाँ हम अपने त्योहार
मनाते हैं।[1]
यरूशलेम एक ऐसी जगह बन
जाएगा, जहाँ हम अमन-चैन से
रहेंगे,
वह ऐसा तंबू बन जाएगा जिसे कभी
नहीं गिराया जाएगा,[2]
उसकी खूँटियाँ नहीं निकाली
जाएँगी,
न उसकी कोई रस्सी काटी जाएगी।
21 वहाँ महाप्रतापी यहोवा,
हमारी नदी और हमारी नहर बन-
कर रक्षा करेगा।
चाहे जहाज़ों* का लशकर हमारे
खिलाफ आए,
वह उन्हें पार नहीं होने देगा,
बड़े-बड़े जहाज़ों को नहीं गुज़रने
देगा।
22 क्योंकि यहोवा हमारा न्यायी है,[3]
यहोवा हमारा कानून देनेवाला है,[4]
यहोवा हमारा राजा है,[5]
वही हमें बचाएगा।[6]
23 दुश्मन के जहाज़ों की रस्सियाँ*
ढीली हो जाएँगी,
न तो मस्तूल खड़ा हो पाएगा, न ही
पाल फैल सकेगा।
उस वक्त लूट का इतना माल बाँटा
जाएगा
कि लँगड़े भी आकर बहुत-सा माल
ले जाएँगे।[7]
24 देश का कोई निवासी न कहेगा, "मैं
बीमार हूँ।"[8]
क्योंकि उसमें रहनेवालों का पाप
माफ किया जाएगा।[9]

34 हे राष्ट्रो, पास आकर सुनो!
हे देश-देश के लोगो, ध्यान से
सुनो!
पृथ्वी और जो कुछ उसमें है,
ज़मीन और जो कोई उस पर रहता
है, सब सुनो!
2 यहोवा की जलजलाहट सारे राष्ट्रों
पर भड़क उठी है,[1]
उसके गुस्से की आग उनकी सेनाओं
पर धधक रही है।[2]
वह उन्हें पूरी तरह से नाश करेगा,
उन्हें घात होने के लिए दे देगा।[3]
3 उनके मरे हुओं को दफनाया नहीं
जाएगा,
उनकी लाशों की बदबू ऊपर
उठेगी,[4]
उनके खून से पहाड़ पिघल
जाएँगे।*[5]
4 आकाश की पूरी सेना गल जाएगी,
आकाश को खर्रे की तरह लपेटकर
रख दिया जाएगा।
जैसे अंगूर की बेल के पत्ते
और अंजीर के फल सूखकर गिर
जाते हैं,
वैसे ही आकाश की सेना मुरझाकर
गिर जाएगी।
5 "आकाश में मेरी तलवार तर
होगी।[6]
यह तलवार एदोम को सज़ा देने के
लिए उतरेगी,[7]
उन लोगों को, जिन्हें मैंने नाश के
लायक ठहराया है।
6 हाँ, यहोवा की तलवार खून से,
चरबी से तर होगी,[8]
मेढ़ों और बकरों के खून से सनी
होगी,

33:21 *या "चप्पूवाले जहाज़ों।" 33:23 *शा., "तेरी रस्सियाँ।"

34:3 *या "उनका खून पहाड़ पर बहेगा।"

अध्य. 33
1 व्य 12:5, 6
2 भज 125:1
3 उत 18:25; भज 50:6; भज 98:9
4 लैव 26:3; याकू 4:12
5 भज 44:4; भज 97:1; प्रक 11:15, 17
6 यश 12:2; सप 3:17
7 यश 33:4
8 व्य 7:15; प्रक 21:4; प्रक 22:1, 2
9 यिर्म 50:20; मी 7:18, 19

दूसरा कॉल.

अध्य. 34
1 यिर्म 25:15; योए 3:12; सप 3:8; जक 14:3
2 यश 30:27; नहू 1:2
3 प्रक 19:11, 15
4 यिर्म 25:33
5 यहे 39:4
6 व्य 32:41
7 भज 137:7; यिर्म 49:7, 22
8 लैव 3:16

मेढ़ों के गुरदे की चरबी से ढकी
होगी।
क्योंकि यहोवा बोसरा में बलिदान
चढ़ाएगा
और एदोम में बहुतों का खून बहाया
जाएगा।[1]
7 जंगली साँड़ भी उनके साथ नाश
होने आएँगे,
बैल भी हट्टे-कट्टे बैलों के साथ
आएँगे,
उनका देश खून से भीग जाएगा,
धूल चरबी से सन जाएगी।"
8 यहोवा ने दुश्मनों से बदला लेने का
दिन ठहरा दिया है,[2]
वह साल तय कर दिया है, जब
उन्हें सिय्योन पर ज़ुल्म करने की
सज़ा देगा।[3]
9 उस नगरी* की नदियाँ डामर में
और उसकी धूल गंधक में बदल
जाएगी,
पूरी नगरी धधकता हुआ डामर बन
जाएगी।
10 वह दिन-रात सुलगती रहेगी,
उससे हमेशा धुआँ उठता रहेगा,
पीढ़ी-पीढ़ी तक वह उजाड़ पड़ी
रहेगी,
फिर कभी कोई उसमें से होकर नहीं
गुज़रेगा।[4]
11 हवासिल* और साही वहाँ अपना
डेरा जमाएँगे,
लंबे कानोंवाला उल्लू और कौवे
उसमें रहेंगे।
परमेश्वर नापने की डोरी और
साहुल से उस नगरी को नापेगा,
क्योंकि उसने ठान लिया है कि
वह उसे सुनसान और तबाह कर
देगा।
12 उसके किसी भी रुतबेदार आदमी
को राजा नहीं बनाया जाएगा
और उसके सारे हाकिमों का अंत हो
जाएगा।
13 नगरी की मज़बूत मीनारों पर काँटे
निकल आएँगे,
उसके किलों में बिच्छू-बूटी और
कँटीली घास उग आएगी।
वह नगरी गीदड़ों की माँद
और शुतुरमुर्गों का अड्डा बन
जाएगी।[1]
14 रेगिस्तान के जंगली जानवर,
गीदड़ों के साथ रहेंगे,
जंगली बकरा अपने साथी को
बुलाएगा,
वहाँ छपका* डेरा जमाएगा और
आराम फरमाएगा।
15 उड़नेवाली साँपिन वहाँ अपना बिल
बनाएगी और अंडे देगी,
उन्हें सेएगी और बच्चों को अपने
साए में इकट्ठा करेगी।
वहाँ चील भी अपने-अपने जोड़े के
साथ जमा होंगी।
16 यहोवा की किताब में ढूँढ़ो और उसे
ज़ोर से पढ़ो।
उनमें से एक भी नहीं छूटेगा,
कोई अपने जोड़े से अलग न होगा,
क्योंकि यह हुक्म यहोवा के मुँह से
निकला है
और उसकी पवित्र शक्ति ने उनको
इकट्ठा किया है।
17 उसी ने चिट्ठियाँ डालकर

34:9 *ज़ाहिर है कि यहाँ एदोम की राजधानी बोसरा की बात की गयी है। 34:11 *एक किस्म का बगुला।

34:14 *रात में निकलनेवाला एक पक्षी जो कुछ-कुछ उल्लू जैसा दिखता है।

अध्य. 34
1 यश 63:1-3 ओब 8, 9
2 व्य 32:41 भज 94:1
3 यश 35:4
4 मला 1:4

दूसरा कॉल.
1 मला 1:3

और नापने की डोरी* से
नापकर,
हरेक को अपनी-अपनी जगह
दी है।
वह जगह हमेशा के लिए उनकी हो
जाएगी
और पीढ़ी-पीढ़ी तक वे उसमें बसे
रहेंगे।

35 वीराना और सूखा मैदान खुशी
से झूम उठेगा,[1]
बंजर ज़मीन खुशियाँ मनाएगी,
केसर के बाग की तरह खिल
उठेगी।[2]
2 पूरे देश में बहार छा जाएगी,[3]
देश खुशी के मारे झूम उठेगा, मगन
होकर चिल्लाएगा।
उसकी शान लबानोन की शान जैसी
हो जाएगी,[4]
उसकी खूबसूरती करमेल और
शारोन जैसी दिखेगी।[5]
लोग यहोवा की महिमा देखेंगे,
हमारे परमेश्वर का वैभव देखेंगे।
3 ढीले हाथों को मज़बूत करो,
काँपते घुटनों को मज़बूती दो।[6]
4 जिनका मन घबरा रहा है उनसे
कहो,
"घबराओ मत! हिम्मत रखो।
देखो! तुम्हारा परमेश्वर दुश्मनों से
बदला लेने,
उन्हें सज़ा देने आ रहा है,[7]
वह ज़रूर आएगा और तुम्हें
बचाएगा।"[8]
5 उस वक्त अंधों की आँखें खोली
जाएँगी[9]
और बहरों के कान खोले जाएँगे,[10]
6 लँगड़े, हिरन की तरह छलाँग
भरेंगे[11]
और गूँगों की ज़बान खुशी के मारे
जयजयकार करेगी।[1]
वीराने में पानी की धाराएँ फूट
निकलेंगी
और बंजर ज़मीन में नदियाँ उमड़
पड़ेंगी।
7 झुलसी हुई ज़मीन, नरकटोंवाला
तालाब बन जाएगी,
प्यासी धरती से पानी के सोते फूट
पड़ेंगे।[2]
जिन माँदों में गीदड़ रहा करते थे,[3]
वहाँ हरी-हरी घास, नरकट और
सरकंडे उग आएँगे।
8 एक राजमार्ग तैयार किया जाएगा,[4]
हाँ, ऐसा मार्ग जो पवित्र मार्ग कह-
लाएगा।
कोई अशुद्ध इंसान उस पर नहीं
चलेगा,[5]
यह सिर्फ उनके लिए होगा,
जिनके लिए यह बनाया गया है,
मूर्ख उस पर पैर भी नहीं रख
सकेगा।
9 वहाँ न शेर, न खूँखार जंगली जान-
वर घूमेंगे,
वे उस राह पर नज़र भी नहीं
आएँगे।[6]
जिन लोगों को कीमत देकर छुड़ाया
गया है,
सिर्फ वे उस राह पर चलेंगे।[7]
10 यहोवा जिन्हें छुड़ाएगा वे
जयजयकार करते हुए सिय्योन
लौटेंगे,[8]
कभी न मिटनेवाली खुशी उनके
सिर का ताज होगी।[9]
वे इतने मगन होंगे, इतनी खुशियाँ
मनाएँगे
कि दुख और मातम उनके सामने से
भाग खड़े होंगे।[10]

अध्य. 35
1 यश 29:17; यश 32:14, 15
2 यश 4:2; यश 27:6; यश 35:6; यश 51:3; यहे 36:35
3 हो 14:5, 6
4 यश 60:13
5 यश 65:10; यिर्म 50:19
6 इब्र 12:12
7 यिर्म 51:56
8 यश 25:9; सप 3:16, 17
9 भज 146:8; यश 42:16; मत 9:28-30
10 यश 29:18; यिर्म 6:10; मर 7:32-35; लूक 7:22
11 मत 11:5; प्रेष 8:7; प्रेष 14:8-10

दूसरा कॉल.
1 मत 15:30
2 यश 44:3
3 यिर्म 9:11
4 एज 1:3; यश 11:16; यश 49:11; यश 62:10; यिर्म 31:21
5 यश 52:1
6 यश 11:6, 7; यश 65:25; यहे 34:25; हो 2:18
7 भज 107:2, 3; यश 62:12
8 व्य 30:4; यश 51:11; यिर्म 31:11, 12
9 यिर्म 33:10, 11
10 यश 30:19; यश 65:19

34:17 *शा., "अपने हाथ।"

36 राजा हिजकियाह के राज के
14वें साल में, अश्शूर[1] के राजा
सनहेरीब ने यहूदा के सभी किलेबंद
शहरों पर हमला कर दिया और उन पर
कब्ज़ा कर लिया।[2] **2** तब अश्शूर के
राजा ने लाकीश से रबशाके* को एक
विशाल सेना के साथ[3] राजा हिजकियाह
के पास यरूशलेम भेजा।[4] वे वहाँ गए
और जाकर ऊपरवाले तालाब की नहर
के पास खड़े हो गए,[5] जो धोबी के
मैदान की तरफ जानेवाले राजमार्ग के
पास थी।[6] **3** तब राज-घराने की देख-
रेख करनेवाला अधिकारी एल्याकीम[7]
(जो हिलकियाह का बेटा था), राज-
सचिव शेबना[8] और शाही इतिहासकार
योआह (जो आसाप का बेटा था) बाहर
उसके पास आए।

4 रबशाके ने उनसे कहा, “जाकर
हिजकियाह से कहो, ‘अश्शूर के राजा-
धिराज का यह संदेश है: “तू किस बात
पर भरोसा किए बैठा है?[9] **5** तू जो
कहता है कि मेरे पास युद्ध की रण-
नीति तैयार है, मेरे पास बहुत ताकत है,
यह सब बकवास है! तूने किस पर
भरोसा करके मुझसे बगावत करने की
जुर्रत की?[10] **6** उस मिस्र पर? वह तो
कुचला हुआ नरकट है! अगर कोई उसका
सहारा लेने के लिए उस पर हाथ रखे
तो वह उसकी हथेली में चुभ जाएगा।
मिस्र के राजा फिरौन पर जितने लोग
भरोसा रखते हैं उनके लिए वह एक
कुचले हुए नरकट के सिवा कुछ नहीं
है।[11] **7** अब यह मत कहना कि हमें
अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा है।
हिजकियाह ने तो उसकी सारी ऊँची
जगह और वेदियाँ ढा दीं[12] और वह
यहूदा और यरूशलेम के लोगों से कहता
है, ‘तुम सिर्फ इस वेदी के आगे दंड-
वत करना।’”’[1] **8** अब आ और मेरे
मालिक अश्शूर के राजा से यह बाज़ी
लगा:[2] मैं तुझे 2,000 घोड़े देता हूँ, तू
उनके लिए सवार लाकर दिखा। **9** जब
तू यह नहीं कर सकता, तो हमारी
सेना का मुकाबला कैसे करेगा? तू चाहे
मिस्र के सारे रथ और घुड़सवार ले
आए, फिर भी मेरे मालिक के एक
राज्यपाल को, उसके सबसे छोटे सेवक
को भी हरा नहीं पाएगा। **10** और क्या
मैं बिना यहोवा की इजाज़त के इस देश
को नाश करने आया हूँ? यहोवा ने खुद
मुझसे कहा है, ‘जा उस देश पर हमला
कर, उसे तबाह कर दे।’”

11 तब एल्याकीम, शेबना[3] और
योआह ने रबशाके[4] से कहा, “मेहरबानी
करके अपने सेवकों से अरामी* भाषा[5]
में बात कर क्योंकि हम वह भाषा समझ
सकते हैं। तू हमसे यहूदियों की भाषा में
बात न कर क्योंकि शहरपनाह पर खड़े
लोग सुन रहे हैं।”[6] **12** मगर रबशाके
ने कहा, “मेरे मालिक ने मुझे सिर्फ तुम्हें
और तुम्हारे मालिक को संदेश सुनाने के
लिए नहीं भेजा। यह संदेश शहरपनाह
पर खड़े आदमियों के लिए भी है, क्योंकि
उनकी और तुम्हारी ऐसी हालत होगी कि
तुम अपना ही मल खाओगे और अपना
ही पेशाब पीओगे।”

13 फिर रबशाके वहीं खड़े-खड़े यहू-
दियों की भाषा में ज़ोर-ज़ोर से कहने
लगा,[7] “अश्शूर के राजाधिराज का
संदेश सुनो,[8] **14** ‘तुम लोग हिज-
कियाह की बातों में मत आओ, वह तुम्हें
नहीं बचा सकता।[9] **15** उसकी बात पर

अध्य. 36
1 यश 10:5
2 2रा 18:13; 2इत 32:1; यश 8:7, 8; यश 10:28-32; यश 33:8
3 2रा 19:8
4 2इत 32:9
5 यश 7:3
6 2रा 18:17, 18
7 यश 22:20, 21
8 2रा 19:2
9 2रा 18:19-25; 2रा 19:10
10 2रा 18:1, 7
11 2रा 17:4; यश 30:2, 7; यिर्म 37:7
12 2रा 18:1, 4; 2इत 31:1

दूसरा कॉल.
1 व्य 12:11; 2इत 7:12; 2इत 32:12
2 2रा 18:13
3 यश 22:15
4 2रा 18:17
5 एज 4:7; दान 2:4
6 2रा 18:26, 27
7 2इत 32:18
8 2रा 18:28-35
9 2इत 32:11, 15; दान 3:15

36:2 * या “प्रधान साकी।”

36:11 * या “सीरियाई।”

यकीन मत करो जो तुम्हें यहोवा पर भरोसा दिलाने[1] के लिए कहता है, "यहोवा हमें ज़रूर बचाएगा और यह शहर अश्शूर के राजा के हाथ में नहीं किया जाएगा।" **16** तुम उसकी बात बिलकुल मत सुनना। अश्शूर के राजा ने कहा है, "तुम लोग मेरे साथ सुलह कर लो और अपने हथियार डाल दो, तब तुममें से हर कोई अपने-अपने अंगूरों के बाग और अंजीर के पेड़ से खा सकेगा और अपने कुंड से पानी पी सकेगा। **17** फिर मैं आकर तुम्हें एक ऐसे देश में ले जाऊँगा जो तुम्हारे देश जैसा है।[2] वहाँ अनाज, नयी दाख-मदिरा और रोटी की भरमार होगी और जगह-जगह अंगूरों के बाग होंगे। **18** हिजकियाह तुम्हें यह कहकर गुमराह न करे, 'यहोवा हमें बचा लेगा।' क्या आज तक किसी राष्ट्र का देवता अपने देश को अश्शूर के राजा के हाथ से बचा पाया है?[3] **19** हमात और अरपाद के देवता कहाँ गए?[4] कहाँ गए सपरवैम के देवता?[5] क्या वे सामरिया को मेरे हाथ से बचा सके?[6] **20** क्या उनमें से एक भी देवता ऐसा है जो अपने देश को मेरे हाथ से बचा पाया हो? तो फिर यहोवा कैसे यरूशलेम को मेरे हाथ से बचा पाएगा?"'"[7]

21 मगर वे चुप रहे, उन्होंने जवाब में कुछ नहीं कहा क्योंकि राजा का यह आदेश था: "तुम उसे कोई जवाब मत देना।"[8] **22** इसके बाद राज-घराने की देखरेख करनेवाले अधिकारी एल्याकीम (जो हिलकियाह का बेटा था), राज-सचिव शेबना[9] और शाही इतिहासकार योआह ने (जो आसाप का बेटा था) अपने कपड़े फाड़े और हिजकियाह के पास आकर उसे रबशाके की सारी बातें बतायीं।

37 जैसे ही राजा हिजकियाह ने यह सुना, उसने अपने कपड़े फाड़े और टाट ओढ़कर यहोवा के भवन में गया।[1] **2** फिर उसने राज-घराने की देखरेख करनेवाले अधिकारी एल्याकीम, राज-सचिव शेबना और याजकों के मुखियाओं को आमोज के बेटे भविष्यवक्ता यशायाह[2] के पास भेजा। वे सभी टाट ओढ़े उसके पास गए। **3** उन्होंने उससे कहा, "हिजकियाह ने कहा है, 'आज का दिन भारी संकट का दिन है, निंदा* और अपमान का दिन है। हमारी हालत ऐसी औरत की तरह हो गयी है जिसके बच्चे होने का वक्त आ गया है,# मगर उसमें बच्चा जनने की ताकत नहीं है।[3] **4** इसलिए तू इस देश में बचे हुओं[4] की खातिर परमेश्वर से बिनती कर।[5] हो सकता है तेरा परमेश्वर यहोवा रबशाके की बातों पर ध्यान दे जिसे अश्शूर के राजा ने जीवित परमेश्वर पर ताना कसने भेजा था।[6] और तेरा परमेश्वर यहोवा उससे उन सारी बातों का हिसाब ले जो उसने सुनी हैं।'"

5 जब राजा हिजकियाह के सेवकों ने यशायाह को यह संदेश सुनाया,[7] **6** तो यशायाह ने उनसे कहा, "तुम जाकर अपने मालिक से कहना, 'यहोवा ने कहा है, "अश्शूर के राजा के सेवकों[8] ने मेरी निंदा में जो बातें कही हैं, उनकी वजह से तू मत डर।[9] **7** मैं उसके दिमाग में एक बात डालूँगा और वह एक खबर सुनकर अपने देश लौट जाएगा।[10] फिर मैं उसे उसी के देश में तलवार से मरवा डालूँगा।"'"[11]

8 रबशाके को खबर मिली कि अश्शूर का राजा लाकीश से अपनी सेना

37:3 *या "बेइज़्ज़ती।" #शा., "बच्चेदानी के मुँह तक आ गए हैं।"

अध्य. 36
1 2रा 19:22
2 2रा 17:6; 2रा 17:22, 23
3 2रा 19:11, 12; 2इत 32:14; यश 37:11, 12
4 यिर्म 49:23
5 2रा 17:24
6 2रा 17:6; 2रा 17:22, 23; यश 10:11
7 2रा 19:17, 18; 2इत 32:15; यश 37:23
8 2रा 18:36, 37; नीत 9:7
9 यश 22:15

दूसरा कॉल.

अध्य. 37
1 2रा 19:1-4
2 2इत 26:22; यश 1:1
3 यश 26:17, 18
4 2रा 17:18
5 2इत 32:20; भज 50:15; योए 2:17
6 1शम 17:45; 2रा 18:28, 35
7 2रा 19:5-7
8 2रा 18:17
9 व्य 20:1
10 नीत 21:1
11 2इत 32:21; यश 37:37, 38

लेकर चला गया है, तब रबशाके वापस
अपने राजा के पास लौट गया और उसने
देखा कि राजा लिब्ना से युद्ध कर रहा
है।[1] **9** अश्शूर के राजा को खबर मिली
कि इथियोपिया का राजा तिरहाका उससे
युद्ध करने आया है। इसलिए उसने अपने
दूतों से यह कहकर उन्हें फिर हिजकियाह
के पास भेजा:[2] **10** "तुम जाकर यहूदा
के राजा हिजकियाह से कहना, 'तू अपने
परमेश्वर की बात पर यकीन मत कर।
वह तुझे यह कहकर धोखा दे रहा है कि
यरूशलेम अश्शूर के राजा के हाथ में नहीं
किया जाएगा।[3] **11** तू अच्छी तरह
जानता है कि अश्शूर के राजाओं ने दूसरे
सभी देशों का क्या हाल किया, उन्हें कैसे
धूल चटा दी।[4] फिर तूने यह कैसे
सोच लिया कि तू अकेला बच जाएगा?
12 मेरे पुरखों ने जिन राष्ट्रों का नाश
किया था, क्या उनके देवता अपने राष्ट्रों
को बचा सके?[5] गोजान, हारान[6] और
रेसेप, आज ये सारे राष्ट्र कहाँ हैं?
तलस्सार में रहनेवाले अदन के लोग कहाँ
गए? **13** हमात का राजा, अरपाद का
राजा और सपरवैम,[7] हेना, इव्वा, इन
सारे शहरों के राजा कहाँ रहे?'"

14 हिजकियाह ने दूतों से वे चिट्ठियाँ
लीं और उन्हें पढ़ा। फिर वह यहोवा
के भवन में गया और यहोवा के सामने
चिट्ठियाँ फैलाकर रख दीं।[8] **15** हिज-
कियाह यहोवा से बिनती करने लगा,[9]
16 "हे सेनाओं के परमेश्वर और इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा,[10] तू जो
करूबों पर* विराजमान है, धरती के सब
राज्यों में तू अकेला सच्चा परमेश्वर है।
तूने ही आकाश और धरती बनायी है।
17 हे यहोवा, मेरी तरफ कान लगा और
सुन![11] हे यहोवा, हम पर नज़र कर![12]

37:16 *या शायद, "के बीच।"

सनहेरीब ने तुझ जीवित परमेश्वर को
ताना मारने के लिए जो बातें लिखी हैं,
उन पर ध्यान दे।[1] **18** हे यहोवा, यह
सच है कि अश्शूर के राजाओं ने सब
राष्ट्रों को और अपने देश को भी
तहस-नहस कर दिया,[2] **19** उनके देव-
ताओं को आग में झोंक दिया।[3] मगर वे
उन देवताओं को इसलिए नाश कर पाए
क्योंकि वे देवता नहीं, बस इंसानों की
कारीगरी थे,[4] पत्थर और लकड़ी थे।
20 अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा, दया
करके तू हमें उसके हाथ से बचा ले ताकि
धरती के सब राज्य जान लें कि तू यहोवा
ही परमेश्वर है।"[5]

21 तब आमोज के बेटे यशायाह ने
हिजकियाह के पास यह संदेश भेजा:
"इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता
है, 'तूने अश्शूर के राजा सनहेरीब के
बारे में मुझसे प्रार्थना की थी,[6] **22** इस-
लिए यहोवा ने सनहेरीब के खिलाफ यह
फैसला सुनाया है:

"सिय्योन की कुँवारी बेटी तुझे
तुच्छ समझती है, तेरी खिल्ली
उड़ाती है।
यरूशलेम की बेटी सिर हिला-हिला-
कर तुझ पर हँसती है।
23 तू जानता भी है तूने किसे ताना
मारा है,[7] किसकी निंदा की है?
किसके खिलाफ आवाज़
उठायी है?[8]
तू घमंड से भरकर किसे आँखें
दिखा रहा है?
इसराएल के पवित्र परमेश्वर को![9]
24 तूने अपने सेवकों के हाथ यह
संदेश भेजकर यहोवा को ताना
मारा है:[10]
'मैं अपने बेहिसाब युद्ध-रथ लेकर
आऊँगा,

अध्य. 37
1 यह 10:29, 30; 2रा 8:22; 2रा 19:8-13
2 2रा 18:17
3 2इत 32:15
4 2रा 17:5, 6; 2इत 32:13; यश 10:11
5 यश 36:19
6 उत 11:31
7 2रा 17:24; यश 36:19
8 2रा 19:14-19
9 1रा 8:30; 2इत 6:20; 2इत 20:9; दान 9:3
10 भज 46:7; यश 8:13
11 2इत 6:40; भज 65:2
12 2इत 16:9; 1पत 3:12

दूसरा कॉल.
1 यश 37:4
2 2रा 15:29; 2रा 16:8, 9; 1इत 5:26
3 यश 10:11
4 यश 40:19; यश 41:7; यिर्म 10:3; हो 8:6; प्रेष 17:29
5 व्य 32:31, 39; भज 83:18; भज 96:5
6 2रा 19:20, 21
7 2रा 19:4, 16
8 2रा 18:30, 35; यश 10:12, 13
9 निर्ग 15:11; 2रा 19:22-24; यश 10:20; यहे 39:7
10 2इत 32:17

पहाड़ों की चोटियों पर चढ़
जाऊँगा,[1]
लबानोन के दूर-दूर के इलाकों तक
पहुँच जाऊँगा।
मैं उसके ऊँचे-ऊँचे देवदार, बढ़िया-
बढ़िया सनोवर काट डालूँगा।
सबसे ऊँचे पर बसे उसके आशि-
याने में, उसके सबसे घने जंगलों
में घुस जाऊँगा।
25 मैं कुएँ खुदवाऊँगा, उनका पानी
पीऊँगा,
अपने पैरों के तलवे से मिस्र की
नदियाँ* सुखा दूँगा।'
26 क्या तूने नहीं सुना? मैंने बहुत
पहले ही यह फैसला कर
लिया था।
अरसों पहले इसकी तैयारी कर
ली थी।*[2]
अब वक्त आ गया है इसे अंजाम
देने का।[3]
तू किलेबंद शहरों को मलबे का ढेर
बना देगा।[4]
27 उनके निवासी बेबस हो जाएँगे,
उनमें डर समा जाएगा, वे शर्मिंदा
हो जाएँगे।
वे मैदान के पेड़-पौधों और हरी
घास की तरह कमज़ोर हो जाएँगे,
छत की घास जैसे हो जाएँगे जो
पूरब की हवा से झुलस जाती है।
28 मैं तेरा उठना-बैठना, आना-जाना
सब जानता हूँ,[5]
यह भी कि तू कब मुझ पर भड़क
उठता है।[6]
29 क्योंकि तेरा क्रोध करना[7] और
तेरा दहाड़ना मेरे कानों तक
पहुँचा है।[8]

मैं तेरी नाक में नकेल डालूँगा और
तेरे मुँह में लगाम लगाऊँगा,[1]
तुझे खींचकर उसी रास्ते वापस ले
जाऊँगा जिससे तू आया है।"

30 ये बातें ज़रूर होंगी, इसकी मैं
तुझे* यह निशानी देता हूँ: इस साल
तुम लोग वह अनाज खाओगे जो
अपने आप उगता है,# अगले साल वह
अनाज खाओगे जो पिछले अनाज के
गिरने से उगता है और तीसरे साल तुम
बीज बोओगे और उसकी फसल काटोगे
और अंगूरों के बाग लगाओगे और उनके
फल खाओगे।[2] 31 यहूदा के घराने के
जो लोग बच जाएँगे,[3] वे पौधों की
तरह जड़ पकड़ेंगे और फल पैदा करेंगे।
32 बचे हुए लोग यरूशलेम से निकलेंगे,
हाँ, जो ज़िंदा बच जाएँगे वे सिय्योन पहाड़
से निकलेंगे।[4] सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा अपने जोश के कारण ऐसा ज़रूर
करेगा।[5]

33 इसलिए यहोवा अश्शूर के राजा
के बारे में कहता है,[6]

"वह इस शहर में नहीं आएगा,[7]
न यहाँ एक भी तीर चलाएगा,
न ढाल लेकर हमला करेगा,
न ही घेराबंदी की ढलान खड़ी
करेगा।"'[8]
34 यहोवा ने यह ऐलान किया है, 'वह
जिस रास्ते आया है उसी रास्ते
लौट जाएगा,
वह इस शहर में नहीं आएगा।
35 मैं अपने नाम की खातिर और
अपने सेवक दाविद की खातिर[9]
इस शहर की रक्षा करूँगा,[10] इसे
बचाऊँगा।'"[11]

37:25 *या "नील की नहरें।" 37:26 *या "इसे रचा था।"

37:30 *यानी हिजकियाह। #या "बिखरे हुए दानों से हुई पैदावार खाओगे।"

अध्य. 37
1 यश 10:10, 11
2 भज 33:11; यश 46:10
3 यश 55:10, 11
4 2रा 19:25, 26
5 नीत 5:21; नीत 15:3; इब्र 4:13
6 2रा 19:27, 28
7 भज 46:6; यश 10:15; यश 37:23
8 यश 36:4, 20

दूसरा कॉल.
1 भज 32:9
2 2रा 19:29-31
3 यश 1:9; यश 10:20, 21
4 2रा 19:4
5 यश 59:17; योए 2:18; जक 1:14, 15
6 यश 10:24
7 2इत 32:22; यश 10:32
8 2रा 19:32-34
9 1रा 15:4
10 यश 31:5
11 व्य 32:27; 1शम 12:22; 2रा 20:6; यहे 36:22

36 फिर यहोवा का एक स्वर्गदूत
अश्शूरियों की छावनी में गया और उनके
1,85,000 सैनिकों को मार डाला। जब
लोग सुबह तड़के उठे तो उन्होंने देखा कि
चारों तरफ लाशें बिछी हैं।[1] 37 तब
अश्शूर का राजा सनहेरीब वहाँ से चला
गया और नीनवे[2] लौट गया और वहीं
रहा।[3] 38 एक दिन जब वह अपने
देवता निसरोक के मंदिर में झुककर दंड-
वत कर रहा था तो उसके अपने बेटों ने,
अद्र-मेलेक और शरेसेर ने उसे तलवार से
मार डाला।[4] फिर वे अरारात देश[5] भाग
गए। सनहेरीब की जगह उसका बेटा
एसर-हद्दोन[6] राजा बना।

38 उन दिनों हिजकियाह बीमार हो
गया। उसकी हालत इतनी
खराब हो गयी कि वह मरनेवाला था।[7]
तब आमोज का बेटा भविष्यवक्ता यशा-
याह[8] उसके पास आया और उससे
कहा, "यहोवा ने कहा है, 'तू अपने
घराने को ज़रूरी हिदायतें दे क्योंकि
तू इस बीमारी से ठीक नहीं होगा, तेरी
मौत हो जाएगी।'"[9] 2 यह सुनकर
हिजकियाह ने दीवार की तरफ मुँह किया
और वह यहोवा से प्रार्थना करने लगा,
3 "हे यहोवा, मैं तुझसे बिनती करता हूँ,
याद कर[10] कि मैं कैसे तेरा विश्वासयोग्य
बना रहा और पूरे दिल से तेरे सामने सही
राह पर चलता रहा।[11] मैंने हमेशा वही
किया जो तेरी नज़र में सही है।" यह कह-
कर हिजकियाह फूट-फूटकर रोने लगा।

4 तब यहोवा का यह संदेश यशा-
याह के पास आया: 5 "तू हिजकियाह
के पास वापस जा और उससे कह,[12] 'तेरे
पुरखे दाविद के परमेश्वर यहोवा ने कहा
है, "मैंने तेरी प्रार्थना सुनी है,[13] तेरे आँसू
देखे हैं।[14] मैं तेरी उम्र 15 साल और
बढ़ा दूँगा।[15] 6 मैं तुझे और इस शहर
को अश्शूर के राजा के हाथ से बचाऊँगा
और इस शहर की हिफ़ाज़त करूँगा।[1]
7 यहोवा की तरफ से तेरे लिए यह
निशानी होगी जिससे तू यकीन करे कि
यहोवा ने जो कहा है उसे वह पूरा भी
करेगा:[2] 8 आहाज की सीढ़ियों* पर
ढलते सूरज की जो छाया आगे बढ़ चुकी
है वह दस कदम पीछे हो जाएगी।"'"[3]
तब सीढ़ियों पर सूरज की जो छाया आगे
बढ़ चुकी थी वह दस कदम पीछे चली
गयी।

9 यहूदा के राजा हिजकियाह की
रचना जो उसने बीमार होने पर और ठीक
होने के बाद रची थी,

10 मैंने कहा, "अपनी आधी उम्र
जीकर,
मैं कब्र के दरवाज़े से अंदर
जाऊँगा।
मेरी ज़िंदगी के बचे हुए साल मुझसे
छीन लिए जाएँगे।"
11 मैंने कहा, "मैं याह,* हाँ, याह की
मेहरबानी देखने के लिए ज़िंदा#
नहीं रहूँगा,[4]
मैं इंसानों को फिर कभी नहीं देख
पाऊँगा,
क्योंकि मैं मरे हुओं में जा मिलूँगा।
12 चरवाहे के तंबू की तरह,
मेरा डेरा उखाड़ दिया गया है और
मुझसे ले लिया गया है।[5]
जैसे जुलाहा कपड़ा बुनकर उसे
लपेटता है, वैसे ही मेरा जीवन
लपेट दिया गया है,

38:8 *शायद इन सीढ़ियों का इस्तेमाल एक धूप-घड़ी की तरह समय मापने के लिए किया जाता था। 38:11 *"याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। #शा., "जीवितों के देश में।"

अध्य. 37
1 2रा 19:35-37, 2इत 32:21
2 उत 10:8, 11, यो 1:2
3 2रा 19:7, 28
4 2इत 32:21
5 उत 8:4
6 एज 4:1, 2

अध्य. 38
7 2इत 32:24
8 2रा 19:20, यश 1:1
9 2रा 20:1-3
10 नहे 13:22, भज 20:1-3, इब्र 6:10
11 2इत 31:20, 21
12 2रा 20:4-6
13 नीत 15:29, 1यूह 5:14
14 भज 39:12, भज 56:8
15 व्य 32:39, 1शम 2:6

दूसरा कॉल.
1 2इत 32:22
2 2रा 20:8-11
3 यह 10:12, 13
4 भज 6:5, सभ 9:5
5 भज 146:4, सभ 8:8

करघे से काटकर अलग कर दिया
गया है।
सुबह से शाम तक तू मुझे दुख
देता है।[1]
13 मैं सुबह तक अपने मन को शांत
करता हूँ,
मगर तू शेर की तरह मेरी हड्डियों
को तोड़ता रहता है,
सुबह से शाम तक मुझे दुख
देता है।[2]
14 बतासी और सारिका* की तरह मैं
चीं-चीं करता हूँ,[3]
फाख्ते की तरह कराहता हूँ।[4]
ऊपर देखते-देखते मेरी आँखें पथरा
गयी हैं।[5]
'हे यहोवा, मैं बहुत दुखी हूँ,
मेरा सहारा बन जा!'#[6]
15 मैं कैसे उसका शुक्रिया अदा करूँ?
उसने मुझसे जो कहा, वह पूरा
किया,
मुश्किल घड़ी में मुझे सँभाला।
इसलिए सारी ज़िंदगी मैं नम्र बना
रहूँगा।
16 'हे यहोवा, इस कारण* लोग
ज़िंदा हैं
और इसी कारण मेरी साँसें भी चल
रही हैं।
तू मेरी सेहत मुझे लौटा देगा और
मेरी ज़िंदगी सलामत रखेगा।[7]
17 देख! शांति के बजाय मैं कड़वाहट
से भर गया था,
पर तुझे मुझसे गहरा लगाव था,
इसलिए तूने मुझे विनाश के गड्ढे
में गिरने से बचाया,[8]
मेरे सारे पापों को अपनी पीठ के
पीछे फेंक दिया।*[1]
18 कब्र* तेरा गुणगान नहीं कर
सकती,[2]
न मौत तेरी बड़ाई कर सकती है,[3]
जो नीचे गड्ढे में जा चुके हैं, वे
तेरे विश्वासयोग्य होने की आस
नहीं लगा सकते।[4]
19 ज़िंदा इंसान, हाँ, जीवित इंसान ही
तेरी बड़ाई कर सकते हैं,
जैसे आज मैं कर रहा हूँ।
एक पिता अपने बेटे को तेरे
विश्वासयोग्य होने के बारे में
सिखा सकता है।[5]
20 हे यहोवा, मुझे बचा
कि मैं ज़िंदगी-भर तेरे भवन में,
यहोवा के भवन में,
दूसरों के साथ तारोंवाले बाजे पर
अपने गीत बजा सकूँ।'"[6]

21 फिर यशायाह ने राजा के सेवकों
से कहा, "सूखे अंजीरों की एक
टिकिया लाओ और राजा के फोड़े पर
लगाओ ताकि वह ठीक हो जाए।"[7]
22 हिजकियाह ने यशायाह से पूछा था,
"मैं कैसे यकीन करूँ कि मैं यहोवा के
भवन में फिर जा पाऊँगा? क्या तू मुझे
इसकी कोई निशानी देगा?"[8]

39 उस वक्त बैबिलोन के राजा मरो-
दक-बलदान ने, जो बलदान का
बेटा था, अपने दूतों के हाथ हिजकियाह
को चिट्ठियाँ और एक तोहफा भेजा[9]
क्योंकि उसे पता चला कि हिजकियाह
बीमार था और अब ठीक हो गया है।[10]
2 हिजकियाह ने उन दूतों का खुशी-खुशी

38:14 *या शायद, "सारस।" #शा., "मेरा ज़ामिन बन जा।" 38:16 *यानी परमेश्वर की कही बातों और कामों के कारण।

38:17 *या "अपनी नज़रों से दूर कर दिया।" 38:18 *या "शीओल।" शब्दावली देखें।

अध्य. 38
1 अय 17:1
2 भज 39:10
3 भज 102:7
4 यश 59:11
5 भज 39:7
6 भज 39:12, भज 119:82, 123
7 1शम 2:6, अय 33:28, भज 71:20
8 भज 30:3, भज 86:13, यो 2:6

दूसरा कॉल.
1 यश 43:25, मी 7:18
2 भज 30:9
3 भज 6:5, भज 115:17
4 सभ 9:5, 10
5 उत 18:19, व्य 4:9, यह 4:21-24
6 2रा 20:5, भज 30:11, 12, भज 84:2
7 2रा 20:7
8 2रा 20:8

अध्य. 39
9 2इत 32:23
10 2रा 20:5, 2रा 20:12, 13

स्वागत किया* और उन्हें अपना सारा
खज़ाना दिखा दिया।[1] उसने सोना-चाँदी,
बलसाँ का तेल, दूसरे किस्म के बेश-
कीमती तेल, हथियारों का भंडार और
वह सारी चीज़ें दिखायीं जो उसके खज़ाने
में थीं। उसके महल और पूरे राज्य में
ऐसी एक भी चीज़ नहीं थी जो उसने न
दिखायी हो।

3 इसके बाद भविष्यवक्ता यशायाह,
राजा हिजकियाह के पास आया और
उससे पूछा, "ये आदमी कहाँ से आए
थे और इन्होंने तुझसे क्या कहा?" हिज-
कियाह ने कहा, "वे एक दूर देश बैबि-
लोन से आए थे।"[2]
4 फिर यशायाह
ने पूछा, "उन्होंने तेरे महल में क्या-क्या
देखा?" हिजकियाह ने कहा, "उन्होंने
मेरे महल की हर चीज़ देखी। मेरे
खज़ानों में ऐसा कुछ नहीं जो मैंने उन्हें न
दिखाया हो।"

5 तब यशायाह ने हिजकियाह से
कहा, "अब तू सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा का संदेश सुन।
6 यहोवा कहता
है, 'देख! वह दिन आ रहा है जब तेरे
महल का सारा खज़ाना बैबिलोन ले जाया
जाएगा। तेरे पुरखों ने आज के दिन तक
जितना धन जमा किया था, वह सब भी
लूट लिया जाएगा। एक भी चीज़ नहीं
छोड़ी जाएगी।[3]
7 तेरे जो बेटे होंगे
उनमें से कुछ को बैबिलोन ले जाया
जाएगा और वहाँ के राजमहल में दरबारी
बनाया जाएगा।'"[4]

8 हिजकियाह ने यशायाह से कहा,
"तूने यहोवा का जो फैसला सुनाया है, वह
सही है।" फिर उसने कहा, "मेरे जीते-
जी* मेरे राज में शांति और सुरक्षा#
रहेगी।"[5]

39:2 *शा., "से खुश हुआ।" **39:8** *शा., "दिनों में।" #शा., "सच्चाई।"

अध्य. 39

1 2इत 32:27
2 2रा 20:14, 15
3 2रा 20:16-18; 2रा 24:11, 13; 2रा 25:13; 2इत 36:18; दान 1:1, 2
4 2रा 24:12; दान 2:49; दान 5:29
5 2रा 20:19

दूसरा कॉल.

अध्य. 40

1 यश 49:13; यश 51:3; 2कुर 1:3, 4
2 भज 79:8, 9; यिर्म 31:34; यिर्म 33:8
3 यिर्म 16:18; दान 9:11, 12
4 यश 35:8; यश 57:14; मला 3:1
5 यश 11:16; मत 3:1, 3; मर 1:2-4; लूक 3:3-6; यूह 1:23
6 यश 42:16
7 यश 24:15
8 यश 49:6; यश 52:10
9 अय 14:1, 2; भज 90:5, 6

40

तुम्हारा परमेश्वर कहता है,
"मेरे लोगों को दिलासा दो,
उन्हें दिलासा दो![1]
2 यरूशलेम नगरी की हिम्मत
बँधाओ।
उससे कहो कि उसके दुख-भरे
दिन* बीत गए,
वह अपने पापों की कीमत अदा
कर चुकी है,[2]
यहोवा के हाथों उसे अपने पापों का
पूरा# बदला मिल चुका है।"[3]
3 वीराने में कोई पुकार रहा है,
"यहोवा का रास्ता तैयार करो,[4]
हमारे परमेश्वर के लिए रेगिस्तान
से जानेवाला राजमार्ग सीधा
करो।[5]
4 हरेक घाटी भर दी जाए,
हरेक पहाड़ और पहाड़ी नीची की
जाए,
ऊँचे-नीचे रास्ते सपाट किए जाएँ
और ऊबड़-खाबड़ ज़मीन को मैदान
बना दिया जाए।[6]
5 तब यहोवा की महिमा प्रकट होगी[7]
और सब इंसान इसे देखेंगे,[8]
क्योंकि यह बात यहोवा ने
कही है।"
6 सुन, कोई कह रहा है, "आवाज़
लगा!"
दूसरे ने पूछा, "क्या आवाज़
लगाऊँ?"
"सब इंसान हरी घास के समान हैं,
उनका अटल प्यार मैदान के फूलों
की तरह है।[9]
7 जब यहोवा की फूँक उन पर
पड़ती है,

40:2 *शा., "जबरन मज़दूरी।" #या "दुगना।"

तो हरी घास सूख जाती है
और खिले हुए फूल मुरझा
जाते हैं।[1]
सच, लोग हरी घास के समान हैं।
8 हरी घास तो सूख जाती है
और फूल मुरझा जाते हैं,
लेकिन हमारे परमेश्वर का वचन
हमेशा तक कायम रहता है।"[2]
9 हे सिय्योन को खुशखबरी सुनाने-
वाली,
ऊँचे पहाड़ पर चढ़ जा।[3]
हे यरूशलेम को खुशखबरी सुनाने-
वाली,
ऊँची आवाज़ में इसे सुना।
हाँ, ऊँची आवाज़ में सुना, डर मत।
यहूदा के शहरों में ऐलान
कर, "वह रहा तुम्हारा पर-
मेश्वर!"[4]
10 देख, सारे जहान का मालिक यहोवा
पूरी ताकत के साथ आ रहा है
और उसका बाज़ू उसकी तरफ से
राज करेगा।[5]
देख, परमेश्वर अपने साथ इनाम
लेकर आ रहा है,
जो मज़दूरी वह देगा, वह उसके
पास है।[6]
11 वह चरवाहे की तरह अपने झुंड की
देखभाल करेगा,[7]
अपने हाथों से मेम्नों को इकट्ठा
करेगा,
उन्हें अपनी गोद में* उठाएगा,
दूध पिलानेवाली भेड़ों को धीरे-धीरे
ले चलेगा।[8]
12 किसने सागर का पानी अपने चुल्लू
में नापा है?[9]

40:11 *या "अपने कपड़े की तह में।"

अध्य. 40

1 भज 103:15, 16; याकू 1:11
2 यश 46:10; 1पत 1:24, 25
3 यश 52:7
4 यश 12:2; यश 25:9
5 यश 53:1; यूह 12:37, 38
6 यश 62:11; प्रक 22:12
7 यश 49:10; यहे 34:15, 16; 1पत 2:25
8 उत 33:13; 1पत 5:2, 3
9 नीत 30:4

दूसरा कॉल.

1 अय 38:4, 5
2 अय 36:22, 23; रोम 11:34; 1कुर 2:16
3 भज 147:5
4 भज 62:9
5 दान 4:35
6 यश 41:11, 12
7 निर्ग 8:10; भज 86:8; यिर्म 10:6, 7

किसने आकाश को बित्ते* से
नापा है?
किसने पृथ्वी की धूल को पैमाने में
भरा है?[1]
किसने पहाड़ों को तराज़ू में
और पहाड़ियों को पलड़े में
तौला है?
13 किसने यहोवा की ज़ोरदार शक्ति
को नाप-तौलकर देखा है?*
कौन उसका सलाहकार बनकर उसे
सलाह दे सकता है?[2]
14 समझ पाने के लिए उसने किससे
मशविरा किया?
या न्याय करना उसे किसने
सिखाया?
किसने उसे ज्ञान दिया
या सच्ची समझ की राह दिखायी?[3]
15 देखो! सब राष्ट्र उसके सामने
ऐसे हैं,
जैसे बाल्टी में पानी की एक बूँद हो,
जैसे तराज़ू के पलड़ों पर जमी
धूल हो।[4]
वह द्वीपों को धूल के समान उठा
लेता है।
16 लबानोन के सारे पेड़ भी उसकी
वेदी के लिए कम पड़ेंगे,
वहाँ के जंगली जानवर भी होम-
बलि के लिए कम पड़ेंगे।
17 सभी राष्ट्र उसके सामने ऐसे हैं मानो
उनका कोई वजूद ही नहीं,[5]
उसकी नज़र में वे कुछ नहीं, उनका
कोई मोल नहीं।[6]
18 तुम परमेश्वर की तुलना किससे
करोगे?[7]

40:12 *अँगूठे के सिरे से छोटी उँगली के सिरे तक की दूरी। अति. ख14 देखें।
40:13 *या शायद, "की थाह ली है।"

ऐसी कौन-सी चीज़ है जो दिखने में
उसके जैसी है?[1]
19 कारीगर एक मूरत ढालता है
और सुनार उसे सोने से मढ़ता है,[2]
उसके लिए चाँदी की ज़ंजीरें
बनाता है।
20 या एक आदमी चढ़ावे के लिए ऐसा
पेड़ चुनता है[3] जिसमें कीड़े न
लगें।
फिर वह जाकर एक कुशल कारी-
गर को ढूँढ़ लाता है
कि वह ऐसी मूरत बनाए जो मज़-
बूती से खड़ी रह सके।[4]
21 क्या तुम नहीं जानते? क्या तुमने
नहीं सुना?
क्या तुम्हें शुरू से नहीं बताया गया?
क्या तुमने उस सबूत पर ध्यान नहीं
दिया,
जो पृथ्वी की नींव डालने के समय
से मौजूद है?[5]
22 यही कि परमेश्वर पृथ्वी के घेरे* के
ऊपर विराजमान है,[6]
उसके सामने धरती के निवासी
टिड्डियों जैसे हैं।
वह आसमान को महीन चादर की
तरह फैलाए हुए है,
उसे तंबू की तरह ताने हुए है।[7]
23 वह ऊँचे-ऊँचे अधिकारियों को
नीचा कर देता है,
पृथ्वी के न्यायियों* को न के बरा-
बर बना देता है।
24 अभी-अभी वे रोपे गए थे,
अभी-अभी वे बोए गए थे,
उनके तने ने मिट्टी में जड़ भी नहीं
पकड़ी थी
कि उन पर फूँक मारी गयी और वे
सूख गए,
आँधी आकर उन्हें भूसे की तरह
उड़ा ले गयी।[1]
25 पवित्र परमेश्वर कहता है,
"तुम किससे मेरी तुलना करोगे?
मुझे किसके बराबर ठहराओगे?
26 ज़रा अपनी आँखें उठाकर आसमान
को देखो,
किसने इन तारों को बनाया?[2]
उसी ने जो गिन-गिनकर उनकी
सेना को बुलाता है,
एक-एक का नाम लेकर उसे पुकार-
ता है।[3]
उसकी ज़बरदस्त ताकत और
विस्मयकारी शक्ति की
वजह से,[4]
उनमें से एक भी उसके सामने गैर-
हाज़िर नहीं रहता।
27 हे याकूब, तू क्यों यह कहता है,
हे इसराएल, तू क्यों ऐसा
बोलता है,
'मेरी राह यहोवा से छिपी हुई है,
परमेश्वर से मुझे कोई न्याय नहीं
मिलता'?[5]
28 क्या तू नहीं जानता? क्या तूने नहीं
सुना?
पृथ्वी की सब चीज़ों का
बनानेवाला यहोवा, युग-युग का
परमेश्वर है।[6]
वह न कभी थकता है न पस्त
होता है,[7]
उसकी समझ की थाह कोई नहीं ले
सकता।[8]
29 वह थके हुओं में दम भर देता है,
कमज़ोरों को गज़ब की ताकत
देता है।[9]

40:22 *या "गोलाई।" 40:23 *या "शासकों।"

अध्य. 40
1 व्य 4:15, 16; प्रेष 17:29
2 भज 115:4-8
3 यश 44:14, 15
4 यश 41:7; यश 46:6, 7; यिर्म 10:3, 4
5 भज 19:1; रोम 1:20
6 यश 66:1
7 यश 44:24; यिर्म 10:12; जक 12:1

दूसरा कॉल.
1 1रा 21:20, 21; 2रा 10:10, 11; यिर्म 22:24, 30
2 भज 102:25
3 भज 147:4
4 भज 89:13
5 यश 49:14; यहे 37:11
6 उत 21:33; भज 90:2; यिर्म 10:10; 1ती 1:17
7 भज 121:4; यश 27:3
8 भज 139:4, 6; भज 147:5; यश 55:9; रोम 11:33; 1कुर 2:16
9 भज 29:11; यश 40:26; फिल 4:13; इब्र 11:33, 34

30 लड़के थककर चूर हो जाएँगे,
जवान आदमी लड़खड़ाकर गिर पड़ेंगे,
31 मगर यहोवा पर भरोसा रखनेवालों को नयी ताकत मिलती रहेगी।
वे उकाब की तरह पंख फैलाकर ऊँची उड़ान भरेंगे,[1]
वे दौड़ेंगे पर पस्त नहीं होंगे,
वे चलेंगे पर थकेंगे नहीं।"[2]

41 "हे द्वीपो, चुपचाप मेरी बात सुनो!*
हे देश-देश के लोगो, नयी ताकत से भर जाओ,
मेरे सामने आकर अपनी बात कहो।[3]
आओ हम इकट्ठा हों कि मैं तुम्हें अपना फैसला सुनाऊँ।
2 वह कौन है जिसने उसे पूरब से उभारा?[4]
न्याय करने के लिए उसे अपने पाँव के पास* बुलाया?
वह कौन है जो राष्ट्रों को उसके हवाले कर देगा?
राजाओं को उसके अधीन कर देगा?[5]
उसकी तलवार के आगे उन्हें धूल में मिला देगा
और उसके धनुष के आगे उन्हें भूसे की तरह उड़ा देगा?
3 वह उनका पीछा करेगा, बिना रुके आगे बढ़ेगा,
उन रास्तों से होकर जाएगा, जहाँ आज तक उसके कदम नहीं पड़े।
4 किसने यह सबकुछ किया, इसे अंजाम दिया?
किसने शुरूआत से एक-एक पीढ़ी को हुक्म देकर बुलाया?
मैं यहोवा, जो सबसे पहला था,[1]
आखिरी पीढ़ी के लिए भी वैसा ही रहूँगा।"[2]
5 द्वीप यह देखकर घबरा गए,
पृथ्वी के दूर-दूर के इलाके काँपने लगे,
वे एकजुट हो गए।
6 हरेक अपने साथी की मदद कर रहा है
और अपने भाई से कह रहा है, "हिम्मत रख।"
7 कारीगर, सुनार का हौसला बढ़ा रहा है[3]
और हथौड़ा पीटनेवाला, निहाई पर काम करनेवाले का।
वह टाँकों के बारे में कहता है, "जोड़ तो अच्छा है।"
फिर कीलें ठोंककर मूरत को खड़ा किया जाता है कि वह न गिरे।
8 "लेकिन हे इसराएल, तू मेरा सेवक है,[4]
हे याकूब, तुझे मैंने चुना है,[5]
तू मेरे दोस्त अब्राहम का वंश* है।[6]
9 मैं तुझे पृथ्वी के छोर से लाया हूँ,[7]
मैंने तुझे धरती के दूर-दूर के इलाकों से बुलाया है।
मैंने तुझसे कहा, 'तू मेरा सेवक है,[8]
मैंने तुझे चुना है, तुझे ठुकराया नहीं।[9]
10 डर मत क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ,[10]
घबरा मत क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ।[11]

41:1 *या "मेरे सामने खामोश रहो।"
41:2 *यानी अपनी सेवा में।
41:8 *शा., "बीज।"

अध्य. 40
1 भज 103:5
2 1रा 18:46; भज 84:7

अध्य. 41
3 यश 41:21
4 यश 44:28; यश 46:11; प्रक 16:12
5 यश 45:1

दूसरा कॉल.
1 यश 43:10; यश 44:6; यश 48:12; प्रक 1:8
2 यश 46:4; मला 3:6; याकू 1:17
3 यश 44:12; यश 46:6
4 निर्ग 19:5, 6; लैव 25:42
5 व्य 7:6; भज 33:12
6 2इत 20:7; याकू 2:23
7 भज 107:2, 3
8 यश 43:10
9 1शम 12:22; यिर्म 33:25, 26
10 व्य 20:1; भज 46:1; रोम 8:31
11 यश 60:19, 20

मैं तेरी हिम्मत बँधाऊँगा, तेरी मदद
करूँगा,[1]
नेकी के दाएँ हाथ से तुझे सँभाले
रहूँगा।’
11 देख! जो तुझ पर भड़क उठते हैं
उनको शर्मिंदा और नीचा किया
जाएगा,[2]
जो तुझसे झगड़ते हैं उनका नामो-
निशान मिटा दिया जाएगा।[3]
12 जो तुझसे लड़ते हैं उन्हें ढूँढ़ने पर
भी तू उन्हें न पाएगा,
क्योंकि तुझसे युद्ध करनेवालों का
नाश हो जाएगा, वे मिट
जाएँगे।[4]
13 मैं तेरा परमेश्वर यहोवा, तेरा दायाँ
हाथ थामे हुए हूँ,
मैं तुझसे कहता हूँ, ‘मत डर, मैं तेरी
मदद करूँगा।’[5]
14 हे याकूब, भले ही तू कीड़े जैसा
कमज़ोर है,[6] मगर डर मत।
हे इसराएल के लोगो, मैं तुम्हारी
मदद करूँगा।”
यह ऐलान इसराएल के पवित्र पर-
मेश्वर यहोवा ने किया है, जो
तुम्हारा छुड़ानेवाला है।[7]
15 “देख, मैंने तुझे दाँवने की पटिया
बनाया है,[8]
एकदम नयी और पैनी दाँवने की
पटिया।
तू पहाड़ों को दाँवेगा और उन्हें चूर-
चूर कर देगा,
तू पहाड़ियों को भूसा बना देगा।
16 तू उन्हें फटकेगा
और हवा उन्हें उड़ा ले जाएगी,
आँधी उन्हें छितरा देगी।
तू यहोवा के कारण मगन होगा[9]
और इसराएल के पवित्र परमेश्वर
के बारे में गर्व से बात करेगा।”[10]

17 “ज़रूरतमंद और गरीब पानी की
तलाश में हैं,
मगर उन्हें पानी नहीं मिलता,
उनकी जीभ प्यास के मारे सूख
गयी है।[1]
मैं यहोवा उनकी दुहाई सुनूँगा,[2]
मैं इसराएल का परमेश्वर उन्हें नहीं
त्यागूँगा।[3]
18 मैं सूखी पहाड़ियों पर नदियाँ
बहाऊँगा,[4]
घाटी के मैदानों में पानी के सोते
निकालूँगा।[5]
मैं वीराने को नरकटोंवाले तालाब में
और सूखे देश को पानी के सोते में
बदल दूँगा।[6]
19 मैं बंजर इलाके में देवदार,
बबूल, मेंहदी और चीड़ के पेड़
लगाऊँगा।[7]
सूखे मैदानों में सनोवर, एश और
सरो के पेड़ लगाऊँगा[8]
20 ताकि सब लोग देखें और जान लें,
ध्यान दें और समझ जाएँ
कि ये यहोवा के हाथ के काम हैं,
इसराएल के पवित्र परमेश्वर ने यह
सब किया है।”[9]
21 यहोवा कहता है, “अपना मुकदमा
पेश करो।”
याकूब का राजा कहता है, “अपनी
दलीलें पेश करो,
22 सबूत लाओ और बताओ कि क्या
होनेवाला है।
जो बातें पहले हो चुकी हैं, वे हमें
बताओ
कि हम उन पर सोचें और उनके
नतीजों पर ध्यान दें,
या जो बातें आगे होनेवाली हैं, वे
हमें बताओ।[10]

अध्य. 41
1 व्य 33:27
भज 115:9
2 यश 45:24
3 यश 40:17
यश 60:12
4 यश 54:17
5 व्य 33:29
6 व्य 7:7
7 यश 43:14
यश 47:4
8 मी 4:13
9 यश 25:9
10 यश 12:6

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:48
आम 8:11
2 यश 30:19
यश 55:1
3 भज 94:14
यश 42:16
इब्र 13:5
4 यश 30:25
5 योए 3:18
6 भज 107:35
7 यश 32:14, 15
यश 60:21
8 यश 51:3
यश 55:13
9 यहे 39:28
10 यश 42:9
यश 46:9, 10
यश 48:5

23 बताओ कि भविष्य में क्या होने-
वाला है
कि हम जान जाएँ कि तुम
ईश्वर हो।[1]
अच्छा या बुरा, कुछ तो करो
कि उसे देखकर हम हैरत में पड़
जाएँ।[2]
24 सुनो, तुम निकम्मे हो!
तुम्हारे काम भी बेकार हैं,[3]
जो कोई तुम्हें चुनता है वह
घिनौना है।[4]
25 मैंने उत्तर से किसी को उभारा है,
वह आ रहा है,[5]
पूरब से आनेवाला वह शख्स[6] मेरे
नाम की महिमा करेगा।
वह शासकों* को मिट्टी की तरह
रौंद देगा,[7]
जैसे कुम्हार गीली मिट्टी को
रौंदता है।
26 किसने यह बात शुरूआत से बतायी
कि हम इसे जान सकें?
किसने बहुत पहले ही यह बता
दिया था
कि हम कहें, 'उसने सही कहा
था'?[8]
किसी ने नहीं! न किसी ने इसका
ऐलान किया।
तुमने हमें कुछ नहीं बताया।"[9]
27 मैंने ही सबसे पहले सिय्योन को
बताया, "देख, यह सब होने-
वाला है।"[10]
और यह खुशखबरी सुनाने के लिए
यरूशलेम में एक दूत भेजा।[11]
28 मैंने इधर-उधर देखा मगर वहाँ कोई
न था,
एक भी नहीं जो सलाह दे सके,
बार-बार पूछने पर भी मुझे कोई
जवाब नहीं मिला।
29 वे सब बेकार हैं,*
उनके काम भी व्यर्थ हैं,
उनकी ढली हुई मूरतें सिर्फ हवा हैं,
धोखा हैं।[1]

42 देखो! मेरा सेवक[2] जिसे मैं
सँभाले हुए हूँ!
मेरा चुना हुआ जन[3] जिसे मैंने
मंज़ूर किया है![4]
मैंने उस पर अपनी पवित्र शक्ति
उँडेली है,[5]
वह राष्ट्रों को दिखाएगा कि सच्चा
न्याय क्या होता है।[6]
2 वह न तो चिल्लाएगा, न शोर
मचाएगा
और न ही सड़कों पर अपनी
आवाज़ ऊँची करेगा।[7]
3 वह कुचले हुए नरकट को नहीं
कुचलेगा,
टिमटिमाती बाती को नहीं
बुझाएगा।[8]
वह न्याय करने में विश्वासयोग्य
होगा।[9]
4 वह न बुझेगा, न कुचला जाएगा,
वह पृथ्वी पर न्याय कायम करेगा[10]
और सारे द्वीप उसके कानून* का
इंतज़ार करेंगे।
5 जिसने आकाश को बनाया और उसे
ताना है,[11]
पृथ्वी और उस पर की सारी चीज़ें
रची हैं,[12]
जिसने उस पर रहनेवाले इंसानों को
जीवन दिया है[13]

41:25 *या "मातहत अधिकारियों।"

41:29 *या "मानो वजूद में ही नहीं।"

42:4 *या "शिक्षा।"

अध्य. 41
1 यश 44:6, 7
2 यिर्म 10:5
3 यश 44:10; यिर्म 10:14, 15
4 व्य 7:26; व्य 27:15; भज 115:4, 8
5 यश 44:28; यश 45:1; यिर्म 51:28, 29
6 यश 46:11; प्रक 16:12
7 मी 7:10
8 यश 43:9; यश 44:7; यश 45:21
9 हब 2:18, 19
10 यश 43:10
11 एज 1:1, 2; यश 40:9

दूसरा कॉल.
1 भज 115:4-8; यश 44:9; 1कुर 8:4

अध्य. 42
2 यश 52:13
3 यश 49:7; लूक 9:35
4 मत 3:17; यूह 6:27; 2पत 1:17
5 यश 61:1; मत 3:16
6 मत 12:15-18
7 जक 9:9; मत 12:16, 19
8 मत 11:28, 29; इब्र 2:17
9 यश 11:3, 4; मत 12:20; यूह 5:30; प्रक 19:11
10 यश 9:7; यश 49:8
11 यश 40:22, 26
12 यिर्म 10:12
13 उत 2:7; प्रेष 17:24, 25

और जीवन कायम रखने के लिए
उन्हें साँसें दी हैं,[1]
वह महान और सच्चा परमेश्वर
यहोवा कहता है,
6 "मुझ यहोवा ने अपने नेक मकसद
के लिए तुझे बुलाया है,
मैंने तेरा हाथ थामा है, मैं तेरी
हिफाज़त करूँगा,
तू मेरे और लोगों के बीच करार
ठहरेगा[2]
और राष्ट्रों के लिए रौशनी बनेगा[3]
7 ताकि तू अंधों की आँखें खोले,[4]
काल-कोठरी से कैदियों को छुड़ाए
और कैदखाने के अँधेरे से लोगों को
निकाले।[5]
8 मैं यहोवा हूँ, यही मेरा नाम है।
मैं अपनी महिमा किसी और को न
दूँगा,*
न अपनी तारीफ खुदी हुई मूरतों को
दूँगा।[6]
9 देखो! पुरानी बातें खत्म हो चुकी हैं,
अब मैं नयी बातों का ऐलान कर
रहा हूँ,
उनके होने से पहले तुम्हें वे बातें
बता रहा हूँ।"[7]
10 हे समुंदर में उतरनेवालो, उसके
जीवों के पास जानेवालो,
हे द्वीपो और उसमें रहनेवालो,[8]
यहोवा के लिए एक नया गीत
गाओ,[9]
पृथ्वी के कोने-कोने में उसकी
तारीफ करो।[10]
11 वीराना और उसके शहर जयजय-
कार करें,[11]
केदार[12] की बस्तियाँ गुणगान करें,

42:8 *या "किसी और के साथ नहीं बाँटूँगा।"

अध्य. 42
1 अय 12:10
2 यश 49:8
3 यश 49:6
लूक 2:29-32
यूह 8:12
4 यश 35:5
5 यश 61:1
1पत 2:9
6 निर्ग 34:14
7 यश 41:23
यश 43:19
2पत 1:21
8 यश 51:5
9 भज 96:1
भज 98:1
प्रक 14:3
10 यश 44:23
11 यश 35:1
12 उत 25:13
यश 60:7

दूसरा कॉल.
1 भज 22:27
यश 24:15
यश 66:19
2 यश 59:17
3 निर्ग 15:3
4 1शम 2:10
5 भज 107:33
यश 44:27
यश 50:2
6 यश 29:18
यश 35:5
यिर्म 31:8
7 यश 30:21
8 यश 60:1, 20
9 यश 40:4

चट्टानों में रहनेवाले खुशी के मारे
चिल्लाएँ,
पहाड़ों की चोटी से ऊँची आवाज़ में
चिल्लाएँ।
12 वे यहोवा की महिमा करें
और द्वीपों में उसका गुणगान करें।[1]
13 यहोवा वीर योद्धा के समान निक-
लेगा,[2]
सूरमा की तरह पूरे जोश के साथ
आएगा,[3]
वह चिल्लाकर युद्ध की ललकार
लगाएगा
और अपने दुश्मनों से ज़्यादा
ताकतवर साबित होगा।[4]
14 "मैं काफी समय से चुप रहा,
खामोश रहकर खुद को रोकता
रहा।
पर अब मैं गर्भवती औरत के
समान कराहूँगा,
हाँफूँगा और ज़ोर-ज़ोर से साँस
भरूँगा।
15 मैं पहाड़ों और पहाड़ियों को उजाड़
दूँगा,
उनकी सारी हरियाली झुलसा दूँगा,
नदियों को सूखी ज़मीन* बना दूँगा,
नरकटोंवाले तालाबों को सुखा
दूँगा।[5]
16 मैं अंधों को ऐसी राह पर ले
जाऊँगा, जिन्हें वे नहीं जानते,[6]
उन रास्तों पर ले चलूँगा जिनसे वे
अनजान हैं।[7]
मैं उनके सामने अंधकार को उजाले
में बदल दूँगा,[8]
ऊबड़-खाबड़ रास्तों को समतल कर
दूँगा।[9]

42:15 *शा., "द्वीप।"

यह सब मैं उनके लिए करूँगा, मैं
उन्हें नहीं त्यागूँगा।"
17 जो तराशी हुई मूरतों पर भरोसा
रखते हैं,
जो ढली हुई मूरतों से कहते हैं,
"तुम हमारे ईश्वर हो,"
वे शर्मिंदा होंगे और पीठ दिखाकर
भागेंगे।[1]
18 हे बहरो, सुनो!
हे अंधो, आँखें खोलो और देखो![2]
19 मेरे सेवक को छोड़ और कौन
अंधा है?
मेरे भेजे हुए दूत के जैसा बहरा
कौन है?
जिसे मैंने इनाम दिया उसके जैसा
अंधा कौन है?
हाँ, यहोवा के सेवक जैसा अंधा
कौन है?[3]
20 तू बहुत-सी चीज़ें देखता है मगर
ध्यान नहीं देता,
तेरे कान खुले रहते हैं मगर तू कुछ
नहीं सुनता।[4]
21 यहोवा वही करता है जो सही है,
इसलिए उसने खुशी-खुशी दिखाया
कि उसके कानून* कितने शान-
दार और महान हैं।
22 मगर ये तो लुटे-पिटे लोग हैं,[5]
सब गड्ढे में फँसे हुए हैं और जेलों
में बंद हैं।[6]
उन्हें लूट लिया गया, उन्हें बचाने-
वाला कोई नहीं,[7]
उनकी तरफ से कोई यह कहनेवाला
नहीं, "उन्हें वापस ले आओ।"
23 तुममें से कौन इस पर कान
लगाएगा?
कौन आनेवाले कल को ध्यान में
रखकर इसे सुनेगा?
24 किसने याकूब को लुटने दिया
और इसराएल को लुटेरों के हाथ
कर दिया?
क्या यहोवा ने नहीं, जिसके खिलाफ
उन्होंने पाप किया,
जिसकी राहों पर चलने से उन्होंने
इनकार किया
और जिसके कानून* को उन्होंने
नहीं माना?[1]
25 इसलिए उसने अपनी जलजलाहट
और अपना क्रोध उन पर उँडेला,
युद्ध का कहर उन पर बरसाया।[2]
उनके आस-पास जो कुछ था सब
भस्म हो गया, फिर भी उन्होंने
ध्यान नहीं दिया।[3]
वे खुद भी झुलस गए, फिर भी उन्हें
समझ नहीं आ रहा।[4]

43 हे याकूब, जिसने तेरी
सृष्टि की,
हे इसराएल, जिसने तुझे रचा है,[5]
वही यहोवा अब कहता है,
"डर मत, मैंने तुझे छुड़ा लिया है।[6]
मैंने तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया है,
तू मेरा है।
2 जब तू पानी में से होकर जाएगा,
तो मैं तेरे साथ रहूँगा,[7]
जब तू नदियों में से होकर जाएगा,
तो वे तुझे डुबा न सकेंगी,[8]
जब तू आग में से होकर जाएगा,
तो तू नहीं जलेगा,
उसकी आँच भी तुझे नहीं लगेगी,
3 क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ,
मैं इसराएल का पवित्र परमेश्वर
और तेरा उद्धारकर्ता हूँ।
मैंने तेरी फिरौती के लिए मिस्र,
इथियोपिया और सबा दिया है।

अध्य. 42
1 यश 44:10, 11 यश 45:16
2 यश 6:9, 10 यश 43:8
3 यश 56:10 यिर्म 4:22 यहे 12:2
4 यहे 33:31
5 व्य 28:15, 33 यिर्म 50:17
6 भज 102:19, 20
7 व्य 28:29, 52

दूसरा कॉल.
1 न्या 2:12, 14 2इत 15:3, 6 भज 106:41
2 व्य 32:22 नहू 1:6
3 यश 9:13 यिर्म 5:3 हो 7:9
4 यश 57:11

अध्य. 43
5 भज 100:3 यश 43:15 यश 44:2, 21
6 यश 44:23 यिर्म 50:34
7 निर्ग 14:29
8 यह 3:15, 16 2रा 2:8

42:21, 24 *या "शिक्षा।"

4 तू मेरी नज़रों में अनमोल है,[1]
तू आदर के लायक ठहरा है और मैं
तुझसे प्यार करता हूँ।[2]
इसलिए मैं तेरे बदले लोगों को दे
दूँगा,
तेरी जान के बदले राष्ट्रों को दे
दूँगा।
5 डर मत क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ![3]
मैं तेरे वंश को पूरब से ले आऊँगा
और पश्चिम से तुझे इकट्ठा
करूँगा।[4]
6 मैं उत्तर से कहूँगा, 'उन्हें छोड़ दे!'[5]
दक्षिण से कहूँगा, 'उन्हें मत रोक।
मेरे बेटों को दूर से और मेरी
बेटियों को धरती के कोने-कोने से
ले आ।[6]
7 हर कोई जो मेरे नाम से जाना
जाता है,[7]
जिसे मैंने अपनी महिमा के लिए
सिरजा है,
जिसे मैंने रचा और बनाया है,[8] उसे
ले आ।'
8 उन लोगों को ले आ जिनकी आँखें
तो हैं, मगर वे अंधे हैं,
जिनके कान तो हैं, मगर वे
बहरे हैं।[9]
9 सब राष्ट्र एक जगह इकट्ठा हों
और देश-देश के लोग जमा हों।[10]
उनमें* ऐसा कौन है जो ये बातें
बता सकता है?
या यह सुना सकता है कि पहली
बातें# क्या हैं?[11]
वह खुद को सही साबित करने के
लिए साक्षियों को लाए
कि दूसरे सुनकर कहें, 'यह
सच है।'"[1]
10 यहोवा ऐलान करता है, "तुम मेरे
साक्षी हो,[2]
हाँ, मेरा वह सेवक, जिसे मैंने
चुना है[3]
कि तुम मुझे जानो और मुझ पर
विश्वास* करो
और यह जान लो कि मैं वही हूँ।[4]
मुझसे पहले न कोई ईश्वर हुआ
और न मेरे बाद कोई होगा।[5]
11 मैं ही यहोवा हूँ,[6] मेरे अलावा कोई
उद्धारकर्ता नहीं।"[7]
12 यहोवा कहता है,
"जब तुम्हारे बीच कोई पराया
देवता नहीं था,[8]
तब मैंने ही तुमसे बात की, तुम्हें
बचाया और तुम्हें समझ दी।
इसलिए तुम मेरे साक्षी हो और मैं
परमेश्वर हूँ।[9]
13 मैं हमेशा से वैसा ही हूँ।[10]
ऐसा कोई नहीं जो मेरे हाथ से कुछ
छीनकर ले जा सके।[11]
जब मैं कुछ करता हूँ तो उसे कौन
रोक सकता है?"[12]
14 तुम्हारा छुड़ानेवाला और इसराएल
का पवित्र परमेश्वर यहोवा
कहता है,[13]
"तुम्हारी खातिर मैं उन्हें बैबिलोन
भेजूँगा और सारे फाटकों को
गिरा दूँगा[14]
और कसदी अपने जहाज़ों में दुख
के मारे रोएँगे।[15]
15 मैं यहोवा हूँ, तुम्हारा पवित्र
परमेश्वर,[16] इसराएल का सृष्टि-
कर्ता[17] और तुम्हारा राजा।"[18]

43:9 *ज़ाहिर है कि यहाँ झूठे देवताओं की बात की गयी है। #शायद यह भविष्य में होनेवाली सबसे पहली बातों का ज़िक्र हो।

43:10 *या "भरोसा।"

अध्य. 43
1 निर्ग 19:5, 6
2 व्य 7:8; यिर्म 31:3
3 यश 41:10; यश 44:2; यिर्म 30:10
4 व्य 30:1-3; भज 106:47; यश 66:20; यहे 36:24; मी 2:12; जक 8:7
5 यिर्म 3:18
6 यिर्म 31:8
7 यिर्म 33:16
8 भज 100:3; यश 29:23
9 यश 6:9, 10; यश 42:18, 19
10 यश 41:1
11 यश 41:21, 22; यश 44:7

दूसरा कॉल.
1 1रा 18:24, 25
2 प्रेष 1:8; प्रक 1:5
3 व्य 4:37
4 यश 41:4
5 यश 44:8
6 व्य 6:4
7 यश 12:2; हो 13:4; 1ती 2:3; यहू 25
8 व्य 32:12
9 यश 46:9, 10
10 यश 41:4; प्रक 1:8
11 व्य 32:39
12 यश 14:27; दान 4:35
13 यश 44:6; यश 54:5; यश 63:16
14 यश 45:1, 2
15 यिर्म 50:10
16 भज 89:18
17 यश 43:1
18 व्य 33:5; भज 74:12; यश 33:22; प्रक 11:17

16 यहोवा जो समुंदर के बीच से रास्ता
बनाता है,
उफनती लहरों में से भी राह
निकालता है,[1]
17 जो अपने साथ युद्ध-रथों और घोड़ों
को ले चलता है,[2]
वीर योद्धाओं के साथ पूरी सेना
लेकर आता है, वह कहता है,
"वे ऐसे गिरेंगे कि फिर न उठ
सकेंगे,[3]
उन्हें बुझा दिया जाएगा जैसे जलती
बाती बुझा दी जाती है।"
18 "गुज़री बातों को याद मत करो,
बीती बातों के बारे में मत सोचते
रहो।
19 देखो! मैं कुछ नया कर रहा हूँ,[4]
उसकी शुरूआत हो चुकी है।
क्या तुम उसे देख सकते हो?
मैं वीराने से एक रास्ता बनाऊँगा[5]
और रेगिस्तान से नदियाँ
बहाऊँगा।[6]
20 गीदड़ और शुतुरमुर्ग,
मैदान के ये जंगली जानवर मेरा
आदर करेंगे,
क्योंकि मैं अपनी प्रजा, अपने चुने
हुओं के लिए[7]
वीराने में पानी का इंतज़ाम करूँगा,
रेगिस्तान में नदियाँ बहाऊँगा,[8]
21 हाँ, अपनी प्रजा के लिए ऐसा
करूँगा,
जिसे मैंने अपने लिए रचा है कि वह
मेरा गुणगान करे।[9]
22 मगर हे याकूब, तूने मुझे नहीं
पुकारा,[10]
क्योंकि हे इसराएल, तू मुझसे ऊब
गया है।[11]

अध्य. 43
1 निर्ग 14:16
यह 3:13
2 निर्ग 15:4
3 यिर्म 51:39
4 यश 42:9
5 यश 11:16
यश 40:3
6 यश 41:18
7 भज 33:12
यश 41:8
1पत 2:9
8 यश 41:17
यिर्म 31:9
9 यश 60:21
10 यश 64:7
11 यिर्म 2:5
हो 7:10
मी 6:3

दूसरा कॉल.
1 यश 66:3
2 लैव 3:14-16
3 यश 1:14, 15
4 भज 25:7
भज 79:8, 9
यश 1:18
यिर्म 50:20
यहे 20:9
5 यिर्म 31:34
6 यश 28:7
यिर्म 5:31
7 भज 79:4
भज 137:3

23 तू होम-बलि चढ़ाने के लिए भेड़ें
नहीं लाया,
अपने बलिदानों से तूने मेरी महिमा
नहीं की,
मैंने ये तोहफे लाने के लिए तुझे
मजबूर नहीं किया,
न लोबान माँग-माँगकर तुझे थका
दिया।[1]
24 तूने अपने पैसों से मेरे लिए खुशबू-
दार वच* नहीं खरीदा,
न बलिदान में चरबी चढ़ाकर मुझे
खुश किया।[2]
उलटा, तूने अपने पापों का बोझ
मुझ पर लाद दिया,
बुरे-बुरे काम करके मुझे थका
दिया।[3]
25 मैं वही हूँ जो अपने नाम की खातिर
तेरे अपराध* मिटाता हूँ[4]
और तेरे पाप याद नहीं रखूँगा।[5]
26 अगर मैं तेरा कोई अच्छा काम भूल
गया हूँ, तो मुझे याद दिला,
हम एक-दूसरे से मुकदमा लड़ेंगे,
तू अपनी सफाई में जो कहना
चाहता है, कहना।
27 तेरे पहले पुरखे ने तो पाप
किया था,
तेरी तरफ से बोलनेवालों* ने भी
मेरे खिलाफ बगावत की।[6]
28 इसलिए मैं पवित्र-स्थान के हाकिमों
को अशुद्ध ठहराऊँगा,
याकूब को नाश होने के लिए दे
दूँगा
और इसराएल को निंदा की बातें
सुनने के लिए सौंप दूँगा।[7]

43:24 *एक खुशबूदार नरकट। **43:25** *या "बगावत।" **43:27** *शायद यहाँ कानून सिखानेवालों की बात की गयी है।

44 हे याकूब, मेरे सेवक,
हे इसराएल, मेरे चुने हुए,[1]
सुन!
2 यहोवा जो तेरा बनानेवाला है,
जिसने तुझे रचा है,[2]
जो जन्म* से तेरी मदद करता
आया है, वह कहता है,
'हे मेरे सेवक याकूब,
हे यशूरून#[3] मेरे चुने हुए,
मत डर,[4]
3 क्योंकि मैं प्यासी धरती* पर पानी
बरसाऊँगा[5]
और सूखी ज़मीन पर नदियाँ
बहाऊँगा।
मैं तेरे वंश पर अपनी पवित्र शक्ति
उँडेलूँगा[6]
और तेरे वंशजों पर आशीषों की
बौछार करूँगा।
4 वे हरी घास की तरह खूब बढ़ेंगे,[7]
बहती धाराओं के किनारे लगे
पेड़ों* की तरह बढ़ेंगे।
5 कोई कहेगा, "मैं यहोवा का हूँ।"[8]
कोई अपना नाम याकूब रखेगा,
कोई अपने हाथ पर लिखेगा, "मैं
यहोवा का हूँ।"
तो कोई इसराएल का नाम अप-
नाएगा।'
6 यहोवा जो इसराएल का राजा[9]
और उसका छुड़ानेवाला है,[10]
यहोवा जो सेनाओं का परमेश्वर है,
वह कहता है,
'मैं ही पहला और मैं ही
आखिरी हूँ।[11]
मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं।[1]
7 मेरे जैसा कौन है?[2]
अगर कोई है तो बताए, आकर मेरे
सामने इसके सबूत पेश करे,[3]
वह करके दिखाए जो मैं अपने
लोगों को अस्तित्व में लाने के
समय से कर रहा हूँ।
क्या वह ऐसी बातें बता सकेगा जो
बस होनेवाली हैं और जो आगे
चलकर होंगी?
8 खौफ मत खाओ,
डर के मारे तुम्हारे हाथ-पैर ढीले
न पड़ें।[4]
क्या मैंने पहले से नहीं बताया था,
तुममें से हरेक को नहीं कहा था?
तुम मेरे साक्षी हो।[5]
क्या मेरे सिवा कोई परमेश्वर है?
नहीं! मुझे छोड़ दूसरी कोई चट्टान
नहीं,[6] मैं तो किसी को नहीं
जानता।'"
9 मूरतों को तराशनेवाले सब-के-सब
बेकार हैं
और जो मूरतें उन्हें प्यारी हैं वे
उनके किसी काम की नहीं।[7]
उनके साक्षी बनकर वे* न तो कुछ
देख सकते हैं न समझ सकते हैं,[8]
इसलिए इन मूरतों को बनानेवाले
शर्मिंदा होंगे।[9]
10 ऐसा कौन है जिसे हाथ के बनाए
देवता,
या ढली हुई मूरत से कोई फायदा
हुआ हो?[10]
11 देखो, उसके सभी साथी शर्मिंदा
किए जाएँगे।[11]
मूरत बनानेवाले कारीगर तो
इंसान हैं।

अध्य. 44
1 उत 17:1, 7; उत 35:10, 11; यश 41:8
2 यश 43:1; यश 44:21
3 व्य 32:15; व्य 33:5, 26
4 यश 41:10; यिर्म 30:10
5 यश 41:17
6 यश 32:14, 15
7 यश 61:11
8 जक 13:9
9 व्य 33:5; यश 33:22
10 निर्ग 6:6; यिर्म 50:34
11 यश 41:4; यश 48:12; प्रक 22:13

दूसरा कॉल.
1 व्य 4:35, 39; यश 43:10
2 यश 46:9
3 यश 43:9; यश 45:21
4 यश 41:10
5 यश 43:10
6 व्य 32:4; 2शम 22:32
7 न्या 10:14; 1रा 18:26; 1कुर 8:4
8 भज 115:4, 5
9 यिर्म 51:17
10 यिर्म 10:5; प्रेष 19:26
11 1शम 5:3, 7

44:2 *शा., "गर्भ।" #मतलब "सीधा-सच्चा जन," इसराएल को दी गयी सम्मान की उपाधि। 44:3 *शा., "प्यासे।" 44:4 *शा., "पहाड़ी पीपल।"

44:9 *यानी मूरतें।

वे सब इकट्ठा हों और सामने आएँ,
वे सब खौफ खाएँगे और शर्मिंदा
किए जाएँगे।
12 लोहार अपने औज़ार से लोहे को
पकड़कर अंगारों पर रखता है,
अपने मज़बूत हाथों से
हथौड़ा चलाता है और उसे
आकार देता है।[1]
काम करते-करते उसे भूख लगती है
और उसमें ताकत नहीं रहती,
वह पानी नहीं पीता और थककर
चूर हो जाता है।
13 बढ़ई नापने की डोरी से लकड़ी
नापता है,
लाल खड़िया से निशान लगाता है,
फिर छेनी से उसे तराशता है और
परकार से उसे नापता रहता है,
उसे इंसान का आकार देता है,[2]
इंसान की तरह उसे सुंदर बनाता
है कि वह मंदिर* में रखी
जा सके।[3]
14 देवदार के पेड़ काटनेवाला,
एक खास किस्म का पेड़ चुनता है,
बाँज का पेड़
और जंगल में उसे बाकी पेड़ों के
बीच बढ़ने देता है।[4]
वह एक और पेड़* लगाता है,
जो बारिश के पानी में बढ़ता
रहता है।
15 फिर उसकी लकड़ी ईंधन के काम
आती है।
वह उसे जलाकर आग तापता है,
उस पर रोटी पकाता है,
फिर उसी लकड़ी से देवता बनाकर
उसे पूजता है,
एक मूरत तराशकर उसके आगे
दंडवत करता है।[1]
16 लकड़ी के आधे हिस्से से वह आग
जलाता है,
फिर उसी पर गोश्त भूनता है,
जी-भरकर खाता है
और आग सेंककर कहता है,
"वाह! इसकी गरमी अच्छी लग
रही है।"
17 बची हुई लकड़ी से वह देवता की
एक मूरत बनाता है,
उसके आगे झुककर उसकी पूजा
करता है
और उससे प्रार्थना करता है,
"मुझे बचा ले क्योंकि तू ही मेरा
ईश्वर है।"[2]
18 ऐसे लोग कुछ नहीं जानते, कुछ
नहीं समझते,[3]
क्योंकि उनकी आँखें बंद हैं, वे कुछ
नहीं देख सकते
और उनका मन अंदरूनी समझ से
खाली है।
19 कोई अपने मन में नहीं सोचता,
न किसी में इतना ज्ञान और समझ
है कि वह कहे,
"लकड़ी का आधा हिस्सा तो मैंने
जला दिया,
उसके अंगारों पर रोटी पकायी और
गोश्त भूनकर खाया।
अब क्या बाकी हिस्से से मैं घिनौनी
चीज़ बनाऊँ?[4]
पेड़ के इस लट्ठे* को पूजूँ?"
20 वह मानो राख से अपना पेट भर
रहा है,

अध्य. 44
1 यश 40:19; यश 41:7; यश 46:6
2 निर्ग 20:4; व्य 4:15, 16; प्रेष 17:29
3 व्य 27:15
4 यश 40:20; यिर्म 10:3

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:4, 5; लैव 26:1; हब 2:18, 19
2 यश 37:37, 38; यश 45:20; यश 46:7
3 यिर्म 10:8, 14; रोम 1:21-23
4 व्य 27:15

44:13 *शा., "घर।" **44:14** *यानी *हब्-एल-घर*/ एक सदाबहार पेड़ जो तेजपात की जाति का है।

44:19 *या "सूखी लकड़ी।"

उसका मन बहक गया है और उसे
गुमराह कर रहा है।
वह खुद को नहीं बचा सकता, न
वह यह कबूल करता है
कि “मेरे दाएँ हाथ में यह चीज़
एकदम बेकार है।”
21 “हे याकूब, हे इसराएल, मेरी इन
बातों को याद रखना,
क्योंकि तू मेरा सेवक है।
तुझे मैंने रचा है और तू मेरा
सेवक है।[1]
हे इसराएल, मैं तुझे नहीं भूलूँगा।[2]
22 मैं तेरे अपराधों और पापों को मिटा
दूँगा,
उन्हें बादलों से, हाँ, घने बादलों से
ढक दूँगा।[3]
मेरे पास लौट आ कि मैं तुझे
छुड़ा लूँ।[4]
23 हे आकाश, खुशी से चिल्ला!
क्योंकि यहोवा ने यह काम
किया है।
हे धरती की गहराइयो, जयजयकार
करो!
हे पहाड़ो, खुशियाँ मनाओ![5]
हे जंगल और उसके सब पेड़ो,
खुशी से झूमो!
क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा
लिया है,
वह इसराएल में अपनी महिमा
दिखाता है।”[6]
24 यहोवा जो तेरा छुड़ानेवाला है,[7]
जिसने तुझे कोख में रचा था, वह
कहता है,
“मैं यहोवा हूँ, मैंने सबकुछ
बनाया है।
मैंने आकाश को ताना है[8] और
धरती को फैलाया है।[9]
उस वक्त मेरे साथ कौन था?

अध्य. 44
1 यश 43:1
यश 44:1
2 यश 49:15
3 भज 51:1
भज 103:12
यश 1:18
यश 43:25
यिर्म 33:8
प्रेष 3:19
4 यश 1:27
यश 48:20
यश 59:20
5 यश 49:13
यश 55:12
6 यश 60:21
7 यश 44:6
8 अय 26:7
यश 40:22
9 यश 42:5
यश 48:13

दूसरा कॉल.
1 हो 9:7
2 2शम 15:31
यश 29:14
3 यह 23:14
यश 55:10, 11
जक 1:6
4 भज 147:2
5 यश 60:10
6 यश 61:4
7 यश 42:15
यिर्म 50:38
प्रक 16:12
8 एज 1:1, 2
यश 41:25
यश 45:1
यश 46:11
दान 10:1
9 यश 48:14
10 2इत 36:22, 23
एज 6:3
यश 45:13

अध्य. 45
11 एज 1:1, 2
यश 44:28
12 यश 45:4
13 यश 13:17
यश 41:25

25 मैं झूठे भविष्यवक्ताओं* की निशा-
नियों को झूठा साबित करूँगा,
ज्योतिषियों का मज़ाक बना दूँगा।[1]
मैं बुद्धिमानों को उलझन में डाल
दूँगा,
उनके ज्ञान को मूर्खता में बदल
दूँगा।[2]
26 मैं अपने सेवक की बातों को सच
साबित करूँगा,
अपने दूतों की भविष्यवाणियों को
पूरा करूँगा।[3]
मैं यरूशलेम नगरी के बारे में कहता
हूँ, ‘वह बसायी जाएगी।’[4]
यहूदा के शहरों के बारे में कहता
हूँ, ‘उन्हें दोबारा खड़ा किया
जाएगा।[5]
मैं उनके खंडहरों को फिर से
बनाऊँगा।’[6]
27 मैं गहरे पानी से कहता हूँ, ‘भाप
बनकर उड़ जा,
मैं तेरी सारी नदियों को सुखा
दूँगा।’[7]
28 मैं कुसरू के बारे में कहता हूँ,[8] ‘वह
मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है,
वह मेरी एक-एक मरज़ी पूरी
करेगा।’[9]
यरूशलेम नगरी के बारे में कहता
हूँ, ‘वह दोबारा बनायी जाएगी।’
और मंदिर के बारे में कहता हूँ
‘तेरी नींव डाली जाएगी।’”[10]

45 यहोवा ने अपने अभिषिक्त
जन कुसरू[11] का दायाँ हाथ
थामा है[12]
कि राष्ट्रों को उसके अधीन करे,[13]
राजाओं की ताकत तोड़ दे।*

44:25 *शा., “खोखली बातें करनेवालों।”
45:1 *शा., “कमर ढीली करे।”

उसके आगे दरवाज़े के दोनों पल्ले
खोल दे
कि फाटक बंद न किए जाएँ।
वही परमेश्वर उससे कहता है,
2 "मैं तेरे आगे-आगे जाऊँगा[1]
और पहाड़ियों को समतल करूँगा।
ताँबे के फाटकों के टुकड़े-टुकड़े कर
दूँगा
और उनके लोहे के बेड़ों को काट
दूँगा।[2]
3 मैं तुझे अँधेरे में रखा खज़ाना दूँगा,
गुप्त जगहों में छिपा खज़ाना दूँगा[3]
ताकि तू जान ले कि मैं यहोवा हूँ,
मैं इसराएल का परमेश्वर हूँ जो
तुझे तेरे नाम से बुलाता हूँ।[4]
4 मेरे सेवक याकूब और मेरे चुने हुए
इसराएल की खातिर,
मैंने तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया है।
तू मुझे नहीं जानता, फिर भी मैं तेरा
नाम महान करूँगा।
5 मैं यहोवा हूँ, मेरे सिवा और कोई
नहीं,
मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं।[5]
तू मुझे नहीं जानता, फिर भी मैं तुझे
शक्तिशाली बनाऊँगा*
6 ताकि पूरब से लेकर पश्चिम तक
सब जान लें
कि मेरे अलावा कोई परमेश्वर
नहीं।[6]
मैं यहोवा हूँ, मेरे सिवा और कोई
नहीं।[7]
7 मैं ही रौशनी और अंधकार का
रचनेवाला हूँ,[8]
मैं ही शांति देनेवाला[9] और विपत्ति
का लानेवाला हूँ,[10]
मैं यहोवा ही यह सब करता हूँ।

45:5 *शा., "तेरी कमर कसूँगा।"

अध्य. 45

1 यश 13:4
2 भज 107:16
3 यिर्म 50:35, 37
4 एज 1:1, 2; यश 44:28
5 व्य 4:35, 39; व्य 32:39
6 1शम 17:46; भज 102:15, 16; यश 37:20
7 भज 83:18
8 उत 1:3; निर्ग 10:21; भज 104:20; यिर्म 31:35
9 यश 26:12
10 सभ 7:14; आम 3:6

दूसरा कॉल.

1 यहे 34:26
2 यश 61:11
3 यश 29:16; यिर्म 18:6; रोम 9:20
4 यश 43:3
5 हो 1:10

8 हे आकाश, ऊपर से रिमझिम
बरस,[1]
बादलों से कह, वे नेकी की बूँदें
बरसाएँ कि धरती जाग जाए,
उसमें उद्धार और नेकी के बीज
फूट पड़ें[2]
और पूरी धरती पर फैल जाएँ।
मैं यहोवा ही यह सब करता हूँ।"
9 धिक्कार है उस पर, जो अपने
बनानेवाले से बहस करता है।
वह है ही क्या? मिट्टी के बरतन का
बस एक टुकड़ा,
जो बाकी टुकड़ों के साथ फेंक दिया
गया है।
क्या मिट्टी का लोंदा कुम्हार* से
कह सकता है, "यह क्या बना
दिया तूने?"[3]
या क्या तेरे हाथ की बनायी चीज़
तुझसे कह सकती है, "तेरे तो
हाथ ही नहीं"?#
10 धिक्कार है उस पर, जो एक पिता
से कहता है, "तूने किसे पैदा कर
दिया?"
जो एक माँ से कहता है, "तूने किसे
जन्म दिया है?"*
11 यहोवा जो इसराएल का पवित्र पर-
मेश्वर[4] और उसका रचनेवाला
है, कहता है,
"क्या तू मुझसे आनेवाली चीज़ों के
बारे में सवाल करेगा?
अपने बेटों[5] और अपनी कारीगरी
के साथ क्या करना है, यह तू
मुझे बताएगा?

45:9 *या "अपने बनानेवाले।" #या शायद, "या क्या मिट्टी कह सकती है, 'तेरी बनायी इस चीज़ में तो हत्था ही नहीं'?"
45:10 *या "तूने किस लिए प्रसव-पीड़ा सही?"

12 मैंने पृथ्वी बनायी[1] और उस पर
इंसान को रचा,[2]
अपने हाथों से आकाश को ताना,[3]
आकाश के सारे तारे* मेरा हुक्म
मानते हैं।”[4]
13 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है,
“अपने नेक मकसद को पूरा करने
के लिए मैंने एक आदमी को
उभारा है,[5]
मैं उसकी हर राह को सीधा
करूँगा।
वही मेरे शहर को बनाएगा[6] और
बँधुआई में पड़े मेरे लोगों को
आज़ाद करेगा,[7]
वह न तो रिश्वत लेगा न कोई
कीमत माँगेगा।”[8]
14 यहोवा कहता है,
“मिस्र का मुनाफा,* इथियोपिया
का माल# और सबाई के लंबे-
चौड़े लोग,
तेरे पास आएँगे और तेरे हो
जाएँगे।
वे बेड़ियाँ पहने तेरे पीछे-पीछे
चलेंगे,
वे आकर तेरे आगे झुकेंगे,[9]
पूरी श्रद्धा से कहेंगे, ‘सचमुच,
परमेश्वर तेरे साथ है।[10]
उसके सिवा कोई परमेश्वर नहीं,
कोई भी नहीं।’”
15 हे इसराएल के परमेश्वर, हे उसके
बचानेवाले,[11]
वाकई, तू ऐसा परमेश्वर है जो खुद
को छिपाए रखता है।
16 मूरत बनानेवालों को शर्मिंदा होना
पड़ेगा, उन्हें नीचा दिखाया
जाएगा,
वे सभी बेइज़्ज़त होकर चले
जाएँगे।[1]
17 पर हे इसराएल, यहोवा तुझे बचाए-
गा और हमेशा के लिए तेरा
उद्धार करेगा,[2]
तुझे फिर कभी शर्मिंदा और
बेइज़्ज़त नहीं होना पड़ेगा।[3]
18 सच्चा परमेश्वर यहोवा जिसने
आकाश की सृष्टि की,[4]
पृथ्वी को रचा, उसे बनाया और
मज़बूती से कायम किया,[5]
जिसने पृथ्वी को यूँ ही*
नहीं बनाया, बल्कि बसने के लिए
रचा है,[6]
वही परमेश्वर कहता है, “मैं यहोवा
हूँ, मेरे सिवा और कोई नहीं।
19 मैंने न तो अंधकार के देश में से
न ही छिपी हुई जगह में से
बात की।[7]
मैंने याकूब के वंश से यह नहीं
कहा,
‘मुझे ढूँढ़ो पर तुम्हारी मेहनत बेकार
जाएगी।’
मैं यहोवा हूँ। मैं नेकी की बातें
कहता हूँ और सीधी-सच्ची बातों
का ऐलान करता हूँ।[8]
20 हे राष्ट्रों से आज़ाद हुए लोगो,
आओ।
इकट्ठे होकर आओ।[9]
जो तराशी हुई मूरत लिए फिरते हैं,
वे कुछ नहीं जानते,
वे ऐसे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं जो
उन्हें नहीं बचा सकता।[10]

45:12 *शा., “की सारी सेना।” **45:14** *या शायद, “के मज़दूर।” #या शायद, “के व्यापारी।”

45:18 *या शायद, “सुनसान रहने के लिए।”

अध्य. 45
1 उत 1:1; यश 40:28
2 उत 1:27
3 यश 44:24; यिर्म 32:17; जक 12:1
4 नहे 9:6
5 यश 42:6
6 2इत 36:23; एज 1:2, 3; यश 44:28
7 यश 14:16, 17; यश 43:14; यश 49:25
8 यश 13:17
9 एस 8:17; यश 14:1, 2; यश 49:23; यश 60:14; यश 61:5
10 जक 8:23
11 यश 43:11; यश 60:16; तीत 1:3

दूसरा कॉल.
1 भज 97:7; यश 44:9
2 यश 26:4; यश 51:6
3 यश 29:22; यश 54:4; योए 2:26; सप 3:11
4 यश 42:5; यिर्म 10:12
5 भज 78:69; भज 104:5; भज 119:90; नीत 3:19
6 उत 1:28; उत 9:1; भज 37:29; भज 115:16
7 यश 48:16
8 भज 111:7, 8; भज 119:137
9 यश 66:20; यिर्म 50:28
10 यश 42:17; यिर्म 50:2

21 अपना मुकदमा पेश करो, अपनी सफाई दो,
आपस में सलाह करो।
किसने बहुत पहले ही बता दिया था,
गुज़रे ज़माने में ही ऐलान कर दिया था?
क्या मुझ यहोवा ने नहीं?
मेरे सिवा और कोई परमेश्वर नहीं,
मुझ जैसा नेक परमेश्वर और उद्धारकर्ता कोई नहीं।[1]
22 हे पृथ्वी के कोने-कोने में रहनेवालो,
मेरे पास लौट आओ, तब तुम उद्धार पाओगे,[2]
क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूँ, मेरे सिवा और कोई नहीं।[3]
23 मैं खुद अपनी शपथ खाकर कहता हूँ,
मेरे मुँह से निकला वचन सच्चा है
और वह हर हाल में पूरा होगा।[4]
हर कोई मेरे सामने घुटने टेकेगा,
अपनी ज़बान से वफा निभाने की कसम खाएगा[5]
24 और कहेगा, 'वाकई, यहोवा नेकी का परमेश्वर है, वह शक्ति-शाली है,
जो उस पर भड़क उठता है, उसे शर्मिंदा होना पड़ेगा।
25 इसराएल का पूरा वंश समझ जाएगा कि यहोवा की सेवा करके उन्होंने बिलकुल सही किया[6]
और वे उसके बारे में गर्व से बात करेंगे।'"

46 बेल देवता झुक गया,[7] नबो नीचा किया गया,
उनकी मूरतें जानवरों पर,
बोझ ढोनेवाले जानवरों पर ऐसी लदी हैं,[8]
जैसे थके हुए जानवरों पर ढेर सारा सामान लदा हो।
2 बेल और नबो झुक गए हैं, उन्हें नीचा किया गया है,
उनका सामान* जा रहा है, पर वे उसे नहीं बचा सकते,
न ही खुद को बँधुआई में जाने से रोक सकते हैं।
3 "हे याकूब के घराने, हे इसराएल के घराने के बचे हुओ,[1] मेरी सुनो!
मैं तुम्हें गर्भ से सँभाले हुए हूँ, तुम्हारे जन्म से तुम्हें उठाए हुए हूँ।[2]
4 तुम्हारे बुढ़ापे में भी मैं नहीं बदलूँगा,[3]
चाहे तुम्हारे बाल पक जाएँ मैं तुम्हें उठाए रहूँगा,
तुम्हें लिए फिरूँगा, तुम्हें सँभालूँगा और बचाऊँगा,
जैसा मैंने अब तक किया है।[4]
5 तुम किससे मेरी तुलना करोगे या किसे मेरे बराबर ठहराओगे?[5]
किसके बारे में कहोगे कि वह मेरे जैसा है?[6]
6 ऐसे लोग हैं जो थैली से सोना निकाल-निकालकर देते हैं
और तराज़ू पर चाँदी तौलते हैं।
वे सुनार को काम पर लगाते हैं
और सुनार उससे देवता की एक मूरत बनाता है,[7]
फिर वे उस मूरत के आगे दंडवत करते हैं, उसकी पूजा करते हैं।[8]
7 उसे कंधों पर उठाते हैं[9]
और ले जाकर उसकी जगह पर उसे खड़ा कर देते हैं।
वह वहीं खड़ी रहती है, अपनी जगह से हिलती तक नहीं।[10]

46:2 *यानी जानवरों पर लदी मूरतें।

अध्य. 45
1 व्य 4:39; यश 43:3; यश 44:8; मर 12:32
2 मी 7:7
3 व्य 4:35
4 यश 55:10, 11
5 व्य 6:13; रोम 14:11
6 यश 61:9

अध्य. 46
7 यिर्म 50:2; यिर्म 51:44
8 यश 45:20

दूसरा कॉल.
1 यश 1:9
2 निर्ग 19:4; व्य 1:31; यश 44:2
3 यश 41:4
4 यश 43:13
5 निर्ग 15:11
6 प्रेष 17:29
7 यश 40:19; यिर्म 10:8, 9
8 यश 44:16, 17; दान 3:1, 5
9 यिर्म 10:5
10 1शम 5:3

वे उसके आगे गिड़गिड़ाते हैं पर वह कोई जवाब नहीं देती,
वह किसी को उसके दुखों से नहीं छुड़ा सकती।[1]
8 हे अपराधियो, उन बातों को याद करो,
उन्हें अपने मन में बिठा लो कि तुम हिम्मत से काम ले सको,
9 बीती बातें याद करो,
जान लो कि मैं परमेश्वर हूँ, मेरे सिवा और कोई नहीं।
मैं ही परमेश्वर हूँ, मेरे जैसा और कोई नहीं।[2]
10 अंत में क्या होगा यह मैं शुरू में ही बता देता हूँ
और जो बातें अब तक नहीं हुईं, उन्हें बहुत पहले से बता देता हूँ।[3]
मैं कहता हूँ, 'मैंने जो तय* किया है वह होकर ही रहेगा[4]
और मैं अपनी मरज़ी ज़रूर पूरी करूँगा।'[5]
11 मैं पूरब से एक शिकारी पक्षी को बुला रहा हूँ,[6]
दूर देश से एक आदमी को बुला रहा हूँ, जो मेरे मकसद* को अंजाम देगा।[7]
मैंने ही यह कहा है और उसे पूरा भी करूँगा,
मैंने ही यह ठाना है और उसे करके रहूँगा।[8]
12 हे मन के ढीठ लोगो, मेरी सुनो!
तुम जो नेकी की राह से कोसों दूर हो, सुनो!
13 बहुत जल्द मैं अपनी नेकी दिखाऊँगा,
वह दिन दूर नहीं।
मैं उद्धार करने में देर न करूँगा,[1]
मैं सिय्योन को उद्धार दिलाऊँगा,
इसराएल को अपने वैभव से भर दूँगा।"[2]

47 हे बैबिलोन की कुँवारी बेटी,[3]
नीचे उतर और आकर धूल में बैठ।
हे कसदियों की बेटी,
ज़मीन पर बैठ, यहाँ तेरे लिए कोई राजगद्दी नहीं,[4]
क्योंकि लोग फिर कभी नहीं कहेंगे कि तू बड़ी नाज़ुक है और तुझे बहुत लाड़-प्यार मिला है।
2 हाथ की चक्की ले और आटा पीस।
अपनी ओढ़नी हटा दे,
अपना घाघरा उतार दे
और अपनी नंगी टाँगों से नदियों को पार कर।
3 सब तेरा नंगापन देखेंगे,
तू सरेआम शर्मिंदा होगी।
मैं तुझसे बदला लूँगा[5] और कोई मुझे नहीं रोक सकेगा।*
4 "इसराएल का पवित्र परमेश्वर,
हमारा छुड़ानेवाला है।
उसका नाम सेनाओं का परमेश्वर यहोवा है।"[6]
5 हे कसदियों की बेटी,
अँधेरे में जा और चुपचाप बैठी रह,[7]
क्योंकि अब लोग तुझे रियासतों की मलिका नहीं कहेंगे।[8]
6 मैं अपने लोगों पर भड़क उठा था,[9]

46:10 *या "मकसद; फैसला।" 46:11 *या "मैंने जो तय किया है; फैसला।"

47:3 *या शायद, "मेरे सामने कोई भी आए, मैं कृपा नहीं करूँगा।"

अध्य. 46
1 1रा 18:26; यश 37:37, 38; यो 1:5
2 व्य 33:26
3 यश 42:9; यश 45:21
4 भज 33:11
5 भज 135:6; यश 55:10, 11
6 यश 41:2; यश 45:1
7 एज 1:1, 2; यश 44:28; यश 48:14
8 गि 23:19; अय 23:13

दूसरा कॉल.
1 यश 12:2; यश 51:5; यश 62:11
2 यश 44:23; यश 60:21

अध्य. 47
3 भज 137:8; यिर्म 50:41, 42
4 दान 5:30
5 व्य 32:35, 41; भज 94:1
6 यश 41:14; यश 43:3; यश 44:6
7 यश 47:1
8 यश 13:19; यश 14:4; प्रक 17:5
9 2इत 36:15, 16; यश 42:24, 25; जक 1:15

मैंने अपनी विरासत को दूषित होने
दिया[1]
और उन्हें तेरे हाथ कर दिया।[2]
लेकिन तूने उन पर कोई दया
नहीं की,[3]
तूने बुज़ुर्गों पर भी भारी जुआ लाद
दिया।[4]
7 तूने कहा, "मैं हमेशा मलिका बनी
रहूँगी।"[5]
एक पल के लिए भी नहीं सोचा कि
तू क्या कर रही है
और तेरे कामों का क्या अंजाम
होगा।
8 हे रंगरलियों में डूबी औरत, सुन![6]
तू जो बेखौफ बैठी है और अपने
मन में कहती है,
"मैं महान हूँ, मेरे जैसा और कोई
नहीं।[7]
मैं कभी विधवा नहीं होऊँगी,
न मेरे बच्चे कभी मरेंगे।"[8]
9 पर एक ही दिन में तुझ पर दो
आफतें टूट पड़ेंगी:[9]
तेरे बच्चे मारे जाएँगे और तू विधवा
हो जाएगी।
ये आफतें ज़बरदस्त तरीके से तुझ
पर आ पड़ेंगी,[10]
क्योंकि* तू बढ़-चढ़कर टोना-
टोटका करती और बड़े-बड़े मंत्र
फूँकती है।[11]
10 तुझे अपने दुष्ट कामों पर इतना
भरोसा है
कि तू कहती है, "मुझे कोई नहीं
देख रहा।"
तेरी बुद्धि और ज्ञान ने तुझे इस
कदर भटका दिया है
कि तू मन-ही-मन कहती है, "मैं
महान हूँ, मेरे जैसा और कोई
नहीं।"
11 मगर तुझ पर विपत्ति आ पड़ेगी
और तेरा कोई मंत्र काम नहीं
आएगा।*
तुझ पर मुसीबत आ पड़ेगी और तू
उसे टाल नहीं पाएगी,
पल-भर में तेरा ऐसा नाश होगा,
जिसके बारे में तूने सोचा भी
नहीं था।[1]
12 तू मंत्र फूँकती रह और टोना-
टोटका करती जा,[2]
जिसमें तू बचपन से लगी हुई है।
क्या पता तुझे उससे कोई
फायदा हो!
क्या पता लोगों में तेरा डर छा
जाए!
13 तू अपने ढेरों सलाहकारों की सुन-
सुनकर खुद को थका रही है।
ज़रा कह उनसे कि वे आकर तुझे
बचाएँ,
हाँ, उन्हीं से जो आकाश की पूजा
करते हैं,* तारों को ध्यान से
देखते हैं,[3]
नए चाँद को देखकर भविष्य
बताते हैं।
वे आकर बताएँ कि तेरे साथ क्या
होनेवाला है।
14 देख! वे तो भूसे की तरह हैं,
आग उन्हें भस्म कर देगी,
उसकी लपटें इतनी तेज़ होंगी कि वे
खुद को बचा नहीं पाएँगे।
ये जलते कोयले नहीं जिन पर कोई
हाथ सेंके,

47:9 *या शायद, "जबकि।"

47:11 *या "और तू अपने मंत्र से उसे दूर नहीं कर पाएगी।" 47:13 *या शायद, "जो आकाश को बाँटते हैं; ज्योतिषी।"

अध्य. 47
1 व्य 28:63
यहे 24:21
2 यिर्म 52:14
3 2रा 25:18-21
भज 137:8
4 व्य 28:49, 50
5 दान 4:30
प्रक 18:7
6 प्रक 18:3
7 दान 5:22, 23
8 प्रक 18:7
9 प्रक 18:10
10 यिर्म 51:29
11 यहे 21:21
दान 5:7
प्रक 18:23

दूसरा कॉल.
1 प्रक 18:10
2 दान 2:2
3 दान 5:7

न यह ऐसी आग है जिसके सामने
कोई बैठ सके।
15 तेरे टोना-टोटका करनेवालों का भी
यही हश्र होगा,
जिनके साथ तू जवानी से मेहनत
करती आयी है।
वे तितर-बितर हो जाएँगे* और
यहाँ-वहाँ भटकते फिरेंगे,
तुझे बचानेवाला कोई न होगा।[1]

48 हे याकूब के घराने के लोगो,
सुनो!
तुम जो खुद को इसराएल
कहते हो[2]
और यहूदा के सोतों से*
निकले हो।
तुम जो यहोवा के नाम से शपथ
खाते हो[3]
और इसराएल के परमेश्वर को
पुकारते हो,
पर यह सब तुम सच्चाई और नेकी
से नहीं करते।[4]
2 ये लोग खुद को पवित्र शहर के
निवासी बताते हैं[5]
और इसराएल के परमेश्वर का
सहारा लेते हैं,[6]
जिसका नाम सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा है।
3 वह तुमसे कहता है,
"पिछली बातों के बारे में मैंने बहुत
पहले ही बता दिया था,
वे मेरे ही मुँह से निकली थीं और
मैंने ही वे बातें बतायी थीं।[7]
मैंने तुरंत कदम उठाया और
वे पूरी हुईं।[8]
4 मैं जानता था कि तुम बहुत ढीठ हो,
तुम्हारी गरदन लोहे की तरह
और तुम्हारा माथा ताँबे की तरह
कड़ा है।[1]
5 इसलिए मैंने बहुत पहले ही वे बातें
बता दी थीं,
उनके पूरा होने से पहले ही तुम्हें
बता दिया था
ताकि तुम यह न कह सको, 'यह
हमारे देवता* का काम है,
हमारी तराशी हुई और ढली हुई
मूरत की आज्ञा पर यह हुआ है।'
6 तुमने ये सारी बातें सुनी और
देखी हैं,
क्या इन्हें सरेआम नहीं बताओगे?[2]
अब मैं नयी बातों का ऐलान कर
रहा हूँ,[3]
छिपे हुए राज़ खोल रहा हूँ।
7 एक नयी रचना करने जा रहा हूँ जो
मैंने पहले कभी नहीं की थी,
जिसके बारे में आज से पहले तुमने
कभी नहीं सुना था
ताकि तुम यह न कह सको,
'अरे! यह तो हम पहले से
जानते हैं।'
8 पर तुम तो सुनना ही नहीं चाहते,[4]
न जानना चाहते हो,
तुमने पहले से ही अपने कान बंद
कर लिए हैं,
मुझे पता है तुम दगाबाज़ हो[5]
और जन्म से बागी हो।[6]
9 मगर मैं अपने नाम की खातिर
अपना क्रोध रोके रहूँगा,[7]
अपनी महिमा की खातिर खुद को
रोके रहूँगा,
मैं तेरा नामो-निशान नहीं
मिटाऊँगा।[8]

47:15 *शा., "अपने-अपने इलाके में जाएँगे।" 48:1 *या शायद, "यहूदा से।"

48:5 *या "हमारी मूरत।"

अध्य. 47
1 यिर्म 51:6

अध्य. 48
2 उत 32:28
3 व्य 6:13
4 लैव 19:12
सप 1:4, 5
5 यश 52:1
6 यिर्म 21:1, 2
7 यश 42:9
8 यह 21:45
यश 55:10, 11

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 32:9
2रा 17:13, 14
2इत 36:15, 16
भज 78:8
यहे 3:7
2 यश 43:10
3 यश 42:9
यश 65:17
4 यश 29:10
5 यिर्म 5:11
यिर्म 9:2
6 व्य 9:7
भज 95:10
7 1शम 12:22
भज 25:11
भज 79:9
यिर्म 14:7
8 नहे 9:30, 31
भज 78:38

10 देख, मैंने तुझे शुद्ध किया है मगर
चाँदी की तरह नहीं।[1]
मैंने तुझे दुख की भट्ठी में तपाकर
परख* लिया है।[2]
11 मैं अपनी खातिर, हाँ, अपने नाम
की खातिर ऐसा करूँगा।[3]
भला मैं अपने नाम को अपवित्र
कैसे होने दूँ?[4]
मैं अपनी महिमा किसी और को न
दूँगा।*
12 हे याकूब, मेरी सुन! हे इसराएल,
मेरी सुन! तुझे मैंने बुलाया है,
मैं वही हूँ, मैं बदला नहीं।[5] मैं ही
पहला और मैं ही आखिरी हूँ।[6]
13 मैंने अपने हाथों से पृथ्वी की नींव
डाली,[7]
अपने दाएँ हाथ से आकाश को
ताना।[8]
मेरे बुलाने पर वे एक-साथ मेरे
सामने हाज़िर हो जाते हैं।
14 तुम सब इकट्ठा हो और सुनो,
तुम्हारे देवताओं में से* ऐसा कौन
है जिसने इन बातों का ऐलान
किया है?
जिस शख्स से यहोवा प्यार
करता है,[9]
वह बैबिलोन के खिलाफ उसकी
मरज़ी पूरी करेगा,[10]
और उसका हाथ कसदियों पर
उठेगा।[11]
15 मैंने खुद यह कहा है, मैंने ही उसे
बुलाया है[12]
और मैं ही उसको लाया हूँ। उसका
हर काम सफल होगा।[13]
16 मेरे पास आओ और सुनो!
शुरू से ही मैंने यह बात खुलकर
बतायी,[1]
जब यह पूरी होने लगी तो मैं
वहीं था।"
अब सारे जहान के मालिक यहोवा
ने मुझे भेजा है और अपनी पवित्र
शक्ति भी दी है।*
17 यहोवा, जो तेरा छुड़ानेवाला और
इसराएल का पवित्र परमेश्वर है,
वह कहता है,[2]
"मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ,
जो तुझे तेरे भले के लिए
सिखाता हूँ[3]
और जिस राह पर तुझे चलना
चाहिए उसी पर ले चलता हूँ।[4]
18 मेरी आज्ञाओं को ध्यान से सुन,
उन्हें मान![5]
तब तेरी शांति नदी के समान[6]
और तेरी नेकी समुंदर की लहरों के
समान होगी।[7]
19 तेरा वंश बालू के समान अनगिनत
होगा
और तेरे वंशज बालू के किनकों की
तरह बेहिसाब होंगे।[8]
तेरा नाम मेरे सामने से न कभी
मिटाया जाएगा, न कभी खाक में
मिलाया जाएगा।"
20 बैबिलोन से निकल जाओ![9]
कसदियों से दूर भाग जाओ!
खुशी के मारे ऐलान करो, ज़ोर-ज़ोर
से चिल्लाओ,[10]
धरती के कोने-कोने तक यह खबर
सुनाओ,[11]
"यहोवा ने अपने सेवक याकूब को
छुड़ा लिया है।[12]

अध्य. 48
1 नीत 17:3
2 यश 1:25; यिर्म 9:7
3 यश 48:9
4 यहे 20:9
5 यश 43:13; यश 46:4
6 यश 44:6; प्रक 1:8; प्रक 22:13
7 अय 38:4
8 यश 40:22; यश 42:5
9 यश 45:1
10 यश 44:28
11 यश 13:19; यिर्म 50:13
12 यश 41:2
13 यश 45:5

दूसरा कॉल.
1 यश 45:19
2 यश 43:14; यश 44:6; यश 54:5
3 1रा 8:36; भज 25:8; यश 54:13; मी 4:2
4 भज 32:8; यश 30:20, 21; यश 49:10
5 व्य 5:29; भज 81:13, 14
6 भज 119:165; यश 32:18; यश 66:12
7 आम 5:23, 24
8 उत 22:15, 17; यिर्म 33:22; हो 1:10
9 यिर्म 50:8; प्रक 18:4
10 यश 49:13
11 यिर्म 50:2
12 यिर्म 31:10, 11

48:10 *या शायद, "चुन।" **48:11** *या "किसी और के साथ न बाँटूँगा।" **48:14** *शा., "उनमें से।"

48:16 *या "मुझे अपनी पवित्र शक्ति देकर भेजा है।"

21 उजाड़ जगहों से लाते वक्त उसने
उन्हें प्यासा नहीं मरने दिया,[1]
उसने उनके लिए चट्टान से पानी
निकाला,
चट्टान को चीर दिया और पानी बह
निकला।"[2]
22 यहोवा कहता है, "दुष्टों को कभी
शांति नहीं मिलती।"[3]

49 हे द्वीपो, मेरी सुनो,
हे दूर-दूर के राष्ट्रो, मेरी बात
पर ध्यान दो।[4]
मेरे पैदा होने से पहले* ही यहोवा
ने मुझे बुलाया,[5]
जब मैं अपनी माँ के पेट में ही था,
उसने मेरा नाम बताया।
2 उसने मेरे मुँह को तेज़ धारवाली
तलवार बनाया,
अपने हाथ की छाया में मुझे
छिपाया,[6]
मुझे चमचमाता तीर बनाया
और अपने तरकश में महफूज़
रखा।
3 उसने मुझसे कहा, "हे इसराएल, तू
मेरा सेवक है,[7]
तेरे ज़रिए मैं अपनी महिमा
दिखाऊँगा।"[8]
4 लेकिन मैंने कहा, "मेरी मेहनत का
कोई फायदा नहीं हुआ,
मैंने बेकार ही अपनी ताकत
लगायी।
मगर यहोवा मेरा न्याय करेगा,
मेरा परमेश्वर ही मेरी मेहनत का
फल* देगा।"[9]
5 और अब यहोवा ने, जिसने मुझे
गर्भ से ही अपना सेवक होने के
लिए रचा,
मुझे यह आदेश दिया है कि
मैं याकूब को वापस उसके
पास लाऊँ
ताकि इसराएल उसके सामने इकट्ठा
हो सके।[1]
मैं यहोवा की नज़रों में ऊँचा किया
जाऊँगा,
मेरा परमेश्वर मेरी ताकत बनेगा।
6 उसने कहा, "मैंने तुझे सिर्फ याकूब
के गोत्रों को बहाल करने,
इसराएल के बचे हुओं को वापस
लाने के लिए अपना सेवक नहीं
ठहराया,
बल्कि राष्ट्रों के लिए रौशनी भी
ठहराया है[2]
कि उद्धार का मेरा संदेश पृथ्वी के
छोर तक फैल सके।"[3]

7 लोग जिससे घिन करते हैं,[4] राष्ट्र
जिससे नफरत करते हैं और जो
शासकों का सेवक है, उससे इसराएल का
छुड़ानेवाला और उसका पवित्र परमेश्वर
यहोवा[5] कहता है,

"राजा तुझे देखकर उठ खड़े होंगे
और हाकिम तेरे आगे झुकेंगे,
वे यहोवा के कारण ऐसा
करेंगे जो विश्वासयोग्य पर-
मेश्वर है,[6]
इसराएल के पवित्र परमेश्वर के
कारण ऐसा करेंगे, जिसने तुझे
चुना है।"[7]
8 यहोवा कहता है,
"मंज़ूरी पाने के वक्त मैंने तेरी सुनी
और तुझे जवाब दिया,[8]
उद्धार के दिन तेरी मदद की।[9]
मैं तेरी हिफाज़त करता रहा कि तू
मेरे और लोगों के बीच करार
ठहरे,[10]

49:1 *शा., "गर्भ से।" 49:4 *या "इनाम।"

अध्य. 48
1 निर्ग 15:24, 25
व्य 8:14, 15
यश 43:19
2 निर्ग 17:5, 6
गि 20:11
3 यश 57:20, 21

अध्य. 49
4 यश 55:4
5 यश 44:2
यश 46:3
6 यश 51:16
7 यश 43:10
8 यश 44:23
9 यश 40:10

दूसरा कॉल.
1 यश 56:8
2 यश 42:6
मत 12:18
लूक 2:30, 32
3 भज 98:2
यश 11:10
यश 52:10
प्रेष 13:47
4 यश 53:3
5 यश 43:14
6 व्य 7:9
7 यश 42:1
8 भज 69:13
9 लूक 1:69
लूक 22:43
2कुर 6:2
इब्र 5:7
10 यश 42:6, 7

देश को दोबारा बसाए,
मेरे लोगों को उनकी विरासत की ज़मीन वापस दिलाए, जो उजाड़ पड़ी है,[1]
9 कैदियों से कहे, 'बाहर आओ!'[2]
और अंधकार में पड़े लोगों[3] से कहे, 'उजाले में आओ!'
मार्ग के किनारे वे खाएँगे,
आने-जानेवाले रास्तों* के किनारे उनके चरागाह होंगे।
10 वे भूखे-प्यासे नहीं रहेंगे,[4]
न चिलचिलाती धूप, न तपती गरमी उन्हें झुलसाएगी।[5]
क्योंकि उनकी अगुवाई करनेवाला उन पर दया करेगा[6]
और उन्हें पानी के सोतों के पास ले चलेगा।[7]
11 मैं अपने सारे पहाड़ों को समतल रास्ता बना दूँगा
और अपने राजमार्गों को ऊँचा करूँगा।[8]
12 देखो, वे दूर-दूर से आ रहे हैं,[9]
कुछ उत्तर से, कुछ पश्चिम से,
तो कुछ सिनीम देश से आ रहे हैं।"[10]
13 हे आकाश, जयजयकार कर! हे पृथ्वी, मगन हो![11]
हे पहाड़ो, खुशी से चिल्लाओ,[12]
क्योंकि यहोवा ने अपने लोगों को दिलासा दिया है,[13]
अपने दुखी लोगों पर उसने दया की है।[14]
14 मगर सिय्योन बार-बार कहती है,
"यहोवा ने मुझे छोड़ दिया है,[15]
यहोवा मुझे भूल गया है।"[16]
15 क्या ऐसा हो सकता है कि एक माँ अपने दूध-पीते बच्चे को भूल जाए?
अपने बच्चे पर तरस न खाए जो उसकी कोख से पैदा हुआ?
अगर वह भूल भी जाए,
तो भी मैं तुझे कभी नहीं भूलूँगा।[1]
16 देख! मैंने अपनी हथेली पर तेरा नाम खुदवाया है,
तेरी शहरपनाह हर पल मेरे सामने है।
17 तेरे बेटे फुर्ती से लौट रहे हैं।
जिन लोगों ने तुझे ढा दिया था, तबाह कर दिया था वे तेरे यहाँ से चले जाएँगे।
18 अपनी आँखें उठा और चारों तरफ नज़र दौड़ा,
देख! वे सब एक-साथ इकट्ठा हो रहे हैं,[2] तेरे पास आ रहे हैं।
यहोवा ऐलान करता है, "मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ,
तू उन सबको गहने की तरह पहन लेगी,
दुल्हन की तरह उनसे अपना सिंगार करेगी।
19 तेरी जो जगह उजाड़ और सुनसान पड़ी थीं, तेरा जो देश खंडहर पड़ा था,[3]
अब वहाँ रहनेवालों के लिए जगह कम पड़ जाएगी।[4]
और जिन्होंने तुझे निगल लिया था[5] वे तुझसे दूर किए जाएँगे।[6]
20 तेरे बच्चों के मरने के बाद जो बेटे पैदा हुए, वे तेरे सामने कहेंगे,
'यह जगह हमारे लिए कम पड़ रही है,

49:9 *या शायद, "सूनी पहाड़ियों।"

अध्य. 49
1 यश 54:3
2 भज 102:19, 20
3 भज 112:4; यश 9:2; लूक 1:68, 79
4 यश 55:1; यश 65:13
5 यश 32:2
6 यहे 34:23
7 भज 23:1, 2; यिर्म 31:9; प्रक 7:16, 17
8 भज 107:6, 7; यश 11:16; यश 40:3, 4
9 व्य 30:4
10 यश 43:5, 6
11 यश 42:10
12 यश 55:12
13 यश 12:1; यश 40:1; यश 66:13
14 यश 44:23; यश 61:3; यिर्म 31:13
15 यश 54:7
16 विल 5:20

दूसरा कॉल.
1 यश 44:21; यिर्म 31:20
2 यश 43:5, 6; यश 60:4
3 यश 51:3
4 यिर्म 30:18, 19
5 यिर्म 51:34
6 यिर्म 30:16

हमारे लिए और जगह बनाओ।'[1]
21 तू अपने मन में कहेगी,
'ये किसके बच्चे हैं जो मुझे दिए गए हैं?
मैं तो बेऔलाद और बाँझ थी,
मुझे कैदी बनाकर बँधुआई में ले गए थे।
किसने इन्हें पाला?[2]
मैं तो अकेली रह गयी थी,[3]
फिर ये सब कहाँ से आए?'"[4]
22 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है,
"देख, मैं अपने हाथ से राष्ट्रों को इशारा करूँगा,
अपना झंडा खड़ा करूँगा कि देश-देश के लोग उसे देख सकें।[5]
तब वे तेरे बेटों को गोद में उठाकर लाएँगे,
तेरी बेटियों को कंधों पर बिठाकर लाएँगे।[6]
23 राजा तेरी सेवा करेंगे,[7]
उनकी रानियाँ तेरी धाई होंगी।
वे ज़मीन पर गिरकर तुझे प्रणाम करेंगे,[8]
तेरे पैरों की धूल चाटेंगे।[9]
तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूँ,
जो मुझ पर आस लगाते हैं वे कभी शर्मिंदा नहीं होंगे।"[10]
24 क्या शूरवीर के हाथ से उसके कैदी छीने जा सकते हैं?
क्या तानाशाह के कब्ज़े में पड़े बंदी छुड़ाए जा सकते हैं?
25 मगर यहोवा कहता है,
"शूरवीर के हाथ से उसके कैदी छीन लिए जाएँगे,[11]
तानाशाह के कब्ज़े में पड़े बंदी भी छुड़ा लिए जाएँगे।[12]

अध्य. 49
1 यश 54:1, 2
2 यश 43:5; यिर्म 31:17
3 विल 1:1
4 यश 62:4
5 एज 1:3; यश 11:10, 12; यश 62:10
6 यश 60:4; यश 66:20
7 यश 60:10, 16
8 यश 60:14
9 मी 7:16, 17
10 यश 25:9
11 यिर्म 29:14; यिर्म 46:27; हो 6:11; योए 3:1
12 यश 52:2; यिर्म 29:10; यिर्म 50:34; जक 9:11

दूसरा कॉल.
1 यश 54:17
2 यहे 39:28
3 1ती 1:1
4 यश 41:14; यश 48:20
5 यश 60:16

अध्य. 50
6 व्य 24:1
7 2रा 17:16, 17
8 यश 59:2; यिर्म 3:1
9 यिर्म 35:15
10 यश 40:28; यश 59:1
11 निर्ग 14:21, 29; भज 106:9; यश 51:10
12 भज 107:33; भज 114:1, 3; यश 42:15; नहू 1:4

जो तेरे खिलाफ उठते हैं, मैं उनके खिलाफ उठूँगा[1]
और तेरे बेटों को बचा लूँगा।
26 जो तेरे साथ बदसलूकी करते हैं मैं उन्हें उन्हीं का माँस खिलाऊँगा,
मीठी दाख-मदिरा की तरह वे अपना ही खून पीकर धुत्त हो जाएँगे।
तब सब लोगों को जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ,[2]
जो तेरा बचानेवाला[3] और तेरा छुड़ानेवाला है,[4]
जो याकूब का शक्तिशाली परमेश्वर है।"[5]

50 यहोवा कहता है,
"जब मैंने तुम्हारी माँ को दूर भेजा, तो क्या उसे कोई तलाकनामा दिया?[6]
क्या मैंने अपना कोई कर्ज़ चुकाने के लिए तुम्हें बेचा?
नहीं! तुम्हें तो अपने गुनाहों[7] के कारण बेचा गया,
तुम्हारे अपराधों के कारण तुम्हारी माँ को दूर भेजा गया।[8]
2 जब मैं यहाँ आया तो क्यों मुझे कोई नहीं मिला?
क्यों मेरे बुलाने पर किसी ने जवाब नहीं दिया?[9]
क्या मेरा हाथ इतना छोटा है कि वह छुड़ा न सके?
क्या मुझमें ताकत नहीं कि तुम्हें बचा सकूँ?[10]
देखो, मेरी फटकार सुनकर समुंदर सूख जाता है।[11]
मैं नदियों को रेगिस्तान बना देता हूँ,[12]

उनकी मछलियाँ बिन पानी के
प्यासी मर जाती हैं और बदबू
मारने लगती हैं।
3 मैं आसमान को काली चादर से ढक
देता हूँ[1]
और उसे टाट का कपड़ा
पहनाता हूँ।"
4 सारे जहान के मालिक यहोवा
ने मुझे सिखाया और ऐसी
ज़बान* दी[2]
कि मैं सही बात कहकर थके-माँदों
को जवाब दे सकूँ।#[3]
वह मुझे हर सुबह उठाता है, मेरे
कान खोलता है
ताकि मैं सीखनेवालों की तरह ध्यान
से उसकी सुनूँ।[4]
5 सारे जहान के मालिक यहोवा ने
मुझे समझ की बातें सिखायीं,*
मैं बागी नहीं था,[5] मैंने उससे मुँह
नहीं फेरा।[6]
6 मैंने कोड़े मारनेवालों को अपनी
पीठ दी,
दाढ़ी नोचनेवालों की ओर अपने
गाल कर दिए।
अपमान सहने और थूके जाने पर
मैंने मुँह नहीं छिपाया।[7]
7 सारे जहान का मालिक यहोवा मेरी
मदद करेगा,[8]
इसलिए मैं बेइज़्ज़त महसूस नहीं
करूँगा।
मैंने अपना चेहरा चकमक पत्थर
की तरह कड़ा कर लिया है[9]
और मुझे यकीन है कि मुझे शर्मिंदा
नहीं होना पड़ेगा।

अध्य. 50
1 निर्ग 10:21
2 निर्ग 4:11
यिर्म 1:9
3 यूह 7:15, 46
4 मत 13:54
5 भज 40:6-8
6 मत 26:39
फिल 2:8
7 मत 26:67
मर 14:65
लूक 22:63
यूह 18:22
8 यश 49:8
9 यहे 3:8, 9

दूसरा कॉल.
1 रोम 8:33
2 यश 42:1
यश 53:11

8 जो मुझे नेक करार देता है, वह मेरे
करीब है।
कौन मुझ पर इलज़ाम लगाएगा?[1]
वह सामने आकर बात करे।
कौन मुझसे मुकदमा लड़ेगा?
वह आगे आए।
9 देखो! सारे जहान का मालिक
यहोवा मेरी मदद करेगा।
कौन मुझे दोषी ठहरा सकता है?
देखो! वे उस पुराने कपड़े की तरह
हो जाएँगे,
जिसे कपड़-कीड़ा खा गया हो।
10 तुम्हारे बीच ऐसा कौन है जो यहोवा
का डर मानता है
और उसके सेवक की बात
सुनता है?[2]
कौन है जो बिन रौशनी के घुप
अँधेरे में चलता है?
वह यहोवा के नाम पर भरोसा करे
और परमेश्वर को अपना सहारा
बनाए।*
11 "तुम सब जो आग सुलगाते हो,
जिससे चिंगारियाँ उठती हैं,
अपनी सुलगायी आग की रौशनी में
चलो,
उससे उठनेवाली चिंगारियों में
होकर चलो।
पर मेरी तरफ से तुम्हें यह सज़ा
मिलेगी:
तुम दर्द से बेहाल पड़े रहोगे।

51 हे नेकी का पीछा करनेवालो,
हे यहोवा को ढूँढ़नेवालो, मेरी
सुनो!
उस चट्टान की ओर देखो, जिससे
तुम काटे गए हो,
उस खदान की ओर देखो, जिससे
तुम निकाले गए हो।

50:4 *या "तालीम पायी हुई ज़बान।" #या शायद, "की हिम्मत बँधा सकूँ।" **50:5** *शा., "मेरा कान खोला।"

50:10 *या "पर आस लगाए।"

2 अपने पिता अब्राहम की ओर देखो,
सारा[1] की ओर देखो, जिसने तुम्हें
जन्म दिया।*
जब मैंने उसे बुलाया तो वह
अकेला था,[2]
फिर मैंने उसे आशीष दी और उसे
एक से अनेक बना दिया।[3]
3 यहोवा सिय्योन को दिलासा देगा,[4]
उसके सभी खंडहरों को दोबारा
बसाएगा।*[5]
वह उसके वीराने को अदन जैसा[6]
और उसके बंजर इलाके को यहोवा
के बाग जैसा बना देगा।[7]
सिय्योन नगरी मगन होगी, उसमें
खुशियाँ मनायी जाएँगी,
धन्यवाद दिया जाएगा और सुरीले
गीत गाए जाएँगे।[8]
4 हे मेरे लोगो, मुझ पर ध्यान दो,
हे मेरे राष्ट्र, मेरी बात पर कान
लगा,[9]
क्योंकि मैं एक कानून निकालूँगा[10]
और अपना न्याय कायम करूँगा,
जो देश-देश के लोगों के लिए
रौशनी ठहरेगा।[11]
5 मेरी नेकी पास आ रही है,[12]
मेरी तरफ से तुम्हें उद्धार मिलने-
वाला है।[13]
मैं अपनी ताकत के दम पर
देश-देश के लोगों का न्याय
करूँगा,[14]
द्वीप मुझ पर आस लगाएँगे[15] और
मेरी ताकत* देखने का इंतज़ार
करेंगे।
6 आकाश की ओर अपनी आँखें
उठाओ,
नीचे पृथ्वी की ओर देखो।
आकाश धुएँ के समान गायब हो
जाएगा,
पृथ्वी पुराने कपड़े के समान तार-
तार हो जाएगी
और उसके निवासी मच्छरों की
तरह मर जाएँगे।
लेकिन जो उद्धार मैं दिलाऊँगा वह
हमेशा रहेगा[1]
और मेरी नेकी का अंत कभी न
होगा।[2]
7 हे लोगो, तुम जो मेरी नेकी से
वाकिफ हो,
जिनके दिलों में मेरा कानून* बसा
है,[3] मेरी सुनो!
नश्वर इंसान के तानों से मत डरो,
न उनकी अपमान-भरी बातों से
खौफ खाओ।
8 क्योंकि कीड़ा उन्हें कपड़े की तरह
खा जाएगा,
कपड़-कीड़ा उन्हें ऊन की तरह चट
कर जाएगा।[4]
लेकिन मेरी नेकी हमेशा कायम
रहेगी
और जो उद्धार मैं देता हूँ वह पीढ़ी-
पीढ़ी तक बना रहेगा।"[5]
9 जाग! जाग यहोवा के बाज़ू,
उठकर अपनी ताकत दिखा,[6]
जैसे तूने बहुत पहले, बीते ज़माने में
दिखायी थी।
क्या वह तू नहीं जिसने राहाब*[7] के
टुकड़े-टुकड़े किए थे,
उस बड़े समुद्री जीव को भेदा था?[8]
10 क्या तूने ही सागर को, गहरे सागर
को नहीं सुखाया था?[9]

अध्य. 51
1 उत 21:2
2 उत 12:1
उत 15:2
3 1रा 4:20
4 भज 102:13
यश 66:13
यिर्म 31:12
5 यश 44:26
यश 61:4
6 उत 2:8
7 यश 35:1
यश 41:18
8 यिर्म 33:10, 11
9 निर्ग 19:6
व्य 7:6
10 यश 2:3
मी 4:2
11 नीत 6:23
12 यश 46:13
13 यश 12:2
यश 56:1
14 1शम 2:10
यश 2:4
15 यश 60:9

दूसरा कॉल.
1 यश 45:17
2 भज 102:25-27
मत 24:35
3 यिर्म 31:33
4 यश 50:9
5 यश 45:17
लूक 1:50
6 लूक 1:51
7 भज 87:4
भज 89:10
यश 30:7
8 निर्ग 15:4
नहे 9:10, 11
भज 106:22
यहे 29:3
9 निर्ग 14:21, 22

51:2 *या "तुम्हें प्रसव-पीड़ा के साथ पैदा किया।" 51:3 *शा., "दिलासा देगा।" 51:5 *शा., "बाज़ू।"

51:7 *या "शिक्षा।" 51:9 *शब्दावली देखें।

समुंदर की गहराइयों में रास्ता नहीं
निकाला था कि छुड़ाए हुए लोग
उसे पार कर सकें?[1]
11 यहोवा जिन्हें छुड़ाएगा वे जयजय-
कार करते हुए सिय्योन लौटेंगे,[2]
कभी न मिटनेवाली खुशी उनके
सिर का ताज होगी।[3]
वे इतने मगन होंगे, इतनी खुशियाँ
मनाएँगे
कि दुख और मातम उनके सामने से
भाग खड़े होंगे।[4]
12 "तुझे दिलासा देनेवाला मैं ही हूँ,[5]
तो फिर तू नश्वर इंसान से क्यों
डरती है, जो एक दिन मर
जाएगा?[6]
इंसान से क्यों खौफ खाती है,
जो हरी घास की तरह मुरझा
जाएगा?
13 तू यहोवा को, अपने बनानेवाले[7]
को क्यों भूल गयी,
जिसने आकाश को ताना[8] और
पृथ्वी की नींव डाली?
तू अत्याचार करनेवाले के क्रोध
से दिन-भर डरी-सहमी क्यों
रहती है,
मानो वह तेरा नाश करने के लिए
तैयार खड़ा है?
बता, कहाँ रहा अत्याचार करनेवाले
का क्रोध?
14 जो ज़ंजीरों से झुक गए हैं वे जल्द
ही आज़ाद किए जाएँगे,[9]
वे मरेंगे नहीं, न कब्र में जाएँगे,
उन्हें रोटी का मोहताज नहीं होना
पड़ेगा।
15 मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ,
मैं समुंदर को झकझोरता हूँ, लहरों
को उछालता हूँ।[10]

अध्य. 51
1 भज 106:9
2 यश 35:10; यिर्म 31:11; जक 10:10
3 यश 61:7
4 यश 25:8; यश 65:18, 19
5 यश 49:13; यश 66:13
6 भज 118:6; दान 3:16, 17; मत 10:28
7 यश 44:2
8 यश 40:22
9 एज 1:2, 3; यश 48:20; यश 52:2
10 यिर्म 31:35, 36; यो 1:4

दूसरा कॉल.
1 यश 47:4
2 व्य 33:27; भज 91:1
3 यश 65:17; यश 66:8, 22
4 यश 60:14; यिर्म 31:33; जक 8:8
5 यश 52:1; यश 60:1
6 यिर्म 25:15
7 यहे 14:21
8 विल 1:17
9 विल 2:11

सेनाओं का परमेश्वर यहोवा, यही
मेरा नाम है।[1]
16 मैं अपना संदेश तेरे मुँह में डालूँगा,
अपने हाथ की छाया में तुझे छिपा
लूँगा,[2]
ताकि आकाश को स्थिर करूँ और
पृथ्वी की नींव डालूँ,[3]
ताकि सिय्योन से कहूँ, 'तू मेरी
प्रजा है।'[4]
17 जाग यरूशलेम जाग!
उठ खड़ी हो![5]
तूने यहोवा के हाथ से उसके क्रोध
का प्याला पी लिया है,
वह जाम पी लिया है जो लड़खड़ा
देता है,
हाँ, तू पूरा-का-पूरा प्याला पी
चुकी है।[6]
18 जितने बेटे उसने पैदा किए, उनमें से
किसी ने उसे राह नहीं दिखायी,
जितने बेटों को उसने पाला-पोसा,
उनमें से किसी ने उसका हाथ नहीं
पकड़ा।
19 तुझ पर दो विपत्तियाँ आ पड़ी हैं:
नाश और बरबादी, भुखमरी और
तलवार![7]
कौन तुझसे हमदर्दी जताएगा?
कौन तुझे दिलासा देगा?[8]
20 तेरे बेटे बेहोश पड़े हैं,[9]
हर गली के नुक्कड़ पर ऐसे पड़े हैं,
जैसे जंगली भेड़ जाल में फँसी हो।
यहोवा का क्रोध पूरी तरह उन पर
आ पड़ा है,
उन्हें परमेश्वर से ज़बरदस्त
फटकार मिली है।"
21 इसलिए हे दुखियारी, सुन!
तू जो नशे में धुत्त है, पर दाख-
मदिरा के नशे में नहीं,

22 तेरा प्रभु और परमेश्वर यहोवा, जो
अपने लोगों की वकालत करता
है, कहता है,
“देख! मैं तेरे हाथ से वह प्याला
ले लूँगा, जिसे पीकर तू लड़खड़ा
रही थी।[1]
मेरे क्रोध का वह प्याला, मेरा जाम
तू फिर कभी न पीएगी।[2]
23 मैं उसे तेरे सतानेवालों के हाथ में दे
दूँगा,[3]
जिन्होंने तुझसे कहा, ‘लेट जा कि
हम तुझ पर पैर रखकर जाएँ!’
इसलिए तूने अपनी पीठ को ज़मीन
बना दिया
कि वे सड़क समझकर उस पर
चलें।”

52 जाग सिय्योन जाग! अपनी
ताकत जुटा[4] और उठ![5]
हे पवित्र नगरी यरूशलेम, अपने
सुंदर कपड़े पहन ले![6]
क्योंकि अब से कोई खतनारहित
और अशुद्ध इंसान तुझमें दाखिल
न होगा।[7]
2 हे यरूशलेम, खड़ी हो! धूल झाड़
और यहाँ ऊपर आकर बैठ।
हे गुलामी में पड़ी सिय्योन की बेटी,
अपने गले के बंधन खोल दे।[8]
3 यहोवा कहता है,
“तुम लोग बिना कीमत के
बेचे गए[9]
और अब बिना कीमत के छुड़ाए भी
जाओगे।”[10]
4 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है,
“पहले मेरे लोग मिस्र गए कि वहाँ
परदेसी बनकर रहें,[11]
फिर अश्शूर ने बेवजह उन पर
ज़ुल्म ढाया।”
5 यहोवा कहता है, “अब जब मेरे
लोगों को बिना कीमत के
बंदी बना लिया गया है, तो मैं क्या
करूँ?”
यहोवा कहता है, “उन पर राज
करनेवाले अपनी जीत पर डींगें
मार रहे हैं,[1]
वे दिन-भर मेरे नाम की बदनामी
कर रहे हैं।[2]
6 इसलिए मेरे लोगों को मेरा नाम
जानना होगा,[3]
हाँ, उस दिन वे जान लेंगे कि
जो उनसे बात कर रहा है,
वह मैं ही हूँ।”
7 पहाड़ों पर उसके पाँव कितने सुंदर
हैं जो खुशखबरी लाता है,[4]
शांति का पैगाम सुनाता है,[5]
अच्छी बातों की खुशखबरी
लाता है,
उद्धार का संदेश सुनाता है,
जो सिय्योन से कहता है, “तेरा पर-
मेश्वर राजा बन गया है।”[6]
8 सुन! तेरे पहरेदार खुशी से चिल्ला
रहे हैं,
साथ मिलकर जयजयकार कर
रहे हैं,
क्योंकि वे साफ देख सकते हैं कि
यहोवा सिय्योन को वापस ला
रहा है।
9 हे यरूशलेम के खंडहरो,[7] खुशी
से झूमो, मिलकर जयजयकार
करो!
क्योंकि यहोवा ने अपने लोगों
को दिलासा दिया है,[8] उसने
यरूशलेम को छुड़ाया है।[9]
10 सब राष्ट्रों के सामने यहोवा ने
अपना पवित्र बाज़ू दिखाया,[10]

अध्य. 51
1 यश 51:17
2 यश 54:9 यश 62:8
3 यश 49:25

अध्य. 52
4 हाग 2:4
5 यश 51:17
6 यश 61:3
7 यश 35:8 यश 60:21 प्रक 21:27
8 यश 51:14 यश 61:1
9 यश 50:1
10 यश 45:13
11 उत 46:5-7

दूसरा कॉल.
1 भज 137:3 यिर्म 50:17
2 भज 74:10 रोम 2:24
3 यहे 20:44
4 यश 40:9 नहू 1:15 प्रेष 8:4 रोम 10:15 इफ 6:14, 15
5 लूक 2:14 प्रेष 10:36 इफ 2:17
6 भज 93:1 यश 33:22 मी 4:7 मत 24:14 प्रक 11:15, 17
7 यश 61:4
8 यश 66:13
9 यश 44:23
10 यश 51:9

पृथ्वी के कोने-कोने तक लोग वह
उद्धार देखेंगे जो हमारा परमेश्वर
दिलाता है।*[1]
11 दूर हो जाओ, उससे दूर हो जाओ!
वहाँ से निकल आओ,[2] किसी भी
अशुद्ध चीज़ को मत छूओ![3]
हे यहोवा के बरतनों को उठाने-
वालो,[4]
उसमें से निकल आओ[5] और खुद
को शुद्ध बनाए रखो।
12 तुम्हें वहाँ से घबराकर नहीं निकल-
ना होगा,
न ही तुम्हें वहाँ से भागना पड़ेगा,
क्योंकि यहोवा तुम्हारे आगे-आगे
जाएगा,[6]
इसराएल का परमेश्वर तुम्हारी रक्षा
के लिए पीछे-पीछे चलेगा।[7]
13 देखो, मेरा सेवक[8] अंदरूनी समझ
से काम लेगा,
उसे ऊँचे पर उठाया जाएगा,
उसे ऊँचा और महान किया
जाएगा।[9]
14 जिस तरह उसे देखकर बहुत-से
लोग दंग रह गए थे,
क्योंकि उसका रूप इतना बिगड़ा
हुआ था जितना किसी आदमी
का नहीं बिगड़ा,
उसकी शान इतनी घट गयी थी
जितनी किसी की नहीं घटी थी,
15 उसी तरह राष्ट्र उसे देखकर दंग रह
जाएँगे,[10]
राजा उसके सामने खामोश खड़े
रहेंगे,*[11]
क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जो उन्हें
नहीं बतायी गयी थी,
ऐसी बात पर ध्यान देंगे जो उन्होंने
नहीं सुनी थी।[1]

53 हमारे संदेश पर* किसने
विश्वास किया है?[2]
यहोवा ने अपनी ताकत#[3] किस
पर ज़ाहिर की है?[4]
2 वह टहनी की तरह उसके* सामने
उगेगा,[5] सूखी ज़मीन में जड़ की
तरह फैलेगा।
जब हम उसे देखते हैं, तो उसमें
कोई सुंदरता, कोई शान नज़र
नहीं आती,[6]
न उसके रूप में ऐसी खासियत है
कि हम उसकी तरफ खिंचे चले
जाएँ।
3 लोगों ने उसे तुच्छ जाना, उससे
किनारा किया।[7]
वह अच्छी तरह जानता था कि
दर्द क्या होता है, बीमारी क्या
होती है।
उसका चेहरा मानो हमसे छिपा
हुआ था।*
हमने उसे तुच्छ जाना और बेकार
समझा।[8]
4 उसने हमारी बीमारी खुद पर
उठा ली[9]
और हमारा दर्द हमसे ले लिया।[10]
पर हमने समझा कि उस पर पर-
मेश्वर की मार पड़ी है,
उसी ने उसे घायल किया और दुख
दिया है।

अध्य. 52
1 भज 22:27; यश 49:6
2 यश 48:20; यिर्म 50:8; यिर्म 51:6; जक 2:6
3 लैव 5:2; यहे 44:23
4 लैव 10:3; गि 3:6, 8; एज 1:7; एज 8:30
5 2कुर 6:17; प्रक 18:4
6 निर्ग 13:21; 1इत 14:15
7 यश 58:8
8 यश 42:1; यश 61:1; फिल 2:5-7
9 भज 2:6; भज 110:1; यश 9:6; मत 28:18
10 भज 2:2
11 भज 2:10; भज 72:11

दूसरा कॉल.
1 रोम 15:20, 21

अध्य. 53
2 रोम 10:16
3 यश 51:9
4 यश 40:5; यूह 12:37, 38
5 यश 11:1; जक 6:12
6 यश 52:14; यूह 1:10; फिल 2:7
7 भज 22:7; मत 26:67, 68; यूह 6:66; 1पत 2:4
8 जक 11:13; यूह 18:39, 40; प्रेष 3:13, 14; प्रेष 4:11
9 मत 8:14-17
10 लैव 16:21, 22; 1पत 2:24; 1यूह 2:1, 2

52:10 *या "लोग हमारे परमेश्वर की जीत देखेंगे।" **52:15** *शा., "अपना मुँह बंद रखेंगे।"

53:1 *या शायद, "जो संदेश हमने सुना है उस पर।" #शा., "बाज़ू।" **53:2** *"उसके" का मतलब परमेश्वर हो सकता है या कोई इंसान, जो यह सब देख रहा है। **53:3** *या शायद, "लोग उससे अपना मुँह फेर लेते थे।"

5 हमारे अपराधों के लिए उसे भेदा गया,[1]
हमारे गुनाहों के लिए उसे कुचला गया,[2]
हमारी शांति के लिए उसने सज़ा भुगती[3]
और उसके घाव से हम चंगे हुए।[4]
6 हम सब भेड़ों की तरह भटके हुए थे,[5]
हर कोई अपनी राह चल रहा था।
लेकिन यहोवा ने हमारे गुनाहों का बोझ उस पर लाद दिया।[6]
7 उस पर अत्याचार किए गए,[7] पर उसने सबकुछ सह लिया,[8]
अपने मुँह से एक शब्द नहीं निकाला।
वह भेड़ की तरह बलि होने के लिए लाया गया।[9]
जैसे मेम्ना अपने ऊन कतरनेवाले के सामने चुपचाप रहता है,
वैसे ही उसने अपने मुँह से एक शब्द नहीं निकाला।[10]
8 ज़ुल्म और अन्याय से उसकी जान ले ली गयी।*
मगर क्या किसी ने यह जानना चाहा कि वह कौन है, कहाँ से आया है?#
उसे दुनिया△ से मिटा दिया गया,[11]
मेरे लोगों के अपराधों के लिए उसे मार डाला गया।⊠[12]
9 उसने कोई बुराई* नहीं की,
न उसके मुँह से छल की बातें निकलीं,[13]
फिर भी उसे दुष्टों के साथ कब्र में दफनाया गया,*[1]
जब उसकी मौत हुई, तो उसे अमीरों# के साथ गाड़ा गया।[2]
10 यह यहोवा की मरज़ी थी* कि वह कुचला जाए,
तभी उसने उसे दुख झेलने दिया।
हे परमेश्वर, अगर तू उसकी जान दोष-बलि के तौर पर दे,[3]
तो वह अपने वंश# को देखेगा और बहुत दिनों तक जीएगा।[4]
उसी से यहोवा की मरज़ी△ पूरी होगी।[5]
11 उसने जो पीड़ाएँ सहीं, उन्हें देखकर उसे संतोष मिलेगा।
मेरा नेक जन, मेरा सेवक[6] अपने ज्ञान से,
कई लोगों की मदद करेगा कि वे नेक ठहरें।[7]
वह उनके गुनाह अपने ऊपर ले लेगा।[8]
12 इसलिए मैं उसे बहुतों के साथ हिस्सा दूँगा,
वह शूरवीरों के साथ लूट का माल बाँटेगा,
क्योंकि उसने अपनी जान कुरबान कर दी,*[9]
वह अपराधियों में गिना गया,[10]
वह बहुतों का पाप उठा ले गया[11]
और अपराधियों की खातिर उसने बिनती की।[12]

अध्य. 53
1 दान 9:24; जक 12:10; यूह 19:34; रोम 4:25
2 मत 20:28; रोम 5:6, 19
3 कुल 1:19, 20
4 1पत 2:24
5 1पत 2:25
6 1पत 3:18
7 भज 22:12; भज 69:4
8 1पत 2:23
9 यूह 1:29; 1कुर 5:7
10 मत 27:12-14; प्रेष 8:32, 33
11 दान 9:26; मत 27:50
12 जक 13:7; यूह 11:49, 50; रोम 5:6; इब्र 9:26
13 1पत 2:22

दूसरा कॉल.
1 मत 27:38
2 मत 27:57-60; मर 15:46; यूह 19:41
3 लैव 16:11; 2कुर 5:21; इब्र 7:27
4 यश 9:7; 1ती 6:16
5 कुल 1:19, 20
6 यश 42:1
7 रोम 5:18, 19
8 1पत 2:24
9 भज 22:14; मत 26:27, 28; इब्र 2:14
10 मर 15:27; लूक 22:37; लूक 23:32, 33
11 मत 20:28; 1ती 2:5, 6; तीत 2:13, 14; इब्र 9:28
12 रोम 8:34; इब्र 7:25; इब्र 9:26; 1यूह 2:1, 2

53:8 *शा., "उसे ले लिया गया।" #या "उसकी ज़िंदगी के बारे में जानना चाहा?" △शा., "जीवितों के देश में।" ⊠शा., "उसे मार पड़ी।" **53:9** *या "हिंसा।" **53:9** *या "दुष्टों के साथ दफनाने के लिए वह अपनी जगह देगा।" #शा., "अमीर आदमी।" **53:10** *या "यहोवा को यह भाया।" #शा., "बीज।" △या "यहोवा को जो मंज़ूर है।" **53:12** *शा., "उँडेल दी।"

54 यहोवा कहता है,
“हे बाँझ औरत, तू जिसने
किसी को जन्म नहीं दिया,[1]
जयजयकार कर!
तू जिसे बच्चा जनने की पीड़ा नहीं
हुई,[2] मगन हो और खुशी के मारे
चिल्ला![3]
क्योंकि छोड़ी हुई औरत के
लड़के,*
उस औरत के लड़कों से ज़्यादा हैं,
जिसका पति# उसके साथ है।[4]
2 अपने तंबू को बड़ा कर,[5]
अपने आलीशान डेरे का कपड़ा
फैला।
कोई कसर मत छोड़, तंबू की
रस्सियों को लंबा कर
और उसकी खूँटियों को
मज़बूत कर,[6]
3 क्योंकि तू दाएँ-बाएँ दोनों तरफ
फैलेगी।
तेरे बच्चे राष्ट्रों पर कब्ज़ा करेंगे,
उजाड़ और सुनसान शहरों को फिर
से बसाएँगे।[7]
4 डर मत,[8] तुझे शर्मिंदा नहीं होना
पड़ेगा,[9]
न खुद को नीचा समझ क्योंकि तुझे
निराश नहीं होना पड़ेगा।
तूने अपनी जवानी में जो शर्मिंदगी
झेली उसे तू भूल जाएगी,
अपने विधवा होने का कलंक तुझे
याद न रहेगा।”
5 “तेरा महान रचनाकार[10] ही तेरा
पति# है,[11]
सेनाओं का परमेश्वर यहोवा उसका
नाम है,
इसराएल का पवित्र परमेश्वर तेरा
छुड़ानेवाला है,[1]
उसे पूरी धरती का परमेश्वर कहा
जाएगा।[2]
6 यहोवा ने तुझे ऐसे बुलाया मानो
तू छोड़ी हुई औरत हो, मन से
दुखी हो,[3]
जिसकी शादी जवानी में हुई हो
और बाद में जिसके पति ने उसे
ठुकरा दिया हो।”
यह बात तेरे परमेश्वर ने कही है।
7 “पल-भर के लिए मैंने तुझे छोड़
दिया था,
लेकिन अब बड़ी दया करके तुझे
वापस ले आऊँगा।[4]
8 क्रोध में आकर कुछ वक्त के
लिए तुझसे अपना चेहरा छिपा
लिया था,[5]
लेकिन अब मैं तुझ पर दया करूँगा
क्योंकि मेरा प्यार सदा कायम
रहता है।”[6]
यह बात यहोवा ने कही है जो तेरा
छुड़ानेवाला है।[7]
9 “मेरे लिए यह वैसा है जैसा नूह के
दिनों में था।[8]
जिस तरह मैंने शपथ खायी थी कि
पृथ्वी जलप्रलय से फिर कभी न
डूबेगी,[9]
उसी तरह मैं शपथ खाता हूँ कि
मैं तुझ पर फिर कभी नहीं भड़-
कूँगा, न तुझे फटकारूँगा।[10]
10 चाहे पहाड़ मिट जाएँ, पहाड़ियाँ
डगमगा जाएँ,
मगर मेरा अटल प्यार तेरे लिए
नहीं मिटेगा,[11]
शांति का मेरा करार कभी नहीं
डगमगाएगा।”[12]

54:1 *या “बच्चे।” 54:1, 5 #या “मालिक।”

अध्य. 54
1 यश 62:4
2 यश 66:7, 8
3 यश 44:23
यश 49:13
4 गल 4:26, 27
5 यश 49:20
6 यश 33:20
7 यश 49:8
यहे 36:35
8 यश 41:10
9 यश 61:7
10 यश 44:2
11 यहे 16:8
हो 2:16

दूसरा कॉल.
1 यश 44:6
2 जक 14:9
रोम 3:29
3 यश 49:14
यश 62:4
4 व्य 30:1, 3
भज 30:5
भज 106:47
यश 27:12
यिर्म 29:10
5 यश 47:6
यहे 39:23
6 यश 55:3
7 यश 48:17
यश 49:26
8 उत 7:23
9 उत 8:21
10 यिर्म 31:35, 36
यहे 39:29
11 यश 51:6
12 यश 55:3

यह बात यहोवा ने कही है, जो तुझ
पर दया करता है।[1]
11 "हे दुखियारी,[2] तू जो आँधी-तूफान
से उछाली गयी,
तू जिसे दिलासा नहीं मिला,[3]
मैं तेरे पत्थरों को मज़बूत गारे से
बिठाऊँगा,
नीलम से तेरी नींव डालूँगा।[4]
12 मैं तेरी शहरपनाह की मुँडेर को
माणिकों से
और तेरे फाटकों को चमचमाते
पत्थरों से बनाऊँगा,
कीमती पत्थरों से तेरी सरहद खड़ी
करूँगा।
13 तेरे सारे बेटे* यहोवा के सिखाए
हुए होंगे[5]
और उन्हें भरपूर शांति मिलेगी।[6]
14 नेकी के दम पर तुझे मज़बूती से
कायम किया जाएगा।[7]
तुझे अत्याचार से बचाया जाएगा,[8]
तुझे किसी बात का डर नहीं होगा,
न ही तू खौफ खाएगी,
डर तेरे पास भी नहीं फटकेगा।[9]
15 अगर तुझ पर हमला हो,
तो वह मेरे आदेश पर नहीं होगा।
जो कोई तुझसे लड़ेगा, उसे हार का
मुँह देखना पड़ेगा।"[10]
16 "देख मैं ही उस लोहार का बनाने-
वाला हूँ,
जो फूँक मारकर कोयले सुलगाता है
और उस पर हथियार बनाता है।
मैं ही उस आदमी का रचनेवाला हूँ,
जो खूँखार है और तबाही
मचाता है।[11]
17 इसलिए तुम्हारे खिलाफ उठनेवाला
कोई भी हथियार कामयाब नहीं
होगा,[1]
तुम पर दोष लगानेवाली हर ज़बान
झूठी साबित होगी।
यही यहोवा के सेवकों की
विरासत है
और मैं उन्हें नेक ठहराता हूँ।" यह
ऐलान यहोवा ने किया है।[2]

55 हे सब प्यासे लोगो, आओ![3]
पानी के पास आओ![4]
जिसके पास पैसा नहीं, वह भी आए
और आकर खाए-पीए!
आओ और बिना पैसे दिए, मुफ्त
में[5] दाख-मदिरा और दूध ले
जाओ।[6]
2 जिस खाने से भूख नहीं मिटती, उस
पर तुम क्यों पैसा खर्च करते हो?
जिस खाने से जी नहीं भरता,
उस पर अपनी कमाई* क्यों
उड़ाते हो?
मेरी बात ध्यान से सुनो! बढ़िया
खाना खाओ,[7]
तब तुम चिकना-चिकना खाना
खाकर खुश हो जाओगे।[8]
3 मेरे पास आओ,[9] मेरी बातों पर
कान लगाओ।
मेरी सुनो, तब तुम जीवित रहोगे।
मैं तुम्हारे साथ सदा का करार
करूँगा[10]
ताकि दिखाऊँ कि दाविद के
लिए मेरा प्यार अटल और
सच्चा है।[11]
4 देखो, मैंने उसे राष्ट्रों के लिए गवाह
ठहराया है,[12]
राष्ट्रों के लिए उसे अगुवा[13] और
शासक[14] बनाया है।

54:13 *या "बच्चे।"

55:2 *या "अपने खून-पसीने की कमाई।"

अध्य. 54
1 यश 14:1
2 यश 52:2
3 विल 1:2, 17
4 प्रक 21:19
5 यिर्म 31:34
यूह 6:45
6 भज 119:165
यश 66:12
यिर्म 33:6
7 यश 1:26
यश 60:21
8 यश 52:1
9 यिर्म 23:4
सप 3:13
10 यहे 38:16, 22
जक 2:8
जक 12:3
11 यश 10:5

दूसरा कॉल.
1 भज 2:2, 4
यश 41:12
2 यिर्म 23:6

अध्य. 55
3 भज 42:2
भज 63:1
आम 8:11
मत 5:6
4 यश 41:17
5 प्रक 21:6
प्रक 22:17
6 योए 3:18
7 यश 25:6
8 भज 36:7, 8
भज 63:5
9 याकू 4:8
10 यश 61:8
11 2शम 7:8, 16
2शम 23:5
भज 89:28, 29
यिर्म 33:25, 26
प्रेष 13:34
12 प्रक 1:5
प्रक 3:14
13 दान 9:25
मत 23:10
14 उत 49:10

5 देख, तू उस राष्ट्र को बुलाएगा जिसे
तू नहीं जानता
और जो राष्ट्र तुझे नहीं जानता वह
तेरे पास दौड़ा चला आएगा।
वह इसराएल के पवित्र परमेश्‍वर,
तेरे परमेश्‍वर यहोवा की वजह से
आएगा,[1]
क्योंकि परमेश्‍वर तेरा गौरव
बढ़ाएगा।[2]
6 जब तक यहोवा मिल सकता है
उसकी खोज करते रहो,[3]
जब तक वह करीब है उसे पुकारते
रहो।[4]
7 दुष्ट इंसान अपनी दुष्ट राह
छोड़ दे,[5]
बुरा इंसान अपने बुरे विचारों को
त्याग दे।
वह यहोवा के पास लौट आए जो
उस पर दया करेगा,[6]
हमारे परमेश्‍वर के पास लौट आए
क्योंकि वह दिल खोलकर माफ
करता है।[7]
8 यहोवा ऐलान करता है, "मेरी सोच
तुम्हारी सोच जैसी नहीं,[8]
न मेरी राहें तुम्हारी राहों जैसी हैं।
9 जिस तरह आकाश पृथ्वी से
ऊँचा है,
उसी तरह मेरी राहें तुम्हारी राहों से
और मेरी सोच तुम्हारी सोच से
ऊँची है।[9]
10 जैसे आसमान से बारिश और बर्फ
गिरती है और यूँ ही नहीं लौट
जाती,
बल्कि धरती को सींचती है और
फसल उपजाती है,
जिससे बोनेवाले को बीज और
खानेवाले को रोटी मिलती है,

11 वैसे ही मेरे मुँह से निकला वचन भी
होगा।[1]
वह बिना पूरा हुए मेरे पास नहीं
लौटेगा,[2]
बल्कि हर हाल में मेरी मरज़ी पूरी
करेगा[3]
और जिस काम के लिए मैंने उसे
भेजा है उसे ज़रूर अंजाम देगा।
12 तुम खुशी मनाते हुए निकलोगे[4]
और तुम्हें सही-सलामत वापस
लाया जाएगा।[5]
तुम्हें आते देख पहाड़ और पहाड़ियाँ
खुशी से चिल्लाएँगे[6]
और मैदान के सब पेड़ तालियाँ
बजाएँगे।[7]
13 कँटीली झाड़ियों की जगह सनोवर
के पेड़ उग आएँगे,[8]
बिच्छू-बूटी की जगह मेंहदी के पेड़
उग आएँगे।
इन सारी बातों से यहोवा का नाम
रौशन होगा[9]
और यह ऐसी निशानी होगी जो
कभी नहीं मिटेगी।"

56 यहोवा कहता है,
"न्याय की राह पर बने रहो[10]
और सही काम करो,
क्योंकि मैं जल्द ही तुम्हारा उद्धार
करूँगा
और अपनी नेकी दिखाऊँगा।[11]
2 सुखी है वह इंसान जो ऐसा
करता है
और जो इन बातों पर कायम
रहता है,
जो सब्त मनाता है और इसे
अपवित्र नहीं करता[12]
और जो हर तरह के बुरे काम करने
से दूर रहता है।

अध्य. 55
1 जक 8:23
2 यश 49:3; यश 60:9
3 1इत 28:9
4 भज 145:18; याकू 4:8
5 यहे 18:21; प्रेष 3:19
6 निर्ग 34:6; 2इत 33:12, 13
7 गि 14:18; भज 103:12, 13; यश 43:25
8 भज 40:5
9 भज 103:11

दूसरा कॉल.
1 गि 23:19; यश 46:11
2 यह 23:14; यश 45:23
3 भज 135:6; यश 46:10
4 यश 35:10
5 यश 54:13; यश 66:12
6 यश 42:11
7 यश 44:23
8 यश 41:19; यश 60:13
9 यिर्म 33:9

अध्य. 56
10 मी 6:8
11 यश 46:13; यश 51:5
12 यश 58:13, 14

3 यहोवा की उपासना करनेवाला पर-
देसी[1] यह न कहे,
‘यहोवा मुझे अपने लोगों में से
अलग कर देगा।’
और जो नपुंसक है वह यह न कहे,
‘देख! मैं तो सूखा पेड़ हूँ।’”

4 क्योंकि यहोवा कहता है, “जो नपुं-
सक मेरे ठहराए हुए सब्त मनाते हैं, वे
वही करते हैं जो मुझे पसंद है और मेरा
करार थामे रहते हैं,

5 मैं उन्हें अपने घर में, अपनी चार-
दीवारी के अंदर एक जगह*
और एक नाम दूँगा,
जो बेटे-बेटियों के होने से कहीं बढ़-
कर होगा।
मैं उन्हें ऐसा नाम दूँगा जो हमेशा
कायम रहेगा,
ऐसा नाम जो कभी नहीं मिटेगा।

6 और जो परदेसी यहोवा की सेवा
करने के लिए,
यहोवा के नाम से प्यार करने
के लिए[2]
और उसके सेवक बनने के लिए
आगे आते हैं,
जो सब्त मनाते हैं और उसे अपवित्र
नहीं करते,
जो मेरा करार थामे रहते हैं,

7 उन्हें भी मैं अपने पवित्र पर्वत पर
लाऊँगा,[3]
अपने प्रार्थना के घर में खुशियाँ
दूँगा,
उनकी होम-बलियाँ और बलिदान
अपनी वेदी पर कबूल करूँगा।
मेरा घर देश-देश के सब लोगों
के लिए प्रार्थना का घर कह-
लाएगा।”[4]

56:5 *या “स्मारक।”

अध्य. 56

1 यश 60:10, जक 8:23
2 मला 1:11
3 यश 2:3, मी 4:2, जक 8:3
4 1रा 8:29, 43, मत 21:13, मर 11:17, लूक 19:46

दूसरा कॉल.

1 व्य 30:3, यश 27:12, हो 1:11
2 यश 49:22, यश 60:4
3 यिर्म 12:9
4 यश 6:10, यश 29:10
5 यिर्म 6:13, 14, यहे 13:16
6 यहे 33:6
7 मी 3:6
8 यश 5:22, यश 28:7, हो 4:11

अध्य. 57

9 मी 7:2

8 सारे जहान का मालिक यहोवा, जो
इसराएल के तितर-बितर हुए लोगों को
इकट्ठा कर रहा है,[1] ऐलान करता है,
“जो लोग इकट्ठे किए जा चुके हैं,
उनके अलावा मैं औरों को भी
इकट्ठा करूँगा।”[2]

9 हे मैदान के जंगली जानवरो,
आओ!
हे जंगल के सारे जानवरो, खाने के
लिए आओ![3]

10 पहरेदार अंधे हैं,[4] उनमें से कोई
ध्यान नहीं देता,[5]
सब-के-सब गूँगे कुत्ते हैं जो भौंक
नहीं सकते,[6]
वे बस लेटे रहते हैं और हाँफते
रहते हैं, उन्हें तो अपनी नींद
प्यारी है।

11 वे ऐसे भूखे कुत्ते हैं,
जिनका पेट* कभी नहीं भरता।
वे ऐसे चरवाहे हैं जिनमें कोई समझ
नहीं,[7]
सब अपनी मनमानी करते हैं,
हर कोई अपने फायदे के लिए बेई-
मानी करता है और कहता है,

12 “आओ, हम दाख-मदिरा पीएँ,
पीकर नशे में चूर हो जाएँ।[8]
कल का दिन आज जैसा होगा
बल्कि आज से भी अच्छा होगा।”

57 नेक जन मिट गया है,
पर किसी को इसकी परवाह
नहीं।
वफादार लोग छीन लिए गए हैं,*[9]
पर कोई नहीं सोचता कि नेक जन
को मुसीबतों ने# छीन लिया है।

56:11 *या “जी।” 57:1 *यानी मौत ने
छीन लिया है। #या शायद, “मुसीबतों से
बचाने के लिए।”

2 अब उसे चैन मिला है।
जितने भी सीधाई से चलते हैं,
उन्हें अपने बिस्तर पर* आराम
मिला है।
3 "हे टोना-टोटका करनेवाली के
बेटो,
हे व्यभिचार करनेवाले की औलादो,
हे वेश्या की संतानो, इधर आओ!
4 तुम किसकी हँसी उड़ा रहे हो?
मुँह फाड़कर किसे जीभ दिखा
रहे हो?
क्या तुम पापियों के बच्चे नहीं?
झूठे लोगों की संतान नहीं?[1]
5 क्या तुम बड़े-बड़े पेड़ों[2] के नीचे,
हर घने पेड़ के नीचे[3] काम-इच्छा से
मचल नहीं उठते?
क्या तुम घाटियों में, खड़ी चट्टान की
दरारों में,
अपने बच्चों की बलि नहीं चढ़ाते?[4]
6 तूने* घाटी के चिकने-चिकने
पत्थरों को चुन लिया है,[5]
वही तेरा हिस्सा हैं।
उन्हीं को तू अर्घ चढ़ाती और भेंट
के चढ़ावे देती है।[6]
क्या यह सब देखकर मैं खुश
होऊँगा?#
7 तूने एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर
अपना बिस्तर सजाया[7]
और वहाँ तू बलि चढ़ाने के लिए
गयी।[8]
8 दरवाज़े के पीछे और चौखट पर
तूने अपने देवताओं की निशानी
बनायी,
तूने मुझे छोड़ दिया, अपने कपड़े
उतारे
और ऊपर जाकर अपना बिस्तर
चौड़ा किया।
तूने उनके साथ करार किया,
उनके साथ सोना तुझे अच्छा लगा[1]
और तूने पुरुष-लिंग देखे।*
9 तू तेल और ढेर सारा इत्र लेकर
मेलेक* के पास गयी।
तूने अपने दूतों को दूर-दूर भेजा।
इस तरह तू नीचे कब्र में उतर
गयी।
10 तू अलग-अलग राहों पर चलते-
चलते थक गयी है,
फिर भी तू नहीं कहती, 'ये सब
बेकार है।'
तुझमें नया जोश भर आया है,
इसलिए तू रुकने का नाम नहीं ले
रही।*
11 तू किसका डर मानकर झूठ बोलने
लगी?[2]
तूने मुझे याद नहीं रखा,[3]
मेरी किसी बात पर ध्यान नहीं
दिया।[4]
मैं चुप रहा, तेरी करतूतों को बर-
दाश्त करता रहा,[5]
इसलिए तूने मेरा डर मानना छोड़
दिया है।
12 तेरी नेकी[6] और तेरे कामों का[7] तुझे
कोई फायदा नहीं होगा,[8]
क्योंकि मैं इनका परदाफाश कर
दूँगा।
13 जब तू मदद के लिए पुकारेगी,
तब जिन मूरतों को तूने जमा

57:2 *यानी कब्र में। 57:6 *सिय्योन या यरूशलेम नगरी की बात की गयी है। #या "खुद को दिलासा दूँगा?"

57:8 *शायद मूर्तिपूजा की बात की गयी है। 57:9 *या शायद, "राजा।" 57:10 *शा., "तू नहीं थकी।"

अध्य. 57
1 यश 1:4 यश 30:9
2 यश 1:29
3 व्य 12:2 1रा 14:22, 23
4 2रा 16:1, 3 यिर्म 7:31
5 यिर्म 3:9
6 यिर्म 7:18
7 यिर्म 2:20 यहे 16:16 यहे 23:17
8 यहे 20:28

दूसरा कॉल.
1 यहे 16:25, 33 यहे 23:18
2 यश 30:9, 10 यश 59:3
3 यश 1:3 यिर्म 2:32 यिर्म 9:3
4 यश 42:24, 25
5 भज 50:21
6 यश 58:2
7 यश 66:3
8 यिर्म 7:4 मी 3:4

किया है, वे तुझे बचा न
सकेंगी।[1]
हवा उन सबको उड़ा ले जाएगी,
एक फूँक में ही वे उड़ जाएँगी।
लेकिन जो मुझमें पनाह लेता है वही
देश में बसेगा
और मेरे पवित्र पहाड़ को अपने
अधिकार में कर लेगा।[2]
14 तब यह कहा जाएगा, 'सड़क
बनाओ! रास्ता तैयार करो![3]
मेरे लोगों की राह से हर रुकावट
दूर करो।'"
15 क्योंकि जो सबसे महान है, जो सदा
तक जीवित रहता है[4]
और जिसका नाम पवित्र है,[5] वह
कहता है,
"भले ही मैं ऊँची और पवित्र जगह
में रहता हूँ,[6]
मगर मैं उनके संग भी रहता हूँ जो
कुचले हुए और मन से दीन हैं
ताकि दीन जनों की हिम्मत बँधाऊँ
और कुचले हुओं में नयी जान
डाल दूँ।[7]
16 मैं सदा तक उनका विरोध नहीं
करूँगा,
न मेरा गुस्सा हमेशा तक बना
रहेगा।[8]
कहीं ऐसा न हो कि मेरी वजह से
इंसान* कमज़ोर हो जाए,[9]
हाँ, साँस लेनेवाला हर जीव जिसे
मैंने बनाया है, कमज़ोर न पड़
जाए।
17 इसराएल को पाप करते देख,
बेईमानी की कमाई बटोरते देख मैं
भड़क उठा,[10]
इसलिए मैंने उसे मारा और गुस्से में
अपना मुँह फेर लिया।
फिर भी वह बागी बनकर[1] अपनी
मनमानी करता रहा।
18 मैं उसकी चाल देखता आया हूँ,
फिर भी मैं उसे चंगा करूँगा[2] और
उसकी अगुवाई करूँगा,[3]
उसे और मातम मनानेवाले उसके
लोगों को दिलासा दूँगा।"[4]
19 यहोवा कहता है, "मैं ही होंठों के
फल का रचनेवाला हूँ,
मैं लोगों को शांति देता रहूँगा फिर
चाहे वे दूर हों या पास[5]
और उन्हें चंगा करूँगा।"
20 "मगर दुष्ट लोग अशांत समुंदर
जैसे हैं, जिसकी लहरें थमने का
नाम नहीं लेतीं
और जिसका पानी काई और
कीचड़ उछालता रहता है।
21 दुष्टों को कभी शांति नहीं
मिलती।"[6] यह बात मेरे पर-
मेश्वर ने कही है।

58

उसने मुझसे कहा, "चुप मत
रह, गला फाड़कर चिल्ला!
नरसिंगे की तरह ऊँची आवाज़ में
चिल्ला।
मेरे लोगों को उनके अपराध बता,[7]
याकूब के घराने को उसके पाप
सुना।
2 वे हर दिन मेरी खोज में रहते हैं,
मेरी राहों को जानने के लिए ऐसे
खुश होते हैं,
मानो वे नेकी की राह पर चलने-
वाला राष्ट्र हों,
जिसने अपने परमेश्वर के नियमों
को कभी न टाला हो।[8]
वे मेरे नेक फैसलों के बारे में ऐसे
पूछते हैं,

57:16 * शा., "इंसान का मन।"

अध्य. 57
1 न्या 10:14; यश 42:17
2 यश 56:6, 7; यश 66:20; यहे 20:40; योए 3:17
3 यश 35:8; यश 40:3; यश 62:10
4 उत 21:33; भज 90:2; यश 40:28; 1ती 1:17
5 निर्ग 15:11; लूक 1:46, 49
6 1रा 8:27
7 भज 34:18; भज 147:3; यश 61:1; यश 66:2
8 भज 103:9; मी 7:18
9 अय 34:14, 15
10 यिर्म 6:13; यिर्म 8:10

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 3:14
2 यिर्म 33:6; हो 14:4
3 यश 49:10
4 यश 12:1; यश 61:2; विल 1:4
5 यश 48:18; इफ 2:17
6 नीत 13:9; यश 3:11

अध्य. 58
7 यश 1:2; यश 31:6; यश 59:13
8 यश 29:13; यहे 33:32

मानो उन्हें अपने परमेश्वर के
करीब आने में खुशी मिल
रही हो।[1]
3 वे कहते हैं, 'जब हम उपवास करते
हैं तब तू क्यों नहीं देखता?[2]
जब हम अपने पापों के लिए दुख
मनाते हैं तब तू क्यों ध्यान नहीं
देता?'[3]
क्योंकि तुम उपवास के दिन भी
अपनी इच्छा* पूरी करने में लगे
रहते हो,
अपने मज़दूरों पर ज़ुल्म ढाते हो।[4]
4 उपवास के दिन लड़ाई-झगड़ा
करते हो
और करारे मुक्के जमाते हो।
जिस तरह के उपवास तुम आजकल
करते हो, उससे स्वर्ग में तुम्हारी
नहीं सुनी जाएगी।
5 क्या मैंने तुम्हें इस तरह उपवास
करने को कहा है
कि तुम उस दिन खुद को दुख पहुँ-
चाओ,
लंबी-लंबी घास की तरह अपना
सिर झुकाओ,
टाट और राख को अपना बिस्तर
बनाओ?
क्या तुम इसे उपवास कहते हो?
क्या इस तरह यहोवा को खुश
किया जाता है?
6 नहीं! मैं जो उपवास चाहता हूँ वह
यह है
कि तुम अन्याय की बेड़ियाँ तोड़ दो,
जुए के बंधन खोल दो,[5]
ज़ुल्म सहनेवालों को रिहा करो,[6]
हर जुए के दो टुकड़े कर दो।
7 अपनी रोटी भूखों के साथ बाँटो,[7]

58:3 *या "खुशी।"

अध्य. 58
1 यश 1:14, 15
2 मला 3:14
3 लैव 16:29
4 यिर्म 34:15, 16
मी 3:2-4
5 यिर्म 34:8, 9
6 नीत 28:27
7 भज 41:1
भज 112:9
नीत 19:17
नीत 22:9

दूसरा कॉल.
1 यहे 18:7, 8
याकू 2:15, 16
1यूह 3:17
2 नीत 4:18
3 निर्ग 14:19
यश 52:12
4 यश 32:6
यश 59:3
5 व्य 15:7, 8
6 भज 37:5, 6
7 यश 49:10
8 यश 61:11
यिर्म 31:12

गरीब और बेघर लोगों को अपने
घर में पनाह दो,
किसी को नंगा देखकर उसे तन
ढकने के लिए कपड़े दो,[1]
अपने जाति भाइयों से मुँह मत
मोड़ो।
8 तब तुम्हारी रौशनी सुबह की
किरणों की तरह चमकेगी[2]
और जल्द ही तुम चंगे हो जाओगे।
नेकी तुम्हारे आगे-आगे चलेगी
और यहोवा का तेज तुम्हारी रक्षा
के लिए पीछे-पीछे आएगा।[3]
9 तुम यहोवा से फरियाद करोगे और
वह तुम्हें जवाब देगा,
तुम मदद के लिए उसे पुकारोगे
और वह कहेगा, 'मैं यहाँ हूँ।'
अगर तुम अपने बीच से जुआ
फेंक दो,
दूसरों पर उँगली उठाना बंद करो,
उनके बारे में गलत बातें बोलना
छोड़ दो,[4]
10 अगर तुम किसी भूखे को वह चीज़
दो जो खुद तुम्हें चाहिए[5]
और सताए हुओं का पूरा खयाल
रखो,
तब तुम्हारी रौशनी अँधेरे में भी
चमकेगी
और तुम्हारा अंधकार, भरी दोपहरी
की तरह जगमगाएगा।[6]
11 यहोवा हमेशा तुम्हारे आगे-आगे
चलेगा
और सूखे देश में भी तुम्हें तृप्त
करेगा,[7]
वह तुम्हारी हड्डियों में जान फूँक
देगा
और तुम सिंचे हुए बाग की तरह
हरे-भरे हो जाओगे,[8]

उस सोते की तरह हो जाओगे जो
कभी नहीं सूखता।
12 तुम्हारे लिए पुराने खंडहर फिर से
बनाए जाएँगे,[1]
जो नींव सदियों से उजाड़ पड़ी हैं
उन्हें दोबारा डाला जाएगा।[2]
तुम्हें टूटी शहरपनाह की मरम्मत
करनेवाला कहा जाएगा,[3]
उन रास्तों का बनानेवाला कहा
जाएगा, जिनके आस-पास फिर
से लोग बसेंगे।
13 अगर तुम सब्त के दिन, मेरे पवित्र
दिन अपनी ख्वाहिशें पूरी करने
से दूर रहो,[4]
इसे अपार खुशी का दिन, यहोवा
का पवित्र दिन मानकर इसका
आदर करो,[5]
अपनी ख्वाहिशें पूरी करने और
बेकार की बातें करने के बजाय
इस दिन को खास समझो,
14 तब तुम्हें यहोवा के कारण अपार
खुशी मिलेगी।
तब मैं धरती की ऊँची-ऊँची जगहों
को तुम्हारे अधीन कर दूँगा[6]
और तुम्हारे पुरखे की ज़मीन से
तुम्हें उपज खिलाऊँगा,*
हाँ, याकूब की विरासत की
ज़मीन से।[7]
यह बात यहोवा ने कही है।"

59 देखो! यहोवा का हाथ इतना
छोटा नहीं कि बचा न सके,[8]
न ही उसके कान इतने कमज़ोर हैं
कि वह सुन न सके।[9]
2 तुम्हारे गुनाह ही तुम्हें अपने पर-
मेश्वर से दूर ले गए हैं।[10]
तुम्हारे पापों की वजह से ही उसने
अपना मुँह फेर लिया है
और वह तुम्हारी नहीं सुनना
चाहता।[1]
3 तुम्हारे हाथ खून से दूषित हैं[2]
और तुम्हारी उँगलियाँ गुनाह से।
तुम्हारे होंठ झूठ बोलते हैं[3] और
तुम्हारी ज़बान बुरी बातें।
4 कोई भी नेकी की बातों का ऐलान
नहीं करता,[4]
कोई भी सच बोलने के लिए
अदालत नहीं जाता,
लोग खोखली बातों पर भरोसा
करते हैं[5] और बेकार की बातें
करते हैं।
उन्हें मुसीबत का गर्भ ठहरता है
और वे बुराई को जन्म देते हैं।[6]
5 वे ज़हरीले साँप के अंडे देते हैं,
अंडा फूटने पर उसमें से ज़हरीला
साँप निकलता है।
जो उन अंडों को खाएगा, मर
जाएगा।
वे लोग मकड़ी का जाल भी
बुनते हैं,[7]
6 मगर वह कपड़े का काम नहीं देता,
वे जो कुछ बुनते हैं, उससे अपना
तन नहीं ढक सकते।[8]
उनके काम तबाही मचाते हैं,
वे खून-खराबा करते हैं।[9]
7 उनके पैर बुराई की तरफ दौड़ते हैं,
वे मासूमों का खून बहाने के लिए
फुर्ती करते हैं,[10]
वे अपने मन में बुरा करने की
सोचते हैं,
दूसरों को बरबाद करना और दुख
देना ही उनका काम है।[11]
8 वे अमन की राह पर चलना जानते
ही नहीं,
उनकी डगर में इंसाफ नाम की कोई
चीज़ नहीं।[12]

अध्य. 58
1 नहे 2:5; यिर्म 31:38
2 यश 61:4
3 नहे 6:1; आम 9:11, 14
4 नहे 13:15; यश 56:2; यिर्म 17:21
5 व्य 5:12-14
6 व्य 32:13
7 भज 105:10, 11; यिर्म 3:18

अध्य. 59
8 गि 11:23; यश 50:2
9 भज 116:1
10 यिर्म 5:25

दूसरा कॉल.
1 व्य 31:16, 17; व्य 32:20; यश 57:17; यहे 39:23; मी 3:4
2 यश 1:15; यिर्म 2:34; यहे 7:23
3 यिर्म 7:9, 10; यहे 13:8
4 यिर्म 5:1; यहे 22:30; मी 7:2
5 यश 30:12, 13
6 मी 2:1
7 अय 8:13, 14
8 यश 57:12
9 यिर्म 6:7; मी 6:12
10 यिर्म 22:17; यहे 9:9; मत 23:35
11 रोम 3:15-17
12 यश 5:7; यश 59:15; यिर्म 5:1; आम 6:12; हब 1:4

58:14 * या "ज़मीन का मज़ा लेने दूँगा।"

उन्होंने अपने रास्ते टेढ़े-मेढ़े बना
लिए हैं,
जो कोई उन पर चलता है उसे
शांति नहीं मिलेगी।[1]
9 इसीलिए इंसाफ हमसे कोसों दूर है
और नेकी हम तक पहुँच नहीं
पाती।
हम रौशनी की उम्मीद करते रहते
हैं, पर अँधेरा ही मिलता है,
हम उजाले की आस देखते रहते हैं,
मगर घुप अँधेरे में चलते हैं।[2]
10 हम अंधों की तरह दीवार
टटोलते हैं,
ऐसे टटोलते हुए चलते हैं मानो
हमारी आँखें ही न हों।[3]
भरी दोपहरी में ऐसे ठोकर खाते
हैं मानो शाम का अँधेरा छा
गया हो।
ताकतवरों के बीच हम ज़िंदा लाश
बनकर रह गए हैं।
11 हम सब भालू की तरह गुर्राते हैं,
फाख्ते की तरह विलाप करते हैं।
हम न्याय की उम्मीद करते हैं, मगर
हमें न्याय नहीं मिलता,
उद्धार की आस लगाते हैं, मगर वह
हमसे कोसों दूर है,
12 क्योंकि हमारे अपराध तेरे सामने
अनगिनत हैं,[4]
हमारा एक-एक पाप हमारे खिलाफ
गवाही दे रहा है।[5]
हम अपने अपराधों से अनजान
नहीं,
हमें अपने गुनाह अच्छी तरह
मालूम हैं।[6]
13 हमने अपराध किया और यहोवा
को जानने से इनकार किया,
अपने परमेश्वर के पीछे चलना
छोड़ दिया।
हमने अत्याचार और विद्रोह करने
की सोची,[1]
अपने दिल में झूठी बातें गढ़ीं और
हम उन्हें ज़बान पर भी लाए।[2]
14 न्याय को खदेड़ दिया गया है[3]
और नेकी दूर हटकर खड़ी हो
गयी है,[4]
क्योंकि शहर के चौक पर सच्चाई*
दम तोड़ रही है
और सीधाई अंदर नहीं आ पा
रही है।
15 सच्चाई* खत्म हो चुकी है,[5]
बुरी राह छोड़नेवालों को लूटा जा
रहा है।
यह देखकर यहोवा को बहुत गुस्सा
आया
कि कहीं भी न्याय नहीं रहा।[6]
16 उसे ताज्जुब हुआ कि कोई कुछ नहीं
कर रहा,
उनकी तरफ से बोलनेवाला एक भी
आदमी नहीं।
तब उसने अपने बाज़ू की ताकत से
उद्धार दिलाया*
और उसकी नेकी ने उसका साथ
दिया।
17 उसने नेकी का बख्तर पहना,
सिर पर उद्धार* का टोप रखा,[7]
बदला लेने की पोशाक
और जोश का चोगा पहन लिया।[8]
18 वह उन्हें उनके कामों का फल
देगा:[9]
अपने शत्रुओं पर क्रोध बरसाएगा,
दुश्मनों को दंड देगा[10]
और द्वीपों को उनके किए की सज़ा
देगा।

59:14, 15 *या "ईमानदारी।" **59:16** *या "से जीत हासिल की।" **59:17** *या "जीत।"

अध्य. 59
1 यिर्म 8:15
2 यश 5:30
3 व्य 28:15, 29
4 यश 1:5; यहे 5:5, 6
5 यिर्म 14:7; हो 5:5
6 एज 9:13; नहे 9:33; दान 9:5

दूसरा कॉल.
1 यश 31:6; यश 32:6; यिर्म 17:13
2 यिर्म 5:23
3 भज 82:2; हब 1:4
4 यश 5:22, 23
5 यश 48:1
6 मी 3:2
7 इफ 6:17; 1थि 5:8
8 व्य 32:35; भज 94:1
9 अय 34:11; भज 62:12; यिर्म 17:10
10 यश 1:24; विल 4:11; यहे 5:13

19 तब पश्चिम के लोग यहोवा के नाम
का डर मानेंगे,
पूरब के लोग उसकी महिमा देखकर
खौफ खाएँगे,
क्योंकि वह नदी की तेज़ धारा की
तरह चला आएगा,
मानो यहोवा की ज़ोरदार शक्ति उसे
बहाकर ला रही हो।
20 यहोवा ऐलान करता है, "सिय्योन
में छुड़ानेवाला[1] आ रहा है![2]
वह याकूब के उन वंशजों के लिए
आ रहा है, जिन्होंने अपराध छोड़
दिया है।"[3]

21 यहोवा कहता है, "मैं उनके साथ
यह करार करूँगा:[4] मेरी पवित्र शक्ति जो
तुझ पर ठहरी है और मेरी बातें जो मैंने
तेरे मुँह में डाली हैं, वे तेरे, तेरे बच्चों और
पोतों के मुँह से कभी नहीं ली जाएँगी, न
तो आज और न ही आगे कभी।" यह
बात यहोवा ने कही है।

60 "हे औरत, उठ![5] उठकर
रौशनी चमका क्योंकि तेरी
रौशनी आ गयी है,
यहोवा की महिमा का तेज तुझ पर
चमका है।[6]
2 देख! धरती पर अँधेरा होनेवाला है,
राष्ट्रों पर घोर अंधकार
छानेवाला है।
मगर तुझ पर यहोवा उदय होगा,
उसकी महिमा का तेज तुझ पर
दिखायी देगा।
3 राष्ट्रों के लोग तेरी रौशनी की तरफ
आएँगे[7]
और राजा[8] तेरे ऐश्वर्य और
वैभव* की ओर।[9]

4 आँख उठाकर अपने चारों
तरफ देख!
वे सब इकट्ठा हो गए हैं और तेरे
पास आ रहे हैं,
तेरे बेटे दूर-दूर से आ रहे हैं,[1]
तेरी बेटियों को गोद में उठाकर
लाया जा रहा है।[2]
5 उस वक्त तेरा चेहरा दमक उठेगा,[3]
तेरा दिल उछल पड़ेगा और खुशी से
भर जाएगा,
क्योंकि समुंदर की दौलत तेरे पास
चली आएगी,
राष्ट्रों का खज़ाना तेरे पास
आएगा।[4]
6 तेरा देश* ऊँटों के कारवाँ से भर
जाएगा,
हाँ, मिद्यान और एपा[5] के जवान
ऊँट वहाँ उमड़ पड़ेंगे।
शीबा के सारे लोग आएँगे,
वे अपने साथ सोना और लोबान
लाएँगे,
आकर यहोवा के गुण गाएँगे।[6]
7 केदार[7] की सारी भेड़-बकरियाँ तेरे
पास इकट्ठा होंगी,
नबायोत[8] के मेढ़े तेरी सेवा में
हाज़िर होंगे।
वे मेरी वेदी पर चढ़ाए जाएँगे और
मैं उन्हें कबूल करूँगा,[9]
मैं अपने शानदार भवन की शोभा
बढ़ाऊँगा।[10]
8 ये कौन हैं जो बादलों की तरह उड़े
चले आ रहे हैं?
कबूतरों की तरह अपने कबूतरखाने
की ओर आ रहे हैं?
9 द्वीप मुझ पर आस लगाएँगे।[11]

60:3 *या "तेरे भोर के उजाले।"

60:6 *शा., "तू।"

अध्या. 59
1 यश 48:17
2 यश 62:11
3 व्य 30:1-3; रोम 11:26
4 रोम 11:27

अध्या. 60
5 यश 51:17; यश 52:1
6 यश 60:19, 20
7 यश 11:10
8 यश 49:23
9 प्रक 21:23, 24

दूसरा कॉल.
1 यश 49:17, 18; यश 54:1
2 यश 49:21, 22
3 यिर्म 33:9
4 यश 61:6; हाग 2:7, 8
5 1इत 1:32, 33
6 मला 1:11
7 यश 42:11
8 उत 25:13
9 निर्ग 29:39, 42; यश 56:6, 7
10 हाग 2:9
11 यश 51:5

तरशीश के जहाज़ सबसे आगे हैं,*
वे तेरे बेटों को दूर-दूर से ला
रहे हैं,[1]
उनका सोना-चाँदी भी साथ ला
रहे हैं
कि तेरे परमेश्वर यहोवा के नाम
की, इसराएल के पवित्र परमेश्वर
की बड़ाई हो,
क्योंकि परमेश्वर तेरी शोभा
बढ़ाएगा।[2]
10 परदेसी तेरी शहरपनाह बनाएँगे,
उनके राजा तेरी सेवा करेंगे।[3]
मैंने क्रोध से भरकर तुझे मारा था,
पर अब तुझसे खुश होकर तुझ पर
दया करूँगा।[4]
11 तेरे फाटक दिन-रात खुले रहेंगे,[5]
वे कभी बंद नहीं किए जाएँगे
ताकि राष्ट्रों की दौलत तेरे पास
लायी जा सके
और ऐसा करने में उनके राजा
सबसे आगे होंगे।[6]
12 जो राष्ट्र और राज्य तेरी सेवा नहीं
करेंगे, उन्हें मिटा दिया जाएगा,
उन राष्ट्रों को खाक में मिला दिया
जाएगा।[7]
13 सनोवर, एश और सरो के पेड़,[8]
हाँ, लबानोन की शान, खुद चलकर
तेरे पास आएगी[9]
ताकि मेरे पवित्र-स्थान की
शोभा बढ़े।
मैं अपने पाँव की जगह को महिमा
से भर दूँगा।[10]
14 जिन्होंने तुझे सताया था, उनके बेटे
आकर तेरे आगे झुकेंगे,
तेरा अपमान करनेवाले तेरे पैरों पर
गिरकर तुझे प्रणाम करेंगे।
उन्हें कहना पड़ेगा कि तू यहोवा की
नगरी है,
इसराएल के पवित्र परमेश्वर की
सिय्योन नगरी।[1]
15 तुझे छोड़ दिया गया, तुझसे नफरत
की गयी और तुझमें से होकर
कोई नहीं जाता,[2]
पर अब मैं तुझे हमेशा के लिए गर्व
करने की वजह बना दूँगा,
तू पीढ़ी-पीढ़ी तक खुशियाँ मनाने
की वजह बन जाएगी।[3]
16 तू राष्ट्रों का दूध पीएगी,[4]
हाँ, राजाओं की छाती से पीएगी[5]
और तू जान लेगी कि मैं यहोवा,
तेरा उद्धारकर्ता हूँ,
याकूब का शक्तिशाली परमेश्वर,
तेरा छुड़ानेवाला हूँ।[6]
17 मैं ताँबे के बदले सोना,
लोहे के बदले चाँदी,
लकड़ी के बदले ताँबा
और पत्थर के बदले लोहा
लाऊँगा।
मैं शांति को ठहराऊँगा कि तेरी
निगरानी करे
और नेकी तुझे काम सौंपेगी।[7]
18 तेरे देश में फिर कभी हिंसा नहीं
होगी,
न तेरी सीमाओं के अंदर तबाही
और बरबादी मचेगी।[8]
तू अपनी शहरपनाह का नाम
उद्धार[9] और अपने फाटकों का
नाम तारीफ रखेगी।
19 तेरी रौशनी न दिन के सूरज से
होगी,
न चाँद की चाँदनी से,
बल्कि यहोवा सदा के लिए तेरी
रौशनी बनेगा[10]

60:9 * या "पहले की तरह आ रहे हैं।"

अध्य. 60
1 यश 60:4; यश 66:20
2 भज 149:4; यश 52:1; यश 55:5
3 एज 7:27; नहे 2:7, 8; यश 49:23
4 व्य 30:3; भज 30:5; यश 54:7; यश 57:17, 18
5 प्रक 21:25, 26
6 यश 60:3, 5
7 यश 41:11
8 यश 41:19; यश 55:13
9 यश 35:1, 2
10 भज 132:7

दूसरा कॉल.
1 यश 62:12
2 2इत 36:20, 21; यश 49:14; यिर्म 30:17; विल 1:4
3 यश 35:10; यश 61:7; यिर्म 33:10, 11
4 यश 61:6
5 यश 49:23
6 यश 49:26
7 यश 1:26; यश 32:1
8 यश 2:4; यश 11:9; यश 54:14; जक 9:8
9 यश 26:1
10 भज 36:9; यश 60:1; प्रक 21:23; प्रक 22:5

और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा
ठहरेगा।[1]
20 अब से तेरा सूरज कभी नहीं डूबेगा,
न तेरे चाँद की चाँदनी फीकी
पड़ेगी।
मातम मनाने के तेरे दिन
खत्म हुए,[2]
क्योंकि यहोवा सदा के लिए तेरी
रौशनी बनेगा।[3]
21 तेरे सभी लोग नेक होंगे,
वे इस देश में सदा बसे रहेंगे।
वे मेरे लगाए हुए पौधे और मेरे
हाथ के काम ठहरेंगे,[4]
जिनसे मेरी महिमा हो।[5]
22 थोड़े-से-थोड़ा, एक हज़ार हो
जाएगा
और छोटे-से-छोटा, ताकतवर राष्ट्र
बन जाएगा।
मैं यहोवा, ठीक समय पर इस काम
में तेज़ी लाऊँगा।"

61 सारे जहान के मालिक
यहोवा की पवित्र शक्ति मुझ
पर है,[6]
यहोवा ने मेरा अभिषेक किया है
कि मैं दीन लोगों को खुशखबरी
सुनाऊँ।[7]
उसने मुझे भेजा है ताकि
मैं टूटे मनवालों की मरहम-
पट्टी करूँ,
बंदियों को रिहाई का पैगाम दूँ,
कैदियों को संदेश दूँ कि उनकी
आँखें खोली जाएँगी,[8]
2 यहोवा की मंज़ूरी पाने के साल का
प्रचार करूँ,
हमारे परमेश्वर के बदला लेने के
दिन[9] के बारे में बताऊँ,
शोक मनानेवाले सभी लोगों को
दिलासा दूँ,[1]
3 सिय्योन पर मातम मनानेवालों को
राख के बजाय सुंदर पगड़ी दूँ,
मातम के बजाय उन पर हर्ष का
तेल मलूँ
और निराश मन के बजाय उन्हें
तारीफ का कपड़ा पहनाऊँ।
वे नेकी के बड़े-बड़े पेड़ कहलाएँगे,
यहोवा के लगाए पेड़ ताकि उसकी
महिमा हो सके।*[2]
4 वे पुराने खंडहरों को फिर से खड़ा
करेंगे,
लंबे समय से उजाड़ पड़ी जगहों को
दोबारा बसाएँगे,[3]
तहस-नहस हो चुके शहरों की
मरम्मत करेंगे,[4]
हाँ, उन जगहों की जो पीढ़ी-पीढ़ी से
उजाड़ पड़ी थीं।[5]
5 "पराए लोग आकर तेरे झुंड के
चरवाहे बनेंगे,
परदेसी[6] तेरे खेत के किसान बनेंगे
और तेरे अंगूरों के बाग के माली
होंगे।[7]
6 मगर तुम यहोवा के याजक कह-
लाओगे,[8]
वे तुम्हें हमारे परमेश्वर के सेवक
बुलाएँगे।
तुम राष्ट्रों की दौलत का मज़ा
लोगे[9]
और उनकी शान* के बारे में गर्व
से बताओगे।
7 शर्मिंदगी की जगह अब मेरे लोगों
को दुगना भाग मिलेगा,
बेइज़्ज़ती की जगह वे अपना हिस्सा
पाकर जयजयकार करेंगे,

अध्या. 60
1 जक 2:4, 5
2 यश 25:8; यश 30:19; यश 35:10
3 भज 27:1; भज 84:11
4 यश 43:6, 7
5 यश 44:23

अध्या. 61
6 यश 42:1; मत 3:16
7 मत 11:4, 5; प्रेष 10:37, 38
8 लूक 4:17-21; लूक 7:22; प्रेष 26:17, 18
9 यश 34:8

दूसरा कॉल.
1 यश 25:8; मत 5:4; लूक 6:21
2 यश 60:21
3 यश 49:8; यश 51:3
4 यश 44:26; यश 58:12
5 यहे 36:33, 34
6 यश 60:10
7 यश 14:1, 2
8 निर्ग 19:6
9 यश 23:17, 18; यश 60:5, 7

61:3 *या "शोभा बढ़ सके।" **61:6** *या "दौलत।"

हाँ, उन्हें अपने देश में दुगना भाग
मिलेगा।[1]
उनकी खुशी का कोई अंत नहीं
होगा।[2]
8 क्योंकि मैं यहोवा, न्याय से प्यार
करता हूँ,[3]
मुझे लूटपाट और अन्याय से नफ-
रत है।[4]
मैं पूरी ईमानदारी से उन्हें उनका
इनाम दूँगा
और उनके साथ सदा का करार
करूँगा।[5]
9 उनकी संतान को सभी राष्ट्र
और उनके वंशजों को देश-देश के
लोग जान लेंगे।[6]
देखनेवाला हर कोई पहचान लेगा
कि ये वही संतान हैं, जिन पर
यहोवा की आशीष है।"[7]
10 मैं यहोवा के कारण खुशियाँ
मनाऊँगा,
मेरा मन अपने परमेश्वर के कारण
झूम उठेगा,[8]
क्योंकि उसने मुझे उद्धार की
पोशाक पहनायी है।[9]
जैसे एक दूल्हा, याजक की तरह
पगड़ी पहनता है,[10]
जैसे दुल्हन गहनों से खुद को
सजाती है,
वैसे ही उसने मुझे नेकी का बागा
पहनाया है।
11 जिस तरह धरती फसल उगाती है
और बाग बीजों को अंकुरित
करता है,
उसी तरह सारे जहान का मालिक
यहोवा,
सब राष्ट्रों के सामने अपनी नेकी[11]
और तारीफ बढ़ाएगा।[12]

62 मैं सिय्योन की खातिर तब तक
चुप नहीं रहूँगा,[1]
यरूशलेम की खातिर तब तक शांत
नहीं बैठूँगा,
जब तक उसकी नेकी तेज़ रौशनी
की तरह नहीं चमकती,[2]
जब तक उसका उद्धार जलती
मशाल की तरह नहीं दिखता।[3]
2 "हे औरत, देश-देश के लोग
तेरी नेकी
और सब राजा तेरी शान देखेंगे।[4]
तुझे एक नए नाम से बुलाया
जाएगा,[5]
उस नाम से, जो खुद यहोवा तुझे
देगा।
3 तू यहोवा के हाथ में खूबसूरत ताज
और अपने परमेश्वर के हाथ में
शाही पगड़ी ठहरेगी।
4 तुझे फिर कभी छोड़ी हुई औरत
नहीं कहा जाएगा,[6]
न कभी तेरे देश को उजाड़ कहा
जाएगा,[7]
बल्कि तुझे इस नाम से बुलाया
जाएगा, 'मेरी खुशी उसमें है'[8]
और तेरे देश को 'ब्याही हुई' कहा
जाएगा,
क्योंकि यहोवा तुझमें खुशी पाएगा
और तेरा देश ऐसा होगा मानो
उसकी शादी हुई हो।
5 जैसे एक जवान आदमी किसी
कुँवारी से शादी करता है,
वैसे ही तेरे लोग तुझसे शादी
करेंगे।
जैसे दूल्हा अपनी दुल्हन पाकर
फूला नहीं समाता,
वैसे ही तेरा परमेश्वर तुझे पाकर
फूला न समाएगा।[9]

अध्य. 61
1 जक 9:12
2 यश 35:10
3 व्य 32:4; भज 33:5; भज 37:28
4 नीत 6:16-19
5 यश 55:3; यिर्म 32:40
6 जक 8:13
7 यश 65:23
8 यश 65:13
9 यश 52:1; प्रक 21:2
10 निर्ग 28:39, 41
11 यश 45:8; यश 62:1
12 यश 58:11; यश 60:18; यश 62:7

दूसरा कॉल.

अध्य. 62
1 भज 102:13; जक 2:12
2 यश 1:26
3 यश 51:5
4 यश 49:23; यश 54:1; यश 60:1; यश 60:11
5 यिर्म 33:16
6 यश 49:14; यश 54:6
7 यश 32:14
8 भज 149:4; सप 3:17
9 यश 65:18, 19; यिर्म 32:41

6 हे यरूशलेम, तेरी शहरपनाह पर
मैंने पहरेदार बिठाए हैं।
वे कभी चुप नहीं रहेंगे, फिर चाहे
दिन हो या रात।
हे यहोवा की तारीफ करनेवालो,
चैन से मत बैठो,
7 उसे पुकारते रहो, जब तक कि वह
यरूशलेम को मज़बूती से कायम
न कर दे,
जब तक कि वह पूरी धरती पर उस
नगरी का नाम न फैला दे।"[1]
8 यहोवा ने अपना दायाँ हाथ, अपना
शक्तिशाली बाज़ू उठाकर यह
शपथ खायी है,
"मैं फिर कभी तेरा अनाज दुश्मनों
को नहीं खाने दूँगा,
न परदेसी तेरी नयी दाख-मदिरा
पीएँगे, जिसके लिए तूने कड़ी
मेहनत की है।[2]
9 मगर अनाज बटोरनेवाले ही उसे
खाएँगे और यहोवा का गुणगान
करेंगे,
अंगूर इकट्ठा करनेवाले ही मेरे
पवित्र आँगनों में इसे पीएँगे।"[3]
10 निकल जाओ, फाटकों से बाहर
निकल जाओ!
लोगों के लिए रास्ता तैयार करो,[4]
पत्थरों को हटाकर राजमार्ग
बनाओ,[5]
देश-देश के लोगों के लिए झंडा
खड़ा करो।[6]
11 सुनो! यहोवा ने धरती के छोर तक
ऐलान किया है,
"सिय्योन की बेटी से कहो,
'तेरा उद्धार होनेवाला है![7]
देख! परमेश्वर अपने साथ इनाम
लेकर आ रहा है,
जो मज़दूरी वह देगा, वह उसके
पास है।'"[1]
12 वे यहोवा के छुड़ाए हुए, उसके
पवित्र लोग कहलाएँगे[2]
और तेरे बारे में कहा जाएगा कि
'तू अपनायी गयी है, तू वह
नगरी है जिसे परमेश्वर ने नहीं
त्यागा।'[3]

63 यह कौन है जो एदोम[4] से चला
आ रहा है?
यह कौन है जो बोसरा[5] से उजले*
कपड़ों में,
शानदार पोशाक पहने ज़बरदस्त
ताकत के साथ चला आ रहा है?
"यह मैं हूँ जो नेकी की बातें
कहता हूँ,
जो उद्धार दिलाने की ज़बरदस्त
ताकत रखता हूँ।"
2 तेरे कपड़े लाल क्यों हैं?
तेरे कपड़े हौद में अंगूर रौंदनेवाले
की तरह क्यों हैं?[6]
3 "मैंने अकेले ही हौद में अंगूर
रौंदे हैं।
देश-देश के लोगों में से कोई भी मेरे
साथ नहीं था।
मैं अपने क्रोध में उनको रौंदता
गया,
अपनी जलजलाहट में उन्हें कुचलता
गया।[7]
उनके खून के छींटें मेरी पोशाक पर
आ पड़े,
इससे मेरे पूरे कपड़ों पर धब्बे लग
गए।
4 मैंने बदला लेने का दिन ठहरा
दिया था,[8]
वह साल तय कर दिया था जब मैं
अपने लोगों को छुड़ाऊँगा।

63:1 *या शायद, "चटक लाल रंग के।"

अध्य. 62
1 यश 61:11, यिर्म 33:9, सप 3:19, 20
2 व्य 28:49-51, यिर्म 5:17
3 व्य 14:23, यश 65:21, 22
4 यश 40:3, यश 48:20
5 यश 57:14
6 एज 1:1, 3, यश 11:12, यश 49:22
7 जक 9:9, मत 21:5, यूह 12:15

दूसरा कॉल.
1 यश 40:9, 10, प्रक 22:12
2 भज 107:2, 3
3 यश 54:7

अध्य. 63
4 भज 137:7, यश 34:5, 6
5 आम 1:12
6 योए 3:13, प्रक 14:19, 20, प्रक 19:15
7 यश 34:2
8 यश 34:8, यश 35:4, यश 61:1, 2

5 मैंने यहाँ-वहाँ देखा मगर मदद के
लिए कोई आगे नहीं आया,
मुझे बड़ी हैरानी हुई कि किसी ने
मेरा साथ नहीं दिया।
तब मैंने अपने बाज़ू की ताकत से
उद्धार दिलाया*[1]
और मेरी जलजलाहट ने मेरा साथ
दिया।
6 मैंने अपने क्रोध में देश-देश के
लोगों को कुचल डाला,
अपनी जलजलाहट का जाम पिला-
कर उन्हें धुत्त कर दिया[2]
और उनका खून ज़मीन पर उँडेल
दिया।"
7 मैं यहोवा के अटल प्यार का ऐलान
करूँगा,
यहोवा के उन कामों का बखान
करूँगा जो तारीफ के लायक हैं,
क्योंकि यहोवा ने हमारे लिए क्या-
कुछ नहीं किया।[3]
अपनी दया और महान अटल प्यार
की वजह से,
उसने इसराएल के घराने पर बहुत
उपकार किए हैं।
8 परमेश्वर ने कहा, "ये मेरे लोग हैं,
मेरे बेटे हैं, ये कभी विश्वासघात
नहीं करेंगे।"[4]
और वह उनका उद्धारकर्ता बन
गया।[5]
9 जब-जब वे तकलीफ में थे, उसे भी
तकलीफ हुई[6]
और उन्हें बचाने के लिए उसने
अपना दूत* भेजा।[7]
उसने प्यार और करुणा की वजह
से उन्हें छुड़ाया,[8]
प्राचीन समय से उन्हें गोद में लेकर
फिरता रहा।[1]
10 लेकिन उन्होंने बगावत की[2] और
उसकी पवित्र शक्ति को दुखी
किया।[3]
इसलिए वह उनका दुश्मन बन
गया[4] और उनसे लड़ा।[5]
11 तब वे पुराने दिनों को याद करने
लगे,
परमेश्वर के सेवक मूसा के दिनों
को और कहने लगे,
"कहाँ है वह, जो अपने लोगों और
उनके चरवाहों[6] को समुंदर से
निकाल लाया था?[7]
जिसने अपनी पवित्र शक्ति मूसा
पर* उँडेली थी?[8]
12 कहाँ है वह, जिसने अपने शक्ति-
शाली हाथ से मूसा का दायाँ हाथ
थामा था?[9]
जिसने लोगों के सामने पानी को दो
हिस्सों में बाँटा था[10]
कि उसका नाम हमेशा तक याद
रखा जाए?[11]
13 कहाँ है वह, जिसने गहरे सागर के
बीच उन्हें चलाया था
और वे बिना ठोकर खाए आगे
बढ़ते रहे,
जैसे कोई घोड़ा खुले मैदान* में दौड़
रहा हो?
14 फिर यहोवा की पवित्र शक्ति ने
उन्हें चैन दिया,[12]
जैसे मवेशी घाटी के मैदान में बैठ-
कर चैन पाते हैं।"
इस तरह तूने अपने लोगों का मार्ग-
दर्शन किया

63:5 *या "जीत दिलायी।" 63:9 *या "उसकी हाज़िरी में रहनेवाला स्वर्गदूत।"

63:11 *शा., "उस पर।" 63:13 *या "वीराने।"

अध्य. 63
1 यश 51:9 यश 52:10 यश 59:16
2 यिर्म 25:15, 16
3 भज 78:12 भज 105:5
4 निर्ग 24:7
5 निर्ग 14:30
6 निर्ग 3:7
7 निर्ग 14:19 निर्ग 23:20
8 व्य 7:8

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 19:4 व्य 1:31
2 व्य 9:7
3 प्रेष 7:51 इफ 4:30
4 लैव 26:14, 17 व्य 28:63
5 यिर्म 21:5
6 भज 77:20
7 निर्ग 14:30 यश 51:10
8 गि 11:16, 17
9 निर्ग 6:1, 6 निर्ग 15:16
10 निर्ग 14:21, 22
11 निर्ग 9:15, 16 निर्ग 14:17 रोम 9:17
12 यह 22:4

कि तेरा नाम गौरवशाली ठहरे।[1]
15 स्वर्ग से नीचे देख,
अपने ऊँचे बसेरे से, अपने पवित्र
और शानदार* निवास से देख।
तू मुझ पर ध्यान क्यों नहीं दे रहा?
अपनी शक्ति क्यों नहीं दिखा
रहा?
तेरे अंदर करुणा क्यों नहीं जाग
रही?[2] कहाँ गयी तेरी दया?[3]
तू क्यों मुझसे यह सब रोके हुए है?
16 तू हमारा पिता है।[4]
भले ही अब्राहम हमें जानने से
और इसराएल हमें पहचानने से
इनकार कर दे,
मगर हे यहोवा, तू हमारा पिता है।
प्राचीन समय से तू ही हमारा
छुड़ानेवाला है और यही तेरा
नाम है।[5]
17 हे यहोवा, तूने क्यों हमें अपनी राहों
से भटकने दिया?*
क्यों हमारे दिलों को कठोर होने
दिया# कि हमने तेरा डर मानना
छोड़ दिया?[6]
लौट आ, अपने सेवकों की खातिर
लौट आ!
उन गोत्रों की खातिर लौट आ, जो
तेरी जागीर हैं।[7]
18 तेरा देश कुछ समय के लिए तेरे
पवित्र लोगों के अधिकार में था,
फिर हमारे दुश्मनों ने आकर तेरा
पवित्र-स्थान रौंद डाला।[8]
19 अरसों तक हम ऐसे थे मानो तूने
हम पर राज ही न किया हो,
मानो हम कभी तेरे नाम से बुलाए
ही न गए हों।

63:15 *या "खूबसूरत।" **63:17** *या "भटका दिया?" #शा., "बना दिया।"

अध्य. 63
1 2शम 7:23; नहे 9:10
2 यिर्म 31:20
3 व्य 4:31; नहे 9:17
4 निर्ग 4:22
5 यश 41:14
6 यश 6:10
7 भज 74:2; भज 80:14, 15
8 2इत 36:19; यश 64:11; विल 1:10

दूसरा कॉल.

अध्य. 64
1 निर्ग 34:10
2 हब 3:6
3 भज 130:6-8; यश 25:9; मी 7:7; 1कुर 2:9
4 सप 2:3; प्रेष 10:34, 35
5 यश 1:21; यश 63:10
6 लैव 12:2; लैव 15:20

64 काश! तू आकाश को फाड़कर
नीचे उतर आए
और तेरे सामने पहाड़ काँप उठें।
2 यह ऐसा होगा जैसे आग झाड़-
झंखाड़ को जला देती है,
जैसे आग पानी को उबाल देती है,
तब तेरे दुश्मन तेरा नाम जान
जाएँगे
और देश-देश के लोग तेरे सामने
थरथराएँगे।
3 तूने हमारी उम्मीद से बढ़कर
विस्मयकारी काम किए,[1]
तू नीचे आया और पहाड़ तेरे सामने
काँप उठे।[2]
4 बीते समय से न तो कभी आँखों ने
देखा है,
न कानों ने सुना है कि तुझे छोड़
कोई दूसरा परमेश्वर है,
जो उस पर आस लगानेवालों* की
खातिर कदम उठाता है।[3]
5 तू उन लोगों की मदद करने
आता है,
जो खुशी-खुशी सही काम करते हैं,[4]
जो तुझे याद करते हैं और तेरी
राहों पर चलते हैं।
पर तू हम पर भड़क उठा क्योंकि
हम पाप-पर-पाप कर रहे थे,[5]
लंबे समय से इनमें लगे हुए थे।
भला हम कैसे बच सकते हैं!
6 हम सब-के-सब अशुद्ध इंसान जैसे
हो गए हैं
और हमारे सारे नेक काम माहवारी
के कपड़े जैसे।[6]
हम पत्तों की तरह मुरझा जाएँगे
और हमारे गुनाह हवा की तरह हमें
उड़ा ले जाएँगे।

64:4 *या "सब्र के साथ इंतज़ार करने-वालों।"

7 कोई भी इंसान तेरा नाम लेकर तुझे
नहीं पुकारता,
न तुझसे लिपटे रहने के लिए तरस-
ता है,
इसलिए तूने हमसे मुँह फेर
लिया है,[1]
हमें अपने गुनाहों की वजह से
घुल-घुलकर मरने के लिए छोड़
दिया है।
8 फिर भी हे यहोवा, तू हमारा
पिता है।[2]
हम मिट्टी के लोंदे हैं और तू हमारा
कुम्हार* है,[3]
हम सब तेरे हाथ के काम हैं।
9 हे यहोवा, हमसे इतना क्रोधित
न हो,[4]
हमारे गुनाहों को हमेशा के लिए
याद न रख।
मेहरबानी करके हम पर नज़र
डाल, हम सब तेरे ही लोग हैं।
10 तेरे पवित्र शहर उजाड़ पड़े हैं,
सिय्योन सुनसान हो चुका है,
यरूशलेम तबाह हो गया है।[5]
11 हमारा पवित्र और शानदार*
मंदिर,
जहाँ हमारे बाप-दादा तेरा गुणगान
करते थे,
आग से फूँक दिया गया है।[6]
जो चीज़ें हमें प्यारी थीं, वे सब
उजाड़ पड़ी हैं।
12 हे यहोवा, यह सब देखकर भी क्या
तू खुद को रोके रहेगा?
क्या तू खामोश रहेगा और हमें दुखों
से घिरा रहने देगा?[7]

64:8 *या "रचनेवाला।" 64:11 *या "खूबसूरत।"

अध्य. 64
1 व्य 31:17
यश 57:17
2 यश 63:16
3 यश 29:16
यश 45:9
यिर्म 18:6
4 भज 74:1
भज 79:5
5 भज 79:1
विल 1:4
विल 5:18
मी 3:12
6 2इत 36:17, 19
यिर्म 52:12, 13
7 भज 74:10, 11
जक 1:12

दूसरा कॉल.

अध्य. 65
1 यश 55:6, 7
2 रोम 10:20, 21
3 व्य 31:27
नहे 9:29
जक 7:11
4 यश 59:7, 8
यिर्म 35:15
5 यिर्म 5:23
6 2रा 17:16, 17
यिर्म 32:29
7 यश 1:29
यश 66:17
8 गि 19:16
9 लैव 11:7, 8
यश 66:17
10 व्य 14:3
11 भज 50:3, 21
यिर्म 16:18
यहे 11:21

65

"जिन्होंने मेरे बारे में नहीं पूछा,
उन्हें मैं मिल गया,
जिन्होंने मुझे नहीं ढूँढ़ा, उन्होंने मुझे
पा लिया।[1]
जो राष्ट्र मेरा नाम नहीं पुकारता,
उससे मैंने कहा, 'मैं यहाँ हूँ!'[2]
2 मैं ऐसे हठीले लोगों[3] के सामने
दिन-भर हाथ फैलाए रहा,
जो बुरी राह पर चलते हैं[4] और
अपने मन की करते हैं।[5]
3 ये लोग खुलेआम मेरी बेइज़्ज़ती
करते हैं,[6]
बगीचों में बलिदान चढ़ाते हैं,[7]
ईंटों पर बलि चढ़ाते हैं ताकि
धुआँ उठे,
4 कब्रों के बीच बैठते हैं,[8]
छिपने की जगहों* में रात
बिताते हैं,
सूअर का माँस खाते हैं[9]
और अपने बरतनों में अशुद्ध#
चीज़ों का शोरबा रखते हैं।[10]
5 वे कहते हैं, 'दूर खड़ा रह, मेरे पास
मत आ,
क्योंकि मैं तुझसे पवित्र हूँ।'*
ये लोग मेरी नाक में धुएँ की तरह
हैं और वे दिन-भर मुझे गुस्सा
दिलाते हैं,
जैसे कोई आग दिन-भर जलती
रहती है।
6 देखो! यह सब मेरे सामने लिखा
गया,
मैं चुप नहीं बैठूँगा,
उनके कामों का बदला उन्हें
चुकाऊँगा,[11]

65:4 *या शायद, "पहरा देने की झोंपड़ियों।" #या "घिनौनी।" 65:5 *या शायद, "वरना मेरी पवित्रता तुझे मिल जाएगी।"

हाँ, उन्हें पूरा-पूरा बदला दूँगा,
7 उन गुनाहों के लिए जो उन्होंने और
उनके पुरखों ने किए हैं।[1]
उन्होंने पहाड़ों पर बलिदान चढ़ाए
कि उनसे धुआँ उठे,
पहाड़ियों पर मेरा अपमान किया,[2]
इसलिए सबसे पहले मैं उन्हें उनके
कामों का पूरा-पूरा बदला दूँगा।"
यह बात यहोवा ने कही है।
8 यहोवा कहता है,
"अंगूर के गुच्छे से अगर नयी दाख-
मदिरा मिल सकती है तो लोग
कहते हैं,
'उसे नष्ट मत करो, उसमें अब भी
कुछ अच्छा* बाकी है।'
अपने सेवकों की खातिर भी मैं कुछ
ऐसा करूँगा,
मैं उन सबका नाश नहीं करूँगा।[3]
9 मैं याकूब से एक वंश निकालूँगा
और यहूदा से अपने पहाड़ों के लिए
एक वारिस लाऊँगा।[4]
मेरे चुने हुए लोग मेरे देश को अपने
अधिकार में कर लेंगे
और मेरे सेवक वहाँ बसेंगे।[5]
10 शारोन के मैदान[6] भेड़ों के लिए
चरागाह बन जाएँगे,
आकोर घाटी[7] गाय-बैलों के आराम
करने की जगह बन जाएगी,
यह सब मेरे उन लोगों के लिए होगा
जो मेरी खोज में रहते हैं।
11 मगर तुम उनमें से हो जिन्होंने
यहोवा को छोड़ दिया है,[8]
तुम मेरे पवित्र पहाड़ को भूल गए,[9]
तुम सौभाग्य देवता के लिए मेज़
सजाते हो,
भविष्य बतानेवाले देवता के

अध्य. 65
1 निर्ग 20:4, 5
लैव 26:39
2 1रा 22:41, 43
2रा 12:3
3 यिर्म 30:11
आम 9:8
4 यश 60:21
यहे 37:21
ओब 17
5 यश 61:7
सप 3:20
6 यश 33:9
7 यह 7:24
हो 2:15
8 यश 1:4
9 2इत 28:24
2इत 34:25

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:25
यहे 6:13
2 यहे 9:6
3 2इत 36:15, 16
4 यश 66:3
5 भज 37:19, 25
आम 8:11
6 यश 49:10
7 यश 66:14
8 यश 66:5

लिए मसालेवाली दाख-मदिरा का
प्याला भरते हो।
12 मैं बताता हूँ तुम्हारा भविष्य क्या
होगा,
तुम तलवार से मारे जाओगे,[1]
घात होने के लिए अपना सिर
झुकाओगे,[2]
क्योंकि मैंने तुम्हें बुलाया था मगर
तुमने कोई जवाब नहीं दिया,
मैंने तुम्हें समझाया था मगर तुमने
मेरी एक न सुनी।[3]
तुम उन्हीं कामों में लगे रहे जो मेरी
नज़र में बुरे थे
और तुमने वही चुना जो मुझे बिल-
कुल पसंद नहीं।"[4]
13 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है,
"देखो! मेरे सेवक खाएँगे, मगर तुम
भूखे रहोगे,[5]
मेरे सेवक पीएँगे,[6] मगर तुम प्यासे
रहोगे,
मेरे सेवक खुशियाँ मनाएँगे,[7] मगर
तुम शर्मिंदा होगे,[8]
14 देखो! मेरे सेवक जयजयकार
करेंगे क्योंकि उनका दिल खुश
होगा,
मगर तुम रोओगे क्योंकि तुम्हारा
दिल दुखी होगा,
तुम ज़ोर-ज़ोर से रोओगे क्योंकि
तुम्हारा मन निराश होगा।
15 तुम अपने पीछे ऐसा नाम छोड़
जाओगे, जिसे मेरे चुने हुए
लोग शाप की तरह इस्तेमाल
करेंगे।
सारे जहान का मालिक यहोवा
तुममें से हरेक को मौत के घाट
उतार देगा,

65:8 *शा., "आशीष।"

मगर अपने सेवकों को मैं* एक
दूसरे नाम से बुलाऊँगा।[1]
16 इसलिए धरती पर जो कोई अपने
लिए आशीष माँगेगा,
वह सच्चाई के# परमेश्‍वर से
आशीष पाएगा
और धरती पर जो कोई शपथ
खाएगा,
वह सच्चाई के* परमेश्‍वर के नाम
से शपथ खाएगा।[2]
पुराने दुख भुला दिए जाएँगे,
वे मेरी आँखों से ओझल हो
जाएँगे।[3]
17 देखो! मैं नए आकाश और नयी
पृथ्वी की सृष्टि कर रहा हूँ,[4]
फिर पुरानी बातें याद न आएँगी,
न ही उनका खयाल कभी तुम्हारे
दिल में आएगा।[5]
18 इसलिए मैं जो रच रहा हूँ, उस
पर सदा खुशी मनाओ और
मगन हो।
देखो! मैं यरूशलेम को रच रहा हूँ
कि वह खुशी का कारण ठहरे
और उसके लोगों को भी कि वे
मगन होने का कारण बनें।[6]
19 मैं यरूशलेम के लिए खुशियाँ
मनाऊँगा, अपने लोगों के लिए
मगन होऊँगा,[7]
फिर कभी उस नगरी में न रोने की
आवाज़ सुनायी देगी न दर्द-भरी
पुकार।"[8]
20 "वहाँ ऐसा नहीं होगा कि कोई शिशु
थोड़े दिन जीकर मर जाए,
बूढ़ा भी अपनी पूरी उम्र जीएगा।
अगर कोई सौ साल की उम्र में
मरेगा, तो कहा जाएगा कि वह
भरी जवानी में ही मर गया
और एक पापी चाहे सौ साल का
भी हो, शाप मिलने पर वह मर
जाएगा।*
21 वे घर बनाकर उसमें बसेंगे,[1]
अंगूरों के बाग लगाएँगे और उनका
फल खाएँगे।[2]
22 ऐसा नहीं होगा कि वे घर बनाएँ
और कोई दूसरा उसमें रहे,
वे बाग लगाएँ और कोई दूसरा
उसका फल खाए,
क्योंकि मेरे लोगों की उम्र, पेड़ों के
समान होगी,[3]
मेरे चुने हुए अपनी मेहनत के फल
का पूरा-पूरा मज़ा लेंगे।
23 उनकी मेहनत बेकार नहीं जाएगी,[4]
न उनके बच्चे दुख उठाने के लिए
पैदा होंगे,
क्योंकि वे और उनके बच्चे यहोवा
का वंश* हैं,
जिन्हें उसने आशीष दी है।[5]
24 उनके बुलाने से पहले ही मैं उन्हें
जवाब दूँगा
और जब वे अपनी बातें बताएँगे,
तो मैं उनकी सुनूँगा।
25 भेड़िया और मेम्ना साथ-साथ चरेंगे,
शेर, बैल की तरह घास-फूस
खाएगा[6]
और साँप मिट्टी खाया करेगा।
मेरे सारे पवित्र पर्वत पर वे न
तो किसी का नुकसान करेंगे, न
ही तबाही मचाएँगे।"[7] यह बात
यहोवा ने कही है।

65:15 *शा., "वह।" 65:16 #या "विश्‍वासयोग्य।" शा., "आमीन के।"

65:20 *या शायद, "और जो सौ की उम्र तक नहीं पहुँचता वह शापित माना जाएगा।" 65:23 *शा., "बीज।"

अध्य. 65
1 यश 62:2, यिर्म 33:16
2 व्य 6:13
3 यश 12:1, यिर्म 31:12, सप 3:14, 15
4 एज 5:2, यश 51:16, यश 66:22, 2पत 3:13
5 प्रक 21:1, 4
6 यश 51:11
7 यश 62:4, यिर्म 32:41
8 यश 25:8, यिर्म 31:12

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 31:4
2 यश 62:8, आम 9:14
3 भज 92:12-14
4 लैव 26:3-5, व्य 28:4
5 यश 61:9, यश 66:22
6 यश 35:9, हो 2:18
7 यश 2:3, 4, यश 11:6-9, मी 4:2

66

यहोवा कहता है,
“स्वर्ग मेरी राजगद्दी है और
पृथ्वी मेरे पाँवों की चौकी।[1]
तो फिर तुम मेरे लिए कैसा भवन
बनाओगे?[2]
मेरे रहने के लिए कहाँ जगह
बनाओगे?”[3]
2 यहोवा ऐलान करता है,
“मेरे ही हाथों ने इन सब चीज़ों को
रचा है और ये वजूद में आयीं।[4]
फिर भी मैं उस इंसान पर ध्यान
दूँगा,
जो दीन है और टूटे मन का है
और जो मेरी बातों पर थर-
थराता है।*[5]
3 बैल की बलि चढ़ानेवाला, उस
इंसान के समान है जो किसी का
खून करता है,[6]
भेड़ की बलि चढ़ानेवाला, उसके
समान है जो कुत्ते की गरदन
तोड़ता है,[7]
भेंट का चढ़ावा चढ़ानेवाला मानो
सूअर का खून चढ़ा रहा हो![8]
यादगार के लिए लोबान
जलानेवाला,[9] उसके समान है जो
मंत्र जपकर आशीर्वाद
देता है।*[10]
उन्होंने अपनी राह खुद चुन ली है,
वे घिनौनी बातों से खुश होते हैं।
4 इसलिए मैं उन्हें अपने तरीके से
सज़ा दूँगा,[11]
जिन बातों से वे खौफ खाते हैं वही
उन पर ले आऊँगा।
क्योंकि जब मैंने उन्हें बुलाया तो
किसी ने जवाब नहीं दिया,
जब मैंने उन्हें समझाया तो किसी ने
मेरी नहीं सुनी।[1]
वे उन्हीं कामों में लगे रहे जो मेरी
नज़र में बुरे थे
और उन्होंने वही चुना जो मुझे
बिलकुल पसंद नहीं।”[2]
5 हे यहोवा की बातों पर थरथराने-
वालो,* सुनो!
“तुम्हारे भाई जो तुमसे नफरत
करते हैं और जिन्होंने मेरे नाम
की वजह से तुमसे किनारा कर
लिया है,
वे दिखावे के लिए कहते हैं, ‘यहोवा
की महिमा हो!’[3]
मगर जब परमेश्वर प्रकट होगा,
तब तुम खुशी मनाओगे और वे
शर्मिंदा होंगे।”[4]
6 सुनो! शहर में होहल्ला मच रहा है,
मंदिर से आवाज़ें आ रही हैं!
यहोवा अपने दुश्मनों को उनके
किए की सज़ा दे रहा है।
7 इससे पहले कि उस औरत को
प्रसव-पीड़ा उठे, उसे बच्चा हो
गया,[5]
इससे पहले कि उसे बच्चा जनने
की पीड़ा उठे, उसने एक लड़के
को जन्म दे दिया।
8 क्या किसी ने कभी ऐसी बात
सुनी है?
क्या किसी ने कभी ऐसा होते
देखा है?
क्या कोई देश एक ही दिन में पैदा
हो सकता है?
या कोई राष्ट्र अचानक ही जन्म ले
सकता है?

66:2 *या “बातें जानने के लिए बेताब रहता है।” **66:3** *या शायद, “जो किसी मूरत की बड़ाई करता है।”

66:5 *या “बातें जानने के लिए बेताब रहनेवालो।”

अध्य. 66
1 मत 5:34, 35
2 2इत 6:18; प्रेष 17:24
3 1इत 28:2; प्रेष 7:48-50
4 यश 40:26
5 2रा 22:18, 19; लूक 18:14
6 यश 1:11
7 लैव 11:27
8 व्य 14:8
9 लैव 2:1, 2
10 यश 1:13
11 व्य 28:15

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 7:13
2 2रा 21:9; यश 65:3
3 यश 5:18, 19; यश 29:13
4 यश 65:13, 14; यिर्म 17:13, 18
5 यश 54:1

मगर सिय्योन ने प्रसव-पीड़ा उठते
ही लड़कों को जन्म दे दिया।
9 यहोवा कहता है, "क्या मैं एक बच्चे
को जन्म के समय तक पहुँचाकर
उसे पैदा न होने दूँ?"
तेरा परमेश्‍वर कहता है, "क्या मैं
गर्भ में बच्चा ठहराकर उसे गर्भ
से निकलने न दूँ?"
10 यरूशलेम से प्यार करनेवाले सब
लोगो,[1] उसके साथ खुशियाँ
मनाओ और झूम उठो।[2]
उस नगरी पर शोक मनानेवाले सब
लोगो, उसके साथ मगन हो,
11 क्योंकि तुम उसकी छाती से दूध
पीकर तृप्त होगे और दिलासा
पाओगे,
तुम जी-भरकर पीओगे और उसकी
बड़ी शान देखकर खुशी पाओगे।
12 यहोवा कहता है,
"मैं उसे नदी के समान शांति दूँगा,[3]
उमड़ती नदी के समान देश-देश की
शान दूँगा।[4]
तुम्हें दूध पिलाया जाएगा, गोद में
उठाया जाएगा
और पैरों पर खिलाया जाएगा।
13 जैसे एक माँ अपने बेटे को दिलासा
देती है,
वैसे ही मैं तुम्हें दिलासा देता रहूँगा[5]
और यरूशलेम के कारण तुम
दिलासा पाओगे।[6]
14 यह सब देखकर तुम्हारा मन खुशी
से झूम उठेगा,
तुम्हारी हड्डियाँ नयी घास की तरह
लहलहा उठेंगी।
तब यहोवा का हाथ* उसके सेवकों
के लिए प्रकट होगा,
मगर अपने दुश्‍मनों को वह धिक्का-
रेगा।"[1]
15 "यहोवा आग की तरह आएगा[2]
और उसके रथ आँधी की तरह
आएँगे।[3]
वह अपने क्रोध की जलजलाहट में
बदला लेने
और आग की ज्वाला के साथ फट-
कार लगाने आएगा।[4]
16 यहोवा आग से, अपनी तलवार से,
सब इंसानों को सज़ा देगा।
तब कई लोग यहोवा के हाथों मारे
जाएँगे।

17 जो बागों के बीच खड़ी मूरत को
पूजने के लिए खुद को तैयार और
शुद्ध करते हैं[5] और जो सूअर का माँस,
घिनौनी चीज़ें और चूहे खाते हैं,[6] वे सब
एक-साथ मारे जाएँगे।" यह बात यहोवा
ने कही है। 18 "क्योंकि मैं उनके कामों
और विचारों को जानता हूँ। मैं देश-
देश के और अलग-अलग भाषा के लोगों
को इकट्ठा करने आ रहा हूँ। वे आएँगे
और आकर मेरी महिमा देखेंगे।"

19 "मैं उनके बीच एक निशानी ठह-
राऊँगा। मैं अपने बचे हुओं में से कुछ
लोगों को उन देशों में भेजूँगा, जहाँ न
तो किसी ने मेरे बारे में सुना है और
न मेरी महिमा देखी है। मैं उन्हें तीरं-
दाज़ों के देश तरशीश,[7] पूल और लूद[8]
भेजूँगा। और तूबल, यावान[9] और दूर-
दूर के द्वीपों में भी उन्हें भेजूँगा। वे देश-
देश में मेरी महिमा का ऐलान करेंगे।[10]
20 जैसे इसराएली साफ बरतनों में
यहोवा के भवन में तोहफे लाते हैं, वैसे ही
ये लोग सब देशों से तुम्हारे सारे भाइयों
को लाएँगे[11] और उन्हें यहोवा को तोहफे
में देंगे। वे उन्हें घोड़ों, खच्चरों और तेज़

66:14 *या "की ताकत।"

अध्य. 66
1 भज 137:6
2 यश 44:23
3 यश 9:7
4 यश 60:3; हाग 2:7
5 यश 51:3
6 यश 44:28; यश 65:18, 19

दूसरा कॉल.
1 यश 59:18
2 व्य 4:24
3 भज 50:3; यिर्म 25:32, 33
4 2थि 1:7, 8
5 यश 1:29; यश 65:3
6 लैव 11:7, 8; लैव 11:29; यश 65:4
7 उत 10:4
8 उत 10:6, 13
9 उत 10:2; यहे 27:12, 13
10 यश 60:3; मला 1:11
11 व्य 30:1-3; यश 11:16; यश 43:6; यश 60:4, 9

दौड़नेवाले ऊँटों पर, रथों और छतवाली
गाड़ियों में लाएँगे और वे सब यरूशलेम
में, मेरे पवित्र पहाड़ पर आएँगे।" यह
बात यहोवा ने कही है।
21 यहोवा कहता है, "उनमें से मैं कुछ
को याजकों और कुछ को लेवियों के तौर
पर ले लूँगा।"
22 यहोवा ऐलान करता है, "जैसे मैं
नए आकाश और नयी पृथ्वी[1] को बना
रहा हूँ और वे मेरे सामने हमेशा कायम
रहेंगे, उसी तरह तुम्हारा वंश* और
तुम्हारा नाम भी बना रहेगा।"[2]

66:22 *शा., "बीज।"

अध्य. 66
1 यश 65:17, 18; 2पत 3:13; प्रक 21:1
2 यश 65:23; यिर्म 31:35, 36

दूसरा कॉल.
1 भज 86:9; जक 14:16; मला 1:11
2 यश 34:10; मत 25:41; मर 9:47, 48; 2थि 1:9

23 यहोवा कहता है, "एक नए चाँद से
लेकर दूसरे नए चाँद तक
और एक सब्त से लेकर दूसरे सब्त
तक हर इंसान आकर मुझे दंड-
वत* करेगा।[1]
24 वे बाहर जाकर उन आदमियों की
लाशें देखेंगे जो मेरे खिलाफ हो
गए थे,
उन लाशों में लगे कीड़े नहीं मरेंगे
और उन्हें जलानेवाली आग कभी
नहीं बुझेगी।[2]
उन लाशों से सब लोग घिन
करेंगे।"

66:23 *या "मेरी उपासना।"

यिर्मयाह

सारांश

1 यिर्मयाह, भविष्यवक्ता ठहराया गया (1-10)
बादाम के पेड़ का दर्शन (11, 12)
एक हंडे का दर्शन (13-16)
यिर्मयाह को मज़बूत किया गया (17-19)

2 इसराएल यहोवा को छोड़ दूसरे देवताओं के पीछे (1-37)
इसराएल, जंगली बेल जैसी (21)
उसका घाघरा खून से दागदार (34)

3 इसराएल की बगावत की हद (1-5)
वह और यहूदा, व्यभिचारी (6-11)
पश्चाताप करने के लिए कहा गया (12-25)

4 पश्चाताप करने से आशीषें मिलती हैं (1-4)
उत्तर से बड़ी विपत्ति आएगी (5-18)
इस वजह से यिर्मयाह को दर्द उठा (19-31)

5 लोगों ने यहोवा की शिक्षा ठुकरायी (1-13)
नाश मगर पूरी तरह नहीं (14-19)
यहोवा ने लोगों से हिसाब माँगा (20-31)

6 यरूशलेम की घेराबंदी करीब (1-9)
यरूशलेम पर यहोवा का क्रोध (10-21)
लोग कहते हैं, "शांति है!" जबकि कोई शांति नहीं (14)
उत्तर से खूँखार लोगों का हमला (22-26)
यिर्मयाह, धातु जाँचनेवाला (27-30)

7 यहोवा के मंदिर पर भरोसा करना धोखा है (1-11)
मंदिर शीलो जैसा बन जाएगा (12-15)
झूठी उपासना की निंदा (16-34)
"स्वर्ग की रानी" की पूजा (18)
हिन्नोम में बच्चों की बलि (31)

8 लोग वही रास्ता चुनते हैं जिस पर सब चलते हैं (1-7)
यहोवा के वचन के बिना बुद्धि कहाँ? (8-17)
यहूदा का घाव देखकर यिर्मयाह दुखी (18-22)
"क्या गिलाद में बलसाँ नहीं है?" (22)

9 यिर्मयाह का गहरा दुख (1-3क)
यहोवा ने यहूदा से हिसाब माँगा (3ख-16)
यहूदा की हालत पर मातम (17-22)
गर्व करो कि तुम यहोवा को जानते हो (23-26)

10 राष्ट्रों के देवताओं और जीवित परमेश्‍वर के बीच फर्क (1-16)
तेज़ी से आनेवाला नाश; बँधुआई (17, 18)
यिर्मयाह दुख मनाता है (19-22)
भविष्यवक्‍ता की प्रार्थना (23-25)
इंसान अपने कदमों को राह नहीं दिखा सकता (23)

11 यहूदा ने परमेश्‍वर से किया करार तोड़ा (1-17)
जितने शहर उतने देवता (13)
यिर्मयाह मेम्ने जैसा है जिसका हलाल होनेवाला था (18-20)
उसके नगर के आदमियों का विरोध (21-23)

12 यिर्मयाह की शिकायत (1-4)
यहोवा का जवाब (5-17)

13 मलमल का कमरबंद खराब (1-11)
दाख-मदिरा के मटके चूर किए जाएँगे (12-14)
कभी न सुधरनेवाले यहूदा की बँधुआई (15-27)
'क्या एक कूशी अपने चमड़े का रंग बदल सकता है?' (23)

14 सूखा, अकाल और तलवार (1-12)
झूठे भविष्यवक्‍ताओं को सज़ा सुनायी (13-18)
यिर्मयाह ने लोगों के पाप कबूल किए (19-22)

15 यहोवा अपना फैसला नहीं बदलेगा (1-9)
यिर्मयाह की शिकायत (10)
यहोवा का जवाब (11-14)
यिर्मयाह की प्रार्थना (15-18)
परमेश्‍वर का संदेश खाने से खुशी मिली (16)
यिर्मयाह को यहोवा ने मज़बूत किया (19-21)

16 यिर्मयाह न शादी करे, न मातम मनाए, न ही दावत में जाए (1-9)
सज़ा, फिर बहाली (10-21)

17 यहूदा का पाप गहराई तक समाया हुआ (1-4)
यहोवा से मिलनेवाली आशीषें (5-8)
धोखेबाज़ दिल (9-11)
यहोवा, इसराएल की आशा (12, 13)
यिर्मयाह की प्रार्थना (14-18)
सब्त को पवित्र मानना (19-27)

18 कुम्हार के हाथ में मिट्टी (1-12)
यहोवा ने इसराएल को पीठ दिखायी (13-17)
यिर्मयाह के खिलाफ साज़िश; उसकी दुहाई (18-23)

19 यिर्मयाह को सुराही तोड़ने के लिए कहा (1-15)
बाल के लिए बच्चों की बलि (5)

20 पशहूर ने यिर्मयाह को मारा (1-6)
यिर्मयाह ने प्रचार बंद नहीं किया (7-13)
परमेश्‍वर का संदेश, आग जैसा (9)
यहोवा वीर योद्धा जैसा है जिससे सब डरते हैं (11)
यिर्मयाह की शिकायत (14-18)

21 यहोवा ने सिदकियाह की गुज़ारिश ठुकरायी (1-7)
लोगों को ज़िंदगी या मौत चुननी थी (8-14)

22 बुरे राजाओं के खिलाफ संदेश (1-30)
शल्लूम के बारे में (10-12)
यहोयाकीम के बारे में (13-23)
कोन्याह के बारे में (24-30)

23 अच्छे और बुरे चरवाहे (1-4)
"नेक अंकुर" के राज में सुरक्षा (5-8)
झूठे भविष्यवक्‍ताओं को सज़ा सुनायी (9-32)
यहोवा का "बोझ" (33-40)

24 अच्छे और खराब अंजीर (1-10)

25 यहोवा का राष्ट्रों के साथ मुकदमा (1-38)
वे 70 साल बैबिलोन की गुलामी करेंगे (11)
परमेश्‍वर के क्रोध का प्याला (15)
एक-एक करके राष्ट्रों पर विपत्ति (32)
यहोवा के हाथों मारे गए लोग (33)

26 यिर्मयाह को मौत की धमकी (1-15)
वह बख्श दिया गया (16-19)
मीका की भविष्यवाणी का हवाला (18)
भविष्यवक्‍ता उरीयाह (20-24)

27 बैबिलोन का जुआ (1-11)
सिदकियाह को बैबिलोन के अधीन हो जाने के लिए कहा गया (12-22)

28 यिर्मयाह का सामना झूठे भविष्यवक्ता हनन्याह से (1-17)

29 बंदियों को यिर्मयाह का खत (1-23)
इसराएल की वापसी 70 साल बाद (10)
शमायाह के लिए संदेश (24-32)

30 बहाली और चंगाई के वादे (1-24)

31 इसराएल के बचे हुए देश में दोबारा बसेंगे (1-30)
राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही है (15)
एक नया करार (31-40)

32 यिर्मयाह ने खेत खरीदा (1-15)
यिर्मयाह की प्रार्थना (16-25)
यहोवा का जवाब (26-44)

33 बहाली का वादा (1-13)
"नेक अंकुर" के राज में सुरक्षा (14-16)
दाविद और याजकों के साथ करार (17-26)
दिन और रात के बारे में करार (20)

34 सिदकियाह को न्याय का संदेश (1-7)
दासों को छोड़ने का करार तोड़ा गया (8-22)

35 रेकाबी लोग आज्ञा मानने में एक अच्छी मिसाल (1-19)

36 यिर्मयाह ने खर्रा शब्द-ब-शब्द लिखवाया (1-7)
बारूक ने खर्रा पढ़कर सुनाया (8-19)
यहोयाकीम ने खर्रा जला दिया (20-26)
संदेश दोबारा लिखा गया (27-32)

37 कसदियों ने कुछ वक्त के लिए घेराबंदी हटायी (1-10)
यिर्मयाह कैद में (11-16)
सिदकियाह यिर्मयाह से मिला (17-21)
यिर्मयाह को रोटी दी गयी (21)

38 यिर्मयाह को कुंड में फेंका गया (1-6)
एबेद-मेलेक ने उसे बचाया (7-13)
यिर्मयाह ने सिदकियाह से कहा कि वह खुद को बैबिलोन के हवाले कर दे (14-28)

39 यरूशलेम का गिरना (1-10)
सिदकियाह भागा, फिर पकड़ा गया (4-7)
यिर्मयाह की हिफाज़त (11-14)
एबेद-मेलेक बख्शा जाएगा (15-18)

40 नबूजरदान ने यिर्मयाह को आज़ाद किया (1-6)
गदल्याह, देश का अधिकारी (7-12)
उसके खिलाफ साज़िश (13-16)

41 इश्माएल ने गदल्याह को मार डाला (1-10)
योहानान की वजह से इश्माएल भागा (11-18)

42 लोग यिर्मयाह से गुज़ारिश करते हैं कि वह मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करे (1-6)
यहोवा कहता है, "मिस्र मत जाओ" (7-22)

43 लोग नहीं माने और मिस्र गए (1-7)
यहोवा का संदेश यिर्मयाह को मिस्र में मिला (8-13)

44 मिस्र में यहूदियों पर विपत्ति की भविष्यवाणी (1-14)
उन्होंने चेतावनी अनसुनी की (15-30)
"स्वर्ग की रानी" की पूजा (17-19)

45 बारूक को यहोवा का संदेश (1-5)

46 मिस्र के खिलाफ भविष्यवाणी (1-26)
उसे नबूकदनेस्सर जीत लेगा (13, 26)
इसराएल से किए वादे (27, 28)

47 पलिश्तियों के खिलाफ भविष्यवाणी (1-7)

48 मोआब के खिलाफ भविष्यवाणी (1-47)

49 अम्मोन के खिलाफ भविष्यवाणी (1-6)
एदोम के खिलाफ भविष्यवाणी (7-22)
उसका वजूद मिट जाएगा (17, 18)
दमिश्क के खिलाफ भविष्यवाणी (23-27)
केदार और हासोर के खिलाफ भविष्यवाणी (28-33)
एलाम के खिलाफ भविष्यवाणी (34-39)

50 बैबिलोन के खिलाफ भविष्यवाणी (1-46)
बैबिलोन से भाग जाओ (8)
इसराएल वापस लाया जाएगा (17-19)
बैबिलोन की नदी सूख जाएगी (38)
बैबिलोन फिर आबाद नहीं होगी (39, 40)

51 बैबिलोन के खिलाफ भविष्यवाणी (1-64)
वह मादियों के आगे अचानक गिर पड़ेगी (8-12)
किताब फरात नदी में फेंकी गयी (59-64)

52 सिदकियाह ने बैबिलोन से बगावत की (1-3)
नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम को घेरा (4-11)
शहर और मंदिर का नाश (12-23)
लोग बैबिलोन ले जाए गए (24-30)
यहोयाकीन कैद से रिहा किया गया (31-34)

---

1 ये यिर्मयाह* के शब्द हैं, जो बिन्या-
मीन के अनातोत में[1] रहनेवाले
एक याजक हिलकियाह का बेटा है:
2 यहोवा का संदेश आमोन[2] के बेटे
और यहूदा के राजा योशियाह[3] के राज
के 13वें साल मेरे पास पहुँचा। **3** पर-
मेश्वर का संदेश मुझे योशियाह के बेटे
और यहूदा के राजा यहोयाकीम के दिनों
में[4] भी मिला और योशियाह के बेटे
और यहूदा के राजा सिदकियाह[5] के राज
के 11वें साल तक मिलता रहा। उसका
संदेश मुझे तब तक मिलता रहा जब तक
कि पाँचवें महीने में यरूशलेम के लोग
बँधुआई में न चले गए।[6]

4 यहोवा का यह संदेश मेरे पास
पहुँचा:

5 “मैं तुझे गर्भ में रचने से पहले ही
जानता* था,[7]
तेरे पैदा होने से पहले ही मैंने तुझे
पवित्र ठहराया था,#[8]
मैंने तुझे राष्ट्रों के लिए एक
भविष्यवक्ता ठहराया है।”

6 मगर मैंने कहा, “हे सारे जहान के
मालिक यहोवा,
मुझे तो बोलना भी नहीं आता,[9] मैं
बस एक लड़का* हूँ।”[10]

7 तब यहोवा ने मुझसे कहा,
“यह मत कह कि मैं बस एक
लड़का हूँ,
क्योंकि तुझे उन सबके पास जाना
होगा जिनके पास मैं तुझे भेज
रहा हूँ,
तुझे उनसे हर वह बात कहनी होगी
जिसकी मैं तुझे आज्ञा देता हूँ।[1]

8 तू उन्हें देखकर डरना मत,[2]
क्योंकि यहोवा कहता है, ‘मैं तुझे
बचाने के लिए तेरे साथ हूँ।’”[3]

9 फिर यहोवा ने अपना हाथ बढ़ाकर
मेरा मुँह छुआ।[4] यहोवा ने मुझसे कहा,
“मैंने अपने शब्द तेरे मुँह में डाले हैं।[5]
10 देख, आज मैंने तुझे राष्ट्रों और
राज्यों पर अधिकार दिया है ताकि तू जड़
से उखाड़े और गिराए, नाश करे और
ढाए, बनाए और लगाए।”[6]

11 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
“यिर्मयाह, तुझे क्या दिखायी दे रहा है?”
मैंने कहा, “मुझे एक बादाम के पेड़* की
डाली दिखायी दे रही है।”

12 यहोवा ने कहा, “तूने सही देखा है
क्योंकि मैं अपने वचन के मुताबिक काम
करने के लिए बिलकुल जागा हुआ हूँ।”

13 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, “तुझे

1:1 *शायद इसका मतलब है, “यहोवा ऊँचा उठाता है।” **1:5** *या “चुन लिया।” #या “अलग किया था।” **1:6** *या “जवान।”

1:11 *शा., “एक जागनेवाले।”

अध्य. 1
1 यह 21:8, 18
2 2रा 21:19, 20
3 2रा 22:1, 2
4 2रा 24:1; 2इत 36:4
5 2रा 24:18, 19
6 2रा 25:8, 11; यिर्म 52:12, 15
7 न्या 13:5; भज 139:15, 16
8 लूक 1:13, 15
9 निर्ग 4:10
10 1रा 3:5, 7

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 7:1, 2
2 यहे 2:6
3 निर्ग 3:11, 12; यिर्म 15:20; प्रेष 18:9, 10
4 यश 6:7
5 निर्ग 4:12, 15; यहे 33:7
6 यिर्म 18:7-10; यिर्म 24:5, 6

क्या दिखायी दे रहा है?" मैंने कहा, "मुझे
उबलता हुआ एक हंडा* दिखायी दे रहा
है और उसका मुँह उत्तर से दक्षिण की
तरफ झुका हुआ है।" 14 फिर यहोवा
ने मुझसे कहा,

"उत्तर से विपत्ति देश के सब लोगों
पर टूट पड़ेगी।[1]

15 क्योंकि यहोवा ऐलान करता है, 'मैं
उत्तर के राज्यों के सब कुलों को
बुला रहा हूँ,[2]
वे आएँगे और हर कोई यरूशलेम
के फाटक के प्रवेश पर
अपनी राजगद्दी पर बैठेगा,[3]
वे उसके चारों तरफ की
शहरपनाह पर
और यहूदा के सभी शहरों पर
हमला करेंगे।[4]

16 मैं उनके सभी दुष्ट कामों की वजह
से उन्हें सज़ा सुनाऊँगा,
क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया है[5]
और वे दूसरे देवताओं के आगे
बलिदान चढ़ाते हैं ताकि उसका
धुआँ उठे,[6]
अपने ही हाथ की बनायी चीज़ों के
आगे दंडवत करते हैं।'[7]

17 मगर तू कदम उठाने के लिए तैयार
हो जा,*
तुझे जाकर उन्हें हर वह बात
बतानी होगी जिसकी मैं तुझे
आज्ञा देता हूँ।
तू उनसे खौफ न खाना[8]
ताकि ऐसा न हो कि मैं तुझे उनके
सामने दहशत में डाल दूँ।

18 आज मैं तुझे एक किलेबंद शहर
जैसा बनाता हूँ,
लोहे के खंभे और ताँबे की दीवारों
जैसा बनाता हूँ ताकि तू पूरे
देश का,[1]
यहूदा के राजाओं और हाकिमों का,
याजकों और देश के आम लोगों का
डटकर सामना कर सके।[2]

19 वे तुझसे लड़ेंगे तो ज़रूर मगर जीत
नहीं पाएँगे,*
क्योंकि यहोवा कहता है, 'मैं
तुझे बचाने के लिए तेरे
साथ हूँ।'"[3]

2 यहोवा का यह संदेश मेरे पास पहुँचा:
2 "तू जाकर यरूशलेम के सामने
यह ऐलान कर: 'यहोवा कहता है,

"मुझे अच्छी तरह याद है कि तू
जवानी में मेरे साथ कैसा लगाव*
रखती थी,[4]
जब मुझसे तेरी सगाई हुई तब तू
मुझे कितना प्यार करती थी,[5]
वीराने में तू किस तरह मेरे पीछे-
पीछे चलती थी,
जहाँ की ज़मीन बोयी नहीं
गयी थी।[6]

3 इसराएल यहोवा की नज़र में पवित्र
था,[7] उसकी फसल का पहला
फल था।"'
यहोवा ऐलान करता है, 'जो कोई
उसे खा जाने की कोशिश करता
वह दोषी ठहरता।
उस पर मुसीबत टूट पड़ती।'"[8]

4 हे याकूब के घराने, हे इसराएल के
घराने के सभी कुलो,
यहोवा का संदेश सुनो।

5 यहोवा कहता है,
"तुम्हारे पुरखों ने मुझमें ऐसा क्या
दोष पाया[9]

1:13 *या "चौड़े मुँहवाला हंडा।" 1:17 *शा., "अपनी कमर कस ले।"

1:19 *या "तुझे हरा नहीं पाएँगे।" 2:2 *या "अटल प्यार।"

अध्य. 1
1 यिर्म 6:1, यिर्म 10:22
2 यिर्म 5:15, यिर्म 6:22, यिर्म 25:9
3 यिर्म 39:3
4 व्य 28:52, यिर्म 34:22, यिर्म 44:6
5 यह 24:20, 2रा 22:17, 2इत 7:19, 20
6 यहे 8:10, 11, हो 11:2
7 यश 2:8
8 यहे 2:6

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 15:20, यिर्म 20:11, यहे 3:8, मी 3:8
2 यिर्म 26:12
3 उत 28:15, निर्ग 3:12, यह 1:5

अध्य. 2
4 हो 2:15
5 निर्ग 24:3
6 व्य 2:7
7 निर्ग 19:6, व्य 7:6
8 निर्ग 17:8, 13
9 यश 5:4, मी 6:3

कि वे मुझसे इतनी दूर हो गए,
निकम्मी मूरतों के पीछे चलने लगे[1]
और खुद निकम्मे हो गए?[2]
6 उन्होंने यह नहीं कहा, 'आओ, हम यहोवा की ओर ताकें,
जो हमें मिस्र से निकाल लाया,[3]
हमें वीराने में राह दिखाते हुए ले चला,
जहाँ जगह-जगह रेगिस्तान[4] और खाई हैं,
जहाँ सूखा पड़ता है[5] और घोर अंधकार छाया रहता है,
जहाँ से कोई इंसान नहीं गुज़रता,
जहाँ एक भी इंसान नहीं रहता।'
7 फिर मैं तुम्हें फलों के बागवाले देश में ले आया
ताकि तुम इसकी उपज और अच्छी-अच्छी चीज़ें खा सको।[6]
मगर तुमने यहाँ आकर मेरे देश को दूषित कर दिया,
मेरी विरासत को घिनौना बना दिया।[7]
8 याजकों ने नहीं कहा, 'आओ, हम यहोवा की ओर ताकें,'[8]
जिन्हें कानून सिखाने की ज़िम्मेदारी थी उन्होंने मुझे नहीं जाना,
चरवाहों ने मुझसे बगावत की,[9]
भविष्यवक्ताओं ने बाल के नाम से भविष्यवाणी की,[10]
वे उन देवताओं के पीछे गए
जो उन्हें फायदा नहीं पहुँचा सकते थे।
9 यहोवा ऐलान करता है, 'इसलिए मैं तुम पर और भी दोष लगाऊँगा,[11]
तुम्हारे बेटों के बेटों पर दोष लगाऊँगा।'
10 'तुम उस पार कित्तीम[1] लोगों के द्वीपों में जाओ और देखो।
हाँ, केदार[2] को संदेश भेजो और अच्छी तरह पता लगाओ
कि क्या वहाँ कभी ऐसी बात हुई है।
11 क्या किसी राष्ट्र ने कभी अपने देवताओं को छोड़कर उन्हें अपनाया जो देवता नहीं हैं?
लेकिन मेरे अपने लोग मेरी महिमा करने के बजाय बेकार की चीज़ों की महिमा करने लगे।[3]
12 हे आकाश, तू फटी आँखों से देखता रह,
मारे हैरत के थर-थर काँप,' यहोवा का यह ऐलान है,
13 'क्योंकि मेरे लोगों ने दो बुरे काम किए हैं:
उन्होंने मुझ जीवन के जल के सोते को छोड़ दिया है[4]
और अपने लिए ऐसे कुंड खोद लिए हैं,*
जो टूटे हुए हैं, जिनमें पानी नहीं ठहरता।'
14 'क्या इसराएल कोई सेवक है, या किसी घराने में जन्मा दास है?
फिर क्यों उसे लूट का शिकार होने के लिए छोड़ दिया गया?
15 उस पर जवान शेर गरजते हैं,[5]
वे ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ते हैं।
उन्होंने उसके देश का ऐसा हश्र किया कि देखनेवालों का दिल दहल गया।
उसके शहरों में आग लगा दी जिस वजह से वहाँ कोई नहीं रहता।

अध्य. 2
1 व्य 32:21
2 भज 115:4, 8
3 निर्ग 14:30
4 व्य 1:1 व्य 32:9, 10
5 व्य 8:14, 15
6 गि 13:26, 27 व्य 6:10, 11 व्य 8:7-9
7 लैव 18:24 गि 35:33 भज 78:58 भज 106:38 यिर्म 16:18
8 1शम 2:12 विल 4:13
9 यहे 34:7, 8
10 1रा 18:19 यिर्म 23:13
11 यहे 20:35 मी 6:2

दूसरा कॉल.
1 उत 10:2, 4
2 उत 25:13 भज 120:5 यिर्म 49:28
3 भज 106:20
4 भज 36:9 यिर्म 17:13 प्रक 22:1
5 यश 5:29 यिर्म 4:7

2:13 *या "काटकर निकाले हैं," शायद चट्टान से।

16 नोप*[1] और तहपनहेस[2] के लोग
तेरा सिर गंजा कर देते हैं।
17 क्या तू यह सब अपने ऊपर खुद ही
नहीं लाया?
तूने ही अपने परमेश्‍वर यहोवा को
छोड़ दिया था,[3]
जो तुझे रास्ता दिखा रहा था।
18 अब तू क्यों मिस्र जाकर[4] शीहोर*
का पानी पीना चाहता है?
क्यों अश्‍शूर जाकर[5] महानदी# का
पानी पीना चाहता है?
19 तुझे अपनी दुष्टता से सबक सीखना
चाहिए,
तूने जो विश्‍वासघात किया है
उससे तुझे फटकार मिलनी
चाहिए।
यह जान ले और समझ ले कि
अपने परमेश्‍वर यहोवा को छोड़ने
का अंजाम
कितना बुरा और भयानक
होता है,[6]
तूने मेरा बिलकुल भी डर नहीं
माना,'[7] सारे जहान के मालिक,
सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा का
यह ऐलान है।
20 'मुद्दतों पहले मैंने तेरा जुआ तोड़
दिया था,[8]
तेरी बेड़ियाँ तोड़ दी थीं।
मगर तूने कहा, "मैं तेरी सेवा नहीं
करूँगी,"
क्योंकि हर ऊँची पहाड़ी के ऊपर
और हर घने पेड़ के नीचे[9]
तू पसर जाती और वेश्‍या के काम
करती थी।[10]
21 जब मैंने तुझे लगाया था तब तू
बढ़िया लाल अंगूर की बेल थी,[1]
तेरे सारे बीज उम्दा थे,
तो फिर तेरी डालियाँ कैसे सड़ने
लगीं और तू मेरी नज़र में जंगली
बेल कैसे बन गयी?'[2]
22 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, 'तू चाहे खार*
से खुद को धोए या खूब सज्जी#
इस्तेमाल करे,
फिर भी मेरे सामने से तेरे दोष का
दाग नहीं मिटेगा।'[3]
23 तू कैसे कह सकती है, 'मैंने खुद को
दूषित नहीं किया।
मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं
गयी'?
घाटी में तूने जो किया उसे देख।
अपने कामों पर गौर कर।
तू एक फुर्तीली जवान ऊँटनी
जैसी है,
जो बेमकसद इधर-उधर भागती
रहती है,
24 तू ऐसी जंगली गधी जैसी है जो
वीराने में रहने की आदी है,
जो हवस में आकर हवा सूँघती
फिरती है।
जब उसमें सहवास की ज़बरदस्त
इच्छा उठती है तो उसे कौन काबू
कर सकता है?
उसकी तलाश करनेवालों को ज़्यादा
मेहनत नहीं करनी पड़ती।
वे उसके मौसम* में उसे पा लेते हैं।
25 अपने पाँव नंगे न होने दे
और अपना गला सूखने न दे।
मगर तूने कहा, 'नहीं, ऐसा नहीं हो
सकता![4]

2:16 *या "मेम्फिस।" 2:18 *यानी नील नदी की धारा। #यानी फरात नदी।

2:22 *या "सोडे।" #एक तरह का साबुन। 2:24 *शा., "महीने।"

अध्य. 2
1 यिर्म 46:19
2 यिर्म 43:4, 7; यिर्म 46:14; यहे 30:18
3 1इत 28:9; 2इत 7:19, 20
4 यश 30:2; यश 31:1; विल 5:6; यहे 16:26; यहे 17:15
5 2रा 16:7; हो 5:13
6 यिर्म 4:18
7 यिर्म 5:22
8 लैव 26:13
9 1रा 14:22, 23; यहे 6:13
10 निर्ग 34:15; यहे 16:15, 16

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 15:17; भज 80:8; यश 5:1
2 यश 5:4
3 यिर्म 16:17
4 यिर्म 18:12

मुझे गैरों* से प्यार हो गया है,[1]
मैं उन्हीं के पीछे जाऊँगी।'[2]
26 जैसे चोर पकड़े जाने पर शर्मिंदा
होता है,
वैसे ही इसराएल के घराने को
शर्मिंदा किया गया है,
उन्हें और उनके राजाओं और
हाकिमों को,
उनके याजकों और भविष्यवक्ताओं
को शर्मिंदा किया गया है।[3]
27 वे एक पेड़ से कहते हैं, 'तू मेरा
पिता है'[4]
और एक पत्थर से कहते हैं, 'तूने
मुझे जन्म दिया है।'
मगर वे मेरी तरफ मुँह करने के
बजाय मुझे पीठ दिखाते हैं।[5]
संकट के समय वे कहेंगे, 'आकर
हमें बचा ले!'[6]
28 अब तुम्हारे वे देवता कहाँ गए
जिन्हें तुमने खुद के लिए
बनाया था?[7]
अगर वे तुम्हें संकट के समय बचा
सकते हैं तो वे आकर बचाएँ,
क्योंकि हे यहूदा, तेरे पास इतने
देवता हो गए हैं जितने कि तेरे
शहर हैं।[8]
29 यहोवा ऐलान करता है, 'तुम क्यों
मेरे खिलाफ शिकायत करते हो?
तुम सब क्यों मुझसे बगावत करते
हो?'[9]
30 मैंने बेकार ही तुम्हारे बेटों को
मारा।[10]
वे शिक्षा मानने से इनकार कर
देते थे,[11]
तुम्हारी अपनी तलवार ने तुम्हारे
भविष्यवक्ताओं को अपना कौर
बना लिया,[12]

2:25 *या "पराए देवताओं।"

अध्य. 2
1 यश 2:6
यिर्म 3:13
2 यिर्म 44:17
3 एज 9:7
4 यश 44:13
5 2इत 29:6
यिर्म 32:33
6 न्या 10:13-15
भज 78:34
भज 106:47
यश 26:16
हो 5:15
7 व्य 32:37, 38
8 यिर्म 11:13
9 यिर्म 5:1
यिर्म 9:2
दान 9:11
10 2इत 28:
20-22
यश 9:13
11 यश 1:5
यिर्म 5:3
सप 3:2
12 2इत 36:15,
16
नहे 9:26
प्रेष 7:52

दूसरा कॉल.
1 व्य 32:15
2 भज 106:21
यश 17:10
यिर्म 18:15
हो 8:14
3 2इत 33:9
4 2रा 21:16
भज 106:38
यश 10:1, 2
मत 23:35
5 निर्ग 22:2

जैसे एक खूँखार शेर अपने शिकार
को फाड़ खाता है।
31 इस पीढ़ी के लोगो, यहोवा के संदेश
पर ध्यान दो।
क्या मैं इसराएल के लिए एक
वीराना बन गया हूँ?
दम घोटनेवाले घोर अंधकार का
देश बन गया हूँ?
ये लोग, मेरे अपने लोग क्यों
कहते हैं, 'हम जहाँ चाहे वहाँ
जाएँगे।
हम फिर कभी तेरे पास नहीं
आएँगे'?[1]
32 क्या एक कुँवारी लड़की कभी अपने
गहने भूल सकती है?
क्या एक दुल्हन सीनाबंद* पहनना
भूल सकती है?
मगर मेरे अपने लोगों ने न
जाने कितने दिनों से मुझे भुला
दिया है।[2]
33 हे औरत, तू प्यार की तलाश में
कितनी चालाकी से अपना रास्ता
चुनती है!
तूने खुद को दुष्टता की राह पर
चलना सिखाया है।[3]
34 तेरा घाघरा बेगुनाहों और गरीबों के
खून से दागदार है,[4]
ऐसा नहीं कि वे सेंध लगाते हुए
पकड़े गए और मारे गए,
फिर भी उनके खून का दाग तेरे पूरे
घाघरे पर लगा है।[5]
35 मगर तू कहती है, 'मैं बेकसूर हूँ।
उसका क्रोध ज़रूर मुझसे दूर हो
गया होगा।'
अब मैं तेरा न्याय करके तुझे सज़ा
दूँगा,

2:32 *या "अपनी शादी का कमरबंद।"

क्योंकि तू कहती है, 'मैंने पाप नहीं
किया है।'
36 तू अपने ढुलमुल रवैए को क्यों एक
हलकी बात समझती है?
तुझे मिस्र की वजह से भी शर्मिंदा
होना पड़ेगा,[1]
ठीक जैसे तू अश्शूर की वजह से
शर्मिंदा हुई थी।[2]
37 इसलिए भी तू सिर पर हाथ रखकर
जाएगी,[3]
क्योंकि यहोवा ने उन्हें ठुकरा दिया
है जिन पर तूने भरोसा रखा,
वे तुझे कामयाबी नहीं दिलाएँगे।"

3 लोग पूछते हैं, "अगर एक आदमी
अपनी पत्नी को भेज दे और वह
उसे छोड़कर चली जाए और किसी दूसरे
आदमी की हो जाए, तो क्या वह दोबारा
उस औरत को अपनाएगा?"
क्या यह देश पूरी तरह दूषित नहीं
हो चुका है?[4]
यहोवा ऐलान करता है, "तूने बहुत-
से यारों के साथ वेश्या के काम
किए हैं[5]
और अब तू मेरे पास वापस आना
चाहती है?"
2 "अपनी नज़रें उठाकर उन सूनी
पहाड़ियों को देख।
क्या ऐसी कोई जगह है जहाँ तेरे
साथ बलात्कार न हुआ हो?
तू उनके इंतज़ार में रास्ते किनारे
बैठा करती थी,
जैसे कोई खानाबदोश* वीराने में
बैठता है।
तू अपने वेश्या के कामों से और
अपनी दुष्टता से
देश को दूषित करती रहती है।[6]

3:2 *शा., "अरबी।"

अध्य. 2
1 यश 30:3, यिर्म 37:7
2 2इत 28:20, 21
3 2शम 13:19

अध्य. 3
4 यश 24:5, यिर्म 2:7
5 यिर्म 2:20, यहे 16:28, 29
6 यहे 16:16, यहे 20:28

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:19, यिर्म 14:4, आम 4:7
2 यिर्म 6:15
3 यिर्म 2:2
4 मी 2:1, मी 7:3
5 2रा 22:1
6 यहे 20:28, हो 4:13
7 2रा 17:13, 2इत 30:6, हो 14:1
8 यहे 16:46, यहे 23:2, 4
9 व्य 24:1
10 यहे 23:4, 5, 9, हो 2:2, हो 9:15
11 2रा 17:19, यहे 23:4, 11
12 यश 57:5, 6, यिर्म 2:27

3 इसलिए बारिश रोक दी गयी है,[1]
वसंत में पानी नहीं बरसता।
तू उस पत्नी की तरह है जो वेश्या
के काम करती है, मगर माथे पर
शिकन तक नहीं है,
तुझमें शर्म नाम की कोई चीज़
नहीं।[2]
4 मगर अब तू मुझे पिता पुकारती है
और यह भी कहती है, 'तू मेरे बच-
पन से मेरा साथी रहा है![3]
5 तो फिर क्या यह सही है कि तू
हमेशा मुझसे नाराज़ रहे,
मेरे खिलाफ दुश्मनी पालती रहे?'
तू यह कहती तो है,
मगर तू जितने बुरे काम कर सकती
है वह सब करती रहती है।"[4]

6 राजा योशियाह[5] के दिनों में यहोवा
ने मुझसे कहा, "'क्या तूने देखा है कि
विश्वासघाती इसराएल ने क्या किया है?
वह हर ऊँचे पहाड़ पर चढ़कर और हर
घने पेड़ के नीचे जाकर वेश्या के काम
करती है।[6] 7 हालाँकि उसने यह सब
किया है, फिर भी मैं उससे कहता रहा कि
वह मेरे पास लौट आए।[7] मगर वह नहीं
लौटी। और यहूदा अपनी दगाबाज़ बहन
इसराएल को देखती रही।[8] 8 जब मैंने
यह देखा तो मैंने विश्वासघाती इसराएल
को तलाकनामा देकर भेज दिया[9] क्योंकि
उसने व्यभिचार किया।[10] मगर उसकी
दगाबाज़ बहन यहूदा नहीं डरी कि उसे भी
सज़ा मिल सकती है। वह भी जाकर बे-
धड़क वेश्या के काम करने लगी।[11]
9 उसने अपने वेश्या के कामों को हलका
समझा और देश को दूषित करती रही
और पत्थरों और पेड़ों के साथ व्यभिचार
करती रही।[12] 10 इतना कुछ होने पर
भी उसकी दगाबाज़ बहन यहूदा पूरे
दिल से मेरे पास नहीं लौटी, उसने सिर्फ

लौटने का ढोंग किया।’ यहोवा का यह
ऐलान है।”
11 फिर यहोवा ने मुझसे कहा,
“विश्वासघाती इसराएल, दगाबाज़ यहूदा
से कम दोषी निकली है।[1] 12 तू उत्तर
में जाकर यह संदेश सुना:[2]
‘यहोवा ऐलान करता है, “हे बागी
इसराएल, मेरे पास लौट आ।”’[3] ‘यहोवा
ऐलान करता है, “मैं तुझे क्रोध-भरी
नज़रों से नहीं देखूँगा[4] क्योंकि मैं वफादार
हूँ।”’ ‘“मैं तुझसे सदा नाराज़ नहीं रहूँगा।
13 बस तू अपना दोष मान ले क्योंकि
तूने अपने परमेश्वर यहोवा से बगा-
वत की है। तू हर घने पेड़ के नीचे पराए
आदमियों* के साथ संबंध रखती और
मेरी बात नहीं मानती।” यहोवा का यह
ऐलान है।’”
14 यहोवा ऐलान करता है, “हे
बगावती बेटो, मेरे पास लौट आओ।
मैं तुम्हारा असली मालिक* बन गया
हूँ। मैं तुम लोगों को इकट्ठा करूँगा, हर
शहर में से एक को और हर परिवार
में से दो को लूँगा और सिय्योन वापस
ले आऊँगा।[5] 15 मैं अपने मन के
मुताबिक तुम्हें चरवाहे दूँगा[6] और वे
तुम्हें ज्ञान और अंदरूनी समझ की
खुराक देंगे। 16 तब तुम गिनती में बढ़
जाओगे और फूलोगे-फलोगे।” यहोवा
का यह ऐलान है।[7] “वे फिर कभी यह
न कहेंगे, ‘यहोवा के करार का संदूक!’
यह बात उनके दिल में कभी नहीं आएगी,
वे न इसे याद करेंगे और न ही इसकी
कमी महसूस करेंगे और यह दोबारा नहीं
बनाया जाएगा। 17 उस समय वे यरू-
शलेम को यहोवा की राजगद्दी कहेंगे[8]
और सारे राष्ट्रों को यहोवा के नाम की
महिमा करने के लिए यरूशलेम लाया
जाएगा।[1] वे फिर कभी ढीठ होकर अपने
दुष्ट मन की नहीं सुनेंगे।”
18 “उन दिनों यहूदा का घराना और
इसराएल का घराना साथ-साथ चलेंगे[2]
और वे मिलकर उत्तर के देश से उस देश
में आएँगे जो मैंने तुम्हारे पुरखों को विरा-
सत में दिया था।[3] 19 मैंने सोचा था,
‘मैं तुम्हें अपने बेटों में गिनूँगा और तुम्हें
विरासत में वह बढ़िया देश दूँगा जो
दुनिया के राष्ट्रों की नज़रों में सबसे खूब-
सूरत विरासत है।’[4] मैंने यह भी सोचा था
कि तुम मुझे ‘पिता’ कहोगे और मेरे पीछे
चलना नहीं छोड़ोगे। 20 यहोवा ऐलान
करता है, ‘मगर हे इसराएल के घराने,
तूने मेरे साथ विश्वासघात किया है, ठीक
जैसे एक पत्नी अपने पति से विश्वासघात
करके उसे छोड़ देती है।’”[5]

21 सूनी पहाड़ियों पर शोर सुनायी दे
रहा है,
इसराएल के लोगों का रोना और
गिड़गिड़ाना सुनायी दे रहा है,
क्योंकि उन्होंने टेढ़ी चाल चली है,
अपने परमेश्वर यहोवा को भूल
गए हैं।[6]
22 “हे बगावती बेटो, मेरे पास लौट
आओ।
मैं तुम्हें चंगा कर दूँगा, तुम्हारी
भटकने की आदत छुड़ा दूँगा।”[7]
“देख, हम आ गए हैं! हम तेरे पास
आ गए हैं,
क्योंकि हे यहोवा, तू हमारा पर-
मेश्वर है।[8]
23 पहाड़ियों और पहाड़ों पर होहल्ला
मचाकर हमने वाकई खुद को
धोखा दिया।[9]
हमारा परमेश्वर यहोवा
ही इसराएल का सच्चा उद्धार-
कर्ता है।[10]

3:13 *या “पराए देवताओं।” 3:14 *या शायद, “तुम्हारा पति।”

अध्य. 3
1 यहे 16:51, यहे 23:4, 11
2 2रा 17:6, यिर्म 23:8
3 यिर्म 4:1, यहे 33:11, हो 14:1
4 हो 11:8, 9
5 यिर्म 23:3
6 यिर्म 23:4, यहे 34:23
7 हो 1:10
8 भज 87:3, यहे 43:7

दूसरा कॉल.
1 यश 2:2, 3, यश 56:6, 7, यश 60:3, मी 4:1, 2, जक 2:11, जक 8:22, 23
2 यिर्म 50:4, यहे 37:19, हो 1:11
3 2इत 36:23, एज 1:3, आम 9:15
4 यहे 20:6
5 यश 48:8, हो 3:1, हो 5:7
6 यश 17:10, हो 8:14, हो 13:6
7 हो 14:1, 4
8 यिर्म 31:18, हो 3:5
9 यश 65:7
10 यश 12:2

24 उस शर्मनाक चीज़* ने हमारे
बचपन से हमारे पुरखों
के खून-पसीने की कमाई खा
ली है,[1]
उनके भेड़-बकरियों और गाय-बैलों,
उनके बेटे-बेटियों को निगल
लिया है।
25 आओ हम शर्म के मारे लेट जाएँ,
अपमान का ओढ़ना ओढ़ लें,
क्योंकि हमने अपने परमेश्वर
यहोवा के खिलाफ पाप
किया है,[2]
बचपन से लेकर आज तक
हमने और हमारे पिताओं ने पाप
किया है,[3]
हमने अपने परमेश्वर यहोवा की
बात नहीं मानी।"

4 यहोवा ऐलान करता है, "हे इस-
राएल, अगर तू लौट आए,
मेरे पास लौट आए
और अपनी घिनौनी मूरतें मेरे
सामने से हटा दे,
तो तू भगोड़ा बनकर फिरता नहीं
रहेगा।[4]
2 अगर तू सच्चाई, न्याय और नेकी
से यह कहकर शपथ खाए,
'यहोवा के जीवन की शपथ!'
तो राष्ट्र परमेश्वर से आशीष
पाएँगे*
और उसके कारण गर्व करेंगे।"[5]
3 क्योंकि यहोवा, यहूदा के लोगों
और यरूशलेम से कहता है,

"तुम ज़मीन जोतो, उसे उपजाऊ
बनाओ,
काँटों के बीच बोना छोड़ दो।[1]
4 यहूदा और यरूशलेम के लोगो,
यहोवा के लिए अपना खतना करो,
अपने दिलों की खलड़ी निकाल
फेंको,[2]
नहीं तो तुम्हारे दुष्ट कामों की
वजह से
मेरा क्रोध आग की तरह भड़क
उठेगा
और उसे कोई बुझा न सकेगा।"[3]
5 यहूदा में इस बात का ऐलान करो,
यरूशलेम में यह संदेश सुनाओ।
पूरे देश में नरसिंगा फूँको, चिल्ला-
चिल्लाकर बताओ।[4]
पुकार-पुकारकर कहो, "चलो हम
सब इकट्ठा हो जाएँ
और किलेबंद शहरों में भाग
जाएँ।[5]
6 सिय्योन का रास्ता दिखानेवाला एक
झंडा खड़ा करो।
खड़े मत रहो, कोई आसरा ढूँढ़ो,"
क्योंकि मैं उत्तर से एक कहर ढाने-
वाला हूँ,[6] एक बड़ी विपत्ति लाने-
वाला हूँ।
7 दुश्मन ऐसे निकला है जैसे शेर
झाड़ी में से निकलता है,[7]
राष्ट्रों को तबाह करनेवाला चल
पड़ा है।[8]
वह अपनी जगह से रवाना हो
चुका है ताकि तुम्हारे देश का
ऐसा हश्र करे कि देखनेवालों का
दिल दहल जाए।
तुम्हारे शहर खंडहर बना दिए
जाएँगे, उनमें एक भी निवासी
नहीं रहेगा।[9]

3:24 *या "शर्मनाक देवता।" 4:2 *इसका यह मतलब हो सकता है कि आशीष पाने के लिए उन्हें भी कुछ कदम उठाने होंगे।

अध्य. 3
1 हो 9:10
2 यिर्म 2:19
3 एज 9:7; भज 106:7

अध्य. 4
4 यिर्म 3:22; योए 2:12, 13
5 यश 65:16

दूसरा कॉल.
1 हो 10:12
2 यिर्म 9:25, 26
3 विल 4:11
4 यिर्म 6:1
5 यिर्म 35:11
6 यिर्म 1:14; यिर्म 21:7; यिर्म 25:9
7 2रा 24:1; 2रा 25:1; यिर्म 5:6; यिर्म 50:17
8 यहे 26:7
9 यश 5:9; यश 6:11; यिर्म 2:15; यिर्म 9:11

8 इसलिए टाट ओढ़ो,[1]
मातम मनाओ,* ज़ोर-ज़ोर से
रोओ,
क्योंकि यहोवा के क्रोध की आग
हमसे दूर नहीं हुई है।
9 यहोवा ऐलान करता है, "उस दिन
राजा हिम्मत* हार जाएगा,[2]
हाकिम भी हिम्मत* हार जाएँगे,
याजक खौफ खाएँगे और
भविष्यवक्ताओं के होश उड़
जाएँगे।"[3]

10 फिर मैंने कहा, "हे सारे जहान के
मालिक यहोवा, कितना बुरा हुआ! तूने
वाकई इन लोगों को और यरूशलेम को
यह कहकर धोखा दिया,[4] 'तुम्हें शांति
मिलेगी,'[5] जबकि तलवार हमारी गर-
दन पर है।"
11 उस समय इन लोगों से और यरू-
शलेम से यह कहा जाएगा:
"रेगिस्तान की सूनी पहाड़ियों से
झुलसानेवाली हवा
मेरे लोगों की बेटी* पर
चलनेवाली है।
यह हवा अनाज फटकने या साफ
करने के लिए नहीं आ रही है।
12 यह तेज़ आँधी मेरे कहने पर इन
जगहों से आएगी।
अब मैं उनके खिलाफ फैसला
सुनाऊँगा।
13 देख! दुश्मन बरसाती बादल की
तरह आएगा,
उसके रथ भयानक आँधी की
तरह हैं।[6]

अध्य. 4
1 यिर्म 6:26
2 2रा 25:5
3 यश 29:9, 10
4 यहे 14:9
5 यिर्म 6:13, 14 यिर्म 14:13 यिर्म 23:16, 17
6 यश 5:26, 28

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:49, 50 विल 4:19 हब 1:8
2 यश 1:16 यहे 18:31
3 यिर्म 8:16
4 2रा 25:1, 2
5 यश 63:10 यहे 2:3
6 भज 107:17

उसके घोड़े उकाबों से भी तेज़ हैं।[1]
हाय, हम बरबाद हो गए!
14 हे यरूशलेम, अपने दिल से दुष्टता
निकालकर उसे साफ कर ताकि
तू बच सके।[2]
तू कब तक अपने मन में बुरे विचार
पालती रहेगी?
15 क्योंकि दान से एक आवाज़ खबर दे
रही है,[3]
वह एप्रैम के पहाड़ों से विपत्ति का
संदेश सुना रही है।
16 हाँ, राष्ट्रों को खबर भेजो,
यरूशलेम के खिलाफ संदेश
सुनाओ।"
"एक दूर देश से कुछ भेदिए* आ
रहे हैं,
वे यहूदा के शहरों के खिलाफ युद्ध
का ऐलान करेंगे।
17 वे खेत के रखवालों की तरह उसे
चारों तरफ से घेर लेंगे,[4]
क्योंकि उसने मुझसे बगावत की
है।"[5] यहोवा का यह ऐलान है।
18 "तुझे अपने ही चालचलन और
कामों का अंजाम भुगतना
पड़ेगा।[6]
तेरी तबाही क्या ही दर्दनाक है,
क्योंकि यह तेरे दिल की गहराई
तक समाया हुआ है!"
19 हाय, यह दर्द!* हाय, यह दर्द!
मेरे दिल में तेज़ दर्द उठता है।
मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क
रहा है।
मैं चुप नहीं रह सकता,

4:8 *या "अपनी छाती पीटो।" **4:9** *शा., "दिल।" **4:11** *शायद दया दिखाने या हमदर्दी करने के लिए उन्हें एक बेटी के रूप में बताया गया।

4:16 *शा., "नज़र रखनेवाले" यानी वे जो शहर पर नज़र रखते थे कि कब उस पर हमला किया जाए। **4:19** *शा., "मेरी अंतड़ियाँ।"

क्योंकि मैंने नरसिंगे की आवाज़
सुनी है,
युद्ध का बिगुल* सुना है।[1]
20 जगह-जगह से तबाही की खबर आ
रही है,
क्योंकि पूरा देश नाश किया जा
रहा है।
अचानक मेरे अपने तंबू नाश कर
दिए गए हैं,
पल-भर में ही मेरे तंबू नाश कर
दिए गए हैं।[2]
21 मैं और कब तक झंडा देखता रहूँ,
नरसिंगे की आवाज़ सुनता रहूँ?[3]
22 "मेरे लोग मूर्ख हैं,[4] वे मुझ पर
बिलकुल ध्यान नहीं देते।
मेरे बेटे बेवकूफ हैं, उन्हें ज़रा भी
समझ नहीं है।
वे बुरे काम करने में तो बड़े होशि-
यार* हैं,
मगर भले काम करना उन्हें आता
ही नहीं।"
23 मैं देश को देखकर दंग रह गया!
वह बिलकुल उजड़ गया था, सुन-
सान हो गया था।[5]
मैंने आकाश की ओर ताका तो
देखा कि उसमें कोई रौशनी
नहीं थी।[6]
24 पहाड़ों पर नज़र डाली तो देखकर
दंग रह गया!
वे काँप रहे थे, पहाड़ियाँ डोल
रही थीं।[7]
25 मैं यह देखकर दंग रह गया कि एक
इंसान तक नहीं था!
आकाश के सारे पंछी उड़ गए थे।[8]
26 मैं यह देखकर दंग रह गया कि
फलों का बाग वीरान हो गया था,
उसके सारे शहर ढा दिए गए थे![1]
यह सब यहोवा ने किया,
उसके क्रोध की आग भड़क
उठी थी।
27 क्योंकि यहोवा ने कहा है, "सारा
देश उजाड़ दिया जाएगा,[2]
मगर मैं उसे पूरी तरह खाक में नहीं
मिलाऊँगा।
28 इस वजह से देश मातम मनाएगा[3]
और ऊपर आकाश अँधेरा हो
जाएगा।[4]
ऐसा इसलिए होगा क्योंकि मैंने कहा
है, मैंने फैसला किया है,
मैंने जो सोचा है उसे नहीं
बदलूँगा,* न ही पीछे हटूँगा।[5]
29 घुड़सवारों और तीरंदाज़ों का आना
सुनकर
सारा शहर भाग जाता है।[6]
लोग घनी झाड़ियों में जा छिपते हैं,
चट्टानों पर चढ़ जाते हैं।[7]
सारे शहर खाली हो गए हैं,
कोई उनमें नहीं रहता।"
30 अब जब तू उजड़ गयी है, तो तू
क्या करेगी?
तू सुर्ख लाल कपड़े पहना
करती थी,
सोने के ज़ेवरों से खुद को
सँवारती थी,
आँखों को और बड़ा दिखाने के
लिए काजल लगाती थी।
मगर तेरा यह सारा सजना-सँवरना
बेकार गया[8]
क्योंकि जो अपनी हवस पूरी करने
तेरे पास आते थे उन्होंने तुझे
ठुकरा दिया,

अध्य. 4
1 सप 1:15, 16
2 यिर्म 10:20
3 यिर्म 6:1
4 व्य 32:6
यिर्म 5:21
5 यिर्म 9:10
6 यश 5:30
योए 2:31
7 यश 5:25
8 सप 1:3

दूसरा कॉल.
1 व्य 29:22, 23
2 लैव 26:32
2इत 36:20, 21
यश 6:11
यिर्म 10:22
यहे 33:28
3 यश 24:4
योए 1:10
4 यश 5:30
योए 2:30, 31
5 2रा 23:26
यहे 24:14
6 2रा 25:4
7 यश 2:19
8 यहे 23:22, 26

4:19 *या शायद, "युद्ध की ललकार।"
4:22 *या "बुद्धिमान।"
4:28 *या "मैं पछतावा नहीं महसूस करूँगा।"

अब वे तेरी जान के दुश्मन बन
गए हैं।[1]
31 मैंने एक बीमार औरत के कराहने
जैसी आवाज़ सुनी है,
उस औरत के चिल्लाने जैसी
आवाज़ जो पहली बार बच्चा
जनती है,
मैंने सिय्योन की बेटी की आवाज़
सुनी है जो एक-एक साँस के लिए
हाँफ रही है।
वह अपने हाथ फैलाकर कहती
है,[2] "हाय, मेरे साथ यह क्या
हुआ है,
कातिलों ने मुझे बदहाल करके
छोड़ा है!"

5 यरूशलेम की गली-गली घूमकर
देखो।
चारों तरफ नज़र दौड़ाओ, ध्यान से
देखो।
उसके हर चौक में ढूँढ़ो,
अगर एक भी ऐसा
इंसान मिले जो न्याय से
काम करता है,[3]
विश्वासयोग्य बने रहने की कोशिश
करता है,
तो मैं उस नगरी को माफ कर दूँगा।
2 वे कहते तो हैं, "यहोवा के जीवन
की शपथ!"
मगर उनकी शपथ झूठी होती है।[4]
3 हे यहोवा, क्या तेरी आँखें ऐसे लोगों
को नहीं ढूँढ़तीं जो तेरे विश्वास-
योग्य हैं?[5]
तूने उन्हें मारा, मगर उन पर कोई
असर नहीं हुआ।*
तूने उन्हें कुचल दिया, फिर भी
उन्होंने सबक नहीं सीखा।[6]
उन्होंने अपना चेहरा चट्टान से भी
ज़्यादा सख्त बना लिया है,[1]
उन्होंने पलटकर लौटने से इनकार
कर दिया है।[2]
4 मैंने सोचा, "ये छोटे लोग होंगे।
ये मूर्खता से पेश आते हैं क्योंकि ये
यहोवा की राह नहीं जानते,
अपने परमेश्वर का फैसला नहीं
जानते।
5 मैं बड़े लोगों के पास जाऊँगा और
उनसे बात करूँगा,
उन्होंने ज़रूर यहोवा की राह पर
ध्यान दिया होगा,
अपने परमेश्वर के फैसले पर ध्यान
दिया होगा।[3]
मगर उन सबने अपना जुआ तोड़
दिया,
अपने बंधन काट डाले।"
6 इसलिए जंगल का एक शेर उन पर
हमला करता है,
वीराने का एक भेड़िया उन्हें फाड़
खाता है,
एक चीता उनके शहरों के पास घात
लगाए बैठता है।
वहाँ से बाहर आनेवाले हर किसी
की बोटी-बोटी कर दी जाती है।
क्योंकि उन्होंने बहुत-से अपराध
किए हैं,
बार-बार विश्वासघात किया है।[4]
7 मैं तेरा यह गुनाह कैसे माफ कर
सकता हूँ?
तेरे बेटों ने मुझे छोड़ दिया है,
वे उसकी शपथ खाते हैं जो पर-
मेश्वर नहीं।[5]
मैंने उनकी ज़रूरतें पूरी कीं,
मगर वे बदचलनी करते रहे,
टोली बनाकर वेश्या के घर
जाते रहे।

5:3 *शा., "वे कमज़ोर नहीं हुए।"

अध्य. 4
1 विल 1:2
2 विल 1:17

अध्य. 5
3 यहे 22:29
मी 7:2
4 यश 48:1
5 2इत 16:9
6 2इत 28:20-22
यिर्म 2:30

दूसरा कॉल.
1 जक 7:11
2 भज 50:17
यश 42:24, 25
यहे 3:7
सप 3:2
3 मी 3:1
4 एज 9:6
यश 59:12
यहे 23:19
5 यह 23:6, 7
यिर्म 2:11
यिर्म 12:16
सप 1:4, 5

8 वे हवस में डूबे बेकाबू घोड़ों की
तरह हैं,
हर कोई दूसरे की पत्नी के पीछे
जाता है।[1]
9 यहोवा ऐलान करता है, "क्या मैं
इन करतूतों के लिए उनसे हिसाब
न माँगूँ?
क्या मैं ऐसे राष्ट्र से अपना बदला
न लूँ?"[2]
10 "आओ, उसके अंगूर के सीढ़ीदार
बागों पर हमला करो, उन्हें बर-
बाद कर दो,
मगर उन्हें पूरी तरह नाश मत
करना।[3]
उसकी फैलती डालियाँ तोड़कर ले
जाओ,
क्योंकि वे यहोवा की नहीं हैं।
11 इसराएल के घराने और यहूदा के
घराने ने
मुझे दगा देने में हद कर दी है।"
यहोवा का यह ऐलान है।[4]
12 "उन्होंने यहोवा का इनकार
किया है,
वे बार-बार कहते हैं, 'वह कुछ नहीं
करेगा।*[5]
हम पर कोई आफत नहीं आने-
वाली।
हम पर न तलवार चलेगी, न
अकाल पड़ेगा।'[6]
13 भविष्यवक्ताओं की बातें
खोखली हैं,
उनमें वचन* नहीं है।
उनके साथ ऐसा ही हो!"
14 इसलिए सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा कहता है,
"ये लोग ऐसा कहते हैं,
इसलिए मैं तेरे मुँह में अपने वचनों
को आग बना दूँगा,[1]
इन लोगों को लकड़ी बना दूँगा
और वह आग इन्हें भस्म कर
देगी।"[2]
15 यहोवा ऐलान करता है, "हे इस-
राएल के घराने, मैं दूर के एक
देश से तुझ पर हमला कराने-
वाला हूँ।[3]
वह ऐसा राष्ट्र है जो मुद्दतों से
वजूद में है,
जो पुराने ज़माने से है,
जिसकी भाषा तू नहीं जानता,
जिसकी बोली तू नहीं समझ
सकता।[4]
16 उनका तरकश खुली कब्र जैसा है,
वे सब-के-सब सूरमा हैं।
17 वे तेरी फसल और तेरी रोटी खा
जाएँगे,[5]
तेरे बेटे-बेटियों को खा जाएँगे,
तेरी भेड़-बकरियों और तेरे मवे-
शियों को खा जाएँगे,
तेरी अंगूर की बेलों और तेरे अंजीर
के पेड़ों को खा जाएँगे।
वे तलवार से तेरे किलेबंद शहरों
को नाश कर देंगे, जिन पर तुझे
भरोसा है।"

18 यहोवा ऐलान करता है, "मगर
उन दिनों में भी मैं तुम्हें पूरी तरह नाश
नहीं करूँगा।[6] 19 जब वे तुझसे पूछेंगे,
'हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे साथ
ये सब क्यों किया?' तो तू उनसे कहना,
'जिस तरह तुम लोगों ने मुझे छोड़कर
अपने देश में एक पराए देवता की सेवा
की, उसी तरह तुम एक ऐसे देश में,
जो तुम्हारा नहीं है, पराए लोगों की सेवा
करोगे।'"[7]

5:12 *या शायद, "वह वजूद में नहीं है।"
5:13 *यानी परमेश्वर का वचन।

अध्य. 5
1 यहे 22:11
2 लैव 26:25 यिर्म 9:9 यिर्म 44:22 नहू 1:2
3 लैव 26:44 यिर्म 46:28
4 यश 48:8 यिर्म 3:20 हो 5:7 हो 6:7
5 2इत 36:15, 16 यश 28:15
6 यिर्म 23:17

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 1:9
2 यिर्म 23:29
3 यिर्म 1:15 यिर्म 4:16 यिर्म 25:9 यहे 7:24 हब 1:6
4 व्य 28:49, 50
5 लैव 26:16
6 यिर्म 4:27
7 व्य 4:27 व्य 28:48 व्य 29:24, 25 2इत 7:21, 22

20 याकूब के घराने में यह ऐलान करो,
यहूदा में यह संदेश सुनाओ,
21 "मूर्खो और नासमझ लोगो, सुनो:[1]
उनकी आँखें तो हैं मगर वे देख नहीं सकते,[2]
उनके कान तो हैं मगर वे सुन नहीं सकते।[3]
22 यहोवा ऐलान करता है, 'क्या तुम्हें मेरा डर नहीं है?
क्या तुम्हें मेरे सामने थर-थर नहीं काँपना चाहिए?
मैंने ही समुंदर के लिए रेत की हद बाँधी थी,
उसके लिए एक सदा का नियम ठहराया था ताकि वह अपनी हद पार न करे।
समुंदर की लहरें कितना भी उछलें मगर वे जीत नहीं सकतीं,
कितना भी गरजें मगर किनारा लाँघ नहीं सकतीं।[4]
23 लेकिन इन लोगों का मन हठीला और बागी है,
ये मुझे छोड़कर अपने रास्ते चलने लगे।[5]
24 ये कभी अपने मन में नहीं कहते,
"आओ, हम अपने परमेश्वर यहोवा का डर मानें,
जो वक्त पर हमें बारिश देता है,
पतझड़ और वसंत की बारिश देता है,
जो हमारे लिए कटाई के तय हफ्तों की हिफाज़त करता है।"[6]
25 तुम्हारे अपने ही गुनाहों ने इन्हें आने से रोक दिया है,
तुम्हारे अपने ही पापों ने तुम्हें अच्छी चीज़ों से दूर कर दिया है।[7]

अध्य. 5
1 यिर्म 4:22
2 यश 59:10
3 यश 6:9 यहे 12:2 मत 13:13
4 अय 38:8, 11 भज 33:7 नीत 8:29
5 भज 95:10 यिर्म 11:8
6 व्य 11:14
7 व्य 28:23, 24 यिर्म 3:3

दूसरा कॉल.
1 आम 8:5 मी 6:11, 12
2 यश 1:23
3 भज 82:2
4 यिर्म 14:14 विल 2:14 यहे 13:6
5 यश 30:10 यूह 3:19

26 मेरे लोगों के बीच दुष्ट लोग पाए जाते हैं।
जैसे बहेलिए झुककर घात लगाते हैं, वैसे ही वे भी ताक में रहते हैं।
वे खतरनाक फंदे बिछाते हैं।
वे इंसानों को पकड़ते हैं।
27 पंछियों से भरे एक पिंजरे की तरह
उनके घर छल की कमाई से भरे रहते हैं।[1]
इसीलिए वे ताकतवर और माला-माल हो गए हैं।
28 वे मोटे और चिकने हो गए हैं,
बुराई उनमें उमड़ती रहती है।
वे अनाथों* के मुकदमे की पैरवी नहीं करते[2]
ताकि उनका अपना काम बन सके,
वे गरीबों को इंसाफ दिलाने से इन-कार करते हैं।'"[3]
29 यहोवा ऐलान करता है, "क्या मैं इन करतूतों के लिए उनसे हिसाब न माँगूँ?
क्या मैं ऐसे राष्ट्र से अपना बदला न लूँ?
30 देश में जो हुआ है वह भयानक और बहुत घिनौना है:
31 भविष्यवक्ता झूठी भविष्यवाणी करते हैं,[4]
याजक अपने अधिकार का गलत इस्तेमाल करके दूसरों को दबाते हैं।
मेरे अपने लोगों को यह सब बहुत पसंद है।[5]
मगर जब अंत आएगा तो तुम क्या करोगे?"

5:28 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।"

6

बिन्यामीन के लोगो, यरूशलेम से
दूर कहीं आसरा लो।
तकोआ[1] में नरसिंगा फूँको,[2]
बेत-हक्केरेम में आग जलाकर
इशारा दो!
क्योंकि उत्तर से एक विपत्ति तेज़ी से
आ रही है, एक बड़ी विपत्ति।[3]
2 सिय्योन की बेटी एक खूबसूरत,
नाज़ुक औरत जैसी दिखती है।[4]
3 चरवाहे और उनके झुंड आएँगे।
वे उसके चारों तरफ अपने तंबू
गाड़ेंगे,[5]
हर चरवाहा अपने झुंड को
चराएगा।[6]
4 "उससे युद्ध करने के लिए तैयार हो
जाओ!
चलो, हम भरी दोपहरी में उस पर
हमला करें!"
"हाय, दिन ढलता जा रहा है,
साँझ की छाया बढ़ती जा रही है!"
5 "चलो, हम रात को उस पर
हमला करें,
उसकी किलेबंद मीनारें ढा दें।"[7]
6 क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है,
"लकड़ी काटो, यरूशलेम पर हमला
करने के लिए ढलान खड़ी
करो।[8]
यह वह नगरी है जिससे हिसाब
लेना ज़रूरी है,
उसमें ज़ुल्म-ही-ज़ुल्म होता है।[9]
7 जैसे कुंड अपना पानी ताज़ा*
रखता है,
वैसे ही वह अपनी बुराई ताज़ी
रखती है।
वहाँ हमेशा खून-खराबे और
तबाही की चीख-पुकार सुनायी
पड़ती है,[1]
वहाँ मैं हर पल बीमारी और महा-
मारी देखता हूँ।
8 हे यरूशलेम, चेतावनी पर ध्यान दे,
वरना मुझे तुझसे घिन हो जाएगी
और मैं तुझसे मुँह फेर लूँगा,[2]
मैं तुझे ऐसा उजाड़कर रख दूँगा कि
तेरे यहाँ एक भी निवासी नहीं
रहेगा।"[3]
9 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है,
"वे इसराएल के सभी बचे हुओं
को बटोर लेंगे, जैसे अंगूर की
बेल पर बचे सारे अंगूर तोड़ लिए
जाते हैं।
अंगूर बटोरनेवाले की तरह एक
बार फिर डालियों पर हाथ
फेर।"
10 "मैं किसे बताऊँ,
किसे खबरदार करूँ?
कौन मेरी सुनेगा?
देख! उनके कान बंद हैं, इसलिए वे
बिलकुल ध्यान नहीं देते।[4]
देख! वे यहोवा के वचन की खिल्ली
उड़ाते हैं,[5]
उन्हें उसके वचन रास नहीं आते।
11 इसलिए यहोवा के क्रोध की आग
मेरे अंदर धधक रही है,
इसे मैं अपने अंदर और दबाकर
नहीं रख सकता।"[6]
"आग का यह प्याला गली के बच्चों
पर उँडेल दे,[7]
जवानों की टोलियों पर उँडेल दे।
उन सबको बंदी बना लिया जाएगा,
पति के साथ पत्नी को,
बुज़ुर्गों के साथ उनको भी जो बहुत
बूढ़े हैं।[8]

6:7 * या "ठंडा।"

अध्य. 6
1 2इत 11:5, 6
आम 1:1
2 यिर्म 4:5
3 यिर्म 1:14
यिर्म 10:22
4 यश 3:16
5 2रा 25:1
6 यिर्म 4:16, 17
7 2इत 36:17, 19
आम 2:5
8 यहे 21:21, 22
9 2रा 21:16
यहे 7:23

दूसरा कॉल.
1 यहे 7:11
मी 2:2
2 यहे 23:18
3 लैव 26:34
यिर्म 9:11
4 यश 6:10
प्रेष 7:51
5 2इत 36:15, 16
यिर्म 20:8
6 यिर्म 20:9
7 यिर्म 18:21
8 यहे 9:6

12 उनके घर दूसरों को दे दिए जाएँगे,
उनके खेत और उनकी पत्नियाँ भी
दे दी जाएँगी।[1]
क्योंकि मैं देश के लोगों के खिलाफ
अपना हाथ बढ़ाऊँगा।" यहोवा
का यह ऐलान है।
13 "क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक,
हर कोई बेईमानी से कमाता है,[2]
भविष्यवक्ता से लेकर याजक तक,
हर कोई धोखाधड़ी करता है।[3]
14 वे यह कहकर मेरे लोगों का घाव
सिर्फ ऊपर से ठीक करते हैं,
'शांति है! शांति है!'
जबकि कोई शांति नहीं है।[4]
15 क्या उन्हें अपने घिनौने कामों पर
शर्म आती है?
नहीं, बिलकुल शर्म नहीं आती!
उनमें शर्म नाम की चीज़ है ही
नहीं![5]
इसलिए वे भी उनकी तरह गिरेंगे
जो गिर चुके हैं।
जब मैं उन्हें सज़ा दूँगा तब वे ठोकर
खाकर गिर पड़ेंगे।" यह बात
यहोवा ने कही है।
16 यहोवा कहता है,
"दोराहे पर खड़े हो जाओ और
देखो।
पुराने ज़माने की राहों के बारे में
पूछो,
पूछो कि सही राह कौन-सी है, फिर
उस पर चलो[6]
और अपने जी को चैन दिलाओ।"
मगर वे कहते हैं, "हम उस राह पर
नहीं चलेंगे।"[7]
17 "मैंने पहरेदार ठहराए[8] जिन्होंने
कहा,
'नरसिंगे की आवाज़ पर ध्यान
दो!'"[9]
मगर उन्होंने कहा, "हम ध्यान नहीं
देंगे।"[1]
18 "इसलिए राष्ट्रो, सुनो!
लोगो, जान लो कि उनके साथ क्या
होनेवाला है।
19 धरती के सभी लोगो, सुनो!
मैं इन लोगों पर विपत्ति
लानेवाला हूँ,[2]
यह उनकी अपनी ही साज़िशों का
अंजाम होगा,
क्योंकि उन्होंने मेरे वचनों पर कोई
ध्यान नहीं दिया,
मेरे कानून* को ठुकरा दिया।"
20 "तुम जो शीबा से मेरे लिए लोबान
लाते हो
और दूर देश से खुशबूदार वच*
लाते हो,
वह मेरे लिए कोई मायने नहीं
रखता।
तुम्हारी पूरी होम-बलियाँ मुझे
स्वीकार नहीं,
तुम्हारे बलिदानों से मैं खुश नहीं।"[3]
21 इसलिए यहोवा कहता है,
"मैं इन लोगों के आगे रोड़े डालूँगा,
जिनसे वे ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे,
पिता और बेटे साथ गिरेंगे,
पड़ोसी और उसका साथी भी गिरेंगे
और वे सब मिट जाएँगे।"[4]
22 यहोवा कहता है,
"देखो, उत्तर के एक देश से लोग
आ रहे हैं,
धरती के छोर से एक बड़े राष्ट्र को
जगाया जाएगा।[5]
23 वे तीर-कमान और बरछी हाथ में
लिए आएँगे।

अध्य. 6
1 व्य 28:30, यिर्म 8:10, विल 5:11, सप 1:13
2 यहे 22:12
3 यिर्म 2:8, यिर्म 8:10-12, यिर्म 23:11, मी 3:5, 11, सप 3:4
4 यिर्म 14:13, यिर्म 23:16, 17, यहे 13:10, 1थि 5:3
5 यिर्म 3:3
6 यश 30:21
7 यिर्म 18:15
8 यिर्म 25:4, यहे 3:17, हब 2:1
9 यश 58:1

दूसरा कॉल.
1 जक 7:11
2 व्य 4:25, 26, दान 9:12
3 यश 1:11, यश 66:3, यिर्म 7:21, आम 5:21
4 2इत 36:17, विल 2:21
5 यिर्म 1:14, यिर्म 25:9

6:19 *या "मेरी हिदायतों।" **6:20** *एक खुशबूदार नरकट।

वे बेरहम हैं, किसी पर तरस नहीं
खाएँगे।
वे समुंदर की तरह गरजेंगे,
घोड़ों पर सवार होकर आएँगे।[1]
हे सिय्योन की बेटी, वे दल बाँधकर
आएँगे,
एक योद्धा की तरह तुझ पर हमला
करेंगे।"
24 हमने इसकी खबर सुनी है।
हमारे हाथ ढीले पड़ गए हैं,[2]
डर ने हमें जकड़ लिया है,
हम बच्चा जनती औरत की तरह
तड़प रहे हैं।[3]
25 खेत में मत जाओ,
न ही सड़क पर चलो,
क्योंकि दुश्मन के हाथ में
तलवार है,
चारों तरफ आतंक छाया हुआ है।
26 मेरे लोगों की बेटी,
टाट ओढ़ ले,[4] राख में लोट।
तू बिलख-बिलखकर रो, ऐसे मातम
मना जैसे कोई इकलौते बेटे की
मौत पर मनाता है,[5]
क्योंकि नाश करनेवाला अचानक
हम पर टूट पड़ेगा।[6]
27 "मैंने तुझे* अपने लोगों के
बीच धातु शुद्ध करनेवाला ठह-
राया है,
जो अच्छी तरह जाँचता-परखता है,
तू उनके तौर-तरीकों पर गौर कर,
उनकी जाँच कर।
28 वे सब ढीठ हैं, उनके जैसे लोग
कहीं नहीं मिलेंगे,[7]
वे बदनाम करते फिरते हैं।[8]
वे ताँबे और लोहे जैसे हैं,
सब-के-सब भ्रष्ट हैं।
29 धौंकनियाँ जल गयीं,
मगर आग से सिर्फ सीसा निकला।
उन्हें शुद्ध करने की ज़बरदस्त
कोशिश की गयी, मगर कोई
फायदा नहीं हुआ,[1]
जो बुरे हैं उन्हें अलग नहीं किया
गया।[2]
30 लोग उन्हें खोटी चाँदी कहेंगे,
क्योंकि यहोवा ने उन्हें खोटा
पाया है।"[3]

7 यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह के
पास पहुँचा: 2 "तू यहोवा के भवन
के फाटक पर खड़े होकर इस संदेश
का ऐलान कर, 'यहूदा के सब लोगो,
तुम जो यहोवा के सामने दंडवत करने
के लिए इन फाटकों से अंदर जा रहे
हो, तुम सब यहोवा का यह संदेश सुनो।
3 सेनाओं का परमेश्वर और इसराएल
का परमेश्वर यहोवा कहता है, "तुम
सब अपना चालचलन सुधारो और अपने
तौर-तरीके बदलो, तब मैं तुम्हें इस जगह
बसे रहने दूँगा।[4] 4 तुम छल-भरी बातों
पर भरोसा करके यह मत कहो, 'यह*
यहोवा का मंदिर है, यहोवा का मंदिर,
यहोवा का मंदिर!'[5] 5 अगर तुम वाकई
अपना चालचलन सुधारोगे और अपने
तौर-तरीके बदलोगे, दो लोगों के बीच के
मुकदमे में सच्चा न्याय करोगे,[6] 6 पर-
देसियों, अनाथों* और विधवाओं को
नहीं सताओगे,[7] इस जगह बेगुनाहों का
खून नहीं बहाओगे और दूसरे देवताओं
के पीछे नहीं जाओगे जिससे तुम्हारा नुक-
सान होगा,[8] 7 तब मैं तुम्हें इस देश में
बसे रहने दूँगा जो मैंने तुम्हारे पुरखों को
सदा* के लिए दिया था।"'"

अध्य. 6
1 हब 1:8
2 यहे 21:7
3 यिर्म 4:31
4 यिर्म 4:8
5 विल 1:2, 16
6 यिर्म 15:8
7 यश 30:1, यश 48:4, यिर्म 5:23
8 यिर्म 9:4

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 9:7, यहे 22:20
2 यहे 24:13
3 यिर्म 14:19, विल 5:22

अध्य. 7
4 यिर्म 26:13
5 मी 3:11
6 यिर्म 21:12, यिर्म 22:3
7 व्य 24:17, भज 82:3, जक 7:9, 10, याकू 1:27
8 व्य 8:19

6:27 *यानी यिर्मयाह।

7:4 *शा., "ये" यानी मंदिर और आस-पास की इमारतें। 7:6 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।" 7:7 *या "हमेशा से हमेशा तक।"

8 “मगर तुम छल-भरी बातों पर
भरोसा करते हो।[1] इससे तुम्हें कोई
फायदा नहीं होगा। **9** तुम चोरी,[2]
कत्ल और व्यभिचार करते हो, झूठी
शपथ खाते हो,[3] बाल देवता के लिए
बलिदान चढ़ाते हो[4] और उन देव-
ताओं के पीछे जाते हो जिन्हें तुम पहले
नहीं जानते थे। तुम्हें क्या लगता है
कि तुम ऐसे काम करते हुए भी **10** इस
भवन में मेरे सामने आकर खड़े हो सकते
हो, जिससे मेरा नाम जुड़ा है? क्या ये
सब घिनौने काम करते हुए भी तुम कह
सकते हो, ‘हम ज़रूर बच जाएँगे’?
11 क्या तुमने इस भवन को, जिससे मेरा
नाम जुड़ा है, लुटेरों की गुफा समझ रखा
है?[5] मैंने खुद यह देखा है।” यहोवा का
यह ऐलान है।

12 “‘अब तुम शीलो में मेरे पवित्र-
स्थान जाओ,[6] जिसे मैंने अपने नाम की
महिमा के लिए पहले चुना था।[7] वहाँ
जाकर देखो कि मैंने अपनी प्रजा इस-
राएल की बुराई की वजह से उस जगह
का क्या हाल किया।’[8] **13** यहोवा
ऐलान करता है, ‘फिर भी तुम इन कामों
से बाज़ नहीं आए। मैं तुम्हें बार-बार सम-
झाता रहा,* मगर तुमने मेरी नहीं सुनी।[9]
मैं तुम्हें पुकारता रहा, मगर तुमने
कोई जवाब नहीं दिया।[10] **14** इसलिए
मैंने शीलो का जो हश्र किया था, वही
इस भवन का भी करूँगा जिससे मेरा नाम
जुड़ा है[11] और जिस पर तुम भरोसा करते
हो।[12] मैं इस जगह का, जो मैंने तुम्हें
और तुम्हारे पुरखों को दी थी, वही हाल
करूँगा।[13] **15** मैं तुम्हें अपनी नज़रों से
दूर कर दूँगा, ठीक जैसे मैंने तुम्हारे सब
भाइयों को, एप्रैम के सभी वंशजों को दूर
कर दिया था।’[1]

16 तू इन लोगों की खातिर प्रार्थना
मत करना। इनकी खातिर मुझे दुहाई
मत देना, न प्रार्थना करना, न फरियाद
करना[2] क्योंकि मैं नहीं सुनूँगा।[3] **17** तू
देख ही रहा है कि ये लोग यहूदा के
शहरों और यरूशलेम की गलियों में
क्या-क्या कर रहे हैं। **18** बेटे लकड़ियाँ
इकट्ठी करते हैं, पिता उनमें आग लगाते हैं
और पत्नियाँ आटा गूँधती हैं ताकि स्वर्ग
की रानी* के लिए बलिदान की टिकियाँ
बना सकें[4] और वे दूसरे देवताओं के
आगे अर्घ चढ़ाते हैं। यह सब करके वे
मेरा क्रोध भड़काते हैं।[5] **19** यहोवा
ऐलान करता है, ‘क्या वे ऐसा करके मुझे
दुख पहुँचा रहे हैं?* नहीं, वे खुद ही
को दुख पहुँचा रहे हैं, अपना ही अपमान
कर रहे हैं।’[6] **20** इसलिए सारे जहान
का मालिक यहोवा कहता है, ‘देख, मेरे
क्रोध और जलजलाहट का प्याला इस
जगह पर उँडेला जाएगा,[7] इंसान और
जानवर पर, मैदान के पेड़ों और ज़मीन
की उपज पर उँडेला जाएगा। मेरे क्रोध
की आग जलती रहेगी, यह कभी नहीं
बुझेगी।’[8]

21 सेनाओं का परमेश्वर और इस-
राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है,
‘चढ़ाओ, चढ़ाओ, बलिदानों के साथ पूरी
होम-बलियाँ चढ़ाओ और उनका गोश्त
खुद खाओ।[9] **22** क्योंकि जिस दिन मैं
तुम्हारे पुरखों को मिस्र से बाहर लाया
था, उस दिन मैंने उनसे पूरी होम-
बलियों और बलिदानों के बारे में न

7:13 *शा., “तड़के उठकर तुमसे बातें
करता रहा।”

7:18 *एक देवी की उपाधि जिसे वे इस-
राएली पूजते थे जो सच्ची उपासना से मुकर
गए थे; शायद यह प्रजनन की देवी थी।
7:19 *या “गुस्सा दिला रहे हैं; भड़का
रहे हैं।”

अध्य. 7
1 यश 30:10
यिर्म 5:31
यिर्म 14:14
2 यश 3:14
मी 2:2
3 यिर्म 5:2
4 यिर्म 11:13
5 मत 21:13
मर 11:17
लूक 19:45, 46
6 यह 18:1
7 व्य 12:5, 11
8 1शम 4:11
भज 78:60
यिर्म 26:6, 9
9 2इत 36:15, 16
यिर्म 25:3, 4
10 यश 65:12
11 2रा 25:8, 9
12 यिर्म 7:4
13 1शम 4:10, 11
भज 78:60
यिर्म 26:4, 6
विल 2:7

दूसरा कॉल.
1 2रा 17:22, 23
2 निर्ग 32:9, 10
यिर्म 11:14
3 यिर्म 15:1
4 यिर्म 44:17
5 यश 57:6
यिर्म 19:13
यहे 20:28
6 दान 9:7
7 विल 2:3
8 2रा 22:17
यिर्म 17:27
9 यश 1:11
यिर्म 6:20
हो 8:13
आम 5:21

बात की थी, न ही उन्हें आज्ञा दी थी।[1]
23 मगर मैंने उनसे यह ज़रूर कहा था:
“तुम मेरी आज्ञा मानना, तब मैं तुम्हारा
परमेश्‍वर होऊँगा और तुम मेरे लोग
होगे।[2] मैं तुम्हें जिस राह पर चलने की
आज्ञा दूँगा तुम उसी पर चलना ताकि
तुम्हारा भला हो।”’[3] **24** मगर उन्होंने
मेरी नहीं सुनी, मेरी तरफ कान नहीं
लगाया।[4] इसके बजाय, वे अपनी ही
योजनाओं* के मुताबिक चले, ढीठ
होकर अपने दुष्ट मन की सुनते रहे[5]
और आगे बढ़ने के बजाय पीछे जाते
रहे। **25** जिस दिन तुम्हारे पुरखे मिस्र
से निकले थे, तब से लेकर आज तक
तुम ऐसा ही करते आए हो।[6] इस-
लिए मैं अपने सभी सेवकों को, अपने
भविष्यवक्‍ताओं को तुम्हारे पास भेजता
रहा। मैंने उन्हें हर दिन भेजा, बार-
बार भेजा।*[7] **26** मगर इन लोगों ने
मेरी सुनने से इनकार कर दिया और मेरी
तरफ कान नहीं लगाया।[8] ये ढीठ-के-
ढीठ बने रहे और अपने पुरखों से भी बद-
तर निकले!

27 तू जाकर ये सारी बातें उनसे
कहना।[9] मगर वे तेरी नहीं सुनेंगे। तू
उन्हें बुलाएगा, मगर वे जवाब नहीं देंगे।
28 तू उनसे कहेगा, ‘यह वह राष्ट्र है
जिसने अपने परमेश्‍वर यहोवा की आज्ञा
नहीं मानी और शिक्षा लेने से इनकार कर
दिया। उनमें एक भी ऐसा इंसान नहीं जो
विश्‍वासयोग्य हो। वे विश्‍वासयोग्य रहने
के बारे में बात तक नहीं करते।’[10]

29 अपने लंबे* बाल काटकर फेंक
दे और सूनी पहाड़ियों पर जाकर शोक-
गीत गा क्योंकि यहोवा ने इस पीढ़ी को
ठुकरा दिया है। परमेश्‍वर इस पीढ़ी को
छोड़ देगा क्योंकि इसने उसका क्रोध भड़-
काया है। **30** यहोवा ऐलान करता है,
‘यहूदा के लोगों ने मेरी नज़र में बुरे काम
किए हैं। उन्होंने उस भवन में, जिससे मेरा
नाम जुड़ा है, घिनौनी मूरतें खड़ी करके
उसे दूषित कर दिया है।[1] **31** उन्होंने
“हिन्‍नोम के वंशजों की घाटी”*[2] में
तोपेत की ऊँची जगह बनायी हैं ताकि वे
अपने बेटे-बेटियों को आग में होम कर
दें।[3] यह ऐसा काम है जिसकी न तो मैंने
कभी आज्ञा दी थी और न ही कभी यह
खयाल मेरे मन में आया।’[4]

32 यहोवा ऐलान करता है, ‘इस-
लिए देख, वे दिन आ रहे हैं जब
यह जगह फिर कभी न तोपेत कहलाए-
गी, न ही “हिन्‍नोम के वंशजों की घाटी”*
बल्कि “मार-काट की घाटी” कहलाए-
गी। वे तोपेत में तब तक लाशें दफनाएँ-
गे जब तक कि वहाँ और जगह न
बचे।[5] **33** और इन लोगों की लाशें
आकाश के पक्षियों और धरती के जान-
वरों का निवाला बन जाएँगी और उन्हें
डराकर भगानेवाला कोई न होगा।[6]
34 मैं यहूदा के शहरों और यरूशलेम की
गलियों का ऐसा हाल कर दूँगा कि वहाँ
से न तो खुशियाँ और जश्‍न मनाने की
आवाज़ें आएँगी, न ही दूल्हा-दुल्हन के
साथ आनंद मनाने की आवाज़ें।[7] सारा
देश खंडहर बन जाएगा।’”[8]

8 यहोवा ऐलान करता है, “उस समय
यहूदा के राजाओं, हाकिमों, याज-
कों, भविष्यवक्‍ताओं और यरूशलेम के
लोगों की हड्डियाँ उनकी कब्रों से निकाली
जाएँगी। **2** उन्हें सूरज, चाँद और
आकाश की सारी सेना के सामने बिखेर

7:24 *या “सलाह।” **7:25** *शा., “मैं हर दिन तड़के उठकर उन्हें भेजता रहा।” **7:29** *या “समर्पित।”

7:31, 32 *शब्दावली में “गेहन्‍ना” देखें।

अध्य. 7

1 1शम 15:22; हो 6:6
2 निर्ग 19:5; लैव 26:3, 12
3 व्य 5:29
4 निर्ग 32:8
5 हो 4:16; जक 7:12
6 व्य 9:7; 1शम 8:8
7 2रा 17:13; 2इत 36:15; नहे 9:17, 30; यिर्म 25:4
8 2इत 33:10; यिर्म 25:3
9 यिर्म 26:2; यहे 2:7
10 यिर्म 5:1; मी 7:2

दूसरा कॉल.

1 2रा 21:1, 4; 2इत 33:1, 4; यिर्म 23:11; यिर्म 32:34
2 यह 15:8, 12
3 व्य 12:29-31; 2रा 17:17; 2इत 28:1, 3; 2इत 33:1, 6; यहे 20:31
4 लैव 18:21; लैव 20:3; यिर्म 19:5, 6; यिर्म 32:35
5 यिर्म 19:11; यहे 6:4, 5
6 व्य 28:26; भज 79:2; यिर्म 16:4
7 यश 24:8; यिर्म 25:10
8 लैव 26:33; यश 1:7; यश 6:11

दिया जाएगा, जिनसे उन्हें बहुत प्यार था, जिनकी वे सेवा करते थे और जिनके पीछे वे जाते थे, जिनसे सलाह करते थे और जिनके आगे दंडवत करते थे।[1] वे न तो इकट्ठी की जाएँगी और न ही दफनायी जाएँगी। वे धरती के ऊपर खाद की तरह पड़ी रहेंगी।"[2]

3 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा ऐलान करता है, "इस दुष्ट घराने के बचे हुए लोगों को मैं जिन-जिन जगहों में तितर-बितर करूँगा, वहाँ वे जीवन के बजाय मौत की कामना करेंगे।

4 तू उनसे कहना, 'यहोवा कहता है,
"क्या वे गिरेंगे और दोबारा नहीं
उठेंगे?
अगर एक पलटकर लौटे तो क्या
दूसरा भी नहीं लौटेगा?
5 यरूशलेम के ये लोग क्यों मुझसे
विश्वासघात करने से बाज़ नहीं
आते?
वे छल का रास्ता नहीं छोड़ते,
वे पलटकर लौटने से इनकार
करते हैं।[3]
6 मैंने उन पर ध्यान दिया, उनकी
बात सुनता रहा, मगर उनके
बात करने का तरीका सही
नहीं था।
एक भी इंसान अपनी दुष्टता पर
नहीं पछताया, न ही उसने पूछा,
'मैंने क्या किया है?'[4]
हर कोई बार-बार उसी रास्ते
पर लौट जाता है जिस पर सब
चलते हैं,
जैसे घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ जंग
में जाता है।
7 आकाश में उड़नेवाला लग-
लग भी जानता है कि कब
उसे उड़कर दूसरी जगह
जाना है,*
फाख्ता, बतासी और सारिका# भी
समय पर लौटते हैं।△
मगर मेरे अपने लोग यहोवा के
फैसले नहीं समझते।"'[1]
8 'तुम लोग कैसे कह सकते हो, "हम
बुद्धिमान हैं, हमारे पास यहोवा
का कानून* है"?
सच तो यह है कि शास्त्रियों#
की झूठी कलम[2] का इस्तेमाल
सिर्फ झूठ लिखने के लिए किया
गया है।
9 बुद्धिमानों को शर्मिंदा किया
गया है।[3]
वे घबरा जाएँगे और पकड़े जाएँगे।
देखो, उन्होंने यहोवा का वचन
ठुकरा दिया है,
तो फिर उनके पास बुद्धि कहाँ से
होगी?
10 इसलिए मैं उनकी पत्नियाँ दूसरे
आदमियों को दे दूँगा,
उनके खेत दूसरों के अधिकार में
कर दूँगा,[4]
क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक,
हर कोई बेईमानी से कमाता है,[5]
भविष्यवक्ता से लेकर याजक
तक, हर कोई धोखाधड़ी
करता है।[6]
11 वे यह कहकर मेरे लोगों की बेटी
का घाव सिर्फ ऊपर से ठीक
करते हैं,
"शांति है! शांति है!"

अध्य. 8
1 व्य 4:19; 2रा 17:16; 2रा 21:1, 3; यिर्म 19:13; यहे 8:16; सप 1:4, 5
2 यिर्म 16:4
3 यिर्म 5:3
4 यिर्म 5:1

दूसरा कॉल.
1 यश 1:3
2 यश 8:1
3 यश 29:14
4 व्य 28:30; सप 1:13
5 यश 56:11; यहे 33:31; मी 3:11
6 यिर्म 5:31; यिर्म 6:12-15; यिर्म 27:9; विल 2:14; यहे 22:28

8:7 *या "अपना तय समय जानता है।" #या शायद, "सारस।" △या "प्रवास करते हैं।" **8:8** *या "की हिदायत।" #या "सचिवों।"

जबकि कोई शांति नहीं है।[1]
12 क्या उन्हें अपने घिनौने कामों पर
शर्म आती है?
नहीं, बिलकुल शर्म नहीं आती!
उनमें शर्म नाम की चीज़ है ही
नहीं![2]
इसलिए वे भी उनकी तरह गिरेंगे
जो गिर चुके हैं।
जब मैं उन्हें सज़ा दूँगा तब वे ठोकर
खाकर गिर पड़ेंगे।'[3] यह बात
यहोवा ने कही है।
13 यहोवा ऐलान करता है, 'जब मैं
उन्हें इकट्ठा करूँगा तो उनका अंत
कर दूँगा।
न अंगूर की बेल पर एक अंगूर
बचेगा, न ही अंजीर के पेड़ पर
एक अंजीर बचेगा और सारे पत्ते
मुरझा जाएँगे।
मैंने उन्हें जो भी दिया था उसे वे खो
देंगे।'"
14 "हम यहाँ क्यों बैठे हैं?
चलो हम इकट्ठे होकर किलेबंद
शहरों में जाएँ और वहाँ मर
जाएँ।[4]
क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा हमें
मिटा देगा,
वह हमें ज़हर मिला पानी
पिलाता है,[5]
क्योंकि हमने यहोवा के खिलाफ
पाप किया है।
15 हमने शांति की आशा की थी, मगर
कुछ भला नहीं हुआ।
ठीक होने की उम्मीद की थी, मगर
खौफ छाया रहा![6]
16 दान से उसके घोड़ों का फुफकारना
सुनायी दे रहा है।
उसके घोड़ों के हिनहिनाने से
पूरी धरती काँप रही है।
दुश्मन आते हैं और पूरा देश और
उसका सबकुछ खा जाते हैं,
शहर और उसके निवासियों को
निगल जाते हैं।"
17 यहोवा ऐलान करता है, "मैं तुम्हारे
बीच साँप भेज रहा हूँ,
ऐसे ज़हरीले साँप जिन्हें मंत्र
फूँककर काबू नहीं किया जा
सकता।
वे तुम्हें डसकर ही रहेंगे।"
18 मेरा दुख बरदाश्त से बाहर है,
मेरा मन रोगी है।
19 दूर देश से मदद की पुकार सुनायी
दे रही है,
मेरे अपने लोगों की बेटी कह
रही है,
"क्या यहोवा सिय्योन में नहीं है?
क्या उसका राजा वहाँ नहीं है?"
"वे क्यों अपनी खुदी हुई मूरतों से,
निकम्मे और पराए देवताओं से मेरा
क्रोध भड़काते हैं?"
20 "कटाई का दौर बीत चुका है,
गरमियाँ जा चुकी हैं,
मगर हमें नहीं बचाया गया!"
21 अपने लोगों की बेटी का घाव देख-
कर मैं दुख से बेहाल हूँ,[1]
मैं बहुत मायूस हूँ।
मैं सदमे में हूँ।
22 क्या गिलाद में बलसाँ* नहीं है?[2]
क्या वहाँ कोई वैद्य नहीं है?[3]
तो फिर क्यों मेरे लोगों की बेटी की
सेहत ठीक नहीं हुई?[4]

9 काश, मेरा सिर आँसुओं से भरा
कुआँ होता
और मेरी आँखें उनका सोता होतीं![5]
तब मैं अपने देश के मारे हुए लोगों
के लिए

8:22 *या "मलहम।"

अध्य. 8
1 यिर्म 23:16, 17; यहे 13:10
2 यिर्म 3:3
3 यिर्म 23:12
4 यिर्म 4:5
5 यिर्म 9:15; यिर्म 23:15; विल 3:19
6 यिर्म 4:10; यिर्म 14:19

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 4:19, 20; यिर्म 14:17
2 उत 37:25
3 यिर्म 30:12, 13
4 यिर्म 30:17; यिर्म 33:4, 6

अध्य. 9
5 यश 22:4; यिर्म 13:17

दिन-रात रोता रहता।
2 काश, वीराने में मेरे लिए एक मुसा-फिरखाना होता!
तब मैं अपने लोगों को छोड़कर दूर चला जाता,
क्योंकि वे सब बदचलन हैं,[1]
दगाबाज़ों का गुट हैं।
3 वे अपनी जीभ कमान की तरह मोड़ते हैं,
देश में कोई विश्वासयोग्य नहीं है,
वहाँ बस झूठ का बोलबाला है,[2]
यहोवा ऐलान करता है, "वे बुराई-पर-बुराई करते जाते हैं
और मुझ पर कोई ध्यान नहीं देते।"[3]
4 "हर कोई अपने पड़ोसी से बचकर रहे,
अपने भाई पर भी भरोसा न करे।
क्योंकि हर भाई गद्दार है,[4]
हर पड़ोसी दूसरों को बदनाम करने-वाला है।[5]
5 हर कोई अपने पड़ोसी को ठगता है,
कोई किसी से सच नहीं कहता।
उन्होंने अपनी जीभ को झूठ बोलना सिखाया है,[6]
वे बुरे काम करते-करते पस्त हो जाते हैं।
6 तू छल-कपट से घिरा हुआ है।
वे छल करते हैं और मुझे जानने से इनकार करते हैं।" यहोवा का यह ऐलान है।
7 इसलिए सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता है,
"मैं उन्हें पिघलाकर परखूँगा,[7]
क्योंकि मैं अपने लोगों की बेटी के साथ और कर ही क्या सकता हूँ?

अध्या. 9
1 यिर्म 5:7
यिर्म 23:10
2 यश 59:3
3 यिर्म 4:22
4 यिर्म 12:6
मी 7:2, 5
5 यिर्म 6:28
यहे 22:9
6 भज 50:19
मी 6:12
7 यश 1:25
यश 48:10

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 5:9, 29
2 यिर्म 4:25
सप 1:3
3 भज 79:1
यिर्म 26:18
4 यिर्म 10:22
5 यिर्म 4:27
यिर्म 25:11
यिर्म 32:43

8 उनकी जीभ झूठ बोलनेवाला घातक तीर है।
वे एक-दूसरे से शांति की बातें तो करते हैं,
मगर मन में घात लगाने की साज़िश रचते हैं।"
9 यहोवा ऐलान करता है, "क्या मैं इन करतूतों के लिए उनसे हिसाब न माँगूँ?
क्या मैं ऐसे राष्ट्र से अपना बदला न लूँ?[1]
10 मैं पहाड़ों के लिए रोऊँगा, मातम मनाऊँगा,
वीराने के चरागाह के लिए शोक-गीत गाऊँगा,
क्योंकि वे ऐसे जल गए हैं कि वहाँ से कोई नहीं गुज़रता,
मवेशियों की आवाज़ नहीं सुनायी देती।
आकाश के पंछी और जानवर भाग गए हैं, सब गायब हो गए हैं।[2]
11 मैं यरूशलेम को मलबे का ढेर[3] और गीदड़ों की माँद बना दूँगा,[4]
यहूदा के शहरों को ऐसा उजाड़ दूँगा कि वहाँ एक भी निवासी नहीं रहेगा।[5]
12 कौन इतना बुद्धिमान है कि वह इस बात को समझ सके?
यहोवा ने किससे कहा कि वह जाकर इन बातों का ऐलान करे?
देश क्यों नाश हो गया?
यह क्यों वीराने की तरह ऐसा जल गया है
कि यहाँ से कोई नहीं गुज़रता?"
13 यहोवा जवाब देता है, "क्योंकि
उन्होंने मेरा दिया कानून* ठुकरा दिया,

9:13 *या "हिदायत।"

उसका पालन नहीं किया और मेरी बात
नहीं मानी। 14 इसके बजाय, वे ढीठ
होकर अपनी मन-मरज़ी करते रहे[1] और
बाल देवता की मूरतों के पीछे चलते रहे,
जैसे उनके पिताओं ने उन्हें सिखाया था।[2]
15 इसलिए सेनाओं का परमेश्वर और
इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता
है, 'देख, मैं इन लोगों को नागदौना
खाने और ज़हर मिला पानी पीने पर
मजबूर करूँगा।[3] 16 मैं उन्हें उन राष्ट्रों
में तितर-बितर कर दूँगा जिन्हें न तो
वे जानते हैं, न उनके पुरखे जानते थे।[4]
और मैं उनके पीछे एक तलवार भेजूँगा
और उन पर तब तक वार करता रहूँगा
जब तक कि उनका सफाया न कर दूँ।'[5]

17 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है,
'समझ से काम लो।
शोकगीत गानेवाली औरतों को
बुलाओ,[6]
उन औरतों को, जो ऐसे गीत गाने
में माहिर हैं।
18 उनसे कहो कि वे जल्द आएँ और
हमारे लिए मातम का गीत गाएँ
ताकि हमारी आँखों से आँसुओं की
धारा बहे,
हमारी पलकें भीग जाएँ।[7]
19 सिय्योन से रोने-बिलखने की
आवाज़ आ रही है,[8]
"हाय, हम कैसे बरबाद हो गए हैं!
हम कितने बेइज़्ज़त किए गए हैं!
क्योंकि हमें अपना देश छोड़ना
पड़ा, उन्होंने हमारे घर ढा
दिए।"[9]
20 औरतो, यहोवा का संदेश सुनो।
उसने जो कहा है, उस पर कान
लगाओ।
अपनी बेटियों को मातम का यह
गीत सिखाओ,
एक-दूसरे को यह शोकगीत
सिखाओ।[1]
21 क्योंकि मौत हमारी खिड़कियों से
अंदर घुस आयी है,
हमारी मज़बूत मीनारों में घुस
आयी है
ताकि गलियों से हमारे बच्चों को
और चौक से हमारे जवानों को
छीन ले।'[2]
22 तू कहना, 'यहोवा ऐलान करता है,
"लोगों की लाशें ऐसी पड़ी रहेंगी
जैसे मैदान में खाद पड़ी रहती है,
जैसे खेत में कतार-भर पूले पड़े
रहते हैं जिन्हें कटाई करनेवाला
काटकर छोड़ देता है।
और उन्हें इकट्ठा करनेवाला कोई
नहीं होगा।"'"[3]
23 यहोवा कहता है,
"बुद्धिमान आदमी अपनी बुद्धि पर
शेखी न मारे,[4]
ताकतवर आदमी अपनी ताकत पर
शेखी न मारे,
न ही दौलतमंद आदमी अपनी
दौलत पर शेखी मारे।"[5]
24 यहोवा ऐलान करता है, "लेकिन
अगर कोई गर्व करे तो इस बात
पर गर्व करे
कि वह मेरे बारे में अंदरूनी समझ
और ज्ञान रखता है[6]
कि मैं यहोवा हूँ, जो अटल
प्यार ज़ाहिर करता है, न्याय
करता है और धरती पर नेकी
करता है,[7]
क्योंकि मैं इन्हीं बातों से खुश
होता हूँ।"[8]

अध्य. 9

1 यिर्म 7:24
2 न्या 3:7; 1शम 12:10; हो 11:2
3 यिर्म 8:14; यिर्म 23:15; विल 3:15, 19
4 लैव 26:33; व्य 28:64; भज 106:27; जक 7:14
5 यिर्म 29:17; यहे 5:2
6 2इत 35:25
7 यिर्म 6:26; यिर्म 14:17
8 यिर्म 4:31; यहे 7:16; मी 1:8, 9
9 विल 4:15; मी 2:10

दूसरा कॉल.

1 यश 29:2; यिर्म 7:29
2 2इत 36:17; यिर्म 6:11
3 यश 5:25; यिर्म 16:3, 4
4 यश 5:21
5 व्य 8:12-14; व्य 8:17, 18
6 1कुर 1:31; 2कुर 10:17
7 निर्ग 34:6; भज 89:14
8 भज 99:4; हो 6:6; मी 6:8; मी 7:18

25 यहोवा ऐलान करता है, “देखो, वे
दिन आ रहे हैं जब मैं ऐसे हर किसी से
हिसाब माँगूँगा जो खतना करवाकर भी
खतनारहित जैसा है।[1] 26 मैं मिस्र,[2]
यहूदा,[3] एदोम,[4] मोआब[5] और अम्मो-
नियों[6] से और वीराने के उन सभी लोगों
से हिसाब माँगूँगा जिनकी कलमें मुँड़ी हुई
हैं।[7] सारे राष्ट्र खतनारहित हैं और इस-
राएल के सारे घराने का दिल खतना-
रहित है।”[8]

10 हे इसराएल के घराने, सुन कि
यहोवा ने तेरे खिलाफ क्या संदेश
दिया है। 2 यहोवा कहता है,

“राष्ट्रों के तौर-तरीके मत सीख,[9]
आकाश के चिन्हों से खौफ मत खा,
जिनसे राष्ट्र खौफ खाते हैं।[10]
3 क्योंकि देश-देश के लोगों के रीति-
रिवाज़ बस एक धोखा* हैं।
कारीगर एक पेड़ काटता है
और अपने औज़ार से उसे मूरत का
आकार देता है।[11]
4 वे उसे सोने-चाँदी से सजाते हैं[12]
और हथौड़े से कील ठोंककर उसे
टिकाते हैं ताकि वह गिर न
जाए।[13]
5 मूरतें, खीरे के खेत में खड़े फूस
के पुतले की तरह बोल नहीं
सकतीं,[14]
उन्हें उठाकर ले जाना पड़ता है
क्योंकि वे चल नहीं सकतीं।[15]
उनसे मत डरना क्योंकि वे न तो
नुकसान कर सकती हैं,
न भला कर सकती हैं।”[16]
6 हे यहोवा, तेरे जैसा कोई नहीं।[17]
तू महान है, तेरा नाम महान है और
उसमें बहुत ताकत है।
7 हे राष्ट्रों के राजा,[1] कौन तुझसे
नहीं डरेगा क्योंकि तुझसे डरना
सही है,
क्योंकि राष्ट्रों और उनके सब राज्यों
में जितने भी बुद्धिमान हैं,
उनमें से एक भी तेरे जैसा नहीं है।[2]
8 वे सब नासमझ और मूर्ख हैं।[3]
एक पेड़ से मिलनेवाली नसीहत
धोखा देती* है।[4]
9 उनके लिए तरशीश से चाँदी के
पत्तर[5] और ऊफाज़ से सोना
मँगाया जाता है,
जिसे कारीगर और धातु-कारीगर
लकड़ी पर मढ़ देते हैं।
वे उन्हें नीले धागे और बैंजनी ऊन
का कपड़ा पहनाते हैं।
ये सारी मूरतें कुशल कारीगरों की
बनायी हुई हैं।
10 मगर असल में यहोवा ही
परमेश्वर है।
वह जीवित परमेश्वर[6] और युग-
युग का राजा है।[7]
उसकी जलजलाहट से धरती काँप
उठेगी,[8]
उसके क्रोध के आगे कोई भी राष्ट्र
टिक नहीं पाएगा।
11 * तू उनसे कहना:
“जिन देवताओं ने आकाश और
धरती को नहीं बनाया,
वे धरती पर से और आकाश के
नीचे से मिट जाएँगे।”[9]
12 उसी ने अपनी शक्ति से धरती
बनायी,
अपनी बुद्धि से उपजाऊ ज़मीन की
मज़बूत बुनियाद डाली[10]

अध्य. 9
1 आम 3:1, 2
2 यश 19:1
यहे 29:2
3 यश 1:1
4 यिर्म 27:2, 3
यहे 32:29
ओब 1
5 यश 15:1
यिर्म 48:1
6 यिर्म 49:1
यहे 25:2
7 यिर्म 25:17, 23
यिर्म 49:32
8 लैव 26:41
यिर्म 4:4

अध्य. 10
9 लैव 18:3, 30
लैव 20:23
व्य 12:30
10 यश 47:13
11 यश 40:20
यश 44:14, 15
यश 45:20
हब 2:18
12 भज 115:4
यश 40:19
13 यश 41:7
14 हब 2:19
15 यश 46:7
16 यश 41:23
यश 44:9
1कुर 8:4
17 निर्ग 15:11
2शम 7:22
भज 86:8

दूसरा कॉल.
1 भज 22:28
2 भज 89:6
दान 4:35
3 यिर्म 51:17
हब 2:18
4 यश 44:19
5 1रा 10:22
6 यह 3:10
दान 6:26
7 दान 4:3
हब 1:12
प्रक 15:3
8 नहू 1:5
9 यश 2:18
यिर्म 51:17, 18
सप 2:11
10 नीत 3:19
यश 45:18

10:3, 8 *या “बेकार।”

10:11 *मूल पाठ में आय. 11 अरामी भाषा में लिखी गयी थी।

और अपनी समझ से आकाश
फैलाया।[1]
13 जब वह गरजता है,
तो आकाश के पानी में हलचल होने
लगती है,[2]
वह धरती के कोने-कोने से बादलों*
को ऊपर उठाता है।[3]
बारिश के लिए बिजली# बनाता है
और अपने भंडारों से आँधी
चलाता है।[4]
14 सभी इंसान ऐसे काम करते हैं मानो
उनमें समझ और ज्ञान नहीं है।
हर धातु-कारीगर अपनी गढ़ी हुई
मूरत की वजह से शर्मिंदा किया
जाएगा,[5]
क्योंकि उसकी धातु की मूरत* एक
झूठ है,
वे मूरतें बेजान हैं।#[6]
15 वे एक धोखा* हैं, बस इस लायक
हैं कि उनकी खिल्ली उड़ायी
जाए।[7]
जब उनसे हिसाब लेने का दिन
आएगा, तो वे नाश हो जाएँगी।
16 याकूब का भाग इन चीज़ों की तरह
नहीं है,
क्योंकि उसी ने हर चीज़ रची है
और इसराएल उसकी विरासत की
लाठी है।[8]
उसका नाम सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा है।[9]
17 हे औरत, तू जो घिरे हुए
शहर में है,
ज़मीन से अपनी गठरी उठा।
18 क्योंकि यहोवा कहता है:

10:13 *या "भाप।" #या शायद, "झरोखे।" **10:14** *या "ढली हुई मूरत।" #या "उनमें साँस नहीं है।" **10:15** *या "बेकार।"

अध्य. 10
1 भज 136:3, 5; यश 40:22; यिर्म 51:15, 16
2 अय 37:2; अय 38:34
3 अय 36:27; भज 135:7
4 उत 8:1; निर्ग 14:21; गि 11:31; यो 1:4
5 यश 42:17; यश 44:11
6 यिर्म 51:17; हब 2:18, 19
7 यश 41:29
8 व्य 32:9; भज 135:4
9 यश 47:4

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:63; यिर्म 16:13
2 यिर्म 8:21
3 यिर्म 4:20
4 यिर्म 31:15
5 यिर्म 5:31
6 यिर्म 2:8; यिर्म 8:9
7 यिर्म 23:1; यहे 34:5, 6
8 यिर्म 1:15; यिर्म 4:6; यिर्म 6:22; हब 1:6
9 यिर्म 9:11
10 भज 17:5; भज 37:23; नीत 16:3; नीत 20:24

"इस समय मैं इस देश के निवासियों
को बाहर फेंकनेवाला* हूँ,[1]
मैं उन्हें संकट से गुज़रने पर मजबूर
करूँगा।"
19 हाय! मुझे यह कैसा घाव मिला है।[2]
यह कभी भर नहीं सकता!
मैंने कहा, "यह मेरी बीमारी है, मुझे
इसे झेलना ही पड़ेगा।
20 मेरा तंबू उजड़ गया है, इसके सभी
रस्से काट दिए गए हैं।[3]
मेरे बेटों ने मुझे छोड़ दिया है, वे मेरे
साथ नहीं हैं।[4]
मेरा तंबू खड़ा करने या तानने के
लिए कोई नहीं है।
21 क्योंकि चरवाहों ने मूर्खता का काम
किया,[5]
उन्होंने यहोवा की मरज़ी नहीं
पूछी।[6]
इसीलिए उन्होंने अंदरूनी समझ से
काम नहीं लिया,
उनके सारे झुंड तितर-बितर हो
गए।"[7]
22 सुनो! एक खबर आयी है! सेना आ
रही है!
उत्तर के देश से उनका हुल्लड़
सुनायी दे रहा है,[8]
वे यहूदा के शहरों को उजाड़कर
गीदड़ों की माँद बना देंगे।[9]
23 हे यहोवा, मैं अच्छी तरह जानता
हूँ कि इंसान को यह अधिकार*
नहीं कि वह अपना रास्ता तय
करे।
उसे यह अधिकार भी नहीं कि वह
अपने कदमों को राह दिखाए।[10]
24 हे यहोवा, अपना फैसला सुनाकर
मुझे सुधार,

10:18 *या "उछालनेवाला।" **10:23** *या "इस काबिल।"

मगर क्रोध में आकर नहीं[1] ताकि मैं
नाश न हो जाऊँ।[2]
25 अपने क्रोध का प्याला उन राष्ट्रों
पर उँडेल दे जो तुझे नज़रअंदाज़
करते हैं,[3]
उन घरानों पर जो तेरा नाम नहीं
पुकारते।
क्योंकि उन्होंने याकूब को निगल
लिया है,[4]
हाँ, उन्होंने उसे निगलकर खत्म कर
दिया है[5]
और उसके देश को उजाड़
दिया है।[6]

11 यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह
के पास पहुँचाः 2 “लोगो, इस
करार की बातें सुनो!
ये* बातें यहूदा के लोगों और यरू-
शलेम के निवासियों को बता 3 और
उनसे कह, ‘इसराएल का परमेश्वर
यहोवा कहता है, “ऐसे हर इंसान पर शाप
पड़े, जो इस करार की बातें नहीं मानता,[7]
4 जिनकी आज्ञा मैंने तुम्हारे पुरखों को
दी थी। जिस दिन मैंने उन्हें मिस्र से,
लोहा पिघलानेवाले भट्ठे से निकाला था,[8]
उस दिन मैंने उनसे कहा था, ‘तुम मेरी
बात मानना और वे सारे काम करना
जिनकी मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, तब
तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा पर-
मेश्वर होऊँगा।[9] 5 और मैं वह वादा
पूरा करूँगा जो मैंने तुम्हारे पुरखों से
शपथ खाकर किया था कि मैं उन्हें वह
देश दूँगा, जहाँ दूध और शहद की धाराएँ
बहती हैं।[10] और आज तक तुम इस देश
में रह रहे हो।’”’”

तब मैंने जवाब में कहा, “हे यहोवा,
आमीन।”*

6 फिर यहोवा ने मुझसे कहा, “यहूदा
के शहरों और यरूशलेम की गलियों
में इन सारी बातों का ऐलान कर,
‘इस करार की बातें सुनो और इनका
पालन करो। 7 क्योंकि जिस दिन मैंने
तुम्हारे पुरखों को मिस्र से निकाला था
उस दिन मैंने उन्हें समझाकर कहा,
“तुम मेरी आज्ञा मानना,” ठीक जैसे आज
मैं तुम्हें समझा रहा हूँ। मैंने उन्हें बार-
बार समझाया,*[1] 8 मगर उन्होंने मेरी
नहीं सुनी, मेरी तरफ कान नहीं लगाया।
इसके बजाय, हर कोई ढीठ होकर अपने
दुष्ट मन की सुनता रहा।[2] इसलिए मैंने
उन्हें करार में लिखी सज़ा दी, क्योंकि मैंने
उन्हें जो आज्ञा दी थी उसे उन्होंने नहीं
माना।’”

9 फिर यहोवा ने मुझसे कहा, “यहूदा
के लोगों और यरूशलेम के निवासियों
ने मुझसे बगावत करने की साज़िश
की है। 10 ये वही गुनाह करते हैं
जो इनके पुरखे शुरू से करते आए थे,
जिन्होंने आज्ञाएँ मानने से इनकार कर
दिया था।[3] ये लोग भी दूसरे देवताओं के
पीछे जाते हैं और उनकी सेवा करते हैं।[4]
इसराएल के घराने और यहूदा के घराने ने
मेरा वह करार तोड़ दिया है जो मैंने
उनके पुरखों से किया था।[5] 11 इस-
लिए यहोवा कहता है, ‘अब मैं उन पर
ऐसी विपत्ति लानेवाला हूँ[6] जिससे वे
बच नहीं सकेंगे। जब वे मदद के लिए
मुझे पुकारेंगे, तो मैं उनकी नहीं सुनूँगा।[7]
12 तब यहूदा के शहरों के लोग और
यरूशलेम के निवासी उन देवताओं के
पास जाएँगे जिनके लिए वे बलिदान
चढ़ाते हैं और उन्हें मदद के लिए पुका-
रेंगे,[8] मगर वे देवता विपत्ति के समय

अध्य. 10
1 भज 6:1, भज 38:1
2 यिर्म 30:11
3 यश 34:2
4 यिर्म 51:34
5 यश 10:22
6 भज 79:6, 7, यिर्म 8:16, विल 2:22

अध्य. 11
7 व्य 27:26, व्य 28:15
8 निर्ग 13:3, निर्ग 24:3, व्य 4:20
9 लैव 26:3, 12
10 उत 15:18, निर्ग 3:8, लैव 20:24, व्य 6:3

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 7:13, यिर्म 25:4, यिर्म 35:15
2 यश 65:2, यिर्म 7:24, 26, यहे 20:8, जक 7:11, 12
3 न्या 2:11, 17, 1शम 8:8, 2रा 22:17
4 2इत 28:22, 23
5 व्य 31:16, 2रा 17:6, 7, हो 6:7
6 2रा 22:16, यिर्म 6:19, यहे 7:5
7 यश 1:15, यिर्म 14:12, यहे 8:18, मी 3:4
8 व्य 32:37, 38, यिर्म 2:28

11:2 *ज़ाहिर है कि यह बात यिर्मयाह से कही गयी है। **11:5** *या “ऐसा ही हो।”

11:7 *शा., “मैं तड़के उठकर उन्हें समझाता रहा।”

उन्हें किसी भी हाल में नहीं बचा सकेंगे।
13 हे यहूदा, तेरे पास इतने देवता हो
गए हैं जितने कि तेरे शहर हैं और तूने उस शर्मनाक चीज़* के लिए इतनी वेदियाँ खड़ी की हैं जितनी कि यरूशलेम में गलियाँ हैं ताकि तू बाल के लिए बलिदान चढ़ा सके।'[1]

14 तू* इन लोगों की खातिर प्रार्थना मत करना। इनकी खातिर दुहाई मत देना, न ही प्रार्थना करना,[2] क्योंकि जब वे विपत्ति के समय मुझे पुकारेंगे तब मैं नहीं सुनूँगा।

15 मेरे प्यारे लोगों को मेरे भवन में
रहने का क्या हक है,
जब उनमें से इतने सारे लोग अपनी
साज़िशों को अंजाम देते हैं?
क्या पवित्र गोश्त* से वे आनेवाली
विपत्ति को टाल पाएँगे?
क्या तुम उस वक्त जश्न मनाओगे?
16 एक वक्त था जब यहोवा ने
तुझे फलता-फूलता जैतून का पेड़
कहा था,
बढ़िया फलों से लदा खूबसूरत पेड़
कहा था।
मगर एक बड़ी गड़गड़ाहट हुई और
उसने पेड़ में आग लगा दी,
उन्होंने उसकी डालियाँ तोड़ डालीं।

17 तुझे लगानेवाले, सेनाओं के परमेश्वर यहोवा[3] ने ऐलान किया है कि तुझ पर एक विपत्ति टूट पड़ेगी क्योंकि इसराएल के घराने और यहूदा के घराने ने बुरे काम किए हैं और बाल के लिए बलिदान चढ़ाकर मुझे क्रोध दिलाया है।"[4]

18 यहोवा ने मुझे खबर दी ताकि मैं
जान सकूँ,

11:13 *या "शर्मनाक देवता।" **11:14** *यानी यिर्मयाह। **11:15** *यानी मंदिर में दिए बलिदानों।

उस वक्त तूने मुझे दिखाया कि वे
क्या कर रहे थे।
19 मैं एक शांत मेम्ने की तरह था जिसे
हलाल करने के लिए लाया जा
रहा था।
मुझे मालूम नहीं था कि वे मेरे
खिलाफ यह साज़िश कर रहे हैं:[1]
"चलो हम इस पेड़ को फलों के
साथ नाश कर दें,
इसे काटकर दुनिया से मिटा दें
ताकि फिर कभी इसका नाम याद न
किया जाए।"
20 मगर सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
नेकी से न्याय करता है,
वह दिलों को और गहराई में छिपे
विचारों* को जाँचता है।[2]
हे परमेश्वर, मुझे यह देखने का
मौका दे कि तू उनसे कैसे बदला
लेगा,
क्योंकि मैंने अपना मुकदमा तेरे हाथ
में छोड़ दिया है।

21 इसलिए अनातोत[3] के जो लोग तेरी जान के पीछे पड़े हैं और तुझसे कहते हैं, "यहोवा के नाम से भविष्यवाणी मत कर,[4] वरना तू हमारे हाथों मारा जाएगा," उनके बारे में यहोवा कहता है,
22 सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा कहता है, "मैं उन लोगों से हिसाब लेनेवाला हूँ। उनके जवान तलवार से मार डाले जाएँगे[5] और उनके बेटे-बेटियाँ अकाल से मर जाएँगे।[6]
23 उनमें से एक भी नहीं बचेगा, क्योंकि
जिस साल मैं अनातोत[7] के लोगों से हिसाब लूँगा, उस साल मैं उन पर विपत्ति लाऊँगा।"

11:20 *या "गहरी भावनाओं।" शा., "गुरदों।"

अध्य. 11
1 यिर्म 7:9, 10
2 यिर्म 7:16; यिर्म 14:11
3 यश 5:2; यिर्म 2:21
4 यिर्म 19:5, 15

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 18:18
2 1इत 28:9; यिर्म 17:10; यिर्म 20:12
3 यिर्म 1:1
4 यश 30:10; आम 2:12; आम 7:16
5 2इत 36:17; विल 2:21
6 यिर्म 18:21
7 यह 21:8, 18

12 हे यहोवा, तू नेक
परमेश्‍वर है।[1]
जब मैं अपनी शिकायत तेरे सामने
पेश करता हूँ,
न्याय के मामलों पर तुझसे बात
करता हूँ,
तो तू इंसाफ करता है।
दुष्ट अपने काम में क्यों कामयाब
होते हैं?[2]
दगाबाज़ क्यों बेखौफ जीते हैं?
2 तूने उन्हें लगाया और उन्होंने जड़
पकड़ी।
वे बढ़ गए हैं और फल देते हैं।
तू उनकी ज़बान पर तो है, मगर
उनके मन की गहराई में छिपे
विचारों* से दूर है।[3]
3 मगर हे यहोवा, तू मुझे अच्छी तरह
जानता है,[4] मुझे देखता है,
तूने मेरा दिल जाँचा और पाया कि
यह तेरे साथ एकता में है।[5]
तू उन्हें ऐसे अलग कर दे जैसे भेड़ों
को हलाल के लिए अलग किया
जाता है,
उन्हें घात किए जानेवाले दिन के
लिए अलग ठहरा दे।
4 और कब तक यह देश बरबाद
होता रहेगा?
हर मैदान के पेड़-पौधे सूखते
जाएँगे?[6]
इस देश के लोगों के बुरे कामों की
वजह से
जानवरों और पंछियों का सफाया
कर दिया गया है।
क्योंकि यहाँ के लोग कहते हैं,
"हमारे साथ जो होगा, उसे पर-
मेश्‍वर नहीं देख सकता।"

12:2 *या "उनकी गहरी भावनाओं।" शा., "उनके गुरदों।"

अध्य. 12
1 उत 18:25
2 अय 12:6
अय 21:7
भज 73:3
यिर्म 5:28
3 यश 29:13
4 भज 139:1, 2
5 2रा 20:3
भज 17:3
यिर्म 11:20
6 यिर्म 14:6
यिर्म 23:10

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 4:13
2 यिर्म 9:4
3 लूक 13:35
4 निर्ग 19:5
यश 47:6
5 विल 2:1
6 2रा 24:2
यहे 16:37
7 यश 56:9
यिर्म 7:33
8 भज 80:8
यश 5:1, 7
यिर्म 6:3

5 अगर तू पैदल चलनेवालों के साथ
दौड़ते-दौड़ते थक गया है,
तो घोड़ों के साथ कैसे दौड़ेगा?[1]
अगर तुझे अमन-चैनवाले देश
में बेफिक्र जीने की आदत हो
गयी है,
तो तू यरदन किनारे घनी झाड़ियों में
क्या करेगा?
6 क्योंकि तेरे अपने भाइयों ने भी, तेरे
पिता के घराने ने भी
तेरे साथ गद्दारी की।[2]
वे तेरे खिलाफ ज़ोर से चिल्लाए।
तू उनकी बातों पर विश्‍वास न
करना,
फिर चाहे वे तुझसे अच्छी बातें क्यों
न कहें।
7 "मैंने अपने घराने को छोड़
दिया है,[3] अपनी विरासत त्याग
दी है।[4]
जिसे मैं बहुत प्यार करता था, उसे
मैंने उसके दुश्‍मनों के हाथों कर
दिया है।[5]
8 मेरी विरासत मेरे लिए जंगल का
शेर बन गयी,
वह मुझ पर गरजने लगी,
इसलिए मुझे उससे नफरत हो
गयी है।
9 मेरी विरासत मेरे लिए रंगीन*
शिकारी पक्षी है,
दूसरे शिकारी पक्षी उसे घेरकर उस
पर हमला करते हैं।[6]
मैदान के सारे जानवरो, आओ,
इकट्ठा हो जाओ,
तुम सब खाने के लिए आओ।[7]
10 बहुत-से चरवाहों ने मेरे अंगूरों के
बाग को नाश कर दिया है,[8]

12:9 *या "धब्बेदार।"

उन्होंने मेरे हिस्से की ज़मीन रौंद
डाली है।[1]
मेरी मनभावनी ज़मीन को उजाड़कर
वीराना बना दिया है।
11 यह बंजर ज़मीन हो गयी है।
यह सूखकर वीरान हो गयी है,*
मेरे सामने उजाड़ पड़ी है।[2]
पूरा देश उजाड़ दिया गया है,
मगर कोई भी इंसान इस बात पर
ध्यान नहीं देता।[3]
12 नाश करनेवाले, वीराने से जानेवाले
सभी रास्तों से गुज़रते हैं,
क्योंकि यहोवा की तलवार एक छोर
से दूसरे छोर तक पूरा देश नाश
कर रही है।[4]
किसी को शांति नहीं मिलती।
13 उन्होंने गेहूँ बोया, मगर काँटों की
फसल काटी।[5]
वे मेहनत करते-करते पस्त हो गए,
मगर कोई फायदा नहीं हुआ।
वे अपनी उपज पर शर्मिंदा होंगे,
क्योंकि यहोवा के क्रोध की ज्वाला
उन पर भड़की है।"

14 यहोवा कहता है, "मैं अपने उन
सभी दुष्ट पड़ोसियों को उनके देश से
उखाड़ दूँगा,[6] जो मेरी इस विरासत को
हाथ लगाते हैं, जिसे मैंने अपनी प्रजा इस-
राएल के अधिकार में किया था।[7] और
मैं उनके बीच से यहूदा के घराने को
उखाड़ दूँगा। 15 मगर उन्हें उखाड़ने के
बाद मैं उन पर दया करूँगा और उनमें
से हर किसी को उसके देश में और
उसकी विरासत की ज़मीन पर वापस ले
आऊँगा।"

16 "अगर वे राष्ट्र उन राहों के बारे
में सीखेंगे, जिन पर मेरे लोग चलते
हैं और मेरे नाम से शपथ खाना सीखेंगे
और कहेंगे, 'यहोवा के जीवन की शपथ!'
ठीक जैसे उन्होंने मेरे लोगों को बाल के
नाम से शपथ लेना सिखाया था, तो मैं
उन्हें अपने लोगों के बीच फलने-फूलने
दूँगा। 17 लेकिन अगर उनमें से कोई
राष्ट्र मेरी आज्ञा मानने से इनकार करेगा,
तो मैं उसे उखाड़कर नाश कर दूँगा।"
यहोवा का यह ऐलान है।[1]

13 यहोवा ने मुझसे कहा, "तू जाकर
अपने लिए मलमल का एक
कमरबंद खरीद और अपनी कमर पर
बाँध। मगर उसे पानी में मत डुबाना।"
2 मैंने यहोवा के कहे मुताबिक एक
कमरबंद खरीदा और अपनी कमर
पर बाँध लिया। 3 यहोवा का संदेश
एक बार फिर मेरे पास पहुँचा: 4 "जो
कमरबंद तूने खरीदकर पहना है, उसे
लेकर फरात नदी के पास जा और
वहाँ एक चट्टान की दरार में छिपा दे।"
5 मैं यहोवा की आज्ञा के मुताबिक फरात
के पास गया और वहाँ कमरबंद छिपा
दिया।

6 कई दिनों बाद यहोवा ने मुझसे
कहा, "तू उठकर फरात नदी के पास जा
और वहाँ से वह कमरबंद निकाल जिसे
छिपाने की आज्ञा मैंने तुझे दी थी।"
7 मैं फरात के पास गया और जिस जगह
मैंने कमरबंद छिपाया था, वहाँ से खोद-
कर उसे निकाला। मैंने देखा कि कमरबंद
खराब हो गया है और किसी काम का नहीं
रहा।

8 फिर यहोवा का यह संदेश मेरे पास
पहुँचा: 9 "यहोवा कहता है, 'मैं इसी
तरह यहूदा का घमंड चूर-चूर कर दूँगा
और यरूशलेम का गुरूर तोड़ दूँगा।[2]
10 ये दुष्ट लोग जो मेरी आज्ञा मानने से
इनकार कर देते हैं,[3] ढीठ होकर अपने

12:11 *या शायद, "यह मातम मनाती है।"

अध्य. 12
1 यश 63:18, यिर्म 3:19
2 यिर्म 9:11, यिर्म 10:22
3 यश 42:24, 25
4 लैव 26:33, यिर्म 15:2
5 लैव 26:16, मी 6:15
6 यिर्म 48:2, यिर्म 49:2
7 भज 79:4, यिर्म 48:26, यहे 25:3, जक 1:15, जक 2:8

दूसरा कॉल.
1 यश 60:12

अध्य. 13
2 लैव 26:19, सप 3:11
3 2इत 36:15, 16

मन की करते हैं[1] और दूसरे देवताओं
के पीछे जाते हैं, उनकी सेवा करते और
उनके आगे दंडवत करते हैं, वे इस कमर-
बंद की तरह किसी काम के न रहेंगे।'
11 यहोवा ऐलान करता है, 'क्योंकि जैसे
एक आदमी कमरबंद को अपनी कमर
पर बाँधे रहता है, उसी तरह मैंने इस-
राएल के पूरे घराने और यहूदा के पूरे
घराने को खुद से बाँधे रखा था ताकि वे
मेरी प्रजा,[2] मेरी शान,[3] मेरी महिमा और
मेरी शोभा बनें। मगर उन्होंने मेरी आज्ञा
नहीं मानी।'[4]

12 तू उन्हें यह संदेश भी देना: 'इस-
राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है,
"हर बड़ा मटका दाख-मदिरा से भरा
रहे।"' वे तुझसे कहेंगे, 'हमें पता है,
हर बड़ा मटका दाख-मदिरा से भरा
होना चाहिए।' 13 तब तू उनसे कहना,
'यहोवा कहता है, "देखो, मैं इस देश के
सभी निवासियों को, दाविद की राजगद्दी
पर बैठनेवाले राजाओं को, याजकों और
भविष्यवक्ताओं और यरूशलेम के सभी
निवासियों को तब तक दाख-मदिरा
पिलाता रहूँगा जब तक कि वे मदहोश न
हो जाएँ।"[5] 14 यहोवा ऐलान करता
है, "मैं उन्हें एक-दूसरे से टकरा दूँगा,
पिताओं और बेटों को एक-दूसरे से टक-
राऊँगा।[6] मैं उन पर करुणा नहीं करूँगा,
न उनके लिए दुख महसूस करूँगा और न
ही उन पर दया करूँगा। उन्हें तबाह करने
से मुझे कोई चीज़ नहीं रोकेगी।"'[7]

15 सुनो और ध्यान दो।
तुम मगरूर मत बनो क्योंकि यह
बात यहोवा ने कही है।
16 अपने परमेश्वर यहोवा की महिमा
करो,
इससे पहले कि वह अंधकार
ले आए
और शाम के झुटपुटे के समय
पहाड़ों पर तुम्हारे पाँव लड़खड़ा
जाएँ।
तुम रौशनी की आस लगाओगे,
मगर वह काली छाया ले आएगा,
वह रौशनी को घोर अंधकार में
बदल देगा।[1]
17 और अगर तुम सुनने से इनकार
कर दोगे,
तो मैं तुम्हारे घमंड की वजह से
छिपकर रोऊँगा।
मैं आँसू बहाऊँगा, मेरी आँखों से
आँसुओं की धारा बहेगी,[2]
क्योंकि यहोवा के झुंड को बंदी
बनाकर ले जाया गया है।[3]
18 राजा और राजमाता से कहना,[4]
'तुम निचली जगह पर बैठो,
क्योंकि तुम्हारे सिर से सुंदर ताज
गिर पड़ेंगे।'
19 दक्षिण के शहरों के फाटक बंद हो
चुके हैं,* उन्हें खोलनेवाला कोई
नहीं।
पूरे यहूदा को बंदी बनाकर ले जाया
गया है, किसी को नहीं बख्शा
गया।[5]
20 अपनी आँखें उठा और उत्तर से
आनेवालों को देख।[6]
कहाँ गया वह झुंड जो तुझे सौंपा
गया था? कहाँ गयीं तेरी सुंदर-
सुंदर भेड़ें?[7]
21 जब तुझे उन लोगों के हाथों सज़ा
मिलेगी,
जिन्हें तूने शुरू से अपना करीबी
दोस्त बनाया है, तब तू क्या
कहेगी?[8]
क्या तुझे अचानक दर्द नहीं उठेगा

अध्य. 13
1 यिर्म 6:28
2 निर्ग 19:5 व्य 26:18 भज 135:4
3 यिर्म 33:9
4 यिर्म 6:17
5 यश 29:9 यश 51:17 यिर्म 25:27
6 यिर्म 6:21 यहे 5:10
7 यहे 7:4 यहे 24:14

दूसरा कॉल.
1 यश 59:9
2 यिर्म 9:1
3 भज 100:3
4 2रा 24:12 यिर्म 22:24, 26
5 व्य 28:64
6 यिर्म 6:22
7 यहे 34:8
8 यश 39:1, 2

13:19 *या "को घेर लिया गया है।"

जैसे बच्चा जननेवाली औरत को
उठता है?[1]
22 जब तू मन में कहेगी, 'यह सब मेरे
साथ क्यों हो रहा है?'[2]
तो तू जान लेना कि तेरे घोर पाप
की वजह से ही तेरा घाघरा उतार
दिया गया है[3]
और तेरी एड़ियों को इतना दर्द
सहना पड़ा है।
23 क्या एक कूशी* अपने चमड़े का
रंग या चीता अपने धब्बे बदल
सकता है?[4]
तो तू कैसे भलाई कर सकती है
जिसने बुराई करना सीख लिया है?
24 मैं उन्हें ऐसे बिखरा दूँगा जैसे
रेगिस्तान से चलनेवाली तेज़ हवा
घास-फूस को बिखरा देती है।[5]
25 यह तेरा हिस्सा है, मैंने तेरे लिए
यही नापकर दिया है,
क्योंकि तू मुझे भूल गयी[6]
और झूठी बातों पर भरोसा
करती है।"[7] यहोवा का यह
ऐलान है।
26 "इसलिए मैं तेरा घाघरा उतार दूँगा
ताकि तू सरेआम शर्मिंदा हो जाए,[8]
27 तेरे व्यभिचार के कामों[9] और तेरी
वासना का,
तेरे वेश्या के अश्लील* कामों का
परदाफाश हो जाए।
मैंने पहाड़ियों पर और मैदानों में
तेरी घिनौनी हरकतें देखी हैं।[10]
हे यरूशलेम, धिक्कार है तुझ पर!
तू और कब तक इसी तरह अशुद्ध
रहेगी?"[11]

13:23 *या "इथियोपियाई।" 13:27 *या "शर्मनाक।"

अध्य. 13
1 यिर्म 6:24; मी 4:9
2 यिर्म 5:19; यिर्म 16:10, 11
3 यहे 16:37
4 नीत 27:22
5 लैव 26:33; व्य 28:64
6 यिर्म 2:32
7 व्य 32:37, 38; यश 28:15; यिर्म 10:14
8 विल 1:8; यहे 16:37; यहे 23:29
9 यिर्म 2:20; यहे 16:15
10 यश 65:7; यहे 6:13
11 यहे 24:13

दूसरा कॉल.

अध्य. 14
1 व्य 28:24
2 योए 1:10
3 लैव 26:20; व्य 28:23
4 यिर्म 12:4; योए 1:18
5 यह 7:9; भज 25:11; भज 115:1, 2

14

यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह के
पास पहुँचा, जो सूखा पड़ने के
बारे में है:[1]
2 यहूदा मातम मना रहा है,[2] उसके
फाटक ढह गए हैं।
वे हताश होकर ज़मीन पर गिर
पड़े हैं,
यरूशलेम से चीखना-चिल्लाना
सुनायी दे रहा है।
3 वहाँ के मालिक नौकरों* को पानी
लाने भेजते हैं।
वे कुंडों# के पास जाते हैं
और पाते हैं कि पानी बिलकुल
नहीं है।
वे खाली बरतन लिए लौटते हैं।
वे शर्मिंदा और निराश हैं,
अपना सिर ढाँप लेते हैं।
4 ज़मीन पर दरारें पड़ गयी हैं,
क्योंकि देश में कहीं बारिश नहीं
होती,[3]
किसान मायूस हैं, अपना सिर ढाँप
लेते हैं।
5 मैदान की हिरनी भी अपने नए
जन्मे बच्चे को छोड़कर चली
जाती है,
क्योंकि कहीं भी घास नहीं है।
6 जंगली गधे सूनी पहाड़ियों पर खड़े,
गीदड़ों की तरह एक-एक साँस के
लिए हाँफते हैं,
उनकी आँखें धुँधला गयी हैं क्योंकि
पेड़-पौधे कहीं नहीं हैं।[4]
7 माना कि हमारे गुनाह हमारे
खिलाफ गवाही देते हैं,
फिर भी हे यहोवा, अपने नाम की
खातिर कुछ कर,[5]
हमने कितनी बार तेरे साथ

14:3 *या "छोटे लोगों।" #या "खाइयों।"

विश्‍वासघात किया है, उसका
कोई हिसाब नहीं,[1]
हमने तेरे ही खिलाफ पाप किया है।
8 हे इसराएल की आशा, संकट के
समय उसके उद्धारकर्ता,[2]
तू क्यों ऐसे पेश आ रहा है मानो तू
देश में कोई अजनबी हो,
कोई मुसाफिर हो जो सिर्फ रात
काटने के लिए रुकता है?
9 तू क्यों ऐसे आदमी की तरह पेश
आ रहा है जो सकते में है,
ऐसे सूरमा की तरह जो बचाने में
बेबस है?
क्योंकि हे यहोवा, तू हमारे बीच है[3]
और हम तेरे नाम से जाने
जाते हैं।[4]
हमें न ठुकरा।

10 यहोवा इन लोगों के बारे में कहता
है, "उन्हें इधर-उधर भटकना बहुत
पसंद है।[5] उन्होंने अपने कदमों को नहीं
रोका।[6] इसलिए यहोवा उनसे खुश नहीं
है।[7] अब वह उनके गुनाह पर ध्यान
देगा और उनसे उनके पापों का हिसाब
लेगा।"[8]

11 फिर यहोवा ने मुझसे कहा, "तू
यह प्रार्थना मत करना कि इन लोगों का
भला हो।[9] 12 जब वे उपवास करते हैं,
तो मैं उनका गिड़गिड़ाना नहीं सुनता,[10]
जब वे पूरी होम-बलियाँ और अनाज के
चढ़ावे चढ़ाते हैं तो मैं उनसे खुश नहीं
होता।[11] मैं उन्हें तलवार, अकाल और
महामारी* से मिटा दूँगा।"[12]

13 तब मैंने कहा, "हे सारे जहान के
मालिक यहोवा, यह कितने अफसोस की
बात है! भविष्यवक्‍ता लोगों से कह रहे हैं,
'तुम्हें तलवार का मुँह नहीं देखना पड़ेगा
और न ही तुम पर अकाल पड़ेगा, इसके
बजाय परमेश्‍वर इस जगह तुम्हें सच्ची
शांति देगा।'"[1]

14 फिर यहोवा ने मुझसे कहा,
"भविष्यवक्‍ता मेरे नाम से झूठी भविष्य-
वाणी कर रहे हैं।[2] मैंने न तो उन्हें भेजा,
न उन्हें आज्ञा दी और न ही उनसे बात
की।[3] वे तुम लोगों को झूठे दर्शन सुनाते
हैं, बेकार की भविष्यवाणी बताते हैं और
मन में छल की बातें गढ़कर सुनाते हैं।[4]
15 इसलिए ये भविष्यवक्‍ता जो मेरे न
भेजने पर भी मेरे नाम से भविष्यवाणी
करते हैं और कहते हैं कि देश में न तो
तलवार चलेगी न अकाल पड़ेगा, उनके
बारे में यहोवा कहता है, 'ये भविष्यवक्‍ता
तलवार और अकाल से मारे जाएँगे।[5]
16 और जिन लोगों को वे भविष्यवाणी
सुना रहे हैं वे भी अकाल और तलवार से
मारे जाएँगे और उनकी लाशें यरूशलेम
की सड़कों पर फेंक दी जाएँगी। उन्हें,
उनकी पत्नियों और उनके बेटे-बेटियों को
दफनानेवाला कोई न होगा[6] क्योंकि मैं
उन पर ऐसी विपत्ति लाऊँगा जिसके वे
लायक हैं।'[7]

17 तू उनसे कहना,
'मेरी आँखों से दिन-रात
आँसुओं की धारा बहती रहे, उसे
थमने न दे,[8]
क्योंकि मेरे लोगों की कुँवारी बेटी
को पूरी तरह चूर-चूर कर दिया
गया है, तोड़ दिया गया है,[9]
उसे गहरे ज़ख्म दिए गए हैं।
18 अगर मैं मैदान में जाता हूँ,
तो मुझे तलवार से मारे गए लोगों
की लाशें नज़र आती हैं![10]
अगर मैं शहर के अंदर जाता हूँ,
तो ऐसे लोग नज़र आते हैं जिन्हें
अकाल ने रोगी बना दिया है![11]

14:12 * या "बीमारी।"

अध्य. 14
1 एज 9:6, नहे 9:33, दान 9:5, 8
2 भज 106:8, भज 106:21, यश 45:15
3 निर्ग 29:45, व्य 23:14
4 दान 9:19
5 यिर्म 2:23
6 यिर्म 2:25
7 यिर्म 6:20
8 हो 8:13
9 यिर्म 7:16, यिर्म 11:14
10 यश 1:15, यश 58:3, यिर्म 11:11, यहे 8:18
11 यश 1:11
12 यिर्म 9:16, यहे 5:12

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 4:10, यिर्म 5:31, यिर्म 6:13, 14, यिर्म 23:16, 17, यिर्म 27:8-10, यहे 13:10, मी 3:11
2 यिर्म 23:25, 26, यिर्म 29:21
3 यिर्म 23:21, यिर्म 27:15
4 विल 2:14
5 यिर्म 5:12, 13, यिर्म 23:15, यहे 12:24, यहे 13:9
6 भज 79:2, 3, यिर्म 9:22
7 यिर्म 4:18
8 यिर्म 8:18, 21, यिर्म 9:1
9 विल 1:15
10 यहे 7:15
11 विल 5:10

क्योंकि भविष्यवक्ता और याजक,
दोनों ऐसे देश में भटकते-फिरते
हैं जिसे वे नहीं जानते।'"[1]

19 हे परमेश्वर, क्या तूने यहूदा को
पूरी तरह ठुकरा दिया है?
क्या तुझे सिय्योन से घिन हो
गयी है?[2]
तूने हमें ऐसा घाव क्यों दिया जिसे
भरा नहीं जा सकता?[3]
हमने शांति की आशा की थी, मगर
कुछ भला नहीं हुआ।
ठीक होने की उम्मीद की थी, मगर
खौफ छाया रहा![4]

20 हे यहोवा, हम अपनी दुष्टता
और अपने पुरखों का गुनाह कबूल
करते हैं,
क्योंकि हमने तेरे खिलाफ पाप
किया है।[5]

21 अपने नाम की खातिर हमें न
ठुकरा,[6]
अपनी गौरवशाली राजगद्दी को
तुच्छ न समझ।
हमारे साथ किया करार याद कर,
उसे न तोड़।[7]

22 क्या राष्ट्रों की एक भी निकम्मी
मूरत पानी बरसा सकती है?
क्या आसमान अपने आप बौछार
कर सकता है?
हे हमारे परमेश्वर यहोवा, क्या
सिर्फ तू ही नहीं जो ऐसा कर
सकता है?[8]
हमने तुझ पर आशा रखी है,
क्योंकि सिर्फ तूने ये सारे काम
किए हैं।

15 फिर यहोवा ने मुझसे कहा,
"अगर मूसा और शमूएल भी मेरे
सामने खड़े होते,[9] तब भी मैं इन लोगों
पर रहम नहीं करता। इन लोगों को
मेरे सामने से निकाल दे। वे यहाँ से
चले जाएँ। 2 और अगर वे पूछें, 'हम
कहाँ जाएँ?' तो उनसे कहना, 'यहोवा
कहता है,

"जिनके लिए जानलेवा महामारी
तय है, वे महामारी के पास जाएँ!
जिनके लिए तलवार तय है, वे
तलवार के पास जाएँ![1]
जिनके लिए अकाल तय है, वे
अकाल के पास जाएँ!
जिनके लिए बँधुआई तय है, वे
बँधुआई में जाएँ!"'[2]

3 यहोवा ऐलान करता है, 'मैं उन पर
चार कहर ढाऊँगा:*[3] घात करने के लिए
तलवार, उनकी लाशें घसीटकर ले जाने
के लिए कुत्ते और उन्हें खा जाने और
नाश करने के लिए आकाश के पक्षी और
धरती के जानवर।[4] 4 हिजकियाह के
बेटे और यहूदा के राजा मनश्शे ने यरू-
शलेम में जो काम किए थे,[5] उनकी
वजह से मैं इन लोगों का ऐसा हश्र
करूँगा कि धरती के सब राज्य देखकर
दहल जाएँगे।[6]

5 हे यरूशलेम, कौन तुझ पर करुणा
करेगा?
कौन तुझसे हमदर्दी जताएगा?
कौन तेरी खैरियत पूछने के लिए
रुकेगा?'

6 यहोवा ऐलान करता है, 'तूने मुझे
छोड़ दिया है,
तू बार-बार मुझे पीठ
दिखाता है।*[7]
इसलिए मैं अपना हाथ बढ़ाकर तुझे
नाश कर दूँगा।[8]

15:3 *या शायद, "चार तरह की सज़ाएँ ठहराऊँगा।" 15:6 *या शायद, "पीछे की तरफ चलता रहता है।"

अध्य. 14
1 व्य 28:36
2 यिर्म 12:8; विल 5:22
3 2इत 36:15, 16
4 यिर्म 8:15
5 एज 9:7; दान 9:5, 8
6 यहे 36:22; दान 9:15
7 निर्ग 32:13; लैव 26:41, 42; भज 106: 43-45
8 व्य 28:12; यश 30:23; योए 2:23

अध्य. 15
9 निर्ग 32:11; 1शम 7:9; भज 99:6; भज 106:23

दूसरा कॉल.
1 यहे 5:2
2 यहे 12:11
3 यहे 14:21
4 व्य 28:26; यिर्म 7:33
5 2रा 21:11; 2रा 23:26; 2रा 24:3, 4
6 व्य 28:15, 25; यिर्म 24:9; यहे 23:46
7 यश 1:4; यिर्म 2:13
8 सप 1:4

मैं तुझ पर तरस खाते-खाते* थक
गया हूँ।
7 मैं देश के शहरों* में उन्हें काँटे से
उसाऊँगा।
उनके बच्चों को मारकर उन्हें बे-
औलाद कर दूँगा।[1]
मैं अपने लोगों को नाश कर दूँगा,
क्योंकि उन्होंने अपने तौर-तरीके
बदलने से इनकार कर दिया है।[2]
8 मेरे सामने उनकी विधवाओं की
गिनती समुंदर की बालू से ज़्यादा
होगी।
मैं भरी दोपहरी में एक नाश
करनेवाले से उन पर हमला
करवाऊँगा,
उनकी माँओं और जवानों पर
हमला करवाऊँगा।
मैं अचानक उनके बीच हलचल
मचा दूँगा, उनमें डर फैला दूँगा।
9 जिस औरत ने सात बच्चों को
जन्म दिया था, वह कमज़ोर हो
गयी है,
मुश्किल से साँस ले रही है।
उसका सूरज दिन रहते ही ढल
गया है,
जिससे शर्मिंदगी और अपमान
हुआ है।'*
यहोवा ऐलान करता है, 'उनमें से
जो थोड़े लोग बच गए,
मैं उन्हें दुश्मनों की तलवार के
हवाले कर दूँगा।'"[3]
10 हे मेरी माँ, धिक्कार है मुझ पर!
तूने मुझे क्यों जन्म दिया,[4]

15:6 *या "मैं पछतावा महसूस करते-करते।" 15:7 *शा., "फाटकों।" 15:9 *या शायद, "वह शर्मिंदा और बेइज़्ज़त हुई।"

अध्य. 15
1 व्य 28:15, 18; यिर्म 9:21; यहे 24:21
2 यिर्म 5:3
3 यिर्म 44:27; यहे 5:12
4 यिर्म 20:14

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 20:5
2 लैव 26:38; यिर्म 16:13
3 व्य 32:22; यश 42:24, 25; यिर्म 17:4
4 यिर्म 11:20; यिर्म 12:3; यिर्म 17:18; यिर्म 37:15
5 भज 69:7
6 यहे 3:1-3; प्रक 10:9, 10

पूरे देश के लोग मुझसे लड़ते-
झगड़ते हैं।
मैंने न तो किसी से उधार लिया,
न ही किसी को उधार दिया,
फिर भी सब मुझे कोसते हैं।
11 यहोवा कहता है, "मैं बेशक तेरे
साथ भलाई करूँगा,
विपत्ति के समय मैं तेरी तरफ से
बात करूँगा,
मुसीबत की घड़ी में मैं दुश्मन से
बात करूँगा।
12 क्या कोई लोहे के टुकड़े-टुकड़े कर
सकता है?
उत्तर दिशा के लोहे और ताँबे के
टुकड़े कर सकता है?
13 तुमने अपने सभी इलाकों में जितने
पाप किए हैं,
उनकी वजह से मैं तुम्हारी दौलत
और तुम्हारा खज़ाना लूट में दे
दूँगा,[1]
बिना दाम लिए दे दूँगा।
14 मैं उन्हें तुम्हारे दुश्मनों को दे दूँगा
ताकि वे उन्हें ऐसे देश में ले जाएँ
जिसे तुम नहीं जानते।[2]
मेरे गुस्से की आग भड़क उठी है,
जो तुम्हें भस्म कर रही है।"[3]
15 हे यहोवा, तू मेरी तकलीफें
जानता है,
मुझे याद कर, मुझ पर ध्यान दे।
मेरे सतानेवालों से मेरी तरफ से
बदला ले।[4]
कहीं मैं नाश न हो जाऊँ* क्योंकि
तू क्रोध करने में धीमा है।
जान ले कि मैं तेरी खातिर यह बद-
नामी झेल रहा हूँ।[5]
16 तेरा संदेश मुझे मिला और मैंने उसे
खाया,[6]

15:15 *शा., "मुझे उठा न लेना।"

तेरा संदेश मेरे लिए खुशी का
कारण बन गया और मेरा दिल
मगन हो गया,
क्योंकि हे सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा, मैं तेरे नाम से जाना
जाता हूँ।
17 मैं मौज-मस्ती करनेवालों के
साथ बैठकर आनंद नहीं
मनाता।[1]
तेरा हाथ मेरे ऊपर है, इसलिए मैं
अकेला बैठता हूँ,
तूने मुझे जलजलाहट* से भर
दिया है।[2]
18 मेरा दर्द क्यों नहीं जाता, मेरा घाव
क्यों नहीं भरता?
यह ठीक होने का नाम ही नहीं
लेता।
क्या तू मेरे लिए धोखा देनेवाले सोते
जैसा होगा,
जिससे पानी मिलने का कोई भरोसा
नहीं?
19 इसलिए यहोवा कहता है,
"अगर तू मेरे पास लौट आएगा,
तो मैं तुझे बहाल कर दूँगा,
तू मेरे सामने खड़ा रहेगा।
अगर तू कीमती चीज़ों को बेकार
चीज़ों से अलग करेगा,
तो तू मेरे मुँह जैसा* बनेगा।
उन्हें मुड़कर तेरे पास लौटना
पड़ेगा,
मगर तू उनके पास नहीं जाएगा।"
20 यहोवा ऐलान करता है, "मैं तुझे
इन लोगों के लिए ताँबे की मज़-
बूत दीवार बनाता हूँ।[3]
वे तुझसे लड़ेंगे तो ज़रूर,

15:17 *या "सज़ा के संदेश।" 15:19 *या "मेरी तरफ से बोलनेवाला।"

अध्य. 15
1 भज 1:1
2 यिर्म 20:8
3 यिर्म 1:18
यहे 3:9

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 20:11

अध्य. 16
2 यिर्म 15:2
3 भज 79:2, 3
यश 5:25
यिर्म 7:33
यिर्म 9:22
यिर्म 36:30
4 यहे 5:12
5 यहे 24:16, 17
6 व्य 31:17
यश 27:11
यश 63:10

मगर तुझसे जीत नहीं पाएँगे,*[1]
क्योंकि मैं तुझे बचाने और छुड़ाने
के लिए तेरे साथ हूँ।"
21 "मैं तुझे दुष्टों के हाथ से छुड़ा लूँगा,
बेरहम लोगों के चंगुल से निकाल
लूँगा।"

16 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे
कहा, 2 "तू इस जगह न तो शादी
करना, न ही बेटे-बेटियाँ पैदा करना।
3 क्योंकि यहोवा यहाँ पैदा होनेवाले बेटे-
बेटियों और उनको जन्म देनेवाले माता-
पिताओं के बारे में कहता है, 4 'वे
जानलेवा बीमारियों से मर जाएँगे,[2] मगर
उनके लिए मातम मनानेवाला या उन्हें
दफनानेवाला कोई न होगा। उनकी लाशें
खाद की तरह ज़मीन पर पड़ी रहेंगी।[3] वे
तलवार और अकाल से नाश हो जाएँगे[4]
और उनकी लाशें आकाश के पक्षियों और
धरती के जानवरों का निवाला बन
जाएँगी।'
5 क्योंकि यहोवा कहता है,
'तू ऐसे घर में मत जाना जहाँ मातम
मनानेवालों को खाना परोसा
जाता है,
तू छाती पीटकर मत रोना, न ही
हमदर्दी जताना।'[5]
यहोवा ऐलान करता है,
'क्योंकि मैंने इन लोगों से शांति
छीन ली है,
अपना अटल प्यार और दया उनसे
वापस ले ली है।[6]
6 इस देश में छोटे-बड़े सभी मरेंगे।
उन्हें दफनाया नहीं जाएगा,
कोई उनके लिए मातम नहीं
मनाएगा,

15:20 *या "तुझे हरा नहीं पाएँगे।"

न ही उनके लिए अपना शरीर
चीरेगा या सिर मुँड़वाएगा।*
7 मातम मनानेवालों को कोई खाना
नहीं देगा,
उनके अपनों की मौत पर उन्हें कोई
दिलासा नहीं देगा,
कोई भी उन्हें दिलासे का प्याला
नहीं देगा
कि वे माँ या पिता को खोने के गम
में पी सकें।
8 तू दावतवाले घर में मत जाना,
उनके साथ बैठकर मत खाना-
पीना।'

9 क्योंकि सेनाओं का परमेश्‍वर और
इसराएल का परमेश्‍वर यहोवा कहता है,
'मैं तेरे ही दिनों में तेरी आँखों के सामने
इस जगह का ऐसा हाल कर दूँगा कि
यहाँ से न तो खुशियाँ और जश्‍न मनाने
की आवाज़ें आएँगी, न ही दूल्हा-दुल्हन के
साथ आनंद मनाने की आवाज़ें।'[1]

10 जब तू इन लोगों को ये सारी बातें
बताएगा तो वे तुझसे पूछेंगे, 'यहोवा ने
क्यों कहा है कि वह हम पर इतनी बड़ी
विपत्ति लाएगा? हमने अपने परमेश्‍वर
यहोवा के खिलाफ ऐसा क्या गुनाह किया,
क्या पाप किया?'[2] 11 तू उन्हें जवाब
देना, 'यहोवा ऐलान करता है, "क्योंकि
तुम्हारे पुरखे मुझे छोड़कर दूसरे देवताओं
के पीछे जाते रहे,[3] उनकी सेवा करते
रहे और उनके आगे दंडवत करते रहे।[4]
उन्होंने मुझे छोड़ दिया और मेरे कानून
का पालन नहीं किया।[5] 12 और तुम
तो अपने पुरखों से भी बदतर निकले।[6]
तुममें से हर कोई मेरी आज्ञा मानने के
बजाय ढीठ होकर अपने दुष्ट मन की
करता है।[1] 13 इसलिए मैं तुम्हें इस
देश से निकालकर ऐसे देश में फेंक दूँगा
जिसे न तुम जानते हो न तुम्हारे पुरखे
जानते थे।[2] वहाँ तुम्हें दिन-रात दूसरे
देवताओं की सेवा करनी पड़ेगी[3] क्योंकि
मैं तुम पर कोई रहम नहीं करूँगा।"'

14 यहोवा ऐलान करता है, 'ऐसे दिन
आ रहे हैं जब वे फिर कभी नहीं कहेंगे,
"यहोवा के जीवन की शपथ जो इस-
राएलियों को मिस्र देश से निकाल लाया
था!"[4] 15 इसके बजाय, वे कहेंगे,
"यहोवा के जीवन की शपथ जो इसराए-
लियों को उत्तर के देश से और उन सभी
देशों से निकाल लाया था जहाँ उसने उन्हें
तितर-बितर कर दिया था!" मैं उन्हें वापस
उनके देश में ले आऊँगा जो मैंने उनके
पुरखों को दिया था।'[5]

16 यहोवा ऐलान करता है, 'देखो, मैं
बहुत-से मछुवारों को बुलवाऊँगा
और वे उनकी मछुवाई करेंगे।
इसके बाद, मैं बहुत-से शिकारियों
को बुलवाऊँगा
और वे हर पहाड़ और हर
पहाड़ी पर
और चट्टानों की दरारों में उनका
शिकार करेंगे।
17 क्योंकि मेरी आँखें उनका एक-एक
काम* देख रही हैं।
वे मुझसे नहीं छिपे हैं,
न ही उनका गुनाह मेरी नज़रों से
छिपा है।
18 पहले, मैं उनके गुनाह और उनके
पाप का उनसे पूरा बदला
चुकाऊँगा,[6]
क्योंकि उन्होंने मेरे देश को अपनी

अध्या. 16
1 यश 24:7, 8
यिर्म 7:34
प्रक 18:23
2 यिर्म 5:19
3 न्या 2:12
4 यिर्म 8:1, 2
5 दान 9:11
आम 2:4
6 यिर्म 7:26

दूसरा कॉल.
1 नहे 9:29
यिर्म 6:28
2 2इत 7:20
यिर्म 15:14
यिर्म 17:4
3 व्य 4:27, 28
व्य 28:36
4 निर्ग 20:2
यिर्म 23:7, 8
5 व्य 30:1-3
यिर्म 3:18
यिर्म 24:6
यिर्म 30:3
यिर्म 32:37
आम 9:14
6 यश 40:2

16:6 *झूठे धर्मों के मातम के दस्तूर, जो ज़ाहिर है कि बगावती इसराएल में मनाए जाते थे।

16:17 *शा., "उनके सभी तौर-तरीके।"

घिनौनी और बेजान मूरतों* से
दूषित कर दिया है,
मेरी विरासत की ज़मीन को
अपनी घिनौनी चीज़ों से भर
दिया है।'"[1]
19 हे यहोवा, मेरी ताकत और मेरा
मज़बूत गढ़,
जहाँ मैं मुसीबत के दिन भागकर
जाता हूँ,[2]
तेरे पास धरती के कोने-कोने से
राष्ट्र आएँगे
और कहेंगे, "हमारे पुरखों ने विरा-
सत में सिर्फ झूठ पाया,
बेकार की चीज़ें पायीं जिनसे कोई
फायदा नहीं।"[3]
20 क्या एक इंसान अपने लिए देवता
बना सकता है?
वह जिन्हें बनाता है वे सचमुच के
देवता नहीं हैं।[4]
21 "इसलिए मैं उन्हें दिखा दूँगा,
इस बार मैं उन्हें अपनी शक्ति और
अपना बल दिखा दूँगा
और उन्हें जानना होगा कि मेरा
नाम यहोवा है।"

17 "यहूदा का पाप लोहे की कलम
से लिखा गया है।
हीरे की नोक से उनके दिल की
पटिया पर
और उनकी वेदियों के सींगों पर गढ़
दिया गया है,
2 उनके बेटे भी उनकी वेदियों और
पूजा-लाठों* को याद करते हैं,[5]
जो एक घने पेड़ के पास, ऊँची
पहाड़ियों पर[6]
3 और खुले देहात में पहाड़ों पर थीं।
तेरी दौलत, तेरा सारा खज़ाना मैं
लूट में दे दूँगा,[1]
हाँ, तेरी ऊँची जगह लूट में दे दूँगा
क्योंकि तूने अपने सारे इलाकों में
पाप किया है।[2]
4 तू अपने ही दोष के कारण मेरी दी
हुई विरासत खो बैठेगा।[3]
मैं तुझे एक अनजान देश में भेज
दूँगा जहाँ तू अपने दुश्मनों की
गुलामी करेगा,[4]
क्योंकि तूने मेरे क्रोध की आग
भड़का दी है।*[5]
यह हमेशा जलती रहेगी।"
5 यहोवा कहता है,
"शापित है वह इंसान* जो
अदना इंसानों पर भरोसा
करता है,[6]
जो इंसानी ताकत का सहारा
लेता है,[7]
जिसका दिल यहोवा से दूर हो
जाता है।
6 वह उस पेड़ की तरह बन
जाएगा जो वीराने में अकेला
खड़ा रहता है।
वह कभी भलाई नहीं देखेगा,
वह वीराने की सूखी जगहों में ही
रहेगा,
नमकवाली जगह में, जहाँ कोई नहीं
रह सकता।
7 उस इंसान* पर परमेश्वर की
आशीष होती है,
जो यहोवा पर भरोसा रखता है,
जो यहोवा पर आशा रखता है।[8]
8 वह उस पेड़ की तरह बन जाएगा

16:18 *शा., "घिनौनी मूरतों की लाशों।"
17:2 *शब्दावली देखें।
17:4 *या शायद, "मेरे क्रोध की वजह से तुझे आग की तरह जलाया गया है।" **17:5, 7** *या "ताकतवर आदमी।"

अध्य. 16
1 लैव 26:30, भज 106:38
2 यिर्म 17:17
3 यिर्म 10:5, 14
4 भज 115:4, यिर्म 2:11, 1कुर 8:4

अध्य. 17
5 न्या 3:7, 2इत 24:18, 2इत 33:1, 3
6 यश 1:29, यहे 6:13

दूसरा कॉल.
1 2रा 24:11, 13, यिर्म 15:13
2 लैव 26:30, यहे 6:3
3 विल 5:2
4 व्य 28:48, यिर्म 16:13
5 यश 5:25, यिर्म 15:14
6 यश 30:1, 2
7 2रा 16:7
8 भज 34:8, भज 146:5, यश 26:3

जिसे पानी के सोतों के पास
लगाया गया है,
जो अपनी जड़ें बहते पानी तक
फैलाता है।
उसे तपती गरमी का एहसास नहीं
होगा,
उसके पत्ते हमेशा हरे रहेंगे।[1]
सूखे के साल में उसे कोई चिंता नहीं
होगी,
न ही वह फल देना छोड़ेगा।
9 दिल सबसे बड़ा धोखेबाज़* है और
यह उतावला# होता है।[2]
इसे कौन जान सकता है?
10 मैं यहोवा दिल को जाँचता हूँ,[3]
गहराई में छिपे विचारों* को
परखता हूँ
ताकि हरेक को उसके चालचलन
और उसके कामों के नतीजे के
मुताबिक फल दूँ।[4]
11 जैसे एक तीतर उन अंडों को सेती
है जो उसने नहीं दिए,
वैसे ही वह इंसान होता है जो बेई-
मानी से दौलत कमाता है।*[5]
दौलत उसे उसकी अधेड़ उम्र में
छोड़ देगी
और आखिर में वह मूर्ख साबित
होगा।"
12 जिस गौरवशाली राजगद्दी की शुरू-
आत से महिमा हुई है,
वही हमारा पवित्र-स्थान है।[6]
13 हे यहोवा, इसराएल की आशा,
तुझे छोड़नेवाले सब शर्मिंदा किए
जाएँगे।
तुझसे* बगावत करनेवालों के नाम
धूल पर लिखे जाएँगे,[1]
क्योंकि उन्होंने यहोवा को
छोड़ दिया है, जो जीवन का जल
देता है।[2]
14 हे यहोवा, मुझे चंगा कर, तब मैं
चंगा हो जाऊँगा।
मुझे बचा ले, तब मैं बच जाऊँगा,[3]
क्योंकि मैं तेरी ही तारीफ करता हूँ।
15 देख! वे मुझसे कहते हैं,
"यहोवा का वचन अब तक पूरा
क्यों नहीं हुआ?"[4]
16 मगर मैं एक चरवाहे के नाते तेरे
पीछे चलना छोड़कर दूर नहीं
भागा,
न ही मैंने मुसीबत के दिन की
कामना की।
तू अच्छी तरह जानता है कि मेरे
होंठों ने क्या-क्या कहा,
यह सब तेरे सामने ही हुआ है!
17 तू मेरे लिए खौफ की वजह न बन।
तू विपत्ति के दिन मेरी पनाह है।
18 मुझे सतानेवाले शर्मिंदा हो जाएँ,[5]
मगर मुझे शर्मिंदा न होने दे।
उन पर खौफ छा जाए,
मगर मुझ पर खौफ न छाने दे।
उन पर विपत्ति का दिन ले आ[6]
और उन्हें कुचलकर पूरी तरह नाश
कर दे।*

19 यहोवा ने मुझसे कहा, "जाकर इन
लोगों के बेटों के फाटक के पास खड़ा
हो, जहाँ से यहूदा के राजा आते-जाते हैं
और यरूशलेम के सभी फाटकों के पास
खड़ा हो।[7]
20 तू उनसे कहना, 'यहूदा

17:9 *या "दगाबाज़।" #या शायद, "लाइलाज।" **17:10** *या "गहरी भावनाओं।" शा., "गुरदों।" **17:11** *या "जो दौलत कमाता है मगर न्याय से नहीं।"

17:13 *शा., "मुझसे," ज़ाहिर है कि यहाँ यहोवा की बात की गयी है। **17:18** *या "दो बार नाश कर दे।"

अध्य. 17
1 भज 1:3; भज 92:12, 13
2 उत 6:5; उत 8:21; नीत 28:26
3 1शम 16:7; 1इत 28:9; नीत 17:3; नीत 21:2
4 रोम 2:6; गल 6:7; प्रक 2:23; प्रक 22:12
5 नीत 28:20; यश 1:23; याकू 5:4
6 2इत 2:5; यश 6:1

दूसरा कॉल.
1 भज 73:27; यश 1:28
2 यिर्म 2:13; प्रक 22:1
3 यिर्म 15:20
4 यश 5:19; 2पत 3:4
5 यिर्म 15:15; यिर्म 20:11
6 यिर्म 18:23
7 यिर्म 7:2

के राजाओ, यहूदा के सब लोगो और यरूशलेम के सभी निवासियो, तुम जो इन फाटकों से दाखिल होते हो, यहोवा का संदेश सुनो। **21** यहोवा कहता है, "तुम इस बात का ध्यान रखना: सब्त के दिन कोई बोझ मत ढोना, न ही उसे यरूशलेम के फाटकों से अंदर लाना।[1] **22** सब्त के दिन तुम अपने घरों से कोई बोझ बाहर मत लाना और कोई भी काम मत करना।[2] सब्त के दिन को पवित्र मानना, ठीक जैसे मैंने तुम्हारे पुरखों को आज्ञा दी थी।[3] **23** मगर उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी थी और उस पर कान नहीं लगाया था। उन्होंने ढीठ होकर मेरी आज्ञा मानने और मेरी शिक्षा कबूल करने से इनकार कर दिया था।"'[4]

24 'यहोवा ऐलान करता है, "लेकिन अगर तुम सख्ती से मेरी बात मानोगे और सब्त के दिन इस शहर के फाटकों से कोई बोझ ढोकर नहीं लाओगे और सब्त के दिन कोई भी काम नहीं करोगे और इस तरह उसे पवित्र मानोगे,[5] **25** तो दाविद की राजगद्दी[6] पर बैठनेवाले राजा और हाकिम, रथ और घोड़ों पर सवार होकर इस शहर के फाटकों से अंदर आ पाएँगे। राजा और उनके हाकिम, यहूदा के लोग और यरूशलेम के निवासी अंदर आ पाएँगे[7] और यह शहर सदा लोगों से आबाद रहेगा। **26** यहूदा के शहरों, यरूशलेम के आस-पास की जगहों, बिन्यामीन के इलाके,[8] निचले प्रदेश,[9] पहाड़ी प्रदेश और नेगेब* से लोग आ पाएँगे। वे अपने साथ पूरी होम-बलियाँ,[10] बलिदान,[11] अनाज के चढ़ावे,[12] लोबान और धन्यवाद-बलियाँ लेकर यहोवा के भवन में आ पाएँगे।[13]

27 लेकिन अगर तुम मेरी आज्ञा तोड़कर सब्त के दिन को पवित्र नहीं मानोगे और सब्त के दिन बोझ ढोओगे और उसे यरूशलेम के फाटकों से अंदर लाओगे, तो मैं उसके फाटकों पर आग लगा दूँगा और यह आग यरूशलेम की किलेबंद मीनारों को ज़रूर भस्म कर देगी[1] और यह बुझायी नहीं जाएगी।"'"[2]

18

यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह के पास पहुँचा, **2** "तू उठकर कुम्हार के घर जा।[3] वहाँ मैं तुझे अपना संदेश सुनाऊँगा।"

3 इसलिए मैं उठकर कुम्हार के घर गया। कुम्हार चाक पर काम कर रहा था। **4** मगर वह मिट्टी से जो बरतन बना रहा था, वह उसके हाथ में बिगड़ गया। इसलिए उसने उसी मिट्टी से दूसरा बरतन बना दिया। उसे जैसा ठीक लगा वैसा बरतन बनाया।

5 फिर यहोवा का यह संदेश मेरे पास पहुँचा: **6** "यहोवा ऐलान करता है, 'हे इसराएल के घराने, क्या मैं तेरे साथ ऐसा ही नहीं कर सकता जैसे इस कुम्हार ने किया? हे इसराएल के घराने, देख! जैसे कुम्हार के हाथ में मिट्टी है, वैसे ही तू मेरे हाथ में है।[4] **7** जब भी मैं किसी राष्ट्र या राज्य के बारे में कहूँ कि मैं उसे जड़ से उखाड़ दूँगा, ढा दूँगा और नाश कर दूँगा,[5] **8** तब अगर वह राष्ट्र अपनी दुष्टता छोड़ दे तो मैं अपनी सोच बदल दूँगा* और उस पर वह विपत्ति नहीं लाऊँगा जिसे लाने की मैंने ठानी थी।[6] **9** लेकिन अगर मैं किसी राष्ट्र या राज्य के बारे में कहूँ कि मैं उसे बनाऊँगा और लगाऊँगा **10** और वह मेरी नज़र में बुरे काम करे और मेरी आज्ञा न माने,

---

17:26 * या "दक्षिण।"

18:8 * या "पछतावा महसूस करूँगा।"

अध्य. 17
1 नहे 13:19
2 निर्ग 20:9, 10; लैव 23:3
3 निर्ग 31:13
4 यश 48:4; यहे 20:13
5 व्य 5:12-14
6 भज 132:11
7 यिर्म 22:4
8 यिर्म 32:44
9 यिर्म 33:13
10 लैव 1:3
11 एज 3:3
12 लैव 2:1, 2
13 भज 107:22; भज 116:17; यिर्म 33:10, 11

दूसरा कॉल.
1 2रा 25:9, 10; यिर्म 39:8
2 2रा 22:16, 17; विल 4:11

अध्य. 18
3 यिर्म 19:1
4 रोम 9:20, 21
5 यिर्म 1:10; यिर्म 12:14; यिर्म 25:9; यिर्म 45:4
6 1रा 8:33, 34; भज 106:45; यिर्म 7:3; यिर्म 26:3; यहे 18:21; योए 2:13; यो 3:5, 10

तो मैं अपनी सोच बदल दूँगा* और मैंने
उसके साथ जो भलाई करने की ठानी थी,
वह नहीं करूँगा।'

11 अब तू मेहरबानी करके यहूदा के
लोगों और यरूशलेम के निवासियों से
बोल, 'यहोवा कहता है, "मैं तुम पर
विपत्ति लाने की तैयारी कर रहा हूँ
और मुसीबत लाने का उपाय कर रहा
हूँ। मेहरबानी करके अपने बुरे रास्ते
से पलटकर लौट आओ, अपने तौर-
तरीके बदलो और अपना चालचलन
सुधारो।"'"[1]

12 मगर उन्होंने कहा, "नहीं, ऐसा
नहीं हो सकता![2] हम तो वही करेंगे जो
हमने सोचा है। हममें से हर कोई ढीठ
होकर अपने दुष्ट मन के मुताबिक काम
करेगा।"[3]

13 इसलिए यहोवा कहता है,
"मेहरबानी करके राष्ट्रों से पूछो।
क्या किसी ने ऐसी बात सुनी है?
इसराएल की कुँवारी ने सबसे
घिनौना काम किया है।[4]
14 क्या लबानोन की पथरीली ढलानों
से बर्फ कभी गायब होती है?
या दूर से बहनेवाला ठंडा पानी
कभी सूखता है?
15 मगर मेरे लोग मुझे भूल गए हैं।[5]
वे निकम्मी चीज़ों के आगे बलिदान
चढ़ाते हैं,[6]
लोगों को ठोकर खिलाकर
गिराते हैं,
उन्हें पुराने ज़माने की राहों
से हटाकर अपनी राहों पर ले
चलते हैं,[7]
कच्चे रास्तों पर ले चलते हैं, जो
समतल और सीधे नहीं हैं*

16 ताकि अपने देश का ऐसा हश्र
करें कि देखनेवालों का दिल
दहल जाए[1]
और वे हमेशा खौफ खाएँ।*[2]
वहाँ से गुज़रनेवाला हर कोई डर के
मारे देखता रह जाएगा,
हैरत से सिर हिलाएगा।[3]
17 पूरब से आनेवाली आँधी की
तरह मैं उन्हें दुश्मन के सामने
तितर-बितर कर दूँगा।
मुसीबत के दिन मैं उन्हें अपना मुँह
नहीं, पीठ दिखाऊँगा।"[4]

18 उन्होंने कहा, "चलो, हम यिर्म-
याह के खिलाफ एक साज़िश रचते
हैं,[5] क्योंकि हमारे याजकों के हाथ से
कानून* कभी नहीं मिटेगा, न बुद्धि-
मानों से सलाह मिलनी बंद होगी और न
ही भविष्यवक्ताओं से संदेश मिलना बंद
होगा। चलो, हम उसके खिलाफ बात
करें# और वह जो कहता है उस पर बिल-
कुल ध्यान न दें।"

19 हे यहोवा, मुझ पर ध्यान दे
और सुन कि मेरे विरोधी क्या कह
रहे हैं।
20 क्या अच्छाई का बदला बुराई से
देना सही है?
उन्होंने मेरी जान लेने के लिए एक
गड्ढा खोदा है।[6]
याद कर कि मैं उनके बारे में अच्छी
बात कहने के लिए तेरे सामने
खड़ा हुआ
ताकि तेरी जलजलाहट उनसे दूर हो
जाए।
21 इसलिए उनके बेटों को अकाल के
हवाले कर दे,
उन्हें तलवार के हवाले कर दे।[7]

18:10 *या "पछतावा महसूस करूँगा।"
18:15 *या "बनाए नहीं गए हैं।"

18:16 *शा., "सीटी बजाएँ।" 18:18 *या "हिदायत।" #शा., "ज़बान से उसे मारें।"

अध्य. 18
1 यश 1:16, यहे 18:23
2 यिर्म 2:25
3 व्य 29:19, 20, यिर्म 7:24
4 यिर्म 2:13
5 यिर्म 2:19, यिर्म 3:21
6 यिर्म 10:14, 15
7 यिर्म 6:16

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:33, यहे 6:14
2 1रा 9:8, यिर्म 19:8, विल 2:15, मी 6:16
3 व्य 28:37
4 व्य 31:17
5 यिर्म 11:19
6 भज 35:7
7 यिर्म 12:3

उनकी पत्नियाँ अपने बच्चों और
पति को खो बैठें।[1]
उनके आदमी जानलेवा महामारी से
मारे जाएँ,
उनके जवान लड़ाई में तलवार से
मारे जाएँ।[2]
22 जब तू उन पर अचानक लुटेरों से
हमला कराएगा,
तो उनके घरों से चीख-पुकार
सुनायी दे।
क्योंकि उन्होंने मुझे पकड़ने के लिए
गड्ढा खोदा,
मेरे पाँवों के लिए फंदे बिछाए।[3]
23 मगर हे यहोवा, तू अच्छी तरह
जानता है
कि उन्होंने मुझे मार डालने के लिए
क्या-क्या साज़िशें रचीं।[4]
उनके गुनाह को ढाँप न देना,
न उनके पाप को अपने सामने से
मिटाना।
जब तू क्रोध में आकर उनके
खिलाफ कदम उठाएगा,
तो वे लड़खड़ाकर तेरे सामने
गिर पड़ें।[5]

19 यहोवा ने मुझसे कहा, "जाकर
कुम्हार से मिट्टी की एक सुराही
खरीदकर ला।[6] लोगों के कुछ मुखि-
याओं और याजकों के कुछ मुखियाओं को
लेकर 2 'हिन्नोम के वंशजों की घाटी'[7]
में जा और ठीकरा फाटक के प्रवेश
पर खड़ा हो। वहाँ तू इस संदेश का ऐलान
करना जो मैं तुझे बता रहा हूँ। 3 तू
उनसे कहना, 'यहूदा के राजाओ और
यरूशलेम के निवासियो, यहोवा का संदेश
सुनो। सेनाओं का परमेश्वर और इस-
राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है,
"मैं इस जगह एक विपत्ति लानेवाला
हूँ, ऐसी विपत्ति कि उसके बारे में सुनने-
वाले हर किसी के कान झनझना जाएँगे,
4 क्योंकि इन लोगों ने मुझे छोड़ दिया है[1]
और इस जगह का ऐसा हाल कर दिया
है कि यह पहचान में नहीं आती।[2] यहाँ
वे दूसरे देवताओं के लिए बलिदान चढ़ाते
हैं, जिनके बारे में न तो वे जानते हैं,
न उनके पुरखे जानते थे और न यहूदा
के राजा जानते थे। उन्होंने इस जगह को
बेगुनाहों के खून से भर दिया है।[3]
5 उन्होंने बाल के लिए ऊँची जगह खड़ी
कीं ताकि वहाँ उसके लिए आग में अपने
बेटों की पूरी होम-बलि चढ़ा सकें।[4] यह
ऐसा काम है जिसकी मैंने कभी आज्ञा नहीं
दी थी, न मैंने इस बारे में कभी बात की
और न ही कभी यह खयाल मेरे मन में
आया।"'[5]
6 'यहोवा ऐलान करता है, "इस-
लिए देखो, वे दिन आ रहे हैं जब
यह जगह फिर कभी न तोपेत कहलाए-
गी, न ही 'हिन्नोम के वंशजों की घाटी'
बल्कि 'मार-काट की घाटी' कहलाए-
गी।[6] 7 मैं इस जगह यहूदा और यरू-
शलेम की योजनाओं को नाकाम कर दूँगा
और उन्हें दुश्मनों की तलवार से मरवा
डालूँगा और उन लोगों से घात करवाऊँगा
जो उनकी जान के पीछे पड़े हैं। मैं उनकी
लाशें आकाश के पक्षियों और धरती के
जानवरों का निवाला बना दूँगा।[7] 8 मैं
इस शहर का ऐसा हश्र कर दूँगा कि
देखनेवालों का दिल दहल जाएगा और
वे मज़ाक उड़ाते हुए सीटी बजाएँगे।
यहाँ से गुज़रनेवाला हर कोई डर के
मारे देखता रह जाएगा और उसकी सारी
विपत्तियों की वजह से मज़ाक उड़ाते हुए
सीटी बजाएगा।[8] 9 मैं उन्हें अपने बेटे-
बेटियों का माँस खाने पर मजबूर कर
दूँगा और वे एक-दूसरे का माँस खाएँगे,
क्योंकि जब उनके दुश्मन और वे लोग,

अध्य. 18
1 विल 5:3
2 2इत 36:17
3 भज 38:12
4 यिर्म 11:19, 20
5 भज 35:4 यिर्म 15:15

अध्य. 19
6 यिर्म 18:2
7 यह 15:8, 12 2इत 28:1, 3 यिर्म 7:31

दूसरा कॉल.
1 2रा 22:16, 17 यश 65:11
2 2इत 33:1, 4
3 2रा 21:16 यश 59:7 यिर्म 2:34 विल 4:13 मत 23:34, 35
4 2इत 28:1, 3 2इत 33:1, 6 यश 57:5
5 लैव 18:21 यिर्म 7:31 यिर्म 32:35
6 यिर्म 7:32
7 व्य 28:25, 26 भज 79:2 यिर्म 7:33 यिर्म 16:4
8 1रा 9:8 यिर्म 18:16 विल 2:15

जो उनकी जान के पीछे पड़े हैं, उन्हें चारों
तरफ से घेर लेंगे तो वे हर तरह से बेबस
हो जाएँगे।"'[1]

10 फिर तू उन सब आदमियों की
आँखों के सामने सुराही तोड़ देना, जो तेरे
साथ वहाँ जाएँगे 11 और उनसे कहना,
'सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता है,
"जैसे कोई कुम्हार के बरतन को ऐसे तोड़
देता है कि वह दोबारा जुड़ न सके, उसी
तरह मैं इन लोगों को और इस शहर को
नाश कर दूँगा। वे तोपेत में तब तक लाशें
दफनाते रहेंगे जब तक कि वहाँ और
जगह न बचे।"'[2]

12 यहोवा ऐलान करता है, 'मैं इस
जगह और इसके निवासियों के साथ ऐसा
ही करनेवाला हूँ ताकि यह शहर तोपेत
जैसा बन जाए। 13 यरूशलेम के घर
और यहूदा के राजाओं के महल इस
तोपेत की तरह अशुद्ध हो जाएँगे।[3] हाँ,
वे सभी घर अशुद्ध हो जाएँगे जिनकी
छतों पर वे आकाश की सारी सेनाओं
के लिए बलिदान चढ़ाते[4] और दूसरे देव-
ताओं के लिए अर्घ चढ़ाते थे।'"[5]

14 जब यिर्मयाह तोपेत से लौटा, जहाँ
यहोवा ने उसे भविष्यवाणी करने भेजा
था, तो वह यहोवा के भवन के आँगन में
खड़ा हुआ और उसने सब लोगों से कहा,
15 "सेनाओं का परमेश्वर और इस-
राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है,
'देखो, मैं इस शहर और इसके सभी
कसबों पर वे सारी विपत्तियाँ लानेवाला
हूँ जिनके बारे में मैंने उन्हें बताया था,
क्योंकि उन्होंने ढीठ होकर मेरी आज्ञा
मानने से इनकार कर दिया है।'"[6]

20 जब यिर्मयाह इन बातों की
भविष्यवाणी कर रहा था तो
इम्मेर का बेटा याजक पशहूर सुन रहा
था। पशहूर यहोवा के भवन का एक
मुख्य अधिकारी था। 2 जब पशहूर ने
यह सब सुना तो उसने भविष्यवक्ता यिर्म-
याह को मारा और उसे यहोवा के भवन
में ऊपरी बिन्यामीन फाटक के पास-
वाले काठ में कस दिया।[1] 3 मगर
अगले दिन जब पशहूर ने यिर्मयाह को
काठ से निकाला तो यिर्मयाह ने उससे
कहा,

"यहोवा ने तेरा नाम पशहूर नहीं
बल्कि 'चौतरफा आतंक' रखा है।[2]
4 क्योंकि यहोवा कहता है, 'मैं तुझे तेरे
लिए और तेरे सब दोस्तों के लिए आतंक
का कारण बना दूँगा। वे सब तेरी आँखों
के सामने अपने दुश्मनों की तलवार से
मारे जाएँगे।[3] मैं पूरे यहूदा को बैबिलोन
के राजा के हाथ में कर दूँगा और वह
उन्हें बंदी बनाकर बैबिलोन ले जाएगा
और तलवार से मार डालेगा।[4] 5 मैं
इस शहर की सारी दौलत, इसकी सारी
जायदाद, सारी कीमती चीज़ें और यहूदा
के राजाओं का सारा खज़ाना उनके
दुश्मनों के हाथ में दे दूँगा।[5] वे उन्हें लूट
लेंगे, ज़ब्त कर लेंगे और बैबिलोन ले
जाएँगे।[6] 6 और हे पशहूर, तू और तेरे
घर में रहनेवाले सब लोग बंदी बना लिए
जाएँगे। तू बैबिलोन जाएगा और वहाँ मर
जाएगा। तुझे वहीं अपने दोस्तों के साथ
दफना दिया जाएगा क्योंकि तूने उन्हें झूठी
भविष्यवाणियाँ सुनायी हैं।'"[7]

7 हे यहोवा, तूने मुझे मूर्ख बनाया
और मैं मूर्ख बन गया।
तूने मुझ पर अपना ज़ोर आज़माया
और तू जीत गया।[8]
मैं सारा दिन मज़ाक बन जाता हूँ,
हर कोई मेरी खिल्ली उड़ाता है।[9]
8 जब भी मैं तेरा संदेश सुनाता हूँ,
तो मुझे ज़ोर-ज़ोर से यही ऐलान
करना पड़ता है,

अध्य. 19
1 लैव 26:29
व्य 28:53
विल 2:20
विल 4:10
यहे 5:10
2 यिर्म 7:32
3 भज 79:1
4 यिर्म 8:1, 2
सप 1:4, 5
5 यिर्म 7:18
यिर्म 32:29
6 नहे 9:17, 29
जक 7:12

दूसरा कॉल.

अध्य. 20
1 2इत 16:10
2 यिर्म 6:25
3 व्य 28:32
4 यिर्म 25:9
यिर्म 39:9
5 2रा 20:17
2रा 24:11, 13
2रा 25:13-15
विल 1:10
6 2इत 36:10
यिर्म 15:13
7 यिर्म 14:14
यिर्म 28:15
यिर्म 29:21
8 यहे 3:14
मी 3:8
9 भज 22:7
यिर्म 15:10,
15

"मार-काट और तबाही मचेगी!"
यहोवा का संदेश सुनाने की
वजह से दिन-भर मेरी बेइज़्ज़ती
की जाती है, मेरी हँसी उड़ायी
जाती है।[1]
9 इसलिए मैंने कहा, "अब से
मैं उसके बारे में कुछ नहीं
बताऊँगा,
उसके नाम से और कुछ नहीं
बोलूँगा।"[2]
लेकिन परमेश्वर का संदेश मेरे मन
में आग की तरह जलने लगा,
यह मेरी हड्डियों में धधकती आग
जैसा था,
मैं उसे रोकते-रोकते थक गया,
मुझसे और रहा नहीं गया।[3]
10 मैंने बहुत-सी झूठी अफवाहें सुनीं,
मुझे चारों तरफ से आतंक ने आ
घेरा।[4]
"चलो उसकी बुराई करते हैं,
उसकी बुराई करते हैं!"
मेरे लिए शांति की कामना करने-
वाला हर कोई इस इंतज़ार में था
कि मैं कब गिरूँगा।[5]
वे कहते थे, "हो सकता है वह
बेवकूफी से कोई गलती करे,
तब हम उसे दबोच सकते
हैं, उससे अपना बदला ले
सकते हैं।"
11 मगर यहोवा मेरे साथ एक ऐसे वीर
योद्धा की तरह था जिससे सब
डरते हैं।[6]
इसलिए मुझे सतानेवाले गिर पड़ेंगे
और मुझसे नहीं जीतेंगे।[7]
उन्हें बुरी तरह शर्मिंदा किया
जाएगा, क्योंकि वे कामयाब नहीं
होंगे।
उन्हें हमेशा के लिए बेइज़्ज़त किया
जाएगा और यह कभी नहीं
भुलाया जाएगा।[1]
12 मगर हे सेनाओं के
परमेश्वर यहोवा, तू नेक इंसान
को जाँचता है।
तू दिल को और गहराई में छिपे
विचारों* को देखता है।[2]
मुझे यह देखने का मौका दे कि तू
उनसे कैसे बदला लेगा,[3]
क्योंकि मैंने अपना मुकदमा तेरे हाथ
में छोड़ दिया है।[4]
13 यहोवा के लिए गीत गाओ! यहोवा
की तारीफ करो!
क्योंकि उसने गरीब को दुष्टों के
हाथ से छुड़ाया है।
14 लानत है उस दिन पर जब मैं पैदा
हुआ था!
वह दिन मुबारक न माना जाए जब
मेरी माँ ने मुझे जन्म दिया था![5]
15 धिक्कार हो उस आदमी पर जिसने
मेरे पिता को यह खुशखबरी
सुनायी थी,
"तेरे लड़का हुआ है, लड़का!"
जिसे सुनकर मेरे पिता का दिल
बाग-बाग हो गया था।
16 उस आदमी की हालत उन शहरों
जैसी हो जाए
जिन्हें यहोवा ने नाश कर दिया,
बिलकुल दया नहीं की।
उसे सुबह चीख-पुकार और भरी
दोपहरी में युद्ध की ललकार
सुनायी दे।
17 मुझे कोख में ही क्यों नहीं मार डाला
गया,

अध्य. 20
1 2इत 36:16; यिर्म 6:10
2 1रा 19:2, 4; यो 1:3
3 यिर्म 6:11; आम 3:8; प्रेष 4:19, 20
4 भज 31:13
5 भज 38:16
6 यिर्म 1:8; रोम 8:31
7 भज 27:2; यिर्म 15:15, 20; यिर्म 17:18

दूसरा कॉल.
1 भज 6:10
2 यिर्म 17:10
3 भज 59:10; यिर्म 17:18
4 यिर्म 11:20; 1पत 2:23
5 अय 3:3; यिर्म 15:10

20:12 *या "गहरी भावनाओं।" शा., "गुरदों।"

जिससे मेरी माँ ही मेरी कब्र बन
जाती
और मैं सदा उसकी कोख में पड़ा
रहता?[1]
18 मैं कोख से क्यों बाहर निकला?
बस इसलिए कि मुसीबतें और
दुख देखूँ
अपमान सहते-सहते मर जाऊँ?[2]

21 यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह
को तब मिला जब राजा सिद-
कियाह[3] ने मल्कियाह के बेटे पशहूर[4]
और मासेयाह के बेटे याजक सपन्याह[5]
को उसके पास भेजा और उससे यह पूछने
की गुज़ारिश की: 2 "मेहरबानी करके
हमारी तरफ से यहोवा से पूछ कि आगे
क्या होगा, क्योंकि बैबिलोन का राजा
नबूकदनेस्सर* हमसे युद्ध करने आया
है।[6] हो सकता है यहोवा हमारी तरफ
से कोई आश्चर्य का काम करे जैसे उसने
गुज़रे ज़माने में किया था और नबूकद-
नेस्सर हमें छोड़कर चला जाए।"[7]

3 यिर्मयाह ने उनसे कहा, "तुम सिद-
कियाह से कहना, 4 'इसराएल का पर-
मेश्वर यहोवा कहता है, "तुम लोग जो
हथियार लेकर बैबिलोन के राजा और
शहरपनाह के बाहर घेरनेवाले कस-
दियों से लड़ रहे हो,[8] उन हथियारों
से मैं तुम्हीं पर हमला कराऊँगा।* मैं
उन्हें शहर के बीचों-बीच इकट्ठा करूँगा।
5 मैं अपना शक्तिशाली हाथ बढ़ाकर
खुद तुमसे युद्ध करूँगा।[9] मैं गुस्से, बड़े
क्रोध और जलजलाहट में आकर तुमसे
लड़ूँगा।[10] 6 मैं इस शहर में रहनेवाले
सबको मार डालूँगा, इंसान और जान-
वर दोनों को। वे बड़ी महामारी* से मर
जाएँगे।"'[1]

7 'यहोवा ऐलान करता है, "इसके
बाद मैं यहूदा के राजा सिदकियाह और
उसके सेवकों को और इस शहर के लोगों
को, जो महामारी, तलवार और अकाल
से ज़िंदा बचेंगे, बैबिलोन के राजा नबू-
कदनेस्सर* के हाथ में कर दूँगा। उनके
दुश्मनों और उन लोगों के हाथ में कर
दूँगा जो उनकी जान के पीछे पड़े हैं।[2]
वह उन्हें तलवार से मार डालेगा। वह उन
पर तरस नहीं खाएगा, उन पर करुणा या
दया नहीं करेगा।"'[3]

8 और इन लोगों से तू कहना,
'यहोवा कहता है, "देखो, मैं तुम्हें ज़िंदगी
या मौत की राह चुनने का मौका देता
हूँ। 9 जो कोई इस शहर में ही रहेगा
वह तलवार, अकाल और महामारी से
मार डाला जाएगा। लेकिन जो कोई बाहर
जाकर खुद को उन कसदियों के हवाले
कर देगा जो तुम्हें घेरे हुए हैं वह ज़िंदा
रहेगा, अपनी जान बचा लेगा।"'*[4]

10 'यहोवा ऐलान करता है, "मैंने
इस शहर को ठुकरा दिया है। मैं इस
पर विपत्ति ले आऊँगा, इसके साथ कोई
भलाई नहीं करूँगा।[5] यह शहर बैबिलोन
के राजा के हाथ में दे दिया जाएगा[6] और
वह इसे आग से फूँक देगा।"[7]

11 यहूदा के राजा के घराने से कहना,
यहोवा का संदेश सुन। 12 हे दाविद के
घराने के लोगो, यहोवा तुमसे कहता है,

"हर सुबह न्याय करो,
जो लुट रहा है, उसे धोखेबाज़ के
हाथ से छुड़ाओ[8]
ताकि ऐसा न हो कि तुम्हारे दुष्ट
कामों की वजह से

21:2, 7 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है। 21:4 *या "को उलटा घुमाऊँगा।"

21:6 *या "बीमारी।" 21:9 *शा., "लूट में उसे अपनी जान मिलेगी।"

अध्य. 20
1 अय 10:18
2 अय 3:20

अध्य. 21
3 2रा 24:18; 1इत 3:15; 2इत 36:9, 10
4 यिर्म 38:1
5 यिर्म 29:25; यिर्म 37:3; यिर्म 52:24, 27
6 2रा 25:1; यिर्म 32:28; यिर्म 39:1
7 1शम 7:10; 2इत 14:11; यश 37:36, 37
8 यिर्म 32:5
9 यश 63:10; विल 2:5
10 यश 5:25

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:21, 22; यहे 7:15
2 2रा 25:6, 7; यिर्म 37:17; यिर्म 39:5-7; यिर्म 52:9-11; यहे 17:20
3 व्य 28:49, 50; 2इत 36:17
4 यिर्म 27:12, 13; यिर्म 38:2, 17
5 यिर्म 44:11
6 यिर्म 38:3
7 2इत 36:17, 19; यिर्म 17:27; यिर्म 34:2; यिर्म 37:10; यिर्म 39:8
8 यश 1:17; यिर्म 22:3; यहे 22:29; मी 2:2

मेरे क्रोध की आग भड़क उठे[1]
और उसे कोई बुझा न सके।"'[2]
13 यहोवा ऐलान करता है, 'हे घाटी के
निवासी,
हे समतल ज़मीन की चट्टान, मैं तुम्हें
सज़ा देनेवाला हूँ।'
'और तुम जो कहते हो, "हमसे
लड़ने कौन आएगा?
हमारे घरों पर कौन हमला
करेगा?" यह जान लो,
14 मैं तुम्हारे कामों के मुताबिक
तुमसे हिसाब माँगूँगा।'[3] यहोवा का
यह ऐलान है।
'मैं तुम्हारे जंगल में आग लगा दूँगा,
जो तुम्हारे आस-पास की हर चीज़
भस्म कर देगी।'"[4]

22 यहोवा कहता है, "यहूदा के
राजा के महल में जा और यह
संदेश सुनाः 2 'हे दाविद की राजगद्दी
पर बैठे यहूदा के राजा, तू और तेरे
सेवक और तेरे लोग, जो इन फाटकों
से होकर जाते हैं, यहोवा का यह संदेश
सुनें। 3 यहोवा कहता है, "न्याय करो।
जो लुट रहा है, उसे धोखेबाज़ के हाथ
से छुड़ाओ। किसी परदेसी के साथ बद-
सलूकी मत करो और अनाथ* या विधवा
का बुरा मत करो।[5] इस जगह किसी बे-
गुनाह का खून मत बहाओ।[6] 4 अगर
तुम इन बातों का सख्ती से पालन करोगे,
तो दाविद की राजगद्दी पर बैठनेवाले
राजा,[7] रथों और घोड़ों पर सवार होकर
इस भवन के फाटकों से अंदर आ पाएँगे।
वे अपने सेवकों और अपने लोगों के साथ
अंदर आ पाएँगे।"'[8]
5 'लेकिन अगर तुम इन बातों का

22:3 *या "जिसके पिता की मौत हो गयी है।"

पालन नहीं करोगे, तो मैं अपनी शपथ
खाकर कहता हूँ कि यह भवन
उजाड़ दिया जाएगा।'[1] यहोवा का यह
ऐलान है।
6 यहूदा के राजा के महल के बारे में
यहोवा कहता है,
'तू मेरे लिए गिलाद जैसा है,
लबानोन की चोटी जैसा है।
मगर मैं तुझे एक वीराना बना दूँगा,
तेरा एक भी शहर आबाद नहीं
रहेगा।[2]
7 मैं नाश करनेवालों को ठहराकर तेरे
खिलाफ भेजूँगा,
उनमें से हर कोई हथियारों से लैस
होगा।[3]
वे तेरे शानदार देवदारों को काट
डालेंगे
और आग में झोंक देंगे।[4]
8 बहुत-से राष्ट्र इस शहर के पास से
गुज़रेंगे और एक-दूसरे से पूछेंगे, "यहोवा
ने इस महान शहर के साथ ऐसा क्यों
किया?"[5] 9 फिर वे कहेंगे, "क्योंकि
उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा का करार
तोड़ दिया और दूसरे देवताओं को दंडवत
करके उनकी सेवा की।"'[6]
10 जो मर गया है उसके लिए मत
रोओ,
उसके लिए शोक मत मनाओ।
इसके बजाय, जो बँधुआई में जा
रहा है उसके लिए फूट-फूटकर
रोओ,
क्योंकि वह फिर कभी यह देश नहीं
देखेगा जहाँ वह पैदा हुआ था।
11 क्योंकि यहूदा के राजा शल्लूम*[7]
के बारे में, जो अपने पिता योशियाह की

22:11 *यहोआहाज भी कहलाता था।

अध्य. 21
1 व्य 32:22
यश 1:31
यिर्म 7:20
2 यिर्म 7:5-7
3 यिर्म 5:9
यिर्म 9:9
4 2इत 36:17, 19
यिर्म 52:12, 13

अध्य. 22
5 लैव 19:15
यश 1:17
यहे 22:7
मी 2:2
6 2रा 24:3, 4
यिर्म 7:6, 7
7 1रा 2:12
8 यिर्म 17:24, 25

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 39:8
मी 3:12
2 यश 6:11
यिर्म 7:34
3 यहे 9:1
4 यिर्म 21:14
5 व्य 29:24-26
1रा 9:8, 9
विल 2:15
6 2रा 22:16, 17
7 1इत 3:15
2इत 36:1

जगह राजा बना[1] और यहाँ से बँधुआई में
चला गया है, यहोवा कहता है, 'वह यहाँ
फिर कभी नहीं लौटेगा। 12 उसे जिस
जगह बंदी बनाकर ले जाया गया है, वह
वहीं मर जाएगा। वह यह देश फिर कभी
नहीं देखेगा।'[2]

13 धिक्कार है उस पर जो अंधेर करके
अपना महल बनवाता है,
अन्याय से अपने ऊपरी कमरे बन-
वाता है,
जो अपने साथी से मुफ्त में काम
करवाता है,
उसकी मज़दूरी देने से इनकार
करता है,[3]

14 जो कहता है, 'मैं अपने लिए एक
आलीशान महल बनवाऊँगा,
जिसके ऊपरी कमरे बड़े-बड़े होंगे।
मैं उसमें खिड़कियाँ लगवाऊँगा
और देवदार से तख्ताबंदी करूँगा
और सिंदूरी* रंग से पुत-
वाऊँगा।'

15 तुझे क्या लगता है, तेरा राज बस
इसलिए कायम रहेगा
क्योंकि तूने देवदार का इस्तेमाल
करने में दूसरों को मात दी है?
तेरा पिता भी खाता-पीता था,
मगर उसने न्याय किया[4] और
उसके साथ भला हुआ।

16 उसने सताए हुओं और गरीबों के
हक के लिए उनकी तरफ से
फरियाद की,
इसलिए उसके साथ भला हुआ।
यहोवा ऐलान करता है, 'क्या इस
तरह उसने नहीं दिखाया कि वह
मुझे जानता था?'

17 'मगर तेरी आँखें और तेरा दिल
सिर्फ बेईमानी की कमाई पर लगे
रहते हैं,
बेगुनाह का खून बहाने पर,
धोखाधड़ी और लूटपाट पर लगे
रहते हैं।'

18 इसलिए योशियाह के बेटे और
यहूदा के राजा यहोयाकीम[1] के बारे में
यहोवा कहता है,

'जिस तरह लोग यह कहकर मातम
मनाते हैं,
"हाय! मेरे भाई। हाय! मेरी बहन।"
उस तरह कोई यह कहकर उसके
लिए मातम नहीं मनाएगा,
"हाय! मेरे मालिक! तेरा वैभव कैसे
मिट गया है!"

19 उसकी लाश के साथ वही किया
जाएगा[2]
जो गधे की लाश के साथ किया
जाता है,
उसकी लाश घसीटकर यरूशलेम
के फाटकों के बाहर फेंक दी
जाएगी।'[3]

20 ऊपर लबानोन जा और चीख-
चीखकर रो,
बाशान में चिल्ला-चिल्लाकर रो,
अबारीम से हाय-हाय कर,[4]
क्योंकि तेरे सभी यारों को कुचल
दिया गया है जो तुझ पर
मरते थे।[5]

21 जब तू चैन से रहती थी, तब मैंने
तुझे समझाया।
मगर तूने कहा, 'मैं तेरी आज्ञा नहीं
मानूँगी।'[6]
जवानी से तेरी यही आदत रही है,
तूने मेरी बात कभी नहीं मानी।[7]

22 आँधी तेरे सभी चरवाहों को उड़ा ले
जाएगी,[8]

22:14 * या "लाल।"

अध्य. 22
1 2रा 23:29, 30
2 2रा 23:34; 2इत 36:4
3 लैव 19:13; मी 3:9, 10
4 2रा 22:1, 2; 2रा 23:23, 25

दूसरा कॉल.
1 2रा 23:34; 2इत 36:4
2 यिर्म 36:30
3 2इत 36:5, 6
4 व्य 32:49
5 2रा 24:7
6 यिर्म 2:31; यिर्म 6:16
7 व्य 9:7; न्या 2:11
8 यिर्म 23:1; यहे 34:2

तुझ पर मरनेवाले तेरे यार बँधुआई
में चले जाएँगे।
तब तुझ पर आनेवाली सारी
विपत्तियों की वजह से तुझे
शर्मिंदा किया जाएगा, नीचा
दिखाया जाएगा।
23 हे लबानोन की रहनेवाली,[1]
देवदारों के बीच बसेरा करनेवाली,[2]
जब तुझे दर्द उठेगा तब तू कैसे
कराहेगी,
तू बच्चा जननेवाली औरत की तरह
कितना तड़पेगी!"[3]

24 "यहोवा ऐलान करता है, 'हे यहो-
याकीम[4] के बेटे और यहूदा के राजा
कोन्याह,*[5] मैं अपने जीवन की शपथ
खाकर कहता हूँ कि अगर तू मेरे दाएँ
हाथ की मुहरवाली अँगूठी होता, तो भी
मैं तुझे निकाल फेंकता! 25 मैं तुझे उन
लोगों के हाथ में कर दूँगा जो तेरी जान
के पीछे पड़े हैं, उनके हाथ में जिनसे तू
डरता है। मैं तुझे बैबिलोन के राजा नबू-
कदनेस्सर* के हाथ में और कसदियों के
हाथ में दे दूँगा।[6] 26 मैं तुझे और तेरी
माँ को, जिसने तुझे जन्म दिया, पराए
देश में फेंक दूँगा जहाँ तू पैदा नहीं हुआ
और तू वहीं मर जाएगा। 27 वे उस
देश में कभी नहीं लौटेंगे जिसके लिए वे
तरसते हैं।[7]

28 क्या यह कोन्याह एक तुच्छ और
टूटा हुआ घड़ा नहीं है?
ऐसा बरतन जिसे कोई रखना नहीं
चाहता?
उसे और उसके वंशजों को क्यों
फेंक दिया गया है?
क्यों उन्हें ऐसे देश में फेंक दिया
गया है जिसे वे नहीं जानते?'[1]
29 हे धरती,* हे धरती, हे धरती,
यहोवा का संदेश सुन।
30 यहोवा कहता है,
'इस आदमी के बारे में लिख कि
यह बेऔलाद है,
जो जीते-जी कभी कामयाब नहीं
होगा,
क्योंकि उसके वंशजों में से कोई भी
दाविद की राजगद्दी पर बैठने
और यहूदा पर दोबारा राज करने
में कामयाब नहीं होगा।'"[2]

23 यहोवा ऐलान करता है,
"धिक्कार है उन चरवाहों पर जो
मेरे चरागाह की भेड़ों को नाश कर रहे हैं,
उन्हें तितर-बितर कर रहे हैं!"[3]

2 इसलिए इसराएल का परमेश्वर
यहोवा अपने लोगों के चरवाहों को यह
संदेश सुनाता है: "तुमने मेरी भेड़ों को
तितर-बितर कर दिया है, उन्हें बिखरा
दिया है और उन पर कोई ध्यान नहीं
दिया।"[4]

यहोवा ऐलान करता है, "तुम्हारे दुष्ट
कामों की वजह से अब मैं तुम्हें सज़ा
दूँगा।"

3 "इसके बाद मैं अपनी बची हुई भेड़ों
को उन सभी देशों से इकट्ठा करूँगा, जहाँ
मैंने उन्हें तितर-बितर कर दिया।[5] मैं उन्हें
वापस उनके चरागाह में ले आऊँगा[6] और
वे फूले-फलेंगी और गिनती में बढ़ जाएँ-
गी।[7] 4 मैं उनके लिए ऐसे चरवाहे
खड़े करूँगा जो वाकई चरवाहों की तरह
उनकी देखभाल करेंगे।[8] इसके बाद मेरी
भेड़ें न डरेंगी न घबराएँगी, उनमें से एक
भी गुम नहीं होगी।" यहोवा का यह
ऐलान है।

22:24 *यहोयाकीन और यकोन्याह भी कहलाता था। **22:25** *शा., "नबूकद-रेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

22:29 *या "देश।"

अध्य. 22
1 यिर्म 22:6
2 यश 2:12, 13
3 यिर्म 4:31; यिर्म 6:24
4 2रा 23:34
5 2रा 24:6; यिर्म 22:28; यिर्म 37:1; मत 1:11
6 2रा 24:12, 15; 2इत 36:9, 10; यिर्म 24:1; यिर्म 29:1, 2
7 यिर्म 52:31-34

दूसरा कॉल.
1 1इत 3:17, 18
2 2इत 36:9, 10; यिर्म 36:30; मत 1:12

अध्य. 23
3 यिर्म 10:21; यिर्म 50:6; यहे 34:2
4 यहे 34:5
5 यश 11:11; यश 35:10; यिर्म 29:14; यिर्म 31:8
6 यिर्म 50:19; यहे 34:14; मी 2:12
7 व्य 30:3, 5; आम 9:14; जक 10:8
8 यिर्म 3:15; यूह 21:15; प्रेष 20:28

5 यहोवा ऐलान करता है, “देख,
वे दिन आ रहे हैं जब मैं दाविद के
वंश से एक नेक अंकुर* उगाऊँगा।[1]
वह राजा बनकर राज करेगा[2] और अंद-
रूनी समझ से काम लेगा। वह देश में
न्याय करेगा।[3] 6 उसके दिनों में यहूदा
बचाया जाएगा[4] और इसराएल मह-
फ़ूज़ बसा रहेगा।[5] वह राजा इस नाम
से कहलाया जाएगा, ‘यहोवा हमारी
नेकी है।’”[6]

7 यहोवा ऐलान करता है, “मगर ऐसे
दिन आ रहे हैं जब वे फिर कभी
नहीं कहेंगे, ‘यहोवा के जीवन की शपथ
जो इसराएलियों को मिस्र देश से निकाल
लाया था!’[7] 8 इसके बजाय वे कहेंगे,
‘यहोवा के जीवन की शपथ जो इसराएल
के घराने के वंशजों को उत्तर के देश से
और उन सभी देशों से निकालकर वापस
लाया था जहाँ उसने उन्हें तितर-बितर
कर दिया था।’ फिर वे अपने ही देश में
बसे रहेंगे।”[8]

9 भविष्यवक्ताओं के लिए यह
संदेश है:

मेरा दिल टूट गया है।
मेरी सारी हड्डियाँ काँप रही हैं।
यहोवा और उसके पवित्र संदेश की
वजह से
मेरी हालत ऐसे आदमी की तरह है
जो नशे में है,
जिसे दाख-मदिरा ने काबू में कर
लिया है।
10 क्योंकि सारा देश बदचलन लोगों से
भरा है,[9]
देश पर ऐसा शाप पड़ा है कि यह
मातम मना रहा है,[10]
वीराने के चरागाह सूख गए हैं।[11]

23:5 *या “वारिस।”

अध्य. 23
1 यश 11:1; यश 53:2; यिर्म 33:15, 16; जक 3:8; मत 2:23
2 लूक 1:32, 33
3 यश 9:7; यश 11:3, 4; यश 32:1
4 जक 10:6
5 व्य 33:28; यिर्म 32:37; जक 14:11
6 यश 54:17
7 यिर्म 16:14, 15
8 यश 43:5; यहे 34:13; सप 3:20
9 यिर्म 3:8, 9; यिर्म 5:7; यिर्म 13:27; यहे 22:11
10 यश 24:4; योए 1:10
11 यिर्म 12:4

दूसरा कॉल.
1 यश 28:7; यिर्म 5:31; यिर्म 6:13; यहे 22:25; सप 3:4
2 2इत 33:1, 5; 2इत 36:14; यिर्म 7:11; यहे 8:10, 11; यहे 23:39
3 यिर्म 13:16
4 यहे 16:46
5 यिर्म 29:21, 23
6 यिर्म 23:26
7 यश 3:9
8 उत 18:20; व्य 32:32; यश 1:10; यहू 7

उनके तौर-तरीके बुरे हैं, वे अपने
अधिकार का गलत इस्तेमाल
करते हैं।
11 यहोवा ऐलान करता है, “भविष्य-
वक्ता और याजक, दोनों दूषित*
हो गए हैं।[1]
यहाँ तक कि मैंने अपने भवन में
उन्हें दुष्ट काम करते देखा है।”[2]
12 यहोवा ऐलान करता है, “इसलिए
उनका रास्ता फिसलन भरा और
अँधेरा हो जाएगा,[3]
उन्हें धकेलकर गिरा दिया जाएगा।
जिस साल उनसे हिसाब लिया
जाएगा,
मैं उन पर विपत्ति लाऊँगा।”
13 “सामरिया[4] के भविष्यवक्ताओं में
मैंने घिनौनी बातें पायी हैं।
वे बाल के नाम से भविष्यवाणी
करते हैं,
मेरी प्रजा इसराएल को गुमराह
करते हैं।
14 मैंने यरूशलेम के भविष्यवक्ताओं
को घिनौने काम करते देखा है।
वे व्यभिचार करते हैं,[5] उनकी पूरी
ज़िंदगी एक झूठ है,[6]
वे दुष्टों को बढ़ावा देते हैं,
वे अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते।
मेरी नज़र में वे सभी सदोम
जैसे हैं,[7]
इस नगरी के लोग अमोरा
जैसे हैं।”[8]

15 इसलिए सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा भविष्यवक्ताओं के खिलाफ यह
संदेश सुनाता है:

“देख, मैं उन्हें नागदौना खाने पर
मजबूर करूँगा,

23:11 *या “बगावती।”

ज़हर मिला पानी पिलाऊँगा।[1]
क्योंकि यरूशलेम के
भविष्यवक्ताओं से ही पूरे देश में
परमेश्वर के खिलाफ बगावत
फैल गयी है।"

16 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है,
"तुम उन भविष्यवक्ताओं की बातें
मत सुनो जो तुम्हें भविष्यवाणियाँ
सुना रहे हैं।[2]
वे तुम्हें भ्रम में डाल रहे हैं।*
वे जो दर्शन बताते हैं, वह यहोवा
की तरफ से नहीं है,[3]
बल्कि उनके मन की गढ़ी हुई
बातें हैं।[4]
17 मेरा अनादर करनेवालों से वे बार-
बार कहते हैं,
'यहोवा ने कहा है, "तुम सुख-चैन
से जीओगे।"'[5]
और जो कोई अपने ढीठ मन की
करता है, उससे वे कहते हैं,
'तुझ पर कोई विपत्ति नहीं
आएगी।'[6]
18 कौन यहोवा के दोस्तों की मंडली में
खड़ा हुआ है
ताकि उसका संदेश सुने और
समझे?
किसने उसका संदेश सुना और उस
पर ध्यान दिया है?
19 देखो! यहोवा के क्रोध की भयानक
आँधी चलेगी,
उसका क्रोध बवंडर की तरह दुष्टों
के सिर पर मँडराएगा।[7]
20 यहोवा का क्रोध तब तक नहीं
टलेगा,
जब तक कि वह उस काम को पूरा
नहीं कर लेता,
उसे अंजाम नहीं देता जो उसने मन
में ठाना है।
आखिरी दिनों में तुम लोग इसे
अच्छी तरह समझोगे।
21 मैंने उन भविष्यवक्ताओं को नहीं
भेजा, फिर भी वे दौड़कर गए।
मैंने उनसे बात नहीं की, फिर भी
उन्होंने भविष्यवाणी की।[1]
22 अगर वे मेरे दोस्तों की मंडली में
खड़े होते,
तो उन्होंने मेरे लोगों को मेरा संदेश
सुनाया होता,
उन्हें बुरे रास्ते से और दुष्ट कामों से
फेर लिया होता।"[2]
23 यहोवा ऐलान करता है, "क्या मैं
सिर्फ नज़दीक का परमेश्वर हूँ,
दूर का नहीं?"
24 यहोवा ऐलान करता है, "क्या ऐसी
कोई गुप्त जगह है जहाँ इंसान
छिप जाए और मैं उसे देख न
सकूँ?"[3]
यहोवा ऐलान करता है, "क्या
आकाश में और धरती पर ऐसी
कोई चीज़ है जो मेरी नज़रों से
बच सके?"[4]

25 "मैंने भविष्यवक्ताओं को मेरे
नाम से यह झूठी भविष्यवाणी
करते सुना है, 'मैंने एक सपना देखा
है, एक सपना!'[5] 26 कब तक इन
भविष्यवक्ताओं का मन उनसे झूठ बुल-
वाता रहेगा? वे अपने मन में छल की
बातें गढ़कर भविष्यवाणी सुनाते हैं।[6]
27 वे एक-दूसरे को सपने बताते हैं
ताकि मेरे लोग मेरा नाम भूल जाएँ,
ठीक जैसे उनके बाप-दादे बाल की
वजह से मेरा नाम भूल गए थे।[7]

23:16 *या "वे तुझे झूठी आशा से भर रहे हैं।"

अध्य. 23
1 यिर्म 8:14; यिर्म 9:15
2 यिर्म 27:9; यिर्म 29:8
3 विल 2:14
4 यिर्म 14:14; यहे 13:3; यहे 22:28
5 यिर्म 4:10; यिर्म 6:13, 14; यिर्म 8:11; यहे 13:10
6 मी 3:11
7 यिर्म 25:32; यिर्म 30:23, 24

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 14:14; यिर्म 27:15; यिर्म 29:8, 9
2 यिर्म 25:4, 5
3 उत 16:7, 13; नीत 15:3; आम 9:2; इब्र 4:13
4 भज 139:7
5 व्य 18:20; यिर्म 27:9; यिर्म 29:21, 23
6 यिर्म 14:14
7 न्या 3:7; 2रा 21:1, 3

28 जिस भविष्यवक्ता को सपना आया है उसे अपना सपना बताने दो, मगर जिस किसी ने मेरा वचन सुना है वह मेरा वचन सच-सच सुनाए।”

यहोवा ऐलान करता है, “कहाँ घास-फूस और कहाँ अनाज?”

29 यहोवा ऐलान करता है, “क्या मेरा संदेश आग जैसा नहीं है?[1] ऐसे हथौड़े जैसा नहीं है जो बड़ी चट्टान को चूर-चूर कर देता है?”[2]

30 यहोवा ऐलान करता है, “इसलिए मैं इन भविष्यवक्ताओं को सज़ा दूँगा, जो मेरे शब्दों को तोड़-मरोड़कर अपने मन-मुताबिक लोगों को बताते हैं।”[3]

31 यहोवा ऐलान करता है, “मैं इन भविष्यवक्ताओं को सज़ा दूँगा जिनकी जीभ कहती है, ‘परमेश्‍वर ने यह ऐलान किया है!’”[4]

32 यहोवा ऐलान करता है, “मैं इन भविष्यवक्ताओं को सज़ा दूँगा, जो झूठे सपने देखते हैं और मेरे लोगों को सुनाते हैं और झूठी बातें कहकर और शेखी मार-कर मेरे लोगों को गुमराह करते हैं।”[5]

यहोवा ऐलान करता है, “मगर मैंने उन्हें नहीं भेजा था, न ही उन्हें आज्ञा दी थी। इसलिए वे इन लोगों का बिलकुल भी भला नहीं करेंगे।”[6]

33 “जब ये लोग या कोई भविष्य-वक्ता या याजक तुझसे पूछे, ‘यहोवा का बोझ* क्या है?’ तो तू उनसे कहना, ‘यहोवा ऐलान करता है, “तुम लोग ही वह बोझ हो! मैं तुम्हें उठाकर फेंक दूँगा।”’[7] 34 जो भविष्यवक्ता या याजक या लोगों में से कोई कहता है, ‘यह यहोवा का बोझ* है!’ मैं उसे और उसके घराने को सज़ा दूँगा। 35 तुममें से हर कोई अपने साथी और भाई से कहता है, ‘यहोवा ने क्या जवाब दिया है? यहोवा ने क्या कहा है?’ 36 मगर तुम लोग यहोवा के बोझ* का अब से ज़िक्र मत करना, क्योंकि तुम में से हरेक का बोझ* उसका अपना संदेश है। तुमने सेनाओं के परमेश्‍वर और हमारे जीवित परमेश्‍वर यहोवा के संदेश को बदल दिया है।

37 तू भविष्यवक्ताओं से कहना, ‘यहोवा ने क्या जवाब दिया है? यहोवा ने क्या कहा है? 38 अगर तुम यह कहते रहोगे, “यह यहोवा का बोझ* है!” तो सुनो यहोवा तुमसे क्या कह रहा है, “मैंने तुमसे कहा था कि तुम यह मत कहना, ‘यह यहोवा का बोझ* है!’ फिर भी तुम कहते हो, ‘यह संदेश यहोवा का बोझ* है!’ 39 इसलिए देखो, मैं तुम्हें उठाकर अपनी नज़रों से दूर फेंक दूँगा, तुम्हें और इस शहर को भी फेंक दूँगा जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे पुरखों को दिया था। 40 मैं तुम्हें हमेशा के लिए बेइज़्ज़त करूँगा और नीचा दिखाऊँगा और यह कभी नहीं भुलाया जाएगा।”’”[1]

24 जब बैबिलोन का राजा नबूकद-नेस्सर,* यहोयाकीम के बेटे[2] और यहूदा के राजा यकोन्याह# को और उसके साथ यहूदा के हाकिमों, कारीगरों और धातु-कारीगरों△ को बंदी बनाकर यरूशलेम से बैबिलोन ले गया,[3] तो उसके बाद यहोवा ने मुझे अंजीरों से भरी दो

अध्य. 23
1 यिर्म 5:14
2 इब्र 4:12
3 व्य 18:20; यिर्म 14:15; यहे 13:2, 3
4 यहे 13:7
5 सप 3:4
6 यिर्म 7:8; विल 2:14
7 यिर्म 12:7

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 24:9; यिर्म 42:18; विल 5:20; दान 9:16

अध्य. 24
2 2रा 24:6; 1इत 3:16
3 2रा 24:15, 16; यिर्म 22:24; यिर्म 29:1, 2

23:33 *या “भारी संदेश।” इसके इब्रानी शब्द के दो मतलब हैं: “परमेश्‍वर की तरफ से भारी संदेश” और “कोई भारी चीज़।”

23:34, 36, 38 *या “भारी संदेश।” 24:1 *शा., “नबूकदरेस्सर।” यह एक अलग वर्तनी है। #यहोयाकीन और कोन्याह भी कहलाता था। △या शायद, “सुरक्षा-दीवार बनानेवालों।”

टोकरियाँ दिखायीं। ये टोकरियाँ यहोवा के मंदिर के सामने रखी हुई थीं। 2 एक टोकरी में बहुत अच्छे अंजीर थे, जैसे शुरू की फसल के अंजीर होते हैं। दूसरी टोकरी में खराब अंजीर थे, इतने खराब कि वे खाए नहीं जा सकते थे।

3 फिर यहोवा ने मुझसे पूछा, “यिर्मयाह, तुझे क्या दिखायी दे रहा है?” मैंने कहा, “मुझे अंजीर दिखायी दे रहे हैं। अच्छे अंजीर तो बहुत बढ़िया हैं, मगर खराब अंजीर इतने खराब हैं कि वे खाए नहीं जा सकते।”[1]

4 तब यहोवा का यह संदेश मेरे पास पहुँचा: 5 “इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘यहूदा के जिन लोगों को मैंने यहाँ से कसदियों के देश में बँधुआई में भेज दिया है, वे मेरे लिए इन अच्छे अंजीरों जैसे हैं। मैं उनके साथ भला करूँगा। 6 मैं उनके अच्छे के लिए उन पर नज़र रखूँगा और उन्हें इस देश में लौटा ले आऊँगा।[2] मैं उन्हें बनाऊँगा और नहीं ढाऊँगा, मैं उन्हें लगाऊँगा और जड़ से नहीं उखाड़ूँगा।[3] 7 मैं उन्हें ऐसा दिल दूँगा जिससे वे जानें कि मैं यहोवा हूँ।[4] वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा,[5] क्योंकि वे पूरे दिल से मेरे पास लौटेंगे।[6]

8 मगर इन खराब अंजीरों के बारे में, जो इतने खराब हैं कि वे खाए नहीं जा सकते,[7] यहोवा कहता है, “मैं यहूदा के राजा सिदकियाह,[8] उसके हाकिमों, इस देश में बचे हुए यरूशलेम के लोगों और मिस्र में रहनेवालों को इन खराब अंजीरों जैसा समझूँगा।[9] 9 मैं उन पर ऐसी विपत्ति लाऊँगा और उनका ऐसा हश्र करूँगा कि धरती के सब राज्य देखकर दहल जाएँगे।[10] मैं उन्हें जिन जगहों में तितर-बितर करूँगा,[11] वहाँ उनका मज़ाक उड़ाया जाएगा, उन पर कहावत बनायी जाएगी, उनकी खिल्ली उड़ायी जाएगी और उन्हें शाप दिया जाएगा।[1] 10 मैं उन पर तब तक तलवार,[2] अकाल और महामारी*[3] भेजता रहूँगा जब तक कि वे इस देश से मिट नहीं जाते, जो मैंने उन्हें और उनके पुरखों को दिया था।”’”

25 यिर्मयाह को यहूदा के सब लोगों के बारे में एक संदेश मिला। उसे यह संदेश योशियाह के बेटे और यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज के चौथे साल मिला।[4] तब बैबिलोन में राजा नबूकदनेस्सर* के राज का पहला साल था। 2 भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने यहूदा के सब लोगों और यरूशलेम के सब निवासियों के बारे में* यह कहा:

3 “आमोन के बेटे और यहूदा के राजा योशियाह के राज के 13वें साल[5] से लेकर आज तक, 23 साल से यहोवा का संदेश मुझे मिलता रहा और मैं उसे बार-बार तुम्हें सुनाता रहा।* मगर तुम हो कि सुनने से इनकार करते रहे।[6] 4 यहोवा अपने सभी सेवकों को, भविष्यवक्ताओं को तुम्हारे पास बार-बार भेजता रहा,* मगर तुमने उनकी नहीं सुनी और न ही उनकी बातों पर कान लगाया।[7] 5 वे तुमसे बिनती करते, ‘तुम सब अपने बुरे रास्तों और दुष्ट कामों से पलटकर लौट आओ,[8] तब तुम इस देश में लंबे समय तक रह पाओगे, जो यहोवा ने तुम्हें और तुम्हारे पुरखों को मुद्दतों पहले दिया था। 6 तुम दूसरे देवताओं के पीछे मत जाओ,

---

24:10 *या “बीमारी।” **25:1** *शा., “नबूकदरेस्सर।” यह एक अलग वर्तनी है। **25:2** *या “से।” **25:3** *शा., “तड़के उठकर तुमसे बातें करता रहा।” **25:4** *शा., “तड़के उठकर तुम्हारे पास भेजता रहा।”

अध्य. 24
1 यिर्म 24:8
2 एज 1:3; यिर्म 12:15; यिर्म 25:11; यिर्म 29:10; यहे 36:24
3 यिर्म 1:10; यिर्म 30:18; यिर्म 32:41
4 व्य 30:6; यिर्म 31:33; यहे 11:19
5 यिर्म 30:22; यिर्म 32:38; जक 8:8
6 यिर्म 29:13
7 यिर्म 29:17
8 2रा 25:6, 7; यहे 12:12, 13
9 यिर्म 44:1; यिर्म 46:13
10 यिर्म 15:4; यिर्म 34:17
11 व्य 28:64; यिर्म 29:18

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 26:4, 6; यिर्म 29:22
2 लैव 26:33; यिर्म 9:16
3 व्य 28:59; यिर्म 15:2; यहे 7:15

अध्य. 25
4 2रा 24:1; यिर्म 36:1; यिर्म 46:2; दान 1:1
5 यिर्म 1:2
6 यिर्म 7:13; यिर्म 13:10
7 यिर्म 29:19
8 2रा 17:13; यश 55:7; यिर्म 18:11; यिर्म 35:15; यहे 18:30; यहे 33:11

उनकी सेवा मत करो, उनके आगे दंडवत
मत करो और मूर्तियाँ बनाकर मेरा क्रोध
मत भड़काओ, वरना मैं तुम पर विपत्ति
ले आऊँगा।'

7 यहोवा ऐलान करता है, 'मगर
तुमने मेरी बात मानने के बजाय मूर्तियाँ
बनाकर मेरा क्रोध भड़काया और खुद पर
विपत्ति ले आए।'[1]

8 इसलिए सेनाओं का परमेश्‍वर
यहोवा कहता है, '"तुमने मेरी आज्ञा
नहीं मानी, **9** इसलिए मैं उत्तर के सभी
घरानों को बुलवा रहा हूँ।[2] मैं अपने
सेवक, बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर*
को बुलवा रहा हूँ।[3] मैं उनसे इस देश पर,
इसके लोगों पर और इसके आस-पास
के सभी राष्ट्रों पर हमला करवाऊँगा।[4]
मैं उन सबको नाश कर दूँगा और उनका
ऐसा हश्र करूँगा कि देखनेवालों का दिल
दहल जाएगा और वे मज़ाक उड़ाते हुए
सीटी बजाएँगे। ये राष्ट्र हमेशा के लिए
उजड़े ही रहेंगे।" यहोवा का यह ऐलान
है। **10** "मैं इन सबका ऐसा हाल कर
दूँगा कि यहाँ से न तो खुशियाँ और
जश्‍न मनाने की,[5] न ही दूल्हा-दुल्हन के
साथ आनंद मनाने की आवाज़ें[6] और न
ही चक्की पीसने की आवाज़ सुनायी देगी
और दीपक की रौशनी भी नहीं दिखायी
देगी। **11** यह पूरा देश मलबे का ढेर
बन जाएगा और इसे देखनेवालों का दिल
दहल जाएगा। और इन राष्ट्रों को 70
साल तक बैबिलोन के राजा की गुलामी
करनी होगी।"'[7]

12 यहोवा ऐलान करता है, 'मगर
जब 70 साल पूरे हो जाएँगे,[8] तो मैं बैबि-
लोन के राजा और उस राष्ट्र से उनके
गुनाह का हिसाब माँगूँगा*[1] और मैं कस-
दियों के देश को नाश करके सदा के लिए
वीराना बना दूँगा।[2] **13** मैं उस देश पर
वे सारी विपत्तियाँ ले आऊँगा जो मैंने
बतायी थीं और इस किताब में लिखी हैं
और जिनकी भविष्यवाणी यिर्मयाह ने सब
राष्ट्रों को सुनायी है। **14** बहुत-से राष्ट्र
और महान राजा[3] उन्हें अपने गुलाम बना
लेंगे[4] और मैं उनके कामों का उन्हें सिला
दूँगा।'"[5]

15 इसराएल के परमेश्‍वर यहोवा ने
मुझसे कहा, "मेरे हाथ से क्रोध की मदिरा
का यह प्याला ले और उन सभी राष्ट्रों को
पिला जिनके पास मैं तुझे भेज रहा हूँ।
16 वे इसे पीएँगे और लड़खड़ाएँगे और
मैं उन पर जो तलवार भेजूँगा, उसकी
वजह से वे पागलों की तरह बरताव
करेंगे।"[6]

17 तब मैंने यहोवा के हाथ से वह
प्याला लिया और उन सभी राष्ट्रों को
पिलाया जिनके पास यहोवा ने मुझे
भेजा।[7] **18** मैंने सबसे पहले यरू-
शलेम और यहूदा के शहरों,[8] उसके
राजाओं और हाकिमों को पिलाया ताकि
वे इस तरह नाश हो जाएँ कि
देखनेवालों का दिल दहल जाए, वे उनका
मज़ाक उड़ाते हुए सीटी बजाएँ और
उन्हें शाप दें,[9] जैसा कि आज ज़ाहिर
है। **19** इसके बाद मिस्र के राजा
फिरौन और उसके सेवकों, हाकिमों,
उसके सब लोगों[10] **20** और उनके यहाँ
रहनेवाले परदेसियों की मिली-जुली भीड़
को पिलाया। फिर ऊज़ देश के सभी
राजाओं और पलिश्‍तियों के देश[11] के
सभी राजाओं को पिलाया यानी अश्‍क-
लोन,[12] गाज़ा, एक्रोन और अशदोद के

25:9 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

25:12 *या "को उनके गुनाह की सज़ा दूँगा।"

अध्य. 25

1 व्य 32:21
नहे 9:26
2 लैव 26:25
यश 5:26
यिर्म 1:15
3 यिर्म 27:6
यिर्म 43:10
4 व्य 28:49, 50
यिर्म 5:15
यहे 7:24
यहे 26:7
यहे 29:19
हब 1:6
5 यश 24:7
यहे 26:13
6 यिर्म 7:34
7 2इत 36:20, 21
दान 9:2
जक 1:12
जक 7:5
8 व्य 30:3
एज 1:1, 2
यिर्म 29:10

दूसरा कॉल.

1 यश 47:1
यिर्म 51:1
दान 5:26, 30
2 यश 13:1, 19
यश 14:4, 23
3 यिर्म 50:9
यिर्म 51:27
4 यश 14:2
हब 2:8
5 भज 137:8
यिर्म 50:29
यिर्म 51:6, 24
प्रक 18:6
6 यिर्म 51:7
विल 4:21
यहे 23:32-34
नहू 3:7, 11
7 यिर्म 1:10
8 यश 51:17
9 यिर्म 24:9
10 यिर्म 46:2
11 यिर्म 47:1
12 यिर्म 47:5

बचे हुए लोगों के राजाओं को।
21 और एदोम,[1] मोआब[2] और अम्मोनी
लोगों को,[3] 22 सोर के सभी राजाओं,
सीदोन के सभी राजाओं[4] और समुंदर के
द्वीप के राजाओं को पिलाया। 23 और
ददान,[5] तेमा, बूज और उन सभी को
जिनकी कलमें मुँड़ी हुई हैं,[6] 24 अरबी
लोगों के सभी राजाओं,[7] वीराने में रहने-
वाली मिली-जुली भीड़ के सभी राजाओं,
25 जिमरी के सभी राजाओं, एलाम के
सभी राजाओं,[8] मादियों के सभी
राजाओं[9] 26 और उत्तर के सभी राष्ट्रों
के राजाओं को एक-एक करके पिलाया,
फिर चाहे वे पास के हों या दूर के और
धरती के बाकी सभी राज्यों को पिलाया।
इन सबके बाद शेशक *[10] का राजा यह
प्याला पीएगा।

27 "तू उनसे कहना, 'सेनाओं का
परमेश्वर और इसराएल का परमेश्वर
यहोवा कहता है, "तुम सब इसे पीओ,
इतना पीओ कि मदहोश हो जाओ, उलटी
करो और ऐसे गिर पड़ो कि उठ न सको[11]
क्योंकि मैं तुम्हारे बीच तलवार भेज रहा
हूँ।"' 28 और अगर वे तेरे हाथ से
प्याला लेकर पीने से इनकार कर दें
तो तू उनसे कहना, 'सेनाओं का पर-
मेश्वर यहोवा कहता है, "तुम्हें इसे पीना
ही होगा! 29 क्योंकि देखो! मैं जब इस
शहर पर सबसे पहले विपत्ति ला रहा हूँ
जिससे मेरा नाम जुड़ा है,[12] तो तुमने कैसे
सोच लिया कि तुम बच जाओगे?"'[13]

'तुम सज़ा से हरगिज़ नहीं बचोगे,
क्योंकि मैं धरती के सभी निवासियों पर
वार करने के लिए एक तलवार बुलवा
रहा हूँ।' सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का
यह ऐलान है।

25:26 * ऐसा मालूम पड़ता है कि यह बाबेल (या बैबिलोन) का एक गुप्त नाम है।

अध्य. 25
1 यिर्म 49:17; विल 4:21
2 यिर्म 48:1
3 यिर्म 49:1
4 यिर्म 27:2, 3; यिर्म 47:4
5 यिर्म 49:8
6 यिर्म 9:25, 26; यिर्म 49:32
7 यिर्म 49:31, 32
8 यिर्म 49:34
9 यिर्म 51:11
10 यिर्म 51:41
11 यश 63:6; हब 2:16
12 1रा 9:7; यिर्म 7:12, 14; दान 9:18; हो 12:2; मी 6:2
13 यिर्म 49:12; ओब 16

दूसरा कॉल.
1 योए 3:2
2 यश 34:2, 3; यिर्म 25:17
3 सप 3:8

30 तू उन्हें ये भविष्यवाणियाँ सुनानाः
'यहोवा ऊँचाई से गरजेगा,
अपने पवित्र निवास से बुलंद
आवाज़ में बोलेगा।
अपने रहने की जगह के खिलाफ
ज़ोर से गरजेगा।
अंगूर रौंदनेवालों की तरह ज़ोर-
ज़ोर से चिल्लाएगा,
धरती के सब निवासियों पर जीत
पाकर खुशी से गीत गाएगा।'
31 यहोवा ऐलान करता है, 'धरती के
कोने-कोने तक शोरगुल सुनायी
देगा,
क्योंकि यहोवा का राष्ट्रों के साथ
एक मुकदमा है।
वह खुद सब इंसानों को फैसला
सुनाएगा।[1]
और तलवार से दुष्टों का अंत कर
डालेगा।'
32 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है,
'देखो! एक-एक करके सब राष्ट्रों
पर विपत्ति आएगी,[2]
धरती के बिलकुल कोने से अचा-
नक एक भयंकर तूफान उठेगा।[3]

33 उस दिन यहोवा के हाथों मारे गए
लोग धरती के एक कोने से दूसरे कोने
तक पड़े रहेंगे। उनके लिए कोई मातम
नहीं मनाएगा। उनकी लाशें न इकट्ठी की
जाएँगी, न ही दफनायी जाएँगी। वे खाद
की तरह ज़मीन पर पड़ी रहेंगी।'
34 चरवाहो, बिलख-बिलखकर रोओ,
चीखो-चिल्लाओ!
झुंड के बड़े लोगो, राख पर लोटो,
क्योंकि तुम्हें मार डालने और
तितर-बितर करने का समय आ
गया है,

तुम मिट्टी के बेशकीमती बरतन
की तरह गिरकर चूर-चूर हो
जाओगे!
35 चरवाहों के लिए भागकर जाने की
कोई जगह नहीं,
झुंड के बड़े लोगों के लिए बचने का
कोई रास्ता नहीं।
36 चरवाहों की चीख-पुकार सुनो,
झुंड के बड़े लोगों का रोना-बिलख-
ना सुनो,
क्योंकि यहोवा उनके चरागाह को
उजाड़ रहा है।
37 उनकी जगह, जहाँ वे शांति से रहते
थे, सूनी बना दी गयी हैं,
क्योंकि यहोवा के क्रोध की आग
जल रही है।
38 वह ऐसे निकल पड़ा है जैसे
एक जवान शेर अपनी माँद से
निकलता है,[1]
भयानक तलवार की वजह से
और उसके क्रोध की जलती आग
की वजह से
उनके देश का ऐसा हश्र हुआ है कि
देखनेवाले दहल जाते हैं।”

26 योशियाह के बेटे और यहूदा के
राजा यहोयाकीम के राज की
शुरूआत में यहोवा का यह संदेश मेरे
पास पहुँचा:[2]
2 “यहोवा कहता है, ‘तू
यहोवा के भवन के आँगन में खड़ा
हो और यहूदा के शहरों के सब
लोगों के बारे में* बोल, जो यहोवा के
भवन में उपासना# के लिए आते हैं।
उन्हें वे सारी बातें बता जिनकी मैं तुझे
आज्ञा देता हूँ, उनमें से एक भी बात
मत छोड़।
3 हो सकता है वे सुनें और
अपने बुरे रास्ते से पलटकर लौट आएँ।
तब मैं अपनी सोच बदल दूँगा* और उन
पर विपत्ति नहीं लाऊँगा जो मैंने उनके
दुष्ट कामों की वजह से लाने की ठानी
है।[1]
4 तू उनसे कह, “यहोवा कहता
है, ‘अगर तुम मेरी बात नहीं सुनोगे, मेरा
दिया कानून* नहीं मानोगे और
5 मेरे
सेवकों, मेरे भविष्यवक्ताओं की बात नहीं
सुनोगे जिन्हें मैं तुम्हारे पास बार-बार भेज
रहा हूँ,* जैसा कि तुम अभी नहीं सुन रहे
हो,[2]
6 तो मैं इस भवन के साथ वही
करूँगा जो मैंने शीलो[3] के साथ किया था।
मैं इस शहर का ऐसा हश्र करूँगा कि
धरती के सभी राष्ट्र शाप देते वक्त इसकी
मिसाल देंगे।’”’”[4]

7 जब यिर्मयाह यहोवा के भवन में
यह सब कह रहा था, तब याजक,
भविष्यवक्ता और सब लोग सुन रहे थे।[5]
8 जब यिर्मयाह सब लोगों को ये सारी
बातें सुना चुका जिनकी आज्ञा यहोवा ने
उसे दी थी तो याजकों, भविष्यवक्ताओं
और सब लोगों ने उसे पकड़ लिया और
कहा, “हम तुझे मार डालेंगे।
9 तूने
यहोवा के नाम से यह भविष्यवाणी
क्यों की, ‘यह भवन शीलो की तरह
बन जाएगा और यह शहर ऐसा उजड़
जाएगा कि यहाँ एक भी निवासी नहीं
रहेगा’?” यहोवा के भवन में सब लोग
यिर्मयाह के चारों तरफ इकट्ठा हो गए।

10 जब यहूदा के हाकिमों ने यह सब
सुना तो वे राजा के महल से निकलकर
यहोवा के भवन में आए और यहोवा के
भवन के नए फाटक के प्रवेश पर बैठे।[6]
11 याजकों और भविष्यवक्ताओं ने
हाकिमों और सब लोगों से कहा, “यह

26:2 *या “से।” #या “दंडवत करने।”

26:3 *या “पछतावा महसूस करूँगा।”
26:4 *या “मेरी दी हिदायत।” 26:5
*शा., “मैं तड़के उठकर तुम्हारे पास भेजता
रहा।”

अध्य. 25
1 हो 5:14

अध्य. 26
2 2रा 23:34
2इत 36:4
यिर्म 25:1
यिर्म 35:1
यिर्म 36:1

दूसरा कॉल.
1 यश 55:7
यिर्म 18:7, 8
यिर्म 36:3
यहे 18:27

2 2रा 17:13, 14
यिर्म 7:12-14
यिर्म 25:3

3 भज 78:60

4 यिर्म 24:9

5 यिर्म 26:2

6 यिर्म 36:10

आदमी मौत की सज़ा पाने के लायक
है[1] क्योंकि इसने इस शहर के खिलाफ
भविष्यवाणी की है, जो तुमने खुद अपने
कानों से सुनी है।”[2]

12 तब यिर्मयाह ने सब हाकिमों और
सब लोगों से कहा, “मुझे यहोवा ने ही
भेजा है कि मैं इस भवन और इस
शहर के खिलाफ इन सारी बातों की
भविष्यवाणी करूँ जो तुमने सुनी हैं।[3]
13 इसलिए तुम अपने तौर-तरीके और
अपना चालचलन सुधारो और अपने पर-
मेश्वर यहोवा की आज्ञा मानो, तब यहोवा
अपनी सोच बदल देगा* और तुम पर वह
विपत्ति नहीं लाएगा जिसके बारे में उसने
कहा है।[4] 14 जहाँ तक मेरी बात है, मैं
तुम्हारे हाथ में हूँ। तुम्हें जो ठीक लगे, जो
सही लगे मेरे साथ करो। 15 मगर एक
बात जान लो, अगर तुमने मुझे मार डाला
तो तुम एक बेगुनाह के खून का दोष खुद
पर, इस शहर पर और इसके लोगों पर
लाओगे, क्योंकि यह सच है कि यहोवा ने
ही ये सारी बातें सुनाने के लिए मुझे
तुम्हारे पास भेजा है।”

16 तब हाकिमों और सब लोगों ने
याजकों और भविष्यवक्ताओं से कहा,
“इस आदमी ने ऐसा कुछ नहीं किया कि
इसे मौत की सज़ा दी जाए, क्योंकि इसने
हमारे परमेश्वर यहोवा के नाम से हमसे
बात की है।”

17 फिर देश के कुछ प्रधान उठे
और लोगों की पूरी मंडली से कहने
लगे, 18 “मोरेशेत के रहनेवाले मीका[5]
ने यहूदा के राजा हिजकियाह[6] के दिनों
में भविष्यवाणी की थी और यहूदा के
सब लोगों से कहा था, ‘सेनाओं का पर-
मेश्वर यहोवा कहता है,

“सिय्योन एक खेत की तरह जोता
जाएगा,
यरूशलेम मलबे का ढेर बन
जाएगा,[1]
इस भवन का पहाड़* जंगल की
पहाड़ियों जैसा# बन जाएगा।”’[2]

19 क्या यह सुनकर यहूदा के राजा
हिजकियाह और पूरे यहूदा के लोगों ने
मीका को मार डाला था? क्या उस
राजा ने यहोवा का डर नहीं माना और
यहोवा से रहम की भीख नहीं माँगी? तभी
यहोवा ने अपनी सोच बदल दी* और उन
पर वह विपत्ति नहीं लाया जिसके बारे में
उसने कहा था।[3] इसलिए अगर हम इसे
मार डालेंगे तो हम खुद पर एक बड़ी
विपत्ति ला रहे होंगे।

20 एक और आदमी यहोवा के नाम
से भविष्यवाणी करता था। उसका नाम
उरीयाह था और वह किरयत-यारीम[4] के
रहनेवाले शमायाह का बेटा था। उरीयाह
भी यिर्मयाह की तरह इस शहर और इस
देश के खिलाफ भविष्यवाणी करता था।
21 राजा यहोयाकीम[5] और उसके सभी
शूरवीरों और सभी हाकिमों ने उसकी बातें
सुनीं और राजा ने उसे मार डालने की
कोशिश की।[6] जब उरीयाह को इस बात
की खबर मिली तो वह बहुत डर गया
और फौरन मिस्र भाग गया। 22 तब
राजा यहोयाकीम ने अकबोर के बेटे एल-
नातान[7] को और उसके साथ कुछ और
आदमियों को मिस्र भेजा। 23 वे मिस्र
से उरीयाह को पकड़कर राजा यहोयाकीम
के पास ले आए। राजा ने उसे तलवार
से मार डाला[8] और उसकी लाश आम
लोगों की कब्र में फिंकवा दी।”

26:13 *या “पछतावा महसूस करेगा।”

26:18 *या “मंदिर की पहाड़ी।” #या “जंगल की ऊँची जगह जैसी।” **26:19** *या “पछतावा महसूस किया।”

अध्य. 26
1 यिर्म 18:19, 20
2 यिर्म 38:4
3 यिर्म 1:17
4 यिर्म 7:3; यिर्म 36:3; यहे 18:32; यो 3:9
5 मी 1:1
6 2इत 29:1

दूसरा कॉल.
1 भज 79:1; यिर्म 9:11
2 मी 3:12
3 2इत 32:26
4 यह 15:20, 60; यह 18:11, 14; 1शम 7:2
5 2रा 23:34; 2इत 36:5
6 2इत 16:10
7 यिर्म 36:11, 12
8 यिर्म 2:30

24 मगर शापान[1] के बेटे अहीकाम[2] ने यिर्मयाह का साथ दिया, इसलिए यिर्मयाह को लोगों के हवाले नहीं किया गया कि वे उसे मार डालें।[3]

27 योशियाह के बेटे और यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज की शुरूआत में यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह के पास पहुँचा: 2 “यहोवा ने मुझसे कहा, ‘तू अपने लिए बंधन और जुए बना और अपनी गरदन पर रख। 3 फिर एदोम,[4] मोआब,[5] अम्मोनी लोगों,[6] सोर[7] और सीदोन[8] के राजाओं के पास उन दूतों के हाथ ये जुए भेज, जो यहूदा के राजा सिदकियाह के पास यरूशलेम आए हैं। 4 उन दूतों को आज्ञा दे कि वे अपने मालिकों से यह कहें:

“सेनाओं का परमेश्वर और इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, तुम अपने मालिकों से यह कहना, 5 ‘मैंने ही अपना हाथ बढ़ाकर अपनी महाशक्ति से धरती और इंसानों को और धरती पर रहनेवाले जानवरों को बनाया है। और मैं जिसे चाहूँ उसे यह सब देता हूँ।[9] 6 अब मैंने ये सारे देश अपने सेवक, बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दिए हैं।[10] यहाँ तक कि मैदान के जंगली जानवरों को भी उसके अधीन कर दिया है। 7 सारे राष्ट्र उसकी और उसके बेटे और पोते की सेवा करेंगे। वे तब तक उसकी सेवा करते रहेंगे जब तक कि उसके देश का अंत होने का समय नहीं आता।[11] तब बहुत-से राष्ट्र और बड़े-बड़े राजा उसे अपना दास बना लेंगे।’[12]

8 यहोवा ऐलान करता है, ‘अगर कोई राष्ट्र या राज्य बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर की सेवा करने और उसका जुआ अपनी गरदन पर रखने से इनकार कर देता है, तो मैं उस राष्ट्र को तलवार, अकाल और महामारी* से तब तक सज़ा देता रहूँगा[1] जब तक कि मैं राजा के हाथों उसे मिटा न दूँ।’

9 ‘इसलिए तुम अपने भविष्यवक्ताओं, ज्योतिषियों, सपने देखनेवालों, जादूगरों और टोना-टोटका करनेवालों की बात मत सुनो जो तुमसे कहते हैं, “तुम्हें बैबिलोन के राजा की सेवा नहीं करनी पड़ेगी।” 10 वे तुम्हें झूठी भविष्यवाणियाँ सुना रहे हैं। अगर तुम उनकी सुनोगे तो तुम्हें अपने देश से बहुत दूर ले जाया जाएगा। मैं तुम्हें तितर-बितर कर दूँगा और तुम नाश हो जाओगे।

11 मगर जो राष्ट्र अपनी गरदन पर बैबिलोन के राजा का जुआ रखेगा और उसकी सेवा करेगा, मैं उसे उसके देश में रहने दूँगा ताकि वह वहाँ की ज़मीन जोते और उसमें बसा रहे।’ यहोवा का यह ऐलान है।”’”

12 मैंने यहूदा के राजा सिदकियाह[2] से भी यही बात कही, “तुम लोग अपनी-अपनी गरदन पर बैबिलोन के राजा का जुआ रखो और उसकी और उसके लोगों की सेवा करो, तब तुम ज़िंदा रहोगे।[3] 13 तू और तेरे लोग क्यों तलवार,[4] अकाल[5] और महामारी[6] से मरना चाहते हैं? यहोवा ने कहा है कि जो राष्ट्र बैबिलोन के राजा की सेवा नहीं करेगा, उसे यही अंजाम भुगतना पड़ेगा। 14 तुम उन भविष्यवक्ताओं की बात मत सुनो जो तुमसे कहते हैं, ‘तुम्हें बैबिलोन के राजा की सेवा नहीं करनी पड़ेगी।’[7] वे तुम्हें झूठी भविष्यवाणी सुना रहे हैं।[8]

15 यहोवा ऐलान करता है, ‘मैंने उन्हें नहीं भेजा है। वे मेरे नाम से झूठी भविष्यवाणी करते हैं। अगर तुम उनकी सुनोगे,

---

27:8 * या “बीमारी।”

अध्य. 26
1 2रा 22:10
2 2रा 22:12, 13; यिर्म 39:13, 14; यिर्म 40:5
3 1रा 18:4

अध्य. 27
4 यहे 25:12, 13; ओब 1
5 यिर्म 48:1; यहे 25:8, 9
6 यिर्म 49:1, 2; यहे 25:2
7 यश 23:1; यिर्म 47:4; यहे 26:3
8 यश 23:4; यहे 28:21; योए 3:4
9 दान 4:17
10 यिर्म 25:9; यिर्म 28:14; यिर्म 43:10; दान 2:37, 38
11 भज 137:8; यिर्म 50:14, 27; दान 5:26, 30
12 यिर्म 25:12, 14; यिर्म 51:11

दूसरा कॉल.
1 यहे 26:7, 8
2 2रा 24:17; 1इत 3:15; यिर्म 37:1
3 यिर्म 38:2, 20
4 2रा 25:7
5 2रा 25:3
6 यिर्म 21:9; यहे 14:21
7 यिर्म 28:1, 2; यिर्म 28:11; यिर्म 37:19
8 यिर्म 14:14; यिर्म 23:21; यिर्म 28:15; यिर्म 29:8, 9; यहे 13:6

तो मैं तुम्हें तितर-बितर कर दूँगा और तुम
और वे भविष्यवक्ता भी नाश हो जाएँगे
जो तुम्हें भविष्यवाणी सुना रहे हैं।'"[1]
16 और याजकों और सब लोगों से
मैंने कहा, "यहोवा कहता है, 'तुम अपने
भविष्यवक्ताओं की बातें मत सुनो जो
तुम्हें यह भविष्यवाणी सुनाते हैं, "देखो,
यहोवा के भवन के बरतन बहुत जल्द
बैबिलोन से वापस लाए जाएँगे!"[2] वे
तुम्हें झूठी भविष्यवाणी सुना रहे हैं।[3]
17 तुम उनकी मत सुनो। बैबिलोन के
राजा की सेवा करो, तब तुम
ज़िंदा रहोगे।[4] वरना यह शहर खंड-
हर बन जाएगा। 18 अगर वे सच-
मुच भविष्यवक्ता हैं और उन्हें यहोवा से
संदेश मिला है, तो वे सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा से गिड़गिड़ाकर मिन्नत करें कि
जो बरतन यहोवा के भवन में, यहूदा के
राजा के महल में और यरूशलेम में बचे
हुए हैं, उन्हें बैबिलोन न ले जाया जाए।'
19 क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा ने भवन के खंभों,[5] ताँबे के बड़े
हौद,*[6] हथ-गाड़ियों[7] और इस शहर में
बचे हुए बरतनों के बारे में एक संदेश
दिया है। 20 उन बरतनों के बारे में,
जिन्हें बैबिलोन का राजा नबूकदनेस्सर
उस समय नहीं ले गया जब वह यहो-
याकीम के बेटे और यहूदा के राजा
यकोन्याह को और यहूदा और यरू-
शलेम के सभी रुतबेदार लोगों को यरू-
शलेम से बंदी बनाकर बैबिलोन ले गया
था।[8] 21 हाँ, सेनाओं के परमेश्वर
और इसराएल के परमेश्वर यहोवा ने उन
बरतनों के बारे में, जो यहोवा के भवन
में, यहूदा के राजा के महल में और
यरूशलेम में बचे हैं, यह संदेश दिया है:
22 'यहोवा ऐलान करता है, "ये बरतन
बैबिलोन ले जाए जाएँगे[1] और ये तब तक
वहीं रहेंगे जब तक कि मैं इन पर ध्यान
न दूँ। फिर मैं इन्हें निकालकर वापस इस
जगह ले आऊँगा।"'"[2]

28

28 उसी साल यानी यहूदा के राजा
सिदकियाह के राज[3] की शुरू-
आत में, चौथे साल के पाँचवें महीने,
गिबोन के रहनेवाले[4] अज्जूर के बेटे
भविष्यवक्ता हनन्याह ने यहोवा के भवन
में याजकों और सब लोगों के सामने मुझसे
कहा, 2 "सेनाओं का परमेश्वर और
इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता
है, 'मैं बैबिलोन के राजा का जुआ
तोड़ डालूँगा।[5] 3 दो साल के अंदर
मैं यहोवा के भवन के वे सारे बर-
तन वापस इस जगह ले आऊँगा जिन्हें
बैबिलोन का राजा नबूकदनेस्सर यहाँ से
अपने देश ले गया था।'"[6] 4 "यहोवा
ऐलान करता है, 'और मैं यहोयाकीम[7] के
बेटे और यहूदा के राजा यकोन्याह[8] को
और यहूदा के उन सभी लोगों को
यहाँ वापस ले आऊँगा जिन्हें बंदी बना-
कर बैबिलोन ले जाया गया है,[9] क्योंकि
मैं बैबिलोन के राजा का जुआ तोड़
डालूँगा।'"
5 तब भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने
यहोवा के भवन में खड़े याजकों और सब
लोगों के सामने भविष्यवक्ता हनन्याह
से कहा, 6 "आमीन!* यहोवा ऐसा ही
करे! यहोवा तेरी यह भविष्यवाणी पूरी
करे और बैबिलोन से यहोवा के भवन
के सारे बरतनों को और बंदी बनाए
गए सब लोगों को वापस इस जगह
ले आए! 7 मगर मेहरबानी करके यह
संदेश सुन जो मैं तुझे और इन सब
लोगों को सुनाने जा रहा हूँ। 8 मुझसे
और तुझसे पहले जो भविष्यवक्ता लंबे

27:19 * शा., "सागर।"

28:6 * या "ऐसा ही हो!"

अध्य. 27

1 यिर्म 20:6, यिर्म 29:21, यहे 13:3
2 2रा 24:11, 13, 2इत 36:7, यिर्म 28:1-3, दान 1:1, 2
3 यिर्म 14:13
4 यिर्म 27:11, यिर्म 38:17
5 1रा 7:15, 2रा 25:17, 2इत 4:11, 12, यिर्म 52:21
6 1रा 7:23
7 1रा 7:27, 2रा 25:16, 2इत 4:11, 14
8 2रा 24:14, 15, 2इत 36:10, यिर्म 24:1, दान 1:2, 3

दूसरा कॉल.

1 2रा 25:13, 14, 2इत 36:18, यिर्म 52:17, 18, दान 5:3
2 एज 1:7, एज 5:14

अध्य. 28

3 2रा 24:17, 2इत 36:10
4 यह 11:19, 2शम 21:2
5 यिर्म 27:4, 8
6 2रा 24:11, 13, यिर्म 27:16, दान 1:2
7 2रा 23:36, 2रा 24:6
8 2रा 24:8, 2रा 25:27, यिर्म 37:1
9 2रा 24:12, 14, यिर्म 24:1

अरसे से थे, वे कई देशों और बड़े-बड़े
राज्यों के बारे में भविष्यवाणी करते थे
कि वे युद्ध, विपत्ति और महामारी* के
शिकार होंगे। 9 लेकिन ऐसे में अगर
कोई भविष्यवक्ता शांति की भविष्यवाणी
करता, तो वह तभी यहोवा का भेजा हुआ
भविष्यवक्ता माना जाता जब उसकी बात
सच निकलती।"

10 जब भविष्यवक्ता हनन्याह ने यह
सुना तो उसने भविष्यवक्ता यिर्मयाह की
गरदन से जुआ उतारकर तोड़ दिया।[1]
11 फिर हनन्याह ने सब लोगों के सामने
कहा, "यहोवा कहता है, 'दो साल के
अंदर मैं इसी तरह सब राष्ट्रों की गर-
दन से बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर
का जुआ उतारकर तोड़ दूँगा।'"[2] तब
भविष्यवक्ता यिर्मयाह वहाँ से चला गया।

12 जब भविष्यवक्ता हनन्याह ने
भविष्यवक्ता यिर्मयाह की गरदन से जुआ
उतारकर तोड़ दिया, तो उसके बाद
यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह के पास
पहुँचा: 13 "जाकर हनन्याह से कह,
'यहोवा कहता है, "तूने लकड़ी के जुए
तोड़ दिए हैं,[3] मगर इनकी जगह लोहे के
जुए रखे जाएँगे।" 14 क्योंकि सेनाओं
का परमेश्वर और इसराएल का पर-
मेश्वर यहोवा कहता है, "मैं इन सब
राष्ट्रों की गरदन पर एक लोहे का जुआ
रखूँगा ताकि वे बैबिलोन के राजा नबू-
कदनेस्सर की गुलामी करें। उन्हें उसकी
गुलामी करनी ही पड़ेगी।[4] मैं मैदान के
जंगली जानवरों को भी उसके हाथ में कर
दूँगा।"'"[5]

15 फिर भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने
भविष्यवक्ता हनन्याह[6] से कहा, "हे
हनन्याह, मेहरबानी करके सुन! तुझे
यहोवा ने नहीं भेजा है। तूने इन लोगों को
एक झूठी बात पर यकीन दिलाया है।[1]
16 इसलिए यहोवा कहता है, 'देख! मैं
तुझे धरती से मिटा दूँगा। इसी साल तू
मर जाएगा क्योंकि तूने यहोवा के खिलाफ
बगावत भड़कायी है।'"[2]

17 भविष्यवक्ता हनन्याह उसी साल
के सातवें महीने में मर गया।

29 ये भविष्यवक्ता यिर्मयाह के खत
में लिखे शब्द हैं जो उसने यरू-
शलेम से उन बाकी मुखियाओं को, जो
बंदी बनाए गए लोगों के बीच थे, याजकों,
भविष्यवक्ताओं और सब लोगों को भेजा
जिन्हें नबूकदनेस्सर यरूशलेम से बंदी
बनाकर बैबिलोन ले गया था। 2 जब
राजा यकोन्याह,[3] राजमाता,[4] दरबारी,
यहूदा और यरूशलेम के हाकिम, कारी-
गर और धातु-कारीगर* यरूशलेम से
चले गए थे,[5] तो इसके बाद यिर्मयाह
ने यह खत भेजा था। 3 उसने यह खत
शापान[6] के बेटे एलासा और हिलकियाह
के बेटे गमरयाह के हाथों भेजा, जिन्हें
यहूदा के राजा सिदकियाह[7] ने बैबिलोन
के राजा नबूकदनेस्सर के पास भेजा था।
खत में यह लिखा था:

4 "सेनाओं का परमेश्वर और इस-
राएल का परमेश्वर यहोवा उन सब लोगों
से कहता है, जिन्हें उसने यरूशलेम से
बैबिलोन की बँधुआई में भेज दिया है,
5 'तुम वहीं घर बनाकर रहो। बाग
लगाकर उनके फल खाओ। 6 शादी
करो और बेटे-बेटियाँ पैदा करो और
अपने बच्चों की भी शादी कराओ ताकि
उनके भी बेटे-बेटियाँ हों। वहाँ तुम्हारी
गिनती कम न हो, बढ़ती जाए। 7 और
उस शहर की शांति की कामना करो जहाँ

28:8 *या "बीमारी।"

29:2 *या शायद, "सुरक्षा-दीवार बनाने-
वाले।"

अध्य. 28
1 यिर्म 27:2
2 यिर्म 28:4
3 यिर्म 27:2
4 व्य 28:48
यिर्म 5:19
5 यिर्म 27:6
दान 2:37, 38
6 यिर्म 28:1

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 14:14
यिर्म 23:21
यिर्म 27:15
यहे 13:3
2 व्य 13:5
व्य 18:20
यिर्म 29:32

अध्य. 29
3 2रा 24:8
यिर्म 22:24
4 यिर्म 22:26
5 2रा 24:15, 16
यिर्म 24:1
6 2रा 22:8
यिर्म 26:24
यिर्म 39:13, 14
यहे 8:11
7 2रा 24:18

मैंने तुम्हें बँधुआई में भेज दिया है। उसकी
खातिर यहोवा से प्रार्थना करो क्योंकि
अगर वहाँ शांति होगी तो तुम भी शांति
से रहोगे।[1] 8 सेनाओं का परमेश्वर
और इसराएल का परमेश्वर यहोवा
कहता है, “तुम्हारे बीच जो भविष्यवक्ता
और ज्योतिषी हैं, उनके धोखे में मत
आओ।[2] वे जो सपने देखकर बताते हैं
उन्हें मत सुनो। 9 क्योंकि यहोवा ऐलान
करता है, ‘वे मेरे नाम से तुम्हें झूठी
भविष्यवाणियाँ सुनाते हैं। उन्हें मैंने नहीं
भेजा है।’”’”[3]

10 “यहोवा कहता है, ‘जब बैबिलोन
में तुम्हें रहते 70 साल पूरे हो जाएँगे
तो मैं तुम पर ध्यान दूँगा[4] और तुम्हें
इस जगह वापस लाने का अपना वादा
पूरा करूँगा।’[5]

11 यहोवा ऐलान करता है, ‘मैंने
सोच लिया है कि मैं तुम्हारे साथ क्या
करूँगा। मैं तुम पर विपत्ति नहीं लाऊँगा
बल्कि तुम्हें शांति दूँगा।[6] मैं तुम्हें एक
अच्छा भविष्य और एक आशा दूँगा।[7]
12 तुम मुझे पुकारोगे, मेरे पास आकर
मुझसे प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी
सुनूँगा।’[8]

13 ‘तुम मेरी खोज करोगे और मुझे
पाओगे,[9] क्योंकि तुम पूरे दिल से
मुझे ढूँढ़ोगे।[10] 14 मैं तुम्हें मिलूँगा।’[11]
यहोवा का यह ऐलान है। ‘मैंने तुम्हें जिन-
जिन जगहों और राष्ट्रों में तितर-बितर
कर दिया है और जहाँ तुम बंदी हो, वहाँ
से मैं तुम सबको इकट्ठा करूँगा और उस
जगह लौटा ले आऊँगा जहाँ से मैंने तुम्हें
बँधुआई में भेज दिया था।’[12] यहोवा का
यह ऐलान है।[13]

15 मगर तुम कहते हो, ‘यहोवा ने
हमारे लिए बैबिलोन में ही भविष्य-
वक्ताओं को ठहराया है।’

16 यहोवा, दाविद की राजगद्दी पर
बैठे राजा से[1] और इस शहर में बचे
लोगों से यानी तुम्हारे भाइयों से, जो
तुम्हारे साथ बँधुआई में नहीं गए,
कहता है, 17 ‘सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा कहता है, “देखो, मैं उनके बीच
तलवार, अकाल और महामारी*[2] भेज
रहा हूँ। मैं उन्हें सड़े# अंजीरों जैसा बना
दूँगा जो इतने खराब होते हैं कि खाए नहीं
जा सकते।”’[3]

18 ‘मैं तलवार, अकाल और महा-
मारी लेकर उनका पीछा करूँगा[4] और
उनका ऐसा हश्र करूँगा कि धरती के सब
राज्य देखकर दहल जाएँगे,[5] शाप देते
वक्त उनकी मिसाल देंगे, उन्हें देखकर
चौंक जाएँगे, उनका मज़ाक उड़ाते हुए
सीटी बजाएँगे[6] और जिन देशों के बीच
मैं उन्हें तितर-बितर कर दूँगा वहाँ
उनकी बदनामी होगी,[7] 19 क्योंकि
उन्होंने मेरा संदेश नहीं सुना जो मैंने
अपने सेवकों, अपने भविष्यवक्ताओं के
हाथों उनके पास बार-बार भेजा* था।’[8]
यहोवा का यह ऐलान है।

यहोवा ऐलान करता है, ‘मगर तुमने
मेरी बात नहीं मानी।’[9]

20 इसलिए तुम सब यहोवा का संदेश
सुनो, जिन्हें मैंने यरूशलेम से बैबिलोन की
बँधुआई में भेज दिया है। 21 सेनाओं
का परमेश्वर और इसराएल का पर-
मेश्वर यहोवा कोलायाह के बेटे अहाब
और मासेयाह के बेटे सिदकियाह के बारे
में, जो मेरे नाम से तुम्हें झूठी भविष्य-
वाणी सुनाते हैं,[10] यह कहता है, ‘मैं उन्हें
बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर* के हाथ

अध्य. 29
1 1ती 2:1, 2
2 यिर्म 14:14; यिर्म 27:14
3 यिर्म 23:21; यिर्म 28:15
4 2इत 36:20, 21; एज 1:1-3; दान 9:2; जक 1:12
5 व्य 30:3; एज 2:1; यिर्म 24:6
6 सप 3:15
7 यिर्म 31:17
8 दान 9:3
9 लैव 26:40
10 व्य 4:29; व्य 30:1-4; 1रा 8:47, 48; यिर्म 24:7
11 यश 55:6
12 यश 49:25; यिर्म 30:3; यहे 39:28
13 भज 126:1; हो 6:11; आम 9:14; सप 3:20

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 28:1
2 यिर्म 24:10
3 यिर्म 24:2, 8
4 लैव 26:33
5 व्य 28:25; यिर्म 34:17
6 1रा 9:8; 2इत 29:8; यिर्म 25:9; विल 2:15
7 यिर्म 24:9
8 यिर्म 7:13
9 यिर्म 6:19
10 यिर्म 14:14; यिर्म 29:8; विल 2:14

29:17 *या “बीमारी।” #या शायद, “फटे हुए।” **29:19** *शा., “तड़के उठकर भेजता रहा।” **29:21** *शा., “नबूकदरेस्सर।” यह एक अलग वर्तनी है।

में करनेवाला हूँ। वह उन्हें तुम्हारी आँखों
के सामने मार डालेगा। 22 उनके साथ
जो होगा, उसकी मिसाल देकर बैबि-
लोन में रहनेवाले यहूदा के सभी बँधुए
शाप देते वक्त कहेंगे, “यहोवा तुम्हें सिद-
कियाह और अहाब जैसा कर दे जिन्हें
बैबिलोन के राजा ने आग में भून दिया
था!” 23 क्योंकि उन्होंने इसराएल में
शर्मनाक काम किए थे,[1] अपने पड़ोसियों
की पत्नियों के साथ व्यभिचार किया और
मेरे नाम से झूठे संदेश दिए, जबकि मैंने
उन्हें आज्ञा नहीं दी थी।[2]

यहोवा ऐलान करता है, “मैं यह सब
जानता हूँ और इस बात का गवाह
हूँ।”’”[3]

24 “और नेहेलामी शमायाह से
तू कहना,[4] 25 ‘सेनाओं का परमेश्वर
और इसराएल का परमेश्वर यहोवा
कहता है, “तूने अपने नाम से यरू-
शलेम के सब लोगों को, मासेयाह के
बेटे याजक सपन्याह[5] को और सब
याजकों को खत भेजे और उनसे कहा,
26 ‘यहोवा ने याजक यहोयादा के बदले
तुझ सपन्याह को याजक ठहराया है ताकि
तू यहोवा के भवन का निगरानी करने-
वाला बने और ऐसे हर पागल को
पकड़ ले जो भविष्यवक्ता होने का ढोंग
करता है और उसे काठ* में कस दे।[6]
27 तो फिर तूने क्यों अनातोत के यिर्म-
याह[7] को नहीं फटकारा जो तुम्हारा
भविष्यवक्ता होने का ढोंग करता है?[8]
28 उसने बैबिलोन में रहनेवाले हम लोगों
को भी खत भेजकर कहा, “बँधुआई
लंबे समय तक चलेगी! इसलिए वहीं घर

29:26 *मूल पाठ में दो शब्द इस्तेमाल किए गए हैं। एक शब्द का मतलब शायद ‘पैरों के लिए काठ’ है और दूसरे का शायद ‘हाथों और सिर के लिए काठ’ है।

बनाकर रहो। बाग लगाकर उनका फल
खाओ,[1]—”’”’”

29 जब याजक सपन्याह[2] ने भविष्य-
वक्ता यिर्मयाह के सामने यह खत पढ़कर
सुनाया, 30 तो यहोवा का यह संदेश
यिर्मयाह के पास पहुँचाः 31 “बँधुआई
में रहनेवाले सब लोगों को यह संदेश भेजः
‘नेहेलामी शमायाह के बारे में यहोवा
कहता है, “मैंने शमायाह को नहीं भेजा,
फिर भी उसने तुम्हें भविष्यवाणी सुनायी
और तुम्हें झूठी बातों पर यकीन दिलाने
की कोशिश की,[3] 32 इसलिए यहोवा
कहता है, ‘अब मैं नेहेलामी शमायाह और
उसके वंशजों को सज़ा देनेवाला हूँ। उसके
वंशजों में से एक भी आदमी इन लोगों के
बीच ज़िंदा नहीं बचेगा। मैं अपने लोगों के
साथ जो भलाई करूँगा, उसे वह नहीं देख
पाएगा, क्योंकि उसने यहोवा के खिलाफ
बगावत भड़कायी है।’ यहोवा का यह
ऐलान है।”’”

30 यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह के
पास पहुँचा, 2 “इसराएल का
परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘मैं तुझसे जो-
जो कहने जा रहा हूँ, वह सब एक किताब
में लिख ले। 3 क्योंकि यहोवा ऐलान
करता है, “देख! वे दिन आ रहे हैं, जब
मैं बँधुआई में पड़े अपने लोगों को, इस-
राएल और यहूदा को इकट्ठा करूँगा।”[4]
यहोवा कहता है, “मैं उन्हें वापस उस देश
में ले जाऊँगा जो मैंने उनके पुरखों को
दिया था और वे दोबारा उस पर अधिकार
करेंगे।”’”[5]

4 यहोवा ने इसराएल और यहूदा को
जो संदेश सुनाया वह यह है।

5 यहोवा कहता है,
“हमने उन लोगों की आवाज़ सुनी
है जो डर के मारे चीख रहे हैं,

अध्य. 29
1 यिर्म 23:14
2 यिर्म 7:9, 10; यिर्म 27:15
3 यिर्म 16:17; यिर्म 23:24
4 यिर्म 29:31, 32
5 2रा 25:18, 21; यिर्म 21:1, 2; यिर्म 37:3; यिर्म 52:24, 27
6 यिर्म 20:2
7 यिर्म 1:1
8 यिर्म 43:2

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 29:5
2 2रा 25:18, 21
3 यिर्म 14:14; यिर्म 28:15, 16; यहे 13:8, 9

अध्य. 30
4 व्य 30:3; यहे 39:25
5 एज 2:1; यिर्म 29:14; यिर्म 32:44; यहे 20:42; आम 9:14

हर कहीं आतंक छाया है, कहीं
शांति नहीं है।
6 ज़रा पूछो, क्या एक आदमी बच्चा
जन सकता है?
तो फिर, मैं क्यों हर ताकतवर
आदमी को पेट पकड़े हुए देख
रहा हूँ,
जैसे बच्चा जननेवाली औरत
पकड़ती है?[1]
क्यों सबका चेहरा पीला पड़
गया है?
7 हाय! यह दिन कितना भयानक है![2]
आज तक ऐसा दिन नहीं आया।
याकूब के लिए संकट का समय है।
मगर उसे संकट से बचा लिया
जाएगा।”

8 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा ऐलान
करता है, “उस दिन मैं उनकी गर-
दन का जुआ तोड़ दूँगा और बंधनों
के दो टुकड़े कर डालूँगा। इसके बाद फिर
कभी पराए लोग* उन्हें अपने दास नहीं
बनाएँगे। 9 वे अपने परमेश्वर यहोवा
की सेवा करेंगे और अपने राजा दाविद
की सेवा करेंगे जिसे मैं उनके लिए खड़ा
करूँगा।”[3]

10 यहोवा ऐलान करता है, “मेरे सेवक
याकूब, तू मत डर,
इसराएल, तू मत घबरा।[4]
क्योंकि मैं तुझे दूर देश से छुड़ा
लूँगा,
मैं तेरे वंशजों को बँधुआई के देश से
निकाल लाऊँगा।[5]
याकूब वापस आएगा, वह चैन से
रहेगा और उसे कोई खतरा नहीं
होगा,
उसे कोई नहीं डराएगा।”[6]

11 यहोवा ऐलान करता है, “क्योंकि मैं
तुझे बचाने के लिए तेरे साथ हूँ।
मैं उन सभी राष्ट्रों को मिटा दूँगा
जहाँ मैंने तुझे तितर-बितर कर
दिया था,[1]
मगर तुझे नहीं मिटाऊँगा।[2]
मैं तुझे सुधारने के लिए
उतनी फटकार लगाऊँगा जितनी
सही है,
तुझे सज़ा दिए बिना हरगिज़ न
छोड़ूँगा।”[3]
12 क्योंकि यहोवा कहता है,
“तुझे जो घाव दिया गया है उसका
कोई इलाज नहीं।[4]
तेरा ज़ख्म कभी ठीक नहीं हो
सकता।
13 तेरा मुकदमा लड़नेवाला कोई
नहीं है,
तेरे ज़ख्म को भरने का कोई उपाय
नहीं।
तेरे लिए कोई इलाज नहीं।
14 तुझ पर मरनेवाले तेरे सभी यार
तुझे भूल गए हैं।[5]
वे अब तुझे ढूँढ़ने नहीं आते।
मैंने एक दुश्मन की तरह तुझ पर
वार किया है,[6]
एक बेरहम की तरह तुझे मारा है,
क्योंकि तेरा दोष बहुत बड़ा है, तेरे
पाप बेहिसाब हैं।[7]
15 तू अपने घाव पर क्यों चिल्ला
रही है?
तेरे दर्द की कोई दवा नहीं!
तेरा दोष बहुत बड़ा है, तेरे पाप
बेहिसाब हैं,[8]
इसलिए मैंने तेरा यह हाल
किया है।
16 बेशक तुझे निगलनेवाले सभी
निगल लिए जाएँगे,[9]

अध्य. 30

1 यिर्म 4:31; मी 4:9
2 योए 2:11; सप 1:14
3 यहे 34:23; यहे 37:24; हो 3:5
4 यश 41:13
5 यश 49:25; यिर्म 3:18
6 यिर्म 33:16; यहे 34:25; हो 2:18; मी 4:4

दूसरा कॉल.

1 यिर्म 50:29; यिर्म 51:24
2 लैव 26:44; नहे 9:31; विल 3:22; आम 9:8
3 निर्ग 34:6, 7; यिर्म 46:27, 28
4 2इत 36:15, 16; यश 6:10; यिर्म 8:21, 22
5 विल 1:2, 19
6 विल 2:5
7 यिर्म 5:6
8 2इत 36:14
9 यश 41:11; यिर्म 25:12

30:8 *या “परदेसी।”

तेरे सारे दुश्मन भी बँधुआई में चले
जाएँगे।[1]
जो तुझे लूट रहे हैं, वे लूट लिए
जाएँगे,
जो तेरी दौलत छीन रहे हैं,
उन सबकी दौलत मैं दूसरों से
छिनवाऊँगा।"[2]
17 यहोवा ऐलान करता है,
"वे कहते हैं कि तू ठुकरायी
हुई है,
'सिय्योन को पूछनेवाला कोई
नहीं है,'[3]
मगर मैं तेरी सेहत दुरुस्त
कर दूँगा, तेरे घाव ठीक कर
दूँगा।"[4]
18 यहोवा कहता है,
"मैं याकूब के तंबुओं के लोगों
को बँधुआई से इकट्ठा करने जा
रहा हूँ,[5]
मैं उसके डेरों पर तरस खाऊँगा।
यह शहर अपने टीले पर फिर से
बसाया जाएगा,[6]
किलेबंद मीनार वहाँ दोबारा
खड़ी होगी जहाँ उसे होना
चाहिए।
19 उनके यहाँ से शुक्रिया अदा करने
और खुशियाँ मनाने की आवाज़ें
सुनायी देंगी।[7]
मैं उनकी गिनती बढ़ाऊँगा, वे कम
नहीं होंगे,[8]
मैं उनकी तादाद बढ़ाकर अनगिनत
कर दूँगा,*
वे तुच्छ नहीं समझे जाएँगे।[9]
20 उसके बेटे बीते दिनों की तरह खुश-
हाल होंगे,
मेरे सामने उसकी मंडली मज़बूती से
कायम होगी।[1]
उस पर अत्याचार करनेवालों से मैं
निपटूँगा।[2]
21 उसका गौरवशाली जन उसी में से
निकलेगा,
उसका शासक उसके बीच से ही
आएगा।
मैं उसे अपने पास आने दूँगा और
वह मेरे पास आएगा।"
यहोवा ऐलान करता है, "वरना
कौन मेरे पास आने की हिम्मत
कर सकता है?"
22 "तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा
परमेश्वर होऊँगा।"[3]
23 देखो! यहोवा के क्रोध की भयानक
आँधी चलेगी,[4]
तबाही मचानेवाला तूफान दुष्टों के
सिर पर मँडराएगा।
24 यहोवा के क्रोध की आग तब तक
नहीं बुझेगी,
जब तक कि वह उस काम को
पूरा नहीं कर लेता, उसे अंजाम
नहीं दे देता जो उसने मन में
ठाना है।[5]
आखिरी दिनों में तुम लोग इसे
समझोगे।[6]

31 यहोवा ऐलान करता है, "उस
वक्त मैं इसराएल के सभी घरानों
का परमेश्वर बनूँगा और वे मेरे लोग
बनेंगे।"[7]
2 यहोवा कहता है,
"जो लोग तलवार से बच गए
उन्होंने वीराने में परमेश्वर की
कृपा पायी,
जब इसराएल अपनी विश्राम की
जगह के लिए सफर कर
रहा था।"

30:19 *या शायद, "मैं उन्हें सम्मानित करूँगा।"

अध्य. 30
1 यिर्म 51:29, 56 मी 5:9
2 जक 2:8, 9
3 विल 2:15
4 भज 102:13 यिर्म 33:6, 7
5 भज 85:1 यिर्म 24:6 यिर्म 29:10
6 मी 4:8
7 एज 3:12 नहे 8:17 यश 35:10
8 व्य 30:5 यश 27:6 जक 10:8
9 यश 60:22 मी 4:7

दूसरा कॉल.
1 यश 1:26
2 यश 49:26 यिर्म 50:18
3 यिर्म 31:1 यहे 11:20 यहे 36:28 हो 2:23
4 यिर्म 25:32
5 यिर्म 4:28
6 यिर्म 23:20

अध्य. 31
7 लैव 26:12 यिर्म 30:22 यिर्म 31:33

3 दूर से यहोवा मेरे पास आया और
मुझसे कहा,
"मैं हमेशा से तुझसे प्यार करता
आया हूँ।
इसलिए मैंने अटल प्यार से तुझे
अपनी तरफ खींचा है।*[1]
4 मैं एक बार फिर तुझे बनाऊँगा
और तू दोबारा बनायी जाएगी।[2]
हे इसराएल की कुँवारी बेटी, तू
फिर से अपनी डफलियाँ हाथ में
लेगी
और खुशी से नाचती हुई
निकलेगी।*[3]
5 तू सामरिया के पहाड़ों पर फिर से
अंगूरों के बाग लगाएगी,[4]
उन्हें लगानेवाले उनके फलों का
आनंद उठाएँगे।[5]
6 क्योंकि वह दिन ज़रूर आएगा जब
एप्रैम के पहाड़ों पर पहरेदार
पुकारेंगे,
'चलो, हम अपने परमेश्वर यहोवा
के पास ऊपर सिय्योन चलें।'"[6]
7 क्योंकि यहोवा कहता है,
"याकूब के लिए खुशी के नारे
लगाओ।
खुशी से जयजयकार करो क्योंकि
तुम सब राष्ट्रों के ऊपर हो।[7]
इसका ऐलान करो, परमेश्वर की
तारीफ करो और कहो,
'हे यहोवा, अपने लोगों का,
इसराएल के बचे हुओं का
उद्धार कर।'[8]
8 मैं उन्हें उत्तर के देश से वापस ला
रहा हूँ।[9]
मैं उन्हें धरती के छोर से इकट्ठा
करूँगा।[1]
उनमें अंधे, लँगड़े,[2] गर्भवती औरतें
और वे औरतें भी होंगी,
जिनकी प्रसव-पीड़ा शुरू हो चुकी
है, वे सब मिलकर आएँगे।
उनकी बड़ी मंडली लौट आएगी।[3]
9 वे रोते हुए आएँगे।[4]
वे रहम की भीख माँगते हुए आएँगे
और मैं उन्हें रास्ता दिखाऊँगा।
मैं उन्हें पानी की धाराओं* के पास
ले चलूँगा,[5]
उन्हें समतल रास्ते से ले जाऊँगा
ताकि वे ठोकर न खाएँ।
क्योंकि मैं इसराएल का पिता हूँ,
एप्रैम मेरा पहलौठा है।"[6]
10 राष्ट्रो, तुम यहोवा का संदेश सुनो,
दूर-दराज़ के द्वीपों में इसका ऐलान
करो:[7]
"जिसने इसराएल को तितर-बितर
कर दिया था, वही उसे इकट्ठा
करेगा।
वह उस पर ऐसे नज़र रखेगा
जैसे चरवाहा अपने झुंड पर नज़र
रखता है।[8]
11 क्योंकि यहोवा याकूब को छुड़ा
लेगा,*[9]
उसके हाथ से, जो याकूब से भी
ताकतवर है।[10]
12 वे आएँगे और सिय्योन की
चोटी पर खुशी से जयजयकार
करेंगे,[11]
उनके चेहरे दमक उठेंगे क्योंकि
यहोवा उनके साथ भलाई
करेगा,*

अध्य. 31

1 व्य 7:8
2 यिर्म 33:7, आम 9:11
3 यिर्म 30:18, 19
4 आम 9:14, मी 4:4
5 व्य 30:9, यश 65:21, 22
6 यश 2:3, यिर्म 50:4, 5
7 व्य 32:43, यश 44:23
8 यश 1:9, यिर्म 23:3, योए 2:32
9 यश 43:6, यिर्म 3:12

दूसरा कॉल.

1 व्य 30:4, यहे 20:34, यहे 34:12
2 यश 35:6, यश 42:16
3 एज 2:1, 64
4 यिर्म 50:4
5 यश 35:7, यश 49:10
6 उत 48:14, निर्ग 4:22
7 यश 11:11, यश 42:10
8 यश 40:11, यहे 34:11-13, मी 2:12
9 यश 44:23, यश 48:20
10 यश 49:25
11 एज 3:13, भज 126:1, यश 51:11

31:3 *या "मैं तुझे अपने अटल प्यार का सबूत देता रहा।" **31:4** *या "हँसनेवालों की तरह नाचती हुई निकलेगी।"

31:9 *या "घाटियों।" **31:11** *या "वापस पा लेगा।" **31:12** *या "उन्हें यहोवा से अच्छी चीज़ें मिलेंगी।"

उन्हें अनाज, नयी दाख-मदिरा[1]
और तेल देगा,
उनकी भेड़-बकरियों और मवेशियों
के बहुत-से बच्चे होंगे।[2]
वे अच्छी तरह सिंचे हुए बाग की
तरह होंगे[3]
और फिर कभी कमज़ोर नहीं
होंगे।"[4]
13 "उस वक्त कुँवारियाँ खुशी से
नाचेंगी,
जवान और बूढ़े आदमी भी
नाचेंगे।[5]
मैं उनके मातम को जश्न में बदल
दूँगा।[6]
मैं उन्हें दिलासा दूँगा, उनका शोक
दूर करके उन्हें खुशी दूँगा।[7]
14 मैं याजकों को भरपूर चीज़ें* देकर
संतुष्ट करूँगा,
मैं अपने लोगों को जो अच्छी चीज़ें
दूँगा, उनसे वे संतुष्ट होंगे।"[8]
यहोवा का यह ऐलान है।
15 "यहोवा कहता है,
'रामाह[9] में विलाप करने
और बिलख-बिलखकर रोने की
आवाज़ें सुनायी दे रही हैं,
राहेल अपने बेटों* के लिए रो
रही है।[10]
उसे कितना भी दिलासा दिया जाए
वह शांत नहीं होती
क्योंकि वे अब नहीं रहे।'"[11]
16 यहोवा कहता है,
"'अब और मत रो, अपने आँसू
पोंछ ले,
क्योंकि तुझे अपने कामों का इनाम
मिलनेवाला है।

31:14 *शा., "चिकना खाना।" 31:15 *या "बच्चों।"

अध्य. 31
1 योए 3:18
2 यश 65:10
3 यश 58:11
4 यश 35:10
5 जक 8:4
6 एज 3:12
7 यश 51:3
यश 65:19
8 व्य 30:9
यश 63:7
9 यह 18:21, 25
यिर्म 40:1
10 विल 1:16
11 मत 2:16-18

दूसरा कॉल.
1 एज 1:5
यिर्म 23:3
यहे 11:17
हो 1:11
2 यिर्म 29:11
3 यिर्म 46:27
4 व्य 30:1-3
5 एज 9:6
6 यिर्म 31:9
हो 14:4
7 हो 11:8
8 व्य 32:36
मी 7:18
9 यश 62:10
10 यश 35:8

वे दुश्मन के देश से लौट आएँगे।'
यहोवा का यह ऐलान है।[1]
17 यहोवा ऐलान करता है, 'तेरा
भविष्य उज्ज्वल होगा,[2]
तेरे बेटे अपने इलाके में लौट
आएँगे।'"[3]
18 "मैंने बेशक एप्रैम का विलाप
सुना है,
'तूने मुझे सुधारा और मैंने अपने
अंदर सुधार किया,
मैं ऐसे बछड़े की तरह था जिसे
हल चलाने के लिए सधाया
नहीं गया।
मुझे फेर दे, मैं फौरन फिर जाऊँगा,
क्योंकि तू मेरा परमेश्वर यहोवा है।
19 पलटकर आने के बाद मुझे बड़ा
पछतावा हुआ,[4]
जब मुझे समझाया गया, तब मैंने
दुख के मारे अपनी जाँघ पीटी।
जवानी में मैंने जो किया था,
उसकी वजह से मैं शर्मिंदा हुआ, मैंने
नीचा महसूस किया।'"[5]
20 यहोवा ऐलान करता है, "क्या एप्रैम
मेरा प्यारा बेटा नहीं, मेरा दुलारा
नहीं?[6]
मैं उसके खिलाफ जितनी बार
बोलता हूँ, उतनी बार उसे याद
भी करता हूँ।
यही वजह है कि उसके लिए मेरी
भावनाएँ* उमड़ आती हैं।[7]
मैं उस पर ज़रूर तरस खाऊँगा।"[8]
21 "तू अपने लिए रास्ते में चिन्ह
लगा ले,
झंडे खड़े कर।[9]
राजमार्ग को ध्यान से देख, उस
रास्ते को जहाँ से तुझे जाना है।[10]

31:20 *शा., "अंतड़ियाँ।"

इसराएल की कुँवारी बेटी, अपने
इन शहरों में लौट आ।
22 विश्‍वासघाती बेटी, तू कब तक
भटकती रहेगी?
यहोवा ने धरती पर एक नयी चीज़
की सृष्टि की है:
एक औरत बड़ी बेताबी से आदमी
के पीछे पड़ जाएगी।"

23 सेनाओं का परमेश्‍वर और इस-
राएल का परमेश्‍वर यहोवा कहता है,
"जब मैं बंदी बनाए गए लोगों को इकट्ठा
करके वापस लाऊँगा, तो उनके यहूदा
देश में और उसके शहरों में फिर से यह
कहा जाएगा, 'हे नेकी के निवास,[1] हे
पवित्र पहाड़,[2] यहोवा तुझे आशीष दे।'
24 और वहाँ यहूदा और उसके सारे
शहर, किसान और चरवाहे, सब साथ
रहेंगे।[3] 25 मैं थके-हारों को संतुष्ट
करूँगा और कमज़ोरों को चुस्त-दुरुस्त
कर दूँगा।"[4]

26 इस पर मेरी आँख खुल गयी और
मैं जाग गया। मैं मीठी नींद सोया था।

27 यहोवा ऐलान करता है, "देख! वे
दिन आ रहे हैं जब मैं इसराएल के घराने
और यहूदा के घराने में इंसान का बीज*
और मवेशियों का बीज बोऊँगा।"[5]

28 यहोवा ऐलान करता है, "जिस
तरह मैं उन्हें जड़ से उखाड़ने, गिराने,
ढाने, नाश करने और नुकसान पहुँचाने
के लिए उन पर नज़र रखे हुए था,[6] उसी
तरह मैं उन्हें बनाने और लगाने के लिए
भी उन पर नज़र रखूँगा।[7] 29 उन
दिनों वे यह बात फिर कभी नहीं कहेंगे,
'खट्टे अंगूर खाए पिताओं ने, मगर दाँत
खट्टे हुए बेटों के।'[8] 30 इसके बजाय
हर कोई अपने ही गुनाह के लिए मरेगा।
जो कोई खट्टे अंगूर खाएगा, उसी के दाँत
खट्टे होंगे।"

31 यहोवा ऐलान करता है, "देख! वे
दिन आ रहे हैं जब मैं इसराएल के घराने
और यहूदा के घराने के साथ एक नया
करार करूँगा।[1] 32 वह उस करार
जैसा नहीं होगा जो मैंने उनके पुरखों के
साथ उस दिन किया था जब मैं उन्हें हाथ
पकड़कर मिस्र से निकाल लाया था।[2]
यहोवा ऐलान करता है, 'मैं उनका सच्चा
मालिक* था, फिर भी उन्होंने मेरा करार
तोड़ दिया।'"[3]

33 यहोवा ऐलान करता है, "उन
दिनों के बाद मैं इसराएल के घराने के
साथ यही करार करूँगा। मैं अपना कानून
उनके अंदर डालूँगा[4] और उनके दिलों पर
लिखूँगा।[5] मैं उनका परमेश्‍वर होऊँगा
और वे मेरे लोग होंगे।"[6]

34 यहोवा ऐलान करता है, "इसके
बाद फिर कभी कोई अपने पड़ोसी और
भाई को यह कहकर नहीं सिखाएगा,
'यहोवा को जान!'[7] क्योंकि छोटे से लेकर
बड़े तक, सब मुझे जानेंगे।[8] मैं उनका
गुनाह माफ करूँगा और उनका पाप फिर
कभी याद नहीं करूँगा।"[9]

35 यहोवा जिसने दिन की रौशनी के
लिए सूरज बनाया,
रात की रौशनी के लिए चाँद-
सितारों के नियम ठहराए,*
जो समुंदर को झकझोरता है, लहरों
को उछालता है,
जिसका नाम सेनाओं का परमेश्‍वर
यहोवा है, वह कहता है:[10]
36 "'जैसे ये कायदे-कानून कभी मिटते
नहीं,

अध्या. 31
1 यश 1:26
2 जक 8:3
3 यिर्म 33:12; यहे 36:10, 11
4 भज 107:9
5 व्य 30:9; यहे 36:9; हो 2:23
6 यिर्म 44:27; यिर्म 45:4
7 भज 102:16; भज 147:2; यिर्म 24:6
8 यहे 18:2-4

दूसरा कॉल.
1 मत 26:27, 28; लूक 22:20; 1कुर 11:25; इब्र 8:8-12
2 निर्ग 19:5
3 यहे 16:59
4 यहे 11:19
5 इब्र 10:16
6 यिर्म 24:7; यिर्म 30:22
7 यश 54:13; यूह 17:3
8 यश 11:9; हब 2:14
9 यिर्म 33:8; यिर्म 50:20; मत 26:27, 28; इब्र 8:10-12; इब्र 9:15; इब्र 10:17
10 यश 51:15

31:27 *या "संतान।"

31:32 *या शायद, "उनका पति।" 31:35 *या "की विधियाँ ठहरायीं।"

वैसे ही एक राष्ट्र के नाते
इसराएल के वंशज मेरे सामने से
कभी नहीं मिटेंगे।' यहोवा का
यह ऐलान है।"[1]

37 यहोवा कहता है, "'जैसे ऊपर
आकाश की नाप लेना और नीचे धरती
की बुनियाद का पता लगाना नामुमकिन
है, वैसे ही यह भी नामुमकिन है कि मैं
इसराएल के सभी वंशजों को उनके कामों
की वजह से ठुकरा दूँ।' यहोवा का यह
ऐलान है।"[2]

38 यहोवा ऐलान करता है, "देख! वे
दिन आ रहे हैं जब हननेल मीनार[3]
से लेकर 'कोनेवाले फाटक'[4] तक यह
शहर यहोवा के लिए बनाया जाएगा।[5]
39 और नापने की डोरी[6] सीधे गारेब
की पहाड़ी तक और फिर वहाँ से घूमकर
गोआ जाएगी। 40 और वह पूरी घाटी
जहाँ लाशें और राख* पड़ी हैं, दूर किद-
रोन घाटी[7] के सभी सीढ़ीदार खेत और
पूरब की तरफ घोड़ा फाटक[8] के कोने
तक की सारी ज़मीन, ये सारे इलाके
यहोवा के लिए पवित्र होंगे।[9] वे फिर
कभी जड़ से नहीं उखाड़े जाएँगे, न ही
ढाए जाएँगे।"

32 यहूदा के राजा सिदकियाह के
राज के 10वें साल में, जो
नबूकदनेस्सर* के राज का 18वाँ साल
था, यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह के
पास पहुँचा।[10] 2 उस वक्त बैबिलोन
के राजा की सेनाएँ यरूशलेम को घेरे
हुई थीं और भविष्यवक्ता यिर्मयाह, यहूदा
के राजमहल के 'पहरेदारों के आँगन' में
कैद था।[11] 3 यहूदा के राजा सिद-

31:40 *यानी बलिदान में जलाए गए जानवरों की पिघली चरबी से भीगी राख। 32:1 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

कियाह ने यह कहकर उसे वहाँ बंद कर
दिया था,[1] "तू क्यों ऐसी भविष्यवाणी
करता है? तू कहता है, 'यहोवा ने कहा
है, "मैं यह शहर बैबिलोन के राजा के
हाथ में कर दूँगा और वह इस पर कब्ज़ा
कर लेगा।[2] 4 यहूदा का राजा सिद-
कियाह कसदियों के हाथ से नहीं बचेगा,
उसे ज़रूर बैबिलोन के राजा के हवाले
कर दिया जाएगा। और सिदकियाह
को उस राजा से आमने-सामने बात करनी
होगी।"'[3] 5 यहोवा ऐलान करता है,
'वह सिदकियाह को बैबिलोन ले जाएगा
और जब तक मैं उस पर ध्यान न
दूँ वह वहीं रहेगा। तुम लोग कसदियों
से चाहे कितना भी लड़ो, तुम जीत नहीं
पाओगे।'"[4]

6 यिर्मयाह ने कहा, "यहोवा का यह
संदेश मेरे पास पहुँचा: 7 'तेरे पिता के
भाई शल्लूम का बेटा हनमेल तेरे पास
आएगा और कहेगा, "तू मेरा अनातोत-
वाला खेत[5] अपने लिए खरीद ले, क्योंकि
उसे वापस खरीदने का पहला हक तेरा
है।"'"[6]

8 जैसे यहोवा ने कहा था, मेरा चचेरा
भाई हनमेल 'पहरेदारों के आँगन' में
मेरे पास आया और उसने मुझसे कहा,
"मेहरबानी करके तू मेरा अनातोतवाला
खेत खरीद ले जो बिन्यामीन के इलाके
में है, क्योंकि उसे वापस खरीदने और
अधिकार में करने का हक तेरा है। तू उसे
अपने लिए खरीद ले।" तब मैं जान गया
कि यह यहोवा की मरज़ी से हुआ है।

9 इसलिए मैंने अपने चचेरे भाई हन-
मेल से अनातोतवाला खेत खरीद लिया।
मैंने उसे सात शेकेल* और चाँदी के
दस टुकड़े तौलकर दे दिए।[7] 10 फिर

32:9 *एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 31
1 यश 54:10, यिर्म 33:20, 21
2 यिर्म 30:11
3 नहे 3:1, जक 14:10
4 2इत 26:9
5 नहे 12:27, यश 44:28, यिर्म 30:18
6 जक 1:16
7 2शम 15:23, 2रा 23:6, यूह 18:1
8 नहे 3:28
9 योए 3:17

अध्य. 32
10 यिर्म 25:1
11 नहे 3:25, यिर्म 33:1, यिर्म 38:28

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 37:18, 21
2 यिर्म 34:2, 3, यिर्म 37:8, 17
3 2रा 25:6, 7, यिर्म 38:17, 18, यिर्म 39:5, यहे 12:13
4 यिर्म 21:4, यहे 17:15
5 यह 21:8, 18, यिर्म 1:1
6 लैव 25:23, 24
7 उत 23:16

मैंने इस ज़मीन का पट्टा लिखवाया,[1] उस पर मुहर लगायी, गवाहों को बुलाया[2] और पैसे तराज़ू में तौलकर उसे दे दिए। **11** मैंने वह पट्टा लिया जो आज्ञा और कानून की माँगों के मुताबिक मुहरबंद किया गया था, साथ ही वह पट्टा भी लिया जो मुहरबंद नहीं था। **12** मैंने वह पट्टा अपने चचेरे भाई हनमेल और दस्तखत करनेवाले गवाहों और 'पहरेदारों के आँगन' में बैठे सभी यहूदियों के सामने बारूक[3] को दिया।[4] बारूक, नेरियाह का बेटा[5] और महसेयाह का पोता था।

13 फिर मैंने उन सबके सामने बारूक को आज्ञा दी, **14** "सेनाओं का परमेश्वर और इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'तू ये पट्टे ले। जो मुहरबंद है और जिस पर मुहर नहीं है, दोनों को लेकर मिट्टी के एक बरतन में रख दे ताकि ये लंबे समय तक सुरक्षित रहें।' **15** क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर और इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'इस देश में घरों, खेतों और अंगूरों के बागों का खरीदना फिर से शुरू होगा।'"[6]

16 नेरियाह के बेटे बारूक को वह पट्टा देने के बाद मैंने यहोवा से यह प्रार्थना की, **17** "हे सारे जहान के मालिक यहोवा, देख! तूने अपना हाथ बढ़ाकर अपनी महाशक्ति से आकाश और धरती को बनाया।[7] तेरे लिए कोई भी काम नामुमकिन नहीं। **18** तू ऐसा परमेश्वर है जो हज़ारों पीढ़ियों से प्यार* करता है, मगर पिताओं के गुनाह की सज़ा उनके बाद के वंशजों तक को देता है।[8] तू सच्चा परमेश्वर है, महान और शक्तिशाली परमेश्वर है जिसका नाम सेनाओं का परमेश्वर यहोवा है। **19** तू शानदार मकसद ठहराता है* और शक्तिशाली काम करता है।[1] तेरी आँखें इंसानों के सभी तौर-तरीके ध्यान से देखती हैं[2] ताकि हरेक को उसके कामों और चालचलन के मुताबिक फल दे।[3] **20** तूने मिस्र में ऐसे चिन्ह और चमत्कार किए जो आज तक जाने जाते हैं। ऐसा करके तूने इसराएल में और पूरी दुनिया में बड़ा नाम कमाया,[4] जो आज भी कायम है। **21** तू चिन्ह और चमत्कार करके, अपना शक्तिशाली हाथ बढ़ाकर और दिल दहलानेवाले बड़े-बड़े काम करके अपनी प्रजा इसराएल को मिस्र से निकाल लाया।[5]

22 वक्त आने पर तूने उन्हें यह देश दिया जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं[6] और जिसके बारे में तूने उनके पुरखों से शपथ खायी थी।[7] **23** उन्होंने इस देश में आकर इसे अपने अधिकार में कर लिया, मगर न तेरी आज्ञा मानी, न ही तेरे कानून का पालन किया। तूने उन्हें जो आज्ञाएँ दी थीं उनमें से एक भी नहीं मानी, इसीलिए तू उन पर ये सारी विपत्तियाँ ले आया।[8] **24** देख! उस सेना ने शहर पर कब्ज़ा करने के लिए घेराबंदी की ढलान खड़ी की है।[9] तलवार,[10] अकाल और महामारी*[11] की वजह से यह शहर ज़रूर कसदियों के हाथ में चला जाएगा जो इससे लड़ रहे हैं। तूने जो-जो कहा वह सब हो रहा है, जैसा कि तू देख रहा है। **25** हे सारे जहान के मालिक यहोवा, यह शहर ज़रूर कसदियों के हाथ में कर दिया जाएगा। फिर तू क्यों मुझसे कहता है कि तू पैसा देकर वह खेत खरीद ले और गवाहों को बुला?"

26 तब यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह के पास पहुँचाः **27** "मैं यहोवा हूँ, सभी

32:18 * या "अटल प्यार।"

32:19 * या "तू अपने मकसदों के मामले में महान है।" **32:24** * या "बीमारी।"

अध्य. 32

1 यिर्म 32:44
2 रूत 4:9
3 यिर्म 36:4, यिर्म 36:26
4 यिर्म 33:1
5 यिर्म 51:59
6 आम 9:14, जक 3:10
7 यश 40:26, प्रक 4:11
8 निर्ग 34:6, 7, गि 14:18

दूसरा कॉल.

1 यश 28:29
2 नीत 15:3, इब्र 4:13
3 सभ 12:14, यिर्म 17:10, रोम 2:6
4 निर्ग 7:3, 5, निर्ग 9:15, 16, व्य 4:34, 2शम 7:23, यश 63:12
5 निर्ग 6:1, 6, निर्ग 15:16, व्य 26:8
6 निर्ग 3:8
7 उत 13:14, 15, उत 26:3
8 व्य 28:15, यह 23:16
9 व्य 28:52, 2रा 25:1, यिर्म 33:4, यहे 4:1, 2
10 लैव 26:31, 33
11 यिर्म 14:12, यिर्म 15:2

इंसानों का परमेश्वर। क्या मेरे लिए कोई भी काम नामुमकिन है? **28** इसलिए मैं यहोवा कहता हूँ, 'मैं यह शहर कसदियों के हवाले करने जा रहा हूँ, बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर* के हाथ में करने जा रहा हूँ और वह इस पर कब्ज़ा कर लेगा।[1] **29** इस शहर से लड़नेवाले कसदी इसमें घुस आएँगे और इसे आग लगा देंगे। वे शहर के साथ-साथ यहाँ के घर फूँक देंगे[2] जिनकी छतों पर लोगों ने बाल देवता के लिए बलिदान चढ़ाए और दूसरे देवताओं के लिए अर्घ चढ़ाया और ऐसा करके मेरा क्रोध भड़काया।'[3]

30 यहोवा ऐलान करता है, 'इसराएल और यहूदा के लोगों ने बचपन से सिर्फ ऐसे काम किए जो मेरी नज़र में बुरे हैं।[4] इसराएल के लोग अपने कामों से बार-बार मेरा क्रोध भड़काते रहे हैं। **31** जब से यह शहर बना है तब से लेकर आज तक इसने सिर्फ मेरा गुस्सा और क्रोध भड़काया है,[5] इसलिए इसे ज़रूर मेरे सामने से दूर कर दिया जाएगा।[6] **32** इसराएल और यहूदा के लोगों ने बुरे काम करके मेरा क्रोध भड़काया है। उन लोगों ने, उनके राजाओं,[7] हाकिमों,[8] याजकों, भविष्यवक्ताओं[9] और यहूदा और यरूशलेम के निवासियों ने मेरा क्रोध भड़काया है। **33** वे मेरी तरफ मुँह करने के बजाय मुझे पीठ दिखाते रहे।[10] मैंने उन्हें सिखाने की बार-बार कोशिश की,* मगर उनमें से किसी ने भी मेरी नहीं सुनी, मेरी शिक्षा स्वीकार नहीं की।[11] **34** उन्होंने अपनी घिनौनी मूरतें उस भवन में रख दीं जिससे मेरा नाम जुड़ा है और उसे दूषित कर दिया।[12] **35** इतना ही नहीं, उन्होंने "हिन्नोम के वंशजों की घाटी"*[1] में बाल के लिए ऊँची जगह बनायीं ताकि वहाँ मोलेक के लिए अपने बेटे-बेटियों को आग में होम कर दें।[2] यह ऐसा काम है जिसकी न तो मैंने कभी आज्ञा दी थी[3] और न ही कभी यह खयाल मेरे मन में आया। ऐसा नीच काम करके उन्होंने यहूदा से पाप करवाया।'

36 इसलिए यह शहर जिसके बारे में तुम कहते हो कि यह तलवार, अकाल और महामारी की वजह से बैबिलोन के राजा के हाथ में कर दिया जाएगा, उसी के बारे में इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, **37** 'मैं उन्हें उन सभी देशों से इकट्ठा करूँगा जहाँ मैंने उन्हें गुस्से, बड़े क्रोध और जलजलाहट में आकर तितर-बितर कर दिया था।[4] मैं उन्हें वापस इस जगह ले आऊँगा और यहाँ महफ़ूज़ बसे रहने दूँगा।[5] **38** तब वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।[6] **39** मैं उन सबको एक मन दूँगा[7] और एक ही राह पर चलाऊँगा ताकि वे हमेशा मेरा डर मानें। इससे उनका और उनके बाद उनके बच्चों का भला होगा।[8] **40** मैं उनके साथ सदा का यह करार करूँगा[9] कि मैं उनकी भलाई करना कभी नहीं छोड़ूँगा।[10] मैं उनके दिलों में अपना डर बिठाऊँगा इसलिए वे मुझसे मुँह नहीं मोड़ेंगे।[11] **41** मैं खुशी-खुशी उनके साथ भलाई करूँगा[12] और पूरे दिल और पूरी जान से उन्हें इस देश में मज़बूती से लगाऊँगा।'"[13]

42 "क्योंकि यहोवा कहता है, 'जैसे मैं इन लोगों पर इतनी बड़ी विपत्ति ले आया था, वैसे ही मैं उनके साथ वे सारे भले काम करूँगा* जिनका मैं उनसे वादा

32:28 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है। **32:33** *शा., "मैं तड़के उठकर उन्हें सिखाता रहा।"

32:35 *शब्दावली में "गेहन्ना" देखें। **32:42** *या "उन्हें अच्छी चीज़ें दूँगा।"

अध्य. 32
1 2रा 25:4; यिर्म 20:5
2 2रा 25:9, 10; 2इत 36:17, 19; विल 4:11
3 यिर्म 7:18; यिर्म 19:13; यिर्म 44:25
4 व्य 9:7; 2रा 17:9
5 1रा 11:7; 2रा 21:1, 4
6 2रा 23:27; 2रा 24:3, 4
7 1रा 11:9, 10; 2रा 23:26; 1इत 10:13
8 यहे 22:6
9 मी 3:5, 11
10 2इत 29:6; यिर्म 2:27
11 यिर्म 25:3; यिर्म 35:15
12 2रा 21:1, 4; यिर्म 23:11; यहे 8:5, 6

दूसरा कॉल.
1 यह 15:8, 12
2 2इत 28:1, 3; 2इत 33:1, 6; यिर्म 7:31
3 लैव 18:21; व्य 18:10, 12
4 व्य 30:3; यिर्म 29:14; यहे 37:21
5 यिर्म 23:3, 6; यिर्म 33:16; यहे 34:25
6 यिर्म 31:33; मी 4:5
7 यहे 11:19
8 व्य 5:29
9 यश 55:3; यश 61:8
10 यहे 39:29
11 यहे 36:26
12 यश 65:19; सप 3:17
13 यश 58:11; यिर्म 24:6; आम 9:15

करता हूँ।[1] 43 इस देश में फिर से
खेतों का खरीदना शुरू होगा,[2] इसके
बावजूद कि तुम कहते हो, “यह ऐसा
वीरान हो गया है कि यहाँ न इंसान हैं न
जानवर और यह कसदियों के हवाले कर
दिया गया है।”’

44 यहोवा ऐलान करता है, ‘बिन्या-
मीन के इलाके में, यरूशलेम के आस-
पास के इलाकों में, यहूदा के शहरों में,[3]
पहाड़ी प्रदेश के शहरों में, निचले इलाके
के शहरों में[4] और दक्षिण के शहरों में
लोग पैसे देकर खेत खरीदेंगे, पट्टे लिखेंगे
और उन्हें मुहरबंद करेंगे और गवाहों
को बुलाएँगे,[5] क्योंकि मैं बंदी बनाए गए
लोगों को वापस यहाँ ले आऊँगा।’”[6]

33 यहोवा का संदेश दूसरी बार
यिर्मयाह के पास पहुँचा। वह
अब भी ‘पहरेदारों के आँगन’ में कैद
था।[7] परमेश्वर ने यिर्मयाह से कहा,
2 “यह धरती के बनानेवाले यहोवा का
संदेश है। यहोवा का संदेश जिसने धरती
को रचा और मज़बूती से कायम किया है,
हाँ, जिसका नाम यहोवा है, वह कहता
है: 3 ‘तू मुझे पुकार और मैं तुझे जवाब
दूँगा और तुझे ऐसी बातें ज़रूर बताऊँगा
जो तेरी समझ से परे हैं और जिन्हें तू नहीं
जानता।’”[8]

4 “इसराएल के परमेश्वर यहोवा का
यह संदेश इस शहर के घरों और यहूदा के
राजाओं के महलों के बारे में है जो घेरा-
बंदी की ढलानों और तलवार की वजह
से ढा दिए गए हैं।[9] 5 यह संदेश उन
लोगों के बारे में भी है जो कसदियों से
लड़ने आ रहे हैं और उन जगहों के बारे
में भी है जहाँ उन लोगों की लाशें भरी हैं
जिन्हें मैंने गुस्से और क्रोध में आकर मार
डाला था। वे इतने दुष्ट थे कि उनकी
वजह से मैंने इस शहर से मुँह फेर

अध्य. 32
1 यिर्म 31:28; जक 8:14, 15
2 यहे 37:14
3 यिर्म 31:23
4 यिर्म 17:26; यिर्म 33:13
5 यिर्म 32:10, 25
6 भज 126:1

अध्य. 33
7 नहे 3:25; यिर्म 32:2; यिर्म 37:21; यिर्म 38:28
8 यश 48:6
9 व्य 28:52; यिर्म 32:24

दूसरा कॉल.
1 यश 30:26; यिर्म 30:17
2 यश 54:13
3 व्य 30:3; यिर्म 30:3
4 यिर्म 24:6
5 यश 40:2; जक 13:1
6 भज 85:2; यश 43:25; यिर्म 31:34; मी 7:18
7 यश 62:3, 7
8 नहे 6:15, 16
9 मी 7:17
10 यिर्म 31:12
11 जक 9:17
12 2इत 5:13; एज 3:11; भज 106:1; यश 12:4; मी 7:18
13 लैव 7:12; भज 107:22

लिया था। 6 परमेश्वर का संदेश यह
है: ‘अब मैं इस नगरी को दुरुस्त करने
जा रहा हूँ ताकि यह दोबारा सेहतमंद हो
जाए।[1] मैं उन्हें चंगा कर दूँगा और भरपूर
शांति और सच्चाई की आशीष दूँगा।[2]
7 मैं यहूदा और इसराएल के उन लोगों
को वापस ले आऊँगा जो बंदी बनाए
गए हैं[3] और उन्हें दोबारा बनाऊँगा और
वे पहले जैसे हो जाएँगे।[4] 8 उन्होंने मेरे
खिलाफ जो पाप किए थे उनका सारा
दोष दूर करके मैं उन्हें शुद्ध कर दूँगा।[5]
मैं उनके सारे पाप और अपराध माफ कर
दूँगा जो उन्होंने मेरे खिलाफ किए थे।[6]
9 इस नगरी का नाम मुझे बहुत खुशी
देगा। दुनिया के उन सब राष्ट्रों में मेरी
तारीफ और महिमा होगी जो सुनेंगे कि
मैंने उनके साथ कितनी भलाई की है।[7] मैं
इस नगरी के साथ जो भलाई करूँगा और
इसे जो शांति दूँगा[8] उसे देखकर सब राष्ट्र
डर जाएँगे और थर-थर काँपेंगे।’”[9]

10 “यहोवा कहता है, ‘इस जगह
के बारे में तुम कहोगे कि यह बिल-
कुल वीराना है, यहाँ एक इंसान या
जानवर तक नहीं है। यहूदा के शहर
और यरूशलेम की गलियाँ सूनी पड़ी
हैं, यहाँ कोई नहीं रहता, एक इंसान या
जानवर तक नहीं है। मगर ये सभी जगह
एक बार फिर 11 खुशियाँ और जश्न
मनाने की आवाज़ों से और दूल्हा-दुल्हन
के साथ आनंद मनाने की आवाज़ों से गूँज
उठेंगी।[10] और लोगों की यह जयजय-
कार सुनायी देगी: “सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा का शुक्रिया अदा करो, क्योंकि
यहोवा भला है।[11] उसका अटल प्यार
सदा बना रहता है!”’[12]

यहोवा कहता है, ‘वे धन्यवाद-बलियाँ
लेकर यहोवा के भवन में आएँगे,[13]
क्योंकि मैं इस देश के उन लोगों को वापस

ले आऊँगा जो बंदी बनाए गए हैं और उनके हालात पहले जैसे हो जाएँगे।'"

12 "सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा कहता है, 'इस वीराने में, जहाँ एक इंसान या जानवर तक नहीं है और इसके सभी शहरों में फिर से चरागाह नज़र आएँगे जहाँ चरवाहे अपने झुंडों को बिठाया करेंगे।'[1]

13 यहोवा कहता है, 'पहाड़ी प्रदेश के शहरों में, निचले इलाके के शहरों में, दक्षिण के शहरों में, बिन्यामीन के इलाके में, यरूशलेम के आस-पास के इलाकों में[2] और यहूदा के शहरों में[3] फिर से चरवाहे के हाथ के नीचे से झुंड जाया करेंगे और वह उनकी गिनती करेगा।'"

14 "यहोवा ऐलान करता है, 'देख! वे दिन आ रहे हैं जब मैं इसराएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ भलाई करने का अपना वादा पूरा करूँगा।[4] 15 उन दिनों और उस समय मैं दाविद के वंश से एक नेक अंकुर* उगाऊँगा[5] और वह देश में न्याय करेगा।[6] 16 उस वक्‍त यहूदा बचाया जाएगा[7] और यरूशलेम नगरी महफूज़ बसी रहेगी।[8] और वह इस नाम से कहलायी जाएगी, "यहोवा हमारी नेकी है।"'"[9]

17 "यहोवा कहता है, 'ऐसा कभी नहीं होगा कि इसराएल के घराने की राजगद्दी पर बैठने के लिए दाविद के वंश का कोई आदमी न हो[10] 18 या मेरे सामने हाज़िर होकर पूरी होम-बलि चढ़ाने, अनाज के चढ़ावे अर्पित करने और बलिदान चढ़ाने के लिए लेवी याजकों में से कोई न हो।'"

19 यहोवा का संदेश एक बार फिर यिर्मयाह के पास पहुँचा। उसने यिर्मयाह से कहा, 20 "यहोवा कहता है, 'मैंने दिन और रात के बारे में जो करार किया है उसे अगर तुम तोड़ सको ताकि दिन और रात अपने-अपने समय पर न हों,[1] 21 तो ही अपने सेवक दाविद से किया मेरा करार टूट सकेगा[2] ताकि उसकी राजगद्दी पर बैठने के लिए उसका कोई बेटा न रहे[3] और उन लेवी याजकों से किया करार भी टूट सकेगा जो मेरे सेवक हैं।[4] 22 जैसे यह बात पक्की है कि आकाश की सेना नहीं गिनी जा सकती और समुंदर की रेत तौली नहीं जा सकती, वैसे ही यह बात पक्की है कि मैं अपने सेवक दाविद के वंश की और मेरी सेवा करनेवाले लेवियों की गिनती बढ़ाऊँगा।'"

23 यहोवा का संदेश एक बार फिर यिर्मयाह के पास पहुँचा। उसने यिर्मयाह से कहा, 24 "क्या तूने गौर किया कि ये लोग क्या कह रहे हैं? ये कह रहे हैं, 'यहोवा इन दोनों घरानों को ठुकरा देगा जिन्हें उसने चुना था।' दुश्‍मन मेरे अपने लोगों की बेइज़्ज़ती करते हैं और उन्हें एक राष्ट्र नहीं मानते।

25 यहोवा कहता है, 'जिस तरह दिन और रात के बारे में मेरा करार पक्का है[5] और आकाश और धरती के लिए मेरे नियम पक्के* हैं,[6] 26 उसी तरह यह तय है कि मैं याकूब और अपने सेवक दाविद के वंश को कभी नहीं ठुकराऊँगा और उसके वंश से आनेवाले राजाओं को अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंशजों पर राज करने के लिए ठहराऊँगा। क्योंकि मैं उनके लोगों को इकट्ठा करके बँधुआई से लौटा ले आऊँगा[7] और उन पर तरस खाऊँगा।'"[8]

33:15 * या "वारिस।"

33:25 * या "मेरी विधियाँ पक्की।"

अध्य. 33
1 यश 65:10; यिर्म 32:43
2 यिर्म 17:26
3 यिर्म 32:44
4 यिर्म 29:10
5 यश 53:2; जक 6:12; प्रक 22:16
6 यश 11:1, 4; यिर्म 23:5; इब्र 1:9
7 यश 45:17
8 यहे 28:26
9 यिर्म 23:6
10 2शम 7:16, 17; 1रा 2:4; भज 89:20, 29; यश 9:7; लूक 1:32, 33

दूसरा कॉल.
1 उत 1:16; यश 54:10; यिर्म 31:35-37
2 2शम 7:16, 17; 2शम 23:5; भज 89:34, 35; भज 132:11; यश 55:3
3 यश 9:6; लूक 1:32, 33
4 व्य 21:5
5 उत 1:16
6 भज 104:19; यिर्म 31:35, 36
7 एज 2:1, 70
8 यश 14:1; यिर्म 31:20

34 जब बैबिलोन का राजा नबूकद-
नेस्सर* और उसकी पूरी सेना
और उसके राज के अधीन रहनेवाले सब
राज्य और देश, यरूशलेम और उसके
सभी शहरों से लड़ रहे थे, तब यहोवा का
यह संदेश यिर्मयाह के पास पहुँचा:[1]
2 “इसराएल का परमेश्‍वर यहोवा
कहता है, ‘तू यहूदा के राजा सिदकियाह[2]
के पास जा और उससे कह, “यहोवा
कहता है, ‘मैं यह शहर बैबिलोन के राजा
के हाथ में करने जा रहा हूँ और वह
इसे आग से जला देगा।[3] 3 तू उसके
हाथ से नहीं बचेगा, तुझे ज़रूर पकड़
लिया जाएगा और उसके हाथ में कर
दिया जाएगा।[4] तू बैबिलोन के राजा से
आमने-सामने बात करेगा और तू बैबि-
लोन जाएगा।’[5] 4 मगर यहूदा के राजा
सिदकियाह, यहोवा का यह संदेश भी
सुनः ‘यहोवा तेरे बारे में कहता है, “तू
तलवार से नहीं मारा जाएगा। 5 तू चैन
से मरेगा[6] और लोग तेरे सम्मान में आग
जलाएँगे, जैसे उन्होंने तेरे पुरखों के लिए
यानी तुझसे पहले के राजाओं के लिए
किया था। वे यह कहकर तेरे लिए मातम
मनाएँगे, ‘हाय! मेरे मालिक!’ ऐसा ज़रूर
होगा क्योंकि ‘मैंने यह कहा है।’ यहोवा
का यह ऐलान है।”’”’”
6 फिर भविष्यवक्‍ता यिर्मयाह ने यरू-
शलेम में यहूदा के राजा सिदकियाह को
ये सारी बातें बतायीं। 7 उस वक्‍त बैबि-
लोन के राजा की सेनाएँ यरूशलेम से और
यहूदा के बचे हुए सब शहरों से,[7] यानी
लाकीश[8] और अजेका[9] से लड़ रही थीं।
यहूदा के शहरों में से सिर्फ इन किले-
बंद शहरों पर अब तक कब्ज़ा नहीं किया
गया था।
8 यहोवा का यह संदेश इस घटना के
बाद यिर्मयाह के पास पहुँचा: राजा सिद-
कियाह ने यरूशलेम के सब लोगों के साथ
एक करार किया था कि वे दासों के लिए
छुटकारे का ऐलान करेंगे,[1] 9 हर कोई
अपने इब्री दास और दासी को आज़ाद
कर देगा। कोई भी अपने साथी यहूदी
को दास बनाकर नहीं रखेगा। 10 सब
हाकिमों और सब लोगों ने इस आज्ञा का
पालन किया। उन्होंने करार किया कि हर
कोई अपने दास-दासियों को आज़ाद कर
देगा और उन्हें दास बनाकर नहीं रखेगा।
उन्होंने इस करार के मुताबिक अपने दासों
को जाने दिया। 11 मगर बाद में वे उन
दास-दासियों को वापस ले आए जिन्हें
उन्होंने आज़ाद कर दिया था। वे उन्हें
दोबारा दास बनाकर उनसे ज़बरदस्ती
सेवा करवाने लगे। 12 इसलिए यहोवा
का यह संदेश यिर्मयाह के पास पहुँचा।
यहोवा ने कहा:
13 “इसराएल का परमेश्‍वर यहोवा
कहता है, ‘जिस दिन मैं तुम्हारे पुरखों को
गुलामी के घर से, मिस्र से निकाल लाया
था,[2] उस दिन मैंने उनके साथ एक करार
किया था।[3] मैंने उनसे कहा था,
14 “हर सात साल के आखिर में तुममें से
हरेक को चाहिए कि वह अपने उस
इब्री भाई को आज़ाद कर दे जो उसे
बेचा गया था। उसने छः साल तेरी
सेवा की होगी, इसलिए तू उसे आज़ाद
कर देना।”[4] मगर तुम्हारे पुरखों ने मेरी
बात नहीं सुनी, न ही मेरी आज्ञा मानी।
15 कुछ समय पहले, तुमने अपने तौर-
तरीके बदले और अपने भाई-बंधुओं के
लिए छुटकारे का ऐलान करके मेरी नज़र
में सही काम किया। तुमने उस भवन में
मेरे साथ करार किया जिससे मेरा नाम
जुड़ा है। 16 मगर इसके बाद तुमने

34:1 *शा., “नबूकदरेस्सर।” यह एक अलग वर्तनी है।

अध्या. 34

1 2रा 25:1, यिर्म 32:2, यिर्म 39:1, यिर्म 52:4
2 2इत 36:11, यिर्म 37:1
3 यिर्म 21:10, यिर्म 32:28, 29, यिर्म 39:8
4 यिर्म 37:17, यिर्म 39:5
5 2रा 25:6, 7, यहे 12:13
6 यहे 17:16
7 यिर्म 4:5
8 मी 1:13
9 यह 15:20, 35

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 21:2
2 निर्ग 13:3
3 निर्ग 24:7
4 निर्ग 21:2, लैव 25:10, लैव 25:39-42, व्य 15:12

अपना मन बदल दिया। तुमने जिन दास-
दासियों को उनकी मरज़ी के मुताबिक
आज़ाद किया था, उन्हें तुम वापस ले
आए और उनसे ज़बरदस्ती सेवा करवाने
लगे। ऐसा करके तुमने मेरे नाम का अप-
मान किया।'[1]

17 इसलिए यहोवा कहता है, 'तुमने
मेरी आज्ञा नहीं मानी कि हर कोई अपने
भाई-बंधु के लिए छुटकारे का ऐलान
करे।[2] इसलिए अब सुनो, मैं तुम्हें छुट-
कारे का ऐलान करता हूँ। तुम आज़ाद हो
जाओगे और तलवार, महामारी* और
अकाल से मार डाले जाओगे[3] और मैं
तुम्हारा ऐसा हश्र कर दूँगा कि धरती के
सभी राज्य तुम्हें देखकर दहल जाएँगे।'[4]
यहोवा का यह ऐलान है। 18 'जिन
लोगों ने बछड़े के दो भाग किए और
उसके बीच से गुज़रकर मेरे सामने करार
किया था, मगर उस करार के मुताबिक
काम नहीं किया और उसे तोड़ दिया,[5]
19 यानी यहूदा के वे हाकिम, यरूशलेम
के हाकिम, दरबारी, याजक और देश के
सब लोग जो बछड़े के दो भागों के बीच
से गुज़रे थे, उनका यह अंजाम होगा:
20 मैं उन्हें दुश्मनों के हवाले और उन
लोगों के हवाले कर दूँगा जो उनकी जान
के पीछे पड़े हैं। उनकी लाशें आकाश के
पक्षियों और धरती के जानवरों का
निवाला बन जाएँगी।[6] 21 मैं यहूदा के
राजा सिदकियाह और उसके हाकिमों को
उनके दुश्मनों के हवाले और उन लोगों के
हवाले कर दूँगा जो उनकी जान के पीछे
पड़े हैं और बैबिलोन के राजा की सेनाओं
के हाथ कर दूँगा[7] जो तुमसे लड़ना छोड़-
कर जा रही हैं।'[8]

22 यहोवा ऐलान करता है, 'मैं उन
सेनाओं को आदेश दूँगा और वापस इस
शहर में ले आऊँगा। वे इससे लड़ेंगी और
इस पर कब्ज़ा कर लेंगी और इसे आग से
जला देंगी।[1] मैं यहूदा के शहरों को ऐसा
वीरान कर दूँगा कि वहाँ एक भी निवासी
नहीं रहेगा।'"[2]

35 योशियाह के बेटे और यहूदा के
राजा यहोयाकीम के दिनों[3] में
यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह के पास
पहुँचा: 2 "रेकाबियों[4] के घराने के पास
जा और उनसे बात कर। उन्हें यहोवा के
भवन में भोजन के एक कमरे* में ले आ।
फिर उन्हें पीने के लिए दाख-मदिरा दे।"

3 इसलिए मैं यिर्मयाह के बेटे और
हबसिन्याह के पोते याजन्याह को, उसके
भाइयों, सब बेटों और रेकाबियों के पूरे
घराने को 4 यहोवा के भवन में ले
गया। वहाँ मैं उन्हें यिग-दल्याह के बेटे
हानान के बेटों के भोजन के कमरे में ले
गया। (हानान सच्चे परमेश्वर का सेवक
था।) यह कमरा, हाकिमों के भोजन के
कमरे के पास था और हाकिमों का कमरा,
दरबान शल्लूम के बेटे मासेयाह के
भोजन के कमरे के ऊपर था। 5 फिर
मैंने रेकाबी घराने के आदमियों को दाख-
मदिरा से भरे प्याले और कटोरियाँ पेश
कीं और उनसे कहा, "लो, दाख-मदिरा
पीओ।"

6 मगर उन्होंने कहा, "नहीं, हम
दाख-मदिरा नहीं पीएँगे क्योंकि हमारे
पुरखे यहोनादाब*[5] ने, जो रेकाब का
बेटा था, हमें यह आज्ञा दी थी: 'तुम
कभी दाख-मदिरा मत पीना, न ही तुम्हारे
वंशज कभी पीएँ। 7 और तुम घर मत
बनाना, बीज मत बोना, न अंगूरों के

34:17 *या "बीमारी।"

35:2 *या "खाने।" 35:6 *शा., "योना-दाब।" यह यहोनादाब नाम का छोटा रूप है।

अध्य. 34
1 लैव 19:12
2 निर्ग 21:2; लैव 25:10
3 2रा 25:3; यिर्म 21:7
4 यिर्म 15:2, 4; यिर्म 29:18
5 उत 15:10, 17
6 व्य 28:26; भज 79:2; यिर्म 16:4
7 2रा 25:6, 7; विल 4:20
8 यिर्म 37:5

दूसरा कॉल.
1 2रा 25:9, 10; यिर्म 32:29; यिर्म 39:8
2 लैव 26:33; यिर्म 44:2

अध्य. 35
3 2रा 23:34; 2इत 36:5; दान 1:1
4 2रा 10:15; 1इत 2:55
5 2रा 10:15

बाग लगाना या उसके अधिकारी होना।
तुम सदा तंबुओं में ही रहना ताकि तुम
इस देश में लंबे समय तक जी सको, जहाँ
तुम परदेसी बनकर रहते हो।' 8 इस-
लिए हम हमेशा अपने पुरखे रेकाब के बेटे
यहोनादाब की आज्ञा मानते हैं। हम और
हमारी पत्नियाँ और हमारे बेटे-बेटियाँ
कभी दाख-मदिरा नहीं पीते। 9 हम न
रहने के लिए घर बनाते हैं, न ही हमारे
पास अंगूरों के बाग या खेत या बीज हैं।
10 हम हमेशा तंबुओं में रहते हैं और
हमारे पुरखे यहोनादाब* ने जो-जो आज्ञा
दी थी, वह सब मानते हैं। 11 मगर
जब बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर* ने
इस देश पर हमला किया तो हमने कहा,[1]
'चलो, हम यरूशलेम जाते हैं ताकि कस-
दियों और सीरिया के लोगों की सेना से
बच सकें।' यही वजह है कि अब हम
यरूशलेम में रहते हैं।"

12 यहोवा का यह संदेश यिर्मयाह के
पास पहुँचाः 13 "सेनाओं का परमेश्वर
और इसराएल का परमेश्वर यहोवा
कहता है, 'तू जाकर यहूदा के लोगों और
यरूशलेम के निवासियों से कहनाः यहोवा
ऐलान करता है, "क्या मैंने तुम्हें मेरी
आज्ञाओं का पालन करने के लिए बार-
बार नहीं उभारा था?[2] 14 रेकाब के
बेटे यहोनादाब ने अपने वंशजों को आज्ञा
दी थी कि वे दाख-मदिरा न पीएँ और
वे आज तक उसकी आज्ञा मानते हैं और
दाख-मदिरा नहीं पीते। इस तरह उन्होंने
अपने पुरखे के आदेश का पालन किया
है।[3] मगर तुम हो कि मेरी आज्ञा कभी
नहीं मानते, इसके बावजूद कि मैंने बार-
बार तुम्हें बताया है।*[1] 15 मैंने अपने
सब सेवकों को, भविष्यवक्ताओं को
तुम्हारे पास भेजा था, बार-बार भेजा
था*[2] और तुमसे गुज़ारिश करता रहा,
'तुम सब अपने बुरे रास्तों से पलट-
कर लौट आओ[3] और सही काम करो!
दूसरे देवताओं के पीछे मत जाओ, उनकी
सेवा मत करो। तब तुम इस देश में बसे
रहोगे जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे पुरखों को
दिया था।'[4] मगर तुमने मेरी बातों पर
कान नहीं लगाया और मेरा कहा नहीं
माना। 16 रेकाब के बेटे यहोनादाब के
वंशज अपने पुरखे के आदेश का पालन
करते आए हैं,[5] मगर तुम मेरी बात नहीं
मानते।"'"

17 "इसलिए सेनाओं का परमेश्वर
और इसराएल का परमेश्वर यहोवा
कहता है, 'मैं यहूदा पर और यरूशलेम के
सब निवासियों पर वे सारी विपत्तियाँ लाने
जा रहा हूँ जिनके बारे में मैंने उन्हें चेताव-
नी दी थी।[6] मैं उन्हें समझाता रहा मगर
उन्होंने कभी मेरी बात नहीं मानी, मैं उन्हें
पुकारता रहा मगर उन्होंने कोई जवाब
नहीं दिया।'"[7]

18 यिर्मयाह ने रेकाबियों के घराने से
कहा, "सेनाओं का परमेश्वर और इस-
राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है,
'तुमने अपने पुरखे यहोनादाब की आज्ञा
का पालन किया है और तुम उसके सब
आदेशों को मानते आए हो और ठीक
वैसा ही करते हो जैसा उसने तुमसे कहा
था। 19 इसलिए सेनाओं का परमेश्वर
और इसराएल का परमेश्वर यहोवा
कहता है, "ऐसा कभी नहीं होगा कि
रेकाब के बेटे यहोनादाब* के वंशजों में से

अध्य. 35

1 2इत 36:5, 6; दान 1:1
2 यिर्म 32:33
3 यिर्म 35:8

दूसरा कॉल.

1 2इत 36:15, 16; नहे 9:26, 30; यिर्म 25:3
2 यिर्म 7:24, 25
3 यश 1:16; यिर्म 25:5; यहे 18:30; हो 14:1
4 यिर्म 7:5-7
5 यिर्म 35:8
6 व्य 28:15; व्य 29:26, 27; यह 23:15, 16; 2रा 23:27
7 यश 65:12; यश 66:4; यिर्म 7:13, 14

35:10, 19 *शा., "योनादाब।" यह यहोनादाब नाम का छोटा रूप है। 35:11 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

35:14 *शा., "मैं तड़के उठकर तुमसे बातें करता रहा।" 35:15 *शा., "तड़के उठ-कर तुम्हारे पास भेजता रहा।"

कोई मेरी सेवा के लिए मेरे सामने हाज़िर
न हो।”’”

36 योशियाह के बेटे और यहूदा
के राजा यहोयाकीम के राज के
चौथे साल,[1] यहोवा का यह संदेश यिर्म-
याह के पास पहुँचाः 2 “एक खर्रा ले
और उसमें वे सारी बातें लिख जो मैंने
इसराएल, यहूदा[2] और सब राष्ट्रों के
खिलाफ कही हैं।[3] योशियाह के दिनों से
यानी जिस दिन मैंने तुझसे बात करनी
शुरू की थी, तब से लेकर आज तक
मैंने तुझे जो-जो बताया वह सब उस पर
लिख।[4] 3 हो सकता है यहूदा के घराने
के लोग उन सारी विपत्तियों के बारे में
सुनकर, जो मैंने उन पर लाने की ठानी
है, अपने बुरे रास्ते से पलटकर लौट
आएँ और मैं उनका गुनाह और पाप माफ
कर दूँ।”[5]

4 तब यिर्मयाह ने नेरियाह के बेटे
बारूक को बुलाया।[6] वह उसे यहोवा
की कही सारी बातें शब्द-ब-शब्द बताता
गया और बारूक खर्रे में लिखता गया।[7]
5 फिर यिर्मयाह ने बारूक को यह आज्ञा
दीः “मुझ पर बंदिश लगी है, मैं यहोवा
के भवन में नहीं जा सकता। 6 इसलिए
तुझे भवन में जाना होगा और मेरे कहने
पर तूने खर्रे में यहोवा की जो बातें
शब्द-ब-शब्द लिखी हैं वह सब वहाँ पढ़-
कर सुनाना। तू यहोवा के भवन में उप-
वास के दिन लोगों को पढ़कर सुनाना।
तू यहूदा के सब लोगों को पढ़कर सुनाना
जो अपने-अपने शहरों से वहाँ आएँगे।
7 हो सकता है वे यहोवा से रहम की
भीख माँगें और वह उनकी सुने और वे
सब अपने बुरे रास्ते से पलटकर लौट
आएँ, क्योंकि यहोवा ने इन लोगों पर
गुस्सा और क्रोध भड़काने का जो ऐलान
किया है वह बहुत भयानक है।”

8 तब नेरियाह के बेटे बारूक ने वह
सब किया जो भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने
उसे आज्ञा दी थी। बारूक ने यहोवा के
भवन में लोगों को खर्रे* से यहोवा की
सारी बातें पढ़कर सुनायीं।[1]

9 योशियाह के बेटे और यहूदा के
राजा यहोयाकीम के राज[2] के पाँचवें
साल के नौवें महीने में, यरूशलेम के सब
लोगों ने और यहूदा के शहरों से यरू-
शलेम आए सब लोगों ने यहोवा के
सामने उपवास रखने का ऐलान किया।[3]
10 तब बारूक ने यहोवा के भवन में
खर्रे* से यिर्मयाह की सारी बातें पढ़कर
सुनायीं। उसने यह सब नकल-नवीस#
शापान[4] के बेटे गमरयाह[5] के खाने△ में
पढ़कर सुनाया, जो यहोवा के भवन के
नए फाटक के प्रवेश के पास ऊपरी
आँगन में था।[6]

11 जब मीकायाह ने, जो गमरयाह
का बेटा और शापान का पोता था, खर्रे*
में लिखी यहोवा की सारी बातें सुनीं
12 तो वह राजमहल में राज-सचिव के
कमरे में गया जहाँ सारे हाकिम* बैठे
हुए थेः राज-सचिव एलीशामा,[7] शमा-
याह का बेटा दलायाह, अकबोर का बेटा[8]
एलनातान,[9] शापान का बेटा गमरयाह,
हनन्याह का बेटा सिदकियाह और बाकी
सभी हाकिम। 13 मीकायाह ने उन्हें वे
सारी बातें बतायीं जो उसने तब सुनी थीं
जब बारूक ने लोगों के सामने खर्रा* पढ़-
कर सुनाया था।

14 तब सब हाकिमों ने यहूदी के हाथ,
जो नतन्याह का बेटा, शेलेम्याह का पोता
और कूशी का परपोता था, बारूक के
पास यह संदेश भेजाः “तू वह खर्रा लेकर

36:8, 10, 11, 13 *या “किताब।” 36:10 #या “शास्त्री।” △या “भोजन के कमरे।” 36:12 *या “दरबारी।”

अध्य. 36
1 2रा 23:36; यिर्म 25:1
2 यिर्म 4:16; यिर्म 32:30
3 यिर्म 1:5; यिर्म 25:9
4 यिर्म 1:1, 2; यिर्म 25:3
5 यश 55:7; यहे 33:11; मी 7:18
6 यिर्म 32:12; यिर्म 45:2-5
7 यिर्म 45:1

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 7:1, 2
2 2रा 23:36
3 2इत 20:2, 3; एस 4:15, 16
4 2रा 22:8; 2इत 34:20, 21; यिर्म 26:24; यिर्म 39:13, 14; यहे 8:11
5 यिर्म 36:25
6 यिर्म 26:10
7 यिर्म 36:20
8 2रा 22:14; यिर्म 26:22
9 यिर्म 36:25

यहाँ आ जो तूने लोगों के सामने पढ़-
कर सुनाया था।" तब नेरियाह का बेटा
बारूक हाथ में खर्रा लिए हाकिमों के पास
आया। **15** उन्होंने बारूक से कहा,
"मेहरबानी करके बैठ जा और हमें खर्रा
पढ़कर सुना।" बारूक ने उन्हें खर्रा पढ़-
कर सुनाया।

16 जैसे ही उन्होंने सारी बातें सुनीं, वे
डर गए और एक-दूसरे को देखने लगे।
उन्होंने बारूक से कहा, "हमें राजा को ये
सारी बातें बतानी होंगी।" **17** उन्होंने
बारूक से पूछा, "मेहरबानी करके हमें
बता, तूने यह सब कैसे लिखा? क्या यिर्म-
याह ने तुझसे शब्द-ब-शब्द लिख-
वाया था?" **18** बारूक ने कहा, "हाँ,
यिर्मयाह मुझे बताता गया और मैं
स्याही से खर्रे* पर शब्द-ब-शब्द लिखता
गया।" **19** तब हाकिमों ने बारूक से
कहा, "तू और यिर्मयाह जाकर कहीं
छिप जा। किसी को मत बताना कि तुम
कहाँ छिपे हो।"[1]

20 फिर हाकिम राजा के पास आँगन
में गए और उन्होंने वह खर्रा राज-
सचिव एलीशामा के कमरे में रखा।
उन्होंने राजा को वे सारी बातें बतायीं
जो उन्होंने सुनी थीं।

21 तब राजा ने यहूदी को वह खर्रा
लाने भेजा[2] और वह उसे राज-सचिव
एलीशामा के कमरे से ले आया। यहूदी
ने राजा और उसके पास खड़े सब
हाकिमों के सामने खर्रा पढ़ना शुरू किया।
22 वह नौवाँ महीना* था और राजा उस
भवन में बैठा था जहाँ वह सर्दियाँ गुज़ार-
ता था। उसके सामने अंगीठी जल रही
थी। **23** जैसे-जैसे यहूदी खर्रे के तीन-
चार स्तंभ पढ़ता, राजा उस हिस्से को
राज-सचिव की छुरी से काट देता और
अंगीठी में फेंक देता। वह ऐसा तब तक
करता रहा जब तक पूरा खर्रा अंगीठी में
जलकर राख नहीं हो गया। **24** राजा
और उसके सब सेवकों ने खर्रे की सारी
बातें सुनीं, मगर वे बिलकुल नहीं डरे, न
ही उन्होंने अपने कपड़े फाड़े। **25** एल-
नातान,[1] दलायाह[2] और गमरयाह[3] ने
राजा से मिन्नत की थी कि वह खर्रे
को न जलाए, मगर उसने उनकी नहीं
सुनी। **26** इतना ही नहीं, राजा ने
यरहमेल को, जो राजा का बेटा था,
अजरीएल के बेटे सरायाह को और
अब्देल के बेटे शेलेम्याह को हुक्म दिया
कि वे सचिव बारूक और भविष्यवक्ता
यिर्मयाह को पकड़ लें। मगर यहोवा ने
उन दोनों को छिपाए रखा।[4]

27 जब राजा ने वह खर्रा जला दिया
जिसमें बारूक ने यिर्मयाह की कही बातें
शब्द-ब-शब्द लिखी थीं, तो इसके बाद
यहोवा का संदेश एक बार फिर यिर्मयाह
के पास पहुँचा।[5] उसने यिर्मयाह से कहा,
28 "तू एक और खर्रा ले और उस पर
पहले खर्रे की सारी बातें लिख जिसे यहूदा
के राजा यहोयाकीम ने जला दिया है।[6]
29 और तू यहूदा के राजा यहोयाकीम
को यह सज़ा सुनाना: 'यहोवा कहता है,
"तूने वह खर्रा जला दिया और कहा,
'तूने इस पर ऐसा क्यों लिखा: "बैबि-
लोन का राजा ज़रूर आएगा और इस
देश का नाश कर देगा, इसे ऐसा सूना कर
देगा कि यहाँ एक इंसान या जानवर तक
नहीं रहेगा"?'[7] **30** इसलिए यहोवा ने
यहूदा के राजा यहोयाकीम को यह सज़ा
सुनायी है, 'उसका कोई बेटा दाविद की
राजगद्दी पर नहीं बैठेगा।[8] उसकी लाश
बाहर छोड़ दी जाएगी ताकि दिन को

36:18 *या "किताब।" **36:22** *नवंबर के बीच से लेकर दिसंबर के बीच तक। अति. ख15 देखें।

अध्य. 36
1 यिर्म 36:26
2 यिर्म 36:14

दूसरा कॉल.
1 2रा 24:8
2 यिर्म 36:12
3 यिर्म 36:10
4 यिर्म 1:19
5 यिर्म 36:2
6 यिर्म 36:23
7 यिर्म 25:8, 9
8 2रा 24:6, 8
2रा 24:15
2इत 36:9, 10
यिर्म 22:24, 30

धूप में और रात को पाले में पड़ी रहे।[1]
31 मैं उससे, उसके वंशजों और सेवकों
से उनके गुनाह का हिसाब माँगूँगा। मैं
उन पर और यरूशलेम के निवासियों और
यहूदा के लोगों पर वे सारी विपत्तियाँ ले
आऊँगा जो मैंने बतायीं,[2] मगर उन्होंने
नहीं सुनीं।'"'"[3]

32 फिर यिर्मयाह ने एक और खर्रा
लिया और उसे नेरियाह के बेटे, सचिव
बारूक को दिया।[4] बारूक ने यिर्मयाह की
कही बातें खर्रे* पर शब्द-ब-शब्द लिखीं।
उसने उस खर्रे की सारी बातें लिखीं
जिसे यहूदा के राजा यहोयाकीम ने आग
में जला दिया था।[5] खर्रे में इस तरह की
और भी कई बातें जोड़ी गयीं।

37 योशियाह का बेटा सिदकियाह,[6]
यहोयाकीम के बेटे कोन्याह*[7]
की जगह राज करने लगा, क्योंकि
बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर# ने
सिदकियाह को यहूदा देश का राजा
बना दिया।[8] 2 मगर राजा सिदकियाह
और उसके सेवकों और देश के लोगों
ने यहोवा की वे बातें नहीं मानीं, जो
उसने भविष्यवक्ता यिर्मयाह से कहल-
वायी थीं।

3 राजा सिदकियाह ने शेलेम्याह के
बेटे यहूकल[9] और याजक मासेयाह के
बेटे सपन्याह[10] को भविष्यवक्ता यिर्म-
याह के पास यह कहने भेजा: "मेहरबानी
करके हमारी तरफ से हमारे परमेश्वर
यहोवा से प्रार्थना कर।" 4 यिर्मयाह को
अब तक कैद नहीं किया गया था,[11] इस-
लिए वह लोगों के बीच आज़ाद घूमता
था। 5 उस दौरान, मिस्र से फिरौन की
सेना निकल पड़ी[1] और जब यह खबर
यरूशलेम की घेराबंदी करनेवाले कस-
दियों को मिली, तो वे यरूशलेम छोड़कर
चले गए।[2] 6 तब यहोवा का यह संदेश
भविष्यवक्ता यिर्मयाह के पास पहुँचा:
7 "इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता
है, 'यहूदा के राजा से, जिसने तुम्हें मेरी
मरज़ी जानने के लिए भेजा है, कहना,
"देखो! फिरौन की जो सेना तुम्हारी मदद
करने आ रही है, उसे अपने देश मिस्र
लौटना पड़ेगा।[3] 8 और कसदी लोग
वापस इस शहर में आएँगे और इस
पर हमला करके कब्ज़ा कर लेंगे और
इसे आग से फूँक देंगे।"[4] 9 यहोवा
कहता है, "तुम यह कहकर खुद को
धोखा मत दो, 'बेशक, कसदी लोग हम
पर हमला करना छोड़कर चले जाएँगे,'
क्योंकि वे नहीं जाएँगे। 10 तुम चाहे
हमला करनेवाले कसदियों में से सबको
मार डालो तो भी उनमें से जो घायल
आदमी बच जाएँगे, वे अपने तंबुओं
में से उठकर आएँगे और इस शहर
को आग से फूँक देंगे।"'"[5]

11 जब कसदी सेना फिरौन की सेना
की वजह से यरूशलेम से घेराबंदी हटाकर
चली गयी,[6] 12 तो यिर्मयाह यरूशलेम
से बिन्यामीन के इलाके में[7] जाने के लिए
रवाना हुआ ताकि वहाँ अपने लोगों के
बीच से अपना भाग ले। 13 मगर जब
भविष्यवक्ता यिर्मयाह बिन्यामीन फाटक
के पास पहुँचा तो पहरेदारों के अधि-
कारी यिरियाह ने, जो शेलेम्याह का बेटा
और हनन्याह का पोता था, उसे यह कह-
कर पकड़ लिया, "तू हमारा साथ छोड़-
कर कसदियों के पास भागा जा रहा
है!" 14 मगर यिर्मयाह ने कहा, "नहीं,
यह झूठ है! मैं कसदियों का साथ देने नहीं
भाग रहा हूँ।" मगर यिरियाह ने उसकी

36:32 *या "किताब।" **37:1** *यहोयाकीन और यकोन्याह भी कहलाता था। #शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

अध्य. 36
1 यिर्म 22:18, 19
2 व्य 28:15; यिर्म 19:15
3 2इत 36:15, 16
4 यिर्म 36:2, 4
5 यिर्म 36:23

अध्य. 37
6 2रा 24:17-19; 1इत 3:15
7 2रा 24:12; यिर्म 22:24
8 2इत 36:10-12
9 यिर्म 38:1, 4
10 2रा 25:18, 21; यिर्म 21:1, 2; यिर्म 29:25
11 यिर्म 37:15

दूसरा कॉल.
1 यहे 17:15
2 यिर्म 34:21
3 यिर्म 17:5; विल 4:17; यहे 17:17
4 यिर्म 32:29; यिर्म 34:22; यिर्म 39:8
5 यिर्म 21:4
6 यिर्म 34:21
7 यिर्म 1:1

बात नहीं सुनी। उसने यिर्मयाह को पकड़
लिया और उसे हाकिमों के पास ले गया।
15 हाकिम यिर्मयाह पर आग-बबूला हो
गए[1] और उन्होंने उसे पीटा और सचिव
यहोनातान के घर में कैद कर दिया।[2]
उसका घर कैदखाना बना दिया गया था।
16 यिर्मयाह को उस घर के तहखाने में
डाल दिया गया जिसमें कई काल-कोठ-
रियाँ थीं। वह बहुत दिनों तक वहीं पड़ा
रहा।

17 फिर राजा सिदकियाह ने यिर्मयाह
को अपने महल में बुलवाया और छिप-
कर उससे कुछ सवाल पूछे।[3] उसने यिर्म-
याह से पूछा, "क्या यहोवा की तरफ से
कोई संदेश है?" यिर्मयाह ने कहा, "हाँ,
है! तुझे बैबिलोन के राजा के हाथ में कर
दिया जाएगा!"[4]

18 यिर्मयाह ने राजा सिदकियाह से
यह भी कहा, "मैंने तेरे, तेरे सेवकों
और इन लोगों के खिलाफ ऐसा क्या
पाप किया है, जो तुम लोगों ने मुझे कैद
में डाल दिया? 19 तुम्हारे वे भविष्य-
वक्ता कहाँ गए जिन्होंने तुम्हें यह भविष्य-
वाणी सुनायी थी, 'बैबिलोन का राजा तुम
पर और इस देश पर हमला करने नहीं
आएगा'?[5] 20 अब हे मेरे मालिक
राजा, मेहरबानी करके सुन और मेरी यह
बिनती स्वीकार कर। मुझे वापस सचिव
यहोनातान के घर मत भेज,[6] अगर मैं
वहीं रहा तो मर जाऊँगा।"[7] 21 इस-
लिए राजा सिदकियाह ने आदेश दिया कि
यिर्मयाह को 'पहरेदारों के आँगन' में बंद
किया जाए।[8] वहाँ उसे हर दिन एक गोल
रोटी दी जाती थी, जो नानबाइयों की
गली से लायी जाती थी।[9] जब तक
शहर में रोटी थी तब तक यिर्मयाह को
रोटी मिलती रही।[10] यिर्मयाह 'पहरेदारों
के आँगन' में ही रहा।

38 मत्तान के बेटे शपत्याह, पशहूर
के बेटे गदल्याह, शेलेम्याह के
बेटे यूकल[1] और मल्कियाह के बेटे
पशहूर[2] ने यिर्मयाह को सब लोगों से
यह कहते सुनाः 2 "यहोवा कहता है,
'जो कोई इस शहर में ही रहेगा वह
तलवार, अकाल और महामारी* से
मारा जाएगा।[3] लेकिन जो कोई खुद
को कसदियों के हवाले कर देगा# वह
ज़िंदा रहेगा, अपनी जान बचा लेगा△
और वह जीता रहेगा।'[4] 3 यहोवा
कहता है, 'यह शहर ज़रूर बैबिलोन के
राजा की सेना के हाथ में कर दिया जाएगा
और वह इस पर कब्ज़ा कर लेगा।'"[5]

4 हाकिमों ने राजा से कहा, "इस
आदमी को मरवा दे[6] क्योंकि यह ऐसी
बातें कहकर शहर में बचे सैनिकों और
सब लोगों का हौसला तोड़ रहा है।*
यह आदमी लोगों की भलाई नहीं बल्कि
बुराई चाहता है।" 5 राजा सिदकियाह
ने उनसे कहा, "देखो! वह तुम्हारे हाथ में
है, तुम उसके साथ जो चाहे करो। राजा
तुम्हें रोक नहीं सकता।"

6 इसलिए उन्होंने यिर्मयाह को पकड़
लिया और उसे राजा के बेटे मल्कियाह के
कुंड में फेंक दिया। यह कुंड 'पहरेदारों के
आँगन' में था।[7] उन्होंने उसे रस्सों से नीचे
उतार दिया। कुंड में बिलकुल पानी नहीं
था, सिर्फ दलदल था और यिर्मयाह दल-
दल में धँसने लगा।

7 एबेद-मेलेक[8] नाम के एक इथियो-
पियाई आदमी ने, जो राजमहल में एक
खोजा* था, सुना कि हाकिमों ने यिर्मयाह

38:2 *या "बीमारी।" #शा., "निकलकर कसदियों के पास जाएगा।" △शा., "लूट में उसे अपनी जान मिलेगी।" **38:4** *शा., "के हाथ कमज़ोर कर रहा है।" **38:7** *या "दरबारी।"

अध्य. 37
1 यिर्म 26:11; यिर्म 38:4
2 यिर्म 20:2; इब्र 11:32, 36
3 यिर्म 38:14
4 यिर्म 21:7; यिर्म 24:8; यिर्म 34:21; यहे 12:12, 13
5 यिर्म 14:13; यिर्म 23:16, 17; यिर्म 27:14; यिर्म 28:1, 2; विल 2:14
6 यिर्म 37:15
7 यिर्म 26:15; यिर्म 38:8, 9
8 नहे 3:25; यिर्म 32:2; यिर्म 33:1; यिर्म 38:13, 28
9 1रा 17:6
10 2रा 25:3; यिर्म 38:9

दूसरा कॉल.

अध्य. 38
1 यिर्म 37:3
2 यिर्म 21:1, 2
3 यिर्म 27:13; यिर्म 29:18; यहे 7:15
4 यिर्म 21:8-10
5 2रा 25:1, 2; 2इत 36:17
6 यिर्म 26:11
7 यिर्म 33:1; यिर्म 37:21; यिर्म 38:28
8 यिर्म 39:16

को कुंड में डाल दिया है। उस वक्त राजा,
बिन्यामीन फाटक के पास बैठा था।[1]
8 तब एबेद-मेलेक राजमहल से निकल-
कर राजा के पास गया और उससे कहा,
9 "मेरे मालिक राजा, उन आदमियों ने
भविष्यवक्ता यिर्मयाह के साथ बहुत बुरा
किया, उसे कुंड में डाल दिया! वहाँ वह
मर जाएगा क्योंकि शहर में अकाल पड़ा
है, खाने के लिए रोटी कहीं नहीं है।"[2]

10 तब राजा ने इथियोपियाई एबेद-
मेलेक को हुक्म दिया, "यहाँ से 30
आदमियों को लेकर जा और भविष्य-
वक्ता यिर्मयाह को कुंड में से निकाल दे,
इससे पहले कि वह मर जाए।" **11** तब
एबेद-मेलेक अपने साथ आदमियों को
लेकर राजमहल के खज़ाने के तलघर में
गया[3] और वहाँ से कुछ फटे-पुराने कपड़े
और चिथड़े लिए। फिर उन्हें रस्सों से
कुंड में यिर्मयाह के पास नीचे उतार दिए।
12 फिर इथियोपियाई एबेद-मेलेक ने
यिर्मयाह से कहा, "अपनी दोनों बगलों
के नीचे कपड़े और चिथड़े रख और
फिर उनके ऊपर रस्से बाँध ले।" यिर्म-
याह ने ऐसा ही किया। **13** फिर उन्होंने
यिर्मयाह को रस्सों से ऊपर खींचा और
कुंड से बाहर निकाला। इसके बाद यिर्म-
याह 'पहरेदारों के आँगन' में रहा।[4]

14 राजा सिदकियाह ने भविष्यवक्ता
यिर्मयाह को यहोवा के भवन के तीसरे
प्रवेश में बुलवाया। राजा ने यिर्मयाह से
कहा, "मुझे तुझसे कुछ पूछना है। तू कुछ
छिपाना मत।" **15** यिर्मयाह ने उससे
कहा, "अगर मैं तुझे बताऊँ तो तू मुझे
ज़रूर मार डालेगा। और अगर मैं तुझे
कुछ सलाह दूँ तो तू नहीं मानेगा।"
16 तब राजा सिदकियाह ने अकेले में
यिर्मयाह से शपथ खाकर कहा, "यहोवा
के जीवन की शपथ जिसने हमें यह जीवन
दिया है, मैं तुझे नहीं मार डालूँगा और उन
आदमियों के हवाले नहीं करूँगा जो तेरी
जान के पीछे पड़े हैं।"

17 तब यिर्मयाह ने सिदकियाह से
कहा, "सेनाओं का परमेश्वर और इस-
राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है,
'अगर तू खुद को बैबिलोन के राजा
के हाकिमों के हवाले कर देगा,*
तो तुझे ज़िंदा छोड़ दिया जाएगा, यह
शहर आग से नहीं जलाया जाएगा और
तू और तेरा घराना जीवित रहेगा।[1]
18 लेकिन अगर तू खुद को बैबि-
लोन के राजा के हाकिमों के हवाले नहीं
करेगा,* तो यह शहर कसदियों के हाथ
में कर दिया जाएगा। वे इसे आग से
फूँक देंगे[2] और तू उनके हाथ से नहीं बच
पाएगा।'"[3]

19 राजा सिदकियाह ने यिर्मयाह से
कहा, "मुझे उन यहूदियों से डर लगता है
जो कसदियों के पास चले गए हैं, क्योंकि
अगर मुझे उन यहूदियों के हवाले कर
दिया गया तो वे मेरे साथ बहुत बे-
रहमी से पेश आएँगे।" **20** मगर यिर्म-
याह ने कहा, "तुझे उनके हवाले नहीं
किया जाएगा। इसलिए मैं तुझसे बिनती
करता हूँ, तू यहोवा की बात मान ले
जो मैं तुझे बता रहा हूँ। इससे तेरा भला
होगा और तू ज़िंदा रहेगा। **21** लेकिन
अगर तू खुद को कसदियों के हवाले नहीं
करेगा,* तो सुन यहोवा ने मुझे क्या
बताया है: **22** देख! यहूदा के राज-
महल में जितनी औरतें बच गयी हैं उन

अध्य. 38
1 यिर्म 37:13
2 यिर्म 52:6
3 2रा 20:13
4 यिर्म 37:21

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 21:9
यिर्म 27:12
2 2रा 25:8, 9
3 2रा 25:6
यिर्म 39:5

38:17 *शा., "निकलकर बैबिलोन के राजा के हाकिमों के पास जाएगा।" **38:18** *शा., "निकलकर बैबिलोन के राजा के हाकिमों के पास नहीं जाएगा।" **38:21** *शा., "निकलकर कसदियों के पास नहीं जाएगा।"

सबको बैबिलोन के राजा के हाकिमों के
पास लाया जा रहा है[1] और वे तुझसे कह
रही हैं,

‘जिन आदमियों पर तूने भरोसा
किया था, उन्होंने तुझे धोखा
दिया और तुझ पर हावी
हो गए।[2]
उन्होंने तेरे पाँव कीचड़ में
धँसा दिए।
और अब वे तुझे छोड़कर भाग
गए हैं।’

23 और वे तेरी सारी पत्नियों और बेटों
को कसदियों के पास ला रहे हैं। तू उनके
हाथ से नहीं बचेगा। बैबिलोन का राजा
तुझे पकड़ लेगा[3] और तेरी वजह से यह
शहर आग से जला दिया जाएगा।”[4]

24 फिर सिदकियाह ने यिर्मयाह से
कहा, “तू किसी को इन बातों की खबर न
होने देना, वरना तेरी जान की खैर नहीं।
25 अगर हाकिमों को पता चल जाए कि
मैंने तुझसे बात की है और वे आकर
तुझसे पूछें, ‘मेहरबानी करके हमें बता कि
तूने राजा से क्या कहा। हमसे कुछ मत
छिपा, हम तुझे नहीं मार डालेंगे।[5] बता,
राजा ने तुझसे क्या कहा,’ 26 तो तू
उनसे कहना, ‘मैं राजा से गुज़ारिश करने
गया था कि वह मुझे यहोनातान के घर
वापस न भेजे ताकि मैं वहाँ मर न
जाऊँ।’”[6]

27 कुछ समय बाद सारे हाकिम यिर्म-
याह के पास आए और उससे सवाल
करने लगे। उसने उन्हें वही बातें बतायीं
जो राजा ने उसे कहने की आज्ञा दी थी।
उन्होंने उससे और कुछ नहीं कहा क्योंकि
किसी ने राजा और यिर्मयाह की बातचीत
नहीं सुनी थी। 28 यरूशलेम पर कब्ज़ा
होने के दिन तक यिर्मयाह ‘पहरेदारों के
आँगन’[7] में ही रहा।[8]

अध्य. 38
1 यिर्म 39:3
2 विल 1:2
3 2रा 25:7
4 यिर्म 52:8, 13
5 यिर्म 38:4
6 यिर्म 37:15
7 यिर्म 15:20, यिर्म 32:2, यिर्म 33:1, यिर्म 37:21, यिर्म 39:13, 14
8 2रा 25:8, 9, 2इत 36:17

दूसरा कॉल.

अध्य. 39
1 2रा 25:1, 2, यिर्म 52:4, 5, यहे 24:1, 2
2 2रा 25:3, 4, यिर्म 52:6, 7, यहे 33:21
3 यिर्म 1:15
4 व्य 28:25
5 2रा 25:4-7, यिर्म 52:7-11
6 यिर्म 32:4, यिर्म 38:18
7 2रा 17:24
8 2रा 23:31, 33
9 यिर्म 21:7, यिर्म 34:18-20
10 यहे 12:13

39 यहूदा के राजा सिदकियाह के
राज के नौवें साल के दसवें महीने
में, बैबिलोन का राजा नबूकदनेस्सर*
अपनी पूरी सेना के साथ यरूशलेम आया
और उसे घेर लिया।[1]

2 सिदकियाह के राज के 11वें साल
के चौथे महीने के नौवें दिन, उन्होंने शहर-
पनाह में दरार कर दी।[2] 3 बैबिलोन के
राजा के सभी हाकिम शहर के अंदर घुस
गए और ‘बीचवाले फाटक’ के पास बैठ
गए।[3] ये हाकिम थेः नेरगल-शरेसेर जो
समगर था, नबो-सर-सेकीम जो रबसा-
रीस था,* नेरगल-शरेसेर जो रबमाग#
था और बैबिलोन के राजा के बाकी सभी
हाकिम।

4 जब यहूदा के राजा सिदकियाह
और सभी सैनिकों ने उन्हें देखा, तो वे
शहर से भाग गए।[4] वे रात के वक्त उस
फाटक से भाग निकले जो राजा के बाग
के पास दो दीवारों के बीच था और
अराबा के रास्ते से आगे बढ़ते गए।[5]
5 मगर कसदी सेना ने उनका पीछा किया
और यरीहो के वीरानों[6] में सिदकियाह
को पकड़ लिया। वे उसे बैबिलोन के
राजा नबूकदनेस्सर* के पास हमात देश[7]
के रिबला ले गए,[8] जहाँ नबूकदनेस्सर
ने उसे सज़ा सुनायी। 6 रिबला में बैबि-
लोन के राजा ने सिदकियाह की आँखों के
सामने उसके बेटों को मरवा डाला और
यहूदा के सब रुतबेदार लोगों को मरवा
डाला।[9] 7 फिर उसने सिदकियाह की
आँखें फोड़ दीं और वह उसे ताँबे की
बेड़ियों में जकड़कर बैबिलोन ले गया।[10]

39:1, 5 *शा., “नबूकदरेस्सर।” यह एक अलग वर्तनी है। **39:3** *या इब्रानी पाठ में इन शब्दों को इस तरीके से भी अलग किया गया हैः “नेरगल-शरेसेर, समगर-नबो, सर-सेकीम, रबसारीस।” #या “प्रधान जादूगर (या ज्योतिषी)।”

8 फिर कसदियों ने राजमहल और यरूशलेम के सभी घर जलाकर राख कर दिए[1] और यरूशलेम की शहरपनाह ढा दी।[2] 9 शहर में जो लोग बचे थे, साथ ही जो लोग यहूदा के राजा का साथ छोड़-कर बैबिलोन के राजा की तरफ चले गए थे, उन सबको पहरेदारों का सरदार नबू-जरदान[3] बंदी बनाकर बैबिलोन ले गया। उनके अलावा, देश के बाकी लोगों को भी वह ले गया।

10 मगर पहरेदारों के सरदार नबूजर-दान ने यहूदा देश के कुछ ऐसे लोगों को छोड़ दिया जो बहुत गरीब थे और जिनके पास कुछ नहीं था। उस दिन उसने उन्हें अंगूरों के बाग और खेत दिए ताकि वे उनमें काम करें।*[4]

11 फिर बैबिलोन के राजा नबूकद-नेस्सर* ने पहरेदारों के सरदार नबूजर-दान को यिर्मयाह के बारे में यह आदेश दिया: 12 "इसे ले जा और इसकी देख-भाल कर। इसके साथ कुछ बुरा न करना और यह तुझसे जो भी माँगे, दे देना।"[5]

13 इसलिए पहरेदारों के सरदार नबू-जरदान, नबू-सजबान जो रबसारीस* था, नेरगल-शरेसेर जो रबमाग# था और बैबिलोन के राजा के सब बड़े-बड़े अधि-कारियों ने अपने आदमी भेजे 14 और यिर्मयाह को 'पहरेदारों के आँगन' से निकलवाया[6] और उसे अहीकाम के बेटे[7] और शापान[8] के पोते गदल्याह[9] के हवाले किया ताकि उसे गदल्याह के घर ले जाया जाए। इस तरह यिर्मयाह लोगों के बीच रहने लगा।

15 जब यिर्मयाह 'पहरेदारों के आँगन' में कैद था,[1] तब यहोवा का यह संदेश उसके पास पहुँचा: 16 "इथियो-पियाई एबेद-मेलेक[2] के पास जा और उससे कह, 'सेनाओं का परमेश्वर और इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, "मैंने कहा था कि मैं इस शहर पर विपत्ति लाऊँगा, इसके साथ कोई भलाई नहीं करूँगा। अब मैं अपनी बात पूरी करने जा रहा हूँ। जिस दिन मैं ऐसा करूँगा उस दिन तू यह देखेगा।"'

17 'मगर तुझे मैं उस दिन बचाऊँगा। तू उन लोगों के हाथ में नहीं किया जाएगा जिनसे तू डरता है।' यहोवा का यह ऐलान है।

18 'मैं ज़रूर तेरी हिफाज़त करूँगा, तू तलवार से नहीं मारा जाएगा। तेरी जान सलामत रहेगी*[3] क्योंकि तूने मुझ पर भरोसा किया है।'[4] यहोवा का यह ऐलान है।"

40 जब पहरेदारों के सरदार नबू-जरदान[5] ने यिर्मयाह को रामाह[6] में आज़ाद कर दिया तो इसके बाद यहोवा का संदेश यिर्मयाह के पास पहुँचा। दर-असल यिर्मयाह यरूशलेम और यहूदा के उन लोगों में मिल गया था जिन्हें बंदी बनाकर बैबिलोन ले जाया जा रहा था। इसलिए नबूजरदान, यिर्मयाह को भी बेड़ियों में जकड़कर रामाह ले गया था। 2 पहरेदारों के सरदार ने जब यिर्मयाह को आज़ाद किया तो वह उसे एक तरफ ले गया और उससे कहा, "तेरे परमेश्वर यहोवा ने भविष्यवाणी की थी कि इस जगह पर यह विपत्ति आएगी और 3 यहोवा ने जैसा कहा था वैसा ही किया,

---

39:10 *या शायद, "जबरन मज़दूरी करें।" 39:11 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है। 39:13 *या "मुख्य दरबारी।" #या "प्रधान जादूगर (या ज्योतिषी)।"

39:18 *शा., "तुझे लूट में अपनी जान मिलेगी।"

अध्य. 39

1 यश 5:9; यिर्म 38:18
2 2रा 25:9-11; 2इत 36:17, 19; नहे 1:3; यिर्म 52:13-15
3 2रा 25:20; यिर्म 40:1; यिर्म 52:12
4 2रा 25:12; यिर्म 52:16
5 यिर्म 40:2, 4
6 यिर्म 38:28
7 2इत 34:20, 21; यिर्म 26:24
8 2रा 22:8
9 2रा 25:22; यिर्म 40:5; यिर्म 41:2

दूसरा कॉल.

1 यिर्म 32:2; यिर्म 37:21
2 यिर्म 38:7
3 यिर्म 45:2, 5
4 भज 37:39, 40; यिर्म 17:7

अध्य. 40

5 यिर्म 39:9; यिर्म 52:12, 13
6 यह 18:21, 25

क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा के खिलाफ
पाप किया और उसकी बात नहीं मानी।
इसीलिए तुम्हारी यह हालत हुई है।[1]
4 अब मैं तेरे हाथों की बेड़ियाँ खोलकर
तुझे आज़ाद कर रहा हूँ। अगर तुझे ठीक
लगे तो मेरे साथ बैबिलोन आ सकता है,
मैं तेरी देखभाल करूँगा। लेकिन अगर तू
बैबिलोन नहीं आना चाहता, तो मत आ।
देख! यह पूरा देश तेरे सामने पड़ा है। तू
जहाँ चाहे वहाँ जा सकता है।”[2]
5 यिर्मयाह लौटने से झिझक रहा था
इसलिए नबूजरदान ने उससे कहा, “तू
अहीकाम के बेटे[3] और शापान[4] के पोते
गदल्याह के पास चला जा[5] जिसे बैबि-
लोन के राजा ने यहूदा के शहरों का अधि-
कारी ठहराया है। तू उसके साथ लोगों के
बीच रह। अगर तू उसके पास नहीं जाना
चाहता तो जहाँ तेरा जी चाहे वहाँ जा।”
फिर पहरेदारों के सरदार ने उसे
कुछ खाना और एक तोहफा देकर जाने
दिया। 6 तब यिर्मयाह अहीकाम के बेटे
गदल्याह के पास मिसपा गया[6] और
उसके साथ उन लोगों के बीच रहने लगा
जो देश में बच गए थे।
7 कुछ समय बाद देहात में रहनेवाले
सभी सेनापतियों और उनके आदमियों ने
सुना कि बैबिलोन के राजा ने अही-
काम के बेटे गदल्याह को देश का अधि-
कारी ठहराया है, उसने गदल्याह को
देश के उन सभी गरीब आदमी-औरतों
और बच्चों का अधिकारी ठहराया है
जिन्हें बैबिलोन की बँधुआई में नहीं भेजा
गया था।[7] 8 वे सेनापति और उनके
आदमी गदल्याह के पास मिसपा आए।[8]
ये थे नतन्याह का बेटा इश्माएल,[9] कारेह
के बेटे योहानान[10] और योनातान, तन-
हूमेत का बेटा सरायाह, नतोपा के रहने-
वाले एपै के बेटे, एक माकाती आदमी
का बेटा याजन्याह[11] और उनके आदमी।

अध्य. 40
1 यिर्म 50:7
2 यिर्म 39:11, 12
3 2रा 22:12, 13; यिर्म 26:24
4 2रा 22:8
5 2रा 25:22; यिर्म 39:13, 14; यिर्म 41:2
6 न्या 20:1; 1रा 15:22
7 2रा 25:22; यिर्म 39:10
8 2रा 25:23
9 2रा 25:25
10 यिर्म 41:11, 16; यिर्म 43:2
11 यिर्म 42:1, 2

दूसरा कॉल.
1 2रा 25:24; यिर्म 27:11
2 यिर्म 39:10
3 यिर्म 41:10
4 यिर्म 41:2

9 अहीकाम के बेटे और शापान के पोते
गदल्याह ने शपथ खाकर सेनापतियों
और उनके आदमियों से कहा, “तुम लोग
कसदियों के सेवक बनने से मत डरो।
तुम इसी देश में रहो और बैबिलोन के
राजा की सेवा करो। तुम्हें कुछ नहीं होगा,
तुम सलामत रहोगे।[1] 10 और मैं यहाँ
मिसपा में रहकर तुम्हारी तरफ से उन
कसदियों से बात करूँगा* जो हमारे पास
आते हैं। मगर तुम लोग दाख-मदिरा,
गरमियों के फल और तेल इकट्ठा करना
और उन्हें बरतनों में जमा करना और
उन शहरों में बस जाना जिन्हें तुमने अपने
अधिकार में किया है।”[2]
11 मोआब, अम्मोन, एदोम और
दूसरे देशों में रहनेवाले यहूदियों ने भी
सुना कि बैबिलोन के राजा ने यहूदा में
कुछ लोगों को रहने दिया है और उन
पर अहीकाम के बेटे और शापान के
पोते गदल्याह को अधिकारी ठहराया
है। 12 इसलिए वे सब यहूदी उन सारी
जगहों से, जहाँ वे तितर-बितर हो गए थे,
यहूदा देश लौटने लगे। वे सब गदल्याह
के पास मिसपा आए। और उन्होंने बड़ी
तादाद में दाख-मदिरा और गरमियों के
फल इकट्ठा किए।
13 कारेह का बेटा योहानान
और देहात में रहनेवाले सभी सेना-
पति गदल्याह के पास मिसपा आए।
14 उन्होंने उससे कहा, “क्या तू जानता
है कि अम्मोनियों के राजा[3] बालीस ने
नतन्याह के बेटे इश्माएल को तुझे मार
डालने भेजा है?”[4] मगर अहीकाम के बेटे
गदल्याह ने उनका यकीन नहीं किया।
15 तब कारेह के बेटे योहानान ने
मिसपा में गदल्याह से चुपके से कहा,
“मुझे जाकर नतन्याह के बेटे इश्माएल

40:10 * शा., “के सामने खड़ा रहूँगा।”

को मार डालने दे। किसी को पता नहीं
चलेगा। वरना वह तुझे मार डालेगा और
यहूदा के जितने लोग तेरे पास इकट्ठा
हुए हैं वे सब तितर-बितर हो जाएँगे
और यहूदा के बचे हुए मिट जाएँगे।"
16 मगर अहीकाम के बेटे गदल्याह[1] ने
कारेह के बेटे योहानान से कहा, "नहीं, तू
ऐसा नहीं करेगा। तू इश्माएल के बारे में
जो कह रहा है वह झूठ है।"

41 मगर सातवें महीने में नतन्याह
का बेटा और एलीशामा का पोता
इश्माएल,[2] अहीकाम के बेटे गदल्याह
के पास मिसपा आया।[3] इश्माएल शाही
खानदान से था* और राजा के खास
आदमियों में से था। वह अपने साथ दस
और आदमियों को लाया। जब वे सब
मिलकर मिसपा में खाना खा रहे थे,
2 तो नतन्याह का बेटा इश्माएल और
उसके साथ आए दस आदमी उठे और
उन्होंने अहीकाम के बेटे और शापान के
पोते गदल्याह को तलवार से मार डाला।
इस तरह इश्माएल ने उस आदमी को मार
डाला जिसे बैबिलोन के राजा ने देश का
अधिकारी ठहराया था। **3** इश्माएल ने
उन सारे यहूदियों को भी मार डाला जो
मिसपा में गदल्याह के साथ थे और
उन कसदी सैनिकों को भी जो वहाँ थे।

4 गदल्याह के कत्ल के दूसरे दिन,
जब किसी को इसकी खबर नहीं थी,
5 शेकेम,[4] शीलो[5] और सामरिया[6] से
80 आदमी आए। उन्होंने अपनी दाढ़ी
मुँड़ा ली थी,[7] अपने कपड़े फाड़े थे और
शरीर पर घाव किए थे। वे अपने हाथ में
अनाज के चढ़ावे और लोबान लिए हुए
थे[8] ताकि यहोवा के भवन में चढ़ाएँ।
6 तब नतन्याह का बेटा इश्माएल रोता
हुआ मिसपा से निकलकर उनसे मिलने

41:1 *शा., "राज का बीज था।"

अध्य. 40
1 2रा 25:22

अध्य. 41
2 2रा 25:23
यिर्म 40:14
3 2रा 25:25
4 1रा 12:1
5 यह 18:1
6 1रा 16:23, 24
7 लैव 19:27, 28
व्य 14:1
8 लैव 2:1

दूसरा कॉल.
1 1रा 15:22
2इत 16:6
2 यिर्म 40:12
3 यिर्म 40:7
4 यिर्म 40:14
5 यिर्म 40:13
यिर्म 43:2

गया। जब इश्माएल उनसे मिला तो उसने
कहा, "तुम अहीकाम के बेटे गदल्याह के
पास चलो।" **7** मगर जब वे शहर में
आए तो नतन्याह के बेटे इश्माएल और
उसके आदमियों ने उन्हें मार डाला और
उनकी लाशें कुंड में फेंक दीं।

8 मगर वहाँ आए आदमियों में से दस
ने इश्माएल से कहा था, "हमें मत मारो,
क्योंकि हमारे पास ढेर सारा गेहूँ, जौ, तेल
और शहद है। हमने यह सब खेतों में
छिपा रखा है।" इसलिए इश्माएल ने उन्हें
और उनके भाइयों को नहीं मार डाला।
9 इश्माएल ने जितने आदमियों को मार
डाला था, उनकी लाशें एक बड़े कुंड में
फेंक दीं। यह वही कुंड था जो राजा आसा
ने इसराएल के राजा बाशा की वजह से
बनाया था।[1] उस कुंड को नतन्याह के बेटे
इश्माएल ने मारे गए आदमियों की लाशों
से भर दिया।

10 इश्माएल ने मिसपा में बचे हुए
लोगों को बंदी बना लिया।[2] उनमें राजा
की बेटियाँ और मिसपा के बचे हुए
लोग भी थे जिन्हें पहरेदारों के सरदार
नबूजरदान ने अहीकाम के बेटे गदल्याह
के हाथ में सौंपा था।[3] नतन्याह का
बेटा इश्माएल उन सब बंदियों को उस
पार अम्मोनियों के यहाँ ले जाने के लिए
निकल पड़ा।[4]

11 जब कारेह के बेटे योहानान[5] और
उसके साथवाले सभी सेनापतियों ने उन
सारे दुष्ट कामों के बारे में सुना जो
नतन्याह के बेटे इश्माएल ने किए थे,
12 तो वे सब अपने आदमियों को लेकर
नतन्याह के बेटे इश्माएल से लड़ने निकल
पड़े। उन्होंने इश्माएल को गिबोन में उस
जगह पाया जहाँ बहुत पानी* था।

41:12 *या शायद, "बड़ा तालाब।"

13 इश्माएल के साथ जो लोग थे, उन्होंने जब कारेह के बेटे योहानान और उसके साथवाले सारे सेनापतियों को देखा, तो वे बहुत खुश हुए। 14 तब ये सब लोग, जिन्हें इश्माएल बंदी बनाकर मिसपा से लाया था,[1] पलटकर कारेह के बेटे योहानान के पास चले गए। 15 मगर नतन्याह का बेटा इश्माएल और उसके आदमियों में से आठ जन योहानान के हाथ से बच निकले और अम्मोनियों के पास भाग गए।

16 जब नतन्याह के बेटे इश्माएल ने अहीकाम के बेटे गदल्याह को मार डाला,[2] तो उसके बाद कारेह के बेटे योहानान और उसके साथवाले सारे सेनापतियों ने मिसपा के उन सभी लोगों को लिया, जिन्हें उन्होंने इश्माएल के हाथ से बचाया था। वे उन सैनिकों, आदमियों, औरतों, बच्चों और दरबारियों को गिबोन से वापस ले आए। 17 वे बेतलेहेम[3] के पास किमहाम की सराय में रुके। उन्होंने मिस्र जाने का इरादा कर लिया था[4] 18 क्योंकि वे कसदियों से डर गए थे। वे इसलिए डर गए थे क्योंकि नतन्याह के बेटे इश्माएल ने अहीकाम के बेटे गदल्याह को मार डाला, जिसे बैबिलोन के राजा ने देश का अधिकारी ठहराया था।[5]

42 फिर सारे सेनापति और कारेह का बेटा योहानान,[6] होशायाह का बेटा याजन्याह और छोटे-बड़े, सब लोग 2 भविष्यवक्ता यिर्मयाह के पास गए और उससे कहने लगे, "मेहरबानी करके हमारी तरफ से, हम बचे हुए सब लोगों की तरफ से अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर। जैसा कि तू देख सकता है, हम थोड़े ही लोग बचे हैं।[7] 3 तेरा परमेश्वर यहोवा हमें बताए कि हमें क्या करना चाहिए, कौन-सा रास्ता अपनाना चाहिए।"

4 भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने उनसे कहा, "ठीक है, जैसा तुमने कहा, मैं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करूँगा। और यहोवा जो-जो कहेगा, वह सब मैं तुम्हें बताऊँगा। एक भी बात नहीं छिपाऊँगा।"

5 उन्होंने यिर्मयाह से कहा, "तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे ज़रिए हमें जो हिदायत देगा, हम ठीक वैसा ही करेंगे। अगर हमने ऐसा नहीं किया, तो यहोवा इस बात का सच्चा और भरोसेमंद गवाह ठहरे और हमें सज़ा दे। 6 हम अपने परमेश्वर यहोवा की बात ज़रूर मानेंगे, जिसके पास हम तुझे भेज रहे हैं, फिर चाहे उसकी आज्ञा हमें पसंद आए या न आए ताकि अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानने से हमारा भला हो।"

7 दस दिन बाद यहोवा का संदेश यिर्मयाह के पास पहुँचा। 8 तब यिर्मयाह ने कारेह के बेटे योहानान, उसके साथवाले सारे सेनापतियों और छोटे-बड़े, सब लोगों को अपने पास बुलवाया।[1] 9 उसने उनसे कहा, "इसराएल का परमेश्वर यहोवा, जिसके पास तुमने मुझे इसलिए भेजा कि मैं तुम्हारी खातिर उससे बिनती करूँ, कहता है, 10 'अगर तुम इस देश में ही रहोगे, तो मैं तुम्हें बनाऊँगा और नहीं ढाऊँगा, तुम्हें लगाऊँगा और जड़ से नहीं उखाड़ूँगा क्योंकि मैं तुम पर जो विपत्ति ले आया था उस पर मुझे दुख होगा।*[2] 11 तुम जो बैबिलोन के राजा से डरते हो, मत डरो।'[3]

यहोवा ऐलान करता है, 'तुम उसकी वजह से मत डरो, क्योंकि मैं तुम्हें बचाने

अध्य. 41
1 यिर्म 40:6
2 यिर्म 41:2
3 उत 35:19
4 2रा 25:26; यिर्म 42:14; यिर्म 43:7
5 यिर्म 41:2

अध्य. 42
6 यिर्म 40:13, 14
7 व्य 28:62

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 41:16
2 व्य 32:36; यिर्म 18:7, 8; मी 7:18
3 यिर्म 41:17, 18

42:10 *शा., "मुझे पछतावा महसूस होगा।"

और उसके हाथ से छुड़ाने के लिए तुम्हारे
साथ हूँ। 12 मैं तुम पर दया करूँगा[1]
और वह भी तुम पर दया करेगा और
तुम्हें तुम्हारे देश में वापस भेज देगा।

13 लेकिन अगर तुम कहोगे, "नहीं,
हम इस देश में नहीं रहेंगे!" और यह कह-
कर अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा
तोड़ोगे: 14 "हम मिस्र ही जाएँगे,[2]
जहाँ हमें न लड़ाई देखनी पड़ेगी, न नर-
सिंगे की आवाज़ सुननी पड़ेगी, न ही हम
रोटी के लिए तरसेंगे। हम वहीं जाकर
रहेंगे," 15 तो हे यहूदा के बचे हुए
लोगो, यहोवा का संदेश सुनो। सेनाओं
का परमेश्वर और इसराएल का पर-
मेश्वर यहोवा कहता है, "अगर तुमने
मिस्र जाने का पक्का इरादा कर लिया
है और तुम वहीं जाकर बस जाओगे,*
16 तो जिस तलवार से तुम डरते हो,
वह मिस्र में तुम पर आ पड़ेगी और
जिस अकाल से तुम डरते हो, वह
तुम्हारा पीछा करता हुआ मिस्र तक पहुँच
जाएगा और तुम वहाँ मर जाओगे।[3]
17 जितने लोगों ने मिस्र जाकर रहने की
ठान ली है वे सब तलवार, अकाल और
महामारी* से मारे जाएँगे। मैं उन पर
विपत्ति ले आऊँगा और ऐसा कोई न होगा
जो उस विपत्ति का शिकार न हो या उससे
ज़िंदा बच निकले।"'

18 क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर और
इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है,
'अगर तुम मिस्र गए तो तुम पर मेरे
क्रोध का प्याला उँडेला जाएगा, ठीक जैसे
मेरे गुस्से और क्रोध का प्याला यरू-
शलेम के निवासियों पर उँडेला गया
था।[4] तुम शापित ठहरोगे, तुम्हारा ऐसा
हश्र होगा कि देखनेवालों का दिल दहल
जाएगा, तुम्हें बददुआ दी जाएगी, तुम्हारी
बदनामी होगी[1] और तुम फिर कभी यह
जगह नहीं देख पाओगे।'

19 हे यहूदा के बचे हुए लोगो, यहोवा
ने कहा है कि तुम मिस्र मत जाओ। जान
लो कि आज मैंने तुम्हें खबरदार किया है
20 कि अगर तुमने वहाँ जाने की गलती
की तो तुम्हें भारी कीमत चुकानी पड़ेगी,
तुम जान से हाथ धो बैठोगे। तुमने
मुझे यह कहकर अपने परमेश्वर यहोवा
के पास भेजा था, 'हमारी तरफ से
हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर।
हम वही करेंगे जो हमारा परमेश्वर
यहोवा हमसे कहेगा।'[2] 21 और आज
मैंने तुम्हें बता दिया है, मगर तुम अपने
परमेश्वर यहोवा की आज्ञा नहीं मानोगे,
उसने मेरे ज़रिए तुमसे जो-जो कहा है
उनमें से एक भी बात नहीं मानोगे।[3]
22 इसलिए तुम यह पक्के तौर पर जान
लो कि तुम जिस जगह जाकर बस जाना
चाहते हो, वहाँ तलवार, अकाल और
महामारी से मारे जाओगे।"[4]

43 यिर्मयाह ने सब लोगों को ये सारी
बातें बतायीं जो उनके परमेश्वर
यहोवा ने कही थीं। उसने उन्हें हर वह
बात बतायी जो उनके परमेश्वर यहोवा
ने उसे बताने के लिए भेजा था। जब
वह यह कह चुका, 2 तो होशायाह के
बेटे अजरयाह, कारेह के बेटे योहानान[5]
और सभी गुस्ताख आदमियों ने यिर्मयाह
से कहा, "तू झूठ बोल रहा है! हमारे पर-
मेश्वर यहोवा ने तुझे यह कहने के
लिए नहीं भेजा, 'मिस्र मत जाओ, वहाँ
मत बसो।' 3 वह नेरियाह का बेटा
बारूक[6] तुझे हमारे खिलाफ भड़का रहा
है ताकि हम कसदियों के हवाले कर दिए
जाएँ, वे हमें मार डालें या बंदी बनाकर
बैबिलोन ले जाएँ।"[7]

42:15 *या "कुछ समय के लिए रहोगे।"
42:17 *या "बीमारी।"

अध्य. 42
1 निर्ग 34:6
2 यिर्म 43:4, 7
3 व्य 28:45; यिर्म 44:12-14; यिर्म 44:27, 28
4 2रा 25:8-10; 2इत 34:24, 25; 2इत 36:16, 17; विल 2:4

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 29:18
2 यिर्म 42:1, 2
3 2इत 24:19; नहे 9:26; जक 7:11
4 यिर्म 43:10, 11

अध्य. 43
5 यिर्म 41:16; यिर्म 42:1-3
6 यिर्म 36:4; यिर्म 45:1
7 यिर्म 38:4, 6

4 कारेह के बेटे योहानान और सब
सेनापतियों और लोगों ने यहोवा की यह
आज्ञा नहीं मानी कि वे यहूदा में ही रहें।
5 इसके बजाय, कारेह के बेटे योहानान
और सब सेनापतियों ने बचे हुए लोगों
को लिया। ये वे लोग थे जो उन देशों
से यहूदा में बसने के लिए लौट आए थे,
जहाँ उन्हें तितर-बितर किया गया था।[1]
6 उन्होंने आदमियों, औरतों, बच्चों,
राजा की बेटियों और ऐसे हर किसी को
लिया जिसे पहरेदारों के सरदार नबूजर-
दान[2] ने अहीकाम के बेटे[3] और शापान[4]
के पोते गदल्याह की निगरानी में छोड़ा
था।[5] उन्होंने भविष्यवक्ता यिर्मयाह और
नेरियाह के बेटे बारूक को भी लिया।
7 और वे यहोवा की आज्ञा तोड़कर
मिस्र चले गए। वे दूर तहपनहेस तक
चले गए।[6]

8 फिर तहपनहेस में यहोवा का यह
संदेश यिर्मयाह के पास पहुँचाः 9 "तू
अपने हाथ में बड़े-बड़े पत्थर ले और उन्हें
तहपनहेस में फिरौन के घर के प्रवेश के
पास ईंटों के चबूतरे में छिपा दे और
उन पर गारा लगा दे। तू यहूदी आद-
मियों के देखते ऐसा करना। 10 फिर तू
उनसे कहना, 'सेनाओं का परमेश्वर और
इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है,
"अब मैं अपने सेवक बैबिलोन के राजा
नबूकदनेस्सर* को बुलवा रहा हूँ।[7] मैं
उसकी राजगद्दी इन्हीं पत्थरों के ऊपर
रखूँगा जो मैंने छिपाए हैं और वह उन
पर अपना शाही तंबू तानेगा।[8] 11 वह
आएगा और मिस्र पर वार करेगा।[9]
जिनके लिए जानलेवा महामारी तय है वे
महामारी के हवाले किए जाएँगे, जिनके
लिए बँधुआई तय है वे बँधुआई में भेज
दिए जाएँगे और जिनके लिए तलवार तय
है वे तलवार के हवाले किए जाएँगे।[1]
12 मैं मिस्र के देवताओं के मंदिरों को
आग लगा दूँगा।[2] वह उन मंदिरों को
जला देगा और देवताओं को बंदी बना-
कर ले जाएगा। वह मिस्र देश को खुद पर
ऐसे ओढ़ लेगा जैसे कोई चरवाहा अपना
कपड़ा ओढ़ लेता है और वह सही-सला-
मत* वहाँ से निकल जाएगा। 13 वह
मिस्र के बेत-शेमेश* के खंभों को चूर-चूर
कर देगा और मिस्र के देवताओं के मंदिरों
को आग से जला देगा।"'"

44 यिर्मयाह को उन सभी यहूदियों
के लिए एक संदेश मिला
जो मिस्र[3] के मिगदोल,[4] तहपनहेस,[5]
नोप*[6] और पत्रोस के इलाके में रहते
थे।[7] वह संदेश थाः 2 "सेनाओं का
परमेश्वर और इसराएल का परमेश्वर
यहोवा कहता है, 'तुम लोगों ने वे
सारी विपत्तियाँ देखी हैं जो मैं यरू-
शलेम[8] और यहूदा के सब शहरों पर
ला चुका हूँ। आज ये इलाके खंडहर बन
गए हैं और वहाँ एक भी निवासी नहीं
है।[9] 3 ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि तुम
लोगों ने दुष्ट काम करके मेरा क्रोध भड़-
काया। तुमने जाकर उन दूसरे देव-
ताओं के लिए बलिदान चढ़ाए[10] और
उनकी सेवा की जिन्हें न तुम जानते हो
और न तुम्हारे बाप-दादे जानते थे।[11]
4 मैं बार-बार अपने सेवकों को, अपने
भविष्यवक्ताओं को तुम्हारे पास भेज-
कर* तुमसे बिनती करता रहा, "तुम यह
घिनौना काम मत करो जिससे मुझे नफरत

अध्य. 43
1 यिर्म 40:11, 12
2 यिर्म 39:10
3 2इत 34:20, 21; यिर्म 26:24
4 2रा 22:8
5 2रा 25:22
6 यिर्म 2:14, 16; यिर्म 44:1; यहे 30:4, 18
7 यिर्म 25:9; यिर्म 27:6; यहे 29:19, 20
8 दान 2:21; दान 5:18
9 यिर्म 25:17, 19; यिर्म 46:13; यहे 29:19; यहे 30:4, 18

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 44:13; यहे 5:12
2 यिर्म 46:25

अध्य. 44
3 यिर्म 43:4, 7
4 यहे 29:10; यहे 30:6
5 यहे 30:18
6 यिर्म 46:14; यहे 30:16
7 यहे 29:14; यहे 30:14
8 2रा 25:9, 10; यिर्म 39:8
9 विल 1:1
10 यिर्म 11:17
11 व्य 13:6-9; व्य 32:17; यिर्म 19:4

43:10 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

43:12 *शा., "शांति से।" **43:13** *या "सूरज का भवन (या मंदिर)" यानी हीलिओ-पोलिस। **44:1** *या "मेम्फिस।" **44:4** *शा., "तड़के उठकर तुम्हारे पास भेजता रहा।"

है।”[1] 5 मगर तुमने मेरी बात नहीं सुनी, न ही मेरी तरफ कान लगाया कि दूसरे देवताओं के आगे बलिदान चढ़ाने के दुष्ट काम से फिर सको।[2] 6 इसलिए मेरे गुस्से और क्रोध का प्याला उँडेला गया और यहूदा के शहर और यरूशलेम की गलियाँ जलकर राख हो गयीं और वे आज तक खंडहर और वीरान पड़े हैं।’[3]

7 अब सेनाओं का परमेश्वर और इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘तुम क्यों खुद पर एक बड़ी विपत्ति लाना चाहते हो जिससे हर आदमी, औरत, बच्चा और दूध पीता बच्चा यहूदा से मिट जाए और कोई न बचे? 8 तुम मिस्र में, जहाँ तुम बसने गए हो, क्यों अपने हाथों से दूसरे देवताओं को बलिदान चढ़ाकर मेरा क्रोध भड़का रहे हो? तुम नाश हो जाओगे और धरती के सब राष्ट्रों में शापित ठहरोगे और बदनाम हो जाओगे।[4] 9 क्या तुम भूल गए कि यहूदा देश में और यरूशलेम की गलियों में तुम्हारे पुरखों ने और यहूदा के राजाओं[5] और उनकी पत्नियों[6] ने कैसे दुष्ट काम किए थे? और क्या तुम भूल गए कि खुद तुमने और तुम्हारी पत्नियों ने कैसे दुष्ट काम किए हैं?[7] 10 आज तक भी तुमने खुद को नम्र नहीं किया,* मेरा डर बिलकुल नहीं माना[8] और न ही तुम मेरे कानून और मेरी विधियों पर चले जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे पुरखों को दी थीं।’[9]

11 इसलिए सेनाओं का परमेश्वर और इसराएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘मैंने ठान लिया है कि मैं तुम पर विपत्ति ले आऊँगा ताकि पूरा यहूदा नाश हो जाए। 12 और मैं यहूदा के उन बचे हुए लोगों को पकड़ूँगा जिन्होंने मिस्र जाकर बसने की ठान ली थी। वे सब मिस्र में नाश हो जाएँगे।[1] वे तलवार और अकाल से मारे जाएँगे, छोटे-बड़े सब तलवार और अकाल से मारे जाएँगे। वे शापित ठहरेंगे, उनका ऐसा हश्र होगा कि देखनेवालों का दिल दहल जाएगा, उन्हें बददुआ दी जाएगी और उनकी बदनामी होगी।[2] 13 मैं मिस्र में रहनेवालों को तलवार, अकाल और महामारी* से सज़ा दूँगा, ठीक जैसे मैंने यरूशलेम को सज़ा दी थी।[3] 14 और यहूदा के जो बचे हुए लोग मिस्र में बसने गए हैं वे न बच पाएँगे और न ही यहूदा देश लौटने के लिए ज़िंदा रहेंगे। वे यहूदा लौटने और वहाँ बसने के लिए तरसेंगे, मगर नहीं लौटेंगे। सिर्फ चंद लोग ही बचेंगे और लौटेंगे।’”

15 तब उन सभी आदमियों ने, जो जानते थे कि उनकी पत्नियाँ दूसरे देवताओं को बलिदान चढ़ाती हैं और वहाँ खड़ी उनकी सभी पत्नियों की बड़ी टोली ने और मिस्र के पत्रोस में रहनेवाले सब लोगों[4] ने यिर्मयाह से कहा, 16 “तूने यहोवा के नाम से हमसे जो कहा है हम उसके मुताबिक काम नहीं करेंगे। 17 इसके बजाय, हमने जो कहा है हम वही करेंगे। हम स्वर्ग की रानी* के आगे बलिदान और अर्घ चढ़ाएँगे।[5] जब हम यहूदा के शहरों और यरूशलेम की गलियों में ऐसा करते थे तो हमें और हमारे पुरखों, राजाओं और हाकिमों को भरपेट रोटी मिलती थी, हमें किसी चीज़ की कमी नहीं थी और हम पर कभी

44:10 *या “कुचला हुआ महसूस नहीं किया।”

44:13 *या “बीमारी।” 44:17 *एक देवी की उपाधि जिसे वे इसराएली पूजते थे जो सच्ची उपासना से मुकर गए थे; शायद यह प्रजनन की देवी थी।

अध्य. 44

1 2इत 36:15, 16; यश 65:2; यिर्म 7:24-26; यिर्म 35:15
2 यिर्म 19:13
3 यश 6:11; यिर्म 39:8
4 1रा 9:7; यिर्म 24:9; यिर्म 42:18
5 2रा 21:19, 20; 2रा 24:8, 9
6 1रा 11:1-3
7 यिर्म 44:19
8 यिर्म 36:22-24
9 व्य 6:1, 2

दूसरा कॉल.

1 यहे 30:13
2 यिर्म 42:17, 18
3 यिर्म 21:9; यिर्म 42:22; यिर्म 43:11
4 यिर्म 43:4, 7; यिर्म 44:1
5 यिर्म 7:18

कोई विपत्ति नहीं आती थी। 18 जब से
हमने स्वर्ग की रानी* के आगे बलि-
दान और अर्घ चढ़ाना बंद कर दिया
तब से हमें हर चीज़ की कमी होने लगी
और हम तलवार और अकाल से नाश हो
गए हैं।”
19 और उन औरतों ने कहा, “जब
हम स्वर्ग की रानी* के लिए बलिदान
और अर्घ चढ़ाती थीं तो क्या हम अपने
पतियों की इजाज़त के बगैर ऐसा करती
थीं? क्या हम उनकी इजाज़त के बगैर
उस देवी की मूरत के आकार की टिकियाँ
बनाकर बलिदान चढ़ाती थीं और उसके
लिए अर्घ चढ़ाती थीं?”
20 तब यिर्मयाह ने उससे बात करने-
वाले सब लोगों से, उन आदमियों और
उनकी पत्नियों से कहा, 21 “तुम और
तुम्हारे बाप-दादे, तुम्हारे राजा, हाकिम
और देश के लोग यहूदा के शहरों और
यरूशलेम की गलियों में जो बलिदान
चढ़ाते थे,[1] उन्हें यहोवा ने याद किया
और वे उसके ध्यान* में आए! 22 और
ऐसा वक्त आया जब यहोवा तुम्हारे
दुष्ट और घिनौने कामों को और बर-
दाश्त न कर सका। तुम्हारा देश उजड़
गया, उसका ऐसा हश्र हुआ कि देखने-
वालों का दिल दहल गया, वह शापित
ठहरा और वहाँ एक भी निवासी नहीं
बचा और उसका आज भी यही हाल है।[2]
23 ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि तुमने ये
बलिदान चढ़ाए और यहोवा के खिलाफ
पाप किया। तुमने यहोवा की बात, उसका
कानून और उसकी विधियाँ नहीं मानीं
और जो हिदायतें उसने याद दिलायीं उन
पर तुम नहीं चले। इसीलिए तुम पर यह
विपत्ति आ पड़ी है और आज तक है।”[1]
24 यिर्मयाह ने सब लोगों से और सब
औरतों से यह भी कहा, “मिस्र में रहने-
वाले यहूदा के सब लोगो, यहोवा का
संदेश सुनो। 25 सेनाओं का परमेश्वर
और इसराएल का परमेश्वर यहोवा
कहता है, ‘तुमने और तुम्हारी पत्नियों ने
अपने मुँह से जो कहा उसे अपने हाथों से
पूरा किया। तुमने कहा, “हमने स्वर्ग की
रानी* को बलिदान और अर्घ चढ़ाने
की मन्नतें मानी थीं और हम उन्हें ज़रूर
पूरा करेंगे।”[2] औरतो, तुम अपनी मन्नतें
ज़रूर पूरी करोगी, तुमने जैसी मन्नतें
मानी हैं वैसा ज़रूर करोगी।’
26 इसलिए मिस्र में रहनेवाले यहूदा
के सब लोगो, यहोवा का संदेश सुनोः
‘यहोवा कहता है, “मैं अपने महान नाम
की शपथ खाकर कहता हूँ कि पूरे मिस्र में
फिर कभी यहूदा का कोई भी आदमी मेरे
नाम से यह कहकर शपथ नहीं खाएगा,
‘सारे जहान के मालिक यहोवा के जीवन
की शपथ!’[3] 27 अब मैं उन पर नज़र
रखे हुए हूँ, इसलिए नहीं कि उनके
साथ भलाई करूँ बल्कि इसलिए कि उन
पर विपत्ति ले आऊँ।[4] मिस्र में रहनेवाले
यहूदा के सब लोग तलवार और अकाल
से तब तक नाश होते जाएँगे जब तक
कि वे मिट न जाएँ।[5] 28 सिर्फ कुछ ही
लोग तलवार से बच जाएँगे और मिस्र से
यहूदा लौट जाएँगे।[6] तब यहूदा के बचे
हुए सब लोग जो मिस्र में रहने गए थे,
जान जाएँगे कि किसकी बात सच हुई,
उनकी या मेरी!”’”
29 “यहोवा ऐलान करता है, ‘मैं इस
जगह पर तुम्हें सज़ा दूँगा और मैं इसकी
एक निशानी देता हूँ जिससे तुम जान
लोगे कि मैंने तुम पर विपत्ति लाने की

अध्य. 44
1 यिर्म 11:13
यहे 16:24, 25
2 1रा 9:8, 9
विल 2:15
यहे 33:29

दूसरा कॉल.
1 2इत 36:15, 16
दान 9:11
2 यिर्म 7:18
यिर्म 44:15, 17
3 यश 48:1, 2
यिर्म 5:2
यहे 20:39
4 यिर्म 1:10
5 यिर्म 44:12
6 लैव 26:44
यश 27:13
यिर्म 44:14

44:18, 19, 25 *एक देवी की उपाधि जिसे वे इसराएली पूजते थे जो सच्ची उपासना से मुकर गए थे; शायद यह प्रजनन की देवी थी। 44:21 *शा., “दिल।”

जो बात कही है वह ज़रूर पूरी होगी।
30 यहोवा कहता है, "मैं मिस्र के राजा
फिरौन होप्रा को उसके दुश्मनों और उन
लोगों के हाथ में करनेवाला हूँ जो उसकी
जान के पीछे पड़े हैं, ठीक जैसे मैंने यहूदा
के राजा सिदकियाह को बैबिलोन के राजा
नबूकदनेस्सर* के हाथ कर दिया जो
उसका दुश्मन था और उसकी जान के
पीछे पड़ा था।"'"[1]

45 योशियाह के बेटे और यहूदा
के राजा यहोयाकीम के राज के
चौथे साल,[2] भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने
नेरियाह के बेटे बारूक[3] को यह संदेश
सुनाया और बारूक ने वही संदेश शब्द-
ब-शब्द लिखा:[4]

2 "बारूक, तेरे बारे में इसराएल
का परमेश्वर यहोवा कहता है, 3 'तू
कहता है, "हाय! मेरे साथ यह क्या
हुआ। यहोवा ने मेरा दर्द बढ़ा दिया है!
मैं कराहते-कराहते पस्त हो गया हूँ, मुझे
कहीं चैन नहीं।"'

4 तू उससे कहना, 'यहोवा कहता है,
"देख! इस पूरे देश को जिसे मैंने बनाया
है ढा रहा हूँ, जिसे मैंने लगाया है जड़
से उखाड़ रहा हूँ।[5] 5 मगर तू बड़ी-बड़ी
चीज़ों की ख्वाहिश* कर रहा है। ऐसी
ख्वाहिश करना बंद कर।"'

'क्योंकि मैं सब इंसानों पर एक विपत्ति
लानेवाला हूँ।[6] तू जहाँ कहीं जाएगा, मैं
तेरी जान सलामत रखूँगा।'# यहोवा का
यह ऐलान है।"[7]

46 यहोवा का यह संदेश भविष्य-
वक्ता यिर्मयाह के पास पहुँचा,
जो राष्ट्रों के बारे में है:[8] 2 यह संदेश
मिस्र के लिए है।[1] योशियाह के बेटे और
यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज के
चौथे साल,[2] मिस्र के राजा फिरौन निको[3]
की सेना फरात नदी के किनारे थी और
बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर* ने उसे
कर्कमीश में हरा दिया था। यह संदेश उसी
सेना के बारे में है:

3 "तुम अपनी छोटी ढालें* और बड़ी
ढालें तैयार करो,
युद्ध के लिए आगे बढ़ो।
4 घुड़सवारो, घोड़ों पर साज डालो,
उन पर चढ़ जाओ।
टोप पहनकर अपनी-अपनी जगह
तैनात हो जाओ।
बरछे पैने करो, बख्तर पहन लो।
5 यहोवा ऐलान करता है, 'वे लोग
डरे-सहमे क्यों दिख रहे हैं?
वे मैदान छोड़कर भाग रहे हैं, उनके
योद्धा कुचल दिए गए हैं।
वे डर के मारे भाग गए हैं, उनके
योद्धा मुड़कर भी नहीं देखते।
चारों तरफ आतंक-ही-आतंक है।'
6 'न तेज़ दौड़नेवाले भाग पाएँगे,
न योद्धा बच सकेंगे।
उत्तर में, फरात नदी के किनारे
वे ठोकर खाकर गिर पड़े हैं।'[4]
7 यह कौन है जो नील नदी की तरह
उमड़ता हुआ आ रहा है,
उफनती नदियों की तरह बढ़ा आ
रहा है?
8 यह मिस्र है जो नील नदी की तरह
उमड़ता हुआ आ रहा है,[5]
उफनती नदियों की तरह बढ़ा आ
रहा है
और कहता है, 'मैं उमड़ पड़ूँगा,
सारी धरती ढाँप दूँगा।

अध्य. 44
1 2रा 25:7, यिर्म 34:21, यिर्म 39:5

अध्य. 45
2 यिर्म 25:1, यिर्म 36:1
3 यिर्म 32:12, यिर्म 43:3
4 यिर्म 36:4, 32
5 यश 5:5, यिर्म 1:1, 10
6 यश 66:16, यिर्म 25:17, 26, सप 3:8
7 यिर्म 21:9, यिर्म 39:18, यिर्म 43:6

अध्य. 46
8 यिर्म 1:10

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 25:15, 19, यहे 29:2, यहे 32:2
2 2रा 23:36, यिर्म 25:1, यिर्म 36:1
3 2इत 35:20
4 2रा 24:7
5 यहे 29:3, यहे 32:2

44:30; 46:2 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है। **45:5** *या "उम्मीद।" #शा., "लूट में तुझे अपनी जान मिलेगी।"

46:3 *ये ढालें अकसर तीरंदाज़ ढोते थे।

इस शहर और इसमें रहनेवालों को
नाश कर दूँगा।’
9 घोड़ो, आगे बढ़ो!
रथो, तेज़ी से दौड़ो!
योद्धाओं को आगे बढ़ने दो,
कूश और पुट को आगे बढ़ने दो,
जो ढाल पकड़े हुए हैं,[1]
लूदियों[2] को आगे बढ़ने दो, जो
कमान चढ़ाते और कुशलता से
तीर चलाते हैं।[3]

10 वह दिन सारे जहान के मालिक,
सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का दिन है,
जब वह अपने दुश्मनों से बदला लेगा।
तलवार उन्हें जी-भरकर खाएगी और
उनके खून से अपनी प्यास बुझाएगी,
क्योंकि सारे जहान के मालिक, सेनाओं के
परमेश्वर यहोवा ने उत्तर के देश में फरात
नदी[4] के किनारे एक बलिदान तैयार
किया है।

11 हे मिस्र की कुँवारी बेटी,
ऊपर गिलाद जाकर बलसाँ
ले आ।[5]
तू बेकार में इतने इलाज करा
रही है,
क्योंकि तेरी बीमारी की कोई दवा
नहीं।[6]
12 राष्ट्रों ने सुना है कि तेरी कितनी
बेइज़्ज़ती हुई है,[7]
तेरी चीख-पुकार देश-भर में गूँज
रही है।
योद्धा, योद्धा से ठोकर खाता है
और दोनों साथ गिर पड़ते हैं।”

13 यहोवा ने भविष्यवक्ता यिर्मयाह
को संदेश दिया कि बैबिलोन का राजा
नबूकदनेस्सर* मिस्र देश पर हमला
करने आ रहा है:[8]

14 “मिस्र में इसका ऐलान करो,
मिगदोल में सुनाओ।[1]
नोप* और तहपनहेस में सुनाओ।[2]
कहो, ‘अपनी-अपनी जगह तैनात
हो जाओ, तैयार हो जाओ,
क्योंकि एक तलवार तुम्हारे चारों
तरफ सबको खा जाएगी।
15 तेरे ताकतवर आदमी क्यों मिट
गए?
वे अपनी जगह टिक नहीं पाए,
क्योंकि यहोवा ने उन्हें धकेलकर
गिरा दिया।
16 उनकी भीड़-की-भीड़ ठोकर खाकर
गिर रही है।
वे एक-दूसरे से कह रहे हैं,
“उठो! आओ हम अपने लोगों के
पास, अपने देश लौट जाएँ
क्योंकि यह तलवार बहुत
भयानक है।”’
17 उन्होंने वहाँ ऐलान किया है,
‘मिस्र का राजा फिरौन बस
बड़बोला है,
उसने मौका* हाथ से गँवा
दिया है।’[3]
18 वह राजा, जिसका नाम सेनाओं
का परमेश्वर यहोवा है, ऐलान
करता है,
‘मैं अपने जीवन की शपथ खाकर
कहता हूँ,
उसका* आना ऐसा होगा, जैसे
पहाड़ों के बीच ताबोर है,[4]
समुंदर किनारे करमेल है।[5]
19 हे मिस्र में रहनेवाली बेटी,
बँधुआई में जाने के लिए अपना
सामान बाँध ले।

अध्य. 46
1 यहे 27:2, 10
2 उत 10:6, 13 यहे 30:4, 5
3 यश 66:19
4 2रा 24:7
5 उत 37:25 यिर्म 8:22
6 यहे 30:21
7 यहे 32:9
8 यिर्म 43:10 यहे 29:19 यहे 30:10

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 44:1 यहे 29:10 यहे 30:6
2 यिर्म 43:4, 7 यहे 30:18
3 यहे 29:3
4 यह 19:17, 22 न्या 4:6 भज 89:12
5 1रा 18:42

46:13 *शा., “नबूकदरेस्सर।” यह एक अलग वर्तनी है।

46:14 *या “मेम्फिस।” **46:17** *शा., “तय समय।” **46:18** *यानी मिस्र को जीतनेवाले का।

क्योंकि नोप* का ऐसा हश्र होगा
कि देखनेवालों का दिल दहल जाएगा,
इसे आग लगा दी जाएगी,# यहाँ कोई निवासी नहीं बचेगा।[1]
20 मिस्र एक सुंदर कलोर जैसी है,
मगर उत्तर से काटनेवाले कीड़े आकर उस पर टूट पड़ेंगे।
21 उसके किराए के सैनिक भी मोटे किए बछड़ों जैसे हैं,
मगर वे भी पीठ दिखाकर भाग गए।
वे अपनी जगह टिक नहीं पाए,[2]
क्योंकि उन पर संकट का दिन आ पड़ा है,
उनसे हिसाब लेने का समय आ गया है।'
22 'उसकी आवाज़ सरसराते हुए साँप की आवाज़ जैसी है,
क्योंकि वे कुल्हाड़ी लिए पूरे दमखम के साथ आ रहे हैं,
पेड़ काटनेवालों* की तरह आ रहे हैं।'
23 यहोवा ऐलान करता है, 'वे उसका जंगल काट डालेंगे,
फिर चाहे वह कितना ही घना क्यों न हो।
क्योंकि वे बेशुमार हैं, उनकी तादाद टिड्डियों से कहीं ज़्यादा है।
24 मिस्र की बेटी शर्मिंदा की जाएगी।
उसे उत्तर के लोगों के हवाले कर दिया जाएगा।'[3]

25 सेनाओं का परमेश्वर और इस-
राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है,
'अब मैं नो* शहर[1] के आमोन देवता
पर,[2] फिरौन पर, मिस्र पर, उसके देव-
ताओं[3] और राजाओं पर, हाँ,
फिरौन और उस पर भरोसा करनेवाले
सब लोगों पर ध्यान दूँगा।'[4]
26 यहोवा ऐलान करता है, 'मैं उन्हें
उन लोगों के हवाले कर दूँगा जो उनकी
जान के पीछे पड़े हैं। मैं उन्हें बैबिलोन के
राजा नबूकदनेस्सर* और उसके सेवकों
के हवाले कर दूँगा।[5] मगर बाद में वह
फिर से आबाद होगी, जैसे गुज़रे वक्त
में थी।'[6]

27 'मगर मेरे सेवक याकूब, तू मत डर,
इसराएल, तू मत घबरा।[7]
क्योंकि मैं तुझे दूर देश से छुड़ा लूँगा,
तेरे वंश को बँधुआई के देश से निकाल लाऊँगा।[8]
याकूब वापस आएगा, वह चैन से रहेगा और उसे कोई खतरा नहीं होगा,
उसे कोई नहीं डराएगा।'[9]
28 यहोवा ऐलान करता है, 'इसलिए मेरे सेवक याकूब, तू मत डर, मैं तेरे साथ हूँ।
मैं उन सभी राष्ट्रों को मिटा दूँगा जहाँ मैंने तुझे तितर-बितर कर दिया था,[10]
मगर तुझे नहीं मिटाऊँगा।[11]
मैं तुझे सुधारने के लिए
उतनी फटकार लगाऊँगा जितनी सही है,[12]
मगर तुझे सज़ा दिए बिना हरगिज़ न छोड़ूँगा।'"

46:19 *या "मेम्फिस।" #या शायद, "यह बंजर ज़मीन बन जाएगी।" 46:22 *या "लकड़ियाँ इकट्ठी करनेवालों।"

46:25 *यानी थीबीज़। 46:26 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

अध्य. 46
1 यहे 32:15
2 यिर्म 46:5, 15
3 यहे 30:10

दूसरा कॉल.
1 यहे 30:14
2 नहू 3:8
3 निर्ग 12:12; यश 19:1; यिर्म 43:12, 13
4 यिर्म 17:5; यिर्म 42:14
5 यिर्म 43:10, 11; यहे 32:11
6 यहे 29:13, 14
7 यश 41:13; यश 43:1, 2; यश 44:2
8 यश 11:11; यिर्म 50:19; यहे 39:27; आम 9:14; सप 3:20
9 यिर्म 23:3, 6; यिर्म 30:10, 11
10 यिर्म 25:9
11 यिर्म 5:10; आम 9:8
12 यिर्म 10:24

47 यहोवा का यह संदेश भविष्य-
वक्ता यिर्मयाह के पास पहुँचा,
जो पलिश्‍तियों के बारे में है।[1] यह संदेश
गाज़ा पर फिरौन के हमले से पहले दिया
गया था। 2 यहोवा कहता है,

“देख! उत्तर से पानी उमड़ता आ
रहा है।
उससे ज़बरदस्त बाढ़ आ जाएगी।
वह पूरे देश और उसमें जो कुछ है,
उसे डुबा देगा,
शहर और उसके निवासियों को
डुबा देगा।
लोगों में हाहाकार मच जाएगा,
देश में रहनेवाला हर कोई ज़ोर-ज़ोर
से रोएगा।
3 जब उसके घोड़ों का दौड़ना सुनायी
देगा,
उसके युद्ध-रथों की खड़खड़ाहट
सुनायी देगी,
उसके पहियों की घड़घड़ाहट सुनायी
देगी,
तो पिता ऐसे भागेंगे कि पीछे मुड़-
कर अपने बेटों को भी नहीं
देखेंगे,
क्योंकि उनके हाथ ढीले पड़
जाएँगे।
4 वह दिन आ रहा है जब
सारे पलिश्‍तियों का नाश किया
जाएगा,[2]
सोर[3] और सीदोन[4] का बचा
हुआ हर संधि-देश मिटा दिया
जाएगा।
क्योंकि यहोवा पलिश्‍तियों का नाश
कर देगा,
जो कप्तोर* द्वीप से आए लोगों में
से बचे हुए हैं।[5]
5 गाज़ा अपना सिर मुँड़ाएगा।*
अश्‍कलोन को खामोश कर दिया
गया है।[1]
उनकी घाटी के मैदान में बचे हुए
लोगो,
तुम कब तक अपने शरीर पर घाव
करते रहोगे?[2]
6 हे यहोवा की तलवार,[3] तू कब
शांत होगी?
अपनी म्यान में लौट जा।
आराम कर और चुप रह।
7 यह कैसे चुप रह सकती है, जब इसे
यहोवा ने आज्ञा दी है?
उसने इसे अश्‍कलोन और
समुंदर किनारे के इलाके में
भेजा है[4]
कि उन्हें नाश करे।”

48 मोआब[5] के बारे में सेनाओं
का परमेश्‍वर और इसराएल का
परमेश्‍वर यहोवा कहता है,

“हाय, नबो[6] का कितना बुरा हुआ
है! उसे नाश किया गया है!
किरयातैम[7] को शर्मिंदा किया
गया है, उस पर कब्ज़ा कर लिया
गया है।
ऊँचे गढ़ को शर्मिंदा किया गया है,
उसे चूर-चूर किया गया है।[8]
2 मोआब की अब और बड़ाई नहीं
होती।
हेशबोन[9] में दुश्‍मनों ने उसे गिराने
की साज़िश रची है:
‘आओ, हम उस राष्ट्र को
मिटा दें।’
हे मदमेन, तू भी चुप रह

अध्य. 47
1 यिर्म 25:17, 20; यहे 25:15, 16; आम 1:6; सप 2:4; जक 9:5, 6
2 यिर्म 25:17, 20; आम 1:8; सप 2:5
3 यहे 26:2; आम 1:9, 10
4 यश 23:1, 4; यिर्म 25:17, 22; यिर्म 27:2, 3; यहे 28:21; योए 3:4
5 उत 10:13, 14; व्य 2:23

दूसरा कॉल.
1 सप 2:4
2 व्य 14:1; यिर्म 16:6
3 व्य 32:41
4 यहे 25:16

अध्य. 48
5 उत 19:36, 37; यश 15:1
6 गि 32:37, 38
7 यह 13:15, 19; यहे 25:9
8 यश 15:2
9 गि 32:37; यश 16:8

47:4 *यानी क्रेते।

47:5 *यानी वे मातम और शर्म की वजह से अपना सिर मुँड़ा लेंगे।

क्योंकि तलवार तेरा पीछा कर
रही है।
3 होरोनैम[1] से चीख-पुकार सुनायी दे
रही है,
नाश और बड़ी तबाही का शोर
सुनायी दे रहा है।
4 मोआब नाश कर दी गयी है।
उसके बच्चे चिल्ला रहे हैं।
5 वे रोते हुए लूहीत की चढ़ाई चढ़
रहे हैं।
होरोनैम से नीचे उतरते वक्त उन्हें
विनाश का हाहाकार सुनायी दे
रहा है।[2]
6 भागो! अपनी जान बचाकर भागो!
तुम वीराने के सनोवर जैसे बन
जाओगे।
7 तुम अपने कामों और खज़ानों पर
भरोसा रखते हो,
इसलिए तुम पर भी कब्ज़ा कर
लिया जाएगा।
कमोश[3] बँधुआई में चला जाएगा,
उसके साथ-साथ उसके पुजारी और
हाकिम भी जाएँगे।
8 नाश करनेवाला हर शहर पर
हमला करेगा,
एक भी शहर नहीं बचेगा।[4]
घाटी नाश हो जाएगी,
पठारी इलाका मिट जाएगा, ठीक
जैसे यहोवा ने कहा है।
9 मोआब को रास्ता दिखानेवाली
निशानी खड़ी करो,
क्योंकि जब वह नाश होकर खंडहर
बन जाएगी तो उसके लोग
भागेंगे,
उसके शहरों का ऐसा हश्र होगा
कि देखनेवालों का दिल दहल
जाएगा,

अध्य. 48

1 यश 15:5
यिर्म 48:34

2 यश 15:5

3 गि 21:29
1रा 11:7

4 यहे 25:9

दूसरा कॉल.

1 सप 2:9

2 1रा 12:28, 29
हो 10:15
आम 5:5

3 यश 16:6

4 भज 24:8

5 यिर्म 48:8

6 यश 34:2

उनमें एक भी निवासी नहीं रहेगा।[1]
10 शापित है वह जो यहोवा का
दिया काम करने में ढिलाई
बरतता है!
शापित है वह जो अपनी तलवार
को खून बहाने से रोकता है!
11 मोआबी लोगों को उनके बचपन से
किसी ने हाथ नहीं लगाया है,
उस दाख-मदिरा की तरह जिसके
नीचे मैल जम गया है।
उन्हें एक बरतन से दूसरे बरतन में
नहीं उँडेला गया
और वे कभी बँधुआई में नहीं गए।
इसलिए उनका स्वाद
वैसे-का-वैसा ही है
और उनकी गंध नहीं बदली है।

12 यहोवा ऐलान करता है, 'इसलिए
देख! वे दिन आ रहे हैं जब मैं उन्हें
पलटने के लिए आदमी भेजूँगा। वे उन्हें
पलट देंगे और उनके बरतन खाली कर
देंगे और बड़े-बड़े मटके चूर-चूर कर देंगे।
13 मोआबियों को कमोश की वजह से
शर्मिंदा होना पड़ेगा, जैसे इसराएल का
घराना बेतेल की वजह से शर्मिंदा है, जिस
पर उसे भरोसा था।[2]

14 तुमने यह कहने की हिम्मत कैसे
की, "हम वीर योद्धा हैं, युद्ध के
लिए तैयार हैं"?'[3]
15 वह राजा, जिसका नाम सेनाओं
का परमेश्वर यहोवा है, ऐलान
करता है,[4]
'मोआब नाश कर दिया गया है,
दुश्मन उसके शहरों में घुस गए हैं,[5]
उसके सबसे काबिल जवानों का
कत्ल कर दिया गया है।'[6]
16 मोआबियों पर बहुत जल्द मुसीबत
आनेवाली है,

उनके गिरने का समय तेज़ी से पास
आ रहा है।[1]
17 उनके आस-पासवालों और उनका
नाम जाननेवालों को
उनके साथ हमदर्दी जतानी होगी।
उनसे कहो, 'हाय, यह ताकतवर
छड़ी, गौरवशाली लाठी कैसे तोड़
दी गयी है!'
18 दीबोन[2] में रहनेवाली बेटी,
तू शोहरत की बुलंदियों से नीचे आ,
प्यासी* बैठी रह,
क्योंकि मोआब को नाश करनेवाला
तुझ पर हमला करने आ गया है,
वह तेरी किलेबंद जगहों को नाश
कर देगा।[3]
19 अरोएर[4] के रहनेवाले, सड़क
किनारे खड़े होकर नज़र रख,
भागनेवाले आदमी और बचकर
निकलनेवाली औरत से पूछ,
'क्या हुआ?'
20 मोआब को शर्मिंदा किया गया है,
उस पर खौफ छा गया है।
ज़ोर-ज़ोर से रोओ और चिल्लाओ।
अरनोन[5] में ऐलान करो कि मोआब
को नाश कर दिया गया है।

21 पठारी इलाके की इन जगहों को
सज़ा सुनायी गयी है:[6] होलोन, यहस[7]
और मेपात,[8] 22 दीबोन,[9] नबो[10]
और बेत-दिबलातैम, 23 किरयातैम,[11]
बेत-गामूल और बेत-मोन,[12] 24 करि-
योत[13] और बोसरा और मोआब देश के
सभी शहर, फिर चाहे वे पास के हों या
दूर के।

25 यहोवा ऐलान करता है, 'मोआब
का सींग* काट दिया गया है,
उसका बाज़ू तोड़ दिया गया है।'
26 'उसे खूब मदिरा पिलाकर मदहोश
कर दो[1] क्योंकि उसने यहोवा के
खिलाफ जाकर खुद को ऊँचा
किया है।[2]
मोआब अपनी उलटी में लोटता है,
उसकी खिल्ली उड़ायी जा रही है।
27 क्या तूने इसराएल की खिल्ली नहीं
उड़ायी थी?[3]
क्या वह चोरों के बीच पकड़ा
गया था,
जो तूने उसे नीचा दिखाते हुए
सिर हिलाया और उसके खिलाफ
बातें कीं?
28 मोआब के निवासियो, उसके शहर
छोड़ दो और चट्टान पर जाकर
रहो,
फाख्ते की तरह बन जाओ जो
तंग घाटी के किनारों पर घोंसला
बनाती है।'"
29 "हमने मोआब के घमंड के बारे में
सुना है, वह कितना मगरूर है,
वह हेकड़ीबाज़, घमंडी और मगरूर
है, उसका मन घमंड से फूल
गया है।"[4]
30 "यहोवा ऐलान करता है, 'मैं उसका
क्रोध जानता हूँ,
मगर उसकी खोखली बातें बेकार
साबित होंगी।
वे कुछ नहीं करेंगे।
31 इसीलिए मैं मोआब के लिए बिलख-
बिलखकर रोऊँगा,
पूरे मोआब के लिए चिल्ला-चिल्ला-
कर रोऊँगा,
कीर-हेरेस के लोगों के लिए मातम
मनाऊँगा।[5]
32 हे सिबमा[6] के अंगूर की बेल, मैं
याजेर[7] के लिए जितना रोया,

48:18 *या शायद, "सूखी ज़मीन पर।"
48:25 *या "ताकत।"

अध्य. 48
1 यहे 25:11
2 गि 21:30 यह 13:15, 17 यश 15:2
3 यिर्म 48:8
4 गि 32:34 व्य 2:36
5 गि 21:13 यह 13:8, 9
6 सप 2:9
7 गि 21:23 यश 15:4
8 यह 13:15, 18
9 गि 32:34
10 गि 32:3, 4
11 गि 32:37 यिर्म 48:1
12 गि 32:37, 38 यह 13:15, 17 यहे 25:9
13 आम 2:2

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 25:15, 16
2 यिर्म 48:42
3 विल 2:15 सप 2:8
4 यश 16:6 यश 25:10, 11 सप 2:9, 10
5 2रा 3:24, 25 यश 16:7
6 गि 32:37, 38 यह 13:15, 19
7 गि 21:32 गि 32:34, 35 यह 21:8, 39

उससे कहीं ज़्यादा तेरे लिए
रोऊँगा।
तेरी फलती-फूलती डालियाँ समुंदर
पार तक फैल गयी हैं,
समुंदर तक, याजेर तक पहुँच
गयी हैं।
नाश करनेवाला तेरे गरमियों के
फलों और
तेरे अंगूर की फसलों पर टूट
पड़ा है।[1]
33 तेरे बाग और मोआब देश से
खुशियाँ छीन ली गयी हैं,
वहाँ जश्न मनाना बंद कर दिया
गया है।[2]
मैंने तेरे अंगूर रौंदने के हौद से
दाख-मदिरा का बहना बंद करा
दिया है।
अब से कोई खुशी से चिल्लाता हुआ
अंगूर नहीं रौंदेगा।
अब उनका चिल्लाना कुछ और ही
चिल्लाना होगा।'"[3]
34 "'हेशबोन[4] से एलाले[5] तक चीख-
पुकार सुनायी दे रही है।
वे इतनी ज़ोर से चिल्लाते हैं कि
यहस[6] तक सुनायी देता है,
सोआर से होरोनैम[7] और
एगलत-शलिशीयाह तक सुनायी
देता है।
निमरीम की धाराएँ भी सूख
जाएँगी।'[8]
35 यहोवा ऐलान करता है, 'मैं मोआब
का ऐसा हाल कर दूँगा
कि वहाँ न तो ऊँची जगह पर
चढ़ावा अर्पित करनेवाला कोई
होगा,
न ही अपने देवता के लिए बलिदान
चढ़ानेवाला कोई होगा।

अध्य. 48
1 यश 16:8, 9 यिर्म 48:8
2 यिर्म 25:10
3 यश 16:10
4 गि 21:25 यह 13:15, 17
5 गि 32:37 यश 16:9
6 गि 21:23
7 यिर्म 48:2, 3
8 यश 15:4-6

दूसरा कॉल.
1 यश 16:11
2 यिर्म 16:6
3 लैव 19:28
4 उत 37:34 यश 15:2, 3
5 विल 4:19 हब 1:8
6 यिर्म 49:22

36 इसलिए मेरा दिल एक बाँसुरी* की
तरह मोआब के लिए रोएगा,#[1]
मेरा दिल एक बाँसुरी* की तरह
कीर-हेरेस के लोगों के लिए
रोएगा।#
क्योंकि उनकी पैदा की हुई दौलत
नाश हो जाएगी।
37 हर किसी का सिर मुँड़ा हुआ है,[2]
दाढ़ी कटी हुई है।
हर किसी का हाथ चिरा हुआ है[3]
और उनकी कमर पर टाट बँधा
हुआ है!'"[4]
38 "यहोवा ऐलान करता है, 'मोआब
की सभी छतों पर,
उसके सभी चौकों पर, रोने-
बिलखने के सिवा कुछ नहीं है।
क्योंकि मैंने मोआब को ऐसे घड़े की
तरह चूर-चूर कर दिया है,
जो किसी काम का नहीं।'
39 'देखो, वह कितना घबराया हुआ है!
ज़ोर-ज़ोर से रोओ!
मोआब ने शर्म से अपनी पीठ फेर
ली है!
मोआब मज़ाक बन गया है,
उसका ऐसा हश्र हुआ कि आस-पास
के देखनेवाले डर गए हैं।'"
40 "यहोवा कहता है,
'देखो! जैसे एक उकाब शिकार पर
झपटता है,[5]
वैसे ही वह अपना पंख फैलाकर
मोआब पर टूट पड़ेगा।[6]
41 उसके नगरों को जीत लिया जाएगा,
उसके मज़बूत गढ़ों पर कब्ज़ा कर
लिया जाएगा।

48:36 *यानी किसी की मौत पर मातम में बजायी जानेवाली बाँसुरी। #या "होहल्ला मचाएगा।"

उस दिन मोआब के योद्धाओं का
दिल डर से ऐसे काँपेगा,
जैसे बच्चा जननेवाली औरत का
दिल काँपता है।'"
42 "'मोआब को ऐसे नाश कर दिया
जाएगा कि वह एक राष्ट्र नहीं
रहेगा,[1]
क्योंकि उसने यहोवा के
खिलाफ जाकर खुद को
ऊँचा किया।'[2]
43 यहोवा ऐलान करता है, 'हे मोआब
के निवासी,
तेरे आगे खौफ, गड्ढा और
फंदा है।'
44 यहोवा ऐलान करता है, 'जो कोई
खौफ से भागेगा वह गड्ढे में जा
गिरेगा,
गड्ढे से निकलकर जो ऊपर
आएगा वह फंदे में फँस जाएगा।
क्योंकि वह साल आ रहा है जब
मैं मोआब के लोगों को सज़ा
दूँगा।'
45 'भागनेवाले, हेशबोन की परछाईं में
लाचार खड़े रहेंगे।
क्योंकि हेशबोन से आग निकलेगी,
सीहोन के बीच से ज्वाला
भड़केगी।[3]
यह आग मोआब का माथा जला
देगी,
हुल्लड़ मचानेवालों की खोपड़ी जला
देगी।'[4]
46 'हे मोआब, तेरा कितना बुरा हुआ!
कमोश के लोग नाश हो गए।[5]
तेरे बेटे बंदी बना लिए गए
और तेरी बेटियाँ बँधुआई में चली
गयीं।[6]
47 मगर मैं आखिरी दिनों में मोआब
के बंदी लोगों को इकट्ठा

अध्य. 48
1 यिर्म 30:11
2 यिर्म 48:29
3 गि 21:26, 28
4 गि 24:17, आम 2:2
5 गि 21:29, 1रा 11:7
6 यिर्म 48:7

दूसरा कॉल.
1 यहे 25:11

अध्य. 49
2 उत 19:36, 38, व्य 2:19, 2इत 20:1
3 1रा 11:5, सप 1:4, 5
4 आम 1:13
5 यहे 21:19, 20
6 व्य 3:11, यह 13:24, 25, यहे 25:5, आम 1:14
7 यश 14:2, यिर्म 50:19, सप 2:9

करूँगा।' यहोवा का यह
ऐलान है।
'इसी से मोआब के लिए न्याय का
संदेश खत्म होता है।'"[1]

49 अम्मोनियों[2] के लिए यहोवा का
यह संदेश है:
"क्या इसराएल का कोई बेटा
नहीं है?
क्या उसका कोई वारिस नहीं है?
तो फिर मलकाम[3] ने क्यों गाद पर
अधिकार कर लिया है?[4]
क्यों उसके लोग इसराएल के शहरों
में रह रहे हैं?"
2 "यहोवा ऐलान करता है, 'इसलिए
देखो! वे दिन आ रहे हैं,
जब मैं अम्मोनियों[5] की रब्बाह
नगरी[6] को युद्ध का बिगुल*
सुनवाऊँगा।
वह उजड़ जाएगी, वहाँ बस एक
टीला रह जाएगा।
उसके आस-पास के नगरों में आग
लगा दी जाएगी।'
यहोवा कहता है, 'और इसराएल
उनके देश पर कब्ज़ा कर लेगा,
जिन्होंने उसका देश ले लिया
था।'[7]
3 'हे हेशबोन, बिलख-बिलखकर रो
क्योंकि ऐ को नाश कर दिया
गया है!
रब्बाह के आस-पास के नगरो,
चिल्ला-चिल्लाकर रोओ।
टाट ओढ़ लो।
बिलख-बिलखकर रोओ और पत्थर
के बाड़ों* में इधर-उधर फिरो,
क्योंकि मलकाम बँधुआई में चला
जाएगा,

49:2 *या शायद, "युद्ध की ललकार।"
49:3 *या "भेड़शालाओं।"

उसके साथ-साथ उसके पुजारी और
हाकिम भी जाएँगे।[1]
4 हे विश्वासघाती बेटी, तू जो
अपने खज़ानों पर भरोसा
करती है
और कहती है, "मुझ पर कौन
हमला करेगा?"
तू क्यों अपनी घाटियों पर
और उस मैदान पर शेखी मारती
है जहाँ पानी की धाराएँ
बहती हैं?'"
5 "सारे जहान का मालिक और
सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
ऐलान करता है,
'मैं तेरे चारों तरफ के लोगों को
भेजकर
तुझ पर एक भयानक कहर ढाने-
वाला हूँ।
तू हर दिशा में तितर-बितर कर दी
जाएगी
और भागनेवालों को कोई इकट्ठा
नहीं करेगा।'"
6 "यहोवा ऐलान करता है, 'मगर मैं
बाद में अम्मोनियों के बंदी लोगों
को इकट्ठा करूँगा।'"

7 एदोम के लिए सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा का यह संदेश है:
"क्या तेमान[2] में बुद्धि का अकाल
पड़ गया है?
क्या ज्ञानियों के पास बढ़िया सलाह
नहीं रही?
क्या उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है?
8 हे ददान[3] के निवासियो, मुड़कर
भागो!
जाकर खाइयों में छिप जाओ!
क्योंकि जब एसाव पर ध्यान देने
का समय आएगा,

अध्य. 49
1 आम 1:13, 15
2 उत 36:10, 11; यहे 25:13; आम 1:12; ओब 8
3 यश 21:13; यिर्म 25:17, 23

दूसरा कॉल.
1 ओब 5
2 ओब 6, 9
3 मला 1:3, 4
4 यिर्म 25:27, 28; विल 4:21; ओब 16
5 यश 34:6; यश 63:1; यिर्म 49:22; आम 1:12
6 ओब 18; मला 1:3

तो मैं उस पर मुसीबत लाऊँगा।
9 जब अंगूर बटोरनेवाले तुम्हारे पास
आते हैं,
तो बीननेवालों के लिए कुछ अंगूर
ज़रूर छोड़ जाते हैं।
जब रात को चोर आते हैं,
तो वे सिर्फ उतना माल चुरा ले जाते
हैं जितना वे चाहते हैं।[1]
10 मगर मैं एसाव को बिलकुल खाली
कर दूँगा।
मैं दिखा दूँगा कि उसके छिपने की
जगह कहाँ-कहाँ हैं
ताकि वह कहीं छिप न सके।
उसके बच्चे, भाई, पड़ोसी, सब
नाश कर दिए जाएँगे[2]
और उसका नामो-निशान मिट
जाएगा।[3]
11 तुममें जो अनाथ हैं* उन्हें छोड़ दो,
मैं उनकी जान की हिफाज़त करूँगा
और तुममें जो विधवाएँ हैं वे मुझ
पर भरोसा रखेंगी।"

12 यहोवा कहता है, "देखो! जब
उन लोगों को प्याला पीना पड़ेगा जिन्हें
प्याला पीने की सज़ा नहीं सुनायी गयी,
तो तू कैसे सज़ा से बच सकता है? तू सज़ा
से हरगिज़ नहीं बचेगा, तुझे प्याला पीना
ही पड़ेगा।"[4]

13 यहोवा ऐलान करता है, "मैं अपने
जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ,
बोसरा का ऐसा हश्र होगा कि देखनेवालों
का दिल दहल जाएगा,[5] उसकी बदनामी
होगी, वह उजड़ जाएगी, शापित ठहरेगी
और उसके सभी शहर हमेशा के लिए
खंडहर बन जाएँगे।"[6]

14 मैंने यहोवा से एक खबर सुनी है,

49:11 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।"

राष्ट्रों में एक दूत भेजा गया है जो
उनसे कहता है,
“तुम सब इकट्ठा हो जाओ, उस पर
हमला करो,
युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।”[1]
15 “क्योंकि देख! मैंने तुझे राष्ट्रों में
छोटा कर दिया है,
इंसानों में तुच्छ बना दिया है।[2]
16 तू जो चट्टान की दरारों में महफूज़
बसी है,
सबसे ऊँची पहाड़ी पर रहती है,
तेरे फैलाए खौफ ने
और तेरे गुस्ताख दिल ने तुझे धोखा
दिया है।
तूने उकाब की तरह ऊँचाई पर
अपना घोंसला बनाया है,
फिर भी मैं तुझे वहाँ से नीचे गिरा
दूँगा।” यहोवा का यह ऐलान है।

17 “एदोम का ऐसा हश्र होगा कि
देखनेवालों का दिल दहल जाएगा।[3]
उसके पास से गुज़रनेवाला हर कोई डर
जाएगा और उसकी सारी विपत्तियों की
वजह से मज़ाक उड़ाते हुए सीटी बजाए-
गा। 18 सदोम, अमोरा और उनके
आस-पास के नगरों का नाश के
बाद जो हाल हुआ,[4] वही एदोम का भी
होगा। उसमें कोई नहीं रहेगा, कोई वहाँ
जाकर नहीं बसेगा।” यह बात यहोवा ने
कही है।[5]

19 “देख! इन महफूज़ चरागाहों पर
हमला करने कोई आएगा। वह ऐसे
आएगा जैसे यरदन के पासवाली घनी
झाड़ियों में से एक शेर निकलकर आता
है।[6] मैं उसे* एक ही पल में उसके
सामने से भगा दूँगा। मैं अपने चुने हुए
जन को उस पर ठहराऊँगा। क्योंकि मेरे
जैसा कौन है और कौन मुझे चुनौती दे
सकता है? कौन चरवाहा मेरे सामने टिक
पाएगा?[1] 20 इसलिए लोगो, सुनो कि
यहोवा ने एदोम के खिलाफ क्या फैसला*
किया है और तेमान[2] के निवासियों के
साथ क्या करने की सोची है:

बेशक, झुंड के मेम्नों को घसीटकर
ले जाया जाएगा।
वह उनकी वजह से उनका चरागाह
उजाड़ देगा।[3]
21 उनके गिरने के धमाके से धरती
काँप उठी है।
चीख-पुकार मच गयी है!
यह आवाज़ दूर लाल सागर तक
सुनायी पड़ी है।[4]
22 देखो! जैसे एक उकाब ऊपर उड़ता
और फिर नीचे अपने शिकार पर
झपटता है,[5]
वैसे ही वह अपना पंख फैलाकर
बोसरा पर टूट पड़ेगा।[6]
उस दिन एदोम के योद्धाओं का
दिल डर से ऐसे काँपेगा,
जैसे बच्चा जननेवाली औरत का
दिल काँपता है।”
23 दमिश्क के लिए यह संदेश है:[7]
“हमात[8] और अरपाद शर्मिंदा किए
गए हैं,
क्योंकि उन्होंने एक बुरी खबर
सुनी है।
डर से उनका हौसला टूट गया है।
समुंदर में ऐसी हलचल मची है जो
थम नहीं सकती।
24 दमिश्क हिम्मत हार बैठी है।
वह भागने के लिए मुड़ी, मगर
उसमें खौफ समा गया।

49:19 *शायद यहाँ एदोम की बात की गयी है।

49:20 *या “मकसद।”

अध्य. 49
1 ओब 1
2 ओब 2-4
3 यिर्म 49:13
4 उत 19:24, 25
5 यश 34:6, 10
6 यिर्म 4:7

दूसरा कॉल.
1 भज 76:7
यिर्म 50:44-46
नहू 1:6
2 ओब 9
3 मला 1:4
4 1रा 9:26
5 यिर्म 4:13
6 यिर्म 48:40
यिर्म 49:13
7 यश 17:1
आम 1:3
8 गि 13:21
2रा 17:24
जक 9:1, 2

दुख और दर्द ने उसे जकड़
लिया है,
जैसे बच्चा जननेवाली औरत को
जकड़ लेता है।
25 इस गौरवशाली शहर को, खुशियों
की नगरी को
लोग छोड़कर क्यों नहीं भागे?
26 उस दिन उसके चौकों पर जवान ढेर
हो जाएँगे,
सारे सैनिक नाश हो जाएँगे।"
सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का
यह ऐलान है।
27 "मैं दमिश्क की शहरपनाह को
आग लगा दूँगा,
यह आग बेन-हदद की किलेबंद
मीनारों को भस्म कर देगी।"[1]

28 केदार[2] के बारे में और हासोर के
राज्यों के बारे में, जिन्हें बैबिलोन के राजा
नबूकदनेस्सर* ने जीत लिया था, यहोवा
का यह संदेश है:

"उठो, केदार जाओ,
पूरब के बेटों को नाश कर दो।
29 उनके तंबू और झुंड ले लिए जाएँगे,
उनके तंबू के कपड़े और उनका
सारा माल छीन लिया जाएगा।
उनके ऊँट ले लिए जाएँगे,
वे चिल्लाकर केदार के लोगों
से कहेंगे, 'चारों तरफ आतंक-ही-
आतंक है!'"
30 यहोवा ऐलान करता है, "हासोर के
निवासियो,
भागो, दूर भागो! खाइयों में जाकर
छिप जाओ।
क्योंकि बैबिलोन के राजा नबूकद-
नेस्सर* ने तुम्हारे खिलाफ एक
रणनीति सोची है,
तुझे तबाह करने की योजना
बनायी है।"
31 यहोवा ऐलान करता है, "उठो, उस
राष्ट्र पर हमला करो
जो चैन से रह रहा है, महफ़ूज़ बसा
हुआ है!
उसके न दरवाज़े हैं न बेड़े, वे
अलग-थलग रहते हैं।"
32 यहोवा ऐलान करता है, "उनके
ऊँट लूट लिए जाएँगे,
उनके जानवरों के बड़े-बड़े झुंड लूट
लिए जाएँगे।
जो लोग अपनी कलमें मुँड़ा
लेते हैं,[1]
मैं उन्हें हर हवा में* बिखरा दूँगा
और हर दिशा से उन पर मुसीबत
ले आऊँगा।
33 हासोर, गीदड़ों की माँद बन
जाएगी,
हमेशा के लिए उजाड़ पड़ी रहेगी।
वहाँ कोई नहीं रहेगा,
कोई नहीं बसेगा।"

34 यहूदा के राजा सिदकियाह के
राज की शुरूआत[2] में एलाम के बारे
में यहोवा का यह संदेश भविष्यवक्ता
यिर्मयाह के पास पहुँचा:[3] 35 "सेनाओं
का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मैं एलाम
की कमान तोड़नेवाला हूँ,[4] जिससे उन्हें
ताकत मिलती है। 36 मैं एलाम पर
आकाश के चारों कोनों से चार हवाएँ
बहाऊँगा और उन्हें उन हवाओं में बिखरा
दूँगा। ऐसा एक भी राष्ट्र नहीं होगा, जहाँ
एलाम के बिखरे हुए लोग नहीं जाएँगे।'"

37 यहोवा ऐलान करता है, "मैं
एलाम के लोगों को उनके दुश्मनों के
सामने और उन लोगों के सामने चूर-चूर

अध्य. 49
1 आम 1:4
2 उत 25:13; यश 42:11; यश 60:7; यहे 27:21

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 9:25, 26; यिर्म 25:17, 23
2 2रा 24:18
3 उत 10:22; यश 21:2; यिर्म 25:17, 25; यहे 32:24; दान 8:2; प्रेष 2:8, 9
4 यश 22:6

49:28, 30 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

49:32 *या "हर दिशा में।"

कर दूँगा जो उनकी जान के पीछे पड़े हैं।
मैं उन पर विपत्ति ले आऊँगा, अपने क्रोध
की आग भड़काऊँगा। और मैं उनके पीछे
तलवार भेजूँगा और उन पर तब तक
वार करता रहूँगा जब तक कि मैं उनका
सफाया न कर दूँ।”
38 यहोवा ऐलान करता है, “मैं
अपनी राजगद्दी एलाम में रखूँगा[1] और
वहाँ के राजा और हाकिमों को नाश कर
दूँगा।”
39 यहोवा ऐलान करता है, “मगर मैं
आखिरी दिनों में एलाम के बंदी लोगों को
इकट्ठा करूँगा।”

50 यहोवा ने भविष्यवक्ता यिर्मयाह
के ज़रिए बैबिलोन और कस-
दियों के देश के बारे में जो संदेश दिया,[2]
वह यह है:

2 “राष्ट्रों में इसका ऐलान करो, इसके
बारे में सुनाओ।
झंडा खड़ा करो और इसके बारे में
सुनाओ।
कुछ भी मत छिपाओ!
बताओ, ‘बैबिलोन पर कब्ज़ा कर
लिया गया है।[3]
बेल को शर्मिंदा किया गया है।[4]
मरोदक खौफ में है।
बैबिलोन की मूरतें शर्मिंदा की
गयी हैं।
उसकी घिनौनी मूरतें* खौफ में हैं।’
3 क्योंकि उस पर उत्तर के एक राष्ट्र
ने हमला किया है।[5]
उसने उसके देश का ऐसा हाल कर
दिया है कि देखनेवालों का दिल
दहल जाता है,
उसमें कोई नहीं रहता।
इंसान और जानवर, दोनों भाग
गए हैं,
वे वहाँ से चले गए हैं।”

4 यहोवा ऐलान करता है, “उन दिनों
इसराएल के लोग और यहूदा के लोग
एक-साथ आएँगे।[1] वे रोते-रोते चलेंगे[2]
और मिलकर अपने परमेश्वर यहोवा की
खोज करेंगे।[3] 5 वे सिय्योन की तरफ
मुँह करके उसका रास्ता पूछेंगे[4] और
कहेंगे, ‘आओ, हम सब मिलकर यहोवा
के साथ सदा का करार करें जो कभी नहीं
भुलाया जाएगा।’[5] 6 मेरे लोग उन
भेड़ों की तरह हो गए हैं जो खो गयी हैं।[6]
उनके चरवाहों ने उन्हें भटका दिया है।[7]
वे उन्हें पहाड़ों पर ले गए। भेड़ें एक पहाड़
से दूसरे पहाड़ पर भटक रही हैं। वे अपने
आराम की जगह भूल गयी हैं। 7 जिन-
जिन को वे मिलीं, उन्होंने उन्हें खा लिया[8]
और उनके दुश्मनों ने कहा, ‘हम दोषी
नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने यहोवा के खिलाफ
पाप किया जिसमें नेकी वास करती है।
उन्होंने यहोवा के खिलाफ पाप किया है
जो उनके पुरखों की आशा है।’”

8 “बैबिलोन से भाग जाओ,
कसदियों के देश से निकल जाओ[9]
और झुंड के आगे-आगे चलनेवाले
बकरों और मेढ़ों जैसे बन जाओ।
9 मैं उत्तर से बड़े-बड़े राष्ट्रों से
मिलकर बनी एक सेना को उभार
रहा हूँ,
उसे बैबिलोन पर हमला करने के
लिए ला रहा हूँ।[10]
वे दल बाँधकर उस पर हमला
करेंगे।

50:2 *इनका इब्रानी शब्द शायद “मल” के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

अध्य. 49
1 यिर्म 25:17, 25

अध्य. 50
2 यश 13:1
3 यिर्म 51:8; प्रक 14:8
4 यश 46:1; यिर्म 51:44
5 यश 13:17; यिर्म 51:11, 48

दूसरा कॉल.
1 यश 11:12; यिर्म 3:18; हो 1:11
2 यिर्म 31:8, 9
3 हो 3:5
4 यश 35:10
5 यिर्म 31:31
6 यश 53:6
7 यिर्म 10:21; यिर्म 23:2; यहे 34:2, 6
8 भज 79:6, 7
9 यश 48:20; यिर्म 51:6, 45; जक 2:7; 2कुर 6:17; प्रक 18:2, 4
10 यश 21:2; यिर्म 51:11, 27, 28, 48; दान 5:28, 30

वहाँ से वह कब्ज़ा कर ली जाएगी।
उनके तीर एक योद्धा के तीर
जैसे हैं,
जो माँ-बाप से उनके बच्चे छीन
लेते हैं।[1]
वे कभी निशाने से नहीं चूकते।
10 कसदिया लूट का माल बन
जाएगा।[2]
उसका माल लूटनेवाले पूरी तरह
संतुष्ट होंगे।"[3] यहोवा का यह
ऐलान है।
11 "क्योंकि जब तुमने मेरी विरासत
लूटी,[4]
तब तुम खुशी से झूमते रहे,[5] जश्न
मनाते रहे।
तुम कलोर की तरह घास पर
उछलते रहे,
घोड़ों की तरह हिनहिनाते रहे।
12 तुम्हारी माँ शर्मिंदा की गयी है।[6]
तुम्हारी जननी निराश हो गयी है।
देखो! वह राष्ट्रों में सबसे कमतर है,
एक सूखा वीराना है,
रेगिस्तान है।[7]
13 यहोवा की जलजलाहट की वजह
से वह दोबारा आबाद नहीं की
जाएगी,[8]
वह पूरी तरह उजड़ जाएगी।[9]
बैबिलोन पर ढाए सारे कहर देख-
कर उसके पास से गुज़रनेवाला
हर कोई डर के मारे देखता रह
जाएगा
और सीटी बजाएगा।[10]
14 तुम सभी जो कमान चढ़ाते हो,
दल बाँधकर हर दिशा से आओ
और बैबिलोन पर हमला करो।
उस पर तीर चलाओ, अपना तर-
कश खाली कर दो,[11]
क्योंकि उसने यहोवा के खिलाफ
पाप किया है।[1]
15 हर दिशा से उसके खिलाफ युद्ध का
ऐलान करो।
उसने हथियार डाल दिया है।
उसके खंभे गिर गए हैं, उसकी
शहरपनाह ढा दी गयी है,[2]
क्योंकि यहोवा उससे बदला ले
रहा है।[3]
तुम उससे अपना बदला लो।
उसने जैसा किया था वैसा ही तुम
उसके साथ करो।[4]
16 बैबिलोन से बीज बोनेवालों को,
कटाई के समय हँसिया चलानेवालों
को मिटा दो।[5]
उस भयानक तलवार की वजह से
हर कोई अपने लोगों के पास
लौट जाएगा,
हर कोई अपने देश भाग जाएगा।[6]

17 इसराएल के लोग तितर-बितर
की गयी भेड़ें हैं।[7] शेरों ने उनका यह
हाल किया है।[8] पहले, अश्शूर का
राजा आकर उन्हें खा गया,[9] फिर बैबि-
लोन के राजा नबूकदनेस्सर* ने उनकी
हड्डियाँ चबा डालीं।[10] 18 इसलिए
सेनाओं का परमेश्वर और इसराएल
का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मैं बैबि-
लोन के राजा और उसके देश को वही
सिला दूँगा जो मैंने अश्शूर के राजा को
दिया था।[11] 19 मैं इसराएल को उसके
चरागाह में वापस ले आऊँगा।[12] वह
करमेल और बाशान पर चरेगा,[13]
एप्रैम[14] और गिलाद[15] के पहाड़ों पर जी-
भरकर खाएगा।'"
20 यहोवा ऐलान करता है, "उन दिनों
और उस समय,

50:17 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

अध्य. 50
1 यश 13:17, 18
2 यिर्म 25:12; यिर्म 27:6, 7
3 प्रक 17:16
4 यश 14:4-6; यश 47:6; यिर्म 30:16
5 विल 1:21
6 यश 47:8
7 यश 13:20, 21
8 जक 1:15
9 यिर्म 25:12
10 यिर्म 51:37
11 यश 13:18; यिर्म 51:11

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 51:35, 36
2 यिर्म 51:58
3 यिर्म 51:6, 11
4 भज 137:8; प्रक 18:6
5 यिर्म 51:23
6 यश 13:14; यिर्म 51:9
7 यिर्म 23:1; यिर्म 50:6; यहे 34:5
8 यिर्म 2:15
9 2रा 17:6; यश 8:7
10 2रा 25:1; 2इत 36:17; यिर्म 4:7
11 2रा 19:35; यश 14:25; सप 2:13
12 यश 11:16; यश 65:10; यिर्म 23:3; यिर्म 33:7; यहे 34:14; मी 2:12
13 मी 7:14
14 यिर्म 31:6
15 ओब 19

इसराएल में दोष ढूँढ़ने पर भी नहीं
मिलेगा,
यहूदा में कोई पाप नहीं पाया
जाएगा,
क्योंकि मैं उन्हें माफ कर दूँगा जिन्हें
मैंने ज़िंदा छोड़ दिया।"[1]
21 यहोवा ऐलान करता है, "मरातैम
देश पर और पकोद के निवासियों
पर हमला कर।[2]
उनका कत्लेआम कर दे, पूरी तरह
नाश कर दे।*
मैंने तुझे जो-जो करने की आज्ञा दी
है, वह सब कर।
22 देश में युद्ध का शोर सुनायी दे
रहा है,
बड़ी तबाही का शोर सुनायी दे
रहा है।
23 देख, सब राष्ट्रों को चूर-चूर करने-
वाला हथौड़ा कैसे काट डाला
गया है, तोड़ दिया गया है![3]
देख, राष्ट्रों के बीच बैबिलोन का
क्या हश्र हुआ है, देखनेवालों का
दिल दहल जाता है।[4]
24 हे बैबिलोन, मैंने तेरे लिए एक फंदा
बिछाया है, तू पकड़ी गयी,
तुझे पता भी नहीं चला।
तुझे ढूँढ़कर बंदी बना लिया
गया है,[5]
क्योंकि तूने यहोवा का विरोध
किया।
25 यहोवा ने अपना हथियार-घर
खोला है,
वह अपनी जलजलाहट के हथियार
बाहर निकालता है।[6]
क्योंकि सारे जहान के मालिक,
सेनाओं के परमेश्वर यहोवा को
कसदियों के देश में एक काम
करना है।
26 दूर-दूर की जगहों से आकर उस पर
हमला करो।[1]
उसके भंडार खोल दो।[2]
अनाज के ढेर की तरह उसका ढेर
लगा दो।
उसे पूरी तरह नाश कर दो।*[3]
उसका एक भी इंसान ज़िंदा न बचे।
27 उसके सारे बैल काट डालो,[4]
उन्हें हलाल के लिए भेज दो।
उनका बहुत बुरा होनेवाला है,
क्योंकि उनका दिन आ गया है,
उनसे हिसाब लेने का समय आ
गया है!
28 भागनेवालों की आवाज़ सुनायी दे
रही है,
बैबिलोन से बचकर भागनेवालों की
आवाज़ सुनायी दे रही है,
वे सिय्योन में ऐलान करने जा रहे
हैं कि हमारे परमेश्वर यहोवा ने
बदला चुका दिया है,
अपने मंदिर के लिए बदला चुका
दिया है।[5]
29 बैबिलोन को नाश करने के लिए
तीरंदाज़ों को बुलाओ,
उन सबको बुलाओ जो कमान
चढ़ाते हैं।[6]
उसके चारों तरफ छावनी डालो,
किसी को बचकर भागने मत दो।
उसे उसके कामों का सिला दो।[7]
उसने जैसा किया था, वैसा ही उसके
साथ करो।[8]
क्योंकि उसने घमंड में आकर
यहोवा के खिलाफ काम किया,

50:21 *या "उन्हें नाश के हवाले कर दे।"

50:26 *या "उसे नाश के हवाले कर दो।"

अध्य. 50
1 यश 44:22; यिर्म 31:34; मी 7:19
2 यहे 23:22, 23
3 यश 14:5, 6; यिर्म 51:20
4 यिर्म 51:41; प्रक 18:15, 16
5 यिर्म 51:31; दान 5:30; प्रक 18:8
6 यश 13:5; यिर्म 51:11

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 51:27
2 यिर्म 50:10
3 यश 14:22, 23
4 यश 34:6, 7; यहे 39:18
5 भज 94:1; यिर्म 51:11
6 यिर्म 50:14
7 भज 137:8; यिर्म 51:56
8 विल 3:64; प्रक 18:6

इसराएल के पवित्र परमेश्वर के
खिलाफ।[1]
30 उस दिन उसके चौकों पर उसके
जवान ढेर हो जाएँगे,[2]
सारे सैनिक नाश* हो जाएँगे।"
यहोवा का यह ऐलान है।
31 सारे जहान का मालिक और
सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
ऐलान करता है, "हे गुस्ताख
बैबिलोन,[3] देख! मैं तुझे सज़ा
दूँगा,[4]
क्योंकि तेरा वह दिन ज़रूर आएगा,
जब मैं तुझसे हिसाब माँगूँगा।
32 हे गुस्ताख बैबिलोन, तू ठोकर
खाकर गिरेगी,
तुझे उठानेवाला कोई न होगा।[5]
मैं तेरे शहरों को आग लगा दूँगा,
यह आग तेरे आस-पास का सब-
कुछ भस्म कर देगी।"
33 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है,
"इसराएल और यहूदा के लोगों को
सताया जा रहा है,
जिन लोगों ने उन्हें बंदी बनाया है,
वे उन्हें पकड़े हुए हैं।[6]
उन्होंने उन्हें छोड़ने से इनकार कर
दिया है।[7]
34 मगर उनका छुड़ानेवाला
ताकतवर है।[8]
उसका नाम सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा है।[9]
वह ज़रूर उनके मुकदमे की पैरवी
करेगा[10]
ताकि उनके देश को चैन दिलाए[11]
और बैबिलोन के निवासियों में
खलबली मचाए।"[12]

35 यहोवा ऐलान करता है, "कसदियों
पर एक तलवार चलेगी,
बैबिलोन के निवासियों, उसके
हाकिमों और ज्ञानियों पर तलवार
चलेगी।[1]
36 खोखली बातें करनेवालों* पर तल-
वार चलेगी और वे मूर्खों जैसा
बरताव करेंगे।
उसके योद्धाओं पर तलवार चलेगी
और वे घबरा जाएँगे।[2]
37 उनके घोड़ों और युद्ध-रथों पर तल-
वार चलेगी,
उसमें रहनेवाले परदेसियों की
मिली-जुली भीड़ पर तलवार
चलेगी
और वे औरतों जैसे बन जाएँगे।[3]
उसके खज़ानों पर तलवार चलेगी
और वे लूट लिए जाएँगे।[4]
38 उसकी नदी की धाराएँ तबाह कर
दी जाएँगी, वे सूख जाएँगी।[5]
क्योंकि यह खुदी हुई मूरतों से भरा
देश है[6]
और वे डरावने दर्शन देखने की
वजह से पागलों जैसा बरताव
करते हैं।
39 इसलिए वह सूखे इलाके के
जानवरों और हुआँ-हुआँ करते
जानवरों का अड्डा बन जाएगी
और वहाँ शुतुरमुर्ग रहा करेंगे।[7]
वह फिर कभी आबाद नहीं होगी,
पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसमें कोई नहीं
बसेगा।"[8]

40 यहोवा ऐलान करता है, "सदोम,
अमोरा और उनके आस-पास के नगरों के
नाश के बाद जो हाल हुआ,[9] वही उसका
भी होगा। उसमें कोई नहीं रहेगा, कोई
वहाँ जाकर नहीं बसेगा।[10]

50:30 *शा., "खामोश।"

50:36 *या "झूठे भविष्यवक्ताओं।"

अध्य. 50

1 यश 14:13
2 यश 13:17, 18
3 यश 14:13; दान 4:30
4 यिर्म 51:25
5 यिर्म 51:26
6 यश 47:6
7 यश 14:17
8 यश 41:14; प्रक 18:8
9 यश 47:4
10 विल 3:59
11 यश 14:3, 4
12 यिर्म 51:24

दूसरा कॉल.

1 यश 47:13; यिर्म 51:57; दान 5:7
2 यिर्म 51:30
3 यश 13:8
4 यश 45:3
5 यश 44:27; यिर्म 51:36, 37; प्रक 16:12
6 यश 46:1; यिर्म 51:44, 52; दान 5:1, 4
7 यश 13:20, 21; यिर्म 51:37; प्रक 18:2
8 यिर्म 25:12; यिर्म 51:43, 64
9 उत 19:24, 25; यश 13:19; यहू 7
10 यिर्म 51:26

41 देख! उत्तर से एक देश आ रहा है,
एक महान राष्ट्र और बड़े-बड़े राजाओं को[1]
धरती के छोर से उभारा जाएगा।[2]
42 वे तीर-कमान और बरछी से लैस रहते हैं।[3]
वे खूँखार हैं, किसी पर दया नहीं करते।[4]
जब वे अपने घोड़ों पर सवार होकर आते हैं,
तो उनका शोर समुंदर के गरजन जैसा होता है।[5]
हे बैबिलोन की बेटी, वे सब एक होकर, दल बाँधकर तुझ पर हमला करने को तैयार हैं।[6]
43 बैबिलोन के राजा ने उनके बारे में खबर सुनी है,[7]
उसके हाथ ढीले पड़ गए हैं।[8]
उस पर डर और चिंता हावी हो गयी है,
वह दर्द से ऐसे तड़प रहा है
जैसे बच्चा जननेवाली औरत तड़पती है।

44 देख! इन महफूज़ चरागाहों पर
हमला करने कोई आएगा। वह ऐसे
आएगा जैसे यरदन के पासवाली घनी
झाड़ियों में से एक शेर निकलकर आता
है। मैं उन्हें एक ही पल में उसके सामने
से भगा दूँगा। मैं अपने चुने हुए जन
को उस पर ठहराऊँगा।[9] क्योंकि मेरे
जैसा कौन है और कौन मुझे चुनौती दे
सकता है? कौन चरवाहा मेरे सामने टिक
पाएगा?[10] 45 इसलिए लोगो, सुनो कि
यहोवा ने बैबिलोन के खिलाफ क्या
फैसला* किया है[11] और कसदियों के देश
के साथ क्या करने की सोची है।

बेशक, झुंड के मेम्नों को घसीटकर ले जाया जाएगा।
वह उनकी वजह से उनका चरागाह उजाड़ देगा।[1]
46 बैबिलोन पर कब्ज़ा किए जाने का हाहाकार सुनकर धरती काँप उठी है,
उसकी चीख-पुकार राष्ट्रों में सुनायी देगी।"[2]

51 यहोवा कहता है,
"मैं बैबिलोन और लेब-कामै* के निवासियों को
नाश करने के लिए एक ज़बरदस्त आँधी चलानेवाला हूँ।[3]
2 मैं उसानेवालों को बैबिलोन भेजूँगा,
वे उसे फटक देंगे और उसका देश खाली कर देंगे।
संकट के दिन वे हर कोने से उस पर टूट पड़ेंगे।[4]
3 तीरंदाज़ अपनी कमान न चढ़ाए।
कोई अपना बख्तर पहनकर खड़ा न हो।
उसके जवानों पर बिलकुल दया न करना।[5]
उसकी पूरी सेना का नाश कर देना।
4 वे सब कसदियों के देश में घात होकर ढेर हो जाएँगे,
उसकी सड़कों में उन्हें भेदा जाएगा।[6]
5 क्योंकि इसराएल और यहूदा को उनके परमेश्वर, सेनाओं के पर- मेश्वर यहोवा ने नहीं छोड़ा है। वे विधवा जैसे नहीं हैं।[7]
मगर इसराएल के पवित्र परमेश्वर

अध्य. 50
1 यश 45:1; यिर्म 51:11; यिर्म 51:27, 28
2 यश 13:5, 17
3 यिर्म 50:9
4 भज 137:8; यश 13:17, 18
5 यिर्म 51:42
6 यिर्म 51:27
7 यिर्म 51:31
8 दान 5:6
9 यश 41:25
10 यिर्म 49:19-21
11 यिर्म 51:11

दूसरा कॉल.
1 यश 13:1, 20; यिर्म 51:43
2 प्रक 18:9

अध्य. 51
3 यिर्म 50:9
4 यिर्म 50:14, 29
5 यश 13:17, 18; यिर्म 50:30
6 यश 13:15
7 भज 94:14; यश 44:21; यिर्म 46:28; जक 2:12

50:45 *या "मकसद।"

51:1 *ऐसा मालूम पड़ता है कि यह कस-दिया का एक गुप्त नाम है।

की नज़र में उनका देश* पूरी
तरह दोषी है।
6 बैबिलोन से भाग जाओ,
अपनी जान बचाकर भागो।[1]
उसके गुनाह की वजह से तुम नाश
मत होना।
क्योंकि यह यहोवा के बदला लेने
का समय है।
वह उसे उसके किए की सज़ा दे
रहा है।[2]
7 बैबिलोन यहोवा के हाथ में सोने का
प्याला थी,
उसने सारी धरती को मदहोश कर
दिया था।
राष्ट्रों ने उसकी दाख-मदिरा पी है,[3]
इसीलिए वे पागल हो गए हैं।[4]
8 बैबिलोन अचानक गिर पड़ी है, टूट
गयी है।[5]
उसके लिए ज़ोर-ज़ोर से रोओ![6]
उसका दर्द दूर करने के लिए बलसाँ
ले आओ, शायद वह ठीक हो
जाए।"
9 "हमने बैबिलोन को चंगा करने की
कोशिश की, मगर वह चंगी न हो
सकी।
उसे छोड़ दो, चलो हम सब अपने-
अपने देश लौट जाएँ।[7]
वह सज़ा के लायक है, उसके गुनाह
आसमान तक पहुँच गए हैं,
बादलों तक पहुँच गए हैं।[8]
10 यहोवा ने हमारी खातिर न्याय
किया है।[9]
आओ, हम सिय्योन में अपने
परमेश्वर यहोवा के कामों का
बखान करें।"[10]

51:5 *यानी कसदियों का देश।

अध्य. 51
1 यिर्म 50:8
जक 2:7
प्रक 18:4
2 यिर्म 25:12, 14
यिर्म 50:15
3 प्रक 17:1, 2
प्रक 18:3
4 यिर्म 25:15, 16
5 यश 21:9
यश 47:9
प्रक 14:8
6 प्रक 18:2, 9
7 यश 13:14
8 प्रक 18:4, 5
9 मी 7:9
10 यिर्म 50:28

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 50:14
2 यश 13:17
यश 45:1
3 यश 13:2
4 प्रक 17:17
5 प्रक 17:1, 15
6 यश 45:3
यिर्म 50:37
7 हब 2:9
प्रक 18:11, 12
प्रक 18:19
8 यिर्म 50:15
9 भज 93:1
भज 104:24

11 "अपने तीरों को तेज़ करो,[1] गोला-
कार ढालें उठाओ।*
यहोवा ने मादियों के राजाओं के
मन को उकसाया है,[2]
क्योंकि उसने बैबिलोन को तबाह
करने की ठान ली है।
यहोवा बदला ले रहा है, अपने
मंदिर के लिए बदला ले रहा है।
12 बैबिलोन की शहरपनाह के खिलाफ
झंडा खड़ा करो।[3]
पहरा और सख्त कर दो, पहरेदारों
को तैनात करो।
घात लगानेवाले सैनिकों को तैयार
करो।
क्योंकि यहोवा ने रणनीति तैयार
की है,
वह बैबिलोन के निवासियों को सज़ा
देने का वादा पूरा करेगा।"[4]
13 "हे औरत, तू जो नदी-नहरों पर
बैठी हुई है,[5]
जिसके पास ढेर सारा खज़ाना है,[6]
तेरा अंत आ गया है, तू मुनाफा
कमाने की हद तक पहुँच
गयी है।[7]
14 सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने
अपने जीवन की शपथ खाकर
कहा है,
'मैं तुझे सैनिकों से भर दूँगा जो
टिड्डियों की तरह अनगिनत होंगे,
वे तुझे हराकर जीत के नारे
लगाएँगे।'[8]
15 उसी ने अपनी शक्ति से धरती
बनायी,
अपनी बुद्धि से उपजाऊ ज़मीन की
मज़बूत बुनियाद डाली[9]

51:11 *या शायद, "तरकश भर लो।"

और अपनी समझ से आकाश
फैलाया।[1]
16 जब वह गरजता है,
तो आकाश के पानी में हलचल होने
लगती है,
वह धरती के कोने-कोने से बादलों*
को ऊपर उठाता है।
बारिश के लिए बिजली# बनाता है
और अपने भंडारों से आँधी
चलाता है।[2]
17 सभी इंसान ऐसे काम करते हैं मानो
उनमें समझ और ज्ञान नहीं है।
हर धातु-कारीगर अपनी गढ़ी हुई
मूरत की वजह से शर्मिंदा किया
जाएगा,[3]
क्योंकि उसकी धातु की मूरत* एक
झूठ है,
वे मूरतें बेजान हैं।#[4]
18 वे एक धोखा* हैं,[5] बस इस लायक
हैं कि उनकी खिल्ली उड़ायी
जाए।
जब उनसे हिसाब लेने का दिन
आएगा, तो वे नाश हो जाएँगी।
19 याकूब का भाग इन चीज़ों की तरह
नहीं है,
क्योंकि उसी ने हर चीज़ रची है,
वही उसकी विरासत की लाठी है।[6]
उसका नाम सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा है।"[7]
20 "तू मेरे लिए युद्ध का हथियार है,
एक लट्ठ है,
क्योंकि मैं तेरे ज़रिए राष्ट्रों को चूर-
चूर कर दूँगा,

अध्य. 51
1 भज 136:5 नीत 3:19 यश 40:22 यिर्म 10:12-16
2 भज 135:7
3 यश 44:11
4 हब 2:19
5 यश 41:29 यिर्म 14:22
6 व्य 32:9
7 यश 47:4

दूसरा कॉल.
1 भज 137:8
2 यिर्म 25:9
3 यिर्म 50:31

राज्यों को तबाह कर दूँगा।
21 घोड़े और उसके सवार को चूर-चूर
कर दूँगा,
युद्ध-रथ और उसके सवार को चूर-
चूर कर दूँगा।
22 आदमी और औरत को चूर-चूर कर
दूँगा।
बूढ़े और जवान को चूर-चूर कर
दूँगा।
जवान लड़के और जवान लड़की
को चूर-चूर कर दूँगा।
23 चरवाहे और उसके झुंड को चूर-चूर
कर दूँगा।
किसान और उसके जुताई करने-
वाले जानवरों को चूर-चूर कर
दूँगा।
राज्यपालों और अधिकारियों को
चूर-चूर कर दूँगा।
24 मैं बैबिलोन को और कसदिया के
सभी निवासियों को उन सब बुरे
कामों का सिला दूँगा,
जो उन्होंने तुम्हारी आँखों के सामने
सिय्योन में किए हैं।"[1] यहोवा का
यह ऐलान है।
25 यहोवा ऐलान करता है, "हे
उजाड़नेवाले पहाड़,
तू जो सारी धरती को उजाड़ रहा
है,[2] मैं तेरे खिलाफ कदम उठाने-
वाला हूँ।[3]
मैं अपना हाथ बढ़ाकर तुझे चट्टानों
से नीचे लुढ़का दूँगा
और तुझे जला हुआ पहाड़ बना
दूँगा।"
26 यहोवा ऐलान करता है, "लोग
तुझसे पत्थर नहीं निकालेंगे,
न कोने के पत्थर के लिए, न बुनि-
याद डालने के लिए,

51:16 *या "भाप।" #या शायद, "झरोखे।" **51:17** *या "ढली हुई मूरत।" #या "उनमें साँस नहीं है।" **51:18** *या "बेकार।"

क्योंकि तू हमेशा के लिए उजाड़
पड़ा रहेगा।”[1]
27 “देश में झंडा खड़ा करो,[2]
राष्ट्रों में नरसिंगा फूँको।
उससे लड़ने के लिए राष्ट्रों को
तैयार करो।
अरारात,[3] मिन्नी और अशकनज[4]
के राज्यों को बुलाओ।
ऐसा अधिकारी ठहराओ जो
उससे लड़ने के लिए सैनिक
भरती करे।
घोड़ों से उन पर कड़े बालोंवाली
टिड्डियों की तरह हमला कराओ।
28 उससे लड़ने के लिए राष्ट्रों को
तैयार करो।
मादै के राजाओं,[5] राज्यपालों और
सभी अधिकारियों को ठहराओ
और उन सब देशों को ठहराओ
जिन पर वे राज करते हैं।
29 धरती डोलेगी और काँपेगी,
क्योंकि यहोवा ने बैबिलोन के साथ
जो करने की सोची है वह ज़रूर
पूरा होगा।
वह बैबिलोन का ऐसा हश्र कर देगा
कि देखनेवालों का दिल दहल
जाएगा, उसमें एक भी निवासी
नहीं रहेगा।[6]
30 बैबिलोन के योद्धाओं ने लड़ना छोड़
दिया है।
वे अपने मज़बूत गढ़ों में छिप
गए हैं।
उनकी हिम्मत जवाब दे गयी है।[7]
वे औरतों जैसे हो गए हैं।[8]
बैबिलोन के घरों को आग लगा दी
गयी है।
उसके बेड़े तोड़ दिए गए हैं।[9]
31 एक दूत दौड़कर दूसरे दूत से
मिलता है,
एक संदेश देनेवाला दूसरे संदेश
देनेवाले से मिलता है
ताकि बैबिलोन के राजा को खबर दे
कि उसका शहर चारों तरफ से ले
लिया गया है,[1]
32 उसके घाटों पर कब्ज़ा कर लिया
गया है,[2]
उसकी सरकंडे की नाव आग से
जला दी गयी हैं
और सैनिक घबरा गए हैं।”

33 क्योंकि सेनाओं का परमेश्‍वर
और इसराएल का परमेश्‍वर यहोवा
कहता है,

“बैबिलोन की बेटी खलिहान की
ज़मीन जैसी है।
अब वक्‍त आ गया है कि उसे दबा-
दबाकर सख्त किया जाए।
जल्द ही उसकी कटाई का समय
आनेवाला है।”
34 “बैबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर*
ने मुझे खा लिया है,[3]
उसने मुझे उलझन में डाल दिया है।
मुझे खाली बरतन जैसा बना
दिया है।
एक बड़े साँप की तरह मुझे निगल
लिया है,[4]
मेरी उम्दा चीज़ों से अपना पेट भर
लिया है।
मुझे खंगालकर फेंक दिया है।
35 सिय्योन का निवासी कहता है, ‘मुझ
पर और मेरे शरीर पर जो ज़ुल्म
किया गया है वही बैबिलोन के
साथ हो!’[5]
यरूशलेम नगरी कहती है, ‘मेरे खून

अध्य. 51
1 यिर्म 50:13, 40
प्रक 18:21
2 यश 13:2
यिर्म 51:12
3 उत 8:4
4 उत 10:2, 3
यिर्म 50:41
5 यश 13:17
दान 5:30, 31
6 यश 13:13, 19
यिर्म 50:13
यिर्म 50:39, 40
7 यश 13:7
8 यिर्म 50:37
9 भज 107:16
यश 45:2

दूसरा कॉल.
1 यश 47:11
यिर्म 50:24, 43
2 यश 44:27
यिर्म 50:38
प्रक 16:12
3 2इत 36:17, 18
यिर्म 50:17
4 यिर्म 51:44
5 भज 137:8
यिर्म 50:29

51:34 *शा., “नबूकदरेस्सर।” यह एक अलग वर्तनी है।

का दोष कसदिया के निवासियों
के सिर पड़े!'"
36 इसलिए यहोवा कहता है,
"अब मैं तेरे मुकदमे की पैरवी
करूँगा[1]
और तेरी तरफ से बदला लूँगा।[2]
मैं उसका समुंदर और उसके कुएँ
सुखा दूँगा।[3]
37 बैबिलोन पत्थरों का ढेर और[4]
गीदड़ों की माँद बन जाएगी।[5]
उसका ऐसा हश्र होगा कि
देखनेवालों का दिल दहल जाएगा
और वे मज़ाक उड़ाते हुए सीटी
बजाएँगे,
उसमें एक भी निवासी नहीं रहेगा।[6]
38 वे सब मिलकर जवान शेरों की
तरह दहाड़ेंगे।
शेर के बच्चों की तरह गुर्राएँगे।"
39 यहोवा ऐलान करता है,
"जब उनकी हवस की आग
भड़केगी,
तो मैं उनके लिए दावत रखूँगा
और उन्हें खूब पिलाकर मदहोश
कर दूँगा
ताकि वे जश्न मनाएँ,[7]
इसके बाद वे हमेशा के लिए सो
जाएँगे,
फिर कभी नहीं उठेंगे।"[8]
40 "मैं उन्हें मेम्नों की तरह
और बकरों और मेढ़ों की
तरह हलाल के लिए ले
जाऊँगा।"
41 "देखो! शेशक* पर कैसे कब्ज़ा
कर लिया गया है,[9]
जिसकी पूरी धरती पर बड़ाई होती
है, उस पर कैसे अधिकार कर
लिया गया है![1]
राष्ट्रों के बीच बैबिलोन का ऐसा
हश्र हुआ है कि देखनेवालों का
दिल दहल जाता है!
42 बैबिलोन पर समुंदर चढ़ आया है,
वह बहुत-सी लहरों में डूब गयी है।
43 उसके शहरों का ऐसा हश्र हुआ
है कि देखनेवालों का दिल दहल
जाता है,
वह एक सूखा वीराना और
रेगिस्तान बन गयी है।
ऐसा देश बन गयी है जहाँ कोई नहीं
रहेगा, जहाँ से कोई नहीं गुज़-
रेगा।[2]
44 मैं बैबिलोन के बेल देवता पर
ध्यान दूँगा[3]
और उसके मुँह से वह सब निका-
लूँगा जो वह निगल गया है।[4]
उसकी तरफ फिर कभी राष्ट्र उमड़-
ते हुए नहीं जाएँगे,
बैबिलोन की शहरपनाह ढह
जाएगी।[5]
45 मेरे लोगो, उसमें से बाहर निकल
आओ![6]
यहोवा के क्रोध की आग जल रही
है,[7] अपनी जान बचाकर भागो![8]
46 देश को जो खबर मिलनेवाली है,
उससे तुम्हारा दिल कमज़ोर न हो
और न ही तुम डरो।
एक साल एक खबर मिलेगी,
दूसरे साल दूसरी खबर मिलेगी
कि देश में कैसी मार-काट मची
है, एक शासक दूसरे शासक के
खिलाफ उठ रहा है।
47 इसलिए देखो! वे दिन आ रहे हैं,
जब मैं बैबिलोन की खुदी हुई मूरतों
पर ध्यान दूँगा।

अध्य. 51
1 यिर्म 50:34
2 व्य 32:35
3 यश 44:27; यिर्म 50:38
4 यिर्म 25:12; यिर्म 50:15
5 यश 13:19, 22
6 यिर्म 50:13, 39
7 दान 5:1, 4
8 यिर्म 25:17, 27; यिर्म 51:57
9 यिर्म 25:17, 26

दूसरा कॉल.
1 यश 13:19; यिर्म 49:25; दान 4:30
2 यश 13:1, 20; यिर्म 50:39
3 यश 46:1; यिर्म 50:2
4 2इत 36:7; एज 1:7; यिर्म 51:34; दान 1:1, 2
5 यिर्म 51:58
6 यश 48:20; प्रक 18:4
7 यश 13:13
8 यिर्म 51:6; जक 2:7

51:41 * ऐसा मालूम पड़ता है कि यह बाबेल (या बैबिलोन) का एक गुप्त नाम है।

उसका पूरा देश शर्मिंदा किया
जाएगा,
उसके बीच उसके सभी लोग घात
होकर ढेर हो जाएँगे।[1]
48 आकाश, धरती और उनमें जो कुछ
है वह सब
बैबिलोन का अंजाम देखकर खुशी
से जयजयकार करेंगे,[2]
क्योंकि उत्तर से उसका विनाश
करनेवाले आएँगे।"[3] यहोवा का
यह ऐलान है।
49 "बैबिलोन ने न सिर्फ इसराएल के
लोगों को मार डाला,[4]
बल्कि अपने बीच रहनेवाले धरती
के सब लोगों को मारकर उन्हें ढेर
कर दिया।
50 तुम जो तलवार से बच जाते हो,
आगे बढ़ते रहो, खड़े मत रहो![5]
तुम जो दूर हो, यहोवा को याद
करो,
तुम्हारे दिलों में यरूशलेम की याद
ताज़ा रहे।"[6]
51 "हमें शर्मिंदा किया गया है, क्योंकि
हम पर ताने कसे गए हैं।
अपमान ने हमारा चेहरा ढाँप
दिया है,
क्योंकि परदेसियों* ने यहोवा के
भवन की पवित्र जगहों पर हमला
कर दिया है।"[7]
52 यहोवा ऐलान करता है, "इसलिए
देख, वे दिन आ रहे हैं,
जब मैं उसकी खुदी हुई मूरतों पर
ध्यान दूँगा
और उसके पूरे देश में घायल लोग
कराहेंगे।"[8]
53 यहोवा ऐलान करता है, "बैबिलोन
चाहे आसमान की बुलंदियाँ छू
जाए,[1]
चाहे अपने ऊँचे-ऊँचे गढ़ों को मज़-
बूत करे,
फिर भी मैं उसका नाश करनेवालों
को ज़रूर भेजूँगा।"[2]
54 "सुनो! बैबिलोन में कैसी चीख-
पुकार मची है,[3]
कसदियों के देश में बड़ी तबाही का
हाहाकार मचा है।[4]
55 क्योंकि यहोवा बैबिलोन का नाश
कर रहा है,
वह उसका शोर बंद कर देगा।
उसका नाश करनेवाले समुंदर की
तरह गरजेंगे।
उनका होहल्ला सुनायी देगा।
56 नाश करनेवाला बैबिलोन पर चढ़
आएगा,[5]
उसके योद्धा पकड़े जाएँगे,[6]
उनकी कमान टुकड़े-टुकड़े कर दी
जाएँगी,
क्योंकि यहोवा सज़ा देनेवाला पर-
मेश्वर है,[7]
वह उसे ज़रूर उसके कामों का
सिला देगा।[8]
57 मैं उसके हाकिमों और ज्ञानियों को,
उसके राज्यपालों, अधिकारियों और
योद्धाओं को
खूब पिलाकर मदहोश कर दूँगा,[9]
वे हमेशा के लिए सो जाएँगे, फिर
कभी नहीं उठेंगे।"[10]
यह उस राजा का ऐलान है
जिसका नाम सेनाओं का पर-
मेश्वर यहोवा है।
58 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है,

51:51 *या "अजनबियों।"

अध्य. 51
1 यश 13:15; दान 5:30
2 यश 44:23; यश 48:20; यश 49:13; प्रक 18:20
3 यिर्म 50:3; यिर्म 50:41
4 यिर्म 50:17; यिर्म 51:24
5 यिर्म 50:8; प्रक 18:4
6 एज 1:3; भज 137:5
7 भज 79:1; विल 1:10
8 यश 13:15

दूसरा कॉल.
1 यश 14:13; दान 4:30
2 यिर्म 50:10
3 यश 13:6
4 यिर्म 50:22, 23
5 यश 21:2
6 यिर्म 50:36
7 व्य 32:35; भज 94:1; यश 34:8; यिर्म 50:29; प्रक 18:5
8 भज 137:8
9 यिर्म 25:27
10 यिर्म 51:39

"बैबिलोन की शहरपनाह भले ही
चौड़ी हो, वह पूरी तरह ढा दी
जाएगी,[1]
उसके फाटक भले ही ऊँचे हों उन्हें
आग लगा दी जाएगी।
देश-देश के लोग बेकार में मेहनत
करेंगे,
जिसके लिए राष्ट्र काम करते-करते
पस्त हो जाएँगे, वह आग में
झोंक दिया जाएगा।"[2]

59 भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने सरायाह
को एक आज्ञा दी, जो नेरियाह का बेटा[3]
और महसेयाह का पोता था। यिर्मयाह ने
सरायाह को यह आज्ञा तब दी जब सरा-
याह यहूदा के राजा सिदकियाह के साथ,
उसके राज के चौथे साल बैबिलोन गया।
सरायाह राजा का निजी प्रबंधक था।
60 यिर्मयाह ने बैबिलोन पर आनेवाली
इन सारी विपत्तियों के बारे में एक किताब
में लिखा, यानी ये बातें जो बैबिलोन के
खिलाफ लिखी गयी हैं। 61 यिर्मयाह ने
सरायाह से कहा, "जब तू बैबिलोन पहुँचे
और उस नगरी को देखे तो ये सारी
बातें पढ़कर सुनाना। 62 फिर कहना,
'हे यहोवा, तूने इस जगह के बारे में कहा
है कि यह इस तरह नाश कर दी जाएगी
कि यहाँ कोई नहीं रहेगा, न इंसान न
जानवर। यह हमेशा के लिए उजाड़ पड़ी
रहेगी।'[4] 63 इस किताब को पढ़ने के
बाद इस पर एक पत्थर बाँधना और
फरात नदी के बीचों-बीच फेंक देना।
64 फिर कहना, 'इसी तरह बैबिलोन डूब
जाएगी और फिर कभी ऊपर नहीं
आएगी[5] क्योंकि मैं उस पर विपत्ति लाने-
वाला हूँ। और वे थककर पस्त हो
जाएँगे।'"[6]

यिर्मयाह के शब्द यहीं तक हैं।

अध्य. 51
1 यिर्म 50:15, यिर्म 51:44
2 हब 2:13
3 यिर्म 32:12, यिर्म 36:4, यिर्म 45:1
4 यश 13:1, 20, यश 14:23, यिर्म 50:3, 39, यिर्म 51:29, 37
5 प्रक 18:21
6 यिर्म 51:58

दूसरा कॉल.

अध्य. 52
1 2रा 24:17-20, 2इत 36:11, 12
2 2रा 23:31
3 2रा 24:1, 2इत 36:5
4 लैव 26:33, व्य 31:16, 17
5 2इत 36:11, 13, यहे 17:15
6 व्य 28:52, 2रा 25:1, 2, यश 29:3, यिर्म 39:1, यहे 4:1, 2, यहे 21:21, 22
7 यिर्म 39:2
8 व्य 28:53-57, 2रा 25:3-7, यश 3:1, यहे 4:16
9 यिर्म 39:4-7
10 यिर्म 24:8, यिर्म 34:21, यिर्म 37:17, यिर्म 38:18

52 सिदकियाह[1] जब राजा बना तब
वह 21 साल का था और
उसने यरूशलेम में रहकर 11 साल
राज किया। उसकी माँ का नाम हमूतल[2]
था जो लिब्ना के रहनेवाले यिर्मयाह की
बेटी थी। 2 सिदकियाह, यहोयाकीम
की तरह वे सारे काम करता रहा जो
यहोवा की नज़र में बुरे थे।[3] 3 यरू-
शलेम और यहूदा के साथ ये बुरी घटनाएँ
इसलिए घटीं क्योंकि यहोवा का क्रोध उन
पर भड़का हुआ था और आखिर में उसने
उन्हें अपनी नज़रों से दूर कर दिया।[4]
सिदकियाह ने बैबिलोन के राजा से बगा-
वत की।[5] 4 सिदकियाह के राज के
नौवें साल के दसवें महीने के दसवें दिन,
बैबिलोन का राजा नबूकदनेस्सर * अपनी
पूरी सेना लेकर यरूशलेम पर हमला
करने आया। उन्होंने यरूशलेम के बाहर
छावनी डाली और उसके चारों तरफ घेरा-
बंदी की दीवार खड़ी की।[6] 5 यह घेरा-
बंदी सिदकियाह के राज के 11वें साल
तक रही।

6 चौथे महीने के नौवें दिन,[7] जब
शहर में भयंकर अकाल था और लोगों
के पास खाने को कुछ नहीं था,[8] 7 तब
नबूकदनेस्सर के सैनिकों ने शहरपनाह
में दरार कर दी। जब कसदी शहर को
घेरे हुए थे तब यरूशलेम के सभी सैनिक
रात के वक्त उस फाटक से भाग निकले,
जो राजा के बाग के पास दो दीवारों के
बीच था और अराबा के रास्ते से आगे
बढ़ते गए।[9] 8 मगर कसदी सेना ने
राजा सिदकियाह का पीछा किया[10] और
यरीहो के वीरानों में उसे पकड़ लिया।
तब राजा की सारी सेना उसे छोड़कर
इधर-उधर भाग गयी। 9 कसदी लोग

52:4 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

राजा सिदकियाह को पकड़कर बैबिलोन
के राजा के पास हमात देश के रिबला
ले गए और वहाँ बैबिलोन के राजा ने उसे
सज़ा सुनायी। **10** उसने सिदकियाह
की आँखों के सामने उसके बेटों को मार
डाला। उसने रिबला में यहूदा के सब
हाकिमों को भी मार डाला। **11** फिर
बैबिलोन के राजा ने सिदकियाह की आँखें
फोड़ दीं[1] और वह उसे ताँबे की बेड़ियों में
जकड़कर बैबिलोन ले गया। उसने सिद-
कियाह को उसकी मौत के दिन तक कैद
रखा।

12 फिर बैबिलोन के राजा का सेवक
नबूजरदान, जो पहरेदारों का सरदार था,
पाँचवें महीने के दसवें दिन यरूशलेम के
अंदर गया। यह नबूकदनेस्सर* के राज
का 19वाँ साल था।[2] **13** नबूजरदान
ने यहोवा का भवन, राजमहल, यरू-
शलेम के सभी घर और सभी बड़े-बड़े घर
जलाकर राख कर दिए।[3] **14** पहरे-
दारों के सरदार के साथ आयी पूरी
कसदी सेना ने यरूशलेम की शहरपनाह
ढा दी।[4]

15 मगर पहरेदारों का सरदार नबू-
जरदान कुछ गरीबों को, शहर में बचे
लोगों को और उन लोगों को, जो यहूदा के
राजा का साथ छोड़कर बैबिलोन के राजा
की तरफ चले गए थे, बंदी बनाकर ले
गया। साथ ही, बचे हुए हुनरमंद कारी-
गरों को भी ले गया।[5] **16** पहरेदारों के
सरदार नबूजरदान ने देश के कुछ ऐसे
लोगों को छोड़ दिया जो बहुत गरीब थे
ताकि वे अंगूरों के बाग में काम करें और
जबरन मज़दूरी करें।[6]

17 कसदियों ने यहोवा के भवन में
ताँबे के बने खंभों के टुकड़े-टुकड़े कर
दिए[1] और यहोवा के भवन में जो हथ-
गाड़ियाँ[2] और ताँबे का बड़ा हौद[3] था
उसके भी टुकड़े-टुकड़े कर दिए और
सारा ताँबा निकालकर बैबिलोन ले गए।[4]
18 वे मंदिर में इस्तेमाल होनेवाली
हंडियाँ, बेलचे, बाती बुझाने की कैंचियाँ,
कटोरे,[5] प्याले[6] और ताँबे की बाकी
सारी चीज़ें उठा ले गए। **19** पहरेदारों
का सरदार बड़े कटोरे,[7] आग उठाने
के करछे, कटोरे, हंडियाँ, दीवटें,[8] प्याले
और चढ़ावे में इस्तेमाल होनेवाले कटोरे
भी ले गया जो शुद्ध सोने और चाँदी के
बने थे।[9] **20** राजा सुलैमान ने यहोवा
के भवन के लिए जो दो खंभे, बड़ा हौद
और उसके नीचे ताँबे के 12 बैल[10] और
हथ-गाड़ियाँ बनायी थीं, उन सबमें इतना
ताँबा लगा था कि उसका तौल नहीं किया
जा सकता था।

21 दोनों खंभों में से हर खंभे की
ऊँचाई 18 हाथ* और गोलाई 12 हाथ
थी।[11] खंभों की दीवार की मोटाई चार
अंगुल# थी और ये अंदर से खोखले थे।
22 दोनों खंभों के ऊपर ताँबे का एक-
एक कंगूरा लगा था। दोनों कंगूरों की
ऊँचाई पाँच-पाँच हाथ थी।[12] हर कंगूरे के
चारों तरफ जो जालीदार काम किया गया
था और अनार बनाए गए थे वे भी ताँबे
के थे। **23** हर कंगूरे के चारों तरफ 96
अनार थे। जालीदार काम के चारों तरफ
कुल मिलाकर 100 अनार थे।[13]

24 पहरेदारों के सरदार ने प्रधान
याजक सरायाह[14] को और उसके सहा-
यक याजक सपन्याह[15] और तीन दर-
बानों को भी पकड़ लिया।[16] **25** वह

52:12 *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

52:21 *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें। #एक अंगुल 1.85 सें.मी. (0.73 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 52

1 यहे 12:13
2 2रा 25:8-10
3 1रा 9:8; 2इत 36:17, 19; भज 74:8; भज 79:1; यिर्म 26:18; विल 2:7; यहे 24:21
4 यिर्म 39:8
5 2रा 25:11, 12; यिर्म 39:9, 10
6 2रा 25:22

दूसरा कॉल.

1 1रा 7:15, 21
2 1रा 7:27
3 1रा 7:23; 2इत 4:11-15
4 2रा 25:13-16; यिर्म 27:19, 22
5 1रा 7:45
6 2इत 4:19, 22
7 1रा 7:50
8 1रा 7:48, 49
9 2इत 24:14; 2इत 36:18
10 1रा 7:23, 25
11 1रा 7:15-20
12 2इत 3:15
13 2इत 3:16; 2इत 4:13
14 1इत 6:14; एज 7:1
15 यिर्म 21:1, 2; यिर्म 29:25
16 2रा 25:18-21

शहर से उस अधिकारी को ले गया
जिसकी कमान के नीचे सैनिक थे, साथ
ही वह राजा के सात सलाहकारों को भी
ले गया जो शहर में पाए गए। उसने
सेनापति के सचिव को भी पकड़ लिया
जो देश के लोगों को सेना के लिए
इकट्ठा करता था। और शहर में अब
भी जो आम लोग बचे हुए थे उनमें
से 60 आदमियों को वह पकड़कर ले
गया। **26** पहरेदारों का सरदार नबू-
जरदान उन सबको बैबिलोन के राजा के
पास रिबला ले गया। **27** बैबिलोन के
राजा ने हमात के रिबला में उन सबको
मार डाला।[1] इस तरह यहूदा को उसके
देश से निकालकर बँधुआई में ले जाया
गया।[2]

28 नबूकदनेस्सर* अपने राज के
सातवें साल 3,023 यहूदियों को बँधु-
आई में ले गया।[3]

29 नबूकदनेस्सर* के राज के 18वें
साल[4] यरूशलेम से 832 लोगों को ले
जाया गया।

30 नबूकदनेस्सर* के राज के 23वें
साल, पहरेदारों का सरदार नबूजर-
दान 745 यहूदियों को बँधुआई में ले
गया।[1]

कुल मिलाकर 4,600 लोगों को बँधु-
आई में ले जाया गया।

31 फिर यहूदा के राजा यहोयाकीन
की बँधुआई के 37वें साल[2] के
12वें महीने के 25वें दिन, बैबिलोन
के राजा एवील-मरोदक ने यहोयाकीन
को रिहा कर दिया और कैदखाने से
बाहर ले आया। एवील-मरोदक उसी
साल राजा बना था।[3] **32** वह यहोया-
कीन के साथ प्यार से बात करता था
और उसने यहोयाकीन को उन राजाओं
से बढ़कर सम्मान का पद सौंपा जो बैबि-
लोन में थे। **33** यहोयाकीन ने कैद-
खाने के कपड़े बदल दिए और उसने
सारी ज़िंदगी एवील-मरोदक की मेज़
पर भोजन किया। **34** यहोयाकीन को
सारी ज़िंदगी, रोज़-ब-रोज़ बैबिलोन के
राजा के यहाँ से खाना मिलता रहा।
अपनी मौत के दिन तक उसने राजा के
यहाँ खाना खाया।

52:28-30 *शा., “नबूकदरेस्सर।” यह एक अलग वर्तनी है।

अध्य. 52
1 2रा 25:6, यिर्म 52:10
2 लैव 18:25, लैव 26:33, व्य 28:36, यश 24:3, यिर्म 25:9
3 2रा 24:12, 14
4 यिर्म 32:1

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 6:9
2 2रा 24:8, यिर्म 24:1, यिर्म 37:1, मत 1:11
3 2रा 25:27-30

विलापगीत

सारांश

1 यरूशलेम, एक विधवा जैसी
- वह अकेली बैठी है, त्याग दी गयी है (1)
- सिय्योन का महापाप (8, 9)
- उसे परमेश्वर ने ठुकरा दिया (12-15)
- उसे दिलासा देनेवाला कोई नहीं (17)

2 यरूशलेम पर यहोवा का क्रोध
- दया नहीं की गयी (2)
- यहोवा उसके लिए दुश्मन जैसा (5)
- सिय्योन के लिए आँसू (11-13)
- राहगीरों ने नगरी की खिल्ली उड़ायी (15)
- सिय्योन के गिरने पर दुश्मन खुश (17)

3 यिर्मयाह की भावनाएँ और उम्मीदें
- “मैं तेरे वक्त का इंतज़ार करूँगा” (21)
- परमेश्वर की दया हर सुबह नयी (22, 23)

परमेश्वर उसके साथ भलाई करता है जो उस पर आस लगाता है (25)
जवानों का जुआ उठाना भला है (27)
परमेश्वर ने अपने पास आने का रास्ता रोका (43, 44)

4 यरूशलेम की घेराबंदी के खौफनाक अंजाम
खाने की कमी (4, 5, 9)
औरतों ने अपने बच्चों को उबाला (10)
यहोवा ने गुस्से की आग बरसायी (11)

5 बहाली की प्रार्थना
"हम पर जो गुज़री है उस पर ध्यान दे" (1)
'धिक्कार है हम पर; हमने पाप किया' (16)
'हे यहोवा, हमें वापस ले आ' (21)
"हमारे पुराने दिन लौटा दे" (21)

א [*आलेफ*]*

1 वह नगरी जो कभी लोगों से
आबाद रहती थी, अब कैसी
अकेली बैठी है![1]
जो कभी राष्ट्रों से ज़्यादा भरी-पूरी
थी, अब कैसे विधवा जैसी हो
गयी है![2]
जो कभी बहुत-से इलाकों# की
मलिका थी, अब कैसे दासी बन
गयी है![3]

ב [*बेथ*]

2 वह रात-भर फूट-फूटकर रोती
है,[4] आँसुओं से उसके गाल भीग
जाते हैं।
उसके इतने यारों में एक भी ऐसा
नहीं जो उसे दिलासा दे।[5]
उसके अपने साथियों ने उसे दगा
दिया है,[6] वे सब उसके दुश्मन
बन बैठे हैं।

ג [*गिमेल*]

3 यहूदा बँधुआई में चली गयी है,[7]
वह दुख झेल रही है, कड़ी
गुलामी कर रही है।[8]
उसे दूसरे राष्ट्रों में रहना होगा,[1]
उसे कहीं चैन नहीं।
जब वह बदहाल थी तभी ज़ुल्म
ढानेवाले सब उस पर टूट पड़े।

ד [*दालथ*]

4 सिय्योन की तरफ जानेवाली सड़कें
मातम मना रही हैं, क्योंकि
त्योहार के लिए कोई नहीं
आता।[2]
उसके सब फाटक उजाड़ पड़े हैं,[3]
उसके याजक आहें भर रहे हैं।
उसकी कुँवारियाँ* गम मना रही हैं,
वह खुद दुख से तड़प रही है।

ה [*हे*]

5 उसके बैरी उसके मालिक बन गए
हैं, उसके दुश्मन बेफिक्र हैं।[4]
यहोवा ने उसके बहुत-से
अपराधों की वजह से उसे यह
दुख दिया है।[5]
दुश्मन उसके बच्चों को बँधुआई में
ले गया है।[6]

ו [*वाव*]

6 सिय्योन की बेटी का सारा वैभव
मिट गया है।[7]
उसके हाकिम उन हिरनों जैसे हैं
जिन्हें कोई चरागाह नहीं मिला,

अध्य. 1
1 भज 122:3, 4
2 1रा 4:20
3 व्य 28:15, 48; 2रा 25:11, 12
4 विल 1:16
5 यिर्म 4:30; यहे 16:37
6 यिर्म 30:14
7 लैव 26:33; 2रा 24:14, 15; 2रा 25:21; यिर्म 39:9; यिर्म 52:27
8 यिर्म 17:4

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:64
2 आम 8:10
3 यश 3:26
4 जक 1:15
5 2इत 36:15, 16; नहे 9:33; दान 9:7, 16
6 यिर्म 39:9; यिर्म 52:30
7 यहे 24:21

1:1 *अध्याय 1-4 शोकगीत हैं जिनके पद इब्रानी वर्णमाला के क्रम से रखे गए हैं, यानी हर पद एक इब्रानी अक्षर से शुरू होता है। #या "ज़िला अधिकार-क्षेत्रों।"

1:4 *या "जवान औरतें।"

उनका पीछा किया जा रहा है,
लेकिन वे थके-हारे चल रहे हैं।

ז [जैन]

7 मुसीबत के इन दिनों में जब
यरूशलेम बेघर हो गयी है,
वह अपने गुज़रे दिनों को याद
करती है,
जब उसके पास बेशकीमती चीज़ें
हुआ करती थीं।[1]
उसके लोग बैरी के हाथ में पड़
गए और उसका कोई मददगार
न था।[2]
दुश्मनों ने यह सब देखा और
उसका गिरना देखकर हँसने
लगे।[3]

ח [हेथ]

8 यरूशलेम ने महापाप किया है।[4]
इसीलिए वह एक घिनौनी चीज़ हो
गयी है।
जो कभी उसका बहुत सम्मान करते
थे, अब वे उसे नीचा देखते हैं
क्योंकि उन्होंने उसका नंगापन
देख लिया।[5]
वह खुद भी कराहती है,[6] शर्म से
अपना मुँह छिपा लेती है।

ט [टेथ]

9 उसकी अशुद्धता उसके घाघरे
पर है।
उसने अंजाम की कोई फिक्र नहीं
की थी।[7]
वह ऐसे गिरी कि सब देखकर चौंक
गए, उसे दिलासा देनेवाला कोई
नहीं।
हे यहोवा, मेरी हालत देख क्योंकि
दुश्मन खुद पर फूल रहा है।[8]

י [योध]

10 बैरी ने उसका सारा खज़ाना लूट
लिया है।[9]
यरूशलेम ने दूसरे राष्ट्रों को अपने
पवित्र-स्थान में घुसते देखा,[1]
उन राष्ट्रों को, जिनको तूने अपनी
मंडली में आने से मना किया था।

כ [काफ]

11 उसके सभी लोग आहें भर रहे
हैं, रोटी की तलाश में भटक
रहे हैं।[2]
उन्होंने अपनी कीमती चीज़ें दे डालीं
ताकि उन्हें खाने को कुछ मिले
और वे ज़िंदा रह सकें।
हे यहोवा, देख, मैं कैसी तुच्छ
औरत* बन गयी हूँ।

ל [लामेध]

12 हे राहगीरो, क्या तुम्हें कोई फर्क
नहीं पड़ता?
मुझे देखो, मुझ पर गौर करो!
क्या इस दर्द से बढ़कर कोई और
दर्द है,
जो यहोवा ने मुझे उस दिन
दिया जब उसके क्रोध की आग
भड़की थी?[3]

מ [मेम]

13 उसने ऊपर से मेरी हड्डियों में आग
भेजी,[4]
वह मेरी हर हड्डी को अपने काबू में
करता है।
उसने मेरे पैरों के लिए एक
जाल बिछाया, मुझे पीछे मुड़ने पर
मजबूर कर दिया।
उसने मुझे दुखियारी बनाकर छोड़ा।
सारा दिन मैं बीमार पड़ी रहती हूँ।

נ [नून]

14 उसने अपने हाथ से मेरे अपराधों
को जुए की तरह कसा है।

अध्य. 1
1 1रा 10:27
2 यिर्म 52:4
3 भज 137:7; विल 2:16
4 यश 1:4; यश 59:2; यहे 22:4
5 यिर्म 13:22; यहे 23:29
6 यिर्म 4:31
7 यिर्म 8:7
8 यिर्म 50:29
9 यिर्म 52:17, 19; दान 1:1, 2

दूसरा कॉल.
1 2इत 36:17, 18; भज 74:7; यिर्म 52:13
2 यिर्म 38:9; यिर्म 52:6; विल 2:12; विल 4:4
3 यिर्म 21:7
4 भज 102:3

1:11 *यहाँ यरूशलेम को एक औरत के रूप में बताया गया है।

उन्हें मेरी गरदन पर रखा गया है,
मेरी ताकत जवाब दे गयी है।
यहोवा ने मुझे ऐसे लोगों के हाथ कर दिया जिनका मैं मुकाबला नहीं कर सकती।[1]

ס [सामेख]

15 यहोवा ने मेरे बीच से सभी ताकतवर आदमियों को उठाकर फेंक दिया।[2]
उसने मेरे खिलाफ लोगों का एक दल बुलाया ताकि मेरे जवानों को कुचल दे।[3]
यहोवा ने यहूदा की कुँवारी बेटी को अंगूर रौंदने के हौद में रौंद दिया।[4]

ע [ऐयिन]

16 इसीलिए मैं रो रही हूँ,[5] मेरी आँखों से आँसू बह रहे हैं।
क्योंकि जो मुझे दिलासा दे सकता था या मुझे तरो-ताज़ा कर सकता था वह कोसों दूर है।
मेरे बेटों के लिए कोई उम्मीद नहीं बची क्योंकि दुश्मन जीत गया है।

פ [पे]

17 सिय्योन हाथ फैलायी हुई है,[6]
उसे दिलासा देनेवाला कोई नहीं।
यहोवा ने याकूब के आस-पास के सभी बैरियों को हुक्म दिया कि वे उस पर हमला करें।[7]
यरूशलेम उनके लिए एक घिनौनी चीज़ बन गयी है।[8]

צ [सादे]

18 यहोवा नेक है,[9] मैंने उसकी आज्ञाओं के खिलाफ जाकर बगावत की थी।[10]
सब देशों के लोगो, सुनो और मेरा दर्द देखो।
मेरी कुँवारियाँ* और मेरे जवान बँधुआई में चले गए हैं।[1]

ק [कोफ]

19 मैंने अपने यारों को बुलाया, मगर उन्होंने मुझे दगा दे दिया।[2]
मेरे याजक और प्रधान खाना तलाश रहे थे ताकि ज़िंदा रह सकें,
मगर वे शहर में भटकते-भटकते मर गए।[3]

ר [रेश]

20 हे यहोवा, देख, मैं कितनी बड़ी मुसीबत में हूँ।
मेरे अंदर* मरोड़ पड़ रही है।
मेरा दिल अंदर-ही-अंदर छटपटा रहा है, क्योंकि मैंने बगावत करने में हद कर दी।[4]
बाहर तलवार मेरे बच्चों को मुझसे छीन रही है,[5] घर के अंदर भी मौत का मंज़र है।

ש [शीन]

21 लोगों ने मेरा कराहना सुना है,
मुझे दिलासा देनेवाला कोई नहीं।
मेरे सब दुश्मनों ने मेरी विपत्ति की खबर सुनी है।
वे बहुत खुश हैं क्योंकि तू यह विपत्ति लाया है।[6]
मगर तू वह दिन भी लाएगा जिसका तूने ऐलान किया है,[7]
जब उनकी हालत मेरी जैसी होगी।[8]

ת [ताव]

22 उनकी सारी बुराइयों पर तू ध्यान दे, उनके साथ कड़ाई से पेश आ,[9]

अध्य. 1
1 लैव 26:37; यहे 11:9
2 2रा 24:14, 15
3 2इत 36:17
4 प्रक 14:19; प्रक 19:15
5 यिर्म 31:15
6 यिर्म 4:31
7 व्य 28:49; 2रा 24:1, 2; 2रा 25:1
8 विल 1:8
9 नहे 9:33; दान 9:7
10 1शम 12:14, 15

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:32
2 यिर्म 30:14
3 2रा 25:3; यिर्म 38:9
4 भज 107:11; यश 1:2; यश 63:10
5 व्य 32:25; यिर्म 15:2
6 यहे 25:6, 7; ओब 12
7 यश 13:19; यिर्म 25:12-14; योए 3:19
8 भज 137:8, 9; यश 51:22, 23
9 यिर्म 51:35

1:18 *या "जवान औरतें।" **1:20** *शा., "मेरी अंतड़ियों में।"

जैसे तू मेरे सभी अपराधों की
वजह से मेरे साथ कड़ाई से पेश
आया था।
मेरी कराहों का कोई हिसाब नहीं,
मेरा मन रोगी है।

א [आलेफ]

2 देख, यहोवा ने कैसे गुस्से में आकर
सिय्योन की बेटी को काले बादल
से ढाँप दिया है!
उसने इसराएल की खूबसूरती आस-
मान से ज़मीन पर पटक दी है।[1]
अपने क्रोध के दिन उसने अपने
पाँवों की चौकी का ध्यान नहीं
रखा।[2]

ב [बेथ]

2 यहोवा ने याकूब में रहने की सारी
जगह निगल ली हैं, उन पर बिल-
कुल दया नहीं की।
जलजलाहट में आकर उसने यहूदा
की बेटी के किले ढा दिए हैं।[3]
उसने उसके राज्य और उसके
हाकिमों को ज़मीन पर गिराकर
बेइज़्ज़त कर दिया है।[4]

ג [गिमेल]

3 गुस्से से तमतमाते हुए उसने
इसराएल का हर सींग काट
डाला।*
जब दुश्मन ने हमला किया तो उसने
अपना दायाँ हाथ खींच लिया,[5]
याकूब पर उसका गुस्सा आग की
तरह भड़कता रहा, जिससे आस-
पास की हर चीज़ भस्म हो
गयी।[6]

ד [दालथ]

4 उसने दुश्मन की तरह अपनी कमान
चढ़ायी है,

अध्य. 2
1 विल 2:15
2 1इत 28:2; भज 132:7; यश 60:13
3 व्य 28:52; मी 5:11
4 यश 39:7; यश 43:28; यहे 21:26, 27
5 भज 74:10, 11
6 व्य 32:22; यश 42:25; यिर्म 7:20

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:63; यश 63:10; यिर्म 21:5
2 2रा 25:21
3 यिर्म 4:4; यिर्म 10:20
4 यिर्म 30:14
5 2रा 25:8, 9; 2इत 36:19; यश 63:18; यश 64:11
6 विल 1:4
7 यिर्म 52:24, 27
8 लैव 26:31; यिर्म 26:6; यिर्म 52:12, 13; यहे 24:21; मी 3:12
9 2इत 36:19
10 भज 74:4

बैरी की तरह हमला करने के लिए
अपना दायाँ हाथ उठाया है,[1]
वह उन सबको मार डालता रहा जो
हमारी नज़रों में अनमोल थे।[2]
उसने सिय्योन की बेटी के तंबू में
अपने क्रोध की आग बरसायी।[3]

ה [हे]

5 यहोवा एक दुश्मन जैसा बन
गया है,[4]
उसने इसराएल को निगल लिया है।
उसकी सभी मीनारें निगल ली हैं,
उसकी सभी किलेबंद जगह नाश
कर दी हैं।
उसने यहूदा की बेटी का मातम और
विलाप बढ़ा दिया है।

ו [वाव]

6 वह अपने डेरे को बुरी तरह तबाह
करता है,[5] मानो वह बाग में कोई
छप्पर हो।
उसने अपने त्योहारों का अंत* कर
दिया है।[6]
यहोवा ने सिय्योन में त्योहार और
सब्त की याद मिटा दी है,
भयानक क्रोध में आकर उसने
राजा और याजक को नकार
दिया है।[7]

ז [जैन]

7 यहोवा ने अपनी वेदी ठुकरा दी है,
अपने पवित्र-स्थान से अपनी मंज़ूरी
हटा ली है।[8]
उसने उसकी किलेबंद मीनारों
की दीवारें दुश्मन के हाथ में कर
दी हैं।[9]
उन्होंने यहोवा के भवन में ऐसा
होहल्ला मचाया[10] मानो कोई
त्योहार हो।

2:3 * या "की पूरी ताकत मिटा दी।"

2:6 * या "नाश।"

ח [हेथ]

8 यहोवा ने ठान लिया है कि वह
सिय्योन की बेटी की शहरपनाह
ढा देगा।[1]
उसने नापने की डोरी से उसे
नापा है।[2]
उसे नाश करने से अपना हाथ नहीं
रोका।
वह शहरपनाह और सुरक्षा की
ढलान को मातम मनाने पर
मजबूर करता है।
उन्हें कमज़ोर कर दिया गया है।

ט [टेथ]

9 उसके फाटक ज़मीन पर गिर
पड़े हैं।[3]
उसने उसके बेड़े तोड़कर नाश कर
दिए हैं।
उसके राजा और हाकिम दूसरे
राष्ट्रों में हैं।[4]
कानून* नाम की चीज़ नहीं
रही, उसके भविष्यवक्ताओं को
भी यहोवा से कोई दर्शन नहीं
मिलता।[5]

י [योध]

10 सिय्योन की बेटी के मुखिया ज़मीन
पर खामोश बैठे हैं।[6]
वे अपने सिर पर धूल डालते हैं
और टाट ओढ़ते हैं।[7]
यरूशलेम की कुँवारियाँ सिर झुकाए
बैठी हैं।

כ [काफ]

11 आँसू बहाते-बहाते मेरी आँखें थक
गयी हैं।[8]
मेरे अंदर* मरोड़ पड़ रही है।
मेरे लोगों की बेटी# गिर गयी है,
नन्हे-मुन्ने और दूध-पीते
बच्चे कसबे के चौकों पर बेहोश
हो रहे हैं,[1]
इस वजह से मेरा कलेजा ज़मीन पर
उँडेल दिया गया है।[2]

ל [लामेध]

12 जब वे शहर के चौकों में
घायल लोगों की तरह होश खोने
लगते हैं,
अपनी-अपनी माँ की गोद में दम
तोड़ रहे हैं,
तो कराहते हुए कहते हैं, "अनाज
और दाख-मदिरा कहाँ है!"[3]

מ [मेम]

13 हे यरूशलेम की बेटी, मैं तुझे
किसकी मिसाल दूँ?
किसके साथ तेरी तुलना करूँ?
हे सिय्योन की कुँवारी बेटी, तुझे
दिलासा देने के लिए तुझे किसके
जैसा बताऊँ?
तेरी तबाही समुंदर की तरह दूर-दूर
तक फैली है।[4] कौन तुझे चंगा
कर सकता है?[5]

נ [नून]

14 तेरे भविष्यवक्ताओं ने तेरे बारे में
जो दर्शन देखे, वे सब झूठे और
खोखले थे,[6]
उन्होंने तेरा गुनाह नहीं बताया,
जिससे तू बँधुआई में जाने से बच
जाती,[7]
मगर वे तुझे झूठे और गुमराह
करनेवाले दर्शन बताते रहे।[8]

ס [सामेख]

15 सभी राहगीर तेरी खिल्ली उड़ाते हैं,
ताली बजाते हैं।[9]
यरूशलेम की बेटी को देखकर
हैरानी से सीटी बजाते हैं,[10] सिर
हिलाते हुए कहते हैं,

2:9 *या "हिदायत।" 2:11 *शा., "मेरी अंतड़ियों में।" #शायद दया दिखाने या हमदर्दी जताने के लिए उन्हें एक बेटी के रूप में बताया गया है।

अध्य. 2
1 2रा 25:10; यिर्म 39:8
2 2रा 21:13; यश 28:17
3 नहे 1:3; यिर्म 14:2
4 व्य 28:15, 36; 2रा 24:15; 2रा 25:7; विल 4:20; यहे 12:13; दान 1:3, 6
5 भज 74:9; यिर्म 23:16; यहे 7:26
6 यश 3:26
7 यिर्म 6:26; यहे 7:18
8 विल 3:48

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 11:22; विल 2:19; विल 4:4
2 यिर्म 14:17
3 व्य 28:49, 51; 2रा 25:3; यश 3:1; यिर्म 18:21
4 यिर्म 14:17; दान 9:12
5 यिर्म 30:12
6 यिर्म 2:8; यिर्म 27:14; यहे 13:2, 3
7 यिर्म 23:14
8 यिर्म 23:32; यिर्म 27:9; मी 3:5; सप 3:4
9 यहे 25:2, 6
10 1रा 9:8; यिर्म 25:9

"क्या यही वह नगरी है जिसके
बारे में वे कहते थे, 'इसकी
खूबसूरती बेमिसाल* है, सारी
धरती के लिए यह हर्ष का
कारण है'?"[1]

פ [*पे*]

16 तुझे देखकर तेरे सब दुश्मनों ने
अपना मुँह खोला है।
वे सीटी बजाते हैं और दाँत पीसते
हुए कहते हैं, "हमने उसे निगल
लिया है।[2]
हमें जिस दिन का इंतज़ार था, यह
वही है![3] वह दिन आ गया है,
हमने यह दिन देख लिया है!"[4]

ע [*ऐयिन*]

17 यहोवा ने जैसा करने की ठानी थी
वैसा ही किया,[5]
उसने जो कहा था वह कर दिया,[6]
मुद्दतों पहले जो आज्ञा दी थी उसके
मुताबिक किया।[7]
उसने उसे ढा दिया है, उस पर
बिलकुल दया नहीं की।[8]
उसने दुश्मन को तुझे हराकर मगन
होने का मौका दिया,
तेरे बैरियों का सींग ऊँचा कर
दिया।*

צ [*सादे*]

18 हे सिय्योन की बेटी की शहरपनाह,
उनका दिल यहोवा को पुकार
रहा है।
दिन-रात तेरी आँखों से आँसू नदी
की तरह बहते रहें,
खुद को एक पल के लिए भी
आराम न दे, अपनी आँख को
चैन न दे।

2:15 *या "परिपूर्ण।" 2:17 *या "की ताकत बढ़ा दी।"

अध्य. 2

1 भज 48:2
यहे 16:14

2 यिर्म 51:34

3 मी 4:11

4 ओब 13

5 यिर्म 18:11
मी 2:3

6 2रा 23:27

7 लैव 26:14, 17
व्य 28:15

8 यहे 5:11

दूसरा कॉल.

1 यश 51:20
विल 4:9
यहे 5:16

2 लैव 26:29
व्य 28:53
यिर्म 19:9
विल 4:10
यहे 5:10

3 यहे 9:6, 7

4 व्य 28:49, 50
2इत 36:17

5 यिर्म 9:21
यिर्म 18:21

6 यिर्म 13:14
यिर्म 21:7
विल 3:43
यहे 5:11
यहे 9:6

7 व्य 16:16

8 सप 1:18

ק [*कोफ*]

19 उठ! रात-भर रोती रह, पहरों की
शुरूआत में रोती रह।
आँसू बहाती हुई अपने दिल का
सारा हाल यहोवा को बता।
अपने बच्चों की जान की खातिर
उसके आगे हाथ फैला
जो भुखमरी की वजह से हर गली
के कोने में बेहोश हो रहे हैं।[1]

ר [*रेश*]

20 हे यहोवा, अपने लोगों को देख
जिनके साथ तू इतनी कड़ाई से
पेश आया।
क्या औरतें इसी तरह अपनी
संतान* को, अपनी कोख से
जन्मे सेहतमंद बच्चों को
खाती रहें?[2]
क्या इसी तरह यहोवा के
पवित्र-स्थान में याजकों और
भविष्यवक्ताओं का कत्ल
होता रहे?[3]

שׁ [*शीन*]

21 जवान और बूढ़े गलियों में मरे
पड़े हैं।[4]
मेरी कुँवारियाँ* और मेरे जवान
तलवार से घात किए गए हैं।[5]
तूने अपने क्रोध के दिन उन्हें मार
डाला, उन्हें काट डाला,
तूने उन पर बिलकुल दया
नहीं की।[6]

ת [*ताव*]

22 तूने चारों तरफ से आतंक को
बुलाया, जैसे त्योहार के लिए
लोगों को बुलाया जाता है।[7]
यहोवा के क्रोध के दिन कोई भाग
नहीं पाया, न ही ज़िंदा बचा,[8]

2:20 *या "अपने फलों।" 2:21 *या "जवान औरतें।"

जिनको मैंने जन्म दिया,* पाला-
पोसा, उनका मेरे दुश्मन ने नाश
कर दिया।[1]

א [आलेफ]

3 मैं वह आदमी हूँ जिसने उसके
क्रोध की छड़ी की वजह से दुख
झेला है।
2 उसने मुझे खदेड़ दिया है, वह
मुझे उजियाले में नहीं अँधेरे में
चलाता है।[2]
3 यहाँ तक कि वह दिन-भर, बार-
बार मुझ पर हाथ उठाता है।[3]

ב [बेथ]

4 उसने मेरे शरीर और मेरी चमड़ी
को गला दिया है,
मेरी हड्डियाँ तोड़ दी हैं।
5 उसने मुझे घेर लिया है, चारों तरफ
से कड़वे ज़हर[4] और मुश्किलों से
घेर लिया है।
6 उसने मुझे बहुत पहले मरे हुओं की
तरह अँधेरे में पड़े रहने के लिए
छोड़ दिया है।

ג [गिमेल]

7 उसने मेरे चारों तरफ दीवार खड़ी
कर दी है ताकि मैं भाग न सकूँ,
मुझे ताँबे की भारी बेड़ियों से जकड़
दिया है।[5]
8 और जब मैं बेबस होकर दुहाई देता
हूँ, तो वह मेरी प्रार्थना ठुकरा
देता है।*[6]
9 उसने गढ़े हुए पत्थरों से मेरा रास्ता
रोक दिया है,
मेरी राहें टेढ़ी-मेढ़ी कर दी हैं।[7]

ד [दालथ]

10 वह घात लगाए रीछ की तरह,
छिपकर बैठे शेर की तरह मुझ
पर हमला करने की ताक में है।[1]
11 वह मुझे रास्ते से घसीटकर ले गया
और उसने मेरी बोटी-बोटी कर
दी है।*
उसने मुझे उजाड़ दिया है।[2]
12 उसने अपनी कमान चढ़ायी है और
मुझ पर अपना तीर साधा है।

ה [हे]

13 उसने अपने तरकश के तीरों से मेरे
गुरदे भेद दिए हैं।
14 सब देशों के लोग मेरा मज़ाक बनाते
हैं, मुझ पर गीत बनाकर सारा
दिन गाते हैं।
15 उसने मुझे कड़वी चीज़ों से भर
दिया है, नागदौना से तर कर
दिया है।[3]

ו [वाव]

16 वह कंकड़ से मेरे दाँत तोड़ देता है,
मुझे राख में लोटने पर मजबूर
करता है।[4]
17 तूने मेरा चैन छीन लिया है, मैं भूल
गया हूँ कि भलाई क्या होती है।
18 इसलिए मैं कहता हूँ, "मेरा वैभव
मिट गया है, यहोवा पर मेरी जो
आशा थी वह टूट गयी है।"

ז [जैन]

19 ध्यान दे कि मैं कैसी तकलीफें
झेल रहा हूँ, बेघर हो गया हूँ,[5]
नागदौना और कड़वा ज़हर खा
रहा हूँ।[6]
20 तू ज़रूर ध्यान देगा और नीचे झुक-
कर मेरे पास आएगा।[7]
21 मैं यह बात दिल में संजोए रखता
हूँ, इसीलिए मैं तेरे वक्त का
इंतज़ार करूँगा।[8]

2:22 *या "सेहतमंद पैदा किया।" **3:8** *या "रोक देता है; अनसुनी कर देता है।"

3:11 *या शायद, "बेकार पड़े रहने पर मजबूर किया है।"

अध्य. 2
1 व्य 28:18

अध्य. 3
2 व्य 28:15, 29; यिर्म 13:16
3 यश 63:10
4 यिर्म 8:14; यिर्म 9:15; विल 3:19
5 यिर्म 39:7
6 भज 80:4; भज 102:2; यश 1:15; मी 3:4
7 यश 63:17

दूसरा कॉल.
1 अय 38:39, 40; हो 5:14; आम 5:18, 19
2 यिर्म 6:8; यिर्म 32:43
3 यिर्म 9:15; यिर्म 23:15
4 भज 102:9; यिर्म 6:26
5 नहे 9:32; भज 137:1
6 यिर्म 9:15; विल 3:5
7 भज 113:5-7
8 भज 130:6-8; मी 7:7

ח [*हेथ*]

22 यहोवा के अटल प्यार की वजह से
ही हमारा अंत नहीं हुआ है,[1]
उसकी दया कभी मिटती नहीं।[2]
23 वह हर सुबह नयी होती है,[3]
तू हमेशा विश्वासयोग्य
रहता है।[4]
24 मैंने कहा, "यहोवा मेरा भाग है,[5]
इसीलिए मैं उसके लिए इंतज़ार
करने का नज़रिया बनाए
रखूँगा।"[6]

ט [*टेथ*]

25 यहोवा उस इंसान के साथ भलाई
करता है जो उस पर आस
लगाता है,[7] उसकी खोज में लगा
रहता है।[8]
26 इंसान की भलाई इसी में है कि वह
खामोश रहकर* उद्धार के लिए
यहोवा का इंतज़ार करे।[9]
27 इंसान की भलाई इसी में है कि वह
जवानी में जुआ उठाए।[10]

י [*योध*]

28 जब परमेश्वर उस पर यह रखता
है, तो वह अकेला बैठा रहे और
खामोश रहे।[11]
29 वह अपना मुँह धूल में रखे,[12]
शायद अब भी कुछ उम्मीद
बाकी हो।[13]
30 वह अपना गाल थप्पड़ मारनेवाले
की तरफ कर दे, जितना अपमान
सह सकता है सहे।

כ [*काफ*]

31 क्योंकि यहोवा हमें सदा के लिए
नहीं ठुकराएगा।[14]
32 माना कि उसने हमें दुख दिया है,
मगर वह अपने भरपूर अटल
प्यार के मुताबिक हम पर दया
भी दिखाएगा।[1]
33 क्योंकि वह दिल से नहीं
चाहता कि इंसानों को दुख दे,
उन्हें सताए।[2]

ל [*लामेध*]

34 धरती के सभी कैदियों को पैरों तले
रौंदना,[3]
35 परम-प्रधान के सामने एक इंसान
का न्याय पाने का हक मारना,[4]
36 एक इंसान के मुकदमे में उसके साथ
धोखा करना,
ये ऐसी बातें हैं जो यहोवा बरदाश्त
नहीं करता।

מ [*मेम*]

37 जब तक यहोवा इसकी आज्ञा न
दे, कौन बोल सकता है और इसे
पूरा कर सकता है?
38 परम-प्रधान के मुँह से
अच्छी और बुरी बातें साथ नहीं
निकलतीं।
39 एक इंसान अपने पाप के अंजामों
के बारे में क्यों शिकायत करे?[5]

נ [*नून*]

40 आओ हम अपने तौर-तरीके जाँचें
और परखें[6] और यहोवा के पास
लौट जाएँ।[7]
41 आओ हम स्वर्ग में रहनेवाले पर-
मेश्वर के आगे हाथ फैलाएँ और
दिल से यह बिनती करें:[8]
42 "हमने अपराध किया है, बगावत
की है[9] और तूने हमें माफ नहीं
किया।[10]

ס [*सामेख*]

43 तूने गुस्से में आकर हमारा रास्ता
रोक दिया है ताकि हम तेरे पास
न आएँ,[11]

3:26 *या "सब्र से।"

अध्या. 3

1 एज 9:8
2 नहे 9:31, यिर्म 30:11, मी 7:18
3 भज 30:5
4 व्य 32:4, भज 36:5
5 भज 16:5, भज 73:26, भज 142:5
6 भज 130:6-8
7 भज 25:3, भज 130:5, यश 25:9, यश 30:18, मी 7:7
8 1इत 28:9, यश 26:9, सप 2:3
9 भज 37:7, भज 116:6
10 भज 119:71
11 भज 39:8, 9, विल 3:39
12 यहे 16:63
13 योए 2:12-14
14 यिर्म 3:12, यिर्म 31:37, यिर्म 32:40, मी 7:18

दूसरा कॉल.

1 भज 30:5, भज 103:9, 11, यश 54:7, यिर्म 31:20
2 यश 55:7, यहे 33:11, 2पत 3:9
3 भज 102:19, 20
4 भज 12:5, नीत 17:15
5 भज 103:10, मी 7:9
6 हाग 1:5
7 व्य 4:30, यश 55:7, योए 2:13
8 व्य 4:29, 2इत 7:14, 2इत 34:27
9 नहे 9:26
10 2रा 24:3, 4, दान 9:5, 12
11 नीत 15:8

तूने हमारा पीछा किया और
हमें मार डाला, बिलकुल दया
नहीं की।[1]
44 तूने एक बादल से अपने पास
आने का रास्ता रोक दिया है
ताकि हमारी प्रार्थना तुझ तक न
पहुँचे।[2]
45 तू हमें देश-देश के लोगों के
बीच मैल और कूड़ा-करकट बना
देता है।”

פ [पे]

46 हमारे सब दुश्मन हमारे खिलाफ
मुँह खोलते हैं।[3]
47 हम बस खौफ के साए में जीते हैं,
गड्ढे में गिरे पड़े हैं,[4] हम नाश
हो गए, तबाह हो गए।[5]
48 मेरे लोगों की बेटी का गिरना
देखकर मेरी आँखों से आँसुओं
की धारा बहती है।[6]

ע [ऐयिन]

49 मेरी आँखें रुकने का नाम नहीं
लेंगी, तब तक बहती रहेंगी,[7]
50 जब तक कि यहोवा स्वर्ग से मुझ
पर नज़र नहीं करता।[8]
51 मेरे शहर की सब बेटियों के साथ
जो हुआ, उस वजह से मेरी
आँखों ने मुझे बहुत दुख
दिया है।[9]

צ [सादे]

52 मेरे दुश्मनों ने बेवजह मेरा
शिकार किया है, मानो मैं एक
चिड़िया हूँ।
53 उन्होंने मुझे गड्ढे में डालकर
हमेशा के लिए खामोश कर
दिया, वे मुझ पर पत्थर
फेंकते रहे।
54 पानी मेरे सिर के ऊपर तक आ
गया, मैंने कहा, “अब तो मैं
गया!”

ק [कोफ]

55 हे यहोवा, गड्ढे की गहराई में से
मैंने तेरा नाम पुकारा।[1]
56 मेरी आवाज़ सुन, मदद और राहत
के लिए मेरी पुकार सुन, अपने
कान बंद न कर।
57 जिस दिन मैंने तुझे पुकारा, उस दिन
तू मेरे करीब आया। तूने मुझसे
कहा, “मत डर।”

ר [रेश]

58 हे यहोवा, तूने मेरी पैरवी की, तूने
मेरी जान छुड़ायी।[2]
59 हे यहोवा, मेरे साथ जो अन्याय
हुआ है उसे तूने देखा है,
मेहरबानी करके मुझे न्याय
दिला।[3]
60 तूने देखा कि उनमें कैसी बदले की
भावना है, उन्होंने मेरे खिलाफ
कितनी साज़िशें रची हैं।

ש [सीन] या [शीन]

61 हे यहोवा, तूने उनके ताने सुने
हैं, उनकी सारी साज़िशें सुनी
हैं जो उन्होंने मेरे खिलाफ
की हैं,[4]
62 मेरे विरोधियों की बातें और उनका
फुसफुसाना तू जानता है।
63 उन्हें देख, उठते-बैठते वे मेरे
बारे में गीत गाकर मेरी खिल्ली
उड़ाते हैं!

ת [ताव]

64 हे यहोवा, तू उनकी करतूतों का
सिला उन्हें देगा।
65 तू उन्हें शाप देगा, उनके दिलों को
कठोर कर देगा।
66 हे यहोवा, तू गुस्से में आकर
उनका पीछा करेगा और अपने
आकाश के नीचे से उन्हें मिटा
देगा।

अध्य. 3

1 व्य 4:26; विल 2:2; यहे 9:10
2 भज 80:4; नीत 15:29; नीत 28:9; यश 1:15; मी 3:4; जक 7:13
3 विल 2:16
4 व्य 28:66, 67
5 यश 51:19; यिर्म 4:6
6 यिर्म 9:1
7 यिर्म 14:17; विल 1:16
8 भज 80:14; भज 102:19-21; यश 63:15
9 यिर्म 11:22

दूसरा कॉल.

1 भज 130:1; यो 2:1, 2
2 यिर्म 50:34
3 यिर्म 51:36, 37
4 भज 74:18

א [आलेफ]

4 जो कभी बढ़िया सोना[1] हुआ करता
था, देखो, उसकी चमक अब
कैसी फीकी पड़ गयी है!
पवित्र पत्थरों[2] को देखो, कैसे
हर गली के कोने में बिखरे
पड़े हैं![3]

ב [बेथ]

2 सिय्योन के इज़्ज़तदार बेटों को
देखो, जो शुद्ध सोने की तरह
अनमोल थे,
अब उनकी कीमत कैसे कुम्हार के
हाथों बने
मिट्टी के घड़ों जितनी रह गयी है!

ג [गिमेल]

3 गीदड़ी भी अपने बच्चों को अपना
दूध पिलाती है,
मगर मेरे लोगों की बेटी कैसी
बेरहम हो गयी है,[4] वीराने के
शुतुरमुर्ग जैसी हो गयी है।[5]

ד [दालथ]

4 दूध-पीते बच्चे की जीभ प्यास के
मारे तालू से चिपक गयी है।
बच्चे रोटी माँगते हैं,[6] मगर उन्हें
कोई कुछ नहीं देता।[7]

ה [हे]

5 जो कभी ज़ायकेदार चीज़ों का मज़ा
लेते थे, वे अब सड़कों पर पड़े
भूख से तड़प रहे हैं।[8]
जो बचपन से सुर्ख लाल कपड़े
पहनने के आदी थे,[9] वे अब राख
के ढेर पर लोट रहे हैं।

ו [वाव]

6 मेरे लोगों की बेटी की सज़ा,*
सदोम के पाप की सज़ा से भी
भारी है,[10]
जिसे एक ही पल में गिरा दिया गया
था और उसकी मदद करनेवाला
कोई न था।[1]

ז [ज़ैन]

7 उसके नाज़ीर[2] बर्फ से भी
ज़्यादा उजले थे, दूध से भी ज़्यादा
सफेद थे।
उनका रंग मूंगों से भी ज़्यादा लाल
था, उनका रूप चमकाए हुए
नीलम जैसा था।

ח [हेथ]

8 मगर अब वे कालिख* से भी
ज़्यादा काले हो गए हैं,
गलियों में वे पहचान में भी नहीं
आते।
उनकी चमड़ी हड्डियों से सटकर
सिकुड़ गयी है,[3] सूखी लकड़ी
जैसी हो गयी है।

ט [टेथ]

9 तलवार से मरनेवाले अकाल से
मरनेवालों से बेहतर हैं,[4]
वे घुल-घुलकर मरते हैं, मानो वे
भेद दिए गए हों।

י [योध]

10 जिन औरतों में ममता होती थी,
उन्होंने अपने ही हाथ से अपने
बच्चों को उबाला।[5]
जब मेरे लोगों की बेटी गिर पड़ी,
तो उनके बच्चे उनके मातम का
खाना बन गए।[6]

כ [काफ]

11 यहोवा ने अपना क्रोध दिखाया है,
अपने गुस्से की आग बरसायी है।[7]
उसने सिय्योन में चिंगारी भड़कायी
है जो उसकी बुनियाद को भस्म
कर देती है।[8]

ל [लामेध]

12 पृथ्वी के राजाओं ने और सारे जगत

4:6 *शा., "का गुनाह।"

4:8 *शा., "काले रंग।"

अध्य. 4
1 1रा 6:22
2 1रा 5:17; 1रा 7:9-12
3 यिर्म 52:12, 13
4 लैव 26:29; व्य 28:53-57; यिर्म 19:9; विल 4:10
5 अय 39:14-16
6 विल 1:11; विल 2:11, 12
7 यिर्म 52:6
8 आम 6:4, 7
9 यिर्म 6:2, 26
10 यहे 16:48

दूसरा कॉल.
1 उत 19:24, 25; दान 9:12
2 गि 6:2
3 भज 102:5
4 यिर्म 29:17; यिर्म 38:2
5 लैव 26:29; विल 2:20; विल 4:3
6 व्य 28:54-57
7 यिर्म 6:11; यिर्म 7:20; यहे 22:31
8 व्य 32:22; 2रा 25:9, 10

के निवासियों ने यकीन नहीं
किया
कि उसके बैरी, उसके दुश्मन यरू-
शलेम के फाटकों से दाखिल
होंगे।[1]

מ [मेम]

13 यह सब उसके भविष्यवक्ताओं के
पापों और याजकों के गुनाहों की
वजह से हुआ है,[2]
जिन्होंने उसके बीच नेक लोगों का
खून बहाया है।[3]

נ [नून]

14 वे गलियों में अंधों की तरह
भटकते हैं।[4]
वे खून से दूषित हैं,[5]
इसलिए कोई उनके कपड़े नहीं
छूता।

ס [सामेख]

15 वे चिल्ला-चिल्लाकर उनसे कहते हैं,
"दूर रहो! हम अशुद्ध हैं!
दूर रहो! दूर रहो! हमें मत
छूओ!"
वे बेघर हो गए हैं, यहाँ-वहाँ
भटकते हैं।
राष्ट्रों के लोग कहते हैं: "वे हमारे
यहाँ नहीं रह सकते।*[6]

פ [पे]

16 खुद यहोवा ने उन्हें तितर-बितर कर
दिया है,[7]
वह उन्हें फिर कभी मंज़ूर नहीं
करेगा।
लोग याजकों का फिर कभी आदर
नहीं करेंगे,[8] मुखियाओं पर कृपा
नहीं करेंगे।"[9]

ע [ऐयिन]

17 हमारी आँखें मदद की राह देखते-
देखते थक गयी हैं, ये बेकार ही
आस लगाए बैठी हैं।[1]
हम मदद के लिए एक ऐसे राष्ट्र
की तरफ ताकते रहे जो हमें बचा
नहीं सकता था।[2]

צ [सादे]

18 उन्होंने हर कदम पर हमारा शिकार
किया,[3] इसलिए हम अपने चौकों
में चल-फिर न सके।
हमारा अंत करीब है, हमारे दिन
पूरे हो गए हैं क्योंकि हमारा अंत
आ गया है।

ק [कोफ]

19 हमारा पीछा करनेवाले आकाश के
उकाबों से भी तेज़ हैं।[4]
उन्होंने पहाड़ों पर हमारा पीछा
किया, वीराने में घात लगाकर
हमें पकड़ लिया।

ר [रेश]

20 जो हमारे जीवन की साँस है,
यहोवा का अभिषिक्त जन है,[5]
जिसके बारे में हम कहा करते थे,
"उसकी छाँव तले हम राष्ट्रों में
जीएँगे,"
वह उनके खोदे हुए बड़े गड्ढे में
पकड़ा गया है।[6]

ש [सीन]

21 एदोम की बेटी, तू जो ऊज़ देश
में रहती है, मगन हो, खुशियाँ
मना।[7]
मगर वह प्याला तेरी तरफ भी
बढ़ाया जाएगा,[8] तू मदहोश हो
जाएगी और अपना नंगापन
दिखाएगी।[9]

ת [ताव]

22 सिय्योन की बेटी, तेरे गुनाह की
सज़ा खत्म होने पर है।
वह तुझे फिर बँधुआई में नहीं ले
जाएगा।[10]

4:15 *या "यहाँ परदेसियों की तरह नहीं रह सकते।"

अध्य. 4
1 व्य 29:24; 1रा 9:8
2 यिर्म 5:31; यिर्म 14:14; मी 3:11; सप 3:4
3 यिर्म 26:8; मत 23:31; प्रेष 7:52
4 व्य 28:28; सप 1:17
5 यश 1:15; यिर्म 2:34
6 व्य 28:25, 65
7 लैव 26:33; व्य 28:64; यिर्म 24:9
8 2रा 25:18, 21
9 विल 5:12; यहे 9:6

दूसरा कॉल.
1 विल 1:19
2 यिर्म 37:7; यहे 29:6
3 2रा 25:5; विल 3:52
4 व्य 28:49, 50; यश 5:26; यिर्म 4:13; हब 1:8
5 यिर्म 37:1
6 2रा 25:5, 6; यिर्म 39:5
7 भज 137:7; ओब 12
8 यिर्म 25:17, 20; ओब 16
9 यिर्म 49:10, 12
10 लैव 26:44; यश 52:1; यश 60:18

मगर एदोम की बेटी, अब वह तेरे
गुनाह पर ध्यान देगा।
तेरे पापों का परदाफाश करेगा।[1]

5 हे यहोवा, हम पर जो गुज़री है उस
पर ध्यान दे।
देख कि हम कितने बेइज़्ज़त
हुए हैं।[2]
2 हमारी विरासत परायों के
हवाले कर दी गयी है, हमारे
घर परदेसियों को दे दिए
गए हैं।[3]
3 हम अनाथ हो गए, हम पर से
पिता का साया उठ गया है,
हमारी माँएँ विधवा जैसी हो
गयी हैं।[4]
4 हमें अपना ही पानी खरीदना पड़ता
है,[5] अपनी ही लकड़ी के लिए
दाम देना पड़ता है।
5 हमारा पीछा करनेवाले हमारी
गरदन पर सवार हैं,
हम पस्त हो गए हैं, हमें बिलकुल
आराम नहीं दिया जाता।[6]
6 हम रोटी के लिए मिस्र और अश्शूर
के आगे हाथ फैलाते हैं[7] ताकि
अपनी भूख मिटा सकें।
7 हमारे पुरखों ने पाप किया था और
वे अब नहीं रहे, मगर उनके
गुनाहों का अंजाम हमें भुगतना
पड़ रहा है।
8 हम पर सेवक राज कर रहे हैं,
उनके हाथ से हमें छुड़ानेवाला
कोई नहीं।
9 वीराने की तलवार की वजह से हम
अपनी जान जोखिम में डालकर
रोटी लाते हैं।[8]
10 तेज़ भूख से हमारी खाल भट्ठे की
तरह तप रही है।[9]
11 उन्होंने सिय्योन में शादीशुदा औरतों
को और यहूदा के शहरों में कुँवा-
रियों को भ्रष्ट* किया।[1]
12 हाकिम हाथ से लटका दिए गए,[2]
मुखियाओं का बिलकुल आदर
नहीं किया गया।[3]
13 जवान हाथ की चक्की उठाते हैं,
लड़के लकड़ियों का बोझ उठाते
हुए लड़खड़ाते हैं।
14 मुखिया अब शहर के फाटकों पर
नज़र नहीं आते,[4] न ही जवानों
का संगीत सुनायी देता है।[5]
15 हमारे दिलों में अब खुशी नहीं रही,
हमारा नाच-गाना मातम में बदल
गया है।[6]
16 हमारे सिर का ताज गिर गया है।
धिक्कार है हम पर क्योंकि हमने
पाप किया है!
17 इसलिए हमारा मन रोगी है,[7]
हमारी नज़र धुँधली पड़ गयी है।[8]
18 सिय्योन पहाड़ उजाड़ पड़ा है,[9] वहाँ
लोमड़ियाँ घूमती हैं।
19 हे यहोवा, तू सदा अपनी राजगद्दी
पर विराजमान रहता है।
तेरी राजगद्दी पीढ़ी-पीढ़ी तक बनी
रहती है।[10]
20 तूने क्यों हमें हमेशा के लिए भुला
दिया है, इतने लंबे अरसे से हमें
त्याग दिया है?[11]
21 हे यहोवा, हमें अपने पास वापस
ले आ और हम खुशी-खुशी तेरे
पास लौट आएँगे।[12]
हमारे पुराने दिन लौटा दे।[13]
22 मगर तूने तो हमें पूरी तरह ठुकरा
दिया है।
तू अब भी हमसे बहुत गुस्सा है।[14]

5:11 *या "का बलात्कार।"

अध्य. 4
1 यश 34:5; यहे 25:13; यहे 35:15; आम 1:11; ओब 13

अध्य. 5
2 भज 79:4; विल 2:15
3 व्य 28:30; भज 79:1; यिर्म 6:12; सप 1:13
4 निर्ग 22:24; यिर्म 18:21
5 व्य 28:15, 48; यश 3:1; यहे 4:11, 16
6 व्य 28:65
7 2इत 28:16; यश 30:2; यिर्म 2:18, 36; यिर्म 44:12; यहे 17:17, 18
8 यहे 4:10
9 2रा 25:3; विल 4:8

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:30
2 यिर्म 39:6
3 यश 47:6; यिर्म 6:11; विल 4:16
4 यह 20:4
5 यिर्म 25:10
6 आम 8:10
7 विल 1:22
8 व्य 28:65
9 यिर्म 26:18
10 भज 102:12; भज 145:13; भज 146:10
11 भज 79:5; यिर्म 14:19
12 व्य 4:30; भज 80:3; भज 85:4; यिर्म 31:18
13 यिर्म 33:13
14 व्य 28:15

यहेजकेल

सारांश

1 यहेजकेल को बैबिलोन में दर्शन मिले (1-3)
यहोवा के स्वर्गीय रथ का दर्शन (4-28)
आँधी, बादल और आग (4)
चार जीवित प्राणी (5-14)
चार पहिए (15-21)
बर्फ जैसा उज्ज्वल फलक (22-24)
यहोवा की राजगद्दी (25-28)

2 यहेजकेल, भविष्यवक्ता ठहराया गया (1-10)
“वे चाहे तेरी सुनें या न सुनें” (5)
शोकगीत का एक खर्रा (9, 10)

3 यहेजकेल को खर्रा खाना था (1-15)
उसे पहरेदार ठहराया गया (16-27)
चेतावनी न देने पर खून का दोष (18-21)

4 यरूशलेम की घेराबंदी दर्शायी गयी (1-17)
390 दिन और 40 दिन दोष लिए रहा (4-7)

5 यरूशलेम का गिरना दर्शाया गया (1-17)
भविष्यवक्ता के मुँड़ाए बालों को तीन हिस्सों में बाँटा (1-4)
यरूशलेम दूसरे राष्ट्रों से भी बदतर (7-9)
बागियों को 3 तरह की सज़ाएँ (12)

6 इसराएल के पहाड़ों के खिलाफ (1-14)
घिनौनी मूरतें बेइज़्ज़त की जाएँगी (4-6)
“तुम्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ” (7)

7 अंत आ गया है (1-27)
आफत जो कभी किसी पर नहीं आयी (5)
पैसा सड़कों पर फेंका जाएगा (19)
मंदिर दूषित हो जाएगा (22)

8 दर्शन में यहेजकेल यरूशलेम में (1-4)
मंदिर में घिनौने काम देखे (5-18)
औरतें तम्मूज के लिए रो रही हैं (14)
आदमी सूरज की पूजा कर रहे हैं (16)

9 नाश करनेवाले छः आदमी; कलम-दवात लिए एक आदमी (1-11)
न्याय पवित्र-स्थान से शुरू होगा (6)

10 पहियों के बीच से आग ली गयी (1-8)
करूबों और पहियों का ब्यौरा (9-17)
परमेश्वर की महिमा मंदिर से उठी (18-22)

11 दुष्ट हाकिमों को सज़ा सुनायी (1-13)
शहर की तुलना हंडे से (3-12)
बहाली का वादा (14-21)
“एक नया रुझान” पैदा किया गया (19)
परमेश्वर की महिमा यरूशलेम से उठी (22, 23)
यहेजकेल दर्शन में कसदिया लौटा (24, 25)

12 अभिनय से बँधुआई की भविष्यवाणी (1-20)
बँधुआई में जाने के लिए सामान (1-7)
प्रधान अँधेरे में निकलेगा (8-16)
चिंता की रोटी, खौफ का पानी (17-20)
छल-भरी कहावत झूठी निकली (21-28)
“मेरी किसी भी बात के पूरे होने में देर नहीं होगी” (28)

13 झूठे भविष्यवक्ताओं के खिलाफ (1-16)
सफेदी की गयी दीवार गिरेगी (10-12)
झूठी भविष्यवक्तिन के खिलाफ (17-23)

14 मूर्तिपूजा करनेवालों को सज़ा सुनायी (1-11)
यरूशलेम सज़ा से नहीं बच सकता (12-23)
नेक आदमी नूह, दानियेल और अय्यूब (14, 20)

15 यरूशलेम, अंगूर की बेकार बेल (1-8)

16 यरूशलेम के लिए परमेश्वर का प्यार (1-63)
ऐसे बच्चे की तरह मिली जिसे छोड़ दिया गया था (1-7)
परमेश्वर ने उसे सजाया; उसके साथ शादी का करार किया (8-14)
वह बेवफा निकली (15-34)
व्यभिचार करने की सज़ा मिली (35-43)
उसकी तुलना सामरिया और सदोम से (44-58)
परमेश्वर करार नहीं भूलता (59-63)

17 पहेलीः दो उकाब; अंगूर की बेल (1-21)
कोमल टहनी से विशाल देवदार (22-24)

18 हरेक अपने पापों के लिए ज़िम्मेदार (1-32)
जो इंसान पाप करता है, वही मरेगा (4)
बेटा पिता की सज़ा नहीं भुगतेगा (19, 20)
दुष्ट के मरने से खुशी नहीं मिलती (23)
पश्‍चाताप से जीवन मिलता है (27, 28)

19 इसराएल के प्रधानों के बारे में शोकगीत (1-14)

20 इसराएल की बगावत का इतिहास (1-32)
इसराएल की बहाली का वादा (33-44)
दक्षिण के खिलाफ भविष्यवाणी (45-49)

21 परमेश्‍वर के न्याय की तलवार (1-17)
बैबिलोन का राजा यरूशलेम पर हमला करेगा (18-24)
इसराएल का दुष्ट प्रधान हटाया जाएगा (25-27)
“उतार दे अपना ताज” (26)
“जब तक वह नहीं आता जिसके पास कानूनी हक है” (27)
अम्मोनियों पर तलवार चली (28-32)

22 यरूशलेम नगरी, खून की दोषी (1-16)
इसराएल धातु के मैल जैसा बेकार (17-22)
अगुवों और लोगों को सज़ा सुनायी (23-31)

23 दो बहनें जो बेवफा निकलीं (1-49)
ओहोला, अश्‍शूर के साथ (5-10)
ओहोलीबा, बैबिलोन और मिस्र के साथ (11-35)
दोनों बहनों को सज़ा मिली (36-49)

24 यरूशलेम ज़ंग लगे हंडे जैसी (1-14)
यहेजकेल की पत्नी की मौत एक निशानी (15-27)

25 अम्मोन के खिलाफ भविष्यवाणी (1-7)
मोआब के खिलाफ भविष्यवाणी (8-11)
एदोम के खिलाफ भविष्यवाणी (12-14)
पलिश्‍त के खिलाफ भविष्यवाणी (15-17)

26 सोर के खिलाफ भविष्यवाणी (1-21)
“मछुवाई के बड़े-बड़े जाल सुखाने की जगह” (5, 14)
पत्थर और मिट्टी समुंदर में डाले गए (12)

27 सोर के डूबते जहाज़ के बारे में शोकगीत (1-36)

28 सोर के राजा के खिलाफ भविष्यवाणी (1-10)
“मैं एक ईश्‍वर हूँ” (2, 9)
सोर के राजा के बारे में शोकगीत (11-19)
‘तू अदन में था’ (13)
“तुझे पहरा देनेवाला करूब ठहराया” (14)
‘तुझमें बुराई पायी गयी’ (15)
सीदोन के खिलाफ भविष्यवाणी (20-24)
इसराएल बहाल किया जाएगा (25, 26)

29 फिरौन के खिलाफ भविष्यवाणी (1-16)
बैबिलोन को इनाम में मिस्र मिलेगा (17-21)

30 मिस्र के खिलाफ भविष्यवाणी (1-19)
नबूकदनेस्सर का हमला (10)
फिरौन की ताकत तोड़ी गयी (20-26)

31 ऊँचे देवदार, मिस्र का गिरना (1-18)

32 फिरौन और मिस्र के बारे में शोकगीत (1-16)
मिस्र खतनारहित लोगों के साथ दफनाया जाएगा (17-32)

33 एक पहरेदार की ज़िम्मेदारियाँ (1-20)
यरूशलेम के गिरने की खबर (21, 22)
उसके खंडहरों में रहनेवालों को संदेश (23-29)
उन्होंने संदेश के मुताबिक काम नहीं किए (30-33)
यहेजकेल “प्रेम गीत गानेवाले जैसा” (32)
“उनके बीच कोई भविष्यवक्‍ता हुआ करता था” (33)

34 इसराएल के चरवाहों के खिलाफ भविष्यवाणी (1-10)
यहोवा अपनी भेड़ों की देखभाल करता है (11-31)
दाविद उनका चरवाहा होगा (23)
“एक शांति का करार” (25)

35 सेईर के पहाड़ों के खिलाफ भविष्यवाणी (1-15)

36 इसराएल के पहाड़ों के बारे में भविष्यवाणी (1-15)
इसराएल की बहाली (16-38)
‘मैं अपने महान नाम को पवित्र करूँगा’ (23)
“अदन के बाग जैसा” (35)

37 सूखी हड्डियों से भरी घाटी का दर्शन (1-14)
दो छड़ियाँ जोड़ी जाएँगी (15-28)
एक राजा के अधीन एक राष्ट्र (22)
सदा के लिए शांति का करार (26)

38 इसराएल पर गोग का हमला (1-16)
गोग पर यहोवा का क्रोध (17-23)
‘राष्ट्रों को जानना होगा, मैं यहोवा हूँ’ (23)

39 गोग और उसकी टुकड़ियों का नाश (1-10)
हामोन-गोग घाटी में दफन (11-20)
इसराएल की बहाली (21-29)
उस पर पवित्र शक्ति उँडेली जाएगी (29)

40 दर्शन में यहेजकेल इसराएल में (1, 2)
उसने मंदिर देखा (3, 4)
आँगन और दरवाज़े (5-47)
बाहरी आँगन के पूरब का दरवाज़ा (6-16)
बाहरी आँगन; दूसरे दरवाज़े (17-26)
भीतरी आँगन और दरवाज़े (27-37)
मंदिर की सेवा के लिए कमरे (38-46)
वेदी (47)
मंदिर का बरामदा (48, 49)

41 मंदिर का पवित्र-स्थान (1-4)
दीवार और खाने (5-11)
पश्‍चिम की इमारत (12)
इमारतें नापी गयीं (13-15क)
पवित्र-स्थान के अंदर का हिस्सा (15ख-26)

42 भोजन के कमरोंवाली इमारतें (1-14)
मंदिर के चारों हिस्से नापे गए (15-20)

43 मंदिर यहोवा की महिमा से भर गया (1-12)
वेदी (13-27)

44 पूरब का दरवाज़ा बंद रहेगा (1-3)
परदेसियों के बारे में नियम (4-9)
लेवियों और याजकों के लिए नियम (10-31)

45 पवित्र भेंट की ज़मीन और शहर (1-6)
प्रधान की ज़मीन (7, 8)
प्रधानों को ईमानदार रहने का आदेश (9-12)
लोगों की भेंट और प्रधान (13-25)

46 अलग-अलग मौकों पर चढ़ावे (1-15)
जब प्रधान विरासत में ज़मीन देगा (16-18)
बलिदान की चीज़ें पकाने की जगह (19-24)

47 मंदिर से बहती धारा (1-12)
पानी धीरे-धीरे गहरा होता है (2-5)
मृत सागर का पानी मीठा हो गया (8-10)
दलदली जगह का पानी मीठा न हुआ (11)
खाने और चंगाई के लिए फलदार पेड़ (12)
देश की सरहदें (13-23)

48 देश की ज़मीन का बँटवारा (1-29)
शहर के 12 फाटक (30-35)
शहर का नाम, “यहोवा वहाँ है” (35)

---

1 जब 30वें साल के चौथे महीने के
पाँचवें दिन मैं कबार नदी के पास
उन लोगों के साथ था जो बँधुआई में
थे,[1] तब आकाश खुल गया और पर-
मेश्‍वर की तरफ से मुझे दर्शन मिले।
2 (यह राजा यहोयाकीन की बँधुआई का
पाँचवाँ साल था।)[2] उस दिन **3** यहोवा
का संदेश याजक बूज़ी के बेटे यहेज-
केल* के पास पहुँचा, जो कसदियों के
देश[1] में कबार नदी के पास रहता
था। वहाँ यहोवा का हाथ उस पर
आया।[2]
4 मुझ यहेजकेल को दर्शन में उत्तर

अध्या. 1
1 2रा 24:12, 14; यहे 3:15
2 2इत 36:9, 10

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 22:25
2 यहे 3:14

1:3 *मतलब “परमेश्‍वर मज़बूत करता है।”

से एक भयानक आँधी आती हुई दिखायी
दी।[1] उसके साथ एक बहुत बड़ा बादल
था जिसमें से आग की लपटें* निकल रही
थीं।[2] बादल के चारों तरफ तेज़ रौशनी
चमक रही थी। आग के बीच में से सोने-
चाँदी जैसा चमचमाता हुआ कुछ नज़र
आया।[3] 5 उसके अंदर चार जीवित
प्राणी जैसे दिखायी दिए[4] और उनमें से
हरेक का रूप इंसान जैसा था। 6 हर
प्राणी के चार चेहरे और चार पंख थे।[5]
7 उनके पैर सीधे थे और पाँव के तलवे
बछड़े के खुर जैसे थे। उनके पैर चमचमा-
ते ताँबे जैसे चमक रहे थे।[6] 8 उनके
चारों तरफ के पंखों के नीचे इंसानों के
हाथ जैसे थे। चारों प्राणियों के चेहरे और
पंख थे। 9 उनके पंख एक-दूसरे को
छूते थे। जब भी वे आगे बढ़ते तो सीधे
जाते थे, कभी मुड़ते नहीं थे।[7]

10 चारों प्राणियों के चेहरे इस तरह
थेः हरेक के सामने की तरफ आदमी का
चेहरा था, दायीं तरफ शेर का चेहरा,[8]
बायीं तरफ बैल का[9] और पीछे की
तरफ उकाब का।[10] 11 उनके चेहरे
इसी तरह थे। उनके पंख उनके ऊपर
फैले हुए थे। हर प्राणी के दो पंख थे जो
एक-दूसरे को छूते थे और बाकी दो पंख
शरीर को ढके हुए थे।[11]

12 वे सभी सीधे आगे की तरफ बढ़ते
थे। जहाँ पवित्र शक्ति उन्हें बढ़ने के लिए
उभारती थी वे वहीं जाते थे।[12] जब भी
वे आगे बढ़ते तो कभी मुड़ते नहीं थे।
13 ये जीवित प्राणी दिखने में जलते
अंगारे जैसे थे और उनके बीच दहक-
ती आग की मशालों जैसा कुछ था जो
आ-जा रहा था और आग में से बिजली
चमक रही थी।[13] 14 जब ये जीवित
प्राणी आगे बढ़ते और वापस आते, तो
ऐसा लग रहा था मानो बिजली कौंध
रही हो।

15 जब मैं चार चेहरोंवाले उन जीवित
प्राणियों[1] को गौर से देख रहा था तो मैंने
देखा कि हरेक के पास में धरती पर एक
पहिया है। 16 चारों पहियों का रूप
और उनकी बनावट करकेटक रत्न जैसी
थी और वे चमक रहे थे और चारों एक
जैसे दिख रहे थे। उनका रूप और उनकी
बनावट दिखने में ऐसी थी मानो हर पहिए
के अंदर एक और पहिया लगा हो।*
17 जब पहिए आगे बढ़ते तो वे चार
दिशाओं में से किसी भी दिशा में बिना
मुड़े जा सकते थे। 18 हर पहिए का
घेरा इतना ऊँचा था कि देखनेवाले की
साँसें थम जाएँ और हर पहिए के पूरे घेरे
में आँखें-ही-आँखें थीं।[2] 19 जब भी
जीवित प्राणी आगे बढ़ते तो उनके साथ-
साथ पहिए भी जाते थे। और जब भी
जीवित प्राणी धरती से ऊपर उठाए जाते
तो उनके साथ पहिए भी ऊपर उठाए
जाते थे।[3] 20 पवित्र शक्ति उन्हें जहाँ
कहीं जाने के लिए उभारती, वे वहीं जाते
थे। पवित्र शक्ति जहाँ कहीं जाती, वे भी
वहाँ जाते थे। जब भी जीवित प्राणी ऊपर
उठाए जाते तो उनके साथ-साथ पहिए भी
उठाए जाते थे क्योंकि जो शक्ति जीवित
प्राणियों पर काम कर रही थी, वही शक्ति
पहियों में भी थी। 21 जब भी जीवित
प्राणी आगे बढ़ते तो पहिए भी साथ-
साथ जाते थे और जब वे प्राणी कहीं रुक
जाते तो पहिए भी वहीं रुक जाते थे।
जब वे प्राणी धरती से ऊपर उठाए जाते
तो पहिए भी उनके साथ ऊपर उठाए

1:4 *या "बिजली।"

1:16 *शायद एक ही आकार के दो पहिए समकोण में इस तरह जोड़े गए थे कि उनकी धुरी ऊपर और नीचे एक ही सीध में थी।

अध्य. 1
1 1रा 19:11
2 निर्ग 19:18; भज 97:2, 3
3 यहे 8:2
4 यहे 10:9, 15; प्रक 4:6
5 यश 6:2; यहे 10:20, 21; प्रक 4:8
6 दान 10:5, 6
7 यहे 10:11, 15
8 2शम 17:10; नीत 28:1
9 नीत 14:4
10 अय 39:27, 29; यहे 10:14, 15; प्रक 4:7
11 यश 6:2
12 भज 103:20; इब्र 1:7, 14
13 दान 7:9, 10

दूसरा कॉल.
1 यहे 10:9-13; प्रक 4:7
2 नीत 15:3; जक 4:10
3 यहे 10:15-17

जाते थे, क्योंकि जो पवित्र शक्ति जीवित प्राणियों पर काम कर रही थी वही पहियों में भी थी।

22 उन जीवित प्राणियों के सिरों के ऊपर फलक जैसा कुछ था[1] जो बर्फ की तरह इतना उज्ज्वल था और ऐसा चम-चमा रहा था कि बयान नहीं किया जा सकता। 23 फलक के नीचे जीवित प्राणियों के पंख सीधे थे* और उनके पंख एक-दूसरे को छू रहे थे। हर प्राणी अपने दो पंखों से शरीर का एक तरफ ढकता था और बाकी दो पंखों से दूसरी तरफ ढकता था। 24 मैंने उनके पंखों की आवाज़ सुनी जो पानी की तेज़ धारा की गड़गड़ाहट जैसी और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आवाज़ जैसी लग रही थी।[2] जब वे आगे बढ़ते तो ऐसी आवाज़ आती जैसे किसी सेना का भयानक शोर हो। जब वे एक जगह खड़े होते तो अपने पंख नीचे कर लेते थे।

25 उनके सिर के ऊपर जो फलक था, उसके ऊपर से एक आवाज़ आ रही थी। (जब वे एक जगह खड़े होते तो अपने पंख नीचे कर लेते थे।) 26 उनके सिर के ऊपर जो फलक था, उसके ऊपर कुछ था जो नीलम का बना हुआ लग रहा था[3] और राज-गद्दी जैसा दिख रहा था।[4] राजगद्दी पर कोई बैठा था जिसका रूप इंसान जैसा था।[5] 27 जो उसकी कमर और ऊपर का हिस्सा लग रहा था वह सोने-चाँदी जैसा चमचमा रहा था।[6] उसमें से आग जैसा कुछ निकल रहा था। कमर के नीचे का हिस्सा आग जैसा लग रहा था।[7] उसके चारों तरफ ऐसी रौनक फैली हुई थी 28 जैसे बरसात के दिन बादल में

1:23 *या शायद, "सीधे फैले हुए थे।"

अध्य. 1
1 यहे 10:1
2 भज 29:3; यहे 43:2; प्रक 14:2
3 निर्ग 24:10; भज 96:6; यहे 10:1
4 1रा 22:19; भज 99:1; यश 6:1; प्रक 4:2
5 दान 7:9
6 यहे 8:2
7 व्य 4:24; भज 104:1, 2

दूसरा कॉल.
1 प्रक 4:3
2 निर्ग 24:16, 17; यहे 8:4

अध्य. 2
3 दान 10:11
4 यहे 3:24
5 2इत 36:15; यहे 33:7
6 यश 1:4; यिर्म 16:12
7 व्य 9:24; भज 78:8; यिर्म 3:25; प्रेष 7:51
8 यहे 3:7
9 यहे 12:2
10 यहे 3:11; यहे 33:4, 15; यहे 33:33; यूह 15:22; प्रेष 20:26
11 2रा 1:15; लूक 12:4
12 मी 7:4

निकलनेवाले मेघ-धनुष में होती है।[1] उसके चारों तरफ फैली चकाचौंध रौशनी दिखने में ऐसी ही लग रही थी। वह यहोवा के महाप्रताप जैसा लग रहा था।[2] जब मैंने यह देखा तो मैं मुँह के बल नीचे गिरा और मुझे किसी के बोलने की आवाज़ सुनायी देने लगी।

2 फिर उसने मुझसे कहा, "इंसान के बेटे,* अपने पैरों के बल खड़ा हो जा। मैं तुझे कुछ बताना चाहता हूँ।"[3] 2 जब उसने मुझसे बात की तो पवित्र शक्ति मेरे अंदर आयी और उसने मुझे पैरों के बल खड़ा किया,[4] इसलिए जो मुझसे बात कर रहा था मैं उसकी बातें सुन सका।

3 उसने मुझसे कहा, "इंसान के बेटे, मैं तुझे इसराएल के लोगों के पास भेज रहा हूँ,[5] उन बगावती राष्ट्रों के पास जिन्होंने मुझसे बगावत की है।[6] अपने पुरखों की तरह ये लोग भी आज तक मेरी आज्ञाएँ तोड़ते आए हैं।[7] 4 मैं तुझे ऐसे लोगों के पास भेज रहा हूँ जो बड़े ही ढीठ* और कठोर हैं।[8] तू जाकर उनसे कहना, 'सारे जहान के मालिक यहोवा का यह संदेश है।' 5 मगर वे चाहे तेरी सुनें या न सुनें क्योंकि वे बगावती घराने के लोग हैं,[9] उन्हें इतना ज़रूर पता चल जाएगा कि उनके बीच एक भविष्यवक्ता हुआ करता था।[10]

6 इंसान के बेटे, तू उनसे बिलकुल मत डरना,[11] उनकी बातों से मत घब-राना, इसके बावजूद कि तू काँटों और कँटीली झाड़ियों से घिरा है*[12] और

2:1 *'इंसान का बेटा,' ये शब्द इस किताब में 93 बार आए हैं जिनमें से यह पहली बार है। 2:4 *या "सख्त चेहरेवाले।" 2:6 *या शायद, "कि लोग ढीठ हैं और चुभने-वाली चीज़ों की तरह हैं।"

बिच्छुओं के बीच रहता है। तू उनकी बातों
से मत डरना,[1] न ही उनके चेहरे देखकर
खौफ खाना[2] क्योंकि वे बगावती घराने
के लोग हैं। **7** चाहे वे सुनें या न सुनें,
तू उन्हें मेरा संदेश ज़रूर देना क्योंकि वे
बगावती लोग हैं।[3]

8 इंसान के बेटे, मैं तुझे जो बताने जा
रहा हूँ उसे ध्यान से सुनना। इस बगावती
घराने की तरह तू भी बागी मत बन
जाना। अब तू अपना मुँह खोल और मैं
तुझे जो दे रहा हूँ उसे खा ले।"[4]

9 फिर मैंने देखा कि किसी का
हाथ मेरी तरफ बढ़ रहा है[5] और उस
हाथ में लिखा हुआ एक खर्रा* है।[6]
10 जब उसने मेरे सामने खर्रा खोला तो
मैंने देखा कि उस पर सामने और पीछे,
दोनों तरफ कुछ लिखा हुआ है।[7] उस पर
शोकगीत और दुख और मातम के शब्द
लिखे हुए थे।[8]

3 फिर उसने मुझसे कहा, "इंसान
के बेटे, तेरे सामने जो चीज़ है उसे
खा ले।* हाँ, इस खर्रे को खा ले और
फिर जाकर इसराएल के घराने से बात
कर।"[9]

2 तब मैंने अपना मुँह खोला और
उसने मुझे वह खर्रा खाने के लिए दिया।
3 उसने मुझसे कहा, "इंसान के बेटे, यह
खर्रा जो मैं तुझे दे रहा हूँ इसे खा ले और
इससे अपना पेट भर।" जब मैं खर्रा खाने
लगा तो वह मेरे मुँह में शहद जैसा मीठा
लगा।[10]

4 उसने मुझसे कहा, "इंसान के बेटे,
इसराएल के घराने के पास जा और उसे
मेरा संदेश सुना। **5** मैं तुझे ऐसे लोगों
के पास नहीं भेज रहा हूँ जिनकी भाषा
तेरे लिए समझना मुश्किल है या जिनकी
बोली तू नहीं जानता, बल्कि तुझे इस-
राएल के घराने के पास ही भेज रहा हूँ।
6 मैं तुझे ऐसे बहुत-से राष्ट्रों के पास
नहीं भेज रहा हूँ जिनकी भाषा तेरे लिए
समझना मुश्किल है या जिनकी बोली तू
नहीं जानता या जिनकी बातें तेरी समझ
से बाहर हैं। अगर मैं तुझे उनके पास
भेजूँ तो वे तेरी बात सुन लेंगे,[1] **7** मगर
इसराएल का घराना तेरा संदेश सुनने से
इनकार कर देगा क्योंकि वह मेरी बात
सुनना ही नहीं चाहता।[2] इसराएल के
घराने के सभी लोग दिल और दिमाग से
ढीठ हैं।[3] **8** मगर वे जितने ढीठ और
सख्त हैं, मैंने तुझे भी उतना ही सख्त
और मज़बूत किया है।*[4] **9** मैंने तुझे
हीरे जैसा सख्त कर दिया और चकमक
पत्थर से भी कड़ा बना दिया है।[5] तू उन
लोगों से डरना मत, न ही उनके चेहरे
देखकर खौफ खाना[6] क्योंकि वे बगावती
घराने के लोग हैं।"

10 उसने मुझसे यह भी कहा, "इंसान
के बेटे, मैं तुझे जो-जो बता रहा हूँ उसे तू
ध्यान से सुन और अपने दिल में बिठा ले।
11 फिर तू अपने लोगों* के पास जा जो
बँधुआई में हैं[7] और उन्हें मेरा संदेश सुना।
चाहे वे तेरी बात सुनें या सुनने से इनकार
कर दें, तू उनसे कहना, 'सारे जहान के
मालिक यहोवा का यह संदेश है।'"[8]

12 फिर एक शक्ति* मुझे उठाकर ले
गयी[9] और मैंने पीछे से तेज़ गड़गड़ा-
हट जैसी आवाज़ सुनी जो कह रही थी,
"जहाँ यहोवा रहता है वहाँ से उसके

2:9 *या "किताब का एक खर्रा।" **3:1** *शा., "जो तुझे मिला है उसे खा ले।"

3:8 *शा., "मैंने तेरा चेहरा उनके चेहरे जितना कठोर और तेरा माथा उनके माथे जितना सख्त बना दिया है।" **3:11** *शा., "अपने लोगों के बेटों।" **3:12** *यहाँ इस्तेमाल हुए इब्रानी शब्द का मतलब पवित्र शक्ति या कोई स्वर्गदूत हो सकता है।

अध्य. 2
1 यश 51:7
2 यिर्म 1:8; यहे 3:9
3 यिर्म 1:17
4 यिर्म 15:16; प्रक 10:9, 10
5 यिर्म 1:9
6 यहे 3:1
7 प्रक 5:1
8 यहे 19:1

अध्य. 3
9 प्रक 10:9, 10
10 भज 119:103; यिर्म 15:16; प्रक 10:9, 10

दूसरा कॉल.
1 यो 3:4, 5; मत 11:21
2 लूक 10:16
3 निर्ग 34:9; यिर्म 3:3; यिर्म 5:3
4 यिर्म 1:18, 19; यिर्म 15:20; मी 3:8
5 यश 50:7
6 यिर्म 17:18
7 2रा 24:12, 14
8 यहे 2:5
9 यहे 8:3

प्रताप की बड़ाई हो।” **13** और उन जीवित प्राणियों के पंखों के एक-दूसरे से लगने की आवाज़ आ रही थी[1] और पास में जो पहिए थे, उनके घूमने की आवाज़ आ रही थी[2] और एक ज़ोरदार गड़गड़ाहट हो रही थी। **14** फिर वह शक्ति* मुझे उठाकर अपने साथ ले चली। जब मैं उसके साथ जा रहा था तो मेरा मन गुस्से और कड़वाहट से भरा था, मगर यहोवा का हाथ मुझ पर मज़बूती से कायम था। **15** मैं बंदी बनाए गए लोगों के पास गया जो कबार नदी के पास तेल-अबीब में रहते थे।[3] मैं वहीं उनके यहाँ रहने लगा। मेरी सदमे की सी हालत हो गयी थी[4] और मैं उसी हाल में सात दिन तक उनके बीच रहा।

16 फिर सात दिन के बीतने पर यहोवा का यह संदेश मेरे पास पहुँचा:

17 “इंसान के बेटे, मैंने तुझे इसराएल के घराने के लिए पहरेदार ठहराया है।[5] जब तू मेरे मुँह से कोई संदेश सुनता है, तो जाकर मेरी तरफ से लोगों को चेतावनी देना।[6] **18** जब मैं किसी दुष्ट से कहूँ, ‘तू ज़रूर मर जाएगा,’ मगर तू जाकर उसे चेतावनी नहीं देता और उसे नहीं बताता कि वह अपने दुष्ट कामों से फिर जाए और अपनी जान बचाए,[7] तो वह दुष्ट अपनी दुष्टता की वजह से मर जाएगा,[8] मगर उसके खून का हिसाब मैं तुझसे माँगूँगा।*[9] **19** लेकिन अगर तू एक दुष्ट को चेतावनी देता है, फिर भी वह अपने दुष्ट कामों से नहीं फिरता और बुराई का रास्ता नहीं छोड़ता तो वह अपने गुनाह की वजह से मरेगा, लेकिन तू अपनी जान बचाएगा।[1] **20** अगर एक नेक इंसान नेकी की राह छोड़कर गलत काम करने लगता है,# तो मैं उसकी राह में बाधाएँ पैदा करूँगा और वह मर जाएगा।[2] अगर तू उसे चेतावनी नहीं देगा तो वह अपने पाप की वजह से मर जाएगा और उसने पहले जितने भी नेक काम किए थे वे याद नहीं किए जाएँगे, मगर उसके खून का हिसाब मैं तुझसे माँगूँगा।*[3] **21** लेकिन अगर तू उस नेक इंसान को चेतावनी देता है कि वह पाप न करे और वह पाप नहीं करता, तो वह ज़रूर ज़िंदा रहेगा क्योंकि उसे चेतावनी दी गयी है[4] और तू भी अपनी जान बचाएगा।”

22 फिर वहाँ यहोवा का हाथ मुझ पर आया और उसने मुझसे कहा, “उठ और घाटी में जा। मैं तुझसे वहाँ बात करूँगा।” **23** तब मैं उठा और घाटी में गया और देख! वहाँ यहोवा की महिमा दिखायी दी।[5] बिलकुल वैसी ही महिमा जैसी मैंने कबार नदी के पास देखी थी[6] और मैं मुँह के बल गिर गया। **24** फिर पवित्र शक्ति मेरे अंदर आयी और उसने मुझे पैरों के बल खड़ा किया।[7] तब परमेश्वर ने मुझसे बात की और कहा,

“तू अपने घर के अंदर जा और दरवाज़ा बंद कर ले। **25** इंसान के बेटे, वे लोग तुझे रस्सियों से बाँध देंगे ताकि तू उनके पास न जा सके। **26** मैं तेरी जीभ तालू से चिपका दूँगा और तू उन्हें फटकारने के लिए उनसे कुछ नहीं कह पाएगा क्योंकि वे बगावती घराने के लोग हैं। **27** लेकिन जब भी मैं तुझसे बात करूँगा तो तेरा मुँह खोल दूँगा और तू उनसे कहना,[8] ‘सारे जहान के मालिक यहोवा का यह संदेश है।’ उनमें से जो

3:14 *यहाँ इस्तेमाल हुए इब्रानी शब्द का मतलब पवित्र शक्ति या कोई स्वर्गदूत हो सकता है। **3:18, 20** *या “उसके खून के लिए मैं तुझे ज़िम्मेदार ठहराऊँगा।”

3:20 #या “अन्याय करता है।”

अध्य. 3
1 यहे 1:24
2 यहे 10:16
3 यहे 1:3
4 यिर्म 23:9
5 यश 21:8, यश 62:6, यिर्म 6:17
6 यश 58:1, यहे 33:7
7 प्रेष 2:40, 1ती 4:16
8 यहे 33:4
9 यहे 33:8

दूसरा कॉल.
1 यहे 33:9, प्रेष 18:6, प्रेष 20:26
2 यहे 18:24, 26, यहे 33:12, 18
3 लैव 19:17, यहे 33:6, इब्र 13:17
4 नीत 17:10, यहे 33:14, 15, याकू 5:19, 20
5 यहे 1:27, 28
6 यहे 1:1
7 यहे 2:2, दान 10:19
8 यहे 24:27, यहे 33:22

सुनना चाहता है वह सुने[1] और जो
सुनने से इनकार करता है वह इन-
कार कर दे क्योंकि वे बगावती घराने के
लोग हैं।[2]

4 इंसान के बेटे, तू एक ईंट लेना
और उसे अपने सामने रखना। उस
पर एक शहर की, हाँ, यरूशलेम की
नक्काशी करना। 2 तू उसके सामने
ऐसे हाव-भाव करना मानो उसकी घेरा-
बंदी कर रहा हो।[3] उसके चारों तरफ
घेराबंदी की दीवार खड़ी करना,[4] एक
ढलान बनाना,[5] छावनियाँ डालना और
बख्तरबंद गाड़ियों से उसे घेर लेना।[6]
3 एक लोहे का तवा लेना और उसे अपने
और शहर के बीच लोहे की एक दीवार
की तरह खड़ा करना। फिर शहर को
गुस्से-भरी नज़रों से देखना और उसकी
घेराबंदी करना। इस तरह तू दिखाना कि
कैसे शहर को घेरकर उस पर कब्ज़ा कर
लिया जाएगा। यह इसराएल के घराने के
लिए एक चिन्ह ठहरेगा।[7]

4 फिर तू अपनी बायीं करवट लेटना
और इसराएल के घराने के पाप
का दोष अपने ऊपर* रखना।[8] तू
जितने दिन उस करवट लेटा करेगा,
उतने दिन तू उसका दोष अपने ऊपर
लिए रहेगा। 5 इसराएल का घराना
जितने साल मेरे खिलाफ पाप करता है,
उनमें से हर एक साल के लिए एक दिन के
हिसाब से, मैंने तेरे लिए 390 दिन तय
किए हैं।[9] इतने दिन तक तू इसराएल के
घराने के पाप का दोष अपने ऊपर लिए
रहेगा। 6 तुझे इतने दिनों तक ऐसा ही
करना होगा।

इन दिनों के बीतने पर तुझे 40 दिन
और लेटना होगा। इस बार तू अपनी
दायीं करवट लेटना और यहूदा के घराने
के पापों का दोष अपने ऊपर लिए
रहना।[1] मैंने एक साल के लिए एक
दिन के हिसाब से ये दिन तय किए
हैं। 7 तुझे अपनी आस्तीनें चढ़ाकर
गुस्से-भरी नज़रों से यरूशलेम की घेरा-
बंदी देखनी होगी[2] और उसके खिलाफ
भविष्यवाणी करनी होगी।

8 देख! मैं तुझे रस्सियों से बाँध दूँगा
ताकि जब तक घेराबंदी के दिन पूरे नहीं
होते, तब तक तू एक करवट से दूसरी
करवट मुड़ न सके।

9 तू गेहूँ, जौ, बाकला, मसूर, चेना
और कठिया गेहूँ लेना और यह सब
एक बरतन में डालना और इन्हें मिलाकर
अपने लिए रोटी बनाना। जितने दिन तू
एक करवट लेटा करेगा उतने दिन
यानी 390 दिन तू ऐसी रोटी खाएगा।[3]
10 तू हर दिन सिर्फ 20 शेकेल* खाना
तौलकर खाएगा। तू दिन में कई बार तय
वक्त पर इसे खाएगा।

11 पानी भी तू नापकर पीएगा। एक
दिन में तू सिर्फ हीन का छठा हिस्सा*
पानी पीएगा। तू दिन में कई बार तय
वक्त पर इसे पीएगा।

12 तू अपनी रोटी ऐसे खाएगा मानो
वह जौ की गोल रोटी हो। तू लोगों
के देखते इंसानों का सूखा मल जला-
कर उसकी आग पर यह रोटी सेंकेगा।"
13 यहोवा ने यह भी कहा, "जब मैं इस-
राएलियों को दूसरे देशों में तितर-बितर
कर दूँगा तो वहाँ वे इसी तरह अशुद्ध
रोटी खाएँगे।"[4]

14 तब मैंने कहा, "नहीं, यह मुझसे
नहीं होगा! हे सारे जहान के मालिक

अध्य. 3
1 मत 11:15
2 यश 30:9

अध्य. 4
3 2रा 24:11; यिर्म 39:1
4 2रा 25:1
5 यिर्म 6:6; यिर्म 32:24
6 यहे 21:22
7 यहे 12:6; यहे 24:24
8 2रा 17:21
9 गि 14:34; 1रा 12:19, 20

दूसरा कॉल.
1 2रा 23:27
2 यिर्म 52:4
3 यहे 4:5
4 हो 9:3

4:4 *शा., "उस पर" यानी यहेजकेल के बायीं तरफ।

4:10 *करीब 230 ग्रा. अति. ख14 देखें।

4:11 *करीब 0.6 ली. अति. ख14 देखें।

यहोवा, मैं बचपन से आज तक कभी दूषित नहीं हुआ। मैंने कभी ऐसे जानवर का गोश्त नहीं खाया जो मरा हुआ मिला हो या जिसे जंगली जानवर ने फाड़ डाला हो।[1] आज तक मेरे मुँह में किसी भी तरह का अशुद्ध* गोश्त नहीं गया।"[2]

15 तब उसने कहा, "ठीक है, मैं तुझे इंसानों के मल के बदले मवेशियों का गोबर इस्तेमाल करने की इजाज़त देता हूँ। तू अपनी रोटी उपलों पर सेंकना।" 16 फिर उसने कहा, "इंसान के बेटे, मैं यरूशलेम में खाने की तंगी फैलाने जा रहा हूँ।*[3] लोग चिंता में डूबे हुए तौल-तौलकर रोटी खाएँगे[4] और खौफ में जीते हुए नाप-नापकर पानी पीया करेंगे।[5] 17 रोटी और पानी की तंगी के मारे लोग हैरान-परेशान एक-दूसरे को देखेंगे और अपने गुनाहों की सज़ा भुगतते-भुगतते नाश हो जाएँगे।

5 इंसान के बेटे, तू एक तेज़ धारवाली तलवार लेना और नाई के उस्तरे की तरह उससे अपने सिर के बाल और दाढ़ी मूँड़ना। फिर एक तराज़ू लेकर कटे बालों को तौलना और उन्हें तीन हिस्सों में बाँटना। 2 जब नगरी की घेराबंदी के दिन पूरे हो जाएँ, तो उन बालों का एक हिस्सा तू नगरी के अंदर आग में जला देगा।[6] दूसरा हिस्सा लेकर नगरी के चारों तरफ तलवार से काटेगा[7] और आखिर में बचा तीसरा हिस्सा हवा में उड़ा देगा। और मैं एक तलवार खींचकर उनका पीछा करूँगा।[8]

3 तू तीसरे हिस्से में से कुछ बाल अलग लेना और अपने चोगे की तह में लपेटकर रखना। 4 फिर उस हिस्से में से कुछ और बाल लेकर उन्हें आग में झोंक देना और पूरी तरह जला देना। इसी में से आग इसराएल के पूरे घराने में फैल जाएगी।[1]

5 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'यह यरूशलेम नगरी है। मैंने इसे राष्ट्रों के बीचों-बीच कायम किया था और दूसरे देश इसके आस-पास बसे हैं। 6 मगर इसने मेरे न्याय-सिद्धांतों और मेरी विधियों के खिलाफ जाकर बगावत की और अपने आस-पास के राष्ट्रों और देशों से भी बढ़कर दुष्ट काम किए।[2] इसके लोगों ने मेरे न्याय-सिद्धांतों को ठुकरा दिया और वे मेरी विधियों पर नहीं चले।'

7 इसलिए सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'तू अपने आस-पास के सब राष्ट्रों से भी ज़्यादा मुसीबत खड़ी करती थी। तूने मेरी विधियों को नहीं माना और न ही मेरे न्याय-सिद्धांतों का पालन किया। इसके बजाय, तूने अपने आस-पास के सभी राष्ट्रों के तौर-तरीके अपना लिए।[3] 8 इसलिए सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, "हे नगरी, देख मैं तेरे खिलाफ हूँ।[4] मैं सब राष्ट्रों के देखते तुझे सज़ा दूँगा।[5] 9 तूने जितने भी घिनौने काम किए हैं, उनकी वजह से मैं तेरा इतना बुरा हश्र करूँगा जितना न आज तक मैंने किया है और न आगे कभी करूँगा।[6]

10 तेरे बीच पिता अपने बेटों का माँस खा जाएँगे[7] और बेटे अपने पिताओं का माँस खा जाएँगे। मैं तेरे लोगों को सज़ा दूँगा और जो बच जाएँगे उन्हें चारों दिशाओं में तितर-बितर कर दूँगा।"'[8]

4:14 *या "घिनौना।" **4:16** *शा., "रोटी के छड़ तोड़ दूँगा।" शायद यहाँ रोटी लटकानेवाले छड़ों की बात की गयी है।

अध्य. 4
1 निर्ग 22:31, लैव 7:24, लैव 11:40
2 व्य 14:3, यश 65:4, यश 66:17
3 लैव 26:26, यश 3:1, यहे 5:16
4 2रा 25:3, यिर्म 37:21, विल 1:11, विल 4:9, विल 5:9, 10
5 यहे 12:18

अध्य. 5
6 यिर्म 9:21, यहे 4:8
7 यिर्म 15:2
8 लैव 26:33, यहे 5:12

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 4:4
2 यहे 16:46, 47
3 2रा 21:9, 11, यिर्म 2:11
4 यिर्म 21:5, यहे 15:7
5 व्य 29:22, 24, 1रा 9:8, विल 2:15
6 विल 4:6, दान 9:12
7 लैव 26:29, यिर्म 19:9, विल 4:10
8 लैव 26:33, व्य 28:64

11 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, ‘तूने मेरे पवित्र-स्थान
को अपनी घिनौनी मूरतों और अपने
घिनौने कामों से दूषित कर दिया है,[1] इस-
लिए मैं अपने जीवन की शपथ खाकर
कहता हूँ, मैं भी तुझे ठुकरा* दूँगा। मेरी
आँखें तुझ पर तरस नहीं खाएँगी और
मैं तुझ पर बिलकुल दया नहीं करूँगा।[2]
12 तेरे एक-तिहाई लोग महामारी* से
मर जाएँगे या अकाल की मार से मिट
जाएँगे। और एक-तिहाई लोग तेरे चारों
तरफ तलवार से मार डाले जाएँगे[3] और
बचे हुए एक-तिहाई लोगों को मैं चारों
दिशाओं में तितर-बितर कर दूँगा। फिर
मैं एक तलवार खींचकर उनका पीछा
करूँगा।[4] 13 तब जाकर मेरा गुस्सा
ठंडा होगा, मेरा क्रोध शांत होगा और
मुझे चैन मिलेगा।[5] जब मैं उन पर अपना
क्रोध प्रकट करके उन्हें सज़ा दूँगा, तो
उन्हें मानना पड़ेगा कि मुझ यहोवा ने यह
सब इसलिए कहा है क्योंकि मैं माँग करता
हूँ कि सिर्फ और सिर्फ मेरी भक्ति की
जाए।[6]

14 मैं तुझे उजाड़ दूँगा और तू आस-
पास के राष्ट्रों के बीच मज़ाक बनकर रह
जाएगी और तेरे पास से गुज़रनेवाला हर
कोई तुझे देखकर तेरी खिल्ली उड़ाएगा।[7]
15 जब मैं गुस्से और क्रोध में आकर तेरा
न्याय करूँगा और तुझे कड़ी-से-कड़ी सज़ा
दूँगा तो तेरी हालत देखकर आस-पास के
सभी राष्ट्र तेरी हँसी उड़ाएँगे और तुझे
नीची नज़रों से देखेंगे।[8] तू उनके लिए
एक सबक बन जाएगी और तेरी बरबादी
देखकर वे बेहद डर जाएँगे। मुझ यहोवा
ने यह बात कही है।

16 मैं उन पर अकाल के घातक
तीर छोड़ूँगा ताकि वे नाश हो जाएँ।
ये तीर जो मैं तुझ पर छोड़ूँगा, तुझे
नाश कर देंगे।[1] मैं खाने की ऐसी
तंगी फैला दूँगा* कि अकाल का कहर
और भी बढ़ जाएगा।[2] 17 मैं तेरे बीच
अकाल और खूँखार जंगली जानवर
भेजूँगा[3] और ये तेरे बच्चों को तुझसे छीन
लेंगे। महामारी और खून-खराबे से तेरा
हाल बेहाल हो जाएगा और मैं तुझ पर
एक तलवार चलाऊँगा।[4] मुझ यहोवा ने
यह बात कही है।’”

6 यहोवा का संदेश एक बार
फिर मेरे पास पहुँचा। उसने
मुझसे कहा, 2 “इंसान के बेटे, इस-
राएल के पहाड़ों की तरफ मुँह करना
और उनके खिलाफ भविष्यवाणी करना।
3 तू उनसे कहना, ‘इसराएल के पहाड़ो,
सारे जहान के मालिक यहोवा का यह
संदेश सुनो: सारे जहान का मालिक
यहोवा पहाड़ों, पहाड़ियों, नदियों और
घाटियों से कहता है, “देखो! मैं तुम पर
एक तलवार चलवाऊँगा और तुम्हारी
ऊँची जगह नाश कर दूँगा। 4 तुम्हारी
वेदियाँ ढा दी जाएँगी, धूप-स्तंभ टुकड़े-
टुकड़े कर दिए जाएँगे[5] और तुम्हारे जिन
लोगों को मार डाला जाएगा उनकी लाशें
मैं तुम्हारी घिनौनी मूरतों* के सामने फेंक
दूँगा।[6] 5 मैं इसराएल के लोगों की
लाशें उन्हीं की घिनौनी मूरतों के सामने
फेंक दूँगा और तुम्हारी हड्डियाँ तुम्हारी
वेदियों के चारों तरफ बिखरा दूँगा।[7]

5:11 *या “घटा।” **5:12** *या “बीमारी।”

5:16 *शा., “तुम्हारी रोटी के छड़ तोड़ दूँगा।” शायद यहाँ रोटी लटकानेवाले छड़ों की बात की गयी है। **6:4** *इनका इब्रानी शब्द शायद “मल” के लिए इस्तेमाल होने-वाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

अध्य. 5
1 लैव 20:3, 2रा 21:1, 7, 2इत 36:14, यिर्म 32:34
2 विल 2:21, यहे 7:4
3 यिर्म 14:12, यिर्म 15:2, यिर्म 21:9
4 लैव 26:33, यिर्म 9:16, यिर्म 42:16
5 यहे 16:42
6 निर्ग 20:3, 5, निर्ग 34:14, व्य 6:15
7 व्य 28:37, 1रा 9:7, नहे 2:17
8 भज 79:4, यिर्म 24:9, विल 2:15, विल 3:61, 62

दूसरा कॉल.
1 व्य 32:23
2 लैव 26:26, यहे 4:16
3 लैव 26:22, व्य 32:24, यहे 14:21, यहे 33:27
4 यहे 21:3

अध्य. 6
5 यश 27:9
6 लैव 26:30
7 यिर्म 8:1, 2

6 तुम जहाँ-जहाँ रहते हो, वहाँ के सभी
शहर नाश कर दिए जाएँगे,[1] ऊँची जगह
ढा दी जाएँगी और उजाड़ पड़ी रहेंगी।[2]
तुम्हारी वेदियाँ ढा दी जाएँगी और चूर-
चूर कर दी जाएँगी। तुम्हारी घिनौनी मूरतें
नष्ट कर दी जाएँगी, तुम्हारे धूप-स्तंभ
तोड़ दिए जाएँगे और तुम्हारे हाथ की
बनायी हुई चीज़ें मिटा दी जाएँगी।
7 तुम्हारे बीच मारे गए लोगों का ढेर लग
जाएगा।[3] तब तुम्हें जानना होगा कि मैं
यहोवा हूँ।[4]

8 मगर मैं तुममें से कुछ लोगों को
ज़िंदा छोड़ दूँगा। जब तुम दूसरे देशों
में तितर-बितर किए जाओगे तो तुममें
से कुछ लोग तलवार से बच जाएँगे।[5]
9 तुम्हारे ये बचे हुए लोग जब उन
देशों में बंदी बनकर रहेंगे तो वहाँ
मुझे याद करेंगे।[6] उन्हें एहसास होगा
कि जब उनका मन विश्वासघाती* होकर
मुझसे फिर गया और वे वासना-भरी
नज़रों से# घिनौनी मूरतों के पीछे गए,[7]
तो उन्होंने किस कदर मेरा दिल दुखाया
था।[8] वे उन सारे बुरे और घिनौने
कामों से घिन करेंगे जो उन्होंने किए थे
और शर्मिंदा महसूस करेंगे।[9] 10 उन्हें
जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ और मैंने उन
पर यह कहर ढाने की जो धमकियाँ दी थीं
वे बेकार ही नहीं दी थीं।”’[10]

11 सारे जहान के मालिक यहोवा ने
मुझसे कहा, ‘तू मारे दुख के अपनी
हथेलियाँ पीटना और अपने पैर पटक-
ना और इसराएल के घराने ने जितने भी
नीच और घिनौने काम किए हैं, उनके
लिए मातम मनाना क्योंकि वे तलवार,
अकाल और महामारी से मार डाले
जाएँगे।[11] 12 जो दूर है वह महामारी
से मरेगा, जो पास है वह तलवार से मार
डाला जाएगा और जो इन दोनों की मार
से बच जाता है वह अकाल से मरेगा।
मैं उन पर अपना गुस्सा उतारकर ही दम
लूँगा।[1] 13 जिन लोगों को मार डाला
जाएगा उनकी लाशें उनकी घिनौनी मूरतों
के पास, उनकी वेदियों के चारों तरफ,[2]
हर ऊँची पहाड़ी पर, सभी पहाड़ों की
चोटियों पर, हर घने पेड़ के नीचे और
बड़े-बड़े पेड़ों की डालियों के नीचे पड़ी
रहेंगी, जहाँ वे अपनी घिनौनी मूरतों
को खुश करने के लिए सुगंधित बलि-
दान चढ़ाया करते थे।*[3] तब तुम्हें
जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।[4] 14 मैं
अपना हाथ बढ़ाकर उन्हें सज़ा दूँगा और
पूरे देश को वीरान बना दूँगा। मैं उनकी
सारी बस्तियाँ उजाड़ दूँगा और वे दिबला
के पासवाले वीराने से भी ज़्यादा वीरान
हो जाएँगी। तब उन्हें जानना होगा कि मैं
यहोवा हूँ।’”

7 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
2 “इंसान के बेटे, सारे जहान का मालिक
यहोवा इसराएल देश के बारे में कहता
है: ‘अंत आ रहा है, अंत! देश के कोने-
कोने का अंत कर दिया जाएगा। 3 तुम
पर अंत आनेवाला है। मैं तुम पर अपना
गुस्सा उतारकर ही रहूँगा और तुम्हारे
चालचलन के मुताबिक तुम्हारा न्याय
करूँगा। तुमने जितने भी घिनौने काम
किए हैं उन सबका लेखा मैं तुमसे लूँगा।
4 मेरी आँखें तुम पर तरस नहीं खाएँगी
और न ही मैं तुम पर दया करूँगा।[5]
तुम्हारे चालचलन के मुताबिक ही मैं तुम्हें
फल दूँगा और तुम अपने घिनौने कामों
का अंजाम भुगतोगे।[6] तब तुम्हें जानना
होगा कि मैं यहोवा हूँ।’[7]

6:9 * या “अनैतिक; नीच।” # या “अनैतिक होकर।”

6:13 * या “मनभावनी सुगंध चढ़ाते थे।”

अध्य. 6
1 यिर्म 2:15 यिर्म 32:29 मी 3:12
2 यहे 16:39
3 यिर्म 14:18
4 यहे 7:4
5 यिर्म 30:10 यिर्म 44:28 यहे 14:22
6 व्य 30:1, 2 भज 137:1
7 गि 15:39
8 भज 78:40, 41 यश 63:10
9 यहे 20:43 यहे 36:31
10 यहे 33:29 दान 9:12 जक 1:6
11 यिर्म 15:2 यिर्म 16:4 यहे 5:12

दूसरा कॉल.
1 यहे 5:13
2 यिर्म 8:2
3 यहे 20:28
4 यहे 12:15

अध्य. 7
5 यहे 5:11
6 यिर्म 16:18 यहे 16:43
7 यहे 6:13

5 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'देखो, तुम पर आफत आने-
वाली है! ऐसी आफत जो कभी किसी
पर नहीं आयी।[1] 6 अंत आनेवाला है,
अंत! यह अंत ज़रूर आएगा। यह तुम
पर अचानक आ पड़ेगा।* देखो! यह बस
आ ही गया है। 7 तुम जो देश में बसे
हुए हो अब तुम्हारी बारी* आ गयी है।
समय आ गया है, वह दिन करीब है।[2]
पहाड़ों पर हाहाकार मचा हुआ है, वहाँ
से जश्न और मौज-मस्ती की आवाज़ें नहीं
आ रहीं।

8 मैं बहुत जल्द तुम पर अपने क्रोध
का प्याला उँडेल दूँगा[3] और अपना
गुस्सा पूरी तरह उतारूँगा।[4] मैं तुम्हारे
चालचलन के मुताबिक तुम्हारा न्याय
करूँगा और तुमने जितने भी घिनौने काम
किए हैं, उन सबका मैं तुमसे लेखा लूँगा।
9 मेरी आँखें तुम पर तरस नहीं खाएँगी
और न ही मैं तुम पर दया करूँगा।[5]
तुम्हारे चालचलन के मुताबिक ही मैं तुम्हें
फल दूँगा और तुम अपने घिनौने कामों
का अंजाम भुगतोगे। तब तुम्हें जानना
होगा कि मैं यहोवा ही तुम्हें सज़ा दे
रहा हूँ।[6]

10 देखो! देखो, वह दिन आ रहा है![7]
तुम्हारी बारी* आ गयी है। छड़ी तैयार है
और गुस्ताखी बढ़ गयी है। 11 हिंसा ने
बढ़ते-बढ़ते दुष्ट को सज़ा देनेवाली छड़ी
का रूप ले लिया है।[8] इसके बाद न
वे, न उनकी भीड़, न उनकी दौलत
या शोहरत बचेगी। 12 वह समय
ज़रूर आएगा, वह दिन ज़रूर आएगा।
न खरीदनेवाला खुशियाँ मनाए और न
ही बेचनेवाला मातम मनाए, क्योंकि
उनकी पूरी भीड़ पर मेरा क्रोध भड़का
हुआ है।*[1] 13 अपनी ज़मीन बेचने-
वाला वापस उसमें कदम नहीं रख पाएगा,
फिर चाहे उसकी जान क्यों न बख्श
दी जाए क्योंकि इस दर्शन की बातें पूरी-
की-पूरी भीड़ पर घटेंगी। कोई भी नहीं
लौटेगा और अपने गुनाह की वजह से*
कोई भी अपनी जान नहीं बचा सकेगा।

14 उन्होंने तुरही फूँक दी है[2] और हर
कोई तैयार है, मगर लड़ाई में कोई नहीं
जा रहा क्योंकि पूरी भीड़ पर मेरा
क्रोध भड़का हुआ है।[3] 15 बाहर तल-
वार है,[4] अंदर महामारी और अकाल है।
जो बाहर मैदान में होगा वह तलवार से
मार डाला जाएगा और जो शहर के अंदर
होगा वह अकाल और महामारी से मारा
जाएगा।[5] 16 जो लोग इन विपत्तियों
से किसी तरह बच निकलेंगे, वे पहाड़ों पर
जाएँगे और वहाँ हर कोई अपने गुनाह
की वजह से ऐसे शोक मनाएगा जैसे
घाटियों में रहनेवाली फाख्ते कराहती
हैं।[6] 17 उन सबके हाथ ढीले पड़
जाएँगे और उनके घुटनों से पानी टपकने
लगेगा।*[7] 18 उन्होंने टाट ओढ़ लिया
है[8] और वे थर-थर काँप रहे हैं। वे सभी
शर्मिंदा किए जाएँगे और हर किसी का
सिर गंजा हो जाएगा।*[9]

19 वे अपनी चाँदी सड़कों पर फेंक
देंगे और उन्हें अपने सोने से घिन
होने लगेगी। यहोवा की जलजलाहट के
दिन न उनकी चाँदी उन्हें बचा पाएगी,
न उनका सोना।[10] वे कभी संतुष्ट नहीं

अध्य. 7
1 2रा 21:12; दान 9:12
2 सप 1:14
3 2इत 34:21
4 यिर्म 7:20; यहे 5:13
5 यिर्म 13:14
6 यश 66:6; यहे 33:29
7 सप 1:14
8 यश 59:6; यिर्म 6:7; मी 6:12

दूसरा कॉल.
1 सप 1:18
2 यिर्म 4:5
3 यिर्म 7:20; यिर्म 12:12
4 लैव 26:25
5 यिर्म 14:18; यहे 5:12
6 यश 59:11
7 यहे 21:7
8 यश 3:24
9 यश 22:12
10 नीत 11:4; सप 1:18

7:6 *शा., "यह तुम्हारे खिलाफ जागा है।" **7:7, 10** *या शायद, "माला।"

7:12 *यानी न जायदाद खरीदनेवालों को फायदा होगा न ही बेचनेवालों को, क्योंकि सबका नाश हो जाएगा। **7:13** *या शायद, "और गलत काम करके।" **7:17** *यानी डर के मारे पेशाब निकल जाएगा। **7:18** *यानी मातम की वजह से उनका सिर मुँड़ा दिया जाएगा।

होंगे और न ही अपना पेट भर पाएँगे,
क्योंकि यह* उनके लिए ठोकर का
कारण बन गया है जो उनसे गुनाह कराता
है। 20 उन्हें अपने खूबसूरत गहनों पर
बड़ा घमंड था और उन्होंने उनसे* अपनी
घिनौनी मूरतें बनायी थीं।[1] इसलिए मैं
उनके सोने-चाँदी को उनकी नज़रों में
घिनौना बना दूँगा। 21 मैं यह सब*
परदेसियों और दुनिया के दुष्ट लोगों के
हाथ कर दूँगा। वे आकर इसे लूट लेंगे
और इस खज़ाने को दूषित कर देंगे।

22 मैं उनसे अपना मुँह फेर लूँगा[2]
और वे* मेरी गुप्त जगह# को दूषित कर
देंगे। लुटेरे उसमें घुस जाएँगे और उसे
दूषित कर देंगे।[3]

23 ज़ंजीरें* तैयार करो[4] क्योंकि पूरा
देश अन्याय से बहाए खून से भरा है[5]
और शहर में हर कहीं मार-काट मची
है।[6] 24 दुनिया के सबसे खूँखार राष्ट्र
को मैं यहाँ ले आऊँगा[7] और वह
उनके घरों पर कब्ज़ा कर लेगा।[8] मैं
ताकतवर लोगों का घमंड चूर-चूर कर
दूँगा और उनकी पवित्र जगह दूषित
कर दी जाएँगी।[9] 25 जब वे दुख से
तड़प रहे होंगे, तो ढूँढ़ने पर भी उन्हें
शांति नहीं मिलेगी।[10] 26 मुसीबत-
पर-मुसीबत टूट पड़ेगी, उन्हें एक-के-
बाद-एक बुरी खबर दी जाएगी। लोग
बेकार ही भविष्यवक्ता से दर्शन पाने की
आस लगाएँगे[11] और याजक कानून*
सिखाना और मुखिया सलाह देना बंद
कर देंगे।[1] 27 राजा मातम मनाएगा,[2]
प्रधान मायूसी* की चादर ओढ़े रहेगा
और देश के लोगों के हाथ डर से थर-थर
काँपेंगे। मैं उनके चालचलन के हिसाब से
उनके साथ पेश आऊँगा। उन्होंने दूसरों
का जिस तरह फैसला किया था उसी तरह
मैं भी उनका फैसला करूँगा। तब उन्हें
जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।' "[3]

8 छठे साल* के छठे महीने के पाँचवें
दिन, जब मैं अपने घर में बैठा हुआ
था और यहूदा के मुखिया मेरे सामने बैठे
हुए थे, तब सारे जहान के मालिक
यहोवा का हाथ मुझ पर आया। 2 जब
मैंने देखा तो मुझे कोई नज़र आया
जिसका रूप आग जैसा था। और उसका
जो भाग कमर जैसा लग रहा था[4] उसके
नीचे के पूरे हिस्से में आग थी और
कमर से ऊपर का हिस्सा सोने-चाँदी जैसा
चमचमा रहा था।[5] 3 फिर उसने हाथ
जैसा कुछ आगे बढ़ाया और मेरे सिर के
बालों से मुझे पकड़ा। और एक शक्ति*
ने मुझे धरती और आकाश के बीच
उठाया और वह परमेश्वर की तरफ से
मिले दर्शनों में मुझे यरूशलेम ले आयी।
वह मुझे भीतरी फाटक के प्रवेश पर ले
आयी[6] जो उत्तर की तरफ है। वहाँ वह
मूरत रखी हुई थी जो परमेश्वर को क्रोध
दिलाती है।[7] 4 और देखो! वहाँ इस-
राएल के परमेश्वर की वैसी ही महिमा
थी[8] जैसी मैंने घाटी में देखी थी।[9]

5 फिर उसने मुझसे कहा, "इंसान के
बेटे, ज़रा अपनी नज़रें उठाकर उत्तर की
तरफ देख।" तब मैंने उत्तर की तरफ

अध्य. 7
1 2रा 21:1, 7; यिर्म 7:30
2 यिर्म 18:17
3 2इत 36:19; विल 1:10
4 यिर्म 39:6, 7; विल 3:7
5 2रा 21:16; 2रा 24:3, 4; यिर्म 2:34; यहे 9:9
6 यश 59:6; मी 2:2
7 व्य 28:48-51; यहे 21:31; हब 1:6
8 यिर्म 6:12; विल 5:2
9 यहे 21:2
10 यश 57:21; यिर्म 8:15
11 यिर्म 21:1, 2; यिर्म 37:17

दूसरा कॉल.
1 भज 74:9; विल 2:9; यहे 20:3
2 यिर्म 52:10
3 यहे 6:13

अध्य. 8
4 दान 7:9
5 यहे 1:4, 27
6 यिर्म 20:2; यहे 9:2
7 व्य 32:16
8 निर्ग 40:34
9 यहे 1:27, 28

7:19 *यानी उनका सोना-चाँदी। 7:20 *यानी सोने-चाँदी की उनकी चीज़ें। 7:21 *यानी उनका सोना-चाँदी जिनसे उन्होंने मूरतें बनायीं। 7:22 *यानी दुश्मन। #ज़ाहिर है कि यह यहोवा के पवित्र-स्थान का भीतरी कमरा है। 7:23 *यानी गुलामी की ज़ंजीरें। 7:26 *या "हिदायत।" 7:27 *या "तबाही।" 8:1 *यहाँ बँधुआई में यहेजकेल के छठे साल की बात की गयी है। 8:3 *यहाँ इस्तेमाल हुए इब्रानी शब्द का मतलब पवित्र शक्ति या कोई स्वर्गदूत हो सकता है।

नज़रें उठायीं और देखा कि वहाँ वेदी के दरवाज़े के उत्तर की तरफ प्रवेश में वह मूरत थी जो परमेश्वर को क्रोध दिलाती है। **6** फिर उसने मुझसे कहा, “इंसान के बेटे, क्या तू देख रहा है कि इसराएल का घराना यहाँ कैसे नीच और घिनौने काम कर रहा है[1] जिस वजह से मैं अपने पवित्र-स्थान से दूर जाने पर मजबूर हो गया हूँ?[2] मगर अब तू ऐसे घिनौने काम देखेगा जो इससे भी भयंकर हैं।”

7 फिर वह मुझे आँगन के प्रवेश पर ले आया और वहाँ मैंने दीवार में एक छेद देखा। **8** उसने मुझसे कहा, “इंसान के बेटे, इस दीवार में एक बड़ा-सा छेद कर।” तब मैंने दीवार में बड़ा-सा छेद किया और देखा कि वहाँ अंदर जाने का एक रास्ता है। **9** उसने मुझसे कहा, “अब तू अंदर जा और देख कि वहाँ लोग कितने बुरे और घिनौने काम कर रहे हैं।” **10** फिर मैं अंदर गया और मैंने नज़र दौड़ायी तो देखा कि वहाँ दीवार पर चारों तरफ तरह-तरह के रेंगनेवाले जीव-जंतुओं, अशुद्ध जानवरों[3] और इसराएल के घराने की सारी घिनौनी मूरतों*[4] की नक्काशियाँ भरी पड़ी हैं। **11** और उनके सामने इसराएल के घराने के 70 मुखिया खड़े हैं जिनमें शापान[5] का बेटा याजन्याह भी था। हर मुखिया के हाथ में उसका धूपदान था जिसमें से सुगंधित धूप का धुआँ बादल की तरह ऊपर उठ रहा था।[6] **12** उसने मुझसे कहा, “इंसान के बेटे, क्या तू देख रहा है कि इसराएल के घराने के मुखिया यहाँ अँधेरे में क्या कर रहे हैं? क्या तू देख रहा है कि वे सभी अंदरवाले कमरों में क्या कर रहे हैं, जहाँ उनकी अपनी-अपनी मूरतों की नुमाइश लगी हुई है?* वे कह रहे हैं, ‘यहोवा हमें नहीं देख रहा। यहोवा ने इस देश को छोड़ दिया है।’”[1]

13 फिर उसने मुझसे कहा, “अब आगे तू लोगों को ऐसे-ऐसे घिनौने काम करते देखेगा जो इससे भी भयंकर हैं।” **14** फिर वह मुझे यहोवा के भवन के उत्तरी दरवाज़े के प्रवेश पर ले आया। वहाँ मैंने देखा कि कुछ औरतें बैठी हुई तम्मूज देवता के लिए रो रही थीं।

15 फिर उसने मुझसे कहा, “इंसान के बेटे, क्या तू यह सब देख रहा है? अब तू इससे भी बढ़कर घिनौने काम देखेगा।”[2] **16** फिर वह मुझे यहोवा के भवन के भीतरी आँगन में ले आया।[3] वहाँ यहोवा के मंदिर के प्रवेश पर, बरामदे और वेदी के बीच करीब 25 आदमी थे। वे सब अपनी पीठ यहोवा के मंदिर की तरफ और अपना मुँह पूरब की तरफ किए हुए थे और पूरब में सूरज को दंडवत कर रहे थे।[4]

17 उसने मुझसे कहा, “इंसान के बेटे, क्या तू यह सब देख रहा है? क्या यह कोई छोटी बात है कि यहूदा का घराना ऐसे-ऐसे घिनौने काम करे और पूरे देश को खून-खराबे से भर दे[5] और मुझे क्रोध दिलाता रहे? और देख, वे उस डाली* को मेरी नाक के पास ला रहे हैं। **18** इसलिए अब मैं क्रोध में आकर उन्हें सज़ा दूँगा। मेरी आँखें उन पर तरस नहीं खाएँगी और न ही मैं उन

8:10 *इनका इब्रानी शब्द शायद “मल” के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

8:12 *या “कि वे गढ़ी हुई मूरतोंवाले भीतरी कमरों में क्या कर रहे हैं?” **8:17** *ज़ाहिर है कि यह मूर्तिपूजा में इस्तेमाल की जानेवाली डाली है।

अध्य. 8
1 2इत 36:14
2 यिर्म 26:4, 6
3 लैव 11:10
4 निर्ग 20:4, 5
5 2रा 22:3, 4; 2रा 25:22; यिर्म 26:24
6 यहे 16:17, 18

दूसरा कॉल.
1 यश 29:15; यहे 9:9
2 2इत 36:14
3 2इत 4:9
4 व्य 4:19; 2रा 17:16; यिर्म 8:1, 2
5 2रा 21:16; यिर्म 19:4; यहे 9:9

पर दया करूँगा।[1] चाहे वे चीख-चीख-
कर मेरी दुहाई दें फिर भी मैं उनकी नहीं
सुनूँगा।”[2]

9 फिर उसने ज़ोर से आवाज़ लगायी
और मेरे सुनते हुए कहा, “उन आद-
मियों को बुलाओ जो इस शहर को सज़ा
देंगे। हर आदमी अपने हाथ में नाश करने
का हथियार लेकर आए!”

2 मैंने देखा कि उत्तर के ऊपरी दर-
वाज़े की तरफ से छः आदमी चले आ रहे
हैं।[3] हर आदमी के हाथ में चूर-चूर करने-
वाला एक हथियार था। उन छः आदमियों
के बीच एक और आदमी था जो मलमल
की पोशाक पहने और कमर पर लिपिक
की कलम-दवात* बाँधे हुए था। ये सारे
आदमी मंदिर में आए और ताँबे की वेदी[4]
के पास खड़े हो गए।

3 तब इसराएल के परमेश्वर की
महिमा,[5] जो अब तक करूबों के ऊपर
छायी हुई थी, वहाँ से हटकर भवन के
दरवाज़े की दहलीज़ पर आ गयी।[6] फिर
परमेश्वर ने उस आदमी को आवाज़ दी
जो मलमल की पोशाक पहने और कमर
पर लिपिक की कलम-दवात बाँधे हुए
था। 4 यहोवा ने उससे कहा, “तू पूरे
यरूशलेम का दौरा कर और उन सभी के
माथे पर एक निशान लगा जो शहर में
होनेवाले घिनौने कामों[7] की वजह से आहें
भरते और कराहते हैं।”[8]

5 फिर उसने बाकी छः आदमियों से
मेरे सुनते कहा, “तुम लोग इस आदमी के
पीछे-पीछे पूरे शहर में जाओ और लोगों
को मार डालो। तुम्हारी आँखें उन पर
तरस न खाएँ, न ही तुम बिलकुल
दया करना।[9] 6 बूढ़े, जवान, छोटे-
छोटे बच्चे, कुँवारी लड़कियाँ, औरतें,
सबको मार डालना, किसी को भी मत
छोड़ना।[1] मगर तुम ऐसे किसी भी आदमी
के पास मत जाना जिसके माथे पर निशान
लगा हो।[2] तुम यह काम मेरे पवित्र-
स्थान से शुरू करना।”[3] तब उन आद-
मियों ने सबसे पहले उन मुखियाओं को
मार डाला जो भवन के सामने मौजूद थे।[4]
7 फिर उसने उन आदमियों से कहा,
“इस भवन को दूषित कर दो और इसके
आँगनों को मारे गए लोगों की लाशों से
भर दो।[5] जाओ, जाकर लोगों को मार
डालो!” तब वे वहाँ से गए और उन्होंने
शहर के लोगों को मार डाला।

8 जब वे लोगों को मार रहे थे, तो
मैं अकेला बच गया। मैं मुँह के बल गिरा
और चिल्लाने लगा, “हाय! ये कैसी बर-
बादी! हे सारे जहान के मालिक यहोवा,
क्या तू इसी तरह यरूशलेम पर अपने
क्रोध का प्याला उँडेलता रहेगा? क्या तू
इसराएल में बचे लोगों में से किसी को भी
ज़िंदा नहीं छोड़ेगा?”[6]

9 तब उसने मुझसे कहा, “इसराएल
और यहूदा के घराने ने गुनाह करने में
सारी हदें पार कर दी हैं।[7] पूरा देश खून-
खराबे से भर गया है[8] और शहर में हर
कहीं भ्रष्टाचार-ही-भ्रष्टाचार है,[9] क्योंकि
वे कहते हैं, ‘यहोवा ने इस देश को छोड़
दिया है, यहोवा हमें नहीं देख रहा।’[10]
10 मेरी आँखें उन पर तरस नहीं खाएँगी,
मैं उन पर बिलकुल दया नहीं करूँगा।[11]
मैं उनके चालचलन के मुताबिक उन्हें फल
दूँगा।”

11 फिर मैंने उस आदमी को देखा जो
मलमल की पोशाक पहने और कमर पर
कलम-दवात बाँधे हुए था। वह वापस
आया और उसने कहा, “तूने मुझे जैसी
आज्ञा दी थी, मैंने बिलकुल वैसा ही
किया।”

9:2 *या “शास्त्री की दवात।”

अध्य. 8
1 यहे 5:11; यहे 7:9
2 यश 1:15; मी 3:4

अध्य. 9
3 यिर्म 20:2; यहे 8:3
4 2इत 4:1
5 यहे 3:23; यहे 8:3, 4; यहे 11:22
6 यहे 10:4
7 यहे 5:11
8 भज 119:53; 2पत 2:7, 8
9 निर्ग 32:26, 27; यहे 7:4

दूसरा कॉल.
1 2इत 36:17
2 निर्ग 12:23; यह 2:17-19; प्रक 9:4
3 2रा 25:18, 21; यिर्म 25:29
4 यहे 8:11
5 विल 2:21
6 उत 18:23; यहे 11:13
7 2इत 36:14; यश 1:4
8 2रा 21:16; यिर्म 2:34; मत 23:30
9 यहे 22:29
10 यश 29:15; यहे 8:12
11 यहे 5:11; यहे 7:4

10 फिर मैंने गौर किया कि करूबों के सिर के ऊपर जो फलक था, उसके ऊपर नीलम जैसा कुछ दिखायी दे रहा था। वह दिखने में एक राजगद्दी जैसा था।[1] **2** फिर परमेश्वर ने मलमल की पोशाक पहने आदमी[2] से कहा, “करूबों के नीचे घूमते पहियों[3] के बीच जा और करूबों के बीच से जलते अंगारे लेकर अपने दोनों हाथों में भर ले[4] और उन्हें शहर पर फेंक दे।”[5] तब वह आदमी मेरे देखते उनके बीच गया।

3 जब वह आदमी पहियों के बीच गया तब करूब भवन के दायीं तरफ खड़े थे और भीतरी आँगन बादल से भर गया था। **4** फिर यहोवा की महिमा का तेज[6] करूबों के पास से उठा और भवन के दरवाज़े की दहलीज़ पर जा ठहरा। भवन धीरे-धीरे बादल से भर गया[7] और पूरा आँगन यहोवा की महिमा के तेज से चकाचौंध हो गया। **5** करूबों के पंखों की आवाज़ इतनी ज़ोरदार थी कि बाहरी आँगन तक सुनायी दे रही थी और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बोलने जैसी आवाज़ थी।[8]

6 फिर परमेश्वर ने मलमल की पोशाक पहने आदमी को यह आज्ञा दी: “तू घूमते हुए पहियों और करूबों के बीच से थोड़ी आग ले।” तब वह आदमी वहाँ गया और पहिए के पास खड़ा हो गया। **7** फिर करूबों में से एक ने अपना हाथ उस आग की तरफ बढ़ाया जो उनके बीच थी[9] और थोड़ी आग लेकर मलमल की पोशाक पहने आदमी[10] के दोनों हाथों पर रख दी। वह आदमी आग लेकर बाहर निकल गया। **8** करूबों के पंखों के नीचे इंसान के हाथों जैसा कुछ दिखता था।[11]

9 जब मैं देख रहा था तो मुझे करूबों के पास में चार पहिए दिखायी दिए। हर करूब के पास में एक पहिया था और ये पहिए करकेटक की तरह चमक रहे थे।[1] **10** चारों पहिए दिखने में एक जैसे लग रहे थे। ऐसा मालूम पड़ रहा था जैसे हर पहिए के अंदर एक और पहिया लगा है। **11** जब पहिए आगे बढ़ते तो वे चार दिशाओं में से किसी भी दिशा में बिना मुड़े जा सकते थे, क्योंकि पहिए बिना मुड़े उसी दिशा में जाते थे जिधर करूबों का सिर होता था। **12** करूबों का पूरा शरीर, उनकी पीठ, उनके हाथ और पंख आँखों से भरे हुए थे। उनके पास जो चार पहिए थे उनके पूरे घेरे में भी आँखें-ही-आँखें थीं।[2] **13** फिर मैंने एक आवाज़ सुनी जिसने पहियों को यह कहकर पुकारा: “घूमनेवाले पहियो!”

14 हरेक* के चार चेहरे थे। पहला चेहरा करूब के चेहरे जैसा था, दूसरा आदमी# का चेहरा, तीसरा शेर का और चौथा उकाब का चेहरा था।[3]

15 ये करूब वही जीवित प्राणी थे जो मैंने कबार नदी के पास देखे थे।[4] करूब जब भी ऊपर उठते **16** और आगे बढ़ते तो उनके साथ-साथ पहिए भी बढ़ते थे। जब करूब अपने पंख उठाकर धरती से ऊपर उठते, तब भी पहिए करूबों से दूर नहीं जाते थे, न ही मुड़ते थे।[5] **17** जब वे जीवित प्राणी कहीं रुक जाते तो पहिए भी वहीं रुक जाते और जब वे ऊपर उठते तो साथ में पहिए भी उठते थे, क्योंकि जो पवित्र शक्ति जीवित प्राणियों पर काम कर रही थी वही पहियों में भी थी।

18 फिर यहोवा की महिमा का तेज[6] भवन के दरवाज़े की दहलीज़ से उठ गया और करूबों पर जा ठहरा।[7] **19** मैंने

10:14 *यानी हर करूब। #या “इंसान।”

अध्य. 10
1 यश 6:1; यहे 1:22, 26; प्रक 4:2, 3
2 यहे 9:2
3 यहे 1:16
4 यहे 1:13
5 2रा 25:8, 9
6 यहे 1:27, 28; यहे 9:3
7 निर्ग 40:35; 2इत 5:13; यहे 43:5
8 भज 29:3, 4; यहे 1:24; यूह 12:28, 29
9 यहे 1:13
10 यहे 9:2
11 यहे 1:8

दूसरा कॉल.
1 यहे 1:15-18
2 प्रक 4:6, 8
3 यहे 1:6, 10; प्रक 4:7
4 यहे 1:3
5 यहे 1:19-21
6 यहे 1:27, 28
7 यहे 9:3; यहे 10:4

देखा कि फिर करूब अपने पंख उठाकर धरती से ऊपर उठ गए। करूबों के साथ-साथ पहिए भी ऊपर जाने लगे। वे जाकर यहोवा के भवन के पूरबवाले फाटक के प्रवेश पर ठहर गए और इसराएल के परमेश्‍वर की महिमा का तेज उन पर छाया रहा।[1]

20 ये वही जीवित प्राणी थे जिन्हें मैंने कबार नदी के पास इसराएल के परमेश्‍वर की राजगद्दी के नीचे देखा था।[2] इसलिए मैं जान गया कि वे करूब ही थे। **21** चारों करूबों के चार-चार चेहरे और चार-चार पंख थे और उनके पंखों के नीचे इंसान के हाथों जैसा कुछ दिखता था।[3] **22** उनके चेहरे बिलकुल उन प्राणियों के चेहरों जैसे थे जो मैंने कबार नदी के पास देखे थे।[4] हर करूब सीधे आगे की तरफ बढ़ता था।[5]

11

फिर एक शक्‍ति* ने मुझे ऊपर उठाया और वह मुझे यहोवा के भवन के पूरबवाले फाटक पर ले गयी जो पूरब की तरफ खुलता है।[6] वहाँ फाटक के प्रवेश पर मैंने 25 आदमी देखे जो लोगों के हाकिम थे।[7] उनमें अज्जूर का बेटा याजन्याह और बनायाह का बेटा पलत्याह भी था। **2** परमेश्‍वर ने मुझसे कहा, "इंसान के बेटे, ये वे आदमी हैं जो साज़िशें रचते हैं और इस नगरी में* गलत सलाह देते हैं। **3** वे कहते हैं, 'अभी तो हमें यहाँ और भी घर बनाने हैं।[8] यह नगरी* एक हंडा# है[9] और हम उसके अंदर का गोश्‍त हैं।'

4 इसलिए इंसान के बेटे, उन लोगों के खिलाफ भविष्यवाणी कर। हाँ, भविष्यवाणी कर।"[1]

5 फिर यहोवा की पवित्र शक्‍ति मुझ पर आयी[2] और उसने मुझसे कहा, "जाकर उनसे कहना, 'यहोवा कहता है, "हे इसराएल के घराने के लोगो, तुम बिलकुल ठीक कह रहे हो। मैं जानता हूँ कि तुम क्या सोच रहे हो। **6** तुमने इस नगरी में बहुतों को मरवा डाला है और उनकी लाशों से सड़कें भर दी हैं।"'"[3] **7** "इसलिए सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'हाँ, यह नगरी हंडा है।[4] मगर इसके अंदर का गोश्‍त वह सारी लाशें हैं जो तुमने पूरी नगरी में बिछा दी हैं। जहाँ तक तुम लोगों की बात है, तुम इससे बाहर निकाल दिए जाओगे।'"

8 "सारे जहान का मालिक यहोवा ऐलान करता है, 'तुम लोग तलवार से डरते हो न?[5] अब देखना, मैं तुम पर तलवार ही चलवाऊँगा। **9** मैं तुम्हें नगरी से बाहर निकाल दूँगा और परदेसियों के हवाले कर दूँगा और तुम्हें सज़ा दूँगा।[6] **10** तुम तलवार से मारे जाओगे।[7] मैं इसराएल की सरहद पर तुम्हें सज़ा दूँगा।[8] तब तुम्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।[9] **11** यह नगरी एक हंडे की तरह तुम्हारी हिफाज़त नहीं करेगी और न ही तुम गोश्‍त की तरह इसके अंदर महफूज़ रह पाओगे, क्योंकि मैं इसराएल की सरहद पर तुम्हें सज़ा दूँगा। **12** तुम्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ, क्योंकि तुम मेरे कायदे-कानूनों पर नहीं चले और तुमने मेरे न्याय-सिद्धांतों का पालन नहीं किया।[10] इसके बजाय, तुमने अपने आस-पास के राष्ट्रों के न्याय-सिद्धांत अपना लिए हैं।'"[11]

11:1 *यहाँ इस्तेमाल हुए इब्रानी शब्द का मतलब पवित्र शक्‍ति या कोई स्वर्गदूत हो सकता है। **11:2** *या "के खिलाफ।" **11:3** *यानी यरूशलेम शहर। यहूदियों ने सोचा कि वे वहाँ महफूज़ रहेंगे। #या "चौड़े मुँहवाला हंडा।"

अध्य. 10
1 यहे 11:22
2 यहे 1:1, 22
3 यहे 1:8
4 यहे 1:10
5 यहे 1:12; यहे 10:11

अध्य. 11
6 यहे 10:19
7 यश 1:23; यहे 22:27
8 यहे 12:27
9 यहे 24:3

दूसरा कॉल.
1 यहे 3:17; यहे 20:46; यहे 21:2
2 2पत 1:21
3 यहे 7:23; यहे 22:3, 4
4 यहे 24:6
5 यिर्म 38:19
6 यिर्म 39:6, 7; यिर्म 52:24-27
7 2रा 25:18-21; 2इत 36:17
8 2रा 14:25; यिर्म 52:27
9 यहे 6:13
10 एज 9:7; नहे 9:34
11 व्य 12:29-31; 2इत 28:1, 3; भज 106:34-36

13 जैसे ही मैंने भविष्यवाणी करना
खत्म किया, बनायाह का बेटा पलत्याह
मर गया। और मैं मुँह के बल ज़मीन पर
गिरा और ज़ोर से चिल्ला उठा, "हे सारे
जहान के मालिक यहोवा! क्या तू इसी
तरह इसराएल के बचे हुओं को भी मार
डालेगा?"[1]

14 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास आया। उसने मुझसे कहा,
15 "इंसान के बेटे, तेरे जो भाई ज़मीन
वापस खरीदने का अधिकार रखते हैं,
उनसे और इसराएल के पूरे घराने से यरू-
शलेम के लोगों ने कहा है, 'तुम यहोवा से
बहुत दूर रहो। देश की ज़मीन हमारी है।
यह हमारे अधिकार में कर दी गयी है।'
16 इसलिए तू कहना, 'सारे जहान का
मालिक यहोवा कहता है, "हालाँकि मैंने
उन लोगों को इस देश से निकालकर दूर-
दूर के देशों में भेज दिया है और वहाँ
तितर-बितर कर दिया है,[2] फिर भी मैं उन
देशों में कुछ समय तक उनके लिए पवित्र-
स्थान बना रहूँगा।"'[3]

17 इसलिए तू कहना, 'सारे जहान
का मालिक यहोवा कहता है, "मैं तुम्हें
दूसरे देशों और राष्ट्रों से इकट्ठा करूँगा,
जहाँ तुम तितर-बितर किए गए हो। फिर
मैं तुम्हें इसराएल देश की ज़मीन दे दूँगा।[4]
18 वे इसराएल लौट जाएँगे और वहाँ से
सारी घिनौनी चीज़ें और घिनौने काम दूर
कर देंगे।[5] **19** मैं उन सबको एकता के
बंधन में बाँधूँगा*[6] और उनके अंदर
एक नया रुझान पैदा करूँगा।[7] उनका
दिल जो पत्थर जैसा सख्त हो गया था,[8]
उसके बदले मैं उन्हें एक ऐसा दिल दूँगा
जो कोमल होगा#[9] **20** ताकि वे मेरी
विधियों पर चलें, मेरे न्याय-सिद्धांतों को
मानें और उनका पालन करें। तब वे
मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर
होऊँगा।"'

21 '"मगर जिन लोगों ने दिल में
ठान लिया है कि वे अपनी घिनौनी
चीज़ों और अपने घिनौने कामों में लगे
रहेंगे, उन्हें मैं उनकी करतूतों का फल
दूँगा।" सारे जहान के मालिक यहोवा का
यह ऐलान है।'"

22 इसके बाद करूबों ने अपने पंख
ऊपर उठा लिए और पहिए उनके बिल-
कुल पास थे[1] और इसराएल के परमेश्वर
की महिमा उनके ऊपर छायी रही।[2]
23 फिर यहोवा की महिमा[3] नगरी से
ऊपर उठने लगी और जाकर उस पहाड़
पर ठहर गयी जो नगरी के पूरब में है।[4]
24 इसके बाद एक शक्ति* ने मुझे ऊपर
उठाया और परमेश्वर की शक्ति से मिले
दर्शन में मुझे कसदिया में उन लोगों के
पास पहुँचाया जो वहाँ बंदी थे। तब वह
दर्शन, जो मैं देख रहा था, खत्म हो गया।
25 फिर मैं बंदी लोगों को वे सारी बातें
बताने लगा जो यहोवा ने मुझे दर्शन में
दिखायी थीं।

12 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे
कहा, **2** "इंसान के बेटे, तू जिन लोगों
के बीच रहता है वे बगावती घराने के
लोग हैं। उनकी आँखें तो हैं मगर वे देखते
नहीं, उनके कान तो हैं मगर सुनते नहीं[5]
क्योंकि वे बगावती घराने के लोग हैं।[6]
3 इंसान के बेटे, तू बँधुआई में जाने के
लिए सामान बाँध ले और दिन के वक्त
जब लोग तुझे देख रहे हों तब अपना

11:19 *शा., "एक दिल दूँगा।" #यानी ऐसा दिल जो परमेश्वर का मार्गदर्शन मानने को तैयार होगा।

11:24 *यहाँ इस्तेमाल हुए इब्रानी शब्द का मतलब पवित्र शक्ति या कोई स्वर्गदूत हो सकता है।

अध्य. 11
1 यहे 9:8
2 2रा 24:14, 15; यिर्म 24:5
3 लैव 26:44
4 यश 11:11, 12; यिर्म 30:10, 11; यहे 34:13, 14; आम 9:14, 15
5 यहे 37:23
6 यिर्म 24:7; यिर्म 31:33; यिर्म 32:39
7 भज 51:10; यहे 36:31
8 जक 7:12
9 यहे 36:26

दूसरा कॉल.
1 यहे 1:19
2 यहे 10:18, 19
3 यहे 9:3; यहे 10:4
4 जक 14:4

अध्य. 12
5 यश 6:9, 10; यिर्म 5:21; रोम 11:8
6 यहे 2:3, 5

सामान लेकर ऐसे निकल जैसे तू बँधुआई में जा रहा है। तू लोगों के देखते अपने घर से किसी और जगह बँधुआई में जा। हालाँकि वे बगावती घराने के लोग हैं, फिर भी हो सकता है वे तुझ पर ध्यान दें। **4** तू बँधुआई का सामान लेकर लोगों के देखते दिन के वक्त बाहर निकल और शाम को उनके देखते ऐसे निकल मानो तुझे बंदी बनाकर ले जाया जा रहा है।[1]

5 तू लोगों के देखते दीवार में एक छेद कर और अपनी चीज़ें लेकर छेद में से उस पार निकल जा।[2] **6** जब अँधेरा होगा तब तू उनके देखते अपनी चीज़ें कंधे पर रखकर निकल जा। तू अपना चेहरा ढक ले ताकि तू ज़मीन को न देख सके क्योंकि मैंने तुझे इसराएल के घराने के लिए एक चिन्ह ठहराया है।"[3]

7 मैंने ठीक वैसे ही किया जैसे मुझे आज्ञा दी गयी थी। दिन के वक्त मैंने अपना सामान निकाला जैसे कोई बँधुआई में जाने के लिए सामान निकालता है। और शाम को मैंने अपने हाथ से दीवार में छेद किया। जब अँधेरा हुआ तो मैंने अपना सामान उठाया और कंधे पर रखकर लोगों के देखते निकल पड़ा।

8 सुबह होने पर यहोवा का संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, **9** "इंसान के बेटे, इसराएल के बगावती घराने के लोगों ने तुझसे पूछा है कि तू क्या कर रहा है। **10** तू उनसे कहना, 'सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, "यह संदेश यरूशलेम शहर में रहनेवाले प्रधान[4] और इसराएल के पूरे घराने के बारे में है।"'

11 तू उनसे कहना कि तू उनके लिए एक चिन्ह है[5] और जैसा तूने किया है वैसा ही उनके साथ किया जाएगा। उन्हें बंदी बनाकर दूर देश भेज दिया जाएगा।[1] **12** जो उनका प्रधान है वह अपना सामान कंधे पर रखकर अँधेरे में निकलेगा। वह दीवार में एक छेद करेगा और अपना सामान लेकर छेद में से उस पार निकलेगा।[2] वह अपना चेहरा ढक लेगा इसलिए वह ज़मीन नहीं देख सकेगा। **13** मैं उस पर अपना जाल डालूँगा और वह उसमें फँस जाएगा।[3] फिर मैं उसे कसदियों के देश बैबिलोन ले जाऊँगा, मगर वह उस देश को नहीं देखेगा और वहीं मर जाएगा।[4] **14** उसके सभी सहायकों और सैनिकों को, जो उसके आस-पास रहते हैं, मैं चारों दिशाओं में तितर-बितर कर दूँगा।[5] और मैं तलवार खींचकर उनका पीछा करूँगा।[6] **15** जब मैं उन्हें अलग-अलग देशों में बिखरा दूँगा और वहाँ तितर-बितर कर दूँगा तो उन्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ। **16** मगर मैं उनमें से कुछ लोगों को छोड़ दूँगा। वे तलवार, अकाल और महामारी की मार से बच जाएँगे ताकि वे जिन राष्ट्रों में जाएँगे, वहाँ लोगों को बता सकें कि उन्होंने कैसे-कैसे घिनौने काम किए थे। तब उन्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।"

17 यहोवा का संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, **18** "इंसान के बेटे, तू डरते-काँपते हुए अपनी रोटी खाना और बड़ी परेशानी और चिंता में डूबे हुए पानी पीना।[7] **19** तू देश के लोगों से कहना, 'सारे जहान का मालिक यहोवा इसराएल देश के यरूशलेम के निवासियों से कहता है, "वे गहरी चिंता में डूबे हुए अपनी रोटी खाएँगे और खौफ में जीते हुए पानी पीएँगे क्योंकि देश में रहनेवालों ने जो मार-काट मचा रखी है, उसकी

अध्य. 12

1 2इत 36:20; यिर्म 52:10, 11
2 2रा 25:4
3 यश 8:18; यहे 4:3; यहे 24:24
4 यिर्म 21:7; यहे 21:25
5 यहे 24:24

दूसरा कॉल.

1 यिर्म 52:15
2 2रा 25:4; यिर्म 39:4
3 यिर्म 52:9; यहे 17:20, 21
4 2रा 25:6, 7; यिर्म 34:3; यिर्म 52:11; यहे 17:16
5 2रा 25:5
6 लैव 26:33; यिर्म 42:15, 16
7 लैव 26:26

वजह से उनका देश पूरी तरह उजाड़ दिया जाएगा।[1] 20 जो शहर लोगों से आबाद हैं, वे उजाड़ दिए जाएँगे और देश की पूरी ज़मीन बंजर हो जाएगी।[2] तब तुम्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।”’”[3]

21 यहोवा का संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, 22 “इंसान के बेटे, इसराएल में यह कैसी कहावत चली है, ‘दिन गुज़रते जा रहे हैं पर एक भी दर्शन पूरा नहीं हुआ’?[4] 23 इसलिए तू उनसे कहना, ‘सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, “मैं इस कहावत का अंत कर दूँगा ताकि इसराएल में यह फिर कभी लोगों की ज़बान पर न आए।”’ और तू उनसे कहना, ‘वे दिन बहुत करीब हैं[5] जब एक-एक दर्शन पूरा होगा।’ 24 इसके बाद फिर कभी इसराएल के घराने में कोई भी झूठा दर्शन या चिकनी-चुपड़ी बातों की* भविष्यवाणी नहीं सुनी जाएगी।[6] 25 ‘“क्योंकि मैं यहोवा बात करूँगा और मैं जो कुछ कहूँगा वह बिना देरी के पूरा हो जाएगा।[7] बगावती घराने के लोगो, मैं तुम्हारे जीते-जी[8] अपनी बात कहूँगा और उसे पूरा भी करूँगा।” सारे जहान के मालिक यहोवा का यह ऐलान है।’”

26 यहोवा का संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, 27 “इंसान के बेटे, इसराएल के लोगों* का कहना है, ‘यह आदमी जो दर्शन देखता है वह एक अरसे बाद जाकर पूरा होगा और इसकी भविष्यवाणियाँ बहुत समय बाद पूरी होंगी।’[9] 28 इसलिए तू उनसे कहना, ‘सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, “‘मेरी किसी भी बात के पूरे होने में देर नहीं होगी। मैं जो कहता हूँ वह होकर ही रहेगा।’ सारे जहान के मालिक यहोवा का यह ऐलान है।”’”

13

यहोवा का संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, 2 “इंसान के बेटे, इसराएल के उन भविष्यवक्ताओं के खिलाफ भविष्यवाणी कर[1] जो खुद की गढ़ी हुई भविष्यवाणियाँ सुनाते हैं।*[2] उनसे कह, ‘यहोवा का संदेश सुनो। 3 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, “धिक्कार है उन मूर्ख भविष्यवक्ताओं पर जो अपने मन से भविष्यवाणी करते हैं जबकि उन्हें कोई दर्शन नहीं मिला है![3] 4 हे इसराएल, तेरे भविष्यवक्ता खंडहरों में रहनेवाली लोमड़ियों जैसे बन गए हैं। 5 तुम इसराएल के घराने की खातिर पत्थर की शहरपनाह में आयी दरारें भरने उनके पास नहीं जाओगे[4] और इसलिए इसराएल यहोवा के युद्ध के दिन खड़ा नहीं रह पाएगा।”[5] 6 “उन्होंने झूठे दर्शन देखे हैं और झूठी भविष्यवाणी की है। यहोवा ने उन्हें नहीं भेजा है, फिर भी वे कहते हैं, ‘यह यहोवा का संदेश है’ और सोचते हैं कि उनकी बात सच निकलेगी।[6] 7 तुमने जो दर्शन देखा क्या वह झूठा नहीं है? और हालाँकि मैंने तुम्हें कोई संदेश नहीं दिया, फिर भी जब तुम कहते हो, ‘यह यहोवा का संदेश है,’ तो क्या तुम झूठी भविष्यवाणी नहीं करते?”’

8 ‘इसलिए सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, “‘तुमने जो बातें कही हैं वे झूठी हैं और तुमने जो दर्शन देखे वे भी झूठे हैं, इसलिए मैं तुम्हारे खिलाफ हूँ।’ सारे जहान के मालिक यहोवा का यह ऐलान है।”[7] 9 मेरा हाथ उन

12:24 * या “छल से भरी।” 12:27 * शा., “घराने।”

13:2 * या “जो अपने ही मन से भविष्यवाणी करते हैं।”

अध्य. 12
1 भज 107:33, 34; यश 6:11; यिर्म 6:7; जक 7:14
2 यश 64:10; यिर्म 25:9
3 यहे 6:13
4 यश 5:19; आम 6:3; 2पत 3:3, 4
5 योए 2:1; सप 1:14
6 यिर्म 14:14; विल 2:14; यहे 13:23
7 विल 2:17; जक 1:6
8 यिर्म 16:9; हब 1:5
9 यश 5:19; यश 28:15; 2पत 3:3, 4

दूसरा कॉल.

अध्य. 13
1 मी 3:5; सप 3:4
2 यिर्म 14:14; यिर्म 23:16
3 यिर्म 23:32
4 यहे 22:30
5 यश 2:12; योए 1:15
6 यिर्म 29:31, 32
7 यहे 22:28

भविष्यवक्ताओं पर उठा है जो झूठे दर्शन देखते हैं और झूठी भविष्यवाणी करते हैं।[1] वे उन लोगों में नहीं होंगे जिनके साथ मैं करीबी रिश्ता रखता हूँ और न ही उनके नाम इसराएल के घराने की नाम-लिखाई की किताब में लिखे जाएँगे और वे इसराएल देश कभी नहीं लौट पाएँगे। तब तुम्हें जानना होगा कि मैं सारे जहान का मालिक यहोवा हूँ।[2] **10** उनके साथ यह सब इसलिए होगा क्योंकि उन्होंने यह कहकर मेरे लोगों को गुमराह किया है, "शांति है, शांति!" जबकि शांति कहीं नहीं है।[3] जब एक कमज़ोर दीवार खड़ी की जाती है तो वे उसकी सफेदी करते हैं।'*[4]

11 सफेदी करनेवालों से कहना कि वह दीवार ढह जाएगी। ऐसी घनघोर बारिश होगी, ओले गिरेंगे और भयंकर आँधियाँ चलेंगी कि दीवार टूटकर गिर जाएगी।[5] **12** और जब दीवार गिरेगी तो तुमसे पूछा जाएगा, 'कहाँ गयी वह सफेदी जो तुमने की थी?'[6]

13 इसलिए सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'मैं क्रोध में आकर भयंकर आँधियाँ चलाऊँगा, गुस्से में आकर घनघोर बारिश कराऊँगा और बड़ी जलजलाहट में आकर ओले बरसाऊँगा। **14** मैं तुम्हारी सफेदी की हुई दीवार तोड़ डालूँगा और ज़मीन पर गिरा दूँगा और उसकी बुनियाद तक दिखने लगेगी। जब नगरी गिर पड़ेगी तो तुम लोग उसके अंदर नाश हो जाओगे और तुम्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।'

15 'मैं उस दीवार पर और उसकी सफेदी करनेवालों पर अपना गुस्सा पूरी

13:10 *यानी अंदर एक कमज़ोर दीवार बनाते हैं और उस पर सफेदी करके उसे मज़बूत दिखाने की कोशिश करते हैं।

तरह उतारने के बाद तुमसे कहूँगा, "अब न वह दीवार रही न उसकी सफेदी करनेवाले।[1] **16** इसराएल के वे भविष्यवक्ता अब नहीं रहे, जिन्होंने यरूशलेम को भविष्यवाणियाँ सुनायी थीं और दर्शन देखे थे कि वहाँ शांति है जबकि शांति बिलकुल नहीं थी।"'[2] सारे जहान के मालिक यहोवा का यह ऐलान है।

17 इंसान के बेटे, अब तू अपने लोगों में से उन औरतों से बात कर जो खुद की गढ़ी हुई भविष्यवाणियाँ सुनाती हैं। तू उनके खिलाफ भविष्यवाणी कर। **18** उनसे कह, 'सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, "धिक्कार है उन औरतों पर जो हर तरह के लोगों के लिए तावीज़ बनाती हैं और हर तरह के लोगों के सिर के लिए परदे बनाती हैं ताकि उन्हें फँसाकर उनकी जान ले लें! क्या तुम मेरे लोगों की जान का शिकार कर रही हो और अपनी जान बचाने की कोशिश कर रही हो? **19** क्या तुम मुट्ठी-भर जौ और रोटी के टुकड़ों के लिए मेरे लोगों के बीच मेरा अपमान करोगी?[3] मेरे लोगों में से जो तुम्हारी झूठी बातें सुनते हैं, क्या तुम उन्हें अपनी झूठी बातों में फँसाकर मार डालोगी और इस तरह ऐसे लोगों को मारोगी जिन्हें मारना सही नहीं और ऐसे लोगों को ज़िंदा रखोगी जो ज़िंदा रहने के लायक नहीं हैं?"'[4]

20 इसलिए सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'हे औरतो, मैं तुम्हारे उन तावीज़ों की वजह से तुम्हारे खिलाफ हूँ जिनका इस्तेमाल करके तुम लोगों का ऐसे शिकार करती हो मानो वे पंछी हों। मैं तुम्हारी बाँहों से तावीज़ निकाल दूँगा और उन लोगों को आज़ाद कर दूँगा जिनका तुम ऐसे शिकार करती हो मानो वे पंछी हों। **21** मैं तुम्हारे परदे

अध्य. 13

1 यिर्म 14:14; यिर्म 28:15, 16; यिर्म 29:8, 9

2 यहे 6:13; यहे 11:10

3 यिर्म 6:13, 14

4 यश 30:10; यहे 22:28

5 यश 27:8

6 यिर्म 37:19

दूसरा कॉल.

1 यश 30:12, 13

2 यिर्म 6:13, 14; यिर्म 28:1-4

3 मी 3:11

4 यिर्म 23:14

फाड़ दूँगा और अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ा लूँगा। इसके बाद फिर कभी तुम उनका शिकार नहीं कर पाओगी और तुम्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।[1] **22** तुमने अपने झूठ से नेक इंसान का हौसला तोड़ दिया है[2] जबकि मैंने उसे कोई दुख* नहीं दिया था। और तुमने दुष्ट के हाथ मज़बूत किए हैं[3] जिस वजह से वह अपने बुरे कामों से नहीं फिरता कि वह ज़िंदा बच सके।[4] **23** इसलिए अब तुम और झूठे दर्शन नहीं देख पाओगी और न ही ज्योतिषी का काम कर पाओगी।[5] मैं अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ा लूँगा और तुम्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।’”

14 इसराएल के कुछ मुखिया मेरे पास आए और मेरे सामने बैठे।[6] **2** फिर यहोवा का यह संदेश मेरे पास पहुँचाः **3** “इंसान के बेटे, इन आदमियों ने अपनी घिनौनी मूरतों* के पीछे चलने की ठान ली है और लोगों के सामने ठोकर का पत्थर रख दिया है जो उनसे पाप करवाता है। अब यही आदमी मेरी मरज़ी जानने तेरे पास आए हैं। मैं उन्हें अपनी मरज़ी क्यों बताऊँ?[7] **4** उन आदमियों से कहना, ‘सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, “अगर एक इसराएली ने अपनी घिनौनी मूरतों के पीछे चलने की ठान ली है और वह लोगों के सामने ठोकर का पत्थर रखता है, जो उनसे पाप करवाता है और फिर मेरी मरज़ी जानने के लिए एक भविष्यवक्ता के पास आता है, तो मैं यहोवा उसे उतनी कड़ी सज़ा दूँगा जितनी कि उसकी घिनौनी मूरतें हैं। **5** मैं इसराएल के घराने के लोगों के दिलों में डर बिठा दूँगा* क्योंकि उन सबने मुझे छोड़ दिया है और अपनी घिनौनी मूरतों के पीछे चलने लगे हैं।”’[1]

6 इसलिए इसराएल के घराने से कहना, ‘सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, “तुम सब मेरे पास लौट आओ, अपनी घिनौनी मूरतों और अपने सब घिनौने कामों से मुँह फेर लो,[2] **7** क्योंकि अगर कोई इसराएली या इसराएल में रहनेवाला कोई परदेसी खुद को मुझसे अलग कर देता है और अपनी घिनौनी मूरतों के पीछे चलने की ठान लेता है और लोगों के सामने ठोकर का पत्थर रखता है जो उनसे पाप करवाता है और फिर मेरे भविष्यवक्ता के पास मेरी मरज़ी जानने आता है,[3] तो मैं यहोवा खुद उस आदमी को जवाब दूँगा। **8** मैं उस आदमी के खिलाफ हो जाऊँगा और उसका ऐसा हश्र करूँगा कि उससे दूसरों को सबक मिले और उस पर एक कहावत बन जाए। मैं उसे अपने लोगों के बीच से नाश कर दूँगा[4] और तुम्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।”’

9 ‘लेकिन अगर वह भविष्यवक्ता मूर्ख बन जाता है और उससे पूछताछ करनेवाले आदमी को कोई भविष्यवाणी सुनाता है, तो जान लेना कि उस भविष्यवक्ता को मुझ यहोवा ने ही मूर्ख बनाया है।[5] मैं उसके खिलाफ अपना हाथ बढ़ाऊँगा और उसे अपनी प्रजा इसराएल के बीच से मिटा दूँगा। **10** उस भविष्यवक्ता और उससे पूछताछ करनेवाले आदमी दोनों को अपने दोष की सज़ा मिलेगी, पूछताछ करनेवाला उतना

13:22 *या “दर्द।” **14:3** *इनका इब्रानी शब्द शायद “मल” के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

14:5 *शा., “इसराएल के घराने के दिलों को अपने कब्ज़े में कर लूँगा।”

अध्य. 13

1 यहे 6:13
2 यिर्म 27:14
3 यिर्म 23:14
4 यिर्म 23:16, 17
5 व्य 18:10, 14; यिर्म 27:9; मी 3:6

अध्य. 14

6 यहे 33:30, 31
7 2रा 3:13; यश 1:15; यिर्म 11:11

दूसरा कॉल.

1 यिर्म 2:5
2 यश 55:7
3 यिर्म 21:1, 2; यहे 33:31
4 लैव 20:2, 3
5 1रा 22:21, 22; यिर्म 4:10; 2थि 2:10, 11

ही दोषी ठहरेगा जितना कि वह भविष्य-
वक्ता। 11 ऐसा इसलिए है ताकि इस-
राएल का घराना मुझसे दूर जाकर भटक-
ना और अपने सभी अपराधों से खुद को
दूषित करना छोड़ दे। तब वे मेरे लोग
होंगे और मैं उनका परमेश्‍वर होऊँगा।'[1]
सारे जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है।"

12 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
13 "इंसान के बेटे, अगर एक देश मुझसे
विश्‍वासघात करके मेरे खिलाफ पाप करे
तो मैं उसके खिलाफ अपना हाथ बढ़ाऊँ-
गा और उसकी खाने-पीने की चीज़ों का
भंडार नष्ट कर दूँगा।*[2] मैं देश में
अकाल भेजूँगा[3] और इंसान और जान-
वर, दोनों को वहाँ से मिटा दूँगा।"[4]
14 "सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, 'अगर उस देश में नूह,[5]
दानियेल[6] और अय्यूब[7] भी हों, तो ये
तीनों आदमी अपनी नेकी की वजह से
सिर्फ अपनी जान बचा पाएँगे।'"[8]

15 "'अगर मैं पूरे देश में खूँखार
जंगली जानवरों को भेजूँगा तो वे सब
लोगों को खाकर देश खाली कर देंगे*
और उसे वीरान बना देंगे। और जंगली
जानवरों के डर से वहाँ से कोई आ-जा
नहीं सकेगा।[9] 16 मैं अपने जीवन की
शपथ खाकर कहता हूँ, अगर उस देश में
ये तीनों आदमी हों तो भी ये अपने बेटे-
बेटियों को नहीं बचा पाएँगे। ये सिर्फ खुद
को बचा पाएँगे और पूरा देश उजाड़ हो
जाएगा।' सारे जहान के मालिक यहोवा
का यह ऐलान है।"

17 "'अगर मैं उस देश पर तलवार
चलवाऊँ[1] और कहूँ, "पूरे देश में तलवार
चलायी जाए," तो मैं इंसान और जानवर
दोनों को मार डालूँगा।[2] 18 मैं अपने
जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ, अगर
उस देश में ये तीनों आदमी हों तो भी ये
अपने बेटे-बेटियों को नहीं बचा पाएँगे। ये
सिर्फ खुद को बचा पाएँगे।' सारे जहान
के मालिक यहोवा का यह ऐलान है।"

19 "'अगर मैं उस देश पर महामारी
ले आऊँ[3] और उस पर अपने क्रोध का
प्याला उँडेलूँ और इंसानों और जानवरों
को मिटाने के लिए खून की नदियाँ बहा दूँ
20 तो मैं अपने जीवन की शपथ खाकर
कहता हूँ कि चाहे उस देश में नूह,[4] दानि-
येल[5] और अय्यूब[6] रहते हों तो भी ये
आदमी अपने बेटे-बेटियों को नहीं बचा
पाएँगे। ये अपनी नेकी की वजह से सिर्फ
खुद को बचा पाएँगे।' सारे जहान के
मालिक यहोवा का यह ऐलान है।"[7]

21 "सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'यरूशलेम का यही हाल होगा
जब मैं उसे इन चार तरीकों से यानी
तलवार, अकाल, खूँखार जंगली जानवर
और महामारी से सज़ा दूँगा[8] और इंसान
और जानवर, दोनों को मिटा दूँगा।[9]
22 मगर उनमें से कुछ आदमी-औरत
बच जाएँगे और उन्हें देश से बाहर ले
जाया जाएगा।[10] वे तुम्हारे पास आएँगे
और जब तुम उनके तौर-तरीके और
उनके काम देखोगे, तो तुम्हें ज़रूर इस
बात से तसल्ली मिलेगी कि मैंने यरूशलेम
पर इतना बड़ा कहर ढाया और उसके
साथ यह सब किया।'"

23 "'जब तुम उनके तौर-तरीके और
उनके काम देखोगे तो तुम्हें इस बात
से तसल्ली मिलेगी कि मुझे यरूशलेम के
साथ जो भी करना पड़ा वह बेवजह नहीं

14:13 *शा., "तुम्हारी रोटी के छड़ तोड़ दूँगा।" शायद यहाँ रोटी लटकानेवाले छड़ों की बात की गयी है। **14:15** *या "वे देश के बच्चों को मारकर उससे छीन लेंगे।"

अध्य. 14
1 यिर्म 24:7, यहे 11:19, 20
2 लैव 26:26
3 यश 3:1, यिर्म 15:2
4 यिर्म 7:20
5 उत 6:8, 9, इब्र 11:7
6 दान 10:11
7 अय 1:8, अय 42:8
8 नीत 11:4, यिर्म 15:1, 2पत 2:9
9 लैव 26:22, यिर्म 15:3

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:25, यिर्म 25:9, यहे 21:3
2 सप 1:3
3 व्य 28:21, 22
4 उत 7:1
5 दान 10:11
6 अय 1:8, अय 42:8
7 यहे 18:20, सप 2:3
8 यिर्म 15:2, यहे 5:17, यहे 33:27
9 यिर्म 32:43
10 व्य 4:31, 2इत 36:20, यहे 6:8, मी 5:7

था।’[1] सारे जहान के मालिक यहोवा का
यह ऐलान है।”

15 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे
कहा, 2 “इंसान के बेटे, क्या अंगूर की
बेल की लकड़ी दूसरे पेड़ की लकड़ी से
या जंगल के पेड़ों की डाली से ज़्यादा
अच्छी होती है? 3 क्या उसकी लकड़ी
से बनाया डंडा किसी काम का होता
है? क्या उससे बरतन टाँगने के लिए
खूँटी तक बनायी जा सकती है? 4 वह
तो बस आग जलाने के काम आती
है। आग उसके दोनों कोने जला देती है
और बीच का हिस्सा भस्म कर देती है।
क्या अब वह लकड़ी किसी काम की है?
5 जब वह जलने से पहले किसी काम की
नहीं थी, तो अब जलने के बाद किस काम
आएगी? अब तो वह पहले से भी बेकार
हो जाएगी!”

6 “इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, ‘जैसे जंगल के पेड़ों
में से अंगूर की बेल की लकड़ी मैंने आग
जलाने के लिए दी है, वैसे ही मैं यरू-
शलेम के निवासियों का नाश कर दूँगा।[2]
7 मैं उनके खिलाफ हो गया हूँ। वे भले
ही आग से बच निकले हैं, मगर आग
उन्हें ज़रूर भस्म कर देगी। जब मैं उनके
खिलाफ होऊँगा तो तुम्हें जानना होगा कि
मैं यहोवा हूँ।’”[3]

8 “‘मैं पूरे देश को उजाड़ दूँगा[4]
क्योंकि उन्होंने विश्‍वासघात किया है।’[5]
सारे जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है।”

16 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे
कहा, 2 “इंसान के बेटे, यरूशलेम
नगरी को उसके घिनौने काम जता दे।[6]
3 तू उससे कहना, ‘सारे जहान का
मालिक यहोवा यरूशलेम से कहता है,
“तू कनानियों के देश में पैदा हुई थी।
तेरी शुरूआत वहीं से हुई थी। तेरा
पिता एमोरी था[1] और माँ हित्ती थी।[2]
4 जिस दिन तू पैदा हुई थी, उस दिन तेरा
नाल नहीं काटा गया और न ही तुझे पानी
से नहलाकर साफ किया गया। न तुझ पर
नमक मला गया और न ही तुझे कपड़ों में
लपेटा गया। 5 किसी ने तुझ पर इतना
भी तरस न खाया कि तेरे लिए इनमें से
एक भी काम करता। किसी ने भी तुझ पर
दया नहीं की। उलटा तुझे खुले मैदान में
यूँ ही फेंक दिया गया क्योंकि जिस दिन
तू पैदा हुई थी उस दिन तुझसे नफरत की
गयी थी।

6 जब मैं तेरे यहाँ से गुज़र रहा था तो
मैंने देखा कि तू अपने खून में पड़ी पैर
मार रही है। तुझे अपने खून में पड़ा देख-
कर मैंने कहा, ‘ज़िंदा रह!’ हाँ, जब
मैंने देखा कि तू अपने ही खून में पड़ी
है तो मैंने कहा, ‘ज़िंदा रह!’ 7 मैंने तुझे
मैदान में उगनेवाले पौधों की तरह गिनती
में बहुत बढ़ाया। तू बड़ी होती गयी और
पूरी तरह खिल गयी और तूने बढ़िया-
से-बढ़िया गहनों से अपना सिंगार किया।
तेरी छातियाँ सुडौल हो गयीं और तेरे
बाल बढ़ गए। मगर अब भी तेरा तन
ढका नहीं था, तू बिलकुल नंगी थी।”’

8 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, ‘जब मैं तेरे पास से गुज़र रहा
था तो मैंने देखा कि तू सयानी हो गयी है
और अब तेरी प्यार करने की उम्र हो गयी
है। इसलिए मैंने अपना बागा तुझे ओढ़ा
दिया[3] और तेरा तन ढाँप दिया। मैंने
शपथ खाकर तेरे साथ एक करार किया
और तू मेरी हो गयी। 9 मैंने तुझे पानी
से नहलाया, तेरे शरीर पर लगा खून
पानी से धो दिया और तुझ पर तेल

अध्य. 14
1 नहे 9:33
यिर्म 22:8, 9
यहे 9:9
दान 9:7

अध्य. 15
2 भज 80:14-16
यश 5:24
यिर्म 7:20
यहे 20:47
3 यहे 6:7
यहे 7:4
4 यश 6:11
यिर्म 25:11
यहे 6:14
5 2इत 36:14

अध्य. 16
6 यहे 8:10
यहे 20:4

दूसरा कॉल.
1 यह 10:5
1रा 21:25, 26
2रा 21:11
2 1इत 1:13, 14
3 रूत 3:9

मला।[1] **10** फिर मैंने तुझे कढ़ाई की हुई सुंदर पोशाक पहनायी, तेरे पैरों में बेहतरीन चमड़े की* जूतियाँ पहनायीं, तुझे बढ़िया मलमल ओढ़ाया और महँगे-महँगे कपड़े पहनाए। **11** मैंने तुझे गहनों से सजाया-सँवारा, हाथों में कंगन और गले में हार पहनाया। **12** मैंने तेरी नाक में नथनी, कानों में बालियाँ और सिर पर एक सुंदर-सा ताज भी पहनाया। **13** तू सोने-चाँदी से अपना सिंगार करती थी और तेरी पोशाकें बढ़िया मलमल, महँगे-महँगे कपड़ों और कढ़ाईदार कपड़ों से बनी होती थीं। तू मैदे, शहद और तेल से बने पकवानों का मज़ा लेती थी। दिनों-दिन तेरा रूप इस तरह निखरता गया कि तेरी खूबसूरती देखते बनती थी[2] और तू रानी बनने* के काबिल हो गयी।’”

14 “सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, ‘मैंने तुझे अपना वैभव प्रदान किया जिस वजह से तू अपनी बेदाग* खूबसूरती के लिए इतनी मशहूर हो गयी कि सब देशों में तेरी शोहरत# के चर्चे होने लगे।’”[3]

15 “‘मगर तू अपनी खूबसूरती पर घमंड करने लगी[4] और तूने अपनी शोहरत का गलत इस्तेमाल किया और एक वेश्या बन गयी।[5] तू आने-जानेवाले हर आदमी के साथ बेझिझक बदचलनी करती रही[6] और उन पर अपनी खूबसूरती लुटाती रही। **16** तूने अपने कुछ कपड़े लिए और उनसे रंग-बिरंगी ऊँची जगह बनायीं जहाँ तू वेश्या के काम करती थी।[7] तूने ऐसे नीच काम किए हैं जो कभी होने ही नहीं चाहिए थे और आगे भी कभी नहीं दोहराए जाने चाहिए। **17** मैंने तुझे सोने-चाँदी के जो खूबसूरत गहने दिए थे,* उनसे तूने आदमियों की मूरतें बनायीं और उन्हें पूजने लगी।#[1] **18** तू अपनी कढ़ाईदार पोशाकें ले जाकर उन्हें* ढकती थी और तूने उनके आगे मेरा तेल और मेरा धूप चढ़ाया।[2] **19** मैंने तुझे खाने के लिए मैदे, तेल और शहद से बनी जो रोटी दी थी, वह भी ले जाकर तूने उन मूरतों के आगे अर्पित कर दी ताकि उनकी सुगंध पाकर वे खुश हों।[3] तूने ऐसा ही किया।’ सारे जहान के मालिक यहोवा का यह ऐलान है।”

20 “‘तू वेश्या के कामों में इस हद तक गिर गयी कि तू अपने बेटे-बेटियों को भी, जिन्हें तूने मेरे लिए जन्म दिया था,[4] मूरतों के पास ले जाती और उनके सामने बलिदान करती थी।[5] **21** तू मेरे बेटों को मार डालती थी और उन्हें आग में होम कर देती थी।[6] **22** तू घिनौने काम करने और वेश्या के काम करने में इतनी डूब गयी कि तू बचपन के वे दिन भूल गयी जब तेरा तन ढका हुआ नहीं था और तू नंगी थी और अपने खून में पड़ी हुई पैर मार रही थी। **23** धिक्कार है तुझ पर, धिक्कार! तूने बुराई करने में हद कर दी है।’[7] सारे जहान के मालिक यहोवा का यह ऐलान है। **24** ‘तूने हर चौक में अपने लिए एक टीला बनाया और एक ऊँची जगह खड़ी की। **25** तूने हर गली के मोड़ पर ऊँची जगह बनायीं। तूने खुद को आने-जानेवाले हर किसी के हाथ सौंप दिया और इस तरह तू जो कभी खूबसूरत हुआ करती थी, अब तूने खुद को

अध्य. 16

1 भज 23:5
2 भज 48:2
3 1रा 4:21, 1रा 10:1, भज 50:2, विल 2:15
4 यिर्म 7:4, मी 3:11
5 1रा 11:5, 7, भज 106:35, 36, यश 57:7, 8, यिर्म 2:20, याकू 4:4
6 यिर्म 3:13
7 1रा 14:22, 23, 2इत 21:5, 11

दूसरा कॉल.

1 यश 57:7, 8
2 यहे 8:10, 11
3 2रा 22:16, 17
4 निर्ग 13:2
5 भज 106:37, 38
6 लैव 18:21, लैव 20:2, 2रा 16:1, 3, 2इत 33:1, 6, यिर्म 7:31, यहे 20:26
7 यिर्म 13:27, सप 3:1

16:10 *या “सील मछली की खाल से बनी।” **16:13** *या “शाही ओहदे।” **16:14** *या “परिपूर्ण।” #शा., “नाम।”

16:17 *या “सजावट की चीज़ें दी थीं।” #या “उनसे वेश्याओं जैसी बदचलनी की।” **16:18** *यानी आदमियों की मूरतों को।

घिनौना बना लिया है।[1] तूने बढ़-चढ़कर वेश्‍या के काम किए हैं।[2] **26** तूने अपने पड़ोसी देश मिस्र के कामुक बेटों के साथ वेश्‍या के काम किए[3] और बढ़-चढ़कर बदचलनी करके मेरा क्रोध भड़काया है। **27** इसलिए अब मैं तेरे खिलाफ अपना हाथ बढ़ाऊँगा और तेरी खाने-पीने की चीज़ों में कटौती कर दूँगा[4] और तुझे पलिश्‍तियों की बेटियों की मरज़ी पर छोड़ दूँगा जो तुझसे नफरत करती हैं[5] और जो तेरे अश्‍लील काम देखकर दंग रह गयी थीं।[6]

28 अब भी तेरी प्यास नहीं बुझी थी, इसलिए तूने अश्‍शूर के बेटों के साथ भी वेश्‍या के काम किए।[7] लेकिन उनसे भी तेरा जी नहीं भरा। **29** इसलिए तू सौदागरों के देश में और कसदियों के साथ और भी ज़्यादा वेश्‍या के काम करने लगी।[8] मगर इससे भी तेरी प्यास नहीं बुझी।' **30** सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'तेरा दिल किस कदर रोगी* हो गया था# जब तूने एक बेशर्म वेश्‍या की तरह ऐसे काम किए थे![9] **31** मगर जब तूने हर गली के मोड़ पर अपने लिए टीला बनाया और हर चौक पर ऊँची जगह खड़ी की, तो तू दूसरी वेश्‍याओं से हटकर थी, क्योंकि तूने अपने यारों से रकम लेने से इनकार कर दिया था। **32** तू ऐसी बदचलन औरत है जो अपने पति को छोड़ पराए आदमियों के पास जाती है।[10] **33** सब वेश्‍याएँ तो अपने पास आनेवाले आदमियों से रकम लेती हैं,[11] मगर तू है कि खुद उन आदमियों को रकम देती है जो अपनी हवस पूरी करने तेरे पास आते हैं।[12] तू खुद पैसा देकर आदमियों को लुभाती है ताकि हर कोने से आदमी तेरे पास खिंचे चले आएँ और तेरे साथ नीच काम करें।[1] **34** तू दूसरी वेश्‍याओं से बिलकुल हटकर है। तेरी जैसी वेश्‍या कहीं नहीं मिलेगी! तू अपने पास आनेवाले आदमियों से रकम लेने के बजाय खुद उन्हें रकम देती है। तेरा तरीका ही उलटा है।'

35 इसलिए हे वेश्‍या,[2] अब सुन कि यहोवा क्या कहता है। **36** सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'क्योंकि तूने अपनी वासनाएँ पूरी करने में हद कर दी है और तूने अपने यारों और अपनी सभी घिनौनी मूरतों* के साथ वेश्‍या के काम करके अपने तन की नुमाइश की है[3] और उन मूरतों के लिए तूने अपने बेटों तक का खून अर्पित कर दिया है,[4] **37** इसलिए मैं तेरे सभी यारों को इकट्ठा करूँगा जिन्हें तूने खुश किया है और मैं उन सबको इकट्ठा करूँगा जिन्हें तू प्यार करती थी और उन्हें भी जिनसे तू नफरत करती थी। मैं चारों तरफ से उन्हें लाकर तेरे खिलाफ खड़ा करूँगा और उन्हें तेरा नंगापन दिखाऊँगा और वे देखेंगे।[5]

38 मैं तुझे वह सज़ा दूँगा जो बदचलन औरतों[6] को और खून करनेवाली औरतों[7] को दी जाती है। मैं क्रोध और जलजलाहट में आकर तेरा खून बहाऊँगा।[8] **39** मैं तुझे उनके हाथ कर दूँगा। वे तेरे टीले ढा देंगे, तेरी ऊँची जगह गिरा देंगे,[9] तेरे तन से कपड़े उतार देंगे,[10] तेरे सुंदर-सुंदर गहने* ले लेंगे[11] और तुझे बिलकुल नंगा करके छोड़ेंगे। **40** वे तेरे

16:30 *या "कमज़ोर।" #या शायद, "मुझे तुम पर बहुत गुस्सा आ रहा है।"

16:36 *इनका इब्रानी शब्द शायद "मल" के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है। **16:39** *या "तेरी सजावट की चीज़ें।"

अध्य. 16
1 यिर्म 2:23, 24
2 यिर्म 3:2
3 यश 30:2, 3; यिर्म 2:36
4 व्य 28:48
5 भज 106:41
6 यिर्म 2:11, 12
7 2रा 16:7
8 यहे 23:14, 16
9 यिर्म 3:3
10 यिर्म 3:1, 20
11 उत 38:16
12 यश 57:9

दूसरा कॉल.
1 2इत 16:2, 3
2 यश 1:21; यिर्म 3:6
3 2रा 21:11
4 भज 106:37, 38
5 यिर्म 13:22; विल 1:8
6 उत 38:24; लैव 20:10; व्य 22:22
7 उत 9:6; निर्ग 21:12
8 भज 79:2, 3; यहे 23:25
9 यश 27:9; यहे 16:24
10 यिर्म 4:30
11 यश 3:18-23; यहे 23:26

खिलाफ एक भीड़ ले आएँगे[1] और तुझे
पत्थरों से मार डालेंगे[2] और अपनी तल-
वारों से घात कर देंगे।[3] **41** वे तेरे घर
जलाकर राख कर देंगे[4] और बहुत-सी
औरतों के सामने तुझे सज़ा देंगे। मैं तेरे
वेश्या के कामों का अंत कर दूँगा[5] और
इसके बाद तू अपने यारों को रकम नहीं
दे पाएगी। **42** मैं तुझ पर अपना गुस्सा
पूरी तरह उतारूँगा[6] और मेरी जलजला-
हट ठंडी हो जाएगी।[7] मैं शांत हो जाऊँगा
और फिर कभी नहीं भड़कूँगा।'

43 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, 'तूने अपने बचपन के वे
दिन भुला दिए[8] और ये सारे काम करके
मुझे गुस्सा दिलाया। इसलिए अब मैं तुझे
तेरे कामों का फल दूँगा और तू फिर
कभी ऐसे अश्लील और घिनौने काम नहीं
करेगी।

44 देख! कहावतें कहनेवाला हर कोई
तेरे बारे में यह कहावत कहेगा, "जैसी
माँ, वैसी बेटी!"[9] **45** तू सचमुच अपनी
माँ की बेटी है। तेरी माँ ने भी अपने
पति और बच्चों को तुच्छ जाना था। और
तू अपनी बहनों जैसी है जिन्होंने अपने
पति और बच्चों को तुच्छ जाना था। तेरी
माँ हित्ती थी और पिता एमोरी था।'"[10]

46 "'तेरी बड़ी बहन सामरिया है[11]
जो अपनी बेटियों* के साथ तेरे उत्तर में#
रहती है।[12] और तेरी छोटी बहन
सदोम है जो अपनी बेटियों[13] के साथ तेरे
दक्षिण में△ रहती है।[14] **47** तूने न सिर्फ
उनके रंग-ढंग अपना लिए और उनके
जैसे घिनौने काम किए बल्कि देखते-ही-
देखते तू बदचलनी करने में उनसे भी
आगे निकल गयी।'[15] **48** सारे जहान

16:46 *मुमकिन है कि यहाँ आस-पास के नगरों की बात की गयी है। #शा., "बायीं तरफ।" △शा., "दायीं तरफ।"

अध्य. 16

1 यहे 23:46, 47; हब 1:6
2 व्य 22:20, 21
3 2इत 36:17; यिर्म 25:9
4 2रा 25:8, 9
5 यहे 23:27
6 यहे 5:13
7 यश 40:2
8 यिर्म 2:32
9 1रा 21:25, 26; 2रा 21:2, 9; भज 106:35, 36
10 व्य 20:17; यह 10:5; 2रा 21:11; यहे 16:3
11 यहे 23:33
12 यिर्म 3:8
13 उत 19:24, 25
14 उत 18:20; यश 3:9; यिर्म 23:14
15 2रा 21:2, 9; यहे 5:5, 6

दूसरा कॉल.

1 यहू 7
2 नीत 16:5
3 नीत 1:32
4 उत 13:10
5 नीत 21:13
6 नीत 16:18
7 उत 13:13; उत 18:20; उत 19:4, 5
8 उत 19:24, 25; विल 4:6; 2पत 2:6
9 2रा 21:13; यिर्म 23:13; यहे 23:33
10 यिर्म 3:11
11 भज 126:1

का मालिक यहोवा कहता है, 'मैं अपने
जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ, तेरी
बहन सदोम और उसकी बेटियों ने वे
काम नहीं किए जो तूने और तेरी
बेटियों ने किए हैं। **49** देख! तेरी बहन
सदोम का गुनाह यह था: वह और
उसकी बेटियाँ[1] घमंड से फूल गयी थीं।[2]
वे अपनी ही दुनिया में मगन रहतीं और
बेपरवाह थीं।[3] उनके पास खाने-पीने की
चीज़ों की भरमार थी,[4] फिर भी उन्होंने
गरीबों और मुसीबत के मारों की मदद
नहीं की।[5] **50** उनका घमंड कभी कम
नहीं हुआ।[6] वे ऐसे कामों में लगी रहीं
जो मेरी नज़र में घिनौने थे।[7] इसलिए मैंने
उन्हें मिटा देना ज़रूरी समझा।[8]

51 तूने जितने पाप किए हैं, साम-
रिया[9] ने उसके आधे भी नहीं किए। तू
अपनी बहनों के मुकाबले इतने ज़्यादा
घिनौने काम करती गयी कि वे नेक
मालूम पड़ती हैं।[10] **52** क्योंकि तूने इस
तरह अपनी बहनों के कामों को सही ठह-
राया है,* इसलिए तुझे अब बुरी तरह
बेइज़्ज़त होना पड़ेगा। तूने उनसे ज़्यादा
घोर पाप किए हैं इसलिए वे नेक मालूम
पड़ती हैं। इसी वजह से अब तुझे शर्मिंदा
और बेइज़्ज़त होना पड़ेगा।'

53 'मैं उनके बंदी बनाए लोगों को,
यानी सदोम और उसकी बेटियों के और
सामरिया और उसकी बेटियों के बंदी
बनाए लोगों को इकट्ठा करूँगा। उनके
साथ-साथ मैं तेरे लोगों को भी इकट्ठा
करूँगा जिन्हें बंदी बना लिया गया है[11]
54 ताकि तेरी बेइज़्ज़ती हो। तुझे ज़रूर
बेइज़्ज़त होना पड़ेगा क्योंकि तेरी वजह
से उन्हें तसल्ली मिली है। **55** तेरी
बहनें, सदोम और सामरिया और उनकी
बेटियाँ फिर से बहाल की जाएँगी। उनके

16:52 *या "उसकी वकालत की है।"

साथ-साथ तुझे और तेरी बेटियों को भी
बहाल किया जाएगा।[1] **56** अपने घमंड
की वजह से तू अपनी बहन सदोम को
इस लायक भी नहीं समझती थी कि
उसका नाम ज़बान पर लाए **57** जब
तक कि तेरी दुष्टता का परदाफाश नहीं
हो गया।[2] मगर अब सीरिया की बेटियाँ
और उसके पड़ोसी तेरी खिल्ली उड़ाते हैं
और तेरे आस-पास रहनेवाले पलिश्ति-
यों की बेटियाँ[3] तुझ पर ताना कसती हैं।
58 तुझे अपने अश्लील और घिनौने
कामों का अंजाम भुगतना होगा।' यहोवा
ने यह फैसला सुनाया है।"

59 "सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'अब मैं तेरे साथ वही करूँगा
जो तूने मेरे साथ किया है।[4] तूने मेरा
करार तोड़कर अपनी शपथ को तुच्छ
जाना है।[5] **60** मगर मैं अपना वह
करार नहीं भूलूँगा जो मैंने तेरी जवानी में
तेरे साथ किया था। और मैं तेरे साथ ऐसा
करार करूँगा जो सदा कायम रहेगा।[6]
61 जब तू अपनी बड़ी और छोटी बहनों
को अपना लेगी, तब तू अपना पहले
का चालचलन याद करके शर्मिंदा मह-
सूस करेगी।[7] फिर मैं तेरी बहनों को तेरी
बेटियाँ बनाकर तुझे सौंप दूँगा, मगर तेरे
साथ कोई करार करने की वजह से नहीं।'

62 'मैं तेरे साथ अपना करार
पक्का करूँगा और तुझे जानना होगा
कि मैं यहोवा हूँ। **63** तेरे सब पापों के
बावजूद जब मैं तुझे माफ कर दूँगा*[8]
तब तुझे अपने पहले का चालचलन
याद आएगा और तू इतना शर्मिंदा मह-
सूस करेगी कि तुझसे कुछ बोलते नहीं
बनेगा।'[9] सारे जहान के मालिक यहोवा
का यह ऐलान है।"

17

यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे
कहा, **2** "इंसान के बेटे, इसराएल के
घराने के बारे में यह पहेली और मिसाल
सुनाः[1] **3** 'सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, "वह बड़े-बड़े पंखोंवाला
बड़ा उकाब,[2] जिसके डैने लंबे-लंबे और
रंग-बिरंगे परों से भरे हैं, लबानोन आया[3]
और देवदार की चोटी से एक फुनगी
तोड़कर ले गया।[4] **4** उसने देवदार की
सबसे ऊपरवाली फुनगी तोड़ ली और
उसे सौदागरों के देश ले गया और सौदा-
गरों के शहर में लगा दिया।[5] **5** फिर
उसने देश का कुछ बीज लिया[6] और उसे
एक उपजाऊ खेत में बो दिया। उसने उसे
ऐसे बोया जैसे बेद-सादा पेड़ को भरपूर
पानी के पास लगाया जाता है। **6** फिर
उस बीज में से अंकुर फूटा और उससे एक
बेल निकली जो नीचे ज़मीन पर फैलने
लगी।[7] उसके पत्ते नीचे की तरफ थे और
उसकी जड़ें ज़मीन के अंदर बढ़ती गयीं।
इस तरह अंगूर की एक बेल तैयार हुई
और उसमें टहनियाँ और डालियाँ निकल-
ने लगीं।[8]

7 फिर एक और बड़ा-सा उकाब
आया[9] जिसके बड़े-बड़े पंख और डैने
थे।[10] जब अंगूर की बेल ने उकाब को
देखा तो उसने बड़ी उम्मीद से अपनी जड़ें
उसकी तरफ फैलायीं। यह बेल जिस बाग
में लगायी गयी थी, वहाँ से उसने अपनी
जड़ें दूर उस उकाब की तरफ फैलायीं
और अपनी पत्तियाँ और डालियाँ उसकी
तरफ बढ़ायीं ताकि उकाब उसकी सिंचाई
करे।[11] **8** यह अंगूर की बेल पहले ही
भरपूर पानी के पास अच्छी ज़मीन में
लगायी गयी थी ताकि उसमें डालियाँ
निकलें, फल लगें और वह एक बहुत बड़ी
अंगूर की बेल बन जाए।"'[12]

16:63 *शा., "तेरी खातिर प्रायश्चित करूँगा।"

अध्य. 16
1 यहे 36:11
2 यहे 21:24
3 2इत 28:18
4 यश 3:11; गल 6:7
5 व्य 29:12; यिर्म 22:8, 9
6 यिर्म 32:40; यिर्म 50:4, 5
7 यहे 20:43
8 भज 103:12; मी 7:18, 19
9 एज 9:6; यहे 36:31

दूसरा कॉल.

अध्य. 17
1 हो 12:10
2 व्य 28:49, 50; यिर्म 4:13; विल 4:19
3 यिर्म 22:23
4 2रा 24:12; 2इत 36:9, 10; यिर्म 24:1
5 2रा 24:15
6 2रा 24:17; यिर्म 37:1
7 यहे 17:13, 14
8 2इत 36:11
9 यहे 17:15
10 यिर्म 37:5, 7
11 2रा 24:20; 2इत 36:11, 13
12 यिर्म 37:1

9 तू लोगों से कहना, ‘सारे जहान का
मालिक यहोवा कहता है, “क्या यह बेल
फूलेगी-फलेगी? क्या कोई आकर उसकी
जड़ें उखाड़ नहीं देगा?[1] फिर क्या उसके
फल सड़ नहीं जाएँगे और अंकुर मुरझा
नहीं जाएँगे?[2] वह इतनी सूख जाएगी कि
उसे जड़ से उखाड़ने के लिए किसी मज़-
बूत हाथ की या बहुत-से लोगों की ज़रू-
रत नहीं होगी। 10 माना कि वह दूसरी
जगह से लाकर यहाँ लगायी गयी है, फिर
भी क्या वह फूलेगी-फलेगी? जब उस पर
पूरब की हवा चलेगी, तो क्या वह पूरी
तरह सूख नहीं जाएगी? वह जिस बाग में
उगी है, वहाँ वह सूख जाएगी।”’”

11 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
12 “ज़रा उस बगावती घराने के लोगों
से कहना, ‘क्या तुम इन बातों का मत-
लब समझे? देखो! बैबिलोन का राजा
यरूशलेम आया और वह यरूशलेम के
राजा और हाकिमों को पकड़कर अपने
साथ बैबिलोन ले गया।[3] 13 फिर
उसने राज-घराने की संतानों में से एक को
लिया[4] और उसके साथ एक करार किया
और उसे एक शपथ धरायी।[5] इसके बाद
वह आकर देश के खास-खास लोगों को
अपने साथ ले गया[6] 14 ताकि राज इस
तरह गिर जाए कि वह दोबारा उठ न पाए
और उसे अपना वजूद बनाए रखने के
लिए बैबिलोन के साथ अपना करार
निभाना ज़रूरी हो जाए।[7] 15 मगर
कुछ समय बाद यरूशलेम के राजा ने
उससे बगावत की[8] और अपने दूतों को
मिस्र भेजा ताकि वे वहाँ से घोड़े और एक
बड़ी सेना ले आएँ।[9] क्या वह इसमें काम-
याब होगा? क्या ऐसे काम करनेवाला
सज़ा से बच पाएगा? क्या वह करार
तोड़कर भी बच पाएगा?’[10]

अध्य. 17
1 यिर्म 21:7
2 2रा 25:7
3 2रा 24:12, 14; यश 39:7; यिर्म 22:24, 25; यिर्म 52:31, 32
4 2रा 24:17; यिर्म 37:1
5 2इत 36:11, 13
6 2रा 24:15; यिर्म 24:1
7 यिर्म 27:12; यिर्म 38:17
8 2रा 24:20; 2इत 36:11, 13
9 व्य 17:16; यिर्म 37:5
10 यिर्म 32:3, 4

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 34:2, 3; यिर्म 52:11
2 यिर्म 37:7, 8; विल 4:17; यहे 29:6
3 व्य 5:11
4 यहे 12:13
5 यहे 20:36
6 यहे 12:14
7 यहे 6:13
8 यश 11:1; यिर्म 23:5
9 यश 53:2

16 ‘सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, “मैं अपने जीवन की शपथ
खाकर कहता हूँ, वह बैबिलोन में ही मर
जाएगा, उस राजा* के देश में जिसने उसे#
राजा बनाया था, जिसकी शपथ को उसने
तुच्छ जाना और जिसका करार उसने तोड़
दिया।[1] 17 फिरौन की विशाल सेना
और अनगिनत टुकड़ियाँ युद्ध के वक्त
किसी काम की नहीं होंगी[2] जब लोगों को
मार डालने के लिए उसके चारों तरफ घेरा-
बंदी की दीवारें और ढलानें खड़ी की
जाएँगी। 18 उसने एक शपथ को तुच्छ
जाना है और एक करार तोड़ा है। उसने
वादा करने के बाद भी यह सब किया इस-
लिए वह बच नहीं पाएगा।”’

19 ‘इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, “मैं अपने जीवन की
शपथ खाकर कहता हूँ, उसने मेरी शपथ
को तुच्छ जाना है और मेरा करार तोड़ा
है, इसलिए मैं उसे ज़रूर सज़ा दूँगा।[3]
20 मैं उस पर अपना जाल डालूँगा और
वह उसमें फँस जाएगा।[4] मैं उसे बैबि-
लोन ले जाऊँगा और वहाँ उससे मुकदमा
लड़ूँगा क्योंकि उसने मेरे साथ विश्वास-
घात किया है।[5] 21 उसकी पलटन के
जितने सैनिक जान बचाकर भागेंगे, वे
सभी तलवार से मारे जाएँगे और जो बच
जाएँगे वे हर दिशा में तितर-बितर हो
जाएँगे।[6] तब तुम्हें जानना होगा कि यह
सब मुझ यहोवा ने ही कहा है।”’[7]

22 ‘सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, “मैं उस ऊँचे देवदार की चोटी
से एक फुनगी लूँगा[8] और उसे लगाऊँगा।
मैं देवदार की सबसे ऊपरवाली कोमल
टहनियों में से एक फुनगी लूँगा[9] और
खुद उसे एक ऊँचे और विशाल पहाड़

17:16 *यानी नबूकदनेस्सर। #यानी सिदकियाह।

पर लगाऊँगा।[1] 23 मैं उसे इसराएल के एक ऊँचे पहाड़ पर लगाऊँगा। उसकी डालियाँ खूब बढ़ेंगी, उस पर बहुत-से फल लगेंगे और वह एक विशाल देवदार बन जाएगा। हर तरह के पंछी उसके नीचे बसेरा करेंगे और उसकी डालियों की छाँव में रहा करेंगे। 24 तब मैदान के सभी पेड़ों को जानना होगा कि मुझ यहोवा ने ही बड़े पेड़ को नीचे गिराया और छोटे पेड़ को ऊँचा उठाया,[2] मैंने ही हरे-भरे पेड़ को सुखा दिया और सूखे पेड़ को हरा-भरा कर दिया।[3] मुझ यहोवा ने यह कहा है और वैसा कर भी दिया है।”’”

18 यहोवा का संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, 2 “इसराएल देश में यह कैसी कहावत चली है, ‘खट्टे अंगूर खाए पिताओं ने, दाँत खट्टे हुए बेटों के’?[4]

3 सारे जहान का मालिक यहोवा ऐलान करता है, ‘मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ, वह दिन आएगा जब तुम इसराएल में यह कहावत कहना बंद कर दोगे। 4 देखो! सबकी जान* का मालिक मैं हूँ। जैसे पिता की जान का वैसे बेटे की जान का मालिक मैं ही हूँ। जो इंसान* पाप करता है, वही मरेगा।

5 मान लो एक आदमी नेक है और वह हमेशा ऐसे काम करता है जो सही और न्याय के मुताबिक हैं। 6 वह पहाड़ों पर मूरतों के आगे बलि की हुई चीज़ें नहीं खाता,[5] इसराएल के घराने की घिनौनी मूरतों* पर आस नहीं लगाता, अपने पड़ोसी की पत्नी को भ्रष्ट नहीं करता,[1] किसी औरत के साथ उसकी माहवारी के दौरान संबंध नहीं रखता,[2] 7 वह किसी के साथ बुरा सलूक नहीं करता,[3] अपने कर्ज़दार की गिरवी की चीज़ लौटा देता है,[4] वह किसी को लूटता नहीं,[5] अपना खाना भूखे को खिला देता है,[6] उसे कपड़ा देता है जिसके पास तन ढकने को कपड़ा नहीं,[7] 8 ब्याज नहीं लेता और किसी का फायदा उठाकर मुनाफा नहीं कमाता,[8] अन्याय नहीं करता[9] और दो लोगों का आपसी झगड़ा निपटाते वक्त सच्चा न्याय करता है[10] 9 और मेरी विधियों पर चलता और मेरे न्याय-सिद्धांतों का पालन करता है ताकि मेरा विश्वासयोग्य बना रहे। ऐसा आदमी नेक है और वह बेशक जीता रहेगा।’[11] सारे जहान के मालिक यहोवा का यह ऐलान है।

10 ‘अब मान लो उसका एक बेटा है जो लुटेरा या कातिल बन जाता है[12] या इनमें से कोई भी पाप करता है 11 (जबकि पिता ने ऐसा एक भी काम नहीं किया): वह पहाड़ों पर मूरतों के आगे बलि की हुई चीज़ें खाता है, अपने पड़ोसी की पत्नी को भ्रष्ट कर देता है, 12 ज़रूरतमंदों और गरीबों के साथ बुरा सलूक करता है,[13] दूसरों को लूटता है, गिरवी की चीज़ नहीं लौटाता, घिनौनी मूरतों पर आस लगाता है,[14] घिनौने काम करता है,[15] 13 ब्याज लेता है और दूसरे का फायदा उठाकर उससे मुनाफा कमाता है।[16] ऐसा बेटा जीता नहीं रहेगा। उसने ये सारे घिनौने काम किए हैं, इसलिए वह ज़रूर मार डाला जाएगा। उसका खून उसी के सिर पड़ेगा।

14 मगर मान लो एक पिता ये सारे पाप करता है और उसका बेटा अपने

18:4 *शब्दावली में “जीवन” देखें। **18:6** *इनका इब्रानी शब्द शायद “मल” के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

अध्य. 17
1 भज 2:6
2 यश 9:6; यहे 21:26, 27; दान 4:17; आम 9:11
3 1शम 2:7, 8; लूक 1:52

अध्य. 18
4 यिर्म 31:29, 30
5 व्य 12:2; यिर्म 3:6

दूसरा कॉल.
1 लैव 20:10
2 लैव 18:19; लैव 20:18
3 नीत 14:21
4 व्य 24:12, 13
5 लैव 6:2, 4
6 व्य 15:11
7 यश 58:6, 7; याकू 2:15, 16
8 निर्ग 22:25; भज 15:5; लूक 6:34, 35
9 लैव 19:35
10 लैव 19:15; लैव 25:14; व्य 1:16
11 लैव 18:5
12 उत 9:6; निर्ग 21:12; लैव 19:13
13 व्य 15:7, 8
14 लैव 26:30
15 2रा 21:11
16 यहे 22:12

पिता को यह सब करते देखता है, मगर उसकी तरह नहीं बनता। **15** वह पहाड़ों पर मूरतों के आगे बलि की हुई चीज़ें नहीं खाता, इसराएल के घराने की घिनौनी मूरतों पर आस नहीं लगाता, अपने पड़ोसी की पत्नी को भ्रष्ट नहीं करता, **16** किसी के साथ बुरा सलूक नहीं करता, गिरवी की चीज़ ज़ब्त नहीं करता, किसी को लूटता नहीं, अपना खाना भूखे को खिला देता है, जिसके पास तन ढकने के लिए कपड़ा नहीं उसे कपड़ा देता है, **17** वह गरीबों को नहीं सताता, ब्याज नहीं लेता और दूसरे का फायदा उठाकर उससे मुनाफा नहीं कमाता। वह मेरे न्याय-सिद्धांतों का पालन करता और मेरी विधियों पर चलता है। ऐसा आदमी अपने पिता के गुनाह की वजह से नहीं मरेगा। वह बेशक जीता रहेगा। **18** मगर उसका पिता अपने गुनाह की वजह से मर जाएगा, क्योंकि उसने धोखाधड़ी की है, अपने संगी-साथी को लूटा है और अपने लोगों के बीच गलत काम किया है।

19 मगर तुम कहोगे, “बेटा अपने पिता के गुनाह का दोषी क्यों नहीं हो सकता?” क्योंकि बेटे ने हमेशा न्याय किया है, मेरी सभी विधियों का पालन किया है और उनके मुताबिक चला है इसलिए वह बेशक जीता रहेगा।[1] **20** जो इंसान* पाप करता है, वही मरेगा।[2] पिता के गुनाह के लिए बेटा बिलकुल दोषी नहीं होगा और बेटे के गुनाह के लिए पिता बिलकुल दोषी नहीं होगा। जो नेक है उसकी नेकी का फल उसी को मिलेगा और जो दुष्ट है उसकी दुष्टता का हिसाब सिर्फ उसी से माँगा जाएगा।[3]

18:20 *शब्दावली में “जीवन” देखें।

अध्य. 18
1 व्य 16:20 रोम 10:5
2 व्य 24:16 यिर्म 31:30 यहे 18:4
3 यश 3:10, 11 गल 6:7

दूसरा कॉल.
1 यश 55:7 यहे 3:21 यहे 33:12, 19 प्रेष 3:19
2 2इत 33:12, 13 भज 25:7 यश 43:25
3 यहे 33:16
4 विल 3:33 यहे 33:11 1ती 2:3, 4 2पत 3:9
5 मी 7:18
6 यहे 33:12, 18 इब्र 10:38 2यूह 8
7 नीत 21:16 यहे 3:20
8 अय 35:2 नीत 19:3 यहे 33:17, 20
9 व्य 32:4
10 यश 55:9 यिर्म 2:17

21 अगर एक दुष्ट अपने सभी पापों से फिर जाता है और मेरी विधियों का पालन करने लगता है और न्याय करता है, तो वह बेशक जीता रहेगा। वह नहीं मरेगा।[1] **22** उसने पहले जितने भी अपराध किए थे, उनमें से किसी भी अपराध के लिए उससे लेखा नहीं लिया जाएगा।*[2] नेक काम करने की वजह से वह जीता रहेगा।’[3]

23 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, ‘तुम्हें क्या लगता है, क्या मुझे किसी दुष्ट के मरने से खुशी होती है? बिलकुल नहीं।[4] मैं तो यही चाहता हूँ कि वह अपने बुरे रास्ते से पलटकर लौट आए और जीता रहे।’[5]

24 ‘लेकिन जब एक नेक इंसान नेकी की राह छोड़कर गलत काम करने लगता है* और वे सारे घिनौने काम करता है जो दुष्ट करते हैं, तो क्या वह जीता रहेगा? नहीं। उसने जितने भी नेक काम किए थे वे याद नहीं किए जाएँगे।[6] उसने परमेश्वर से जो विश्वासघात किया है और जो पाप किए हैं उनकी वजह से वह मर जाएगा।[7]

25 मगर तुम कहोगे, “यहोवा के काम करने का तरीका सही नहीं है।”[8] इसराएल के घराने के लोगो, ज़रा सुनो! मेरे काम करने का तरीका सही नहीं है[9] या तुम्हारे तौर-तरीके गलत हैं?[10]

26 जब एक नेक इंसान नेकी की राह छोड़कर गलत काम करने लगता है, तो वह मर जाएगा। वह अपनी ही दुष्टता की वजह से मरेगा।

27 जब एक दुष्ट अपने दुष्ट काम छोड़कर न्याय करने लगता है, तो वह

18:22 *शा., “अपराध को याद नहीं किया जाएगा।” **18:24** *या “अन्याय करता है।”

अपनी जान बचाएगा।[1] 28 जब उसे
अपने सभी अपराधों का एहसास होता है
और उनसे फिर जाता है, तो वह बेशक
जीता रहेगा। वह नहीं मरेगा।

29 मगर इसराएल का घराना कहेगा,
“यहोवा के काम करने का तरीका सही
नहीं है।” इसराएल के घराने के लोगो,
ज़रा सोचो, मेरे काम करने का तरीका
सही नहीं है या तुम्हारे तौर-तरीके गलत
हैं?’[2]

30 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, ‘इसराएल के घराने के
लोगो, मैं तुममें से हरेक का फैसला
उसके चालचलन के मुताबिक करूँगा।[3]
इसलिए तुम अपने सारे बुरे काम करना
छोड़ दो और पलटकर लौट आओ ताकि
तुम्हारे बुरे काम तुम्हारे लिए ठोकर
की वजह बनकर तुम्हें दोषी न ठह-
राएँ। 31 तुम अपने सब अपराधों को
खुद से दूर कर दो[4] और अपना दिल और
अपनी सोच बदलो।[5] हे इसराएल के
घराने, तू क्यों बेकार में अपनी जान
गँवाना चाहता है?’[6]

32 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, ‘मुझे किसी के मरने से
खुशी नहीं होती,[7] इसलिए पलटकर लौट
आओ और जीते रहो।’”[8]

19 “तू इसराएल के प्रधानों के बारे
में एक शोकगीत गाना 2 और
कहना,

‘तेरी माँ शेरों के बीच रहनेवाली
एक शेरनी थी!
वह ताकतवर जवान शेरों के बीच
लेटती और अपने बच्चों को
पालती थी।
3 उसने अपने एक बच्चे को बड़ा
किया और वह ताकतवर जवान
शेर बना।[9]
उसने शिकार को फाड़ खाना सीखा,
इंसानों तक को खा लिया।
4 राष्ट्रों ने उसके बारे में सुना और
उसे गड्‌ढे में फँसाया,
वे नकेल डालकर उसे मिस्र
ले गए।[1]
5 शेरनी उसका इंतज़ार करती रही,
आखिरकार उसने देखा कि उसके
लौटने की कोई उम्मीद नहीं।
तब उसने अपने बच्चों में से एक
और को बड़ा किया, उसे ताकत-
वर जवान शेर बनाकर भेजा।
6 वह भी दूसरे शेरों के बीच घूमने
लगा और एक ताकतवर जवान
शेर बन गया।
उसने शिकार को फाड़ खाना सीखा,
इंसानों तक को खा लिया।[2]
7 वह दबे पाँव उनकी किलेबंद
मीनारों में गया, उनके शहरों को
तहस-नहस कर दिया,
उजड़े देश में चारों तरफ उसकी
दहाड़ गूँजने लगी।[3]
8 आस-पास के राष्ट्रों ने आकर उस
पर जाल डाला,
उसे गड्‌ढे में फँसाकर पकड़ लिया।
9 उन्होंने नकेल डालकर उसे पिंजरे
में बंद कर दिया, वे उसे बैबिलोन
के राजा के पास ले गए।
वहाँ उन्होंने उसे कैद कर
दिया ताकि उसका गरजन फिर
कभी इसराएल के पहाड़ों पर
सुनायी न दे।
10 तेरी माँ उस अंगूर की बेल जैसी
थी[4] जो तेरे खून में है,* जो पानी
के पास लगायी गयी थी।

अध्य. 18
1 यश 55:7; 1ती 4:16
2 उत 18:25; भज 145:17; यश 40:14
3 अय 34:11; रोम 2:6
4 भज 34:14; यश 1:16
5 भज 51:10; यिर्म 32:39; यहे 11:19; इफ 4:23, 24
6 व्य 30:15; नीत 8:36; प्रेष 13:46
7 यिर्म 29:11; विल 3:33; यहे 33:11; लूक 15:10; 2पत 3:9
8 व्य 30:16

अध्य. 19
9 2इत 36:1

दूसरा कॉल.
1 2रा 23:31-34; 2इत 36:4; यिर्म 22:11, 12
2 यिर्म 22:17
3 नीत 28:15
4 भज 80:8; यश 5:7

19:10 *या शायद, “तेरे अंगूरों के बाग में एक बेल जैसी थी।”

भरपूर पानी की वजह से वह फलने
लगी और डालियों से भर गयी।
11 उसकी डालियाँ* इतनी मज़बूत हो
गयीं कि वे राजाओं के राजदंड
बनने लायक थीं।
वह बढ़ती गयी, दूसरे पेड़ों से भी
ऊँची हो गयी।
वह इतनी ऊँची हो गयी और
डालियों और पत्तों से इतनी भर
गयी कि दूर से भी नज़र
आती थी।
12 मगर परमेश्वर ने जलजलाहट में
आकर उसे जड़ से उखाड़ डाला[1]
और ज़मीन पर पटक दिया,
पूरब की हवा ने उसके फल सुखा
दिए।
उसकी मज़बूत डालियाँ तोड़ दी
गयीं, वे सूख गयीं[2] और आग ने
उन्हें भस्म कर दिया।[3]
13 अब उसे वीराने में लगाया गया है
एक सूखी, प्यासी ज़मीन में।[4]
14 आग उसकी डालियों* से टहनियों
और फलों तक फैल गयी और
उन्हें भस्म कर दिया।
पेड़ पर एक भी मज़बूत डाली नहीं
बची, राज करने के लिए एक भी
राजदंड नहीं रहा।[5]

यह एक शोकगीत है और यह शोक-
गीत ही बना रहेगा।’”

20 सातवें साल के पाँचवें महीने के
दसवें दिन, इसराएल के कुछ
मुखिया यहोवा की मरज़ी जानने मेरे पास
आए और मेरे सामने बैठ गए। 2 तब
यहोवा का यह संदेश मेरे पास पहुँचा:
3 “इंसान के बेटे, इसराएल के मुखि-
याओं से कहना, ‘सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, “क्या तुम मेरी मरज़ी
जानने आए हो? सारे जहान का मालिक
यहोवा ऐलान करता है, ‘मैं अपने जीवन
की शपथ खाकर कहता हूँ, मैं तुम्हें जवाब
नहीं दूँगा।’”’[1]

4 इंसान के बेटे, क्या तू उनका न्याय
करने* के लिए तैयार है? क्या तू तैयार
है? उन्हें बता कि उनके पुरखों ने कैसे-
कैसे घिनौने काम किए थे।[2] 5 उनसे
कहना, ‘सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, “जिस दिन मैंने इसराएल को
चुना था,[3] उसी दिन मैंने याकूब के
घराने की संतानों से शपथ खायी थी और
मिस्र देश में खुद को उन पर प्रकट किया
था।[4] हाँ, मैंने शपथ खाकर उनसे कहा
था, ‘मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।’
6 उस दिन मैंने शपथ खाकर कहा था
कि मैं उन्हें मिस्र से बाहर निकाल लाऊँगा
और एक ऐसे देश में ले जाऊँगा जहाँ
दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं।[5]
वह देश मैंने काफी देख-परखकर* उनके
लिए चुना था। वह दुनिया का सबसे
सुंदर, सबसे निराला देश# था। 7 फिर
मैंने उनसे कहा, ‘तुममें से हर कोई अपनी
घिनौनी चीज़ें फेंक दे जो तुम्हारी आँखों
के सामने हैं। मिस्र की घिनौनी मूरतों* से
खुद को दूषित मत करो।[6] मैं तुम्हारा पर-
मेश्वर यहोवा हूँ।’[7]

8 मगर उन्होंने मुझसे बगावत की। वे
मेरी बात मानने के लिए हरगिज़ तैयार
नहीं थे। उन्होंने अपने सामने से घिनौनी

19:11 *या “डंडे।” 19:14 *या “डंडों।”

20:4 *या “उन्हें फैसला सुनाने।” 20:6 *या “जासूसी करके।” #या “सरताज।” 20:7 *इनका इब्रानी शब्द शायद “मल” के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

अध्य. 19
1 यश 5:5; यहे 15:6
2 2रा 23:34; 2रा 24:6; 2रा 25:5-7
3 व्य 32:22; यहे 15:4
4 व्य 28:48; यिर्म 17:5, 6; यिर्म 52:27
5 यहे 17:16, 18

दूसरा कॉल.

अध्य. 20
1 यश 1:12, 15; यहे 14:3
2 यहे 16:51; यहे 22:2; लूक 11:47
3 व्य 7:6
4 निर्ग 4:31; निर्ग 6:7, 8
5 निर्ग 3:8
6 लैव 18:3; व्य 29:16, 17; यह 24:14
7 लैव 20:7

चीज़ें नहीं फेंकीं, न ही मिस्र की घिनौनी
मूरतें छोड़ीं।[1] इसलिए मैंने ठान लिया कि
मैं मिस्र में उन पर अपने क्रोध का प्याला
उँडेलूँगा और उन पर अपना गुस्सा उतार-
कर ही दम लूँगा। **9** मगर फिर मैंने
अपने नाम की खातिर ऐसा किया कि
वे जिन जातियों के बीच रहते थे, उनके
सामने मेरे नाम का अपमान न हो[2]
क्योंकि जब मैं उन्हें* मिस्र से बाहर ले
आया तो मैंने दूसरी जातियों के देखते
उन# पर खुद को प्रकट किया था।[3]
10 इस तरह मैं उन्हें मिस्र से बाहर ले
आया और वीराने में ले गया।[4]

11 इसके बाद, मैंने उन्हें अपनी
विधियाँ दीं और अपने न्याय-सिद्धांत
बताए[5] ताकि जो कोई उन पर चले वह
ज़िंदा रहे।[6] **12** मैंने उनके लिए अपने
सब्त भी ठहराए[7] जो उनके और मेरे बीच
एक निशानी होते[8] ताकि वे जानें कि मुझ
यहोवा ने उन्हें पवित्र ठहराया है।

13 मगर इसराएल के घराने के लोगों
ने वीराने में मुझसे बगावत की।[9] वे मेरी
विधियों पर नहीं चले और उन्होंने मेरे
न्याय-सिद्धांतों को ठुकरा दिया, जिनका
पालन करने पर ही इंसान ज़िंदा रहेगा।
उन्होंने मेरे सब्तों को पूरी तरह अपवित्र
कर दिया। इसलिए मैंने ठान लिया कि मैं
वीराने में उन पर अपने क्रोध का प्याला
उँडेलकर उन्हें मिटा दूँगा।[10] **14** मगर
फिर मैंने अपने नाम की खातिर कुछ
ऐसा किया कि उन जातियों के सामने
मेरे नाम का अपमान न हो जिनके देखते
मैं उन्हें* मिस्र से बाहर ले आया था।[11]
15 मैंने वीराने में शपथ खाकर उनसे यह
भी कहा था कि मैं उन्हें उस देश में नहीं
ले जाऊँगा जो मैंने उन्हें दिया था,[12] जहाँ
दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं[1] और
जो दुनिया का सबसे सुंदर, सबसे निराला
देश* है। **16** मैंने ऐसा इसलिए कहा
क्योंकि उन्होंने मेरे न्याय-सिद्धांतों को
ठुकरा दिया था, वे मेरी विधियों पर नहीं
चले और मेरे सब्त अपवित्र कर दिए
क्योंकि उनका दिल अपनी घिनौनी मूरतों
पर लग गया था।[2]

17 मगर फिर मैंने* उन पर तरस
खाया और उन्हें नाश नहीं किया।
मैंने वीराने में उन्हें नहीं मिटाया।
18 मैंने वीराने में उनके बेटों[3] से कहा,
'तुम अपने पुरखों के उसूलों पर मत
चलना,[4] उनके न्याय-सिद्धांतों को मत
मानना, न ही उनकी घिनौनी मूरतों से खुद
को दूषित करना। **19** मैं तुम्हारा पर-
मेश्वर यहोवा हूँ। तुम मेरी विधियों पर
चलना, मेरे न्याय-सिद्धांत मानना और
उनके मुताबिक काम करना।[5] **20** तुम
मेरे सब्तों को पवित्र मानना[6] और ये सब्त
मेरे और तुम्हारे बीच एक निशानी ठह-
रेंगे ताकि तुम जान लो कि मैं तुम्हारा पर-
मेश्वर यहोवा हूँ।'[7]

21 मगर उनके बेटे मुझसे बगावत
करने लगे।[8] वे मेरी विधियों पर नहीं चले
और उन्होंने मेरे न्याय-सिद्धांत नहीं माने,
जिनका पालन करने पर ही इंसान ज़िंदा
रहेगा। उन्होंने मेरे सब्तों को अपवित्र कर
दिया। तब मैंने ठान लिया कि मैं वीराने
में उन पर अपने क्रोध का प्याला उँडे-
लूँगा और उन पर अपना गुस्सा उतारकर
ही दम लूँगा।[9] **22** मगर मैंने ऐसा नहीं
किया,[10] अपने नाम की खातिर खुद को
रोक लिया[11] ताकि उन जातियों के सामने
मेरे नाम का अपमान न हो जिनके देखते
मैं उन्हें* मिस्र से बाहर ले आया था।

20:9, 14, 22 *यानी इसराएल को। **20:9** #यानी इसराएल।

20:15 *या "सरताज।" **20:17** *शा., "मेरी आँख ने।"

अध्य. 20

1 निर्ग 32:4
2 गि 14:13-16; व्य 9:27, 28; 1शम 12:22
3 निर्ग 32:11, 12; यह 2:9, 10; यह 9:3, 9; 1शम 4:7, 8
4 निर्ग 13:17, 18; निर्ग 15:22
5 व्य 4:8
6 व्य 8:3; व्य 30:16
7 निर्ग 20:8-10; लैव 23:3, 24; लैव 25:4, 11
8 निर्ग 31:13; निर्ग 35:2
9 निर्ग 32:8; गि 14:22, 23
10 गि 14:11, 12
11 यह 7:9; यहे 36:22
12 गि 14:30; भज 95:11; भज 106:26, 27

दूसरा कॉल.

1 गि 13:26, 27
2 निर्ग 32:1, 4; गि 25:1, 2; प्रेष 7:42
3 गि 14:33
4 भज 78:8
5 व्य 4:1
6 यिर्म 17:22
7 निर्ग 31:13
8 गि 25:1; व्य 9:23
9 यश 63:10
10 भज 78:38
11 भज 25:11; भज 79:9; यिर्म 14:7; दान 9:19

23 फिर मैंने वीराने में शपथ खाकर
उनसे कहा कि मैं उन्हें दूसरे राष्ट्रों में
तितर-बितर कर दूँगा और दूसरे देशों
में बिखरा दूँगा[1] 24 क्योंकि उन्होंने मेरे
न्याय-सिद्धांतों का पालन नहीं किया,
मेरी विधियाँ ठुकरा दीं,[2] मेरे सब्त अ-
पवित्र कर दिए और वे अपने पुरखों
की घिनौनी मूरतों के पीछे चलते रहे।*[3]
25 मैंने उन्हें ऐसे नियमों को मानने दिया
जो अच्छे नहीं थे और ऐसे न्याय-सिद्धांतों
का पालन करने दिया जिनसे उन्हें ज़िंदगी
नहीं मिलती।[4] 26 जब वे अपने हर
पहलौठे बच्चे को आग में होम कर देते[5]
तो मैंने उन्हें अपने ही बलिदानों से दूषित
होने दिया ताकि उन्हें नाश करूँ और वे
जान जाएँ कि मैं यहोवा हूँ।"'

27 इसलिए इंसान के बेटे, इसराएल
के घराने के लोगों से कहना, 'सारे जहान
का मालिक यहोवा कहता है, "तुम्हारे
पुरखों ने भी इसी तरह मेरे साथ विश्वास-
घात करके मेरे नाम की निंदा की थी।
28 मैं उन्हें उस देश में ले आया था जिसे
देने के बारे में मैंने शपथ खायी थी।[6] जब
उन्होंने वहाँ ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ और
हरे-भरे पेड़ देखे[7] तो वहाँ बलिदान और
भेंट चढ़ाकर मुझे क्रोध दिलाया। वे उन
जगहों पर अपने सुगंधित बलिदान चढ़ाते
और अपना अर्घ उँडेलते थे। 29 तब
मैंने उनसे पूछा, 'तुम इस ऊँची जगह पर
क्यों जा रहे हो? (वह जगह आज तक
ऊँची जगह कहलाती है।)'"'[8]

30 अब तू इसराएल के घराने के
लोगों से कहना, 'सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, "तुम भी क्यों अपने
पुरखों की तरह घिनौनी मूरतों के पीछे
जाकर मेरे साथ विश्वासघात* करते
हो और खुद को दूषित करते हो?[1]
31 आज के दिन तक तुम अपने बेटों को
आग में होम करके उन्हें अपनी घिनौनी
मूरतों के लिए अर्पित करते हो और अपने
बलिदानों से खुद को दूषित करते हो।[2]
इसराएल के घराने के लोगो, तुम ऐसे-ऐसे
काम करते हुए भी यह उम्मीद करते हो
कि मैं तुम्हारे पूछने पर जवाब दूँगा?"'[3]

सारे जहान का मालिक यहोवा कहता
है, 'मैं अपने जीवन की शपथ खाकर
कहता हूँ, मैं तुम्हें जवाब नहीं दूँगा।[4]
32 तुम मन-ही-मन कहते हो, "चलो हम
दूसरे राष्ट्रों की तरह बन जाएँ, उन
जातियों के लोगों की तरह जो लकड़ी
और पत्थर के देवताओं को पूजते
हैं।"*[5] मगर तुम्हारी यह इच्छा कभी पूरी
नहीं होगी।'"

33 "सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, 'मैं अपने जीवन की
शपथ खाकर कहता हूँ, मैं एक राजा के
नाते तुम पर राज करूँगा और अपना
शक्तिशाली हाथ बढ़ाकर तुम्हें सज़ा दूँगा
और अपने क्रोध का प्याला तुम पर
उँडेल दूँगा।[6] 34 मैं अपना शक्तिशाली
हाथ बढ़ाकर और अपने क्रोध का प्याला
उँडेलकर तुम्हें दूसरे देशों में से बाहर
निकाल लाऊँगा और तुम्हें उन देशों से
इकट्ठा करूँगा जहाँ तुम्हें तितर-बितर कर
दिया गया है।[7] 35 मैं तुम्हें दूसरे देशों
के वीराने में ले जाऊँगा और वहाँ आमने-
सामने तुमसे मुकदमा लड़ूँगा।'[8]

36 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'जैसे मिस्र के वीराने में
मैंने तुम्हारे पुरखों से मुकदमा लड़ा था,
उसी तरह मैं तुमसे भी मुकदमा लड़ूँगा।

20:24 *शा., "मूरतों पर उनकी आँखें लगी थीं।"

20:30 *या "जाकर वेश्याओं जैसी बद-चलनी।" 20:32 *या "की सेवा करते हैं।"

अध्य. 20
1 लैव 26:33; भज 106:26, 27
2 लैव 26:15, 16
3 यिर्म 2:7
4 भज 81:12
5 लैव 18:21; यिर्म 7:31
6 यह 23:5
7 व्य 12:2
8 यहे 16:24, 25

दूसरा कॉल.
1 न्या 2:19; 2इत 21:13; यिर्म 13:26, 27
2 व्य 18:10, 12; भज 106:36-38; यिर्म 7:31
3 यश 1:15
4 जक 7:13
5 यिर्म 44:17
6 यिर्म 21:5; यहे 8:18
7 यश 27:13; यहे 34:16
8 यिर्म 2:9

37 मैं तुम्हें चरवाहे की लाठी के नीचे
से गुज़रने पर मजबूर करूँगा[1] और तुम्हें
करार के बंधन में बाँधूँगा। 38 मगर मैं
तुम्हारे बीच से उन लोगों को अलग कर
दूँगा जो बागी हैं और मेरे खिलाफ अप-
राध करते हैं।[2] मैं उन्हें उस देश से
निकाल लाऊँगा जहाँ वे परदेसी बनकर
रहते हैं, मगर वे इसराएल देश में कदम
नहीं रख सकेंगे।[3] और तुम्हें जानना होगा
कि मैं यहोवा हूँ।’

39 इसराएल के घराने के लोगो, सारे
जहान का मालिक यहोवा तुमसे कहता
है, ‘तुममें से हर कोई जाए और अपनी
घिनौनी मूरतों की सेवा करे।[4] लेकिन
बाद में अगर तुम मेरी नहीं सुनोगे तो तुम्हें
इसका अंजाम भुगतना होगा। तुम अपने
बलिदानों और अपनी घिनौनी मूरतों से
फिर कभी मेरे पवित्र नाम का अपमान
नहीं कर पाओगे।’[5]

40 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, ‘मेरे पवित्र पहाड़ पर, हाँ, इस-
राएल के एक ऊँचे पहाड़[6] पर इस-
राएल का पूरा घराना मेरी सेवा करेगा।[7]
वहाँ मैं तुमसे खुश होऊँगा और तुमसे
भेंट और पहले फलों का चढ़ावा लिया
करूँगा, मैं तुमसे ये सब पवित्र चीज़ें
लिया करूँगा।[8] 41 जब मैं तुम्हें दूसरे
देशों से निकाल लाऊँगा और जिन देशों
में तुम तितर-बितर किए गए हो वहाँ
से इकट्ठा करूँगा,[9] तो मैं तुम्हारे बलि-
दानों की खुशबू से खुश होऊँगा और दूसरे
राष्ट्रों के सामने मैं तुम्हारे बीच अपनी
पवित्रता दिखाऊँगा।’[10]

42 ‘जब मैं तुम्हें इसराएल देश वापस
ले आऊँगा,[11] जिसे देने के बारे में
मैंने तुम्हारे पुरखों से शपथ खायी थी,
तो तुम्हें जानना होगा कि मैं यहोवा
हूँ।[12] 43 वहाँ जब तुम याद करोगे
कि तुमने अपने चालचलन और अपने
कामों से कैसे खुद को दूषित कर लिया
था,[1] तो तुम्हें खुद से* घिन हो जाएगी।[2]
44 इसराएल के घराने के लोगो, मैं
तुम्हारे बुरे चालचलन या भ्रष्ट कामों के
मुताबिक तुम्हारे साथ सलूक नहीं करूँगा
बल्कि अपने नाम की खातिर तुम्हारे लिए
कदम उठाऊँगा, तब तुम्हें जानना होगा
कि मैं यहोवा हूँ।’[3] सारे जहान के मालिक
यहोवा का यह ऐलान है।”

45 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
46 “इंसान के बेटे, अब तू दक्षिण के
भाग की तरफ मुँह कर और दक्षिण की
तरफ ऐलान कर और दक्षिण के जंगल
को भविष्यवाणी सुना। 47 दक्षिण के
जंगल से कहना, ‘यहोवा का संदेश सुन।
सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है,
“मैं तेरे बीच आग की ऐसी चिंगारी भड़-
काने जा रहा हूँ[4] जो तेरे हर पेड़ को जला-
कर राख कर देगी, फिर चाहे वह हरा-
भरा हो या सूखा। यह आग नहीं बुझेगी[5]
और उसकी वजह से दक्षिण से लेकर
उत्तर तक हर किसी का चेहरा झुलस
जाएगा। 48 तब सब लोग जान जाएँगे
कि मुझ यहोवा ने यह आग लगायी है,
इसलिए यह आग बुझायी नहीं जा
सकती।”’”[6]

49 फिर मैंने कहा, “हाय, सारे जहान
के मालिक यहोवा! ज़रा देख, ये लोग मेरे
बारे में कहते हैं, ‘यह आदमी तो पहेलियाँ
बुझा रहा है।’”*

21

21 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे
कहा, 2 “इंसान के बेटे, यरूशलेम की
तरफ मुँह करना और उन पवित्र जगहों

अध्य. 20

1 लैव 27:32; यहे 34:17
2 यहे 34:20, 21
3 यहे 13:9
4 न्या 10:14; भज 81:12
5 यश 1:13; यहे 23:39
6 यश 2:2, 3; यश 66:20
7 यश 56:7; जक 8:22
8 मला 3:4
9 यश 11:11; यिर्म 23:3
10 यश 5:16; यहे 38:23
11 यहे 11:17
12 यहे 36:23

दूसरा कॉल.

1 लैव 26:40; यहे 6:9; यहे 16:61
2 यिर्म 31:18
3 भज 79:9; यहे 36:22, 23
4 व्य 32:22; यिर्म 21:14
5 यश 66:24
6 2इत 7:20; विल 2:17

20:43 *शा., “अपनी सूरत से।” **20:49** *या “कहावतें कहता है।”

के खिलाफ संदेश सुनाना और इसराएल
देश के खिलाफ भविष्यवाणी करना।
3 इसराएल देश से कहना, ‘यहोवा
कहता है, “देख, मैं तेरे खिलाफ हूँ। मैं
म्यान से अपनी तलवार खींचूँगा[1] और
तेरे यहाँ रहनेवाले हर किसी को काट
डालूँगा, फिर चाहे वह नेक हो या दुष्ट।
4 मैं तेरे सभी लोगों को, नेक और दुष्ट
सबको काट डालूँगा, इसलिए मैं म्यान से
तलवार खींचकर दक्षिण से लेकर उत्तर
तक सब लोगों पर चलाऊँगा। 5 तब
सब लोगों को जानना होगा कि मुझ
यहोवा ने ही म्यान से तलवार खींची है।
यह वापस म्यान में नहीं जाएगी।”’[2]

6 इंसान के बेटे, तू* लोगों के सामने
थर-थर काँप और कराह। हाँ, उनके
सामने बुरी तरह कराह।[3] 7 अगर वे
तुझसे पूछें, ‘तू क्यों कराह रहा है?’ तो
कहना, ‘मुझे एक बुरी खबर मिली है।’
यह खबर लोगों को ज़रूर मिलेगी और
तब डर के मारे सबका दिल काँप उठेगा,
उनके हाथ ढीले पड़ जाएँगे, हिम्मत टूट
जाएगी और हर किसी के घुटनों से
पानी टपकने लगेगा।*[4] सारे जहान का
मालिक यहोवा ऐलान करता है, ‘देख!
यह ज़रूर होगा, ज़रूर!’”

8 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
9 “इंसान के बेटे, तू यह भविष्यवाणी
करना, ‘यहोवा कहता है, “लोगों से
कहना, ‘देखो, एक तलवार! एक तल-
वार[5] तेज़ की गयी है, खूब चमकायी गयी
है। 10 भीड़-की-भीड़ का नाश करने
के लिए उसे तेज़ किया गया है, बिजली
की तरह कौंधने के लिए उसे चमकाया
गया है।’”’”

अध्य. 21
1 लैव 26:33
2 यिर्म 23:20
3 यश 22:4; यिर्म 4:19; यहे 9:8
4 यहे 7:15-17
5 यश 66:16; यिर्म 12:12; आम 9:4

दूसरा कॉल.
1 उत 49:10; 2शम 7:12, 14
2 यिर्म 25:9; यिर्म 51:20
3 यहे 9:8; मी 1:8
4 यहे 19:1
5 यिर्म 6:27
6 2रा 25:7; यहे 19:14; यहे 21:26
7 2रा 25:1, 2
8 यहे 21:7
9 यश 1:24; यहे 5:13; यहे 16:42

“क्या हमें जश्न नहीं मनाना चाहिए?”
“‘क्या यह* मेरे बेटे के राजदंड को
ठुकरा देगी,[1] जैसे यह हर पेड़ को ठुकरा
देती है?

11 यह इसलिए दी गयी है कि यह
चमकायी जाए और हाथ में ली जाए। यह
तलवार तेज़ की गयी है और चमकायी
गयी है ताकि इसे जल्लाद के हाथ में दिया
जाए।[2]

12 इंसान के बेटे, ज़ोर से चिल्ला,
बिलख-बिलखकर रो[3] क्योंकि मेरे लोगों
पर तलवार चलने ही वाली है। यह इस-
राएल के सभी प्रधानों को मार डालेगी।[4]
वे मेरे लोगों के साथ-साथ तलवार का
कौर हो जाएँगे। इसलिए दुख के मारे
अपनी जाँघ पीट। 13 क्योंकि जाँच की
गयी है[5] और अगर तलवार राजदंड को
ठुकरा दे तो क्या होगा? यह* हमेशा
के लिए मिट जाएगा।’[6] सारे जहान के
मालिक यहोवा का यह ऐलान है।

14 इंसान के बेटे, तू भविष्यवाणी
कर, ताली बजा और तीन बार ‘तलवार!’
कह। यह घात करनेवाली तलवार है जो
चारों तरफ मँडरा रही है। यह भीड़-की-
भीड़ को मार डालेगी।[7] 15 लोगों का
दिल डर के मारे काँप उठेगा[8] और बहुत-
से लोग शहर के फाटकों के पास गिर
पड़ेंगे। मैं तलवार से लोगों को नाश
कर दूँगा। हाँ, यह तलवार बिजली की
तरह चमक रही है और नाश करने के
लिए चमकायी गयी है! 16 दायीं तरफ
तेज़ी से काट! अब बायीं तरफ घूम! तुझे
जहाँ जाने का हुक्म दिया जाए वहाँ जा!
17 मैं भी ताली बजाऊँगा और अपना
गुस्सा पूरी तरह उतारूँगा।[9] मुझ यहोवा
ने यह बात कही है।”

21:6 *शा., “तेरी कमर।” **21:7** *यानी डर के मारे पेशाब निकल जाएगा।

21:10 *यानी यहोवा की तलवार। **21:13** *या “राजदंड।”

18 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
19 “इंसान के बेटे, बैबिलोन का राजा
अपनी तलवार हाथ में लिए आ रहा है।
उसके लिए दो रास्ते तय कर। दोनों रास्ते
एक ही देश से शुरू होंगे। जिस जगह
ये दोनों रास्ते अलग होकर दो शहरों
की तरफ जाएँगे वहाँ एक संकेत-चिन्ह
लगाया जाए। **20** तू निशान लगाकर
दिखा कि उनमें से कौन-सा रास्ता लेने
पर उसकी तलवार अम्मोनियों के शहर
रब्बाह जाएगी[1] और कौन-सा रास्ता लेने
पर यहूदा के किलेबंद शहर यरूशलेम
जाएगी।[2] **21** जब बैबिलोन का राजा
उस दोराहे पर आएगा तो वहाँ रुककर
शकुन विचारेगा कि उसे कौन-सा रास्ता
लेना चाहिए। वह अपने तीर हिलाएगा,
अपनी मूरतों* से सलाह-मशविरा करेगा
और जानवर के कलेजे की जाँच करेगा।
22 जब वह शकुन विचारेगा तो उसका
दायाँ हाथ यरूशलेम को चुनेगा कि वह
वहीं जाए, बख्तरबंद गाड़ियाँ खड़ी करे,
कत्लेआम का हुक्म दे, जंग का ऐलान
करे, बख्तरबंद गाड़ियों से उसके फाटक
तोड़ दे, घेराबंदी की दीवार खड़ी करे और
ढलान बनाए।[3] **23** मगर यह सब उन
लोगों* को झूठा शकुन लगेगा जिन्होंने
उनसे शपथ खायी थी।[4] मगर राजा
उनका दोष याद करेगा और उन्हें बंदी
बनाकर ले जाएगा।[5]

24 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, ‘तुमने अपने अपराधों
को सरेआम ज़ाहिर किया है, तुमने अपने
कामों से अपने पापों का खुलासा किया
है। इस तरह तुमने खुद याद दिलाया है
कि तुम कितने दोषी हो। अब क्योंकि तुम
याद किए जा रहे हो, इसलिए तुम्हें ज़बर-
दस्ती घसीटकर ले जाया जाएगा।’

25 हे इसराएल के दुष्ट प्रधान, तू
जो बुरी तरह घायल है, तेरा दिन आ
गया है।[1] वह घड़ी आ गयी है जब तुझे
सज़ा देकर तेरा अंत कर दिया जाएगा।
26 सारे जहान का मालिक यहोवा तुझसे
कहता है, ‘उतार अपनी पगड़ी, उतार दे
अपना ताज।[2] यह जैसा है वैसा नहीं
रहेगा।[3] जो नीचे है उसे ऊपर उठा[4] और
जो ऊपर है उसे नीचे गिरा।[5] **27** अब
मैं इस राज का अंत कर दूँगा, अंत। हाँ,
मैं इसका अंत कर दूँगा! जब तक वह नहीं
आता जिसके पास कानूनी हक है,[6] तब
तक यह किसी का नहीं होगा। जब वह
आएगा तब मैं यह उसी को दूँगा।’[7]

28 इंसान के बेटे, तू यह भविष्य-
वाणी करना, ‘सारे जहान का मालिक
यहोवा अम्मोनियों और उनकी अपमान-
भरी बातों के बारे में यह कहता है।’ तू
यह कहना, ‘देखो एक तलवार! लोगों का
घात करने के लिए एक तलवार खींची
गयी है। इसे चमकाया गया है कि यह
सबको खा जाए और बिजली की तरह
चमके। **29** तुम्हारे बारे में झूठे दर्शन
देखे गए हैं और झूठी भविष्यवाणी की
गयी है, फिर भी तुम्हें उन मारे गए लोगों
की लाशों के ऊपर ढेर कर दिया जाएगा,
उन दुष्टों की लाशों* के ऊपर जिनका
दिन आ गया है। वह घड़ी आ गयी है
जब उन्हें सज़ा देकर उनका अंत कर दिया
जाएगा। **30** तलवार अपनी म्यान में
वापस रख। जिस जगह तुम्हें सिरजा गया
था, जिस देश में तुम्हारी शुरूआत हुई
थी वहीं मैं तुम्हारा न्याय करूँगा। **31** मैं
तुम पर अपने क्रोध का प्याला उँडेलूँगा।

21:21 *शा., “कुल देवताओं।” **21:23** *यानी यरूशलेम के निवासियों।

21:29 *शा., “घात किए हुओं की गरदन।”

अध्य. 21

1 यिर्म 49:2; यहे 25:5; आम 1:14
2 2शम 5:9; 2इत 26:9; 2इत 32:2, 5; 2इत 33:1, 14
3 यिर्म 32:24; यिर्म 52:4
4 2इत 36:11, 13; यहे 17:13
5 2रा 25:6, 7

दूसरा कॉल.

1 2इत 36:11, 13; यिर्म 24:8; यिर्म 52:1, 2; यहे 17:19
2 2रा 25:5-7; यिर्म 52:8, 11; यहे 12:12, 13
3 यहे 21:13
4 भज 75:7; दान 4:17
5 दान 4:37; लूक 21:24
6 उत 49:10; भज 89:3, 4; भज 110:1; यश 9:6; यश 11:10; लूक 1:32, 33; प्रक 5:5
7 भज 2:6, 8; दान 7:13, 14; लूक 22:29

मैं तुम पर अपने गुस्से की आग फूँकूँगा और तुम्हें उन बेरहम लोगों के हाथ कर दूँगा जो मार-काट करने में उस्ताद हैं।[1] **32** तुम आग जलाने की लकड़ी बन जाओगे,[2] देश में तुम्हारे खून की नदियाँ बहा दी जाएँगी और तुम्हें फिर कभी याद नहीं किया जाएगा क्योंकि मुझ यहोवा ने यह बात कही है।'"

22 यहोवा का संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, **2** "इंसान के बेटे, क्या तू उस नगरी को सज़ा सुनाने के लिए तैयार है* जो खून की दोषी है?[3] क्या तू उसके सभी घिनौने कामों का परदाफाश करने के लिए तैयार है?[4] **3** तू उससे कहना, 'सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, "हे नगरी, तू जो अपने यहाँ खून की नदियाँ बहाती है[5] और घिनौनी मूरतें* बनाकर खुद को दूषित करती है,[6] तेरा वक्त आ रहा है,[7] **4** तूने जो खून बहाया है उसकी वजह से तू दोषी है[8] और तेरी घिनौनी मूरतों ने तुझे अशुद्ध कर दिया है।[9] तूने अपने विनाश का दिन और पास बुला लिया है और तेरी ज़िंदगी के साल अब गिनती के रह गए हैं। इसीलिए मैं तुझे राष्ट्रों के बीच मज़ाक बना दूँगा और सब देशों में तेरी खिल्ली उड़ायी जाएगी।[10] **5** हे बदनाम और अशांत नगरी, तेरे आस-पास के और दूर-दूर के सभी देश तेरी खिल्ली उड़ाएँगे।[11] **6** देख! तेरे यहाँ रहनेवाला इसराएल का हर प्रधान अपने अधिकार का गलत इस्तेमाल करके खून बहाता है।[1] **7** तेरे यहाँ लोग अपने माँ-बाप को नीचा दिखाते हैं।[2] वे परदेसियों को ठगते हैं और अनाथों* और विधवाओं पर अत्याचार करते हैं।"'"[3]

8 "'तू मेरी पवित्र जगहों को तुच्छ समझती है और मेरे सब्तों को अपवित्र करती है।[4] **9** तेरे यहाँ लोग दूसरों को बदनाम करनेवाले हैं जो उनका खून बहाने पर तुले रहते हैं।[5] वे तेरे यहाँ पहाड़ों पर मूरतों के आगे बलि की हुई चीज़ें खाते हैं और अश्लील कामों में डूबे रहते हैं।[6] **10** तेरे यहाँ कोई अपने पिता की पत्नी के साथ संबंध रखता है,*[7] तो कोई ऐसी औरत के साथ जो माहवारी की वजह से अशुद्ध है।[8] **11** तेरे यहाँ कोई अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ नीच काम करता है,[9] कोई अपनी बहू के साथ अश्लील काम करके उसे दूषित करता है,[10] तो कोई अपनी बहन को यानी अपने पिता की बेटी को भ्रष्ट कर देता है।[11] **12** तेरे यहाँ लोग खून करने के लिए घूस लेते हैं।[12] तू ब्याज पर या मुनाफे के लिए कर्ज़ देती है[13] और अपने पड़ोसियों से पैसा ऐंठती है।[14] हाँ, तू मुझे बिलकुल भूल गयी है।' सारे जहान के मालिक यहोवा ने यह कहा है।

13 'देख! तेरी बेईमानी की कमाई से और तेरे यहाँ होनेवाले खून-खराबे से मुझे घिन हो गयी है और मैं अपनी हथेलियाँ पीटता हूँ। **14** जिन दिनों मैं तेरे खिलाफ कार्रवाई करूँगा तब क्या तू हिम्मत से सह पाएगी* और तेरा हाथ

22:2 *शा., "का न्याय करेगा, उसका न्याय करेगा।" **22:3** *इनका इब्रानी शब्द शायद "मल" के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

22:7 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।" **22:10** *शा., "अपने पिता का तन उघाड़ता है।" **22:14** *शा., "तेरा दिल सह पाएगा।"

अध्य. 21
1 यहे 25:5
2 यिर्म 49:2, 3

अध्य. 22
3 2रा 21:16; यिर्म 2:34; मत 23:37
4 यहे 16:51
5 यहे 24:6
6 2रा 21:11
7 यहे 12:25
8 उत 9:6
9 लैव 26:30; यहे 23:37
10 व्य 28:37; 1रा 9:7; भज 80:6; यहे 23:32; दान 9:16
11 भज 79:4

दूसरा कॉल.
1 यश 1:23; मी 3:1-3; सप 3:3
2 व्य 27:16
3 निर्ग 22:21, 22; भज 82:3; यश 1:17
4 लैव 19:30
5 निर्ग 23:1; लैव 19:16
6 यिर्म 13:27
7 लैव 18:7; लैव 20:11
8 लैव 18:19; लैव 20:18
9 लैव 18:20; लैव 20:10; यिर्म 5:8
10 लैव 18:15
11 लैव 20:17
12 निर्ग 23:8; व्य 27:25; यश 1:23
13 व्य 23:19
14 निर्ग 22:25; लैव 6:4, 5

मज़बूत बना रहेगा?[1] मुझ यहोवा ने यह
बात कही है और मैं ऐसा ज़रूर करूँगा।
15 मैं तेरे लोगों को अलग-अलग राष्ट्रों
में तितर-बितर कर दूँगा, दूसरे देशों में
बिखरा दूँगा[2] और तेरे अशुद्ध कामों का
अंत कर डालूँगा।[3] 16 दूसरे राष्ट्रों के
सामने तेरी बेइज़्ज़ती होगी और तुझे
जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।'"[4]

17 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
18 "इंसान के बेटे, इसराएल का घराना
मेरी नज़र में धातु के मैल जैसा बेकार
हो गया है। सब-के-सब एक जलती भट्ठी
में गलनेवाला ताँबा, राँगा, लोहा और
सीसा हैं। वे पिघलायी हुई चाँदी का
मैल हैं।[5]

19 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, 'तुम सब धातु के
मैल जैसे बेकार हो गए हो,[6] इसलिए
मैं तुम्हें यरूशलेम के अंदर इकट्ठा करने-
वाला हूँ। 20 जैसे चाँदी, ताँबे, लोहे,
सीसे और राँगे को भट्ठी में इकट्ठा किया
जाता है और आग फूँककर उन्हें पिघ-
लाया जाता है, उसी तरह मैं गुस्से और
क्रोध में आकर तुम्हें इकट्ठा करूँगा और
तुम पर आग फूँककर तुम्हें गला दूँगा।[7]
21 मैं तुम सबको इकट्ठा करूँगा और तुम
पर अपने क्रोध की आग फूँकूँगा[8] और
तुम सब उसके अंदर गल जाओगे।[9]
22 जैसे भट्ठी में चाँदी पिघलायी जाती
है, वैसे ही तुम उसके अंदर गला दिए
जाओगे। और तुम्हें जानना होगा कि मुझ
यहोवा ने ही तुम पर अपने गुस्से की आग
बरसायी है।'"

23 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
24 "इंसान के बेटे, उससे कहना, 'तू
ऐसा देश है जिसे मेरी जलजलाहट
के दिन शुद्ध नहीं किया जाएगा और न
ही तुझ पर बारिश होगी। 25 तेरे
भविष्यवक्ता तेरे यहाँ लोगों को मारने
के लिए साज़िश रचते हैं[1] और उन्हें
निगल जाते हैं, जैसे एक दहाड़ता शेर
अपने शिकार को फाड़ खाता है।[2] वे
दूसरों का खज़ाना और उनकी बेश-
कीमती चीज़ें हड़प लेते हैं। उन्होंने तेरे
यहाँ कितनी ही औरतों को विधवा बना
दिया है। 26 तेरे याजकों ने मेरे कानून
का उल्लंघन किया है[3] और वे मेरी
पवित्र जगहों को दूषित करते रहते हैं।[4]
वे पवित्र और आम चीज़ों के बीच कोई
फर्क नहीं करते[5] और लोगों को नहीं
सिखाते कि क्या शुद्ध है और क्या
अशुद्ध।[6] वे मेरे सब्त मानने से इनकार
कर देते हैं और मेरा अपमान करते हैं।
27 तेरे यहाँ हाकिम शिकार को फाड़
खानेवाले भेड़ियों जैसे हैं, वे बेईमानी की
कमाई के लिए लोगों को मार डालते हैं,
उनका खून बहाते हैं।[7] 28 मगर तेरे
भविष्यवक्ता उनकी काली करतूतों को
ढाँप देते हैं, जैसे कोई दीवार में आयी
दरारों पर सफेदी करके उन्हें ढाँप देता है।
वे झूठे दर्शन देखते हैं और झूठी भविष्य-
वाणियाँ करते हैं[8] और कहते हैं, "सारे
जहान के मालिक यहोवा ने यह कहा
है," जबकि यहोवा ने कुछ नहीं कहा है।
29 तेरे लोगों ने धोखाधड़ी और लूट-
मार की है,[9] गरीबों और ज़रूरतमंदों पर
ज़ुल्म किया है और परदेसियों को ठगा
है और उन्हें न्याय दिलाने से इनकार
किया है।'

30 'मैं उनके बीच एक ऐसा आदमी
ढूँढ़ रहा था जो पत्थर की टूटी दीवार
की मरम्मत कर सके या देश की
खातिर उस दरार में मेरे सामने खड़ा हो
सके ताकि यह नगरी नाश न की जाए।[10]

अध्य. 22

1 यहे 21:7
2 व्य 4:27; व्य 28:25
3 यश 1:25; यहे 23:27
4 यहे 6:13
5 नीत 17:3; यिर्म 6:28-30
6 भज 119:119; नीत 25:4
7 यहे 21:31
8 व्य 4:24; भज 21:9; यिर्म 21:12
9 भज 68:2

दूसरा कॉल.

1 यिर्म 5:31; यिर्म 6:13, 14
2 मी 3:5
3 यिर्म 2:8; विल 4:13; मी 3:11
4 लैव 20:3; लैव 22:2
5 लैव 10:10
6 लैव 11:46, 47
7 मी 3:1-3; सप 3:3
8 यश 30:10; यिर्म 23:25; विल 2:14; यहे 13:9, 10
9 यश 1:23; यश 3:14; यिर्म 21:12; मी 2:2
10 निर्ग 32:11; भज 106:23

मगर मुझे ऐसा कोई भी नहीं मिला। **31** इसलिए मैं उन पर अपने गुस्से की आग बरसाऊँगा और अपनी जल-जलाहट से उन्हें भस्म कर दूँगा। मैं उनके चालचलन का फल उन्हें ज़रूर दूँगा।' सारे जहान के मालिक यहोवा का यह ऐलान है।"

23 यहोवा का संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, **2** "इंसान के बेटे, सुन। दो औरतें थीं जो एक ही माँ की बेटियाँ थीं।[1] **3** वे मिस्र में वेश्या बन गयीं[2] और जवानी से ही वेश्या का काम करने लगीं। वहाँ उन्होंने बदचलनी की और अपनी पवित्रता पूरी तरह खो दी। **4** उनमें से बड़ी बहन का नाम ओहोला* था और छोटी का ओहोलीबा।# वे मेरी हो गयीं और उन्होंने बेटे-बेटियों को जन्म दिया। ओहोला दरअसल सामरिया है[3] और ओहोलीबा, यरूशलेम।

5 ओहोला जब मेरी थी तभी वेश्या बन बैठी।[4] अपनी वासना पूरी करने के लिए वह अपने पड़ोसियों के पास जाया करती थी, अपने अश्शूरी यारों[5] के पास जो उस पर मरते थे।[6] **6** उसके यार नीले लिबास पहने अश्शूर के राज्यपाल और अधिकारी थे, सुंदर-सजीले जवान थे जो बड़ी शान से घोड़ों पर सवारी करते थे। **7** वह अश्शूर के बड़े-बड़े आद-मियों के साथ बदचलनी करती रही और उन लोगों की घिनौनी मूरतों* से खुद को दूषित करती रही[7] जिनके लिए वह कामातुर रहती थी। **8** उसने मिस्र में जो वेश्या के काम शुरू किए थे उन्हें नहीं छोड़ा। जब वह जवान थी तब मिस्र के आदमी उसके साथ सोया करते थे और उन्होंने उसे पूरी तरह भ्रष्ट कर दिया। वे उसके पास जाकर अपनी हवस पूरी करते थे।[1] **9** इसलिए मैंने उसे अश्शूरी आद-मियों को दे दिया जो उस पर मरते थे,[2] क्योंकि वह उन्हीं के लिए कामातुर रहती थी। **10** उन्होंने उसे पूरी तरह नंगा कर दिया,[3] उसके बेटे-बेटियों को उससे छीन लिया[4] और उसे तलवार से मार डाला। वह औरतों में सबसे बदनाम हो गयी थी और उन्होंने उसे सज़ा दी।

11 जब उसकी बहन ओहोलीबा ने उसे देखा तो उसने अपनी वासना पूरी करने के लिए उससे भी बढ़-चढ़कर बद-चलनी की। वेश्या के काम करने में वह अपनी बहन से भी बदतर निकली।[5] **12** अपनी वासना पूरी करने के लिए वह पड़ोस के अश्शूरी राज्यपालों और अधि-कारियों के पास जाने लगी,[6] उन सुंदर-सजीले जवानों के पास जो बढ़िया-बढ़िया लिबास पहने घोड़ों पर सवारी करते थे। **13** इस तरह ओहोलीबा ने भी खुद को दूषित कर लिया और मैंने दोनों बहनों को एक ही राह पर चलते देखा।[7] **14** ओहोलीबा और भी बढ़-चढ़कर बद-चलनी करती गयी। उसने दीवार पर सिंदूरी लाल रंग से रंगी कसदी आदमियों की नक्काशियाँ देखीं, **15** जो कमरबंद बाँधे थे और सिर पर लहराती सुंदर पग-ड़ियाँ पहने थे। ये सारी-की-सारी नक्का-शियाँ कसदिया में पैदा हुए बैबिलोनी आदमियों की थीं और उनका रंग-रूप सूरमाओं जैसा था। **16** उसने जैसे ही उन्हें देखा, वह उनके साथ संबंध बनाने के लिए मचलने लगी और उसने अपने

23:4 *मतलब "उसका तंबू।" #मतलब "मेरा तंबू उसमें है।" **23:7** *इनका इब्रानी शब्द शायद "मल" के लिए इस्तेमाल होने-वाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

अध्य. 23
1 यिर्म 3:6, 7
2 लैव 17:7; व्य 29:16, 17; यह 24:14; यहे 20:8
3 1रा 16:23, 24
4 1रा 14:16; 1रा 21:25, 26
5 2रा 15:19; 2रा 17:3; हो 5:13; हो 7:11
6 हो 2:5
7 हो 5:3

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 32:1, 4; 1रा 12:28, 29; 2रा 10:29
2 2रा 15:29; 1इत 5:26
3 हो 2:10
4 2रा 17:6; 2रा 18:11
5 यिर्म 3:6-8; यहे 16:46, 47
6 2रा 16:7
7 2रा 17:19

दूतों को उन आदमियों के पास कसदिया
भेजा।[1] 17 फिर बैबिलोन के आदमी
उस पर प्यार लुटाने उसके बिस्तर पर
आते रहे और उन्होंने अपनी हवस पूरी
करके* उसे दूषित कर दिया। जब वह
उन आदमियों से दूषित हो गयी तो वह
उनसे घिन करने लगी और उनसे मुँह फेर
लिया।

18 जब वह शर्म-हया की सारी हदें
पार करके वेश्‍या के काम करने लगी और
अपने तन की नुमाइश करने लगी,[2] तो
मुझे उससे घिन होने लगी और मैंने उससे
मुँह फेर लिया, जैसे मैंने उसकी बहन से
भी मुँह फेर लिया था।[3] 19 वह जवानी
के उन दिनों को याद करती जब वह मिस्र
में वेश्‍या के काम करती थी[4] और पहले
से भी बढ़-चढ़कर बदचलनी करती।[5]
20 वह उन आदमियों की रखैलियों की
तरह उनके पास जाने लगी जिनके लिंग
गधे और घोड़े के लिंग जैसे होते हैं।
21 ओहोलीबा, तू ऐसे अश्‍लील काम
करने के लिए बेताब रहती है जो तूने
मिस्र में रहते वक्‍त जवानी में किए थे।[6]
जवानी में वहाँ के आदमियों ने तुझे भ्रष्ट
कर दिया था।[7]

22 इसलिए ओहोलीबा सुन, सारे
जहान का मालिक यहोवा तुझसे क्या
कहता है, 'मैं तेरे यारों को तेरे खिलाफ
भड़काने जा रहा हूँ[8] जिनसे तूने घिन
करके अपना मुँह फेर लिया था। मैं उन्हें
चारों तरफ से तेरे खिलाफ ले आऊँगा।[9]
23 मैं बैबिलोन के आदमियों[10] को और
सारे कसदियों को,[11] पकोद, शोआ और
कोआ के आदमियों को,[12] साथ ही
अश्‍शूर के सारे आदमियों को तेरे खिलाफ
खड़ा करूँगा। हाँ, उन सभी राज्य-
पालों, अधिकारियों और चुने हुए सूर-
माओं को जो एक-से-बढ़कर-एक सुंदर-
सजीले जवान हैं और घोड़ों पर बड़ी शान
से सवारी करते हैं। 24 वे रथों की तेज़
घड़घड़ाहट के साथ और एक बड़ी सेना
लेकर तुझ पर टूट पड़ेंगे जो बड़ी ढालों,
छोटी ढालों* और टोप से पूरी तरह लैस
होगी। वे तुझे चारों तरफ से घेर लेंगे और
मैं उन्हें तेरा न्याय करने का अधिकार दूँगा
और वे अपने तरीके से तुझे सज़ा देंगे।[1]
25 मैं तुझ पर अपनी जलजलाहट प्रकट
करूँगा और वे गुस्से में आकर तेरा बहुत
बुरा हश्र करेंगे। वे तेरी नाक और तेरे
कान काट डालेंगे। तेरे लोगों में से जो बच
जाएँगे वे तलवार से मारे जाएँगे। वे तेरे
बेटे-बेटियों को तुझसे छीन लेंगे और तेरे
लोगों में से जो बच जाएँगे वे आग में भस्म
कर दिए जाएँगे।[2] 26 वे तेरे कपड़े
उतार लेंगे[3] और तेरे सुंदर गहने* छीन
लेंगे।[4] 27 मैं तेरे अश्‍लील कामों और
तेरे वेश्‍या के कामों का अंत कर दूँगा[5] जो
तूने मिस्र में शुरू किए थे।[6] तू उन्हें फिर
कभी न देख सकेगी और न ही मिस्र को
कभी याद कर पाएगी।'

28 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'देख, मैं तुझे उन सबके हवाले
करने पर हूँ जिनसे तू नफरत करती है,
जिनसे तूने घिन करके अपना मुँह फेर
लिया है।[7] 29 वे तुझसे नफरत करेंगे,
तेरे पसीने की सारी कमाई लूट लेंगे[8]
और तुझे पूरी तरह नंगा छोड़ जाएँगे।
तेरी बदचलनी के शर्मनाक कामों का, तेरे
अश्‍लील कामों और तेरे वेश्‍या के कामों
का परदाफाश हो जाएगा।[9] 30 तुझ
पर यह नौबत इसलिए आएगी क्योंकि तू
एक वेश्‍या की तरह दूसरे राष्ट्रों के पीछे
भागती रही[10] और तूने उनकी घिनौनी

अध्य. 23
1 यहे 16:29
2 यिर्म 3:2; यहे 16:36, 37
3 भज 106:39, 40; यिर्म 6:8; यिर्म 12:8
4 यहे 20:7
5 यहे 16:25
6 यह 24:14
7 यहे 23:3
8 यहे 16:37; हब 1:6
9 यिर्म 6:22; यिर्म 12:9
10 यहे 21:19
11 2रा 24:2
12 यिर्म 50:21

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 39:5
2 यहे 15:7; यहे 20:47
3 यिर्म 13:22; प्रक 17:16
4 यश 3:18-23; यिर्म 4:30; यहे 16:39
5 यश 27:9; यहे 16:41; यहे 22:15
6 यहे 23:3
7 यिर्म 21:7
8 व्य 28:49, 51
9 यहे 16:36, 37; यहे 16:39
10 यिर्म 2:18

23:17 * या "नाजायज़ संबंध रखकर।"

23:24 * ये ढालें अकसर तीरंदाज़ ढोते थे।
23:26 * या "सजावट की चीज़ें।"

मूरतों से खुद को दूषित कर लिया।[1]
31 तूने भी अपनी बहन के रंग-ढंग
अपना लिए हैं,[2] इसलिए उसका प्याला
तेरे हाथ में दूँगा।'[3]

32 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है,

'तू अपनी बहन के चौड़े, गहरे
प्याले से पीएगी,[4]
तू एक मज़ाक बनकर रह जाएगी
और तेरी हँसी उड़ायी जाएगी,
क्योंकि उस प्याले में यही सब
भरा है।[5]
33 तू अपनी बहन सामरिया का प्याला
पीएगी,
जो खौफ और तबाही का प्याला है,
तू पी-पीकर मदहोश हो जाएगी
और तेरा दुख बरदाश्त के बाहर
होगा।*
34 तुझे यह प्याला पीना ही होगा,
इसकी एक-एक बूँद पीनी होगी,[6]
तुझे प्याले के टुकड़े तक चबाने
होंगे और तू मारे दुख के अपनी
छातियाँ चीरेगी।
"यह मैंने खुद कहा है," सारे
जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है।'

35 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'तू मुझे भूल गयी है। तूने
मेरी बिलकुल भी कदर नहीं की।[7] इस-
लिए तुझे अपने अश्लील कामों का और
अपने वेश्या के कामों का अंजाम भुगतना
ही होगा।'"

36 इसके बाद यहोवा ने मुझसे कहा,
"इंसान के बेटे, क्या तू ओहोला और
ओहोलीबा[8] को मेरा फैसला सुनाएगा
और उनके घिनौने कामों के लिए उन्हें
दोषी ठहराएगा? 37 उन्होंने व्यभिचार
किया है*[1] और उनके हाथ खून से रंगे
हैं। उन्होंने न सिर्फ घिनौनी मूरतों को
पूजा# है बल्कि मेरे लिए उन्होंने जो बेटे
पैदा किए थे, उन्हें भी मूरतों के आगे
भोग चढ़ाने के लिए आग में होम कर
दिया है।[2] 38 और-तो-और उन्होंने मेरे
साथ यह सब किया: उन्होंने उस दिन
मेरे पवित्र-स्थान को दूषित कर दिया
और मेरे सब्तों को अपवित्र कर दिया।
39 अपने बेटों को घिनौनी मूरतों के आगे
बलि चढ़ाने के बाद,[3] उन्होंने उसी दिन
मेरे पवित्र-स्थान में आकर उसे दूषित कर
दिया।[4] उन्होंने मेरे भवन के अंदर ऐसा
किया। 40 इतना ही नहीं, उन्होंने दूर-
दूर से आदमियों को बुलाने के लिए एक
दूत भी भेजा।[5] जब वे आदमी आ रहे थे
तो तूने नहा-धोकर अपनी आँखों को
सँवारा और सुंदर गहनों से अपना सिंगार
किया[6] 41 और जाकर एक आलीशान
दीवान पर बैठ गयी।[7] तेरे आगे एक
मेज़ थी[8] जिस पर तूने मेरा धूप और
मेरा तेल रखा।[9] 42 वहाँ मस्ती में डूबे
आदमियों की भीड़ का शोरगुल सुनायी
दिया, जिनमें वीराने से लाए गए शराबी
भी थे। उन्होंने इन दोनों औरतों के हाथों
में कंगन पहनाए और सिर पर खूबसूरत
ताज रखे।

43 इसके बाद मैंने उस औरत के बारे
में, जो व्यभिचार करते-करते पस्त हो
गयी है, यह कहा: 'अब भी यह औरत
वेश्या के कामों से बाज़ नहीं आएगी।'
44 वे आदमी उसके पास जाते रहे जैसे
कोई किसी वेश्या के पास बार-बार जाता

23:33 *शा., "मदहोशी और दुख से भर जाएगी।"

23:37 *यानी परमेश्वर से विश्वासघात किया है। #या "मूरतों के साथ व्यभिचार किया।"

अध्य. 23
1 भज 106:35, 36; यहे 6:9; यहे 23:7
2 यिर्म 3:8; यहे 16:46, 47
3 2रा 21:13; यिर्म 25:15; दान 9:12
4 यश 51:17
5 व्य 28:37; 1रा 9:7; विल 2:15
6 भज 75:8
7 1रा 14:9; नहे 9:26; यश 17:10; यिर्म 2:32; यिर्म 13:25
8 यहे 23:4

दूसरा कॉल.
1 हो 1:2; याकू 4:4
2 लैव 18:21; 2रा 17:17, 18; यहे 16:36
3 यिर्म 7:31
4 लैव 20:3
5 यश 57:9
6 यिर्म 4:30
7 यश 57:7
8 यश 65:11
9 यहे 8:10, 11; यहे 16:17, 18

है। वे ओहोला और ओहोलीबा के पास
इसी तरह जाते रहे जो अश्लील कामों के
लिए बदनाम हैं। 45 मगर नेक आदमी
उन दोनों को व्यभिचार और कत्ल की
वह सज़ा देंगे जिसकी वे लायक हैं।[1]
उन्होंने व्यभिचार किया है और उनके हाथ
खून से रंगे हैं इसलिए उनका यही अंजाम
होगा।[2]

46 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'उनके खिलाफ एक
सेना लायी जाएगी और उनका ऐसा हश्र
किया जाएगा कि देखनेवालों का दिल
दहल जाएगा और उन्हें लूट लिया
जाएगा।[3] 47 सेना उन पर पत्थर
फेंकेगी[4] और तलवारों से उन्हें काट
डालेगी। वह उनके बेटे-बेटियों को मार
डालेगी[5] और उनके घर आग से फूँक
देगी।[6] 48 मैं देश में अश्लील कामों
का अंत कर दूँगा और सारी औरतें
तुमसे सबक सीखेंगी और कोई भी
औरत तुम्हारी तरह अश्लील काम नहीं
करेगी।[7] 49 तुमने जो अश्लील काम
किए हैं और अपनी घिनौनी मूरतों को
पूजकर जो पाप किया है, उसकी सज़ा वे
ज़रूर तुम्हें देंगे और तुम्हें जानना होगा कि
मैं सारे जहान का मालिक यहोवा हूँ।'"[8]

24

नौवें साल के दसवें महीने के
दसवें दिन यहोवा का संदेश एक
बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे
कहा, 2 "इंसान के बेटे, आज की यह
तारीख लिख ले। आज ही के दिन बैबि-
लोन के राजा ने यरूशलेम पर हमला शुरू
किया है।[9] 3 तू उस बगावती घराने के
बारे में एक मिसाल* बताना और उनके
बारे में कहना,

'सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है,

"हंडे* को आग पर रख और उसमें
पानी डाल।[1]
4 उसमें गोश्त के टुकड़े डाल,[2]
बढ़िया-बढ़िया टुकड़े डाल,
जाँघ और कंधे के टुकड़े डाल, उसे
अच्छी-अच्छी हड्डियों से भर दे।
5 झुंड की सबसे मोटी-ताज़ी भेड़ ले[3]
और हंडे के नीचे चारों तरफ
लकड़ियाँ जमा दे।
गोश्त के टुकड़े उबाल और हड्डियाँ
पका।"'

6 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है,

'धिक्कार है इस खूनी नगरी पर![4]
यह ज़ंग लगा हंडा है जिसका ज़ंग
निकाला नहीं गया है!
इसे खाली कर, टुकड़े एक-एक
करके बाहर निकाल,[5] उन पर
चिट्ठियाँ मत डाल।
7 इसका बहाया खून इसके अंदर ही
पड़ा है[6]
इसने खुली चट्टान पर खून
उँडेला है।
इसने ज़मीन पर नहीं उँडेला कि उसे
मिट्टी से ढका जाए।[7]
8 मैंने इसका बहाया खून चिकनी,
खुली चट्टान पर छोड़ा है
ताकि उसे ढका न जाए
और मैं क्रोध में आकर इससे
बदला लूँ।'[8]

9 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है,

'धिक्कार है इस खूनी नगरी पर![9]
मैं इसके चारों तरफ लकड़ियों का
ढेर और बढ़ा दूँगा।

24:3 *या "एक रूपक कथा।"

24:3 *या "चौड़े मुँहवाले हंडे।"

अध्य. 23
1 उत 9:6
लैव 20:10
यहे 16:38
2 2रा 24:3, 4
भज 106:38
यहे 23:37
3 यिर्म 15:4
यिर्म 25:9
यहे 16:40
4 लैव 20:2
5 2इत 36:17
6 2रा 25:9, 10
यिर्म 39:8
7 2पत 2:6
8 यहे 6:13

अध्य. 24
9 2रा 25:1
यिर्म 39:1
यिर्म 52:4

दूसरा कॉल.
1 यहे 11:3
2 यहे 11:7
3 यिर्म 39:6
4 2रा 21:16
मी 7:2
मत 23:35
5 यहे 11:7, 9
6 यिर्म 2:34
7 लैव 17:13
व्य 12:16
8 2रा 24:3, 4
9 मत 23:37

10 मोटी-मोटी लकड़ियों का ढेर लगा
दो, आग लगा दो,
हंडे का गोश्त अच्छी तरह उबालो,
शोरबा उँडेल दो और हड्डियों को
जलकर राख हो जाने दो।
11 खाली हंडा अंगारों पर रखो कि वह
गरम हो जाए,
उसका ताँबा पूरा लाल हो जाए,
तब उसकी गंदगी अंदर-ही-अंदर
पिघल जाएगी[1] और आग उसका
ज़ंग खा लेगी।
12 यह खीज दिलाता है, बड़ा
थकाऊ है,
क्योंकि यह भारी ज़ंग नहीं
निकलनेवाला।[2]
इसे ज़ंग के साथ आग में झोंक दो!'

13 'तू अपने अश्लील कामों की
वजह से अशुद्ध हो गयी है।[3] मैंने तुझे
शुद्ध करने की बहुत कोशिश की, मगर
तू शुद्ध नहीं होती। तू तब तक शुद्ध नहीं
होगी जब तक कि मैं तुझ पर अपना
गुस्सा पूरी तरह उतार न लूँ।[4] 14 यह
बात मुझ यहोवा ने कही है। यह ज़रूर
पूरी होगी। मैं तुझे सज़ा देने से पीछे
नहीं हटूँगा, तुझ पर बिलकुल तरस नहीं
खाऊँगा और न ही अपना फैसला बद-
लूँगा।[5] तेरे रंग-ढंग और तेरे चाल-
चलन के मुताबिक वे तेरा न्याय करेंगे।'
सारे जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है।"

15 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
16 "इंसान के बेटे, मैं तेरी प्यारी संगिनी
को अचानक मारकर तुझसे छीन लूँगा।[6]
तू उसके लिए न तो मातम मनाना,* न
रोना, न ही आँसू बहाना। 17 तू मन-
ही-मन कराहना और मातम का कोई
दस्तूर न मानना।[1] सिर पर पगड़ी और
पैरों में जूतियाँ पहनना।[2] अपनी मूँछें* न
ढाँपना[3] और जब दूसरे तुझे रोटी लाकर
दें तो उसे न खाना।"[4]

18 सुबह मैंने लोगों को परमेश्वर का
संदेश सुनाया और शाम को मेरी पत्नी
की मौत हो गयी। अगली सुबह मैंने वैसा
ही किया जैसी मुझे आज्ञा दी गयी थी।
19 तब लोग मुझसे कहने लगे, "हमें बता
कि तू यह सब जो कर रहा है, हमारे लिए
क्या मायने रखता है?" 20 मैंने उनसे
कहा, "यहोवा ने मुझे यह संदेश दिया है:
21 'इसराएल के घराने से कहना, "सारे
जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'मैं
अपने पवित्र-स्थान को दूषित करनेवाला
हूँ[5] जिस पर तुम्हें बड़ा गुमान है, जो तुम्हें
बहुत प्यारा है और जिसे तुम दिल से
चाहते हो। तुम्हारे अपने बेटे-बेटियाँ,
जिन्हें तुम पीछे छोड़ आए हो, तलवार
से मारे जाएँगे।[6] 22 तब तुम्हें भी वही
करना होगा जो मैंने किया था। तुम
अपनी मूँछें नहीं ढाँपोगे और न ही वह
रोटी खाओगे जो दूसरे तुम्हें लाकर देंगे।[7]
23 तुम सिर पर पगड़ी बाँधे और पैरों
में जूतियाँ पहने रहोगे। तुम न तो
मातम मनाओगे, न ही रोओगे बल्कि
तुम अपने गुनाहों की वजह से सड़-
गल जाओगे[8] और एक-दूसरे के सामने
कराहोगे। 24 यहेजकेल तुम्हारे लिए
एक चिन्ह ठहरा है।[9] जैसा उसने किया है
तुम भी वैसा ही करोगे। जब ये सारी बातें
घटेंगी, तब तुम्हें जानना होगा कि मैं सारे
जहान का मालिक यहोवा हूँ।'"'"

25 "इंसान के बेटे, मैं उनका किला
उनसे छीन लूँगा जो उनकी खुशी का
खज़ाना है, जो उन्हें बहुत प्यारा है और
जिसे वे दिल से चाहते हैं। मैं उनके

अध्य. 24
1 यिर्म 21:10
यिर्म 32:29
यहे 22:15
2 यिर्म 5:3
यिर्म 6:29
3 2इत 36:14
यहे 22:9
4 यहे 5:12, 13
यहे 8:18
5 यिर्म 13:14
यहे 5:11
6 यहे 24:18, 21

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 16:5
2 लैव 10:6
2शम 15:30
3 मी 3:7
4 यिर्म 16:7
5 भज 74:7
भज 79:1
यिर्म 7:14
विल 1:10
विल 2:7
यहे 9:7
6 2इत 36:17
यिर्म 6:11
7 यहे 24:17
8 लैव 26:39
यहे 33:10
9 यश 8:18
यश 20:3
यहे 4:3

24:16 * या "छाती मत पीटना।"

24:17 * या "अपने ऊपर का होंठ।"

बेटे-बेटियों को भी उनसे छीन लूँगा।[1]
जिस दिन मैं ऐसा करूँगा उस दिन
26 यह खबर तुझे एक ऐसा आदमी देगा
जो अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग
आएगा।[2] 27 उस दिन तू अपना मुँह
खोलेगा और उस आदमी से बात करेगा।
इसके बाद तू कभी चुप न रहेगा।[3] तू
उन लोगों के लिए एक चिन्ह ठहरेगा और
उन्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।”

25 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे
कहा, 2 “इंसान के बेटे सुन, अम्मो-
नियों[4] की तरफ मुँह कर और उनके
खिलाफ भविष्यवाणी कर।[5] 3 तू
अम्मोनियों से कहना, ‘सारे जहान के
मालिक यहोवा का संदेश सुनो। सारे
जहान का मालिक यहोवा कहता है, “जब
मेरा पवित्र-स्थान दूषित किया गया था,
इसराएल देश उजाड़ा गया और यहूदा
का घराना बँधुआई में चला गया था, तब
तुमने कहा, ‘अच्छा हुआ!’ 4 इसलिए
मैं तुम्हें पूरब के लोगों के हवाले करने जा
रहा हूँ और वे तुम पर कब्ज़ा कर लेंगे।
वे तुम्हारे देश में छावनियाँ* डालेंगे और
तंबू गाड़कर बस जाएँगे। वे तुम्हारे देश
की उपज खाएँगे और तुम्हारी भेड़-बक-
रियों का दूध पीएँगे। 5 मैं तुम्हारे शहर
रब्बाह[6] को ऊँटों के लिए चरागाह बना
दूँगा और तुम अम्मोनियों का देश भेड़-
बकरियों के लिए आराम करने की जगह
बन जाएगा और तुम्हें जानना होगा कि मैं
यहोवा हूँ।”’”

6 “सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, ‘तुमने इसराएल देश का
हाल देखकर तालियाँ बजायी थी[7] और
तुम नाचने-झूमने लगे* और तुमने उन्हें
नीचा दिखाने के लिए जश्न मनाया था।[1]
7 इसलिए मैं तुम्हारे खिलाफ अपना हाथ
बढ़ाऊँगा और तुम्हें दूसरे राष्ट्रों के हवाले
कर दूँगा और वे तुम्हें लूट लेंगे। मैं देशों
के बीच से तुम्हें मिटा डालूँगा और तुम्हारे
देश का नाश कर दूँगा।[2] मैं तुम्हें खत्म
कर दूँगा और तुम्हें जानना होगा कि मैं
यहोवा हूँ।’

8 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, ‘मोआब[3] और सेईर[4] ने कहा
था, “देखो! यहूदा के घराने की हालत
दुनिया के बाकी सभी राष्ट्रों जैसी हो गयी
है।” 9 इसलिए मैं मोआब की सर-
हद पर बसे शहर बेत-यशिमोत, बालमोन
और किरयातैम[5] तक को, जो उसकी
शान* हैं, दुश्मनों के लिए खोल रहा हूँ।
10 मैं अम्मोनियों के साथ-साथ मोआ-
बियों को भी पूरब के लोगों के हवाले कर
दूँगा[6] ताकि वे उन पर कब्ज़ा कर लें। इस
तरह राष्ट्रों के बीच अम्मोनियों को फिर
कभी याद नहीं किया जाएगा।[7] 11 मैं
मोआब को सज़ा दूँगा[8] और उन्हें जानना
होगा कि मैं यहोवा हूँ।’

12 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, ‘एदोम ने यहूदा के घराने से
बदला लिया और ऐसा करके बहुत बड़े
पाप का दोषी बन गया।[9] 13 इसलिए
सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है,
“मैं एदोम के खिलाफ भी अपना हाथ
बढ़ाऊँगा और उसके देश से इंसानों और
मवेशियों, दोनों को काट डालूँगा। मैं उसे
उजाड़ दूँगा।[10] तेमान से ददान तक रहने-
वाले सभी तलवार से मारे जाएँगे।[11]
14 ‘मैं अपनी प्रजा इसराएल के हाथों
एदोम से बदला लूँगा।[12] उनके ज़रिए मैं
एदोम पर अपना गुस्सा और क्रोध भड़-
काऊँगा ताकि एदोम जान जाए कि मैं

25:4 *या “दीवारों से घिरी छावनियाँ।”
25:6 *या “पैर पटकने लगे।”
25:9 *या “सरताज।”

अध्य. 24
1 व्य 28:32 यिर्म 11:22
2 यहे 33:21
3 यहे 3:26 यहे 33:22

अध्य. 25
4 उत 19:36, 38
5 यिर्म 49:1 आम 1:13 सप 2:9
6 2शम 12:26 यहे 21:20
7 विल 2:15

दूसरा कॉल.
1 सप 2:8
2 यिर्म 49:2 आम 1:14
3 यश 15:1 यिर्म 48:1 आम 2:1
4 व्य 2:4
5 गि 32:37, 38 यह 13:15, 19
6 यहे 25:4
7 यहे 21:28, 32
8 यिर्म 48:1
9 2इत 28:17 भज 137:7 विल 4:22 आम 1:11 ओब 10
10 मला 1:4
11 यिर्म 49:7, 8
12 यश 11:14 यश 63:1

किस तरह बदला लेता हूँ।'[1] सारे जहान
के मालिक यहोवा का यह ऐलान है।"'

15 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'पलिश्तियों ने सदियों पुरानी
दुश्मनी की वजह से इसराएलियों से
बदला लेने और उन्हें मिटा डालने की
घिनौनी साज़िश की थी।[2] 16 इसलिए
सारे जहान का मालिक यहोवा कहता
है, "मैं पलिश्तियों के खिलाफ हाथ
बढ़ाने जा रहा हूँ[3] और मैं करेती लोगों
को काट डालूँगा[4] और समुद्र-तट के
बचे हुए निवासियों को नाश कर दूँगा।[5]
17 मैं उन्हें कड़ी-से-कड़ी सज़ा देकर
उनसे बदला लूँगा और जब मैं उनसे
बदला लूँगा तो उन्हें जानना होगा कि मैं
यहोवा हूँ।"'"

26 ग्यारहवें साल के महीने के पहले
दिन यहोवा का यह संदेश मेरे
पास पहुँचा: 2 "इंसान के बेटे सुन, सोर
नगरी ने यरूशलेम की खिल्ली उड़ाते हुए
कहा है,[6] 'यह नगरी, जो सब देशों के
लिए फाटक जैसी थी, आज देखो इसे
तोड़ दिया गया है![7] अच्छा हुआ! अब
देखना, सारे लोग मेरे पास आएँगे और मैं
मालामाल हो जाऊँगी।' 3 इसलिए
सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है,
'हे सोर, मैं तेरे खिलाफ हूँ। मैं बहुत-से
राष्ट्रों को तेरे खिलाफ ऐसे उठाऊँगा, जैसे
समुंदर अपनी लहरें उठाता है। 4 वे
सोर की दीवारें ढा देंगे और उसकी मीनारें
गिरा देंगे।[8] मैं उसकी मिट्टी खुरच-खुरच-
कर उसे चिकनी, खुली चट्टान बना दूँगा।
5 वह समुंदर के बीच मछुवाई के बड़े-बड़े
जाल सुखाने की जगह बन जाएगी।'[9]

'क्योंकि यह मैंने कहा है और दुनिया
के राष्ट्र आकर उसे लूट लेंगे।' सारे
जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है। 6 'सोर में देहात की खुली
बस्तियों* में रहनेवाले सभी तलवार से
काट डाले जाएँगे और लोगों को जानना
होगा कि मैं यहोवा हूँ।'

7 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'मैं उत्तर से बैबिलोन के राजा
नबूकदनेस्सर* को सोर पर हमला करने
भेज रहा हूँ।[1] वह राजाओं का राजा है[2]
जिसके पास बेशुमार घोड़े,[3] युद्ध-रथ,[4]
घुड़सवार और बहुत-से सैनिकों से बनी
एक सेना है। 8 वह देहात में तेरी खुली
बस्तियों को तलवार से तहस-नहस कर
देगा। वह तुझ पर हमला करने के
लिए घेराबंदी की दीवार खड़ी करेगा
और ढलान बनाएगा और तुझसे अपना
बचाव करने के लिए एक बड़ी ढाल
तैयार करेगा। 9 वह अपनी बख्तर-
बंद गाड़ी* से तेरी दीवारों को मार-मार-
कर ढा देगा और अपने कुल्हाड़ों# से
तेरी मीनारें गिरा देगा। 10 उसके पास
इतनी तादाद में घोड़े होंगे कि उनके दौड़ने
से उठनेवाली धूल तुझे ढक लेगी। वह
तेरे फाटकों में ऐसे घुस आएगा जैसे लोग
टूटी दीवारों से धड़धड़ाते हुए शहर में घुस
जाते हैं। तब उसके घुड़सवारों, युद्ध-रथों
और उनके पहियों की तेज़ गड़गड़ाहट
से तेरी दीवारें हिल जाएँगी। 11 उसके
घोड़े अपनी टापों से तेरी सड़कों को रौंद
डालेंगे।[5] वह अपनी तलवार से तेरे लोगों
को मार डालेगा और तेरे बड़े-बड़े मज़-
बूत खंभे ज़मीन पर गिरकर चकनाचूर हो
जाएँगे। 12 वे तेरी सारी दौलत और
व्यापार का सारा माल लूट लेंगे,[6] तेरी
दीवारें ढा देंगे और तेरे आलीशान घरों
को उजाड़ देंगे। फिर वे तेरे पत्थर, तेरा

अध्य. 25
1 नहू 1:2
2 2इत 28:18; यश 9:11, 12; यश 14:29; यिर्म 47:1; योए 3:4-6; आम 1:6
3 यिर्म 25:17, 20; सप 2:4
4 सप 2:5
5 यिर्म 47:4

अध्य. 26
6 योए 3:4-6; आम 1:9
7 विल 1:1
8 यश 23:11; आम 1:10; जक 9:4
9 यहे 27:32

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 25:9; यहे 29:18
2 दान 2:37
3 हब 1:8
4 यिर्म 4:13
5 यश 5:28; हब 1:8
6 यहे 27:32, 33; यहे 28:5, 18; जक 9:3

26:6 *शा., "बेटियों।" **26:7** *शा., "नबू-कदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है। **26:9** *या "हमला करने के अपने यंत्र।" #या "तलवारों।"

लकड़ी का सामान और तेरी मिट्टी समुंदर
में डाल देंगे।’
13 ‘मैं तेरे बीच से गाने-बजाने की
सारी आवाज़ें बंद कर दूँगा। तेरे यहाँ
सुरमंडल की धुनें फिर कभी सुनायी
न देंगी।[1] 14 मैं तुझे चिकनी, खुली
चट्टान बना दूँगा और तू मछुवाई के
बड़े-बड़े जाल सुखाने की जगह बन
जाएगी।[2] तू फिर कभी नहीं बसायी
जाएगी क्योंकि यह बात मुझ यहोवा ने
कही है।’ सारे जहान के मालिक यहोवा
का यह ऐलान है।
15 सारे जहान का मालिक यहोवा
सोर से कहता है, ‘जब तू गिरेगी और
तेरे यहाँ मरनेवाले लोग* कराहेंगे और
तेरे बीच मार-काट मचेगी, तो ऐसा
हाहाकार होगा कि सारे द्वीप थर-थर
काँपने लगेंगे।[3] 16 समुंदर के सभी
हाकिम* अपनी-अपनी गद्दी से उतर
जाएँगे, अपने चोगे# और खूबसूरत
कढ़ाईदार कपड़े उतार देंगे और थर-थर
काँपेंगे।△ वे ज़मीन पर बैठ जाएँगे, थर-
थर काँपते रहेंगे और हैरत-भरी नज़रों
से तुझे ताकेंगे।[4] 17 वे तेरे लिए शोक-
गीत गाएँगे[5] और तुझसे कहेंगे,

“तू वह नगरी है जिसकी बड़ाई की
जाती थी, समुंदर से लोग आकर
तेरे यहाँ बसते थे,
समुंदर पर तेरा और तेरे लोगों का
दबदबा था,[6]
तूने धरती के सभी लोगों में डर
फैला दिया था,
हाय! अब तू किस कदर नाश हो
गयी है।[7]

18 जिस दिन तू गिरेगी उस दिन द्वीप
थरथराएँगे,
जब तू गायब हो जाएगी तो समुंदर
के द्वीप घबरा जाएँगे।”’[1]

19 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, ‘मैं तेरा हाल उन शहरों की
तरह कर दूँगा जो सुनसान और वीरान
पड़े हैं। मैं समुंदर की उफनती लहरें तुझ
पर चढ़ाऊँगा और तू गहरे सागर में डूब
जाएगी।[2] 20 मैं तुझे गड्ढे* में उतार
दूँगा जैसे मैं दूसरों को उतारता हूँ, जहाँ
लंबे अरसे से मरे हुए लोग हैं। मैं तुझे उन
गहराइयों में फेंक दूँगा जहाँ मुद्दतों से कई
जगह उजाड़ पड़ी हैं और मैं तुझे उस कब्र
में डाल दूँगा जहाँ बाकी सब लोग डाले
जाते हैं[3] ताकि तू फिर कभी आबाद न
हो। फिर मैं ज़िंदा लोगों के देश में रौनक
ले आऊँगा।#
21 मैं तुझ पर अचानक कहर ढाऊँगा
और तू फिर कभी नज़र नहीं आएगी।[4]
वे तुझे ढूँढ़ेंगे, मगर तू कहीं नहीं मिलेगी।’
सारे जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है।”

27

यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे
कहा, 2 “इंसान के बेटे, सोर के बारे में
एक शोकगीत गा[5] 3 और उससे कह,

‘समुंदर के फाटकों पर रहनेवाले,
बहुत-से द्वीपों के देशों के साथ
व्यापार करनेवाले,
सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है,
“हे सोर, तूने खुद कहा है, ‘मेरी
सुंदरता बेमिसाल* है।’[6]
4 तेरे इलाके समुंदर के बीचों-बीच हैं।

26:15 *शा., “घात किए हुए लोग।” **26:16** *या “प्रधान।” #या “बिन आस्तीन के चोगे।” △शा., “थरथराहट के कपड़े पहनेंगे।”

26:20 *या “कब्र।” #या “को सजाऊँ-गा।” **27:3** *या “परिपूर्ण।”

अध्य. 26
1 यश 23:16
2 यहे 26:4, 5
3 यहे 27:28
4 यहे 27:35, यहे 32:10
5 यहे 27:32
6 आम 1:9, 10
7 यहे 28:2

दूसरा कॉल.
1 यश 23:5
2 यहे 27:34
3 यहे 28:8
4 यहे 27:36

अध्य. 27
5 यहे 26:17
6 यश 23:9, यहे 28:2, 12

तेरे कारीगरों ने तुझे इतना निखारा
कि तेरी सुंदरता बेमिसाल* है।
5 उन्होंने तेरे सारे तख्ते सनीर से
लायी सनोवर की लकड़ी से
बनाए[1]
तेरा मस्तूल लबानोन के एक
देवदार से बनाया।
6 तेरे चप्पू बाशान के बाँज के पेड़ों से
तैयार किए
तेरे आगे का हिस्सा कित्तीम द्वीपों[2]
के सरो पेड़ की लकड़ियों से
बनाया गया जिस पर हाथी-दाँत
का काम था।
7 तेरे पाल मिस्र से लाए रंग-बिरंगे
मलमल से बनाए गए,
तेरे फर्श पर लगा शामियाना एली-
शाह[3] द्वीपों से लाए नीले धागे
और बैंजनी ऊन का बना था।
8 तेरे खेवैए सीदोन और अरवाद[4]
से थे।
हे सोर, तेरे नाविक तेरे ही हुनरमंद
आदमी थे।[5]
9 तेरी जुड़ाई करनेवाले, गबाल
के कुशल और तजुरबेकार
लोग* थे।[6]
समुंदर के सभी जहाज़ और उनके
मल्लाह तेरे पास लेन-देन करने
आते थे।
10 तेरी सेना में फारस, लूद और पुट[7]
के योद्धा थे
वे तुझ पर अपनी ढालें और टोप
लटकाया करते थे, उन्होंने तेरी
शान बढ़ा दी थी।
11 तेरी सेना में अरवाद के आदमी थे
जो तेरे चारों तरफ की दीवारों
पर तैनात रहते थे,
तेरी मीनारों पर शूरवीर खड़े
रहते थे।
तेरे चारों तरफ की दीवारों पर वे
अपनी गोल ढालें टाँगते थे,
उन्होंने तुझे इतना निखारा कि तेरी
सुंदरता बेमिसाल* है।

12 तेरी बेशुमार दौलत देखकर तर-
शीश[1] ने तेरे साथ कारोबार किया।[2]
उसने तेरे माल के बदले तुझे चाँदी, लोहा,
राँगा और सीसा दिया।[3] 13 यावान,
तूबल[4] और मेशेक[5] ने तेरे साथ व्यापार
किया और तेरे माल के बदले तुझे
दास-दासियाँ[6] और ताँबे की चीज़ें दीं।
14 तोगरमा के घराने[7] ने तेरे माल
के बदले तुझे घोड़े और खच्चर दिए।
15 ददान[8] के लोगों ने भी तेरे साथ
व्यापार किया। तूने बहुत-से द्वीपों में
सौदागरों को काम पर रखा। वे तुझे
नज़राने में हाथी-दाँत[9] और आबनूस की
लकड़ी दिया करते थे। 16 तेरी चीज़ों
की भरमार देखकर एदोम ने तेरे साथ
कारोबार किया। उसने तेरे माल के बदले
तुझे फिरोज़ा, बैंजनी ऊन, रंगीन कढ़ाई-
दार कपड़े, बेहतरीन-से-बेहतरीन कपड़े,
मूंगे और माणिक दिए।

17 यहूदा और इसराएल देश ने भी
तेरे साथ व्यापार किया और तेरे माल के
बदले तुझे मिन्नीत[10] का गेहूँ, खाने की
बढ़िया-बढ़िया चीज़ें, शहद,[11] तेल और
बलसाँ[12] दिया।[13]

18 तेरी चीज़ों की भरमार और तेरी
सारी दौलत देखकर दमिश्क[14] ने तेरे
साथ कारोबार किया। उसने तुझे बदले में
हेलबोन की दाख-मदिरा और ज़हार
की ऊन* दी। 19 ऊज़ाल के वदान
और यावान ने तेरे माल के बदले

अध्य. 27
1 व्य 3:8, 9; 1इत 5:23
2 उत 10:2, 4
3 उत 10:2, 4
4 उत 10:15, 18
5 1रा 9:27
6 यह 13:2, 5; यहे 27:27
7 उत 10:6; यिर्म 46:9

दूसरा कॉल.
1 उत 10:2, 4; यो 1:3
2 2इत 9:21
3 यिर्म 10:9
4 यश 66:19
5 उत 10:2
6 योए 3:6
7 उत 10:2, 3; यहे 38:6
8 उत 10:7
9 1रा 10:22
10 न्या 11:12, 33
11 उत 43:11
12 यिर्म 8:22
13 1रा 5:9; एज 3:7; प्रेष 12:20
14 यश 7:8

27:4, 11 *या "परिपूर्ण।" **27:9** *शा., "बूढ़े आदमी।"

27:18 *या "लाल-भूरे रंग की ऊन।"

तुझे पिटवाँ लोहा, तज* और वच#
दिए। 20 ददान[1] ने तेरे साथ ज़ीन के
कपड़ों* का व्यापार किया। 21 तूने
अरबी लोगों और केदार[2] के सभी प्रधानों
को काम पर रखा जो मेम्नों, मेढ़ों और
बकरियों के व्यापारी थे।[3] 22 शीबा
और रामा[4] के सौदागरों ने भी तेरे
साथ व्यापार किया। उन्होंने तेरे माल
के बदले तुझे हर तरह के बढ़िया-बढ़िया
इत्र, कीमती पत्थर और सोना दिया।[5]
23 हारान,[6] कन्ने और अदन[7] ने, साथ
ही शीबा,[8] अस्सूर[9] और कलमद के
सौदागरों ने तेरे साथ व्यापार किया।
24 वे तेरे बाज़ार में सुंदर-सुंदर कपड़ों
और नीले कपड़ों से बने ऐसे चोगों का
व्यापार करते थे जिन पर रंगीन कढ़ाई
का काम था। साथ ही, रंग-बिरंगे कालीन
को रस्सों से अच्छी तरह बाँधकर लाते
और बेचते थे।

25 तरशीश के जहाज़[10] तेरा माल
ढोया करते थे
इसलिए समुंदर के बीचों-बीच तू
हमेशा सामान से लदा रहता था,
भरा रहता था।*
26 तेरे खेवैए तुझे समुंदर की गहराइयों
में ले गए,
पूरब की तेज़ आँधी ने बीच समुंदर
में तुझे ऐसा मारा कि तू तहस-
नहस हो गया।
27 तेरी दौलत, तेरा माल-असबाब, तेरे
मल्लाह और नाविक,
तेरी जुड़ाई करनेवाले, तेरे
व्यापारी[11] और तेरे सभी
योद्धा,[12]
तुझ पर सवार सारी भीड़,
सबकुछ उस दिन बीच समुंदर में
समा जाएगा जब तू गिरेगा।[1]
28 तेरे नाविकों का चीखना सुनकर
समुंदर किनारे के इलाके काँप
उठेंगे।
29 सभी खेवैए, मल्लाह और नाविक
अपने-अपने जहाज़ से उतरकर
ज़मीन पर आ खड़े होंगे।
30 वे ज़ोर-ज़ोर से और बिलख-बिलख-
कर रोएँगे,[2]
अपने सिर पर धूल डालेंगे और
राख में लोटेंगे।
31 वे अपना सिर मुँड़वा लेंगे और टाट
ओढ़ेंगे,
तेरे लिए विलाप करेंगे और ज़ोर-
ज़ोर से रोएँगे।
32 वे मारे दुख के तेरे बारे में शोकगीत
गाएँगे और यह राग अलापेंगे:
'सोर की टक्कर का कौन है,
जो आज गहरे सागर में खामोश
पड़ा है?[3]
33 तेरा माल समुंदर के रास्ते आया
करता था और तू देश-देश के
लोगों को खुश करता था।[4]
तू अपनी अपार दौलत और माल-
असबाब से धरती के राजाओं को
मालामाल करता था।[5]
34 मगर आज तू समुंदर की
गहराइयों में टूटकर तहस-नहस
हो गया है,[6]
तेरे साथ तेरा सारा माल और तेरे
लोग डूब गए।[7]
35 द्वीपों के सब लोग फटी आँखों से
तुझे देखेंगे,[8]
उनके राजा मारे डर के थर-थर
काँपेंगे,[9] उनके चेहरे फक पड़
जाएँगे।

अध्य. 27
1 उत 25:3
2 उत 25:13
3 2इत 17:11; यश 60:7
4 उत 10:7
5 1रा 10:1, 2; यश 60:6
6 उत 11:31
7 2रा 19:12; आम 1:5
8 उत 25:3; अय 6:19
9 उत 10:22
10 1रा 10:22; यश 23:14
11 यहे 27:8, 9
12 यहे 27:10, 11

दूसरा कॉल.
1 यहे 26:14
2 यश 23:1; यहे 26:17
3 यहे 26:5
4 यहे 27:14, 16
5 जक 9:3
6 यहे 26:19
7 यहे 27:27
8 यहे 26:15
9 यहे 28:17

27:19 *यह दालचीनी की जाति का एक पेड़ है। #एक खुशबूदार नरकट। **27:20** *या "बुने हुए कपड़ों से तैयार की गयी पोशाकों।" **27:25** *या शायद, "और शानदार लगता था।"

36 राष्ट्रों के सौदागर तेरी यह हालत
देखकर मारे हैरत के सीटी
बजाएँगे।
तेरा अंत अचानक और भयानक
होगा,
तू हमेशा के लिए मिट
जाएगा।'"'"[1]

28 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे
कहा, 2 "इंसान के बेटे, सोर के अगुवे
से कहना, 'सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है,

"तेरा मन घमंड से फूल गया है,[2]
तू बार-बार कहता है, 'मैं एक
ईश्वर हूँ।
मैं बीच समुंदर में एक ईश्वर के
आसन पर बैठा हूँ।'[3]
मगर तू जो खुद को ईश्वर
समझता है,
तू कोई ईश्वर नहीं, मामूली
इंसान है।
3 तू खुद को दानियेल से ज़्यादा बुद्धि-
मान समझता है।[4]
तू सोचता है कि ऐसा कोई रहस्य
नहीं जो तेरी समझ से बाहर हो।
4 तूने अपनी बुद्धि और पैनी समझ से
खूब दौलत बटोरी है,
तू अपने खज़ाने में सोना-चाँदी जमा
करता जा रहा है।[5]
5 तूने बड़ी हुनरमंदी से लेन-देन करके
बेशुमार दौलत कमायी है,[6]
अपनी दौलत की वजह से तेरा मन
घमंड से फूल गया है।"'

6 'इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है,

"तू मन-ही-मन खुद को ईश्वर
समझता है न?
7 इसलिए मैं तेरे खिलाफ परदेसियों
को ला रहा हूँ, जो राष्ट्रों में से
सबसे खूँखार लोग हैं,[1]
वे तेरी हर खूबसूरत चीज़ पर तल-
वारें चलाएँगे जो तूने अपनी बुद्धि
से हासिल की है
और तेरी शान मिट्टी में मिलाकर
तुझे दूषित कर देंगे।[2]
8 वे तुझे गड्ढे* में उतार देंगे,
तू बीच समुंदर में बहुत बुरी मौत
मरेगा।[3]
9 क्या तब भी तू अपने कातिल से
कहेगा, 'मैं एक ईश्वर हूँ'?
तू अपने दूषित करनेवालों के हाथ
में कोई ईश्वर नहीं, अदना इंसान
होगा।"'
10 'तू परदेसियों के हाथों ऐसे
मारा जाएगा मानो तू कोई
खतनारहित हो,
क्योंकि यह बात मैंने कही है।' सारे
जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है।"

11 यहोवा का संदेश एक बार
फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
12 "इंसान के बेटे, सोर के राजा के बारे
में एक शोकगीत गा और उससे कह,
'सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है,

"तू परिपूर्णता का आदर्श था,*
तू बुद्धि से भरपूर था[4] और तेरी
सुंदरता बेमिसाल थी।[5]
13 तू परमेश्वर के बाग, अदन में था।
तुझे हर तरह के अनमोल रत्न से
जड़े कपड़े पहनाए गए थे
—माणिक, पुखराज और यशब,
करकेटक, सुलेमानी और

अध्य. 27
1 भज 37:10

अध्य. 28
2 यहे 28:5
3 यहे 27:4
4 दान 2:48
5 जक 9:3
6 यश 23:1, 3
यहे 27:12

दूसरा कॉल.
1 यहे 30:10, 11
2 यश 23:9
3 यहे 27:26
4 यहे 28:3
5 यहे 27:3

28:8 *या "कब्र।" 28:12 *शा., "तूने नमूने पर मुहर लगा दी थी।"

मरगज, नीलम, फिरोज़ा[1] और
पन्ना।
उन्हें सोने के खाँचों में बिठाया
गया था।
जिस दिन तुझे सिरजा गया था,
उसी दिन तेरे लिए ये तैयार किए
गए थे।
14 मैंने तेरा अभिषेक करके तुझे पहरा
देनेवाला करूब ठहराया था।
तू परमेश्वर के पवित्र पहाड़ पर
था[2] और आग से धधकते पत्थरों
के बीच चला करता था।
15 जिस दिन तुझे सिरजा गया था, उस
दिन से लेकर तब तक तू अपने
चालचलन में निर्दोष रहा
जब तक कि तुझमें बुराई न पायी
गयी।[3]
16 अपने फलते-फूलते कारोबार[4] की
वजह से
तू ज़ुल्मी बन गया और पाप करने
लगा।[5]
मैं तुझे दूषित जानकर परमेश्वर के
पहाड़ से निकाल दूँगा और तेरा
नाश कर दूँगा।[6]
हे पहरा देनेवाले करूब, तुझे
मैं धधकते पत्थरों के बीच से
निकाल दूँगा।
17 अपनी सुंदरता की वजह से तेरा मन
घमंड से फूल गया है।[7]
अपनी शान की वजह से तूने अपनी
बुद्धि भ्रष्ट कर ली है।[8]
मैं तुझे नीचे ज़मीन पर पटक
दूँगा।[9]
तुझे राजाओं के सामने तमाशा बना
दूँगा।
18 तेरे पाप के भारी दोष और व्यापार
में तेरी बेईमानी ने तेरे पवित्र-
स्थानों को दूषित कर दिया है।
मैं तुझमें आग की ज्वाला भड़काऊँ-
गा जो तुझे भस्म कर देगी।[1]
मैं धरती पर सबके सामने तुझे
जलाकर राख कर दूँगा।
19 देश-देश के सभी लोग जो तुझे
जानते थे, तुझे देखकर हक्के-
बक्के रह जाएँगे।[2]
तेरा अंत अचानक और भयानक
होगा।
तू हमेशा के लिए मिट
जाएगा।"'"[3]

20 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
21 "इंसान के बेटे, सीदोन की तरफ मुँह
कर[4] और उसके खिलाफ भविष्यवाणी
कर। 22 तू उससे कहना, 'सारे जहान
का मालिक यहोवा कहता है,

"हे सीदोन, मैं तेरे खिलाफ हूँ और
तेरे यहाँ मेरी महिमा होगी।
जब मैं तेरा न्याय करके तुझे सज़ा
दूँगा और तेरे यहाँ खुद को पवित्र
ठहराऊँगा, तो लोगों को जानना
होगा कि मैं यहोवा हूँ।
23 मैं सीदोन में महामारी भेजूँगा और
उसकी सड़कों पर खून की नदियाँ
बहेंगी।
जब उस पर चारों दिशाओं से तल-
वार चलेगी, तो वहाँ लाशों का
ढेर लग जाएगा
और लोगों को जानना होगा कि मैं
यहोवा हूँ।[5]

24 इसके बाद इसराएल का घराना
फिर कभी ऐसे लोगों से नहीं घिरा
रहेगा जो उनके साथ नीच व्यवहार
करते हैं, कँटीली झाड़ियों और काँटों
की तरह चुभते हैं।[6] और लोगों को
जानना होगा कि मैं सारे जहान का
मालिक यहोवा हूँ।"'

अध्य. 28
1 यहे 27:16
2 यश 14:13
3 योए 3:4 आम 1:9
4 1रा 10:11 2इत 9:21 यहे 27:12
5 योए 3:6
6 यश 23:9 यिर्म 25:17, 22 यिर्म 47:4 योए 3:8
7 यहे 27:3
8 यश 14:14
9 यश 14:15

दूसरा कॉल.
1 आम 1:9, 10
2 यहे 27:35
3 यहे 27:36
4 यश 23:4 यिर्म 25:17, 22 यहे 32:30
5 यहे 26:6
6 गि 33:55 यह 23:12, 13

25 ‘सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, “जब मैं इसराएल के घराने को
उन सभी देशों से दोबारा इकट्ठा करूँगा
जहाँ उन्हें तितर-बितर किया गया है,[1]
तब मैं सब देशों के देखते उनके बीच
पवित्र ठहरूँगा।[2] फिर वे अपने देश
में जाकर बसेंगे[3] जो मैंने अपने सेवक
याकूब को दिया था।[4] 26 वहाँ वे मह-
फूज़ बसे रहेंगे,[5] घर बनाएँगे और अंगूरों
के बाग लगाएँगे।[6] वे तब महफूज़ बसे
रहेंगे जब मैं उनके आस-पास के लोगों का
न्याय करके उन्हें सज़ा दूँगा जो उन्हें तुच्छ
जानकर उनके साथ नीच व्यवहार करते
हैं।[7] और उन्हें जानना होगा कि मैं उनका
परमेश्वर यहोवा हूँ।”’”

29 दसवें साल के दसवें महीने के
12वें दिन यहोवा का यह संदेश
मेरे पास पहुँचाः 2 “इंसान के बेटे, मिस्र
के राजा फिरौन की तरफ मुँह कर और
उसके और पूरे मिस्र के खिलाफ यह
भविष्यवाणी करः[8] 3 ‘सारे जहान का
मालिक यहोवा कहता है,

“हे मिस्र के राजा फिरौन, मैं तेरे
खिलाफ हूँ।[9]
तू वह बड़ा और भयानक जीव है
जो नील* की धाराओं में लेटा
रहता है।[10]
तू कहता है, ‘यह नील नदी मेरी है।
मैंने इसे अपने लिए बनाया है।’[11]
4 मगर मैं तेरे जबड़ों में काँटे डालूँगा
और तेरी नील की मछलियों को
तेरे छिलके पर चिपटाऊँगा।
मैं तुझे और तुझसे चिपटी सारी
मछलियों को नील से खींचकर
बाहर निकालूँगा।
5 मैं तुझे और तेरी नील की सारी
मछलियों को ले जाकर रेगिस्तान
में छोड़ दूँगा।
तू खुले मैदान में गिर पड़ेगा और
कोई तेरी लाश के बिखरे हुए
टुकड़े इकट्ठे नहीं करेगा।[1]
मैं तुझे धरती के जंगली जानवरों
और आकाश के पक्षियों का
निवाला बना दूँगा।[2]
6 तब मिस्र के सभी निवासियों को
जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ,
क्योंकि इसराएल के घराने ने
जब उन पर टेक लगायी तो वे
बस एक सूखा तिनका*
साबित हुए।[3]
7 जब उन्होंने तेरा हाथ पकड़ा तो तू
कुचला गया,
तेरी वजह से उनके कंधे ज़ख्मी
हो गए।
जब उन्होंने तुझ पर टेक लगायी तो
तू टूट गया,
तेरी वजह से उनके पाँव* लड़-
खड़ाने लगे।”[4]

8 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, “अब मैं तुझ पर तल-
वार चलाऊँगा[5] और तेरे बीच से इंसानों
और जानवरों, दोनों को काट डालूँगा।
9 मिस्र उजाड़ दिया जाएगा और तबाह
हो जाएगा[6] और उन्हें जानना होगा
कि मैं यहोवा हूँ, क्योंकि तूने* कहा था,
‘नील नदी मेरी है और मैंने ही इसे
बनाया है।’[7] 10 देख, मैं तेरे और तेरी
नील नदी के खिलाफ हूँ। मैं मिस्र देश को
तबाह कर दूँगा, उसे सूखा देश बनाकर
छोड़ूँगा। मिगदोल[8] से लेकर इथियोपिया

अध्य. 28
1 व्य 30:3; यश 11:12; यिर्म 30:18; हो 1:11
2 यश 5:16
3 यिर्म 23:8
4 उत 28:13
5 यश 32:18; यिर्म 23:6; हो 2:18
6 यश 65:21, 22; यिर्म 31:5; आम 9:14
7 यिर्म 30:16

अध्य. 29
8 यिर्म 25:17, 19; यिर्म 43:10, 11; यहे 31:2
9 यिर्म 46:25; यहे 31:18
10 यहे 32:2
11 यहे 29:9

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 25:33
2 यहे 32:4
3 यश 36:6; यिर्म 37:5-7; यहे 17:17
4 यिर्म 17:5
5 यिर्म 46:14; यहे 30:4; यहे 32:12
6 यिर्म 43:11-13
7 यहे 29:3
8 यिर्म 44:1

29:3 *यहाँ और आगे की आयतों में “नील” का मतलब है नील नदी और उसकी नहरें। 29:6 *शा., “एक नरकट।” 29:7 *शा., “कमर।” 29:9 *शा., “उसने।”

की सरहद पर बसे सवेने[1] तक मैं पूरे मिस्र
को उजाड़कर एक वीराना बना दूँगा।[2]
11 न तो इंसान और न ही मवेशी वहाँ
से गुज़रेंगे।[3] वह 40 साल यूँ ही सुन-
सान पड़ा रहेगा। 12 मैं मिस्र को उजड़े
हुए देशों से भी ज़्यादा उजाड़ दूँगा। और
40 साल उसके शहर उजड़े हुए शहरों से
भी ज़्यादा उजाड़ पड़े रहेंगे।[4] मैं मिस्रियों
को दूसरे राष्ट्रों में तितर-बितर कर दूँगा
और दूसरे देशों में बिखरा दूँगा।”[5]

13 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, “मैं 40 साल के बाद
मिस्रियों को उन देशों से इकट्ठा करूँगा
जहाँ वे तितर-बितर हो चुके होंगे।[6]
14 मैं मिस्री बंदियों को दोबारा उनके
देश और उनकी जन्म-भूमि पत्रोस[7] ले
आऊँगा। इसके बाद उनके देश का
दुनिया में कोई नाम नहीं होगा।
15 मिस्र दुनिया के बाकी राज्यों से कम-
तर हो जाएगा और फिर कभी दूसरे
राष्ट्रों पर अधिकार नहीं चला पाएगा।[8]
मैं मिस्रियों को इतना घटा दूँगा कि वे
फिर कभी दूसरे देशों पर कब्ज़ा नहीं कर
पाएँगे।[9] 16 इसराएल का घराना फिर
कभी सहारे के लिए मिस्र की तरफ नहीं
ताकेगा।[10] उन्हें मिस्र को देखकर बस
यही याद आएगा कि उन्होंने मिस्रियों से
मदद लेकर कितनी बड़ी भूल की थी।
और उन्हें जानना होगा कि मैं सारे जहान
का मालिक यहोवा हूँ।”’”

17 फिर 27वें साल के पहले महीने
के पहले दिन, यहोवा का यह संदेश मेरे
पास पहुँचा: 18 “इंसान के बेटे, बैबि-
लोन के राजा नबूकदनेस्सर*[11] ने सोर
पर हमला करने के लिए अपने सैनिकों से
खूब मशक्कत करवायी थी।[12] सभी
सैनिकों के सिर गंजे हो गए और कंधे
छिल गए थे। मगर इस मेहनत के बदले
न तो नबूकदनेस्सर को और न ही उसकी
सेना को कोई मज़दूरी मिली थी।

19 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, ‘देख, मैं मिस्र को बैबि-
लोन के राजा नबूकदनेस्सर* के हाथ
करनेवाला हूँ।[1] वह मिस्र के सारे खज़ाने
खाली कर देगा और उसे लूट लेगा। यही
उसकी सेना की मज़दूरी होगी।’

20 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, ‘नबूकदनेस्सर ने उस*
पर हमला करने में जो कड़ी मेहनत की
थी, उसके बदले मैं उसे मिस्र दूँगा क्योंकि
उसने यह काम मेरे लिए किया था।’[2]

21 उस दिन मैं इसराएल के घराने
के लिए एक सींग उगाऊँगा*[3] और तुझे
उनके बीच बोलने का मौका दूँगा और
उन्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।”

30 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे
कहा, 2 “इंसान के बेटे, तू यह भविष्य-
वाणी कर: ‘सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है,

“लोगो, यह कहकर विलाप करो,
‘हाय, वह दिन आ रहा है!’
3 वह दिन नज़दीक है। हाँ, यहोवा
का दिन नज़दीक है।[4]
वह काली घटाओं का दिन होगा,[5]
राष्ट्रों को सज़ा देने का समय
होगा।[6]
4 मिस्र पर एक तलवार चलेगी,
वहाँ हर कहीं लाशें पड़ी होंगी,
यह देखकर इथियोपिया बौखला
जाएगा।

अध्य. 29
1 यहे 30:6, 7
2 यहे 30:12
3 यहे 31:12; यहे 32:13
4 यिर्म 46:19
5 यहे 30:23
6 यिर्म 46:25, 26
7 उत 10:13, 14; यहे 30:14
8 यहे 30:13
9 यहे 32:2
10 यश 30:2; यश 36:4, 6; यिर्म 2:18; यिर्म 37:5-7
11 यिर्म 25:9; यिर्म 27:3, 6
12 यहे 26:7

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 43:10, 12
2 यहे 30:9, 10
3 1शम 2:10; लूक 1:69

अध्य. 30
4 ओब 15
5 यहे 32:7
6 भज 110:6

29:18, 19 *शा., “नबूकदरेस्सर।” यह एक अलग वर्तनी है।

29:20 *यानी सोर। 29:21 *या “इस-राएल के घराने को ताकत दूँगा।”

उसकी दौलत लूट ली गयी है,
उसकी नींवें तोड़ दी गयी हैं।[1]
5 इथियोपिया,[2] पुट,[3] लूद और
मिली-जुली भीड़*
और कूब के लोगों को, साथ
ही करार किए हुए देश के
बेटों को,#
सबको तलवार से मार गिराया
जाएगा।"'
6 यहोवा कहता है,
'मिस्र के हिमायती भी गिर जाएँगे
और उसकी ताकत का गुरूर तोड़
दिया जाएगा।'[4]

सारे जहान का मालिक यहोवा ऐलान
करता है, 'मिगदोल[5] से लेकर सवेने[6]
तक सभी तलवार से मारे जाएँगे।
7 उन्हें उजड़े हुए देशों से भी ज़्यादा
उजाड़ दिया जाएगा और उनके शहर
उजड़े हुए शहरों में से सबसे ज़्यादा
उजाड़ पड़े रहेंगे।[7] 8 मैं मिस्र को आग
में झोंक दूँगा और उसके साथ संधि करने-
वाले सभी भस्म हो जाएँगे। तब उन्हें
जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ। 9 उस
दिन मैं इथियोपिया को, जिसे खुद पर
कुछ ज़्यादा ही भरोसा है, कँपाने के
लिए जहाज़ों पर अपने दूत भेजूँगा।
मिस्र पर जिस दिन कहर टूटेगा तब
इथियोपिया बौखला जाएगा। वह दिन
ज़रूर आएगा।'

10 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'मैं बैबिलोन के राजा नबूकद-
नेस्सर* के हाथों मिस्र की भीड़ का अंत
कर दूँगा।[8] 11 मिस्र का नाश करने के
लिए नबूकदनेस्सर और उसकी टुकड़ियों
को लाया जाएगा जो राष्ट्रों में से सबसे
खूँखार लोग हैं।[1] वे अपनी तलवार
मिस्र पर चलाएँगे और पूरे देश में
लाशें बिछा देंगे।[2] 12 मैं नील नदी
की नहरों[3] को सुखा दूँगा और मिस्र को
दुष्टों के हाथ बेच दूँगा। यह देश और
इसमें जो कुछ है, वह सब मैं परदेसियों के
हाथों उजाड़ दूँगा।[4] यह बात मुझ यहोवा
ने कही है।'

13 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'मैं घिनौनी मूरतों* का भी
नाश कर दूँगा और नोप# के निकम्मे देव-
ताओं को मिटा दूँगा।[5] इसके बाद फिर
कभी मिस्र का अपना कोई हाकिम△ नहीं
होगा। मैं मिस्र में आतंक फैला दूँगा।[6]
14 मैं पत्रोस[7] को उजाड़ दूँगा और
सोअन को आग से फूँक दूँगा और नो*
शहर को भी सज़ा दूँगा।[8] 15 और मैं
सीन पर, जो मिस्र का मज़बूत गढ़
है, अपने क्रोध का प्याला उँडेलूँगा और
नो की आबादी मिटा दूँगा। 16 मैं
मिस्र को आग से फूँक दूँगा और सीन
पर खौफ छा जाएगा, नो में घुसपैठ
की जाएगी और नोप# पर दिन-दहाड़े
हमला होगा! 17 ओन* और पीवेसेत
के जवान तलवार से मारे जाएँगे और
उनके शहरों में रहनेवालों को बंदी बना-
कर ले जाया जाएगा। 18 जब मैं तह-
पनहेस में मिस्र का जुआ तोड़ूँगा तो
वहाँ दिन में ही अँधेरा छा जाएगा।[9]
उस दिन उसकी ताकत का गुरूर टूट

30:5 *या "दूसरे राष्ट्रों के सब लोग।" #शायद यहाँ मिस्र से संधि करने-वाले इसराएलियों की बात की गयी है। **30:10** *शा., "नबूकदरेस्सर।" यह एक अलग वर्तनी है।

30:13 *इनका इब्रानी शब्द शायद "मल" के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है। **30:13, 16** #या "मेम्फिस।" **30:13** △या "प्रधान।" **30:14** *यानी थीबीज़। **30:17** *यानी हीलिओ-पोलिस।

अध्य. 30
1 यहे 32:11, 12
2 सप 2:12
3 नहू 3:8, 9
4 यहे 30:18
5 यिर्म 44:1
6 यहे 29:10
7 यिर्म 46:19, यहे 29:12, यहे 32:18
8 यहे 29:19, यहे 32:11

दूसरा कॉल.
1 हब 1:6
2 यहे 29:5
3 यहे 29:3
4 यहे 31:12
5 यिर्म 43:12, यिर्म 46:14
6 यिर्म 46:5
7 उत 10:13, 14, यिर्म 44:1
8 यिर्म 46:25
9 यहे 30:8

जाएगा,[1] उसे काले बादल ढक लेंगे
और उसके कसबों में रहनेवाले बंदी
बना लिए जाएँगे।[2] 19 मैं मिस्र को
सज़ा दूँगा और उन्हें जानना होगा कि मैं
यहोवा हूँ।'"

20 फिर 11वें साल के पहले महीने
के सातवें दिन यहोवा का यह संदेश मेरे
पास पहुँचा: 21 "इंसान के बेटे, मैंने
मिस्र के राजा फिरौन का बाज़ू तोड़ दिया
है। उसकी टूटी हड्डी को ठीक करने के
लिए उस पर पट्टी नहीं बाँधी जाएगी और
वह कभी तलवार नहीं उठा सकेगा।"

22 "इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, 'देख, मैं मिस्र के राजा
फिरौन के खिलाफ हूँ।[3] मैं उसके दोनों
बाज़ू तोड़ दूँगा, जो मज़बूत है उसे भी
और जो टूटा है उसे भी।[4] मैं उसके
हाथ से तलवार गिरा दूँगा।[5] 23 फिर
मैं मिस्रियों को अलग-अलग राष्ट्रों में
तितर-बितर कर दूँगा और दूसरे देशों में
बिखरा दूँगा।[6] 24 मगर मैं बैबिलोन के
राजा के बाज़ुओं को मज़बूत करूँगा*[7]
और उसके हाथ में अपनी तलवार दूँगा।[8]
मैं फिरौन के बाज़ू तोड़ दूँगा और वह
उसके सामने# ज़ोर-ज़ोर से कराहेगा
जैसे कोई मरता हुआ इंसान कराहता
है। 25 मैं बैबिलोन के राजा के बाज़ुओं
को मज़बूत करूँगा, जबकि फिरौन के
बाज़ू ढीले पड़ जाएँगे। जब मैं बैबिलोन
के राजा के हाथ में अपनी तलवार
दूँगा और वह उसे मिस्र पर चलाएगा[9]
तो उन्हें जानना होगा कि मैं यहोवा
हूँ। 26 मैं मिस्री लोगों को अलग-अलग
राष्ट्रों में तितर-बितर कर दूँगा और दूसरे
देशों में बिखरा दूँगा।[10] और उन्हें जानना
होगा कि मैं यहोवा हूँ।'"

30:24 *या "राजा की ताकत बढ़ाऊँगा।"
#यानी बैबिलोन के राजा के सामने।

अध्य. 30
1 यिर्म 46:20
यहे 31:18
2 यिर्म 46:19
3 यिर्म 46:25
यहे 29:3
4 2रा 24:7
यिर्म 46:2
5 यिर्म 46:21
6 यहे 29:12
7 यिर्म 27:6
8 यहे 32:11, 12
9 यहे 29:19, 20
10 यहे 29:12

दूसरा कॉल.

अध्य. 31
1 यिर्म 46:2
यहे 29:2
2 उत 2:8
यहे 28:12, 13

31

31 फिर 11वें साल के तीसरे महीने
के पहले दिन, यहोवा का संदेश
एक बार फिर मेरे पास पहुँचा।
उसने मुझसे कहा, 2 "इंसान के बेटे,
मिस्र के राजा फिरौन और उसकी भीड़ से
कहना,[1]

'अपनी महानता की वजह से तू
किसके बराबर है?
3 एक अश्शूरी था, लबानोन का एक
देवदार
जिसकी डालियाँ सुंदर थीं, जो बहुत
ऊँचा और छायादार था,
उसकी चोटी बादलों को छूती थी।
4 पानी की धाराओं ने उसे खूब
बढ़ाया, गहरे पानी के सोतों ने
उसे ऊँचा किया।
जहाँ वह लगाया गया था वहाँ चारों
तरफ नदियाँ थीं,
उनकी नालियाँ मैदान के सभी पेड़ों
को सींचती थीं।
5 इसलिए वह मैदान के बाकी सभी
पेड़ों से ऊँचा हो गया।
उसकी शाखाएँ कई गुना बढ़ती
गयीं, डालियाँ लंबी होती गयीं,
क्योंकि उसकी नदियों में भरपूर
पानी था।
6 आकाश के सभी पंछी उसकी
शाखाओं पर बसेरा करते थे,
सभी जंगली जानवर उसकी डालियों
के नीचे बच्चे देते थे
और घनी आबादीवाले सारे राष्ट्र
उसकी छाँव में रहते थे।
7 उसकी सुंदरता और लंबी-लंबी
डालियाँ लाजवाब थीं,
क्योंकि उसकी जड़ें गहरे पानी में
अंदर तक फैली हुई थीं।
8 परमेश्वर के बाग[2] में कोई और
देवदार उसके जैसा नहीं था।

न किसी सनोवर पर उसके जैसी
शाखाएँ थीं,
न किसी चिनार पर उसके जैसी
डालियाँ।
परमेश्वर के बाग में कोई और पेड़
ऐसा न था जो सुंदरता में उसे
टक्कर दे सके।
9 मैंने ही उसे हरा-भरा बनाकर सुंदर
रूप दिया,
सच्चे परमेश्वर के बाग, अदन
के बाकी सभी पेड़ उससे
जलते थे।'

10 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, 'वह* इतना ऊँचा होता
गया कि उसकी चोटी बादलों को छूने लगी
और अपनी ऊँचाई की वजह से उसका
मन घमंड से फूल गया। 11 मैं उसे
राष्ट्रों के सबसे ताकतवर शासक के
हवाले कर दूँगा।[1] वह उसके खिलाफ
कदम उठाएगा। मैं उसकी दुष्टता की
वजह से उसे ठुकरा दूँगा। 12 परदेसी
जो दुनिया के सबसे खूँखार लोग हैं, वे
आकर उसे काट डालेंगे और पहाड़ों पर
छोड़ देंगे। उसकी टहनियाँ और सारे पत्ते
घाटियों में झड़ जाएँगे, उसकी डालियाँ
देश में बहती धाराओं में टूटी पड़ी
रहेंगी।[2] धरती के जितने देश उसकी
छाँव तले रहते थे वे सब उसे छोड़कर
चले जाएँगे। 13 आकाश के सारे पंछी
उसके गिरे हुए तने पर बसेरा करेंगे और
सभी जंगली जानवर उसकी डालियों पर
रहा करेंगे।[3] 14 ऐसा इसलिए होगा
ताकि पानी की धाराओं के पास लगा
कोई भी पेड़ इतना ऊँचा न बढ़े और न
ही उसकी चोटी बादलों को छूने लगे और
पानी की बहुतायत से बढ़नेवाला कोई
भी पेड़ बादलों जितनी ऊँचाई हासिल न
करे। ये सारे पेड़ मौत के हवाले किए
जाएँगे और इन्हें धरती के नीचे फेंक दिया
जाएगा, उस गड्ढे* में जहाँ मरनेवाले
सभी इंसान जाते हैं।'

15 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'जिस दिन वह पेड़ नीचे कब्र
में जाएगा उस दिन मैं सबसे मातम मन-
वाऊँगा। मैं नदियों को ढाँप दूँगा और
उनकी धाराएँ रोक दूँगा, इसलिए पेड़ों को
भरपूर पानी मिलना बंद हो जाएगा। उस
पेड़ की वजह से मैं लबानोन में अंधकार
फैला दूँगा और मैदान के सारे पेड़ मुरझा
जाएँगे। 16 जब मैं उसे कब्र में गिराऊँ-
गा, उस गड्ढे* में जहाँ मरनेवाले सभी
जाते हैं तो उसके गिरने के धमाके से
सभी राष्ट्र थर-थर काँपने लगेंगे। उसके
गिरने से अदन के सभी पेड़[1] और लबा-
नोन के सभी शानदार और बेहतरीन पेड़,
जिनकी अच्छी सिंचाई होती है, धरती के
नीचे दिलासा पाएँगे। 17 वे उसके साथ
कब्र में नीचे चले गए जहाँ वे सभी पड़े हैं
जिन्हें तलवार से मारा गया था।[2] साथ ही
उसके हिमायती* भी चले गए जो राष्ट्रों
के बीच उसकी छाँव तले रहते थे।'[3]

18 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, 'तू इतना शानदार और
महान है कि अदन के बाग का कोई भी
पेड़ तेरी बराबरी नहीं कर सकता।[4] फिर
भी तुझे नीचे उस जगह उतारा जाएगा
जहाँ अदन के सारे पेड़ पड़े हैं। तू उन
खतनारहित लोगों के बीच पड़ा रहेगा
जिन्हें तलवार से मार डाला गया है।
फिरौन और उसकी सारी भीड़ का यही
अंजाम होगा।'"

31:10 *शा., "तू।"

31:14, 16 *या "कब्र।" 31:17 *शा., "बाज़ू।"

अध्य. 31
1 यहे 30:10, 11
हब 1:6
2 यहे 32:5, 6
3 यहे 29:5
यहे 32:4

दूसरा कॉल.
1 यहे 31:9
2 यहे 32:18, 20
3 यहे 30:6
यहे 32:31
4 यहे 31:9
यहे 32:19

32 और 12वें साल के 12वें महीने
के पहले दिन, यहोवा का संदेश
एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने
मुझसे कहा, 2 “इंसान के बेटे, मिस्र के
राजा फिरौन के बारे में एक शोकगीत गा
और उससे कह,

‘तू राष्ट्रों के बीच एक जवान
ताकतवर शेर जैसा था,
मगर तुझे खामोश कर दिया
गया है।
तू समुंदर के एक बड़े भयानक जीव
की तरह था,[1] तू अपनी नदियों
में उछाल मारता था,
अपने पैरों से पानी मटमैला
करता था, नदियों* को गंदा
करता था।’

3 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है,
‘मैं कई राष्ट्रों की एक टोली से तुझ
पर अपना जाल डलवाऊँगा,
वे तुझे मेरे बड़े जाल में फाँसकर
ऊपर खींच लेंगे।
4 मैं तुझे ज़मीन पर ले जाकर छोड़
दूँगा,
खुले मैदान में पटक दूँगा।
मैं आकाश के सारे पंछियों को तुझ
पर बिठाऊँगा,
पूरी धरती के जंगली जानवरों
को तेरा माँस खिलाकर संतुष्ट
करूँगा।[2]
5 मैं तेरी लाश पहाड़ों पर फेंक दूँगा
और तेरे बचे हुए टुकड़ों से घाटियाँ
भर दूँगा।[3]
6 तेरे खून की जो तेज़ धारा फूटेगी
उससे मैं ज़मीन को पहाड़ों की
ऊँचाइयों तक तर कर दूँगा,
तेरे खून से नदियाँ भर जाएँगी।’*
7 ‘जब तुझे बुझा दिया जाएगा तब
मैं आकाश को ढाँप दूँगा, उसके
तारों की चमक मिटा दूँगा।
मैं सूरज को बादलों से ढक दूँगा,
चाँद अपनी चाँदनी नहीं बिखेरेगा।[1]
8 मैं तेरी वजह से आकाश की सारी
जगमगाती ज्योतियों की रौशनी
खत्म कर दूँगा,
तेरे देश को अंधकार से ढाँप दूँगा।’
सारे जहान के मालिक यहोवा का
यह ऐलान है।
9 ‘जब मैं तेरे लोगों को बंदी बन-
वाकर दूसरे राष्ट्रों में भेज दूँगा,
उन देशों में, जो उनके लिए अन-
जान हैं,
तो देश-देश के लोगों के दिलों में
घबराहट पैदा कर दूँगा।[2]
10 जब मैं देश-देश के राजाओं
के देखते तुझ पर तलवार
चलाऊँगा,
तो वे डर के मारे थरथराने
लगेंगे, उनके लोग हक्के-बक्के
रह जाएँगे।
जिस दिन तू गिरेगा उस दिन
सभी काँपते रहेंगे कि कहीं वे भी न
मार डाले जाएँ।’
11 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है,
‘बैबिलोन के राजा की तलवार तुझ
पर चलेगी।[3]
12 मैं तेरी भीड़ को उसके सूरमाओं की
तलवारों का कौर बना दूँगा,
उसके सभी सूरमा दुनिया के सबसे
खूँखार लोग हैं।[4]

32:2 *शा., “उनकी नदियों।”

32:6 *शा., “नदियों के तल तुझसे (या तेरे साथ) भर जाएँगे।”

अध्य. 32
1 यश 51:9, 10; यहे 29:3
2 यहे 29:5
3 यहे 31:12

दूसरा कॉल.
1 यश 13:1, 10
2 यहे 29:12; यहे 30:26
3 यिर्म 43:10, 11; यिर्म 46:25, 26; यहे 30:24
4 यहे 30:10, 11; हब 1:6

वे मिस्र का घमंड चूर कर देंगे और
उसकी पूरी भीड़ मिट जाएगी।[1]
13 मैं उसके नदी-नालों के पास रहने-
वाले सभी मवेशियों को नाश कर
दूँगा,[2]
फिर कभी उसके नदी-नाले किसी
इंसान के पैर या जानवर के खुर
से गंदे नहीं होंगे।'[3]
14 'उस वक्‍त मैं उनका पानी साफ
करूँगा,
उनकी नदियों को तेल की
तरह बहाऊँगा।' सारे जहान के
मालिक यहोवा का यह ऐलान है।
15 'मैं मिस्र को उजाड़कर वीराना बना
दूँगा, भरे-पूरे देश को खाली कर
दूँगा,[4]
उसके सभी निवासियों को मार
डालूँगा।
तब उन्हें जानना होगा कि मैं
यहोवा हूँ।[5]
16 यह एक शोकगीत है और लोग
ज़रूर यह राग अलापेंगे,
देश-देश की औरतें इसे अलापेंगी।
वे मिस्र और उसकी सारी भीड़
के लिए इसे अलापेंगे।' सारे
जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है।"

17 फिर 12वें साल के महीने* के
15वें दिन यहोवा का यह संदेश मेरे पास
पहुँचा: 18 "इंसान के बेटे, मिस्र की
भीड़ के लिए ज़ोर-ज़ोर से रो और उसे
और ताकतवर देशों की बेटियों को धरती
के नीचे उस गड्ढे* में उतार दे, जहाँ
मरनेवाले सभी जाते हैं।

19 'तुझे क्या लगता है, तू दुनिया
में सबसे ज़्यादा खूबसूरत है? नीचे जा,
खतनारहित लोगों के साथ पड़ी रह!'

20 'वे तलवार से मारे हुओं के बीच
ढेर हो जाएँगे।[1] उसे तलवार के हवाले
किया गया है। उसे उसकी सारी भीड़
समेत घसीटकर दूर ले जाओ।

21 कब्र की गहराइयों से बड़े-बड़े
दिग्गज सैनिक उससे और उसके मदद-
गारों से बात करेंगे। मिस्रियों को तल-
वार से मार डाला जाएगा और वे ज़रूर
नीचे जाएँगे और वहाँ खतनारहित लोगों
की तरह पड़े रहेंगे। 22 वहाँ अश्‍शूर
अपनी पूरी टोली के साथ पड़ा है। उनकी
कब्रें उसके चारों तरफ हैं, वे सब-के-सब
तलवार से मारे गए हैं।[2] 23 उसकी
कब्रें गड्ढे* की गहराइयों में हैं और
उसकी कब्र के चारों तरफ उसकी टोली
की कब्रें भी हैं। उन्होंने जीते-जी लोगों# में
आतंक फैला दिया था, इसीलिए वे तल-
वार से मारे गए।

24 वहाँ एलाम[3] भी पड़ा है और
उसकी कब्र के आस-पास उसकी भीड़ की
कब्रें हैं जिन्हें तलवार से मार डाला गया
है। उन्हें खतनारहित हालत में धरती के
नीचे जाना पड़ा क्योंकि उन्होंने जीते-जी
लोगों# में आतंक फैला दिया था। अब
उन्हें उनके साथ अपमान सहना पड़ेगा जो
उस गड्ढे* में जाते हैं। 25 घात किए
हुओं के बीच उसकी सेज लगायी गयी है।
उसकी कब्र के चारों तरफ उसकी भीड़
की कब्रें हैं। वे सब-के-सब खतनारहित हैं
और उन्हें तलवार से मार डाला गया है
क्योंकि उन्होंने जीते-जी लोगों# में आतंक
फैला दिया था। अब उन्हें उनके साथ
अपमान सहना पड़ेगा जो उस गड्ढे* में
जाते हैं। उसे घात किए हुओं के बीच डाल
दिया गया है।

अध्य. 32
1 यहे 29:19
2 यहे 30:12
3 यहे 29:8, 11
4 भज 107:33, 34; यहे 29:12
5 यहे 30:26

दूसरा कॉल.
1 यहे 29:8
2 यश 37:36; जक 10:11
3 उत 10:22; यिर्म 49:34, 35

32:17 *शायद यह 12वाँ महीना था। आय. 1 से मिलाकर देखें। **32:18, 23-25** *या "कब्र।"

32:23-25 #शा., "जीवितों के देश।"

26 वहाँ मेशेक, तूबल[1] और उनकी*
सारी भीड़ भी पड़ी है। उनकी कब्रें
उसकी कब्र के चारों तरफ हैं। वे सब-
के-सब खतनारहित हैं और उन्हें तल-
वार से भेदा गया है, क्योंकि उन्होंने जीते-
जी लोगों# में आतंक फैला दिया था।
27 वे उन खतनारहित शूरवीरों के साथ
पड़े रहेंगे जिन्हें मार गिराया गया था और
जो अपने युद्ध के हथियार समेत नीचे
कब्र में चले गए थे। लोग उनकी तल-
वारें उनके सिर के नीचे रखेंगे* और
उनके पाप की सज़ा उनकी हड्डियों तक
को मिलेगी, क्योंकि इन शूरवीरों ने जीते-
जी लोगों# में आतंक फैला दिया था।
28 मगर तुझे खतनारहित लोगों के साथ
कुचल दिया जाएगा और तू उन लोगों
के साथ पड़ा रहेगा जिन्हें तलवार से मार
डाला गया था।

29 वहाँ एदोम[2] भी पड़ा है। उसके
राजा और सभी प्रधान बहुत शक्तिशाली
होने के बावजूद उन लोगों के साथ पड़े हैं
जो तलवार से मार डाले गए थे। वे भी
उन लोगों के साथ पड़े रहेंगे जो खतना-
रहित हैं[3] और उस गड्ढे* में जाते हैं।

30 वहाँ उत्तर के सभी हाकिम# और
सभी सीदोनी भी पड़े हैं।[4] उन्होंने जीते-
जी अपनी ताकत के दम पर लोगों में
आतंक फैला दिया था, मगर बाद में उन्हें
शर्मनाक हालत में धरती के नीचे उन
लोगों के बीच जाना पड़ा जो मार डाले गए
थे। वे खतनारहित हालत में उन लोगों के
साथ पड़े रहेंगे जिन्हें तलवार से मार डाला
गया था और वे उन लोगों के साथ अप-
मान सहेंगे जो उस गड्ढे* में जाते हैं।

31 फिरौन यह सब देखेगा और
उसकी भीड़ के साथ जो हुआ, उसे
देखकर दिलासा पाएगा।[1] फिरौन और
उसकी पूरी सेना को तलवार से मार डाला
जाएगा।' सारे जहान के मालिक यहोवा
का यह ऐलान है।

32 'फिरौन ने जीते-जी लोगों# में
आतंक फैला दिया था, इसलिए उसे और
उसकी भीड़ को उन खतनारहित लोगों
के साथ मौत की नींद सुला दिया जाएगा
जिन्हें तलवार से मार डाला गया था।'
सारे जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है।"

33 यहोवा का यह संदेश मेरे पास
पहुँचाः 2 "इंसान के बेटे, तू
अपने लोगों को मेरा यह संदेश सुनाः[2]

'अगर मैं किसी देश पर तलवार
लाऊँ[3] और उस देश के लोग एक आदमी
को चुनकर उसे अपना पहरेदार ठहराएँ
3 और पहरेदार देखे कि देश पर तलवार
चलनेवाली है और वह नरसिंगा फूँक-
कर लोगों को खबरदार करे,[4] 4 तो
जो कोई नरसिंगे की आवाज़ सुनकर भी
चेतावनी को अनसुना करता है,[5] वह
तलवार से मार डाला जाएगा। वह अपनी
मौत का ज़िम्मेदार खुद होगा।[6] 5 उसने
नरसिंगे की आवाज़ सुनकर भी चेतावनी
को अनसुना किया। वह अपनी मौत का
ज़िम्मेदार खुद होगा। अगर उसने चेताव-
नी सुनी होती तो उसकी जान बच जाती।

6 लेकिन अगर पहरेदार यह देखकर
भी कि देश पर तलवार चलनेवाली है,
नरसिंगा न फूँके[7] और इसलिए लोगों को
कोई चेतावनी न मिले तो देश में से जो
कोई तलवार से मार डाला जाएगा, वह
अपने गुनाह की वजह से खुद मरेगा,

32:26 *शा., "उसकी।" 32:26, 27, 32 #शा., "जीवितों के देश।" 32:27 *शायद इसका यह मतलब है कि योद्धाओं को सम्मान देकर उनकी तलवारों के साथ दफ-नाया जाएगा। 32:29, 30 *या "कब्र।" 32:30 #या "अगुवे।"

अध्य. 32
1 उत 10:2; यहे 38:2
2 उत 25:30; यश 34:5; यहे 25:12, 13; आम 1:11; ओब 1; मला 1:4
3 यिर्म 9:25, 26
4 उत 10:15; यहे 28:21

दूसरा कॉल.
1 यहे 31:16

अध्य. 33
2 यहे 3:11
3 लैव 26:25; यहे 6:3; यहे 21:9
4 यिर्म 4:5; हो 8:1
5 यिर्म 6:17; जक 1:4
6 यहे 3:19; प्रेष 18:6
7 यश 56:10

मगर उसके खून का हिसाब मैं पहरेदार से
माँगूँगा।’*[1]
7 इंसान के बेटे, मैंने तुझे इसराएल के
घराने के लिए पहरेदार ठहराया है। जब
तू मेरे मुँह से कोई संदेश सुनता है, तो
जाकर मेरी तरफ से लोगों को चेताव-
नी देना।[2] 8 जब मैं किसी दुष्ट से कहूँ,
‘हे दुष्ट, तू ज़रूर मर जाएगा!’[3] मगर तू
जाकर उसे चेतावनी न दे कि वह अपने
तौर-तरीके बदले, तो वह दुष्ट अपने
गुनाह की वजह से मर जाएगा,[4] मगर
उसके खून का हिसाब मैं तुझसे माँगूँगा।
9 लेकिन अगर तू एक दुष्ट को चेतावनी
देता है कि वह अपने दुष्ट कामों से फिर
जाए, मगर वह अपने तौर-तरीके बदल-
ने से इनकार कर देता है, तो वह अपने
गुनाह की वजह से मरेगा,[5] लेकिन तू
अपनी जान बचाएगा।[6]
10 इंसान के बेटे, इसराएल के घराने
से कहना, ‘तुम लोगों ने कहा है, “हम
अपनी बगावत और अपने पापों के
भारी बोझ से दबे हुए हैं, उनकी वजह
से हम गलते जा रहे हैं,[7] अब हम कैसे
बच सकते हैं?”’[8] 11 मगर तू उनसे
कहना, ‘सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, “मैं अपने जीवन की
शपथ खाकर कहता हूँ कि मुझे किसी
दुष्ट के मरने से खुशी नहीं होती।[9]
इसके बजाय, मुझे इससे खुशी मिलती है
कि दुष्ट अपने तौर-तरीके बदले[10] और
जीता रहे।[11] इसराएल के घराने, मेरे
पास लौट आ, अपने बुरे रास्ते से पलट-
कर लौट आ।[12] तू क्यों अपनी जान
गँवाना चाहता है?”’[13]
12 इंसान के बेटे, तू अपने लोगों से
कहना, ‘अगर एक नेक इंसान बगावत
करने लगे तो उसने पहले जो नेक काम
किए थे वे उसे बचा नहीं सकेंगे।[1] अगर
एक दुष्ट आदमी दुष्ट काम करना छोड़
देता है तो वह उन दुष्ट कामों की
वजह से नाश नहीं होगा जो उसने पहले
किए थे।[2] एक नेक इंसान जिस दिन पाप
करता है, उस दिन उसके वे नेक काम
उसे बचा नहीं पाएँगे जो उसने पहले किए
थे।[3] 13 अगर मैं एक नेक इंसान से
कहूँ, “तू ज़रूर जीता रहेगा” और वह यह
सोचकर बुरे काम* करने लगे कि उसने
पहले जो नेक काम किए थे उनकी वजह
से उसे कोई सज़ा नहीं मिलेगी,[4] तो वह
नाश किया जाएगा। उसका एक भी नेक
काम नहीं गिना जाएगा। इसके बजाय,
उसने जो बुरे काम किए हैं उनकी वजह से
वह मर जाएगा।[5]
14 अगर मैं एक दुष्ट से कहूँ, “तू
ज़रूर मर जाएगा” और वह पाप करना
छोड़कर न्याय करने लगे,[6] 15 गिरवी
की चीज़ लौटा दे,[7] लूटी हुई चीज़
वापस कर दे[8] और गलत काम छोड़-
कर वह सारी विधियाँ मानने लगे जिन
पर चलने से ही इंसान ज़िंदा रहेगा,
तो वह बेशक जीता रहेगा।[9] वह नहीं
मरेगा। 16 उसके किसी भी पाप के
लिए उससे हिसाब नहीं लिया जाएगा*[10]
बल्कि न्याय करने की वजह से वह जीता
रहेगा।’[11]
17 मगर तेरे लोगों ने कहा है, ‘यहोवा
के काम करने का तरीका सही नहीं है,’
जबकि उन्हीं के तौर-तरीके गलत हैं।
18 जब एक नेक इंसान नेकी की राह
छोड़कर गलत काम करने लगता है, तो
वह अपने इन कामों की वजह से ज़रूर
मरेगा।[12] 19 लेकिन अगर एक दुष्ट

33:6 *या “के लिए मैं पहरेदार को ज़िम्मे-
दार ठहराऊँगा।”

33:13 *या “अन्याय।” 33:16 *शा.,
“को याद नहीं किया जाएगा।”

अध्य. 33
1 यहे 3:18
2 यश 21:8, यिर्म 1:17, यहे 3:17
3 यश 3:11, यहे 18:4
4 नीत 11:21
5 नीत 15:10
6 यहे 3:19, प्रेष 18:6
7 लैव 26:39, यश 64:6, यहे 24:23
8 यहे 37:11
9 यहे 18:23, 1ती 2:3, 4
10 यश 31:6, लूक 15:10
11 भज 130:7, 8
12 यश 55:7, यिर्म 3:22, यिर्म 25:5, प्रेष 3:19
13 यहे 18:31, 2पत 3:9

दूसरा कॉल.
1 यहे 3:20, यहे 18:24
2 1रा 8:48, 50, यहे 18:21
3 यहे 18:26
4 2पत 2:20
5 यहे 18:4
6 यश 55:7, यहे 18:21, मी 6:8
7 निर्ग 22:26
8 लैव 6:2, 4, यहे 22:29
9 लैव 18:5, यहे 18:27
10 यश 1:18
11 यहे 20:11
12 इब्र 10:38, 2पत 2:20

अपने दुष्ट काम छोड़कर न्याय करने लगे तो वह ज़िंदा रहेगा।[1]

20 मगर तुम लोगों ने कहा है, 'यहोवा के काम करने का तरीका सही नहीं है।'[2] इसराएल के घराने के लोगो, मैं तुममें से हरेक का न्याय उसके चालचलन के हिसाब से करूँगा।"

21 हमारी बँधुआई के 12वें साल के दसवें महीने के पाँचवें दिन, एक आदमी मेरे पास आया जो यरूशलेम से भाग आया था।[3] उसने मुझे यह खबर दी, "शहर पर कब्ज़ा कर लिया गया है!"[4]

22 जिस दिन सुबह वह आदमी मेरे पास आया था, उससे पहलेवाली शाम यहोवा का हाथ मुझ पर आया और उसने मेरा मुँह खोल दिया। तब मेरी ज़बान खुल गयी और मैं गूँगा न रहा।[5]

23 फिर यहोवा का यह संदेश मेरे पास पहुँचा: **24** "इंसान के बेटे, इन खंडहरों में रहनेवाले[6] इसराएल देश के बारे में कह रहे हैं, 'जब एक अकेले अब्राहम को इस देश का अधिकारी बनाया जा सकता है,[7] तो हमें क्यों नहीं? हम तो बहुत-से लोग हैं। ज़रूर यह देश हमारे अधिकार में कर दिया गया है।'

25 इसलिए तू उनसे कहना, 'सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, "यह देश तुम्हारे अधिकार में कैसे किया जा सकता है? तुम लोग खून समेत माँस खाते हो,[8] घिनौनी मूरतों* की ओर ताकते हो और खून की नदियाँ बहाते हो।[9] **26** तुम अपनी तलवार का सहारा लेते हो,[10] घिनौने काम करते हो और तुममें से हरेक अपने पड़ोसी की पत्नी को दूषित करता है।[1] तो फिर यह देश तुम्हारे अधिकार में कैसे किया जा सकता है?"'[2]

27 तू उनसे कहना, 'सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, "मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ, जो खंडहरों में रहते हैं वे तलवार से मारे जाएँगे, जो खुले मैदान में रहते हैं उन्हें मैं जंगली जानवरों का निवाला बना दूँगा और जो मज़बूत गढ़ों और गुफाओं में रहते हैं वे बीमारी से मारे जाएँगे।[3] **28** मैं इस देश को उजाड़कर बिलकुल वीरान बना दूँगा,[4] उसकी ताकत का गुरूर तोड़ दिया जाएगा और मैं इसराएल के पहाड़ों को ऐसा उजाड़ दूँगा[5] कि वहाँ से कोई नहीं गुज़र पाएगा। **29** जब मैं उनके घिनौने कामों[6] की वजह से देश को उजाड़कर बिलकुल वीरान बना दूँगा[7] तो उन्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।"'

30 इंसान के बेटे, तेरे लोग दीवारों की आड़ में और अपने घर की दहलीज़ पर तेरे बारे में आपस में बातें करते हैं।[8] हर कोई अपने भाई से कहता है, 'चलो, चलकर सुनते हैं कि यहोवा ने क्या संदेश दिया है।' **31** हमेशा की तरह उनकी भीड़ तेरे पास आएगी और वे तेरे सामने बैठकर तेरी बातें सुनेंगे, मगर उनके मुताबिक काम नहीं करेंगे।[9] वे मुँह से तो बढ़-चढ़कर तेरी तारीफ करेंगे,* मगर उनका दिल बेईमानी की कमाई के लिए ललचाता है। **32** देख! तू उनके लिए कोई प्रेम गीत गानेवाले जैसा है, जो तारोंवाले बाजे की मधुर धुन पर सुरीली आवाज़ में गीत गाता है। वे सब तेरा

33:25 *इनका इब्रानी शब्द शायद "मल" के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

33:31 *या "तो काम-वासना से भरी बातें करेंगे।"

अध्य. 33
1 यहे 18:27
2 यहे 18:25, 29
3 यहे 24:25-27
4 2रा 25:4; 2इत 36:17; यिर्म 39:2
5 यहे 3:26
6 यिर्म 39:10; यहे 36:4
7 उत 12:7
8 उत 9:4; लैव 17:12
9 यहे 22:6
10 सप 3:3

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 5:8
2 व्य 4:26; यह 23:15
3 यिर्म 42:22; यहे 5:12
4 2इत 36:20, 21; यश 6:11; यिर्म 44:2
5 यहे 6:3
6 2रा 17:9; 2इत 36:14
7 यिर्म 9:11; यिर्म 25:11
8 यिर्म 18:18
9 यश 29:13; यिर्म 44:16, 17

संदेश सुनेंगे, मगर कोई उसके मुताबिक काम नहीं करेगा। 33 और जब तेरे संदेश की बातें सच निकलेंगी जो कि ज़रूर सच होंगी, तब उन्हें जानना होगा कि उनके बीच कोई भविष्यवक्ता हुआ करता था।”[1]

34 यहोवा का संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, 2 “इंसान के बेटे, इसराएल के चरवाहों के खिलाफ भविष्यवाणी कर। उनसे कहना, ‘सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, “धिक्कार है इसराएल के चरवाहों पर,[2] जो बस अपना ही पेट भरते रहते हैं! क्या चरवाहों का काम यह नहीं कि वे झुंड को खिलाएँ-पिलाएँ?[3] 3 तुम जानवरों की चरबी खाते हो, उनकी ऊन से अपने लिए गरम कपड़े बनाते हो और मोटे-ताज़े जानवर हलाल करते हो,[4] मगर तुम झुंड को चराते नहीं।[5] 4 तुमने कमज़ोरों को मज़बूत नहीं किया, बीमारों को ठीक नहीं किया, घायलों की मरहम-पट्टी नहीं की, भटके हुओं को झुंड में वापस नहीं लाए और खोए हुओं को तुम ढूँढ़ने नहीं गए।[6] इसके बजाय, तुमने उन पर तानाशाहों की तरह राज किया और अत्याचार किया।[7] 5 उनका कोई चरवाहा नहीं था, इसलिए वे तितर-बितर हो गयीं[8] और मैदान के सभी जंगली जानवरों का निवाला बन गयीं। 6 मेरी भेड़ें सभी पहाड़ों और हर पहाड़ी पर भटकती रहीं और धरती के कोने-कोने तक तितर-बितर हो गयीं। उनकी तलाश करनेवाला या उन्हें ढूँढ़नेवाला कोई नहीं था।

7 इसलिए चरवाहो, यहोवा का यह संदेश सुनो, 8 ‘सारे जहान का मालिक यहोवा ऐलान करता है, “मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ, मैं ज़रूर कदम उठाऊँगा। मेरी भेड़ें शिकार हो गयीं, सभी जंगली जानवरों का निवाला बन गयीं, क्योंकि उनका कोई चरवाहा नहीं था। मेरे चरवाहों ने मेरी भेड़ों को नहीं ढूँढ़ा। वे मेरी भेड़ों को खिलाने-पिलाने के बजाय अपना ही पेट भरते रहे।”’ 9 इसलिए चरवाहो, यहोवा का संदेश सुनो। 10 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, ‘मैं इन चरवाहों के खिलाफ हूँ और उनसे अपनी भेड़ों का हिसाब माँगूँगा।* मैं उन्हें भेड़ों को चराने# के काम से निकाल दूँगा[1] और वे फिर कभी अपना पेट न भर सकेंगे। मैं अपनी भेड़ों को उनके मुँह से छुड़ाऊँगा ताकि वे फिर कभी उनका निवाला न बनें।’”

11 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, “देखो, मैं खुद अपनी भेड़ों को ढूँढ़कर लाऊँगा और उनकी देखभाल करूँगा।[2] 12 जैसे एक चरवाहा उन भेड़ों को ढूँढ़कर लाता है जो तितर-बितर हो गयी हैं और उन्हें खिलाता-पिलाता है, उसी तरह मैं अपनी भेड़ों की देखभाल करूँगा।[3] मैं उन्हें उन सभी जगहों से बचाकर ले आऊँगा जहाँ वे काले घने बादलों के दिन[4] तितर-बितर हो गयी थीं। 13 मैं उन्हें दूसरे देशों से निकाल लाऊँगा और उन्हें इकट्ठा करूँगा और उनके अपने देश में बसाऊँगा। मैं उन्हें इसराएल के पहाड़ों पर, नदियों के पास और बसी हुई जगहों के पास चराऊँगा।[5] 14 मैं हरे-भरे चरागाहों में उन्हें चराऊँगा और वे इसराएल के ऊँचे पहाड़ों पर चरा करेंगी।[6] वहाँ वे हरियाली में बैठा करेंगी[7] और

34:10 *या “मैं उनसे अपनी भेड़ें वापस माँगूँगा।” #या “की देखभाल करने।”

अध्य. 33
1 यहे 2:5

अध्य. 34
2 यिर्म 23:1; मी 3:1, 11; सप 3:3; जक 11:17; मत 23:13
3 यश 40:11; यूह 21:15
4 2रा 21:16; यिर्म 22:17; मी 3:3; जक 11:4, 5
5 यश 56:11
6 लूक 15:4
7 यिर्म 22:13
8 यिर्म 23:2; यिर्म 50:6; मत 9:36

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 52:24-27
2 1शम 17:34, 35; भज 80:1; यश 56:8
3 यश 40:11
4 योए 2:1, 2; सप 1:14, 15
5 यिर्म 23:3; यहे 11:17; आम 9:14; मी 7:14
6 यश 25:6; यश 30:23; यिर्म 31:12
7 यिर्म 33:12

इसराएल के पहाड़ों पर बढ़िया-से-बढ़िया
चरागाहों में चरा करेंगी।”
15 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, “मैं अपनी भेड़ों को खुद
चराऊँगा[1] और आराम करने की जगह
ले जाऊँगा।[2] 16 मैं खोयी हुई भेड़
को ढूँढ़ूँगा,[3] भटकी हुई को वापस
लाऊँगा, जो घायल है उसकी मरहम-पट्टी
करूँगा और जो कमज़ोर है उसे मज़बूत
करूँगा, मगर जो मोटी-ताज़ी और तगड़ी
है उसे मिटा डालूँगा। मैं उसका न्याय
करके उसे सज़ा दूँगा।”
17 मेरी भेड़ो, सारे जहान का मालिक
यहोवा तुमसे कहता है, “मैं बहुत जल्द
झुंड की भेड़ों, मेढ़ों और बकरों का न्याय
करनेवाला हूँ।[4] 18 तुमने बढ़िया-
बढ़िया चरागाहों में खूब खाया है। क्या
यह काफी नहीं था जो अब बाकी चरा-
गाहों को अपने पैरों से रौंदने लगे हो?
तुमने जी-भरकर साफ पानी पीया है।
क्या यह काफी नहीं था जो अब बाकी
पानी को पैर मार-मारकर गंदा करते
हो? 19 क्या मेरी भेड़ें उन चरागाहों में
चरें जिन्हें तुमने रौंद डाला है और वह
पानी पीएँ जो तुमने पैर मारकर गंदा कर
दिया है?”
20 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा उनसे कहता है, “देखो, मैं मोटी-
ताज़ी भेड़ और दुबली-पतली भेड़
का न्याय खुद करूँगा 21 क्योंकि तुम
बीमार भेड़ों को अपने पांजर और कंधों से
धकेलते रहते हो और सींगों से तब तक
मारते रहते हो जब तक कि वे दूर-दूर तक
तितर-बितर न हो जाएँ। 22 मैं अपनी
भेड़ों को बचाऊँगा और वे फिर कभी
किसी का शिकार नहीं होंगी।[5] मैं हरेक
भेड़ का न्याय करूँगा। 23 मैं उन सब
पर एक चरवाहे को, अपने सेवक दाविद
को ठहराऊँगा[1] और वह उन्हें चराएगा।
वह खुद उन्हें चराएगा और उनका चर-
वाहा बन जाएगा।[2] 24 मैं यहोवा
उनका परमेश्वर होऊँगा[3] और मेरा
सेवक दाविद उनका प्रधान होगा।[4] यह
बात मुझ यहोवा ने कही है।
25 मैं उनके साथ एक शांति का
करार करूँगा[5] और देश से खूँखार
जंगली जानवरों को निकाल दूँगा[6] ताकि
वे लोग वीराने में महफ़ूज़ रह सकें और
जंगलों में सो सकें।[7] 26 मैं उन्हें और
उस पूरे इलाके को, जो मेरी पहाड़ी के
आस-पास है, एक आशीष ठहराऊँगा।[8]
मैं वक्त पर बारिश कराऊँगा और वहाँ
आशीषों की बौछार होगी।[9] 27 मैदान
के पेड़ फलेंगे और ज़मीन अपनी उपज
दिया करेगी[10] और वे देश में मह-
फ़ूज़ बसे रहेंगे। जब मैं उनकी गुलामी का
जुआ तोड़ डालूँगा[11] और उन्हें उन लोगों
के हाथ से छुड़ाऊँगा जिन्होंने उन्हें गुलाम
बना लिया है, तो उन्हें जानना होगा कि
मैं यहोवा हूँ। 28 इसके बाद फिर कभी
दूसरे राष्ट्र उन्हें अपना शिकार नहीं बना
सकेंगे और जंगली जानवर उन्हें नहीं खा
सकेंगे। वे महफ़ूज़ बसे रहेंगे और उन्हें
कोई नहीं डराएगा।[12]
29 मैं उन्हें ऐसा बाग दूँगा जिसका
बड़ा नाम होगा और वे फिर कभी
देश में अकाल से नहीं मरेंगे[13] और
दूसरे राष्ट्र उन्हें नीचा नहीं दिखाएँगे।[14]
30 सारे जहान का मालिक यहोवा ऐलान
करता है, ‘तब उन्हें जानना होगा कि
मैं उनका परमेश्वर यहोवा उनके साथ हूँ
और इसराएल के घराने के वे लोग मेरी
प्रजा हैं।’”’[15]
31 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, ‘तुम लोग मेरी भेड़ें
हो[16] जिनकी मैं देखभाल करता हूँ। तुम

अध्य. 34
1 यिर्म 3:15
2 सप 3:13
3 मी 4:6
मत 15:24
लूक 15:4
4 जक 10:3
5 यश 40:11
यिर्म 23:3

दूसरा कॉल.
1 यश 11:1
यिर्म 30:9
यूह 10:11
इब्र 13:20
1पत 5:4
प्रक 7:17
2 यहे 37:24
हो 3:5
3 निर्ग 29:45
यिर्म 31:1
4 भज 2:6
यश 9:6
यिर्म 23:5
मी 5:2
लूक 1:32
प्रेष 5:31
5 यहे 37:26
6 लैव 26:6
यश 11:6-9
यश 35:9
यश 65:25
हो 2:18
7 यिर्म 23:6
यिर्म 33:16
8 यश 56:7
यहे 20:40
मी 4:1
9 उत 12:2, 3
व्य 28:12
जक 8:13
10 लैव 26:4
भज 85:12
यश 35:2
यहे 36:30
11 लैव 26:13
12 यिर्म 30:10
यिर्म 46:27
13 यहे 36:29
14 यहे 36:15
15 यहे 37:27
16 भज 78:52
भज 100:3
यश 40:11

अदना इंसान हो और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ।'"

35

यहोवा का संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, 2 "इंसान के बेटे, सेईर के पहाड़ी प्रदेश[1] की तरफ मुँह कर और उसके खिलाफ भविष्यवाणी कर।[2] 3 उससे कहना, 'सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, "हे सेईर के पहाड़ी प्रदेश, मैं तेरे खिलाफ हूँ। मैं अपना हाथ तेरे खिलाफ बढ़ाऊँगा और तुझे उजाड़कर वीराना बना दूँगा।[3] 4 मैं तेरे शहरों को खंडहर बना दूँगा और तू बिलकुल वीरान हो जाएगा[4] और तुझे जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ। 5 क्योंकि तूने हमेशा इसराएलियों से दुश्मनी की है[5] और जब वे मुसीबत में थे और उन्हें सज़ा देकर उनका अंत करने का समय आया, तब तूने उन्हें पकड़कर तलवार के हवाले कर दिया था।"'[6]

6 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'इसलिए मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ, मैंने तेरी मौत तय कर दी है और मौत तेरा पीछा नहीं छोड़ेगी।[7] तूने जिन लोगों से नफरत की थी उनका तूने खून बहा दिया था। इसलिए तेरा भी खून बहा दिया जाएगा।[8] 7 मैं सेईर के पहाड़ी प्रदेश को उजाड़कर वीराना बना दूँगा[9] और वहाँ से गुज़रनेवाले और लौटनेवाले हर किसी को नाश कर दूँगा। 8 मैं उसके पहाड़ों को मारे गए लोगों की लाशों से भर दूँगा। तेरी पहाड़ियों पर और घाटियों और नदियों में भी तलवार से मारे गए लोगों की लाशें पड़ी रहेंगी। 9 मैं तुझे हमेशा के लिए उजाड़ दूँगा और तेरे शहर फिर कभी आबाद नहीं किए जाएँगे[10] और तुझे जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।'

10 हालाँकि मैं यहोवा खुद उन दोनों देशों में मौजूद था, फिर भी तूने कहा, 'ये दोनों राष्ट्र और ये दोनों देश मेरे हो जाएँगे, इन दोनों पर हमारा कब्ज़ा हो जाएगा।'[1] 11 इसलिए सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ, जिस तरह तूने उनसे नफरत की, उन पर गुस्सा उतारा और उनसे जलन की, उसी तरह मैं भी तेरे साथ पेश आऊँगा।[2] जब मैं तेरा न्याय करूँगा तो उनके बीच खुद को प्रकट करूँगा। 12 तब तुझे जानना होगा कि मुझ यहोवा ने वह सारी अपमान की बातें सुनी हैं जो तूने इसराएल के पहाड़ों के बारे में कही थीं। तूने कहा था, "उन्हें उजाड़ दिया गया है और हमें दे दिया गया है ताकि हम उन्हें खा जाएँ।" 13 तूने घमंड से भरकर मेरे खिलाफ बहुत-सी बातें की थीं।[3] मैंने तेरी एक-एक बात सुनी है।'

14 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'जब मैं तुझे उजाड़कर वीराना बना दूँगा तब सारी धरती खुशियाँ मनाएगी। 15 जब इसराएल के घराने की विरासत उजाड़ दी गयी थी तब तूने जश्न मनाया था। अब मैं भी तेरा वही हाल करूँगा।[4] हे सेईर के पहाड़ी प्रदेश, हाँ, एदोम के पूरे इलाके, तुझे उजाड़कर खंडहर बना दिया जाएगा[5] और उन्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।'"

36

"इंसान के बेटे, इसराएल के पहाड़ों के बारे में यह भविष्यवाणी कर: 'इसराएल के पहाड़ो, यहोवा का संदेश सुनो। 2 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, "दुश्मनों ने तुम्हारे बारे में कहा है, 'अरे वाह! पुराने ज़माने की ऊँची-ऊँची जगह भी हमारे कब्ज़े में आ गयीं!'"'[6]

अध्य. 35

1 उत 32:3; व्य 2:5
2 यिर्म 49:8; विल 4:22; यहे 25:8, 9; ओब 1
3 यहे 25:12, 13
4 योए 3:19; मला 1:3
5 उत 27:41; आम 1:11
6 भज 137:7; ओब 10
7 ओब 15
8 यहे 25:14
9 यहे 25:13
10 यिर्म 49:17, 18; यहे 25:13; मला 1:4

दूसरा कॉल.

1 यहे 36:5; ओब 13
2 आम 1:11
3 ओब 3
4 विल 4:21; ओब 12, 15
5 यश 34:5; यहे 25:12, 13; यहे 36:5

अध्य. 36

6 यिर्म 49:1; यहे 35:10

3 इसलिए यह भविष्यवाणी कर:
‘सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है,
“उन्होंने तुम्हें उजाड़ दिया और हर दिशा
से तुम पर हमला किया ताकि दूसरे राष्ट्रों
के बचे हुए लोग तुम पर कब्ज़ा कर लें
और लोग तुम्हारे बारे में झूठी बातें कह-
कर तुम्हें बदनाम करते रहें।[1] 4 इस-
लिए इसराएल के पहाड़ो, सारे जहान के
मालिक यहोवा का संदेश सुनो! सारे
जहान का मालिक यहोवा पहाड़ों और
पहाड़ियों से, नदियों और घाटियों से,
उजड़े हुए खंडहरों से[2] और उन वीरान
शहरों से बात करता है जिन्हें आस-पास
के राष्ट्रों के बचे हुए लोगों ने लूटा और
जिनका मज़ाक उड़ाया।[3] 5 इन सबसे
सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है,
‘दूसरे राष्ट्रों के बचे हुए लोगों पर और
पूरे एदोम पर मेरे क्रोध की आग भड़क
उठेगी[4] और मैं उन्हें फैसला सुनाऊँगा।
उन्होंने बड़ी खुशी से और मेरे लोगों को
नीचा दिखाते हुए[5] मेरे देश के बारे में
दावा किया है कि यह उनकी जागीर है
ताकि वे इसके चराईवाले मैदान हड़प लें
और इसे लूट लें।’”’[6]

6 इसराएल देश के बारे में भविष्य-
वाणी कर और पहाड़ों और पहाड़ियों से,
नदियों और घाटियों से कह, ‘सारे जहान
का मालिक यहोवा कहता है, “देखो! मैं
क्रोध और जलजलाहट में आकर दूसरे
देशों को फैसला सुनाऊँगा क्योंकि उन्होंने
तेरी बेइज़्ज़ती की है।”’[7]

7 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, ‘मैं अपना हाथ ऊपर
उठाता हूँ और शपथ खाकर कहता
हूँ कि आस-पास के राष्ट्रों ने जिस
तरह तुम्हारी बेइज़्ज़ती की है, उसी
तरह उन्हें भी बेइज़्ज़त होना पड़ेगा।[8]
8 मगर हे इसराएल के पहाड़ो, तुम
मेरी प्रजा इसराएल के लिए डालियाँ और
फल पैदा करोगे[1] क्योंकि वे बहुत जल्द
लौट आएँगे। 9 मैं तुम्हारे साथ हूँ और
एक बार फिर मैं तुम पर ध्यान दूँगा
और तुम्हारी ज़मीन जोती-बोई जाएगी।
10 मैं तुम्हारे लोगों की, पूरे इसराएल
के घराने की गिनती कई गुना बढ़ाऊँगा।
उसके शहर फिर से आबाद किए जाएँगे[2]
और खंडहर दोबारा बनाए जाएँगे।[3]
11 हाँ, मैं तुम्हारे लोगों और मवेशियों
की गिनती कई गुना बढ़ाऊँगा,[4] उनकी
तादाद बढ़ती जाएगी और वे खूब फलेंगे-
फूलेंगे। मैं तुम्हें पहले की तरह आबाद
करूँगा[5] और तुम्हें पहले से ज़्यादा खुश-
हाली दूँगा[6] और तुम्हें जानना होगा कि
मैं यहोवा हूँ।[7] 12 मैं अपनी प्रजा इस-
राएल के लोगों को तुम पर चलाऊँगा
और वे तुम पर कब्ज़ा कर लेंगे।[8]
तुम उनकी विरासत बन जाओगे और
फिर कभी तुम उनसे उनके बच्चे नहीं
छीनोगे।’”[9]

13 “सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, ‘वे तुम्हारे बारे में कहते हैं,
“तुम ऐसा देश हो जो लोगों को निगल
जाता है और राष्ट्रों से उनके बच्चों
को छीन लेता है।”’ 14 सारे जहान का
मालिक यहोवा ऐलान करता है, ‘मगर
अब तुम फिर कभी लोगों को नहीं
खाओगे और न ही राष्ट्रों से उनके बच्चों
को छीनोगे। 15 मैं तुम्हें दूसरे राष्ट्रों के
हाथों अपमान झेलने के लिए उनके हवाले
नहीं करूँगा और न ही तुम्हें लोगों के
ताने सहने पड़ेंगे।[10] और तुम फिर कभी
अपने राष्ट्रों के लिए ठोकर की वजह नहीं
बनोगे।’ सारे जहान के मालिक यहोवा
का यह ऐलान है।”

16 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,

अध्य. 36

1 व्य 28:37, 1रा 9:7, विल 2:15, दान 9:16
2 यिर्म 25:9
3 भज 79:4, यहे 34:28
4 सप 3:8
5 ओब 12
6 यहे 25:12, 13, यहे 35:10, 11, आम 1:11
7 भज 74:10, भज 123:4
8 यिर्म 25:9, यिर्म 49:17

दूसरा कॉल.

1 यश 44:23, यश 51:3, यहे 36:30
2 जक 8:4
3 यश 51:3, यिर्म 30:18, 19, आम 9:14
4 यिर्म 31:27
5 यश 54:7, यिर्म 30:18
6 हाग 2:9
7 हो 2:20, योए 3:17
8 यिर्म 32:44, ओब 17
9 यश 65:23
10 यश 54:4, यश 60:14, मी 7:8, सप 2:8, सप 3:19

17 “इंसान के बेटे, जब इसराएल के
घराने के लोग अपने देश में रहते थे,
तब उन्होंने अपने चालचलन और तौर-
तरीकों से देश को अशुद्ध कर दिया था।[1]
मेरी नज़र में उनका चालचलन उतना ही
अशुद्ध था जितना कि माहवारी की
अशुद्धता।[2] **18** उन्होंने देश में खून
की नदियाँ बहा दी थीं और अपनी घिनौनी
मूरतों* से देश को अशुद्ध कर दिया
था,[3] इसलिए मैंने उन पर अपने क्रोध
का प्याला उँडेला।[4] **19** मैंने उन्हें दूसरे
राष्ट्रों में तितर-बितर कर दिया और
अलग-अलग देशों में बिखरा दिया।[5]
मैंने उनके चालचलन और तौर-तरीकों
के मुताबिक उन्हें सज़ा दी। **20** मगर
जब वे दूसरे राष्ट्रों में गए तो वहाँ
के लोगों ने उनके बारे में यह कहकर
मेरे पवित्र नाम का अपमान किया:[6] ‘ये
यहोवा के लोग हैं, मगर इन्हें उसका देश
छोड़ना पड़ा।’ **21** इसराएल का घराना
जब दूसरे राष्ट्रों में गया तो उसने मेरे
पवित्र नाम का अपमान किया, इसलिए
अब मैं दिखाऊँगा कि मैं अपने पवित्र नाम
की कितनी फिक्र करता हूँ।”[7]

22 “इसलिए इसराएल के घराने से
कहना, ‘सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, “हे इसराएल के घराने के
लोगो, मैं तुम्हारी खातिर नहीं बल्कि
अपने पवित्र नाम की खातिर कदम
उठानेवाला हूँ जिसका तुमने दूसरे राष्ट्रों
के बीच अपमान किया है।”’[8] **23** सारे
जहान का मालिक यहोवा कहता है,
‘मैं अपने महान नाम को ज़रूर पवित्र
करूँगा,[1] जिसका तुमने दूसरे राष्ट्रों के
बीच अपमान किया था। जब दूसरे राष्ट्रों
के देखते मैं तुम्हारे बीच पवित्र ठहरूँगा
तो उन्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।[2]
24 मैं तुम्हें अलग-अलग राष्ट्रों से लूँगा,
सब देशों से इकट्ठा करूँगा और वापस
तुम्हारे देश में ले आऊँगा।[3] **25** मैं तुम
पर शुद्ध पानी छिड़कूँगा और तुम शुद्ध
हो जाओगे।[4] मैं तुम्हारी सारी अशुद्धता
और तुम्हारी घिनौनी मूरतों[5] की अशुद्ध-
ता दूर करके तुम्हें शुद्ध कर दूँगा।[6]
26 मैं तुम्हें एक नया दिल दूँगा[7] और
तुम्हारे अंदर एक नया रुझान पैदा
करूँगा।[8] तुम्हारा दिल जो पत्थर जैसा
सख्त हो गया था,[9] उसके बदले मैं तुम्हें
एक ऐसा दिल दूँगा जो कोमल होगा।*
27 मैं अपनी पवित्र शक्ति से तुम्हारी
सोच बदल दूँगा और तब तुम मेरे
कायदे-कानूनों को मानोगे[10] और मेरे
न्याय-सिद्धांतों का पालन किया करोगे।
28 फिर तुम उस देश में रह पाओगे जो
मैंने तुम्हारे पुरखों को दिया था। तुम मेरे
लोग होगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर
होऊँगा।’[11]

29 ‘मैं तुम्हारी सारी अशुद्धता दूर
करके तुम्हें बचाऊँगा, अनाज को अच्छी
पैदावार देने का हुक्म दूँगा और तुम पर
अकाल नहीं लाऊँगा।[12] **30** मैं पेड़ों के
फल और खेतों की उपज खूब बढ़ाऊँगा
ताकि तुम्हें फिर कभी अकाल की वजह
से राष्ट्रों के बीच बेइज़्ज़त न होना पड़े।[13]
31 उस वक्त तुम याद करोगे कि तुमने
कैसे दुष्ट काम किए थे और तुम्हारे काम
अच्छे नहीं थे और तब अपने पाप के दोष
की वजह से और उन घिनौने कामों की

36:18 *इनका इब्रानी शब्द शायद “मल” के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

36:26 *यानी ऐसा दिल जो परमेश्वर का मार्गदर्शन मानने को तैयार होगा।

अध्य. 36

1 भज 106:38, यश 24:5, यिर्म 2:7, यिर्म 16:18
2 लैव 12:2, यश 64:6
3 यहे 23:37
4 यश 42:24, 25
5 लैव 26:38, यहे 22:15
6 यश 52:5, रोम 2:24
7 भज 74:18, यश 48:9, यहे 20:9
8 भज 106:7, 8

दूसरा कॉल.

1 यश 5:16, यहे 20:41
2 भज 102:13-15
3 व्य 30:3, यश 43:5, यिर्म 23:3, यहे 34:13, हो 1:11
4 गि 19:13, भज 51:7
5 यहे 6:4
6 यश 4:4, यिर्म 33:8
7 यिर्म 32:39
8 भज 51:10, यहे 11:19, 20
9 जक 7:12
10 यिर्म 31:33
11 यिर्म 30:22, यहे 37:25, 27
12 यहे 34:29
13 यहे 34:27

वजह से तुम्हें खुद से घिन हो जाएगी।[1]
32 मगर तुम यह बात जान लो, मैं यह
सब तुम्हारी खातिर नहीं कर रहा हूँ।[2] हे
इसराएल के घराने, अपने चालचलन की
वजह से शर्मिंदा महसूस कर, अपमान
सह।' सारे जहान के मालिक यहोवा का
यह ऐलान है।

33 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'जिस दिन मैं तुम्हारे सभी
पापों का दोष मिटाकर तुम्हें शुद्ध करूँगा,
उस दिन मैं शहरों को फिर से आबाद
करूँगा[3] और खंडहरों को दोबारा बनाऊँ-
गा।[4] 34 वह देश जो सब आने-जाने-
वालों के सामने उजाड़ पड़ा है उसकी
ज़मीन पर खेती की जाएगी। 35 और
लोग कहेंगे, "यह देश जो कभी उजाड़
पड़ा था, अब अदन के बाग[5] जैसा बन
गया है। इसके शहरों को तहस-नहस
करके खंडहर बना दिया गया था, मगर
अब वे किलेबंद शहर बन गए हैं और
लोगों से आबाद हैं।"[6] 36 तब तुम्हारे
आस-पास बचे हुए राष्ट्रों को जानना
होगा कि जिसे ढा दिया गया था उसे मुझ
यहोवा ने ही बनाया है और जो ज़मीन
उजाड़ पड़ी थी वहाँ मैंने ही पेड़ लगाए हैं।
मुझ यहोवा ने यह बात कही है और मैंने
ही इसे पूरा किया है।'[7]

37 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'मैं इसराएल के घराने को यह
बिनती करने दूँगा कि मैं उन्हें भेड़-बक-
रियों के एक झुंड की तरह कई गुना बढ़ा
दूँ। 38 जैसे पवित्र लोगों की भीड़ होती
है और यरूशलेम में त्योहार के वक्त[8]
जानवरों का बड़ा झुंड होता है* उसी
तरह ये शहर जो अब खंडहर हैं, लोगों
के झुंड से भर जाएँगे।[1] तब उन्हें जानना
होगा कि मैं यहोवा हूँ।'"

37 यहोवा का हाथ मुझ पर था और
यहोवा अपनी पवित्र शक्ति से
मुझे बाहर ले गया और उसने मुझे
घाटी के मैदान के बीचों-बीच लाकर खड़ा
किया।[2] वह मैदान हड्डियों से भरा था।
2 उसने मुझे उनके चारों तरफ घुमाया
और मैंने देखा कि उस मैदान में हड्डियाँ-
ही-हड्डियाँ भरी हैं और वे सभी एकदम
सूखी हैं।[3] 3 उसने मुझसे पूछा, "इंसान
के बेटे, क्या इन हड्डियों में दोबारा जान
आ सकती है?" मैंने कहा, "हे सारे
जहान के मालिक यहोवा, यह तो सिर्फ तू
जानता है।"[4] 4 तब उसने मुझसे कहा,
"इन हड्डियों के बारे में भविष्यवाणी कर
और उनसे कह, 'सूखी हड्डियो, यहोवा का
यह संदेश सुनो:

5 सारे जहान का मालिक यहोवा इन
हड्डियों से कहता है, "मैं तुम्हारे अंदर साँस
फूँकूँगा और तुम ज़िंदा हो जाओगी।[5]
6 मैं तुम पर नसें लगाऊँगा, माँस भरूँगा,
खाल चढ़ाऊँगा और तुममें साँस फूँकूँगा
और तब तुम ज़िंदा हो जाओगी। और
तुम्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।"'"

7 फिर मैं भविष्यवाणी करने लगा
ठीक जैसे मुझे आज्ञा दी गयी थी। मैं
भविष्यवाणी कर ही रहा था कि मुझे ज़ोर
की खड़खड़ाहट सुनायी पड़ी और मैंने
देखा कि हड्डियाँ एक-दूसरे से जुड़ने लगी
हैं। 8 फिर मैंने देखा कि हड्डियों पर नसें
लग रही हैं, माँस भर रहा है और खाल
चढ़ रही है। लेकिन अब भी उनमें साँस
नहीं थी।

9 फिर उसने मुझसे कहा, "हवा को
भविष्यवाणी सुना। इंसान के बेटे, हवा
को भविष्यवाणी सुना और उससे कह,
'सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है,

अध्य. 36
1 एज 9:6; नहे 9:26; यिर्म 31:18; यहे 6:9
2 व्य 9:5; दान 9:19
3 जक 8:8
4 यश 58:12; यिर्म 33:10, 11; आम 9:14
5 उत 2:8
6 यश 51:3
7 यहे 28:26; यहे 37:14
8 निर्ग 23:17

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 30:18, 19

अध्य. 37
2 प्रक 21:10
3 यहे 37:11
4 व्य 32:39; 1शम 2:6
5 उत 2:7; यहे 37:14

36:38 *या शायद, "जैसे त्योहार के वक्त यरूशलेम में बलि के लिए भेड़ों का झुंड होता है।"

"हे हवा,* चारों दिशाओं से आकर इन
मारे गए लोगों में समा जा ताकि ये ज़िंदा
हो जाएँ।"'"

10 तब जैसे मुझे बताया गया था, मैंने
हवा को भविष्यवाणी सुनायी। तब उनमें
साँस आ गयी और वे ज़िंदा हो गए और
अपने पैरों पर उठ खड़े हुए।[1] और वे
एक बहुत बड़ी सेना बन गए।

11 फिर उसने मुझसे कहा, "इंसान
के बेटे, इन हड्डियों का मतलब इसराएल
का पूरा घराना है।[2] वे कहते हैं, 'हमारी
हड्डियाँ सूख गयी हैं, हमारी आशा मिट
चुकी है।[3] हमें पूरी तरह काट डाला गया
है।' **12** इसलिए तू उन्हें यह भविष्य-
वाणी सुना, 'सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, "मेरे लोगो, मैं तुम्हारी
कब्रें खोलकर[4] तुम्हें वहाँ से उठाऊँगा
और इसराएल देश ले जाऊँगा।[5]
13 मेरे लोगो, जब मैं तुम्हारी कब्रें
खोलूँगा और तुम्हें वहाँ से उठाऊँगा तब
तुम्हें जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ।"'[6]
14 'मैं तुममें अपनी पवित्र शक्ति डालूँगा
और तुम ज़िंदा हो जाओगे।[7] मैं तुम्हें
तुम्हारे देश में बसाऊँगा और तुम्हें जानना
होगा कि यह बात मुझ यहोवा ने कही है
और मैंने ही इसे पूरा किया है।' यहोवा
का यह ऐलान है।"

15 यहोवा का संदेश एक बार फिर
मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा,
16 "इंसान के बेटे, एक छड़ी ले और उस
पर यह लिख, 'यहूदा के लिए और इस-
राएल के लोगों के लिए जो उसके साथ*
हैं।'[8] फिर एक और छड़ी ले और उस पर
यह लिख, 'एप्रैम की छड़ी, यूसुफ के
लिए और इसराएल के पूरे घराने के
लिए जो उसके साथ# है।'[9] **17** फिर
उन छड़ियों को एक-दूसरे के पास ला
ताकि वे दोनों तेरे हाथ में जुड़कर एक
छड़ी बन जाएँ।[1] **18** जब तेरे लोग*
तुझसे कहेंगे, 'क्या तू हमें नहीं बताएगा
कि इन सब बातों का क्या मतलब है?'
19 तो तू उनसे कहना, 'सारे जहान का
मालिक यहोवा कहता है, "मैं एप्रैम के
हाथ से यूसुफ की छड़ी लूँगा और इस-
राएल के सभी गोत्रों को लूँगा जो यूसुफ
के साथ हैं और उन्हें यहूदा की छड़ी से
जोड़ दूँगा और दोनों को एक ही छड़ी
बनाऊँगा[2] और वे मेरे हाथ में एक छड़ी
बन जाएँगे।"' **20** वे छड़ियाँ जिन पर
तू लिखेगा, तेरे हाथ में ही रहें ताकि लोग
उन्हें देख सकें।

21 फिर तू लोगों को बताना, 'सारे
जहान का मालिक यहोवा कहता है,
"मैं इसराएलियों को उन राष्ट्रों से निका-
लूँगा जहाँ वे चले गए हैं और उन्हें
हर दिशा से इकट्ठा करके उनके अपने
देश ले जाऊँगा।[3] **22** फिर इसराएल
के पहाड़ों पर मैं उनके देश में उन सबसे
एक राष्ट्र बनाऊँगा[4] और उन सब पर
एक ही राजा राज करेगा।[5] इसके बाद
वे दो अलग-अलग राष्ट्र नहीं होंगे,
न ही दो राज्यों में बँटे हुए होंगे।[6]
23 वे फिर कभी अपनी घिनौनी मूरतों,*
अपने नीच कामों और अपराधों से खुद
को दूषित नहीं करेंगे।[7] उन्होंने मेरे साथ
विश्वासघात करके जो-जो पाप किए थे
उनसे छुड़ाकर मैं उन्हें शुद्ध करूँगा। तब
वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर
होऊँगा।[8]

अध्य. 37
1 प्रक 11:11
2 यहे 36:10
3 यश 49:14
4 यश 66:14
5 यहे 11:17; आम 9:14
6 भज 126:2
7 यश 32:14, 15; यहे 36:27
8 2इत 15:9; 2इत 30:11
9 1रा 11:31; 1रा 12:20

दूसरा कॉल.
1 यश 11:13; यिर्म 3:18
2 यिर्म 50:4; जक 10:6
3 व्य 30:3; यश 11:12; यिर्म 16:14, 15; आम 9:14
4 यिर्म 3:18; हो 1:11
5 उत 49:10; भज 2:6; यश 9:6; यिर्म 23:5; लूक 1:32
6 यहे 37:19; जक 10:6
7 यश 2:18; यहे 11:18; हो 14:8; जक 13:2
8 यिर्म 31:33; यहे 36:28

37:9 *या "साँस।" **37:16** *या "साझे-दार।" #या "उसका साझेदार।"

37:18 *शा., "तेरे लोगों के बेटे।" **37:23** *इनका इब्रानी शब्द शायद "मल" के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

24 मेरा सेवक दाविद उनका राजा होगा[1] और उन सबका एक ही चरवाहा होगा।[2] वे मेरे न्याय-सिद्धांतों को मानेंगे और मेरी विधियों का सख्ती से पालन करेंगे।[3] 25 वे उस देश में बसेंगे जो मैंने अपने सेवक याकूब को दिया था और जहाँ तुम्हारे बाप-दादे रहते थे।[4] वे और उनके बच्चे* और नाती-पोते सदा उसमें बसे रहेंगे।[5] और मेरा सेवक दाविद सदा के लिए उनका प्रधान# बना रहेगा।[6]

26 मैं उनके साथ एक शांति का करार करूँगा।[7] यह करार सदा तक कायम रहेगा। मैं उन्हें उनके देश में बसाऊँगा और उनकी गिनती बढ़ाऊँगा[8] और उनके बीच सदा के लिए अपना पवित्र-स्थान खड़ा करूँगा। 27 मेरा डेरा* उनके बीच होगा# और मैं उनका परमेश्‍वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे।[9] 28 जब मेरा पवित्र-स्थान सदा के लिए उनके बीच बना रहेगा तो सभी राष्ट्रों को जानना होगा कि मैं यहोवा इसराएल को पवित्र कर रहा हूँ।"'"[10]

38 यहोवा का संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा। उसने मुझसे कहा, 2 "इंसान के बेटे, मागोग देश के गोग[11] की तरफ मुँह कर जो मेशेक और तूबल[12] के प्रधानों का मुखिया* है और उसके खिलाफ यह भविष्यवाणी कर:[13] 3 'सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, "हे गोग, मेशेक और तूबल के प्रधानों के मुखिया,* देख मैं तेरे खिलाफ हूँ। 4 मैं तुझे फेर दूँगा, तेरे जबड़ों में काँटे डालूँगा[1] और तुझे तेरी पूरी सेना समेत खींच लाऊँगा,[2] तेरे घोड़ों और घुड़सवारों को, जो बढ़िया और शानदार कपड़े पहने हैं। तेरी उस बड़ी टोली को मैं खींच लाऊँगा जो बड़ी ढालों, छोटी ढालों* और तलवारों से लैस है। 5 उनके साथ फारस, इथियोपिया और पुट[3] के सैनिक भी हैं जो हाथ में छोटी ढाल लिए और सिर पर टोप पहने हैं। 6 गोमेर और उसकी सारी टुकड़ियाँ और उत्तर के दूर-दराज़ इलाकों से तोगरमा का घराना[4] और उनकी सारी टुकड़ियाँ भी तेरे साथ हैं। तेरे साथ कई देश हैं।[5]

7 तू अपनी सारी सेनाओं के साथ तैयार हो जा, युद्ध के लिए तैयार हो जा। तू उन सबका सेनापति होगा।

8 कई दिन बीतने के बाद तुझ पर ध्यान दिया जाएगा।* आखिरकार कई सालों बाद तू उस देश पर धावा बोल देगा, जिसके लोग तलवार से घाव खाने के बाद बहाल किए गए थे। उन्हें कई देशों से इकट्ठा करके इसराएल के पहाड़ों पर बसाया गया था जो लंबे अरसे से उजाड़ पड़े थे। इस देश के निवासियों को दूसरे देशों से निकालकर वापस उनके अपने देश में बसाया गया था और वे सब महफूज़ जी रहे हैं।[6] 9 तू तेज़ आँधी की तरह उन पर टूट पड़ेगा और अपनी सेनाओं और कई देशों के साथ उनके देश को बादलों की तरह ढक लेगा।"'

10 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, 'उस दिन तेरे मन में तरह-तरह के विचार उठेंगे और तू एक साज़िश रचेगा। 11 तू कहेगा, "मैं जाकर उस देश पर धावा बोलूँगा जिसकी बस्तियों की

37:25 *शा., "बेटे।" #या "हाकिम।" **37:27** *या "निवास-स्थान; घर।" #या "उनके ऊपर तना रहेगा।" **38:2** *या "का प्रधान हाकिम।" **38:3** *या "प्रधान हाकिम।"

38:4 *ये ढालें अकसर तीरंदाज़ ढोते थे। **38:8** *या "तुझे बुलाया जाएगा।"

अध्य. 37

1 यिर्म 23:5, यिर्म 30:9, हो 3:5, लूक 1:32
2 यूह 10:16, 1पत 5:4
3 व्य 30:8-10, यिर्म 32:39, यहे 36:27
4 यिर्म 30:3
5 यश 60:21, योए 3:20, आम 9:15
6 यहे 34:24, लूक 1:32
7 यहे 34:25
8 यिर्म 30:19, जक 8:5
9 लैव 26:12, यहे 11:19, 20, यहे 43:7, हो 2:23, प्रक 21:3
10 यहे 36:23

अध्य. 38

11 यहे 38:15
12 यश 66:19, यहे 27:13, यहे 32:26
13 यहे 39:1

दूसरा कॉल.

1 2रा 19:20, 28, यहे 29:3, 4, यहे 39:2
2 यहे 38:15
3 1इत 1:8
4 उत 10:2, 3, यहे 27:14
5 यहे 39:2
6 यिर्म 23:5, 6, यहे 28:25, 26, यहे 34:25

हिफ़ाज़त के लिए कोई दीवार नहीं है।*[1]
मैं उन लोगों पर हमला करूँगा जो बिना
किसी डर के महफ़ूज़ जी रहे हैं। वे सब
ऐसी बस्तियों में रहते हैं जिनकी हिफ़ाज़त
के लिए न कोई दीवार है, न कोई फाटक
और न बेड़े।” 12 तू सोचेगा कि मैं
जाकर पूरे देश को लूट लूँगा और वहाँ
से खूब सारा माल बटोरकर लाऊँगा।
मैं उन सारी जगहों पर हमला करूँगा जो
पहले उजाड़ पड़ी थीं मगर अब आबाद
हैं।[2] मैं उन लोगों पर हमला करूँगा जिन्हें
दूसरे राष्ट्रों से दोबारा इकट्ठा किया गया
है[3] और जो अब धरती के बीचों-बीच
रहते हैं और अपनी धन-संपत्ति बढ़ाते जा
रहे हैं।[4]

13 शीबा[5] और ददान,[6] साथ ही तर-
शीश के व्यापारी[7] और उसके सभी वीर
योद्धा* तुझसे कहेंगे, “क्या तू उस देश
पर धावा बोलकर खूब सारा माल और
लूट बटोरने जा रहा है? क्या तूने सोना-
चाँदी और दौलत लूटने, ज़मीन-जाय-
दाद हड़पने और खूब सारी लूट ले
जाने के लिए अपनी सेनाओं को तैयार
किया है?”’

14 इसलिए इंसान के बेटे, तू गोग को
यह भविष्यवाणी सुनाः ‘सारे जहान का
मालिक यहोवा कहता है, “उस दिन जब
मेरे लोग महफ़ूज़ बसे रहेंगे तो बेशक
तेरी नज़र उन पर पड़ेगी।[8] 15 तू
उत्तर से, अपने दूर-दराज़ इलाकों से
आएगा।[9] तू और तेरे साथ बहुत-से
देश आएँगे, तुम सबकी बड़ी टोली और
विशाल सेना घोड़ों पर सवार होकर
आएगी।[10] 16 तुम मेरी प्रजा इसराएल
पर ऐसे धावा बोलोगे जैसे घने बादल एक
देश को ढक लेते हैं। हे गोग, मैं आखिरी
दिनों में तुझे अपने देश के खिलाफ
लाऊँगा[1] ताकि तेरी वजह से जब मैं
राष्ट्रों के सामने खुद को पवित्र ठहराऊँ
तो वे जान लें कि मैं कौन हूँ।”’[2]

17 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, ‘क्या तू वही नहीं जिसके बारे
में मैंने बहुत पहले अपने सेवकों से, इस-
राएल के भविष्यवक्ताओं से कहलवाया
था? उन्होंने कई सालों तक भविष्यवाणी
की थी कि तुझे इसराएलियों पर हमला
करने के लिए लाया जाएगा।’

18 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, ‘जिस दिन गोग इस-
राएल देश पर हमला करेगा, उस दिन मेरे
क्रोध की ज्वाला भड़क उठेगी।[3] 19 मैं
बड़ी जलजलाहट में आकर बोलूँगा और
उस दिन इसराएल देश में एक भारी
भूकंप होगा। 20 मेरी वजह से समुंदर
की मछलियाँ, आकाश के पक्षी, मैदान
के जंगली जानवर, ज़मीन पर रेंगनेवाले
सभी जीव और धरती के सभी इंसान
काँप उठेंगे और पहाड़ ढा दिए जाएँगे,[4]
खड़ी चट्टानें टूटकर गिर पड़ेंगी और हरेक
दीवार टूटकर गिर जाएगी।’

21 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, ‘मैं अपने सभी पहाड़ों
पर हुक्म दूँगा कि गोग पर तलवार
चलायी जाए। तब हर कोई अपने ही भाई
पर तलवार चलाएगा।[5] 22 मैं उस पर
महामारी लाकर[6] और खून की नदियाँ
बहाकर उसे सज़ा दूँगा।* मैं उस पर
और उसकी सारी सेनाओं और कई
देशों पर जो उसके साथ हैं, मूसला-
धार बारिश कराऊँगा, ओले, आग
और गंधक बरसाऊँगा।[7] 23 मैं बहुत-
से राष्ट्रों के देखते अपनी महिमा करूँगा,

अध्य. 38
1 निर्ग 15:9
2 यिर्म 33:12
3 जक 10:8
4 यश 60:5 यश 61:6
5 यहे 27:22
6 यहे 27:15
7 यहे 27:25
8 यहे 38:8
9 यहे 39:2
10 सप 3:8

दूसरा कॉल.
1 योए 3:2
2 निर्ग 14:4 2रा 19:17-19 भज 83:17, 18 यहे 39:21
3 योए 3:16 नहू 1:2 जक 2:8
4 नहू 1:5
5 2इत 20:23 हाग 2:22 जक 14:13
6 जक 14:12
7 उत 19:24 निर्ग 9:22 यह 10:11 यश 30:30 यिर्म 25:31

38:11 *या “जो खुली बस्तियों का देश है।” 38:13 *या “जवान शेर।”

38:22 *या “उससे मुकदमा लड़ूँगा।”

खुद को पवित्र ठहराऊँगा और खुद को
प्रकट करूँगा और उन्हें जानना होगा कि
मैं यहोवा हूँ।’

39 इंसान के बेटे, तू गोग के खिलाफ
यह भविष्यवाणी सुनाः[1] ‘सारे
जहान का मालिक यहोवा कहता है, “हे
गोग, मेशेक और तूबल[2] के प्रधानों के
मुखिया,* देख मैं तेरे खिलाफ हूँ। **2** मैं
तुझे घुमा दूँगा और हाँक-हाँकर तुझे उत्तर
के दूर-दराज़ इलाकों से निकलवाऊँगा[3]
और इसराएल के पहाड़ों पर ले आऊँगा।
3 मैं तुझे ऐसा मारूँगा कि तेरे बाएँ हाथ
से कमान और दाएँ हाथ से तीर गिर
जाएँगे। **4** तू इसराएल के पहाड़ों पर
गिर जाएगा,[4] तू और तेरी सारी टुकड़ियाँ
और वे देश जो तेरे साथ होंगे, सब ढेर
हो जाएँगे। मैं तुझे तरह-तरह के शिकारी
पक्षियों और मैदान के जंगली जानवरों का
निवाला बना दूँगा।”’[5]

5 ‘तू खुले मैदान में जा गिरेगा,[6]
क्योंकि यह बात मैंने कही है।’ सारे जहान
के मालिक यहोवा का यह ऐलान है।

6 ‘मैं मागोग पर और उन सभी
पर, जो द्वीपों में महफूज़ रहते हैं,
आग भेजूँगा[7] और उन्हें जानना होगा कि
मैं यहोवा हूँ। **7** मैं अपना पवित्र नाम
अपनी प्रजा इसराएल के बीच ज़ाहिर
करूँगा और फिर कभी अपने पवित्र नाम
का अपमान नहीं होने दूँगा और राष्ट्रों को
जानना होगा कि मैं यहोवा हूँ,[8] इसराएल
में पवित्र परमेश्वर।’[9]

8 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है, ‘हाँ, यह पूरा होने-
वाला है और ज़रूर होगा। यह वही
दिन है जिसके बारे में मैंने बताया
है। **9** इसराएल के लोग अपने-अपने
शहरों से बाहर निकल आएँगे और
सारे हथियारों को, छोटी ढालों,* बड़ी
ढालों, तीर-कमानों, युद्ध के लट्ठ# और
बरछियों को आग जलाने के काम में
लाएँगे।[1] वे सात साल तक इन्हीं से आग
जलाएँगे। **10** उन्हें मैदानों या जंगलों में
जाकर लकड़ियाँ इकट्ठी नहीं करनी पड़ेगी
क्योंकि वे इन्हीं हथियारों को जलाया
करेंगे।’

‘जिन लोगों ने उन्हें लूटा था उन्हीं
को वे लूटेंगे और जिन्होंने उनका सब-
कुछ छीन लिया था उनका वे सबकुछ छीन
लेंगे।’ सारे जहान के मालिक यहोवा का
यह ऐलान है।

11 ‘उस दिन मैं गोग[2] के लिए इस-
राएल देश की उस घाटी में एक कब्रिस्तान
दूँगा जहाँ से समुंदर के पूरब की तरफ
सफर करनेवाले गुज़रते हैं और इससे
मुसाफिरों का रास्ता रुक जाएगा। वे गोग
और उसकी सारी भीड़ को वहीं गाड़ देंगे
और उस घाटी को हामोन-गोग घाटी*
नाम देंगे।[3] **12** इसराएल के घराने को
उन्हें गाड़कर देश को शुद्ध करने में
सात महीने लगेंगे।[4] **13** देश के सभी
लोग उन्हें गाड़ने में लग जाएँगे और इससे
उस दिन उनका बड़ा नाम होगा जब मैं
खुद की महिमा करूँगा।’[5] सारे जहान के
मालिक यहोवा का यह ऐलान है।

14 ‘लोगों को यह काम दिया जाएगा
कि लगातार देश का दौरा करें और देश
की ज़मीन पर बची लाशें गाड़ दें ताकि
देश को शुद्ध किया जा सके। वे सात
महीने तक लाशें ढूँढ़ते रहेंगे। **15** जब
भी देश का दौरा करनेवालों को कहीं

अध्य. 39
1 यहे 38:2
2 यहे 27:13; यहे 32:26
3 यहे 38:4, 15
4 यहे 38:21
5 प्रक 19:17, 18
6 यिर्म 25:33
7 यहे 38:22
8 यहे 38:16
9 यश 6:3

दूसरा कॉल.
1 भज 46:9
2 यहे 38:2
3 यहे 39:15
4 व्य 21:22, 23
5 यहे 38:16

39:1 *या “प्रधान हाकिम।”

39:9 *ये ढालें अकसर तीरंदाज़ ढोते थे। #या शायद, “भालों।” **39:11** *या “गोग की भीड़ की घाटी।”

किसी इंसान की हड्डी दिखायी देगी, तो वे
उसके पास एक निशानी लगाएँगे। फिर
जिन्हें गाड़ने का काम दिया गया है वे उस
हड्डी को हामोन-गोग घाटी में गाड़ देंगे।[1]
16 वहाँ एक शहर भी होगा जिसका नाम
हमोना* होगा। और वे पूरे देश को शुद्ध
कर देंगे।'[2]

17 इंसान के बेटे, सारे जहान का
मालिक यहोवा कहता है, 'तू तरह-
तरह के पक्षियों से और मैदान के
सभी जंगली जानवरों से कहना, "तुम
सब इकट्ठा होकर यहाँ आओ। मेरे बलि-
दान के आस-पास जमा हो जाओ जो मैं
तुम्हारे लिए तैयार कर रहा हूँ। मैंने इस-
राएल के पहाड़ों पर तुम सबके लिए
एक बड़ा भोज तैयार किया है।[3] तुम माँस
खाओगे और खून पीओगे।[4] **18** तुम
बाशान के मोटे किए सभी जानवरों की
दावत उड़ाओगे, मेढ़ों, मेम्नों, बकरियों
और बैलों की दावत उड़ाओगे। हाँ, तुम
बड़े-बड़े शूरवीरों का माँस खाओगे और
धरती के प्रधानों का खून पीओगे।
19 जो बलिदान मैंने तुम्हारे लिए तैयार
किया है, तुम उसकी चरबी ठूँस-ठूँसकर
खाओगे और खून पी-पीकर मदहोश हो
जाओगे।"'

20 'तुम मेरी मेज़ पर घोड़ों, सार-
थियों, शूरवीरों और हर तरह के
योद्धा का माँस जी-भरकर खाओगे।'[5]
सारे जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है।

21 'मैं राष्ट्रों के बीच अपनी महिमा
दिखाऊँगा और सब राष्ट्र देखेंगे कि मैंने
कैसे न्याय करके उन्हें सज़ा दी है और
उनके बीच कैसे अपनी शक्ति दिखायी*
है।[6] **22** उस दिन से इसराएल के घराने
को जानना होगा कि मैं उनका परमेश्वर
यहोवा हूँ। **23** और राष्ट्रों को जानना
होगा कि इसराएल के घराने को उसी के
गुनाह की वजह से, मेरे साथ विश्वास-
घात करने की वजह से बँधुआई में भेज
दिया गया था।[1] मैंने उनसे अपना मुँह फेर
लिया[2] और उन्हें दुश्मनों के हवाले कर
दिया[3] और वे सब तलवार से मारे गए।
24 मैंने उनकी अशुद्धता और उनके
गुनाहों के मुताबिक उनको सज़ा दी और
उनसे अपना मुँह फेर लिया।'

25 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, 'मैं याकूब के लोगों को,
जो बंदी बनाए गए हैं, उनके देश वापस
ले आऊँगा[4] और इसराएल के पूरे घराने
पर दया करूँगा[5] और पूरे जोश के साथ
अपने पवित्र नाम की पैरवी करूँगा।[6]
26 अपने विश्वासघात और बुरे कामों
की वजह से बेइज़्ज़ती सहने के बाद[7]
वे अपने देश में महफ़ूज़ बसे रहेंगे और
उन्हें कोई नहीं डराएगा।[8] **27** जब मैं
उन्हें दूसरे देशों से वापस ले आऊँगा
और उनके दुश्मनों के देशों से उन्हें
इकट्ठा करूँगा[9] तब मैं बहुत-से राष्ट्रों
के देखते उनके बीच खुद को पवित्र
ठहराऊँगा।'[10]

28 'मैं उन्हें उन राष्ट्रों से इकट्ठा
करूँगा जहाँ मैंने उन्हें बँधुआई में भेज
दिया था। मैं उन्हें वापस उनके
अपने देश में ले आऊँगा और किसी को
भी पराए देश में नहीं छोड़ूँगा[11] और
तब उन्हें जानना होगा कि मैं उनका
परमेश्वर यहोवा हूँ। **29** इसके बाद
मैं फिर कभी अपना मुँह उनसे नहीं
फेरूँगा,[12] क्योंकि मैं इसराएल के घराने
पर अपनी पवित्र शक्ति उँडेलूँगा।'[13]
सारे जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है।"

अध्य. 39
1 यहे 39:11
2 यहे 39:12
3 यश 34:6-8; यिर्म 46:10; सप 1:7
4 प्रक 19:17, 18
5 यहे 38:4-6; हाग 2:22; प्रक 19:17, 18
6 निर्ग 7:4; निर्ग 14:4; यश 37:20; यहे 38:16; मला 1:11

दूसरा कॉल.
1 2इत 7:21, 22
2 व्य 31:18; यश 59:2
3 लैव 26:24, 25; व्य 32:30; भज 106:40, 41
4 यिर्म 30:3; यहे 34:13
5 हो 1:11; जक 1:16
6 यहे 36:21
7 दान 9:16
8 लैव 26:5, 6
9 यिर्म 30:10; आम 9:14; सप 3:20
10 यश 5:16; यहे 36:23
11 व्य 30:4
12 यश 45:17; यश 54:8; यिर्म 29:14
13 यश 32:14, 15; योए 2:28

39:16 *मतलब "भीड़।" **39:21** *शा., "अपना हाथ दिखाया।"

40 हमारी बँधुआई के 25वें साल,[1]
यानी शहर* पर कब्ज़ा किए
जाने के 14वें साल के पहले महीने के
दसवें दिन,[2] यहोवा का हाथ मुझ पर
आया और वह मुझे शहर ले गया।[3]
2 परमेश्वर की तरफ से मुझे दर्शन मिले
जिनमें वह मुझे इसराएल देश ले गया
और उसने मुझे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर
खड़ा किया।[4] उस पहाड़ पर दक्षिण की
तरफ मुझे शहर जैसा कुछ दिखायी दिया।
3 जब वह मुझे वहाँ ले गया तो मैंने
वहाँ एक आदमी को देखा जिसका रूप
ताँबे जैसा था।[5] उसके हाथ में अलसी
की एक डोरी और एक माप-छड़* था[6]
और वह दरवाज़े पर खड़ा था। **4** उस
आदमी ने मुझसे कहा, "इंसान के बेटे, मैं
तुझे जो कुछ दिखाऊँगा वह सब तू गौर
से देखना और मेरी हर बात ध्यान से
सुनना। मैं तुझे जो भी दिखाऊँगा उस पर
पूरा ध्यान देना क्योंकि तुझे यहाँ इसीलिए
लाया गया है। तू जो भी देखेगा वह सब
इसराएल के घराने को बताना।"[7]
5 मैंने उस मंदिर* के बाहर चारों
तरफ एक दीवार देखी। उस आदमी के
हाथ में जो माप-छड़ था वह छः हाथ लंबा
था। (हर हाथ के माप में चार अंगुल जोड़ा
गया था।)# वह माप-छड़ से दीवार नापने
लगा। दीवार की मोटाई और ऊँचाई एक-
एक छड़ थी।
6 फिर वह उस दरवाज़े* पर गया
जिसका मुँह पूरब की तरफ था[1] और
उसकी सीढ़ियाँ चढ़ा। उसने दरवाज़े की
दहलीज़ नापी। उसकी चौड़ाई एक छड़
थी और दरवाज़े के दूसरी तरफ की दह-
लीज़ की चौड़ाई भी एक छड़ थी।
7 दरवाज़े के अंदर पहरेदारों के खाने
बने थे। हर खाने की लंबाई और चौड़ाई
एक-एक छड़ थी। और एक खाने से दूसरे
खाने के बीच पाँच-पाँच हाथ की दूरी
थी।[2] दरवाज़े की जो दहलीज़ बरामदे
के पास और अंदर की तरफ थी, उसकी
चौड़ाई भी एक छड़ थी।
8 फिर उसने वह बरामदा नापा जो
अंदर की तरफ था और वह एक छड़ था।
9 फिर उसने दरवाज़े का बरामदा नापा
और उसकी नाप आठ हाथ थी। उसने
बरामदे के दोनों तरफ के खंभे नापे और
उनकी नाप दो-दो हाथ थी। दरवाज़े का
यह बरामदा अंदर की तरफ था।
10 पूरब के दरवाज़े में दोनों तरफ
पहरेदारों के तीन-तीन खाने थे। तीनों
खाने एक ही नाप के थे और दोनों तरफ
के खंभे भी एक ही नाप के थे।
11 फिर उसने दरवाज़े के प्रवेश की
चौड़ाई नापी और वह 10 हाथ थी और
दरवाज़े की लंबाई 13 हाथ थी।
12 पहरेदारों के खानों के सामने बाड़े
से बँधी हुई जो खुली जगह थी, वह दोनों
तरफ एक-एक हाथ थी। दोनों तरफ
पहरेदारों के खाने छः-छः हाथ थे।
13 फिर उसने एक तरफवाले खाने
की छत* से दूसरी तरफवाले खाने की
छत तक दरवाज़े की चौड़ाई नापी। यह
25 हाथ थी। खानों के प्रवेश एक-दूसरे
के आमने-सामने थे।[3] **14** फिर उसने
दोनों तरफ के खंभों की ऊँचाई नापी।

40:1 *यानी यरूशलेम। **40:3** *अति. ख14 देखें। **40:5** *शा., "भवन।" अध्याय 40-48 में जहाँ-जहाँ "भवन" का मतलब मंदिर या मंदिर और उसके आस-पास की इमारतें हैं वहाँ "मंदिर" लिखा है। #यह लंबे हाथ का माप है। अति. ख14 देखें। **40:6** *यह दरवाज़ा एक बड़ी इमारत था जिसमें कई खाने थे।

40:13 *शायद यह पहरेदार के खाने की दीवार का ऊपरी हिस्सा है।

अध्य. 40
1 2रा 24:15, 16
2 2रा 25:8-10; यहे 33:21
3 यहे 8:3
4 यश 2:2
5 यहे 1:5, 7; दान 10:5, 6
6 यहे 47:3; जक 2:1, 2; प्रक 11:1; प्रक 21:15
7 यहे 43:10

दूसरा कॉल.
1 यहे 40:10; यहे 43:1, 4; यहे 46:1, 2
2 1इत 9:26, 27
3 यहे 40:20, 21

यह 60 हाथ थी। आँगन के चारों
तरफ के दरवाज़ों के दोनों तरफ के खंभों
की ऊँचाई भी 60 हाथ थी। **15** दर-
वाज़े के बाहरी हिस्से से लेकर उसके
बरामदे के सामनेवाले हिस्से तक की
लंबाई 50 हाथ थी।

16 पहरेदारों के खानों के लिए और
दोनों तरफ उनके खंभों के लिए ऐसी
खिड़कियाँ थीं जो अंदर की ओर चौड़ी
और बाहर की ओर सँकरी थीं।*[1] दर-
वाज़ों के बरामदों के लिए भी हर तरफ
खिड़कियाँ थीं और दोनों तरफ के खंभों
पर खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी।[2]

17 फिर वह मुझे बाहरी आँगन में ले
आया। आँगन के चारों तरफ एक फर्श
बना हुआ था। मैंने वहाँ भोजन के कमरे
देखे।*[3] कुल मिलाकर 30 कमरे थे।
18 दरवाज़ों के दोनों तरफ के उस फर्श
की चौड़ाई दरवाज़े की लंबाई जितनी थी।
यह फर्श निचला फर्श था।

19 फिर उसने निचले दरवाज़े और
भीतरी आँगन में जानेवाले दरवाज़े के
बीच की दूरी नापी। यह दूरी 100 हाथ
थी। पूरब और उत्तर के दरवाज़ों से भी
इतनी ही दूरी थी।

20 बाहरी आँगन में उत्तर की तरफ
भी एक दरवाज़ा था। उस आदमी ने
उस दरवाज़े की लंबाई-चौड़ाई नापी।
21 उस दरवाज़े में भी दोनों तरफ पहरे-
दारों के तीन-तीन खाने थे। उसके दोनों
तरफ के खंभों और बरामदे की नाप,
पहले दरवाज़े के खंभों और बरामदे की
नाप जितनी ही थी। उत्तर का दरवाज़ा भी
50 हाथ लंबा और 25 हाथ चौड़ा था।
22 उसकी खिड़कियों, उसके बरामदे
और उस पर बनी खजूर के पेड़ों की
नक्काशी[1] की नाप पूरब के दरवाज़े
जितनी ही थी। उस दरवाज़े तक पहुँच-
ने के लिए लोगों को सात सीढ़ियाँ चढ़नी
होती थीं और उसका बरामदा उनके
सामने था।

23 उत्तर के दरवाज़े और पूरब के
दरवाज़े के सामने भीतरी आँगन में एक-
एक दरवाज़ा था। उसने एक दरवाज़े से
दूसरे दरवाज़े के बीच की दूरी नापी। यह
दूरी 100 हाथ थी।

24 इसके बाद वह मुझे दक्षिण की
तरफ ले आया और मैंने दक्षिण में भी एक
दरवाज़ा देखा।[2] उसने उसके दोनों तरफ
के खंभों और बरामदे को नापा। उनकी
नाप भी बाकी दरवाज़ों के खंभों और
बरामदे जितनी ही थी। **25** उस दरवाज़े
में दोनों तरफ और बरामदे में भी वैसी ही
खिड़कियाँ थीं जैसी दूसरे दरवाज़ों में
थीं। दक्षिण का दरवाज़ा 50 हाथ लंबा
और 25 हाथ चौड़ा था। **26** उस दर-
वाज़े तक पहुँचने के लिए सात सीढ़ियाँ
थीं[3] और उसका बरामदा उनके सामने
था। बरामदे के दोनों तरफ एक-एक
खंभा था और खंभों पर खजूर के पेड़ों की
नक्काशी थी।

27 भीतरी आँगन में भी दक्षिण की
तरफ एक दरवाज़ा था। उस आदमी
ने दक्षिण की तरफवाले दोनों दर-
वाज़ों के बीच की दूरी नापी। यह
दूरी 100 हाथ थी। **28** इसके बाद वह
मुझे भीतरी आँगन के दक्षिणी दरवाज़े से
भीतरी आँगन में ले आया। जब उसने
यह दक्षिणी दरवाज़ा नापा तो उसकी
नाप भी दूसरे दरवाज़ों जितनी ही थी।
29 उसके पहरेदारों के खानों, उसके
दोनों तरफ के खंभों और उसके बराम-
दे की नाप दूसरे दरवाज़ों के खानों,

अध्य. 40
1 1रा 6:4; यहे 41:26
2 1रा 6:35
3 1इत 28:12

दूसरा कॉल.
1 यहे 41:20, 26
2 यहे 46:9
3 यहे 40:20, 22

40:16 *या “खंभों के लिए ढलाननुमा खिड़कियाँ थीं।” **40:17** *या “वहाँ खाने देखे।”

खंभों और बरामदे जितनी थी। उस दरवाज़े के दोनों तरफ और उसके बरामदे में खिड़कियाँ थीं। वह दरवाज़ा 50 हाथ लंबा और 25 हाथ चौड़ा था।[1] **30** भीतरी आँगन के सभी दरवाज़ों में बरामदे थे और उन बरामदों की लंबाई 25 हाथ और चौड़ाई 5 हाथ थी। **31** दक्षिणी दरवाज़े का बरामदा बाहरी आँगन की तरफ था और उसके दोनों तरफ के खंभों पर खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी[2] और उस दरवाज़े तक पहुँचने के लिए आठ सीढ़ियाँ थीं।[3]

32 जब वह मुझे पूरब से भीतरी आँगन में ले आया तो उसने वहाँ का दरवाज़ा नापा। उसकी नाप दूसरे दरवाज़ों जितनी ही थी। **33** उसके पहरेदारों के खानों, उसके दोनों तरफ के खंभों और उसके बरामदे की नाप दूसरे दरवाज़ों के खानों, खंभों और बरामदे जितनी थी। उस दरवाज़े के दोनों तरफ और उसके बरामदे में खिड़कियाँ थीं। वह दरवाज़ा 50 हाथ लंबा और 25 हाथ चौड़ा था। **34** उसका बरामदा बाहरी आँगन की तरफ था और उसके दोनों तरफ के खंभों पर खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी और उस दरवाज़े तक पहुँचने के लिए आठ सीढ़ियाँ थीं।

35 फिर वह मुझे उत्तरी दरवाज़े* पर ले आया[4] और उसे नापा। उसकी नाप भी दूसरे दरवाज़ों जितनी थी। **36** उसके पहरेदारों के खानों, दोनों तरफ के खंभों और उसके बरामदे की नाप दूसरे दरवाज़ों के खानों, खंभों और बरामदे जितनी थी। उसके दोनों तरफ खिड़कियाँ थीं। वह दरवाज़ा 50 हाथ लंबा और 25 हाथ चौड़ा था। **37** उसके दोनों तरफ के खंभे बाहरी आँगन की तरफ थे और उन खंभों पर खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी। उस दरवाज़े तक पहुँचने के लिए आठ सीढ़ियाँ थीं।

38 भीतरी आँगन के दरवाज़ों के खंभों के पास भोजन का कमरा था जिसका एक प्रवेश था। इस कमरे में पूरी होम-बलि के जानवरों का माँस धोया जाता था।[1]

39 उत्तरी दरवाज़े के बरामदे के दोनों तरफ दो-दो मेज़ें थीं। उन पर पूरी होम-बलि,[2] पाप-बलि[3] और दोष-बलि के जानवर हलाल किए जाते थे।[4] **40** उत्तरी दरवाज़े की तरफ जानेवाले रास्ते पर बाहर दोनों तरफ दो-दो मेज़ें थीं और दरवाज़े के बरामदे के दूसरी तरफ भी दो-दो मेज़ें थीं। **41** दरवाज़े के दोनों तरफ चार-चार मेज़ें थीं। कुल मिलाकर आठ मेज़ें थीं जिन पर बलिदान के जानवर हलाल किए जाते थे। **42** पूरी होम-बलि की चारों मेज़ें गढ़े हुए पत्थरों की बनी थीं। उन मेज़ों की लंबाई डेढ़ हाथ, चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊँचाई एक हाथ थी। उन मेज़ों पर वे औज़ार रखे जाते थे जिनसे होम-बलि और दूसरे बलिदानों के जानवर हलाल किए जाते थे। **43** भीतरी दीवारों के चारों तरफ ताक बनी हुई थीं जो चार अंगुल चौड़ी थीं। उन मेज़ों पर भेंट के चढ़ावे का माँस रखा जाता था।

44 भीतरी आँगन के दरवाज़े के बाहर गायकों के लिए भोजन के कमरे थे।[5] ये कमरे भीतरी आँगन में उत्तरी दरवाज़े के पास थे और उनका प्रवेश दक्षिण की तरफ था। एक और भोजन का कमरा पूरब के दरवाज़े के पास था जिसका प्रवेश उत्तर की तरफ था।

40:35 *यानी भीतरी आँगन का उत्तरी दरवाज़ा।

अध्य. 40
1 यहे 40:20, 21
2 यहे 40:16
3 यहे 40:32, 34; यहे 40:35, 37
4 यहे 44:4

दूसरा कॉल.
1 लैव 8:21
2 लैव 1:3, 6; लैव 8:20; यहे 43:18
3 लैव 4:3, 4
4 लैव 5:6; लैव 7:1; यहे 42:13; यहे 44:29
5 1इत 6:31, 32

45 उस आदमी ने मुझे बताया,
“भोजन का यह कमरा, जिसका प्रवेश
दक्षिण की तरफ है, उन याजकों के
लिए है जिन्हें मंदिर में सेवा की ज़िम्मेदारी
दी गयी है।[1] 46 और भोजन का वह
कमरा, जिसका प्रवेश उत्तर की तरफ है,
उन याजकों के लिए है जिन्हें वेदी के पास
सेवा करने की ज़िम्मेदारी दी गयी है।[2]
वे याजक सादोक के वंशज हैं।[3] लेवियों
में से उन्हीं याजकों को यहोवा के पास
आकर उसकी सेवा करने के लिए ठह-
राया गया है।”[4]

47 इसके बाद उसने भीतरी आँगन
नापा। यह आँगन चौकोर था, 100 हाथ
लंबा, 100 हाथ चौड़ा। मंदिर के सामने
वेदी थी।

48 फिर वह मुझे मंदिर के बरामदे
में ले आया[5] और उसने बरामदे के दोनों
खंभे नापे जो उसके प्रवेश में दायीं और
बायीं तरफ थे। हर खंभा पाँच हाथ लंबा
और तीन हाथ चौड़ा था।

49 बरामदा 20 हाथ लंबा और
11* हाथ चौड़ा था। उस तक पहुँचने के
लिए लोगों को कुछ सीढ़ियाँ चढ़नी होती
थीं। बरामदे के दोनों तरफ के खंभों के
पास दो और खंभे थे। हर खंभे के पास
एक खंभा था।[6]

41 इसके बाद वह मुझे पवित्र-स्थान
के बाहरी कमरे* में ले गया।
उसने उस कमरे के दोनों तरफ के खंभे
नापे, एक दायीं तरफ था और दूसरा
बायीं तरफ। हर खंभे की मोटाई छः
हाथ* थी। 2 इस कमरे का प्रवेश दस
हाथ चौड़ा था और प्रवेश के दायीं
और बायीं तरफ के खंभे पाँच हाथ
चौड़े थे। फिर उसने बाहरी कमरा नापा।
उसकी लंबाई 40 हाथ और चौड़ाई
20 हाथ थी।

3 फिर वह अंदर* गया और उसने
प्रवेश के एक तरफ का खंभा नापा।
उसकी मोटाई दो हाथ और चौड़ाई सात
हाथ थी। प्रवेश छः हाथ चौड़ा था।
4 फिर उसने वह कमरा नापा जो पवित्र-
स्थान के बाहरी कमरे के सामने था।
उसकी लंबाई 20 हाथ और चौड़ाई
20 हाथ थी।[1] उसने मुझे बताया, “यह
परम-पवित्र भाग है।”[2]

5 फिर उसने मंदिर की दीवार नापी।
उसकी मोटाई छः हाथ थी। मंदिर के
चारों तरफ खाने थे और हर खाने की
चौड़ाई चार हाथ थी।[3] 6 इन खानों की
तीन मंज़िलें थीं, जो एक के ऊपर एक
थीं। हर मंज़िल में 30 खाने थे। ये खाने
चारों तरफ की दीवार के ताक के सहारे
टिके हुए थे। इसलिए खानों की शहतीरें
मंदिर की दीवार के अंदर नहीं घुसायी
गयी थीं।[4] 7 मंदिर के दोनों तरफ के
ऊपरी खानों तक जाने का रास्ता घुमाव-
दार था।[5] यह रास्ता नीचे से ऊपरी
मंज़िलों तक चौड़ा होता गया था। बीच-
वाली मंज़िल के खाने, निचली मंज़िल के
खानों से चौड़े थे और तीसरी मंज़िल के
खाने बीचवाली मंज़िल के खानों से भी
चौड़े थे।

8 मैंने मंदिर के चारों तरफ एक ऊँचा
चबूतरा देखा जिस पर मंदिर के साथवाले
खाने बने हुए थे। उस चबूतरे की ऊँचाई

अध्य. 40
1 गि 3:6-8; 1इत 9:22, 23; भज 134:1
2 लैव 6:12, 13; गि 18:5; 2इत 13:10, 11
3 1रा 2:35; यहे 43:19
4 गि 16:39, 40; यहे 44:15, 16
5 1रा 6:3; 2इत 3:4
6 1रा 7:21

दूसरा कॉल.

अध्य. 41
1 1रा 6:20; 2इत 3:8
2 निर्ग 26:33
3 1रा 6:5
4 1रा 6:6, 10
5 1रा 6:8

40:49 *या शायद, “12.” **41:1** *शा., “मंदिर।” अध्याय 41 और 42 में इस शब्द का मतलब है, पवित्र-स्थान का बाहरी कमरा (यानी पवित्र भाग) या पूरा पवित्र-स्थान (यानी मंदिर जिसमें पवित्र और परम-पवित्र भाग शामिल है)।

41:1 *यह लंबे हाथ का माप है। अति. ख14 देखें। **41:3** *यानी पवित्र-स्थान के भीतरी कमरे या परम-पवित्र भाग के अंदर।

कोने तक छः हाथ के पूरे माप-छड़ के बराबर थी। **9** खानों की बाहरी दीवार की मोटाई पाँच हाथ थी। उन खानों के किनारे-किनारे खुली जगह* थी जो मंदिर का ही हिस्सा थी।

10 मंदिर और भोजन के कमरों*[1] के बीच हर तरफ 20 हाथ चौड़ी खुली जगह थी। **11** उत्तर की तरफ, मंदिर के साथवाले खानों और खाली जगह के बीच एक प्रवेश था। इसी तरह का एक और प्रवेश मंदिर के दक्षिण की तरफ था। मंदिर के चारों तरफ की खुली जगह की चौड़ाई पाँच हाथ थी।

12 जो इमारत पश्चिम में, खुली जगह के सामने थी, वह 70 हाथ चौड़ी और 90 हाथ लंबी थी। उस इमारत के चारों तरफ की दीवार की मोटाई पाँच हाथ थी।

13 जब उसने मंदिर नापा तो देखा कि उसकी लंबाई 100 हाथ थी। वह खाली जगह, वह इमारत* और उसकी दीवारें, उन सबकी लंबाई भी कुल मिलाकर 100 हाथ थी। **14** मंदिर का सामनेवाला हिस्सा जो पूरब की तरफ था, उसकी चौड़ाई और दोनों तरफ की खाली जगह की चौड़ाई कुल मिलाकर 100 हाथ थी।

15 उस आदमी ने उस इमारत की लंबाई नापी जो पीछेवाली खाली जगह के पास थी। उसने इमारत की चौड़ाई और उसके दोनों तरफ के गलियारों की चौड़ाई नापी, जो कुल मिलाकर 100 हाथ थी।

उसने पवित्र-स्थान का बाहरी कमरा, भीतरी कमरा[2] और आँगन के बरामदे नापे। **16** उसने इन तीनों जगहों की दहलीज़ें, सँकरी खिड़कियाँ[1] और गलियारे भी नापे। हर दहलीज़ के पास फर्श से लेकर खिड़कियों तक लकड़ी के तख्ते लगे थे[2] और खिड़कियाँ ढकी थीं। **17** उसने प्रवेश का ऊपरी हिस्सा, मंदिर के अंदर का हिस्सा, बाहर का हिस्सा और चारों तरफ की दीवार नापी। **18** उस पर करूबों और खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी।[3] हर दो करूब के बीच एक खजूर का पेड़ था और हर करूब के दो मुँह थे, **19** एक इंसान का और एक शेर का। इंसान का मुँह एक तरफ के खजूर के पेड़ की तरफ था और शेर का मुँह दूसरी तरफ के खजूर के पेड़ की तरफ था।[4] पूरे मंदिर में इसी तरह की नक्काशी थी। **20** पवित्र-स्थान के प्रवेश की दीवार पर, फर्श से लेकर ऊपर तक करूबों और खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी।

21 पवित्र-स्थान के फाटकों की चौखटें* चौकोर थीं।[5] पवित्र जगह# के सामने **22** लकड़ी की वेदी[6] जैसा कुछ था। वह तीन हाथ ऊँचा और दो हाथ लंबा था। उसके चार कोने थे और उसका आधार और उसकी अलंगें लकड़ी की बनी थीं। उस आदमी ने मुझे बताया, "यही यहोवा के सामने की मेज़ है।"[7]

23 पवित्र-स्थान के बाहरी कमरे में दो किवाड़वाला एक फाटक था और अंदर की पवित्र जगह में भी ऐसा ही एक फाटक था।[8] **24** इन फाटकों के हर किवाड़ में दो पल्ले थे जो मुड़कर दोहरे हो जाते थे। **25** पवित्र-स्थान की दीवारों

अध्य. 41
1 1इत 28:12
2 2इत 3:8 यहे 41:4

दूसरा कॉल.
1 1रा 6:4
2 1रा 6:15 2इत 3:5
3 1रा 6:29 1रा 7:36 2इत 3:7 यहे 40:16
4 यहे 1:5, 10 प्रक 4:7
5 1रा 6:33
6 निर्ग 30:1 1रा 7:48 प्रक 8:3
7 यहे 44:16 मला 1:7
8 1रा 6:31-35

41:9 *ज़ाहिर है, यह मंदिर के चारों तरफ आने-जाने का सँकरा रास्ता है। **41:10** *या "खानों।" **41:13** *यानी पवित्र-स्थान के पश्चिम की इमारत।

41:21 *शा., "फाटक की चौखट।" ज़ाहिर है कि यहाँ पवित्र भाग के प्रवेश की बात की गयी है। #ज़ाहिर है कि यह परम-पवित्र भाग है।

की तरह उसके फाटकों पर भी करूबों और खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी।[1] बरामदे के ठीक बाहर लकड़ी का एक छज्जा भी था। **26** बरामदे के दोनों तरफ, मंदिर के साथवाले खानों में और छज्जों के पास सँकरी खिड़कियाँ[2] और खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी।

42 फिर वह मुझे उत्तर के बाहरी आँगन में ले गया।[3] वह मुझे भोजन के कमरोंवाली इमारत के पास ले गया, जो खुली जगह के पास,[4] सटी हुई इमारत[5] के उत्तर में थी। **2** भोजन के कमरोंवाली इमारत का प्रवेश उत्तर की तरफ था और उस तरफ इमारत की पूरी लंबाई 100 हाथ* और चौड़ाई 50 हाथ थी। **3** वह इमारत बाहरी आँगन के फर्श और भीतरी आँगन की उस खुली जगह के बीच थी जो 20 हाथ चौड़ी थी।[6] इस इमारत के दो हिस्से थे और दोनों हिस्सों में तीन-तीन मंज़िलें थीं और उनके गलियारे एक-दूसरे के सामने थे। **4** इमारत के दोनों हिस्सों के बीच एक रास्ता था[7] जो 100 हाथ लंबा* और 10 हाथ चौड़ा था। भोजन के कमरों# के लिए प्रवेश उत्तर की तरफ थे। **5** इस इमारत के दोनों हिस्सों की ऊपरी मंज़िलों की चौड़ाई बीचवाली और निचली मंज़िलों से कम थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि ऊपरी मंज़िलों के गलियारों ने खाने के कमरों की बहुत जगह ले ली थी। **6** भोजन के कमरों की तीन मंज़िलें थीं, मगर इनमें कोई खंभा नहीं था, जैसे आँगनों में थे। इसीलिए निचली और बीचवाली मंज़िलों के मुकाबले ऊपरी मंज़िलें कम जगह में बनायी गयी थीं।

7 भोजन के कमरोंवाली इमारत का जो हिस्सा बाहरी आँगन की तरफ था, उसके पास पत्थर की एक दीवार थी। यह दीवार इमारत के दूसरे हिस्से के सामने थी। इस दीवार की लंबाई 50 हाथ थी, **8** क्योंकि इमारत का जो हिस्सा बाहरी आँगन की तरफ था वह सिर्फ 50 हाथ लंबा था, जबकि पवित्र-स्थान की तरफवाला हिस्सा 100 हाथ लंबा था। **9** भोजन के कमरोंवाली इमारत का प्रवेश पूरब की तरफ था, जो बाहरी आँगन से इमारत में आने के लिए था।

10 पूरब की तरफ आँगन के पत्थर की दीवार की चौड़ाई में, खुली जगह और इमारत के पास भी भोजन के कमरे थे।[1] **11** इनके सामने भी वैसा ही एक रास्ता था जैसे उत्तर में भोजन के कमरों के सामने था।[2] इन कमरों की लंबाई-चौड़ाई उत्तर के कमरों जितनी ही थी और कमरों से बाहर जाने का रास्ता भी वैसा ही था जैसा उत्तर की इमारत में था। उनका पूरा ढाँचा उत्तर के कमरों जैसा था। उनके प्रवेश **12** उन भोजन के कमरों के प्रवेश जैसे थे जो दक्षिण की तरफ थे। रास्ते की शुरूआत में एक प्रवेश था जो पूरब में पत्थर की दीवार के पास था। यह प्रवेश इमारत के अंदर जाने के लिए था।[3]

13 फिर उस आदमी ने मुझे बताया, "खाली जगह के पास उत्तर और दक्षिणवाले भोजन के कमरे,[4] भोजन के पवित्र कमरे हैं। ये कमरे उन याजकों के लिए हैं जो यहोवा के पास आकर उसकी सेवा करते हैं। वे इन कमरों में उस भेंट की चीज़ें खाते हैं जो बहुत पवित्र है।[5] यह

42:2 *यह लंबे हाथ का माप है। अति. ख14 देखें। **42:4** *यूनानी *सेप्टुआजेंट* के मुताबिक "100 हाथ लंबा।" इब्रानी पाठ में लिखा है, "एक हाथ लंबा रास्ता।" अति. ख14 देखें। #या "खानों।"

अध्य. 41
1 यहे 41:17, 18
2 यहे 40:16

अध्य. 42
3 यहे 40:2
4 यहे 42:13
5 यहे 41:12, 15
6 यहे 41:10
7 यहे 42:10, 11

दूसरा कॉल.
1 यहे 41:12; यहे 42:1
2 यहे 42:4
3 यहे 42:9
4 यहे 42:1
5 लैव 6:14, 16; लैव 7:1, 6; लैव 10:12, 13; लैव 24:8, 9; गि 18:10; यहे 40:46

जगह पवित्र है इसलिए वे इन्हीं कमरों में
अनाज के चढ़ावे, पाप-बलि और दोष-
बलि के लिए अर्पित की गयी चीज़ें रखते
हैं जो बहुत पवित्र हैं।[1] **14** जब भी
याजकों को पवित्र जगह से बाहरी आँगन
में जाना हो, तो उन्हें पहले अपनी वह
पोशाक बदलनी होगी जिसे पहनकर वे
पवित्र जगह में सेवा करते हैं।[2] वे अपनी
यह पोशाक बदले बगैर बाहरी आँगन में
नहीं जा सकते क्योंकि यह पवित्र पोशाक
है। जब भी याजक उन जगहों में जाते हैं
जहाँ आम लोगों को आने की इजाज़त है,
तो उन्हें अपनी पवित्र पोशाक बदलकर
दूसरे कपड़े पहनने चाहिए।”

15 जब उसने मंदिर के अंदर का
हिस्सा* और उसके आस-पास का सब-
कुछ नाप लिया, तो वह मुझे बाहरी
आँगन के पूरब के दरवाज़े से बाहर ले
गया।[3] और उसने वह पूरी जगह नापी।

16 उसने माप-छड़* से पूरब का
हिस्सा नापा। पूरब में एक कोने से दूसरे
कोने तक की लंबाई 500 छड़ थी।

17 उसने माप-छड़ से उत्तर का हिस्सा
नापा और उसकी लंबाई 500 छड़ थी।

18 उसने माप-छड़ से दक्षिण का
हिस्सा नापा और उसकी लंबाई 500
छड़ थी।

19 उसने माप-छड़ से पश्चिम का
हिस्सा नापा और उसकी लंबाई 500
छड़ थी।

20 उसने चारों हिस्से नापे। उसके
चारों तरफ एक दीवार थी[4] जिसकी
लंबाई-चौड़ाई 500 छड़ थी।[5] यह दीवार
पवित्र जगह को उस जगह से अलग
करने के लिए थी जो आम इस्तेमाल के
लिए थी।[6]

43

43 इसके बाद वह मुझे पूरब के दर-
वाज़े पर ले गया।[1] **2** वहाँ मैंने
इसराएल के परमेश्वर की महिमा देखी
जो पूरब से आ रही थी।[2] परमेश्वर
की आवाज़ नदी की तेज़ धारा की गड़-
गड़ाहट जैसी थी[3] और धरती उसकी
महिमा से रौशन हो गयी।[4] **3** मैंने वहाँ
जो देखा वह उस दर्शन जैसा था जो मैंने
उस वक्त देखा था जब मैं* शहर का नाश
करने आया था। मैंने वहाँ जो देखा वह
बिलकुल वैसा ही था जो मैंने कबार नदी
के पास देखा था।[5] और मैं मुँह के बल
ज़मीन पर गिर पड़ा।

4 फिर यहोवा की महिमा पूरब के
दरवाज़े से मंदिर* में आयी।[6] **5** फिर
एक शक्ति* ने मुझे उठाया और वह
मुझे भीतरी आँगन में ले गयी। वहाँ मैंने
देखा कि पूरा मंदिर यहोवा की महिमा
से भर गया है।[7] **6** फिर मैंने मंदिर
में से किसी की आवाज़ सुनी जो मुझसे
बात कर रहा था और वह आदमी मेरे
पास आकर खड़ा हो गया।[8] **7** पर-
मेश्वर ने मुझसे कहा,

“इंसान के बेटे, यही मेरी राजगद्दी की
जगह है[9] और यही मेरे पाँव रखने की
जगह है।[10] यहाँ मैं इसराएलियों के बीच
सदा तक निवास करूँगा।[11] इसके बाद
फिर कभी न तो इसराएल का घराना
न ही उसके राजा मेरे साथ विश्वास-
घात करके* मेरे पवित्र नाम का अप-
मान करेंगे।[12] जब उनके राजा मर
जाएँगे तो वे उनकी लाशों से भी मेरे
पवित्र नाम का अपमान नहीं करेंगे।

अध्य. 42

1 लैव 2:3; गि 18:9; नहे 13:5
2 निर्ग 28:40; निर्ग 29:8, 9; लैव 8:13; यहे 44:19
3 यहे 40:6
4 यहे 40:5
5 यहे 45:1, 2
6 लैव 10:10; यहे 44:23; 2कुर 6:17

दूसरा कॉल.

अध्य. 43

1 यहे 40:6; यहे 42:15; यहे 44:1
2 यहे 9:3; यहे 11:23
3 यहे 1:24; यूह 12:28, 29
4 यश 6:3; यहे 10:4
5 यहे 1:3, 4; यहे 3:23
6 यहे 10:19; यहे 44:1, 2
7 निर्ग 40:34; 1रा 8:10; यहे 44:4
8 यहे 40:3
9 यश 6:1; यिर्म 3:17; यहे 1:26
10 1इत 28:2
11 निर्ग 29:45; भज 68:16; भज 132:14; योए 3:17
12 यहे 39:7; जक 13:2

42:15 *शा., “अंदर का भवन।” **42:16** *अति. ख14 देखें।

43:3 *या शायद, “वह।” **43:4** *शा., “भवन।” **43:5** *यहाँ इस्तेमाल हुए इब्रानी शब्द का मतलब पवित्र शक्ति या कोई स्वर्गदूत हो सकता है। **43:7** *या “राजा वेश्याओं जैसी बदचलनी करके।”

8 उन्होंने मेरे मंदिर की दहलीज़ से सटा-
कर अपनी दहलीज़ बनायी और मेरे
मंदिर के खंभे के पास अपना खंभा लगा
दिया, जिससे उनके और मेरे बीच सिर्फ
एक दीवार की आड़ रह गयी।[1] इस तरह
उन्होंने घिनौने काम करके मेरे पवित्र नाम
का अपमान किया। इसलिए मैंने क्रोध में
आकर उनका नाश कर दिया।[2] **9** अब
वे मेरे साथ और विश्वासघात न करें*
और अपने राजाओं की लाशें मुझसे दूर
कर दें। तब मैं उनके बीच सदा के लिए
निवास करूँगा।[3]

10 इंसान के बेटे, इसराएल के घराने
को मंदिर के बारे में ब्यौरा दे[4] ताकि वे
अपने गुनाहों पर शर्मिंदा महसूस करें[5]
और मंदिर के नमूने पर गौर करें।*
11 अगर वे अपने सभी कामों पर शर्मिंदा
महसूस करते हैं तो तू उन्हें मंदिर के
नमूने, उसकी बनावट, उसके प्रवेश और
निकलने के रास्तों के बारे में समझाना।[6]
उन्हें मंदिर का पूरा नमूना दिखाना और
उसकी विधियाँ और नियम बताना। तू
ये सारी बातें उनके देखते लिखना ताकि
वे मंदिर का पूरा नमूना गौर से देखें और
उसकी विधियों का पालन करें।[7]
12 मंदिर का यही नियम है: पहाड़ के
ऊपर का सारा इलाका बहुत पवित्र है।[8]
देख! मंदिर का नियम यही है।

13 वेदी की नाप हाथ के हिसाब से
यह है:[9] इसका आधार एक हाथ ऊँचा
और एक हाथ चौड़ा है। (हर हाथ के माप
में चार अंगुल जोड़ा गया था।)* आधार
के चारों तरफ एक किनारा है जो एक
बित्ता* ऊँचा है। यह वेदी का आधार
है। **14** फर्श पर बने आधार के ऊपर-
वाले छोटे कगार की ऊँचाई दो हाथ
और चौड़ाई एक हाथ है। इस छोटे कगार
पर बने बड़े कगार की ऊँचाई चार हाथ
और चौड़ाई एक हाथ है। **15** वेदी के
अग्नि-कुंड की ऊँचाई चार हाथ है। इस
अग्नि-कुंड के चारों कोनों पर चार
सींग ऊपर की तरफ निकले हुए हैं।[1]
16 अग्नि-कुंड चौकोर है, 12 हाथ लंबा,
12 हाथ चौड़ा।[2] **17** बड़े कगार की
लंबाई-चौड़ाई चौदह-चौदह हाथ है और
उसके चारों तरफ बना किनारा आधा
हाथ है। वेदी का आधार चारों तरफ से
एक हाथ निकला है।

वेदी की सीढ़ियाँ पूरब की तरफ हैं।”

18 इसके बाद उसने मुझसे कहा,
“इंसान के बेटे, सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है, ‘जब वेदी बनायी
जाएगी तो इन निर्देशों का पालन किया
जाए ताकि पूरी होम-बलियाँ चढ़ायी जाएँ
और उनका खून वेदी पर छिड़का
जाए।’[3]

19 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, ‘तुम झुंड में से एक बैल लेना
और सादोक के वंश के लेवी याजकों
को देना[4] जो मेरे पास आकर मेरी
सेवा करते हैं। वे उस बैल की पाप-बलि
चढ़ाएँगे।[5] **20** तुम उसका थोड़ा खून
लेकर वेदी के चारों सींगों पर, बड़े कगार
के चारों कोनों पर और चारों तरफ के
किनारे पर लगाना ताकि वेदी से पाप दूर
करके उसे शुद्ध किया जाए और उसके
लिए प्रायश्चित किया जाए।[6] **21** फिर
तुम पाप-बलि का बैल पवित्र-स्थान के
बाहर, मंदिर की तय जगह पर ले

43:9 *या “वे वेश्याओं जैसी बदचलनी करना बंद करें।” **43:10** *शा., “का नमूना नापें।” **43:13** *यह लंबे हाथ का माप है। अति. ख14 देखें।

43:13 *करीब 22.2 सें.मी. (8.75 इंच)। अति. ख14 देखें।

अध्य. 43
1 यहे 8:3
2 दान 9:12
3 यहे 37:23, यहे 37:26, 2कुर 6:16
4 यहे 40:4
5 यहे 16:63
6 यहे 44:5
7 यहे 11:19, 20, यहे 36:27
8 भज 93:5, यहे 40:2, यहे 42:20
9 निर्ग 27:1, 2इत 4:1

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 27:2, प्रक 9:13
2 निर्ग 38:1, 2इत 4:1
3 निर्ग 40:29, लैव 1:5, लैव 8:18-21, यहे 45:19
4 यहे 40:46, यहे 44:15, यहे 48:11
5 निर्ग 29:10, लैव 8:14
6 निर्ग 29:36, 37, लैव 8:15, इब्र 9:23

जाना ताकि उसे जलाया जा सके।[1]
22 अगले दिन तुम पाप-बलि के लिए
एक ऐसा बकरा अर्पित करना जिसमें
कोई दोष न हो। वे इस जानवर की भी
बलि चढ़ाकर वेदी से पाप दूर करेंगे और
उसे शुद्ध करेंगे, ठीक जैसे वे बैल की बलि
चढ़ाकर उससे पाप दूर करते और शुद्ध
करते हैं।'

23 'जब तुम वेदी से पाप दूर करके
उसे शुद्ध कर चुके होगे, तो तुम झुंड में से
एक ऐसे बैल और मेढ़े की बलि चढ़ाओ-
गे जिनमें कोई दोष न हो। **24** तुम उन्हें
यहोवा के लिए अर्पित करना। याजक
उन जानवरों के गोश्त पर नमक छिड़-
केंगे[2] और उनकी होम-बलि का पूरा
चढ़ावा यहोवा के लिए अर्पित करेंगे।
25 तुम सात दिन तक हर रोज़ पाप-
बलि के लिए एक बकरा, एक बैल और
एक मेढ़ा अर्पित करोगे।[3] ये ऐसे जान-
वर होने चाहिए जिनमें कोई दोष न
हो।* **26** उन्हें सात दिन तक वेदी के
लिए प्रायश्चित करना होगा और वेदी
को शुद्ध करके उसका उद्घाटन करना
होगा। **27** जब वेदी को शुद्ध करने के
सात दिन पूरे हो जाएँ तो आठवें दिन[4]
और उसके बाद याजक तुम्हारी* पूरी
होम-बलियाँ और शांति-बलियाँ वेदी पर
अर्पित किया करेंगे और मैं तुमसे खुश
होऊँगा।'[5] सारे जहान के मालिक यहोवा
का यह ऐलान है।"

44 वह मुझे वापस पवित्र-स्थान के
उस बाहरी दरवाज़े के पास ले
आया जो पूरब में था।[6] वह दरवाज़ा बंद
था।[7] **2** फिर यहोवा ने मुझे बताया,
"यह दरवाज़ा बंद ही रहेगा। इसे खोला
नहीं जाएगा और कोई भी इंसान इसमें से
नहीं जा पाएगा। इसराएल के परमेश्वर
यहोवा ने इस दरवाज़े से प्रवेश किया है,[1]
इसलिए इसे बंद रखा जाए। **3** लेकिन
प्रधान इस दरवाज़े के अंदर बैठेगा
ताकि यहोवा के सामने रोटी खाए[2]
क्योंकि वह एक प्रधान है। वह दरवाज़े
के बरामदे से होकर अंदर आया करेगा
और उस बरामदे से होकर बाहर जाया
करेगा।"[3]

4 इसके बाद वह मुझे उत्तरी दर-
वाज़े से मंदिर के सामने ले आया। वहाँ
मैंने देखा कि यहोवा का मंदिर यहोवा
की महिमा से भरा हुआ है[4] और मैं मुँह
के बल ज़मीन पर गिर पड़ा।[5] **5** फिर
यहोवा ने मुझसे कहा, "इंसान के बेटे,
मैं तुझे यहोवा के मंदिर की विधियों और
उसके नियमों के बारे में जो कुछ बताऊँगा
उस पर ध्यान देना, मैं तुझे जो कुछ
दिखाऊँगा उसे गौर से देखना और मेरी
हर बात कान लगाकर सुनना। पवित्र-
स्थान के प्रवेश और बाहर निकलने के
सभी रास्तों को तू ध्यान से देखना।[6]
6 तू इसराएल के बगावती घराने से
कहना, 'सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, "इसराएल के घराने के लोगो,
बहुत हो चुका! तुमने घिनौने काम करने में
हद कर दी है। **7** तुम मेरे पवित्र-स्थान
के अंदर उन परदेसियों को ले आते हो
जो तन और मन से खतनारहित हैं और
वे मेरे मंदिर को दूषित कर देते हैं।
एक तरफ तो तुम मुझे रोटी, चरबी और
खून अर्पित करते हो, वहीं दूसरी तरफ
घिनौने काम करके मेरा करार तोड़ते हो।
8 तुमने मेरी पवित्र चीज़ों की देखभाल
नहीं की।[7] इसके बजाय, तुम मेरे पवित्र-
स्थान से जुड़ी ज़िम्मेदारियाँ दूसरों को सौंप
देते हो।"'

43:25 *या "जो परिपूर्ण हों।" **43:27** *यानी लोगों की।

अध्य. 43
1 निर्ग 29:14; लैव 8:17; इब्र 13:11
2 लैव 2:13
3 निर्ग 29:35
4 लैव 9:1
5 यहे 20:40

अध्य. 44
6 यहे 43:1
7 यहे 46:1

दूसरा कॉल.
1 यहे 43:2
2 व्य 12:5, 7
3 यहे 46:2
4 यश 6:1-3; यहे 10:4
5 यहे 1:27, 28; यहे 3:23
6 यहे 40:4
7 लैव 22:2; गि 18:2, 3

9 ‘सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, “इसराएल में रहनेवाले ऐसे किसी भी परदेसी को मेरे पवित्र-स्थान के अंदर कदम रखने की इजाज़त नहीं है जो तन और मन से खतनारहित है।”’

10 ‘जब इसराएल मेरी राह से फिर-कर दूर चला गया और अपनी घिनौनी मूरतों* के पीछे चलने लगा, तब जो लेवी मुझसे दूर चले गए थे,[1] उन्हें अपने गुनाह का अंजाम भुगतना पड़ेगा। 11 फिर वे मेरे पवित्र-स्थान में सेवक बनकर मंदिर के दरवाज़ों की निगरानी करेंगे[2] और मंदिर में सेवा करेंगे। वे लोगों की पूरी होम-बलि और दूसरे बलिदानों के जान-वर हलाल किया करेंगे और लोगों की सेवा करने के लिए उनके सामने हाज़िर रहेंगे।’ 12 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, ‘उन लेवियों ने लोगों की सेवा उनकी घिनौनी मूरतों के सामने की और ऐसा करके वे इसराएल के घराने के लिए ठोकर का पत्थर बने जिस वजह से उसने पाप किया।[3] इसलिए मैंने हाथ उठाकर शपथ खायी है कि उन्हें अपने गुनाह का अंजाम भुगतना पड़ेगा। 13 वे मेरे याजकों के नाते मेरे पास आकर सेवा नहीं करेंगे और मेरी किसी भी चीज़ के पास नहीं जाएँगे जो पवित्र या बहुत पवित्र है। उन्हें अपने घिनौने कामों की वजह से शर्मिंदा होना पड़ेगा। 14 लेकिन मैं उन्हें मंदिर की ज़िम्मेदारियाँ सौंपूँगा ताकि वे वहाँ सेवा के सभी काम कर सकें।’[4]

15 सारे जहान का मालिक यहोवा कहता है, ‘लेकिन जहाँ तक सादोक वंश के लेवी याजकों की बात है,[1] वे मेरे पास आकर मेरी सेवा करेंगे और मेरे सामने हाज़िर होकर मुझे चरबी और खून अर्पित करेंगे[2] क्योंकि जब इसराएली मेरी राह से फिरकर दूर चले गए थे, तब भी ये लेवी मेरे पवित्र-स्थान में अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाते रहे।[3] 16 ये लोग ही मेरे पवित्र-स्थान में कदम रखेंगे और मेरी मेज़ के पास आकर मेरी सेवा किया करेंगे[4] और मेरी तरफ उनकी जो ज़िम्मे-दारी बनती है उसे पूरा करेंगे।[5]

17 जब वे भीतरी आँगन के दरवाज़ों के अंदर जाएँगे तो उन्हें मलमल के कपड़े पहनने चाहिए।[6] जब वे भीतरी आँगन के दरवाज़ों में या अंदर सेवा करते हैं तो उनके शरीर पर कोई भी ऊनी कपड़ा नहीं होना चाहिए। 18 उन्हें मलमल की पगड़ी और मलमल के लंबे जाँघिये पहनने चाहिए।[7] उन्हें ऐसा कोई भी कपड़ा नहीं पहनना चाहिए जिससे पसीना छूटता है। 19 जब भी उन्हें बाहरी आँगन में जाना हो जहाँ आम लोग होते हैं, तो उन्हें पहले अपनी वह पोशाक बदलनी चाहिए जिसे पहनकर वे मंदिर में सेवा करते हैं।[8] उन्हें अपनी पोशाक भोजन के पवित्र कमरों* में रख देनी चाहिए।[9] उन्हें दूसरे कपड़े पहनकर बाहरी आँगन में जाना चाहिए ताकि वे अपनी पवित्र पोशाक से आम लोगों को पवित्र न करें। 20 उन्हें अपना सिर नहीं मुँड़ाना चाहिए[10] और न ही अपने बाल ज़्यादा बढ़ाने चाहिए। उन्हें बाल कटवाते रहना चाहिए। 21 याजकों को भीतरी आँगन में जाने से पहले दाख-मदिरा नहीं पीनी चाहिए।[11] 22 उन्हें एक विधवा या तलाकशुदा औरत को

अध्य. 44
1 2रा 23:8, 9; 2इत 29:1, 5; नहे 9:34; यिर्म 23:11; यहे 8:5
2 1इत 26:1
3 यश 9:16; मला 2:8
4 गि 18:2, 4

दूसरा कॉल.
1 1रा 2:35; यहे 40:46
2 लैव 3:14-16; लैव 17:6
3 यहे 48:9, 11
4 यहे 41:21, 22
5 गि 18:7
6 निर्ग 28:39, 42; निर्ग 39:27, 28; लैव 16:4
7 निर्ग 28:40, 42
8 लैव 6:10; यहे 42:14
9 यहे 42:13
10 लैव 21:1, 5; व्य 14:1
11 लैव 10:9

44:10 *इनका इब्रानी शब्द शायद “मल” के लिए इस्तेमाल होनेवाले शब्द से संबंध रखता है और यह बताने के लिए इस्तेमाल होता है कि किसी चीज़ से कितनी घिन की जा रही है।

44:19 *या “खानों।”

अपनी पत्नी नहीं बनाना चाहिए।[1] मगर
वे इसराएलियों में से किसी कुँवारी लड़की
से या याजक की विधवा से शादी कर
सकते हैं।’[2]

23 ‘याजकों को चाहिए कि वे मेरे
लोगों को पवित्र और आम बातों के बीच
और शुद्ध और अशुद्ध बातों के बीच फर्क
करना सिखाएँ।[3] 24 उन्हें न्यायी बन-
कर मुकदमों की सुनवाई करनी चाहिए[4]
और मेरे न्याय-सिद्धांतों के मुताबिक
फैसला करना चाहिए।[5] उन्हें मेरे सभी
त्योहारों के नियमों और विधियों का
पालन करना चाहिए[6] और मेरे सब्तों को
पवित्र मानना चाहिए। 25 उन्हें किसी
इंसान की लाश के पास नहीं जाना चाहिए
वरना वे अशुद्ध हो जाएँगे। लेकिन
अगर एक याजक के पिता, उसकी माँ,
बेटे, बेटी, भाई या अविवाहित बहन की
मौत हो जाती है तो वह उसकी लाश के
पास जा सकता है और अशुद्ध हो सकता
है।[7] 26 फिर उस याजक को शुद्ध होने
के बाद सात दिन इंतज़ार करना चाहिए।
27 इसके बाद वह जिस दिन भीतरी
आँगन में यानी पवित्र जगह में सेवा करने
जाएगा उस दिन उसे अपने लिए एक
पाप-बलि चढ़ानी होगी।’[8] सारे जहान के
मालिक यहोवा का यह ऐलान है।

28 ‘उनकी विरासत यह होगी: मैं ही
उनकी विरासत हूँ।[9] इसराएल देश में तुम
उन्हें कोई ज़मीन न देना क्योंकि मैं उनकी
जागीर हूँ। 29 ये ही वे लोग हैं जिन्हें
अनाज के चढ़ावे, पाप-बलि और दोष-
बलि में से हिस्सा खाने को मिलेगा[10] और
इसराएल में समर्पित की हुई हर चीज़
उनकी होगी।[11] 30 तुम्हारी हर तरह
की पहली उपज के सबसे बढ़िया फलों पर
और तुम्हारे हर तरह के दान पर याजकों
का हक होगा।[12] साथ ही, तुम पहले फल
का अनाज दरदरा कूटकर याजकों को
देना।[1] इससे तुम्हारे घराने पर आशीष
बनी रहेगी।[2] 31 याजकों को किसी
ऐसे पक्षी या जानवर का गोश्त नहीं खाना
चाहिए, जो मरा हुआ या फाड़ा हुआ पाया
जाता है।’[3]

45 ‘जब तुम देश की ज़मीन विरा-
सत में बाँटोगे,[4] तो उसमें से
एक भाग यहोवा को भेंट करना। यह
देश का पवित्र भाग होगा।[5] इसकी
लंबाई 25,000 हाथ* और चौड़ाई
10,000 हाथ होनी चाहिए।[6] यह
पूरा भाग# पवित्र होगा। 2 इसी ज़मीन
का एक चौकोर हिस्सा पवित्र जगह के
लिए होगा, जिसकी लंबाई 500 हाथ
और चौड़ाई 500 हाथ होगी।*[7]
पवित्र जगह के चारों तरफ पचास-
पचास हाथ चौड़ा चरागाह होगा।[8]
3 पवित्र भाग में से 25,000 हाथ
लंबी और 10,000 हाथ चौड़ी ज़मीन
अलग करना। उस ज़मीन में पवित्र-
स्थान होगा जो बहुत पवित्र होगा।
4 ज़मीन का यह टुकड़ा याजकों को दिया
गया पवित्र भाग होगा,[9] जो पवित्र-स्थान
के सेवक हैं और यहोवा के पास आकर
उसकी सेवा करते हैं।[10] इसी हिस्से में
उनके घर होंगे और पवित्र-स्थान के लिए
पवित्र जगह भी होगी।

5 मंदिर में सेवा करनेवाले लेवियों
के लिए ज़मीन का एक टुकड़ा होगा,
जिसकी लंबाई 25,000 हाथ और
चौड़ाई 10,000 हाथ होगी।[11] और
भोजन के 20 कमरे*[12] उनके हिस्से में
होंगे।

अध्य. 44
1 लैव 21:7
2 लैव 21:10, 14
3 मला 2:7
4 व्य 17:9
5 1इत 23:3, 4; 2इत 19:8
6 लैव 23:2
7 लैव 21:1-3
8 लैव 4:3
9 गि 18:20; व्य 18:1; यह 13:14; यहे 45:4
10 लैव 2:3; लैव 6:17, 18; लैव 7:1, 6; 1कुर 9:13
11 लैव 27:21; गि 18:14
12 निर्ग 23:19; गि 18:8, 12; गि 18:26, 27; व्य 18:4

दूसरा कॉल.
1 गि 15:20; नहे 10:35-37
2 नीत 3:9, 10; मला 3:10
3 निर्ग 22:31; लैव 22:3, 8

अध्य. 45
4 यह 14:1, 2; यहे 47:21, 22
5 यहे 48:20
6 यहे 48:8, 9
7 यहे 42:20
8 यह 21:1, 2
9 यहे 48:10, 11
10 यहे 40:46
11 यहे 48:13
12 यहे 40:17

45:1 *यह लंबे हाथ का माप है। अति. ख14 देखें। #या “उसकी सारी सरहदों के अंदर की जगह।” **45:2** *शा., “500 बटे 500.” **45:5** *या “खाने।”

6 तुम शहर के लिए 25,000 हाथ
लंबी और 5,000 हाथ चौड़ी ज़मीन
अलग करना।[1] (यह ज़मीन भेंट किए
गए पवित्र भाग के बराबर में होगी।)
यह ज़मीन इसराएल के पूरे घराने की
होगी।

7 प्रधान की ज़मीन, पवित्र भेंट की
ज़मीन और शहर के लिए अलग की
गयी ज़मीन के दोनों तरफ होगी। उसकी
ज़मीन, पवित्र भेंट की ज़मीन और शहर
की ज़मीन के पास होगी। यह पश्‍चिम
और पूरब की तरफ होगी। इसकी
लंबाई पूरब से पश्‍चिम की सरहद तक
बाकी गोत्रों की ज़मीन की लंबाई के बरा-
बर होगी।[2] 8 इसराएल में यह ज़मीन
प्रधान की जागीर होगी। मेरे ठहराए
प्रधान फिर कभी मेरे लोगों के साथ बद-
सलूकी नहीं करेंगे[3] और वे इसराएल के
घराने के लिए गोत्रों के हिसाब से ज़मीन
का बँटवारा करेंगे।'[4]

9 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'इसराएल के प्रधानो, बहुत हो
चुका!'

'अब लोगों को सताना और उन पर
अत्याचार करना बंद करो। न्याय करो।[5]
मेरे लोगों की जायदाद हड़पना बंद
करो।'[6] सारे जहान के मालिक यहोवा
ने यह ऐलान किया है। 10 'तुम्हें
ऐसा तराज़ू, एपा* और बत* इस्तेमाल
करना चाहिए जो सही हो।[7] 11 तुम्हारे
एपा और बत तय नाप के होने चाहिए।
बत में होमेर* का दसवाँ भाग समाए और
एपा में भी होमेर का दसवाँ भाग समाए।
दोनों की नाप होमेर के हिसाब से होनी
चाहिए। 12 एक शेकेल*[8] 20 गेरा*
का होना चाहिए। और 20 शेकेल,
25 शेकेल और 15 शेकेल को मिलाकर
एक मानेह* होगा।'

13 'तुम्हें भेंट में यह सब देना चाहिए:
हर होमेर गेहूँ में से एपा का छठा भाग
और हर होमेर जौ में से एपा का छठा
भाग। 14 तुम्हें तेल का जो तय हिस्सा
देना है, वह बत के हिसाब से नापकर
दिया जाए। बत, कोर* का दसवाँ भाग
है। बत, होमेर का भी दसवाँ भाग है
क्योंकि दस बत से एक होमेर बनता है।
15 और इसराएल के जानवरों के झुंड में
से हर 200 भेड़ों में से एक भेड़ देना। ये
सारी भेंट अनाज के चढ़ावे,[1] पूरी होम-
बलि[2] और शांति-बलियों[3] के लिए होगी
ताकि लोगों के लिए प्रायश्‍चित किया जा
सके।'[4] सारे जहान के मालिक यहोवा का
यह ऐलान है।

16 'देश के सभी लोग इसराएल
के प्रधान को यह भेंट दिया करेंगे।[5]
17 लेकिन प्रधान इस बात के लिए
ज़िम्मेदार होगा कि त्योहारों और नए चाँद
के मौकों पर, सब्तों[6] और इसराएल के
घराने के लिए तय किए गए सारे त्योहारों
के दौरान पूरी होम-बलियाँ,[7] अनाज का
चढ़ावा[8] और अर्घ दिया जाए।[9] उसी को
पाप-बलि, अनाज के चढ़ावे, पूरी होम-
बलि और शांति-बलियों का इंतज़ाम
करना होगा ताकि इसराएल के घराने के
लिए प्रायश्‍चित किया जा सके।'

18 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'पहले महीने के पहले दिन
तुम झुंड में से ऐसा बैल लेना, जिसमें
कोई दोष न हो और उसकी बलि चढ़ा-
कर पवित्र-स्थान से पाप दूर करना और
उसे शुद्ध करना।[10] 19 याजक पाप-
बलि का थोड़ा खून लेकर मंदिर के फाटक

45:10-12, 14 *अति. ख14 देखें।

45:12 *या "मीना।" अति. ख14 देखें।

अध्य. 45
1 यहे 48:15
2 यहे 48:21
3 यश 32:1; यश 60:17; यिर्म 22:17; यिर्म 23:5; यहे 22:27; यहे 46:18; मी 3:1-3
4 यह 11:23
5 यिर्म 22:3; मी 6:8; जक 8:16
6 मी 2:2
7 लैव 19:36; नीत 11:1; आम 8:5; मी 6:10, 11
8 निर्ग 30:13

दूसरा कॉल.
1 लैव 2:1
2 लैव 1:10
3 लैव 3:1
4 लैव 1:4; लैव 6:30; इब्र 9:22
5 निर्ग 30:14
6 यश 66:23
7 1इत 16:2; 2इत 30:24
8 1रा 8:64
9 व्य 16:16; 2इत 8:12, 13; 2इत 31:3; 2इत 35:7
10 लैव 16:16

की चौखट पर,[1] वेदी के कगार के चारों
कोनों पर और भीतरी आँगन के दरवाज़े
के खंभे पर लगाएगा। **20** ऐसा तुम
महीने के सातवें दिन भी करना क्योंकि
हो सकता है कोई अनजाने में या गलती से
पाप कर बैठा हो।[2] तुम्हें मंदिर के लिए
प्रायश्चित करना होगा।[3]

21 पहले महीने के 14वें दिन तुम
फसह का त्योहार मनाओगे।[4] सात दिन
तक तुम्हें बिन-खमीर की रोटी खानी
चाहिए।[5] **22** उस दिन प्रधान अपनी
खातिर और देश के सभी लोगों की
खातिर पाप-बलि के लिए एक बैल
का इंतज़ाम करेगा।[6] **23** सात दिन के
त्योहार में वह यहोवा को पूरी होम-
बलि चढ़ाने के लिए ऐसे सात बैलों
और सात मेढ़ों का इंतज़ाम करेगा जिनमें
कोई दोष न हो।[7] साथ ही, वह पाप-
बलि के लिए सात बकरों का भी इंतज़ाम
करेगा। हर दिन एक-एक बैल, मेढ़े और
बकरे की बलि की जाएगी। **24** उसे
हर बैल और मेढ़े के साथ एक-एक
एपा अनाज का चढ़ावा और हर एपा के
साथ एक हीन* तेल का इंतज़ाम करना
चाहिए।

25 सातवें महीने के 15वें दिन से शुरू
होनेवाले सात दिन के त्योहार के दौरान[8]
भी उसे वैसी ही पाप-बलि, पूरी होम-
बलि, अनाज के चढ़ावे और तेल का इंत-
ज़ाम करना चाहिए।'"

46 "सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'भीतरी आँगन के
पूरब का दरवाज़ा[9] काम-काज के छः
दिन[10] बंद रखा जाए।[11] मगर सब्त के
दिन और नए चाँद के दिन उसे खोला
जाए। **2** प्रधान दरवाज़े के बरामदे से
होकर आएगा[1] और दरवाज़े के खंभे के
पास खड़ा होगा। याजक उसकी दी हुई
पूरी होम-बलि और शांति-बलियाँ अर्पित
करेंगे और प्रधान दरवाज़े की दह-
लीज़ पर झुककर दंडवत करेगा और
फिर बाहर चला जाएगा। मगर इस दर-
वाज़े को शाम से पहले बंद नहीं करना
चाहिए। **3** सब्त और नए चाँद के दिन
उस दरवाज़े के प्रवेश के पास देश के
लोग भी यहोवा के सामने झुककर दंडवत
करेंगे।[2]

4 सब्त के दिन प्रधान, यहोवा को
जो पूरी होम-बलि अर्पित करेगा, वह छः
नर मेम्नों और एक मेढ़े की होनी चाहिए
जिनमें कोई दोष न हो।[3] **5** वह मेढ़े के
साथ एपा-भर* अनाज का चढ़ावा देगा
और नर मेम्नों के साथ अनाज का उतना
चढ़ावा देगा जितना वह दे सकता है।
और वह हर एपा चढ़ावे के साथ एक
हीन* तेल देगा।[4] **6** नए चाँद के दिन
वह झुंड में से एक बैल, छः नर मेम्ने
और एक मेढ़ा अर्पित करेगा। इन जान-
वरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए।[5]
7 उसे बैल और मेढ़े के साथ एक-एक
एपा अनाज का चढ़ावा देना होगा और
नर मेम्नों के साथ वह अनाज का उतना
चढ़ावा देगा जितना वह दे सकता है। उसे
हर एपा चढ़ावे के साथ एक हीन तेल देना
होगा।

8 जब-जब प्रधान को आना होता है,
उसे दरवाज़े के बरामदे से होकर आना
चाहिए और उसी रास्ते से वापस बाहर
जाना चाहिए।[6] **9** और जब देश के
लोग त्योहारों के दौरान यहोवा की
उपासना करने उसके सामने आते हैं,[7] तो
उत्तरी दरवाज़े[8] से अंदर आनेवालों को
दक्षिणी दरवाज़े से बाहर जाना चाहिए[9]
और दक्षिणी दरवाज़े से आनेवालों को

45:24; 46:5 *अति. ख14 देखें।

अध्य. 45
1 यहे 41:21
2 लैव 4:27, 28
3 लैव 16:20
4 लैव 23:5
5 निर्ग 12:18
6 लैव 4:13, 14
7 लैव 23:8
8 लैव 23:34 व्य 16:13 2इत 7:8 जक 14:16

अध्य. 46
9 यहे 40:32
10 निर्ग 20:9
11 यहे 44:1, 2

दूसरा कॉल.
1 यहे 44:3
2 भज 81:3 यश 66:23
3 गि 28:9, 10 यहे 45:17
4 यहे 46:11
5 गि 28:11-15
6 यहे 46:2
7 निर्ग 23:14 व्य 16:16
8 यहे 40:20
9 यहे 40:24

उत्तरी दरवाज़े से बाहर जाना चाहिए।
किसी को भी उस दरवाज़े से वापस नहीं
जाना चाहिए जिससे वह अंदर आता है।
लोग जिस दरवाज़े से अंदर आते हैं,
उसके सामनेवाले दरवाज़े से उन्हें बाहर
जाना चाहिए। **10** और लोगों के बीच
जो प्रधान है, उसे तब अंदर आना
चाहिए जब लोग अंदर आते हैं और
तब बाहर जाना चाहिए जब वे बाहर जाते
हैं। **11** त्योहारों और ठहराए गए खास
दिनों पर उसे बैल और मेढ़े के साथ एक-
एक एपा अनाज का चढ़ावा देना चाहिए
और नर मेम्नों के साथ अनाज का उतना
चढ़ावा देना चाहिए जितना वह दे सकता
है। और उसे हर एपा चढ़ावे के साथ एक
हीन तेल देना चाहिए।[1]

12 अगर प्रधान यहोवा को पूरी होम-
बलि[2] या शांति-बलियों की स्वेच्छा-बलि
देना चाहता है, तो उसके लिए पूरब का
दरवाज़ा खोला जाएगा। वह पूरी होम-
बलि और शांति-बलियाँ उसी तरह लाकर
देगा जैसे वह सब्त के दिन बलियाँ लाकर
देता है।[3] जब वह बाहर चला जाएगा तो
दरवाज़ा बंद कर दिया जाए।[4]

13 तू हर दिन यहोवा को पूरी होम-
बलि चढ़ाने के लिए ऐसा नर मेम्ना देना,
जो एक साल का हो और जिसमें कोई
दोष न हो।[5] ऐसा तू हर सुबह करना।
14 हर सुबह इस होम-बलि के साथ तू
अनाज के चढ़ावे के लिए एपा का छठा
हिस्सा मैदा और मैदे पर छिड़कने के लिए
एक-तिहाई हीन तेल देना। यह निय-
मित तौर पर यहोवा को दिया जानेवाला
अनाज का चढ़ावा है। यह नियम सदा
तक लागू रहेगा। **15** इस तरह उन्हें हर
सुबह नियमित तौर पर पूरी होम-बलि के
लिए नर मेम्ना, अनाज का चढ़ावा और
तेल देना चाहिए।'

16 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, 'अगर प्रधान अपने बेटों में से
हरेक को तोहफे में ज़मीन देता है कि वह
उनकी विरासत बन जाए, तो वह ज़मीन
उसके बेटों की हो जाएगी। वह ज़मीन
उनकी जागीर बन जाएगी जो उन्हें विरा-
सत में मिलती है। **17** लेकिन अगर
वह अपने किसी दास को अपनी विरा-
सत में से कुछ ज़मीन तोहफे में देता
है, तो वह ज़मीन छुटकारे के साल तक
दास की रहेगी।[1] इसके बाद वह ज़मीन
वापस प्रधान की हो जाएगी। सिर्फ
उसके बेटों को दी गयी विरासत की
ज़मीन हमेशा के लिए उनकी हो जाएगी।
18 प्रधान लोगों को उनकी विरासत की
किसी ज़मीन से ज़बरदस्ती न निकाले
और उनकी ज़मीन न हड़पे। उसे सिर्फ
अपनी ज़मीन में से अपने बेटों को विरा-
सत देनी चाहिए ताकि मेरे लोगों में से
किसी को ज़बरदस्ती उसकी ज़मीन से न
निकाला जाए।'"

19 इसके बाद वह मुझे उस दर-
वाज़े के पासवाले प्रवेश से ले आया[2]
जो उत्तर में याजकों के भोजन के पवित्र
कमरों* की तरफ जाता है।[3] वहाँ मैंने
पीछे पश्चिम की तरफ एक जगह देखी।
20 उसने मुझे बताया, "यह वह जगह है
जहाँ याजक दोष-बलि और पाप-बलि का
गोश्त उबालेंगे और अनाज के चढ़ावे की
रोटियाँ सेंकेंगे।[4] वे इसी जगह पर यह
सब पकाएँगे ताकि उन्हें कोई भी चीज़
बाहरी आँगन में न ले जानी पड़े और वे
लोगों को पवित्र न करें।"[5]

21 फिर वह मुझे बाहरी आँगन में
ले गया और उसने मुझे आँगन के
चारों कोनों में घुमाया। मैंने हर कोने

46:19 * या "खानों।"

अध्य. 46
1 यहे 45:21, 24
यहे 46:6, 7
2 लैव 1:3
3 यहे 45:17
4 यहे 46:1, 2
5 निर्ग 29:38
गि 28:3, 5

दूसरा कॉल.
1 लैव 25:10
2 यहे 42:9
3 यहे 42:1
4 लैव 2:4, 5
5 यहे 44:19

में एक छोटा आँगन देखा। 22 चारों
कोनों में चार छोटे आँगन थे। ये आँगन
40 हाथ[*] लंबे और 30 हाथ चौड़े
थे। चारों आँगन एक ही नाप के थे।
23 इन आँगनों में चारों तरफ कगार बने
थे[*] और कगारों के नीचे चढ़ावे की चीज़ें
पकाने की जगह बनी थीं। 24 फिर
उसने मुझे बताया, "इन जगहों में मंदिर के
सेवक लोगों की दी हुई बलिदान की चीज़ें
पकाते हैं।"[1]

47 इसके बाद वह मुझे वापस मंदिर
के प्रवेश पर ले गया।[2] वहाँ मैंने
देखा कि मंदिर की दहलीज़ के नीचे से
पानी की एक धारा बहती हुई पूरब की
तरफ जा रही है,[3] क्योंकि मंदिर के आगे
का हिस्सा पूरब की तरफ था। पानी की
यह धारा मंदिर की दहलीज़ के नीचे से
दायीं तरफ और वेदी के दक्षिण की तरफ
बह रही थी।

2 फिर वह मुझे उत्तरी दरवाज़े से
बाहर ले गया[4] और घुमाकर पूरब-
वाले बाहरी दरवाज़े पर ले आया।[5] मैंने
देखा कि दरवाज़े के दायीं तरफ पानी की
धारा हलकी-हलकी बह रही है।

3 वह आदमी हाथ में एक नापने
की डोरी लिए पूरब की तरफ जाने
लगा[6] और उसने पूरब के दरवाज़े से
1,000 हाथ[*] की दूरी तक पानी की
धारा नापी। फिर उसने मुझे पानी की
धारा पार करने को कहा। वहाँ पानी
टखनों तक था।

4 फिर उसने 1,000 हाथ की दूरी
और नापी और मुझे पानी की धारा पार
करने को कहा। वहाँ पानी घुटनों तक
गहरा था।

उसने 1,000 हाथ की दूरी और
नापी और मुझे पानी की धारा पार
करने को कहा। वहाँ पानी कमर तक
गहरा था।

5 उसने 1,000 हाथ की दूरी और
नापी। वहाँ पानी बढ़कर नदी बन गया था
जिसे मैं पैदल पार नहीं कर सका।
नदी इतनी गहरी थी कि उसे तैरकर ही
पार किया जा सकता था। वह ऐसी नदी
थी जिसे चलकर पार नहीं किया जा
सकता था।

6 उसने मुझसे पूछा, "इंसान के बेटे,
क्या तू यह सब देख रहा है?"

फिर वह मुझे पैदल चलाकर वापस
नदी किनारे ले आया। 7 वापस लौटने
पर मैंने देखा कि नदी किनारे दोनों तरफ
बहुत सारे पेड़ हैं।[1] 8 फिर उसने मुझे
बताया, "नदी का यह पानी पूरब के
इलाके की तरफ बहता है और फिर
अराबा[*2] से होता हुआ समुंदर में जा
मिलता है। जब यह पानी समुंदर में
जा मिलेगा[3] तो उसका पानी मीठा[#] हो
जाएगा। 9 अब उसका पानी जहाँ भी
बहेगा वह समुद्री जीवों के झुंडों से भर
जाएगा। वहाँ मछलियों की भरमार होगी
क्योंकि वहाँ यह पानी बहेगा। समुंदर का
पानी मीठा[#] हो जाएगा और जहाँ कहीं
उसका पानी बहेगा, वहाँ हर तरह का
समुद्री जीव ज़िंदा रह पाएगा।
10 एनगदी[4] से लेकर ऐन-एग्लैम
तक समुंदर किनारे मछुवारे खड़े रहेंगे,
जहाँ बड़े-बड़े जाल सुखाने की जगह
होगी। वहाँ तरह-तरह की मछलियों
की भरमार होगी, जैसे महासागर[*5] में
होती है।

अध्य. 46
1 2इत 35:13

अध्य. 47
2 यहे 41:2
3 जक 13:1; जक 14:8; प्रक 22:1
4 यहे 40:20
5 यहे 40:6; यहे 44:1, 2
6 यहे 40:3; प्रक 21:15

दूसरा कॉल.
1 प्रक 22:1, 2
2 व्य 4:47, 49
3 जक 14:8
4 यह 15:20, 62; 2इत 20:2
5 गि 34:2, 6

46:22; 47:3 *यह लंबे हाथ का माप है। अति. ख14 देखें। **46:23** *या "कतारें बनी थीं।"

47:8 *या "वीराने।" **47:8, 9** #शा., "स्वस्थ।" **47:10** *यानी भूमध्य सागर।

11 इसके पास कुछ जगह दलदली
और कीचड़ से भरी होंगी। उनका पानी
बदलकर मीठा* नहीं होगा, वह खारा ही
रहेगा।[1]

12 नदी किनारे दोनों तरफ हर तरह
के फलदार पेड़ उगेंगे। उनके पत्ते कभी
नहीं मुरझाएँगे और उनका फलना कभी
बंद नहीं होगा। वे हर महीने नए फल देंगे
क्योंकि वे पवित्र-स्थान से निकलनेवाले
पानी से सींचे जाते हैं।[2] उनके फल खाने
के लिए होंगे और पत्ते रोग दूर करने के
काम आएँगे।"[3]

13 सारे जहान का मालिक यहोवा
कहता है, "तुम देश का यह इलाका इस-
राएल के 12 गोत्रों को विरासत में
बाँटोगे और यूसुफ को दो हिस्से मिलेंगे।[4]
14 तुम यह इलाका विरासत में
पाओगे और हर किसी को बराबर
हिस्सा मिलेगा।* मैंने तुम्हारे पुरखों से
शपथ खाकर कहा था कि यह देश उन्हें
दिया जाएगा[5] और अब तुम्हें विरासत में
यह दिया जा रहा है।

15 देश की उत्तरी सरहद यह है: महा-
सागर से लेकर हेतलोन की तरफ जाने-
वाले रास्ते[6] से होते हुए सदाद[7] तक और
16 सदाद से हमात[8] तक और हमात से
बेरोता[9] तक और बेरोता से सिबरैम तक
जो दमिश्क और हमात के इलाकों के
बीच है और सिबरैम से हासेर-हत्तीकोन
तक जो हौरान[10] की सरहद के पास है।
17 इस तरह सरहद सागर से हसर-
एनोन[11] तक होगी। यह सरहद दमिश्क
की सरहद के साथ-साथ आगे उत्तर तक
और हमात की सरहद तक होगी।[12] यह
उत्तरी सरहद है।

47:11 *शा., "स्वस्थ।" **47:14** *शा., "तुममें से हरेक अपने भाई की तरह यह इलाका विरासत में पाएगा।"

18 पूरब की सरहद हौरान और
दमिश्क के इलाकों के बीच है। यह यर-
दन नदी के किनारे-किनारे जाती है, जो
गिलाद[1] और इसराएल देश के बीच है।
तुम सरहद* से लेकर पूर्वी सागर# तक
नापना। यह पूर्वी सरहद है।

19 दक्षिणी सरहद तामार से मरीबोत-
कादेश के सोतों[2] तक, फिर घाटी* तक
और महासागर तक होगी।[3] यह दक्षिणी
सरहद है।

20 पश्चिम में महासागर है और
दक्षिणी सरहद से उस जगह तक पश्चिमी
सरहद है जिसके सामने लेबो-हमात*[4]
है। यह पश्चिमी सरहद है।"

21 "तुम यह देश आपस में यानी इस-
राएल के 12 गोत्रों में बाँटना। 22 तुम
विरासत में इसकी ज़मीन अपने लोगों में
और अपने बीच रहनेवाले उन पर-
देसियों में बाँटना जिनके बच्चे तुम्हारे देश
में पैदा हुए हैं। परदेसी भी तुम्हारी तरह
पैदाइशी इसराएली माने जाएँगे। उन्हें भी
तुम्हारे इसराएली गोत्रों के बीच विरासत
की ज़मीन मिलेगी। 23 तुम हर पर-
देसी को विरासत की ज़मीन उस गोत्र के
इलाके में देना जहाँ वह रहता है।"
सारे जहान के मालिक यहोवा का यह
ऐलान है।

48 "ये गोत्रों के नाम हैं जो उत्तरी
छोर से शुरू होते हैं: दान का
हिस्सा[5] हेतलोन जानेवाले रास्ते से लेबो-
हमात*[6] तक, लेबो-हमात से हसर-
एनान तक और दमिश्क की सरहद
के किनारे-किनारे उत्तर की तरफ और

47:18 *यानी उत्तरी सरहद। #यानी मृत सागर। **47:19** *यानी मिस्र घाटी। **47:20** *या "हमात का प्रवेश।" **48:1** *या "हमात के प्रवेश।"

अध्य. 47
1 व्य 29:22, 23 भज 107:33, 34 यिर्म 17:6
2 यहे 47:1
3 प्रक 22:1, 2
4 उत 48:5 1इत 5:1 यहे 48:5
5 उत 26:3 उत 28:13
6 यहे 48:1
7 गि 34:2, 8
8 गि 13:21
9 2शम 8:8
10 यहे 47:18
11 गि 34:2, 9
12 यहे 48:1

दूसरा कॉल.
1 गि 32:1
2 व्य 32:51
3 यहे 48:28
4 गि 34:2, 8

अध्य. 48
5 यह 19:40
6 गि 34:2, 8

हमात के पास[1] तक फैला होगा। दान
का हिस्सा पूर्वी सरहद से पश्‍चिमी सरहद
तक होगा। 2 आशेर का हिस्सा[2] दान
के दक्षिण में होगा। यह पूर्वी सरहद से
पश्‍चिमी सरहद तक होगा। 3 नप्ताली
का हिस्सा[3] आशेर के दक्षिण में होगा।
यह पूर्वी सरहद से पश्‍चिमी सरहद तक
होगा। 4 मनश्‍शे का हिस्सा[4] नप्ताली
के दक्षिण में होगा। यह पूर्वी सरहद से
पश्‍चिमी सरहद तक होगा। 5 एप्रैम का
हिस्सा मनश्‍शे के दक्षिण में होगा।[5]
यह पूर्वी सरहद से पश्‍चिमी सरहद
तक होगा। 6 रूबेन का हिस्सा एप्रैम
के दक्षिण में होगा।[6] यह पूर्वी सरहद
से पश्‍चिमी सरहद तक होगा। 7 यहूदा
का हिस्सा रूबेन के दक्षिण में होगा।[7]
यह पूर्वी सरहद से पश्‍चिमी सरहद
तक होगा। 8 तुम यहूदा के दक्षिण में,
25,000 हाथ* चौड़ी ज़मीन भेंट के
लिए अलग रखना।[8] यह टुकड़ा जिस
ज़मीन में होगा, उसकी लंबाई पूरब से
पश्‍चिम तक दूसरे गोत्रों की ज़मीन की
लंबाई के बराबर होगी। भेंट की ज़मीन के
बीचों-बीच पवित्र-स्थान होगा।

9 तुम्हें यहोवा को भेंट करने के
लिए जो ज़मीन अलग रखनी है,
उसकी लंबाई 25,000 हाथ और चौड़ाई
10,000 हाथ होगी। 10 पवित्र भेंट
की यह ज़मीन याजकों के लिए होगी।[9]
उसकी लंबाई उत्तर में 25,000 हाथ
और दक्षिण में 25,000 हाथ होगी
और चौड़ाई पूरब में 10,000 हाथ और
पश्‍चिम में 10,000 हाथ होगी। यहोवा
का पवित्र-स्थान इस ज़मीन के बीचों-बीच
होगा। 11 यह ज़मीन सादोक वंश के
याजकों के लिए होगी जिन्हें पवित्र ठह-
राया गया है,[1] क्योंकि मेरी तरफ उनकी
जो ज़िम्मेदारी बनती है, वह उन्होंने पूरी
की और जब बाकी इसराएली और लेवी
मेरी राह से फिरकर दूर चले गए, तब ये
याजक मुझसे दूर नहीं गए।[2] 12 उन्हें
भेंट की गयी उस ज़मीन में हिस्सा मिलेगा
जिसे अलग किया गया है और जो बहुत
पवित्र है। उनका हिस्सा लेवियों के हिस्से
के दक्षिण में होगा।

13 याजकों के इलाके के बिलकुल
पास लेवियों का हिस्सा होगा। उनकी
ज़मीन की लंबाई 25,000 हाथ और
चौड़ाई 10,000 हाथ होगी। (ज़मीन की
पूरी लंबाई 25,000 हाथ और चौड़ाई
10,000 हाथ होगी।) 14 देश की
सबसे बढ़िया ज़मीन में से यह जो हिस्सा
लेवियों को दिया जाएगा, उन्हें उसका
कोई भी टुकड़ा न तो बेचना चाहिए,
न किसी से अदला-बदली करनी चाहिए
और न ही किसी के नाम करना चाहिए
क्योंकि यह ज़मीन यहोवा की नज़र में
पवित्र है।

15 बाकी ज़मीन, जो 5,000 हाथ
चौड़ी और 25,000 हाथ लंबी सीमा से
लगी है, शहर के आम इस्तेमाल के लिए
होगी।[3] उसमें घर और चरागाह होंगे।
और उस ज़मीन के बीचों-बीच शहर
होगा।[4] 16 शहर की नाप यह होगी:
उत्तरी सीमा 4,500 हाथ, दक्षिणी सीमा
4,500 हाथ, पूर्वी सीमा 4,500 हाथ
और पश्‍चिमी सीमा 4,500 हाथ होगी।
17 शहर की चराई की ज़मीन उत्तर में
250 हाथ, दक्षिण में 250 हाथ, पूरब
में 250 हाथ और पश्‍चिम में 250 हाथ
चौड़ी होगी।

18 बाकी ज़मीन की लंबाई पवित्र भेंट
की ज़मीन की लंबाई के बराबर होगी,[5]

48:8 *यह लंबे हाथ का माप है। अति. ख14 देखें।

अध्य. 48
1 यहे 47:15-17
2 यह 19:24
3 यह 19:32
4 यह 13:29
5 यह 17:17, 18
6 यह 18:7
7 यह 15:1; यह 19:9
8 यहे 45:1
9 गि 35:2; यहे 45:3, 4

दूसरा कॉल.
1 यहे 40:46; यहे 44:15
2 यिर्म 23:11; यहे 22:26
3 यहे 45:6
4 यहे 48:35
5 यहे 45:1

पूरब की तरफ 10,000 हाथ और पश्‍चिम की तरफ 10,000 हाथ। यह ज़मीन पवित्र भेंट की ज़मीन के बराबर होगी और इस ज़मीन की उपज शहर में सेवा करनेवालों के खाने के लिए होगी।
19 शहर में सेवा करनेवाले सब गोत्रों के लोग इस ज़मीन पर जुताई-बोआई करेंगे।[1]

20 भेंट की पूरी ज़मीन चौकोर होगी और उसकी लंबाई 25,000 हाथ और चौड़ाई 25,000 हाथ होगी। तुम यह ज़मीन पवित्र भेंट और शहर के लिए अलग रखना।

21 पवित्र भेंट की ज़मीन और शहर की ज़मीन के दोनों तरफ जो ज़मीन बचेगी वह प्रधान की होगी।[2] यह ज़मीन, 25,000 हाथ लंबी पवित्र भेंट की ज़मीन के पूरब और पश्‍चिम में होगी। यह ज़मीन आस-पास के दोनों गोत्रों की ज़मीन के बराबर में होगी और यह प्रधान के लिए होगी। पवित्र भेंट की ज़मीन और मंदिर का पवित्र-स्थान इस ज़मीन के बीचों-बीच होंगे।

22 लेवियों की ज़मीन और शहर की ज़मीन, प्रधान की ज़मीन के बीच होगी। प्रधान का इलाका, यहूदा की सरहद[3] और बिन्यामीन की सरहद के बीच होगा।

23 बाकी गोत्रों की ज़मीन का बँटवारा इस तरह किया जाएगाः बिन्यामीन का हिस्सा पूर्वी सरहद से पश्‍चिमी सरहद तक होगा।[4]
24 शिमोन का हिस्सा बिन्यामीन के दक्षिण में होगा।[5] यह पूर्वी सरहद से पश्‍चिमी सरहद तक होगा।
25 इस्साकार का हिस्सा[6] शिमोन के दक्षिण में होगा। यह पूर्वी सरहद से पश्‍चिमी सरहद तक होगा।
26 जबूलून का हिस्सा इस्साकार के दक्षिण में होगा।[1] यह पूर्वी सरहद से पश्‍चिमी सरहद तक होगा।[2]
27 गाद का हिस्सा जबूलून के दक्षिण में होगा।[3] यह पूर्वी सरहद से पश्‍चिमी सरहद तक होगा।
28 दक्षिणी सरहद, जो गाद की सरहद से लगी हुई है, तामार[4] से लेकर मरीबोत-कादेश के सोतों[5] तक, फिर वहाँ से घाटी*[6] तक और वहाँ से महासागर# तक होगी।

29 यही वह देश है जिसे तुम इसराएल के गोत्रों को विरासत में बाँटना[7] और ये उनके हिस्से होंगे।"[8] सारे जहान के मालिक यहोवा का यह ऐलान है।

30 "शहर से निकलने के लिए ये रास्ते होंगेः उत्तरी सीमा 4,500 हाथ लंबी होगी।[9]

31 शहर के फाटकों के नाम इसराएल के गोत्रों के नाम पर रखे जाएँगे। उत्तर में तीन फाटक होंगे, एक रूबेन का, एक यहूदा का और एक लेवी का।

32 पूर्वी सीमा 4,500 हाथ लंबी होगी और उस सीमा पर तीन फाटक होंगे, एक यूसुफ का, एक बिन्यामीन का और एक दान का।

33 दक्षिणी सीमा 4,500 हाथ लंबी होगी और उस सीमा पर तीन फाटक होंगे, एक शिमोन का, एक इस्साकार का और एक जबूलून का।

34 पश्‍चिमी सीमा 4,500 हाथ लंबी होगी और उस सीमा पर तीन फाटक होंगे, एक गाद का, एक आशेर का और एक नप्ताली का।

35 शहर की चारों सीमाओं की कुल नाप 18,000 हाथ होगी। उस दिन से शहर का नाम होगा, 'यहोवा वहाँ है।'"[10]

अध्य. 48
1 यहे 45:6
2 यहे 45:7
3 यहे 48:8
4 यह 18:11
5 यह 19:1
6 यह 19:17

दूसरा कॉल.
1 यह 19:10
2 उत 49:13
3 यह 18:7
4 यहे 47:19
5 गि 20:13
6 उत 15:18
7 गि 34:2
8 यहे 47:13
9 यहे 48:16
10 यिर्म 3:17, योए 3:21, जक 2:10

48:28 *यानी मिस्र घाटी। #यानी भूमध्य सागर।

दानियेल

सारांश

1 यरूशलेम की घेराबंदी (1, 2)
शाही घराने के जवान बंदियों को तालीम (3-5)
4 इब्री जवानों की वफादारी की परीक्षा (6-21)

2 राजा नबूकदनेस्सर ने बेचैन करनेवाला सपना देखा (1-4)
कोई भी ज्ञानी मतलब नहीं बता पाया (5-13)
दानियेल ने परमेश्वर से मदद माँगी (14-18)
रहस्य खोलने पर परमेश्वर की तारीफ (19-23)
दानियेल ने राजा को सपना बताया (24-35)
सपने का मतलब (36-45)
राज का पत्थर मूरत को चूर करेगा (44, 45)
राजा ने दानियेल का सम्मान किया (46-49)

3 राजा नबूकदनेस्सर की सोने की मूरत (1-7)
मूरत की उपासना करने की माँग (4-6)
3 इब्रियों पर आज्ञा तोड़ने का दोष (8-18)
'हम तेरे देवताओं की सेवा नहीं करेंगे' (18)
आग की भट्ठी में फेंका गया (19-23)
चमत्कारी तरीके से बचाया गया (24-27)
राजा ने उनके परमेश्वर की बड़ाई की (28-30)

4 राजा नबूकदनेस्सर ने कबूल किया कि परमेश्वर ही राजा है (1-3)
उसने एक पेड़ का सपना देखा (4-18)
पेड़ सात काल तक गिरा पड़ा रहेगा (16)
परमेश्वर इंसानों का राजा है (17)
दानियेल ने सपने का मतलब बताया (19-27)
सपना पहले राजा पर पूरा हुआ (28-36)
राजा सात काल तक पागल (32, 33)
उसने स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की (37)

5 राजा बेलशस्सर की दावत (1-4)
दीवार पर हाथ की लिखाई (5-12)
दानियेल को इसका मतलब बताने के लिए कहा गया (13-25)
मतलबः बैबिलोन गिर जाएगा (26-31)

6 दानियेल के खिलाफ साज़िश (1-9)
उसने प्रार्थना करना नहीं छोड़ा (10-15)
उसे शेरों की माँद में फेंका गया (16-24)
राजा दारा ने उसके परमेश्वर का आदर किया (25-28)

7 चार जानवरों का दर्शन (1-8)
एक छोटा मगरूर सींग निकला (8)
अति प्राचीन की अदालत (9-14)
इंसान का बेटा राजा बनाया गया (13, 14)
दर्शन का मतलब दानियेल को बताया गया (15-28)
चार जानवर चार राजा हैं (17)
पवित्र जनों को राज मिलेगा (18)
दस सींग या राजा उठेंगे (24)

8 मेढ़े और बकरे का दर्शन (1-14)
छोटे सींग ने खुद को ऊँचा उठाया (9-12)
जब तक 2,300 शाम और सुबह नहीं बीतते (14)
जिब्राईल ने दर्शन का मतलब बताया (15-27)
मेढ़े और बकरे का मतलब (20, 21)
एक खूँखार राजा उभरेगा (23-25)

9 दानियेल ने पाप कबूल किया (1-19)
70 साल तक उजाड़ पड़ा रहेगा (2)
जिब्राईल, दानियेल के पास आया (20-23)
70 हफ्तों की भविष्यवाणी (24-27)
मसीहा 69 हफ्तों बाद प्रकट होगा (25)
वह काट डाला जाएगा (26)
नगरी और पवित्र जगह का नाश (26)

10 एक स्वर्गदूत दानियेल से मिला (1-21)
मीकाएल ने स्वर्गदूत की मदद की (13)

11 फारस और यूनान के राजा (1-4)
दक्षिण और उत्तर के राजा (5-45)
कर-वसूलनेवाला आएगा (20)
करार का अगुवा कुचला जाएगा (22)
किलों के देवता की महिमा हुई (38)
दक्षिण और उत्तर के राजा आपस में भिड़ेंगे (40)
पूरब और उत्तर से मिलनेवाली खबरें (44)

12 'अंत का समय' और उसके बाद (1-13)
मीकाएल खड़ा होगा (1)
अंदरूनी समझ रखनेवाले चमकेंगे (3)
सच्चा ज्ञान बहुत बढ़ जाएगा (4)
दानियेल हिस्सा पाने के लिए उठेगा (13)

---

1 यहूदा के राजा यहोयाकीम[1] के राज के तीसरे साल, बैबिलोन का राजा नबूकदनेस्सर यरूशलेम आया और उसने शहर की घेराबंदी कर दी।[2] 2 कुछ समय बाद यहोवा ने यहूदा के राजा यहोयाकीम को और सच्चे परमेश्वर के भवन* के कुछ बरतनों को नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दिया।[3] नबूकदनेस्सर इन बरतनों को शिनार देश#[4] ले गया और वहाँ उसने इन्हें अपने देवता के मंदिर के खज़ाने में रख दिया।[5]

3 फिर राजा ने अपने प्रधान दरबारी अशपनज को आदेश दिया कि वह कुछ इसराएलियों* को ले आए जिनमें शाही घराने के और ऊँचे खानदान के लोग भी हों।[6] 4 उसने कहा कि ये ऐसे नौजवान* होने चाहिए जिनमें कोई खामी न हो, वे दिखने में सुंदर हों, उनमें बुद्धि, ज्ञान और पैनी समझ हो[7] और वे राजमहल में सेवा करने के काबिल हों। अशपनज को आज्ञा दी गयी थी कि वह उन नौजवानों को कसदियों के साहित्य और उनकी भाषा की शिक्षा दे। 5 राजा ने यह आज्ञा भी दी कि उन्हें हर दिन वही लज़ीज़ खाना और दाख-मदिरा दी जाए जो राजा को दी जाती है। तीन साल तक उन्हें तालीम दी जानी थी,* इसके बाद उन्हें राजा की सेवा शुरू करनी थी।

6 जिन नौजवानों को लाया गया था उनमें से कुछ यहूदा गोत्र* से थे। उनके नाम थे दानियेल,#[1] हनन्याह,△ मीशाएल⊠ और अजरयाह।□[2] 7 इन नौजवानों को मुख्य दरबारी ने नए नाम* दिए। उसने दानियेल को बेलतशस्सर नाम दिया,[3] हनन्याह को शदरक, मीशाएल को मेशक और अजरयाह को अबेदनगो।[4]

8 मगर दानियेल ने अपने दिल में ठान लिया था कि वह न तो राजा के यहाँ से मिलनेवाला लज़ीज़ खाना खाएगा, न ही उसकी दाख-मदिरा पीएगा ताकि खुद को दूषित न करे। इसलिए उसने मुख्य दरबारी से गुज़ारिश की कि उसे छूट

1:2 *या "मंदिर।" #यानी बैबिलोनिया। **1:3** *शा., "इसराएल के बेटों।" **1:4** *शा., "बच्चे।"

1:5 *या शायद, "उनका पालन-पोषण होता रहे।" **1:6** *शा., "के बेटों में।" #मतलब "मेरा न्यायी परमेश्वर है।" △मतलब "यहोवा ने कृपा की।" ⊠शायद इसका मतलब है, "परमेश्वर जैसा कौन है?" □मतलब "यहोवा ने मदद की।" **1:7** *यानी बैबिलोनी नाम।

अध्य. 1
1 2इत 36:4; यिर्म 22:18, 19; यिर्म 36:30
2 व्य 28:49, 50; 2रा 24:1; 2इत 36:5, 6
3 यश 42:24
4 उत 10:9, 10
5 2इत 36:7; एज 1:7
6 2रा 20:16, 18
7 दान 1:17, 20; दान 5:11, 12

दूसरा कॉल.
1 दान 2:48; दान 5:13, 29
2 दान 2:17, 18
3 दान 4:8; दान 5:12
4 दान 2:49; दान 3:12, 28

दी जाए ताकि वह इन चीज़ों से खुद को दूषित न करे। **9** और सच्चे परमेश्‍वर ने मुख्य दरबारी को दानियेल पर कृपा और दया करने के लिए उभारा।[1] **10** मगर मुख्य दरबारी ने दानियेल से कहा, “मैं अपने मालिक राजा से डरता हूँ जिसने तुम लोगों का खान-पान तय किया है। अगर वह देखेगा कि तुम अपनी उम्र के दूसरे नौजवानों* के मुकाबले कमज़ोर लग रहे हो, तो जानते हो क्या होगा? तुम्हारी वजह से मैं राजा के सामने दोषी ठहरूँगा।” **11** तब दानियेल ने उस अधिकारी से बात की जिसे मुख्य दरबारी ने दानियेल, हनन्याह, मीशाएल और अजरयाह की देखभाल की ज़िम्मेदारी सौंपी थी। दानियेल ने उससे कहा, **12** “मेहरबानी करके अपने सेवकों को दस दिन तक परखकर देख। हमें खाने के लिए साग-सब्ज़ी और पीने के लिए पानी दे। **13** फिर देख कि कौन दिखने में अच्छा लगता है, हम या राजा के यहाँ से लज़ीज़ खाना खानेवाले नौजवान।* इसके बाद तू फैसला करना कि तू अपने इन सेवकों के साथ आगे क्या करेगा।”

14 अधिकारी ने उनका सुझाव मान लिया और उन्हें दस दिन तक परखा। **15** दस दिन के आखिर में ये नौजवान शाही खाना खानेवाले सभी जवानों* से ज़्यादा अच्छे और तंदुरुस्त दिख रहे थे। **16** इसलिए अधिकारी उन्हें ठहराया गया लज़ीज़ खाना और दाख-मदिरा देने के बजाय साग-सब्ज़ियाँ ही देता रहा। **17** और सच्चे परमेश्‍वर ने इन चारों नौजवानों* को ज्ञान, बुद्धि और हर तरह के साहित्य के बारे में अंदरूनी समझ दी। उसने दानियेल को हर तरह के दर्शन और सपनों के बारे में समझ दी।[1]

18 राजा नबूकदनेस्सर ने जो समय तय किया था, उसके आखिर में मुख्य दरबारी ने उन नौजवानों को उसके सामने पेश किया।[2] **19** जब राजा ने उनसे बात की तो उसने पाया कि उन सब नौजवानों में दानियेल, हनन्याह, मीशाएल और अजरयाह[3] जैसा कोई नहीं है। और वे राजा के सामने सेवा करते रहे। **20** राजा जब भी उनसे ऐसे मामले पर बात करता जिसके लिए बुद्धि और समझ की ज़रूरत होती तो वह पाता कि वे उसके पूरे राज्य के जादू-टोना करनेवाले सभी पुजारियों और तांत्रिकों[4] से दस गुना बेहतर हैं। **21** और दानियेल राजा कुसरू के राज के पहले साल तक वहीं रहा।[5]

2 नबूकदनेस्सर ने अपने राज के दूसरे साल कई सपने देखे और उसका मन इतना बेचैन हो गया[6] कि वह सो नहीं पाया। **2** इसलिए राजा ने आदेश दिया कि जादू-टोना करनेवाले पुजारियों, तांत्रिकों, टोना-टोटका करनेवालों और कसदियों* को बुलाया जाए ताकि वे राजा को उसके सपने बताएँ। इसलिए वे सब आए और राजा के सामने खड़े हुए।[7] **3** राजा ने उनसे कहा, “मैंने एक सपना देखा है, मैं जानना चाहता हूँ कि वह सपना क्या है। मैं जानने के लिए बहुत बेचैन हूँ।” **4** तब कसदियों ने राजा से अरामी भाषा में कहा,*[8] “हे राजा, तू युग-युग जीए। अपने सेवकों को वह

1:10, 15, 17 *शा., “बच्चों।” **1:13** *शा., “बच्चे।”

2:2 *यानी ऐसे लोगों का समूह जो ज्योतिष-विद्या और नक्षत्र-विद्या में माहिर थे। **2:4** *मूल पाठ में दान 2:4ख से लेकर 7:28 तक का हिस्सा अरामी भाषा में लिखा गया था।

अध्य. 1
1 1रा 8:49, 50; भज 106:44, 46

दूसरा कॉल.
1 दान 1:20; दान 4:9; दान 5:11, 12
2 दान 1:5
3 दान 1:3, 6
4 दान 2:2; दान 4:7; दान 5:8
5 दान 6:28; दान 10:1

अध्य. 2
6 दान 4:4, 5
7 दान 4:6, 7; दान 5:7, 8
8 2रा 18:26; एज 4:7; यश 36:11

सपना बता, फिर हम उसका मतलब
बताएँगे।”
5 राजा ने कसदियों से कहा, “तुम
लोग बताओ कि मैंने क्या सपना देखा
और उसका मतलब क्या है। वरना तुम्हारे
टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँगे और तुम्हारे
घर आम लोगों के लिए शौचालय* बना
दिए जाएँगे। मेरा यह फैसला अटल
है। 6 लेकिन अगर तुम मुझे वह सपना
और उसका मतलब बताओगे, तो मैं तुम्हें
इनाम और तोहफे दूँगा और तुम्हारा बहुत
सम्मान करूँगा।[1] इसलिए बताओ कि
मैंने क्या सपना देखा और उसका मतलब
क्या है।”
7 उन्होंने राजा से फिर कहा, “राजा
अपने सेवकों को वह सपना बताए, फिर
हम उसका मतलब समझाएँगे।”
8 तब राजा ने कहा, “मैं अच्छी तरह
जानता हूँ कि तुम टाल-मटोल कर रहे
हो, क्योंकि तुम जानते हो कि मेरा फैसला
अटल है। 9 अगर तुम मुझे वह सपना
नहीं बताओगे तो तुम सबके लिए वह
सज़ा तय है। लेकिन तुम सबने मिलकर
सोचा है कि समय के गुज़रते शायद मैं
अपना मन बदल दूँगा और तब तक तुम
मुझे झूठी बातें बताकर धोखे में रखोगे।
मगर ऐसा कुछ नहीं होनेवाला। मैं कहता
हूँ, तुम मुझे वह सपना बताओ ताकि मैं
जानूँ कि तुम उसका मतलब भी समझा
सकोगे।”
10 कसदियों ने राजा से कहा,
“दुनिया* में ऐसा कोई नहीं होगा जो राजा
की यह माँग पूरी कर सके। आज तक
किसी महान राजा या राज्यपाल ने किसी
जादू-टोना करनेवाले पुजारी से या टोना-
टोटका करनेवाले से या कसदी से ऐसी
बात नहीं पूछी। 11 राजा जो पूछ रहा
है वह बताना मुश्किल है। कोई भी इंसान
राजा को यह बात नहीं बता सकता, सिवा
देवताओं के जो नश्वर इंसानों के बीच नहीं
रहते।”
12 इस पर राजा आग-बबूला हो
उठा। उसने हुक्म दिया कि बैबिलोन के
सभी ज्ञानियों को मार डाला जाए।[1]
13 जब यह हुक्म दिया गया और सभी
ज्ञानियों को मार डाला जानेवाला था, तो
दानियेल और उसके साथियों को भी ढूँढ़ा
गया ताकि उन्हें भी मार डाला जाए।
14 तब दानियेल ने राजा के अंग-
रक्षकों के सरदार अरयोक से सूझ-बूझ
और बहुत सावधानी से बात की, जो
बैबिलोन के ज्ञानियों को मार डालने के
लिए निकला था। 15 उसने राजा के
अधिकारी अरयोक से पूछा, “राजा ने
ऐसा कड़ा आदेश क्यों दिया?” तब अर-
योक ने दानियेल को सारी बात बतायी।[2]
16 फिर दानियेल राजा के सामने गया
और उससे गुज़ारिश की कि अगर राजा
उसे थोड़ा वक्त दे तो वह उसे सपने का
मतलब बता सकता है।
17 फिर दानियेल अपने घर गया
और उसने अपने साथियों यानी हनन्याह,
मीशाएल और अजरयाह को यह
सब बताया। 18 दानियेल ने उनसे यह
प्रार्थना करने के लिए कहा कि स्वर्ग
का परमेश्वर दया करे और इस रहस्य
का खुलासा करे ताकि बैबिलोन के बाकी
ज्ञानियों के साथ दानियेल और उसके
साथियों का नाश न किया जाए।
19 फिर रात को एक दर्शन में दानि-
येल पर वह रहस्य खोला गया।[3] इसलिए
उसने स्वर्ग के परमेश्वर की तारीफ की।

2:5 *या शायद, “कूड़े की जगह; गू-गोबर का ढेर।” 2:10 *या “सूखी ज़मीन।”

अध्य. 2
1 दान 2:48
दान 5:16, 29

दूसरा कॉल.
1 दान 2:24
2 दान 2:9
3 दान 2:28

20 दानियेल ने कहा,
“परमेश्वर के नाम की युग-युग
तक* तारीफ होती रहे,
क्योंकि बुद्धि और ताकत सिर्फ उसी
की हैं।[1]
21 वह समय और दौर को बदल
देता है,[2]
राजाओं को पद से हटाता है और
उस पर ठहराता है,[3]
बुद्धिमानों को बुद्धि और पैनी सम-
झवालों को ज्ञान देता है।[4]
22 वह गूढ़ और छिपी बातें ज़ाहिर
करता है,[5]
वह जानता है कि अँधेरे में क्या है,[6]
उसके साथ रौशनी का निवास है।[7]
23 हे मेरे पुरखों के परमेश्वर, मैं
तेरा शुक्रिया अदा करता हूँ, तेरी
तारीफ करता हूँ,
क्योंकि तूने मुझे बुद्धि और शक्ति
दी है।
हमने तुझसे जो पूछा वह तूने मुझे
बताया है,
राजा को जिस बात की चिंता है वह
तूने हम पर ज़ाहिर की है।”[8]

24 फिर दानियेल अरयोक के पास
गया, जिसे राजा ने बैबिलोन के ज्ञानियों
को नाश करने का काम सौंपा था।[9]
दानियेल ने अरयोक से कहा, “बैबिलोन
के किसी भी ज्ञानी का नाश मत कर। मुझे
राजा के पास ले चल, मैं राजा को उसके
सपने का मतलब बताऊँगा।”

25 अरयोक फौरन दानियेल को राजा
के सामने ले गया और उससे कहा,
“मुझे यहूदा के बंदी लोगों में एक
आदमी मिला है[10] जो राजा को सपने
का मतलब बता सकता है।” 26 राजा

2:20 *या “हमेशा से हमेशा तक।”

ने दानियेल से, जिसका नाम बेलतशस्सर
था,[1] कहा, “क्या तू वाकई मुझे बता
सकता है कि मैंने क्या सपना देखा और
उसका मतलब क्या है?”[2] 27 दानि-
येल ने राजा से कहा, “राजा जो रहस्य
जानना चाहता है, उसे बताना किसी भी
ज्ञानी या तांत्रिक या टोना-टोटका करने-
वाले पुजारी या ज्योतिषी के बस की बात
नहीं है।[3] 28 मगर जो परमेश्वर स्वर्ग
में है वह रहस्य खोलनेवाला परमेश्वर
है।[4] उसने राजा नबूकदनेस्सर को बताया
है कि आखिरी दिनों में क्या होनेवाला
है। अब सुन कि तूने बिस्तर पर कौन-सा
सपना और कौन-से दर्शन देखे थे।

29 हे राजा, जब तू बिस्तर पर था तो
तू भविष्य में होनेवाली बातों के बारे में
सोचने लगा और रहस्य खोलनेवाले पर-
मेश्वर ने तुझे बताया कि आगे क्या होने-
वाला है। 30 मुझ पर यह रहस्य इस-
लिए नहीं ज़ाहिर किया गया कि मैं दुनिया
के सभी इंसानों से कहीं ज़्यादा बुद्धि-
मान हूँ बल्कि मुझे इसलिए बताया गया
कि मैं राजा को सपने का मतलब बताऊँ
और तू जाने कि तू मन में क्या सोच
रहा था।[5]

31 हे राजा, तूने सपने में एक विशाल
मूरत देखी। वह मूरत जो तेरे सामने खड़ी
थी बहुत लंबी-चौड़ी थी और तेज़ चमक
रही थी और उसका रूप भयानक था।
32 मूरत का सिर बढ़िया सोने का बना
था,[6] उसका सीना और उसके बाज़ू चाँदी
के थे,[7] पेट और जाँघें ताँबे के थे,[8]
33 टाँगें लोहे की थीं,[9] पैर का कुछ
हिस्सा लोहे का और कुछ मिट्टी* का
था।[10] 34 तू मूरत को देखता रहा और
फिर एक पत्थर, जो किसी के हाथ

2:33 *या “भट्ठी में पकायी गयी (या साँचे में ढाली गयी) मिट्टी।”

अध्य. 2

1 1इत 29:11; अय 12:13; भज 147:5; यिर्म 32:17-19
2 प्रेष 1:7
3 1शम 2:7, 8; भज 75:7; यिर्म 27:5; दान 4:17
4 नीत 2:6; सभ 2:26; याकू 1:5
5 यिर्म 33:3; 1कुर 2:10
6 भज 139:12; इब्र 4:13
7 भज 36:9; भज 112:4
8 दान 1:17; दान 2:28
9 दान 2:12, 14
10 दान 1:3, 6

दूसरा कॉल.

1 दान 1:7
2 उत 41:15
3 दान 2:10, 11
4 उत 40:8; दान 1:17
5 दान 2:47
6 दान 2:37, 38; दान 7:4
7 दान 5:28; दान 7:5; दान 8:3, 20
8 दान 2:39; दान 7:6; दान 8:5, 21
9 दान 7:7, 19
10 दान 2:40-42

का काटा हुआ नहीं था, अपने आप आया और सीधे उस मूरत के लोहे और मिट्टी के पैरों पर लगा और उसे चूर-चूर कर दिया।[1] **35** तब लोहा, मिट्टी, ताँबा, चाँदी और सोना, सब चूर-चूर हो गए और उस भूसी की तरह बन गए जो गरमियों में खलिहान में होती है। और हवा उन्हें ऐसे उड़ा ले गयी कि कहीं भी उनका नामो-निशान नहीं मिला। मगर वह पत्थर, जिसने मूरत को तोड़ दिया था, एक बड़ा पहाड़ बन गया जिससे पूरी धरती भर गयी।

36 यही वह सपना है जो तूने देखा था। अब हम राजा को इसका मतलब बताएँगे। **37** हे राजा, तू जो राजाओं का राजा है, तुझे स्वर्ग के परमेश्‍वर ने राज,[2] शक्‍ति, ताकत और शोहरत दी है, **38** उसने सभी इंसानों को तेरे अधिकार में कर दिया है फिर चाहे वे जहाँ भी रहते हों, साथ ही मैदान के जानवरों और आकाश के पंछियों को तेरे अधिकार में कर दिया है और सब पर तुझे राजा ठहराया गया है,[3] तू ही सोने का वह सिर है।[4]

39 मगर तेरे बाद एक और राज खड़ा होगा[5] जिसका दर्जा तुझसे कम होगा। उसके बाद एक तीसरा राज खड़ा होगा जो ताँबे का होगा और पूरी धरती पर राज करेगा।[6]

40 फिर जो चौथा राज आएगा वह लोहे की तरह मज़बूत होगा।[7] जैसे लोहा सब चीज़ों को चूर-चूर कर देता है, पीस डालता है, हाँ, जैसे लोहा सब चीज़ों के टुकड़े-टुकड़े कर देता है, वैसे ही वह राज इन सारी हुकूमतों को चूर-चूर कर देगा और पूरी तरह मिटा देगा।[8]

41 तूने देखा कि मूरत के पैर और उसकी उँगलियाँ कहीं मिट्टी के और कहीं लोहे के थे, उसी तरह यह राज बँट जाएगा। फिर भी इसमें थोड़ा लोहे जैसा कड़ापन रह जाएगा, ठीक जैसे तूने देखा कि कच्ची मिट्टी के साथ लोहा मिला हुआ था। **42** जैसे पैरों की उँगलियाँ कहीं लोहे की और कहीं मिट्टी की थीं, वैसे ही यह राज एक मामले में मज़बूत होगा तो दूसरे में कमज़ोर। **43** जैसे तूने देखा कि कच्ची मिट्टी और लोहा मिला हुआ था, वैसे ही इस राज के कुछ हिस्से लोगों* से मिले होंगे, मगर वे एक-दूसरे से नहीं जुड़े रहेंगे ठीक जैसे लोहा मिट्टी से नहीं जुड़ता।

44 उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्‍वर एक ऐसा राज कायम करेगा[1] जो कभी नाश नहीं किया जाएगा।[2] वह राज किसी और* के हाथ में नहीं किया जाएगा।[3] वह राज इन सारी हुकूमतों को चूर-चूर करके उनका अंत कर डालेगा[4] और सिर्फ वही हमेशा तक कायम रहेगा,[5] **45** ठीक जैसे तूने देखा कि पहाड़ में से एक पत्थर बिना किसी के हाथ के काटे आया और उसने लोहे, ताँबे, मिट्टी, चाँदी और सोने को चूर-चूर कर डाला।[6] महान परमेश्‍वर ने राजा को बताया है कि भविष्य में क्या होगा।[7] यह सपना सच्चा है और इसका जो मतलब बताया गया है वह भरोसे के लायक है।"

46 तब राजा नबूकदनेस्सर दानियेल के सामने मुँह के बल ज़मीन पर गिरा और उसने दानियेल का सम्मान किया। उसने आदेश दिया कि दानियेल को भेंट दी जाए और उसके आगे धूप जलाया जाए। **47** राजा ने दानियेल से कहा, "वाकई, तुम्हारा परमेश्‍वर सब ईश्‍वरों से महान

2:43 *या "इंसानों के वंशजों," यानी आम लोग। **2:44** *या "दूसरे लोगों।"

अध्य. 2

1 दान 2:44, 45
2 यिर्म 28:14; दान 5:18
3 यिर्म 27:5-7
4 दान 2:32; दान 4:20-22
5 यश 45:1; यिर्म 51:28, 29; दान 5:28
6 दान 7:6; दान 8:5, 21; दान 11:3
7 दान 2:33; दान 7:19, 23
8 दान 7:7

दूसरा कॉल.

1 उत 49:10; भज 2:6; मत 6:10; लूक 22:29; यूह 18:36; प्रक 11:15; प्रक 20:6
2 2शम 7:13; यश 9:7; दान 7:13, 14
3 दान 4:17; दान 7:27
4 भज 2:7-9; भज 110:5, 6; प्रक 19:15
5 दान 4:34; लूक 1:31-33
6 दान 2:34, 35
7 उत 41:28; दान 2:28

ईश्वर है, सब राजाओं का मालिक है और
रहस्य खोलनेवाला परमेश्वर है, यही
वजह है कि तू यह रहस्य बता पाया।"[1]
48 फिर राजा ने दानियेल का पद और
ऊँचा कर दिया, उसे कई बेहतरीन तोहफे
दिए और बैबिलोन के पूरे प्रांत* का
शासक और बैबिलोन के सभी ज्ञानियों
का मुख्य प्रशासक ठहराया।[2] 49 और
दानियेल की गुज़ारिश पर राजा ने शद-
रक, मेशक और अबेदनगो[3] को बैबिलोन
के प्रांत* के प्रशासन के अधिकारी ठह-
राया। मगर दानियेल राजा के दरबार में
ही काम करता रहा।

3 राजा नबूकदनेस्सर ने सोने की
एक मूरत बनवायी जिसकी ऊँचाई
60 हाथ# और चौड़ाई 6 हाथ△ थी।
उसने यह मूरत बैबिलोन के प्रांत* में दूरा
नाम के मैदान में खड़ी करायी। 2 फिर
राजा नबूकदनेस्सर ने सूबेदारों, प्रशा-
सकों, राज्यपालों, सलाहकारों, खज़ान-
चियों, न्यायियों, नगर-अधिकारियों और
अलग-अलग प्रांतों* के सभी अधि-
कारियों को खबर भेजी कि वे उसकी खड़ी
करायी मूरत के उद्घाटन पर आएँ।

3 इसलिए सूबेदार, प्रशासक, राज्य-
पाल, सलाहकार, खज़ानची, न्यायी,
नगर-अधिकारी और अलग-अलग
प्रांतों* के सभी अधिकारी राजा नबूकद-
नेस्सर की खड़ी करायी मूरत के उद्-
घाटन पर हाज़िर हुए। वे सभी उस
मूरत के सामने खड़े हो गए। 4 तब
संदेश ऐलान करनेवाले ने ज़ोर-ज़ोर से
ऐलान किया, "अलग-अलग राष्ट्रों और
भाषाओं के लोगो, सुनो। तुम सबको यह
हुक्म दिया जाता है 5 कि जब तुम नर-
सिंगे, बाँसुरी, सुरमंडल, छोटे सुरमंडल,
तारोंवाले बाजे, मशकबीन और बाकी
सभी साज़ों की आवाज़ सुनोगे, तो तुम
सब गिरकर सोने की उस मूरत की पूजा
करोगे जो राजा नबूकदनेस्सर ने खड़ी
करायी है। 6 जो कोई गिरकर उसकी
पूजा नहीं करेगा, उसे फौरन धधकते भट्ठे
में फेंक दिया जाएगा।"[1] 7 इसलिए
जब नरसिंगे, बाँसुरी, सुरमंडल, छोटे सुर-
मंडल, तारोंवाले बाजे और बाकी सभी
साज़ों की आवाज़ सुनायी पड़ी, तो सब
राष्ट्रों और भाषाओं के लोगों ने गिरकर
सोने की उस मूरत की पूजा की जो राजा
नबूकदनेस्सर ने खड़ी करायी थी।

8 उस समय कुछ कसदी लोग राजा
के पास आए और यहूदियों पर इल-
ज़ाम लगाने लगे।* 9 वे राजा नबूकद-
नेस्सर से कहने लगे, "हे राजा, तू युग-
युग जीए। 10 हे राजा, तूने हुक्म दिया
था कि हर वह इंसान जो नरसिंगे,
बाँसुरी, सुरमंडल, छोटे सुरमंडल, तारों-
वाले बाजे, मशकबीन और बाकी सभी
साज़ों की आवाज़ सुनता है वह गिरकर
सोने की मूरत की पूजा करे 11 और
जो कोई ऐसा नहीं करेगा उसे धधकते भट्ठे
में फेंक दिया जाएगा।[2] 12 फिर भी हे
राजा, तीन यहूदी आदमियों ने तेरी बिल-
कुल इज़्ज़त नहीं की। वे शदरक, मेशक,
अबेदनगो हैं जिन्हें तूने बैबिलोन के प्रांत*
के प्रशासन का ज़िम्मा सौंपा है।[3] वे तेरे
देवताओं की सेवा नहीं करते और उन्होंने
तेरी खड़ी करायी सोने की मूरत को पूजने
से इनकार कर दिया है।"

13 यह सुनकर नबूकदनेस्सर क्रोध
और जलजलाहट से भर गया और उसने

2:48, 49; 3:1, 12 *या "ज़िला अधिकार-क्षेत्र।" **3:1** #करीब 27 मी. (88 फुट)। अति. ख14 देखें। △करीब 2.7 मी. (8.8 फुट)। अति. ख14 देखें। **3:2, 3** *या "ज़िला अधिकार-क्षेत्रों।"

3:8 *या "को बदनाम करने लगे।"

अध्य. 2
1 उत 41:39; दान 1:17; दान 2:28; दान 4:9
2 दान 2:6; दान 5:16, 29
3 दान 1:7

दूसरा कॉल.

अध्य. 3
1 यिर्म 29:22
2 दान 3:4-6
3 दान 1:7; दान 2:49

हुक्म दिया कि शदरक, मेशक और अबेदनगो को उसके सामने पेश किया जाए। तब उन आदमियों को राजा के सामने लाया गया। 14 नबूकदनेस्सर ने उनसे कहा, "शदरक, मेशक और अबेदनगो, क्या यह सच है कि तुम लोग मेरे देवताओं की सेवा नहीं करते[1] और तुमने मेरी खड़ी करायी सोने की मूरत को पूजने से इनकार कर दिया है? 15 अब सुनो, जब तुम्हें नरसिंगे, बाँसुरी, सुरमंडल, छोटे सुरमंडल, तारोंवाले बाजे, मशकबीन और बाकी सभी साज़ों की आवाज़ सुनायी पड़े, तब तुम अगर गिरकर मेरी बनायी मूरत को पूजने के लिए तैयार हो जाओगे तो बेहतर होगा। लेकिन अगर तुम उसे पूजने से इनकार करोगे तो तुम्हें फौरन धधकते भट्ठे में फेंक दिया जाएगा। ऐसा कौन-सा देवता है जो तुम्हें मेरे हाथ से छुड़ा सकता है?"[2]

16 शदरक, मेशक और अबेदनगो ने राजा से कहा, "हे राजा नबूकदनेस्सर, हमें इस बारे में कुछ और नहीं कहना। 17 अगर हमें आग के भट्ठे में फेंक दिया जाना है, तो यही सही। हमारा परमेश्वर, जिसकी हम सेवा करते हैं, हमें उस भट्ठे से और तेरे हाथ से छुड़ाने की ताकत रखता है।[3] 18 लेकिन अगर वह हमें नहीं छुड़ाता, तो भी हे राजा, हम न तेरे देवताओं की सेवा करेंगे, न ही तेरी खड़ी करायी मूरत की पूजा करेंगे।"[4]

19 तब नबूकदनेस्सर शदरक, मेशक और अबेदनगो पर भड़क उठा और उसके चेहरे का भाव बदल गया।* उसने हुक्म दिया कि भट्ठे को सात गुना और तेज़ किया जाए। 20 उसने अपनी सेना के कुछ ताकतवर आदमियों को हुक्म दिया कि वे शदरक, मेशक और अबेदनगो को बाँधकर धधकते भट्ठे में फेंक दें।

21 तब उन तीनों आदमियों को उनके चोगों, टोपियों और दूसरे कपड़ों समेत बाँधा गया और धधकते भट्ठे में फेंक दिया गया। 22 राजा का हुक्म इतना सख्त था और भट्ठे को इतना ज़्यादा तेज़ किया गया था कि जो आदमी शदरक, मेशक और अबेदनगो को भट्ठे की तरफ लेकर गए वे आग की लपटों से झुलसकर मर गए। 23 मगर शदरक, मेशक और अबेदनगो, जो बँधे हुए थे, धधकते भट्ठे में गिर गए।

24 फिर राजा नबूकदनेस्सर बहुत डर गया और फौरन उठकर अपने बड़े-बड़े अधिकारियों से कहने लगा, "क्या हमने तीन आदमियों को बाँधकर आग में नहीं फेंका था?" उन्होंने कहा, "हाँ राजा।" 25 उसने कहा, "मगर देखो! मुझे तो चार आदमी आग में खुले घूमते नज़र आ रहे हैं और उन्हें कुछ भी नहीं हुआ है! और चौथा आदमी कोई देवता लग रहा है।"

26 नबूकदनेस्सर धधकते भट्ठे के द्वार पर गया और उसने कहा, "शदरक, मेशक और अबेदनगो, परम-प्रधान परमेश्वर के सेवको,[1] बाहर निकलो, इधर आओ!" शदरक, मेशक और अबेदनगो आग में से बाहर निकल आए। 27 वहाँ जमा हुए सूबेदारों, प्रशासकों, राज्यपालों और राजा के बड़े-बड़े अधिकारियों[2] ने देखा कि उन तीनों आदमियों को आग से कुछ नहीं हुआ है,[3] उनका एक भी बाल नहीं झुलसा है और न ही उनके कपड़े जले हैं। उनसे जलने की बू तक नहीं आ रही।

28 तब नबूकदनेस्सर ने ऐलान किया, "शदरक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की तारीफ हो,[4] जिसने

3:19 *या "उसका रवैया पूरी तरह बदल गया।"

अध्य. 3

1 यश 46:1 यिर्म 50:2 दान 2:47

2 निर्ग 5:2 2इत 32:15 यश 36:4, 20

3 1शम 17:37 भज 27:1 यश 12:2 दान 6:27

4 निर्ग 20:5 प्रेष 5:29

दूसरा कॉल.

1 दान 2:47

2 दान 3:2

3 इब्र 11:33, 34

4 दान 2:47 दान 4:34

अपने स्वर्गदूत को भेजकर अपने सेवकों
को बचाया। इन्होंने उस पर भरोसा किया
और राजा का हुक्म नहीं माना। अपने
परमेश्‍वर को छोड़ किसी और देवता की
सेवा करने और उसे पूजने के बजाय
उन्हें मरना मंज़ूर था।*[1] **29** इसलिए
मैं आदेश देता हूँ कि अगर किसी राष्ट्र
या भाषा के लोगों ने शदरक, मेशक
और अबेदनगो के परमेश्‍वर के खिलाफ
कुछ कहा, तो उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए
जाएँ और उनके घर आम लोगों के लिए
शौचालय* बना दिए जाएँ, क्योंकि ऐसा
कोई देवता नहीं जो इस परमेश्‍वर की
तरह छुड़ाने की ताकत रखता हो।"[2]

30 फिर राजा ने बैबिलोन के प्रांत* में
शदरक, मेशक और अबेदनगो को ऊँचा
ओहदा दिया।[3]

4 "पूरी धरती पर रहनेवाले सभी
राष्ट्रों और भाषाओं के लोगों को
राजा नबूकदनेस्सर का यह संदेश है:
तुम्हारा सुख-चैन बढ़ता रहे! **2** मुझे यह
बताने में खुशी हो रही है कि परम-प्रधान
परमेश्‍वर ने मुझे क्या-क्या चिन्ह और
अजूबे दिखाए हैं। **3** वाकई उसके चिन्ह
क्या ही शानदार हैं और उसके अजूबे
उसकी लाजवाब ताकत का सबूत देते हैं!
उसका राज सदा कायम रहनेवाला राज
है और उसका राज पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना
रहता है।[4]

4 मैं नबूकदनेस्सर अपने महल में चैन
से जी रहा था, एक खुशहाल ज़िंदगी बिता
रहा था। **5** मैंने एक सपना देखा जिससे
मैं बहुत घबरा गया। जब मैं बिस्तर पर
लेटा था तब मुझे ऐसे दृश्‍य और दर्शन
दिखायी दिए कि मैं बहुत डर गया।[1]
6 इसलिए मैंने हुक्म दिया कि बैबि-
लोन के सभी ज्ञानियों को मेरे सामने पेश
किया जाए ताकि वे मेरे सपने का मतलब
बताएँ।[2]

7 तब जादू-टोना करनेवाले पुजारी,
तांत्रिक, कसदी* और ज्योतिषी[3] मेरे
सामने आए। मैंने उन्हें अपना सपना
बताया, मगर वे उसका मतलब नहीं बता
सके।[4] **8** आखिर में मेरे सामने दानि-
येल आया। उसका नाम मेरे देवता के
नाम पर बेलतशस्सर रखा गया था[5] और
उसमें पवित्र ईश्‍वरों की शक्‍ति है।[6] मैंने
उसे अपना सपना बताया:

9 'हे बेलतशस्सर, जादू-टोना करने-
वाले पुजारियों के प्रधान,[7] मैं अच्छी तरह
जानता हूँ कि तुझमें पवित्र ईश्‍वरों की
शक्‍ति है[8] और तेरे लिए कोई भी रहस्य
खोलना मुश्‍किल नहीं है।[9] इसलिए मुझे
बता कि मैंने सपने में जो-जो देखा उसका
क्या मतलब है।

10 मुझे बिस्तर पर लेटे जो दर्शन
मिले उनमें मैंने देखा कि धरती के बीचों-
बीच एक पेड़ है[10] जो बहुत ऊँचा और
विशाल है।[11] **11** पेड़ बड़ा होकर बहुत
मज़बूत हो गया, उसकी ऊँचाई आस-
मान छू रही थी और वह धरती के
छोर से भी नज़र आता था। **12** उसके
पत्ते और डालियाँ बहुत सुंदर थे, वह
फलों से लदा हुआ था और उससे सबके
लिए खाना मिलता था। उसकी छाँव तले
मैदान के जानवर रहते थे, डालियों पर
आकाश के पंछी बसेरा करते थे और
धरती के सभी प्राणियों को उससे खाना
मिलता था।

3:28 *या "उन्होंने अपना शरीर अर्पित कर दिया।" **3:29** *या शायद, "कूड़े की जगह; गू-गोबर का ढेर।" **3:30** *या "ज़िला अधिकार-क्षेत्र।"

4:7 *यानी ऐसे लोगों का समूह जो ज्योतिष-विद्या और नक्षत्र-विद्या में माहिर थे।

अध्य. 3
1 दान 3:15
2 दान 4:35; दान 6:26, 27
3 दान 2:49

अध्य. 4
4 भज 10:16; भज 90:2; यिर्म 10:10

दूसरा कॉल.
1 दान 2:1
2 दान 2:2
3 यश 47:13
4 दान 2:10, 11
5 यश 46:1; यिर्म 50:2; दान 1:7
6 दान 4:18; दान 5:11, 12
7 दान 1:20; दान 2:48
8 उत 41:38; दान 6:3
9 दान 1:17, 20
10 दान 4:26
11 दान 4:20-22

13 मैंने बिस्तर पर लेटे दर्शन में आगे देखा कि एक पहरेदार, एक पवित्र दूत स्वर्ग से उतर रहा है।[1] **14** उसने बुलंद आवाज़ में कहा, “इस पेड़ को काट डालो,[2] इसकी डालियाँ काट दो, पत्ते झाड़ दो और फल बिखरा दो! इसके नीचे से जानवर भाग जाएँ और डालियों से पंछी उड़ जाएँ। **15** मगर इसके ठूँठ को जड़ों समेत ज़मीन में ही रहने दो। और ठूँठ को लोहे और ताँबे के एक बंधन से बाँधकर मैदान में घास के बीच छोड़ दो। यह आकाश की ओस से भीगा करे और जानवरों के साथ रहे।[3] **16** इसका मन बदल जाए, इंसान का न रहकर जानवर का मन हो जाए और सात काल[4] बीतें।[5] **17** पहरेदारों[6] ने यही आदेश सुनाया है और पवित्र दूतों ने इस फैसले का ऐलान किया है ताकि धरती पर जीनेवाले सब लोग जान जाएँ कि इंसानी राज्यों पर परम-प्रधान परमेश्‍वर का राज है[7] और वह जिसे चाहे उसके हाथ में राज देता है, वह छोटे-से-छोटे इंसान को भी राज करने के लिए ठहराता है।”

18 यही वह सपना था जो मैंने, राजा नबूकदनेस्सर ने देखा। अब हे बेलतशस्सर, तू इसका मतलब बता क्योंकि मेरे राज्य के बाकी ज्ञानियों में से कोई भी इसका मतलब नहीं बता पाया है।[8] मगर तू बता सकता है क्योंकि तुझमें पवित्र ईश्‍वरों की शक्‍ति है।’

19 तब दानियेल, जिसका नाम बेलतशस्सर है,[9] एक पल के लिए बिलकुल सुन्‍न हो गया और कुछ सोचकर घबराने लगा।

राजा ने कहा, ‘हे बेलतशस्सर, तू सपने और उसके मतलब के बारे में सोचकर मत घबरा।’

बेलतशस्सर ने कहा, ‘हे मेरे मालिक, यह सपना उन पर पूरा हो जो तुझसे नफरत करते हैं और इसका मतलब तेरे दुश्‍मनों पर लागू हो।

20 जो पेड़ तूने देखा था, जो बहुत बढ़ गया और मज़बूत हो गया था, जिसकी ऊँचाई आसमान छू रही थी और पूरी धरती से नज़र आती थी,[1] **21** जिसके पत्ते बहुत सुंदर थे, जो फलों से लदा हुआ था, जिससे सबको खाना मिलता था, जिसके नीचे मैदान के जानवर रहते थे और डालियों पर आकाश के पंछी बसेरा करते थे,[2] **22** वह पेड़ तू ही है क्योंकि हे राजा, तू बहुत महान और ताकतवर हो गया है और तेरा वैभव आसमान तक पहुँच गया है[3] और तेरा राज धरती के कोने-कोने तक फैल गया है।[4]

23 और राजा ने एक पहरेदार को, एक पवित्र दूत[5] को स्वर्ग से उतरते देखा जो कह रहा था, “इस पेड़ को काट डालो और इसे नाश कर दो। मगर इसके ठूँठ को जड़ों समेत ज़मीन में ही रहने दो और ठूँठ को लोहे और ताँबे के एक बंधन से बाँधकर मैदान की घास के बीच रहने दो। यह आकाश की ओस से भीगा करे और तब तक मैदान के जानवरों के साथ रहे जब तक कि सात काल न बीत जाएँ।”[6] **24** हे राजा, अब सुन कि इसका मतलब क्या है। यह परम-प्रधान का फैसला है जो मेरे मालिक राजा पर बीतना तय है। **25** तुझे इंसानों के बीच से खदेड़ दिया जाएगा और तू मैदान के जानवरों के साथ रहा करेगा। तू बैलों की तरह घास-पत्ते खाएगा। तू आकाश की ओस से भीगा करेगा[7] और तुझ पर सात काल[8] बीतेंगे।[9] तब जाकर तू जान जाएगा कि इंसानी राज्यों पर परम-प्रधान परमेश्‍वर

अध्य. 4

1 दान 4:23-26
2 दान 4:31; दान 5:18, 20
3 दान 4:32, 33
4 लूक 21:24
5 दान 4:32
6 दान 4:13
7 दान 4:34
8 यश 47:13; दान 2:27; दान 5:8, 15
9 दान 1:7

दूसरा कॉल.

1 दान 4:10, 11
2 दान 4:12
3 यश 14:13, 14
4 दान 2:37, 38
5 दान 4:13; दान 8:13
6 दान 4:13-16; लूक 21:24
7 दान 4:31-33
8 लूक 21:24; प्रक 12:6, 14
9 दान 4:16

का राज है और वह जिसे चाहे उसके हाथ
में राज देता है।[1]
26 मगर उन्होंने यह भी कहा कि
ठूँठ को जड़ों समेत छोड़ दिया जाए।[2]
इसका मतलब यह है: जब तू जान लेगा
कि स्वर्ग में कोई है जो राज करता है*
तो तेरा राज तुझे लौटा दिया जाएगा।
27 इसलिए हे राजा, मेहरबानी करके
मेरी यह सलाह मान। अपने पापों से
फिरकर सही काम कर और दुष्ट काम
छोड़कर गरीबों पर दया कर। हो सकता
है तेरी खुशहाली के दिन और बढ़ा दिए
जाएँ।'"[3]
28 ये सारी बातें राजा नबूकदनेस्सर
पर घटीं।
29 बारह महीने बाद जब राजा बैबि-
लोन में अपने राजमहल की छत पर
टहल रहा था, 30 तब वह कहने लगा,
"क्या यह महानगरी बैबिलोन नहीं जिसे
मैंने अपने बल से, अपनी ताकत से
बनाया है ताकि यह राज-निवास हो और
इससे मेरा प्रताप और ऐश्वर्य बढ़े?"
31 राजा अपनी बात पूरी कर भी
नहीं पाया था कि आकाश से एक आवाज़
सुनायी दी: "हे राजा नबूकदनेस्सर, तेरे
लिए यह संदेश है, 'राज तेरे हाथ से ले
लिया गया है[4] 32 और तुझे इंसानों के
बीच से खदेड़ दिया जाएगा। तू मैदान
के जानवरों के साथ रहेगा और बैलों
की तरह घास-पत्ते खाएगा और तुझ पर
सात काल गुज़रेंगे। तब जाकर तू जान
जाएगा कि इंसानी राज्यों पर परम-प्रधान
परमेश्वर का राज है और वह जिसे चाहे
उसके हाथ में राज देता है।'"[5]
33 उसी पल यह बात नबूकदनेस्सर
पर पूरी हो गयी। उसे इंसानों के बीच

4:26 *शा., "राज करनेवाला स्वर्ग है।"

से खदेड़ दिया गया और वह बैलों की
तरह घास-पत्ते खाने लगा। उसका शरीर
आकाश की ओस से भीगता रहा। उसके
बाल उकाबों के पंखों जैसे लंबे हो गए
और नाखून पक्षियों के चंगुलों जैसे हो
गए।[1]
34 "उस समय के आखिर में[2] मैंने,
नबूकदनेस्सर ने ऊपर स्वर्ग की ओर देखा
और मेरा दिमाग दुरुस्त हो गया और
मैंने परम-प्रधान परमेश्वर की तारीफ
की, सदा तक रहनेवाले परमेश्वर की
तारीफ और महिमा की, क्योंकि उसका
राज सदा कायम रहनेवाला राज है
और उसका राज पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना
रहता है।[3] 35 उसके सामने धरती के
निवासी कुछ भी नहीं हैं। वह आकाश की
सेना और धरती के निवासियों के साथ
वही करता है जो उसकी मरज़ी के मुता-
बिक है। उसे कोई रोक नहीं सकता,*[4]
न ही उससे कह सकता है, 'यह तूने क्या
किया?'[5]
36 उस वक्त मेरा दिमाग दुरुस्त हो
गया और मेरे राज का प्रताप, मेरा वैभव
और मेरी शान मुझे लौटा दी गयी।[6] मेरे
बड़े-बड़े अधिकारी और रुतबेदार लोग
मुझसे मिलने के लिए बेताब होने लगे।
मेरा राज मुझे लौटा दिया गया और मुझे
पहले से ज़्यादा महान किया गया।
37 अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के
राजा की तारीफ और बड़ाई करता हूँ,
उसकी महिमा करता हूँ[7] क्योंकि उसके
सभी काम सच्चाई के मुताबिक हैं और
उसकी राहें न्याय के मुताबिक हैं[8] और
जो घमंड करते हैं उन्हें वह नीचा कर
सकता है।"[9]

4:35 *या "उसका हाथ कोई नहीं जाँच
सकता।"

अध्य. 4
1 1शम 2:7, 8
अय 34:24
यिर्म 27:5
यहे 21:26, 27
दान 2:21
दान 7:13, 14
लूक 1:32, 33
2 दान 4:15
3 1रा 21:29
योए 2:14
यो 3:8-10
4 दान 4:25
प्रेष 12:22, 23
5 दान 4:17

दूसरा कॉल.
1 दान 4:25
2 दान 4:16
3 भज 10:16
दान 4:3
4 अय 34:24
यश 43:13
5 यश 45:9
6 दान 4:26
7 दान 4:2, 3
8 व्य 32:4
भज 33:5
9 निर्ग 18:10, 11
याकू 4:6

5 राजा बेलशस्सर[1] ने एक बड़ी और
आलीशान दावत रखी और अपने
हज़ार रुतबेदार लोगों को न्यौता दिया।
उसने उन सबके सामने दाख-मदिरा पी।[2]
2 बेलशस्सर ने नशे में धुत्त होकर हुक्म
दिया कि उसका पिता नबूकदनेस्सर,
यरूशलेम के मंदिर से सोने-चाँदी के जो
प्याले और कटोरे उठा लाया था,[3] वे अब
उसके सामने लाए जाएँ ताकि वह और
उसके रुतबेदार लोग और उसकी रखै-
लियाँ और दूसरी पत्नियाँ उनमें से पीएँ।
3 तब सोने के वे बरतन लाए गए जो
यरूशलेम में परमेश्वर के भवन के मंदिर
से उठाकर लाए गए थे। राजा, उसके
रुतबेदार लोग, उसकी रखैलियाँ और
दूसरी पत्नियाँ, सब उनमें से पीने लगे।
4 वे दाख-मदिरा पीकर उन देवताओं की
बड़ाई करने लगे जो सोने-चाँदी, ताँबे,
लोहे, लकड़ी और पत्थर के बने थे।

5 तब अचानक एक आदमी का हाथ
दिखायी दिया और दीवट के पास राज-
महल की दीवार के पलस्तर पर कुछ
लिखने लगा। राजा ने उस हाथ को
दीवार पर लिखते हुए देखा। 6 राजा
का चेहरा पीला पड़ गया* और वह कुछ
सोचकर घबराने लगा। उसकी कमर के
जोड़ हिलने लगे[4] और घुटने आपस में
टकराने लगे।

7 राजा ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा
कि तांत्रिकों, कसदियों* और ज्योतिषियों
को बुलाया जाए।[5] राजा ने बैबिलोन के
ज्ञानियों से कहा, “जो कोई यह लिखा-
वट पढ़कर मुझे इसका मतलब बताएगा
उसे बैंजनी कपड़ा पहनाया जाएगा, उसके
गले में सोने का हार डाला जाएगा[6] और

अध्य. 5
1 दान 7:1; दान 8:1
2 यश 21:5; यिर्म 51:39
3 2रा 25:15; 2इत 36:18; एज 1:7; यिर्म 52:19; दान 1:1, 2
4 यश 21:2, 3
5 दान 2:2; दान 4:6
6 उत 41:39, 42; एस 8:15

दूसरा कॉल.
1 दान 2:6, 48
2 दान 2:27; दान 4:7
3 यश 13:1, 7
4 दान 4:8, 9
5 दान 2:47, 48
6 दान 1:7; दान 4:8
7 दान 1:17, 20; दान 6:3
8 2रा 24:11, 14; दान 1:3, 6; दान 2:25

उसे इस राज्य का तीसरा सबसे बड़ा
शासक बनाया जाएगा।”[1]

8 तब राजा के सभी ज्ञानी आए, मगर
वे न तो लिखावट पढ़ सके, न ही उसका
मतलब राजा को बता सके।[2] 9 इस-
लिए राजा बेलशस्सर बहुत घबरा गया
और उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसके
रुतबेदार लोग भी उलझन में पड़ गए।[3]

10 राजा और उसके रुतबेदार लोगों
की बातें सुनकर रानी दावत-खाने में
आयी। रानी ने कहा, “हे राजा, तू युग-
युग जीए। तेरा चेहरा क्यों पीला पड़
गया? तुझे खौफ खाने की ज़रूरत नहीं।
11 तेरे राज्य में एक आदमी# है जिसमें
पवित्र ईश्वरों की शक्ति है। तेरे पिता
के दिनों में उस आदमी में ईश्वरों जैसा
ज्ञान, अंदरूनी समझ और बुद्धि पायी
गयी थी।[4] तेरे पिता राजा नबूकदनेस्सर
ने उसे जादू-टोना करनेवाले पुजारियों,
तांत्रिकों, कसदियों* और ज्योतिषियों का
प्रधान ठहराया था।[5] हे राजा, तेरे पिता
ने वाकई ऐसा किया था। 12 दानि-
येल, जिसका नाम राजा ने बेलतशस्सर
रखा था,[6] बहुत काबिल था, उसमें ज्ञान
और अंदरूनी समझ थी, इसलिए वह
सपनों का मतलब बता सकता था, पहे-
लियाँ बुझा सकता था और कोई भी गुत्थी
सुलझा सकता था।[7] इसलिए दानियेल
को बुला, वह तुझे इस लिखावट का मत-
लब बताएगा।”

13 तब दानियेल को राजा के सामने
लाया गया। राजा ने दानियेल से पूछा,
“क्या तू दानियेल है? क्या तू उन लोगों
में से है जिन्हें मेरा पिता यानी राजा
यहूदा से बंदी बनाकर लाया था?[8]
14 मैंने सुना है कि तुझमें ईश्वरों की

5:6 *या “राजा का रूप बदल गया।” **5:7, 11** *यानी ऐसे लोगों का समूह जो ज्योतिष-विद्या और नक्षत्र-विद्या में माहिर थे।

5:11 #या “एक काबिल आदमी।”

शक्ति है[1] और तेरे पास कमाल की
बुद्धि, ज्ञान और अंदरूनी समझ है।[2]
15 मेरे सामने ज्ञानियों और तांत्रिकों
को लाया गया ताकि वे यह लिखावट
पढ़कर इसका मतलब मुझे बताएँ, मगर
वे नहीं बता पा रहे हैं।[3] **16** लेकिन
मैंने सुना है कि तेरे पास रहस्य खोलने
और गुत्थी सुलझाने की काबिलीयत है।[4]
इसलिए अगर तू यह लिखावट पढ़-
कर इसका मतलब मुझे बताए तो तुझे
बैंजनी कपड़ा पहनाया जाएगा, तेरे गले
में सोने का हार डाला जाएगा और तुझे
इस राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शासक
बनाया जाएगा।"[5]

17 दानियेल ने राजा से कहा, "मुझे
तेरे तोहफे नहीं चाहिए, तू चाहे तो
ये सब किसी और को दे दे। फिर
भी, मैं राजा को यह लिखावट पढ़कर
सुनाऊँगा और इसका मतलब बताऊँगा।
18 हे राजा, परम-प्रधान परमेश्वर ने तेरे
पिता नबूकदनेस्सर को राज, महानता,
सम्मान और प्रताप दिया था।[6] **19** पर-
मेश्वर की बदौलत उसे जो महानता
हासिल हुई थी, उस वजह से सभी राष्ट्रों
और भाषाओं के लोग उसके सामने
थर-थर काँपते थे।[7] वह जिसे चाहे
मार डालता और जिसे चाहे ज़िंदा छोड़
देता था, जिसे चाहे सम्मान देता और
जिसे चाहे नीचा करता था।[8] **20** मगर
जब उसका मन घमंड से फूल गया और
वह ढीठ हो गया और गुस्ताखी करने
लगा,[9] तो उसे राजगद्दी से नीचे उतारा
गया और उसकी गरिमा उससे छीन ली
गयी। **21** उसे इंसानों के बीच से खदेड़
दिया गया, उसका मन जानवर के मन
जैसा हो गया और वह जंगली गधों के
साथ रहने लगा। वह बैलों की तरह घास-
पत्ते खाता और उसका शरीर आकाश की
ओस से भीगा करता था। ऐसा तब तक
होता रहा जब तक कि उसने नहीं जान
लिया कि इंसानी राज्यों पर परम-प्रधान
परमेश्वर का राज है और वह जिसे चाहे
उसे राज करने के लिए ठहराता है।[1]

22 मगर हे बेलशस्सर, तू जो उसका
बेटा है, तूने यह सब जानते हुए भी अपने
मन को नम्र नहीं किया। **23** इसके
बजाय तूने स्वर्ग के मालिक, परमेश्वर
के खिलाफ जाकर खुद को ऊँचा उठाया[2]
और तूने उसके भवन के बरतन मँगाए।[3]
फिर तू और तेरे रुतबेदार लोग, तेरी
रखैलियाँ और दूसरी पत्नियाँ, सब उनमें
से पीने लगे और तुम सबने उन देव-
ताओं की बड़ाई की जो सोने-चाँदी, ताँबे,
लोहे, लकड़ी और पत्थर के बने हैं, जो
न कुछ देख-सुन सकते हैं और न ही कुछ
जानते हैं।[4] मगर तूने उस परमेश्वर की
महिमा नहीं की जिसकी बदौलत तू साँस
ले रहा है और जिसके हाथ में तेरी ज़िंदगी
है।[5] **24** इसलिए परमेश्वर ने इस हाथ
को भेजा और ये शब्द लिखे गए।[6]
25 यहाँ लिखे गए शब्द हैं: मने, मने,
तकेल और परसीन।

26 इन शब्दों का मतलब यह है: मने,
यानी परमेश्वर ने तेरे राज के दिन गिने हैं
और उसका अंत कर दिया है।[7]

27 तकेल, यानी तुझे तराज़ू में तौला
गया और तू हलका पाया गया है।

28 परेस, यानी तेरा राज्य बाँट दिया
गया है और मादियों और फारसियों को दे
दिया गया है।"[8]

29 फिर बेलशस्सर के हुक्म पर
दानियेल को बैंजनी कपड़ा पहनाया गया,
उसके गले में सोने का हार डाला गया
और यह ऐलान किया गया कि वह
इस राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शासक
होगा।[9]

अध्य. 5
1 दान 4:9
2 दान 1:17, 20
3 यश 47:12, 13; दान 2:10, 11; दान 5:8
4 दान 2:28
5 दान 2:6; दान 5:7
6 दान 2:37, 38
7 यिर्म 25:9; दान 3:4, 5; दान 4:22
8 दान 2:12; दान 3:6, 29
9 यश 14:13, 14; दान 4:30

दूसरा कॉल.
1 दान 4:31-35
2 यिर्म 50:29
3 दान 5:2, 3
4 भज 115:4-7; यश 46:6, 7
5 भज 104:29
6 दान 5:5
7 यश 13:11; यिर्म 25:12; यिर्म 27:6, 7; यिर्म 50:1, 2; यिर्म 51:11
8 एज 1:1, 2; यश 21:2; यश 45:1; यिर्म 50:9; दान 6:28; दान 9:1
9 दान 5:7, 16

30 उसी रात कसदी राजा बेलशस्सर मार डाला गया।[1] 31 और उसका राज्य मादी दारा[2] को मिल गया। दारा करीब 62 साल का था।

6 दारा को अपने पूरे राज्य पर 120 सूबेदारों को ठहराना सही लगा।[3] 2 और उन सूबेदारों पर तीन बड़े-बड़े अधिकारी ठहराए गए जिनमें से एक दानियेल था।[4] सूबेदार[5] इन अधिकारियों को सारी बातों की खबर देते थे ताकि राजा को कोई नुकसान न हो। 3 दानियेल बहुत ही काबिल था इसलिए वह दूसरे बड़े-बड़े अधिकारियों और सूबेदारों में सबसे खास नज़र आने लगा।[6] राजा ने फैसला किया कि वह उसे और भी ऊँचा पद देकर पूरे राज्य पर अधिकार सौंपेगा।

4 उस समय बड़े-बड़े अधिकारी और सूबेदार राज-काज के मामले में दानियेल में दोष ढूँढ़ने लगे ताकि उस पर कोई इलज़ाम लगा सकें। मगर उन्हें उसमें कोई दोष नहीं मिला, न ही उसके खिलाफ भ्रष्टाचार का कोई सबूत मिला क्योंकि वह एक भरोसेमंद इंसान था, अपने काम में लापरवाह नहीं था और बेईमानी नहीं करता था। 5 वे आदमी कहने लगे, "हमें इस दानियेल में कोई दोष नहीं मिलेगा जिससे हम उस पर इलज़ाम लगा सकें। हमें उसकी शिकायत के लिए कोई ऐसी बात ढूँढ़नी होगी जो उसके परमेश्वर के नियमों से संबंध रखती हो।"[7]

6 इसलिए वे बड़े-बड़े अधिकारी और सूबेदार टोली बनाकर राजा के सामने गए और कहने लगे, "हे राजा दारा, तू युग-युग जीए। 7 राज्य के सभी बड़े-बड़े अधिकारियों, प्रशासकों, सूबेदारों, ऊँचे ओहदे के अधिकारियों और राज्यपालों ने आपस में मशविरा करके तय किया है कि लोगों पर पाबंदी लगाने का एक शाही फरमान जारी किया जाए कि अगर 30 दिन तक कोई भी राजा को छोड़ किसी और देवता या इंसान से बिनती करे तो उसे शेरों की माँद में फेंक दिया जाएगा।[1] 8 इसलिए हे राजा, तू यह फरमान जारी कर दे और इस पर दस्तखत कर दे[2] ताकि मादियों और फारसियों के कानून के मुताबिक यह बदला न जाए और न ही रद्द किया जाए।"[3]

9 इसलिए राजा दारा ने पाबंदी के उस फरमान पर दस्तखत कर दिए।

10 मगर जैसे ही दानियेल को पता चला कि उस फरमान पर राजा ने दस्तखत कर दिए हैं, वह अपने घर गया जिसके ऊपरी कमरे की खिड़कियाँ यरूशलेम की तरफ खुलती थीं।[4] और पहले की तरह वह हर दिन तीन बार घुटने टेककर अपने परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा और उसकी तारीफ करता रहा। 11 तभी वे आदमी धड़धड़ाते हुए अंदर घुस आए और उन्होंने देखा कि दानियेल अपने परमेश्वर से बिनती कर रहा है और उससे कृपा के लिए मिन्नतें कर रहा है।

12 तब वे राजा के पास गए और उन्होंने उसे पाबंदी के बारे में याद दिलाते हुए कहा, "हे राजा, क्या तूने एक फरमान पर दस्तखत नहीं किए थे कि 30 दिन तक अगर कोई राजा को छोड़ किसी और देवता या इंसान से बिनती करेगा, तो उसे शेरों की माँद में फेंक दिया जाएगा?" राजा ने कहा, "बेशक किया था और मादियों और फारसियों के अटल कानून के मुताबिक यह फरमान रद्द नहीं किया जा सकता।"[5] 13 उन्होंने फौरन राजा से कहा, "हे राजा, वह दानियेल, जो यहूदा से लाए

अध्य. 5
1 यश 21:9; यिर्म 51:8, 31; यिर्म 51:39, 57
2 दान 6:1; दान 9:1

अध्य. 6
3 एस 1:1; दान 9:1
4 दान 2:48; दान 5:29
5 एज 8:36; एस 8:9; दान 3:2
6 दान 1:17, 20; दान 5:12
7 एस 3:8

दूसरा कॉल.
1 दान 3:6
2 एस 3:12; एस 8:10
3 एस 1:19; एस 8:8
4 1रा 8:44, 45
5 एस 8:8; दान 6:7, 8

गए बंदियों में से है,[1] उसने तेरी बिलकुल कदर नहीं की, न ही उस फरमान की कोई परवाह की जिस पर तूने दस्तखत किए थे। वह दिन में तीन बार प्रार्थना करता है।"[2] **14** जैसे ही राजा ने यह बात सुनी उसे बहुत दुख हुआ और वह दानियेल को बचाने की तरकीब सोचने लगा। सूरज ढलने तक उसने दानियेल को बचाने की हर मुमकिन कोशिश की। **15** आखिरकार, वे आदमी टोली बनाकर राजा के पास आए और कहने लगे, "हे राजा, मत भूल कि यह मादियों और फारसियों का कानून है कि राजा जो फरमान जारी करता है या पाबंदी लगाता है, उसे बदला नहीं जा सकता।"[3]

16 तब राजा ने हुक्म दिया और उन्होंने दानियेल को ले जाकर शेरों की माँद में फेंक दिया।[4] राजा ने दानियेल से कहा, "तेरा परमेश्‍वर, जिसकी तू बिना नागा सेवा करता है, तुझे ज़रूर छुड़ाएगा।" **17** फिर एक पत्थर लाया गया और उसे माँद के मुहाने पर रखा गया। राजा ने अपनी मुहरवाली अँगूठी और अपने अधिकारियों की मुहरवाली अँगूठी से उस पर मुहर लगा दी ताकि दानियेल के बारे में किया गया फैसला बदला न जा सके।

18 फिर राजा अपने महल चला गया। उसने पूरी रात कुछ नहीं खाया और मनबहलाव करने से इनकार कर दिया* और वह रात-भर सो नहीं सका।# **19** सुबह सूरज की पहली किरण पड़ते ही राजा उठा और जल्दी से शेरों की माँद के पास गया। **20** माँद के पास जाते ही राजा ने दुख-भरी आवाज़ में दानियेल को पुकारा, "हे दानियेल, जीवित परमेश्‍वर के सेवक, क्या तेरे परमेश्‍वर ने, जिसकी तू बिना नागा सेवा करता है, तुझे शेरों से बचा लिया है?" **21** दानियेल ने फौरन राजा से कहा, "हे राजा, तू युग-युग जीए। **22** मेरे परमेश्‍वर ने अपने स्वर्गदूत को भेजकर शेरों का मुँह बंद कर दिया[1] और उन्होंने मुझे कुछ नहीं किया।[2] ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मैं परमेश्‍वर के सामने बेगुनाह हूँ और हे राजा, मैंने तेरा भी कुछ बुरा नहीं किया।"

23 राजा खुशी से फूला नहीं समाया और उसने आज्ञा दी कि दानियेल को माँद में से ऊपर निकाला जाए। तब दानियेल को माँद में से ऊपर निकाला गया। उसके शरीर पर एक खरोंच तक नहीं थी क्योंकि उसने अपने परमेश्‍वर पर भरोसा रखा था।[3]

24 फिर राजा के हुक्म पर उन आदमियों को लाया गया जिन्होंने दानियेल पर इलज़ाम लगाया था।* और उन्हें उनके बीवी-बच्चों के साथ शेरों की माँद में फेंक दिया गया। वे माँद की तह तक पहुँचे भी न थे कि शेर उन पर झपट पड़े और उनकी हड्डियाँ तोड़ डालीं।[4]

25 फिर राजा दारा ने सारी धरती पर रहनेवाले सब राष्ट्रों और भाषाओं के लोगों[5] को यह संदेश लिखकर भेजा: "तुम्हारा सुख-चैन बढ़ता रहे! **26** मैं एक फरमान जारी कर रहा हूँ कि मेरे राज्य के हर इलाके में रहनेवाले लोग दानियेल के परमेश्‍वर का डर मानें और उसका आदर करें,[6] क्योंकि वही जीवित परमेश्‍वर है और युग-युग तक बना रहता है। उसका राज कभी नाश नहीं किया

6:18 *या शायद, "उसके पास कोई संगीतकार नहीं लाया गया।" #शा., "उसकी नींद उसके पास से भाग गयी।"

6:24 *या "को बदनाम किया था।"

अध्य. 6
1 दान 1:3, 6; दान 2:25; दान 5:13
2 एस 3:8; दान 6:10
3 एस 8:8; दान 6:8
4 दान 6:7; इब्र 11:32, 33

दूसरा कॉल.
1 1शम 17:37; इब्र 11:32, 33
2 भज 34:7; भज 118:5; दान 3:28
3 भज 37:40; नीत 18:10; दान 3:26, 27
4 एस 7:10
5 एस 8:9; दान 4:1
6 दान 3:29

जाएगा और उसका राज करने का अधि-
कार सदा बना रहेगा।[1] 27 वह अपने
लोगों को छुड़ाता और बचाता है[2]
और आकाश और धरती पर चिन्ह
और अजूबे दिखाता है।[3] इसीलिए उसने
दानियेल को शेरों के पंजों से बचा
लिया है।"

28 इस तरह दानियेल दारा के राज में
और फारसी राजा कुसरू के राज में भी
कामयाब हुआ।[4]

7 बैबिलोन के राजा बेलशस्सर[5] के
राज के पहले साल, दानियेल ने
बिस्तर पर लेटे एक सपना और कुछ
दर्शन देखे।[6] फिर उसने लिखा कि
उसने क्या सपना देखा था।[7] उसने जो-
जो देखा, उसका पूरा ब्यौरा लिखा।
2 दानियेल ने कहा,

"मैंने रात को दर्शन में यह देखा:
आकाश के चारों तरफ से आँधी चलने
लगी, जो विशाल समुंदर में हलचल
मचाने लगी![8] 3 समुंदर में से चार बड़े-
बड़े जानवर[9] निकले, जो एक-दूसरे से
अलग थे।

4 पहला जानवर शेर जैसा था[10] और
उसके उकाब जैसे पंख थे।[11] मैं उसे देख
ही रहा था कि उसके पंख नोच दिए गए
और उसे ज़मीन से ऊपर उठाया गया
और एक आदमी की तरह दो पैरों पर
खड़ा किया गया और उसे एक इंसान का
दिल दिया गया।

5 फिर मैंने दूसरा जानवर देखा, जो
रीछ जैसा था![12] उसका शरीर एक तरफ
से उठा हुआ था और उसके मुँह में दाँतों
के बीच तीन पसलियाँ थीं। उससे कहा
गया, 'उठ, खूब माँस खा।'[13]

6 मैंने दर्शन में आगे देखा कि एक
और जानवर निकला जो चीते जैसा था![14]
मगर उसकी पीठ पर पक्षियों जैसे चार
पंख थे। उस जानवर के चार सिर थे[1]
और उसे राज करने का अधिकार दिया
गया।

7 फिर मैंने दर्शन में चौथा जानवर
देखा, जो बड़ा ही खूँखार और डरावना
था। वह बहुत ताकतवर था और उसके
बड़े-बड़े लोहे के दाँत थे। वह सबकुछ खा
जाता और चूर-चूर कर देता और जो कुछ
बच जाता उसे पैरों से रौंद डालता।[2] वह
उससे पहले के सभी जानवरों से अलग
था और उसके दस सींग थे। 8 मैं उन
सींगों पर गौर कर ही रहा था कि उनके
बीच से एक छोटा सींग निकल आया![3]
फिर उस छोटे सींग के सामने पहलेवाले
सींगों में से तीन उखाड़ दिए गए। फिर
मैंने देखा कि उस छोटे सींग में इंसान जैसी
आँखें थीं और एक मुँह भी था जो बड़ी-
बड़ी डींगें मारता था![4]

9 मैं दर्शन देख ही रहा था कि राज-
गद्दियाँ रखी गयीं और 'अति प्राचीन'[5]
अपनी राजगद्दी पर विराजमान हुआ।[6]
उसकी पोशाक बर्फ जैसी उजली थी[7]
और उसके सिर के बाल ऊन जैसे सफेद
थे। उसकी राजगद्दी आग की ज्वाला थी
और राजगद्दी के पहिए धधकती आग
थे।[8] 10 उसके सामने से आग की
धारा बह रही थी।[9] हज़ारों-हज़ार स्वर्ग-
दूत उसकी सेवा कर रहे थे, लाखों-लाख
उसके सामने खड़े थे।[10] फिर अदालत[11]
की कार्रवाई शुरू हुई और किताबें खोली
गयीं।

11 मैं देखता रहा क्योंकि वह सींग
बड़ी-बड़ी डींगें हाँक रहा था।[12] मैं देख ही
रहा था कि वह जानवर मार डाला गया
और उसकी लाश आग में डालकर भस्म
कर दी गयी। 12 मगर जहाँ तक बाकी

अध्य. 6
1 दान 4:34
2 दान 3:28
3 यिर्म 32:20
दान 4:3
4 2इत 36:22, 23
एज 1:1, 2
यश 44:28
दान 5:31
दान 6:1, 2

अध्य. 7
5 दान 5:1, 30
6 दान 2:19
दान 8:1
7 यश 30:8
हब 2:2
प्रक 1:11
8 यश 57:20
प्रक 17:15
9 दान 7:17
10 दान 2:37, 38
11 व्य 28:49, 50
यिर्म 48:40
विल 4:19
हब 1:8
12 दान 2:39
दान 5:28
दान 8:3, 20
13 यश 13:17, 18
दान 11:2
14 दान 2:39
दान 8:5
दान 11:3

दूसरा कॉल.
1 दान 8:8
दान 11:4
2 दान 2:40
दान 7:19
3 दान 7:24
4 दान 7:20
प्रक 13:5
5 भज 90:2
दान 7:13, 22
6 यश 6:1, 2
प्रक 4:2, 3
7 भज 104:1, 2
8 व्य 9:3
इब्र 12:29
9 भज 50:3
10 व्य 33:2
1रा 22:19
इब्र 12:22
यहू 14
प्रक 5:11
11 1शम 2:10
भज 50:6
12 दान 7:8, 25

जानवरों की बात है,[1] उनका राज करने का अधिकार छीन लिया गया और उन्हें कुछ समय और जीने दिया गया।

13 मैंने रात के दर्शनों में आगे देखा कि इंसान के बेटे[2] जैसा कोई आकाश के बादलों के साथ आ रहा है! उसे 'अति प्राचीन'[3] के पास जाने की इजाज़त दी गयी और वे उसे उसके सामने ले गए। **14** उसे राज करने का अधिकार,[4] सम्मान[5] और एक राज दिया गया ताकि सब राष्ट्रों और भाषाओं के लोग उसकी सेवा करें।[6] उसका राज करने का अधिकार सदा बना रहेगा, वह कभी नहीं मिटेगा और उसका राज कभी नाश नहीं होगा।[7]

15 मैं दानियेल मन-ही-मन बहुत परेशान हो उठा, क्योंकि मैं उन दर्शनों से बहुत डर गया था।[8] **16** वहाँ जो खड़े थे, उनमें से एक के पास मैं गया ताकि उससे पूछूँ कि उन दर्शनों का असल मतलब क्या है। तब उसने मुझे जवाब दिया और बताया कि उन बातों का मतलब क्या है।

17 'ये चार बड़े-बड़े जानवर[9] चार राजा हैं जो धरती से उठेंगे।[10] **18** मगर राज सबसे महान परमेश्वर के पवित्र जनों[11] को दिया जाएगा[12] और इस राज पर उनका सदा के लिए अधिकार होगा,[13] हाँ, युग-युग तक उन्हीं का अधिकार होगा।'

19 फिर मैंने चौथे जानवर के बारे में ज़्यादा जानना चाहा, जो बाकी जानवरों से बिलकुल अलग था। वह बहुत ही भयानक था और उसके लोहे के दाँत और ताँबे के पंजे थे। वह सबकुछ खा जाता और चूर-चूर कर देता था और जो कुछ बच जाता उसे पैरों से रौंद डालता था।[14] **20** मैंने उसके सिर के दस सींगों[15] के बारे में भी जानना चाहा और उस दूसरे सींग के बारे में भी, जो बाद में निकल आया था और जिसके सामने तीन सींग उखड़कर गिर गए थे।[1] उस सींग की आँखें थीं और एक मुँह भी था जिससे वह बड़ी-बड़ी डींगें मारता था। वह सींग बाकी सींगों से बहुत बड़ा था।

21 मैंने आगे देखा कि वह सींग पवित्र जनों से युद्ध करने लगा और तब तक उन पर अपना ज़ोर आज़माता रहा[2] **22** जब तक कि 'अति प्राचीन'[3] न आया और सबसे महान परमेश्वर के पवित्र जनों के पक्ष में फैसला न सुनाया गया।[4] और तब वह तय समय आ गया कि पवित्र जन राज पर अधिकार करें।[5]

23 जो मुझे दर्शन समझा रहा था उसने मुझसे कहा, 'चौथा जानवर, चौथे राज को दर्शाता है जो धरती पर आएगा। वह बाकी सभी राज्यों से अलग होगा, वह पूरी धरती को खा जाएगा, उसे पैरों तले रौंद डालेगा और चूर-चूर कर देगा।[6] **24** दस सींग दस राजाओं को दर्शाते हैं जो उसी राज में से निकलेंगे और उनके बाद एक और राजा आएगा जो पहले के राजाओं से अलग होगा और तीन राजाओं को नीचा दिखाएगा।[7] **25** वह परम-प्रधान परमेश्वर के खिलाफ बातें करेगा[8] और सबसे महान परमेश्वर के पवित्र जनों को सताता रहेगा। वह समय और कानून को बदलने की कोशिश करेगा और पवित्र जनों को उसके हाथ में एक काल, दो काल और आधे काल* के लिए दे दिया जाएगा।[9] **26** मगर फिर अदालत की कार्रवाई शुरू हुई और उन्होंने

7:25 *यानी साढ़े तीन काल।

अध्य. 7
1 दान 7:3
2 मत 24:30, लूक 21:27, यूह 3:13, प्रेष 7:56, प्रक 14:14
3 भज 90:2, दान 7:9, 22, हब 1:12
4 भज 2:6, भज 110:1, 2, मत 28:18, 1कुर 15:25, इफ 1:22, प्रक 3:21
5 फिल 2:9-11
6 उत 49:10
7 भज 45:6, यश 9:6, 7, दान 2:44, लूक 1:32, 33, प्रक 11:15
8 दान 8:27
9 दान 7:3
10 दान 2:39, 40
11 दान 7:25, 27
12 मत 19:28, 2ती 2:12, प्रक 3:21, प्रक 5:9, 10
13 दान 7:21, 22, लूक 22:29
14 दान 2:40, दान 7:7
15 दान 7:24

दूसरा कॉल.
1 दान 7:8
2 दान 8:23, 24, दान 12:7, प्रक 13:7
3 भज 90:2, दान 7:9, 13, हब 1:12
4 दान 7:18, 27
5 मत 19:28, लूक 22:29, प्रक 1:6, प्रक 3:21, प्रक 5:9, 10, प्रक 20:4
6 दान 2:40, दान 7:7
7 दान 7:20
8 दान 7:8
9 दान 12:7, प्रक 13:5-7

उसका राज करने का अधिकार छीन लिया ताकि उसे मिटा दें और पूरी तरह नाश कर दें।[1]

27 और आकाश के नीचे के सारे राज्य और राज करने का अधिकार और उनका वैभव सबसे महान परमेश्‍वर के पवित्र जनों को दे दिया गया।[2] उनका राज सदा तक कायम रहनेवाला राज है[3] और सारे राज्य उनकी सेवा करेंगे और उनकी आज्ञा मानेंगे।'

28 मेरे दर्शन का ब्यौरा यहीं खत्म होता है। मैं दानियेल, दर्शन की बातें सोच-कर बहुत घबरा गया, मेरा चेहरा पीला पड़ गया,* मगर मैंने यह बात अपने दिल में ही रखी।"

8 राजा बेलशस्सर[4] के राज के तीसरे साल मुझ दानियेल को एक और दर्शन मिला।[5] 2 मैं एलाम प्रांत*[6] में शूशन#[7] नाम के किले△ में था। मैं ऊलै की नहर के पास था। 3 मैंने नज़रें उठायीं तो देखा कि नहर के सामने एक मेढ़ा[8] खड़ा है और उसके दो सींग हैं![9] दोनों सींग लंबे थे, मगर एक सींग दूसरे से ज़्यादा लंबा था। लंबा सींग बाद में निकला था।[10] 4 मैंने देखा कि मेढ़ा पश्‍चिम, उत्तर और दक्षिण की तरफ सींग मार रहा है और कोई भी जंगली जानवर उसके सामने टिक नहीं पा रहा था और ऐसा कोई नहीं था जो उसके हाथ से किसी को छुड़ा सके।[11] वह अपनी मन-मरज़ी कर रहा था और खुद को ऊँचा उठा रहा था।

5 फिर मैंने देखा कि पश्‍चिम से एक बकरा[12] आ रहा है जो पूरी धरती पर इतनी तेज़ी से गुज़र रहा था कि उसके पैर ज़मीन को नहीं छू रहे थे! उस बकरे की आँखों के बीच एक सींग था जो देखने-लायक था।[1] 6 वह उस दो सींगोंवाले मेढ़े की तरफ आ रहा था जिसे मैंने नहर के पास खड़े देखा था। बकरा गुस्से से भरा हुआ उसकी तरफ दौड़ रहा था।

7 मैंने देखा कि बकरा मेढ़े पर झुँझ-लाता हुआ उसके बिलकुल पास आ रहा था। वह मेढ़े पर लपका और उसे गिरा दिया और उसके दोनों सींग तोड़ दिए। मेढ़े के पास उसका सामना करने की ताकत नहीं थी। बकरे ने उसे ज़मीन पर गिराकर रौंद दिया और मेढ़े को बकरे के हाथ से छुड़ानेवाला कोई न था।

8 फिर उस बकरे ने खुद को बहुत ऊँचा उठाया। मगर जैसे ही वह ताकतवर हुआ उसका बड़ा सींग तोड़ दिया गया। फिर उस सींग की जगह ऐसे चार सींग निकल आए जो देखनेलायक थे। ये चार सींग धरती की चार दिशाओं की तरफ बढ़ने लगे।[2]

9 उन चार सींगों में से एक सींग से एक और सींग निकल आया जो छोटा था। यह छोटा सींग दक्षिण और पूरब की तरफ और सुंदर देश* की तरफ बढ़-चढ़कर अपनी ताकत दिखाने लगा।[3]
10 यह इतना ताकतवर हो गया कि आकाश की सेना तक पहुँच गया और इसने सेना में से कुछ को और कुछ तारों को धरती पर गिरा दिया और उन्हें रौंद डाला। 11 यहाँ तक कि उसने उस सेना के हाकिम को चुनौती दी और उसकी नियमित बलियाँ छीन ली गयीं और उसका ठहराया हुआ पवित्र-स्थान गिरा दिया गया।[4] 12 अपराध की वजह से

7:28 *या "मेरा रूप बदल गया।" 8:2 *या "ज़िला अधिकार-क्षेत्र।" #या "सूसा।" △या "महल।"

8:9 *या "सरताज।"

अध्य. 7
1 दान 7:10, 11
2 दान 7:22; मत 19:28; लूक 22:29; प्रक 20:4
3 प्रक 11:15

अध्य. 8
4 दान 5:1, 30
5 दान 7:1, 15
6 उत 10:22; यश 11:11; यश 21:2
7 नहे 1:1; एस 2:8
8 यश 13:17; यिर्म 51:11; दान 7:5; दान 8:20
9 एस 1:1, 3
10 यश 44:28
11 यश 45:1; यिर्म 51:12; दान 5:30, 31
12 दान 2:39; दान 7:6; दान 8:21

दूसरा कॉल.
1 दान 11:3
2 दान 8:22; दान 11:4
3 भज 48:2; दान 11:16, 45
4 दान 11:31; दान 12:11

एक सेना और नियमित बलियाँ उसके
हवाले कर दी गयीं और वह सच्चाई को
धरती पर गिराता रहा और अपने काम में
कामयाब हो गया।
13 फिर मैंने एक पवित्र दूत को बात
करते सुना। और एक दूसरे पवित्र दूत
ने उससे कहा, “वह दर्शन कब तक
पूरा होता रहेगा जो नियमित बलियों
और उस अपराध के बारे में है जिससे
तबाही मचती है?[1] कब तक पवित्र जगह
और सेना को रौंदा जाएगा?” **14** उसने
मुझसे कहा, “जब तक कि 2,300 शाम
और सुबह नहीं बीत जाते। फिर पवित्र
जगह को ज़रूर पहले की तरह सही
हालत में लाया जाएगा।”
15 मैं दानियेल दर्शन देख रहा था
और उसे समझने की कोशिश कर रहा
था कि तभी अचानक मैंने देखा कि एक
आदमी जैसा कोई मेरे सामने खड़ा है।
16 फिर मैंने ऊलै[2] के बीच खड़े एक
आदमी की आवाज़ सुनी। उसने पुकार-
कर कहा, “जिब्राईल,[3] इस आदमी ने जो
देखा है उसका मतलब इसे समझा।”[4]
17 तब वह उस जगह आया जहाँ मैं
खड़ा था। मगर जब वह आया तो मैं
इतना डर गया कि मैं मुँह के बल गिर
पड़ा। उसने मुझसे कहा, “इंसान के बेटे,
तू यह जान ले कि यह दर्शन अंत
के समय में पूरा होगा।”[5] **18** मगर
जब वह मुझसे बात कर रहा था तो मैं
मुँह के बल ज़मीन पर गिर गया और
गहरी नींद सो गया। उसने मुझे छुआ
और मुझे वहाँ खड़ा किया जहाँ मैं पहले
खड़ा था।[6] **19** फिर उसने कहा, “अब
मैं तुझे बताऊँगा कि परमेश्वर के क्रोध के
समय के आखिर में क्या होगा, क्योंकि
यह दर्शन अंत के तय समय में पूरा
होगा।[7]

20 तूने जो दो सींगोंवाला मेढ़ा देखा
वह मादै और फारस के राजाओं को
दर्शाता है।[1] **21** रोएँदार बकरा यूनान
के राजा को दर्शाता है[2] और उसकी
आँखों के बीच बड़ा सींग यूनान के पहले
राजा को दर्शाता है।[3] **22** वह सींग
तोड़ दिया गया और उसके बदले चार
सींग निकल आए,[4] उसका मतलब यह है
कि उसके राष्ट्र से चार राज्य उभर आएँगे
मगर वे राज्य उस राजा के जितने ताकत-
वर नहीं होंगे।
23 उनके राज्य के आखिरी दौर में,
जब अपराधी अपराध करने में हद कर
जाएँगे, तब एक ऐसा खूँखार राजा
उभरेगा जो उलझानेवाली बातें समझ-
ता होगा।* **24** वह बहुत ताकतवर हो
जाएगा मगर अपने दम पर नहीं। वह बड़े
ही अनोखे तरीके से तबाही मचाएगा*
और अपने हर काम में कामयाब होगा।
वह शक्तिशाली लोगों को और पवित्र
जनों को भी नाश कर देगा।[5] **25** वह
कामयाब होने के लिए चालाकी से दूसरों
को धोखा देगा, मन-ही-मन खुद को बहुत
ऊँचा समझेगा और अमन-चैन के दौर
में* बहुत-से लोगों को नाश कर देगा।
यहाँ तक कि वह हाकिमों के हाकिम से
भी लड़ेगा, मगर वह किसी इंसान के हाथ
लगाए बगैर तोड़ दिया जाएगा।
26 शाम और सुबह के बारे में दर्शन
में जो कहा गया था वह सच है, मगर तू
यह दर्शन राज़ रखना क्योंकि यह आज से
बहुत दिनों बाद* पूरा होगा।”[6]
27 मैं दानियेल पस्त हो गया और
कुछ दिनों तक बीमार पड़ा रहा।[7] फिर

8:23 *या “साज़िशें करने में माहिर होगा।” **8:24** *या “वह भयानक विनाश लाएगा।” **8:25** *या शायद, “और बिना चेतावनी दिए।” **8:26** *या “दूर भविष्य में।”

अध्य. 8
1 दान 12:11
2 दान 8:2
3 लूक 1:19, 26
4 दान 9:21, 22
5 दान 10:14; दान 12:4, 9
6 दान 10:9, 10
7 दान 11:27

दूसरा कॉल.
1 दान 7:5; दान 8:3; दान 11:2
2 दान 7:6
3 दान 8:5; दान 11:3
4 दान 8:8; दान 11:4
5 दान 7:25; दान 8:10
6 दान 10:14
7 दान 7:28; दान 10:16

मैं उठा और राजा के काम में लग गया,[1]
मगर मैंने जो देखा था उसकी वजह से मैं
सुन्न हो गया और कोई मेरी हालत नहीं
समझ पाया था।[2]

9 यह मादियों के वंशज दारा का
पहला साल था।[3] दारा अहश-वेरोश
का बेटा था और उसे कसदियों के राज्य
का राजा बनाया गया था।[4] 2 उसके
राज के पहले साल मुझ दानियेल को
किताबें* पढ़कर यह समझ मिली कि
यरूशलेम 70 साल तक उजाड़ पड़ा
रहेगा,[5] ठीक जैसे यहोवा ने भविष्यवक्ता
यिर्मयाह से कहा था।[6] 3 इसलिए मैंने
सच्चे परमेश्वर यहोवा की तरफ मुँह
किया और उससे गिड़गिड़ाकर मिन्नतें
कीं। साथ ही, मैंने उपवास किया,[7]
टाट ओढ़ा और खुद पर राख डाली।
4 मैंने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना
की और हमारे पाप कबूल करते हुए
कहा,

"हे सच्चे परमेश्वर यहोवा, तू महान
और विस्मयकारी परमेश्वर है, अपना
करार निभाता है और जो तुझसे प्यार
करते हैं और तेरी आज्ञाएँ मानते हैं,
उन्हें तू अपने अटल प्यार का सबूत
देता है।[8] 5 हमने पाप किया, बुरे
काम किए, दुष्ट काम किए और तुझसे
बगावत की।[9] हम तेरी आज्ञाओं और
तेरे न्याय-सिद्धांतों से दूर चले गए।
6 हमने तेरे सेवकों, भविष्यवक्ताओं की
बात नहीं सुनी[10] जिन्होंने तेरे नाम से
हमारे राजाओं, हाकिमों, पुरखों और देश
के सभी लोगों को बताया था कि उन्हें क्या
करना चाहिए। 7 हे यहोवा, तू नेक है,
मगर हम शर्मिंदा हैं जैसे कि आज देखा
जा सकता है। यहूदा के लोग, यरू-
शलेम के निवासी और पूरे इसराएल के
लोग शर्मिंदा हैं, जो पास और दूर के उन
सभी देशों में रहते हैं जहाँ तूने उन्हें तितर-
बितर कर दिया क्योंकि उन्होंने तेरे साथ
विश्वासघात किया था।[1]

8 हे यहोवा, हम और हमारे राजा,
हाकिम और बाप-दादे शर्मिंदा हैं क्योंकि
हमने तेरे खिलाफ पाप किया है।
9 हमारा परमेश्वर यहोवा दयालु और
माफ करनेवाला परमेश्वर है,[2] मगर
हमने उससे बगावत की।[3] 10 हमने
अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा नहीं
मानी और उसके कानून नहीं माने जो
उसने अपने सेवक, भविष्यवक्ताओं के
ज़रिए हमें दिए थे।[4] 11 पूरे इसराएल
ने तेरा कानून लाँघा और तेरी बात
मानने के बजाय तुझसे मुँह मोड़ लिया।
इसलिए तू हम पर वे सारे शाप ले
आया जो तूने शपथ खाकर बताए थे
और सच्चे परमेश्वर के सेवक मूसा के
कानून में लिखवाए थे।[5] हमने वाकई
तेरे खिलाफ पाप किया है। 12 पर-
मेश्वर ने हम पर बड़ी विपत्ति लाकर
वह बात पूरी की,[6] जो उसने हमारे बारे
में और हम पर राज करनेवाले शासकों*
के बारे में कही थी। यरूशलेम पर
जैसा कहर ढाया गया था, वैसा आज
तक आकाश के नीचे कहीं पर भी नहीं
ढाया गया।[7] 13 जैसे मूसा के कानून
में लिखा था, हम पर ये सारी विपत्तियाँ
आ पड़ीं,[8] फिर भी हमने अपने परमेश्वर
यहोवा से रहम की भीख नहीं माँगी,
हमने गुनाह करना नहीं छोड़ा[9] और तेरी
सच्चाई को नहीं समझा।*

14 इसलिए यहोवा हम पर नज़र रखे
हुए था और विपत्ति लाया, क्योंकि हमारा

अध्य. 8
1 दान 2:48, 49
2 दान 8:17

अध्य. 9
3 दान 6:28; दान 11:1
4 दान 5:30, 31
5 एज 1:1, 2; भज 79:1; यश 64:10; विल 1:1
6 2इत 36:20, 21; यिर्म 25:11; यिर्म 29:10; जक 1:12; जक 7:5
7 एज 8:21
8 निर्ग 34:6; व्य 5:9, 10; नहे 1:5
9 एज 9:6, 7; नहे 9:26, 33; भज 106:6; विल 3:42
10 2इत 36:15, 16; यिर्म 7:13

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:33; व्य 28:41; 2रा 17:6; यश 11:11
2 निर्ग 34:6, 7; नहे 9:17; भज 86:5
3 नहे 9:26
4 2रा 17:13, 14
5 व्य 28:15; व्य 31:17
6 विल 2:17
7 यिर्म 39:8
8 लैव 26:16, 17; व्य 28:15; विल 1:1
9 यश 9:13; यिर्म 5:3

9:2 *यानी पवित्र किताबें।

9:12 *शा., "हमारा न्याय करनेवाले न्यायियों।" 9:13 *या "के बारे में अंदरूनी समझ हासिल नहीं की।"

परमेश्वर यहोवा जो कुछ करता है सही करता है, मगर हमने उसकी आज्ञा नहीं मानी।[1]

15 हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तू अपने शक्तिशाली हाथ से अपने लोगों को मिस्र से निकाल लाया था[2] और तूने एक बड़ा नाम कमाया जो आज तक मशहूर है।[3] हमने पाप किया है और दुष्ट काम किए हैं। **16** हे यहोवा, तू जो हमेशा नेक काम करता है,[4] मेहरबानी करके अपना क्रोध और जलजलाहट अपने शहर यरूशलेम से, अपने पवित्र पहाड़ से दूर कर दे। हमारे पुरखों के गुनाहों और हमारे पापों की वजह से यरूशलेम और तेरे लोग आस-पास के सभी लोगों के बीच बदनाम हो गए हैं।[5] **17** हे हमारे परमेश्वर, अपने इस सेवक की प्रार्थना और मिन्नतें सुन। हे यहोवा, अपने नाम की खातिर अपने मुख का प्रकाश अपने पवित्र-स्थान पर चमका,[6] जो उजाड़ पड़ा है।[7] **18** हे मेरे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना पर कान लगा और सुन! अपनी आँखें खोलकर हमारी बदहाली देख और वह शहर जो तेरे नाम से जाना जाता है, उसकी हालत पर गौर कर। हम इसलिए मिन्नतें नहीं कर रहे हैं कि हमने नेक काम किए हैं बल्कि इसलिए कि तू बड़ा दयालु है।[8] **19** हे यहोवा, हमारी प्रार्थना सुन। हे यहोवा, हमें माफ कर दे।[9] हे यहोवा, हमारी प्रार्थना पर ध्यान दे और हमारी मदद कर! हे मेरे परमेश्वर, अपने नाम की खातिर देर मत कर क्योंकि तेरा शहर और तेरे लोग तेरे नाम से जाने जाते हैं।"[10]

20 मैं प्रार्थना कर रहा था और अपना और अपने इसराएली लोगों का पाप कबूल कर रहा था और अपने परमेश्वर यहोवा से उसके पवित्र पहाड़[11] की खातिर रहम की भीख माँग रहा था। **21** हाँ, मैं प्रार्थना कर ही रहा था कि जिब्राईल नाम का आदमी,[1] जिसे मैंने पहले दर्शन में देखा था,[2] मेरे पास आया। उस वक्त मैं बहुत पस्त हो चुका था और शाम का चढ़ावा अर्पित करने का समय हो रहा था। **22** उसने मुझे समझाते हुए कहा,

"दानियेल, अब मैं तुझे सब बातों को और भी अच्छी तरह जानने और समझने की काबिलीयत देने आया हूँ। **23** जब तू मिन्नतें करने लगा तो मुझे एक संदेश मिला और मैं तुझे वह संदेश बताने आया हूँ, क्योंकि तू परमेश्वर के लिए बहुत अनमोल है।*[3] इसलिए इस संदेश पर गौर कर और दर्शन को समझ।

24 तेरे लोगों और तेरी पवित्र नगरी[4] के लिए 70 हफ्ते* ठहराए गए हैं ताकि अपराध मिटा दिया जाए, पाप का अंत किया जाए,[5] गुनाह के लिए प्रायश्चित किया जाए,[6] सदा के लिए नेकी कायम की जाए,[7] दर्शन और भविष्यवाणी पर मुहर लगायी जाए[8] और परम-पवित्र का अभिषेक किया जाए। **25** तू यह बात जान और समझ ले कि जब यरूशलेम को बहाल करने और दोबारा बनाने की आज्ञा दी जाएगी,[9] तब से लेकर मसीहा*[10] यानी अगुवे[11] के आने तक 7 हफ्ते बीतेंगे, फिर 62 हफ्ते बीतेंगे।[12] वह नगरी बहाल की जाएगी। उसे बहाल किया जाएगा और एक चौक और नहर समेत दोबारा बनाया जाएगा, मगर मुसीबत के समय।

26 फिर 62 हफ्तों के बीतने पर

अध्य. 9
1 नहे 9:33
2 निर्ग 6:1
3 निर्ग 9:16; नहे 9:10; भज 106:7, 8
4 भज 89:14; यश 26:9
5 लैव 26:38, 39; 1रा 9:7-9; भज 79:1, 4; यिर्म 24:9
6 गि 6:23, 25
7 यश 64:10, 11; विल 5:18
8 भज 102:13; यश 54:7, 8; यिर्म 14:7
9 1रा 8:30
10 भज 79:8, 9; यश 63:18, 19; यिर्म 14:9
11 भज 87:1, 2; जक 8:3

दूसरा कॉल.
1 दान 8:16; लूक 1:19
2 दान 8:1
3 दान 10:11, 19
4 नहे 11:1; यश 52:1
5 लूक 1:76, 77; इब्र 9:26
6 रोम 3:25; 1यूह 2:1, 2; 1यूह 4:10
7 यश 53:11; रोम 1:16, 17
8 2कुर 1:19, 20
9 नहे 2:5, 11; नहे 6:15
10 भज 2:2; यूह 1:41
11 यश 55:4; मत 23:10; यूह 1:45, 49
12 लूक 3:1, 2

9:23 *या "बहुत प्यारा है; तेरा बहुत मान है।" **9:24** *यानी सालोंवाले हफ्ते। **9:25** *या "अभिषिक्त जन।"

मसीहा काट डाला जाएगा*[1] और उसके
पास कुछ नहीं बचेगा।[2]

और आनेवाले प्रधान की सेना नगरी
और पवित्र जगह को नाश कर देगी।[3]
उसका अंत बाढ़ से होगा। और अंत तक
युद्ध चलता रहेगा। और उसके लिए नाश
तय किया गया है।[4]

27 और वह बहुतों के लिए करार को
एक हफ्ते तक बरकरार रखेगा। और
जब वह हफ्ता आधा बीत जाएगा तो वह
बलिदान और चढ़ावे बंद करा देगा।[5]

और घिनौनी चीज़ों के पंख पर उजाड़ने-
वाला सवार होकर आएगा।[6] और जो तय
किया गया है, वह उजाड़ पड़ी हुई जगह पर
भी तब तक उँडेला जाएगा जब तक कि वह
खाक में नहीं मिल जाती।”

10 फारस के राजा कुसरू के राज
के तीसरे साल[7] मुझ दानियेल
को, जो बेलतशस्सर कहलाता था,[8] एक
संदेश मिला। वह संदेश सच्चा था और
एक बड़ी लड़ाई के बारे में था। दानियेल
ने उस संदेश को समझ लिया और उसने
जो देखा था, उसके बारे में उसे समझ दी
गयी।

2 उन दिनों मैं दानियेल तीन हफ्ते से
मातम मना रहा था।[9] 3 मैंने तीन
हफ्तों से न तो बढ़िया-बढ़िया पक-
वान और गोश्त खाया, न ही दाख-
मदिरा को मुँह लगाया और मैंने शरीर
पर तेल भी नहीं मला। 4 पहले महीने
के 24वें दिन, जब मैं महानदी टिग्रिस*[10]
के किनारे था, 5 तब मैंने नज़रें उठायीं
तो एक आदमी को देखा जो मलमल की
पोशाक पहने हुए था[11] और उसकी कमर
पर ऊफाज़ के सोने का बना कमरबंद
था। 6 उसका शरीर करकेटक रत्न की
तरह था,[1] चेहरा बिजली की तरह चमक
रहा था, आँखें जलती मशालों की तरह
थीं, उसकी बाँहें और पैर चमचमाते ताँबे
जैसे दिख रहे थे[2] और उसकी आवाज़
भीड़ की आवाज़ जैसी बुलंद थी। 7 वह
दर्शन सिर्फ मैंने देखा, जो आदमी मेरे
साथ थे उन्होंने नहीं देखा।[3] फिर भी वे
थर-थर काँपने लगे और भागकर कहीं
छिप गए।

8 फिर मैं अकेला रह गया और
जब मैंने यह अनोखा दर्शन देखा तो बिल-
कुल बेजान-सा हो गया, लाचार और
मरियल-सा हो गया* और मुझमें ताकत
नहीं रही।[4] 9 फिर मैंने उस आदमी को
बोलते हुए सुना, मगर जब वह
बोल रहा था तो मैं मुँह के बल ज़मीन
पर गिर गया और गहरी नींद सो
गया।[5] 10 मगर फिर किसी के हाथ
ने मुझे छुआ[6] और मुझे हिलाया ताकि
मैं जाग जाऊँ और हाथों और घुटनों
के बल खड़ा हो जाऊँ। 11 फिर उसने
मुझसे कहा,

“हे दानियेल, तू जो परमेश्वर के लिए
बहुत अनमोल है,*[7] मैं तुझे जो बताने जा
रहा हूँ उस पर ध्यान दे। तू जहाँ खड़ा
था वहाँ खड़ा हो जा क्योंकि मुझे तेरे पास
भेजा गया है।”

जब उसने ऐसा कहा तो मैं खड़ा हो
गया और काँपता रहा।

12 फिर उसने मुझसे कहा, “हे दानि-
येल, तू मत डर।[8] जिस दिन तूने इन
बातों को समझने के लिए मन लगाया
और अपने परमेश्वर के सामने खुद
को नम्र किया, उसी दिन से तेरी प्रार्थना

9:26 *या “मार डाला जाएगा।” **10:4** *शा., “हिद्देकेल।”

10:8 *या “अपनी गरिमा खो बैठा।” **10:11** *या “बहुत प्यारा है; तू जिसका बहुत मान है।”

अध्य. 9
1 यश 53:8, 12; मत 26:2; लूक 24:26; 1कुर 15:3
2 मर 9:12
3 मत 24:15; लूक 19:43, 44; लूक 21:20
4 लूक 21:22, 24
5 इब्र 9:11, 12; इब्र 10:8-10
6 मर 13:14; लूक 21:20

अध्य. 10
7 एज 1:1, 2; यश 45:1; दान 1:21; दान 6:28
8 दान 1:7; दान 4:8
9 दान 9:3
10 उत 2:14
11 प्रक 19:14

दूसरा कॉल.
1 यहे 1:16
2 यहे 1:5, 7
3 2रा 6:17; प्रेष 9:7
4 दान 7:28; दान 8:27
5 दान 8:18
6 यिर्म 1:9; प्रक 1:17
7 दान 9:23; दान 10:19
8 प्रक 1:17

सुनी गयी और इसी वजह से मैं तेरे पास आया हूँ।[1] **13** मगर फारस राज्य का हाकिम[2] 21 दिन तक मेरा विरोध करता रहा। फिर मीकाएल,*[3] जो सबसे बड़े हाकिमों में से है,# मेरी मदद करने आया और मैं फारस के राजाओं के पास खड़ा रहा। **14** मैं तुझे यह समझाने आया हूँ कि आखिरी दिनों में तेरे लोगों पर क्या बीतेगी[4] क्योंकि यह दर्शन भविष्य में पूरा होगा।"[5]

15 जब उसने मुझसे ये बातें कहीं तो मैंने ज़मीन की तरफ मुँह किया और मुझसे कुछ बोलते न बना। **16** फिर जो आदमी जैसा दिख रहा था, उसने मेरे होंठ छुए[6] और तब मैं बोलने लगा। मेरे सामने जो खड़ा था उससे मैंने कहा, "मेरे मालिक, दर्शन की वजह से मैं काँप रहा हूँ, मुझमें ज़रा भी ताकत नहीं है।[7] **17** इसलिए मालिक, तेरा यह सेवक तुझसे कैसे बात कर सकता है?[8] मुझमें ज़रा भी ताकत नहीं है, बिलकुल भी जान नहीं है।"[9]

18 फिर जो आदमी जैसा दिख रहा था, उसने मुझे दोबारा छुआ और मेरी हिम्मत बँधायी।[10] **19** उसने मुझसे कहा, "हे दानियेल, तू जो परमेश्वर के लिए बहुत अनमोल है,*[11] मत डर।[12] तेरा भला हो।[13] हिम्मत रख, हाँ, हिम्मत रख।" जब उसने ऐसा कहा तो मुझे हिम्मत मिली और मैंने कहा, "मेरे मालिक, अब तू बोल क्योंकि तूने मेरी हिम्मत बँधायी है।"

20 फिर उसने मुझसे कहा, "क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास क्यों आया हूँ? अब मैं वापस जाकर फारस के हाकिम से युद्ध करूँगा।[1] जब मैं जाऊँगा तो यूनान का हाकिम आएगा। **21** फिर भी मैं तुझे वे बातें बताऊँगा जो सच्चाई की किताब में लिखी हैं। तेरे हाकिम मीका-एल[2] के सिवा कोई और इन बातों में मेरा पूरा साथ नहीं दे रहा है।[3]

11 मादी दारा के राज के पहले साल,[4] मैं उसकी हिम्मत बँधाने और उसे मज़बूत करने के लिए* खड़ा हुआ। **2** अब मैं तुझे एक सच्ची बात बताने जा रहा हूँ:

देख! फारस में तीन और राजा उठेंगे और चौथा राजा बाकियों से ज़्यादा दौलत इकट्ठी करेगा। और जब वह अपनी दौलत के दम पर ताकतवर हो जाएगा, तो वह हर किसी को यूनान के राज्य[5] के खिलाफ भड़काएगा।

3 फिर एक ताकतवर राजा उठेगा और एक बड़े इलाके पर राज करेगा[6] और अपनी मनमानी करेगा। **4** मगर उसके उठने के बाद उसके राज्य के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँगे और चार दिशाओं में बिखरा दिए जाएँगे।[7] उसका राज्य उसके वंशजों को नहीं दिया जाएगा और जो उसके बाद आएँगे उनका इलाका उसके इलाके जितना नहीं होगा, क्योंकि उसका राज्य जड़ से उखाड़ दिया जाएगा और दूसरों का हो जाएगा।

5 दक्षिण का राजा यानी उसके हाकिमों में से एक ताकतवर हो जाएगा। मगर कोई और उससे ज़्यादा ताकत-वर होगा और एक बड़े इलाके पर राज करेगा और वह उससे ज़्यादा अधिकार पाएगा।

10:13 *मतलब "परमेश्वर जैसा कौन है?" #या "सबसे ऊँचे दर्जे का हाकिम है।" **10:19** *या "बहुत प्यारा है; तू जिसका बहुत मान है।"

11:1 *या "उसके लिए एक किले की तरह बनने।"

अध्य. 10
1 दान 9:23
2 इफ 6:12
3 दान 10:21, दान 12:1, यहू 9, प्रक 12:7, 8
4 दान 2:28
5 दान 8:17, 26, दान 12:4
6 यश 6:7, यिर्म 1:9
7 दान 10:8
8 न्या 6:22
9 यश 6:5
10 दान 10:10
11 दान 9:22, 23, दान 10:11
12 प्रक 1:17
13 न्या 6:23

दूसरा कॉल.
1 दान 10:13
2 दान 12:1
3 दान 10:13, यहू 9, प्रक 12:7, 8

अध्य. 11
4 दान 5:30, 31, दान 9:1
5 दान 8:21
6 दान 8:5, 21
7 दान 7:6, दान 8:8, 22

6 कुछ साल बाद वे एक संधि करेंगे।
दक्षिण के राजा की बेटी उत्तर के राजा के
पास आएगी ताकि उनके बीच एक सम-
झौता हो। मगर उस बेटी की ताकत मिट
जाएगी और न राजा टिकेगा, न ही उसकी
ताकत रहेगी और बेटी दूसरे के हवाले
कर दी जाएगी। बेटी और उसे लाने-
वाले और उसका पिता और वह जिसने
उन दिनों उसे ताकतवर बनाया था,
सब दूसरों के हवाले कर दिए जाएँगे।
7 उस बेटी की जड़ों में से एक अंकुर
निकलकर अपने पिता की जगह लेगा।
वह सेना के पास आएगा और उत्तर के
राजा के किले पर हमला करेगा और
उनके खिलाफ कदम उठाकर उन्हें जीत
लेगा। 8 साथ ही, वह उनके देवताओं,
उनकी धातु की मूरतों* और उनके सोने-
चाँदी की मनभावनी# चीज़ों को लेकर
और उनके लोगों को बंदी बनाकर मिस्र
लौट आएगा। वह कुछ साल तक उत्तर के
राजा पर हमला नहीं करेगा। 9 मगर
उत्तर का राजा दक्षिण के राजा के राज्य
पर हमला करेगा, लेकिन फिर वह अपने
देश लौट जाएगा।

10 उसके बेटे युद्ध की तैयारी करेंगे
और एक बड़ी, विशाल सेना इकट्ठी
करेंगे। वह ज़रूर आगे बढ़ेगा और एक
बाढ़ की तरह सबकुछ बहा ले जाएगा।
मगर फिर वह वापस चला जाएगा और
युद्ध करता हुआ अपने किले में लौट
जाएगा।

11 दक्षिण का राजा कड़वाहट से भर
जाएगा और निकल पड़ेगा और उससे
यानी उत्तर के राजा से युद्ध करेगा। वह
एक बड़ी भीड़ इकट्ठी करेगा, मगर भीड़
उसके हवाले कर दी जाएगी। 12 उस
भीड़ को ले जाया जाएगा। उसका मन
घमंड से फूल जाएगा और वह लाखों
लोगों को गिराएगा, फिर भी वह अपनी
ताकत का फायदा नहीं उठाएगा।

13 उत्तर का राजा लौट आएगा और
पहले से भी बड़ी भीड़ इकट्ठी करेगा। उस
दौर के खत्म होने पर, यानी कुछ साल
बाद वह एक विशाल सेना के साथ ज़रूर
आएगा, जो हथियारों से पूरी तरह लैस
होगी। 14 उस समय दक्षिण के राजा के
खिलाफ बहुत-से लोग उठ खड़े होंगे।

तेरे लोगों में से जो खूँखार* हैं वे बह-
कावे में आकर दर्शन को पूरा करने की
कोशिश करेंगे, मगर वे ठोकर खाकर
गिर जाएँगे।

15 उत्तर का राजा आएगा और एक
किलेबंद शहर के चारों तरफ घेराबंदी की
ढलान खड़ी करेगा और उस पर कब्ज़ा
कर लेगा। दक्षिण की सेनाएँ और उनके
बड़े-बड़े सूरमा नहीं टिक पाएँगे। उनके
पास मुकाबला करने की ताकत नहीं
होगी। 16 दक्षिण के राजा के खिलाफ
आनेवाला अपनी मनमानी करेगा और
उसके सामने कोई नहीं टिक पाएगा। वह
सुंदर देश*[1] में जाकर खड़ा होगा और
उसके पास नाश करने की ताकत होगी।
17 वह अपने राज्य की पूरी ताकत को
लेकर पक्के इरादे के साथ आएगा, मगर
फिर वह उस राजा के साथ समझौता
करेगा और कदम उठाएगा। उसे औरतों
की बेटी को नाश करने का अधिकार
दिया जाएगा। वह बेटी नहीं टिकेगी, न
ही उसकी बनी रहेगी। 18 वह फिर से
समुंदर किनारे के इलाकों की तरफ मुँह
करके बहुत-सी जगहों पर कब्ज़ा कर
लेगा। इसने दूसरे के हाथों जो बेइज़्ज़ती

दूसरा कॉल.

अध्य. 11
1 भज 48:2
दान 8:9
दान 11:41, 45

11:8 *या "ढली हुई मूरतों।" #या "अन-मोल।"

11:14 *या "लुटेरों के बेटे।" **11:16** *या "सरताज।"

सही है, उसे एक सेनापति आकर दूर कर देगा। वह और बेइज़्ज़त न होगा, क्योंकि वह बेइज़्ज़ती करनेवाले को ही बेइज़्ज़त कर देगा। **19** फिर राजा अपने देश के किले की तरफ मुँह करेगा। वह लड़खड़ाकर गिर जाएगा और उसका पता भी न चलेगा।

20 उसकी जगह एक और राजा आएगा जो वैभवशाली राज्य के पूरे इलाके में कर-वसूलनेवाले[*] को भेजेगा, लेकिन वह राजा कुछ ही दिनों में मिटा दिया जाएगा, मगर न क्रोध से न ही युद्ध से।

21 उसकी जगह एक तुच्छ[*] आदमी उठेगा और वे राज्य का प्रताप उसके हाथ में नहीं देंगे। वह अमन-चैन के दौर में[#] आएगा और चिकनी-चुपड़ी[△] बातें करके राज्य पर अधिकार कर लेगा। **22** वह बाढ़ जैसी सेनाओं को हरा देगा और वे कुचल दी जाएँगी और करार[1] का अगुवा[2] भी कुचल दिया जाएगा। **23** उन्होंने उसके साथ जो संधि की होगी उसकी वजह से वह छल करेगा और उठेगा और एक छोटे राष्ट्र के दम पर शक्तिशाली बन जाएगा। **24** वह अमन-चैन के एक दौर में[#] प्रांत[*] की सबसे बढ़िया जगहों में आएगा और ऐसा काम करेगा जो उसके पुरखों ने नहीं किया था। वह लूट का सारा माल उनमें बाँट देगा और किलेबंद जगहों को लेने की साज़िशें रचेगा, मगर सिर्फ कुछ समय के लिए।

25 वह ताकत और हिम्मत[*] जुटाएगा और एक विशाल सेना लेकर दक्षिण के राजा पर हमला करने आएगा। दक्षिण का राजा एक बहुत बड़ी और ताकतवर सेना के साथ युद्ध की तैयारी करेगा। वह खड़ा नहीं रह पाएगा क्योंकि वे उसके खिलाफ साज़िशें रचेंगे। **26** उसके साथ शाही खाना खानेवाले ही उसे गिरा देंगे।

जहाँ तक उसकी सेना की बात है, उसका सफाया कर दिया जाएगा[*] और बहुत-से लोग मार डाले जाएँगे।

27 इन दोनों राजाओं का मन बुराई की तरफ झुका रहेगा। वे एक ही मेज़ पर बैठकर एक-दूसरे से झूठ बोलेंगे। मगर उन्हें किसी भी बात में कामयाबी नहीं मिलेगी क्योंकि अंत भविष्य में तय समय पर होगा।[1]

28 वह खूब सारा माल लेकर अपने देश लौट जाएगा और उसका मन पवित्र करार के खिलाफ होगा। वह कार्रवाई करेगा और अपने देश लौट जाएगा।

29 वह तय समय पर लौट आएगा और दक्षिण पर हमला करेगा। मगर इस बार हालात पहले जैसे नहीं होंगे, **30** क्योंकि कित्तीम[2] के जहाज़ उस पर हमला करेंगे और उसे नीचा किया जाएगा।

वह लौट जाएगा और पवित्र करार पर अपना गुस्सा निकालेगा[3] और कदम उठाएगा। वह लौट जाएगा और पवित्र करार छोड़नेवालों पर ध्यान देगा। **31** उसकी सेनाएँ खड़ी होंगी और पवित्र-स्थान और किले को दूषित कर देंगी[4] और नियमित बलियाँ बंद कर देंगी।[5]

11:20 [*]या "काम लेनेवाले जल्लाद।" **11:21** [*]या "नीच।" **11:21, 24** [#]या शायद, "बिना चेतावनी दिए।" **11:21** [△]या "साज़िशों के बारे में।" **11:24** [*]या "ज़िला अधिकार-क्षेत्र।"

11:25 [*]शा., "अपना दिल।" **11:26** [*]या "उसे बाढ़ से बहा दिया जाएगा।"

अध्य. 11

1 उत 15:18, प्रेष 3:25

2 दान 9:25, यूह 1:45, 49

दूसरा कॉल.

1 दान 12:9

2 उत 10:4, गि 24:24, यश 23:1, यिर्म 2:10, यहे 27:6

3 दान 11:28

4 दान 8:11

5 दान 8:12

और वे उजाड़नेवाली घिनौनी चीज़ खड़ी करेंगे।[1]

32 जो लोग करार के खिलाफ दुष्ट काम करते हैं उन्हें वह चिकनी-चुपड़ी बातों से* बगावत की राह पर ले जाएगा। मगर जो लोग अपने परमेश्वर को जानते हैं वे उससे भी मज़बूत साबित होंगे और कदम उठाएँगे। **33** लोगों में से जिनके पास अंदरूनी समझ है[2] वे बहुतों को समझ देंगे। उन्हें कुछ दिनों तक तलवार, आग की ज्वाला, बँधुआई और लूटमार से गिराया जाएगा। **34** मगर जब उन्हें गिराया जाएगा तो उन्हें थोड़ी मदद दी जाएगी। बहुत-से लोग चिकनी-चुपड़ी बातें कहकर* उनसे मिल जाएँगे। **35** और अंदरूनी समझ रखनेवालों में से कुछ लोग गिरा दिए जाएँगे ताकि उनकी वजह से शुद्ध करने का काम हो सके और साफ करने और उजला करने का काम[3] अंत के समय तक चलता रहे क्योंकि यह सब भविष्य में तय समय पर पूरा होगा।

36 राजा अपनी मनमानी करेगा। वह हर देवता से खुद को ऊपर उठाएगा और उनसे ज़्यादा खुद की बड़ाई करेगा। वह सब ईश्वरों से महान ईश्वर[4] के खिलाफ चौंकानेवाली बातें कहेगा। वह तब तक कामयाब होता जाएगा जब तक कि क्रोध पूरी तरह प्रकट नहीं हो जाता क्योंकि जो तय किया गया है वह होकर ही रहेगा। **37** वह अपने पिताओं के ईश्वर की कोई कदर नहीं करेगा, न ही औरतों की ख्वाहिश की या किसी और देवता की परवाह करेगा। वह खुद को सबसे ऊँचा उठाएगा। **38** इसके बजाय* वह किलों के देवता की महिमा करेगा, ऐसे देवता को सोना-चाँदी, कीमती रत्न और मनभावनी* चीज़ें चढ़ाएगा जिसे उसके पिता नहीं जानते थे और ऐसा करके उसकी महिमा करेगा। **39** वह एक पराए देवता के साथ मिलकर* मज़बूत-से-मज़बूत गढ़ों के खिलाफ कदम उठाएगा। जो उसे मानते हैं उनकी# वह बहुत बड़ाई करेगा और उन्हें बहुतों पर राज करने का अधिकार देगा और दाम लेकर उनमें ज़मीन बाँट देगा।

40 अंत के समय में दक्षिण का राजा उससे भिड़ेगा* और उत्तर का राजा रथों, घुड़सवारों और बहुत-से जहाज़ों के साथ उस पर आँधी की तरह टूट पड़ेगा। वह कई देशों में घुस जाएगा और बाढ़ की तरह सबकुछ बहा ले जाएगा। **41** वह सुंदर देश* में भी घुस जाएगा[1] और बहुत-से देश हरा दिए जाएँगे। मगर जो उसके हाथ से बच जाएँगे, वे ये हैं: एदोम, मोआब और अम्मोनियों का सबसे खास हिस्सा। **42** वह कई देशों की तरफ अपना हाथ बढ़ाता जाएगा और मिस्र देश भी नहीं बचेगा। **43** वह मिस्र के छिपे खज़ाने यानी सोने-चाँदी और वहाँ की सारी मनभावनी* चीज़ों का मालिक बन जाएगा। लिबिया और इथियोपिया के लोग उसके कदमों में होंगे।#

44 मगर पूरब और उत्तर से मिलनेवाली खबरों से वह बेचैन हो उठेगा और बड़ी जलजलाहट में आकर बहुतों को नाश करने और मिटाने के लिए निकल पड़ेगा। **45** वह अपने शाही*

11:32, 34 *या "चापलूसी करके; धोखे से।" **11:38** *या "उसके बदले।"

11:38, 43 *या "अनमोल।" **11:39** *या "की मदद से।" #या शायद, "जिसे भी वह मानता है उसकी।" **11:40** *या "उससे सींग लड़ाएगा।" **11:41** *या "सरताज।" **11:43** #या "उसके पीछे जाएँगे।" **11:45** *या "आलीशान।"

अध्य. 11

1 दान 12:11; मत 24:15; मर 13:14; लूक 21:20

2 दान 12:10

3 दान 12:10

4 व्य 10:17; भज 136:1, 2

दूसरा कॉल.

1 भज 48:2; दान 8:9; दान 11:16, 45

तंबू विशाल सागर और सुंदर देश* के पवित्र पहाड़ के बीच खड़े करेगा।[1] आखिरकार उसका अंत हो जाएगा और उसकी मदद करनेवाला कोई न होगा।

12 उस समय के दौरान मीकाएल*[2] खड़ा होगा, वह बड़ा हाकिम[3] जो तेरे लोगों# की तरफ से खड़ा है। और संकट का ऐसा समय आएगा जैसा एक राष्ट्र के बनने से लेकर उस समय तक नहीं आया होगा। उस समय के दौरान तेरे लोग बच जाएँगे,[4] हर कोई जिसका नाम किताब में लिखा है बच जाएगा।[5] **2** और जो मिट्टी में मिल गए हैं और मौत की नींद सो रहे हैं, उनमें से कई लोग जाग उठेंगे, कुछ हमेशा की ज़िंदगी के लिए तो कुछ बदनामी और हमेशा का अपमान सहने के लिए।

3 जिनमें अंदरूनी समझ है वे आसमान की तरह तेज़ चमकेंगे और जो बहुतों को नेकी की राह पर लाते हैं वे तारों की तरह हमेशा-हमेशा तक चमकते रहेंगे।

4 और हे दानियेल, तू इस किताब को मुहरबंद कर दे और अंत के समय तक इसकी बातों को राज़ रख।[6] बहुत-से लोग ढूँढ़-ढाँढ़ करेंगे* और सच्चा ज्ञान बहुत बढ़ जाएगा।"[7]

5 फिर मुझ दानियेल को वहाँ दो स्वर्गदूत दिखायी दिए, एक नदी के इस किनारे खड़ा था और दूसरा उस किनारे।[8] **6** तब एक स्वर्गदूत ने उस आदमी से, जो मलमल की पोशाक पहने था[9] और नदी के ऊपर था, पूछा, "ये अनोखी बातें कब जाकर पूरी होंगी?" **7** तब मैंने उस आदमी को बोलते सुना, जो मलमल की पोशाक पहने था और नदी के ऊपर था। उसने अपना दायाँ और बायाँ हाथ स्वर्ग की तरफ उठाया और युग-युग तक जीनेवाले परमेश्वर की शपथ खाकर कहा,[1] "ये बातें ठहराए हुए एक काल, दो काल और आधे काल* के लिए होंगी। जैसे ही पवित्र लोगों की ताकत का चूर-चूर करना खत्म हो जाएगा,[2] ये सारी बातें पूरी हो जाएँगी।"

8 मैंने ये सारी बातें सुनीं, मगर मैं समझ नहीं पाया।[3] इसलिए मैंने पूछा, "मालिक, इन सारी बातों का क्या नतीजा होगा?"

9 उसने कहा, "हे दानियेल, तू जा क्योंकि ये बातें अंत के समय तक राज़ रखी गयी हैं और इन पर मुहर लगायी गयी है।[4] **10** बहुत-से लोग खुद को साफ और उजला करेंगे और उन्हें शुद्ध किया जाएगा।[5] दुष्ट लोग दुष्टता करेंगे और कोई भी दुष्ट नहीं समझ पाएगा, मगर अंदरूनी समझ रखनेवाले समझ जाएँगे।[6]

11 जिस समय नियमित बलियाँ[7] बंद कर दी गयीं और उजाड़नेवाली घिनौनी चीज़ खड़ी की गयी,[8] तब से 1,290 दिन गुज़रेंगे।

12 सुखी है वह इंसान जो 1,335 दिनों के बीतने तक उम्मीद लगाए रहता है!*

13 मगर जहाँ तक तेरी बात है, तू आखिर तक मज़बूत बना रह। तू आराम करेगा मगर फिर वक्त आने पर अपना हिस्सा पाने के लिए* उठ खड़ा होगा।"[9]

अध्य. 11
1 भज 48:2
दान 8:9
दान 11:16, 41

अध्य. 12
2 दान 10:13
यहू 9
प्रक 12:7, 8
3 दान 10:21
4 यश 26:20
योए 2:31, 32
मत 24:21, 22
प्रक 7:13, 14
5 मला 3:16
लूक 10:20
प्रक 3:5
6 दान 8:17, 26
दान 12:9
7 यश 11:9
8 दान 10:4
9 दान 10:5, 6

दूसरा कॉल.
1 दान 4:34
प्रक 4:9
प्रक 10:6
2 दान 8:24
3 लूक 18:34
प्रेष 1:7
1पत 1:10, 11
4 दान 8:17, 26
दान 10:14
दान 12:4
5 दान 11:35
6 भज 111:10
दान 11:33
दान 12:3
7 दान 8:11
8 दान 11:31
मर 13:14
9 यूह 11:24
प्रेष 17:31
प्रेष 24:15
प्रक 20:12

11:45 *या "सरताज।" **12:1** *मतलब "परमेश्वर जैसा कौन है?" #शा., "तेरे लोगों के बेटों।" **12:4** *या "उसे [यानी किताब को] अच्छी तरह जाँचेंगे।"

12:7 *यानी साढ़े तीन काल। **12:12** *या "का बेसब्री से इंतज़ार करता है।" **12:13** *या "अपनी ठहरायी जगह पर।"

होशे

सारांश

1 यहोवा का संदेश बएरी के बेटे होशे*
के पास उन दिनों पहुँचा जब यहूदा
में उज्जियाह,[1] योताम,[2] आहाज[3] और
हिजकियाह का राज था[4] और इसराएल
में योआश[5] के बेटे यारोबाम का राज
था।[6] **2** जब यहोवा ने होशे के ज़रिए
अपना संदेश लोगों को सुनाना शुरू किया
तब यहोवा ने होशे से कहा, "तू जाकर
एक ऐसी औरत से शादी कर जो बाद
में वेश्‍या के काम करेगी और अपनी बद-
चलनी से बच्चे पैदा करेगी, क्योंकि इस
देश ने वेश्‍या जैसे काम करके यहोवा से
पूरी तरह मुँह फेर लिया है।"[1]
3 इसलिए होशे ने जाकर दिबलैम की
बेटी गोमेर से शादी की। गोमेर गर्भ-
वती हुई और उसने होशे के बेटे को जन्म
दिया।

1:1 *यह होशायाह नाम का छोटा रूप है जिसका मतलब है, "याह के ज़रिए बचाया गया; याह ने बचाया।"

अध्या. 1
1 2इत 26:1, 3, 4
2 2रा 15:32-34
3 2रा 16:1-3
4 2रा 18:1-3; यश 1:1; मी 1:1
5 2रा 13:10, 11
6 2रा 14:23, 24; आम 1:1

दूसरा कॉल.
1 व्य 31:16; हो 3:1

4 तब यहोवा ने होशे से कहा, “तू
इस लड़के का नाम यिजरेल* रख क्योंकि
यिजरेल में जो खून की नदियाँ बहायी
गयी थीं, उसके लिए मैं कुछ समय बाद
येहू के घराने से हिसाब माँगूँगा[1] और
इसराएल के राज का अंत कर दूँगा।[2]
5 उस दिन मैं यिजरेल की घाटी में इस-
राएल की कमान तोड़ दूँगा।”

6 वह फिर से गर्भवती हुई और उसने
एक बेटी को जन्म दिया। परमेश्‍वर ने
होशे से कहा, “तू इस लड़की का नाम
लो-रुहामा* रख क्योंकि मैं इसराएल के
घराने पर और दया नहीं करूँगा,[3] मैं उन्हें
ज़रूर खदेड़ दूँगा।[4] 7 लेकिन मैं यहूदा
के घराने पर दया करूँगा[5] और मैं उनका
परमेश्‍वर यहोवा उन्हें बचाऊँगा,[6] मगर
तीर-कमान या तलवार या युद्ध या घोड़ों
या घुड़सवारों के ज़रिए नहीं।”[7]

8 लो-रुहामा का दूध छुड़ाने के बाद
वह गर्भवती हुई और उसने एक बेटे को
जन्म दिया। 9 फिर परमेश्‍वर ने कहा,
“तू इस लड़के का नाम लो-अम्मी* रख
क्योंकि तुम मेरे लोग नहीं हो और मैं
तुम्हारा परमेश्‍वर नहीं होऊँगा।

10 और इसराएल के लोगों* की
गिनती समुंदर की बालू के किनकों
जैसी होगी, जिन्हें न तौला जा सकता
है और न ही गिना जा सकता है।[8]
और जिस जगह उनसे कहा गया था,
‘तुम मेरे लोग नहीं हो,’[9] वहाँ उनसे कहा
जाएगा, ‘तुम जीवित परमेश्‍वर के बेटे
हो।’[10] 11 और यहूदा के लोगों और
इसराएल के लोगों को इकट्ठा करके एक
किया जाएगा[11] और वे अपने लिए एक
मुखिया चुनेंगे और देश से बाहर निकल
जाएँगे, क्योंकि वह दिन यिजरेल के लिए
एक खास दिन होगा।”[1]

2 “अपने भाइयों से कहो, ‘तुम मेरे
लोग हो!’*[2]
अपनी बहनों से कहो, ‘तुम
औरतों पर परमेश्‍वर ने दया
की है!’#[3]
2 अपनी माँ को दोषी ठहराओ, हाँ,
उसे दोषी ठहराओ,
क्योंकि वह मेरी पत्नी नहीं है[4] और
मैं उसका पति नहीं हूँ।
वह अब और वेश्‍या के काम
न करे,
व्यभिचार करना बंद कर दे,
3 वरना मैं उसके कपड़े उतारकर उसे
जन्म के दिन के समान नंगी कर
दूँगा,
उसे वीराने जैसा बना दूँगा,
सूखे देश जैसा बदहाल कर दूँगा
ताकि वह प्यासी मर जाए।
4 मैं उसके बेटों पर दया नहीं करूँगा,
क्योंकि वे बदचलनी से पैदा हुए थे।
5 उनकी माँ ने वेश्‍या के काम किए।[5]
जिसकी कोख में वे थे, उसने शर्म-
नाक काम किए,[6]
उसने कहा, ‘मैं अपने यारों के पास
जाऊँगी जो मुझ पर मरते हैं,[7]
जो मुझे रोटी और पानी देते हैं,
ऊन और मलमल के कपड़े, तेल
और दाख-मदिरा देते हैं।’
6 इसलिए मैं काँटों का बाड़ा बाँधकर
उसका रास्ता रोक दूँगा,
पत्थर की दीवार खड़ी कर दूँगा
ताकि वह अपना रास्ता न
ढूँढ़ सके।

अध्य. 1
1 2रा 10:29-31
2 2रा 15:8, 10
3 हो 2:23
4 2रा 17:6; 2रा 17:22, 23
5 हो 11:12
6 2रा 19:34, 35
7 यश 37:36
8 उत 13:16; उत 22:17
9 1पत 2:10
10 रोम 9:25, 26; 2कुर 6:18
11 एज 3:1; यश 11:12; यिर्म 3:18; यहे 37:19; मी 2:12

दूसरा कॉल.
1 हो 2:22

अध्य. 2
2 यिर्म 31:33; यहे 36:28; जक 13:9
3 हो 2:23
4 यिर्म 3:8
5 यहे 23:4, 5; हो 3:1
6 एज 9:6; दान 9:7; हो 9:10
7 यहे 23:7, 8; हो 8:9

1:4 *मतलब “परमेश्‍वर बीज बोएगा।” **1:6** *मतलब “दया नहीं की गयी।” **1:9** *मतलब “मेरे लोग नहीं।” **1:10** *शा., “बेटों।”

2:1 *हो 1:9 फु. देखें। #हो 1:6 फु. देखें।

7 वह अपने यारों के पीछे भागेगी जो
उस पर मरते थे, मगर उन तक
पहुँच नहीं पाएगी,[1]
वह उन्हें बहुत ढूँढ़ेगी, मगर वे उसे
नहीं मिलेंगे।
तब वह कहेगी, 'मैं अपने पहले
पति के पास लौट जाऊँगी,[2]
क्योंकि उसके साथ रहते वक्त मेरी
हालत कहीं ज़्यादा अच्छी थी।'[3]
8 उसने यह नहीं माना कि उसे
अनाज, नयी दाख-मदिरा और
तेल देनेवाला मैं था,[4]
मैंने ही उसे भरपूर चाँदी और सोना
दिया था,
जिन्हें लोगों ने बाल के लिए इस्ते-
माल किया।[5]
9 'इसलिए मैं वापस आऊँगा और
कटाई के समय उससे अनाज
छीन लूँगा,
अंगूर बटोरने के समय नयी दाख-
मदिरा ले लूँगा,[6]
ऊन और मलमल का कपड़ा छीन
लूँगा जिससे वह अपना तन
ढकती है।
10 मैं उसके यारों के सामने उसके नंगे-
पन का परदाफाश कर दूँगा,
कोई भी आदमी उसे मेरे हाथ से
नहीं छुड़ाएगा।[7]
11 मैं उसकी सारी खुशियों का अंत कर
दूँगा,
उसके त्योहारों,[8] नए चाँद के मौकों,
सब्त के मौकों और जश्नों का
अंत कर दूँगा।
12 मैं उसकी अंगूर की बेलों और
अंजीर के पेड़ों को नष्ट कर दूँगा,
जिनके बारे में वह कहती है, "यह
सब मेरी कमाई है जो मेरे यारों ने
मुझे दी है,"

अध्य. 2
1 यश 31:1
हो 5:13
2 यिर्म 31:18
यहे 23:4
हो 5:15
3 व्य 32:12-14
नहे 9:25
4 व्य 32:28
यश 1:3
5 हो 8:4
6 यश 17:11
7 भज 50:22
हो 5:14
8 आम 5:21
आम 8:10

दूसरा कॉल.
1 न्या 3:7
1रा 16:30-32
2रा 10:28
हो 11:2
2 यश 17:10
3 व्य 30:5
यश 65:21
यिर्म 32:15
यहे 28:25, 26
आम 9:14
4 यह 7:24-26
यश 65:10
5 निर्ग 15:1
6 निर्ग 23:13
यह 23:6, 7
7 जक 13:2
8 यश 11:6-8
यहे 34:25

मैं उन्हें जंगल बना दूँगा
और मैदान के जंगली जानवर उन्हें
खा जाएँगे।
13 मैं उससे उन सारे दिनों का हिसाब
माँगूँगा जब वह बाल की मूरतों
के आगे बलिदान चढ़ाती थी,[1]
कान की बालियों और गहनों से
खुद को सँवारती थी और अपने
यारों के पीछे भागती थी
और मुझे वह बिलकुल भूल गयी
थी।'[2] यहोवा का यह ऐलान है।
14 'इसलिए मैं उसे कायल करूँगा,
उसे वीराने में ले जाऊँगा,
उसका दिल जीतने के लिए उससे
बात करूँगा।
15 तब मैं उसके अंगूरों के बाग उसे
लौटा दूँगा,[3]
आकोर घाटी[4] को आशा का द्वार
बना दूँगा,
वहाँ वह मुझे जवाब देगी जैसे
जवानी में दिया करती थी,
उस दिन की तरह जब वह मिस्र
देश से बाहर आयी थी।'[5]
16 यहोवा ऐलान करता है, 'उस दिन
तू मुझे अपना पति कहेगी
और फिर कभी अपना मालिक *
नहीं कहेगी।'
17 'मैं उसकी ज़बान से बाल की मूरतों
का नाम मिटा दूँगा,[6]
उन्हें फिर कभी उनके नाम से याद
नहीं किया जाएगा।[7]
18 उस दिन मैं अपने लोगों की खातिर
मैदान के जंगली जानवरों,
आकाश के पक्षियों और ज़मीन
पर रेंगनेवाले जीव-जंतुओं से एक
करार करूँगा,[8]

2:16 * या "अपना बाल।"

मैं देश से तीर-कमान, तलवार और
युद्ध मिटा दूँगा,[1]
मैं उन्हें महफूज़ बसे रहने दूँगा।*[2]
19 मैं तेरे साथ हमेशा के बंधन में बँध
जाऊँगा,
नेकी और न्याय,
अटल प्यार और दया के
मुताबिक तेरे साथ बंधन में बँध
जाऊँगा।[3]
20 मैं सच्चाई से तेरे साथ बंधन में बँध
जाऊँगा
और तू ज़रूर मुझ यहोवा को जान
जाएगी।'[4]
21 यहोवा ऐलान करता है, 'उस दिन
मैं सुनूँगा,
मैं आसमान की सुनूँगा,
आसमान धरती की सुनेगा,[5]
22 धरती अनाज, नयी दाख-मदिरा
और तेल की सुनेगी
और वे यिजरेल* की सुनेंगे।[6]
23 मैं उसे बीज की तरह अपने लिए
धरती पर बोऊँगा,[7]
मैं उस पर दया करूँगा जिस पर
दया नहीं की गयी थी*
और जो मेरे लोग नहीं थे# उनसे मैं
कहूँगा, "तुम मेरे लोग हो"[8]
और वे कहेंगे, "तू हमारा पर-
मेश्वर है।"'"[9]

3 फिर यहोवा ने मुझसे कहा, "जा, उस
औरत से फिर से प्यार कर, जिसे
कोई और प्यार करता है और जो व्यभि-
चार करती है,[10] ठीक जैसे यहोवा भी
इसराएल के लोगों से प्यार करता है[11]
इसके बावजूद कि वे दूसरे देवताओं की
तरफ मुड़ जाते हैं[1] और किशमिश की
टिकियाँ* बहुत पसंद करते हैं।"
2 इसलिए मैंने चाँदी के 15 टुकड़े
और डेढ़ होमेर* जौ देकर उस औरत को
खरीद लिया। 3 फिर मैंने उससे कहा,
"तू कई दिनों के लिए मेरी बनकर रहेगी।
तू वेश्या का काम मत करना और पराए
आदमी के साथ संबंध मत रखना और मैं
भी तेरे साथ संबंध नहीं रखूँगा।"
4 ऐसा इसलिए है क्योंकि एक लंबे
अरसे* तक इसराएल के लोगों पर कोई
राजा और हाकिम नहीं होगा,[2] उनके यहाँ
कोई बलिदान, पूजा-स्तंभ, एपोद या कुल
देवताओं की मूरतें नहीं होंगी।[3] 5 बाद
में इसराएल के लोग लौट आएँगे और
अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा
दाविद की खोज करेंगे[4] और आखिरी
दिनों में वे थर-थर काँपते हुए यहोवा
के पास आएँगे ताकि वह उनके साथ
भलाई करे।[5]

4 इसराएल के लोगो, यहोवा का
संदेश सुनो,
इस देश के लोगों पर यहोवा ने
मुकदमा किया है,[6]
क्योंकि इस देश में न सच्चाई है,
न अटल प्यार और न ही पर-
मेश्वर के बारे में ज्ञान।[7]
2 यहाँ झूठी शपथ खाना, झूठ
बोलना,[8] कत्ल,[9]
चोरी और व्यभिचार[10] आम हो
गया है,
जगह-जगह कत्लेआम हो
रहा है।[11]
3 इसलिए देश मातम मनाएगा,[12]

2:18 *या "जीने दूँगा।" 2:22 *मतलब "परमेश्वर बीज बोएगा।" 2:23 *हो 1:6 फु. देखें। #हो 1:9 फु. देखें।

3:1 *यानी वे टिकियाँ जिनका झूठी उपासना में इस्तेमाल होता था। 3:2 *एक होमेर 220 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। 3:4 *शा., "बहुत दिनों।"

अध्य. 2
1 यश 2:4; यहे 39:9; जक 9:10
2 लैव 26:5, 6; यिर्म 23:6; मी 4:3, 4
3 मी 7:18
4 यश 54:13; यिर्म 24:7; यिर्म 31:34
5 व्य 28:12; जक 8:12
6 हो 1:11
7 यिर्म 31:27
8 हो 2:1; रोम 9:25, 26; 1पत 2:10
9 हो 1:10

अध्य. 3
10 हो 1:2, 3
11 व्य 7:6-8; 2रा 13:23; भज 106:44, 45

दूसरा कॉल.
1 न्या 10:13; यिर्म 3:20
2 2रा 17:6; 2रा 18:9, 10
3 न्या 8:27; न्या 17:5; 1शम 19:15, 16
4 यिर्म 30:9; यिर्म 50:4; यहे 34:23, 24; यहे 37:24, 25; आम 9:11; लूक 1:31-33
5 व्य 4:30

अध्य. 4
6 मी 6:2
7 मी 7:2
8 हो 11:12
9 1रा 21:18, 19
10 यहे 23:37
11 हो 1:4; हो 6:8, 9
12 आम 8:7, 8

इसका हर निवासी घुल-घुलकर मर
जाएगा,
मैदान के जंगली जानवर और
आकाश के पक्षी,
यहाँ तक कि समुंदर की मछलियाँ,
सब नाश हो जाएँगे।
4 "कोई आदमी किसी का विरोध
न करे, न ही उसे फटकारे,[1]
क्योंकि तुम्हारे लोग याजक का
विरोध करनेवालों की तरह हैं।[2]
5 इसलिए तुम लोग भरी दोपहरी में
लड़खड़ाकर गिर जाओगे
और तुम्हारे साथ भविष्यवक्ता भी
लड़खड़ाकर गिर जाएँगे, मानो
रात हो।
मैं तुम्हारी माँ को खामोश* कर
दूँगा।
6 मेरे लोग खामोश* कर दिए जाएँगे,
क्योंकि उनके पास ज्ञान नहीं है।
तुम लोगों ने ज्ञान को ठुकरा
दिया है,[3]
इसलिए मैं भी तुम्हें ठुकरा दूँगा
और तुम याजकों के नाते मेरी
सेवा न कर सकोगे।
तुम अपने परमेश्वर का कानून#
भूल गए हो,[4]
इसलिए मैं भी तुम्हारे बेटों को भूल
जाऊँगा।
7 उनकी गिनती जितनी बढ़ती गयी,
वे मेरे खिलाफ उतने ही ज़्यादा
पाप करते गए।[5]
मैं उनका सम्मान अपमान में बदल
दूँगा।*

4:5, 6 *या "नाश।" 4:6 #या "की हिदायत।" 4:7 *या शायद, "उन्होंने मेरी महिमा करने के बजाय मेरा अपमान किया।"

अध्य. 4
1 आम 5:10, 13
2 व्य 17:12
3 यिर्म 2:8
4 2रा 17:15, 16
5 एज 9:6, 7

दूसरा कॉल.
1 आम 3:1, 2
2 लैव 26:26
मी 6:14
3 हो 9:11, 12
4 नीत 20:1
नीत 23:31, 33
यश 28:7
5 यिर्म 3:6
6 2रा 17:10-12
यिर्म 2:20
यहे 20:28

8 वे मेरे लोगों के पापों पर पलते हैं,
उनके गुनाहों के लालची हैं।
9 लोगों और याजकों का एक ही
अंजाम होगा,
मैं उनसे उनके कामों का
हिसाब लूँगा
और उन्हें उनके किए की सज़ा
दूँगा।[1]
10 वे खाएँगे मगर उनका जी नहीं
भरेगा।[2]
वे बदचलनी में हद कर जाएँगे,
मगर उनकी गिनती नहीं बढ़ेगी,[3]
क्योंकि उन्होंने यहोवा का बिलकुल
आदर नहीं किया।
11 बदचलनी और पुरानी और नयी
दाख-मदिरा,
सही काम करने का इरादा कमज़ोर
कर देती हैं।[4]
12 मेरे लोग अपने लकड़ी के देवताओं
से सलाह करते हैं,
वही करते हैं जो उनका डंडा* उनसे
कहता है,
क्योंकि वेश्या के काम करने की
फितरत उन्हें बहका देती है,
वे वेश्या के काम करके अपने पर-
मेश्वर के अधीन होने से इनकार
कर देते हैं।
13 वे पहाड़ों की चोटियों पर बलिदान
चढ़ाते हैं,[5]
पहाड़ियों पर बलिदान चढ़ाते हैं
ताकि उसका धुआँ उठे,
बाँज और सिलाजीत पेड़
और हर बड़े पेड़ के नीचे ऐसा
करते हैं,[6]
क्योंकि इन पेड़ों के नीचे अच्छी
छाया होती है।

4:12 *या "ज्योतिषी की छड़ी।"

इसीलिए तुम्हारी बेटियाँ वेश्या के
काम करती हैं
और तुम्हारी बहुएँ व्यभिचार
करती हैं।
14 मैं तुम्हारी बेटियों से उनके
वेश्या के कामों का हिसाब
नहीं माँगूँगा,
न ही तुम्हारी बहुओं से उनके
व्यभिचार का हिसाब माँगूँगा।
क्योंकि आदमी वेश्याओं के साथ
निकल पड़ते हैं
और मंदिर की वेश्याओं के साथ
बलिदान चढ़ाते हैं,
ये लोग जो समझ नहीं रखते,[1] नाश
किए जाएँगे।
15 हे इसराएल, तू वेश्या के काम
करती है,[2]
मगर हे यहूदा, तू उसके जैसा पाप
मत करना।[3]
तू न गिलगाल जाना[4] न ही बेत-
आवेन जाना[5]
और यह कहकर शपथ न खाना,
'यहोवा के जीवन की शपथ!'[6]
16 इसराएल ने एक ज़िद्दी गाय की
तरह ज़िद की है।[7]
क्या यहोवा अब उनकी चरवाही
करेगा जैसे कोई खुले चरागाह*
में मेढ़े को चराता है?
17 एप्रैम मूर्तियों से जुड़ गया है।[8]
उसे वैसे ही रहने दो!
18 जब उनकी शराब* खत्म हो
जाती है,
तो वे बदचलनी में हद कर जाते हैं।
उसके शासकों को बेइज़्ज़ती बहुत
प्यारी है।[9]
19 आँधी उसे अपने पंखों में लपेटकर
उड़ा ले जाएगी
और वे अपने बलिदानों की वजह
से शर्मिंदा होंगे।"

5 "याजको, सुनो,[1]
इसराएल के घराने, ध्यान दे,
राजा के घराने, सुन,
तुम्हारा न्याय किया जाएगा,
क्योंकि तुम मिसपा के लिए एक
फंदा हो
और ताबोर पर बिछाया जाल हो।[2]
2 जो गिर गए हैं वे* बढ़-चढ़कर खून
बहा रहे हैं,
मैं उन सबको आगाह कर रहा हूँ।#
3 मैं एप्रैम को जानता हूँ,
इसराएल मुझसे छिपा नहीं है।
क्योंकि हे एप्रैम, तूने बदचलनी में
हद कर दी है,
इसराएल ने खुद को दूषित कर
लिया है।[3]
4 उनके काम उन्हें अपने परमेश्वर की
तरफ लौटने नहीं देते,
क्योंकि उनमें वेश्या के काम करने
की फितरत है[4]
और वे यहोवा की कदर नहीं
करते।
5 इसराएल के घमंड ने उसके खिलाफ
गवाही दी है,[5]
इसराएल और एप्रैम, दोनों ने
अपने गुनाहों की वजह से ठोकर
खायी है,
उनके साथ यहूदा ने भी ठोकर
खायी है।[6]
6 वे अपनी भेड़-बकरियों और मवे-
शियों को लेकर यहोवा की खोज
करने निकले,

4:16 *शा., "एक खुली जगह।" 4:18 *या "गेहूँ से बनी शराब।"

5:2 *या "बागी।" #या "शिक्षा दूँगा।"

अध्य. 4
1 यिर्म 4:22
2 यहे 23:4, 5
3 2रा 17:18
4 हो 9:15; हो 12:11; आम 4:4
5 हो 5:8; हो 10:5
6 यश 48:1; यिर्म 5:2; यहे 20:39
7 भज 78:8; भज 81:11, 12; जक 7:11, 12
8 हो 11:2; हो 13:1, 2
9 मी 7:3

दूसरा कॉल.

अध्य. 5
1 हो 4:9
2 न्या 4:6; यिर्म 46:18
3 यहे 23:4, 5; हो 4:17, 18
4 हो 4:12; आम 2:7
5 यश 9:9, 10; हो 7:10
6 2रा 17:19, 20; यहे 23:30, 31; आम 2:4, 5

मगर उसे पा नहीं सके।
उसने खुद को उनसे दूर कर
लिया है।[1]
7 उन्होंने यहोवा से गद्दारी की है,[2]
क्योंकि वे परदेसी लड़कों के पिता
बने हैं।
अब एक महीने के अंदर उन्हें और
उनके हिस्सों* को नाश कर दिया
जाएगा।
8 गिबा में नरसिंगा फूँको,[3] रामाह में
तुरही फूँको![4]
बेत-आवेन में युद्ध का ऐलान
करो[5]—हे बिन्यामीन, हम तेरे
पीछे-पीछे आते हैं!
9 हे एप्रैम, सज़ा के दिन तेरा ऐसा
हश्र होगा कि देखनेवालों का दिल
दहल जाएगा।[6]
मैंने ऐलान कर दिया है कि इस-
राएल के गोत्रों के साथ क्या होना
तय है।
10 यहूदा के हाकिम उनके जैसे हैं जो
सीमा-चिन्ह सरका देते हैं।[7]
मैं उन पर अपनी जलजलाहट पानी
की तरह उँडेलूँगा।
11 एप्रैम पर ज़ुल्म किया जा रहा है,
उसकी सज़ा उसे कुचल रही है,
क्योंकि उसने अपने दुश्मन के पीछे-
पीछे जाने की ठान ली थी।[8]
12 इसलिए मैं एप्रैम के लिए कपड़-
कीड़े जैसा
और यहूदा के घराने के लिए सड़न
जैसा था।
13 जब एप्रैम ने अपनी बीमारी और
यहूदा ने अपना घाव देखा,
तो एप्रैम अश्शूर गया[9] और एक
महान राजा के पास दूत भेजे।
मगर वह राजा तुम्हें चंगा नहीं कर
पाया,
तुम्हारा घाव ठीक नहीं कर पाया।
14 मैं एप्रैम के लिए एक जवान
शेर जैसा
और यहूदा के घराने के लिए एक
ताकतवर शेर जैसा बनूँगा।
मैं खुद उनकी बोटी-बोटी कर
दूँगा,[1]
मैं उन्हें उठा ले जाऊँगा और कोई
उन्हें मेरे पंजे से नहीं छुड़ाएगा।[2]
15 मैं अपनी जगह लौट जाऊँगा और
तब तक वहाँ रहूँगा जब तक कि
वे अपने पाप का अंजाम नहीं
भुगतते,
फिर वे मेरी मंज़ूरी पाना चाहेंगे।[3]
जब वे संकट में होंगे तो मेरी खोज
करेंगे।"[4]

6 "आओ, हम यहोवा के पास लौट
जाएँ,
उसने हमारी बोटी-बोटी कर दी है,[5]
मगर वह हमें चंगा करेगा।
उसने हमें घायल किया है, मगर वह
हमारे घावों पर पट्टी बाँधेगा।
2 वह दो दिन बाद हममें दोबारा जान
फूँकेगा,
तीसरे दिन हमें खड़ा कर देगा
और हम उसके सामने जीएँगे।
3 हम यहोवा को जानेंगे, उसे जानने
के लिए जी-जान से मेहनत
करेंगे।
भोर की तरह उसका आना
पक्का है,
वह मूसलाधार बारिश की तरह
हमारे पास आएगा,
वसंत की बारिश की तरह, जो पूरी
धरती को सींचती है।"

5:7 * या "खेतों।"

अध्या. 5
1 यश 1:15, मी 3:4
2 यश 48:8, यिर्म 3:20
3 हो 8:1
4 यश 10:29
5 हो 4:15, हो 10:5
6 यश 28:1-3, हो 9:13
7 व्य 19:14
8 1रा 20:1
9 हो 8:9, हो 12:1

दूसरा कॉल.
1 भज 50:22
2 आम 2:14
3 लैव 26:38, 40
4 व्य 4:29, 30, व्य 30:10

अध्या. 6
5 हो 5:14

4 “हे एप्रैम, मुझे तेरे साथ क्या करना चाहिए?
हे यहूदा, मुझे तेरे साथ क्या करना चाहिए?
क्योंकि तुम्हारा अटल प्यार सुबह के बादल की तरह
और ओस की तरह है जो जल्द ही गायब हो जाती है।
5 इसलिए मैं भविष्यवक्ताओं के ज़रिए उन्हें काट डालूँगा,[1]
अपने मुँह के वचनों से उन्हें मार डालूँगा।[2]
तुम्हें जो फैसले सुनाए जाएँगे वे रौशनी की तरह चमकेंगे।[3]
6 मैं अटल प्यार* से खुश होता हूँ, बलिदान से नहीं,
परमेश्वर के बारे में ज्ञान से खुश होता हूँ, पूरी होम-बलियों से नहीं।[4]
7 मगर उन्होंने अदना इंसानों की तरह करार तोड़ दिया है।[5]
वहाँ उन्होंने मेरे साथ विश्वासघात किया है।
8 गिलाद दुष्टों का नगर है,[6]
खून से रंगा हुआ है।[7]
9 याजकों की टोली लुटेरे-दल की तरह है, जो किसी को पकड़ने के लिए घात लगाता है।
वे शेकेम की सड़क पर कत्ल करते हैं,[8]
उनका चालचलन शर्मनाक है।
10 मैंने इसराएल के घराने में एक घिनौनी बात देखी है।
वहाँ एप्रैम वेश्या के काम करती है,[9]
इसराएल ने खुद को दूषित कर लिया है।[10]

6:6 *या “दया।”

अध्य. 6
1 यश 58:1 यिर्म 1:9, 10 यहे 3:8, 9
2 यिर्म 23:29
3 सप 3:5
4 1शम 15:22 नीत 21:3 यश 1:11 मी 6:6-8 मत 9:13 मत 12:7
5 2रा 17:15 यश 24:5 हो 8:1
6 हो 12:11
7 मी 7:2
8 1रा 12:25
9 2रा 17:6, 7 यिर्म 3:6
10 यहे 23:4, 5

दूसरा कॉल.
1 व्य 30:3 यिर्म 29:14 आम 9:14

अध्य. 7
2 यश 28:1
3 आम 8:14 मी 1:5
4 मी 7:3
5 हो 6:9
6 व्य 32:29 यश 1:3 आम 8:7
7 यश 5:11 यश 28:1

11 मगर हे यहूदा, तेरे लिए कटाई का समय तय है,
मैं अपने लोगों को इकट्ठा करके बँधुआई से वापस लाऊँगा।”[1]

7 “जब भी मैं इसराएल को चंगा करने की कोशिश करता हूँ,
तो एप्रैम के गुनाह का[2]
और सामरिया की दुष्टता का परदाफाश होता है।[3]
क्योंकि वे छल-कपट के काम करते हैं,[4]
अंदर चोर घुस आते हैं और बाहर लुटेरे-दल लूट मचाते हैं।[5]
2 मगर वे अपने दिलों में यह सोचते तक नहीं कि मैं उनकी दुष्टता पर ध्यान दूँगा।[6]
अब वे अपने बुरे कामों से घिरे हुए हैं,
उनके काम मेरी नज़रों से छिपे नहीं हैं।
3 वे अपनी दुष्टता से राजा को
और अपने छल से हाकिमों को खुश करते हैं।
4 वे सब बदचलन हैं,
वे जलते तंदूर की तरह हैं जिसमें नानबाई ने आग जलायी है,
वह आटा गूँधने से लेकर उसके खमीरा होने तक तंदूर को और नहीं धधकाता।
5 हमारे राजा के जश्न के दिन हाकिम बीमार हो गए
—दाख-मदिरा की वजह से भड़क गए हैं।[7]
राजा ने खिल्ली उड़ानेवालों की तरफ अपना हाथ बढ़ाया है।

6 वे जलते हुए तंदूर जैसा मन लेकर
पास आते हैं,*
नानबाई सारी रात सोता है,
सुबह तंदूर शोलों की तरह दहक
उठता है।
7 वे सब तंदूर की तरह धधकते हैं,
अपने शासकों* को खा जाते हैं।
उनके सभी राजा गिर गए हैं,[1]
उनमें से कोई मुझे नहीं पुकारता।[2]
8 एप्रैम दूसरे राष्ट्रों में मिल
जाता है।[3]
एप्रैम एक गोल रोटी जैसा है जिसे
पलटा नहीं गया है।
9 परायों ने उसकी ताकत चूस ली,[4]
मगर उसे खबर नहीं।
उसके बाल सफेद हो गए, मगर उसे
पता नहीं।
10 इसराएल के घमंड ने उसके खिलाफ
गवाही दी है,[5]
मगर इतना कुछ होने के बावजूद
वे अपने परमेश्वर यहोवा के पास
नहीं लौटे[6]
और न ही उस पर आस लगायी।
11 एप्रैम एक फाख्ते जैसा है जिसमें
बुद्धि नहीं है, समझ* नहीं है।[7]
उन्होंने मिस्र को पुकारा है,[8] वे
अश्शूर गए हैं।[9]
12 वे जहाँ भी जाएँ मैं उन पर अपना
जाल डालूँगा।
मैं उन्हें आकाश के पक्षियों की तरह
नीचे गिरा दूँगा।
मैं उन्हें सज़ा दूँगा ठीक जैसे
मैंने उनकी टोली को खबरदार
किया था।[10]

7:6 *या शायद, "जब वे साज़िशें करके आते हैं तो उनके दिल तंदूर जैसे होते हैं।" 7:7 *शा., "न्यायियों।" 7:11 *शा., "दिल।"

अध्य. 7
1 2रा 15:8, 10; 2रा 15:14
2 यश 9:13
3 भज 106:34-36; यहे 23:4, 5
4 2रा 13:3; 2रा 15:19
5 हो 5:5
6 नहे 9:35; यश 9:13; आम 4:6; जक 1:4
7 यश 1:3
8 2रा 17:4; यश 31:1
9 2रा 15:19; यहे 23:4, 5
10 व्य 28:15; 2रा 17:13

दूसरा कॉल.
1 यश 59:13
2 भज 78:37; यश 29:13
3 भज 78:57
4 यहे 36:19, 20; हो 9:3

अध्य. 8
5 हो 5:8
6 व्य 28:49, 50
7 हो 6:7
8 2रा 17:15
9 यश 48:1; मी 3:11

13 धिक्कार है उन पर क्योंकि वे मुझसे
दूर भाग गए हैं!
वे नाश हो जाएँ क्योंकि उन्होंने मेरे
खिलाफ अपराध किया है!
मैं उन्हें छुड़ाने ही वाला था, मगर
उन्होंने मेरे खिलाफ झूठ बोला।[1]
14 वे अपने पलंग पर बिलख-बिलख-
कर रोते रहे,
फिर भी उन्होंने मदद के लिए मुझे
दिल से नहीं पुकारा।[2]
वे अनाज और नयी दाख-मदिरा
के लिए अपने शरीर पर घाव
करते रहे,
वे मेरे खिलाफ हो जाते हैं।
15 मैंने उन्हें शिक्षा दी और उनके
बाज़ुओं को मज़बूत किया,
फिर भी वे मेरे खिलाफ जाकर बुरा
करने की साज़िश रचते हैं।
16 उन्होंने अपना रास्ता बदला, मगर
ऊँचाई* की तरफ नहीं,
वे ढीली कमान की तरह भरोसे के
लायक नहीं थे।[3]
उनके हाकिम तलवार से मार डाले
जाएँगे क्योंकि वे अपनी जीभ से
विरोध करते हैं।
इसलिए वे मिस्र में मज़ाक बनकर
रह जाएँगे।"[4]

8 "अपने मुँह में नरसिंगा लगा![5]
दुश्मन उकाब की तरह यहोवा के
भवन पर हमला करेगा,[6]
क्योंकि उन्होंने मेरा करार तोड़
दिया है,[7] मेरे कानून के खिलाफ
काम किया है।[8]
2 वे मुझे पुकारते हैं, 'हे हमारे पर-
मेश्वर, हम इसराएली लोग तुझे
जानते हैं!'[9]

7:16 *यानी ऊँचे दर्जे की उपासना।

3 इसराएल ने भलाई ठुकरा दी है।[1]
एक दुश्मन उसका पीछा करे।
4 उन्होंने राजा ठहराए हैं, मगर मेरी
इजाज़त के बगैर।
हाकिम ठहराए हैं, मगर मेरी मंज़ूरी
के बगैर।
उन्होंने अपने ही विनाश के लिए
सोने-चाँदी से मूरतें बनायी हैं।[2]
5 हे सामरिया, तेरा बछड़ा ठुकरा
दिया गया है।[3]
मेरे क्रोध की ज्वाला उन पर
भड़की है।[4]
वे खुद को कब शुद्ध करेंगे? और
कितना वक्त लगाएँगे?
6 यह इसराएल से है।
इसे एक कारीगर ने बनाया है, यह
परमेश्वर नहीं है,
सामरिया का बछड़ा टुकड़े-टुकड़े
कर दिया जाएगा।
7 वे हवा बोते हैं
और आँधी की कटाई करेंगे।[5]
बालों पर पका अनाज नहीं उगता,[6]
उपज से आटा नहीं मिलता।
अगर कुछ उगे भी तो परदेसी* उसे
निगल जाएँगे।[7]
8 इसराएल को निगल लिया
जाएगा।[8]
वे दूसरे राष्ट्रों में ऐसा बरतन ठह-
रेंगे जो किसी काम का नहीं।[9]
9 वे अकेले जंगली गधे की तरह
अश्शूर के पास गए हैं।[10]
एप्रैम ने वेश्याओं को किराए पर
बुलाया है।[11]
10 हालाँकि वे उन्हें दूसरे राष्ट्रों से
किराए पर बुलाते हैं,
मगर मैं उन्हें इकट्ठा करूँगा,
वे राजा और हाकिमों के लादे हुए
बोझ के कारण दुख झेलेंगे।[1]
11 एप्रैम ने बहुत-सी वेदियाँ बनाकर
पाप किया है।[2]
ये वेदियाँ उसके पाप की वजह
बनीं।[3]
12 मैंने उसे बहुत-से कानून* लिखकर
दिए,
मगर उसने इन कानूनों को अजीबो-
गरीब समझा।[4]
13 वे मेरे लिए बलिदान चढ़ाते हैं और
माँस खाते हैं,
मगर यहोवा उनके बलिदानों से
खुश नहीं होता।[5]
अब वह उनका गुनाह याद करेगा
और उन्हें पापों की सज़ा देगा।[6]
वे मिस्र की तरफ फिर गए हैं।*[7]
14 इसराएल अपने बनानेवाले को
भूल गया[8] और उसने मंदिर
बनाए हैं[9]
और यहूदा ने बहुत-से किलेबंद
शहर बनाए हैं।[10]
मगर मैं उसके शहरों पर आग
भेजूँगा,
जो हर शहर की मीनारों को भस्म
कर देगी।"[11]

9 "हे इसराएल, खुशियाँ मत मना,[12]
देश-देश के लोगों की तरह मगन
मत हो।
क्योंकि तू वेश्या के काम करके
अपने परमेश्वर से दूर चली
गयी।[13]
तुझे हर खलिहान में वेश्या के
काम करके मज़दूरी लेना बहुत
भाया।[14]

8:7 *या "अजनबी।"

8:12 *या "हिदायतें।" 8:13 *या शायद, "मिस्र लौट जाएँगे।"

अध्य. 8
1 भज 50:17
2 1रा 12:26, 28
1रा 13:34
हो 13:2
3 हो 10:5, 6
4 व्य 32:21, 22
2रा 17:18
5 नीत 22:8
6 यश 17:11
7 व्य 28:15, 33
8 2रा 15:29
2रा 18:11
यिर्म 50:17
9 लैव 26:33
10 2रा 15:19
यहे 23:4, 5
हो 5:13
हो 12:1
11 यहे 23:9

दूसरा कॉल.
1 2रा 14:26
1इत 5:26
2 यश 10:10, 11
3 हो 12:11
4 2रा 17:15
नहे 9:26
5 यश 1:11
आम 5:22
6 हो 9:9
आम 8:7
7 हो 7:16
हो 9:3
8 व्य 32:18
9 1रा 12:25, 31
10 2इत 26:9, 10
11 2रा 18:13
2इत 36:17, 19
यिर्म 17:27
यिर्म 34:7

अध्य. 9
12 हो 10:5
13 यहे 23:4, 5
हो 4:12
14 हो 2:12
मी 1:7

2 मगर खलिहान और अंगूर रौंदने
का हौद उन्हें नहीं खिलाएगा
और नयी दाख-मदिरा उसे नहीं
मिलेगी।[1]
3 वे यहोवा के देश में और नहीं रह
पाएँगे,[2]
इसके बजाय, एप्रैम मिस्र लौट
जाएगा
और अश्शूर में वे अशुद्ध चीज़ें
खाएँगे।[3]
4 वे फिर कभी यहोवा के लिए दाख-
मदिरा का अर्घ नहीं चढ़ाएँगे,[4]
उनके बलिदानों से वह खुश नहीं
होगा।[5]
वे मातम की रोटी जैसे होंगे,
उसे खानेवाले सभी दूषित हो
जाएँगे।
क्योंकि उनकी रोटी सिर्फ उनके
लिए होगी,
उसे यहोवा के भवन में नहीं लाया
जाएगा।
5 तुम लोग इकट्ठा होने* के दिन,
यहोवा के त्योहार के दिन क्या
करोगे?
6 क्योंकि देखो! उन्हें नाश की वजह
से भागना पड़ेगा।[6]
मिस्र उन्हें इकट्ठा करेगा[7] और
मेम्फिस उन्हें दफनाएगा।[8]
बिच्छू-बूटियाँ उनकी चाँदी की
कीमती चीज़ों पर कब्ज़ा
कर लेंगी
और उनके तंबुओं में कँटीली
झाड़ियाँ उग आएँगी।
7 हिसाब लेने के दिन ज़रूर आएँगे,[9]
बदला चुकाने के दिन ज़रूर आएँगे
और इसराएल इसे जान जाएगा।

9:5 *या "अपनी तय दावत।"

उनका भविष्यवक्ता मूर्ख साबित
होगा और प्रेरित जन पागल हो
जाएगा।
तेरे गुनाह बेहिसाब हैं, इसलिए
तुझसे बढ़-चढ़कर दुश्मनी की
गयी है।"
8 एप्रैम का पहरेदार[1] मेरे परमेश्वर
के साथ था।[2]
मगर अब उसके भविष्यवक्ताओं[3]
के सभी तौर-तरीके बहेलिए के
फंदों जैसे हैं,
उसके परमेश्वर के भवन में
दुश्मनी है।
9 वे ऐसे कामों में डूब गए हैं जो नाश
लाते हैं, जैसे गिबा के दिनों में
हुआ था।[4]
वह उनका गुनाह याद करेगा और
उन्हें पापों की सज़ा देगा।[5]
10 "मुझे इसराएल ऐसे मिला जैसे
वीराने में अंगूर मिलते हैं।[6]
जब मैंने तुम्हारे पुरखों को देखा तो
वे अंजीर के पेड़ पर लगे पहले
फल जैसे थे।
मगर वे पोर के बाल के पास
चले गए,[7]
उन्होंने शर्मनाक चीज़* के लिए
खुद को समर्पित कर दिया,[8]
वे उस चीज़ की तरह घिनौने बन
गए जिससे वे प्यार करते थे।
11 एप्रैम की शान एक चिड़िया की
तरह फुर्र हो जाती है,
न कोई पैदा होता है, न कोई औरत
गर्भवती होती है, न ही किसी का
गर्भ ठहरता है।[9]
12 चाहे वे बच्चों को पालें-पोसें,
तो भी मैं उन्हें उनसे छीन लूँगा
ताकि एक भी आदमी न बचे,[10]

9:10 *या "शर्मनाक देवता।"

अध्य. 9

1 हो 2:8, 9; आम 5:11
2 लैव 20:22; व्य 28:63, 64; यह 23:15, 16; 1रा 9:6, 7
3 2रा 17:6
4 गि 15:5; गि 28:14; योए 1:13
5 यश 1:11
6 हो 7:13
7 हो 7:16; हो 8:13
8 यिर्म 2:14, 16
9 यश 10:3

दूसरा कॉल.

1 यश 21:6, 8; यिर्म 6:17; यहे 33:7
2 1रा 17:1; 2रा 2:14
3 1रा 18:19
4 न्या 19:22; न्या 20:4-6; हो 10:9
5 हो 8:13
6 यिर्म 2:2
7 गि 25:1-3; व्य 4:3; भज 106:28
8 1रा 16:31; यिर्म 11:13
9 व्य 28:15, 18
10 व्य 28:32; व्य 32:25

हाँ, जब मैं उनसे मुँह फेर लूँगा तो
वे बरबाद हो जाएँगे![1]
13 एप्रैम, जो चरागाह में बोया गया था,
मेरे लिए सोर जैसा था,[2]
अब एप्रैम को अपने बेटों को वध
होने के लिए लाना होगा।"
14 हे यहोवा, उन्हें जो देना चाहिए
उन्हें दे,
ऐसी कोख जिसमें बच्चे मर जाएँ
और ऐसे स्तन जो सूखे रहें।*
15 "उन्होंने गिलगाल में सारी बुराई की
थी,[3] वहाँ मुझे उनसे नफरत हो
गयी।
उनकी दुष्टता की वजह से मैं उन्हें
अपने भवन से खदेड़ दूँगा।[4]
मैं उन्हें फिर कभी प्यार नहीं
करूँगा,[5]
उनके सब हाकिम ढीठ हैं।
16 एप्रैम एक पेड़ की तरह काट दिया
जाएगा।[6]
उनकी जड़ सूख जाएगी और वे
कोई फल नहीं देंगे।
चाहे वे बच्चे पैदा करें तो भी मैं
उनके दुलारों को मार डालूँगा।"
17 मेरा परमेश्वर उन्हें ठुकरा देगा,
क्योंकि उन्होंने उसकी नहीं सुनी,[7]
वे दूसरे राष्ट्रों में भगोड़े बनकर
फिरेंगे।[8]

10 "इसराएल अंगूर की सड़ी*
बेल है जिस पर फल
लगते हैं।[9]
उस पर जितने ज़्यादा फल लगते
हैं वह उतनी ज़्यादा वेदियाँ खड़ी
करता है,[10]
उसकी ज़मीन जितनी अच्छी उपज
देती है उसके पूजा-स्तंभ उतने ही
शानदार होते हैं।[1]
2 उनका दिल कपटी है,
अब वे दोषी पाए जाएँगे।
ऐसा कोई है जो उनकी वेदियाँ तोड़
डालेगा, उनके पूजा-स्तंभ नाश
कर देगा।
3 अब वे कहेंगे, 'हमारा कोई राजा
नहीं,[2] क्योंकि हमने यहोवा का
डर नहीं माना।
अगर राजा होता भी तो वह हमारे
लिए क्या कर पाता?'
4 वे खोखली बातें कहते हैं,
झूठी शपथ खाते हैं[3] और करार
करते हैं,
इसलिए अन्याय ऐसा बढ़ गया है,
जैसे ज़हरीले पौधे कूँड़ों में देखते-
ही-देखते उग आते हैं।[4]
5 सामरिया के निवासी बेत-आवेन के
बछड़े की मूरत के लिए डरेंगे।[5]
वहाँ के लोग उसके लिए मातम
मनाएँगे,
पराए देवता के पुजारी भी मातम
मनाएँगे, जो कभी उसकी और
उसकी शान की वजह से खुशियाँ
मनाते थे,
क्योंकि वह मूरत उनसे दूर बँधुआई
में चली जाएगी।
6 वह मूरत अश्शूर ले जायी जाएगी
ताकि एक महान राजा को तोहफे
में दी जा सके।[6]
एप्रैम शर्मिंदा किया जाएगा,
इसराएल ने जो सलाह मानी थी
उसकी वजह से वह शर्मिंदा किया
जाएगा।[7]
7 सामरिया और उसके राजा को
ज़रूर नाश किया जाएगा,[8]

9:14 *या "कुम्हला जाएँ।" 10:1 *या शायद, "फैलनेवाली।"

अध्य. 9
1 व्य 31:17; 2रा 17:18
2 यहे 28:12
3 हो 4:15; हो 12:11; आम 5:5
4 लैव 26:27, 33; 2रा 17:18; आम 5:27
5 व्य 29:19, 20
6 यश 7:8
7 2रा 17:14, 15; जक 1:4
8 व्य 28:64; आम 9:9

अध्य. 10
9 यश 5:3, 4
10 हो 8:11; हो 12:11

दूसरा कॉल.
1 हो 8:4
2 हो 3:4; हो 13:11
3 2रा 17:4
4 आम 5:7; आम 6:12
5 1रा 12:28, 29; हो 4:15; हो 8:5; आम 3:14
6 2रा 17:3; हो 5:13
7 मी 6:16
8 2रा 17:4

वह उस टहनी जैसा होगा
जिसे तोड़कर पानी में फेंक दिया गया हो।
8 बेत-आवेन की ऊँची जगह,[1] जो इसराएल का पाप हैं,[2] मिटा दी जाएँगी।[3]
उनकी वेदियों पर काँटे और कँटीली झाड़ियाँ उगेंगी।[4]
लोग पहाड़ों से कहेंगे,
'हमें ढक लो!'
और पहाड़ियों से कहेंगे, 'हम पर गिर पड़ो!'[5]
9 हे इसराएल, तू गिबा के दिनों से पाप करता आया है।[6]
वहाँ वे पाप में लगे रहे।
युद्ध ने गिबा में दुष्टों को पूरी तरह नहीं मिटाया।
10 मैं भी जब चाहूँ उन्हें सज़ा दूँगा।
जब उनके दोनों गुनाहों का बोझ उन पर लादा जाएगा,*
तब देश-देश के लोग उनके खिलाफ इकट्ठा होंगे।
11 एप्रैम सधी हुई गाय* था जिसे दाँवना बहुत पसंद था,
इसलिए मैंने उसकी सुंदर गरदन बख्श दी।
अब मैं एप्रैम पर किसी को सवार कराऊँगा।#[7]
यहूदा हल जोतेगा, याकूब उसके लिए हेंगा खींचेगा।
12 अपने लिए नेकी के बीज बोओ और अटल प्यार की फसल काटो।
जब तक यहोवा की खोज करने का समय है,[8]
अपने लिए उपजाऊ ज़मीन जोतो[1]
और वह आएगा और तुम्हें नेकी सिखाएगा।[2]
13 मगर तुमने दुष्टता के लिए हल जोता है
और बुराई की फसल काटी है,[3]
तुम छल का फल खा रहे हो,
क्योंकि तुमने अपने तौर-तरीकों पर,
अपने बेहिसाब योद्धाओं पर भरोसा रखा है।
14 तुम्हारे लोगों के बीच युद्ध का शोर सुनायी देगा,
तुम्हारे सारे किलेबंद शहर नाश हो जाएँगे,[4]
जैसे बेत-अरबेल को शलमान ने नाश किया था,
लड़ाई के दिन माँओं को उनके बच्चों के साथ पटककर मार डाला गया था।
15 हे बेतेल, तेरी घोर दुष्टता की वजह से तेरे साथ यही किया जाएगा।[5]
भोर को इसराएल का राजा ज़रूर नाश किया जाएगा।"[6]

11

"जब इसराएल एक छोटा लड़का था तो मैं उसे प्यार करता था,[7]
मैंने अपने बेटे को मिस्र से बुलाया।[8]
2 वे* जितना ज़्यादा उन्हें पुकारते,
उतना ज़्यादा वे उनसे दूर चले जाते।[9]
वे बाल की मूरतों के लिए बलिदान चढ़ाते रहे,[10]

10:10 *यानी जब वे जुआ ढोने की तरह सज़ा भुगतेंगे। 10:11 *या "कलोर।" #या "रस्सी बाँधूँगा।"

11:2 *यानी इसराएल को सिखाने के लिए भेजे गए भविष्यवक्ता और दूसरे लोग।

अध्य. 10
1 हो 4:15
2 1रा 12:28-30; मी 1:5
3 आम 7:9
4 2रा 23:15
5 लूक 23:30; प्रक 6:16
6 न्या 20:4-6; हो 9:9
7 2रा 17:6
8 यश 55:6; आम 5:4

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 4:3, 4
2 व्य 32:2; यश 45:8
3 भज 22:8; हो 8:7; गल 6:7
4 2रा 18:9, 10
5 आम 7:9
6 2रा 18:9, 10

अध्य. 11
7 व्य 7:8
8 निर्ग 4:22; मत 2:14, 15
9 यश 30:9-11
10 न्या 2:13; न्या 3:7; 1रा 16:30-32; 1रा 18:19; 2रा 17:13, 16; हो 2:13

खुदी हुई मूरतों के लिए बलिदान
अर्पित करते रहे।[1]
3 मगर मैंने ही एप्रैम को चलना
सिखाया था,[2] मैं उन्हें अपनी
बाँहों में ले लेता था,[3]
मगर उन्होंने यह नहीं माना कि मैंने
उन्हें चंगा किया था।
4 इंसानों की डोरी* से और प्यार
की डोरी से मैं उन्हें अपनी तरफ
खींचता रहा।[4]
मैं उनके लिए गरदन# से जुआ
हटानेवाले जैसा था
और मैं हरेक को प्यार से खाना
देता था।
5 वे मिस्र नहीं लौटेंगे, मगर अश्शूर
उनका राजा होगा,[5]
क्योंकि उन्होंने मेरे पास लौटने से
इनकार कर दिया है।[6]
6 उसके शहरों पर तलवार चलेगी,[7]
फाटक के बेड़े काट डालेगी और
उन्हें खा जाएगी क्योंकि वे
साज़िशें रचते हैं।[8]
7 मेरे लोगों ने मुझसे विश्वासघात
करने की ठान ली है।[9]
वे उन्हें ऊपर* बुलाते थे, मगर
उनमें से कोई नहीं उठता था।
8 हे एप्रैम, मैं कैसे तुझे दुश्मन के
हवाले करूँ?[10]
हे इसराएल, मैं कैसे तुझे दुश्मन के
हाथ सौंप दूँ?
मैंने अदमा के साथ जो किया था
वह तेरे साथ कैसे करूँ?
मैं तेरा हाल सबोयीम की तरह कैसे
कर दूँ?[11]
मैंने अपना मन बदला है,
साथ ही मेरे दिल में करुणा जाग
उठी है।[1]
9 मैं तुझ पर अपने क्रोध की आग
नहीं बरसाऊँगा।
मैं एप्रैम को फिर नाश नहीं
करूँगा,[2]
क्योंकि मैं परमेश्वर हूँ इंसान नहीं,
मैं तेरे बीच रहनेवाला पवित्र पर-
मेश्वर हूँ,
मैं क्रोध से भरकर तेरे पास नहीं
आऊँगा।
10 वे यहोवा के पीछे-पीछे चलेंगे और
वह शेर की तरह गरजेगा,[3]
जब वह गरजेगा तो उसके बेटे थर-
थराते हुए पश्चिम से आएँगे।[4]
11 जब वे मिस्र से निकलकर आएँगे तो
एक पक्षी की तरह थरथराएँगे,
एक फाख्ते की तरह जो अश्शूर
देश से आती है[5]
और मैं उन्हें उनके घरों में
बसाऊँगा।" यहोवा का यह
ऐलान है।[6]
12 "एप्रैम मुझसे सिर्फ झूठ बोलता है,
इसराएल का घराना छल
करता है।[7]
मगर यहूदा अब भी परमेश्वर के
साथ चलता है,
वह परम-पवित्र परमेश्वर का
विश्वासयोग्य बना हुआ है।"[8]

12 "एप्रैम बेकार की चीज़ों पर
भरोसा रखता है।*
पूरब से बहनेवाली हवा के पीछे
सारा दिन भागता है।
वह बढ़-चढ़कर झूठ बोलता और
मार-काट मचाता है।

11:4 *या "कृपा की डोरी।" यानी उस डोरी की तरह जो एक माँ या पिता इस्तेमाल करता है। #शा., "जबड़ों।" **11:7** *यानी ऊँचे दर्जे की उपासना की तरफ।

12:1 *शा., "एप्रैम हवा खा रहा है।"

अध्य. 11
1 1रा 12:32, 33; हो 13:1, 2
2 व्य 8:2
3 व्य 1:31; व्य 33:27; यश 46:3
4 यश 63:9
5 2रा 17:3
6 2रा 17:13, 14; आम 4:6
7 लैव 26:31
8 यश 31:1
9 भज 78:57, 58; यिर्म 3:6
10 हो 6:4
11 उत 10:19; व्य 29:22, 23

दूसरा कॉल.
1 व्य 32:36; यिर्म 31:20
2 यिर्म 30:11
3 योए 3:16
4 जक 8:7
5 यश 11:11, 12; यश 60:8, 9; जक 10:10
6 यिर्म 23:6; यहे 28:25, 26; यहे 37:21; आम 9:14
7 मी 6:12
8 2रा 18:1, 6; 2इत 29:1, 2; हो 4:15

वे अश्शूर के साथ एक करार करते
हैं[1] और मिस्र के पास तेल ले
जाते हैं।[2]
2 यहोवा ने यहूदा पर मुकदमा
किया है,[3]
वह याकूब से उसके कामों का
हिसाब माँगेगा,
उसे उसके किए की सज़ा देगा।[4]
3 कोख में उसने अपने भाई की एड़ी
पकड़ ली थी,[5]
वह पूरा ज़ोर लगाकर परमेश्वर से
लड़ा।[6]
4 वह स्वर्गदूत से लड़ता रहा और
उससे जीत गया।
उसकी कृपा पाने के लिए उसने रो-
रोकर बिनती की।"[7]
परमेश्वर ने उसे बेतेल में पाया
और वहाँ परमेश्वर ने हमसे
बात की।[8]
5 यहोवा सेनाओं का परमेश्वर है,[9]
यहोवा नाम से उसे याद किया
जाता है।[10]
6 "इसलिए अपने परमेश्वर के पास
लौट जा,[11]
अटल प्यार ज़ाहिर करता रह,
न्याय करता रह[12]
और हमेशा अपने परमेश्वर पर
आशा रख।
7 मगर लेन-देन करनेवाले* के हाथ
में छल का तराज़ू है,
उसे धोखाधड़ी करना बहुत
पसंद है।[13]
8 एप्रैम कहता रहता है, 'हाँ, मैं
दौलतमंद हो गया हूँ,[14]
मुझे खज़ाना मिल गया है।[15]
मेरी सारी मेहनत में वे कोई दोष या
पाप नहीं पा सकते।'
9 मगर मैं यहोवा तब से तेरा पर-
मेश्वर हूँ जब इसराएल मिस्र में
ही था।*[1]
मैं तुझे दोबारा तंबुओं में बसाऊँगा,
जैसे तय समय# के दिनों में हुआ
करता है।
10 मैंने भविष्यवक्ताओं से बात की,[2]
उन्हें दर्शन-पर-दर्शन दिए,
उनके ज़रिए मिसालें बतायीं।
11 गिलाद में धोखा* और झूठ पाया
गया।[3]
गिलगाल में उन्होंने बैलों की
बलि की,[4]
उनकी वेदियाँ पत्थरों के उस
ढेर जैसी हैं जो खेत के कूँड़ों में
होता है।[5]
12 याकूब अराम* के इलाके# में भाग
गया,[6]
इसराएल[7] ने वहाँ पत्नी पाने के
लिए मज़दूरी की,[8]
भेड़ों की रखवाली की।[9]
13 यहोवा ने एक भविष्यवक्ता के
ज़रिए इसराएल को मिस्र से
निकाला,[10]
एक भविष्यवक्ता के ज़रिए उसकी
हिफाज़त की।[11]
14 एप्रैम ने परमेश्वर को बहुत गुस्सा
दिलाया,[12]
उस पर खून का दोष बना हुआ है,
उसने अपने प्रभु का अपमान

अध्य. 12
1 2रा 15:19; हो 8:9
2 2रा 17:4
3 2रा 17:19; यिर्म 2:35; हो 4:1; मी 6:2
4 यश 3:11
5 उत 25:26
6 उत 32:28
7 उत 32:24-26
8 उत 28:13, 19
9 उत 28:16; उत 32:30
10 निर्ग 3:15
11 यश 31:6; हो 14:1; योए 2:12, 13
12 व्य 16:20; मी 6:8
13 आम 8:5, 6; मी 2:1, 2
14 प्रक 3:17
15 व्य 8:17-19

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:2; हो 13:4
2 1रा 17:1; 2रा 17:13; आम 7:14, 15
3 हो 6:8
4 हो 9:15; आम 4:4
5 2रा 17:9, 10; हो 8:11; हो 10:1
6 उत 28:5; व्य 26:5
7 उत 32:28
8 उत 29:18
9 उत 31:38
10 निर्ग 12:50, 51; भज 77:20
11 यह 24:17; 1शम 12:8
12 2रा 17:9-11; यहे 23:4, 5

12:7 *या "सौदागर।"

12:9 *या "मिस्र से तेरा परमेश्वर हूँ।" #या शायद, "त्योहार।" **12:11** *या "जादू-टोने की बातें; रहस्यमयी बातें।" **12:12** *या "सीरिया।" #शा., "मैदान।"

किया है, प्रभु उसे इसका सिला
देगा।”[1]

13 “जब एप्रैम बोलता तो लोग
काँप उठते थे,
वह इसराएल में सबसे बड़ा था।[2]
मगर वह बाल की पूजा करके दोषी
बन गया[3] और मर गया।
2 अब वे और भी पाप करते हैं,
अपनी चाँदी ढालकर मूरतें
बनाते हैं,[4]
उनके कारीगर हुनरमंदी से मूरतें
बनाते हैं।
वे कहते हैं, ‘बलिदान चढ़ानेवाले
आकर बछड़ों को चूमें।’[5]
3 इसलिए वे सुबह के बादल की तरह
और ओस की तरह बन जाएँगे जो
जल्द ही गायब हो जाती है,
भूसी की तरह बन जाएँगे
जिसे आँधी खलिहान से उड़ा ले
जाती है,
धुएँ की तरह बन जाएँगे जो धुँआरे
से निकल जाता है।
4 मगर मैं यहोवा तब से तेरा पर-
मेश्वर हूँ जब इसराएल मिस्र में
ही था,*[6]
तू मुझे छोड़ किसी और परमेश्वर
को नहीं जानता था,
मेरे सिवा तेरा कोई और उद्धारकर्ता
नहीं है।[7]
5 मैंने तुझे तब देखा जब तू वीराने में
था,[8] सूखे इलाके में था।
6 वे अपने चरागाहों से संतुष्ट
हो गए,[9]
संतुष्ट होने पर उनका मन घमंड से
भर गया
और वे मुझे भूल गए।[10]
7 मैं उनके लिए जवान शेर जैसा बन
जाऊँगा,[1]
एक चीते जैसा जो रास्ते में घात
लगाए रहता है।
8 मैं ऐसी रीछनी की तरह उन पर टूट
पड़ूँगा जिसके बच्चे खो गए हैं,
मैं उनकी छाती* चीर दूँगा।
एक शेर की तरह उन्हें वहीं खा
जाऊँगा,
मैदान का एक जंगली जानवर
उनकी बोटी-बोटी कर देगा।
9 हे इसराएल, वह तुझे नाश कर
देगा,
क्योंकि तू मेरे खिलाफ हो गया है,
अपने मददगार के खिलाफ।
10 कहाँ गया तेरा राजा जो तुझे सभी
शहरों में बचाता?[2]
कहाँ गए तेरे शासक?*
उनके बारे में तूने कहा था,
‘मुझे एक राजा और
हाकिम दे।’[3]
11 मैंने गुस्से से भरकर तुझे एक राजा
दिया[4]
और अब जलजलाहट में आकर
उसे ले लूँगा।[5]
12 एप्रैम के गुनाहों की गठरी बाँधी
गयी है,*
उसका पाप सँभालकर रखा
गया है।
13 उसे बच्चा जनने का सा दर्द उठेगा।
मगर वह नासमझ बच्चा है,
पैदा होने का समय आ गया
है मगर वह बाहर नहीं आना
चाहता।

13:4 *या “मिस्र से तेरा परमेश्वर हूँ।”

13:8 *शा., “उनके दिल की झिल्ली।” 13:10 *शा., “न्यायी।” 13:12 *या “गुनाह सँभालकर रखे गए हैं।”

अध्य. 12
1 व्य 28:37

अध्य. 13
2 यह 17:17
3 2रा 17:16; हो 11:2
4 हो 2:8
5 1रा 12:26, 28; 1रा 19:18
6 निर्ग 20:2; हो 12:9
7 यश 43:11; यश 45:21, 22
8 व्य 2:7; व्य 32:9, 10
9 नहे 9:25
10 व्य 6:10-12; व्य 8:12-14; व्य 32:15, 18; यश 17:10

दूसरा कॉल.
1 हो 5:14
2 1शम 8:19, 20
3 1शम 8:4, 5
4 1शम 8:7; 1शम 12:13
5 1शम 12:25; 2रा 17:4; यिर्म 52:11

14 मैं उन्हें कब्र* की गिरफ्त से
छुड़ाऊँगा,
मौत के चंगुल से छुड़ाकर उन्हें
वापस लाऊँगा।[1]
हे मौत, तेरा डंक कहाँ है?[2]
हे कब्र, तेरी नाश करने की शक्ति
कहाँ गयी?[3]
मैं तुझ पर बिलकुल दया नहीं
करूँगा।
15 चाहे वह नरकटों के बीच खूब बढ़े,
फिर भी पूरब से हवा चलेगी,
यहोवा की तरफ से हवा चलेगी,
यह रेगिस्तान से चलेगी, उसका
कुआँ और सोता सुखा देगी।
वह आकर उसकी सब अनमोल
चीज़ों का खज़ाना लूट लेगा।[4]
16 सामरिया को दोषी ठहराया जाएगा[5]
क्योंकि उसने अपने परमेश्वर से
बगावत की है।[6]
वे तलवार से मारे जाएँगे,[7]
उनके बच्चों को पटक-पटककर
मार डाला जाएगा
और उनकी गर्भवती औरतों का पेट
चीर दिया जाएगा।"

14 "हे इसराएल, अपने परमेश्वर
यहोवा के पास लौट आ,[8]
क्योंकि तू अपने गुनाह की वजह से
ठोकर खाकर गिर गया है।
2 यहोवा के पास लौट आ और
उससे कह,
'हमारे गुनाह माफ कर दे[9]
और जो अच्छा है वह हमसे
स्वीकार कर
और हम अपने होंठों से तुझे तारीफ
के बोल अर्पित करेंगे,[10] जैसे हम
बैलों का बलिदान चढ़ाते हैं।

13:14 *या "शीओल।" शब्दावली देखें।

अध्य. 13
1 यश 25:8
यश 26:19
2 1कुर 15:55
3 प्रक 20:13, 14
4 2रा 17:20
5 2रा 17:18
आम 3:9, 10
6 यहे 20:21
7 यश 7:8

अध्य. 14
8 2इत 30:6
यश 55:6, 7
हो 12:6
योए 2:12, 13
9 मी 7:18
10 इब्र 13:15

दूसरा कॉल.
1 हो 5:13
2 यश 31:1
3 व्य 10:17, 18
4 भज 103:3
यश 57:18
5 सप 3:17
6 यश 12:1
7 जक 8:12
8 हो 14:3
9 यिर्म 31:18

3 अश्शूर हमें नहीं बचाएगा।[1]
हम घोड़ों पर सवार नहीं होंगे[2]
और फिर कभी अपने हाथ की
बनायी चीज़ों से यह नहीं कहेंगे:
"हे हमारे परमेश्वर!"
क्योंकि तू ही है जो अनाथ* पर
दया करता है।'[3]
4 मैं उनकी विश्वासघात करने की
बीमारी दूर कर दूँगा।[4]
मैं अपनी मरज़ी से उन्हें प्यार
करूँगा,[5]
क्योंकि मेरा क्रोध उनसे दूर हो
गया है।[6]
5 मैं इसराएल के लिए ओस जैसा
बनूँगा,
वह सोसन के फूल की तरह
खिलेगा
और लबानोन के पेड़ों की तरह
अपनी जड़ें गहराई तक
जमाएगा।
6 उसकी टहनियाँ दूर-दूर तक
फैलेंगी,
उसकी शोभा जैतून के पेड़ जैसी
और खुशबू लबानोन के पेड़ जैसी
होगी।
7 वे फिर से उसकी छाया में रहेंगे।
वे अनाज उगाएँगे और अंगूर की
बेल की तरह फूलेंगे-फलेंगे।[7]
वह लबानोन की दाख-मदिरा की
तरह मशहूर होगा।*
8 एप्रैम कहेगा, 'मूरतों से अब मेरा
और क्या लेना-देना?'[8]
मैं उसकी सुनूँगा और उस पर नज़र
रखूँगा।[9]

14:3 *या "जिसके पिता की मौत हो गयी है।" 14:7 *शा., "उसका स्मारक लबा-नोन की दाख-मदिरा जैसा होगा।"

मैं तेरे लिए सनोवर के हरे-भरे पेड़
जैसा होऊँगा।
मुझसे ही तुझे फल मिला
करेगा।”
9 कौन बुद्धिमान है? वह इन बातों को
समझे।
कौन सूझ-बूझवाला है? वह इन
बातों को जाने।
क्योंकि यहोवा की राहें सीधी हैं,[1]
नेक लोग उन पर चलेंगे,
मगर अपराधी उन पर ठोकर
खाकर गिरेंगे।

दूसरा कॉल.

अध्य. 14
1 व्य 32:4

योएल

सारांश

1 कीड़ों का भयानक कहर (1-14)
“यहोवा का दिन करीब है” (15-20)
भविष्यवक्ता ने यहोवा को पुकारा (19, 20)

2 यहोवा का दिन; उसकी विशाल सेना (1-11)
यहोवा के पास लौटने का बुलावा (12-17)
‘अपने दिलों को फाड़ो’ (13)
अपने लोगों को यहोवा का जवाब (18-32)
‘मैं अपनी पवित्र शक्ति उँडेलूँगा’ (28)
आकाश और धरती पर अजूबे (30)
यहोवा का नाम पुकारनेवालों को
उद्धार (32)

3 यहोवा सब राष्ट्रों का न्याय करता है (1-17)
यहोशापात की घाटी (2, 12)
फैसले की घाटी (14)
यहोवा, इसराएल के लिए किला (16)
वह अपने लोगों को आशीष देता है (18-21)

1 यहोवा का यह संदेश पतूएल के बेटे
योएल* के पास पहुँचाः
2 “प्रधानो, सुनो, देश* के सभी
निवासियो, ध्यान से सुनो।
क्या ऐसी कोई बात तुम्हारे दिनों
में हुई है
या तुम्हारे पुरखों के ज़माने में हुई?[1]
3 इस बारे में अपने बेटों को बताओ,
तुम्हारे बेटे अपने बेटों को बताएँ
और उनके बेटे अगली पीढ़ी को
बताएँ।
4 जो कुछ कुतरनेवाली टिड्डी से
बचा उसे दलवाली टिड्डी ने खा
लिया,[1]
जो कुछ दलवाली टिड्डी से बचा
उसे बिन पंखोंवाली टिड्डी ने खा
लिया
और जो कुछ बिन पंखोंवाली टिड्डी
से बचा उसे भूखी टिड्डी ने खा
लिया।[2]
5 पियक्कड़ो,[3] जागो और रोओ!
दाख-मदिरा पीनेवालो, तुम सब
ज़ोर-ज़ोर से रोओ,
क्योंकि तुम्हारे मुँह से मीठी दाख-
मदिरा छिन गयी है।[4]

1:1 *मतलब “यहोवा परमेश्वर है।” 1:2 *या “धरती।”

अध्य. 1
1 योए 2:2

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 10:14, 15
2 योए 2:25
3 यश 28:1
आम 6:6
4 व्य 28:39

6 मेरे देश पर एक ताकतवर राष्ट्र ने
हमला कर दिया है जिसके लोग
बेशुमार हैं।[1]
उसके दाँत और जबड़े शेर के
जैसे हैं।[2]
7 उसने मेरी अंगूर की बेल तहस-
नहस कर दी है
और मेरे अंजीर के पेड़ का सिर्फ
ठूँठ छोड़ा है,
उनकी पूरी छाल छीलकर यहाँ-वहाँ
फेंक दी है,
उनकी टहनियाँ सफेद हो गयी हैं।
8 तुम ज़ोर-ज़ोर से रोओ,
जैसे एक कुँवारी* अपने दूल्हे# की
मौत पर टाट पहने रोती है,
9 यहोवा के भवन में अनाज का
चढ़ावा[3] और अर्घ[4] का आना
बंद हो गया है,
यहोवा की सेवा करनेवाले याजक
दुख मना रहे हैं।
10 खेत उजाड़ दिया गया है, ज़मीन
मातम मना रही है,[5]
अनाज नाश कर दिया गया है, नयी
दाख-मदिरा सूख गयी है, तेल
खत्म हो गया है।[6]
11 किसान मायूस हैं, अंगूरों के बागों
के माली ज़ोर से रो रहे हैं,
क्योंकि गेहूँ और जौ नष्ट हो गए हैं,
खेत की फसल बरबाद हो गयी है।
12 अंगूर की बेल सूख गयी है,
अंजीर का पेड़ मुरझा गया है।
अनार, खजूर, सेब, मैदान के सारे
पेड़ सूख गए हैं।[7]
लोगों की खुशी अपमान में बदल
गयी है।
13 याजको, टाट ओढ़कर मातम
मनाओ,*
वेदी के पास सेवा करनेवालो,[1]
ज़ोर-ज़ोर से रोओ।
मेरे परमेश्वर के सेवको, आओ
और टाट ओढ़कर रात बिताओ,
क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर के भवन
में अनाज का चढ़ावा[2] और अर्घ[3]
का आना रोक दिया गया है।
14 उपवास का ऐलान करो, एक पवित्र
सभा बुलाओ।[4]
अपने परमेश्वर यहोवा के भवन
में मुखियाओं और देश के सभी
निवासियों को इकट्ठा करो[5]
और मदद के लिए यहोवा को
पुकारो।
15 हाय! वह दिन आ रहा है,
यहोवा का दिन करीब है,[6]
वह दिन सर्वशक्तिमान की ओर से
नाश लाएगा!
16 हमसे खाना छीन लिया गया है,
हमारे परमेश्वर के भवन से खुशियाँ
और जश्न छीन लिए गए हैं।
17 बेलचे के नीचे पड़े बीज* सूख
गए हैं।
गोदाम सूने पड़े हैं।
भंडार ढा दिए गए हैं क्योंकि फसल
मारी गयी है।
18 मवेशी भी कराह रहे हैं!
गाय-बैल मारे-मारे फिर रहे हैं
क्योंकि कोई चरागाह नहीं है!
भेड़ों के झुंड सज़ा भुगत रहे हैं।
19 हे यहोवा, मैं तुझी को पुकारूँगा,[7]
क्योंकि आग ने वीराने के चरागाह
भस्म कर दिए हैं,

अध्य. 1
1 योए 2:2
2 प्रक 9:7, 8
3 लैव 2:1
4 निर्ग 29:40
5 लैव 26:20
6 व्य 28:39, 40
7 लैव 26:20

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 30:19, 20
2 लैव 2:1
3 निर्ग 29:40
4 योए 2:15
5 2इत 20:3, 13
6 योए 2:1
सप 1:7, 14
सप 2:2
2पत 3:10
प्रक 6:16, 17
7 मी 7:7
हब 3:18

1:8 *या "जवान औरत।" #या "पति।"

1:13 *या "छाती पीटो।" **1:17** *या शायद, "सूखे अंजीर।"

लपटों ने मैदान के सारे पेड़ जला
दिए हैं।
20 जंगली जानवर भी तुझ पर आस
लगाए हुए हैं,
क्योंकि नदियाँ सूख गयी हैं
और आग ने वीराने के चरागाह
भस्म कर दिए हैं।"

2 "सिय्योन में नरसिंगा फूँको![1]
मेरे पवित्र पहाड़ पर ऐलान करो
कि युद्ध होनेवाला है।
देश* के सभी निवासी थर-थर
काँपें,
क्योंकि यहोवा का दिन आ रहा है![2]
वह करीब है!
2 वह घोर अंधकार का दिन है,[3]
काले घने बादलों का दिन है,[4]
जैसे सुबह की रौशनी हो जो पहाड़ों
पर फैलती है।
एक ऐसा ताकतवर देश है जिसके
लोग बेशुमार हैं।[5]
ऐसा देश पहले कभी नहीं हुआ
और न फिर कभी होगा,
पीढ़ी-पीढ़ी तक नहीं होगा।
3 उसके आगे आग भस्म करती
जाती है,
पीछे ज्वाला जलाती जाती है।[6]
उसके आगे अदन के बाग जैसा
देश है,[7]
मगर पीछे उजड़ा हुआ वीराना है,
उससे कुछ नहीं बच सकता।
4 वे घोड़ों जैसे दिखते हैं,
युद्ध के घोड़ों जैसे दौड़ते हैं।[8]
5 जब वे पहाड़ों की चोटियों पर दौड़ते
हैं तो उनका शोर रथों की खड़-
खड़ाहट[9]
और भूसी के जलने की चटचटाहट
जैसा होता है।
वे ऐसे हैं मानो सूरमाओं का दल
मोरचा बाँधे हुए है।[1]
6 उनकी वजह से देश-देश के लोग
डर और चिंता में पड़ जाएँगे,
उन सबके चेहरे लाल हो जाएँगे।
7 वे योद्धाओं की तरह बढ़े चले
आते हैं,
सैनिकों की तरह दीवार लाँघ
जाते हैं,
हर कोई अपनी राह पर चलता है,
वह उससे नहीं हटता।
8 वे एक-दूसरे को धक्का नहीं देते,
हर कोई अपनी राह पर सीधे आगे
बढ़ता है।
चाहे उनमें से कुछ हथियारों की मार
से गिर जाएँ,
तो भी दूसरे अपनी पंक्ति नहीं
तोड़ते।
9 वे शहर में तेज़ी से घुसते हैं, शहर-
पनाह पर दौड़ते हैं।
घरों पर चढ़ते हैं और चोर की तरह
खिड़कियों से घुस जाते हैं।
10 उनके सामने ज़मीन थरथराती है,
आसमान डोलने लगता है।
सूरज और चाँद पर अँधेरा छा
जाता है[2] और तारे बुझ जाते हैं।
11 यहोवा अपनी सेना के सामने बुलंद
आवाज़ में हुक्म देगा[3] क्योंकि
उसकी सेना विशाल है।[4]
उसका वचन पूरा करनेवाला
शक्तिशाली है,
यहोवा का दिन बड़ा ही
भयानक है।[5]
उस दिन कौन टिक पाएगा?"[6]
12 यहोवा ऐलान करता है, "मगर अब
भी वक्त है, तुम लोग पूरे दिल से
मेरे पास लौट आओ,[7]

अध्य. 2
1 यहे 33:2, 3
आम 3:6
2 सप 1:14, 16
मला 4:1
3 आम 5:18, 20
4 सप 1:15
5 योए 1:6
6 योए 1:19
7 उत 2:8
8 प्रक 9:7
9 प्रक 9:9

दूसरा कॉल.
1 नीत 30:27
2 योए 2:31
मत 24:29
लूक 21:25
प्रक 9:2
3 योए 2:25
4 योए 2:2
5 यिर्म 30:7
आम 5:18
सप 1:15
6 प्रक 6:16, 17
7 यिर्म 4:1
हो 12:6
हो 14:1, 2

2:1 * या "धरती।"

उपवास करते[1] और रोते-बिलखते
मेरे पास आओ।
13 अपने कपड़ों को नहीं,[2] दिलों को
फाड़ो[3]
और अपने परमेश्‍वर यहोवा के
पास लौट आओ,
क्योंकि वह करुणा से भरा और
दयालु है, क्रोध करने में धीमा[4]
और अटल प्यार से भरपूर है,[5]
वह विपत्ति लाने की बात पर फिर
से गौर करेगा।*
14 क्या पता, वह अपने फैसले पर
फिर से सोचे,*
उसे बदल दे[6] और तुम्हें आशीष दे
ताकि तुम अपने परमेश्‍वर यहोवा
के लिए अनाज का चढ़ावा और
अर्घ चढ़ा सको!
15 सिय्योन में नरसिंगा फूँको!
उपवास का ऐलान करो, एक पवित्र
सभा बुलाओ।[7]
16 लोगों को इकट्ठा करो, मंडली को
पवित्र करो।[8]
बुज़ुर्गों* को इकट्ठा करो, बच्चों
और दूध-पीते बच्चों को इकट्ठा
करो।[9]
दूल्हा-दुल्हन अपने अंदर के कमरे
से बाहर आएँ।
17 मंदिर में बरामदे और वेदी
के बीच[10]
यहोवा की सेवा करनेवाले याजक
रो-रोकर कहें,
‘हे यहोवा, अपने लोगों पर
तरस खा,
राष्ट्रों को उन पर राज न करने दे

2:13 *या “पछतावा महसूस करेगा।” 2:14 *या “पछतावा महसूस करे।” 2:16 *या “मुखियाओं।”

अध्य. 2
1 1शम 7:6
2इत 20:3
2 2शम 1:11, 12
3 2रा 22:18, 19
भज 51:17
यश 57:15
4 यश 48:9
5 निर्ग 34:6
गि 14:18
नहे 9:17
भज 106:44, 45
मी 7:18, 19
6 2इत 30:8, 9
यिर्म 18:7, 8
सप 2:2, 3
7 योए 1:14
8 निर्ग 19:10
9 व्य 31:12
2इत 20:3, 13
10 2इत 8:12

दूसरा कॉल.
1 व्य 32:26, 27
भज 79:9, 10
मी 7:10
2 व्य 32:36
यश 60:10
विल 3:22
हो 11:8
3 यश 62:8, 9
आम 9:13
मला 3:10
4 यहे 34:29
यहे 36:15
5 यश 34:2, 3
6 यश 30:23
यश 51:3
7 यहे 34:27

ताकि तेरी विरासत मज़ाक न बन
जाए।
दूसरे देशों को यह कहने का मौका
क्यों मिले, “कहाँ गया उनका
परमेश्‍वर?”’[1]
18 तब यहोवा अपने देश के लिए जोश
दिखाएगा
और अपने लोगों पर करुणा
करेगा।[2]
19 यहोवा अपने लोगों को यह जवाब
देगा:
‘मैं तुम्हें अनाज, नयी दाख-मदिरा
और तेल देने जा रहा हूँ,
तुम पूरी तरह संतुष्ट हो जाओगे,[3]
मैं फिर कभी तुम्हें राष्ट्रों के बीच
बदनाम नहीं होने दूँगा।[4]
20 मैं उत्तर से आनेवाले को तुमसे दूर
भगा दूँगा,
उसे एक सूखे और उजाड़ देश में
खदेड़ दूँगा,
उसके सामने की सेना पूरब के
सागर* की तरफ होगी
और पीछे की सेना पश्‍चिम के
सागर# की तरफ।
उससे बदबू ऊपर उठेगी
उससे गंध ऊपर उठती रहेगी,[5]
क्योंकि परमेश्‍वर महान काम
करेगा।’
21 हे देश, मत डर।
खुशियाँ और जश्‍न मना क्योंकि
यहोवा महान काम करेगा।
22 मैदान के जानवरो, मत डरो
क्योंकि वीराने के चरागाह हरे-भरे
हो जाएँगे[6]
और पेड़ फलने लगेंगे,[7]

2:20 *यानी मृत सागर। #यानी भूमध्य सागर।

अंजीर का पेड़ और अंगूर की बेल,
दोनों पूरा-पूरा फल देंगे।[1]
23 सिय्योन के बेटो, अपने परमेश्वर यहोवा के कारण खुशियाँ और जश्न मनाओ,[2]
वह तुम्हें सही मात्रा में पतझड़ की बारिश देगा,
तुम पर खूब पानी बरसाएगा,
पहले की तरह तुम्हें पतझड़ और वसंत की बारिश देगा।[3]
24 खलिहानों में अनाज का ढेर लग जाएगा,
हौद नयी दाख-मदिरा और तेल से उमड़ते रहेंगे।[4]
25 जितने साल मेरी भेजी हुई विशाल सेना ने,
दलवाली टिड्डी, बिन पंखोंवाली टिड्डी, भूखी टिड्डी और कुतरने-वाली टिड्डी ने नुकसान किया,[5]
उसकी मैं भरपाई कर दूँगा।
26 तुम बेशक जी-भरकर खाओगे[6]
और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की तारीफ करोगे,[7]
जिसने तुम्हारी खातिर अजूबे किए हैं,
मेरे लोगों को फिर कभी शर्मिंदा नहीं किया जाएगा।[8]
27 और तुम्हें जानना होगा कि मैं इस-राएल के बीच हूँ,[9]
मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ,[10]
मेरे सिवा कोई नहीं है!
मेरे लोगों को फिर कभी शर्मिंदा नहीं किया जाएगा।
28 इसके बाद मैं हर तरह के इंसान पर अपनी पवित्र शक्ति उँडेलूँगा[11]
और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्य-वाणी करेंगे,
तुम्हारे बुज़ुर्ग खास सपने देखेंगे,
तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।[1]
29 उन दिनों मैं अपने दास-दासियों पर भी
अपनी पवित्र शक्ति उँडेलूँगा।
30 मैं आकाश में और धरती पर अजूबे दिखाऊँगा,*
खून, आग और धुएँ का बादल।[2]
31 यहोवा के बड़े भयानक दिन के आने से पहले,
सूरज पर अँधेरा छा जाएगा
और चाँद खून जैसा लाल हो जाएगा।[3]
32 और जो कोई यहोवा का नाम पुकारता है वह उद्धार पाएगा,[4]
क्योंकि जैसे यहोवा ने कहा है,
सिय्योन पहाड़ पर और यरू-शलेम में वे लोग होंगे जो बच जाएँगे,[5]
वे लोग जिन्हें यहोवा बुलाता है।”

3 “क्योंकि देखो! उन दिनों और उस समय,
जब मैं यहूदा और यरूशलेम के लोगों को बँधुआई से वापस ले आऊँगा,[6]
2 तब मैं सारे राष्ट्रों को भी इकट्ठा करूँगा
और उन्हें यहोशापात* की घाटी में ले आऊँगा।
वहाँ मैं अपने लोगों और अपनी विरासत इसराएल की खातिर उनसे मुकदमा लड़ूँगा,[7]
क्योंकि उन्होंने मेरे लोगों को दूसरे राष्ट्रों में तितर-बितर कर दिया
और मेरे देश की ज़मीन आपस में बाँट ली।[8]

अध्य. 2
1 आम 9:14, जक 8:12
2 यश 12:6, जक 10:7
3 लैव 26:4, व्य 11:14
4 लैव 26:10, आम 9:13, मला 3:10
5 योए 1:4
6 लैव 26:5
7 व्य 26:10, 11
8 सप 3:11
9 भज 46:5
10 लैव 26:11, 12, यहे 37:26, 27
11 यश 32:15, यश 44:3, यहे 39:29

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 2:16-18
2 प्रेष 2:19, 20
3 सप 1:14, 15, मला 4:5, मत 24:29, मर 13:24, 25, लूक 21:25, प्रक 6:12
4 प्रेष 2:21, रोम 10:13
5 ओब 17

अध्य. 3
6 व्य 30:3, यिर्म 30:3, यहे 39:28, आम 9:14, सप 3:20
7 यहे 38:22, योए 3:12, सप 3:8, जक 14:3, प्रक 16:14, 16
8 यहे 35:10, 11, सप 2:8, 9

2:30 *या “चिन्ह दूँगा।” **3:2** *मतलब “यहोवा न्यायी है।”

3 उन्होंने चिट्ठियाँ डालकर मेरे लोगों
को आपस में बाँट लिया,[1]
वे वेश्‍याओं का किराया चुकाने के
लिए लड़के दे देते थे
और दाख-मदिरा के लिए लड़कियों
को बेच देते थे।
4 हे सोर और सीदोन, हे पलिश्‍त के
सभी प्रांतो,
तुमने मेरे साथ ऐसा करने की
हिम्मत कैसे की?
क्या तुम मुझसे किसी बात का
बदला ले रहे हो?
अगर तुम बदला ले रहे हो,
तो मैं फौरन तुम्हें अपनी करतूतों
का फल भुगतने पर मजबूर
करूँगा।[2]
5 तुम मेरा सोना-चाँदी ले गए,[3]
मेरा बढ़िया-से-बढ़िया खज़ाना
अपने मंदिरों में ले गए,
6 तुमने यहूदा और यरूशलेम के
लोगों को यूनानियों के हाथ बेच
दिया[4]
ताकि उन्हें उनके इलाके से दूर कर
दिया जाए।
7 इसलिए देखो, तुमने उन्हें जहाँ बेच
दिया था वहाँ से मैं उन्हें वापस ले
आऊँगा,[5]
तुम्हें अपनी करतूतों का फल
भुगतने पर मजबूर करूँगा।
8 मैं तुम्हारे बेटे-बेटियों को यहूदा के
लोगों के हाथ बेच दूँगा[6]
और वे उन्हें दूर देश शीबा के लोगों
के हाथ बेच देंगे,
क्योंकि खुद यहोवा ने ऐसा कहा है।
9 राष्ट्रों के बीच ऐलान करो,[7]
‘युद्ध की तैयारी करो! सूरमाओं को
उभारो!
सारे सैनिक आगे बढ़ें और
हमला करें![1]
10 अपने हल के फाल पीटकर तलवारें
बनाओ और अपनी दरातियों को
पीटकर भाले* बनाओ।
कमज़ोर कहे, “मैं बड़ा
ताकतवर हूँ।”
11 आस-पास के सब राष्ट्रो,
आकर इकट्ठा हो जाओ,
मदद करो!’”[2]
हे यहोवा, अपने योद्धाओं को नीचे
उस जगह ले आ।
12 “राष्ट्र उभारे जाएँ और यहोशापात
की घाटी में जाएँ,
क्योंकि मैं वहाँ बैठूँगा ताकि
आस-पास के सभी राष्ट्रों का
न्याय करूँ।[3]
13 हँसिया चलाओ, फसल पक
चुकी है।
नीचे आकर रौंदो, अंगूर रौंदने का
हौद भर गया है।[4]
रस-कुंड उमड़ रहे हैं क्योंकि उनकी
बुराई बहुत बढ़ गयी है।
14 फैसले की घाटी में भीड़-की-भीड़
जमा है,
क्योंकि फैसले की घाटी में यहोवा
का दिन करीब है।[5]
15 सूरज और चाँद पर अँधेरा छा
जाएगा
और तारे अपनी चमक खो बैठेंगे।
16 यहोवा सिय्योन से गरजेगा,
यरूशलेम से बुलंद आवाज़ में
बोलेगा।
आसमान और धरती डोलने लगेंगे,
मगर यहोवा अपने लोगों के लिए
पनाह होगा,[6]

अध्य. 3
1 ओब 11
2 यश 23:12; यिर्म 47:4; यहे 25:15-17; आम 1:9, 10; जक 9:1, 2
3 2इत 21:16, 17
4 व्य 28:32; यहे 27:8, 13
5 यश 11:11, 12; यश 43:5, 6; यश 49:12; यिर्म 23:7, 8; यहे 34:12
6 ओब 19, 20
7 यश 34:1, 2

दूसरा कॉल.
1 यहे 38:7
2 यहे 38:9; सप 3:8; प्रक 16:14
3 भज 76:8, 9; योए 3:2
4 यश 63:3; प्रक 14:18-20
5 यश 34:2; सप 1:14
6 भज 50:15

3:10 * या “बरछियाँ।”

इसराएल के लोगों के लिए किला
होगा।
17 और तुम्हें जानना होगा कि मैं
यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जो
अपने पवित्र पहाड़ सिय्योन पर
निवास करता है।[1]
यरूशलेम नगरी एक पवित्र जगह
बन जाएगी,[2]
अजनबी* फिर कभी वहाँ से नहीं
गुज़रेंगे।[3]
18 उस दिन पहाड़ों से मीठी दाख-
मदिरा टपकेगी,[4]
पहाड़ियों पर दूध बहेगा,
यहूदा की सारी नदियों में पानी
उमड़ने लगेगा।
यहोवा के भवन से एक सोता
फूटेगा,[1]
बबूल के पेड़ों की घाटी को सींचेगा।
19 मगर मिस्र उजड़ जाएगा,[2]
एदोम उजड़ा हुआ वीराना हो
जाएगा,[3]
क्योंकि उन्होंने यहूदा के लोगों को
सताया,[4]
उनके देश में बेगुनाहों का खून
बहाया।[5]
20 मगर यहूदा हमेशा आबाद रहेगा,
यरूशलेम पीढ़ी-पीढ़ी तक आबाद
रहेगी।[6]
21 उन पर जो खून का दोष था, मैं उसे
मिटा दूँगा,[7]
मैं यहोवा सिय्योन पर निवास
करूँगा।"[8]

3:17 *या "परदेसी।"

अध्य. 3
1 जक 8:3
2 यश 4:3
3 यश 60:18
नहू 1:15
जक 14:21
4 आम 9:13
जक 9:17

दूसरा कॉल.
1 यहे 47:1
प्रक 22:1
2 यश 19:1
3 यिर्म 49:17
4 यहे 25:12, 13
5 आम 1:11
ओब 10
6 भज 48:8
यश 33:20
यश 60:15
आम 9:15
7 यश 4:4
यहे 36:25
मी 7:18, 19
8 यश 24:23
मी 4:7

आमोस

सारांश

1 आमोस को यहोवा से संदेश मिला (1, 2)
बार-बार बगावत करने की सज़ा (3-15)
सीरिया (3-5), पलिश्‍त (6-8), सोर (9, 10), एदोम (11, 12), अम्मोन (13-15)

2 बार-बार बगावत करने की सज़ा (1-16)
मोआब (1-3), यहूदा (4, 5), इसराएल (6-16)

3 परमेश्वर की तरफ से सज़ा सुनाना (1-8)
परमेश्वर राज़ की बात बताता है (7)
सामरिया के खिलाफ संदेश (9-15)

4 बाशान की गायों के खिलाफ संदेश (1-3)
यहोवा ने इसराएल की झूठी उपासना के बारे में ताना कसा (4, 5)
इसराएल ने शिक्षा कबूल नहीं की (6-13)
"अपने परमेश्वर के सामने आने के लिए तैयार हो जा" (12)
"वह इंसान को अपने विचार बताता है" (13)

5 इसराएल ऐसी कुँवारी की तरह है जो गिर गयी है (1-3)
परमेश्वर की खोज कर और जीता रह (4-17)
बुराई से नफरत, भलाई से प्यार (15)
यहोवा का दिन, अंधकार का दिन (18-27)
इसराएल के बलिदान ठुकराए गए (22)

6 धिक्कार है उन पर जो बेफिक्र हैं! (1-14)
हाथी-दाँत के पलंग; दाख-मदिरा के प्याले (4, 6)

1 यह आमोस* का संदेश है जो उसे
दर्शन में मिला था। आमोस तकोआ[1]
के चरवाहों में से एक था। उसने भूकंप[2]
से दो साल पहले इसराएल के बारे में यह
दर्शन देखा था। उस वक्‍त उज्जियाह,
यहूदा का राजा था[3] और योआश[4] का
बेटा यारोबाम, इसराएल का राजा था।[5]
2 आमोस ने कहा,

"यहोवा सिय्योन से गरजेगा,
यरूशलेम से बुलंद आवाज़ में
बोलेगा।
चरवाहों के चरागाह मातम मनाएँगे
और करमेल की चोटी सूख
जाएगी।"[6]

3 "यहोवा कहता है,
'"दमिश्‍क के बार-बार* बगावत#
करने की वजह से मैं सज़ा देने से
पीछे नहीं हटूँगा,
क्योंकि उन्होंने गिलाद को लोहे
के दाँवनेवाले औज़ारों से रौंद
डाला।[7]
4 इसलिए मैं हजाएल[8] के महल पर
आग भेजूँगा,
जो बेन-हदद की किलेबंद मीनारों
को भस्म कर देगी।[9]
5 मैं दमिश्‍क के फाटकों के बेड़े तोड़
डालूँगा,[1]
बिकत-आवेन के निवासियों को
और बेत-एदेन से राज करनेवाले*
को नाश कर दूँगा,
सीरिया के लोगों को बंदी बनाकर
कीर ले जाया जाएगा।"[2] यह
बात यहोवा ने कही है।'
6 यहोवा कहता है,
'"गाज़ा के बार-बार बगावत करने[3]
की वजह से मैं सज़ा देने से पीछे
नहीं हटूँगा,
क्योंकि उन्होंने बंदियों के एक पूरे
समूह[4] को एदोम के हवाले कर
दिया।
7 इसलिए मैं गाज़ा की शहरपनाह पर
आग भेजूँगा,[5]
जो उसकी किलेबंद मीनारों को
भस्म कर देगी।
8 मैं अशदोद के निवासियों को
और अश्‍कलोन से राज करनेवाले*
को नाश कर दूँगा,[6]
मैं एक्रोन पर अपना हाथ उठाऊँगा[7]
और बचे हुए पलिश्‍ती मिट
जाएँगे।"[8] यह बात सारे
जहान के मालिक यहोवा ने
कही है।'

1:1 *मतलब "बोझ होना" या "बोझ ढोना।" 1:3 *शा., "तीन बार बल्कि चार बार।" #या "अपराध।"

1:5, 8 *शा., "राजदंड पकड़नेवाले।"

अध्य. 1
1 2इत 11:5, 6
2 जक 14:5
3 2इत 26:1, 3, 4; यश 1:1
4 2रा 13:10, 11
5 2रा 14:23, 24; हो 1:1; आम 7:10
6 यश 33:9; नहू 1:4
7 2रा 8:12; 2रा 10:32, 33; 2रा 13:7
8 1रा 19:15
9 यिर्म 49:27

दूसरा कॉल.
1 यश 7:8; यश 8:4; यश 17:1
2 2रा 16:9
3 यहे 25:15
4 2इत 21:16, 17; 2इत 28:18; योए 3:4, 6
5 यिर्म 25:17, 20; यिर्म 47:1; जक 9:5
6 यश 20:1; यिर्म 47:5
7 सप 2:4
8 यश 14:29; यिर्म 47:4; यहे 25:16, 17; सप 2:5; जक 9:6

9 यहोवा कहता है,
‘सोर के बार-बार बगावत करने[1]
की वजह से मैं सज़ा देने से पीछे
नहीं हटूँगा,
क्योंकि उन्होंने बंदियों के एक पूरे
समूह को एदोम के हवाले कर
दिया
और उन्होंने भाइयों का करार याद
नहीं रखा।[2]
10 इसलिए मैं सोर की शहरपनाह पर
आग भेजूँगा,
जो उसकी किलेबंद मीनारों को
भस्म कर देगी।’[3]
11 यहोवा कहता है,
‘एदोम के बार-बार बगावत करने[4]
की वजह से मैं सज़ा देने से पीछे
नहीं हटूँगा,
क्योंकि उसने तलवार खींचकर
अपने ही भाई का पीछा किया[5]
और उसने दया करने से इनकार
कर दिया।
वह गुस्से में आकर उन्हें बेतहाशा
चीरता-फाड़ता है
और उनसे हमेशा भड़का
रहता है।[6]
12 इसलिए मैं तेमान पर आग भेजूँगा,[7]
जो बोसरा की किलेबंद मीनारों को
भस्म कर देगी।’[8]
13 यहोवा कहता है,
‘“अम्मोनियों के बार-बार बगावत
करने[9] की वजह से मैं सज़ा देने
से पीछे नहीं हटूँगा,
क्योंकि उन्होंने अपने इलाके की
सरहद बढ़ाने के लिए गिलाद की
गर्भवती औरतों का पेट चीर
दिया।[10]
14 इसलिए मैं रब्बाह की शहरपनाह
को आग लगा दूँगा,[11]
जो उसकी किलेबंद मीनारों को
भस्म कर देगी।
लड़ाई के दिन युद्ध की ललकार
सुनायी देगी,
तेज़ आँधी के दिन तूफान चलेगा।
15 उनका राजा अपने हाकिमों समेत
बँधुआई में चला जाएगा।”[1] यह
बात यहोवा ने कही है।’

2 यहोवा कहता है,
‘“मोआब के बार-बार बगावत*
करने[2] की वजह से मैं सज़ा देने
से पीछे नहीं हटूँगा,
क्योंकि उसने चूने के लिए एदोम के
राजा की हड्डियाँ जला दीं।
2 इसलिए मैं मोआब पर आग
भेजूँगा,
जो करियोत की किलेबंद मीनारों
को भस्म कर देगी,[3]
जब चारों तरफ शोरगुल होगा, युद्ध
की ललकार और नरसिंगे की
आवाज़ सुनायी देगी,
तब मोआब मर जाएगा।[4]
3 मैं उसके बीच से शासक* को
हटा दूँगा,
उसके साथ उसके सभी हाकिमों
को मार डालूँगा।”[5] यह बात
यहोवा ने कही है।’
4 यहोवा कहता है,
‘यहूदा के बार-बार बगावत करने[6]
की वजह से मैं सज़ा देने से पीछे
नहीं हटूँगा,
क्योंकि उन्होंने यहोवा का कानून*
ठुकरा दिया,
उसके नियमों का पालन नहीं
किया।[7]
इसके बजाय वे उन्हीं झूठी बातों

2:1 * या “अपराध।” 2:3 * शा., “न्यायी।”
2:4 * या “हिदायत।”

अध्य. 1
1 यहे 26:2
2 योए 3:4, 6
3 यहे 26:12
4 योए 3:19
5 यहे 25:12
6 2इत 28:17; ओब 10
7 उत 36:10, 11; ओब 9
8 यश 34:5, 6; यिर्म 49:13
9 यहे 25:3; सप 2:8
10 न्या 11:12, 13; यिर्म 49:1
11 यिर्म 49:2; यहे 25:5

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 27:2, 3; यिर्म 49:3

अध्य. 2
2 यिर्म 48:29, 30; यहे 25:8, 9; सप 2:8
3 यिर्म 48:21, 24
4 यश 15:1
5 यश 16:14; यिर्म 48:7
6 2रा 17:19; यिर्म 2:13
7 लैव 26:14-16; 2इत 36:14

से गुमराह हो गए जो उनके बाप-
दादे मानते थे।[1]
5 इसलिए मैं यहूदा पर आग भेजूँगा,
जो यरूशलेम की किलेबंद मीनारों
को भस्म कर देगी।’[2]
6 यहोवा कहता है,
‘इसराएल के बार-बार बगावत
करने[3] की वजह से मैं सज़ा देने
से पीछे नहीं हटूँगा,
क्योंकि वे चाँदी के लिए नेक
जन को
और एक जोड़ी जूती के लिए गरीब
को बेच देते हैं।[4]
7 वे मुसीबत के मारों का सिर धूल में
रौंद देते हैं,[5]
दीनों का रास्ता रोक देते हैं।[6]
बाप-बेटा, दोनों एक ही लड़की के
साथ संबंध रखते हैं
और मेरे पवित्र नाम का अपमान
करते हैं।
8 वे गिरवी के लिए कपड़े ज़ब्त करते
हैं[7] और हर वेदी[8] के सामने
बिछाकर पसर जाते हैं,
जुरमाने के पैसे से दाख-मदिरा
खरीदकर अपने देवताओं के
मंदिर में पीते हैं।’
9 ‘मगर मैंने ही उनके सामने से
एमोरी को नाश किया था,[9]
जो देवदारों जितना लंबा और बाँज
के पेड़ों जितना मज़बूत था,
मैंने ऊपर से उसके फल और
नीचे से उसकी जड़ें नाश
कर दी थीं।[10]
10 मैं तुम्हें मिस्र से निकाल लाया था,[11]
40 साल वीराने से चलाकर
लाया था[12]
ताकि तुम एमोरियों के देश पर
कब्ज़ा कर सको।
11 मैंने तुम्हारे कुछ बेटों को
भविष्यवक्ता
और कुछ जवानों को नाज़ीर ठह-
राया था।[1]
हे इसराएल के लोगो, क्या मैंने ऐसा
नहीं किया था?’ यहोवा का यह
ऐलान है।
12 ‘मगर तुम लोग नाज़ीरों को दाख-
मदिरा पिलाते रहे[2]
और तुमने भविष्यवक्ताओं को
आज्ञा दी, “तुम भविष्यवाणी मत
करो।”[3]
13 इसलिए मैं तुम्हें तुम्हारी जगह रौंद
दूँगा,
जैसे पूलों से लदी गाड़ी ज़मीन को
रौंद देती है।
14 तेज़ दौड़नेवाला कहीं भाग न
सकेगा,[4]
ताकतवर की ताकत किसी काम की
न होगी,
कोई भी सूरमा अपनी जान बचाकर
नहीं भाग सकेगा।
15 तीरंदाज़ अपनी जगह टिक न
सकेगा,
तेज़ दौड़नेवाला बच नहीं पाएगा,
घुड़सवार अपनी जान बचाकर नहीं
भाग सकेगा।
16 योद्धाओं में जो सबसे दिलेर है,
वह भी उस दिन नंगा
भाग जाएगा।’[5] यहोवा का यह
ऐलान है।”

3

“इसराएल के लोगो, सुनो मैं यहोवा
तुम्हें क्या संदेश दे रहा हूँ, इस पूरे
घराने को क्या संदेश दे रहा हूँ जिसे मैं
मिस्र से निकाल लाया था:
2 ‘मैं धरती के सब घरानों में से सिर्फ
तुम्हीं को जानता हूँ।[6]

अध्या. 2
1 यिर्म 9:14
2 1शम 12:15 1इत 28:9 2इत 36:17, 19 यिर्म 17:27 यिर्म 37:8 यिर्म 52:12-14 हो 8:14
3 व्य 28:45 2रा 17:6, 7 यहे 23:4, 5 हो 4:1, 2
4 आम 5:11 आम 8:4-6
5 आम 4:1
6 यश 10:1, 2 आम 5:12
7 निर्ग 22:26 व्य 24:12
8 हो 8:11 हो 10:1
9 गि 21:23-25 यह 24:8 भज 135:10, 11
10 व्य 2:31-33
11 निर्ग 12:51
12 गि 14:34 व्य 2:7

दूसरा कॉल.
1 गि 6:2 न्या 13:5 1शम 3:20 1रा 17:1 1रा 19:19
2 गि 6:3, 4
3 यश 30:10, 11 आम 7:12, 13
4 आम 9:1
5 व्य 28:25

अध्या. 3
6 निर्ग 19:5 व्य 7:6 भज 147:19, 20

इसलिए मैं तुम्हारे सभी गुनाहों का
हिसाब तुमसे माँगूँगा।[1]

3 अगर दो लोग आपस में मिलना तय
न करें, तो क्या वे साथ-साथ चल
सकेंगे?

4 अगर एक शेर को जंगल में शिकार
न मिले तो क्या वह गरजेगा?
अगर एक जवान शेर ने कुछ
पकड़ा न हो तो क्या वह अपनी
माँद में से गुर्राएगा?

5 अगर ज़मीन पर फंदा न बिछा हो*
तो क्या चिड़िया उसमें फँसेगी?
अगर फंदे में शिकार न फँसे तो
क्या वह ऊपर उछलेगा?

6 अगर शहर में नरसिंगा फूँका जाए
तो क्या लोग नहीं काँपेंगे?
अगर शहर में विपत्ति आए तो क्या
इसके पीछे यहोवा का हाथ नहीं?

7 सारे जहान का मालिक
यहोवा अपने सेवकों यानी
भविष्यवक्ताओं को
राज़ की बात बताए बिना कोई भी
काम नहीं करेगा।[2]

8 शेर गरजा है![3] कौन नहीं डरेगा?
सारे जहान के मालिक यहोवा ने
यह बात कही है! कौन भविष्य-
वाणी नहीं करेगा?'[4]

9 'अशदोद की किलेबंद मीनारों पर
और मिस्र की किलेबंद मीनारों पर
यह ऐलान करो:
"सामरिया के पहाड़ों के खिलाफ
इकट्ठा हो जाओ,[5]
देखो, उसके यहाँ कितनी खलबली
मची है,
कितनी धोखाधड़ी हो रही है![6]

10 क्योंकि वे सही काम करना नहीं
जानते,
वे मानो अपनी किलेबंद मीनारों में
हिंसा और विनाश जमा कर रहे
हों।" यहोवा का यह ऐलान है।'

11 इसलिए सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है,
'एक दुश्मन आकर देश को घेर
लेगा,[1]
वह तेरी ताकत छीन लेगा,
तेरी किलेबंद मीनारों को लूट लिया
जाएगा।'[2]

12 यहोवा कहता है,
'आज सामरिया में लोग शानदार
बिस्तरों और बढ़िया दीवानों*
पर बैठते हैं।
उनमें से सिर्फ कुछ लोग ही बचाए
जाएँगे,
जैसे चरवाहा शेर के मुँह से बस
दो पैर या कान का एक टुकड़ा
खींच पाता है।'[3]

13 सारे जहान का मालिक, सेनाओं का
परमेश्वर यहोवा ऐलान करता है,
'सुनो और याकूब के घराने को
चेतावनी दो।'*

14 'जिस दिन मैं इसराएल से उसकी
सारी बगावत* का हिसाब
माँगूँगा,[4]
उस दिन मैं बेतेल की वेदियों से भी
हिसाब माँगूँगा,[5]
वेदी के सींग काटकर ज़मीन पर
गिरा दिए जाएँगे।[6]

15 मैं जाड़े के मकान और गरमियों के
मकान, दोनों ढा दूँगा।'

3:5 *या शायद, "अगर ज़मीन पर बिछाए फंदे में चारा न हो।"

3:12 *या "दमिश्क के दीवानों।" **3:13** *या "के खिलाफ गवाही दो।" **3:14** *या "उसके अपराधों।"

अध्य. 3
1 दान 9:11, 12; हो 12:2; आम 4:12
2 उत 6:13; उत 18:17; भज 25:14; यश 42:9; दान 9:22; प्रक 1:1
3 आम 1:2
4 यिर्म 20:9; आम 7:14, 15; प्रेष 4:19, 20
5 2रा 17:22, 23
6 हो 7:1; आम 4:1

दूसरा कॉल.
1 2रा 17:6
2 हो 11:6; आम 6:8
3 यश 8:4; आम 6:4
4 हो 4:9
5 1रा 12:32, 33; हो 13:2
6 2रा 23:15, 16; 2इत 31:1; 2इत 34:1, 7; हो 10:2; मी 1:6

'हाथी-दाँत के घर नाश कर दिए
जाएँगे,[1]
बड़े-बड़े* घर नाश कर दिए
जाएँगे।'[2] यहोवा का यह
ऐलान है।"

4 "बाशान की गायो, यह संदेश सुनो,
तुम जो सामरिया के पहाड़ों
पर हो,[3]
तुम ऐसी औरतें हो जो दीन-दुखियों
को ठगती हैं,[4] गरीबों को कुचल
देती हैं,
तुम अपने पतियों* से कहती हो,
'शराब लाओ कि हम पीएँ!'
2 सारे जहान का मालिक यहोवा
अपनी पवित्रता की शपथ खाकर
कहता है,
'"देखो! तुम पर ऐसे दिन आनेवाले
हैं जब वह तुम्हें कसाई के काँटों
से उठाएगा
और बाकियों को मछली पकड़ने के
काँटों से उठाएगा।
3 तुम शहरपनाह की दरारों से
निकलोगी, हर किसी को अपने
सामने की दरार से निकलना
होगा
और तुम्हें हरमोन में फेंक
दिया जाएगा।" यहोवा का
यह ऐलान है।'
4 'बेतेल आओ और अपराध*
करो,[5]
गिलगाल आओ और अपराध-पर-
अपराध करो![6]
सुबह अपने बलिदान लाओ[7]
और तीसरे दिन दसवाँ हिस्सा
लाओ।[8]
5 धन्यवाद-बलि के लिए खमीरी रोटी
जलाओ,[1]
अपनी स्वेच्छा-बलियों का ढिंढोरा
पीटो!
क्योंकि इसराएल के लोगो, तुम्हें
यही तो पसंद है।' सारे जहान के
मालिक यहोवा का यह ऐलान है।
6 यहोवा ऐलान करता है, 'मैंने तुम्हारे
हर शहर में अकाल भेजा,*
तुम्हारे सभी घरों में रोटी की तंगी
फैलायी,[2]
फिर भी तुम मेरे पास नहीं लौटे।'[3]
7 'मैंने कटाई से पहले के तीन महीने
बारिश भी रोक दी,[4]
एक शहर पर पानी बरसाया, दूसरे
पर नहीं।
एक खेत पर बारिश होती,
तो दूसरा खेत बारिश न होने की
वजह से सूख जाता था।
8 दो-तीन शहरों के लोग लड़खड़ाते
हुए पानी के लिए एक शहर
जाते,[5]
मगर उनकी प्यास नहीं बुझती,
फिर भी तुम मेरे पास नहीं लौटे।'[6]
यहोवा का यह ऐलान है।
9 यहोवा ऐलान करता है, 'मैंने
तुम्हारी फसलों को झुलसन और
बीमारी से मारा।[7]
तुम अपने बगीचे और अंगूरों के
बाग बढ़ाते गए,
मगर टिड्डी तुम्हारे अंजीर और
जैतून के पेड़ों को चट कर
जाती थी,[8]
इसके बाद भी तुम मेरे पास नहीं
लौटे।'[9]
10 यहोवा ऐलान करता है, 'मैंने तुम्हारे

अध्य. 3
1 1रा 22:39
2 आम 6:11

अध्य. 4
3 आम 6:1
4 हो 4:1, 2; मी 2:2
5 1रा 12:28, 29; हो 4:13; आम 3:14
6 हो 4:15; हो 9:15; आम 5:5
7 हो 8:11, 13
8 व्य 14:28

दूसरा कॉल.
1 लैव 7:12
2 लैव 26:26; व्य 28:38; व्य 32:24; 1रा 18:2; 2रा 4:38
3 यिर्म 3:6, 7
4 व्य 28:23, 24
5 1रा 18:5
6 हो 7:10
7 व्य 28:22
8 व्य 28:40, 42
9 यश 42:24

3:15 *या शायद, "बहुत-से।" **4:1** *या "मालिकों।" **4:4** *या "बगावत।"

4:6 *शा., "मैंने तुम्हें साफ दाँत दिए।"

बीच ऐसी महामारी भेजी जैसी
मिस्र में आयी थी।[1]
मैंने तलवार से तुम्हारे जवानों को
मार डाला[2] और तुम्हारे घोड़े ले
लिए।[3]
मैंने तुम्हारी छावनी की बदबू
तुम्हारी नाकों में भर दी,[4]
फिर भी तुम मेरे पास नहीं लौटे।'
11 यहोवा ऐलान करता है, 'मैंने तुम्हारे
देश को नाश कर दिया,
जैसे मैंने सदोम और अमोरा को
नाश किया था।[5]
तुम ऐसी लकड़ी जैसे थे जिसे आग
से खींचकर निकाला गया हो,
फिर भी तुम मेरे पास नहीं लौटे।'[6]
12 इसलिए हे इसराएल, मैं तुझे फिर से
सज़ा दूँगा।
मैं तेरे साथ ऐसा ही करूँगा,
हे इसराएल, अपने परमेश्वर के
सामने आने के लिए तैयार
हो जा।
13 क्योंकि देख! उसी ने पहाड़ बनाए[7]
और हवा की सृष्टि की थी,[8]
वह इंसान को अपने विचार
बताता है,
भोर को अँधेरे में बदल देता है,[9]
धरती की ऊँची जगहों को रौंद
देता है,[10]
उसका नाम सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा है।"

5 "हे इसराएल के घराने, यह संदेश
सुन। यह एक शोकगीत है जो मैं तेरे
बारे में सुनाता हूँ:
2 'कुँवारी इसराएल गिर गयी है,
वह उठ नहीं सकती।
उसे अपनी ज़मीन पर पड़ा छोड़
दिया गया है,
उसे उठानेवाला कोई नहीं।'
3 क्योंकि सारे जहान का मालिक
यहोवा कहता है,
'जो शहर हज़ार सैनिक लेकर
जाएगा उसके सिर्फ सौ सैनिक
बचेंगे,
जो सौ लेकर जाएगा उसके सिर्फ
दस बचेंगे,
इसराएल के घराने के साथ यही
होगा।'[1]
4 यहोवा इसराएल के घराने से
कहता है,
'तू मेरी खोज कर और जीता रह।[2]
5 बेतेल की खोज मत कर,[3]
न गिलगाल जा,[4] न ही सरहद पार
करके बेरशेबा जा,[5]
क्योंकि गिलगाल ज़रूर बँधुआई में
जाएगा[6]
और बेतेल मिट्टी में मिल जाएगा।*
6 यहोवा की खोज कर और
जीता रह[7]
ताकि वह आग की तरह यूसुफ के
घराने पर न भड़क उठे,
बेतेल को ऐसे भस्म न कर दे
कि उस आग को बुझानेवाला
कोई न हो।
7 तुम न्याय को नागदौना* बना
देते हो,
नेकी को मिट्टी में मिला देते हो।[8]
8 जिस परमेश्वर ने किमा* और
केसिल तारामंडल# बनाए,[9]
जो घोर अंधकार को सुबह में बदल
देता है,

5:5 *या शायद, "जादू-टोने की चीज़ बन जाएगा।" **5:7** *या "कड़वा।" **5:8** *शायद वृष तारामंडल में तारों का समूह, कृत्तिका। #शायद मृगशिरा तारामंडल।

अध्य. 4
1 निर्ग 9:3; व्य 28:27, 60
2 लैव 26:23, 25; 2रा 8:12
3 2रा 13:7
4 व्य 28:26
5 उत 19:24, 25
6 हो 7:10
7 यश 40:12
8 यिर्म 10:13
9 निर्ग 10:22; यश 5:30; आम 8:9
10 मी 1:3

दूसरा कॉल.

अध्य. 5
1 व्य 4:27; व्य 28:62
2 2इत 15:2; यश 55:3, 6
3 1रा 12:28, 29; आम 3:14
4 हो 4:15; आम 4:4
5 आम 8:14
6 2रा 17:6; हो 9:15
7 यहे 33:11
8 आम 6:12
9 अय 9:9; अय 38:31-33

जो दिन को काली रात बना
देता है,[1]
जो समुंदर के पानी को बुलाता है
ताकि उसे धरती पर बरसाए[2]
—उसका नाम यहोवा है।
9 वह ताकतवर लोगों को अचानक
नाश कर देगा,
किलेबंद जगहों को तहस-नहस कर
देगा।
10 वे उनसे नफरत करते हैं जो शहर
के फाटक पर फटकार लगाते हैं,
वे उनसे घिन करते हैं जो सच
बोलते हैं।[3]
11 तुम गरीब से ज़बरदस्ती लगान
वसूलते हो,
कर के नाम पर उसका अनाज ले
लेते हो,[4]
इसलिए तुम गढ़े पत्थरों से जो घर
बनाकर रहते हो, उनमें और नहीं
रह पाओगे,[5]
तुमने जो बढ़िया अंगूरों के बाग
लगाए हैं, उनकी दाख-मदिरा
नहीं पी सकोगे।[6]
12 मैं जानता हूँ कि तुमने कितनी बार
बगावत की है,*
कितने बड़े-बड़े पाप किए हैं,
तुम नेक लोगों को सताते हो,
रिश्वत लेते हो,
शहर के फाटक पर गरीबों का हक
मारते हो।[7]
13 इसलिए अंदरूनी समझवाले उस
समय चुप रहेंगे,
क्योंकि वह विपत्ति का समय
होगा।[8]
14 भलाई की खोज करो, बुराई
की नहीं[9]
ताकि तुम जीते रहो।[1]
तब सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
तुम्हारे साथ रहेगा,
जैसे तुम कहते हो कि वह तुम्हारे
साथ है।[2]
15 बुराई से नफरत करो और भलाई से
प्यार करो,[3]
शहर के फाटक पर न्याय की
जीत हो।[4]
तब शायद सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा
यूसुफ के बचे हुओं पर कृपा
करे।'[5]
16 इसलिए यहोवा, सेनाओं का पर-
मेश्वर यहोवा कहता है,
'शहर के सभी चौकों पर रोना-
पीटना होगा,
गली-गली में हाय-हाय मचेगी,
वे शोक मनाने के लिए किसानों को
बुलाएँगे,
किराए पर मातम मनानेवालों को
बुलाएँगे।'
17 यहोवा कहता है, 'अंगूरों के हर
बाग में रोना-पीटना होगा,[6]
क्योंकि मैं तुम्हारे बीच से
गुज़रूँगा।'
18 'उन लोगों का बुरा होगा
जो यहोवा के दिन के लिए
तरसते हैं![7]
तुम क्या उम्मीद करते हो, यहोवा
के दिन क्या होगा?[8]
उस दिन अँधेरा होगा, उजाला
नहीं।[9]
19 उस दिन ऐसा होगा मानो
एक आदमी शेर से बचकर
भागता है और उसके सामने भालू
आ जाता है,

5:12 * या "कितने अपराध किए हैं।"

अध्या. 5
1 निर्ग 10:21, 22
2 अय 36:27, 28; सभ 1:7
3 1रा 18:17; 1रा 22:8
4 मी 2:2
5 यश 9:9, 10
6 व्य 28:30
7 यश 10:1, 2; आम 2:6, 7
8 मी 2:3
9 यश 1:16, 17; मी 6:8

दूसरा कॉल.
1 लैव 18:5; व्य 30:19, 20
2 2इत 15:2; मी 3:11
3 भज 34:14; भज 97:10; रोम 12:9
4 2इत 19:6; आम 5:24
5 यिर्म 31:7; जक 10:6
6 हो 9:2
7 यश 5:18, 19
8 आम 4:12
9 सप 1:14, 15

वह अपने घर में घुसकर दीवार पर
हाथ टेकता है और एक साँप उसे
डस लेता है।
20 क्या यहोवा के दिन, उजाले के
बजाय अँधेरा नहीं होगा?
तेज़ रौशनी के बजाय काली घटा
नहीं होगी?
21 मैं तुम्हारे त्योहारों से नफरत करता
हूँ, घिन करता हूँ,[1]
तुम्हारी पवित्र सभाओं की सुगंध से
खुश नहीं होता।
22 तुम चाहे मुझे पूरी होम-बलियाँ और
भेंट का चढ़ावा चढ़ाओ,
फिर भी मैं उनसे खुश नहीं
होऊँगा,[2]
तुम्हारे मोटे किए जानवरों
की शांति-बलियाँ मंज़ूर नहीं
करूँगा।[3]
23 अपने गीतों का शोर-शराबा बंद
करो,
मुझे तुम्हारे तारोंवाले बाजों की धुन
नहीं सुननी।[4]
24 तुम्हारे देश में न्याय की नदी
बहती रहे,[5]
नेकी की धारा हमेशा बहती रहे।
25 हे इसराएल के घराने, वीराने में उन
40 सालों के दौरान,
क्या तूने बलिदान और भेंट के
चढ़ावे मुझे दिए थे?[6]
26 अब तुम्हें अपने राजा सक्कूत और
कैवान* को ले जाना होगा,
अपनी बनायी मूरतों को, अपने
देवता के सितारे को ले जाना
होगा।
27 मैं तुम्हें दमिश्क से भी आगे बँधुआई में भेज दूँगा।'[1] यह बात
उसने कही है जिसका नाम
सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा है।"[2]

6 "सिय्योन के उन लोगों का बहुत
बुरा होगा
जिन्हें खुद पर बहुत भरोसा है,*
जो सोचते हैं कि सामरिया के पहाड़
पर वे सुरक्षित हैं,[3]
जो सबसे बड़े राष्ट्र के खास
लोग हैं,
जिनके पास इसराएल का घराना
आता है!
2 कलने नगर जाओ और देखो।
वहाँ से महानगर हमात[4] जाओ
और नीचे पलिश्तियों के गत शहर
जाओ।
क्या वे इन राज्यों* से बेहतर हैं?
क्या उनका इलाका तुम्हारे इलाके से
बड़ा है?
3 क्या तुमने विपत्ति के दिन को अपने
दिमाग से निकाल दिया है[5]
और क्या तुम खून-खराबे का राज*
ला रहे हो?[6]
4 वे हाथी-दाँत के पलंगों पर सोते
हैं[7] और दीवानों पर पैर फैलाए
रहते हैं,[8]
झुंड के मेढ़े और मोटे किए बछड़े*
खाते हैं,[9]
5 सुरमंडल* की धुन पर गीत
रचते हैं,[10]

5:26 *ये दोनों देवता शायद शनि गृह को दर्शाते थे, जिसे देवता मानकर पूजा जाता था।

6:1 *या "जो बेफिक्र रहते हैं।" 6:2 *ज़ाहिर है कि यहाँ यहूदा और इसराएल राज्यों की बात की गयी है। 6:3 *शा., "की गद्दी।" 6:4 *या "बैल।" 6:5 *या "तारोंवाले बाजे।"

अध्य. 5
1 नीत 15:8
2 भज 50:8 यश 66:3 हो 6:6
3 यश 1:11
4 आम 6:5 आम 8:10
5 मी 6:8
6 प्रेष 7:42, 43

दूसरा कॉल.
1 2रा 15:29 2रा 17:6
2 आम 4:13

अध्य. 6
3 आम 3:13, 15
4 गि 34:2, 8 2रा 14:28
5 यश 56:12
6 आम 5:12
7 1रा 22:39
8 आम 3:12
9 यश 22:13
10 यश 5:12

दाविद की तरह नए-नए साज़
बनाते हैं,[1]
6 बड़े-बड़े प्यालों में दाख-मदिरा
पीते हैं,[2]
खुद पर बढ़िया-से-बढ़िया तेल
मलते हैं।
मगर यूसुफ के विनाश की उन्हें
कोई फिक्र नहीं।[3]
7 इसलिए सबसे पहले उन्हें बंदी बना-
कर ले जाया जाएगा[4]
और रंगरलियों के दिन खत्म हो
जाएँगे।
8 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा ऐलान
करता है,
'सारे जहान के मालिक यहोवा ने
अपने जीवन की शपथ खाकर
कहा है,[5]
"मैं याकूब के घमंड से घिन
करता हूँ,[6]
उसकी किलेबंद मीनारों से नफरत
करता हूँ,[7]
शहर और उसमें जो भरा हुआ है,
सब मैं दुश्मनों के हवाले कर
दूँगा।[8]

9 अगर एक घर में दस आदमी बच
जाएँ तो वे भी मर जाएँगे। 10 एक
रिश्तेदार* आएगा ताकि उनकी लाशें
बाहर ले जाए और एक-एक करके उन्हें
जला दे। वह घर से उनकी हड्डियाँ निका-
लेगा और फिर घर के भीतरी कमरों में जो
कोई है उससे कहेगा, 'क्या तेरे साथ और
कोई है?' और वह कहेगा, 'कोई नहीं
है!' तब वह रिश्तेदार कहेगा, 'चुप रहो!
क्योंकि यह समय यहोवा का नाम लेने का
नहीं है।'"
11 क्योंकि यहोवा की ही आज्ञा पर[9]
बड़े घर को मलबे का ढेर बना दिया
जाएगा
और छोटे घर को खंडहर।[1]
12 क्या घोड़े चट्टान पर दौड़ते हैं?
क्या वहाँ कोई बैलों से जुताई
करेगा?
तुमने न्याय को ज़हरीला पौधा बना
दिया है,
नेकी के फल को नागदौना* बना
दिया है।[2]
13 तुम बेकार की बातों पर खुश
होते हो
और कहते हो, "क्या हम अपने दम
पर ताकतवर नहीं बने?"[3]
14 इसलिए हे इसराएल के घराने,
मैं तेरे खिलाफ एक राष्ट्र खड़ा
करूँगा[4]
और वह लेबो-हमात*[5] से अराबा
की घाटी# तक तुझ पर ज़ुल्म
ढाएगा।' सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा का यह ऐलान है।"

7 सारे जहान के मालिक यहोवा ने मुझे
एक दर्शन दिखाया। मैंने देखा कि
बाद की फसल* उगनी शुरू ही हुई थी
कि उसने टिड्डियों का एक दल भेजा! राजा
को देने के लिए घास की कटाई हो चुकी
थी और यह फसल उसके बाद बोयी गयी
थी। 2 जब टिड्डियों का दल देश की
पूरी हरियाली चट कर गया तो मैंने कहा,
"हे सारे जहान के मालिक यहोवा, दया
करके लोगों को माफ कर दे![6] नहीं तो
याकूब नहीं बच पाएगा क्योंकि वह कम-
ज़ोर है!"[7]
3 इसलिए यहोवा ने अपने फैसले पर

6:10 *शा., "उसके पिता का भाई।"

6:12 *या "कड़वा।" 6:14 *या "हमात के प्रवेश।" #शब्दावली देखें। 7:1 *यानी जनवरी और फरवरी की फसल।

अध्य. 6
1 2इत 7:6; 2इत 29:25, 26
2 यश 5:11
3 2रा 15:29; 2रा 17:6
4 व्य 28:41; आम 5:5
5 आम 4:2
6 यहे 33:28; हो 5:5
7 विल 2:5
8 मी 1:6
9 यश 10:5, 6

दूसरा कॉल.
1 आम 3:15
2 1रा 21:13; यश 59:13; हो 10:4; आम 5:7
3 व्य 8:17, 18; भज 75:5
4 व्य 28:49, 50; 2रा 15:29; 2रा 17:6; यश 7:20; यश 8:4; यश 10:5, 6; हो 10:6
5 गि 34:2, 8

अध्य. 7
6 यिर्म 14:7; दान 9:19
7 यश 37:4

दोबारा गौर किया।*[1] यहोवा ने कहा,
“ठीक है, अब ऐसा नहीं होगा।”
4 सारे जहान के मालिक यहोवा ने
मुझे यह दर्शन दिखाया: मैंने देखा कि सारे
जहान के मालिक यहोवा ने हुक्म दिया
कि आग बरसाकर सज़ा दी जाए! आग ने
विशाल गहरे सागर को सुखा दिया और
ज़मीन के एक हिस्से को भस्म कर
दिया। 5 तब मैंने कहा, “हे सारे जहान
के मालिक यहोवा, दया करके यह कहर
रोक दे![2] नहीं तो याकूब नहीं बच पाएगा
क्योंकि वह कमज़ोर है!”[3]
6 इसलिए यहोवा ने अपने फैसले
पर दोबारा गौर किया।[4] सारे जहान के
मालिक यहोवा ने कहा, “ठीक है, अब
यह भी नहीं होगा।”
7 परमेश्वर ने मुझे यह दर्शन
दिखाया: मैंने देखा कि यहोवा एक दीवार
पर खड़ा था जो साहुल लगाकर बनायी
गयी थी! उसके हाथ में एक साहुल
था। 8 यहोवा ने मुझसे पूछा, “आमोस,
तू क्या देखता है?” मैंने कहा, “एक
साहुल।” यहोवा ने कहा, “मैं अपनी प्रजा
इसराएल पर एक साहुल लगाने जा रहा
हूँ। अब मैं उन्हें और माफ नहीं करूँगा।[5]
9 इसहाक की ऊँची जगह[6] उजाड़ दी
जाएँगी और इसराएल के पवित्र-स्थान
तहस-नहस कर दिए जाएँगे।[7] मैं एक
तलवार लिए यारोबाम के घराने पर
हमला करूँगा।”[8]
10 बेतेल के याजक अमज्याह[9] ने
इसराएल के राजा यारोबाम[10] को यह
संदेश भेजा: “आमोस इसराएल के घराने
के बीच तेरे खिलाफ साज़िश कर रहा
है।[11] देश के लोग उसका संदेश अब और
नहीं सह सकते।[12] 11 क्योंकि आमोस
कहता है, ‘यारोबाम तलवार से मारा
जाएगा और इसराएल के लोगों को ज़रूर
बंदी बनाकर अपने देश से ले जाया
जाएगा।’”[1]
12 फिर अमज्याह ने आमोस से कहा,
“हे दर्शी, भाग यहाँ से। जा यहूदा
देश जा, वहाँ जाकर रोटी कमा*
और वहीं अपनी भविष्यवाणियाँ सुना।[2]
13 मगर यहाँ बेतेल में फिर कभी
भविष्यवाणी मत करना[3] क्योंकि यहाँ
राजा का पवित्र-स्थान[4] और एक राज्य
का मंदिर है।”
14 तब आमोस ने अमज्याह से कहा,
“मैं न भविष्यवक्ता था, न भविष्य-
वक्ता का बेटा। मैं तो एक चरवाहा था[5]
और गूलर के पेड़ों की देखभाल करता
था।* 15 मगर यहोवा ने मुझे झुंड
चराने का काम छोड़कर आने के लिए
कहा। यहोवा ने मुझसे कहा, ‘जाकर मेरी
प्रजा इसराएल को भविष्यवाणी सुना।’[6]
16 इसलिए अब यहोवा का संदेश सुन,
‘तू कहता है, “इसराएल के खिलाफ
भविष्यवाणी मत कर[7] और इसहाक के
घराने के खिलाफ प्रचार मत कर।”[8]
17 इसलिए यहोवा ने कहा है, “तेरी
पत्नी शहर में वेश्या बन जाएगी और तेरे
बेटे-बेटियाँ तलवार से मार डाले जाएँगे।
तेरी ज़मीन नापने की डोरी से नापकर
बाँट ली जाएगी और तू खुद एक अशुद्ध
देश में मरेगा और इसराएल के लोगों को
ज़रूर बंदी बनाकर अपने देश से ले जाया
जाएगा।”’”[9]

8 सारे जहान के मालिक यहोवा ने मुझे
एक दर्शन दिखाया। मैंने देखा कि
गरमियों के फलों से भरी एक टोकरी है!
2 उसने पूछा, “आमोस, तू क्या देखता

अध्य. 7
1 व्य 32:36 भज 106:44, 45 हो 11:8
2 निर्ग 32:11
3 यश 1:9 आम 7:2
4 निर्ग 32:14
5 आम 8:2
6 1रा 12:25, 31 1रा 13:33
7 हो 10:8 आम 5:5 आम 8:14
8 2रा 15:8, 10 हो 13:16
9 1रा 12:32
10 2रा 14:23
11 यिर्म 26:8, 9 आम 1:1
12 यिर्म 18:18

दूसरा कॉल.
1 आम 5:5 आम 6:7
2 यश 30:10
3 आम 2:12
4 1रा 12:29, 32 1रा 13:1
5 आम 1:1
6 यिर्म 1:7 यहे 2:3 2पत 1:21
7 यिर्म 11:21 आम 7:13
8 मी 2:6
9 लैव 26:33 2रा 17:6

7:3 *या “पछतावा महसूस किया।”

7:12 *शा., “रोटी खा।” 7:14 *या “गूलर के फलों में चीरा लगानेवाला था।”

है?” मैंने कहा, “गरमियों के फलों से भरी
एक टोकरी।” तब यहोवा ने मुझसे कहा,
“मेरी प्रजा इसराएल का अंत आ गया
है। अब मैं उन्हें और माफ नहीं करूँगा।[1]
3 सारे जहान का मालिक यहोवा ऐलान
करता है, ‘मंदिर से गीतों के बजाय रोने-
पीटने की आवाज़ें आएँगी।[2] हर कहीं
लाशें बिछी होंगी[3] जिससे सन्नाटा छा
जाएगा!’

4 तुम सब यह संदेश सुनो, जो गरीबों
को रौंदते हो,
देश के दीन जनों का नाश
करते हो,[4]
5 जो कहते हो, ‘नए चाँद का त्योहार
कब खत्म होगा[5] ताकि हम
अनाज बेच सकें?
सब्त का दिन[6] कब बीतेगा ताकि
हम अनाज बेच सकें?
फिर हम एपा* की नाप छोटी कर
सकेंगे,
शेकेल* का वज़न बढ़ा सकेंगे
और तराज़ू में दंडी मारेंगे।[7]
6 फिर हम चाँदी से ज़रूरतमंदों को
खरीद सकेंगे,
एक जोड़ी जूती के दाम पर गरीब
को खरीद सकेंगे[8]
और अनाज की फटकन बेच
सकेंगे।’
7 यहोवा याकूब की शान[9] की शपथ
खाकर कहता है,
‘मैं उनका एक भी काम नहीं
भूलूँगा।[10]
8 इसलिए देश काँपेगा,*
इसका हर निवासी मातम
मनाएगा।[11]
क्या यह देश नील नदी की तरह
उमड़ने नहीं लगेगा?
मिस्र की नील की तरह नहीं घटेगा-
बढ़ेगा?’[1]
9 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है,
‘उस दिन मैं भरी दोपहरी में सूरज
डुबा दूँगा
और दिन के उजाले में देश में
अँधेरा कर दूँगा।[2]
10 मैं तुम्हारे त्योहारों को मातम में
बदल दूँगा,[3]
तुम्हारे सब गीतों को शोकगीतों में
बदल दूँगा।
मैं सबकी कमर पर टाट ओढ़ाऊँगा
और सबका सिर मुँड़वाऊँगा,
मैं उनसे ऐसे मातम करवाऊँगा जैसे
कोई इकलौते बेटे की मौत पर
करता है
और उस दिन का अंत बहुत कड़वा
होगा।’
11 सारे जहान का मालिक यहोवा
ऐलान करता है,
‘देखो! वे दिन आ रहे हैं,
जब मैं देश में अकाल भेजूँगा,
रोटी और पानी के लिए नहीं
बल्कि यहोवा के वचन सुनने
के लिए लोग भूखे-प्यासे रह
जाएँगे।[4]
12 वे लड़खड़ाते हुए एक सागर से
दूसरे सागर जाएँगे,
उत्तर से पूरब जाएँगे।
यहोवा के वचनों की खोज में
मारे-मारे फिरेंगे, मगर कहीं नहीं
पाएँगे।
13 उस दिन सुंदर कुँवारियाँ और
जवान आदमी

8:5 *अति. ख14 देखें। 8:8 *या “धरती
काँपेगी।”

अध्य. 8
1 आम 4:12
आम 7:8
2 हो 10:5
आम 5:23
3 आम 6:9, 10
4 आम 2:6, 7
5 गि 10:10
6 निर्ग 20:8
7 लैव 19:35, 36
हो 12:7
मी 6:10, 11
8 लैव 25:39
आम 2:6
9 व्य 33:26
भज 68:34
10 हो 8:13
11 हो 4:3

दूसरा कॉल.
1 आम 9:5
2 मी 3:6
3 हो 2:11
4 भज 74:9
यहे 7:26
मत 4:4

प्यास के मारे बेहोश हो जाएँगे।
14 जो सामरिया के पाप[1] की शपथ
खाकर कहते हैं,
“हे दान, तेरे देवता के जीवन की
शपथ!”[2]
और “बेरशेबा के रास्ते की
शपथ!”[3]
वे गिर जाएँगे और फिर कभी नहीं
उठेंगे।’”[4]

9 मैंने यहोवा को वेदी के ऊपर देखा[5]
और उसने कहा, “खंभे के सिरे को
मार और दहलीज़ें हिल जाएँगी। सिरों को
काट डाल और मैं नाश से बचनेवाले सभी
को तलवार से मार डालूँगा। कोई भी भाग
नहीं पाएगा, जो बचने की कोशिश करेगा
वह कामयाब नहीं होगा।[6]

2 अगर वे कब्र खोदकर उसमें जा
छिपें,
तो मैं हाथ बढ़ाकर उन्हें निकाल
लाऊँगा।
अगर वे ऊपर आसमानों में चले
जाएँ,
तो मैं उन्हें नीचे उतार लाऊँगा।
3 अगर वे करमेल की चोटी पर
जाकर छिप जाएँ,
तो मैं उन्हें ढूँढ़कर पकड़ लूँगा।[7]
अगर वे मेरी नज़रों से छिपने के
लिए समुंदर के तल में उतर
जाएँ,
तो मैं वहाँ साँप को उन्हें डसने का
हुक्म दूँगा।
4 अगर दुश्मन उन्हें बँधुआई में ले
जाएँ,
तो मैं वहाँ तलवार को हुक्म दूँगा
और वह उन्हें मार डालेगी।[8]
मैं उन पर नज़र रखूँगा, आशीष
देने के लिए नहीं, विपत्ति लाने के
लिए।[9]

अध्य. 8
1 हो 8:5
हो 10:5
2 1रा 12:28-30
3 आम 5:5
4 2रा 18:11
हो 13:16

अध्य. 9
5 यश 6:1
यहे 1:27, 28
6 आम 2:14
7 यिर्म 23:24
8 लैव 26:33
9 व्य 28:63, 65

दूसरा कॉल.
1 मी 1:4
2 हो 4:3
3 आम 8:8
4 अय 36:27, 28
भज 135:7
5 निर्ग 3:15
आम 4:13
आम 5:8
6 निर्ग 12:51
7 यिर्म 47:4
8 2रा 16:9
9 1रा 13:34
2रा 18:11
10 यिर्म 30:11
11 लैव 26:33
व्य 28:64

5 क्योंकि देश* को छूनेवाला सारे
जहान का मालिक और सेनाओं
का परमेश्वर यहोवा है,
इसलिए देश पिघल जाएगा[1] और
उसके सभी निवासी मातम
मनाएँगे,[2]
सारा देश नील नदी की तरह
उमड़ने लगेगा,
और मिस्र की नील की तरह घट
जाएगा।[3]
6 ‘जो आसमानों तक जानेवाली
सीढ़ियाँ बनाता है,
धरती पर अपनी इमारत खड़ी*
करता है,
जो समुंदर के पानी को बुलाता है
ताकि उसे धरती पर बरसाए[4]
—उसका नाम यहोवा है।’[5]
7 यहोवा ऐलान करता है, ‘इसराएल
के लोगो, क्या तुम मेरे लिए
कूशियों जैसे नहीं हो?
क्या मैं इसराएल को मिस्र से,[6]
पलिश्तियों को क्रेते से[7]
और सीरिया को कीर से नहीं
निकाल लाया था?’[8]
8 यहोवा ऐलान करता है, ‘देखो!
मैं सारे जहान का मालिक
यहोवा इस पापी राज्य को देख
रहा हूँ,
मैं धरती से इसका नामो-निशान
मिटा दूँगा।[9]
मगर मैं याकूब के घराने को पूरी
तरह नाश नहीं करूँगा।’[10]
9 ‘क्योंकि देखो! मैं हुक्म दे रहा हूँ
और मैं सब राष्ट्रों के बीच इसराएल
के घराने को हिलाऊँगा,[11]

9:5 *या “धरती।” **9:6** *या “अपना गुंबद खड़ा।”

जैसे कोई छलना हिलाता है
ताकि एक भी कंकड़ ज़मीन पर न
गिरे।
10 मेरे लोगों में से जितने भी पापी हैं,
वे सब तलवार से मारे जाएँगे,
वे सभी मारे जाएँगे जो कहते हैं,
"विपत्ति हम पर नहीं आएगी,
हमारे पास तक नहीं फटकेगी।"'
11 'उस दिन मैं दाविद का गिरा हुआ
छप्पर* खड़ा करूँगा,[1]
मैं दरारें# भर दूँगा,
जो खंडहर बन गया है उसे दोबारा
बनाऊँगा,
मैं उसे दोबारा बनाऊँगा और वह
मुद्दतों पहले जैसा हो जाएगा[2]
12 ताकि वे एदोम के बचे हुए हिस्से पर
अधिकार करें[3]
और उन सब राष्ट्रों पर भी, जो
मेरे नाम से पुकारे जाते हैं।' यह
यहोवा का ऐलान है, जो यह सब
कर रहा है।
13 यहोवा ऐलान करता है, 'देखो! वे
दिन आ रहे हैं,
कटाई करनेवाले का काम पूरा होने
से पहले जुताई करनेवाला आ
जाएगा,
अंगूर रौंदनेवाले से पहले बीज
बोनेवाला आ जाएगा,[1]
पहाड़ों से मीठी दाख-मदिरा
टपकेगी,[2]
सभी पहाड़ियों से इसकी धारा
बहेगी।[3]
14 मैं अपनी प्रजा इसराएल को इकट्ठा
करके बँधुआई से वापस ले
आऊँगा,[4]
वे उजाड़ पड़े हुए शहरों को
दोबारा बनाएँगे और उन्हें आबाद
करेंगे,[5]
वे अंगूरों के बाग लगाएँगे और
उनकी दाख-मदिरा पीएँगे,[6]
वे बगीचे लगाएँगे और उनका फल
खाएँगे।'[7]
15 तुम्हारा परमेश्वर यहोवा कहता
है, 'मैं उन्हें उनके देश में
लगाऊँगा,
मैंने उन्हें जो देश दिया है,
वहाँ से उन्हें फिर कभी नहीं उखाड़ा
जाएगा।'"[8]

9:11 *या "तंबू; झोपड़ी।" #या "उनकी दरारें।"

अध्य. 9
1 यश 9:6, 7; यश 16:5; यिर्म 23:5; यहे 37:24, 25; जक 12:8; लूक 1:31-33
2 2शम 7:11; प्रेष 15:16-18
3 गि 24:18; यश 11:14; ओब 18, 19

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:5; हो 2:22
2 योए 3:18
3 यश 35:1; यश 55:12
4 एज 3:1; यिर्म 30:3; यहे 39:25
5 यश 61:4; यहे 36:33
6 यश 65:21, 22; यहे 28:25, 26
7 यश 62:8, 9; मी 4:4
8 यश 60:21; यहे 34:27, 28; यहे 37:25

ओबद्याह

सारांश

घमंडी एदोम नीचा किया जाएगा (1-9)
याकूब पर एदोम के ज़ुल्म (10-14)
यहोवा का दिन सब राष्ट्रों पर आ पड़ेगा (15, 16)
याकूब का घराना बहाल होगा (17-21)
- याकूब, एदोम को भस्म कर देगा (18)
- राज-अधिकार यहोवा का हो जाएगा (21)

1 ओबद्याह* को मिला दर्शन।
उसने एदोम के बारे में सारे जहान
के मालिक यहोवा का यह संदेश
सुनायाः[1]
"हमने यहोवा से एक खबर सुनी है,
राष्ट्रों में एक दूत भेजा गया है जो
कहता है,
'आओ हम उस देश के खिलाफ
युद्ध की तैयारी करें।'"[2]
2 "देख! मैंने तुझे राष्ट्रों में छोटा कर
दिया है,
तुझे एकदम तुच्छ समझा जाएगा।[3]
3 हे चट्टान की दरारों में रहनेवाले,
तेरे गुस्ताख दिल ने तुझे धोखा
दिया है।[4]
हे ऊँचाइयों में बसनेवाले, तू मन में
कहता है,
'कौन मुझे नीचे गिराएगा?'
4 चाहे तू उकाब की तरह ऊँचाई पर
अपना घोंसला बना ले,*
चाहे तू तारों के बीच अपना घर
बना ले,
पर मैं तुझे वहाँ से नीचे गिरा
दूँगा।" यह यहोवा का ऐलान है।
5 "अगर रात में तेरे यहाँ चोर-लुटेरे
आ जाएँ,
तो क्या वे सिर्फ उतना माल नहीं
लूटेंगे जितना वे चाहते हैं?
या अगर अंगूर बटोरनेवाले तेरे
यहाँ आ जाएँ,
तो क्या वे बीननेवालों के लिए कुछ
अंगूर नहीं छोड़ जाएँगे?
(पर तुझे पूरी तरह बरबाद किया
जाएगा!)*[5]

6 देख, एसाव का चप्पा-चप्पा छाना
गया,
उसका छिपा खज़ाना ढूँढ़ निकाला
गया।
7 तेरे साथियों* ने तुझे धोखा दिया,
उन्होंने तुझे सीमा तक खदेड़ दिया।
जिनके साथ तेरा शांति का रिश्ता
था, वे तुझ पर हावी होते हैं।
जो तेरे साथ रोटी खाते हैं, वही तेरे
लिए जाल बिछाते हैं
और तुझे पता भी नहीं चलता।"
8 यहोवा ऐलान करता है,
"उस दिन मैं एदोम के बुद्धिमान
लोगों का नाश करूँगा,[1]
एसाव के पहाड़ी इलाके में पैनी
समझ रखनेवालों को मिटा दूँगा।
9 हे तेमान, तेरे योद्धा थर-थर
काँपेंगे,[2]
क्योंकि एसाव के पहाड़ी इलाके का
हर इंसान मार डाला जाएगा।[3]
10 तूने अपने भाई याकूब पर जो ज़ुल्म
किए हैं,[4]
उस कारण तुझे बहुत शर्मिंदा होना
पड़ेगा,[5]
तुझे हमेशा के लिए मिटा दिया
जाएगा।[6]
11 जिस दिन पराए लोग उसकी सेना
को बंदी बनाकर ले गए,[7]
उस दिन तू किनारे खड़ा तमाशा
देखता रहा।
जब परदेसी उसके शहर* में
घुसकर यरूशलेम पर चिट्ठियाँ
डालने लगे,[8]
तब तूने भी उनके जैसा काम
किया।

---

1 *मतलब "यहोवा का सेवक।" 4 *या शायद, "ऊँचा उड़े।" 5 *या शायद, "वे किस हद तक बरबाद करेंगे?"

7 *या "तेरे साथ करार करनेवालों।" 11 *शा., "फाटक।"

---

1 यश 21:11
यहे 25:12-14
योए 3:19
आम 1:11, 12
2 यिर्म 49:14-16
3 यिर्म 49:8
4 मला 1:4
5 व्य 24:21
यिर्म 49:9, 10

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 49:7
2 उत 36:10, 11
यिर्म 49:22
यहे 25:13
आम 1:12
3 यश 34:5, 6
4 उत 27:41, 42
गि 20:20, 21
भज 83:4-6
भज 137:7
योए 3:19
आम 1:11
5 यिर्म 49:13
6 मला 1:3, 4
7 2रा 24:10, 16
यिर्म 52:28
8 योए 3:3

12 तूने यह अच्छा नहीं किया,
अपने भाई की बरबादी के दिन,
उसकी बुरी हालत पर तूने
खुशियाँ मनायीं,[1]
जिस दिन यहूदा के लोगों का
नाश हुआ, उस दिन तूने जश्न
मनाया।[2]
जब उन पर मुसीबत टूटी तो तूने
बड़ी-बड़ी डींगें मारी।
13 जिस दिन मेरे लोगों पर विपत्ति
आयी, तू उनके शहर* में घुसा,[3]
उनकी बरबादी पर हँसा, खुश
हुआ,
विपत्ति के दिन तूने उनकी दौलत
पर हाथ डाला।[4]
14 चौराहे पर खड़े होकर तूने भागने-
वालों को मार डाला,[5]
विपत्ति के दिन ज़िंदा बचनेवालों को
दुश्मनों के हवाले कर दिया।[6]
15 यहोवा का वह दिन करीब है,
जब वह सब राष्ट्रों के खिलाफ
आएगा![7]
जैसा तूने दूसरों के साथ किया, वैसा
ही तेरे साथ किया जाएगा,[8]
तेरा किया तेरे ही सिर आ पड़ेगा।
16 मेरे पवित्र पर्वत पर जिस तरह तुम
लोग दाख-मदिरा पीते रहे,
उसी तरह सब राष्ट्र मेरा क्रोध पीते
रहेंगे।[9]
उन्हें मेरा क्रोध पीना पड़ेगा, वे उसे
गटक जाएँगे
और ऐसे हो जाएँगे मानो वे वजूद
में थे ही नहीं।
17 लेकिन सिय्योन पहाड़ पर वे लोग
रहेंगे जो ज़िंदा बच निकलेंगे[10]
और वह पवित्र ठहरेगा।[11]

13 *शा., "फाटक।"

याकूब का घराना अपनी
चीज़ों पर दोबारा अधिकार
कर लेगा।[1]
18 याकूब का घराना आग बन जाएगा
और यूसुफ का घराना लपटें।
एसाव का घराना घास-फूस बन
जाएगा,
जिसे वे जलाकर भस्म कर देंगे।
एसाव के घराने से कोई ज़िंदा नहीं
बचेगा,[2]
क्योंकि यह बात खुद यहोवा ने
कही है।
19 वे एसाव के पहाड़ी इलाके और
नेगेब पर,
पलिश्तियों के देश और शफे-
लाह पर अधिकार कर लेंगे।[3]
वे एप्रैम और सामरिया के मैदानों
पर कब्ज़ा कर लेंगे।[4]
और बिन्यामीन, गिलाद को अपने
अधिकार में कर लेगा।
20 सुरक्षा की ढलान*[5] से ले गए
बंदियों को,
हाँ, इसराएल के लोगों को वह
इलाका दिया जाएगा,
जो कनानियों के देश से लेकर सार-
पत[6] तक फैला है।
और यरूशलेम के बंदी जो सपा-
राद में थे, उन्हें नेगेब के
शहरों पर अधिकार दिया
जाएगा।[7]
21 उद्धार दिलानेवाले, सिय्योन पहाड़
पर जाएँगे
कि एसाव के पहाड़ी इलाके का
न्याय करें[8]
और राज-अधिकार यहोवा का हो
जाएगा।"[9]

20 *या "गढ़।"

1 मी 4:11
2 विल 4:21
3 जक 1:15
4 भज 137:7 यहे 25:12
5 आम 1:11
6 यिर्म 30:7
7 यिर्म 9:25, 26 यिर्म 25:32 योए 3:12, 14 मी 5:15
8 यहे 35:15
9 यिर्म 25:17 यिर्म 49:12
10 योए 2:32
11 यश 4:3 जक 8:3

दूसरा कॉल.
1 यश 14:2 आम 9:11, 12
2 यिर्म 49:17, 18 यहे 35:15
3 यश 11:14 आम 1:8 आम 9:11, 12
4 2रा 17:24 यिर्म 31:5, 6
5 भज 122:6, 7
6 1रा 17:9
7 यिर्म 13:19 यिर्म 33:13
8 भज 149:6, 7 यहे 35:11
9 भज 22:28 जक 14:9

योना

सारांश

1 योना ने यहोवा से दूर भागने की कोशिश की (1-3)
यहोवा एक भयंकर तूफान लाया (4-6)
योना मुसीबत की जड़ (7-13)
योना को तूफानी समुंदर में फेंका (14-16)
एक बड़ी मछली उसे निगल गयी (17)

2 मछली के पेट में योना की प्रार्थना (1-9)
मछली ने उसे ज़मीन पर उगल दिया (10)

3 योना परमेश्वर की आज्ञा मानकर नीनवे गया (1-4)
संदेश सुनकर नीनवे के लोगों ने पश्चाताप किया (5-9)
परमेश्वर ने नीनवे का नाश नहीं किया (10)

4 योना भड़क उठा; मरना चाहता है (1-3)
यहोवा ने योना को दया की सीख दी (4-11)
"क्या तेरा गुस्से से भड़कना सही है?" (4)
घीए की बेल से सबक (6-10)

1 यहोवा का यह संदेश अमित्तै के बेटे
योना[*][1] के पास पहुँचाः **2** "जा!
उस बड़े शहर नीनवे को जा[2] और उसे
सज़ा सुना। क्योंकि मैं उसकी दुष्टता को
अनदेखा नहीं कर सकता।"
3 लेकिन योना, यहोवा से दूर तर-
शीश की तरफ भागा। वह याफा तक
गया और वहाँ उसे एक जहाज़ मिला जो
तरशीश जा रहा था। वह किराया देकर
जहाज़ पर चढ़ गया और बाकी लोगों के
साथ तरशीश के लिए रवाना हुआ कि
यहोवा से दूर चला जाए।
4 तब यहोवा ने समुंदर में एक ज़बर-
दस्त आँधी चलायी। ऐसा भयंकर
तूफान उठा कि जहाज़ टूटने पर था।
5 नाविक बहुत डर गए और अपने-
अपने देवता को पुकारने लगे। जहाज़ को
हलका करने के लिए वे सामान उठा-उठा-
कर समुंदर में फेंकने लगे।[3] लेकिन योना
जहाज़ के निचले हिस्से में गहरी नींद
सोया हुआ था। **6** जहाज़ का कप्तान
योना के पास आया और कहने लगा,
"ऐसे वक्त में तू सो रहा है? उठ, अपने
देवता को पुकार! क्या पता सच्चा पर-
मेश्वर हमारी सुन ले और हम मिटने से
बच जाएँ।"[1]
7 फिर वे एक-दूसरे से कहने लगे,
"आओ, हम चिट्ठियाँ डालकर[2] पता
लगाएँ कि यह विपत्ति किसकी वजह से
आयी है।" उन्होंने चिट्ठियाँ डाली और
चिट्ठी योना के नाम निकली।[3] **8** वे
योना से पूछने लगे, "मेहरबानी करके
हमें बता कि इस विपत्ति के लिए कौन
ज़िम्मेदार है? तू क्या काम करता है?
कहाँ से आया है? तू किस देश का रहने-
वाला है और किस जाति से है?"
9 उसने कहा, "मैं एक इब्री हूँ। और
मैं स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा की उपासना
करता[*] हूँ, वही परमेश्वर जिसने समुंदर
और धरती को बनाया है।"
10 यह सुनकर वे आदमी और भी डर
गए और उन्होंने योना से पूछा, "तूने ऐसा
क्यों किया?" (नाविकों को पता चला
कि योना, यहोवा से दूर भाग रहा है।

अध्य. 1
1 2रा 14:25; लूक 11:29, 30
2 मत 12:41
3 प्रेष 27:18, 38

दूसरा कॉल.
1 यो 3:9
2 नीत 16:33; नीत 18:18
3 यह 7:14, 18; 1शम 14:42, 43

1:1 * मतलब "फाख्ता।"
1:9 * शा., "का डर मानता।"

यह बात खुद योना ने उन्हें बतायी थी।)
11 समुंदर में तूफान का कहर बढ़ता
ही जा रहा था। उन आदमियों ने योना
से पूछा, "बता, हम तेरे साथ क्या करें
कि समुंदर शांत हो जाए?" 12 योना ने
कहा, "मुझे उठाकर समुंदर में फेंक दो,
तब समुंदर शांत हो जाएगा। मैं जानता
हूँ, यह भयंकर तूफान मेरी वजह से
तुम पर आया है।" 13 फिर भी नाविक
ज़ोर-ज़ोर से चप्पू चलाने लगे कि किसी
तरह जहाज़ को किनारे लगा दें। मगर
वे कामयाब नहीं हुए क्योंकि तूफान और
ज़ोर पकड़ने लगा।

14 तब उन्होंने यहोवा को पुकारकर
कहा, "हे यहोवा, दया कर! इस आदमी
की वजह से हमारा नाश मत कर। न हमें
निर्दोष के खून का दोषी ठहरा क्योंकि हे
यहोवा, तू वही कर रहा है जो तू चाहता
है।" 15 तब उन्होंने योना को उठाकर
समुंदर में फेंक दिया और तूफान थम
गया, समुंदर शांत हो गया। 16 यह
देखकर उन आदमियों पर यहोवा का डर
छा गया[1] और उन्होंने यहोवा को बलि-
दान चढ़ाया और मन्नतें मानीं।

17 तब यहोवा ने एक बड़ी मछली
भेजी कि वह योना को निगल जाए। और
योना तीन दिन और तीन रात मछली के
पेट में रहा।[2]

2 फिर योना ने मछली के पेट में अपने
परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की।[3]
2 उसने कहा,

"मुसीबत में मैंने यहोवा से फरियाद
की और उसने मुझे जवाब
दिया।[4]
कब्र* की गहराइयों से मैंने मदद के
लिए तुझे पुकारा[5]
और तूने मेरी आवाज़ सुन ली।
3 जब तूने मुझे गहरे पानी में, खुले
समुंदर की गहराइयों में फेंका,
तब पानी की तरंगों ने मुझे घेर
लिया,[1]
तेरी ऊँची-ऊँची लहरें मुझे डुबाने
लगीं।[2]
4 मैंने कहा, 'तूने मुझे अपनी नज़रों
से दूर कर दिया है,
अब मैं फिर कभी तेरे पवित्र मंदिर
को नहीं देख सकूँगा।'
5 पानी ने मुझे घेर लिया और मेरी
जान पर बन आयी,[3]
मैं गहरे सागर में उतरता चला गया,
समुद्री पौधों में मेरा सिर उलझ
गया।
6 मैं पहाड़ों की जड़ तक पहुँच गया,
मेरे लिए पृथ्वी के फाटक हमेशा के
लिए बंद हो गए।
लेकिन हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तूने
मुझे उस गड्ढे से ज़िंदा बाहर
निकाला।[4]
7 जब मेरा दम निकलने पर था, तब
मैंने यहोवा को याद किया।[5]
मेरी प्रार्थना तेरे पास तेरे पवित्र
मंदिर में पहुँची।[6]
8 जो निकम्मी मूरतों को पूजते हैं, वे
उस हस्ती को ठुकरा देते हैं, जो
उनसे अटल प्यार करता है।*
9 लेकिन मैं तेरा धन्यवाद करूँगा
और तुझे बलिदान चढ़ाऊँगा,
जो मन्नत मैंने मानी है उसे पूरा
करूँगा।[7]
हे यहोवा, उद्धार करनेवाला तू
ही है।"[8]

2:2 *या "शीओल।" शब्दावली देखें।

2:8 *या शायद, "वे अपनी वफादारी से मुकर जाते हैं।"

अध्य. 1
1 दान 6:26, 27
2 मत 12:39, 40; मत 16:4; लूक 11:29, 30

अध्य. 2
3 भज 91:14, 15; मत 12:40
4 भज 120:1
5 भज 130:1, 2

दूसरा कॉल.
1 भज 69:1
2 भज 42:7
3 भज 69:1
4 भज 16:10; भज 30:3; यश 38:17; प्रेष 2:31
5 भज 142:2, 3; भज 143:4, 5
6 भज 18:6
7 भज 50:14
8 भज 3:8; यश 12:2

10 फिर यहोवा ने मछली को हुक्म
दिया और उसने योना को सूखी ज़मीन पर
उगल दिया।

3 यहोवा ने दूसरी बार योना से कहा,[1]
2 "जा! उस बड़े शहर नीनवे[2] को
जा और उसे वह संदेश सुना, जो मैं तुझे
बताता हूँ।"

3 योना ने यहोवा की आज्ञा मानी
और वह नीनवे[3] गया।[4] नीनवे बहुत बड़ा
शहर था,* इतना बड़ा कि पैदल उसका
चक्कर लगाने में तीन दिन लग जाते थे।
4 योना शहर में आया। वह पूरे एक
दिन पैदल चलकर यह ऐलान करता रहा,
"अब से 40 दिन बाद नीनवे तबाह हो
जाएगा।"

5 यह सुनकर नीनवे के लोगों ने पर-
मेश्वर पर विश्वास किया[5] और उपवास
का ऐलान किया। फिर छोटे से लेकर बड़े
तक, सब लोगों ने टाट ओढ़ा। 6 जब
नीनवे के राजा के पास संदेश पहुँचा, तो
वह अपनी राजगद्दी से उठा। उसने अपने
शाही कपड़े उतारे और टाट ओढ़कर
राख पर बैठ गया। 7 यही नहीं, उसने
पूरे शहर में यह ऐलान करवाया,

"राजा और उसके बड़े-बड़े अधि-
कारियों ने यह फरमान दिया है: आदमी
हो या जानवर, गाय-बैल हो या भेड़-
बकरी, कोई कुछ न खाए, पानी की एक
बूँद भी न पीए 8 और सब टाट ओढ़ें।
लोग गिड़गिड़ाकर परमेश्वर की दुहाई दें,
अपनी दुष्ट राहों से फिरें और दूसरों का
बुरा करना छोड़ दें। 9 क्या पता, सच्चा
परमेश्वर अपने फैसले पर दोबारा गौर
करे और अपनी जलजलाहट हम पर से
हटा ले कि हम मिट न जाएँ।"

3:3 *शा., "नीनवे परमेश्वर के लिए बहुत
बड़ा शहर था।"

अध्य. 3
1 यो 1:1, 2
2 उत 10:8, 11 नहू 1:1 सप 2:13
3 उत 10:8, 11
4 यो 2:9
5 निर्ग 9:20 मत 12:41 लूक 11:32

दूसरा कॉल.
1 लूक 11:32
2 यिर्म 18:7, 8 यहे 18:21-23 यो 4:2

अध्य. 4
3 यो 1:3
4 निर्ग 34:6 भज 78:38 भज 86:5 भज 145:8
5 गि 11:11, 15 1रा 19:2, 4 अय 6:8, 9
6 यो 3:4

10 जब सच्चे परमेश्वर ने उनके
कामों को देखा कि किस तरह वे अपनी
दुष्ट राहों से फिर गए हैं,[1] तो उसने अपने
फैसले पर दोबारा गौर किया। और वह
नीनवे पर कहर नहीं लाया।[2]

4 यह बात योना को बहुत बुरी लगी
और वह आग-बबूला हो उठा।
2 उसने यहोवा से प्रार्थना की, "हे
यहोवा, आखिर वही हुआ न, जो मैं अपने
देश में रहते वक्त सोच रहा था! इसी-
लिए मैंने तरशीश भागने की कोशिश
की।[3] मैं जानता था कि तू करुणा करने-
वाला और दयालु परमेश्वर है, क्रोध
करने में धीमा और अटल प्यार से भर-
पूर है।[4] मैं जानता था कि तू अपना
मन बदल लेगा और सज़ा नहीं देगा।
3 अब हे यहोवा, मेहरबानी करके मेरी
जान ले ले। जीने से तो अच्छा है कि मैं मर
जाऊँ।"[5]

4 यहोवा ने पूछा: "क्या तेरा गुस्से से
भड़कना सही है?"

5 फिर योना शहर के बाहर गया और
उसके पूरब में जाकर एक जगह बैठ
गया। वहाँ उसने अपने लिए एक छप्पर
बनाया और यह सोचकर उसकी छाया
में बैठा रहा कि देखूँ शहर का क्या
होता है।[6] 6 तब यहोवा परमेश्वर
ने घीए की एक बेल* उगायी और
उसे ऐसा फैलाया कि योना के सिर पर
अच्छी छाया हो और उसे आराम मिले।
घीए की बेल देखकर योना बहुत खुश
हुआ।

7 लेकिन अगले दिन पौ फटते ही,
सच्चे परमेश्वर ने एक कीड़ा भेजा। कीड़े
ने बेल को ऐसा खाया कि बेल सूख गयी।
8 फिर जब सूरज निकला तो परमेश्वर

4:6 *या शायद, "अरंडी का पौधा।"

ने पूरब से झुलसा देनेवाली हवा चलायी। चिलचिलाती धूप योना के सिर पर ऐसी पड़ी कि वह बेहोश होने लगा। वह मौत माँगने लगा और कहने लगा, "जीने से तो अच्छा है कि मैं मर जाऊँ।"[1]

9 परमेश्वर ने योना से पूछा, "क्या घीए की बेल के लिए तेरा गुस्से से भड़कना सही है?"[2]

योना ने कहा, "हाँ, मेरा भड़कना सही है। मुझे इतना गुस्सा आ रहा है कि मैं मर जाना चाहता हूँ।" 10 पर यहोवा ने कहा, "जिस घीए की बेल के लिए न तूने मेहनत की न जिसे बढ़ाया, जो एक रात में उगी और एक ही रात में मर गयी, उस पर तू तरस खा रहा है। 11 तो क्या मैं उस बड़े शहर नीनवे[1] पर तरस न खाऊँ, जहाँ 1,20,000 से भी ज़्यादा लोग हैं, जो सही-गलत में* फर्क तक नहीं जानते और जहाँ बहुत-से जान-वर भी हैं?"[2]

अध्य. 4
1 यो 4:3
2 यो 4:4

दूसरा कॉल.
1 यो 3:3
2 भज 36:6
भज 145:9

4:11 *या "जो अपने दाएँ हाथ और बाएँ हाथ में।"

मीका

सारांश

1 सामरिया और यहूदा को मिलेगी सज़ा (1-16)
इसकी वजह उनका पाप और अपराध (5)

2 ज़ुल्म करनेवालों पर धिक्कार है! (1-11)
इसराएल को एकता में इकट्ठा करना (12, 13)
देश लोगों के शोर से गूँज उठेगा (12)

3 अगुवे और भविष्यवक्ता धिक्कारे गए (1-12)
यहोवा की पवित्र शक्ति ने मीका को ताकत से भर दिया (8)
याजक सिखाने के पैसे माँगते हैं (11)
यरूशलेम मलबे का ढेर बन जाएगा (12)

4 यहोवा का पर्वत ऊँचा किया जाएगा (1-5)
तलवारों को हल के फाल बनाएँगे (3)
'हम यहोवा का नाम लेकर चलेंगे' (5)
बहाली के बाद सिय्योन शक्तिशाली (6-13)

5 वह शासक जो पृथ्वी पर महान होगा (1-6)
वह बेतलेहेम से आएगा (2)
बचे हुए लोग ओस और शेर जैसे (7-9)
देश शुद्ध किया जाएगा (10-15)

6 इसराएल के साथ परमेश्वर का मुकदमा (1-5)
यहोवा क्या चाहता है? (6-8)
न्याय, वफादारी, मर्यादा (8)
इसराएल का अपराध और सज़ा (9-16)

7 इसराएल की बुरी हालत (1-6)
अपने ही घराने के लोग दुश्मन होंगे (6)
'मैं परमेश्वर के वक्त का इंतज़ार करूँगा' (7)
परमेश्वर के लोग सही साबित हुए (8-13)
मीका की प्रार्थना; परमेश्वर की तारीफ की (14-20)
यहोवा का जवाब (15-17)
'यहोवा जैसा परमेश्वर कौन है?' (18)

1 यहूदा के राजा योताम,[1] आहाज[2]
और हिजकियाह के दिनों में[3] यहोवा
का संदेश मीका*[4] के पास पहुँचा[5] जो
मोरेशेत का रहनेवाला था। उसे साम-
रिया और यरूशलेम के बारे में यह
दर्शन दिया गयाः

2 "हे देश-देश के लोगो, सुनो!
हे पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, सब ध्यान से सुनो!
यहोवा अपने पवित्र मंदिर में है।
सारे जहान का मालिक यहोवा वहाँ से तुम्हारे खिलाफ गवाही दे।[6]
3 देखो, यहोवा अपनी जगह से आ रहा है,
वह नीचे उतरेगा और धरती की ऊँची-ऊँची जगहों पर चलेगा।
4 पहाड़ उसके पैरों के नीचे पिघल जाएँगे[7]
और घाटियाँ फट जाएँगी,
जैसे मोम आग के सामने पिघल जाता है,
जैसे पानी खड़ी ढलान पर बह जाता है।
5 यह सब याकूब के अपराध की वजह से होगा,
इसराएल के घराने के पाप की वजह से होगा।[8]
याकूब के अपराध के लिए कौन ज़िम्मेदार है?
क्या सामरिया नहीं?[9]
यहूदा की ऊँची जगहों के लिए कौन दोषी है?[10]
क्या यरूशलेम नहीं?
6 मैं सामरिया को मैदान के मलबे का ढेर बना दूँगा
और उसे ऐसी जगह बना दूँगा जहाँ सिर्फ अंगूर लगेंगे।
मैं उसके पत्थरों को घाटी में लुढ़का दूँगा
और उसकी नींव उखाड़ दूँगा।
7 उसकी सारी खुदी हुई मूरतें चूर-चूर कर दी जाएँगी,[1]
उसे वेश्या के काम करके जो तोहफे मिले, उन्हें आग में जला दिया जाएगा।[2]
मैं उसकी सब मूरतें नष्ट कर दूँगा।
बदचलनी की कमाई से उसने जो कुछ जमा किया है,
वह दूसरी वेश्याओं की कमाई बन जाएगा।"
8 मैं दुख से छाती पीटूँगा और खूब रोऊँगा,[3]
मैं नंगे पैर और नंगे बदन घूमूँगा।[4]
मैं गीदड़ों के समान रोऊँगा
और शुतुरमुर्ग के समान शोक मनाऊँगा,
9 क्योंकि सामरिया का घाव ठीक नहीं होनेवाला,[5]
वह यहूदा में भी फैल जाएगा,[6]
मेरे लोगों के फाटक तक, यरूशलेम तक आ जाएगा।[7]
10 "गत में यह खबर मत सुनाना
और उनके सामने बिलकुल मत रोना।
बेत-आप्रा* में धूल में लोटना।
11 हे शापीर के रहनेवालो,* नंगे और लज्जित होकर उस पार चले जाओ।
सानान के रहनेवाले* बाहर नहीं निकले।

अध्य. 1
1 2रा 15:32-34; 2इत 27:1, 2
2 2रा 16:1, 2
3 2रा 18:1-3; 2इत 29:1, 2
4 यिर्म 26:18
5 यश 1:1; हो 1:1
6 भज 50:7
7 न्या 5:5; भज 97:5
8 2रा 17:7, 8
9 हो 7:1
10 2रा 16:2, 4

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:30; हो 8:6
2 हो 2:5; हो 9:1
3 यिर्म 4:19
4 यश 20:2
5 यश 1:5, 6; यिर्म 15:18
6 2रा 18:13; यश 8:7, 8
7 2इत 32:2; मी 1:12

1:1 *यह मीकाएल या मीकायाह नाम का छोटा रूप है जिसका मतलब है, "यहोवा जैसा कौन है?"

1:10 *या "आप्रा के घर।" **1:11** *शा., "की रहनेवाली।"

बेत-एसेल में रोने की आवाज़
सुनायी दे रही है, अब वह तुम्हें
और सहारा नहीं देगा।
12 मारोत के रहनेवाले* उम्मीद लगाए
थे कि कुछ अच्छा होगा,
लेकिन यहोवा की ओर से विपत्ति
यरूशलेम के फाटक तक आ
गयी है।
13 हे लाकीश[1] के रहनेवालो,* रथ
तैयार करो, उसमें घोड़े जोतो!
तुम्हीं से सिय्योन की बेटी के पाप
शुरू हुए,
हाँ, उसी में इसराएल के अपराध
पाए गए।[2]
14 इसलिए तू* मोरेशेत-गात को
तोहफे देकर विदा करेगी।
इसराएल के राजाओं को अकजीब[3]
के घरों से धोखा मिला।
15 हे मारेशाह[4] के रहनेवालो,* मैं
जीत हासिल करनेवाले# को
तुम्हारे पास लाऊँगा,[5]
इसराएल की शान अदुल्लाम[6] तक
पहुँचेगी।
16 अपने बाल कटवाकर गंजे हो जाओ
क्योंकि तुम्हारे प्यारे बच्चों पर
आफत आनेवाली है।
गिद्ध* की तरह अपना सिर
मुँड़वा लो,
क्योंकि तुम्हारे बच्चों को छीनकर
बँधुआई में ले जाया जाएगा।"[7]

2 "धिक्कार है उन पर, जो बुरे कामों
की योजना बनाते हैं,
जो बिस्तर पर लेटे-लेटे साज़िश
रचते हैं
और सुबह होते ही उसे अंजाम
देते हैं,
उनके पास ऐसा करने की ताकत
जो है।[1]
2 वे खेतों का लालच करके उन्हें हड़प
लेते हैं,[2]
घरों का लालच करके उन्हें भी
हथिया लेते हैं।
वे धोखा देकर एक आदमी से
उसका घर
और उसकी विरासत छीन लेते हैं।[3]
3 इसलिए यहोवा कहता है,
'मैंने इस घराने पर एक विपत्ति
लाने की सोची है,[4] जिससे तुम
बच नहीं सकोगे।*[5]
तुम फिर कभी घमंड से फूलकर
नहीं चलोगे[6] क्योंकि वह विपत्ति
का समय होगा।[7]
4 उस दिन लोग तुम्हारे बारे में कहा-
वत कहेंगे और तुम्हारे हाल पर
ज़ोर-ज़ोर से रोएँगे।[8]
वे कहेंगे, "हम तो पूरी तरह तबाह
हो चुके हैं![9]
उसने हमारे लोगों की ज़मीन किसी
और को दे दी।
हमारी ही ज़मीन हमसे छीन ली![10]
हमारे खेत एक अविश्वासी को दे
दिए।"
5 इसलिए यहोवा की मंडली में ऐसा
कोई नहीं होगा,
जो नापने की डोरी से ज़मीन नाप-
कर बाँटेगा।
6 वे कहते हैं, "प्रचार करना बंद
करो!
इन बातों का प्रचार मत करो।

1:12, 13, 15 *शा., "की रहनेवाली।" **1:14** *यानी सिय्योन की बेटी। **1:15** #या "खदेड़नेवाले।" **1:16** *इसके इब्रानी शब्द का मतलब उकाब भी हो सकता है।

2:3 *शा., "तुम अपनी गरदन हटा न सकोगे।"

अध्य. 1
1 यह 15:20, 39; 2रा 18:14
2 1रा 14:16; 2रा 16:2, 3; यिर्म 3:8
3 यह 15:20, 44
4 2इत 11:5, 8
5 यश 7:17
6 नहे 11:25, 30
7 व्य 28:41; 2रा 17:6; यश 39:7

दूसरा कॉल.

अध्य. 2
1 1रा 21:7
2 निर्ग 20:17; 1रा 21:2; यश 5:8
3 यिर्म 22:17; यहे 22:12, 29
4 यिर्म 18:11
5 आम 2:14
6 यश 2:11
7 आम 5:13
8 यिर्म 9:10; विल 1:1
9 यश 6:11; यिर्म 25:9; सप 1:2
10 2रा 17:23

हमें शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा।”
7 हे याकूब के घराने, तू कहता है,
“क्या यहोवा* बेसब्र हो गया है?
क्या वह सचमुच ऐसा करेगा?”
क्या मेरी बातें सीधाई से चलनेवालों
की भलाई नहीं करेंगी?
8 लेकिन कुछ वक्‍त से मेरे अपने ही
लोग दुश्‍मन बन बैठे हैं।
तुम सरेआम उन राहगीरों को लूटते
हो, जो युद्ध से लौटनेवालों की
तरह बेखौफ चलते हैं।
तुम उनके कपड़ों से* सुंदर-सुंदर
चीज़ें उतरवा लेते हो।
9 तुम मेरी प्रजा की औरतों को उनके
प्यारे आशियाने से खदेड़ देते हो,
उनके बच्चों से वे अच्छी-अच्छी
चीज़ें हमेशा के लिए छीन लेते
हो, जो मैंने उन्हें दी थीं।
10 उठो और जाओ, अब यह जगह
आराम करने के लिए नहीं रही,
यह अशुद्ध हो गयी है,[1] इसलिए
इसे बरबाद होना है।
यह बरबादी बहुत दर्दनाक होगी![2]
11 अगर कोई आदमी खोखली
और झूठी बातों के पीछे जाए
और कहे,
“मैं तुम्हें दाख-मदिरा और शराब के
बारे में बताऊँगा,”
तो लोगों को वही प्रचारक अच्छा
लगेगा।[3]
12 हे याकूब, मैं तुम सबको ज़रूर
इकट्ठा करूँगा,
हाँ, मैं इसराएल के बचे हुओं को
इकट्ठा करूँगा।[4]
मैं उन्हें एकता में ऐसे रखूँगा,
जैसे भेड़ें एक-साथ बाड़े में रहती हैं,
जैसे भेड़ों का झुंड चरागाह में
चरता है[1]
और वह जगह लोगों के शोर से
गूँज उठेगी।’[2]
13 राजा अपने लोगों के लिए रास्ता
निकालेगा,
लोग उसके पीछे-पीछे चलेंगे और
फाटक से निकल आएँगे।[3]
उनका राजा उनके आगे-आगे
जाएगा
और यहोवा उन सबकी अगुवाई
करेगा।”[4]

3 मैंने कहा, “हे याकूब के मुखियाओ,
हे इसराएल के घराने के शासको,
सुनो![5]
क्या न्याय करना तुम्हारा काम
नहीं?
2 लेकिन तुम अच्छाई से नफरत[6]
और बुराई से प्यार करते हो,[7]
मेरे लोगों की चमड़ी उधेड़ देते
हो, उनकी हड्डियों से माँस नोंच
लेते हो।[8]
3 यही नहीं, तुम मेरे लोगों का माँस
खाते हो,[9]
उनकी खाल खींच लेते हो।
जैसे हंडे* में माँस पकाने के
लिए उसके टुकड़े-टुकड़े किए
जाते हैं,
वैसे ही तुम मेरे लोगों की
हड्डियाँ तोड़ते हो, उन्हें चूर-चूर
करते हो।[10]
4 उस समय तुम मदद के लिए यहोवा
को पुकारोगे,
लेकिन वह तुम्हें कोई जवाब नहीं
देगा,

2:7 *या “यहोवा की पवित्र शक्‍ति।” 2:8 *या “के साथ-साथ।”

3:3 *या “चौड़े मुँहवाले हंडे।”

अध्य. 2
1 भज 106:38, 39
2 यिर्म 9:19; यिर्म 10:18
3 1रा 22:6, 8; यश 9:15, 16; यिर्म 6:13, 14; यहे 13:2, 3
4 यश 11:11; यिर्म 23:3; यिर्म 31:7, 8; मी 4:6

दूसरा कॉल.
1 यहे 34:11
2 यहे 36:38; जक 8:22
3 यश 62:10
4 यश 49:10; यश 52:12

अध्य. 3
5 मी 3:9
6 1रा 22:8; आम 5:10
7 2इत 19:2
8 यहे 22:27; आम 8:4; सप 3:3
9 यहे 34:2, 3
10 यश 3:15

तुम्हारे दुष्ट कामों की वजह से वह
तुमसे मुँह फेर लेगा।[1]
5 भविष्यवक्ता मेरे लोगों को गुमराह
कर रहे हैं।[2]
जब उन्हें खाना* मिलता है तो वे
कहते हैं, 'शांति है, शांति!'[3]
मगर जब कोई उन्हें खाना नहीं
देता,# तो वे उसके खिलाफ जंग
छेड़ देते हैं।
ऐसे भविष्यवक्ताओं के खिलाफ
यहोवा यह ऐलान करता है,
6 'तुम पर ऐसी रात आएगी,[4] जब
तुम्हें कोई दर्शन नहीं मिलेगा,[5]
तुम्हारे चारों तरफ अँधेरा-ही-अँधेरा
होगा,
तुम ज्योतिषी का काम नहीं कर
पाओगे।
भविष्यवक्ताओं के लिए सूरज डूब
जाएगा,
दिन अंधकार में बदल जाएगा।[6]
7 दर्शियों को शर्मिंदा होना पड़ेगा,[7]
ज्योतिषियों को निराश होना
पड़ेगा।
उन्हें परमेश्वर की तरफ से कोई
जवाब नहीं मिलेगा,
इसलिए सब-के-सब अपनी मूँछें*
ढाँप लेंगे।'"
8 लेकिन यहोवा की पवित्र शक्ति ने
मुझे ताकत से भर दिया है
कि मैं न्याय और हिम्मत के साथ
याकूब को उसके अपराध और इस-
राएल को उसके पाप बता सकूँ।
9 हे याकूब के घराने के मुखियाओ,
हे इसराएल के घराने के शासको,
सुनो![8]
तुम न्याय से घृणा करते हो, जो
सीधा है उसे टेढ़ा कर देते हो।[1]
10 तुमने सिय्योन को खून-खराबे से
और यरूशलेम को बुरे कामों से
खड़ा किया है।[2]
11 उसके अगुवे फैसला सुनाने के लिए
घूस खाते हैं,[3]
याजक सिखाने की कीमत लेते हैं[4]
और भविष्यवक्ता ज्योतिष-विद्या के
लिए पैसे* माँगते हैं।[5]
फिर भी वे यहोवा पर भरोसा रख-
कर# कहते हैं,
"क्या यहोवा हमारे साथ नहीं?[6]
हम पर कोई मुसीबत नहीं
आएगी।"[7]
12 इसलिए तुम्हारे कारण
सिय्योन एक खेत की तरह जोता
जाएगा,
यरूशलेम मलबे का ढेर बन
जाएगा,[8]
इस भवन का पहाड़* जंगल की
पहाड़ियों जैसा# बन जाएगा।[9]

4 आखिरी दिनों में,
यहोवा के भवन का पर्वत,[10]
सब पहाड़ों के ऊपर बुलंद किया
जाएगा
और सभी पहाड़ियों से ऊँचा किया
जाएगा।
देश-देश के लोग धारा के समान
उसकी ओर आएँगे,[11]
2 बहुत-से राष्ट्र आएँगे और कहेंगे,
"आओ हम यहोवा के पर्वत
पर चढ़ें,

अध्य. 3
1 व्य 31:17, 18; यश 1:15; यश 3:11; विल 3:44
2 यश 9:15, 16; यश 56:10
3 यिर्म 23:16, 17; यहे 13:10; यहे 13:19; यहे 34:2
4 यिर्म 13:16
5 भज 74:9; यहे 13:23
6 यश 59:9, 10; आम 8:9
7 यश 29:10
8 मी 3:1

दूसरा कॉल.
1 व्य 27:19; यिर्म 5:28
2 यिर्म 22:13
3 यश 1:23; यश 5:20, 23; यहे 22:12
4 यिर्म 6:13
5 यश 56:10, 11
6 यश 48:1, 2; यिर्म 7:4
7 आम 9:10
8 भज 79:1
9 यिर्म 26:18

अध्य. 4
10 यश 11:9; जक 8:3
11 भज 86:9; यश 2:2-4; यश 60:3; प्रक 15:4

3:5 *या "चबाने को।" #या "उनके मुँह में कुछ नहीं देता।" 3:7 *या "अपना मुँह।"

3:11 *या "चाँदी।" #या "भरोसा रखने का दम भरकर।" 3:12 *या "मंदिर की पहाड़ी।" #या "जंगल की ऊँची जगह जैसी।"

याकूब के परमेश्वर के भवन की
ओर जाएँ।[1]
वह हमें अपने मार्ग सिखाएगा
और हम उसकी राहों पर चलेंगे।”
क्योंकि सिय्योन से कानून* दिया
जाएगा
और यरूशलेम से यहोवा का
वचन।
3 वह देश-देश के लोगों को अपने
फैसले सुनाएगा,[2]
दूर-दूर के शक्तिशाली राष्ट्रों के
मामले सुलझाएगा।
वे अपनी तलवारें पीटकर
हल के फाल
और अपने भालों को हँसिया
बनाएँगे।[3]
एक देश दूसरे देश पर फिर तलवार
नहीं चलाएगा
और न लोग फिर कभी युद्ध करना
सीखेंगे।[4]
4 हर कोई अपनी अंगूरों की बेल और
अपने अंजीर के पेड़ तले बैठेगा[5]
और कोई उसे नहीं डराएगा,[6]
क्योंकि यह बात सेनाओं के पर-
मेश्वर यहोवा ने कही है।
5 सब देशों के लोग अपने-अपने
ईश्वर का नाम लेकर चलेंगे,
मगर हम अपने परमेश्वर यहोवा
का नाम लेकर हमेशा-हमेशा तक
चलते रहेंगे।[7]
6 यहोवा ऐलान करता है,
“उस दिन मैं उन्हें इकट्ठा करूँगा जो
लँगड़ाते थे,
उन्हें बटोरूँगा जो तितर-बितर हो
गए थे[8]
और उन सबको जमा करूँगा
जिनके साथ मैंने सख्ती की थी।
7 लँगड़ानेवालों में से कुछ लोगों को मैं
बचाऊँगा,[1]
जिन्हें दूर भेज दिया था उन्हें एक
ताकतवर राष्ट्र बनाऊँगा।[2]
यहोवा उनका राजा बनेगा
और सिय्योन पहाड़ से हमेशा-
हमेशा तक उन पर राज करेगा।
8 हे झुंड की मीनार,
हे सिय्योन की बेटी के टीले,[3]
पहली हुकूमत लौट आएगी, वह
तेरे पास फिर लौट आएगी,[4]
हाँ, यरूशलेम की बेटी को अपना
राज वापस मिल जाएगा।[5]
9 फिर तू क्यों इतनी ज़ोर से चिल्ला
रही है?
क्या तुझ पर कोई राजा नहीं?
क्या तेरा सलाहकार मिट चुका है?
क्या इसीलिए तू ऐसे तड़प रही
है, जैसे कोई औरत बच्चा जनते
वक्त तड़पती है?[6]
10 हे सिय्योन की बेटी,
बच्चा जननेवाली की तरह दर्द से
कराह और छटपटा,
क्योंकि अब तुझे शहर से निकलकर
खुले मैदान में रहना पड़ेगा।
तू बहुत दूर बैबिलोन चली
जाएगी,[7]
पर वहाँ से तुझे छुड़ाया जाएगा,[8]
यहोवा तुझे तेरे दुश्मनों के हाथ से
वापस खरीद लेगा।[9]
11 कई राष्ट्र तेरे खिलाफ इकट्ठा होंगे
और तेरे बारे में कहेंगे, ‘सिय्योन
को दूषित होने दो!
हम अपनी आँखों से उसके साथ
ऐसा होते देखेंगे।’

अध्य. 4
1 यिर्म 31:6
जक 8:20, 21
2 1शम 2:10
भज 96:13
यश 51:4, 5
3 हो 2:18
जक 9:10
4 भज 72:7
यश 9:7
यश 60:18
5 जक 3:10
6 यश 54:14
यहे 34:25
यहे 39:25, 26
7 जक 10:12
8 भज 147:2
यश 56:8
यहे 34:12, 16
यहे 37:21
सप 3:19

दूसरा कॉल.
1 यश 10:21
मी 2:12
मी 7:18
2 यश 60:22
3 2शम 5:7
4 ओब 21
5 जक 9:9
6 यिर्म 30:6
7 2रा 20:18
2इत 36:17, 20
8 यश 45:13
जक 2:7
9 भज 107:2, 3
यश 48:20
यिर्म 15:21

4:2 * या “शिक्षा।”

12 लेकिन वे यहोवा की सोच नहीं
जानते,
न उसके मकसद को समझते हैं।
वह उन्हें ऐसे बटोर लेगा, जैसे
अभी-अभी काटी गयी फसल
खलिहान में बटोरी जाती है।
13 हे सिय्योन की बेटी, जल्दी कर और
दाँवना शुरू कर।[1]
मैं तेरे सींग लोहे के बना दूँगा,
तेरे खुरों को ताँबे का बना दूँगा
और तू देश-देश के लोगों को रौंद
डालेगी।[2]
तू उनकी बेईमानी की कमाई यहोवा
के लिए अलग ठहराएगी
और उनकी दौलत सारे जहान
के सच्चे प्रभु के लिए अलग
रखेगी।"[3]

5 "हे चारों तरफ से घिरी हुई बेटी,
तू अपने शरीर को ज़ख्मी कर
रही है।
दुश्मनों ने हमारी घेराबंदी कर
ली है,[4]
वे इसराएल के न्यायी के गाल पर
छड़ी मारते हैं।[5]
2 हे बेतलेहेम एप्राता,[6]
तू जो यहूदा के हज़ारों* में सबसे
छोटा है,
तुझमें से एक ऐसा शख्स आएगा
जिसे मैं इसराएल का शासक
ठहराऊँगा,[7]
जिसकी शुरूआत बहुत पहले, युगों
पहले हुई थी।
3 इसलिए परमेश्वर अपने लोगों को
तब तक के लिए छोड़ देगा,
जब तक कि बच्चा जननेवाली
औरत बच्चे को जन्म नहीं दे
देती।
तब उस शासक के बाकी भाई इस-
राएल के लोगों के पास लौट
आएँगे।
4 वह उठेगा और यहोवा की
ताकत से,
अपने परमेश्वर यहोवा के महान
नाम से,
झुंड की चरवाही करेगा[1] और वे
महफूज़ रहेंगे,[2]
क्योंकि तब उसकी महानता
धरती के कोने-कोने तक पहुँच
जाएगी[3]
5 और वह शांति कायम करेगा।[4]
और अगर कभी अश्शूरी हमारे देश
पर हमला करें और हमारी मज़-
बूत मीनारों को रौंदें,[5]
तो हम उनके खिलाफ लोगों में से
सात चरवाहे, हाँ, आठ हाकिम*
खड़े करेंगे।
6 वे अश्शूर पर तलवार उठाएँगे,[6]
निमरोद के देश[7] में दाखिल होने के
रास्तों पर तलवार चलाएँगे।
जब अश्शूर हमारे देश पर हमला
करेगा और हमारे इलाके को
रौंदेगा,
तब वह शासक हमें उसके हाथ से
बचाएगा।[8]
7 याकूब के बचे हुए जन, बहुत-से
लोगों के बीच ऐसे होंगे,
जैसे यहोवा की तरफ से पड़नेवाली
ओस,
जैसे पेड़-पौधों पर बारिश की
बौछार,
जो न किसी आदमी के भरोसे
रहती है,
न इंसानों के कहने पर गिरती है।

5:2 * या "कुलों।"

5:5 * या "अगुवे।"

अध्य. 4
1 यश 41:15
2 जक 9:13
3 यह 6:18, 19; यश 23:17, 18

अध्य. 5
4 व्य 28:52
5 मत 26:67; यूह 18:22; यूह 19:3
6 उत 35:19; लूक 2:4
7 उत 49:10; 1इत 5:2; यश 9:6; मत 2:4-6; लूक 1:32, 33; लूक 2:11; यूह 7:42

दूसरा कॉल.
1 यहे 34:23; यहे 37:24
2 यिर्म 23:5, 6
3 जक 9:9, 10
4 यश 9:6
5 यश 8:7
6 यश 33:1
7 उत 10:9-11
8 यश 14:25

8 राष्ट्रों के बीच, हाँ, देश-देश के
लोगों के बीच
याकूब के बचे हुए जन ऐसे होंगे,
जैसे कोई शेर जंगल के जानवरों के
बीच हो,
जैसे जवान शेर भेड़ों के झुंड में चल
रहा हो।
जब वह उनके बीच से जाता है,
तो उन पर झपटता है और उन्हें
फाड़ खाता है,
उन्हें बचानेवाला कोई नहीं होता।
9 तू बैरियों को हराकर अपना हाथ
उठाएगा,
तेरे सारे दुश्मनों का नाश हो
जाएगा।”
10 यहोवा ऐलान करता है,
“उस दिन मैं तेरे घोड़ों को तेरे बीच
में से नाश करूँगा और तेरे रथों
को तोड़ दूँगा।
11 मैं तेरे देश के सभी शहरों को तबाह
कर दूँगा
और तेरे सारे मज़बूत गढ़ों को ढा
दूँगा।
12 तू जो टोना-टोटका करता है, उसे मैं
खत्म कर दूँगा,
तेरे यहाँ जादू-टोना करनेवाला कोई
भी ज़िंदा नहीं बचेगा।[1]
13 मैं तेरी खुदी हुई मूरतें और तेरे
पूजा-स्तंभ खाक में मिला दूँगा,
तू फिर कभी अपने हाथ की बनायी
चीज़ों के आगे दंडवत नहीं
करेगा।[2]
14 मैं तेरे बीच से पूजा-लाठों* को
उखाड़ फेंकूँगा[3]
और तेरे शहरों का सर्वनाश कर
दूँगा।
15 जिन राष्ट्रों ने मेरा हुक्म नहीं माना
उनसे मैं बदला लूँगा,
उन्हें मेरे क्रोध और जलजलाहट का
सामना करना पड़ेगा।”

6 हे लोगो, मेहरबानी करके सुनो कि
यहोवा क्या कहता है।
पहाड़ों के सामने अपनी सफाई
पेश करने के लिए तैयार हो
जाओ,
पहाड़ियाँ भी तुम्हारी बातें सुनेंगी।[1]
2 हे पहाड़ो! हे पृथ्वी की मज़बूत
नींवो!
यहोवा का आरोप सुनो,[2]
क्योंकि यहोवा ने अपने लोगों पर
मुकदमा किया है।
वह इसराएल के साथ अपना
मुकदमा लड़ता है[3] और उनसे
पूछता है,
3 “हे मेरे लोगो, मैंने तुम्हारा क्या
बिगाड़ा है?
ऐसा क्या किया है जो तुम उकता
गए हो?[4]
बोलो, मेरे खिलाफ गवाही दो।
4 मैंने तुम्हें मिस्र से बाहर निकाला,[5]
गुलामी के घर से तुम्हें आज़ाद
किया।[6]
मूसा, हारून और मिरयम को
तुम्हारे आगे-आगे भेजा।[7]
5 हे मेरे लोगो, ज़रा याद करो कि
मोआब के राजा बालाक ने क्या
साज़िश रची थी[8]
और बओर के बेटे बिलाम ने उसे
क्या जवाब दिया।[9]
शित्तीम से लेकर गिलगाल[10] तक
जो हुआ उसे याद करो[11]
ताकि तुम यहोवा के नेक कामों को
जान सको।”

5:14 *शब्दावली देखें।

अध्य. 5
1 यश 2:6
यश 8:19
2 यश 2:8
यहे 36:25
हो 14:3
जक 13:2
3 यश 27:9

दूसरा कॉल.

अध्य. 6
1 यश 5:3
2 भज 50:1, 4
यश 1:2
3 यश 43:26
यिर्म 2:35
हो 4:1
4 यिर्म 2:5
5 निर्ग 12:51
व्य 4:20
6 व्य 7:8
7 निर्ग 15:20
8 गि 22:5, 6
9 गि 23:7, 8
गि 24:10
प्रक 2:14
10 यह 4:19
11 गि 25:1
गि 33:48, 49

6 मैं क्या लेकर यहोवा के सामने
जाऊँ?
क्या लेकर उस परमेश्वर को दंडवत
करूँ जो ऊँचे पर विराजमान है?
क्या मैं उसके सामने होम-बलियाँ ले
जाऊँ?
एक-एक साल के बछड़े
अर्पित करूँ?[1]
7 क्या यहोवा हज़ारों मेढ़ों से,
तेल की लाखों नदियों से खुश
होगा?[2]
अपने अपराधों के लिए क्या मैं
अपने पहलौठे की बलि दे दूँ?
अपने पापों के लिए अपने बच्चे
को* चढ़ा दूँ?[3]
8 हे इंसान, उसने तुझे बता दिया है
कि अच्छा क्या है।
यहोवा इसे छोड़ तुझसे और क्या
चाहता है
कि तू न्याय करे,[4] वफादारी से
लिपटा रहे*[5]
और मर्यादा में रहकर अपने पर-
मेश्वर के साथ चले।[6]
9 यहोवा की आवाज़ इस शहर को
पुकारती है,
जिनमें बुद्धि* है वे तेरे नाम का डर
मानेंगे।
उस छड़ी पर ध्यान दो और जिसने
उसे ठहराया है उस पर भी
ध्यान दो।[7]
10 क्या दुष्ट के घर में अब भी दुष्टता
का खज़ाना है?
क्या अब भी उसके पास एपा* का
झूठा* और घिनौना माप पाया
जाता है?
11 अगर मेरा तराज़ू खोटा हो और
मेरी थैली में बेईमानी के बाट-
पत्थर हों,
तो क्या मैं बेदाग* ठहर
सकता हूँ?[1]
12 यहाँ के अमीर आदमी अंधेर
मचाते हैं,
लोग झूठ बोलते हैं,[2]
उनके मुँह से छल की बातें
निकलती हैं।[3]
13 "इसलिए मैं तुझे मारूँगा, तुझे
घायल करूँगा,[4]
तेरे पापों की वजह से तुझे उजाड़
दूँगा।
14 तू खाएगा मगर तेरी भूख नहीं
मिटेगी,
तेरा पेट खाली ही रहेगा।[5]
तू अपनी चीज़ें सुरक्षित जगह ले
जाने की कोशिश करेगा,
मगर कामयाब नहीं होगा
और अगर हो भी गया,
तो मैं उन्हें तेरे दुश्मनों के
हवाले कर दूँगा।
15 तू बीज बोएगा मगर फसल नहीं
काट पाएगा,
तू जैतून रौंदेगा मगर उसका तेल
नहीं ले पाएगा,
तू नयी दाख-मदिरा बनाएगा मगर
उसे पी नहीं पाएगा।[6]
16 तुम लोग ओम्री के नियमों पर चलते
हो और अहाब के घराने जैसे
काम करते हो,[7]
तुम उनके नक्शे-कदम पर
चलते हो,

अध्य. 6
1 1शम 15:22 भज 51:16, 17 यश 1:11
2 भज 50:8-15
3 2रा 3:26, 27 यहे 16:20
4 नीत 21:3 यश 1:17 यिर्म 22:3 यहे 45:9 हो 12:6
5 नीत 3:3 हो 6:6 जक 7:9
6 व्य 10:12, 13 नीत 8:13
7 यश 9:13

दूसरा कॉल.
1 व्य 25:13 नीत 11:1 हो 12:7
2 यश 59:3 मी 7:2
3 यिर्म 9:3
4 यश 1:5
5 लैव 26:26 यहे 4:16 हो 4:10
6 व्य 28:38 यिर्म 12:13 योए 1:10 आम 5:11
7 1रा 16:25, 30 2रा 16:2, 3 2रा 21:1, 3

6:7 *शा., "शरीर का फल।" 6:8 *या "कृपा करे और प्यार में वफा निभाए।" शा., "अटल प्यार से प्यार करे।" 6:9 *या "ऐसी बुद्धि जो फायदा पहुँचाती है।" 6:10 *अति. ख14 देखें।

6:10 *या "अधूरा।" 6:11 *या "निर्दोष।"

इसलिए मैं तुम्हारा वह हाल करूँगा
कि देखनेवाले डर जाएँगे,
लोग सीटियाँ बजा-बजाकर यहाँ के
निवासियों का मज़ाक उड़ाएँगे[1]
और तुम्हें उनके ताने सुनने
पड़ेंगे।"[2]

7 हाय! मैं उस आदमी जैसा हूँ,
जिसे गरमियों के फल इकट्ठा होने
के बाद,
अंगूरों की कटाई और उनके बीनने
के बाद,
खाने को अंगूर का एक गुच्छा तक
नहीं मिलता,
न अंजीर का पहला फल मिलता है,
जिसके लिए मैं तरसता हूँ।
2 वफादार इंसान धरती से मिट गया,
आदमियों में कोई भी सीधा-सच्चा
नहीं रहा।[3]
सब-के-सब खून करने के लिए घात
लगाते हैं।[4]
हरेक अपने ही भाई का
शिकार करने के लिए बड़ा जाल
बिछाता है।
3 बुरे काम करने में वे उस्ताद हैं,[5]
हाकिम माँग-पर-माँग करता है,
न्यायी, न्याय करने की कीमत
माँगता है,[6]
रुतबेदार आदमी खुलकर अपनी
इच्छा बताता है,[7]
ये सब मिलकर जाल बुनते हैं।
4 उनमें जो सबसे अच्छा है, वह काँटों
की तरह चुभता है
और जो सबसे सीधा है, वह कँटीले
बाड़े से भी नुकीला है।
वह दिन आ रहा है जिसके बारे में
तुम्हारे पहरेदारों ने बताया था,
जिस दिन तुमसे हिसाब लिया
जाएगा,[8]
इसलिए तुम पर आतंक छा
गया है।[1]
5 तू न अपने साथी पर,
न ही अपने जिगरी दोस्त पर
भरोसा करना।[2]
यहाँ तक कि अपनी बीवी से भी
सँभलकर बोलना,
6 क्योंकि बेटा अपने पिता को तुच्छ
समझेगा,
बेटी अपनी माँ के खिलाफ हो
जाएगी[3]
और बहू अपनी सास के।[4]
एक आदमी के दुश्मन उसके अपने
ही घराने के लोग होंगे।[5]
7 लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, मैं
यहोवा की राह देखूँगा,[6]
अपने उद्धारकर्ता, अपने परमेश्वर
के वक्त का इंतज़ार करूँगा।*[7]
मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।[8]
8 हे मेरी दुश्मन, मेरे हाल पर खुश
मत हो।
भले ही मैं गिर गया हूँ, पर मैं खड़ा
होऊँगा,
भले ही मैं अंधकार में पड़ा हूँ, मगर
यहोवा मेरी रौशनी होगा।
9 मैंने यहोवा के खिलाफ पाप
किया है,
मैं उसका क्रोध तब तक सहता
रहूँगा,[9]
जब तक कि वह मेरा मुकदमा
नहीं लड़ता और मुझे न्याय नहीं
दिलाता।
वह मुझे निकालकर उजाले में
लाएगा
और मैं उसकी नेकी देखूँगा।

7:7 *या "मैं सब्र रखूँगा और इंतज़ार करूँगा।"

अध्य. 6
1 यिर्म 19:8
2 भज 44:13; यिर्म 51:51; विल 5:1; दान 9:16

अध्य. 7
3 यश 57:1
4 यश 59:7
5 यिर्म 3:5; यिर्म 4:22; यहे 22:6
6 यश 1:23; मी 3:11
7 1रा 21:5, 6
8 यश 10:3; यहे 12:23; हो 9:7

दूसरा कॉल.
1 यश 22:5
2 यिर्म 9:4
3 यहे 22:7
4 लूक 12:53
5 यिर्म 12:6; मत 10:35, 36
6 भज 123:2; यश 8:17
7 भज 25:5; भज 62:1; विल 3:26
8 भज 40:1; यश 12:2; यश 25:9
9 विल 1:18

10 मेरी दुश्मन जो मुझसे कहती थी,
“तेरा परमेश्वर यहोवा कहाँ है?”[1]
वह भी यह देखेगी और बहुत
शर्मिंदा होगी।
उसे सड़क की मिट्टी की तरह रौंदा
जाएगा
और मैं अपनी आँखों से यह होते
देखूँगा।
11 उस दिन तेरी पत्थरों की दीवार
बनायी जाएगी,
उस दिन तेरी सरहदें बढ़ायी
जाएँगी।*
12 उस दिन दूर-दूर से लोग तेरे पास
आएँगे,
अश्शूर से और मिस्र के शहरों से
आएँगे।
मिस्र से लेकर महानदी* तक,
एक समुंदर से लेकर दूसरे
समुंदर तक
और एक पहाड़ से लेकर दूसरे
पहाड़ तक के सब लोग आएँगे।[2]
13 देश अपने निवासियों की वजह से,
उनके कामों की वजह से उजाड़
दिया जाएगा।
14 लाठी लेकर अपने लोगों की चर-
वाही कर,
हाँ, उस झुंड की जो तेरी
जागीर है,[3]
जो जंगल में फलों के बाग के बीच
अकेला रहता था।
उन्हें पहले की तरह बाशान और
गिलाद में चरने दे।[4]
15 “मैं तुम लोगों को अद्‌भुत काम
दिखाऊँगा,
जैसे मैंने तुम्हें मिस्र से छुड़ाते वक्त
दिखाए थे।[1]
16 देश-देश के लोग भी यह देखेंगे
और शक्तिशाली होने पर भी वे
शर्मिंदा होंगे।[2]
वे अपने मुँह पर हाथ रखेंगे, उनके
कान बहरे हो जाएँगे,
17 वे साँप की तरह धूल चाटेंगे,[3]
रेंगनेवाले जंतुओं की तरह अपने
मज़बूत गढ़ से काँपते हुए
निकलेंगे।
वे खौफ खाते हुए हमारे परमेश्वर
यहोवा के पास आएँगे
और उसके* सामने थर-थर
काँपेंगे।”[4]
18 तेरे जैसा परमेश्वर कौन है,
जो अपनी जागीर के बचे हुए
लोगों के गुनाह माफ करता है
और उनके अपराध याद नहीं
रखता?[5]
तेरा गुस्सा हमेशा तक नहीं बना
रहता,
क्योंकि अटल प्यार से तुझे खुशी
मिलती है।[6]
19 तू हम पर फिर से दया करेगा,[7]
हमारे गुनाहों को रौंद देगा,
तू हमारे सब पापों को समुंदर की
गहराइयों में फेंक देगा।[8]
20 जैसे तू याकूब के साथ सच्चाई से
पेश आया,
जैसे तूने अब्राहम के लिए अपने
अटल प्यार का सबूत दिया,
वैसे ही तू हमारे साथ पेश आएगा,
क्योंकि तूने बहुत पहले हमारे
पुरखों से इसकी शपथ
खायी थी।[9]

7:11 *या शायद, “फरमान दूर किया जाएगा।” **7:12** *यानी फरात नदी। **7:17** *शा., “तेरे।”

अध्य. 7
1 भज 79:10; भज 115:2; योए 2:17
2 यश 11:16; यश 27:13; हो 11:11
3 यश 40:11
4 यिर्म 50:19; यहे 34:23

दूसरा कॉल.
1 भज 78:12; यश 63:11; यिर्म 23:7, 8
2 भज 126:2; यश 26:11; यश 66:18
3 यश 49:23
4 यिर्म 33:9
5 निर्ग 34:6, 7; यश 1:18; यश 44:22; यिर्म 23:3; यिर्म 50:20; दान 9:9; योए 2:32
6 भज 103:9; यश 57:16; विल 3:22
7 व्य 30:3; भज 103:8, 13; हो 2:19
8 भज 103:12; यश 55:7; यिर्म 31:34
9 उत 22:17; भज 105:8-11; लूक 1:72, 73; प्रेष 3:25, 26

नहूम

सारांश

1 परमेश्वर दुश्मनों से बदला लेता है (1-7)
उसकी माँग है कि सिर्फ उसकी भक्ति की जाए (2)
यहोवा की पनाह में आनेवालों को वह जानता है (7)
नीनवे का नाश होगा (8-14)
विपत्ति दूसरी बार नहीं आएगी (9)
यहूदा को खुशखबरी दी जाती है (15)

2 नीनवे तबाह होगी (1-13)
"नदियों के फाटक खोल दिए जाएँगे" (6)

3 "धिक्कार है इस खूनी नगरी पर!" (1-19)
नीनवे को सज़ा देने की वजह (1-7)
नो-अम्मोन की तरह नीनवे का नाश (8-12)
नीनवे का विनाश पक्का है (13-19)

1 एल्कोशी नहूम* को मिले दर्शन की
किताब, जिसमें नीनवे को यह संदेश
सुनाया गया:[1]
2 यहोवा ऐसा परमेश्वर है जो माँग
करता है कि सिर्फ उसकी भक्ति
की जाए।[2]
यहोवा अपने दुश्मनों से बदला लेता
है, उन पर अपना क्रोध उँडेलने
को तैयार रहता है,[3]
वह अपने दुश्मनों से बदला लिए
बिना नहीं रहता,
यहोवा अपना क्रोध उनके लिए
बचाए रखता है।
3 यहोवा क्रोध करने में धीमा[4] और
महाशक्तिमान है,[5]
लेकिन जो दोषी हैं, उन्हें सज़ा देने
से यहोवा पीछे नहीं हटेगा।[6]
जब वह चलता है तो तबाही
मचानेवाली आँधी और तूफान
उठते हैं,
जब वह पैर रखता है तो बादल
धूल की तरह उड़ते हैं।[7]
4 वह समुंदर को डाँटता है[1] और उसे
सुखा देता है,
सारी नदियों का पानी सुखा
देता है।[2]
बाशान और करमेल की हरियाली
मुरझा जाती है[3]
और लबानोन के फूल कुम्हला
जाते हैं।
5 उसके कारण पहाड़ काँप उठते हैं,
पहाड़ियाँ पिघल जाती हैं।[4]
उसके सामने पृथ्वी काँप उठती है,
धरती और उसके निवासी भी थर-
थरा उठते हैं।[5]
6 उसके क्रोध के सामने कौन टिक
सकता है?[6]
उसकी जलजलाहट के आगे कौन
खड़ा रह सकता है?[7]
उसका क्रोध, आग की तरह उँडेला
जाएगा
और उसके कारण चट्टानें चूर-चूर
हो जाएँगी।
7 यहोवा भला है,[8] विपत्ति के दिन
मज़बूत गढ़ बन जाता है,[9]

1:1 *मतलब "दिलासा देनेवाला।"

अध्य. 1
1 यश 10:12
नहू 3:7
सप 2:13
2 निर्ग 20:5
3 व्य 32:35, 41
यश 59:18
4 गि 14:18
5 अय 9:4
6 निर्ग 34:6, 7
7 अय 38:1

दूसरा कॉल.
1 अय 38:11
भज 104:6, 7
भज 107:29
2 यह 3:16
3 यश 33:9
आम 1:2
4 2शम 22:8
भज 68:7, 8
5 भज 97:4, 5
यश 24:1
6 यिर्म 10:10
7 व्य 32:22
8 भज 136:1
मत 19:17
9 भज 46:1
भज 91:2
नीत 18:10
यश 25:4

वह उन लोगों को जानता है* जो
उसकी पनाह में आते हैं।[1]
8 ज़बरदस्त बाढ़ लाकर वह उसकी*
जगह का सफाया कर देगा
और अंधकार परमेश्वर के दुश्मनों
का पीछा नहीं छोड़ेगा।
9 यहोवा के खिलाफ तुम कौन-सी
साज़िश रचोगे?
वह पूरी तरह तुम्हारा नाश कर
देगा।
विपत्ति दूसरी बार नहीं आएगी।[2]
10 भले ही वे कँटीले बाड़े की तरह हों,
जिसमें घुसना मुश्किल है,
भले ही वे अपनी ताकत के नशे में
चूर हों, जैसे कोई शराब* के नशे
में होता है,
मगर उन्हें घास-फूस की तरह भस्म
कर दिया जाएगा।
11 हे नगरी, तुझसे एक शख्स
निकला है,
जो घटिया सलाह देकर यहोवा के
खिलाफ बुरे मंसूबे बाँधेगा।
12 यहोवा कहता है,
"वे कितने ही शक्तिशाली क्यों न
हों, उनकी गिनती बेहिसाब क्यों
न हो,
फिर भी वे काट दिए जाएँगे, वे
खत्म हो जाएँगे।*
मैंने तुझे# दुख दिया है लेकिन अब
और नहीं दूँगा।
13 मैं तेरी गरदन से उसका जुआ
उतारकर तोड़ दूँगा,[3]
तेरी ज़ंजीरों के दो टुकड़े कर दूँगा।

1:7 *या "की देखभाल करता है।" **1:8** *यानी नीनवे की। **1:10** *या "गेहूँ से बनी शराब।" **1:12** *या शायद, "और वह उनके बीच से गुज़रेगा।" #यानी यहूदा।

अध्य. 1
1 भज 1:6
2 यश 10:24, 25
3 यश 14:25

दूसरा कॉल.
1 यश 52:7
रोम 10:15
2 व्य 16:16

अध्य. 2
3 यिर्म 25:9
4 2रा 17:6

14 यहोवा ने तेरे* बारे में यह आज्ञा
दी है,
'तेरा वंश चलानेवाला कोई नहीं
होगा।
मैं तेरे देवताओं के मंदिर से गढ़ी
हुई मूरतें और ढली हुई मूरतें
नाश कर दूँगा,
मैं तेरे लिए कब्र खोदूँगा क्योंकि तू
घिनौना है।'
15 देखो! खुशखबरी लानेवाला, शांति
का पैगाम सुनानेवाला,
पहाड़ों पर चला आ रहा है।[1]
हे यहूदा, अपने त्योहार मना[2] और
अपनी मन्नतें पूरी कर!
तेरे बीच से फिर कभी कोई निकम्मा
आदमी नहीं गुज़रेगा,
उसे पूरी तरह नाश कर दिया
जाएगा।"

2 तितर-बितर करनेवाला तेरे*
खिलाफ आ रहा है![3]
जा, जाकर अपने गढ़ों की
हिफाज़त कर,
रास्ते पर नज़र रख,
अपनी सारी ताकत बटोर ले और
लड़ने को तैयार हो जा।#
2 यहोवा, याकूब को उसकी शान
लौटा देगा,
इसराएल को भी उसकी शान लौटा
देगा,
क्योंकि तबाह करनेवालों ने उन्हें
तबाह कर दिया था[4]
और उनकी टहनियाँ नाश कर
दी थीं।
3 उसके शूरवीरों की ढालें लाल रंग से
रंगी हैं,

1:14 *यानी अश्शूर के। **2:1** *यानी नीनवे के। #शा., "और कमर कस ले।"

उसके योद्धाओं के कपड़े सुर्ख
लाल हैं।
वे युद्ध के लिए तैयार हैं,
उसके युद्ध-रथों में लगी लोहे की
चीज़ें आग-सी दमक रही हैं
और वे सनोवर लकड़ी के भाले
उठाए ललकार रहे हैं।
4 युद्ध-रथ सड़कों पर अंधाधुंध दौड़
रहे हैं,
नगर के चौक में इधर-उधर भाग
रहे हैं,
वे जलती मशाल की तरह
जगमगा रहे हैं, बिजली की तरह
कौंध रहे हैं।
5 वह* अपने अधिकारियों को
बुलाता है।
वे फुर्ती से शहरपनाह के लिए
निकलते हैं,
गिरते-पड़ते वहाँ पहुँचकर नाकाबंदी
करते हैं।
6 नदियों के फाटक खोल दिए जाएँगे,
महल ढह जाएगा।*
7 यह तय किया गया है:
उसका* परदाफाश होगा, उसे बंदी
बना लिया जाएगा,
उसकी दासियाँ मातम मनाएँगी, वे
छाती पीटती हुईं फाख्ते की तरह
रोएँगी।
8 नीनवे जब से बनी है,[1] तब से पानी
के तालाब जैसी है,
लेकिन अब लोग उससे दूर भाग
रहे हैं।
"रुक जाओ! रुक जाओ!" सुन-
कर भी,
कोई पलटकर नहीं देख रहा।[1]
9 सोना लूटो! चाँदी लूटो!
खज़ाने की कोई कमी नहीं,
यहाँ हर तरह की बेशकीमती चीज़ों
का भंडार है।
10 नगरी खाली, सुनसान और उजाड़
हो गयी,[2]
लोगों का मन कच्चा हो गया,
उनके घुटने थरथरा रहे हैं,
उनकी कमर के जोड़ हिलने
लगे हैं,
सबके चेहरे का रंग उड़ गया है।
11 शेरों की माँद कहाँ गयी?[3]
वह जगह कहाँ गयी, जहाँ जवान
शेर बैठकर खाता था,
जहाँ शेर अपने बच्चों को लेकर
बेखौफ घूमता था?
12 वह अपने बच्चों के लिए बहुत-सा
शिकार लाता था
और अपनी शेरनियों के
लिए जानवरों का गला
दबोचता था।
उसने अपनी गुफाओं को शिकार से
भरा था,
हाँ, फाड़े हुए जानवरों से अपनी
माँद भरी थी।
13 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा ऐलान
करता है,
"देख, मैं तेरे खिलाफ हूँ![4]
मैं तेरे युद्ध-रथों को जलाकर धुएँ में
उड़ा दूँगा,[5]
तलवार तेरे जवान शेरों को खा
जाएगी।
मैं पृथ्वी से तेरी लूटपाट का अंत
कर दूँगा
और तेरे दूतों की आवाज़ फिर
कभी सुनायी नहीं देगी।"[6]

2:5 *शायद अश्शूर के राजा की बात की गयी है। 2:6 *या "गल जाएगा।" 2:7 *नीनवे की बात की गयी है, जिसे रानी बताया गया है।

अध्य. 2
1 उत 10:8, 11

दूसरा कॉल.
1 सप 2:13
2 सप 2:15
3 यिर्म 2:14, 15 यिर्म 50:17
4 यश 10:12
5 भज 46:9 यश 37:24
6 2रा 18:17

3 धिक्कार है इस खूनी नगरी पर!
यह छल-कपट और लूट के माल से
भरी हुई है,
यह शिकार करने से बाज़ नहीं
आती।
2 चाबुक की आवाज़ और पहियों की
गड़गड़ाहट सुनायी दे रही है,
घोड़े सरपट दौड़ रहे हैं और रथ
धड़धड़ाते हुए आ रहे हैं।
3 घुड़सवार चले आ रहे हैं,
तलवारें चमक रही हैं, भाले चम-
चमा रहे हैं,
बड़ी तादाद में लोग मरे पड़े हैं,
लाशों के ढेर लगे हैं,
जहाँ देखो वहाँ लाशें-ही-लाशें हैं।
वे लाशों से ठोकर खाकर चले जा
रहे हैं।
4 यह सब उस वेश्या की बदचलनी
की वजह से हुआ है,
उस सुंदर, मन मोहिनी की वजह से,
जो जादूगरी में माहिर है,
जिसने अपनी बदचलनी से राष्ट्रों
को और अपनी जादूगरी से कुलों
को फँसाया है।
5 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा ऐलान
करता है,
"देख, मैं तेरे * खिलाफ हूँ![1]
मैं तेरा घाघरा तेरे मुँह तक
उठाऊँगा कि हर राष्ट्र तेरा
नंगापन देखे
और सब राज्य तुझे बेइज़्ज़त
होते देखें।
6 मैं तुझ पर गंदगी फेंकूँगा
और सब तुझ पर थू-थू करेंगे।
मैं सबके सामने तेरा तमाशा
बनाऊँगा।[2]

3:5 * यानी नीनवे के।

अध्य. 3
1 नहू 2:13
2 सप 2:15

दूसरा कॉल.
1 नहू 2:8
2 यिर्म 46:25
यहे 30:14
3 यश 19:6
4 उत 10:6
5 2इत 16:8
यिर्म 46:8, 9
6 यश 20:4
7 भज 75:8
यिर्म 25:15

7 जो कोई तुझे देखेगा वह तुझसे दूर
भागेगा[1] और कहेगा,
'नीनवे तबाह हो चुकी है!
कौन उस पर तरस खाएगा?'
तुझे दिलासा देने के लिए मैं लोगों
को कहाँ से लाऊँ?
8 क्या तू नो-अम्मोन * नगरी से बढ़-
कर है,[2]
जो नील की नहरों के किनारे
बसी थी?[3]
वह तो पानी से घिरी थी,
समुंदर उसकी दौलत और शहर-
पनाह था।
9 इथियोपिया और मिस्र उसकी अपार
शक्ति का सोता थे,
लिबिया के लोग और पुट[4]
उसके * मददगार थे,[5]
10 फिर भी उसे बंदी बना लिया गया
और पराए देश ले जाया गया।[6]
उसके बच्चों को हर नुक्कड़ पर
पटक-पटककर मार डाला गया,
उसके इज़्ज़तदार आदमियों पर
चिट्ठियाँ डाली गयीं
और उसके सभी बड़े-बड़े लोगों को
बेड़ियों में जकड़ा गया।
11 तू भी पीकर धुत्त हो जाएगी,[7]
नज़रों से ओझल हो जाएगी,
दुश्मनों से बचने के लिए पनाह
ढूँढ़ेगी।
12 मगर तेरे सब गढ़ अंजीर के पेड़ों
जैसे हैं, जिन पर पहली फसल के
पके फल लगे हैं,
अगर पेड़ों को हिलाया जाए, तो
फल सीधे खानेवाले के मुँह में जा
गिरेंगे।

3:8 * यानी थीबीज़। 3:9 * शा., "तेरे।"

13 देख! तेरे सैनिक अबला नारी बन
जाएँगे,
तेरे देश के फाटक दुश्मनों के लिए
खुले पड़े रहेंगे,
तेरे फाटकों के बेड़ों को आग भस्म
कर देगी।
14 घेराबंदी के लिए तैयार हो जा, पानी
भर ले,[1]
अपने गढ़ों को मज़बूत कर ले,
कीचड़ में जा, मिट्टी रौंद
और ईंट बनाने के लिए साँचा उठा।
15 लेकिन फिर भी आग तुझे भस्म
कर देगी,
तलवार तुझे काट डालेगी,[2]
वह नन्हीं टिड्डियों की तरह तुझे चट
कर जाएगी।[3]
जा, तू भी टिड्डियों की तरह अपनी
गिनती बढ़ा ले!
हाँ, नन्हीं टिड्डियों की तरह अपनी
गिनती बढ़ा ले!
16 तूने अपने व्यापारियों को
आसमान के तारों से भी ज़्यादा
बढ़ा लिया है।
नन्हीं टिड्डियाँ अपना खोल उतारकर
फुर्र हो जाती हैं।
17 तेरे पहरेदार टिड्डियों जैसे हैं
और तेरे अधिकारी टिड्डियों के झुंड
जैसे हैं,
जो ठंड के दिन पत्थरों की दीवार में
जा छिपते हैं,
लेकिन धूप निकलते ही उड़
जाते हैं
और न जाने कहाँ गायब हो
जाते हैं।
18 हे अश्शूर के राजा, तेरे चरवाहे
ऊँघ रहे हैं,
तेरे रुतबेदार आदमी घरों में आराम
फरमा रहे हैं,
जबकि तेरे लोग पहाड़ों पर तितर-
बितर हैं
और उन्हें इकट्ठा करनेवाला कोई
नहीं।[1]
19 आनेवाली तबाही से तुझे कोई राहत
नहीं मिलेगी,
तेरे ज़ख्म कभी नहीं भरेंगे।
जो कोई तेरे बारे में सुनेगा तालियाँ
बजाएगा,[2]
क्योंकि ऐसा कौन है जिस
पर तूने ज़ुल्म-पे-ज़ुल्म न
किया हो?"[3]

अध्य. 3
1 2इत 32:3, 4
2 सप 2:13
3 निर्ग 10:14, 15

दूसरा कॉल.
1 नहू 2:8
2 सप 2:15
3 यश 10:5, 6
यश 37:18

हबक्कूक

सारांश

1 भविष्यवक्ता मदद के लिए पुकारता है (1-4)
'हे यहोवा, कब तक?' (2)
'तू क्यों अत्याचार होने देता है?' (3)
सज़ा देने के लिए परमेश्वर कसदियों को लाता है (5-11)
यहोवा से भविष्यवक्ता की बिनती (12-17)
'हे मेरे परमेश्वर तू कभी नहीं मरता' (12)
'तू इतना शुद्ध है कि बुराई नहीं देख सकता' (13)

2 'मैं इंतज़ार करूँगा कि वह क्या संदेश देता है' (1)
भविष्यवक्ता को यहोवा का जवाब (2-20)

‘दर्शन पूरा होने का इंतज़ार करना’ (3)
नेक जन विश्वास से ज़िंदा रहेगा (4)
कसदी पाँच बार धिक्कारे गए (6-20)
पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से भर जाएगी (14)

3 प्रार्थना कि यहोवा कदम उठाए (1-19)
परमेश्वर अभिषिक्त जनों को बचाएगा (13)
दुखों में भी यहोवा के कारण खुशी मनाना (17, 18)

---

1 यह संदेश भविष्यवक्ता हबक्कूक* को दर्शन में मिलाः

2 हे यहोवा, मैं कब तक पुकारता
रहूँगा और तू अनसुना करता
रहेगा?[1]
मैं कब तक दुहाई देता रहूँगा और
तू मुझे हिंसा से नहीं बचाएगा?[2]
3 तू क्यों मुझे बुराई दिखाता है?
क्यों अत्याचार होने देता है?
मेरे सामने विनाश और हिंसा क्यों
हो रही है?
लड़ाई-झगड़े क्यों बढ़ते जा रहे हैं?
4 कानून का डर किसी में नहीं रहा
और कहीं इंसाफ नहीं होता।
नेक इंसान दुष्टों से घिरा हुआ है,
तभी तो न्याय का खून हो रहा है।[3]
5 “राष्ट्रों को देखो और ध्यान दो!
हैरानी से ताको और दंग रह जाओ!
क्योंकि तुम्हारे दिनों में कुछ ऐसा
होनेवाला है
कि अगर तुम्हें बताया भी जाए तब
भी तुम यकीन नहीं करोगे।[4]
6 मैं तुम्हारे खिलाफ कसदियों को
लानेवाला हूँ,[5]
हाँ, उस बेरहम और उतावले
राष्ट्र को।
वे लोग धरती के दूर-दूर के इलाकों
से होकर जाते हैं
और परायों की ज़मीन हथिया
लेते हैं।[1]
7 वे बहुत भयानक और डरावने हैं,
वे अपने कानून खुद बनाते हैं और
धौंस जमाते हैं।[2]
8 उनके घोड़े, चीते से भी तेज़
दौड़ते हैं।
वे लोग रात को निकलनेवाले
भेड़ियों से ज़्यादा खूँखार हैं।[3]
उनके जंगी घोड़े धड़धड़ाते हुए
आते हैं,
उनके घोड़े दूर से आते हैं।
वे लोग उकाब की तरह अपने
शिकार पर झपट पड़ते हैं।[4]
9 सब-के-सब खून के प्यासे हैं,[5]
वे एक-साथ ऐसे आते हैं जैसे पूरब
से गरम हवा आती है[6]
और वे बंदियों को रेत के किनकों
की तरह उठा ले जाते हैं।
10 वे राजाओं का मज़ाक उड़ाते हैं,
बड़े-बड़े अधिकारियों पर हँसते हैं,[7]
सब मज़बूत गढ़ों पर
ठहाके मारते हैं[8]
और मिट्टी का टीला बनाकर उन
पर कब्ज़ा कर लेते हैं।
11 फिर वे तेज़ झोंके की तरह देश में
से होकर जाते हैं।

अध्य. 1
1 भज 13:1
2 भज 22:1; भज 74:10; प्रक 6:10
3 अय 12:6; भज 12:8; सभ 8:11; यश 1:21; प्रेष 7:52, 53
4 यश 28:21; यश 29:14; विल 4:11, 12; प्रेष 13:40, 41
5 यिर्म 22:7; यिर्म 46:2

दूसरा कॉल.
1 व्य 28:49-51; यिर्म 5:15-17; यिर्म 6:22, 23; यहे 23:22, 23
2 यिर्म 39:5-7; दान 5:18, 19
3 यिर्म 5:6
4 यिर्म 4:13; विल 4:19; यहे 17:3
5 यिर्म 25:9
6 यश 27:8; यहे 17:10
7 2रा 24:12
8 यिर्म 32:24; यिर्म 52:7

1:1 *शायद इसका मतलब है, “प्यार से गले लगाना।”

लेकिन उन्हें दोषी ठहराया जाएगा,[1]
क्योंकि वे अपनी ताकत का श्रेय
अपने देवता को देते हैं।"*[2]
12 हे यहोवा, तू हमेशा से वजूद में है,[3]
हे मेरे परमेश्वर, मेरे पवित्र पर-
मेश्वर, तू कभी नहीं मरता।*[4]
हे यहोवा, अपना फैसला सुनाने के
लिए तूने उन्हें ठहराया है,
हे मेरी चट्टान,[5] हमें सज़ा देने# के
लिए तूने उन्हें चुना है।[6]
13 तेरी आँखें इतनी शुद्ध हैं कि तू
बुराई नहीं देख सकता,
दुष्टता तुझसे बरदाश्त नहीं होती।[7]
तो फिर तू छल करनेवालों को क्यों
बरदाश्त कर रहा है?[8]
जब दुष्ट किसी नेक जन को निगल
जाता है, तो तू क्यों खामोश
रहता है?[9]
14 तूने इंसान को समुंदर की मछलियों
जैसा क्यों बना दिया है?
समुंदर के जीव-जंतुओं जैसा क्यों
बना दिया है, जिन पर कोई
शासक नहीं होता?
15 वह* उन सबको मछली पकड़ने के
काँटे से खींच लेता है,
बड़े जाल में उन्हें फँसा लेता है,
मछली के जाल में इकट्ठा करके खूब
खुश होता है।[10]
16 इसलिए वह अपने बड़े जाल के
लिए बलिदान चढ़ाता है,
मछली के जाल के आगे धूप
जलाता है,
क्योंकि इन्हीं से उसे चिकना-चिकना
भोजन मिलता है
और वह बढ़िया-बढ़िया खाना
खाता है।
17 क्या वह अपना बड़ा जाल यूँ
ही भरता और खाली करता
रहेगा?*
क्या वह तरस खाए बिना राष्ट्रों को
मारता रहेगा?[1]

2 मैं अपने पहरे की चौकी पर खड़ा
रहूँगा,[2]
दीवार* पर तैनात रहूँगा।
मैं इंतज़ार करूँगा कि वह मुझे क्या
संदेश देता है,
देखूँगा कि जब वह मुझे सुधारेगा
तो मैं क्या जवाब दूँगा।
2 फिर यहोवा ने मुझसे कहा,
"जो बातें तू दर्शन में देखनेवाला है,
उन्हें पटियाओं पर साफ-साफ
लिख ले[3]
ताकि पढ़कर सुनानेवाला इसे
आसानी से पढ़ सके,[4]
3 क्योंकि यह दर्शन अपने तय वक्त
पर पूरा होगा,
वह समय बड़ी तेज़ी से पास आ
रहा है,
यह दर्शन झूठा साबित नहीं होगा।
अगर ऐसा लगे भी कि इसमें देर
हो रही है, तब भी इसका इंतज़ार
करना![5]
क्योंकि यह ज़रूर पूरा होगा, इसमें
देर नहीं होगी!
4 उस आदमी को देखो जो घमंड से
फूला हुआ है,
वह मन से सीधा-सच्चा नहीं।
लेकिन जो नेक है, वह अपने
विश्वास से ज़िंदा रहेगा।[6]
5 सच, दाख-मदिरा धोखा देती है,

अध्य. 1
1 यश 47:5, 6; यिर्म 51:24; जक 1:15
2 दान 5:1, 4
3 भज 90:2; भज 93:2; प्रक 1:8
4 1ती 1:17; प्रक 15:3
5 व्य 32:4
6 यिर्म 30:11
7 भज 5:4, 5
8 यिर्म 12:1
9 भज 35:21, 22
10 यिर्म 50:11

दूसरा कॉल.
1 2इत 36:17; नहू 3:7

अध्य. 2
2 यश 21:8; मी 7:7
3 निर्ग 17:14
4 व्य 31:9, 11
5 मी 7:7
6 यूह 3:36; रोम 1:17; गल 3:11; इब्र 10:38

1:11 *या शायद, "उनकी ताकत ही उनका देवता है।" **1:12** *या शायद, "हम नहीं मरेंगे।" #या "सुधारने।" **1:15** *यानी उनके दुश्मन, कसदी। **1:17** *या शायद, "अपनी तलवार ताने रहेगा?" **2:1** *शा., "सुरक्षा की ढलान।"

तभी घमंडी इंसान अपना लक्ष्य नहीं
पा सकेगा।
वह अपनी भूख कब्र के समान बढ़ा
लेता है,
मौत की तरह उसका पेट कभी नहीं
भरता,
वह सब राष्ट्रों और देश-देश के
लोगों को अपने लिए इकट्ठा
करता है।[1]
6 वे सब उसके खिलाफ कहावतें
कहेंगे,
पहेलियों में बात करेंगे और व्यंग
कसेंगे।[2]
वे कहेंगे, 'वह कब तक दूसरों की
चीज़ों से अपना खज़ाना भरता
रहेगा?
धिक्कार है उस पर! क्योंकि वह
अपना कर्ज़ बढ़ा रहा है।
7 क्या तेरे देनदार तुझ पर अचानक
नहीं टूट पड़ेंगे?
वे उठेंगे और तुझे बुरी तरह
झँझोड़ देंगे,
वे तुझे लूट लेंगे।[3]
8 तूने बहुत-से राष्ट्रों को लूटा है,
इसलिए उनके बचे हुए लोग तुझे
लूटेंगे।[4]
तूने कितनों का खून बहाया है,
धरती और शहरों को तबाह
किया है,
वहाँ रहनेवालों को मार डाला है।[5]
9 धिक्कार है उस पर, जो बेईमानी
की कमाई से अपना घर
भरता है,
मुसीबत की मार से बचने के
लिए अपना घोंसला ऊँचाई पर
बनाता है।
10 देश-देश के लोगों को मिटाकर तूने
अपने ही खिलाफ पाप किया है,

अध्य. 2
1 यश 14:16, 17
2 यश 14:4
3 यिर्म 51:11
4 यश 13:19
यिर्म 27:6, 7
जक 2:7-9
5 2इत 36:17
भज 137:8

दूसरा कॉल.
1 यश 14:20
2 यिर्म 51:58
3 भज 72:19
यश 11:9
जक 14:9
4 भज 75:8
यश 51:22, 23
यिर्म 25:28
यिर्म 51:57

तेरी साज़िशों से तेरे ही घर की बद-
नामी हुई है।[1]
11 तेरे खिलाफ दीवार का पत्थर
चिल्लाएगा
और छत की शहतीर भी बोलेगी।
12 धिक्कार है उस पर, जिसने खून-
खराबे से शहर को खड़ा किया है
और दुष्ट कामों से नगर की नींव
डाली है।
13 देखो! देश-देश के लोग जिसके लिए
जतन करते हैं, वह आग की भेंट
चढ़ जाता है,
राष्ट्र जिसके लिए खुद को थका
लेते हैं, वह बेकार साबित
होता है।
क्या यह सब सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा का काम नहीं?[2]
14 पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से
ऐसी भर जाएगी,
जैसे समुंदर पानी से भरा
रहता है।[3]
15 धिक्कार है उस पर, जो अपने
साथियों को जाम पिलाता है,
उसमें गुस्सा और क्रोध मिलाकर
उन्हें धुत्त कर देता है
ताकि उनका नंगापन देखे।
16 तू आदर के बजाय अनादर से भर
जाएगा।
अब तू भी पीने के लिए और अपना
खतनारहित हाल दिखाने* के
लिए तैयार हो जा!
यहोवा के दाएँ हाथ से प्याला पीने
की तेरी बारी आ गयी है,[4]
बदनामी तेरी शान को ढक लेगी।
17 लबानोन के साथ तूने जो ज़्यादती
की है वह तुझे आ घेरेगी

2:16 *या शायद, "और लड़खड़ाने।"

और तबाही लाकर तूने जानवरों में
जो आतंक फैलाया, वही तबाही
तुझ पर आ पड़ेगी।
क्योंकि तूने कितनों का खून
बहाया है,
धरती और शहरों को तबाह
किया है,
वहाँ रहनेवालों को मार डाला है।[1]
18 मूरत बनानेवाले को उस मूरत से
क्या फायदा, जिसे उसने खुद
बनाया है?
वह बस एक ढली हुई मूरत है और
झूठ सिखाती है,
फिर भी उसका बनानेवाला उस पर
भरोसा करता है,
बेज़ुबान और निकम्मी मूरतें बनाता
जाता है।[2]
19 धिक्कार है उस पर जो लकड़ी के
टुकड़े से कहता है, "जाग!"
गूँगे पत्थरों से कहता है, "उठ और
हमें सिखा!"
देखो, वे सोने-चाँदी से मढ़ी तो हैं,[3]
पर उनमें साँस नहीं![4]
20 लेकिन यहोवा अपने पवित्र मंदिर
में है।[5]
हे सारी पृथ्वी, उसके सामने
चुप रह!'"[6]

3 भविष्यवक्ता हबक्कूक की प्रार्थना
जो शोकगीतों की तरह है:
2 "हे यहोवा, मैंने तेरे चर्चे सुने हैं,
हे यहोवा, तेरे कामों ने मुझे विस्मय
से भर दिया है।
हमारे समय में* एक बार फिर ये
काम कर,
हमारे समय में* एक बार फिर उन्हें
दिखा
और जब तू कहर ढाए तो दया
करना मत भूलना।[1]
3 परमेश्वर तेमान से आया,
पवित्र परमेश्वर पारान के पहाड़ से
आया।[2] (*सेला*)*
उसका प्रताप पूरे आसमान में
छा गया[3]
और उसकी तारीफ से पृथ्वी गूँज
उठी।
4 उसका तेज, दिन के उजाले
जैसा था।[4]
दो किरणें उसके हाथ से निकल
रही थीं,
जिसमें उसकी ताकत छिपी थी।
5 महामारी उसके आगे-आगे
फैलती गयी[5]
और तेज़ बुखार उसके पीछे-पीछे।
6 उसके रुकने पर पृथ्वी हिल उठी,[6]
उसकी एक नज़र से राष्ट्र
काँप उठे,[7]
युग-युग से खड़े पहाड़ चकनाचूर
हो गए,
सदियों से खड़ी पहाड़ियाँ झुक
गयीं।[8]
उसकी राहें बीते ज़माने से ऐसी ही
रही हैं।
7 मैंने देखा, कूशान के तंबू संकट
में हैं,
मिद्यान के तंबुओं के कपड़े थर-
थरा उठे।[9]
8 हे यहोवा, क्या तू नदियों से
गुस्सा है?
क्या तेरा क्रोध नदियों पर
भड़का है?
या तेरी जलजलाहट सागर के
खिलाफ है,[10]

3:2 *शा., "इन सालों के दौरान।"

3:3 *शब्दावली देखें।

अध्य. 2
1 भज 137:8; यिर्म 50:28; यिर्म 51:24
2 यश 42:17; यश 44:19, 20; यश 45:20
3 यश 40:19; यश 46:6
4 यिर्म 51:17
5 यश 6:1
6 भज 76:8; भज 115:3; जक 2:13

दूसरा कॉल.

अध्य. 3
1 विल 3:32
2 व्य 33:2; न्या 5:4; भज 68:7, 8
3 निर्ग 19:16
4 निर्ग 13:21
5 गि 14:11, 12; गि 16:46; गि 25:1, 9
6 यश 13:13; हाग 2:21
7 निर्ग 14:25; निर्ग 23:27
8 भज 114:1, 4; नहू 1:5
9 निर्ग 15:14, 15; गि 22:3, 4
10 भज 114:1, 3; यश 50:2; नहू 1:4

जो तू घोड़ों पर सवार होकर आया[1]
और तेरे रथों ने जीत* दिलायी?[2]
9 तू अपनी कमान निकालकर उसको
तैयार करता है,
तेरी शपथ पूरी करने के लिए
छड़* ठहरे हुए हैं।# (*सेला*)
तू नदियों से पृथ्वी को चीर
डालता है।
10 तुझे देखकर पहाड़ों की कँपकँपी
छूट गयी,[3]
मूसलाधार बारिश से बाढ़ आ गयी,
ज़मीन की गहराइयों में पानी
गरज उठा[4]
और ऐसे फूट पड़ा मानो उसने हाथ
ऊपर उठाया हो।
11 तेरे छूटते तीरों की चमक से,[5]
चमचमाते भाले की रौशनी से,
सूरज और चाँद अपने ऊँचे ठिकानों
से बाहर नहीं निकले।[6]
12 अपनी जलजलाहट में तू धरती पर
से होकर गुज़रा,
तूने अपने क्रोध में राष्ट्रों को रौंद
डाला।
13 तू अपने लोगों का उद्धार करने,
अपने अभिषिक्त जन को बचाने
निकला।
तूने दुष्ट के घर के अगुवे को मसल
दिया
और घर को ऊपर* से लेकर नींव
तक उजाड़ दिया। (*सेला*)
14 उसके योद्धा आँधी की तरह मुझे
तितर-बितर करने आए,
क्योंकि उन्हें दुखियारे को चोरी-छिपे
उजाड़ने में खुशी मिलती है,

3:8 *या "उद्धार।" 3:9 *या शायद, "तीर।" #या शायद, "गोत्रों ने शपथ खायी है।" 3:13 *शा., "गले।"

अध्य. 3
1 व्य 33:26
2 भज 68:17
3 निर्ग 19:18
भज 114:1, 4
4 भज 77:16
5 भज 77:17, 18
6 यह 10:12

दूसरा कॉल.
1 भज 119:120
यिर्म 23:9
दान 8:27
2 भज 42:5
यश 26:20
विल 3:26
3 निर्ग 15:2
1शम 2:1
भज 18:2
भज 27:1
यश 61:10
4 यश 12:2
फिल 4:13
5 2शम 22:34

पर तूने उनके हथियार* उन्हीं के
सिर में घोंप दिए।
15 अपने घोड़ों को साथ लिए तू
समुंदर को,
हाँ, उफनती धाराओं को चीरता
हुआ आया।
16 यह सुनते ही मैं अंदर तक काँप
उठा,
खबर मिलते ही मेरे होंठ थर-
थराने लगे,
मेरी हड्डियाँ गल गयीं[1]
और मेरे पैर लड़खड़ाने लगे।
लेकिन मैं शांत होकर संकट के दिन
का इंतज़ार करूँगा,[2]
क्योंकि यह दिन उन पर टूट पड़ेगा
जो हम पर हमला करते हैं।
17 चाहे अंजीर के पेड़ पर फूल न लगें
और अंगूरों की बेल पर अंगूर न
आएँ,
चाहे जैतून की फसल न आए
और खेत में अनाज न उगे,
चाहे बाड़े से भेड़-बकरियाँ गायब
हो जाएँ
और छप्पर में गाय-बैल न रहें,
18 फिर भी मैं यहोवा के कारण खुशी
मनाऊँगा,
अपने उद्धारकर्ता, अपने परमेश्वर
के कारण मगन होऊँगा।[3]
19 सारे जहान का मालिक यहोवा मेरी
ताकत है,[4]
वह मेरे पैरों को हिरन की सी
तेज़ी देगा
और मुझे ऊँची जगहों में ले
चलेगा।"[5]

निर्देशक के लिए हिदायत: यह गीत मेरे तारोंवाले बाजे बजाकर गाया जाए।

3:14 *शा., "छड़ें।"

सपन्याह

सारांश

1 यहोवा का संदेश सपन्याह* के पास
पहुँचा जो कूशी का बेटा था, कूशी
गदल्याह का, गदल्याह अमरयाह का
और अमरयाह हिजकियाह का बेटा था।
यहूदा के राजा योशियाह के दिनों में,[1] जो
आमोन[2] का बेटा था, सपन्याह को यह
संदेश मिलाः

2 यहोवा ऐलान करता है, "मैं धरती
पर से हर चीज़ का सफाया कर
दूँगा।"[3]
3 "मैं इंसान और जानवर का सफाया
कर दूँगा।
आकाश के पंछियों और समुंदर की
मछलियों का सफाया कर दूँगा,[4]
ठोकर खिलानेवाली बाधाओं*[5]
और दुष्टों को मिटा दूँगा,
मैं धरती से सभी इंसानों को
नाश कर दूँगा।" यहोवा का यह
ऐलान है।

4 "मैं यहूदा के खिलाफ और
यरूशलेम के सभी निवासियों के
खिलाफ अपना हाथ बढ़ाऊँगा,
मैं इस जगह से बाल की हर
निशानी मिटा दूँगा,[1]
पराए देवताओं के पुजारियों के
साथ-साथ याजकों के नाम मिटा
दूँगा,[2]
5 मैं उन सबको मिटा दूँगा जो छत
पर आकाश की सेनाओं को दंड-
वत करते हैं,[3]
जो यहोवा को दंडवत करने और
उसके वफादार रहने की शपथ
खाने[4] के साथ-साथ
मलकाम के वफादार रहने की भी
शपथ खाते हैं,[5]
6 जो यहोवा के पीछे चलना छोड़
देते हैं[6]
और न यहोवा की खोज करते हैं न
ही उसकी मरज़ी पूछते हैं।"[7]
7 सारे जहान के मालिक यहोवा के
सामने चुप रहो क्योंकि यहोवा
का दिन करीब है।[8]

1:1 *मतलब "यहोवा ने छिपाया (या संजोए रखा) है।" **1:3** *ज़ाहिर है, मूर्तिपूजा से जुड़ी चीज़ें या काम।

अध्य. 1
1 2रा 22:1, 2; यिर्म 1:2
2 2रा 21:18-20
3 2रा 22:16; यश 6:11; यिर्म 6:8
4 यिर्म 4:25
5 यहे 14:3

दूसरा कॉल.
1 गि 25:3; न्या 2:11, 13; 2इत 28:1, 2; यिर्म 11:17
2 2रा 23:5
3 2इत 33:1, 3; यिर्म 19:13
4 यश 48:1
5 यह 23:6, 7; 1रा 11:33; यिर्म 49:1
6 यश 1:4; यिर्म 2:13
7 यश 43:22
8 योए 2:1; 2पत 3:10

यहोवा ने एक बलिदान तैयार किया
है, उसने मेहमानों को तैयार
किया है।
8 “जिस दिन मैं यहोवा बलिदान
चढ़ाऊँगा उस दिन मैं हाकिमों से,
राजा के बेटों से और उन सबसे
हिसाब माँगूँगा[1] जो विदेशी कपड़े
पहनते हैं।
9 उस दिन मैं उन सभी से हिसाब
माँगूँगा जो मंच* पर चढ़ते हैं,
अपने मालिक का घर हिंसा और
धोखाधड़ी से भर देते हैं।”
10 यहोवा ऐलान करता है, “उस दिन
मछली फाटक[2] से होहल्ला
सुनायी देगा,
शहर के ‘नए हिस्से’[3] से रोने-पीटने
की आवाज़ें आएँगी
और पहाड़ियों से ज़ोरदार धमाका
सुनायी देगा।
11 मक्तेश* के निवासियो, ज़ोर-ज़ोर
से रोओ
क्योंकि सारे व्यापारी# मारे गए,
चाँदी तौलनेवाले सभी नाश
हो गए।
12 उस समय मैं दीए लेकर यरूशलेम
का कोना-कोना छान मारूँगा,
मैं उनसे हिसाब माँगूँगा जो बेफिक्र
रहते हैं* और अपने दिल में
कहते हैं,
‘यहोवा न भला करेगा न बुरा।’[4]
13 उनकी दौलत लूट ली जाएगी और
उनके घर तहस-नहस कर दिए
जाएँगे।[1]
वे घर बनाएँगे मगर उनमें नहीं रह
पाएँगे,
अंगूरों के बाग लगाएँगे मगर उनकी
दाख-मदिरा नहीं पी पाएँगे।[2]
14 यहोवा का महान दिन करीब है![3]
वह करीब है और बड़ी तेज़ी से
नज़दीक आ रहा है![4]
यहोवा के दिन के आने की आवाज़
भयानक है।[5]
उस दिन सूरमा दुख के मारे
चिल्लाता है।[6]
15 वह दिन जलजलाहट का दिन है,[7]
मुसीबतों और चिंताओं का दिन,[8]
आँधी और तबाही का दिन,
घोर अंधकार का दिन,[9]
काले घने बादलों का दिन,[10]
16 किलेबंद शहरों और कोने की ऊँची
मीनारों के खिलाफ[11]
नरसिंगा फूँकने और युद्ध का ऐलान
करने का दिन है।[12]
17 मैं सभी इंसानों पर विपत्ति लाऊँगा
और वे अंधों की तरह चलेंगे,[13]
क्योंकि उन्होंने यहोवा के खिलाफ
पाप किया है।[14]
उनका खून धूल की तरह
और उनकी लाशें गोबर की तरह
पड़ी रहेंगी।[15]
18 यहोवा की जलजलाहट के दिन
उनके सोने-चाँदी से उनका बचाव
नहीं होगा,[16]
उसके क्रोध की आग से पूरी धरती
भस्म हो जाएगी,[17]
क्योंकि वह धरती के सब निवासियों
का सफाया कर देगा, वाकई,
भयानक तरीके से सफाया कर
देगा।”[18]

1:9 *या “दहलीज़।” शायद यह राजा की राजगद्दी का मंच था। **1:11** *ज़ाहिर है, यरूशलेम का एक हिस्सा जो मछली फाटक के पास था। #या “सौदागर।” **1:12** *शा., “दाख-मदिरा के तलछट की तरह बैठे हुए हैं।”

अध्य. 1
1 2रा 25:7, यिर्म 39:6
2 2इत 33:1, 14, नहे 3:3, नहे 12:38, 39
3 2इत 34:22
4 भज 10:13, भज 14:1

दूसरा कॉल.
1 यश 6:11
2 व्य 28:30, यिर्म 5:17
3 योए 2:1
4 हब 2:3
5 यश 66:6
6 यश 33:7, योए 1:15
7 प्रक 6:17
8 यिर्म 30:7
9 आम 5:18, 20, प्रेष 2:20
10 योए 2:2
11 यश 2:12, 15
12 यिर्म 4:19
13 व्य 28:28, 29, यश 59:9, 10
14 यश 24:5, दान 9:5, 8
15 भज 79:2, 3, यिर्म 9:22, यिर्म 16:4
16 नीत 11:4, यश 2:20, यहे 7:19
17 व्य 32:22, यिर्म 7:20
18 यिर्म 4:27

2 हे बेशर्म राष्ट्र,[1] अपने लोगों को
इकट्ठा कर,
हाँ, उन्हें इकट्ठा कर।[2]
2 इससे पहले कि फरमान लागू किया
जाए,
वह दिन ऐसे बीत जाए जैसे भूसी
उड़ायी जाती है,
इससे पहले कि यहोवा के क्रोध की
आग तुम पर बरसे,[3]
यहोवा के क्रोध का दिन तुम पर
आए,
3 धरती के सब दीन* लोगो, यहोवा
की खोज करो,[4]
तुम जो उसके नेक आदेशों# का
पालन करते हो।
नेकी की खोज करो, दीनता△ की
खोज करो।
मुमकिन है⊠ यहोवा के क्रोध
के दिन तुम्हारी हिफाज़त की
जाएगी।□[5]
4 क्योंकि गाज़ा नगरी सुनसान हो
जाएगी
और अश्कलोन उजाड़ दी
जाएगी।[6]
अशदोद को भरी दोपहरी में खदेड़
दिया जाएगा
और एक्रोन जड़ से उखाड़ दी
जाएगी।[7]
5 "उन लोगों का बहुत बुरा होगा जो
समुंदर किनारे रहते हैं, जो करेती
जाति के हैं![8]
यहोवा ने तुम्हें सज़ा सुनायी है।
हे पलिश्तियों के देश कनान, मैं तुझे
नाश कर दूँगा,
तेरे यहाँ एक भी निवासी नहीं
बचेगा।
6 समुंदर किनारे का इलाका चरागाह
बन जाएगा,
जहाँ चरवाहों के लिए कुएँ और
भेड़ों के लिए पत्थर के बाड़े
होंगे।
7 वह इलाका यहूदा के घराने के बचे
हुए लोगों का हो जाएगा,[1]
वे वहाँ खाएँगे।
अश्कलोन के घरों में वे शाम को
लेटेंगे।
क्योंकि उनका परमेश्वर यहोवा उन
पर ध्यान देगा*
और उनके लोगों को इकट्ठा
करके बँधुआई से वापस
लाएगा।"[2]
8 "मोआब ने मेरे लोगों को जिस तरह
बदनाम किया है,[3]
अम्मोनियों ने जिस तरह अपमान
किया है वह मैंने सुना है,[4]
उन्होंने मेरे लोगों पर ताने कसे और
घमंड से भरकर उनका इलाका
हड़पने की धमकी दी।"[5]
9 सेनाओं का परमेश्वर और इस-
राएल का परमेश्वर यहोवा
ऐलान करता है,
"इसलिए मैं अपने जीवन की शपथ
खाकर कहता हूँ,
मोआब सदोम जैसा हो जाएगा,[6]
अम्मोनी लोग अमोरा जैसे हो
जाएँगे,[7]
उनका इलाका बिच्छू-बूटी और
नमक का प्रदेश बन जाएगा और
हमेशा के लिए उजाड़ पड़ा
रहेगा।[8]

2:3 *या "नम्र।" #शा., "उसके फैसलों।" △या "नम्रता।" ⊠या "हो सकता है।" □या "तुम यहोवा के क्रोध के दिन छिपाए जाओगे।"

2:7 *या "उनकी देखभाल करेगा।"

अध्य. 2
1 यश 1:4; यिर्म 6:15
2 योए 1:14; योए 2:15, 16
3 2रा 23:26; 2इत 36:16, 17; यिर्म 23:20; विल 4:11
4 यश 55:6; आम 5:6
5 उत 7:13, 16; यश 26:20; योए 2:12, 14; आम 5:15
6 यिर्म 47:5
7 यिर्म 25:17, 20; आम 1:6-8; जक 9:5, 6
8 यहे 25:16, 17

दूसरा कॉल.
1 यश 11:11; यिर्म 31:7; हाग 1:12
2 भज 126:1; यिर्म 23:3; यहे 39:25; आम 9:14; मी 2:12; मी 4:10; सप 3:20
3 यिर्म 48:26, 27; यहे 25:8, 9
4 यिर्म 49:1; यहे 25:3
5 भज 83:2, 4
6 यहे 25:11; आम 2:1, 2
7 उत 19:24, 25
8 आम 1:13-15; यहू 7

मेरी प्रजा के बचे हुए लोग उन्हें
लूट लेंगे,
मेरे राष्ट्र के बचे हुए लोग उन्हें वहाँ
से भगा देंगे।
10 उन्हें घमंड करने[1] का यही सिला
मिलेगा,
क्योंकि उन्होंने सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा के लोगों पर ताने कसे
और उनसे खुद को ऊँचा
उठाया था।
11 यहोवा उनके लिए खौफनाक साबित
होगा,
क्योंकि वह धरती के सभी देवताओं
को बेकार कर देगा*
और राष्ट्रों के सभी द्वीप उसे
दंडवत# करेंगे,[2]
अपनी-अपनी जगह से दंडवत
करेंगे।
12 तुम इथियोपिया के लोग भी मेरी
तलवार से मारे जाओगे।[3]
13 वह अपना हाथ उत्तर की तरफ
बढ़ाएगा और अश्शूर का नाश
कर देगा,
नीनवे को उजाड़ देगा,[4] रेगिस्तान
जैसा सूखा बना देगा।
14 वहाँ हर तरह के जंगली जानवरों*
के झुंड रहा करेंगे।
रात में हवासिल और साही
उसके खंभों के कंगूरों पर
बसेरा करेंगे।
खिड़की से किसी के गाने की
आवाज़ आएगी।
दहलीज़ पर तबाही होगी, वह देव-
दार के तख्ते उखाड़ देगा।

2:11 *या "कमज़ोर कर देगा।" #या "उसकी उपासना।" 2:14 *शा., "एक राष्ट्र के हर जानवर।"

अध्य. 2
1 यश 16:6
यिर्म 48:29
2 भज 22:27
मला 1:11
3 यश 43:3
यहे 30:4, 5
4 नहू 3:7

दूसरा कॉल.
1 नहू 3:1, 19

अध्य. 3
2 यश 5:7
यिर्म 6:6
3 यिर्म 22:21
यिर्म 32:23
4 भज 50:17
यश 1:5
यिर्म 5:3
5 भज 78:22
यिर्म 17:5
6 यश 29:13
7 यश 1:23
यहे 22:27
8 विल 2:14
9 यिर्म 23:11
10 यहे 22:25, 26
मी 3:9
11 व्य 32:4
12 यिर्म 21:12
13 यिर्म 3:3
यिर्म 8:12
सप 2:1

15 यह वही घमंडी नगरी है जो महफूज़
बैठा करती थी,
जो दिल में कहती थी, 'मैं ही सबसे
पहली हूँ, कोई मेरी बराबरी नहीं
कर सकता।'
अब देखो, उसका ऐसा हश्र हुआ
है कि देखनेवालों का दिल दहल
जाता है,
वह जंगली जानवरों का अड्डा बन
गयी है!
उसके पास से गुज़रनेवाला हर कोई
मज़ाक उड़ाते हुए सीटी बजाएगा
और मुट्ठी हिलाएगा।"[1]

3 उस बगावती, दूषित, ज़ुल्मी नगरी
के साथ बुरा होगा![2]
2 उसने आज्ञा नहीं मानी,[3] शिक्षा
स्वीकार नहीं की।[4]
उसने यहोवा पर भरोसा नहीं
रखा,[5] वह अपने परमेश्वर के
करीब नहीं गयी।[6]
3 उसके हाकिम गरजते शेर हैं।[7]
उसके न्यायी रात में शिकार करते
भेड़िए हैं,
वे सुबह चबाने के लिए एक हड्डी
तक नहीं छोड़ते।
4 उसके भविष्यवक्ता गुस्ताख हैं,
दगाबाज़ हैं।[8]
उसके याजक पवित्र चीज़ों
को दूषित करते हैं,[9] कानून
तोड़ते हैं।[10]
5 उसके बीच निवास करनेवाला
यहोवा नेक है,[11] वह कुछ गलत
नहीं करता।
जैसे भोर का होना तय है वैसे
ही वह हर सुबह अपना न्याय-
सिद्धांत बताता है।[12]
मगर बुरे लोगों में शर्म नाम की
चीज़ नहीं।[13]

6 "मैंने राष्ट्रों को नाश कर दिया,
उनके कोने की मीनारें उजाड़ दी गयीं।
मैंने उनकी गलियाँ नाश कर दीं,
वहाँ से कोई नहीं गुज़रता।
उनके शहर खंडहर बना दिए गए,
वहाँ कोई नहीं बचा, एक भी निवासी नहीं।[1]
7 मैंने उस नगरी से कहा, 'तू मेरा डर मान और शिक्षा* स्वीकार कर'[2]
ताकि उसका निवास नाश न हो जाए[3]
—मैं इन सभी कामों के लिए उससे ज़रूर हिसाब माँगूँगा।#
मगर वे बुरे काम करने के लिए बहुत ही उतावले थे।[4]
8 यहोवा ऐलान करता है, 'तुम लोग उस दिन तक मेरा इंतज़ार करो,*[5]
जिस दिन मैं लूट का माल लेने के लिए उठूँगा,#
क्योंकि मेरा फैसला है कि राष्ट्रों को इकट्ठा किया जाए, राज्यों को जमा किया जाए
ताकि उन पर अपनी जलजलाहट और सारा क्रोध उँडेल दूँ,[6]
क्योंकि मेरे गुस्से की आग से पूरी धरती भस्म हो जाएगी।[7]
9 तब मैं देश-देश के लोगों को एक शुद्ध भाषा सिखाऊँगा
ताकि वे सब यहोवा का नाम पुकारें,
कंधे-से-कंधा मिलाकर उसकी सेवा करें।'*[1]
10 मेरे तितर-बितर हुए लोग, जो मुझसे मिन्नत करते हैं,
इथियोपिया की नदियों के इलाके से मेरे लिए एक तोहफा लेकर आएँगे।[2]
11 तूने मुझसे बगावत करके जितने काम किए हैं,
उनकी वजह से उस दिन तुझे शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा,[3]
क्योंकि तब मैं तेरे बीच से घमंडियों को निकाल दूँगा जो डींगें मारते हैं
और तू फिर कभी मेरे पवित्र पहाड़ पर घमंडी नहीं होगी।[4]
12 मैं तेरे बीच नम्र और दीन लोगों को रहने दूँगा,[5]
वे यहोवा के नाम में पनाह लेंगे।
13 इसराएल के बचे हुए लोग[6] बुरे काम नहीं करेंगे,[7]
झूठ नहीं बोलेंगे, न उनकी जीभ छल की बातें करेगी।
वे खाएँगे-पीएँगे* और आराम करेंगे, उन्हें कोई नहीं डराएगा।"[8]
14 हे सिय्योन की बेटी, खुशी से जय-जयकार कर!
हे इसराएल, जीत के नारे लगा![9]
हे यरूशलेम की बेटी, पूरे दिल से खुशियाँ मना और मगन हो![10]
15 यहोवा ने तेरी सज़ा माफ कर दी है।[11]
तेरे दुश्मन को दूर कर दिया है।[12]
इसराएल का राजा यहोवा तेरे बीच है।[13]

3:7 *या "सुधार के लिए दी गयी सलाह।" #या "उसे सज़ा दूँगा।" 3:8 *या "सब्र से इंतज़ार करो।" #या शायद, "मैं गवाह की तरह उठूँगा।"
3:9 *या "एकता से उसकी उपासना करें।"
3:13 *या "चरेंगे।"

अध्य. 3
1 लैव 18:28
2 यश 5:3, 4; यश 63:8; 2पत 3:9
3 यिर्म 7:5-7; यिर्म 25:5, 6
4 मी 2:1
5 भज 37:34; भज 130:7; यश 30:18
6 यश 34:2; योए 3:2; प्रक 16:14; प्रक 19:19
7 यहे 36:5

दूसरा कॉल.
1 जक 8:23
2 यश 60:4
3 यश 45:17; यश 54:4
4 यश 11:9
5 यश 57:15; यश 61:1
6 यश 10:22; मी 4:7
7 यश 60:21
8 यिर्म 30:10; यहे 34:28; यहे 39:25, 26; हो 2:18; मी 4:4
9 एज 3:11; यश 12:5, 6; जक 2:10
10 मी 4:8
11 यश 40:2; जक 8:13
12 मी 7:10; जक 2:8, 9
13 यहे 48:35

अब तुझे फिर कभी विपत्ति का डर
नहीं होगा।[1]
16 उस दिन यरूशलेम से कहा जाएगा,
"हे सिय्योन, मत डर।[2]
तेरे हाथ ढीले न पड़ें।
17 तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच है।[3]
एक वीर योद्धा की तरह वह तुझे
बचाएगा।
वह तेरी वजह से बहुत खुश
होगा।[4]
तुझसे प्यार करने की वजह से वह
शांत* रहेगा।
वह तुझे देखकर खुशी से
चिल्लाएगा।
18 मैं उन सबको इकट्ठा करूँगा जो तेरे
त्योहारों में न आने की वजह से
दुखी हैं,[5]
वे इसलिए नहीं आ पाते थे क्योंकि
वे बँधुआई में अपमान सह
रहे थे।[6]
19 देख! उस समय मैं उन सबके
खिलाफ कदम उठाऊँगा जो तुझे
सताते हैं,[1]
मैं उसे बचाऊँगा जो लँगड़ा रहा है,[2]
उन्हें इकट्ठा करूँगा जो तितर-बितर
हो गए हैं।[3]
जिन देशों में उन्हें शर्मिंदा होना
पड़ा था,
वहाँ मैं उनकी तारीफ कराऊँगा,
उन्हें मशहूर कर दूँगा।
20 उस समय मैं तुम लोगों को वापस
लाऊँगा,
उस समय तुम सबको इकट्ठा
करूँगा।
जब मैं तुम्हारी आँखों के सामने
तुम्हारे लोगों को बँधुआई से
वापस लाऊँगा,
तब मैं धरती के सब देशों में तुम्हें
मशहूर कर दूँगा, तुम्हारी तारीफ
कराऊँगा।"[4] यह बात यहोवा ने
कही है।[5]

3:17 *या "चुप; बेफिक्र; संतुष्ट।"

अध्य. 3
1 आम 9:15, जक 14:11
2 यिर्म 46:28
3 यश 12:6
4 व्य 30:9, भज 147:11, यश 62:3, यश 65:19, यिर्म 32:41
5 विल 1:4, विल 2:6
6 विल 5:1

दूसरा कॉल.
1 यश 60:14, जक 14:3
2 मी 4:6, 7
3 यश 11:11, 12, यश 27:12, यहे 28:25, यहे 34:15, 16, आम 9:14
4 यश 60:15
5 यश 61:7, यिर्म 30:10, यिर्म 33:7, 9, यहे 39:25, 27

हाग्गै

सारांश

1 मंदिर दोबारा न बनाने की वजह से फटकार मिली (1-11)
- 'क्या यह वक्त बढ़िया-बढ़िया घरों में रहने का है?' (4)
- "अपने तौर-तरीकों पर ध्यान दो" (5)
- बोया बहुत मगर फसल कम (6)

लोगों ने यहोवा की बात मानी (12-15)

2 दूसरा मंदिर महिमा से भरा होगा (1-9)
- सब राष्ट्र हिलाए जाएँगे (7)
- राष्ट्रों की अनमोल चीज़ें आएँगी (7)

मंदिर दोबारा बनाने पर आशीषें (10-19)
- पवित्र चीज़ें छूने से पवित्र नहीं होती (10-14)

जरुबाबेल के लिए संदेश (20-23)
- "मैं तुझे मुहरवाली अँगूठी की तरह बनाऊँगा" (23)

1 राजा दारा के राज के दूसरे साल
के छठे महीने के पहले दिन, यहोवा
का संदेश भविष्यवक्ता हाग्गै*[1] के ज़रिए
यहूदा के राज्यपाल जरुबाबेल[2] और
महायाजक यहोशू के पास पहुँचा। जरु-
बाबेल, शालतीएल का बेटा था और
यहोशू, यहोसादाक का बेटा था। उन्हें यह
संदेश दिया गयाः
2 “सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, ‘ये लोग कहते हैं, “यहोवा
का भवन* बनाने# का समय अभी नहीं
आया है।”’”[3]
3 एक बार फिर यहोवा का यह
संदेश भविष्यवक्ता हाग्गै[4] के ज़रिए
दिया गयाः 4 “क्या यह वक्त है कि तुम
बढ़िया-बढ़िया लकड़ियों से सजे घरों में
रहो, जबकि मेरा भवन उजाड़ पड़ा
है?[5] 5 अब सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा कहता है, ‘अपने तौर-तरीकों
पर ध्यान दो। 6 तुम बोते तो बहुत
हो मगर तुम्हें फसल कम मिलती है।[6]
तुम खाते हो मगर पेट नहीं भरता।
पीते हो मगर संतुष्ट नहीं होते। तुम
कपड़े पहनते हो मगर तुम्हें गरमी नहीं
मिलती। मज़दूरी करनेवाला अपनी मज़-
दूरी ऐसी थैली में डालता है जिसमें छेद-
ही-छेद हैं।’”
7 “सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, ‘अपने तौर-तरीकों पर
ध्यान दो।’
8 यहोवा कहता है, ‘पहाड़ पर जाओ,
लकड़ी लाओ।[7] मेरा भवन बनाओ[8]
ताकि मुझे उससे खुशी मिले और मेरी
महिमा हो।’”[9]
9 “सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, ‘तुमने ढेर सारी फसल पाने
की उम्मीद की मगर थोड़ी ही पायी
और जब तुम उसे अपने घर में लाए
तो मैंने उसे फूँककर उड़ा दिया।[1] जानते
हो मैंने ऐसा क्यों किया? क्योंकि मेरा
भवन उजाड़ पड़ा है, फिर भी तुम सब
अपने-अपने घर के लिए भाग-दौड़ कर
रहे हो।[2] 10 यही वजह है कि आकाश
ने ओस बरसाना और धरती ने उपज देना
बंद कर दिया है। 11 मैं ज़मीन और
पहाड़ों पर, अनाज, नयी दाख-मदिरा
और तेल पर, ज़मीन से उगनेवाली हर
चीज़ पर, इंसानों और जानवरों पर और
तुम्हारे हाथ की सारी मेहनत पर सूखे को
बार-बार बुलाता रहा।’”
12 शालतीएल के बेटे जरुबाबेल[3]
और यहोसादाक[4] के बेटे, महायाजक
यहोशू और बाकी सब लोगों ने अपने पर-
मेश्वर यहोवा की बात और भविष्य-
वक्ता हाग्गै की बात मानी क्योंकि उनके
परमेश्वर यहोवा ने ही उसे यह संदेश
देने भेजा था। और लोग यहोवा का डर
मानने लगे।
13 फिर यहोवा के दूत हाग्गै ने
यहोवा से मिली ज़िम्मेदारी निभाते हुए
लोगों को यह संदेश सुनायाः “यहोवा
ऐलान करता है, ‘मैं तुम लोगों के
साथ हूँ।’”[5]
14 इसलिए यहोवा ने शालतीएल के
बेटे, यहूदा के राज्यपाल जरुबाबेल[6]
और यहोसादाक के बेटे, महायाजक
यहोशू[7] और बाकी सब लोगों के मन को
उभारा[8] और उन सबने आकर अपने पर-
मेश्वर, सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का
भवन बनाने का काम शुरू कर दिया।[9]
15 उन्होंने यह काम राजा दारा के राज
के दूसरे साल के छठे महीने के 24वें दिन
शुरू किया।[10]

1:1 *मतलब “त्योहार में पैदा हुआ।” **1:2** *या “मंदिर।” #या “दोबारा बनाने।”

अध्य. 1
1 एज 5:1
2 एज 3:2; एज 5:2
3 एज 4:4, 23
4 एज 6:14
5 यिर्म 52:12, 13
6 व्य 28:22
7 एज 3:7
8 एज 5:2; एज 6:15; जक 1:16
9 यश 60:13

दूसरा कॉल.
1 मला 2:2
2 हाग 1:4
3 1इत 3:17-19; मत 1:12; लूक 3:23, 27
4 1इत 6:15
5 2इत 15:2; यश 8:10; रोम 8:31
6 एज 1:8; एज 5:14
7 जक 3:1; जक 6:11-13
8 एज 1:1, 5
9 एज 5:2; जक 6:15
10 एज 4:24; हाग 1:1; जक 1:1

2 सातवें महीने के 21वें दिन यहोवा का यह संदेश भविष्यवक्ता हाग्गै[1] के ज़रिए दिया गयाः **2** "शालतीएल के बेटे, यहूदा के राज्यपाल जरुबाबेल[2] और यहोसादाक[3] के बेटे, महायाजक यहोशू[4] से और बाकी लोगों से ज़रा यह सवाल पूछः **3** 'तुममें से किन लोगों ने इस भवन* की पहले की शान देखी है?[5] अब तुम्हें यह कैसा लग रहा है? क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि यह पहलेवाले भवन के मुकाबले कुछ भी नहीं?'[6]

4 यहोवा ऐलान करता है, 'फिर भी जरुबाबेल, हिम्मत रख। यहोसादाक के बेटे महायाजक यहोशू, तू भी हिम्मत रख।'

यहोवा ऐलान करता है, 'देश के सब लोगो, तुम हिम्मत रखो[7] और काम करो।'

'क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ,'[8] सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का यह ऐलान है। **5** 'जब तुम मिस्र से निकले थे तब मैंने तुमसे जो वादा किया था,[9] उसे याद करो और मेरी शक्ति तुम पर काम करती रहेगी।*[10] तुम मत डरो।'"[11]

6 "सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मैं थोड़ी देर बाद, एक बार फिर आकाश और धरती और समुंदर और सूखी ज़मीन को हिलाऊँगा।'[12]

7 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मैं सब राष्ट्रों को हिलाऊँगा और सब राष्ट्रों की अनमोल* चीज़ें इस भवन में आएँगी[13] और मैं इस भवन को महिमा से भर दूँगा।'[14]

8 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा ऐलान करता है, 'चाँदी मेरी है, सोना भी मेरा है।'

9 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'आगे चलकर इस भवन की ऐसी शान होगी जो पहले की शान से भी बढ़कर होगी।'[1]

सेनाओं का परमेश्वर यहोवा ऐलान करता है, 'और मैं इस जगह शांति दूँगा।'"[2]

10 दारा के राज के दूसरे साल के नौवें महीने के 24वें दिन, यहोवा का यह संदेश भविष्यवक्ता हाग्गै के पास पहुँचाः[3] **11** "सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'ज़रा याजकों से कानून के बारे में पूछ,[4] **12** "अगर एक आदमी अपने कपड़े की तह में पवित्र माँस बाँधकर ले जाए और उसका कपड़ा रोटी या शोरबा या दाख-मदिरा या तेल या किसी और खाने की चीज़ को छू जाए तो क्या वह चीज़ पवित्र हो जाएगी?"'"

याजकों ने जवाब दिया, "नहीं!"

13 फिर हाग्गै ने पूछा, "अगर एक आदमी किसी लाश* को छूने की वजह से अशुद्ध हो जाए और वह इनमें से किसी चीज़ को छुए तो क्या वह अशुद्ध हो जाएगी?"[5]

याजकों ने जवाब दिया, "हाँ, वह अशुद्ध हो जाएगी।"

14 तब हाग्गै ने कहा, "यहोवा ऐलान करता है, 'मेरी नज़रों में ये लोग और यह राष्ट्र भी ऐसे ही हैं। उनके सभी काम और उनकी अर्पित की हुई हर चीज़ अशुद्ध है।'

15 'मगर आज से तुम ज़रा इस बात पर ध्यान देनाः यहोवा के मंदिर को दोबारा बनाने का काम शुरू करने से

अध्य. 2

1 एज 5:1, एज 6:14
2 1इत 3:17-19, एज 1:8, जक 4:9
3 1इत 6:15
4 जक 3:8, जक 6:11
5 1रा 6:1, एज 3:12
6 जक 4:10
7 जक 8:9
8 निर्ग 3:12, यश 43:2, रोम 8:31
9 निर्ग 29:45, निर्ग 34:10
10 जक 4:6
11 यश 41:10, जक 8:13
12 इब्र 12:26, 27
13 यश 2:2, यश 60:5, 11
14 निर्ग 40:35, 1रा 8:11, यश 66:12

दूसरा कॉल.

1 यश 60:13
2 भज 85:8, यश 2:4, यश 60:17, 18, जक 8:12
3 हाग 1:1
4 मला 2:7
5 लैव 7:21, गि 5:2, 3, गि 9:6, गि 19:11, गि 31:19

2:3 *या "मंदिर।" **2:5** *या शायद, "तब मेरी शक्ति तुम्हारे बीच खड़ी थी।" **2:7** *या "मनभावनी।"

2:13 *शब्दावली में "जीवन" देखें।

पहले[1] 16 तुम्हारी क्या हालत थी? जब कोई अनाज के ढेर के पास 20 पैमाना अनाज पाने की उम्मीद से जाता, तो उसे सिर्फ 10 पैमाना मिलता था। और जब कोई हौद के पास 50 पैमाना दाख-मदिरा पाने की उम्मीद से जाता, तो उसे सिर्फ 20 पैमाना मिलता था।[2] 17 मैंने तुम्हारी फसलों को झुलसन, बीमारी और ओलों से मारा[3] और तुम्हारे हाथ की सारी मेहनत नाश कर दी, फिर भी तुममें से कोई मेरी तरफ नहीं फिरा।' यहोवा का यह ऐलान है।

18 'मगर आज से, नौवें महीने के इस 24वें दिन से, जब यहोवा के मंदिर की नींव डाली गयी,[4] तुम इस बात पर ध्यान देना: 19 क्या बीज अब भी भंडार* में है?[5] क्या अंगूर, अंजीर, अनार और जैतून पेड़ में अब तक फल नहीं लगे? मगर आज से मैं तुम्हें आशीष दूँगा।'"[1]

20 उसी महीने के 24वें दिन, दूसरी बार यहोवा का यह संदेश हाग्गै के पास पहुँचा:[2] 21 "यहूदा के राज्यपाल जरुबाबेल से कह, 'मैं आकाश और धरती को हिलाने जा रहा हूँ।[3] 22 मैं राजाओं की राजगद्दियाँ उलट दूँगा और राष्ट्रों के राजाओं की ताकत मिटा दूँगा।[4] मैं रथ और उसके सवारों को पलट दूँगा और घोड़े और उनके सवार एक-दूसरे की तलवार के वार से गिर पड़ेंगे।'"[5]

23 "सेनाओं का परमेश्वर यहोवा ऐलान करता है, 'हे शालतीएल के बेटे, मेरे सेवक जरुबाबेल,[6] उस दिन मैं तुझे बुलाऊँगा।'[7] यहोवा ऐलान करता है, 'मैं तुझे मुहरवाली अँगूठी की तरह बनाऊँगा क्योंकि मैंने तुझी को चुना है।' सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का यह ऐलान है।"

2:19 *या "अनाज के गड्ढे।"

अध्य. 2
1 एज 3:10; जक 4:9
2 हाग 1:6; जक 8:10
3 व्य 28:22
4 एज 5:2; जक 8:9
5 हाग 1:6

दूसरा कॉल.
1 नीत 3:9, 10; जक 8:12
2 हाग 2:10
3 हाग 2:6; इब्र 12:26, 27
4 यश 60:12; दान 2:44; सप 3:8
5 न्या 7:22
6 मत 1:12
7 एज 3:8

जकरयाह

सारांश

1 यहोवा का बुलावा (1-6)
- "मेरे पास लौट आओ! तब मैं तुम्हारे पास लौट आऊँगा" (3)

पहला दर्शन: मेंहदी के पेड़ों में घुड़सवार (7-17)
- "यहोवा फिर से सिय्योन को दिलासा देगा" (17)

दूसरा दर्शन: 4 सींग, 4 कारीगर (18-21)

2 तीसरा दर्शन: एक आदमी नापने की डोरी लिए हुए (1-13)
- यरूशलेम नापा जाएगा (2)
- यहोवा "चारों तरफ आग की दीवार" है (5)
- परमेश्वर की आँख की पुतली छूना (8)
- कई राष्ट्र यहोवा से जुड़ जाएँगे (11)

3 चौथा दर्शन: महायाजक यहोशू के कपड़े बदले गए (1-10)
- शैतान उसका विरोध करता है (1)
- 'मैं अपने सेवक अंकुर को लाऊँगा' (8)

4 पाँचवाँ दर्शन: एक दीवट और जैतून के दो पेड़ (1-14)
- "न ताकत से बल्कि मेरी पवित्र शक्ति से" (6)
- छोटी शुरूआत को तुच्छ न जानो (10)

5 छठा दर्शन: उड़ता हुआ खर्रा (1-4)

सातवाँ दर्शनः एपा का बरतन (5-11)
उसमें बैठी औरत दुष्टता की निशानी (8)
बरतन शिनार ले जाया गया (9-11)

6 आठवाँ दर्शनः चार रथ (1-8)
वह अंकुर, राजा और याजक होगा (9-15)

7 उपवास के ढोंग के लिए यहोवा धिक्कारता है (1-14)
‘क्या उपवास सचमुच मेरे लिए था?’ (5)
‘न्याय करो, दया करो और अटल प्यार रखो’ (9)

8 यहोवा सिय्योन में शांति और सच्चाई फैलाता है (1-23)
यरूशलेम “सच्चाई की नगरी” (3)
“एक-दूसरे से सच बोलना” (16)
उपवास जश्न में बदला (18, 19)
‘आओ, यहोवा की खोज करें’ (21)
दस लोग, एक यहूदी के कपड़े का छोर पकड़ेंगे (23)

9 पड़ोसी राष्ट्रों को परमेश्वर की तरफ से सज़ा (1-8)
सिय्योन के राजा का आना (9, 10)
वह नम्र राजा गधे पर सवार होकर आता है (9)
यहोवा के लोग आज़ाद होंगे (11-17)

10 यहोवा से बारिश माँगो, झूठे ईश्वरों से नहीं (1, 2)
यहोवा अपने लोगों को एक करता है (3-12)
यहूदा के घराने से एक अगुवा निकलेगा (3, 4)

11 परमेश्वर के सच्चे चरवाहे को ठुकराने का नतीजा (1-17)
“घात होनेवाली भेड़ों का चरवाहा बन जा” (4)
दो लाठियाँः कृपा और एकता (7)
चरवाहे की मज़दूरीः चाँदी के 30 टुकड़े (12)
पैसे, खज़ाने में फेंक दिए गए (13)

12 यहोवा, यहूदा और यरूशलेम की रक्षा करेगा (1-9)
यरूशलेम एक “भारी पत्थर” (3)
जिसे भेदा गया उसके लिए रोना (10-14)

13 मूरतों और झूठे भविष्यवक्ताओं को निकालना (1-6)
झूठे भविष्यवक्ता शर्मिंदा (4-6)
चरवाहे को मारा जाएगा (7-9)
एक-तिहाई लोग शुद्ध किए जाएँगे (9)

14 सच्ची उपासना की बड़ी जीत (1-21)
जैतून पहाड़ का दो हिस्सों में बँटना (4)
यहोवा एक होगा और उसका नाम भी एक होगा (9)
यरूशलेम के दुश्मनों पर महामारी (12-15)
छप्परों का त्योहार मनाना (16-19)
हर हंडा यहोवा के लिए पवित्र (20, 21)

---

1 दारा के राज के दूसरे साल के आठवें
महीने में,[1] बेरेक्याह के बेटे और इद्दो के
पोते भविष्यवक्ता जकरयाह* के पास
यहोवा का यह संदेश पहुँचा:[2] 2 “यहोवा
का क्रोध तुम्हारे पुरखों पर भड़का था।[3]
3 उनसे कह, ‘सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा कहता है, “मैं सेनाओं का पर-
मेश्वर यहोवा हूँ, मेरे पास लौट आओ!
तब मैं तुम्हारे पास लौट आऊँगा।”[1]
यह बात सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने
कही है।’
4 ‘अपने पुरखों के समान मत बनो,
जिन्हें पहले के भविष्यवक्ताओं ने कहा
था, “सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता

1:1 * मतलब “यहोवा ने याद किया है।”

अध्य. 1
1 एज 4:24; हाग 1:1; हाग 2:10
2 एज 5:1
3 2रा 22:16, 17; यिर्म 44:5, 6

दूसरा कॉल.
1 यहे 33:11; मी 7:18, 19; मला 3:7

है, ‘अपनी बुरी राहें और बुरे काम छोड़
दो और मेरे पास लौट आओ!’”’[1]
यहोवा कहता है, ‘लेकिन उन्होंने मेरी
एक न सुनी, मुझ पर कोई ध्यान नहीं
दिया।’[2]
5 ‘आज तुम्हारे पुरखे कहाँ हैं? और
क्या वे भविष्यवक्ता अब तक ज़िंदा हैं?
6 मगर मैंने अपने सेवकों को, अपने
भविष्यवक्ताओं को जो आदेश और
संदेश सुनाने को कहा था, उसका क्या
हुआ? क्या वह तुम्हारे पुरखों पर पूरा
नहीं हुआ?’[3] इसलिए वे मेरे पास लौट
आए और उन्होंने कहा, ‘हमने जो काम
किए, जो राह अपनायी, हमें उसी का
सिला मिला है। सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा ने हमारे साथ वही किया जो उसने
ठाना था।’”[4]
7 दारा के राज के दूसरे साल में,[5]
शबात* नाम के 11वें महीने के 24वें
दिन यहोवा का यह संदेश बेरेक्याह के बेटे
और इद्दो के पोते भविष्यवक्ता जकरयाह
के पास पहुँचा: **8** “रात को मुझे एक
दर्शन मिला। मैंने देखा कि एक आदमी
लाल घोड़े पर आ रहा है। वह आकर तंग
घाटी में मेंहदी के पेड़ों के बीच खड़ा हो
गया। उसके पीछे लाल, भूरे और सफेद
रंग के घोड़े थे।”
9 तब मैंने पूछा, “हे प्रभु, ये
कौन हैं?”
जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था
उसने कहा, “मैं तुझे बताऊँगा कि ये
कौन हैं।”
10 तब जो आदमी मेंहदी के पेड़ों के
बीच खड़ा था उसने कहा, “इन्हें यहोवा
ने भेजा है कि वे धरती का चक्कर
लगाकर आएँ।” **11** उन्होंने यहोवा के
स्वर्गदूत से जो मेंहदी के पेड़ों के बीच खड़ा
था कहा, “हम पृथ्वी का चक्कर लगाकर
आए हैं और देख! पूरी पृथ्वी शांत है, वहाँ
कोई खलबली नहीं।”[1]
12 तब यहोवा के स्वर्गदूत ने कहा,
“हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, तू यहूदा
के शहरों और यरूशलेम पर 70 साल
तक क्रोधित रहा,[2] अब और कब तक तू
उन पर दया नहीं करेगा?”[3]
13 जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर
रहा था, यहोवा ने बड़े प्यार से उसे
जवाब दिया और दिलासा दिया।
14 तब जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर
रहा था उसने मुझसे कहा, “ऐलान कर,
‘सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता है
कि मैं यरूशलेम और सिय्योन के लिए
बेचैन हो उठा हूँ, अंदर-ही-अंदर तड़प
रहा हूँ।[4] **15** मैं उन राष्ट्रों से बहुत
क्रोधित हूँ जो चैन से जी रहे हैं।[5] क्योंकि
मैंने अपने लोगों को थोड़ी-सी सज़ा देनी
चाही,[6] मगर उन्होंने मेरे लोगों को पूरी
तरह तबाह कर दिया।’[7]
16 इसलिए यहोवा कहता है, ‘“मैं दया
करने के लिए यरूशलेम लौटूँगा[8] और
अपने भवन को दोबारा खड़ा करूँगा।[9]
यरूशलेम नगरी को खड़ा करने के लिए
उसे नापने की डोरी से नापा जाएगा।”[10]
यह बात सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने
कही है।’
17 एक बार फिर ऐलान कर,
‘सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता है,
“मेरे शहर एक बार फिर खुशहाली* से
भर जाएँगे। यहोवा फिर से सिय्योन को
दिलासा देगा[11] और यरूशलेम को चुन
लेगा।”’”[12]
18 फिर मैंने नज़र उठायी और मुझे
चार सींग दिखायी दिए।[13] **19** मैंने उस

अध्य. 1
1 एज 9:6, 7; यश 1:16; यश 55:7; हो 14:1
2 2इत 36:15, 16; यिर्म 11:7, 8
3 2इत 36:17; दान 9:11, 12
4 व्य 28:20, 45; यिर्म 23:20
5 एज 4:24

दूसरा कॉल.
1 जक 1:15
2 2इत 36:20, 21; यिर्म 25:11, 12; दान 9:2; जक 7:5
3 भज 74:10; भज 102:13
4 योए 2:18; जक 8:2
5 यिर्म 48:11; जक 1:11
6 यश 54:8
7 भज 137:7; यश 47:6; यिर्म 51:35
8 यश 12:1; यिर्म 33:14; जक 8:3
9 एज 6:14, 15; यश 44:28; हाग 1:14
10 यिर्म 31:38, 39; यहे 40:2, 3; जक 2:1, 2
11 यश 51:3
12 भज 132:13; जक 2:12; जक 3:2
13 जक 1:21

1:7 *अति. ख15 देखें।

1:17 *शा., “भलाई” जो परमेश्वर की तरफ से है।

स्वर्गदूत से जो मुझसे बात कर रहा था पूछा, “ये क्या हैं?” उसने कहा, “ये वे सींग हैं जिन्होंने यहूदा, इसराएल और यरूशलेम को तितर-बितर किया था।”[1]

20 इसके बाद यहोवा ने मुझे चार कारीगर दिखाए। **21** मैंने पूछा, “ये क्या करने आ रहे हैं?”

उसने कहा, “उन सींगों ने यहूदा को इस हद तक तितर-बितर किया था कि कोई सिर नहीं उठा सका। ये कारीगर उनमें आतंक फैलाने आ रहे हैं। ये उन सींगों को तोड़ देंगे, जो राष्ट्रों ने यहूदा देश को तितर-बितर करने के लिए उठाए थे।”

2 फिर मैंने नज़र उठायी और देखा, एक आदमी हाथ में नापने की डोरी लिए है।[2] **2** मैंने पूछा, “तू कहाँ जा रहा है?”

उसने कहा, “मैं यरूशलेम की लंबाई-चौड़ाई नापने जा रहा हूँ।”[3]

3 फिर मैंने देखा, जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था वह चला गया और एक दूसरा स्वर्गदूत उससे मिलने आया। **4** उस स्वर्गदूत ने उससे कहा, “दौड़कर उस जवान आदमी के पास जा और उसे बता, ‘यरूशलेम एक खुली बस्ती* की तरह आबाद होगी[4] क्योंकि उसमें आदमियों और मवेशियों की गिनती बढ़ती जाएगी।’[5] **5** यहोवा ऐलान करता है, ‘मैं उसके चारों तरफ आग की दीवार बनकर रहूँगा[6] और उसे अपनी महिमा से भर दूँगा।’”[7]

6 यहोवा ऐलान करता है, “भाग आओ! भाग आओ! उत्तर के देश से निकल आओ!”[8]

यहोवा कहता है, “मैंने तुम्हें चारों दिशाओं में* तितर-बितर कर दिया है।”[1]

7 “हे सिय्योन, निकल आ! तू जो बैबिलोन की बेटी के संग रहती है, भाग आ![2] **8** सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने महिमा पाने के बाद, मुझे उन राष्ट्रों के पास भेजा है जिन्होंने तुम्हें लूटा था।[3] वह कहता है, ‘जो तुम्हें छूता है वह मेरी आँख की पुतली को छूता है।[4] **9** मैं अपना हाथ उनके खिलाफ उठाऊँगा और वे अपने ही गुलामों के लिए लूट का माल बन जाएँगे।’[5] और तुम जान लोगे कि सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने मुझे भेजा है।”

10 यहोवा ऐलान करता है, “हे सिय्योन की बेटी, खुशी से चिल्ला![6] क्योंकि मैं आ रहा हूँ[7] और मैं तेरे बीच रहूँगा।[8] **11** उस दिन कई राष्ट्र मुझ यहोवा के साथ जुड़ जाएँगे[9] और मेरे लोग बन जाएँगे और मैं तेरे बीच रहूँगा।” और तू जान लेगी कि सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने मुझे तेरे पास भेजा है। **12** यहोवा पवित्र ज़मीन पर यहूदा को अपना हिस्सा मानकर उस पर अधिकार कर लेगा और यरूशलेम को फिर से चुन लेगा।[10] **13** हर इंसान यहोवा के सामने चुप रहे क्योंकि वह कदम उठाने के लिए अपने पवित्र निवास से आ रहा है।

3 फिर उसने मुझे महायाजक यहोशू[11] दिखाया, जो यहोवा के स्वर्गदूत के सामने खड़ा है। और यहोशू के दायीं तरफ शैतान[12] उसका विरोध करने के लिए खड़ा है। **2** यहोवा के स्वर्गदूत ने शैतान से कहा, “हे शैतान, यहोवा तुझे

2:4 *यानी उसके चारों तरफ शहरपनाह नहीं होगी।

2:6 *शा., “आकाश की चारों हवाओं की तरह।”

अध्य. 1

1 2रा 15:29, 2रा 17:6, 2रा 18:11, 2रा 24:12, 14, 2रा 25:11, 2इत 36:17, 19, यिर्म 50:17

अध्य. 2

2 जक 1:16
3 यिर्म 31:38, 39
4 यश 44:26, यिर्म 30:18, यहे 36:10
5 यश 33:20, यिर्म 31:24, यिर्म 33:10, 11, जक 8:4, 5
6 भज 125:2, यश 26:1
7 यश 12:6, यश 60:19, 20, हाग 2:9
8 यश 11:12, 16

दूसरा कॉल.

1 व्य 28:64, यहे 5:12
2 यश 48:20, यश 52:2, यिर्म 50:8, मी 4:10
3 2रा 24:2, मी 4:11
4 व्य 32:9, 10, भज 105:14, 15, 2थि 1:6
5 यश 14:2
6 यश 35:10
7 यश 40:9, 10
8 लैव 26:11, 12, यश 12:6
9 भज 22:27, यश 2:2, 3, जक 8:22, 23
10 2इत 6:6, जक 1:17

अध्य. 3

11 एज 5:2, हाग 1:14, जक 6:11
12 अय 1:6

डाँटे![1] हाँ, यहोवा जिसने यरूशलेम को
चुना है,[2] वही तुझे डाँटे। क्या यह आदमी
जलते हुए लट्ठे जैसा नहीं जिसे आग से
निकाला गया हो?”

3 यहोशू मैले कपड़ों में स्वर्गदूत के
सामने खड़ा था। 4 स्वर्गदूत ने उनसे
जो उसके सामने खड़े थे कहा, “उसके
मैले कपड़े उतार दो।” फिर उसने यहोशू
से कहा, “देख, मैंने तेरा गुनाह* दूर कर
दिया है। अब तुझे बढ़िया कपड़े पहनाए
जाएँगे।”[3]

5 तब मैंने कहा, “उसे साफ पगड़ी
पहनायी जाए।”[4] उन्होंने उसके सिर पर
साफ पगड़ी रखी और उसे बढ़िया कपड़े
पहनाए। उस वक्त यहोवा का स्वर्गदूत
पास ही खड़ा था। 6 फिर यहोवा के
स्वर्गदूत ने यहोशू से कहा, 7 “सेनाओं
का परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘अगर तू
मेरी राहों पर चले और मेरे सामने अपनी
ज़िम्मेदारियाँ पूरी करे, तो तू मेरे घर में
न्यायी बनकर सेवा करेगा[5] और मेरे
आँगनों की देखभाल* करेगा। और जो
यहाँ खड़े हैं उनके साथ तू भी मेरे सामने
आया-जाया करेगा।’

8 ‘हे महायाजक यहोशू, तू और तेरे
साथी जो तेरे सामने बैठते हैं, तुम लोग
भविष्य के लिए एक निशानी हो। मेहर-
बानी करके मेरी बात पर ध्यान दोः देखो!
मैं अपने सेवक को ला रहा हूँ,[6] जो
अंकुर कहलाएगा।[7] 9 उस पत्थर को
देखो, जिसे मैंने यहोशू के सामने रखा है।
उस एक पत्थर पर सात आँखें लगी हैं।
मैं उस पर खोदकर कुछ लिख रहा हूँ।
मैं उस देश का गुनाह एक ही दिन में दूर
कर दूँगा।’ यह बात सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा ने कही है।[8]

10 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
ऐलान करता है, ‘उस दिन तुममें से हर
कोई अपने पड़ोसी को बुलाएगा कि वह
तुम्हारी अंगूरों की बेल के नीचे और
तुम्हारे अंजीर के पेड़ तले आए।’”[1]

4 फिर जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर
रहा था, वापस आया। उसने आकर
मुझे जगाया जैसे कोई सोते हुए को
जगाता है। 2 उसने पूछा, “तुझे क्या
दिख रहा है?”

मैंने कहा, “मुझे एक दीवट दिख रहा
है जो सोने का बना है[2] और उसके ऊपर
एक कटोरा है। दीवट पर सात दीए हैं,[3]
हाँ, पूरे सात दीए! उनसे सात नलियाँ
निकल रही हैं जो उस कटोरे से जुड़ी हैं।
3 दीवट के पास जैतून के दो पेड़ लगे
हैं।[4] एक उस कटोरे के दायीं तरफ और
दूसरा बायीं तरफ।”

4 तब मैंने उस स्वर्गदूत से जो मुझसे
बात कर रहा था पूछा, “हे मेरे प्रभु, इन
सबका क्या मतलब है?” 5 उस स्वर्ग-
दूत ने जो मुझसे बात कर रहा था कहा,
“क्या तुझे नहीं पता?”

मैंने कहा, “नहीं प्रभु, मुझे नहीं पता।”
6 तब उसने मुझसे कहा, “जरुबाबेल
के लिए यहोवा का यह संदेश है, सेनाओं
का परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘न किसी
सेना से, न ताकत से[5] बल्कि मेरी
पवित्र शक्ति से यह सब होगा।’[6] 7 हे
विशाल पहाड़, तू है क्या चीज़? जरुबा-
बेल[7] के सामने तू समतल* हो जाएगा।[8]
जब वह चोटी का पत्थर लेकर आएगा
तो यह आवाज़ गूँज उठेगी, ‘बहुत खूब!
बहुत खूब!’”

8 यहोवा ने फिर से मुझे एक संदेश
दियाः 9 “जरुबाबेल के हाथों ने ही इस
घर की नींव डाली थी[9] और उसी के हाथों

3:4 * या “दोष।” **3:7** * या “रखवाली।”

4:7 * या “मैदान।”

अध्य. 3
1 यहू 9
2 2इत 6:6; जक 2:12
3 निर्ग 28:2
4 निर्ग 29:6
5 मला 2:7
6 यश 42:1; यश 52:13
7 यश 11:1; यश 53:2, 11; यिर्म 23:5; यिर्म 33:15; जक 6:12
8 यिर्म 50:20

दूसरा कॉल.
1 1रा 4:25; हो 2:18; मी 4:4

अध्य. 4
2 निर्ग 25:31; 1रा 7:48, 49
3 निर्ग 25:37
4 जक 4:11, 14; प्रक 11:3, 4
5 1शम 17:45; हो 1:7
6 न्या 6:34; न्या 15:14
7 एज 3:2; हाग 1:1
8 यश 40:4
9 एज 3:8, 10; एज 5:14, 16

यह घर बनकर पूरा होगा।[1] (तुम लोगों
को जानना होगा कि सेनाओं के परमेश्‍वर
यहोवा ने ही मुझे तुम्हारे पास भेजा
है।) **10** उस छोटी-सी शुरूआत* को
कोई तुच्छ न जाने।[2] जरुबाबेल के
हाथ में साहुल देखकर लोग झूम उठेंगे
और सात आँखें भी खुशियाँ मनाएँगी।
ये सात आँखें यहोवा की हैं जो पूरी पृथ्वी
पर फिरती हैं।"[3]

11 फिर मैंने उससे पूछा, "दीवट
के दायीं और बायीं तरफ जैतून के
इन दो पेड़ों का क्या मतलब है?"[4]
12 मैंने उससे दूसरी बार पूछा, "इनकी
दो डालियों* का क्या मतलब है, जो सोने
की दो नलियों से कटोरे में सुनहरा तेल
उँडेल रही हैं?"

13 उसने मुझसे कहा, "क्या तुझे नहीं
पता?"

मैंने कहा, "नहीं प्रभु, मुझे नहीं पता।"

14 उसने कहा, "ये उन दो अभिषिक्‍त
जनों को दर्शाते हैं जो पूरी धरती के
मालिक के पास खड़े हैं।"[5]

5 मैंने फिर ऊपर नज़र उठायी और
क्या देखा कि एक खर्रा उड़ रहा है।
2 स्वर्गदूत ने मुझसे पूछा, "तुझे क्या
दिखायी दे रहा है?"

मैंने कहा, "मुझे एक खर्रा उड़ता हुआ
दिख रहा है, जिसकी लंबाई 20 हाथ*
और चौड़ाई 10 हाथ है।"

3 फिर उसने मुझसे कहा, "यह शाप
पूरी पृथ्वी पर पड़नेवाला है। क्योंकि चोरी
करनेवाले[6] को उसकी सज़ा नहीं मिली,
जबकि खर्रे के एक तरफ लिखा है कि
चोर को उसकी सज़ा मिलनी चाहिए।
और झूठी शपथ खानेवाले[1] को सज़ा नहीं
मिली, जबकि खर्रे के दूसरी तरफ लिखा
है कि ऐसों को सज़ा मिलनी चाहिए।
4 सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा ऐलान
करता है, 'मैंने यह शाप भेजा है। यह
शाप चोर के घर जाएगा और उस आदमी
के घर भी जो मेरे नाम से झूठी शपथ
खाता है। यह उनके घर ठहरेगा और
उनके घर को लकड़ियों और पत्थरों समेत
नष्ट कर देगा।'"

5 फिर जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर
रहा था वह आगे आया और उसने कहा,
"ज़रा ऊपर नज़र उठा और देख कि क्या
जा रहा है।"

6 मैंने पूछा, "यह क्या है?"

उसने कहा, "यह एपा का बरतन* जा
रहा है।" उसने यह भी कहा, "पूरी पृथ्वी
पर दुष्ट लोगों का यही रूप है।" **7** फिर
मैंने देखा कि सीसे का गोल ढक्कन उस
बरतन पर से उठाया गया। उसके अंदर
एक औरत बैठी थी। **8** उसने कहा, "यह
औरत दुष्टता की निशानी है।" उसने उस
औरत को एपा के बरतन में वापस धकेल
दिया और उस पर सीसे का भारी ढक्कन
रख दिया।

9 फिर मैंने नज़र उठायी तो क्या
देखा, दो औरतें तेज़ी से उड़ती हुई आ
रही हैं। उनके पंख, लगलग पक्षी जैसे
हैं। उन्होंने एपा के बरतन को पृथ्वी और
आकाश के बीच उठा लिया। **10** तब
जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था,
उससे मैंने पूछा, "वे एपा का बरतन कहाँ
ले जा रही हैं?"

4:10 *या "छोटी बातों के दिन।" **4:12** *यानी फलों से लदी डालियाँ। **5:2** *एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

5:6 *शा., "एपा।" यहाँ ऐसे बरतन या टोकरी की बात की गयी है जिसमें एक एपा नापा जाता था। एक एपा 22 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 4

1 एज 6:14, जक 6:12

2 एज 3:12, हाग 2:3

3 2इत 16:9, नीत 15:3, यिर्म 16:17, प्रक 5:6

4 जक 4:2, 3

5 हाग 2:4, प्रक 11:3, 4

अध्य. 5

6 निर्ग 20:15

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 20:7, लैव 19:12

11 उसने कहा, “शिनार* देश,[1] जहाँ
वे उस औरत के लिए एक घर बनाएँगी।
और जब घर बनकर तैयार हो जाएगा तो
वे उसे वहाँ, उसकी सही जगह पर छोड़
आएँगी।”

6 मैंने फिर नज़र उठायी और क्या
देखा, दो पहाड़ों के बीच से चार
रथ आ रहे हैं। वे पहाड़ ताँबे के हैं।
2 पहले रथ में लाल घोड़े बँधे हैं, दूसरे
में काले घोड़े,[2] 3 तीसरे में सफेद घोड़े
और चौथे में धब्बेदार, चितकबरे घोड़े
बँधे हैं।[3]

4 मैंने उस स्वर्गदूत से जो मुझसे बात
कर रहा था पूछा, “हे प्रभु, इनका क्या
मतलब है?”

5 स्वर्गदूत ने कहा, “ये स्वर्ग की चार
सेनाएँ हैं[4] जो पूरी धरती के मालिक के
सामने खड़ी थीं।[5] ये वहीं से आ रही
हैं। 6 जिस रथ में काले घोड़े बँधे हैं वह
उत्तर देश की तरफ बढ़ रहा है।[6]
सफेद घोड़े पश्चिम देश की तरफ* जा
रहे हैं और धब्बेदार घोड़े दक्षिण देश की
तरफ। 7 ये चितकबरे घोड़े धरती का
चक्कर लगाने के लिए भी बेताब हैं।”
तब उसने कहा, “जाओ धरती का चक्कर
लगाओ।” और वे धरती का चक्कर
लगाने निकल पड़े।

8 फिर उसने मुझे पुकारकर कहा,
“देख! जो घोड़े उत्तर देश की तरफ गए
थे, उनके कारण उस देश के खिलाफ
यहोवा का क्रोध शांत हो गया है।”

9 एक बार फिर यहोवा का संदेश
मेरे पास पहुँचाः 10 “हेल्दै, तोबियाह
और यदायाह से वे चीज़ें ले ले जो
बँधुआई में पड़े लोगों ने दी हैं। और
उसी दिन तू सपन्याह के बेटे योशि-
याह के घर जाना और बैबिलोन से
आए इन लोगों को भी साथ ले जाना।
11 तू अपने साथ सोना-चाँदी ले जाना
और एक ताज* बनाकर उसे यहोसादाक
के बेटे महायाजक यहोशू को पहनाना।[1]
12 और उससे कहना,

‘सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता
है, “यह वह आदमी है जो अंकुर कह-
लाएगा।[2] यह अंकुर अपनी जगह से
फूटेगा और यहोवा का मंदिर बनाएगा।[3]
13 यह वही है जो यहोवा का मंदिर खड़ा
करेगा, यह वही है जो वैभव पाएगा। वह
अपनी राजगद्दी पर बैठकर राज करेगा।
राजा होने के साथ-साथ वह याजक भी
होगा।[4] इन दोनों में* वह बढ़िया ताल-
मेल बिठाएगा। 14 हेलेम,* तोबियाह,
यदायाह[5] और सपन्याह के बेटे हेन#
की याद में, वह शानदार ताज यहोवा
के मंदिर में रखा जाएगा। 15 दूर-दूर
से लोग आएँगे और यहोवा के मंदिर को
बनाने में हाथ बँटाएँगे।” यह बात ज़रूर
पूरी होगी। अगर तुम अपने परमेश्वर
यहोवा की बात मानोगे, तो तुम जान लोगे
कि सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने ही मुझे
तुम्हारे पास भेजा है।’”

7 राजा दारा के राज के चौथे साल
में, किसलेव* नाम के नौवें महीने के
चौथे दिन, यहोवा का संदेश जकरयाह के
पास पहुँचा।[6] 2 बेतेल के लोगों ने शरे-
सेर, रेगेम-मेलेक और उसके आदमियों
को भेजा कि वे यहोवा से दया की भीख
माँगें। 3 उन्होंने सेनाओं के परमेश्वर

अध्य. 5
1 उत 10:8, 10; उत 11:1, 2; दान 1:2

अध्य. 6
2 जक 6:6
3 जक 6:7
4 भज 104:4
5 2इत 18:18; अय 1:6; दान 7:10; लूक 1:19; इब्र 1:7, 14
6 जक 2:6, 7

दूसरा कॉल.
1 हाग 1:1; जक 3:3, 5
2 यश 11:1; जक 3:8
3 जक 8:9
4 इब्र 3:1; इब्र 4:14; इब्र 8:1
5 जक 6:10

अध्य. 7
6 एज 6:14; जक 1:1

5:11 *यानी बैबिलोनिया। 6:6 *या “सागर के पार।”

6:11 *या “शानदार ताज।” 6:13 *यानी राजा और याजक की भूमिकाओं के बीच। 6:14 *आय. 10 में बताया हेल्दै। #मुमकिन है कि यह आय. 10 में बताया योशियाह हो। 7:1 *अति. ख15 देखें।

यहोवा के भवन* के याजकों और
उसके भविष्यवक्ताओं से पूछा, "क्या
हम# पाँचवें महीने में विलाप[1] और उप-
वास करें, जैसा हम इतने सालों से करते
आए हैं?"

4 सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा का
संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचाः
5 "देश के सब लोगों और याजकों से
कह, 'तुमने 70 सालों[2] में हर पाँचवें और
सातवें महीने शोक मनाकर जो उपवास
किया,[3] क्या वह सचमुच मेरे लिए था?
6 जब तुम खा रहे थे और पी रहे थे,
तो क्या अपने लिए नहीं खा-पी रहे
थे? 7 जब यरूशलेम और उसके आस-
पास के शहर चैन से बसे थे, जब
नेगेब और शफेलाह आबाद थे, तब तुम्हें
यहोवा की बात माननी चाहिए थी जो
उसने पहले के भविष्यवक्ताओं से कहल-
वायी थी।'"[4]

8 यहोवा का संदेश एक बार फिर
जकरयाह के पास पहुँचाः 9 "सेनाओं
का परमेश्‍वर यहोवा कहता है, 'सच्चाई
से न्याय करो,[5] एक-दूसरे पर दया करो
और अटल प्यार रखो।[6] 10 विध-
वाओं और अनाथों* को मत ठगो,[7] पर-
देसियों और गरीबों को मत लूटो।[8]
अपने दिलों में एक-दूसरे के खिलाफ
साज़िश मत रचो।'[9] 11 मगर लोगों ने
ध्यान देने से इनकार कर दिया।[10] ढीठ
होकर उन्होंने उससे मुँह फेर लिया[11]
और अपने कान बंद कर लिए कि
उसकी न सुनें।[12] 12 उन्होंने अपना
दिल हीरे* जैसा सख्त कर लिया।[13]
उन्होंने सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा की
उन बातों और आज्ञाओं* को नहीं
माना, जिन्हें सुनाने के लिए उसने पहले
के भविष्यवक्ताओं को पवित्र शक्‍ति
दी थी।[1] इसलिए सेनाओं के परमेश्‍वर
यहोवा का क्रोध उन पर भड़क उठा।"[2]

13 "सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा
कहता है, 'मेरे* बुलाने पर उन्होंने मेरी
नहीं सुनी,[3] इसलिए उनके बुलाने पर
मैं भी उनकी नहीं सुनूँगा।[4] 14 मैंने
आँधी लाकर उन्हें सब अनजान राष्ट्रों में
बिखेर दिया।[5] उनके चले जाने के बाद
उनका देश उजाड़ पड़ा रहा, वहाँ कोई
लौटकर नहीं आया, कोई उसमें से होकर
नहीं गुज़रा।[6] क्योंकि दुश्‍मनों ने उस
खूबसूरत देश का वह हाल कर दिया
कि देखनेवालों के रोंगटे खड़े हो
जाते हैं।'"

8 सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा का
संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचाः
2 "सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा कहता
है, 'मैं सिय्योन के लिए बेचैन हो उठा हूँ,
अंदर-ही-अंदर तड़प रहा हूँ।[7] मेरा क्रोध
भड़क उठा है और मैं उसकी खातिर कदम
उठाऊँगा।'"

3 "यहोवा कहता है, 'मैं वापस
सिय्योन आऊँगा[8] और आकर यरू-
शलेम में रहूँगा।[9] यरूशलेम सच्चाई की*
नगरी कहलाएगी[10] और सेनाओं के पर-
मेश्‍वर यहोवा का पहाड़, पवित्र पहाड़
कहलाएगा।'"[11]

4 "सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा
कहता है, 'बूढ़े लोग फिर से यरूशलेम
के चौक में बैठा करेंगे। वे हाथ में लाठी
लिए रहेंगे क्योंकि उनकी उम्र बहुत लंबी

7:3 *या "मंदिर।" #शा., "मैं।" **7:10** *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।" **7:12** *या शायद, "कोई और सख्त पत्थर।"

7:12 *या "शिक्षाओं।" **7:13** *शा., "उसके।" **8:3** *या "विश्‍वासयोग्य।"

अध्य. 7

1 2रा 25:8-10; यिर्म 52:12-14
2 यिर्म 25:11; जक 1:12
3 यिर्म 41:1, 2
4 2इत 36:15
5 नीत 21:3; यिर्म 21:12
6 नीत 16:6; हो 10:12; मी 6:8
7 निर्ग 22:22; व्य 24:17; यश 1:17
8 निर्ग 23:9; नीत 22:22; मला 3:5
9 जक 8:17
10 2इत 33:10; यिर्म 6:10
11 नहे 9:29
12 2रा 17:13, 14; यश 6:10; यिर्म 25:7
13 यहे 3:7

दूसरा कॉल.

1 नहे 9:30; प्रेष 7:51
2 2इत 36:15, 16; यिर्म 21:5
3 यश 50:2
4 यश 1:15; विल 3:44
5 व्य 28:64; यिर्म 5:15
6 लैव 26:22, 33; 2इत 36:20, 21

अध्य. 8

7 योए 2:18; जक 1:14
8 जक 1:16
9 यश 12:6; योए 3:17; जक 2:11; जक 8:8
10 यश 1:26; यश 60:14; यिर्म 33:16
11 यश 2:2; यश 11:9; यश 66:20; यिर्म 31:23

होगी।[1] 5 शहर के चौक खेलते-कूदते
बच्चों से भरे रहेंगे।'"[2]

6 "सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, 'चाहे उन दिनों में यह बात
इन बचे हुए लोगों को नामुमकिन लगे,
पर क्या मेरे लिए यह बात नामुमकिन हो
सकती है?' सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
ने यह बात कही है।"

7 "सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, 'मैं अपने लोगों को पूरब और
पश्चिम के देशों से छुड़ाऊँगा।[3] 8 मैं
उन्हें वापस लाऊँगा और वे यरूशलेम में
रहेंगे।[4] वे मेरे लोग ठहरेंगे और मैं उनका
नेक और सच्चा* परमेश्वर ठहरूँगा।'"[5]

9 "सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, 'हे भविष्यवक्ताओं की बातें
सुननेवालो,[6] हिम्मत से काम लो!*[7] तुम
उनके मुँह से जो बातें सुन रहे हो,
वे तब भी कही गयी थीं जब सेनाओं के
परमेश्वर यहोवा के मंदिर की नींव डाली
गयी। 10 उससे पहले न तो लोगों को
उनकी मज़दूरी मिलती थी, न जान-
वरों का किराया।[8] और दुश्मन के डर
से कहीं आना-जाना खतरे से खाली नहीं
था क्योंकि मैंने सब लोगों को एक-दूसरे
के खिलाफ कर दिया था।'

11 सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का
यह ऐलान है, 'मगर अब मैं इन बचे हुए
लोगों के साथ पहले जैसा व्यवहार नहीं
करूँगा[9] 12 क्योंकि शांति के बीज बोए
जाएँगे। अंगूर की बेलें फलेंगी, धरती
अपनी उपज देगी[10] और आसमान से
ओस गिरेगी। मैं बचे हुए लोगों को
इन सब चीज़ों का वारिस बना दूँगा।[11]
13 हे यहूदा के घराने, हे इसराएल के
घराने, राष्ट्र तुम्हारी मिसाल देकर शाप
देते थे,[1] मगर अब मैं तुम्हें बचाऊँ-
गा और तुम आशीष पाने की वजह बन
जाओगे।[2] डरो मत,[3] हिम्मत से काम
लो।'*[4]

14 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, 'सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
ने कहा है, "जैसे तुम्हारे पुरखों के क्रोध
दिलाने पर मैंने तुम पर विपत्ति लाने की
ठान ली थी और मैंने अपना इरादा नहीं
बदला,*[5] 15 वैसे ही अब मैंने यहूदा
के घराने और यरूशलेम का भला करने
की ठान ली है।[6] इसलिए तुम मत
डरो!"'[7]

16 'तुम यह सब करना: एक-
दूसरे से सच बोलना,[8] शहर के फाटकों
पर सच्चाई से न्याय करना और ऐसे
फैसले सुनाना जिनसे शांति कायम हो।[9]
17 मन-ही-मन किसी को बरबाद करने
की साज़िश मत रचना[10] और झूठी
शपथ मत खाना[11] क्योंकि मुझे इन बातों
से नफरत है।'[12] यह बात यहोवा ने
कही है।"

18 सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का
संदेश एक बार फिर मेरे पास पहुँचा:
19 "सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता
है, 'चौथे, पाँचवें, सातवें और दसवें महीने
में जिस-जिस दिन यहूदा का घराना उप-
वास करता था,[13] वह जश्न और खुशी के
दिन में बदल जाएगा। हर कहीं खुशियों
का त्योहार मनाया जाएगा।[14] इसलिए
सच्चाई और शांति से प्यार करो।'

20 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, 'ऐसा समय आनेवाला है जब
देश-देश के लोग और कई शहरों के
निवासी आएँगे। 21 और एक शहर के

8:8 * या "विश्वासयोग्य।" 8:9, 13 * शा., "अपने हाथों को मज़बूत करो।"

8:14 * या "मैं नहीं पछताया।"

अध्य. 8

1 यश 65:20; यिर्म 30:10
2 यिर्म 30:19; यिर्म 31:4, 27; जक 2:4
3 भज 107:2, 3
4 यिर्म 3:17; योए 3:20; आम 9:14
5 लैव 26:12; यिर्म 30:22; यहे 11:20
6 एज 5:1
7 यश 35:4; हाग 2:4
8 हाग 1:6
9 हाग 2:19
10 लैव 26:4; व्य 28:4; यश 30:23
11 यश 35:10; यश 61:7

दूसरा कॉल.

1 व्य 28:37; यिर्म 42:18
2 उत 22:18; यश 19:24, 25
3 यश 41:10
4 यश 35:4
5 यिर्म 4:28; यहे 24:14
6 यिर्म 31:28; यिर्म 32:42
7 यश 43:1; सप 3:16
8 लैव 19:11; नीत 12:19; इफ 4:25
9 जक 7:9
10 जक 7:10
11 जक 5:4
12 नीत 6:16-19
13 2रा 25:25; यिर्म 52:4; यिर्म 52:6, 7; यिर्म 52:12-14; जक 7:5
14 यश 35:10; यिर्म 31:12

निवासी दूसरे शहर के निवासियों से
जाकर कहेंगे, “आओ, यहोवा से दया
की भीख माँगने चलें। आओ, सेनाओं के
परमेश्‍वर यहोवा की खोज करें। हम तो
जा रहे हैं!”[1] 22 तब कई देशों के लोग
और बड़े-बड़े राष्ट्र, सेनाओं के परमेश्‍वर
यहोवा की खोज करने यरूशलेम आएँगे[2]
और यहोवा से दया की भीख माँगेंगे।’

23 सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा
कहता है, ‘उन दिनों अलग-अलग भाषा
बोलनेवाले सब राष्ट्रों में से दस लोग,[3]
एक यहूदी* के कपड़े का छोर पकड़
लेंगे। हाँ, वे उसका छोर पकड़कर कहेंगे,
“हम तुम्हारे साथ चलना चाहते हैं[4]
क्योंकि हमने सुना है, परमेश्‍वर तुम्हारे
साथ है।”’”[5]

9 परमेश्‍वर की तरफ से संदेशः
“यहोवा ने हदराक देश को सज़ा
सुनायी है,
दमिश्‍क उसका खास निशाना है।[6]
(क्योंकि यहोवा की आँखें इसराएल
के सब गोत्रों के साथ-साथ इंसानों
पर लगी हैं।)[7]
2 उसके पड़ोसी हमात को भी सज़ा
सुनायी गयी है,[8]
यह सोर और सीदोन के लिए
भी है,[9]
क्योंकि वे खुद को बहुत बुद्धिमान
समझते हैं।[10]
3 सोर ने अपने लिए मज़बूत गढ़*
खड़े किए हैं,
धूल के कणों के समान बेशुमार
चाँदी जमा कर ली है,
सड़क की मिट्टी के समान सोने का
ढेर लगा लिया है।[11]
4 देखो! यहोवा उसका खज़ाना उससे
छीन लेगा,
उसकी सेना को समुंदर में मार
डालेगा,[1]
वह नगरी आग में भस्म हो
जाएगी।[2]
5 यह देखकर अश्‍कलोन के होश उड़
जाएँगे,
गाज़ा दुख के मारे तड़प उठेगी
और एक्रोन का भी वही हाल
होगा, क्योंकि उसकी आशा टूट
जाएगी।
गाज़ा से राजा का नामो-निशान मिट
जाएगा
और अश्‍कलोन फिर कभी नहीं
बसेगी।[3]
6 अशदोद में परदेसियों की औलाद
आकर बसेरा करेगी,
मैं पलिश्‍त का घमंड तोड़ दूँगा।[4]
7 मैं खून से सनी चीज़ें उसके मुँह से
हटा दूँगा,
घिनौनी चीज़ें उसके दाँतों के बीच से
निकाल दूँगा,
उसके बचे हुए लोग हमारे परमेश्‍वर
के हो जाएँगे
और यहूदा में शेख* की तरह
रहेंगे।[5]
एक्रोन के लोग यबूसियों के जैसे हो
जाएँगे।[6]
8 मैं अपने घर के बाहर तंबू लगाकर
पहरा दूँगा[7]
ताकि कोई आ-जा न सके।
फिर कभी कोई ज़ालिम वहाँ से नहीं
गुज़रेगा,[8]
क्योंकि मैंने अपनी आँखों से यह*
देखा है।

8:23 *शा., “एक यहूदी आदमी।” 9:3 *शा., “सुरक्षा की ढलान।”

9:7 *शेख, गोत्र का प्रधान था। 9:8 *ज़ाहिर है, उसके लोगों का दुख।

अध्य. 8
1 यिर्म 50:4, 5
2 भज 22:27, यश 2:2, 3, यश 11:10, यश 55:5, यश 60:3, हो 1:10, मी 4:2, हाग 2:7
3 जक 2:11, प्रक 7:9, प्रक 14:6
4 निर्ग 12:37, 38
5 यश 45:14

अध्य. 9
6 यिर्म 49:27, आम 1:3
7 इब्र 4:13, 1पत 3:12
8 यिर्म 49:23
9 यश 23:1, यहे 28:21, योए 3:4, आम 1:9, 10
10 यहे 28:2, 3
11 यहे 27:32, 33

दूसरा कॉल.
1 यहे 26:17, यहे 27:26
2 यहे 28:18
3 सप 2:4
4 आम 1:8
5 यश 60:14
6 2शम 5:6, 7, 1रा 9:20, 21
7 भज 125:2
8 यश 54:14

9 हे सिय्योन की बेटी, खुशियाँ मना!
हे यरूशलेम की बेटी,
जयजयकार कर!
देख! तेरा राजा तेरे पास आ
रहा है।[1]
वह नेक है और उद्धार दिलाएगा,*
वह नम्र है,[2] वह गधे पर सवार
होकर आ रहा है,
हाँ, गधी के बच्चे पर आ रहा है।[3]
10 मैं एप्रैम से युद्ध-रथों
और यरूशलेम से घोड़ों को ले
लूँगा।
युद्ध के धनुष छीन लिए जाएँगे।
वह देश-देश में शांति का ऐलान
करेगा,[4]
उसका राज एक सागर से दूसरे
सागर तक
और महानदी* से धरती के छोर
तक फैला होगा।[5]
11 हे औरत,* जहाँ तक तेरी बात है,
मैं तेरे कैदियों को सूखे गड्ढे से
बाहर निकालूँगा।[6]
मैं तेरे उस करार की वजह से
ऐसा करूँगा, जिसे खून से पक्का
किया गया था।
12 हे आशा रखनेवाले कैदियो, मज़बूत
गढ़ में लौट आओ।[7]
आज मैं तुझसे कहता हूँ,
'हे औरत, मैं तुझे दुगनी आशीष
दूँगा।[8]
13 मैं यहूदा को अपने धनुष की
तरह मोड़ूँगा
और एप्रैम को उस कमान पर
तानूँगा।*

9:9 *या "और विजयी है; और बचाया गया है।" 9:10 *यानी फरात नदी। 9:11 *यानी सिय्योन या यरूशलेम। 9:13 *यानी तीर की तरह।

अध्य. 9
1 भज 2:6, यश 32:1, यिर्म 23:5, लूक 19:37, 38, यूह 1:49
2 मत 11:29
3 1रा 1:33, 34, मत 21:5, 7, यूह 12:14, 15
4 यश 9:7
5 निर्ग 23:31, भज 2:8, भज 72:8
6 यश 49:9
7 यश 61:1, यिर्म 31:17
8 यश 61:7

दूसरा कॉल.
1 यह 6:5
2 मी 5:9, जक 10:5, जक 12:6
3 निर्ग 27:2, लैव 4:7
4 यहे 34:22
5 यश 62:3, सप 3:20
6 भज 25:8, भज 31:19, यश 63:7
7 यश 62:8, योए 3:18, आम 9:13

हे सिय्योन, मैं तेरे बेटों को
यूनान के बेटों के खिलाफ
उभारूँगा।
मैं तुझे योद्धा की तलवार बना
दूँगा।'
14 यहोवा दिखा देगा कि वह अपने
लोगों के साथ है,
उसके तीर, बिजली की फुर्ती से
छूटेंगे।
सारे जहान का मालिक यहोवा,
नरसिंगा फूँकेगा[1]
और दक्षिण की आँधी की तरह
दुश्मनों पर टूट पड़ेगा।
15 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा अपने
लोगों की रक्षा करेगा,
दुश्मन गोफन के पत्थरों से उन पर
वार करेंगे, मगर वे दुश्मनों को
हरा देंगे,[2]
वे खुश होकर ऐसे शोर मचाएँगे,
जैसे दाख-मदिरा के नशे में हों,
वे कटोरे की तरह भर जाएँगे,
वेदी के कोनों की तरह भीग
जाएँगे।[3]
16 उस दिन उनका परमेश्वर यहोवा,
अपने लोगों को, अपने झुंड को
बचाएगा।[4]
वे मुकुट में जड़े रत्नों की तरह
उसके देश में चमकेंगे।[5]
17 परमेश्वर की भलाई लाजवाब है![6]
उसकी शोभा बेमिसाल है!
जवान, अनाज खाकर फलेंगे-फूलेंगे
और कुँवारियाँ नयी दाख-मदिरा
पीकर खुश होंगी।"[7]

10 "वसंत की बारिश के वक्त
यहोवा से बारिश माँगो,
क्योंकि काले बादलों को यहोवा ही
बनाता है,

वही लोगों के लिए पानी
बरसाता है[1]
और हर किसी के खेत में हरियाली
उपजाता है।
2 मगर कुल देवताओं* की बातें
धोखा# हैं
और ज्योतिषी झूठे दर्शन देखते हैं,
वे झूठे सपने सुनाते हैं
और व्यर्थ का दिलासा देते हैं।
इसलिए लोग भेड़ के समान भटक
जाएँगे,
वे दुख उठाएँगे क्योंकि उनका कोई
चरवाहा नहीं।
3 चरवाहों पर मेरा क्रोध भड़क
उठा है,
मैं ज़ालिम अगुवों* से हिसाब लूँगा,
क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
ने अपने झुंड पर, यहूदा के घराने
पर ध्यान दिया है[2]
और उसे ऐसी शान दी है जैसी
उसके जंगी घोड़े की है।
4 उसमें से* एक अगुवा# निकलेगा,
उसमें से मदद देने के लिए एक
शासक△ आएगा,
उसमें से युद्ध का धनुष निकलेगा,
उसमें से आनेवाला हरेक जन निग-
रानी करेगा,
ये सब एक-साथ निकलेंगे।
5 वे ऐसे योद्धाओं की तरह होंगे,
जो युद्ध के समय सड़क की मिट्टी
को रौंदते हैं।

वे लड़ेंगे क्योंकि यहोवा उनके साथ
होगा,[1]
दुश्मनों के घुड़सवार शर्मिंदा किए
जाएँगे।[2]
6 मैं यहूदा के घराने को शक्तिशाली
बनाऊँगा
और यूसुफ के घराने को
बचाऊँगा।[3]
मैं उन पर दया करूँगा और उन्हें
बहाल करूँगा।[4]
तब वे ऐसे हो जाएँगे जैसे मैंने उन्हें
ठुकराया ही न हो।[5]
मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ और
मैं उनकी बिनती सुनूँगा।
7 एप्रैम के लोग शक्तिशाली योद्धा की
तरह हो जाएँगे,
उनका मन खुश होगा, जैसे दाख-
मदिरा पीने पर होता है,[6]
यह देखकर उनके बेटे फूले न
समाएँगे,
यहोवा के कारण उनका मन खुशी
से भर जाएगा।[7]
8 'मैं सीटी बजाकर उन्हें बुलाऊँगा
और इकट्ठा करूँगा,
मैं उन्हें छुड़ाऊँगा[8] और उनकी
गिनती बेशुमार हो जाएगी
और आगे भी बेशुमार रहेगी।
9 भले ही मैं उन्हें बीज की तरह देश-
देश के लोगों में छितरा दूँगा,
मगर वे दूर-दूर के उन इलाकों में
भी मुझे याद करेंगे,
वे और उनके बेटे उमंग से भरकर
लौट आएँगे।
10 मैं मिस्र से उन्हें वापस लाऊँगा,
अश्शूर से उन्हें इकट्ठा करूँगा।[9]
मैं उन्हें गिलाद और लबानोन के
देश तक ले आऊँगा,[10]

अध्य. 10
1 व्य 11:14; यिर्म 14:22; यिर्म 51:16; यहे 34:26; योए 2:23
2 यहे 34:16, 17

दूसरा कॉल.
1 व्य 20:1
2 हाग 2:22
3 यिर्म 3:18; यहे 37:16, 19; हो 1:10, 11
4 यिर्म 31:9, 20
5 यिर्म 30:18
6 जक 9:15
7 यश 66:14; सप 3:14
8 यश 44:22; यश 51:11
9 यश 11:11
10 यिर्म 50:19; मी 7:14

10:2 *या "मूरतों।" #या "जादू-टोने की; रहस्यमय।" **10:3** *शा., "बकरों।" **10:4** *यानी यहूदा में से। #शा., "कोने की मीनार," यह एक खास आदमी को दर्शाती है; एक प्रधान। △शा., "खूँटी," यह एक आदमी को दर्शाती है जो सहारा है; एक शासक।

क्योंकि उन सबके लिए रहने की
जगह काफी नहीं होगी।[1]
11 जब सागर उनका रास्ता रोकेगा,
तो मैं उसमें से होकर जाऊँगा और
उसकी लहरों को दबा दूँगा।[2]
जब नील नदी रास्ता रोके खड़ी
होगी, तो मैं उसका पानी सुखा
दूँगा।
अश्शूर का घमंड तोड़ दिया जाएगा
और मिस्र का राजदंड उससे ले
लिया जाएगा।[3]
12 मैं यहोवा, उन्हें शक्तिशाली
बनाऊँगा[4]
और वे मेरा नाम लेकर चलेंगे।'[5]
यह बात यहोवा ने कही है।"

11 "हे लबानोन, अपने फाटक
खोल
कि आग तेरे देवदारों को भस्म
कर दे।
2 हे सनोवर, ज़ोर-ज़ोर से रो क्योंकि
देवदार गिर गए हैं,
ऊँचे-ऊँचे पेड़ नष्ट हो गए हैं!
बाशान के बाँज पेड़ो, तुम भी
विलाप करो,
क्योंकि घना जंगल खाक में मिल
चुका है!
3 सुनो! चरवाहों का मातम सुनो!
क्योंकि उनकी शान मिट गयी है।
सुनो! जवान शेर का दहाड़ना सुनो!
क्योंकि यरदन किनारे की घनी
झाड़ियाँ नष्ट हो चुकी हैं।

4 मेरा परमेश्वर यहोवा कहता है,
'घात होनेवाली भेड़ों का चरवाहा बन
जा।[6]
5 खरीदनेवाले उन्हें मार डालते
हैं,[7] मगर कोई उन्हें दोषी नहीं ठह-
राता। उन भेड़ों को बेचनेवाले[8] कहते हैं,
"यहोवा की बड़ाई हो क्योंकि मैं माला-
माल हो जाऊँगा।" उनके चरवाहे उन पर
कोई तरस नहीं खाते।'[1]

6 यहोवा ऐलान करता है, 'मैं देश
के निवासियों पर अब और तरस नहीं
खाऊँगा। मैं हर आदमी को उसके पड़ोसी
और उसके राजा के हवाले कर दूँगा कि
वे उसे सताएँ। वे देश को तबाह कर देंगे
और मैं उसके लोगों को उनके हाथ से नहीं
बचाऊँगा।'"

7 तब मैं घात होनेवाली भेड़ों का चर-
वाहा बन गया।[2] हाँ, तुम सतायी हुई
भेड़ों की खातिर मैंने ऐसा किया। मैंने दो
लाठियाँ लीं, एक का नाम मैंने कृपा रखा
और दूसरी का एकता।[3] और मैं झुंड
की चरवाही करने लगा।
8 मैंने एक
ही महीने में तीन चरवाहों को निकाल
दिया क्योंकि मैं उनको बरदाश्त नहीं
कर सका। वे भी मुझसे नफरत करते
थे।
9 मैंने कहा, "अब मैं तुम भेड़ों की
और देखभाल नहीं करूँगा। जिसे मरना है
वह मरे, जिसे नष्ट होना है वह नष्ट हो।
और जो बच जाएँ, वे एक-दूसरे को फाड़
खाएँ।"
10 तब मैंने कृपा की लाठी
ली[4] और उसे काट डाला। इस तरह मैंने
वह करार तोड़ दिया जो मैंने अपने
लोगों के साथ किया था।
11 उस दिन
वह करार टूट गया। जब झुंड की सतायी
हुई भेड़ों ने मुझे यह सब करते देखा तो
वे समझ गयीं कि यह संदेश यहोवा की
तरफ से है।

12 फिर मैंने उनसे कहा, "अगर तुम्हें
ठीक लगे तो मुझे मेरी मज़दूरी दो,
लेकिन अगर नहीं तो मत दो।" तब
उन्होंने मुझे मज़दूरी में चाँदी के 30 टुकड़े
तौलकर दिए।[5]

13 इस पर यहोवा ने मुझसे कहा,
"बहुत बड़ी कीमत आँकी है उन्होंने मेरी![6]
जा, इन्हें खज़ाने में फेंक आ!" तब मैं

अध्य. 10
1 यश 49:19, 20; यश 54:1, 2
2 यश 11:15
3 यश 19:1; यहे 30:13
4 यश 41:10; यश 45:24
5 मी 4:5

अध्य. 11
6 यहे 34:8
7 यहे 22:25
8 नहे 5:8

दूसरा कॉल.
1 यहे 34:2, 4
2 जक 11:4
3 जक 11:10, 14
4 जक 11:7
5 मत 26:14, 15; मत 27:9; मर 14:10, 11
6 निर्ग 21:32

चाँदी के 30 टुकड़े लेकर यहोवा के भवन
में गया और मैंने उन्हें खज़ाने में फेंक
दिया।[1]
14 फिर मैंने दूसरी लाठी एकता को
लिया[2] और उसे काट डाला। इस तरह
यहूदा और इसराएल के बीच भाईचारा
खत्म हो गया।[3]
15 फिर यहोवा ने मुझसे कहा,
"निकम्मे चरवाहे का औज़ार ले ले।[4]
16 क्योंकि मैं एक चरवाहे को इस देश
का अधिकारी बनने दूँगा। वह उन भेड़ों
की देखभाल नहीं करेगा जो मरनेवाली
हैं।[5] वह न तो नन्हीं भेड़ों को ढूँढ़ेगा, न
ज़ख्मी भेड़ों की मरहम-पट्टी करेगा[6] और
न ही भली-चंगी भेड़ों को खिलाएगा।
उलटा, वह मोटी-ताज़ी भेड़ों का माँस
खाएगा[7] और भेड़ों के खुरों को उखाड़
देगा।[8]

17 धिक्कार है उस निकम्मे चरवाहे
पर,[9] जो भेड़ों को बेसहारा छोड़
देता है![10]
एक तलवार उसके बाज़ू पर और
उसकी दायीं आँख पर वार
करेगी।
उसका हाथ पूरी तरह सूख जाएगा
और वह दायीं आँख से अंधा हो
जाएगा।"

12

परमेश्वर की तरफ से संदेश:
यहोवा, जिसने आकाश को
ताना है,[11]
जिसने पृथ्वी की नींव डाली है,[12]
जिसने इंसान में जान* फूँकी है,
वह ऐलान करता है:
"इसराएल के बारे में यहोवा का यह
कहना है,

2 मैं यरूशलेम को ऐसा प्याला*
बना दूँगा जिसे पीकर आस-पास के
सब लोग लड़खड़ाएँगे। यहूदा के साथ-
साथ यरूशलेम की भी घेराबंदी की
जाएगी।[1] 3 उस दिन मैं यरूशलेम को
सब देशों के लोगों के लिए भारी पत्थर
बना दूँगा। जो कोई उसे उठाएगा वह
बुरी तरह घायल हो जाएगा।[2] धरती के
सब राष्ट्र उसके खिलाफ इकट्ठा होंगे।"[3]
4 यहोवा ऐलान करता है, "उस दिन मैं
हर घोड़े में आतंक फैला दूँगा और
उसके सवार को पागल कर दूँगा। मैं
यहूदा के घराने पर नज़र रखूँगा, मगर
राष्ट्रों के सब घोड़ों को अंधा कर दूँगा।
5 यहूदा के शेख* अपने मन में कहेंगे,
'यरूशलेम के निवासी हमारी ताकत हैं
क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
उनके साथ है।'[4] 6 उस दिन मैं यहूदा
के शेख को ऐसा बना दूँगा, जैसे वे लक-
ड़ियों के ढेर में जलती अंगीठी हों और
कटे हुए अनाज की बालों में जलती
मशाल हों।[5] वे अपने दाएँ-बाएँ सब
लोगों को भस्म कर देंगे।[6] और यरूशलेम
के निवासी वापस अपनी नगरी* यरू-
शलेम में बस जाएँगे।[7]
7 यहोवा पहले यहूदा के तंबुओं को
बचाएगा ताकि दाविद के घराने की
शान और यरूशलेम के निवासियों की
शान, यहूदा से बढ़कर न हो। 8 उस
दिन यहोवा ढाल बनकर यरूशलेम के
निवासियों की रक्षा करेगा।[8] उस दिन,
उनमें से ठोकर खानेवाला* दाविद के
समान ताकतवर हो जाएगा। और दाविद
का घराना ईश्वर की तरह, हाँ, यहोवा के
स्वर्गदूत की तरह उन्हें राह दिखाएगा।[9]
9 उस दिन मैं यरूशलेम के खिलाफ

12:1 *या "साँस।" 12:2 *या "कटोरा।"

12:5 *शेख, गोत्र का प्रधान था। 12:6 *या "अपनी सही जगह।" 12:8 *या "सबसे कमज़ोर जन।"

अध्य. 11
1 मत 27:5, 6; प्रेष 1:18
2 जक 11:7
3 1रा 12:19, 20; यहे 37:16
4 यहे 34:2, 4
5 यिर्म 23:2; यहे 34:6; मत 9:36
6 यहे 34:21
7 उत 31:38
8 यहे 34:3, 10
9 यिर्म 23:1; मत 23:13
10 यूह 10:12

अध्य. 12
11 अय 26:7; यश 42:5
12 भज 102:25; यश 45:18

दूसरा कॉल.
1 जक 14:14
2 सप 3:19
3 जक 14:2, 3
4 यश 41:10; योए 3:16; जक 12:8
5 यश 41:15
6 मी 4:13; जक 9:15
7 जक 2:4
8 यिर्म 23:6; योए 3:16; जक 2:5; जक 9:15
9 निर्ग 14:19; निर्ग 23:20

आनेवाले सभी राष्ट्रों का सर्वनाश कर
दूँगा।[1]
10 मैं दाविद के घराने और यरूशलेम
के निवासियों पर अपनी पवित्र शक्ति
उँडेलूँगा। वे मुझसे बिनती करेंगे और मेरी
मंज़ूरी पाएँगे। वे उसे देखेंगे जिसे उन्होंने
भेदा है[2] और उसके लिए ऐसे रोएँगे
जैसे इकलौते बेटे की मौत हो गयी हो।
वे ऐसा भारी शोक मनाएँगे जैसे पह-
लौठा बेटा मर गया हो। 11 उस दिन
यरूशलेम में बड़ा मातम मनाया जाएगा,
ऐसा मातम जैसा मगिद्दो के मैदानी
इलाके में, हदद-रिम्मोन में मनाया गया
था।[3] 12 पूरा देश छाती पीटेगा और
हर परिवार अलग-अलग रोएगा। दाविद
के घराने का परिवार अलग रोएगा और
उनकी औरतें अलग। नातान[4] के घराने
का परिवार अलग रोएगा और उनकी
औरतें अलग। 13 लेवी[5] के घराने का
परिवार अलग रोएगा और उनकी औरतें
अलग। शिमियों के घराने[6] का परिवार
अलग रोएगा और उनकी औरतें अलग।
14 बाकी परिवार और उनकी औरतें भी
अलग-अलग रोएँगे।

13 उस दिन दाविद के घराने और
यरूशलेम के निवासियों के लिए
एक कुआँ खोदा जाएगा कि वे अपने पाप
धोएँ और अपनी अशुद्धता दूर करें।"[7]
2 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा ऐलान
करता है, "उस दिन मैं देश में से मूरतों का
नामो-निशान मिटा दूँगा[8] और उन्हें फिर
कोई याद नहीं करेगा। मैं भविष्यवक्ताओं
को और दुष्ट शक्ति को देश में से निकाल
दूँगा।[9] 3 अगर कोई आदमी फिर भी
भविष्यवाणी करे, तो उसके माता-पिता
जिन्होंने उसे जन्म दिया है कहेंगे, 'तू ज़िंदा
नहीं बचेगा क्योंकि तूने यहोवा के नाम
से झूठी बातें कही हैं।' और भविष्यवाणी
करने के लिए उसके माता-पिता जिन्होंने
उसे जन्म दिया है, उसे भेदकर मार
डालेंगे।[1]
4 उस दिन भविष्यवाणी करते वक्त,
हर भविष्यवक्ता को अपना दर्शन बताने
में शर्म आएगी। वह अपनी पोशाक,*
उस रोएँदार कपड़े को पहनना छोड़
देगा,[2] जिसे पहनकर वह लोगों को
धोखा देता था। 5 वह कहेगा, 'मैं कोई
भविष्यवक्ता नहीं। मैं तो बचपन से ही
एक आदमी के यहाँ गुलाम हूँ और खेती-
बाड़ी करता हूँ।' 6 और अगर कोई
उससे पूछे, 'तेरे शरीर पर* ये घाव
कैसे?' तो वह कहेगा, 'ये घाव मुझे अपने
दोस्तों# के घर पर मिले हैं।'"

7 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा ऐलान
करता है,
"हे तलवार, मेरे चरवाहे के
खिलाफ उठ,[3]
उस आदमी के खिलाफ जो मेरा
साथी है।
चरवाहे को मार[4] और झुंड* को
तितर-बितर होने दे।[5]
मैं अपना हाथ मामूली लोगों पर
उठाऊँगा।"
8 यहोवा ऐलान करता है, "पूरे देश में
जितने लोग हैं,
उनमें से दो-तिहाई को काट दिया
जाएगा, वे खत्म हो जाएँगे
और एक-तिहाई को छोड़ दिया
जाएगा।
9 मैं उन एक-तिहाई लोगों को आग में
तपाऊँगा,
उन्हें चाँदी के समान शुद्ध करूँगा,

13:4 *या "भविष्यवक्ता की पोशाक।" **13:6** *शा., "तेरे हाथों के बीच" यानी छाती या पीठ पर। #या "अज़ीज़ों।" **13:7** *या "भेड़ों।"

अध्य. 12
1 यश 54:17, हाग 2:22
2 यूह 19:34, 37; यूह 20:27; प्रक 1:7
3 2रा 23:29; 2इत 35:22
4 2शम 5:13, 14; लूक 3:23, 31
5 निर्ग 6:16
6 निर्ग 6:17; 1इत 23:10

अध्य. 13
7 यहे 36:25, 29
8 निर्ग 23:13
9 व्य 13:5

दूसरा कॉल.
1 व्य 13:6-9; व्य 18:20
2 2रा 1:8; मत 3:4
3 यहे 34:23; मी 5:4; यूह 10:11; इब्र 13:20
4 यश 53:8; दान 9:26; प्रेष 3:18
5 मत 26:31; मत 26:55, 56; मर 14:27, 50; यूह 16:32

सोने के समान परखूँगा।[1]
वे मेरा नाम लेकर मुझे पुकारेंगे
और मैं उनकी सुनूँगा।
मैं कहूँगा, 'वे मेरे लोग हैं'[2]
और वे कहेंगे, 'यहोवा हमारा पर-
मेश्वर है।'"

14 "देख! यहोवा का वह दिन आ रहा है, जब तेरा* माल लूट-कर तेरे ही सामने बाँट लिया जाएगा। 2 मैं सभी राष्ट्रों को यरूशलेम से युद्ध करने के लिए इकट्ठा करूँगा। शहर पर कब्ज़ा कर लिया जाएगा, घरों को लूट लिया जाएगा और औरतों का बलात्कार किया जाएगा। आधा शहर बँधुआई में चला जाएगा, मगर बचे हुए लोग शहर से नहीं ले जाए जाएँगे।

3 यहोवा उन राष्ट्रों से लड़ने आएगा और जैसे वह युद्ध के दिन लड़ता है[3] वैसे ही उनसे लड़ेगा।[4] 4 उस दिन वह जैतून पहाड़[5] पर खड़ा होगा, जो यरू-शलेम के पूरब में है। जैतून पहाड़ पूरब से लेकर पश्चिम* तक फटकर दो हिस्सों में बँट जाएगा। आधा पहाड़ उत्तर की तरफ और आधा दक्षिण की तरफ खिसक जाएगा। और उनके बीच एक गहरी घाटी बन जाएगी। 5 मेरे पहाड़ों के बीच बनी उस घाटी में तुम भागकर पनाह लोगे क्योंकि वह घाटी आसेल तक पहुँचेगी। तुम्हें भागना होगा ठीक जैसे तुम यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में भूकंप आने पर भागे थे।[6] परमेश्वर यहोवा आएगा और उसके संग सारे पवित्र जन भी आएँगे।[7]

6 उस दिन जगमगाती रौशनी नहीं होगी।[8] चीज़ें जम जाएँगी। 7 तब न दिन होगा न रात होगी और शाम को उजाला रहेगा। वह दिन यहोवा का दिन कहलाएगा।[1] 8 उस दिन यरू-शलेम से जीवन देनेवाला पानी[2] निक-लेगा।[3] उनमें से आधा पानी पूर्वी सागर* की तरफ[4] और आधा पश्चिमी सागर# की तरफ बहेगा।[5] गरमियों में और सर्दियों में भी यह बहता रहेगा। 9 तब यहोवा पूरी धरती का राजा होगा।[6] उस दिन यहोवा एक होगा[7] और उसका नाम भी एक होगा।[8]

10 गेबा[9] से लेकर यरूशलेम के दक्षिण में रिम्मोन[10] तक पूरा देश, अराबा[11] के समान हो जाएगा। मगर यरूशलेम नगरी अपनी जगह पर बहाल होगी।[12] वह बिन्यामीन फाटक[13] से लेकर 'पहले फाटक' तक, 'पहले फाटक' से लेकर 'कोनेवाले फाटक' तक और हननेल मीनार[14] से लेकर राजा के अंगूरों के हौद तक आबाद होगी। 11 उसमें लोगों का बसेरा होगा। यरू-शलेम को फिर कभी नाश के लायक नहीं ठहराया जाएगा[15] और सब उसमें चैन से रहेंगे।[16]

12 देश-देश के जो लोग यरूशलेम से युद्ध करते हैं, उन पर यहोवा महामारी लाएगा।[17] खड़े-खड़े उनका शरीर गल जाएगा, उनकी आँखें अपने गड्ढों में सड़ जाएँगी और उनकी जीभ उनके मुँह में सड़ जाएगी।

13 उस दिन यहोवा उनके बीच गड़-बड़ी फैलाएगा और हर कोई अपने साथी को धर-दबोचेगा और उस पर हाथ उठाएगा।[18] 14 यहूदा, यरूशलेम के साथ मिलकर युद्ध करेगा। और आस-पास के सब राष्ट्रों की दौलत, ढेर सारा सोना-चाँदी और कपड़े बटोरे जाएँगे।[19]

14:1 *यानी आय. 2 में बताया शहर।
14:4 *शा., "सागर।"
14:8 *यानी मृत सागर। #यानी भूमध्य सागर।

अध्य. 13
1 मला 3:2, 3
2 यिर्म 30:22

अध्य. 14
3 निर्ग 15:3
2इत 20:15
4 यहे 38:23
योए 3:2, 14
प्रक 16:14
5 लूक 19:29
प्रेष 1:12
6 आम 1:1
7 व्य 33:2
योए 3:11
यहू 14
8 यश 13:9, 10
आम 5:18

दूसरा कॉल.
1 योए 2:31
1थि 5:2
2पत 3:10
2 प्रक 21:6
प्रक 22:17
3 यिर्म 17:13
यहे 47:1
योए 3:18
प्रक 22:1
4 व्य 3:17
5 यह 1:4
6 भज 97:1
प्रक 19:6
7 व्य 6:4
8 यश 42:8
यश 44:6
9 1रा 15:22
10 1इत 4:24, 32
11 व्य 1:7
12 यिर्म 30:18
13 यिर्म 37:13
14 नहे 3:1
यिर्म 31:38
15 यश 60:18
यिर्म 31:40
16 यिर्म 23:6
यिर्म 33:16
17 2रा 19:34, 35
योए 3:2
18 न्या 7:22
यहे 38:21
19 2इत 14:13
2इत 20:25
जक 2:8, 9

15 उस महामारी के समान एक और
महामारी उनकी छावनी में घोड़ों, खच्चरों,
ऊँटों, गधों और सारे मवेशियों पर
आएगी।

16 यरूशलेम से युद्ध करनेवाले सब
राष्ट्रों में से जो-जो बच जाएँगे, वे
हर साल राजा को, सेनाओं के पर-
मेश्वर यहोवा को दंडवत* करने
आएँगे[1] और छप्परों का त्योहार मनाएँ-
गे।[2] 17 लेकिन अगर धरती के परि-
वारों में से कोई राजा को, सेनाओं के
परमेश्वर यहोवा को दंडवत करने ऊपर
यरूशलेम को नहीं आएगा, तो उसके यहाँ
बारिश नहीं होगी।[3] 18 अगर मिस्र के
लोग नहीं आएँगे और आकर उसे दंड-
वत नहीं करेंगे, तो उनके यहाँ भी बारिश
नहीं होगी। इसके बजाय, यहोवा उन
पर वह महामारी लाएगा जो वह छप्परों का
त्योहार न मनानेवाले राष्ट्रों पर लाता है।
19 मिस्र और सब राष्ट्रों में से जो छप्परों
का त्योहार मनाने नहीं आएँगे, उन्हें अपने
पाप की यही सज़ा मिलेगी।

20 उस दिन घोड़ों की घंटियों पर ये
शब्द लिखे होंगे, 'यहोवा पवित्र है।'[1]
यहोवा के भवन के हंडे,*[2] उन कटोरों[3]
जैसे ठहरेंगे जो वेदी के सामने रखे जाते हैं।
21 यरूशलेम और यहूदा में जितने भी
हंडे* हैं, वे पवित्र ठहरेंगे और सेनाओं के
परमेश्वर यहोवा को अर्पित होंगे। बलि-
दान चढ़ानेवाले सब लोग आकर इनमें
से कुछ हंडों में गोश्त उबालेंगे। उस
दिन सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के
भवन में एक भी कनानी# नहीं रहेगा।"[4]

अध्य. 14
1 भज 86:9; यश 66:23
2 लैव 23:34; नहे 8:14, 15
3 यश 60:12

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 28:36; निर्ग 39:30
2 1शम 2:13, 14
3 निर्ग 25:29; गि 4:7
4 यहे 44:9

14:16 * या "की उपासना।"

14:20, 21 * या "चौड़े मुँहवाले हंडे।"
14:21 # या शायद, "लेन-देन करनेवाला।"

मलाकी

सारांश

1 अपने लोगों के लिए यहोवा का प्यार (1-5)
- याजक घटिया बलिदान चढ़ाते हैं (6-14)
  - राष्ट्रों में परमेश्वर का नाम महान होगा (11)

2 याजक, लोगों को सिखाने से चूक गए (1-9)
  - याजक को ज्ञान की बातें सिखानी चाहिए (7)
- बेवजह तलाक देने के दोषी (10-17)
  - यहोवा को तलाक से नफरत है (16)

3 सच्चा प्रभु अपना मंदिर शुद्ध करने आता है (1-5)
  - करार का दूत (1)
- यहोवा के पास लौटने का बढ़ावा (6-12)
  - यहोवा बदलता नहीं (6)
  - "मेरे पास लौट आओ, तब मैं तुम्हारे पास लौट आऊँगा" (7)
  - 'सारा दसवाँ हिस्सा ले आओ और यहोवा आशीषें बरसाएगा' (10)
- नेक और दुष्ट (13-18)
  - याद रखने के लिए परमेश्वर के सामने एक किताब लिखी गयी (16)
  - नेक और दुष्ट में फर्क (18)

4 यहोवा का दिन आने से पहले एलियाह आएगा (1-6)
  - "नेकी का सूरज चमकेगा" (2)

1 परमेश्वर की तरफ से एक भारी
संदेश:
मलाकी* ने यहोवा का यह संदेश इस-
राएल को सुनाया,
2 यहोवा कहता है, "मैंने तुमसे प्यार
किया है।"[1]
लेकिन तुम पूछते हो, "तूने किस तरह
हमसे प्यार किया है?"
यहोवा कहता है, "क्या एसाव, याकूब
का भाई नहीं था?[2] लेकिन मैंने याकूब
से प्यार किया 3 और एसाव से नफ-
रत की।[3] मैंने उसके पहाड़ों को उजाड़
दिया[4] और उसकी जागीर को वीराने के
गीदड़ों का अड्डा बना दिया।"[5]
4 "एदोम* कहता है, 'हम बरबाद हो
चुके हैं! मगर हम लौटेंगे और अपने खंड-
हरों को दोबारा बनाएँगे।' लेकिन सेनाओं
का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'वे बनाएँ-
गे, पर मैं उन्हें गिरा दूँगा। और एदोम के
बारे में कहा जाएगा कि यह "दुष्टों
का देश" है और "इन लोगों को यहोवा
ने हमेशा के लिए दोषी ठहराया है।"[6]
5 तुम खुद अपनी आँखों से यह देखोगे
और कहोगे, "पूरे इसराएल में यहोवा की
महिमा हो।"'"
6 "'एक बेटा अपने पिता का आदर
करता है[7] और एक दास अपने मालिक
का। अगर तुम मुझे अपना पिता कहते
हो,[8] तो मेरा आदर क्यों नहीं करते?[9]
अगर तुम मुझे अपना मालिक कहते हो,
तो मेरा डर* क्यों नहीं मानते?' यह बात
सेनाओं का परमेश्वर यहोवा तुम याजकों
से कहता है, जो मेरे नाम का अपमान
करते हो।[10]
'मगर तुम पूछते हो, "हमने कैसे तेरे
नाम का अपमान किया?"'
7 'मेरी वेदी पर दूषित खाना* चढ़ा-
कर।'
तुम पूछते हो, 'हमने किस तरह तुझे
दूषित किया?'
'यह कहकर कि यहोवा की मेज़[1] तुच्छ
है। 8 तुम बलि के लिए अंधा जानवर
पेश करते हो और कहते हो, "इसमें कोई
बुराई नहीं।" तुम लँगड़ा या बीमार जान-
वर पेश करते हो और कहते हो, "इसमें
कोई बुराई नहीं।"'"[2]
सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता
है, "ज़रा यही जानवर अपने राज्यपाल
को पेश करके देखो। क्या वह तुमसे खुश
होगा? क्या वह तुम पर कृपा करेगा?"
9 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता
है, "अब परमेश्वर से बिनती करो कि वह
हम पर कृपा करे। तुम्हें क्या लगता है,
तुमने अपने हाथों से जो बलिदान चढ़ाए
हैं, क्या उनके लिए वह तुम पर कृपा
करेगा?"
10 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, "दरवाज़े* बंद करना[3] तो दूर,
तुममें से कोई बिना पैसे लिए मेरी वेदी पर
आग तक नहीं जलाता।[4] मैं तुमसे ज़रा
भी खुश नहीं। और न ही तुम्हारे हाथ से
भेंट का चढ़ावा कबूल करने में मुझे खुशी
मिलती है।"[5]
11 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, "पूरब से पश्चिम तक सब
राष्ट्रों में मेरा नाम महान होगा।[6] जगह-
जगह बलिदान चढ़ाए जाएँगे कि उनसे
धुआँ उठे और मेरे नाम से शुद्ध भेंट

अध्य. 1
1 व्य 10:15
2 उत 25:25, 26
3 रोम 9:13
4 यिर्म 49:20; योए 3:19
5 यश 34:10, 13
6 यश 34:5; ओब 18
7 निर्ग 20:12
8 निर्ग 4:22
9 यश 1:2
10 यहे 22:26

दूसरा कॉल.
1 यहे 41:21, 22; 1कुर 10:21
2 लैव 22:20, 22; व्य 15:21
3 2इत 23:4
4 यिर्म 6:13; मी 3:11
5 यश 1:11; यिर्म 6:20
6 भज 113:3; यश 45:6; यश 59:19

1:1 *मतलब "मेरा दूत।" **1:4** *एसाव को दिया गया दूसरा नाम। शब्दावली देखें। **1:6** *या "आदर।"
1:7 *शा., "रोटी।" **1:10** *ज़ाहिर है, मंदिर के दरवाज़े जिन्हें बंद करना उनका काम था।

अर्पित की जाएगी क्योंकि सब राष्ट्रों में
मेरा नाम महान होगा।"[1]

12 "मगर तुम लोग यह कहकर मेरी
मेज़ का* अपमान करते हो,[2] 'यहोवा
की मेज़ अशुद्ध है। उस पर चढ़ायी गयी
भेंट, हाँ, चढ़ाया गया खाना घिनौना है।'[3]
13 तुम नाक-भौं सिकोड़कर यह भी
कहते हो, 'उफ! यह कैसी मुसीबत है!'"
यह बात सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने
कही है। यहोवा यह भी कहता है, "तुम
चोरी के जानवर, लँगड़े और बीमार
जानवर लाते हो। और लाकर मुझे भेंट में
चढ़ाते हो। तुम्हें क्या लगता है, मैं तुम्हारे
हाथ से इन्हें कबूल करूँगा?"[4]

14 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, "मैं महाराजाधिराज हूँ[5] और
मेरा नाम सभी राष्ट्रों में आदर से लिया
जाएगा।[6] इसलिए शापित है वह धूर्त
इंसान जिसके झुंड में अच्छा नर जान-
वर तो है, फिर भी वह मन्नत मानकर
यहोवा को ऐसा जानवर चढ़ाता है जिसमें
दोष है।"

2 "अब हे याजको, मैं तुम्हें एक आज्ञा
देता हूँ।[7] 2 अगर तुम इसे नहीं
मानोगे और मेरे नाम की महिमा करने
में मन नहीं लगाओगे, तो मैं तुम्हें शाप
दूँगा[8] और तुम्हारी आशीषों को शाप में
बदल दूँगा।[9] सच पूछो तो, मैं तुम्हारी
आशीषों को शाप में बदल चुका हूँ क्योंकि
तुम मेरी आज्ञा पर मन नहीं लगाते।"
यह बात सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने
कही है।

3 "देखो, तुम्हारी वजह से मैं तुम्हारे
बोए हुए बीजों को नष्ट कर दूँगा।*[10]
मैं तुम्हारे चेहरे पर गोबर फेंकूँगा, हाँ,
तुम्हारे त्योहारों में बलि किए गए जान-
वरों का गोबर। और तुम्हें उठाकर वहाँ*
पटक दिया जाएगा। 4 तब तुम जान
लोगे कि मैंने तुम्हें यह आज्ञा इसलिए दी
है ताकि लेवी के साथ मेरा करार बना
रहे।"[1] यह बात सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा ने कही है।

5 "मैंने उसके साथ जो करार किया,
उसकी वजह से उसे जीवन और शांति
मिली। मैंने उसे ये आशीषें इसलिए दीं
कि वह मेरा डर* माने। और उसने मेरा
डर माना और मेरे नाम का आदर किया।
6 उसके मुँह पर सच्चाई की बातें* रहती
थीं[2] और उसके होंठों से कोई बुरी बात
नहीं निकलती थी। वह मेरे साथ शांति
और सीधाई से चला[3] और कई लोगों को
बुरी राह से वापस ले आया। 7 याजक
को ज्ञान की बातें सिखानी चाहिए और
लोगों को उसी से कानून की बातें सीखनी
चाहिए[4] क्योंकि वह सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा का दूत है।

8 लेकिन हे याजको, तुम सही राह
से भटक गए। तुम्हारी वजह से कई
लोग कानून मानने से चूक गए।*[5] तुमने
लेवी का करार तोड़ दिया।"[6] यह बात
सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने कही है।
9 "अब मैं सब लोगों के सामने तुम्हें तुच्छ
ठहराऊँगा, नीचा दिखाऊँगा क्योंकि तुम
मेरी राह पर नहीं चले और तुमने
कानून के मुताबिक सही-सही न्याय नहीं
किया।"[7]

10 "क्या हम सबका एक ही पिता
नहीं?[8] क्या एक ही परमेश्वर ने हमारी

1:12 *या शायद, "मेरा।" 2:3 *शा., "फटकारूँगा।" 2:3 *यानी वह जगह जहाँ बलि के जान-वरों का गोबर फेंका जाता था। 2:5 *या "आदर; श्रद्धा।" 2:6 *शा., "का कानून।" 2:8 *या शायद, "तुम्हारी शिक्षाओं की वजह से कई लोगों से चूक हुई।"

अध्य. 1

1 भज 22:27, सप 3:9, मत 28:19, प्रक 15:4
2 यहे 22:26
3 मला 1:7
4 लैव 22:20, 22, व्य 15:21, व्य 17:1
5 भज 47:2, यिर्म 10:10
6 प्रक 15:4

अध्य. 2

7 मला 1:6
8 लैव 26:14-17, व्य 28:15
9 हाग 1:11
10 योए 1:17

दूसरा कॉल.

1 निर्ग 40:12, 15, गि 3:6, गि 18:23, यहे 44:15, 16
2 2इत 17:8, 9
3 निर्ग 32:26
4 व्य 24:8, 2इत 15:3, नहे 8:7, 8, यहे 44:23, 24
5 लूक 11:52
6 नहे 13:29
7 लैव 19:15, व्य 1:17, व्य 16:19
8 मला 1:6, 1कुर 8:6

सृष्टि नहीं की? तो फिर हम एक-दूसरे
के साथ विश्वासघात क्यों कर रहे हैं,[1]
अपने पुरखों का करार क्यों तोड़ रहे हैं?
11 यहूदा ने विश्वासघात किया है और
इसराएल और यरूशलेम में एक घिनौना
काम हुआ है। हाँ, यहूदा ने पराए देव-
ताओं को पूजनेवाली औरत* से शादी
कर ली।[2] उसने यहोवा की पवित्रता#
को, जो परमेश्वर को प्यारी है भंग कर
दिया।[3] **12** ऐसे काम करनेवालों को
यहोवा, याकूब के डेरे से नाश कर देगा
फिर चाहे वह कोई भी हो, चाहे वह
सेनाओं के परमेश्वर यहोवा को चढ़ावे
क्यों न चढ़ाता हो।"[4]

13 "तुमने एक और काम किया है
जिससे यहोवा की वेदी आहें भरने-
वालों और रोनेवालों के आँसुओं से
भीग गयी है। इसलिए अब वह तुम्हारे
चढ़ावे पर कोई ध्यान नहीं देता, न
तुम्हारी दी किसी चीज़ से खुश होता है।[5]
14 तुम कहते हो, 'हमने ऐसा क्या किया
है?' तुमने अपनी जवानी की पत्नी के
साथ विश्वासघात किया है और यहोवा
इस बात का गवाह है। तुमने अपनी
संगिनी, अपनी पत्नी के साथ विश्वास-
घात किया है जिसके साथ तुमने करार
किया था।*[6] **15** लेकिन कुछ लोगों ने
ऐसा नहीं किया क्योंकि उनमें अब भी
पवित्र शक्ति काम कर रही है। वे
ऐसा वंश* चाहते हैं जो सचमुच पर-
मेश्वर के लोग हों। इसलिए तुम भी अपने
मन को टटोलो और सही रुझान पैदा
करो। ठान लो कि तुम अपनी जवानी
की पत्नी के साथ विश्वासघात नहीं
करोगे। **16** क्योंकि मुझे* तलाक से
नफरत है।"[1] यह बात इसराएल के पर-
मेश्वर यहोवा ने कही है। "और जो हिंसा
करता है# उससे भी मुझे नफरत है।" यह
बात सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने कही
है। "इसलिए अपने मन को टटोलो और
सही रुझान पैदा करो। ठान लो कि तुम
विश्वासघात नहीं करोगे।[2]

17 तुमने अपनी बातों से यहोवा को
थका दिया है।[3] मगर तुम पूछते हो,
'हमने उसे कैसे थका दिया?' यह कह-
कर कि 'बुरे काम करनेवाले, यहोवा की
नज़र में अच्छे हैं और वह उनसे खुश होता
है।'[4] और यह कहकर कि 'कहाँ गया
न्याय का परमेश्वर?'"

3 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा कहता
है, "देखो, मैं अपना दूत भेज रहा
हूँ और वह मेरे आगे-आगे जाकर
रास्ता तैयार करेगा।[5] फिर सच्चा प्रभु
जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो, अचानक
अपने मंदिर में आएगा।[6] करार का
वह दूत भी आएगा जिसकी तुम खुशी-
खुशी आस लगाए हो। देखो, वह ज़रूर
आएगा।"

2 "लेकिन जिस दिन वह आएगा,
कौन उसका सामना कर सकेगा? जब वह
प्रकट होगा, तब कौन उसके सामने खड़ा
रह सकेगा? वह शुद्ध करनेवाले की
आग के समान और धोबी की सज्जी*[7]
के समान होगा। **3** जैसे शुद्ध करने-
वाला चाँदी गलाता है और उसमें से मैल
दूर करके उसे शुद्ध करता है,[8] वैसे ही
वह लेवी के बेटों को शुद्ध करने के लिए
बैठेगा। वह उन्हें सोने-चाँदी के समान
शुद्ध करेगा और वे यहोवा के लिए ऐसे

अध्य. 2
1 नहे 5:8
2 व्य 7:1, 3; न्या 3:5, 6; 1रा 11:1, 2; नहे 13:23
3 लैव 20:26
4 1शम 15:22
5 नीत 21:27
6 नीत 5:18-20; मत 19:4-6

दूसरा कॉल.
1 उत 2:24; मत 5:32; मत 19:8, 9; मर 10:5-9
2 मला 2:10
3 यश 1:14, 15
4 यहे 18:29

अध्य. 3
5 मत 3:1-3; मत 11:7, 10; मर 1:2-4; लूक 1:76; यूह 1:6, 23; यूह 3:28
6 भज 11:4
7 यश 1:25; यिर्म 2:22
8 भज 66:10; नीत 25:4; जक 13:9

2:11 *शा., "पराए देवता की बेटी।" #या शायद, "पवित्र-स्थान।" **2:14** *या "जो कानूनी तौर पर तुम्हारी पत्नी है।" **2:15** *शा., "बीज।"

2:16 *शा., "उसे।" #शा., "जो हिंसा को कपड़े की तरह पहनता है।" **3:2** *एक तरह का साबुन।

लोग बन जाएँगे जो सच्चाई से अपनी भेंट
चढ़ाएँगे। 4 तब यहूदा और यरूशलेम
का भेंट का चढ़ावा यहोवा को भाएगा,
जैसे बहुत समय पहले भाता था।[1]

5 मैं न्याय करने तुम्हारे पास आऊँगा
और टोना-टोटका करनेवालों, व्यभिचार
करनेवालों, झूठी शपथ खानेवालों, मज़-
दूरों की मज़दूरी मारनेवालों, विधवाओं
और अनाथों* को सतानेवालों और पर-
देसियों की मदद करने से इनकार करने-
वालों# के खिलाफ फुर्ती से सज़ा सुनाऊँ-
गा।[2] क्योंकि उनमें मेरा ज़रा भी डर
नहीं।" यह बात सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा ने कही है।

6 "मैं यहोवा हूँ, मैं बदलता नहीं।*[3]
और तुम याकूब के बेटे हो, इसलिए
तुम्हारा वजूद अब तक नहीं मिटा।
7 तुम्हारे पुरखों के दिनों से तुम मेरे
कायदे-कानून तोड़ते आए हो और उन्हें
नहीं मानते।[4] मेरे पास लौट आओ, तब
मैं तुम्हारे पास लौट आऊँगा।"[5] यह बात
सेनाओं के परमेश्वर यहोवा ने कही है।

लेकिन तुम पूछते हो, "हम कैसे
लौटें?"

8 "क्या अदना इंसान परमेश्वर को
लूट सकता है? लेकिन तुम मुझे लूटते
हो।"

तुम पूछते हो, "हमने तुझे कैसे लूटा?"

"दसवाँ हिस्सा और दान में चीज़ें
न देकर। 9 सचमुच, तुम शापित हो*
क्योंकि तुम मुझे लूट रहे हो। तुम ही नहीं
पूरा राष्ट्र मुझे लूट रहा है। 10 अब
सारा दसवाँ हिस्सा भंडार में ले आओ[6]
ताकि मेरे घर में भोजन रहे।[7] ज़रा मुझे
परखो और फिर देखो मैं किस तरह
तुम्हारे लिए आकाश के झरोखे खोल
दूँगा[1] और तुम पर आशीषों की बौछार
करूँगा, इतनी कि तुम्हें कोई कमी नहीं
होगी।"[2] यह बात सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा ने कही है।

11 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, "मैं तुम्हारी खातिर नाश करने-
वाले* को फटकारूँगा और वह तुम्हारे
देश की उपज नहीं उजाड़ेगा, न ही तुम्हारे
अंगूरों के बाग रौंदेगा।"[3]

12 सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
कहता है, "सब राष्ट्र तुम्हें सुखी कहेंगे[4]
क्योंकि तुम्हारा देश खुशी का कारण बन
जाएगा।"

13 यहोवा कहता है, "तुमने मेरे
खिलाफ बहुत बुरी बात कही है।"

तुम पूछते हो, "हमने तेरे खिलाफ क्या
कहा?"[5]

14 "तुमने कहा, 'परमेश्वर की सेवा
करने का कोई फायदा नहीं।[6] अपना फर्ज़
निभाकर हमें क्या मिला? सेनाओं के पर-
मेश्वर यहोवा के सामने अपने पापों का
अफसोस करके हमें क्या फायदा हुआ?
15 हमें तो लगता है जो गुस्ताखी करते
हैं, वही सुखी हैं। जो दुष्टता करते हैं,
वही कामयाब होते हैं।[7] वे परमेश्वर की
परीक्षा लेने की जुर्रत करते हैं, पर उन्हें
कुछ नहीं होता।'"

16 तब यहोवा का डर माननेवाले
एक-दूसरे से, हाँ, हर कोई अपने साथी
से बात करने लगा और यहोवा ध्यान से
उनकी सुनता रहा। और जो यहोवा का
डर मानते हैं और उसके नाम के बारे में
मनन करते हैं,*[8] उन्हें याद रखने के लिए

3:5 *या "जिनके पिता की मौत हो गयी है।" #या "के हक नहीं देनेवालों।" 3:6 *या "मैं नहीं बदला।" 3:9 *या शायद, "तुम मुझे शाप दे रहे हो।"

3:11 *ज़ाहिर है कि यहाँ कीड़ों के कहर की बात की गयी है। 3:16 *या "सोचते हैं।" या शायद, "को अनमोल समझते हैं।"

अध्य. 3

1 2इत 7:1

2 निर्ग 20:7; निर्ग 23:9; व्य 18:10, 12; व्य 24:17; नीत 14:31; यश 1:17; जक 7:10; याकू 1:27; याकू 5:4

3 यश 43:10; यश 46:4; याकू 1:17

4 व्य 9:7; प्रेष 7:51

5 यिर्म 3:12; जक 1:3; याकू 4:8

6 लैव 27:30; व्य 14:28

7 2इत 31:11; नहे 12:44; नहे 13:10

दूसरा कॉल.

1 व्य 28:12

2 लैव 26:10; 2इत 31:10; नीत 3:9, 10

3 व्य 11:14; जक 8:12

4 यश 61:9

5 मला 1:6

6 अय 21:14, 15; भज 73:13, 14; यश 58:3; सप 1:12

7 यिर्म 12:1

8 यश 26:8

परमेश्‍वर के सामने एक किताब लिखी
जाने लगी।[1]
17 सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा
कहता है, "उस दिन मैं उन्हें अपनी
खास जागीर* बनाऊँगा[2] और वे मेरे हो
जाएँगे।[3] मैं उन पर दया करूँगा, ठीक
जैसे एक पिता आज्ञा माननेवाले अपने
बेटे पर दया करता है।[4] 18 तब तुम
एक बार फिर यह फर्क देख पाओगे कि
कौन नेक है और कौन दुष्ट,[5] कौन पर-
मेश्‍वर की सेवा करता है और कौन नहीं।"

4 सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा कहता
है, "देखो, वह दिन आ रहा है जो
धधकते भट्ठे जैसा होगा।[6] उस दिन सारे
गुस्ताख लोग और दुष्ट काम करनेवाले
घास-फूस बन जाएँगे। आनेवाला वह
दिन उन्हें भस्म कर देगा, न जड़ बचेगी
न डाल। 2 लेकिन तुम जो मेरे नाम
का आदर करते* हो, तुम पर नेकी का

3:17 *या "अनमोल जायदाद।" 4:2 *शा., "डर मानते।"

अध्य. 3
1 भज 56:8
भज 69:28
2 यश 62:3
1पत 2:9
3 यिर्म 31:33
4 भज 103:13
5 भज 58:10,11

अध्य. 4
6 सप 2:2
2पत 3:7

दूसरा कॉल.
1 व्य 4:5
2 योए 2:31
प्रेष 2:20
2पत 3:10
3 मत 11:13, 14
मर 9:11, 12
4 लूक 1:17

सूरज चमकेगा और उसकी किरणों से
तुम चंगे होगे। तुम मोटे-ताज़े बछड़ों की
तरह कूदोगे-फाँदोगे।"
3 सेनाओं का परमेश्‍वर यहोवा कहता
है, "जिस दिन मैं कदम उठाऊँगा उस
दिन, दुष्ट तुम्हारे पैरों की धूल बन जाएँगे
और तुम उन्हें रौंदोगे।"
4 "मैंने अपने सेवक मूसा को
जो कानून दिया था उसे याद रखना।
हाँ, उन नियमों और फैसलों को याद
रखना जो मैंने होरेब में इसराएल के लिए
दिए थे।[1]
5 देखो, यहोवा के उस महान और
भयानक दिन के आने से पहले[2]
मैं तुम्हारे पास भविष्यवक्‍ता एलियाह
को भेज रहा हूँ।[3] 6 वह पिताओं का
दिल पलटकर बेटों जैसा कर देगा[4] और
बेटों का दिल पलटकर पिताओं जैसा
कर देगा ताकि मुझे आकर पृथ्वी को
तबाह न करना पड़े, इसे नाश न करना
पड़े।"

**(यहाँ इब्रानी-अरामी शास्त्र का अनुवाद खत्म होता है
और मसीही यूनानी शास्त्र का अनुवाद शुरू होता है)**

मत्ती
के मुताबिक खुशखबरी

सारांश

11 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की तारीफ (1-15)
उस पीढ़ी को धिक्कारा गया जिसने पश्‍चाताप नहीं किया (16-24)
पिता की तारीफ की जिसने नम्र लोगों पर कृपा की (25-27)
यीशु का जुआ ताज़गी देता है (28-30)

12 यीशु "सब्त के दिन का प्रभु" (1-8)
सूखे हाथवाले आदमी को ठीक किया (9-14)
परमेश्‍वर का प्यारा सेवक (15-21)
दुष्ट स्वर्गदूत, पवित्र शक्‍ति की मदद से निकाले गए (22-30)
ऐसा पाप जिसकी कोई माफी नहीं (31, 32)
पेड़ अपने फलों से पहचाना जाता है (33-37)
योना का चिन्ह (38-42)
जब दुष्ट स्वर्गदूत लौटता है (43-45)
यीशु की माँ और उसके भाई (46-50)

राज के बारे में मिसालें (1-52)

13 बीज बोनेवाला (1-9)
यीशु मिसालें क्यों देता था (10-17)
बोनेवाले की मिसाल का मतलब समझाया (18-23)
गेहूँ और जंगली पौधे (24-30)
राई का दाना और खमीर (31-33)
यीशु ने मिसालें बताकर भविष्यवाणी पूरी की (34, 35)
गेहूँ और जंगली पौधों का मतलब समझाया (36-43)
छिपा खज़ाना और बेशकीमती मोती (44-46)
बड़ा जाल (47-50)
खज़ाने से नयी और पुरानी चीज़ें (51, 52)
यीशु अपने इलाके में ठुकराया गया (53-58)

14 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर काट दिया गया (1-12)
यीशु ने 5,000 को खिलाया (13-21)
यीशु पानी पर चलता है (22-33)
गन्‍नेसरत में चंगा करता है (34-36)

15 इंसानी परंपराओं का परदाफाश किया (1-9)
दिल से निकलनेवाली बातें ही दूषित करती हैं (10-20)
फीनीके की औरत का विश्‍वास बहुत बड़ा था (21-28)
यीशु कई बीमारियाँ ठीक करता है (29-31)
यीशु 4,000 को खिलाता है (32-39)

16 चिन्ह दिखाने के लिए कहा (1-4)
फरीसियों और सदूकियों का खमीर (5-12)
राज की चाबियाँ (13-20)
मंडली चट्टान पर बनायी जाएगी (18)
यीशु अपनी मौत की भविष्यवाणी करता है (21-23)
सच्चा चेला कौन है (24-28)

17 यीशु का रूप बदला (1-13)
राई के दाने के बराबर विश्‍वास (14-21)
यीशु फिर से अपनी मौत की भविष्यवाणी करता है (22, 23)
मछली के मुँह से मिले सिक्के से कर अदा किया (24-27)

18 राज में कौन सबसे बड़ा (1-6)
विश्‍वास की राह में बाधाएँ डालना (7-11)
खोयी हुई भेड़ की मिसाल (12-14)
भाई को पा लेना (15-20)
माफ न करनेवाले दास की मिसाल (21-35)

19 शादी और तलाक (1-9)
अविवाहित रहने का तोहफा (10-12)
यीशु बच्चों को आशीष देता है (13-15)
एक अमीर नौजवान का सवाल (16-24)
राज के लिए त्याग (25-30)

20 अंगूरों के बाग के मज़दूर; बराबर मज़दूरी (1-16)
यीशु फिर से अपनी मौत की भविष्यवाणी करता है (17-19)
राज में खास पदवी के लिए गुज़ारिश (20-28)
यीशु बहुतों के लिए फिरौती है (28)
दो अंधे आदमियों को ठीक करता है (29-34)

21 यीशु राजा की हैसियत से दाखिल होता है (1-11)
यीशु मंदिर को शुद्ध करता है (12-17)
अंजीर के पेड़ को शाप देता है (18-22)

---

1 इस किताब में यीशु मसीह* के जीवन का इतिहास है। वह अब्राहम के वंश[1] से और उसके वंशज दाविद के वंश[2] से था। पेश है यीशु की वंशावली:

2 अब्राहम से इसहाक पैदा हुआ,[3]
इसहाक से याकूब,[4]
याकूब से यहूदा[5] और उसके भाई पैदा हुए,

3 यहूदा से पेरेस और जेरह पैदा हुए[1]
जिनकी माँ तामार थी,
पेरेस से हेसरोन पैदा हुआ,[2]
हेसरोन से राम,[3]

4 राम से अम्मीनादाब,
अम्मीनादाब से नहशोन,[4]
नहशोन से सलमोन,

5 सलमोन से बोअज़ पैदा हुआ,
बोअज़ की माँ राहाब थी।[5]

अध्य. 1
1 उत 22:18
2 1इत 17:11
मत 9:27
लूक 1:32, 33
3 उत 21:3
4 उत 25:26
1इत 1:34
5 उत 29:35

दूसरा कॉल.
1 उत 38:29, 30
2 रूत 4:18-22
3 1इत 2:9
4 1इत 2:10, 11
5 यह 2:1

1:1 * या "मसीहा; अभिषिक्‍त जन।"

बोअज़ से ओबेद पैदा हुआ, ओबेद
की माँ रूत थी।[1]
ओबेद से यिशै पैदा हुआ,[2]
6 यिशै से राजा दाविद[3]
और दाविद से सुलैमान पैदा
हुआ।[4] सुलैमान उस औरत से
पैदा हुआ जो पहले उरियाह की
पत्नी थी।
7 सुलैमान से रहूबियाम पैदा हुआ,[5]
रहूबियाम से अबियाह,
अबियाह से आसा,[6]
8 आसा से यहोशापात,[7]
यहोशापात से यहोराम[8]
और यहोराम से उज्जियाह पैदा
हुआ।
9 उज्जियाह से योताम पैदा हुआ,[9]
योताम से आहाज,[10]
आहाज से हिजकियाह,[11]
10 हिजकियाह से मनश्शे,[12]
मनश्शे से आमोन[13]
और आमोन से योशियाह पैदा
हुआ।[14]
11 योशियाह[15] से यकोन्याह[16] और
उसके भाई पैदा हुए। उस दौरान,
यहूदियों को बंदी बनाकर बैबि-
लोन ले जाया गया।[17]
12 बैबिलोन में यकोन्याह से शालतीएल
पैदा हुआ,
शालतीएल से जरुबाबेल,[18]
13 जरुबाबेल से अबीहूद,
अबीहूद से एल्याकीम,
एल्याकीम से अज़ोर,
14 अज़ोर से सादोक,
सादोक से अखीम
और अखीम से एलीहूद पैदा हुआ।
15 एलीहूद से एलिआज़र पैदा हुआ,
एलिआज़र से मत्तान,
मत्तान से याकूब
16 और याकूब से यूसुफ पैदा हुआ जो
मरियम का पति था। मरियम ने
यीशु को जन्म दिया[1] जो मसीह[2]
कहलाता है।

17 अब्राहम से लेकर दाविद तक कुल
मिलाकर 14 पीढ़ियाँ हुईं। दाविद से
लेकर उस समय तक 14 पीढ़ियाँ हुईं,
जब यहूदी बैबिलोन की बँधुआई में गए।
बैबिलोन की बँधुआई से लेकर मसीह तक
14 पीढ़ियाँ हुईं।

18 यीशु मसीह का जन्म इस तरह
हुआ। उसकी माँ मरियम की सगाई यूसुफ
से हो चुकी थी। मगर शादी से पहले
जब वह कुँवारी ही थी, तब परमेश्वर की
पवित्र शक्ति* की ताकत से मरियम गर्भ-
वती हुई।[3] 19 मगर उसका पति यूसुफ
लोगों के सामने उसका तमाशा नहीं
बनाना चाहता था क्योंकि वह एक नेक
इंसान था। इसलिए उसने चुपके से मरि-
यम को तलाक देने का इरादा किया।[4]
20 लेकिन इस बारे में सोच-विचार करने
के बाद जब वह सो गया, तो उसे सपने
में यहोवा* का स्वर्गदूत दिखायी दिया।
स्वर्गदूत ने उससे कहा, "यूसुफ, दाविद के
वंशज, तू मरियम से शादी करने# से मत
डर क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र
शक्ति की ताकत से है।[5] 21 मरि-
यम एक बेटे को जन्म देगी। तू उसका
नाम यीशु* रखना[6] क्योंकि वह अपने
लोगों को पापों से उद्धार दिलाएगा।"[7]
22 यह सब इसलिए हुआ ताकि

1:18 *या "ज़ोरदार शक्ति।" **1:20** *यह उन 237 जगहों में से पहली जगह है, जहाँ यहोवा नाम यूनानी शास्त्र में पाया जाता है। अति. क5 देखें। #शा., "अपने घर लाने।" **1:21** *यह नाम, इब्रानी नाम "येशू" और "यहोशू" के जैसा है, जिसका मतलब है "यहोवा उद्धार है।"

अध्य. 1
1 रूत 4:13
2 1इत 2:12
3 1इत 2:13, 15
4 2शम 12:24; 1इत 3:5
5 1रा 11:43
6 1इत 3:10-19; 2इत 14:1
7 1रा 15:24
8 2इत 21:1
9 2रा 15:32
10 2रा 15:38
11 2रा 18:1
12 2रा 20:21
13 2इत 33:20
14 2रा 21:24
15 2रा 23:34
16 1इत 3:15, 16
17 2रा 24:12, 15; 2इत 36:9, 10
18 एज 3:2; नहे 12:1

दूसरा कॉल.
1 मत 13:55; मर 6:3
2 लूक 3:23-38
3 लूक 1:35
4 व्य 24:1
5 लूक 1:35
6 मत 1:25; लूक 1:31
7 लूक 2:30; यूह 1:29; प्रेष 4:12; प्रेष 5:31; इफ 1:7; इब्र 7:25; 1पत 2:24

यहोवा* का यह वचन पूरा हो, जो उसने
अपने भविष्यवक्ता से कहलवाया था,
23 “देख! कुँवारी गर्भवती होगी और
एक बेटे को जन्म देगी। वे उसका नाम
इम्मानुएल रखेंगे,”[1] जिसका मतलब है,
“परमेश्वर हमारे साथ है।”[2]

24 तब यूसुफ नींद से जाग उठा और
उसने वैसा ही किया जैसा यहोवा* के
स्वर्गदूत ने उसे बताया था। वह अपनी
पत्नी को अपने घर ले आया। 25 मगर
जब तक मरियम ने बेटे को जन्म[3] न
दिया, तब तक यूसुफ ने उसके साथ यौन-
संबंध नहीं रखे। यूसुफ ने उस बच्चे का
नाम यीशु रखा।[4]

2 यीशु का जन्म यहूदिया के बेतलेहेम[5]
में हो चुका था। उन दिनों हेरोदेस*[6]
यहूदिया का राजा था। यीशु के जन्म के
कुछ समय बाद, देखो! पूरब से कुछ
ज्योतिषी# यरूशलेम आए। 2 वे पूछने
लगे, “यहूदियों का जो राजा[7] पैदा हुआ
है, वह कहाँ है? जब हम पूरब में
थे, तो हमने उसका तारा देखा था।
इसलिए हम उसे दंडवत* करने आए
हैं।” 3 यह सुनकर राजा हेरोदेस घबरा
गया और पूरे यरूशलेम में खलबली मच
गयी। 4 हेरोदेस ने सभी प्रधान याजकों
और शास्त्रियों को इकट्ठा किया और
उनसे पूछा कि मसीह* का जन्म कहाँ
होना है। 5 उन्होंने कहा, “यहूदिया के
बेतलेहेम में,[8] क्योंकि भविष्यवक्ता से
यह लिखवाया गया है, 6 ‘हे यहूदा के
इलाके के बेतलेहेम, तू यहूदा के राज्य-
पालों के लिए किसी भी मायने में सबसे
छोटा शहर नहीं, क्योंकि तुझी से एक
राज करनेवाला निकलेगा जो चरवाहे की
तरह मेरी प्रजा इसराएल की अगुवाई
करेगा।’”[1]

7 तब हेरोदेस ने चुपके से उन ज्योति-
षियों को बुलवाया। फिर उनसे अच्छी
तरह पूछताछ करके पता लगाया कि
उन्हें यह तारा पहली बार कब नज़र
आया था। 8 फिर उसने यह कहकर
उन्हें बेतलेहेम भेजा, “जाओ, अच्छी तरह
ढूँढ़ो और उस बच्चे का पता लगाओ।
जब वह तुम्हें मिल जाए तो आकर मुझे
खबर देना ताकि मैं भी जाकर उसे दंड-
वत करूँ।” 9 राजा हेरोदेस की यह
बात सुनने के बाद ज्योतिषी वहाँ से
निकल पड़े। तब देखो! वही तारा जो उन्हें
पूरब में दिखायी दिया था,[2] उनके आगे-
आगे चलने लगा और जाकर उस घर
के ऊपर ठहर गया जहाँ वह बच्चा था।
10 जब उन्होंने तारे को ठहरते देखा,
तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा।
11 वे घर के अंदर गए और बच्चे को
उसकी माँ मरियम के साथ देखा। उन्होंने
बच्चे के आगे गिरकर उसे दंडवत*
किया। फिर अपना-अपना खज़ाना खोल-
कर उसे तोहफे में सोना, लोबान और
गंधरस दिया। 12 मगर परमेश्वर ने
सपने में उन्हें चेतावनी दी[3] कि हेरोदेस के
पास फिर न जाएँ। इसलिए वे दूसरे रास्ते
से अपने देश लौट गए।

13 उनके चले जाने के बाद, देखो!
यहोवा* का स्वर्गदूत यूसुफ को सपने में
दिखायी दिया[4] और उससे कहने लगा,
“उठ, बच्चे और उसकी माँ को लेकर
मिस्र भाग जा। जब तक मैं न कहूँ, वहीं
रहना क्योंकि हेरोदेस इस बच्चे को मार
डालने के लिए इसकी तलाश करनेवाला
है।” 14 इसलिए यूसुफ उठा और रात

अध्य. 1
1 यश 7:14
2 यश 8:8, 10
3 लूक 2:7
4 लूक 2:21

अध्य. 2
5 मी 5:2; लूक 2:4
6 लूक 1:5
7 मत 27:37
8 यूह 7:42

दूसरा कॉल.
1 2शम 5:2; मी 5:2
2 मत 2:2
3 मत 2:22
4 मत 1:20; मत 2:19

1:22, 24; 2:13 *अति. क5 देखें। **2:1** *शब्दावली देखें। #या “मजूसी।” **2:2** *या “उसके सामने झुककर प्रणाम।” **2:4** *या “मसीहा; अभिषिक्त जन।”

2:11 *या “झुककर उसे प्रणाम।”

में ही बच्चे और उसकी माँ को लेकर मिस्र
चला गया। **15** वह हेरोदेस की मौत
तक वहीं रहा। इस तरह, वह बात पूरी
हुई जो यहोवा* ने अपने भविष्यवक्ता से
कहलवायी थी, "मैंने अपने बेटे को मिस्र
से बुलाया।"[1]

16 जब हेरोदेस ने देखा कि ज्योति-
षियों ने उसे धोखा दिया है, तो वह
आग-बबूला हो उठा। उसने अपने सेवकों
को भेजकर बेतलेहेम और उसके आस-
पास के सभी ज़िलों में जितने लड़के दो
साल के और उससे छोटे थे, उन सबको
मरवा डाला। उसने ज्योतिषियों से समय
का जो ठीक-ठीक पता लगाया था,[2]
उसी के मुताबिक ऐसा किया। **17** इस
घटना से वह बात पूरी हुई जो यिर्म-
याह भविष्यवक्ता से कहलवायी गयी थी,
18 "रामाह में रोने और मातम मनाने की
आवाज़ सुनायी दे रही थी। वह राहेल
थी[3] जो अपने बच्चों के लिए रो रही
थी और किसी भी तरह का दिलासा नहीं
चाहती थी क्योंकि वे अब नहीं रहे।"[4]

19 हेरोदेस के मरने के बाद, देखो!
मिस्र में यहोवा* का स्वर्गदूत यूसुफ को
सपने में दिखायी दिया[5] **20** और उसने
कहा, "उठ, बच्चे और उसकी माँ को
लेकर इसराएल देश चला जा, क्योंकि
जो बच्चे की जान लेना चाहते थे वे
मर चुके हैं।" **21** तब यूसुफ उठा और
बच्चे और उसकी माँ को लेकर इसराएल
देश चला गया। **22** मगर यह सुन-
कर कि अरखिलाउस अपने पिता हेरो-
देस की जगह यहूदिया पर राज कर
रहा है, यूसुफ वहाँ जाने से डर गया। यही
नहीं, परमेश्वर ने भी उसे सपने में
चेतावनी दी थी,[6] इसलिए वह गलील[7]

2:15, 19; 3:3 *अति. क5 देखें।

के इलाके में चला गया। **23** वह आकर
नासरत[1] नाम के शहर में बस गया।
इससे ये शब्द पूरे हुए जो भविष्यवक्ताओं
से कहलवाए गए थे, "वह एक नासरी*
कहलाएगा।"[2]

3 उन दिनों यूहन्ना[3] बपतिस्मा देने-
वाला यहूदिया के वीरान इलाकों में
आया और यह प्रचार करने लगा,[4]
2 "पश्चाताप करो क्योंकि स्वर्ग का
राज पास आ गया है।"[5] **3** दर-
असल यूहन्ना वही है जिसके बारे में
भविष्यवक्ता यशायाह[6] से यह कहल-
वाया गया था, "सुनो! वीराने में कोई
पुकार रहा है, 'यहोवा* का रास्ता तैयार
करो, उसकी सड़कें सीधी करो।'"[7]
4 यूहन्ना ऊँट के बालों से बने कपड़े
पहने था और कमर पर चमड़े का पट्टा
बाँधे हुए था।[8] उसका खाना टिड्डियाँ
और जंगली शहद था।[9] **5** तब यरू-
शलेम, पूरे यहूदिया और यरदन नदी के
आस-पास के सारे इलाके से लोग उसके
पास जाने लगे।[10] **6** वे अपने पापों को
खुलकर मान लेते थे और वह उन्हें यरदन
नदी में बपतिस्मा देता* था।[11]

7 जब यूहन्ना ने कई फरीसियों और
सदूकियों[12] को बपतिस्मे की जगह आते
देखा तो उसने उनसे कहा, "अरे साँप
के सँपोलो,[13] किसने तुम्हें आगाह कर
दिया कि तुम आनेवाले कहर से भाग
सकते हो?[14] **8** इसलिए पश्चाताप
दिखानेवाले फल पैदा करो। **9** अब यह
मत सोचो, 'हम तो अब्राहम के वंशज
हैं।'[15] क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि पर-
मेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिए
संतान पैदा कर सकता है। **10** पेड़ों की

2:23 *यह शब्द शायद "अंकुर" के लिए इस्तेमाल होनेवाले इब्रानी शब्द से निकला है। **3:6** *या "डुबकी दिलाता।"

अध्य. 2
1 हो 11:1
2 मत 2:7
3 उत 35:19
4 यिर्म 31:15
5 मत 1:20
6 मत 2:12
7 मर 1:9, लूक 2:39

दूसरा कॉल.
1 यूह 1:45
2 यश 11:1, यश 53:2, यिर्म 23:5, जक 3:8

अध्य. 3
3 यूह 1:6
4 मर 1:3, 4, लूक 3:3-6
5 मत 4:17
6 मर 1:2, यूह 1:23
7 यश 40:3
8 2रा 1:8
9 मर 1:6
10 मर 1:5
11 मर 1:9
12 मर 12:18, लूक 7:30
13 मत 12:34
14 मत 23:33, लूक 3:7-9, लूक 21:23
15 यूह 8:33, 39

जड़ पर कुल्हाड़ा रखा जा चुका है। हर वह पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता, उसे काटकर आग में झोंक दिया जाएगा।[1] **11** मैं तो तुम्हारे पश्‍चाताप की वजह से तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ।[2] मगर जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझसे कहीं शक्‍तिशाली है। मैं उसकी जूतियाँ उतार-ने के भी लायक नहीं हूँ।[3] वह तुम लोगों को पवित्र शक्‍ति से और आग से बप-तिस्मा देगा।[4] **12** उसके हाथ में अनाज फटकनेवाला बेलचा है, वह अपने खलि-हान को पूरी तरह साफ करेगा और अपने गेहूँ को तो इकट्ठा करके गोदाम में रखेगा, मगर भूसी को उस आग में जला देगा[5] जिसे बुझाया नहीं जा सकता।"

13 फिर यीशु गलील से यरदन नदी के पास आया ताकि यूहन्‍ना से बप-तिस्मा ले।[6] **14** मगर यूहन्‍ना ने यह कहकर उसे रोकने की कोशिश की, "मुझे तो खुद तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है और तू मेरे पास आया है?" **15** तब यीशु ने उससे कहा, "इस वक्‍त ऐसा ही होने दे क्योंकि हमें वही करना चाहिए जो परमेश्‍वर की नज़र में सही* है।" तब यूहन्‍ना ने उसे नहीं रोका। **16** बपतिस्मा लेने के बाद यीशु फौरन पानी में से ऊपर आया। तब आकाश खुल गया[7] और उसने परमेश्‍वर की पवित्र शक्‍ति को एक कबूतर के रूप में उस पर उतरते देखा।[8] **17** तभी स्वर्ग से आवाज़ आयी:[9] "यह मेरा प्यारा बेटा है।[10] मैंने इसे मंज़ूर किया है।"[11]

4 तब परमेश्‍वर की पवित्र शक्‍ति यीशु को वीराने में ले गयी। वहाँ शैतान* ने उसे फुसलाने की कोशिश की।[12] **2** यीशु ने 40 दिन और 40 रात उपवास किया था, फिर उसे भूख लगी। **3** तब फुसलानेवाला[1] आया और उसने कहा, "अगर तू परमेश्‍वर का एक बेटा है, तो इन पत्थरों से बोल कि ये रोटियाँ बन जाएँ।" **4** मगर जवाब में यीशु ने कहा, "यह लिखा है, 'इंसान को सिर्फ रोटी से नहीं बल्कि यहोवा* के मुँह से निकलने-वाले हर वचन से ज़िंदा रहना है।'"[2]

5 इसके बाद, शैतान उसे पवित्र शहर यरूशलेम[3] ले गया और उसे मंदिर की छत की मुँडेर* पर लाकर खड़ा किया।[4] **6** उसने यीशु से कहा, "अगर तू पर-मेश्‍वर का एक बेटा है, तो यहाँ से नीचे छलाँग लगा दे क्योंकि लिखा है, 'वह तेरे बारे में अपने स्वर्गदूतों को हुक्म देगा।' और 'वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे ताकि तेरा पैर किसी पत्थर से चोट न खाए।'"[5] **7** यीशु ने शैतान से कहा, "यह भी लिखा है, 'तू अपने परमेश्‍वर यहोवा* की परीक्षा न लेना।'"[6]

8 फिर शैतान उसे अपने साथ बहुत ही ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उसे दुनिया के सारे राज्य और उनकी शानो-शौकत दिखायी।[7] **9** फिर उसने यीशु से कहा, "अगर तू बस एक बार मेरे सामने गिरकर मेरी उपासना करे, तो मैं यह सबकुछ तुझे दे दूँगा।" **10** यीशु ने उससे कहा, "दूर हो जा शैतान! क्योंकि लिखा है, 'तू सिर्फ अपने परमेश्‍वर यहोवा* की उपासना कर[8] और उसी की पवित्र सेवा कर।'"[9] **11** तब शैतान उसे छोड़कर चला गया।[10] और देखो! स्वर्गदूत आकर यीशु की सेवा करने लगे।[11]

3:15 *या "नेक।" **4:1** *शा., "इबलीस।" शब्दावली देखें।

4:4, 7, 10 *अति. क5 देखें। **4:5** *या "सबसे ऊँची जगह।"

अध्य. 3

1 मत 7:19, लूक 13:6-9
2 प्रेष 19:4
3 यूह 1:15, 27
4 मर 1:7, 8, लूक 3:16, 17, यूह 1:33, प्रेष 2:1, 4, 1कुर 12:13
5 मला 4:1
6 मर 1:9
7 लूक 3:21
8 यश 11:2, मर 1:10, 11, लूक 4:18, यूह 1:32
9 यूह 12:28
10 भज 2:7, लूक 9:35
11 यश 42:1, मत 17:5, लूक 3:22

अध्य. 4

12 मर 1:12, 13, लूक 4:1-4, इब्र 4:15

दूसरा कॉल.

1 1थि 3:5
2 व्य 8:3, लूक 4:4, यूह 4:34
3 नहे 11:1, यश 52:1
4 लूक 4:9-12
5 भज 91:11, 12
6 व्य 6:16, लूक 4:12, 1कुर 10:9
7 लूक 4:5-8
8 प्रक 22:9
9 व्य 6:13, व्य 10:20, लूक 4:8
10 लूक 4:13, याकू 4:7
11 लूक 22:43, इब्र 1:7, 14

12 जब यीशु ने सुना कि यूहन्ना
को गिरफ्तार कर लिया गया है,[1] तो वह
वहाँ से गलील चला गया।[2] **13** फिर
नासरत छोड़ने के बाद वह कफरनहूम[3] में
रहने लगा, जो झील के किनारे जबूलून
और नप्ताली के ज़िलों में है। **14** इससे
वह बात पूरी हुई जो भविष्यवक्ता यशा-
याह से कहलवायी गयी थी, **15** "हे
गैर-यहूदियों के गलील, जबूलून और
नप्ताली के देश, तुम जो समुंदर के
रास्ते पर और यरदन के उस पार हो,
16 जो लोग अंधकार में बैठे थे, उन्होंने
तेज़ रौशनी देखी। जो मौत के साए
के देश में बैठे थे, उन पर रौशनी[4]
चमकी।"[5] **17** उस वक्त से यीशु ने
प्रचार करना और यह कहना शुरू किया,
"पश्चाताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज
पास आ गया है।"[6]

18 गलील झील के किनारे चलते-
चलते उसने शमौन को, जो पतरस कह-
लाता है[7] और उसके भाई अन्द्रियास को
झील में जाल डालते देखा। वे दोनों मछु-
वारे थे।[8] **19** उसने उनसे कहा, "मेरे
पीछे हो लो और जिस तरह तुम मछलियाँ
पकड़ते हो, मैं तुम्हें इंसानों को पकड़ने-
वाले बनाऊँगा।"[9] **20** वे फौरन अपने
जाल छोड़कर उसके पीछे चल दिए।[10]
21 वहाँ से आगे बढ़ने पर यीशु ने याकूब
और उसके भाई यूहन्ना को देखा। ये
दोनों जब्दी के बेटे थे।[11] वे अपने पिता
के साथ नाव में अपने जाल ठीक कर रहे
थे। यीशु ने उन्हें भी बुलाया।[12] **22** वे
फौरन नाव को और अपने पिता को छोड़-
कर उसके पीछे चल दिए।

23 फिर वह पूरे गलील का दौरा
करता हुआ,[13] उनके सभा-घरों[14] में
सिखाता और राज की खुशखबरी का
प्रचार करता रहा। वह लोगों की हर
तरह की बीमारी और शरीर की
कमज़ोरी दूर करता रहा।[1] **24** उसकी
खबर सारे सीरिया प्रांत में फैल गयी।
लोग उसके पास तरह-तरह की बीमा-
रियों और पीड़ाओं से दुखी लोगों को
लाने लगे।[2] उनमें ऐसे लोग भी थे
जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत समाए थे[3] और
मिरगी[4] और लकवे के मारे हुए भी थे।
उसने सबको ठीक किया। **25** इसलिए
गलील, दिकापुलिस,* यरूशलेम और
यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़-
की-भीड़ उसके पीछे हो ली।

5 जब यीशु ने भीड़ को देखा, तो
वह पहाड़ पर गया और वहाँ बैठ
गया और उसके चेले उसके पास आए।
2 तब वह उन्हें ये बातें सिखाने लगाः

3 "सुखी हैं वे जिनमें परमेश्वर से
मार्गदर्शन पाने की भूख है*[5] क्योंकि
स्वर्ग का राज उन्हीं का है।

4 सुखी हैं वे जो मातम मनाते हैं
क्योंकि उन्हें दिलासा दिया जाएगा।[6]

5 सुखी हैं वे जो कोमल स्वभाव[7] के हैं
क्योंकि वे धरती के वारिस होंगे।[8]

6 सुखी हैं वे जो नेकी के भूखे-प्यासे
हैं[9] क्योंकि वे तृप्त किए जाएँगे।[10]

7 सुखी हैं वे जो दयालु[11] हैं क्योंकि
उन पर दया की जाएगी।

8 सुखी हैं वे जिनका दिल शुद्ध[12] है
क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

9 सुखी हैं वे जो शांति कायम करते
हैं[13] क्योंकि वे परमेश्वर के बेटे कह-
लाएँगे।

10 सुखी हैं वे जो सही काम करने की
वजह से ज़ुल्म सहते हैं[14] क्योंकि स्वर्ग का
राज उन्हीं का है।

अध्य. 4

1 मर 6:17, 18; लूक 3:19, 20
2 मर 1:14; लूक 4:14
3 लूक 4:31
4 यूह 1:9
5 यश 9:1, 2
6 मत 10:7; मर 1:14, 15
7 यूह 1:42
8 मर 1:16-18
9 लूक 5:10, 11
10 मर 10:28; लूक 18:28
11 मत 10:2; मत 27:55, 56; मर 3:17; मर 10:35; यूह 21:2
12 मर 1:19, 20
13 मत 9:35; मर 1:39; मर 6:6
14 लूक 4:16; प्रेष 13:13, 14

दूसरा कॉल.

1 लूक 9:11; प्रेष 10:37, 38
2 मर 6:55
3 मर 1:32; प्रेष 5:16
4 मत 17:15

अध्य. 5

5 लूक 6:20
6 यश 61:2, 3; मत 11:28
7 1ती 6:11; तीत 3:2
8 भज 37:11
9 यश 55:1; लूक 6:21
10 यूह 6:35
11 मत 6:14; मत 18:33; याकू 2:13
12 भज 24:3, 4; भज 73:1
13 रोम 12:18; इब्र 12:14; याकू 3:18
14 मर 10:29, 30; 1पत 3:14

4:25 *या "दस शहरों का इलाका।" **5:3** *या "जो पवित्र शक्ति की भीख माँगते हैं।"

11 सुखी हो तुम जब लोग तुम्हें मेरे
चेले होने की वजह से बदनाम करें,[1]
तुम पर ज़ुल्म ढाएँ[2] और तुम्हारे बारे में
तरह-तरह की झूठी और बुरी बातें कहें।[3]
12 तब तुम मगन होना और खुशियाँ
मनाना[4] इसलिए कि स्वर्ग में तुम्हारे लिए
बड़ा इनाम है।[5] उन्होंने तुमसे पहले के
भविष्यवक्ताओं पर भी इसी तरह ज़ुल्म
ढाए थे।[6]

13 तुम पृथ्वी के नमक[7] हो। लेकिन
अगर नमक अपना स्वाद खो दे, तो
क्या उसे दोबारा नमकीन किया जा सकता
है? नहीं! फिर वह किसी काम का नहीं
रहता। उसे सड़कों पर फेंक दिया जाता
है[8] और वह लोगों के पैरों तले रौंदा
जाता है।

14 तुम दुनिया की रौशनी हो।[9] जो
शहर पहाड़ पर बसा हो, वह छिप नहीं
सकता। **15** लोग दीपक जलाकर उसे
टोकरी* से ढककर नहीं रखते, बल्कि
दीवट पर रखते हैं। इससे घर के सब
लोगों को रौशनी मिलती है।[10] **16** उसी
तरह तुम्हारी रौशनी लोगों के सामने
चमके[11] ताकि वे तुम्हारे भले काम[12]
देखकर स्वर्ग में रहनेवाले तुम्हारे पिता की
महिमा करें।[13]

17 यह मत सोचो कि मैं कानून या
भविष्यवक्ताओं के वचनों को रद्द करने
आया हूँ। मैं उन्हें रद्द करने नहीं बल्कि
पूरा करने आया हूँ।[14] **18** मैं तुमसे सच
कहता हूँ कि जैसे आकाश और पृथ्वी
कभी नहीं मिटेंगे, वैसे ही कानून में लिखा
छोटे-से-छोटा अक्षर या बिंदु भी बिना पूरा
हुए नहीं मिटेगा, उसमें लिखी एक-एक
बात पूरी होगी।[15] **19** इसलिए अगर
कोई इसकी छोटी आज्ञाओं में से किसी
एक को भी तोड़ता है और दूसरों को भी
ऐसा करना सिखाता है, तो वह स्वर्ग के
राज में दाखिल होने के लायक नहीं
होगा।* मगर जो इन्हें मानता है और
दूसरों को भी ऐसा करना सिखाता है, वह
स्वर्ग के राज में दाखिल होने के लायक
होगा।# **20** क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ
कि अगर तुम्हारे नेक काम शास्त्रियों और
फरीसियों के नेक कामों से बढ़कर न हों,[1]
तो तुम स्वर्ग के राज में हरगिज़ दाखिल न
होगे।[2]

21 तुम सुन चुके हो कि गुज़रे ज़माने
के लोगों से कहा गया था, ‘तुम खून
न करना।[3] जो कोई खून करता है उसे
अदालत के सामने जवाब देना पड़ेगा।’[4]
22 मगर मैं तुमसे कहता हूँ कि हर
वह इंसान जिसके दिल में अपने भाई के
खिलाफ गुस्से की आग सुलगती रहती
है,[5] उसे अदालत के सामने जवाब देना
पड़ेगा। और हर वह इंसान जो अपने
भाई का अपमान करने के लिए ऐसे
शब्द कहता है जिन्हें ज़बान पर भी नहीं
लाना चाहिए, उसे सबसे बड़ी अदालत के
सामने जवाब देना पड़ेगा। और हर वह
इंसान जो अपने भाई से कहता है, ‘अरे
चरित्रहीन मूर्ख!’ वह गेहन्ना* की आग में
जाने के लायक ठहरेगा।[6]

23 इसलिए अगर तू मंदिर में वेदी के
पास अपनी भेंट ला रहा हो[7] और वहाँ
तुझे याद आए कि तेरे भाई को तुझसे कुछ
शिकायत है, **24** तो अपनी भेंट वहीं
वेदी के सामने छोड़ दे और जाकर पहले
अपने भाई के साथ सुलह कर और फिर
आकर अपनी भेंट चढ़ा।[8]

अध्य. 5
1 मत 10:22
2 यूह 15:20
3 लूक 6:22, 23; याकू 1:2; 1पत 4:14
4 प्रेष 5:41; रोम 5:3
5 इब्र 11:6
6 2इत 36:16; प्रेष 7:52; इब्र 11:32, 37
7 मर 9:50
8 लूक 14:34, 35
9 यूह 8:12; यूह 12:36; फिल 2:15
10 मर 4:21; लूक 11:33
11 इफ 5:8; फिल 2:15
12 इफ 5:9
13 यूह 15:8; 1पत 2:9, 12
14 लूक 4:21
15 यश 40:8; लूक 16:17

दूसरा कॉल.
1 मत 15:7-9; मत 23:23; लूक 11:42
2 मत 18:3; यूह 3:5
3 उत 9:6; निर्ग 20:13; व्य 5:17
4 लैव 24:17; व्य 17:8, 9
5 कुल 3:8; याकू 1:19
6 मत 10:28; लूक 12:5; 1यूह 3:15
7 व्य 16:16
8 1यूह 4:20

5:15 *या “नापने की टोकरी।”

5:19 *शा., “वह स्वर्ग के राज के संबंध में सबसे ‘छोटा’ कहलाएगा।” #शा., “वह स्वर्ग के राज के संबंध में ‘महान’ कहलाएगा।” **5:22** *यरूशलेम के बाहर कूड़ा-करकट जलाने की जगह। शब्दावली देखें।

25 अगर कोई तुझ पर मुकदमा दायर करने जा रहा है, तो रास्ते में ही जल्द-से-जल्द उसके साथ सुलह कर ले। कहीं ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायी के हवाले कर दे और न्यायी तुझे पहरेदार के हवाले कर दे और तुझे कैदखाने में डाल दिया जाए।[1] **26** मैं तुझसे सच कहता हूँ, जब तक तू एक-एक पाई* न चुका दे, तब तक तू वहाँ से किसी भी हाल में न छूट सकेगा।

27 तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'तुम व्यभिचार* न करना।'[2] **28** मगर मैं तुमसे कहता हूँ कि हर वह आदमी जो किसी औरत को ऐसी नज़र से देखता रहता है[3] जिससे उसके मन में उसके लिए वासना पैदा हो, वह अपने दिल में उस औरत के साथ व्यभिचार कर चुका है।[4] **29** अगर तेरी दायीं आँख तुझसे पाप करवा रही है,# तो उसे नोंच-कर निकाल दे और दूर फेंक दे।[5] अच्छा यही होगा कि तू अपना एक अंग गँवा दे, बजाय इसके कि तेरा पूरा शरीर गेहन्ना* में फेंक दिया जाए।[6] **30** और अगर तेरा दायाँ हाथ तुझसे पाप करवा रहा है,# तो उसे काटकर दूर फेंक दे।[7] अच्छा यही होगा कि तू अपना एक अंग गँवा दे, बजाय इसके कि तेरा पूरा शरीर गेहन्ना* में डाल दिया जाए।[8]

31 यह भी कहा गया था, 'जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देता है, वह उसे एक तलाकनामा दे।'[9] **32** लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि हर वह आदमी जो अपनी पत्नी को नाजायज़ यौन-संबंध* के अलावा किसी और वजह से तलाक देता है, वह उसे व्यभिचार करने के खतरे में डालता है। और जो कोई ऐसी तलाकशुदा औरत से शादी करता है, वह व्यभिचार करने का दोषी है।[1]

33 तुमने यह भी सुना है कि गुज़रे ज़माने के लोगों से कहा गया था, 'तुम ऐसी शपथ न खाना जिसे तुम पूरा न करो,[2] मगर तुम यहोवा* के सामने अपनी मन्नतें पूरी करना।'[3] **34** लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, तुम कभी कसम न खाना,[4] न स्वर्ग की क्योंकि वह परमेश्वर की राजगद्दी है, **35** न ही पृथ्वी की क्योंकि यह उसके पाँवों की चौकी है,[5] न यरूशलेम की क्योंकि यह उस महाराजा का नगर है।[6] **36** न ही तुम अपने सिर की कसम खाना क्योंकि तुम एक बाल भी सफेद या काला नहीं कर सकते। **37** बस तुम्हारी 'हाँ' का मतलब हाँ हो और 'न' का मतलब न,[7] इसलिए कि इससे बढ़कर जो कुछ कहा जाता है वह शैतान* से होता है।[8]

38 तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत।'[9] **39** लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, जो दुष्ट है उसका मुकाबला मत करो। इसके बजाय, अगर कोई तुम्हारे दाएँ गाल पर थप्पड़ मारे, तो उसकी तरफ दूसरा गाल भी कर देना।[10] **40** और अगर कोई तुम पर अदालत में मुकदमा करके तुम्हारा कुरता लेना चाहे, तो उसे अपना ओढ़ना भी दे देना।[11] **41** और अगर कोई अधिकारी तुमसे कहे कि मेरा बोझ उठाकर एक मील* चल, तो तुम उसके साथ दो मील चले जाना। **42** जो कोई तुमसे माँगता है, उसे देना और

5:26 *शा., "आखिरी कौद्रान।" अति. ख14 देखें। **5:27, 29, 30** *शब्दावली देखें। **5:29** #या "तुझे ठोकर खिला रही है।" **5:30** #या "तुझे ठोकर खिला रहा है।" **5:32** *यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें।

5:33 *अति. क5 देखें। **5:37** *शा., "उस दुष्ट।" **5:41** *अति. ख14 देखें।

अध्य. 5

1 लूक 12:58, 59
2 निर्ग 20:14; व्य 5:18; लूक 18:20; रोम 13:9
3 2शम 11:2; अय 31:1
4 मर 7:20-22
5 लूक 11:34
6 मत 18:9; मर 9:47
7 कुल 3:5
8 मत 18:8
9 व्य 24:1; मत 19:3, 8; मर 10:2, 4

दूसरा कॉल.

1 मत 19:9; मर 10:11, 12; लूक 16:18; रोम 7:3
2 लैव 19:12
3 गि 30:2; व्य 23:21; सभ 5:4
4 याकू 5:12
5 यश 66:1
6 भज 48:2
7 याकू 5:12
8 यूह 8:44
9 निर्ग 21:24, 25; लैव 24:20; व्य 19:21
10 नीत 24:29; यश 50:6; लूक 6:29; रोम 12:17; 1पत 2:23
11 1कुर 6:7

जो तुमसे उधार माँगे* उसे देने से इनकार
मत करना।[1]

43 तुम सुन चुके हो कि कहा गया
था, 'तुम अपने पड़ोसी से प्यार करना[2]
और दुश्मन से नफरत।' 44 लेकिन मैं
तुमसे कहता हूँ: अपने दुश्मनों से प्यार
करते रहो[3] और जो तुम्हें सताते हैं, उनके
लिए प्रार्थना करते रहो।[4] 45 इस तरह
तुम साबित करो कि तुम स्वर्ग में रहने-
वाले अपने पिता के बेटे हो[5] क्योंकि वह
अच्छे और बुरे दोनों पर अपना सूरज
चमकाता है और नेक और दुष्ट दोनों पर
बारिश बरसाता है।[6] 46 क्योंकि अगर
तुम उन्हीं से प्यार करो जो तुमसे प्यार
करते हैं, तो तुम्हें इसका क्या इनाम
मिलेगा?[7] क्या कर-वसूलनेवाले भी ऐसा
ही नहीं करते? 47 और अगर तुम
सिर्फ अपने भाइयों को ही नमस्कार करो,
तो कौन-सा अनोखा काम करते हो?
क्या गैर-यहूदी भी ऐसा ही नहीं करते?
48 इसलिए तुम्हें परिपूर्ण* होना चाहिए
ठीक जैसे स्वर्ग में रहनेवाला तुम्हारा पिता
परिपूर्ण है।[8]

6 खबरदार रहो कि तुम लोगों को
दिखाने के लिए उनके सामने नेक
काम न करो,[9] नहीं तो तुम अपने पिता
से जो स्वर्ग में है, कोई फल नहीं
पाओगे। 2 इसलिए जब तू दान* दे,
तो अपने आगे-आगे तुरही न बजवा, जैसे
कपटी सभा-घरों और गलियों में बज-
वाते हैं ताकि लोग उनकी वाह-वाही करें।
मैं तुमसे सच कहता हूँ, वे अपना पूरा फल
पा चुके हैं। 3 मगर जब तू दान दे, तो
तेरे बाएँ हाथ को भी मालूम न पड़े कि
तेरा दायाँ हाथ क्या दे रहा है, 4 जिससे
तेरा दान गुप्त रहे। तब तेरा पिता जो तेरा
हर काम देख रहा है,* तुझे इसका फल
देगा।[1]

5 जब तुम प्रार्थना करो, तो कपटियों
की तरह मत करो[2] क्योंकि उन्हें सभा-
घरों और सड़कों के चौराहे पर खड़े होकर
प्रार्थना करना अच्छा लगता है ताकि
लोग उन्हें देख सकें।[3] मैं तुमसे सच
कहता हूँ, वे अपना पूरा फल पा चुके हैं।
6 लेकिन जब तू प्रार्थना करे, तो अकेले
अपने घर के कमरे में जा और दरवाज़ा
बंद कर और अपने पिता से जिसे कोई
नहीं देख सकता,* प्रार्थना कर।[4] तब
तेरा पिता जो तेरा हर काम देख रहा है,*
तुझे इसका फल देगा। 7 प्रार्थना करते
वक्त, दुनिया के लोगों की तरह एक ही
बात बार-बार मत दोहराओ क्योंकि वे
सोचते हैं कि उनके बहुत ज़्यादा बोलने
से परमेश्वर उनकी सुनेगा। 8 इसलिए
तुम उनके जैसे मत बनो क्योंकि तुम्हारा
पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है
कि तुम्हें किन चीज़ों की ज़रूरत है।[5]

9 इसलिए, तुम इस तरह प्रार्थना
करना:[6]

'हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में है, तेरा
नाम[7] पवित्र किया जाए।*[8] 10 तेरा
राज[9] आए। तेरी मरज़ी[10] जैसे स्वर्ग
में पूरी होती है, वैसे धरती पर भी
पूरी हो।[11] 11 आज के दिन की रोटी
हमें दे।[12] 12 जैसे हमने अपने खिलाफ
पाप करनेवालों* को माफ किया है, वैसे
ही तू भी हमारे पाप# माफ कर।[13]
13 जब हम पर परीक्षा आए तो हमें

5:42 *यानी बिना ब्याज के उधार माँगे। 5:48 *या "पूरा।" 6:2 *शा., "दया के दान।" शब्दावली देखें।

6:4, 6 *या "जो गुप्त में देखता है।" 6:9 *या "पवित्र माना जाए; समझा जाए।" 6:12 *शा., "अपने कर्ज़दारों।" #शा., "हमारे कर्ज़।"

अध्य. 5
1 लैव 25:36
व्य 23:19
2 लैव 19:18
मर 12:31
3 नीत 25:21
रोम 12:20
4 लूक 6:27, 28
प्रेष 7:60
रोम 12:14
5 इफ 5:1
6 लूक 6:35
प्रेष 14:17
7 लूक 6:32, 33
8 लैव 19:2
व्य 18:13
लूक 6:36
1पत 1:16

अध्य. 6
9 मत 23:5

दूसरा कॉल.
1 नीत 19:17
मत 10:42
2 लूक 18:11
3 मत 6:16
मत 23:5
4 लूक 6:12
5 लूक 12:30
6 लूक 11:2-4
7 निर्ग 6:3
भज 83:18
8 यहे 36:23
9 दान 2:44
मत 6:33
प्रक 11:15
10 मत 26:42
1ती 2:4
प्रक 4:11
11 भज 37:10
लूक 23:43
प्रेष 24:15
12 भज 37:25
नीत 30:8
मत 6:34
1ती 6:8
13 मत 18:21
मर 11:25

गिरने न दे,[1] मगर हमें शैतान* से
बचा।’#[2]

14 अगर तुम दूसरों के अपराध
माफ करोगे, तो स्वर्ग में रहनेवाला
तुम्हारा पिता भी तुम्हें माफ करेगा।[3]
15 लेकिन अगर तुम दूसरों के अपराध
माफ नहीं करोगे, तो तुम्हारा पिता भी
तुम्हारे अपराध माफ नहीं करेगा।[4]

16 जब तुम उपवास करते हो,[5] तो
पाखंडियों की तरह मुँह लटकाए रहना
बंद करो, क्योंकि वे अपना चेहरा गंदा
कर लेते हैं* ताकि लोग उन्हें देखकर
जानें कि वे उपवास कर रहे हैं।[6] मैं तुमसे
सच कहता हूँ, वे अपना पूरा फल पा चुके
हैं। **17** लेकिन जब तू उपवास करे, तो
अपने सिर पर तेल लगा और मुँह धो
18 ताकि लोग नहीं बल्कि तेरा पिता,
जिसे कोई नहीं देख सकता, जाने कि तू
उपवास कर रहा है। तब तेरा पिता जो
तेरा हर काम देख रहा है,* तुझे इसका
फल देगा।

19 अपने लिए पृथ्वी पर धन जमा
करना बंद करो,[7] जहाँ कीड़ा और ज़ंग
उसे खा जाते हैं और चोर सेंध लगाकर
चुरा लेते हैं। **20** इसके बजाय, अपने
लिए स्वर्ग में धन जमा करो,[8] जहाँ
न तो कीड़ा, न ही ज़ंग उसे खाते
हैं[9] और न चोर सेंध लगाकर चुराते हैं।
21 क्योंकि जहाँ तेरा धन होगा, वहीं तेरा
मन होगा।

22 आँख, शरीर का दीपक है।[10]
इसलिए अगर तेरी आँख एक ही चीज़
पर टिकी है,* तो तेरा सारा शरीर रौशन
रहेगा। **23** लेकिन अगर तेरी आँखों में

6:13 *शा., “उस दुष्ट।” #या “छुड़ा।”
6:16 *या “गंदा रहने देते हैं।” **6:18** *या
“जो गुप्त में देखता है।” **6:22** *या “साफ-
साफ देखती है।” शा., “सादी है।”

अध्य. 6
1 मत 26:41
1कुर 10:13
प्रक 3:10
2 यूह 17:15
1यूह 5:19
3 इफ 4:32
कुल 3:13
4 मत 18:35
याकू 2:13
5 प्रेष 13:2, 3
प्रेष 14:23
6 यश 58:5
लूक 18:11, 12
7 मत 13:22
लूक 12:20
याकू 5:3
8 मत 19:21
मर 10:21
लूक 12:33, 34
लूक 18:22
9 1पत 1:3, 4
10 नीत 4:25
लूक 11:34
इफ 1:18

दूसरा कॉल.
1 मत 20:15
2 याकू 4:4
3 मत 13:22
लूक 16:13
4 भज 55:22
फिल 4:6
1पत 5:6, 7
5 1ती 6:8
इब्र 13:5
6 लूक 12: 22-28
7 अय 38:41
भज 147:9
मत 10:29
8 भज 39:5
9 1रा 10:4, 5

ईर्ष्या भरी है,*[1] तो तेरा सारा शरीर
अंधकार से भर जाएगा। अगर शरीर को
रौशन करनेवाली तेरी आँख ही अँधेरे में
हो, तो तू कितने गहरे अंधकार में होगा!

24 कोई भी दास दो मालिकों की सेवा
नहीं कर सकता। क्योंकि या तो वह एक
से नफरत करेगा और दूसरे से प्यार[2]
या वह एक से जुड़ा रहेगा और दूसरे
को तुच्छ समझेगा। तुम परमेश्वर के दास
होने के साथ-साथ धन-दौलत की गुलामी
नहीं कर सकते।[3]

25 इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, अपने
जीवन के लिए चिंता करना छोड़ दो[4]
कि तुम क्या खाओगे या क्या पीओगे, न
ही अपने शरीर के लिए चिंता करो कि
तुम क्या पहनोगे।[5] क्या जीवन भोजन
से और शरीर कपड़े से अनमोल नहीं?[6]
26 आकाश में उड़नेवाले पंछियों को
ध्यान से देखो।[7] वे न तो बीज बोते,
न कटाई करते, न ही गोदामों में भर-
कर रखते हैं, फिर भी स्वर्ग में रहने-
वाला तुम्हारा पिता उन्हें खिलाता है।
क्या तुम्हारा मोल उनसे बढ़कर नहीं?
27 तुममें ऐसा कौन है जो चिंता करके
एक पल के लिए भी* अपनी ज़िंदगी बढ़ा
सके?[8] **28** तुम यह चिंता क्यों करते हो
कि तुम्हारे पास पहनने के लिए कपड़े
कहाँ से आएँगे? मैदान में उगनेवाले
सोसन* के फूलों से सबक सीखो, वे
कैसे बढ़ते हैं; वे न तो कड़ी मज़दूरी
करते हैं न ही सूत कातते हैं। **29** मगर
मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलैमान[9] भी
जब अपने पूरे वैभव में था, तो इनमें से
किसी एक की तरह भी सज-धज न
सका। **30** इसलिए अगर परमेश्वर

6:23 *शा., “आँख बुरी; दुष्ट है।” **6:27**
*शा., “एक हाथ भी।” अति. ख14 देखें।
6:28 *या “लिली।”

मैदान में उगनेवाले इन पौधों को, जो
आज हैं और कल आग* में झोंक दिए
जाएँगे, ऐसे शानदार कपड़े पहनाता है,
तो अरे कम विश्वास रखनेवालो! क्या
वह तुम्हें नहीं पहनाएगा? **31** इसलिए
कभी-भी चिंता[1] करके यह मत कहना कि
हम क्या खाएँगे? या हम क्या पीएँगे?
या हम क्या पहनेंगे?[2] **32** क्योंकि इन्हीं
सब चीज़ों के पीछे दुनिया के लोग दिन-
रात भाग रहे हैं। मगर स्वर्ग में रहनेवाला
तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन सब
चीज़ों की ज़रूरत है।

33 इसलिए तुम पहले उसके राज और
उसके नेक* स्तरों की खोज में लगे रहो
और ये बाकी सारी चीज़ें भी तुम्हें दे दी
जाएँगी।[3] **34** इसलिए अगले दिन की
चिंता कभी न करना[4] क्योंकि अगले दिन
की अपनी ही चिंताएँ होंगी। आज के लिए
आज की परेशानियाँ काफी हैं।

7 दोष लगाना बंद करो[5] ताकि तुम पर
भी दोष न लगाया जाए। **2** इस-
लिए कि जैसे तुम दोष लगाते हो, वैसे ही
तुम पर भी दोष लगाया जाएगा।[6] जिस
नाप से तुम नापते हो, वे भी उसी नाप
से तुम्हारे लिए नापेंगे।[7] **3** तो फिर
तू क्यों अपने भाई की आँख में पड़ा
तिनका देखता है, मगर अपनी आँख
के लट्ठे पर ध्यान नहीं देता?[8] **4** या
तू अपने भाई से कैसे कह सकता है,
'आ मैं तेरी आँख का तिनका निकाल दूँ,'
जबकि देख! तेरी अपनी ही आँख में एक
लट्ठा है? **5** अरे कपटी! पहले अपनी
आँख से लट्ठा निकाल, तब तू साफ-साफ
देख सकेगा कि अपने भाई की आँख से
तिनका कैसे निकालना है।

6 पवित्र चीज़ें कुत्तों को मत दो, न ही
अपने मोती सूअरों के आगे फेंको।[1] ऐसा
न हो कि वे अपने पैरों से उन्हें रौंद दें और
पलटकर तुम्हें फाड़ डालें।

7 माँगते रहो तो तुम्हें दिया जाएगा,[2]
ढूँढ़ते रहो तो तुम पाओगे, खटखटाते
रहो तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।[3]
8 क्योंकि हर कोई जो माँगता है, उसे
मिलता है[4] और जो ढूँढ़ता है, वह पाता
है और हर कोई जो खटखटाता है, उसके
लिए खोला जाएगा। **9** आखिर तुममें
ऐसा कौन है जिसका बेटा अगर उससे
रोटी माँगे, तो वह उसे एक पत्थर पकड़ा
दे? **10** या मछली माँगे तो उसे एक
साँप पकड़ा दे? **11** इसलिए जब तुम
दुष्ट होकर भी अपने बच्चों को
अच्छे तोहफे देना जानते हो तो तुम्हारा
पिता, जो स्वर्ग में है, और भी बढ़कर
अपने माँगनेवालों को अच्छी चीज़ें क्यों न
देगा![5]

12 इसलिए जो कुछ तुम चाहते हो कि
लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ
वैसा ही करो।[6] दरअसल कानून और
भविष्यवक्ताओं की किताबों का निचोड़
यही है।[7]

13 सँकरे फाटक से अंदर जाओ[8]
क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और खुला
है वह रास्ता, जो विनाश की तरफ ले
जाता है और उस पर जानेवाले बहुत हैं।
14 जबकि सँकरा है वह फाटक और तंग
है वह रास्ता, जो जीवन की तरफ ले
जाता है और उसे पानेवाले थोड़े हैं।[9]

15 झूठे भविष्यवक्ताओं से खबरदार
रहो[10] जो भेड़ों के भेस में तुम्हारे पास
आते हैं,[11] मगर अंदर से भूखे भेड़िए
हैं।[12] **16** उनके फलों से तुम उन्हें पह-
चान लोगे। क्या लोग कभी कँटीली
झाड़ियों से अंगूर या जंगली पौधों से

अध्य. 6
1 लूक 10:41
2 लूक 12:29-31
3 भज 37:25
4 निर्ग 16:4, 19

अध्य. 7
5 लूक 6:37; रोम 2:1; रोम 14:13
6 मत 18:33, 34; याकू 2:13
7 मर 4:24; लूक 6:38; गल 6:7
8 लूक 6:41, 42

दूसरा कॉल.
1 नीत 9:7; मत 10:14
2 मर 11:24; याकू 1:5; 1यूह 5:14
3 लूक 11:9-13
4 यूह 14:13; 1यूह 3:22
5 लूक 11:13; याकू 1:17
6 लूक 6:31
7 रोम 13:10; गल 5:14
8 लूक 13:24
9 प्रेष 14:22; 1पत 4:18
10 मत 24:11; 2पत 2:1; 1यूह 4:1
11 लूक 6:26
12 प्रेष 20:29, 30

6:30 *या "तंदूर।" **6:33** *शब्दावली देखें।

अंजीर तोड़ते हैं?[1] 17 उसी तरह, हरेक अच्छा पेड़ बढ़िया फल देता है, मगर सड़ा हुआ पेड़ खराब फल देता है।[2] 18 अच्छा पेड़ खराब फल नहीं दे सकता, न ही सड़ा हुआ पेड़ बढ़िया फल दे सकता है।[3] 19 हर वह पेड़ जो बढ़िया फल नहीं देता, काटा और आग में झोंक दिया जाता है।[4] 20 इसलिए तुम उन लोगों को उनके फलों से पहचान लोगे।[5]

21 जो मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहते हैं, उनमें से हर कोई स्वर्ग के राज में दाखिल नहीं होगा, मगर सिर्फ वही दाखिल होगा जो स्वर्ग में रहनेवाले मेरे पिता की मरज़ी पूरी करता है।[6] 22 उस दिन बहुत-से लोग मुझसे कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु,[7] क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की और तेरे नाम से, लोगों में समाए दुष्ट स्वर्गदूतों को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत-से शक्तिशाली काम नहीं किए?'[8] 23 तब मैं उनसे साफ-साफ कह दूँगा: मैं तुम्हें नहीं जानता। अरे दुष्टो, दूर हो जाओ मेरे सामने से![9]

24 इसलिए हर कोई जो मेरी ये बातें सुनता है और इन पर चलता है, वह उस समझदार आदमी जैसा होगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।[10] 25 फिर ज़बरदस्त बरसात हुई, बाढ़-पर-बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस घर से टकरायीं, फिर भी वह नहीं गिरा क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर बनायी गयी थी। 26 लेकिन हर कोई जो मेरी ये बातें सुनता है मगर इन पर नहीं चलता, वह उस मूर्ख जैसा होगा जिसने अपना घर रेत पर बनाया।[11] 27 और ज़बरदस्त बरसात हुई, बाढ़-पर-बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस घर से टकरायीं[1] और वह ढह गया और तहस-नहस हो गया।"

28 जब यीशु ये बातें कह चुका, तो भीड़ उसके सिखाने का तरीका देखकर दंग रह गयी,[2] 29 क्योंकि वह उनके शास्त्रियों की तरह नहीं बल्कि ऐसे इंसान की तरह सिखा रहा था जिसके पास बड़ा अधिकार हो।[3]

8 जब यीशु उस पहाड़ से नीचे उतर आया, तो भीड़-की-भीड़ उसके पीछे हो ली। 2 और देखो! एक कोढ़ी उसके पास आया। उसने झुककर उसे प्रणाम* किया और कहा, "प्रभु, बस अगर तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।"[4] 3 तब यीशु ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, "हाँ, मैं चाहता हूँ। शुद्ध हो जा।"[5] उसी पल उसका कोढ़ दूर हो गया और वह शुद्ध हो गया।[6] 4 फिर यीशु ने उससे कहा, "देख, किसी को मत बताना।[7] मगर जाकर खुद को याजक को दिखा[8] और मूसा ने जो भेंट चढ़ाने के लिए कहा है, वह चढ़ा[9] ताकि उन्हें गवाही मिले।"

5 जब यीशु कफरनहूम आया, तो एक सेना-अफसर उसके पास आकर उससे बिनती करने लगा,[10] 6 "मालिक, मेरा सेवक घर में बीमार पड़ा है, उसे लकवा मार गया है और उसका बहुत बुरा हाल है।" 7 यीशु ने उससे कहा, "जब मैं वहाँ आऊँगा, तो उसे ठीक करूँगा।" 8 जवाब में सेना-अफसर ने कहा, "मालिक, मैं इस लायक नहीं कि तू मेरी छत तले आए। इसलिए बस तू अपने मुँह से कह दे और मेरा सेवक ठीक हो जाएगा। 9 क्योंकि मैं भी किसी अधिकारी के नीचे काम करता हूँ

अध्य. 7
1 लूक 6:44
2 मत 12:33
3 लूक 6:43
4 मत 3:10, लूक 13:6, 9
5 मत 12:33
6 रोम 2:13, याकू 1:22, 1यूह 2:17, 1यूह 5:3
7 लूक 6:46
8 यिर्म 14:14, यिर्म 27:15
9 लूक 13:25-27
10 लूक 6:47-49, याकू 1:25
11 याकू 1:23, 24

दूसरा कॉल.
1 1कुर 3:13
2 मर 1:22, लूक 4:32
3 यूह 7:46

अध्य. 8
4 मर 1:40-44, लूक 5:12-14
5 मर 1:41, लूक 5:13
6 यश 53:4
7 मत 9:30, मत 12:15, 16, मर 7:35, 36
8 लैव 14:2, लूक 17:14
9 लैव 14:3, 4, लैव 14:19, 20
10 लूक 7:1-9

8:2 * या "दंडवत।"

और मेरे नीचे भी सिपाही हैं। जब मैं एक
से कहता हूँ, ‘जा!’ तो वह जाता है और
दूसरे से कहता हूँ, ‘आ!’ तो वह आता
है और अपने दास से कहता हूँ, ‘यह
कर!’ तो वह करता है।” **10** यह सुन-
कर यीशु को बहुत ताज्जुब हुआ और
उसने अपने पीछे आनेवालों से कहा,
“मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैंने इसराएल
में इसके जैसा एक भी इंसान नहीं पाया
जिसमें इतना ज़बरदस्त विश्वास हो।[1]
11 मगर मैं तुमसे कहता हूँ कि पूरब
से और पश्चिम से बहुत-से लोग आएँगे
और स्वर्ग के राज में अब्राहम, इसहाक
और याकूब के साथ मेज़ से टेक लगा-
कर बैठेंगे,[2] **12** जबकि राज के बेटे
बाहर अँधेरे में फेंक दिए जाएँगे। वहाँ
वे रोएँगे और दाँत पीसेंगे।”[3] **13** फिर
उसने सेना-अफसर से कहा, “जा। जैसा
तूने विश्वास किया है, तेरे लिए वैसा ही
हो।”[4] और उसी पल उसका सेवक ठीक
हो गया।[5]

14 यीशु पतरस के घर आया और
देखा कि पतरस की सास[6] बीमार है
और बुखार में पड़ी है।[7] **15** तब यीशु
ने उसका हाथ छुआ[8] और उसका बुखार
उतर गया। वह उठी और उसकी सेवा
करने लगी। **16** जब शाम हो गयी, तो
लोग उसके पास ऐसे कई लोगों को
लाने लगे जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत समाए थे।
उसने इन दुष्ट स्वर्गदूतों को सिर्फ बोल-
कर ही निकाल दिया और उन सब लोगों
को ठीक कर दिया जो तकलीफ में थे
17 ताकि वह वचन पूरा हो जो भविष्य-
वक्ता यशायाह से कहलवाया गया था,
“उसने हमारी बीमारी खुद पर ले ली और
हमारे रोग उठा ले गया।”[9]

18 जब यीशु ने अपने चारों तरफ
लोगों की भीड़ देखी, तो उसने चेलों को
हुक्म दिया कि नाव को उस पार ले
जाएँ।[1] **19** तब एक शास्त्री ने आकर
उससे कहा, “गुरु, तू जहाँ कहीं जाएगा,
मैं तेरे साथ चलूँगा।”[2] **20** मगर यीशु
ने उससे कहा, “लोमड़ियों की माँदें और
आकाश के पंछियों के बसेरे होते हैं, मगर
इंसान के बेटे के पास कहीं सिर टिकाने
की भी जगह नहीं है।”[3] **21** तब एक
और चेले ने उससे कहा, “प्रभु, मुझे इजा-
ज़त दे कि मैं जाकर पहले अपने पिता को
दफना दूँ।”[4] **22** यीशु ने उससे कहा,
“मेरे पीछे चलता रह और मुरदों को
अपने मुरदे दफनाने दे।”[5]

23 जब यीशु एक नाव पर चढ़ गया,
तो चेले भी उसके साथ हो लिए।[6]
24 तब अचानक झील में ऐसी ज़ोरदार
आँधी उठी कि लहरें नाव को ढकने लगीं
मगर वह सो रहा था।[7] **25** चेले उसके
पास आए और यह कहकर उसे जगाने
लगे, “प्रभु, हमें बचा, हम नाश होनेवाले
हैं!” **26** मगर यीशु ने उनसे कहा, “अरे,
कम विश्वास रखनेवालो, तुम क्यों इतना
डर रहे हो?”*[8] फिर उसने उठकर आँधी
और लहरों को डाँटा और बड़ा सन्नाटा
छा गया।[9] **27** यह देखकर चेले हैरत में
पड़ गए और कहने लगे, “आखिर यह
आदमी कौन है कि आँधी और समुंदर तक
इसका हुक्म मानते हैं?”

28 इसके बाद, यीशु उस पार गद-
रेनियों के इलाके में पहुँचा। वहाँ दो
आदमी थे जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत समाए
थे। वे कब्रों* के बीच से निकलकर
यीशु के पास आए।[10] वे इतने खूँखार
थे कि कोई भी उस रास्ते से गुज़रने की
हिम्मत नहीं करता था। **29** और देखो!

अध्य. 8
1 मत 15:28 लूक 7:9
2 लूक 13:29
3 लूक 13:28
4 मत 9:29 मत 15:28 मर 9:23
5 लूक 7:10
6 1कुर 9:5
7 मर 1:29-34 लूक 4:38-41
8 मर 5:41 प्रेष 3:7
9 यश 53:4

दूसरा कॉल.
1 मर 4:35 लूक 8:22
2 लूक 9:57
3 लूक 9:58 2कुर 8:9
4 लूक 9:59
5 लूक 9:60
6 मर 4:36
7 मर 4:37-41 लूक 8:23-25
8 मत 14:31 मर 4:40
9 भज 89:9 भज 107:29 लूक 8:25
10 मर 5:1-3 लूक 8:26, 27

8:26 * या “तुम्हारे दिल क्यों काँप रहे हैं?”
8:28 * या “स्मारक कब्रों।”

वे चिल्लाकर कहने लगे, “हे परमेश्‍वर के
बेटे, हमारा तुझसे क्या लेना-देना?[1] क्या
तू तय किए गए वक्‍त से पहले हमें तड़-
पाने आया है?”[2] **30** उनसे काफी दूरी
पर सूअरों का एक बड़ा झुंड चर रहा
था।[3] **31** इसलिए दुष्ट स्वर्गदूत यीशु
से बिनती करने लगे, “अगर तू हमें
निकाल रहा है, तो हमें सूअरों के उस झुंड
में भेज दे।”[4] **32** तब यीशु ने उनसे
कहा, “जाओ!” और वे उन आदमियों में
से बाहर निकल गए और सूअरों में समा
गए। और देखो! सूअरों का पूरा झुंड बड़ी
तेज़ी से दौड़ा और पहाड़ की कगार से
नीचे झील में जा गिरा और सारे सूअर
मर गए। **33** मगर उन्हें चरानेवाले वहाँ
से भाग गए और उन्होंने शहर में जाकर
सारा किस्सा कह सुनाया और उन आद-
मियों के बारे में भी बताया, जिनमें दुष्ट
स्वर्गदूत समाए थे। **34** तब देखो! सारा
शहर निकलकर यीशु को देखने आया।
जब उन्होंने उसे देखा, तो उससे बार-बार
कहने लगे कि वह उनके इलाके से चला
जाए।[5]

9 तब यीशु नाव पर चढ़कर उस पार
चला गया और अपने शहर गया।[6]
2 और देखो! कुछ लोग लकवे के मारे
हुए एक आदमी को खाट पर लिटाकर
ला रहे थे। जब यीशु ने उनका विश्‍वास
देखा, तो उसने लकवे के मारे आदमी से
कहा, “हिम्मत रख बेटे, तेरे पाप माफ
किए गए।”[7] **3** तब कुछ शास्त्री मन में
कहने लगे, “यह आदमी परमेश्‍वर की
निंदा कर रहा है।” **4** यह जानते हुए
कि वे क्या सोच रहे हैं, यीशु ने कहा, “तुम
क्यों अपने मन में बुरी बातें सोच रहे हो?[8]
5 क्या कहना ज़्यादा आसान है, ‘तेरे
पाप माफ किए गए’ या यह कहना, ‘उठ
और चल-फिर’?[9] **6** मगर इसलिए कि
तुम जान लो कि इंसान के बेटे को धरती
पर पाप माफ करने का अधिकार दिया
गया है . . .।” फिर उसने लकवे के मारे
हुए से कहा, “खड़ा हो! अपनी खाट उठा
और घर जा।”[1] **7** तब वह आदमी
खड़ा हो गया और अपने घर चला गया।
8 यह देखकर लोगों पर डर छा गया
और वे परमेश्‍वर की महिमा करने लगे,
जिसने एक इंसान को ऐसा करने का
अधिकार दिया था।

9 फिर जब यीशु वहाँ से आगे जा
रहा था, तो उसकी नज़र मत्ती नाम के
एक आदमी पर पड़ी, जो कर-वसूली के
दफ्तर में बैठा था। यीशु ने उससे कहा,
“आ, मेरा चेला बन जा।” तब मत्ती उठ-
कर उसके पीछे चल दिया।[2] **10** बाद
में जब यीशु एक घर में खाना खा रहा
था,* तो देखो! बहुत-से कर-वसूलनेवाले
और उनके जैसे दूसरे पापी आए और
वे भी यीशु और उसके चेलों के साथ खाने
बैठे।#[3] **11** मगर यह देखकर फरीसी
उसके चेलों से कहने लगे, “तुम्हारा गुरु
कर-वसूलनेवालों और पापियों के साथ
क्यों खाता है?”[4] **12** उनकी बात सुन-
कर यीशु ने कहा, “जो भले-चंगे हैं
उन्हें वैद्य की ज़रूरत नहीं होती, मगर
बीमारों को होती है।[5] **13** इसलिए
जाओ और इस बात का मतलब सीखो,
‘मैं बलिदान नहीं चाहता बल्कि यह
चाहता हूँ कि तुम दूसरों पर दया करो।’[6]
क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं, पापियों को
बुलाने आया हूँ।”

14 फिर यूहन्‍ना के चेले यीशु के
पास आए और पूछने लगे, “हम लोग
और फरीसी तो उपवास रखते हैं, मगर
तेरे चेले उपवास क्यों नहीं रखते?”[7]

9:10 *या “मेज़ से टेक लगाए बैठा था।”
#या “मेज़ से टेक लगाए बैठे थे।”

अध्य. 8
1 लूक 4:34, 41
2 मर 1:24; मर 5:7-10; लूक 8:28; याकू 2:19
3 मर 5:11-17
4 व्य 14:8; लूक 8:31-34
5 लूक 8:35-37

अध्य. 9
6 मत 4:13; मर 2:1
7 मर 2:3-12; लूक 5:18-26
8 यूह 2:24, 25
9 मर 2:9

दूसरा कॉल.
1 मर 2:10, 11; लूक 5:24; यूह 5:8
2 मर 2:14; लूक 5:27, 28
3 मर 2:15-17; लूक 5:29-32
4 लूक 7:39; लूक 15:2; लूक 19:7
5 लूक 5:31
6 नीत 21:3; हो 6:6; मत 12:7
7 मर 2:18-20; लूक 5:33-35

15 यीशु ने उनसे कहा, “जब तक दूल्हा[1]
अपने दोस्तों के साथ होता है, क्या उसके
दोस्त मातम मनाते हैं? नहीं। मगर वे
दिन आएँगे जब दूल्हे को उनसे जुदा कर
दिया जाएगा,[2] तब वे उपवास करेंगे।
16 कोई भी पुराने कपड़े के छेद पर नए
कपड़े का टुकड़ा नहीं लगाता। अगर वह
लगाए तो नया टुकड़ा सिकुड़कर पुराने
कपड़े को फाड़ देगा और छेद और
भी बड़ा हो जाएगा।[3] **17** न ही लोग
नयी दाख-मदिरा पुरानी मशकों में भरते
हैं। अगर वे भरें, तो मशकें फट जाएँगी
और मदिरा बह जाएगी और मशकें नष्ट
हो जाएँगी। मगर लोग नयी मदिरा नयी
मशकों में भरते हैं और दोनों सही-सला-
मत रहती हैं।”

18 जब वह उन्हें ये बातें बता रहा
था, तब देखो! एक अधिकारी उसके पास
आया और उसने झुककर उसे प्रणाम[*]
किया और कहा, “अब तक मेरी बच्ची
मर चुकी होगी। फिर भी तू चल और
उस पर अपना हाथ रख, तब वह फिर से
ज़िंदा हो जाएगी।”[4]

19 तब यीशु उठा और उसके पीछे
गया और चेले भी उसके साथ गए।
20 और देखो! एक औरत जो 12 साल
से खून बहने की बीमारी से पीड़ित
थी,[5] वह यीशु के पीछे आयी और
उसने उसके कपड़े की झालर छू ली,[6]
21 क्योंकि वह मन-ही-मन कहती थी,
“अगर मैं उसके कपड़े को ही छू लूँ, तो
अच्छी हो जाऊँगी।” **22** यीशु ने मुड़-
कर उसे देखा और कहा, “बेटी, हिम्मत
रख, तेरे विश्वास ने तुझे ठीक किया
है।”[7] उसी घड़ी वह औरत ठीक हो
गयी।[8]

23 जब वह उस अधिकारी के घर
पहुँचा, तो उसकी नज़र बाँसुरी बजाने-
वालों और शोरगुल करती भीड़ पर
पड़ी।[1] **24** यीशु ने उनसे कहा, “तुम
लोग यहाँ से जाओ, क्योंकि बच्ची मरी
नहीं बल्कि सो रही है।”[2] यह सुनकर वे
उसकी खिल्ली उड़ाने लगे। **25** जैसे ही
भीड़ को बाहर कर दिया गया, यीशु अंदर
गया और उसने बच्ची का हाथ पकड़ा[3]
और वह उठ बैठी।[4] **26** इस बात की
चर्चा उस पूरे इलाके में फैल गयी।

27 जब यीशु वहाँ से आगे जा रहा
था, तो दो अंधे आदमी[5] उसके पीछे-पीछे
यह पुकारते हुए आने लगे, “हे दाविद
के वंशज, हम पर दया कर।” **28** जब
वह घर के अंदर गया, तो वे अंधे आदमी
उसके पास आए। तब यीशु ने उनसे पूछा,
“क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं यह कर
सकता हूँ?”[6] उन्होंने जवाब दिया, “हाँ,
प्रभु।” **29** तब उसने उनकी आँखों को
छूकर[7] कहा, “जैसा तुमने विश्वास किया
है, तुम्हारे लिए वैसा ही हो।” **30** और
वे अपनी आँखों से देखने लगे। फिर यीशु
ने उन्हें चेतावनी दी, “देखो, इस बारे में
किसी को मत बताना।”[8] **31** मगर
बाहर जाने के बाद उन्होंने पूरे इलाके में
उसके बारे में बता दिया।

32 फिर जब वे बाहर जा रहे थे तो
देखो! लोग उसके पास एक गूँगे आदमी
को ले आए, जिसमें एक दुष्ट स्वर्ग-
दूत समाया था।[9] **33** जब दुष्ट स्वर्गदूत
निकाल दिया गया, तो वह आदमी बोलने
लगा।[10] यह देखकर भीड़ हैरान रह
गयी और कहने लगी, “इसराएल में ऐसा
कभी नहीं देखा गया।”[11] **34** मगर
फरीसी कहने लगे, “यह तो दुष्ट स्वर्ग-
दूतों के राजा की मदद से दुष्ट स्वर्गदूत
निकालता है।”[12]

9:18 * या “दंडवत।”

अध्य. 9

1 मत 22:2
2 मत 26:2
3 मर 2:21, 22; लूक 5:36-39
4 मर 5:22-24; लूक 8:41, 42; यूह 11:25
5 लैव 15:25
6 मर 5:25-34; मर 6:56; लूक 8:43-48
7 मर 10:52; लूक 7:50; लूक 17:19; लूक 18:42
8 यूह 4:53

दूसरा कॉल.

1 मर 5:38-43; लूक 8:52-56
2 यूह 11:11
3 मर 9:27
4 लूक 8:55
5 मत 20:30
6 प्रेष 14:9, 10
7 मत 20:34
8 यश 42:2; मत 12:15, 16; मर 1:44, 45; मर 7:35, 36
9 मत 12:22; लूक 11:14
10 मत 15:31
11 मर 2:12
12 मत 12:24; मर 3:22; लूक 11:15

35 यीशु सब शहरों और गाँवों का दौरा करने निकला और वह उनके सभा-घरों में सिखाता और राज की खुशखबरी का प्रचार करता गया। वह हर तरह की बीमारी और शरीर की कमज़ोरी दूर करता रहा।[1] 36 जब उसने भीड़ को देखा तो वह तड़प उठा,[2] क्योंकि वे ऐसी भेड़ों की तरह थे जिनकी खाल खींच ली गयी हो और जिन्हें बिन चरवाहे के यहाँ-वहाँ भटकने के लिए छोड़ दिया गया हो।[3] 37 तब उसने अपने चेलों से कहा, "बेशक, कटाई के लिए फसल बहुत है मगर मज़दूर थोड़े हैं।[4] 38 इसलिए खेत के मालिक से बिनती करो कि वह कटाई के लिए और मज़दूर भेजे।"[5]

10 फिर यीशु ने अपने 12 चेलों को पास बुलाया और उन्हें दुष्ट स्वर्गदूतों पर अधिकार दिया[6] ताकि वे उन्हें लोगों में से निकालें और हर तरह की बीमारी और शरीर की कमज़ोरी दूर करें।

2 इन 12 प्रेषितों के नाम ये हैं:[7] पहला, शमौन जो पतरस[8] कहलाता है और उसका भाई अन्द्रियास,[9] फिर याकूब और यूहन्ना जो जब्दी के बेटे थे,[10] 3 फिलिप्पुस और बरतुलमै,[11] थोमा[12] और कर-वसूलनेवाला मत्ती,[13] हलफई का बेटा याकूब और तद्दी, 4 जोशीला* शमौन और यहूदा इस्करियोती, जिसने बाद में उसके साथ गद्दारी की।[14]

5 इन बारहों को यीशु ने ये आदेश देकर भेजा,[15] "तुम गैर-यहूदियों के इलाके में या सामरिया के किसी शहर में मत जाना।[16] 6 इसके बजाय, सिर्फ इसराएल के घराने की खोयी हुई भेड़ों के पास जाना।[1] 7 तुम जहाँ-जहाँ जाओ वहाँ यह प्रचार करना, 'स्वर्ग का राज पास आ गया है।'[2] 8 बीमारों को ठीक करो,[3] मुरदों को ज़िंदा करो, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालो। तुम्हें मुफ्त मिला है, मुफ्त में दो। 9 अपने कमरबंद में न तो सोने के, न चाँदी के और न ही ताँबे के पैसे लेना।[4] 10 न ही सफर के लिए खाने की पोटली या दो जोड़ी कपड़े या जूतियाँ या लाठी लेना[5] क्योंकि काम करनेवाला भोजन पाने का हकदार है।[6]

11 तुम जिस किसी शहर या गाँव में जाओ, तो अच्छी तरह ढूँढ़ो कि वहाँ कौन योग्य है और तब तक उसके यहाँ रहो, जब तक कि तुम उस इलाके से न निकलो।[7] 12 जब तुम किसी घर में जाओ, तो घर के लोगों को नमस्कार करो। 13 अगर वह घराना योग्य है, तो वह शांति जिसकी तुमने दुआ की थी, उस पर बनी रहेगी।[8] लेकिन अगर वह योग्य नहीं है, तो शांति तुम्हारे पास लौट आए। 14 अगर किसी घर या शहर में कोई तुम्हें स्वीकार नहीं करे या तुम्हारी नहीं सुने, तो वहाँ से बाहर निकलते वक्त अपने पैरों की धूल झाड़ देना।[9] 15 मैं तुमसे सच कहता हूँ कि न्याय के दिन सदोम और अमोरा[10] का हाल उस शहर के हाल से ज़्यादा सहने लायक होगा।

16 देखो! मैं तुम्हें भेड़ों की तरह भेड़ियों के बीच भेज रहा हूँ। इसलिए साँपों की तरह सतर्क रहो और कबूतरों की तरह सीधे बने रहो।[11] 17 लोगों से सावधान रहो क्योंकि वे तुम्हें निचली अदालतों के हवाले कर देंगे[12] और अपने सभा-घरों में तुम्हें कोड़े

10:4 *शा., "कनानानी।"

अध्य. 9

1 मत 4:23
2 मत 14:14; इब्र 4:15
3 गि 27:16, 17; 1रा 22:17; यहे 34:5; मर 6:34
4 लूक 10:2; यूह 4:35
5 रोम 10:14

अध्य. 10

6 मर 3:14, 15; मर 6:7; लूक 9:1, 2
7 मर 3:16-19; लूक 6:13-16; प्रेष 1:13
8 यूह 1:42; प्रेष 15:14
9 मर 1:16; यूह 1:40
10 मत 4:21
11 यूह 1:45
12 यूह 11:16; यूह 20:27
13 मर 2:14; लूक 5:27
14 मत 26:47; यूह 13:18
15 मर 6:7; लूक 9:1, 2
16 2रा 17:24

दूसरा कॉल.

1 यश 53:6; यहे 34:6; प्रेष 13:45, 46
2 मत 4:17; लूक 10:9
3 लूक 9:2
4 मर 6:8, 9
5 लूक 9:3
6 लूक 10:7; 1कुर 9:7, 14
7 मर 6:10; लूक 9:4
8 लूक 10:5
9 मर 6:11; लूक 9:5; लूक 10:6, 11; प्रेष 13:50, 51
10 उत 19:4, 5; 2पत 2:6; यहू 7
11 फिल 2:14, 15
12 मत 24:9

लगवाएँगे।[1] 18 मेरी वजह से तुम्हें
राज्यपालों और राजाओं के सामने पेश
किया जाएगा[2] ताकि उन्हें और गैर-यहू-
दियों को गवाही मिले।[3] 19 मगर जब
वे तुम्हें पकड़वाएँगे, तो यह चिंता
न करना कि तुम क्या कहोगे और
कैसे कहोगे। जो तुम्हें बोलना है वह
उस वक्त तुम जान जाओगे।[4] 20 इस-
लिए कि तुम अपने आप नहीं बल्कि
अपने पिता की पवित्र शक्ति की मदद
से बोलोगे।[5] 21 भाई, भाई को मरवाने
के लिए सौंप देगा और पिता अपने बच्चों
को। बच्चे अपने माँ-बाप के खिलाफ खड़े
होंगे और उन्हें मरवा डालेंगे।[6] 22 मेरे
नाम की वजह से सब लोग तुमसे नफरत
करेंगे।[7] मगर जो अंत तक धीरज
धरेगा,* वही उद्धार पाएगा।[8] 23 जब
वे एक शहर में तुम्हें सताएँ, तो दूसरे
शहर में भाग जाना[9] क्योंकि मैं तुमसे सच
कहता हूँ कि तुम इसराएल के शहरों का
दौरा पूरा भी न कर पाओगे कि इंसान का
बेटा आ जाएगा।

24 चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं
होता, न ही दास अपने मालिक से।[10]
25 एक चेले का अपने गुरु जैसा और
दास का अपने मालिक जैसा बनना ही
बहुत है।[11] जब लोगों ने घर के मालिक
को ही बाल-ज़बूल* कहा है,[12] तो
उसके घर के लोगों को क्यों न कहेंगे?
26 इसलिए उनसे मत डरो क्योंकि ऐसा
कुछ नहीं जो ढका गया हो और खोला न
जाए और जिसे राज़ रखा गया हो
और जाना न जाए।[13] 27 जो मैं तुम्हें
अँधेरे में बताता हूँ उसे उजाले में कहो
और जो मैं तुमसे फुसफुसाकर कहता

10:22 *या "धरता है।" **10:25** *शैतान को दिया एक नाम जो दुष्ट स्वर्गदूतों का राजा या शासक है।

अध्य. 10

1 मत 23:34
मर 13:9
लूक 21:12, 13
प्रेष 5:40
2कुर 11:24
2 प्रेष 4:8
प्रेष 24:10
प्रेष 25:23
प्रेष 26:25
प्रेष 27:23, 24
3 मत 24:14
4 मर 13:11
लूक 12:11, 12
लूक 21:14, 15
5 यूह 14:26
6 मी 7:6
मत 10:36
7 मत 24:9
लूक 21:17
यूह 15:21
8 मत 24:13
लूक 21:19
प्रक 2:10
9 मत 23:34
प्रेष 8:1
10 यूह 15:20
11 1पत 2:21
12 मत 12:24
मर 3:22
लूक 11:15
यूह 8:48
13 मर 4:22
लूक 8:17

दूसरा कॉल.

1 लूक 12:3
2 नीत 29:25
प्रक 2:10
3 लूक 12:4, 5
इब्र 10:31
4 लूक 12:6, 7
5 मत 6:26
6 रोम 10:9
7 लूक 12:8, 9
प्रक 3:5
8 मर 8:38
लूक 9:26
2ती 2:12
9 लूक 12:51-53
10 मी 7:6
11 मत 19:29
लूक 14:26

हूँ, उसका घर की छतों पर चढ़कर
ऐलान करो।[1] 28 उनसे मत डरो जो
शरीर को नष्ट कर सकते हैं मगर
जीवन को नहीं,*[2] इसके बजाय उससे
डरो जो जीवन और शरीर दोनों को
गेहन्ना# में मिटा सकता है।[3] 29 क्या
एक पैसे में* दो चिड़ियाँ नहीं बिकतीं?
मगर उनमें से एक भी तुम्हारे पिता
के जाने बगैर ज़मीन पर नहीं गिरती।[4]
30 मगर तुम्हारे सिर का एक-एक बाल
तक गिना हुआ है। 31 इसलिए मत
डरो, तुम बहुत-सी चिड़ियों से कहीं ज़्यादा
अनमोल हो।[5]

32 तो फिर, जो कोई लोगों के सामने
मुझे स्वीकार करता है,[6] मैं भी स्वर्ग
में रहनेवाले अपने पिता के सामने उसे
स्वीकार करूँगा।[7] 33 मगर जो कोई
लोगों के सामने मेरा इनकार करता
है, मैं भी स्वर्ग में रहनेवाले अपने
पिता के सामने उसका इनकार कर
दूँगा।[8] 34 यह मत सोचो कि मैं धरती
पर शांति लाने आया हूँ, मैं शांति
लाने नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया
हूँ।[9] 35 मैं बेटे को पिता के, बेटी को
माँ के और बहू को उसकी सास के
खिलाफ करने आया हूँ।[10] 36 वाकई,
एक आदमी के दुश्मन उसके अपने ही
घराने के लोग होंगे। 37 जो मुझसे
ज़्यादा अपने पिता या अपनी माँ से लगाव
रखता है, वह मेरे लायक नहीं और जो
मुझसे ज़्यादा अपने बेटे या अपनी बेटी
से लगाव रखता है, वह मेरे लायक
नहीं।[11] 38 जो कोई अपना यातना का

10:28 *या "जीवन पाने की उम्मीद नहीं छीन सकते।" #शब्दावली देखें। **10:29** *शा., "एक असारियन में।" अति. ख14 देखें।

काठ* नहीं उठाना चाहता और मेरे पीछे नहीं चलता, वह मेरा चेला बनने के लायक नहीं।[1] 39 जो अपनी जान बचाता है वह उसे खोएगा और जो मेरी खातिर अपनी जान गँवाता है वह उसे पाएगा।[2]

40 जो तुम्हें स्वीकार करता है, वह मुझे भी स्वीकार करता है और जो मुझे स्वीकार करता है, वह उसे भी स्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।[3] 41 जो किसी भविष्यवक्ता को इसलिए स्वीकार करता है कि वह भविष्यवक्ता है, उसे वही इनाम मिलेगा जो एक भविष्यवक्ता को मिलता है।[4] और जो किसी नेक इंसान को इसलिए स्वीकार करता है कि वह नेक है, उसे वही इनाम मिलेगा जो एक नेक इंसान को मिलता है। 42 मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कोई इन छोटों में से किसी एक को मेरा चेला जानकर एक प्याला ठंडा पानी भी पिलाता है, वह अपना इनाम ज़रूर पाएगा।"[5]

11 जब यीशु अपने 12 चेलों को हिदायतें दे चुका, तो वह वहाँ से दूसरे शहरों में सिखाने और प्रचार करने निकल पड़ा।[6]

2 लेकिन जब जेल में यूहन्ना[7] ने मसीह के कामों की चर्चा सुनी, तो उसने अपने चेलों को उसके पास भेजा[8] 3 कि वे उससे पूछें, "वह जो आनेवाला था, क्या तू ही है या हम किसी और की आस लगाएँ?"[9] 4 यीशु ने उनसे कहा, "जो कुछ तुम देखते और सुनते हो, जाकर वह सब यूहन्ना को बताओ:[10] 5 अंधे अब देख रहे हैं,[11] लँगड़े चल-फिर रहे हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जा रहे हैं,[12] बहरे सुन रहे हैं, मरे हुओं को ज़िंदा किया जा रहा है और गरीबों को खुशखबरी सुनायी जा रही है।[1] 6 सुखी है वह जो मेरे बारे में शक नहीं करता।"*[2]

7 जब वे वहाँ से चल दिए, तो यीशु भीड़ से यूहन्ना के बारे में यह कहने लगा, "तुम वीराने में क्या देखने गए थे?[3] हवा से इधर-उधर हिलते किसी नरकट को?[4] 8 फिर तुम क्या देखने गए थे? क्या रेशमी मुलायम* कपड़े पहने किसी आदमी को? रेशमी मुलायम कपड़े पहननेवाले तो राजाओं के महलों में होते हैं। 9 तो आखिर तुम क्यों गए थे? एक भविष्यवक्ता को देखने? हाँ। बल्कि मैं तुमसे कहता हूँ, भविष्यवक्ता से भी बढ़कर किसी को देखने गए थे।[5] 10 यह वही है जिसके बारे में लिखा है, 'देख! मैं अपना दूत तेरे आगे-आगे भेज रहा हूँ, जो तेरे लिए रास्ता तैयार करेगा!'[6] 11 मैं तुमसे सच कहता हूँ, अब तक जितने भी इंसान पैदा हुए हैं, उनमें यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से बड़ा कोई भी नहीं। मगर जो स्वर्ग के राज में सबसे छोटा है, वह यूहन्ना से भी बड़ा है।[7] 12 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक, स्वर्ग का राज वह लक्ष्य है जिसे पाने के लिए लोग ज़ोर लगा रहे हैं और जो पूरी कोशिश कर रहे हैं, वे उसे पा रहे हैं।*[8] 13 क्योंकि सारे भविष्यवक्ताओं और कानून ने यूहन्ना के समय तक भविष्यवाणी की।[9] 14 चाहे तुम इस बात को मानो या न मानो, 'जिस एलियाह का आना तय है,' वह यही है।[10] 15 कान लगाकर सुनो कि मैं क्या कह रहा हूँ।

16 मैं इस पीढ़ी की तुलना किससे करूँ?[11] यह ऐसी है मानो बाज़ारों में बैठे

10:38 *शब्दावली देखें।

11:6 *या "मेरी वजह से ठोकर नहीं खाता।" 11:8 *या "शानदार।" 11:12 *या "उसे कब्ज़े में कर रहे हैं।"

अध्य. 10

1 मत 16:24, 25; मर 8:34, 35; लूक 9:23; लूक 14:27
2 लूक 17:33; यूह 12:25
3 मत 25:40; लूक 10:16; यूह 12:44; यूह 13:20
4 1रा 17:9, 10; 1रा 17:20-23; 2रा 4:8; 2रा 4:13-17
5 मत 25:40; मर 9:41; इब्र 6:10

अध्य. 11

6 मत 4:23; मत 19:1; लूक 9:6
7 मत 14:3; मर 6:17
8 लूक 7:18-23
9 मत 3:11; यूह 1:15
10 लूक 7:22
11 यश 35:5, 6; यश 61:1
12 मत 8:3

दूसरा कॉल.

1 मत 4:23
2 मर 6:3; लूक 7:23; 1कुर 1:23; 1पत 2:7, 8
3 मत 3:1, 5
4 लूक 7:24-28
5 लूक 1:67, 76
6 मला 3:1; मत 3:3; मर 1:2; लूक 1:17; यूह 3:28
7 लूक 7:28; यूह 3:3
8 लूक 13:24
9 लूक 16:16
10 मला 4:5; मत 17:10-13
11 लूक 7:31-35

बच्चे अपने साथ खेलनेवालों को पुकार-
कर कह रहे हों, **17** ‘हमने तुम्हारे लिए
बाँसुरी बजायी मगर तुम नहीं नाचे। हम
रोए मगर तुमने दुख के मारे छाती नहीं
पीटी।’ **18** वैसे ही यूहन्ना औरों की
तरह खाता-पीता नहीं आया फिर भी लोग
कहते हैं, ‘उसमें दुष्ट स्वर्गदूत समाया है,’
19 जबकि इंसान का बेटा औरों की तरह
खाता-पीता आया,[1] फिर भी लोग कहते
हैं, ‘देखो! यह आदमी पेटू और पियक्कड़
है और कर-वसूलनेवालों और पापियों का
दोस्त है।’[2] लेकिन बुद्धि अपने कामों* से
सही साबित होती है।”#[3]

20 फिर वह उन शहरों को धिक्कार-
ने लगा, जहाँ उसने ज़्यादातर शक्तिशाली
काम किए थे, क्योंकि उन्होंने पश्चाताप
नहीं किया: **21** “हे खुराजीन, धिक्कार
है तुझ पर! हे बैतसैदा, धिक्कार है तुझ
पर! क्योंकि जो शक्तिशाली काम तुममें
हुए थे, अगर वे सोर और सीदोन में हुए
होते, तो वहाँ के लोगों ने टाट ओढ़कर
और राख में बैठकर कब का पश्चाताप
कर लिया होता।[4] **22** इसलिए मैं तुमसे
कहता हूँ कि न्याय के दिन सोर और
सीदोन का हाल, तुम्हारे हाल से ज़्यादा
सहने लायक होगा।[5] **23** और कफर-
नहूम[6] तू, तू क्या सोचता है कि तुझे
आकाश तक ऊँचा किया जाएगा? तू तो
नीचे कब्र में जाएगा[7] क्योंकि जो शक्ति-
शाली काम तुझमें किए गए थे, अगर
वे सदोम में हुए होते तो वह आज तक
बना रहता। **24** मैं तुझसे कहता हूँ कि
न्याय के दिन सदोम का हाल, तेरे हाल से
ज़्यादा सहने लायक होगा।”[8]

25 उस वक्त यीशु ने कहा, “हे पिता,
स्वर्ग और पृथ्वी के मालिक, मैं सबके
सामने तेरी बड़ाई करता हूँ कि तूने ये
बातें बुद्धिमानों और ज्ञानियों से तो छिपाए
रखीं, मगर नन्हे-मुन्नों पर प्रकट की हैं।[1]
26 क्योंकि हे पिता, तुझे यही तरीका
मंज़ूर है। **27** मेरे पिता ने सबकुछ मेरे
हाथ में सौंपा है।[2] और कोई बेटे को पूरी
तरह नहीं जानता सिवा पिता के,[3] न ही
कोई पिता को पूरी तरह जानता है सिवा
बेटे के और उसके, जिस पर बेटा उसे
प्रकट करना चाहे।[4] **28** हे कड़ी मज़-
दूरी करनेवालो और बोझ से दबे लोगो,
तुम सब मेरे पास आओ, मैं तुम्हें तरो-
ताज़ा करूँगा। **29** मेरा जुआ उठाओ
और मुझसे सीखो क्योंकि मैं कोमल
स्वभाव का और दिल से दीन हूँ[5] और
तुम ताज़गी पाओगे। **30** इसलिए कि
मेरा जुआ उठाना आसान है और मेरा
बोझ हलका है।”

12 एक बार सब्त के दिन यीशु अपने
चेलों के साथ खेतों से होकर जा
रहा था। उसके चेलों को भूख लगी और
वे अनाज की बालें तोड़कर खाने लगे।[6]
2 यह देखकर फरीसियों ने उससे कहा,
“देख! तेरे चेले सब्त के दिन वह काम कर
रहे हैं जो कानून के खिलाफ है।”[7]
3 यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुमने
नहीं पढ़ा कि जब दाविद और उसके
आदमी भूखे थे, तब उसने क्या किया?[8]
4 किस तरह वह परमेश्वर के भवन में
गया और उन्होंने चढ़ावे की वे रोटियाँ*
खायीं[9] जो सिर्फ याजकों के लिए थीं और
जिन्हें खाना उसके और उसके साथियों
के लिए कानून के खिलाफ था?[10] **5** या
क्या तुमने कानून में नहीं पढ़ा कि सब्त
के दिन, मंदिर में सेवा करनेवाले याजक
सब्त का नियम तोड़ते हैं फिर भी वे

11:19 *या “नतीजों।” #या “बुद्धि की जीत होती है।”

12:4 *या “नज़राने की रोटी।”

अध्य. 11
1 मत 9:10; मर 2:15; यूह 2:2
2 लूक 5:30; लूक 15:2; लूक 19:7
3 लूक 7:34, 35
4 यो 3:5, 6; लूक 10:13
5 लूक 10:14
6 लूक 4:31
7 लूक 10:15
8 मत 10:15; लूक 10:12

दूसरा कॉल.
1 यश 29:14; मत 13:15; लूक 10:21; 1कुर 1:27
2 यूह 3:35
3 यूह 1:18
4 लूक 10:22; यूह 10:15; 1यूह 5:20
5 जक 9:9

अध्य. 12
6 निर्ग 12:16; व्य 23:25; मर 2:23-28; लूक 6:1-5
7 निर्ग 20:10; निर्ग 31:15; व्य 5:14
8 1शम 21:1-6
9 निर्ग 25:30; निर्ग 40:22, 23
10 लैव 24:5-9

निर्दोष ठहरते हैं?[1] **6** मगर मैं तुमसे
कहता हूँ, यहाँ वह है जो मंदिर से भी
बढ़कर है।[2] **7** लेकिन अगर तुमने इस
बात का मतलब समझा होता कि मैं बलि-
दान नहीं चाहता बल्कि यह चाहता हूँ कि
तुम दूसरों पर दया करो,[3] तो तुम निर्दोष
लोगों को दोषी न ठहराते। **8** क्योंकि
इंसान का बेटा सब्त के दिन का
प्रभु है।"[4]

9 वहाँ से वह उनके सभा-घर में
गया। **10** और देखो! वहाँ एक आदमी
था जिसका एक हाथ सूखा हुआ
था।*[5] तब कुछ लोगों ने यीशु से पूछा,
"क्या सब्त के दिन बीमारों को ठीक
करना सही है?" ताकि उन्हें उस पर इल-
ज़ाम लगाने की कोई वजह मिल सके।[6]
11 उसने कहा, "तुममें ऐसा कौन है
जिसके पास एक ही भेड़ हो और अगर
वह भेड़ सब्त के दिन गड्ढे में गिर जाए,
तो वह उसे पकड़कर बाहर न निकाले?[7]
12 तो सोचो एक इंसान का मोल भेड़ से
कितना ज़्यादा है! इसलिए सब्त के दिन
भला काम करना सही है।" **13** फिर
उसने उस आदमी से कहा, "अपना हाथ
आगे बढ़ा।" जब उसने हाथ आगे बढ़ाया
तो उसका हाथ दूसरे हाथ की तरह
ठीक हो गया। **14** मगर फरीसी बाहर
निकल गए और यीशु को मार डालने की
साज़िश करने लगे। **15** यीशु यह जान
गया और वहाँ से निकल गया। बहुत-से
लोग उसके पीछे हो लिए[8] और उसने उन
सबकी बीमारियाँ दूर कीं। **16** मगर
उसने उन्हें कड़ा हुक्म दिया कि वे किसी
को न बताएँ कि वह कौन है[9] **17** ताकि
ये वचन पूरे हों जो भविष्यवक्ता यशायाह
से कहलवाए गए थे:

12:10 * या "लकवा मार गया था।"

18 "देखो! मेरा सेवक[1] जिसे मैंने
चुना है। मेरा प्यारा, जिसे मैंने मंज़ूर
किया है![2] मैं उस पर अपनी पवित्र शक्ति
उँडेलूँगा[3] और वह राष्ट्रों को साफ-
साफ दिखाएगा कि सच्चा न्याय क्या
होता है। **19** वह न तो झगड़ा करेगा,[4]
न ज़ोर से चिल्लाएगा, न ही उसकी
आवाज़ बड़ी-बड़ी सड़कों पर सुनायी
देगी। **20** वह कुचले हुए नरकट को
नहीं कुचलेगा, न ही टिमटिमाती बाती
को बुझाएगा[5] और वह पूरी तरह न्याय
करेगा। **21** वाकई, राष्ट्र उसके नाम
पर आशा रखेंगे।"[6]

22 इसके बाद वे उसके पास एक
आदमी को लाए, जिसमें एक दुष्ट स्वर्ग-
दूत समाया था और वह आदमी अंधा
और गूँगा था। यीशु ने उस आदमी को
ठीक कर दिया और वह बोलने और
देखने लगा। **23** यह देखकर भीड़ दंग
रह गयी और कहने लगी, "कहीं यही तो
दाविद का वंशज नहीं?" **24** यह सुन-
कर फरीसियों ने कहा, "यह आदमी
दुष्ट स्वर्गदूतों के राजा बाल-ज़बूल* की
मदद से ही लोगों में समाए दुष्ट स्वर्ग-
दूत निकालता है।"[7] **25** यीशु जानता
था कि वे क्या सोच रहे हैं इसलिए उसने
उनसे कहा, "जिस राज में फूट पड़ जाए,
वह बरबाद हो जाएगा और जिस शहर
या घर में फूट पड़ जाए वह नहीं टिकेगा।
26 उसी तरह, अगर शैतान ही शैतान
को निकाले, तो उसमें फूट पड़ गयी है
और वह खुद अपने खिलाफ हो गया है।
तो फिर उसका राज कैसे टिकेगा?
27 और फिर, अगर मैं बाल-ज़बूल की
मदद से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालता हूँ,
तो तुम्हारे बेटे किसकी मदद से इन्हें
निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारे न्यायी

12:24 * शैतान को दिया एक नाम।

अध्य. 12
1 गि 28:9, यूह 7:22
2 लूक 11:31, 32
3 हो 6:6, मी 6:6, 8, मत 9:13, मत 23:23
4 मर 2:27, 28, लूक 6:5
5 मर 3:1-6, लूक 6:6-11
6 लूक 14:3, यूह 9:16
7 निर्ग 23:4, व्य 22:4, लूक 14:5
8 मर 3:7
9 मत 8:3, 4, मर 3:11, 12, मर 7:35, 36

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 3:13
2 मत 3:17, मत 17:5
3 यश 61:1, मर 1:10
4 2ती 2:24
5 मत 11:28
6 यश 11:10, यश 42:1-4, प्रेष 4:12
7 मर 3:22-27, लूक 11:15-23

ठहरेंगे। 28 लेकिन अगर मैं परमेश्वर
की पवित्र शक्ति से दुष्ट स्वर्गदूतों को
निकालता हूँ, तो इसका मतलब परमेश्वर
का राज तुम्हारे हाथ से निकल चुका है।[1]
29 या क्या कोई किसी ताकतवर आदमी
के घर में घुसकर उसका सामान तब तक
लूट सकता है जब तक कि वह पहले
उस आदमी को पकड़कर बाँध न दे? उसे
बाँधने के बाद ही वह उसका घर लूट
सकेगा। 30 जो मेरी तरफ नहीं है, वह
मेरे खिलाफ है और जो मेरे साथ नहीं
बटोरता, वह तितर-बितर कर देता है।[2]
31 इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि
इंसानों का हर तरह का पाप और
निंदा की बातें माफ की जाएँगी, मगर
पवित्र शक्ति के खिलाफ निंदा की बातें
माफ नहीं की जाएँगी।[3] 32 मिसाल के
लिए, अगर कोई इंसान के बेटे के
खिलाफ बोलता है, तो उसे माफ किया
जाएगा।[4] मगर जो कोई पवित्र शक्ति के
खिलाफ बोलता है, उसे माफ नहीं किया
जाएगा, न तो इस दुनिया* में न ही आने-
वाली दुनिया* में।[5]
33 अगर तुम बढ़िया पेड़ हो, तो
तुम्हारा फल भी बढ़िया होगा और अगर
तुम सड़ा पेड़ हो, तो तुम्हारा फल भी सड़ा
हुआ होगा क्योंकि एक पेड़ अपने फल
से पहचाना जाता है।[6] 34 अरे साँप
के सँपोलो,[7] जब तुम दुष्ट हो तो अच्छी
बातें कैसे कह सकते हो? क्योंकि जो
दिल में भरा है वही मुँह पर आता
है।[8] 35 अच्छा इंसान अपनी अच्छाई
के खज़ाने से अच्छी चीज़ें निकालता है,
जबकि बुरा इंसान अपनी बुराई के खज़ाने
से बुरी चीज़ें निकालता है।[9] 36 मैं
तुमसे कहता हूँ कि लोग जो भी निकम्मी
बात बोलते हैं, उसके लिए उन्हें न्याय
के दिन हिसाब देना होगा।[1] 37 तुझे
अपनी बातों की वजह से नेक ठहराया
जाएगा या अपनी बातों की वजह से दोषी
ठहराया जाएगा।"
38 यह सुनकर कुछ शास्त्रियों और
फरीसियों ने यीशु से कहा, "हे गुरु, हम
चाहते हैं कि तू हमें कोई चिन्ह दिखाए।"[2]
39 यीशु ने उनसे कहा, "एक दुष्ट और
विश्वासघाती* पीढ़ी हमेशा कोई चिन्ह
देखने की ताक में लगी रहती है। मगर
इसे योना भविष्यवक्ता के चिन्ह को छोड़
और कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा।[3]
40 ठीक जैसे योना एक बड़ी मछली के
पेट में तीन दिन और तीन रात रहा,[4]
वैसे ही इंसान का बेटा धरती के गर्भ
में तीन दिन और तीन रात रहेगा।[5]
41 नीनवे के लोग न्याय के वक्त इस
पीढ़ी के साथ उठेंगे और इसे दोषी ठह-
राएँगे क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुन-
कर पश्चाताप किया था।[6] मगर देखो!
यहाँ वह मौजूद है जो योना से भी बढ़-
कर है।[7] 42 दक्षिण की रानी को न्याय
के वक्त इस पीढ़ी के साथ उठाया जाएगा
और वह इसे दोषी ठहराएगी क्योंकि वह
सुलैमान की बुद्धि की बातें सुनने के लिए
पृथ्वी के छोर से आयी थी।[8] मगर देखो!
यहाँ वह मौजूद है जो सुलैमान से भी बढ़-
कर है।[9]
43 जब एक दुष्ट स्वर्गदूत* किसी
आदमी से बाहर निकल आता है, तो
आराम करने की जगह ढूँढ़ने के लिए सूखे
इलाकों में फिरता है, मगर उसे कोई जगह
नहीं मिलती।[10] 44 तब वह कहता है,
'मैं अपने जिस घर से निकला था,
उसमें फिर लौट जाऊँगा।' वह आकर

अध्य. 12
1 लूक 11:20
2 मर 9:40, लूक 9:50, लूक 11:23
3 मर 3:28, 29, प्रेष 7:51, इब्र 6:4, 6
4 1ती 1:13
5 लूक 12:10, इब्र 10:26
6 मत 7:17, लूक 6:43
7 मत 3:7, मत 23:33
8 मत 15:11
9 लूक 6:45, याकू 3:6

दूसरा कॉल.
1 सभ 12:14, रोम 14:12
2 मत 16:1
3 मत 16:4, लूक 11:29-32
4 यो 1:17
5 मत 16:21, मत 17:23, मत 27:63, लूक 24:46
6 यो 3:5
7 लूक 11:30
8 1रा 10:1, 2इत 9:1
9 मत 12:6, लूक 11:31
10 लूक 11:24-26

12:32 *या "दुनिया की व्यवस्था।" शब्दा-वली देखें।

12:39 *शा., "व्यभिचारी।" **12:43** *शब्दावली में "रुआख; नफ्मा" देखें।

पाता है कि वह घर न सिर्फ खाली पड़ा है बल्कि साफ-सुथरा और सजा हुआ है। 45 तब वह जाकर सात और स्वर्गदूतों को लाता है जो उससे भी दुष्ट हैं। फिर वे सब उस आदमी में समाकर वहीं बस जाते हैं और उस आदमी की हालत पहले से भी बदतर हो जाती है।[1] इस दुष्ट पीढ़ी का भी यही हाल होगा।"

46 जब यीशु भीड़ से बात कर ही रहा था, तो देखो! उसकी माँ और उसके भाई[2] आकर बाहर खड़े हो गए। वे उससे बात करना चाहते थे।[3] 47 तब किसी ने यीशु से कहा, "देख! तेरी माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं और तुझसे बात करना चाहते हैं।" 48 तब यीशु ने उससे कहा, "मेरी माँ और मेरे भाई कौन हैं?" 49 फिर उसने अपने चेलों की तरफ हाथ बढ़ाकर कहा, "देखो, ये रहे मेरी माँ और मेरे भाई![4] 50 क्योंकि जो कोई स्वर्ग में रहनेवाले मेरे पिता की मरज़ी पूरी करता है, वही मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।"[5]

13 उस दिन यीशु घर से निकलने के बाद झील के किनारे बैठा हुआ था। 2 तब लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठा हो गयी, इसलिए वह एक नाव पर चढ़कर बैठ गया और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी हुई थी।[6] 3 फिर उसने मिसालें देकर उन्हें बहुत-सी बातें बतायीं।[7] उसने कहा, "देखो! एक बीज बोनेवाला बीज बोने निकला।[8] 4 जब वह बो रहा था, तो कुछ बीज रास्ते के किनारे गिरे और पंछी आकर उन्हें खा गए।[9] 5 कुछ बीज ऐसी ज़मीन पर गिरे जहाँ ज़्यादा मिट्टी नहीं थी, क्योंकि मिट्टी के नीचे चट्टान थी। इन बीजों के अंकुर फौरन दिखायी देने लगे क्योंकि वहाँ मिट्टी गहरी नहीं थी।[10] 6 लेकिन जब सूरज निकला, तो वे झुलस गए और जड़ न पकड़ने की वजह से सूख गए। 7 कुछ और बीज काँटों में गिरे और कँटीले पौधों ने बढ़कर उन्हें दबा दिया।[1] 8 मगर कुछ और बीज बढ़िया मिट्टी पर गिरे और उनमें फल आने लगे। किसी में 100 गुना, किसी में 60 गुना तो किसी में 30 गुना।[2] 9 कान लगाकर सुनो कि मैं क्या कह रहा हूँ।"[3]

10 फिर चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, "तू लोगों को मिसालें देकर क्यों सिखाता है?"[4] 11 तब उसने यह जवाब दिया, "स्वर्ग के राज के पवित्र रहस्यों की समझ[5] तुम्हें दी गयी है, मगर उन लोगों को नहीं दी गयी। 12 क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा और उसके पास बहुत हो जाएगा। मगर जिस किसी के पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है।[6] 13 मैं उन्हें इसलिए मिसालें बताता हूँ क्योंकि वे देखते हुए भी नहीं देखते और सुनते हुए भी नहीं सुनते, न ही इसके मायने समझते हैं।[7] 14 उन पर यशायाह की यह भविष्यवाणी पूरी होती है, जो कहती है, 'तुम लोग सुनोगे मगर सुनते हुए भी इसके मायने बिलकुल नहीं समझ पाओगे। और देखोगे मगर देखते हुए भी बिलकुल नहीं देख पाओगे।[8] 15 क्योंकि इन लोगों का मन सुन्न हो चुका है। वे अपने कानों से सुनते तो हैं, मगर कुछ करते नहीं। उन्होंने अपनी आँखें मूँद ली हैं ताकि न वे कभी अपनी आँखों से देखें, न अपने कानों से सुनें और न कभी उनका मन इसके मायने समझे और न वे पलटकर लौट आएँ और मैं उन्हें चंगा करूँ।'[9]

16 मगर सुखी हो तुम क्योंकि तुम्हारी आँखें देखती हैं और तुम्हारे कान सुनते

अध्य. 12

1 इब्र 6:4, 6; 2पत 2:20
2 मत 13:55; यूह 2:12; प्रेष 1:14; 1कुर 9:5; गल 1:19
3 मर 3:31-35
4 यूह 20:17; इब्र 2:11
5 मर 3:35; लूक 8:21

अध्य. 13

6 मर 4:1
7 मत 13:34
8 मर 4:3-9; लूक 8:4-8
9 मत 13:19
10 मत 13:20, 21

दूसरा कॉल.

1 मत 13:22; मर 4:18, 19; लूक 8:14
2 मत 13:23; मर 4:8; लूक 8:8
3 मत 11:15
4 मर 4:10, 11; लूक 8:9, 10
5 1कुर 2:9, 10; इफ 1:9-12; कुल 1:26, 27
6 मत 25:29; मर 4:25; लूक 8:18
7 यश 6:10; मर 4:12
8 यूह 12:40; रोम 11:8; 2कुर 3:14
9 यश 6:9, 10; मर 4:12; प्रेष 28:26, 27

हैं।[1] 17 मैं तुमसे सच कहता हूँ, बहुत-
से भविष्यवक्ताओं और नेक लोगों ने
चाहा था कि वह सब देखें जो तुम देख
रहे हो, मगर नहीं देख सके[2] और वे
बातें सुनें जो तुम सुन रहे हो, मगर नहीं
सुन सके।

18 अब तुम बीज बोनेवाले की
मिसाल पर ध्यान दो।[3] 19 जो इंसान
राज का वचन सुनता तो है मगर उसके
मायने नहीं समझता, उसके दिल में जो
बोया गया था उसे शैतान*[4] आकर छीन
ले जाता है। यह वही बीज है जो रास्ते के
किनारे बोया गया था।[5] 20 जो चट्टानी
ज़मीन पर बोया गया था, यह वह इंसान
है जो वचन को सुनते ही उसे खुशी-खुशी
स्वीकार करता है।[6] 21 मगर उसमें
जड़ नहीं होती इसलिए वह थोड़े वक्त के
लिए रहता है और जब वचन की वजह से
उसे मुसीबतें या ज़ुल्म सहने पड़ते हैं, तो
वह फौरन वचन पर विश्वास करना छोड़
देता है।* 22 जो काँटों के बीच बोया
गया है, यह वह इंसान है जो वचन को
सुनता तो है, मगर इस ज़माने* की
ज़िंदगी की चिंता[7] और धोखा देनेवाली
पैसे की ताकत वचन को दबा देती है और
वह फल नहीं देता।[8] 23 जो बढ़िया
मिट्टी में बोया गया है, यह वह इंसान है जो
वचन को सुनता है, उसके मायने समझ-
ता है और वाकई फल देता है, कोई
100 गुना, कोई 60 गुना और कोई 30
गुना।"[9]

24 यीशु ने भीड़ को एक और मिसाल
बतायी, "स्वर्ग के राज की तुलना एक
ऐसे आदमी से की जा सकती है, जिसने
अपने खेत में बढ़िया बीज बोए।
25 जब लोग रात को सो रहे थे, तो
उसका दुश्मन आया और गेहूँ के बीच
जंगली पौधे के बीज बोकर चला गया।
26 जब पौधे बड़े हुए और उनमें बालें
आयीं, तो जंगली पौधे भी दिखायी
देने लगे। 27 इसलिए उस आदमी के
दासों ने आकर उससे कहा, 'मालिक,
क्या तूने अपने खेत में बढ़िया बीज नहीं
बोए थे? तो फिर उसमें जंगली पौधे कहाँ
से उग आए?' 28 मालिक ने कहा,
'यह एक दुश्मन का काम है।'[1] तब
उन्होंने कहा, 'अगर तू कहे तो क्या हम
जंगली पौधों को उखाड़कर बटोर लें?'
29 उसने कहा, 'नहीं! कहीं ऐसा न हो
कि जंगली पौधे उखाड़ते वक्त तुम उनके
साथ गेहूँ भी उखाड़ दो। 30 कटाई का
समय आने तक उन्हें साथ-साथ बढ़ने दो।
जब कटाई के दिन आएँगे, तो मैं काटने-
वालों से कहूँगा कि पहले जंगली पौधों को
उखाड़कर उन्हें गट्ठरों में बाँध दो ताकि
उन्हें जला दिया जाए, उसके बाद तुम गेहूँ
को मेरे गोदाम में जमा करो।'"[2]

31 उसने लोगों को एक और मिसाल
दी, "स्वर्ग का राज राई के दाने की तरह
है, जिसे एक आदमी ने लेकर अपने खेत
में बो दिया।[3] 32 दरअसल वह बीजों
में सबसे छोटा होता है, मगर जब वह
उगता है तो सब्ज़ियों के पौधों में सबसे
बड़ा हो जाता है और एक पेड़ बन जाता
है। यहाँ तक कि आकाश के पंछी आकर
उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं।"

33 उसने उन्हें एक और मिसाल
बतायी, "स्वर्ग का राज खमीर की तरह
है, जिसे लेकर एक औरत ने करीब
10 किलो* आटे में गूँध दिया, आखिर में
सारा आटा खमीरा हो गया।"[4]

34 यीशु ने भीड़ को ये सारी बातें

13:19 *शा., "वह दुष्ट।" 13:21 *शा., "तो वह ठोकर खाता है।" 13:22 *या "दुनिया की व्यवस्था।" शब्दावली देखें।

13:33 *या "तीन बड़े माप।"

अध्य. 13
1 लूक 10:23, 24
2 यूह 8:56; इफ 3:5; 1पत 1:10
3 मर 4:14; लूक 8:11
4 1पत 5:8
5 मर 4:15; लूक 8:12
6 मर 4:16, 17; लूक 8:13
7 लूक 12:22
8 मत 6:21; मर 4:18, 19; मर 10:23; लूक 8:14; 1ती 6:9; 2ती 4:10
9 मर 4:20; लूक 8:15

दूसरा कॉल.
1 मत 13:38, 39
2 प्रक 14:15
3 मर 4:30-32; लूक 13:18, 19
4 लूक 13:21

मिसालें देकर बतायीं। वाकई, वह बगैर
मिसाल के उनसे बात नहीं करता था[1]
35 ताकि यह बात पूरी हो जो भविष्य-
वक्ता से कहलवायी गयी थी, “मैं मिसालें
देकर सिखाऊँगा और वे बातें बताऊँ-
गा जो शुरूआत* से छिपी हुई हैं।”[2]

36 इसके बाद यीशु भीड़ को विदा
करके घर में गया। उसके चेले उसके पास
आकर कहने लगे, “हमें खेत के जंगली
पौधों की मिसाल का मतलब समझा।”
37 उसने कहा, “बढ़िया बीज बोनेवाला,
इंसान का बेटा है। **38** खेत, दुनिया
है।[3] बढ़िया बीज, राज के बेटे हैं। मगर
जंगली पौधों के बीज, शैतान* के बेटे हैं[4]
39 और जिस दुश्मन ने इन्हें बोया है, वह
शैतान है। कटाई, दुनिया की व्यवस्था*
का आखिरी वक्त है और कटाई करने-
वाले स्वर्गदूत हैं। **40** इसलिए ठीक
जैसे जंगली दाने के पौधों को उखाड़-
कर आग में जला दिया जाता है, वैसे
ही इस दुनिया की व्यवस्था* के आखिरी
वक्त में होगा।[5] **41** इंसान का बेटा
अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे उसके
राज से उन सब लोगों को इकट्ठा करेंगे,
जो दूसरों को पाप की तरफ ले जाते
हैं* और उन्हें भी जो दुष्ट काम करते
हैं। **42** स्वर्गदूत उन्हें आग की भट्ठी
में झोंक देंगे,[6] जहाँ वे रोएँगे और दाँत
पीसेंगे। **43** उस वक्त नेक जन अपने
पिता के राज में सूरज की तरह तेज़ चम-
केंगे।[7] कान लगाकर सुनो कि मैं क्या कह
रहा हूँ।

44 स्वर्ग का राज ज़मीन में छिपे
खज़ाने की तरह है जो एक आदमी को
मिलता है। वह इसे दोबारा वहीं छिपा
देता है और खुशी के मारे जाकर अपना
सबकुछ बेच देता है और उस ज़मीन को
खरीद लेता है।[1]

45 इसके अलावा, स्वर्ग का राज एक
ऐसे व्यापारी की तरह है, जो बेहतरीन
किस्म के मोतियों की तलाश में घूमता है।
46 और जब उसे एक बेशकीमती मोती
मिला, तो उसने जाकर फौरन अपना सब-
कुछ बेच दिया और वह मोती खरीद
लिया।[2]

47 साथ ही, स्वर्ग का राज एक बड़े
जाल की तरह है, जिसे समुंदर में डाला
गया और जिसने हर किस्म की मछ-
लियाँ समेट लीं। **48** जब जाल भर
गया तो वे उसे खींचकर किनारे पर लाए
और बैठकर अच्छी मछलियों[3] को बर-
तनों में इकट्ठा किया, जबकि बेकार मछ-
लियों[4] को उन्होंने फेंक दिया। **49** इस
दुनिया की व्यवस्था* के आखिरी वक्त में
भी ऐसा ही होगा: स्वर्गदूत जाकर दुष्टों
को नेक जनों से अलग करेंगे। **50** और
दुष्टों को आग की भट्ठी में डाल देंगे, जहाँ
वे रोएँगे और दाँत पीसेंगे।

51 क्या तुम इन सब बातों के
मायने समझे?” उन्होंने कहा, “हाँ।”
52 उसने उनसे कहा, “अगर ऐसा है, तो
लोगों को सिखानेवाला हर उपदेशक जिसे
स्वर्ग के राज के बारे में सिखाया गया है,
घर के उस मालिक की तरह है जो अपने
खज़ाने से नयी और पुरानी चीज़ें बाहर
लाता है।”

53 ये मिसालें बताने के बाद यीशु
वहाँ से चला गया। **54** वह अपने
इलाके में आया जहाँ वह पला-बढ़ा था।[5]
वह सभा-घर में लोगों को सिखाने लगा।
वे उसकी बातें सुनकर हैरान रह गए और
कहने लगे, “इस आदमी को ऐसी बुद्धि

अध्य. 13
1 मर 4:33, 34
2 भज 78:2
3 मत 24:14
रोम 10:18
कुल 1:6
4 यूह 8:44
5 मत 13:30
6 मत 13:30
7 न्या 5:31

दूसरा कॉल.
1 फिल 3:7
2 फिल 3:8
3 लैव 11:9
4 लैव 11:12
5 मत 2:23

13:35 *या शायद, “दुनिया की शुरूआत।” **13:38** *शा., “उस दुष्ट।” **13:39, 40, 49** *या “ज़माने।” शब्दावली देखें। **13:41** *शा., “जो चीज़ें ठोकर खिलाने की वजह बनती हैं।”

कहाँ से मिली और यह ऐसे शक्तिशाली
काम कैसे कर पा रहा है?[1] 55 क्या
यह बढ़ई का बेटा नहीं?[2] क्या इसकी
माँ का नाम मरियम नहीं और इसके भाई
याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं?[3]
56 और इसकी बहनें भी क्या हमारे
बीच नहीं रहतीं? तो फिर, इस आदमी
को ये सारी बातें कहाँ से आ गयीं?"[4]
57 इसलिए उन्होंने उस पर यकीन नहीं
किया।[5] मगर यीशु ने उनसे कहा, "एक
भविष्यवक्ता का हर कहीं आदर किया
जाता है, सिर्फ उसके अपने इलाके और
घर में नहीं किया जाता।"[6] 58 उनके
विश्वास की कमी की वजह से उसने वहाँ
ज़्यादा चमत्कार नहीं किए।

14 उस वक्त ज़िला-शासक हेरोदेस*
ने यीशु के बारे में खबर
सुनी।[7] 2 उसने अपने सेवकों से कहा,
"यह बपतिस्मा देनेवाला यूहन्ना ही है, जो
मर गया था पर अब उसे ज़िंदा कर दिया
गया है। इसी वजह से वह शक्ति-
शाली काम कर रहा है।"[8] 3 हेरो-
देस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी
हेरोदियास की वजह से यूहन्ना को
गिरफ्तार कर लिया था और ज़ंजीरों
में बाँधकर जेल में डलवा दिया था।[9]
4 क्योंकि यूहन्ना हेरोदेस से कहा करता
था, "तूने हेरोदियास को अपनी पत्नी
बनाकर कानून तोड़ा है।"[10] 5 हेरोदेस
यूहन्ना को मार डालना चाहता था, मगर
लोगों से डरता था क्योंकि वे यूहन्ना को
एक भविष्यवक्ता मानते थे।[11] 6 मगर
हेरोदेस के जन्मदिन[12] पर जब हेरोदि-
यास की बेटी नाची, तो हेरोदेस इतना
खुश हुआ[13] 7 कि उसने कसम खाकर
वादा किया कि वह उससे जो माँगेगी,
वह उसे दे देगा। 8 तब उसने अपनी
माँ के सिखाने पर कहा, "तू मुझे यहीं
एक थाल में यूहन्ना बपतिस्मा देने-
वाले का सिर ला दे।"[1] 9 यह सुनकर
राजा दुखी तो हुआ, फिर भी उसने
जो कसमें खायी थीं और उसके साथ
जो लोग बैठे थे,* उनकी वजह से उसने
हुक्म दिया कि यूहन्ना का सिर लाकर
उसे दे दिया जाए। 10 उसने आदमी
भेजा और जेल में यूहन्ना का सिर कटवा
दिया। 11 उसका सिर एक थाल में
रखकर लाया गया और उस लड़की को
दे दिया गया और वह इसे अपनी माँ के
पास ले गयी। 12 बाद में यूहन्ना के
चेले आकर उसकी लाश ले गए और उसे
दफना दिया और आकर यीशु को खबर
दी। 13 यह सुनकर यीशु वहाँ से किसी
सुनसान जगह में एकांत पाने के लिए
नाव पर निकल पड़ा। मगर जब लोगों
की भीड़ ने सुना, तो वे शहरों से पैदल ही
उसके पीछे चले आए।[2]

14 जब यीशु किनारे पर पहुँचा, तो
उसने लोगों की एक बड़ी भीड़ देखी।
उन्हें देखकर वह तड़प उठा[3] और उसने
बीमारों को ठीक किया।[4] 15 मगर
जब शाम हुई, तो चेलों ने उसके पास
आकर कहा, "यह जगह सुनसान है
और बहुत देर हो चुकी है। इसलिए
भीड़ को विदा कर दे ताकि वे आस-
पास के गाँवों में जाकर खाने के लिए
कुछ खरीद लें।"[5] 16 मगर यीशु ने
उनसे कहा, "उन्हें जाने की ज़रूरत
नहीं, तुम्हीं उन्हें कुछ खाने को दो।"
17 चेलों ने उससे कहा, "यहाँ हमारे पास
पाँच रोटियों और दो मछलियों के सिवा
और कुछ नहीं है।" 18 उसने कहा,
"रोटी और मछली मेरे पास लाओ।"

14:1 *यानी हेरोदेस अन्तिपास। शब्दावली देखें।

14:9 *या "मेज़ से टेक लगाए बैठे थे।"

अध्य. 13
1 मर 6:1-6
2 लूक 4:22; यूह 6:42
3 मत 12:46; यूह 2:12; प्रेष 1:14; 1कुर 9:5; गल 1:19
4 यूह 7:15
5 1पत 2:7, 8
6 मर 6:4; लूक 4:24; यूह 4:44

अध्य. 14
7 मर 6:14; लूक 9:7-9; प्रेष 4:27
8 मत 16:13, 14; मर 6:16
9 मर 6:17, 18; लूक 3:19, 20
10 लैव 18:16; लैव 20:21
11 मर 6:20; लूक 1:67, 76
12 उत 40:20-22
13 मर 6:21-29

दूसरा कॉल.
1 मर 6:25
2 मर 6:31-33; लूक 9:10
3 मत 9:36; मत 15:32; मर 1:41; मर 6:34; लूक 7:13; इब्र 2:17; इब्र 5:2
4 लूक 9:11
5 मर 6:35-44; लूक 9:12-17; यूह 6:5-13

19 इसके बाद यीशु ने भीड़ को घास पर
आराम से बैठ जाने के लिए कहा। फिर
उसने पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं
और आकाश की तरफ देखकर प्रार्थना
में धन्यवाद दिया।[1] उसने रोटियाँ तोड़-
कर चेलों को दीं और चेलों ने उन्हें
भीड़ में बाँट दिया। 20 उन सबने जी-
भरकर खाया और उन्होंने बचे हुए टुकड़े
उठाए जिनसे 12 टोकरियाँ भर गयीं।[2]
21 खानेवालों में करीब 5,000 आदमी
थे, उनके अलावा औरतें और बच्चे भी
थे।[3] 22 फिर यीशु ने बिना देर किए
अपने चेलों से कहा कि वे नाव पर चढ़
जाएँ और उससे पहले उस पार चले जाएँ,
जबकि वह खुद भीड़ को विदा करने
लगा।[4]

23 भीड़ को भेजने के बाद वह प्रार्थना
करने के लिए पहाड़ पर चला गया।[5]
शाम हो गयी और वह वहाँ अकेला
ही था। 24 अब तक चेलों की नाव
किनारे से कुछ किलोमीटर* दूर जा
चुकी थी। नाव लहरों के थपेड़े खा रही
थी क्योंकि हवा का रुख उनके खिलाफ
था। 25 मगर रात के चौथे पहर* यीशु
पानी पर चलता हुआ उनके पास आया।
26 जैसे ही चेलों ने देखा कि वह पानी
पर चल रहा है, वे घबराकर कहने लगे,
"यह ज़रूर हमारा वहम है!" और वे डर
के मारे ज़ोर से चिल्लाने लगे। 27 मगर
तभी यीशु ने उनसे कहा, "हिम्मत रखो,
मैं ही हूँ। डरो मत।"[6] 28 तब पत-
रस ने कहा, "प्रभु अगर यह तू है, तो
मुझे आज्ञा दे कि मैं पानी पर चलकर
तेरे पास आऊँ।" 29 यीशु ने कहा,
"आ!" तब पतरस नाव से उतरा और
पानी पर चलता हुआ यीशु की तरफ जाने
लगा। 30 मगर तूफान को देखकर
वह डर गया और डूबने लगा। तब
वह चिल्ला उठा, "हे प्रभु, मुझे बचा!"
31 यीशु ने फौरन अपना हाथ बढ़ाकर
उसे थाम लिया और उससे कहा, "अरे
कम विश्वास रखनेवाले, तूने शक क्यों
किया?"[1] 32 जब वे दोनों नाव पर
चढ़ गए, तो तूफान थम गया। 33 तब
जो नाव में थे उन्होंने उसे झुककर प्रणाम*
किया और कहा, "तू वाकई परमेश्वर
का बेटा है।" 34 वे उस पार पहुँचकर
गन्नेसरत आ गए।[2]

35 वहाँ के लोग उसे पहचान गए
और उन्होंने आस-पास के सारे इलाके
में खबर भेजी और लोग सब बीमारों
को उसके पास ले आए। 36 और वे
उससे बिनती करने लगे कि वह उन्हें
अपने कपड़े की झालर को ही छू लेने दे।[3]
जितनों ने उसे छुआ वे सब अच्छे हो गए।

15 इसके बाद यरूशलेम से फरीसी
और शास्त्री, यीशु के पास आए[4]
और कहने लगे, 2 "आखिर क्यों तेरे
चेले हमारे पुरखों की परंपराओं को तोड़ते
हैं? जैसे, खाना खाने से पहले वे हाथ नहीं
धोते।"*[5]

3 यीशु ने उन्हें जवाब दिया, "तुम
क्यों अपनी परंपराओं की वजह से
परमेश्वर की आज्ञा तोड़ते हो?[6]
4 मिसाल के लिए, परमेश्वर ने कहा था,
'अपने पिता और अपनी माँ का आदर
करना'[7] और 'जो कोई अपने पिता या
अपनी माँ को बुरा-भला कहता है,* वह
मार डाला जाए।'[8] 5 मगर तुम कहते

अध्य. 14
1 मत 15:36, मर 6:41, लूक 9:16
2 2रा 4:42-44, मर 6:42, 43, मर 8:8, लूक 9:17, यूह 6:12, 13
3 मर 6:44, लूक 9:14, यूह 6:10
4 मर 6:45-52, यूह 6:16-21
5 मर 6:46, लूक 6:12, लूक 9:18
6 मर 6:50, यूह 6:20

दूसरा कॉल.
1 मत 6:30, मत 8:26, मत 28:16, 17, याकू 1:6
2 मर 6:53-56
3 मत 9:20, 21, मर 3:10, लूक 6:19

अध्य. 15
4 मर 7:1, 2
5 लूक 11:38, यूह 2:6
6 मत 15:9, मर 7:8-13, कुल 2:8
7 निर्ग 20:12, व्य 5:16, इफ 6:2
8 निर्ग 21:17, लैव 20:9

14:24 *शा., "कई स्तादियौन।" एक स्तादियौन 185 मी. (606.95 फुट) के बराबर था। **14:25** *यानी सुबह करीब 3 बजे से करीब 6 बजे तक।

14:33 *या "दंडवत।" **15:2** *यानी रिवाज़ के मुताबिक हाथ नहीं धोते। **15:4** *या "गाली देता है।"

हो, ‘अगर एक आदमी अपने पिता या
अपनी माँ से कहता है, “मेरे पास जो कुछ
है जिससे तुझे फायदा हो सकता था, वह
परमेश्‍वर के लिए रखी गयी भेंट है,”[1]
6 तो उसे अपने माता-पिता का आदर
करने की कोई ज़रूरत नहीं।’ इस तरह
तुमने अपनी परंपराओं की वजह से पर-
मेश्‍वर के वचन को रद्द कर दिया है।[2]
7 अरे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे बारे
में बिलकुल सही भविष्यवाणी की थी,
जब उसने कहा,[3] 8 ‘ये लोग होंठों से
तो मेरा आदर करते हैं, मगर इनका दिल
मुझसे कोसों दूर रहता है। 9 ये बेकार
ही मेरी उपासना करते रहते हैं क्योंकि
ये इंसानों की आज्ञाओं को परमेश्‍वर
की शिक्षाएँ बताकर सिखाते हैं।’”[4]
10 तब यीशु ने भीड़ को अपने पास
बुलाया और उनसे कहा, “सुनो और इस
बात के मायने समझोः[5] 11 जो मुँह में
जाता है वह इंसान को दूषित नहीं करता,
लेकिन जो उसके मुँह से निकलता है वही
उसे दूषित करता है।”[6]

12 फिर चेलों ने आकर उससे कहा,
“क्या तू जानता है कि फरीसियों को
तेरी बात चुभ गयी है?”[7] 13 तब उसने
कहा, “हर वह पौधा जिसे स्वर्ग में रहने-
वाले मेरे पिता ने नहीं लगाया, जड़
से उखाड़ दिया जाएगा। 14 उन्हें रहने
दो। वे खुद तो अंधे हैं, मगर दूसरों को राह
दिखाते हैं। अगर एक अंधा अंधे को राह
दिखाए, तो दोनों गड्ढे में जा गिरेंगे।”[8]
15 यह सुनकर पतरस ने उससे कहा,
“हमें उस मिसाल का मतलब समझा।”
16 उसने कहा, “क्या तुम भी अब तक
नहीं समझे?[9] 17 क्या तुम नहीं जानते
कि मुँह में जानेवाली हर चीज़ पेट से
होते हुए जाती है और फिर मल-कुंड में
निकल जाती है? 18 मगर जो कुछ मुँह
से निकलता है, वह दिल से निकलता है

अध्य. 15
1 मर 7:11, 12
2 मर 7:13
3 मर 7:6
4 यश 29:13
मर 7:7
5 मर 7:14
6 मर 7:15
इफ 4:29
याकू 3:6
7 मर 7:17
8 मत 23:15, 16
लूक 6:39
9 मर 7:18-23

दूसरा कॉल.
1 मर 7:20
2 उत 8:21
यिर्म 17:9
3 मर 7:24
4 मर 7:25-30
5 यश 53:6
मत 10:5, 6
प्रेष 3:26
प्रेष 13:46
रोम 15:8
6 मर 7:28

और यही सब एक इंसान को दूषित
करता है।[1] 19 जैसे, दुष्ट विचार दिल
से ही निकलते हैं।[2] इनकी वजह से
हत्या, व्यभिचार, नाजायज़ यौन-संबंध,*
और चोरी की जाती है, झूठी गवाही दी
जाती है और निंदा की बातें की जाती हैं।
20 यही सब इंसान को दूषित करता है,
मगर बिना हाथ धोए* खाना खाना उसे
दूषित नहीं करता।”

21 अब यीशु वहाँ से निकलकर सोर
और सीदोन के इलाके में चला गया।[3]
22 और देखो! उस इलाके की एक
औरत जो फीनीके की रहनेवाली थी
उसके पास आयी और चिल्लाकर कहने
लगी, “हे प्रभु, दाविद के वंशज, मुझ पर
दया कर। मेरी बेटी को एक दुष्ट स्वर्ग-
दूत ने बुरी तरह काबू में कर लिया
है।”[4] 23 मगर यीशु ने उससे एक
शब्द भी न कहा। इसलिए उसके चेले
आए और बार-बार कहने लगे, “इसे
भेज दे क्योंकि यह चिल्लाती हुई हमारे
पीछे-पीछे आ रही है।” 24 तब उसने
कहा, “मुझे इसराएल के घराने की
खोयी हुई भेड़ों को छोड़ किसी और के
पास नहीं भेजा गया।”[5] 25 मगर वह
औरत यीशु के पास आयी और उसे
झुककर प्रणाम* करके कहने लगी, “हे
प्रभु, मेरी मदद कर!” 26 उसने कहा,
“बच्चों की रोटी लेकर पिल्लों के आगे
फेंकना सही नहीं है।” 27 तब औरत
ने कहा, “सही कहा प्रभु, मगर फिर भी
पिल्ले अपने मालिकों की मेज़ से गिरे
टुकड़े तो खाते ही हैं।”[6] 28 यह सुन-
कर यीशु ने उससे कहा, “तेरा विश्‍वास
बहुत बड़ा है। जैसा तू चाहती है, तेरे लिए

15:19 *यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें। **15:20** *यानी रिवाज़ के मुताबिक हाथ धोए बिना। **15:25** *या “दंडवत।”

वैसा ही हो।" और उसी घड़ी उसकी बेटी ठीक हो गयी।

29 फिर यीशु उस इलाके से निकलकर गलील झील के पास आया[1] और पहाड़ पर चढ़कर वहाँ बैठ गया। 30 तब भारी तादाद में लोग उसके पास आए और अपने साथ लूले-लँगड़े, अंधे, गूँगे और ऐसे बहुत-से लोगों को लाए और उसके पैरों के पास डाल दिया और उसने उन्हें ठीक किया।[2] 31 जब भीड़ के लोगों ने देखा कि गूँगे बोल रहे हैं, लूले-लँगड़े ठीक हो रहे हैं और अंधे देख रहे हैं, तो वे दंग रह गए और उन्होंने इसराएल के परमेश्वर की महिमा की।[3]

32 तब यीशु ने अपने चेलों को बुलाया और कहा, "मुझे इस भीड़ पर तरस आ रहा है[4] क्योंकि इन्हें मेरे साथ रहते हुए तीन दिन बीत चुके हैं और इनके पास खाने को कुछ भी नहीं है। मैं इन्हें भूखा नहीं भेजना चाहता, कहीं वे रास्ते में ही पस्त न हो जाएँ।"[5] 33 मगर चेलों ने उससे कहा, "यहाँ इस सुनसान जगह में हम इतनी रोटियाँ कहाँ से लाएँ कि यह बड़ी भीड़ भरपेट खा सके?"[6] 34 यीशु ने उनसे पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?" उन्होंने कहा, "सात। और कुछ छोटी मछलियाँ भी हैं।" 35 तब उसने भीड़ को ज़मीन पर आराम से बैठने के लिए कहा 36 और उन सात रोटियों और मछलियों को लेकर प्रार्थना में धन्यवाद दिया। फिर वह उन्हें तोड़कर चेलों को देने लगा और चेलों ने इन्हें भीड़ में बाँट दिया।[7] 37 सब लोगों ने जी-भरकर खाया और बचे हुए टुकड़े इकट्ठे किए गए जिनसे सात बड़े टोकरे भर गए।[8] 38 खानेवालों में करीब 4,000 आदमी थे, उनके अलावा औरतें और बच्चे भी थे। 39 आखिर में उसने भीड़ को विदा किया, फिर वह नाव पर चढ़कर मगदन के इलाके में आया।[1]

16 यहाँ फरीसी और सदूकी यीशु के पास आए और उसकी परीक्षा लेने के लिए कहने लगे कि वह उन्हें स्वर्ग से एक चिन्ह दिखाए।[2] 2 यीशु ने उनसे कहा, "जब शाम होती है तो तुम कहते हो, 'मौसम साफ रहेगा क्योंकि आसमान का रंग चटक लाल है।' 3 फिर सुबह के वक्त कहते हो, 'आज मौसम सर्द और बरसाती होगा क्योंकि आसमान का रंग लाल तो है, मगर बादल छाए हैं।' तुम आसमान को देखकर उसका मतलब समझाना तो जानते हो, मगर समय की निशानियाँ देखकर उनका मतलब समझाना नहीं जानते। 4 यह दुष्ट और विश्वासघाती* पीढ़ी हमेशा कोई चिन्ह देखने की ताक में लगी रहती है। मगर इसे योना के चिन्ह को छोड़ और कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा।"[3] यह कहने के बाद वह उन्हें छोड़कर आगे चला गया।

5 चेले उस पार जाते समय अपने साथ रोटियाँ लेना भूल गए थे।[4] 6 यीशु ने उनसे कहा, "अपनी आँखें खुली रखो और फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकन्ने रहो।"[5] 7 तब वे एक-दूसरे से कहने लगे, "हम अपने साथ रोटियाँ नहीं लाए।" 8 यह जानकर यीशु ने कहा, "अरे कम विश्वास रखनेवालो, तुम क्यों आपस में चर्चा कर रहे हो कि तुम्हारे पास रोटियाँ नहीं हैं? 9 क्या तुम अब तक नहीं समझे? क्या तुम्हें याद नहीं कि कैसे पाँच रोटियों से 5,000 लोगों ने खाया था और तुमने भरी हुई कितनी टोकरियाँ उठायी थीं?[6] 10 क्या तुम्हें याद नहीं कि कैसे सात रोटियों से

अध्य. 15
1 मर 7:31
2 यश 35:5 मत 19:2 मर 3:10
3 मत 9:33
4 मत 14:14 मर 6:34
5 मर 8:1-9
6 2रा 4:42-44
7 मत 14:19
8 मर 8:8, 9

दूसरा कॉल.
1 मर 8:10

अध्य. 16
2 मत 12:38 मर 8:11 लूक 11:16
3 यो 1:17 मत 12:39 मर 8:12 लूक 11:29
4 मर 8:13-21
5 मर 8:15 लूक 12:1
6 मत 14:17

16:4 * शा., "व्यभिचारी।"

4,000 लोगों ने खाया था और तुमने भरे
हुए कितने टोकरे* उठाए थे?[1] **11** तो
फिर, तुम यह क्यों नहीं समझ पाए कि मैंने
तुमसे रोटियों के बारे में नहीं कहा बल्कि
यह कहा कि तुम फरीसियों और सदूकियों
के खमीर से चौकन्ने रहो?"[2] **12** तब
उन्हें समझ आया कि वह फरीसियों और
सदूकियों की शिक्षाओं से चौकन्ने रहने के
लिए कह रहा है, न कि रोटियों के खमीर
की बात कर रहा है।

13 जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के
इलाके में आया, तो उसने अपने चेलों से
पूछा, "लोग क्या कहते हैं, इंसान का बेटा
कौन है?"[3] **14** उन्होंने कहा, "कुछ
कहते हैं, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला,[4]
दूसरे कहते हैं एलियाह[5] और कुछ कहते
हैं यिर्मयाह या कोई और भविष्यवक्ता।"
15 यीशु ने उनसे पूछा, "लेकिन तुम क्या
कहते हो, मैं कौन हूँ?" **16** शमौन पत-
रस ने जवाब दिया, "तू मसीह है,[6]
जीवित परमेश्वर का बेटा।"[7] **17** यीशु
ने उससे कहा, "हे शमौन, योना के बेटे,
सुखी है तू क्योंकि तू यह बात हाड़-माँस
के इंसान की मदद से नहीं, बल्कि स्वर्ग
में रहनेवाले मेरे पिता की मदद से समझ
पाया है।[8] **18** मैं तुझसे यह कहता हूँ,
तू पतरस है।[9] और इस चट्टान[10] पर मैं
अपनी मंडली खड़ी करूँगा और कब्र* के
दरवाज़े उस पर हावी न हो सकेंगे।
19 मैं तुझे स्वर्ग के राज की चाबियाँ दूँगा
और जो कुछ तू धरती पर बाँधेगा, वह
पहले ही स्वर्ग में बँधा होगा और जो कुछ
तू धरती पर खोलेगा, वह पहले ही स्वर्ग
में खुला होगा।" **20** इसके बाद उसने
चेलों को सख्ती से कहा कि वे किसी को न
बताएँ कि वह मसीह है।[11]

21 उस वक्त से यीशु अपने चेलों को
बताने लगा कि उसे यरूशलेम जाना होगा
और वहाँ मुखियाओं, प्रधान याजकों और
शास्त्रियों के हाथ कई दुख सहने होंगे,
उसे मार डाला जाएगा और फिर तीसरे
दिन ज़िंदा कर दिया जाएगा।[1] **22** तब
पतरस उसे अलग ले गया और झिड़कने
लगा, "प्रभु खुद पर दया कर, तेरे साथ
ऐसा कभी नहीं होगा।"[2] **23** मगर
उसने पतरस से मुँह फेर लिया और कहा,
"अरे शैतान, मेरे सामने से दूर हो जा!*
तू मेरे लिए ठोकर की वजह है क्योंकि
तेरी सोच परमेश्वर जैसी नहीं, बल्कि
इंसानों जैसी है।"[3]

24 इसके बाद, यीशु ने अपने चेलों से
कहा, "अगर कोई मेरे पीछे आना चाहता
है, तो वह खुद से इनकार करे और
अपना यातना का काठ* उठाए और
मेरे पीछे चलता रहे।[4] **25** क्योंकि जो
कोई अपनी जान बचाना चाहता है
वह उसे खोएगा, मगर जो कोई मेरी
खातिर अपनी जान गँवाता है वह उसे
पाएगा।[5] **26** वाकई, अगर एक इंसान
सारी दुनिया हासिल कर ले मगर अपनी
जान गँवा बैठे, तो उसे क्या फायदा?[6]
या एक इंसान अपनी जान के बदले
क्या देगा?[7] **27** क्योंकि यह तय है कि
इंसान का बेटा अपने पिता से महिमा
पाकर अपने स्वर्गदूतों के साथ आएगा।
तब वह हरेक को उसके चालचलन के
मुताबिक बदला देगा।[8] **28** मैं तुमसे
सच कहता हूँ कि यहाँ जो खड़े हैं, उनमें से
कुछ ऐसे हैं जो तब तक मौत का मुँह नहीं
देखेंगे, जब तक कि वे इंसान के बेटे को
उसके राज में आता हुआ न देख लें।"[9]

अध्य. 16

1 मत 15:34
2 लूक 12:1
3 मर 8:27-29
लूक 9:18-20
4 मत 14:1, 2
5 यूह 1:25, 26
6 मर 8:29
लूक 9:20
यूह 1:40, 41
यूह 4:25
यूह 11:27
7 भज 2:7
मत 14:33
प्रेष 9:20, 22
इब्र 1:2
1यूह 4:15
8 मत 11:27
9 यूह 1:42
10 रोम 9:33
1कुर 3:11
1कुर 10:4
इफ 2:20
1पत 2:6-8
11 मर 8:29, 30
लूक 9:20, 21

दूसरा कॉल.

1 भज 16:10
यश 53:12
मत 17:22, 23
मत 20:18, 19
मर 8:31
लूक 9:22
लूक 24:46
1कुर 15:3, 4
2 मर 8:32
3 मर 8:33
4 मत 10:38
मर 8:34
लूक 9:23
लूक 14:27
5 मर 8:35
लूक 9:24
लूक 17:33
यूह 12:25
प्रक 12:11
6 मर 8:36
लूक 9:25
7 भज 49:8
8 भज 62:12
नीत 24:12
लूक 9:26
रोम 2:6
1पत 1:17
9 मत 17:2
मर 9:1
लूक 9:27

16:10 *या "बड़े टोकरे।" **16:18** *या "हेडीज़।" शब्दावली देखें।

16:23 *शा., "मेरे पीछे जा।" **16:24** *शब्दावली देखें।

17 छः दिन बाद यीशु ने पतरस,
याकूब और उसके भाई यूहन्ना
को अपने साथ लिया। वह उनको एक
ऊँचे पहाड़ पर ले गया, जहाँ उनके सिवा
कोई नहीं था।[1] 2 उनके सामने यीशु
का रूप बदल गया। उसका चेहरा सूरज
की तरह दमक उठा और उसके कपड़े
रौशनी की तरह चमकने लगे।[2]
3 तभी अचानक उन्हें वहाँ मूसा और
एलियाह दिखायी दिए, जो यीशु से बात
कर रहे थे। 4 तब पतरस ने यीशु से
कहा, "प्रभु, हम बहुत खुश हैं कि
हम यहाँ आए। अगर तू चाहे तो मैं
यहाँ तीन तंबू खड़े करता हूँ, एक तेरे
लिए, एक मूसा के लिए और एक एलि-
याह के लिए।" 5 वह बोल ही रहा
था कि तभी एक उजला बादल उन पर
छा गया और देखो! उस बादल में से
यह आवाज़ आयी, "यह मेरा प्यारा
बेटा है जिसे मैंने मंज़ूर किया है।[3] इसकी
सुनो।"[4] 6 यह सुनते ही चेले औंधे मुँह
गिर पड़े और बहुत डर गए। 7 तब
यीशु उनके नज़दीक आया और उन्हें
छूकर कहा, "उठो, डरो मत।" 8 जब
उन्होंने नज़रें उठायीं तो देखा कि वहाँ
यीशु के सिवा कोई नहीं था। 9 इसके
बाद जब वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे, तो
यीशु ने उन्हें हुक्म दिया, "जब तक इंसान
के बेटे को मरे हुओं में से ज़िंदा न किया
जाए, तब तक इस दर्शन के बारे में किसी
को मत बताना।"[5]

10 मगर चेलों ने उससे पूछा,
"तो फिर, शास्त्री क्यों कहते हैं कि
पहले एलियाह का आना ज़रूरी है?"[6]
11 जवाब में उसने कहा, "एलियाह
वाकई आ रहा है और वह सबकुछ पहले
जैसा कर देगा।[7] 12 बल्कि मैं तुमसे
कहता हूँ कि एलियाह आ चुका है
और उन्होंने उसे नहीं पहचाना, मगर
उसके साथ वह सब किया जो वे करना
चाहते थे।[1] इसी तरह, इंसान का बेटा
भी उनके हाथों दुख झेलेगा।"[2] 13 तब
चेले समझ गए कि वह उनसे यूहन्ना बप-
तिस्मा देनेवाले के बारे में बात कर
रहा है।

14 जब वे भीड़ की तरफ आए,[3] तो
एक आदमी यीशु के पास आया और
उसके सामने घुटने टेककर कहने लगा,
15 "प्रभु, मेरे बेटे पर दया कर क्योंकि
इसे मिरगी आती है और इसकी हालत
बहुत खराब है। यह कभी आग में गिर
जाता है, तो कभी पानी में।[4] 16 मैं इसे
तेरे चेलों के पास लाया था मगर वे इसे
ठीक नहीं कर सके।" 17 तब यीशु ने
कहा, "हे अविश्वासी और टेढ़े लोगो,*[5]
मैं और कब तक तुम्हारे साथ रहूँ? कब
तक तुम्हारी सहूँ? उसे यहाँ मेरे पास
लाओ।" 18 तब यीशु ने उस लड़के में
समाए दुष्ट स्वर्गदूत को फटकारा और
वह उसमें से निकल गया। उसी पल
लड़का ठीक हो गया।[6] 19 इसके बाद
चेले अकेले में यीशु के पास आए और
उन्होंने कहा, "हम उस दुष्ट स्वर्गदूत
को क्यों नहीं निकाल पाए?" 20 उसने
कहा, "अपने विश्वास की कमी की वजह
से। मैं तुमसे सच कहता हूँ, अगर तुम्हारे
अंदर राई के दाने के बराबर भी विश्वास
है, तो तुम इस पहाड़ से कहोगे, 'यहाँ
से हटकर वहाँ चला जा' और वह चला
जाएगा और तुम्हारे लिए कुछ भी नामुम-
किन नहीं होगा।"[7] 21 *—

22 जब यीशु और उसके चेले गलील
में एक-साथ थे, तो उसने उनसे कहा,
"इंसान के बेटे के साथ विश्वासघात

अध्य. 17
1 मर 9:2-8, लूक 9:28-36
2 प्रक 1:13, 16
3 भज 2:7, यश 42:1, मत 3:17, 2पत 1:17, 18
4 व्य 18:15, मर 9:7, लूक 9:35, प्रेष 3:22, 23, इब्र 2:3
5 मत 16:20, मर 9:9
6 मर 9:11
7 यश 40:3, मला 4:5, 6, मत 11:13, 14, मर 9:12, लूक 1:17

दूसरा कॉल.
1 मर 9:13
2 मत 16:21, लूक 23:24, 25
3 लूक 9:37
4 मर 9:17-29, लूक 9:38-42
5 व्य 32:5, 20
6 मत 8:13, मत 9:22, मत 15:28, यूह 4:51, 52
7 मत 21:21, मर 11:23, लूक 17:6

17:17 *शा., "टेढ़ी पीढ़ी।" **17:21** *अति. क3 देखें।

किया जाएगा और उसे लोगों के हवाले
कर दिया जाएगा।[1] 23 वे उसे मार
डालेंगे और उसे तीसरे दिन ज़िंदा किया
जाएगा।"[2] यह सुनकर वे बहुत दुखी
हो गए।

24 जब वे कफरनहूम पहुँचे, तो पत-
रस के पास वे लोग आए जो मंदिर
का कर* वसूला करते थे। उन्होंने पत-
रस से कहा, "क्या तुम्हारा गुरु मंदिर का
कर नहीं देता?"[3] 25 उसने कहा, "हाँ,
देता है।" मगर जब वह घर के अंदर
गया, तो यीशु ने उसके बोलने से पहले
ही उससे पूछा, "शमौन, तू क्या सोचता
है? दुनिया के राजा महसूल या कर
किससे लेते हैं? अपने बेटों से या परायों
से?" 26 जब उसने कहा, "परायों से,"
तो यीशु ने उससे कहा, "इसका मतलब
है कि बेटों को कर देने की ज़रू-
रत नहीं है। 27 लेकिन ऐसा न हो कि
हमारी वजह से वे ठोकर खाएँ,[4] इसलिए
तू झील के किनारे जा और मछली पकड़-
ने के लिए काँटा डाल। जो पहली
मछली पकड़ में आए उसे लेना और
उसका मुँह खोलना, तुझे उसमें चाँदी का
एक सिक्का* मिलेगा। उसे ले जाकर
अपने और मेरे लिए कर-वसूलनेवालों को
दे देना।"

18 उस वक्त चेलों ने यीशु के
पास आकर उससे पूछा, "स्वर्ग
के राज में कौन सबसे बड़ा होगा?"[5]
2 तब यीशु ने एक छोटे बच्चे को अपने
पास बुलाकर उनके बीच खड़ा किया
3 और कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ,
जब तक कि तुम खुद को बदलकर*
वैसे न बनो जैसे छोटे बच्चे होते हैं,[1] तब
तक तुम स्वर्ग के राज में हरगिज़ दाखिल
न हो सकोगे।[2] 4 इसलिए जो कोई इस
छोटे बच्चे की तरह खुद को नम्र करेगा,
वही स्वर्ग के राज में सबसे बड़ा होगा।[3]
5 जो कोई मेरे नाम से ऐसे एक भी बच्चे
को स्वीकार करता है, वह मुझे स्वीकार
करता है। 6 मगर जो कोई मुझ पर
विश्वास करनेवाले इन छोटों में से किसी
को ठोकर खिलाता है,* उसके लिए यही
अच्छा है कि उसके गले में चक्की का
वह पाट लटकाया जाए जिसे गधा घुमाता
है और उसे गहरे समुंदर में डुबा दिया
जाए।[4]

7 इस दुनिया का बहुत बुरा हाल
होगा, क्योंकि यह विश्वास की राह में
बाधाएँ* डालती है! बेशक, राह में बाधाएँ
ज़रूर आएँगी, मगर उस इंसान के साथ
बहुत बुरा होगा जो विश्वास की राह में
बाधा बनता है! 8 इसलिए अगर तेरा
हाथ या पैर तुझसे पाप करवाता है*
तो उसे काटकर दूर फेंक दे।[5] अच्छा यही
होगा कि तू एक हाथ या पैर के बिना
जीवन पाए, बजाय इसके कि तू दोनों
हाथों या पैरों समेत हमेशा जलनेवाली
आग से नाश किया जाए।[6] 9 अगर
तेरी आँख तुझसे पाप करवाती है तो
उसे नोंचकर निकाल दे और दूर फेंक
दे। अच्छा यही होगा कि तू एक आँख
के बिना जीवन पाए, बजाय इसके कि
तू दोनों आँखों समेत गेहन्ना* की आग
में फेंक दिया जाए।[7] 10 ध्यान रहे कि

अध्य. 17
1 मत 20:18, लूक 9:44, 45
2 मत 16:21, मर 9:31
3 निर्ग 30:13, 14
4 1कुर 10:32, 2कुर 6:3

अध्य. 18
5 मर 9:33-37, लूक 9:46-48, लूक 22:24

दूसरा कॉल.
1 मत 19:14, 1पत 2:2
2 लूक 18:17
3 नीत 15:33, मत 20:26, मत 23:12, लूक 9:48, लूक 14:11, लूक 22:26, याकू 4:10, 1पत 5:5
4 मर 9:42, लूक 17:1, 2
5 कुल 3:5
6 मत 25:41, मर 9:43-48
7 मत 5:22, मत 5:29, मर 9:47, रोम 8:13

17:24 *शा., "दो-द्राख्मा का एक सिक्का।" अति. ख14 देखें। **17:27** *शा., "स्ताटेर सिक्का," जो चार-द्राख्मा के बराबर माना जाता था। अति. ख14 देखें।

18:3 *शा., "तुम न पलटो।" **18:6** *यानी कुछ ऐसा करता है कि दूसरा आदमी विश्वास करना छोड़ देता है। **18:7** *या "ठोकर के पत्थर।" **18:8** *या "तुझे ठोकर खिलाता है।" **18:9** *शब्दावली देखें।

तुम इन छोटों में से किसी को भी तुच्छ न समझो। मैं तुमसे कहता हूँ कि इनके स्वर्गदूत हमेशा स्वर्ग में मेरे पिता के सामने मौजूद रहते हैं।[1] **11** *—

12 तुम क्या सोचते हो? अगर किसी आदमी की 100 भेड़ें हों और उनमें से एक भटक जाए,[2] तो क्या वह बाकी 99 को पहाड़ों पर छोड़कर उस एक भटकी हुई भेड़ को ढूँढ़ने नहीं जाएगा?[3] **13** और अगर वह उसे मिल जाती है, तो मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वह अपनी 99 भेड़ों से ज़्यादा, जो भटकी नहीं थीं, इस एक भेड़ के लिए खुशियाँ मनाएगा। **14** इसी तरह मेरा* पिता जो स्वर्ग में है, नहीं चाहता कि इन छोटों में से एक भी नाश हो।[4]

15 अगर तेरा भाई कोई पाप करता है, तो जा और उससे अकेले में बात कर और उसकी गलती उसे बता।*[5] अगर वह तेरी सुने, तो तूने अपने भाई को पा लिया है।[6] **16** लेकिन अगर वह तेरी नहीं सुनता, तो अपने साथ एक या दो लोगों को ले जाकर उससे बात कर ताकि हर मामले की सच्चाई दो या तीन गवाहों के बयान* से साबित हो।[7] **17** अगर वह उनकी नहीं सुनता, तो मंडली को बता। और अगर वह मंडली की भी नहीं सुनता, तो वह तेरे लिए गैर-यहूदी[8] या कर-वसूलनेवाले जैसा ठहरे।[9]

18 मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कुछ तुम धरती पर बाँधोगे, वह पहले ही स्वर्ग में बँधा होगा और जो कुछ तुम धरती पर खोलोगे, वह पहले ही स्वर्ग में खुला होगा। **19** मैं फिर तुमसे सच कहता हूँ, अगर तुममें से दो लोग धरती पर किसी ज़रूरी बात के लिए एक मन होकर बिनती करें, तो स्वर्ग में रहनेवाला मेरा पिता उनके लिए उसे पूरा कर देगा।[1] **20** इसलिए कि जहाँ दो या तीन जन मेरे नाम से इकट्ठा होते हैं,[2] वहाँ मैं उनके बीच मौजूद रहता हूँ।"

21 इसके बाद पतरस ने आकर यीशु से पूछा, "प्रभु, अगर मेरा भाई मेरे खिलाफ पाप करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे माफ करूँ? सात बार?" **22** यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझसे कहता हूँ कि सात बार नहीं बल्कि 77 बार।[3]

23 इसीलिए स्वर्ग के राज की तुलना एक ऐसे राजा से की जा सकती है, जो अपने दासों से कहता है कि वे अपना-अपना कर्ज़ चुकाएँ। **24** जब उसने हिसाब लेना शुरू किया, तो उसके सामने एक ऐसे दास को लाया गया जिस पर छः करोड़ दीनार* का कर्ज़ था। **25** मगर उसके पास कर्ज़ चुकाने के लिए कुछ नहीं था, इसलिए उसके मालिक ने हुक्म दिया कि उस दास को, उसके बीवी-बच्चों को और जो कुछ उसका है, सब बेच-कर कर्ज़ चुकाया जाए।[4] **26** तब वह दास उसके सामने गिरकर* गिड़गिड़ाने लगा, 'मुझे थोड़ी और मोहलत दे और मैं तेरी पाई-पाई चुका दूँगा।' **27** यह देखकर मालिक का दिल तड़प उठा और उसने उस दास को छोड़ दिया और उसका सारा कर्ज़ माफ कर दिया।[5] **28** लेकिन वही दास बाहर निकला और उसने अपने एक संगी दास को ढूँढ़ा, जिसने उससे 100 दीनार* उधार लिए थे। वह उसे पकड़कर उसका गला दबाने लगा और कहने लगा, 'तूने जो उधार

18:11 *अति. क3 देखें। **18:14** *या शायद, "तुम्हारा।" **18:15** *शा., "उसे सुधार।" **18:16** *शा., "मुँह।"

18:24 *या "चाँदी के 10,000 तोड़े।" अति. ख14 देखें। **18:26** *या "दंडवत करके।" **18:28** *अति. ख14 देखें।

अध्य. 18

1 लूक 1:19
इब्र 1:7, 14

2 1पत 2:25

3 लूक 15:3-7

4 2पत 3:9

5 लैव 19:17
नीत 25:8, 9
लूक 17:3

6 याकू 5:20

7 व्य 19:15
2कुर 13:1
1ती 5:19

8 यूह 18:28
प्रेष 10:28
प्रेष 11:2, 3

9 रोम 16:17
1कुर 5:11

दूसरा कॉल.

1 मर 11:24
यूह 14:13
यूह 16:23, 24
1यूह 3:22
1यूह 5:14

2 1कुर 5:4, 5

3 मत 6:12
मर 11:25
लूक 17:4
इफ 4:32
कुल 3:13

4 निर्ग 21:7
लैव 25:39
2रा 4:1
नहे 5:8

5 1यूह 1:9

लिया है वह वापस कर।’ 29 तब उसका संगी दास उसके पैर पड़ने लगा और बिनती करने लगा, ‘मुझे थोड़ी और मोहलत दे और मैं तेरा उधार चुका दूँगा।’ 30 मगर उसने उसकी एक न सुनी और जाकर उसे तब तक के लिए जेल में डलवा दिया, जब तक कि वह अपना उधार न चुका दे। 31 जब उसके संगी दासों ने यह सब देखा, तो वे बहुत दुखी हुए और उन्होंने जाकर अपने मालिक को सारी बात बता दी। 32 तब मालिक ने उस पहले दास को बुलवाया और उससे कहा, ‘अरे दुष्ट, जब तू मेरे सामने गिड़गिड़ाया था, तब मैंने तेरा सारा कर्ज़ माफ कर दिया था। 33 तो क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया नहीं करनी थी, जैसे मैंने तुझ पर दया की थी?’[1] 34 मालिक का गुस्सा भड़क उठा और उसने उस दास को तब तक के लिए जेलरों के हवाले कर दिया, जब तक कि वह उसकी पाई-पाई न चुका दे। 35 अगर तुममें से हरेक अपने भाई को दिल से माफ नहीं करेगा, तो स्वर्ग में रहनेवाला मेरा पिता भी तुम्हारे साथ इसी तरह पेश आएगा।”[2]

19 जब यीशु ये बातें कह चुका, तो वह गलील से निकल पड़ा और यरदन के पार यहूदिया की सरहदों के पास आया।[3] 2 भीड़-की-भीड़ उसके पीछे आ गयी और उसने वहाँ लोगों को ठीक किया।

3 तब फरीसी यीशु की परीक्षा लेने के लिए उसके पास आए। उन्होंने उससे पूछा, “क्या कानून के हिसाब से यह सही है कि एक आदमी अपनी पत्नी को किसी भी वजह से तलाक दे सकता है?”[4] 4 यीशु ने उन्हें जवाब दिया, “क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जिसने उनकी सृष्टि की थी, उसने शुरूआत से ही उन्हें नर और नारी बनाया था[1] 5 और कहा था, ‘इस वजह से आदमी अपने माता-पिता को छोड़ देगा और अपनी पत्नी से जुड़ा रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे’?[2] 6 तो वे अब दो नहीं रहे बल्कि एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने एक बंधन में बाँधा है,* उसे कोई इंसान अलग न करे।”[3] 7 तब फरीसियों ने उससे कहा, “तो फिर मूसा ने यह क्यों कहा कि एक आदमी तलाकनामा लिखकर अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है?”[4] 8 यीशु ने उनसे कहा, “मूसा ने तुम्हारे दिलों की कठोरता की वजह से तुम्हें अपनी पत्नियों को तलाक देने की इजाज़त दी,[5] मगर शुरूआत से ऐसा नहीं था।[6] 9 मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई नाजायज़ यौन-संबंध* के अलावा किसी और वजह से अपनी पत्नी को तलाक देता है और किसी दूसरी से शादी करता है, वह व्यभिचार# करने का दोषी है।”[7]

10 चेलों ने उससे कहा, “अगर एक पति का अपनी पत्नी के साथ ऐसा रिश्ता है, तो शादी न करना ही अच्छा है।” 11 उसने उनसे कहा, “मैं जो कह रहा हूँ उसे हर कोई नहीं कर सकता, सिर्फ वे कर सकते हैं जिनके पास यह तोहफा है।[8] 12 क्योंकि कुछ लोग ऐसे हैं जो जन्म से नपुंसक हैं। कुछ ऐसे हैं जिन्हें लोगों ने नपुंसक बना दिया है और कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज के लिए खुद को नपुंसक बना लिया है। जो कोई राज के लिए अविवाहित रह सकता है, वह रहे।”[9]

19:6 *शा., “एक जुए में जोड़ा है।”
19:9 *यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें। #शब्दावली देखें।

अध्य. 18
1 यश 55:7; मत 6:12; मत 7:12; याकू 2:13
2 मत 6:14; मर 11:25; लूक 17:3; रोम 2:6; इफ 4:32

अध्य. 19
3 मर 10:1
4 व्य 24:1; मर 10:2-12

दूसरा कॉल.
1 उत 1:27; उत 5:2
2 उत 2:24; इफ 5:31
3 मर 10:9; 1कुर 7:11
4 व्य 24:1; मत 5:31
5 मर 10:5
6 उत 2:24
7 मला 2:14; मत 5:32; मर 10:11, 12; लूक 16:18; रोम 7:3; 1कुर 7:10; इब्र 13:4
8 1कुर 7:7
9 1कुर 7:32, 38; 1कुर 9:5

13 फिर लोग छोटे बच्चों को यीशु के
पास लाए ताकि वह उन पर हाथ रखे
और उनके लिए प्रार्थना करे। मगर चेलों
ने उन्हें डाँटा।[1] 14 लेकिन यीशु ने
कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें
रोकने की कोशिश मत करो, क्योंकि स्वर्ग
का राज ऐसों ही का है।”[2] 15 और
उसने उन पर हाथ रखे, फिर वह वहाँ से
चला गया।

16 और देखो! एक आदमी उसके
पास आया और कहने लगा, “गुरु,
हमेशा की ज़िंदगी पाने के लिए मैं कौन-
सा अच्छा काम करूँ?”[3] 17 यीशु ने
उससे कहा, “तू मुझसे क्यों पूछता है
कि अच्छा काम क्या है? सिर्फ एक
ही है जो अच्छा है।[4] लेकिन अगर
तू ज़िंदगी पाना चाहता है, तो आज्ञाएँ
मानता रह।”[5] 18 उस आदमी ने पूछा,
“कौन-सी आज्ञाएँ?” यीशु ने कहा, “यही
कि तुम खून न करना,[6] तुम व्यभि-
चार न करना,[7] तुम चोरी न करना,[8] तुम
झूठी गवाही न देना,[9] 19 अपने पिता
और अपनी माँ का आदर करना[10] और
अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार करना जैसे
तुम खुद से करते हो।”[11] 20 उस नौ-
जवान ने यीशु से कहा, “मैं ये सारी
बातें मानता आया हूँ। बता कि मुझमें
और क्या कमी है?” 21 यीशु ने उससे
कहा, “अगर तू चाहता है कि तुझमें कोई
कमी न हो,* तो जा और अपना सब-
कुछ बेचकर कंगालों को दे दे, क्योंकि
तुझे स्वर्ग में खज़ाना मिलेगा[12] और
आकर मेरा चेला बन जा।”[13] 22 जब
उस नौजवान ने यह बात सुनी, तो
वह दुखी होकर चला गया क्योंकि उसके
पास बहुत धन-संपत्ति थी।[14] 23 तब
यीशु ने अपने चेलों से कहा, “मैं तुमसे
सच कहता हूँ कि एक अमीर आदमी
के लिए स्वर्ग के राज में दाखिल होना
बहुत मुश्किल होगा।[1] 24 मैं तुमसे
फिर कहता हूँ, परमेश्वर के राज में एक
अमीर आदमी के दाखिल होने से, एक
ऊँट का सुई के छेद से निकल जाना ज़्यादा
आसान है।”[2]

25 यह सुनकर चेलों को बड़ा
ताज्जुब हुआ और वे कहने लगे, “तो
भला कौन उद्धार पा सकता है?”[3]
26 यीशु ने सीधे उनकी तरफ देखकर
कहा, “इंसानों के लिए यह नामुमकिन है
मगर परमेश्वर के लिए सबकुछ मुम-
किन है।”[4]

27 तब पतरस ने उससे कहा, “देख!
हम तो सबकुछ छोड़कर तेरे पीछे चल
रहे हैं, हमें क्या मिलेगा?”[5] 28 यीशु ने
उनसे कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ कि
जब सबकुछ नया बनाया जाएगा* और
इंसान का बेटा अपनी महिमा की राज-
गद्दी पर बैठेगा, तब तुम भी जो मेरे
पीछे हो लिए हो, 12 राजगद्दियों पर
बैठकर इसराएल के 12 गोत्रों का न्याय
करोगे।[6] 29 और जिस किसी ने मेरे
नाम की खातिर घरों या भाइयों या बहनों
या पिता या माँ या बच्चों को छोड़ दिया
है या ज़मीनें छोड़ दी हैं, वह इसका 100
गुना पाएगा और हमेशा की ज़िंदगी का
वारिस होगा।[7]

30 फिर भी बहुत-से जो पहले हैं वे
आखिरी होंगे और जो आखिरी हैं वे पहले
होंगे।[8]

20 इसलिए कि स्वर्ग का राज उस
मालिक जैसा है, जिसका अंगूरों
का बाग था। वह तड़के सुबह बाहर
निकला कि अपने बाग में दिहाड़ी पर

अध्य. 19

1 मर 10:13-16; लूक 18:15-17
2 मत 18:3; मर 10:14; लूक 18:16
3 मर 10:17-22; लूक 18:18-23
4 मर 10:18
5 लैव 18:5; लूक 10:25-28
6 निर्ग 20:13; व्य 5:17
7 निर्ग 20:14; व्य 5:18
8 निर्ग 20:15; व्य 5:19
9 निर्ग 20:16; व्य 5:20
10 निर्ग 20:12; व्य 5:16
11 लैव 19:18; मत 22:39; मर 12:31; लूक 10:27; रोम 13:9
12 मत 6:20
13 लूक 12:33; लूक 18:22; फिल 3:7
14 लूक 18:23

दूसरा कॉल.

1 मर 10:23; लूक 18:24; 1ती 6:10
2 मर 10:25; लूक 18:25
3 मर 10:26, 27; लूक 18:26, 27
4 अय 42:2
5 मर 10:28; लूक 5:11; लूक 18:28; फिल 3:8
6 दान 7:14; मत 20:21; लूक 22:28-30; 1कुर 6:2; प्रक 20:4
7 मर 10:29, 30; लूक 18:29, 30; इब्र 10:34
8 मत 20:16; मर 10:31; लूक 13:30

19:21 * या “तू परिपूर्ण हो।”

19:28 * या “नयी सृष्टि की जाएगी।”

काम करनेवाले मज़दूर लगाए।[1] 2 वह मज़दूरों को दिन-भर की मज़दूरी के लिए एक दीनार* देने को राज़ी हुआ और उसने उन्हें अपने बाग में भेज दिया। 3 फिर वह तीसरे घंटे* के करीब बाहर निकला और उसने देखा कि बाज़ार के चौक में कुछ मज़दूर खड़े हैं जिन्हें कोई काम नहीं मिला। 4 बाग के मालिक ने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे बाग में जाओ और जो ठीक होगा, वह मैं तुम्हें दूँगा।' 5 तब वे बाग में गए। वह फिर छठे* और नौवें घंटे# के करीब बाहर निकला और उसने ऐसा ही किया। 6 आखिर में, वह 11वें घंटे* के करीब बाहर निकला और कई और मज़दूरों को खड़े देखा। तब बाग के मालिक ने उनसे पूछा, 'तुम दिन-भर यहाँ बेकार क्यों खड़े रहे?' 7 उन्होंने कहा, 'हमें किसी ने काम नहीं दिया।' तब उसने कहा, 'तुम भी मेरे बाग में जाओ।'

8 जब शाम हुई, तो बाग के मालिक ने काम की देखरेख करनेवाले आदमी से कहा, 'मज़दूरों को बुला और उनकी मज़दूरी दे।[2] जो आखिर में आए थे उनसे शुरू करते हुए, सबसे पहले आए मज़दूरों तक सबको दे।' 9 जब 11वें घंटे में काम पर लगनेवाले आदमी आए, तो उनमें से हरेक को एक दीनार* मिला। 10 जब सबसे पहले आनेवालों की बारी आयी, तो उन्होंने सोचा कि उन्हें ज़्यादा मज़दूरी मिलेगी। मगर उन्हें भी एक दीनार* दिया गया। 11 एक दीनार मिलने पर वे उस मालिक पर कुड़कुड़ाने लगे, 12 'ये जो आखिर में आए थे, इन्होंने बस एक ही घंटा काम किया, फिर भी तूने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जबकि हमने सारा दिन मेहनत की और तपती धूप सही!' 13 मगर मालिक ने उनमें से एक को जवाब दिया, 'देख भई, मैं तेरे साथ कोई नाइंसाफी नहीं कर रहा। क्या तू मेरे यहाँ एक दीनार* पर काम करने के लिए राज़ी नहीं हुआ था?[1] 14 इसलिए जो तेरा है वह ले और चला जा। जितना मैंने तुझे दिया है, उतना ही मैं आखिर में आनेवाले इस आदमी को देना चाहता हूँ। 15 क्या मुझे अधिकार नहीं कि अपने पैसे के साथ जो चाहे वह करूँ? या मैंने जो भलाई* की है उसे देखकर तुझे जलन हो रही है?'#[2] 16 इस तरह, जो आखिरी हैं वे पहले होंगे और जो पहले हैं वे आखिरी।"[3]

17 जब वे सब यरूशलेम जा रहे थे, तो रास्ते में यीशु ने अपने 12 चेलों को अलग ले जाकर उनसे कहा,[4] 18 "देखो! हम यरूशलेम जा रहे हैं और इंसान का बेटा प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हवाले किया जाएगा। वे उसे मौत की सज़ा सुनाएँगे[5] 19 और गैर-यहूदियों के हवाले कर देंगे कि वे उसका मज़ाक उड़ाएँ, उसे कोड़े लगाएँ और काठ पर लटकाकर मार डालें।[6] फिर तीसरे दिन उसे ज़िंदा कर दिया जाएगा।"[7]

20 इसके बाद, जब्दी की पत्नी अपने दो बेटों[8] के साथ यीशु के पास आयी और उसे झुककर प्रणाम* किया। वह उससे कुछ माँगना चाहती थी।[9] 21 यीशु ने उससे कहा, "तू क्या चाहती है?" वह बोली, "मुझसे वादा कर कि तेरे राज में, मेरे ये दोनों बेटे, एक तेरे दाएँ और दूसरा

अध्य. 20
1 मत 21:33
2 लैव 19:13; व्य 24:14, 15

दूसरा कॉल.
1 मत 20:2
2 मत 6:23
3 मत 19:30; मर 10:31; लूक 13:30
4 मर 10:32; लूक 18:31
5 मत 16:21; मर 10:33, 34; लूक 9:22; लूक 18:32, 33
6 मत 27:31; यूह 19:1
7 मत 17:22, 23; मत 28:6; प्रेष 10:40; 1कुर 15:4
8 मत 4:21; मत 27:55, 56
9 मर 10:35-40

20:2, 9, 10, 13 *अति. ख14 देखें। **20:3** *यानी सुबह करीब 9 बजे। **20:5** *यानी दोपहर करीब 12 बजे। #यानी दोपहर करीब 3 बजे। **20:6** *यानी शाम करीब 5 बजे।

20:15 *या "दरियादिली।" #शा., "तेरी आँख दुष्ट है।" **20:20** *या "दंडवत।"

तेरे बाएँ बैठे।"[1] 22 यीशु ने कहा,
"तुम नहीं जानते कि तुम क्या माँग रहे
हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो,
जो मैं पीनेवाला हूँ?"[2] उन्होंने कहा, "हम
पी सकते हैं।" 23 यीशु ने उनसे कहा,
"तुम मेरा प्याला ज़रूर पीओगे,[3] मगर
मेरे दायीं या बायीं तरफ बैठने की इजा-
ज़त देने का अधिकार मेरे पास नहीं।
ये जगह उनके लिए हैं, जिनके लिए मेरे
पिता ने इन्हें तैयार किया है।"[4]

24 जब बाकी दस ने इस बारे में सुना,
तो उन्हें दोनों भाइयों पर बहुत गुस्सा
आया।[5] 25 मगर यीशु ने चेलों को
अपने पास बुलाकर कहा, "तुम जानते
हो कि दुनिया के अधिकारी लोगों पर
हुक्म चलाते हैं और उनके बड़े-बड़े लोग
उन पर अधिकार जताते हैं।[6] 26 मगर
तुम्हारे बीच ऐसा नहीं होना चाहिए,[7]
बल्कि तुममें जो बड़ा बनना चाहता है, उसे
तुम्हारा सेवक होना चाहिए[8] 27 और
जो कोई तुममें पहला होना चाहता है, उसे
तुम्हारा दास होना चाहिए।[9] 28 जैसे
इंसान का बेटा भी सेवा करवाने नहीं,
बल्कि सेवा करने आया है[10] और इसलिए
आया है कि बहुतों की फिरौती के लिए
अपनी जान बदले में दे।"[11]

29 जब वे यरीहो से बाहर जा रहे थे,
तब एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे आने
लगी। 30 और देखो! दो अंधे सड़क के
किनारे बैठे थे। जब उन्होंने सुना कि यीशु
वहाँ से गुज़र रहा है तो वे ज़ोर-ज़ोर से
पुकारने लगे, "हे प्रभु, दाविद के वंशज,
हम पर दया कर!"[12] 31 मगर भीड़ ने
उन्हें डाँटा कि वे चुप हो जाएँ। लेकिन
वे और ज़ोर से चिल्लाने लगे, "हे प्रभु,
दाविद के वंशज, हम पर दया कर!"
32 तब यीशु रुक गया और उसने
उन्हें बुलाकर कहा, "तुम क्या चाहते हो,
मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?" 33 उन्होंने
कहा, "प्रभु, हमारी आँखें ठीक हो जाएँ।"
34 यह देखकर यीशु तड़प उठा और
उसने उनकी आँखों को छुआ।[1] उसी
वक्त उनकी आँखों की रौशनी लौट आयी
और वे उसके पीछे हो लिए।

21 जब वे यरूशलेम के करीब आ
गए और जैतून पहाड़ पर बैत-
फगे गाँव पहुँचे, तब यीशु ने दो चेलों को
यह कहकर भेजा,[2] 2 "जो गाँव तुम्हें
नज़र आ रहा है उसमें जाओ। वहाँ जाते
ही तुम्हें एक गधी और उसका बच्चा बँधा
हुआ मिलेगा। उन्हें खोलकर मेरे पास ले
आओ। 3 और अगर कोई तुमसे कुछ
कहे तो कहना, 'प्रभु को इनकी ज़रूरत
है।' तब वह उन्हें फौरन भेज देगा।"

4 यह इसलिए हुआ ताकि यह वचन
पूरा हो जो भविष्यवक्ता से कहलवाया
गया था: 5 "सिय्योन की बेटी से कहो,
'देख! तेरा राजा तेरे पास आ रहा है,[3]
वह कोमल स्वभाव का है[4] और एक गधे
पर, हाँ, बोझ ढोनेवाली गधी के बच्चे पर
सवार है।'"[5]

6 तब वे चेले निकल पड़े और जैसा
यीशु ने उनसे कहा था, उन्होंने वैसा
ही किया।[6] 7 वे उस गधी और उसके
बच्चे को ले आए और उन्होंने इन पर
अपने ओढ़ने डाले और वह उन पर*
बैठ गया।[7] 8 तब भीड़ में से ज़्यादा-
तर लोगों ने अपने कपड़े रास्ते में बिछाए[8]
जबकि दूसरे लोग पेड़ों से डालियाँ काट-
कर रास्ते में बिछाने लगे। 9 भीड़ के
जो लोग उसके आगे-आगे चल रहे थे
और जो उसके पीछे-पीछे आ रहे थे, वे
पुकार रहे थे, "हम बिनती करते हैं,
दाविद के वंशज को बचा ले![9] धन्य है वह

अध्य. 20
1 मत 19:28
2 मत 26:39
मर 10:38
मर 14:36
यूह 18:11
3 प्रेष 12:2
रोम 8:17
2कुर 1:7
प्रक 1:9
4 मर 10:39, 40
5 मर 10:41-45
लूक 22:24
6 मर 10:42
7 2कुर 1:24
1पत 5:3
8 मत 18:4
मत 23:11
मर 10:43, 44
लूक 22:26
9 मर 9:35
10 लूक 22:27
यूह 13:14
फिल 2:7
11 यश 53:11
मर 10:45
1ती 2:5, 6
तीत 2:13, 14
इब्र 9:28
12 मत 9:27
मर 10:46-52
लूक 18:
35-43

दूसरा कॉल.
1 मत 9:29

अध्य. 21
2 मर 11:1-3
लूक 19:28-31
3 यश 62:11
यूह 12:15
4 मत 11:29
5 जक 9:9
6 मर 11:4-6
लूक 19:32-35
7 1रा 1:38, 40
मर 11:7-11
यूह 12:14, 15
8 लूक 19:
36-38
9 मत 9:27
मत 21:15

21:7 *ज़ाहिर है, ओढ़नों पर।

जो यहोवा* के नाम से आता है![1] स्वर्ग में रहनेवाले, हम बिनती करते हैं, इसे बचा ले!"[2]

10 जब वह यरूशलेम पहुँचा, तो पूरे शहर में तहलका मच गया और सब कहने लगे, "यह कौन है?" **11** भीड़ के लोग कहते रहे, "यह भविष्यवक्ता यीशु है,[3] गलील के नासरत का रहनेवाला!"

12 फिर यीशु मंदिर में गया और जो लोग मंदिर के अंदर बिक्री और खरीदारी कर रहे थे, उन सबको उसने खदेड़ दिया और पैसा बदलनेवाले सौदागरों की मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों की चौकियाँ उलट दीं।[4] **13** और उसने उनसे कहा, "लिखा है, 'मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा,'[5] मगर तुम इसे लुटेरों का अड्डा* बना रहे हो।"[6] **14** फिर मंदिर में उसके पास अंधे और लँगड़े आए और उसने उन्हें ठीक किया।

15 जब प्रधान याजकों और शास्त्रियों ने उसे आश्चर्य के काम करते देखा और मंदिर में लड़कों को यह पुकारते सुना, "हम बिनती करते हैं, दाविद के वंशज को बचा ले!"[7] तो उन्हें बहुत गुस्सा आया।[8] **16** उन्होंने उससे कहा, "क्या तू सुन रहा है, ये क्या कह रहे हैं?" यीशु ने उनसे कहा, "हाँ, क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा, 'नन्हे-मुन्नों और दूध-पीते बच्चों के मुँह से तूने तारीफ करवायी है'?"[9] **17** और वह उन्हें छोड़कर यरूशलेम से बाहर बैतनियाह चला गया और उसने वहीं रात बितायी।[10]

18 तड़के सुबह जब वह यरूशलेम की तरफ लौट रहा था तो उसे भूख लगी।[11] **19** और रास्ते के किनारे जब एक अंजीर के पेड़ पर उसकी नज़र पड़ी तो वह उसके पास गया, मगर पत्तियों को छोड़ उसमें कुछ नहीं पाया।[1] तब उसने पेड़ से कहा, "अब से फिर कभी तुझमें फल न लगें।"[2] और अंजीर का वह पेड़ उसी घड़ी सूख गया। **20** जब चेलों ने इसे देखा, तो वे ताज्जुब करते हुए कहने लगे, "यह अंजीर का पेड़ फौरन कैसे सूख गया?"[3] **21** यीशु ने कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, अगर तुममें विश्वास हो और तुम शक न करो, तो तुम न सिर्फ वह करोगे जो मैंने इस अंजीर के पेड़ के साथ किया, बल्कि अगर तुम इस पहाड़ से कहोगे, 'यहाँ से उखड़कर समुंदर में जा गिर,' तो ऐसा हो जाएगा।[4] **22** और तुम विश्वास के साथ प्रार्थना में जो कुछ माँगोगे, वह तुम्हें मिल जाएगा।"[5]

23 जब वह मंदिर में जाकर सिखा रहा था, तब प्रधान याजक और लोगों के मुखिया उसके पास आए और उन्होंने कहा, "तू ये सब किस अधिकार से करता है? और किसने तुझे यह अधिकार दिया है?"[6] **24** यीशु ने उनसे कहा, "मैं भी तुमसे एक बात पूछता हूँ। अगर तुम उसका जवाब दोगे, तो मैं भी तुम्हें बताऊँगा कि मैं ये सब किस अधिकार से करता हूँ: **25** जो बपतिस्मा यूहन्ना ने दिया, वह किसकी तरफ से था? स्वर्ग की तरफ से या इंसानों की तरफ से?" वे एक-दूसरे से कहने लगे, "अगर हम कहें, 'स्वर्ग की तरफ से,' तो वह हमसे कहेगा, 'फिर क्यों तुमने उसका यकीन नहीं किया?'[7] **26** लेकिन अगर हम कहें, 'इंसानों की तरफ से,' तो पता नहीं यह भीड़ हमारे साथ क्या करेगी, क्योंकि ये सब यूहन्ना को एक भविष्यवक्ता मानते हैं।" **27** इसलिए उन्होंने यीशु को जवाब दिया, "हम नहीं जानते।" तब उसने कहा, "तो मैं भी तुम्हें

अध्य. 21
1 भज 118:25, 26; यूह 12:13
2 मर 11:9, 10
3 मत 21:46; लूक 7:16; लूक 24:19
4 मर 11:15, 16; लूक 19:45; यूह 2:15
5 यश 56:7
6 यिर्म 7:11; मर 11:17; लूक 19:46; यूह 2:16
7 मत 21:9
8 मर 11:18; लूक 19:39, 40
9 भज 8:2
10 मर 11:11; लूक 21:37; यूह 11:1
11 मर 11:12

दूसरा कॉल.
1 लूक 13:6
2 मत 3:10; मर 11:13, 14
3 मर 11:20, 21
4 मत 17:20; मर 11:22, 23; लूक 17:6
5 मर 11:24; लूक 11:9; यूह 14:13; याकू 1:5; 1यूह 3:22
6 मर 11:27-33; लूक 20:1-8
7 मत 21:32; मर 11:30, 31; लूक 7:29, 30

21:9 *अति. क5 देखें। **21:13** *शा., "की गुफा।"

नहीं बताऊँगा कि मैं किस अधिकार से
यह सब करता हूँ।

28 तुम क्या सोचते हो? एक आदमी
के दो बेटे थे। उसने पहले के पास जाकर
कहा, 'बेटा जा, आज अंगूरों के बाग में
काम कर।' 29 तब उस लड़के ने कहा,
'मैं नहीं जाऊँगा,' मगर बाद में उसे पछ-
तावा हुआ और वह गया। 30 फिर
दूसरे बेटे के पास जाकर पिता ने वही बात
कही। बेटे ने पिता से कहा, 'ठीक है, मैं
जाऊँगा।' मगर वह नहीं गया। 31 इन
दोनों में से किसने अपने पिता की मरज़ी
पूरी की?" उन्होंने कहा, "पहले ने।"
यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता
हूँ कि कर-वसूलनेवाले और वेश्याएँ
तुमसे पहले परमेश्वर के राज में जा रहे
हैं। 32 क्योंकि यूहन्ना नेकी की राह
दिखाता हुआ तुम्हारे पास आया, फिर भी
तुमने उस पर यकीन नहीं किया। लेकिन
कर-वसूलनेवालों और वेश्याओं ने उस
पर यकीन किया।[1] और यह सब देखने
के बाद भी तुम्हें पछतावा नहीं हुआ और
तुमने उस पर यकीन नहीं किया।

33 एक और मिसाल सुनोः एक ज़मीं-
दार ने अंगूरों का एक बाग लगाया[2]
और उसके चारों तरफ बाड़ा बाँधा। उसने
बाग में अंगूर रौंदने का हौद खोदा और
एक मीनार खड़ी की।[3] फिर उसे बाग-
बानों को ठेके पर देकर वह परदेस चला
गया।[4] 34 कटाई का मौसम आने पर
उसने अपने दासों को बागबानों के पास
भेजा कि वे फसल में से उसका हिस्सा
ले आएँ। 35 मगर बागबानों ने उसके
दासों को पकड़ लिया और एक को उन्होंने
पीटा, दूसरे का खून कर दिया और तीसरे
को पत्थरों से मार डाला।[5] 36 मालिक
ने कुछ और दासों को भेजा, जो गिनती
में पहले से ज़्यादा थे। लेकिन बागबानों
ने इनके साथ भी वैसा ही सलूक किया।[1]
37 आखिर में उसने अपने बेटे को यह
सोचकर उनके पास भेजा, 'वे मेरे बेटे की
ज़रूर इज़्ज़त करेंगे।' 38 उसके बेटे
को देखकर बागबानों ने आपस में कहा,
'यह तो वारिस है।[2] चलो इसे मार डालें
और इसकी विरासत ले लें!' 39 तब
उन्होंने उसे पकड़ लिया और बाग के
बाहर ले जाकर मार डाला।[3] 40 इस-
लिए जब बाग का मालिक आएगा, तो
वह उन बागबानों के साथ क्या करेगा?"
41 उन्होंने कहा, "वे दुष्ट हैं, इसलिए
वह उनका भयानक तरीके से नाश करेगा
और अपने बाग का ठेका दूसरे बागबानों
को दे देगा, जो कटाई के बाद उसका
हिस्सा उसे दिया करेंगे।"

42 यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुमने
शास्त्र में कभी नहीं पढ़ा, 'जिस पत्थर
को राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया, वही
कोने का मुख्य पत्थर बन गया है।'[4] क्या
तुमने यह भी नहीं पढ़ा, 'यह यहोवा*
की तरफ से हुआ है और हमारी नज़र
में लाजवाब है'?[5] 43 इसलिए मैं तुमसे
कहता हूँ, परमेश्वर का राज तुमसे ले
लिया जाएगा और एक ऐसे राष्ट्र को दे
दिया जाएगा, जो राज के योग्य फल
पैदा करता है। 44 जो कोई इस पत्थर
पर गिरेगा वह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।[6]
और जिस किसी पर यह पत्थर गिरेगा,
उसे यह चूर-चूर कर देगा।"[7]

45 जब प्रधान याजकों और फरी-
सियों ने उसकी मिसालें सुनीं, तो वे समझ
गए कि वह उन्हीं के बारे में बोल रहा है।[8]
46 हालाँकि वे उसे पकड़ना* चाहते थे
मगर भीड़ से डरते थे, क्योंकि लोग यीशु
को एक भविष्यवक्ता मानते थे।[9]

अध्य. 21
1 लूक 3:12; लूक 7:29, 30
2 यश 5:7
3 यश 5:2
4 मर 12:1-9; लूक 20:9-16
5 नहे 9:26

दूसरा कॉल.
1 2इत 36:15; प्रेष 7:52; इब्र 11:32, 37
2 इब्र 1:2
3 प्रेष 2:23; प्रेष 3:15
4 यश 28:16; लूक 20:17; प्रेष 4:11; रोम 9:33; इफ 2:20; 1पत 2:7
5 भज 118:22, 23; मर 12:10, 11
6 यश 8:14; 1पत 2:7, 8
7 लूक 20:18
8 मर 12:12; लूक 20:19
9 मत 21:11; यूह 7:40

21:42 *अति. क5 देखें। **21:46** *या "गिरफ्तार करना।"

22 यीशु ने एक बार फिर उन्हें
मिसालें देकर कहा, **2** “स्वर्ग
का राज एक ऐसे राजा की तरह है,
जिसने अपने बेटे की शादी पर दावत
रखी।[1] **3** उसने अपने दासों को भेज-
कर उन लोगों को बुलाया जिन्हें दावत
का न्यौता दिया गया था। मगर वे नहीं
आना चाहते थे।[2] **4** राजा ने फिर से
कुछ दासों को यह कहकर भेजा, ‘जिन्हें
न्यौता दिया गया है उनसे जाकर कहो,
“देखो! मैं खाना तैयार कर चुका हूँ, मेरे
बैल और मोटे-ताज़े जानवर हलाल किए
जा चुके हैं और सबकुछ तैयार है। शादी
की दावत में आ जाओ।”’ **5** मगर
उन्होंने ज़रा भी परवाह नहीं की और
अपने-अपने रास्ते चल दिए, कोई अपने
खेत की तरफ, तो कोई अपना कारोबार
करने।[3] **6** और बाकियों ने उसके दासों
को पकड़ लिया, उनके साथ बुरा सलूक
किया और उन्हें मार डाला।

7 तब राजा का गुस्सा भड़क उठा
और उसने अपनी सेनाएँ भेजकर उन
हत्यारों को मार डाला और उनके शहर
को जलाकर राख कर दिया।[4] **8** इसके
बाद, उसने अपने दासों से कहा, ‘शादी
की दावत तो तैयार है, मगर जिन्हें बुलाया
गया था वे इसके लायक नहीं थे।[5]
9 इसलिए शहर की बड़ी-बड़ी सड़कों पर
जाओ और वहाँ तुम्हें जो भी मिले, उसे
शादी की दावत के लिए बुला लाओ।’[6]
10 तब वे दास सड़कों पर गए और उन्हें
जितने भी लोग मिले, चाहे अच्छे या बुरे,
वे सबको ले आए। और वह भवन जहाँ
शादी की रस्में होनी थीं, दावत में आए*
लोगों से भर गया।

11 जब राजा मेहमानों का मुआयना
करने अंदर आया, तो उसकी नज़र एक
ऐसे आदमी पर पड़ी जिसने शादी की
पोशाक नहीं पहनी थी। **12** तब उसने
उससे कहा, ‘अरे भई, तू शादी की
पोशाक पहने बिना यहाँ अंदर कैसे आ
गया?’ वह कोई जवाब न दे सका।
13 तब राजा ने अपने सेवकों से कहा,
‘इसके हाथ-पैर बाँधकर इसे बाहर अँधेरे
में फेंक दो, जहाँ यह रोएगा और दाँत
पीसेगा।’

14 इसलिए कि न्यौता तो बहुत लोगों
को मिला है, मगर चुने गए थोड़े हैं।”

15 इसके बाद फरीसी चले गए और
उन्होंने आपस में सलाह की कि किस
तरह यीशु को उसी की बातों में फँसाएँ।[1]
16 इसलिए उन्होंने अपने चेलों को हेरो-
देस के गुट के लोगों के साथ उसके पास
भेजा।[2] उन्होंने यीशु से कहा, “गुरु, हम
जानते हैं कि तू सच्चा है और सच्चाई
से परमेश्वर की राह सिखाता है। तू
इंसानों को खुश करने की कोशिश नहीं
करता, क्योंकि तू किसी की सूरत देख-
कर बात नहीं करता। **17** इसलिए हमें
बता, तू क्या सोचता है, सम्राट* को कर
देना सही है या नहीं?” **18** मगर वह
समझ गया कि उनके इरादे बुरे हैं और
उसने कहा, “अरे कपटियो, तुम मेरी
परीक्षा क्यों लेते हो? **19** मुझे कर का
सिक्का दिखाओ।” तब वे उसके पास
एक दीनार* लाए। **20** यीशु ने उनसे
पूछा, “इस पर किसकी सूरत और
किसके नाम की छाप है?” **21** उन्होंने
कहा, “सम्राट की।” तब उसने कहा,
“इसलिए जो सम्राट का है वह सम्राट को
चुकाओ, मगर जो परमेश्वर का है वह
परमेश्वर को।”[3] **22** यह सुनकर वे
दंग रह गए और उसे छोड़कर चले गए।

अध्य. 22
1 लूक 14:16; प्रक 19:9
2 लूक 14:17, 18
3 लूक 14:18, 19
4 दान 9:26
5 प्रेष 13:45, 46
6 मत 21:43; लूक 14:23

दूसरा कॉल.
1 मर 12:13-17; लूक 20:20-26
2 मर 3:6
3 दान 3:17, 18; मला 3:8; मर 12:17; लूक 20:25; लूक 23:2; रोम 13:7

22:10 *या “मेज़ से टेक लगाए।”

22:17 *यूनानी में “कैसर।” **22:19** *अति. ख14 देखें।

23 उसी दिन सदूकी उसके पास आए, जो कहते हैं कि मरे हुओं के फिर से ज़िंदा होने की शिक्षा सच नहीं है।[1] उन्होंने उससे पूछा,[2] 24 "गुरु, मूसा ने कहा था, 'अगर कोई आदमी बेऔलाद मर जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी से शादी करे और अपने मरे हुए भाई के लिए औलाद पैदा करे।'[3] 25 हमारे यहाँ सात भाई थे। पहले ने शादी की और बेऔलाद मर गया। और अपने भाई के लिए अपनी पत्नी छोड़ गया। 26 ऐसा ही दूसरे और तीसरे के साथ हुआ, यहाँ तक कि सातों के साथ यही हुआ। 27 आखिर में वह औरत भी मर गयी। 28 तो फिर जब मरे हुए ज़िंदा किए जाएँगे, तब वह उन सातों में से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि सातों उसे अपनी पत्नी बना चुके थे।"

29 यीशु ने उनसे कहा, "तुम बड़ी गलतफहमी में हो क्योंकि तुम न तो शास्त्र को जानते हो, न ही परमेश्वर की शक्ति को।[4] 30 क्योंकि जब मरे हुए ज़िंदा किए जाएँगे तो उनमें से न तो कोई आदमी शादी करेगा न कोई औरत, मगर वे स्वर्गदूतों की तरह होंगे।[5] 31 जहाँ तक मरे हुओं के ज़िंदा होने की बात है, क्या तुमने वह बात नहीं पढ़ी जो परमेश्वर ने तुमसे कही थी, 32 'मैं अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ'?[6] वह मरे हुओं का नहीं बल्कि जीवितों का परमेश्वर है।"[7] 33 यह सुनकर भीड़ उसकी शिक्षा से हैरान रह गयी।[8]

34 जब फरीसियों ने सुना कि उसने सदूकियों का मुँह बंद कर दिया है, तो वे झुंड बनाकर उसके पास आए। 35 उनमें से एक ने, जो कानून का अच्छा जानकार था, यीशु को परखने के लिए पूछा, 36 "गुरु, कानून में सबसे बड़ी आज्ञा कौन-सी है?"[1] 37 उसने कहा, "'तुम अपने परमेश्वर यहोवा* से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान# और अपने पूरे दिमाग से प्यार करना।'[2] 38 यही सबसे बड़ी और पहली आज्ञा है। 39 और इसी की तरह यह दूसरी है, 'तुम अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार करना जैसे तुम खुद से करते हो।'[3] 40 इन्हीं दो आज्ञाओं पर पूरा कानून और भविष्यवक्ताओं की शिक्षाएँ आधारित हैं।"[4]

41 जब फरीसी वहीं इकट्ठा थे, तो यीशु ने उनसे पूछा,[5] 42 "तुम मसीह के बारे में क्या सोचते हो? वह किसका वंशज है?" उन्होंने कहा, "दाविद का।"[6] 43 उसने कहा, "तो फिर, क्यों दाविद पवित्र शक्ति से उभारे जाने पर[7] उसे प्रभु पुकारता है और कहता है, 44 'यहोवा* ने मेरे प्रभु से कहा, "तू तब तक मेरे दाएँ हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पैरों तले न कर दूँ"'?[8] 45 इसलिए अगर दाविद उसे प्रभु कहकर पुकारता है, तो वह उसका वंशज कैसे हुआ?"[9] 46 जवाब में कोई उससे एक शब्द भी न कह सका और उस दिन के बाद किसी ने उससे और सवाल पूछने की हिम्मत नहीं की।

23 इसके बाद यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से बात की। उसने कहा, 2 "शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। 3 इसलिए वे जो कुछ तुम्हें बताते हैं वह सब करो और मानो, मगर उनके जैसे काम मत करो, क्योंकि जो वे कहते हैं वह खुद नहीं करते।[10]

अध्य. 22

1 प्रेष 4:1, 2; प्रेष 23:8
2 मर 12:18-23; लूक 20:27-33
3 उत 38:7, 8; व्य 25:5, 6; रूत 1:11; रूत 3:13
4 मर 12:24-27
5 लूक 20:35, 36
6 निर्ग 3:6
7 लूक 20:37, 38; रोम 4:17
8 मत 7:28; मर 11:18

दूसरा कॉल.

1 मर 12:28
2 व्य 6:5; व्य 10:12; यह 22:5; मर 12:30; लूक 10:27
3 लैव 19:18; मर 12:31; लूक 10:27; कुल 3:14; याकू 2:8; 1पत 1:22
4 रोम 13:10; गल 5:14
5 मर 12:35-37; लूक 20:41-44
6 यूह 7:42
7 2शम 23:2
8 भज 110:1; प्रेष 2:34, 35; 1कुर 15:25; इब्र 1:13; इब्र 10:12, 13
9 मर 12:37

अध्य. 23

10 मला 2:7, 8

22:37, 44 *अति. क5 देखें। **22:37** #शब्दावली में "जीवन" देखें।

4 उनके बनाए हुए नियम भारी बोझ जैसे
हैं, जिन्हें वे लोगों के कंधों पर लाद देते
हैं,[1] मगर उसे उठाने के लिए खुद उँगली
तक नहीं लगाना चाहते।[2] 5 वे सारे
काम लोगों को दिखाने के लिए करते हैं।[3]
वे उन डिब्बियों को और भी चौड़ा बनाते
हैं, जिनमें शास्त्र की आयतें लिखी होती
हैं और जिन्हें वे तावीज़ों की तरह पहन-
ते हैं।[4] वे अपने कपड़ों की झालरें और
लंबी करते हैं।[5] 6 उन्हें शाम की दावतों
में सबसे खास जगह लेना और सभा-
घरों में सबसे आगे की* जगहों पर बैठना
पसंद है।[6] 7 उन्हें बाज़ारों में लोगों से
नमस्कार सुनना और गुरु* कहलाना
अच्छा लगता है। 8 मगर तुम गुरु
न कहलाना क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु
है[7] जबकि तुम सब भाई हो। 9 और
धरती पर किसी को अपना 'पिता' न
कहना क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है[8]
जो स्वर्ग में है। 10 न ही तुम 'नेता'
कहलाना क्योंकि तुम्हारा एक ही नेता
या अगुवा है, मसीह। 11 मगर तुम्हारे
बीच जो सबसे बड़ा है, वह तुम्हारा
सेवक बने।[9] 12 जो कोई खुद को बड़ा
बनाता है, उसे छोटा किया जाएगा[10] और
जो कोई खुद को छोटा बनाता है उसे बड़ा
किया जाएगा।[11]

13 अरे कपटी शास्त्रियो और फरी-
सियो, धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम
लोगों के सामने स्वर्ग के राज का दरवाज़ा
बंद कर देते हो। न तो खुद अंदर जाते
हो और न ही उन्हें जाने देते हो जो अंदर
जाना चाहते हैं।[12] 14 *—

15 अरे कपटी शास्त्रियो और फरी-
सियो,[13] धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम
एक आदमी को अपने पंथ में लाने के
लिए* पूरी धरती पर फिरते हो और समुं-
दर तक पार कर जाते हो। और जब वह
तुम्हारे पंथ में आ जाता है, तो तुम उसे
खुद से दुगना गेहन्ना# के लायक बना
देते हो।

16 अरे अंधो, तुम जो दूसरों को राह
दिखाते हो,[1] धिक्कार है तुम पर! तुम
कहते हो, 'अगर कोई मंदिर की कसम
खाए तो कोई बात नहीं। लेकिन अगर
वह मंदिर के सोने की कसम खाए,
तो अपनी कसम पूरी करना उसका फर्ज़
है।'[2] 17 अरे मूर्खो और अंधो! असल
में बड़ा क्या है, सोना या मंदिर जो सोने
को पवित्र ठहराता है? 18 तुम यह भी
कहते हो, 'अगर कोई वेदी की कसम
खाए तो कोई बात नहीं। लेकिन अगर
वह उस पर रखी भेंट की कसम खाए, तो
अपनी कसम पूरी करना उसका फर्ज़ है।'
19 अरे अंधो! असल में बड़ा क्या है, भेंट
या वेदी जो भेंट को पवित्र ठहराती है?
20 इसलिए जो वेदी की कसम खाता है,
वह उसकी और उस पर रखी सब चीज़ों
की कसम खाता है। 21 जो मंदिर की
कसम खाता है, वह उसकी और उस पर-
मेश्वर की कसम खाता है जो मंदिर में
निवास करता है।[3] 22 जो स्वर्ग की
कसम खाता है, वह परमेश्वर की राज-
गद्दी की और उस पर बैठनेवाले परमेश्वर
की कसम खाता है।

23 अरे कपटी शास्त्रियो और फरी-
सियो, धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम
पुदीने, सोए और जीरे का दसवाँ हिस्सा
तो देते हो,[4] मगर कानून की बड़ी-बड़ी
बातों को यानी न्याय,[5] दया[6] और वफा-
दारी को कोई अहमियत नहीं देते। ज़रूरी
था कि ये चीज़ें देने के साथ-साथ तुम दूसरी

अध्य. 23
1 मत 11:28
2 लूक 11:46
3 मत 6:1, 2
4 व्य 6:6, 8
5 गि 15:38, 39
6 मर 12:38, 39; लूक 11:43; लूक 14:7, 10; लूक 20:46
7 यूह 13:13
8 मत 6:9
9 मत 20:26; मर 9:35; लूक 22:26
10 नीत 16:18
11 नीत 29:23; मत 18:4; लूक 14:11; रोम 12:3; 1पत 5:5
12 लूक 11:52
13 मत 6:2; लूक 12:56

दूसरा कॉल.
1 मत 15:14
2 मत 5:34, 35
3 1रा 8:13
4 लैव 27:30
5 मी 6:8; यूह 7:24
6 मत 9:13; मत 12:7

23:6 *या "सबसे बढ़िया।" 23:7 *शा., "रब्बी।" 23:14 *अति. क3 देखें।

23:15 *या "को यहूदी धर्म अपनाने के लिए।" #शब्दावली देखें।

आज्ञाओं को भी तुच्छ नहीं समझते।[1] 24 अरे अंधे अगुवो,[2] तुम मच्छर[3] को तो छानकर निकाल देते हो, मगर ऊँट को निगल जाते हो![4]

25 अरे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम उन प्यालों और थालियों की तरह हो जिन्हें सिर्फ बाहर से साफ किया जाता है,[5] मगर अंदर से वे गंदे हैं। तुम्हारे अंदर लालच* भरा है[6] और तुम बेकाबू होकर अपनी इच्छाएँ पूरी करते हो।[7] 26 अरे अंधे फरीसी, पहले प्याले और थाली को अंदर से साफ कर, तब वह बाहर से भी साफ हो जाएगा।

27 अरे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो,[8] धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम सफेदी पुती कब्रों की तरह हो,[9] जो बाहर से तो बहुत खूबसूरत दिखायी देती हैं, मगर अंदर मुरदों की हड्डियों और हर तरह की गंदगी से भरी होती हैं। 28 उसी तरह तुम भी बाहर से लोगों को बहुत नेक दिखायी देते हो, मगर अंदर से कपटी और दुष्ट हो।[10]

29 अरे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो,[11] धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम भविष्यवक्ताओं की कब्रें बनवाते हो और नेक लोगों की कब्रें* सजाते हो[12] 30 और तुम कहते हो, ‘अगर हम अपने पुरखों के ज़माने में होते, तो भविष्यवक्ताओं का खून बहाने में उनका साथ नहीं देते।’ 31 इस तरह तुम खुद अपने खिलाफ गवाही देते हो कि तुम भविष्यवक्ताओं का खून करनेवालों की औलाद हो।[13] 32 तुम्हारे पुरखों ने पाप करने में जो कसर छोड़ दी, उसे पूरा कर दो।*

23:25 *या “लूट का माल।” **23:29** *या “स्मारक कब्रें।” **23:32** *शा., “अपने पुरखों का पैमाना भर दो।”

अध्य. 23

1 लूक 11:42
2 मत 15:14
3 लैव 11:23
4 लैव 11:4
5 मर 7:3, 4
6 मर 12:38, 40
7 लूक 11:39
8 लूक 12:56
9 लूक 11:44 प्रेष 23:3
10 लूक 16:15
11 मत 6:2
12 लूक 11:47
13 लूक 11:48 प्रेष 7:52 इब्र 11:32, 37

दूसरा कॉल.

1 मत 3:7 मत 12:34 लूक 3:7
2 मत 10:28 लूक 12:5
3 लूक 11:49-51
4 मत 13:52
5 यूह 16:2 प्रेष 7:59
6 प्रेष 5:40 2कुर 11:24
7 लूक 21:12
8 उत 4:8, 10 इब्र 11:4
9 2इत 24:20-22
10 यूह 8:59 इब्र 11:32, 37
11 लूक 13:34 लूक 19:41, 42
12 1रा 9:7, 8 यिर्म 12:7 यिर्म 22:5 मत 21:43 लूक 21:20
13 भज 118:26

33 अरे साँपो और ज़हरीले साँप के सँपोलो,[1] तुम गेहन्ना* की सज़ा से बचकर कैसे भाग सकोगे?[2] 34 इसलिए मैं तुम्हारे पास भविष्यवक्ताओं[3] और बुद्धिमानों को और लोगों को सिखानेवाले उपदेशकों[4] को भेज रहा हूँ। उनमें से कुछ को तुम मार डालोगे[5] और काठ पर लटका दोगे और कुछ को अपने सभा-घरों में कोड़े लगाओगे[6] और शहर-शहर जाकर उन्हें सताओगे।[7] 35 जितने नेक जनों का खून धरती पर बहाया गया है यानी नेक हाबिल[8] से लेकर बिरिक्याह के बेटे जकरयाह तक, जिसे तुमने मंदिर और वेदी के बीच मार डाला था, उन सबका खून तुम्हारे सिर आ पड़े।[9] 36 मैं तुमसे सच कहता हूँ कि ये सारी बातें इस पीढ़ी के सिर आ पड़ेंगी।

37 यरूशलेम, यरूशलेम, तू जो भविष्यवक्ताओं का खून करनेवाली नगरी है और जो तेरे पास भेजे जाते हैं उन्हें पत्थरों से मार डालती है[10]—मैंने कितनी बार चाहा कि जैसे मुर्गी अपने चूज़ों को अपने पंखों तले इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बच्चों को इकट्ठा करूँ! मगर तुम लोगों ने यह नहीं चाहा।[11] 38 देखो! परमेश्वर ने तुम्हारे घर* को त्याग दिया है।#[12] 39 मैं तुमसे कहता हूँ कि अब से तुम मुझे तब तक हरगिज़ न देखोगे जब तक कि यह न कहो, ‘धन्य है वह जो यहोवा* के नाम से आता है!’”[13]

24

जब यीशु मंदिर से बाहर जा रहा था, तो चेले उसके पास आए और उसे मंदिर की इमारतें दिखाने लगे।

23:33 *शब्दावली देखें। **23:38** *यानी मंदिर। #या शायद, “तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा गया है।” **23:39** *अति. क5 देखें।

2 तब यीशु ने उनसे कहा, “तुम ये सब देखकर ताज्जुब कर रहे हो? मैं तुमसे सच कहता हूँ कि इनका एक भी पत्थर दूसरे पत्थर के ऊपर हरगिज़ न बचेगा जो ढाया न जाए।”[1]

3 जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था, तब चेले अकेले में उसके पास आकर पूछने लगे, “हमें बता, ये सब बातें कब होंगी और तेरी मौजूदगी*[2] की और दुनिया की व्यवस्था# के आखिरी वक्त की क्या निशानी होगी?”[3]

4 यीशु ने उन्हें यह जवाब दिया, “खबरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न करे।[4] 5 इसलिए कि बहुत-से लोग आएँगे और मेरा नाम लेकर दावा करेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ’ और बहुतों को गुमराह करेंगे।[5] 6 तुम युद्धों का शोरगुल और युद्धों की खबरें सुनोगे, देखो घबरा न जाना। क्योंकि इन सबका होना ज़रूरी है मगर तभी अंत न होगा।[6]

7 क्योंकि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर और एक राज्य दूसरे राज्य पर हमला करेगा।[7] एक-के-बाद-एक कई जगह अकाल पड़ेंगे[8] और भूकंप होंगे।[9] 8 ये सारी बातें प्रसव-पीड़ा की तरह मुसीबतों की सिर्फ शुरूआत होंगी।

9 तब लोग तुम पर ज़ुल्म करने के लिए तुम्हें पकड़वाएँगे[10] और तुम्हें मार डालेंगे[11] और मेरे नाम की वजह से सब राष्ट्रों के लोग तुमसे नफरत करेंगे।[12] 10 इतना ही नहीं, बहुत-से लोग परमेश्वर से दूर चले जाएँगे* और एक-दूसरे के साथ विश्वासघात करेंगे और एक-दूसरे से नफरत करेंगे। 11 कई झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे और बहुतों को गुमराह करेंगे।[1] 12 और दुष्टता* के बढ़ने से कई लोगों का प्यार ठंडा हो जाएगा। 13 मगर जो अंत तक धीरज धरेगा,* वही उद्धार पाएगा।[2] 14 और राज की इस खुशखबरी का सारे जगत में प्रचार किया जाएगा ताकि सब राष्ट्रों को गवाही दी जाए[3] और इसके बाद अंत आ जाएगा।

15 इसलिए जब तुम्हें वह उजाड़नेवाली घिनौनी चीज़, जिसके बारे में भविष्यवक्ता दानियेल ने बताया था, पवित्र जगह में खड़ी नज़र आए[4] (पढ़नेवाला समझ इस्तेमाल करे), 16 तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों की तरफ भागना शुरू कर दें।[5] 17 जो आदमी घर की छत पर हो वह अपने घर से सामान लेने के लिए नीचे न उतरे। 18 और जो आदमी खेत में हो वह अपना चोगा लेने न लौटे। 19 जो गर्भवती होंगी और जो बच्चे को दूध पिलाती होंगी, उनके लिए वे दिन क्या ही भयानक होंगे! 20 प्रार्थना करते रहो कि तुम्हें न तो सर्दियों के मौसम में भागना पड़े, न ही सब्त के दिन। 21 इसलिए कि तब ऐसा महा-संकट होगा[6] जैसा दुनिया की शुरूआत से न अब तक हुआ और न फिर कभी होगा।[7] 22 दरअसल अगर उन दिनों को घटाया न जाए, तो कोई भी नहीं बच पाएगा। मगर चुने हुओं की खातिर वे दिन घटाए जाएँगे।[8]

23 उन दिनों अगर कोई तुमसे कहे, ‘देखो! मसीह यहाँ है,’[9] या ‘वहाँ है!’ तो यकीन न करना।[10] 24 क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता[11] उठ खड़े होंगे और बड़े-बड़े चमत्कार और अजूबे दिखाएँगे ताकि हो सके तो चुने हुओं को

24:3 *शब्दावली देखें। #या “ज़माने।” शब्दावली देखें। 24:10 *या “ठोकर खाएँगे।”

24:12 *यानी परमेश्वर के कानून को तुच्छ समझना। 24:13 *या “धरता है।”

अध्य. 24

1 मर 13:1, 2; लूक 19:44; लूक 21:5, 6
2 मत 24:27; मत 24:37-39
3 मत 13:39; मत 28:20; मर 13:3, 4; लूक 21:7
4 मर 13:5, 6; लूक 21:8
5 मत 24:24
6 मर 13:7; लूक 21:9
7 प्रक 6:4
8 प्रेष 11:28; प्रक 6:6
9 मर 13:8; लूक 21:10, 11
10 यूह 15:20; प्रेष 11:19; प्रक 2:10
11 यूह 16:2; प्रेष 7:59; प्रेष 12:1, 2; प्रक 6:11
12 मत 10:17, 22; मर 13:9, 13; लूक 21:12, 13; लूक 21:17; यूह 15:21; 2ती 3:12

दूसरा कॉल.

1 मत 7:15; 1ती 4:1; 2पत 2:1
2 मत 10:22; मर 13:13; लूक 21:19; इब्र 10:36
3 मत 9:35; मत 28:19, 20; मर 13:10; प्रक 14:6
4 दान 9:27; दान 11:31; दान 12:11; मर 13:14-18; लूक 21:20
5 लूक 21:21-23
6 लूक 21:23; प्रक 7:14
7 दान 12:1; मर 13:19
8 मर 13:20
9 मत 24:5
10 मर 13:21-23
11 मत 7:15; 2पत 2:1

भी गुमराह कर दें।[1] 25 देखो! मैं तुम्हें
पहले से खबरदार कर रहा हूँ। 26 इस-
लिए अगर लोग तुमसे कहें, 'देखो! वह
वीराने में है,' तो बाहर न जाना। 'देखो!
वह अंदरवाले कमरों में है,' तो यकीन न
करना।[2] 27 इसलिए कि जैसे बिजली
पूरब से निकलकर पश्चिम तक चमकती
दिखायी देती है, वैसे ही इंसान के बेटे की
मौजूदगी* भी होगी।[3] 28 जहाँ लाश
है, वहीं उकाब जमा होंगे।[4]

29 उन दिनों के संकट के फौरन बाद
सूरज अँधियारा हो जाएगा,[5] चाँद अपनी
रौशनी नहीं देगा, आकाश से तारे गिर
पड़ेंगे और आकाश की शक्तियाँ हिलायी
जाएँगी।[6] 30 तब इंसान के बेटे की
निशानी आकाश में दिखायी देगी और
धरती की सारी जातियाँ दुख के मारे
छाती पीटेंगी[7] और वे इंसान के बेटे को
शक्ति और बड़ी महिमा के साथ आकाश
के बादलों पर आता देखेंगे।[8] 31 और
वह तुरही की बड़ी आवाज़ के साथ अपने
स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे उसके चुने
हुओं को आकाश के एक छोर से लेकर
दूसरे छोर तक, चारों दिशाओं से इकट्ठा
करेंगे।[9]

32 अब अंजीर के पेड़ की मिसाल
से यह बात सीखो: जैसे ही उसकी
नयी डाली नरम हो जाती है और उस
पर पत्तियाँ आने लगती हैं, तुम जान
लेते हो कि गरमियों का मौसम पास है।[10]
33 उसी तरह, जब तुम ये सब बातें होती
देखो, तो जान लेना कि इंसान का
बेटा पास है बल्कि दरवाज़े पर
ही है।[11] 34 मैं तुमसे सच कहता हूँ,
जब तक ये सारी बातें पूरी न हो जाएँ,
तब तक यह पीढ़ी हरगिज़ नहीं मिटेगी।
35 आकाश और पृथ्वी मिट जाएँगे,
मगर मेरे शब्द कभी नहीं मिटेंगे।[1]

36 उस दिन और उस घड़ी के बारे में
कोई नहीं जानता,[2] न स्वर्ग के दूत, न बेटा
बल्कि सिर्फ पिता जानता है।[3] 37 ठीक
जैसे नूह के दिन थे,[4] इंसान के बेटे की
मौजूदगी* भी वैसी ही होगी।[5] 38 इस-
लिए कि जैसे जलप्रलय से पहले के दिनों
में, जिस दिन तक नूह जहाज़ के अंदर
न गया, उस दिन तक लोग खा-पी रहे थे
और शादी-ब्याह कर रहे थे[6] 39 और
जब तक जलप्रलय आकर उन सबको बहा
न ले गया, तब तक उन्होंने कोई ध्यान
न दिया।[7] इंसान के बेटे की मौजूदगी
भी ऐसी ही होगी। 40 तब दो आदमी
खेत में होंगे, एक को साथ ले लिया
जाएगा और दूसरे को छोड़ दिया जाएगा।
41 दो औरतें हाथ से चक्की पीस रही
होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा और
दूसरी को छोड़ दिया जाएगा।[8] 42 इस-
लिए जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते
कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आ रहा है।[9]

43 लेकिन एक बात जान लो कि
अगर घर के मालिक को पता होता कि
चोर किस पहर* आनेवाला है,[10] तो वह
जागता रहता और अपने घर में सेंध नहीं
लगने देता।[11] 44 इस वजह से तुम
भी तैयार रहो[12] क्योंकि जिस घड़ी तुमने
सोचा भी न होगा, उस घड़ी इंसान का बेटा
आ रहा है।

45 तो असल में वह विश्वासयोग्य
और बुद्धिमान* दास कौन है, जिसे उसके
मालिक ने अपने घर के कर्मचारियों के
ऊपर ठहराया है कि उन्हें सही वक्त पर
खाना दे?[13] 46 सुखी होगा वह दास
अगर उसका मालिक आने पर उसे

24:27, 37 *शब्दावली देखें।

24:43 *या "रात में किस वक्त।" 24:45 *या "सूझ-बूझ से काम लेनेवाला।"

अध्य. 24

1 मत 7:22, 23; 2थि 2:9
2 लूक 17:23
3 लूक 17:24
4 लूक 17:37
5 योए 2:31
6 मर 13:24, 25; लूक 21:25, 26
7 प्रक 1:7
8 दान 7:13; मत 26:64; मर 13:26; लूक 21:27
9 मर 13:27
10 मर 13:28-31; लूक 21:29-33
11 याकू 5:8, 9

दूसरा कॉल.

1 लूक 21:33
2 1थि 5:1, 2
3 मर 13:32; प्रेष 1:7
4 उत 6:11-13
5 लूक 17:26, 27
6 उत 7:7; इब्र 11:7; 1पत 3:19, 20; 2पत 2:5
7 उत 7:23; 2पत 3:6
8 लूक 17:35
9 मत 25:13; मर 13:33; लूक 21:36
10 1थि 5:2; 2पत 3:10
11 लूक 12:39, 40
12 मर 13:35
13 लूक 12:42-44

ऐसा ही करता पाए![1] 47 मैं तुमसे सच कहता हूँ, वह उसे अपनी सारी संपत्ति पर अधिकार देगा।

48 लेकिन अगर कभी वह दुष्ट दास अपने दिल में कहने लगे, ‘मेरा मालिक देर कर रहा है’[2] 49 और अपने संगी दासों को पीटने लगे और बदनाम शराबियों के साथ खाने-पीने लगे, 50 तो उस दास का मालिक ऐसे दिन आएगा जिस दिन की उसने उम्मीद भी न की होगी और उस घड़ी आएगा जिसकी उसे खबर भी न होगी।[3] 51 और वह उसे कड़ी-से-कड़ी सज़ा देगा और उस जगह फेंक देगा जहाँ कपटियों को फेंका जाता है। वहाँ वह रोएगा और दाँत पीसेगा।[4]

25 स्वर्ग के राज की तुलना उन दस कुँवारियों से की जा सकती है, जो अपना-अपना दीपक[5] लेकर दूल्हे से मिलने निकलीं।[6] 2 उनमें से पाँच मूर्ख थीं और पाँच समझदार।*[7] 3 क्योंकि मूर्ख कुँवारियों ने अपने साथ दीपक तो लिए मगर तेल नहीं लिया, 4 जबकि समझदार कुँवारियों ने दीपकों के साथ-साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी लिया। 5 जब दूल्हा आने में देर कर रहा था, तो सारी कुँवारियाँ ऊँघने लगीं और सो गयीं। 6 ठीक आधी रात को पुकार लगायी गयी, ‘देखो, दूल्हा आ रहा है! उससे मिलने बाहर चलो।’ 7 तब सारी कुँवारियाँ उठीं और अपना-अपना दीपक तैयार करने लगीं।[8] 8 जो मूर्ख थीं उन्होंने समझदारों से कहा, ‘अपने तेल में से थोड़ा हमें दो, क्योंकि हमारे दीपक बुझनेवाले हैं।’ 9 लेकिन समझदार कुँवारियों ने कहा, ‘शायद यह हमारे और तुम्हारे लिए पूरा न पड़े। इसलिए तुम तेल बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिए खरीद लाओ।’ 10 जब वे खरीदने जा रही थीं, तो दूल्हा आ गया। जो कुँवारियाँ तैयार थीं वे शादी की दावत के लिए उसके साथ अंदर चली गयीं[1] और दरवाज़ा बंद कर दिया गया। 11 बाद में बाकी कुँवारियाँ भी आयीं और कहने लगीं, ‘साहब, साहब, हमारे लिए दरवाज़ा खोलो!’[2] 12 मगर दूल्हे ने कहा, ‘मैं सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।’

13 इसलिए जागते रहो[3] क्योंकि तुम न तो उस दिन को जानते हो, न ही उस घड़ी को।[4]

14 स्वर्ग का राज उस आदमी जैसा है जिसने परदेस जाने से पहले अपने दासों को बुलाया और उन्हें अपनी दौलत सौंपी।[5] 15 एक को उसने पाँच तोड़े* चाँदी के सिक्के दिए, दूसरे को दो तोड़े और तीसरे को एक तोड़ा। हरेक को उसकी काबिलीयत के मुताबिक देकर वह परदेस चला गया। 16 जिस दास को पाँच तोड़े चाँदी के सिक्के मिले थे, वह फौरन गया और उसने उन पैसों* से कारोबार करके पाँच तोड़े और कमाए। 17 उसी तरह, जिसे दो तोड़े चाँदी के सिक्के मिले थे, उसने दो तोड़े और कमाए। 18 मगर जिसे सिर्फ एक तोड़ा चाँदी के सिक्के मिले थे, उसने मालिक के पैसे* ज़मीन में गाड़कर छिपा दिए।

19 बहुत समय बाद उन दासों का मालिक आया और उसने उनसे हिसाब माँगा।[6] 20 जिसे पाँच तोड़े चाँदी के सिक्के मिले थे, वह अपने साथ और पाँच तोड़े लेकर आगे आया और उसने

25:2 *या “सूझ-बूझ से काम लेनेवाली।”

25:15 *“तोड़ा” यूनानी तौल की एक इकाई थी जो करीब 20.4 किलो के बराबर था। अति. ख14 देखें। **25:16, 18** *शा., “चाँदी।”

अध्य. 24
1 प्रक 16:15
2 लूक 12:45, 46
3 मत 25:13
4 मत 13:42

अध्य. 25
5 लूक 12:35
फिल 2:15
6 यूह 3:28, 29
प्रक 19:7
7 मत 7:24, 26
8 लूक 12:35

दूसरा कॉल.
1 प्रक 19:9
2 लूक 13:25, 27
3 1थि 5:6
1पत 5:8
4 मत 24:42, 50
मर 13:33
5 लूक 19:12, 13
6 लूक 19:15

कहा, 'मालिक, तूने मुझे पाँच तोड़े सौंपे
थे। देख, मैंने पाँच तोड़े और कमाए हैं।'[1]
21 मालिक ने उससे कहा, 'शाबाश,
अच्छे और विश्वासयोग्य दास! तू थोड़ी
चीज़ों में विश्वासयोग्य रहा। मैं तुझे
बहुत-सी चीज़ों पर अधिकार दूँगा।[2]
अपने मालिक के साथ खुशियाँ मना।'[3]
22 इसके बाद, जिसे दो तोड़े चाँदी के
सिक्के मिले थे, वह आगे आया और
उसने कहा, 'मालिक, तूने मुझे दो तोड़े
सौंपे थे। देख, मैंने दो तोड़े और कमाए
हैं।'[4] 23 मालिक ने उससे कहा,
'शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य दास!
तू थोड़ी चीज़ों में विश्वासयोग्य रहा। मैं
तुझे बहुत-सी चीज़ों पर अधिकार दूँगा।
अपने मालिक के साथ खुशियाँ मना।'

24 आखिर में, वह दास आगे आया
जिसे एक तोड़ा चाँदी के सिक्के मिले
थे। उसने कहा, 'मालिक, मैं जानता था
कि तू एक कठोर इंसान है, तू जहाँ नहीं
बोता वहाँ भी कटाई करता है और जहाँ
अनाज नहीं फटकाता वहाँ से भी बटोर-
ता है।[5] 25 इसलिए मैं डर गया और
मैंने जाकर तेरे चाँदी के सिक्के ज़मीन में
छिपा दिए। यह ले, जो तेरा है, यह रहा।'
26 जवाब में मालिक ने उससे कहा, 'अरे
दुष्ट और आलसी दास, तू जानता था
न कि मैं जहाँ नहीं बोता वहाँ भी कटाई
करता हूँ और जहाँ अनाज नहीं फटकाता
वहाँ से भी बटोरता हूँ? 27 तो फिर,
तूने मेरे पैसे* साहूकारों के पास क्यों नहीं
जमा कर दिए, तब लौटने पर मुझे अपने
पैसों के साथ ब्याज भी मिलता।

28 इसलिए उससे वह चाँदी ले लो
और जिसके पास दस तोड़े हैं, उसे दे दो[6]
29 क्योंकि जिसके पास है, उसे और
दिया जाएगा और उसके पास बहुत हो
जाएगा। मगर जिसके पास नहीं है, उससे
वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास
है।[1] 30 इस निकम्मे दास को बाहर
अँधेरे में फेंक दो, जहाँ वह रोएगा और
दाँत पीसेगा।'

31 जब इंसान का बेटा[2] पूरी
महिमा के साथ आएगा और सब स्वर्ग-
दूत उसके साथ होंगे,[3] तब वह अपनी
शानदार राजगद्दी पर बैठेगा। 32 और
सब राष्ट्रों के लोग उसके सामने इकट्ठे
किए जाएँगे। तब वह लोगों को एक-
दूसरे से अलग करेगा, ठीक जैसे एक
चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग
करता है। 33 वह भेड़ों[4] को अपने
दायीं तरफ करेगा मगर बकरियों को
बायीं तरफ।[5]

34 इसके बाद राजा उन लोगों से जो
उसके दायीं तरफ हैं कहेगा, 'मेरे पिता
से आशीष पानेवालो, आओ, उस राज के
वारिस बन जाओ जो दुनिया की शुरू-
आत से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।
35 इसलिए कि मैं भूखा था और तुमने
मुझे खाना दिया। मैं प्यासा था और तुमने
मुझे पानी पिलाया। मैं अजनबी था और
तुमने मुझे अपने घर ठहराया।[6] 36 मैं
नंगा था* और तुमने मुझे कपड़े दिए।[7] मैं
बीमार पड़ा और तुमने मेरी देखभाल की।
मैं जेल में था और तुम मुझसे मिलने
आए।'[8] 37 तब नेक जन उससे कहेंगे,
'प्रभु, हमने कब तुझे भूखा देखा और
खाना खिलाया या प्यासा देखा और तुझे
पानी पिलाया?[9] 38 हमने कब तुझे
एक अजनबी देखा और अपने घर
ठहराया, या नंगा देखकर तुझे कपड़े
दिए? 39 हमने कब तुझे बीमार या

25:27 *शा., "चाँदी।"

25:36 *या "मेरे पास तन ढकने को कपड़े नहीं थे।"

अध्य. 25
1 लूक 19:16, 17
2 लूक 16:10
3 इब्र 12:2
4 लूक 19:18, 19
5 लूक 19: 20-23
6 लूक 19: 24-26

दूसरा कॉल.
1 मत 13:12, मर 4:25, लूक 8:18, यूह 15:2
2 दान 7:13
3 मत 16:27
4 यूह 10:14
5 मत 25:41
6 इब्र 13:2, 3यूह 5
7 याकू 2:15, 16
8 2ती 1:16
9 मत 10:42

जेल में देखा और तुझसे मिलने आए?’ **40** तब राजा उनसे कहेगा, ‘मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे-से-छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे साथ किया।’[1]

41 इसके बाद राजा उन लोगों से जो उसके बायीं तरफ हैं कहेगा, ‘हे शापित लोगो, मेरे सामने से दूर हो जाओ[2] और हमेशा जलनेवाली उस आग में चले जाओ,[3] जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गयी है।[4] **42** इसलिए कि मैं भूखा था मगर तुमने मुझे खाने को कुछ नहीं दिया। मैं प्यासा था मगर तुमने मुझे पीने को कुछ नहीं दिया। **43** मैं अजनबी था मगर तुमने मुझे अपने घर नहीं ठहराया। मैं नंगा था मगर तुमने मुझे कपड़े नहीं दिए। मैं बीमार पड़ा और जेल में था मगर तुमने मेरी देखभाल नहीं की।’ **44** तब वे भी उससे कहेंगे, ‘प्रभु, हमने कब तुझे भूखा या प्यासा या एक अजनबी या नंगा या बीमार या जेल में देखा और तेरी सेवा नहीं की?’ **45** तब राजा उनसे कहेगा, ‘मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे-से-छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।’[5] **46** ये लोग हमेशा के लिए नाश हो जाएँगे,*[6] मगर नेक जन हमेशा की ज़िंदगी पाएँगे।”[7]

26 जब यीशु ये सारी बातें बता चुका, तो उसने अपने चेलों से कहा, **2** “तुम जानते हो कि अब से दो दिन बाद फसह का त्योहार है[8] और इंसान के बेटे को काठ पर लटकाकर मार डालने के लिए सौंप दिया जाएगा।”[9]

3 तब प्रधान याजक और लोगों के मुखिया, कैफा नाम के महायाजक के आँगन में इकट्ठा हुए।[1] **4** उन्होंने मिलकर साज़िश की[2] कि कैसे यीशु को छल से पकड़ें* और मार डालें। **5** मगर वे कह रहे थे, “त्योहार के वक्त नहीं ताकि लोग हंगामा न मचा दें।”

6 यीशु बैतनियाह में शमौन के घर में था, जो पहले एक कोढ़ी था।[3] **7** जब वह खाना खा रहा था,* तो एक औरत उसके पास खुशबूदार तेल की बोतल लेकर आयी जो बहुत महँगा था। वह उसके सिर पर तेल उँडेलने लगी। **8** यह देखकर चेले भड़क उठे और कहने लगे, “यह औरत क्यों तेल बर-बाद कर रही है? **9** इसे ऊँचे दामों में बेचकर पैसा गरीबों को दिया जा सकता था।” **10** यीशु ने यह जानकर कि वे आपस में क्या बात कर रहे हैं कहा, “तुम इस औरत को क्यों परेशान कर रहे हो? इसने तो मेरी खातिर एक बढ़िया काम किया है। **11** गरीब तो हमेशा तुम्हारे साथ होंगे,[4] मगर मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।[5] **12** इसने मेरे शरीर पर खुशबूदार तेल मलकर मेरे दफनाए जाने की तैयारी की है।[6] **13** मैं तुमसे सच कहता हूँ, सारी दुनिया में जहाँ कहीं खुशखबरी का प्रचार किया जाएगा, वहाँ इस औरत की याद में इसके काम की चर्चा की जाएगी।”[7]

14 फिर उन बारहों में से एक, जो यहूदा इस्करियोती कहलाता था,[8] प्रधान याजकों के पास गया[9] **15** और उसने उनसे कहा, “अगर मैं उसे तुम्हारे हाथों पकड़वा दूँ, तो तुम मुझे क्या दोगे?”[10] उन्होंने कहा कि वे उसे चाँदी के 30 सिक्के देंगे।[11] **16** तब से यहूदा,

---

25:46 *शा., “काट डाले जाएँगे।” यानी जीवन से।

26:4 *या “गिरफ्तार करें।” 26:7 *या “मेज़ से टेक लगाए बैठा था।”

अध्य. 25
1 नीत 19:17; मत 10:40; मर 9:41; इब्र 6:10
2 मत 7:23
3 मत 18:8, 9
4 प्रक 12:9; प्रक 20:10
5 जक 2:8; प्रेष 9:4, 5
6 2पत 2:9
7 रोम 2:6, 7

अध्य. 26
8 निर्ग 12:14; मर 14:1, 2; लूक 22:1, 2; यूह 13:1
9 मत 16:21; मत 20:18, 19; मत 27:26; मर 15:15; यूह 19:16

दूसरा कॉल.
1 मत 26:57; लूक 3:2; यूह 11:49; यूह 18:13, 24
2 भज 2:2
3 मर 14:3-9; यूह 12:1-8
4 व्य 15:11
5 मर 14:7
6 मर 14:8; यूह 12:7
7 मर 14:9
8 मत 10:2, 4; यूह 13:2
9 मर 14:10, 11; लूक 22:3-6
10 यूह 11:57
11 निर्ग 21:32; जक 11:12; मत 27:3

यीशु को पकड़वाने के लिए सही मौका
ढूँढ़ने लगा।
17 बिन-खमीर की रोटी के त्योहार[1]
के पहले दिन, चेले यीशु के पास आए
और उससे पूछने लगे, “तू कहाँ चाहता है
कि हम तेरे लिए फसह का खाना खाने की
तैयारी करें?”[2] **18** उसने कहा, “शहर
में फलाँ-फलाँ आदमी के पास जाओ
और उससे कहो, ‘गुरु कहता है, “मेरे
लिए तय किया गया वक्त पास आ
गया है। मैं अपने चेलों के साथ तेरे
घर में फसह का त्योहार मनाऊँगा।”’”
19 तब चेलों ने ठीक वैसा ही किया जैसा
यीशु ने उनसे कहा था और फसह की
तैयारी की।
20 जब शाम हुई[3] तो वह अपने
12 चेलों के साथ खाना खाने बैठा।*[4]
21 जब वे खा रहे थे, तो उसने कहा,
“मैं तुमसे सच कहता हूँ, तुममें से एक
मेरे साथ विश्वासघात करके मुझे पकड़-
वा देगा।”[5] **22** यह सुनकर वे बहुत
दुखी हुए और एक-एक करके उससे
पूछने लगे, “प्रभु, वह मैं तो नहीं हूँ
न?” **23** उसने कहा, “जो मेरे साथ
कटोरे में हाथ डालता है, वही मेरे साथ
विश्वासघात करेगा।[6] **24** यह सच है
कि इंसान का बेटा तो जा ही रहा है,
ठीक जैसा उसके बारे में लिखा है, मगर
उस आदमी का बहुत बुरा होगा[7] जो
इंसान के बेटे के साथ विश्वासघात करके
उसे पकड़वा देगा![8] उस आदमी के लिए
अच्छा तो यह होता कि वह पैदा ही न
हुआ होता।”[9] **25** तब यहूदा ने, जो
उसके साथ गद्दारी करनेवाला था, उससे
कहा, “रब्बी, वह मैं तो नहीं हूँ न?”
यीशु ने उससे कहा, “तूने खुद कह
दिया है।”

26:20 *या “मेज़ से टेक लगाए बैठा।”

अध्य. 26
1 निर्ग 12:18, निर्ग 23:15, लूक 22:1
2 मर 14:12-16, लूक 22:7-13
3 व्य 16:6
4 मर 14:17-21, लूक 22:14
5 लूक 22:21-23, यूह 6:70, यूह 13:21, 22
6 भज 41:9, मर 14:20, लूक 22:21, यूह 13:26
7 व्य 27:25
8 लूक 22:22, यूह 17:12
9 मर 14:21

दूसरा कॉल.
1 1कुर 10:16
2 मर 14:22, लूक 22:19, 1कुर 11:23-26
3 मर 14:23, लूक 22:20
4 1कुर 10:16
5 निर्ग 24:8, यिर्म 31:31, इब्र 7:22
6 मत 20:28, मर 14:24, इफ 1:7, इब्र 9:20, 22
7 मर 14:25, लूक 22:18
8 लूक 22:39, यूह 18:1
9 जक 13:7, मर 14:27, 28, यूह 16:32
10 मत 28:7, मत 28:16
11 मर 14:29-31
12 मर 14:30, लूक 22:34, यूह 13:38

26 जब वे खाना खा रहे थे, तो यीशु
ने एक रोटी ली और प्रार्थना में धन्य-
वाद देकर उसे तोड़ा[1] और चेलों को
देकर कहा, “लो, खाओ। यह मेरे शरीर
की निशानी है।”[2] **27** फिर उसने एक
प्याला लिया और प्रार्थना में धन्यवाद
देकर उन्हें दिया और कहा, “तुम सब
इसमें से पीओ[3] **28** क्योंकि यह मेरे
खून की निशानी है,[4] जो करार को
पक्का करता है[5] और जो बहुतों के
पापों की माफी के लिए बहाया जाएगा।[6]
29 मगर मैं तुमसे कहता हूँ, अब से मैं
यह दाख-मदिरा उस दिन तक हर-
गिज़ नहीं पीऊँगा, जिस दिन मैं अपने
पिता के राज में तुम्हारे साथ नयी
दाख-मदिरा न पीऊँ।”[7] **30** आखिर में
उन्होंने परमेश्वर की तारीफ में गीत*
गाए और फिर जैतून पहाड़ की तरफ
निकल गए।[8]
31 इसके बाद यीशु ने उनसे कहा,
“आज की रात मेरे साथ जो होगा उसकी
वजह से तुम सबका विश्वास डगमगा
जाएगा* क्योंकि लिखा है, ‘मैं चरवाहे को
मारूँगा और झुंड की भेड़ें तितर-बितर
हो जाएँगी।’[9] **32** लेकिन जब मुझे
ज़िंदा कर दिया जाएगा, तो मैं तुमसे पहले
गलील जाऊँगा।”[10] **33** मगर पतरस
ने उससे कहा, “तेरे साथ जो होगा उसकी
वजह से चाहे बाकी सबका विश्वास डग-
मगा जाए, मगर मेरा विश्वास कभी नहीं
डगमगाएगा।”[11] **34** यीशु ने उससे
कहा, “मैं तुझसे सच कहता हूँ, इसी रात
मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन
बार मुझे जानने से इनकार कर देगा।”[12]
35 पतरस ने उससे कहा, “चाहे मुझे तेरे
साथ मरना पड़े, तब भी मैं तुझे जानने से

26:30 *या “भजन।” **26:31** *शा., “तुम ठोकर खाओगे।”

हरगिज़ इनकार नहीं करूँगा।”[1] बाकी
सभी चेलों ने भी यही कहा।

36 तब यीशु अपने चेलों के साथ गत-
समनी[2] नाम की जगह आया और उसने
चेलों से कहा, “मैं वहाँ प्रार्थना करने जा
रहा हूँ, तुम यहीं बैठे रहना।”[3] 37 और
उसने पतरस और जब्दी के दोनों बेटों को
अपने साथ लिया। उसका जी बहुत
बेचैन हो उठा और वह दुख से बेहाल
होने लगा।[4] 38 तब उसने उनसे कहा,
“मेरा मन बहुत दुखी है, यहाँ तक कि
मेरी मरने जैसी हालत हो रही है। तुम
यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।”[5]
39 फिर वह थोड़ा आगे गया और मुँह के
बल गिरकर यह प्रार्थना करने लगा,[6] “मेरे
पिता, अगर हो सके तो यह प्याला[7] मेरे
सामने से हटा दे। फिर भी मेरी मरज़ी नहीं
बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।”[8]

40 जब वह अपने चेलों के पास
वापस आया, तो उसने देखा कि वे सो
रहे हैं। उसने पतरस से कहा, “क्या
तुम लोग मेरे साथ थोड़ी देर के लिए
भी नहीं जाग सके?[9] 41 जागते रहो[10]
और प्रार्थना करते रहो[11] ताकि तुम
परीक्षा में न पड़ो।[12] दिल तो बेशक
तैयार* है, मगर शरीर कमज़ोर है।”[13]
42 फिर वह दूसरी बार गया और यह
कहकर प्रार्थना करने लगा, “मेरे पिता,
अगर मुझे यह प्याला पीना ही है और
इसे हटाया नहीं जा सकता, तो तेरी मरज़ी
पूरी हो।”[14] 43 वह फिर चेलों के पास
आया और उसने उन्हें सोता हुआ पाया
क्योंकि उनकी आँखें नींद से बोझिल थीं।
44 तब वह उन्हें वहीं छोड़कर एक बार
फिर गया और तीसरी बार भी उसने वही
प्रार्थना की। 45 इसके बाद वह फिर
अपने चेलों के पास आया और उसने
कहा, “तुम ऐसे वक्त में सो रहे हो और
आराम कर रहे हो! देखो, वह घड़ी आ
गयी है कि इंसान के बेटे के साथ विश्वास-
घात करके उसे पापियों के हाथ सौंप दिया
जाए। 46 उठो, आओ चलें। देखो,
मुझसे गद्दारी करनेवाला पास आ गया
है।” 47 वह बोल ही रहा था कि तभी
यहूदा आ गया, जो उन बारहों में से एक
था। उसके साथ तलवारें और लाठियाँ
लिए हुए लोगों की एक बड़ी भीड़ थी जिसे
प्रधान याजकों और लोगों के मुखियाओं
ने भेजा था।[1]

48 उसके साथ विश्वासघात करने-
वाले ने उन्हें यह कहकर एक निशानी
दी थी, “जिसे मैं चूमूँगा, वही है। उसे
गिरफ्तार कर लेना।” 49 यहूदा ने
सीधे यीशु के पास जाकर उससे कहा,
“नमस्कार, रब्बी!” और उसे प्यार से
चूमा। 50 मगर यीशु ने उससे कहा,
“तू यहाँ किस इरादे से आया है?”[2] तब
उन्होंने आगे बढ़कर यीशु को पकड़ लिया
और हिरासत में ले लिया। 51 मगर
तभी जो यीशु के साथ थे उनमें से एक
ने हाथ बढ़ाकर अपनी तलवार खींची
और महायाजक के दास पर वार करके
उसका कान उड़ा दिया।[3] 52 तब यीशु
ने उससे कहा, “अपनी तलवार म्यान
में रख ले,[4] इसलिए कि जो तलवार
उठाते हैं वे तलवार से ही नाश किए
जाएँगे।[5] 53 क्या तुझे नहीं लगता कि
मैं अपने पिता से यह बिनती कर सकता
हूँ कि वह इसी पल स्वर्गदूतों की 12
से भी ज़्यादा पलटनें मेरे पास भेज दे?[6]
54 ऐसे में शास्त्र में लिखी यह बात कैसे
पूरी होगी कि यह सबकुछ होना ज़रूरी
है?” 55 तब यीशु ने भीड़ से कहा,
“क्या तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर
मुझे गिरफ्तार करने आए हो, मानो मैं

अध्य. 26

1 लूक 22:33
2 यूह 18:1
3 मर 14:32-36, लूक 22:40
4 यश 53:3
5 मर 14:34
6 इब्र 5:7
7 मत 20:22, यूह 18:11
8 मर 14:36, लूक 22:42, यूह 5:30, यूह 6:38, इब्र 10:9
9 मर 14:37-42, लूक 22:45
10 मर 13:33, 1पत 5:8, प्रक 16:15
11 लूक 18:1, रोम 12:12, इफ 6:18, 1पत 4:7
12 मत 6:13, लूक 22:46
13 मर 14:38, रोम 7:23
14 मत 6:10, यूह 12:27

दूसरा कॉल.

1 मर 14:43-47, लूक 22:47-51, यूह 18:3
2 भज 41:9
3 मर 14:47, लूक 22:50, यूह 18:10
4 यूह 18:11
5 उत 9:6
6 2रा 6:17, दान 7:10, मत 4:11

26:41 * या “उत्सुक।”

कोई लुटेरा हूँ? मैं हर दिन मंदिर में
बैठकर सिखाया करता था,[1] फिर भी
तुमने मुझे हिरासत में नहीं लिया।[2]
56 मगर यह सब इसलिए हुआ है
ताकि भविष्यवक्ताओं ने जो लिखा है
वह पूरा हो।"[3] तब सारे चेले उसे छोड़-
कर भाग गए।[4]

57 जिन लोगों ने यीशु को गिरफ्तार
किया वे उसे महायाजक कैफा के पास
ले गए,[5] जहाँ शास्त्री और मुखिया इकट्ठा
थे।[6] 58 मगर पतरस कुछ दूरी पर
रहकर यीशु के पीछे-पीछे गया और महा-
याजक के आँगन तक आ गया। अंदर
जाने के बाद वह घर के सेवकों के साथ
बैठ गया कि देखे आगे क्या होगा।[7]

59 प्रधान याजक और पूरी महा-
सभा यीशु को मार डालने के लिए उसके
खिलाफ झूठी गवाही ढूँढ़ रही थी।[8]
60 बहुत-से झूठे गवाह आए मगर एक
भी ऐसी गवाही नहीं मिली, जिससे
यीशु को दोषी ठहराया जाए।[9] बाद में
दो गवाह आए 61 और उन्होंने कहा,
"इस आदमी ने कहा था, 'मैं परमेश्वर के
मंदिर को ढा सकता हूँ और तीन दिन के
अंदर इसे खड़ा कर सकता हूँ।'"[10]
62 यह सुनकर महायाजक उठ गया और
उसने यीशु से कहा, "क्या तू जवाब में
कुछ नहीं कहेगा? क्या तू सुन नहीं
रहा कि ये तुझ पर क्या-क्या इल-
ज़ाम लगा रहे हैं?"[11] 63 मगर तब
भी यीशु चुप रहा।[12] महायाजक ने फिर
उससे कहा, "मैं तुझे जीवित परमेश्वर की
शपथ दिलाता हूँ, हमें बता, क्या तू पर-
मेश्वर का बेटा मसीह है?"[13] 64 यीशु
ने उससे कहा, "तूने खुद कह दिया है।
फिर भी मैं तुम लोगों से कहता हूँ,
अब से तुम इंसान के बेटे[14] को शक्ति-
शाली परमेश्वर के दाएँ हाथ बैठा[15] और
आकाश के बादलों पर आता देखोगे।"[1]
65 तब महायाजक ने यह कहते हुए
अपना चोगा फाड़ा, "इसने परमेश्वर की
निंदा की है! अब हमें और गवाहों
की क्या ज़रूरत है? देखो! तुम लोगों ने ये
निंदा की बातें सुनी हैं। 66 तुम्हारी क्या
राय है?" उन्होंने कहा, "यह मौत की
सज़ा के लायक है।"[2] 67 इसके बाद,
उन्होंने यीशु के मुँह पर थूका[3] और उसे
घूँसे मारे।[4] दूसरों ने यह कहते हुए उसके
मुँह पर थप्पड़ मारे,[5] 68 "अरे मसीह,
भविष्यवाणी कर, हममें से किसने तुझे
मारा?"

69 पतरस बाहर आँगन में बैठा हुआ
था। तब एक दासी उसके पास आकर
कहने लगी, "तू भी उस यीशु गलीली
के साथ था!"[6] 70 मगर उसने सबके
सामने इनकार करते हुए कहा, "मैं नहीं
जानता तू क्या कह रही है।" 71 जब
वह बाहर निकलकर आँगन के द्वार की
तरफ गया, तो एक और लड़की ने उसे
देखकर वहाँ मौजूद लोगों से कहा, "यह
आदमी यीशु नासरी के साथ था।"[7]
72 एक बार फिर वह शपथ खाकर इन-
कार करने लगा, "मैं उस आदमी को नहीं
जानता!" 73 थोड़ी देर बाद आस-पास
खड़े लोग पतरस के पास आकर उससे
कहने लगे, "बेशक तू भी उनमें से एक
है, तेरी बोली* तेरा राज़ खोल रही है।"
74 तब वह खुद को कोसने लगा और
कसम खाकर कहने लगा, "मैं उस आदमी
को नहीं जानता!" उसी घड़ी एक मुर्गे ने
बाँग दी। 75 तब पतरस को यीशु की
वह बात याद आयी, "मुर्गे के बाँग देने से
पहले, तू तीन बार मुझे जानने से इनकार
कर देगा।"[8] और वह बाहर जाकर फूट-
फूटकर रोने लगा।

अध्य. 26
1 लूक 19:47; यूह 18:20
2 मर 14:48, 49; लूक 22:52, 53
3 भज 22:16-18; यश 53; दान 9:26
4 जक 13:7; मर 14:50; यूह 16:32
5 यूह 18:13
6 मर 14:53, 54; लूक 22:54, 55
7 यूह 18:16
8 मर 14:55-59
9 भज 27:12; भज 35:11
10 मत 27:39, 40; यूह 2:19; प्रेष 6:14
11 मर 14:60-65
12 यश 53:7; प्रेष 8:32
13 लूक 22:67-71
14 दान 7:13; यूह 1:51
15 भज 110:1; लूक 22:69

दूसरा कॉल.
1 मर 14:62; प्रक 1:7
2 लैव 24:16; यूह 19:7
3 यश 50:6
4 लूक 22:63, 64
5 यश 53:3
6 मर 14:66-72; लूक 22: 54-62; यूह 18:15-17
7 यूह 18:25-27
8 मत 26:34; मर 14:30; यूह 13:38

26:73 *या "बोलने का लहज़ा।"

27 जब सुबह हो गयी, तो सभी प्रधान याजकों और लोगों के मुखियाओं ने यीशु को मार डालने के लिए आपस में सलाह-मशविरा किया।[1] **2** वे उसे बाँधकर राज्यपाल पीलातुस के पास ले गए और उसके हवाले कर दिया।[2]

3 उसके साथ विश्वासघात करनेवाले यहूदा ने जब देखा कि यीशु को मौत की सज़ा दी गयी है, तो उसका दिल उसे कचोटने लगा। उसने प्रधान याजकों और मुखियाओं को चाँदी के वे 30 सिक्के लौटाते हुए[3] **4** कहा, "मैंने एक निर्दोष आदमी के खून का सौदा करके पाप किया है।" उन्होंने कहा, "इससे हमें क्या लेना? तू ही जान!"* **5** तब उसने चाँदी के टुकड़े मंदिर में फेंक दिए और जाकर फाँसी लगा ली।[4] **6** लेकिन प्रधान याजकों ने उन चाँदी के टुकड़ों को लेकर कहा, "इन्हें मंदिर के खज़ाने में डालना सही नहीं होगा क्योंकि यह खून की कीमत है।" **7** उन्होंने आपस में बात करने के बाद, उन पैसों से अजनबियों को दफनाने के लिए कुम्हार की ज़मीन खरीद ली। **8** इसलिए वह ज़मीन आज के दिन तक खून की ज़मीन कहलाती है।[5] **9** इससे यह बात पूरी हुई जो यिर्मयाह भविष्यवक्ता से कहलवायी गयी थी, "उन्होंने चाँदी के 30 टुकड़े लिए, जो उस आदमी के लिए ठहरायी गयी कीमत थी। इसराएल के कुछ बेटों ने उस आदमी के लिए एक कीमत ठहरा दी थी। **10** और उन्होंने ये सिक्के कुम्हार की ज़मीन के लिए दिए, जैसा यहोवा* ने मुझे आज्ञा दी थी।"[6]

11 यीशु अब राज्यपाल के सामने खड़ा था। और राज्यपाल ने उससे यह सवाल किया, "क्या तू यहूदियों का राजा है?" यीशु ने जवाब दिया, "तू खुद यह कहता है।"[1] **12** मगर जब प्रधान याजक और मुखिया उस पर इलज़ाम लगा रहे थे, तो उसने कोई जवाब नहीं दिया।[2] **13** तब पीलातुस ने उससे कहा, "क्या तू सुन नहीं रहा कि ये तुझ पर क्या-क्या इलज़ाम लगा रहे हैं?" **14** फिर भी यीशु ने उसे कोई जवाब नहीं दिया, यहाँ तक कि एक शब्द भी नहीं कहा, इसलिए राज्यपाल को बड़ा ताज्जुब हुआ।

15 राज्यपाल का यह रिवाज़ था कि वह हर साल त्योहार के वक्त किसी एक कैदी को, जिसे लोग चाहते थे, रिहा कर दिया करता था।[3] **16** उन्हीं दिनों, बरअब्बा नाम का एक कुख्यात कैदी उनकी कैद में था। **17** इसलिए जब वे इकट्ठा हुए, तो पीलातुस ने उनसे पूछा, "तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिए किसे रिहा करूँ, बरअब्बा को या यीशु को जिसे मसीह कहा जाता है?" **18** पीलातुस जानता था कि उन्होंने ईर्ष्या की वजह से यीशु को उसके हवाले किया था। **19** इतना ही नहीं, जब वह न्याय-आसन पर बैठा हुआ था, तो उसकी पत्नी ने उसके पास यह संदेश भेजा, "तू उस नेक इंसान के मामले में दखल मत देना, क्योंकि उसकी वजह से मुझे एक डरावना सपना आया और आज मैं बहुत परेशान हूँ।" **20** मगर प्रधान याजकों और मुखियाओं ने भीड़ को यह कहने के लिए उकसाया कि बरअब्बा को रिहा कर दिया जाए,[4] मगर यीशु को मार डाला जाए।[5] **21** राज्यपाल ने एक बार फिर उनसे पूछा, "तुम क्या चाहते हो, मैं दोनों में से किसे तुम्हारे लिए रिहा करूँ?" उन्होंने कहा, "बरअब्बा को।" **22** पीलातुस ने उनसे कहा, "तो फिर मैं इस यीशु के साथ,

---

27:4 *या "यह तेरी सिरदर्दी है।" **27:10** *अति. क5 देखें।

अध्य. 27
1 मर 15:1
लूक 22:66
2 भज 2:2
मत 20:18, 19
लूक 23:1
यूह 18:28
प्रेष 3:13
3 मत 26:14, 15
मर 14:10, 11
4 प्रेष 1:16, 18
5 प्रेष 1:19
6 जक 11:12, 13

दूसरा कॉल.
1 मर 15:2-5
लूक 23:3
यूह 18:33, 37
2 यश 53:7
मत 26:63
यूह 19:9
3 मर 15:6-10
यूह 18:39
4 लूक 23:18
यूह 18:40
प्रेष 3:14
5 मर 15:11-14

जिसे मसीह कहा जाता है, क्या करूँ?”
उन सबने कहा, “इसे काठ पर लटका
दे!”[1] 23 राज्यपाल ने कहा, “क्यों,
इसने क्या बुरा किया है?” मगर वे और
भी ज़ोर से चिल्लाने लगे, “इसे काठ पर
लटका दे!”[2]

24 जब पीलातुस ने देखा कि उसके
कहने का कोई फायदा नहीं हो रहा,
बल्कि हुल्लड़ बढ़ता ही जा रहा है, तो
उसने पानी लिया और भीड़ के सामने
अपने हाथ धोते हुए कहा, “मैं इस आदमी
के खून से निर्दोष हूँ। तुम ही जानो।”
25 तब सब लोगों ने कहा, “इसका
खून हमारे और हमारे बच्चों के सिर
आ पड़े।”[3] 26 तब उसने बरअब्बा को
रिहा कर दिया। मगर यीशु को उसने
कोड़े लगवाए[4] और काठ पर लटकाकर
मार डालने के लिए सौंप दिया।[5]

27 इसके बाद, राज्यपाल के सैनिक
यीशु को उसके भवन के अंदर ले गए
और उन्होंने सैनिकों की पूरी पलटन
को वहाँ उसके पास इकट्ठा कर लिया।[6]
28 उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे
सुर्ख लाल रंग का एक कपड़ा पहनाया[7]
29 और काँटों का एक ताज बना-
कर उसके सिर पर रखा और उसके दाएँ
हाथ में एक नरकट दिया। फिर वे
उसके सामने घुटने टेककर यह कहते हुए
उसका मज़ाक उड़ाने लगे, “हे यहूदियों
के राजा, सलाम!”* 30 उन्होंने उस पर
थूका[8] और नरकट लेकर उसके सिर पर
मारने लगे। 31 जब उन्होंने उसका खूब
मज़ाक उड़ा लिया, तो वह कपड़ा उतार
दिया और उसी के कपड़े उसे पहना दिए।
फिर वे उसे काठ पर ठोंकने के लिए
ले गए।[9]

32 जब वे जा रहे थे, तो उन्हें कुरेने
का रहनेवाला एक आदमी मिला जिसका
नाम शमौन था। उन्होंने इस आदमी को
जबरन सेवा के लिए पकड़ा कि वह यीशु
का यातना का काठ* उठाकर ले चले।[1]
33 जब वे *गुलगुता* नाम की जगह पहुँचे,
जो खोपड़ी स्थान कहलाती है,[2] 34 तो
उन्होंने यीशु को पीने के लिए पित्त* मिली
दाख-मदिरा दी।[3] मगर उसने चखने के
बाद, उसे पीने से इनकार कर दिया।
35 सैनिकों ने उसे काठ पर ठोंक दिया
और चिट्ठियाँ डालकर उसका ओढ़ना
आपस में बाँट लिया।[4] 36 फिर वहाँ
बैठकर वे उसकी पहरेदारी करने लगे।
37 और उस पर जो इलज़ाम था, उसे
लिखकर उन्होंने उसके सिर के ऊपर काठ
पर लगा दिया: “यह यहूदियों का राजा
यीशु है।”[5]

38 उसके साथ दो लुटेरों को काठ
पर लटकाया गया था, एक उसके दायीं
तरफ और दूसरा बायीं तरफ।[6] 39 जो
लोग वहाँ से गुज़र रहे थे, वे सिर
हिला-हिलाकर उसकी बेइज़्ज़ती करने
लगे,[7] 40 “अरे मंदिर को ढानेवाले,
उसे तीन दिन के अंदर बनानेवाले,[8] खुद
को बचा ले! अगर तू परमेश्वर का बेटा
है, तो यातना के काठ* से नीचे उतर
आ!”[9] 41 इसी तरह, प्रधान याजक
भी शास्त्रियों और मुखियाओं के साथ
मिलकर उसका मज़ाक उड़ाने लगे,[10]
42 “इसने दूसरों को तो बचाया, मगर
खुद को नहीं बचा सकता! यह इसराएल
का राजा है।[11] अब यह यातना के काठ*
से नीचे तो उतरे, तब हम इसका यकीन
करेंगे। 43 इसने परमेश्वर पर भरोसा
रखा है, अगर परमेश्वर इसे चाहता है,
तो इसे बचाए[12] क्योंकि इसने कहा है, ‘मैं

अध्य. 27
1 लूक 23:21
2 लूक 23:23; प्रेष 3:13
3 प्रेष 5:27, 28; 1थि 2:14, 15
4 लूक 18:33; यूह 19:1
5 मर 15:15; लूक 23:25
6 मर 15:16-20
7 यूह 19:2, 3
8 यश 50:6; मत 26:67
9 यश 53:7; मत 20:18, 19

दूसरा कॉल.
1 मर 15:21; लूक 23:26
2 मर 15:22-24; लूक 23:33; यूह 19:17
3 भज 69:21
4 भज 22:18; मर 15:24; लूक 23:34; यूह 19:23, 24
5 मर 15:26; लूक 23:38; यूह 19:19
6 यश 53:12; मर 15:27; लूक 23:33; यूह 19:18
7 भज 22:7; भज 109:25; लूक 18:32; इब्र 12:3
8 मत 26:60, 61; यूह 2:19
9 मर 15:29-32
10 लूक 23:35
11 यूह 1:49; यूह 12:13
12 भज 22:8

27:29 *या “तेरी जय हो!”

27:32, 40, 42 *शब्दावली देखें। 27:34 *एक कड़वी चीज़।

परमेश्वर का बेटा हूँ।'"[1] **44** यहाँ तक कि जो लुटेरे उसके दोनों तरफ काठ पर थे, वे भी उसे बुरा-भला कह रहे थे।[2]

45 छठे घंटे* से उस पूरे देश में अंधकार छा गया और नौवें घंटे# तक छाया रहा।[3] **46** नौवें घंटे के करीब यीशु ने ज़ोर से पुकारा, *"एली, एली, लामा शबकतानी?"* जिसका मतलब है, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"[4] **47** यह सुनकर वहाँ खड़े कुछ लोग कहने लगे, "यह आदमी एलियाह को पुकार रहा है।"[5] **48** उनमें से एक ने फौरन दौड़कर एक स्पंज लिया और उसे खट्टी दाखमदिरा में डुबोकर नरकट पर रखा और उसे पीने के लिए दिया।[6] **49** मगर बाकियों ने कहा, "देखते हैं, एलियाह इसे बचाने आता है या नहीं।" **50** यीशु एक बार फिर ज़ोर से चिल्लाया और उसने दम तोड़ दिया।[7]

51 तब देखो! मंदिर का परदा[8] ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया[9] और धरती काँप उठी और चट्टानें फट गयीं। **52** कब्रें* खुल गयीं और मौत की नींद सोए बहुत-से पवित्र जनों की लाशें कब्रों से बाहर जा गिरीं **53** और कब्रिस्तान में मौजूद बहुत-से लोगों ने ये लाशें देखीं। (कुछ लोग जो कब्रों के पास गए थे, वे यीशु के ज़िंदा किए जाने के बाद पवित्र शहर आए।) **54** मगर जब सेना-अफसर और उसके साथ यीशु की पहरेदारी करनेवालों ने भूकंप और उन सारी घटनाओं को देखा, तो वे बहुत डर गए और कहने लगे, "वाकई यह परमेश्वर का बेटा था।"[10]

27:45 *यानी दोपहर करीब 12 बजे। #यानी दोपहर करीब 3 बजे। **27:52** *या "स्मारक कब्रें।"

55 वहाँ बहुत-सी औरतें, जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उसके साथ आयी थीं, दूर खड़ी देख रही थीं।[1] **56** उनमें मरियम मगदलीनी, याकूब और योसेस की माँ मरियम और जब्दी के बेटों की माँ भी थी।[2]

57 जब दोपहर काफी बीत चुकी, तब यूसुफ नाम का एक अमीर आदमी वहाँ आया, जो अरिमतियाह का रहनेवाला था। वह भी यीशु का एक चेला बन चुका था।[3] **58** इस आदमी ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लाश माँगी।[4] तब पीलातुस ने हुक्म दिया कि उसे लाश दे दी जाए।[5] **59** यूसुफ ने लाश लेकर उसे बढ़िया मलमल की साफ चादर में लपेटा[6] **60** और अपनी नयी कब्र में रखा,[7] जो उसने चट्टान खोदकर बनवायी थी। कब्र के द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़काने के बाद, वह वहाँ से चला गया। **61** लेकिन मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहीं कब्र के सामने बैठी रहीं।[8]

62 अगले दिन यानी तैयारी के दिन के बाद,[9] प्रधान याजक और फरीसी, पीलातुस के सामने जमा हुए **63** और कहने लगे, "हुज़ूर, हमें याद है कि उस फरेबी ने जीते-जी कहा था, 'तीन दिन बाद मुझे ज़िंदा कर दिया जाएगा।'[10] **64** इसलिए हुक्म दे कि तीसरे दिन तक कब्र की चौकसी की जाए ताकि उसके चेले आकर उसे चुरा न लें[11] और लोगों से कहें, 'उसे मरे हुओं में से ज़िंदा कर दिया गया है!' फिर यह आखिरी ढोंग, पहलेवाले ढोंग से भी बदतर होगा।" **65** पीलातुस ने उनसे कहा, "तुम पहरेदार ले जा सकते हो। और जैसा पहरा बिठाना चाहते हो वैसा बिठा दो।" **66** तब वे गए और उन्होंने एक बड़े

अध्य. 27

1 मर 14:62; यूह 5:18; यूह 10:36
2 लूक 23:39
3 मर 15:33; लूक 23:44
4 भज 22:1; यश 53:10; मर 15:34
5 मर 15:35, 36
6 भज 69:21; लूक 23:36; यूह 19:29
7 मर 15:37; लूक 23:46; यूह 19:30
8 निर्ग 26:31-33; इब्र 9:3
9 मर 15:38; लूक 23:45; इब्र 10:19, 20
10 मर 15:39

दूसरा कॉल.

1 मर 15:40, 41; लूक 8:2, 3
2 मत 20:20; यूह 19:25
3 मर 15:42, 43; लूक 23:50-53
4 व्य 21:22, 23
5 मर 15:45-47; यूह 19:38
6 यूह 19:40, 41
7 यश 53:9
8 लूक 23:55
9 मर 15:42; लूक 23:54; यूह 19:14
10 मत 12:40; यूह 2:19
11 मत 28:12, 13

पत्थर से कब्र का द्वार अच्छी तरह बंद कर
दिया और पहरेदार तैनात कर दिए।

28 सब्त के बाद, हफ्ते के पहले
दिन पौ फटते ही मरियम मग-
दलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने
आयीं।[1]

2 कुछ समय पहले एक भारी भूकंप
आया था क्योंकि यहोवा* का दूत स्वर्ग
से उतरा था। उसने कब्र के मुँह पर
रखा पत्थर लुढ़का दिया था और उस पर
बैठा हुआ था।[2] **3** उसका रूप बिजली
जैसा था और उसके कपड़े बर्फ जैसे सफेद
थे।[3] **4** पहरेदार उससे इतने डर गए थे
कि वे काँपने लगे और मुरदे जैसे हो गए।

5 मगर जब ये औरतें कब्र पर आयीं,
तो स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो मत। तुम
यीशु को ढूँढ़ रही हो न, जिसे काठ पर
लटकाकर मार डाला गया था?[4] **6** वह
यहाँ नहीं है। जैसा उसने कहा था, उसे
ज़िंदा कर दिया गया है।[5] आकर यह
जगह देखो जहाँ उसे रखा गया था।
7 अब तुम जल्दी जाओ और जाकर
उसके चेलों को बताओ कि उसे मरे हुओं
में से ज़िंदा कर दिया गया है और वह
तुमसे पहले गलील जाएगा[6] और वहाँ
तुम उसे देखोगे। मैं तुम्हें यही संदेश देने
आया हूँ।"[7]

8 यह सुनकर वे फौरन कब्र के पास
से निकल पड़ीं। वे डरी हुई थीं पर साथ
ही, खुशी से फूली नहीं समा रही थीं। वे
उसके चेलों को खबर देने के लिए दौड़ी-
दौड़ी जा रही थीं[8] **9** कि अचानक यीशु
उनसे रास्ते में मिला और उन्हें सलाम
कहा। वे उसके पास गयीं और उन्होंने
उसके पैर पकड़ लिए और उसे झुककर
प्रणाम* किया। **10** तब यीशु ने उनसे
कहा, "डरो मत! जाकर मेरे भाइयों को
खबर दो कि वे गलील चले जाएँ। वे मुझे
वहाँ देखेंगे।"

11 जब ये औरतें रास्ते में ही थीं,
तो कब्र पर पहरा देनेवाले पहरेदारों में
से कुछ,[1] शहर में गए और उन्होंने
सारी घटनाएँ प्रधान याजकों को सुनायीं।
12 तब प्रधान याजकों ने मुखियाओं
को बुलाया और उनके साथ सलाह-मश-
विरा करने के बाद सैनिकों को घूस
में बहुत चाँदी दी **13** और उनसे कहा,
"तुम बोल देना कि रात में जब हम सो रहे
थे, तब उसके चेले आए और उसे चुरा-
कर ले गए।[2] **14** और अगर यह बात
राज्यपाल के कानों तक पहुँचेगी, तो
हम उसे समझा देंगे* और तुम्हारी सारी
चिंता दूर कर देंगे।" **15** तब पहरेदारों
ने चाँदी के सिक्के ले लिए और उन्हें जैसा
बताया गया था उन्होंने वैसा ही किया
और आज तक हर कहीं यह किस्सा यहू-
दियों में फैला हुआ है।

16 वे 11 चेले गलील में उस पहाड़
पर गए,[3] जहाँ यीशु ने उन्हें मिलने के लिए
कहा था।[4] **17** जब उन्होंने उसे देखा तो
झुककर प्रणाम* किया, मगर उनमें से
कुछ ने शक किया। **18** यीशु उनके पास
आया और उसने कहा, "स्वर्ग में और
धरती पर सारा अधिकार मुझे दिया गया
है।[5] **19** इसलिए जाओ और सब राष्ट्रों
के लोगों को मेरा चेला बनना सिखाओ[6]
और उन्हें पिता, बेटे और पवित्र शक्ति के
नाम से बपतिस्मा दो।[7] **20** और उन्हें वे
सारी बातें मानना सिखाओ जिनकी मैंने
तुम्हें आज्ञा दी है।[8] और देखो! मैं दुनिया
की व्यवस्था* के आखिरी वक्त[9] तक
हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा।"

अध्य. 28
1 मर 16:1; लूक 24:1; लूक 24:10; यूह 20:1
2 मर 16:4, 5; लूक 24:2, 4
3 प्रेष 1:10
4 मर 16:6
5 मत 16:21; मत 17:22, 23; 1कुर 15:3, 4
6 मत 26:32; मत 28:16; मर 14:28
7 मर 16:7
8 मर 16:8; लूक 24:9

दूसरा कॉल.
1 मत 27:65
2 मत 27:64
3 मत 26:32
4 1कुर 15:6
5 इफ 1:20, 21; फिल 2:9
6 प्रेष 1:8; रोम 10:18; रोम 11:13; प्रक 14:6
7 प्रेष 2:38; प्रेष 8:12
8 प्रेष 20:20; 1कुर 11:23; 2पत 3:1, 2; 1यूह 3:23
9 मत 13:39; मत 13:49; मत 24:3

28:2 *अति. क5 देखें। **28:9, 17** *या "दंडवत।"

28:14 *शा., "कायल कर देंगे।" **28:20** *या "ज़माने।" शब्दावली देखें।

मरकुस

के मुताबिक खुशखबरी

सारांश

1 परमेश्वर के बेटे यीशु मसीह के
बारे में खुशखबरी यूँ शुरू होती है:
2 भविष्यवक्ता यशायाह की किताब
में लिखा है: “(देख! मैं अपना दूत तेरे
आगे-आगे भेज रहा हूँ, जो तेरे लिए
रास्ता तैयार करेगा।)[1] 3 सुनो! वीराने
में कोई पुकार रहा है: ‘यहोवा* का
रास्ता तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी
करो।’”[1] 4 इसी के मुताबिक, यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाला वीरान इलाकों में
आया। वह प्रचार करने लगा कि लोगों

अध्य. 1
1 मला 3:1
मत 3:1, 3
मत 11:10
लूक 3:2-6
लूक 7:27

दूसरा कॉल.
1 यश 40:3
यूह 1:23

1:3 *अति. क5 देखें।

को बपतिस्मा लेना होगा, जो इस बात की
निशानी ठहरेगा कि उन्होंने अपने पापों
का पश्चाताप किया है और वे माफी
पाना चाहते हैं।[1] **5** इसलिए पूरे यहू-
दिया प्रदेश और यरूशलेम के सब लोग
यूहन्ना के पास जाने लगे। वे अपने पापों
को खुलकर मान लेते थे और वह उन्हें
यरदन नदी में बपतिस्मा देता* था।[2]
6 यूहन्ना ऊँट के बालों से बने कपड़े
पहनता था और कमर पर चमड़े का
पट्टा बाँधा करता था।[3] वह टिड्डियाँ और
जंगली शहद खाता था।[4] **7** वह यह
प्रचार करता था: "मेरे बाद जो आने-
वाला है वह मुझसे कहीं शक्तिशाली है।
मैं इस लायक भी नहीं कि झुककर उसकी
जूतियों के फीते खोलूँ।[5] **8** मैं तो तुम्हें
पानी से बपतिस्मा देता हूँ, मगर वह तुम्हें
पवित्र शक्ति से बपतिस्मा देगा।"[6]

9 उन्हीं दिनों यीशु, गलील प्रदेश के
नासरत शहर से यूहन्ना के पास आया
और उसने यरदन में यूहन्ना से बप-
तिस्मा लिया।[7] **10** जैसे ही यीशु पानी
में से ऊपर आया, उसने आकाश को खुलते
और पवित्र शक्ति को एक कबूतर के रूप
में अपने ऊपर उतरते देखा।[8] **11** फिर
स्वर्ग से आवाज़ सुनायी दी: "तू मेरा प्यारा
बेटा है, मैंने तुझे मंज़ूर किया है।"[9]

12 इसके तुरंत बाद पवित्र शक्ति ने
यीशु को वीराने में जाने के लिए उभारा।
13 यीशु 40 दिन तक वीराने में ही रहा,
जहाँ शैतान ने उसे फुसलाने की कोशिश
की।[10] वह जंगली जानवरों के बीच रहा
और स्वर्गदूतों ने उसकी सेवा की।[11]

14 फिर यूहन्ना के गिरफ्तार होने के
बाद, यीशु गलील गया[12] और परमेश्वर
की खुशखबरी सुनाने लगा।[13] **15** उसने
यह प्रचार किया, "तय किया गया वक्त आ
चुका है और परमेश्वर का राज पास आ
गया है। इसलिए हे लोगो, पश्चाताप करो[1]
और खुशखबरी पर विश्वास करो।"

16 फिर यीशु ने गलील झील के
किनारे चलते-चलते शमौन और उसके
भाई अन्द्रियास को देखा।[2] वे दोनों मछु-
वारे थे और झील में अपने जाल डाल रहे
थे।[3] **17** यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पीछे
हो लो और जिस तरह तुम मछलियाँ पकड़-
ते हो, मैं तुम्हें इंसानों को पकड़नेवाले
बनाऊँगा।"[4] **18** तब वे फौरन अपने
जाल छोड़कर उसके पीछे चल दिए।[5]
19 थोड़ी दूर चलने पर यीशु ने याकूब
और उसके भाई यूहन्ना को देखा। ये दोनों
जब्दी के बेटे थे और अपनी नाव में जाल
ठीक कर रहे थे।[6] **20** उसने बिना देर
किए उन्हें बुलाया। तब वे अपने पिता
जब्दी को मज़दूरों के साथ नाव में छोड़कर
यीशु के पीछे चल दिए। **21** इसके बाद
वे कफरनहूम गए।

जैसे ही सब्त का दिन शुरू हुआ,
वह वहाँ के सभा-घर में गया और
लोगों को सिखाने लगा।[7] **22** लोग
उसके सिखाने का तरीका देखकर दंग रह
गए, क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों की
तरह नहीं, बल्कि अधिकार रखनेवाले की
तरह सिखा रहा था।[8] **23** वहीं सभा-
घर में एक ऐसा आदमी था जिसमें एक
दुष्ट स्वर्गदूत समाया था। उस आदमी ने
चिल्लाकर कहा, **24** "हे यीशु नासरी,
हमें तुझसे क्या लेना-देना?[9] क्या तू हमें
नाश करने आया है? मैं जानता हूँ तू
असल में कौन है, तू परमेश्वर का पवित्र
जन है!"[10] **25** मगर यीशु ने उसे फट-
कारा, "चुप हो जा और उसमें से बाहर
निकल जा!" **26** तब उस दुष्ट स्वर्ग-
दूत ने उस आदमी को मरोड़ा और फिर
ज़ोर से चीखता हुआ उसमें से बाहर

अध्य. 1
1 मत 3:1, 2; प्रेष 13:24; प्रेष 19:4
2 मत 3:5, 6
3 2रा 1:8
4 मत 3:4
5 लूक 3:16; यूह 1:26, 27; प्रेष 13:25
6 योए 2:28; प्रेष 2:1, 4; प्रेष 11:16; 1कुर 12:13
7 मत 3:13; लूक 3:21, 22
8 यश 42:1; मत 3:16; यूह 1:32-34
9 भज 2:7; मत 3:17; लूक 3:22; 2पत 1:17
10 मत 4:1-10; लूक 4:1-13
11 मत 4:11
12 मत 4:12
13 लूक 4:14, 15; लूक 8:1

दूसरा कॉल.
1 मत 4:17
2 मत 10:2
3 मत 4:18; लूक 5:4
4 मत 4:19, 20
5 मत 19:27; लूक 5:11
6 मत 4:21, 22
7 लूक 4:31-37
8 मत 7:28, 29
9 मत 8:28, 29
10 याकू 2:19

1:5 *या "डुबकी दिलाता।"

निकल गया। **27** यह देखकर सब लोग
हैरान रह गए और आपस में कहने लगे,
“यह क्या है? यह तो कोई नयी शिक्षा
है! वह दुष्ट स्वर्गदूतों को भी अधि-
कार के साथ आज्ञा देता है और वे उसकी
मानते हैं।” **28** और यीशु की चर्चा
बड़ी तेज़ी से गलील के पूरे इलाके में फैल
गयी।

29 तब वे सभा-घर से निकलकर
शमौन और अन्द्रियास के घर गए।[1]
याकूब और यूहन्ना भी उनके साथ थे।
30 शमौन की सास[2] बीमार थी और
बुखार में पड़ी थी। उन्होंने फौरन यीशु
को उसके बारे में बताया। **31** यीशु
उसके पास गया और उसने हाथ पकड़-
कर उसे उठाया। तब उसका बुखार
उतर गया और वह उनकी सेवा करने
लगी।

32 फिर शाम को जब सूरज ढल चुका
था तब लोग उन सभी को जो बीमार थे
और जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत समाए थे, यीशु
के पास लाने लगे।[3] **33** यहाँ तक कि
पूरा शहर उनके दरवाज़े पर जमा हो
गया। **34** तब उसने ऐसे बहुत-से लोगों
को ठीक किया जिन्हें तरह-तरह की
बीमारियाँ थीं।[4] उसने कई दुष्ट स्वर्गदूतों
को भी निकाला मगर वह उन दुष्ट स्वर्ग-
दूतों को बोलने नहीं देता था, क्योंकि वे
जानते थे कि वह मसीह है।*

35 अगली सुबह जब अँधेरा ही था,
तब यीशु उठकर बाहर गया और किसी
एकांत जगह की तरफ निकल पड़ा। वहाँ
वह प्रार्थना करने लगा।[5] **36** मगर
शमौन और उसके साथी उसे ढूँढ़ने निकले
37 और जब वह उन्हें मिला तो उन्होंने
कहा, “सब लोग तुझे ढूँढ़ रहे हैं।”

1:34 *या शायद, “वे जानते थे कि वह कौन है।”

अध्य. 1
1 मत 8:14, 15; लूक 4:38, 39
2 1कुर 9:5
3 मत 8:16; लूक 4:40, 41
4 यश 53:4
5 मत 14:23; मर 14:32; लूक 4:42; इब्र 5:7

दूसरा कॉल.
1 यश 61:1; लूक 4:43; यूह 17:4
2 मत 4:23
3 मत 8:1, 2; लूक 5:12
4 मत 8:3; लूक 5:13
5 लैव 14:3, 4; लैव 14:10, 11; व्य 24:8
6 मत 8:4; लूक 5:14
7 लूक 5:15

अध्य. 2
8 मत 4:13; मत 9:1
9 यश 61:1; इफ 2:17; इब्र 2:3
10 लूक 5:18, 19

38 मगर उसने कहा, “आओ हम कहीं
और आस-पास की बस्तियों में जाएँ ताकि
मैं वहाँ भी प्रचार कर सकूँ क्योंकि मैं इसी-
लिए आया हूँ।”[1] **39** वह वहाँ से गया
और पूरे गलील के सभा-घरों में प्रचार
करता रहा और लोगों में समाए दुष्ट
स्वर्गदूतों को निकालता रहा।[2]

40 फिर उसके पास एक कोढ़ी भी
आया और उसके सामने घुटने टेककर
गिड़गिड़ाने लगा, “बस अगर तू चाहे,
तो मुझे शुद्ध कर सकता है।”[3] **41** उसे
देखकर यीशु तड़प उठा और अपना
हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा,
“हाँ, मैं चाहता हूँ। शुद्ध हो जा।”[4]
42 उसी पल उसका कोढ़ गायब हो
गया और वह शुद्ध हो गया। **43** फिर
यीशु ने उसे फौरन विदा कर दिया और
उसे सख्ती से कहा, **44** “देख, किसी
से कुछ न कहना। मगर जाकर खुद को
याजक को दिखा और मूसा ने शुद्ध होने
के लिए भेंट में जो-जो चीज़ें चढ़ाने के
लिए कहा था उन्हें चढ़ा[5] ताकि उन्हें
गवाही मिले।”[6] **45** लेकिन वहाँ से
जाते ही वह आदमी सबको बताने लगा।
उसने यह किस्सा इतना मशहूर कर दिया
कि इसके बाद यीशु खुलेआम किसी शहर
में न जा सका बल्कि एकांत इलाकों में ही
रहा। फिर भी, लोग हर कहीं से उसके
पास आते रहे।[7]

2 मगर कुछ दिन बाद, यीशु फिर
कफरनहूम आया और चारों तरफ
खबर फैल गयी कि वह घर पर है।[8]
2 वहाँ लोगों की भीड़ लग गयी और घर
लोगों से इतना भर गया कि दरवाज़े के
पास भी जगह नहीं बची। यीशु उन्हें पर-
मेश्वर के वचन सुनाने लगा।[9] **3** तब
लोग एक लकवे के मारे हुए को वहाँ
लाए, जिसे चार आदमी उठाए हुए थे।[10]

4 मगर भीड़ की वजह से वे उसे अंदर
यीशु के पास नहीं ले जा सके। इसलिए
जहाँ यीशु बैठा था, उन्होंने उसके ऊपर
घर की छत को खोदा और खोल दिया
और लकवे के मारे हुए को उसकी खाट
समेत नीचे उतार दिया। 5 जब यीशु
ने उनका विश्वास देखा,[1] तो उसने लकवे
के मारे आदमी से कहा, “बेटे, तेरे पाप
माफ किए गए।”[2] 6 वहाँ कुछ शास्त्री
बैठे थे जो मन में कहने लगे,[3] 7 “यह
आदमी क्या कह रहा है! यह तो परमेश्वर
की निंदा कर रहा है। परमेश्वर के सिवा
और कौन पापों को माफ कर सकता
है?”[4] 8 मगर यीशु ने फौरन मन में
जान लिया कि वे क्या सोच रहे हैं।
इसलिए उसने कहा, “तुम क्यों अपने मन
में ये बातें सोच रहे हो?[5] 9 इस लकवे
के मारे आदमी से क्या कहना ज़्यादा
आसान है, ‘तेरे पाप माफ किए गए’
या यह कहना, ‘उठ, अपनी खाट उठा
और चल-फिर’? 10 मगर इसलिए कि
तुम जान लो कि इंसान के बेटे[6] को
धरती पर पाप माफ करने का अधिकार
दिया गया है . . .।”[7] उसने लकवे के
मारे हुए से कहा, 11 “मैं तुझसे कहता
हूँ, खड़ा हो! अपनी खाट उठा और घर
जा।” 12 तब वह आदमी खड़ा हो गया
और फौरन अपनी खाट उठाकर सबके
सामने बाहर निकल गया। यह देखकर
सभी दंग रह गए और यह कहकर पर-
मेश्वर की महिमा करने लगे, “हमने ऐसा
पहले कभी नहीं देखा।”[8]

13 फिर यीशु वहाँ से निकलकर
झील के किनारे गया और लोगों की
भीड़ उसके पास आती रही और वह उन्हें
सिखाने लगा। 14 फिर चलते-चलते
उसकी नज़र हलफई के बेटे लेवी पर पड़ी
जो कर-वसूली के दफ्तर में बैठा था।
उसने उससे कहा, “आ, मेरा चेला बन
जा।” और वह उठकर उसके पीछे चल
दिया।[1] 15 बाद में वह लेवी के घर
खाने पर गया था* और बहुत-से कर-
वसूलनेवाले और उनके जैसे दूसरे पापी,
यीशु और उसके चेलों के साथ खाने बैठे
थे।# ये लोग बड़ी तादाद में वहाँ जमा थे।
उनमें से कई ऐसे थे जो यीशु के चेले बन
गए थे।[2] 16 मगर जब फरीसी-दल के
कुछ शास्त्रियों ने देखा कि वह पापियों
और कर-वसूलनेवालों के साथ खाना खा
रहा है, तो वे उसके चेलों से कहने लगे,
“यह कर-वसूलनेवालों और पापियों के
साथ खाता है?” 17 यह सुनकर यीशु
ने उनसे कहा, “जो भले-चंगे हैं उन्हें वैद्य
की ज़रूरत नहीं होती, मगर बीमारों को
होती है। मैं धर्मियों को नहीं, पापियों को
बुलाने आया हूँ।”[3]

18 यूहन्ना के चेले और फरीसी उप-
वास किया करते थे। इसलिए वे यीशु के
पास आए और उन्होंने पूछा, “क्या बात है
कि यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले
उपवास रखते हैं, मगर तेरे चेले उपवास
नहीं रखते?”[4] 19 तब यीशु ने उनसे
कहा, “जब तक दूल्हा[5] अपने दोस्तों के
साथ होता है, क्या उसके दोस्त उपवास
रखते हैं? नहीं। जब तक दूल्हा उनके
साथ रहता है, वे उपवास नहीं रखते।
20 मगर वे दिन आएँगे जब दूल्हे को
उनसे जुदा कर दिया जाएगा,[6] तब वे उप-
वास करेंगे। 21 कोई भी पुराने कपड़े
के छेद पर नए कपड़े का टुकड़ा नहीं
लगाता। अगर वह लगाए तो नया टुकड़ा
सिकुड़कर पुराने कपड़े को फाड़ देगा
और छेद और भी बड़ा हो जाएगा।[7]
22 न ही कोई नयी दाख-मदिरा पुरानी

अध्य. 2
1 प्रेष 14:9, 10
2 यश 53:11; मत 9:2; लूक 5:20; लूक 7:47, 48
3 मत 9:3-8; लूक 5:21-26
4 यश 43:25
5 मत 9:4; लूक 6:8; प्रक 2:23
6 दान 7:13
7 यश 53:11
8 मत 9:33; यूह 7:31; यूह 9:32

दूसरा कॉल.
1 मत 9:9; लूक 5:27, 28
2 मत 9:10, 11; लूक 5:29, 30
3 यश 61:1; मत 9:12, 13; लूक 5:31, 32; लूक 19:10; 1ती 1:15
4 मत 9:14, 15; लूक 5:33-35
5 मत 22:2; 2कुर 11:2; प्रक 19:7
6 लूक 17:22
7 मत 9:16, 17; लूक 5:36-38

2:15 *या “मेज़ से टेक लगाए बैठा था।”
#या “मेज़ से टेक लगाए बैठे थे।”

मशकों में भरता है। अगर वह भरे, तो
मदिरा मशकों को फाड़ देगी और मदिरा
के साथ-साथ मशकें भी नष्ट हो जाएँगी।
मगर लोग नयी मदिरा नयी मशकों में
भरते हैं।”

23 जब यीशु सब्त के दिन खेतों से
होकर जा रहा था तो उसके चेले चलते-
चलते अनाज की बालें तोड़ने लगे।[1]
24 तब फरीसियों ने उससे कहा, “यह
देख! ये सब्त के दिन ऐसा काम क्यों
कर रहे हैं जो कानून के खिलाफ है?”
25 मगर यीशु ने कहा, “क्या तुमने कभी
नहीं पढ़ा कि जब दाविद और उसके
आदमी भूखे थे और उनके पास खाने को
कुछ नहीं था, तब उसने क्या किया?[2]
26 क्या तुमने प्रधान याजक अबिया-
तार[3] वाले किस्से में नहीं पढ़ा कि दाविद
परमेश्वर के भवन में गया और उसने
चढ़ावे की रोटियाँ* खायीं और कुछ
अपने साथियों को भी दीं जबकि कानून
के मुताबिक याजकों के सिवा कोई
और ये रोटियाँ नहीं खा सकता था?”[4]
27 फिर यीशु ने कहा, “सब्त का दिन
इंसान के लिए बना है,[5] न कि इंसान सब्त
के दिन के लिए। 28 इंसान का बेटा तो
सब्त के दिन का भी प्रभु है।”[6]

3 एक बार फिर वह सभा-घर में गया।
वहाँ एक ऐसा आदमी था जिसका
एक हाथ सूखा हुआ था।*[7] 2 फरीसी
यीशु पर नज़र जमाए हुए थे कि देखें,
वह उस आदमी को सब्त के दिन ठीक
करता है या नहीं ताकि वे उस पर इलज़ाम
लगा सकें। 3 तब उसने सूखे हाथवाले
आदमी* से कहा, “उठ और यहाँ बीच में
आ।” 4 फिर उसने उनसे पूछा, “पर-
मेश्वर के कानून के हिसाब से सब्त के
दिन क्या करना सही है, किसी का भला
करना या बुरा करना? किसी की जान
बचाना या किसी की जान लेना?”[1] मगर
वे चुप रहे। 5 उनके दिलों की कठोरता
देखकर यीशु बहुत दुखी हुआ[2] और उसने
गुस्से से भरकर उन सबको देखा और
उस आदमी से कहा, “अपना हाथ आगे
बढ़ा।” जब उसने हाथ आगे बढ़ाया तो
उसका हाथ ठीक हो गया। 6 यह देख-
कर फरीसी बाहर निकल गए और उसी
वक्त हेरोदेस के गुट के लोगों के साथ
मिलकर यीशु को मार डालने की साज़िश
करने लगे।[3]

7 मगर यीशु वहाँ से निकलकर अपने
चेलों के साथ झील की तरफ चला
गया। तब गलील और यहूदिया से
भारी तादाद में लोग उसके पीछे-पीछे
गए।[4] 8 उसके बड़े-बड़े कामों की चर्चा
सुनकर यरूशलेम, इदूमिया और यरदन
पार के इलाकों और सोर और सीदोन
के आस-पास से भी लोगों की एक
बड़ी भीड़ उसके पास आयी। 9 उसने
अपने चेलों से कहा कि एक छोटी नाव
उसके लिए तैयार रखें ताकि भीड़ उसे
दबा न दे। 10 यीशु ने बहुतों को ठीक
किया था, इसलिए जितने लोगों को
दर्दनाक बीमारियाँ थीं वे उसे छूने के
लिए उसके पास भीड़ लगाने लगे।[5]
11 जिन लोगों में दुष्ट स्वर्गदूत[6] समाए
थे, वे भी जब उसे देखते तो उसके
आगे गिर पड़ते और चिल्लाकर कहते,
“तू परमेश्वर का बेटा है।”[7] 12 मगर
उसने कई बार उन्हें कड़ा हुक्म दिया कि वे
किसी को न बताएँ कि वह कौन है।[8]

13 फिर यीशु एक पहाड़ पर चढ़ा
और उसने अपने कुछ चेलों को बुलाया[9]
और वे उसके पास आए।[10] 14 उसने

अध्य. 2
1 मत 12:1-8; लूक 6:1-5
2 1शम 21:1-6
3 1शम 22:20
4 निर्ग 25:30; लैव 24:5-9
5 निर्ग 20:9, 10
6 मत 12:8; लूक 6:5

अध्य. 3
7 मत 12:9-14; लूक 6:6-11

दूसरा कॉल.
1 लूक 14:1-3
2 यूह 12:39, 40
3 मत 22:16; मर 12:13
4 मत 12:15
5 मत 9:20, 21; मर 5:27, 28; मर 6:56
6 मत 8:31
7 मर 1:23, 24; मर 5:7; लूक 4:41
8 मत 12:15, 16; मर 1:25
9 यूह 15:16
10 लूक 6:12, 13

2:26 *या “नज़राने की रोटी।” **3:1** *या “लकवा मार गया था।” **3:3** *या “जिसका हाथ लकवा मार गया था।”

12 चेलों का एक दल बनाया* और उन्हें
प्रेषित नाम दिया ताकि वे हमेशा उसके
साथ रहें और वह उन्हें प्रचार के लिए भेजे
15 और दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालने का
अधिकार दे।[1]

16 जिन 12 चेलों का दल[2] उसने
बनाया* वे थे, शमौन जिसे उसने पतरस
नाम दिया,[3] 17 जब्दी का बेटा याकूब
और याकूब का भाई यूहन्ना (इन्हें यीशु ने
बोअनरगिस नाम दिया, जिसका मतलब है
“गरजन के बेटे”),[4] 18 अन्द्रियास,
फिलिप्पुस, बरतुलमै, मत्ती, थोमा, हलफई
का बेटा याकूब, तद्दी, जोशीला* शमौन
19 और यहूदा इस्करियोती, जिसने बाद
में उसके साथ गद्दारी की।

फिर यीशु एक घर में गया। 20 एक
बार फिर लोगों की इतनी भीड़ जमा हो
गयी कि यीशु और उसके चेले खाना तक
न खा सके। 21 मगर जब यीशु के घर-
वालों को इन बातों की खबर मिली, तो
वे निकल पड़े कि उसे पकड़कर ले
आएँ क्योंकि वे कह रहे थे, “उसका
दिमाग फिर गया है।”[5] 22 जो शास्त्री
यरूशलेम से आए थे वे कह रहे थे,
“इसमें बाल-ज़बूल* समाया है। यह
दुष्ट स्वर्गदूतों के राजा की मदद से,
लोगों में समाए दुष्ट स्वर्गदूत निकालता
है।”[6] 23 तब यीशु ने उन्हें अपने
पास बुलाया और मिसालें देकर कहा,
“शैतान खुद शैतान को कैसे निकाल
सकता है? 24 अगर किसी राज में
फूट पड़ जाए, तो वह राज टिक नहीं
सकता।[7] 25 और अगर किसी घर में
फूट पड़ जाए तो वह घर टिक नहीं
सकता। 26 उसी तरह, अगर शैतान
अपने ही खिलाफ उठ खड़ा हो और उसमें
फूट पड़ जाए, तो वह टिक नहीं सकेगा
बल्कि उसका अंत हो जाएगा। 27 सच
तो यह है कि कोई किसी ताकतवर
आदमी के घर में घुसकर उसका सामान
तब तक नहीं चुरा सकता जब तक कि
वह पहले उस आदमी को पकड़कर बाँध
न दे। इसके बाद ही वह उसका घर
लूट सकेगा। 28 मैं तुमसे सच कहता
हूँ, इंसानों की सब बातें माफ की जाएँगी,
फिर चाहे उन्होंने जो भी पाप किए
हों और जो भी निंदा की बातें कही
हों। 29 मगर जो कोई पवित्र शक्ति के
खिलाफ निंदा की बातें कहेगा, उसे कभी
माफ नहीं किया जाएगा,[1] बल्कि वह
ऐसे पाप का दोषी होगा जो कभी नहीं
मिटेगा।”[2] 30 यीशु ने ऐसा इसलिए
कहा क्योंकि वे कह रहे थे, “उसमें एक
दुष्ट स्वर्गदूत है।”[3]

31 फिर उसकी माँ और उसके भाई[4]
आए और उन्होंने बाहर खड़े होकर
उसे बुलाने के लिए किसी को भेजा।[5]
32 भीड़ उसके चारों तरफ बैठी थी
और उन्होंने उससे कहा, “देख! तेरी
माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, वे
तुझसे मिलना चाहते हैं।”[6] 33 मगर
उसने कहा, “मेरी माँ और मेरे भाई कौन
हैं?” 34 फिर उसने उन लोगों को, जो
उसके चारों तरफ घेरा बनाकर बैठे थे,
देखकर कहा, “देखो, ये रहे मेरी माँ और
मेरे भाई![7] 35 जो कोई परमेश्वर की
मरज़ी पूरी करता है, वही मेरा भाई, मेरी
बहन और मेरी माँ है।”[8]

4 एक बार फिर वह झील के किनारे
सिखाने लगा। वहाँ उसके पास लोगों
की बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गयी। इस-
लिए वह एक नाव पर चढ़कर बैठ

3:14, 16 *या “चुना।” **3:18** *शा., “कनानानी।” **3:22** *शैतान को दिया एक नाम।

अध्य. 3
1 मत 10:1
2 मत 10:2-4; लूक 6:14-16; प्रेष 1:13
3 यूह 1:42
4 लूक 9:54
5 यूह 7:5
6 मत 9:34; मत 10:25; मत 12:24-29; लूक 11:15; यूह 8:48
7 लूक 11:17, 18

दूसरा कॉल.
1 मत 12:31, 32; लूक 12:10
2 इब्र 6:4, 6; इब्र 10:26
3 यूह 7:20; यूह 10:20
4 मत 13:55; यूह 2:12; प्रेष 1:14
5 मत 12:46-50; लूक 8:19-21
6 मर 6:3
7 मत 12:49; इब्र 2:11
8 मत 12:50; लूक 8:21; यूह 15:14

गया और किनारे से थोड़ी दूर नाव
में बैठकर भीड़ को सिखाने लगा। सारी
भीड़ किनारे पर थी।[1] **2** तब वह उन्हें
मिसालें देकर कई बातें सिखाने लगा।[2]
उसने कहा,[3] **3** "ध्यान से सुनो। एक
बीज बोनेवाला बीज बोने निकला।[4]
4 जब वह बो रहा था, तो कुछ बीज रास्ते
के किनारे गिरे और पंछी आकर उन्हें खा
गए। **5** कुछ बीज ऐसी ज़मीन पर गिरे
जहाँ ज़्यादा मिट्टी नहीं थी, क्योंकि मिट्टी
के नीचे चट्टान थी। इन बीजों के अंकुर
फौरन दिखायी देने लगे क्योंकि वहाँ मिट्टी
गहरी नहीं थी।[5] **6** लेकिन जब सूरज
निकला, तो वे झुलस गए और जड़ न
पकड़ने की वजह से सूख गए। **7** कुछ
और बीज काँटों में गिरे और कँटीले पौधों
ने बढ़कर उन्हें दबा दिया और उन्होंने
फल नहीं दिए।[6] **8** मगर कुछ और
बीज बढ़िया मिट्टी पर गिरे, वे उगे और
बढ़े और उनमें फल आने लगे। किसी में
30 गुना, किसी में 60 गुना और किसी
में 100 गुना।"[7] **9** फिर उसने कहा,
"कान लगाकर सुनो कि मैं क्या कह
रहा हूँ।"[8]

10 जब यीशु अकेला था, तो उसके
12 चेले और बाकी लोग उससे
इन मिसालों के बारे में सवाल करने
लगे।[9] **11** यीशु ने उनसे कहा, "पर-
मेश्वर के राज के पवित्र रहस्य[10] की
समझ तुम्हें दी गयी है, मगर बाहरवालों
के लिए ये सिर्फ मिसालें हैं[11] **12** ताकि
वे देखते हुए भी न देख सकें और
सुनकर भी इसके मायने न समझ सकें।
वे कभी पलटकर नहीं आएँगे और माफी
नहीं पाएँगे।"[12] **13** फिर उसने कहा,
"जब तुम यह मिसाल नहीं समझते, तो
बाकी सब मिसालों का मतलब कैसे सम-
झोगे?

14 बोनेवाला वचन बोता है।[1]
15 जो रास्ते के किनारे बोए गए, वे
ऐसे लोग हैं जो वचन सुनते हैं, मगर
फौरन शैतान आता है[2] और उनमें बोया
गया वचन ले जाता है।[3] **16** वैसे ही जो
चट्टानी ज़मीन पर बोए गए, वे ऐसे लोग हैं
जो वचन सुनते ही उसे खुशी-खुशी मानते
हैं,[4] **17** मगर उनमें जड़ नहीं होती इस-
लिए वे थोड़े समय के लिए रहते हैं। फिर
जैसे ही वचन की वजह से उन पर मुसीबतें
आती हैं या ज़ुल्म होता है, वे वचन पर
विश्वास करना छोड़ देते हैं।* **18** कुछ
और बीज काँटों में बोए गए। वे ऐसे लोग
हैं जो वचन सुनते तो हैं,[5] **19** मगर इस
ज़माने* की ज़िंदगी की चिंताएँ[6] और
धोखा देनेवाली पैसे की ताकत[7] और
बाकी सब चीज़ों की चाहत[8] उनमें समा
जाती है और वचन को दबा देती है और
वे फल नहीं देते। **20** आखिर में, जो
बीज बढ़िया मिट्टी में बोए गए, वे ऐसे
लोग हैं जो वचन सुनकर उसे खुशी-खुशी
मानते हैं और फल देते हैं, कोई 30 गुना,
कोई 60 गुना और कोई 100 गुना।"[9]

21 फिर यीशु ने उनसे कहा, "क्या
कोई दीपक जलाकर उसे टोकरी* से
ढकता है या पलंग के नीचे रखता है? क्या
वह उसे लाकर दीवट पर नहीं रखता?[10]
22 ऐसा कुछ भी नहीं जो छिपा है और
खोला न जाए। ऐसी कोई भी चीज़ नहीं
जिसे बड़ी सावधानी से छिपाया गया हो
और जो निकलकर खुले में न आए।[11]
23 कान लगाकर सुनो कि मैं क्या कह
रहा हूँ।"[12]

24 फिर यीशु ने उनसे कहा, "तुम जो
सुनते हो उस पर ध्यान दो।[13] जिस नाप

4:17 *शा., "तो वे ठोकर खाते हैं।" **4:19** *या "दुनिया की व्यवस्था।" शब्दावली देखें। **4:21** *या "नापने की टोकरी।"

अध्य. 4
1 मत 13:1, 2; लूक 8:4
2 मत 13:34
3 मत 13:3-9; लूक 8:5-8
4 मर 4:14
5 मर 4:16, 17
6 मर 4:18, 19
7 मर 4:20
8 नीत 1:5; मत 11:15; लूक 8:8
9 मत 13:10; लूक 8:9
10 इफ 1:9, 10; कुल 1:26, 27
11 मत 13:11; लूक 8:10
12 यश 6:9, 10; मत 13:13, 14; यूह 12:40; प्रेष 28:26

दूसरा कॉल.
1 मत 13:18; लूक 8:11; 1पत 1:25
2 1पत 5:8
3 मत 13:19; लूक 8:12
4 मत 13:20, 21; लूक 8:13
5 मत 13:22; लूक 8:14
6 मत 6:25; मत 24:38, 39
7 नीत 23:4, 5; मर 10:23; लूक 18:24; 1ती 6:9; 2ती 4:10
8 1यूह 2:16
9 मत 13:23; लूक 8:15
10 मत 5:15; लूक 8:16, 17; लूक 11:33
11 मत 10:26; लूक 12:2
12 नीत 1:5; मत 11:15; प्रक 2:7
13 लूक 8:18; याकू 1:25

से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा बल्कि तुम्हें उससे भी ज़्यादा दिया जाएगा। **25** क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा।[1] लेकिन जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है।"[2]

26 फिर उसने कहा, "परमेश्वर का राज ऐसा है जैसे कोई आदमी खेत में बीज छितराता है। **27** वह आदमी हर रात सोता है और सुबह जागता है। इस दौरान बीज में अंकुर फूटते हैं और अपने आप बढ़ते हैं लेकिन कैसे, यह वह नहीं जानता। **28** ज़मीन अपने आप धीरे-धीरे फल देती है, पहले अंकुर निकलता है, फिर डंठल और आखिर में तैयार दाने की बालें। **29** फिर जैसे ही फसल पक जाती है, वह हँसिया चलाता है क्योंकि कटाई का वक्त आ गया है।"

30 फिर उसने कहा, "हम परमेश्वर के राज को किसके जैसा बताएँ या क्या मिसाल देकर इसे समझाएँ? **31** वह राई के दाने की तरह है। जब यह दाना ज़मीन में बोया जाता है तो बीजों में सबसे छोटा होता है।[3] **32** लेकिन बोने के बाद जब वह उगता है, तो सभी सब्ज़ियों के पौधों से बड़ा हो जाता है। उसमें ऐसी बड़ी-बड़ी डालियाँ निकलती हैं कि उसकी छाँव में आकाश के पंछी आकर बसेरा करते हैं।"

33 तो इस तरह की कई मिसालें देकर,[4] जितना वे समझ सकते थे, यीशु उनको परमेश्वर का वचन सुनाया करता था। **34** वाकई, वह बगैर मिसाल के लोगों से बात नहीं करता था, मगर अपने चेलों को अकेले में उन सब बातों का मतलब समझाता था।[5]

35 उस दिन जब शाम ढल गयी तो उसने चेलों से कहा, "आओ हम झील के उस पार चलें।"[1] **36** इसलिए भीड़ को विदा करने के बाद, वे उसे नाव में ले गए। उसकी नाव के साथ दूसरी नावें भी थीं।[2] **37** अब एक ज़ोरदार आँधी चलने लगी और लहरें नाव से इतनी ज़ोर से टकराने लगीं कि नाव पानी से भरने पर थी।[3] **38** मगर यीशु नाव के पिछले हिस्से में एक तकिए पर सिर रखकर सो रहा था। चेलों ने उसे जगाया और कहा, "गुरु, क्या तुझे फिक्र नहीं कि हम नाश होनेवाले हैं?" **39** तब वह उठा और उसने आँधी को डाँटा और लहरों से कहा, "शश्श! खामोश हो जाओ!"[4] तब आँधी थम गयी और बड़ा सन्नाटा छा गया। **40** यीशु ने उनसे कहा, "तुम क्यों इतना डर रहे हो?* क्या तुममें अब भी विश्वास नहीं?" **41** मगर उनमें अजीब-सा डर समा गया और वे एक-दूसरे से कहने लगे, "आखिर यह कौन है? आँधी और समुंदर तक इसका हुक्म मानते हैं!"[5]

5 फिर वे झील के उस पार गिरासेनियों के इलाके में पहुँचे।[6] **2** जैसे ही यीशु नाव से उतरा, एक आदमी जो एक दुष्ट स्वर्गदूत के वश में था, कब्रों* के बीच से निकलकर उसके पास आया। **3** यह आदमी कब्रों के बीच भटकता फिरता था। कोई भी उसे बाँधकर रखने में कामयाब नहीं हो सका था, यहाँ तक कि ज़ंजीरों से भी नहीं। **4** उसे कई बार बेड़ियों और ज़ंजीरों से बाँधा गया था, मगर वह ज़ंजीरें तोड़ डालता और बेड़ियों के टुकड़े-टुकड़े कर देता था। किसी में इतनी ताकत नहीं थी कि उसे काबू में कर सके। **5** वह रात-दिन कब्रों और पहाड़ों के बीच चिल्लाता रहता और पत्थरों से खुद को घायल करता रहता।

अध्य. 4
- 1 मत 25:23
- 2 मत 13:12; लूक 8:18; लूक 19:26
- 3 मत 13:31, 32; लूक 13:18, 19
- 4 भज 78:2
- 5 मत 13:11; मत 13:34, 35; मर 4:11

दूसरा कॉल.
- 1 मत 8:18
- 2 मत 8:23; लूक 8:22
- 3 मत 8:24-27; लूक 8:23-25
- 4 भज 89:9
- 5 यूह 6:19

अध्य. 5
- 6 मत 8:28; लूक 8:26, 27

4:40 * या "तुम्हारे दिल क्यों काँप रहे हैं?"
5:2 * या "स्मारक कब्रों।"

6 लेकिन जैसे ही उसने दूर से यीशु
को देखा, वह भागकर उसके पास गया
और उसे झुककर प्रणाम किया।[1]
7 फिर उसने ज़ोर से चिल्लाकर कहा,
“हे यीशु, परम-प्रधान परमेश्‍वर के बेटे,
मेरा तुझसे क्या लेना-देना? मैं परमेश्‍वर
की शपथ धराकर तुझसे कहता हूँ, मुझे
मत तड़पा।”[2] 8 उसने ऐसा इसलिए
कहा क्योंकि यीशु उससे कह रहा था,
“हे दुष्ट स्वर्गदूत, इस आदमी में से बाहर
निकल जा।”[3] 9 मगर यीशु ने उससे
पूछा, “तेरा नाम क्या है?” उसने कहा,
“मेरा नाम पलटन है क्योंकि हम बहुत
सारे हैं।” 10 और उसने बार-बार यीशु
से बिनती की कि वह उन्हें उस इलाके से
बाहर न भेजे।[4]

11 उस पहाड़ पर सूअरों[5] का एक
बड़ा झुंड चर रहा था।[6] 12 इसलिए
दुष्ट स्वर्गदूतों ने उससे बिनती की, “हमें
उन सूअरों में भेज दे ताकि हम उनमें समा
जाएँ।” 13 उसने उन्हें जाने की इजा-
ज़त दी। तब दुष्ट स्वर्गदूत उस आदमी
में से बाहर निकल गए और उन सूअरों में
समा गए और करीब 2,000 सूअरों का
वह पूरा झुंड तेज़ी से दौड़ा और पहाड़ की
कगार से नीचे झील में जा गिरा और सारे
सूअर डूबकर मर गए। 14 मगर उन्हें
चरानेवाले वहाँ से भाग गए और उन्होंने
शहर और देहात में जाकर इसकी खबर
दी। और लोग देखने आए कि वहाँ क्या
हुआ था।[7] 15 वे यीशु के पास आए
और उन्होंने देखा कि वह आदमी जो दुष्ट
स्वर्गदूत के कब्ज़े में था, वहाँ बैठा हुआ
है। यह वही आदमी था जिसमें पहले पल-
टन समायी हुई थी। अब वह कपड़े
पहने है और उसकी दिमागी हालत ठीक
हो गयी है। और लोग बहुत डर गए।
16 जिन्होंने यह सब अपनी आँखों से
देखा था, उन्होंने लोगों को बताया कि
जो आदमी दुष्ट स्वर्गदूतों के कब्ज़े में था
उसके साथ यह सब कैसे हुआ और सूअरों
का क्या हाल हुआ। 17 इसलिए वे
यीशु से बिनती करने लगे कि वह उनके
इलाके से चला जाए।[1]

18 जब यीशु नाव पर चढ़ रहा था,
तो वह आदमी जिसमें पहले दुष्ट स्वर्ग-
दूत समाया था, उससे बिनती करने
लगा कि वह उसे अपने साथ आने दे।[2]
19 मगर यीशु ने उसे नहीं आने दिया
बल्कि उससे कहा, “अपने घर चला
जा और अपने रिश्‍तेदारों को बता कि
यहोवा* ने तेरे लिए क्या-क्या किया और
तुझ पर कितनी दया की है।” 20 तब
वह आदमी वहाँ से चला गया और दिका-
पुलिस* में उन सारे कामों का ऐलान
करने लगा जो यीशु ने उसके लिए किए
थे और सब लोग ताज्जुब करने लगे।

21 जब यीशु नाव से इस पार लौटा,
तो एक बड़ी भीड़ उसके पास जमा
हो गयी।[3] वह झील के किनारे था।
22 वहाँ सभा-घर का एक अधिकारी
आया जिसका नाम याइर था। जैसे ही
उसने यीशु को देखा वह उसके पैरों
पर गिर पड़ा।[4] 23 वह बार-बार उससे
मिन्‍नत करने लगा, “मेरी बच्ची की
हालत बहुत खराब है।* मेहरबानी करके
मेरे साथ चल और उस पर अपने हाथ
रख[5] ताकि वह अच्छी हो जाए और जीती
रहे।” 24 तब यीशु उसके साथ चल
दिया। एक बड़ी भीड़ उसके पीछे थी और
लोग उस पर गिरे जा रहे थे।

25 वहाँ एक ऐसी औरत थी जिसे
12 साल से खून बहने की बीमारी थी।[6]

अध्य. 5
1 लूक 8:28-30
2 मत 8:29; याकू 2:19
3 प्रेष 16:17, 18
4 लूक 8:31
5 लैव 11:7, 8; व्य 14:8
6 मत 8:30-33; लूक 8:32-34
7 लूक 8:35-37

दूसरा कॉल.
1 मत 8:34
2 लूक 8:38, 39
3 लूक 8:40
4 मत 9:18; लूक 8:41, 42
5 लूक 4:40
6 लैव 15:25; मत 9:20-22; लूक 8:43, 44

5:19 *अति. क5 देखें। **5:20** *या “दस शहरों का इलाका।” **5:23** *या “मरने पर है।”

26 उसने कई वैद्यों से इलाज करवा-
करवाकर बहुत दुख उठाया था और
उसके पास जो कुछ था, वह सब खर्च
करने के बाद भी वह ठीक नहीं हुई,
उलटा उसकी हालत और ज़्यादा बिगड़
गयी थी। **27** जब उसने यीशु के बारे
में चर्चा सुनी, तो वह भीड़ में उसके पीछे
से आयी और उसके कपड़े को छुआ[1]
28 क्योंकि वह कहती थी, "अगर मैं
उसके कपड़े को ही छू लूँ, तो अच्छी
हो जाऊँगी।"[2] **29** उसी घड़ी उसका
खून बहना बंद हो गया और उसने मह-
सूस किया कि उसके शरीर की वह दर्द-
नाक बीमारी ठीक हो गयी है।

30 उसी घड़ी यीशु ने जान लिया कि
उसके अंदर से शक्ति निकली है[3] और
उसने भीड़ में पीछे मुड़कर कहा, "मेरे
कपड़ों को किसने छुआ?"[4] **31** मगर
चेलों ने कहा, "तू देख रहा है कि
भीड़ तुझे कैसे दबाए जा रही है, फिर
भी तू कह रहा है, 'मुझे किसने छुआ?'"
32 लेकिन यीशु चारों तरफ देखने लगा
कि किसने ऐसा किया है। **33** तब वह
औरत, यह जानते हुए कि वह ठीक हो
गयी है, डरती-काँपती हुई आयी और
उसके आगे गिर पड़ी और उसे सबकुछ
सच-सच बता दिया। **34** यीशु ने उससे
कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे ठीक
किया है। जा, अब और चिंता मत
करना।[5] यह दर्दनाक बीमारी तुझे फिर
कभी न हो।"[6]

35 जब वह बोल ही रहा था, तो
सभा-घर के अधिकारी के घर से कुछ
आदमी आए और कहने लगे, "तेरी
बेटी मर गयी! अब गुरु को और क्यों
परेशान करें?"[7] **36** मगर जब उनकी
बातें यीशु के कानों में पड़ीं, तो उसने
सभा-घर के अधिकारी से कहा, "डर मत,
बस विश्वास रख।"[1] **37** फिर उसने
पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना
के सिवा किसी और को अपने साथ नहीं
आने दिया।[2]

38 जब वे सभा-घर के अधिकारी के
घर पहुँचे, तो उसने देखा कि वहाँ
काफी होहल्ला मचा है। लोग ज़ोर-ज़ोर से
रो रहे हैं, मातम मना रहे हैं।[3] **39** यीशु
ने अंदर जाने के बाद उनसे कहा,
"तुम क्यों रो रहे हो और होहल्ला मचा
रहे हो? बच्ची मरी नहीं बल्कि सो
रही है।"[4] **40** यह सुनकर वे उसकी
खिल्ली उड़ाने लगे। मगर यीशु ने उन
सबको बाहर भेज दिया और लड़की के
माँ-बाप और अपने साथियों को लेकर वह
अंदर गया जहाँ लड़की थी। **41** फिर
यीशु ने बच्ची का हाथ पकड़कर कहा,
"तलीता कूमी," जिसका मतलब है,
"बच्ची, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ!"[5]
42 उसी वक्त वह लड़की उठकर चलने-
फिरने लगी। (वह 12 साल की थी।)
यह देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न
रहा। **43** मगर यीशु ने बार-बार उन्हें
सख्ती से कहा* कि वे इस बारे में किसी
को न बताएँ[6] और फिर कहा कि लड़की
को कुछ खाने के लिए दिया जाए।

6 फिर यीशु वहाँ से निकला और अपने
इलाके में आया जहाँ वह पला-बढ़ा
था[7] और उसके चेले भी उसके साथ
आए। **2** जब सब्त का दिन आया,
तो वह सभा-घर में सिखाने लगा। उसकी
बात सुननेवाले ज़्यादातर लोग हैरान थे।
उन्होंने कहा, "इस आदमी ने ये बातें
कहाँ से सीखीं?[8] भला यह बुद्धि इसे
कहाँ से मिली और यह ऐसे शक्तिशाली
काम कैसे कर पा रहा है?[9] **3** यह तो
वही बढ़ई है न,[10] जो मरियम का बेटा[11]

5:43 *या "कड़ा आदेश दिया।"

अध्य. 5
1 मत 14:36; मर 6:56
2 मत 9:21
3 लूक 5:17; लूक 6:19
4 लूक 8:45-48
5 लूक 7:50; लूक 8:48
6 मत 9:22
7 लूक 8:49

दूसरा कॉल.
1 लूक 8:50; यूह 11:39, 40
2 मत 17:1; मत 26:36, 37
3 मत 9:23-26; लूक 8:51-56
4 लूक 8:52; यूह 11:11
5 मत 9:25; लूक 7:14; लूक 8:54; प्रेष 9:40
6 मर 1:42-44; मर 7:35, 36

अध्य. 6
7 लूक 4:16
8 यूह 6:42; यूह 7:15
9 मत 13:54-58
10 यश 53:2
11 यूह 6:42

और याक़ूब, यूसुफ, यहूदा और शमौन
का भाई है![1] और इसकी बहनें यहाँ हमारे
बीच ही रहती हैं न!” इसलिए उन्होंने उस
पर यकीन नहीं किया। 4 मगर यीशु ने
उनसे कहा, “एक भविष्यवक्ता का हर
कहीं आदर किया जाता है, सिर्फ उसके
अपने इलाके, घर और रिश्तेदारों के बीच
नहीं किया जाता।”[2] 5 इसलिए उसने
चंद बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें ठीक
करने के सिवा वहाँ और कोई शक्तिशाली
काम नहीं किया। 6 दरअसल उनके
विश्वास की कमी देखकर उसे ताज्जुब
हुआ। इसके बाद वह आस-पास के गाँवों
में जाकर सिखाने लगा।[3]

7 फिर यीशु ने उन बारहों को
बुलाया और वह उन्हें दो-दो की जोड़ी
में भेजने लगा।[4] उसने उन्हें दुष्ट स्वर्ग-
दूतों पर अधिकार भी दिया।[5] 8 उसने
ये हिदायतें भी दीं कि वे सफर के लिए
एक लाठी को छोड़ और कुछ न लें, न
रोटी, न खाने की पोटली, न अपने कमर-
बंद में पैसे,*[6] 9 न ही दो जोड़ी कपड़े
लें* बल्कि जूतियाँ कस लें। 10 यीशु
ने उनसे यह भी कहा, “जब भी तुम
किसी घर में जाओ, तो वहाँ तब तक
ठहरो जब तक तुम उस इलाके में
रहो।[7] 11 अगर किसी इलाके में लोग
तुम्हें स्वीकार नहीं करें या तुम्हारी नहीं
सुनें, तो वहाँ से बाहर निकलते वक्त
अपने पैरों की धूल झाड़ देना ताकि उन्हें
गवाही मिले।”[8] 12 तब वे निकल पड़े
और प्रचार करने लगे कि लोग पश्‍चा-
ताप करें।[9] 13 उन्होंने कई दुष्ट स्वर्ग-
दूतों को निकाला[10] और कई बीमारों पर
तेल मलकर उन्हें ठीक किया।

14 यह बात राजा हेरोदेस के कानों
में पड़ी क्योंकि यीशु का नाम मशहूर हो
गया था। लोग कहते थे, “यूहन्‍ना बप-
तिस्मा देनेवाला, जो मर गया था, ज़िंदा
कर दिया गया है और इसीलिए वह
ऐसे शक्तिशाली काम कर रहा है!”[1]
15 मगर दूसरे कहते थे, “यह एलि-
याह है।” कुछ और लोग कहते थे, “यह
तो पुराने ज़माने के भविष्यवक्ताओं जैसा
कोई भविष्यवक्ता है।”[2] 16 मगर जब
हेरोदेस ने यह बात सुनी, तो उसने
कहा, “जिस यूहन्‍ना का सिर मैंने कट-
वाया था, वह फिर से ज़िंदा हो गया है।”
17 हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस
की पत्नी हेरोदियास से शादी कर ली
थी। हेरोदियास की वजह से हेरोदेस ने
यूहन्‍ना को गिरफ्तार कर लिया था और
उसे ज़ंजीरों में बाँधकर जेल में डलवा
दिया था।[3] 18 क्योंकि यूहन्‍ना हेरोदेस
से कहा करता था, “तूने अपने भाई की
पत्नी को अपना बनाकर कानून तोड़ा
है।”[4] 19 इसलिए हेरोदियास, यूहन्‍ना
से नफरत करने लगी थी। वह उसे मार
डालना चाहती थी, मगर ऐसा नहीं कर
पा रही थी। 20 क्योंकि हेरोदेस जानता
था कि यूहन्‍ना नेक और पवित्र इंसान
है।[5] इसलिए वह उससे डरता था और
उसे बचाने की कोशिश करता था। वह
यूहन्‍ना की बातें सुनने के बाद बड़ी उल-
झन में पड़ जाता था कि क्या करे। फिर
भी वह खुशी से उसकी सुनता था।

21 मगर एक दिन वह मौका
आया जिसकी हेरोदियास को तलाश थी।
उस दिन हेरोदेस का जन्मदिन था और
उसने शाम की बड़ी दावत रखी[6] जिसमें
उसने बड़े-बड़े अधिकारियों और सेना-
पतियों और गलील के जाने-माने लोगों
को बुलाया।[7] 22 तब हेरोदियास की
बेटी वहाँ आयी और उसने नाचकर

अध्य. 6
1 मर 3:31; गल 1:19
2 मत 13:57; लूक 4:24; यूह 4:44
3 मत 9:35; लूक 13:22
4 लूक 10:1
5 मत 10:1; लूक 9:1-6
6 मत 10:9, 10
7 मत 10:11
8 मत 10:14; लूक 10:10, 11; प्रेष 13:50, 51
9 प्रेष 2:38; प्रेष 3:19
10 लूक 10:17

दूसरा कॉल.
1 मत 14:1-5; लूक 9:7-9
2 मत 16:14; मर 8:28
3 लूक 3:19, 20
4 लैव 18:16; लैव 20:21
5 मत 11:11; मत 21:26
6 उत 40:20-22
7 मत 14:6-12

6:8 *शा., “ताँबा।” 6:9 *शा., “दो-दो कपड़े न पहनें।”

हेरोदेस और दावत में मौजूद* बाकी
लोगों का दिल खुश किया। राजा ने
लड़की से कहा, “तू जो चाहे माँग, मैं तुझे
दे दूँगा।” **23** राजा ने कसम खायी,
“तू जो चाहे माँग ले, मैं अपना आधा
राज तक तुझे दे दूँगा।” **24** तब लड़की
ने बाहर जाकर अपनी माँ से पूछा, “मैं
क्या माँगूँ?” उसकी माँ ने कहा, “यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाले का सिर।” **25** उसी
वक्त वह लड़की तेज़ी से अंदर राजा के
पास गयी और उसने कहा, “मैं चाहती
हूँ कि तू अभी, इसी वक्त मुझे एक थाल
में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर ला
दे।”[1] **26** यह सुनकर राजा बहुत दुखी
हुआ, फिर भी उसने जो कसमें खायी थीं
और जो मेहमान वहाँ थे,* उनकी वजह
से उसने लड़की की गुज़ारिश नहीं ठुक-
रायी। **27** राजा ने फौरन एक अंग-
रक्षक को भेजा और उसे यूहन्ना का
सिर लाने का हुक्म दिया। उस आदमी ने
जाकर जेल में यूहन्ना का सिर काट
दिया **28** और उसे एक थाल में रखकर
लड़की को दे दिया और लड़की ने उसे
ले जाकर अपनी माँ को दिया। **29** जब
यूहन्ना के चेलों को इसकी खबर मिली,
तो वे आकर उसकी लाश ले गए और उसे
एक कब्र* में रख दिया।

30 यीशु के प्रेषित उसके पास इकट्ठा
हुए और उन्होंने लोगों के बीच जो-
जो काम किए थे और उन्हें जो-जो
सिखाया था, वह सब उसे बताया।[2]
31 तब यीशु ने उनसे कहा, “आओ, तुम
सब अलग किसी एकांत जगह में चल-
कर थोड़ा आराम कर लो,”[3] क्योंकि
वहाँ बहुत लोग आ-जा रहे थे और उन्हें
खाने तक की फुरसत नहीं मिली थी।
32 इसलिए वे एक नाव पर चढ़कर
किसी एकांत जगह के लिए निकल
पड़े।[1] **33** मगर लोगों ने उन्हें जाते देख
लिया और बहुतों को इस बात का पता
चल गया। तब सब शहरों से लोग दौड़-
कर उनसे पहले ही उस जगह जा
पहुँचे। **34** जब यीशु नाव से उतरा तो
उसने लोगों की एक भीड़ देखी और उन्हें
देखकर वह तड़प उठा,[2] क्योंकि वे ऐसी
भेड़ों की तरह थे जिनका कोई चरवाहा न
हो।[3] और वह उन्हें बहुत-सी बातें सिखाने
लगा।[4]

35 अब काफी वक्त बीत चुका था
और उसके चेलों ने उसके पास आकर
कहा, “यह जगह सुनसान है और बहुत
देर हो चुकी है।[5] **36** इसलिए इन्हें
विदा कर ताकि वे आस-पास के देहातों
और गाँवों में जाकर खाने के लिए
कुछ खरीद लें।”[6] **37** मगर यीशु ने
उनसे कहा, “तुम्हीं उन्हें कुछ खाने को
दो।” यह सुनकर चेलों ने कहा, “क्या
हम 200 दीनार* की रोटियाँ खरीदें
और इन्हें खाने को दें?”[7] **38** यीशु ने
उनसे कहा, “जाओ देखो, तुम्हारे पास
कितनी रोटियाँ हैं।” पता लगाकर उन्होंने
कहा, “पाँच। और दो मछलियाँ भी हैं।”[8]
39 फिर यीशु ने सब लोगों से कहा कि वे
अलग-अलग टोलियाँ बनाकर हरी घास
पर आराम से बैठ जाएँ।[9] **40** वे सौ-
सौ और पचास-पचास की टोलियों में बैठ
गए। **41** यीशु ने वे पाँच रोटियाँ और
दो मछलियाँ लीं और आकाश की तरफ
देखकर प्रार्थना में धन्यवाद दिया।[10] फिर
वह रोटियाँ तोड़कर चेलों को देने लगा
ताकि वे उन्हें लोगों में बाँटें। उसने
वे दो मछलियाँ भी सबके लिए बाँट

अध्य. 6

1 मत 14:8
2 लूक 9:10
3 मत 11:29
मत 14:13

दूसरा कॉल.

1 यूह 6:1, 2
2 मत 14:14
इब्र 4:15
3 1रा 22:17
यश 53:6
यहे 34:5, 8
मत 9:36
4 यश 61:1
लूक 9:11
5 मत 14:15-21
लूक 9:12-17
6 यूह 6:5
7 2रा 4:42-44
मत 15:33
यूह 6:7
8 यूह 6:9
9 यूह 6:10-13
10 मर 8:6
लूक 24:30
प्रेष 27:35

6:22 *या “मेज़ से टेक लगाए।” **6:26** *या “जो मेज़ से टेक लगाए बैठे थे।” **6:29** *या “स्मारक कब्र।”

6:37 *अति. ख14 देखें।

दीं। **42** तब सब लोगों ने जी-भरकर खाया **43** और उन्होंने बची हुई रोटियों के टुकड़े उठाए जिनसे 12 टोकरियाँ भर गयीं। इनके अलावा मछलियाँ भी थीं।[1] **44** और रोटियाँ खानेवालों में आदमियों की गिनती 5,000 थी।

45 फिर यीशु ने बिना देर किए अपने चेलों से कहा कि वे नाव पर चढ़ जाएँ और उस पार बैतसैदा चले जाएँ, जबकि वह खुद भीड़ को विदा करने लगा।[2] **46** मगर उनको अलविदा कहने के बाद, वह प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर चढ़ गया।[3] **47** अब शाम ढल चुकी थी और नाव झील के बीच थी, मगर वह अकेला पहाड़ पर था।[4] **48** उसने देखा कि तेज़ आँधी चल रही है और उसके चेलों को नाव खेने में बड़ी मुश्किल हो रही है क्योंकि हवा का रुख उनके खिलाफ था। तब रात के करीब चौथे पहर* वह झील पर चलते हुए उनकी तरफ आया। मगर ऐसा लग रहा था जैसे वह उनसे आगे जाना चाहता है।# **49** जैसे ही चेलों ने देखा कि वह पानी पर चल रहा है, उन्होंने सोचा, “यह ज़रूर हमारा वहम है!” और वे ज़ोर से चिल्ला उठे। **50** क्योंकि वह उन सबको नज़र आ रहा था और वे घबरा गए। मगर उसने फौरन उनसे बात की और कहा, “हिम्मत रखो, मैं ही हूँ। डरो मत।”[5] **51** फिर यीशु भी उनके पास नाव पर चढ़ गया और आँधी थम गयी। वे मन-ही-मन बहुत हैरान थे **52** क्योंकि रोटियों का चमत्कार देखने के बाद भी वे उसके मायने नहीं समझ सके थे। उनके मन अभी-भी समझने में मंद थे।

6:48 *यानी सुबह करीब 3 बजे से करीब 6 बजे तक। #या “आगे निकलनेवाला है।”

अध्य. 6
1 मत 14:20; लूक 9:17; यूह 6:13
2 मत 14:22
3 मत 6:6; मत 14:23; मर 1:35; लूक 6:12
4 मत 14:24-33; यूह 6:16-21
5 मत 14:27; यूह 6:20

दूसरा कॉल.
1 मत 14:34-36
2 मत 9:20; मर 5:25-28; लूक 8:43, 44; प्रेष 19:11, 12

अध्य. 7
3 मत 15:1
4 मत 23:25; लूक 11:38, 39
5 मत 15:2

53 जब वे इस पार किनारे पहुँचे, तो गन्नेसरत आए और वहीं पास में नाव का लंगर डाला।[1] **54** मगर जैसे ही वे नाव से उतरे, लोगों ने यीशु को पहचान लिया। **55** और वे उस पूरे इलाके में यहाँ-वहाँ दौड़े गए और बीमारों को खाट पर डालकर लाते गए और उन्हें जहाँ-जहाँ यीशु के होने की खबर मिली वे उन्हें वहाँ ले गए। **56** यीशु जिस किसी गाँव, शहर या देहात में जाता, लोग वहाँ के बाज़ारों में अपने बीमारों को रख देते और उससे बिनती करते कि वह उन्हें अपने कपड़े की झालर को ही छू लेने दे।[2] और जितनों ने उसकी झालर छुई, वे सभी ठीक हो गए।

7 अब फरीसी और कुछ शास्त्री जो यरूशलेम से वहाँ आए थे, उसके पास जमा हुए।[3] **2** उन्होंने देखा कि उसके कुछ चेले दूषित हाथों से यानी बिना हाथ धोए* खाना खाते हैं। **3** (दर-असल फरीसी और सारे यहूदी अपने पुरखों की ठहरायी परंपराओं को सख्ती से मानते हैं। इसलिए वे तब तक खाना नहीं खाते जब तक कि कोहनी तक हाथ न धो लें। **4** और बाज़ार से लौटने पर वे तब तक नहीं खाते जब तक कि वे पानी से खुद को शुद्ध न कर लें। ऐसी कई और परंपराएँ उन्हें मिली हैं जिन्हें वे सख्ती से मानते हैं। जैसे प्यालों, सुराहियों और ताँबे के बरतनों को पानी में डुबकी दिलाना।)[4] **5** इन फरीसियों और शास्त्रियों ने यीशु से पूछा, “क्यों तेरे चेले हमारे पुरखों की परंपराएँ नहीं मानते और दूषित हाथों से खाना खाते हैं?”[5] **6** यीशु ने उनसे कहा, “यशायाह ने तुम कपटियों के बारे में बिलकुल

7:2 *यानी रस्म के मुताबिक शुद्ध न होकर।

सही भविष्यवाणी की थी, जैसा लिखा है, ‘ये लोग होंठों से तो मेरा आदर करते हैं, मगर इनका दिल मुझसे कोसों दूर रहता है।[1] **7** ये बेकार ही मेरी उपासना करते हैं क्योंकि ये इंसानों की आज्ञाओं को परमेश्वर की शिक्षाएँ बताकर सिखाते हैं।’[2] **8** तुम परमेश्वर की आज्ञाओं को छोड़ देते हो और इंसानों की परंपराओं को पकड़े रहते हो।”[3]

9 फिर उसने कहा, “तुम अपनी परंपरा को बनाए रखने के लिए कितनी चतुराई से परमेश्वर की आज्ञा टाल देते हो।[4] **10** मिसाल के लिए, मूसा ने कहा था, ‘अपने पिता और अपनी माँ का आदर करना,’[5] और ‘जो कोई अपने पिता या अपनी माँ को बुरा-भला कहता है* वह मार डाला जाए।’[6] **11** मगर तुम कहते हो, ‘अगर एक आदमी अपने पिता या अपनी माँ से कहता है, “मेरे पास जो कुछ है जिससे तुझे फायदा हो सकता था वह कुरबान है (यानी परमेश्वर के लिए रखी गयी भेंट है),” तो यह गलत नहीं।’ **12** ऐसा करके तुम उसे अपने पिता या अपनी माँ के लिए कुछ भी नहीं करने देते।[7] **13** इस तरह तुम अपनी परंपराएँ सिखाकर परमेश्वर के वचन को रद्द कर देते हो।[8] तुम ऐसे बहुत-से काम करते हो।”[9] **14** फिर उसने भीड़ को दोबारा अपने पास बुलाया और उनसे कहा, “तुम सब मेरी बात ध्यान से सुनो और इसके मायने समझो।[10] **15** ऐसी कोई चीज़ नहीं जो बाहर से इंसान के अंदर जाकर उसे दूषित कर सके। मगर जो चीज़ें इंसान के अंदर से निकलती हैं, वे ही उसे दूषित करती हैं।”[11] **16** *——

7:10 *या “गाली देता है।” **7:16** *अति. क3 देखें।

अध्य. 7
1 मत 15:7-9
2 यश 29:13
3 गल 1:14; कुल 2:8
4 मत 15:3-6
5 निर्ग 20:12; व्य 5:16; इफ 6:2
6 निर्ग 21:17; लैव 20:9; नीत 20:20
7 1ती 5:8
8 मत 15:6
9 मर 7:3
10 मत 15:10
11 मत 15:11; तीत 1:15

दूसरा कॉल.
1 मत 15:15-20
2 मत 15:18
3 उत 6:5; उत 8:21; यिर्म 17:9
4 मत 15:21
5 मत 15:22-28

17 जब वह भीड़ से दूर एक घर में गया, तो उसके चेले उस मिसाल के बारे में उससे सवाल पूछने लगे।[1] **18** तब उसने चेलों से कहा, “क्या तुम भी उनकी तरह समझ नहीं रखते? क्या तुम नहीं जानते कि बाहर की कोई भी चीज़ जो इंसान के अंदर जाती है, उसे दूषित नहीं कर सकती? **19** क्योंकि वह उसके दिल में नहीं बल्कि उसके पेट में जाती है और फिर मल-कुंड में निकल जाती है?” इस तरह उसने खाने की सभी चीज़ों को शुद्ध ठहराया। **20** इसके बाद उसने कहा, “इंसान के अंदर से जो निकलता है, वही उसे दूषित करता है।[2] **21** क्योंकि इंसानों के अंदर से, उनके दिलों से[3] ही बुरे विचार निकलते हैं। इनकी वजह से नाजायज़ यौन-संबंध,* चोरी, कत्ल, **22** व्यभिचार,* लालच, दुष्ट काम, धोखाधड़ी, निर्लज्ज काम,# ईर्ष्या,△ निंदा, घमंड और मूर्खता की जाती है। **23** ये सारी बुराइयाँ इंसान के अंदर से निकलती हैं और उसे दूषित करती हैं।”

24 वहाँ से उठकर यीशु सोर और सीदोन के इलाके में गया।[4] वहाँ वह एक घर में गया और नहीं चाहता था कि कोई उसके बारे में जाने। फिर भी, वह लोगों की नज़र से छिप न सका। **25** वहाँ एक औरत थी, जिसकी छोटी बच्ची में दुष्ट स्वर्गदूत समाया था। जैसे ही यीशु वहाँ आया, उसके आने की खबर सुनकर वह औरत उसके पास आयी और उसके पैरों पर गिर पड़ी।[5] **26** वह औरत यूनानी थी और सीरिया प्रांत के फीनीके

7:21 *यूनानी में *पोर्निया*। शब्दावली देखें। **7:22** *शब्दावली देखें। #या “शर्मनाक बरताव।” शब्दावली देखें। △शा., “ईर्ष्या से भरी आँख।”

इलाके की रहनेवाली थी। वह उससे बिनती करती रही कि मेरी बेटी में से दुष्ट स्वर्गदूत निकाल दे। 27 मगर यीशु ने उससे कहा, “पहले बच्चों को जी-भरके खा लेने दो क्योंकि बच्चों की रोटी लेकर पिल्लों के आगे फेंकना सही नहीं।”[1] 28 मगर औरत ने कहा, “सही कहा साहब, मगर फिर भी पिल्ले बच्चों की मेज़ से गिरे टुकड़े तो खाते ही हैं।” 29 यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, “तूने जो यह बात कही है, इसलिए जा, दुष्ट स्वर्गदूत तेरी बेटी में से निकल चुका है।”[2] 30 तब वह औरत अपने घर चली गयी और उसने देखा कि उसकी बच्ची बिस्तर पर लेटी है और दुष्ट स्वर्गदूत उसमें से निकल चुका था।[3]

31 जब यीशु सोर के इलाके से निकला, तो वह सीदोन और दिकापुलिस* के इलाके से होता हुआ वापस गलील झील पहुँचा।[4] 32 यहाँ लोग उसके पास एक बहरे आदमी को लाए जो ठीक से बोल भी नहीं पाता था।[5] उन्होंने यीशु से बिनती की कि वह अपना हाथ उस पर रखे। 33 यीशु उस आदमी को भीड़ से दूर अलग ले गया और उसके कानों में अपनी उँगलियाँ डालीं और थूकने के बाद उसकी जीभ को छुआ।[6] 34 फिर उसने आकाश की तरफ देखा और गहरी आह भरकर उससे कहा, *“एफ्फतह,”* जिसका मतलब है “खुल जा।” 35 तब उस आदमी की सुनने की शक्ति लौट आयी[7] और उसकी ज़बान खुल गयी और वह साफ-साफ बोलने लगा। 36 फिर यीशु ने उन्हें सख्ती से कहा कि यह सब किसी को न बताएँ।[1] मगर जितना वह मना करता, उतना ही वे उसकी खबर फैलाते गए।[2] 37 वाकई, लोग हैरान थे[3] और कह रहे थे, “उसने कमाल कर दिया! वह तो बहरों और गूँगों को भी ठीक कर देता है।”[4]

8 उन दिनों जब एक बार फिर एक बड़ी भीड़ जमा थी और उनके पास खाने को कुछ नहीं था, तो यीशु ने चेलों को बुलाकर कहा, 2 “मुझे इस भीड़ पर तरस आ रहा है[5] क्योंकि इन्हें मेरे साथ रहते हुए तीन दिन बीत चुके हैं और इनके पास खाने को कुछ भी नहीं है।[6] 3 अगर मैं इन्हें भूखा ही घर भेज दूँ, तो वे रास्ते में पस्त हो जाएँगे। इनमें से कुछ तो बहुत दूर से आए हैं।” 4 मगर चेलों ने उससे कहा, “यहाँ इस सुनसान जगह पर कोई कहाँ से इतनी रोटियाँ लाएगा कि ये जी-भरकर खा सकें?” 5 तब यीशु ने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात।”[7] 6 फिर उसने भीड़ को ज़मीन पर आराम से बैठने के लिए कहा। उसने सातों रोटियाँ लीं और प्रार्थना में धन्यवाद दिया, फिर वह उन्हें तोड़कर अपने चेलों को देने लगा कि वे उन्हें बाँट दें। तब चेलों ने रोटियाँ लोगों में बाँट दीं।[8] 7 उनके पास कुछ छोटी मछलियाँ भी थीं। उसने मछलियों के लिए प्रार्थना में धन्यवाद दिया और चेलों से कहा कि इन्हें भी बाँट दें। 8 तब लोगों ने जी-भरकर खाया और बचे हुए टुकड़े इकट्ठे किए जिनसे सात बड़े टोकरे भर गए।[9] 9 खानेवालों में आदमियों की गिनती करीब 4,000 थी। फिर उसने उन्हें विदा किया।

10 वह फौरन अपने चेलों के साथ नाव पर चढ़ गया और दलमनूता के इलाके में आया।[10] 11 वहाँ फरीसी

7:31 *या “दस शहरों का इलाका।”

अध्य. 7
1 मत 10:5, 6; मत 15:26; रोम 9:4; इफ 2:12
2 मत 15:28
3 यूह 4:49-51
4 मत 15:29
5 मत 9:32, 33; लूक 11:14
6 मर 8:23; यूह 9:6
7 यश 35:5; मत 11:5; मत 15:30

दूसरा कॉल.
1 यश 42:2; मत 8:3, 4; मर 5:42, 43
2 मर 1:43-45
3 प्रेष 14:11
4 यश 35:5, 6; मत 15:31

अध्य. 8
5 मत 14:14; मर 6:34
6 मत 15:32-38
7 मर 6:38
8 मर 6:41
9 मत 15:37
10 मत 15:39

आए और उससे बहस करने लगे। वे
यीशु की परीक्षा लेने के लिए उससे
माँग करने लगे कि वह स्वर्ग से कोई
चिन्ह दिखाए।[1] **12** तब वह मन-ही-
मन बहुत दुखी हुआ और उसने कहा,
“यह पीढ़ी क्यों हमेशा चिन्ह देखना
चाहती है?[2] मैं सच कहता हूँ, इस पीढ़ी
को कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा।”[3]
13 यह कहने के बाद वह उन्हें छोड़कर
दोबारा नाव पर चढ़ गया और उस पार
चला गया।

14 चेले अपने साथ रोटियाँ लेना भूल
गए थे और नाव में उनके पास एक रोटी
को छोड़ और कुछ नहीं था।[4] **15** यीशु
ने उन्हें साफ शब्दों में यह चेतावनी
दी, “अपनी आँखें खुली रखो और फरी-
सियों के खमीर और हेरोदेस के खमीर से
चौकन्ने रहो।”[5] **16** तब वे एक-दूसरे
से बहस करने लगे कि वे अपने साथ
रोटियाँ क्यों नहीं लाए। **17** यह देख-
कर यीशु ने उनसे कहा, “तुम इस बात
पर क्यों बहस कर रहे हो कि तुम्हारे
पास रोटियाँ नहीं हैं? क्या तुम अब भी
नहीं जान पाए और इसके मायने नहीं
समझ पाए? क्या तुम्हारे मन अब भी
समझने में मंद हैं? **18** ‘क्या आँखें होते
हुए भी तुम नहीं देखते और कान होते
हुए भी नहीं सुनते?’ क्या तुम्हें याद
नहीं, **19** जब मैंने 5,000 आदमियों
के लिए पाँच रोटियाँ[6] तोड़ीं, तब तुमने
कितनी टोकरियों में टुकड़े इकट्ठे किए?”
उन्होंने कहा, “बारह।”[7] **20** “जब मैंने
4,000 आदमियों के लिए सात रोटियाँ
तोड़ीं, तब तुमने टुकड़ों से भरे जो बड़े
टोकरे उठाए थे उनकी गिनती क्या थी?”
उन्होंने कहा, “सात।”[8] **21** तब यीशु
ने उनसे कहा, “क्या तुम अब भी मेरी
बात नहीं समझ पाए?”

22 अब वे बैतसैदा आए। यहाँ लोग
उसके पास एक अंधे आदमी को लाए
और उससे बिनती करने लगे कि वह उसे
छुए।[1] **23** वह अंधे आदमी का हाथ
पकड़कर उसे गाँव के बाहर ले गया।
उसने उसकी आँखों पर थूककर[2] अपने
हाथ उस पर रखे और उससे पूछा,
“क्या तुझे कुछ दिखायी दे रहा है?”
24 उस आदमी ने ऊपर देखा और कहा,
“मुझे लोग दिखायी तो दे रहे हैं, मगर ऐसे
लग रहे हैं जैसे चलते-फिरते पेड़ हों।”
25 यीशु ने दोबारा उस आदमी की
आँखों पर हाथ रखे और तब उसे साफ
दिखने लगा। उसकी आँखों की रौशनी
लौट आयी और उसे सबकुछ साफ-साफ
दिखने लगा। **26** तब यीशु ने उसे घर
भेज दिया और कहा, “इस गाँव में मत
जाना।”

27 यीशु और उसके चेले अब कैस-
रिया फिलिप्पी के गाँवों में जाने के लिए
निकल पड़े। रास्ते में वह अपने चेलों से
पूछने लगा, “लोग मेरे बारे में क्या कहते
हैं, मैं कौन हूँ?”[3] **28** उन्होंने कहा,
“कुछ कहते हैं, यूहन्ना बपतिस्मा देने-
वाला,[4] दूसरे कहते हैं एलियाह[5] और
कुछ कहते हैं तू भविष्यवक्ताओं में से एक
है।” **29** फिर उसने यही सवाल चेलों
से पूछा, “लेकिन तुम क्या कहते हो, मैं
कौन हूँ?” पतरस ने जवाब दिया, “तू
मसीह है।”[6] **30** तब उसने उन्हें सख्ती
से कहा कि किसी को उसके बारे में न
बताएँ।[7] **31** फिर वह चेलों को बताने
लगा कि इंसान के बेटे को कई तकलीफें
सहनी पड़ेंगी और मुखिया, प्रधान याजक
और शास्त्री उसे ठुकरा देंगे और वह
मार डाला जाएगा।[8] फिर तीन दिन बाद
वह ज़िंदा हो जाएगा।[9] **32** वह यह
बात उन्हें साफ-साफ बता रहा था। मगर

अध्य. 8
1 मत 16:1-3
2 मत 12:38; यूह 6:30
3 मत 16:4
4 मत 16:5-12
5 मत 16:6; लूक 12:1
6 मर 6:38
7 मत 14:20; मर 6:43; लूक 9:17; यूह 6:13
8 मत 15:37

दूसरा कॉल.
1 मर 6:56
2 मर 7:32, 33; यूह 9:1, 6
3 मत 16:13-15; लूक 9:18, 19
4 मत 14:1, 2; मर 6:14
5 मर 9:11
6 मत 16:16; लूक 9:20; यूह 1:40, 41; यूह 6:68, 69
7 मत 16:20; मर 9:9; लूक 9:21, 22
8 मत 26:2
9 मत 16:21; मत 17:22, 23

पतरस उसे अलग ले गया और झिड़कने
लगा।[1] 33 तब यीशु ने मुड़कर अपने
चेलों की तरफ देखा और पतरस को
झिड़का, "अरे शैतान, मेरे सामने से दूर
हो जा!* क्योंकि तेरी सोच परमेश्वर जैसी
नहीं, बल्कि इंसानों जैसी है।"[2]

34 अब उसने भीड़ को अपने चेलों
समेत पास बुलाया और उनसे कहा,
"अगर कोई मेरे पीछे आना चाहता
है, तो वह खुद से इनकार करे और
अपना यातना का काठ* उठाए और मेरे
पीछे चलता रहे।[3] 35 क्योंकि जो कोई
अपनी जान* बचाना चाहता है वह उसे
खोएगा, मगर जो कोई मेरी और खुश-
खबरी की खातिर अपनी जान* गँवाता है
वह उसे बचाएगा।[4] 36 वाकई, अगर
एक इंसान सारी दुनिया हासिल कर ले
मगर अपनी जान* गँवा बैठे, तो उसे क्या
फायदा?[5] 37 इंसान अपनी जान* के
बदले भला क्या दे सकता है?[6] 38 जो
कोई इस विश्वासघाती* और पापी पीढ़ी
के सामने मेरा चेला होने और मेरे
वचनों पर विश्वास करने में शर्मिंदा मह-
सूस करता है, उसे इंसान का बेटा
भी उस वक्त स्वीकार करने में शर्मिंदा
महसूस करेगा,[7] जब वह अपने पिता
से महिमा पाकर पवित्र स्वर्गदूतों के
साथ आएगा।"[8]

9 फिर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे
सच कहता हूँ कि यहाँ जो खड़े हैं,
उनमें से कुछ ऐसे हैं जो तब तक मौत
का मुँह नहीं देखेंगे, जब तक कि वे
यह न देख लें कि परमेश्वर का राज पूरी
ताकत के साथ आ चुका है।"[9] 2 इसके
छः दिन बाद यीशु ने पतरस, याकूब
और यूहन्ना को अपने साथ लिया। वह
उनको एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया, जहाँ
उनके सिवा कोई नहीं था। उनके सामने
यीशु का रूप बदल गया।[1] 3 उसके
कपड़े चमकने लगे और इतने उजले
सफेद हो गए जितना कि कोई भी धोबी
सफेद नहीं कर सकता। 4 वहाँ चेलों
को एलियाह और मूसा भी दिखायी दिए,
वे दोनों यीशु से बात कर रहे थे। 5 तब
पतरस ने यीशु से कहा, "गुरु,* हम बहुत
खुश हैं कि हम यहाँ आए। इसलिए हमें
तीन तंबू खड़े करने दे, एक तेरे लिए,
एक मूसा के लिए और एक एलियाह
के लिए।" 6 सच तो यह है कि पतरस
को समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या
कहना चाहिए क्योंकि वे बहुत डर गए
थे। 7 फिर एक बादल उभरा और उन
पर छा गया और बादल में से यह आवाज़
आयी,[2] "यह मेरा प्यारा बेटा है।[3]
इसकी सुनो।"[4] 8 फिर अचानक चेलों
ने आस-पास नज़र डाली और देखा कि
अब वहाँ उनके साथ यीशु के सिवा कोई
नहीं है।

9 जब वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे,
तो यीशु ने उन्हें सख्ती से आदेश दिया कि
जब तक इंसान का बेटा मरे हुओं में से
ज़िंदा न हो जाए, तब तक उन्होंने जो देखा
है वह किसी को न बताएँ।[5] 10 चेलों
ने यह बात गाँठ बाँध ली।* मगर
वे आपस में चर्चा करने लगे कि उसने
मरे हुओं में से ज़िंदा होने की जो
बात कही, उसका क्या मतलब है।
11 उन्होंने यीशु से पूछा, "शास्त्री क्यों
कहते हैं कि पहले एलियाह[6] का आना
ज़रूरी है?"[7] 12 उसने कहा, "एलि-
याह वाकई पहले आएगा और सबकुछ

अध्य. 8
1 मत 16:22
2 मत 16:23
3 मत 10:38, मत 16:24, लूक 9:23, लूक 14:27
4 मत 10:39, मत 16:25, लूक 9:24, यूह 12:25, प्रक 12:11
5 मत 16:26, लूक 9:25
6 भज 49:8
7 मत 10:33, लूक 9:26, लूक 12:9, 2ती 1:7, 8
8 मत 16:27, मत 25:31, 2थि 1:7

अध्य. 9
9 मत 16:28, लूक 9:27

दूसरा कॉल.
1 मत 17:1-8, लूक 9:28-36
2 लूक 3:22, यूह 12:28
3 भज 2:7, यश 42:1, मत 3:17, 2पत 1:17
4 व्य 18:15, मत 17:5, लूक 9:35, प्रेष 3:22, 23
5 मत 12:15, 16, मत 17:9, मर 8:29, 30, लूक 9:36
6 मला 4:5, 6, मर 8:27, 28
7 मत 17:10

8:33 *शा., "मेरे पीछे जा।" **8:34** *शब्दावली देखें। **8:35-37** *शब्दावली में "जीवन" देखें। **8:38** *शा., "व्यभिचारी।"

9:5 *शा., "रब्बी।" **9:10** *या शायद, "यह बात अपने तक रखी।"

पहले जैसा कर देगा।[1] मगर शास्त्र में फिर ऐसा क्यों लिखा है कि इंसान के बेटे को बहुत-सी तकलीफें झेलनी होंगी[2] और उसे तुच्छ समझा जाएगा?[3] **13** पर मैं तुमसे कहता हूँ कि एलियाह[4] दरअसल आ चुका है और ठीक जैसा उसके बारे में लिखा है, उन्होंने उसके साथ वह सब किया जो वे करना चाहते थे।"[5]

14 जब वे बाकी चेलों के पास आए, तो उन्होंने देखा कि लोगों की भीड़ चेलों को घेरे हुए है और शास्त्री उनसे बहस कर रहे हैं।[6] **15** मगर जैसे ही भीड़ ने यीशु को देखा, वे दंग रह गए और भागकर उसके पास आए और उसका स्वागत किया। **16** यीशु ने उनसे पूछा, "तुम उनसे क्या बहस कर रहे हो?" **17** भीड़ में से एक ने कहा, "गुरु, मैं अपने बेटे को तेरे पास लाया था क्योंकि उसमें एक गूँगा दुष्ट स्वर्गदूत समाया है।[7] **18** और जब कभी वह मेरे बेटे को पकड़ता है, तो उसे ज़मीन पर पटक देता है और मेरे बेटे के मुँह से झाग निकलने लगता है, वह दाँत पीसता है और बिलकुल बेजान हो जाता है। मैंने तेरे चेलों से इस दुष्ट दूत को निकालने के लिए कहा, मगर वे नहीं निकाल सके।" **19** यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, "हे अविश्वासी लोगो,*[8] मैं और कब तक तुम्हारे साथ रहूँ? कब तक तुम्हारी सहूँ? लड़के को मेरे पास लाओ।"[9] **20** वे उसे यीशु के पास ले आए। मगर जैसे ही उस दुष्ट स्वर्गदूत ने यीशु को देखा, उसने बच्चे को मरोड़ा और वह बच्चा ज़मीन पर गिर पड़ा और लोटने और झाग उगलने लगा। **21** तब यीशु ने लड़के के पिता से पूछा, "इसकी यह हालत कब से है?" उसने कहा, "बचपन से। **22** इसकी जान लेने के लिए इस दुष्ट दूत ने कई बार इसे आग में झोंका है, तो कई बार पानी में गिराया है। लेकिन अगर तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खा और हमारी मदद कर।" **23** यीशु ने उससे कहा, "तू यह क्यों कह रहा है, 'अगर तू कुछ कर सके'? जिसमें विश्वास है, उसके लिए सबकुछ मुमकिन है।"[1] **24** उसी वक्त उस बच्चे के पिता ने ऊँची आवाज़ में कहा, "मुझमें विश्वास है, लेकिन अगर मेरे विश्वास में कोई कमी है, तो मेरी मदद कर!"[2]

25 तभी यीशु ने देखा कि लोगों की एक भीड़ उनकी तरफ दौड़ी चली आ रही है, इसलिए उसने दुष्ट स्वर्गदूत को फटकारा और कहा, "हे गूँगे और बहरे दूत, मैं तुझे हुक्म देता हूँ, इसमें से बाहर निकल आ और आइंदा कभी इसमें मत जाना!"[3] **26** तब वह दुष्ट दूत ज़ोर से चिल्लाया और लड़के को बहुत मरोड़ने के बाद उसमें से निकल गया। वह बच्चा मुरदा-सा हो गया और ज़्यादातर लोग कहने लगे, "यह तो मर गया है!" **27** लेकिन यीशु ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया और वह खड़ा हो गया। **28** इसके बाद यीशु एक घर में गया और वहाँ उसके चेलों ने अकेले में उससे पूछा, "हम उस दुष्ट स्वर्गदूत को क्यों नहीं निकाल पाए?"[4] **29** उसने कहा, "इस किस्म का दूत सिर्फ प्रार्थना से निकाला जा सकता है।"

30 वे उस जगह से निकल पड़े और गलील से होकर गए। यीशु नहीं चाहता था कि लोग जानें कि वह कहाँ है। **31** क्योंकि इस दौरान वह अपने चेलों को सिखा रहा था और उन्हें यह बता रहा था, "इंसान के बेटे के साथ विश्वासघात किया जाएगा और उसे लोगों के

9:19 *शा., "पीढ़ी।"

अध्य. 9
1 मत 17:11
2 दान 9:26
3 भज 22:6, 7; यश 50:6; यश 53:3; लूक 23:11
4 मत 11:13, 14; लूक 1:13, 17
5 मत 17:12
6 लूक 9:37
7 मत 17:14-17; लूक 9:38-42
8 व्य 32:20
9 मत 17:17; लूक 9:41

दूसरा कॉल.
1 मत 17:20; मर 11:23; लूक 17:6; यूह 11:40; प्रेष 14:9, 10
2 लूक 17:5
3 मत 17:18; मर 1:23-25; लूक 4:34, 35; प्रेष 10:38
4 मत 17:19, 20

हवाले कर दिया जाएगा। वे उसे मार
डालेंगे,[1] मगर मरने के तीन दिन बाद
वह ज़िंदा हो जाएगा।"[2] **32** मगर चेले
उसकी बात नहीं समझे और उससे सवाल
पूछने से भी डर रहे थे।

33 फिर वे कफरनहूम आए। जब वह
घर के अंदर था, तो उसने चेलों से पूछा,
"तुम रास्ते में किस बात पर झगड़ रहे
थे?"[3] **34** वे चुप्पी साधे रहे क्योंकि वे
इस बात पर झगड़ रहे थे कि हममें बड़ा
कौन है। **35** तब उसने बैठकर बारहों
को बुलाया और उनसे कहा, "अगर कोई
सबसे बड़ा बनना चाहता है, तो ज़रूरी
है कि वह सबसे छोटा बने और सबका
सेवक बने।"[4] **36** फिर उसने एक छोटे
बच्चे को लेकर उनके बीच खड़ा किया
और उसके कंधों पर हाथ रखकर उनसे
कहा, **37** "जो कोई मेरे नाम से ऐसे एक
भी बच्चे को स्वीकार करता है,[5] वह मुझे
स्वीकार करता है। और जो मुझे स्वीकार
करता है, वह न सिर्फ मुझे बल्कि मेरे
भेजनेवाले को भी स्वीकार करता है।"[6]

38 यूहन्ना ने उससे कहा, "गुरु,
हमने देखा कि एक आदमी तेरा नाम
लेकर लोगों में समाए दुष्ट स्वर्गदूतों को
निकाल रहा था और हमने उसे रोकने की
कोशिश की, क्योंकि वह हमारे साथ नहीं
चलता।"[7] **39** लेकिन यीशु ने कहा,
"उसे रोकने की कोशिश मत करो,
क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से
शक्तिशाली काम करे और पलटकर मुझे
बदनाम भी करे। **40** जो हमारे खिलाफ
नहीं, वह हमारे साथ है।[8] **41** जो कोई
तुम्हें इसलिए एक प्याला पानी पिलाता
है कि तुम मसीह के हो,[9] मैं तुमसे
सच कहता हूँ कि वह अपना इनाम हर-
गिज़ न खोएगा।[10] **42** लेकिन जो कोई
विश्वास करनेवाले ऐसे छोटों में से किसी
एक को ठोकर खिलाता है,* उसके लिए
यही अच्छा है कि उसके गले में चक्की का
वह पाट लटकाया जाए जिसे गधा घुमाता
है और उसे समुंदर में फेंक दिया जाए।[1]

43 अगर तेरा हाथ कभी तुझसे पाप
करवाए* तो उसे काट डाल। अच्छा यही
होगा कि तू एक हाथ के बिना जीवन
पाए, बजाय इसके कि दोनों हाथों समेत
गेहन्ना# में डाला जाए, हाँ, उस आग
में जो कभी बुझायी नहीं जा सकती।[2]
44 *— **45** और अगर तेरा पैर
तुझसे पाप करवाता है* तो उसे काट
डाल। अच्छा यही होगा कि तू एक पैर
के बिना जीवन पाए, बजाय इसके कि तू
दोनों पैरों समेत गेहन्ना# में डाला जाए।[3]
46 *— **47** और अगर तेरी आँख
तुझसे पाप करवाती है* तो उसे निकाल-
कर दूर फेंक दे।[4] अच्छा यही होगा कि
तू एक आँख के बिना परमेश्वर के
राज में दाखिल हो, बजाय इसके कि
तुझे दोनों आँखों समेत गेहन्ना# में
फेंक दिया जाए,[5] **48** जहाँ कीड़े कभी
नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती।[6]

49 इसलिए कि हर इंसान पर ऐसे
आग बरसायी जाएगी जैसे नमक छिड़का
जाता है।[7] **50** नमक बढ़िया होता है,
लेकिन अगर नमक अपना स्वाद खो दे,
तो किस चीज़ से तुम उसे नमकीन कर
पाओगे?[8] खुद में नमक जैसा स्वाद रखो[9]
और आपस में शांति बनाए रखो।"[10]

10 यीशु उठा और वहाँ से निकल-
कर यरदन के पार यहूदिया की
सरहदों के पास आया। उसके पास फिर

9:42 *यानी कुछ ऐसा करता है कि दूसरा आदमी विश्वास करना छोड़ देता है। **9:43, 45, 47** *शा., "तुझे ठोकर खिलाए।" **9:43, 45, 47** #शब्दावली देखें। **9:44, 46** *अति. क3 देखें।

अध्य. 9
1 मत 26:2
2 मत 16:21; मत 17:22, 23; मर 8:31; लूक 9:44, 45
3 मत 18:1-5; लूक 9:46-48; लूक 22:24
4 मत 20:26-28; मर 10:43-45; फिल 2:8, 9
5 लूक 18:16
6 मत 10:40; लूक 9:48; यूह 13:20
7 लूक 9:49
8 लूक 9:50
9 मत 25:40
10 मत 10:42

दूसरा कॉल.
1 मत 18:6; लूक 17:1, 2
2 मत 5:30; मत 18:8; कुल 3:5
3 मत 10:28; मत 23:33; लूक 12:5
4 गल 5:24
5 मत 5:29; मत 18:9; रोम 8:13
6 यश 66:24
7 लूक 17:29
8 मत 5:13; लूक 14:34, 35
9 कुल 4:6
10 रोम 12:18; इफ 4:29; 1थि 5:13; इब्र 12:14

से भीड़ जमा हो गयी। और जैसा उसका
दस्तूर था, वह उन्हें एक बार फिर
सिखाने लगा।[1] **2** अब फरीसी आए
और यीशु की परीक्षा लेने के लिए उन्होंने
उससे पूछा कि एक आदमी के लिए
अपनी पत्नी को तलाक देना कानून के
हिसाब से सही है या नहीं?[2] **3** उसने
कहा, "मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी
है?" **4** उन्होंने कहा, "मूसा ने तलाक-
नामा लिखकर पत्नी को तलाक देने
की इजाज़त दी है।"[3] **5** मगर यीशु
ने उनसे कहा, "तुम्हारे दिलों की कठोर-
ता की वजह से[4] उसने तुम्हारे लिए यह
आज्ञा लिखी।[5] **6** मगर सृष्टि की शुरू-
आत से 'परमेश्वर ने उन्हें नर और
नारी बनाया था।[6] **7** इस वजह से
आदमी अपने माता-पिता को छोड़ देगा[7]
8 और वह और उसकी पत्नी* एक तन
होंगे।'[8] तो वे अब दो नहीं रहे बल्कि
एक तन हैं। **9** इसलिए जिसे परमेश्वर
ने एक बंधन में बाँधा है,* उसे कोई
इंसान अलग न करे।"[9] **10** एक बार
फिर जब वे घर में थे, तो चेले इस बारे
में उससे सवाल पूछने लगे। **11** यीशु ने
उनसे कहा, "जो कोई अपनी पत्नी को
तलाक देता है और किसी दूसरी से शादी
करता है, वह उस पहली औरत का हक
मारता है और व्यभिचार* करने का दोषी
है।[10] **12** और अगर एक औरत अपने
पति को तलाक देकर कभी किसी दूसरे से
शादी करती है, तो वह व्यभिचार करने
की दोषी है।"[11]

13 अब लोग यीशु के पास छोटे बच्चों
को लाने लगे ताकि वह उन पर हाथ रखे,
मगर चेलों ने उन्हें डाँटा।[12] **14** यह
देखकर यीशु नाराज़ हुआ और उसने
कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें
रोकने की कोशिश मत करो, क्योंकि पर-
मेश्वर का राज ऐसों ही का है।[1] **15** मैं
तुमसे सच कहता हूँ, जो कोई परमेश्वर के
राज को एक छोटे बच्चे की तरह स्वीकार
नहीं करता, वह उसमें हरगिज़ नहीं जा
पाएगा।"[2] **16** फिर उसने बच्चों को
अपनी बाँहों में लिया और उन पर हाथ
रखकर उन्हें आशीर्वाद देने लगा।[3]

17 जब वह निकलकर अपने रास्ते
जा रहा था, तो एक आदमी दौड़कर
आया और उसके सामने घुटनों के बल
गिरा और उसने पूछा, "अच्छे गुरु, हमेशा
की ज़िंदगी का वारिस बनने के लिए
मुझे क्या करना चाहिए?"[4] **18** यीशु ने
उससे कहा, "तू मुझे अच्छा क्यों कहता
है? कोई अच्छा नहीं है, सिवा पर-
मेश्वर के।[5] **19** तू तो आज्ञाएँ जानता
है, 'खून न करना,[6] व्यभिचार न करना,[7]
चोरी न करना,[8] झूठी गवाही न देना,[9]
किसी को न ठगना[10] और अपने पिता
और अपनी माँ का आदर करना।'"[11]
20 उस आदमी ने कहा, "गुरु, ये सारी
बातें तो मैं बचपन से मान रहा हूँ।"
21 यीशु ने प्यार से उसे देखा और कहा,
"तुझमें एक चीज़ की कमी है: जा और जो
कुछ तेरे पास है उसे बेचकर कंगालों को
दे दे क्योंकि तुझे स्वर्ग में खज़ाना मिलेगा
और आकर मेरा चेला बन जा।"[12]
22 मगर इस बात पर वह उदास हो गया
और दुखी होकर चला गया क्योंकि उसके
पास बहुत धन-संपत्ति थी।[13]

23 यीशु ने चारों तरफ देखने के
बाद अपने चेलों से कहा, "पैसेवालों के
लिए परमेश्वर के राज में दाखिल होना
कितना मुश्किल होगा!"[14] **24** मगर
चेले उसकी बातें सुनकर ताज्जुब करने

10:8 *शा., "वे दोनों।" **10:9** *शा., "एक जुए में जोड़ा है।" **10:11** *शब्दावली देखें।

अध्य. 10
1 मत 19:1, 2
2 मत 19:3
3 व्य 24:1 मत 5:31 मत 19:7
4 व्य 9:6 प्रेष 13:18
5 मत 19:8
6 उत 1:27 उत 5:2 मत 19:4
7 मत 19:5
8 उत 2:24 इफ 5:31
9 मत 19:6
10 मत 5:32 मत 19:9 लूक 16:18
11 रोम 7:3
12 मत 19:13 लूक 18:15

दूसरा कॉल.
1 मत 18:4 मत 19:14 लूक 18:16 1पत 2:2
2 मत 18:3 लूक 18:17
3 मर 9:36
4 मत 19:16 लूक 18:18
5 भज 86:5 मत 19:17 लूक 18:19
6 निर्ग 20:13 व्य 5:17 मत 5:21 1यूह 3:15
7 निर्ग 20:14 व्य 5:18
8 निर्ग 20:15 व्य 5:19
9 निर्ग 20:16 व्य 5:20
10 लैव 19:13
11 निर्ग 20:12 व्य 5:16 इफ 6:2
12 मत 19:21
13 लूक 18:23
14 यिर्म 9:23 1ती 6:17

लगे। तब यीशु ने दोबारा उनसे कहा,
“बच्चो, परमेश्‍वर के राज में दाखिल
होना कितना मुश्‍किल है! **25** परमेश्‍वर
के राज में एक अमीर आदमी के दाखिल
होने से, एक ऊँट का सुई के छेद
से निकल जाना ज़्यादा आसान है।”[1]
26 यह सुनकर वे और भी हैरान रह
गए और उन्होंने उससे* कहा, “तो भला
कौन उद्धार पा सकता है?”[2] **27** यीशु
ने सीधे उनकी तरफ देखकर कहा,
“इंसानों के लिए यह नामुमकिन है मगर
परमेश्‍वर के लिए नहीं, क्योंकि पर-
मेश्‍वर के लिए सबकुछ मुमकिन है।”[3]
28 तब पतरस ने उससे कहा, “देख!
हम तो सबकुछ छोड़कर तेरे पीछे चल
रहे हैं।”[4] **29** यीशु ने कहा, “मैं तुमसे
सच कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं जिसने मेरी
और खुशखबरी की खातिर घर या भाइयों
या बहनों या पिता या माँ या बच्चों या
खेतों को छोड़ा हो[5] **30** और इस ज़माने
में घरों, भाइयों, बहनों, माँओं, बच्चों और
खेतों का 100 गुना न पाए पर ज़ुल्मों के
साथ[6] और आनेवाले ज़माने* में हमेशा
की ज़िंदगी न पाए। **31** फिर भी बहुत-
से जो पहले हैं वे आखिरी होंगे और जो
आखिरी हैं वे पहले होंगे।”[7]

32 अब वे यरूशलेम जानेवाले रास्ते
पर थे और यीशु उनके आगे-आगे चल
रहा था। चेले हैरान थे और जो उनके
पीछे-पीछे चल रहे थे उन्हें डर लगने
लगा। एक बार फिर वह अपने 12 चेलों
को अलग ले गया और उन्हें बताने लगा
कि उसके साथ यह सब होनेवाला है:[8]
33 “देखो! हम यरूशलेम जा रहे हैं
और इंसान का बेटा प्रधान याजकों और
शास्त्रियों के हवाले किया जाएगा। वे
उसे मौत की सज़ा सुनाएँगे और गैर-यहू-
दियों के हवाले कर देंगे। **34** वे उसकी
खिल्ली उड़ाएँगे, उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े
लगाएँगे और मार डालेंगे मगर तीन दिन
बाद वह ज़िंदा हो जाएगा।”[1]

35 जब्दी के बेटे याकूब और यूहन्‍ना[2]
उसके पास आए और उन्होंने कहा, “गुरु,
हम चाहते हैं कि हम तुझसे जो कुछ कहें,
तू हमारे लिए कर दे।”[3] **36** उसने
कहा, “तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिए
क्या करूँ?” **37** उन्होंने कहा, “जब तू
महिमा पाएगा, तब हममें से एक को
अपने दाएँ और दूसरे को अपने बाएँ
बैठने देना।”[4] **38** मगर यीशु ने उनसे
कहा, “तुम नहीं जानते कि तुम क्या
माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी
सकते हो जिसे मैं पी रहा हूँ? और मेरा
जो बपतिस्मा हो रहा है, क्या तुम वह
बपतिस्मा ले सकते हो?”[5] **39** उन्होंने
कहा, “हम कर सकते हैं।” तब यीशु
ने उनसे कहा, “जो प्याला मैं पी रहा हूँ,
उसे तुम भी पीओगे। और मेरा जो बप-
तिस्मा हो रहा है, वही तुम्हारा भी होगा।[6]
40 मगर मेरे दायीं या बायीं तरफ बैठने
की इजाज़त देने का अधिकार मेरे पास
नहीं। ये जगह उनके लिए हैं, जिनके लिए
ये तैयार की गयी हैं।”

41 जब बाकी दस ने इस बारे में
सुना, तो उन्हें याकूब और यूहन्‍ना पर
बहुत गुस्सा आया।[7] **42** मगर यीशु ने
चेलों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा,
“तुम जानते हो कि दुनिया में जिन्हें राज
करनेवाले समझा जाता है, वे लोगों पर
हुक्म चलाते हैं और उनके बड़े-बड़े लोग
उन पर अधिकार जताते हैं।[8] **43** मगर
तुम्हारे बीच ऐसा नहीं होना चाहिए,
बल्कि तुममें जो बड़ा बनना चाहता है, उसे

10:26 *या शायद, “एक-दूसरे से।”
10:30 *या “दुनिया की व्यवस्था।” शब्दा-
वली देखें।

अध्य. 10

1 मत 19:24; लूक 18:25
2 मत 19:25, 26; लूक 18:26, 27
3 अय 42:2
4 मत 19:27; लूक 18:28
5 मत 10:37; मत 19:29; लूक 18:29, 30
6 मत 5:11; प्रेष 14:22
7 मत 19:30; मत 20:16; लूक 13:30
8 मत 20:17-19; मर 8:31; मर 9:31; लूक 9:22; लूक 18: 31-33

दूसरा कॉल.

1 प्रेष 10:40; 1कुर 15:3, 4
2 मत 10:2
3 मत 20:20, 21
4 मत 19:28
5 मत 20:22, 23; लूक 12:50; यूह 18:11; रोम 6:3
6 प्रेष 12:2; प्रक 1:9
7 मत 20:24
8 मत 20:25; लूक 22:25; 1पत 5:2, 3

तुम्हारा सेवक होना चाहिए[1] 44 और
जो कोई तुममें पहला होना चाहता है, उसे
सबका दास होना चाहिए 45 क्योंकि
इंसान का बेटा भी सेवा करवाने नहीं,
बल्कि सेवा करने आया है[2] और इसलिए
आया है कि बहुतों की फिरौती के लिए
अपनी जान बदले में दे।"[3]

46 फिर वे यरीहो आए। मगर जब
यीशु, उसके चेले और भारी तादाद
में लोग यरीहो से बाहर जा रहे थे,
तो (तिमाई का बेटा) बरतिमाई नाम
का एक अंधा भिखारी सड़क के किनारे
बैठा था।[4] 47 जब उसने सुना कि यीशु
नासरी वहाँ से जा रहा है, तो वह चिल्ला-
कर कहने लगा, "दाविद के वंशज[5] यीशु,
मुझ पर दया कर!"[6] 48 इस पर कई
लोगों ने उसे डाँटा कि वह चुप हो जाए,
मगर वह और ज़ोर से चिल्लाने लगा,
"दाविद के वंशज, मुझ पर दया कर!"
49 तब यीशु रुक गया और उसने कहा,
"उसे मेरे पास बुलाओ।" उन्होंने अंधे
आदमी को बुलाया और कहा, "हिम्मत
रख और खड़ा हो जा, वह तुझे बुला रहा
है।" 50 उसने अपना चोगा फेंका और
उछलकर खड़ा हो गया और यीशु के पास
गया। 51 तब यीशु ने उससे कहा, "तू
क्या चाहता है, मैं तेरे लिए क्या करूँ?"
अंधे आदमी ने उससे कहा, "हे मेरे
गुरु,* मेरी आँखों की रौशनी लौट
आए।" 52 यीशु ने उससे कहा, "जा,
तेरे विश्वास ने तुझे ठीक किया है।"[7]
उसी वक्त उसकी आँखों की रौशनी लौट
आयी[8] और वह यीशु के साथ उसी रास्ते
पर चल दिया।

11 अब वे यरूशलेम के पास, जैतून
पहाड़ पर बैतफगे और बैत-
नियाह[9] गाँव पहुँचनेवाले थे। वहाँ उसने
अपने दो चेलों को यह कहकर भेजा,[1]
2 "जो गाँव तुम्हें नज़र आ रहा है उसमें
जाओ। जैसे ही तुम वहाँ जाओगे, तुम्हें
एक गधी का बच्चा बँधा हुआ मिलेगा,
जिस पर आज तक कोई आदमी नहीं
बैठा। उसे खोलकर ले आओ। 3 अगर
कोई तुमसे कहे, 'यह क्या कर रहे हो?'
तो कहना, 'प्रभु को इसकी ज़रूरत है
और वह इसे जल्द वापस भेज देगा।'"
4 तब वे चले गए और उन्होंने गली के
नुक्कड़ पर एक दरवाज़े के पास गधी के
बच्चे को बँधा हुआ पाया और उसे खोल
लिया।[2] 5 मगर वहाँ खड़े कुछ लोगों ने
उनसे पूछा, "तुम गधी के बच्चे को क्यों
खोल रहे हो?" 6 चेलों ने उनसे वही
कहा जो यीशु ने बताया था। तब उन्होंने
चेलों को जाने दिया।

7 वे गधी के बच्चे[3] को यीशु के
पास ले आए। उन्होंने अपने ओढ़ने उस
पर डाले और वह उस पर बैठ गया।[4]
8 कई और लोगों ने अपने कपड़े रास्ते में
बिछाए, जबकि दूसरों ने रास्ते के किनारे
से पेड़ों की डालियाँ काटकर बिछा दीं।[5]
9 जो लोग आगे-आगे चल रहे थे और
जो पीछे-पीछे आ रहे थे, वे पुकार रहे थे,
"हम बिनती करते हैं, इसे बचा ले![6] धन्य
है वह जो यहोवा* के नाम से आता है![7]
10 हमारे पुरखे दाविद का आनेवाला
राज धन्य हो![8] स्वर्ग में रहनेवाले, हम
बिनती करते हैं, इसे बचा ले!" 11 फिर
वह यरूशलेम पहुँचा और मंदिर में गया।
वहाँ उसने आस-पास की सब चीज़ों पर
नज़र डाली। मगर काफी वक्त हो चुका
था, इसलिए वह उन बारहों के साथ बैत-
नियाह चला गया।[9]

12 अगले दिन जब वे बैतनियाह से
निकल रहे थे, तो उसे भूख लगी।[10]

अध्य. 10
1 मत 20:26, 27; मर 9:35; लूक 9:48; लूक 22:26
2 यूह 13:14; फिल 2:7
3 यश 53:10; दान 9:24; मत 20:28; गल 3:13; तीत 2:13, 14
4 मत 20:29-34; लूक 18:35-43
5 यिर्म 23:5; रोम 1:3
6 मत 9:27; मत 15:22
7 मत 9:20, 22
8 यश 35:5; यश 42:7; मर 8:25

अध्य. 11
9 यूह 11:18

दूसरा कॉल.
1 मत 21:1-3; लूक 19:29-34
2 मत 21:6
3 1रा 1:33; जक 9:9
4 मत 21:7, 8; यूह 12:14, 15
5 लूक 19:36; यूह 12:13
6 मत 21:15
7 भज 118:25, 26; मत 21:9; लूक 19:37, 38; यूह 12:13
8 जक 9:9; लूक 1:32
9 मत 21:10
10 मत 21:18

10:51 * इब्रानी में "रब्बोनी।"

11:9 * अति. क5 देखें।

13 दूर से उसकी नज़र एक हरे-भरे
अंजीर के पेड़ पर पड़ी। वह यह देखने
के लिए उसके पास गया कि शायद उसमें
कुछ फल मिल जाएँ। मगर नज़दीक
पहुँचने पर उसे पत्तियों को छोड़ कुछ नहीं
मिला क्योंकि वह अंजीरों का मौसम नहीं
था। 14 इसलिए उसने पेड़ से कहा,
“अब से फिर कभी कोई तेरा फल न खा
सके।”[1] उसके चेले यह सुन रहे थे।

15 अब वे यरूशलेम आए। वह
मंदिर में गया और जो लोग मंदिर
के अंदर बिक्री और खरीदारी कर रहे
थे, उन्हें वहाँ से खदेड़ने लगा। उसने
पैसा बदलनेवाले सौदागरों की मेज़ें और
कबूतर बेचनेवालों की चौकियाँ उलट
दीं।[2] 16 उसने किसी को भी बर-
तन लेकर मंदिर में से नहीं जाने दिया।
17 उसने लोगों को सिखाया और उनसे
कहा, “क्या यह नहीं लिखा है, ‘मेरा घर
सब राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर कह-
लाएगा’?[3] मगर तुम लोगों ने इसे लुटेरों
का अड्डा* बना दिया है।”[4] 18 जब
प्रधान याजकों और शास्त्रियों ने यह सुना,
तो वे उसे मार डालने की तरकीब सोचने
लगे[5] क्योंकि वे उससे डरते थे और सारी
भीड़ उसकी शिक्षा से दंग रह जाती थी।[6]

19 जब शाम हो गयी, तो वे शहर से
बाहर निकल गए। 20 अगले दिन जब
वे तड़के सुबह उधर से जा रहे थे, तो
उन्होंने देखा कि अंजीर का वह पेड़ जड़
तक सूख गया है।[7] 21 पतरस ने कल
की बात याद करके कहा, “गुरु, देख!
वह अंजीर का पेड़ जिसे तूने शाप दिया
था, सूख गया है।”[8] 22 तब यीशु ने
उनसे कहा, “परमेश्वर पर विश्वास
रखो। 23 मैं तुमसे सच कहता हूँ कि
जो कोई इस पहाड़ से कहे, ‘यहाँ से

11:17 *शा., “की गुफा।”

अध्य. 11
1 मत 21:19
मर 11:20
2 मत 21:12
लूक 19:45, 46
यूह 2:14-16
3 1रा 8:43
यश 56:7
4 यिर्म 7:11
मत 21:13
लूक 19:46
यूह 2:16
5 मर 14:1
लूक 20:19
6 लूक 19:47, 48
7 मत 21:19, 20
8 मर 11:14

दूसरा कॉल.
1 मत 17:20
मत 21:21
लूक 17:6
2 मत 7:7
मत 18:19
मत 21:22
लूक 11:9
यूह 14:13
यूह 15:7
यूह 16:24
3 भज 103: 10-12
मत 6:12, 14
इफ 4:32
कुल 3:13
4 मत 21:23-27
लूक 20:1-8
5 मर 1:4
6 मत 21:25
लूक 20:4
7 मत 3:1, 5
मत 14:3, 5
मर 6:20

उखड़कर समुंदर में जा गिर,’ और अपने
दिल में शक न करे मगर विश्वास रखे
कि उसने जो कहा है वह ज़रूर होगा, तो
उसके लिए वह हो जाएगा।[1] 24 इसी-
लिए मैं तुमसे कहता हूँ, जो कुछ तुम
प्रार्थना में माँगते हो उसके बारे में विश्वास
रखो कि वह तुम्हें ज़रूर मिलेगा और
वह तुम्हें मिल जाएगा।[2] 25 जब तुम
प्रार्थना करने खड़े हो और तुम्हारे दिल में
किसी के खिलाफ कुछ है, तो उसे माफ
कर दो। तब तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है,
वह भी तुम्हारे अपराध माफ करेगा।”[3]
26 *—

27 वे एक बार फिर यरूशलेम आए।
जब वह मंदिर में टहल रहा था तो
प्रधान याजक, शास्त्री और मुखिया उसके
पास आए 28 और उससे कहने लगे,
“तू ये सब किस अधिकार से करता
है? किसने तुझे यह अधिकार दिया है?”[4]
29 यीशु ने उनसे कहा, “मैं भी तुमसे एक
सवाल पूछता हूँ। तुम उसका जवाब दो,
तब मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं ये सब किस
अधिकार से करता हूँ। 30 जो बपतिस्मा
यूहन्ना ने दिया,[5] वह स्वर्ग की तरफ
से था या इंसानों की तरफ से? जवाब
दो।”[6] 31 वे एक-दूसरे से कहने लगे,
“अगर हम कहें, ‘स्वर्ग की तरफ से,’ तो
वह कहेगा, ‘फिर क्यों तुमने उसका यकीन
नहीं किया?’ 32 पर हम यह कहने की
भी जुर्रत कैसे करें कि इंसानों की तरफ
से था?” उन्हें भीड़ का डर था क्योंकि
सब लोग मानते थे कि यूहन्ना वाकई एक
भविष्यवक्ता था।[7] 33 इसलिए उन्होंने
यीशु को जवाब दिया, “हम नहीं जानते।”
तब यीशु ने उनसे कहा, “तो मैं भी तुम्हें
नहीं बताऊँगा कि मैं किस अधिकार से यह
सब करता हूँ।”

11:26 *अति. क3 देखें।

12 फिर वह ये मिसालें देकर उनसे
बात करने लगा: "किसी आदमी
ने अंगूरों का बाग लगाया[1] और उसके
चारों तरफ एक बाड़ा बाँधा। उसने अंगूर
रौंदने का हौद खोदा और एक मीनार
खड़ी की।[2] फिर उसे बागबानों को ठेके
पर देकर परदेस चला गया।[3] 2 कटाई
का मौसम आने पर उसने एक दास को
बागबानों के पास भेजा ताकि वह अंगूरों
की फसल में से उसका हिस्सा ले आए।
3 मगर बागबानों ने उस दास को पकड़
लिया, उसे पीटा और खाली हाथ भेज
दिया। 4 फिर बाग के मालिक ने उनके
पास एक और दास को भेजा। बाग-
बानों ने उसका सिर फोड़ दिया और
उसे बेइज़्ज़त किया।[4] 5 फिर मालिक
ने एक और दास को भेजा और उन्होंने
उसे मार डाला। मालिक ने और भी बहुतों
को भेजा, मगर कुछ को उन्होंने पीटा
तो कुछ को मार डाला। 6 अब मालिक
के पास एक ही रह गया, उसका प्यारा
बेटा।[5] उसने आखिर में यह सोचकर
उसे बागबानों के पास भेजा, 'वे मेरे बेटे
की ज़रूर इज़्ज़त करेंगे।' 7 मगर बाग-
बान आपस में कहने लगे, 'यह तो वारिस
है।[6] चलो इसे मार डालें, तब इसकी
विरासत हमारी हो जाएगी।' 8 उन्होंने
उसे पकड़ लिया और मार डाला और
बाग के बाहर फेंक दिया।[7] 9 अब बाग
का मालिक क्या करेगा? वह आकर उन
बागबानों को मार डालेगा और अंगूरों का
बाग दूसरों को ठेके पर दे देगा।[8]
10 क्या तुमने शास्त्र में यह बात कभी
नहीं पढ़ी, 'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों
ने ठुकरा दिया, वही कोने का मुख्य
पत्थर बन गया है'?[9] 11 क्या तुमने
यह भी नहीं पढ़ा, 'यह यहोवा* की तरफ
से हुआ है और हमारी नज़र में ला-
जवाब है'?"[1]

12 यह सुनकर उसके दुश्मनों ने उसे
पकड़ना* चाहा क्योंकि वे समझ गए कि
उसने यह मिसाल उन्हीं को ध्यान में रख-
कर दी है। लेकिन वे भीड़ से डरते थे,
इसलिए वे उसे छोड़कर चले गए।[2]

13 इसके बाद उन्होंने कुछ फरीसियों
और हेरोदेस के गुट के लोगों को यीशु
के पास भेजा ताकि वे उसकी बातों में उसे
पकड़ सकें।[3] 14 वे उसके पास आए
और कहने लगे, "गुरु, हम जानते हैं कि
तू सच्चा है और इंसानों को खुश करने
की कोशिश नहीं करता, क्योंकि तू किसी
की सूरत देखकर बात नहीं करता बल्कि
सच्चाई के मुताबिक परमेश्वर की राह
सिखाता है। हमें बता कि सम्राट* को कर
देना सही# है या नहीं? 15 हमें कर
देना चाहिए या नहीं?" यीशु उनका कपट
भाँप गया और उसने कहा, "तुम मेरी
परीक्षा क्यों लेते हो? एक दीनार* लाकर
मुझे दिखाओ।" 16 वे एक दीनार
लाए। उसने कहा, "इस पर किसकी सूरत
और किसके नाम की छाप है?" उन्होंने
कहा, "सम्राट की।" 17 तब यीशु ने
कहा, "जो सम्राट* का है वह सम्राट
को चुकाओ,[4] मगर जो परमेश्वर का है
वह परमेश्वर को।"[5] वे उसका जवाब
सुनकर दंग रह गए।

18 अब सदूकी उसके पास आए, जो
कहते हैं कि मरे हुओं के फिर से ज़िंदा
होने की शिक्षा सच नहीं है।[6] उन्होंने
उससे पूछा,[7] 19 "गुरु, मूसा ने हमारे
लिए लिखा है कि अगर कोई आदमी

12:11 *अति. क5 देखें।

12:12 *या "गिरफ्तार करना।" **12:14, 17** *यूनानी में "कैसर।" **12:14** #या "कानून के मुताबिक।" **12:15** *अति. ख14 देखें।

अध्य. 12
1 यश 5:7
2 यश 5:2
3 मत 21:33-41, लूक 20:9-16
4 इब्र 11:32, 37
5 भज 2:7, गल 4:4, 1यूह 4:9
6 भज 2:8, इब्र 1:2
7 प्रेष 2:23
8 मत 21:41, 43
9 मत 21:42, लूक 20:17, प्रेष 4:10, 11, इफ 2:20, 1पत 2:7

दूसरा कॉल.
1 भज 118:22, 23
2 मत 21:45, 46, लूक 20:19
3 मत 22:15-22, लूक 20:20-26
4 रोम 13:7, तीत 3:1, 1पत 2:13
5 मला 3:8, मत 22:21, लूक 20:25
6 प्रेष 23:8
7 मत 22:23-28, लूक 20:27-33

बेऔलाद मर जाए और अपनी पत्नी
छोड़ जाए, तो उसके भाई को चाहिए
कि वह अपने मरे हुए भाई की पत्नी
से शादी कर ले और अपने भाई के
लिए औलाद पैदा करे।[1] 20 सात भाई
थे। पहले ने शादी की मगर बेऔलाद
मर गया। 21 तब दूसरे भाई ने उसकी
पत्नी से शादी कर ली, मगर वह भी
बेऔलाद मर गया। तीसरे के साथ
भी ऐसा ही हुआ। 22 सातों भाई बे-
औलाद मर गए। आखिर में वह औरत
भी मर गयी। 23 अब बता, जब मरे
हुए ज़िंदा किए जाएँगे, तब वह उन
सातों में से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि
सातों उसे अपनी पत्नी बना चुके थे।"
24 यीशु ने उनसे कहा, "तुम बड़ी गलत-
फहमी में हो, क्योंकि तुम न तो शास्त्र
को जानते हो, न ही परमेश्वर की
शक्ति को।[2] 25 क्योंकि जब मरे हुए
ज़िंदा किए जाएँगे तो उनमें से न तो कोई
आदमी शादी करेगा न कोई औरत, मगर
वे स्वर्गदूतों की तरह होंगे।[3] 26 मरे
हुओं के ज़िंदा होने के बारे में, क्या तुमने
मूसा की किताब में नहीं पढ़ा कि पर-
मेश्वर ने झाड़ी के पास क्या कहा था, 'मैं
अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का पर-
मेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ'?[4]
27 वह मरे हुओं का नहीं बल्कि जीवितों
का परमेश्वर है। तुम बड़ी गलतफहमी
में हो।"[5]

28 वहाँ आए शास्त्रियों में से एक
उनकी बहस सुन रहा था। उसने यह देख-
कर कि यीशु ने उन्हें क्या ही बेहतरीन
ढंग से जवाब दिया है, उससे पूछा, "सब
आज्ञाओं में सबसे पहली* आज्ञा कौन-
सी है?"[6] 29 यीशु ने जवाब दिया,
"सबसे पहली* यह है: 'हे इसराएल

अध्य. 12
1 उत 38:7, 8 व्य 25:5, 6
2 मत 22:29
3 मत 22:30 लूक 20:34-36
4 निर्ग 3:2, 6 मत 22:31 लूक 20:37
5 मत 22:32 लूक 20:38
6 मत 22:34-36

दूसरा कॉल.
1 व्य 6:4, 5 यह 22:5 मत 22:37 लूक 10:27
2 लैव 19:18 मत 22:39, 40 रोम 13:9 गल 5:14 याकू 2:8
3 व्य 4:39 व्य 6:4 यश 45:21
4 व्य 6:5 1शम 15:22 हो 6:6
5 मत 22:46
6 मत 22:42-45 लूक 20:41-44 यूह 7:42
7 2शम 23:2 2ती 3:16 2पत 1:21
8 भज 110:1 प्रेष 2:34, 35 1कुर 15:25 इब्र 1:13
9 रोम 1:3 प्रक 22:16

सुन, हमारा परमेश्वर यहोवा# एक ही
यहोवा# है। 30 और तू अपने पर-
मेश्वर यहोवा# से अपने पूरे दिल, अपनी
पूरी जान,* अपने पूरे दिमाग और अपनी
पूरी ताकत से प्यार करना।'[1] 31 और
दूसरी यह है: 'तू अपने पड़ोसी से वैसे ही
प्यार करना जैसे तू खुद से करता है।'[2]
और कोई आज्ञा इनसे बढ़कर नहीं।"
32 तब उस शास्त्री ने उससे कहा, "गुरु,
तूने बिलकुल सही कहा। तेरी बात
सच्चाई के मुताबिक है, 'परमेश्वर एक
ही है, उसके सिवा और कोई परमेश्वर
नहीं।'[3] 33 और इंसान को अपने पूरे
दिल से, पूरी समझ के साथ और पूरी
ताकत से उससे प्यार करना चाहिए और
अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार करना
चाहिए जैसे वह खुद से करता है। यह
सारी होम-बलियों और बलिदानों से कहीं
बढ़कर है।"[4] 34 यीशु ने यह जान-
कर कि उस शास्त्री ने बड़ी अक्लमंदी से
जवाब दिया है, उससे कहा, "तू परमेश्वर
के राज से ज़्यादा दूर नहीं।" इसके बाद
किसी ने यीशु से और सवाल पूछने की
हिम्मत नहीं की।[5]

35 लेकिन मंदिर में सिखाते वक्त
यीशु ने उनसे कहा, "शास्त्री क्यों कहते
हैं कि मसीह, दाविद का सिर्फ एक
वंशज है?[6] 36 दाविद ने पवित्र शक्ति
से उभारे जाने पर[7] खुद कहा था,
'यहोवा# ने मेरे प्रभु से कहा, "तू तब तक
मेरे दाएँ हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे
दुश्मनों को तेरे पैरों तले न कर दूँ।"'[8]
37 जब दाविद खुद मसीह को प्रभु कहता
है, तो फिर मसीह, दाविद का वंशज कैसे
हो सकता है?"[9]

लोगों की भीड़ खुशी से उसकी सुन

12:28, 29 *या "सबसे बड़ी।"

12:29, 30, 36 #अति. क5 देखें। **12:30** *शब्दावली में "जीवन" देखें।

रही थी। **38** फिर उसने लोगों को यह
सिखाया, “शास्त्रियों से खबरदार रहो,
जिन्हें लंबे-लंबे चोगे पहनकर घूमना और
बाज़ारों में लोगों से नमस्कार सुनना
अच्छा लगता है।[1] **39** उन्हें सभा-घरों
में सबसे आगे की* जगहों पर बैठना और
शाम की दावतों में सबसे खास जगह लेना
पसंद है।[2] **40** वे विधवाओं के घर*
हड़प जाते हैं और दिखावे के लिए लंबी-
लंबी प्रार्थनाएँ करते हैं। इन्हें दूसरों के
मुकाबले और भी कड़ी सज़ा मिलेगी।”

41 फिर यीशु दान-पात्रों के सामने
बैठ गया[3] और देखने लगा कि
लोगों की भीड़ कैसे दान-पात्रों में पैसे डाल
रही है। वहाँ बहुत-से अमीर लोग ढेरों
सिक्के डाल रहे थे।[4] **42** फिर एक
गरीब विधवा आयी और उसने दो पैसे*
डाले, जिनकी कीमत न के बराबर
थी।[5] **43** तब यीशु ने अपने चेलों
को पास बुलाया और कहा, “मैं तुमसे
सच कहता हूँ, यहाँ जितने लोग दान-
पात्रों में पैसे डाल रहे हैं, उनमें से इस
गरीब विधवा ने सबसे ज़्यादा डाला है,[6]
44 क्योंकि वे सब अपनी बहुतायत में से
डाल रहे हैं, मगर इसने अपनी तंगी में से
डाला है, अपने गुज़ारे के लिए जो कुछ
उसके पास था उसने सब दे दिया।”[7]

13 जब वह मंदिर से बाहर निकल
रहा था, तो उसके चेलों में से
एक ने उससे कहा, “गुरु, देख! ये कितने
बढ़िया पत्थर हैं, कितनी शानदार इमार-
तें हैं!”[8] **2** लेकिन यीशु ने उससे कहा,
“ये जो आलीशान इमारतें तू देख रहा
है, इनका एक भी पत्थर दूसरे पत्थर
के ऊपर हरगिज़ न बचेगा जो ढाया न
जाए।”[1]

3 जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था
जहाँ से मंदिर नज़र आता था तब पतरस,
याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास ने अकेले
में उससे पूछा, **4** “हमें बता, ये सब बातें
कब होंगी और जब इनका आखिरी वक्त
पास आ रहा होगा तो उसकी क्या निशानी
होगी?”[2] **5** तब यीशु ने उनसे कहा,
“खबरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह
न करे।[3] **6** बहुत-से लोग आएँगे और
मेरा नाम लेकर दावा करेंगे, ‘मैं वही हूँ’
और बहुतों को गुमराह करेंगे। **7** जब
तुम युद्धों का शोरगुल और युद्धों की
खबरें सुनो, तो घबरा न जाना। इन
सबका होना ज़रूरी है मगर तभी अंत न
होगा।[4]

8 क्योंकि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर
और एक राज्य दूसरे राज्य पर हमला
करेगा।[5] एक-के-बाद-एक कई जगह
भूकंप होंगे और अकाल भी पड़ेंगे।[6] ये
बातें प्रसव-पीड़ा की तरह मुसीबतों की
सिर्फ शुरूआत होंगी।[7]

9 मगर तुम चौकन्ने रहना। लोग तुम्हें
निचली अदालतों के हवाले कर देंगे[8]
और तुम सभा-घरों में पीटे जाओगे।[9] तुम
मेरी वजह से राज्यपालों और राजाओं के
सामने कठघरे में पेश किए जाओगे
ताकि उन्हें गवाही मिले।[10] **10** और
यह ज़रूरी है कि पहले सब राष्ट्रों
में खुशखबरी का प्रचार किया जाए।[11]
11 मगर जब वे तुम्हें अदालत के हवाले
करने ले जा रहे होंगे, तो पहले से चिंता
मत करना कि हम क्या कहेंगे। पर जो
कुछ तुम्हें उस घड़ी बताया जाए, वही
कहना क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं बल्कि
पवित्र शक्ति होगी।[12] **12** यही नहीं,

12:39 *या “सबसे बढ़िया।” **12:40** *या “की जायदाद।” **12:42** *शा., “दो लेप्टौन” यानी एक कौद्रान। दो लेप्टौन एक दिन की मज़दूरी का 1/64वाँ हिस्सा था। अति. ख14 देखें।

अध्य. 12
1 लूक 20:45-47
2 मत 23:6, 7; लूक 11:43
3 2रा 12:9
4 लूक 21:1
5 लूक 21:2
6 लूक 21:3; 2कुर 8:12
7 लूक 21:4

अध्य. 13
8 मत 24:1; लूक 21:5

दूसरा कॉल.
1 लैव 26:31; मत 24:2; लूक 19:44; लूक 21:6
2 मत 24:3; लूक 21:7
3 मत 24:4, 5; लूक 21:8
4 मत 24:6; लूक 21:9
5 प्रक 6:4
6 मत 24:7; लूक 21:10, 11; प्रक 6:6, 8
7 मत 24:8
8 प्रेष 4:15
9 मत 10:17; यूह 16:2
10 मत 24:9; लूक 21:12, 13; 2ती 3:12; प्रक 2:10
11 मत 24:14; रोम 10:18; प्रक 14:6
12 निर्ग 4:12; मत 10:19, 20; लूक 12:11, 12; लूक 21:14, 15; प्रेष 4:8; प्रेष 6:9, 10

भाई, भाई को मरवाने के लिए सौंप देगा और पिता अपने बच्चे को। बच्चे अपने माँ-बाप के खिलाफ खड़े होंगे और उन्हें मरवा डालेंगे।[1] **13** मेरे नाम की वजह से सब लोग तुमसे नफरत करेंगे।[2] मगर जो अंत तक धीरज धरेगा,*[3] वही उद्धार पाएगा।[4]

14 लेकिन जब तुम्हें वह उजाड़नेवाली घिनौनी चीज़ वहाँ खड़ी नज़र आए[5] जहाँ उसे नहीं खड़ा होना चाहिए (पढ़नेवाला समझ इस्तेमाल करे), तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों की तरफ भागना शुरू कर दें।[6] **15** जो आदमी घर की छत पर हो वह नीचे न उतरे, न ही कुछ लेने के लिए अपने घर के अंदर जाए। **16** जो आदमी खेत में हो वह अपना चोगा लेने या उन चीज़ों को लेने वापस न लौटे जो पीछे छूट गयी हैं। **17** जो गर्भवती होंगी और जो बच्चे को दूध पिलाती होंगी, उनके लिए वे दिन क्या ही भयानक होंगे![7] **18** प्रार्थना करते रहो कि ऐसा सर्दियों के मौसम में न हो। **19** क्योंकि उन दिनों ऐसा संकट आएगा[8] जैसा सृष्टि की शुरूआत से, जो परमेश्वर ने रची है, न अब तक आया है और न फिर कभी आएगा।[9] **20** दरअसल अगर यहोवा* वे दिन न घटाए, तो कोई भी नहीं बच पाएगा। मगर चुने हुओं की खातिर जिन्हें परमेश्वर ने चुना है, उसने वे दिन घटाए हैं।[10]

21 उन दिनों अगर कोई तुमसे कहे, 'देखो! मसीह यहाँ है,' 'देखो! वह वहाँ है,' तो यकीन न करना।[11] **22** क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे[12] और चमत्कार और अजूबे दिखाएँगे ताकि हो सके तो चुने हुओं को

अध्य. 13

1 मी 7:6; मत 10:21; लूक 21:16; 2ती 3:1, 3
2 लूक 21:17
3 2ती 4:7; इब्र 3:6
4 मत 10:22; मत 24:13; लूक 21:19; प्रक 2:10
5 दान 9:27; दान 11:31
6 मत 24:15-20; लूक 21:20-23
7 लूक 21:23; लूक 23:28
8 प्रक 7:14
9 दान 12:1; मत 24:21
10 मत 24:22
11 मत 24:23, 24; लूक 17:23; लूक 21:8; 1यूह 4:1
12 मत 7:15

भी बहका लें। **23** इसलिए तुम चौकन्ने रहना।[1] मैंने तुम्हें सब बातें पहले से बता दी हैं।

24 मगर उन दिनों, उस संकट के बाद सूरज अँधियारा हो जाएगा, चाँद अपनी रौशनी नहीं देगा,[2] **25** आकाश से तारे गिर पड़ेंगे और आकाश की शक्तियाँ हिलायी जाएँगी। **26** फिर वे इंसान के बेटे[3] को पूरी शक्ति और महिमा के साथ बादलों में आता देखेंगे।[4] **27** फिर वह स्वर्गदूतों को भेजेगा और पृथ्वी के छोर से लेकर आकाश के छोर तक, चारों दिशाओं से अपने चुने हुओं को इकट्ठा करेगा।[5]

28 अब अंजीर के पेड़ की मिसाल से यह बात सीखो: जैसे ही उसकी नयी डाली नरम हो जाती है और उस पर पत्तियाँ आने लगती हैं, तुम जान लेते हो कि गरमियों का मौसम पास है।[6] **29** उसी तरह, जब तुम ये बातें होती देखो, तो जान लेना कि इंसान का बेटा पास है बल्कि दरवाज़े पर ही है।[7] **30** मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक ये सारी बातें पूरी न हो जाएँ, तब तक यह पीढ़ी हरगिज़ नहीं मिटेगी।[8] **31** आकाश और पृथ्वी मिट जाएँगे,[9] मगर मेरे शब्द कभी नहीं मिटेंगे।[10]

32 उस दिन या उस घड़ी के बारे में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, न बेटा बल्कि पिता जानता है।[11] **33** जागते रहो, आँखों में नींद न आने दो[12] क्योंकि तुम नहीं जानते कि तय किया हुआ वक्त कब आएगा।[13] **34** यह ऐसा है मानो एक आदमी परदेस जा रहा हो। घर छोड़ने से पहले वह अपने दासों को अधिकार देता है[14] और हरेक को उसका काम सौंपता है और दरबान को जागते रहने का हुक्म देता है।[15] **35** इसलिए

दूसरा कॉल.

1 मत 24:42; इफ 6:18; 2पत 3:17
2 मत 24:29; लूक 21:25, 26
3 दान 7:13
4 मत 24:30; लूक 21:27; प्रक 1:7
5 मत 24:31
6 मत 24:32; लूक 21:29-33
7 मत 24:33
8 मत 24:34; लूक 21:32
9 यश 51:6
10 यह 23:14; यश 40:8; मत 24:35
11 मत 24:36; प्रेष 1:7
12 रोम 13:11; 1थि 5:6
13 मत 25:13; लूक 21:34
14 मत 25:14
15 लूक 12:35, 36

13:13 *या "धरता है।" **13:20** *अति. क5 देखें।

जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि
घर का मालिक कब आ रहा है,[1]
दिन ढलने पर, आधी रात को, मुर्गे के
बाँग देने के वक्त या सुबह।[2] **36** कहीं
ऐसा न हो कि जब वह अचानक आए, तो
तुम्हें सोता हुआ पाए।[3] **37** मगर जो
मैं तुमसे कहता हूँ वही सब से कहता हूँ,
जागते रहो।"[4]

14 दो दिन बाद फसह[5] और बिन-
खमीर की रोटी का त्योहार था।[6]
और प्रधान याजक और शास्त्री मौका ढूँढ़
रहे थे कि कैसे यीशु को छल से पकड़ें*
और मार डालें।[7] **2** पर वे कह रहे थे,
"त्योहार के वक्त नहीं, कहीं ऐसा न हो
कि लोग हंगामा मचा दें।"

3 जब वह बैतनियाह में शमौन के घर
खाना खाने बैठा हुआ था* जो पहले
कोढ़ी था, तब एक औरत खुशबूदार तेल
की बोतल# लेकर आयी। उसमें असली
जटामाँसी का खुशबूदार तेल था, जो
बहुत कीमती था। उस औरत ने बोतल
तोड़कर खोली और वह यीशु के सिर
पर तेल उँडेलने लगी।[8] **4** यह देखकर
कुछ लोग भड़क उठे और आपस में कहने
लगे, "यह खुशबूदार तेल क्यों बरबाद
कर दिया गया? **5** इसे 300 दीनार*
से भी ज़्यादा दाम में बेचकर पैसा गरीबों
को दिया जा सकता था!" वे उस औरत
पर बहुत नाराज़ हुए।# **6** मगर यीशु
ने कहा, "तुम क्यों इसे परेशान कर रहे
हो? छोड़ दो इसे। इसने मेरी खातिर एक
बढ़िया काम किया है।[9] **7** गरीब तो
हमेशा तुम्हारे साथ होंगे[10] और तुम जब
चाहो उनके साथ भलाई कर सकते हो,
मगर मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।[1]
8 वह जो कर सकती थी उसने किया।
उसने मेरे शरीर पर खुशबूदार तेल मल-
कर मेरे दफनाए जाने की तैयारी की है।[2]
9 मैं तुमसे सच कहता हूँ, सारी दुनिया
में जहाँ कहीं खुशखबरी का प्रचार किया
जाएगा,[3] वहाँ इस औरत की याद में
इसके काम की चर्चा की जाएगी।"[4]

10 यहूदा इस्करियोती जो बारहों में
से एक था, निकलकर प्रधान याजकों के
पास गया ताकि यीशु को उनके हाथों
पकड़वा दे।[5] **11** जब उन्होंने उसकी
बात सुनी तो वे बहुत खुश हुए और उसे
चाँदी के सिक्के देने का वादा किया।[6] तब
से यहूदा यीशु को पकड़वाने का मौका
ढूँढ़ने लगा।

12 बिन-खमीर की रोटी के त्योहार के
पहले दिन,[7] जब यहूदी अपने दस्तूर के
मुताबिक फसह का जानवर बलि करते
थे,[8] उसके चेलों ने उससे पूछा, "तू
कहाँ चाहता है कि हम जाकर तेरे लिए
फसह का खाना खाने की तैयारी करें?"[9]
13 तब उसने अपने दो चेलों को यह
कहकर भेजा, "शहर में जाओ और
तुम्हें एक आदमी पानी का घड़ा उठाए
हुए मिलेगा। उसके पीछे-पीछे जाना।[10]
14 वह जिस घर में जाए उस घर के
मालिक से कहना, 'गुरु ने पूछा है, "मेह-
मानों का वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने
चेलों के साथ फसह का खाना खाऊँ?"'
15 फिर वह तुम्हें ऊपर का एक बड़ा
कमरा दिखाएगा जो सजा हुआ होगा।
वहाँ हमारे लिए तैयारी करना।"
16 तब वे चेले निकले और शहर के
अंदर गए और जैसा उसने बताया था
ठीक वैसा ही पाया। और उन्होंने फसह
की तैयारी की।

14:1 *या "गिरफ्तार करें।" **14:3** *या "मेज़ से टेक लगाए बैठा था।" #यह बोतल सिलखड़ी पत्थर की थी जो संगमरमर जैसा होता है। **14:5** *अति. ख14 देखें। #या "उस पर भड़क उठे; उसे डाँटा।"

अध्य. 13
1 मत 24:42
2 लूक 21:36
3 मत 25:5
4 हब 2:3

अध्य. 14
5 निर्ग 12:3, 6; लैव 23:5
6 लैव 23:6; यूह 13:1
7 मत 26:2-5; लूक 22:1, 2
8 मत 26:6-9; यूह 12:2-5
9 मत 26:10; यूह 12:7
10 व्य 15:11

दूसरा कॉल.
1 मत 26:11; यूह 12:8
2 मत 26:12; यूह 12:7
3 मत 24:14
4 मत 26:13
5 मत 26:14-16; लूक 22:3-6
6 जक 11:12
7 निर्ग 12:15, 18; निर्ग 23:15
8 लूक 22:1, 7
9 गि 9:2; मत 26:17-19
10 लूक 22:10-13

17 शाम होने पर वह बारहों के साथ आया।[1] 18 और जब वे खाना खा रहे थे,* तब यीशु ने कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, तुममें से एक जो मेरे साथ खा रहा है, मेरे साथ विश्वासघात करके मुझे पकड़वा देगा।”[2] 19 वे दुखी होने लगे और एक-एक करके उससे कहने लगे, “वह मैं तो नहीं हूँ न?” 20 उसने कहा, “वह तुम बारहों में से एक है जो मेरे साथ कटोरे में निवाला डुबोकर खा रहा है।[3] 21 इंसान का बेटा तो जा ही रहा है, ठीक जैसा उसके बारे में लिखा है, मगर उस आदमी का बहुत बुरा होगा जो इंसान के बेटे के साथ विश्वासघात करके उसे पकड़वा देगा![4] उस आदमी के लिए अच्छा तो यह होता कि वह पैदा ही न हुआ होता।”[5]

22 जब वे खाना खा रहे थे, तो यीशु ने एक रोटी ली और प्रार्थना में धन्यवाद देकर उसे तोड़ा और उन्हें देकर कहा, “यह लो, यह मेरे शरीर की निशानी है।”[6] 23 फिर उसने एक प्याला लिया और प्रार्थना में धन्यवाद देकर उन्हें दिया और उन सबने उसमें से पीया।[7] 24 फिर यीशु ने उनसे कहा, “यह मेरे खून की निशानी है,[8] जो करार[9] को पक्का करता है और जो बहुतों की खातिर बहाया जाएगा।[10] 25 मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैं दाख-मदिरा* उस दिन तक हरगिज़ नहीं पीऊँगा, जिस दिन मैं परमेश्वर के राज में नयी दाख-मदिरा न पीऊँ।” 26 आखिर में उन्होंने परमेश्वर की तारीफ में गीत* गाए और फिर जैतून पहाड़ की तरफ निकल गए।[11]

14:18 *या “मेज़ से टेक लगाए बैठे थे।” **14:25** *शा., “अंगूर की बेल की उपज से बनी यह चीज़।” **14:26** *या “भजन।”

अध्य. 14

1 मत 26:20; लूक 22:14
2 भज 41:9; मत 26:21, 22; लूक 22:21, 23; यूह 13:21, 22
3 मत 26:23
4 लूक 22:22
5 मत 26:24
6 मत 26:26; लूक 22:19; 1कुर 11:23, 24
7 मत 26:27; 1कुर 10:16; 1कुर 11:25
8 निर्ग 24:8; लैव 17:11; इब्र 9:22
9 यिर्म 31:31; इब्र 7:22; इब्र 9:15
10 यश 53:12; मत 26:28; लूक 22:20
11 मत 26:30; लूक 22:39; यूह 18:1

दूसरा कॉल.

1 यश 53:5; दान 9:26
2 जक 13:7; मत 26:31-33; मत 26:56; मर 14:50; यूह 16:32
3 मर 16:7
4 लूक 22:31-33; यूह 13:37
5 मत 26:34; लूक 22:34; यूह 13:38
6 मत 26:35
7 मत 26:36, 37; लूक 22:39-41; यूह 18:1
8 मर 9:2
9 यूह 12:27
10 मत 26:38
11 रोम 8:15; गल 4:6

27 यीशु ने उनसे कहा, “तुम सबका विश्वास डगमगा जाएगा* क्योंकि लिखा है, ‘मैं चरवाहे को मारूँगा[1] और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।’[2] 28 लेकिन जब मुझे ज़िंदा कर दिया जाएगा, तो मैं तुमसे पहले गलील जाऊँगा।”[3] 29 मगर पतरस ने उससे कहा, “चाहे इन सबका विश्वास क्यों न डगमगा जाए, मगर मेरा विश्वास नहीं डगमगाएगा।”[4] 30 तब यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझसे सच कहता हूँ, आज ही, हाँ, इसी रात मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर देगा।”[5] 31 मगर पतरस बार-बार कहने लगा, “अगर मुझे तेरे साथ मरना पड़े, तब भी मैं तुझे जानने से हरगिज़ इनकार नहीं करूँगा।” बाकी चेले भी यही कहने लगे।[6]

32 फिर वे गतसमनी नाम की जगह आए और उसने अपने चेलों से कहा, “मैं वहाँ प्रार्थना करने जा रहा हूँ, तुम यहीं बैठे रहना।”[7] 33 फिर उसने पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लिया।[8] वह मन-ही-मन बेचैन हो उठा* और दुख से बेहाल होने लगा। 34 उसने उनसे कहा, “मेरा मन बहुत दुखी है,[9] यहाँ तक कि मेरी मरने जैसी हालत हो रही है। यहीं ठहरो और जागते रहो।”[10] 35 फिर वह थोड़ा आगे गया और ज़मीन पर गिरकर प्रार्थना करने लगा कि अगर हो सके तो यह वक्त टल जाए। 36 उसने कहा, “हे *अब्बा,* हे पिता,[11] तेरे लिए सबकुछ मुमकिन है। यह प्याला मेरे सामने से हटा दे। मगर फिर भी जो मैं चाहता हूँ वह

14:27 *शा., “तुम ठोकर खाओगे।” **14:33** *या “उसकी सदमे की सी हालत हो गयी।”

नहीं, बल्कि वही हो जो तू चाहता है।”[1]
37 जब वह चेलों के पास वापस आया, तो
उसने देखा कि वे सो रहे हैं। उसने पत-
रस से कहा, “शमौन, तू सो रहा है? क्या
तुझमें इतनी भी ताकत नहीं कि थोड़ी देर
मेरे साथ जाग सके?[2] 38 जागते रहो
और प्रार्थना करते रहो ताकि तुम परीक्षा में
न पड़ो।[3] दिल तो बेशक तैयार* है, मगर
शरीर कमज़ोर है।”[4] 39 वह दोबारा
गया और उसने फिर से वही प्रार्थना की।[5]
40 वह फिर चेलों के पास आया और
उसने उन्हें सोता हुआ पाया क्योंकि उनकी
आँखें नींद से भरी थीं। वे नहीं जानते
थे कि उसे क्या जवाब दें। 41 फिर वह
तीसरी बार उनके पास आया और उसने
कहा, “तुम ऐसे वक्त में सो रहे हो और
आराम कर रहे हो! बहुत हुआ! देखो,
वह घड़ी आ गयी है![6] अब इंसान के बेटे
के साथ विश्वासघात करके उसे पापियों के
हाथ सौंप दिया जाएगा। 42 उठो, आओ
चलें। देखो, मुझसे गद्दारी करनेवाला पास
आ गया है।”[7]

43 वह बोल ही रहा था कि तभी
यहूदा आ गया, जो उन बारहों में से एक
था। उसके साथ तलवारें और लाठियाँ
लिए हुए लोगों की भीड़ थी जिसे प्रधान
याजकों, शास्त्रियों और मुखियाओं ने
भेजा था।[8] 44 उसके साथ विश्वास-
घात करनेवाले ने यह कहकर उन्हें
पहले से एक निशानी दी थी, “जिसे मैं
चूमूँगा, वही है। उसे गिरफ्तार कर लेना
और सावधानी से ले जाना।” 45 वह
सीधे यीशु की तरफ आया और पास
आकर उसने कहा, “रब्बी!” और उसे
प्यार से चूमा। 46 तब उन्होंने उसे
पकड़ लिया और हिरासत में ले लिया।
47 मगर वहाँ जो खड़े थे उनमें से एक
ने अपनी तलवार खींचकर महायाजक के
दास पर वार किया और उसका कान
उड़ा दिया।[1] 48 यीशु ने भीड़ से कहा,
“क्या तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर
मुझे गिरफ्तार करने आए हो, मानो मैं
कोई लुटेरा हूँ?[2] 49 मैं हर दिन तुम्हारे
बीच मंदिर में सिखाया करता था,[3] फिर
भी तुमने मुझे हिरासत में नहीं लिया।
मगर यह सब इसलिए हुआ है ताकि
शास्त्र के वचन पूरे हों।”[4]

50 तब सब चेले उसे छोड़कर भाग
गए।[5] 51 मगर एक नौजवान जो सिर्फ
एक बढ़िया मलमल का कपड़ा ओढ़े था,
उसके पीछे-पीछे आने लगा। लेकिन जब
भीड़ ने उसे पकड़ने की कोशिश की,
52 तो वह अपना मलमल का कपड़ा
छोड़कर नंगा* भाग गया।

53 अब वे यीशु को महायाजक के
पास ले गए[6] और सारे प्रधान याजक,
मुखिया और शास्त्री वहाँ इकट्ठा हुए।[7]
54 मगर पतरस कुछ दूरी पर रहकर
उसके पीछे-पीछे महायाजक के आँगन
तक आया। वह घर के सेवकों के साथ
बैठ गया और आग तापने लगा।[8]
55 प्रधान याजक और पूरी महा-
सभा यीशु को मार डालने के लिए
उसके खिलाफ झूठी गवाही ढूँढ़ रही
थी, मगर उन्हें ऐसी एक भी गवाही
नहीं मिली।[9] 56 बेशक, बहुत-से लोग
उसके खिलाफ झूठी गवाही दे रहे थे,[10]
मगर उनके बयान एक-दूसरे से मेल
नहीं खा रहे थे। 57 कुछ लोगों ने खड़े
होकर उसके खिलाफ यह झूठी गवाही दी,
58 “हमने इसे यह कहते सुना है कि मैं
हाथ के बनाए इस मंदिर को ढा दूँगा
और तीन दिन के अंदर दूसरा मंदिर खड़ा

अध्य. 14
1 मत 26:39, लूक 22:42, यूह 6:38, इब्र 5:7
2 मत 26:40, लूक 22:45
3 मत 6:13, लूक 11:4, लूक 22:46
4 मत 26:41, रोम 7:23
5 मत 26:42-46
6 यूह 13:1
7 यूह 18:2
8 मत 26:47-51, लूक 22:47-51, यूह 18:3

दूसरा कॉल.
1 मत 26:51, लूक 22:50, यूह 18:10
2 मत 26:55, 56, लूक 22:52, 53
3 लूक 19:47, यूह 18:20
4 भज 22:6, यश 53:7, दान 9:26, लूक 22:37
5 जक 13:7, मत 26:31, यूह 16:32
6 यूह 18:13
7 मत 26:57, लूक 22:54, 55
8 मत 26:58, यूह 18:15
9 मत 26:59, 60
10 भज 35:11

14:38 * या “उत्सुक।”

14:52 * या “कम कपड़ों में।”

कर दूँगा जो हाथों से नहीं बना होगा।"[1]
59 मगर इस बारे में भी उनके बयान
एक-दूसरे से मेल नहीं खा रहे थे।

60 तब महायाजक उनके बीच खड़ा
हुआ और उसने यीशु से पूछा, "क्या तू
जवाब में कुछ नहीं कहेगा? क्या तू सुन
नहीं रहा कि ये तुझ पर क्या-क्या इल-
ज़ाम लगा रहे हैं?"[2] 61 मगर तब भी
यीशु चुप रहा और उसने कोई जवाब
नहीं दिया।[3] एक बार फिर महायाजक
उससे सवाल करने लगा और उससे
कहा, "क्या तू परम-प्रधान परमेश्वर का
बेटा, मसीह है?" 62 यीशु ने कहा,
"हाँ मैं हूँ। और तुम लोग इंसान के
बेटे[4] को शक्तिशाली परमेश्वर के दाएँ
हाथ बैठा[5] और आकाश के बादलों के
साथ आता देखोगे।"[6] 63 यह सुनते
ही महायाजक ने अपना कपड़ा फाड़ा
और कहा, "अब हमें और गवाहों की
क्या ज़रूरत है?[7] 64 तुम लोगों ने ये
निंदा की बातें सुनी हैं। अब तुम्हारा
क्या फैसला है?"* उन सबने कहा कि
यह मौत की सज़ा के लायक है।[8]
65 कुछ उस पर थूकने लगे[9] और
उसका मुँह ढाँपकर उसे घूँसे मारने लगे
और उससे कहने लगे, "भविष्यवाणी
कर, तुझे किसने मारा!" और पहरेदारों
ने उसके मुँह पर थप्पड़ मारे और उसे ले
गए।[10]

66 जब पतरस नीचे आँगन में था,
तो महायाजक की एक दासी आयी।[11]
67 पतरस को आग तापते देख, वह उस
पर नज़रें गड़ाकर बोली, "तू भी उस
नासरी यीशु के साथ था।" 68 मगर
उसने यह कहकर इनकार कर दिया, "न
तो मैं उसे जानता हूँ न मुझे यह समझ
आ रहा है कि तू क्या कह रही है।" तब
वह बाहर फाटक* के पास चला गया।
69 वहाँ उस दासी ने उसे देखा और वहाँ
खड़े लोगों से एक बार फिर कहा, "यह
भी उनमें से एक है।" 70 पतरस फिर
से इनकार करने लगा। थोड़ी देर बाद
आस-पास खड़े लोग फिर से पतरस से
कहने लगे, "बेशक तू भी उनमें से एक है
क्योंकि तू एक गलीली है।" 71 मगर
वह खुद को कोसने लगा और कसम
खाकर कहने लगा, "मैं उस आदमी को
नहीं जानता जिसकी तुम बात कर रहे
हो!" 72 उसी घड़ी एक मुर्गे ने दूसरी
बार बाँग दी[1] और पतरस को यीशु की
यह बात याद आयी, "मुर्गे के दो बार
बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझे जानने
से इनकार कर देगा।"[2] तब उससे और
बरदाश्त नहीं हुआ और वह फूट-फूटकर
रोने लगा।

15 सुबह होते ही मुखियाओं और
शास्त्रियों ने प्रधान याजकों के
साथ मिलकर यानी पूरी महासभा ने
आपस में सलाह-मशविरा किया। उन्होंने
यीशु को बाँधा और पीलातुस के पास
ले गए और उसके हवाले कर दिया।[3]
2 तब पीलातुस ने यीशु से सवाल किया,
"क्या तू यहूदियों का राजा है?"[4] जवाब
में उसने कहा, "तू खुद यह कहता है।"[5]
3 लेकिन प्रधान याजक उस पर तरह-
तरह के इलज़ाम लगाने लगे। 4 अब
पीलातुस एक बार फिर उससे सवाल
करने लगा, "क्या तेरे पास कोई
जवाब नहीं?[6] देख, ये तुझ पर कितने
इलज़ाम लगा रहे हैं।"[7] 5 मगर यीशु
ने और कोई जवाब नहीं दिया, इसलिए
पीलातुस को बहुत ताज्जुब हुआ।[8]

14:64 * या "तुम क्या सोचते हो?"

14:68 * या "ओसारे।"

अध्य. 14

1 मत 26:61, मर 15:29, यूह 2:19
2 मत 26:62, 63
3 यश 53:7, 1पत 2:23
4 दान 7:13
5 भज 110:1, इफ 1:20, कुल 3:1
6 मत 24:30, मत 26:64, लूक 21:27, प्रक 1:7
7 मत 26:65, 66
8 लैव 24:16, यूह 19:7
9 यश 50:6, यश 53:3, मत 26:67, 68
10 लूक 22:63-65
11 मत 26:69-75, लूक 22: 55-62, यूह 18:25, 26

दूसरा कॉल.

1 यूह 18:27
2 मत 26:34, मर 14:30, लूक 22:34, यूह 13:38

अध्य. 15

3 भज 2:2, मत 27:1, 2, लूक 22:66, यूह 18:28, प्रेष 3:13, प्रेष 4:26
4 यूह 18:33, 37
5 मत 27:11-14, लूक 23:3
6 मत 26:62
7 यूह 19:9, 10
8 यश 53:7

6 ऐसा था कि पीलातुस हर साल त्योहार के वक्त, लोगों की गुज़ारिश पर किसी एक कैदी को रिहा कर देता था।[1] 7 उस वक्त बरअब्बा नाम का एक आदमी कुछ और लोगों के साथ जेल में कैद था। इन सबने सरकार के खिलाफ बगावत की थी और खून किया था। 8 अब भीड़ पीलातुस के पास आयी और गुज़ारिश करने लगी कि जैसा वह उनके लिए करता आया है, वैसा ही करे। 9 उसने लोगों से कहा, “क्या मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को रिहा कर दूँ?”[2] 10 पीलातुस जानता था कि प्रधान याजकों ने ईर्ष्या की वजह से यीशु को उसके हवाले किया था।[3] 11 मगर प्रधान याजकों ने भीड़ को यह कहने के लिए भड़काया कि वह यीशु के बजाय बरअब्बा को रिहा करे।[4] 12 एक बार फिर पीलातुस ने उनसे कहा, “तो मैं इस आदमी का क्या करूँ जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो?”[5] 13 वे फिर चिल्ला उठे, “इसे काठ पर लटका दे!”*[6] 14 मगर उसने कहा, “क्यों, इसने क्या बुरा किया है?” मगर वे और भी ज़ोर से चिल्लाने लगे, “इसे काठ पर लटका दे!”*[7] 15 तब पीलातुस ने भीड़ को खुश करने के लिए बरअब्बा को रिहा कर दिया और यीशु को कोड़े लगवाने के बाद,[8] काठ पर लटकाकर मार डालने के लिए सौंप दिया।[9]

16 फिर सैनिक यीशु को राज्यपाल के भवन के अंदर, आँगन में ले गए। उन्होंने सैनिकों की पूरी पलटन को वहाँ बुला लिया।[10] 17 उन्होंने उसे बैंजनी कपड़ा पहनाया और काँटों का एक ताज बनाकर उसके सिर पर रखा। 18 वे ज़ोर से चिल्लाकर कहने लगे, “हे यहूदियों के राजा, सलाम!”*[1] 19 वे नरकट से उसे सिर पर मारने लगे, उस पर थूकने लगे और उसे झुककर प्रणाम* करने लगे। 20 जब उन्होंने उसका खूब मज़ाक उड़ा लिया, तो वह बैंजनी कपड़ा उतार दिया और उसी के कपड़े उसे पहना दिए। फिर वे उसे काठ पर ठोंकने के लिए ले गए।[2] 21 उस वक्त शमौन नाम का एक आदमी देहात से आ रहा था और वहाँ से गुज़र रहा था। वह कुरेने का रहनेवाला था और सिकंदर और रूफुस का पिता था। सैनिकों ने उसे जबरन सेवा के लिए पकड़ा कि वह यीशु का यातना का काठ* उठाकर ले चले।[3]

22 फिर वे यीशु को *गुलगुता* नाम की जगह ले आए, जिसका मतलब है, “खोपड़ी स्थान।”[4] 23 यहाँ उन्होंने उसे नशीली गंधरस मिली दाख-मदिरा पिलाने की कोशिश की,[5] मगर उसने नहीं पी। 24 उन्होंने उसे काठ पर ठोंक दिया और उसके ओढ़ने के लिए चिट्ठियाँ डालीं ताकि तय कर सकें कि किसे क्या मिलेगा और उन्हें आपस में बाँट लिया।[6] 25 यह तीसरा घंटा* था और उन्होंने उसे काठ पर ठोंक दिया। 26 उस पर जो इलज़ाम था, उसे लिखकर ऊपर लगा दिया गया: “यहूदियों का राजा।”[7] 27 और उन्होंने उसके साथ दो लुटेरों को भी काठ पर लटकाया, एक उसके दायीं तरफ और दूसरा बायीं तरफ।[8] 28 *— 29 जो लोग वहाँ से गुज़र रहे थे वे सिर हिला-हिलाकर उसकी बेइज़्ज़ती करने लगे,[9]

15:13, 14 *या “काठ पर लटकाकर मार डाल।”

15:18 *या “तेरी जय हो!” **15:19** *या “उसे दंडवत।” **15:21** *शब्दावली देखें। **15:25** *यानी सुबह करीब 9 बजे। **15:28** *अति. क3 देखें।

अध्य. 15

1 मत 27:15-18, यूह 18:39
2 लूक 23:16
3 मत 21:38
4 मत 27:20-23, प्रेष 3:14
5 लूक 23:20-25
6 यूह 19:6
7 प्रेष 3:13, प्रेष 13:28
8 यूह 19:1
9 मत 27:24, 26
10 मत 27:27-31

दूसरा कॉल.

1 यूह 19:3
2 यूह 19:16
3 मत 27:32, लूक 23:26
4 मत 27:33-37, लूक 23:33, यूह 19:17, इब्र 13:12
5 भज 69:21
6 भज 22:18, यूह 19:23, 24
7 मत 27:29, 37, लूक 23:38, यूह 19:19
8 मत 27:38
9 भज 22:7, भज 109:25, यश 53:3

“अरे ओ मंदिर को ढानेवाले, उसे तीन
दिन के अंदर बनानेवाले![1] 30 यातना के
काठ* से नीचे उतरकर खुद को बचा
ले।” 31 इसी तरह, प्रधान याजक भी
शास्त्रियों के साथ मिलकर यह कहते हुए
आपस में उसका मज़ाक उड़ा रहे थे, “इसने
दूसरों को तो बचाया, मगर खुद को नहीं
बचा सकता![2] 32 ज़रा इसराएल का
राजा मसीह अब यातना के काठ* से
नीचे तो उतरे ताकि हम देखें और यकीन
करें।”[3] यहाँ तक कि जो आदमी उसके
दोनों तरफ काठ पर थे, वे भी उसे बुरा-
भला कह रहे थे।[4]

33 जब छठा घंटा* हुआ, तो पूरे देश
में अंधकार छा गया और नौवें घंटे# तक
छाया रहा।[5] 34 नौवें घंटे में यीशु ने
ज़ोर से पुकारा, *“एली, एली, लामा
शबकतानी?”* जिसका मतलब है, “मेरे
परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों
छोड़ दिया?”[6] 35 यह सुनकर पास
खड़े कुछ लोग कहने लगे, “देखो! यह
एलियाह को पुकार रहा है।” 36 फिर
एक आदमी भागकर गया और उसने
एक स्पंज को खट्टी दाख-मदिरा में डुबो-
कर नरकट पर रखा और उसे यह कहते
हुए पीने के लिए दिया,[7] “देखते हैं, एलि-
याह इसे नीचे उतारने के लिए आता है
या नहीं।” 37 लेकिन यीशु ज़ोर से
चिल्लाया और उसने दम तोड़ दिया।*[8]
38 तब मंदिर का परदा[9] ऊपर से
नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया।[10]
39 जब उसके सामने खड़े सेना-अफ-
सर* ने देखा कि उसकी मौत पर क्या-

15:30, 32 *शब्दावली देखें। **15:33** *यानी दोपहर करीब 12 बजे। #यानी दोपहर करीब 3 बजे। **15:37** *या “आखिरी साँस ली।” **15:39** *या “शतपति,” जिसकी कमान के नीचे सौ सैनिक होते थे।

अध्य. 15
1 मत 27:39-42; मर 14:58
2 लूक 23:35
3 मत 16:4
4 मत 27:44; 1पत 2:23
5 मत 27:45; लूक 23:44
6 भज 22:1; मत 27:46-49
7 भज 69:21; यूह 19:29
8 भज 31:5; मत 27:50; लूक 23:46; यूह 19:30
9 निर्ग 26:31-33; इब्र 6:19
10 मत 27:51; लूक 23:45; इब्र 10:19, 20

क्या हुआ तो उसने कहा, “वाकई यह
इंसान, परमेश्वर का बेटा था।”[1]

40 वहाँ कुछ औरतें भी थीं, जो दूर
खड़ी देख रही थीं। उनमें मरियम मग-
दलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माँ
मरियम और सलोमी भी थीं।[2] 41 ये
औरतें उसके साथ-साथ रहती थीं
और जब वह गलील में था तब उसकी
सेवा करती थीं।[3] वहाँ और भी कई
औरतें थीं जो उसके साथ यरूशलेम
आयी थीं।

42 दोपहर काफी बीत चुकी थी और
यह तैयारी का दिन था यानी सब्त से
पहले का दिन। 43 इसलिए अरिमति-
याह का रहनेवाला यूसुफ वहाँ आया जो
धर्म-सभा* का एक इज़्ज़तदार सदस्य था।
वह खुद भी परमेश्वर के राज के आने
का इंतज़ार कर रहा था। वह हिम्मत
करके पीलातुस के सामने गया और उसने
यीशु की लाश माँगी।[4] 44 मगर पीला-
तुस को ताज्जुब हुआ कि यीशु वाकई
मर चुका है। इसलिए उसने सेना-अफ-
सर को बुलाकर पूछा कि क्या वह मर
चुका है। 45 पीलातुस ने सेना-अफसर
से यह पक्का कर लेने के बाद कि वह
मर चुका है, उसकी लाश यूसुफ को
सौंप दी। 46 तब यूसुफ बढ़िया मल-
मल खरीदकर ले आया और उसने यीशु
की लाश नीचे उतारी और उसे मल-
मल में लपेटकर एक कब्र* में रख दिया,[5]
जो चट्टान खोदकर बनायी गयी थी। और
कब्र* के द्वार पर एक पत्थर लुढ़काकर
उसे बंद कर दिया।[6] 47 लेकिन मरियम
मगदलीनी और योसेस की माँ मरियम उस
जगह को देखती रहीं जहाँ उसे रखा
गया था।[7]

15:43 *या “महासभा।” **15:46** *या “स्मारक कब्र।”

दूसरा कॉल.
1 मत 27:54; लूक 23:47
2 मत 27:55, 56; लूक 23:49
3 लूक 8:2, 3
4 व्य 21:22, 23; मत 27:57, 58; लूक 23:50-52; यूह 19:38
5 यश 53:9
6 मत 27:59, 60; लूक 23:53; यूह 19:40
7 मत 27:61; लूक 23:55

16 जब सब्त का दिन[1] बीत गया,
तो मरियम मगदलीनी, याकूब
की माँ मरियम[2] और सलोमी ने खुशबू-
दार मसाले खरीदे ताकि आकर यीशु के
शरीर पर लगाएँ।[3] 2 वे हफ्ते के पहले
दिन सुबह-सुबह, जब सूरज निकला ही
था, कब्र* पर आयीं।[4] 3 वे आपस
में कह रही थीं, "कौन हमारे लिए कब्र
के मुँह से पत्थर हटाएगा?" 4 मगर
जब उन्होंने नज़र उठाकर देखा, तो
पत्थर पहले से ही दूर लुढ़का हुआ था,
इसके बावजूद कि वह बहुत बड़ा था।[5]
5 जब वे कब्र के अंदर गयीं, तो उन्होंने
देखा कि एक नौजवान सफेद चोगा पहने
दायीं तरफ बैठा है और वे हैरान रह
गयीं। 6 उसने उनसे कहा, "हैरान मत
हो।[1] तुम यीशु नासरी को ढूँढ़ रही हो न,
जिसे काठ पर लटकाकर मार डाला गया
था? उसे ज़िंदा कर दिया गया है[2] और
वह यहाँ नहीं है। यह जगह देखो जहाँ
उसे रखा गया था।[3] 7 जाओ और
जाकर पतरस और बाकी चेलों से कहो,
'वह तुमसे पहले गलील जाएगा।[4] वहाँ
तुम उसे देखोगे, ठीक जैसा उसने तुमसे
कहा था।'"[5] 8 इसलिए जब वे बाहर
निकलीं तो वे कब्र से भागीं। वे थर-थर
काँप रही थीं और इस कदर हैरान थीं कि
उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था। उन्होंने
किसी को कुछ नहीं बताया क्योंकि वे
बहुत डरी हुई थीं।*[6]

16:2 *या "स्मारक कब्र।"

16:8 *सबसे पुरानी भरोसेमंद हस्तलिपियों के मुताबिक मरकुस की किताब आय. 8 पर खत्म हो जाती है। अति. क3 देखें।

अध्य. 16
1 निर्ग 20:8, 9
2 मत 28:1
3 लूक 23:55, 56
4 लूक 24:1; यूह 20:1
5 लूक 24:2, 3

दूसरा कॉल.
1 लूक 24:4
2 मर 8:31; लूक 18:33; प्रेष 4:10
3 मत 28:5, 6
4 मत 26:32; मर 14:28
5 मत 28:7
6 मत 28:8; लूक 24:9

लूका

के मुताबिक खुशखबरी

सारांश

यीशु ने गलील में प्रचार शुरू किया (14, 15)
नासरत में यीशु ठुकराया गया (16-30)
कफरनहूम के सभा-घर में (31-37)
शमौन की सास और बाकी लोगों को ठीक करता है (38-41)
जब यीशु एकांत में होता है तो भीड़ उसे ढूँढ़ लेती है (42-44)

5 चमत्कार से मछलियाँ पकड़ी गयीं; शुरूआती चेले (1-11)
कोढ़ी ठीक किया गया (12-16)
यीशु, लकवे के मारे हुए को ठीक करता है (17-26)
लेवी को बुलाता है (27-32)
उपवास के बारे में सवाल (33-39)

6 यीशु "सब्त के दिन का प्रभु" (1-5)
सूखे हाथवाला आदमी ठीक होता है (6-11)
12 प्रेषित (12-16)
यीशु सिखाता और चंगा करता है (17-19)
सुख और दुख की वजह (20-26)
दुश्मनों से प्यार करना (27-36)
दोष लगाना बंद करो (37-42)
पेड़ अपने फल से जाना जाता है (43-45)
पक्की नींव पर बना घर; बिना नींववाला घर (46-49)

7 सेना-अफसर का विश्वास (1-10)
नाईन में यीशु एक विधवा के बेटे को ज़िंदा करता है (11-17)
यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की तारीफ (18-30)
ढीठ पीढ़ी को धिक्कारा गया (31-35)
एक पापिन को माफ किया गया (36-50)
कर्ज़ लेनेवालों की मिसाल (41-43)

8 यीशु के साथ-साथ जानेवाली औरतें (1-3)
बीज बोनेवाले की मिसाल (4-8)
यीशु ने मिसालें क्यों दीं (9, 10)
बीज बोनेवाले की मिसाल का मतलब समझाया (11-15)
दीपक ढककर नहीं रखा जाता (16-18)
यीशु की माँ और उसके भाई (19-21)
यीशु तूफान शांत करता है (22-25)
यीशु दुष्ट स्वर्गदूतों को सूअरों में भेजता है (26-39)
याइर की बेटी; एक औरत यीशु का कपड़ा छूती है (40-56)

9 12 चेलों को प्रचार की हिदायतें (1-6)
हेरोदेस, यीशु के बारे में सुनकर उलझन में (7-9)
यीशु ने 5,000 को खिलाया (10-17)
पतरस बताता है कि यीशु ही मसीह है (18-20)
यीशु की मौत की भविष्यवाणी (21, 22)
सच्चा चेला कौन है (23-27)
यीशु का रूप बदला (28-36)
दुष्ट स्वर्गदूत के कब्ज़े में पड़ा लड़का ठीक हुआ (37-43क)
यीशु एक बार फिर अपनी मौत की भविष्यवाणी करता है (43ख-45)
चेले बहस करते हैं कि कौन बड़ा है (46-48)
जो हमारे खिलाफ नहीं, वह हमारे साथ है (49, 50)
सामरियों का एक गाँव यीशु को ठुकरा देता है (51-56)
यीशु का चेला बनने के लिए क्या करें (57-62)

10 यीशु 70 चेलों को भेजता है (1-12)
पश्चाताप न करनेवाले शहरों को धिक्कारता है (13-16)
70 चेले लौटते हैं (17-20)
पिता की तारीफ की जिसने नम्र लोगों पर कृपा की (21-24)
दयालु सामरी की मिसाल (25-37)
यीशु, मरियम और मारथा के घर पर (38-42)

11 प्रार्थना कैसे करें (1-13)
आदर्श प्रार्थना (2-4)
पवित्र शक्ति से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकाला (14-23)
दुष्ट स्वर्गदूत लौटता है (24-26)
सच्चा सुख (27, 28)
योना का चिन्ह (29-32)
शरीर का दीपक (33-36)
कपटी धर्म गुरुओं को धिक्कारा (37-54)

12 फरीसियों का खमीर (1-3)
परमेश्वर से डरो, इंसान से नहीं (4-7)
मसीह को स्वीकार करनेवाला (8-12)
मूर्ख अमीर आदमी की मिसाल (13-21)
चिंता करना छोड़ दो (22-34)
छोटा झुंड (32)
जागते रहना (35-40)
विश्वासयोग्य और विश्वासघाती प्रबंधक (41-48)
शांति नहीं, फूट डालने (49-53)
खास वक्त का मतलब समझना (54-56)
झगड़े निपटाना (57-59)

13 पश्चाताप करो वरना नाश हो जाओगे (1-5)
अंजीर के बाँझ पेड़ की मिसाल (6-9)
सब्त के दिन कुबड़ी औरत को चंगा किया (10-17)
राई के दाने और खमीर की मिसाल (18-21)
सँकरे दरवाज़े से जाने के लिए संघर्ष ज़रूरी (22-30)
"उस लोमड़ी" हेरोदेस से (31-33)
यरूशलेम के लिए यीशु का दुख (34, 35)

14 जलोदर का रोगी सब्त के दिन ठीक किया गया (1-6)
खुद को छोटा समझनेवाला मेहमान बनो (7-11)
उन्हें न्यौता दो जो बदले में कुछ नहीं दे सकते (12-14)
उन मेहमानों की मिसाल जो बहाना बनाते हैं (15-24)
चेला बनने की कीमत (25-33)
नमक जो स्वाद खो दे (34, 35)

15 खोयी हुई भेड़ की मिसाल (1-7)
खोए हुए सिक्के की मिसाल (8-10)
खोए हुए बेटे की मिसाल (11-32)

16 बेईमान प्रबंधक की मिसाल (1-13)
'थोड़े में भरोसे के लायक, बहुत में भी' (10)
कानून और परमेश्वर का राज (14-18)
अमीर आदमी और लाज़र की मिसाल (19-31)

17 विश्वास की राह में बाधा; माफी और विश्वास (1-6)
निकम्मे दास (7-10)
दस कोढ़ी ठीक हुए (11-19)
परमेश्वर का राज कैसे आएगा (20-37)
परमेश्वर का राज "तुम्हारे ही बीच है" (21)
"लूत की पत्नी को याद रखो" (32)

18 हार न माननेवाली विधवा की मिसाल (1-8)
फरीसी और कर-वसूलनेवाला (9-14)
यीशु और बच्चे (15-17)
एक अमीर अधिकारी का सवाल (18-30)
यीशु एक बार फिर अपनी मौत की भविष्यवाणी करता है (31-34)
अंधे भिखारी की आँखें ठीक हो गयीं (35-43)

19 यीशु, जक्कई के घर गया (1-10)
दस मीना चाँदी की मिसाल (11-27)
यीशु राजा की हैसियत से दाखिल होता है (28-40)
यीशु, यरूशलेम के लिए रोया (41-44)
यीशु ने मंदिर को शुद्ध किया (45-48)

20 यीशु के अधिकार पर सवाल उठाया गया (1-8)
खून करनेवाले बागबानों की मिसाल (9-19)
परमेश्वर और सम्राट (20-26)
मरे हुओं के ज़िंदा होने के बारे में सवाल (27-40)
मसीह, दाविद का सिर्फ एक वंशज? (41-44)
शास्त्रियों के बारे में चेतावनी (45-47)

21 ज़रूरतमंद विधवा के दो पैसे (1-4)
आगे होनेवाली घटनाओं की निशानी (5-36)
युद्ध, बड़े भूकंप, महामारी, अकाल (10, 11)
यरूशलेम, फौज से घिरा हुआ (20)
राष्ट्रों के लिए तय किया गया वक्त (24)
इंसान के बेटे का आना (27)
अंजीर के पेड़ की मिसाल (29-33)
आँखों में नींद न आने दो (34-36)
यीशु मंदिर में सिखाता है (37, 38)

22 याजक, यीशु को मारने की साज़िश करते हैं (1-6)

---

1 आदरणीय थियुफिलुस, जिन सच्ची
घटनाओं पर हम सब यकीन करते
हैं, उन्हें लिखने का काम बहुत-से लोगों ने
अपने हाथ में लिया।[1] **2** उसी तरह, जो
लोग शुरूआत से इन बातों के चश्मदीद
गवाह रहे[2] और हमें परमेश्वर का संदेश
सुनानेवाले सेवक बने, उन्होंने भी ये बातें
हम तक पहुँचायी हैं।[3] **3** मैंने भी ठाना
है कि मैं तुझे ये सारी बातें तर्क के मुता-
बिक सिलसिलेवार ढंग से लिखूँ, जिनके
बारे में मैंने शुरूआत से सही-सही पता
लगाया है[4] **4** ताकि तू पक्की तरह जाने
कि जो बातें तुझे ज़बानी तौर पर सिखायी
गयी थीं वे भरोसे के लायक हैं।[5]

5 जिन दिनों हेरोदेस*[6] यहूदिया पर
राज कर रहा था, उन दिनों जकर-
याह नाम का एक आदमी याजक था।
वह अबियाह के दल का था[7] और
उसकी पत्नी का नाम इलीशिबा था, जो
हारून के वंश से थी। **6** वे दोनों पर-
मेश्वर की नज़र में नेक थे, क्योंकि वे
यहोवा* की सभी आज्ञाओं और
कानूनों को मानते थे और उनका चाल-
चलन बेदाग था। **7** लेकिन उनके कोई
बच्चा नहीं था क्योंकि इलीशिबा बाँझ थी
और वे दोनों बूढ़े हो चुके थे।

8 अब ऐसा हुआ कि जकरयाह पर-
मेश्वर के सामने याजक का काम कर रहा
था[1] क्योंकि यह उसके दल की बारी थी।
9 याजकपद के रिवाज़ के मुताबिक जब
धूप जलाने की उसकी बारी आयी,[2]
तो वह यहोवा* के मंदिर के अंदर
गया।[3] **10** धूप जलाने के वक्त, लोगों
की सारी भीड़ बाहर प्रार्थना कर रही थी।
11 तब जकरयाह के सामने यहोवा* का
स्वर्गदूत प्रकट हुआ। वह धूप की वेदी के
दायीं तरफ खड़ा था। **12** उसे देखकर
जकरयाह उलझन में पड़ गया और बहुत
डर गया। **13** लेकिन स्वर्गदूत ने उससे
कहा, “जकरयाह मत डर, क्योंकि तेरी

अध्य. 1
1 यूह 20:30, 31
2 यूह 15:27; 1पत 5:1; 2पत 1:16
3 इब्र 2:3
4 प्रेष 1:1
5 यूह 20:30, 31
6 मत 2:1
7 1इत 24:3, 10

दूसरा कॉल.
1 1इत 24:1, 19; 2इत 8:14; 2इत 31:2
2 निर्ग 30:7, 8
3 निर्ग 40:5

1:5 *शब्दावली देखें।

1:6, 9, 11 *अति. क5 देखें।

मिन्नतें सुन ली गयी हैं। तेरी पत्नी इलीशिबा माँ बनेगी और तेरे लिए एक बेटे को जन्म देगी। तू उसका नाम यूहन्ना रखना।[1] **14** तुझे बहुत खुशी मिलेगी और तू आनंद करेगा। बहुत-से लोग उस बच्चे के जन्म पर खुशियाँ मनाएँगे[2] **15** क्योंकि वह यहोवा* की नज़र में महान होगा।[3] मगर उसे दाख-मदिरा या शराब बिलकुल नहीं पीनी है।[4] वह अपनी माँ के गर्भ से ही# परमेश्वर की पवित्र शक्ति से भरपूर होगा।[5] **16** वह बहुत-से इसराएलियों को उनके परमेश्वर यहोवा* के पास वापस ले आएगा।[6] **17** और वह एलियाह जैसे जोश# और शक्ति के साथ परमेश्वर के आगे-आगे जाएगा[7] ताकि पिताओं का दिल पलटकर बच्चों जैसा कर दे[8] और जो आज्ञा नहीं मानते उन्हें ऐसी बुद्धि दे जो नेक लोगों में होती है। इस तरह वह यहोवा* के लिए ऐसे लोगों को तैयार करेगा जो उसके योग्य हों।”[9]

18 तब जकरयाह ने स्वर्गदूत से कहा, “मैं इस बात का यकीन कैसे करूँ कि मैं पिता बनूँगा? क्योंकि मैं बूढ़ा हो चुका हूँ और मेरी पत्नी की भी उम्र ढल चुकी है।” **19** स्वर्गदूत ने उससे कहा, “मैं जिब्राईल हूँ[10] और परमेश्वर के सामने हाज़िर रहता हूँ।[11] मुझे तुझसे बात करने और यह खुशखबरी सुनाने के लिए भेजा गया है। **20** मगर देख! तू गूँगा हो जाएगा और जिस दिन तक ये बातें पूरी न हो जाएँ, उस दिन तक तू बोल नहीं सकेगा क्योंकि तूने मेरी बातों का यकीन नहीं किया, जो तय वक्त पर पूरी होंगी।” **21** इस दौरान लोग बाहर जकरयाह का इंतज़ार करते रहे। वे ताज्जुब करने लगे कि उसे मंदिर में इतनी देर क्यों लग रही है। **22** जब वह बाहर आया, तो कुछ बोल नहीं सका। वे समझ गए कि ज़रूर उसने अभी-अभी मंदिर में कोई दर्शन देखा* है। वह उनसे इशारों में बात करता रहा और गूँगा रहा। **23** जब उसकी पवित्र सेवा* के दिन पूरे हुए, तो वह अपने घर लौट गया।

24 कुछ दिनों बाद उसकी पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई। वह पाँच महीने तक अपने घर से नहीं निकली। वह कहती थी, **25** “इन दिनों यहोवा* ने मुझ पर मेहरबानी की है। उसने मुझ पर ध्यान दिया है ताकि लोगों के बीच से मेरी बदनामी दूर करे।”[1]

26 इलीशिबा के छठे महीने में परमेश्वर ने जिब्राईल स्वर्गदूत[2] को गलील के नासरत शहर में **27** एक कुँवारी[3] के पास भेजा। उसकी मँगनी यूसुफ नाम के एक आदमी से हो चुकी थी जो दाविद के घराने से था। उस कुँवारी का नाम मरियम था।[4] **28** जब वह स्वर्गदूत मरियम के सामने आया, तो उसने मरियम से कहा, “खुश रह! परमेश्वर की बड़ी आशीष तुझ पर है। यहोवा* तेरे साथ है।” **29** मगर यह सुनकर वह बहुत घबरा गयी और सोचने लगी कि ऐसे नमस्कार का क्या मतलब हो सकता है। **30** तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, “मरियम, मत डर! क्योंकि तूने परमेश्वर की बड़ी आशीष पायी है। **31** देख! तू गर्भवती होगी और एक बेटे को जन्म देगी।[5] तू उसका नाम यीशु रखना।[6] **32** वह महान होगा[7] और परम-प्रधान का बेटा कहलाएगा[8] और यहोवा*

1:15-17, 25, 28, 32 *अति. क5 देखें। **1:15** #या “पैदा होने के पहले से ही।” **1:17** #शब्दावली में “रुआख; नफ्मा” देखें।

1:22 *या “अनोखी घटना देखी।” **1:23** *या “जन-सेवा।”

अध्य. 1

1 लूक 1:59, 60
2 लूक 1:57, 58
3 लूक 7:28
4 गि 6:2, 3; मत 11:18
5 यिर्म 1:5; रोम 9:10-12
6 मला 4:6
7 मत 11:13, 14; मत 17:10-12
8 मला 4:5, 6
9 यश 40:3; मला 3:1
10 दान 8:16; दान 9:21; लूक 1:26, 27
11 इब्र 1:7, 14

दूसरा कॉल.

1 उत 30:22, 23; 1शम 1:10, 11
2 दान 8:16; लूक 1:19
3 यश 7:14
4 मत 1:18
5 गल 4:4
6 मत 1:21-23; लूक 2:21
7 फिल 2:9-11; 1ती 6:15
8 मत 27:54; यूह 1:49

परमेश्वर उसके पुरखे दाविद की राजगद्दी उसे देगा।[1] **33** वह राजा बनकर याकूब के घराने पर हमेशा तक राज करेगा और उसके राज का कभी अंत नहीं होगा।”[2]

34 मगर मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, “मुझे बच्चा कैसे हो सकता है, मैं तो कुँवारी हूँ?”*[3] **35** स्वर्गदूत ने उससे कहा, “परमेश्वर की पवित्र शक्ति तुझ पर आएगी[4] और परम-प्रधान की शक्ति तुझ पर छा जाएगी। इसलिए जो पैदा होगा वह पवित्र[5] और परमेश्वर का बेटा कहलाएगा।[6] **36** देख! तेरी रिश्तेदार इलीशिबा जिसे बाँझ कहा जाता था, वह भी बुढ़ापे में गर्भवती हुई है। वह एक बेटे को जन्म देनेवाली है और यह उसका छठा महीना है। **37** क्योंकि परमेश्वर के मुँह से निकली कोई भी बात* नामुमकिन नहीं हो सकती।”[7] **38** तब मरियम ने कहा, “देख! मैं तो यहोवा* की दासी हूँ! तूने जैसा कहा है, वैसा ही मेरे साथ हो।” तब वह स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।

39 उन दिनों मरियम ने जल्दी-जल्दी तैयारी की और पहाड़ी इलाके में यहूदा के एक शहर के लिए निकल पड़ी। **40** वह जकरयाह के घर पहुँची और उसने इलीशिबा को नमस्कार किया। **41** जैसे ही इलीशिबा ने मरियम का नमस्कार सुना, उसके पेट में बच्चा उछल पड़ा और इलीशिबा पवित्र शक्ति से भर गयी **42** और ज़ोर से बोल उठी, “तू औरतों में सबसे धन्य है! तेरे गर्भ का फल भी धन्य है! **43** यह मेरे लिए कितना बड़ा सम्मान है कि मेरे प्रभु की माँ मेरे पास आयी है! **44** क्योंकि देख! जैसे ही तेरे नमस्कार की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी, मेरे पेट में बच्चा खुशी से उछल पड़ा। **45** तू इसलिए भी धन्य है कि तूने यकीन किया, क्योंकि यहोवा* की जो बातें तुझसे कही गयी हैं, वे सब पूरी होंगी।”

46 तब मरियम ने कहा, “मैं# यहोवा* का गुणगान करती हूँ[1] **47** और मेरा दिल मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर की वजह से खुशी से फूला नहीं समा रहा[2] **48** क्योंकि उसने अपनी दासी की दीन दशा पर ध्यान दिया है[3] और अब से सारी पीढ़ियाँ मुझे सुखी कहा करेंगी।[4] **49** क्योंकि शक्तिशाली परमेश्वर ने मेरी खातिर बड़े-बड़े काम किए हैं और उसका नाम पवित्र है।[5] **50** जो उसका डर मानते हैं, उन पर उसकी दया पीढ़ी-पीढ़ी तक बनी रहती है।[6] **51** उसने अपने बाज़ुओं की ताकत दिखायी है और जिनका दिल घमंड से भरा था उन्हें तितर-बितर किया है।[7] **52** उसने अधिकार रखनेवालों को उनकी गद्दी से नीचे उतारा है[8] और दीन-हीनों को ऊँचा किया है।[9] **53** उसने भूखों को भरपेट अच्छी चीज़ें दी हैं,[10] जबकि दौलतमंदों को खाली हाथ लौटा दिया है। **54** वह अपने सेवक इसराएल को सहारा देने आया है और जैसा उसने हमारे पुरखों से वादा किया था,[11] **55** उसे अब्राहम और उसके वंश* पर सदा-सदा तक दया करना याद रहा।”[12] **56** मरियम करीब तीन महीने तक इलीशिबा के साथ रही और फिर अपने घर लौट आयी।

57 इलीशिबा के दिन पूरे हुए और उसने एक बेटे को जन्म दिया। **58** जब

1:34 *या “मैंने किसी आदमी के साथ यौन-संबंध नहीं रखे हैं।” **1:37** *या “परमेश्वर के लिए कुछ भी।” **1:38, 45, 46** *अति. क5 देखें।

1:46 #या “मेरा रोम-रोम।” शब्दावली में “जीवन” देखें। **1:55** *शा., “बीज।”

अध्य. 1

1 2शम 7:8, 12; भज 132:11; यश 9:7; यश 11:1, 10; यिर्म 23:5; मत 1:1

2 दान 2:44; दान 7:13, 14; इब्र 1:8

3 यश 7:14; मत 1:24, 25

4 मत 1:18, 20

5 यूह 6:68, 69

6 मत 14:33; यूह 1:32, 34; यूह 20:31

7 उत 18:14; मत 19:26

दूसरा कॉल.

1 1शम 2:1

2 2शम 22:3; यश 43:3; हब 3:18; तीत 1:3; यहू 25

3 1शम 1:10, 11

4 लूक 11:27

5 भज 71:19; भज 111:9

6 भज 103:17

7 2शम 22:28

8 अय 12:19

9 1शम 2:7

10 1शम 2:5; भज 34:10; भज 107:9

11 भज 98:3; यश 41:8, 9

12 उत 17:19; मी 7:20; गल 3:16

उसके पड़ोसियों और रिश्तेदारों ने सुना
कि यहोवा* ने उस पर बड़ी दया की है,
तो उन्होंने उसके साथ खुशियाँ मनायीं।[1]
59 आठवें दिन वे उस बच्चे का खतना
करने आए।[2] वे उसके पिता जकर-
याह के नाम पर उसका नाम रखने
जा रहे थे। 60 लेकिन बच्चे की माँ ने
कहा, "नहीं! उसका नाम यूहन्ना होगा।"
61 तब वे उससे कहने लगे, "तेरे रिश्ते-
दारों में से किसी का भी यह नाम नहीं
है।" 62 फिर उन्होंने बच्चे के पिता
से इशारों में पूछा कि वह उसका क्या
नाम रखना चाहता है। 63 उसने एक
तख्ती मँगवायी और उस पर लिखा,
"इसका नाम यूहन्ना होगा।"[3] यह देख-
कर सब हैरान रह गए। 64 उसी घड़ी
जकरयाह की ज़बान खुल गयी और वह
फिर से बोलने लगा[4] और परमेश्वर की
तारीफ करने लगा। 65 उनके आस-
पास रहनेवाले सभी लोगों पर डर छा
गया। यहूदिया के पहाड़ी इलाके में हर
तरफ इन बातों की चर्चा होने लगी।
66 जितने लोगों ने यह सब सुना वे मन में
सोचने लगे, "यह बच्चा बड़ा होकर क्या
बनेगा?" इसलिए कि यहोवा* का हाथ
वाकई उस बच्चे पर था।

67 फिर उसका पिता जकरयाह
पवित्र शक्ति से भर गया और यह
भविष्यवाणी करने लगा, 68 "इस-
राएल के परमेश्वर यहोवा* की जयजय-
कार हो,[5] क्योंकि उसने अपने लोगों पर
ध्यान दिया है और उन्हें छुटकारा दिलाया
है।[6] 69 उसने अपने सेवक दाविद के
घराने[7] में हमारे लिए एक शक्तिशाली
उद्धारकर्ता पैदा किया[8] है,* 70 ठीक
जैसे उसने प्राचीनकाल के पवित्र भविष्य-
वक्ताओं के मुँह से कहलवाया था।[1]
71 उसने बताया था कि वह हमारे
दुश्मनों से और जो हमसे नफरत करते हैं
उन सबसे हमें छुटकारा दिलाएगा।[2]
72 वह हमारे पुरखों पर दया करते हुए
अपने पवित्र करार को याद करेगा,[3]
73 उस शपथ को जो उसने हमारे पुरखे
अब्राहम से खायी थी।[4] 74 उसने कहा
था कि वह हमें दुश्मनों के हाथ से छुड़ाकर
हमें यह सम्मान देगा कि हम निडर होकर
उसकी पवित्र सेवा करें 75 और सारी
ज़िंदगी उसकी नज़रों में वफादार रहें और
उसके नेक स्तरों के मुताबिक चलते रहें।
76 मगर मेरे बेटे, जहाँ तक तेरी बात है,
तू परम-प्रधान का भविष्यवक्ता कहलाए-
गा, इसलिए कि तू यहोवा* के आगे-आगे
जाकर उसके लिए रास्ता तैयार करेगा।[5]
77 और उसके लोगों को यह संदेश देगा
कि वह उनके पाप माफ करेगा और
उनका उद्धार करेगा।[6] 78 यह हमारे
परमेश्वर की कोमल करुणा की वजह से
होगा। जब वह करुणा करेगा तो मानो
हम पर सुबह का उजाला चमकाएगा
79 ताकि जो अँधेरे में और मौत के साए
में बैठे हैं उन्हें वह रौशनी दे[7] और हमारे
कदमों को शांति की राह पर ले चले।"

80 वह लड़का बड़ा होता गया और
दमदार शख्सियतवाला इंसान बना। जब
तक उसके लिए इसराएल के सामने आने
का वक्त नहीं आया, तब तक वह वीरान
इलाकों में रहा।

2 उन दिनों सम्राट* औगुस्तुस की
तरफ से एक फरमान जारी हुआ
कि उसके साम्राज्य# के सब लोग अपना-
अपना नाम दर्ज़ कराएँ। 2 (यह पहली

1:58, 66, 68, 76 *अति. क5 देखें।
1:69 *शा., "एक उद्धार का सींग निकाला है।" शब्दावली में "सींग" देखें।

2:1 *यूनानी में "कैसर।" #या "पूरी दुनिया।"

अध्य. 1
1 लूक 1:14
2 उत 17:10, 12
लैव 12:2, 3
3 लूक 1:13
4 लूक 1:20
5 1रा 1:48
भज 41:13
भज 72:18
भज 106:48
6 भज 111:9
लूक 7:16
7 भज 132:17
8 1शम 2:10

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 23:5
दान 9:24
2 भज 106:10
3 उत 17:7
लैव 26:42
भज 106:45, 46
4 उत 22:15-18
भज 105:8, 9
मी 7:20
5 यश 40:3
मला 3:1
मत 3:3
6 मर 1:4
7 भज 107:10
यश 9:2
मत 4:16

नाम-लिखाई तब हुई जब क्वीरिनियुस,
सीरिया का राज्यपाल था।) 3 इसलिए
सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने-
अपने शहर जाने लगे, जहाँ वे पैदा हुए
थे। 4 यूसुफ[1] गलील के नासरत शहर
में रहता था। वह दाविद के खानदान और
उसके वंश का था। इसलिए वह भी यहू-
दिया में दाविद के शहर गया जो बेतलेहेम[2]
कहलाता है 5 ताकि मरियम के साथ
अपना नाम लिखवाए। मरियम अब उसकी
पत्नी बन चुकी थी[3] और इस वक्त पूरे
दिनों पेट से थी।[4] 6 जब वे बेतलेहेम में
थे, तब मरियम के बच्चा जनने का समय
आ गया। 7 उसे बेटा हुआ, जो उसका
पहलौठा था।[5] उन्हें ठहरने के लिए
सराय में कोई कमरा नहीं मिला था, इस-
लिए मरियम ने बच्चे को कपड़े की पट्टियों
में लपेटकर एक चरनी में रखा।[6]

8 उस इलाके में कुछ चरवाहे भी थे,
जो मैदानों में रहकर रात को अपने झुंडों
की रखवाली कर रहे थे। 9 यहोवा*
का एक स्वर्गदूत अचानक उनके सामने
आकर खड़ा हो गया और यहोवा* की
महिमा का तेज उनके चारों तरफ चमक
उठा और वे बहुत डर गए। 10 मगर
स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो मत।
देखो! मैं तुम्हें एक खुशखबरी सुनाने
आया हूँ जिससे सब लोगों को बहुत खुशी
मिलेगी। 11 आज दाविद के शहर[7] में
तुम्हारे लिए एक उद्धार करनेवाला पैदा
हुआ है।[8] वही मसीह प्रभु है।[9] 12 उसे
पहचानने की यह निशानी है: तुम एक
शिशु को कपड़े की पट्टियों में लिपटा हुआ
चरनी में पाओगे।" 13 तभी अचानक
उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्ग की एक बड़ी
सेना[10] परमेश्वर की महिमा करती हुई
और यह कहती दिखायी दी, 14 "स्वर्ग
में परमेश्वर की महिमा हो और धरती पर
उन लोगों को शांति मिले जिनसे परमेश्वर
खुश है।"

15 जब स्वर्गदूत वापस स्वर्ग चले गए,
तो चरवाहे एक-दूसरे से कहने लगे, "चलो
हम बेतलेहेम चलें और जो यहोवा* ने हमें
बताया है वह देखकर आएँ।" 16 तब
वे जल्दी-जल्दी गए और उन्होंने वहाँ मरि-
यम और यूसुफ को देखा और उस शिशु
को चरनी में पाया। 17 जब चरवाहों ने
उस बच्चे को देखा, तो उन्होंने वे सारी
बातें बतायीं जो स्वर्गदूत ने उसके बारे
में कही थीं। 18 जितनों ने चरवाहों की
बातें सुनीं, वे सब ताज्जुब करने लगे।
19 मगर मरियम ने इन सब बातों को
अपने दिल में संजोकर रखा[1] और वह
इनके मतलब के बारे में गहराई से सोचने
लगी। 20 तब चरवाहे, परमेश्वर की
बड़ाई और उसका गुणगान करते हुए लौट
गए। जैसा उन्हें बताया गया था उन्होंने
सबकुछ वैसा ही सुना और देखा था।

21 आठ दिन बाद जब बच्चे का
खतना करने का समय आया,[2] तो
उसका नाम यीशु रखा गया। यह वही
नाम था जो स्वर्गदूत ने उसके गर्भ में पड़ने
से पहले बताया था।[3]

22 फिर जब मूसा के कानून के मुता-
बिक उन्हें शुद्ध करने का समय आया,[4]
तो वे उसे यहोवा* के सामने पेश करने के
लिए यरूशलेम ले आए, 23 ठीक जैसा
यहोवा* के कानून में लिखा है: "हरेक
पहलौठा यहोवा* के लिए पवित्र ठहराया
जाए।"[5] 24 और उन्होंने वह बलिदान
चढ़ाया जो यहोवा* के कानून में बताया
गया है: "फाख्ता का एक जोड़ा या कबू-
तर के दो बच्चे।"[6]

25 और देखो! यरूशलेम में शिमोन
नाम का एक आदमी था जो नेक और

अध्य. 2
1 मत 1:16
2 1शम 16:1; मी 5:2; मत 2:6
3 लूक 1:26, 27
4 मत 1:18
5 मत 1:25
6 यश 53:2
7 1शम 20:6
8 यश 9:6
9 प्रेष 2:36; फिल 2:11
10 दान 7:10; प्रक 5:11

दूसरा कॉल.
1 लूक 2:51
2 उत 17:10, 12; लैव 12:2, 3
3 मत 1:20, 21; लूक 1:30, 31
4 लैव 12:2, 4
5 निर्ग 13:2, 12; निर्ग 22:29; गि 3:13; गि 8:17
6 लैव 12:6, 8

2:9, 15, 22-24 *अति. क5 देखें।

परमेश्वर का भक्त था। उस पर पवित्र शक्ति थी और वह उस समय के इंतज़ार में था जब परमेश्वर इसराएल को दिलासा देगा।[1] **26** इतना ही नहीं, परमेश्वर ने पवित्र शक्ति से उस पर ज़ाहिर किया था कि जब तक वह यहोवा* के मसीह को न देख ले, तब तक मौत का मुँह नहीं देखेगा। **27** अब वह पवित्र शक्ति से उभारे जाने पर मंदिर में आया। जब नन्हे यीशु को उसके माता-पिता अंदर ला रहे थे ताकि कानून का रिवाज़ पूरा करें,[2] **28** तब शिमोन ने बच्चे को अपनी बाँहों में लिया और परमेश्वर की बड़ाई करने लगा, **29** "हे सारे जहान के मालिक, अब तेरा यह दास शांति से मर सकता है[3] क्योंकि जैसा तूने वादा किया था, **30** मेरी आँखों ने उसे देख लिया है जिसके ज़रिए तू उद्धार करेगा[4] **31** और जिसे तूने दिया है ताकि सब देशों के लोग उसे देखें।[5] **32** वह राष्ट्रों की आँखों से परदा हटाने के लिए एक रौशनी[6] है और तेरी प्रजा इसराएल की महिमा है।" **33** जब बच्चे के बारे में ये बातें कही जा रही थीं, तो उसके माता-पिता बड़े हैरान थे। **34** फिर शिमोन ने उन्हें भी आशीष दी और उसकी माँ मरियम से कहा, "देख! यह इसराएल में बहुतों के गिरने[7] और बहुतों के फिर से उठने का कारण होगा[8] और एक ऐसी निशानी होगा जिसके खिलाफ बातें की जाएँगी।[9] **35** (और जहाँ तक तेरी बात है, एक लंबी तलवार तेरे आर-पार हो जाएगी)[10] ताकि बहुतों के दिल में क्या है, यह खुलकर सामने आए।"

36 वहाँ हन्ना नाम की एक भविष्यवक्तिन थी, जो बहुत बूढ़ी थी। वह आशेर गोत्र के फनूएल की बेटी थी। शादी के बाद वह सिर्फ सात साल तक अपने पति के साथ रह पायी थी। **37** फिर वह विधवा हो गयी और अब उसकी उम्र 84 साल थी। वह मंदिर जाना कभी नहीं छोड़ती थी और उपवास और मिन्नतें करती हुई रात-दिन पवित्र सेवा में लगी रहती थी। **38** वह ठीक उसी घड़ी वहाँ आयी और परमेश्वर का धन्यवाद करने लगी और उन सबको जो यरूशलेम के छुटकारे का इंतज़ार कर रहे थे,[1] उस बच्चे के बारे में बताने लगी।

39 जब यूसुफ और मरियम यहोवा* के कानून में बताए सारे काम पूरे कर चुके,[2] तो गलील में अपने शहर नासरत लौट गए।[3] **40** वह बच्चा बढ़ता गया और ताकतवर और बुद्धिमान होता गया और परमेश्वर की आशीष उस पर बनी रही।[4]

41 उसके माता-पिता अपने दस्तूर के मुताबिक हर साल फसह का त्योहार मनाने यरूशलेम जाया करते थे।[5] **42** जब वह 12 साल का था, तो वे त्योहार के दस्तूर के मुताबिक यरूशलेम गए।[6] **43** मगर त्योहार के दिन खत्म होने के बाद जब वे लौट रहे थे, तो उनका लड़का यीशु पीछे यरूशलेम में ही रह गया। मगर उसके माता-पिता का इस बात पर ध्यान नहीं गया। **44** उन्होंने सोचा कि वह मुसाफिरों की टोली में होगा। इसलिए उन्होंने एक दिन का सफर तय कर लिया। मगर इसके बाद वे उसे अपने रिश्तेदारों और जान-पहचानवालों में ढूँढ़ने लगे। **45** लेकिन जब वह नहीं मिला, तो वे यरूशलेम लौट गए और उसे जगह-जगह ढूँढ़ने लगे। **46** तीन दिन बाद उन्हें वह मंदिर में मिला, जहाँ वह शिक्षकों के बीच बैठा

2:26, 39 *अति. क5 देखें।

अध्य. 2

1 यश 40:1, यश 49:13
2 लैव 12:6, 7
3 उत 46:30
4 यश 52:10, लूक 3:4, 6, प्रेष 4:12
5 यश 40:5
6 यश 9:2, यश 11:10, यश 42:6, यश 49:6, मत 4:16, प्रेष 13:47, प्रेष 26:23
7 यश 8:14
8 1कुर 1:23, 24
9 प्रेष 28:22, 1पत 2:7, 8
10 यूह 19:25

दूसरा कॉल.

1 यश 52:9, मर 15:43, लूक 2:25
2 लैव 12:6
3 मत 2:23, लूक 1:26
4 लूक 2:52
5 निर्ग 23:14, 15, व्य 16:16
6 निर्ग 34:23

उनकी सुन रहा था और उनसे सवाल कर
रहा था। **47** जितने लोग उसकी सुन
रहे थे, वे सभी उसकी समझ और उसके
जवाबों से रह-रहकर दंग हो रहे थे।[1]
48 जब उसके माता-पिता ने उसे वहाँ
देखा, तो वे बहुत हैरान हो गए। उसकी
माँ ने उससे कहा, "बेटा, तूने हमारे
साथ ऐसा क्यों किया? देख, तेरा पिता
और मैं तुझे पागलों की तरह ढूँढ़ रहे
थे!" **49** लेकिन उसने उनसे कहा, "तुम
मुझे यहाँ-वहाँ क्यों ढूँढ़ रहे थे? क्या तुम
नहीं जानते थे कि मैं अपने पिता के घर
में होऊँगा?"[2] **50** मगर वे उसकी बात
का मतलब नहीं समझ सके।

51 फिर वह उनके साथ चला गया
और नासरत आ गया और लगातार
उनके अधीन रहा।*[3] उसकी माँ ने ये
सारी बातें अपने दिल में संजोकर रखीं।[4]
52 यीशु डील-डौल और बुद्धि में बढ़ता
गया और परमेश्वर और लोगों की कृपा
उस पर बनी रही।

3 सम्राट तिबिरियुस के राज के 15वें
साल में, जिस दौरान पुन्तियुस पीला-
तुस, यहूदिया का राज्यपाल था और
हेरोदेस*[5] गलील का ज़िला-शासक था,
साथ ही हेरोदेस का भाई फिलिप्पुस, इतू-
रैया और त्रखोनीतिस इलाके का ज़िला-
शासक था और लिसानियास, अबिलेने
इलाके का ज़िला-शासक था **2** और
हन्ना एक प्रधान याजक और कैफा महा-
याजक था।[6] उन्हीं दिनों परमेश्वर का
संदेश जकरयाह के बेटे यूहन्ना[7] के पास
वीराने में पहुँचा।[8]

3 इसलिए यूहन्ना, यरदन नदी के
आस-पास के सभी इलाकों में जाकर
प्रचार करने लगा कि लोगों को बपतिस्मा
लेना होगा, जो इस बात की निशानी ठह-
रेगा कि उन्होंने अपने पापों का पश्चा-
ताप किया है और वे माफी पाना चाहते
हैं,[1] **4** ठीक जैसा भविष्यवक्ता यशा-
याह की किताब में लिखा है, "सुनो!
वीराने में कोई पुकार रहा है, 'यहोवा*
का रास्ता तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी
करो।[2] **5** हरेक घाटी भर दी जाए और
हरेक पहाड़ और पहाड़ी सपाट कर दी
जाए और टेढ़े-मेढ़े रास्ते सीधे और
ऊबड़-खाबड़ जगह समतल कर दी जाएँ।
6 और सब इंसान देखेंगे कि परमेश्वर
कैसे उद्धार करता है।'"*[3]

7 जो भीड़ यूहन्ना से बपतिस्मा लेने
आती थी, वह उससे कहा करता था,
"अरे साँप के सँपोलो, किसने तुम्हें
आगाह कर दिया कि तुम आनेवाले कहर
से भाग सकते हो?[4] **8** इसलिए पश्चा-
ताप दिखानेवाले फल पैदा करो। खुद से
यह मत कहो, 'हम तो अब्राहम के वंशज
हैं।' क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि पर-
मेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिए
संतान पैदा कर सकता है। **9** वाकई,
पेड़ों की जड़ पर कुल्हाड़ा रखा जा
चुका है। हर वह पेड़ जो अच्छा फल
नहीं देता, उसे काटकर आग में झोंक
दिया जाएगा।"[5]

10 तब भीड़ उससे पूछती थी, "तो
हमें क्या करना चाहिए?" **11** वह उनसे
कहता, "जिस आदमी के पास दो कपड़े
हों, वह एक उसे दे दे जिसके पास एक
भी नहीं है। जिसके पास खाने की चीज़ें
हों वह भी ऐसा ही करे।"[6] **12** कर-
वसूलनेवाले भी यूहन्ना के पास बपतिस्मा
लेने आए।[7] उन्होंने उससे पूछा, "गुरु,

2:51 *या "उनकी आज्ञा मानता रहा।"
3:1 *यानी हेरोदेस अन्तिपास। शब्दावली देखें।

3:4 *अति. क5 देखें। **3:6** *या "उद्धार करने का परमेश्वर का ज़रिया देखेंगे।"

अध्य. 2
1 भज 119:99, मत 7:28, मर 1:22, यूह 7:15
2 यूह 2:16
3 निर्ग 20:12, व्य 5:16, इफ 6:1, कुल 3:20
4 लूक 2:19

अध्य. 3
5 मत 14:1, लूक 23:6, 7
6 मत 26:57, यूह 18:13, यूह 18:24, प्रेष 4:5, 6
7 यूह 1:6
8 लूक 1:80

दूसरा कॉल.
1 मत 3:1, 2, मर 1:4, लूक 1:76, 77
2 मत 3:3, मर 1:3, यूह 1:23
3 यश 40:3-5, लूक 2:30, प्रेष 28:28
4 मत 3:7-10, मत 23:33
5 मत 7:19
6 1ती 6:18, याकू 2:15, 16, 1यूह 3:17
7 मत 21:32, लूक 7:29

हमें क्या करना चाहिए?” 13 उसने
कहा, “जितना कर बनता है उससे
ज़्यादा की माँग* मत करो।”[1] 14 जो
सेना में थे उन्होंने यूहन्ना से पूछा,
“हमें क्या करना चाहिए?” उसने कहा,
“किसी को मत सताओ* या किसी पर
झूठा इलज़ाम मत लगाओ।[2] मगर तुम्हें
जो रोज़ी-रोटी# मिलती है उसी में खुश
रहो।”

15 लोग मसीह के आने की बड़ी
आस लगाए थे और सब लोग मन-ही-
मन यूहन्ना के बारे में सोच रहे थे, “कहीं
यही तो मसीह नहीं?”[3] 16 यूहन्ना ने
उन सबसे कहा, “मैं तो तुम्हें पानी
से बपतिस्मा देता हूँ। मगर जो आने-
वाला है वह मुझसे कहीं शक्तिशाली है।
मैं उसकी जूतियों के फीते खोलने के भी
लायक नहीं।[4] वह तुम लोगों को पवित्र
शक्ति से और आग से बपतिस्मा देगा।[5]
17 उसके हाथ में अनाज फटकनेवाला
बेलचा है, वह अपने खलिहान को पूरी
तरह साफ करेगा और गेहूँ को इकट्ठा
करके अपने गोदाम में रखेगा, मगर भूसी
को उस आग में जला देगा जिसे बुझाया
नहीं जा सकता।”

18 यूहन्ना लोगों को और भी कई
सीख देता रहा और उन्हें खुशखबरी
सुनाता रहा। 19 लेकिन जब यूहन्ना
ने ज़िला-शासक हेरोदेस को फटकारा
क्योंकि उसने अपने भाई की पत्नी हेरो-
दियास को रख लिया था और दूसरे
कई दुष्ट काम किए थे, 20 तो हेरोदेस
ने यूहन्ना को जेल में डलवा दिया और
अपने दुष्ट कामों में एक काम और जोड़
लिया।[6]

21 जब सब लोग बपतिस्मा ले रहे
थे, तब यीशु ने भी बपतिस्मा लिया[1]
और जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो
आकाश खुल गया[2] 22 और परमेश्वर
की पवित्र शक्ति कबूतर जैसे आकार में
उसके ऊपर उतरी और स्वर्ग से यह
आवाज़ सुनायी दी: “तू मेरा प्यारा बेटा
है। मैंने तुझे मंज़ूर किया है।”[3]

23 जब यीशु[4] ने अपनी सेवा शुरू
की, तो वह करीब 30 साल का था।[5]
जैसा माना जाता था
वह यूसुफ का बेटा था[6]
और यूसुफ एली का,
24 एली मत्तात का,
मत्तात लेवी का,
लेवी मलकी का,
मलकी यन्ना का
और यन्ना यूसुफ का बेटा था।
25 यूसुफ मतित्याह का,
मतित्याह आमोस का,
आमोस नहूम का,
नहूम असल्याह का
और असल्याह नोगह का बेटा था।
26 नोगह मात का,
मात मतित्याह का,
मतित्याह शिमी का,
शिमी योसेख का
और योसेख योदाह का बेटा था।
27 योदाह योनान का,
योनान रेसा का,
रेसा जरुबाबेल[7] का,
जरुबाबेल शालतीएल का[8]
और शालतीएल नेरी का बेटा था।
28 नेरी मलकी का,
मलकी अद्दी का,
अद्दी कोसाम का,
कोसाम इलमोदाम का
और इलमोदाम एर का बेटा था।

अध्य. 3
1 लूक 19:8
2 निर्ग 23:1, 7 लैव 19:11
3 यूह 1:25
4 यूह 1:26, 27
5 मत 3:11, 12 मर 1:7, 8 प्रेष 2:1, 4
6 मत 14:3-5 मर 6:17-20

दूसरा कॉल.
1 मत 3:13
2 मत 3:16 मर 1:9, 10
3 भज 2:7 मत 3:17 मत 17:5 मर 1:11 यूह 1:32-34
4 मत 1:1-17
5 गि 4:2, 3
6 मत 1:16 मत 13:55 लूक 4:22 यूह 6:42
7 एज 3:2
8 1इत 3:17 मत 1:12

3:13 *या “इकट्ठा।” 3:14 *या “लूटो।”
#या “मज़दूरी।”

29 एर यीशु का,
यीशु एलीएज़ेर का,
एलीएज़ेर योरीम का,
योरीम मत्तात का
और मत्तात लेवी का बेटा था।
30 लेवी शिमौन का,
शिमौन यहूदा का,
यहूदा यूसुफ का,
यूसुफ योनाम का
और योनाम एल्याकीम का
बेटा था।
31 एल्याकीम मलेआह का,
मलेआह मिन्नाह का,
मिन्नाह मत्तता का,
मत्तता नातान[1] का
और नातान दाविद का बेटा था।[2]
32 दाविद यिशै का,[3]
यिशै ओबेद का,[4]
ओबेद बोअज़[5] का,
बोअज़ सलमोन का[6]
और सलमोन नहशोन का
बेटा था।[7]
33 नहशोन अम्मीनादाब का,
अम्मीनादाब अरनी का,
अरनी हेसरोन का,
हेसरोन पेरेस का[8]
और पेरेस यहूदा का बेटा था।[9]
34 यहूदा याकूब[10] का,
याकूब इसहाक का,[11]
इसहाक अब्राहम का,[12]
अब्राहम तिरह का[13]
और तिरह नाहोर का बेटा था।[14]
35 नाहोर सरूग का,[15]
सरूग रऊ का,[16]
रऊ पेलेग का,[17]
पेलेग एबेर का[18]
और एबेर शेलह का बेटा था।[19]
36 शेलह केनान का,
केनान अरपक्षद का,[1]
अरपक्षद शेम का,[2]
शेम नूह का[3]
और नूह लेमेक का बेटा था।[4]
37 लेमेक मतूशेलह का,[5]
मतूशेलह हनोक का,
हनोक येरेद का,[6]
येरेद महल-लेल का[7]
और महल-लेल केनान का
बेटा था।[8]
38 केनान एनोश का,[9]
एनोश शेत का,[10]
शेत आदम का[11]
और आदम परमेश्वर का बेटा था।

4 यीशु पवित्र शक्ति से भरा हुआ
यरदन से चला गया। पवित्र शक्ति
उसे वीराने में ले गयी[12] 2 और वह
40 दिन तक वहाँ रहा। इस दौरान
यीशु ने कुछ नहीं खाया और जब वे
दिन खत्म हुए, तो उसे भूख लगी।
तब शैतान* ने उसे फुसलाने की कोशिश
की।[13] 3 उसने यीशु से कहा, "अगर
तू परमेश्वर का एक बेटा है, तो इस
पत्थर से बोल कि यह रोटी बन जाए।"
4 मगर यीशु ने उसे जवाब दिया, "लिखा
है, 'इंसान को सिर्फ रोटी से ज़िंदा नहीं
रहना है।'"[14]
5 फिर शैतान उसे एक ऊँची जगह ले
आया और पल-भर में उसे दुनिया के सारे
राज्य दिखाए।[15] 6 शैतान ने उससे
कहा, "मैं इन सबका अधिकार और
इनकी शानो-शौकत तुझे दे दूँगा क्योंकि
यह सब मेरे हवाले किया गया है[16] और
मैं जिसे चाहूँ उसे देता हूँ। 7 इसलिए
अगर तू बस एक बार मेरे सामने मेरी

4:2 * शा., "इबलीस।" शब्दावली देखें।

अध्य. 3
1 2शम 5:13, 14; 1इत 3:5
2 1शम 16:13; 1शम 17:58; मत 1:6
3 यश 11:1
4 रूत 4:17
5 रूत 4:13
6 रूत 4:21
7 1इत 2:11
8 रूत 4:12; रूत 4:18, 19; 1इत 2:4, 5
9 उत 29:35; 1इत 2:1
10 उत 25:26
11 उत 21:2, 3
12 1इत 1:28
13 उत 11:24; उत 11:26, 27
14 उत 11:22
15 उत 11:20
16 उत 11:18
17 उत 11:16
18 उत 11:14; 1इत 1:25
19 उत 11:12

दूसरा कॉल.
1 उत 11:10
2 उत 5:32
3 उत 5:29
4 उत 5:25
5 उत 5:21
6 उत 5:19
7 उत 5:12, 16
8 उत 5:9; 1इत 1:2
9 उत 4:26; उत 5:10
10 उत 5:7
11 उत 5:1, 4; 1इत 1:1

अध्य. 4
12 मत 4:1-4; मर 1:12, 13
13 इब्र 2:18
14 व्य 8:3
15 मत 4:8-10
16 यूह 12:31; यूह 14:30; इफ 2:2

उपासना करे, तो यह सबकुछ तेरा हो
जाएगा।” **8** यीशु ने उसे जवाब दिया,
“लिखा है, ‘तू सिर्फ अपने परमेश्वर
यहोवा* की उपासना कर और उसी की
पवित्र सेवा कर।’”[1]

9 फिर शैतान, यीशु को यरूशलेम
ले गया और मंदिर की छत की मुँडेर*
पर लाकर खड़ा किया और उससे
कहा, “अगर तू परमेश्वर का एक बेटा
है, तो यहाँ से नीचे छलाँग लगा दे[2]
10 क्योंकि लिखा है, ‘परमेश्वर अपने
स्वर्गदूतों को हुक्म देगा कि वे तुझे
बचाएँ,’ **11** और ‘वे तुझे हाथों-हाथ
उठा लेंगे ताकि तेरा पैर किसी पत्थर
से चोट न खाए।’”[3] **12** तब यीशु ने
उससे कहा, “यह कहा गया है, ‘तू
अपने परमेश्वर यहोवा* की परीक्षा न
लेना।’”[4] **13** जब शैतान ये सारी परी-
क्षाएँ ले चुका, तब कोई और सही मौका
मिलने तक वह उसके पास से चला
गया।[5]

14 फिर यीशु पवित्र शक्ति से भरा
हुआ गलील लौटा[6] और आस-पास के
सारे इलाकों में उसके बारे में अच्छी खबरें
फैल गयीं। **15** वह उनके सभा-घरों में
सिखाने लगा और सब लोग उसका आदर
करने लगे।

16 फिर वह नासरत गया[7] जहाँ
उसकी परवरिश हुई थी। और अपने
दस्तूर के मुताबिक वह सब्त के दिन वहाँ
के सभा-घर में गया[8] और पढ़ने के लिए
खड़ा हुआ। **17** भविष्यवक्ता यशायाह
का खर्रा उसके हाथ में दिया गया
और उसने खर्रा खोला और वह जगह
ढूँढ़कर निकाली जहाँ यह लिखा था,
18 “यहोवा* की पवित्र शक्ति मुझ पर
है क्योंकि उसने मेरा अभिषेक किया है कि
मैं गरीबों को खुशखबरी सुनाऊँ। उसने
मुझे भेजा है ताकि मैं बंदियों को रिहाई
का, अंधों को आँखों की रौशनी पाने का
और कुचले हुओं को आज़ादी का संदेश
दूँ[1] **19** और यहोवा* की मंज़ूरी पाने के
साल का प्रचार करूँ।”[2] **20** फिर उसने
खर्रा लपेटकर सेवक को दे दिया और बैठ
गया। सभा-घर में सब लोगों की नज़रें
उस पर जमी हुई थीं। **21** तब उसने
कहा, “यह वचन जो तुमने अभी-अभी
सुना, आज पूरा हुआ है।”[3]

22 वे सभी उसकी तारीफ करने लगे
और उसकी दिल जीतनेवाली बातों पर
ताज्जुब करने[4] और यह कहने लगे,
“क्या यह यूसुफ का बेटा नहीं है?”[5]
23 तब यीशु ने उनसे कहा, “बेशक
तुम यह कहावत कहोगे, ‘अरे वैद्य,
पहले खुद का इलाज कर’ और मुझ
पर यह कहते हुए लागू करोगे, ‘कफर-
नहूम[6] में तूने जो काम किए थे उनके
बारे में हमने सुना है, अब वही काम
अपने शहर में भी कर।’” **24** यीशु ने
कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ कि किसी
भी भविष्यवक्ता को उसके अपने इलाके
में स्वीकार नहीं किया जाता।[7] **25** अब
एलियाह के दिनों की ही बात ले लो,
साढ़े तीन साल तक बारिश नहीं हुई
और पूरे देश में भारी अकाल पड़ा।[8]
यकीन मानो उस वक्त इसराएल में बहुत-
सी विधवाएँ थीं **26** मगर एलियाह को
उनमें से किसी भी औरत के पास नहीं
भेजा गया, बल्कि सिर्फ सीदोन देश के
सारपत नगर की एक विधवा के पास
भेजा गया।[9] **27** यही नहीं, भविष्य-
वक्ता एलीशा के ज़माने में इसराएल में
बहुत-से कोढ़ी थे, फिर भी उनमें से किसी
को भी शुद्ध नहीं किया गया, बल्कि

4:8, 12, 18, 19 *अति. क5 देखें। **4:9** *या “सबसे ऊँची जगह।”

अध्य. 4

1 निर्ग 20:3, व्य 6:13, व्य 10:20
2 मत 4:5-7
3 भज 91:11, 12
4 व्य 6:16, 1कुर 10:9
5 मत 4:11, इब्र 4:15
6 मत 4:12, यूह 4:3
7 मत 2:23
8 प्रेष 17:1, 2

दूसरा कॉल.

1 मत 12:20
2 यश 61:1, 2
3 मत 5:17
4 भज 45:2, यश 50:4
5 मत 13:54, मर 6:2, यूह 6:42
6 मत 4:13
7 मत 13:57, मर 6:4, यूह 4:44
8 1रा 18:1
9 1रा 17:9, 10

सीरिया के नामान को शुद्ध* किया गया।”[1] **28** सभा-घर में मौजूद लोगों ने जब ये बातें सुनीं, तो वे सब आग-बबूला हो गए।[2] **29** वे उठे और फौरन यीशु को शहर के बाहर ले गए ताकि जिस पहाड़ पर उनका शहर बसा था उसकी चोटी से उसे नीचे धकेल दें। **30** मगर वह उनके बीच में से निकलकर अपने रास्ते चला गया।[3]

31 यीशु वहाँ से कफरनहूम गया जो गलील का एक शहर था। वह सब्त के दिन लोगों को सिखा रहा था।[4] **32** वे उसके सिखाने का तरीका देखकर दंग रह गए[5] क्योंकि वह पूरे अधिकार के साथ बोलता था। **33** उस सभा-घर में एक आदमी था, जिसमें एक दुष्ट स्वर्गदूत समाया था और वह ज़ोर से चिल्लाने लगा,[6] **34** “ओ यीशु नासरी,[7] हमें तुझसे क्या लेना-देना? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं जानता हूँ तू असल में कौन है, तू परमेश्वर का पवित्र जन है।”[8] **35** मगर यीशु ने उसे फटकारा, “चुप हो जा और उसमें से बाहर निकल जा।” तब उस दुष्ट स्वर्गदूत ने उस आदमी को लोगों के बीच पटक दिया और उसे बिना कोई नुकसान पहुँचाए उसमें से निकल गया। **36** यह देखकर सब हैरान रह गए और एक-दूसरे से कहने लगे, “देखो! यह कितने अधिकार के साथ बात करता है, इसके पास कितनी शक्ति है! इसके हुक्म पर तो दुष्ट स्वर्गदूत भी निकल जाते हैं।” **37** इसलिए आस-पास के इलाके में हर तरफ उसकी खबर फैल गयी।

38 सभा-घर से निकलने के बाद, यीशु शमौन के घर आया। शमौन की सास तेज़ बुखार से तप रही थी। उन्होंने यीशु से बिनती की कि वह उसके लिए कुछ करे।[1] **39** इसलिए यीशु ने उसके पास खड़े होकर बुखार को डाँटा और उसका बुखार उतर गया। उसी पल वह उठ गयी और उनकी सेवा करने लगी।

40 लेकिन जब सूरज ढलने लगा, तब लोग अपने घर के उन सभी लोगों को उसके पास ले आए, जिन्हें तरह-तरह की बीमारियाँ थीं। उसने हरेक पर अपने हाथ रखकर उन्हें ठीक कर दिया।[2] **41** यहाँ तक कि दुष्ट स्वर्गदूत भी यह चिल्लाते हुए बहुतों में से निकल जाते थे, “तू परमेश्वर का बेटा है।”[3] मगर वह उन्हें डाँट देता और बोलने नहीं देता था,[4] क्योंकि वे जानते थे कि वह मसीह है।[5]

42 लेकिन जब दिन हुआ, तो वह वहाँ से निकलकर किसी एकांत जगह की तरफ चला गया।[6] मगर लोगों की भीड़ उसे तलाशने लगी और ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उसके पास पहुँच गयी और उसे रोकने लगी ताकि वह उनके पास से न जाए। **43** मगर यीशु ने उनसे कहा, “मुझे दूसरे शहरों में भी परमेश्वर के राज की खुशखबरी सुनानी है क्योंकि मुझे इसीलिए भेजा गया है।”[7] **44** फिर वह जाकर यहूदिया के सभा-घरों में प्रचार करने लगा।

5 एक बार यीशु गन्नेसरत झील*[8] के किनारे खड़ा एक बड़ी भीड़ को परमेश्वर का वचन सिखा रहा था। लोग उस पर गिरे जा रहे थे। **2** तब उसने झील के किनारे लगी दो नाव देखीं, जिनमें से मछुवारे उतरकर अपने जाल धो रहे थे।[9] **3** तब वह उनमें से एक नाव पर चढ़ गया जो शमौन की थी। उसने शमौन से कहा कि नाव को खेकर किनारे से थोड़ी दूर ले जाए। फिर यीशु नाव में बैठकर भीड़

4:27 *या “चंगा।”

5:1 *यानी गलील झील।

अध्य. 4
1 2रा 5:1, 14
2 लूक 2:34
3 यूह 8:59, यूह 10:39
4 मर 1:21, 22
5 मत 7:28, यूह 7:46
6 मर 1:23-28
7 मत 2:23
8 मत 8:29, लूक 4:41, लूक 8:28, याकू 2:19

दूसरा कॉल.
1 मत 8:14, 15, मर 1:29-31
2 मत 8:16, 17, मर 1:32-34
3 मत 8:28, 29, मर 3:11
4 प्रेष 16:17, 18
5 मर 1:23-25, मर 3:11, 12, लूक 4:33-35
6 मर 1:35-38
7 मत 4:23, लूक 8:1

अध्य. 5
8 मत 4:18, मर 1:16
9 मत 4:21

को सिखाने लगा। 4 जब उसने बोलना
खत्म किया, तो शमौन से कहा, “नाव को
खेकर गहरे पानी में ले चल, वहाँ अपने
जाल डालना।” 5 मगर शमौन ने कहा,
“गुरु, हमने सारी रात मेहनत की, मगर
हमारे हाथ कुछ नहीं लगा।[1] फिर भी
तेरे कहने पर मैं जाल डालूँगा।” 6 जब
उन्होंने ऐसा किया, तो ढेर सारी मछ-
लियाँ उनके जाल में आ फँसीं। यहाँ
तक कि उनके जाल फटने लगे।[2] 7 तब
उन्होंने दूसरी नाव में सवार अपने साथियों
को इशारा किया कि उनकी मदद के
लिए आएँ। और वे आए और आकर
दोनों नाव में मछलियाँ भरने लगे। दोनों
नाव मछलियों से इतनी भर गयीं कि
डूबने लगीं। 8 यह देखकर शमौन पत-
रस यीशु के पैरों पर गिर पड़ा और कहने
लगा, “मेरे पास से चला जा प्रभु, क्योंकि
मैं एक पापी इंसान हूँ।” 9 इतनी तादाद
में मछलियाँ पकड़ने की वजह से वह और
उसके सब साथी हक्के-बक्के रह गए थे।
10 याकूब और यूहन्ना का भी यही हाल
था, जो जब्दी के बेटे थे[3] और शमौन के
साझेदार थे। मगर यीशु ने शमौन से कहा,
“मत डर। अब से तू जीते-जागते इंसानों
को पकड़ा करेगा।”[4] 11 तब वे अपनी-
अपनी नाव किनारे पर ले आए और सब-
कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।[5]

12 एक और मौके पर जब यीशु
किसी शहर में था, तो देखो! वहाँ एक
आदमी था जिसका पूरा शरीर कोढ़ से
भरा था! जैसे ही उसकी नज़र यीशु पर
पड़ी, वह उसके सामने मुँह के बल गिरा
और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, “प्रभु, बस
अगर तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता
है।”[6] 13 तब यीशु ने हाथ बढ़ाकर
उसे छुआ और कहा, “हाँ, मैं चाहता
हूँ। शुद्ध हो जा।” उसी पल उसका
कोढ़ गायब हो गया।[1] 14 यीशु ने उस
आदमी को आदेश दिया कि किसी को
कुछ न बताए और कहा, “जाकर खुद को
याजक को दिखा और शुद्ध होने के लिए
भेंट चढ़ा, ठीक जैसा मूसा ने कहा था[2]
ताकि उन्हें गवाही मिले।”[3] 15 मगर
यीशु की चर्चा दूर-दूर तक फैलती गयी
और भीड़-की-भीड़ उसकी सुनने और
अपनी बीमारियाँ दूर करवाने उसके पास
आती रही।[4] 16 लेकिन वह अकसर
वीरान इलाकों में चला जाता था ताकि
प्रार्थना कर सके।

17 एक दिन वह लोगों को सिखा
रहा था। वहाँ गलील, यहूदिया के हर
गाँव और यरूशलेम से आए फरीसी और
कानून के शिक्षक भी बैठे हुए थे। और
लोगों को चंगा करने के लिए यहोवा*
की शक्ति उस पर थी।[5] 18 तभी लोग
लकवे के मारे हुए एक आदमी को खाट
पर लेकर आए। वे उसे किसी तरह उस
कमरे में ले जाना चाहते थे जहाँ यीशु
था।[6] 19 मगर जब भीड़ की वजह से
उसे अंदर ले जाने का रास्ता नहीं मिला,
तो वे ऊपर छत पर चढ़ गए। उन्होंने
खपरैल हटाकर उसे खाट समेत उन
लोगों के बीच उतार दिया जो यीशु के
सामने थे। 20 जब यीशु ने उन आद-
मियों का विश्वास देखा तो लकवे के मारे
से कहा, “तेरे पाप माफ किए गए।”[7]
21 यह सुनकर शास्त्री और फरीसी
सोचने लगे, “यह कौन है जो परमेश्वर के
बारे में निंदा की बातें कर रहा है? पर-
मेश्वर को छोड़ और कौन पापों को माफ
कर सकता है?”[8] 22 मगर यीशु जान
गया कि वे क्या सोच रहे हैं और उसने
कहा, “तुम अपने मन में क्या सोच रहे
हो? 23 क्या कहना ज़्यादा आसान है,

अध्य. 5
1 यूह 21:3
2 यूह 21:6
3 मत 4:21; मर 1:19
4 मत 4:19; मर 1:17
5 मत 4:20; मत 6:33; मत 19:27; मर 1:20; लूक 18:28; फिल 3:8
6 मत 8:2; मर 1:40-45

दूसरा कॉल.
1 मत 8:3; मर 1:41
2 लैव 14:2-4; लैव 14:10, 20
3 मत 8:4
4 मत 4:24, 25; मर 3:7, 8; यूह 6:2
5 मर 2:1, 2
6 मत 9:2; मर 2:3-12
7 मत 9:2-8
8 भज 103:2, 3; भज 130:3, 4; यश 43:25

5:17 *अति. क5 देखें।

‘तेरे पाप माफ किए गए’ या यह कहना,
‘उठ और चल-फिर’? 24 मगर इस-
लिए कि तुम जान लो कि इंसान के बेटे
को धरती पर पाप माफ करने का अधि-
कार दिया गया है . . .।” यीशु ने लकवे
के मारे हुए आदमी से कहा, “मैं तुझसे
कहता हूँ, खड़ा हो! अपनी खाट उठा और
घर जा।”[1] 25 तब वह आदमी उनके
सामने खड़ा हो गया। उसने वह खाट
उठायी जिस पर वह लेटा था और पर-
मेश्वर की महिमा करता हुआ अपने
घर चला गया। 26 यह देखकर सब-
के-सब हैरान रह गए और परमेश्वर की
बड़ाई करने लगे और उन पर डर छा
गया। वे कहने लगे, “आज हमने अजब
घटनाएँ देखी हैं!”

27 इसके बाद यीशु बाहर गया और
उसने कर-वसूली के दफ्तर में लेवी नाम
के एक आदमी को बैठे देखा जो कर
वसूला करता था। यीशु ने उससे कहा,
“आ, मेरा चेला बन जा।”[2] 28 तब
लेवी उठा और सबकुछ छोड़-छाड़कर
उसके पीछे हो लिया। 29 फिर लेवी ने
यीशु के लिए अपने घर पर एक बड़ी
दावत रखी। वहाँ भारी तादाद में कर-
वसूलनेवाले और दूसरे लोग आए थे
जो उनके साथ खाना खा रहे थे।*[3]
30 यह देखकर फरीसी और उनके
शास्त्री कुड़कुड़ाने लगे और यीशु के चेलों
से कहने लगे, “तुम कर-वसूलनेवालों
और पापियों के साथ क्यों खाते हो?”[4]
31 यीशु ने उन्हें जवाब दिया, “जो भले-
चंगे हैं उन्हें वैद्य की ज़रूरत नहीं होती,
मगर बीमारों को होती है।[5] 32 मैं
धर्मियों को नहीं, पापियों को बुलाने आया
हूँ कि वे पश्चाताप करें।”[6]

33 उन्होंने कहा, “यूहन्ना के चेले
अकसर उपवास रखते और मिन्नतें करते
हैं और फरीसियों के चेले भी ऐसा ही
करते हैं, मगर तेरे चेले खाते-पीते हैं।”[1]
34 यीशु ने उनसे कहा, “जब तक
दूल्हा अपने दोस्तों के साथ है, तब
तक तुम उसके दोस्तों से उपवास नहीं
करवा सकते, क्या करवा सकते हो?
35 लेकिन वे दिन आएँगे जब दूल्हे[2] को
उनसे जुदा कर दिया जाएगा, तब वे उप-
वास करेंगे।”[3]

36 इसके बाद यीशु ने उन्हें एक
मिसाल भी दी, “कोई भी नए कपड़े का
टुकड़ा काटकर पुराने कपड़े के छेद पर
नहीं लगाता। अगर वह लगाए तो नए
कपड़े का टुकड़ा फट जाएगा और पुराने
कपड़े से मेल नहीं खाएगा।[4] 37 न ही
कोई नयी दाख-मदिरा पुरानी मशकों में
भरता है। अगर वह भरे, तो नयी
मदिरा मशकों को फाड़ देगी और बह
जाएगी और मशकें भी नष्ट हो जाएँगी।
38 नयी दाख-मदिरा नयी मशकों में
भरी जानी चाहिए। 39 जिसने पुरानी
दाख-मदिरा पी है वह नयी मदिरा नहीं
चाहता क्योंकि वह कहता है, ‘पुरानी ही
बढ़िया है।’”

6 एक बार सब्त के दिन वह खेतों से
होकर जा रहा था और उसके चेले
अनाज की बालें तोड़कर[5] और हाथों
से मसलकर खाने लगे।[6] 2 तब कुछ
फरीसियों ने कहा, “तुम सब्त के दिन
ऐसा काम क्यों कर रहे हो जो कानून
के खिलाफ है?”[7] 3 मगर यीशु ने उन्हें
जवाब दिया, “क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा
कि जब दाविद और उसके आदमी भूखे
थे, तब उसने क्या किया?[8] 4 किस
तरह वह परमेश्वर के भवन में गया और

5:29 * या “मेज़ से टेक लगाए बैठे थे।”

अध्य. 5
1 यूह 5:6-9
2 मत 9:9, मर 2:14
3 मत 9:10-13, मर 2:15-17
4 लूक 15:1, 2
5 यश 53:4, मत 9:12, मर 2:17
6 मत 9:13, 1ती 1:15

दूसरा कॉल.
1 मत 9:14, 15, मर 2:18-20, लूक 7:34
2 मत 22:2, 2कुर 11:2, प्रक 19:7
3 यूह 16:19, 20
4 मत 9:16, 17, मर 2:21, 22

अध्य. 6
5 व्य 23:25
6 मत 12:1-8, मर 2:23-28
7 निर्ग 20:9, 10, व्य 5:13, 14, यूह 5:9, 10
8 1शम 21:1-6

उसे चढ़ावे की रोटियाँ* दी गयीं और
उसने वे खायीं और अपने साथियों को भी
दीं, जबकि उन्हें याजकों के सिवा किसी
और का खाना कानून के खिलाफ था?"[1]
5 फिर यीशु ने उनसे कहा, "इंसान का
बेटा सब्त के दिन का प्रभु है।"[2]

6 एक और सब्त के दिन[3] यीशु सभा-
घर में गया और सिखाने लगा। वहाँ एक
आदमी था जिसका दायाँ हाथ सूखा हुआ
था।*[4] **7** शास्त्री और फरीसी यीशु पर
नज़र जमाए हुए थे कि देखें, वह सब्त के
दिन बीमारों को ठीक करता है या नहीं
ताकि किसी तरह उस पर इलज़ाम लगा
सकें। **8** पर यीशु जानता था कि वे
अपने मन में क्या सोच रहे हैं,[5] इसलिए
उसने सूखे हाथवाले आदमी* से कहा,
"उठकर यहाँ आ और बीच में खड़ा हो
जा।" तब वह आदमी उठा और जाकर
बीच में खड़ा हो गया। **9** फिर यीशु ने
उनसे कहा, "मैं तुम लोगों से पूछता हूँ,
परमेश्वर के कानून के हिसाब से सब्त के
दिन क्या करना सही है, किसी का
भला करना या बुरा करना? किसी की
जान बचाना या किसी की जान लेना?"[6]
10 फिर यीशु ने चारों तरफ सब पर
नज़र डाली और उस आदमी से कहा,
"अपना हाथ आगे बढ़ा।" उसने ऐसा ही
किया और उसका हाथ ठीक हो गया।
11 मगर शास्त्री और फरीसी गुस्से से
पागल हो गए और एक-दूसरे से सलाह
करने लगे कि उन्हें यीशु के साथ क्या
करना चाहिए।

12 एक दिन यीशु प्रार्थना करने के
लिए पहाड़ पर गया[7] और सारी
रात परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा।[8]

6:4 *या "नज़राने की रोटी।" **6:6** *या
"लकवा मार गया था।" **6:8** *या "जिसके
हाथ को लकवा मार गया था।"

अध्य. 6
1 लैव 24:5-9
2 मत 12:8, मर 2:27, 28
3 लूक 13:14, यूह 9:16
4 मत 12:9-14, मर 3:1-6
5 लूक 5:22, यूह 2:24, 25
6 मत 12:11, मर 3:4, यूह 7:23
7 मत 6:6, मर 3:13
8 मत 14:23

दूसरा कॉल.
1 मत 10:2-4, मर 3:14-19, प्रेष 1:13
2 यूह 14:8
3 यूह 11:16
4 मर 5:30
5 मत 5:2, 3, याकू 2:5
6 भज 107:9, यश 55:1, यिर्म 31:25, मत 5:6
7 यश 61:3, प्रक 21:4
8 मत 5:10, 11, यूह 17:14, 1पत 3:14
9 यूह 16:2

13 फिर जब दिन निकला तो उसने अपने
चेलों को बुलाया और उनमें से 12 को
चुना, जिन्हें उसने प्रेषित नाम दिया।[1]
14 ये थेः शमौन, जिसे उसने पतरस नाम
भी दिया और उसका भाई अन्द्रियास और
याकूब, यूहन्ना, फिलिप्पुस,[2] बरतुलमै,
15 मत्ती, थोमा,[3] हलफई का बेटा
याकूब, शमौन जो "जोशीला" कहलाता
है, **16** यहूदा जो याकूब का बेटा था
और यहूदा इस्करियोती जो बाद में गद्दार
बन गया।

17 यीशु उनके साथ नीचे आया और
एक समतल जगह में आकर रुक गया।
वहाँ उसके चेलों की एक बड़ी भीड़
थी और पूरे यहूदिया और यरूशलेम
से, साथ ही समुद्र-तट के इलाके यानी
सोर और सीदोन से भारी तादाद में लोग
वहाँ जमा थे। वे उसकी बातें सुनने और
अपनी बीमारियों से ठीक होने आए थे।
18 यहाँ तक कि जिन्हें दुष्ट स्वर्गदूत
सताते थे, वे भी चंगे हो गए। **19** भीड़
में सभी उसे छूने की कोशिश कर रहे थे,
क्योंकि उसके अंदर से शक्ति निकलती
थी[4] और सबको चंगा करती थी।

20 यीशु ने अपने चेलों की तरफ देखा
और वह कहने लगाः

"सुखी हो तुम जो गरीब हो क्योंकि
परमेश्वर का राज तुम्हारा है।[5]

21 सुखी हो तुम जो अभी भूखे हो
क्योंकि तुम्हें तृप्त किया जाएगा।[6]

सुखी हो तुम जो अभी रोते हो क्योंकि
तुम हँसोगे।[7]

22 सुखी हो तुम जब भी लोग इंसान
के बेटे की वजह से तुमसे नफरत करें[8]
और तुम्हें अपने बीच से निकाल दें,[9] तुम्हें
बदनाम करें और दुष्ट कहकर तुम्हारा
नाम खराब करें।* **23** उस दिन मगन

6:22 *या "नाम काट दें।"

होना और खुशियाँ मनाना इसलिए कि
स्वर्ग में तुम्हारे लिए बड़ा इनाम है। उनके
पुरखों ने भी भविष्यवक्ताओं के साथ यही
सब किया था।[1]
24 मगर हाय तुम पर जो अमीर हो[2]
क्योंकि तुम अपने हिस्से का सुख पा
चुके।[3]
25 हाय तुम पर जो अभी तृप्त हो
क्योंकि तुम्हें भूख सताएगी।
हाय तुम पर जो अभी हँस रहे
हो क्योंकि तुम मातम मनाओगे और
रोओगे।[4]
26 हाय तुम पर जब सब लोग
तुम्हारी तारीफ करें,[5] क्योंकि उनके बाप-
दादे झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ ऐसा ही
करते थे।
27 मगर मैं तुम लोगों से जो मेरी
बातें सुन रहे हो कहता हूँ: अपने दुश्मनों
से प्यार करते रहो। जो तुमसे नफरत
करते हैं उनके साथ भलाई करते रहो।[6]
28 जो तुम्हें कोसते हैं उन्हें आशीष देते
रहो और जो तुम्हारी बेइज़्ज़ती करते हैं,
उनके लिए प्रार्थना करते रहो।[7] **29** जो
तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी
तरफ दूसरा गाल भी कर दे। जो तेरा
ओढ़ना तुझसे छीन ले, उसे कुरता लेने
से भी मत रोक।[8] **30** जो कोई तुझसे
माँगता है उसे दे[9] और जो तेरी चीज़ें उठा-
कर ले जाता है, उससे वापस मत माँग।
31 ठीक जैसा तुम चाहते हो कि लोग
तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा
ही करो।[10]
32 अगर तुम उन्हीं से प्यार करो
जो तुमसे प्यार करते हैं, तो इसमें तारीफ
की क्या बात है? इसलिए कि पापी
भी उन्हीं से प्यार करते हैं जो उनसे
प्यार करते हैं।[11] **33** अगर तुम उन्हीं
का भला करो जो तुम्हारा भला करते हैं,
तो इसमें तारीफ की क्या बात है? पापी
भी तो ऐसा ही करते हैं। **34** और
अगर तुम उन लोगों को उधार* दो
जिनसे तुम्हें वापस पाने की उम्मीद है, तो
इसमें तारीफ की क्या बात है?[1] पापी भी
तो दूसरे पापियों को उधार देते हैं ताकि
उन्होंने जितना दिया है उतना वापस पा
सकें। **35** इसके बजाय अपने दुश्मनों
से प्यार करते रहो और भलाई करते रहो
और उधार देते रहो और बदले में कुछ भी
पाने की उम्मीद मत करो।[2] इसका तुम्हें
बड़ा इनाम मिलेगा और तुम परम-प्रधान
के बेटे ठहरोगे, क्योंकि वह एहसान न
माननेवालों और दुष्टों पर भी कृपा करता
है।[3] **36** जैसे तुम्हारा पिता दयालु है,
वैसे ही तुम भी दया करते रहो।[4]
37 दोष लगाना बंद करो और तुम
पर भी हरगिज़ दोष नहीं लगाया
जाएगा।[5] दूसरों को मुजरिम ठहराना
बंद करो और तुम्हें हरगिज़ मुजरिम नहीं
ठहराया जाएगा। माफ करते रहो*
और तुम्हें भी माफ किया जाएगा।#[6]
38 दिया करो और लोग तुम्हें भी देंगे।[7]
वे तुम्हारी झोली में नाप भर-भरकर,
दबा-दबाकर, अच्छी तरह हिला-हिलाकर
और ऊपर तक भरकर डालेंगे। इसलिए
कि जिस नाप से तुम नापते हो, बदले में वे
भी उसी नाप से तुम्हारे लिए नापेंगे।”
39 फिर उसने उन्हें एक मिसाल भी
दी: “एक अंधा दूसरे अंधे को राह नहीं
दिखा सकता, क्या दिखा सकता है?
अगर वह दिखाए, तो क्या दोनों गड्ढे
में नहीं गिर पड़ेंगे?[8] **40** चेला* अपने
गुरु से बड़ा नहीं होता, मगर हर कोई
जिसे पूरी तरह सिखाया जाता है, वह

अध्य. 6
1 2इत 36:16; मत 5:12; लूक 11:47; प्रेष 7:52
2 याकू 5:1
3 मत 6:2
4 यश 65:13
5 याकू 4:4; 1यूह 4:5
6 निर्ग 23:4; नीत 25:21; मत 5:44; रोम 12:20
7 प्रेष 7:59, 60; रोम 12:14
8 मत 5:39, 40; 1कुर 6:7
9 व्य 15:7, 8; नीत 3:27; नीत 21:26; मत 5:42
10 मत 7:12
11 मत 5:46, 47

दूसरा कॉल.
1 लैव 25:35, 36; व्य 15:7, 8; मत 5:42
2 निर्ग 22:25; लैव 25:37; व्य 23:20; भज 37:25, 26
3 मत 5:45; प्रेष 14:17
4 मत 5:48; इफ 5:1, 2; याकू 2:13
5 मत 7:1, 2; रोम 14:10
6 मत 6:14; मर 11:25
7 नीत 19:17
8 मत 15:14

6:34 *यानी बिना ब्याज के। **6:37** *या “दूसरों को छोड़ दो।” #या “छोड़ दिया जाएगा।” **6:40** *या “विद्यार्थी।”

अपने गुरु जैसा होगा। 41 तो फिर तू
क्यों अपने भाई की आँख में पड़ा तिनका
देखता है, मगर अपनी आँख के लट्ठे पर
ध्यान नहीं देता?[1] 42 तू अपने भाई से
कैसे कह सकता है, 'भाई, आ मैं तेरी
आँख का तिनका निकाल दूँ,' जबकि तू
उस लट्ठे को नहीं देख रहा जो तेरी
अपनी ही आँख में पड़ा है? अरे कपटी!
पहले अपनी आँख से लट्ठा निकाल, तब
तू साफ-साफ देख सकेगा कि अपने भाई
की आँख से तिनका कैसे निकालना है।

43 कोई भी अच्छा पेड़ सड़ा हुआ
फल पैदा नहीं करता और न ही कोई सड़ा
हुआ पेड़ बढ़िया फल पैदा करता है।[2]
44 इसलिए कि हर पेड़ अपने फल से
जाना जाता है।[3] मिसाल के लिए, लोग
कभी कँटीले पेड़ों से अंजीर नहीं बटोरते,
न ही कँटीली झाड़ियों से अंगूर काटते हैं।
45 अच्छा इंसान अपने दिल की अच्छाई
के खज़ाने से अच्छी चीज़ें निकालता है,
जबकि बुरा इंसान अपनी बुराई के खज़ाने
से बुरी चीज़ें निकालता है, इसलिए कि
जो दिल में भरा है, वही उसके मुँह पर
आता है।[4]

46 तो फिर तुम क्यों मुझे 'प्रभु! प्रभु!'
पुकारते हो, मगर मैं जो कहता हूँ वह
नहीं करते?[5] 47 मैं तुम्हें बताता हूँ कि
हर वह इंसान जो मेरे पास आता है, मेरी
बातें सुनता है और उन पर चलता है वह
किसके जैसा है।[6] 48 वह उस आदमी
के जैसा है, जिसने एक घर बनाने के लिए
गहराई तक खुदाई की और चट्टान पर
नींव डाली। इसलिए जब बाढ़ आयी और
नदी की तेज़ धाराएँ उस घर से टकरायीं,
तो वे उसे हिला न सकीं क्योंकि उसकी
नींव मज़बूत थी।[7] 49 दूसरी तरफ, जो
मेरी बातें सुनता तो है मगर उन पर चलता
नहीं,[8] वह उस आदमी के जैसा है जिसने
बिना कोई नींव डाले अपना घर ज़मीन
पर बनाया। जब नदी की तेज़ धाराएँ
उसके घर से टकरायीं, तो वह उसी वक्त
ढह गया और तहस-नहस हो गया।"

7 जब वह लोगों को वे सारी बातें
बता चुका जो वह बताना चाहता था,
तो वह कफरनहूम आया। 2 वहाँ एक
सेना-अफसर था जिसे अपने एक दास से
बहुत प्यार था। वह दास इतना बीमार
पड़ गया कि अब मरने पर था।[1]
3 जब सेना-अफसर ने यीशु के बारे में
सुना, तो उसने यहूदियों के मुखियाओं को
उससे यह बिनती करने भेजा कि आकर
मेरे दास को ठीक कर दे। 4 जब वे
यीशु के पास पहुँचे, तो उसके आगे
गिड़गिड़ाने लगे, "वह सेना-अफसर एक
भला आदमी है, मेहरबानी करके उसकी
मदद कर। 5 वह हम यहूदियों से प्यार
करता है, उसी ने हमारा सभा-घर बन-
वाया है।" 6 तब यीशु उनके साथ चल
दिया। मगर जब वह उसके घर से थोड़ी
ही दूर था, तो सेना-अफसर के कुछ दोस्त
उसके पास आए, जिनके हाथ उसने यह
संदेश भेजा था: "मालिक, और तकलीफ
मत उठा क्योंकि मैं इस लायक नहीं कि तू
मेरी छत तले आए।[2] 7 इसी वजह से
मैंने अपने आपको इस काबिल नहीं
समझा कि तेरे पास आऊँ। बस तू अपने
मुँह से कह दे और मेरा सेवक ठीक हो
जाएगा। 8 क्योंकि मैं भी किसी अधि-
कारी के नीचे काम करता हूँ और मेरे
नीचे भी सिपाही हैं। जब मैं एक से कहता
हूँ, 'जा!' तो वह जाता है और दूसरे से
कहता हूँ, 'आ!' तो वह आता है और
अपने दास से कहता हूँ, 'यह कर!' तो
वह करता है।" 9 जब यीशु ने यह सुना
तो उसे अफसर पर बहुत ताज्जुब हुआ।
उसने मुड़कर अपने पीछे आनेवाली भीड़

अध्या. 6

1 मत 7:3-5
2 मत 7:16-18
3 मत 12:33
4 मत 12:34, 35
5 मत 7:21
लूक 13:24
रोम 2:13
याकू 1:22
6 मत 7:24-27
7 भज 125:1
8 याकू 1:23, 24

दूसरा कॉल.

अध्या. 7

1 मत 8:5, 6
2 मत 8:8, 9

से कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ, मैंने इस-
राएल में भी ऐसा ज़बरदस्त विश्वास नहीं
पाया।"[1] **10** जो भेजे गए थे उन्होंने
घर लौटने पर पाया कि वह दास बिलकुल
ठीक हो चुका है।[2]

11 कुछ ही समय बाद वह नाईन
नाम के एक शहर गया। उसके चेले और
एक बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी।
12 जब वह शहर के फाटक के पास
पहुँचा, तो देखो! लोग एक मुरदे को ले
जा रहे थे जो अपनी माँ का अकेला* बेटा
था।[3] और-तो-और, वह विधवा थी।
उस शहर से बड़ी तादाद में लोग उस
औरत के साथ जा रहे थे। **13** जब प्रभु
की नज़र उस औरत पर पड़ी, तो वह
तड़प उठा[4] और उसने कहा, "मत रो।"[5]
14 तब उसने पास आकर अर्थी को छुआ
और अर्थी उठानेवाले रुक गए। फिर
उसने कहा, "हे जवान, मैं तुझसे कहता
हूँ उठ!"[6] **15** तब वह जवान जो मर
गया था, उठ बैठा और बात करने लगा
और यीशु ने उसे उसकी माँ को सौंप
दिया।[7] **16** यह देखकर सब लोगों पर
डर छा गया और वे यह कहते हुए पर-
मेश्वर की महिमा करने लगे, "हमारे
बीच एक महान भविष्यवक्ता आया है"[8]
और "परमेश्वर ने अपने लोगों की तरफ
ध्यान दिया है।"[9] **17** उसके बारे में यह
खबर पूरे यहूदिया और आस-पास के सब
इलाकों में फैल गयी।

18 यूहन्ना के चेलों ने उसे इन सारी
बातों की खबर दी।[10] **19** तब यूहन्ना
ने अपने दो चेलों को बुलाया और उन्हें
प्रभु से यह पूछने के लिए भेजा, "वह
जो आनेवाला था, क्या तू ही है[11] या हम
किसी और की आस लगाएँ?" **20** जब
वे यीशु के पास आए, तो उन्होंने कहा,
"यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे
पास यह पूछने के लिए भेजा है, 'वह
जो आनेवाला था, क्या तू ही है या
हम किसी और की आस लगाएँ?'"
21 उसी वक्त यीशु ने बहुत-से लोगों की
बीमारियाँ और दर्दनाक रोग दूर किए[1]
और लोगों में समाए दुष्ट स्वर्गदूतों को
निकाला और बहुत-से अंधों को आँखों
की रौशनी दी। **22** यीशु ने उनसे कहा,
"जो कुछ तुमने देखा और सुना है,
जाकर वह सब यूहन्ना को बताओ: अंधे
अब देख रहे हैं,[2] लँगड़े चल-फिर रहे
हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जा रहे हैं, बहरे सुन
रहे हैं,[3] मरे हुओं को ज़िंदा किया जा रहा
है और गरीबों को खुशखबरी सुनायी जा
रही है।[4] **23** सुखी है वह जो मेरे बारे
में शक नहीं करता।"*[5]

24 जब यूहन्ना का संदेश लानेवाले
चले गए, तो यीशु भीड़ से यूहन्ना के
बारे में यह कहने लगा, "तुम वीराने में
क्या देखने गए थे? हवा से इधर-उधर
हिलते किसी नरकट को?[6] **25** फिर
तुम क्या देखने गए थे? क्या रेशमी मुला-
यम* कपड़े पहने किसी आदमी को?[7]
शानदार कपड़े पहननेवाले और ऐशो-
आराम से जीनेवाले तो महलों में रहते
हैं। **26** तो आखिर तुम क्या देखने गए
थे? एक भविष्यवक्ता को? हाँ। बल्कि मैं
तुमसे कहता हूँ, भविष्यवक्ता से भी बढ़-
कर किसी को देखने गए थे।[8] **27** यह
वही है जिसके बारे में लिखा है, 'देख! मैं
अपना दूत तेरे आगे-आगे भेज रहा हूँ, जो
तेरे लिए रास्ता तैयार करेगा।'[9] **28** मैं
तुमसे कहता हूँ, अब तक जितने भी
इंसान पैदा हुए हैं, उनमें यूहन्ना से बड़ा
कोई भी नहीं। मगर परमेश्वर के राज में

अध्य. 7
1 मत 8:10
2 मत 8:13
3 1रा 17:17; लूक 8:41, 42
4 इब्र 4:15
5 लूक 8:52; यूह 11:33
6 1रा 17:21, 22; लूक 8:52-54; यूह 11:43; प्रेष 9:40
7 1रा 17:23; 2रा 4:36
8 व्य 18:15; यूह 4:19; यूह 6:14; यूह 7:40
9 लूक 1:68
10 मत 11:2-6
11 भज 40:7; भज 118:26; जक 9:9; मत 3:11

दूसरा कॉल.
1 यश 53:4
2 यश 42:7
3 यश 29:18; यश 35:5, 6
4 यश 61:1; लूक 4:18; याकू 2:5
5 यश 8:14; लूक 2:34; यूह 6:66
6 मत 11:7-11
7 मर 1:6
8 मर 1:2; लूक 1:67, 76
9 यश 40:3; मला 3:1; लूक 1:16, 17; यूह 1:23

7:12 *शा., "इकलौता।"

7:23 *या "मेरी वजह से ठोकर नहीं खाता।" **7:25** *या "बढ़िया।"

जो सबसे छोटा है, वह यूहन्ना से भी बड़ा है।”[1] 29 (जब सब लोगों ने और कर-वसूलनेवालों ने यह सुना, तो उन्होंने कहा कि परमेश्‍वर सच्चा है। इन लोगों ने वह बपतिस्मा लिया था जिसका प्रचार यूहन्ना करता था।[2] 30 मगर फरीसी और जो कानून के जानकार थे, उन्होंने वह बपतिस्मा नहीं लिया था। और परमेश्‍वर ने उनके लिए जो मकसद ठहराया था, उसे ठुकरा दिया।)[3]

31 “इसलिए मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किससे करूँ, ये किसके जैसे हैं?[4] 32 ये ऐसे हैं मानो बाज़ारों में बैठे बच्चे एक-दूसरे को पुकारकर कह रहे हों, ‘हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजायी मगर तुम नहीं नाचे। हमने विलाप किया मगर तुम नहीं रोए।’ 33 वैसे ही यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला औरों की तरह न रोटी खाता, न दाख-मदिरा पीता आया,[5] फिर भी तुम कहते हो, ‘उसमें दुष्ट स्वर्गदूत समाया है।’ 34 जबकि इंसान का बेटा औरों की तरह खाता-पीता आया, फिर भी तुम कहते हो, ‘देखो! यह आदमी पेटू और पियक्कड़ है और कर-वसूलनेवालों और पापियों का दोस्त है!’[6] 35 लेकिन बुद्धि अपने सारे नतीजों* से सही साबित होती है।”#[7]

36 शमौन नाम का एक फरीसी था जिसने यीशु से बार-बार गुज़ारिश की कि वह उसके यहाँ खाने पर आए। इसलिए यीशु उसके घर गया और खाने बैठा। 37 उसी शहर में एक बदनाम औरत थी, जिसके बारे में सब जानते थे कि वह एक पापिन है। जब उसे मालूम पड़ा कि यीशु उस फरीसी के घर खाने पर आया है,* तो वह खुशबूदार तेल की बोतल लेकर आयी।[1] 38 वह यीशु के पैरों के पास पीछे आयी और रो-रोकर अपने आँसुओं से उसके पैर भिगोने लगी और अपने बालों से उन्हें पोंछने लगी। वह बार-बार उसके पैरों को चूम रही थी और उन पर खुशबूदार तेल डाल रही थी। 39 यह देखकर वह फरीसी जिसने यीशु को न्यौता दिया था, मन-ही-मन कहने लगा, “अगर यह आदमी सचमुच एक भविष्यवक्ता होता, तो जान लेता कि यह औरत जो उसे छू रही है, कौन है और कैसी है, यह एक पापिन है।”[2] 40 मगर यीशु ने उससे कहा, “शमौन, मैं तुझसे कुछ कहना चाहता हूँ।” उसने कहा, “गुरु, बोल!”

41 “दो आदमी किसी साहूकार के कर्ज़दार थे। एक पर 500 दीनार* का कर्ज़ था और दूसरे पर 50 का। 42 लेकिन जब अपना कर्ज़ चुकाने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं था, तब साहूकार ने बड़ी उदारता से उन दोनों का कर्ज़ माफ कर दिया। इसलिए बता, उन दोनों में से कौन साहूकार से ज़्यादा प्यार करेगा?” 43 शमौन ने जवाब दिया, “मेरे खयाल से वही आदमी जिसका उसने ज़्यादा कर्ज़ माफ किया।” यीशु ने कहा, “तूने बिलकुल सही कहा।” 44 तब यीशु ने उस औरत की तरफ मुड़कर देखा और शमौन से कहा, “क्या तू इस औरत को देख रहा है? मैं तेरे घर आया और तूने मुझे पैर धोने के लिए पानी नहीं दिया। मगर इस औरत ने अपने आँसुओं से मेरे पैर धोए और अपने बालों से उन्हें पोंछा। 45 तूने मुझे नहीं चूमा। मगर जब से मैं आया हूँ तब से यह औरत मेरे पैरों को चूम रही है। 46 तूने मेरे सिर पर तेल नहीं उँडेला। मगर इस औरत

7:35 *या “बच्चों।” #या “बुद्धि की जीत होती है।” 7:37 *या “मेज़ से टेक लगाए बैठा है।”

7:41 *अति. ख14 देखें।

अध्य. 7

1 मत 11:11

2 मत 3:5, 6; लूक 3:12

3 प्रेष 13:46; रोम 10:2, 3

4 मत 11:16-19

5 गि 6:2, 3; मत 3:4; लूक 1:13, 15

6 मत 11:19; लूक 5:30

7 यूह 10:37, 38

दूसरा कॉल.

1 मत 26:6, 7; मर 14:3; यूह 12:3

2 लूक 15:2

ने मेरे पैरों पर खुशबूदार तेल डाला है।
47 इस वजह से, मैं तुझसे कहता हूँ कि
भले ही इसके पाप बहुत हैं मगर वे माफ
किए गए,[1] इसलिए यह ज़्यादा प्यार कर
रही है। मगर जिसके कम पाप माफ किए
गए, वह कम प्यार करता है।" 48 तब
यीशु ने औरत से कहा, "तेरे पाप माफ
किए गए।"[2] 49 यह सुनकर जो लोग
उसके साथ मेज़ पर थे, मन-ही-मन कहने
लगे, "यह आदमी कौन है जो पापों
को भी माफ करता है?"[3] 50 मगर
यीशु ने औरत से कहा, "तेरे विश्वास ने
तुझे बचा लिया है।[4] जा, अब और चिंता
मत करना।"

8 इसके कुछ समय बाद यीशु शहर-
शहर और गाँव-गाँव गया और लोगों
को प्रचार करता और परमेश्वर के राज
की खुशखबरी सुनाता गया।[5] वे 12 चेले
उसके साथ थे 2 और कुछ औरतें भी
थीं, जिनमें से दुष्ट स्वर्गदूत निकाले गए थे
और उनकी बीमारियाँ दूर की गयी थीं।
जैसे, मरियम जो मगदलीनी कहलाती थी
और जिसमें से सात दुष्ट स्वर्गदूत निकले
थे, 3 योअन्ना[6] जो हेरोदेस के घर के
प्रबंधक खुज़ा की पत्नी थी, सुसन्ना और
दूसरी कई औरतें। ये सभी अपनी धन-
संपत्ति से यीशु और उसके चेलों की सेवा
करती थीं।[7]

4 अलग-अलग शहरों से आए लोगों
के अलावा, जब एक बड़ी भीड़ उसके
पास जमा हुई तो उसने उन्हें यह मिसाल
दी:[8] 5 "एक बीज बोनेवाला बीज बोने
निकला। जब वह बो रहा था, तो कुछ
बीज रास्ते के किनारे गिरे और वे
पैरों तले रौंदे गए और आकाश के पंछी
आकर उन्हें खा गए।[9] 6 कुछ चट्टानी
ज़मीन पर गिरे और अंकुर फूटने के बाद
सूख गए क्योंकि उन्हें नमी न मिली।[10]
7 कुछ और बीज काँटों में गिरे और
उनके साथ-साथ बढ़नेवाले कँटीले पौधों
ने उन्हें दबा दिया।[1] 8 मगर कुछ और
बीज अच्छी मिट्टी पर गिरे और अंकुर
फूटने के बाद उनसे 100 गुना फल पैदा
हुआ।"[2] ये बातें बताने के बाद उसने
ऊँची आवाज़ में कहा, "कान लगाकर
सुनो कि मैं क्या कह रहा हूँ।"[3]

9 मगर उसके चेले उससे पूछने लगे
कि इस मिसाल का क्या मतलब है।[4]
10 उसने कहा, "परमेश्वर के राज के
पवित्र रहस्यों की समझ तुम्हें दी गयी
है, मगर बाकियों के लिए ये सिर्फ
मिसालें ही हैं[5] ताकि वे देखते हुए भी न
देख सकें और सुनकर भी इसके मायने न
समझ सकें।[6] 11 इस मिसाल का मत-
लब यह है: बीज परमेश्वर का वचन है।[7]
12 जो बीज रास्ते के किनारे गिरे वे
ऐसे लोग हैं जो वचन सुनते हैं, मगर
फिर शैतान आता है और उनके दिलों
से वचन उठा ले जाता है ताकि वे
न तो यकीन करें और न ही उद्धार
पाएँ।[8] 13 जो बीज चट्टानी ज़मीन पर
गिरे, वे ऐसे लोग हैं जो वचन को सुन-
कर इसे खुशी-खुशी स्वीकार करते हैं,
मगर उनमें जड़ नहीं होती। वे थोड़े वक्त
के लिए यकीन करते हैं, मगर परीक्षा
के वक्त गिर जाते हैं।[9] 14 और जो
बीज काँटों में गिरे, वे ऐसे लोग हैं
जो वचन सुनते तो हैं, मगर इस ज़िंदगी
की चिंताएँ, धन-दौलत[10] और ऐशो-
आराम उन्हें भटका देता है[11] और वे
इनसे पूरी तरह दब जाते हैं और अच्छे
फल नहीं पैदा करते।[12] 15 जो बीज
बढ़िया मिट्टी पर गिरे, वे ऐसे लोग हैं
जिनका दिल बहुत अच्छा है।[13] वे वचन
सुनकर इसे संजोए रखते हैं और धीरज
धरते हुए फल पैदा करते हैं।[14]

अध्य. 7

1 भज 32:1; भज 51:1; भज 103:2, 3; यश 1:18; यश 43:25; यश 44:22
2 मत 9:2; मर 2:5
3 मर 2:7; लूक 5:21
4 मत 9:22; लूक 8:48

अध्य. 8

5 मत 9:35; लूक 4:43
6 लूक 24:9, 10
7 मत 27:55; मर 15:40, 41
8 मत 13:1-3; मर 4:1, 2
9 मत 13:3-9; मर 4:3-9; लूक 8:12
10 लूक 8:13

दूसरा कॉल.

1 लूक 8:14
2 लूक 8:15
3 मत 11:15; मत 13:9; मर 4:9
4 मत 13:10; मर 4:10
5 भज 78:2; मत 13:34, 35; मर 4:34
6 यश 6:9, 10; मत 13:11, 13; मर 4:11, 12
7 मत 13:18-23; मर 4:14-20
8 मत 13:19; मर 4:15; 2कुर 4:3, 4
9 मत 13:20, 21; मर 4:16, 17
10 मत 19:23; 1ती 6:9
11 2ती 4:10
12 मत 13:22; मर 4:18, 19
13 प्रेष 16:14
14 मत 13:23; मर 4:20; इब्र 10:36

16 कोई भी दीपक जलाकर उसे बर-
तन से नहीं ढकता या पलंग के नीचे
नहीं रखता, मगर दीवट पर रखता है
ताकि अंदर आनेवालों को रौशनी मिले।[1]
17 ऐसा कुछ नहीं जो छिपा है और
सामने न लाया जाए, न ही ऐसी कोई
चीज़ है जिसे बड़ी सावधानी से छिपाया
गया हो और जो कभी जानी न जाए और
खुले में न आए।[2] 18 इसलिए ध्यान दो
कि तुम कैसे सुनते हो। क्योंकि जिसके
पास है, उसे और दिया जाएगा।[3] लेकिन
जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले
लिया जाएगा जो उसे लगता है कि उसका
अपना है।”[4]

19 फिर यीशु की माँ और उसके
भाई[5] उससे मिलने आए, मगर भीड़ की
वजह से वे उस तक पहुँच नहीं पा
रहे थे।[6] 20 इसलिए उसे यह खबर दी
गयी, “तेरी माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं
और तुझसे मिलना चाहते हैं।” 21 तब
उसने उनसे कहा, “मेरी माँ और मेरे भाई
ये हैं, जो परमेश्‍वर का वचन सुनते और
उस पर चलते हैं।”[7]

22 एक दिन यीशु और उसके चेले
एक नाव पर चढ़े और उसने उनसे कहा,
“आओ हम झील के उस पार चलें।” तब
वे नाव में रवाना हो गए।[8] 23 मगर
सफर के दौरान वह सो गया। तब झील
में भयंकर तूफान उठा और उनकी नाव
में पानी भरने लगा, उनकी जान खतरे
में थी।[9] 24 चेले उसके पास आकर
उसे जगाने लगे, “गुरु, गुरु, हम नाश
होनेवाले हैं!” यीशु ने उठकर आँधी और
उफनती लहरों को डाँटा और वे शांत हो
गए और सन्‍नाटा छा गया।[10] 25 फिर
उसने चेलों से कहा, “कहाँ गया तुम्हारा
विश्‍वास?” मगर उन पर डर छा गया
और वे ताज्जुब करने लगे और एक-दूसरे
से कहने लगे, “आखिर यह कौन है जो
आँधी और पानी तक को हुक्म देता है
और वे उसकी मानते हैं?”[1]

26 फिर वे किनारे पर गिरासेनियों के
इलाके में पहुँचे,[2] जो उस पार गलील
के सामने है। 27 मगर जब वह उतर-
कर किनारे पर आया, तो पास के
शहर का एक आदमी उससे मिला जिसमें
दुष्ट स्वर्गदूत समाए थे। वह बहुत समय
से बिना कपड़ों के घूमता था और घर में
नहीं बल्कि कब्रों* के बीच रहता था।[3]
28 जब उसने यीशु को देखा तो वह ज़ोर-
ज़ोर से चीखने लगा और उसके आगे
गिरकर चिल्लाने लगा, “हे यीशु, परम-
प्रधान परमेश्‍वर के बेटे, मेरा तुझसे क्या
लेना-देना? मैं तुझसे बिनती करता हूँ,
मुझे मत तड़पा।”[4] 29 (क्योंकि यीशु
उस दुष्ट स्वर्गदूत को हुक्म दे रहा था कि
वह उस आदमी में से निकल जाए।
दुष्ट स्वर्गदूत ने कई बार उस आदमी
को अपने कब्ज़े में किया था।*[5] उस
आदमी को बार-बार ज़ंजीरों और बेड़ियों
से बाँधा जाता था और उसकी पहरेदारी
की जाती थी, मगर वह उन बंधनों को
तोड़ देता। दुष्ट स्वर्गदूत उस आदमी को
भगाए फिरता था और सुनसान जगहों में
ले जाता था।) 30 यीशु ने उससे पूछा,
“तेरा नाम क्या है?” उसने कहा, “पल-
टन,” क्योंकि उसमें बहुत सारे दुष्ट स्वर्ग-
दूत समाए थे। 31 वे उससे बिनती
करते रहे कि वह उन्हें अथाह-कुंड में
जाने का हुक्म न दे।[6] 32 वहीं पहाड़
पर बहुत सारे सूअर[7] चर रहे थे। इस-
लिए दुष्ट स्वर्गदूतों ने यीशु से बिनती
की कि वह उन्हें सूअरों में समा जाने दे।

अध्य. 8
1 मत 5:15, मर 4:21, लूक 11:33, फिल 2:15
2 मत 10:26, मर 4:22, लूक 12:2
3 मत 25:23
4 मत 13:12, मत 25:29, मर 4:24, 25, लूक 19:26
5 मत 13:55, यूह 7:5, प्रेष 1:14
6 मत 12:46, 47, मर 3:31, 32
7 मत 12:48-50, मर 3:33-35, यूह 15:14
8 मत 8:18, 23, मर 4:35, 36
9 मत 8:24-27, मर 4:37-41
10 भज 89:9

दूसरा कॉल.
1 मत 8:27, मर 4:41
2 मर 5:1
3 मत 8:28, 29, मर 5:2-10
4 मर 1:23, 24
5 मर 9:20, 21
6 प्रक 20:2, 3
7 लैव 11:7, 8, व्य 14:8

8:27 *या “स्मारक कब्रों।” **8:29** *या शायद, “लंबे अरसे से उसने उस आदमी को अपने कब्ज़े में कर रखा था।”

और उसने उन्हें जाने दिया।[1] 33 तब
सारे दुष्ट स्वर्गदूत उस आदमी में से बाहर
निकल गए और उन सूअरों में समा गए।
तब सूअरों का पूरा झुंड बड़ी तेज़ी से दौड़ा
और पहाड़ की कगार से नीचे झील में जा
गिरा और सारे सूअर डूबकर मर गए।
34 जब सूअर चरानेवालों ने देखा कि
क्या हुआ है, तो वे भाग गए और
उन्होंने जाकर शहर और देहात में इसकी
खबर दी।

35 जो हुआ था, उसे देखने के लिए
लोग आए। जब वे यीशु के पास आए
तो उन्होंने देखा कि वह आदमी जिससे
दुष्ट स्वर्गदूत निकले थे, कपड़े पहने और
बिलकुल ठीक दिमागी हालत में यीशु के
पैरों के पास बैठा है। यह देखकर लोग
बहुत डर गए। 36 जिन्होंने यह सब
अपनी आँखों से देखा था, वे लोगों को
बताने लगे कि जो आदमी दुष्ट स्वर्ग-
दूतों के कब्ज़े में था, वह किस तरह ठीक
हुआ। 37 तब गिरासेनियों के आस-
पास के इलाकों से आयी भीड़ ने यीशु से
कहा कि वह उनके यहाँ से चला जाए,
क्योंकि उनमें डर बैठ गया था। इस-
लिए यीशु वहाँ से जाने के लिए नाव पर
चढ़ गया। 38 तब जिस आदमी से दुष्ट
स्वर्गदूत निकले थे, वह यीशु से बार-बार
बिनती करने लगा कि वह उसे अपने साथ
आने दे। मगर यीशु ने उस आदमी को
यह कहकर भेज दिया,[2] 39 "अपने
घर लौट जा और परमेश्वर ने जो कुछ तेरे
लिए किया है, वह सबको बताता रह।"
वह आदमी चला गया और पूरे शहर में
बताने लगा कि यीशु ने उसके लिए क्या
किया है।

40 जब यीशु इस पार आया, तो भीड़
ने बड़े प्यार से उसका स्वागत किया
क्योंकि सब उसका इंतज़ार कर रहे थे।[3]

अध्य. 8
1 मत 8:30-34 मर 5:11-17
2 मर 5:18-20
3 मर 5:21

दूसरा कॉल.
1 मत 9:18, 19 मर 5:22-24
2 लैव 15:25
3 मत 9:20-22 मर 5:25-29
4 गि 15:38, 39
5 मर 5:30-34
6 लूक 5:17
7 मत 9:22 लूक 7:50
8 मर 5:35-37
9 यूह 11:25 रोम 4:17

41 लेकिन तभी वहाँ याइर नाम का
एक आदमी आया, जो सभा-घर में अगु-
वाई करनेवाला एक अधिकारी था। वह
यीशु के पैरों पर गिरकर उससे बिनती
करने लगा कि वह उसके घर चले।[1]
42 क्योंकि उसकी इकलौती बेटी जो
करीब 12 साल की थी मरने पर थी।

जब यीशु जा रहा था, तो लोगों की
भीड़ उसे घेरे हुए साथ-साथ चलने लगी।
43 वहाँ एक औरत थी जिसे 12 साल
से खून बहने की बीमारी थी[2] और
वह किसी के भी इलाज से ठीक नहीं
हो पायी थी।[3] 44 उसने पीछे से आकर
यीशु के कपड़े की झालर को छुआ[4]
और उसी घड़ी उसका खून बहना बंद हो
गया। 45 तब यीशु ने कहा, "किसने
मुझे छुआ?" जब सब इनकार करने लगे,
तो पतरस ने कहा, "गुरु, भीड़ तुझे
दबाए जा रही है और तुझ पर गिरे जा
रही है।"[5] 46 फिर भी यीशु ने कहा,
"किसी ने मुझे छुआ है, क्योंकि मैं जानता
हूँ कि मेरे अंदर से शक्ति[6] निकली है।"
47 जब उस औरत ने देखा कि यीशु को
पता चल गया है, तो वह काँपती हुई
आयी और उसके आगे गिर पड़ी और
उसने सब लोगों के सामने बता दिया कि
उसने क्यों उसे छुआ और वह कैसे फौरन
ठीक हो गयी। 48 तब यीशु ने उससे
कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे ठीक
किया है। जा, अब और चिंता मत
करना।"[7]

49 जब वह बोल ही रहा था, तो
सभा-घर के अधिकारी के घर से एक
आदमी आया और कहने लगा, "तेरी
बेटी मर चुकी है। अब गुरु को और परे-
शान मत कर।"[8] 50 यह सुनकर यीशु
ने उस अधिकारी से कहा, "डर मत, बस
विश्वास रख और वह बच जाएगी।"[9]

51 जब यीशु उस घर में पहुँचा तो उसने पतरस, यूहन्ना, याकूब और लड़की के माता-पिता के सिवा किसी और को अपने साथ अंदर नहीं आने दिया। **52** लेकिन सब लोग रो रहे थे और छाती पीटते हुए उस लड़की के लिए मातम मना रहे थे। यीशु ने कहा, “मत रोओ![1] लड़की मरी नहीं बल्कि सो रही है।”[2] **53** यह सुनकर वे उसकी खिल्ली उड़ाने लगे क्योंकि वे जानते थे कि वह मर चुकी है। **54** फिर यीशु ने बच्ची का हाथ पकड़कर कहा, “बच्ची, उठ!”[3] **55** तब उस लड़की में जान*[4] आ गयी और वह फौरन उठ बैठी।[5] यीशु ने कहा कि लड़की को खाने के लिए कुछ दिया जाए। **56** लड़की को ज़िंदा देखकर उसके माता-पिता खुशी के मारे अपने आपे में न रहे। मगर यीशु ने उनसे कहा कि जो हुआ है, वह किसी को न बताएँ।[6]

9 फिर यीशु ने अपने 12 चेलों को बुलाया और उन्हें सब दुष्ट स्वर्गदूतों पर अधिकार दिया और शक्ति दी कि वे लोगों में से उन्हें निकालें[7] और बीमारियाँ ठीक करें।[8] **2** और उन्हें परमेश्वर के राज का प्रचार करने और चंगा करने भेजा। **3** उसने उनसे कहा, “सफर के लिए कुछ मत लेना, न लाठी, न खाने की पोटली, न रोटी, न पैसे,* न ही दो जोड़ी कपड़े लेना।[9] **4** मगर जब भी तुम किसी घर में जाओ, तो वहीं ठहरो और वहीं से विदा लो।[10] **5** अगर किसी शहर में लोग तुम्हें स्वीकार न करें, तो वहाँ से बाहर निकलते वक्त अपने पैरों की धूल झाड़ देना ताकि उनके खिलाफ गवाही हो।”[11] **6** तब वे पूरे इलाके में गाँव-गाँव जाकर खुशखबरी सुनाते रहे और हर कहीं लोगों को चंगा करते गए।[1]

7 जब ज़िला-शासक हेरोदेस* ने सुना कि क्या-क्या हो रहा है, तो वह बड़ी उलझन में पड़ गया। इसलिए कि यीशु के बारे में कुछ लोग कहते थे कि वह यूहन्ना है जो मर गया था और जिसे अब ज़िंदा कर दिया गया है।[2] **8** जबकि दूसरे उसके बारे में कहते थे कि एलियाह प्रकट हुआ है, मगर कुछ और कहते थे कि पुराने भविष्यवक्ताओं में से कोई ज़िंदा हो गया है।[3] **9** हेरोदेस ने कहा, “यूहन्ना का तो मैंने सिर कटवा दिया था।[4] तो फिर, यह कौन है जिसके बारे में मैं ऐसी बातें सुन रहा हूँ?” इसलिए वह यीशु को देखना चाहता था।[5]

10 जब प्रेषित लौटे तो आकर यीशु को बताने लगे कि उन्होंने क्या-क्या किया है।[6] तब वह उन्हें साथ लेकर बैतसैदा नाम के शहर में, किसी एकांत जगह के लिए निकल गया।[7] **11** मगर भीड़ को इसका पता चल गया और वह उसके पीछे गयी। यीशु उन सबसे प्यार से मिला और उन्हें परमेश्वर के राज के बारे में बताने लगा और जिन्हें इलाज की ज़रूरत थी, उन्हें ठीक किया।[8] **12** फिर दिन ढलने लगा और वे 12 उसके पास आए और कहने लगे, “भीड़ को भेज दे ताकि वे आस-पास के गाँवों और देहातों में जाकर अपने खाने और ठहरने का इंतज़ाम करें, क्योंकि हम यहाँ सुनसान जगह में हैं।”[9] **13** मगर यीशु ने उनसे कहा, “तुम्हीं उन्हें कुछ खाने को दो।”[10] उन्होंने कहा, “हमारे पास

8:55 *या “जीवन-शक्ति।” शब्दावली में “रुआख; नफ्मा” देखें। **9:3** *शा., “चाँदी।”

9:7 *यानी हेरोदेस अन्तिपास। शब्दावली देखें।

अध्य. 8
1 लूक 7:12, 13
2 मत 9:23-26; मर 5:38-43; यूह 11:11; प्रेष 7:60; प्रेष 13:36
3 मर 5:41; लूक 7:14; यूह 11:43
4 उत 2:7; सभ 3:19; यश 42:5
5 मर 5:42
6 मर 7:35, 36

अध्य. 9
7 मर 6:7
8 मत 10:1
9 मत 10:9, 10; मर 6:8, 9; लूक 10:4
10 मत 10:11; मर 6:10; लूक 10:5, 7
11 मत 10:14; मर 6:11; लूक 10:10, 11; प्रेष 13:50, 51

दूसरा कॉल.
1 मत 11:1; मर 6:12, 13
2 मत 14:1, 2; मर 6:14-16
3 मर 8:27, 28; लूक 9:18, 19
4 मत 14:3, 10
5 लूक 23:8
6 मर 6:30
7 मत 14:13
8 मत 14:14; मर 6:34; यूह 6:2
9 मत 14:15-21; मर 6:35-44; यूह 6:5-13
10 2रा 4:42-44

पाँच रोटियों और दो मछलियों के सिवा
कुछ नहीं है। क्या तू यह चाहता है
कि हम खुद जाकर इन सब लोगों के
लिए खाना खरीदकर लाएँ?" **14** दर-
असल वहाँ करीब 5,000 आदमी थे।
यीशु ने अपने चेलों से कहा, "उन्हें
पचास-पचास की टोलियों में बिठा दो।"
15 उन्होंने ऐसा ही किया और सबको
बिठा दिया। **16** तब उसने पाँच रोटियाँ
और दो मछलियाँ लीं और आकाश की
तरफ देखकर प्रार्थना में धन्यवाद दिया।
फिर उन्हें तोड़कर चेलों को देने लगा
ताकि वे भीड़ के सामने परोस दें।
17 तब सब लोगों ने जी-भरकर खाया
और उन्होंने बचे हुए टुकड़े उठाए जिनसे
12 टोकरियाँ भर गयीं।[1]

18 बाद में जब यीशु अकेले में प्रार्थना
कर रहा था, तब चेले उसके पास
आए। उसने चेलों से पूछा, "लोग मेरे
बारे में क्या कहते हैं, मैं कौन हूँ?"[2]
19 उन्होंने कहा, "कुछ कहते हैं, यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाला, दूसरे कहते हैं एलि-
याह और कुछ कहते हैं पुराने ज़माने के
भविष्यवक्ताओं में से कोई ज़िंदा हो
गया है।"[3] **20** तब यीशु ने उनसे पूछा,
"लेकिन तुम क्या कहते हो, मैं कौन हूँ?"
पतरस ने जवाब दिया, "तू परमेश्वर का
भेजा हुआ मसीह है।"[4] **21** तब उसने
उन्हें सख्ती से कहा कि यह बात किसी
को न बताएँ[5] **22** और यह भी कहा,
"इंसान के बेटे को कई दुख-तकलीफें
सहनी पड़ेंगी और मुखिया, प्रधान याजक
और शास्त्री उसे ठुकरा देंगे और वह
मार डाला जाएगा।[6] फिर तीसरे दिन उसे
ज़िंदा कर दिया जाएगा।"[7]

23 तब यीशु ने सबसे कहा, "अगर
कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह
खुद से इनकार करे[8] और हर दिन
अपना यातना का काठ* उठाए और मेरे
पीछे चलता रहे।[1] **24** क्योंकि जो कोई
अपनी जान बचाना चाहता है वह उसे
खोएगा, मगर जो कोई मेरी खातिर
अपनी जान गँवाता है वही उसे बचाए-
गा।[2] **25** वाकई, अगर एक इंसान
सारी दुनिया हासिल कर ले मगर अपनी
जान गँवा बैठे या वह बरबाद हो जाए,
तो उसे क्या फायदा?[3] **26** इसलिए
कि जो कोई मेरा चेला होने और मेरे
वचनों पर विश्वास करने में शर्मिंदा मह-
सूस करता है, उसे इंसान का बेटा भी
उस वक्त स्वीकार करने में शर्मिंदा मह-
सूस करेगा जब वह अपनी, अपने पिता
की और पवित्र स्वर्गदूतों की महिमा के
साथ आएगा।[4] **27** मगर मैं तुमसे सच
कहता हूँ कि यहाँ जो खड़े हैं, उनमें से
कुछ ऐसे हैं जो तब तक मौत का मुँह नहीं
देखेंगे, जब तक कि वे परमेश्वर के राज
को न देख लें।"[5]

28 दरअसल यह कहने के करीब
आठ दिन बाद ऐसा हुआ कि वह पतरस,
यूहन्ना और याकूब को अपने साथ लेकर
प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर
चढ़ गया।[6] **29** जब वह प्रार्थना कर
रहा था, तो उसके चेहरे का रूप बदल
गया और उसके कपड़े सफेद होकर जग-
मगाने लगे। **30** और देखो! दो आदमी
उससे बात कर रहे थे। वे मूसा और
एलियाह थे। **31** वे पूरी महिमा के साथ
दिखायी दिए और यीशु की विदाई के बारे
में बात करने लगे, जो बहुत जल्द
यरूशलेम से होनेवाली थी।[7] **32** पत-
रस और उसके साथी नींद से बोझिल
थे। मगर जब वे पूरी तरह जाग गए,
तो उन्होंने यीशु की महिमा देखी[8] और
दो आदमियों को उसके साथ खड़ा देखा।

9:23 *शब्दावली देखें।

अध्य. 9

1 मत 14:20
मर 6:43
यूह 6:13

2 मत 16:13-16
मर 8:27-30

3 लूक 9:7, 8

4 मत 16:16
मर 8:29
यूह 1:41
यूह 6:68, 69

5 मत 16:20

6 यश 53:5, 8
लूक 17:25

7 मत 16:21
मर 8:31

8 फिल 3:7, 8

दूसरा कॉल.

1 मत 10:38
मत 16:24
मर 8:34
लूक 14:27

2 मत 16:25
मर 8:35
यूह 12:25
प्रेष 20:24
प्रक 2:10

3 मत 16:26
मर 8:36

4 मत 10:33
मर 8:38
2ती 2:12

5 मत 16:28
मर 9:1

6 मत 17:1-8
मर 9:2-8

7 लूक 9:22
लूक 13:33

8 2पत 1:16

33 जब वे दोनों यीशु के पास से जाने
लगे, तो पतरस ने उससे कहा, “गुरु, हम
बहुत खुश हैं कि हम यहाँ आए। इस-
लिए हमें तीन तंबू खड़े करने दे, एक तेरे
लिए, एक मूसा के लिए और एक एलि-
याह के लिए।” पतरस नहीं जानता था
कि वह क्या कह रहा है। **34** जब वह
बोल ही रहा था, तो एक बादल उभरा
और उन पर छाने लगा। बादल के
घिरने से वे घबरा गए। **35** उस बादल
में से आवाज़[1] आयी: “यह मेरा बेटा
है, जिसे मैंने चुना है।[2] इसकी सुनो।”[3]
36 जब वह आवाज़ आयी, तो उन्होंने
देखा कि यीशु वहाँ अकेला है। उन्होंने
वहाँ जो देखा था उसमें से एक भी बात
कुछ समय तक किसी को नहीं बतायी
और इस बारे में वे चुप रहे।[4]

37 अगले दिन जब वे पहाड़ से नीचे
उतरे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पास
आयी।[5] **38** तभी अचानक भीड़ में से
एक आदमी ने ज़ोर से पुकारा, “गुरु,
मैं तुझसे बिनती करता हूँ एक नज़र
मेरे बेटे को देख ले, वह मेरा एक ही
बेटा है।[6] **39** उसे एक दुष्ट स्वर्गदूत
जकड़ लेता है और अचानक वह चीखने
लगता है। वह दूत उसे ऐसे मरोड़ता है
कि वह झाग उगलने लगता है और
उसे घायल करने के बाद बड़ी मुश्किल
से छोड़ता है। **40** मैंने तेरे चेलों से उसे
निकालने की बिनती की मगर वे नहीं
निकाल सके।” **41** तब यीशु ने कहा,
“अरे अविश्वासी और टेढ़े लोगो,*[7] मैं
और कब तक तुम्हारे साथ रहूँ? कब तक
तुम्हारी सहूँ? अपने बेटे को यहाँ ला।”[8]
42 जब लड़का आ रहा था, तो दुष्ट
स्वर्गदूत ने उसे ज़मीन पर पटक दिया
और बुरी तरह मरोड़ा। लेकिन यीशु
ने उस दुष्ट स्वर्गदूत को फटकारा और
लड़के को ठीक कर दिया और उसके
पिता को सौंप दिया। **43** परमेश्वर की
यह महाशक्ति देखकर सब लोग दंग
रह गए।

जब वे उसके सब कामों पर ताज्जुब
कर रहे थे, तो उसने अपने चेलों से कहा,
44 “मैं जो बताने जा रहा हूँ उस पर कान
लगाओ। इंसान के बेटे के साथ विश्वास-
घात किया जाएगा और उसे लोगों के
हवाले कर दिया जाएगा।”[1] **45** मगर
चेले अब भी उसकी बात का मतलब नहीं
समझे थे। दरअसल इस बात का मतलब
उनसे छिपाया गया था ताकि वे इसे समझ
न सकें और वे इस बारे में उससे सवाल
पूछने से भी डर रहे थे।

46 इसके बाद उनमें यह बहस छिड़
गयी कि उनमें सबसे बड़ा कौन है।[2]
47 तब यीशु ने यह जानते हुए कि
वे अपने दिलों में क्या सोच रहे हैं, एक
छोटे बच्चे को अपने पास खड़ा किया
48 और उनसे कहा, “जो कोई मेरे नाम
से इस छोटे बच्चे को स्वीकार करता है
वह मुझे भी स्वीकार करता है। और जो
मुझे स्वीकार करता है वह उसे भी
स्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।[3]
इसलिए कि तुममें से जो अपने आपको
बाकियों से छोटा समझकर चलता है, वही
तुम सब में बड़ा है।”[4]

49 यूहन्ना ने कहा, “गुरु, हमने देखा
कि एक आदमी तेरा नाम लेकर लोगों
में समाए दुष्ट स्वर्गदूतों को निकाल
रहा था और हमने उसे रोकने की
कोशिश की, क्योंकि वह हमारे साथ
नहीं चलता।”[5] **50** मगर यीशु ने उससे
कहा, “उसे रोकने की कोशिश मत करो
क्योंकि जो तुम्हारे खिलाफ नहीं, वह
तुम्हारे साथ है।”

9:41 *शा., “पीढ़ी।”

अध्य. 9
1 लूक 3:22; यूह 12:28
2 भज 2:7; यश 42:1; मत 3:17; 2पत 1:17
3 व्य 18:15; मत 17:5; मर 9:7; प्रेष 3:22, 23
4 मत 17:9; मर 9:9
5 मर 9:14, 15
6 मत 17:14-16; मर 9:17, 18
7 व्य 32:5
8 मत 17:17, 18; मर 9:19-27

दूसरा कॉल.
1 मत 17:22, 23; मर 9:31, 32; लूक 18:31-33
2 मत 18:1-5; मर 9:33-37; लूक 22:24
3 मर 9:37; यूह 12:44
4 नीत 18:12; मत 18:4, 5; मत 23:11, 12
5 मर 9:38-40

51 जब वह वक्त पास आ रहा था[*] कि वह ऊपर उठा लिया जाए,[1] तब उसने यरूशलेम जाने की ठान ली। **52** इसलिए उसने कुछ चेलों को अपने आगे-आगे भेजा। वे सामरियों के एक गाँव में गए ताकि उसके लिए तैयारियाँ करें। **53** मगर गाँववालों ने यीशु को कोई जगह नहीं दी[2] क्योंकि वह यरूशलेम जाने की ठान चुका था।[*] **54** यह देखकर चेले याकूब और यूहन्ना[3] ने कहा, "प्रभु अगर तेरी इजाज़त हो, तो क्या हम हुक्म दें कि आकाश से आग बरसे और इन्हें भस्म कर दे?"[4] **55** मगर उसने पलटकर उन्हें डाँटा। **56** तब वे किसी और गाँव में चले गए।

57 जब वे सड़क पर जा रहे थे, तो किसी ने यीशु से कहा, "तू जहाँ कहीं जाएगा मैं तेरे साथ चलूँगा।" **58** मगर यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों की माँदें और आकाश के पंछियों के बसेरे होते हैं, मगर इंसान के बेटे के पास कहीं सिर टिकाने की भी जगह नहीं है।"[5] **59** तब उसने एक और से कहा, "मेरा चेला बन जा।" उस आदमी ने कहा, "प्रभु, मुझे इजाज़त दे कि मैं जाकर पहले अपने पिता को दफना दूँ।"[6] **60** मगर यीशु ने उससे कहा, "मुरदों[7] को अपने मुरदे दफनाने दे, मगर तू जाकर परमेश्वर के राज का ऐलान कर।"[8] **61** फिर किसी और ने कहा, "हे प्रभु, मैं तेरा चेला ज़रूर बनूँगा, मगर मुझे इजाज़त दे कि पहले अपने घरवालों को अलविदा कह दूँ।" **62** यीशु ने उससे कहा, "कोई भी इंसान जो हल पर हाथ रखने के बाद, पीछे छोड़ी हुई चीज़ों को मुड़कर देखता है,[9] वह परमेश्वर के राज के लायक नहीं।"[10]

9:51 [*]शा., "जब दिन पूरे होने पर थे।"
9:53 [*]शा., "का रुख किया।"

अध्य. 9
1 प्रेष 1:1, 2; 1ती 3:16
2 यूह 4:9
3 मर 3:17
4 2रा 1:10
5 मत 8:20
6 मत 8:21
7 इफ 2:1
8 मत 8:22
9 उत 19:17
10 मत 10:37; 1कुर 9:24; फिल 3:13

दूसरा कॉल.

अध्य. 10
1 मर 6:7
2 मत 9:37, 38; 1कुर 3:9; 2थि 3:1
3 मत 10:16
4 मत 10:9, 10; लूक 9:3
5 मत 10:12, 13
6 मत 10:11; लूक 9:4
7 गल 6:6
8 मत 10:9, 10; 1कुर 9:11, 14; 1ती 5:18
9 मत 3:1, 2; लूक 9:2
10 मत 10:14; लूक 9:5; प्रेष 13:50, 51

10 इसके बाद प्रभु ने 70 और चेले चुने और जिस-जिस शहर और इलाके में वह खुद जानेवाला था, वहाँ उन्हें दो-दो की जोड़ियों में अपने आगे भेजा।[1] **2** वह उनसे कहने लगा, "बेशक, कटाई के लिए फसल बहुत है मगर मज़दूर थोड़े हैं। इसलिए खेत के मालिक से बिनती करो कि वह कटाई के लिए और मज़दूर भेजे।[2] **3** जाओ, मगर देखो! मैं तुम्हें मेम्नों की तरह भेड़ियों के बीच भेज रहा हूँ।[3] **4** अपने साथ पैसों की थैली मत लेना, न खाने की पोटली, न ही जूतियाँ लेना[4] और रास्ते में किसी को नमस्कार मत करना।[*] **5** जब तुम किसी घर में जाओ तो पहले कहो, 'इस घर में शांति हो।'[5] **6** अगर वहाँ कोई शांति चाहनेवाला हो, तो तुम्हारी शांति उस पर बनी रहेगी। लेकिन अगर न हो तो तुम्हारी शांति तुम्हारे पास लौट आएगी। **7** इसलिए उसी घर में रहो[6] और जो कुछ वे तुम्हें दें, वह खाओ-पीओ[7] क्योंकि काम करनेवाला मज़दूरी पाने का हकदार है।[8] अपने ठहरने के लिए घर-पर-घर बदलते मत रहना।

8 जब तुम किसी शहर में जाओ और लोग तुम्हें अपने यहाँ ठहराएँ, तो वे तुम्हारे आगे जो खाना परोसें उसे खाओ, **9** वहाँ बीमारों को ठीक करो और प्रचार करो कि 'परमेश्वर का राज तुम्हारे पास आ गया है।'[9] **10** लेकिन जब किसी शहर में लोग तुम्हें अपने यहाँ न ठहराएँ तो वहाँ के चौराहों में जाओ और कहो, **11** 'तुम्हारे शहर की धूल तक जो हमारे पैरों में लगी है, हम पोंछ डालते हैं ताकि यह तुम्हारे खिलाफ गवाही दे।[10] फिर भी

10:4 [*]या "नमस्कार करके गले न लगाना।"

याद रखो कि परमेश्वर का राज पास आ
गया है।’ 12 मैं तुमसे कहता हूँ कि उस
दिन सदोम का हाल उस शहर के हाल से
ज़्यादा सहने लायक होगा।[1]

13 हे खुराजीन, धिक्कार है तुझ पर!
हे बैतसैदा, धिक्कार है तुझ पर! क्योंकि
जो शक्तिशाली काम तुममें हुए थे, अगर
वे सोर और सीदोन में हुए होते, तो वहाँ
के लोगों ने टाट ओढ़कर और राख में
बैठकर कब का पश्चाताप कर लिया
होता।[2] 14 इसलिए न्याय के वक्त,
सोर और सीदोन का हाल तुम्हारे हाल
से ज़्यादा सहने लायक होगा। 15 और
कफरनहूम तू, तू क्या सोचता है कि तुझे
आकाश तक ऊँचा किया जाएगा? तू तो
नीचे कब्र में जाएगा!

16 जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी भी
सुनता है।[3] जो तुम्हें ठुकराता है, वह मुझे
भी ठुकराता है। जो मुझे ठुकराता है, वह
उस परमेश्वर को भी ठुकराता है जिसने
मुझे भेजा है।”[4]

17 इसके बाद वे 70 चेले खुशी-खुशी
लौटे और कहने लगे, “प्रभु, तेरा नाम
लेने से दुष्ट स्वर्गदूत भी हमारे अधीन हो
रहे हैं।”[5] 18 तब यीशु ने उनसे कहा,
“मैं देख सकता हूँ कि शैतान बिजली
की तरह आकाश से गिर चुका है।[6]
19 देखो! मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं
को पैरों तले रौंदने और दुश्मन की ताकत
पर काबू पाने का अधिकार दिया है[7] और
कोई भी चीज़ तुम्हें नुकसान नहीं पहुँ-
चाएगी। 20 फिर भी इस बात से खुश
मत हो कि स्वर्गदूत तुम्हारे अधीन किए
जा रहे हैं, मगर इस बात पर खुशी
मनाओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे गए
हैं।”[8] 21 उसी घड़ी वह पवित्र शक्ति
से भर गया और खुशी से फूला नहीं
समाया और बोला, “हे पिता, स्वर्ग और
पृथ्वी के मालिक, मैं सबके सामने तेरी
बड़ाई करता हूँ कि तूने ये बातें बुद्धि-
मानों और ज्ञानियों[1] से तो बड़े ध्यान से
छिपाए रखीं, मगर नन्हे-मुन्नों पर प्रकट
की हैं। क्योंकि हे पिता, तुझे यही तरीका
मंज़ूर है।[2] 22 मेरे पिता ने सबकुछ मेरे
हाथ में सौंपा है। बेटा कौन है, यह कोई
नहीं जानता सिवा पिता के। और पिता
कौन है, यह कोई नहीं जानता सिवा बेटे
के[3] और उसके, जिस पर बेटा उसे प्रकट
करना चाहे।”[4]

23 तब उसने मुड़कर अपने चेलों से
अकेले में कहा, “सुखी हैं वे जिनकी आँखें
वह सब देखती हैं जो तुम देख रहे हो।[5]
24 क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, बहुत-से
भविष्यवक्ताओं और राजाओं ने चाहा था
कि वह सब देखें जो तुम देख रहे हो, मगर
नहीं देख सके[6] और वे बातें सुनें जो तुम
सुन रहे हो, मगर नहीं सुन सके।”

25 इसके बाद, एक आदमी जो
कानून का अच्छा जानकार था, यीशु की
परीक्षा लेने के लिए खड़ा हुआ। उसने
कहा, “गुरु, हमेशा की ज़िंदगी का वारिस
बनने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?”[7]
26 यीशु ने कहा, “कानून में क्या लिखा
है? तूने क्या पढ़ा है?” 27 उसने जवाब
दिया, “‘तुम अपने परमेश्वर यहोवा*
से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान,#
अपनी पूरी ताकत और अपने पूरे दिमाग
से प्यार करना,’[8] और ‘अपने पड़ोसी से
वैसे ही प्यार करना जैसे तुम खुद से करते
हो।’”[9] 28 यीशु ने कहा, “तूने सही
जवाब दिया। ऐसा ही करता रह और तू
जीवन पाएगा।”[10]

29 मगर उस आदमी ने खुद को
नेक साबित करने[11] के इरादे से यीशु से

अध्य. 10
1 मत 11:24
2 मत 11:21-23
3 मत 10:40; मर 9:37; यूह 13:20
4 यूह 5:23; यूह 12:48; यूह 15:23
5 प्रेष 16:17, 18
6 यूह 12:31; यूह 16:11; इब्र 2:14; प्रक 12:7-9
7 भज 91:13
8 निर्ग 32:32; दान 12:1; फिल 4:3; प्रक 3:5

दूसरा कॉल.
1 1कुर 1:19; 1कुर 2:6
2 मत 11:25, 26
3 यूह 10:15
4 मत 11:27; यूह 1:18; 2कुर 4:6
5 मत 13:16, 17
6 1पत 1:10, 11
7 मत 19:16; मर 10:17; लूक 18:18
8 व्य 6:5; व्य 10:12; यह 22:5; मर 12:30
9 लैव 19:18; मत 19:19; रोम 13:9; गल 5:14; याकू 2:8
10 लैव 18:5; यूह 17:3
11 लूक 16:15

10:27 *अति. क5 देखें। #शब्दावली में “जीवन” देखें।

पूछा, "असल में मेरा पड़ोसी कौन है?" **30** यीशु ने कहा, "एक आदमी यरूशलेम से नीचे उतरकर यरीहो जा रहा था और लुटेरों ने उसे घेर लिया। उन्होंने उसके कपड़े उतरवा लिए और उसका सबकुछ छीनकर उसे बहुत मारा और अधमरा छोड़कर वहाँ से चले गए। **31** इत्तफाक से एक याजक उसी सड़क से नीचे जा रहा था, मगर जब उसने उस आदमी को पड़ा देखा, तो सड़क की दूसरी तरफ से निकल गया। **32** उसी तरह, जब एक लेवी भी वहाँ से जा रहा था और उसने उस आदमी को देखा, तो सड़क की दूसरी तरफ से निकल गया। **33** मगर फिर एक सामरी[1] उस सड़क से गुज़रा और जब उसने उस आदमी को देखा तो उसका दिल तड़प उठा। **34** वह उसके पास गया और उसके घावों पर तेल और दाख-मदिरा डालकर पट्टियाँ बाँधी। फिर वह उसे अपने गधे पर लादकर एक सराय में ले आया और उसकी देखभाल की। **35** अगले दिन उसने सरायवाले को दो दीनार* देते हुए कहा, 'इस आदमी की देखभाल करना और इसके अलावा जो भी खर्च होगा, वह मैं लौटकर तुझे दे दूँगा।' **36** अब बता, तुझे क्या लगता है, उन तीनों में से किसने उस आदमी का पड़ोसी होने का फर्ज़ निभाया,[2] जिसे लुटेरों ने घेर लिया था?" **37** उसने कहा, "वही जिसने उस पर दया की और उसकी मदद की।"[3] तब यीशु ने उससे कहा, "जा और तू भी ऐसा ही कर।"[4]

38 फिर वे आगे बढ़े और एक गाँव में गए। वहाँ मारथा[5] नाम की एक औरत थी, जिसने उसे अपने घर मेहमान ठहराया। **39** उसकी एक बहन भी थी, जिसका नाम मरियम था। वह नीचे प्रभु के पैरों के पास बैठकर उसकी बातें सुन रही थी। **40** मगर मारथा का ध्यान बहुत-सी तैयारियाँ करने में बँटा हुआ था। इसलिए वह यीशु के पास आयी और बोली, "प्रभु, क्या तुझे परवाह नहीं कि मेरी बहन ने सारा काम मुझ अकेली पर छोड़ दिया है? उससे बोल कि आकर मेरा हाथ बँटाए।" **41** प्रभु ने उससे कहा, "मारथा, मारथा, तू बहुत बातों की चिंता कर रही है और परेशान हो रही है। **42** असल में थोड़ी ही चीज़ों की ज़रूरत है या बस एक ही काफी है। जहाँ तक मरियम की बात है, उसने अच्छा* भाग चुना है[1] और वह उससे नहीं छीना जाएगा।"

11 फिर ऐसा हुआ कि यीशु किसी जगह प्रार्थना कर रहा था। जब वह प्रार्थना कर चुका, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, "प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया था, तू भी हमें प्रार्थना करना सिखा।"

2 तब उसने कहा, "जब भी तुम प्रार्थना करो तो कहो: 'हे पिता, तेरा नाम पवित्र किया जाए।*[2] तेरा राज आए।[3] **3** हर दिन की रोटी हमें देता रह।[4] **4** हमारे पाप माफ कर दे,[5] इसलिए कि जो भी हमारे खिलाफ पाप करके हमारा कर्ज़दार बन जाता है, हम भी उसे माफ करते हैं।[6] और परीक्षा आने पर हमें गिरने न दे।'"[7]

5 फिर यीशु ने उनसे कहा, "मान लो तुम्हारा एक दोस्त है और तुम आधी रात को जाकर उससे कहते हो, 'दोस्त, मुझे तीन रोटी उधार दे दे, **6** क्योंकि

अध्य. 10
1 यूह 4:9
2 मत 19:19
3 नीत 14:21
4 लूक 6:36; यूह 13:17; इफ 4:32
5 यूह 12:2

दूसरा कॉल.
1 मत 4:4; मत 6:33

अध्य. 11
2 लैव 22:32; यश 5:16; यहे 36:23
3 दान 2:44; दान 7:13, 14; मत 6:9-13
4 भज 37:25
5 भज 79:9; दान 9:19
6 मर 11:25; इफ 4:32; कुल 3:13
7 लूक 22:46; 1कुर 10:13; याकू 1:13; प्रक 3:10

10:35 *अति. ख14 देखें।

10:42 *या "सबसे बढ़िया।" 11:2 *या "पवित्र माना जाए; समझा जाए।"

मेरा एक दोस्त सफर से अभी-अभी मेरे घर आया है और मेरे पास उसे खिलाने के लिए कुछ भी नहीं है।' **7** मगर वह अंदर से जवाब देता है, 'मुझे परेशान मत कर। दरवाज़ा बंद हो चुका है और मेरे बच्चे मेरे साथ बिस्तर पर सो रहे हैं। मैं उठकर तुझे कुछ नहीं दे सकता।' **8** मैं तुमसे कहता हूँ, वह उसे दोस्ती की खातिर न सही, मगर यह देखकर कि वह बिना शर्म के माँगता ही जा रहा है,[1] ज़रूर उठेगा और उसे जो चाहिए देगा। **9** इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, माँगते रहो[2] तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूँढ़ते रहो तो तुम पाओगे। खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।[3] **10** क्योंकि हर कोई जो माँगता है, उसे मिलता है[4] और हर कोई जो ढूँढ़ता है, वह पाता है और हर कोई जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा। **11** आखिर तुममें ऐसा कौन-सा पिता है जिसका बेटा अगर उससे मछली माँगे, तो उसे मछली की जगह साँप थमा दे?[5] **12** या अगर वह अंडा माँगे, तो उसे बिच्छू थमा दे? **13** इसलिए जब तुम दुष्ट होकर भी अपने बच्चों को अच्छे तोहफे देना जानते हो तो तुम्हारा पिता, जो स्वर्ग में है, और भी बढ़कर अपने माँगनेवालों को पवित्र शक्ति* क्यों न देगा!"[6]

14 बाद में, यीशु ने एक आदमी में से दुष्ट स्वर्गदूत निकाला, जिसने उस आदमी को गूँगा कर दिया था।[7] जब दुष्ट स्वर्गदूत निकल गया तो वह आदमी बोलने लगा। यह देखकर भीड़ हैरान रह गयी।[8] **15** मगर उनमें से कुछ ने कहा, "वह दुष्ट स्वर्गदूतों के राजा बाल-ज़बूल* की मदद से दुष्ट स्वर्गदूत निकालता है।"[1] **16** जबकि दूसरे लोग यीशु की परीक्षा लेने के लिए उससे स्वर्ग से एक चिन्ह माँगने लगे।[2] **17** यीशु जानता था कि वे क्या सोच रहे हैं[3] इसलिए उसने उनसे कहा, "जिस राज में फूट पड़ जाए, वह बरबाद हो जाएगा और जिस घर में फूट पड़ जाए वह नाश हो जाएगा। **18** उसी तरह अगर शैतान अपने ही खिलाफ हो जाए, तो उसका राज कैसे टिकेगा? क्योंकि तुम कहते हो कि मैं बाल-ज़बूल की मदद से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालता हूँ। **19** अगर मैं बाल-ज़बूल की मदद से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालता हूँ, तो तुम्हारे बेटे किसकी मदद से इन्हें निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारे न्यायी ठहरेंगे। **20** लेकिन अगर मैं परमेश्वर की पवित्र शक्ति*[4] से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालता हूँ, तो इसका मतलब परमेश्वर का राज तुम्हारे हाथ से निकल चुका है।[5] **21** जब कोई ताकतवर आदमी सारे हथियार लेकर अपने घर की रखवाली करता है, तो उसकी जायदाद कोई नहीं ले सकता। **22** मगर जब कोई उससे भी ताकतवर आदमी उस पर हमला करके उसे हरा देता है, तो वह उसके सारे हथियार छीन लेता है जिन पर उसे भरोसा था और उसकी जायदाद लूटकर बाँट देता है। **23** जो मेरी तरफ नहीं है, वह मेरे खिलाफ है और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह तितर-बितर कर देता है।[6]

24 जब एक दुष्ट स्वर्गदूत किसी आदमी से बाहर निकल आता है, तो आराम करने की जगह ढूँढ़ने के लिए सूखे इलाकों में फिरता है, मगर जब उसे कोई जगह नहीं मिलती, तो कहता है, 'मैं

अध्य. 11
1 लूक 18:5
2 रोम 12:12
3 मत 7:7, 8
4 मर 11:24, यूह 15:7, याकू 1:6, 1यूह 3:22, 1यूह 5:14
5 मत 7:9, 10
6 मत 7:11, याकू 1:17
7 मत 12:22
8 मत 9:32-34

दूसरा कॉल.
1 मत 12:24-30, मर 3:22-27
2 मत 12:38, मर 8:11
3 यूह 2:24, 25
4 निर्ग 8:19
5 मत 12:28, लूक 17:21
6 मत 12:30

11:13 *शब्दावली में "रुआख; नफ्मा" देखें। **11:15** *शैतान को दिया एक नाम। **11:20** *शा., "उँगली।"

अपने जिस घर से निकला था उसमें फिर
लौट जाऊँगा।’[1] **25** वह आकर पाता
है कि वह घर साफ-सुथरा और सजा हुआ
है। **26** तब वह जाकर सात और स्वर्ग-
दूतों को लाता है जो उससे भी दुष्ट हैं।
फिर वे सब उस आदमी में समाकर वहीं
बस जाते हैं। तब उस आदमी की हालत
पहले से भी बदतर हो जाती है।”

27 जब वह ये बातें बता रहा था, तो
भीड़ में से किसी औरत ने ऊँची आवाज़ में
उससे कहा, “सुखी है वह औरत जिसकी
कोख में तू रहा और जिसका तूने दूध
पीया!”[2] **28** मगर यीशु ने कहा, “नहीं,
इसके बजाय सुखी हैं वे जो परमेश्वर का
वचन सुनते हैं और उस पर चलते हैं!”[3]

29 जब भीड़ बढ़ने लगी, तो उसने
कहा, “यह एक दुष्ट पीढ़ी है जो एक
चिन्ह देखना चाहती है। मगर इसे योना
के चिन्ह को छोड़ और कोई चिन्ह नहीं
दिया जाएगा।[4] **30** इसलिए कि जिस
तरह योना[5] नीनवे के लोगों के लिए एक
चिन्ह ठहरा था, उसी तरह इंसान का
बेटा भी इस पीढ़ी के लिए चिन्ह ठह-
रेगा। **31** दक्षिण की रानी[6] को न्याय
के वक्त इस पीढ़ी के लोगों के साथ
उठाया जाएगा और वह इन्हें दोषी ठह-
राएगी क्योंकि वह सुलैमान की बुद्धि की
बातें सुनने के लिए पृथ्वी के छोर से आयी
थी। मगर देखो! यहाँ वह मौजूद है जो
सुलैमान से भी बढ़कर है।[7] **32** नीनवे
के लोग न्याय के वक्त इस पीढ़ी के साथ
उठेंगे और इसे दोषी ठहराएँगे क्योंकि
उन्होंने योना का प्रचार सुनकर पश्चाताप
किया था।[8] मगर देखो! यहाँ वह मौजूद
है जो योना से भी बढ़कर है। **33** एक
इंसान दीपक जलाकर उसे आड़ में नहीं
रखता, न ही टोकरी* से ढककर रखता
है, मगर दीवट पर रखता है[1] ताकि अंदर
आनेवालों को रौशनी मिले। **34** तेरी
आँख तेरे शरीर का दीपक है। अगर तेरी
आँख एक ही चीज़ पर टिकी है,* तो तेरा
सारा शरीर रौशन है। लेकिन अगर तेरी
आँखों में ईर्ष्या भरी है,# तो तेरा सारा
शरीर अंधकार से भरा है।[2] **35** ध्यान
रहे कि तुम्हें रौशनी देनेवाली आँख कहीं
अँधेरे में न हो। **36** इसलिए अगर तेरा
सारा शरीर रौशन है और उसका कोई भी
हिस्सा अंधकार में नहीं, तो पूरा शरीर
ऐसा रौशन होगा, जैसे एक दीपक अपनी
किरणों से तुम्हें रौशनी देता है।”

37 जब वह यह कह चुका, तो एक
फरीसी ने उससे गुज़ारिश की कि वह
उसके यहाँ खाने पर आए। इसलिए
वह उसके घर गया और खाने बैठा।*
38 लेकिन फरीसी को यह देखकर
हैरानी हुई कि उसने खाने से पहले हाथ
नहीं धोए।*[3] **39** मगर प्रभु ने उससे
कहा, “हे फरीसियो, तुम उन प्यालों और
थालियों की तरह हो जिन्हें सिर्फ बाहर से
साफ किया जाता है, मगर अंदर से वे गंदे
हैं। तुम्हारे अंदर लालच और दुष्टता भरी
हुई है।[4] **40** अरे अक्ल के दुश्मनो!
जिसने बाहर से बनाया है, क्या उसी ने
अंदर से नहीं बनाया? **41** इसलिए तुम
जो दान* देते हो वह दिल से दो, तब
तुम पूरी तरह शुद्ध ठहरोगे। **42** मगर
धिक्कार है तुम फरीसियों पर! क्योंकि
तुम पुदीने, सुदाब और इस तरह के हर
साग-पात* का दसवाँ हिस्सा तो देते हो,[5]

11:33 *या “नापने की टोकरी।”

11:34 *या “साफ-साफ देखती है।” शा., “सादी।” #शा., “आँख बुरी; दुष्ट है।” **11:37** *या “मेज़ से टेक लगाकर बैठा।” **11:38** *यानी रिवाज़ के मुताबिक हाथ नहीं धोए। **11:41** *शा., “दया के दान।” शब्दावली देखें। **11:42** *या “हर तरह की सब्ज़ी।”

अध्य. 11

1 मत 12:43-45
2 लूक 1:46-48
3 व्य 29:9
भज 1:1, 2
भज 112:1
भज 119:2
मत 7:21
याकू 1:25
4 मत 12:38-42
मत 16:4
5 यो 1:17
6 1रा 10:1
2इत 9:1
7 मत 12:42
8 यो 3:5

दूसरा कॉल.

1 मत 5:15
मर 4:21
लूक 8:16
2 मत 6:22, 23
3 मत 15:2
4 मत 23:25, 26
5 लैव 27:30

मगर न्याय और परमेश्‍वर से प्यार करने
की आज्ञा को कोई अहमियत नहीं देते।
माना कि यह सब देना तुम्हारा फ़र्ज़ है,
मगर तुम्हें उन दूसरी बातों को भी तुच्छ
नहीं समझना चाहिए।[1] **43** धिक्कार है
तुम फरीसियों पर! क्योंकि तुम्हें सभा-घरों
में सबसे आगे की* जगहों पर बैठना और
बाज़ारों में लोगों से नमस्कार सुनना पसंद
है![2] **44** धिक्कार है तुम पर! क्योंकि
तुम उन कब्रों* जैसे हो जो ऊपर से
दिखायी नहीं देतीं,#[3] इसलिए लोग उन
पर चलते-फिरते हैं और उन्हें पता ही नहीं
चलता!”

45 यह सुनकर कानून के एक जान-
कार ने उससे कहा, “गुरु, यह सब कह-
कर तू हमारी बेइज़्ज़ती कर रहा है।”
46 तब यीशु ने कहा, “अरे कानून के
जानकारो, तुम पर भी धिक्कार है!
क्योंकि तुम ऐसे नियम बनाते हो जो लोगों
पर भारी बोझ की तरह हैं, मगर तुम खुद
इस बोझ को उठाने के लिए अपनी एक
उँगली तक नहीं लगाते![4]

47 धिक्कार है तुम पर, क्योंकि तुम
भविष्यवक्‍ताओं की कब्रें* बनवाते हो,
जबकि तुम्हारे पुरखों ने उन्हें मार डाला
था![5] **48** बेशक तुम अपने पुरखों की
करतूतें जानते हो, फिर भी तुम उन्हें सही
बताते हो। उन्होंने भविष्यवक्‍ताओं को मार
डाला था[6] और तुम उन्हीं भविष्यवक्‍ताओं
की कब्रें बनाते हो। **49** इसलिए पर-
मेश्‍वर ने अपनी बुद्धि की बदौलत*
कहा, ‘मैं उनके पास भविष्यवक्‍ताओं और
प्रेषितों को भेजूँगा और वे उनमें से कुछ
पर ज़ुल्म करेंगे और कुछ को मार डालेंगे
50 ताकि दुनिया की शुरूआत से जितने
भविष्यवक्‍ताओं का खून बहाया गया है
उनके खून का दोष इस पीढ़ी पर आए,*[1]
51 यानी हाबिल के खून[2] से लेकर जकर-
याह के खून तक, जिसे वेदी और मंदिर के
बीच मार डाला गया था।’[3] हाँ, मैं तुमसे
कहता हूँ कि उन सबके खून का दोष इस
पीढ़ी पर आएगा।*

52 धिक्कार है तुम पर जो कानून
के जानकार हो, क्योंकि तुमने वह चाबी
लेकर रख ली है, जो परमेश्‍वर के बारे
में ज्ञान का दरवाज़ा खोलती है। तुम खुद
उस दरवाज़े के अंदर नहीं गए और जो
जा रहे हैं उन्हें भी तुम रोक देते हो!”[4]

53 जब यीशु वहाँ से बाहर निकला,
तो शास्त्री और फरीसी बुरी तरह उसके
पीछे पड़ गए और उन्होंने उसके सामने
सवालों की झड़ी लगा दी। **54** वे इस
ताक में थे कि उसके मुँह से कोई ऐसी बात
निकले जिससे वे उसे पकड़ सकें।[5]

12 इस बीच लोग हज़ारों की तादाद
में वहाँ इकट्ठा हो चुके थे, यहाँ
तक कि वे एक-दूसरे पर चढ़े जा रहे
थे। वह अपने चेलों से कहने लगा,
“फरीसियों के खमीर से, उनके कपट
से चौकन्ने रहो।[6] **2** लेकिन ऐसी कोई
बात नहीं जो बड़ी सावधानी से छिपायी
गयी हो और जो सामने न लायी जाए
और जिसे राज़ रखा गया हो और
जाना न जाए।[7] **3** इसलिए जो कुछ
तुम अँधेरे में कहते हो वह उजाले में
सुना जाएगा और जो तुम अंदर के कमरों
में फुसफुसाकर कहते हो उसका घर की
छतों पर चढ़कर ऐलान किया जाएगा।

11:43 *या “सबसे बढ़िया।” **11:44** *या “स्मारक कब्रों।” #या “जिन पर कोई निशानी नहीं होती।” **11:47** *या “स्मारक कब्रें।” **11:49** *शा., “परमेश्‍वर की बुद्धि ने।”

11:50 *या “खून का हिसाब माँगा जाए।” **11:51** *या “खून का हिसाब माँगा जाएगा।”

अध्य. 11
1 मत 23:23, 24
यूह 7:24
2 मत 23:6, 7
3 मत 23:27, 28
4 मत 23:2, 4
5 मत 23:29-31
6 प्रेष 7:52
इब्र 11:32, 37

दूसरा कॉल.
1 प्रक 18:21, 24
2 उत 4:8, 10
3 2इत 24:
20-22
4 मत 23:13
1थि 2:14-16
5 लूक 20:20

अध्य. 12
6 मत 16:6
मर 8:15
7 मत 10:26, 27
मर 4:22
लूक 8:17

4 मेरे दोस्तो,[1] मैं तुमसे कहता हूँ, उनसे
मत डरो जो तुम्हारे शरीर को नष्ट कर
सकते हैं और इससे ज़्यादा कुछ नहीं कर
सकते।[2] 5 मगर मैं तुम्हें बताता हूँ कि
तुम्हें किससे डरना चाहिए। उससे डरो
जिसके पास न सिर्फ तुम्हें मार डालने का,
बल्कि इसके बाद तुम्हें गेहन्ना* में फेंकने
का भी अधिकार है।[3] हाँ मैं तुमसे
कहता हूँ, उसी से डरो।[4] 6 क्या दो
पैसे* में पाँच चिड़ियाँ नहीं बिकतीं? मगर
उनमें से एक भी ऐसी नहीं जिसे परमेश्वर
भूल जाए।#[5] 7 मगर तुम्हारे सिर का
एक-एक बाल तक गिना हुआ है।[6] इस-
लिए मत डरो, तुम बहुत-सी चिड़ियों से
कहीं ज़्यादा अनमोल हो।[7]

8 मैं तुमसे कहता हूँ, जो कोई लोगों
के सामने मुझे स्वीकार करता है,[8] इंसान
का बेटा भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों के
सामने उसे स्वीकार करेगा।[9] 9 मगर
जो कोई लोगों के सामने मेरा इन-
कार करता है, मैं भी परमेश्वर के
स्वर्गदूतों के सामने उसका इनकार कर
दूँगा।[10] 10 जो कोई इंसान के बेटे के
खिलाफ कुछ कहता है उसे माफ कर
दिया जाएगा, मगर जो पवित्र शक्ति के
खिलाफ निंदा की बातें बोलता है उसे माफ
नहीं किया जाएगा।[11] 11 जब वे तुम्हें
जनता की सभाओं,* सरकारी अफसरों
और अधिकारियों के सामने ले जाएँ, तो
यह चिंता मत करना कि अपनी सफाई में
तुम क्या कहोगे और कैसे कहोगे।[12]
12 इसलिए कि पवित्र शक्ति उसी घड़ी
तुम्हें वे सारी बातें सिखा देगी जो तुम्हें
बोलनी चाहिए।"[13]

12:5 *शब्दावली देखें। **12:6** *शा., "दो असारियन।" अति. ख14 देखें। #या "अन-देखा करे।" **12:11** *या "सभा-घरों के सामने।"

13 तब भीड़ में से किसी ने उससे
कहा, "गुरु, मेरे भाई से बोल कि वह
हमारी विरासत का बँटवारा कर दे।"
14 यीशु ने उससे कहा, "किसने मुझे तुम
लोगों का न्यायी या बँटवारा करनेवाला
ठहराया है?" 15 फिर उसने भीड़ से
कहा, "तुम अपनी आँखें खुली रखो और
हर तरह के लालच से खुद को बचाए
रखो,[1] क्योंकि चाहे इंसान के पास
बहुत कुछ हो, तो भी उसकी दौलत
उसे ज़िंदगी नहीं दे सकती।"[2] 16 फिर
उसने यह मिसाल दी, "किसी दौलतमंद
आदमी की ज़मीन से बहुत उपज हुई।
17 वह मन-ही-मन सोचने लगा, 'मेरे
पास अपनी फसल रखने के लिए और
जगह नहीं है, इसलिए अब क्या करना
ठीक रहेगा?' 18 फिर उसने कहा,
'एक काम करता हूँ,[3] अपने गोदाम
तुड़वाकर और भी बड़े गोदाम बन-
वाता हूँ। फिर वहीं अपना सारा अनाज
और सारी चीज़ें जमा करूँगा। 19 और
खुद से कहूँगा, "तेरे पास कई सालों के
लिए बहुत सारी अच्छी चीज़ें जमा हैं।
अब चैन से जी, खा-पी और मौज कर।"'
20 मगर परमेश्वर ने उससे कहा, 'अरे
मूर्ख, आज रात ही तेरी ज़िंदगी तुझसे
छीन ली जाएगी।* फिर जो कुछ तूने
बटोरा है वह किसका होगा?'[4] 21 उस
इंसान के साथ भी ऐसा ही होता है,
जो धन-दौलत बटोरने में लगा रहता है
मगर परमेश्वर की नज़र में कंगाल है।"[5]

22 फिर उसने अपने चेलों से कहा,
"इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, अपने
जीवन के लिए चिंता करना छोड़ दो कि
तुम क्या खाओगे, न ही अपने शरीर के
लिए चिंता करो कि तुम क्या पहनोगे।[6]

12:20 *या "वे तेरी ज़िंदगी की माँग कर रहे हैं।"

अध्य. 12
1 यूह 15:14
2 प्रेष 20:24
3 मत 10:28
4 यश 8:13; इब्र 10:31; 1पत 2:17; प्रक 14:7
5 मत 10:29
6 मत 10:30; लूक 21:18
7 मत 10:31; लूक 12:24
8 रोम 10:9
9 मत 10:32, 33
10 मर 8:38; लूक 9:26; 2ती 2:12; 1यूह 2:23
11 मत 12:31, 32; मर 3:28, 29
12 मत 10:19, 20; मर 13:11; लूक 21:14, 15
13 निर्ग 4:12; प्रेष 6:8, 10

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:17; व्य 5:21; कुल 3:5
2 1ती 6:7
3 याकू 4:13-16
4 भज 49:16-19; नीत 27:1
5 सभ 11:9; मत 6:20; 1ती 6:17-19; याकू 2:5
6 मत 6:25-30; फिल 4:6

23 क्योंकि एक इंसान का जीवन भोजन
से और उसका शरीर कपड़ों से कहीं
ज़्यादा अनमोल है। 24 ध्यान दो कि
कौवे न तो बीज बोते हैं, न कटाई
करते हैं, न उनके अनाज के भंडार होते
हैं, न ही गोदाम, फिर भी परमेश्वर उन्हें
खिलाता है।[1] क्या तुम्हारा मोल पंछियों
से बढ़कर नहीं?[2] 25 तुममें ऐसा कौन
है जो चिंता करके एक पल के लिए भी*
अपनी ज़िंदगी बढ़ा सके? 26 इसलिए
अगर तुम इतना तक नहीं कर सकते, तो
बाकी चीज़ों की चिंता क्यों करते हो?[3]
27 ध्यान दो कि सोसन* के फूल कैसे
उगते हैं। वे न तो कड़ी मज़दूरी करते हैं
न ही सूत कातते हैं। मगर मैं तुमसे
कहता हूँ कि सुलैमान भी जब अपने पूरे
वैभव में था, तो इनमें से किसी एक की
तरह भी सज-धज न सका।[4] 28 इस-
लिए अगर परमेश्वर मैदान में उगनेवाले
इन पौधों को, जो आज हैं और कल
आग* में झोंक दिए जाएँगे, ऐसे शानदार
कपड़े पहनाता है, तो अरे कम विश्वास
रखनेवालो! वह तुम्हें इससे भी बढ़कर
क्यों न पहनाएगा! 29 इसलिए यह
चिंता करना छोड़ दो कि तुम क्या खाओगे
और क्या पीओगे। तुम इन बातों की हद-
से-ज़्यादा चिंता मत करो।[5] 30 क्योंकि
इन्हीं सब चीज़ों के पीछे दुनिया के लोग
दिन-रात भाग रहे हैं। मगर तुम्हारा पिता
जानता है कि तुम्हें इन चीज़ों की ज़रूरत
है।[6] 31 इसके बजाय, उसके राज की
खोज में लगे रहो और ये चीज़ें तुम्हें दे दी
जाएँगी।[7]

32 हे छोटे झुंड,[8] मत डर, क्योंकि
तुम्हारे पिता ने तुम्हें राज देना मंज़ूर
किया है।[1] 33 इसलिए अपनी चीज़ें
बेचकर गरीबों को दान* कर दो।[2]
अपने लिए पैसे की ऐसी थैलियाँ बनाओ
जो कभी पुरानी नहीं होतीं, यानी स्वर्ग
में ऐसा खज़ाना जमा करो जो कभी
खत्म नहीं होता,[3] जहाँ न कोई चोर पास
फटकता है, न कोई कीड़ा उसे खाता है।
34 क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन होगा, वहीं
तुम्हारा मन होगा।

35 तुम कमर कसकर तैयार रहो[4]
और तुम्हारे दीपक जलते रहें।[5] 36 उन
आदमियों की तरह बनो जो अपने मालिक
का इंतज़ार करते हैं[6] कि वह शादी
से कब लौटेगा[7] ताकि जब वह आकर
दरवाज़ा खटखटाए, तो फौरन उसके
लिए खोल सकें। 37 सुखी होंगे वे दास
जिनका मालिक आने पर उन्हें जागा हुआ
पाएगा! मैं तुमसे सच कहता हूँ, वह खुद
उनकी सेवा करने के लिए अपनी कमर
कसेगा और कहेगा कि वे खाने के लिए
बैठें* और पास खड़े होकर उनकी सेवा
करेगा। 38 अगर वह दूसरे पहर* में,
यहाँ तक कि तीसरे पहर# में आकर उन्हें
जागा हुआ पाएगा, तो उनके लिए खुशी
की बात है! 39 लेकिन यह जान लो कि
अगर घर के मालिक को पता होता कि चोर
किस वक्त आनेवाला है, तो वह जागता
रहता और अपने घर में सेंध नहीं लगने
देता।[8] 40 तुम भी तैयार रहो क्योंकि
जिस घड़ी तुमने सोचा भी न होगा, उसी
घड़ी इंसान का बेटा आ रहा है।"[9]

41 तब पतरस ने कहा, "प्रभु, तू
यह मिसाल सिर्फ हमारे लिए बता रहा

12:25 *शा., "एक हाथ भी।" अति. ख14 देखें। **12:27** *या "लिली।" **12:28** *या "तंदूर।"

12:33 *शा., "दया के दान।" शब्दावली देखें। **12:37** *या "मेज़ से टेक लगाएँ।" **12:38** *रात के करीब 9 बजे से आधी रात तक। #आधी रात से सुबह करीब 3 बजे तक।

अध्य. 12

1 अय 38:41, भज 147:9
2 मत 6:26, लूक 12:7
3 मत 6:34
4 1रा 10:4-7
5 मत 6:31, 32
6 2इत 16:9, फिल 4:19
7 भज 34:10, मत 6:33, 1ती 4:8
8 यूह 10:14

दूसरा कॉल.

1 दान 7:27, लूक 22:28-30, इब्र 12:28, याकू 2:5, प्रक 1:6
2 मत 19:21, लूक 18:22, प्रेष 2:45, प्रेष 4:34, 35
3 मत 6:20, 21, लूक 16:9, 1ती 6:18, 19
4 इफ 6:14, 1पत 1:13
5 मत 25:1, फिल 2:15
6 मर 13:35
7 मत 25:5
8 मत 24:43, 1थि 5:2, 2पत 3:10, प्रक 16:15
9 मत 24:44, मत 25:13, प्रक 3:3

है या सबके लिए?" 42 प्रभु ने कहा, "असल में वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान* प्रबंधक# कौन है, जिसे उसका मालिक अपने घर के सेवकों के दल△ पर ठहराएगा कि उन्हें सही वक्त पर सही मात्रा में खाना देता रहे?[1] 43 सुखी होगा वह दास अगर उसका मालिक आने पर उसे ऐसा ही करता पाए! 44 मैं तुमसे सच कहता हूँ, वह उसे अपनी सारी संपत्ति पर अधिकार देगा। 45 लेकिन अगर कभी वह दास अपने दिल में यह सोचे, 'मेरा मालिक आने में देर कर रहा है' और दास-दासियों को पीटने लगे और खा-पीकर, नशे में चूर रहे,[2] 46 तो उस दास का मालिक ऐसे दिन आएगा जिस दिन की वह उम्मीद भी नहीं कर रहा होगा और उस घड़ी आएगा जिसकी उसे खबर भी न होगी। और वह उसे कड़ी-से-कड़ी सज़ा देगा और उस जगह फेंक देगा जहाँ विश्वासघातियों को फेंका जाता है। 47 तब वह दास जिसने समझ तो लिया था कि उसके मालिक की मरज़ी क्या है, मगर तैयार नहीं था या उसका दिया हुआ काम उसने नहीं किया,* उसे कोड़े से बहुत मारा जाएगा।[3] 48 मगर जो दास अपने मालिक की मरज़ी नहीं जानता था और इसलिए उसने मार खाने लायक काम किए, उसे कम कोड़े लगेंगे। सच, जिस किसी को बहुत दिया गया है, उससे बहुत का हिसाब लिया जाएगा। और जिसे बहुत सारे काम की निगरानी सौंपी गयी है, उससे और ज़्यादा हिसाब लिया जाएगा।[4]

49 मैं धरती पर आग लगाने आया हूँ। यह आग सुलग चुकी है, इससे बढ़कर मैं और कुछ नहीं चाहता। 50 हाँ, एक बपतिस्मा है जो मुझे लेना है और जब तक मेरा यह बपतिस्मा पूरा नहीं हो जाता, मैं तकलीफ में रहूँगा![1] 51 तुम्हें क्या लगता है, मैं धरती पर शांति देने आया हूँ? नहीं, शांति नहीं बल्कि मैं तुमसे कहता हूँ, मैं फूट डालने आया हूँ।[2] 52 इसलिए कि अब से एक ही घर के पाँच लोग एक-दूसरे के खिलाफ हो जाएँगे, तीन दो के खिलाफ होंगे और दो तीन के। 53 वे एक-दूसरे के खिलाफ होंगे, पिता बेटे के खिलाफ और बेटा पिता के, माँ बेटी के खिलाफ और बेटी माँ के, सास अपनी बहू के खिलाफ और बहू अपनी सास के।"[3]

54 इसके बाद उसने भीड़ से कहा, "जब तुम पश्चिम से एक बादल उठता देखते हो, तो फौरन कहते हो, 'बरसाती तूफान आनेवाला है' और ऐसा ही होता है। 55 और जब तुम दक्षिणी हवा चलती देखते हो, तो कहते हो 'बहुत गरमी होगी' और ऐसा ही होता है। 56 अरे कपटियो, तुम धरती और आसमान की सूरत देखकर समझ जाते हो कि मौसम कैसा होगा, मगर तुम यह क्यों नहीं समझ पाते कि इस खास वक्त का क्या मतलब है?[4] 57 तुम खुद यह फैसला क्यों नहीं कर पा रहे कि तुम्हारे लिए क्या करना सही है? 58 उदाहरण के लिए, जब कोई तुझ पर मुकदमा दायर करने के लिए किसी अधिकारी के पास जा रहा हो, तो तू रास्ते में ही उसके साथ झगड़ा निपटा ले। कहीं ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायी के सामने हाज़िर करे और न्यायी तुझे कोतवाल के हवाले करे और कोतवाल तुझे जेल में डलवा दे।[5]

अध्य. 12
1 मत 24:45-47
2 मत 24:48-51
3 याकू 1:22
याकू 4:17
4 मत 25:29
यूह 15:2

दूसरा कॉल.
1 यूह 12:27
2 मत 10:34-36
यूह 7:41, 43
यूह 9:16
3 मी 7:6
4 मत 16:2, 3
लूक 19:42
5 मत 5:25, 26

12:42 *या "सूझ-बूझ से काम लेनेवाला।" #या "घर के कामों की देखरेख करनेवाला।" △या "घर के दासों।" **12:47** *या "उसकी मरज़ी पूरी नहीं की।"

59 मैं तुमसे कहता हूँ, जब तक तुम एक-एक पाई* न चुका दो, तब तक तुम वहाँ से किसी भी हाल में नहीं छूट सकोगे।"

13

उसी दौरान, वहाँ मौजूद कुछ लोगों ने यीशु को बताया कि जब गलील के कुछ लोग मंदिर में बलि-दान चढ़ा रहे थे, तो कैसे पीलातुस ने उन्हें मरवा डाला था। **2** तब उसने उनसे कहा, "क्या तुम्हें लगता है कि ये गलीली बाकी सभी गलीलियों से ज़्यादा पापी थे क्योंकि उनके साथ ऐसा हुआ था? **3** मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं! अगर तुम पश्चा-ताप नहीं करोगे, तो तुम सब इसी तरह नाश हो जाओगे।[1] **4** क्या तुम्हें लगता है कि वे 18 लोग जिन पर सिलोम की मीनार गिर गयी थी और जो उसके नीचे दबकर मर गए थे, यरूशलेम के बाकी सभी लोगों से ज़्यादा पापी थे? **5** मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं! अगर तुम पश्चा-ताप नहीं करोगे, तो तुम सब इसी तरह नाश हो जाओगे।"

6 इसके बाद उसने यह मिसाल दी, "एक आदमी था जिसके अंगूरों के बाग में एक अंजीर का पेड़ लगा था। वह उस पेड़ में फल ढूँढ़ने आया, मगर उसे एक भी फल नहीं मिला।[2] **7** तब उसने बाग के माली से कहा, 'पिछले तीन साल से मैं इस पेड़ के पास यह उम्मीद लेकर आ रहा हूँ कि मुझे फल मिलें, लेकिन आज तक मुझे एक भी फल नहीं मिला। इस पेड़ को काट डाल! यह बेकार में ज़मीन को क्यों घेरे खड़ा है?' **8** माली ने उससे कहा, 'मालिक, एक और साल इसे रहने दे ताकि मैं इसके चारों तरफ खुदाई करके इसमें खाद डालूँ। **9** और अगर यह भविष्य में फल दे, तो अच्छी बात है। लेकिन अगर नहीं, तो तू इसे कटवा देना।'"[1]

10 सब्त के दिन यीशु एक सभा-घर में सिखा रहा था। **11** वहाँ एक औरत थी जिसमें 18 साल से एक दुष्ट स्वर्ग-दूत समाया था, जिसने उसे बहुत कम-ज़ोर* कर दिया था। वह कुबड़ी हो गयी थी और बिलकुल सीधी नहीं हो पाती थी। **12** जब यीशु ने उस औरत को देखा, तो उससे कहा, "जा, तुझे अपनी कमज़ोरी से छुटकारा दिया जा रहा है।"[2] **13** यीशु ने अपने हाथ उस औरत पर रखे और वह फौरन सीधी हो गयी और परमेश्वर की महिमा करने लगी। **14** मगर जब सभा-घर के अधि-कारी ने देखा कि यीशु ने सब्त के दिन चंगा किया है, तो वह भड़क उठा और लोगों से कहा, "छः दिन होते हैं जिनमें काम किया जाना चाहिए।[3] इसलिए उन्हीं दिनों में आकर चंगे हो, सब्त के दिन नहीं।"[4] **15** लेकिन प्रभु ने उससे कहा, "अरे कपटियो,[5] क्या तुममें से हर कोई सब्त के दिन अपने बैल या गधे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता?[6] **16** तो क्या यह औरत, जो अब्राहम की बेटी है और जिसे शैतान ने 18 साल तक अपने कब्ज़े में कर रखा था, इसे सब्त के दिन उसकी कैद से आज़ाद करना सही नहीं था?" **17** जब यीशु ने ये बातें कहीं, तो उसके सभी विरोधी शर्मिंदा हो गए। मगर भीड़ उसके सभी शानदार कामों को देखकर खुशियाँ मनाने लगी।[7]

18 इसलिए उसने यह भी कहा, "पर-मेश्वर का राज किसके जैसा है? मैं इसकी

12:59 *शा., "आखिरी लेप्टौन।" अति. ख14 देखें।

13:11 *या "अपंग।"

अध्य. 13
1 प्रेष 3:19
2 मत 21:19; मर 11:13

दूसरा कॉल.
1 2पत 3:9
2 यश 61:1; लूक 4:18
3 निर्ग 20:9, 10; निर्ग 35:2; व्य 5:13, 14
4 मत 12:10; मर 3:2; यूह 5:15, 16
5 मत 23:27, 28; लूक 12:1
6 लूक 14:5
7 लूक 9:43

तुलना किससे करूँ? **19** यह राई के
दाने की तरह है, जिसे एक आदमी ने
लेकर अपने बाग में बो दिया और
वह उगकर पेड़ बन गया और आकाश
के पंछियों ने उसकी डालियों पर आकर
बसेरा किया।”[1]

20 एक बार फिर उसने कहा, “मैं पर-
मेश्वर के राज की तुलना किससे करूँ?
21 यह खमीर की तरह है, जिसे लेकर
एक औरत ने करीब दस किलो* आटे
में गूँध दिया और सारा आटा खमीरा
हो गया।”[2]

22 फिर यीशु शहर-शहर और गाँव-
गाँव जाकर सिखाता रहा और उसने यरू-
शलेम की तरफ अपना सफर जारी रखा।
23 तब एक आदमी ने उससे पूछा, “प्रभु,
जो उद्धार पाएँगे क्या वे थोड़े हैं?” यीशु
ने उनसे कहा, **24** “सँकरे दरवाज़े से
अंदर जाने के लिए जी-तोड़ संघर्ष करो,[3]
क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि बहुत
लोग अंदर जाना चाहेंगे, मगर नहीं जा
पाएँगे। **25** जब घर का मालिक उठ-
कर दरवाज़ा बंद कर देगा, तो तुम बाहर
खड़े होकर खटखटाओगे और कहोगे,
‘प्रभु, हमारे लिए दरवाज़ा खोल।’[4] तब
वह कहेगा, ‘मैं नहीं जानता कि तुम
कहाँ से आए हो।’ **26** तब तुम कहोगे,
‘हमने तेरे साथ बैठकर खाया-पीया और
तू हमारे यहाँ सड़क के चौराहों में
सिखाया करता था।’[5] **27** मगर वह
तुमसे कहेगा, ‘मैं नहीं जानता कि तुम
कहाँ से आए हो। अरे दुष्ट काम करने-
वालो, दूर हो जाओ मेरे सामने से!’
28 जब तुम देखोगे कि अब्राहम, इस-
हाक, याकूब और सभी भविष्यवक्ता पर-
मेश्वर के राज में हैं और तुम्हें बाहर
फेंक दिया गया है, तो वहाँ तुम रोओगे
और दाँत पीसोगे।[1] **29** इतना ही नहीं,
लोग पूरब, पश्‍चिम, उत्तर और दक्षिण
से आएँगे और परमेश्वर के राज में मेज़
से टेक लगाकर बैठेंगे। **30** देखो! कुछ
लोग जो आखिरी हैं वे पहले होंगे और
कुछ जो पहले हैं वे आखिरी होंगे।”[2]

31 उसी वक्‍त कुछ फरीसी आए
और यीशु से कहने लगे, “यहाँ से निकल
जा क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालना
चाहता है।” **32** लेकिन उसने उनसे
कहा, “जाओ जाकर कहो उस लोमड़ी से,
‘देख! मैं आज और कल भी दुष्ट
स्वर्गदूतों को निकालूँगा और लोगों को
चंगा करूँगा और तीसरे दिन मेरा काम
पूरा होगा।’ **33** मगर चाहे जो भी हो,
मुझे आज, कल और परसों भी अपना
काम करना है, क्योंकि यह हो नहीं
सकता कि एक भविष्यवक्ता यरूशलेम
के बाहर मारा जाए।[3] **34** यरूशलेम,
यरूशलेम, तू जो भविष्यवक्ताओं का
खून करनेवाली नगरी है और जो तेरे पास
भेजे जाते हैं उन्हें पत्थरों से मार डालती
है[4]—मैंने कितनी बार चाहा कि जैसे मुर्गी
अपने चूज़ों को अपने पंखों तले इकट्ठा
करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बच्चों को
इकट्ठा करूँ! मगर तुम लोगों ने यह नहीं
चाहा![5] **35** देखो! परमेश्वर ने तुम्हारे
घर* को त्याग दिया है।[6] मैं तुमसे कहता
हूँ कि तुम मुझे तब तक नहीं देखोगे जब
तक कि यह न कहो, ‘धन्य है वह जो
यहोवा# के नाम से आता है!’”[7]

14 एक और मौके पर यीशु सब्त के
दिन फरीसियों के एक सरदार के
घर खाने पर गया और वे उस पर नज़रें
जमाए हुए थे। **2** वहाँ उसके सामने

अध्य. 13
1 मत 13:31, 32; मर 4:30-32
2 मत 13:33
3 यश 55:6; मत 7:13, 14; फिल 3:12-14; 1ती 6:12
4 लूक 6:46
5 मत 7:22, 23

दूसरा कॉल.
1 मत 8:11, 12
2 मत 19:30; मर 10:31
3 मत 16:21
4 2इत 24:20, 21; नहे 9:26
5 मत 23:37
6 लैव 26:31; 1रा 9:7, 8; यिर्म 12:7; यिर्म 22:5
7 भज 118:26; मत 23:38, 39

13:21 *शा., “सआ माप।” एक सआ 7.33 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

13:35 *यानी मंदिर। #अति. क5 देखें।

एक आदमी था जो जलोदर* का रोगी
था। 3 तब यीशु ने कानून के जानकारों
और फरीसियों से पूछा, "क्या सब्त के
दिन बीमारों को ठीक करना सही है?"[1]
4 मगर वे खामोश रहे। तब यीशु ने उस
आदमी को छूकर ठीक कर दिया और
भेज दिया। 5 फिर यीशु ने उनसे कहा,
"अगर तुममें से किसी का बेटा या बैल
सब्त के दिन कुएँ में गिर जाए,[2] तो
कौन है जो उसे फौरन खींचकर बाहर
नहीं निकालेगा?"[3] 6 वे इस सवाल का
जवाब नहीं दे सके।

7 इसके बाद जब उसने देखा कि वहाँ
आए मेहमान बैठने के लिए कैसे खास-
खास जगह चुन रहे हैं,[4] तो उसने उनसे
कहा,* 8 "जब कोई तुझे शादी की
दावत के लिए न्यौता दे, तो जाकर सबसे
खास जगह पर मत बैठना।[5] हो सकता है
किसी और को भी न्यौता दिया गया हो जो
तुझसे भी बड़ा है। 9 तब जिस मेज़बान
ने तुम दोनों को न्यौता दिया है वह आकर
तुझसे कहेगा, 'इस आदमी को यहाँ
बैठने दे।' और तुझे शर्मिंदा होकर वहाँ
से उठना पड़ेगा और जाकर सबसे नीची
जगह बैठना पड़ेगा। 10 इसलिए जब
तुझे न्यौता मिले, तो जाकर सबसे नीची
जगह पर बैठना। जब मेज़बान आएगा
तो तुझसे कहेगा, 'मेरे दोस्त, वहाँ ऊपर
जाकर बैठ।' तब सब मेहमानों के सामने
तेरी इज़्ज़त बढ़ेगी।[6] 11 क्योंकि हर
कोई जो खुद को बड़ा बनाता है उसे छोटा
किया जाएगा और जो कोई खुद को छोटा
बनाता है उसे बड़ा किया जाएगा।"[7]

12 इसके बाद उसने अपने मेज़बान से
कहा, "जब तू दोपहर या शाम का खाना

14:2 *शरीर में हद-से-ज़्यादा पानी की वजह से होनेवाली सूजन। 14:7 *शा., "उन्हें एक मिसाल दी।"

अध्य. 14

1 लूक 6:9, यूह 7:23
2 निर्ग 23:5, व्य 22:4
3 मत 12:11, लूक 13:15
4 मत 23:2, 6, लूक 11:43, लूक 20:46
5 नीत 25:6, 7
6 नीत 15:33, याकू 4:10, 1पत 5:5
7 नीत 29:23, मत 23:12, लूक 18:14, याकू 4:6

दूसरा कॉल.

1 अय 31:16, 22, नीत 3:27, 28
2 यूह 5:28, 29, यूह 11:24, प्रेष 24:15
3 मत 22:2
4 मत 22:3
5 मत 22:5

करे, तो अपने दोस्तों, भाइयों, रिश्तेदारों
या अमीर पड़ोसियों को मत बुलाना। हो
सकता है कि बदले में वे भी तुझे
कभी खाने पर बुलाएँ और बात बरा-
बर हो जाए। 13 मगर जब तू दावत दे,
तो गरीबों, अपाहिजों, लँगड़ों और अंधों
को न्यौता देना।[1] 14 तब तुझे खुशी
मिलेगी क्योंकि तुझे बदले में देने के
लिए उनके पास कुछ नहीं है। जब नेक
जन दोबारा ज़िंदा किए जाएँगे, तब तुझे
इसका इनाम मिलेगा।"[2]

15 ये बातें सुनकर वहाँ मौजूद मेह-
मानों में से एक ने उससे कहा, "सुखी
है वह जो परमेश्वर के राज में भोजन
करेगा।"*

16 यीशु ने उससे कहा, "एक आदमी
ने शाम के खाने की आलीशान दावत
रखी[3] और बहुतों को न्यौता दिया।
17 जब दावत शुरू होने का समय आया,
तो उसने अपने दास से कहा कि जिन्हें
बुलाया गया है उनसे जाकर कह, 'आ
जाओ, सबकुछ तैयार है।' 18 मगर
वे सभी बहाने बनाने लगे।[4] पहले ने
उससे कहा, 'मैंने एक खेत खरीदा है,
उसे देखने के लिए मेरा जाना ज़रूरी
है। इसलिए मुझे माफ कर।' 19 दूसरे
ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़ी बैल खरीदे हैं
और मैं उनकी जाँच-परख करने जा
रहा हूँ। इसलिए मुझे माफ कर।'[5]
20 एक और ने कहा, 'मेरी अभी-
अभी शादी हुई है, इसलिए मैं नहीं आ
सकता।' 21 दास ने लौटकर यह सारी
खबर घर के मालिक को दी। तब मालिक
भड़क उठा और उसने दास से कहा,
'फौरन चौराहों और शहर की गलियों में
जा और गरीबों, अपाहिजों, अंधों और

14:15 *शा., "रोटी खाएगा।"

लँगड़ों को यहाँ ले आ।’ 22 थोड़ी देर
बाद दास ने कहा, ‘मालिक, जैसा तेरा
हुक्म था वैसा ही किया गया है। मगर
फिर भी जगह खाली है।’ 23 तब
मालिक ने उससे कहा, ‘सड़कों और तंग
गलियों में जा और वहाँ के लोगों को
आने के लिए मजबूर कर ताकि मेरा घर
भर जाए।[1] 24 क्योंकि मैं तुमसे कहता
हूँ, जिन लोगों को न्यौता दिया गया था
उनमें से एक भी मेरी दावत नहीं चख
सकेगा।’”[2]

25 लोगों की एक बड़ी भीड़ यीशु के
साथ-साथ चल रही थी। उसने मुड़-
कर उनसे कहा, 26 “अगर कोई मेरे
पास आता है और अपने पिता, माँ,
पत्नी, बच्चों, भाइयों और बहनों, यहाँ
तक कि अपनी जान से नफरत नहीं
करता,*[3] तो वह मेरा चेला नहीं बन
सकता।[4] 27 जो अपना यातना का
काठ* नहीं उठाता और मेरे पीछे नहीं
चलता, वह मेरा चेला नहीं बन सकता।[5]
28 मिसाल के लिए, तुममें ऐसा कौन है
जो एक मीनार बनाना चाहता हो और
बैठकर पहले इसमें लगनेवाले खर्च का
हिसाब न लगाए ताकि देखे कि उसे
पूरा करने के लिए उसके पास काफी
पैसा है या नहीं? 29 नहीं तो ऐसा
होगा कि वह उसकी नींव तो डालेगा,
मगर मीनार बनाने का काम पूरा नहीं
कर पाएगा। और सब देखनेवाले उसका
मज़ाक उड़ाएँगे 30 और कहेंगे, ‘यह
आदमी बनाने तो चला, मगर पूरा नहीं
कर पाया।’ 31 या कौन-सा राजा ऐसा
है जो युद्ध में जाने से पहले बैठकर
सलाह न करे कि वह अपनी 10,000
की फौज से उस दुश्मन राजा का मुकाब-

14:26 *या “कम प्यार नहीं करता।”
14:27 *शब्दावली देखें।

अध्य. 14

1 मत 22:9, 10

2 मत 21:43
मत 22:8

3 प्रक 12:11

4 मत 10:37
लूक 18:29, 30
यूह 12:25

5 मत 16:24
मर 8:34
लूक 9:23

दूसरा कॉल.

1 मत 19:27
लूक 9:62
फिल 3:7, 8

2 मत 5:13
मर 9:50
कुल 4:6

3 मत 13:43
मर 4:9
प्रक 2:29

अध्य. 15

4 मत 9:10, 11
मर 2:15, 16
लूक 5:29, 30
1ती 1:15

5 यहे 34:11, 16
मत 18:12, 13
लूक 19:10

ला कर पाएगा या नहीं, जो 20,000
की फौज लेकर लड़ने आ रहा है?
32 अगर वह मुकाबला नहीं कर सकता,
तो दूसरे राजा के दूर रहते ही वह अपने
राजदूतों का दल भेजकर उससे सुलह
करने की कोशिश करेगा। 33 इसी
तरह, यकीन मानो कि तुममें से जो कोई
अपनी सारी संपत्ति को अलविदा नहीं
कहता* वह मेरा चेला नहीं बन सकता।[1]

34 बेशक, नमक बढ़िया होता है।
लेकिन अगर नमक अपना स्वाद खो दे,
तो उसे किस चीज़ से दोबारा नम-
कीन किया जा सकता है?[2] 35 वह न
तो ज़मीन के लिए अच्छा होता है न खाद
में मिलाने के लिए, बल्कि लोग उसे बाहर
फेंक देते हैं। कान लगाकर सुनो कि मैं
क्या कह रहा हूँ।”[3]

15 फिर सभी कर-वसूलनेवाले और
उनके जैसे दूसरे पापी, यीशु की
सुनने के लिए उसके पास आने लगे।[4]
2 यह देखकर फरीसी और शास्त्री बड़-
बड़ाने लगे, “यह तो पापियों को भी अपने
पास आने देता है और उनके साथ खाता
है।” 3 तब यीशु ने उन्हें यह मिसाल
दी: 4 “तुममें ऐसा कौन है जिसके
पास अगर 100 भेड़ें हों और उनमें से
एक खो जाए, तो वह बाकी 99 को
वीराने में छोड़कर उस एक को ढूँढ़ने न
जाए? क्या वह उस खोयी हुई भेड़
को तब तक नहीं ढूँढ़ता रहेगा जब तक
कि वह मिल न जाए?[5] 5 और जब
वह उसे मिल जाती है, तो वह उसे अपने
कंधों पर उठा लेता है और खुशी से
फूला नहीं समाता। 6 वह घर पहुँचकर
अपने दोस्तों और पड़ोसियों को बुलाता है
और उनसे कहता है, ‘मेरे साथ खुशियाँ

14:33 *या “नहीं त्याग देता।”

मनाओ क्योंकि मुझे अपनी खोयी हुई
भेड़ मिल गयी है।’[1] 7 मैं तुमसे कहता
हूँ कि इसी तरह एक पापी के पश्‍चाताप
करने पर स्वर्ग में इतनी ज़्यादा खुशियाँ
मनायी जाएँगी,[2] जितनी कि ऐसे 99 नेक
लोगों के लिए नहीं मनायी जातीं, जिन्हें
पश्‍चाताप की ज़रूरत नहीं।

8 या ऐसी कौन-सी औरत होगी
जिसके पास दस चाँदी के सिक्के* हों
और अगर उनमें से एक खो जाए, तो वह
दीया जलाकर पूरे घर में झाड़ू न लगाए
और उस सिक्के* को बड़े जतन से तब
तक न ढूँढ़े, जब तक कि वह मिल नहीं
जाता? 9 और जब वह सिक्का उसे
मिल जाता है, तो अपनी सहेलियों और
पड़ोसिनों को बुलाती है और कहती है,
‘मेरे साथ खुशियाँ मनाओ क्योंकि मुझे
अपना खोया हुआ सिक्का* मिल गया
है।’ 10 मैं तुमसे कहता हूँ कि पश्‍चा-
ताप करनेवाले एक पापी के लिए भी,
इसी तरह परमेश्‍वर के स्वर्गदूत बहुत
खुशियाँ मनाते हैं।”[3]

11 फिर उसने कहा, “एक आदमी के
दो बेटे थे। 12 छोटे ने अपने पिता से
कहा, ‘पिता, जायदाद में से मेरा हिस्सा
मुझे दे दे।’ तब पिता ने अपनी जाय-
दाद उन दोनों में बाँट दी। 13 कुछ
दिन बाद, छोटे बेटे ने अपना सब-
कुछ बटोरा और सफर करके किसी
दूर देश चला गया। वहाँ उसने ऐयाशी
में अपनी सारी संपत्ति उड़ा दी। 14 जब
उसके सारे पैसे खत्म हो गए, तो उस
पूरे देश में एक भारी अकाल पड़ा और
वह कंगाल हो गया। 15 यह नौबत आ
गयी कि वह उस देश के एक आदमी के
यहाँ काम करने गया, जिसने उसे अपनी
ज़मीन में सूअर[1] चराने भेजा। 16 वह
उन फलियों को खाने के लिए भी तरसने
लगा जिन्हें सूअर खाते थे और उसे कोई
कुछ नहीं देता था।

17 जब उसकी अक्ल ठिकाने आयी,
तो उसने कहा, ‘मेरे पिता के यहाँ दिहाड़ी
पर काम करनेवाले कितने ही मज़दूर हैं
जिनके पास रोटी की कोई कमी नहीं।
और एक मैं हूँ जो यहाँ भूख से मर रहा हूँ!
18 अब मैं सफर करके वापस अपने
पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा,
“पिता, मैंने स्वर्ग के और तेरे खिलाफ
पाप किया है। 19 मैं इस लायक नहीं
कि तेरा बेटा कहलाऊँ। मुझे अपने यहाँ
मज़दूर की तरह रख ले।”’ 20 इस-
लिए वह उठा और अपने पिता के पास
गया। अभी वह काफी दूर ही था कि
पिता की नज़र उस पर पड़ी और वह
तड़प उठा। वह दौड़ा-दौड़ा गया और बेटे
को गले लगा लिया और बहुत प्यार से
उसे चूमने लगा। 21 तब बेटे ने उससे
कहा, ‘पिता, मैंने स्वर्ग के और तेरे
खिलाफ पाप किया है।[2] मैं इस लायक
नहीं कि तेरा बेटा कहलाऊँ।’ 22 मगर
पिता ने अपने दासों से कहा, ‘जल्दी
जाओ! और सबसे बढ़िया चोगा लाकर
इसे पहनाओ। इसके हाथ में अँगूठी और
पाँवों में जूतियाँ पहनाओ। 23 एक
मोटा-ताज़ा बछड़ा लाकर काटो कि हम
खाएँ और खुशियाँ मनाएँ। 24 क्योंकि
मेरा यह बेटा जो मर गया था, अब
ज़िंदा हो गया है।[3] यह खो गया था और
अब मिल गया है।’ फिर वे सब मिलकर
खुशियाँ मनाने लगे।

25 उस आदमी का बड़ा बेटा खेत में
था। खेत से लौटते वक्‍त जब वह घर
के पास पहुँचा, तो उसे गाने-बजाने
और नाचने की आवाज़ सुनायी दी।

15:8, 9 *शा., “द्राख्मा।” अति. ख14 देखें।

अध्य. 15
1 मत 18:14; रोम 12:15; 1पत 2:25
2 यहे 33:11; लूक 5:32
3 मत 9:13; मर 2:17

दूसरा कॉल.
1 लैव 11:7, 8
2 2इत 7:14; भज 32:5; भज 51:4; नीत 28:13; लूक 18:13; 1यूह 1:9
3 रोम 6:13; इफ 2:4, 5

26 उसने एक सेवक को अपने पास
बुलाकर पूछा कि यह सब क्या हो
रहा है। 27 सेवक ने कहा, 'तेरा भाई
आया है और तेरे पिता ने एक मोटा-ताज़ा
बछड़ा कटवाया है क्योंकि उसका बेटा
उसे सही-सलामत* वापस मिल गया है।'
28 मगर बड़े बेटे को बहुत गुस्सा आया
और उसने घर के अंदर जाने से इनकार
कर दिया। तब उसका पिता बाहर आया
और उसे मनाने लगा। 29 उसने अपने
पिता से कहा, 'मैं बरसों से तेरी गुलामी
कर रहा हूँ और मैंने एक बार भी तेरा
हुक्म नहीं टाला। फिर भी तूने मुझे कभी
बकरी का एक बच्चा तक नहीं दिया कि
मैं अपने दोस्तों के साथ मौज कर सकूँ।
30 लेकिन जैसे ही तेरा यह बेटा वापस
आया, जिसने तेरी जायदाद वेश्याओं पर
उड़ा दी है,* तूने इसके लिए मोटा-
ताज़ा बछड़ा कटवाया।' 31 तब पिता
ने उससे कहा, 'मेरे बेटे, तू तो हमेशा से
मेरे साथ है और जो कुछ मेरा है वह सब
तेरा ही तो है। 32 लेकिन आज का यह
दिन खुशियों का दिन है, हमें मगन होना
चाहिए क्योंकि तेरा यह भाई जो मर गया
था, अब ज़िंदा हो गया है। हमने इसे खो
दिया था, लेकिन अब पा लिया है।'"

16 तब यीशु ने अपने चेलों से यह
भी कहा, "एक अमीर आदमी के
यहाँ एक प्रबंधक* था, जिसकी शिका-
यत की गयी कि वह उसके माल की बर-
बादी कर रहा है। 2 इसलिए उसने प्रबं-
धक को बुलाया और उससे कहा, 'मैं तेरे
बारे में यह क्या सुन रहा हूँ? अपने काम
का हिसाब दे क्योंकि अब से तू मेरे घर के
काम की देखरेख नहीं करेगा।' 3 तब
प्रबंधक मन में कहने लगा, 'अब मैं
क्या करूँ? मालिक मुझे प्रबंधक के काम
से हटा रहा है। मुझमें इतनी ताकत नहीं
कि खेतों में मिट्टी खोदने का काम करूँ
और भीख माँगने में मुझे शर्म आती है।
4 हाँ! मुझे समझ आ गया कि मुझे क्या
करना चाहिए ताकि जब मुझे प्रबंधक के
काम से हटा दिया जाए, तो लोग मुझे
अपने घरों में स्वीकार करें।' 5 उसने
अपने मालिक के कर्ज़दारों को एक-एक
करके बुलाया और पहलेवाले से कहा,
'तुझे मेरे मालिक को कितना देना है?'
6 उसने कहा, '2,200 लीटर* जैतून
का तेल।' प्रबंधक ने कहा, 'यह ले अपना
करारनामा जो तूने लिखा था और बैठकर
फौरन 1,100 लिख दे।' 7 इसके बाद
उसने दूसरे से पूछा, 'बता तुझे कितना
देना है?' उसने कहा, '170 क्विन्टल*
गेहूँ।' उसने उससे कहा, 'यह ले अपना
करारनामा जो तूने लिखा था और इस पर
136# लिख दे।' 8 उस प्रबंधक के
मालिक ने उसके बेईमान होने के बावजूद
उसकी सराहना की, क्योंकि उसने होशि-
यारी से काम लिया था। मैं तुमसे यह इस-
लिए कह रहा हूँ, क्योंकि इस ज़माने* के
लोग दूसरों के साथ व्यवहार करने में उन
लोगों से ज़्यादा होशियार हैं जो रौशनी में
चलते हैं।[1]

9 मैं तुमसे यह भी कहता हूँ, बेईमानी
की दौलत[2] से अपने लिए दोस्त बना लो
ताकि जब यह दौलत न रहे, तो ये दोस्त
तुम्हें उन जगहों में ले लें जो हमेशा बनी

दूसरा कॉल.

अध्य. 16
1 यूह 12:36
इफ 5:8
1थि 5:5

2 मत 19:21
1ती 6:17

15:27 *या "भला-चंगा।" **15:30** *शा., "जायदाद खा गया।" **16:1** *या "घर के कामों की देखरेख करनेवाला।"

16:6 *शा., "सौ बत।" एक बत 22 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। **16:7** *शा., "100 कोर।" एक कोर करीब 220 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें। #शा., "80 कोर।" **16:8** *या "दुनिया की व्यवस्था।" शब्दावली देखें।

रहेंगी।[1] **10** जो इंसान थोड़े में भरोसे
के लायक है, वह बहुत में भी भरोसे
के लायक होता है और जो थोड़े में बेई-
मान है, वह बहुत में भी बेईमान होता
है। **11** इसलिए अगर तुम बेईमानी की
दौलत के मामले में भरोसेमंद साबित
नहीं होगे, तो कौन तुम्हें सच्ची दौलत
सौंपेगा? **12** और अगर तुम दूसरों की
संपत्ति के मामले में भरोसेमंद साबित
नहीं होगे, तो कौन तुम्हें वह संपत्ति
देगा जो तुम्हारे लिए रखी गयी है?[2]
13 कोई भी दास दो मालिकों की सेवा
नहीं कर सकता। क्योंकि या तो वह एक
से नफरत करेगा और दूसरे से प्यार या
वह एक से जुड़ा रहेगा और दूसरे को
तुच्छ समझेगा। तुम परमेश्वर के दास
होने के साथ-साथ धन-दौलत की गुलामी
नहीं कर सकते।"[3]

14 तब फरीसी जिन्हें पैसों से प्यार
था, यीशु की ये सारी बातें सुनकर
उसकी खिल्ली उड़ाने लगे।[4] **15** इस-
लिए उसने उनसे कहा, "तुम इंसानों के
सामने खुद को बड़ा नेक दिखाते हो,[5]
मगर परमेश्वर तुम्हारे दिलों को जानता
है।[6] क्योंकि जिस बात को इंसान बहुत
बड़ा समझता है, वह परमेश्वर की नज़र
में घिनौनी है।[7]

16 दरअसल कानून और भविष्य-
वक्ताओं की लिखी बातें, यूहन्ना के समय
तक के लिए थीं। तब से परमेश्वर के राज
की खुशखबरी सुनायी जा रही है और हर
किस्म का इंसान उसमें दाखिल होने के
लिए ज़ोर लगा रहा है।[8] **17** आकाश
और पृथ्वी का मिट जाना आसान है,
लेकिन कानून में लिखा एक भी अक्षर या
बिंदु बिना पूरा हुए नहीं मिटेगा।[9]

18 हर वह आदमी जो अपनी पत्नी
को तलाक देता है और दूसरी से शादी
करता है, वह व्यभिचार* करने का दोषी
है। और जो कोई एक तलाकशुदा औरत
से शादी करता है, वह भी व्यभिचार करने
का दोषी है।[1]

19 एक अमीर आदमी था जो बैंजनी
और रेशमी कपड़े पहनता था और बड़े
ठाट-बाट से रहता और हर दिन ऐश
करता था। **20** मगर लाज़र नाम का
एक भिखारी था जिसका शरीर फोड़ों
से भरा हुआ था। उसे अमीर आदमी
के फाटक के पास छोड़ दिया जाता
था **21** और वह उसकी मेज़ से गिरने-
वाले टुकड़े खाने के लिए तरसता था।
यहाँ तक कि कुत्ते आकर उसके फोड़े
चाटते थे। **22** कुछ वक्त बाद वह
भिखारी मर गया और स्वर्गदूत उसे अब्रा-
हम के पास* ले गए।

फिर वह अमीर आदमी भी मर गया
और उसे गाड़ा गया। **23** वह अमीर
आदमी कब्र* में तड़प रहा था। वहाँ से
उसने नज़रें उठाकर देखा, तो उसे बहुत
दूर अब्राहम दिखायी दिया, उसके पास#
लाज़र भी था। **24** तब अमीर आदमी
ने पुकारा, 'पिता अब्राहम, मुझ पर दया
कर। लाज़र को मेरे पास भेज कि वह
अपनी उँगली का छोर पानी में डुबा-
कर मेरी जीभ को ठंडा करे क्योंकि मैं
यहाँ इस धधकती आग में तड़प रहा हूँ।'
25 मगर अब्राहम ने कहा, 'बच्चे, याद
कर कि तूने अपनी सारी ज़िंदगी बढ़िया-
बढ़िया चीज़ों का खूब मज़ा लिया, मगर
लाज़र ने दुख-ही-दुख झेला। लेकिन अब
वह यहाँ आराम से है जबकि तू तड़प
रहा है। **26** इसके अलावा हमारे और

अध्य. 16
1 मत 25:34 लूक 12:20, 21
2 लूक 12:48
3 मत 6:24
4 यश 53:3
5 मत 6:2 मत 23:27, 28 लूक 18:9
6 1शम 16:7 1इत 28:9 2इत 6:30
7 1पत 5:5
8 मत 11:12, 13
9 मत 5:17, 18

दूसरा कॉल.
1 मत 5:32 मत 19:9 मर 10:11, 12

16:18 *शब्दावली देखें। **16:22** *शा., "अब्राहम के सीने के पास।" **16:23** *या "हेडीज़।" शब्दावली देखें। #शा., "उसके सीने के पास।"

तुम लोगों के बीच एक बड़ी खाई बनायी गयी है ताकि कोई चाहते हुए भी यहाँ से तुम्हारे पास न जा सके और न कोई वहाँ से इस पार हमारे यहाँ आ सके।' 27 तब उसने कहा, 'अगर ऐसी बात है, तो हे पिता मैं तुझसे बिनती करता हूँ कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज दे 28 ताकि वह जाकर मेरे पाँचों भाइयों को अच्छी तरह समझाए और उन्हें यहाँ आकर तड़पना न पड़े।' 29 मगर अब्राहम ने कहा, 'उनके पास मूसा और भविष्यवक्ताओं के वचन हैं, वे उनकी सुनें।'[1] 30 तब उसने कहा, 'नहीं पिता अब्राहम। अगर मरे हुओं में से कोई उनके पास जाएगा, तो वे ज़रूर पश्चाताप करेंगे।' 31 लेकिन अब्राहम ने उससे कहा, 'अगर वे मूसा और भविष्यवक्ताओं की नहीं सुनते,[2] तो चाहे मरे हुओं में से कोई ज़िंदा हो जाए, तो भी वे उसका यकीन नहीं करेंगे।'"

17 फिर यीशु ने अपने चेलों से कहा, "ऐसा हो नहीं सकता कि विश्वास की राह में बाधाएँ* न आएँ। मगर उस इंसान के साथ बहुत बुरा होगा जो विश्वास की राह में बाधा बनता है। 2 ऐसे इंसान के लिए यही अच्छा होगा कि उसके गले में चक्की का पाट लटकाया जाए और उसे समुंदर में फेंक दिया जाए, बजाय इसके कि वह इन छोटों में से किसी एक को भी ठोकर खिलाए।*[3] 3 खुद पर ध्यान दे। अगर तेरा भाई पाप करता है तो उसे डाँट[4] और अगर वह पश्चाताप करता है तो उसे माफ कर।[5] 4 चाहे वह तेरे खिलाफ दिन में सात बार पाप करे और सातों बार तेरे पास आकर कहे, 'मैं पछता रहा हूँ,' तो तुझे उसे माफ करना है।"[6]

17:1 *या "ठोकर खिलाने की वजह।" **17:2** *यानी कुछ ऐसा करे कि दूसरा आदमी विश्वास करना छोड़ दे।

अध्य. 16
1 व्य 18:18; लूक 24:25-27
2 यूह 5:46

अध्य. 17
3 मत 18:6; मर 9:42
4 नीत 17:10
5 लैव 19:17; मत 18:15
6 यश 55:7; मत 6:12; मत 18:21, 22; कुल 3:13; 1पत 4:8

दूसरा कॉल.
1 मर 9:23, 24; इब्र 12:2
2 मत 17:20; मत 21:21; मर 11:23
3 1कुर 9:16
4 लैव 13:45, 46
5 लैव 14:2-4; व्य 24:8; मत 8:3, 4; लूक 5:13, 14
6 2रा 5:1, 14
7 2रा 17:24; यूह 4:9

5 फिर प्रेषितों ने प्रभु से कहा, "हमारा विश्वास बढ़ा।"[1] 6 तब प्रभु ने कहा, "अगर तुम्हारे अंदर राई के दाने के बराबर भी विश्वास है, तो तुम शहतूत के इस पेड़ से कहोगे, 'यहाँ से उखड़कर समुंदर में जा लग!' और वह तुम्हारा कहना मानेगा।[2]

7 तुममें ऐसा कौन है जिसका दास हल जोतकर या भेड़-बकरियाँ चराकर खेतों से वापस आए, तो वह दास से कहे, 'फौरन यहाँ आ और खाने के लिए बैठ'? 8 इसके बजाय क्या वह उससे यह न कहेगा, 'मेरे शाम के खाने के लिए कुछ तैयार कर और जब तक मैं खा-पी न लूँ तब तक कमर में अंगोछा बाँधकर मेरी सेवा कर, फिर बाद में तू खा-पी लेना'? 9 क्या वह उस दास का एहसान मानेगा कि उसने वे सारे काम किए जो उसे दिए गए थे? 10 इसी तरह जब तुम वे सारे काम कर लो जो तुम्हें दिए गए हैं, तो कहना, 'हम निकम्मे दास हैं। हमने बस वही किया है, जो हमें करना चाहिए था।'"[3]

11 यीशु यरूशलेम जाते वक्त सामरिया और गलील के बीच से होते हुए गया। 12 जब वह एक गाँव में जा रहा था, तो दस कोढ़ियों ने उसे देखा मगर वे दूर खड़े रहे।[4] 13 उन्होंने ज़ोर से पुकारा, "हे गुरु यीशु, हम पर दया कर!" 14 उन्हें देखकर यीशु ने कहा, "जाओ और खुद को याजकों को दिखाओ।"[5] जब वे जा रहे थे, तो रास्ते में ही वे शुद्ध हो गए।[6] 15 उनमें से एक ने देखा कि वह ठीक हो गया है और वह ज़ोर-ज़ोर से परमेश्वर का गुणगान करता हुआ वापस आया। 16 वह यीशु के पाँवों पर मुँह के बल गिरा और उसका धन्यवाद करने लगा। और देखो! वह एक सामरी[7] था।

17 उसे देखकर यीशु ने कहा, "क्या दसों के दस शुद्ध नहीं हुए थे? तो फिर बाकी नौ कहाँ हैं? **18** दूसरी जाति के इस आदमी को छोड़, क्या एक भी आदमी परमेश्वर की महिमा करने वापस नहीं आया?" **19** उसने उस आदमी से कहा, "उठ और अपने रास्ते चला जा। तेरे विश्वास ने तुझे ठीक किया है।"[1]

20 जब फरीसियों ने उससे पूछा कि परमेश्वर का राज कब आ रहा है,[2] तो उसने जवाब दिया, "परमेश्वर का राज ऐसे अनोखे तरीके से नहीं आ रहा कि उसे साफ-साफ देखा जा सके **21** और लोग कहें, 'वह यहाँ है!' या 'वहाँ है!' इस-लिए कि देखो! परमेश्वर का राज तुम्हारे ही बीच है।"[3]

22 फिर उसने चेलों से कहा, "वह वक्त आएगा जब तुम इंसान के बेटे के दिनों में से एक दिन देखना चाहोगे, मगर न देख सकोगे। **23** लोग तुमसे कहेंगे, 'देखो वह वहाँ है!' या 'यहाँ है!' पर तुम बाहर मत जाना, न उनके पीछे भागना।[4] **24** इसलिए कि जैसे बिजली आकाश के एक छोर से चमकती हुई दूसरे छोर तक दिखायी देती है, वैसे ही इंसान का बेटा[5] अपने दिन में होगा।[6] **25** मगर इससे पहले उसे बहुत-सी दुख-तकलीफें सहनी होंगी और यह पीढ़ी उसे ठुकरा देगी।[7] **26** और ठीक जैसा नूह के दिनों में हुआ था,[8] वैसा ही इंसान के बेटे के दिनों में होगा।[9] **27** जिस दिन तक नूह जहाज़ के अंदर[10] नहीं गया और जल-प्रलय ने आकर सबको नाश[11] नहीं कर दिया, उस दिन तक लोग खा-पी रहे थे और शादी-ब्याह कर रहे थे। **28** इसी तरह लूत के दिनों में[12] भी लोग खा-पी रहे थे, खरीद रहे थे, बेच रहे थे, बीज बो रहे थे और घर बना रहे थे। **29** लेकिन जिस दिन लूत सदोम से बाहर आया, उस दिन आकाश से आग और गंधक बरसी और सब नाश हो गए।[1] **30** जिस दिन इंसान का बेटा प्रकट होगा,[2] उस दिन भी ऐसा ही होगा।

31 उस दिन जो इंसान घर की छत पर हो मगर उसका सामान घर के अंदर हो, वह उन्हें लेने के लिए नीचे न उतरे। उसी तरह जो आदमी खेत में हो, वह भी उन चीज़ों को लेने वापस न लौटे जो पीछे छूट गयी हैं। **32** लूत की पत्नी[3] को याद रखो। **33** जो कोई अपनी जान बचाने की कोशिश करता है वह उसे खोएगा, लेकिन जो कोई उसे गँवाता है वह उसे बचाएगा।[4] **34** मैं तुमसे कहता हूँ, उस रात दो आदमी एक पलंग पर होंगे। एक को साथ ले लिया जाएगा, मगर दूसरे को छोड़ दिया जाएगा।[5] **35** दो औरतें एक ही चक्की से पीस रही होंगी। एक को साथ ले लिया जाएगा और दूसरी को छोड़ दिया जाएगा।" **36** *— **37** तब उन्होंने उससे पूछा, "कहाँ प्रभु?" उसने कहा, "जहाँ लाश है, वहीं उकाब जमा होंगे।"[6]

18 फिर यीशु ने उन्हें यह सम-झाने के लिए एक मिसाल दी कि उन्हें क्यों हमेशा प्रार्थना करते रहना चाहिए और कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।[7] **2** उसने कहा, "किसी शहर में एक न्यायी था जो न तो परमेश्वर से डरता था, न ही किसी इंसान की इज़्ज़त करता था। **3** उस शहर में एक विधवा थी जो बार-बार उसके पास जाकर कहती रही, 'किसी भी हाल में मुझे इंसाफ दिला! मुझसे मुकदमा लड़नेवाले से मुझे बचा।' **4** बहुत समय तक तो वह नहीं माना, मगर बाद में वह अपने दिल में

अध्य. 17
1 मत 9:22, मर 5:34, लूक 7:50
2 मत 24:3
3 मत 12:28, मत 21:5
4 मत 24:23, मर 13:21, लूक 21:8, 1यूह 4:1
5 दान 7:13
6 मत 24:27
7 मर 8:31, मर 9:31, लूक 9:22
8 उत 6:5
9 मत 24:37-39
10 उत 7:7
11 उत 7:17, 21
12 उत 19:15

दूसरा कॉल.
1 उत 19:24, 25
2 1कुर 1:7, 2थि 1:7, 8
3 उत 19:17, 26
4 मत 10:39, मत 16:25, मर 8:35, लूक 9:24, यूह 12:25
5 मत 24:40, 41
6 मत 24:28

अध्य. 18
7 रोम 12:12, इफ 6:18, फिल 4:6, कुल 4:2, 1थि 5:17

17:36 *अति. क3 देखें।

कहने लगा, ‘न तो मैं परमेश्वर से डरता
हूँ, न ही किसी इंसान की इज़्ज़त करता हूँ,
5 फिर भी मैं इस विधवा को ज़रूर इंसाफ
दिलाऊँगा क्योंकि इसने मुझे परेशान
कर रखा है। अगर मैंने इसके लिए कुछ
नहीं किया, तो यह बार-बार आकर मेरा
जीना दुश्वार कर देगी।’”[1] **6** फिर प्रभु
ने कहा, “ध्यान दो कि उस न्यायी ने
बुरा इंसान होने के बावजूद क्या कहा!
7 तो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं की
खातिर इंसाफ नहीं करेगा, जो दिन-रात
उससे फरियाद करते हैं?[2] भले ही पर-
मेश्वर उनके मामले में सब्र से काम
लेता है, मगर वह उनकी ज़रूर सुनेगा।[3]
8 मैं तुमसे कहता हूँ, वह जल्द-से-जल्द
उन्हें इंसाफ दिलाएगा। फिर भी जब
इंसान का बेटा आएगा, तब क्या वह
धरती पर ऐसा विश्वास* पाएगा?”

9 फिर उसने उन लोगों को एक
मिसाल दी जिन्हें अपनी नेकी पर बड़ा
भरोसा था और जो दूसरों को कुछ
नहीं समझते थे। उसने कहा, **10** “दो
आदमी मंदिर में प्रार्थना करने गए।
एक फरीसी था और दूसरा कर-वसूलने-
वाला। **11** फरीसी खड़ा होकर मन-ही-
मन प्रार्थना करने लगा, ‘हे परमेश्वर,
मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं दूसरों
की तरह नहीं हूँ जो लुटेरे, बेईमान और
व्यभिचारी* हैं, न ही इस कर-वसूलने-
वाले जैसा हूँ। **12** मैं हफ्ते में दो बार
उपवास करता हूँ और मुझे जो कुछ
मिलता है, उसका दसवाँ हिस्सा देता
हूँ।’[4] **13** मगर कर-वसूलनेवाला दूर
खड़ा था। उसे आकाश की तरफ नज़र
उठाने की हिम्मत भी नहीं हुई, बल्कि
वह छाती पीटते हुए कहता रहा, ‘हे पर-
मेश्वर, मुझ पापी पर दया* कर।’[1]
14 मैं तुमसे कहता हूँ, यह आदमी उस
फरीसी से ज़्यादा नेक साबित होकर
अपने घर गया।[2] क्योंकि हर कोई जो
खुद को ऊँचा करता है उसे नीचा किया
जाएगा, मगर जो कोई खुद को छोटा
बनाता है उसे बड़ा किया जाएगा।”[3]

15 फिर लोग अपने नन्हे-मुन्नों को
भी उसके पास लाने लगे कि वह उन पर
हाथ रखे, मगर यह देखकर चेले उन्हें
डाँटने लगे।[4] **16** मगर यीशु ने नन्हे-
मुन्नों को अपने पास बुलाया और कहा,
“बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें
रोकने की कोशिश मत करो, क्योंकि पर-
मेश्वर का राज ऐसों ही का है।[5] **17** मैं
तुमसे सच कहता हूँ, जो कोई पर-
मेश्वर के राज को एक छोटे बच्चे की
तरह स्वीकार नहीं करता, वह उसमें हर-
गिज़ नहीं जा पाएगा।”[6]

18 किसी अधिकारी ने उससे पूछा,
“अच्छे गुरु, हमेशा की ज़िंदगी का वारिस
बनने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?”[7]
19 यीशु ने उससे कहा, “तू मुझे अच्छा
क्यों कहता है? कोई अच्छा नहीं है,
सिवा परमेश्वर के।[8] **20** तू तो आज्ञाएँ
जानता है, ‘व्यभिचार* न करना,[9] खून
न करना,[10] चोरी न करना,[11] झूठी
गवाही न देना,[12] अपने पिता और अपनी
माँ का आदर करना।’”[13] **21** तब
उसने कहा, “ये सारी बातें तो मैं बचपन से
मान रहा हूँ।” **22** यह सुनकर यीशु ने
उससे कहा, “तुझमें अब भी एक चीज़ की
कमी है: जा और जो कुछ तेरे पास है सब
बेचकर कंगालों में बाँट दे और तुझे स्वर्ग
में खज़ाना मिलेगा और आकर मेरा चेला
बन जा।”[14] **23** जब उसने यह सुना,

18:8 *या “इस तरह का विश्वास।” शा., “यह विश्वास।” **18:11, 20** *शब्दावली देखें।

18:13 *या “कृपा।”

अध्य. 18
1 लूक 11:7, 8
2 प्रक 6:9, 10
3 2पत 3:9
4 मत 23:23

दूसरा कॉल.
1 भज 51:1-3
2 यश 66:2 मत 21:28-31
3 यश 2:11 मत 23:12 याकू 4:6 1पत 5:5
4 मत 19:13-15 मर 10:13-16
5 1पत 2:2
6 मत 18:3 मर 10:15
7 मत 19:16-22 मर 10:17-22 लूक 10:25-28
8 मत 19:17 मर 10:18
9 निर्ग 20:14 व्य 5:18
10 निर्ग 20:13 व्य 5:17
11 निर्ग 20:15 व्य 5:19
12 निर्ग 20:16 व्य 5:20
13 निर्ग 20:12 व्य 5:16 रोम 13:9 इफ 6:2
14 मत 6:20 मत 19:21 मर 10:21 लूक 12:33 1ती 6:18, 19

तो वह बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह बहुत
अमीर था।[1]
24 यीशु ने उसकी तरफ देखकर
कहा, “पैसेवालों के लिए परमेश्वर के
राज में दाखिल होना कितना मुश्किल
होगा![2] 25 दरअसल, परमेश्वर के
राज में एक अमीर आदमी के दाखिल
होने से, एक ऊँट का सिलाई की सुई के
छेद से निकल जाना ज़्यादा आसान है।”[3]
26 जिन्होंने यह सुना, उन्होंने कहा, “तो
भला कौन उद्धार पा सकता है?”[4]
27 उसने कहा, “जो काम इंसानों के लिए
नामुमकिन हैं, वे परमेश्वर के लिए मुम-
किन हैं।”[5] 28 मगर पतरस ने कहा,
“देख! हम तो अपना सबकुछ छोड़-
कर तेरे पीछे चल रहे हैं।”[6] 29 उसने
उनसे कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, ऐसा
कोई नहीं जिसने परमेश्वर के राज की
खातिर घर या पत्नी या भाइयों या माँ-
बाप या बच्चों को छोड़ा हो[7] 30 और
इस ज़माने में इन सबका कई गुना न
पाए और आनेवाले ज़माने* में हमेशा की
ज़िंदगी न पाए।”[8]
31 फिर यीशु उन बारहों को अलग ले
गया और उनसे कहा, “देखो! हम यरू-
शलेम जा रहे हैं। और इंसान के बेटे के
बारे में भविष्यवक्ताओं ने जो-जो लिखा,
वह सब पूरा होगा।[9] 32 जैसे, उसे
गैर-यहूदियों के हवाले किया जाएगा,[10]
उसका मज़ाक उड़ाया जाएगा,[11] उसके
साथ बुरा सलूक किया जाएगा और
उस पर थूका जाएगा।[12] 33 वे उसे
कोड़े लगाएँगे और मार डालेंगे[13] मगर
तीसरे दिन वह ज़िंदा हो जाएगा।”[14]
34 लेकिन चेले इनमें से किसी भी बात
के मायने नहीं समझ पाए, क्योंकि ये बातें
उनसे छिपाकर रखी गयी थीं और वे इन
बातों को नहीं समझ पाए।
35 जब वह यरीहो पहुँचनेवाला था,
तो सड़क के किनारे एक अंधा बैठ-
कर भीख माँग रहा था।[1] 36 जब
उस अंधे ने वहाँ से गुज़रती भीड़ का
शोर सुना, तो पूछने लगा कि यह क्या
हो रहा है। 37 लोगों ने उसे बताया,
“यीशु नासरी यहाँ से जा रहा है!”
38 यह सुनकर उसने ज़ोर से पुकारा,
“हे यीशु, दाविद के वंशज, मुझ पर
दया कर!” 39 जो आगे-आगे जा रहे थे
वे उसे डाँटने लगे कि चुप हो जा!
मगर वह और ज़ोर से चिल्लाता रहा,
“हे दाविद के वंशज, मुझ पर दया
कर!” 40 तब यीशु रुक गया और
उसने हुक्म दिया कि उस आदमी को
उसके पास लाया जाए। जब वह आया तो
यीशु ने पूछा, 41 “तू क्या चाहता है, मैं
तेरे लिए क्या करूँ?” उसने कहा, “प्रभु,
मेरी आँखों की रौशनी लौट आए।”
42 इसलिए यीशु ने उससे कहा, “तेरी
आँखें ठीक हो जाएँ। तेरे विश्वास ने तुझे
ठीक किया है।”[2] 43 उसी पल उसकी
आँखों की रौशनी लौट आयी और वह
परमेश्वर की महिमा करता हुआ उसके
पीछे चल दिया।[3] देखनेवाले सब लोगों ने
भी परमेश्वर की तारीफ की।[4]

19 यीशु यरीहो पहुँचा और उस
शहर से होकर जा रहा था।
2 वहाँ जक्कई नाम का एक आदमी था।
वह कर-वसूलनेवालों का एक प्रधान था
और बहुत अमीर था। 3 वह देखना
चाहता था कि यह यीशु कौन है, मगर
भीड़ की वजह से देख नहीं पा रहा था
क्योंकि वह ठिंगना था। 4 इसलिए वह
भागकर आगे गया और उसे देखने के
लिए रास्ते में एक गूलर के पेड़ पर चढ़

18:30 * या “दुनिया की व्यवस्था।” शब्दा-वली देखें।

अध्य. 18
1 मत 19:22; मर 10:22
2 नीत 11:28; मत 19:23; मर 10:23, 24; 1ती 6:9
3 मत 19:24; मर 10:25
4 मत 19:25
5 मत 19:26; मर 10:27
6 मत 19:27
7 मत 19:28, 29; मर 10:29, 30
8 प्रक 2:10
9 मत 16:21; मत 20:17-19; मर 10:32-34
10 मत 27:2; प्रेष 3:13
11 भज 22:7
12 यश 50:6
13 यश 53:5, 7
14 मर 10:33, 34; लूक 9:22

दूसरा कॉल.
1 मत 20:29-34; मर 10:46-52
2 लूक 7:50; लूक 17:19
3 मत 20:34
4 लूक 5:26

गया क्योंकि यीशु वहीं से गुज़रनेवाला
था। 5 जब यीशु वहाँ पहुँचा, तो उसने
ऊपर देखकर कहा, “जक्कई, जल्दी से
नीचे उतर आ क्योंकि आज मुझे तेरे घर
ठहरना है।” 6 तब वह जल्दी-जल्दी
नीचे उतरा और उसने खुशी से अपने
घर में यीशु का स्वागत किया। 7 जब
उन्होंने यह देखा, तो सब बड़बड़ाने लगे,
“यह एक ऐसे आदमी के घर ठहरा है
जो पापी है।”[1] 8 मगर जक्कई खड़ा
हुआ और उसने प्रभु से कहा, “प्रभु देख!
मैं अपनी आधी संपत्ति गरीबों को देता
हूँ और मैंने जिस-जिस को लूटा* है,
उसे मैं चार गुना वापस लौटा देता हूँ।”[2]
9 तब यीशु ने उससे कहा, “आज पर-
मेश्वर ने इस आदमी और इसके घराने
का उद्धार किया है क्योंकि यह भी अब्रा-
हम का एक वंशज है। 10 इसलिए कि
जो खो गए हैं, इंसान का बेटा उन्हें ढूँढ़ने
और उनका उद्धार करने आया है।”[3]

11 जब चेले ये बातें सुन रहे थे, तो
उसने एक मिसाल भी दी क्योंकि वह यरू-
शलेम के करीब था और चेले यह सोच
रहे थे कि परमेश्वर का राज बस कुछ ही
पल में ज़ाहिर होनेवाला है।[4] 12 उसने
कहा, “एक आदमी था जो शाही खानदान
से था। वह दूर देश के लिए रवाना हुआ[5]
ताकि राज-अधिकार पाकर लौट आए।
13 उसने अपने दस दासों को बुलाकर
उन्हें दस मीना चाँदी के सिक्के* दिए
और उनसे कहा, ‘जब तक मैं वापस न
आऊँ, तब तक इनसे कारोबार करो।’[6]
14 मगर उसके देश के लोग उससे नफ-
रत करते थे और उन्होंने उसके पीछे-पीछे
यह कहने के लिए राजदूतों का एक दल
भेजा, ‘हम नहीं चाहते कि यह आदमी
हमारा राजा बने।’

15 राज-अधिकार हासिल करने* के
बाद वह आदमी लौट आया। उसने उन
दासों को बुलाया जिन्हें वह पैसे# देकर
गया था। वह देखना चाहता था कि
उन्होंने उन पैसों से कारोबार करके और
कितना कमाया है।[1] 16 तब पहला
दास उसके सामने आया और कहने लगा,
‘मालिक, तूने मुझे एक मीना चाँदी के
सिक्के दिए थे, उनसे मैंने दस मीना
चाँदी के सिक्के कमाए हैं।’[2] 17 तब
मालिक ने उससे कहा, ‘शाबाश, अच्छे
दास! तू एक छोटी-सी बात में भी भरोसे-
मंद साबित हुआ है, मैं तुझे दस शहरों
का अधिकारी बनाता हूँ।’[3] 18 अब
दूसरा आकर कहने लगा, ‘मालिक,
तूने मुझे एक मीना चाँदी के सिक्के
दिए थे, उनसे मैंने पाँच मीना चाँदी
के सिक्के कमाए हैं।’[4] 19 मालिक ने
उससे कहा, ‘मैं तुझे भी पाँच शहरों का
अधिकारी बनाता हूँ।’ 20 मगर एक
और आया और कहने लगा, ‘मालिक,
यह रही तेरी चाँदी। मैंने इसे कपड़े में
बाँधकर छिपा दिया था। 21 मैं तुझसे
डरता था क्योंकि तू एक कठोर आदमी
है। तू वे पैसे निकालता है जो तूने जमा
नहीं किए और वह फसल काटता है जो
तूने नहीं बोयी।’[5] 22 मालिक ने उससे
कहा, ‘अरे दुष्ट दास, तूने जो कहा है
उसी से मैं तुझे फैसला सुनाता हूँ। तू
जानता था न कि मैं एक कठोर आदमी
हूँ? मैं वे पैसे निकालता हूँ जो मैंने जमा
नहीं किए और वह फसल काटता हूँ,
जो मैंने नहीं बोयी।[6] 23 तो फिर, तूने

19:8 *या “झूठ बोलकर लूटा।” **19:13** *यूनानी मीना का वज़न 340 ग्रा. था। एक मीना 100 द्राख्मा के बराबर था। अति. ख14 देखें।

19:15 *या “हुकूमत पाने।” #शा., “चाँदी।”

अध्य. 19
1 मत 9:11, लूक 5:30, लूक 15:2
2 निर्ग 22:1, लैव 6:4, 5
3 यहे 34:16, मत 9:13, मत 15:24, लूक 15:4, रोम 5:8, 1ती 1:15
4 प्रेष 1:6
5 मत 25:14, मर 13:34, यूह 18:36
6 मत 25:15

दूसरा कॉल.
1 मत 25:19
2 मत 25:20, 21
3 लूक 16:10
4 मत 25:22, 23
5 मत 25:24
6 मत 25:26, 27

मेरे पैसे* साहूकारों के पास जमा क्यों
नहीं कर दिए? तब लौटने पर मुझे अपने
पैसों के साथ-साथ ब्याज भी मिलता।’

24 तब जो आस-पास खड़े थे उनसे
मालिक ने कहा, ‘यह चाँदी इससे ले लो
और उसे दे दो जिसके पास दस मीना
चाँदी है।’[1] **25** मगर उन्होंने कहा,
‘मालिक, उसके पास तो पहले से दस
मीना चाँदी है!’. . . **26** ‘मैं तुमसे
कहता हूँ, जिसके पास है, उसे और
दिया जाएगा। मगर जिसके पास नहीं
है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो
उसके पास है।[2] **27** मेरे जो दुश्मन नहीं
चाहते थे कि मैं उनका राजा बनूँ, उन्हें
यहाँ लाओ और मेरे सामने मार डालो।’”

28 ये बातें कहने के बाद यीशु ने
अपना सफर जारी रखा और यरूशलेम
की तरफ गया। **29** जब वह जैतून नाम
पहाड़[3] पर बैतफगे और बैतनियाह के
पास पहुँचा, तो उसने दो चेलों को
यह कहकर भेजा,[4] **30** “जो गाँव तुम्हें
नज़र आ रहा है उसमें जाओ। वहाँ जाने
पर तुम्हें एक गधी का बच्चा बँधा हुआ
मिलेगा, जिस पर आज तक कोई आदमी
नहीं बैठा। उसे खोलकर ले आओ।
31 लेकिन अगर कोई तुमसे पूछे, ‘तुम
इसे क्यों खोल रहे हो?’ तो कहना, ‘प्रभु
को इसकी ज़रूरत है।’” **32** तब जिन्हें
भेजा गया था, वे चले गए और जैसा
उसने कहा था ठीक वैसा ही पाया।[5]
33 लेकिन जब वे गधी के बच्चे को खोल
रहे थे, तब उसके मालिकों ने उनसे कहा,
“तुम गधी के बच्चे को क्यों खोल रहे
हो?” **34** उन्होंने कहा, “प्रभु को इसकी
ज़रूरत है।” **35** और वे उसे यीशु के
पास ले गए और उन्होंने उस गधी के बच्चे
के ऊपर अपने ओढ़ने बिछाए और यीशु
को उस पर बिठाया।[1]

36 जैसे-जैसे वह आगे जा रहा था,
लोग सड़क पर उसके आगे-आगे अपने
कपड़े बिछाने लगे।[2] **37** जैसे ही वह
उस सड़क के पास पहुँचा जो जैतून
पहाड़ से नीचे जाती है, उसके चेलों की
सारी भीड़ खुशियाँ मनाने लगी और ऊँची
आवाज़ में परमेश्वर की बड़ाई करने
लगी क्योंकि उन्होंने बहुत-से शक्तिशाली
काम देखे थे। **38** वे कहने लगे, “धन्य
है वह जो राजा बनकर यहोवा* के नाम
से आ रहा है! स्वर्ग में शांति हो और ऊँचे
आसमानों में परमेश्वर की महिमा हो!”[3]
39 लेकिन भीड़ में से कुछ फरीसी
उससे कहने लगे, “गुरु, अपने चेलों
को डाँट।”[4] **40** मगर उसने कहा, “मैं
तुमसे कहता हूँ, अगर ये खामोश रहे तो
पत्थर बोल उठेंगे।”

41 जब वह शहर के करीब पहुँचा,
तो वह शहर को देखकर रोने लगा[5]
42 और कहने लगा, “काश आज के
दिन तूने, हाँ तूने, उन बातों को समझा
होता जिनसे शांति मिलती है—लेकिन
अब ये तेरी आँखों से छिपा दी गयी
हैं।[6] **43** क्योंकि वे दिन आएँगे जब
तेरे दुश्मन तेरे चारों तरफ नुकीले लट्ठों
से घेराबंदी कर लेंगे और तुझे हर
तरफ से घेर लेंगे।*[7] **44** वे तुझे और
तेरे बच्चों को ज़मीन पर पटक-पटक-
कर मार डालेंगे।[8] वे तेरे यहाँ एक पत्थर
पर दूसरा पत्थर भी नहीं छोड़ेंगे[9] क्योंकि
तूने उस वक्त को नहीं पहचाना जब तुझे
जाँचा जा रहा था।”

45 फिर यीशु मंदिर में गया और जो
लोग वहाँ बिक्री कर रहे थे उन्हें बाहर

अध्य. 19
1 मत 25:28
2 मत 13:12, मत 25:29, मर 4:25, लूक 8:18
3 प्रेष 1:12
4 मत 21:1-3, मर 11:1-6
5 मत 21:6, 7

दूसरा कॉल.
1 जक 9:9, मर 11:7-10, यूह 12:14, 15
2 मत 21:8
3 भज 118:26, मत 21:9, मर 11:9
4 मत 21:15, यूह 12:19
5 यूह 11:35
6 यश 6:9, 10, मत 13:14
7 व्य 28:52, दान 9:26, लूक 21:20
8 लूक 23:28, 29
9 मत 24:2, मर 13:2, लूक 21:6

19:23 *शा., “मेरी चाँदी।”

19:38 *अति. क5 देखें। **19:43** *या “दुख देंगे।”

खदेड़ने लगा।[1] 46 उसने उनसे कहा, “लिखा है, ‘मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा,’[2] मगर तुम लोगों ने इसे लुटेरों का अड्डा* बना दिया है।”[3]

47 वह हर दिन मंदिर में सिखाता रहा। मगर प्रधान याजक, शास्त्री और जनता के खास-खास लोग उसे मार डालने की ताक में थे।[4] 48 मगर उन्हें ऐसा करने का सही मौका नहीं मिल रहा था, क्योंकि सब लोग उसकी बातें सुनने के लिए हमेशा उसे घेरे रहते थे।[5]

20 उन दिनों जब वह लोगों को मंदिर में सिखा रहा था और खुशखबरी सुना रहा था, तो एक बार प्रधान याजक और शास्त्री, मुखियाओं के साथ उसके पास आए। 2 वे उससे पूछने लगे, “बता, तू ये सब किस अधिकार से करता है? किसने तुझे यह अधिकार दिया है?”[6] 3 उसने कहा, “मैं भी तुमसे एक सवाल पूछता हूँ। तुम मुझे उसका जवाब दो। 4 जो बपतिस्मा यूहन्ना ने दिया, वह स्वर्ग की तरफ से था या इंसानों की तरफ से?” 5 तब वे एक-दूसरे से कहने लगे, “अगर हम कहें, ‘स्वर्ग की तरफ से,’ तो वह कहेगा, ‘फिर क्यों तुमने उसका यकीन नहीं किया?’ 6 लेकिन अगर हम कहें, ‘इंसानों की तरफ से,’ तो सब लोग हमें पत्थरों से मार डालेंगे इसलिए कि उन्हें पूरा यकीन है कि यूहन्ना एक भविष्यवक्ता था।”[7] 7 इसलिए उन्होंने कहा कि हम नहीं जानते कि किसकी तरफ से था। 8 तब यीशु ने उनसे कहा, “तो मैं भी तुम्हें नहीं बताऊँगा कि मैं किस अधिकार से यह सब करता हूँ।”

9 फिर वह लोगों को यह मिसाल देने लगा: “एक आदमी ने अंगूरों का बाग लगाया[1] और उसे बागबानों को ठेके पर देकर लंबे समय के लिए परदेस चला गया।[2] 10 कटाई का मौसम आने पर उसने एक दास को बागबानों के पास भेजा ताकि वे अंगूरों की फसल में से उसका हिस्सा उसे दें। मगर बागबानों ने उस दास को पीटा और खाली हाथ भेज दिया।[3] 11 फिर उसने एक और दास को उनके पास भेजा। उन्होंने उसे भी पीटा, बेइज़्ज़त किया और खाली हाथ भेज दिया। 12 फिर भी उसने तीसरे को भेजा। उन्होंने उसे भी घायल करके भगा दिया। 13 तब बाग के मालिक ने कहा, ‘अब मैं क्या करूँ? मैं अपने प्यारे बेटे को भेजता हूँ,[4] हो सकता है वे उसकी इज़्ज़त करें।’ 14 जैसे ही बागबानों ने उसके बेटे को देखा, वे आपस में कहने लगे, ‘यह तो वारिस है। चलो इसे मार डालें, तब इसकी विरासत हमारी हो जाएगी।’ 15 उन्होंने उसे बाग के बाहर ले जाकर मार डाला।[5] अब बाग का मालिक उनके साथ क्या करेगा? 16 वह आकर उन बागबानों को मार डालेगा और अंगूरों का बाग दूसरों को ठेके पर दे देगा।”

यह सुनकर उन्होंने कहा, “ऐसा कभी न हो!” 17 मगर उसने सीधे उनकी तरफ देखकर कहा, “फिर यह जो बात लिखी है इसका क्या मतलब है, ‘जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया, वही कोने का मुख्य पत्थर बन गया है’?[6] 18 जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।[7] और जिस किसी पर यह पत्थर गिरेगा, उसे यह चूर-चूर कर देगा।”

19 तब शास्त्रियों और प्रधान याजकों ने उसे उसी वक्त पकड़ना चाहा, क्योंकि वे समझ गए थे कि उसने यह मिसाल

अध्य. 19
1 मत 21:12; मर 11:15, 16
2 यश 56:7
3 यिर्म 7:11; मत 21:13; मर 11:17; यूह 2:16
4 मर 11:18
5 मर 12:37; लूक 21:38

अध्य. 20
6 मत 21:23-27; मर 11:27-33
7 लूक 7:29

दूसरा कॉल.
1 यश 5:7
2 मत 21:33-41; मर 12:1-9
3 2रा 17:13, 14; 2इत 36:15, 16; प्रेष 7:52; इब्र 11:36, 37
4 मत 17:5; यूह 3:16
5 प्रेष 3:15
6 भज 118:22; यश 28:16; मत 21:42, 44; मर 12:10, 11; प्रेष 4:11; 1पत 2:7
7 यश 8:14, 15

19:46 *शा., “की गुफा।”

उन्हीं को ध्यान में रखकर दी है। मगर
वे लोगों से डरते थे।[1] **20** वे उस पर
कड़ी नज़र रखे हुए थे। उन्होंने चुपके से
कुछ लोगों को पैसों से खरीद लिया कि वे
उसके सामने नेक होने का ढोंग करें और
उसकी बातों में उसे पकड़ सकें[2] ताकि
उसे सरकार और राज्यपाल* के हवाले
कर दें। **21** उन्होंने उससे कहा, “गुरु,
हम जानते हैं कि तू सही-सही बोलता
और सिखाता है और कोई भेदभाव नहीं
करता, बल्कि तू सच्चाई के मुताबिक
परमेश्वर की राह सिखाता है। **22** हमें
बता कि सम्राट* को कर देना सही है या
नहीं?” **23** मगर उसने उनकी चालाकी
भाँप ली और उनसे कहा, **24** “मुझे
एक दीनार* दिखाओ। इस पर किसकी
सूरत और किसके नाम की छाप है?”
उन्होंने कहा, “सम्राट की।” **25** उसने
कहा, “तो फिर जो सम्राट का है वह
सम्राट को चुकाओ,[3] मगर जो परमेश्वर
का है वह परमेश्वर को।”[4] **26** वे
लोगों के सामने उसकी बातों में उसे पकड़
नहीं सके, उलटा उसके जवाब से हैरान
रह गए और एक शब्द भी नहीं बोल
पाए।

27 मगर सदूकी, जो कहते हैं कि मरे
हुओं के फिर से ज़िंदा होने की शिक्षा सच
नहीं है,[5] उनमें से कुछ लोग उसके पास
आए और उससे सवाल करने लगे,[6]
28 “गुरु, मूसा ने हमारे लिए लिखा है,
‘अगर कोई आदमी बेऔलाद मर जाए
और अपनी पत्नी छोड़ जाए, तो उसके
भाई को चाहिए कि वह अपने मरे हुए
भाई की पत्नी से शादी कर ले और
अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे।’[7]

20:20 *शा., “राज्यपाल के अधिकार।” **20:22** *यूनानी में “कैसर।” **20:24** *अति. ख14 देखें।

अध्य. 20

1 मत 21:45, 46 मर 12:12

2 मत 22:15-22 मर 12:13-17

3 रोम 13:7 तीत 3:1 1पत 2:13

4 मत 22:21 मर 12:17

5 प्रेष 23:8

6 मत 22:23-28 मर 12:18-23

7 उत 38:7, 8 व्य 25:5, 6

दूसरा कॉल.

1 मत 22:29, 30 मर 12:24, 25

2 निर्ग 3:2, 6 मत 22:31-33 मर 12:26, 27

3 मत 22:32

29 सात भाई थे। पहले ने शादी की मगर
बेऔलाद मर गया। **30** फिर दूसरे ने
उसी औरत से शादी की मगर वह भी
बेऔलाद मर गया। **31** फिर तीसरे ने
उससे शादी की। इस तरह सातों भाइयों ने
एक-एक करके उस औरत से शादी की,
लेकिन बेऔलाद मर गए। **32** आखिर
में वह औरत भी मर गयी। **33** जब मरे
हुए ज़िंदा किए जाएँगे, तब वह उन सातों
में से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि सातों
उसे अपनी पत्नी बना चुके थे।”

34 यीशु ने उनसे कहा, “इस ज़माने*
में आदमी शादी करते हैं और औरतों की
भी शादी करायी जाती है। **35** मगर जो
उस ज़माने में जीवन पाने और मरे
हुओं में से ज़िंदा किए जाने के लायक
समझे जाएँगे, उनमें न आदमी शादी करेंगे
न औरतों की शादी करवायी जाएगी।[1]
36 दरअसल वे फिर कभी नहीं मर
सकते क्योंकि वे स्वर्गदूतों की तरह
होंगे और मरे हुओं में से ज़िंदा होने
की वजह से परमेश्वर के बच्चे कहलाएँ-
गे। **37** मगर यह बात कि मरे हुओं को
ज़िंदा किया जाता है, मूसा ने भी झाड़ी
के किस्से में ज़ाहिर की है, जहाँ वह
यहोवा* को ‘अब्राहम का परमेश्वर, इस-
हाक का परमेश्वर और याकूब का पर-
मेश्वर’ कहता है।[2] **38** वह मरे हुओं
का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है
इसलिए कि वे सब उसकी नज़र में ज़िंदा
हैं।”[3] **39** यह सुनकर शास्त्रियों में से
कुछ ने कहा, “गुरु, तूने क्या खूब कहा!”
40 इसके बाद उन्होंने उससे कोई और
सवाल करने की हिम्मत नहीं की।

41 फिर उसने भी उनसे सवाल किया,
“लोग क्यों कहते हैं कि मसीह, दाविद का

20:34 *या “दुनिया की व्यवस्था।” शब्दावली देखें। **20:37** *अति. क5 देखें।

सिर्फ एक वंशज है?[1] 42 दाविद खुद
भजनों की किताब में कहता है, ‘यहोवा*
ने मेरे प्रभु से कहा, “तू तब तक मेरे
दाएँ हाथ बैठ, 43 जब तक कि मैं तेरे
दुश्मनों को तेरे पाँवों की चौकी न बना
दूँ।”’[2] 44 जब दाविद उसे प्रभु कहता
है, तो वह उसका वंशज कैसे हुआ?”

45 जब सब लोग यीशु की सुन रहे थे,
तो उसने चेलों से कहा, 46 “शास्त्रियों
से खबरदार रहो, जिन्हें लंबे-लंबे चोगे
पहनकर घूमना और बाज़ारों में लोगों
से नमस्कार सुनना अच्छा लगता है और
सभा-घरों में सबसे आगे की* जगहों पर
बैठना और शाम की दावतों में सबसे
खास जगह लेना पसंद है,[3] 47 लेकिन
वे विधवाओं के घर* हड़प जाते हैं और
दिखावे के लिए लंबी-लंबी प्रार्थनाएँ करते
हैं। इन्हें दूसरों के मुकाबले और भी कड़ी
सज़ा मिलेगी।”

21 फिर उसने नज़र उठाकर देखा कि
अमीर लोग दान-पात्रों में अपना-
अपना दान डाल रहे हैं।[4] 2 तब उसने
एक ज़रूरतमंद विधवा को दो पैसे*
डालते देखा जिनकी कीमत न के बराबर
थी[5] 3 और कहा, “मैं तुमसे सच
कहता हूँ, इस गरीब विधवा ने उन सबसे
ज़्यादा डाला है।[6] 4 इसलिए कि उन
सबने अपनी बहुतायत में से डाला, मगर
इस औरत ने अपनी तंगी में से, जो कुछ
उसके जीने का सहारा था वह सबकुछ डाल
दिया।”[7]

5 बाद में जब उनमें से कुछ मंदिर के
बारे में बात कर रहे थे कि वह कैसे शान-
दार पत्थरों और समर्पित की हुई चीज़ों
से सजाया गया है,[1] 6 तो उसने कहा,
“ऐसे दिन आएँगे जब यह सब जो तुम
देख रहे हो, इनका एक भी पत्थर
दूसरे पत्थर के ऊपर नहीं बचेगा जो
ढाया न जाए।”[2] 7 तब चेलों ने उससे
पूछा, “गुरु, ये सब बातें असल में
कब होंगी और उस वक्त की क्या निशानी
होगी जब इनके होने का समय पास आ
रहा होगा?”[3] 8 उसने कहा, “खबर-
दार रहो कि तुम गुमराह न हो जाओ।[4]
इसलिए कि बहुत-से लोग आएँगे और
मेरा नाम लेकर दावा करेंगे, ‘मैं वही
हूँ’ और ‘तय किया हुआ वक्त पास आ
गया है।’ तुम उनके पीछे मत जाना।[5]
9 इसके अलावा, जब तुम युद्धों और
हंगामों* की खबरें सुनो, तो घबरा न
जाना। इसलिए कि पहले इन सबका
होना ज़रूरी है मगर अंत फौरन नहीं
आएगा।”[6]

10 फिर उसने उनसे कहा, “एक राष्ट्र
दूसरे राष्ट्र पर और एक राज्य दूसरे
राज्य पर[7] हमला करेगा।[8] 11 बड़े-
बड़े भूकंप आएँगे और एक-के-बाद-एक
कई जगह अकाल पड़ेंगे और महामारियाँ
फैलेंगी।[9] खौफनाक नज़ारे दिखायी देंगे
और आकाश में बड़ी-बड़ी निशानियाँ
दिखायी देंगी।

12 मगर इन सब बातों के होने से
पहले लोग तुम्हें पकड़वाएँगे, तुम पर
ज़ुल्म ढाएँगे,[10] तुम्हें सभा-घरों के हवाले
कर देंगे और जेलों में डलवा देंगे। मेरे
नाम की खातिर तुम्हें राजाओं और राज्य-
पालों के सामने पेश किया जाएगा।[11]
13 इससे तुम्हें गवाही देने का मौका
मिलेगा। 14 इसलिए अपने दिल में
ठान लो कि तुम पहले से तैयारी नहीं

अध्य. 20
1 मत 22:41-46; मर 12:35-37
2 भज 110:1; प्रेष 2:34, 35
3 मत 23:2, 6, 7; मर 12:38-40

अध्य. 21
4 मर 12:41
5 मर 12:42
6 मर 12:43, 44; 2कुर 8:12
7 मत 22:37

दूसरा कॉल.
1 मत 24:1, 2; मर 13:1, 2
2 लूक 19:44
3 मत 24:3; मर 13:4
4 2ती 3:13; 1यूह 4:1; प्रक 12:9
5 मत 24:4, 5; मर 13:5, 6
6 मत 24:6; मर 13:7
7 प्रक 6:4
8 मत 24:7; मर 13:8
9 प्रेष 11:28; प्रक 6:8
10 यूह 16:2
11 मत 10:17, 18; मत 24:9; मर 13:9; प्रेष 25:23; प्रक 2:10

20:42 *अति. क5 देखें। **20:46** *या “सबसे बढ़िया।” **20:47** *या “की जायदाद।” **21:2** *शा., “दो लेप्टौन।” अति. ख14 देखें।

21:9 *या “खलबली; बगावत।”

करोगे कि अपनी सफाई में क्या-क्या कहोगे।[1] **15** इसलिए कि मैं तुम्हें ऐसे शब्द और ऐसी बुद्धि दूँगा कि सब विरोधी साथ मिलकर भी तुम्हारा मुकाबला नहीं कर पाएँगे, न ही जवाब में कुछ कह पाएँगे।[2] **16** यहाँ तक कि तुम्हारे माता-पिता, भाई, रिश्तेदार और दोस्त तक तुम्हें पकड़वा देंगे* और तुममें से कुछ को मार डाला जाएगा।[3] **17** मेरे नाम की वजह से सब लोग तुमसे नफरत करेंगे।[4] **18** मगर तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं होगा।[5] **19** तुम धीरज धरने की वजह से अपनी जान बचा पाओगे।[6]

20 जब तुम यरूशलेम को फौजों से घिरा हुआ देखो,[7] तो जान लेना कि उसके उजड़ने का समय पास आ गया है।[8] **21** तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों की तरफ भागना शुरू कर दें[9] और जो यरूशलेम के अंदर हों, वे बाहर निकल जाएँ और जो देहातों में हों वे यरूशलेम में न जाएँ। **22** क्योंकि वे दिन, बदला चुकाने* के दिन होंगे ताकि जितनी बातें लिखी हैं वे सब पूरी हों। **23** जो गर्भवती होंगी और जो बच्चे को दूध पिलाती होंगी, उनके लिए वे दिन क्या ही भयानक होंगे![10] इसलिए कि देश पर बड़ी मुसीबत आ पड़ेगी और इन लोगों पर क्रोध भड़क उठेगा। **24** वे तलवार से मार डाले जाएँगे और उन्हें बंदी बनाकर सब राष्ट्रों में ले जाया जाएगा।[11] और जब तक राष्ट्रों* के लिए तय किया गया वक्त पूरा न हो जाए, तब तक यरूशलेम राष्ट्रों* के पैरों तले रौंदा जाएगा।[12]

25 यही नहीं, सूरज, चाँद और तारों में निशानियाँ दिखायी देंगी[1] और धरती के राष्ट्र बड़ी मुसीबत में होंगे क्योंकि समुंदर के गरजने और उसकी बड़ी हलचल की वजह से उन्हें बचने का कोई रास्ता नहीं सूझेगा। **26** धरती पर और क्या-क्या होगा, इस चिंता और डर के मारे लोगों के जी में जी न रहेगा, इसलिए कि आकाश की शक्तियाँ हिलायी जाएँगी। **27** इसके बाद वे इंसान के बेटे[2] को एक बादल में शक्ति और बड़ी महिमा के साथ आता देखेंगे।[3] **28** लेकिन जब ये बातें होने लगें, तो तुम सिर उठाकर सीधे खड़े हो जाना, क्योंकि तुम्हारे छुटकारे का वक्त पास आ रहा होगा।"

29 यीशु ने उन्हें एक मिसाल दी: "अंजीर के पेड़ और दूसरे सभी पेड़ों पर गौर करो।[4] **30** जब उनमें नयी पत्तियाँ निकल आती हैं, तो यह देखकर तुम जान लेते हो कि गरमियों का मौसम पास है। **31** उसी तरह, जब तुम ये बातें होती देखो, तो जान लेना कि परमेश्वर का राज पास है। **32** मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक सारी बातें पूरी न हो जाएँ, तब तक यह पीढ़ी हरगिज़ नहीं मिटेगी।[5] **33** आकाश और पृथ्वी मिट जाएँगे, मगर मेरे शब्द कभी नहीं मिटेंगे।[6]

34 मगर तुम खुद पर ध्यान दो कि हद-से-ज़्यादा खाने और पीने[7] से और ज़िंदगी की चिंताओं[8] के भारी बोझ से कहीं तुम्हारे दिल दब न जाएँ और वह दिन तुम पर पलक झपकते ही अचानक **35** फंदे की तरह न आ जाए।[9] इसलिए कि वह दिन धरती पर रहनेवाले सभी लोगों पर आ जाएगा। **36** इसलिए आँखों में नींद न आने दो[10] और हर घड़ी प्रार्थना और मिन्नत करते रहो[11] ताकि जिन बातों का होना तय है, उन

21:16 *या "विश्वासघात करेंगे।" **21:22** *या "न्याय करने।" **21:24** *या "गैर-यहूदियों।"

अध्य. 21
1 लूक 12:11, 12
2 मर 13:11; प्रेष 6:8, 10
3 मी 7:6; मर 13:12, 13; प्रेष 7:59
4 मत 10:22; मत 24:9
5 मत 10:29, 30; लूक 12:6, 7
6 मत 24:13; रोम 5:3, 4; इब्र 10:36; 2पत 1:5, 6
7 लूक 19:43
8 दान 9:26; मत 23:37, 38; मत 24:15, 16
9 मर 13:14
10 मत 24:19; मर 13:17; लूक 23:28, 29
11 व्य 28:64; दान 9:26
12 दान 4:25

दूसरा कॉल.
1 मत 24:29; मर 13:24, 25
2 दान 7:13
3 मत 24:30; मर 13:26; प्रक 1:7
4 मत 24:32, 33; मर 13:28, 29
5 मत 24:34; मर 13:30
6 मत 24:35; मर 13:31
7 यश 5:11, 12; रोम 13:13
8 नीत 11:4; मत 6:25; 1ती 6:8
9 1थि 5:2, 3; 2पत 3:10
10 मत 25:13; मर 13:33; 1कुर 16:13; 1पत 5:8
11 रोम 12:12; इफ 6:18; 1पत 4:7

सबसे तुम बच सको और इंसान के बेटे के
सामने खड़े रह सको।"[1]

37 इस तरह, यीशु दिन के वक्त
मंदिर में सिखाता था, मगर रात के
वक्त शहर से बाहर चला जाता और
जैतून नाम पहाड़ पर ठहरा करता था।
38 सब लोग मंदिर में उसकी सुनने
के लिए सुबह जल्दी उसके पास आ
जाते थे।

22 बिन-खमीर की रोटी का त्योहार
जो फसह कहलाता है,[2] पास आ
रहा था।[3] 2 और प्रधान याजक और
शास्त्री, यीशु को अपने रास्ते से हटाना
चाहते थे[4] मगर उन्हें लोगों का डर
था, इसलिए वे कोई बढ़िया तरकीब ढूँढ़
रहे थे।[5] 3 फिर शैतान, यहूदा में समा
गया जो इस्करियोती कहलाता था और
जिसकी गिनती उन बारहों में होती थी।[6]
4 यहूदा निकलकर प्रधान याजकों और
मंदिर के सरदारों के पास गया और उनसे
इस बारे में बात की कि वह यीशु को किस
तरह पकड़वाए।[7] 5 तब वे बहुत खुश
हुए और उन्होंने कहा कि वे उसे चाँदी
के सिक्के देंगे।[8] 6 यहूदा राज़ी हो गया
और यीशु को पकड़वाने के लिए ऐसा
मौका ढूँढ़ने लगा जब भीड़ उसके आस-
पास न हो।

7 अब बिन-खमीर की रोटी के
त्योहार का दिन आया, जब फसह का
जानवर चढ़ाया जाना था।[9] 8 यीशु ने
पतरस और यूहन्ना को यह कहकर भेजा,
"जाओ और हमारे लिए फसह का खाना
खाने की तैयारी करो।"[10] 9 उन्होंने
पूछा, "तू कहाँ चाहता है कि हम इसकी
तैयारी करें?" 10 उसने कहा, "देखो!
जब तुम शहर में जाओगे तो तुम्हें एक
आदमी पानी का घड़ा उठाए हुए मिलेगा।
उसके पीछे-पीछे उस घर में जाना जिसमें

अध्य. 21
1 मत 24:42
मर 13:35
प्रक 6:16, 17
प्रक 16:15

अध्य. 22
2 लैव 23:5-8
लूक 22:7
यूह 13:1
3 निर्ग 12:3, 6
4 लूक 9:22
5 मत 21:45, 46
मत 26:3-5
मर 14:1, 2
लूक 20:19
6 मत 26:14-16
मर 14:10, 11
यूह 6:70
यूह 13:2, 27
प्रेष 1:16, 17
7 यूह 13:18
8 जक 11:12
9 निर्ग 12:14, 18
व्य 16:1, 2
मत 26:17
मर 14:12
10 निर्ग 12:8

दूसरा कॉल.
1 मत 26:18, 19
मर 14:13-16
2 मत 26:20
मर 14:17
3 निर्ग 12:8
4 1कुर 10:16
5 इब्र 10:10
1पत 2:24
6 मत 26:27, 28
मर 14:23, 24
1कुर 11: 23-25
7 यिर्म 31:31
इब्र 7:22
इब्र 8:8
8 निर्ग 24:8
9 इब्र 9:13, 14
1पत 1:18, 19

वह जाएगा।[1] 11 तुम उस घर के
मालिक से कहना, 'गुरु ने पूछा है, "मेह-
मानों का वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने
चेलों के साथ फसह का खाना खाऊँ?"'
12 फिर वह तुम्हें ऊपर का एक बड़ा
कमरा दिखाएगा जो सजा हुआ होगा।
वहाँ इसकी तैयारी करना।" 13 तब वे
निकल पड़े और जैसा उसने बताया था
ठीक वैसा ही पाया और उन्होंने फसह की
तैयारी की।

14 जब वह वक्त आया, तो वह
अपने प्रेषितों के साथ खाना खाने
बैठा।*[2] 15 यीशु ने उनसे कहा, "मेरी
बड़ी तमन्ना थी कि मैं दुख झेलने से
पहले तुम्हारे साथ फसह का खाना खाऊँ।
16 क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जब
तक इससे जुड़ी हर बात परमेश्वर के राज
में पूरी न हो जाए, तब तक मैं इसे फिर
नहीं खाऊँगा।" 17 फिर एक प्याला
लेकर उसने प्रार्थना में धन्यवाद दिया और
कहा, "इसे लो और एक-एक करके इसमें
से पीओ। 18 इसलिए कि मैं तुमसे
कहता हूँ कि मैं यह दाख-मदिरा तब तक
दोबारा नहीं पीऊँगा जब तक परमेश्वर
का राज नहीं आता।"

19 फिर उसने एक रोटी ली[3] और
प्रार्थना में धन्यवाद देकर उसे तोड़ा और
यह कहते हुए उन्हें दिया, "यह मेरे शरीर
की निशानी है,[4] जो तुम्हारी खातिर दिया
जाना है।[5] मेरी याद में ऐसा ही किया
करना।"[6] 20 जब वे शाम का खाना
खा चुके तो उसने प्याला लेकर भी
ऐसा ही किया और कहा, "यह प्याला उस
नए करार की निशानी है[7] जिसे मेरे खून
से पक्का किया जाएगा,[8] उस खून से जो
तुम्हारी खातिर बहाया जाना है।[9]

22:14 * या "मेज़ से टेक लगाए बैठा।"

21 मगर देखो! मुझसे गद्दारी करने-
वाले का हाथ मेरे साथ मेज़ पर है।[1]
22 इंसान का बेटा तो जा ही रहा है,
ठीक जैसे उसके लिए तय किया गया है।[2]
लेकिन उस आदमी का बहुत बुरा होगा
जो इंसान के बेटे के साथ विश्वासघात
करके उसे पकड़वा देगा!"[3] **23** इस-
लिए वे आपस में बात करने लगे कि
आखिर उनमें से वह कौन है जो ऐसा
करनेवाला है।[4]

24 मगर फिर उनके बीच इस बात
पर गरमा-गरम बहस छिड़ गयी कि
उनमें सबसे बड़ा किसे समझा जाए।[5]
25 मगर उसने उनसे कहा, "दुनिया के
राजा लोगों पर हुक्म चलाते हैं और जो
अधिकार रखते हैं, वे दानी कहलाते हैं।[6]
26 मगर तुम्हें ऐसा नहीं होना है।[7] इसके
बजाय, जो तुममें सबसे बड़ा है वह सबसे
छोटा बने[8] और जो अगुवाई करता है,
वह सेवक जैसा बने। **27** इसलिए कि
कौन ज़्यादा बड़ा है, जो खाने के लिए मेज़
से टेक लगाए बैठा है या जो सेवा कर रहा
है? क्या वही नहीं जो मेज़ से टेक लगाए
बैठा है? मगर मैं तुम्हारे बीच सेवक
जैसा हूँ।[9]

28 मगर तुम वे हो जो मेरी
परीक्षाओं[10] के दौरान मेरा साथ देते
रहे।[11] **29** ठीक जैसे मेरे पिता ने मेरे
साथ एक करार किया है, वैसे ही मैं भी
तुम्हारे साथ राज का एक करार करता
हूँ[12] **30** ताकि तुम मेरे राज में मेरी
मेज़ पर खाओ-पीओ[13] और राजगद्दियों
पर बैठकर[14] इसराएल के 12 गोत्रों का
न्याय करो।[15]

31 शमौन, शमौन, देख! शैतान ने
तुम लोगों को गेहूँ की तरह फटकने की
माँग की है।[16] **32** मगर मैंने तेरे लिए
मिन्नत की है कि तू अपना विश्वास खो न
दे।[1] जब तू पश्चाताप करके लौट आए,
तो अपने भाइयों को मज़बूत करना।"[2]
33 तब पतरस ने उससे कहा, "प्रभु, मैं
तो तेरे साथ जेल जाने और मरने के लिए
भी तैयार हूँ।"[3] **34** मगर उसने कहा,
"पतरस, मैं तुझसे कहता हूँ, आज जब
तक तू मुझे जानने से तीन बार इनकार न
करेगा, मुर्गा बाँग न देगा।"[4]

35 उसने चेलों से यह भी कहा, "जब
मैंने तुम्हें पैसे की थैली, खाने की पोटली
और जूतियों के बिना भेजा था,[5] तो
क्या तुम्हें किसी चीज़ की कमी हुई
थी?" उन्होंने कहा, "नहीं!" **36** फिर
उसने उनसे कहा, "मगर अब जिसके
पास पैसे की थैली हो वह उसे ले ले
और खाने की पोटली भी रख ले। जिसके
पास कोई तलवार नहीं, वह अपना
चोगा बेचकर एक खरीद ले। **37** मैं
तुमसे कहता हूँ, यह ज़रूरी है कि यह
बात मुझ पर पूरी हो जो मेरे बारे में
लिखी गयी थी: 'वह अपराधियों में
गिना गया।'[6] अब यह बात मुझ पर पूरी
हो रही है।"[7] **38** तब उन्होंने कहा,
"प्रभु, देख! यहाँ दो तलवारें हैं।" उसने
कहा, "ये काफी हैं।"

39 फिर वह बाहर निकलकर अपने
दस्तूर के मुताबिक जैतून पहाड़ पर गया।
चेले भी उसके साथ गए।[8] **40** वहाँ
पहुँचकर उसने उनसे कहा, "प्रार्थना में
लगे रहो ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो।"[9]
41 वह उनसे कुछ दूर* आगे गया और
घुटने टेककर यह प्रार्थना करने लगा,
42 "हे पिता, अगर तेरी मरज़ी हो, तो
यह प्याला मेरे सामने से हटा दे। मगर
मेरी मरज़ी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी

22:41 *या "पत्थर को जितनी दूर फेंका जा सकता है, करीब उतनी दूर।"

अध्य. 22
1 भज 41:9, मत 26:21, मर 14:18, यूह 13:21
2 यश 53:7, 8, दान 9:26, प्रेष 4:27, 28
3 मत 26:24
4 मत 26:22, मर 14:19, यूह 13:22
5 मर 9:34, लूक 9:46
6 मत 20:25-27, मर 10:42-44
7 1पत 5:2, 3
8 लूक 9:46-48
9 मत 20:28, यूह 13:3-5, फिल 2:5-7
10 इब्र 4:15
11 यूह 6:67, 68
12 दान 7:27, लूक 12:32, 2ती 2:12, इब्र 12:28, याकू 2:5, प्रक 1:6
13 लूक 13:29, यूह 17:24
14 1कुर 6:2, प्रक 2:26, 27, प्रक 3:21, प्रक 20:6
15 मत 19:28
16 मत 26:31, मर 14:27, 1पत 5:8

दूसरा कॉल.
1 यूह 17:15
2 इब्र 12:12
3 मत 26:33, मर 14:29, यूह 13:37
4 मत 26:34, मर 14:30, लूक 22:61, यूह 13:38
5 मत 10:9, 10, मर 6:7-9, लूक 9:2, 3
6 यश 53:12
7 लूक 18:31
8 मत 26:30, मर 14:26, यूह 18:1
9 मत 26:41, मर 14:38, लूक 22:46

हो।”[1] 43 तब स्वर्ग से एक दूत उसके
सामने प्रकट हुआ और उसकी हिम्मत
बँधायी।[2] 44 उसका मन दुख और
चिंता से ऐसा छलनी हो गया कि वह और
ज़्यादा गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करता रहा[3]
और उसका पसीना खून की बूँदें बनकर
ज़मीन पर गिर रहा था। 45 जब वह
प्रार्थना करके उठा और अपने चेलों के
पास गया, तो उसने देखा कि वे सो रहे थे
क्योंकि वे दुख के मारे पस्त हो चुके थे।[4]
46 उसने उनसे कहा, “तुम सो क्यों रहे
हो? उठो और प्रार्थना करते रहो ताकि
तुम परीक्षा में न पड़ो।”[5]

47 जब वह बोल ही रहा था, तो देखो!
एक भीड़ वहाँ आयी जिसे यहूदा नाम का
वह आदमी ला रहा था, जो उन
बारहों में से एक था। वह यीशु को चूमने
के लिए उसके पास आया।[6] 48 मगर
यीशु ने उससे कहा, “यहूदा, क्या तू
इंसान के बेटे को चूमकर उसे पकड़वा रहा
है?” 49 जो उसके साथ थे जब उन्होंने
देखा कि क्या होनेवाला है, तो उन्होंने कहा,
“प्रभु, क्या हम उन पर तलवार चलाएँ?”
50 यहाँ तक कि उनमें से एक ने महा-
याजक के दास पर तलवार चलाकर
उसका दायाँ कान उड़ा दिया।[7] 51 मगर
यीशु ने कहा, “बहुत हो चुका।” और
यीशु ने उस दास का कान छूकर उसे ठीक
किया। 52 तब यीशु ने प्रधान याजकों
और मंदिर के सरदारों और मुखियाओं से
जो उसे पकड़ने के लिए वहाँ आए थे,
कहा, “क्या तुम तलवारें और लाठियाँ
लेकर मुझे पकड़ने आए हो, मानो मैं कोई
लुटेरा हूँ?[8] 53 जब मैं हर दिन तुम्हारे
बीच मंदिर में होता था,[9] तब तुमने मुझे
हाथ नहीं लगाया।[10] मगर यह वक्त
तुम्हारा है और अभी अंधकार का राज चल
रहा है।”[11]

54 तब उन्होंने उसे गिरफ्तार कर
लिया[1] और महायाजक के घर ले गए।
मगर पतरस कुछ दूरी पर रहते हुए
उनका पीछा करता रहा।[2] 55 जब वे
आँगन के बीच आग जलाकर एक-
साथ बैठ गए, तो पतरस भी उनके बीच
बैठा हुआ था।[3] 56 मगर एक दासी
ने उसे आग के सामने बैठे देखा। उसने
उसे गौर से देखा और कहा, “यह आदमी
भी उसके साथ था।” 57 मगर उसने
यह कहते हुए इनकार कर दिया, “मैं उसे
नहीं जानता।” 58 थोड़ी ही देर बाद
किसी और ने उसे देखकर कहा, “तू भी
उनमें से एक है।” मगर पतरस ने कहा,
“नहीं भई, मैं नहीं हूँ।”[4] 59 फिर
करीब एक घंटे बाद, एक और आदमी
ज़ोर देकर यह कहने लगा, “बेशक यह
आदमी भी उसके साथ था क्योंकि यह
एक गलीली है!” 60 मगर पतरस ने
कहा, “मैं नहीं जानता तू क्या कह रहा
है।” वह बोल ही रहा था कि उसी घड़ी
एक मुर्गे ने बाँग दी 61 और प्रभु ने
मुड़कर सीधे पतरस को देखा और पत-
रस को प्रभु की यह बात याद आयी,
“आज मुर्गे के बाँग देने से पहले, तू तीन
बार मुझे जानने से इनकार कर देगा।”[5]
62 और वह बाहर जाकर फूट-फूटकर
रोने लगा।

63 जिन आदमियों ने यीशु को हिरा-
सत में लिया था, वे उसकी खिल्ली
उड़ाने[6] और उसे मारने लगे।[7] 64 वे
उसका मुँह ढककर उससे पूछने लगे,
“भविष्यवाणी कर! तुझे किसने मारा?”
65 वे उसके बारे में बहुत-सी निंदा की
बातें कहने लगे।

66 जब दिन निकल आया तो लोगों
के मुखियाओं की सभा इकट्ठा हुई,[8]
जिसमें प्रधान याजक और शास्त्री भी थे।

अध्य. 22

1 मत 6:10; मत 26:39; मर 14:36; यूह 5:30; यूह 6:38
2 1रा 19:5, 7; दान 10:18, 19; मत 4:11
3 यूह 12:27; इब्र 5:7
4 मत 26:40; मर 14:37
5 मत 26:41; मर 14:38; लूक 22:40
6 मत 26:47-50; मर 14:43-46; यूह 18:2, 3
7 मत 26:51, 52; मर 14:47; यूह 18:10, 11
8 मत 26:55, 56; मर 14:48, 49
9 लूक 19:47
10 यूह 7:30
11 यूह 19:11

दूसरा कॉल.

1 यश 53:7; प्रेष 8:32
2 मत 26:57, 58; मर 14:53, 54; यूह 18:15
3 मत 26:69-75; मर 14:66-72; यूह 18:18
4 यूह 18:25-27
5 मत 26:75; मर 14:72
6 भज 22:7
7 यश 50:6; यश 53:5; मत 26:67, 68; मर 14:65
8 भज 2:2; मत 27:1; मर 15:1; प्रेष 4:26

वे उसे अपनी महासभा के भवन में ले गए
और उससे पूछने लगे, **67** “अगर तू
मसीह है, तो हमें बता दे।”[1] मगर उसने
कहा, “अगर मैं तुम्हें बताऊँ तो भी तुम
हरगिज़ यकीन नहीं करोगे। **68** और
अगर मैं तुमसे सवाल करूँ, तो तुम
मुझे जवाब नहीं दोगे। **69** मगर अब
से इंसान का बेटा[2] परमेश्वर के शक्ति-
शाली दाएँ हाथ बैठा हुआ होगा।”[3]
70 यह सुनकर उन सबने कहा, “तो
क्या तू परमेश्वर का बेटा है?” उसने
कहा, “तुम खुद कह रहे हो कि मैं हूँ।”
71 उन्होंने कहा, “अब हमें और गवाही
की क्या ज़रूरत है? हमने खुद इसके मुँह
से सुन लिया है।”[4]

23 तब वे सब-के-सब उठे और
उसे पीलातुस के पास ले गए।[5]
2 वहाँ पहुँचकर वे उस पर इलज़ाम
लगाने लगे,[6] “यह आदमी हमारे राष्ट्र को
बगावत के लिए भड़काता है, सम्राट* को
कर देने से मना करता है[7] और कहता है
कि मैं मसीह हूँ, मैं राजा हूँ।”[8] **3** तब
पीलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू यहूदियों
का राजा है?” जवाब में यीशु ने कहा,
“तू खुद कह रहा है।”[9] **4** तब पीला-
तुस ने प्रधान याजकों और सारी भीड़
से कहा, “मुझे इस आदमी में कोई दोष
नज़र नहीं आता।”[10] **5** मगर वे और
भी ज़ोर देकर कहने लगे, “यह सारे यहू-
दिया में, गलील से लेकर इस जगह
तक लोगों को सिखा-सिखाकर भड़का
रहा है।” **6** यह सुनकर पीलातुस ने
पूछा कि क्या यह आदमी गलीली है
7 और यह पक्का कर लेने के बाद कि
यीशु उस इलाके से है जिस पर हेरोदेस का
अधिकार है,[11] उसने उसे हेरोदेस के पास
भेज दिया। हेरोदेस उन दिनों यरूशलेम
में था।

8 यीशु को देखकर हेरोदेस बहुत खुश
हुआ इसलिए कि वह एक अरसे से
उसे देखना चाहता था। हेरोदेस ने उसके
बारे में बहुत कुछ सुना था[1] और उम्मीद
कर रहा था कि यीशु उसके सामने कोई
चमत्कार दिखाएगा। **9** इसलिए हेरो-
देस उससे बहुत देर तक सवाल करता
रहा, मगर यीशु ने कोई जवाब नहीं
दिया।[2] **10** लेकिन प्रधान याजक और
शास्त्री तैश में आ गए और खड़े हो-होकर
उस पर इलज़ाम लगाने लगे। **11** तब
हेरोदेस ने अपने सैनिकों के साथ मिल-
कर उसकी बेइज़्ज़ती की[3] और उसे एक
शानदार कपड़ा पहनाकर उसकी खिल्ली
उड़ायी[4] और उसे वापस पीलातुस के पास
भेज दिया। **12** उसी दिन हेरोदेस और
पीलातुस के बीच दोस्ती हो गयी, जबकि
अब तक उनमें दुश्मनी थी।

13 फिर पीलातुस ने प्रधान याजकों,
अधिकारियों और लोगों को इकट्ठा किया
14 और उनसे कहा, “तुम इस आदमी
को मेरे पास यह कहकर लाए कि यह
लोगों को बगावत करने के लिए भड़का
रहा है। देखो! मैंने तुम्हारे सामने इससे
सवाल-जवाब किए, मगर तुम इस पर
जो इलज़ाम लगा रहे हो उसका मुझे
कोई सबूत नहीं मिला।[5] **15** यहाँ तक
कि हेरोदेस को भी कोई सबूत नहीं
मिला, इसलिए उसने इसे वापस हमारे
पास भेज दिया है। इसने ऐसा कोई काम
नहीं किया कि इसे मौत की सज़ा दी जाए।
16 इसलिए मैं इसे कोड़े लगवाकर*[6]
छोड़ देता हूँ।” **17** *— **18** मगर
सारी भीड़ चिल्ला उठी, “इस आदमी को

23:2 *यूनानी में “कैसर।”

23:16 *शा., “सज़ा देकर।” **23:17** *अति. क3 देखें।

अध्य. 22

1 मत 26:63, मर 14:61

2 दान 7:13

3 भज 110:1, मत 26:64, मर 14:62, प्रेष 2:32, 33, प्रेष 7:55, रोम 8:34, कुल 3:1, इब्र 1:3

4 मत 26:65, मर 14:63

अध्य. 23

5 मत 27:2, मर 15:1, यूह 18:28

6 भज 35:11

7 मर 12:17

8 यूह 18:36

9 मत 27:11

10 यूह 18:38, इब्र 7:26, 1पत 2:21, 22

11 लूक 3:1

दूसरा कॉल.

1 मत 14:1, मर 6:14, लूक 9:7-9

2 यश 53:7

3 यश 53:3

4 भज 22:7

5 यूह 18:38

6 मत 27:26, यूह 19:1

मार डाल* और हमारे लिए बरअब्बा को
रिहा कर दे!”[1] 19 (बरअब्बा को शहर
में बगावत और कत्ल करने की वजह से
जेल में डाला गया था।) 20 एक बार
फिर पीलातुस ने भीड़ से बात की क्योंकि
वह यीशु को रिहा करना चाहता था।[2]
21 तब वे चीख-चीखकर कहने लगे,
“इसे काठ पर लटका दे! काठ पर लटका
दे!”[3] 22 उसने तीसरी बार उनसे कहा,
“क्यों, इस आदमी ने ऐसा क्या बुरा किया
है? इसने ऐसा कोई काम नहीं किया कि
इसे मौत की सज़ा दी जाए। इसलिए मैं
इसे कोड़े लगवाकर* छोड़ देता हूँ।”
23 मगर वे अपनी बात पर अड़े रहे और
ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कहने लगे कि
उसे मार डाला जाए।* उनका चिल्लाना
बढ़ता ही गया।[4] 24 इसलिए पीलातुस
ने यह फैसला सुनाया कि उनकी माँग पूरी
की जाए। 25 उसने उस आदमी को तो
रिहा कर दिया, जो बगावत और कत्ल
के इलज़ाम में जेल में था और जिसकी
लोग माँग कर रहे थे, जबकि उसने यीशु
को उनके हवाले कर दिया ताकि वे उसके
साथ जो चाहे करें।

26 जब वे उसे ले जा रहे थे, तो
उन्होंने शमौन नाम के एक आदमी
को पकड़ा जो कुरेने का रहनेवाला था
और देहात से आ रहा था। उन्होंने
यातना का काठ* उस पर रख दिया कि
वह उसे उठाकर यीशु के पीछे-पीछे
चले।[5] 27 उसके पीछे लोगों की बड़ी
भीड़ चल रही थी जिसमें औरतें भी
थीं, जो दुख के मारे छाती पीट रही
थीं और उसके लिए बिलख-बिलख-
कर रो रही थीं। 28 यीशु ने पलटकर

23:18 *शा., “को ले जा।” 23:22 *शा., “सज़ा देकर।” 23:23 *या “काठ पर मार डाला जाए।” 23:26 *शब्दावली देखें।

उन औरतों को देखा और कहा, “यरू-
शलेम की बेटियो, मेरे लिए मत रोओ।
इसके बजाय, अपने और अपने बच्चों के
लिए रोओ।[1] 29 क्योंकि देखो! वे दिन
आ रहे हैं जब लोग कहेंगे, ‘सुखी हैं वे
औरतें जो बाँझ हैं और जिन्होंने किसी
बच्चे को जन्म नहीं दिया और किसी को
दूध नहीं पिलाया!’[2] 30 तब वे पहाड़ों
से कहने लगेंगे, ‘हम पर गिर पड़ो!’
और पहाड़ियों से कहेंगे, ‘हमें ढक लो!’[3]
31 जब पेड़ हरा है तब वे ऐसा कर रहे
हैं, तो उस वक्त क्या करेंगे जब यह सूख
जाएगा?”

32 उसके साथ दो और आदमियों
को, जो अपराधी थे मार डालने के लिए
ले जाया जा रहा था।[4] 33 जब वे
खोपड़ी कहलानेवाली जगह पर पहुँचे,[5]
तो वहाँ उन्होंने यीशु को दो अपराधियों के
साथ काठ पर ठोंक दिया। एक अपराधी
उसके दायीं तरफ था और दूसरा बायीं
तरफ।[6] 34 मगर यीशु कह रहा था,
“पिता, इन्हें माफ कर दे क्योंकि ये नहीं
जानते कि ये क्या कर रहे हैं।” उन्होंने
उसके कपड़े आपस में बाँटने के लिए
चिट्ठियाँ डालीं।[7] 35 और लोग वहाँ
खड़े देख रहे थे। मगर उनके धर्म-अधि-
कारी* यह कहकर उसकी खिल्ली उड़ाते
रहे, “इसने दूसरों को तो बचाया। और
अगर यह परमेश्वर का भेजा हुआ मसीह
और उसका चुना हुआ है, तो अब खुद को
बचाए।”[8] 36 यहाँ तक कि सैनिकों ने
भी उसकी खिल्ली उड़ायी और उसे खट्टी
दाख-मदिरा देते हुए[9] कहा, 37 “अगर
तू यहूदियों का राजा है, तो खुद को बचा
ले।” 38 और उसके ऊपर यह लिख-
कर लगा दिया गया, “यह यहूदियों का
राजा है।”[10]

23:35 *शा., “शासक।”

अध्य. 23
1 मत 27:20, 21; मर 15:11; यूह 18:40
2 मत 27:22-26; मर 15:12-15; यूह 19:12
3 यूह 19:6
4 यूह 19:15, 16
5 मर 15:21; यूह 19:17

दूसरा कॉल.
1 मर 13:17
2 मत 24:19; लूक 21:23
3 हो 10:8
4 यश 53:12; मत 27:38
5 मत 27:33
6 यूह 19:17, 18
7 भज 22:18; मत 27:35; मर 15:24; यूह 19:24
8 भज 22:7, 8; मत 27:42, 43; मर 15:31
9 भज 69:21
10 मत 27:37; मर 15:26; यूह 19:19

39 तब उसके साथ लटकाए गए एक
अपराधी ने उसे ताना मारा,[1] “तू तो
मसीह है न? तो फिर खुद को बचा
और हमें भी।” 40 तब दूसरे अप-
राधी ने उसे डाँटा, “क्या तुझे पर-
मेश्वर का ज़रा भी डर नहीं, जबकि तू
भी वही सज़ा पा रहा है? 41 हमें जो
सज़ा मिली वह सही है, क्योंकि हमने जो
काम किए हैं उन्हीं का अंजाम भुगत रहे
हैं। मगर इस आदमी ने तो कुछ बुरा नहीं
किया।” 42 फिर उसने कहा, “यीशु,
जब तू अपने राज में[2] आए तो मुझे याद
करना।” 43 तब यीशु ने उससे कहा,
“मैं आज तुझसे सच कहता हूँ, तू मेरे साथ
फिरदौस* में होगा।”[3]

44 यह दिन का करीब छठा घंटा*
था, फिर भी पूरे देश में अंधकार छा
गया और नौवें घंटे# तक छाया रहा[4]
45 क्योंकि सूरज ने रौशनी देना बंद कर
दिया। तब मंदिर का परदा[5] बीच से फट-
कर दो टुकड़े हो गया।[6] 46 यीशु ज़ोर
से चिल्लाया और उसने कहा, “पिता, मैं
अपनी जान तेरे हवाले करता हूँ।”[7] यह
कहने के बाद उसने दम तोड़ दिया।*[8]
47 जो कुछ हुआ था उसे देखकर सेना-
अफसर ने परमेश्वर की बड़ाई की और
कहा, “यह वाकई एक नेक इंसान था।”[9]
48 वहाँ जमा भीड़ ने जब यह सब देखा,
तो वे छाती पीटते हुए घर लौट गए।
49 इतना ही नहीं, उसकी जान-पहचान-
वाले सब लोग कुछ दूरी पर खड़े थे। और
जो औरतें गलील से उसके साथ-साथ
आयी थीं, वे भी खड़ी होकर यह सब देख
रही थीं।[10]

23:43 *शब्दावली देखें। **23:44** *यानी दोपहर करीब 12 बजे। #यानी दोपहर करीब 3 बजे। **23:46** *या “आखिरी साँस ली।”

50 वहाँ यूसुफ नाम का एक आदमी
था, जो धर्म-सभा* का सदस्य और
एक अच्छा और नेक इंसान था।[1]
51 (उसने धर्म-अधिकारियों की साज़िश
और उनके काम में उनका साथ नहीं दिया
था।) वह यहूदिया के लोगों के एक शहर
अरिमतियाह का रहनेवाला था और पर-
मेश्वर के राज के आने का इंतज़ार कर
रहा था। 52 वह पीलातुस के सामने
गया और उसने यीशु की लाश माँगी।
53 उसने उसकी लाश नीचे उतारी[2] और
उसे बढ़िया मलमल में लपेटकर चट्टान
में खोदी गयी कब्र* में रखा,[3] जिसमें
अब तक कोई लाश नहीं रखी गयी
थी। 54 यह तैयारी का दिन था[4] और
सब्त[5] शुरू होनेवाला था। 55 मगर जो
औरतें यीशु के साथ गलील से आयी थीं,
वे भी पीछे-पीछे गयीं और उन्होंने कब्र*
को अच्छी तरह देखा और यह भी देखा
कि उसकी लाश कैसे रखी गयी थी।[6]
56 फिर वे लौट गयीं ताकि मसाले और
खुशबूदार तेल तैयार करें। मगर हाँ, जैसी
आज्ञा थी, उन्होंने सब्त के दिन आराम
किया।[7]

24 लेकिन हफ्ते के पहले दिन, वे
औरतें तैयार किए हुए खुशबू-
दार मसाले लेकर सुबह-सुबह कब्र*
पर आयीं।[8] 2 मगर उन्होंने देखा कि
कब्र* के मुँह पर रखा गया पत्थर
दूर लुढ़का हुआ है।[9] 3 अंदर जाने पर
उन्हें वहाँ प्रभु यीशु की लाश नहीं
मिली।[10] 4 जब वे इस बात को लेकर
बड़ी उलझन में थीं, तभी अचानक दो
आदमी उनके पास आ खड़े हुए जिनके
कपड़े तेज़ चमक रहे थे। 5 वे औरतें

23:50 *या “महासभा।” **23:53, 55; 24:1, 2** *या “स्मारक कब्र।”

अध्य. 23
1 मत 27:44, मर 15:32
2 लूक 1:32, 33
3 यश 11:6, यश 35:1, यश 65:17, प्रेष 24:15, प्रक 21:1
4 मत 27:45, मर 15:33
5 निर्ग 26:31-33
6 इब्र 10:19, 20
7 भज 31:5
8 मत 27:50
9 मत 27:54
10 मत 27:55, 56, मर 15:40, 41, लूक 8:2, 3

दूसरा कॉल.
1 मत 27:57-60, मर 15:43-46, यूह 19:38
2 व्य 21:22, 23
3 यश 53:9
4 मर 15:42, यूह 19:42
5 निर्ग 20:9, 10, व्य 5:13, 14
6 मत 27:61, मर 15:47
7 निर्ग 16:29, निर्ग 20:9, 10, निर्ग 31:15, व्य 5:12

अध्य. 24
8 मत 28:1, मर 16:1, 2, यूह 20:1
9 मत 28:2, मर 16:4
10 मर 16:5

डर गयीं और अपना सिर नीचे झुकाए
रहीं। तब उन आदमियों ने कहा, “जो
ज़िंदा है, उसे तुम मरे हुओं के बीच क्यों
ढूँढ़ रही हो?[1] **6** वह यहाँ नहीं है बल्कि
उसे ज़िंदा कर दिया गया है। याद करो,
जब वह गलील में ही था तो उसने तुमसे
क्या कहा था **7** कि ज़रूरी है कि इंसान
का बेटा पापियों के हवाले किया जाए
और काठ पर लटकाकर मार डाला जाए,
मगर फिर तीसरे दिन ज़िंदा हो जाए।”[2]
8 तब उन्हें उसकी ये बातें याद आयीं[3]
9 और वे कब्र* से लौट आयीं और
इन सारी बातों की खबर उन ग्यारहों को
और बाकी सभी को दी।[4] **10** ये औरतें
थीं, मरियम मगदलीनी, योअन्ना और
याकूब की माँ मरियम। उनके साथ दूसरी
औरतें भी थीं जिन्होंने प्रेषितों को ये बातें
बतायीं। **11** मगर प्रेषितों और दूसरे
चेलों को ये बातें एकदम बकवास लगीं
और उन्होंने इन औरतों का यकीन नहीं
किया।

12 लेकिन पतरस उठा और कब्र*
की तरफ दौड़ा। उसने झुककर कब्र के
अंदर देखा तो वहाँ सिर्फ मलमल का
कपड़ा पड़ा था। इसलिए जो कुछ हुआ
था, उस पर वह मन-ही-मन ताज्जुब
करता हुआ चला गया।

13 मगर देखो! उसी दिन दो चेले
इम्माऊस नाम के एक गाँव जा रहे थे, जो
यरूशलेम से करीब 11 किलोमीटर* दूर
है। **14** जो-जो हुआ था, उसके बारे में
वे एक-दूसरे से बात कर रहे थे।

15 जब वे इस बारे में एक-दूसरे से
चर्चा कर रहे थे, तो खुद यीशु उनके पास
आया और उनके साथ-साथ चलने लगा
16 मगर वे उसे पहचान नहीं पाए।[1]
17 उसने उनसे पूछा, “तुम चलते-चलते
एक-दूसरे से किस बारे में बहस कर रहे
हो?” तब वे रुक गए, उनके चेहरे पर
उदासी छायी हुई थी। **18** क्लियुपास
नाम के चेले ने उससे कहा, “क्या तू यरू-
शलेम में अकेला रहनेवाला कोई परदेसी
है और नहीं जानता* कि इस शहर में
इन दिनों क्या-क्या हुआ है?” **19** तब
उसने उनसे पूछा, “क्या हुआ है?”
उन्होंने कहा, “क्या तूने नहीं सुना कि
यीशु नासरी[2] के साथ क्या-क्या हुआ?
उसने ऐसे-ऐसे शक्तिशाली काम किए
और शिक्षाएँ दीं जिससे परमेश्वर और
इंसानों के सामने साबित हुआ कि वह
एक भविष्यवक्ता है।[3] **20** और हमारे
प्रधान याजकों और धर्म-अधिकारियों ने
उसे मौत की सज़ा देने के लिए सौंप दिया[4]
और उसे काठ पर ठोंक दिया गया।
21 मगर हम तो यह उम्मीद लगाए बैठे
थे कि यह वही है जो इसराएल को छुट-
कारा दिलाएगा।[5] और हाँ, इन सब घट-
नाओं को हुए आज तीसरा दिन हो चुका
है। **22** और-तो-और हमारे बीच कुछ
औरतों ने भी हमें हैरत में डाल दिया है
क्योंकि जब वे सुबह-सुबह कब्र* पर
गयीं,[6] **23** तो उन्हें उसकी लाश नहीं
मिली। वे आकर कहने लगीं कि उन्होंने
एक अनोखी घटना देखी, उन्हें स्वर्गदूत
दिखायी दिए जो कह रहे थे कि वह
ज़िंदा है! **24** फिर हममें से कुछ उसकी
कब्र* पर गए[7] और जैसा उन औरतों ने
बताया था, वैसा ही पाया मगर उसे नहीं
देखा।”

अध्य. 24
1 मत 28:5-7
मर 16:5-7
2 यो 1:17
मत 16:21
मर 8:31
लूक 9:22
3 यूह 2:22
4 मत 28:8

दूसरा कॉल.
1 यूह 20:14
यूह 21:4
2 मत 2:23
मत 21:11
3 व्य 18:18
लूक 7:15, 16
यूह 3:2
यूह 6:14
प्रेष 2:22
4 लूक 23:1
प्रेष 3:13
प्रेष 13:27, 28
5 प्रेष 1:6
6 मत 28:1, 8
लूक 24:9-11
7 लूक 24:12
यूह 20:3

24:9, 12, 22, 24 *या “स्मारक कब्र।” **24:13** *शा., “60 स्तादियौन।” एक स्तादियौन 185 मी. (606.95 फुट) के बरा-बर था। अति. ख14 देखें।

24:18 *या शायद, “क्या यरूशलेम में तू ही एक मुसाफिर है जो नहीं जानता?”

25 तब उसने उनसे कहा, “अरे ना-
समझ लोगो, तुम्हें भविष्यवक्ताओं की
सब बातों पर विश्‍वास करना इतना
मुश्‍किल क्यों लग रहा है! **26** क्या
मसीह के लिए यह ज़रूरी नहीं था कि
वह ये सारे दुख झेले[1] और फिर महिमा
पाए?”[2] **27** उसने मूसा की किताबों से
लेकर सारे भविष्यवक्ताओं की किताबों
तक,[3] यानी पूरे शास्त्र में उसके बारे
में जितनी भी बातें लिखी थीं, उन सबका
मतलब उन्हें खोल-खोलकर समझाया।

28 आखिरकार वे उस गाँव के नज़-
दीक आ पहुँचे जहाँ वे जा रहे थे और
उसने ऐसे दिखाया जैसे उसे आगे जाना
हो। **29** मगर वे उससे बार-बार कहने
लगे, “हमारे साथ रुक जा क्योंकि दिन
ढल चुका है और अँधेरा होनेवाला है।”
तब वह उनके साथ ठहरने के लिए घर
में गया। **30** जब वह उनके साथ खाने
पर बैठा,* तो उसने रोटी ली और प्रार्थना
में धन्यवाद देकर उसे तोड़ा और उन्हें देने
लगा।[4] **31** तब उनकी आँखें खुल गयीं
और वे उसे पहचान गए। मगर वह उनके
सामने से गायब हो गया।[5] **32** उन्होंने
एक-दूसरे से कहा, “जब वह सड़क पर
हमसे बात कर रहा था और हमें शास्त्र
का मतलब खोल-खोलकर* समझा रहा
था, तो क्या हमारे दिल की धड़कनें तेज़
नहीं हो गयी थीं?” **33** तब उसी घड़ी
वे उठे और यरूशलेम लौट आए और
उन्होंने उन ग्यारहों को दूसरे चेलों के साथ
इकट्ठा पाया, **34** जो कह रहे थे, “यह
बात सच है कि प्रभु ज़िंदा हो गया है। वह
शमौन को दिखायी दिया है!”[6] **35** फिर
इन लोगों ने भी वह सारी घटनाएँ बतायीं
जो सड़क पर हुई थीं और यह भी कि कैसे
उन्होंने उसे रोटी तोड़ते देखकर पहचान
लिया।[1]

36 वे इस बारे में बात कर ही रहे
थे कि तभी यीशु खुद उनके बीच आ
खड़ा हुआ और उनसे कहा, “तुम्हें शांति
मिले।”[2] **37** मगर वे बहुत डर गए और
दहशत में थे और उन्होंने सोचा कि यह
ज़रूर कोई स्वर्गदूत है। **38** तब उसने
उनसे कहा, “तुम क्यों परेशान हो रहे हो
और क्यों अपने दिलों में शक कर रहे
हो? **39** मेरे हाथ और मेरे पैर देखो कि
यह मैं ही हूँ। मुझे छूओ और देखो
क्योंकि स्वर्गदूत का हाड़-माँस नहीं होता,
जैसा कि तुम मेरा देख रहे हो।” **40** यह
कहते हुए उसने उन्हें अपने हाथ और पैर
दिखाए। **41** मगर वे अभी-भी मारे खुशी
और हैरत के यकीन नहीं कर रहे थे। तब
उसने उनसे कहा, “क्या तुम्हारे पास खाने
के लिए कुछ है?” **42** उन्होंने उसे भुनी
हुई मछली का एक टुकड़ा दिया **43** और
उसने लेकर उन सबके सामने खाया।

44 तब उसने कहा, “याद है, ये सारी
बातें मैंने तुम्हें उस वक्‍त बतायी थीं जब
मैं तुम्हारे साथ था।[3] मैंने बताया था, किस
तरह मूसा के कानून, भविष्यवक्ताओं की
किताबों और भजनों में मेरे बारे में जो कुछ
लिखा है, वह सब पूरा होना ज़रूरी है।”[4]
45 तब उसने शास्त्र में लिखी बातों का
मतलब उन्हें अच्छी तरह समझाया।*[5]
46 और उनसे कहा, “लिखा है कि मसीह
दुख झेलेगा और तीसरे दिन मरे हुओं
में से ज़िंदा हो जाएगा।[6] **47** फिर यरू-
शलेम से शुरू करते हुए सब राष्ट्रों में प्रचार
किया जाएगा[7] कि पापों की माफी पाने
के लिए[8] उसके नाम से पश्‍चाताप करो।[9]

24:30 *या “मेज़ से टेक लगाए था।”
24:32 *या “साफ-साफ।”
24:45 *या “उनके दिमाग पूरी तरह खोल दिए।”

अध्य. 24

1 भज 22:16-18, यश 53:7-9, 1कुर 15:3
2 फिल 2:9-11, इब्र 2:9, 1पत 1:11
3 यूह 1:45, प्रेष 10:43, प्रेष 26:22
4 मत 14:19, मत 15:36, मर 6:41
5 यूह 20:19
6 1कुर 15:3, 5

दूसरा कॉल.

1 लूक 24:30, 31
2 यूह 20:21
3 मत 16:21, लूक 9:22
4 लूक 24:27
5 यूह 12:16
6 यश 53:5, मर 9:31
7 गल 3:14
8 प्रेष 5:31
9 प्रेष 4:1, 2, प्रेष 5:27, 28

48 तुम्हें इन बातों की गवाही देनी है।[1]
49 और देखो! मैं तुम पर वह शक्ति भेज
रहा हूँ, जिसका वादा मेरे पिता ने किया
है। मगर जब तक तुम ऊपर से वह शक्ति
हासिल न कर लो, तब तक इसी शहर
में रहना।"[2]
50 फिर वह उन्हें शहर से बाहर बैत-
नियाह तक ले आया और अपने हाथ
उठाकर उन्हें आशीष दी। 51 आशीष
देते हुए वह उनसे जुदा हो गया और
उसे स्वर्ग उठा लिया गया।[1] 52 उन्होंने
उसे दंडवत किया* और खुशी-
खुशी यरूशलेम लौट आए।[2] 53 वे
हर दिन मंदिर में परमेश्वर की बड़ाई
करते रहे।[3]

24:52 * या "झुककर प्रणाम किया।"

अध्य. 24
1 यूह 15:26, 27; प्रेष 1:8
2 योए 2:28; प्रेष 1:4, 5; प्रेष 2:1, 4

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 1:9
2 यूह 16:22; प्रेष 1:12
3 प्रेष 2:46, 47

यूहन्ना

के मुताबिक खुशखबरी

सारांश

9 यीशु एक जन्म के अंधे को ठीक करता है (1-12)
फरीसी उस आदमी से सवाल-जवाब करते हैं (13-34)
फरीसियों का अंधापन (35-41)

10 चरवाहा और भेड़शालाएँ (1-21)
यीशु एक अच्छा चरवाहा है (11-15)
"मेरी दूसरी भेड़ें भी हैं" (16)
समर्पण के त्योहार पर यहूदियों से यीशु का सामना (22-39)
बहुत-से यहूदियों ने नहीं विश्वास किया (24-26)
"मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं" (27)
बेटा, पिता के साथ एकता में है (30, 38)
यरदन के उस पार कई लोगों ने विश्वास किया (40-42)

11 लाज़र की मौत (1-16)
मरियम और मारथा को यीशु दिलासा देता है (17-37)
यीशु, लाज़र को ज़िंदा करता है (38-44)
यीशु को मार डालने की साज़िश (45-57)

12 मरियम, यीशु के पैरों पर तेल उँडेलती है (1-11)
यीशु राजा की हैसियत से दाखिल होता है (12-19)
यीशु अपनी मौत की भविष्यवाणी करता है (20-37)
यहूदियों ने विश्वास नहीं किया जिससे भविष्यवाणी पूरी हुई (38-43)
यीशु दुनिया को बचाने आया (44-50)

13 यीशु अपने चेलों के पैर धोता है (1-20)
यीशु बताता है कि उसे पकड़वानेवाला यहूदा है (21-30)
नयी आज्ञा (31-35)
"अगर तुम्हारे बीच प्यार होगा" (35)
यीशु ने कहा कि पतरस उसका इनकार करेगा (36-38)

14 सिर्फ यीशु ही पिता के पास जाने की राह (1-14)
"मैं ही वह राह, सच्चाई और जीवन हूँ" (6)
यीशु वादा करता है कि पवित्र शक्ति आएगी (15-31)
"पिता मुझसे बड़ा है" (28)

15 अंगूर की सच्ची बेल की मिसाल (1-10)
मसीह जैसा प्यार करने की आज्ञा (11-17)
"क्या कोई इससे बढ़कर प्यार कर सकता है" (13)
दुनिया यीशु के चेलों से नफरत करती है (18-27)

16 यीशु के चेलों को मौत का सामना करना पड़ सकता है (1-4क)
पवित्र शक्ति का काम (4ख-16)
चेलों का दुख खुशी में बदल जाएगा (17-24)
यीशु ने दुनिया पर जीत हासिल की (25-33)

17 प्रेषितों के साथ यीशु की आखिरी प्रार्थना (1-26)
हमेशा की ज़िंदगी के लिए परमेश्वर को जानना ज़रूरी (3)
मसीही दुनिया के नहीं (14-16)
"तेरा वचन सच्चा है" (17)
'मैंने तेरा नाम बताया है' (26)

18 यहूदा, यीशु के साथ गद्दारी करता है (1-9)
पतरस तलवार चलाता है (10, 11)
यीशु, हन्ना के पास ले जाया गया (12-14)
पतरस पहली बार इनकार करता है (15-18)
यीशु, हन्ना के सामने (19-24)
पतरस दूसरी और तीसरी बार इनकार करता है (25-27)
यीशु, पीलातुस के सामने (28-40)
"मेरा राज इस दुनिया का नहीं है" (36)

19 यीशु को कोड़े लगाए गए, उसका मज़ाक उड़ाया गया (1-7)
पीलातुस फिर से यीशु से सवाल-जवाब करता है (8-16क)

1 शुरूआत में वचन था[1] और
वचन परमेश्‍वर के साथ था[2]
और वचन एक ईश्‍वर* था।[3] 2 यही
शुरूआत में परमेश्‍वर के साथ था।
3 सारी चीज़ें उसी के ज़रिए वजूद में
आयीं[4] और एक भी चीज़ ऐसी नहीं जो
उसके बिना वजूद में आयी हो।

4 उसके ज़रिए जीवन वजूद में
आया और जीवन इंसानों के लिए रौशनी
था।[5] 5 यह रौशनी अँधेरे में चमक रही
है,[6] लेकिन अँधेरा उस पर हावी नहीं हो
सका।

6 परमेश्‍वर की तरफ से भेजा हुआ
एक आदमी आया, उसका नाम यूहन्‍ना
था।[7] 7 यह आदमी गवाह बनकर
आया ताकि उस रौशनी के बारे में
गवाही दे[8] और इस तरह उसके ज़रिए
सब किस्म के लोग यकीन करें। 8 यह
आदमी खुद वह रौशनी नहीं था,[9] मगर
उस रौशनी की गवाही देने आया था।

9 वह सच्ची रौशनी जो सब
किस्म के इंसानों को रौशनी देती है,
बहुत जल्द दुनिया में आनेवाली थी।[10]

10 वह* दुनिया में था[1] और दुनिया
उसके ज़रिए वजूद में आयी[2] मगर दुनिया
ने उसे नहीं जाना। 11 वह अपने घर
आया मगर उसके अपने ही लोगों ने उसे
स्वीकार नहीं किया। 12 मगर जितनों
ने उसे स्वीकार किया, उन सबको उसने
परमेश्‍वर के बच्चे बनने का अधिकार
दिया,[3] क्योंकि उन्होंने उसके नाम पर
विश्‍वास किया।[4] 13 वे न तो खून से,
न शरीर की इच्छा से, न ही किसी इंसान
की मरज़ी से बल्कि परमेश्‍वर की मरज़ी
से पैदा हुए।[5]

14 वचन इंसान बना[6] और हमारे
बीच रहा और हमने उसका तेज देखा,
ऐसा तेज जैसा एक पिता के इक-
लौते बेटे[7] का होता है और वह परमेश्‍वर
की कृपा* और सच्चाई से भरपूर था।
15 (यूहन्‍ना ने उसके बारे में गवाही
दी, हाँ उसने चिल्लाकर कहा, “यह वही
है जिसके बारे में मैंने कहा था, ‘जो मेरे
बाद आया वह मुझसे आगे निकल गया
क्योंकि वह मुझसे पहले से वजूद में

अध्या. 1
1 कुल 1:15; प्रक 19:11, 13
2 नीत 8:22, 30
3 यश 9:6; यूह 1:18; फिल 2:5, 6
4 यूह 1:10
5 यूह 8:12
6 यूह 3:19
7 मत 3:1; लूक 3:2
8 मत 3:11
9 यूह 1:19, 20
10 मत 4:16, 17; यूह 3:19; यूह 12:46; 1यूह 2:8

दूसरा कॉल.
1 यूह 1:14
2 उत 1:26; 1कुर 8:6; कुल 1:16; इब्र 1:2
3 रोम 8:14, 16; 2कुर 6:18; इफ 1:5; 1यूह 3:1
4 गल 3:26
5 यूह 3:3; 1पत 1:23; 1यूह 3:9
6 फिल 2:7; 1ती 3:16; इब्र 2:14
7 यूह 3:16; 1यूह 4:9

1:1 *या “ईश्‍वर जैसा।”

1:10 *यानी वचन। **1:14** *या “महा-कृपा।”

था।'")[1] **16** हम सबने उससे भरपूर
महा-कृपा पायी जो खुद महा-कृपा से भर-
पूर है। **17** क्योंकि मूसा के ज़रिए हमें
कानून मिला था,[2] मगर महा-कृपा[3] और
सच्चाई हमें यीशु मसीह के ज़रिए मिली।[4]
18 किसी इंसान ने परमेश्वर को कभी
नहीं देखा।[5] इकलौते बेटे ने ही हमें पिता
के बारे में समझाया,[6] जो एक ईश्वर है[7]
और पिता के बिलकुल पास* है।[8]

19 यूहन्ना ने यह गवाही तब दी
जब यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों
और लेवियों को उसके पास यह पूछने
के लिए भेजा कि "तू कौन है?"[9]
20 उसने जवाब देने से इनकार नहीं
किया बल्कि कहा, "मैं मसीह नहीं हूँ।"
21 फिर उन्होंने पूछा, "तो क्या तू एलि-
याह है?"[10] उसने कहा, "नहीं।" "क्या तू
वही भविष्यवक्ता है जिसे आना था?"[11]
उसने कहा, "नहीं!" **22** तब उन्होंने
पूछा, "फिर तू कौन है? हमें बता ताकि
हम अपने भेजनेवालों को जवाब दे
सकें। तू अपने बारे में क्या कहता है?"
23 यूहन्ना ने कहा, "मैं वह आवाज़ हूँ
जो वीराने में पुकार रही है, 'यहोवा*
का रास्ता सीधा करो,'[12] ठीक जैसा
भविष्यवक्ता यशायाह ने कहा था।"[13]
24 यूहन्ना के पास आए इन लोगों
को फरीसियों ने भेजा था। **25** उन्होंने
सवाल किया, "अगर तू मसीह नहीं है,
न ही एलियाह है, न ही वह भविष्यवक्ता
है, तो फिर तू बपतिस्मा क्यों देता है?"
26 यूहन्ना ने जवाब दिया, "मैं पानी में
बपतिस्मा देता हूँ। मगर तुम्हारे बीच वह
खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते। **27** वह
मेरे बाद आ रहा है और मैं उसकी जूतियों
के फीते खोलने के भी लायक नहीं।"[1]
28 यह सब यरदन के पार बैतनियाह में
हुआ, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देता था।[2]

29 अगले दिन जब उसने यीशु को
अपनी तरफ आते देखा, तो कहा, "देखो,
परमेश्वर का मेम्ना[3] जो दुनिया का पाप
दूर ले जाता है![4] **30** यह वही है जिसके
बारे में मैंने कहा था, जो मेरे बाद आ
रहा है वह मुझसे आगे निकल गया है
क्योंकि वह मुझसे पहले से वजूद में था।[5]
31 मैं भी उसके बारे में नहीं जानता
था। मगर मैं इसलिए पानी में बपतिस्मा
दे रहा हूँ ताकि वह इसराएल पर ज़ाहिर
हो सके।"[6] **32** यूहन्ना ने यह गवाही
भी दी, "मैंने पवित्र शक्ति को कबूतर के
रूप में आकाश से उतरते देखा और वह
उस पर ठहर गयी।[7] **33** मैं भी उसके
बारे में नहीं जानता था मगर जिसने मुझे
पानी में बपतिस्मा देने के लिए भेजा उसी
ने मुझे बताया, 'जिस किसी पर तू पवित्र
शक्ति को उतरते और ठहरते देखे,[8] वही
है जो पवित्र शक्ति से बपतिस्मा देगा।'[9]
34 मैंने यह देखा है और मैंने गवाही दी है
कि यही परमेश्वर का बेटा है।"[10]

35 अगले दिन फिर यूहन्ना अपने
दो चेलों के साथ खड़ा था। **36** जब
उसने यीशु को वहाँ से जाते देखा तो
कहा, "देखो परमेश्वर का मेम्ना!"[11]
37 उसकी यह बात सुनकर दोनों चेले
यीशु के पीछे-पीछे गए। **38** तब यीशु
ने मुड़कर उन्हें पीछे आते देखा और
उनसे पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"
उन्होंने कहा, "रब्बी, (जिसका मतलब
है, "गुरु") तू कहाँ ठहरा हुआ है?"
39 यीशु ने उनसे कहा, "आओ और
चलकर देख लो।" तब वे उसके साथ
गए और देखा कि वह कहाँ ठहरा हुआ
है और उस दिन वे उसी के साथ ठहरे।

1:18 *या "सीने के पास।" यह दिखाता है कि वह पिता के लिए सबसे खास है। **1:23** *अति. क5 देखें।

अध्य. 1
1 यूह 8:58
2 निर्ग 31:18
3 रोम 3:23, 24; इफ 1:5, 6
4 यूह 8:31, 32; यूह 14:6; यूह 18:37
5 निर्ग 33:17, 20; यूह 6:46
6 मत 11:27
7 यूह 1:1
8 नीत 8:22, 30
9 लूक 3:15
10 मला 4:5
11 व्य 18:15; यूह 6:14, 15; यूह 7:37, 40; प्रेष 3:22
12 यश 40:3
13 मत 3:1, 3; मर 1:3; लूक 1:67, 76; लूक 3:3, 4; लूक 7:27, 28

दूसरा कॉल.
1 मत 3:11
2 मत 3:1, 6
3 प्रेष 8:32, 35; 1पत 1:18, 19; प्रक 5:6
4 यश 53:7, 11; यूह 6:51; 1कुर 15:3; इब्र 9:13, 14; 1पत 2:24; 1यूह 2:1, 2; 1यूह 3:5; 1यूह 4:14
5 यूह 1:15
6 प्रेष 19:4
7 मत 3:16; मर 1:10; लूक 3:22
8 मत 3:16
9 मत 3:11; प्रेष 1:5; प्रेष 2:1, 4
10 मत 3:17
11 प्रक 5:12

यह दिन का करीब दसवाँ घंटा* था।
40 यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे
जानेवाले इन दो जनों में से एक का नाम
अन्द्रियास[1] था जो शमौन पतरस का भाई
था। 41 अन्द्रियास सबसे पहले अपने
सगे भाई शमौन से मिला और उससे कहा,
"हमें मसीहा[2] मिल गया है।" (मसीहा
का मतलब है, "अभिषिक्त जन।")
42 अन्द्रियास उसे यीशु के पास ले गया।
यीशु ने शमौन को देखकर कहा, "तू
यूहन्ना का बेटा शमौन[3] है। तू कैफा कह-
लाएगा" (यूनानी में कैफा का अनुवाद
"पतरस"[4] किया जाता है)।

43 अगले दिन यीशु गलील जाना
चाहता था। जब वह फिलिप्पुस[5] से मिला
तो उसने कहा, "मेरा चेला बन जा।"
44 फिलिप्पुस बैतसैदा शहर का रहने-
वाला था, अन्द्रियास और पतरस भी वहीं
से थे। 45 जब फिलिप्पुस, नतनएल[6]
से मिला तो उसने कहा, "हमें वह मिल
गया है जिसके बारे में मूसा ने कानून में
और भविष्यवक्ताओं ने लिखा था। वह
नासरत का रहनेवाला यीशु है, जो यूसुफ
का बेटा है।"[7] 46 मगर नतनएल ने
उससे कहा, "भला नासरत से भी कुछ
अच्छा निकल सकता है?" फिलिप्पुस ने
कहा, "चलकर देख ले।" 47 यीशु ने
नतनएल को अपनी तरफ आते देखा
और उसके बारे में कहा, "देखो, यह एक
सच्चा इसराएली है जिसमें कोई कपट
नहीं।"[8] 48 तब नतनएल ने उससे
कहा, "तू मुझे कैसे जानता है?" यीशु ने
कहा, "फिलिप्पुस के बुलाने से भी पहले
जब तू अंजीर के पेड़ के नीचे था,
मैंने तुझे देखा था।" 49 तब नतनएल
ने उससे कहा, "गुरु, तू परमेश्वर का बेटा
है, इसराएल का राजा है।"[9] 50 यीशु

1:39 *यानी शाम करीब 4 बजे।

अध्य. 1

1 मत 4:18
2 दान 9:25
3 मत 10:2; प्रेष 15:14
4 मत 16:18
5 मत 10:2, 3
6 मत 10:2, 3; लूक 6:13, 14
7 मत 1:16; मत 13:55; लूक 2:4
8 यूह 2:24, 25
9 मत 27:11; लूक 1:31, 32; यूह 12:13

दूसरा कॉल.

1 उत 28:10, 12; भज 104:4; दान 7:13; मत 4:11; लूक 22:43

अध्य. 2

2 मर 7:3

ने कहा, "क्या तूने इसलिए यकीन किया
क्योंकि मैंने तुझसे कहा कि मैंने तुझे
अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था? तू इससे
भी बड़े-बड़े काम देखेगा।" 51 फिर
यीशु ने उससे कहा, "मैं तुम लोगों से सच-
सच कहता हूँ, तुम स्वर्ग को खुला हुआ
और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को इंसान के
बेटे के पास नीचे आते और ऊपर जाते
देखोगे।"[1]

2 फिर तीसरे दिन गलील में काना नाम
की जगह एक शादी की दावत थी
और यीशु की माँ भी वहाँ थी। 2 यीशु
और उसके चेलों को भी शादी में बुलाया
गया था।

3 जब वहाँ दाख-मदिरा कम पड़
गयी, तो यीशु की माँ ने उससे
कहा, "उनकी दाख-मदिरा खत्म हो गयी
है।" 4 मगर यीशु ने उससे कहा, "हम
क्यों इसकी चिंता करें?* मेरा वक्त
अब तक नहीं आया है।" 5 उसकी
माँ ने सेवा करनेवालों से कहा, "वह
तुमसे जो कहे, वही करना।" 6 वहाँ
पत्थर के छः मटके रखे थे, जैसा यहू-
दियों के शुद्ध करने के नियमों के मुता-
बिक ज़रूरी था।[2] हर मटके में 44 से
66 लीटर* पानी समा सकता था।
7 यीशु ने उनसे कहा, "मटकों को पानी
से भर दो।" तब उन्होंने मटके मुँह तक
लबालब भर दिए। 8 फिर उसने कहा,
"अब इसमें से थोड़ा लेकर दावत की देख-
रेख करनेवाले के पास ले जाओ।" तब

2:4 *शा., "हे औरत, मुझे क्या और तुझे क्या?" किसी की बात पर एतराज़ करने के लिए यह मुहावरा कहा जाता था। "औरत" कहना बेइज़्ज़ती करना नहीं था। 2:6 *शायद यहाँ द्रव्य माप बत का ज़िक्र किया गया है जो 22 ली. के बराबर था। अति. ख14 देखें।

वे ले गए। 9 दावत की देखरेख करने-
वाले ने वह पानी चखा जो अब दाख-
मदिरा में बदल चुका था। मगर वह
नहीं जानता था कि यह मदिरा कहाँ
से आयी (जबकि सेवा करनेवाले जानते
थे जिन्होंने मटके से पानी निकाला था)।
तब उसने दूल्हे को बुलाया 10 और
उससे कहा, "हर कोई बढ़िया दाख-मदिरा
पहले निकालता है और जब लोग पीकर
धुत्त हो जाते हैं, तो हलकी दाख-मदिरा
देता है। मगर तूने अब तक इस बेहतरीन
दाख-मदिरा को अलग रखा हुआ है।"
11 इस तरह यीशु ने गलील के काना में
पहला चमत्कार किया और अपनी शक्ति
दिखायी[1] और उसके चेलों ने उस पर
विश्वास किया।

12 इसके बाद यीशु, उसकी माँ,
उसके भाई[2] और चेले कफरनहूम गए,[3]
मगर वहाँ ज़्यादा दिन नहीं ठहरे।

13 यहूदियों का फसह का त्योहार[4]
पास था और यीशु यरूशलेम गया।
14 उसने वहाँ मंदिर में मवेशी, भेड़ और
कबूतर[5] बेचनेवालों को और पैसे बदलने-
वाले सौदागरों को अपनी-अपनी गद्दियों
पर बैठा देखा। 15 तब उसने रस्सियों
का एक कोड़ा बनाया और उन सभी
को उनकी भेड़ों और उनके मवेशियों के
साथ मंदिर से बाहर खदेड़ दिया। उसने
सौदागरों के सिक्के बिखरा दिए और
उनकी मेज़ें पलट दीं।[6] 16 उसने कबू-
तर बेचनेवालों से कहा, "यह सब लेकर
यहाँ से निकल जाओ! मेरे पिता के घर को
बाज़ार* मत बनाओ!"[7] 17 तब उसके
चेलों को याद आया कि यह लिखा है,
"तेरे भवन के लिए जोश की आग मुझे
भस्म कर देगी।"[8]

2:16 *या "व्यापार की जगह।"

अध्य. 2
1 यश 9:1, 2; यूह 1:14
2 मत 13:55; मर 3:31; लूक 8:19; प्रेष 1:14
3 मत 4:13
4 निर्ग 12:14; गि 28:16; व्य 16:1; यूह 11:55
5 लैव 1:14
6 मत 21:12; मर 11:15, 16; लूक 19:45
7 यिर्म 7:11; मत 21:13; मर 11:17; लूक 19:46
8 भज 69:9

दूसरा कॉल.
1 मत 12:38; मत 16:1; यूह 4:48; यूह 6:30
2 मत 26:59-61; मत 27:39, 40; मर 14:57, 58
3 मत 16:21
4 लूक 24:6-8
5 मत 9:3, 4; मर 2:6-8; यूह 1:47, 48; यूह 6:64; प्रक 2:23

अध्य. 3
6 यूह 7:50, 51; यूह 19:39
7 यूह 12:42
8 यूह 1:38
9 यूह 2:11
10 यूह 14:11; प्रेष 2:22; प्रेष 10:38
11 यूह 1:12, 13; 1पत 1:3, 23; 1यूह 3:9

18 यह देखकर यहूदियों ने उससे
कहा, "तू हमें कौन-सा चमत्कार दिखा
सकता है[1] जिससे हम जानें कि तुझे
यह सब करने का अधिकार मिला है?"
19 यीशु ने उन्हें जवाब दिया, "इस मंदिर
को गिरा दो और मैं तीन दिन के
अंदर इसे खड़ा कर दूँगा।"[2] 20 तब
यहूदी कहने लगे, "यह मंदिर बनाने में
46 साल लगे थे और तू इसे तीन दिन
में खड़ा कर देगा?" 21 मगर मंदिर
से उसका मतलब था, उसका अपना
शरीर।[3] 22 जब उसे मरे हुओं में से
ज़िंदा किया गया, तो उसके चेलों को याद
आया कि वह यह बात कहा करता था।[4]
और उन्होंने शास्त्र का और यीशु की बात
का यकीन किया।

23 जब वह फसह के त्योहार के वक्त
यरूशलेम में था, तो बहुत-से लोगों ने
उसके चमत्कार देखकर उसके नाम पर
विश्वास किया। 24 मगर यीशु ने खुद
को उनके भरोसे नहीं छोड़ा क्योंकि वह
सबको जानता था। 25 और लोगों के
बारे में जानने के लिए उसे किसी इंसान
की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि वह जानता था
कि इंसान के दिल में क्या है।[5]

3 नीकुदेमुस[6] नाम का एक फरीसी, जो
यहूदियों का एक धर्म-अधिकारी था,
2 रात के वक्त यीशु के पास आया[7] और
उससे कहा, "रब्बी,[8] हम जानते हैं कि तू
परमेश्वर की तरफ से आया शिक्षक है।
इसलिए कि तू जो चमत्कार करता है, वह
कोई भी इंसान तब तक नहीं कर सकता,[9]
जब तक कि परमेश्वर उसके साथ न
हो।"[10] 3 यीशु ने उसे जवाब दिया, "मैं
तुझसे सच-सच कहता हूँ कि जब तक कोई
दोबारा पैदा न हो,*[11] वह परमेश्वर का

3:3 *या शायद, "कोई ऊपर से न
पैदा हो।"

राज नहीं देख सकता।”[1] 4 नीकुदेमुस
ने कहा, “एक इंसान बड़ा होकर दोबारा
कैसे पैदा हो सकता है? क्या वह अपनी
माँ के गर्भ में वापस जा सकता है और
दोबारा पैदा हो सकता है?” 5 यीशु ने
उसे जवाब दिया, “मैं तुझसे सच-सच
कहता हूँ, जब तक कोई पानी और पवित्र
शक्ति से पैदा न हो,[2] तब तक वह पर-
मेश्वर के राज में दाखिल नहीं हो सकता।
6 जो शरीर से पैदा हुआ है, वह शारी-
रिक है और जो पवित्र शक्ति से पैदा हुआ
है, वह स्वर्ग का है। 7 मेरी इस बात पर
ताज्जुब मत कर कि तुम लोगों के लिए
दोबारा पैदा होना ज़रूरी है। 8 हवा
जहाँ चाहे वहाँ बहती है और तू हवा चलने
की आवाज़ सुनता है, मगर तू नहीं जानता
कि यह कहाँ से आती है और कहाँ जा रही
है। जो कोई पवित्र शक्ति से पैदा होता है
वह ऐसा ही है।”[3]

9 यह सुनकर नीकुदेमुस ने उससे
कहा, “यह सब कैसे हो सकता है?”
10 यीशु ने जवाब दिया, “तू इसराए-
लियों का एक गुरु होकर भी ये बातें नहीं
जानता? 11 मैं तुझसे सच-सच कहता
हूँ, हम जो जानते हैं उसी के बारे में
बताते हैं और हमने जो देखा है उसी
की गवाही देते हैं, मगर तुम लोग हमारी
गवाही कबूल नहीं करते। 12 मैं तुम्हें
धरती की बातें बता रहा हूँ फिर भी तुम
यकीन नहीं करते, तो अगर मैं तुम्हें स्वर्ग
की बातें बताऊँ, तो कैसे यकीन करोगे?
13 इतना ही नहीं, कोई भी इंसान स्वर्ग
पर नहीं चढ़ा,[4] मगर सिर्फ एक ही है
जो स्वर्ग से उतरा है[5] और वह है इंसान
का बेटा। 14 ठीक जैसे मूसा ने वीराने
में उस साँप को ऊँचे पर चढ़ाया,[6] उसी
तरह ज़रूरी है कि इंसान के बेटे को भी
ऊँचे पर चढ़ाया जाए[7] 15 ताकि हर
कोई जो उस पर यकीन करे वह हमेशा
की ज़िंदगी पाए।[1]

16 क्योंकि परमेश्वर ने दुनिया से
इतना प्यार किया कि उसने अपना इक-
लौता बेटा दे दिया[2] ताकि जो कोई
उस पर विश्वास करे, वह नाश न
किया जाए बल्कि हमेशा की ज़िंदगी
पाए।[3] 17 परमेश्वर ने अपने बेटे को
दुनिया में इसलिए नहीं भेजा कि वह
दुनिया को सज़ा सुनाए, मगर इस-
लिए भेजा कि दुनिया उसके ज़रिए उद्धार
पाए।[4] 18 जो उस पर विश्वास करता
है, उसे सज़ा नहीं दी जाएगी।[5] जो उस
पर विश्वास नहीं करता, उसे सज़ा
सुनायी जा चुकी है क्योंकि उसने पर-
मेश्वर के इकलौते बेटे के नाम पर
विश्वास नहीं किया।[6] 19 न्याय इस
आधार पर किया जाता है: रौशनी दुनिया
में आयी,[7] मगर लोगों ने रौशनी के
बजाय अंधकार से प्यार किया क्योंकि
उनके काम दुष्ट थे। 20 जो बुरे कामों
में लगा रहता है, वह रौशनी से नफरत
करता है और रौशनी में नहीं आता ताकि
उसके बुरे कामों का परदाफाश न हो
जाए। 21 मगर जो सही काम करता है
वह रौशनी में आता है[8] ताकि साबित हो
कि उसने ये काम परमेश्वर की मरज़ी के
मुताबिक किए हैं।”

22 इसके बाद, यीशु और उसके चेले
यहूदिया के देहातों में गए और उसने
वहाँ उनके साथ कुछ वक्त बिताया और
लोगों को बपतिस्मा दिया।[9] 23 मगर
यूहन्ना भी सालिम के पास एनोन नाम की
एक जगह बपतिस्मा दे रहा था, क्योंकि
वहाँ बहुत पानी था[10] और लोग आते
रहे और बपतिस्मा लेते रहे।[11] 24 उस
वक्त तक यूहन्ना को जेल में नहीं डाला
गया था।[12]

अध्य. 3

1 1कुर 15:50
2 मत 3:11, मत 28:19, प्रेष 1:5, प्रेष 8:36, प्रेष 10:45, प्रेष 10:47, प्रेष 19:5, 6
3 रोम 8:14, 16
4 प्रेष 2:34
5 यूह 6:38, यूह 8:23, 42
6 गि 21:8, 9
7 यूह 8:28, गल 3:13

दूसरा कॉल.

1 यूह 3:36, यूह 20:31
2 रोम 5:8, रोम 8:32, 1यूह 4:9, 10, 1यूह 4:19
3 यूह 6:40, यूह 20:31, रोम 6:23, 2ती 3:15, 1यूह 5:13
4 लूक 19:10, यूह 12:47, 1कुर 15:22, 2कुर 5:18, 19, 1ती 1:15, 1यूह 2:1, 2, 1यूह 4:14
5 यूह 5:24
6 मत 10:33, इब्र 10:29
7 यूह 1:9, यूह 8:12, यूह 9:5, यूह 12:46
8 यूह 12:36, 46, 1यूह 1:7
9 यूह 4:2
10 मर 1:10, प्रेष 8:38
11 मत 3:1, 5, 6
12 मत 14:3, लूक 3:19, 20

25 तब शुद्ध किए जाने के रिवाज़
को लेकर किसी यहूदी के साथ यूहन्ना
के चेलों की बहस छिड़ गयी। 26 फिर
यूहन्ना के चेले उसके पास आए और
उससे कहने लगे, “गुरु, वह आदमी जो
यरदन के उस पार तेरे साथ था और
जिसके बारे में तूने गवाही दी थी,[1] वह
बपतिस्मा दे रहा है और सब उसके पास
जा रहे हैं।” 27 यूहन्ना ने कहा, “जब
तक एक इंसान को स्वर्ग से न दिया
जाए, तब तक वह एक भी चीज़ नहीं
पा सकता। 28 तुम खुद इस बात के
गवाह हो कि मैंने कहा था, मैं मसीह नहीं
हूँ[2] मगर मुझे उसके आगे भेजा गया है।[3]
29 जिसके पास दुल्हन है वही दूल्हा है।[4]
मगर जब दूल्हे का दोस्त खड़ा होता है
और दूल्हे को बात करते सुनता है, तो
उसकी आवाज़ सुनकर उसे बहुत खुशी
होती है। इसलिए मेरी यह खुशी पूरी
की गयी है। 30 यह ज़रूरी है कि वह
बढ़ता जाए और मैं घटता जाऊँ।”

31 जो ऊपर से आता है वह बाकी
सबके ऊपर है।[5] जो धरती से है, वह
धरती का होता है और धरती की बातें
बोलता है। जो स्वर्ग से आता है, वह
बाकी सबके ऊपर है।[6] 32 उसने जो
देखा और सुना है, उसकी वह गवाही
देता है,[7] मगर कोई आदमी उसकी गवाही
पर यकीन नहीं करता।[8] 33 जिसने
उसकी गवाही पर यकीन किया है उसने
इस बात पर अपनी मुहर लगायी है*
कि परमेश्वर सच्चा है।[9] 34 परमेश्वर
ने जिसे भेजा है, वह परमेश्वर की बातें
बताता है[10] इसलिए कि परमेश्वर थोड़ा-
थोड़ा करके* पवित्र शक्ति नहीं देता।
35 पिता बेटे से प्यार करता है[11] और
उसने सबकुछ उसके हाथ में सौंप दिया
है।[1] 36 जो बेटे पर विश्वास करता है
वह हमेशा की ज़िंदगी पाएगा।[2] जो बेटे
की आज्ञा नहीं मानता वह ज़िंदगी नहीं
पाएगा,[3] बल्कि परमेश्वर का क्रोध उस
पर बना रहता है।[4]

4 जब प्रभु को पता चला कि फरीसियों
ने यह बात सुनी है कि यीशु, यूहन्ना
से ज़्यादा चेले बना रहा है और उन्हें
बपतिस्मा दे रहा है[5] 2 (हालाँकि यीशु
खुद बपतिस्मा नहीं देता था बल्कि उसके
चेले देते थे), 3 तो वह यहूदिया छोड़-
कर फिर से गलील चला गया। 4 मगर
उसे सामरिया से होकर जाना ज़रूरी
था। 5 रास्ते में वह सामरिया के सूखार
नाम के एक शहर पहुँचा। यह शहर उस
ज़मीन के पास था जो याकूब ने अपने बेटे
यूसुफ को दी थी।[6] 6 दरअसल याकूब
का कुआँ* वहीं था[7] और यीशु सफर से
थका-माँदा कुएँ के पास बैठा था। यह दिन
का करीब छठा घंटा# था।

7 वहाँ सामरिया की एक औरत पानी
भरने आयी। तब यीशु ने उससे
कहा, “मुझे पानी पिला।” 8 (उसके
चेले खाना खरीदने शहर गए हुए थे।)
9 उस सामरी औरत ने उससे कहा,
“तू एक यहूदी होकर मुझसे पानी कैसे
माँग रहा है, मैं तो एक सामरी औरत
हूँ?” (क्योंकि यहूदी, सामरियों से कोई
नाता नहीं रखते।)[8] 10 यीशु ने कहा,
“अगर तू यह जानती कि परमेश्वर का
मुफ्त वरदान क्या है[9] और यह कौन है
जो तुझसे कह रहा है कि ‘मुझे पानी
पिला,’ तो तू उससे पानी माँगती और
वह तुझे जीवन देनेवाला पानी देता।”[10]
11 तब औरत ने कहा, “तेरे पास तो

3:33 *या “पक्का किया है।” **3:34** *या “नाप-नापकर।”

4:6 *या “पानी का सोता।” #यानी दोपहर करीब 12 बजे।

अध्य. 3
1 यूह 1:33, 34
2 यूह 1:19, 20
3 मत 11:7, 10; लूक 1:13, 17
4 2कुर 11:2; इफ 5:25; प्रक 21:9
5 यूह 8:23
6 मत 3:11
7 यूह 8:26; यूह 15:15
8 यूह 1:11; यूह 3:11
9 1यूह 5:10
10 यूह 7:16
11 यूह 5:20; यूह 15:9, 10

दूसरा कॉल.
1 मत 11:27; लूक 10:22
2 यूह 3:16; यूह 6:47; रोम 1:17; इब्र 5:9
3 2थि 1:7, 8; 1यूह 5:12
4 इफ 5:5, 6; इब्र 10:26, 27

अध्य. 4
5 यूह 3:22
6 उत 33:18, 19; यह 24:32
7 यूह 4:12
8 2रा 17:24; प्रेष 10:28
9 इफ 2:8
10 यूह 7:37

पानी निकालने के लिए कोई बरतन तक
नहीं है और कुआँ भी गहरा है। फिर तेरे
पास यह जीवन देनेवाला पानी कहाँ से
आया? **12** क्या तू हमारे पुरखे याकूब
से भी महान है जिसने हमें यह कुआँ दिया
था और इसी से उसने, उसके बेटों और
मवेशियों ने भी पीया था?” **13** यीशु ने
जवाब दिया, “हर कोई जो यह पानी पीता
है वह फिर प्यासा होगा। **14** मगर जो
कोई वह पानी पीएगा, जो मैं उसे दूँगा वह
फिर कभी प्यासा नहीं होगा।[1] जो पानी
मैं उसे दूँगा वह उसके अंदर पानी का एक
सोता बन जाएगा और हमेशा की ज़िंदगी
देने के लिए उमड़ता रहेगा।”[2] **15** तब
औरत ने कहा, “मुझे वह पानी दे ताकि
मुझे प्यास न लगे, न ही मुझे पानी भरने
के लिए बार-बार यहाँ आना पड़े।”

16 उसने औरत से कहा, “जा और
अपने पति को लेकर यहाँ आ।”
17 औरत ने कहा, “मेरा कोई पति
नहीं।” यीशु ने उससे कहा, “तूने
सही कहा कि मेरा कोई पति नहीं।
18 क्योंकि तेरे पाँच पति हो चुके हैं
और अब तू जिस आदमी के साथ रहती
है वह भी तेरा पति नहीं है। तूने बिल-
कुल सच कहा।” **19** तब औरत ने
उससे कहा, “प्रभु, तू ज़रूर एक भविष्य-
वक्ता है![3] **20** हमारे पुरखे इस पहाड़
पर उपासना करते थे, मगर तुम लोग
कहते हो कि यरूशलेम वह जगह है जहाँ
उपासना की जानी चाहिए।”[4] **21** यीशु
ने उससे कहा, “मेरा यकीन कर, वह
समय आ रहा है जब तुम लोग न तो
इस पहाड़ पर, न ही यरूशलेम में पिता
की उपासना करोगे। **22** तुम ज्ञान के
बिना उपासना करते हो[5] मगर हम ज्ञान
के साथ उपासना करते हैं क्योंकि उद्धार
की शुरूआत यहूदियों से होती है।[6]
23 मगर वह समय आ रहा है और
अभी-भी है, जब सच्चे उपासक पिता
की उपासना पवित्र शक्ति और सच्चाई
से करेंगे। दरअसल, पिता ऐसे लोगों को
ढूँढ़ रहा है जो इसी तरह उसकी
उपासना करेंगे।[1] **24** परमेश्वर अदृश्य
है[2] और उसकी उपासना करनेवालों को
पवित्र शक्ति और सच्चाई से उसकी
उपासना करनी चाहिए।”[3] **25** तब उस
औरत ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ कि
मसीहा आनेवाला है जो अभिषिक्त कह-
लाता है। जब वह आएगा तो हमें सारी
बातें खुलकर समझाएगा।” **26** यीशु ने
उससे कहा, “मैं जो तुझसे बात कर रहा
हूँ, वही हूँ।”[4]

27 तभी उसके चेले लौट आए और
वे यह देखकर हैरान रह गए कि वह
एक औरत से बात कर रहा है। फिर
भी किसी ने उससे नहीं पूछा, “तुझे क्या
चाहिए?” या “तू इस औरत से क्यों
बात कर रहा है?” **28** तब वह औरत
अपना पानी का घड़ा वहीं छोड़कर
शहर चली गयी और लोगों से कहने
लगी, **29** “आओ मेरे साथ चलो, उस
आदमी को देखो जिसने वह सब बता
दिया जो मैंने किया है। कहीं वह मसीह
तो नहीं?” **30** लोग शहर से निकलकर
उसके पास आने लगे।

31 इस दौरान चेले उससे बार-बार
कहते रहे, “गुरु,[5] खाना खा ले।”
32 मगर उसने उनसे कहा, “मेरे
पास ऐसा खाना है जिसके बारे में
तुम नहीं जानते।” **33** तब चेले एक-
दूसरे से कहने लगे, “कोई उसके खाने
के लिए कुछ ले तो नहीं आया था?”
34 यीशु ने उनसे कहा, “मेरा खाना यह
है कि मैं अपने भेजनेवाले की मरज़ी
पूरी करूँ[6] और उसका काम पूरा करूँ।[7]

अध्य. 4
1 यूह 6:35
2 यूह 7:38 रोम 6:23 1यूह 5:20
3 लूक 7:16 यूह 9:17
4 व्य 12:5, 6 1रा 9:3 2इत 7:12 भज 122
5 2रा 17:29, 33
6 यश 2:3 रोम 9:4

दूसरा कॉल.
1 2इत 16:9
2 2कुर 3:17 1ती 1:17 इब्र 11:27
3 रोम 12:1
4 यूह 9:35-37
5 यूह 1:38
6 यूह 6:38
7 यूह 5:30, 36 यूह 17:4 यूह 19:30

35 तुम कहते हो न कि फसल की कटाई
के लिए अभी चार महीने बाकी हैं? देखो!
मैं तुमसे कहता हूँ, अपनी आँखें उठाओ
और खेतों पर नज़र डालो, वे कटाई के
लिए पक चुके हैं।[1] **36** कटाई करने-
वाला अभी से मज़दूरी पा रहा है और
हमेशा की ज़िंदगी के लिए फसल बटोर
रहा है ताकि बोनेवाला और काटने-
वाला दोनों मिलकर खुशियाँ मनाएँ।[2]
37 इस मामले में वाकई यह कहावत सच
है कि बोता कोई और है, काटता कोई
और। **38** मैंने तुम्हें वह फसल काटने
भेजा जिसके लिए तुमने मेहनत नहीं की।
दूसरों ने कड़ी मेहनत की और तुम उनकी
मेहनत का फल पा रहे हो।"

39 उस शहर के बहुत-से सामरियों ने
उस पर विश्वास किया क्योंकि उस औरत
ने यह कहते हुए गवाही दी थी, "उसने
वह सब बता दिया जो मैंने किया है।"[3]
40 इसलिए जब सामरिया के लोग यीशु
के पास आए, तो उससे गुज़ारिश करने
लगे कि वह उनके यहाँ ठहरे और वह
उनके यहाँ दो दिन ठहरा। **41** नतीजा
यह हुआ कि और भी कई लोगों ने उसकी
बातें सुनकर यकीन किया **42** और वे
औरत से कहने लगे, "अब हम सिर्फ
तेरी बात सुनने की वजह से नहीं बल्कि
इसलिए यकीन करते हैं क्योंकि हमने
खुद सुन लिया है और जान लिया है कि
यह आदमी सचमुच दुनिया का उद्धार-
कर्ता है।"[4]

43 दो दिन बाद यीशु वह जगह
छोड़कर गलील के लिए निकल पड़ा।
44 मगर उसने खुद कहा था कि अपने
इलाके में एक भविष्यवक्ता का आदर
नहीं होता।[5] **45** जब वह गलील पहुँचा
तो वहाँ के लोगों ने उसका स्वागत किया
क्योंकि उन्होंने वे सारे काम देखे थे जो
उसने त्योहार के वक्त यरूशलेम में किए
थे।[1] वे लोग भी त्योहार के लिए वहाँ
गए थे।[2]

46 फिर यीशु गलील के काना में
आया, जहाँ उसने पानी को दाख-
मदिरा में बदला था।[3] कफरनहूम में
राजा का एक अधिकारी था, जिसका
बेटा बीमार था। **47** जब इस आदमी
ने सुना कि यीशु यहूदिया से गलील आ
गया है, तो वह उसके पास गया और
उससे बिनती करने लगा कि वह आए
और उसके बेटे को ठीक करे क्योंकि
उसका बेटा मरनेवाला था। **48** लेकिन
यीशु ने उससे कहा, "जब तक तुम लोग
चिन्ह और चमत्कार न देख लो, तुम हर-
गिज़ यकीन नहीं करोगे।"[4] **49** राजा
के अधिकारी ने उससे कहा, "प्रभु, इससे
पहले कि मेरा बच्चा मर जाए, मेरे साथ
चल।" **50** यीशु ने उससे कहा, "जा,
तेरा बेटा ज़िंदा है।"[5] उस आदमी ने
यीशु की बात पर यकीन किया और
अपने रास्ते चल दिया। **51** जब वह
रास्ते में ही था, तो उसके दास उससे मिले
और उन्होंने कहा कि उसका लड़का ठीक
हो गया है। **52** उसने उनसे पूछा कि
लड़का किस वक्त ठीक हुआ था। उन्होंने
कहा, "कल सातवें घंटे* में उसका बुखार
उतर गया।" **53** तब पिता जान गया
कि यह वही घड़ी थी जब यीशु ने उससे
कहा था, "तेरा बेटा ज़िंदा है।"[6] और
उसने और उसके पूरे घराने ने यीशु पर
यकीन किया। **54** यह यीशु का दूसरा
चमत्कार था[7] जो उसने यहूदिया से
गलील आने पर किया था।

5 इसके बाद यहूदियों का एक त्योहार
आया[8] और यीशु यरूशलेम गया।
2 यरूशलेम में भेड़ फाटक[9] के पास एक

अध्य. 4
1 मत 9:37
2 1कुर 3:8
3 यूह 4:29
4 मत 1:21, यूह 1:29, 1ती 1:15, 1यूह 4:14
5 मत 13:57, मर 6:4, लूक 4:24

दूसरा कॉल.
1 यूह 2:23
2 व्य 16:16
3 यूह 2:1-11
4 मत 16:1, 1कुर 1:22
5 मत 8:13, मर 7:29, 30
6 मत 8:13
7 यूह 2:11

अध्य. 5
8 निर्ग 12:14, व्य 16:1, 16, यूह 2:13, यूह 6:4
9 नहे 3:1

4:52 *यानी दोपहर करीब 1 बजे।

कुंड है जो इब्रानी भाषा में *बेतहसदा* कह-
लाता है। उस कुंड के चारों तरफ खंभों-
वाला बरामदा है। **3** इस बरामदे में
बड़ी तादाद में बीमार, अंधे, लँगड़े और
अपंग लोग पड़े थे। **4** *— **5** वहाँ
एक आदमी था जो 38 साल से बीमार
था। **6** यीशु ने इस आदमी को वहाँ
पड़ा देखा और यह जानकर कि वह एक
लंबे समय से बीमार है उससे पूछा, “क्या
तू ठीक होना चाहता है?”[1] **7** उस
बीमार आदमी ने जवाब दिया, “साहब,
मेरे साथ कोई नहीं जो मुझे उस वक्त
कुंड में उतारे जब पानी हिलाया जाता है।
इससे पहले कि मैं पहुँचूँ कोई दूसरा पानी
में उतर जाता है।” **8** यीशु ने उससे
कहा, “उठ, अपना बिस्तर उठा और
चल-फिर।”[2] **9** वह आदमी उसी वक्त
ठीक हो गया और उसने अपना बिस्तर
उठाया और चलने-फिरने लगा।

वह सब्त का दिन था। **10** इसलिए
यहूदी उस आदमी से जो ठीक हो गया
था कहने लगे, “आज सब्त है और आज
के दिन तेरे लिए बिस्तर उठाना कानून के
हिसाब से सही नहीं।”[3] **11** मगर उसने
कहा, “जिसने मुझे ठीक किया है उसी
ने मुझसे कहा, ‘अपना बिस्तर उठा और
चल-फिर।’” **12** उन्होंने पूछा, “किसने
तुझसे कहा कि इसे उठा और चल-
फिर?” **13** मगर वह आदमी नहीं
जानता था कि उसे ठीक करनेवाला कौन
है, क्योंकि यीशु चुपचाप भीड़ में जा
मिला था।

14 इसके बाद, जब यीशु ने मंदिर
में उस आदमी को देखा तो उससे कहा,
“देख, अब तू ठीक हो चुका है। इसलिए
आगे पाप मत करना, कहीं ऐसा न हो कि
तेरे साथ इससे भी बुरा हो।” **15** तब
उस आदमी ने जाकर यहूदियों को बताया
कि वह यीशु था जिसने उसे ठीक किया
था। **16** इस वजह से यहूदी लोग यीशु
को सताने लगे क्योंकि वह सब्त के
दिन यह सब कर रहा था। **17** मगर
यीशु ने उनसे कहा, “मेरा पिता अब तक
काम कर रहा है और मैं भी काम करता
रहता हूँ।”[1] **18** इस वजह से यहूदी
उसे मार डालने के और भी मौके ढूँढ़ने
लगे, क्योंकि उनके हिसाब से वह न सिर्फ
सब्त का कानून तोड़ रहा था, बल्कि पर-
मेश्वर को अपना पिता[2] कहकर खुद को
परमेश्वर के बराबर ठहरा रहा था।[3]

19 इसलिए यीशु ने उनसे कहा, “मैं
तुमसे सच-सच कहता हूँ, बेटा अपनी
पहल पर कुछ भी नहीं कर सकता, मगर
सिर्फ वही करता है जो पिता को करते हुए
देखता है।[4] इसलिए कि पिता जो कुछ
करता है, बेटा भी उसी तरीके से वे काम
करता है। **20** पिता को बेटे से बहुत
लगाव है[5] और वह खुद जो करता है
वह सब बेटे को भी दिखाता है और
वह इनसे भी बड़े-बड़े काम उसे दिखाए-
गा ताकि तुम ताज्जुब करो।[6] **21** जैसे
पिता मरे हुओं को ज़िंदा करता है और
उन्हें जीवन देता है,[7] ठीक वैसे ही बेटा
भी जिन्हें चाहता है उन्हें जीवन देता
है।[8] **22** पिता खुद किसी का न्याय
नहीं करता, बल्कि उसने न्याय करने की
सारी ज़िम्मेदारी बेटे को सौंप दी है[9]
23 ताकि सब उसके बेटे का आदर करें
जैसे वे पिता का आदर करते हैं। जो
बेटे का आदर नहीं करता, वह पिता का
आदर नहीं करता जिसने उसे भेजा है।[10]
24 मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जो मेरे
वचन सुनता है और मेरे भेजनेवाले पर
यकीन करता है, वह हमेशा की ज़िंदगी
पाता है[11] और उसे सज़ा नहीं सुनायी

अध्य. 5

1 यश 53:3

2 मत 9:6; मर 2:10, 11; लूक 5:24

3 निर्ग 20:9, 10; मत 12:2; लूक 6:2

दूसरा कॉल.

1 यूह 9:4; यूह 14:10

2 यूह 14:28

3 फिल 2:5, 6

4 यूह 5:30; यूह 8:28; यूह 12:49

5 मत 3:17; यूह 3:35; यूह 10:17; 2पत 1:17

6 लूक 8:25; यूह 6:10, 11; यूह 6:19

7 2रा 4:32-34; इब्र 11:35

8 लूक 7:12, 14; लूक 8:52-54; यूह 11:25

9 प्रेष 10:42; प्रेष 17:31; 2कुर 5:10; 2ती 4:1

10 लूक 10:16

11 यूह 3:16; यूह 6:40; यूह 8:51

5:4 *अति. क3 देखें।

जाती बल्कि वह मौत को पार करके
ज़िंदगी पाता है।[1]
25 मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, वह
वक्त आ रहा है और अब भी है जब
मरे हुए, परमेश्वर के बेटे की आवाज़
सुनेंगे और जिन्होंने उसकी बात मानी है
वे जीएँगे। 26 ठीक जैसे पिता के पास
जीवन देने की शक्ति है,*[2] वैसे ही
उसने अपने बेटे को भी जीवन देने
की शक्ति दी है।[3] 27 और उसने उसे
न्याय करने का अधिकार दिया है[4]
क्योंकि वह इंसान का बेटा[5] है। 28 इस
बात पर हैरान मत हो क्योंकि वह वक्त
आ रहा है जब वे सभी, जो स्मारक कब्रों
में हैं उसकी आवाज़ सुनेंगे[6] 29 और
बाहर निकल आएँगे। जिन्होंने अच्छे
काम किए हैं, उनका ज़िंदा किया जाना
जीवन पाने के लिए होगा और जो दुष्ट
कामों में लगे रहे, उनका ज़िंदा किया
जाना सज़ा पाने के लिए होगा।[7] 30 मैं
अपनी पहल पर एक भी काम नहीं कर
सकता। मगर ठीक जैसा पिता से सुनता
हूँ वैसा ही न्याय करता हूँ।[8] मैं जो न्याय
करता हूँ वह सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी
नहीं बल्कि उसकी मरज़ी पूरी करना
चाहता हूँ जिसने मुझे भेजा है।[9]
31 अगर मैं अकेले ही अपने बारे में
गवाही दूँ, तो मेरी गवाही सच नहीं है।[10]
32 एक और है जो मेरे बारे में गवाही
देता है और मैं जानता हूँ कि वह मेरे
बारे में जो गवाही देता है, वह सच्ची
है।[11] 33 तुमने यूहन्ना के पास आदमी
भेजे और उसने सच्चाई के बारे में गवाही
दी।[12] 34 ऐसा नहीं कि मुझे इंसानों
की गवाही की ज़रूरत है, मगर मैं ये
बातें इसलिए कह रहा हूँ ताकि तुम उद्धार
पा सको। 35 वह आदमी एक जलता
और जगमगाता दीपक था और तुम थोड़े
वक्त के लिए उसकी रौशनी में बड़ी खुशी
मनाने के लिए तैयार थे।[1] 36 मगर
मेरे पास वह गवाही है जो यूहन्ना की
गवाही से भी बढ़कर है। जो काम मेरे
पिता ने मुझे पूरे करने के लिए सौंपे हैं
और जिन्हें मैं कर रहा हूँ, वही मेरे बारे में
गवाही देते हैं कि मुझे पिता ने भेजा
है।[2] 37 और पिता ने भी, जिसने मुझे
भेजा है, खुद मेरे बारे में गवाही दी है।[3]
तुमने न तो कभी उसकी आवाज़ सुनी,
न ही कभी उसका रूप देखा[4] 38 और
उसका वचन तुम्हारे दिलों में कायम नहीं
रहता, क्योंकि तुम उसका यकीन नहीं
करते जिसे पिता ने भेजा है।
39 तुम शास्त्र में खोजबीन करते हो[5]
क्योंकि तुम सोचते हो कि उसके ज़रिए
तुम्हें हमेशा की ज़िंदगी मिलेगी। यही*
मेरे बारे में गवाही देता है।[6] 40 फिर
भी तुम मेरे पास नहीं आना चाहते[7] कि
तुम ज़िंदगी पा सको। 41 मैं इंसानों से
अपनी बड़ाई नहीं चाहता। 42 मगर मैं
अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम्हारे अंदर
परमेश्वर के लिए प्यार नहीं है। 43 मैं
अपने पिता के नाम से आया हूँ, मगर
तुम मुझे स्वीकार नहीं करते। अगर कोई
और अपने ही नाम से आता, तो तुम
उसे स्वीकार कर लेते। 44 तुम मेरा
यकीन कर भी कैसे सकते हो, क्योंकि
तुम इंसानों की बड़ाई करते हो और उनसे
अपनी बड़ाई करवाते हो और वह बड़ाई
नहीं पाना चाहते जो एकमात्र परमेश्वर
से मिलती है?[8] 45 यह मत सोचो कि
मैं पिता के सामने तुम पर दोष लगाऊँ-
गा। क्योंकि तुम पर दोष लगानेवाला एक
है, यानी मूसा[9] जिस पर तुमने आशा रखी
है। 46 दरअसल, अगर तुमने मूसा का

अध्य. 5
1 1यूह 3:14
2 भज 36:9 प्रेष 17:28
3 यूह 11:25
4 यूह 5:22 2ती 4:1
5 दान 7:13
6 अय 14:13 यश 25:8 यश 26:19
7 प्रक 20:12, 15
8 यश 11:4
9 मत 26:39 यूह 4:34 यूह 6:38
10 व्य 19:15
11 मत 3:17 मर 9:7 यूह 12:28-30 1यूह 5:9
12 यूह 1:15, 32

दूसरा कॉल.
1 मत 3:1, 5, 6 मर 6:20
2 मत 11:5 यूह 3:2 यूह 7:31 यूह 10:25
3 मर 1:11 यूह 8:18
4 व्य 4:11, 12 यूह 1:18 यूह 6:46
5 लूक 11:52
6 व्य 18:15
7 यश 53:3 यूह 1:11
8 यूह 12:42, 43
9 व्य 31:26, 27 यूह 7:19

5:26 *या “उसमें जीवन का वरदान है।”

5:39 *यानी शास्त्र।

यकीन किया होता तो मेरा भी यकीन करते क्योंकि उसने मेरे बारे में लिखा था।[1] **47** जब तुम उसकी किताबों का यकीन नहीं करते, तो भला मेरी बातों का यकीन कैसे करोगे?”

6 इसके बाद, यीशु गलील झील यानी तिबिरियास झील के उस पार चला गया।[2] **2** मगर एक बड़ी भीड़ उसके पीछे-पीछे गयी,[3] क्योंकि उन्होंने देखा था कि वह कैसे चमत्कार करके बीमारों को ठीक कर रहा था।[4] **3** फिर यीशु अपने चेलों के साथ एक पहाड़ पर चढ़ा और वहाँ बैठ गया। **4** यहूदियों का फसह का त्योहार पास था।[5] **5** जब यीशु ने नज़र उठाकर देखा कि एक बड़ी भीड़ उसकी तरफ चली आ रही है, तो उसने फिलिप्पुस से कहा, “हम इनके खाने के लिए रोटियाँ कहाँ से खरीदें?”[6] **6** मगर वह उसे परखने के लिए यह बात कह रहा था क्योंकि वह जानता था कि वह खुद क्या करने जा रहा है। **7** फिलिप्पुस ने उसे जवाब दिया, “दो सौ दीनार* की रोटियाँ भी इन सबके लिए पूरी नहीं पड़ेंगी कि हरेक को थोड़ा-थोड़ा भी मिल सके।” **8** तब यीशु के एक चेले, अन्द्रियास ने जो शमौन पतरस का भाई था, उससे कहा, **9** “यहाँ एक लड़का है, जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो छोटी मछलियाँ हैं। मगर इतनी बड़ी भीड़ के लिए इससे क्या होगा?”[7]

10 यीशु ने कहा, “लोगों को खाने के लिए बिठा दो।” उस जगह बहुत घास थी, इसलिए लोग वहाँ आराम से बैठ गए। इनमें आदमियों की गिनती करीब 5,000 थी।[8] **11** तब यीशु ने वे रोटियाँ लीं और प्रार्थना में धन्यवाद देने के बाद लोगों में बाँट दीं। फिर उसने छोटी मछलियाँ भी बाँट दीं, जिसे जितनी चाहिए थी उतनी दे दी। **12** जब उन्होंने भरपेट खा लिया, तो उसने चेलों से कहा, “बचे हुए टुकड़े इकट्ठा कर लो ताकि कुछ भी बेकार न हो।” **13** इसलिए जौ की पाँच रोटियों में से जब सब लोग खा चुके, तो बचे हुए टुकड़े इकट्ठे किए गए जिनसे 12 टोकरियाँ भर गयीं।

14 जब लोगों ने उसका चमत्कार देखा तो वे कहने लगे, “यह ज़रूर वही भविष्यवक्ता है जिसे दुनिया में आना था।”[1] **15** फिर यीशु जान गया कि वे उसे पकड़कर राजा बनाने आ रहे हैं,[2] इसलिए वह अकेले पहाड़ पर चला गया।[3]

16 जब शाम हुई तो उसके चेले झील के किनारे गए।[4] **17** वे एक नाव पर चढ़कर झील के उस पार कफरनहूम के लिए रवाना हो गए। अँधेरा हो गया था और यीशु अब तक उनके पास नहीं पहुँचा था।[5] **18** और आँधी की वजह से झील में ऊँची-ऊँची लहरें उठने लगीं।[6] **19** लेकिन जब चेले करीब पाँच-छः किलोमीटर* तक नाव खे चुके थे, तो उन्होंने यीशु को झील पर चलते हुए नाव की तरफ आते देखा और वे डर के मारे थरथराने लगे। **20** मगर यीशु ने उनसे कहा, “डरो मत, मैं ही हूँ!”[7] **21** तब वे उसे नाव में चढ़ाने के लिए तैयार हो गए और जल्द ही नाव उस जगह किनारे जा लगी जहाँ वे जा रहे थे।[8]

22 अगले दिन भीड़ ने, जो झील के उस पार रह गयी थी, देखा कि जो छोटी नाव किनारे पर थी वह नहीं है।

6:7 *अति. ख14 देखें।

6:19 *शा., “करीब 25 या 30 स्तादियौन।” अति. ख14 देखें।

अध्य. 5
1 व्य 18:15, लूक 24:44, यूह 1:45

अध्य. 6
2 मत 14:13, लूक 9:10
3 मर 6:33
4 लूक 9:11
5 यूह 2:13, यूह 5:1
6 मत 14:14-17, मर 6:35-38, लूक 9:12, 13
7 2रा 4:42-44
8 मत 14:19-21, मर 6:39-44, लूक 9:14-17

दूसरा कॉल.
1 व्य 18:15, 18
2 यूह 17:16, यूह 18:36
3 मत 14:23, मर 6:45
4 मत 14:22
5 मर 6:47-51
6 मत 8:24, मत 14:24-33
7 मत 14:27, मर 6:50
8 मत 14:34

भीड़ को पता चला कि उस नाव में
चेले बैठकर चले गए, मगर यीशु उनके
साथ नहीं गया। **23** फिर तिबिरियास
से कुछ नाव उस जगह के पास आयीं,
जहाँ उन्होंने वे रोटियाँ खायी थीं जो प्रभु
ने प्रार्थना में धन्यवाद देने के बाद उन्हें
दी थीं। **24** जब भीड़ ने देखा कि यहाँ
न तो यीशु है, न ही उसके चेले, तो वे
उन नावों में चढ़ गए और यीशु को ढूँढ़ने
कफरनहूम चल दिए।

25 झील के इस पार जब उन्होंने उसे
देखा तो पूछा, "गुरु,[1] तू यहाँ कब
आया?" **26** यीशु ने उनसे कहा, "मैं
तुमसे सच-सच कहता हूँ कि तुम मुझे इस-
लिए नहीं ढूँढ़ रहे हो कि तुमने चमत्कार
देखे थे, बल्कि इसलिए कि तुमने जी-भर-
कर रोटियाँ खायी थीं।[2] **27** उस खाने
के लिए काम मत करो जो नष्ट हो जाता
है, बल्कि उस खाने के लिए काम करो
जो नष्ट नहीं होता और हमेशा की ज़िंदगी
देता है,[3] वही खाना जो तुम्हें इंसान का
बेटा देगा। क्योंकि पिता यानी परमेश्वर
ने खुद उसी बेटे पर अपनी मंज़ूरी की
मुहर लगायी है।"[4]

28 तब उन्होंने उससे पूछा, "पर-
मेश्वर की मंज़ूरी पाने के लिए हमें कौन-
सा काम करना होगा?" **29** यीशु ने उन्हें
जवाब दिया, "परमेश्वर की मंज़ूरी पाने के
लिए तुम उस पर विश्वास करो जिसे उसने
भेजा है।"[5] **30** तब उन्होंने कहा, "फिर
तू हमें क्या चमत्कार दिखानेवाला है[6] कि
हम उसे देखकर तेरा यकीन करें? तू कौन-
सा काम करने जा रहा है? **31** हमारे
पुरखों ने तो वीराने में मन्ना खाया था,[7]
ठीक जैसा लिखा है, 'उसने उन्हें खाने
के लिए स्वर्ग से रोटी दी।'"[8] **32** यीशु
ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच-सच कहता
हूँ कि मूसा ने तुम्हें स्वर्ग से रोटी नहीं
दी थी, मगर मेरा पिता तुम्हें स्वर्ग से
सच्ची रोटी देता है। **33** इसलिए कि जो
स्वर्ग से नीचे आया है वही परमेश्वर की
रोटी है और दुनिया को जीवन देती है।"
34 तब लोगों ने कहा, "प्रभु, हमें यह
रोटी हमेशा दिया कर।"

35 यीशु ने उनसे कहा, "मैं जीवन
देनेवाली रोटी हूँ। जो मेरे पास आता है
वह फिर कभी भूखा नहीं होगा और जो
मुझ पर विश्वास करता है वह फिर कभी
प्यासा नहीं होगा।[1] **36** मगर जैसा मैंने
तुमसे कहा था, तुम मुझे देखकर भी मेरा
यकीन नहीं करते।[2] **37** वे सभी जिन्हें
पिता ने मुझे दिया है, मेरे पास आएँगे
और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं खुद
से कभी दूर नहीं करूँगा।[3] **38** क्योंकि
मैं अपनी मरज़ी नहीं, बल्कि अपने
भेजनेवाले की मरज़ी पूरी करने[4] के
लिए स्वर्ग से नीचे आया हूँ।[5] **39** मुझे
भेजनेवाले की यही मरज़ी है कि उसने
जितनों को मुझे दिया है, उनमें से मैं एक
को भी न खोऊँ, बल्कि आखिरी दिन उन्हें
ज़िंदा करूँ।[6] **40** मेरे पिता की मरज़ी
यह है कि जो कोई बेटे को स्वीकार
करता है और उस पर विश्वास करता है,
उसे हमेशा की ज़िंदगी मिले[7] और मैं उसे
आखिरी दिन ज़िंदा करूँगा।"[8]

41 तब यहूदी कुड़कुड़ाने लगे क्योंकि
उसने कहा था, "मैं वह रोटी हूँ जो स्वर्ग
से नीचे उतरी है।"[9] **42** वे कहने लगे,
"क्या यह यूसुफ का बेटा यीशु नहीं जिसके
माता-पिता को हम जानते हैं?[10] तो
फिर यह कैसे कह सकता है कि 'मैं
स्वर्ग से नीचे आया हूँ'?" **43** यीशु ने
उनसे कहा, "आपस में मत कुड़कुड़ाओ।
44 कोई भी इंसान मेरे पास तब तक नहीं
आ सकता जब तक कि पिता जिसने मुझे
भेजा है, उसे मेरे पास खींच न लाए।[11]

अध्य. 6

1 यूह 1:38
2 यूह 6:11
3 यूह 4:14; यूह 17:3; रोम 6:23
4 मत 3:17; प्रेष 2:22; 2पत 1:17
5 प्रेष 16:31; 1यूह 3:23
6 मत 12:38; मर 8:12; यूह 2:18; 1कुर 1:22
7 निर्ग 16:15; गि 11:7
8 भज 78:24; भज 105:40

दूसरा कॉल.

1 यूह 4:14; यूह 7:37; प्रक 22:17
2 यूह 6:64
3 मत 11:28, 29; यूह 17:6
4 मत 26:39; यूह 5:30
5 यूह 3:13; यूह 8:23, 42
6 यूह 5:28, 29; रोम 6:5
7 यूह 10:27, 28
8 यूह 11:24; प्रेष 17:31; 1थि 4:16; प्रक 20:12
9 यूह 6:33
10 मर 6:3
11 यूह 6:65

और मैं उसे आखिरी दिन ज़िंदा करूँगा।[1]
45 भविष्यवक्ताओं ने लिखा है, 'वे सब
यहोवा* के सिखाए हुए होंगे।'[2] हर कोई
जिसने पिता से सुना है और सीखा है,
वह मेरे पास आता है। 46 किसी इंसान
ने पिता को कभी नहीं देखा[3] सिवा उसके
जो परमेश्वर की तरफ से है। उसी ने
पिता को देखा है।[4] 47 मैं तुमसे सच-
सच कहता हूँ कि जो कोई यकीन करता
है, वह हमेशा की ज़िंदगी पाएगा।[5]

48 मैं जीवन देनेवाली रोटी हूँ।[6]
49 तुम्हारे पुरखों ने वीराने में मन्ना
खाया था, फिर भी वे मर गए।[7]
50 मगर जो कोई इस रोटी में से खाता
है जो स्वर्ग से उतरी है, वह नहीं मरेगा।
51 मैं वह जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से
उतरी है। अगर कोई इस रोटी में से
खाता है तो वह हमेशा ज़िंदा रहेगा। दर-
असल जो रोटी मैं दूँगा, वह मेरा शरीर
है जो मैं इंसानों की खातिर दूँगा ताकि वे
जीवन पाएँ।"[8]

52 तब यहूदी एक-दूसरे से बहस
करने लगे, "भला यह आदमी कैसे अपना
शरीर हमें खाने के लिए दे सकता है?"
53 तब यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे
सच-सच कहता हूँ कि जब तक तुम
इंसान के बेटे का माँस न खाओ और
उसका खून न पीओ, तुममें जीवन नहीं।[9]
54 जो मेरे शरीर में से खाता है और मेरे
खून में से पीता है, वह हमेशा की ज़िंदगी
पाएगा और मैं आखिरी दिन उसे ज़िंदा
करूँगा।[10] 55 इसलिए कि मेरा शरीर
असली खाना है और मेरा खून पीने की
असली चीज़ है। 56 जो मेरे शरीर में
से खाता है और मेरे खून में से पीता
है, वह मेरे साथ एकता में बना रहता है
और मैं उसके साथ एकता में बना रहता
हूँ।[1] 57 ठीक जैसे जीवित पिता ने मुझे
भेजा है और मैं पिता की वजह से जीवित
हूँ, वैसे ही जो मुझमें से खाता है वह भी
मेरी वजह से जीवित रहेगा।[2] 58 यह
वह रोटी है जो स्वर्ग से नीचे उतरी है।
यह वैसी नहीं जैसी तुम्हारे पुरखों ने
खायी, फिर भी मर गए। जो इस रोटी
में से खाता है, वह हमेशा ज़िंदा रहेगा।"[3]
59 ये बातें उसने कफरनहूम में उस वक्त
कही थीं जब वह एक सभा-घर* में सिखा
रहा था।

60 जब उसके कई चेलों ने यह बात
सुनी तो वे कहने लगे, "यह कैसी घिनौनी
बात है, कौन इसे सुनेगा?" 61 मगर
यीशु ने मन में यह जानते हुए कि उसके
चेले इस बारे में कुड़कुड़ा रहे हैं, उनसे
कहा, "क्या इस बात से तुम्हारा विश्वास
डगमगा रहा है?* 62 तो फिर तब
क्या होगा जब तुम इंसान के बेटे को ऊपर
जाता देखोगे जहाँ वह पहले था?[4]
63 परमेश्वर की पवित्र शक्ति से ही
जीवन मिलता है,[5] शरीर किसी काम का
नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं, वे पर-
मेश्वर की पवित्र शक्ति के मुताबिक हैं
और जीवन देती हैं।[6] 64 मगर तुममें
से कुछ ऐसे हैं जो मेरी बात पर यकीन
नहीं करते।" यीशु शुरू से जानता था
कि वे कौन हैं जो यकीन नहीं करते और
वह कौन है जो उसके साथ विश्वासघात
करेगा।[7] 65 वह उनसे कहने लगा,
"इसीलिए मैंने तुमसे कहा था कि कोई भी
तब तक मेरे पास नहीं आ सकता जब
तक कि पिता उसे इजाज़त न दे।"[8]

66 इस वजह से उसके बहुत-से चेलों
ने उसके पीछे चलना छोड़ दिया और
वापस उन कामों में लग गए जिन्हें

6:45 *अति. क5 देखें।

6:59 *या "जन-सभा।" 6:61 *शा., "तुम्हें ठोकर लगी है?"

अध्य. 6
1 यूह 11:24
2 यश 54:13
3 निर्ग 33:17, 20
4 मत 11:27 लूक 10:22 यूह 1:18
5 यूह 3:16
6 यूह 6:33
7 यूह 6:31
8 इब्र 10:10
9 यूह 6:33
10 यूह 6:40 1कुर 15:51, 52 1थि 4:16

दूसरा कॉल.
1 यूह 15:4
2 यूह 5:26 1कुर 15:22
3 यूह 6:51
4 यूह 3:13 यूह 6:38 यूह 8:23 प्रेष 1:9
5 गल 6:8
6 व्य 8:3 मत 4:4
7 मत 9:3, 4 यूह 2:24, 25 यूह 13:11
8 यूह 6:44

वे छोड़ आए थे।[1] **67** तब यीशु ने अपने 12 चेलों से कहा, “क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?” **68** शमौन पतरस ने जवाब दिया, “प्रभु, हम किसके पास जाएँ?[2] हमेशा की ज़िंदगी की बातें तो तेरे ही पास हैं।[3] **69** हमने यकीन किया है और हम जान गए हैं कि तू परमेश्वर का पवित्र जन है।”[4] **70** यीशु ने उनसे कहा, “मैंने तुम बारहों को चुना था न?[5] मगर तुममें से एक बदनाम करनेवाला* है।”[6] **71** दरअसल वह शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदा की बात कर रहा था, क्योंकि वही था जो उन बारहों में से एक होते हुए भी उसे पकड़वानेवाला था।[7]

7 इसके बाद यीशु गलील का ही दौरा करता रहा। वह यहूदिया नहीं जाना चाहता था क्योंकि यहूदी उसे मार डालने की ताक में थे।[8] **2** यहूदियों का डेरों* का त्योहार[9] पास था। **3** इसलिए यीशु के भाइयों[10] ने उससे कहा, “यहाँ से निकलकर यहूदिया जा ताकि तू जो काम करता है उन्हें तेरे सभी चेले देखें। **4** इसलिए कि कोई भी इंसान जो चाहता है कि सब लोग उसे जानें, वह छिपकर काम नहीं करता। अगर तू ये काम करता है, तो खुद को दुनिया के सामने ज़ाहिर कर।” **5** दरअसल उसके भाई उस पर विश्वास नहीं करते थे।[11] **6** इसलिए यीशु ने उनसे कहा, “मेरा वक्त अब तक नहीं आया है,[12] मगर तुम्हारे लिए तो हर वक्त सही है। **7** दुनिया के पास तुमसे नफरत करने की कोई वजह नहीं है, मगर यह मुझसे नफरत करती है क्योंकि मैं यह गवाही देता हूँ कि इसके काम दुष्ट हैं।[1] **8** तुम त्योहार के लिए जाओ। मैं इस त्योहार के लिए अभी नहीं जा रहा, क्योंकि मेरा वक्त अभी नहीं आया है।”[2] **9** उनसे यह कहने के बाद, वह गलील में ही रहा।

10 मगर जब उसके भाई त्योहार के लिए चले गए, तो उसके बाद वह खुद भी गया। लेकिन वह छिपकर गया ताकि लोग उसे न देखें। **11** इसलिए त्योहार के दौरान यहूदी यह कहते हुए उसे ढूँढ़ने लगे, “वह आदमी कहाँ है?” **12** लोगों के बीच उसके बारे में बहुत-सी दबी-दबी बातें हो रही थीं। कुछ कह रहे थे, “वह अच्छा आदमी है।” दूसरे कह रहे थे, “नहीं, वह आदमी अच्छा नहीं है। वह लोगों को गुमराह करता है।”[3] **13** मगर यहूदियों के डर से कोई भी सबके सामने उसके बारे में बात नहीं करता था।[4]

14 जब त्योहार के आधे दिन बीत चुके, तो यीशु मंदिर में गया और सिखाने लगा। **15** इसलिए यहूदी ताज्जुब करने लगे और कहने लगे, “इस आदमी को शास्त्र* का इतना ज्ञान कहाँ से मिला?[5] इसने तो कभी धर्म गुरुओं के स्कूलों# में पढ़ाई भी नहीं की!”[6] **16** यीशु ने उन्हें जवाब दिया, “जो मैं सिखाता हूँ वह मेरी तरफ से नहीं बल्कि उसकी तरफ से है जिसने मुझे भेजा है।[7] **17** अगर कोई परमेश्वर की मरज़ी पूरी करना चाहता है, तो वह जान लेगा कि मैं जो सिखा रहा हूँ वह परमेश्वर की तरफ से है[8] या मेरे अपने विचार हैं। **18** जो अपने विचार सिखाता है, वह अपनी बड़ाई चाहता है। मगर जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है[9] वह

अध्य. 6
1 लूक 9:62
2 मत 16:16; मर 8:29
3 यूह 6:63; यूह 17:3
4 लूक 9:20
5 लूक 6:13
6 लूक 22:3; यूह 13:18
7 मत 26:14, 15; यूह 12:4

अध्य. 7
8 यूह 5:18
9 लैव 23:34
10 मत 12:46; मर 6:3; लूक 8:19; यूह 2:12; प्रेष 1:14; गल 1:19
11 मर 3:21
12 यूह 2:4; यूह 7:30

दूसरा कॉल.
1 यूह 3:19; यूह 15:19
2 यूह 8:20
3 यूह 9:16
4 यूह 9:22; यूह 12:42; यूह 19:38
5 लूक 4:16, 17
6 मत 13:54; मर 6:2; लूक 2:46, 47; प्रेष 4:13
7 यूह 8:28; यूह 12:49; यूह 14:10
8 यूह 8:47
9 यूह 5:41; यूह 8:50

6:70 *या “इबलीस।” **7:2** *या “छप्परों।”

7:15 *शा., “लेखनों।” #यानी रब्बियों के स्कूलों।

सच्चा है और उसमें झूठ नहीं। 19 मूसा
ने तुम्हें कानून दिया था न?[1] लेकिन तुममें
से कोई भी उस कानून को नहीं मानता।
तुम मुझे क्यों मार डालना चाहते हो?”[2]
20 भीड़ ने उसे जवाब दिया, “तेरे अंदर
दुष्ट स्वर्गदूत है। कौन तुझे मार डालना
चाहता है?” 21 यीशु ने उनसे कहा,
“मैंने बस एक काम किया और तुम सब
ताज्जुब कर रहे हो। 22 इसलिए इस
बात पर गौर करो, मूसा ने तुम्हें खतने की
आज्ञा दी थी[3] (वह आज्ञा मूसा के ज़माने
से नहीं, बल्कि हमारे पुरखों के ज़माने से
थी)[4] और तुम सब्त के दिन भी आदमी
का खतना करते हो। 23 अगर सब्त के
दिन एक आदमी का खतना इसलिए
किया जाता है कि मूसा का कानून न टूटे,
तो तुम इस बात को लेकर मुझ पर आग-
बबूला क्यों हो रहे हो कि मैंने सब्त के दिन
एक आदमी को पूरी तरह तंदुरुस्त किया
है?[5] 24 जो दिखता है सिर्फ उसके
हिसाब से न्याय मत करो, बल्कि सच्चाई
से न्याय करो।”[6]

25 तब यरूशलेम के कुछ लोग कहने
लगे, “यह वही आदमी है न जिसे
वे मार डालना चाहते हैं?[7] 26 फिर भी
देखो! वह लोगों के सामने खुल्लम-
खुल्ला बातें कर रहा है और वे उसे
कुछ भी नहीं कहते। कहीं ऐसा तो नहीं
कि धर्म-अधिकारियों को यकीन हो गया
है कि यही मसीह है? 27 मगर हम
तो जानते हैं कि यह आदमी कहाँ का
है।[8] लेकिन जब मसीह आएगा तो कोई
नहीं जान पाएगा कि वह कहाँ का है।”
28 फिर जब यीशु मंदिर में सिखा रहा
था तो उसने ऊँची आवाज़ में कहा, “तुम
मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि
मैं कहाँ का हूँ। मैं अपनी मरज़ी से नहीं
आया,[9] बल्कि जिसने मुझे भेजा है वह
सचमुच वजूद में है और तुम उसे नहीं
जानते।[1] 29 मैं उसे जानता हूँ[2] क्योंकि
मैं उसकी तरफ से आया हूँ और उसी
ने मुझे भेजा है।” 30 तब वे उसे किसी
तरह पकड़ने का मौका ढूँढ़ने लगे,[3] मगर
किसी ने भी उसे हाथ नहीं लगाया क्योंकि
उसका वक्त अब तक नहीं आया था।[4]
31 फिर भी भीड़ में से बहुतों ने उस पर
विश्वास किया[5] और कहा, “जब मसीह
आता तो बहुत-से चमत्कार करता, है कि
नहीं? इस आदमी ने क्या कम चमत्कार
किए हैं?”

32 फरीसियों ने सुना कि भीड़ उसके
बारे में ये बातें बुदबुदा रही है। और
प्रधान याजकों और फरीसियों ने यीशु
को पकड़ने* के लिए पहरेदार भेजे।
33 तब यीशु ने कहा, “जिसने मुझे भेजा
है उसके पास जाने से पहले मैं तुम्हारे
साथ कुछ वक्त और रहूँगा।[6] 34 तुम
मुझे ढूँढ़ोगे मगर नहीं पाओगे और
जहाँ मैं रहूँगा वहाँ तुम नहीं आ सकते।”[7]
35 इसलिए यहूदी आपस में कहने लगे,
“यह आदमी कहाँ जाना चाहता है कि
हम उसे ढूँढ़ न सकें? यह उन यहूदियों के
पास तो नहीं जाना चाहता जो यूनानियों
के बीच तितर-बितर होकर रहते हैं?
कहीं यह यूनानियों को तो नहीं सिखाना
चाहता? 36 यह क्या बोल रहा है, ‘तुम
मुझे ढूँढ़ोगे मगर नहीं पाओगे और जहाँ मैं
रहूँगा वहाँ तुम नहीं आ सकते’?”

37 फिर त्योहार के आखिरी दिन जो
सबसे खास दिन होता है,[8] यीशु खड़ा
हुआ और उसने ज़ोर से कहा, “अगर
कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और
पानी पीए।[9] 38 जो मुझ पर विश्वास
करता है, ‘उसके दिल की गहराइयों से
जीवन देनेवाले पानी की धाराएँ बहेंगी,’

7:32 *या “गिरफ्तार करने।”

अध्य. 7
1 निर्ग 24:3
2 मत 12:14; मर 3:6
3 लैव 12:2, 3
4 उत 17:9, 10
5 यूह 5:8, 9
6 यश 11:3, 4; मत 23:23
7 यूह 5:18
8 मत 13:55
9 यूह 8:42

दूसरा कॉल.
1 यूह 8:54, 55
2 मत 11:27; यूह 1:18; यूह 10:15
3 मर 11:18; लूक 19:47
4 यूह 8:20
5 यूह 2:23; यूह 8:30; यूह 10:40, 42; यूह 11:45
6 यूह 13:33; यूह 16:16
7 यूह 8:21, 22
8 यूह 7:2
9 यूह 4:14; यूह 6:35

जैसा शास्त्र में भी कहा गया है।”[1]
39 यह बात उसने पवित्र शक्ति के बारे
में कही जो यीशु पर विश्वास करने-
वालों को मिलनेवाली थी। उन्हें अब तक
पवित्र शक्ति नहीं मिली थी[2] क्योंकि
यीशु ने अब तक महिमा नहीं पायी थी।[3]
40 जब भीड़ के कुछ लोगों ने ये बातें
सुनीं, तो वे कहने लगे, “यह सचमुच वही
भविष्यवक्ता है जो आनेवाला था।”[4]
41 दूसरे कह रहे थे, “यही मसीह है।”[5]
मगर कुछ लोग कह रहे थे, “मसीह तो
गलील से नहीं आएगा, है कि नहीं?[6]
42 क्या शास्त्र यह नहीं कहता कि मसीह
दाविद के वंश से[7] और दाविद के गाँव
बेतलेहेम[8] से आएगा?”[9] 43 इसलिए
यीशु की वजह से भीड़ में फूट पड़ गयी।
44 उनमें से कुछ उसे पकड़ना* चाहते
थे, फिर भी किसी ने उसे छुआ तक नहीं।
45 पहरेदार, प्रधान याजकों और
फरीसियों के पास खाली हाथ लौट
आए। तब उन्होंने पहरेदारों से पूछा,
“तुम उसे पकड़कर क्यों नहीं लाए?”
46 पहरेदारों ने कहा, “आज तक किसी
भी इंसान ने उसकी तरह बात नहीं
की।”[10] 47 तब फरीसियों ने उनसे
कहा, “कहीं तुम भी तो गुमराह नहीं हो
गए? 48 क्या धर्म-अधिकारियों और
फरीसियों में से एक ने भी उस पर
विश्वास किया है?[11] 49 मगर ये लोग
जो कानून की रत्ती-भर भी समझ नहीं
रखते, शापित लोग हैं।” 50 तब नीकु-
देमुस ने, जो इन धर्म-अधिकारियों में से
एक था और पहले यीशु के पास आया
था, उनसे कहा, 51 “हमारा कानून तब
तक एक आदमी को दोषी नहीं ठह-
राता जब तक कि पहले उसकी सुन न ले
और यह न जान ले कि वह क्या कर रहा
है। क्या ऐसा नहीं है?”[1] 52 उन्होंने
नीकुदेमुस से कहा, “कहीं तू भी तो
गलील का नहीं? शास्त्र में ढूँढ़ और देख
कि कोई भी भविष्यवक्ता गलील से नहीं
आएगा।”*

8 12 यीशु ने एक बार फिर लोगों से
बात की और कहा, “मैं दुनिया की
रौशनी हूँ।[2] जो मेरे पीछे चलता है
वह हरगिज़ अंधकार में न चलेगा, मगर
जीवन की रौशनी उसके पास होगी।”[3]
13 तब फरीसियों ने उससे कहा, “तू खुद
अपने बारे में गवाही देता है, इसलिए
तेरी गवाही सच्ची नहीं है।” 14 यीशु
ने उनसे कहा, “अगर मैं अपने बारे में
गवाही देता हूँ, तो भी मेरी गवाही सच्ची
है क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से
आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ।[4] मगर तुम
नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया हूँ और
कहाँ जा रहा हूँ। 15 तुम इंसानी नज़-
रिए* से न्याय करते हो,[5] मगर मैं
किसी का न्याय नहीं करता। 16 और
अगर न्याय करता भी हूँ, तो मेरा न्याय
सच्चा है क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ बल्कि
पिता मेरे साथ है जिसने मुझे भेजा है।[6]
17 तुम्हारे अपने कानून में भी लिखा है,
‘दो लोगों की गवाही सच्ची मानी जाए।’[7]
18 एक मैं खुद हूँ जो अपने बारे में
गवाही देता हूँ और दूसरा पिता है जिसने
मुझे भेजा है, वह मेरे बारे में गवाही देता
है।”[8] 19 तब उन्होंने कहा, “कहाँ है
तेरा पिता?” यीशु ने जवाब दिया, “तुम
न तो मुझे जानते हो, न ही मेरे पिता
को।[9] अगर तुम मुझे जानते, तो मेरे
पिता को भी जानते।”[10] 20 ये बातें
उसने मंदिर में दान-पात्रों[11] के पास

अध्य. 7
1 निर्ग 17:6; गि 20:8; यूह 4:14
2 योए 2:28; यूह 16:7; प्रेष 2:17
3 यूह 12:16; यूह 13:31, 32; 1ती 3:16
4 व्य 18:18; यूह 6:14
5 यूह 4:40, 42; यूह 6:68, 69
6 यूह 1:46; यूह 7:52
7 2इत 13:5; भज 89:3, 4; भज 132:11; यिर्म 23:5
8 मी 5:2; लूक 2:4
9 1शम 16:1
10 मत 7:28, 29; लूक 4:22
11 यूह 12:42; प्रेष 6:7

दूसरा कॉल.
1 व्य 1:16, 17

अध्य. 8
2 यश 9:2; यश 49:6; मत 4:16; यूह 1:5; यूह 12:35
3 यूह 12:46; 1पत 2:9; 1यूह 2:8
4 यूह 7:28; यूह 13:3; यूह 16:28
5 यूह 7:24
6 यूह 14:10
7 व्य 17:6; व्य 19:15
8 यूह 5:37; 2पत 1:17; 1यूह 5:9
9 यूह 16:3
10 मत 11:27; यूह 14:7
11 मर 12:41

7:44 *या “गिरफ्तार करना।”

7:52 *कई पुरानी और जानी-मानी हस्त-लिपियों में यूह 7:53 से 8:11 तक की आयतें नहीं पायी जातीं। 8:15 *या “उसूलों।”

सिखाते वक्त कही थीं। मगर किसी ने
उसे नहीं पकड़ा, क्योंकि उसका वक्त
अभी नहीं आया था।[1]

21 यीशु ने एक बार फिर उनसे कहा,
"मैं जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँढ़ोगे। मगर
तुम अपनी पापी हालत में मरोगे।[2] जहाँ
मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।"[3]
22 इसलिए यहूदी कहने लगे, "क्या
यह अपनी जान लेनेवाला है? क्योंकि
यह कह रहा है, 'जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ
तुम नहीं आ सकते।'" **23** इसलिए वह
उनसे कहने लगा, "तुम नीचे के हो और
मैं ऊपर का हूँ।[4] तुम इस दुनिया के हो
और मैं इस दुनिया का नहीं। **24** इस-
लिए मैंने तुमसे कहा कि तुम अपनी
पापी हालत में मरोगे। क्योंकि अगर तुम
इस बात पर यकीन नहीं करते कि मैं
वही हूँ, तो तुम अपनी पापी हालत में
मरोगे।" **25** तब वे उससे कहने लगे,
"तू है कौन?" यीशु ने उनसे कहा, "तुमसे
बात करने का क्या फायदा, जब तुम मेरी
बात ही नहीं समझ रहे? **26** तुम्हारे
बारे में मुझे बहुत-सी बातें कहनी हैं
और बहुत-से मामलों का न्याय करना है।
सच तो यह है कि जिसने मुझे भेजा है वह
सच्चा है और जो बातें मैंने उससे सुनीं,
वही मैं दुनिया में बता रहा हूँ।"[5] **27** वे
नहीं समझ पाए कि यीशु उनसे पिता के
बारे में बात कर रहा है। **28** इसलिए
यीशु ने कहा, "जब तुम इंसान के बेटे को
ऊँचे पर चढ़ा चुके होगे,[6] तो तुम जान
लोगे कि मैं वही हूँ।[7] मैं अपनी मरज़ी
से कुछ भी नहीं करता,[8] बल्कि जैसा
पिता ने मुझे सिखाया है मैं ये बातें बताता
हूँ। **29** जिसने मुझे भेजा है वह मेरे
साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा,
क्योंकि मैं हमेशा वही करता हूँ जिससे
वह खुश होता है।"[9] **30** जब वह ये

अध्य. 8
1 यूह 7:30
2 यूह 8:24
3 यूह 7:34; यूह 13:33
4 यूह 3:31; यूह 16:28
5 यूह 18:19, 20
6 गि 21:8, 9; दान 7:13; मत 26:64; यूह 3:14; यूह 12:32, 33; गल 3:13
7 मत 27:54
8 यूह 5:19, 30
9 यूह 4:34; यूह 14:10; इब्र 1:9

दूसरा कॉल.
1 यूह 17:17; यूह 18:37
2 रोम 6:14, 22; याकू 1:25
3 रोम 6:6, 16; रोम 7:14
4 यूह 5:19
5 रोम 2:28, 29; रोम 9:7, 8; गल 3:7, 29
6 यूह 8:26

बातें बोल रहा था, तो बहुतों ने उस पर
विश्वास किया।

31 तब यीशु उन यहूदियों से जिन्होंने
उस पर यकीन किया था, कहने लगा,
"अगर तुम हमेशा मेरी शिक्षाओं को
मानोगे, तो तुम सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32 तुम सच्चाई को जानोगे[1] और सच्चाई
तुम्हें आज़ाद करेगी।"[2] **33** उन्होंने
उससे कहा, "हम अब्राहम के वंशज हैं
और कभी किसी के गुलाम नहीं रहे। तो
फिर तू कैसे कह सकता है कि तुम आज़ाद
हो जाओगे?" **34** यीशु ने उन्हें जवाब
दिया, "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, हर
कोई जो पाप करता है वह पाप का गुलाम
है।[3] **35** और गुलाम घर में हमेशा तक
नहीं रहता, मगर बेटा हमेशा तक रहता
है। **36** इसलिए अगर बेटा तुम्हें आज़ाद
करे, तो तुम सचमुच आज़ाद हो जाओगे।
37 मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के
वंशज हो। मगर तुम मुझे मार डालने
की ताक में हो, क्योंकि मेरी बातें तुम्हारे
दिलों में जड़ नहीं पकड़तीं। **38** मैं वही
कहता हूँ जो मैंने अपने पिता के पास रह-
कर देखा है,[4] जबकि तुम वह करते हो जो
तुमने अपने पिता से सुना है।" **39** यहू-
दियों ने उससे कहा, "हमारा पिता तो
अब्राहम है।" यीशु ने उनसे कहा, "अगर
तुम अब्राहम के वंशज[5] होते, तो अब्राहम
जैसे काम करते। **40** मगर तुम तो मुझे
मार डालना चाहते हो, एक ऐसे इंसान को,
जिसने तुम्हें वह सच्चाई बतायी जो उसने
परमेश्वर से सुनी है।[6] अब्राहम ने तो ऐसा
नहीं किया था। **41** तुम अपने पिता जैसे
काम करते हो।" उन्होंने कहा, "हम ना-
जायज़* औलाद नहीं। हमारा एक ही
पिता है, परमेश्वर।"

8:41 *या "नाजायज़ संबंधों से पैदा हुई।" यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें।

42 यीशु ने उनसे कहा, “अगर परमेश्‍वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे प्यार करते[1] क्योंकि मैं परमेश्‍वर की तरफ से आया हूँ और यहाँ हूँ। मैं अपनी मरज़ी से नहीं आया, बल्कि उसी ने मुझे भेजा है।[2] 43 तुम मेरी बात समझ क्यों नहीं रहे? इसलिए कि तुम मेरी बात मानना ही नहीं चाहते। 44 तुम अपने पिता शैतान* से हो और अपने पिता की ख्वाहिशें पूरी करना चाहते हो।[3] वह शुरू से ही हत्यारा है[4] और सच्चाई में टिका नहीं रहा, क्योंकि सच्चाई उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है तो अपनी फितरत के मुताबिक बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है।[5] 45 मगर दूसरी तरफ, मैं तुम्हें सच्चाई बताता हूँ इसलिए तुम मेरा यकीन नहीं करते। 46 तुममें से कौन मुझे पापी साबित कर सकता है? और अगर मैं सच बोल रहा हूँ, तो तुम मेरा यकीन क्यों नहीं करते? 47 जो परमेश्‍वर की तरफ से है वह परमेश्‍वर की बातें सुनता है।[6] तुम इसीलिए मेरी बात नहीं सुनते क्योंकि तुम परमेश्‍वर की तरफ से नहीं हो।”[7]

48 यहूदियों ने उससे कहा, “क्या हम सही नहीं कहते कि तू एक सामरी है[8] और तेरे अंदर एक दुष्ट स्वर्गदूत है?”[9] 49 यीशु ने जवाब दिया, “मेरे अंदर कोई दुष्ट स्वर्गदूत नहीं मगर मैं अपने पिता का आदर करता हूँ और तुम मेरा अनादर करते हो। 50 मैं अपनी महिमा नहीं चाहता,[10] मगर एक है जो चाहता है और वही न्यायी है। 51 मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, अगर कोई मेरे वचन पर चलता है तो वह कभी मौत का मुँह नहीं देखेगा।”[11] 52 यहूदियों ने उससे कहा, “अब हमें ज़रा भी शक नहीं कि तेरे अंदर एक दुष्ट स्वर्गदूत है। अब्राहम मर गया और भविष्यवक्‍ता भी मर गए। मगर तू कहता है, ‘अगर कोई मेरे वचनों पर चलता है, तो वह कभी नहीं मरेगा।’ 53 क्या तू हमारे पिता अब्राहम से भी बढ़कर है? वह तो मर गया और भविष्यवक्‍ता भी मर गए। तू क्या होने का दावा करता है?” 54 यीशु ने जवाब दिया, “अगर मैं अपनी महिमा करूँ, तो मेरी महिमा कुछ भी नहीं। मगर मेरा पिता है जो मेरी महिमा करता है,[1] वही जिसे तुम अपना परमेश्‍वर कहते हो। 55 फिर भी तुमने उसे नहीं जाना[2] मगर मैं उसे जानता हूँ।[3] अगर मैं कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं तुम्हारे जैसा ठहरूँगा, एक झूठा। मगर मैं उसे जानता हूँ और उसके वचन पर चलता हूँ। 56 तुम्हारा पिता अब्राहम खुशी-खुशी आस लगाए था कि वह मेरा दिन देखेगा और उसने देखा भी और बहुत खुश हुआ।”[4] 57 तब यहूदियों ने उससे कहा, “तू 50 साल का भी नहीं हुआ, फिर भी कहता है मैंने अब्राहम को देखा है?” 58 यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, मैं तो अब्राहम के पैदा होने से पहले से वजूद में हूँ।”[5] 59 तब उन्होंने यीशु को मारने के लिए पत्थर उठा लिए। मगर वह छिप गया और मंदिर से बाहर निकल गया।

9 जब यीशु जा रहा था तो उसने एक आदमी को देखा जो जन्म से अंधा था। 2 चेलों ने उससे पूछा, “गुरु,*[6] किसने पाप किया था कि यह अंधा पैदा हुआ? इसने या इसके माता-पिता ने?” 3 यीशु ने जवाब दिया, “न तो इस आदमी ने पाप किया, न इसके माता-पिता ने। मगर यह इसलिए हुआ कि

अध्य. 8
1 यूह 16:27; 1यूह 5:1
2 यूह 3:16; यूह 5:19, 30
3 उत 3:15
4 1यूह 3:8
5 उत 3:4; 2कुर 11:3; प्रक 12:9
6 यूह 18:37
7 यूह 10:26; 1यूह 4:6
8 यूह 4:9
9 मत 12:24; यूह 7:20; यूह 10:20
10 यूह 5:41; यूह 7:18
11 यूह 5:24; यूह 11:25, 26; 1कुर 15:54; प्रक 20:6

दूसरा कॉल.
1 यूह 5:41; यूह 13:31, 32; प्रेष 3:13
2 यूह 7:28
3 यूह 7:29
4 मत 13:17; इब्र 11:13
5 नीत 8:22; यूह 17:5; फिल 2:6, 7; कुल 1:15-17

अध्य. 9
6 यूह 1:38

8:44 * शा., “इबलीस।” शब्दावली देखें।

9:2 * शा., “रब्बी।”

इसके मामले में परमेश्‍वर के काम ज़ाहिर
हों।[1] 4 जिसने मुझे भेजा है उसके काम
हमें दिन रहते ही कर लेने चाहिए।[2] वह
रात आ रही है जब कोई आदमी काम
नहीं कर सकेगा। 5 जब तक मैं दुनिया
में हूँ, मैं दुनिया की रौशनी हूँ।"[3] 6 यह
कहने के बाद, उसने ज़मीन पर थूका और
थूक से मिट्टी मिलाकर लेप बनाया और
उस अंधे आदमी की आँखों पर लगाया[4]
7 और उससे कहा, "जा और जाकर
सिलोम के कुंड में धो ले" (सिलोम का
मतलब है, 'भेजा हुआ')। उसने जाकर
अपनी आँखें धोयीं और देखता हुआ लौट
आया।[5]

8 उस आदमी के पड़ोसी और वे
लोग, जो उसे भीख माँगते देखा करते
थे, कहने लगे, "यह तो वही आदमी है
न, जो पहले बैठकर भीख माँगता था?"
9 कुछ कह रहे थे, "हाँ-हाँ यह वही है।"
दूसरे कह रहे थे, "नहीं यह वह नहीं
है, मगर उसी के जैसा दिखता है।"
वह आदमी कहता रहा, "मैं वही हूँ।"
10 तब वे उससे पूछने लगे, "तेरी आँखें
कैसे ठीक हो गयीं?" 11 उसने कहा,
"यीशु नाम के आदमी ने मिट्टी का लेप
बनाकर मेरी आँखों पर लगाया और
मुझसे कहा, 'जाकर सिलोम में धो ले।'[6]
जब मैंने जाकर अपनी आँखें धोयीं तो
मुझे दिखने लगा।" 12 तब वे उससे
पूछने लगे, "कहाँ है वह आदमी?" उसने
कहा, "मैं नहीं जानता।"

13 वे लोग उस आदमी को फरी-
सियों के पास ले गए। 14 इत्तफाक से,
जिस दिन यीशु ने मिट्टी का लेप लगा-
कर उसकी आँखें खोली थीं,[7] वह सब्त
का दिन था।[8] 15 इसलिए अब फरीसी
भी उस आदमी से पूछताछ करने लगे कि
उसकी आँखें कैसे ठीक हुईं। उस आदमी
ने कहा, "उसने मेरी आँखों पर मिट्टी
का लेप लगाया और जब मैंने आँखें धोयीं
तो मुझे दिखायी देने लगा।" 16 इस-
लिए कुछ फरीसी कहने लगे, "वह
आदमी परमेश्‍वर की तरफ से नहीं है
क्योंकि वह सब्त को नहीं मानता।"[1]
मगर दूसरों ने कहा, "एक पापी भला इस
तरह के चमत्कार कैसे कर सकता है?"[2]
इस तरह उनके बीच फूट पड़ गयी।[3]
17 तब उन्होंने उस अंधे आदमी से
फिर कहा, "उसने तेरी आँखें खोली
हैं, तू उसके बारे में क्या कहता है?"
उस आदमी ने कहा, "वह एक भविष्य-
वक्‍ता है।"

18 मगर यहूदी यह मानने को तैयार
नहीं थे कि वह पहले अंधा था। जब तक
उन्होंने उसके माता-पिता को बुलाकर यह
पक्का नहीं कर लिया, तब तक उन्होंने
यकीन नहीं किया कि वह पहले अंधा
था और अब देख सकता है। 19 उन्होंने
उसके माता-पिता से पूछा, "क्या यह
तुम्हारा बेटा है जिसके बारे में तुम कहते
हो कि यह अंधा पैदा हुआ था? तो अब
यह देखने कैसे लगा?" 20 उसके माता-
पिता ने कहा, "हाँ यह हमारा बेटा है
और यह अंधा पैदा हुआ था। 21 मगर
हमें नहीं पता कि यह कैसे देखने लगा या
किसने इसकी आँखें ठीक कीं! तुम उसी
से पूछ लो। वह कोई बच्चा नहीं, वह
खुद अपने बारे में बता सकता है।"
22 उसके माता-पिता ने ये बातें इसलिए
कहीं क्योंकि वे यहूदी धर्म-अधिकारियों से
डरते थे,[4] इसलिए कि यहूदी मिलकर तय
कर चुके थे कि अगर कोई यीशु को मसीह
मानेगा, तो उसे सभा-घर से बेदखल कर
दिया जाएगा।[5] 23 इसी वजह से उसके
माता-पिता ने कहा था, "वह कोई बच्चा
नहीं, उसी से पूछो।"

अध्य. 9
1 यूह 11:2-4
2 यूह 4:34
यूह 11:9
3 यश 49:6
यश 61:1
यूह 1:5
यूह 8:12
4 मर 8:23
5 2रा 5:10, 14
6 यूह 9:7
7 यूह 9:6
8 लूक 13:14
यूह 5:8, 9

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:9, 10
2 यूह 3:2
3 लूक 12:51
यूह 7:12, 43
यूह 10:19
4 यूह 7:13
यूह 19:38
5 यूह 12:42
यूह 16:2

24 तब उन्होंने उस आदमी को जो
पहले अंधा था, दोबारा बुलाया और
उससे कहा, “परमेश्‍वर को हाज़िर जान-
कर, सच-सच बोल। क्योंकि हम जानते
हैं कि वह आदमी पापी है।” 25 उसने
कहा, “वह पापी है या नहीं, यह मैं नहीं
जानता। मैं बस इतना जानता हूँ कि
मैं पहले अंधा था, मगर अब देख
सकता हूँ।” 26 तब उन्होंने उससे
पूछा, “उसने क्या किया? कैसे तेरी
आँखें खोलीं?” 27 उसने कहा, “मैं
तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ, मगर तुमने
मेरी नहीं सुनी। फिर तुम दोबारा क्यों
पूछ रहे हो? कहीं तुम भी तो उसके
चेले नहीं बनना चाहते?” 28 तब वे
उसे नीचा दिखाते हुए कहने लगे, “तू
होगा उसका चेला, हम तो मूसा के
चेले हैं। 29 हम जानते हैं कि पर-
मेश्‍वर ने मूसा से बात की थी, मगर
यह आदमी कहाँ से आया हम नहीं
जानते।” 30 तब उस आदमी ने कहा,
“कमाल है, उसने मेरी आँखें खोल दीं
फिर भी तुम नहीं जानते कि वह कहाँ
से आया है? 31 हम जानते हैं कि पर-
मेश्‍वर पापियों की नहीं सुनता,[1] लेकिन
अगर कोई उसका डर मानता है और
उसकी मरज़ी पूरी करता है, तो वह
उसकी सुनता है।[2] 32 आज तक यह
बात सुनने में नहीं आयी कि किसी ने जन्म
के अंधे को आँखों की रौशनी दी हो।
33 अगर यह आदमी परमेश्‍वर की तरफ
से नहीं होता, तो कुछ भी नहीं कर
पाता।”[3] 34 उन्होंने उससे कहा, “तू
तो जन्म से ही पूरा-का-पूरा पापी है, फिर
भी हमें सिखाने चला है?” और उन्होंने
उसे बाहर निकाल दिया![4]

35 यीशु ने सुना कि उन्होंने उस
आदमी को निकालकर बाहर कर दिया
है। उससे मिलने पर यीशु ने कहा,
“क्या तू इंसान के बेटे पर विश्‍वास करता
है?” 36 उस आदमी ने जवाब दिया,
“साहब, वह कौन है ताकि मैं उस
पर विश्‍वास करूँ?” 37 यीशु ने उससे
कहा, “तूने उसे देखा है। दरअसल वही
तुझसे बात कर रहा है।” 38 तब उसने
कहा, “प्रभु, मैं उस पर विश्‍वास
करता हूँ।” और उसने यीशु को झुककर
प्रणाम* किया। 39 तब यीशु ने कहा,
“मैं इसलिए आया हूँ ताकि दुनिया का
न्याय किया जाए और जो नहीं देखते, वे
देखें[1] और जो देखते हैं वे अंधे हो
जाएँ।”[2] 40 जो फरीसी उसके साथ थे,
उन्होंने यह सुनकर उससे कहा, “क्या हम
भी अंधे हैं?” 41 यीशु ने उनसे कहा,
“अगर तुम अंधे होते, तो तुममें कोई पाप
नहीं होता। मगर अब तुम कहते हो, ‘हम
देखते हैं,’ इसलिए तुम्हारे पाप माफ नहीं
किए जाएँगे।”[3]

10 “मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि
जो दरवाज़े से भेड़शाला में नहीं
आता मगर किसी और रास्ते से
चढ़कर आता है, वह चोर और लुटेरा
है।[4] 2 मगर जो दरवाज़े से आता
है वह भेड़ों का चरवाहा है।[5] 3 दर-
बान उसके लिए दरवाज़ा खोलता है[6]
और भेड़ें अपने चरवाहे की आवाज़
सुनती हैं।[7] वह अपनी भेड़ों को नाम ले-
लेकर बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता
है। 4 जब वह अपनी सब भेड़ों को
बाहर ले आता है, तो वह उनके आगे-
आगे चलता है और भेड़ें उसके पीछे-पीछे
चलती हैं, क्योंकि वे उसकी आवाज़ पह-
चानती हैं। 5 वे किसी अजनबी के
पीछे हरगिज़ नहीं जाएँगी बल्कि उससे

अध्य. 9
1 भज 66:18
नीत 28:9
यश 1:15
2 भज 34:15
नीत 15:29
3 यूह 5:36
4 यूह 9:22
यूह 16:2

दूसरा कॉल.
1 लूक 4:18
यूह 12:46
2 मत 11:25
मत 13:13
यूह 3:19
3 यूह 15:22

अध्य. 10
4 मत 7:15
5 मत 26:31
मर 14:27
यूह 10:11
6 लूक 1:17
यूह 3:28
7 यूह 10:27

9:38 *या “दंडवत।”

दूर भागेंगी, क्योंकि वे अजनबियों की
आवाज़ नहीं पहचानतीं।" **6** यीशु ने
उन्हें यह मिसाल दी, मगर वे समझ नहीं
पाए कि वह क्या कह रहा है।

7 इसलिए यीशु ने एक बार फिर
कहा, "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि
मैं भेड़ों के लिए दरवाज़ा हूँ।[1] **8** जितने
भी ढोंगी मेरी जगह लेने आए, वे सब-
के-सब चोर और लुटेरे हैं। मगर भेड़ों
ने उनकी नहीं सुनी। **9** दरवाज़ा मैं हूँ,
जो कोई मुझसे होकर जाता है वह
उद्धार पाएगा और अंदर-बाहर आया-
जाया करेगा और चरागाह पाएगा।[2]
10 चोर सिर्फ चोरी करने, हत्या करने
और तबाह करने आता है।[3] मगर मैं इस-
लिए आया हूँ कि भेड़ें जीवन पाएँ और
बहुतायत में पाएँ। **11** अच्छा चरवाहा
मैं हूँ।[4] अच्छा चरवाहा भेड़ों की खातिर
अपनी जान दे देता है।[5] **12** लेकिन
मज़दूरी पर रखा गया आदमी, चरवाहा
नहीं है और भेड़ें उसकी अपनी नहीं
होतीं। जब वह भेड़िए को आते देखता है,
तो भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है
(और भेड़िया, भेड़ों पर झपट पड़ता
है और उन्हें तितर-बितर कर देता है)
13 क्योंकि वह आदमी, मज़दूरी पर रखा
गया है और उसे भेड़ों की परवाह नहीं
होती। **14** अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं
अपनी भेड़ों को जानता हूँ और मेरी भेड़ें
मुझे जानती हैं,[6] **15** ठीक जैसे पिता
मुझे जानता है और मैं पिता को जानता
हूँ।[7] मैं अपनी भेड़ों की खातिर अपनी
जान देता हूँ।[8]

16 मेरी दूसरी भेड़ें भी हैं जो इस भेड़-
शाला की नहीं,[9] मुझे उन्हें भी लाना है।
वे मेरी आवाज़ सुनेंगी और तब एक झुंड
और एक चरवाहा होगा।[10] **17** पिता
इसीलिए मुझसे प्यार करता है[11] क्योंकि
मैं अपनी जान देता हूँ[1] ताकि उसे फिर
से पाऊँ। **18** कोई भी इंसान मुझसे मेरी
जान नहीं छीनता, मगर मैं खुद अपनी
मरज़ी से इसे देता हूँ। मुझे इसे देने का
अधिकार है और इसे दोबारा पाने का भी
अधिकार है।[2] इसकी आज्ञा मुझे अपने
पिता से मिली है।"

19 इन बातों की वजह से यहूदियों
में फिर से फूट पड़ गयी।[3] **20** बहुत-से
कह रहे थे, "इसमें दुष्ट स्वर्गदूत समाया
हुआ है, इसका दिमाग फिर गया है।
तुम इसकी क्यों सुनते हो?" **21** दूसरे
कह रहे थे, "ये बातें किसी ऐसे आदमी
की नहीं जिसमें दुष्ट स्वर्गदूत समाया हो।
क्या कोई दुष्ट स्वर्गदूत अंधों की आँखें
खोल सकता है?"

22 उस वक्त यरूशलेम में मंदिर के
समर्पण का त्योहार चल रहा था। यह
सर्दियों का मौसम था **23** और यीशु
मंदिर में सुलैमान के खंभोंवाले बराम-
दे में टहल रहा था।[4] **24** तब यहूदियों
ने उसे घेर लिया और उससे पूछने लगे,
"तू और कब तक हमें दुविधा में रखेगा?
अगर तू मसीह है तो साफ-साफ कह
दे।" **25** यीशु ने उन्हें जवाब दिया, "मैं
तुमसे कह चुका हूँ, फिर भी तुम यकीन
नहीं करते। मैं अपने पिता के नाम से
जो काम करता हूँ वही मेरे बारे में गवाही
देते हैं।[5] **26** मगर तुम इसलिए यकीन
नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं।[6]
27 मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं
और मैं उन्हें जानता हूँ और वे मेरे पीछे-
पीछे चलती हैं।[7] **28** मैं उन्हें हमेशा की
ज़िंदगी देता हूँ[8] और उन्हें कभी-भी नाश
नहीं किया जाएगा और कोई भी उन्हें मेरे
हाथ से नहीं छीनेगा।[9] **29** मेरे पिता ने
मुझे जो दिया है, वह बाकी सब चीज़ों से
कहीं बढ़कर है और कोई भी उन्हें पिता के

अध्य. 10
1 यूह 14:6
2 यूह 21:17
3 मत 7:15
4 यहे 34:23; मत 9:36
5 1शम 17:34, 35; मत 20:28; इब्र 13:20
6 यूह 10:27
7 मत 11:27
8 मत 20:28; यूह 15:13; 1यूह 3:16
9 लूक 12:32
10 यहे 34:23; यहे 37:24; 1पत 5:4
11 यूह 17:23

दूसरा कॉल.
1 यश 53:12; फिल 2:8; इब्र 2:9; इब्र 12:2
2 प्रेष 2:23, 24
3 लूक 12:51; यूह 7:12; यूह 9:16
4 प्रेष 3:11
5 यूह 3:2; यूह 5:36; यूह 10:38; यूह 14:10; प्रेष 2:22
6 यूह 8:47
7 यूह 10:3
8 यूह 5:24; यूह 17:1, 2
9 यूह 6:37; यूह 18:9

हाथ से नहीं छीन सकता।[1] 30 मैं और
पिता एक हैं।”*[2]

31 एक बार फिर यहूदियों ने उसे मार
डालने के लिए पत्थर उठाए। 32 यीशु
ने उनसे कहा, “मैंने तुम्हें पिता की तरफ
से बहुत-से बढ़िया काम दिखाए। उनमें से
किस काम के लिए तुम मुझे पत्थरों से मार
डालना चाहते हो?” 33 यहूदियों ने उसे
जवाब दिया, “हम किसी बढ़िया काम के
लिए नहीं बल्कि इसलिए तुझे पत्थरों से
मारना चाहते हैं क्योंकि तू परमेश्वर की
निंदा करता है।[3] तू इंसान होकर खुद
को ईश्वर का दर्जा देता है।” 34 यीशु
ने उनसे कहा, “क्या तुम्हारे कानून में नहीं
लिखा है, ‘मैंने कहा, “तुम सब ईश्वर*
हो।”’[4] 35 जब परमेश्वर ने उन लोगों
को ‘ईश्वर’ कहा है[5] जो दोषी ठह-
राए गए थे और शास्त्र की इस बात को
रद्द नहीं किया जा सकता, 36 तो फिर
तुम यह कैसे कह सकते हो कि मैंने खुद
को परमेश्वर का बेटा कहकर उसकी
निंदा की है,[6] जबकि मुझे परमेश्वर ने
ही पवित्र ठहराया और दुनिया में भेजा
है? 37 अगर मैं अपने पिता के काम
नहीं कर रहा, तो मेरा यकीन मत करो।
38 लेकिन अगर मैं अपने पिता के काम
कर रहा हूँ तो मुझ पर न सही, मगर मेरे
कामों पर तो यकीन करो[7] ताकि तुम जान
सको और आगे भी यकीन करो कि पिता
मेरे साथ एकता में है और मैं पिता के साथ
एकता में हूँ।”[8] 39 इसलिए उन्होंने एक
बार फिर उसे पकड़ने की कोशिश की
मगर वह उनके हाथ से निकल गया।

40 फिर वह यरदन के पार उस जगह
चला गया जहाँ पहले यूहन्ना बपतिस्मा
दिया करता था[9] और वह वहीं रहा।
41 बहुत-से लोग उसके पास आए और
कहने लगे, “यूहन्ना ने तो एक भी
चमत्कार नहीं किया, मगर उसने इस
आदमी के बारे में जितनी बातें कही थीं, वे
सब सच थीं।”[1] 42 वहाँ बहुतों ने यीशु
पर विश्वास किया।

11 बैतनियाह गाँव में लाज़र नाम का
एक आदमी बीमार था। उसकी
बहनें, मारथा और मरियम भी इसी गाँव
में रहती थीं।[2] 2 दरअसल यह वह
मरियम थी जिसने प्रभु पर खुशबूदार
तेल उँडेला था और उसके पैरों को
अपने बालों से पोंछा था।[3] बीमार लाज़र
इसी मरियम का भाई था। 3 इसलिए
लाज़र की बहनों ने यीशु के पास खबर
भेजी, “प्रभु, आकर देख! तेरा वह दोस्त
बीमार है जिससे तू बहुत प्यार करता
है।” 4 मगर जब यीशु ने यह सुना तो
कहा, “इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं
बल्कि इससे परमेश्वर की महिमा होगी[4]
ताकि इसके ज़रिए परमेश्वर के बेटे की
महिमा हो सके।”

5 यीशु, मारथा और उसकी बहन
और लाज़र से बहुत प्यार करता था।
6 मगर जब उसने सुना कि लाज़र बीमार
है, तो वह जिस जगह रुका था वहाँ
दो दिन और रुक गया। 7 इसके बाद
उसने चेलों से कहा, “चलो हम फिर से
यहूदिया चलें।” 8 तब चेलों ने उससे
कहा, “गुरु,[5] अभी कुछ ही वक्त पहले
यहूदिया के लोग तुझे पत्थरों से मार
डालना चाहते थे,[6] क्या तू फिर वहीं
जाना चाहता है?” 9 यीशु ने जवाब
दिया, “क्या दिन की रौशनी 12 घंटे नहीं
होती?[7] अगर कोई दिन की रौशनी में
चलता है, तो वह किसी चीज़ से ठोकर
नहीं खाता क्योंकि वह इस दुनिया की
रौशनी देखता है। 10 लेकिन अगर

अध्य. 10
1 1पत 1:4, 5
2 यूह 10:38 यूह 17:11, 21
3 लैव 24:16
4 भज 82:6 1कुर 8:5
5 भज 82:1
6 लूक 1:35 यूह 5:18
7 यूह 5:36
8 यूह 14:10 यूह 17:21
9 यूह 1:28

दूसरा कॉल.
1 यूह 1:29

अध्य. 11
2 लूक 10:38
3 मत 26:6, 7 मर 14:3 यूह 12:3
4 यूह 9:1-3
5 यूह 1:38
6 यूह 8:59 यूह 10:31
7 यूह 9:4 यूह 12:35

10:30 *या “मेरे और पिता के बीच एकता है।” **10:34** *या “ईश्वर जैसे।”

कोई रात में चलता है, तो वह ठोकर खाता है क्योंकि उसमें रौशनी नहीं है।"

11 ये बातें कहने के बाद यीशु ने उनसे कहा, "हमारा दोस्त लाज़र सो गया है,[1] लेकिन मैं उसे जगाने वहाँ जा रहा हूँ।" **12** चेलों ने उससे कहा, "प्रभु, अगर वह सो गया है, तो ठीक हो जाएगा।" **13** दरअसल यीशु कह रहा था कि लाज़र मर गया है, मगर चेलों ने समझा कि यीशु सचमुच की नींद की बात कर रहा है। **14** इसलिए यीशु ने उन्हें साफ-साफ बताया, "लाज़र मर चुका है[2] **15** और मैं तुम्हारी वजह से खुश हूँ कि मैं वहाँ नहीं था ताकि तुम यकीन करो। मगर अब चलो, हम उसके पास चलते हैं।" **16** इसलिए थोमा ने जो जुड़वाँ कहलाता था, बाकी चेलों से कहा, "चलो हम भी उसके साथ चलें ताकि उसके साथ अपनी जान दें।"[3]

17 जब यीशु बैतनियाह पहुँचा, तो उसे पता चला कि लाज़र को कब्र* में रखे चार दिन हो गए हैं। **18** बैतनियाह, यरूशलेम के पास, करीब तीन किलो-मीटर* की दूरी पर था। **19** बहुत-से यहूदी, मारथा और मरियम को उनके भाई की मौत पर दिलासा देने आए थे। **20** जब मारथा ने सुना कि यीशु आ रहा है, तो वह उससे मिलने गयी। मगर मरि-यम[4] घर में बैठी रही। **21** मारथा ने यीशु से कहा, "प्रभु, अगर तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता। **22** मगर मैं अब भी जानती हूँ कि तू परमेश्वर से जो कुछ माँगेगा, वह तुझे दे देगा।" **23** यीशु ने उससे कहा, "तेरा भाई ज़िंदा हो जाएगा।" **24** मारथा ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि आखिरी दिन जब मरे हुओं को ज़िंदा किया जाएगा,[1] तब वह ज़िंदा हो जाएगा।" **25** यीशु ने उससे कहा, "मरे हुओं को ज़िंदा करनेवाला और उन्हें जीवन देनेवाला मैं ही हूँ।[2] जो मुझ पर विश्वास करता है वह चाहे मर भी जाए, तो भी ज़िंदा किया जाएगा। **26** और हर कोई जो ज़िंदा है और मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा।[3] क्या तू इस पर यकीन करती है?" **27** उसने कहा, "हाँ प्रभु, मुझे यकीन है कि तू परमेश्वर का बेटा मसीह है, जिसे दुनिया में आना था।" **28** यह कहने के बाद वह चली गयी और उसने जाकर अपनी बहन मरियम से अकेले में कहा, "गुरु[4] आ चुका है और तुझे बुला रहा है।" **29** जब मरियम ने यह सुना तो वह फौरन उठी और उससे मिलने निकल पड़ी।

30 यीशु अब तक गाँव के अंदर नहीं आया था। वह अब भी वहीं था जहाँ मारथा उससे मिली थी। **31** जब उन यहूदियों ने, जो घर में मरियम को दिलासा दे रहे थे, देखा कि वह उठ-कर जल्दी से बाहर निकल गयी है, तो वे भी उसके पीछे-पीछे गए क्योंकि उन्हें लगा कि वह कब्र*[5] पर रोने जा रही है। **32** जब मरियम उस जगह आयी जहाँ यीशु था और उसकी नज़र यीशु पर पड़ी, तो वह यह कहते हुए उसके पैरों पर गिर पड़ी, "प्रभु, अगर तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता।" **33** जब यीशु ने उसे और उसके साथ आए यहूदियों को रोते देखा, तो उसने गहरी आह भरी और उसका दिल भर आया। **34** उसने कहा, "तुमने उसे कहाँ रखा है?" उन्होंने कहा, "प्रभु, आ और आकर देख ले।" **35** यीशु के आँसू बहने लगे।[6] **36** यह देखकर यहूदियों ने कहा, "देखो,

अध्य. 11

1 भज 13:3, मत 9:24, प्रेष 7:59, 60, 1कुर 15:6
2 सभ 9:5
3 यूह 11:8
4 लूक 10:38, 39

दूसरा कॉल.

1 यश 26:19, यूह 5:28, 29, प्रेष 24:15, इब्र 11:35, प्रक 20:12
2 यूह 14:6
3 यूह 8:51
4 मत 23:8, यूह 13:13
5 यूह 11:17
6 लूक 19:41, इब्र 4:15

11:17, 31 *या "स्मारक कब्र।" **11:18** *शा., "करीब 15 स्तादियौन।" अति. ख14 देखें।

यह उससे कितना प्यार करता था!” 37 मगर कुछ ने कहा, “जब इस आदमी ने अंधे की आँखें खोल दीं,[1] तो इसकी जान क्यों नहीं बचा सका?”

38 यीशु ने फिर से गहरी आह भरी और कब्र* के पास आया। यह असल में एक गुफा थी और इसके मुँह पर एक पत्थर रखा हुआ था। 39 यीशु ने कहा, “पत्थर को हटाओ।” तब मारथा ने जो मरे हुए आदमी की बहन थी, उससे कहा, “प्रभु अब तक तो उसमें से बदबू आती होगी, उसे मरे चार दिन हो चुके हैं।” 40 यीशु ने उससे कहा, “क्या मैंने तुझसे नहीं कहा था कि अगर तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा देखेगी?”[2] 41 तब उन्होंने पत्थर हटा दिया। फिर यीशु ने आँखें उठाकर स्वर्ग की तरफ देखा[3] और कहा, “पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मेरी सुनी है। 42 मैं जानता था कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन यहाँ खड़ी भीड़ की वजह से मैंने ऐसा कहा ताकि ये यकीन कर सकें कि तूने ही मुझे भेजा है।”[4] 43 जब वह ये बातें कह चुका, तो उसने ज़ोर से पुकारा, “लाज़र, बाहर आ जा!”[5] 44 तब वह जो मर चुका था बाहर निकल आया। उसके हाथ-पैर कफन की पट्टियों में लिपटे हुए थे और उसका चेहरा कपड़े से लिपटा हुआ था। यीशु ने उनसे कहा, “इसे खोल दो और जाने दो।”

45 इसलिए बहुत-से यहूदियों ने जो मरियम के पास आए थे और जिन्होंने यीशु का यह काम देखा, उस पर विश्वास किया।[6] 46 मगर कुछ लोगों ने जाकर फरीसियों को बता दिया कि यीशु ने क्या किया है। 47 तब प्रधान याजक और फरीसियों ने महासभा को इकट्ठा किया और कहा, “हम क्या करें, यह आदमी तो बहुत-से चमत्कार कर रहा है?[1] 48 अगर हम इसे यूँ ही छोड़ दें, तो सब लोग इस पर विश्वास करने लगेंगे और रोमी आकर हमसे हमारी जगह* और राष्ट्र दोनों छीन लेंगे।” 49 मगर उनमें से कैफा[2] नाम के आदमी ने, जो उस साल का महायाजक था, उनसे कहा, “तुम कुछ नहीं जानते 50 और यह नहीं सोचते कि यह तुम्हारे ही फायदे के लिए है कि एक आदमी सब लोगों की खातिर मरे, बजाय इसके कि सारा राष्ट्र नाश किया जाए।” 51 उसने यह बात अपनी तरफ से नहीं कही थी, बल्कि उस साल का महायाजक होने की वजह से उसने यह भविष्यवाणी की कि यीशु पूरे राष्ट्र के लिए अपनी जान देनेवाला है 52 और न सिर्फ उस राष्ट्र के लिए, बल्कि इसलिए भी कि परमेश्वर के उन सभी बच्चों को इकट्ठा करके एक करे, जो यहाँ-वहाँ तितर-बितर हैं। 53 इसलिए उस दिन से वे यीशु को मार डालने की साज़िश करने लगे।

54 इस वजह से यीशु इसके बाद खुल्लम-खुल्ला यहूदियों के बीच नहीं घूमा, बल्कि वह इलाका छोड़कर वीराने के पास एप्रैम[3] नाम के शहर चला गया और वहीं अपने चेलों के साथ रहा। 55 यहूदियों का फसह का त्योहार[4] पास था और बहुत-से लोग गाँव और देहातों से निकलकर यरूशलेम गए ताकि फसह से पहले खुद को कानून के मुताबिक शुद्ध कर सकें। 56 वहाँ वे यीशु को ढूँढ़ने लगे और मंदिर में खड़े होकर आपस में कहने लगे, “तुम्हें क्या लगता है, क्या वह त्योहार के लिए आएगा ही

11:38 * या “स्मारक कब्र।”

11:48 * यानी मंदिर।

अध्य. 11
1 यूह 9:6, 7
2 यूह 9:1-3
3 मत 14:19; मर 7:34, 35
4 यूह 12:28-30; यूह 17:8
5 लूक 7:12, 14
6 यूह 2:23; यूह 10:42; यूह 12:10, 11

दूसरा कॉल.
1 यूह 12:37; प्रेष 4:15, 16
2 मत 26:3; लूक 3:2; प्रेष 4:5, 6
3 2शम 13:23; 2इत 13:19
4 निर्ग 12:14; व्य 16:1; यूह 2:13; यूह 5:1; यूह 6:4; यूह 12:1

नहीं?” 57 प्रधान याजकों और फरी-
सियों ने हुक्म दिया हुआ था कि अगर
किसी को पता चले कि वह कहाँ है,
तो वह आकर उन्हें बताए ताकि वे उसे
पकड़* सकें।

12 फसह के त्योहार से छः दिन
पहले यीशु बैतनियाह पहुँचा।
लाज़र,[1] जिसे यीशु ने मरे हुओं में से
ज़िंदा किया था वहीं का रहनेवाला था।
2 यीशु के लिए वहाँ शाम की दावत रखी
गयी और मारथा सेवा में लगी हुई थी।[2]
जो लोग यीशु के साथ खाने बैठे,* उनमें
लाज़र भी एक था। 3 तब मरियम ने
करीब 327 ग्राम* असली जटामाँसी का
खुशबूदार तेल लिया जो बहुत कीमती
था। उसने यीशु के पैरों पर यह तेल
उँडेला और अपने बालों से उन्हें पोंछा।
सारा घर इस तेल की खुशबू से महक
उठा।[3] 4 मगर यहूदा इस्करियोती[4]
ने, जो यीशु के चेलों में से एक था और
उसे पकड़वानेवाला था कहा, 5 “इस
खुशबूदार तेल को 300 दीनार* में बेच-
कर इसका पैसा गरीबों को क्यों नहीं
दिया गया?” 6 मगर यह उसने इस-
लिए नहीं कहा कि उसे गरीबों की चिंता
थी, बल्कि इसलिए कहा क्योंकि वह चोर
था और उसके पास पैसों का बक्सा रहता
था जिसमें से वह पैसे चुरा लेता था।
7 तब यीशु ने मरियम के लिए कहा,
“इसे छोड़ दो ताकि यह मेरे दफनाए जाने
की तैयारी के लिए यह दस्तूर पूरा करे।[5]
8 क्योंकि गरीब तो हमेशा तुम्हारे साथ
होंगे,[6] मगर मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं
रहूँगा।”[7]

9 इस बीच यहूदियों की एक बड़ी
भीड़ को पता चला कि यीशु वहाँ है। तब
वे न सिर्फ यीशु को बल्कि लाज़र को भी
देखने वहाँ आए, जिसे उसने मरे हुओं
में से ज़िंदा किया था।[1] 10 अब प्रधान
याजकों ने लाज़र को भी मार डालने की
साज़िश रची 11 क्योंकि उसी की वजह
से बहुत-से यहूदी वहाँ जा रहे थे और
यीशु पर विश्वास कर रहे थे।[2]
12 अगले दिन, त्योहार के लिए आए
लोगों की बड़ी भीड़ ने सुना कि यीशु
यरूशलेम आ रहा है। 13 तब वे खजूर
की डालियाँ लिए उससे मिलने निकले।
वे ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगे, “हम तुझसे
बिनती करते हैं, इसे बचा ले! धन्य है
वह जो यहोवा* के नाम से आता है,[3]
इसराएल का राजा धन्य है!”[4] 14 जब
यीशु को गधे का एक बच्चा मिला, तो वह
उस पर बैठ गया,[5] ठीक जैसा लिखा है,
15 “सिय्योन की बेटी, मत डर। देख!
तेरा राजा गधे के बच्चे पर बैठकर आ
रहा है।”[6] 16 शुरू में उसके चेले इन
बातों का मतलब नहीं समझ पाए। मगर
जब यीशु ने महिमा पायी[7] तब उन्हें याद
आया कि उन्होंने उसके लिए ठीक वही
किया, जो उसके बारे में लिखा था।[8]
17 जिन लोगों ने देखा था कि कैसे
यीशु ने लाज़र को कब्र* से बाहर
बुलाया[9] और उसे मरे हुओं में से ज़िंदा
किया, वे इस बारे में दूसरों को गवाही
देते रहे।[10] 18 उस भीड़ के लोग यीशु
से मिलने इसलिए आए थे क्योंकि उन्होंने
इस चमत्कार के बारे में सुना था।
19 तब फरीसी आपस में कहने लगे,
“देखो, हम कुछ नहीं कर पा रहे। सारी
दुनिया उसके पीछे जा रही है।”[11]

11:57 *या “गिरफ्तार कर।” **12:2** *या “मेज़ से टेक लगाए थे।” **12:3** *शा., “एक पौंड।” यानी रोमी पौंड। अति. ख14 देखें। **12:5** *अति. ख14 देखें।

12:13 *अति. क5 देखें। **12:17** *या “स्मारक कब्र।”

अध्य. 12
1 यूह 11:1, 43
2 लूक 10:40
3 मत 26:6-10, मर 14:3-6
4 मत 26:47, मर 14:10, लूक 22:48, यूह 13:29, प्रेष 1:16
5 मत 26:12, मर 14:8, यूह 19:40
6 व्य 15:11
7 मत 26:11, मर 14:7

दूसरा कॉल.
1 यूह 11:43, 44
2 यूह 7:31, यूह 11:44, 45
3 भज 118:25, 26
4 मत 21:8, 9, मर 11:8, 9, यूह 1:49
5 मत 21:7, मर 11:7, लूक 19:35
6 1रा 1:33, 34, यश 62:11, जक 9:9, मत 21:5
7 यूह 7:39
8 लूक 24:45, यूह 14:26
9 यूह 11:1, 43
10 मत 21:15, लूक 19:37
11 यूह 11:48

20 त्योहार के वक्त उपासना के लिए आनेवालों में कुछ यूनानी भी थे। 21 इसलिए वे फिलिप्पुस[1] के पास आए जो गलील के बैतसैदा का रहनेवाला था और उससे गुज़ारिश करने लगे, "साहब, हम यीशु से मिलना चाहते हैं।" 22 फिलिप्पुस ने जाकर अन्द्रियास को बताया। अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने जाकर यीशु को बताया।

23 मगर यीशु ने उन्हें जवाब दिया, "वह घड़ी आ चुकी है जब इंसान का बेटा महिमा पाए।[2] 24 मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जब तक गेहूँ का एक दाना मिट्टी में गिरकर मर नहीं जाता, तब तक वह एक दाना ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है[3] तो बहुत फल पैदा करता है। 25 जो अपनी जान से लगाव रखता है, वह इसे नाश करता है। मगर जो इस दुनिया में अपनी जान से नफरत करता है[4] वह इसे बचाए-गा ताकि हमेशा की ज़िंदगी पाए।[5] 26 जो मेरी सेवा करना चाहता है, वह मेरे पीछे हो ले और जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा सेवक भी होगा।[6] जो मेरी सेवा करेगा, पिता उसका आदर करेगा। 27 अब मैं और क्या कहूँ? मेरा जी बेचैन है।[7] हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा ले![8] मगर मैं इसीलिए तो इस घड़ी तक पहुँचा हूँ। 28 पिता अपने नाम की महिमा कर।" तब आकाश से आवाज़[9] आयी: "मैंने इसकी महिमा की है और फिर से करूँगा।"[10]

29 जब आस-पास खड़ी भीड़ ने यह आवाज़ सुनी, तो लोग कहने लगे कि बादल गरजा है। दूसरों ने कहा, "किसी स्वर्गदूत ने उससे बात की है।" 30 यीशु ने कहा, "यह आवाज़ मेरी खातिर नहीं बल्कि तुम्हारी खातिर सुनायी दी है। 31 अब इस दुनिया का न्याय किया जा रहा है और इस दुनिया का राजा[1] बाहर कर दिया जाएगा।[2] 32 मगर जहाँ तक मेरी बात है, जब मुझे धरती से ऊपर उठाया जाएगा,[3] तो मैं सब किस्म के लोगों को अपनी ओर खींचूँगा।" 33 यह बात उसने दरअसल यह दिखाने के लिए कही कि वह कैसी मौत मरनेवाला था।[4] 34 तब भीड़ ने उससे कहा, "हमने तो कानून में सुना है कि मसीह हमेशा तक रहेगा,[5] फिर तू कैसे कह सकता है कि इंसान के बेटे को ऊपर उठाया जाना है?[6] यह इंसान का बेटा कौन है?" 35 तब यीशु ने उनसे कहा, "रौशनी बस थोड़ी देर और तुम्हारे बीच रहेगी। जब तक यह तुम्हारे साथ है, तब तक रौशनी में चलते रहो ताकि अँधेरा तुम पर हावी न हो। जो अँधेरे में चलता है वह नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है।[7] 36 जब तक रौशनी तुम्हारे साथ है, तब तक उस पर विश्वास करो और तुम रौशनी के बेटे[8] कहलाओगे।"

यीशु ये बातें कहने के बाद चला गया और उनसे छिप गया। 37 उसने उनके सामने बहुत-से चमत्कार किए थे, फिर भी वे उस पर विश्वास नहीं कर रहे थे। 38 इस तरह भविष्य-वक्ता यशायाह की कही यह बात पूरी हुई, "हे यहोवा,* किसने हमारे संदेश पर विश्वास किया है?[9] यहोवा* ने अपनी ताकत# किस पर ज़ाहिर की है?"[10] 39 उन्होंने क्यों यकीन नहीं किया, इसकी वजह बताते हुए यशायाह फिर कहता है, 40 "उसने उनकी आँखें अंधी कर दी हैं और उनके दिल कठोर कर दिए हैं ताकि न वे कभी अपनी

12:38 *अति. क5 देखें। #शा., "बाज़ू।"

अध्य. 12
1 यूह 1:44
2 यूह 13:31, 32; यूह 17:1
3 मत 16:21; रोम 14:9; 1कुर 15:36
4 प्रक 12:11
5 मत 16:25; मर 8:35; लूक 9:24
6 यूह 14:3; यूह 17:24; 1थि 4:17
7 मत 26:38; मर 14:34
8 लूक 12:50; लूक 22:41, 42; इब्र 5:7
9 मत 3:17; मत 17:5; मर 1:11; मर 9:7; लूक 3:22; लूक 9:35; 2पत 1:17
10 यूह 17:1

दूसरा कॉल.
1 यूह 14:30; यूह 16:11; प्रेष 26:17, 18; 2कुर 4:3, 4; इफ 2:1, 2; 1यूह 5:19
2 लूक 10:18; प्रक 12:9
3 यूह 8:28
4 प्रेष 5:30
5 भज 89:35, 36; भज 110:4; यश 9:7
6 यूह 3:14
7 यूह 11:10
8 इफ 5:8
9 रोम 10:16
10 यश 53:1

आँखों से देखें और न ही अपने दिलों
से समझें और न वे पलटकर लौट आएँ
और मैं उन्हें चंगा करूँ।”[1] 41 यशा-
याह ने मसीह के बारे में ये बातें इसलिए
कहीं क्योंकि उसने मसीह की महिमा देखी
थी।[2] 42 हालाँकि बहुत-से धर्म-अधि-
कारियों ने भी यीशु पर विश्वास किया,[3]
मगर वे फरीसियों के डर से खुलकर उसे
स्वीकार नहीं करते थे ताकि उन्हें सभा-
घर से बेदखल न कर दिया जाए।[4]
43 उन्हें परमेश्वर से मिलनेवाली महिमा
से ज़्यादा इंसानों से मिलनेवाली महिमा
प्यारी थी।[5]

44 मगर यीशु ने ज़ोर से कहा, “जो
मुझ पर विश्वास करता है वह मुझ पर ही
नहीं बल्कि उस पर भी विश्वास करता है
जिसने मुझे भेजा है।[6] 45 और जो मुझे
देखता है वह उसे भी देखता है जिसने
मुझे भेजा है।[7] 46 मैं इस दुनिया में
रौशनी बनकर आया हूँ[8] ताकि हर कोई
जो मुझ पर विश्वास करता है वह अँधेरे
में न रहे।[9] 47 लेकिन अगर कोई मेरी
बातें सुनता है मगर उन्हें मानता नहीं, तो
मैं उसे दोषी नहीं ठहराऊँगा क्योंकि
मैं दुनिया को दोषी ठहराने नहीं बल्कि
बचाने आया हूँ।[10] 48 जो कोई मुझे
ठुकरा देता है और मेरे वचन स्वीकार नहीं
करता, उसे दोषी ठहरानेवाला कोई और
है। जो वचन मैंने कहा है वही उसे आखिरी
दिन में दोषी ठहराएगा। 49 क्योंकि मैंने
अपनी तरफ से कुछ नहीं कहा। मगर खुद
पिता ने, जिसने मुझे भेजा है, मुझे
आज्ञा दी है कि मैं क्या-क्या बताऊँ और
क्या-क्या बोलूँ।[11] 50 और मैं जानता हूँ
कि उसकी आज्ञा मानने का मतलब
हमेशा की ज़िंदगी है।[12] इसलिए मैं सिर्फ
वही बातें बताता हूँ जो पिता ने मुझे
बतायी हैं।”[13]

अध्य. 12
1 यश 6:10
मत 13:14
मर 4:11, 12
प्रेष 28:27
2 यश 6:1, 8
3 यूह 19:38
4 यूह 9:22
यूह 16:2
5 यूह 5:44
6 मत 10:40
मर 9:37
7 यूह 14:9
8 यूह 3:19
यूह 8:12
यूह 9:5
9 यूह 12:35
10 यूह 3:16, 17
11 यूह 8:38
यूह 14:10
12 यूह 6:40
13 यूह 3:34

दूसरा कॉल.

अध्य. 13
1 मत 26:2
यूह 12:23
यूह 17:1
2 यूह 16:28
यूह 17:11
3 यूह 15:9
इफ 5:2
1यूह 3:16
4 लूक 22:3, 4
यूह 13:27
5 मत 26:14-16
मत 26:24
मर 14:10, 11
6 यूह 16:28
7 फिल 2:5-7
8 1कुर 6:11
इफ 5:25, 26
तीत 3:5
इब्र 10:22

13 फसह के त्योहार से पहले यीशु
जानता था कि वह घड़ी आ गयी
है[1] जब वह इस दुनिया को छोड़कर पिता
के पास चला जाएगा।[2] इसलिए दुनिया में
जो उसके अपने थे और जिनसे वह प्यार
करता था, उनसे आखिर तक प्यार करता
रहा।[3] 2 शाम का खाना चल रहा था
और शैतान, शमौन के बेटे यहूदा इस्करि-
योती के दिल में यह बात डाल चुका था[4]
कि वह यीशु को पकड़वाए।[5] 3 यीशु
यह जानते हुए कि पिता ने सबकुछ
उसके* हाथ में सौंप दिया है और वह
परमेश्वर की तरफ से आया है और पर-
मेश्वर के पास जा रहा है,[6] 4 खाने की
मेज़ से उठा। उसने अपना चोगा उतार-
कर अलग रख दिया और तौलिया लेकर
कमर में बाँधा।*[7] 5 इसके बाद उसने
एक बरतन में पानी भरा और अपने
चेलों के पैर धोने लगा और कमर पर
बँधे* तौलिये से पोंछने लगा। 6 जब
वह शमौन पतरस के पास आया, तो पत-
रस ने उससे कहा, “प्रभु, क्या तू मेरे पैर
धोएगा?” 7 यीशु ने उससे कहा, “मैं
जो कर रहा हूँ उसे तू अभी नहीं समझ
रहा, मगर बाद में समझेगा।” 8 पत-
रस ने उससे कहा, “नहीं, तू मेरे पैर नहीं
धोएगा।” यीशु ने उससे कहा, “अगर
मैं तुझे न धोऊँ,[8] तो मेरे साथ तेरी
कोई साझेदारी नहीं।” 9 शमौन पतरस
ने उससे कहा, “तो प्रभु, मेरे पैर ही नहीं,
बल्कि मेरे हाथ और मेरा सिर भी धो दे।”
10 यीशु ने उससे कहा, “जो नहा चुका है
उसे पैर के सिवा और कुछ धोने की ज़रू-
रत नहीं, वह पूरी तरह शुद्ध है। तुम लोग
शुद्ध हो, पर तुममें से सब नहीं।”
11 वह जानता था कि वह कौन है जो

13:3 *यानी यीशु के। **13:4** *या “कमर कसी।” **13:5** *या “कसे।”

उसके साथ विश्‍वासघात करनेवाला है।[1]
इसीलिए उसने कहा, “तुममें से सब शुद्ध
नहीं हैं।”

12 जब वह उनके पैर धो चुका और
अपना चोगा पहनकर एक बार फिर मेज़
से टेक लगाकर बैठ गया, तो उसने उनसे
कहा, “क्या तुम समझे कि मैंने तुम्हारे
साथ क्या किया है? **13** तुम मुझे ‘गुरु’
और ‘प्रभु’ बुलाते हो और तुम ठीक कहते
हो क्योंकि मैं वही हूँ।[2] **14** इसलिए
जब मैंने प्रभु और गुरु होते हुए भी तुम्हारे
पैर धोए,[3] तो तुम्हें भी एक-दूसरे के पैर
धोने चाहिए।*[4] **15** इसलिए कि मैंने
तुम्हारे लिए नमूना छोड़ा है कि जैसा
मैंने तुम्हारे साथ किया, तुम्हें भी वैसा ही
करना चाहिए।[5] **16** मैं तुमसे सच-सच
कहता हूँ, दास अपने मालिक से बड़ा नहीं
होता, न ही भेजा हुआ अपने भेजनेवाले
से बड़ा होता है। **17** तुमने ये बातें जान
ली हैं, लेकिन अगर तुम ऐसा करो तो
सुखी होगे।[6] **18** मैं तुम सबके बारे
में बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने चुना है
उन्हें मैं जानता हूँ, मगर शास्त्र की इस
बात का पूरा होना ज़रूरी है,[7] ‘जो मेरी
रोटी खाया करता था वही मेरे खिलाफ हो
गया है।’*[8] **19** जो होनेवाला है वह मैं
तुम्हें अभी से बता रहा हूँ ताकि जब मेरे
साथ वैसा हो, तो तुम यकीन करो कि
शास्त्र में यह बात मेरे बारे में कही गयी
थी।[9] **20** मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ,
जिसे मैं भेजता हूँ उसे अगर एक इंसान
स्वीकार करता है तो वह मुझे भी स्वीकार
करता है।[10] और जो मुझे स्वीकार करता
है, वह उसे भी स्वीकार करता है जिसने
मुझे भेजा है।”[11]

21 ये बातें कहने के बाद यीशु मन-
ही-मन परेशान हो उठा और उसने खुल-
कर कह दिया, “मैं तुमसे सच-सच कहता
हूँ, तुममें से एक मेरे साथ विश्‍वासघात
करके मुझे पकड़वा देगा।”[1] **22** यह
सुनकर चेले एक-दूसरे का मुँह ताकने
लगे क्योंकि वे नहीं समझ पा रहे थे कि
वह किसके बारे में बात कर रहा है।[2]
23 यीशु का एक चेला, जिससे वह
बहुत प्यार करता था,[3] उसके सीने के
पास टेक लगाए बैठा था। **24** इस-
लिए शमौन पतरस ने सिर हिलाते हुए
उस चेले से कहा, “हमें बता, वह किसके
बारे में कह रहा है?” **25** तब उस चेले
ने पीछे की तरफ यीशु के सीने पर
झुककर पूछा, “प्रभु, वह कौन है?”[4]
26 यीशु ने जवाब दिया, “जिसे मैं रोटी
का टुकड़ा डुबोकर दूँगा, वही है।”[5]
फिर उसने रोटी का टुकड़ा डुबोया और
शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदा को
दिया। **27** यहूदा ने टुकड़ा लिया और
इसके बाद शैतान उसमें समा गया।[6]
इसलिए यीशु ने उससे कहा, “जो तू
कर रहा है, उसे फौरन कर।” **28** मगर
जो खाने की मेज़ पर बैठे थे उनमें
से कोई नहीं जानता था कि यीशु ने
यहूदा से ऐसा क्यों कहा। **29** यहूदा के
पास पैसों का बक्सा रहता था,[7] इसलिए
कुछ चेलों ने सोचा कि यीशु उससे कह
रहा है, “त्योहार के लिए हमें जिन
चीज़ों की ज़रूरत है वे खरीद ले,” या उसे
गरीबों को कुछ देना चाहिए। **30** इस-
लिए रोटी का टुकड़ा लेने के बाद
यहूदा फौरन वहाँ से चला गया। यह रात
का वक्‍त था।[8]

31 उसके निकल जाने के बाद यीशु
ने कहा, “अब इंसान के बेटे की महिमा
हुई है[9] और उसके ज़रिए परमेश्‍वर
की महिमा हुई है। **32** परमेश्‍वर खुद

13:14 *या “यह तुम्हारा फर्ज़ है।” **13:18** *शा., “मेरे खिलाफ एड़ी उठाए है।”

अध्य. 13
1 यूह 6:64
2 मत 23:8
3 लूक 22:27
4 मत 20:26, 27; लूक 9:48; लूक 22:26; रोम 12:10; 1पत 5:5
5 फिल 2:5; 1पत 2:21; 1यूह 2:6
6 मत 7:24, 25; लूक 11:28; याकू 1:25
7 यूह 17:12
8 भज 41:9; मत 26:23
9 यूह 14:29; यूह 16:4
10 मत 25:40
11 मत 10:40

दूसरा कॉल.
1 मत 26:21; मर 14:18; लूक 22:21; यूह 6:70
2 मत 26:22; लूक 22:23
3 यूह 19:26; यूह 20:2
4 यूह 21:20
5 मत 26:23
6 लूक 22:3, 4
7 यूह 12:4-6
8 मत 26:20
9 यूह 12:23

उसकी महिमा करेगा[1] और बहुत जल्द
ऐसा करेगा। 33 प्यारे बच्चो, मैं बस
थोड़ी देर और तुम्हारे साथ हूँ। तुम
मुझे ढूँढ़ोगे। और जो बात मैंने यहू-
दियों से कही थी, वह अब तुमसे भी
कह रहा हूँ, 'जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम
नहीं आ सकते।'[2] 34 मैं तुम्हें एक नयी
आज्ञा देता हूँ कि तुम एक-दूसरे से प्यार
करो। ठीक जैसे मैंने तुमसे प्यार किया
है,[3] वैसे ही तुम भी एक-दूसरे से प्यार
करो।[4] 35 अगर तुम्हारे बीच प्यार
होगा, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे
चेले हो।"[5]

36 शमौन पतरस ने उससे कहा,
"प्रभु, तू कहाँ जा रहा है?" यीशु ने जवाब
दिया, "जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तू अभी
मेरे पीछे नहीं आ सकता, मगर बाद में
तू आएगा।" 37 पतरस ने उससे कहा,
"प्रभु, मैं अभी तेरे पीछे क्यों नहीं आ
सकता? मैं तेरी खातिर अपनी जान भी दे
दूँगा।"[6] 38 यीशु ने जवाब दिया,
"क्या तू मेरी खातिर अपनी जान देगा?
मैं तुझसे सच-सच कहता हूँ, जब तक तू
मुझे जानने से तीन बार इनकार न करेगा,
मुर्गा बाँग न देगा।"[7]

14 "तुम्हारे दिल दुख से बेहाल
न हों।[8] परमेश्वर पर विश्वास
करो[9] और मुझ पर भी विश्वास करो।
2 मेरे पिता के घर में रहने की बहुत-
सी जगह हैं। अगर नहीं होतीं, तो
मैं तुमसे यह बात नहीं कहता। मगर अब
मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जा
रहा हूँ।[10] 3 और जब मैं जाकर तुम्हारे
लिए जगह तैयार करूँगा, तो मैं दोबारा
आऊँगा और तुम्हें अपने घर ले जाऊँगा
ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी रहो।[11]
4 जहाँ मैं जा रहा हूँ, तुम वहाँ की राह
जानते हो।"

5 थोमा[1] ने उससे कहा, "प्रभु, हम
नहीं जानते कि तू कहाँ जा रहा है। तो
फिर हम वहाँ की राह कैसे जानें?"

6 यीशु ने उससे कहा, "मैं ही वह
राह,[2] सच्चाई[3] और जीवन हूँ।[4] कोई
भी पिता के पास नहीं आ सकता,
सिवा उसके जो मेरे ज़रिए आता है।[5]
7 अगर तुमने मुझे सचमुच जाना होता,
तो तुम मेरे पिता को भी जानते। इस घड़ी
से तुम उसे जानोगे, सच तो यह है कि
तुमने उसे देखा है।"[6]

8 फिलिप्पुस ने उससे कहा, "प्रभु,
हमें पिता दिखा दे, यही हमारे लिए
काफी है।"

9 यीशु ने उससे कहा, "फिलिप्पुस, मैं
इतने समय से तुम लोगों के साथ हूँ और
फिर भी तू मुझे नहीं जान पाया? जिसने
मुझे देखा है उसने पिता को भी देखा है।[7]
तो फिर तू क्यों कहता है, 'हमें पिता दिखा
दे'? 10 क्या तू यकीन नहीं करता कि
मैं पिता के साथ एकता में हूँ और पिता
मेरे साथ एकता में है?[8] मैं जो बातें तुमसे
कहता हूँ वे अपनी तरफ से नहीं कहता,[9]
बल्कि पिता जो मेरे साथ एकता में है,
वही मेरे ज़रिए अपने काम कर रहा है।
11 मेरा यकीन करो कि मैं पिता के साथ
एकता में हूँ और पिता मेरे साथ एकता में
है। नहीं तो, जो काम मैंने किए हैं उन्हीं
की वजह से मेरा यकीन करो।[10] 12 मैं
तुमसे सच-सच कहता हूँ, जो मुझ पर
विश्वास करता है, वह भी वे काम करेगा
जो मैं करता हूँ बल्कि इनसे भी बड़े-बड़े
काम करेगा[11] क्योंकि मैं पिता के पास
जा रहा हूँ।[12] 13 साथ ही, जो कुछ
तुम मेरे नाम से माँगोगे, वह मैं करूँगा
ताकि बेटे के ज़रिए पिता महिमा पाए।[13]
14 अगर तुम मेरे नाम से कुछ माँगोगे,
तो मैं वह करूँगा।

अध्य. 13

1 यूह 17:1
2 यूह 8:21
3 यूह 15:9
4 लैव 19:18
1थि 4:9
याकू 2:8
1पत 1:22
1यूह 3:14
5 रोम 13:8
1कुर 13:8, 13
1यूह 4:20
6 मत 26:33
मर 14:29
लूक 22:33
7 मत 26:34
मर 14:30
लूक 22:34
यूह 18:27

अध्य. 14

8 यूह 14:27
9 मर 11:22
1पत 1:21
10 लूक 12:32
1पत 1:3, 4
11 यूह 17:24
रोम 8:17
फिल 1:23
1थि 4:16, 17

दूसरा कॉल.

1 यूह 11:16
2 यूह 10:9
इफ 2:18
इब्र 10:19, 20
3 यूह 1:17
इफ 4:21
4 यूह 1:4
यूह 6:63
यूह 17:3
रोम 6:23
5 प्रेष 4:12
6 मत 11:27
यूह 1:18
7 यूह 12:45
कुल 1:15
इब्र 1:3
8 यूह 10:38
यूह 17:21
9 यूह 7:16
यूह 8:28
यूह 12:49
10 यूह 5:36
11 मत 21:21
प्रेष 1:8
प्रेष 2:41
12 प्रेष 2:32, 33
13 यूह 15:16
यूह 16:23

15 अगर तुम मुझसे प्यार करते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।[1] **16** मैं पिता से बिनती करूँगा और वह तुम्हें एक और मददगार* देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा[2] **17** यानी सच्चाई की पवित्र शक्ति,[3] जो दुनिया को नहीं मिल सकती क्योंकि दुनिया न तो इसे देखती है न ही इसे जानती है।[4] तुम इसे जानते हो क्योंकि यह तुम्हारे साथ रहती है और तुममें है। **18** मैं तुम्हें मातम की हालत में* नहीं छोड़ूँगा। मैं तुम्हारे पास फिर आ रहा हूँ।[5] **19** थोड़ी देर और है, फिर दुनिया मुझे कभी नहीं देखेगी मगर तुम मुझे देखोगे[6] क्योंकि मैं जीवित हूँ और तुम भी जीओगे। **20** उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता के साथ एकता में हूँ और तुम मेरे साथ एकता में हो और मैं तुम्हारे साथ एकता में हूँ।[7] **21** जिसके पास मेरी आज्ञाएँ हैं और जो उन्हें मानता है, वही मुझसे प्यार करता है। जो मुझसे प्यार करता है उससे मेरा पिता प्यार करेगा और मैं भी उससे प्यार करूँगा और अपने आपको उस पर खुलकर ज़ाहिर करूँगा।"

22 यहूदा[8] (इस्करियोती नहीं) ने उससे कहा, "प्रभु, क्या वजह है कि तू अपने आपको हम पर तो खुलकर ज़ाहिर करना चाहता है मगर दुनिया पर नहीं?"

23 यीशु ने जवाब दिया, "अगर कोई मुझसे प्यार करता है, तो वह मेरे वचन पर चलेगा[9] और मेरा पिता उससे प्यार करेगा। हम उसके पास आएँगे और उसके साथ निवास करेंगे।[10] **24** जो मुझसे प्यार नहीं करता वह मेरे वचनों पर नहीं चलता। जो वचन तुम सुन रहे हो वह मेरा नहीं, बल्कि पिता का है जिसने मुझे भेजा है।[1]

25 तुम्हारे साथ रहते हुए मैंने ये बातें तुम्हें बतायी हैं। **26** मगर वह मददगार यानी पवित्र शक्ति जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, तुम्हें सारी बातें सिखाएगा और जितनी बातें मैंने तुम्हें बतायी हैं वे सब तुम्हें याद दिलाएगा।[2] **27** जो शांति मैं देता हूँ[3] वह मैं तुम्हारे पास छोड़कर जा रहा हूँ। मैं तुम्हें यह शांति इस तरीके से नहीं देता जैसे दुनिया देती है। तुम्हारे दिल दुख से बेहाल न हों, न ही वे डर के मारे कमज़ोर पड़ें। **28** तुमने मुझे यह कहते सुना है कि मैं जा रहा हूँ और मैं तुम्हारे पास वापस आऊँगा। अगर तुम मुझसे प्यार करते, तो इस बात पर खुशी मनाते कि मैं पिता के पास जा रहा हूँ क्योंकि पिता मुझसे बड़ा है।[4] **29** और ऐसा होने से पहले मैं अभी से तुम्हें बता रहा हूँ ताकि जब ऐसा हो तो तुम यकीन कर सको।[5] **30** मैं अब तुमसे और ज़्यादा बात नहीं करूँगा क्योंकि इस दुनिया का राजा[6] आ रहा है और मुझ पर उसका कोई ज़ोर नहीं चलता।*[7] **31** मगर दुनिया जान सके कि मैं पिता से प्यार करता हूँ इसलिए मैं ठीक वैसा ही करता हूँ जैसा पिता ने मुझे आज्ञा दी है।[8] अब उठो, हम यहाँ से चलें।

15 मैं अंगूर की सच्ची बेल हूँ और मेरा पिता बागबान है। **2** मेरी हर वह डाली जो फल नहीं देती, उसे वह काट देता है और ऐसी हर डाली जो फल देती है, उसकी वह छँटाई करता है ताकि उसमें और ज़्यादा फल लगें।[9] **3** मैंने तुमसे जो वचन कहा है उसकी वजह से तुम पहले ही शुद्ध हो।[10] **4** मेरे साथ

14:16 *या "दिलासा देनेवाला।" **14:18** *या "अनाथों की तरह।"

14:30 *या "उसे मुझ पर अधिकार नहीं।"

अध्य. 14

1 यूह 13:34, यूह 15:10, याकू 1:22
2 लूक 24:49, यूह 15:26, यूह 16:7, प्रेष 1:5, प्रेष 2:1, 4, रोम 8:26
3 मत 10:19, 20, यूह 16:13, 1कुर 2:12, 1यूह 2:27
4 1कुर 2:14
5 मत 28:20
6 प्रेष 10:40, 41
7 यूह 10:38, यूह 17:21
8 लूक 6:13, 16, प्रेष 1:13
9 यूह 15:10
10 1यूह 2:24, प्रक 3:20

दूसरा कॉल.

1 यूह 5:19, यूह 7:16, यूह 12:49
2 लूक 24:49, यूह 15:26, यूह 16:13, 1यूह 2:27
3 यूह 16:33, इफ 2:14, फिल 4:6, 7, कुल 3:15, 2थि 3:16
4 यूह 20:17, 1कुर 11:3, 1कुर 15:28, फिल 2:5, 6
5 यूह 13:19, यूह 16:4
6 यूह 12:31, यूह 16:11
7 यूह 16:33
8 यूह 10:18, यूह 12:49, यूह 15:10, फिल 2:8

अध्य. 15

9 2पत 1:8
10 यूह 13:10, यूह 17:17

एकता में बने रहो और मैं तुम्हारे साथ
एकता में रहूँगा। एक डाली तब तक फल
देती है जब तक वह बेल से जुड़ी रहती
है। बेल से अलग होकर डाली अपने आप
फल नहीं दे सकती। तुम भी अगर मेरे
साथ एकता में न रहो, तो फल नहीं पैदा
कर सकते।[1] 5 मैं अंगूर की बेल हूँ
और तुम डालियाँ हो। जो मेरे साथ एकता
में रहता है और जिसके साथ मैं एकता में
रहता हूँ, वह बहुत फल पैदा करता है।[2]
मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर
सकते। 6 अगर कोई मेरे साथ एकता
में नहीं रहता, तो उसे फेंक दिया जाता
है जैसे एक डाली को फेंक दिया जाता है
और वह सूख जाती है। लोग ऐसी
डालियाँ बटोरकर आग में झोंक देते हैं
और जला देते हैं। 7 अगर तुम मेरे
साथ एकता में रहो और मेरी बातें तुम्हारे
दिल में रहें, तो तुम जो चाहो और माँगो,
वह तुम्हें दे दिया जाएगा।[3] 8 मेरे पिता
की महिमा इस बात से होती है कि तुम
बहुत फल पैदा करते रहो और यह
साबित करो कि तुम मेरे चेले हो।[4]
9 ठीक जैसे पिता ने मुझसे प्यार किया,[5]
मैंने भी तुमसे प्यार किया है। तुम मेरे
प्यार के लायक बने रहो। 10 अगर
तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे
प्यार के लायक बने रहोगे, ठीक जैसे मैं
पिता की आज्ञाएँ मानता हूँ और उसके
प्यार के लायक बना रहता हूँ।

11 ये बातें मैंने तुमसे इसलिए कही हैं
कि तुम्हें वह खुशी मिले जो मुझे मिली
है और वह खुशी तुम्हें पूरी तरह मिले।[6]
12 मेरी यह आज्ञा है कि तुम एक-
दूसरे से प्यार करो जैसे मैंने तुमसे प्यार
किया है।[7] 13 क्या कोई इससे बढ़कर
प्यार कर सकता है कि वह अपने दोस्तों
की खातिर जान दे दे?[8] 14 जो आज्ञा
मैं देता हूँ अगर तुम उसे मानो तो तुम
मेरे दोस्त हो।[1] 15 अब मैं तुम्हें दास
नहीं कहता क्योंकि दास नहीं जानता कि
उसका मालिक क्या करता है। लेकिन मैंने
तुम्हें अपना दोस्त कहा है क्योंकि मैंने
अपने पिता से जो कुछ सुना है वह सब
तुम्हें बता दिया है। 16 तुमने मुझे नहीं
चुना मगर मैंने तुम्हें चुना है। मैंने तुम्हें
इसलिए ठहराया है कि तुम जाओ और
फल पैदा करते रहो। और तुम्हारे फल
हमेशा बने रहें ताकि तुम मेरे नाम से पिता
से जो कुछ माँगो वह तुम्हें दे दे।[2]

17 मैंने तुम्हें इन बातों की आज्ञा इस-
लिए दी है ताकि तुम एक-दूसरे से प्यार
करो।[3] 18 अगर दुनिया तुमसे नफरत
करती है, तो याद रखो कि इसने तुमसे
पहले मुझसे नफरत की है।[4] 19 अगर
तुम दुनिया के होते तो दुनिया तुम्हें पसंद
करती क्योंकि तुम उसके अपने होते।
मगर तुम दुनिया के नहीं हो[5] बल्कि
मैंने तुम्हें दुनिया से चुन लिया है, इस-
लिए दुनिया तुमसे नफरत करती है।[6]
20 मैंने जो बात तुमसे कही थी, उसे याद
रखो। एक दास अपने मालिक से बड़ा
नहीं होता। अगर उन्होंने मुझे सताया है
तो तुम्हें भी सताएँगे।[7] अगर उन्होंने
मेरी बात मानी है तो तुम्हारी भी मानेंगे।
21 मगर वे मेरे नाम की वजह से तुम्हारे
खिलाफ यह सब करेंगे क्योंकि वे मेरे
भेजनेवाले को नहीं जानते।[8] 22 अगर
मैं नहीं आता और उनसे बात नहीं
करता तो उनमें पाप नहीं होता।[9] मगर
अब अपने पाप से इनकार करने के लिए
उनके पास कोई बहाना नहीं।[10] 23 जो
मुझसे नफरत करता है वह मेरे पिता से
भी नफरत करता है।[11] 24 मैंने उनके
बीच वे काम किए जो किसी और ने नहीं
किए थे। अगर मैंने उनके बीच ये काम न

अध्य. 15

1 यूह 6:56; 1कुर 12:27; इफ 4:16
2 यूह 15:16
3 मत 7:7; यूह 16:23
4 मत 5:16; यूह 13:35; फिल 1:9, 11
5 यूह 3:35
6 यूह 16:24; यूह 17:13
7 मर 12:31; यूह 13:34; 1थि 4:9; 1पत 4:8
8 यूह 10:11; रोम 5:7, 8; इफ 5:1, 2; 1यूह 3:16

दूसरा कॉल.

1 मत 12:50; यूह 14:23
2 यूह 14:13
3 यूह 13:34; 1यूह 3:23
4 मत 10:22; यूह 17:14
5 याकू 4:4
6 लूक 6:22; यूह 17:14; 1पत 4:4
7 मत 5:11; मत 10:22; मत 24:9; 2ती 3:12; 1पत 2:21
8 यूह 16:2, 3
9 यूह 9:41
10 मत 11:21
11 यूह 5:23; 1यूह 2:23

किए होते, तो उनमें कोई पाप नहीं
होता।[1] लेकिन अब उन्होंने मुझे देखा है
और मुझसे और मेरे पिता, दोनों से नफ-
रत की है। **25** मगर यह इसलिए हुआ
कि उनके कानून में लिखी यह बात पूरी
हो, 'उन्होंने मुझसे बेवजह नफरत की।'[2]
26 मैं अपने पिता के यहाँ से तुम्हारे पास
एक मददगार भेजूँगा यानी सच्चाई की
पवित्र शक्ति, जो पिता से आती है।[3] वह
मददगार मेरे बारे में गवाही देगा।[4]
27 फिर तुम्हें भी मेरे बारे में गवाही देनी
है[5] क्योंकि तुम शुरू से मेरे साथ रहे हो।

16 मैंने तुमसे ये बातें इसलिए कही
हैं कि तुम डगमगा न जाओ।
2 लोग तुम्हें सभा-घर से बेदखल कर
देंगे।[6] यही नहीं, ऐसा समय आ रहा
है जब हर कोई जो तुम्हें मार डालेगा,[7]
यह सोचेगा कि उसने परमेश्वर की पवित्र
सेवा की है। **3** मगर ये काम वे इसलिए
करेंगे क्योंकि उन्होंने न तो पिता को जाना
है, न ही मुझे।[8] **4** फिर भी मैंने तुमसे ये
बातें इसलिए कहीं ताकि जब इनके होने
का समय आए, तब तुम्हें याद आए कि
मैंने ये बातें तुमसे कही थीं।[9]

मैंने ये बातें तुम्हें पहले नहीं बतायी
थीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। **5** मगर
अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जा रहा
हूँ,[10] फिर भी तुममें से कोई मुझसे नहीं
पूछ रहा कि तू कहाँ जा रहा है?
6 मैंने जो ये बातें तुमसे कही हैं इसलिए
तुम्हारा दिल बहुत दुखी है।[11] **7** फिर
भी मैं तुमसे सच कह रहा हूँ, मैं तुम्हारे
ही भले के लिए जा रहा हूँ। इसलिए कि
अगर मैं नहीं जाऊँगा, तो वह मददगार[12]
हरगिज़ तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन
अगर मैं जाऊँगा, तो मैं उसे तुम्हारे पास
भेजूँगा। **8** जब वह आएगा तो दुनिया
के सामने पाप, नेकी और न्याय के

अध्य. 15
1 मत 11:23
यूह 7:31
यूह 11:47
2 भज 35:19
भज 69:4
लूक 23:22
3 लूक 24:49
यूह 14:26
4 1यूह 5:6
5 लूक 24:48
प्रेष 1:8
प्रेष 2:22
प्रेष 5:32

अध्य. 16
6 यूह 9:22
7 मत 24:9
प्रेष 8:1
प्रेष 12:1, 2
प्रेष 26:11
8 यूह 8:19
यूह 15:20, 21
रोम 10:2
1कुर 2:8
9 यूह 13:19
यूह 14:29
10 यूह 7:33
यूह 13:3
11 यूह 16:22
12 यूह 14:16, 26
यूह 15:26
प्रेष 2:32, 33

दूसरा कॉल.
1 यूह 15:22
2 यूह 5:37, 38
3 यूह 12:31
यूह 14:30
4 यूह 16:7
5 प्रेष 11:28
प्रेष 21:10, 11
1ती 4:1
6 1यूह 4:2
7 यूह 15:26
1यूह 2:27
8 यूह 17:10
9 यूह 7:33
यूह 14:19

ठोस सबूत पेश करेगा: **9** सबसे पहले
वह पाप[1] के सबूत पेश करेगा क्योंकि
वे मुझ पर विश्वास नहीं कर रहे।[2]
10 फिर वह नेकी के सबूत पेश करेगा
क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ और
तुम मुझे फिर नहीं देखोगे। **11** इसके
बाद, न्याय के सबूत पेश करेगा क्योंकि
इस दुनिया के राजा का न्याय किया
गया है।[3]

12 मुझे तुमसे और भी बहुत-सी बातें
कहनी हैं, मगर इस वक्त तुम इन्हें नहीं
समझ सकते। **13** लेकिन जब वह*
आएगा यानी सच्चाई की पवित्र शक्ति,[4]
तो वह सच्चाई की पूरी समझ पाने में
तुम्हारी मदद करेगा। इसलिए कि वह
अपनी तरफ से नहीं बोलेगा बल्कि जो
बातें वह सुनता है वही बोलेगा और आने-
वाली बातों के बारे में तुम्हें बताएगा।[5]
14 वह मेरी महिमा करेगा[6] क्योंकि उसने
मुझसे जो सुना है वही तुम्हें बताएगा।[7]
15 जो कुछ पिता का है वह सब मेरा
है।[8] इसीलिए मैंने कहा कि वह मददगार
मुझसे जो सुनता है वही तुम्हें बताएगा।
16 अब से थोड़ी देर बाद तुम मुझे नहीं
देखोगे[9] और फिर थोड़ी देर बाद तुम मुझे
देखोगे।"

17 तब उसके कुछ चेले एक-दूसरे से
कहने लगे, "यह जो हमसे कह रहा है
इसका क्या मतलब है: 'अब से थोड़ी
देर बाद तुम मुझे नहीं देखोगे और
फिर थोड़ी देर बाद तुम मुझे देखोगे'
और इसका भी, 'क्योंकि मैं अपने पिता
के पास जा रहा हूँ'?" **18** इसलिए वे

16:13 *आय. 13 और 14 में "वह" का मतलब आय. 7 में बताया "मददगार" है। यीशु ने पवित्र शक्ति की तुलना एक "मदद-गार" से की है। पवित्र शक्ति कोई व्यक्ति नहीं बल्कि एक ताकत है।

कहने लगे, “यह जो कह रहा है ‘थोड़ी
देर बाद,’ इसका क्या मतलब है? हम
नहीं जानते कि यह किस बारे में बात
कर रहा है।” **19** यीशु जानता था कि
वे उससे सवाल पूछना चाहते हैं, इसलिए
उसने चेलों से कहा, “क्या तुम एक-दूसरे
से यह पूछ रहे हो कि मैंने ऐसा क्यों कहा:
‘थोड़ी देर बाद तुम मुझे नहीं देखोगे और
फिर थोड़ी देर बाद तुम मुझे देखोगे’?
20 मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, तुम
रोओगे और मातम मनाओगे मगर दुनिया
खुशियाँ मनाएगी। तुम्हें दुख होगा मगर
तुम्हारा दुख खुशी में बदल जाएगा।[1]
21 एक औरत जब बच्चे को जन्म देने-
वाली होती है, तो उसे दर्द होता है
क्योंकि उसकी घड़ी आ गयी है। मगर
जब वह बच्चे को जन्म दे देती है, तो वह
अपना दर्द भूल जाती है और अपने बच्चे
को देखकर खुश हो जाती है। **22** उसी
तरह, तुम भी अभी दुख मना रहे हो।
मगर जब मैं तुमसे दोबारा मिलूँगा, तब
तुम्हारा दिल खुशी से भर जाएगा[2] और
कोई भी तुम्हारी खुशी नहीं छीन सकेगा।
23 उस दिन तुम मुझसे कोई सवाल नहीं
करोगे। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ,
अगर तुम पिता से कुछ भी माँगोगे[3] तो
वह मेरे नाम से तुम्हें दे देगा।[4] **24** अब
तक तुमने मेरे नाम से एक भी चीज़ नहीं
माँगी है। माँगो और तुम पाओगे ताकि
तुम्हें बहुत खुशी मिले।

25 मैंने ये बातें तुमसे मिसालों में कही
हैं। वह वक्त आ रहा है जब मैं तुमसे
मिसालों में बात नहीं करूँगा, मगर पिता
के बारे में तुम्हें साफ-साफ बताऊँगा।
26 उस दिन तुम मेरे नाम से पिता से
प्रार्थना करोगे। मेरे कहने का मतलब यह
नहीं कि मैं तुम्हारे लिए पिता से बिनती
करूँगा। **27** पिता खुद तुमसे लगाव
रखता है क्योंकि तुम मुझसे लगाव रखते
हो[1] और तुमने यकीन किया है कि मैं पर-
मेश्वर की तरफ से आया हूँ।[2] **28** मैं
पिता की तरफ से इस दुनिया में आया हूँ।
अब मैं यह दुनिया छोड़कर पिता के पास
जा रहा हूँ।”[3]

29 उसके चेलों ने कहा, “अब तू हमें
साफ-साफ बता रहा है और मिसालें नहीं
दे रहा। **30** अब हम जानते हैं कि तुझे
सब बातें पता हैं और किसी को तुझसे
सवाल करने की ज़रूरत नहीं। इसलिए
हमें यकीन है कि तू परमेश्वर की तरफ
से आया है।” **31** यीशु ने कहा, “अब
क्या तुम यकीन करते हो? **32** देखो!
वह घड़ी आ रही है, दरअसल आ चुकी
है, जब तुम सब तितर-बितर हो जाओगे
और अपने-अपने घर चले जाओगे और
मुझे अकेला छोड़ दोगे।[4] फिर भी मैं
अकेला नहीं हूँ क्योंकि पिता मेरे साथ
है।[5] **33** मैंने तुमसे ये बातें इसलिए
कही हैं ताकि मेरे ज़रिए तुम शांति पा
सको।[6] दुनिया में तुम्हें तकलीफें झेलनी
पड़ेंगी, मगर हिम्मत रखो! मैंने इस दुनिया
पर जीत हासिल कर ली है।”[7]

17 यीशु ने ये बातें कहने के बाद
स्वर्ग की तरफ नज़रें उठायीं और
कहा, “पिता, वह घड़ी आ गयी है। अपने
बेटे की महिमा कर ताकि तेरा बेटा तेरी
महिमा करे।[8] **2** तूने उसे सब इंसानों
पर अधिकार दिया है[9] ताकि तूने उसे
जितने लोग दिए हैं,[10] उन सबको वह
हमेशा की ज़िंदगी दे सके।[11] **3** हमेशा
की ज़िंदगी[12] पाने के लिए ज़रूरी है कि
वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और
यीशु मसीह को जिसे तूने भेजा है,
जानें।*[13] **4** जो काम तूने मुझे दिया है

अध्य. 16
1 मत 28:8; लूक 24:39-41; यूह 20:19, 20
2 लूक 24:51, 52
3 फिल 4:6
4 यूह 14:13; यूह 15:16; 1यूह 5:14

दूसरा कॉल.
1 यूह 14:21
2 यूह 17:7, 8
3 यूह 13:3; इब्र 9:24
4 जक 13:7; मत 26:31; मर 14:27
5 यूह 8:29
6 यूह 14:27; इफ 2:14
7 यूह 14:30; प्रेष 14:22; 1यूह 4:4; 1यूह 5:4; प्रक 3:21

अध्य. 17
8 यूह 12:23; यूह 13:31, 32
9 फिल 2:9, 10
10 यूह 6:37
11 यूह 4:14; यूह 6:27
12 लूक 10:25-28
13 इफ 4:11, 13; 2पत 3:18; 1यूह 5:20

17:3 * या “ज्ञान लेते रहें।”

उसे पूरा करके[1] मैंने धरती पर तेरी महिमा की है।[2] **5** इसलिए अब हे पिता, मुझे अपने पास वह महिमा दे जो दुनिया की शुरूआत से पहले तेरे पास रहते हुए मुझे मिली थी।[3]

6 मैंने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया* है जिन्हें तूने दुनिया में से मुझे दिया है।[4] वे तेरे थे और तूने उन्हें मुझे दिया है और उन्होंने तेरा वचन माना है। **7** अब वे जान गए हैं कि जो कुछ तूने मुझे दिया है, वह सब तेरी तरफ से है। **8** क्योंकि जो बातें तूने मुझे बतायी हैं वे मैंने उन तक पहुँचायी हैं।[5] उन्होंने ये बातें स्वीकार की हैं और वे पक्के तौर पर जान गए हैं कि मैं तेरी तरफ से आया हूँ[6] और उन्होंने यकीन किया है कि तूने मुझे भेजा है।[7] **9** मैं उनके लिए बिनती करता हूँ। मैं दुनिया के लिए बिनती नहीं करता, मगर उनके लिए करता हूँ जिन्हें तूने मुझे दिया है क्योंकि वे तेरे हैं। **10** और मेरा सबकुछ तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है[8] और उनके बीच मेरी महिमा हुई है।

11 यही नहीं, अब से मैं इस दुनिया में नहीं रहूँगा, मगर वे इसी दुनिया में रहेंगे[9] और मैं तेरे पास आ रहा हूँ। हे पवित्र पिता, अपने नाम की खातिर जो तूने मुझे दिया है, उनकी देख-भाल कर[10] ताकि वे भी एक* हों जैसे हम एक* हैं।[11] **12** जब मैं उनके साथ था, तो मैं तेरे नाम की खातिर जो तूने मुझे दिया है, उनकी देखभाल करता था।[12] मैंने उनकी हिफाज़त की और उनमें से एक भी नाश नहीं हुआ,[13] सिर्फ विनाश का बेटा नाश हुआ[14] ताकि शास्त्र में लिखी बात पूरी हो।[15] **13** मगर अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ और ये बातें मैं दुनिया में रहते हुए इसलिए कह रहा हूँ ताकि जो खुशी मुझे मिली है वह उन्हें भी पूरी तरह मिले।[1] **14** मैंने तेरा वचन उनके पास पहुँचा दिया है मगर दुनिया ने उनसे नफरत की है क्योंकि वे दुनिया के नहीं,[2] ठीक जैसे मैं भी दुनिया का नहीं।

15 मैं तुझसे यह बिनती नहीं करता कि तू उन्हें दुनिया से निकाल ले मगर यह कि शैतान* की वजह से उनकी देखभाल कर।[3] **16** वे दुनिया के नहीं हैं,[4] ठीक जैसे मैं दुनिया का नहीं हूँ।[5] **17** सच्चाई से उन्हें पवित्र कर।[6] तेरा वचन सच्चा है।[7] **18** ठीक जैसे तूने मुझे दुनिया में भेजा है, वैसे ही मैंने भी उन्हें दुनिया में भेजा है।[8] **19** और मैं उनकी खातिर खुद को पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सच्चाई से पवित्र किए जाएँ।

20 मैं सिर्फ इन्हीं के लिए बिनती नहीं करता, मगर उनके लिए भी करता हूँ जो इनकी बातें मानकर मुझ पर विश्वास करते हैं **21** ताकि वे सभी एक हो सकें।[9] ठीक जैसे हे पिता, तू मेरे साथ एकता में है और मैं तेरे साथ एकता में हूँ,[10] उसी तरह वे भी हमारे साथ एकता में हों ताकि दुनिया यकीन करे कि तूने मुझे भेजा है। **22** मैंने उन्हें वह महिमा दी है जो तूने मुझे दी थी ताकि वे भी एक हों ठीक जैसे हम एक हैं।[11] **23** मैं उनके साथ एकता में हूँ और तू मेरे साथ एकता में है ताकि वे पूरी तरह से एक हों, जिससे दुनिया जाने कि तूने मुझे भेजा है और तूने उनसे भी प्यार किया है जैसे मुझसे किया है। **24** हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तूने मुझे दिया है वे भी मेरे साथ वहाँ रहें जहाँ मैं रहूँगा[12] ताकि वे मेरी महिमा देखें जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने दुनिया की शुरूआत से

17:6 *या "को बताया।" **17:11** *या "एकता में।"

17:15 *शा., "उस दुष्ट।"

अध्य. 17

1 यूह 4:34
2 यूह 13:31
3 यूह 1:1; यूह 8:58; कुल 1:15
4 भज 22:22; प्रेष 15:14; इब्र 2:12
5 यूह 6:68; यूह 8:28; यूह 12:49; यूह 14:10
6 यूह 16:27
7 यूह 16:30
8 यूह 16:15
9 यूह 13:1
10 1पत 1:5; यहू 24
11 यूह 10:30; यूह 17:21
12 यूह 6:39; यूह 10:28
13 यूह 18:9
14 मर 14:21
15 भज 41:9; भज 109:8; प्रेष 1:20

दूसरा कॉल.

1 यूह 15:11
2 यूह 15:19; याकू 4:4
3 मत 6:13; 2थि 3:3; 1यूह 5:18
4 कुल 1:13
5 यूह 18:36
6 इफ 5:25, 26; 1थि 5:23; 2थि 2:13; 1पत 1:22
7 भज 12:6; भज 119:151, 160
8 यूह 20:21
9 रोम 12:5; 1कुर 1:10; गल 3:28
10 यूह 10:38; यूह 14:10
11 यूह 14:20; यूह 17:11; 1यूह 3:24
12 लूक 22:28-30; 1थि 4:17

भी पहले मुझसे प्यार किया।[1] 25 हे सच्चे पिता, दुनिया वाकई तुझे नहीं जान पायी है[2] मगर मैंने तुझे जाना है[3] और ये भी जान गए हैं कि तूने मुझे भेजा है। 26 मैंने तेरा नाम उन्हें बताया है और आगे भी बताऊँगा[4] ताकि जो प्यार तूने मुझसे किया, वह उनमें भी हो और मैं उनके साथ एकता में रहूँ।"[5]

18 ये बातें कहने के बाद, यीशु अपने चेलों के साथ किदरोन घाटी*[6] पार करके उस जगह गया जहाँ एक बाग था। वह और उसके चेले बाग के अंदर गए।[7] 2 उसके साथ गद्दारी करनेवाले यहूदा को भी इस जगह का पता था, क्योंकि यीशु अकसर अपने चेलों के साथ वहाँ जाया करता था। 3 इसलिए यहूदा अपने साथ सैनिकों के दल को और प्रधान याजकों और फरीसियों के पहरेदारों को लेकर वहाँ आया। वे अपने हाथ में मशालें, दीपक और हथियार लिए हुए थे।[8] 4 यीशु जानता था कि उसके साथ क्या-क्या होनेवाला है, इसलिए उसने आगे आकर उनसे कहा, "तुम किसे ढूँढ़ रहे हो?" 5 उन्होंने कहा, "यीशु नासरी को।"[9] यीशु ने उनसे कहा, "मैं वही हूँ।" उसके साथ गद्दारी करनेवाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा था।[10]

6 मगर जब यीशु ने कहा, "मैं वही हूँ," तो वे पीछे हट गए और ज़मीन पर गिर पड़े।[11] 7 इसलिए यीशु ने उनसे दोबारा पूछा, "तुम किसे ढूँढ़ रहे हो?" उन्होंने कहा, "यीशु नासरी को।" 8 यीशु ने कहा, "मैं तुमसे कह चुका हूँ कि मैं वही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँढ़ रहे हो, तो इन्हें जाने दो।" 9 यह इसलिए हुआ ताकि उसकी यह बात पूरी हो, "जिन्हें तूने मुझे दिया है, उनमें से मैंने एक को भी नहीं खोया।"[1]

10 शमौन पतरस के पास तलवार थी। उसने तलवार खींचकर महायाजक के दास पर वार किया जिससे उसका दायाँ कान कट गया।[2] उस दास का नाम मलखुस था। 11 मगर यीशु ने पतरस से कहा, "तलवार म्यान में रख ले।[3] पिता ने जो प्याला मुझे दिया है, क्या वह मुझे नहीं पीना चाहिए?"[4]

12 तब सैनिकों और सेनापति ने और यहूदियों के भेजे हुए पहरेदारों ने यीशु को पकड़* लिया और उसे बाँध दिया। 13 वे उसे पहले हन्ना के पास ले गए क्योंकि वह उस साल के महायाजक कैफा का ससुर था।[5] 14 दरअसल कैफा ने ही यहूदियों को सलाह दी थी कि यह उनके फायदे में है कि एक आदमी सब लोगों की खातिर मरे।[6]

15 शमौन पतरस और एक और चेला यीशु का पीछा करते हुए गए।[7] यह चेला महायाजक की जान-पहचान का था और वह यीशु के साथ महायाजक के घर के आँगन में गया। 16 मगर पतरस बाहर दरवाज़े* पर खड़ा था। इसलिए वह दूसरा चेला, जो महायाजक की जान-पहचान का था, बाहर गया और उसने दरबान से बात की, फिर वह पतरस को अंदर ले आया। 17 तब उस नौकरानी ने जो दरबान थी, पतरस से कहा, "तू भी इस आदमी का चेला है न?" उसने कहा, "नहीं, मैं नहीं हूँ।"[8] 18 वहाँ दास और पहरेदार खड़े थे, जो ठंड की वजह से लकड़ी जलाकर आग ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा आग ताप रहा था।

18:1 *या "सर्दियों में बहनेवाली किदरोन नदी।"

18:12 *या "गिरफ्तार कर।" **18:16** *या "प्रवेश-द्वार।"

अध्य. 17
1 यूह 17:5
2 यूह 8:55; यूह 15:21
3 मत 11:27
4 मत 6:9; यूह 17:6
5 यूह 15:9

अध्य. 18
6 2शम 15:23
7 मत 26:36; मर 14:32; लूक 22:39
8 मत 26:47; मर 14:43
9 मत 2:23
10 लूक 22:47
11 यूह 7:46

दूसरा कॉल.
1 यूह 6:39; यूह 17:12
2 मत 26:51; मर 14:47; लूक 22:50
3 मत 26:52; लूक 22:51; यूह 18:36
4 मत 20:22; मत 26:42
5 मत 26:57; लूक 3:2; यूह 18:24; प्रेष 4:5, 6
6 यूह 11:49, 50
7 मत 26:58; मर 14:54; लूक 22:54
8 मत 26:69, 70; मर 14:66-68; लूक 22:55-57; यूह 18:25

19 तब प्रधान याजक ने यीशु से
उसके चेलों और उसकी शिक्षाओं के बारे
में कुछ सवाल किए। 20 यीशु ने जवाब
दिया, “मैंने पूरी दुनिया के सामने बात
की है। मैं हमेशा सभा-घर और मंदिर
में सिखाया करता था,[1] जहाँ सभी यहूदी
इकट्ठा होते हैं और मैंने कुछ भी छिप-
कर नहीं कहा। 21 तो फिर तू मुझसे
क्यों पूछता है? जिन्होंने मेरी बातें सुनी
हैं उनसे पूछ कि मैंने उनसे क्या-क्या
कहा था। देख! ये जानते हैं कि मैंने क्या
बताया था।” 22 जब उसने यह कहा,
तो वहाँ खड़े पहरेदारों में से एक ने
यीशु के मुँह पर थप्पड़ मारा[2] और कहा,
“क्या प्रधान याजक को जवाब देने का
यह तरीका है?” 23 यीशु ने उसे जवाब
दिया, “अगर मैंने कुछ गलत कहा, तो
मुझे बता। लेकिन अगर मैंने सही कहा,
तो तूने मुझे क्यों मारा?” 24 तब हन्ना
ने उसे बँधा हुआ, महायाजक कैफा के
पास भेज दिया।[3]

25 शमौन पतरस वहाँ खड़ा आग
ताप रहा था। तब लोगों ने उससे कहा,
“क्या तू भी उसका चेला नहीं?” उसने
इनकार किया और कहा, “नहीं, मैं
नहीं हूँ।”[4] 26 वहाँ महायाजक का एक
दास भी खड़ा था, जो उस आदमी का
रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने काट
दिया था।[5] उस दास ने कहा, “क्या मैंने
तुझे उसके साथ बाग में नहीं देखा था?”
27 मगर पतरस ने फिर इनकार किया
और फौरन एक मुर्गे ने बाँग दी।[6]

28 तब वे यीशु को कैफा के यहाँ से
राज्यपाल के घर ले गए।[7] यह सुबह का
वक्त था। मगर वे खुद राज्यपाल के घर
के अंदर नहीं गए ताकि वे दूषित न हो
जाएँ[8] और फसह का खाना खा सकें।
29 इसलिए पीलातुस बाहर उनके पास
आया और उसने कहा, “तुम इस आदमी
को किस इलज़ाम में मेरे पास लाए
हो?” 30 उन्होंने कहा, “अगर यह
अपराधी* न होता, तो हम इसे तेरे हवाले
नहीं करते।” 31 तब पीलातुस ने उनसे
कहा, “तुम्हीं इसे ले जाओ और अपने
कानून के मुताबिक इसका न्याय करो।”[1]
यहूदियों ने उससे कहा, “कानून के हिसाब
से हमें किसी को जान से मारने का अधि-
कार नहीं है।”[2] 32 यह इसलिए हुआ
ताकि यीशु ने जो कहा था वह पूरा हो,
उसने पहले ही बता दिया था कि वह कैसी
मौत मरनेवाला है।[3]

33 तब पीलातुस फिर से अपने घर
में गया और यीशु को बुलाकर उसने
पूछा, “क्या तू यहूदियों का राजा है?”[4]
34 यीशु ने जवाब दिया, “क्या तू यह
अपनी तरफ से कह रहा है या दूसरों ने
तुझे मेरे बारे में बताया है?” 35 पीला-
तुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी
हूँ? तेरे अपने लोगों ने और प्रधान
याजकों ने तुझे मेरे हवाले किया है।
बता तूने क्या किया है?” 36 यीशु ने
जवाब दिया,[5] “मेरा राज इस दुनिया
का नहीं है।[6] अगर मेरा राज इस
दुनिया का होता तो मेरे सेवक लड़ते कि
मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाए।[7]
मगर सच तो यह है कि मेरा राज
इस दुनिया का नहीं।” 37 पीलातुस ने
उससे कहा, “तो क्या तू एक राजा
है?” यीशु ने जवाब दिया, “तू खुद
कह रहा है कि मैं एक राजा हूँ।[8] मैं इसी-
लिए पैदा हुआ हूँ और इस दुनिया में
आया हूँ कि सच्चाई की गवाही दूँ।[9]
हर कोई जो सच्चाई के पक्ष में है वह
मेरी आवाज़ सुनता है।” 38 पीलातुस
ने उससे कहा, “सच्चाई क्या है?”

18:30 * या “मुजरिम।”

अध्या. 18
1 मत 26:55, लूक 4:15, लूक 19:47, यूह 7:14
2 यश 50:6
3 मत 26:57
4 मत 26:69, 70, मर 14:69, 70, लूक 22:58
5 यूह 18:10
6 मत 26:74, मर 14:72, लूक 22:60, यूह 13:38
7 मत 27:2, मर 15:1, लूक 23:1
8 प्रेष 10:28

दूसरा कॉल.
1 यूह 19:6
2 यूह 19:10
3 मत 20:18, 19, यूह 3:14, यूह 12:32
4 मत 27:11, यूह 12:13
5 1ती 6:13
6 यश 9:6, दान 2:44, दान 7:14
7 मत 26:52, 53, यूह 18:11
8 मत 27:11
9 यूह 1:14, 17, यूह 14:6

यह कहने के बाद पीलातुस फिर से
बाहर यहूदियों के पास गया और उनसे
कहा, "मुझे उसमें कोई दोष नज़र नहीं
आता।[1] 39 तुम्हारे दस्तूर के मुताबिक
मुझे फसह के त्योहार पर एक आदमी को
कैद से रिहा करना चाहिए।[2] क्या तुम
चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के
इस राजा को रिहा करूँ?" 40 तब वे
फिर से चिल्लाए, "नहीं, इस आदमी को
नहीं, बल्कि बरअब्बा को रिहा कर!" दर-
असल बरअब्बा एक डाकू था।[3]

19 तब पीलातुस यीशु को ले
गया और उसे कोड़े लगवाए।[4]
2 सैनिकों ने काँटों का एक ताज बना-
कर उसके सिर पर रखा और उसे एक
बैंजनी कपड़ा पहनाया।[5] 3 वे उसके
पास आकर कहने लगे, "हे यहूदियों के
राजा, सलाम!"* और उसके मुँह पर
थप्पड़ मारने लगे।[6] 4 पीलातुस एक
बार फिर बाहर आया और उसने लोगों से
कहा, "देखो! मैं उसे बाहर लाता हूँ ताकि
तुम जानो कि मैंने उसमें कोई दोष नहीं
पाया।"[7] 5 तब यीशु काँटों का ताज
पहने और बैंजनी ओढ़ना ओढ़े बाहर
आया। और पीलातुस ने लोगों से कहा,
"देखो इस आदमी को!" 6 लेकिन जब
प्रधान याजकों और पहरेदारों ने उसे
देखा, तो वे चिल्लाने लगे, "इसे काठ
पर लटका दे! इसे काठ पर लटका दे!"[8]
पीलातुस ने उनसे कहा, "तुम खुद ही
इसे ले जाकर काठ पर लटका दो
क्योंकि मुझे इस आदमी में कोई दोष नहीं
मिला।"[9] 7 यहूदियों ने कहा, "हमारा
एक कानून है और उस कानून के मुता-
बिक यह मौत की सज़ा के लायक है[10]
क्योंकि इसने खुद को परमेश्वर का बेटा
कहा है।"[11]

8 जब पीलातुस ने यह बात सुनी
तो वह और भी डर गया। 9 वह
फिर से अपने घर के अंदर गया और
उसने यीशु से पूछा, "तू कहाँ का है?"
मगर यीशु ने कोई जवाब नहीं दिया।[1]
10 पीलातुस ने उससे कहा, "क्या तू मुझे
जवाब नहीं देगा? क्या तुझे नहीं मालूम
कि मेरे पास तुझे रिहा करने का भी अधि-
कार है और तुझे मार डालने का भी?"*
11 यीशु ने उसे जवाब दिया, "अगर
तुझे यह अधिकार ऊपर से न दिया
गया होता, तो मुझ पर तेरा कोई अधि-
कार नहीं होता। इसीलिए जिस आदमी
ने मुझे तेरे हवाले किया है, उसका पाप
ज़्यादा बड़ा है।"

12 इस वजह से पीलातुस किसी तरह
उसे रिहा करने की कोशिश करता रहा।
मगर यहूदियों ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा,
"अगर तूने इस आदमी को रिहा किया,
तो तू सम्राट* का दोस्त नहीं। हर कोई
जो खुद को राजा बनाता है वह सम्राट
के खिलाफ बोलता है।"#[2] 13 ये बातें
सुनने के बाद पीलातुस, यीशु को बाहर
ले आया। फिर वह एक न्याय-आसन पर
यानी उस जगह बैठ गया जो पत्थर का
चबूतरा कहलाता था और जिसे इब्रानी में
गब्बता कहा जाता था। 14 यह फसह
की तैयारी का दिन था[3] और दिन का
करीब छठा घंटा* था। पीलातुस ने यहू-
दियों से कहा, "देखो! तुम्हारा राजा!"
15 लेकिन वे चिल्लाए, "इसे मार डाल!
इसे मार डाल! काठ पर लटका दे इसे!"
पीलातुस ने उनसे कहा, "क्या मैं तुम्हारे
राजा को काठ पर लटका दूँ?" प्रधान

19:3 *या "तेरी जय हो!"

19:10 *या "काठ पर मार डालने का भी?"
19:12 *यूनानी में "कैसर।" #या "का विरोध करता है।" **19:14** *यानी दोपहर करीब 12 बजे।

अध्य. 18
1 मत 27:24; लूक 23:4; यूह 15:25
2 मत 27:15; मर 15:6
3 गि 35:31; लूक 23:18, 19; प्रेष 3:14

अध्य. 19
4 यश 50:6; मत 20:18, 19; मत 27:26; मर 15:15
5 मत 27:27-29; मर 15:16, 17; लूक 23:11
6 यश 53:3
7 लूक 23:4; यूह 18:38
8 मत 27:22; मर 15:13; लूक 23:21
9 यूह 18:31
10 लैव 24:16
11 मत 26:63-65; यूह 5:18

दूसरा कॉल.
1 यश 53:7; मत 27:12, 14
2 लूक 23:2; प्रेष 17:6, 7
3 यूह 19:31

याजकों ने जवाब दिया, “सम्राट को छोड़
हमारा कोई राजा नहीं।” **16** तब उसने
यीशु को काठ पर लटकाकर मार डालने
के लिए उन्हें सौंप दिया।[1]

और सैनिकों ने यीशु को अपने कब्ज़े
में ले लिया। **17** यीशु अपना यातना
का काठ* उठाए उस जगह गया जिसे
खोपड़ी स्थान कहा जाता है।[2] वह
जगह इब्रानी में *गुलगुता* कहलाती है।[3]
18 वहाँ उन्होंने दो आदमियों के बीच उसे
काठ पर ठोंक दिया।[4] एक आदमी उसके
दायीं तरफ था और दूसरा बायीं तरफ
और यीशु बीच में था।[5] **19** पीला-
तुस ने यातना के काठ* के ऊपर यह
लिखवा दिया: “यीशु नासरी, यहूदियों का
राजा।”[6] **20** इसे बहुत-से यहूदियों ने
पढ़ा क्योंकि जिस जगह यीशु को काठ पर
ठोंका गया था वह जगह शहर के पास ही
थी। ये शब्द इब्रानी, लातीनी और यूनानी
भाषा में लिखे थे। **21** लेकिन यहूदियों
के प्रधान याजकों ने पीलातुस से कहा,
“यह मत लिख: ‘यहूदियों का राजा,’
मगर यह लिख कि उसने कहा, ‘मैं यहू-
दियों का राजा हूँ।’” **22** पीलातुस ने
जवाब दिया, “मैंने जो लिखवा दिया सो
लिखवा दिया।”

23 जब सैनिकों ने यीशु को काठ पर
ठोंक दिया, तो उन्होंने उसका ओढ़ना
लिया और उसके चार टुकड़े करके
आपस में बाँट लिए। हर सैनिक ने एक
टुकड़ा लिया। फिर उन्होंने कुरता भी
लिया, मगर कुरते में कोई जोड़ नहीं
था बल्कि यह ऊपर से नीचे तक बुना
हुआ था। **24** इसलिए उन्होंने एक-
दूसरे से कहा, “हम इसे नहीं फाड़ेंगे
बल्कि चिट्ठियाँ डालकर तय करेंगे कि
यह किसका होगा।”[7] यह इसलिए हुआ
ताकि शास्त्र की यह बात पूरी हो, “वे मेरी
पोशाक आपस में बाँटते हैं और मेरे कपड़े
के लिए चिट्ठियाँ डालते हैं।”[1] सैनिकों ने
वाकई ऐसा किया।

25 यीशु के यातना के काठ* के
पास उसकी माँ,[2] उसकी मौसी, क्लोपास
की पत्नी मरियम और मरियम मगदलीनी
खड़ी थीं।[3] **26** जब यीशु ने अपनी माँ
को और उस चेले को जिससे वह बहुत
प्यार करता था,[4] पास खड़े देखा तो उसने
अपनी माँ से कहा, “देख! तेरा बेटा!”
27 इसके बाद यीशु ने उस चेले से कहा,
“देख! तेरी माँ!” उसी दिन वह चेला मरि-
यम को अपने घर ले गया ताकि वह उसके
यहाँ रहे।

28 इसके बाद, यीशु ने यह जानते
हुए कि सबकुछ पूरा हो चुका है कहा, “मैं
प्यासा हूँ” ताकि शास्त्र में लिखी बात पूरी
हो।[5] **29** वहाँ खट्टी दाख-मदिरा से भरा
एक घड़ा रखा था। इसलिए उन्होंने खट्टी
दाख-मदिरा में भिगोए हुए एक स्पंज को
मरुए* की डंडी पर रखा और उसके मुँह
से लगाया।[6] **30** जब यीशु ने वह खट्टी
दाख-मदिरा चखी तो कहा, “पूरा हुआ!”[7]
और सिर झुकाकर दम तोड़ दिया।[8]

31 यह तैयारी का दिन था[9] और
यहूदी नहीं चाहते थे कि लाशें सब्त के
दिन यातना के काठ पर लटकी रहें[10]
(क्योंकि यह बड़ा सब्त था)।[11] इस-
लिए उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की
कि काठ पर लटकाए गए आदमियों
की टाँगें तोड़ दी जाएँ और उनकी लाशें
उतार ली जाएँ। **32** इसलिए सैनिकों
ने आकर यीशु के पास काठ पर लटकाए
गए पहले आदमी की टाँगें तोड़ दीं और
फिर दूसरे की। **33** मगर जब वे यीशु
के पास आए तो उन्होंने देखा कि वह मर
चुका है इसलिए उन्होंने उसकी टाँगें नहीं

अध्य. 19
1 दान 9:26; मत 27:26, 31; मर 15:15; लूक 23:24, 25
2 इब्र 13:12
3 मत 27:32, 33; मर 15:22
4 यूह 3:14; प्रेष 5:30; गल 3:13
5 यश 53:9; लूक 23:33
6 मत 27:37; मर 15:26; लूक 23:38
7 मत 27:35; मर 15:24; लूक 23:34

दूसरा कॉल.
1 भज 22:18
2 लूक 2:34, 35
3 मत 27:55, 56; मत 27:61; मर 15:40; लूक 23:49
4 यूह 13:23; यूह 21:7, 20
5 भज 22:15
6 भज 69:21; मत 27:48; मर 15:36; लूक 23:36
7 यूह 17:4
8 यश 53:12; मत 27:50; मर 15:37; लूक 23:46
9 यूह 19:14
10 व्य 21:22, 23
11 लैव 23:5-7

19:17, 19, 25, 29 *शब्दावली देखें।

तोड़ीं। 34 फिर भी सैनिकों में से एक ने
अपना भाला उसकी पसलियों में भोंका[1]
और फौरन खून और पानी बह निकला।
35 जिसने यह सबकुछ अपनी आँखों से
देखा था, उसने इसकी गवाही दी है और
उसकी गवाही सच्ची है। वह जानता है
कि उसने जो कुछ कहा है वह सच है
और उसने ये बातें इसलिए बतायीं कि तुम
भी यकीन करो।[2] 36 दरअसल यह
सब इसलिए हुआ ताकि शास्त्र की यह
बात पूरी हो: "उसकी एक भी हड्डी नहीं
तोड़ी जाएगी।"[3] 37 शास्त्र में एक
और जगह लिखा है: "वे उसे देखेंगे जिसे
उन्होंने भेदा है।"[4]

38 इसके बाद अरिमतियाह के यूसुफ
ने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह यीशु
की लाश ले जाना चाहता है। यूसुफ, यीशु
का एक चेला था, मगर यहूदियों के डर
से यह बात छिपाए रखता था।[5] पीलातुस
ने उसे यीशु की लाश ले जाने की इजा-
ज़त दे दी। इसलिए यूसुफ जाकर वहाँ
से लाश ले गया।[6] 39 नीकुदेमुस भी,[7]
जो पहली बार यीशु के पास रात के वक्त
आया था, करीब 30 किलो* गंधरस
और अगर का मिश्रण# लेकर आया।[8]
40 तब उन्होंने यीशु की लाश ली और
यहूदियों के दफनाने की रीत के मुता-
बिक उसे इन खुशबूदार मसालों के साथ
मलमल के कपड़ों में लपेटा।[9] 41 इत्त-
फाक से जिस जगह उसे काठ पर लट-
काया गया था, वहीं एक बाग था और
उसमें एक नयी कब्र* थी[10] जिसमें अब
तक कोई लाश नहीं रखी गयी थी।
42 उन्होंने यीशु को वहीं उस कब्र में रख
दिया क्योंकि वह दिन यहूदियों के त्योहार
की तैयारी का दिन था[1] और वह कब्र भी
पास ही थी।

20 हफ्ते के पहले दिन सुबह के
वक्त जब अँधेरा ही था, मरि-
यम मगदलीनी कब्र* पर आयी।[2] उसने
देखा कि कब्र* पर रखा पत्थर पहले से
हटा हुआ है।[3] 2 तब वह दौड़ी-दौड़ी
शमौन पतरस और उस चेले के पास गयी
जिससे यीशु को बहुत प्यार था[4] और
उनसे कहा, "वे प्रभु को कब्र से निकाल-
कर ले गए हैं[5] और हमें नहीं पता कि
उन्होंने उसे कहाँ रखा है।"

3 तब पतरस और वह दूसरा चेला
कब्र की तरफ चल दिए। 4 वे दोनों
साथ-साथ भागने लगे, मगर दूसरा चेला
पतरस से तेज़ दौड़ा और कब्र पर
पहले पहुँच गया। 5 उसने झुककर कब्र
में झाँका तो उसे मलमल के कपड़े
दिखायी दिए,[6] मगर वह अंदर नहीं
गया। 6 तब शमौन पतरस भी उसके
पीछे-पीछे आ पहुँचा और कब्र के अंदर
घुस गया। उसने वहाँ मलमल के कपड़े
पड़े हुए देखे। 7 उसने देखा कि जो
कपड़ा यीशु के सिर पर था वह दूसरे
कपड़ों के साथ नहीं था बल्कि एक
तरफ लपेटा हुआ रखा था। 8 फिर वह
दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहले पहुँचा
था, अंदर गया और उसने देखा और
यकीन किया। 9 वे अब तक शास्त्र की
यह बात नहीं समझे थे कि उसका मरे
हुओं में से ज़िंदा होना ज़रूरी था।[7]
10 इसलिए वे अपने घर लौट गए।

11 मगर मरियम रोती हुई कब्र के
बाहर ही खड़ी रही। जब उसने
रोते-रोते झुककर कब्र के अंदर झाँका,
12 तो सफेद कपड़े पहने दो स्वर्गदूतों
को देखा।[8] एक उस जगह बैठा था जहाँ
यीशु का सिर था और दूसरा वहाँ बैठा

19:39 *शा., "100 पौंड।" यानी रोमी
पौंड। अति. ख14 देखें। #या शायद, "की
पट्टियाँ।" **19:41; 20:1** *या "स्मारक
कब्र।"

अध्य. 19
1 यश 53:5
जक 12:10
यूह 20:25
2 यूह 20:31
यूह 21:24
3 निर्ग 12:46
गि 9:12
भज 34:20
4 जक 12:10
प्रक 1:7
5 यूह 7:13
यूह 9:22
6 व्य 21:22, 23
मत 27:57-60
मर 15:43-46
7 यूह 3:1, 2
यूह 7:50-52
8 लूक 23:55,
56
9 यूह 20:7
10 यश 53:9

दूसरा कॉल.
1 यूह 19:14

अध्य. 20
2 मत 28:1
मर 16:1, 2
3 लूक 24:1-3
4 यूह 13:23
यूह 19:26
यूह 21:24
5 यूह 19:41, 42
6 यूह 19:40
7 भज 16:10
मत 16:21
प्रेष 2:27
8 मर 16:5

था जहाँ उसके पैर थे। **13** उन्होंने मरि-
यम से कहा, “तू क्यों रो रही है?” उसने
उनसे कहा, “वे मेरे प्रभु को ले गए हैं और
मैं नहीं जानती कि उन्होंने उसे कहाँ रखा
है।” **14** यह कहने के बाद जब वह
मुड़ी तो यीशु वहाँ खड़ा था, मगर वह उसे
देखकर पहचान नहीं पायी।[1] **15** यीशु
ने उससे कहा, “तू क्यों रो रही है? तू
किसे ढूँढ़ रही है?” मरियम ने उसे माली
समझकर कहा, “भाई, अगर तू उसे उठा-
कर ले गया है तो मुझे बता दे कि तूने उसे
कहाँ रखा है और मैं उसे ले जाऊँगी।”
16 यीशु ने उससे कहा, “मरियम!” तब
मरियम ने पीछे मुड़कर इब्रानी में कहा,
“रब्बोनी!” (जिसका मतलब है, “गुरु!”)
17 यीशु ने उससे कहा, “मुझसे लिपटी
मत रह इसलिए कि मैं अभी तक पिता
के पास ऊपर नहीं गया। मगर जाकर
मेरे भाइयों से कह,[2] ‘मैं अपने पिता और
तुम्हारे पिता और अपने परमेश्वर[3] और
तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा
हूँ।’”[4] **18** मरियम मगदलीनी चेलों के
पास गयी और उनसे कहा, “मैंने प्रभु को
देखा है!” और उन्हें बताया कि यीशु ने
उससे क्या-क्या कहा है।[5]

19 उसी दिन यानी हफ्ते के पहले
दिन, शाम के समय चेले यहूदियों के
डर से दरवाज़े बंद करके घर के अंदर
थे। लेकिन दरवाज़े बंद होने के बावजूद
यीशु उनके बीच आ खड़ा हुआ और उनसे
कहा, “तुम्हें शांति मिले।”[6] **20** यह
कहने के बाद उसने उन्हें अपने हाथ और
अपनी पसलियाँ दिखायीं।[7] तब चेले प्रभु
को देखकर बेहद खुश हुए।[8] **21** यीशु
ने एक बार फिर उनसे कहा, “तुम्हें शांति
मिले।[9] जैसे पिता ने मुझे भेजा है,[10] मैं भी
तुम्हें भेजता हूँ।”[11] **22** यह कहने के
बाद उसने उन पर फूँका और उनसे कहा,
“परमेश्वर की पवित्र शक्ति पाओ।[1]
23 अगर तुम किसी का पाप माफ
करोगे, तो उसे माफ कर दिया जाएगा।
तुम जिसका पाप माफ नहीं करोगे, उसका
पाप नहीं मिटेगा।”

24 मगर जब यीशु आया था, तब
थोमा[2] जो उन बारहों में से एक था
और जुड़वाँ कहलाता था, चेलों के
साथ नहीं था। **25** इसलिए दूसरे चेलों
ने उसे बताया, “हमने प्रभु को देखा है!”
मगर थोमा ने उनसे कहा, “जब तक मैं
उसके हाथों में कीलों के निशान न देख
लूँ और उनमें अपनी उँगली न डालूँ
और उसकी पसली में अपना हाथ डाल-
कर न देख लूँ,[3] तब तक मैं यकीन नहीं
करूँगा।”

26 ऐसा हुआ कि आठ दिन बाद चेले
फिर से घर के अंदर थे और थोमा
भी उनके साथ था। तब घर के दर-
वाज़े बंद होने के बावजूद यीशु उनके
बीच आ खड़ा हुआ और उनसे कहा,
“तुम्हें शांति मिले।”[4] **27** इसके बाद
उसने थोमा से कहा, “अपनी उँगली मेरे
हाथों पर लगाकर देख और अपना
हाथ मेरी पसली में लगाकर देख। शक
करना छोड़ दे बल्कि यकीन कर।”
28 तब थोमा ने उससे कहा, “हे मेरे
प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!” **29** यीशु ने
उससे कहा, “क्या तू इसलिए यकीन कर
रहा है क्योंकि तूने मुझे देखा है? सुखी
हैं वे जिन्होंने देखा नहीं फिर भी यकीन
करते हैं।”

30 सच तो यह है कि यीशु ने
चेलों के सामने और भी बहुत-से चमत्कार
किए जो इस खर्रे में नहीं लिखे गए।[5]
31 मगर जो लिखे गए हैं वे इसलिए
लिखे गए हैं ताकि तुम यकीन करो कि
यीशु ही परमेश्वर का बेटा, मसीह है और

अध्य. 20
1 लूक 24:15, 16; लूक 24:30, 31; यूह 21:4
2 मत 28:10
3 1कुर 11:3; इफ 1:17; कुल 1:3
4 यूह 14:28; यूह 16:28
5 लूक 24:9, 10
6 लूक 24:36
7 यूह 19:34
8 यूह 16:22
9 लूक 24:36
10 यश 61:1; यूह 5:36
11 मत 28:19, 20; यूह 17:18

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 2:2, 4
2 यूह 11:16
3 यूह 19:34
4 यूह 20:19
5 यूह 21:25

यकीन करने की वजह से उसके नाम से
ज़िंदगी पाओ।[1]

21 इसके बाद एक बार फिर यीशु,
तिबिरियास झील के किनारे
चेलों के सामने प्रकट हुआ। वह इस
तरह प्रकट हुआ। **2** ऐसा हुआ कि
शमौन पतरस, थोमा (जो जुड़वाँ कह-
लाता था),[2] गलील के काना का नत-
नएल,[3] जब्दी के बेटे[4] और यीशु के दो
और चेले एक-साथ थे। **3** शमौन पत-
रस ने उनसे कहा, "मैं मछली पकड़-
ने जा रहा हूँ।" उन्होंने कहा, "हम भी
तेरे साथ चलते हैं।" वे बाहर निकले और
नाव पर सवार हो गए, मगर उस रात
उनके हाथ कुछ नहीं लगा।[5]

4 जब सुबह होने लगी तब यीशु
किनारे पर आकर खड़ा हो गया। मगर
चेलों ने नहीं पहचाना कि वह यीशु है।[6]
5 तब यीशु ने उनसे पूछा, "बच्चो, क्या
तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है?"*
उन्होंने कहा, "नहीं!" **6** उसने उनसे
कहा, "नाव के दायीं तरफ जाल डालो
और तुम्हें कुछ मछलियाँ मिलेंगी।" तब
उन्होंने जाल डाला और उसमें ढेर सारी
मछलियाँ आ फँसीं और वे जाल को खींच
न पाए।[7] **7** तब उस चेले ने, जिसे यीशु
प्यार करता था[8] पतरस से कहा, "यह तो
प्रभु है!" जब शमौन पतरस ने सुना कि
यह प्रभु है तो उसने कपड़े पहने* क्योंकि
वह नंगे बदन# था और झील में कूद
पड़ा। **8** मगर दूसरे चेले छोटी नाव में
मछलियों से भरा जाल खींचते हुए आए
क्योंकि वे किनारे से ज़्यादा दूर नहीं थे,
करीब 300 फुट* की दूरी पर ही थे।

9 जब वे किनारे पर आए, तो उन्होंने
देखा कि जलते कोयलों पर मछलियाँ रखी
हुई हैं और रोटी भी है। **10** यीशु ने
उनसे कहा, "तुमने अभी-अभी जो मछ-
लियाँ पकड़ी हैं उनमें से कुछ ले आओ।"
11 तब शमौन पतरस नाव पर चढ़ा
और मछलियों से भरा जाल खींच लाया,
जिसमें 153 बड़ी मछलियाँ थीं। मगर
इतनी ज़्यादा मछलियाँ होने के बाव-
जूद वह जाल फटा नहीं। **12** यीशु ने
उनसे कहा, "आओ, नाश्ता कर लो।"
लेकिन चेलों में से किसी ने भी यह पूछने
की हिम्मत नहीं की कि "तू कौन है?"
क्योंकि वे जानते थे कि वह प्रभु ही है।
13 यीशु ने रोटी ली और उन्हें दी। फिर
उसने मछलियाँ भी उन्हें दीं। **14** इस
तरह यीशु मरे हुओं में से ज़िंदा होने के
बाद तीसरी बार[1] अपने चेलों को दिखायी
दिया।

15 जब वे नाश्ता कर चुके तो यीशु ने
शमौन पतरस से कहा, "शमौन, यूहन्ना
के बेटे, क्या तू इनसे ज़्यादा मुझसे प्यार
करता है?" पतरस ने उससे कहा, "हाँ
प्रभु, तू जानता है कि मुझे तुझसे कितना
प्यार है।" यीशु ने उससे कहा, "मेरे
मेम्नों को खिला।"[2] **16** यीशु ने दूसरी
बार उससे कहा, "शमौन, यूहन्ना के बेटे,
क्या तू मुझसे प्यार करता है?" पत-
रस ने कहा, "हाँ प्रभु, तू जानता है कि
मुझे तुझसे कितना प्यार है।" उसने पत-
रस से कहा, "चरवाहे की तरह मेरी छोटी
भेड़ों की देखभाल कर।"[3] **17** यीशु ने
तीसरी बार उससे कहा, "शमौन, यूहन्ना
के बेटे, क्या तू मुझसे प्यार करता है?"
यह सुनकर पतरस दुखी हुआ कि उसने
तीसरी बार उससे पूछा कि 'क्या तू मुझसे
प्यार करता है?' इसलिए पतरस ने उससे
कहा, "प्रभु, तू सबकुछ जानता है। तू यह

21:5 *या "मछलियाँ हैं।" **21:7** *या
"कस लिए।" #या "कम कपड़ों में।" **21:8**
*करीब 90 मी.; शा., "करीब 200 हाथ।"
अति. ख14 देखें।

अध्य. 20

1 यूह 3:15
यूह 5:24
1पत 1:8, 9
1यूह 5:13

अध्य. 21

2 यूह 11:16
यूह 20:24

3 यूह 1:45

4 मत 4:21

5 लूक 5:4, 5

6 लूक 24:15, 16
यूह 20:11, 14

7 लूक 5:4, 6

8 यूह 13:23
यूह 19:26
यूह 20:2

दूसरा कॉल.

1 यूह 20:19, 26

2 लूक 22:32
प्रेष 20:28
1पत 5:2, 3

3 प्रेष 1:15
इब्र 13:20
1पत 2:25

भी जानता है कि मैं तुझसे कितना प्यार
करता हूँ।" यीशु ने कहा, "मेरी छोटी
भेड़ों को खिला।[1] 18 मैं तुझसे सच-
सच कहता हूँ, जब तू जवान था तो
खुद कपड़े पहनता था और जहाँ चाहे
वहाँ जाता था। मगर जब तू बूढ़ा होगा,
तो तू अपने हाथ आगे बढ़ाएगा और
कोई दूसरा आदमी तुझे कपड़े पहनाएगा
और जहाँ तू नहीं चाहेगा वहाँ तुझे ले
जाएगा।" 19 उसने यह बताने के लिए
ऐसा कहा कि वह किस तरह की मौत
मरकर परमेश्वर की महिमा करेगा। यह
कहने के बाद यीशु ने उससे कहा, "मेरे
पीछे चलता रह।"[2]

20 जब पतरस मुड़ा तो उसने उस
चेले को आते देखा जिसे यीशु प्यार करता
था।[3] यह वही चेला था जिसने शाम के
खाने के वक्त यीशु के सीने पर झुककर
उससे पूछा था, "प्रभु, वह कौन है जो तुझे
धोखा देकर पकड़वाएगा?" 21 जब
पतरस की नज़र उस चेले पर पड़ी, तो
उसने यीशु से पूछा, "प्रभु, इस आदमी का
क्या होगा?" 22 यीशु ने उससे कहा,
"अगर मेरी मरज़ी है कि यह मेरे आने
तक रहे, तो तुझे इससे क्या? तू मेरे
पीछे चलता रह।" 23 इसलिए भाइयों
में यह बात फैल गयी कि वह चेला नहीं
मरेगा। मगर यीशु ने उससे यह नहीं कहा
था कि वह नहीं मरेगा बल्कि यह कहा था
कि "अगर मेरी मरज़ी है कि यह मेरे आने
तक रहे, तो तुझे इससे क्या?"

24 यह वही चेला है[1] जो इन बातों की
गवाही देता है और जिसने ये बातें लिखी
हैं और हम जानते हैं कि उसकी गवाही
सच्ची है।

25 दरअसल ऐसे और भी बहुत-से
काम हैं जो यीशु ने किए थे। अगर उन
सारे कामों के बारे में एक-एक बात लिखी
जाती, तो मैं समझता हूँ कि जो खर्रे लिखे
जाते वे पूरी दुनिया में भी नहीं समाते।[2]

अध्य. 21
1 यूह 10:14, 15
2 मत 19:28
यूह 12:26
प्रक 14:4
3 यूह 13:23
यूह 20:2

दूसरा कॉल.
1 यूह 13:23
यूह 19:26
यूह 20:2
यूह 21:7
2 यूह 20:30, 31

प्रेषितों के काम

सारांश

1 थियुफिलुस के नाम (1-5)
दुनिया के कोने-कोने तक गवाह (6-8)
यीशु स्वर्ग उठा लिया गया (9-11)
चेले एक मकसद से इकट्ठा होते थे (12-14)
यहूदा की जगह मत्तियाह चुना गया (15-26)

2 पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र शक्ति उँडेली गयी (1-13)
पतरस का भाषण (14-36)
भाषण सुनकर लोग कदम उठाते हैं (37-41)
3,000 का बपतिस्मा (41)
मसीही आपस में संगति करते हैं (42-47)

3 पतरस लँगड़े भिखारी को ठीक करता है (1-10)
सुलैमान के खंभोंवाले बरामदे के पास पतरस का भाषण (11-26)
'सबकुछ पहले जैसा कर दिया जाएगा' (21)
मूसा जैसा भविष्यवक्ता (22)

4 पतरस और यूहन्ना गिरफ्तार (1-4)
विश्वास करनेवाले आदमी 5,000 हो गए (4)
महासभा के सामने मुकदमा (5-22)

16 पौलुस तीमुथियुस को चुनता है (1-5)
दर्शन में मकिदुनिया का आदमी दिखा (6-10)
फिलिप्पी में लुदिया विश्वासी बनती है (11-15)
पौलुस और सीलास को जेल (16-24)
जेलर और उसका घराना बपतिस्मा लेता है (25-34)
पौलुस कहता है, अधिकारी माफी माँगें (35-40)

17 पौलुस और सीलास थिस्सलुनीके में (1-9)
पौलुस और सीलास बिरीया में (10-15)
पौलुस एथेन्स में (16-22क)
अरियुपगुस में पौलुस का भाषण (22ख-34)

18 कुरिंथ में पौलुस का प्रचार (1-17)
सीरिया के अंताकिया लौटता है (18-22)
पौलुस गलातिया और फ्रूगिया के लिए निकला (23)
कुशल वक्ता अपुल्लोस की मदद की गयी (24-28)

19 पौलुस इफिसुस में; कुछ लोगों का दोबारा बपतिस्मा (1-7)
पौलुस ने कहाँ-कहाँ सिखाया (8-10)
दुष्ट स्वर्गदूतों के दबदबे के बावजूद कामयाबी (11-20)
इफिसुस में दंगा (21-41)

20 पौलुस मकिदुनिया और यूनान में (1-6)
त्रोआस में युतुखुस ज़िंदा किया गया (7-12)
त्रोआस से मीलेतुस तक का सफर (13-16)
पौलुस इफिसुस के प्राचीनों से मिला (17-38)
घर-घर सिखाना (20)
'देने में ज़्यादा खुशी है' (35)

21 यरूशलेम के सफर पर (1-14)
वे यरूशलेम पहुँचे (15-19)
पौलुस प्राचीनों की सलाह मानता है (20-26)
मंदिर में दंगा; पौलुस गिरफ्तार (27-36)
उसे भीड़ से बात करने की इजाज़त मिली (37-40)

22 पौलुस भीड़ के सामने सफाई देता है (1-21)
पौलुस रोमी नागरिकता का इस्तेमाल करता है (22-29)
महासभा इकट्ठा हुई (30)

23 पौलुस महासभा के सामने बोलता है (1-10)
पौलुस को प्रभु ने हिम्मत दी (11)
पौलुस के कत्ल की साज़िश (12-22)
पौलुस को कैसरिया ले जाया गया (23-35)

24 पौलुस पर इलज़ाम (1-9)
फेलिक्स के सामने पौलुस सफाई देता है (10-21)
पौलुस का मुकदमा दो साल तक टाल दिया गया (22-27)

25 फेस्तुस के सामने पौलुस का मुकदमा (1-12)
"मैं सम्राट से फरियाद करता हूँ!" (11)
फेस्तुस, राजा अग्रिप्पा से सलाह-मशविरा करता है (13-22)
पौलुस अग्रिप्पा के सामने (23-27)

26 पौलुस अग्रिप्पा के सामने सफाई पेश करता है (1-11)
पौलुस बताता है कि वह कैसे मसीही बना (12-23)
फेस्तुस और अग्रिप्पा ने क्या कहा (24-32)

27 पौलुस जहाज़ से रोम जाता है (1-12)
जहाज़ तूफान में (13-38)
जहाज़ टूट गया (39-44)

28 माल्टा के किनारे जा पहुँचे (1-6)
पुबलियुस का पिता बीमारी से ठीक हुआ (7-10)
रोम की तरफ (11-16)
रोम में पौलुस यहूदियों से बात करता है (17-29)
पौलुस दो साल तक निडरता से प्रचार करता है (30, 31)

1 प्यारे थियुफिलुस, जब से यीशु ने
सेवा करनी शुरू की तब से उसने जो-
जो काम किए और बातें सिखायीं, वह
सब मैंने अपनी पहली किताब में लिखा
है।[1] 2 उसमें उस वक्त तक का ब्यौरा
है जब यीशु ने अपने चुने हुए प्रेषितों को
पवित्र शक्ति के ज़रिए हिदायतें दीं[2] और
इसके बाद उसे स्वर्ग उठा लिया गया।[3]
3 अपनी मौत तक दुख झेलने के बाद,
वह कई मौकों पर अपने चेलों को दिखायी
दिया और उन्हें इस बात के पक्के सबूत
दिए कि वह ज़िंदा हो गया है।[4] वह 40
दिन तक उन्हें दिखायी देता रहा और
उन्हें परमेश्वर के राज के बारे में बताता
रहा।[5] 4 जब वह चेलों से मिला तो
उसने उन्हें आज्ञा दी, "यरूशलेम छोड़-
कर मत जाना।[6] वहीं रहना और पिता ने
जिस बात का वादा किया है[7] और
जिसके बारे में तुमने मुझसे सुना है, उसके
पूरा होने का इंतज़ार करना। 5 क्योंकि
यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया था,
मगर अब से कुछ दिन बाद तुम पवित्र
शक्ति से बपतिस्मा पाओगे।"[8]

6 जब चेले इकट्ठा हुए तो उससे पूछने
लगे, "प्रभु, क्या तू इसी वक्त इस-
राएल को उसका राज दोबारा दे देगा?"[9]
7 उसने उनसे कहा, "समय या दौर*
को जानने का अधिकार तुम्हें नहीं,
इन्हें तय करना पिता ने अपने अधि-
कार में रखा है।[10] 8 लेकिन जब तुम
पर पवित्र शक्ति आएगी, तो तुम ताकत
पाओगे[11] और यरूशलेम[12] और सारे
यहूदिया और सामरिया में,[13] यहाँ तक
कि दुनिया के सबसे दूर के इलाकों में*[14]
मेरे बारे में गवाही दोगे।"[15] 9 जब वह
ये बातें कह चुका, तो उनके देखते-

1:7 *यानी ठहराए हुए दिनों। **1:8** *या "कोनों तक।"

देखते वह ऊपर उठा लिया गया और
एक बादल ने उसे उनकी नज़रों से छिपा
लिया।[1] 10 जब वह जा रहा था, तब
वे आकाश की तरफ ताक रहे थे। तभी
अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी[2]
उनके पास आकर खड़े हो गए 11 और
उन्होंने कहा, "हे गलीली आदमियो, तुम
यहाँ खड़े आकाश की तरफ क्यों ताक रहे
हो? यह यीशु, जो तुम्हारे पास से आकाश
में उठा लिया गया है, वह इसी ढंग से
आएगा जैसे तुमने उसे आकाश में जाते
देखा है।"

12 फिर वे उस पहाड़ से, जिसे जैतून
पहाड़ कहा जाता है, यरूशलेम लौट
आए।[3] यह पहाड़ यरूशलेम के पास है
और सिर्फ सब्त के दिन की दूरी पर है।
13 यरूशलेम शहर पहुँचकर चेले ऊपर
के उस कमरे में गए जहाँ वे ठहरे हुए थे।
ये चेले थे पतरस, यूहन्ना और याकूब,
अन्द्रियास, फिलिप्पुस और थोमा, बर-
तुलमै और मत्ती, हलफई का बेटा याकूब,
जोशीला शमौन और याकूब का बेटा
यहूदा।[4] 14 वे सभी एक ही मकसद से
प्रार्थना करते रहे और उनके साथ कुछ
औरतें,[5] यीशु के भाई और उसकी माँ
मरियम भी थी।[6]

15 उन्हीं दिनों की बात है, एक
बार पतरस भाइयों के बीच खड़ा हुआ
(उनकी* गिनती करीब 120 थी) और
कहने लगा, 16 "भाइयो, पवित्र शक्ति
ने दाविद से यहूदा के बारे में जो भविष्य-
वाणी करवायी थी, उसका पूरा होना
ज़रूरी था।[7] यहूदा उन लोगों को यीशु के
पास ले गया जो उसे गिरफ्तार करने
आए थे।[8] 17 उसकी गिनती हमारे
साथ होती थी[9] और उसने हमारी तरह
सेवा में हिस्सा भी लिया था। 18 (इसी

1:15 *या "भीड़ की।"

अध्य. 1
1 लूक 1:3; लूक 3:23
2 यूह 15:16
3 1ती 3:16
4 मत 28:9; यूह 20:19; 1कुर 15:4-7
5 लूक 24:27
6 लूक 24:49
7 यूह 14:16, 17; प्रेष 2:33
8 योए 2:28; मत 3:11; मर 1:8
9 लूक 19:11; लूक 24:21
10 दान 2:20, 21; मत 24:36
11 प्रेष 4:33
12 प्रेष 5:27, 28
13 प्रेष 8:14
14 कुल 1:23
15 यश 43:10; लूक 24:48; यूह 15:26, 27

दूसरा कॉल.
1 लूक 24:51; यूह 6:62
2 मत 28:2, 3
3 लूक 24:52
4 मत 10:2-4; मर 3:16-19
5 लूक 23:49
6 मत 13:55; यूह 7:5; गल 1:19
7 भज 41:9; भज 55:12; यूह 13:18
8 लूक 22:47; यूह 18:3
9 मत 10:2, 4; लूक 6:12-16; यूह 6:70, 71

आदमी ने अपनी बेईमानी की कमाई से
एक ज़मीन खरीदी थी।[1] वह सिर के बल
गिरा, उसका पेट फट गया और उसकी
सारी अंतड़ियाँ बाहर निकल गयीं।[2]
19 यरूशलेम के रहनेवाले सभी लोगों
को यह बात पता चली, इसलिए उनकी
भाषा में वह ज़मीन *हकलदमा* यानी “खून
की ज़मीन” कहलायी।) **20** क्योंकि
भजनों की किताब में लिखा है, ‘उसका
घर उजड़ जाए और सुनसान हो जाए’[3]
और ‘उसका निगरानी का पद कोई और
ले ले।’[4] **21** इसलिए यह ज़रूरी है कि
उसकी जगह किसी ऐसे आदमी को चुना
जाए, जो उस पूरे समय के दौरान हमारे
साथ था जब प्रभु यीशु ने हमारे बीच रह-
कर सेवा की,* **22** यानी जब से यीशु
ने यूहन्ना से बपतिस्मा पाया,[5] तब से
लेकर उस दिन तक जब उसे ऊपर
उठा लिया गया।[6] और वह आदमी इस
बात का भी गवाह हो कि यीशु को मरे
हुओं में से ज़िंदा किया गया है।”[7]

23 इसलिए उन्होंने दो चेलों के नाम
का सुझाव दिया। पहला था यूसुफ जो
बर-सबा और युसतुस भी कहलाता है
और दूसरा मत्तियाह। **24** फिर चेलों ने
प्रार्थना की, “हे यहोवा,* तू जो सबके
दिलों को जानता है,[8] हमें बता कि
तूने इन दो आदमियों में से किसे चुना है
25 ताकि उसे सेवा की ज़िम्मेदारी और
प्रेषित-पद मिले जिसे यहूदा ने ठुकरा दिया
और अपने रास्ते चला गया।”[9] **26** तब
उन्होंने उनके नाम पर चिट्ठियाँ डालीं[10]
और चिट्ठी मत्तियाह के नाम निकली। और
वह 11 प्रेषितों के साथ गिना गया।*

1:21 *शा., “अंदर आता था और बाहर जाता था।” **1:24** *अति. क5 देखें। **1:26** *या “माना गया,” यानी बाकी 11 के बराबर समझा गया।

अध्य. 1

1 जक 11:12, मत 26:14, 15
2 मत 27:5-8
3 भज 69:25
4 भज 109:8
5 मत 3:13
6 लूक 24:51, प्रेष 1:9
7 मत 28:5, 6, मर 16:6
8 1शम 16:7, 1इत 28:9, यिर्म 11:20
9 यूह 6:70
10 नीत 16:33

दूसरा कॉल.

अध्य. 2

1 लैव 23:16, व्य 16:9-11
2 प्रेष 4:31
3 मर 1:8, यूह 14:26
4 प्रेष 10:45, 46, 1कुर 12:8, 10
5 निर्ग 23:17
6 मर 14:70, प्रेष 1:11
7 2रा 17:6
8 दान 8:1, 2
9 1पत 1:1
10 निर्ग 12:48

2 पिन्तेकुस्त के त्योहार के दिन,[1] जब
वे सब एक ही घर में इकट्ठा थे,
2 तभी अचानक आकाश से साँय-साँय
करती तेज़ आँधी जैसी आवाज़ हुई और
सारा घर जिसमें वे बैठे थे गूँज उठा।[2]
3 और उन्हें आग की लपटें दिखायी दीं
जो जीभ जैसी थीं और ये अलग-अलग
बँट गयीं और उनमें से हरेक के ऊपर
एक-एक जा ठहरी। **4** तब वे सभी
पवित्र शक्ति से भर गए[3] और अलग-
अलग भाषा बोलने लगे, ठीक जैसा
पवित्र शक्ति उन्हें बोलने के काबिल बना
रही थी।[4]

5 उस वक्त, दुनिया के सभी देशों
से आए यहूदी भक्त यरूशलेम में थे।[5]
6 जब यह आवाज़ सुनायी दी, तो भीड़-
की-भीड़ इकट्ठी हो गयी और वे सब
हैरान थे क्योंकि हर किसी को चेलों के
मुँह से अपनी ही भाषा सुनायी दे रही
थी। **7** लोग दंग रह गए और कहने
लगे, “कमाल हो गया! ये लोग जो बोल
रहे हैं क्या ये सब गलील के रहने-
वाले[6] नहीं? **8** तो फिर हममें से हरेक
को अपनी ही मातृ-भाषा* कैसे सुनायी दे
रही है? **9** हम तो पारथी, मादी[7] और
एलामी[8] हैं और मेसोपोटामिया, यहूदिया
और कप्पदूकिया, पुन्तुस और एशिया
प्रांत के रहनेवाले[9] हैं **10** और फ्रूगिया,
पमफूलिया और मिस्र से और लिबिया के
इलाकों से हैं जो कुरेने के पास है और
रोम से आए मुसाफिर हैं। हम सब यहूदी
और यहूदी धर्म अपनानेवालों[10] में से हैं।
11 हममें क्रेती और अरबी लोग भी हैं।
फिर भी हम इन लोगों को हमारी अपनी
भाषा में परमेश्वर के शानदार कामों के
बारे में बोलते हुए सुन रहे हैं।” **12** सब
लोग हैरान थे और उलझन में थे। वे

2:8 *या “जन्म की भाषा।”

एक-दूसरे से कहने लगे, “यह सब क्या हो रहा है?” **13** मगर कुछ लोग चेलों की खिल्ली उड़ाने लगे, “ये तो नयी* दाख-मदिरा के नशे में हैं।”

14 तब पतरस उन ग्यारहों[1] के साथ खड़ा हुआ और उसने वहाँ मौजूद लोगों से बुलंद आवाज़ में कहा, “हे यहूदिया और यरूशलेम के सब लोगो, मेरी बात ध्यान से सुनो। **15** जैसा तुम सोच रहे हो, ये लोग नशे में नहीं हैं क्योंकि अभी सुबह का तीसरा घंटा* ही हुआ है। **16** इसके बजाय, यह वही हो रहा है जिसके बारे में भविष्यवक्ता योएल ने बताया था: **17** ‘परमेश्वर कहता है, “मैं आखिरी दिनों में हर तरह के इंसान पर अपनी पवित्र शक्ति उँडेलूँगा और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे और तुम्हारे बुज़ुर्ग खास सपने देखेंगे।[2] **18** उन दिनों मैं अपने दास-दासियों पर भी अपनी पवित्र शक्ति उँडेलूँगा और वे भविष्यवाणी करेंगे।[3] **19** और मैं ऊपर आकाश में अजूबे और नीचे धरती पर चमत्कार दिखाऊँगा, खून, आग और धुएँ का बादल। **20** यहोवा* के महान और महिमा से भरे दिन के आने से पहले सूरज पर अँधेरा छा जाएगा और चाँद खून जैसा लाल हो जाएगा। **21** और जो कोई यहोवा* का नाम पुकारता है वह उद्धार पाएगा।”’[4]

22 हे इसराएलियो, मेरी यह बात सुनो: यीशु नासरी परमेश्वर का भेजा हुआ इंसान था और इस बात को साबित करने के लिए परमेश्वर ने उसके ज़रिए तुम्हारे बीच बड़े-बड़े शक्तिशाली और आश्चर्य के काम और चमत्कार किए,[1] जैसा कि तुम खुद भी जानते हो। **23** इस आदमी को तुमने दुष्टों के हाथ सौंपा और काठ पर लटकाकर मार डाला।[2] परमेश्वर ने भविष्य जानने की काबिलीयत का इस्तेमाल करके और अपनी मरज़ी* के मुताबिक यह तय किया[3] कि उसके साथ ऐसा ही हो। **24** मगर परमेश्वर ने उसे ज़िंदा करके[4] मौत के बंधनों से आज़ाद किया, क्योंकि यह नामुमकिन था कि वह मौत के बंधनों* में जकड़ा रहे।[5] **25** इसलिए कि दाविद ने उसके बारे में कहा था, ‘मैं हर पल यहोवा* को अपने सामने# रखता हूँ। वह मेरे दायीं तरफ रहता है ताकि मुझे कभी हिलाया न जा सके। **26** इस वजह से मेरा दिल खुशी से भर गया है और मेरी जीभ बड़े आनंद से बोल उठी है। मैं* पूरी आशा के साथ जीऊँगा। **27** क्योंकि तू मुझे कब्र* में नहीं छोड़ देगा, तू अपने वफादार जन को सड़ने नहीं देगा।[6] **28** तूने मुझे जीवन की राह दिखायी है, तू अपने सामने* मुझे खुशी से भर देगा।’[7]

29 भाइयो, मैं कुलपिता दाविद के बारे में बेझिझक तुमसे यह कह सकता हूँ कि उसकी मौत हुई और उसे कब्र में दफनाया गया[8] और उसकी कब्र आज के दिन तक हमारे बीच मौजूद है। **30** वह एक भविष्यवक्ता था और जानता था कि परमेश्वर ने शपथ खाकर उससे वादा किया है कि वह उसके वंशजों में से एक को उसकी राजगद्दी पर बिठाएगा।[9]

अध्य. 2
1 प्रेष 1:13
2 योए 2:28
3 1कुर 12:8, 10
4 योए 2:28-32; रोम 10:13

दूसरा कॉल.
1 यूह 5:36; यूह 14:10
2 लूक 23:33; प्रेष 5:30; प्रेष 7:52
3 यूह 19:10, 11; प्रेष 4:27, 28; 1पत 1:20
4 प्रेष 3:15; रोम 4:24; 1कुर 6:14; कुल 2:12; इब्र 13:20
5 यूह 10:17, 18
6 प्रेष 13:35
7 भज 16:8-11
8 1रा 2:10
9 2शम 7:12, 13; भज 89:3, 4; भज 132:11

2:13 *या “मीठी।” **2:15** *यानी सुबह करीब 9 बजे। **2:20, 21, 25** *अति. क5 देखें।

2:23 *या “मकसद।” **2:24** *या शायद, “रस्सों।” **2:25** #या “अपनी आँखों के सामने।” **2:26** *शा., “मेरा शरीर।” **2:27** *या “हेडीज़।” शब्दावली देखें। **2:28** *या “अपने मुख के सामने।”

31 दाविद, मसीह के ज़िंदा होने के बारे
में पहले से जानता था और उसने बताया
कि मसीह को कब्र* में नहीं छोड़ा
जाएगा, न ही उसका शरीर सड़ने दिया
जाएगा।[1] **32** इसी यीशु को परमेश्वर
ने ज़िंदा किया है और हम सब इस बात के
गवाह हैं।[2] **33** उसे परमेश्वर के दायीं
तरफ ऊँचा पद दिया गया है[3] और वादे
के मुताबिक उसने पिता से पवित्र शक्ति
पायी है।[4] यही शक्ति उसने हम पर
उँडेली है और इसी को तुम काम करते
हुए देख और सुन रहे हो। **34** दाविद
स्वर्ग नहीं गया, मगर वह खुद कहता है,
'यहोवा* ने मेरे प्रभु से कहा, "तू तब तक
मेरे दाएँ हाथ बैठ, **35** जब तक कि मैं
तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों की चौकी न बना
दूँ।"'[5] **36** इसलिए इसराएल का सारा
घराना हर हाल में यह जान ले कि पर-
मेश्वर ने इसी यीशु को प्रभु[6] और मसीह
ठहराया है, जिसे तुमने काठ पर लटका-
कर मार डाला।"[7]

37 जब उन्होंने यह सुना तो उनका
दिल उन्हें बेहद कचोटने लगा और उन्होंने
पतरस और बाकी प्रेषितों से कहा,
"भाइयो, अब हमें क्या करना चाहिए?"
38 पतरस ने उनसे कहा, "पश्चाताप
करो[8] और तुममें से हरेक अपने पापों की
माफी के लिए[9] यीशु मसीह के नाम
से बपतिस्मा ले।[10] तब तुम पवित्र शक्ति
का मुफ्त वरदान पाओगे। **39** क्योंकि
यह वादा[11] तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों
के लिए और दूर-दूर के उन सब
लोगों के लिए है जिनको हमारा पर-
मेश्वर यहोवा* अपने पास बुलाएगा।"[12]
40 उसने और भी बहुत-सी बातें बता-
कर अच्छी तरह गवाही दी और वह
उन्हें समझाता रहा, "इन टेढ़े लोगों की
पीढ़ी[1] से अलग हो जाओ और उद्धार
पाओ।" **41** जिन लोगों ने खुशी-खुशी
उसके वचन को माना, उन्होंने बपतिस्मा
लिया।[2] उस दिन चेलों में करीब 3,000
लोग शामिल हो गए।[3] **42** और वे सब
प्रेषितों से लगातार सीखते रहे। वे एक-
साथ इकट्ठा होते, खाना खाते[4] और
प्रार्थना करते थे।[5]

43 हर इंसान पर डर छाने लगा और
प्रेषितों के हाथों बहुत-से आश्चर्य के काम
और चमत्कार होने लगे।[6] **44** वे सभी
जिन्होंने विश्वास किया, साथ इकट्ठा होते
और उनके पास जो कुछ था आपस में
बाँट लेते थे। **45** वे अपना सामान और
अपनी जायदाद बेच देते[7] और मिलने-
वाली रकम सबमें बाँट देते थे। हरेक
को उसकी ज़रूरत के मुताबिक देते थे।[8]
46 वे एक ही मकसद के साथ हर दिन
मंदिर में हाज़िर रहते और एक-दूसरे के
घर जाकर खाना खाते और सच्चे दिल से
और खुशी-खुशी मिल-बाँटकर खाते थे।
47 वे परमेश्वर की तारीफ करते और
सब लोग उनसे खुश थे। यहोवा* हर
दिन ऐसे और भी लोगों को उनमें शामिल
करता गया, जिन्हें वह उद्धार दिला
रहा था।[9]

3 पतरस और यूहन्ना नौवें घंटे* के
करीब, प्रार्थना के वक्त मंदिर जा रहे
थे। **2** तभी लोग एक आदमी को ला
रहे थे जो जन्म से लँगड़ा था। वे उसे
रोज़ मंदिर के उस फाटक के पास
बिठा दिया करते थे, जिसका नाम सुंदर
फाटक था ताकि वह मंदिर में जानेवालों
से भीख* माँग सके। **3** जब उसने देखा
कि पतरस और यूहन्ना मंदिर के अंदर जा

2:31 *या "हेडीज़।" शब्दावली देखें। **2:34, 39, 47** *अति. क5 देखें।

3:1 *यानी दोपहर करीब 3 बजे। **3:2** *शा., "दया के दान।"

अध्य. 2
1 भज 16:10
2 लूक 24:46-48; प्रेष 1:8; प्रेष 3:15
3 रोम 8:34; फिल 2:9-11; 1पत 3:22
4 यूह 14:26
5 भज 110:1; लूक 20:42, 43; 1कुर 15:25; इब्र 10:12, 13
6 मत 28:18; यूह 3:35; प्रेष 5:31
7 यूह 19:6
8 लूक 24:46, 47; प्रेष 17:30; प्रेष 26:20
9 मत 26:27, 28; इफ 1:7
10 मत 28:19
11 योए 2:28
12 योए 2:32

दूसरा कॉल.
1 व्य 32:5; भज 78:8
2 प्रेष 8:12; प्रेष 18:8
3 प्रेष 4:4; प्रेष 5:14
4 प्रेष 2:46
5 प्रेष 1:14
6 प्रेष 5:12
7 मत 19:21
8 प्रेष 4:32, 34
9 प्रेष 5:14; प्रेष 11:21; 1कुर 3:7

रहे हैं, तो वह उनसे भीख माँगने लगा।
4 तब पतरस और यूहन्ना ने सीधे उसे
देखा और कहा, “हमारी तरफ देख।”
5 इसलिए वह उनसे कुछ पाने की उम्मीद
में उन्हें ताकने लगा। 6 मगर पतरस ने
कहा, “सोना-चाँदी तो मेरे पास नहीं है
मगर जो मेरे पास है वह तुझे दे रहा हूँ।
यीशु मसीह नासरी के नाम से मैं तुझसे
कहता हूँ, खड़ा हो और चल-फिर।”[1]
7 पतरस ने उसका दायाँ हाथ पकड़कर
उसे उठाया।[2] उसी घड़ी उस आदमी के
पैर और टखने मज़बूत हो गए[3] 8 और
वह उछलकर खड़ा हो गया[4] और चलने-
फिरने लगा। वह चलते और उछलते-
कूदते परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ
उनके साथ मंदिर में गया। 9 सब लोगों
ने उसे चलते-फिरते और परमेश्वर की
बड़ाई करते देखा। 10 वे पहचान गए
कि यह वही आदमी है जो मंदिर के
सुंदर फाटक के पास बैठकर भीख माँगा
करता था।[5] उसे चलता-फिरता देखकर
लोग हैरान रह गए और उनकी खुशी का
ठिकाना नहीं रहा।

11 जब वह आदमी पतरस और
यूहन्ना को थामे हुए था, तब सब लोग
दौड़े-दौड़े उस जगह आए, जिसे ‘सुलैमान
का खंभोंवाला बरामदा’ कहा जाता है।[6]
यह घटना देखकर लोगों की आँखें फटी-
की-फटी रह गयीं। 12 लोगों को देख-
कर पतरस ने उनसे कहा, “इसराएल के
लोगो, तुम यह देखकर क्यों इतना ताज्जुब
कर रहे हो? तुम हमें ऐसे क्यों देख रहे
हो मानो हमने अपनी शक्ति से या पर-
मेश्वर की भक्ति से इसे चलने-फिरने
के काबिल बनाया हो? 13 अब्राहम,
इसहाक, याकूब और हमारे पुरखों के
परमेश्वर[7] ने अपने सेवक यीशु की
महिमा की है,[8] जिसे तुमने दुश्मनों के

अध्य. 3

1 प्रेष 3:16, प्रेष 4:10
2 मत 8:14, 15, मत 9:24, 25
3 यूह 5:8, 9, प्रेष 9:34, प्रेष 14:8-10
4 यश 35:6
5 प्रेष 3:2
6 यूह 10:23, प्रेष 5:12
7 निर्ग 3:6
8 यश 52:13, यश 53:11, फिल 2:9-11

दूसरा कॉल.

1 प्रेष 5:30
2 मत 27:20, 21, लूक 23:14, 18
3 प्रेष 5:31, इब्र 2:10
4 लूक 24:46-48, प्रेष 1:8, प्रेष 2:32
5 यूह 16:2, 3, 1ती 1:13
6 1कुर 2:8
7 भज 118:22, यश 50:6, यश 53:8, दान 9:26, लूक 22:15
8 प्रेष 2:38
9 यहे 33:11, इफ 4:22
10 यहे 33:14, 16, 1यूह 1:7

हवाले कर दिया था।[1] तुमने पीला-
तुस के सामने उसे ठुकरा दिया, जबकि
पीलातुस ने उसे छोड़ने का फैसला किया
था। 14 हाँ, तुमने उस पवित्र और नेक
इंसान को ठुकरा दिया और उसके बदले
अपने लिए एक कातिल को माँग लिया,[2]
15 जबकि तुमने जीवन दिलानेवाले खास
अगुवे को मार डाला।[3] मगर परमेश्वर ने
उसे मरे हुओं में से ज़िंदा कर दिया है और
इस सच्चाई के हम गवाह हैं।[4] 16 हम
उसके नाम पर विश्वास करते हैं और
उसके नाम से ही यह आदमी ठीक हुआ
है, जिसे तुम देख रहे हो और जानते भी
हो। यीशु पर हमारे विश्वास की वजह से
ही इस आदमी को तुम्हारे सामने पूरी
तरह ठीक किया गया है। 17 भाइयो, मैं
जानता हूँ कि तुमने जो भी किया अनजाने
में किया,[5] ठीक जैसे तुम्हारे धर्म-अधि-
कारियों ने किया।[6] 18 मगर इस तरह
परमेश्वर ने वे बातें पूरी कीं, जो उसने सारे
भविष्यवक्ताओं से बहुत पहले कहलवायी
थीं कि उसका मसीह दुख उठाएगा।[7]

19 इसलिए पश्चाताप करो[8] और
पलटकर लौट आओ[9] ताकि तुम्हारे पाप
मिटाए जाएँ[10] और यहोवा की तरफ
से* तुम्हारे लिए ताज़गी के दिन आएँ
20 और वह तुम्हारे लिए ठहराए गए
मसीह यानी यीशु को भेजे। 21 उसका
तब तक स्वर्ग में रहना ज़रूरी है जब तक
कि सबकुछ पहले जैसा न कर दिया जाए,
जिसके बारे में परमेश्वर ने बीते ज़माने
में अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं से
कहलवाया था। 22 दरअसल मूसा
ने तो कहा था, ‘तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा* तुम्हारे भाइयों के बीच में से
तुम्हारे लिए मेरे जैसा एक भविष्यवक्ता

3:19 *शा., “यहोवा के मुख से।” अति. क5 देखें। **3:22** *अति. क5 देखें।

खड़ा करेगा।[1] जो कुछ वह तुमसे कहे, वह सब तुम सुनना।[2] **23** जो कोई उस भविष्यवक्ता की बात नहीं सुनेगा, उसे लोगों के बीच से मिटा दिया जाएगा।’[3] **24** सभी भविष्यवक्ताओं ने यानी शमूएल से लेकर जितने भी भविष्यवक्ता हुए, उन सबने इन दिनों के बारे में साफ-साफ ऐलान किया था।[4] **25** तुम भविष्यवक्ताओं के वंशज और उस करार के वारिस हो जो परमेश्वर ने तुम्हारे पुरखों के साथ किया था।[5] परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था, ‘तेरे वंश के ज़रिए धरती के सभी परिवार आशीष पाएँगे।’[6] **26** उसने अपने सेवक को ठहराकर सबसे पहले तुम्हारे पास भेजा[7] ताकि वह तुममें से हरेक को दुष्ट काम छोड़ने में मदद दे और आशीष दे।”

4 जब ये दोनों, लोगों को ये बातें बता रहे थे तभी कुछ याजक, मंदिर के पहरेदारों का सरदार और सदूकी[8] वहाँ आ धमके। **2** वे इस बात से चिढ़ गए कि प्रेषित, लोगों को सिखा रहे हैं और खुलकर बता रहे हैं कि यीशु मरे हुओं में से ज़िंदा हो गया है।*[9] **3** और उन्होंने दोनों प्रेषितों को पकड़* लिया और शाम हो जाने की वजह से उन्हें अगले दिन तक हिरासत में रखा।[10] **4** मगर जिन लोगों ने वह भाषण सुना था, उनमें से बहुतों ने विश्वास किया और चेलों में आदमियों की गिनती करीब 5,000 तक पहुँच गयी।[11]

5 अगले दिन यरूशलेम में यहूदियों के धर्म-अधिकारी, मुखिया और शास्त्री जमा हुए। **6** उनके साथ प्रधान याजक हन्ना,[12] कैफा,[13] यूहन्ना, सिकंदर और प्रधान याजक के सभी रिश्तेदार भी थे। **7** उन्होंने पतरस और यूहन्ना को अपने बीच खड़ा करके उनसे पूछताछ करनी शुरू की, “तुमने किस अधिकार से यह काम किया है और किसके नाम से यह किया है?” **8** तब पतरस ने पवित्र शक्ति से भरकर[1] उनसे कहा,

“धर्म-अधिकारियो और मुखियाओ सुनो, **9** अगर आज के दिन इस अपाहिज आदमी[2] का भला करने की वजह से हमसे पूछताछ की जा रही है कि किसने इसे ठीक किया है, **10** तो तुम सब और इसराएल के सभी लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से[3] यह आदमी ठीक हुआ है और यहाँ तुम्हारे सामने भला-चंगा खड़ा है। हाँ, उसी यीशु के नाम से जिसे तुमने काठ पर लटकाकर मार डाला था,[4] मगर जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से ज़िंदा कर दिया।[5] **11** यीशु ही ‘वह पत्थर है जिसे राजमिस्त्रियों ने बेकार समझा, मगर वही कोने का मुख्य पत्थर बन गया।’[6] **12** यह भी जान लो कि किसी और के ज़रिए उद्धार नहीं मिलेगा क्योंकि परमेश्वर ने हमें उद्धार दिलाने के लिए धरती पर इंसानों में कोई और नाम नहीं चुना।”[7]

13 जब उन्होंने देखा कि पतरस और यूहन्ना कैसे बेधड़क* होकर बोल रहे हैं और यह जाना कि ये कम पढ़े-लिखे,# मामूली आदमी[8] हैं, तो वे ताज्जुब करने लगे। फिर उन्हें एहसास हुआ कि ये लोग यीशु के साथ रहा करते थे।[9] **14** वे देख रहे थे कि जिस आदमी को पतरस और यूहन्ना ने ठीक किया था, वह उनके साथ खड़ा है[10] इसलिए उनके पास

4:2 *या “यीशु की मिसाल देकर मरे हुओं के जी उठने का ऐलान कर रहे थे।” **4:3** *या “गिरफ्तार कर।”

4:13 *या “निडर।” #या “अनपढ़।” वे सचमुच में अनपढ़ नहीं थे बल्कि उन्होंने कभी रब्बियों के स्कूल में पढ़ाई नहीं की थी।

अध्य. 3
1 व्य 34:10; प्रेष 7:37
2 व्य 18:15, 18
3 व्य 18:19
4 लूक 24:27; प्रेष 10:43
5 रोम 9:4
6 उत 22:18; गल 3:8
7 प्रेष 13:45, 46; रोम 1:16

अध्य. 4
8 प्रेष 23:8
9 प्रेष 4:33; प्रेष 17:18
10 लूक 21:12
11 प्रेष 2:41; प्रेष 6:7
12 यूह 18:13
13 मत 26:57; लूक 3:2; यूह 11:49-51

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 7:55
2 प्रेष 3:7
3 प्रेष 3:6
4 प्रेष 2:36
5 प्रेष 2:24; प्रेष 5:30
6 भज 118:22; यश 28:16; मत 21:42; 1पत 2:7
7 मत 1:21; यूह 1:12; यूह 14:6; प्रेष 10:43; फिल 2:9, 10; 1ती 2:5, 6
8 मत 11:25; 1कुर 1:26, 27
9 यूह 7:14, 15
10 प्रेष 3:11

प्रेषितों के खिलाफ कहने के लिए कुछ
नहीं रहा।[1] **15** उन्होंने पतरस और
यूहन्ना को महासभा के भवन से बाहर
जाने का हुक्म दिया। फिर वे एक-दूसरे
से मशविरा करने लगे **16** और कहने
लगे, "हम इन आदमियों के साथ क्या
करें?[2] क्योंकि यह सच है कि इनके हाथों
एक बड़ा चमत्कार हुआ है, जिसे यरू-
शलेम के सब रहनेवालों ने देखा है[3] और
हम इसे झुठला नहीं सकते। **17** अब
आओ हम इन्हें धमकाएँ कि वे इस नाम से
फिर कभी किसी से बात न करें ताकि यह
बात और लोगों में न फैले।"[4]

18 फिर उन्होंने चेलों को बुलाया
और हुक्म दिया कि वे यीशु के नाम से
कोई बात न करें और न ही सिखाएँ।
19 मगर पतरस और यूहन्ना ने उन्हें
जवाब दिया, "क्या परमेश्वर की नज़र में
यह सही होगा कि हम उसकी बात
मानने के बजाय तुम्हारी सुनें, तुम खुद
फैसला करो। **20** मगर जहाँ तक हमारी
बात है, हम उन बातों के बारे में बोलना
नहीं छोड़ सकते जो हमने देखी और सुनी
हैं।"[5] **21** उन्होंने पतरस और यूहन्ना
को एक बार फिर धमकाकर छोड़ दिया
क्योंकि उन्हें सज़ा देने की कोई वजह नहीं
मिली। अधिकारियों को लोगों का भी डर
था[6] क्योंकि जो घटना घटी थी उसकी
वजह से सभी परमेश्वर की महिमा कर
रहे थे। **22** जो आदमी इस चमत्कार*
से चंगा हुआ था, उसकी उम्र 40 साल से
ज़्यादा थी।

23 वहाँ से छूटकर पतरस और
यूहन्ना अपने लोगों के पास गए और उन्हें
वे सारी बातें बतायीं जो प्रधान याजकों
और मुखियाओं ने उनसे कही थीं।
24 यह सुनने के बाद उन सभी ने एक

4:22 *या "चिन्ह।"

अध्य. 4
1 लूक 21:15
2 यूह 11:47
3 प्रेष 3:9, 10
4 प्रेष 5:40
5 प्रेष 5:29
6 लूक 22:2 प्रेष 5:26

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 20:11 नहे 9:6 भज 146:6
2 2शम 23:1, 2
3 भज 2:1, 2
4 लूक 23:12
5 भज 45:7 प्रेष 10:38
6 यश 53:10 लूक 24:44 प्रेष 2:23 1पत 1:20
7 प्रेष 3:16
8 प्रेष 2:43 प्रेष 5:12
9 प्रेष 2:2, 4
10 1थि 2:2

मन होकर ऊँची आवाज़ में परमेश्वर से
बिनती की:

"हे सारे जहान के मालिक, तूने ही
आकाश और पृथ्वी और समुंदर और
उनमें की सब चीज़ों को बनाया है[1]
25 और तूने पवित्र शक्ति के ज़रिए
हमारे पुरखे और अपने सेवक दाविद के
मुँह से कहलवाया,[2] 'राष्ट्र क्यों गुस्से
से उफन रहे हैं? देश-देश के लोग
क्यों खोखली बातें सोच* रहे हैं?
26 धरती के राजा, यहोवा* और उसके
अभिषिक्त जन# के खिलाफ खड़े हुए
और अधिकारियों ने मिलकर उनका
विरोध किया।'[3] **27** और सचमुच ऐसा
ही हुआ। राजा हेरोदेस और पुन्ति-
युस पीलातुस दोनों,[4] गैर-यहूदियों और
इसराएल की जनता के साथ मिलकर
इस शहर में तेरे पवित्र सेवक यीशु के
खिलाफ इकट्ठा हुए, जिसका तूने अभिषेक
किया था[5] **28** ताकि वे उसके साथ वह
सब करें जो तूने अपनी शक्ति और मरज़ी
के मुताबिक पहले से तय किया था।[6]
29 अब हे यहोवा,* उनकी धमकियों पर
ध्यान दे और अपने दासों की मदद कर
कि वे पूरी तरह निडर होकर तेरा वचन
सुनाते रहें **30** और तू अपना हाथ बढ़ा-
कर लोगों को चंगा करता रहे और तेरे
पवित्र सेवक यीशु के नाम से[7] चमत्कार
और आश्चर्य के काम होते रहें।"[8]

31 जब वे गिड़गिड़ाकर मिन्नत कर
चुके तो वह जगह जहाँ वे इकट्ठा थे, काँप
उठी और वे सब-के-सब पवित्र शक्ति से
भर गए[9] और निडर होकर परमेश्वर का
वचन सुनाने लगे।[10]

32 विश्वास करनेवाले सब लोग एक

4:25 *या "बातों पर गहराई से विचार कर।" **4:26, 29** *अति. क5 देखें। **4:26** #या "उसके मसीह।"

दिल और एक जान* थे। उनमें से कोई
भी अपनी संपत्ति को अपना नहीं कहता
था, बल्कि सब चीज़ें वे आपस में बाँट
लेते थे।[1] 33 और प्रेषित बड़े ज़बर-
दस्त ढंग से गवाही देते रहे कि प्रभु
यीशु मरे हुओं में से ज़िंदा हो गया
है।[2] उन सब पर परमेश्वर की भरपूर
महा-कृपा बनी रही। 34 सच तो यह है
कि उनमें कोई भी तंगी में नहीं था[3]
क्योंकि जितनों के पास खेत या घर थे,
वे उन्हें बेच देते और मिलनेवाली रकम
लाकर 35 प्रेषितों के पैरों पर रख देते
थे।[4] और फिर हरेक को उसकी ज़रू-
रत के मुताबिक बाँट दिया जाता था।[5]
36 यूसुफ जिसे प्रेषित, बरनबास[6] नाम से
बुलाते थे, (जिसका मतलब है, "दिलासे
का बेटा") कुप्रुस का रहनेवाला लेवी था।
37 उसके पास ज़मीन का एक टुकड़ा था
जिसे उसने बेच दिया और रकम लाकर
प्रेषितों के पैरों पर रख दी।[7]

5 हनन्याह नाम के एक आदमी और
उसकी पत्नी सफीरा ने भी अपनी
कुछ ज़मीन बेची। 2 मगर हनन्याह
ने चोरी-छिपे उसकी कीमत का कुछ
हिस्सा अपने पास रख लिया और यह
बात उसकी पत्नी भी जानती थी। उसने
रकम का सिर्फ कुछ हिस्सा ले जाकर
प्रेषितों के पैरों पर रखा।[8] 3 तब पत-
रस ने कहा, "हनन्याह, क्यों शैतान ने
तुझे ऐसा ढीठ बना दिया कि तू पवित्र
शक्ति से झूठ बोले[9] और ज़मीन की
कीमत का कुछ हिस्सा चोरी से अपने
पास रख ले? 4 जब तक वह तेरे पास
थी, क्या वह तेरी न थी और बेचने के
बाद भी क्या उसकी कीमत पर तेरा
हक नहीं था? तो फिर क्यों तूने अपने
दिल में ऐसा काम करने की सोची? तूने
इंसानों से नहीं, परमेश्वर से झूठ बोला
है।" 5 यह सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा
और मर गया। और इस बारे में सुननेवाले
हर किसी पर डर छा गया। 6 फिर कुछ
नौजवानों ने उठकर उसे कपड़े में लपेटा
और उसे बाहर ले गए और दफना दिया।

7 करीब तीन घंटे बाद उसकी पत्नी
आयी और उसे नहीं पता था कि वहाँ क्या
हुआ है। 8 पतरस ने उससे कहा, "मुझे
बता, क्या तुम दोनों ने अपनी ज़मीन
इतने ही दाम में बेची थी?" उसने कहा,
"हाँ, इतने में ही बेची थी।" 9 पत-
रस ने उससे कहा, "क्यों तुम दोनों ने
मिलकर तय किया कि तुम यहोवा* की
पवित्र शक्ति की परीक्षा लो? देख! तेरे
पति को दफनानेवाले दरवाज़े पर हैं और
अब वे तुझे भी उठाकर ले जाएँगे।"
10 उसी घड़ी वह उसके पैरों पर गिर पड़ी
और मर गयी। जब वे नौजवान अंदर
आए तो उन्होंने उसे मरा हुआ पाया और
वे उसे उठाकर बाहर ले गए और उसके
पति के पास उसे दफना दिया। 11 इस
घटना से पूरी मंडली पर और इस बारे में
सुननेवाले हर किसी पर डर छा गया।

12 प्रेषितों के हाथों लोगों के बीच
और भी बहुत-से चमत्कार और आश्चर्य
के काम होते रहे।[1] वे सभी 'सुलैमान के
खंभोंवाले बरामदे' में इकट्ठा हुआ करते
थे।[2] 13 बाकियों में से किसी की हिम्मत
नहीं होती थी कि वे चेलों में जा मिले।
फिर भी लोग चेलों की तारीफ करते थे।
14 और-तो-और प्रभु पर विश्वास करने-
वाले आदमी-औरत बड़ी तादाद में उनमें
शामिल होते रहे।[3] 15 यहाँ तक कि वे
बीमारों को बड़ी सड़कों पर लाकर चारपा-
इयों और बिस्तरों पर लिटा देते थे ताकि
जब पतरस वहाँ से गुज़रे, तो कम-से-कम

अध्य. 4
1 प्रेष 2:44, 45
2 प्रेष 1:21, 22; प्रेष 4:2
3 प्रेष 2:44, 45
4 प्रेष 5:1, 2
5 प्रेष 6:1
6 प्रेष 11:22; प्रेष 12:25
7 लूक 12:33

अध्य. 5
8 प्रेष 4:34, 35
9 भज 101:7; प्रेष 5:9; इफ 4:25; कुल 3:9

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 4:29, 30; प्रेष 6:8; प्रेष 14:3; प्रेष 15:12; रोम 15:18, 19; 2कुर 12:12
2 यूह 10:23; प्रेष 3:11
3 प्रेष 6:7

4:32 *शब्दावली में "जीवन" देखें।

5:9 *अति. क5 देखें।

उसकी परछाईं ही उनमें से कुछ पर पड़
जाए।[1] **16** यरूशलेम के आस-पास के
शहरों से भी भारी तादाद में लोग वहाँ
आते रहे और बीमारों और दुष्ट स्वर्गदूतों
के सताए हुओं को लाते रहे और वे सब-
के-सब ठीक हो जाते थे।

17 मगर महायाजक और वे सभी जो
उसके साथ थे यानी उस वक्त के सदू-
कियों के गुट के लोग, जलन से भर गए।
18 उन्होंने प्रेषितों को पकड़* लिया और
जेल में डाल दिया।[2] **19** मगर रात को
यहोवा* के स्वर्गदूत ने जेल के दरवाज़े
खोल दिए[3] और उन्हें बाहर लाकर उनसे
कहा, **20** "जाओ और जाकर मंदिर
में लोगों को जीवन* का संदेश सुनाते
रहो।" **21** इसलिए वे सुबह होते ही
मंदिर में गए और सिखाने लगे।

फिर जब महायाजक और उसके साथी
आए, तो उन्होंने महासभा और इसराए-
लियों के मुखियाओं की पूरी सभा को
इकट्ठा किया और जेल से प्रेषितों को
लाने के लिए पहरेदार भेजे। **22** मगर
वहाँ पहुँचकर पहरेदारों ने देखा कि वे
जेल में नहीं हैं। इसलिए वे लौट आए
और आकर यह खबर दी, **23** "हमने
देखा कि जेल के दरवाज़े अच्छी तरह बंद
हैं और दरवाज़ों पर पहरेदार भी तैनात
हैं, मगर जेल खोलने पर हमें अंदर कोई
नहीं मिला।" **24** जब मंदिर के पहरे-
दारों के सरदार और प्रधान याजकों ने यह
सुना, तो वे बड़ी दुविधा में पड़ गए और
उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या
होगा। **25** मगर किसी ने आकर उन्हें
खबर दी, "देखो! तुमने जिन आदमियों
को जेल में डाला था, वे तो मंदिर में हैं
और वहाँ खड़े होकर लोगों को सिखा रहे
हैं।" **26** तब सरदार अपने पहरेदारों
के साथ गया और उन्हें ले आया, मगर
उनके साथ कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं की
क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं लोग हमें
पत्थरों से मार न डालें।[1]

27 वे उन्हें ले आए और लाकर
महासभा के सामने खड़ा कर दिया।
महायाजक ने उनसे कुछ सवाल किए
28 और कहा, "हमने तुम्हें कड़ा आदेश
दिया था कि इस नाम से सिखाना बंद
कर दो,[2] मगर फिर भी देखो! तुमने सारे
यरूशलेम को अपनी शिक्षाओं से भर
दिया है और तुमने इस आदमी के खून
का दोष हमारे सिर पर थोपने की ठान
ली है।"[3] **29** तब पतरस और दूसरे
प्रेषितों ने कहा, "इंसानों के बजाय पर-
मेश्वर को अपना राजा जानकर उसकी
आज्ञा मानना ही हमारा फर्ज़ है।[4]
30 जिस यीशु को तुमने काठ* पर लट-
काकर मार डाला था, उसे हमारे पुरखों के
परमेश्वर ने ज़िंदा कर दिया।[5] **31** पर-
मेश्वर ने उसी को ऊँचा पद देकर खास
अगुवा[6] और उद्धारकर्ता ठहराया[7] और
अपने दायीं तरफ बिठाया[8] ताकि इस-
राएल पश्चाताप करे और पापों की माफी
पाए।[9] **32** हम इन सब बातों के गवाह
हैं[10] और पवित्र शक्ति भी गवाह है[11] जो
परमेश्वर ने उन लोगों को दी है, जो उसे
राजा जानकर उसकी आज्ञा मानते हैं।"

33 जब उन्होंने यह सुना तो वे आग-
बबूला हो उठे और वे उनका काम तमाम
कर देना चाहते थे। **34** मगर महासभा
में गमलीएल[12] नाम का एक फरीसी खड़ा
हुआ, जो कानून का शिक्षक था और
लोगों में उसकी बड़ी इज़्ज़त थी। उसने
इन आदमियों को कुछ देर के लिए
बाहर ले जाने का हुक्म दिया। **35** फिर

अध्य. 5
1 मत 9:20, 21
2 लूक 21:12
3 भज 34:7
प्रेष 12:7
प्रेष 16:26
इब्र 1:7, 14

दूसरा कॉल.
1 लूक 20:19
2 प्रेष 4:18
3 मत 27:25
प्रेष 3:14, 15
4 दान 3:17, 18
प्रेष 4:19, 20
5 प्रेष 2:23, 24
6 प्रेष 3:15
7 मत 1:21
इब्र 2:10
8 प्रेष 2:32, 33
फिल 2:9
9 यश 53:11
प्रेष 2:38
प्रेष 10:43
10 लूक 24:
46-48
प्रेष 1:8
11 यूह 15:26
12 प्रेष 22:3

5:18 *या "गिरफ्तार कर।" **5:19** *अति. क5 देखें। **5:20** *या "इस जीवन।"

5:30 *या "पेड़।"

गमलीएल ने उनसे कहा, “इसराएल के
लोगो, तुम इन आदमियों के साथ जो
करना चाहते हो, उसके बारे में अच्छी
तरह सोच लो। 36 कुछ वक्त पहले
थियूदास यह कहते हुए उठ खड़ा हुआ
था कि मैं भी कुछ हूँ। और कई आदमी,
करीब 400 लोग उसके गुट में शामिल
हो गए थे। मगर वह मार डाला गया
और जितने उसे मानते थे वे सब तितर-
बितर हो गए। 37 उसके बाद, नाम-
लिखाई के दिनों में गलील का यहूदा उठ
खड़ा हुआ और उसने लोगों को बहकाकर
अपने पीछे कर लिया। मगर वह आदमी
भी मिट गया और जो उसे मानते थे वे
सब तितर-बितर हो गए। 38 इसलिए
अभी के हालात को देखते हुए मैं तुमसे
कहता हूँ, इन आदमियों के काम में दखल
मत दो, पर इन्हें अपने हाल पर छोड़
दो। क्योंकि अगर यह योजना या यह
काम इंसानों की तरफ से है तो यह
मिट जाएगा, 39 लेकिन अगर यह पर-
मेश्वर की तरफ से है, तो तुम इन्हें
मिटा नहीं सकोगे।[1] कहीं ऐसा न हो
कि तुम परमेश्वर से लड़नेवाले ठहरो।”[2]
40 उन्होंने उसकी सलाह मान ली और
प्रेषितों को बुलवाकर उन्हें कोड़े लग-
वाए*[3] और हुक्म दिया कि यीशु के नाम
से बोलना बंद कर दें, फिर उन्हें जाने
दिया।

41 तब वे महासभा के सामने से इस
बात पर बड़ी खुशी मनाते हुए अपने
रास्ते चल दिए[4] कि उन्हें यीशु के
नाम से बेइज़्ज़त होने के लायक तो समझा
गया। 42 और वे बिना नागा हर दिन
मंदिर में और घर-घर जाकर सिखाते रहे[5]
और मसीह यीशु के बारे में खुशखबरी
सुनाते रहे।[6]

5:40 *या “पिटवाया।”

अध्य. 5
1 नीत 21:30
2 प्रेष 26:14
3 मत 10:17, मर 13:9
4 मत 5:12, प्रेष 16:25, रोम 5:3, 2कुर 12:10, फिल 1:29, इब्र 10:34, 1पत 4:13
5 प्रेष 20:20
6 प्रेष 4:31

दूसरा कॉल.

अध्य. 6
1 प्रेष 4:34, 35, 1ती 5:3, याकू 1:27
2 निर्ग 18:17, 18
3 प्रेष 16:1, 2, 1ती 3:7
4 प्रेष 6:8, 10
5 व्य 1:13
6 प्रेष 21:8
7 व्य 34:9, प्रेष 8:14, 17, प्रेष 13:2, 3, 1ती 4:14, 1ती 5:22, 2ती 1:6
8 प्रेष 12:24, प्रेष 19:20
9 प्रेष 2:47
10 यूह 12:42, प्रेष 15:5

6 उन दिनों चेलों की गिनती बढ़ती जा
रही थी। तब ऐसा हुआ कि यूनानी
बोलनेवाले यहूदी चेले, इब्रानी बोलनेवाले
यहूदी चेलों के बारे में शिकायत करने
लगे, क्योंकि रोज़ के खाने के बँटवारे में
यूनानी बोलनेवाली विधवाओं को नज़र-
अंदाज़ किया जा रहा था।[1] 2 तब उन
12 प्रेषितों ने बाकी सभी चेलों को बुलाया
और उनसे कहा, “यह ठीक नहीं कि
हम प्रेषित, परमेश्वर का वचन सिखाना
छोड़कर खाना बाँटने के काम में लग
जाएँ।[2] 3 इसलिए भाइयो, अपने बीच
से ऐसे सात आदमी चुनो जिनका तुम्हारे
बीच अच्छा नाम हो[3] और जो पवित्र
शक्ति और बुद्धि से भरपूर हों[4] ताकि
हम उन्हें इस ज़रूरी काम की देखरेख
के लिए ठहराएँ।[5] 4 और हम प्रार्थना
करने और वचन सिखाने की सेवा में
लगे रहेंगे।” 5 यह बात सबको अच्छी
लगी और उन्होंने इन आदमियों को चुनाः
स्तिफनुस, जो विश्वास और पवित्र शक्ति
से भरपूर था और फिलिप्पुस,[6] प्रखुरुस,
नीकानोर, तीमोन, परमिनास और निकु-
लाउस। निकुलाउस, अंताकिया का रहने-
वाला था और उसने यहूदी धर्म अपनाया
था। 6 वे इन सातों को प्रेषितों के पास
लाए। उन्होंने प्रार्थना की और उन पर
हाथ रखे।[7]

7 इस वजह से परमेश्वर का वचन
फैलता गया[8] और यरूशलेम में चेलों की
गिनती तेज़ी से बढ़ती गयी[9] और बड़ी
तादाद में याजक भी विश्वासी बन गए।[10]

8 स्तिफनुस पर परमेश्वर की बड़ी
कृपा थी और वह उसकी शक्ति से भरपूर
था, इसलिए वह लोगों के बीच बड़े-बड़े
आश्चर्य के काम और चमत्कार करता
था। 9 मगर कुछ आदमी जो ‘आज़ाद
लोगों के सभा-घर’ के सदस्य थे, कुरेने,

सिकंदरिया, किलिकिया और एशिया के लोगों के साथ मिलकर स्तिफनुस के खिलाफ खड़े हुए और उससे बहस करने लगे। **10** मगर स्तिफनुस ने बड़ी बुद्धि-मानी से और पवित्र शक्ति की मदद से उन्हें जवाब दिया, इसलिए वे उसके सामने टिक नहीं पाए।[1] **11** तब उन्होंने चोरी-छिपे कुछ आदमियों को फुसलाया कि वे लोगों में यह बात फैलाएँ, "हमने इसे मूसा और परमेश्वर के खिलाफ निंदा की बातें कहते सुना है।" **12** उन्होंने जनता को और मुखियाओं और शास्त्रियों को भड़काया और अचानक स्तिफनुस पर टूट पड़े और उसे ज़बरदस्ती महासभा के सामने ले गए। **13** और वे झूठे गवाहों को ले आए जिन्होंने कहा, "यह आदमी हमारे पवित्र मंदिर और परमेश्वर के कानून के खिलाफ बोलने से बाज़ नहीं आता। **14** जैसे, हमने इसे यह कहते सुना है कि यीशु नासरी इस मंदिर को ढा देगा और उन रीतियों को बदल डालेगा जो हमें मूसा से मिली हैं।"

15 जब महासभा में बैठे सब लोगों ने स्तिफनुस पर नज़र डाली, तो देखा कि उसका चेहरा एक स्वर्गदूत के चेहरे जैसा दिख रहा है।

7 फिर महायाजक ने उससे पूछा, "क्या ये बातें सच हैं?" **2** स्तिफनुस ने जवाब दिया, "भाइयो और पिता समान बुज़ुर्गो, सुनो। हमारा पुरखा अब्राहम, हारान में बसने से पहले जब मेसोपोटा-मिया में रहता था,[2] तब महिमा से भर-पूर परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया **3** और उससे कहा, 'तू अपने देश और नाते-रिश्तेदारों को छोड़कर एक ऐसे देश में जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।'[3] **4** तब अब्रा-हम कसदियों के उस देश से निकलकर हारान में रहने लगा। फिर उसके पिता की मौत के बाद,[1] परमेश्वर ने उसे वहाँ से निकालकर इस देश में बसाया, जहाँ अब तुम रहते हो।[2] **5** मगर फिर भी पर-मेश्वर ने उस वक्त अब्राहम को इस देश में कोई ज़मीन नहीं दी, पैर रखने तक की जगह भी नहीं दी। मगर परमेश्वर ने उससे वादा किया कि वह यह देश उसे और उसके बाद उसके वंशजों को विरा-सत में देगा,[3] जबकि उस वक्त तक अब्रा-हम की कोई औलाद नहीं थी। **6** और परमेश्वर ने यह भी कहा कि अब्राहम का वंश पराए देश में परदेसी बनकर रहेगा और वहाँ के लोग उससे गुलामी करवाएँ-गे और 400 साल तक उसे सताते रहेंगे।*[4] **7** फिर परमेश्वर ने कहा, 'जिस देश की वे गुलामी करेंगे उसे मैं सज़ा दूँगा[5] और यह सब होने के बाद वे वहाँ से निकल आएँगे और इस जगह मेरी पवित्र सेवा करेंगे।'[6]

8 परमेश्वर ने अब्राहम के साथ खतने का करार भी किया।[7] फिर अब्राहम, इसहाक का पिता बना[8] और आठवें दिन उसका खतना किया।[9] और इसहाक से याकूब पैदा हुआ* और याकूब के 12 बेटे हुए जो अपने घराने के मुखिया# बने। **9** वे अपने भाई यूसुफ से जलने लगे[10] और उन्होंने उसे मिस्रियों को बेच दिया।[11] मगर परमेश्वर यूसुफ के साथ था।[12] **10** परमेश्वर ने उसे सारी मुसीबतों से छुड़ाया और इस काबिल बनाया कि उसने फिरौन का दिल जीत लिया और वह उसके सामने बुद्धिमान ठहरा। और फिरौन ने उसे मिस्र और अपने पूरे घराने का अधिकारी बनाया।[13] **11** मगर फिर पूरे मिस्र और कनान देश

7:6 *या "बुरा सलूक करेंगे।" **7:8** *या शायद, "उसी तरह याकूब का खतना किया।" #या "कुलपिता।"

अध्य. 6
1 यश 54:17; लूक 21:15; प्रेष 6:3

अध्य. 7
2 उत 11:31
3 उत 12:1

दूसरा कॉल.
1 उत 11:32
2 उत 12:4, 5; इब्र 11:8
3 उत 12:7; उत 13:14, 15; उत 17:1, 8
4 उत 15:13; निर्ग 12:40
5 उत 15:14
6 निर्ग 3:12
7 उत 17:9, 10
8 उत 21:1-3
9 उत 21:4
10 उत 37:9-11
11 उत 37:28; उत 45:4
12 उत 39:2, 3
13 उत 41:40-46

पर एक बड़ी मुसीबत टूट पड़ी, वहाँ
अकाल पड़ा और हमारे पुरखों को कहीं
भी खाने की चीज़ें नहीं मिल पा रही
थीं।[1] **12** मगर जब याकूब ने सुना
कि मिस्र में खाने-पीने की चीज़ें* हैं,
तो उसने अपने बेटों यानी हमारे पुरखों
को पहली बार वहाँ भेजा।[2] **13** और
जब वे दूसरी बार वहाँ गए, तब यूसुफ
ने अपने भाइयों को बताया कि वह कौन
है और फिरौन को उसके परिवार के
बारे में मालूम हुआ।[3] **14** तब यूसुफ ने
अपने पिता याकूब को और अपने घराने
के सभी लोगों को कनान से बुलवा
लिया,[4] जो कुल मिलाकर 75 लोग थे।[5]
15 तब याकूब मिस्र में आकर रहने
लगा।[6] और वहीं उसकी मौत हुई[7] और
हमारे पुरखों की भी मौत हुई[8] **16** और
उनकी हड्डियाँ शेकेम लायी गयीं और उस
कब्र में रखी गयीं जिसे अब्राहम ने
चाँदी देकर शेकेम में हमोर के बेटों से
खरीदा था।[9]

17 और परमेश्वर ने अब्राहम से जो
वादा किया था, जैसे-जैसे उसके पूरा
होने का वक्त पास आ रहा था, वैसे-
वैसे अब्राहम के वंशज मिस्र में बढ़ते
गए और उनकी गिनती बहुत हो गयी।
18 फिर मिस्र में दूसरा राजा हुआ, जो
यूसुफ को नहीं जानता था।[10] **19** उसने
हमारी जाति के खिलाफ एक चाल
चली और हमारे पुरखों को मजबूर
किया कि वे अपने बच्चों को पैदा होते ही
मरने के लिए छोड़ दें।[11] **20** उस
दौरान मूसा पैदा हुआ और वह बहुत
सुंदर* था। तीन महीने तक तो उसके
माता-पिता ने उसे घर में पाला-पोसा।#[12]
21 मगर जब उसे छोड़ दिया गया,[1] तो
फिरौन की बेटी ने उसे उठा लिया और
अपने बेटे की तरह उसकी परवरिश
की।[2] **22** और मूसा को मिस्रियों की
हर तरह की शिक्षा दी गयी। यही नहीं,
वह दमदार तरीके से बोलता था और
बड़े-बड़े काम करता था।[3]

23 जब वह 40 साल का हुआ, तो
उसके दिल में यह बात आयी* कि वह
जाकर अपने भाइयों को यानी दूसरे इस-
राएलियों को देख आए।#[4] **24** जब
उसने देखा कि एक मिस्री एक इस-
राएली के साथ अन्याय कर रहा है,
तो उसने जाकर उसे बचाया और मिस्री
को मारकर उस इसराएली की तरफ से
बदला लिया। **25** उसने सोचा कि इस-
राएली यह समझ जाएँगे कि परमेश्वर
उसके ज़रिए उन्हें छुड़ा रहा है, मगर
उन्होंने ऐसा नहीं समझा। **26** अगले
दिन जब दो इसराएली आपस में झगड़
रहे थे, तो वह उनके सामने गया और
उसने उनके बीच सुलह करवाने के लिए
कहा, 'तुम तो भाई-भाई हो। फिर क्यों
एक-दूसरे के साथ बुरा सलूक कर रहे
हो?' **27** मगर जो अपने साथी इस-
राएली के साथ बुरा सलूक कर रहा था,
उसने मूसा को धक्का दिया और कहा,
'तुझे किसने हमारा अधिकारी और न्यायी
ठहराया है? **28** क्या तू मुझे भी मार
डालना चाहता है, जैसे तूने कल उस मिस्री
को मार डाला था?' **29** यह सुनकर
मूसा वहाँ से भाग गया और मिद्यान देश में
परदेसी की तरह रहने लगा। वहाँ उसके
दो बेटे पैदा हुए।[5]

30 फिर 40 साल बाद, जब मूसा
सीनै पहाड़ के पास वीराने में था, तो

अध्य. 7
1 उत 41:54; उत 42:5
2 उत 42:2, 6
3 उत 45:1, 16
4 उत 45:9-11
5 उत 46:27; व्य 10:22
6 उत 46:29; व्य 26:5
7 उत 49:33
8 निर्ग 1:6
9 उत 23:16; निर्ग 13:19; यह 24:32
10 निर्ग 1:7, 8
11 निर्ग 1:10, 22
12 निर्ग 2:2; इब्र 11:23

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 2:3
2 निर्ग 2:5, 10
3 निर्ग 11:3
4 निर्ग 2:11-15
5 निर्ग 2:21, 22; निर्ग 18:2-4

7:12 *या "अनाज।" **7:20** *या "पर-मेश्वर की नज़र में सुंदर।" #या "दूध पिलाया।"

7:23 *या "उसने फैसला किया।" #या "का हाल देख आए।"

एक स्वर्गदूत उसके सामने एक जलती हुई
कँटीली झाड़ी की लपटों में प्रकट हुआ।[1]
31 जब मूसा ने यह देखा, तो वह दंग
रह गया। जब वह उसे देखने के लिए
पास जा रहा था तो उसे यहोवा* की
यह आवाज़ सुनायी दी, 32 'मैं तेरे
पुरखों का परमेश्वर हूँ, अब्राहम का
परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और
याकूब का परमेश्वर।'[2] यह सुनकर
मूसा काँपने लगा और उसने और आगे
जाकर देखने की हिम्मत नहीं की।
33 यहोवा* ने उससे कहा, 'तू अपने
पाँवों की जूतियाँ उतार दे क्योंकि जिस
ज़मीन पर तू खड़ा है वह पवित्र है।
34 बेशक मैंने देखा है कि मिस्र में
मेरे लोगों पर कितने ज़ुल्म किए जा
रहे हैं और मैंने उनका कराहना सुना है।[3]
मैं उन्हें छुड़ाने के लिए नीचे आया
हूँ। अब आ, मैं तुझे मिस्र भेजूँगा।'
35 जिस मूसा को उन्होंने यह कहकर
ठुकरा दिया था, 'तुझे किसने हमारा
अधिकारी और न्यायी ठहराया है?'[4]
उसी को परमेश्वर ने अधिकारी और
छुड़ानेवाला ठहराकर उस स्वर्गदूत के
ज़रिए भेजा,[5] जो कँटीली झाड़ी में उसे
दिखायी दिया था। 36 इसी मूसा ने
उन्हें मिस्र और लाल सागर[6] में चमत्कार
और आश्चर्य के काम दिखाए[7] और उन्हें
वहाँ से निकाल लाया।[8] उसने 40 साल
वीराने में भी ऐसे आश्चर्य के काम
किए।[9]

37 यह वही मूसा है जिसने इस-
राएलियों से कहा था, 'परमेश्वर तुम्हारे
भाइयों के बीच में से तुम्हारे लिए मेरे
जैसा एक भविष्यवक्ता खड़ा करेगा।'[10]
38 यह वही मूसा है जो वीराने में इस-
राएल की मंडली के बीच था और उस
स्वर्गदूत के साथ था,[1] जिसने सीनै पहाड़
पर उससे बात की थी।[2] मूसा ने ही हमारे
पुरखों से बात की थी और जीवित और
पवित्र वचन पाए थे ताकि हम तक पहुँ-
चाए।[3] 39 हमारे पुरखों ने उसकी बात
मानने से इनकार कर दिया और उसे
ठुकरा दिया[4] और वे मन-ही-मन मिस्र
लौटने के सपने देखने लगे।[5] 40 और
उन्होंने हारून से कहा, 'पता नहीं उस
मूसा का क्या हुआ, जो हमें मिस्र से
निकालकर यहाँ ले आया था। इसलिए
अब हमारे लिए देवता बना कि वे हमारी
अगुवाई करें।'[6] 41 फिर उन्होंने बछड़े
की एक मूरत बनायी और उस मूरत के
आगे बलि चढ़ायी और अपने हाथों से
बनायी उस मूरत के सामने मौज-मस्ती
करने लगे।[7] 42 इसलिए परमेश्वर ने
उनसे मुँह फेर लिया और उन्हें आकाश
की सेना को पूजने के लिए छोड़ दिया,[8]
ठीक जैसा भविष्यवक्ताओं की किताब में
लिखा है, 'हे इसराएल के घराने, वीराने
में उन 40 सालों के दौरान क्या तूने
बलिदान और चढ़ावे मुझे ही दिए थे?
43 नहीं, बल्कि तुम मोलोक के तंबू[9]
और रिफान देवता के तारे की मूरत लिए
फिरते रहे, जिन्हें तुमने इसलिए बनाया
था कि तुम उनकी पूजा करो। इसलिए मैं
तुम्हें देश से निकालकर बैबिलोन के उस
पार भेज दूँगा।'[10]

44 हमारे पुरखों के पास वीराने में
गवाही का तंबू था, जिसके बारे में
परमेश्वर ने मूसा को आदेश दिए थे
कि उसे जो नमूना दिखाया गया है,
उसी के मुताबिक वह तंबू बनाए।[11]
45 यह हमारे पुरखों को दिया गया और
वे इसे यहोशू के साथ इस देश में ले
आए, जिस पर दूसरी जातियों का कब्ज़ा
था[12] और जिन्हें परमेश्वर ने हमारे पुरखों

7:31, 33 *अति. क5 देखें।

अध्य. 7
1 निर्ग 3:2-10
2 निर्ग 3:6, मर 12:26, लूक 20:37
3 निर्ग 2:23, 24
4 निर्ग 2:14, प्रेष 7:27
5 निर्ग 4:19
6 निर्ग 14:21, 22, निर्ग 15:4, 5
7 निर्ग 7:3
8 निर्ग 12:41
9 निर्ग 16:35, गि 14:33, 34
10 व्य 18:15, प्रेष 3:22

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 7:53, गल 3:19
2 निर्ग 19:3, व्य 5:27
3 निर्ग 21:1, व्य 9:10
4 गि 14:3, 4
5 निर्ग 16:3
6 निर्ग 32:1, 23
7 निर्ग 32:4, 6
8 2रा 17:16
9 1रा 11:7
10 यिर्म 25:11, आम 5:25-27
11 निर्ग 25:40
12 व्य 3:28, व्य 31:3, यह 3:14

के सामने से खदेड़ दिया था।[1] गवाही का
यह तंबू दाविद के दिनों तक यहीं रहा।
46 दाविद पर परमेश्‍वर की कृपा थी
और उसने बिनती की कि उसे याकूब के
परमेश्‍वर के निवास के लिए एक भवन
बनाने का मौका दिया जाए।[2] 47 मगर
उसने नहीं बल्कि सुलैमान ने यह भवन
बनाया।[3] 48 फिर भी, परम-प्रधान
परमेश्‍वर हाथ के बनाए भवनों में नहीं
रहता,[4] ठीक जैसे एक भविष्यवक्‍ता ने
बताया था, 49 'यहोवा* कहता है,
स्वर्ग मेरी राजगद्दी है[5] और पृथ्वी मेरे
पाँवों की चौकी।[6] तो फिर तुम मेरे लिए
कैसा भवन बनाओगे? मेरे रहने के लिए
कहाँ जगह बनाओगे? 50 क्या मेरे ही
हाथों ने इन सब चीज़ों को नहीं रचा?'[7]

51 अरे ढीठ लोगो, तुमने अपने कान
और अपने दिल के दरवाज़े बंद कर
रखे हैं। तुम हमेशा से पवित्र शक्‍ति
का विरोध करते आए हो। तुम वही
करते हो जो तुम्हारे बाप-दादा करते थे।[8]
52 ऐसा कौन-सा भविष्यवक्‍ता हुआ है
जिस पर तुम्हारे पुरखों ने ज़ुल्म नहीं
ढाए?[9] हाँ, उन्होंने उन लोगों को मार
डाला जिन्होंने पहले से उस नेक जन के
आने का ऐलान किया था।[10] और अब
तुमने भी उसके साथ विश्‍वासघात किया
और उसका खून कर दिया।[11] 53 हाँ
तुमने ही ऐसा किया। तुम्हें स्वर्गदूतों के
ज़रिए पहुँचाया गया कानून मिला,[12]
मगर तुम उस पर नहीं चले।"

54 जब उन्होंने ये बातें सुनीं, तो वे
तिलमिला उठे और उस पर दाँत पीसने
लगे। 55 मगर उसने पवित्र शक्‍ति से
भरकर स्वर्ग की तरफ एकटक देखा और
उसे परमेश्‍वर की महिमा दिखायी दी और
उसने यीशु को परमेश्‍वर के दाएँ हाथ
खड़े देखा[1] 56 और कहा, "देखो! मैं
स्वर्ग को खुला हुआ और इंसान के
बेटे[2] को परमेश्‍वर के दाएँ हाथ[3] खड़ा
देख रहा हूँ।" 57 यह सुनते ही वे चीख
उठे और हाथों से अपने कान बंद कर
लिए और सब मिलकर उस पर लपक
पड़े। 58 और उसे खदेड़कर शहर के
बाहर ले गए और पत्थरों से मारने लगे।[4]
स्तिफनुस के खिलाफ झूठी गवाही देने-
वालों[5] ने अपने चोगे उतारकर शाऊल
नाम के एक नौजवान के पाँवों के
पास रख दिए।[6] 59 जब वे स्तिफ-
नुस को पत्थर मार रहे थे, तो उसने
यह प्रार्थना की, "हे प्रभु यीशु, मैं अपनी
जान* तेरे हवाले करता हूँ।" 60 फिर
उसने घुटने टेककर बड़ी ज़ोर से पुकारा,
"यहोवा,* यह पाप इनके सिर मत
लगाना।"[7] यह कहने के बाद वह मौत
की नींद सो गया।

8 शाऊल ने भी स्तिफनुस के कत्ल में
साथ दिया।[8]

उस दिन से यरूशलेम की मंडली पर
बहुत ज़ुल्म होने लगे। प्रेषितों को छोड़
बाकी सभी चेले यहूदिया और साम-
रिया के इलाकों में तितर-बितर हो गए।[9]
2 मगर कुछ भक्‍त जन स्तिफनुस को
दफनाने ले गए और उन्होंने उसके लिए
बहुत मातम मनाया। 3 शाऊल मंडली
को तबाह करने लगा। वह घर-घर
घुसकर आदमी-औरत सबको घसीट-
कर निकालता और उन्हें जेल में डलवा
देता था।[10]

4 मगर जो चेले तितर-बितर हो गए
थे वे जहाँ कहीं गए, वहाँ वचन की
खुशखबरी सुनाते गए।[11] 5 फिलिप्पुस

अध्य. 7
1 उत 17:1, 8; यह 23:9; यह 24:18
2 2शम 7:2; 1इत 22:7; भज 132:1-5
3 1रा 6:1
4 प्रेष 17:24
5 भज 11:4
6 मत 5:34, 35
7 यश 66:1, 2; इब्र 3:4
8 यश 63:10
9 2इत 36:16
10 मत 23:31
11 यश 53:8; प्रेष 3:13, 14
12 प्रेष 7:38; गल 3:19

दूसरा कॉल.
1 भज 110:1; मत 26:64
2 दान 7:13
3 रोम 8:34
4 लैव 24:14, 16; मत 23:37; यूह 16:2
5 व्य 17:7
6 प्रेष 8:1; प्रेष 22:20
7 मत 5:44

अध्य. 8
8 प्रेष 7:58
9 मत 10:23; प्रेष 11:19
10 प्रेष 9:1, 2; प्रेष 22:4; प्रेष 26:10; गल 1:13; फिल 3:5, 6
11 प्रेष 11:19

7:49, 60 *अति. क5 देखें।

7:59 *शब्दावली में "रूआख; नफ्मा" देखें।

नाम का चेला सामरिया[1] शहर* गया
और वहाँ मसीह के बारे में प्रचार करने
लगा। 6 लोगों की भीड़ ने फिलिप्पुस
की बातों पर ध्यान दिया और मन लगा-
कर उन्हें सुना और उसके चमत्कार देखे।
7 वहाँ ऐसे बहुत-से लोग थे जिनमें दुष्ट
स्वर्गदूत समाए थे और वे ज़ोर से चीखते
हुए उनसे बाहर निकल जाते थे।[2] इसके
अलावा, कई लोग जो लकवे के मारे थे
और लँगड़े थे वे भी ठीक हो गए।
8 इससे पूरे शहर में खुशियाँ छा गयी।

9 सामरिया शहर में शमौन नाम का
एक आदमी था, जिसने अपनी जादू-
गरी से लोगों को हैरत में डाल रखा था।
वह खुद को एक महापुरुष बताता था।
10 छोटे से लेकर बड़े तक, सब उस पर
ध्यान देते थे और कहते थे, "इस आदमी
में परमेश्वर की शक्ति है, महाशक्ति।"
11 उसने उन्हें काफी समय से अपनी
जादूगरी से हैरत में डाल रखा था इस-
लिए वे उस पर ध्यान देते थे। 12 मगर
जब उन्होंने फिलिप्पुस का यकीन किया,
जो उन्हें परमेश्वर के राज की और
यीशु मसीह के नाम की खुशखबरी
सुना रहा था,[3] तो आदमी-औरत सबने
बपतिस्मा लिया।[4] 13 शमौन भी एक
विश्वासी बन गया और बपतिस्मा लेने के
बाद फिलिप्पुस[5] के साथ-साथ रहने
लगा। वह उसके चमत्कार और बड़े-
बड़े शक्तिशाली काम देखकर दंग रह
जाता था।

14 जब यरूशलेम में प्रेषितों ने सुना
कि सामरिया के लोगों ने परमेश्वर का
वचन स्वीकार किया है,[6] तो उन्होंने पत-
रस और यूहन्ना को उनके पास भेजा।
15 उन्होंने वहाँ जाकर उनके लिए
प्रार्थना की कि वे पवित्र शक्ति पाएँ।[1]
16 क्योंकि तब तक उनमें से किसी पर
भी पवित्र शक्ति नहीं उतरी थी, मगर
उन्होंने प्रभु यीशु के नाम से सिर्फ बप-
तिस्मा लिया था।[2] 17 तब पतरस और
यूहन्ना ने उन पर हाथ रखे[3] और वे
पवित्र शक्ति पाने लगे।

18 अब जब शमौन ने देखा कि
प्रेषितों के हाथ रखने से पवित्र शक्ति
मिलती है, तो उसने उन्हें पैसा देते हुए
19 कहा, "मुझे भी यह अधिकार दो कि
जिस किसी पर मैं अपने हाथ रखूँ वह
पवित्र शक्ति पाए।" 20 मगर पतरस
ने उससे कहा, "तेरी चाँदी तेरे संग
नाश हो, क्योंकि तूने सोचा कि तू पर-
मेश्वर के मुफ्त वरदान को पैसों से खरीद
सकता है।[4] 21 लेकिन इस सेवा में न
तेरा कोई साझा है, न हिस्सा क्योंकि पर-
मेश्वर की नज़र में तेरा दिल सीधा नहीं
है। 22 इसलिए अपनी यह बुराई छोड़
और पश्चाताप करके यहोवा* से मिन्नत
कर कि हो सके तो तेरे दिल का यह दुष्ट
विचार माफ किया जाए 23 क्योंकि मैं
देख सकता हूँ कि तेरे दिल में ज़हर
भरा है* और तू बुराई का गुलाम है।"
24 तब शमौन ने उनसे कहा, "मेहरबानी
करके मेरे लिए यहोवा* से मिन्नत करो
कि जो बातें तुमने कही हैं, उनमें से कोई
भी मुझ पर न आ पड़े।"

25 इस तरह जब पतरस और यूहन्ना
सारे इलाके में अच्छी तरह गवाही दे
चुके और यहोवा* का वचन सुना चुके,
तो वे यरूशलेम लौट चले और रास्ते में
सामरियों के बहुत-से गाँवों में खुशखबरी
सुनाते गए।[5]

अध्य. 8
1 यूह 4:39-42; प्रेष 1:8
2 मत 10:1; मर 6:7
3 लूक 8:1
4 मत 28:19; प्रेष 18:8
5 प्रेष 6:5
6 प्रेष 11:1

दूसरा कॉल.
1 मत 16:19
2 प्रेष 10:47, 48; प्रेष 19:2, 3
3 प्रेष 6:5, 6; प्रेष 19:6; 2ती 1:6
4 मत 10:8; प्रेष 10:45
5 मत 9:35; प्रेष 1:8

8:5 *या शायद, "एक शहर।"

8:22, 24, 25 *अति. क5 देखें। **8:23** *शा., "तू कड़वा पित्त है।"

26 मगर यहोवा* के स्वर्गदूत[1] ने
फिलिप्पुस से कहा, "उठ और दक्षिण
की तरफ उस रास्ते पर जा जो यरू-
शलेम से गाज़ा जाता है।" (यह एक
सुनसान रास्ता है।) **27** यह सुनकर
फिलिप्पुस उठा और निकल पड़ा और
उसे रास्ते में इथियोपिया का एक
खोजा* मिला। यह खोजा इथियोपिया
की रानी कन्दाके के दरबार में ऊँचे पद
पर था और उसके सारे खज़ाने का अधि-
कारी था। वह यरूशलेम में उपासना
करने गया था[2] **28** और अब लौट रहा
था। वह अपने रथ पर बैठा ऊँची
आवाज़ में भविष्यवक्ता यशायाह की
किताब पढ़ रहा था। **29** तब पवित्र
शक्ति ने फिलिप्पुस से कहा, "जा,
उस रथ के पास जा।" **30** फिलिप्पुस
उस रथ के साथ-साथ दौड़ने लगा और
उसने खोजे को भविष्यवक्ता यशायाह की
किताब पढ़ते सुना और उससे पूछा, "तू
जो पढ़ रहा है, क्या उसे समझता भी है?"
31 उसने कहा, "जब तक कोई मुझे न
समझाए, मैं भला कैसे समझ सकता हूँ?"
फिर उसने फिलिप्पुस से बिनती की कि
वह रथ पर चढ़कर उसके साथ बैठ
जाए। **32** शास्त्र का जो हिस्सा वह पढ़
रहा था वह यह था: "वह भेड़ की
तरह बलि होने के लिए लाया गया।
जैसे मेम्ना अपने ऊन कतरनेवाले के
सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने
अपने मुँह से एक शब्द नहीं निकाला।[3]
33 जब उसका अपमान हो रहा था, तो
उसके साथ न्याय नहीं किया गया।[4] यह
कौन बताएगा कि वह कौन है, कहाँ से
आया है? क्योंकि धरती से उसका जीवन
ले लिया गया।"[5]

8:26, 39 *अति. क5 देखें। **8:27** *या
"दरबारी।"

अध्य. 8

1 इब्र 1:7, 14
प्रक 14:6

2 2इत 6:32, 33

3 1पत 2:23

4 मत 26:59

5 यश 53:7, 8
दान 9:26
फिल 2:8

दूसरा कॉल.

1 प्रेष 21:8

अध्य. 9

2 प्रेष 8:3
प्रेष 22:4
प्रेष 26:10, 11
गल 1:13
1ती 1:12, 13

3 प्रेष 11:26
प्रेष 22:4

4 प्रेष 22:6-11
प्रेष 26:13-18

34 तब खोजे ने फिलिप्पुस से कहा,
"मेहरबानी करके मुझे बता कि भविष्य-
वक्ता यह किसके बारे में कह रहा है?
अपने बारे में या किसी दूसरे के बारे में?"
35 तब फिलिप्पुस ने बोलना शुरू किया
और शास्त्र के इस वचन से शुरू करते हुए
उसे यीशु के बारे में खुशखबरी सुनायी।
36 जब वे सड़क पर जा रहे थे, तो वे
एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ काफी पानी
था और खोजे ने कहा, "देख! यहाँ पानी
है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रुका-
वट है?" **37** *— **38** तब खोजे ने
रथ रुकवाया और वे दोनों पानी में उतरे
और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया।
39 जब वे पानी से बाहर निकले, तो
यहोवा* की पवित्र शक्ति फिलिप्पुस को
वहाँ से फौरन कहीं और ले गयी और
खोजा उसे फिर नहीं देख पाया और
वह खुशी-खुशी अपने रास्ते चल दिया।
40 इसके बाद, फिलिप्पुस ने खुद को
अशदोद में पाया और कैसरिया[1] पहुँचने
तक वह सभी इलाकों और शहरों में खुश-
खबरी सुनाता गया।

9 मगर शाऊल पर अब भी प्रभु के
चेलों को धमकाने और मार
डालने का जुनून सवार था।[2] इसलिए
वह महायाजक के पास गया **2** और
उससे दमिश्क शहर के सभा-घरों के नाम
चिट्ठियाँ माँगीं ताकि 'प्रभु की राह' पर
चलनेवाला जो भी मिले, चाहे आदमी हो
या औरत, उन्हें गिरफ्तार करके* यरू-
शलेम ले आए।[3]

3 जब वह दमिश्क पहुँचनेवाला था,
तो रास्ते में अचानक उसके चारों तरफ
आकाश से रौशनी चमक उठी।[4] **4** तब
वह ज़मीन पर गिर पड़ा और उसने एक

8:37 *अति. क3 देखें। **9:2** *या "बाँध-
कर।"

आवाज़ सुनी जो उससे कह रही थी,
“शाऊल, शाऊल, तू क्यों मुझ पर ज़ुल्म
कर रहा है?” 5 शाऊल ने कहा, “हे
प्रभु, तू कौन है?” उसने कहा, “मैं यीशु
हूँ,[1] जिस पर तू ज़ुल्म कर रहा है।[2]
6 मगर अब उठ और शहर में जा और
जो तुझे करना है वह तुझे बता दिया
जाएगा।” 7 जो आदमी शाऊल के
साथ सफर कर रहे थे, वे हक्के-बक्के रह
गए और वहीं खड़े रहे। उन्हें कुछ आवाज़
तो आ रही थी मगर कोई दिखायी नहीं दे
रहा था।[3] 8 तब शाऊल ज़मीन से उठ-
कर खड़ा हुआ। उसकी आँखें तो खुली थीं
मगर वह कुछ देख नहीं पा रहा था। इस-
लिए वे उसे हाथ पकड़कर ले गए और
दमिश्क पहुँचा दिया। 9 तीन दिन तक
शाऊल कुछ नहीं देख पाया और न उसने
कुछ खाया, न पीया।[4]

10 वहाँ दमिश्क में हनन्याह नाम का
एक चेला था[5] और प्रभु ने एक दर्शन
में उससे कहा, “हनन्याह!” उसने कहा,
“हाँ, प्रभु!” 11 प्रभु ने उससे कहा,
“उठ, उस गली में जा जो सीधी कह-
लाती है। वहाँ यहूदा के घर में जाकर
शाऊल नाम के आदमी के बारे में पूछ
जो तरसुस का रहनेवाला है।[6] क्योंकि
देख! वह प्रार्थना कर रहा है 12 और
उसने एक दर्शन में देखा है कि हनन्याह
नाम का एक आदमी उसके पास आया
और उसने उसके ऊपर हाथ रखा ताकि
उसकी आँखों की रौशनी लौट आए।”[7]
13 मगर हनन्याह ने कहा, “प्रभु, मैंने
उस आदमी के बारे में कई लोगों से
सुना है कि उसने यरूशलेम में तेरे
पवित्र जनों को कितना दुख दिया है।
14 अब उसके पास प्रधान याजकों की
तरफ से यह अधिकार है कि जितने तेरा
नाम लेते हैं, उन सबको गिरफ्तार कर
ले।”*[1] 15 मगर प्रभु ने उससे कहा,
“तू उसके पास जा क्योंकि मैंने उसे
चुना है*[2] ताकि वह गैर-यहूदियों को,
साथ ही राजाओं[3] और इसराएलियों को
मेरे नाम की गवाही दे।[4] 16 मैं उस पर
साफ ज़ाहिर करूँगा कि उसे मेरे नाम की
खातिर कितने दुख सहने होंगे।”[5]

17 तब हनन्याह चल पड़ा और उस
घर में गया जहाँ शाऊल था। उसने
अपने हाथ शाऊल पर रखे और कहा,
“शाऊल, मेरे भाई, प्रभु यीशु जिसने उस
सड़क पर तुझे दर्शन दिया था जहाँ से तू
आ रहा था, उसी ने मुझे तेरे पास भेजा
है ताकि तेरी आँखों की रौशनी लौट आए
और तू पवित्र शक्ति से भर जाए।”[6]
18 उसी घड़ी शाऊल की आँखों से
छिलकों जैसा कुछ गिरा और वह फिर
से देखने लगा और उसने उठकर बप-
तिस्मा लिया। 19 उसने खाना खाया
और ताकत पायी।

शाऊल कुछ दिनों तक दमिश्क[7] में
चेलों के साथ रहा 20 और उसने तुरंत
वहाँ के सभा-घरों में यीशु का प्रचार
करना शुरू कर दिया कि वही परमेश्वर
का बेटा है। 21 मगर जितनों ने भी
उसके बारे में सुना, वे सब दंग रह गए
और कहने लगे, “यह तो वही आदमी है
न, जो यरूशलेम में यीशु का नाम लेने-
वालों पर ज़ुल्म कर रहा था?[8] क्या वह
यहाँ भी इसी इरादे से नहीं आया था कि
चेलों को गिरफ्तार करके* प्रधान याजकों
के पास ले जाए?”[9] 22 लेकिन शाऊल
सिखाने में और भी दमदार होता गया।
वह बढ़िया तर्क देकर साबित करता था

अध्य. 9
1 1कुर 15:8
2 मत 25:45
3 प्रेष 22:9
4 प्रेष 13:11
5 प्रेष 22:12
6 प्रेष 21:39 प्रेष 22:3
7 प्रेष 9:17

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 9:1, 2
2 प्रेष 13:2 रोम 1:1 1ती 1:12
3 प्रेष 26:1 प्रेष 27:24
4 रोम 1:5 गल 2:7 1ती 2:7
5 प्रेष 20:22, 23 प्रेष 21:11 2कुर 11:23-28 कुल 1:24 2ती 1:12
6 प्रेष 22:12, 13
7 प्रेष 26:19, 20
8 प्रेष 8:3 गल 1:13, 23
9 प्रेष 9:1, 2

9:14 *शा., “बाँध ले; जेल में डाल दे।”
9:15 *या “वह मेरा चुना हुआ पात्र है।”
9:21 *शा., “उन्हें बाँधकर।”

कि यीशु ही मसीह है और दमिश्क के यहूदियों का मुँह बंद कर देता था।[1]

23 इस तरह जब कई दिन गुज़र गए, तो यहूदियों ने उसे मार डालने के लिए मिलकर साज़िश की।[2] **24** मगर शाऊल को उनकी साज़िश का पता चल गया। यहूदी उसे मार डालने के लिए दिन-रात शहर के फाटकों पर नज़र रखे हुए थे। **25** इसलिए उसके चेलों ने रातों-रात उसे एक बड़े टोकरे में बिठाकर शहरपनाह में बनी एक खिड़की से नीचे उतार दिया।[3]

26 जब वह यरूशलेम[4] पहुँचा तो उसने चेलों के साथ जुड़ने की कोशिश की, मगर सभी उससे डरते थे क्योंकि उन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि वह भी एक चेला बन चुका है। **27** इसलिए बरनबास[5] उसकी मदद के लिए आगे आया और उसे प्रेषितों के पास ले गया। बरनबास ने उन्हें पूरी जानकारी दी कि कैसे शाऊल ने सड़क पर प्रभु को देखा था[6] और यह भी कि प्रभु ने उससे बात की थी और कैसे उसने दमिश्क में निडर होकर यीशु के नाम से प्रचार किया था।[7] **28** इसलिए शाऊल यरूशलेम में चेलों के साथ रहा और वहाँ खुलेआम आता-जाता था और प्रभु के नाम से निडर होकर बात करता था। **29** वह यूनानी बोलनेवाले यहूदियों से बातचीत और बहस किया करता था। मगर उन लोगों ने उसे खत्म करने की कोशिश की।[8] **30** जब यह बात भाइयों को पता चली, तो वे उसे कैसरिया ले आए और वहाँ से उसे तरसुस[9] भेज दिया।

31 इसके बाद सारे यहूदिया, गलील और सामरिया में मंडली के लिए शांति का दौर शुरू हुआ[10] और वह विश्वास में मज़बूत होती गयी। मंडली यहोवा* का डर मानती रही और पवित्र शक्ति[1] से दिलासा पाती रही और उसमें बढ़ोतरी होती गयी।

32 जब पतरस पूरे इलाके का दौरा कर रहा था, तो वह लुद्दा शहर में रहनेवाले पवित्र जनों के पास भी आया।[2] **33** वहाँ उसे ऐनियास नाम का एक आदमी मिला, जो आठ साल से लकवे की वजह से खाट पर पड़ा था। **34** पतरस ने उससे कहा, "ऐनियास, यीशु मसीह तेरी बीमारी दूर करता है।[3] उठ और अपना बिस्तर ठीक कर।"[4] वह फौरन उठ खड़ा हुआ। **35** जब लुद्दा और शारोन के मैदानी इलाके में रहनेवाले सभी लोगों ने उसे देखा, तो वे प्रभु की तरफ हो गए।

36 याफा शहर में तबीता नाम की एक शिष्या थी, जिसका नाम यूनानी में "दोरकास"* था। वह बहुत-से भले काम करती और दान दिया करती थी। **37** मगर उन दिनों वह बीमार पड़ गयी और मर गयी। उन्होंने उसे नहलाकर ऊपर के एक कमरे में रखा। **38** लुद्दा शहर याफा के पास ही था इसलिए जब चेलों ने सुना कि पतरस लुद्दा में है, तो उन्होंने दो आदमियों को भेजकर उससे बिनती की, "जल्दी से हमारे पास आ।" **39** तब पतरस उठकर उनके साथ गया। जब वह याफा पहुँचा तो वे उसे ऊपरी कमरे में ले गए और सारी विधवाएँ रोती हुई उसके पास आयीं। वे पतरस को वे कपड़े और कुरते दिखाने लगीं जो दोरकास ने उनके लिए बनाए थे। **40** फिर पतरस ने सबको बाहर जाने के लिए कहा[5] और घुटने टेककर प्रार्थना की।

अध्य. 9
1 प्रेष 17:2, 3
2 प्रेष 20:2, 3 प्रेष 23:12 2कुर 11:23
3 2कुर 11:32, 33
4 गल 1:18
5 प्रेष 4:36, 37
6 प्रेष 9:3, 4 1कुर 9:1
7 प्रेष 9:19, 20
8 2कुर 11:23, 26
9 प्रेष 11:25 गल 1:21
10 प्रेष 8:1

दूसरा कॉल.
1 यूह 14:16
2 प्रेष 9:38
3 मत 10:8 प्रेष 4:9, 10
4 प्रेष 3:6
5 लूक 8:51

9:31 *अति. क5 देखें। **9:36** *यूनानी नाम दोरकास और अरामी नाम तबीता, दोनों का मतलब "हिरनी" है।

इसके बाद उसने लाश की तरफ मुड़कर
कहा, “तबीता, उठ!” तबीता ने अपनी
आँखें खोलीं और जैसे ही उसने पत-
रस को देखा, वह उठ बैठी।[1] **41** पत-
रस ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे उठाया
और पवित्र जनों और विधवाओं को बुला-
कर उसे जीती-जागती उन्हें सौंप दिया।[2]
42 यह बात पूरे याफा में फैल गयी और
बहुत-से लोग प्रभु में विश्वासी बन गए।[3]
43 पतरस काफी दिनों तक याफा में ही
रहा। वह शमौन नाम के एक आदमी के
घर ठहरा, जो चमड़े का काम करता था।[4]

10 कैसरिया में कुरनेलियुस नाम
का एक आदमी था। वह उस
फौजी टुकड़ी का अफसर* था जो इताल-
वी टुकड़ी# कहलाती थी। **2** वह एक
भक्त इंसान था। वह और उसका पूरा
घराना परमेश्वर का डर मानता था। वह
लोगों को बहुत-से दान देता था और
परमेश्वर के सामने गिड़गिड़ाकर बिनती
किया करता था। **3** उसने दिन के
करीब नौवें घंटे*[5] में परमेश्वर के एक
स्वर्गदूत को दर्शन में साफ देखा, जिसने
उसके पास आकर कहा, “कुरनेलियुस!”
4 वह डर के मारे दूत को देखता रह गया
और उसने कहा, “प्रभु, क्या हुआ?” दूत
ने उससे कहा, “परमेश्वर ने तेरी प्रार्थनाएँ
सुनी हैं और जो दान तू देता है उन पर
ध्यान दिया है।[6] **5** इसलिए अब तू
अपने आदमी भेजकर याफा से शमौन को
बुलवा ले, जो पतरस भी कहलाता है।
6 वह चमड़े का काम करनेवाले शमौन
के यहाँ मेहमान है, जिसका घर समुंदर के
किनारे है।” **7** उस स्वर्गदूत के जाते ही
कुरनेलियुस ने अपने घर के दो सेवकों को
और परमेश्वर का डर माननेवाले अपने
एक सैनिक को बुलाया, जो हमेशा उसकी
सेवा में हाज़िर रहता था। **8** उसने उन्हें
पूरी बात बताकर याफा भेजा।

9 अगले दिन जब कुरनेलियुस के
सेवक सफर करते-करते शहर के पास
आ पहुँचे, तब छठे घंटे* के करीब पत-
रस प्रार्थना करने के लिए घर की छत पर
गया। **10** मगर उसे ज़ोरों की भूख लगी
और वह कुछ खाना चाहता था। जब
वे खाना तैयार कर रहे थे, तो उसे एक
दर्शन मिला।*[1] **11** और उसने देखा
कि आकाश खुल गया और बड़ी चादर
जैसा कुछ* नीचे आ रहा है। उसे चारों
कोनों से पकड़कर धरती पर उतारा जा
रहा है। **12** उसमें धरती पर पाए जाने-
वाले हर किस्म के जानवर* और रेंगने-
वाले जीव-जंतु और आकाश के पक्षी
हैं। **13** फिर पतरस को एक आवाज़
सुनायी दी, “पतरस उठ, इन्हें काटकर
खा!” **14** मगर उसने कहा, “नहीं प्रभु,
नहीं! मैंने कभी कोई दूषित और अशुद्ध
चीज़ नहीं खायी है।”[2] **15** फिर दूसरी
बार उसी आवाज़ ने उससे कहा, “तू अब
से उन चीज़ों को दूषित मत कहना जिन्हें
परमेश्वर ने शुद्ध किया है।” **16** तीन
बार ऐसा हुआ और फिर वह चादर जैसी
चीज़* फौरन आकाश में उठा ली गयी।

17 पतरस बड़ी उलझन में था कि
इस दर्शन का क्या मतलब हो सकता
है। वह इस बारे में सोच ही रहा था
कि तभी कुरनेलियुस के आदमी शमौन

अध्य. 9
1 मत 9:24, 25
लूक 7:14, 15
यूह 11:43, 44
2 1रा 17:23
3 यूह 11:44, 45
4 प्रेष 10:6, 32

अध्य. 10
5 प्रेष 3:1
6 भज 65:2

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 11:5-10
2 लैव 11:4
लैव 11:13-20
लैव 20:25
व्य 14:3, 19
यहे 4:14

10:1 *या “शतपति,” जिसकी कमान में 100 सैनिक होते थे। #या “टोली,” 600 सैनिकों से बनी रोमी टुकड़ी। **10:3** *यानी दोपहर करीब 3 बजे।

10:9 *यानी दोपहर करीब 12 बजे। **10:10** *या “उस पर बेसुधी छा गयी।” **10:11** *शा., “एक तरह का बरतन।” **10:12** *शा., “चार-पैरोंवाले प्राणी।” **10:16** *शा., “बरतन।”

का घर पूछते-पूछते उसके दरवाज़े पर आ
खड़े हुए।[1] **18** उन्होंने ज़ोर से आवाज़
लगायी और पूछा कि शमौन जो पतरस
कहलाता है, क्या वह यहीं ठहरा हुआ है।
19 पतरस दर्शन के बारे में सोच रहा था
और पवित्र शक्ति[2] ने उससे कहा, “देख!
तीन आदमी तेरे बारे में पूछ रहे हैं।
20 उठ, नीचे जा और उनके साथ बे-
झिझक चला जा, क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा
है।” **21** तब पतरस सीढ़ियाँ उतरकर
उन आदमियों के पास गया और उसने
कहा, “देखो! तुम जिसे ढूँढ़ रहे हो,
वह मैं ही हूँ। यहाँ कैसे आना हुआ?”
22 उन्होंने कहा, “सेना-अफसर कुरने-
लियुस[3] ने हमें भेजा है। वह परमेश्वर का
डर माननेवाला नेक इंसान है। सारे यहूदी
भी उसकी तारीफ करते हैं। एक पवित्र
स्वर्गदूत ने उसे परमेश्वर की तरफ से
हिदायत दी है कि तुझे बुलवा ले और
जो बातें तू बताएगा उन्हें सुने।” **23** यह
सुनकर पतरस ने उन्हें अंदर बुलाया और
अपना मेहमान बनाकर वहाँ ठहराया।

अगले दिन पतरस उठा और उनके
साथ निकल पड़ा और याफा के कुछ भाई
भी उसके साथ गए। **24** दूसरे दिन वह
कैसरिया पहुँचा। वहाँ कुरनेलियुस उनका
इंतज़ार कर रहा था। उसने अपने रिश्ते-
दारों और करीबी दोस्तों को भी अपने घर
बुला रखा था। **25** जब पतरस घर के
अंदर गया, तो कुरनेलियुस उससे मिला
और उसने पतरस के पैरों पर गिर-
कर उसे प्रणाम* किया। **26** मगर पत-
रस ने उसे उठाकर कहा, “खड़ा हो, मैं भी
तेरे जैसा एक इंसान हूँ।”[4] **27** पतरस
उससे बातें करता हुआ अंदर गया और
उसने देखा कि वहाँ बहुत लोग जमा
हैं। **28** उसने उनसे कहा, “तुम अच्छी
तरह जानते हो कि एक यहूदी के लिए
दूसरी जाति के किसी इंसान से मिलना-
जुलना या उसके यहाँ जाना भी नियम के
खिलाफ है।[1] मगर फिर भी परमेश्वर ने
मुझे दिखाया है कि मैं किसी भी इंसान को
दूषित या अशुद्ध न कहूँ।[2] **29** इसलिए
जब मुझे बुलाया गया, तो मैं बिना किसी
एतराज़ के चला आया। अब मुझे बताओ
कि तुमने मुझे किस वजह से बुलाया है।”

30 फिर कुरनेलियुस ने कहा, “आज
से ठीक चार दिन पहले की बात है, जब
मैं नौवें घंटे* में अपने घर में प्रार्थना कर
रहा था, तब मैंने देखा कि एक आदमी
उजले कपड़े पहने मेरे सामने आ खड़ा
हुआ। **31** उसने मुझसे कहा, ‘कुरने-
लियुस, परमेश्वर ने तेरी प्रार्थना सुन ली
है और जो दान तू देता है उन पर उसने
ध्यान दिया है। **32** इसलिए अब अपने
आदमियों को याफा भेज और उस शमौन
को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले।
वह चमड़े का काम करनेवाले शमौन के
यहाँ मेहमान है, जिसका घर समुंदर
किनारे है।’[3] **33** इसलिए मैंने फौरन
तुझे बुलावा भेजा और तूने यहाँ आकर
हम पर मेहरबानी की है। अब इस वक्त,
हम सब परमेश्वर के सामने हाज़िर हैं
ताकि वे सारी बातें सुनें, जिन्हें सुनाने की
आज्ञा यहोवा* ने तुझे दी है।”

34 तब पतरस ने बोलना शुरू किया,
“अब मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि पर-
मेश्वर भेदभाव नहीं करता,[4] **35** मगर
हर वह इंसान जो उसका डर मानता है
और सही काम करता है, फिर चाहे वह
किसी भी राष्ट्र का क्यों न हो, उसे
वह स्वीकार करता है।[5] **36** परमेश्वर
ने इसराएलियों के पास एक संदेश भेजा,

अध्य. 10
1 प्रेष 11:11
2 प्रेष 13:2; प्रेष 15:28; प्रेष 16:6; प्रेष 20:23
3 प्रेष 10:1
4 लूक 4:8; प्रेष 14:12-15; प्रक 19:10; प्रक 22:8, 9

दूसरा कॉल.
1 यूह 18:28
2 प्रेष 10:45; इफ 3:5, 6
3 प्रेष 9:43
4 व्य 10:17; 2इत 19:7; रोम 2:11
5 रोम 2:13; 1कुर 12:13; गल 3:28

10:25 *या “दंडवत।”

10:30 *यानी दोपहर करीब 3 बजे।
10:33 *अति. क5 देखें।

उन्हें यह खुशखबरी दी कि यीशु मसीह
के ज़रिए परमेश्‍वर के साथ शांति कायम
की जा सकती है।[1] यही यीशु सबका प्रभु
है।[2] 37 तुम जानते हो कि जब यूहन्‍ना
ने बपतिस्मे का प्रचार किया तो उसके
बाद गलील में किस बात की चर्चा होने
लगी और पूरे यहूदिया में फैल गयी,[3]
38 यानी नासरत के यीशु की चर्चा।
तुमने सुना है कि परमेश्‍वर ने किस तरह
पवित्र शक्‍ति से उसका अभिषेक किया[4]
और उसे ताकत दी और वह पूरे देश में
भलाई करता रहा और शैतान* के सताए
हुओं को ठीक करता रहा,[5] क्योंकि पर-
मेश्‍वर उसके साथ था।[6] 39 और हम
उन सभी कामों के गवाह हैं जो उसने यहू-
दियों के देश में और यरूशलेम में किए
थे। मगर उन्होंने उसे काठ* पर लट-
काकर मार डाला। 40 परमेश्‍वर ने इसी
यीशु को तीसरे दिन ज़िंदा किया[7] और उसे
लोगों पर प्रकट होने दिया।* 41 मगर
सभी लोगों पर नहीं बल्कि उन गवाहों पर
जिन्हें परमेश्‍वर ने पहले से चुना था, यानी
हम पर। जब वह मरे हुओं में से ज़िंदा हो
गया तो उसके बाद हमने उसके साथ
खाया-पीया।[8] 42 उसने हमें यह आज्ञा
भी दी कि हम लोगों को प्रचार करें
और इस बात की अच्छी तरह गवाही दें[9]
कि यह वही है जिसे परमेश्‍वर ने जीवितों
और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है।[10]
43 सारे भविष्यवक्‍ताओं ने इसी यीशु की
गवाही दी[11] कि जो कोई उस पर विश्‍वास
करेगा वह उसके नाम से पापों की माफी
पाएगा।"[12]

44 पतरस ये बातें बोल ही रहा था
कि तभी पवित्र शक्‍ति उन सभी लोगों पर
उतरी जो वचन सुन रहे थे।[1] 45 पत-
रस के साथ आए सभी विश्‍वासी भाई,
जिनका खतना हो चुका था,* वे दंग रह
गए क्योंकि पवित्र शक्‍ति का मुफ्त वर-
दान, गैर-यहूदियों को भी दिया जा रहा
था। 46 उन्होंने उन लोगों को अलग-
अलग भाषाएँ* बोलते और परमेश्‍वर की
बड़ाई करते सुना।[2] तब पतरस ने
कहा, 47 "इन लोगों ने भी हमारी तरह
पवित्र शक्‍ति पायी है, अब कौन इन्हें
पानी में बपतिस्मा लेने से रोक सकता
है?"[3] 48 फिर पतरस ने यह आज्ञा दी
कि उन्हें यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा
दिया जाए।[4] इसके बाद उन्होंने पतरस से
बिनती की कि वह कुछ दिन वहीं ठहर
जाए।

11 यह बात प्रेषितों और उन भाइयों
ने सुनी, जो यहूदिया में थे कि
गैर-यहूदियों ने भी परमेश्‍वर का वचन
स्वीकार किया है। 2 इसलिए जब पत-
रस यरूशलेम आया, तो खतने का समर्थन
करनेवाले[5] उसे बुरा-भला कहने* लगे,
3 "तू ऐसे लोगों के घर गया था जिनका
खतना नहीं हुआ और तूने उनके साथ
खाना भी खाया।" 4 तब पतरस उन्हें
शुरू से लेकर सारी बात समझाने लगा कि
क्या-क्या हुआ था:

5 "जब मैं याफा शहर में प्रार्थना कर
रहा था, तो मुझ पर बेसुधी छा गयी और
मैंने एक दर्शन देखा। मैंने देखा कि एक
बड़ी चादर जैसा कुछ* आकाश से नीचे
आ रहा है। उसे चारों कोनों से पकड़कर
धरती पर उतारा जा रहा था और वह
बिलकुल मेरे पास आ गया।[6] 6 फिर

10:38 *शा., "इबलीस।" शब्दावली देखें। **10:39** *या "पेड़।" **10:40** *या "को दिखने दिया।"

10:45 *या "वफादार जन।" **10:46** *शा., "दूसरी ज़बान।" **11:2** *या "झगड़ने।" **11:5** *शा., "एक तरह का बरतन।"

अध्य. 10
1 यश 52:7; नहू 1:15
2 मत 28:18; रोम 14:9; प्रक 19:11, 16
3 लूक 4:14
4 यश 11:2; यश 42:1; यश 61:1; मत 3:16
5 लूक 13:16
6 यूह 3:1, 2
7 यो 1:17; यो 2:10; प्रेष 2:23, 24
8 लूक 24:30, 31; यूह 21:13, 14
9 मत 28:19, 20; प्रेष 1:8
10 प्रेष 17:31; रोम 14:9; 2कुर 5:10; 2ती 4:1; 1पत 4:5
11 लूक 24:27; प्रक 19:10
12 यश 53:11; यिर्म 31:34; दान 9:24

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 4:31; प्रेष 8:14, 15
2 प्रेष 2:1, 4; प्रेष 19:6
3 मत 3:11; प्रेष 8:36; प्रेष 11:17
4 मत 16:19; प्रेष 2:38

अध्य. 11
5 प्रेष 10:45; गल 2:12
6 प्रेष 10:10-16

मैंने गौर किया कि उसमें धरती पर
पाए जानेवाले हर किस्म के जान-
वर,* जंगली जानवर, रेंगनेवाले जीव-
जंतु और आकाश के पक्षी थे। 7 मुझे
एक आवाज़ भी सुनायी दी जो कह रही
थी, 'पतरस उठ, इन्हें काटकर खा!'
8 मगर मैंने कहा, 'नहीं प्रभु, नहीं! मैंने
कभी कोई दूषित और अशुद्ध चीज़ अपने
मुँह में नहीं डाली।' 9 फिर दूसरी बार
आकाश से उसी आवाज़ ने मुझसे कहा,
'तू अब से उन चीज़ों को दूषित मत
कहना जिन्हें परमेश्वर ने शुद्ध किया है।'
10 ऐसा ही तीसरी बार हुआ और फिर
सबकुछ वापस आकाश में उठा लिया
गया। 11 उसी घड़ी, तीन आदमी उस
घर के सामने आ खड़े हुए जहाँ हम
ठहरे हुए थे। उन्हें कैसरिया से मेरे
पास भेजा गया था।[1] 12 पवित्र शक्ति
ने मुझे बताया कि मैं बेझिझक उनके साथ
चला जाऊँ। और ये छः भाई भी मेरे साथ
चल पड़े और हम उस आदमी के घर गए।

13 उसने हमें बताया कि उसने एक
स्वर्गदूत को अपने घर में खड़े देखा
जिसने उससे कहा, 'याफा में आदमी भेज-
कर शमौन को, जो पतरस भी कह-
लाता है, बुलवा ले।[2] 14 वह तुझे वे
बातें बताएगा जिनसे तू और तेरा सारा
घराना उद्धार पा सकता है।' 15 मगर
जब मैंने बोलना शुरू किया, तो उन पर
पवित्र शक्ति उतरी, ठीक जैसे शुरूआत
में हम पर उतरी थी।[3] 16 तब मुझे
प्रभु की वह बात याद आयी, जो वह
कहा करता था, 'यूहन्ना ने तो पानी से
बपतिस्मा दिया था,[4] मगर तुम्हें पवित्र
शक्ति से बपतिस्मा दिया जाएगा।'[5]
17 इसलिए जब परमेश्वर ने उन्हें भी वह
मुफ्त वरदान दिया, जो उसने हमें यानी
प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करनेवालों
को दिया था, तो परमेश्वर को रोकने-
वाला* भला मैं कौन होता?"[1]

18 जब उन्होंने ये बातें सुनीं तो इस
बारे में और कुछ न कहा* और यह कह-
कर परमेश्वर की महिमा करने लगे, "तो
इसका मतलब, परमेश्वर ने गैर-यहूदियों
को भी पश्चाताप करने का मौका दिया है
ताकि वे भी जीवन पाएँ।"[2]

19 स्तिफनुस के कत्ल के बाद जब
भाइयों पर ज़ुल्म होने लगे और वे तितर-
बितर हो गए,[3] तो वे फीनीके, कुप्रुस और
अंताकिया तक पहुँच गए। मगर उन्होंने
यहूदियों के अलावा किसी और को पर-
मेश्वर का संदेश नहीं सुनाया।[4]
20 लेकिन उनमें से कुछ चेले जो कुप्रुस
और कुरेने के थे, वे अंताकिया आए
और यूनानी बोलनेवाले लोगों को प्रभु
यीशु की खुशखबरी सुनाने लगे।
21 इसके अलावा, यहोवा* का हाथ
उन पर था और बड़ी तादाद में लोगों
ने विश्वास किया और प्रभु की तरफ
हो गए।[5]

22 उनके बारे में यरूशलेम की मंडली
तक खबर पहुँची और उन्होंने बरनबास[6]
को अंताकिया भेजा। 23 वहाँ पहुँचकर
जब उसने परमेश्वर की महा-कृपा देखी,
तो वह बहुत खुश हुआ और सबका
हौसला बढ़ाने लगा कि वे दिल के
पक्के इरादे के साथ प्रभु के वफादार
बने रहें।[7] 24 क्योंकि बरनबास एक
अच्छा इंसान था और पवित्र शक्ति और
विश्वास से भरपूर था। और बड़ी तादाद
में लोग प्रभु पर विश्वास करने लगे।[8]
25 इसलिए बरनबास तरसुस गया ताकि

अध्य. 11
1 प्रेष 10:17-20
2 प्रेष 10:30-33
3 प्रेष 2:1, 4; प्रेष 10:44, 45
4 मत 3:11; मर 1:8; लूक 3:16; प्रेष 1:5
5 योए 2:28; यूह 1:33; प्रेष 2:17

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 10:47
2 यश 11:10; प्रेष 17:30; रोम 10:12; रोम 15:8, 9
3 प्रेष 8:1
4 मत 10:5, 6
5 प्रेष 2:47; प्रेष 9:35
6 प्रेष 4:36, 37
7 प्रेष 13:43; प्रेष 14:21, 22
8 प्रेष 2:47; प्रेष 4:4; प्रेष 5:14; प्रेष 9:31

11:6 *या "चार-पैरोंवाले प्राणी।"

11:17 *या "परमेश्वर का रास्ता रोकने-वाला।" 11:18 *या "और एतराज़ नहीं किया।" 11:21 *अति. क5 देखें।

वहाँ जाकर शाऊल को अच्छी तरह
ढूँढ़ें।[1] 26 और जब शाऊल उसे मिल
गया, तो वह उसे अंताकिया ले आया।
इसके बाद, पूरे एक साल तक वे वहाँ की
मंडली के साथ इकट्ठा होते रहे और लोगों
की बड़ी भीड़ को सिखाते रहे। और पर-
मेश्वर के मार्गदर्शन से अंताकिया में ही
पहली बार चेले 'मसीही' कहलाए।[2]

27 उन्हीं दिनों यरूशलेम से
कुछ भविष्यवक्ता[3] अंताकिया आए।
28 उनमें से एक का नाम अगबुस था।[4]
उसने उठकर पवित्र शक्ति की मदद से
बताया कि पूरी दुनिया में भारी अकाल
पड़नेवाला है।[5] यह अकाल क्लौदि-
युस के दिनों में पड़ा। 29 तब अंता-
किया के चेलों ने ठान लिया कि हरेक
से जितना बन पड़ेगा,[6] उतना वे यहूदिया
के भाइयों की मदद के लिए राहत का
सामान भेजेंगे।[7] 30 और उन्होंने ऐसा
ही किया और यह सामान बरनबास और
शाऊल के हाथों प्राचीनों के पास भेजा।[8]

12 उन्हीं दिनों राजा हेरोदेस मंडली
के कुछ लोगों पर ज़ुल्म ढाने
लगा।[9] 2 उसने यूहन्ना के भाई
याकूब[10] को तलवार से मरवा डाला।[11]
3 जब उसने देखा कि यहूदी इससे खुश
हुए हैं, तो उसने पतरस को भी गिरफ्तार
कर लिया। (ये बिन खमीर की रोटी
के त्योहार के दिन थे।)[12] 4 हेरोदेस ने
पतरस को पकड़कर जेल में डाल दिया[13]
और चार सिपाहियों के चार दल ठहराए
कि वे बारी-बारी से उस पर पहरा दें।
उसका इरादा था कि फसह के त्योहार के
बाद वह उसे लोगों के सामने* ले
जाएगा। 5 जब पतरस जेल में था तो
मंडली उसके लिए परमेश्वर से दिलो-
जान से प्रार्थना कर रही थी।[14]

6 जिस दिन हेरोदेस उसे लोगों के
सामने पेश करनेवाला था, उससे पहले
की रात पतरस दो ज़ंजीरों से बँधा
हुआ दो सिपाहियों के बीच सो रहा था
और जेल के दरवाज़े पर पहरेदार पहरा दे
रहे थे। 7 तभी अचानक यहोवा* का
स्वर्गदूत वहाँ आ खड़ा हुआ[1] और जेल
की वह कोठरी रौशनी से जगमगा उठी।
स्वर्गदूत ने पतरस का कंधा थपथपा-
कर उसे जगाया और कहा, "उठ, जल्दी
कर!" तब उसके हाथों की ज़ंजीरें खुलकर
गिर पड़ीं।[2] 8 स्वर्गदूत ने पतरस से
कहा, "कमर कस ले और अपनी जूतियाँ
पहन ले।" उसने ऐसा ही किया। फिर
उसने पतरस से कहा, "अपना चोगा पहन
ले और मेरे पीछे चला आ।" 9 वह
निकलकर उसके पीछे-पीछे चलता गया,
मगर वह यह नहीं जानता था कि स्वर्ग-
दूत जो कर रहा है वह हकीकत में हो रहा
है। उसे तो यही लगा कि वह कोई दर्शन
देख रहा है। 10 पहरेदारों की पहली
और दूसरी चौकी पार करके वे लोहे
के उस फाटक पर आ पहुँचे जो शहर की
तरफ खुलता है। वह फाटक उनके लिए
अपने आप खुल गया। बाहर निकल-
ने के बाद वे एक गली में पहुँचे और
उसी घड़ी स्वर्गदूत उसे छोड़कर चला
गया। 11 तब पतरस को एहसास हुआ
कि असल में क्या हुआ है। उसने कहा,
"अब मैं जान गया हूँ कि यहोवा* ने एक
स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से
बचाया है और मेरे साथ वे बुरी घटनाएँ
नहीं होने दीं जिनकी यहूदी उम्मीद कर
रहे थे।"[3]

12 इसके बाद वह मरियम के घर गया
जो मरकुस कहलानेवाले यूहन्ना[4] की माँ
थी। वहाँ काफी चेले जमा थे और प्रार्थना

12:4 *या "मुकदमे के लिए बाहर।"

12:7, 11 *अति. क5 देखें।

अध्य. 11
1 प्रेष 21:39
2 प्रेष 9:2
3 1कुर 12:28; इफ 4:11
4 प्रेष 21:10, 11
5 मत 24:7
6 2कुर 8:12
7 गल 2:10
8 प्रेष 12:25

अध्य. 12
9 यूह 15:20
10 मत 4:21
11 मत 20:20-23; लूक 11:49
12 निर्ग 12:15; निर्ग 23:15; लैव 23:6
13 लूक 21:12
14 2कुर 1:11

दूसरा कॉल.
1 भज 34:7; इब्र 1:7, 14
2 प्रेष 5:18, 19
3 2पत 2:9
4 प्रेष 13:5; प्रेष 15:37, 38; कुल 4:10

कर रहे थे। 13 जब पतरस ने बाहर
का दरवाज़ा खटखटाया, तो रुदे नाम की
दासी यह देखने आयी कि कौन आया है।
14 पतरस की आवाज़ पहचानने पर वह
इतनी खुश हो गयी कि दरवाज़ा खोले
बिना ही दौड़कर अंदर चली गयी और
जाकर सबको बताने लगी कि पतरस
बाहर दरवाज़े पर खड़ा है। 15 चेलों ने
उससे कहा, "तू पागल हो गयी है।"
मगर वह ज़ोर देकर कहती रही कि सच-
मुच वही आया है। तब वे कहने लगे,
"वह उसका स्वर्गदूत होगा।" 16 मगर
पतरस वहीं खड़ा खटखटाता रहा। जब
उन्होंने दरवाज़ा खोला तो उसे देखकर दंग
रह गए। 17 मगर पतरस ने हाथ से
उन्हें चुप रहने का इशारा किया और उन्हें
पूरा किस्सा कह सुनाया कि कैसे यहोवा*
ने उसे जेल से बाहर निकाला। फिर
उसने कहा, "ये बातें याकूब[1] और दूसरे
भाइयों को बता देना।" इसके बाद वह
बाहर गया और किसी और जगह के लिए
निकल पड़ा।

18 जब दिन हुआ तो सिपाहियों में
अफरा-तफरी मच गयी कि आखिर पत-
रस गया कहाँ। 19 हेरोदेस ने उसकी
बहुत तलाश करवायी और जब वह उसे
नहीं मिला, तो उसने पहरेदारों से पूछताछ
की और हुक्म दिया कि इन्हें ले जाओ
और सज़ा दो।[2] फिर हेरोदेस यहूदिया से
कैसरिया चला गया और कुछ समय के
लिए वहीं रहा।

20 राजा हेरोदेस, सोर और सीदोन के
लोगों से बहुत गुस्सा था।* इसलिए वे
सभी एक मन से उसके पास आए और
उन्होंने राजा के घराने की देखरेख करने-
वाले बलासतुस को मनाकर राजा के साथ
सुलह करनी चाही, क्योंकि उनके देश को
राजा के देश से ही खाने का सामान मिलता
था। 21 फिर एक दिन एक खास मौके
पर, हेरोदेस शाही लिबास में न्याय-आसन
पर बैठा और उसने जनता को भाषण
देना शुरू किया। 22 उसकी बातें सुन-
कर वहाँ जमा लोग चिल्ला-चिल्लाकर
कहने लगे, "यह किसी इंसान की नहीं,
बल्कि देवता की आवाज़ है!" 23 उसी
घड़ी यहोवा* के स्वर्गदूत ने हेरोदेस को
मारा क्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा
नहीं की। उसके शरीर में कीड़े पड़ गए
और वह मर गया।

24 मगर यहोवा* का वचन फैलता
गया और बहुत-से लोगों ने विश्वास
किया।[1]

25 बरनबास[2] और शाऊल यरू-
शलेम में राहत का काम पूरा करने के
बाद[3] लौट गए और अपने साथ यूहन्ना
को ले गए[4] जो मरकुस कहलाता है।

13 अंताकिया की मंडली में कई
भविष्यवक्ता और शिक्षक थे।[5]
ये थे बरनबास, शिमौन जो काला* कह-
लाता था, कुरेने का लूकियुस, मना-
हेम जो ज़िला-शासक हेरोदेस के साथ पढ़ा
था और शाऊल। 2 जब वे यहोवा* की
सेवा करने# और उपवास करने में लगे
हुए थे तो पवित्र शक्ति ने उनसे कहा, "मेरे
लिए बरनबास और शाऊल[6] को उस काम
के लिए अलग करो, जिसके लिए मैंने
उन्हें बुलाया है।"[7] 3 तब उपवास और
प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने उन दोनों पर
हाथ रखे और उन्हें रवाना कर दिया।

4 फिर ये आदमी पवित्र शक्ति के
मार्गदर्शन के मुताबिक सिलूकिया गए

12:17, 23, 24; 13:2 *अति. क5 देखें।
12:20 *या "झगड़ा करने पर उतारू था।"

13:1 *शा., "नीगर।" **13:2** #या "सरे-
आम सेवा करने।"

अध्य. 12
1 मत 13:55
प्रेष 15:13
प्रेष 21:18
1कुर 15:7
गल 1:19
गल 2:9
2 प्रेष 16:27

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 6:7
प्रेष 19:20
कुल 1:6
2 प्रेष 4:36, 37
3 प्रेष 11:29, 30
4 प्रेष 13:5
प्रेष 15:37, 38

अध्य. 13
5 1कुर 12:28
इफ 4:11, 12
6 प्रेष 9:15
7 1ती 2:7

और फिर वहाँ से जहाज़ पर चढ़कर
कुप्रुस द्वीप के लिए रवाना हुए। **5** जब
वे उस द्वीप के सलमीस शहर पहुँचे,
तो वे यहूदियों के सभा-घरों में पर-
मेश्वर का वचन सुनाने लगे। उनके साथ
यूहन्ना* भी था, जो उनकी सेवा किया
करता था।[#1]

6 जब वे उस पूरे द्वीप का दौरा करते
हुए पाफुस शहर पहुँचे, तो वहाँ उन्हें
बार-यीशु नाम का एक यहूदी मिला।
वह एक जादूगर और झूठा भविष्य-
वक्ता था। **7** वह उस प्रांत के राज्य-
पाल* सिरगियुस पौलुस के साथ-साथ
रहता था। सिरगियुस पौलुस एक अक्ल-
मंद इंसान था। उसने बरनबास और
शाऊल को अपने पास बुलाया क्योंकि
उसे परमेश्वर का वचन सुनने की गहरी
इच्छा थी। **8** मगर बार-यीशु जो इली-
मास जादूगर कहलाता है (इलीमास नाम
का मतलब है, जादूगर) उनका विरोध
करने लगा और उसने पूरी कोशिश की कि
राज्यपाल इस विश्वास को न अपनाए।
9 तब शाऊल ने, जिसका नाम पौलुस
भी है, पवित्र शक्ति से भरकर उसकी
तरफ टकटकी लगाकर देखा **10** और
कहा, "अरे शैतान की औलाद,[2] तू जो
हर तरह की धोखाधड़ी और मक्कारी से
भरा हुआ है और हर तरह की नेकी
का दुश्मन है, क्या तू यहोवा* की
सीधी राहों को बिगाड़ना नहीं छोड़ेगा?
11 अब देख! यहोवा* का हाथ तेरे
खिलाफ उठा है और तू अंधा हो जाएगा
और कुछ वक्त के लिए सूरज की रौशनी
नहीं देख पाएगा।" उसी पल उसकी
आँखों के आगे घने कोहरे जैसा धुँधलापन
और अँधेरा छा गया और वह इधर-उधर
टटोलने लगा कि कोई उसका हाथ पकड़-
कर उसे ले चले। **12** तब जो कुछ हुआ,
उसे देखकर राज्यपाल विश्वासी बन गया
क्योंकि वह यहोवा* की शिक्षा से दंग रह
गया था।

13 इसके बाद पौलुस और उसके
साथी, पाफुस से समुद्री यात्रा करते हुए
पमफूलिया प्रांत के पिरगा शहर पहुँचे।
वहाँ यूहन्ना*[1] उन्हें छोड़कर यरूशलेम
लौट गया।[2] **14** मगर वे पिरगा से आगे
बढ़े और पिसिदिया इलाके के अंताकिया
शहर में आए और सब्त के दिन सभा-घर
में जाकर बैठ गए।[3] **15** वहाँ जब सबके
सामने कानून और भविष्यवक्ताओं की
किताबें पढ़कर सुनायी गयीं,[4] तो इसके
बाद सभा-घर के अधिकारियों ने पौलुस
और उसके साथियों को यह कहकर बुल-
वाया, "भाइयो, अगर लोगों की हिम्मत
बँधाने के लिए तुम्हारे पास कहने को कुछ
हो तो कहो।" **16** तब पौलुस उठा और
उसने हाथ से सबको शांत हो जाने का
इशारा करते हुए कहा,

"इसराएलियो और परमेश्वर का डर
माननेवाले दूसरे लोगो, सुनो। **17** इस-
राएल के परमेश्वर ने हमारे पुरखों को
चुना और जब वे मिस्र में परदेसियों की
तरह रहते थे, तब उन्हें महान किया और
अपने शक्तिशाली हाथों से वहाँ से बाहर
ले आया।[5] **18** वह करीब 40 साल
तक वीराने में उन्हें बरदाश्त करता रहा।[6]
19 उसने कनान देश में सात जातियों का
नाश करने के बाद, उनका देश इसराए-
लियों को विरासत में दे दिया।[7] **20** यह
सब करीब 450 साल के दौरान हुआ।

इसके बाद, परमेश्वर ने उन पर न्यायी
ठहराए। न्यायियों का दौर भविष्यवक्ता
शमूएल तक चला।[8] **21** मगर आगे

अध्य. 13
1 प्रेष 12:25
2 यूह 8:44

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 12:12
2 प्रेष 15:37, 38
3 प्रेष 17:1, 2
प्रेष 18:4
प्रेष 19:8
4 प्रेष 15:21
5 निर्ग 6:1, 6
व्य 7:6, 8
6 निर्ग 16:35
गि 14:33, 34
7 व्य 7:1
यह 14:1, 2
8 न्या 2:16
1शम 3:20

13:5, 13 *यानी यूहन्ना मरकुस। **13:5** #या "उनका मददगार था।" **13:7** *शब्दावली देखें। **13:10-12** *अति. क5 देखें।

चलकर इसराएली एक राजा की माँग
करने लगे[1] और परमेश्वर ने कीश के
बेटे शाऊल को उनका राजा बनाया,
जो बिन्यामीन गोत्र से था।[2] वह 40
साल तक उनका राजा रहा। 22 उसे
हटाने के बाद, उसने दाविद को उनका
राजा बनाया,[3] जिसके बारे में उसने यह
गवाही दी, ‘मैंने यिशै के बेटे दाविद को
पाया,[4] वह एक ऐसा इंसान है जो
मेरे दिल को भाता है।[5] मेरी जो भी
मरज़ी है उसे वह पूरा करेगा।’ 23 पर-
मेश्वर ने अपने वादे के मुताबिक इसी
दाविद के वंश* से इसराएल के पास
एक उद्धारकर्ता भेजा, वह यीशु था।[6]
24 यीशु के आने से पहले यूहन्ना ने सरे-
आम इसराएल के सब लोगों को प्रचार
किया कि वे बपतिस्मा लें, जो इस बात की
निशानी होगा कि उन्होंने पश्चाताप किया
है।[7] 25 मगर जब यूहन्ना अपनी सेवा
के आखिरी समय में पहुँचा तो वह कहता
था, ‘तुम्हें क्या लगता है, मैं कौन हूँ?
मैं वह नहीं हूँ। मगर देखो! मेरे बाद वह
आ रहा है जिसके पैरों की जूतियाँ तक
खोलने के मैं लायक नहीं।’[8]

26 भाइयो, अब्राहम के वंशजो और
परमेश्वर का डर माननेवाले बाकी लोगो,
सुनो। परमेश्वर ने हमारे उद्धार के बारे
में एक संदेश हम तक पहुँचाया है।[9]
27 यरूशलेम के रहनेवालों और उनके
धर्म-अधिकारियों* ने उस उद्धारकर्ता
को नहीं पहचाना, मगर उसका न्याय
करते वक्त उन्होंने भविष्यवक्ताओं की
कही वे सारी बातें पूरी कीं[10] जो हर
सब्त के दिन पढ़कर सुनायी जाती हैं।
28 हालाँकि उसे मार डालने की उन्हें
कोई वजह नहीं मिली,[11] फिर भी उन्होंने
पीलातुस से माँग की कि उसे मौत की
सज़ा दी जाए।[1] 29 और जब उन्होंने
वह सब कर लिया जो उसके बारे में लिखा
था, तो उसे काठ* से नीचे उतारा और
एक कब्र# में रख दिया।[2] 30 मगर
परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से ज़िंदा कर
दिया।[3] 31 फिर वह कई दिनों तक
उन लोगों को दिखायी देता रहा जो उसके
साथ गलील से यरूशलेम गए थे। आज वे
सब लोगों के सामने उसके गवाह हैं।[4]

32 इसलिए हम तुम्हें उस वादे के
बारे में खुशखबरी सुना रहे हैं जो हमारे
पुरखों से किया गया था। 33 परमेश्वर
ने अपने बच्चों यानी हमारी खातिर यह
वादा हर तरह से पूरा किया और इसके
लिए उसने यीशु को मरे हुओं में से ज़िंदा
किया,[5] ठीक जैसे दूसरे भजन में लिखा
है, ‘तू मेरा बेटा है, आज मैं तेरा पिता
बना हूँ।’[6] 34 परमेश्वर ने उसे मरे
हुओं में से ज़िंदा किया और वह फिर कभी
इंसान नहीं बनेगा जो मरकर सड़ जाता
है। परमेश्वर ने इस बात को पक्का करने
के लिए कहा है, ‘मैं तुम लोगों पर ज़ाहिर
करूँगा कि दाविद के लिए मेरा प्यार
अटल और सच्चा है, ठीक जैसे मैंने उससे
वादा किया था।’[7] 35 इसलिए एक
और भजन कहता है, ‘तू अपने वफादार
जन को सड़ने नहीं देगा।’[8] 36 जहाँ
तक दाविद की बात है, उसने सारी
ज़िंदगी परमेश्वर की पवित्र सेवा की,*
फिर वह मौत की नींद सो गया और उसे
अपने पुरखों के साथ दफनाया गया और
वह सड़ गया।[9] 37 मगर वहीं, जिसे
परमेश्वर ने मरे हुओं में से ज़िंदा किया,
उसका शरीर नहीं सड़ा।[10]

38 इसलिए भाइयो, तुम जान लो कि

13:23 *शा., “बीज।” **13:27** *शा., “शासकों।”

13:29 *या “पेड़।” #या “स्मारक कब्र।”
13:36 *या “परमेश्वर की मरज़ी पूरी की।”

अध्य. 13
1 1शम 8:4, 5
2 1शम 10:21; 1शम 11:15
3 1शम 16:12, 13; भज 89:20
4 1शम 16:1
5 1शम 13:13, 14
6 2शम 7:12; यश 11:1; लूक 1:31, 32; लूक 1:68, 69
7 मत 3:1, 6
8 मत 3:11; लूक 3:16
9 मत 10:5, 6; लूक 24:47, 48
10 यश 53:7, 8
11 मत 26:59, 60; लूक 23:13-15; यूह 19:4

दूसरा कॉल.
1 मत 27:22, 23; यूह 19:15
2 मत 27:59, 60; यूह 19:40-42
3 मत 28:5, 6; प्रेष 2:24
4 मत 28:16; प्रेष 1:3; प्रेष 3:15; 1कुर 15:4-7
5 रोम 1:4
6 भज 2:7; इब्र 1:5; इब्र 5:5
7 यश 55:3
8 भज 16:10; प्रेष 2:31
9 प्रेष 2:29
10 प्रेष 2:27

उसी के ज़रिए तुम्हें पापों की माफी
मिल सकती है और यही खबर हम तुम्हें
सुना रहे हैं।[1] 39 और जिन बातों में
मूसा का कानून तुम्हें निर्दोष नहीं ठहरा
सका,[2] उन्हीं बातों में एक इंसान यीशु के
ज़रिए निर्दोष ठहर सकता है, बशर्ते वह
विश्वास करे।[3] 40 इसलिए खबरदार
रहो कि भविष्यवक्ताओं की किताबों में
लिखी यह बात कहीं तुम्हारे साथ न घटे:
41 'हे ठट्ठा करनेवालो, देखो, ताज्जुब
करो और मिट जाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे
दिनों में ऐसा काम करनेवाला हूँ जिसके
बारे में अगर कोई तुम्हें बारीकी से भी
बताए, तो भी तुम हरगिज़ उसका यकीन
नहीं करोगे।'"[4]

42 यह सब कहने के बाद जब वे
बाहर जा रहे थे, तो लोग उनसे बिनती
करने लगे कि ये बातें उन्हें अगले सब्त के
दिन फिर सुनायी जाएँ। 43 जब सभा
खत्म हो गयी तो बहुत-से यहूदी और
यहूदी धर्म अपनानेवाले, जो परमेश्वर की
उपासना करते थे, पौलुस और बरनबास
के साथ-साथ गए। उन दोनों ने उनसे बात
की और उन्हें बढ़ावा दिया कि वे पर-
मेश्वर की महा-कृपा के लायक बने रहें।[5]

44 अगले सब्त के दिन करीब-करीब
पूरा शहर यहोवा* का वचन सुनने के
लिए जमा हो गया। 45 जब यहूदियों ने
लोगों की इतनी बड़ी भीड़ देखी, तो
वे जलन से भर गए और पौलुस की
बातों को गलत साबित करने के लिए
बहस करने लगे और उसकी बातों की
निंदा करने लगे।[6] 46 तब पौलुस और
बरनबास ने निडर होकर उनसे कहा,
"यह ज़रूरी था कि परमेश्वर का वचन
पहले तुम यहूदियों को सुनाया जाए।[7]
मगर तुम इसे ठुकरा रहे हो और दिखा रहे
हो कि तुम हमेशा की ज़िंदगी के लायक
नहीं हो, इसलिए देखो! हम दूसरे राष्ट्रों
के पास जा रहे हैं।[1] 47 यहोवा* ने हमें
यह आज्ञा दी है, 'मैंने तुझे राष्ट्रों के लिए
रौशनी ठहराया है ताकि तू पृथ्वी के छोर
तक उद्धार का संदेश सुनाए।'"[2]

48 जब गैर-यहूदियों ने यह बात
सुनी, तो वे बहुत खुश हुए और यहोवा*
के वचन की बड़ाई करने लगे और वे
सभी जो हमेशा की ज़िंदगी पाने के लायक
अच्छा मन रखते थे, विश्वासी बन गए।
49 इतना ही नहीं, यहोवा* का वचन
आस-पास के पूरे इलाके में फैलता रहा।
50 मगर यहूदियों ने शहर की जानी-
मानी औरतों को, जो परमेश्वर का डर
मानती थीं और खास-खास आदमियों को
भड़काया। उन्होंने पौलुस और बरनबास
पर ज़ुल्म करवाया[3] और उन्हें अपनी
सरहदों के बाहर खदेड़ दिया। 51 तब
पौलुस और बरनबास ने अपने पैरों की
धूल झाड़ दी ताकि उनके खिलाफ गवाही
हो और वे इकुनियुम शहर चले गए।[4]
52 और चेले आनंद और पवित्र शक्ति
से भरपूर होते रहे।[5]

14 अब पौलुस और बरनबास इकु-
नियुम में एक-साथ यहूदियों के
सभा-घर में गए और वहाँ उन्होंने इतने
बढ़िया ढंग से बात की कि बहुत-
से यहूदी और यूनानी विश्वासी बन
गए। 2 मगर जिन यहूदियों ने विश्वास
नहीं किया, उन्होंने गैर-यहूदियों को भड़-
काया और भाइयों के खिलाफ उनके
मन में कड़वाहट भर दी।[6] 3 इस-
लिए पौलुस और बरनबास ने वहाँ
काफी समय बिताया। और यहोवा* से
मिले अधिकार की वजह से वे निडर
होकर उसका वचन सुनाते रहे। परमेश्वर
उनके हाथों चमत्कार और आश्चर्य के

13:44, 47-49; 14:3 *अति. क5 देखें।

अध्य. 13
1 लूक 24:46, 47; प्रेष 5:31; प्रेष 10:43
2 इब्र 10:1
3 यश 53:11; रोम 3:28; रोम 5:18; रोम 8:3; इब्र 7:19
4 हब 1:5
5 प्रेष 11:23; प्रेष 14:21, 22
6 प्रेष 14:1, 2; प्रेष 17:4, 5
7 मत 10:5, 6; प्रेष 3:25, 26; रोम 1:16

दूसरा कॉल.
1 लूक 2:29-32; प्रेष 18:5, 6; रोम 10:19
2 यश 49:6; प्रेष 1:8
3 मत 23:34; प्रेष 14:2, 19; प्रेष 17:5
4 मत 10:14; लूक 9:5
5 मत 5:12

अध्य. 14
6 प्रेष 13:45

काम करवाता रहा ताकि साबित हो कि
परमेश्‍वर की महा-कृपा का जो संदेश
वे सुना रहे हैं, वह उसी की तरफ
से है।[1] **4** मगर शहर के लोगों में फूट
पड़ गयी और कुछ यहूदियों की तरफ हो
गए, तो कुछ प्रेषितों की तरफ। **5** गैर-
यहूदी और यहूदी अपने अधिकारियों
के साथ मिलकर पौलुस और बरन-
बास को बेइज़्ज़त करने और उन्हें पत्थरों
से मार डालने की कोशिश करने लगे।[2]
6 मगर पौलुस और बरनबास को इसकी
खबर मिल गयी, इसलिए वे वहाँ से
भाग गए और लुकाउनिया के लुस्त्रा और
दिरबे शहर में और आस-पास के इलाकों
में चले गए।[3] **7** वहाँ वे खुशखबरी का
ऐलान करते चले।

8 लुस्त्रा में एक आदमी था जो पाँवों
से लाचार था। वह जन्म से ही लँगड़ा
था और कभी नहीं चला था। **9** यह
आदमी पौलुस की बातें ध्यान से सुन रहा
था। पौलुस ने उसे गौर से देखा और
जान गया कि उस आदमी में विश्‍वास
है और उसे यकीन भी है कि वह ठीक
हो सकता है।[4] **10** इसलिए पौलुस ने
ऊँची आवाज़ में कहा, "अपने पाँवों के
बल सीधा खड़ा हो जा।" तब वह उछल-
कर खड़ा हो गया और चलने लगा।[5]
11 जब लोगों ने पौलुस का यह काम
देखा, तो लुकाउनिया की भाषा में
चिल्लाने लगे, "देवता, इंसान बनकर
हमारे बीच उतर आए हैं!"[6] **12** वे
बरनबास को ज़्यूस देवता मगर पौलुस
को हिरमेस देवता कहने लगे क्योंकि बात
करने में पौलुस ही आगे था। **13** और
शहर के सामने जो ज़्यूस का मंदिर था,
वहाँ का पुजारी बैल और फूलों के हार *
लेकर फाटक के पास आया। वह लोगों
के साथ मिलकर पौलुस और बरनबास के
आगे बलि चढ़ाना चाहता था।

14 मगर जब प्रेषित बरनबास और
प्रेषित पौलुस ने इस बारे में सुना, तो
उन्होंने अपने कपड़े फाड़े और भीड़
में कूद पड़े और चिल्लाकर कहने लगे,
15 "हे लोगो, तुम यह सब क्यों कर रहे
हो? हम भी तुम्हारी तरह मामूली इंसान
हैं[1] और तुम्हें एक खुशखबरी सुना रहे हैं
ताकि तुम इन बेकार की चीज़ों को छोड़-
कर जीवित परमेश्‍वर के पास आओ,
जिसने आकाश, पृथ्वी और समुंदर को
और जो कुछ उनमें है सब बनाया है।[2]
16 बीते समय में उसने सब राष्ट्रों को
अपनी-अपनी राह चलने दिया,[3]
17 फिर भी वह भलाई करता रहा और
इस तरह अपने बारे में गवाही देता
रहा।[4] वह तुम्हें आकाश से बरसात और
अच्छी पैदावार के मौसम देता रहा[5] और
तुम्हें जी-भरकर खाना देता रहा और
तुम्हारे दिलों को आनंद से भरता रहा।"[6]
18 यह सब कहने के बाद भी वे बड़ी
मुश्‍किल से भीड़ को उनके आगे बलिदान
चढ़ाने से रोक पाए।

19 मगर अंताकिया और इकुनियुम
से यहूदी वहाँ आ धमके और उन्होंने
लोगों को अपनी तरफ कर लिया।[7] तब
लोगों ने पौलुस को पत्थरों से मारा और
उसे मरा समझकर शहर के बाहर घसीट-
कर ले गए।[8] **20** मगर जब चेले उसके
चारों तरफ आ खड़े हुए, तो वह उठा और
शहर में गया। दूसरे दिन वह बरनबास
के साथ दिरबे चला गया।[9] **21** वे उस
शहर में खुशखबरी सुनाने और कई चेले
बनाने के बाद लुस्त्रा, इकुनियुम और
अंताकिया लौट गए। **22** वहाँ उन्होंने
चेलों की हिम्मत बँधायी[10] और यह कह-
कर उन्हें अपना विश्‍वास मज़बूत बनाए

14:13 * या "फूलों के ताज।"

अध्य. 14
1 प्रेष 19:11, इब्र 2:3, 4
2 प्रेष 14:19
3 मत 10:23
4 मत 9:28
5 यश 35:6
6 प्रेष 28:3-6

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 10:25, 26
2 निर्ग 20:11, भज 146:6
3 प्रेष 17:30
4 प्रेष 17:26, 27, रोम 1:20
5 भज 147:8, यिर्म 5:24, मत 5:45
6 भज 145:16
7 प्रेष 17:13
8 2कुर 11:25
9 प्रेष 16:1
10 प्रेष 11:22, 23

रखने का बढ़ावा दिया, “हमें बहुत तक-
लीफें झेलकर ही परमेश्वर के राज में
दाखिल होना है।”[1] 23 इसके अलावा,
उन्होंने हर मंडली में उनके लिए प्राचीन
ठहराए,[2] उपवास रखा और प्रार्थना की[3]
और प्राचीनों को यहोवा* के हाथ में
सौंप दिया जिन्हें परमेश्वर पर पूरा
विश्वास था।

24 फिर वे पिसिदिया के इलाके से
होते हुए पमफूलिया पहुँचे[4] 25 और
पिरगा में वचन सुनाने के बाद वे अत्त-
लिया आए। 26 वहाँ से वे जहाज़ पर
चढ़कर अंताकिया गए। यह वही जगह
थी जहाँ भाइयों ने उन्हें परमेश्वर की महा-
कृपा के भरोसे सौंपा था। और अब वे यह
काम पूरा कर चुके थे।[5]

27 जब वे अंताकिया पहुँचे, तो
उन्होंने मंडली को इकट्ठा किया और
उन्हें बताने लगे कि परमेश्वर ने उनके
ज़रिए कैसे-कैसे काम किए और किस
तरह उसने गैर-यहूदियों के लिए विश्वास
अपनाने का रास्ता खोल दिया है।[6]
28 और उन्होंने वहाँ चेलों के साथ काफी
वक्त बिताया।

15 फिर यहूदिया से कुछ लोग अंता-
किया आए और भाइयों को
यह सिखाने लगे, “जब तक तुम मूसा
के रिवाज़ के मुताबिक खतना नहीं कर-
वाओगे,[7] तब तक तुम उद्धार नहीं
पा सकते।” 2 मगर जब इस बात पर
पौलुस और बरनबास के साथ उनकी
काफी बहस हुई और झगड़ा हुआ,
तो इस सिलसिले में पौलुस और बरन-
बास को साथ ही कुछ और भाइयों को,
प्रेषितों और प्राचीनों के पास यरूशलेम
भेजने का इंतज़ाम किया गया।[8]

14:23 *अति. क5 देखें।

अध्य. 14
1 मत 10:38
यूह 15:19
रोम 8:17
1थि 3:4
2 तीत 1:5
3 प्रेष 13:2, 3
4 प्रेष 13:13
5 प्रेष 13:1, 2
6 प्रेष 11:18

अध्य. 15
7 उत 17:9, 10
निर्ग 12:48
लैव 12:2, 3
8 गल 2:1

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 12:48
प्रेष 11:2, 3
2 प्रेष 10:34, 35
प्रेष 11:16, 17
3 1इत 28:9
यिर्म 11:20
4 प्रेष 10:44, 45
प्रेष 11:15
5 गल 3:28
6 गल 2:15, 16
1पत 1:22
7 गल 5:1

3 मंडली ने उन्हें कुछ दूर तक विदा
किया और फिर ये भाई फीनीके और
सामरिया के इलाकों से होते हुए गए
और वहाँ के भाइयों को पूरा ब्यौरा देकर
बताया कि गैर-यहूदी खुद को बदल-
कर परमेश्वर की तरफ हो गए हैं। यह
सब सुनकर भाइयों को बहुत खुशी हुई।
4 जब वे यरूशलेम पहुँचे तो मंडली और
प्रेषितों और प्राचीनों ने खुशी से उनका
स्वागत किया और पौलुस और बरनबास
ने उन सब कामों के बारे में उन्हें बताया
जो परमेश्वर ने उनके ज़रिए किए थे।
5 मगर फरीसियों के गुट के कुछ लोग,
जो विश्वासी बन गए थे, अपनी जगह
से उठ खड़े हुए और उन्होंने कहा, “यह
बेहद ज़रूरी है कि गैर-यहूदियों का खतना
कराया जाए और उन्हें मूसा का कानून
मानने की आज्ञा दी जाए।”[1]

6 तब प्रेषित और प्राचीन इस मामले
पर चर्चा करने के लिए इकट्ठा हुए।
7 उन्होंने इस मामले पर गहराई से सोच-
विचार किया और उनके बीच लंबी चर्चा*
हुई। इसके बाद पतरस ने उठकर उनसे
कहा, “भाइयो, तुम अच्छी तरह जानते
हो कि शुरू में ही परमेश्वर ने तुम्हारे
बीच में से मुझे चुना कि मेरे मुँह से
गैर-यहूदी खुशखबरी सुनें और विश्वास
करें।[2] 8 और परमेश्वर ने, जो दिलों
को जानता है,[3] उन्हें पवित्र शक्ति देकर
गवाही दी[4] कि उसने उन्हें मंज़ूर किया है,
ठीक जैसे हमें भी मंज़ूर किया था।
9 उसने हमारे और उनके बीच कोई फर्क
नहीं किया,[5] मगर उनके विश्वास की
बिना पर उनके दिलों को शुद्ध किया।[6]
10 तो अब तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा
लेने के लिए चेलों पर ऐसा बोझ लाद
रहे हो,[7] जिसे न हमारे बाप-दादा उठा

15:7 *या “काफी बहस।”

सके थे, न हम?[1] **11** इसके बजाय, हमें विश्वास है कि हम प्रभु यीशु की महा-कृपा की वजह से उद्धार पाते हैं,[2] ठीक जैसे वे भी उद्धार पाते हैं।”[3]

12 यह सुनकर पूरी सभा खामोश हो गयी और वे बरनबास और पौलुस की सुनने लगे कि कैसे परमेश्वर ने उनके ज़रिए गैर-यहूदियों के बीच बहुत-से चमत्कार और आश्चर्य के काम किए। **13** जब वे बोल चुके तो याकूब ने कहा, “भाइयो, मेरी सुनो। **14** शिमौन*[4] ने पूरा ब्यौरा देकर बताया कि परमेश्वर ने कैसे पहली बार गैर-यहूदी राष्ट्रों की तरफ ध्यान दिया ताकि उनके बीच से ऐसे लोगों को इकट्ठा करे जो परमेश्वर के नाम से पहचाने जाएँ।[5] **15** और इस बात से भविष्यवक्ताओं के वचन भी मेल खाते हैं, जैसा कि लिखा है: **16** ‘इन बातों के बाद मैं वापस आऊँगा और दाविद का गिरा हुआ तंबू* दोबारा खड़ा करूँगा और उसके खंडहरों को फिर बनाऊँगा और उसे पहले जैसा कर दूँगा **17** ताकि उसके बचे हुए लोग, सब राष्ट्रों के साथ मिलकर जी-जान से यहोवा* की खोज करें, जिनके बारे में यहोवा* ने कहा है कि वे मेरे नाम से पुकारे जाते हैं। परमेश्वर ने, जो यह सब कर रहा है[6] **18** बहुत पहले ही ऐसा करने की ठान ली थी।’[7] **19** इसलिए मेरा फैसला* यह है कि गैर-यहूदियों में से जो लोग परमेश्वर की तरफ फिर रहे हैं, उन्हें हम परेशान न करें,[8] **20** मगर उन्हें यह लिख भेजें कि वे मूर्तिपूजा से अपवित्र हुई चीज़ों से,[9] नाजायज़ यौन-संबंध* से,[10] गला घोंटे हुए जानवरों के माँस से* और खून से दूर रहें।[1] **21** इसलिए कि पुराने ज़माने से ही ऐसे लोग रहे हैं जो मूसा की किताबों में लिखी इन बातों का हर शहर में प्रचार करते आए हैं, हर सब्त के दिन सभा-घरों में उसकी किताबें पढ़कर सुनाते आए हैं।”[2]

22 फिर प्रेषितों और प्राचीनों ने पूरी मंडली के साथ मिलकर फैसला किया कि वे पौलुस और बरनबास के साथ अपने बीच से चुने हुए आदमियों को अंताकिया भेजें, यानी बर-सबा कहलानेवाले यहूदा और सीलास को,[3] जो भाइयों में अगुवे थे। **23** उन्होंने इन भाइयों के हाथ यह चिट्ठी भेजी:

“अंताकिया,[4] सीरिया और किलिकिया में रहनेवाले गैर-यहूदी भाइयों को, आपके भाइयों यानी प्रेषितों और प्राचीनों का नमस्कार! **24** हमने सुना है कि हमारे यहाँ से कुछ लोगों ने आकर तुमसे ऐसी बातें कहीं जिससे तुम परेशान हो गए[5] और उन्होंने तुम्हारे विश्वास को मिटाने की कोशिश की है, जबकि हमने उन्हें ऐसी कोई हिदायत नहीं दी थी। **25** इसलिए हम सबने एकमत होकर तय किया कि हम कुछ भाइयों को चुनकर उन्हें हमारे प्यारे बरनबास और पौलुस के साथ तुम्हारे पास भेजेंगे। **26** ये ऐसे आदमी हैं जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की खातिर अपनी जान तक दाँव पर लगा दी।[6] **27** हम यहूदा और सीलास को भेज रहे हैं ताकि वे खुद भी तुम्हें इन बातों की जानकारी दें।[7] **28** हम पवित्र शक्ति[8] की मदद से इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि इन ज़रूरी बातों को छोड़ हम तुम पर और बोझ न

15:14 *या “पतरस।” **15:16** *या “छप्पर; घराना।” **15:17** *अति. क5 देखें। **15:19** *या “मेरी राय।” **15:20** *यूनानी में *पोर्निया*। शब्दावली देखें।

15:20 *या “ऐसे जानवर का माँस जिसका खून अच्छी तरह नहीं बहाया जाता।”

अध्य. 15

1 गल 3:10
2 यश 53:11; यूह 1:17
3 मत 20:28
4 मत 10:2; प्रेष 11:13; 2पत 1:1
5 1पत 2:9, 10
6 आम 9:11, 12
7 यश 45:21
8 प्रेष 15:10
9 उत 35:2; निर्ग 20:3; 1कुर 10:14
10 1कुर 6:9, 10; कुल 3:5; 1थि 4:3

दूसरा कॉल.

1 उत 9:4; लैव 3:17; लैव 7:26; लैव 17:10, 13; लैव 19:26; व्य 12:23; व्य 15:23; 1शम 14:32, 33
2 प्रेष 13:15; 2कुर 3:15
3 1थि 1:1; 1पत 5:12
4 प्रेष 11:26
5 प्रेष 15:1
6 प्रेष 13:50; 1कुर 15:30, 31; 2कुर 11:23-26
7 प्रेष 16:4
8 यूह 16:13; प्रेष 5:32

लादें 29 कि तुम मूरतों को बलि की हुई चीज़ों से,[1] खून से,[2] गला घोंटे हुए जानवरों के माँस से*[3] और नाजायज़ यौन-संबंध# से[4] हमेशा दूर रहो। अगर तुम ध्यान रखो कि तुम इन बातों से हमेशा दूर रहोगे, तो तुम्हारा भला होगा। सलामत रहो!"△

30 फिर जब इन आदमियों को विदा किया गया, तो वे अंताकिया गए और उन्होंने सब चेलों को इकट्ठा किया और उन्हें वह चिट्ठी सौंप दी। 31 चिट्ठी पढ़कर उन्हें बहुत हौसला मिला और वे बेहद खुश हुए। 32 यहूदा और सीलास भविष्यवक्ता थे, इसलिए उन्होंने कई भाषण देकर भाइयों की हिम्मत बँधायी और उन्हें मज़बूत किया।[5] 33 उन्होंने वहाँ कुछ वक्त बिताया, फिर वहाँ के भाइयों ने उन्हें विदा किया और वे उन भाइयों के पास लौट आए जिन्होंने उन्हें भेजा था। 34 *— 35 मगर पौलुस और बरनबास अंताकिया में ही रहे और कई और लोगों के साथ मिलकर यहोवा* के वचन की खुशखबरी सुनाते और सिखाते रहे।

36 फिर कुछ दिन बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, "चलो,# हम उन सभी शहरों में दोबारा जाएँ जहाँ हमने यहोवा* का वचन सुनाया था और देख आएँ कि वहाँ के भाई कैसे हैं।"[6] 37 बरनबास ने तो ठान लिया था कि वह अपने साथ यूहन्ना को भी ले जाएगा जो मरकुस कहलाता है।[7] 38 मगर पौलुस को उसे अपने साथ ले जाना ठीक नहीं लगा क्योंकि वह पमफूलिया में उन्हें छोड़कर चला गया था और उसने इस काम में उनका साथ नहीं दिया था।[1] 39 इस बात को लेकर पौलुस और बरनबास के बीच ज़बरदस्त तकरार हुई, इसलिए वे एक-दूसरे से अलग हो गए। बरनबास[2] मरकुस को लेकर जहाज़ से कुप्रुस के लिए रवाना हो गया। 40 लेकिन पौलुस ने सीलास को चुना। भाइयों ने पौलुस के लिए प्रार्थना की कि उस पर यहोवा* की महा-कृपा बनी रहे।[3] फिर वे दोनों निकल पड़े। 41 वह सीरिया और किलिकिया के इलाकों से होता हुआ मंडलियों को मज़बूत करता गया।

16 फिर पौलुस दिरबे और लुस्त्रा शहर भी पहुँचा।[4] और देखो! वहाँ तीमुथियुस[5] नाम का एक चेला था, जो एक विश्वासी यहूदी औरत का बेटा था मगर उसका पिता यूनानी था। 2 लुस्त्रा और इकुनियुम के भाई तीमुथियुस की बहुत तारीफ किया करते थे। 3 इसलिए पौलुस ने यह इच्छा ज़ाहिर की कि वह तीमुथियुस को अपने साथ सफर पर ले जाना चाहता है। उसने तीमुथियुस को अपने साथ लिया और उसका खतना करवाया क्योंकि उन इलाकों के सभी यहूदी जानते थे कि तीमुथियुस का पिता यूनानी था।[6] 4 वे अपने सफर में जिन-जिन शहरों में गए, वहाँ उन्होंने बताया कि यरूशलेम के प्रेषितों और प्राचीनों ने क्या-क्या आदेश दिए हैं ताकि वे उन्हें मानें।[7] 5 नतीजा यह हुआ कि मंडलियों का विश्वास मज़बूत होता गया और उनकी तादाद दिनों-दिन बढ़ती गयी।

6 इसके बाद वे फ्रूगिया और गलातिया प्रांत से गुज़रे[8] क्योंकि पवित्र शक्ति ने उन्हें एशिया प्रांत में वचन सुनाने से मना

अध्य. 15

1 उत 35:2, निर्ग 20:3, निर्ग 34:15, 1कुर 10:14
2 उत 9:4, लैव 3:17, लैव 7:26, लैव 17:10, व्य 12:16, 23, 1शम 14:32, 33
3 लैव 17:13
4 उत 39:7-9, 1कुर 6:9, 10, इफ 5:5, कुल 3:5, 1थि 4:3
5 प्रेष 18:23
6 2कुर 11:28
7 प्रेष 13:4, 5, कुल 4:10, 2ती 4:11

दूसरा कॉल.

1 प्रेष 13:13
2 प्रेष 4:36, 37
3 प्रेष 14:26

अध्य. 16

4 प्रेष 14:5-7, 2ती 3:11
5 प्रेष 19:22, रोम 16:21, 1कुर 4:17, 1थि 3:2, 1ती 1:2
6 1कुर 9:20
7 प्रेष 15:28, 29
8 प्रेष 18:23

15:29 *या "ऐसे जानवर का माँस जिसका खून अच्छी तरह नहीं बहाया जाता।" #यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें। △या "अलविदा।" **15:34** *अति. क3 देखें। **15:35, 36, 40** *अति. क5 देखें। **15:36** #या शायद, "हर हाल में।"

किया था। 7 फिर जब वे मूसिया पहुँचे
तो उन्होंने बितूनिया[1] प्रांत में जाने की
कोशिश की, मगर यीशु ने पवित्र शक्ति के
ज़रिए उन्हें वहाँ जाने की इजाज़त नहीं दी।
8 इसलिए वे मूसिया से* होकर त्रोआस
शहर पहुँचे। 9 रात को पौलुस ने एक
दर्शन में देखा कि मकिदुनिया का एक
आदमी खड़ा हुआ उससे यह बिनती कर
रहा है, "इस पार मकिदुनिया आकर
हमारी मदद कर।" 10 जैसे ही उसने
यह दर्शन देखा, हम यह समझकर मकि-
दुनिया के लिए निकल पड़े कि परमेश्वर ने
हमें वहाँ के लोगों को खुशखबरी सुनाने का
बुलावा दिया है।

11 इसलिए हम त्रोआस में जहाज़ पर
चढ़े और समुंदर के रास्ते सीधे समोथ्राके
द्वीप पहुँचे और अगले दिन नियापुलिस
शहर गए। 12 वहाँ से हम फिलिप्पी[2]
गए जो मकिदुनिया के उस ज़िले का
सबसे जाना-माना शहर और एक रोमी
उपनिवेश बस्ती है। हम उस शहर में
कुछ दिन रहे। 13 सब्त के दिन हम
यह सोचकर शहर के फाटक के बाहर
नदी किनारे गए कि वहाँ प्रार्थना करने
की कोई जगह होगी। हम वहीं बैठकर
उन औरतों को प्रचार करने लगे जो वहाँ
जमा थीं। 14 वहाँ लुदिया नाम की एक
औरत भी थी जो थुआतीरा[3] शहर की
रहनेवाली थी और बैंजनी कपड़े* बेचती
थी। वह परमेश्वर की उपासक थी और
जब वह पौलुस की बातें सुन रही थी,
तो यहोवा# ने उसके दिल के दरवाज़े
पूरी तरह खोल दिए ताकि वह उसकी
बातों पर यकीन करे। 15 लुदिया और
उसके घराने ने बपतिस्मा लिया,[4] फिर
उसने हमसे बिनती की, "अगर तुम वाकई
मानते हो कि मैं यहोवा# की वफादार हूँ,
तो मेरे घर आकर ठहरो।" वह हमें जैसे-
तैसे मनाकर अपने घर ले ही गयी।

16 फिर जब हम प्रार्थना की जगह जा
रहे थे, तो हमें एक दासी मिली जिसमें
भविष्य बतानेवाला दुष्ट स्वर्गदूत समाया
था।[1] वह दासी भविष्य बताया करती
थी जिससे उसके मालिकों की बहुत
कमाई होती थी। 17 पौलुस और हम
जहाँ कहीं जाते, वह लड़की हमारे पीछे-
पीछे आती और चिल्लाकर कहती थी,
"ये आदमी परम-प्रधान परमेश्वर के दास
हैं,[2] तुम्हें उद्धार की राह का संदेश
सुना रहे हैं।" 18 वह बहुत दिनों तक
ऐसा करती रही। आखिरकार, पौलुस
उससे तंग आ गया और उसने मुड़कर उस
दासी में समाए दुष्ट स्वर्गदूत से कहा, "मैं
तुझे यीशु मसीह के नाम से हुक्म देता हूँ,
उससे बाहर निकल जा।" उसी घड़ी वह
बाहर निकल गया।[3]

19 जब उस दासी के मालिकों ने देखा
कि उनकी कमाई का ज़रिया बंद हो गया
है,[4] तो उन्होंने पौलुस और सीलास को
पकड़ लिया और उन्हें घसीटकर चौक
में अधिकारियों के सामने ले आए।[5]
20 वे उन्हें नगर-अधिकारियों के पास
ले गए और कहने लगे, "ये आदमी
हमारे शहर में गड़बड़ी मचा रहे हैं।[6] ये
यहूदी हैं और 21 लोगों को ऐसे रिवाज़
सिखा रहे हैं जिन्हें अपनाने या मानने की
हमें इजाज़त नहीं क्योंकि हम रोमी हैं।"
22 तब लोगों की भीड़ उनके खिलाफ
जमा हो गयी और नगर-अधिकारियों ने
पौलुस और सीलास के कपड़े फाड़ दिए
और उन्हें बेंत लगाने का हुक्म दिया।[7]
23 उन्हें बहुत मारने के बाद जेल में डाल
दिया गया और जेलर को हुक्म दिया गया
कि उन पर सख्त पहरा दे।[8] 24 ऐसा

16:8 *या "के बीच से।" **16:14** *या "बैंजनी रंग की डाई।" **16:14, 15** #अति. क5 देखें।

अध्य. 16
1 1पत 1:1
2 फिल 1:1
3 प्रक 1:11
4 प्रेष 16:33
प्रेष 18:8

दूसरा कॉल.
1 लैव 19:31
लैव 20:6
2 मर 1:23, 24
लूक 4:41
3 मत 17:18
मर 1:25, 26
मर 1:34
लूक 9:1
लूक 10:17
4 प्रेष 19:24, 25
5 मत 10:18
6 प्रेष 17:6
7 1थि 2:2
8 लूक 21:12

कड़ा हुक्म पाने की वजह से जेलर ने उन्हें
अंदर की कोठरी में डाल दिया और उनके
पाँव काठ में कस दिए।
25 मगर आधी रात के वक्त, पौलुस
और सीलास प्रार्थना कर रहे थे और गीत
गाकर परमेश्वर का गुणगान कर रहे थे[1]
और बाकी कैदी सुन रहे थे। **26** तभी
अचानक एक बड़ा भूकंप हुआ जिससे
जेल की नींव तक हिल गयी। उसी
घड़ी जेल के सारे दरवाज़े खुल गए
और सबकी ज़ंजीरें खुलकर गिर पड़ीं।[2]
27 तब जेलर जाग गया और जेल
के दरवाज़े खुले देखकर उसने सोचा कि
कैदी भाग गए हैं।[3] उसने अपनी तलवार
खींची और वह अपनी जान लेने ही वाला
था, **28** तभी पौलुस ने ज़ोर से पुकार-
कर कहा, "अपनी जान मत ले क्योंकि
हम सब यहीं हैं!" **29** तब जेलर ने
दीपक मँगवाए और जल्दी से अंदर आया
और थर-थर काँपता हुआ पौलुस और
सीलास के पैरों पर गिर पड़ा। **30** वह
उन्हें बाहर ले आया और उसने कहा,
"मुझे बताओ, उद्धार पाने के लिए मुझे
क्या करना होगा?" **31** उन्होंने कहा,
"प्रभु यीशु पर विश्वास कर, तब तू
और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा।"[4]
32 पौलुस और सीलास ने उसे और
उसके पूरे घराने को यहोवा* का वचन
सुनाया। **33** जेलर ने रात को उसी
घड़ी उन्हें अपने साथ ले जाकर उनके
घाव धोए। फिर उसने और उसके घराने
के सब लोगों ने बिना देर किए बप-
तिस्मा लिया।[5] **34** वह उन्हें अपने घर
ले आया और उनके सामने खाना परोसा।
उसने अपने पूरे घराने के साथ इस बात
पर खुशियाँ मनायीं कि अब वह परमेश्वर
पर विश्वास करनेवाला बन गया है।
35 जब दिन निकला तो नगर-अधि-
कारियों ने पहरेदारों के हाथ यह संदेश
भेजा: "उन आदमियों को रिहा कर
दो।" **36** तब जेलर ने उनकी बात
पौलुस को बतायी, "नगर-अधिकारियों ने
कुछ आदमियों के हाथ यह संदेश भेजा है
कि तुम दोनों को रिहा कर दिया जाए।
इसलिए अब बाहर आ जाओ और
सही-सलामत लौट जाओ।" **37** मगर
पौलुस ने उनसे कहा, "हम रोमी नागरिक
हैं,[1] फिर भी उन्होंने यह साबित किए
बगैर कि हमने कोई जुर्म किया है,* हमें
सबके सामने पिटवाया और जेल में डाल
दिया। और अब कह रहे हैं कि हम चुप-
चाप यहाँ से निकल जाएँ? नहीं, ऐसा हर-
गिज़ नहीं होगा! उन्हें खुद आकर हमें यहाँ
से बाहर ले जाना होगा।" **38** पहरे-
दारों ने जाकर ये बातें नगर-अधिकारियों
को बतायीं। जब अधिकारियों ने सुना कि
ये आदमी रोमी नागरिक हैं, तो वे बहुत
डर गए।[2] **39** इसलिए वे आए और
उन्हें मनाने लगे और उन्हें बाहर लाकर
उनसे गुज़ारिश की कि वे शहर छोड़कर
चले जाएँ। **40** मगर वे जेल से निकल-
कर लुदिया के घर गए और जब वे भाइयों
से मिले, तो उनकी हिम्मत बँधायी[3] और
फिर वहाँ से चले गए।

17 अब वे अम्फिपुलिस और
अपुल्लोनिया शहरों से होते हुए
थिस्सलुनीके शहर आए,[4] जहाँ यहू-
दियों का एक सभा-घर था। **2** पौलुस
अपने रिवाज़ के मुताबिक[5] उस सभा-घर
में गया और उसने तीन सब्त तक पवित्र
शास्त्र से उन यहूदियों के साथ तर्क-वितर्क
किया[6] **3** और वह शास्त्र से हवाले दे-
देकर समझाता रहा और साबित करता

16:32 *अति. क5 देखें।

16:37 *या "उन्होंने बिना किसी मुकद-
मे के।"

अध्य. 16
1 इफ 5:19
कुल 3:16
2 प्रेष 5:18-20
प्रेष 12:7
3 प्रेष 12:18, 19
4 यूह 3:16
यूह 6:47
5 प्रेष 8:12

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 22:25
प्रेष 23:27
2 प्रेष 22:27-29
3 2कुर 1:3, 4

अध्य. 17
4 1थि 2:1
5 प्रेष 9:19, 20
प्रेष 13:13, 14
प्रेष 14:1
प्रेष 18:4
6 प्रेष 18:19

रहा कि मसीह के लिए दुख उठाना[1]
और मरे हुओं में से ज़िंदा होना ज़रूरी
था।[2] वह कहता था, "यही है वह
मसीह, वह यीशु जिसके बारे में मैं तुम्हें
बता रहा हूँ।" 4 नतीजा यह हुआ कि
उनमें से कुछ विश्‍वासी बन गए और
पौलुस और सीलास के साथ हो लिए।[3]
इनके अलावा, परमेश्‍वर की उपासना
करनेवाले यूनानियों की एक बड़ी भीड़ ने
भी विश्‍वास किया। इनमें कई जानी-मानी
औरतें भी थीं।

5 मगर यह देखकर यहूदी जलन से
भर गए[4] और अपने साथ बाज़ार के
कुछ आवारा बदमाशों को लेकर एक
दल बना लिया और शहर भर में हंगामा
करने लगे। उन्होंने यासोन के घर पर
धावा बोल दिया ताकि पौलुस और
सीलास को इस पागल भीड़ के हवाले कर
दें। 6 मगर जब ढूँढ़ने पर उन्हें पौलुस
और सीलास वहाँ नहीं मिले, तो उन्होंने
यासोन और कुछ और भाइयों को पकड़
लिया और उन्हें घसीटकर नगर-अधि-
कारियों के पास ले गए और चिल्ला-
चिल्लाकर कहने लगे, "जिन आदमियों
ने सारी दुनिया में उथल-पुथल मचा रखी
है, वे अब यहाँ भी आ पहुँचे हैं[5] 7 और
इस यासोन ने उन्हें अपने घर में मेह-
मान ठहराया है। ये आदमी सम्राट*
के आदेशों के खिलाफ बगावत करते हैं
और कहते हैं कि कोई दूसरा राजा है,
जिसका नाम यीशु है।"[6] 8 जब भीड़
ने और नगर-अधिकारियों ने यह सुना तो
वे घबरा गए। 9 नगर-अधिकारियों ने
यासोन और बाकियों से ज़मानत के तौर
पर भारी रकम लेकर उन्हें छोड़ दिया।

10 तब भाइयों ने बिना देर किए
रातों-रात पौलुस और सीलास, दोनों
को बिरीया शहर भेज दिया। वहाँ पहुँच-
ने पर वे यहूदियों के सभा-घर में गए।
11 बिरीया के लोग तो थिस्सलुनीके के
लोगों से ज़्यादा भले और खुले विचारों-
वाले थे क्योंकि उन्होंने बड़ी उत्सुक-
ता से वचन स्वीकार किया। वे हर दिन
ध्यान से शास्त्र की जाँच करते थे कि जो
बातें वे सुन रहे हैं वे सच हैं या नहीं।
12 इसलिए उनमें से कई लोग विश्‍वासी
बन गए। और कई इज़्ज़तदार यूनानी
आदमी-औरत भी विश्‍वासी बन गए।
13 मगर जब थिस्सलुनीके के यहूदियों
को पता चला कि पौलुस बिरीया में भी
परमेश्‍वर का वचन सुना रहा है, तो वे
वहाँ आ धमके ताकि जनता को भड़-
काएँ और हंगामा मचाएँ।[1] 14 तब
भाइयों ने फौरन पौलुस को समुंदर किनारे
भेज दिया,[2] मगर सीलास और तीमु-
थियुस वहीं बिरीया में रहे। 15 जो भाई
पौलुस को छोड़ने उसके साथ गए वे उसे
बहुत दूर एथेन्स तक ले गए। पौलुस ने
उन्हें विदा करते वक्‍त सीलास और तीमु-
थियुस[3] के लिए यह खबर दी कि वे जल्द-
से-जल्द उसके पास एथेन्स चले आएँ।

16 जब पौलुस एथेन्स में उनका इंत-
ज़ार कर रहा था, तब उसने देखा कि पूरा
शहर मूरतों से भरा हुआ है। यह देखकर
उसका जी जलने लगा। 17 इसलिए
वह सभा-घर में यहूदियों के साथ और
परमेश्‍वर का डर माननेवाले दूसरे लोगों
के साथ शास्त्र से तर्क-वितर्क करने लगा।
साथ ही, हर दिन बाज़ार में उसे जो
भी मिलता था उसके साथ वह इसी तरह
तर्क-वितर्क करता था। 18 मगर इपि-
कूरी और स्तोइकी दार्शनिकों में से कुछ
लोग पौलुस से बहस करने लगे। उनमें
से कुछ कहते थे, "यह बकबक करने-
वाला आखिर कहना क्या चाहता है?"

17:7 * यूनानी में "कैसर।"

अध्य. 17
1 भज 22:7, भज 34:20, भज 69:21, भज 118:22, यश 50:6, यश 53:3, 5
2 भज 16:10, लूक 24:45, 46
3 प्रेष 15:22, 40
4 प्रेष 13:45
5 प्रेष 16:19-21
6 लूक 23:1, 2, यूह 19:12

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 14:2, 19
2 मत 10:23
3 प्रेष 16:1, 2, 1थि 3:2

दूसरे कहते थे, “यह तो कोई विदेशी देवताओं का प्रचारक लगता है।” क्योंकि पौलुस, यीशु के बारे में खुशखबरी सुना रहा था और यह सिखा रहा था कि मरे हुए ज़िंदा किए जाएँगे।[1] 19 तब ये लोग उसे अपने साथ अरियुपगुस ले गए और कहने लगे, “क्या हम जान सकते हैं कि तू यह जो नयी शिक्षा सिखा रहा है यह क्या है? 20 क्योंकि तू ऐसी नयी बातें बता रहा है जो हमारे कानों को अजीब लगती हैं। हम जानना चाहते हैं कि इन सब बातों का क्या मतलब है।” 21 दरअसल एथेन्स के सभी लोग और वहाँ रहनेवाले* विदेशी लोग अपना फुरसत का समय किसी और काम में नहीं बल्कि कुछ-न-कुछ नया सुनने या सुनाने में बिताते थे। 22 तब पौलुस अरियुपगुस[2] के बीच खड़ा हुआ और उनसे कहने लगा,

“एथेन्स के लोगो, मैं देख सकता हूँ कि तुम हर बात में दूसरों से बढ़कर देवताओं के भक्त* हो।[3] 23 मिसाल के लिए, जब मैं यहाँ से गुज़र रहा था और उन चीज़ों पर गौर कर रहा था जिनकी तुम पूजा करते हो, तो मैंने एक वेदी देखी जिस पर लिखा था, ‘अनजाने परमेश्वर के लिए।’ इसलिए तुम अनजाने में जिस परमेश्वर की उपासना कर रहे हो, मैं उसी के बारे में तुम्हें बता रहा हूँ। 24 जिस परमेश्वर ने पूरी दुनिया और उसकी सब चीज़ें बनायीं, वह आकाश और धरती का मालिक है[4] इसलिए वह हाथ के बनाए मंदिरों में नहीं रहता,[5] 25 न ही वह इंसान के हाथों अपनी सेवा करवाता है, मानो उसे किसी चीज़ की ज़रूरत हो[6] क्योंकि वह खुद सबको जीवन और साँसें और सबकुछ देता है।[7] 26 उसने

17:21 *या “आनेवाले।” 17:22 *या “धार्मिक।”

अध्य. 17

1 यूह 5:28, 29; यूह 11:25; 1कुर 15:12
2 प्रेष 17:33, 34
3 प्रेष 17:16
4 भज 146:6
5 1रा 8:27
6 भज 50:12
7 यश 42:5

दूसरा कॉल.

1 उत 5:2
2 उत 1:28
3 व्य 2:5, 19; व्य 32:8; भज 74:17
4 व्य 4:29; भज 145:18; रोम 1:20
5 उत 1:27
6 व्य 5:8; यश 37:19; यश 40:18-20; यश 46:5
7 इफ 4:17, 18
8 भज 96:13; भज 98:9; यूह 5:22; प्रेष 10:42
9 यूह 11:25; प्रेष 2:24; प्रेष 13:32, 33
10 1कुर 1:23

एक ही इंसान से[1] सारे राष्ट्र बनाए कि वे पूरी धरती पर रहें[2] और उनका वक्त ठहराया और उनके रहने की हदें तय कीं[3] 27 ताकि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें और उसकी खोज करें और वाकई उसे पा लें।[4] सच तो यह है कि वह हममें से किसी से भी दूर नहीं है। 28 क्योंकि उसी से हमारी ज़िंदगी है और हम चलते-फिरते हैं और वजूद में हैं, जैसा तुम्हारे कुछ कवियों ने भी कहा है, ‘हम तो उसी के बच्चे हैं।’

29 हम परमेश्वर के बच्चे हैं[5] इसलिए हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि परमेश्वर सोने या चाँदी या पत्थर जैसा है, या इंसान की कल्पना और कला से गढ़ी गयी किसी चीज़ जैसा है।[6] 30 सच है कि परमेश्वर ने उस वक्त को नज़रअंदाज़ किया जब लोगों ने अनजाने में ऐसा किया था।[7] मगर अब वह हर जगह ऐलान कर रहा है कि सब लोग पश्चाताप करें। 31 क्योंकि उसने एक दिन तय किया है जब वह सच्चाई से सारी दुनिया का न्याय करेगा[8] और इसके लिए उसने एक आदमी को ठहराया है। और सब इंसानों को इस बात का पक्का यकीन दिलाने* के लिए परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से ज़िंदा किया है।”[9]

32 जब उन्होंने मरे हुओं के ज़िंदा होने की बात सुनी, तो कुछ लोग उसकी खिल्ली उड़ाने लगे[10] जबकि दूसरों ने कहा, “हम इस बारे में तुझसे फिर कभी सुनेंगे।” 33 तब पौलुस वहाँ से निकल गया। 34 मगर कुछ आदमी उसके साथ हो लिए और विश्वासी बन गए। इनमें अरियुपगुस की अदालत का एक न्यायी दियोनिसियुस और दमरिस नाम की एक औरत और इनके अलावा और भी लोग थे।

17:31 *या “गारंटी देने।”

18 इसके बाद पौलुस एथेन्स से
निकला और कुरिंथ शहर आया।
2 कुरिंथ में उसे अक्विला नाम का
एक यहूदी मिला,[1] जिसका जन्म पुन्तुस
इलाके में हुआ था। वह हाल ही में
अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इटली
से आया था, क्योंकि सम्राट क्लौदियुस ने
सभी यहूदियों को रोम से निकल जाने का
हुक्म दिया था। पौलुस, अक्विला और
प्रिस्किल्ला के पास गया। 3 पौलुस का
और उनका पेशा एक ही था, इसलिए वह
उनके घर में रहने लगा और उनके साथ
काम करने लगा।[2] वे तंबू बनाया करते
थे। 4 पौलुस हर सब्त[3] के दिन सभा-
घर में भाषण देता*[4] और यहूदियों और
यूनानियों को कायल करता था।

5 जब सीलास[5] और तीमुथियुस[6]
दोनों मकिदुनिया से आ गए, तो पौलुस
और भी ज़ोर-शोर से वचन का प्रचार
करने लगा। वह यहूदियों को गवाही देने
लगा और साबित करने लगा कि यीशु
ही मसीह है।[7] 6 मगर जब वे पौलुस
के संदेश का विरोध करते रहे और उसके
बारे में बुरी-बुरी बातें कहते रहे, तो
उसने अपने कपड़े झाड़ते हुए[8] उनसे
कहा, “तुम्हारा खून तुम्हारे ही सिर पड़े।[9]
मैं निर्दोष हूँ।[10] अब से मैं गैर-यहू-
दियों के पास जाऊँगा।”[11] 7 फिर वह
वहाँ* से अपनी जगह बदलकर तितुस
युसतुस नाम के एक आदमी के घर
रहने लगा, जो परमेश्वर का उपासक
था और जिसका घर सभा-घर से सटा
हुआ था। 8 सभा-घर का अधिकारी
क्रिसपुस[12] और उसका पूरा घराना पौलुस
का संदेश सुनकर प्रभु में विश्वासी बन
गया। कुरिंथ के बहुत-से लोगों ने भी यह
संदेश सुनकर विश्वास किया और बप-
तिस्मा लिया। 9 यही नहीं, रात में प्रभु
ने एक दर्शन में पौलुस से कहा, “मत डर,
प्रचार किए जा, चुप मत रह। 10 इस
शहर में मेरे बहुत-से लोग हैं जिन्हें इकट्ठा
करना बाकी है। इसलिए मैं तेरे साथ
हूँ[1] और कोई भी तुझ पर हमला करके
तुझे चोट नहीं पहुँचाएगा।” 11 इस-
लिए पौलुस डेढ़ साल तक वहीं रहा
और उनके बीच परमेश्वर का वचन
सुनाता रहा।

12 जब गल्लियो, अखाया प्रांत का
राज्यपाल* था, तो उस दौरान यहूदी
आपस में तय करके एक-साथ पौलुस पर
चढ़ आए और उसे न्याय-आसन के
सामने ले गए। 13 वे उस पर यह इल-
ज़ाम लगाने लगे, “यह आदमी लोगों को
ऐसे तरीके से परमेश्वर की उपासना करने
के लिए कायल कर रहा है जो कानून के
खिलाफ है।” 14 मगर इससे पहले कि
पौलुस कुछ बोलता, गल्लियो ने यहूदियों
से कहा, “यहूदियो, अगर यह अन्याय या
बड़े अपराध का मामला होता, तो मैं
ज़रूर सब्र के साथ तुम्हारी बात सुनता।
15 लेकिन अगर ये झगड़े तुम्हारे अपने
कानून को लेकर हैं और शब्दों और
नामों के बारे में हैं, तो तुम्हीं इन्हें सुल-
झाओ।[2] मैं इन बातों में तुम्हारा न्यायी
नहीं बनना चाहता।” 16 यह कहकर
उसने यहूदियों को न्याय-आसन के सामने
से निकलवा दिया। 17 फिर उन सभी
ने सभा-घर के अधिकारी सोस्थिनेस[3] को
पकड़ लिया और न्याय-आसन के सामने
उसे पीटने लगे। मगर गल्लियो इस मामले
में बिलकुल नहीं पड़ा।

18 फिर भी पौलुस वहाँ कुछ दिन
और ठहरा और इसके बाद उसने भाइयों

18:4 *या “उन्हें दलीलें देकर समझाता।”
18:7 *यानी सभा-घर।
18:12 *शब्दावली देखें।

अध्य. 18
1 प्रेष 18:24, 26; 1कुर 16:19; 2ती 4:19
2 प्रेष 20:34; 1कुर 4:11, 12; 1कुर 9:15; 1थि 2:9; 2थि 3:8, 10
3 प्रेष 17:2
4 मत 4:23
5 प्रेष 15:27; प्रेष 17:14
6 प्रेष 16:1, 2; 1थि 3:6
7 प्रेष 17:2, 3; प्रेष 28:23
8 मत 10:14
9 यहे 33:4
10 प्रेष 20:26
11 प्रेष 13:46; प्रेष 28:28; रोम 1:16
12 1कुर 1:14

दूसरा कॉल.
1 मत 28:20
2 प्रेष 23:29; प्रेष 25:19
3 1कुर 1:1

से विदा ली। उसने किंख्रिया[1] में अपने
बाल कटवाए क्योंकि उसने मन्नत मानी
थी। फिर वह जहाज़ से सीरिया के लिए
रवाना हो गया और प्रिस्किल्ला और
अक्विला भी उसके साथ थे। 19 जब
वे इफिसुस आए तो प्रिस्किल्ला और
अक्विला को वहीं छोड़कर वह वहाँ के
सभा-घर में गया और यहूदियों के
साथ तर्क-वितर्क करके उन्हें समझाने
लगा।[2] 20 वे उससे कुछ और वक्त
वहीं रहने की बिनती करते रहे, मगर
वह नहीं माना। 21 उसने यह कहकर
उनसे विदा ली, “अगर यहोवा* ने चाहा
तो मैं तुम्हारे पास दोबारा आऊँगा।” वह
इफिसुस से समुद्री यात्रा पर निकल
पड़ा 22 और कैसरिया आया। फिर
उसने वहाँ से ऊपर* जाकर मंडली
से मुलाकात की और वहाँ से अंताकिया
चला गया।[3]

23 अंताकिया में कुछ वक्त बिताने के
बाद, पौलुस वहाँ से रवाना हुआ और
गलातिया और फ्रूगिया प्रांत[4] में जगह-
जगह जाकर सभी चेलों की हिम्मत
बँधाता रहा।[5]

24 अपुल्लोस नाम का एक यहूदी,[6]
जिसका जन्म सिकंदरिया शहर में
हुआ था, इफिसुस आया। वह बात
करने में माहिर था और शास्त्र का
अच्छा ज्ञान रखता था। 25 उस आदमी
को यहोवा* की राह के बारे में सिखाया
गया था# और वह पवित्र शक्ति से भर-
पूर होने की वजह से बहुत जोशीला था।
वह यीशु के बारे में सही-सही बातें
बोलता और सिखाता था, मगर सिर्फ
उस बपतिस्मे के बारे में जानता था
जिसका यूहन्ना ने प्रचार किया था।
26 अपुल्लोस सभा-घर में बेधड़क होकर
बोलने लगा। जब प्रिस्किल्ला और
अक्विला[1] ने उसकी बातें सुनीं, तो वे उसे
अपने साथ ले गए और उसे परमेश्वर की
राह के बारे में सही जानकारी दी और
अच्छी तरह समझाया। 27 अपुल्लोस
चाहता था कि वह उस पार अखाया जाए,
इसलिए भाइयों ने वहाँ के चेलों को चिट्ठी
लिखकर उन्हें बढ़ावा दिया कि वे उसका
प्यार से स्वागत करें। अखाया पहुँचने के
बाद, अपुल्लोस ने उन लोगों की बहुत
मदद की जो परमेश्वर की महा-कृपा की
वजह से विश्वासी बने थे। 28 उसने
सरेआम और बड़े दमदार तरीके से यहू-
दियों को गलत साबित किया और शास्त्र
से साफ-साफ दिखाया कि यीशु ही
मसीह है।[2]

19 जब अपुल्लोस[3] कुरिंथ में था
तब पौलुस समुद्री तट से दूर,
अंदर के इलाकों का दौरा करता हुआ
इफिसुस[4] शहर आया। वहाँ उसे कुछ
चेले मिले। 2 उसने उनसे पूछा, “जब
तुम विश्वासी बने तब क्या तुमने पवित्र
शक्ति पायी?”[5] उन्होंने कहा, “हमने
पवित्र शक्ति के बारे में कभी नहीं
सुना।” 3 तब पौलुस ने कहा, “तो
फिर, तुमने कौन-सा बपतिस्मा लिया?”
उन्होंने कहा, “यूहन्ना का।”[6] 4 पौलुस
ने कहा, “यूहन्ना ने पश्चाताप का बप-
तिस्मा दिया था[7] और लोगों को बताया
था कि उसके बाद जो आनेवाला है,[8]
उस पर यानी यीशु पर विश्वास करें।”
5 यह सुनने पर उन्होंने प्रभु यीशु के
नाम से बपतिस्मा लिया। 6 और जब
पौलुस ने उन पर अपने हाथ रखे,
तो उन पर पवित्र शक्ति आयी[9]
और वे अलग-अलग भाषा बोलने और

18:21, 25 *अति. क5 देखें। **18:22** *ज़ाहिर है कि यह यरूशलेम है। **18:25** #या “ज़बानी तौर पर सिखाया गया था।”

अध्य. 18
1 रोम 16:1
2 प्रेष 17:2
3 प्रेष 15:36
4 प्रेष 16:6
5 प्रेष 14:21, 22; प्रेष 15:32
6 प्रेष 19:1; 1कुर 1:12; 1कुर 3:5, 6

दूसरा कॉल.
1 रोम 16:3; 1कुर 16:19
2 व्य 18:15; भज 16:10; यश 7:14; मी 5:2

अध्य. 19
3 प्रेष 18:24; 1कुर 3:5, 6
4 1कुर 16:8, 9
5 प्रेष 2:38
6 प्रेष 18:24, 25
7 मत 3:11; मर 1:4
8 यूह 1:15, 30
9 प्रेष 8:14, 17

भविष्यवाणी करने लगे।[1] 7 ये करीब 12 आदमी थे।

8 फिर पौलुस तीन महीने तक इफिसुस के सभा-घर में जा-जाकर[2] निडरता से बोलता रहा। वह परमेश्‍वर के राज के बारे में भाषण देता और दलीलें देकर लोगों को कायल करता था।[3] 9 मगर जब कुछ लोगों ने ढीठ होकर मानने से इनकार कर दिया और लोगों के सामने ‘प्रभु की राह’ को बदनाम करने लगे,[4] तो उसने उन्हें छोड़ दिया[5] और चेलों को उनसे अलग कर लिया। वह हर दिन तरन्‍नुस के स्कूल के सभा-भवन में भाषण देता था। 10 ऐसा दो साल तक चलता रहा। इसलिए एशिया प्रांत में रहनेवाले सब लोगों ने, चाहे वे यहूदी हों या यूनानी, प्रभु का वचन सुना।

11 परमेश्‍वर, पौलुस के हाथों बड़े-बड़े शक्‍तिशाली काम करवाता रहा।[6] 12 यहाँ तक कि उसके शरीर को छूनेवाले कपड़े और अंगोछे बीमारों के पास ले जाए जाते थे[7] और उनकी बीमारियाँ दूर हो जाती थीं और जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत समाए थे वे उनमें से बाहर निकल जाते थे।[8] 13 मगर कुछ यहूदियों ने भी जो जगह-जगह घूमकर दुष्ट स्वर्गदूतों को निकाला करते थे, यीशु का नाम लेकर लोगों में से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालने की कोशिश की। वे कहते थे, “मैं तुम्हें उस यीशु के नाम से हुक्म देता हूँ जिसका प्रचार पौलुस करता है।”[9] 14 स्कीवा नाम के एक यहूदी प्रधान याजक के सात बेटों ने भी ऐसा ही करने की कोशिश की। 15 मगर उस दुष्ट स्वर्गदूत ने उन्हें जवाब दिया, “मैं यीशु को भी जानता हूँ[10] और पौलुस को भी[11] मगर तुम कौन हो?” 16 यह कहकर वह आदमी, जिसमें दुष्ट स्वर्गदूत था, उन पर झपट पड़ा और उसने एक-एक करके उन सातों को धर दबोचा और उन पर इस कदर हावी हो गया कि वे नंगे और ज़ख्मी हालत में उसके घर से भागे। 17 यह बात इफिसुस में रहनेवाले यहूदियों और यूनानियों, सबको पता चली और उन सब पर डर छा गया और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई होती गयी। 18 बहुत-से लोग जो विश्‍वासी बन गए थे, वे आते और खुलकर मान लेते थे कि उन्होंने क्या-क्या बुरे काम किए और इनके बारे में साफ-साफ बताते थे। 19 यहाँ तक कि बहुत-से लोग जो जादूगरी की विद्या में लगे हुए थे, अपनी-अपनी पोथियाँ ले आए और सबके सामने उन्हें जला दिया।[1] जब उन्होंने हिसाब लगाया तो उनकी कीमत 50,000 चाँदी के टुकड़े निकली। 20 इस तरह बड़े शक्‍तिशाली तरीके से यहोवा* का वचन फैलता गया और उसकी जीत होती गयी।[2]

21 यह सब होने के बाद, पौलुस ने मन में ठाना कि वह मकिदुनिया[3] और अखाया का दौरा करने के बाद यरूशलेम के सफर पर निकलेगा।[4] उसने कहा, “वहाँ पहुँचने के बाद मुझे रोम भी जाना होगा।”[5] 22 उसने अपनी सेवा करनेवालों में से दो भाइयों यानी तीमुथियुस[6] और इरास्तुस[7] को मकिदुनिया भेजा, मगर वह खुद कुछ वक्‍त के लिए एशिया प्रांत में ही रुक गया।

23 उसी दौरान इफिसुस में ‘प्रभु की राह’[8] को लेकर बड़ा हंगामा मचा।[9] 24 वहाँ देमेत्रियुस नाम का एक सुनार था जो चाँदी से अरतिमिस देवी के छोटे-छोटे मंदिर बनाता था और कारीगरों का

अध्य. 19
1 प्रेष 2:1, 4; प्रेष 10:45, 46; 1कुर 12:8, 10
2 प्रेष 17:2
3 प्रेष 1:3; प्रेष 28:30, 31
4 प्रेष 9:1, 2; प्रेष 22:4
5 मत 10:14
6 प्रेष 14:3
7 मर 6:56; प्रेष 5:15
8 मत 10:1
9 प्रेष 16:18
10 मत 8:28, 29; मर 1:23, 24; लूक 4:33, 34
11 प्रेष 16:16, 17

दूसरा कॉल.
1 व्य 18:10, 11
2 प्रेष 6:7; प्रेष 12:24; कुल 1:6
3 1कुर 16:5
4 प्रेष 20:22
5 प्रेष 23:11
6 प्रेष 16:1, 2
7 2ती 4:20
8 प्रेष 9:1, 2; प्रेष 19:9; प्रेष 22:4
9 2कुर 1:8

19:20 *अति. क5 देखें।

बहुत मुनाफा करवाता था।[1] **25** उसने इन कारीगरों को और उनके जैसे दूसरे कारीगरों को इकट्ठा किया और उनसे कहा, “लोगो, तुम अच्छी तरह जानते हो कि इस कारोबार से हमारी कितनी कमाई होती है। **26** तुमने यह भी देखा और सुना है कि इस पौलुस ने किस तरह न सिर्फ इफिसुस में,[2] बल्कि एशिया प्रांत के तकरीबन सभी इलाकों में भारी तादाद में लोगों को कायल किया है और उन्हें यह कहकर दूसरे मत की तरफ फेर दिया है कि जो हाथ के बनाए हुए हैं वे ईश्वर हैं ही नहीं।[3] **27** इससे न सिर्फ इस बात का खतरा है कि हमारे कारोबार की बदनामी होगी बल्कि महान देवी अरतिमिस के मंदिर को तुच्छ समझा जाएगा। और जिस देवी को एशिया का सारा प्रांत और सारी दुनिया पूजती है, उसकी शान खत्म हो जाएगी।” **28** यह सुनकर लोग आग-बबूला हो उठे और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे, “इफिसियों की देवी अरतिमिस महान है!”

29 तब शहर में बड़ा हुल्लड़ मच गया और वे सब इकट्ठे रंगशाला में घुस गए और अपने साथ गयुस और अरिस्तरखुस[4] को घसीटकर ले गए जो मकिदुनिया से थे और पौलुस के सफरी साथी थे। **30** पौलुस तो चाहता था कि वह खुद भी अंदर लोगों के सामने जाए, मगर चेलों ने उसे जाने नहीं दिया। **31** यहाँ तक कि त्योहारों और खेलों के कुछ प्रबंधकों ने, जो पौलुस का भला चाहते थे, उसे संदेश भेजा और यह बिनती की कि वह रंगशाला में जाने का जोखिम न उठाए। **32** भीड़ में कोई कुछ चिल्ला रहा था तो कोई कुछ क्योंकि उनमें गड़बड़ी मची हुई थी और ज़्यादातर लोगों को तो पता भी नहीं था कि आखिर वे रंगशाला में क्यों जमा हुए हैं। **33** इसलिए भीड़ में से कुछ लोगों ने सिकंदर को आगे कर दिया और यहूदियों ने उसे सामने की तरफ धकेल दिया। तब सिकंदर ने अपने हाथ से इशारा किया और लोगों को सफाई देनी चाही। **34** मगर जब उन्होंने उसे पहचान लिया कि वह एक यहूदी है, तो वे सब एक-साथ चिल्ला उठे और दो घंटे तक चिल्लाते रहे, “इफिसियों की देवी अरतिमिस महान है!”

35 आखिर में नगर-प्रमुख ने भीड़ को शांत किया और उनसे कहा, “इफिसुस के लोगो, इस दुनिया में ऐसा कौन है जो यह न जानता हो कि इफिसियों का यह शहर, महान अरतिमिस के मंदिर का और आकाश से गिरी मूरत का रखवाला है? **36** इन बातों को कोई झुठला नहीं सकता, इसलिए तुम शांत रहो और जल्दबाज़ी में कोई कदम मत उठाओ। **37** तुम ऐसे आदमियों को पकड़ लाए हो जो न तो मंदिरों को लूटते हैं, न हमारी देवी को बदनाम करते हैं। **38** इसलिए अगर देमेत्रियुस[1] और उसके साथी कारीगरों का किसी के साथ कोई झगड़ा है, तो ऐसे मामलों के लिए तय दिनों पर अदालत लगती है और राज्यपाल भी हैं। वे वहाँ जाकर एक-दूसरे पर इलज़ाम लगाएँ। **39** लेकिन अगर तुम कुछ और चाहते हो तो उसका फैसला जनता की सभा में किया जाना चाहिए, **40** क्योंकि आज के इस मामले को लेकर हम पर देशद्रोह का इलज़ाम लगने का खतरा है। वह इसलिए कि हमने हुल्लड़ मचानेवाली इस भीड़ को जो इकट्ठा होने दिया है, हम इसकी कोई वजह नहीं दे सकते।” **41** यह कहने के बाद उसने भीड़ को भेज दिया।

अध्य. 19

1 प्रेष 16:16

2 इफ 1:1

3 प्रेष 17:29
1कुर 8:4

4 प्रेष 20:4
कुल 4:10
फिले 23, 24

दूसरा कॉल.

1 प्रेष 19:24

20 जब हुल्लड़ थम गया, तो पौलुस ने चेलों को बुलवाया और उनका हौसला बढ़ाने के बाद उन्हें अलविदा कहा और मकिदुनिया के सफर पर निकल पड़ा। 2 उन इलाकों का दौरा करते वक्त उसने बहुत-सी बातें कहकर वहाँ के चेलों का हौसला बढ़ाया और फिर वह यूनान आया। 3 वहाँ तीन महीने रहने के बाद, जब वह जहाज़ पर सीरिया के लिए रवाना होने पर था, तो यहूदियों ने उसके खिलाफ साज़िश रची,[1] इसलिए उसने मकिदुनिया से होते हुए लौटने का फैसला किया। 4 उसके साथ ये सभी लोग गए: बिरीया के रहनेवाले पुररुस का बेटा सोपत्रुस, थिस्सलुनीके के रहनेवालों में से अरिस्तरखुस[2] और सिकुंदुस और दिरबे का रहनेवाला गयुस और तीमुथियुस[3] और एशिया प्रांत से तुखिकुस[4] और त्रुफिमुस।[5] 5 ये लोग आगे निकल गए और त्रोआस शहर में हमारा इंतज़ार करने लगे। 6 मगर हम बिन-खमीर की रोटी के त्योहार[6] के दिनों के बाद फिलिप्पी से समुद्री यात्रा पर निकले और पाँच दिन के अंदर उनके पास त्रोआस पहुँच गए। हमने वहाँ सात दिन बिताए।

7 हफ्ते के पहले दिन जब हम खाना खाने के लिए इकट्ठा हुए, तो पौलुस जमा हुए लोगों को उपदेश देने लगा। वह अगले दिन वहाँ से निकलनेवाला था इसलिए वह आधी रात तक भाषण देता रहा। 8 ऊपर के जिस कमरे में हम इकट्ठा थे वहाँ बहुत-से दीए जल रहे थे। 9 युतुखुस नाम का एक जवान, खिड़की पर बैठा हुआ था। जब पौलुस देर तक बातें करता रहा, तो वह लड़का गहरी नींद सो गया और तीसरी मंज़िल से नीचे गिर पड़ा। जब उसे उठाया गया तो वह मर चुका था। 10 मगर पौलुस सीढ़ियाँ उतरकर नीचे गया और झुककर उससे लिपट गया[1] और भाइयों से कहा, "शांत हो जाओ क्योंकि यह अब ज़िंदा हो गया है।"[2] 11 इसके बाद वह ऊपर गया और खाना खाने लगा* और तब तक उनसे बातें करता रहा जब तक कि दिन न निकल गया और फिर उसने उनसे विदा ली। 12 और वे उस लड़के को ले गए और उसे ज़िंदा पाकर उन्हें इतना दिलासा मिला कि उसका बयान नहीं किया जा सकता।

13 इसके बाद हम जहाज़ पर चढ़कर अस्सुस के लिए रवाना हो गए। मगर पौलुस पैदल चलकर वहाँ आया। अस्सुस में हमें पौलुस को अपने साथ जहाज़ पर लेना था, जैसा उसने हमसे कहा था। 14 जब पौलुस अस्सुस पहुँचा, तो हमने उसे अपने साथ जहाज़ पर चढ़ाया और मितुलेने गए। 15 अगले दिन हम वहाँ से जहाज़ पर निकले और खियुस के पास पहुँचे। फिर दूसरे दिन जहाज़ सामुस में रुका और अगले दिन हम मीलेतुस पहुँचे। 16 पौलुस ने तय किया था कि वह इफिसुस[3] में रुके बिना आगे बढ़ जाएगा ताकि उसे एशिया प्रांत में और वक्त न बिताना पड़े। वह इसलिए जल्दी कर रहा था कि हो सके तो पिन्तेकुस्त के त्योहार के दिन तक यरूशलेम[4] पहुँच जाए।

17 मगर उसने मीलेतुस से इफिसुस में संदेश भेजा और वहाँ की मंडली के प्राचीनों को बुलवाया। 18 जब वे उसके पास आए तो उसने उनसे कहा, "तुम अच्छी तरह जानते हो कि जिस दिन से मैंने एशिया प्रांत में कदम रखा उस दिन से मैंने तुम्हारे बीच किस

अध्य. 20
1 प्रेष 23:12, 16 2कुर 11:23, 26
2 प्रेष 27:2
3 प्रेष 16:1, 2
4 इफ 6:21 कुल 4:7 2ती 4:12
5 प्रेष 21:29 2ती 4:20
6 निर्ग 12:15 निर्ग 23:15

दूसरा कॉल.
1 1रा 17:21, 22 2रा 4:32, 34
2 मत 9:23, 24 यूह 11:39, 40 प्रेष 9:39, 40
3 प्रेष 18:21
4 प्रेष 24:17

20:11 *शा., "रोटी तोड़ी।"

तरह जीवन बिताया।[1] 19 मैं प्रभु का दास बनकर पूरी नम्रता से[2] उसकी सेवा करता रहा और यहूदियों की साज़िशों की वजह से मैंने बहुत आँसू बहाए और कई परीक्षाओं का सामना किया। 20 इस दौरान मैं तुम्हें ऐसी कोई भी बात बताने से पीछे नहीं हटा जो तुम्हारे फायदे* की थी, न ही तुम्हें सरेआम और घर-घर जाकर[3] सिखाने[4] से रुका। 21 मगर मैंने यहूदी और यूनानी, दोनों को परमेश्वर के सामने पश्चाताप करने[5] और हमारे प्रभु यीशु पर विश्वास करने के बारे में अच्छी तरह गवाही दी।[6] 22 और अब देखो, मैं पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन के मुताबिक यरूशलेम जाने के लिए मजबूर हूँ, हालाँकि मैं नहीं जानता कि वहाँ मुझ पर क्या-क्या बीतेगी। 23 मैं सिर्फ इतना जानता हूँ कि हर शहर में पवित्र शक्ति ने बार-बार मुझ पर ज़ाहिर किया कि कैद और मुसीबतें मेरी राह तक रहे हैं।[7] 24 फिर भी मैं अपनी जान को ज़रा भी कीमती नहीं समझता। बस इतना चाहता हूँ कि मैं किसी तरह अपनी दौड़ और अपनी सेवा पूरी कर सकूँ।[8] यह सेवा मुझे प्रभु यीशु ने सौंपी थी कि मैं परमेश्वर की महा-कृपा की खुशखबरी के बारे में अच्छी गवाही दूँ।

25 अब देखो! मैं जानता हूँ कि तुम सब जिनके बीच मैंने राज का प्रचार किया, मेरा मुँह फिर कभी नहीं देखोगे। 26 इसलिए आज के दिन तुम इस बात के गवाह हो कि मैं सब लोगों के खून से निर्दोष हूँ।[9] 27 क्योंकि मैं परमेश्वर की मरज़ी* के बारे में तुम्हें सारी बातें बताने से पीछे नहीं हटा।[10] 28 तुम अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो[11] जिसके बीच पवित्र शक्ति ने तुम्हें निगरानी करनेवाले ठहराया है[1] ताकि तुम चरवाहों की तरह परमेश्वर की मंडली की देखभाल करो[2] जिसे उसने अपने बेटे के खून से खरीदा है।[3] 29 मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद अत्याचारी भेड़िए तुम्हारे बीच घुस आएँगे[4] और झुंड के साथ कोमलता से पेश नहीं आएँगे 30 और तुम्हारे ही बीच में से ऐसे आदमी उठ खड़े होंगे जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने के लिए टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे।[5]

31 इसलिए जागते रहो और याद रखो कि तीन साल तक,[6] मैं रात-दिन आँसू बहा-बहाकर तुममें से हरेक को समझाता रहा। 32 और अब मैं तुम्हें परमेश्वर और उसकी महा-कृपा के वचन के हवाले सौंपता हूँ। यह वचन तुम्हें मज़बूत कर सकता है और सब पवित्र जनों के बीच विरासत दिला सकता है।[7] 33 मैंने किसी की चाँदी या सोने या कपड़े का लालच नहीं किया।[8] 34 तुम खुद यह बात जानते हो कि मेरे इन्हीं हाथों ने न सिर्फ मेरी बल्कि मेरे साथियों की ज़रूरतों को भी पूरा किया है।[9] 35 मैंने सब बातों में तुम्हें दिखाया है कि तुम भी इसी तरह मेहनत करते हुए[10] उन लोगों की मदद करो जो कमज़ोर हैं और प्रभु यीशु के ये शब्द हमेशा याद रखो जो उसने खुद कहे थे: 'लेने से ज़्यादा खुशी देने में है।'"[11]

36 यह सब कहने के बाद पौलुस ने उन सबके साथ घुटने टेके और प्रार्थना की। 37 तब वे सब फूट-फूटकर रोने लगे और पौलुस के गले लगकर उसे प्यार से चूमने लगे। 38 वे खासकर पौलुस की इस बात से दुखी हो गए थे कि वे फिर कभी उसका मुँह नहीं देख पाएँगे।[12] इसके बाद वे उसे जहाज़ तक छोड़ने गए।

20:20 *या "तुम्हारे भले के लिए।" 20:27 *या "के मकसद।"

अध्य. 20
1 प्रेष 19:9, 10
2 1कुर 15:9 1थि 2:6
3 प्रेष 5:42
4 मत 28:19, 20 2ती 4:2
5 मर 1:14, 15
6 लूक 24:46, 47
7 प्रेष 9:15, 16 प्रेष 21:4, 11
8 2ती 4:7
9 यहे 33:8
10 मत 28:19, 20
11 1ती 4:16

दूसरा कॉल.
1 1ती 3:1-7 तीत 1:5-9 इब्र 13:17
2 यूह 21:15 इफ 4:11 1पत 5:2-4
3 मत 26:27, 28 1यूह 1:7
4 मत 7:15 2थि 2:3 2पत 2:1
5 1ती 4:1 2ती 4:3, 4 1यूह 2:18, 19
6 प्रेष 19:9, 10
7 इफ 1:18 कुल 1:12
8 1शम 12:1, 3 मत 10:8 1कुर 9:11, 12 2कुर 7:2 तीत 1:7
9 प्रेष 18:3 1कुर 4:11, 12 1थि 2:9
10 इफ 4:28 1थि 4:11, 12 2थि 3:7, 8
11 नीत 19:17 मत 10:8 लूक 6:38
12 प्रेष 20:25

21 हमने भारी दिल से उनसे विदा
ली और अपनी समुद्री यात्रा शुरू
की। हम बड़ी तेज़ी से सीधे कोस द्वीप
पहुँचे, फिर दूसरे दिन रुदुस द्वीप आए
और वहाँ से पतरा बंदरगाह। **2** फिर
हमें एक जहाज़ मिला जो सीधे समुं-
दर पार फीनीके जा रहा था, हम उस पर
सवार होकर वहाँ से चल दिए। **3** रास्ते
में हमें कुप्रुस द्वीप दिखायी दिया जो हमारे
बायीं तरफ* था। उसे पीछे छोड़ते हुए
हम सीरिया की तरफ बढ़ते गए और
सोर के बंदरगाह पहुँचकर वहाँ जहाज़ से
उतरे, क्योंकि वहाँ जहाज़ का माल
उतारा जाना था। **4** वहाँ हमने ढूँढ़कर
पता लगाया कि चेले कहाँ रहते हैं और
हम सात दिन तक उन्हीं के यहाँ ठहरे।
मगर पवित्र शक्ति ने जो ज़ाहिर किया था
उसकी वजह से चेलों ने पौलुस से बार-
बार कहा कि वह यरूशलेम न जाए।[1]
5 जब वहाँ ठहरने का समय पूरा हुआ,
तो हम वहाँ से निकले और अपने
सफर पर चल पड़े। मगर सारे भाई,
औरतों और बच्चों के साथ हमें शहर के
बाहर तक विदा करने आए। हमने समुं-
दर के किनारे घुटने टेककर प्रार्थना की
6 और एक-दूसरे को अलविदा कहने के
बाद हम जहाज़ पर चढ़ गए और वे अपने
घरों को लौट गए।

7 फिर हम सोर से निकले और
समुद्री रास्ते से पतुलि-मयिस शहर के
बंदरगाह पहुँचे। वहाँ हम भाइयों से
मिले और एक दिन उनके साथ रहे।
8 अगले दिन हम वहाँ से निकलकर
कैसरिया पहुँचे और प्रचारक फिलिप्पुस
के घर गए। फिलिप्पुस चुने हुए सात
आदमियों में से एक था[2] और हम उसके
यहाँ ठहरे। **9** उस आदमी की चार
कुँवारी बेटियाँ थीं जो भविष्यवाणी करती
थीं।[1] **10** हमें वहाँ रहते काफी दिन हो
गए और तब यहूदिया से अगबुस नाम का
एक भविष्यवक्ता[2] आया। **11** उसने
हमारे यहाँ आकर पौलुस का कमरबंद
लिया और उससे अपने हाथ-पैर बाँध-
कर कहा, "पवित्र शक्ति कहती है, 'जिस
आदमी का यह कमरबंद है, उसे यहूदी
इसी तरह यरूशलेम में बाँधेंगे[3] और दूसरे
राष्ट्रों के लोगों के हवाले कर देंगे।'"[4]
12 जब हमने यह सुना, तो हम और वहाँ
के लोग पौलुस से मिन्नतें करने लगे कि
वह यरूशलेम न जाए। **13** तब पौलुस
ने कहा, "तुम क्यों रो-रोकर मेरा इरादा*
कमज़ोर कर रहे हो? यकीन मानो,
मैं प्रभु यीशु के नाम की खातिर यरूशलेम
में न सिर्फ बंदी बनने के लिए बल्कि मरने
के लिए भी तैयार हूँ।"[5] **14** जब वह
नहीं माना तो हम यह कहकर चुप हो गए,
"यहोवा* की मरज़ी पूरी हो।"

15 इसके बाद हमने सफर की तैयारी
की और यरूशलेम के लिए निकल पड़े।
16 कैसरिया से कुछ चेले भी हमारे साथ
आए ताकि हमें कुप्रुस के मनासोन के
घर ले जाएँ जिसके यहाँ हमें ठहर-
ना था। मनासोन शुरू के चेलों में से
एक था। **17** जब हम यरूशलेम पहुँचे,
तो भाइयों ने खुशी-खुशी हमारा स्वागत
किया। **18** मगर अगले दिन पौलुस
हमारे साथ याकूब[6] से मिलने गया और
सभी प्राचीन वहाँ मौजूद थे। **19** पौलुस
ने उन्हें नमस्कार किया और उन्हें पूरा
ब्यौरा दिया कि परमेश्‍वर ने उसकी सेवा
के ज़रिए गैर-यहूदियों के बीच क्या-
क्या काम किए थे।

अध्य. 21
1 प्रेष 21:10-12
2 प्रेष 6:3, 5

दूसरा कॉल.
1 योए 2:28; प्रेष 2:17; 1कुर 11:5
2 प्रेष 11:27, 28
3 प्रेष 20:22, 23; प्रेष 21:33
4 प्रेष 9:15, 16
5 प्रेष 20:24; 2कुर 4:10, 11; 2ती 4:6
6 प्रेष 12:17; प्रेष 15:13; गल 1:19; गल 2:9; याकू 1:1

21:3 *या "बंदरगाह की तरफ।"

21:13 *या "दिल।" **21:14** *अति. क5 देखें।

20 यह सुनकर वे परमेश्वर की
महिमा करने लगे और उन्होंने पौलुस से
कहा, "भाई, तू देख रहा है कि हज़ारों
यहूदी विश्वासी बन गए हैं और वे
सब पूरे जोश के साथ कानून मानते हैं।[1]
21 मगर उन्होंने तेरे बारे में यह अफवाह
सुनी है कि तू दूसरे राष्ट्रों में रहनेवाले सब
यहूदियों को मूसा के कानून के खिलाफ
बगावत करना सिखा रहा है। तू उनसे
कहता है कि वे न तो अपने बच्चों का
खतना करें, न ही सदियों से चले आ रहे
रिवाज़ों को मानें।[2] **22** अब इस बारे में
क्या किया जाए? उन्हें पता चल ही
जाएगा कि तू यहाँ आया हुआ है।
23 इसलिए हम जो तुझसे कह रहे हैं
वह कर। हमारे यहाँ ऐसे चार आदमी
हैं जिन्होंने मन्नत मानी है। **24** तू इन
आदमियों को साथ ले जा और रिवाज़ के
मुताबिक उनके साथ-साथ खुद को शुद्ध
कर और उनका खर्च उठा ताकि वे अपना
सिर मुँड़वाएँ। तब हर कोई जान लेगा
कि तेरे बारे में उन्होंने जो अफवाह सुनी
थी वह सच नहीं है, बल्कि तू सही चाल
चलता है और कानून भी मानता है।[3]
25 जहाँ तक गैर-यहूदी विश्वासियों की
बात है, हमने अपना फैसला उन्हें लिख
भेजा है कि वे मूरतों के आगे बलि की हुई
चीज़ों से,[4] खून से,[5] गला घोंटे हुए जान-
वरों के माँस से*[6] और नाजायज़ यौन-
संबंध# से हमेशा दूर रहें।"[7]

26 अगले दिन पौलुस उन आदमियों
को ले गया और कानून के मुताबिक
उसने खुद को उन आदमियों के साथ शुद्ध
किया।[8] वह मंदिर के अंदर यह बताने
गया कि कानून के मुताबिक शुद्ध होने के
दिन कब पूरे होंगे और कब उनमें से हरेक
के लिए बलिदान चढ़ाए जाने हैं।

27 जब वे सात दिन पूरे होनेवाले थे,
तो एशिया से आए यहूदियों ने उसे मंदिर
में देखा और भीड़ को भड़काकर उसे
पकड़ लिया। **28** वे चिल्ला-चिल्लाकर
कहने लगे, "इसराएल के लोगो, हमारी
मदद करो! यही है वह आदमी जो हर
कहीं, हर किसी को हमारे लोगों के
खिलाफ और हमारे कानून और इस
जगह के खिलाफ शिक्षा दे रहा है। और-
तो-और, यह यूनानियों को इस मंदिर में
लाया है और इसने इस पवित्र जगह को
दूषित कर दिया है।"[1] **29** ऐसा उन्होंने
इसलिए कहा क्योंकि उन्होंने पहले, इफि-
सुस के त्रुफिमुस[2] को उसके साथ शहर में
देखा था और उन्हें लगा कि पौलुस उसे
मंदिर के अंदर ले आया है। **30** तब
सारे शहर में होहल्ला होने लगा और
लोग इकट्ठा होकर मंदिर की तरफ दौड़
पड़े। उन्होंने पौलुस को धर-दबोचा और
उसे घसीटते हुए मंदिर के बाहर ले
गए। उसी घड़ी दरवाज़े बंद कर दिए
गए। **31** वे उसे मार डालना चाहते थे।
तभी रोमी पलटन के सेनापति को खबर
मिली कि सारे यरूशलेम में हाहाकार मचा
हुआ है। **32** तब वह फौरन सैनिकों
और सेना-अफसरों को लेकर नीचे उनके
पास दौड़ा। जब यहूदियों ने सेनापति और
उसके सैनिकों को देखा, तो पौलुस को
पीटना बंद कर दिया।

33 तब सेनापति पास आया और
उसने पौलुस को हिरासत में ले लिया।
उसने हुक्म दिया कि उसे दो ज़ंजीरों
से बाँध दिया जाए।[3] फिर वह पूछताछ
करने लगा कि वह कौन है और उसने
क्या किया है। **34** मगर भीड़ में कोई
कुछ चिल्लाता तो कोई कुछ। जब वह

21:25 *या "ऐसे जानवर का माँस जिसका खून अच्छी तरह नहीं बहाया जाता।" #यूनानी में *पोर्निया*। शब्दावली देखें।

अध्य. 21
1 प्रेष 15:1
2 रोम 2:28, 29; 1कुर 7:18-20
3 1कुर 9:20
4 उत 35:2; निर्ग 34:15
5 उत 9:4; लैव 3:17; लैव 17:10; 1शम 14:32, 33
6 लैव 17:13; व्य 12:23, 24
7 प्रेष 15:28, 29; 1कुर 6:9; कुल 3:5; 1थि 4:3; 1पत 4:3
8 1कुर 9:20

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 24:5, 6
2 प्रेष 20:4; 2ती 4:20
3 प्रेष 20:22, 23; प्रेष 21:10, 11

इस हंगामे की वजह से पौलुस के बारे में
ठीक-ठीक नहीं जान पाया, तो उसने हुक्म
दिया कि पौलुस को सैनिकों के रहने की
जगह ले जाओ। 35 मगर जब पौलुस
सीढ़ियों पर पहुँचा, तो भीड़ उसे मारने पर
उतारू हो गयी इसलिए सैनिकों को उसे
उठाकर ले जाना पड़ा। 36 लोगों की
भीड़ यह चिल्लाती हुई पीछे-पीछे आ रही
थी, "इसे मार डालो!"

37 जब वे पौलुस को लेकर अपने
रहने की जगह पहुँचनेवाले थे तो पौलुस
ने सेनापति से कहा, "क्या मैं कुछ कह
सकता हूँ?" उसने कहा, "क्या तू यूनानी
बोल सकता है? 38 क्या तू वही मिस्री
नहीं जिसने कुछ समय पहले बगावत की
आग भड़कायी थी और 4,000 कटार-
बंद आदमियों को वीराने में ले गया
था?" 39 तब पौलुस ने कहा, "मैं दर-
असल एक यहूदी हूँ[1] और किलिकिया
के तरसुस शहर का नागरिक हूँ[2] और
वह कोई छोटा शहर नहीं है। इसलिए मैं
तुझसे बिनती करता हूँ कि मुझे इन लोगों
से बात करने की इजाज़त दे।" 40 जब
उसने इजाज़त दी तो पौलुस ने सीढ़ियों पर
खड़े-खड़े हाथ से लोगों को शांत होने का
इशारा किया। तब सन्‍नाटा छा गया और
पौलुस इब्रानी भाषा में उनसे बात करने
लगा।[3] उसने कहा,

22 "भाइयो और पिता समान
बुज़ुर्गो, अब मैं अपनी सफाई में
जो कहने जा रहा हूँ, वह सुनो।"[4]
2 जब उन्होंने पौलुस को इब्रानी भाषा में
बोलते सुना, तो वे और भी शांत हो
गए और उसने कहा, 3 "मैं एक यहूदी
हूँ।[5] मेरा जन्म किलिकिया के तरसुस में
हुआ था।[6] मगर मैंने यहाँ यरूशलेम में
गमलीएल के पैरों के पास बैठकर
शिक्षा पायी[7] और मुझे पुरखों के कानून
को सख्ती से मानना सिखाया गया।[1] मैं
परमेश्वर की सेवा में बहुत जोशीला था,
जैसे आज तुम सब हो।[2] 4 इस 'राह'
के माननेवालों को मैं गिरफ्तार करके जेल
में डलवा देता था, फिर चाहे वे आदमी
हों या औरत। मैं उन पर बहुत ज़ुल्म
ढाता था, यहाँ तक कि उन्हें मरवा डालता
था।[3] 5 मेरी इन बातों की गवाही महा-
याजक और मुखियाओं की पूरी सभा दे
सकती है। मैंने उनसे दमिश्क के यहूदी
भाइयों के नाम चिट्ठियाँ भी ली थीं। और
वहाँ के लिए निकल पड़ा ताकि वहाँ जो
लोग इस 'राह' को मानते थे, उन्हें
गिरफ्तार करके यरूशलेम ले आऊँ और
उन्हें सज़ा दिलाऊँ।

6 मगर जब मैं सफर करते-करते
दमिश्क के पास आ पहुँचा, तो दोपहर
के वक्‍त अचानक आकाश से तेज़ रौशनी
मेरे चारों तरफ चमक उठी।[4] 7 तब मैं
ज़मीन पर गिर पड़ा और मैंने एक
आवाज़ सुनी जो मुझसे कह रही थी,
'शाऊल, शाऊल, तू क्यों मुझ पर ज़ुल्म
कर रहा है?' 8 मैंने पूछा, 'हे प्रभु, तू
कौन है?' उसने कहा, 'मैं यीशु नासरी हूँ,
जिस पर तू ज़ुल्म कर रहा है।' 9 जो
आदमी मेरे साथ थे, उन्हें रौशनी तो
दिखायी दे रही थी मगर वे उसके शब्द
नहीं समझ रहे थे जो मुझसे बात कर
रहा था। 10 तब मैंने कहा, 'प्रभु, मैं
क्या करूँ?' प्रभु ने मुझसे कहा, 'उठ
और दमिश्क जा और वहाँ तुझे वे सारे
काम बताए जाएँगे जो तेरे लिए ठहराए
गए हैं।'[5] 11 मगर मैं उस रौशनी की
चमक की वजह से कुछ नहीं देख पा रहा
था, इसलिए जो मेरे साथ थे उन्होंने मेरा
हाथ पकड़कर मुझे दमिश्क पहुँचाया।

12 वहाँ हनन्याह नाम का एक आदमी
था जो परमेश्वर का कानून माननेवाला

अध्य. 21
1 फिल 3:4, 5
2 प्रेष 22:3
3 प्रेष 26:14

अध्य. 22
4 फिल 1:7
5 रोम 11:1
6 प्रेष 21:39
7 प्रेष 5:34

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 26:4, 5
2 गल 1:14
फिल 3:4-6
3 प्रेष 8:3
प्रेष 9:1, 2
प्रेष 26:9-11
1ती 1:12, 13
4 प्रेष 9:3-8
प्रेष 26:13-15
5 प्रेष 26:16

एक भक्त इंसान था और वहाँ रहनेवाले
सभी यहूदी उसकी तारीफ किया करते
थे। **13** वह मेरे पास आकर खड़ा हुआ
और उसने मुझसे कहा, 'शाऊल, मेरे
भाई, आँखों की रौशनी पा!' उसी घड़ी
मेरी आँखों की रौशनी लौट आयी और
मैंने उसे देखा।[1] **14** उसने कहा, 'हमारे
पुरखों के परमेश्‍वर ने तुझे चुना है कि तू
उसकी मरज़ी को जाने और उस नेक
जन को देखे[2] और उसकी आवाज़ सुने,
15 क्योंकि तुझे उसकी तरफ से सब
इंसानों के सामने उन बातों की गवाही
देनी होगी जो तूने देखी और सुनी हैं।[3]
16 अब तू देर क्यों करता है? उठ, बप-
तिस्मा ले और उसका नाम लेकर[4] अपने
पापों को धो ले।'[5]

17 मगर जब मैं यरूशलेम[6] लौटकर
मंदिर में प्रार्थना कर रहा था, तो मैंने एक
दर्शन देखा।* **18** और मैंने देखा कि
वह मुझसे कह रहा है, 'जल्दी कर, फौरन
यरूशलेम से निकल जा क्योंकि तू मेरे
बारे में जो गवाही दे रहा है, उसे वे नहीं
मानेंगे।'[7] **19** तब मैंने कहा, 'प्रभु, वे
जानते हैं कि मैं तुझ पर विश्‍वास करने-
वालों को जेल में डालता था और एक-
एक सभा-घर में जाकर उन्हें कोड़े लगाता
था।[8] **20** और जब तेरे गवाह स्तिफ-
नुस का खून बहाया जा रहा था, तब मैं भी
वहीं पास खड़े होकर उस कत्ल में साथ दे
रहा था और उसके कातिलों के कपड़ों की
रखवाली कर रहा था।'[9] **21** फिर भी
उसने मुझसे कहा, 'जा, मैं तुझे दूर-दूर के
गैर-यहूदियों के पास भेजता हूँ।'"[10]

22 भीड़ के लोग अब तक पौलुस की
बात सुन रहे थे, मगर फिर ज़ोर-ज़ोर
से चिल्लाने लगे, "इस आदमी का धरती
से नामो-निशान मिटा दो, यह ज़िंदा
रहने के लायक नहीं!" **23** वे ज़ोर-
ज़ोर से चिल्लाकर अपने चोगे यहाँ-वहाँ
हवा में उछाल रहे थे और धूल उड़ा
रहे थे।[1] **24** इसलिए सेनापति ने हुक्म
दिया कि पौलुस को सैनिकों के रहने की
जगह लाया जाए और उसे कोड़े लगा-
कर पूछताछ की जाए ताकि मैं ठीक-
ठीक जानूँ कि ये लोग क्यों इसके
खिलाफ इतना चिल्ला रहे हैं। **25** मगर
जब सैनिकों ने उसे कोड़े लगाने के लिए
बाँध दिया, तो पौलुस ने वहाँ खड़े सेना-
अफसर से कहा, "क्या तू एक रोमी नाग-
रिक को, यह साबित किए बगैर कि उसने
कोई जुर्म किया है,* कोड़े लगवाएगा?
क्या यह कानून के हिसाब से सही है?"[2]
26 जब सेना-अफसर ने यह सुना, तो
वह सेनापति के पास गया और उसे यह
खबर देकर कहा, "तू क्या करना चाहता
है? यह आदमी तो एक रोमी नागरिक
है।" **27** तब सेनापति ने पौलुस के पास
आकर उससे पूछा, "मुझे बता, क्या तू
रोमी नागरिक है?" उसने कहा, "हाँ।"
28 सेनापति ने कहा, "मैंने बड़ी रकम
देकर नागरिक होने के अधिकार खरीदे
हैं।" पौलुस ने कहा, "मगर मेरे पास तो ये
जन्म से ही हैं।"[3]

29 तब फौरन वे आदमी जो उसे
बुरी तरह पीटकर पूछताछ करनेवाले थे,
उसके पास से हट गए और सेनापति यह
जानकर डर गया कि उसने एक रोमी
आदमी को ज़ंजीरों में जकड़ा है।[4]

30 इसलिए अगले दिन उसने पौलुस
के बंधन खोल दिए और प्रधान याजकों
और पूरी महासभा को इकट्ठा होने
का हुक्म दिया क्योंकि वह ठीक-ठीक
जानना चाहता था कि यहूदी क्यों उस
पर इलज़ाम लगा रहे हैं। इसके बाद वह

अध्य. 22
1 प्रेष 9:17, 18
2 1कुर 9:1; 1कुर 15:8; गल 1:15, 16
3 प्रेष 23:11; प्रेष 26:16
4 प्रेष 10:43
5 1कुर 6:11; 1यूह 1:7; प्रक 1:5
6 प्रेष 9:26; गल 1:18
7 प्रेष 9:28, 29
8 प्रेष 8:3
9 प्रेष 7:58; प्रेष 8:1; 1ती 1:13, 15
10 प्रेष 9:15; प्रेष 13:2; रोम 1:5; रोम 11:13; गल 2:7; 1ती 2:7

दूसरा कॉल.
1 2शम 16:13
2 प्रेष 16:37, 38; प्रेष 23:27
3 प्रेष 16:37
4 प्रेष 25:16

22:17 * या "मुझ पर बेसुधी छा गयी।"

22:25 * या "बिना किसी मुकदमे के।"

पौलुस को नीचे लाया और उनके बीच
खड़ा किया।[1]

23 पौलुस ने महासभा की तरफ
टकटकी लगाकर देखा और
कहा, "भाइयो, मैंने आज के दिन तक
परमेश्वर के सामने बिलकुल साफ ज़मीर
से ज़िंदगी बितायी है।"[2] **2** यह सुन-
कर महायाजक हनन्याह ने पौलुस के पास
खड़े लोगों को हुक्म दिया कि वे उसके मुँह
पर थप्पड़ मारें। **3** तब पौलुस ने उससे
कहा, "अरे कपटी,* तुझ पर पर-
मेश्वर की मार पड़ेगी। तू कानून के मुता-
बिक मेरा न्याय करने बैठा है और मुझे
मारने का हुक्म देकर उसी कानून को तोड़
भी रहा है?" **4** तब वहाँ खड़े लोगों
ने कहा, "तू परमेश्वर के महायाजक
की बेइज़्ज़ती कर रहा है?" **5** पौलुस ने
कहा, "भाइयो, मुझे मालूम नहीं था कि
यह महायाजक है। क्योंकि लिखा है, 'तू
अपने लोगों के अधिकारी की निंदा मत
करना।'"[3]

6 पौलुस ने यह जानते हुए कि उनमें
से एक दल सदूकियों का है और दूसरा
फरीसियों का, महासभा में ज़ोर से पुकार-
कर कहा, "भाइयो, मैं एक फरीसी हूँ[4]
और फरीसियों का बेटा हूँ। मरे हुओं के
ज़िंदा होने की आशा को लेकर मुझ पर
मुकदमा चलाया जा रहा है।" **7** जब
उसने यह कहा, तो फरीसियों और सदू-
कियों में झगड़ा होने लगा और सभा में
फूट पड़ गयी। **8** क्योंकि सदूकी कहते
हैं कि न तो मरे हुए ज़िंदा किए जाते हैं,
न स्वर्गदूत होते हैं, न ही अदृश्य प्राणी।
मगर फरीसी इन सब बातों पर विश्वास
करते हैं।[5] **9** इसलिए वहाँ बड़ी चीख-
पुकार मच गयी और फरीसियों के दल
के कुछ शास्त्री उठे और यह कहकर

23:3 * या "सफेदी पुती दीवार।"

बुरी तरह झगड़ने लगे, "हमें इस आदमी
में कोई बुराई नज़र नहीं आती। क्या
पता किसी अदृश्य प्राणी या स्वर्गदूत
ने उससे बात की हो[1] . . .।" **10** जब
झगड़ा हद-से-ज़्यादा बढ़ गया, तो सेना-
पति डर गया कि कहीं वे पौलुस की बोटी-
बोटी न कर दें। उसने सैनिकों को हुक्म
दिया कि वे नीचे जाकर पौलुस को छुड़ा लें
और सैनिकों के रहने की जगह ले आएँ।

11 मगर उसी रात प्रभु पौलुस के पास
आ खड़ा हुआ और उसने कहा, "हिम्मत
रख![2] क्योंकि जैसे तू यरूशलेम में मेरे बारे
में अच्छी तरह गवाही देता आया है, उसी
तरह रोम में भी तुझे गवाही देनी है।"[3]

12 जब दिन निकला, तो यहूदियों ने
एक साज़िश रची और यह कसम खायी
कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें
तब तक अगर हमने कुछ खाया या पीया,
तो हम पर शाप पड़े। **13** जिन्होंने यह
कसम खाकर साज़िश रची थी उनकी
गिनती 40 से ज़्यादा थी। **14** वे प्रधान
याजकों और मुखियाओं के पास गए और
कहने लगे, "हमने कसम* खायी है कि
जब तक हम पौलुस को मार नहीं डालते,
तब तक अगर हमने कुछ खाया तो हम
पर शाप पड़े। **15** इसलिए अब तुम
लोग महासभा के साथ मिलकर सेनापति
को बताओ कि वह पौलुस को नीचे तुम्हारे
पास ले आए, मानो तुम उसके मामले की
करीबी से जाँच करना चाहते हो। मगर
हम उसके यहाँ पहुँचने से पहले ही उसका
काम तमाम करने के लिए तैयार रहेंगे।"

16 लेकिन पौलुस के भाँजे ने यह सुन
लिया कि वे उसे छिपकर मार डालने
की साज़िश कर रहे हैं। उसने सैनिकों
के रहने की जगह जाकर यह खबर
पौलुस को दे दी। **17** तब पौलुस ने

23:14 * या "शपथ।"

अध्य. 22
1 मत 10:17, 18
लूक 21:12

अध्य. 23
2 प्रेष 24:15, 16
2कुर 1:12
इब्र 13:18
1पत 3:16

3 निर्ग 22:28

4 प्रेष 26:4, 5
फिल 3:4, 5

5 प्रेष 4:1, 2

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 22:6, 7
प्रेष 22:17, 18

2 प्रेष 18:9

3 प्रेष 27:23, 24
प्रेष 28:23
प्रेष 28:30, 31

एक सेना-अफसर को अपने पास बुला-
कर उससे कहा, “इस लड़के को सेनापति
के पास ले जाओ, यह उसे एक खबर देना
चाहता है।” 18 वह उसे लेकर सेना-
पति के पास गया और उसने कहा, “कैदी
पौलुस ने मुझे अपने पास बुलाया और
मुझसे गुज़ारिश की कि इस लड़के को तेरे
पास ले आऊँ क्योंकि यह तुझे कुछ
बताना चाहता है।” 19 सेनापति लड़के
का हाथ पकड़कर उसे अलग ले गया
और अकेले में उससे पूछा, “तू मुझे क्या
खबर देना चाहता है?” 20 उसने कहा,
“यहूदियों ने मिलकर यह तय किया
है कि वे तुझसे बिनती करेंगे कि तू
कल पौलुस को महासभा के सामने लाए,
मानो वे उसके मामले के बारे में और
जानना चाहते हों।[1] 21 मगर तू उनकी
बातों में न आना क्योंकि उनके 40 से
ज़्यादा आदमी पौलुस को छिपकर मार
डालने की साज़िश कर रहे हैं और
उन्होंने कसम* खायी है कि जब तक वे
पौलुस को मार न डालें, तब तक अगर
उन्होंने कुछ खाया या पीया तो उन पर
शाप पड़े।[2] और अब वे तैयार हैं और
तुझसे इजाज़त पाने का इंतज़ार कर रहे
हैं।” 22 इसलिए सेनापति ने लड़के को
सख्ती से यह कहकर भेज दिया, “किसी
से मत कहना कि तूने मुझे यह बात
बता दी है।”

23 तब उसने दो सेना-अफसरों को
बुलाया और उनसे कहा, “200 सैनिक,
70 घुड़सवार और 200 भाला चलाने-
वाले तैयार रखो कि वे रात के तीसरे
घंटे* कैसरिया के लिए कूच करें।
24 और पौलुस के लिए घोड़े तैयार रखो
ताकि तुम उसे सही-सलामत राज्यपाल
फेलिक्स के पास पहुँचाओ।” 25 और
उसने चिट्ठी लिखी जिसमें ये बातें थीं:

26 “महाप्रतापी राज्यपाल फेलिक्स
को क्लौदियुस लूसियास का नमस्कार!
27 इस आदमी को यहूदियों ने पकड़
लिया था और वे इसे मार डालनेवाले थे,
मगर मैंने अपने सैनिकों के साथ फौरन
वहाँ पहुँचकर इसे बचा लिया,[1] क्योंकि
मुझे पता चला कि यह एक रोमी नाग-
रिक है।[2] 28 मैं जानना चाहता था कि
वे किस वजह से इस पर इलज़ाम लगा रहे
हैं, इसलिए मैं इसे उनकी महासभा में ले
गया।[3] 29 मैंने पाया कि उनके अपने
कानूनी मसले को लेकर इस पर इलज़ाम
लगाया गया था,[4] मगर इस पर ऐसा कोई
भी इलज़ाम नहीं था जिससे यह मौत की
सज़ा पाने या जेल जाने के लायक ठहरे।
30 मगर मुझे खबर मिली कि इसके
खिलाफ एक साज़िश रची गयी है।[5] इस-
लिए मैं बिना देर किए इसे तेरे पास भेज
रहा हूँ और मैंने मुद्दइयों को हुक्म दिया है
कि तेरे सामने इसके खिलाफ अपने इल-
ज़ाम बताएँ।”

31 इसलिए सैनिकों को जैसा
हुक्म मिला था, वे पौलुस को रातों-
रात अंतिपत्रिस शहर ले आए।[6]
32 अगले दिन घुड़सवार पौलुस को
लेकर आगे निकल गए और सैनिक
अपने रहने की जगह लौट आए।
33 कैसरिया पहुँचकर घुड़सवारों ने
राज्यपाल को चिट्ठी दी और पौलुस
को उसके सामने पेश किया। 34 चिट्ठी
पढ़कर राज्यपाल ने पूछा कि पौलुस किस
प्रांत का है और उसे पता चला कि वह
किलिकिया से है।[7] 35 उसने पौलुस से
कहा, “जब तेरे मुद्दई यहाँ आएँगे,[8] तो
मैं तुझे अपनी सफाई में बोलने का पूरा-
पूरा मौका दूँगा।” उसने हुक्म दिया कि

अध्य. 23
1 प्रेष 23:15
2 प्रेष 23:12

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 21:31-33
2 प्रेष 16:37
प्रेष 22:25
3 प्रेष 22:30
4 प्रेष 25:19
5 प्रेष 23:16
6 प्रेष 23:23, 24
7 प्रेष 21:39
प्रेष 22:3
8 प्रेष 24:1

23:21 *या “शपथ।” **23:23** *यानी रात करीब 9 बजे।

उसे हेरोदेस के महल में पहरे में रखा
जाए।

24 पाँच दिन बाद महायाजक
हनन्याह[1] कुछ मुखियाओं और
तिरतुल्लुस नाम के किसी वकील के
साथ वहाँ आया और उन्होंने राज्यपाल[2]
के सामने पौलुस के खिलाफ मुकदमा पेश
किया। **2** जब तिरतुल्लुस को बोलने के
लिए कहा गया, तो उसने यह कहकर
पौलुस पर इलज़ाम लगाना शुरू किया,

“हे महाप्रतापी फेलिक्स, तेरी बदौलत
हम बड़े अमन-चैन से हैं और तेरी अच्छी-
अच्छी योजनाओं से इस जाति में काफी
सुधार हो रहे हैं। **3** इनका फायदा हमें
हर वक्त और हर जगह हो रहा है और
इसके लिए हम तेरे बहुत एहसानमंद हैं।
4 मगर मैं तुझे और तकलीफ नहीं देना
चाहता, इसलिए मैं तुझसे मिन्नत करता
हूँ कि तू मेहरबानी करके कुछ देर के लिए
हमारी सुन ले। **5** हमने पाया है कि यह
आदमी फसाद की जड़* है[3] और पूरी
दुनिया में यहूदियों को बगावत करने के
लिए भड़काता है[4] और नासरियों के गुट
का एक मुखिया है।[5] **6** इसने मंदिर को
अपवित्र करने की भी कोशिश की इस-
लिए हमने इसे पकड़ लिया।[6] **7** *—
8 हम इस पर जो-जो इलज़ाम लगा रहे
हैं, उनके बारे में अगर तू खुद इससे पूछ-
ताछ करे तो तुझे पता चल जाएगा कि ये
बातें सच हैं।”

9 तब यहूदी भी पौलुस के खिलाफ
बोलने लगे और दावे के साथ कहने लगे
कि ये बातें सही हैं। **10** जब राज्यपाल
ने सिर हिलाकर पौलुस को बोलने का
इशारा किया, तो उसने कहा,

“मुझे तेरे सामने अपनी सफाई पेश
करने में बड़ी खुशी हो रही है, क्योंकि मैं
जानता हूँ कि तू कई सालों से इस जाति
का न्यायी है।[1] **11** मैं जो कह रहा हूँ
उसकी सच्चाई तू खुद पता कर सकता
है। मुझे उपासना के लिए यरूशलेम गए
12 दिन से ज़्यादा नहीं हुए[2] **12** और
ऐसा कभी नहीं हुआ कि यहूदियों ने मुझे
मंदिर में किसी से बहस करते पाया हो,
या फिर सभा-घरों या शहर में कहीं भीड़
को जमा करते हुए पाया हो। **13** न ही
ये उन बातों के सच होने का सबूत दे
सकते हैं जिनका ये मुझ पर अभी इल-
ज़ाम लगा रहे हैं। **14** मगर मैं तेरे
सामने स्वीकार करता हूँ कि जिस राह को
ये एक गुट कहते हैं, उसी को मानते हुए मैं
अपने पुरखों के परमेश्वर की पवित्र सेवा
कर रहा हूँ।[3] क्योंकि मैं कानून और
भविष्यवक्ताओं की लिखी सारी बातों
पर विश्वास करता हूँ।[4] **15** और मैं
भी इन लोगों की तरह परमेश्वर से यह
आशा रखता हूँ कि अच्छे और बुरे,[5]
दोनों तरह के लोगों को मरे हुओं में से
ज़िंदा किया जाएगा।[6] **16** इसलिए मैं
हमेशा कोशिश करता हूँ कि परमेश्वर
और इंसानों की नज़र में कोई अपराध
न करूँ ताकि मेरा ज़मीर साफ* रहे।[7]
17 कई सालों बाद मैं अपने लोगों के
लिए दान लेकर आया था[8] और पर-
मेश्वर को चढ़ावे अर्पित करने आया था।
18 जब मैं ये काम कर रहा था, तो
उन्होंने मुझे मंदिर में मूसा के कानून के
मुताबिक शुद्ध पाया।[9] मगर वहाँ न तो
मेरे साथ कोई भीड़ थी, न ही मैं
कोई दंगा कर रहा था। वहाँ एशिया प्रांत
के कुछ यहूदी भी मौजूद थे। **19** अगर
उन्हें मेरे खिलाफ कुछ कहना था तो उन्हें
यहाँ होना चाहिए था और तेरे सामने मुझ

24:5 *शा., “महामारी।” **24:7** *अति. क3 देखें।

24:16 *या “निर्दोष।”

अध्य. 24
1 प्रेष 23:2
2 प्रेष 23:26
3 मत 5:11; प्रेष 16:20, 21; प्रेष 17:6, 7
4 लूक 23:1, 2
5 मत 2:23; प्रेष 28:22
6 प्रेष 21:27, 28

दूसरा कॉल.
1 फिल 1:7
2 प्रेष 21:17, 26
3 निर्ग 3:15; प्रेष 3:13; 2ती 1:3
4 प्रेष 28:23; रोम 3:21
5 लूक 23:43
6 यश 26:19; मत 22:31, 32; लूक 14:13, 14; यूह 5:28, 29; यूह 11:25; इब्र 11:35; प्रक 20:12
7 प्रेष 23:1; 1कुर 4:4; इब्र 13:18
8 2कुर 8:4
9 प्रेष 21:24, 26

पर इलज़ाम लगाना था।[1] 20 या फिर
यहाँ मौजूद ये लोग बताएँ कि जब मैं महा-
सभा के सामने खड़ा था तो इन्होंने मुझमें
क्या दोष पाया। 21 वे मुझ पर सिर्फ
एक बात का दोष लगा सकते हैं, जो मैंने
इनके बीच खड़े होकर बुलंद आवाज़ में
कही थी, 'मरे हुओं के ज़िंदा होने की बात
को लेकर आज तुम्हारे सामने मुझ पर
मुकदमा चलाया जा रहा है!'"[2]

22 फेलिक्स 'प्रभु की राह'[3] के बारे
में अच्छी तरह जानता था कि सच
क्या है, फिर भी उसने यह कहकर
मामला टाल दिया, "जब सेनापति लूसि-
यास यहाँ आएगा तब मैं तुम्हारे इस
मामले का फैसला करूँगा।" 23 फिर
उसने सेना-अफसर को हुक्म दिया कि इस
आदमी को हिरासत में रखा जाए मगर
थोड़ी आज़ादी दी जाए और उसके लोगों
को उसकी सेवा करने से न रोका जाए।

24 कुछ दिन बाद जब फेलिक्स
अपनी पत्नी द्रुसिल्ला को, जो एक यहूदी
थी, साथ लेकर आया तो उसने पौलुस
को बुलवाया। और जब पौलुस ने उससे
मसीह यीशु में विश्वास करने के बारे
में बताया तो उसने सुना।[4] 25 लेकिन
जब पौलुस नेकी, संयम और आनेवाले
न्याय के बारे में बात करने लगा,[5] तो
फेलिक्स घबरा उठा और उसने कहा,
"फिलहाल तू जा। फिर कभी मौका मिला
तो मैं तुझे बुला लूँगा।" 26 पर साथ ही
वह पौलुस से रिश्वत पाने की भी उम्मीद
कर रहा था। इसलिए वह उसे बार-बार
बुलाकर उससे बातचीत किया करता था।
27 इस तरह दो साल बीत गए और
फेलिक्स की जगह पुरकियुस फेस्तुस ने
ले ली। फेलिक्स यहूदियों को खुश करना
चाहता था,[6] इसलिए वह पौलुस को कैद
में ही छोड़ गया।

अध्य. 24
1 प्रेष 25:16
2 प्रेष 23:6
3 प्रेष 9:1, 2; प्रेष 19:9
4 मत 10:18
5 प्रेष 17:30, 31; 2कुर 5:10
6 प्रेष 25:9

दूसरा कॉल.

25 उस प्रांत में आने और सत्ता
सँभालने के तीन दिन बाद,
फेस्तुस[1] कैसरिया से यरूशलेम
गया। 2 तब प्रधान याजकों और यहू-
दियों के खास-खास आदमियों ने उसके
सामने पौलुस के खिलाफ अपने इल-
ज़ाम पेश किए।[2] वे फेस्तुस से बिनती
करने लगे 3 कि वह मेहरबानी करके
पौलुस को यरूशलेम भेजे। मगर उन्होंने
साज़िश की थी कि वे छिपकर बैठेंगे और
रास्ते में ही पौलुस को मार डालेंगे।[3]
4 मगर फेस्तुस ने कहा कि पौलुस को
कैसरिया में ही हिरासत में रखा जाए और
मैं खुद बहुत जल्द वहाँ जानेवाला हूँ।
5 उसने कहा, "इसलिए तुम लोगों के जो
बड़े अधिकारी हैं वे मेरे साथ चलें और
उस आदमी ने अगर कुछ बुरा किया है,
तो उस पर इलज़ाम लगाएँ।"[4]

6 फेस्तुस यरूशलेम में आठ-दस दिन
रहने के बाद कैसरिया आया और
अगले दिन न्याय-आसन पर बैठा। उसने
हुक्म दिया कि पौलुस को लाया जाए।
7 जब पौलुस आया, तो जो यहूदी यरू-
शलेम से आए थे वे उसे घेरकर खड़े हो
गए और उस पर कई बड़े-बड़े इलज़ाम
लगाने लगे जिनका वे कोई सबूत नहीं दे
सकते थे।[5]

8 मगर पौलुस ने अपनी सफाई में
कहा, "मैंने किसी के खिलाफ कोई पाप
नहीं किया, न यहूदियों के कानून के
खिलाफ, न मंदिर के खिलाफ और
न ही सम्राट के खिलाफ।"[6] 9 फेस्तुस
ने यहूदियों को खुश करने के इरादे
से[7] पौलुस से कहा, "तो क्या तू
यरूशलेम जाना चाहता है ताकि वहाँ मेरे
सामने इन मामलों के बारे में तेरा न्याय
किया जाए?" 10 मगर पौलुस ने कहा,
"मैं सम्राट के न्याय-आसन के सामने खड़ा

अध्य. 25
1 प्रेष 24:27
2 प्रेष 24:1
3 प्रेष 23:20, 21
4 प्रेष 25:16
5 मत 5:11; लूक 23:1, 2; प्रेष 24:5
6 प्रेष 24:11, 12
7 प्रेष 24:27

हूँ, मेरा न्याय यहीं किया जाना चाहिए। मैंने यहूदियों के साथ कुछ बुरा नहीं किया, जैसा कि तुझे अच्छी तरह पता चल रहा है। **11** अगर मैं वाकई अपराधी हूँ और मैंने मौत की सज़ा के लायक कोई अपराध किया है,[1] तो मैं मरने से पीछे नहीं हटता। लेकिन अगर इनका एक भी इलज़ाम सच नहीं है तो कोई भी आदमी उन्हें खुश करने के लिए मुझे उनके हवाले नहीं कर सकता। मैं सम्राट से फरियाद करता हूँ!"[2] **12** तब फेस्तुस ने अपने सलाहकारों की सभा से मशविरा करने के बाद पौलुस से कहा, "तूने सम्राट* से फरियाद की है, तू सम्राट के पास जाएगा।"

13 कुछ दिन बाद राजा अग्रिप्पा और बिरनीके, फेस्तुस को मुबारकबाद देने के लिए उससे मिलने कैसरिया आए। **14** वे वहाँ कई दिन रहनेवाले थे, इसलिए फेस्तुस ने राजा को पौलुस के मुकदमे के बारे में बताया और कहा,

"एक आदमी है जिसे फेलिक्स कैद में छोड़ गया है। **15** जब मैं यरूशलेम में था तो यहूदियों के प्रधान याजकों और मुखियाओं ने इस बारे में मुझे बताया[3] और इसे सज़ा सुनाने के लिए मुझसे बिनती की। **16** मगर मैंने उन्हें यह जवाब दिया कि यह रोमी तरीका नहीं कि किसी मुलज़िम को उसके मुद्दइयों के सामने लाए बगैर और उसे बचाव में बोलने का मौका दिए बगैर सज़ा दे दी जाए, सिर्फ इसलिए कि मुद्दई खुश हों।[4] **17** इसलिए जब वे यहाँ आए, तो मैं बिना देर किए अगले ही दिन न्याय-आसन पर बैठा और उस आदमी को लाने का हुक्म दिया। **18** मैंने सोचा था कि उसके मुद्दई उस पर बुरे-बुरे कामों का इलज़ाम लगाएँगे, मगर जब वे खड़े हुए तो उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा।[1] **19** उनका झगड़ा बस अपने ईश्वर की उपासना*[2] और किसी यीशु को लेकर था, जो मर चुका है मगर जिसके बारे में पौलुस दावा करता रहा कि वह ज़िंदा है।[3] **20** मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इस मामले को कैसे निपटाऊँ। इसलिए मैंने उससे पूछा कि क्या वह यरूशलेम जाना चाहेगा ताकि वहाँ उसका न्याय किया जाए।[4] **21** मगर पौलुस ने फरियाद की कि उसका फैसला महामहिम* के हाथों हो और तब तक उसे वहीं हिरासत में रखा जाए।[5] इसलिए मैंने हुक्म दिया कि जब तक मैं उसे सम्राट के पास न भेजूँ तब तक उसे वहीं रखा जाए।"

22 तब अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "मैं खुद उसके मुँह से सुनना चाहता हूँ।"[6] फेस्तुस ने कहा, "तू कल उसकी बात सुन सकता है।" **23** इसलिए अगले दिन, अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूम-धाम से दरबार में आए और उनके साथ सेनापति और शहर के जाने-माने लोग भी आए। फिर फेस्तुस के हुक्म पर पौलुस को वहाँ लाया गया। **24** फेस्तुस ने कहा, "हे राजा अग्रिप्पा और यहाँ मौजूद सभी लोगो, तुम उस आदमी को देख रहे हो जिसके खिलाफ पूरे यहूदी समाज ने यरूशलेम में और यहाँ भी चिल्ला-चिल्लाकर मुझसे बिनती की है कि यह आदमी मार डाला जाए, यह ज़िंदा रहने के लायक नहीं है।[7] **25** मगर मैं जान गया हूँ कि इस आदमी ने ऐसा कुछ नहीं किया है कि इसे मौत की सज़ा दी जाए।[8] इसलिए जब इसने खुद महामहिम के पास जाने की फरियाद की, तो मैंने इसे वहाँ भेजने का फैसला किया। **26** मगर इसके बारे में

25:12 *यूनानी में "कैसर।"

25:19 *या "अपने धर्म को लेकर।"

25:21 *रोमी सम्राट की उपाधि।

अध्य. 25

1 प्रेष 23:26, 29
2 प्रेष 28:17-19
3 प्रेष 25:2, 3
4 प्रेष 25:5

दूसरा कॉल.

1 प्रेष 25:7
2 प्रेष 18:14, 15; प्रेष 23:26, 29
3 प्रेष 22:6-8
4 प्रेष 25:9
5 प्रेष 25:11, 12
6 प्रेष 9:15
7 प्रेष 22:22
8 प्रेष 23:26, 29

मेरे पास अपने मालिक को लिखने लायक
कोई पुख्ता बात नहीं है। इसलिए मैं इस
आदमी को तुम सबके सामने, खासकर
राजा अग्रिप्पा तेरे सामने लाया हूँ ताकि
अदालती जाँच के बाद मुझे इसके बारे में
लिखने के लिए कुछ मिले। **27** क्योंकि
मुझे यह सही नहीं लगता कि मैं एक कैदी
को वहाँ भेजूँ तो सही, मगर उस पर लगे
इलज़ाम न बताऊँ।"

26 फिर अग्रिप्पा[1] ने पौलुस से कहा,
"तुझे अपनी सफाई में बोलने की
इजाज़त है।" तब पौलुस ने हाथ उठाया
और अपने बचाव में यह कहने लगा,

2 "हे राजा अग्रिप्पा, यहूदियों ने मुझ
पर जिन बातों का इलज़ाम लगाया है,[2]
उन सबके बारे में आज तेरे सामने अपनी
सफाई देने में मुझे बड़ी खुशी हो रही है,
3 खासकर इसलिए कि तुझे यहूदियों के
सभी रिवाज़ों, साथ ही उनके मसलों की
अच्छी जानकारी है। इसलिए मैं तुझसे
बिनती करता हूँ कि तू सब्र से मेरी सुने।

4 वाकई, मैंने जवानी से अपने जाति-
भाइयों के बीच और यरूशलेम में रहते
वक्त जैसी ज़िंदगी बितायी है, उसके बारे
में उन सभी यहूदियों को मालूम है[3]
5 जो मुझे पहले से जानते हैं। अगर वे
चाहें तो इस बात की गवाही दे सकते हैं
कि मैं अपने धर्म के सबसे कट्टर पंथ को
मानता था[4] और एक फरीसी की ज़िंदगी
जीता था।[5] **6** मगर अब उस आशा की
वजह से जिसका वादा परमेश्वर ने हमारे
पुरखों से किया था,[6] मुझ पर यहाँ मुकद-
मा चलाया जा रहा है। **7** हमारे 12
गोत्र इसी वादे के पूरा होने की आशा
लगाए हुए हैं, इसलिए वे रात-दिन बड़े
जतन से परमेश्वर की पवित्र सेवा करते
हैं। हे राजा, इसी आशा के बारे में यहू-
दियों ने मुझ पर इलज़ाम लगाए हैं।[7]

8 तुम्हें क्यों यह नामुमकिन लगता है
कि परमेश्वर मरे हुओं को ज़िंदा करता
है? **9** एक वक्त पर मुझे भी लगता था
कि यीशु नासरी के नाम का कड़ा
विरोध करना मेरा फर्ज़ है। **10** और
मैंने यरूशलेम में ऐसा ही किया। मैंने
प्रधान याजकों से अधिकार पाकर बहुत-
से पवित्र जनों को जेलों में बंद कर दिया[1]
और जब उन्हें मौत की सज़ा देने की
बात चलती, तो मैं भी हामी भरता था।
11 मैंने हर सभा-घर में जाकर उन्हें
कितनी ही बार सज़ा दिलायी ताकि वे
मजबूर होकर अपना विश्वास छोड़ दें। मैं
उनके खिलाफ गुस्से से इस कदर पागल
हो गया था कि दूसरे शहरों में भी जाकर
उन पर ज़ुल्म ढाने लगा।

12 इसी धुन में जब मैं प्रधान याजकों
से अधिकार और आज्ञा पाकर दमिश्क
जा रहा था, **13** तो हे राजा, भरी दो-
पहरी में आकाश से एक रौशनी चमकी जो
सूरज से भी तेज़ थी। वह रौशनी मेरे और
मेरे साथ चलनेवालों के चारों तरफ चमक
उठी।[2] **14** तब हम सब ज़मीन पर गिर
पड़े और मैंने एक आवाज़ सुनी जो मुझसे
इब्रानी भाषा में कह रही थी, 'शाऊल,
शाऊल, तू क्यों मुझ पर ज़ुल्म कर रहा है?
इस तरह विरोध करके* तू अपने लिए
मुश्किल पैदा कर रहा है।' **15** मगर
मैंने कहा, 'हे प्रभु, तू कौन है?' और प्रभु
ने कहा, 'मैं यीशु हूँ, जिस पर तू ज़ुल्म कर
रहा है। **16** मगर अब उठ, अपने पाँवों
के बल खड़ा हो। मैंने तुझे इसलिए दर्शन
दिया है कि तुझे एक सेवक और गवाह
ठहराऊँ ताकि तूने मेरे बारे में जो बातें
देखी हैं और जो मैं तुझे आगे दिखाऊँगा,
उनकी तू गवाही दे।[3] **17** और मैं इस
राष्ट्र से और दूसरे राष्ट्रों से तेरी हिफाज़त

अध्य. 26
1 प्रेष 25:13
2 प्रेष 24:5, 9
3 गल 1:13, 14
4 प्रेष 22:3
5 प्रेष 23:6; फिल 3:4, 5
6 प्रेष 24:15
7 प्रेष 24:20, 21

दूसरा कॉल.
1 यूह 16:2; प्रेष 8:3; प्रेष 9:1, 2, 14; 1कुर 15:9; गल 1:13; 1ती 1:13
2 प्रेष 9:3-5; प्रेष 22:6-8
3 प्रेष 22:14, 15; गल 1:11, 12; 1ती 1:12

26:14 * शा., "अंकुश पर लात मारकर।"

करूँगा जिनके पास मैं तुझे भेज रहा हूँ।[1]
18 मैं तुझे इसलिए भेज रहा हूँ ताकि तू
उनकी आँखें खोले[2] और उन्हें अंधकार
से निकालकर[3] उजाले में ले आए[4] और
शैतान के अधिकार से छुड़ाकर[5] परमेश्वर
के अधिकार में ले आए और वे मुझ
पर विश्वास करके पापों की माफी पाएँ[6]
और उन लोगों के साथ विरासत पाएँ जो
पवित्र ठहराए गए हैं।'

19 इसलिए हे राजा अग्रिप्पा, जो
आज्ञा मुझे स्वर्ग के इस दर्शन में मिली,
मैंने उसे नहीं तोड़ा। **20** मैंने सबसे पहले
दमिश्क के लोगों को,[7] फिर यरूशलेम के
लोगों को[8] और पूरे यहूदिया प्रदेश में और
फिर दूसरे राष्ट्रों में भी यह संदेश दिया कि
उन्हें पश्चाताप करना चाहिए और पश्चा-
ताप दिखानेवाले काम करके परमेश्वर
की तरफ फिरना चाहिए।[9] **21** इसी-
लिए यहूदियों ने मुझे मंदिर में पकड़ लिया
और मुझे मार डालने की कोशिश की।[10]
22 मगर परमेश्वर मेरी मदद करता रहा
इसलिए मैं आज के दिन तक छोटे-बड़े
सभी को गवाही दे रहा हूँ। और मैं
उन बातों को छोड़ और कुछ नहीं बताता
जिनके बारे में भविष्यवक्ताओं और मूसा
ने पहले से कहा था।[11] **23** यानी यह
कि मसीह दुख उठाएगा[12] और वही पहला
होगा जिसे मरे हुओं में से ज़िंदा किया
जाएगा[13] और वह इस राष्ट्र को और
दूसरे राष्ट्रों को प्रचार करेगा और रौशनी
देगा।"[14]

24 पौलुस अपने बचाव में ये बातें
बोल ही रहा था कि फेस्तुस ने ऊँची
आवाज़ में कहा, "अरे पौलुस, तेरा दिमाग
खराब हो गया है, बहुत ज्ञान ने तुझे पागल
कर दिया है!" **25** मगर पौलुस ने कहा,
"हे महाप्रतापी फेस्तुस, मैं पागल नहीं हूँ,
मैं सच्ची बातें कह रहा हूँ और पूरे होश-
हवास में बोल रहा हूँ। **26** सच तो यह है
कि जिस राजा के सामने मैं बेझिझक बात
कर रहा हूँ, वह खुद भी इन बातों के बारे
में अच्छी तरह जानता है और मुझे पूरा
यकीन है कि इनमें से एक भी बात उससे
छिपी नहीं है क्योंकि ये घटनाएँ किसी
कोने में तो नहीं घटीं।[1] **27** हे राजा
अग्रिप्पा, क्या तू भविष्यवक्ताओं की
बातों पर यकीन करता है? मैं जानता हूँ
तू यकीन करता है।" **28** मगर अग्रिप्पा
ने पौलुस से कहा, "थोड़ी ही देर में तू मुझे
मसीही बनने के लिए कायल कर देगा।"
29 तब पौलुस ने कहा, "परमेश्वर से मेरी
यही दुआ है कि चाहे थोड़ी देर में या ज़्यादा
में, सिर्फ तू ही नहीं बल्कि जितने लोग
आज मेरी सुन रहे हैं, सब मेरी तरह बन
जाएँ, बस इस तरह ज़ंजीरों में न हों।"

30 तब राजा अग्रिप्पा उठा और
उसके साथ राज्यपाल और बिरनीके और
उनके साथ बैठे आदमी उठ खड़े हुए।
31 मगर जाते-जाते वे एक-दूसरे से
कहने लगे, "इस आदमी ने ऐसा कुछ नहीं
किया कि इसे मौत की सज़ा दी जाए या
जेल में डाला जाए।"[2] **32** तब अग्रिप्पा
ने फेस्तुस से कहा, "अगर इस आदमी
ने सम्राट से फरियाद न की होती, तो इसे
रिहा किया जा सकता था।"[3]

27

जैसा तय किया गया था कि
हम जहाज़ से इटली जाएँ,[4]
उन्होंने पौलुस और दूसरे कुछ कैदियों को
औगुस्तुस की टुकड़ी के सेना-अफसर,
यूलियुस के हाथ सौंप दिया। **2** फिर
हम अद्र-मुत्तियुम के एक जहाज़ पर
चढ़े जो एशिया प्रांत के किनारे के
बंदरगाहों से होते हुए जानेवाला था।
और हम वहाँ से रवाना हुए। हमारे साथ
अरिस्तरखुस[5] भी था जो मकिदुनिया
प्रांत के थिस्सलुनीके का रहनेवाला था।

अध्य. 26
1 प्रेष 22:21; रोम 11:13
2 यश 61:1
3 कुल 1:13
4 यूह 8:12; 2कुर 4:6
5 इफ 2:1, 2
6 1यूह 3:5
7 प्रेष 9:22
8 प्रेष 9:28
9 मत 3:8
10 प्रेष 21:30, 31
11 लूक 24:27, 44; रोम 3:21
12 भज 22:7; भज 35:19; यश 50:6; यश 53:5
13 भज 16:10
14 भज 18:49; यश 11:10; लूक 2:30-32

दूसरा कॉल.
1 यूह 18:20
2 प्रेष 23:26, 29; प्रेष 25:24, 25
3 प्रेष 25:11, 12

अध्य. 27
4 प्रेष 25:12
5 प्रेष 19:29; प्रेष 20:4; कुल 4:10

3 अगले दिन हमने सीदोन में लंगर
डाला और यूलियुस ने पौलुस पर कृपा*
की और पौलुस को अपने दोस्तों के यहाँ
जाकर उनसे मदद पाने की इजाज़त दी।
4 वहाँ से लंगर उठाकर हम रवाना
हुए और कुप्रुस की आड़ में होकर चले
क्योंकि हवा का रुख हमारे खिलाफ था।
5 हम खुले समुंदर में किलिकिया और
पमफूलिया के पास से होते हुए लूसिया
के मूरा बंदरगाह में उतरे। 6 वहाँ सेना-
अफसर ने सिकंदरिया का एक जहाज़
देखा जो इटली जानेवाला था और उसने
हमें उस पर चढ़ा दिया। 7 फिर कई
दिनों तक धीमी रफ्तार से बढ़ते हुए हम
बड़ी मुश्किल से कनिदुस द्वीप पहुँचे। हवा
हमें सीधे आगे नहीं बढ़ने दे रही थी इस-
लिए हम सलमोने के सामने से होकर
क्रेते की आड़ में चले। 8 और किनारे-
किनारे बड़ी मुश्किल से खेते हुए हम उस
जगह पहुँचे जो 'बढ़िया बंदरगाह' कह-
लाती है, जहाँ से लसिया शहर पास था।
9 बहुत दिन बीत गए, यहाँ तक कि
प्रायश्चित के दिन[1] का उपवास भी बीत
गया और समुंदर में सफर करना अब
खतरे से खाली नहीं था। इसलिए पौलुस
ने उन्हें यह सलाह दी, 10 "सज्जनो,
मैं देख सकता हूँ कि अब जहाज़ को
आगे बढ़ाना ठीक नहीं होगा, वरना हमें
न सिर्फ माल और जहाज़ का भारी नुक-
सान होगा, बल्कि अपनी जान से भी हाथ
धोना पड़ेगा।" 11 मगर सेना-अफसर
ने पौलुस की बातों पर ध्यान देने के
बजाय जहाज़ के कप्तान और मालिक की
बात मानी। 12 वह बंदरगाह सर्दियाँ
बिताने के लिए सही नहीं था, इसलिए
ज़्यादातर लोगों ने सलाह दी कि हम यहाँ
से आगे बढ़ें और किसी तरह फीनिक्स
पहुँचकर वहाँ सर्दियाँ बिताएँ। फीनिक्स,
क्रेते का एक ऐसा बंदरगाह है जिसके
उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व दोनों तरफ
जहाज़ आकर रुकते थे।
13 जब दक्षिणी हवा मंद-मंद बह रही
थी, तो उन्हें लगा कि जैसा उन्होंने
सोचा था वैसा ही हो जाएगा। उन्होंने
लंगर उठाया और क्रेते के किनारे-किनारे
जहाज़ आगे बढ़ाने लगे। 14 मगर कुछ
ही समय बाद उत्तर-पूर्व से एक बड़ी
आँधी चली, जो यूरकुलीन कहलाती है
और इसने क्रेते द्वीप को अपनी चपेट
में ले लिया। 15 जहाज़ तूफान में घिर
गया और आँधी को चीरकर आगे न
बढ़ सका। हमने लाचार होकर जहाज़ को
हवा के रुख के साथ-साथ बहने दिया।
16 तब हम बहते-बहते कौदा नाम के
एक छोटे द्वीप की आड़ में आ गए, फिर
भी हम बहुत मुश्किल से जहाज़ के पिछले
हिस्से में लगी डोंगी* को काबू में कर
सके। 17 मगर डोंगी को ऊपर खींचने
के बाद, नाविकों ने जहाज़ को ऊपर से
नीचे तक रस्सों से बाँध दिया और सुर-
तिस* में धँस जाने के डर से उन्होंने पाल
उतार दिया और जहाज़ को बहने दिया।
18 जहाज़ आँधी में बुरी तरह हिचकोले
खा रहा था इसलिए अगले दिन नाविक
जहाज़ को हलका करने के लिए समुं-
दर में माल फेंकने लगे। 19 तीसरे दिन
उन्होंने अपने ही हाथों से पाल चढ़ाने के
रस्से समुंदर में फेंक दिए।
20 कई दिनों तक न सूरज निकला,
न तारे दिखायी दिए, न ही इस ज़बर-
दस्त आँधी के थपेड़े थम रहे थे। हमारे
बचने की कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही
थी। 21 बहुत दिनों से किसी ने कुछ

अध्य. 27
1 लैव 16:29, 30 लैव 23:27

27:3 *या "इंसानियत के नाते कृपा।"

27:16 *एक छोटी नाव जो जान बचाने के काम आती। 27:17 *शब्दावली देखें।

नहीं खाया था। पौलुस ने उनके बीच
खड़े होकर कहा, “सज्जनो, तुम्हें मेरी
बात मान लेनी थी और क्रेते से आगे
सफर नहीं करना चाहिए था, तब तुम्हें
यह तकलीफ और नुकसान नहीं झेलना
पड़ता।[1] **22** पर अब भी मैं तुमसे
गुज़ारिश करता हूँ कि हिम्मत रखो,
क्योंकि तुममें से एक की भी जान नहीं
जाएगी, सिर्फ जहाज़ का नुकसान होगा।
23 क्योंकि मैं जिस परमेश्वर का हूँ और
जिसकी पवित्र सेवा करता हूँ, उसका
एक स्वर्गदूत[2] रात को मेरे पास आया
था **24** और उसने मुझसे कहा, ‘पौलुस,
मत डर। तू सम्राट के सामने ज़रूर खड़ा
होगा[3] और देख, परमेश्वर तेरी वजह
से उन सबकी भी जान बचाएगा जो तेरे
साथ सफर कर रहे हैं।’ **25** इसलिए
लोगो, हिम्मत रखो क्योंकि मुझे परमेश्वर
पर विश्वास है कि जैसा मुझे बताया गया
है बिलकुल वैसा ही होगा। **26** मगर
हमारा जहाज़ एक द्वीप के किनारे[4]
जाकर टूट जाएगा।”

27 जब 14वीं रात हुई और हम
अद्रिया सागर में हिचकोले खा रहे थे,
तो आधी रात को नाविकों को लगने
लगा कि वे किसी तट के पास पहुँच
गए हैं। **28** और जब उन्होंने पानी
की गहराई नापी, तो पाया कि वह
36 मीटर* गहरा है और थोड़ी दूर
जाकर फिर से नापने पर पाया कि
27 मीटर# गहरा है। **29** और इस डर
से कि हम कहीं चट्टानों से न जा टकराएँ,
उन्होंने जहाज़ के पिछले हिस्से से चार
लंगर डाले और दिन निकलने का इंत-
ज़ार करने लगे। **30** मगर जब नाविकों

27:28 *शा., “20 पुरसा।” अति. ख14 देखें। #शा., “15 पुरसा।” अति. ख14 देखें।

अध्य. 27
1 प्रेष 27:9, 10
2 प्रेष 5:18, 19
इब्र 1:7, 14
3 प्रेष 23:11
प्रेष 25:11, 12
4 प्रेष 28:1

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 27:22
2 यो 1:5
3 प्रेष 28:1

ने जहाज़ से निकलकर भागने के लिए,
आगे के हिस्से से लंगर डालने के बहाने
डोंगी को नीचे समुंदर में उतारा, **31** तो
पौलुस ने सेना-अफसर और सैनिकों से
कहा, “अगर ये आदमी जहाज़ में नहीं
रहे, तो तुम भी नहीं बच पाओगे।”[1]
32 तब सैनिकों ने डोंगी के रस्से काट
दिए और उसे समुंदर में गिर जाने दिया।

33 जब दिन निकलने पर था, तो
पौलुस उन्हें समझाने लगा कि वे कुछ खा
लें। उसने कहा, “तुम्हें इंतज़ार करते-
करते आज 14वाँ दिन हो गया है और
इतने दिनों से तुमने कुछ नहीं खाया है।
34 इसलिए मेरी मानो, कुछ खा लो। मैं
तुम्हारे ही भले के लिए कह रहा हूँ क्योंकि
तुम में से किसी का बाल भी बाँका नहीं
होगा।” **35** यह कहने के बाद उसने
सबके सामने एक रोटी लेकर परमेश्वर
को धन्यवाद दिया और उसे तोड़कर
खाने लगा। **36** तब उन सबको हिम्मत
मिली और वे भी खाने लगे। **37** जहाज़
में हम सबको मिलाकर 276 लोग थे।
38 जब उन्होंने जी-भरकर खा लिया तो
वे जहाज़ को हलका करने के लिए गेहूँ
समुंदर में फेंकने लगे।[2]

39 जब दिन निकला तो वे उस जगह
को पहचान न सके,[3] मगर उन्हें एक खाड़ी
और उसका किनारा नज़र आया। उन्होंने
ठान लिया कि हम किसी तरह जहाज़ को
किनारे ले जाकर लगा देंगे। **40** इस-
लिए उन्होंने लंगर के रस्से काट दिए और
उन्हें समुंदर में गिरा दिया। और जहाज़ को
खेनेवाले पतवारों के बंधन ढीले किए और
आगे का पाल चढ़ाकर हवा के रुख में
किनारे की तरफ बढ़ चले। **41** उनका
जहाज़ रेत के ऐसे ढेर पर जा टिका जो दो
समुंदरों की लहरों के टकराने से बना था।
जहाज़ रेत में धँस गया और उसका

अगला हिस्सा रेत में गड़ गया और हिल
न सका, जबकि जहाज़ का पिछला हिस्सा
लहरों के थपेड़ों से बुरी तरह टूटने लगा।[1]
42 यह देखकर सैनिकों ने तय किया कि
वे कैदियों को मार डालेंगे ताकि कोई भी
तैरकर भाग न सके। 43 लेकिन सेना-
अफसर ने पौलुस को बचाने के इरादे से
उन्हें ऐसा करने से रोका। उसने हुक्म दिया
कि जो तैर सकते हैं वे समुंदर में कूद
जाएँ और किनारे पर पहले पहुँच जाएँ
44 और बाकी लोग जहाज़ के तख्तों और
दूसरी चीज़ों के सहारे किनारे पहुँच जाएँ।
इस तरह सब लोग किनारे पर सही-सला-
मत पहुँच गए।[2]

28 जब हम सही-सलामत किनारे
पहुँच गए, तो हमें मालूम हुआ
कि उस द्वीप का नाम माल्टा है।[3] 2 उस
द्वीप के लोगों* ने हम पर अनोखी
कृपा# की और हमारी बहुत मदद की।
उन्होंने हमारे लिए आग जलायी क्योंकि
बारिश हो रही थी और बहुत ठंड थी।
3 जब पौलुस ने लकड़ियों का एक गट्ठर
बटोरकर आग पर रखा, तो गरमी की
वजह से गट्ठर के अंदर से एक ज़हरीला
साँप निकला और पौलुस के हाथ से लिपट
गया। 4 जब द्वीप के लोगों* ने देखा कि
एक ज़हरीला साँप उसके हाथ से लटक
रहा है, तो वे एक-दूसरे से कहने लगे,
"यह आदमी ज़रूर कोई खूनी है। यह समुं-
दर से तो बच गया मगर इंसाफ# ने इसकी
जान नहीं बख्शी।" 5 पौलुस ने हाथ
झटककर साँप को आग में झोंक दिया
मगर पौलुस को कुछ नहीं हुआ। 6 फिर
भी लोग उम्मीद कर रहे थे कि पौलुस का
शरीर सूज जाएगा या वह अचानक गिर-
कर मर जाएगा। उन्होंने काफी देर तक
इंतज़ार किया और जब उन्होंने देखा कि
उसके साथ कुछ बुरा नहीं हुआ है, तो
उन्होंने अपनी राय बदल दी और कहने
लगे कि यह ज़रूर कोई देवता है।

7 वहीं पास में द्वीप के प्रधान पुब-
लियुस की ज़मीनें थीं। उसने बड़े प्यार
से हमारा स्वागत किया और तीन दिन
तक हमारी खातिरदारी की। 8 पुब-
लियुस का पिता बिस्तर पर बीमार पड़ा
था। उसे बुखार था और पेचिश हो गयी
थी। पौलुस उसके पास गया और उसने
प्रार्थना की, उस पर अपने हाथ रखे
और उसे ठीक किया।[1] 9 जब ऐसा
हुआ, तो द्वीप के बाकी बीमार लोग भी
पौलुस के पास आने लगे और ठीक
हुए।[2] 10 फिर उन्होंने हमें कई तोहफे
देकर हमारा सम्मान किया और जब हम
जहाज़ पर चढ़कर जाने लगे, तो उन्होंने
हमें ज़रूरत का ढेर सारा सामान दिया।

11 तीन महीने बाद हम सिकंदरिया
के एक जहाज़ से रवाना हुए, जो पूरी सर्दी
उसी द्वीप पर रुका हुआ था। उस जहाज़
के सामने की तरफ "ज़्यूस के बेटों" की
निशानी बनी हुई थी। 12 फिर हम सुर-
कूसा के बंदरगाह में लंगर डालकर तीन
दिन वहीं रहे। 13 वहाँ से हम रवाना
हुए और रेगियुम पहुँचे। एक दिन बाद
दक्षिणी हवा चली और हम अगले ही
दिन पुतियुली पहुँच गए। 14 यहाँ हमें
मसीही भाई मिले और उन्होंने हमसे
बिनती की कि हम उनके यहाँ सात दिन
ठहरें। इसके बाद हम रोम की तरफ
निकल पड़े। 15 जब भाइयों ने हमारे

अध्य. 27
1 प्रेष 27:22; 2कुर 11:25
2 प्रेष 27:23, 24

अध्य. 28
3 प्रेष 27:26

दूसरा कॉल.
1 लूक 4:38, 39
2 मत 10:8

28:2 *या "दूसरी भाषा बोलनेवालों।" #या "इंसानियत के नाते कृपा।" **28:4** *या "दूसरी भाषा बोलनेवाले।" #यूनानी में *डायकी।* शायद यह शब्द उस देवी के लिए इस्तेमाल हुआ है जिसे बदला चुकाकर इंसाफ देनेवाली माना जाता था। या शायद यहाँ न्याय के गुण की बात की गयी है।

आने की खबर सुनी, तो वे हमसे मिलने
अपियुस के बाज़ार तक और तीन सराय
तक आए। भाइयों को देखते ही पौलुस
ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया और
हिम्मत पायी।[1] 16 आखिरकार जब
हम रोम पहुँचे, तो पौलुस को अकेले रहने
की इजाज़त मिली और उस पर पहरा देने
के लिए एक सैनिक ठहराया गया।

17 तीन दिन बाद उसने यहूदियों के
खास आदमियों को अपने यहाँ बुलाया।
जब वे इकट्ठा हुए, तो वह उनसे कहने
लगा, “भाइयो, मैंने अपने लोगों या
अपने पुरखों के रीति-रिवाज़ों के खिलाफ
कुछ नहीं किया।[2] फिर भी मुझे यरू-
शलेम में कैदी बनाकर रोमियों के हाथ
सौंप दिया गया।[3] 18 उन्होंने मामले
की जाँच करने के बाद[4] मुझे छोड़ देना
चाहा क्योंकि मुझे मौत की सज़ा देने के
लिए उन्हें मेरे खिलाफ कोई सबूत नहीं
मिला।[5] 19 मगर जब यहूदियों ने एत-
राज़ जताया, तो मुझे मजबूरन सम्राट से
फरियाद करनी पड़ी,[6] लेकिन मेरा इरादा
यह नहीं था कि अपनी जाति पर कोई
दोष लगाऊँ। 20 इसीलिए मैंने तुम्हें
बुलाने और तुमसे बात करने की बिनती
की थी, क्योंकि इसराएल को जिसकी
आशा थी उसकी वजह से मैं इन ज़ंजीरों में
जकड़ा हुआ हूँ।”[7] 21 उन्होंने पौलुस
से कहा, “हमें तेरे बारे में न तो यहूदिया से
चिट्ठियाँ मिली हैं, न ही वहाँ से आए किसी
यहूदी भाई ने तेरे बारे में खबर दी या कुछ
बुरा कहा। 22 मगर हमें लगता है कि
जो भी तेरे विचार हैं वे तुझी से सुनना सही
होगा, क्योंकि जहाँ तक हमें इस गुट के
बारे में मालूम हुआ है,[8] सब जगह लोग
इसके खिलाफ ही बात करते हैं।”[9]

23 उन्होंने उसके साथ एक दिन तय
किया और उसके ठहरने की जगह पर
भारी तादाद में इकट्ठा हुए। पौलुस ने
सुबह से शाम तक उन्हें परमेश्वर के राज
के बारे में अच्छी तरह गवाही दी और
समझाता रहा। वह मूसा के कानून[1] और
भविष्यवक्ताओं की किताबों से यीशु के
बारे में दलीलें देकर उन्हें कायल करता
रहा।[2] 24 उनमें से कुछ लोगों ने उसकी
बातों पर यकीन किया मगर दूसरों ने
नहीं। 25 उनके बीच मतभेद हो गया
इसलिए वे वहाँ से जाने लगे। तब पौलुस
ने उनसे एक और बात कही,

“पवित्र शक्ति ने भविष्यवक्ता यशा-
याह के ज़रिए तुम्हारे पुरखों से
बिलकुल सही कहा था, 26 ‘जाकर इन
लोगों से कह, “तुम लोग सुनोगे मगर
सुनते हुए भी बिलकुल नहीं समझोगे।
और देखोगे मगर देखते हुए भी बिल-
कुल नहीं देख पाओगे।[3] 27 क्योंकि
इन लोगों का मन सुन्न हो चुका है। वे
अपने कानों से सुनते तो हैं, मगर कुछ
करते नहीं। उन्होंने अपनी आँखें मूँद ली
हैं ताकि न वे कभी अपनी आँखों से
देखें, न अपने कानों से सुनें और न कभी
उनका मन इसे समझे और न वे पलट-
कर लौट आएँ और मैं उन्हें चंगा करूँ।”’[4]
28 इसलिए तुम जान लो कि परमेश्वर
की तरफ से मिलनेवाले इस उद्धार का
संदेश, गैर-यहूदियों के पास भेजा गया है[5]
और वे इसे ज़रूर सुनेंगे।”[6] 29 *—

30 पौलुस पूरे दो साल तक किराए के
मकान में रहा[7] और जितने भी लोग उसके
यहाँ आते उनका वह प्यार से स्वागत
करता रहा। 31 वह उनको परमेश्वर के
राज का प्रचार करता और प्रभु यीशु
मसीह के बारे में बेझिझक* और बिना
किसी रुकावट के सिखाता रहा।[8]

अध्य. 28
1 2कुर 1:3, 4
2 प्रेष 24:11, 12; प्रेष 25:8
3 प्रेष 21:33
4 प्रेष 24:10
5 प्रेष 23:26, 29; प्रेष 25:24, 25; प्रेष 26:31, 32
6 प्रेष 25:11, 12
7 प्रेष 23:6; प्रेष 26:6; इफ 6:19, 20; 2ती 1:16
8 प्रेष 24:14
9 लूक 2:34; यूह 15:19

दूसरा कॉल.
1 यूह 5:46
2 प्रेष 17:2, 3; प्रेष 26:22, 23
3 रोम 11:8
4 यश 6:9, 10; मत 13:14, 15
5 लूक 3:4, 6; प्रेष 13:45, 46; प्रेष 22:21; रोम 11:11
6 भज 67:2; भज 98:3; यश 11:10
7 प्रेष 28:16
8 इफ 6:19

28:29 *अति. क3 देखें। **28:31** *या “निडर होकर।”

रोमियों
के नाम चिट्ठी

सारांश

1 मैं पौलुस, जो यीशु मसीह का एक
दास हूँ, तुम्हें यह चिट्ठी लिख रहा हूँ।
मुझे प्रेषित होने का बुलावा मिला है और
परमेश्वर की खुशखबरी सुनाने के लिए
ठहराया गया है।[1] **2** इस खुशखबरी
का वादा परमेश्वर ने पहले से अपने
भविष्यवक्ताओं के ज़रिए पवित्र शास्त्र में
किया था। **3** यह खुशखबरी उसके बेटे
के बारे में है। वह दाविद के वंश*[2] से
इंसान के रूप में आया। **4** मगर जब
उसे पवित्र शक्ति की ताकत से मरे हुओं
में से ज़िंदा किया गया,[3] तो वह पर-
मेश्वर का बेटा[4] ठहरा। वही हमारा प्रभु
यीशु मसीह है। **5** उसी के ज़रिए हमने
महा-कृपा और प्रेषित होने की ज़िम्मेदारी
पायी[5] ताकि सब राष्ट्र विश्वास करें[6]
और उसकी आज्ञा मानें जिससे उसके
नाम की महिमा हो। **6** तुम भी इन
राष्ट्रों में से हो, जिन्हें यीशु मसीह
का होने के लिए बुलाया गया है। **7** मैं
पौलुस यह चिट्ठी रोम में रहनेवाले तुम
सबको लिख रहा हूँ, जो परमेश्वर के
प्यारे हो और पवित्र जन होने के लिए
बुलाए गए हो:

हमारे पिता यानी परमेश्वर की तरफ
से और प्रभु यीशु मसीह की तरफ से तुम्हें
महा-कृपा और शांति मिले।

8 सबसे पहले मैं यीशु मसीह के
ज़रिए तुम सबके बारे में अपने परमेश्वर
का धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि तुम्हारे
विश्वास की चर्चा सारी दुनिया में हो रही
है। **9** परमेश्वर, जिसकी पवित्र सेवा मैं
उसके बेटे की खुशखबरी सुनाते हुए जी-
जान से करता हूँ, वही मेरा गवाह है कि
कैसे मैं हमेशा अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें
याद करता हूँ[1] **10** और बिनती करता
हूँ कि अगर उसकी इच्छा हो, तो कम-से-
कम अब किसी तरह मैं तुम्हारे पास आ
सकूँ। **11** क्योंकि मैं तुमसे मिलने के
लिए तरस रहा हूँ ताकि तुम्हें परमेश्वर
की तरफ से कोई आशीष* दूँ जिससे तुम
मज़बूत हो सको। **12** या यूँ कहूँ कि मैं
और तुम अपने-अपने विश्वास के ज़रिए
एक-दूसरे का हौसला बढ़ा सकें।[2]

13 मगर भाइयो, मैं नहीं चाहता कि
तुम इस बात से अनजान रहो कि मैंने
तुम्हारे पास आने की कई बार कोशिश
की ताकि जैसे मैंने बाकी गैर-यहूदी राष्ट्रों

1:3 *शा., "बीज।"

1:11 *या "तोहफा।"

अध्य. 1
1 प्रेष 9:11, 15
2 2शम 7:8, 12; लूक 1:32; 2ती 2:8
3 प्रेष 13:33
4 भज 2:7; इब्र 1:5
5 1ती 2:7
6 प्रेष 15:14; गल 2:7

दूसरा कॉल.
1 1थि 3:10; 2ती 1:3
2 1थि 5:11; इब्र 10:25

में अच्छे नतीजे पाए हैं, वैसे ही तुम्हारे
बीच भी पाऊँ। मगर अब तक मुझे रोका
गया है। **14** मैं यूनानियों और गैर-
यूनानियों, बुद्धिमानों और मूर्खों, दोनों का
कर्ज़दार हूँ। **15** इसलिए तुम जो वहाँ
रोम में हो, मैं तुम्हें भी खुशखबरी
सुनाने के लिए बेताब हूँ।[1] **16** मुझे
खुशखबरी सुनाने में कोई शर्म महसूस
नहीं होती।[2] दरअसल यह विश्वास
करनेवाले हर किसी के उद्धार के लिए
परमेश्वर की शक्ति है,[3] पहले यहू-
दियों के लिए,[4] फिर यूनानियों के लिए।[5]
17 क्योंकि विश्वास करनेवालों पर इस
खुशखबरी के ज़रिए परमेश्वर की नेकी
ज़ाहिर होती है और इससे उनका विश्वास
मज़बूत होता है,[6] ठीक जैसा लिखा है,
"लेकिन जो नेक है, वह अपने विश्वास से
ज़िंदा रहेगा।"[7]

18 जो भक्तिहीन और बुरे लोग
गलत तरीके अपनाकर सच्चाई को दबा
रहे हैं,[8] उन सब पर स्वर्ग से परमेश्वर का
क्रोध[9] प्रकट हो रहा है। **19** इसलिए
कि परमेश्वर के बारे में जो कुछ जाना
जा सकता है वह उनके बीच साफ
ज़ाहिर है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर
ज़ाहिर कर दिया है।[10] **20** उसके अन-
देखे गुण दुनिया की रचना के वक्त से
साफ दिखायी देते हैं यानी यह कि
उसके पास अनंत शक्ति है[11] और सच-
मुच वही परमेश्वर है।[12] ये गुण उसकी
बनायी चीज़ों को देखकर अच्छी तरह
समझे जा सकते हैं,[13] इसलिए उनके पास
परमेश्वर पर विश्वास न करने का कोई
बहाना नहीं बचता। **21** क्योंकि वे पर-
मेश्वर को जानते तो थे, फिर भी उन्होंने
उसकी वैसी बड़ाई न की जैसी करनी
चाहिए, न ही उसका धन्यवाद किया,
बल्कि खोखली और मूर्खता से भरी बातें
सोचने लगे और उनका निर्बुद्धि मन अंध-
कार से भर गया।[1] **22** वे दावा करते
थे कि वे बुद्धिमान हैं मगर वे मूर्ख
निकले **23** और उन्होंने अनश्वर पर-
मेश्वर की महिमा करने के बजाय, नश्वर
इंसान और पक्षियों और चार-पैरोंवाले
जीवों और रेंगनेवाले जंतुओं की मूरतों
की महिमा की।[2]

24 इसलिए परमेश्वर ने उनके दिल
की बुरी इच्छाओं के मुताबिक उन्हें
अशुद्ध काम करने के लिए छोड़ दिया
ताकि वे अपने ही शरीर का अनादर
करें। **25** उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई
के बदले झूठ पर यकीन किया और
सृष्टिकर्ता के बजाय उसकी सृष्टि की
भक्ति और पूजा की। उस सृष्टिकर्ता
की सदा तारीफ हो। आमीन। **26** पर-
मेश्वर ने उन लोगों को छोड़ दिया कि
वे अपनी नीच वासनाओं को पूरा करें[3]
क्योंकि उनकी औरतें स्वाभाविक यौन-
संबंध छोड़कर अस्वाभाविक यौन-संबंध
रखने लगीं।[4] **27** उसी तरह आदमियों
ने भी औरतों के साथ स्वाभाविक यौन-
संबंध रखना छोड़ दिया और आदमी
आपस में एक-दूसरे के लिए काम-वासना
से जलने लगे। आदमियों ने आदमियों के
साथ अश्लील काम किए[5] और अपनी
करतूतों का पूरा-पूरा अंजाम भुगता।*[6]

28 उन लोगों को परमेश्वर को
जानना सही नहीं लगा।* इसलिए पर-
मेश्वर ने भी उन्हें उनकी भ्रष्ट दिमागी
हालत पर छोड़ दिया कि वे गलत काम
करें।[7] **29** उनमें हर तरह का पाप,[8]
दुष्टता, लालच[9] और बुराई कूट-कूटकर
भरी है और वे ईर्ष्या,[10] हत्या,[11] झगड़े

1:27 *या "बदला पा चुके।" **1:28** *या "यह मंज़ूर नहीं था कि परमेश्वर के बारे में सही ज्ञान लें।"

अध्य. 1
1 प्रेष 19:21
2 मर 8:38; 2ती 1:8
3 इब्र 11:6
4 प्रेष 3:25, 26
5 प्रेष 18:5, 6
6 यूह 3:36; रोम 3:21, 22
7 हब 2:4; गल 3:11; इब्र 10:38
8 रोम 1:25
9 रोम 2:5; इफ 5:6
10 भज 19:1; प्रेष 14:17
11 यिर्म 10:12
12 भज 103:19; यिर्म 10:10; प्रक 15:3
13 यश 40:26; प्रक 4:11

दूसरा कॉल.
1 उत 6:5
2 यिर्म 2:11; प्रेष 17:29
3 गल 5:19; 1थि 4:4, 5
4 यहू 7
5 उत 19:5; लैव 18:22; लैव 20:13; 1कुर 6:9, 10
6 गल 6:7
7 गल 5:19-21
8 1पत 4:3
9 व्य 5:21
10 तीत 3:3
11 1यूह 3:15

और छल[1] करते हैं और दूसरों का
बुरा चाहते हैं।[2] वे चुगली लगानेवाले,*
30 पीठ पीछे बदनाम करनेवाले,[3] पर-
मेश्वर से नफरत करनेवाले, गुस्ताख,
घमंडी, शेखी मारनेवाले, बुरी बातें गढ़ने-
वाले, माता-पिता की बात न माननेवाले,[4]
31 समझ न रखनेवाले,[5] अपने वादे से
मुकरनेवाले, लगाव न रखनेवाले और बे-
रहम हैं। 32 वे परमेश्वर के इस खरे
आदेश को अच्छी तरह जानते हैं कि जो
लोग ऐसे कामों में लगे रहते हैं वे मौत की
सज़ा के लायक हैं।[6] फिर भी वे न सिर्फ
खुद ऐसे कामों में लगे रहते हैं बल्कि ऐसे
काम करनेवालों को सही ठहराते भी हैं।

2 अरे दोष लगानेवाले, तू चाहे जो भी
हो,[7] अगर तू दूसरे पर दोष लगाता
है, तो तू खुद को भी सही नहीं ठहरा
सकता। जब तू दूसरे को दोषी ठहराता
है, तो खुद भी सज़ा के लायक ठहर-
ता है, क्योंकि तू जिन कामों के लिए दूसरे
को दोषी ठहराता है, खुद भी वही काम
करता रहता है।[8] 2 हम जानते हैं कि
परमेश्वर का न्याय सच्चा है और जो इन
कामों में लगे रहते हैं, वह उन्हें सज़ा देगा।

3 लेकिन हे इंसान, तू जो ऐसे काम
करनेवालों को दोषी ठहराता है मगर खुद
इन्हीं कामों में लगा रहता है, क्या तू यह
सोच बैठा है कि तू परमेश्वर से सज़ा पाने
से बच जाएगा? 4 क्या तू परमेश्वर की
कृपा[9] और उसके बरदाश्त करने[10] और
सब्र से पेश आने के गुण को[11] तुच्छ समझ
रहा है? क्या तू नहीं जानता कि पर-
मेश्वर तुझ पर कृपा करके तुझे पश्चा-
ताप की तरफ ले जाने की कोशिश कर
रहा है?[12] 5 मगर तू ढीठ हो चुका है
और तेरा दिल पश्चाताप करने को तैयार
नहीं। इस तरह तू परमेश्वर के क्रोध
के उस दिन के लिए क्रोध जमा कर रहा
है, जब वह अपने नेक स्तरों के मुताबिक
न्याय करेगा।[1] 6 वह हरेक को उसके
कामों के हिसाब से बदला देगा।[2] 7 जो
धीरज धरते हुए भले काम में लगे रहते हैं
ताकि महिमा, आदर और अनश्वरता पा
सकें,[3] उन्हें वह हमेशा की ज़िंदगी देगा।
8 मगर जो झगड़ालू हैं और सच्चाई को
मानने के बजाय दुष्ट काम करते हैं, उन
पर उसका क्रोध और गुस्सा भड़केगा।[4]
9 ऐसा हर इंसान जो बुरे कामों में लगा
रहता है, उस पर संकट और मुसीबतें
आएँगी। पहले यहूदियों पर और फिर
गैर-यहूदियों पर भी। 10 मगर हर वह
इंसान जो अच्छे काम करता है, परमेश्वर
उसे महिमा, आदर और शांति देगा, पहले
यहूदियों को[5] और फिर गैर-यहूदियों को
भी।[6] 11 इसलिए कि परमेश्वर भेद-
भाव नहीं करता।[7]

12 वे सभी जिन्होंने परमेश्वर का
कानून न होते हुए पाप किया, वे बिना
कानून के ही मिट जाएँगे।[8] मगर जिन्होंने
कानून के अधीन होते हुए भी पाप किया,
उनका न्याय कानून के हिसाब से होगा।[9]
13 क्योंकि परमेश्वर के सामने कानून
को बस सुननेवाले नहीं, मगर कानून
पर चलनेवाले नेक ठहराए जाएँगे।[10]
14 राष्ट्रों के लोगों के पास भले ही पर-
मेश्वर का कानून नहीं है,[11] फिर भी जब
वे अपने स्वभाव से उसे मानते हैं तो
कानून न होते हुए भी वे कानून के मुता-
बिक चलते हैं। 15 वे दिखाते हैं कि
कानून की बातें उनके दिलों में लिखी
हुई हैं और उनके साथ-साथ उनका
ज़मीर भी गवाही देता है और उनकी
खुद की सोच उन्हें या तो कसूरवार ठह-
राती है या बेकसूर। 16 ऐसा उस दिन
होगा जब परमेश्वर मसीह यीशु के ज़रिए
इंसानों की छिपी हुई बातों का न्याय

1:29 * या "गपशप करनेवाले।"

अध्य. 1
1 1पत 2:1
2 इफ 4:31
3 1पत 2:1
4 व्य 21:18, 21
5 रोम 1:21
6 प्रक 21:8

अध्य. 2
7 रोम 2:9
8 मत 7:5
9 रोम 11:22; इफ 1:7
10 रोम 3:25
11 यश 30:18
12 2पत 3:9

दूसरा कॉल.
1 2थि 1:7, 8; प्रक 6:16, 17; प्रक 11:18
2 भज 62:12; नीत 24:12; मत 16:27
3 1कुर 15:53; प्रक 20:6
4 रोम 1:18; कुल 3:6; इब्र 10:26, 27
5 यूह 4:22; प्रेष 13:45, 46
6 प्रेष 15:14
7 व्य 10:17; 2इत 19:7; प्रेष 10:34, 35
8 इफ 2:12
9 रोम 3:19
10 व्य 30:14; यहे 20:11; याकू 1:22
11 भज 147:19, 20

करेगा[1] और यह न्याय उस खुशखबरी के मुताबिक किया जाएगा जो मैं सुना रहा हूँ।

17 अगर तू यहूदी कहलाता है[2] और तुझे परमेश्‍वर के कानून पर भरोसा है और तू परमेश्‍वर के साथ अपने रिश्‍ते पर गर्व करता है **18** और जानता है कि उसकी इच्छा क्या है और तुझे कानून सिखाया गया* है जिस वजह से तू उत्तम-से-उत्तम बातों की समझ रखता है,[3] **19** तुझे पक्का यकीन है कि तू अंधों को राह दिखानेवाला और अंधकार में रहने-वालों के लिए रौशनी है, **20** तू मूर्खों को सुधारनेवाला और नादानों को सिखाने-वाला गुरु है और कानून में पाए जाने-वाले ज्ञान और सच्चाई के बुनियादी ढाँचे की समझ रखता है— **21** तो तू जो दूसरे को सिखाता है, क्या खुद को नहीं सिखाता?[4] क्या तू जो प्रचार करता है कि "चोरी न करना,"[5] खुद चोरी करता है? **22** तू जो कहता है कि "व्यभिचार* न करना,"[6] क्या तू खुद ऐसा करता है? तू जो मूर्तियों से घिन करता है, क्या तू खुद मंदिरों को लूटता है? **23** तू जो कानून पर घमंड करता है, क्या तू खुद कानून के खिलाफ जाकर परमेश्‍वर का अना-दर करता है? **24** क्योंकि लिखा है, "तुम्हारी वजह से राष्ट्रों के बीच परमेश्‍वर के नाम की बदनामी हो रही है।"[7]

25 तेरे लिए खतना[8] तभी फायदे-मंद होगा जब तू कानून को मानता हो।[9] लेकिन अगर तू कानून तोड़ता है, तो तेरा खतना, खतना न होने के बराबर है। **26** इसलिए अगर एक इंसान, खतना-रहित होते हुए[10] भी कानून में बतायी परमेश्‍वर की माँगें पूरी करता है, तो क्या उसका खतना न होना, खतना होने के बराबर नहीं समझा जाएगा?[1] **27** वह इंसान जो शरीर से खतनारहित है वह कानून पर चलकर तुझे दोषी ठहराता है, क्योंकि तेरे पास लिखित कानून है और तेरा खतना हुआ है फिर भी तू कानून पर नहीं चलता। **28** क्योंकि यहूदी वह नहीं जो ऊपर से यहूदी दिखता है,[2] न ही खतना वह है जो बाहर शरीर पर होता है।[3] **29** मगर असली यहूदी वह है जो अंदर से यहूदी है[4] और असली खतना लिखित कानून के हिसाब से होने-वाला खतना नहीं बल्कि पवित्र शक्‍ति के हिसाब से[5] होनेवाला दिल का खतना है।[6] ऐसा इंसान लोगों से नहीं बल्कि पर-मेश्‍वर से तारीफ पाता है।[7]

3 तो फिर एक इंसान का यहूदी होना क्यों फायदेमंद है या खतने का क्या फायदा? **2** बहुत फायदे हैं। पहला तो यह कि यहूदियों को ही परमेश्‍वर के पवित्र वचन दिए गए थे।[8] **3** लेकिन अगर यहूदियों में से कुछ ने विश्‍वास नहीं किया, तो क्या हुआ? क्या उनके विश्‍वास न करने से यह साबित होता है कि पर-मेश्‍वर विश्‍वासयोग्य नहीं है? **4** हर-गिज़ नहीं! परमेश्‍वर हर हाल में सच्चा साबित होता है,[9] चाहे हर इंसान झूठा साबित हो।[10] जैसा कि लिखा भी है, "ताकि तू जो बोलता है वह सही साबित हो और तू अपना मुकदमा जीत जाए।"[11] **5** कुछ लोगों का कहना है कि हम बुरे काम करके यह दिखा रहे हैं कि परमेश्‍वर कितना नेक है। अगर उनकी बात सही है तो क्या परमेश्‍वर उन्हें सज़ा देकर अन्याय नहीं कर रहा? (मैं एक इंसान के नज़रिए से बोल रहा हूँ।) **6** नहीं, वह अन्याय नहीं कर सकता! अगर ऐसा हो तो वह पूरी दुनिया का न्याय कैसे करेगा?[12]

2:18 * या "ज़बानी तौर पर सिखाया गया।"
2:22 * शब्दावली देखें।

अध्य. 2
1 यूह 5:22; प्रेष 10:42; 1पत 4:5
2 रोम 9:6
3 व्य 4:8
4 मत 23:2, 3
5 निर्ग 20:15
6 व्य 5:18
7 यश 52:5; यहे 36:20
8 उत 17:10
9 1कुर 7:19; गल 5:3
10 इफ 2:11

दूसरा कॉल.
1 रोम 4:9, 10
2 यूह 8:39; प्रक 2:9
3 1कुर 7:19
4 रोम 9:6
5 रोम 7:6
6 यिर्म 4:4; प्रेष 7:51; फिल 3:3
7 यूह 5:44; 1कुर 4:5

अध्य. 3
8 व्य 4:8; भज 147:19, 20; प्रेष 7:38
9 यश 55:10, 11; यूह 8:26; 2ती 2:13
10 गि 23:19; भज 116:11
11 भज 51:4
12 भज 9:8; भज 96:13; भज 98:9; प्रेष 17:31

7 लेकिन अगर मेरे झूठ बोलने से
यह साफ दिखता है कि परमेश्‍वर कितना
सच्चा है और उसकी महिमा होती है,
तो फिर परमेश्‍वर मुझे क्यों पापी ठह-
राता है? **8** फिर तो हम भी क्यों न कहें,
"चलो हम बुराई करें कि भलाई निकल-
कर सामने आए," जैसा कि कुछ लोग हम
पर झूठा इलज़ाम लगाते हैं कि हम यही
सिखाते हैं। ऐसे लोग न्याय के हिसाब से
ठीक सज़ा पाएँगे।[1]

9 तो फिर हम क्या कहें? क्या हम
यहूदी दूसरों से बढ़कर हैं? हरगिज़
नहीं! क्योंकि हम पहले ही यह साबित
कर चुके हैं* कि यहूदी और गैर-यहूदी
सभी पाप के अधीन हैं।[2] **10** ठीक जैसा
लिखा है, "कोई भी इंसान नेक नहीं,
एक भी नहीं।[3] **11** ऐसा कोई नहीं जो
ज़रा भी अंदरूनी समझ रखता हो, ऐसा
कोई नहीं जो परमेश्‍वर की खोज करता
हो। **12** सभी इंसान सही राह से हट
गए हैं। वे सब-के-सब बेकार हो गए
हैं। कोई भी भलाई नहीं करता, एक
भी नहीं।"[4] **13** "उनका गला एक खुली
कब्र है, वे अपनी ज़बान से छलते हैं।"[5]
"उनके होंठों के पीछे साँपों का ज़हर है।"[6]
14 "उनका मुँह दूसरों को कोसनेवाली
कड़वी बातों से भरा रहता है।"[7]
15 "उनके पैर खून बहाने के लिए फुर्ती
करते हैं।"[8] **16** "दूसरों को बरबाद
करना और दुख देना ही उनका काम है
17 और वे अमन की राह पर चलना
जानते ही नहीं।"[9] **18** "उनकी आँखों में
परमेश्‍वर का ज़रा भी डर नहीं।"[10]

19 हम जानते हैं कि कानून की सारी
बातें उनसे कही गयी हैं जो कानून के
अधीन हैं ताकि हर इंसान का मुँह बंद
किया जा सके और सारी दुनिया पर-
मेश्‍वर से सज़ा पाने के लायक ठहरे।[1]
20 क्योंकि कानून में बताए कामों के
आधार पर कोई भी इंसान परमेश्‍वर के
सामने नेक नहीं ठहर सकता।[2] वह इस-
लिए कि पाप क्या है इसका सही-सही
ज्ञान कानून कराता है।[3]

21 मगर अब यह ज़ाहिर किया गया
है कि कानून को माने बिना एक
इंसान परमेश्‍वर की नज़र में नेक
ठहर सकता है,[4] जैसा कानून और
भविष्यवक्ताओं की किताबें भी गवाही
देती हैं।[5] **22** हाँ, यीशु मसीह पर
विश्‍वास करने से एक इंसान परमेश्‍वर की
नज़र में नेक ठहर सकता है। विश्‍वास
करनेवाले सभी इंसान नेक ठहर सकते
हैं और इसमें कोई भेदभाव नहीं।[6]
23 इसलिए कि सबने पाप किया है और
वे परमेश्‍वर के शानदार गुण* दिखाने
में नाकाम रहे हैं।[7] **24** मगर यह पर-
मेश्‍वर की महा-कृपा[8] है कि वह हमें नेक
ठहराता है और यह उसका मुफ्त वरदान
है।[9] मसीह यीशु ने हमें छुड़ाने के लिए
जो फिरौती का दाम दिया है, उसकी
बदौलत परमेश्‍वर हमें नेक ठहराता है।[10]
25 परमेश्‍वर ने मसीह को बलिदान के
तौर पर दे दिया[11] ताकि मसीह के खून
पर विश्‍वास करने से[12] पापों का प्राय-
श्‍चित* हो। ऐसा उसने खुद को नेक
साबित करने के लिए किया क्योंकि बीते
ज़माने में उसने लोगों के पापों को बर-
दाश्‍त किया और उन्हें माफ करता रहा।
26 यह परमेश्‍वर ने इसलिए भी किया
ताकि हमारे ज़माने में भी खुद को नेक
साबित करे[13] ताकि जो इंसान यीशु पर
विश्‍वास करता है उसे नेक ठहराते वक्‍त
वह खुद भी नेक साबित हो।[14]

अध्य. 3
1 इब्र 2:2, 3
2 रोम 3:23; गल 3:22
3 नीत 20:9; सभ 7:20
4 भज 14:1-3
5 भज 5:9
6 भज 140:3
7 भज 10:7; याकू 3:8, 9
8 नीत 1:16
9 यश 59:7, 8
10 भज 36:1

दूसरा कॉल.
1 रोम 2:12; रोम 5:13; गल 3:10
2 गल 2:16; गल 3:11
3 रोम 7:9, 13; गल 3:19
4 रोम 1:16, 17
5 यश 53:11; यिर्म 31:34; दान 9:24
6 गल 3:28
7 सभ 7:20
8 इफ 2:8
9 रोम 5:17
10 मत 20:28; 1ती 2:5, 6; 1पत 2:24
11 यश 53:11; 2कुर 5:19; 1यूह 2:1, 2; 1यूह 4:10
12 लैव 17:11; प्रेष 13:39; इफ 1:7
13 भज 89:14
14 1कुर 1:30; 1यूह 1:9

3:9 *शा., "आरोप लगा चुके हैं।"

3:23 *शा., "महिमा।" **3:25** *या "पर-
मेश्‍वर के साथ सुलह।"

27 तो क्या घमंड करने की कोई वजह रही? नहीं, कोई वजह नहीं रही। किस कानून पर घमंड करें? उस कानून पर जो कामों को अहमियत देता है?[1] बिलकुल नहीं, बल्कि विश्वास के कानून पर। 28 इसलिए हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि एक इंसान कानून में बताए कामों से नहीं, बल्कि विश्वास से नेक ठहराया जाता है।[2] 29 क्या वह सिर्फ यहूदियों का परमेश्वर है?[3] क्या वह दूसरे राष्ट्रों के लोगों का भी परमेश्वर नहीं?[4] बेशक, वह उनका भी परमेश्वर है।[5] 30 परमेश्वर एक है[6] इसलिए वही खतना किए गए लोगों को उनके विश्वास की वजह से नेक ठहराता है[7] और जो खतनारहित हैं, उन्हें उनके विश्वास के ज़रिए नेक ठहराता है।[8] 31 तो क्या हम अपने विश्वास से कानून को बेकार साबित करते हैं? बिलकुल नहीं! बल्कि हम कानून को सही ठहराते हैं।[9]

4 जब ऐसा है तो हम क्या कहें, हमारे पुरखे अब्राहम ने क्या पाया था? 2 अगर अब्राहम को उसके कामों की बिना पर नेक ठहराया जाता, तो उसके पास शेखी मारने की वजह होती, मगर परमेश्वर के सामने नहीं। 3 शास्त्र क्या कहता है? "अब्राहम ने यहोवा* पर विश्वास किया और इस वजह से उसे नेक समझा गया।"[10] 4 जो आदमी काम करता है उसे मज़दूरी देना उस पर महा-कृपा करना नहीं समझा जाता, बल्कि उसका हक* माना जाता है। 5 दूसरी तरफ, जो इंसान अपने कामों पर भरोसा करने के बजाय उस परमेश्वर पर विश्वास करता है जो पापी को नेक ठहराता है, उस इंसान को उसके विश्वास की वजह से नेक समझा जाता है।[1] 6 दाविद ने भी ऐसे इंसान को सुखी कहा जिसने कानून को पूरी तरह नहीं माना, फिर भी परमेश्वर ने उसे नेक समझा। उसने कहा, 7 "सुखी हैं वे जिनके बुरे काम माफ किए गए हैं और जिनके पाप ढाँप दिए* गए हैं। 8 सुखी है वह इंसान जिसके पाप का यहोवा* हरगिज़ लेखा नहीं लेगा।"[2]

9 तो क्या यह सुख सिर्फ उन लोगों को मिलता है जिनका खतना हुआ है? क्या यह उन्हें भी नहीं मिलता जो खतनारहित हैं?[3] क्योंकि हम कहते हैं, "अब्राहम के विश्वास की वजह से उसे नेक समझा गया।"[4] 10 उसे कब नेक समझा गया था? खतना होने के बाद या खतना होने से पहले? जब उसका खतना हुआ भी नहीं था, तब उसे नेक समझा गया था। 11 बिना खतने की दशा में उसने जो विश्वास किया, उसी की वजह से परमेश्वर ने उसे नेक समझा। और उसके नेक होने की निशानी* के तौर पर उसे खतना करवाने के लिए कहा[5] ताकि वह उन सबका पिता बने जो खतनारहित होते हुए भी विश्वास करते हैं[6] कि वे नेक समझे जाएँ। 12 साथ ही, वह उनका भी पिता बने जिनका खतना हुआ है यानी उनका जिन्होंने न सिर्फ खतना करवाया है बल्कि जो हमारे पिता अब्राहम के नक्शे-कदम पर सीधी चाल चलते हैं[7] और वैसा ही विश्वास करते हैं जैसा उसने बिना खतने की दशा में किया था।

4:3, 8 *अति. क5 देखें। **4:4** *या "कर्ज़।"

4:7 *या "माफ किए।" **4:11** *शा., "मुहर।" या "गारंटी।"

अध्य. 3
1 प्रेष 13:38, 39; इफ 2:8, 9
2 गल 2:15, 16; याकू 2:24
3 प्रेष 17:26, 27
4 प्रेष 10:4
5 यश 54:5; रोम 10:12; गल 3:14
6 व्य 6:4; 1कुर 8:6; इफ 4:6
7 1कुर 7:18
8 गल 3:8
9 मत 5:17; रोम 8:3, 4; रोम 13:10

अध्य. 4
10 उत 15:6; गल 3:6; याकू 2:23

दूसरा कॉल.
1 गल 2:15, 16
2 भज 32:1, 2
3 रोम 3:30
4 रोम 4:3
5 उत 17:1, 2, 11
6 रोम 4:16; गल 3:7
7 गल 3:29

13 अब्राहम और उसके वंश* से वादा किया गया था कि वे दुनिया के वारिस होंगे। उनसे यह वादा कानून मानने की वजह से नहीं[1] बल्कि विश्वास करके नेक ठहरने की वजह से किया गया था।[2] **14** इसलिए कि अगर सिर्फ कानून पर चलनेवाले वारिस होते, तो विश्वास करना बेमाने हो जाता और वादा बेकार जाता। **15** सच तो यह है कि कानून क्रोध पैदा करता है,[3] मगर जहाँ कानून नहीं है वहाँ उसे तोड़ा भी नहीं जाता।[4]

16 इसलिए अब्राहम से वारिस होने का यह वादा उसके विश्वास की वजह से किया गया था[5] और इस वादे से परमेश्वर की महा-कृपा[6] ज़ाहिर हुई। और यह पक्का हुआ कि यह वादा उसके सभी वंशजों* के लिए है, यानी न सिर्फ उनके लिए जो कानून पर चलते हैं बल्कि उनके लिए भी है जिनमें अब्राहम जैसा विश्वास है जो हम सबका पिता है।[7] **17** (यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा लिखा है, "मैंने तुझे बहुत-सी जातियों का पिता ठहराया है।")[8] यह परमेश्वर के सामने हुआ जिस पर उसे विश्वास था और जो मरे हुओं को ज़िंदा करता है और जो बातें अब तक पूरी नहीं हुई हैं उनके बारे में ऐसे बात करता है मानो वे पूरी हो चुकी हों।* **18** हालाँकि अब्राहम के लिए सारी आशाएँ खत्म हो चुकी थीं, फिर भी उसने आशा रखते हुए विश्वास किया कि वह बहुत-सी जातियों का पिता बनेगा, ठीक जैसे उससे वादा किया गया था: "तेरे वंश* की गिनती भी इसी तरह बेशुमार होगी।"[9] **19** हालाँकि अब्राहम ने अपने शरीर की बेजान हालत पर गौर किया (क्योंकि वह करीब 100 साल का हो चुका था)[1] और वह अपनी पत्नी सारा के गर्भ की बेजान हालत* भी जानता था, फिर भी उसका विश्वास कमज़ोर नहीं हुआ।[2] **20** परमेश्वर के वादे की वजह से वह विश्वास की कमी से नहीं डगमगाया, बल्कि अपने विश्वास की वजह से शक्तिशाली साबित हुआ और उसने परमेश्वर की महिमा की। **21** उसे पूरा यकीन था कि जिस परमेश्वर ने वादा किया है वह उसे पूरा करने के काबिल भी है।[3] **22** तभी, "इस वजह से उसे नेक समझा गया।"[4]

23 मगर शास्त्र में लिखी यह बात कि 'उसे समझा गया,' न सिर्फ उसके बारे में है[5] **24** बल्कि हमारे बारे में भी है। हमें भी नेक समझा जाएगा क्योंकि हम उस परमेश्वर पर विश्वास करते हैं जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से ज़िंदा किया।[6] **25** यीशु को हमारे गुनाहों की खातिर मौत के हवाले किया गया[7] और हमें नेक ठहराने के लिए ज़िंदा किया गया।[8]

5 इसलिए जब हमें विश्वास की वजह से नेक ठहराया गया है,[9] तो आओ हम अपने प्रभु यीशु मसीह के ज़रिए परमेश्वर के साथ शांति के रिश्ते में बने रहें।*[10] **2** उसी के ज़रिए हमने विश्वास की वजह से परमेश्वर के सामने जाने की इजाज़त पायी है ताकि हम उसकी महा-कृपा पा सकें जो अभी हम पर है।[11] और आओ हम परमेश्वर से महिमा पाने की आशा की वजह से खुशी मनाएँ।* **3** यही नहीं, हम दुख-तकलीफें झेलते हुए

4:13, 16, 18 *शा., "बीज।" **4:17** *या शायद, "जो वजूद में नहीं है उसके बारे में ऐसे बात करता है जैसे वह वजूद में हो।"

4:19 *या "बाँझ होने की हालत।" **5:1** *या शायद, "हमारे पास शांति है।" **5:2** *या शायद, "हम खुशी मनाते हैं।"

अध्य. 4
1 उत 12:1-3 उत 17:5, 6 उत 22:17, 18
2 इब्र 11:8
3 रोम 3:20 रोम 5:20 2कुर 3:7
4 रोम 5:13
5 रोम 9:8 गल 3:29
6 रोम 3:24
7 रोम 4:11
8 उत 17:5
9 उत 15:5 इब्र 11:17, 18

दूसरा कॉल.
1 उत 17:17
2 उत 18:11 इब्र 11:11, 12
3 इब्र 11:19
4 उत 15:6 याकू 2:23
5 रोम 15:4
6 प्रेष 2:24 प्रेष 13:30 1पत 1:21
7 मत 20:28
8 यश 53:11, 12 2कुर 5:21

अध्य. 5
9 प्रेष 13:38, 39
10 इफ 2:14
11 2कुर 5:18 इफ 3:11, 12 इब्र 10:19

भी खुशी मनाएँ*[1] क्योंकि हम जानते हैं
कि दुख-तकलीफों से धीरज पैदा होता
है[2] 4 और धीरज धरने से परमेश्‍वर की
मंज़ूरी हम पर बनी रहती है[3] और इस
वजह से हमें आशा मिलती है।[4] 5 यह
आशा हमें निराश नहीं होने देती[5] क्योंकि
परमेश्‍वर का प्यार हमारे दिलों में उस
पवित्र शक्‍ति के ज़रिए भरा गया है, जो
हमें दी गयी थी।[6]

6 वाकई, जब हम कमज़ोर ही थे[7] तब
मसीह, तय किए गए वक्‍त पर भक्‍ति-
हीन इंसानों के लिए मरा। 7 क्योंकि
शायद ही कोई किसी धर्मी इंसान के लिए
अपनी जान दे। हाँ, हो सकता है कि
एक अच्छे इंसान के लिए कोई अपनी
जान देने की हिम्मत करे। 8 मगर पर-
मेश्‍वर ने हमारे लिए अपने प्यार का सबूत
इस तरह दिया कि जब हम पापी ही
थे, तब मसीह हमारे लिए मरा।[8] 9 तो
अब जब हम उसके खून से नेक ठहराए
जा चुके हैं,[9] तो हम उसके ज़रिए पर-
मेश्‍वर के क्रोध से भी क्यों न बचेंगे?[10]
10 जब हम परमेश्‍वर के दुश्‍मन थे, तब
अगर उसके बेटे की मौत की बिना पर
परमेश्‍वर के साथ हमारी सुलह हुई,[11] तो
अब जब हमारी सुलह हो चुकी है, तो
हम उसके जीवन के ज़रिए उद्धार पाने
का और भी कितना यकीन रख सकते हैं!
11 इतना ही नहीं, हम परमेश्‍वर के साथ
अपने रिश्‍ते की वजह से खुशी मनाते हैं
जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के ज़रिए
कायम हुआ है, जिसके ज़रिए परमेश्‍वर
के साथ हमारी सुलह हुई है।[12]

12 इसलिए एक आदमी से पाप
दुनिया में आया और पाप से मौत
आयी[13] और इस तरह मौत सब इंसानों
में फैल गयी क्योंकि सबने पाप किया।[1]
13 कानून दिए जाने से पहले पाप दुनिया
में था, मगर जब कानून नहीं होता तो
किसी को पाप का दोषी नहीं ठह-
राया जा सकता।[2] 14 फिर भी मौत ने
आदम से लेकर मूसा के समय तक राजा
बनकर राज किया, उन पर भी जिन्होंने
आदम की तरह कानून तोड़कर पाप नहीं
किया था। आदम बिलकुल उसी के जैसा
था जो आनेवाला था।[3]

15 मगर परमेश्‍वर का वरदान गुनाह
जैसा नहीं। एक आदमी के गुनाह की
वजह से बहुत लोग मर गए, मगर पर-
मेश्‍वर की महा-कृपा और उसके मुफ्त
वरदान से बहुतों को बेहिसाब फायदे
मिले।[4] यह मुफ्त वरदान, महा-कृपा
के साथ एक आदमी यीशु मसीह के
ज़रिए दिया गया।[5] 16 मुफ्त वरदान
से मिलनेवाले फायदे, एक आदमी के
पाप[6] के अंजामों जैसे नहीं हैं। इसलिए
कि एक गुनाह की वजह से यह सज़ा
मिली कि इंसान दोषी ठहरे,[7] मगर बहुत-
से गुनाहों के बाद जो वरदान मिला उसकी
वजह से इंसानों को नेक ठहराया जाता
है।[8] 17 जब एक आदमी के गुनाह की
वजह से मौत ने राजा बनकर राज किया
है,[9] तो जो लोग महा-कृपा और नेक
ठहरने का मुफ्त वरदान बहुतायत में पाते
हैं,[10] वे एक व्यक्‍ति यानी यीशु मसीह के
ज़रिए ज़रूर जीवन पाएँगे[11] और राजा
बनकर राज करेंगे।[12]

18 इसलिए जैसे एक गुनाह का
अंजाम यह हुआ कि सब किस्म के लोग
सज़ा के लायक ठहरे,[13] वैसे ही एक
नेक काम का नतीजा यह हुआ कि
सब किस्म के लोग[14] नेक ठहराए जाते
हैं ताकि जीवन पाएँ।[15] 19 और जैसे
एक आदमी के आज्ञा तोड़ने से बहुत लोग

अध्य. 5
1 फिल 2:17; 1पत 4:12, 13
2 प्रेष 5:41, 42
3 याकू 1:12
4 फिल 1:18-20
5 यह 21:45
6 2कुर 1:22; गल 4:6; इफ 1:13, 14
7 इफ 2:1, 5
8 यश 53:12; यूह 3:16; इफ 2:4, 5; 1पत 3:18; 1यूह 4:10
9 प्रेष 13:38, 39; इब्र 9:14
10 1थि 1:10
11 2कुर 5:18; कुल 1:21, 22
12 2कुर 5:19
13 उत 2:17; उत 3:6; उत 3:19; 1कुर 15:21

दूसरा कॉल.
1 भज 51:5; रोम 3:23
2 रोम 4:15
3 1कुर 15:45
4 यश 53:11; मत 20:28
5 इब्र 2:9
6 उत 2:17; उत 3:6
7 उत 3:17-19
8 रोम 4:25
9 रोम 5:12, 14
10 रोम 3:24
11 1पत 3:18; प्रक 1:5, 6
12 प्रक 5:9, 10; प्रक 20:4
13 1कुर 15:21
14 रोम 1:16; 1ती 2:3, 4
15 यूह 10:10

5:3 * या शायद, “हम खुशी मनाते हैं।”

पापी ठहरे,[1] उसी तरह एक आदमी के
आज्ञा मानने से बहुत लोग नेक ठहरेंगे।[2]
20 फिर कानून आया जिसने गुनाहों
को और भी बढ़कर ज़ाहिर किया।[3]
मगर जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ महा-कृपा और
भी बहुतायत में हुई। 21 किस लिए?
ताकि जैसे पाप ने मौत के साथ राजा बन-
कर राज किया,[4] वैसे ही महा-कृपा भी
नेकी के ज़रिए राजा बनकर राज करे
जिससे हमारे प्रभु यीशु मसीह के ज़रिए
हमेशा की ज़िंदगी मिले।[5]

6 तो अब हम क्या कहें? क्या हम पाप
करते रहें ताकि और भी ज़्यादा महा-
कृपा पाएँ? 2 हरगिज़ नहीं! जब हम
पाप के लिए मर चुके,[6] तो फिर आगे
हम उसमें कैसे जीते रह सकते हैं?[7]
3 या क्या तुम नहीं जानते कि हम
सभी ने, जिन्होंने मसीह यीशु में बप-
तिस्मा पाया है,[8] उसकी मौत में भी
बपतिस्मा पाया है?[9] 4 इसलिए उसकी
मौत में बपतिस्मा पाने से हम भी उसके
साथ दफन किए गए[10] ताकि जैसे पिता
की महिमा से भरी शक्ति से मसीह को
मरे हुओं में से ज़िंदा किया गया, वैसे ही
हम भी एक नया जीवन जीएँ।[11] 5 जब
हम उसके जैसी मौत मरकर उसके साथ
एक हुए हैं,[12] तो उसकी तरह ज़िंदा होकर
भी उसके साथ एक होंगे।[13] 6 क्योंकि
हम जानते हैं कि हमारी पुरानी शख्सि-
यत उसके साथ काठ पर ठोंक दी गयी[14]
ताकि हमारे पापी शरीर का हम पर अधि-
कार खत्म हो जाए[15] और अब से हम
पाप के दास न रहें।[16] 7 इसलिए कि
जो मर चुका है, वह अपने पाप से छूट*
गया है।

8 यही नहीं, अगर हम मसीह के साथ
मर चुके हैं, तो हमें यकीन है कि हम
उसके साथ जीएँगे भी। 9 इसलिए कि
हम जानते हैं कि मसीह, जिसे मरे हुओं में
से ज़िंदा किया गया है दोबारा नहीं मरेगा,[1]
अब मौत का उस पर कोई अधिकार नहीं।
10 इसलिए कि मसीह जो मौत मरा, वह
पाप को मिटाने के लिए था और वह एक
ही बार मरा[2] ताकि दोबारा न मरना पड़े।
लेकिन वह जो जीवन जीता है वह पर-
मेश्वर के लिए जीता है। 11 इसी तरह
तुम भी यह समझो कि तुम पाप के लिए
तो मर गए हो, मगर मसीह यीशु के ज़रिए
परमेश्वर के लिए जी रहे हो।[3]

12 इसलिए तुम पाप को अपने नश्वर
शरीर में राजा बनकर राज मत करने दो[4]
और शरीर की इच्छाओं के गुलाम बन-
कर उसकी मत मानो। 13 न ही अपने
शरीर* को बुराई के हथियार बनने के
लिए पाप के हवाले करते रहो। इसके
बजाय मरे हुओं में से ज़िंदा किए गए लोगों
के नाते खुद को परमेश्वर को सौंप दो,
साथ ही अपने शरीर* को नेकी के हथि-
यार बनने के लिए परमेश्वर के हवाले
कर दो।[5] 14 अब पाप तुम्हारा मालिक
न हो क्योंकि तुम कानून के अधीन नहीं[6]
बल्कि महा-कृपा के अधीन हो।[7]

15 तो अब हम क्या कहें? क्या हम
इस वजह से पाप करें कि हम कानून के
अधीन नहीं बल्कि महा-कृपा के अधीन
हैं?[8] हरगिज़ नहीं! 16 क्या तुम नहीं
जानते कि अगर तुम किसी की आज्ञा
मानने के लिए खुद को गुलामों की
तरह उसके हवाले करते हो, तो उसी
के गुलाम बन जाते हो?[9] फिर चाहे पाप
के गुलाम[10] जिससे मौत मिलती है,[11] या
आज्ञा मानने के गुलाम जिससे नेक ठह-
राया जाता है। 17 मगर परमेश्वर का
धन्यवाद हो कि तुम जो कभी पाप के

6:7 * या "बरी; माफ किया।"

6:13 * शा., "अंगों।"

अध्य. 5
1 रोम 5:12
2 यश 53:11
इब्र 2:10
3 रोम 3:20
गल 3:19
4 1कुर 15:56
5 यूह 3:16
1यूह 4:9

अध्य. 6
6 1पत 2:24
7 इब्र 10:26, 27
8 1कुर 12:13
गल 3:27
9 मर 10:38, 39
1कुर 15:29
10 कुल 2:12
11 कुल 3:10
1यूह 3:14
12 2कुर 4:10
फिल 3:10
13 1कुर 15:42,
49
14 गल 5:24
15 कुल 2:11
कुल 3:5
16 2कुर 7:1

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 13:34
प्रक 1:17, 18
2 इब्र 9:28
1पत 3:18
3 1पत 2:24
4 उत 4:7
5 रोम 12:1
6 रोम 7:6
गल 5:18
कुल 2:13, 14
7 यूह 1:17
8 रोम 5:21
9 2पत 2:19
10 यूह 8:34
11 रोम 6:23

गुलाम थे, अब दिल से उस शिक्षा के
आज्ञाकारी बने जिसके साँचे के हवाले
तुम्हें किया गया था। 18 हाँ, तुम्हें
पाप से आज़ाद किया गया था,[1] इस-
लिए तुम नेकी के दास बने।[2] 19 मैं
आसान शब्दों में तुमसे बात कर रहा हूँ,
क्योंकि तुम्हारे अंदर इंसानी कमज़ोरी है।
जैसे एक वक्त पर तुमने अपने अंगों को
अशुद्ध और दुष्ट कामों का गुलाम बना
लिया था ताकि दुष्टता करो, उसी तरह
अब तुम अपने अंगों को नेकी के दास
बना दो ताकि तुम पवित्र काम करो।[3]
20 क्योंकि जब तुम पाप के गुलाम थे, तो
नेकी के बंधनों से आज़ाद थे।

21 तो फिर उस वक्त तुम कैसे
फल पैदा करते थे? तुम ऐसे काम करते
थे जिनके बारे में सोचकर आज तुम्हें
शर्म आती है। ऐसे कामों से अंत में
मौत मिलती है।[4] 22 मगर अब तुम
पाप से आज़ाद किए गए हो और पर-
मेश्वर के दास बन गए हो। इसलिए तुम
पवित्रता के फल पैदा कर रहे हो[5] जिससे
अंत में हमेशा की ज़िंदगी मिलती है।[6]
23 क्योंकि पाप जो मज़दूरी देता है वह
मौत है,[7] मगर परमेश्वर जो तोहफा देता
है वह हमारे प्रभु मसीह यीशु के ज़रिए
हमेशा की ज़िंदगी है।[8]

7 भाइयो, क्या ऐसा हो सकता है कि
तुम्हें यह नहीं मालूम हो (मैं उनसे
बात कर रहा हूँ जो कानून जानते हैं) कि
एक इंसान पर तब तक कानून का
अधिकार रहता है, जब तक वह ज़िंदा
है? 2 मिसाल के लिए, एक शादीशुदा
औरत अपने पति के जीते-जी कानूनी
तौर पर उससे बँधी होती है, लेकिन
अगर उसका पति मर जाए, तो वह उसके
कानून से छूट जाती है।[9] 3 अगर वह
पति के जीते-जी किसी और आदमी की
हो जाए, तो यह कहा जाएगा कि उसने
व्यभिचार* किया है।[1] लेकिन अगर
उसका पति मर जाए, तो वह उसके
कानून से छूट जाती है। इसके बाद अगर
वह किसी और आदमी की हो जाए, तो
यह नहीं कहा जाएगा कि उसने व्यभि-
चार* किया है।[2]

4 उसी तरह मेरे भाइयो, तुम मसीह
के शरीर के ज़रिए कानून के लिए मर
चुके हो ताकि तुम मसीह के हो जाओ[3]
जिसे मरे हुओं में से ज़िंदा किया गया
था।[4] यह इसलिए हुआ है ताकि हम
परमेश्वर के लिए फल पैदा करें।[5]
5 क्योंकि जब हम शरीर की इच्छाओं
के मुताबिक जीते थे, तब कानून ने हमें
अपनी पाप-भरी वासनाओं का एहसास
दिलाया, जो हमारे शरीर* में काम कर
रही थीं कि हम ऐसे फल पैदा करें जिनका
अंजाम मौत है।[6] 6 मगर अब हम इस
कानून से आज़ाद हो चुके हैं[7] क्योंकि हम
जिसके बंधन में थे उसके लिए मर चुके हैं
ताकि हम लिखित कानून से पुराने मायने
में नहीं[8] बल्कि पवित्र शक्ति से एक नए
मायने में दास बनें।[9]

7 तो फिर हम क्या कहें? क्या कानून
में खोट है?* हरगिज़ नहीं! दरअसल
अगर कानून न होता, तो मैं पाप के
बारे में कभी नहीं जान पाता।[10] मिसाल
के लिए, अगर कानून यह न कहता, "तू
लालच न करना," तो लालच क्या है यह
मैं नहीं जान पाता।[11] 8 मगर पाप ने
मौका मिलते ही कानून का फायदा उठा-
कर मेरे अंदर हर तरह का लालच
पैदा किया। क्योंकि बिना कानून के
पाप मरा हुआ था।[12] 9 दरअसल एक
वक्त ऐसा था जब मैं कानून के बिना

अध्य. 6
1 यूह 8:31, 32
2 1पत 2:24
3 रोम 12:1
4 रोम 8:6
गल 5:19-21
5 गल 5:22, 23
6 1कुर 9:25
7 उत 2:17
8 मत 25:46
1ती 1:16
1पत 1:3, 4
1यूह 2:1, 2
यहू 21

अध्य. 7
9 1कुर 7:39

दूसरा कॉल.
1 मत 5:32
मत 19:9
मर 10:11, 12
लूक 16:18
2 1कुर 7:8, 9
1ती 5:14
3 2कुर 11:2
4 प्रेष 5:30
2कुर 5:15
5 गल 5:22, 23
कुल 1:10
6 याकू 1:14, 15
7 रोम 10:4
इफ 2:15
कुल 2:13, 14
8 गल 3:10
9 रोम 12:11
10 रोम 3:20
गल 3:19
11 निर्ग 20:17
व्य 5:21
12 रोम 4:15
रोम 5:20

7:3 *शब्दावली देखें। **7:5** *शा., "अंगों।"
7:7 *शा., "क्या कानून पाप है?"

ज़िंदा था। मगर जब कानून आया तो पाप
फिर से ज़िंदा हो गया और मैं मर गया।[1]
10 और जो आज्ञा जीवन के लिए थी,[2]
मैंने पाया कि वह मेरे लिए मौत की वजह
बनी। **11** क्योंकि पाप ने मौका मिलते
ही कानून का फायदा उठाकर मुझे बह-
काया और इसके ज़रिए मुझे मार डाला।
12 कानून अपने आप में पवित्र है और
आज्ञा पवित्र, नेक और अच्छी है।[3]

13 तो फिर जो अच्छा है, क्या वह
मेरी मौत की वजह बना? हरगिज़ नहीं!
बल्कि पाप मेरी मौत की वजह बना ताकि
जो अच्छा है उससे ज़ाहिर हो कि पाप
ही मेरे अंदर काम करते हुए मुझे मौत
की तरफ ले जा रहा है[4] और कानून की
आज्ञा के ज़रिए पाप की बुराई और भी
बढ़कर ज़ाहिर हो।[5] **14** हम जानते हैं
कि कानून परमेश्वर की तरफ से है, मगर
मैं पापी* हूँ और पाप के हाथों बिका हुआ
हूँ।[6] **15** मैं जो करता हूँ, मैं समझ नहीं
पाता कि क्यों ऐसा करता हूँ। क्योंकि मैं
जो करना चाहता हूँ वह नहीं करता, मगर
जिस काम से मुझे नफरत है वही करता
हूँ। **16** लेकिन अगर मैं वही करता हूँ
जो मैं नहीं करना चाहता, तो मैं मानता
हूँ कि कानून बढ़िया है। **17** इसलिए मैं
जो कर रहा हूँ वह मैं नहीं, बल्कि
पाप कर रहा है जो मेरे अंदर बसा हुआ
है।[7] **18** मैं जानता हूँ कि मुझमें यानी
मेरे शरीर में ज़रा भी अच्छाई नहीं बसी
है, क्योंकि भला काम करने की इच्छा तो
मेरे अंदर है मगर भला काम मुझसे होता
नहीं।[8] **19** क्योंकि जो अच्छा काम मैं
करना चाहता हूँ वह नहीं करता, मगर
जो बुरा काम नहीं करना चाहता, वही
करता रहता हूँ। **20** तो अगर मैं वही
करता हूँ जो नहीं करना चाहता, तो इसे
करनेवाला मैं नहीं बल्कि पाप है जो मेरे
अंदर बसा हुआ है।

21 तो फिर मैं अपने मामले में यह
नियम पाता हूँ: जब मैं अच्छा करना
चाहता हूँ, तो अपने अंदर बुराई को ही
पाता हूँ।[1] **22** मेरे अंदर का इंसान
वाकई परमेश्वर के कानून से खुशी पाता
है[2] **23** मगर मैं अपने शरीर* में दूसरे
कानून को काम करता हुआ पाता हूँ, जो
मेरे सोच-विचार पर राज करनेवाले कानून
से लड़ता है[3] और मुझे पाप के उस कानून
का गुलाम बना लेता है[4] जो मेरे शरीर*
में है। **24** मैं कैसा लाचार इंसान हूँ! मुझे
इस शरीर से, जो मर रहा है, कौन छुड़ाए-
गा? **25** हमारे प्रभु, यीशु मसीह के
ज़रिए परमेश्वर का धन्यवाद हो! मैं अपने
सोच-विचार में तो परमेश्वर के कानून का
दास हूँ, मगर मेरा शरीर पाप के कानून
का गुलाम है।[5]

8 इसलिए जो मसीह यीशु के साथ
एकता में हैं, उन्हें दोषी नहीं ठह-
राया जाता। **2** क्योंकि पवित्र शक्ति के
कानून ने, जो मसीह यीशु में जीवन देता
है, तुम्हें पाप और मौत के कानून से
आज़ाद कर दिया है।[6] **3** पापी इंसानों
की वजह से कानून कमज़ोर पड़ गया,[7]
इसलिए कानून जो काम नहीं कर पाया[8]
वह परमेश्वर ने किया। परमेश्वर ने अपने
बेटे को इंसान के रूप[9] में* भेजा[10] ताकि
वह पाप को मिटाए और इस तरह उसने
शरीर में पाप को दोषी ठहराया **4** ताकि
हम, जो शरीर के मुताबिक नहीं बल्कि
पवित्र शक्ति के मुताबिक चलते हैं,[11]
कानून की उचित माँगें पूरी कर सकें।[12]
5 जो शरीर के मुताबिक जीते हैं वे शरीर
की बातों पर ध्यान लगाते हैं,[13] मगर

7:14 *शा., "शारीरिक।"

7:23 *शा., "अंगों।" **8:3** *शा., "पापी शरीर की समानता में।"

अध्य. 7
1 2कुर 3:6
2 लैव 18:5; लूक 10:26-28
3 व्य 4:8; भज 19:8
4 1कुर 15:56
5 रोम 5:13
6 भज 51:5; यूह 8:34; रोम 6:16
7 उत 8:21
8 मत 26:41

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 17:9
2 2कुर 4:16; इफ 3:16; इफ 4:23, 24
3 गल 5:17; याकू 4:1
4 यूह 8:34
5 रोम 6:13; गल 5:17

अध्य. 8
6 यूह 8:31, 32; याकू 1:25
7 इब्र 7:18
8 रोम 3:20; इब्र 7:11
9 यूह 1:14
10 1यूह 4:9
11 गल 5:16, 18
12 रोम 3:31
13 गल 5:19-21

जो पवित्र शक्ति के मुताबिक जीते हैं, वे
पवित्र शक्ति की बातों पर ध्यान लगाते
हैं।[1] 6 इसलिए कि शरीर की बातों पर
ध्यान लगाने का मतलब मौत है,[2] मगर
पवित्र शक्ति की बातों पर ध्यान लगाने
का मतलब जीवन और शांति है।[3]
7 इसलिए कि शरीर की बातों पर ध्यान
लगाना, परमेश्वर से दुश्मनी रखना है[4]
क्योंकि शरीर न तो परमेश्वर के कानून के
अधीन है, न हो सकता है। 8 इसलिए
जो शरीर के मुताबिक चलते हैं, वे पर-
मेश्वर को खुश नहीं कर सकते।

9 लेकिन अगर परमेश्वर की पवित्र
शक्ति सचमुच तुममें वास करती है तो
तुम शरीर के मुताबिक नहीं, बल्कि
पवित्र शक्ति के मुताबिक चलते हो।[5]
लेकिन अगर किसी में मसीह का स्वभाव
नहीं है, तो वह मसीह का नहीं है।
10 लेकिन अगर मसीह तुम्हारे साथ
एकता में है,[6] तो चाहे तुम्हारा शरीर पाप
की वजह से मुरदा है, फिर भी पवित्र
शक्ति नेकी की वजह से तुम्हें जीवन देती
है। 11 जिस परमेश्वर ने यीशु को मरे
हुओं में से ज़िंदा किया, उसकी पवित्र
शक्ति अगर तुममें वास करती है, तो
वह परमेश्वर जिसने मसीह यीशु को
ज़िंदा किया,[7] तुम्हारे नश्वर शरीर को भी
अपनी उस पवित्र शक्ति से ज़िंदा करेगा[8]
जो तुममें रहती है।

12 इसलिए भाइयो, हम शरीर के
मुताबिक जीने और उसके काम करने
के लिए मजबूर नहीं हैं।[9] 13 अगर
तुम शरीर के मुताबिक जीते हो तो
तुम्हारा मरना तय है, लेकिन अगर तुम
पवित्र शक्ति से शरीर के कामों को
मार देते हो,[10] तो तुम ज़िंदा रहोगे।[11]
14 इसलिए कि जितने परमेश्वर की
पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन में चलते हैं, वे
सचमुच परमेश्वर के बेटे हैं।[1] 15 पर-
मेश्वर की पवित्र शक्ति न तो हमें गुलाम
बनाती है, न ही हमारे अंदर डर पैदा
करती है, बल्कि इसके ज़रिए हम बेटों के
नाते गोद लिए जाते हैं और यही पवित्र
शक्ति हमें *“अब्बा,* * हे पिता!” पुकार-
ने के लिए उभारती है।[2] 16 परमेश्वर
की पवित्र शक्ति हमारे अंदर के एहसास
के साथ मिलकर गवाही देती है[3] कि हम
परमेश्वर के बच्चे हैं।[4] 17 तो अगर
हम उसके बच्चे हैं, तो वारिस भी हैं। हाँ,
परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी
वारिस हैं,[5] बशर्ते हम उसके साथ दुख
झेलें[6] ताकि हम उसके साथ महिमा भी
पाएँ।[7]

18 मैं समझता हूँ कि आज के दौर
में हम जो दुख झेल रहे हैं वे उस महिमा
के आगे कुछ भी नहीं जो हमारे मामले
में प्रकट होनेवाली है।[8] 19 सृष्टि, पर-
मेश्वर के बेटों के ज़ाहिर होने का
बड़ी बेसब्री से इंतज़ार कर रही है।[9]
20 इसलिए कि सृष्टि व्यर्थता के अधीन
की गयी,[10] मगर अपनी मरज़ी से नहीं
बल्कि इसे अधीन करनेवाले ने आशा के
आधार पर इसे अधीन किया। 21 इस
आशा के आधार पर कि सृष्टि भी
भ्रष्टता की गुलामी से आज़ाद होकर पर-
मेश्वर के बच्चे होने की शानदार आज़ादी
पाएगी।[11] 22 हम जानते हैं कि सारी
सृष्टि अब तक एक-साथ कराहती और
दर्द से तड़प रही है। 23 यही नहीं, हम
भी जिन्हें पहला फल यानी पवित्र शक्ति
मिली है, अपने दिलों में कराहते हैं।[12]
इस दौरान हम बड़ी बेचैनी से इंतज़ार
कर रहे हैं कि परमेश्वर हमें अपने बेटों
के नाते गोद ले[13] और फिरौती के ज़रिए

अध्य. 8
1 गल 5:22, 23
2 रोम 6:21
3 गल 6:7, 8
4 यश 59:2; कुल 1:21
5 गल 5:25
6 यूह 15:4
7 प्रेष 2:24
8 इफ 2:1, 5
9 गल 5:19-21
10 1कुर 9:27; गल 5:24; इफ 4:22; कुल 3:5
11 गल 6:7, 8

दूसरा कॉल.
1 यूह 1:12; यूह 3:5
2 गल 4:4-6
3 1कुर 2:10, 12; 2कुर 1:22
4 यूह 1:12; गल 3:26; 1यूह 3:2
5 लूक 12:32; गल 3:29
6 फिल 1:29; कुल 1:24
7 1कुर 15:53; प्रक 3:21
8 2कुर 4:17; 1पत 4:13
9 1यूह 3:2
10 उत 3:17-19
11 यूह 8:31, 32; 1कुर 15:22
12 2कुर 5:1, 2
13 गल 4:4, 5; इफ 1:5; प्रक 21:7

8:15 * यह इब्रानी या अरामी भाषा का शब्द है जिसका मतलब है, “हे पिता!”

हमें अपने शरीर से छुटकारा दिलाए।
24 जब हमें छुड़ाया गया तब हमें यह
आशा मिली। मगर जिस चीज़ की आशा
की जाती है, जब वह एक बार दिख जाती
है तो वह आशा नहीं रहती, क्योंकि इंसान
जिसे देख लेता है क्या फिर उसकी आशा
रखता है? **25** लेकिन अगर हम उसकी
आशा रखते हैं[1] जिसे हमने देखा नहीं,[2]
तो हम धीरज धरते हुए बेसब्री से उसका
इंतज़ार करते हैं।[3]

26 इसके अलावा, परमेश्वर की
पवित्र शक्ति भी हमारी कमज़ोरी में हमारी
मदद करती है।[4] क्योंकि समस्या यह है
कि जब हमें प्रार्थना करनी होती है, तब
हमें समझ नहीं आता कि हम प्रार्थना में
क्या कहें। मगर पवित्र शक्ति खुद हमारी
दबी हुई* आहों के साथ हमारे लिए बिनती
करती है। **27** और दिलों को जाँचने-
वाला जानता है[5] कि पवित्र शक्ति क्या
कहना चाहती है, क्योंकि यह परमेश्वर की
मरज़ी के मुताबिक पवित्र जनों की खातिर
गिड़गिड़ाकर बिनती करती है।

28 हम जानते हैं कि परमेश्वर अपने
सब कामों में इस तरह तालमेल बिठाता
है कि जो उससे प्यार करते हैं और
उसके मकसद के मुताबिक बुलाए गए हैं,
उनका भला हो।[6] **29** क्योंकि जिन पर
उसने सबसे पहले ध्यान दिया, उनके लिए
पहले से यह भी तय किया कि वे ऐसे
ढाले जाएँ कि बिलकुल उसके बेटे जैसे
हों[7] और उसका बेटा बहुत-से भाइयों में[8]
पहलौठा[9] ठहरे। **30** यही नहीं, जिन्हें
उसने पहले से ठहराया[10] ये वे हैं जिन्हें
उसने बुलाया है।[11] और जिन्हें उसने
बुलाया ये वे हैं, जिन्हें उसने नेक ठहराया
है।[12] और जिन्हें उसने नेक ठहराया ये वे
हैं जिन्हें उसने महिमा भी दी।[13]

31 तो फिर इन बातों के बारे में हम
क्या कहें? अगर परमेश्वर हमारी तरफ
है, तो कौन हमारे खिलाफ होगा?[1]
32 जब उसने हमारे लिए अपना बेटा
तक दे दिया और उसे मौत के हवाले
कर दिया,[2] तो वह और उसका बेटा हम
पर कृपा करके हमें बाकी सारी चीज़ें भी
क्यों नहीं देंगे? **33** परमेश्वर के चुने
हुओं पर कौन इलज़ाम लगा सकता है?[3]
उन्हें नेक ठहरानेवाला तो परमेश्वर है।[4]
34 कौन उन्हें सज़ा के लायक ठहरा
सकता है? कोई नहीं। क्योंकि मसीह यीशु
ने अपनी जान दी, यही नहीं, उसे मरे
हुओं में से ज़िंदा किया गया, वह परमेश्वर
के दाएँ हाथ बैठा है[5] और वही हमारी
खातिर बिनती भी करता है।[6]

35 कौन हमें मसीह के प्यार से अलग
कर सकता है?[7] क्या संकट या दुख
या ज़ुल्म या भूख या नंगापन या खतरा
या तलवार?[8] **36** ठीक जैसा लिखा है,
"तेरी खातिर हम दिन-भर मौत का
सामना करते हैं, हमारी हालत उन भेड़ों
जैसी है जिन्हें हलाल किया जाएगा।"[9]
37 इसके बजाय, जिसने हमसे प्यार
किया, हम उसकी मदद से इन सारी मुसी-
बतों में शानदार जीत हासिल करते हैं।[10]
38 क्योंकि मुझे यकीन है कि न तो
मौत, न ज़िंदगी, न स्वर्गदूत, न सरकारें,
न आज की चीज़ें, न आनेवाली चीज़ें, न
कोई ताकत,[11] **39** न ऊँचाई, न गह-
राई, न ही कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर
के उस प्यार से अलग कर सकेगी जो
हमारे प्रभु मसीह यीशु में है।

9 मैं मसीह में सच कहता हूँ, मैं झूठ
नहीं बोल रहा जैसे मेरा ज़मीर भी
मेरे साथ पवित्र शक्ति में गवाही देता है
2 कि मुझे गहरा दुख है और मेरे दिल में
ऐसा दर्द उठता है जो थमने का नाम नहीं

8:26 * या "जो कही नहीं गयी।"

अध्य. 8
1 1पत 1:3, 4
2 2कुर 5:7
3 रोम 5:3-5
4 यूह 14:16, 26 यूह 16:7
5 यिर्म 11:20
6 इफ 1:9-11 2ती 1:9
7 यूह 13:15 रोम 6:5 1कुर 15:49
8 इब्र 2:11
9 इब्र 1:6
10 इफ 1:5
11 फिल 3:14 1थि 2:12 इब्र 3:1
12 रोम 5:18 तीत 3:7
13 2कुर 4:6

दूसरा कॉल.
1 भज 118:6 1यूह 4:4
2 यूह 3:16 रोम 3:25 1यूह 4:9
3 यश 50:8
4 प्रेष 13:38, 39 इब्र 10:16, 17
5 भज 110:1
6 इब्र 7:25 1यूह 2:1
7 यूह 15:10
8 2कुर 4:8, 9
9 भज 44:22
10 यूह 16:33
11 इफ 6:12

लेता। 3 काश! अपने यहूदी भाइयों के
बदले, जिनके साथ मेरा खून का रिश्ता
है, मैं ऐसा शापित जन ठहरता जो मसीह
से दूर हो गया है। 4 ये इसराएली हैं,
जिन्हें बेटों के नाते गोद लिया गया था।[1]
उन्हीं को महिमा दी गयी थी, उनके साथ
करार किए गए थे[2] और उन्हें कानून[3]
और पवित्र सेवा करने का सम्मान दिया
गया था[4] और उन्हीं से वादे किए गए
थे।[5] 5 हमारे पुरखे भी उन्हीं में से थे[6]
और उन्हीं के वंश से मसीह आया।[7] पर-
मेश्वर जो सबके ऊपर है, हमेशा-हमेशा
के लिए उसकी तारीफ हो। आमीन।

6 मगर इसका यह मतलब नहीं कि
परमेश्वर का वचन नाकाम हो गया। दर-
असल इसराएल के वंश से निकलनेवाले
सभी लोग सचमुच इसराएली नहीं हैं।[8]
7 न ही अब्राहम के वंशज* होने की
वजह से वे सभी असल में उसके बच्चे हैं,[9]
मगर जैसा लिखा है, "तुझसे जिस वंश*
का वादा किया गया है वह इसहाक से
आएगा।"[10] 8 इसका मतलब यह है
कि जो खून के रिश्ते से अब्राहम के
बच्चे हैं, वे असल में परमेश्वर के बच्चे
नहीं,[11] बल्कि जो परमेश्वर के वादे के
मुताबिक उसके बच्चे हैं,[12] वे ही अब्राहम
का वंश* माने जाते हैं। 9 क्योंकि पर-
मेश्वर ने यह वादा किया था, "मैं अगले
साल इसी समय आऊँगा और सारा के
एक बेटा होगा।"[13] 10 मगर यह वादा
सिर्फ उस वक्त ही नहीं, बल्कि तब भी
किया गया था जब रिबका हमारे पुरखे
इसहाक से गर्भवती हुई और उसके गर्भ
में जुड़वाँ बच्चे थे।[14] 11 यह वादा उस
वक्त किया गया था जब बच्चे पैदा भी
नहीं हुए थे, न ही उन्होंने कोई अच्छा-बुरा
काम किया था ताकि यह चुनाव परमेश्वर
के मकसद के मुताबिक हो, न कि इंसान
के कामों के मुताबिक। परमेश्वर उसी को
चुनता है जिसे वह चाहता है। 12 पर-
मेश्वर ने रिबका से कहा था, "बड़ा छोटे
का दास होगा।"[1] 13 ठीक जैसा लिखा
भी है, "मैंने याकूब से प्यार किया मगर
एसाव से नफरत की।"[2]

14 तो हम क्या कहें? क्या पर-
मेश्वर अन्याय करता है? हरगिज़ नहीं![3]
15 इसलिए कि उसने मूसा से कहा,
"मैं जिस किसी पर दया दिखाना चाहूँ
उस पर दया दिखाऊँगा और जिस किसी
पर करुणा करना चाहूँ उस पर करुणा
करूँगा।"[4] 16 तो फिर परमेश्वर किसे
चुनेगा यह न तो इंसान की इच्छा पर
निर्भर करता है न ही उसकी मेहनत
पर,* बल्कि परमेश्वर पर निर्भर करता
है जो दया दिखाता है।[5] 17 इसलिए
कि शास्त्रवचन फिरौन के बारे में कहता
है, "मैंने तुझे इसलिए ज़िंदा छोड़ा है ताकि
तेरे मामले में अपनी शक्ति दिखाऊँ और
पूरी धरती पर अपने नाम का ऐलान करा
सकूँ।"[6] 18 तो फिर, परमेश्वर जिस
पर चाहे उस पर दया दिखाता है मगर
जिसे चाहे उसे ढीठ होने देता है।[7]

19 मगर अब तू मुझसे कहेगा, "तो
फिर क्यों वह इंसानों को अब भी दोषी
ठहराता है? कौन है जो उसकी मरज़ी के
खिलाफ खड़ा रह सका है?" 20 मगर
हे इंसान, तू कौन है जो परमेश्वर को
पलटकर जवाब देने की जुर्रत कर
रहा है?[8] क्या ढली हुई चीज़ अपने
ढालनेवाले से कह सकती है, "तूने मुझे
ऐसा क्यों बनाया?"[9] 21 क्या कुम्हार
को मिट्टी पर अधिकार नहीं[10] कि वह एक
ही लोंदे से एक बरतन आदर के काम के

अध्य. 9
1 निर्ग 4:22
2 प्रेष 3:25 प्रेष 7:8
3 निर्ग 24:12
4 प्रेष 26:7 इब्र 9:1
5 रोम 4:13
6 व्य 10:15
7 मत 1:17
8 रोम 2:28 प्रक 2:9
9 यूह 8:39 गल 3:29
10 उत 21:12 इब्र 11:18
11 यूह 1:12, 13
12 गल 4:28
13 उत 18:10, 14
14 उत 25:21, 24

दूसरा कॉल.
1 उत 25:23
2 मला 1:2, 3 इब्र 12:16
3 व्य 32:4 अय 34:10
4 निर्ग 33:19
5 तीत 3:4, 5
6 निर्ग 9:16
7 निर्ग 10:1 निर्ग 14:4
8 अय 40:2
9 यश 29:16 यश 45:9
10 यश 64:8 यिर्म 18:6

9:7, 8 *शा., "बीज।"

9:16 *शा., "न तो चाहनेवाले पर निर्भर करता है, न ही दौड़नेवाले पर।"

लिए और दूसरा मामूली काम* के लिए
बनाए? **22** परमेश्वर भी चाहता है कि
वह दुष्टों पर क्रोध प्रकट करे और
अपनी शक्ति दिखाए, फिर भी वह बहुत
सब्र रखता है और उसने क्रोध के बर-
तनों यानी दुष्टों को बरदाश्त किया है जो
नाश के लायक हैं। **23** उसने यह इस-
लिए किया ताकि अपनी अपार महिमा,
दया के बरतनों पर दिखाए[1] जिन्हें उसने
महिमा पाने के लिए पहले से तैयार किया
है **24** यानी हम पर जिन्हें उसने न सिर्फ
यहूदियों में से बल्कि गैर-यहूदी राष्ट्रों में
से भी बुलाया है।[2] **25** यह ऐसा ही है
जैसा होशे की किताब में भी वह कहता
है, "जो मेरे लोग नहीं थे,[3] उन्हें मैं
'अपने लोग' कहूँगा और जो मेरी प्यारी
नहीं थी, उसे 'प्यारी' कहूँगा[4] **26** और
जिस जगह उनसे कहा गया था, 'तुम मेरे
लोग नहीं हो,' वहाँ वे 'जीवित परमेश्वर
के बेटे' कहलाएँगे।"[5]

27 इतना ही नहीं, यशायाह इसराएल
के बारे में पुकारकर कहता है, "इस-
राएल के बेटों की गिनती चाहे समुं-
दर की बालू के किनकों जितनी अन-
गिनत क्यों न हो, मगर सिर्फ मुट्ठी-भर
लोग* ही उद्धार पाएँगे।[6] **28** इसलिए
कि यहोवा* धरती पर हिसाब लेगा और
बड़ी तेज़ी से यह काम पूरा करेगा।"[7]
29 साथ ही, जैसे यशायाह ने पहले से
बताया था, "अगर सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा* ने हमारे कुछ वंशजों को ज़िंदा न
छोड़ा होता, तो हम सदोम की तरह बन
गए होते, हमारा हाल अमोरा जैसा हो
गया होता।"[8]

30 तो फिर हम क्या कहें? यही कि
हालाँकि गैर-यहूदी राष्ट्रों के लोग नेक
ठहरने की कोशिश नहीं कर रहे, फिर भी
परमेश्वर उन्हें नेक ठहरा रहा है[1] क्योंकि
उनमें विश्वास है।[2] **31** लेकिन इस-
राएल ने कानून पर चलकर नेक ठहर-
ने की कोशिश की, फिर भी वे कानून
के मुताबिक पूरी तरह चल नहीं सके।
32 वजह क्या थी? उन्होंने विश्वास
से नहीं बल्कि अपने कामों से नेक
ठहरने की कोशिश की। उन्होंने "ठोकर
खिलानेवाले पत्थर" से ठोकर खायी[3]
33 जैसा लिखा भी है, "देख! मैं सिय्योन
में ठोकर खिलानेवाला पत्थर[4] और ठेस
पहुँचानेवाली चट्टान रखता हूँ, मगर जो
उस पर विश्वास करता है वह निराश नहीं
होगा।"[5]

10 भाइयो, मैं दिल से यही चाहता
हूँ और इसराएलियों के लिए पर-
मेश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि वे
उद्धार पाएँ।[6] **2** इसलिए कि मैं उनके
बारे में गवाही देता हूँ कि उनमें परमेश्वर
की सेवा के लिए जोश तो है,[7] मगर
सही ज्ञान के मुताबिक नहीं। **3** वे नहीं
जानते थे कि परमेश्वर की नज़र में नेक
ठहरने के लिए क्या ज़रूरी है।[8] इसलिए
वे अपने तरीके से खुद को नेक ठहराने
की कोशिश करते रहे[9] और परमेश्वर
के नेक स्तरों पर नहीं चले।[10] **4** मसीह
की मौत से कानून का अंत हो गया[11]
ताकि हर कोई जो मसीह पर विश्वास करे
वह नेक ठहरे।[12]

5 मूसा ने कानून के ज़रिए नेक ठहर-
ने के बारे में लिखा, "जो इंसान ये काम
करता है वह ज़िंदा रहेगा।"[13] **6** मगर
विश्वास से नेक ठहरने के बारे में लिखा
है, "अपने दिल में यह न कहो,[14] 'कौन
ऊपर स्वर्ग जाएगा?'[15] यानी मसीह को
नीचे लाने के लिए कौन स्वर्ग जाएगा।
7 या, 'कौन अथाह-कुंड में उतरेगा?'[16]

9:21 *शा., "अनादर।" **9:27** *या "बचे हुए लोग।" **9:28, 29** *अति. क5 देखें।

अध्य. 9
1 1थि 5:9
2 रोम 11:13, इफ 3:6
3 इफ 2:12
4 हो 2:23, मत 21:43, 1पत 2:10
5 हो 1:10, गल 3:26
6 हो 1:10, रोम 11:4, 5
7 यश 10:22, 23
8 यश 1:9

दूसरा कॉल.
1 रोम 10:20
2 रोम 4:11, फिल 3:9
3 यश 8:14, लूक 20:17, 18, 1कुर 1:23
4 भज 118:22, मत 21:42
5 यश 28:16, रोम 10:11, 1पत 2:6

अध्य. 10
6 रोम 9:3, 4
7 प्रेष 21:20, गल 1:14
8 रोम 1:16, 17
9 लूक 16:15, फिल 3:9
10 लूक 7:29, 30
11 मत 5:17, रोम 7:6, इफ 2:15, कुल 2:13, 14
12 गल 3:24
13 लैव 18:5, गल 3:12
14 व्य 9:4
15 व्य 30:12
16 व्य 30:13

यानी मसीह को मरे हुओं में से ऊपर लाने
के लिए कौन अथाह-कुंड में उतरेगा।”
8 मगर शास्त्र क्या कहता है? यह कहता
है, “यह संदेश तेरे पास, तेरे ही मुँह में
और तेरे ही दिल में है,”[1] यानी विश्वास
का “संदेश” जिसका हम प्रचार करते हैं।
9 अगर तू मुँह से सब लोगों के सामने
ऐलान करे कि यीशु ही प्रभु है[2] और
अपने दिल में यह विश्वास रखे कि पर-
मेश्वर ने उसे मरे हुओं में से ज़िंदा किया
है, तो तू उद्धार पाएगा। **10** इसलिए
कि एक इंसान नेक ठहराए जाने के लिए
दिल से विश्वास करता है, मगर उद्धार
पाने के लिए सब लोगों के सामने मुँह से
अपने विश्वास का ऐलान करता है।[3]

11 क्योंकि शास्त्र कहता है, “जो कोई
उस पर विश्वास करता है वह निराश नहीं
होगा।”[4] **12** इसलिए कि यहूदी और
यूनानी के बीच कोई फर्क नहीं[5] क्योंकि
सबके ऊपर एक ही प्रभु है, जो अपने सब
पुकारनेवालों को ढेरों आशीषें देता है।*
13 इसलिए कि “जो कोई यहोवा* का
नाम पुकारता है वह उद्धार पाएगा।”[6]
14 मगर वे उसका नाम कैसे पुकारेंगे जब
उन्होंने उस पर विश्वास ही नहीं किया?
और वे उस पर कैसे विश्वास करेंगे जिसके
बारे में उन्होंने सुना ही नहीं? और वे उसके
बारे में कैसे सुनेंगे जब कोई प्रचार करने-
वाला ही न हो? **15** और प्रचार करने-
वाले कैसे प्रचार करेंगे जब तक उन्हें भेजा
न जाए?[7] ठीक जैसा लिखा है, “उनके
पाँव कितने सुंदर हैं जो अच्छी बातों की
खुशखबरी सुनाते हैं!”[8]

16 फिर भी उनमें से सब खुश-
खबरी के मुताबिक नहीं चले। यशा-
याह कहता है, “हे यहोवा,* किसने हमारे
संदेश पर विश्वास किया है?”[1] **17** तो
संदेश सुनने के बाद ही विश्वास किया
जाता है।[2] और संदेश तब सुना जाता है
जब कोई मसीह के बारे में प्रचार करता
है। **18** मगर मैं पूछता हूँ, क्या उन्होंने
संदेश नहीं सुना? बेशक सुना क्योंकि
लिखा है, “संदेश सुनानेवालों की आवाज़
सारी धरती पर गूँज उठी और उनका
संदेश धरती के कोने-कोने तक पहुँचा।”[3]
19 मगर मैं पूछता हूँ, क्या इसराएली
समझ नहीं पाए?[4] पहले मूसा कहता है,
“मैं उसके ज़रिए तुम्हें जलन दिलाऊँगा
जो एक जाति नहीं है। मैं एक मूर्ख
जाति के ज़रिए तुम्हारे अंदर गुस्से की
आग भड़काऊँगा।”[5] **20** फिर यशा-
याह बेधड़क होकर कहता है, “जिन्होंने
मुझे नहीं ढूँढ़ा, उन्होंने मुझे पा लिया[6]
और जिन्होंने मेरे बारे में नहीं पूछा उन पर
मैं ज़ाहिर हुआ।”[7] **21** लेकिन इस-
राएलियों के बारे में वह कहता है,
“मैं ऐसे लोगों के सामने दिन-भर हाथ
फैलाए रहा जो मेरी आज्ञा नहीं मानते
और ढीठ हैं।”[8]

11 तो फिर, मैं पूछता हूँ क्या पर-
मेश्वर ने अपने लोगों को ठुकरा
दिया?[9] बिलकुल नहीं! क्योंकि मैं भी तो
एक इसराएली हूँ और अब्राहम के वंश*
और बिन्यामीन गोत्र से हूँ। **2** पर-
मेश्वर ने अपने उन लोगों को नहीं ठुक-
राया, जिन पर उसने सबसे पहले खास
ध्यान दिया।[10] क्या तुम नहीं जानते कि
जब एलियाह ने परमेश्वर से इसराएल
की शिकायत की थी, तो इस बारे में शास्त्र
क्या कहता है? **3** “हे यहोवा,* उन्होंने
तेरे भविष्यवक्ताओं को मार डाला है और
तेरी वेदियों को खोदकर गिरा दिया है

अध्य. 10
1 व्य 30:14
2 प्रेष 16:31
3 1कुर 9:16; 2कुर 4:13; इब्र 13:15
4 यश 28:16; रोम 9:33
5 प्रेष 15:7-9; गल 3:28
6 योए 2:32; प्रेष 2:21
7 मत 28:19, 20
8 यश 52:7; इफ 6:14, 15

दूसरा कॉल.
1 यश 53:1; यूह 12:37, 38
2 यूह 4:42
3 भज 19:4; प्रेष 1:8
4 मत 10:5, 6; प्रेष 2:14
5 व्य 32:21
6 रोम 9:30
7 यश 65:1
8 यश 65:2

अध्य. 11
9 1शम 12:22; यिर्म 31:37
10 निर्ग 19:5; भज 94:14

10:12 * या “दरियादिल है।” **10:13, 16; 11:3** * अति. क5 देखें।

11:1 * शा., “बीज।”

और मैं ही अकेला बचा हूँ और अब वे
मेरी जान के पीछे पड़े हैं।"[1] 4 लेकिन
परमेश्‍वर ने उसे क्या जवाब दिया? "मेरे
अब भी ऐसे 7,000 आदमी हैं जिन्होंने
बाल के सामने घुटने टेककर दंडवत नहीं
किया।"[2] 5 उसी तरह, आज भी कुछ
बचे हुए लोग हैं[3] जिन्हें परमेश्‍वर की
महा-कृपा की वजह से चुना गया है।
6 अगर यह चुनाव महा-कृपा की वजह
से है[4] तो इसका मतलब यह उनके कामों
की वजह से नहीं है।[5] नहीं तो महा-कृपा,
महा-कृपा नहीं रहती।

7 तो फिर हम क्या कहें? इसराएल
जिस चीज़ की खोज में बड़े जतन से लगा
हुआ था वह उसे नहीं मिली, मगर यह
चुने हुओं को मिली।[6] बाकी लोग कठोर
हो गए,[7] 8 ठीक जैसा लिखा है, "पर-
मेश्‍वर ने उन्हें मानो गहरी नींद में डाल
दिया है,[8] उनकी आँखें ऐसी हैं जो देख
नहीं सकतीं और कान ऐसे हैं जो सुन
नहीं सकते। आज तक उनकी यही
हालत है।"[9] 9 और दाविद भी कहता
है, "उनकी मेज़ उनके लिए फंदा, जाल,
ठोकर खिलानेवाला पत्थर और सज़ा का
कारण बन जाए। 10 उनकी आँखों के
आगे अँधेरा छा जाए ताकि वे देख न सकें
और उनकी कमर हमेशा के लिए झुकी
रहे।"[10]

11 इसलिए मैं पूछता हूँ, क्या उन्होंने
इस तरह ठोकर खायी कि हमेशा के लिए
गिर पड़ें? बेशक नहीं! मगर उनके गलत
कदम उठाने से गैर-यहूदी लोगों को उद्धार
मिला ताकि यहूदियों में जलन पैदा हो।[11]
12 अब अगर उनके गलत कदम उठाने
से दुनिया को आशीषें मिलीं और उनके
घटने से गैर-यहूदी लोगों ने आशीषें
पायीं,[12] तो उनकी गिनती के पूरा होने से
और कितना फायदा होगा!

13 अब मैं तुम गैर-यहूदियों से बात
कर रहा हूँ। मैं गैर-यहूदी राष्ट्रों के
लिए प्रेषित हूँ यानी मुझे उनके पास
भेजा गया है,[1] इसलिए मैं अपनी सेवा
का बहुत सम्मान* करता हूँ[2] 14 ताकि
अपने लोगों में किसी तरह जलन पैदा कर
सकूँ और उनमें से कुछ का उद्धार करवा
सकूँ। 15 इसलिए कि जब उन्हें त्याग
दिया गया[3] और इससे दुनिया के लिए
परमेश्‍वर के साथ सुलह करने का रास्ता
खुला, तो सोचो अगर उन्हें स्वीकार किया
जाए तो कैसा होगा! यह ऐसा होगा मानो
वे पहले मर गए थे मगर अब ज़िंदा हो गए
हैं। 16 इसके अलावा, अगर पहले
फल के तौर पर ली गयी आटे की लोई
पवित्र है, तो गुँधा हुआ पूरा आटा भी
पवित्र है और अगर जड़ पवित्र है, तो
डालियाँ भी पवित्र हैं।

17 अच्छे जैतून के पेड़ की कुछ
डालियाँ तोड़ दी गयीं और तुझे जंगली
जैतून होते हुए भी उसकी बाकी डालियों
के बीच कलम लगाया गया है और तू
उसकी जड़ के उत्तम रस का हिस्सेदार हो
गया है। 18 इसलिए तू घमंड से भर-
कर* उन टूटी डालियों को नीचा मत
समझ। अगर तू घमंड करता है,#[4] तो
याद रख कि तू जड़ को नहीं सँभाले हुए
है, बल्कि जड़ तुझे सँभाले हुए है।
19 तू कहेगा, "डालियाँ इसीलिए तोड़
दी गयीं कि मैं उस पेड़ पर कलम
लगाया जाऊँ।"[5] 20 तू ठीक कह रहा
है! मगर उन्हें इसलिए तोड़ा गया क्योंकि
उनमें विश्‍वास की कमी थी,[6] पर तू अपने
विश्‍वास की वजह से कायम है।[7] घमंड
करना बंद कर, बल्कि सावधान रह।

अध्य. 11
1 1रा 19:2, 14
2 1रा 19:18
3 रोम 9:27
4 इफ 1:7; इफ 2:8
5 गल 2:15, 16
6 यूह 1:11, 12
7 2कुर 3:14, 15
8 यश 29:10
9 व्य 29:4
10 भज 69:22, 23
11 व्य 32:21; रोम 10:19
12 रोम 9:23, 24

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 9:15; गल 1:15, 16; इफ 3:8
2 प्रेष 28:30, 31; कुल 1:23; 2ती 4:5
3 मत 21:43
4 1कुर 10:12
5 प्रेष 15:14
6 मत 21:43
7 इफ 2:8

11:13 *या "की बड़ाई।" **11:18** *या "शेखी मारते हुए।" #या "शेखी मारता है।"

21 इसलिए कि जब परमेश्वर ने असली डालियों को नहीं छोड़ा, तो तुझे भी नहीं छोड़ेगा। 22 इसलिए ध्यान दे कि परमेश्वर ने कैसी कृपा की[1] और कैसी सख्ती बरती। जो गिर गए उनके साथ उसने सख्ती बरती है[2] लेकिन तुझ पर उसकी कृपा है। अब तू उसकी कृपा के लायक बना रह, वरना तू भी काट डाला जाएगा। 23 और अगर वे फिर से विश्वास करने लगें, तो उन्हें भी पेड़ पर कलम लगाया जाएगा[3] क्योंकि परमेश्वर उन्हें दोबारा जोड़ सकता है। 24 इसलिए कि जब तुझे जंगली जैतून में से काटकर, बाग में उगाए गए असली जैतून के पेड़ पर कलम लगाया गया है जबकि आम तौर पर ऐसा नहीं किया जाता, तो इन असली डालियों को अपने ही जैतून के पेड़ पर और कितनी आसानी से लगाया जा सकता है!

25 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम अपनी ही नज़र में खुद को बुद्धिमान समझो और इस पवित्र रहस्य से अनजान रहो:[4] कुछ इसराएली तब तक कठोर बने रहे, जब तक कि गैर-यहूदियों की गिनती पूरी नहीं हो गयी 26 और इस तरह सारा इसराएल[5] उद्धार पाएगा। ठीक जैसा लिखा है, "छुड़ानेवाला* सिय्योन से आएगा[6] और याकूब से ऐसे काम मिटा देगा जिनसे परमेश्वर का अनादर होता है। 27 मैं उनके साथ यह करार तब करूँगा[7] जब मैं उनके पाप मिटा दूँगा।"[8] 28 यह सच है कि वे खुशखबरी को ठुकराकर परमेश्वर के दुश्मन बन गए और इससे तुम्हें फायदा हुआ, मगर परमेश्वर ने उनके पुरखों से जो वादा किया था उसकी वजह से उसने उनमें से कुछ लोगों को अपना दोस्त चुना है।[1] 29 इसलिए कि वरदानों और बुलावे के मामले में परमेश्वर अपना फैसला नहीं बदलेगा। 30 एक वक्त था जब तुम परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते थे,[2] मगर तुम पर इसलिए दया की गयी[3] क्योंकि उन्होंने आज्ञा नहीं मानी।[4] 31 जिस तरह उनके आज्ञा न मानने से तुम पर दया की गयी, उसी तरह उन पर भी दया की जा सकती है। 32 इसलिए कि परमेश्वर ने उन सबको आज्ञा न मानने की कैद में पड़ने दिया[5] ताकि वह उन सब पर दया करे।[6]

33 वाह! परमेश्वर की दौलत और बुद्धि और ज्ञान की गहराई की कोई थाह नहीं! उसके फैसले हमारी सोच से परे हैं और उसकी राहें हमारी समझ से बाहर हैं! 34 इसलिए कि "कौन यहोवा* की सोच जान सका है या कौन उसका सलाहकार बन सका है?"[7] 35 या "कौन है जिसने उसे कुछ दिया हो कि उसे लौटाया जाए?"[8] 36 क्योंकि सबकुछ उसी की तरफ से, उसी के ज़रिए और उसी के लिए है। उसकी महिमा हमेशा-हमेशा तक होती रहे। आमीन।

12 इसलिए भाइयो, मैं तुम्हें परमेश्वर की करुणा का वास्ता देकर तुमसे गुज़ारिश करता हूँ कि तुम अपने शरीर को जीवित, पवित्र[9] और परमेश्वर को भानेवाले बलिदान के तौर पर अर्पित करो।[10] इस तरह तुम अपनी सोचने-समझने की शक्ति का इस्तेमाल करते हुए पवित्र सेवा कर सकोगे।[11] 2 इस दुनिया की व्यवस्था* के मुताबिक खुद को ढालना बंद करो, मगर नयी सोच पैदा करो ताकि तुम्हारी कायापलट होती

अध्य. 11
1 रोम 2:4
2 मत 23:38
3 प्रेष 2:38
4 इफ 3:5, 6
5 रोम 2:29, रोम 9:6, गल 3:29
6 भज 14:7
7 यश 59:20, 21
8 यश 27:9

दूसरा कॉल.
1 व्य 10:15
2 इफ 2:1, 2
3 प्रेष 15:7-9
4 प्रेष 7:51
5 रोम 3:9
6 1ती 2:3, 4
7 यश 40:13, दान 4:35
8 अय 41:11

अध्य. 12
9 2कुर 7:1, 1पत 1:15
10 रोम 6:13
11 2ती 1:7

11:26 *या "उद्धारकर्ता।"

11:34 *अति. क5 देखें। 12:2 *या "ज़माने।" शब्दावली देखें।

जाए।[1] तब तुम परखकर खुद के लिए
मालूम करते रहोगे[2] कि परमेश्वर की
भली, उसे भानेवाली और उसकी परिपूर्ण
इच्छा क्या है।

3 मुझ पर जो महा-कृपा हुई है,
उसके ज़रिए मैं तुममें से हरेक से जो
वहाँ है, यह कहता हूँ कि कोई भी
अपने आपको जितना समझना चाहिए,
उससे बढ़कर न समझे।[3] इसके बजाय
परमेश्वर ने हरेक को जितना विश्वास
दिया* है उसके मुताबिक वह सही सोच
बनाए रखे।[4] 4 इसलिए कि जैसे हमारे
एक ही शरीर में कई अंग हैं[5] और
सभी अंगों का काम एक जैसा नहीं है,
5 वैसे ही हम भी बहुत होते हुए भी
मसीह के साथ एकता में एक शरीर हैं
और एक-दूसरे से जुड़े अंग हैं।[6] 6 हम
पर महा-कृपा करके हमें अलग-अलग
वरदान दिए गए हैं।[7] इसलिए अगर
हमारे पास भविष्यवाणी करने का वर-
दान है, तो आओ हमें जो विश्वास
दिया गया है उसके हिसाब से भविष्य-
वाणी करें, 7 या अगर सेवा का वर-
दान है, तो आओ हम सेवा में लगे रहें।
और जिसे सिखाने का वरदान मिला है,
वह सिखाने में लगा रहे।[8] 8 या जिसे
हौसला बढ़ाने का वरदान मिला है, वह
ऐसा करने में लगा रहे।[9] जो बाँटता*
है वह दिल खोलकर बाँटे,[10] जो अगु-
वाई करता है वह पूरी मेहनत# से ऐसा
करे।[11] जो दया दिखाता है, वह खुशी-
खुशी दया दिखाए।[12]

9 तुम्हारे प्यार में कपट न हो।[13]
बुरी बातों से घिन करो,[14] अच्छी बातों
से लिपटे रहो। 10 एक-दूसरे से भाइयों
जैसा प्यार करो और गहरा लगाव रखो।
खुद आगे बढ़कर* दूसरों का आदर
करो।[1] 11 मेहनती* बनो, आलसी
मत हो।#[2] पवित्र शक्ति के तेज से
भरे रहो।[3] यहोवा△ के दास बनकर
उसकी सेवा करो।[4] 12 अपनी आशा
की वजह से खुशी मनाओ। मुसीबतों के
वक्त में धीरज धरो।[5] प्रार्थना में लगे
रहो।[6] 13 पवित्र जनों की ज़रूरतें पूरी
करने में हाथ बँटाओ।[7] मेहमान-नवाज़ी
करने की आदत डालो।[8] 14 जो तुम
पर ज़ुल्म करते हैं, उनके लिए परमेश्वर
से आशीष माँगते रहो।[9] हाँ, आशीष
माँगो, उन्हें शाप मत दो।[10] 15 खुशी
मनानेवालों के साथ खुशी मनाओ, रोने-
वालों के साथ रोओ। 16 दूसरों के बारे
में वैसा ही नज़रिया रखो जैसा तुम खुद
के बारे में रखते हो। बड़ी-बड़ी बातों के
बारे में मत सोचो,* बल्कि जिन बातों को
छोटा और मामूली समझा जाता है उनमें
लगे रहो।[11] खुद को बड़ा बुद्धिमान मत
समझो।[12]

17 किसी को भी बुराई का बदला
बुराई से मत दो।[13] ध्यान दो कि सबकी
नज़र में अच्छा क्या है और वही करो।
18 जहाँ तक हो सके, सबके साथ शांति
बनाए रखने की पूरी कोशिश करो।[14]
19 प्यारे भाइयो, बदला मत लो बल्कि
क्रोध* को मौका दो[15] क्योंकि लिखा है,
"यहोवा△ कहता है, 'बदला लेना मेरा
काम है, मैं ही बदला चुकाऊँगा।'"[16]
20 लेकिन "अगर तेरा दुश्मन भूखा हो
तो उसे खाना खिला। अगर वह प्यासा हो
तो उसे पानी पिला, क्योंकि ऐसा करने से

12:3 *या "उसके हिस्से में दिया; बाँटा है।"
12:8 *या "दान देता।" #या "पूरे जोश।"

12:10 *या "पहल करके।" **12:11** *या "जोशीले।" #या "काम में ढीले मत बनो।"
12:11, 19 △अति. क5 देखें। **12:16** *या "दिमाग में बड़े-बड़े खयाल मत पनपने दो।"
12:19 *यानी परमेश्वर के क्रोध।

अध्य. 12
1 इफ 4:23, 24
2 1ती 4:15
3 नीत 16:18; गल 6:3; 1पत 5:5
4 इफ 2:8
5 1कुर 12:12
6 1कुर 12:25
7 इफ 3:7
8 1ती 5:17; 1पत 4:10, 11
9 2ती 4:2
10 व्य 15:11; 2कुर 8:2
11 1थि 5:12; 1पत 5:2
12 इफ 4:32
13 1ती 1:5; याकू 3:17; 1पत 1:22
14 भज 97:10; नीत 8:13

दूसरा कॉल.
1 फिल 2:3
2 नीत 13:4
3 प्रेष 18:24, 25
4 रोम 6:22
5 प्रेष 14:22
6 फिल 4:6; 1थि 5:17
7 नीत 3:27; 1यूह 3:17
8 1पत 4:9; 3यूह 8
9 मत 5:44; लूक 6:27, 28
10 याकू 3:9, 10
11 लूक 14:10; लूक 22:24-26; यूह 13:14; फिल 2:3
12 अय 37:24; नीत 3:7
13 1थि 5:15; 1पत 2:23; 1पत 3:9
14 2ती 2:24; इब्र 12:14; याकू 3:18
15 लैव 19:18; मत 5:39
16 व्य 32:35; इब्र 10:30

तू उसके सिर पर अंगारों का ढेर लगाएगा।”*[1] 21 बुराई से मत हारो बल्कि भलाई से बुराई को जीतते रहो।[2]

13 हर इंसान ऊँचे अधिकारियों के अधीन रहे[3] इसलिए कि ऐसा कोई भी अधिकार नहीं जो परमेश्‍वर की तरफ से न हो।[4] मौजूदा अधिकारियों को परमेश्‍वर ने अपने अधीन अलग-अलग पद पर ठहराया है।[5] 2 इसलिए जो अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्‍वर के ठहराए इंतज़ाम के खिलाफ खड़ा होता है। जो इस इंतज़ाम के खिलाफ खड़े होते हैं वे सज़ा पाएँगे। 3 राज करनेवालों से वे लोग डरते हैं जो बुरे काम करते हैं, न कि जो अच्छे काम करते हैं।[6] क्या तू चाहता है कि अधिकारियों से डर-डरकर न जीए? तो अच्छे काम करता रह[7] और तुझे उनसे तारीफ मिलेगी। 4 इसलिए कि अधिकारी तेरे भले के लिए परमेश्‍वर के सेवक हैं। लेकिन अगर तू बुरे काम करता है तो डर, क्योंकि वे बेवजह तलवार लिए नहीं हैं। वे परमेश्‍वर के सेवक हैं और जो बुरे काम करते रहते हैं उन पर क्रोध बरसाते हैं।*

5 इसलिए उसके अधीन रहने की तुम्हारे पास और भी ज़बरदस्त वजह है, वह यह कि तुम्हें अपने ज़मीर की वजह से उसके अधीन रहना है न कि सिर्फ उसके क्रोध के डर से।[8] 6 इसी वजह से तुम कर भी अदा करते हो, क्योंकि वे परमेश्‍वर के ठहराए जन-सेवक हैं और इस सेवा में लगे रहते हैं। 7 इसलिए जिसका जो हक बनता है वह उसे दो। जो कर की माँग करता है उसे कर चुकाओ।[9] जो महसूल की माँग करता है उसे महसूल दो। जिससे डरना चाहिए उससे डरो,[1] जिसे आदर देना चाहिए उसे आदर दो।[2]

8 प्यार के अलावा किसी भी बात में एक-दूसरे के कर्ज़दार मत बनो[3] इसलिए कि जो दूसरों से प्यार करता है, उसने सही मायनों में परमेश्‍वर के कानून को माना है।[4] 9 क्योंकि ये आज्ञाएँ, “तुम व्यभिचार* न करना,[5] तुम खून न करना,[6] तुम चोरी न करना,[7] तुम लालच न करना”[8] और इनके साथ-साथ जो भी आज्ञाएँ हैं, सबका निचोड़ इस एक बात में पाया जाता है, “अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार करना जैसे तुम खुद से करते हो।”[9] 10 प्यार अपने पड़ोसी का बुरा नहीं करता,[10] इसलिए प्यार करना सही मायनों में कानून को मानना है।[11]

11 ऐसा इसलिए भी करो क्योंकि तुम जानते हो कि कैसे वक्‍त में जी रहे हो। अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ चुकी है[12] क्योंकि जब हम विश्‍वासी बने थे, तब के मुकाबले आज हमारे उद्धार का वक्‍त और भी पास आ गया है। 12 रात बहुत बीत चुकी है, दिन निकलने पर है। इसलिए आओ हम अंधकार के कामों को उतार फेंकें[13] और रौशनी के हथियार बाँध लें।[14] 13 आओ हम शराफत से चलें[15] जैसे दिन के वक्‍त शोभा देता है, न कि बेकाबू होकर रंगरलियाँ मनाएँ, शराब के नशे में धुत्त रहें, नाजायज़ संबंधों और निर्लज्ज कामों* में डूबे रहें,[16] न ही झगड़े और जलन करने में लगे रहें।[17] 14 इसके बजाय, प्रभु यीशु मसीह को पहन लो[18] और शरीर की इच्छाएँ पूरी करने की योजनाएँ मत बनाओ।[19]

12:20 *यानी उसके सख्त दिल को पिघलाना और उसका गुस्सा शांत करना। **13:4** *या “उन्हें सज़ा देते हैं।”

13:9 *शब्दावली देखें। **13:13** *या “शर्मनाक बरताव।” शब्दावली देखें।

अध्य. 12
1 नीत 25:21, 22
2 निर्ग 23:4; मत 5:44; लूक 6:27

अध्य. 13
3 तीत 3:1; 1पत 2:13, 14
4 यूह 19:10, 11
5 प्रेष 17:26
6 1पत 2:13, 14
7 1पत 3:13
8 1पत 2:19; 1पत 3:16
9 मत 22:21; मर 12:17; लूक 20:25

दूसरा कॉल.
1 नीत 24:21
2 1पत 2:13, 17
3 कुल 3:14; 1ती 1:5; 1यूह 4:11
4 गल 5:14; याकू 2:8
5 निर्ग 20:14; मत 5:27, 28; 1कुर 6:9, 10
6 उत 9:6; व्य 5:17
7 निर्ग 20:15
8 निर्ग 20:17
9 लैव 19:18; मत 22:39
10 लूक 6:31; 2ती 2:24
11 मत 22:37-40
12 लूक 21:36; 1थि 5:6
13 इफ 5:10, 11
14 2कुर 6:4, 7; इफ 6:11; 1थि 5:8
15 1पत 2:12
16 इफ 4:19; 1पत 4:3
17 2कुर 12:20
18 1कुर 11:1; गल 3:27; इफ 4:24
19 गल 5:16

14 जिसका विश्वास कमज़ोर है उसे
स्वीकार करो,[1] मगर यह देख-
कर उसे गलत मत ठहराओ कि उसके
विचार तुमसे अलग हैं।* 2 किसी को
विश्वास है कि सबकुछ खाया जा सकता
है, मगर जिसका विश्वास कमज़ोर है
वह साग-सब्ज़ी खाता है। 3 खानेवाला,
न खानेवाले को नीचा न समझे, वैसे
ही नहीं खानेवाला उसे दोषी न ठहराए
जो खाता है[2] क्योंकि परमेश्वर उसे
स्वीकार करता है। 4 तू कौन होता है
दूसरे के सेवक को दोषी ठहरानेवाला?[3]
वह खड़ा रहेगा या गिर जाएगा, इसका
फैसला उसका मालिक करेगा।[4] दर-
असल, उसे खड़ा किया जाएगा क्योंकि
यहोवा* उसे खड़ा कर सकता है।

5 कोई आदमी एक दिन को दूसरे
दिन से बड़ा मानता है,[5] तो दूसरा
सभी दिनों को एक बराबर मानता है।[6]
हर एक इंसान वही करे जिसके बारे में
उसे पूरा यकीन है। 6 जो आदमी किसी
दिन को खास मानता है, वह यहोवा* के
लिए मानता है। और जो खाता है, वह
यहोवा* के लिए खाता है क्योंकि वह
परमेश्वर को धन्यवाद देकर खाता है।[7]
और जो नहीं खाता वह यहोवा* के लिए
नहीं खाता, फिर भी वह परमेश्वर का
धन्यवाद करता है।[8] 7 दरअसल हममें
से कोई भी सिर्फ अपने लिए नहीं जीता[9]
और न ही कोई अपने लिए मरता है।
8 क्योंकि अगर हम जीते हैं तो यहोवा*
के लिए जीते हैं[10] और अगर मरते हैं तो
यहोवा* के लिए मरते हैं। इसलिए चाहे
हम जीएँ या मरें, हम यहोवा* ही के हैं।[11]
9 इसी वजह से मसीह ने अपनी जान दी
और फिर ज़िंदा हुआ ताकि वह मरे हुओं
और जीवितों, दोनों का प्रभु ठहरे।[1]

10 लेकिन तू अपने भाई को क्यों
दोषी ठहराता है?[2] या अपने भाई को
क्यों नीचा समझता है? हम सब परमेश्वर
के न्याय-आसन के सामने खड़े होंगे,[3]
11 क्योंकि लिखा है, "यहोवा* ने कहा
है, 'मैं अपने जीवन की शपथ खाकर
कहता हूँ,[4] हर कोई मेरे सामने घुटने
टेकेगा और हर कोई अपनी ज़बान से
सबके सामने मान लेगा कि मैं ही पर-
मेश्वर हूँ।'"[5] 12 तो फिर हममें से
हर कोई परमेश्वर को अपना हिसाब
देगा।[6]

13 इसलिए अब से हम एक-दूसरे पर
दोष न लगाएँ।[7] इसके बजाय, ठान लो
कि तुम किसी भाई को ठोकर नहीं
खिलाओगे, न ही उसे गिरने की वजह
दोगे।[8] 14 मैं जानता हूँ और प्रभु यीशु
में मुझे यकीन है कि कोई भी चीज़
अशुद्ध नहीं है,[9] मगर जो उसे अशुद्ध
समझता है उसके लिए वह चीज़ अशुद्ध
है। 15 अगर तेरे खाने की वजह से तेरे
भाई को ठेस पहुँचती है, तो तू अब प्यार
की राह पर नहीं चल रहा।[10] जिसके
लिए मसीह ने अपनी जान दी है, उसे तू
अपने खाने की वजह से नाश मत कर।[11]
16 इसलिए तुम लोग जो अच्छा काम
करते हो, उसकी बदनामी मत होने दो।
17 इसलिए कि परमेश्वर के राज का
मतलब खाना-पीना नहीं[12] बल्कि नेकी,
शांति और वह खुशी है जो पवित्र शक्ति से
मिलती है। 18 जो कोई इस तरीके से
मसीह का दास बनकर उसकी सेवा करता
है, उसे परमेश्वर स्वीकार करता है और
वह इंसानों से भी तारीफ पाता है।

19 तो आओ हम उन बातों में
लगे रहें जिनसे शांति कायम होती है[13]

अध्य. 14

1 रोम 15:1; 1थि 5:14
2 कुल 2:16
3 मत 7:1; याकू 4:12
4 1कुर 4:4
5 गल 4:10
6 कुल 2:16
7 1ती 4:4
8 1कुर 10:31
9 1कुर 6:19, 20
10 भज 146:2; 1पत 4:1, 2
11 1थि 4:14

दूसरा कॉल.

1 1थि 5:10; प्रक 1:17, 18
2 लूक 6:37; रोम 14:4
3 प्रेष 10:42; 2कुर 5:10
4 यश 49:18
5 यश 45:23
6 सभ 12:14; मत 12:36; 2कुर 5:10
7 मत 7:1
8 मत 18:6; 1कुर 8:9; 1कुर 10:32
9 मत 15:11; प्रेष 10:15; 1ती 4:4
10 इफ 5:2
11 1कुर 8:10, 11
12 1कुर 8:8
13 मत 5:9; रोम 12:18

14:1 *या शायद, "निजी सवालों को लेकर गलत मत ठहराओ।" **14:4, 6, 8, 11** *अति. क5 देखें।

और एक-दूसरे का हौसला मज़बूत होता
है।*[1] 20 सिर्फ खाने की खातिर पर-
मेश्‍वर के काम को बरबाद मत करो।[2]
माना कि सब चीज़ें शुद्ध हैं, मगर ये
तब नुकसानदेह* हो जाती हैं जब एक
इंसान का खाना दूसरे के लिए ठोकर की
वजह बनता है।[3] 21 अच्छा तो यह है
कि तू न माँस खाए, न दाख-मदिरा
पीए, न ही ऐसा कुछ करे जिससे तेरे
भाई को ठोकर लगे।[4] 22 इन मामलों
में तेरा जो विश्‍वास है, उसे परमेश्‍वर के
सामने अपने तक रख। सुखी है वह इंसान
जो किसी काम को सही समझता है और
उसे करने के बाद खुद को दोषी नहीं ठह-
राता। 23 लेकिन अगर उसके मन में
शक है, फिर भी वह खाता है तो वह दोषी
ठहर चुका है क्योंकि वह विश्‍वास से नहीं
खाता। वाकई, हर वह काम जो विश्‍वास
से नहीं किया जाता, पाप है।

15 लेकिन हम जो विश्‍वास में मज़-
बूत हैं, हमें चाहिए कि हम
उनकी कमज़ोरियाँ सहें जो मज़बूत नहीं
हैं,[5] न कि खुद को खुश करने की
सोचें।[6] 2 हरेक अपने पड़ोसी को खुश
करे जिससे पड़ोसी का भला हो और वह
मज़बूत हो।[7] 3 इसलिए कि मसीह ने
भी खुद को खुश नहीं किया[8] ठीक
जैसा लिखा है, "जो तेरी निंदा करते हैं,
उनकी निंदा-भरी बातें मुझ पर आ पड़ी
हैं।"[9] 4 जो बातें पहले से लिखी गयी
थीं, वे इसलिए लिखी गयीं कि हम उनसे
सीखें[10] और शास्त्र से हमें धीरज धरने में
मदद मिले[11] और हम दिलासा पाएँ ताकि
हमारे पास आशा हो।[12] 5 धीरज और
दिलासा देनेवाला परमेश्‍वर तुम्हें ऐसी
आशीष दे कि तुम्हारी सोच और तुम्हारा
नज़रिया मसीह यीशु जैसा हो 6 ताकि
तुम सब एकता में रहकर[1] और एक
आवाज़ में* हमारे प्रभु यीशु मसीह के
परमेश्‍वर और पिता की महिमा करो।

7 इसलिए जैसे मसीह ने हमें अप-
नाया* है,[2] तुम भी एक-दूसरे को अपना
लो#[3] ताकि परमेश्‍वर की महिमा हो।
8 मैं कहता हूँ कि मसीह उनका सेवक
बना जिनका खतना हुआ था[4] ताकि यह
गवाही दे कि परमेश्‍वर सच्चा है और पर-
मेश्‍वर ने उनके पुरखों से जो वादे किए
थे[5] वे भरोसे के लायक हैं 9 और इस-
लिए भी कि गैर-यहूदी राष्ट्र परमेश्‍वर की
दया के लिए उसकी महिमा करें।[6] ठीक
जैसा लिखा है, "इसीलिए मैं राष्ट्रों के बीच
सरेआम तेरी बड़ाई करूँगा और तेरे नाम
की तारीफ में गीत गाऊँगा।"[7] 10 फिर
वह कहता है, "राष्ट्रो, परमेश्‍वर की प्रजा
के साथ खुशियाँ मनाओ।"[8] 11 और
फिर कहता है, "सब राष्ट्रो, यहोवा* की
तारीफ करो और देश-देश के लोग उसका
गुणगान करें।"[9] 12 और फिर यशा-
याह कहता है, "यिशै की जड़ प्रकट
होगी[10] यानी वह जो राष्ट्रों पर राज करने
के लिए खड़ा होगा[11] और राष्ट्र उस
पर आशा रखेंगे।"[12] 13 मेरी दुआ है
कि आशा देनेवाला परमेश्‍वर तुम्हें भर-
पूर खुशी और शांति दे क्योंकि तुमने उस
पर भरोसा रखा है और इस तरह पवित्र
शक्‍ति की ताकत से तुम्हारी आशा पक्की
होती जाए।[13]

14 भाइयो, मुझे तुम्हारे बारे में यकीन
है कि तुम भलाई और ज्ञान से भरपूर हो
और एक-दूसरे को समझाने* के काबिल

अध्य. 14
- 1 1कुर 14:12; इब्र 10:24
- 2 रोम 14:3; 1कुर 8:11
- 3 1कुर 8:9
- 4 रोम 14:13; 1कुर 8:13; 1कुर 10:24

अध्य. 15
- 5 रोम 14:1; 1थि 5:14
- 6 1कुर 10:24
- 7 1कुर 9:22; फिल 2:4
- 8 मर 10:45; यूह 5:30
- 9 भज 69:9
- 10 1कुर 10:11; 2ती 3:16, 17; 2पत 1:19
- 11 रोम 5:3, 4
- 12 भज 119:49, 50; इब्र 3:6; 1पत 1:10

दूसरा कॉल.
- 1 1कुर 1:10; 2कुर 13:11; फिल 2:2; 1पत 3:8
- 2 यूह 6:37
- 3 फिले 10, 17
- 4 मत 15:24; यूह 1:11
- 5 उत 22:16-18; भज 89:3
- 6 रोम 9:23, 24
- 7 2शम 22:50; भज 18:49
- 8 व्य 32:43
- 9 भज 117:1
- 10 प्रक 5:5
- 11 उत 49:10
- 12 यश 11:1, 10; मत 12:21
- 13 यश 40:31

14:19 *या "निर्माण होता है।" **14:20** *या "गलत।"

15:6 *शा., "एक मुँह से।" **15:7** *या "हमारा स्वागत किया।" #या "का स्वागत करो।" **15:11** *अति. क5 देखें। **15:14** *या "सिखाने।"

हो। **15** फिर भी कुछ बातों के बारे में
मैंने तुम्हें सीधे-सीधे लिखा है ताकि तुम्हें
उनके बारे में याद दिला सकूँ, क्योंकि पर-
मेश्वर ने मुझ पर महा-कृपा की है।
16 मुझ पर यह महा-कृपा इसलिए की
गयी ताकि मैं गैर-यहूदी राष्ट्रों के लिए
मसीह यीशु का एक जन-सेवक ठहरूँ।[1] मैं
परमेश्वर की खुशखबरी सुनाने का पवित्र
काम करता हूँ[2] ताकि गैर-यहूदी राष्ट्र एक
ऐसी भेंट के तौर पर परमेश्वर को चढ़ाए
जाएँ जो उसे स्वीकार हो और पवित्र
शक्ति से पवित्र ठहरायी गयी हो।

17 इसलिए परमेश्वर की सेवा से जुड़ी
बातों के बारे में, मैं मसीह यीशु का
चेला होने में गर्व करता हूँ। **18** जो काम
मसीह ने मेरे ज़रिए किए हैं, उनके बारे
में बताने के अलावा मैं कुछ और कहने
की जुर्रत नहीं करूँगा। मसीह ने मेरे
ज़रिए काम किया कि गैर-यहूदी राष्ट्रों को
आज्ञाकारी बनाए। उसने मेरे वचनों और
कामों के ज़रिए **19** और चमत्कारों और
आश्चर्य के कामों की ताकत से[3] और
पवित्र शक्ति की ताकत से ऐसा किया है।
मैंने यरूशलेम से लेकर इल्लुरिकुम तक
चारों तरफ मसीह के बारे में खुश-
खबरी का अच्छी तरह प्रचार किया है।[4]
20 वाकई, इस तरह मैंने ठान लिया है
कि मैं ऐसे इलाकों में खुशखबरी न सुनाऊँ
जहाँ मसीह के नाम का प्रचार पहले ही
हो चुका है ताकि मैं किसी दूसरे की
डाली हुई नींव पर इमारत न खड़ी करूँ।
21 इसके बजाय, मैंने वैसा ही करने का
लक्ष्य रखा है जैसा लिखा है, "जिन्हें उसके
बारे में कभी नहीं बताया गया, वे देखेंगे
और जिन्होंने नहीं सुना वे समझेंगे।"[5]

22 इसलिए मुझे तुम्हारे पास आने
से बहुत बार रोका भी गया। **23** मगर
अब इन इलाकों में ऐसी कोई जगह नहीं
बची जहाँ प्रचार न हुआ हो और मैं कई*
सालों से तुम्हारे पास आने के लिए तरस
भी रहा था। **24** इसलिए मैं उम्मीद
करता हूँ कि जब मैं स्पेन के सफर पर
निकलूँगा तो रास्ते में तुमसे मिलूँगा और
कुछ समय के लिए तुम्हारी संगति का
आनंद लूँगा, फिर तुम कुछ दूर तक मुझे
छोड़ने आओगे। **25** लेकिन अभी मैं
पवित्र जनों की सेवा करने के लिए यरू-
शलेम के सफर पर जानेवाला हूँ।[1]
26 यरूशलेम के पवित्र जनों में जो गरीब
हैं उनके लिए मकिदुनिया और अखाया के
रहनेवालों ने अपनी संपत्ति में से खुशी-
खुशी दान दिया है।[2] **27** सच है कि
उन्हें देने में खुशी मिली और देखा जाए
तो वे पवित्र जनों के कर्ज़दार थे। क्योंकि
पवित्र जनों ने परमेश्वर से जो पाया था
वह गैर-यहूदी राष्ट्रों को भी दिया, इस-
लिए इनका भी फर्ज़ बनता है कि वे
पवित्र जनों की खाने-पहनने की ज़रूर-
तों के लिए दान देकर उनकी सेवा करें।[3]
28 इसलिए मैं यह काम पूरा करने
और उन तक यह दान पहुँचाने के बाद,
तुम्हारे यहाँ से होता हुआ स्पेन जाऊँगा।
29 और मैं जानता हूँ कि जब मैं तुम्हारे
पास आऊँगा, तो मसीह की तरफ से भर-
पूर आशीष लेकर आऊँगा।

30 अब मेरे भाइयो, हमारे प्रभु यीशु
मसीह में तुम्हें जो विश्वास है और पवित्र
शक्ति ने तुममें जो प्यार पैदा किया है,
उस वजह से मैं तुम्हें बढ़ावा देता हूँ कि
मेरी तरह तुम भी दिलो-जान से मेरे लिए
परमेश्वर से प्रार्थना करते रहो[4] **31** कि
परमेश्वर मुझे यहूदिया के अविश्वासियों
के हाथों में पड़ने से बचाए[5] और यरू-
शलेम के पवित्र जन मेरी सेवा स्वीकार
करें[6] **32** ताकि जब मैं परमेश्वर की

अध्य. 15
1 रोम 11:13; गल 2:7, 8
2 प्रेष 20:24
3 प्रेष 15:12; 2कुर 12:12
4 प्रेष 21:18, 19
5 यश 52:15

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 19:21; प्रेष 20:22
2 1कुर 16:1; 2कुर 8:1-4; 2कुर 9:2, 12
3 गल 6:6; इब्र 13:16
4 2कुर 1:11; इफ 6:18; कुल 4:3; 1थि 5:25
5 2थि 3:1, 2
6 रोम 15:26

15:23 * या शायद, "कुछ।"

मरज़ी से खुशी-खुशी तुम्हारे पास आऊँ,
तो तुम्हारी संगति से तरो-ताज़ा हो जाऊँ।
33 दुआ करता हूँ कि शांति देनेवाला
परमेश्‍वर तुम सबके साथ रहे।[1] आमीन।

16 मैं किंख्रिया[2] की मंडली में सेवा
करनेवाली हमारी बहन फीबे के
बारे में तुम्हें बताना चाहता हूँ 2 ताकि
तुम प्रभु में उसका वैसा ही स्वागत करो
जैसा पवित्र जनों का किया जाना चाहिए।
और अगर किसी भी काम में उसे तुम्हारी
ज़रूरत पड़े तो उसकी मदद करना[3]
क्योंकि वह खुद बहुतों की और मेरी भी
मददगार* साबित हुई है।

3 प्रिसका और अक्विला[4] को जो
मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, मेरा
नमस्कार। 4 उन्होंने मेरी जान बचाने के
लिए खुद अपनी जान* जोखिम में डाल
दी।[5] और सिर्फ मैं ही नहीं बल्कि गैर-
यहूदी राष्ट्रों की सभी मंडलियाँ भी उनका
धन्यवाद करती हैं। 5 उनके घर में
इकट्ठा होनेवाली मंडली को भी
नमस्कार।[6] मेरे प्यारे इपैनितुस को भी
नमस्कार जो मसीह के लिए एशिया का
पहला फल है। 6 मरियम को नमस्कार
जिसने तुम्हारे लिए बहुत मेहनत की है।
7 मेरे रिश्‍तेदार अन्द्रुनीकुस और यूनि-
यास को नमस्कार,[7] जो मेरे साथ कैद में थे
और जिनका प्रेषितों के बीच बड़ा नाम है
और जो मुझसे भी पहले से मसीह के
चेले हैं।*

8 प्रभु में मेरे प्यारे अम्पलि-यातुस को
मेरा नमस्कार। 9 मसीह में हमारे सह-
कर्मी उरबानुस और मेरे प्यारे इस्त-
खुस को नमस्कार। 10 अपिल्लेस को
मेरा नमस्कार, जिस पर मसीह की

16:2 *या "पैरवी करनेवाली।" 16:4 *शा., "अपनी गरदन।" 16:7 *शा., "के साथ एकता में हैं।"

अध्य. 15
1 1कुर 14:33; फिल 4:9

अध्य. 16
2 प्रेष 18:18
3 रोम 12:13; 1यूह 3:17
4 प्रेष 18:2; प्रेष 18:24, 26; 2ती 4:19
5 1यूह 3:16
6 1कुर 16:19; कुल 4:15; फिले 2
7 रोम 16:11

दूसरा कॉल.
1 मत 7:15; तीत 3:10; 2यूह 10

मंज़ूरी है। अरिस्तु-बुलुस के घराने को
मेरा नमस्कार। 11 मेरे रिश्‍तेदार हेरो-
दियोन को मेरा नमस्कार। नरकिस्सुस के
घराने के जो लोग प्रभु में हैं, उनको
मेरा नमस्कार। 12 प्रभु में कड़ी मेह-
नत करनेवाली त्रूफैना और त्रूफोसा को
मेरा नमस्कार। हमारी प्यारी पिरसिस
को मेरा नमस्कार, जिसने प्रभु में कड़ी
मेहनत की है। 13 प्रभु में चुने हुए
रूफुस को और उसकी माँ को मेरा
नमस्कार, जो मेरी भी माँ जैसी है।
14 असुक्रितुस, फिलगोन, हिरमेस, पत्रु-
बास, हिरमास और उनके साथ के
भाइयों को मेरा नमस्कार। 15 फिलु-
लुगुस और यूलिया, नेरयुस और उसकी
बहन और उलुम्पास और उनके साथ
के सभी पवित्र जनों को मेरा नमस्कार।
16 पवित्र चुंबन से एक-दूसरे को
नमस्कार करो। मसीह की सारी मंडलियाँ
तुम्हें नमस्कार भेजती हैं।

17 भाइयो, अब मैं तुमसे गुज़ारिश
करता हूँ कि जो लोग उस शिक्षा के
खिलाफ जो तुमने पायी है, मंडली में फूट
डालते हैं और किसी के लिए विश्‍वास
की राह छोड़ देने की वजह* बनते हैं,
उन पर नज़र रखो और उनसे दूर रहो।[1]
18 क्योंकि इस तरह के आदमी हमारे
प्रभु मसीह के दास नहीं हैं, बल्कि अपनी
भूख मिटाने* में लगे रहते हैं और वे
अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों और तारीफों
से सीधे-सादे लोगों के दिलों को बहका
देते हैं। 19 सब लोग जान गए हैं कि
तुम कितने आज्ञाकारी हो, इसलिए मैं
तुम्हारी वजह से खुशी मनाता हूँ। लेकिन
मैं चाहता हूँ कि तुम अच्छी बातों के
मामले में बुद्धिमान बनो, मगर बुरी बातों

16:17 *शा., "ठोकर की वजह।" 16:18 *या "पेट भरने।"

के मामले में अनजान रहो।[1] 20 शांति
देनेवाला परमेश्वर बहुत जल्द शैतान को
तुम्हारे पैरों तले कुचल देगा।[2] हमारे प्रभु
यीशु की महा-कृपा तुम पर बनी रहे।
21 मेरा सहकर्मी तीमुथियुस और मेरे
रिश्तेदार लूकियुस, यासोन और सोसि-
पत्रुस का तुम्हें नमस्कार।[3]
22 मैं तिरतियुस भी, जिसने यह चिट्ठी
लिखी है, प्रभु में तुम्हें नमस्कार कहता हूँ।
23 गयुस[4] जो मेरा और सारी मंडली
का मेज़बान है, तुम्हें नमस्कार कहता है।
इरास्तुस जो शहर का खजांची* है और
उसके भाई क्वारतुस का तुम्हें नमस्कार।
24 *—

16:23 *या "प्रबंधक।" **16:24** *अति. क3 देखें।

अध्य. 16
1 1कुर 14:20
2 उत 3:15, इब्र 2:14
3 रोम 16:7
4 1कुर 1:14

दूसरा कॉल.
1 इफ 1:9-12, कुल 1:26, 27
2 रोम 11:33

25 मैं जो खुशखबरी सुनाता हूँ और
यीशु मसीह के बारे में प्रचार करता हूँ
उसके ज़रिए परमेश्वर तुम्हें मज़बूत कर
सकता है। यह खुशखबरी उस पवित्र
रहस्य[1] के मुताबिक है जिसका खुलासा
किया गया है। इस पवित्र रहस्य को पुराने
ज़माने से राज़ रखा गया था, 26 मगर
अब इसे ज़ाहिर किया जा रहा है। सदा
कायम रहनेवाले परमेश्वर के आदेश के
मुताबिक यह रहस्य, शास्त्र में लिखी
भविष्यवाणियों के ज़रिए सब राष्ट्रों को
बताया जा रहा है ताकि वे भी विश्वास
करें और आज्ञा मानें। 27 यीशु मसीह
के ज़रिए उस एकमात्र बुद्धिमान पर-
मेश्वर[2] की सदा महिमा होती रहे।
आमीन।

कुरिंथियों

के नाम पहली चिट्ठी

सारांश

1 नमस्कार (1-3)
- पौलुस, कुरिंथियों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता है (4-9)
- एकता में रहने का बढ़ावा (10-17)
- मसीह, परमेश्वर की शक्ति और बुद्धि (18-25)
- सिर्फ यहोवा के बारे में गर्व करो (26-31)

2 कुरिंथ में पौलुस का प्रचार (1-5)
- परमेश्वर की बुद्धि श्रेष्ठ है (6-10)
- परमेश्वर जैसी सोच और इंसानी सोच में फर्क (11-16)

3 कुरिंथ के लोगों की दुनियावी सोच (1-4)
- परमेश्वर बढ़ाता है (5-9)
  - परमेश्वर के सहकर्मी (9)
- आग में टिकनेवाली चीज़ों से बनाना (10-15)
- तुम परमेश्वर का मंदिर हो (16, 17)
- दुनिया की बुद्धि मूर्खता है (18-23)

4 प्रबंधक को विश्वासयोग्य होना चाहिए (1-5)
- मसीही सेवकों की नम्रता (6-13)
  - "जो लिखा है उससे आगे न जाना" (6)
  - मसीहियों की नुमाइश (9)
- अपने मसीही बच्चों के लिए पौलुस की परवाह (14-21)

5 नाजायज़ यौन-संबंध का मामला (1-5)
- ज़रा-सा खमीर सारे आटे को खमीरा कर देता है (6-8)
- दुष्ट आदमी को निकाल बाहर करना (9-13)

1 मैं पौलुस, जो परमेश्‍वर की मरज़ी से
मसीह यीशु का प्रेषित होने के लिए
बुलाया गया हूँ,[1] हमारे भाई सोस्थि-
नेस के साथ
2 यह चिट्ठी परमेश्‍वर की
उस मंडली को लिख रहा हूँ जो कुरिंथ
में है।[2] तुम मसीह यीशु के चेले होने के
नाते पवित्र किए गए हो[3] और पवित्र जन
होने के लिए बुलाए गए हो। मैं उन सभी
भाइयों को भी लिख रहा हूँ जो हर कहीं
हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम लेते हैं,[1]
जो हमारा और उनका भी प्रभु है:
3 हमारे पिता यानी परमेश्‍वर की
तरफ से और प्रभु यीशु मसीह की तरफ
से तुम्हें महा-कृपा और शांति मिले।
4 परमेश्‍वर ने मसीह यीशु के ज़रिए
तुम पर जो महा-कृपा की है, उसके लिए

अध्य. 1
1 प्रेष 9:15
2 प्रेष 18:1
3 1कुर 6:11; इब्र 9:13, 14

दूसरा कॉल.
1 मत 12:18, 21; प्रेष 4:12

मैं हमेशा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। 5 उसने तुम्हें वचन सुनाने की पूरी काबिलीयत और पूरा ज्ञान देकर मसीह में हर तरह से मालामाल किया है।[1] 6 मसीह के बारे में गवाही[2] तुम्हारे बीच अच्छी तरह जड़ पकड़ चुकी है 7 इसलिए तुममें किसी भी वरदान की कमी नहीं है और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हो।[3] 8 परमेश्वर तुम्हें आखिर तक मज़बूत भी बनाए रखेगा ताकि हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन तुम निर्दोष ठहरो।[4] 9 परमेश्वर विश्वासयोग्य है,[5] उसने अपने बेटे और हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ साझेदार होने के लिए तुम्हें बुलाया है।

10 अब हे भाइयो, मैं तुमसे हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से गुज़ारिश करता हूँ कि तुम सब एक ही बात कहो और तुम्हारे बीच फूट न हो,[6] बल्कि तुम सबके विचार और तुम्हारे सोचने का तरीका एक जैसा हो ताकि तुम्हारे बीच एकता हो।[7] 11 इसलिए कि मेरे भाइयो, खलोए के घर के कुछ लोगों ने मुझे बताया है कि तुम्हारे बीच झगड़े हो रहे हैं। 12 मेरा मतलब है कि तुममें से कोई कहता है, “मैं पौलुस का चेला हूँ,” तो कोई कहता है “मैं अपुल्लोस का चेला हूँ”[8] और कोई “मैं कैफा* का चेला हूँ” या “मैं मसीह का चेला हूँ।” 13 क्या मसीह तुम्हारे बीच बँट गया है? क्या तुम्हारी खातिर पौलुस को काठ पर लटकाकर मार डाला गया था? या क्या तुम्हें पौलुस के नाम से बपतिस्मा दिया गया था? 14 परमेश्वर का शुक्र है कि मैंने क्रिसपुस[9] और गयुस[10] के अलावा तुममें से किसी और को बपतिस्मा नहीं दिया 15 ताकि कोई यह न कहे कि तुम्हें मेरे नाम से बपतिस्मा मिला। 16 हाँ, मैंने स्तिफनास के घराने[1] को भी बपतिस्मा दिया। इनको छोड़ मैं नहीं जानता कि मैंने किसी और को बपतिस्मा दिया हो। 17 इसलिए कि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं, बल्कि खुशखबरी सुनाने के लिए भेजा है[2] और यह मुझे विद्वानों की भाषा * में नहीं सुनानी है ताकि मसीह का यातना का काठ# बेकार न ठहरे।

18 इसलिए कि यातना के काठ# का संदेश उन लोगों के लिए मूर्खता है जो विनाश की तरफ जा रहे हैं,[3] मगर हम उद्धार पानेवालों के लिए यह परमेश्वर की ताकत है।[4] 19 क्योंकि लिखा है, “मैं बुद्धिमानों की बुद्धि खत्म कर दूँगा और ज्ञानियों का ज्ञान ठुकरा दूँगा।”*[5] 20 कहाँ रहा इस ज़माने* का बुद्धिमान? कहाँ रहा शास्त्री?# कहाँ रहा बहस करनेवाला? क्या परमेश्वर ने साबित नहीं कर दिया कि इस दुनिया की बुद्धि मूर्खता है? 21 इसलिए कि परमेश्वर की बुद्धि इस बात से दिखायी देती है कि जब यह दुनिया अपनी बुद्धि से[6] परमेश्वर को नहीं जान पायी,[7] तो परमेश्वर को भाया कि हम जिस संदेश का प्रचार करते हैं और जिसे लोग मूर्खता समझते हैं,[8] उस पर विश्वास करनेवालों का वह उद्धार करे।

22 यहूदी चमत्कारों की माँग करते हैं[9] और यूनानी बुद्धि की तलाश में रहते हैं, 23 मगर हम काठ पर लटकाए गए मसीह का प्रचार करते हैं जो यहूदियों के

1:12 *पतरस भी कहलाता था।

1:17 *या “छल की बातों।” 1:17, 18 #शब्दावली देखें। 1:19 *या “दरकिनार कर दूँगा।” 1:20 *या “दुनिया की व्यवस्था।” शब्दावली देखें। #यानी कानून का जानकार।

अध्य. 1
1 कुल 1:9
2 प्रेष 18:5
3 लूक 17:29, 30; 2थि 1:7; 1पत 1:7
4 1कुर 4:5; 1कुर 5:5; प्रक 1:10
5 व्य 7:9
6 रोम 16:17
7 रोम 15:5, 6; 2कुर 13:11; इफ 4:1, 3; फिल 2:2
8 प्रेष 18:24; 1कुर 3:4, 5; 1कुर 3:21-23
9 प्रेष 18:8
10 रोम 16:23

दूसरा कॉल.
1 1कुर 16:15
2 प्रेष 9:15
3 प्रेष 17:18; 1कुर 2:14
4 रोम 1:16
5 यश 29:14
6 कुल 2:8
7 लूक 10:21
8 1कुर 2:14; 1कुर 3:18
9 मत 12:38; लूक 11:29

लिए ठोकर की वजह है और गैर-यहू-
दियों के लिए मूर्खता।[1] 24 लेकिन जो
बुलाए गए हैं, फिर चाहे वे यहूदी हों
या यूनानी, उनके लिए मसीह, परमेश्वर
की शक्ति और परमेश्वर की बुद्धि है।[2]
25 क्योंकि परमेश्वर की जो बातें इंसान
को मूर्खता लगती हैं वे इंसानों की बुद्धि
से बढ़कर हैं और परमेश्वर की जो बातें
इंसान को कमज़ोर लगती हैं वे इंसानों की
ताकत से कहीं ज़्यादा ताकतवर हैं।[3]

26 भाइयो, तुम अपने ही मामले में
देख सकते हो कि परमेश्वर ने जिन्हें
बुलाया है, उनमें ज़्यादातर ऐसे नहीं जो
इंसान की नज़र में* बुद्धिमान हैं,[4]
ताकतवर हैं या ऊँचे खानदान में पैदा हुए
हैं।[5] 27 बल्कि परमेश्वर ने दुनिया के
मूर्खों को चुना ताकि वह बुद्धिमानों को
शर्मिंदा कर सके और उसने दुनिया के
कमज़ोरों को चुना ताकि ताकतवरों को
शर्मिंदा कर सके।[6] 28 परमेश्वर ने
ऐसे लोगों को चुना है जिन्हें दुनिया तुच्छ
समझती है और नीची नज़र से देखती है
और जो हैं ही नहीं उन्हें चुना ताकि जो हैं
उन्हें बेकार साबित करे[7] 29 और कोई
इंसान परमेश्वर के सामने शेखी न मार
सके। 30 मगर तुम परमेश्वर की वजह
से ही मसीह यीशु के साथ एकता में हो,
जिसने परमेश्वर की बुद्धि और नेकी हम
पर ज़ाहिर की[8] और जो हमें पवित्र ठह-
राता है[9] और फिरौती के ज़रिए छुटकारा
दिलाता है[10] 31 ताकि वैसा ही हो जैसा
लिखा है, "जो गर्व करता है वह यहोवा*
के बारे में गर्व करे।"[11]

2 इसलिए भाइयो, जब मैं तुम्हारे पास
आया और मैंने परमेश्वर का पवित्र
रहस्य[12] सुनाया, तो लच्छेदार भाषा
या बुद्धि का दिखावा नहीं किया।[1]
2 क्योंकि जब मैं तुम्हारे साथ था तो
मैंने फैसला किया था कि तुम्हारा ध्यान
यीशु मसीह और उसके काठ पर लट-
काए जाने की बात को छोड़ किसी और
बात पर न खींचूँ।[2] 3 मैं बहुत कमज़ोरी
और डर से थरथराता हुआ तुम्हारे पास
आया। 4 जब मैंने तुम्हें प्रचार किया तो
तुम्हें कायल करने के लिए ज्ञान की बड़ी-
बड़ी बातें नहीं सिखायीं, बल्कि मेरी बातों
ने पवित्र शक्ति की ताकत ज़ाहिर की[3]
5 ताकि तुम्हारा विश्वास इंसानों की
बुद्धि पर नहीं बल्कि परमेश्वर की ताकत
पर हो।

6 अब हम प्रौढ़* लोगों को बुद्धि
की बातें बताते हैं।[4] मगर इस ज़माने#
की बुद्धि के बारे में नहीं, न ही इस
ज़माने में राज करनेवालों की बुद्धि के
बारे में, जो मिटनेवाले हैं[5] 7 बल्कि पर-
मेश्वर की बुद्धि के बारे में बताते हैं जो
पवित्र रहस्य[6] से ज़ाहिर होती है। हम उस
छिपी हुई बुद्धि के बारे में बताते हैं। पर-
मेश्वर ने इसे दुनिया की व्यवस्थाओं के
शुरू होने से पहले ही ठहराया था ताकि
हम महिमा पाएँ। 8 इस बुद्धि के बारे में
इस ज़माने# में राज करनेवालों में से कोई
नहीं जान सका।[7] अगर वे इसे जानते तो
वे महिमावान प्रभु को मार न डालते।*
9 मगर ठीक जैसा लिखा है, "जो बातें
आँखों ने नहीं देखीं और कानों ने नहीं
सुनीं, न ही जिनका खयाल इंसान के दिल
में आया, वही बातें परमेश्वर ने उनके
लिए तैयार की हैं जो उससे प्यार करते
हैं।"[8] 10 इसलिए कि परमेश्वर ने ये
बातें हम पर ज़ाहिर की हैं।[9] उसने अपनी

अध्य. 1
1 प्रेष 17:32
2 कुल 2:3
3 2कुर 13:4
4 प्रेष 4:13
5 यूह 7:48, याकू 2:5
6 मत 11:25
7 1कुर 2:6
8 रोम 10:4, 2कुर 5:21
9 यूह 17:19, इब्र 10:10
10 रोम 3:24, कुल 1:13, 14
11 यिर्म 9:24, 2कुर 10:17

अध्य. 2
12 इफ 3:5, 6, कुल 2:2

दूसरा कॉल.
1 1कुर 1:17
2 गल 6:14
3 रोम 15:18, 19, 1कुर 4:20, 1थि 1:5
4 1कुर 14:20, इफ 4:13, इब्र 5:14
5 1कुर 15:24
6 रोम 16:25, 26, इफ 3:8, 9
7 यूह 7:48, प्रेष 13:27, 28
8 यश 64:4
9 मत 16:17, मर 4:11, इफ 3:5, 2ती 1:9, 10, 1पत 1:12

1:26 *या "इंसान के स्तरों के मुताबिक।" **1:31** *अति. क5 देखें।

2:6 *या "सयाने और समझदार।" **2:6, 8** #या "दुनिया की व्यवस्था।" शब्दावली देखें। **2:8** *या "काठ पर मार न डालते।"

पवित्र शक्ति के ज़रिए हमें बताया है[1] जो
सब बातों की खोज करती है, यहाँ तक
कि परमेश्वर की गहरी बातों की भी।[2]
11 इंसानों में ऐसा कौन है जो जानता
हो कि दूसरे इंसान के दिल में क्या है,
सिवा उसके अंदर के इंसान के? उसी
तरह परमेश्वर के दिल में क्या है, यह
कोई नहीं जान सकता, सिवा उसकी
पवित्र शक्ति के। **12** हमने दुनिया की
फितरत नहीं पायी बल्कि पवित्र शक्ति
पायी है जो परमेश्वर की तरफ से है[3]
ताकि हम उन बातों को जान सकें जो
परमेश्वर ने हम पर कृपा करके हमें दी
हैं। **13** हम ये बातें दूसरों को बताते भी
हैं मगर इंसानी बुद्धि के सिखाए शब्दों
से नहीं[4] बल्कि पवित्र शक्ति के सिखाए
शब्दों से,[5] क्योंकि हम परमेश्वर की बातें
परमेश्वर के* शब्दों से समझाते हैं।#
14 मगर इंसानी सोच रखनेवाला,
परमेश्वर की पवित्र शक्ति की बातें
स्वीकार नहीं करता, क्योंकि ये उसकी
नज़र में मूर्खता की बातें हैं। वह इन
बातों को जान नहीं सकता, क्योंकि इन्हें
पवित्र शक्ति की मदद से ही जाँचा-परखा
जाता है। **15** परमेश्वर की सोच रखने-
वाला* इंसान सबकुछ जाँच-परख सकता
है,[6] मगर कोई इंसान उसकी जाँच-
परख नहीं कर सकता। **16** क्योंकि
“कौन है जो यहोवा* की सोच जान सका
है कि उसे सिखा सके?”[7] मगर हम मसीह
के जैसी सोच रखते हैं।[8]

3 इसलिए भाइयो, मैं तुमसे ऐसे बात
नहीं कर सका जैसे परमेश्वर की
सोच रखनेवालों से की जाती है,[9] बल्कि
मुझे ऐसे बात करनी पड़ी जैसे दुनि-
यावी* सोच रखनेवालों से की जाती
है और जो मसीह में दूध-पीते बच्चे
हैं।[1] **2** मैंने तुम्हें दूध ही दिया, न कि
ठोस खाना क्योंकि तुम उस वक्त उसे
पचाने के काबिल नहीं थे। दरअसल तुम
अब भी काबिल नहीं हो[2] **3** क्योंकि
तुम अब तक दुनियावी हो।[3] तुम्हारे बीच
जलन है और झगड़े होते हैं, इसलिए क्या
तुम दुनियावी लोगों जैसे नहीं हो[4] और
क्या तुम इंसानों जैसी चाल नहीं चल रहे?
4 जब कोई कहता है, “मैं पौलुस का
चेला हूँ,” और दूसरा कहता है, “मैं
अपुल्लोस[5] का हूँ,” तो क्या तुम दुनियावी
लोगों जैसा बरताव नहीं कर रहे?
5 अपुल्लोस क्या है? और हाँ, पौलुस
क्या है? सिर्फ सेवक हैं,[6] ठीक जैसे
प्रभु ने हरेक को सेवा सौंपी है और
जिनके ज़रिए तुम विश्वासी बने हो।
6 मैंने लगाया,[7] अपुल्लोस ने पानी देकर
सींचा[8] लेकिन परमेश्वर उसे बढ़ाता
रहा। **7** इसलिए न तो लगानेवाला कुछ
है, न ही पानी देनेवाला कुछ है मगर पर-
मेश्वर सबकुछ है जो इसे बढ़ाता है।[9]
8 जो पौधा लगाता है और पानी देता
है, वे दोनों एकता में हैं,* मगर हर कोई
अपनी मेहनत का इनाम पाएगा।[10]
9 हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं। तुम पर-
मेश्वर का खेत हो जिसमें खेती की जा
रही है और परमेश्वर की इमारत हो।[11]
10 परमेश्वर ने मुझ पर जो महा-कृपा
की है, उसकी बदौलत मैंने एक कुशल
राजमिस्त्री की तरह नींव डाली।[12] मगर
कोई दूसरा उस नींव पर इमारत खड़ी
कर रहा है। हर कोई ध्यान देता रहे कि
वह नींव पर किस तरह इमारत खड़ी कर

अध्य. 2
1 यूह 14:26; 1यूह 2:27
2 रोम 11:33
3 यूह 15:26
4 कुल 2:8
5 यूह 16:13
6 रोम 8:5
7 यश 40:13
8 रोम 15:5

अध्य. 3
9 1कुर 2:15; कुल 1:9

दूसरा कॉल.
1 1कुर 14:20
2 इब्र 5:12-14
3 रोम 8:7, 8
4 गल 5:19, 20
5 प्रेष 18:24, 25
6 2कुर 3:5, 6; कुल 1:23; 1ती 1:12
7 प्रेष 18:4
8 प्रेष 18:26-28; प्रेष 19:1
9 रोम 9:16
10 रोम 2:6; 1कुर 4:5; प्रक 22:12
11 इफ 2:22; 1पत 2:5
12 रोम 15:20; इब्र 6:1

2:13 *या “परमेश्वर की पवित्र शक्ति के।” #या “मेल बिठाते हैं।” **2:15** *या “पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन में चलनेवाला।” **2:16** *अति. क5 देखें।

3:1 *शा., “शारीरिक।” **3:8** *या “उनका एक ही मकसद है।”

रहा है। 11 इसलिए कि कोई भी इंसान उस नींव के सिवा जो डाली जा चुकी है, दूसरी नींव नहीं डाल सकता और यह नींव यीशु मसीह है।[1] 12 कोई इस नींव पर सोने, चाँदी और कीमती पत्थरों से इमारत खड़ी करता है तो कोई लकड़ी, भूसे या घास-फूस से। 13 एक इंसान का काम कैसा है, यह उस दिन पता चल जाएगा जिस दिन उसे परखा जाएगा क्योंकि आग सबकुछ ज़ाहिर कर देगी[2] और साबित कर देगी कि हरेक का काम कैसा है। 14 अगर किसी की इमारत जो उसने नींव पर खड़ी की है, टिकी रहेगी तो वह इनाम पाएगा। 15 और अगर किसी की इमारत जल जाएगी तो उसे नुकसान उठाना पड़ेगा लेकिन वह खुद बचा लिया जाएगा, फिर भी यह ऐसा होगा मानो वह आग से जलते-जलते बचा हो।

16 क्या तुम नहीं जानते कि तुम लोग परमेश्वर का मंदिर हो[3] और परमेश्वर की पवित्र शक्ति तुममें निवास करती है?[4] 17 अगर कोई परमेश्वर के मंदिर को नाश करता है, तो परमेश्वर उसे नाश करेगा इसलिए कि परमेश्वर का मंदिर पवित्र है और यह मंदिर तुम लोग हो।[5]

18 कोई खुद को न बहकाए: अगर तुममें से कोई सोचता है कि वह इस ज़माने* में बुद्धिमान है, तो वह मूर्ख बन जाए ताकि वह बुद्धिमान बन सके। 19 इस दुनिया की बुद्धि परमेश्वर की नज़र में मूर्खता है क्योंकि लिखा है, "वह बुद्धिमानों को उन्हीं की चालाकी में फँसा देता है।"[6] 20 और यह भी लिखा है, "यहोवा* जानता है कि बुद्धिमानों के तर्क बेकार हैं।"[7] 21 इसलिए कोई भी इंसानों पर शेखी न मारे क्योंकि सब-कुछ तुम्हारा है, 22 चाहे पौलुस हो या अपुल्लोस या कैफा*[1] या यह दुनिया या मौत या ज़िंदगी या आज की या आनेवाली चीज़ें, सबकुछ तुम्हारा है। 23 और तुम मसीह के हो[2] और मसीह, परमेश्वर का है।

4 लोग हमें मसीह के सेवक* और ऐसे प्रबंधक समझें जिन्हें परमेश्वर के पवित्र रहस्य सौंपे गए हैं।[3] 2 और एक प्रबंधक से उम्मीद की जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो। 3 मेरे लिए यह बात कोई मायने नहीं रखती कि तुम या कोई इंसानी अदालत मेरी जाँच-पड़ताल करे। यहाँ तक कि मैं खुद भी अपनी जाँच-पड़ताल नहीं करता। 4 मुझे खुद में कोई बुराई नज़र नहीं आती। फिर भी इस बात से मैं नेक साबित नहीं होता। जो मेरी जाँच-पड़ताल करता है वह यहोवा* है।[4] 5 इसलिए तय वक्त से पहले, यानी जब तक प्रभु नहीं आता तब तक किसी बात का न्याय मत करो।[5] वही अंधकार में छिपी हुई बातों को रौशनी में लाएगा और दिल के इरादों का खुलासा कर देगा। तब हर कोई अपने लिए परमेश्वर से तारीफ पाएगा।[6]

6 भाइयो, मैंने तुम्हारे भले के लिए खुद को और अपुल्लोस[7] को मिसाल बनाकर ये बातें कही हैं ताकि तुम हमारी मिसाल से इस नियम पर चलना सीखो: "जो लिखा है उससे आगे न जाना" ताकि तुम घमंड से फूलकर एक को दूसरे से बेहतर न समझो।[8] 7 तुझमें ऐसा क्या है जो तुझे दूसरों से बढ़कर समझा जाए? दरअसल, तेरे पास ऐसा क्या है जो तूने

3:18 *या "दुनिया की व्यवस्था।" शब्दावली देखें। 3:20; 4:4 *अति. क5 देखें।

3:22 *पतरस भी कहलाता था। 4:1 *या "के अधीन काम करनेवाले।"

अध्य. 3
1 भज 118:22, यश 28:16, मत 21:42, इफ 2:20, 1पत 2:6
2 1पत 4:12
3 2कुर 6:16, इफ 2:21, 1पत 2:5
4 1कुर 6:19
5 1पत 2:5
6 अय 5:13
7 भज 94:11

दूसरा कॉल.
1 1कुर 1:12
2 यूह 17:9, 2कुर 10:7

अध्य. 4
3 मत 13:11, रोम 16:25, 26
4 नीत 21:2, रोम 14:10, इब्र 4:13
5 मत 7:1
6 नीत 10:9, 2कुर 10:18, 1ती 5:24, 25
7 1कुर 1:12
8 रोम 12:3, 2कुर 12:20, 3यूह 9

पाया न हो?[1] अगर तूने इसे पाया है, तो
तू इस तरह शेखी क्यों मारता है मानो तूने
नहीं पाया?

8 क्या तुम्हारी उम्मीद पूरी हो गयी
है? क्या तुम अभी से दौलतमंद हो चुके
हो? क्या तुमने हमारे बिना ही राज करना
शुरू कर दिया है?[2] काश, तुमने राजा
बनकर राज करना शुरू कर दिया होता
ताकि हम भी तुम्हारे साथ राजा बनकर
राज कर सकते।[3] 9 मुझे ऐसा लगता
है कि परमेश्वर ने हम प्रेषितों को, उन
आदमियों की तरह ठहराया है जिन्हें मौत
की सज़ा सुनायी गयी है और जिन्हें रंग-
शाला में सबसे आखिर में लाया जाता है,[4]
क्योंकि दुनिया और स्वर्गदूतों और इंसानों
के सामने हमारी नुमाइश हो रही है।[5]
10 हमें मसीह की खातिर मूर्ख समझा
जाता है,[6] मगर तुम खुद को मसीह में
बुद्धिमान समझते हो। हम कमज़ोर हैं,
मगर तुम तो ताकतवर हो। तुम बड़े
इज़्ज़तदार हो, मगर हमारी कोई इज़्ज़त
नहीं। 11 आज के दिन तक हम भूखे-
प्यासे[7] और फटेहाल* हैं, हमें मारा-
पीटा जाता है,#[8] हम बेघर हैं 12 और
अपने हाथों से कड़ी मेहनत करते हैं।[9]
जब हमारा अपमान किया जाता है तो हम
आशीष देते हैं।[10] जब हमें सताया जाता
है तो हम धीरज धरते हुए सह लेते हैं।[11]
13 जब हमें बदनाम किया जाता है तो
हम कोमलता से जवाब देते हैं।*[12] आज
तक हमें दुनिया का कचरा और हर तरह
की गंदगी समझा जाता है।

14 मैं तुम्हें शर्मिंदा करने के लिए
ये बातें नहीं लिख रहा, बल्कि अपने
प्यारे बच्चे जानकर तुम्हें समझा रहा हूँ।
15 इसलिए कि मसीह में चाहे तुम्हारी
देखरेख करनेवाले* 10,000 हों, तो भी
तुम्हारे कई पिता नहीं हैं। खुशखबरी के
ज़रिए मसीह यीशु में, मैं तुम्हारा पिता
बना हूँ।[1] 16 इसलिए मैं तुमसे गुज़ा-
रिश करता हूँ कि मेरी मिसाल पर चलो।[2]
17 इसी वजह से मैं तुम्हारे पास तीमु-
थियुस को भेज रहा हूँ जो प्रभु में मेरा
प्यारा और विश्वासयोग्य बच्चा है। वह
मसीह की सेवा से जुड़े मेरे तौर-तरीके
तुम्हें याद दिलाएगा,[3] जिन्हें आज़मा-
कर मैं जगह-जगह हर मंडली में सिखा
रहा हूँ।

18 कुछ तो इस तरह घमंड से फूल
गए हैं मानो मैं तुम्हारे पास कभी
वापस नहीं आऊँगा। 19 लेकिन अगर
यहोवा* की मरज़ी हुई, तो मैं बहुत जल्द
तुम्हारे पास आऊँगा। और जो लोग घमंड
से फूल गए हैं, मैं उनकी बातों में कोई
दिलचस्पी नहीं लूँगा बल्कि यह देखूँगा
कि उनमें परमेश्वर की शक्ति है या
नहीं। 20 इसलिए कि परमेश्वर का
राज, बातों से नहीं बल्कि परमेश्वर की
शक्ति से ज़ाहिर होता है। 21 तुम क्या
चाहते हो? क्या मैं डंडा लेकर तुम्हारे पास
आऊँ[4] या फिर प्यार और कोमल स्वभाव
के साथ आऊँ?

5 दरअसल मुझे खबर मिली है कि
तुम्हारे यहाँ एक आदमी ने नाजायज़
यौन-संबंध*[5] रखने का पाप किया है
और वह भी ऐसा पाप जैसा दुनिया के
लोग भी नहीं करते। उसने अपने पिता
की पत्नी को रख लिया है।[6] 2 क्या
तुम इस बात पर गर्व कर रहे हो? क्या
तुम्हें मातम नहीं मनाना चाहिए[7] और
जिस आदमी ने ऐसी करतूत की है, उसे

अध्य. 4
1 यूह 3:27
2 प्रक 20:4, 6
3 2ती 2:12; प्रक 3:21
4 रोम 8:36; 1कुर 15:32; 2कुर 6:4, 9
5 इब्र 10:33
6 1कुर 3:18
7 2कुर 11:27; फिल 4:12
8 प्रेष 14:19; प्रेष 23:2; 2कुर 11:24
9 प्रेष 18:3; प्रेष 20:34; 1थि 2:9
10 रोम 12:14; 1पत 3:9
11 मत 5:44
12 1पत 2:23

दूसरा कॉल.
1 गल 4:19; 1थि 2:11
2 1कुर 11:1; फिल 3:17; 1थि 1:6
3 2ती 1:13
4 2कुर 13:10

अध्य. 5
5 इफ 5:3
6 लैव 18:8
7 2कुर 7:9

4:11 *शा., "नंगे।" #या "घूसे मारे जाते हैं।" **4:13** *शा., "हम गुज़ारिश करते हैं।"

4:15 *या "अभिभावक।" **4:19** *अति. क5 देखें। **5:1** *यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें।

अपने बीच से निकाल नहीं देना चाहिए?[1]
3 हालाँकि मैं तुम्हारे यहाँ नहीं हूँ मगर
मन से वहीं मौजूद हूँ और मैं उस आदमी
को दोषी ठहरा चुका हूँ मानो मैं वहीं हूँ।
4 जब तुम हमारे प्रभु यीशु के नाम से
इकट्ठा हो तब यह जानते हुए कि मानो मैं*
भी हमारे प्रभु यीशु की ताकत से तुम्हारे
साथ हूँ, **5** तुम उस आदमी को शैतान
के हवाले कर दो[2] ताकि उसके पाप का
बुरा असर मिट जाए और प्रभु के दिन में
मंडली का नज़रिया सही बना रहे।[3]

6 तुम्हारा घमंड करना सही नहीं है।
क्या तुम नहीं जानते कि ज़रा-सा खमीर
पूरे गुँधे हुए आटे को खमीरा कर देता
है?[4] **7** पुराने खमीर को निकालकर
फेंक दो ताकि तुम गुँधा हुआ नया आटा
बन सको और देखा जाए तो तुम बिना
खमीर के हो। इसलिए कि हमारे फसह
का मेम्ना, मसीह[5] बलि किया जा चुका
है।[6] **8** इसलिए आओ हम यह त्योहार
न तो पुराने खमीर से, न ही बुराई और
दुष्टता के खमीर से मनाएँ बल्कि सीधाई
और सच्चाई की बिन-खमीर की रोटियों
के साथ मनाएँ।[7]

9 मैंने अपनी चिट्ठी में लिखा था
कि तुम नाजायज़ यौन-संबंध* रखने-
वालों के साथ मेल-जोल रखना बंद करो।
10 मेरे कहने का यह मतलब नहीं कि
तुम दुनिया[8] के उन लोगों से बिल-
कुल भी नाता न रखो जो नाजायज़ यौन-
संबंध* रखते हैं, लालची हैं, धन ऐंठते हैं
या मूर्तिपूजा करते हैं। क्योंकि ऐसे में तो
तुम्हें दुनिया से ही निकल जाना होगा।[9]
11 मगर अब मैं तुम्हें लिख रहा हूँ कि
ऐसे किसी भी आदमी के साथ मेल-जोल
रखना बंद कर दो,[10] जो भाई कहलाते
हुए भी नाजायज़ यौन-संबंध* रखता है
या लालची है[1] या मूर्तिपूजा करता है या
गाली-गलौज करता है या पियक्कड़
है[2] या दूसरों का धन ऐंठता है।[3]
ऐसे आदमी के साथ खाना भी मत खाना।
12 बाहर के लोगों का न्याय करनेवाला
मैं कौन होता हूँ? मगर क्या तुम्हें उनका
न्याय नहीं करना चाहिए जो अंदर हैं,
13 जबकि बाहरवालों का न्याय पर-
मेश्वर करता है?[4] "उस दुष्ट आदमी को
अपने बीच से निकाल बाहर करो।"[5]

6 जब तुम्हारे बीच दो लोगों का झगड़ा
होता है[6] तो तुम फैसले के लिए
पवित्र जनों के पास जाने के बजाय, अदा-
लत में दुष्टों के सामने जाने की जुर्रत क्यों
करते हो? **2** क्या तुम नहीं जानते कि
पवित्र जन पूरी दुनिया का न्याय करेंगे?[7]
जब तुम दुनिया का न्याय करनेवाले हो,
तो क्या तुम इस काबिल भी नहीं कि
छोटे-छोटे मामलों का फैसला कर सको?
3 क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्ग-
दूतों का न्याय करेंगे?[8] तो फिर तुम इस
ज़िंदगी के मामलों का न्याय क्यों नहीं
कर सकते? **4** जब तुम्हें इस ज़िंदगी के
मामलों का फैसला करना होता है,[9] तो
तुम ऐसे आदमियों को अपना न्यायी क्यों
चुनते हो जिन्हें मंडली नीचा देखती है?
5 मैं तुम्हें शर्मिंदा करने के लिए यह कह
रहा हूँ। क्या तुम्हारे बीच ऐसा एक भी
बुद्धिमान आदमी नहीं जो अपने भाइयों
का न्याय कर सके? **6** इसके बजाय,
एक भाई दूसरे भाई को अदालत ले जाता
है और वह भी अविश्वासियों के सामने!

7 वाकई, यह तुम्हारी हार है कि तुम
एक-दूसरे पर मुकदमा कर रहे हो। तुम
खुद अन्याय क्यों नहीं सह लेते?[10] जब
दूसरा तुम्हें धोखा देता है तो तुम बर-
दाश्त क्यों नहीं कर लेते? **8** इसके

5:4 *या "मेरा मन।" **5:9-11** *शब्दावली देखें।

अध्य. 5
1 1कुर 5:13; 2यूह 10
2 1ती 1:20
3 1कुर 1:8
4 1कुर 15:33; गल 5:9; 2ती 2:16, 17
5 यूह 1:29
6 1पत 1:19, 20; प्रक 5:12
7 निर्ग 13:7
8 1यूह 2:17
9 यूह 17:15
10 गि 16:25, 26; रोम 16:17; 2यूह 10

दूसरा कॉल.
1 इफ 5:5
2 व्य 21:20, 21; 1पत 4:3
3 1कुर 6:9, 10; गल 5:19-21
4 सभ 12:14
5 उत 3:23, 24; व्य 17:7; तीत 3:10; 2यूह 10

अध्य. 6
6 मत 18:15-17
7 प्रक 2:26, 27; प्रक 20:4
8 रोम 16:20
9 मत 18:17
10 मत 5:39, 40

बजाय, तुम खुद अन्याय करते और
धोखा देते हो और वह भी अपने
भाइयों को!
9 क्या तुम नहीं जानते कि जो लोग
परमेश्वर के नेक स्तरों पर नहीं चलते,
वे उसके राज के वारिस नहीं होंगे?[1]
धोखे में न रहो। नाजायज़ यौन-
संबंध* रखनेवाले,[2] मूर्तिपूजा करने-
वाले,[3] व्यभिचारी,[4] आदमियों के साथ
संभोग के लिए रखे गए आदमी,[5] आद-
मियों के साथ संभोग करनेवाले आदमी,[6]
10 चोर, लालची,[7] पियक्कड़,[8] गाली-
गलौज करनेवाले और दूसरों का धन
ऐंठनेवाले परमेश्वर के राज के वारिस
नहीं होंगे।[9] 11 तुममें से कुछ लोग
पहले ऐसे ही काम करते थे। मगर तुम्हें
धोकर शुद्ध किया गया,[10] पवित्र ठह-
राया गया[11] और हमारे प्रभु यीशु मसीह
के नाम से और हमारे परमेश्वर की पवित्र
शक्ति से नेक ठहराया गया है।[12]
12 सब बातें मेरे लिए जायज़ तो हैं,*
मगर सब बातें फायदेमंद नहीं।[13] सब
बातें मेरे लिए जायज़ तो हैं, मगर मैं खुद
को किसी भी चीज़ का गुलाम बनने#
नहीं दूँगा। 13 खाना पेट के लिए है
और पेट खाने के लिए, मगर परमेश्वर
इन दोनों को मिटा देगा।[14] शरीर ना-
जायज़ संबंधों* के लिए नहीं बल्कि प्रभु
के लिए है[15] और प्रभु शरीर के लिए है।
14 मगर परमेश्वर ने अपनी शक्ति से[16]
प्रभु को मरे हुओं में से ज़िंदा किया[17] और
वह हमें भी ज़िंदा करेगा।[18]
15 क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे
शरीर मसीह के अंग हैं?[19] तो क्या मैं
मसीह के अंगों को ले जाकर वेश्या
के अंगों से जोड़ दूँ? हरगिज़ नहीं!
16 क्या तुम नहीं जानते कि जो वेश्या
से मिल जाता है वह उसके साथ एक तन
हो जाता है? क्योंकि परमेश्वर कहता है,
“वे दोनों एक तन होंगे।”[1] 17 मगर
जो प्रभु से मिल जाता है, वह उसके साथ
एक मन हो जाता है।[2] 18 नाजायज़
यौन-संबंधों* से दूर भागो![3] बाकी सभी
पाप जो इंसान करता है वे उसके शरीर
के बाहर होते हैं, मगर जो नाजायज़ यौन-
संबंधों में लगा रहता है वह अपने ही
शरीर के खिलाफ पाप करता है।[4]
19 क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा
शरीर उस पवित्र शक्ति का मंदिर है[5] जो
तुम्हारे अंदर रहती है और जो पर-
मेश्वर ने तुम्हें दी है?[6] और तुम्हारा खुद
पर अधिकार नहीं है।[7] 20 तुम्हें बड़ी
कीमत देकर खरीदा गया है।[8] इसलिए
हर हाल में अपने शरीर से परमेश्वर की
महिमा करो।[9]

7 अब मैं उन सवालों का जवाब दे रहा
हूँ जो तुमने लिखकर मुझसे पूछे थे।
एक आदमी के लिए अच्छा तो यह है कि
वह औरत को न छुए।* 2 फिर भी,
यह देखते हुए कि नाजायज़ यौन-संबंध*
रखना आम हो गया है, हर आदमी की
अपनी पत्नी हो[10] और हर औरत का
अपना पति हो।[11] 3 पति अपनी पत्नी
का हक अदा करे और उसी तरह पत्नी
भी अपने पति का हक अदा करे।[12]
4 पत्नी को अपने शरीर पर अधिकार
नहीं बल्कि उसके पति को है। उसी
तरह, पति को अपने शरीर पर अधिकार
नहीं बल्कि उसकी पत्नी को है। 5 तुम

6:9 *शब्दावली देखें। **6:12** *या “सब बातों की मुझे इजाज़त है।” #या “के काबू में आने।” **6:13, 18** *यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें।

7:1 *यानी यौन-संबंध रखने के लिए। **7:2** *यूनानी में *पोर्निया* का बहुवचन। शब्दावली देखें।

अध्य. 6
1 इफ 5:5, प्रक 22:15
2 प्रक 21:8
3 कुल 3:5
4 इब्र 13:4
5 रोम 1:27
6 1ती 1:9, 10
7 1कुर 5:11
8 व्य 21:20, 21, नीत 23:20, 1पत 4:3
9 इब्र 12:14
10 प्रेष 22:16, इब्र 10:22
11 इफ 5:25, 26, 2थि 2:13
12 रोम 5:18
13 1कुर 10:23
14 रोम 14:17
15 1थि 4:3
16 रोम 8:11, इफ 1:19, 20
17 प्रेष 2:24
18 2कुर 4:14
19 रोम 12:4, 5, 1कुर 12:18, 27, इफ 4:15, इफ 5:29, 30

दूसरा कॉल.
1 उत 2:24, मत 19:4, 5
2 यूह 17:20, 21
3 उत 39:10-12, 1थि 4:3
4 रोम 1:24, 27
5 2कुर 6:16
6 1कुर 3:16
7 रोम 14:8
8 1कुर 7:23, इब्र 9:12, 1पत 1:18, 19
9 मत 5:16, रोम 12:1

अध्य. 7
10 नीत 5:18, 19
11 उत 2:24, इब्र 13:4
12 निर्ग 21:10, 1कुर 7:5

एक-दूसरे को इस हक से वंचित न
रखो, लेकिन अगर प्रार्थना में वक्त
बिताने के लिए ऐसा करो भी, तो सिर्फ़
आपसी रज़ामंदी से कुछ वक्त के लिए
करो। इसके बाद फिर से साथ हो जाओ
ताकि शैतान तुम्हारे संयम की कमी की
वजह से तुम्हें लुभाता न रहे। **6** मगर
यह मेरा सिर्फ़ सुझाव है, आज्ञा नहीं।
7 मैं तो यही चाहता हूँ कि सब लोग ऐसे
होते जैसा मैं हूँ। मगर हर किसी को पर-
मेश्वर से अपना तोहफा मिला है,[1] किसी
को इस तरह का तो किसी को दूसरी
तरह का।

8 अब मैं अविवाहितों और विधवाओं
से कहता हूँ कि उनके लिए अच्छा है कि
वे ऐसे ही रहें जैसा मैं हूँ।[2] **9** लेकिन
अगर उनमें संयम नहीं तो वे शादी कर लें,
क्योंकि वासनाओं की आग में जलने से तो
अच्छा है कि वे शादी कर लें।[3]

10 शादीशुदा लोगों को मैं ये हिदायतें
देता हूँ, दरअसल मैं नहीं बल्कि प्रभु देता
है कि एक पत्नी को अपने पति से अलग
नहीं होना चाहिए।[4] **11** लेकिन अगर
वह अलग हो भी जाए, तो किसी दूसरे से
शादी न करे या अपने पति से सुलह कर
ले। और एक पति को चाहिए कि अपनी
पत्नी को न छोड़े।[5]

12 अब दूसरों से प्रभु नहीं मैं यह
कहता हूँ:[6] अगर एक भाई की पत्नी
अविश्वासी हो फिर भी वह अपने पति के
साथ रहने के लिए राज़ी हो, तो वह भाई
अपनी पत्नी को न छोड़े। **13** अगर
एक औरत का पति अविश्वासी हो फिर
भी वह अपनी पत्नी के साथ रहने के लिए
राज़ी हो, तो वह औरत अपने पति को
न छोड़े। **14** इसलिए कि अविश्वासी
पति अपनी पत्नी के साथ शादी के
रिश्ते की वजह से पवित्र माना जाता है
और अविश्वासी पत्नी अपने पति यानी
उस मसीही भाई के साथ शादी के रिश्ते
की वजह से पवित्र मानी जाती है। अगर
ऐसा न होता, तो तुम्हारे बच्चे अशुद्ध
होते मगर अब वे पवित्र हैं। **15** लेकिन
अगर अविश्वासी साथी अलग होना
चाहता है, तो उसे अलग होने दो। ऐसे
हालात में एक भाई या बहन पर कोई
बंदिश नहीं। परमेश्वर ने तुम्हें शांति से
जीने के लिए बुलाया है।[1] **16** इसलिए
कि हे पत्नी, अगर तू अपने पति के साथ
रहे तो क्या जाने तू अपने पति को बचा
ले?[2] या हे पति, अगर तू अपनी पत्नी के
साथ रहे तो क्या जाने तू अपनी पत्नी को
बचा ले?

17 यहोवा* ने हरेक को जो दिया है
और परमेश्वर ने हरेक को जिस दशा में
बुलाया है, वह वैसा ही चलता रहे।[3] मैं
सब मंडलियों को यही आदेश देता हूँ।
18 क्या किसी आदमी को खतने की दशा
में बुलाया गया था?[4] तो वह उसी दशा
में रहे। क्या किसी आदमी को खतना-
रहित दशा में बुलाया गया था? तो वह
खतना न कराए।[5] **19** खतने की दशा
में होना कुछ मायने नहीं रखता, न ही
खतनारहित दशा में होना।[6] मगर पर-
मेश्वर की आज्ञाएँ मानना मायने रखता
है।[7] **20** हरेक को जिस दशा में बुलाया
गया है, वह वैसा ही रहे।[8] **21** क्या तुझे
तब बुलाया गया था जब तू एक दास था?
तो यह बात तुझे परेशान न करे।[9] लेकिन
अगर तू आज़ाद हो सकता है, तो ऐसा
मौका न छोड़। **22** इसलिए कि जो एक
दास के नाते प्रभु में बुलाया गया था
वह प्रभु में आज़ाद है और उसी का
है।[10] वैसे ही जो आज़ाद आदमी के
नाते बुलाया गया था वह मसीह का दास

7:17 *अति. क5 देखें।

अध्य. 7
1 मत 19:10, 11
2 1कुर 7:39, 40; 1कुर 9:5
3 1थि 4:4, 5; 1ती 5:11, 14
4 मत 5:32; मत 19:6
5 मर 10:11; लूक 16:18
6 1कुर 7:25, 40

दूसरा कॉल.
1 इब्र 12:14
2 1पत 3:1, 2
3 1कुर 7:7
4 प्रेष 21:20
5 प्रेष 10:45; प्रेष 15:1, 24; गल 5:2
6 गल 6:15; कुल 3:11
7 सभ 12:13; यिर्म 7:23; रोम 2:25; गल 5:6; 1यूह 5:3
8 1कुर 7:17
9 गल 3:28
10 यूह 8:36; फिले 15, 16

है। 23 तुम्हें कीमत देकर खरीद लिया गया है,[1] इंसानों के गुलाम बनना छोड़ दो। 24 भाइयो, हरेक को जिस दशा में बुलाया गया है, वह परमेश्‍वर के सामने वैसा ही रहे।

25 जहाँ तक कुँवारे लोगों की बात है, उनके बारे में प्रभु से मुझे कोई आज्ञा नहीं मिली है। मगर मैं एक ऐसे आदमी के नाते अपनी राय बताता हूँ[2] जिस पर प्रभु ने दया की थी कि मैं विश्‍वासयोग्य पाया जाऊँ। 26 इसलिए मुझे लगता है कि आजकल के मुश्‍किल हालात को देखते हुए, सबसे अच्छा यही है कि एक आदमी जैसा है वैसा ही रहे। 27 क्या तू पत्नी से बँधा हुआ है? तो उससे आज़ाद होने की कोशिश करना बंद कर।[3] क्या तू पत्नी से आज़ाद है? तो एक पत्नी की खोज करना बंद कर। 28 लेकिन अगर तू शादी कर भी ले, तो कोई पाप नहीं करेगा। और अगर एक कुँवारा शादी करता है, तो यह कोई पाप नहीं है। फिर भी, जो शादी करते हैं उन्हें शारीरिक दुख-तकलीफें झेलनी पड़ेंगी। मगर मैं तुम्हें इनसे बचाना चाहता हूँ।

29 इसके अलावा, भाइयो मैं यह कहता हूँ, जो वक्‍त रह गया है उसे घटाया गया है।[4] इसलिए जिनकी पत्नियाँ हैं, वे अब से ऐसे रहें जैसे उनकी पत्नियाँ नहीं हैं 30 और जो रोते हैं वे ऐसे रहें जो रोते नहीं, जो खुशियाँ मनाते हैं वे ऐसे रहें जो खुशियाँ नहीं मनाते और जो खरीदते हैं वे ऐसे रहें मानो उन्होंने खरीदा ही नहीं। 31 इस दुनिया का इस्तेमाल करनेवाले ऐसे हों जो इसका पूरा-पूरा इस्तेमाल नहीं करते, क्योंकि इस दुनिया का दृश्‍य बदल रहा है। 32 वाकई, मैं चाहता हूँ कि तुम चिंताओं से आज़ाद रहो। अविवाहित आदमी प्रभु की सेवा से जुड़ी बातों की चिंता में रहता है कि वह कैसे प्रभु को खुश करे। 33 मगर शादीशुदा आदमी दुनियादारी की बातों की चिंता में रहता है[1] कि कैसे अपनी पत्नी को खुश करे 34 और वह बँटा हुआ है। इसके अलावा, अविवाहित और कुँवारी औरत प्रभु की सेवा से जुड़ी बातों की चिंता में रहती है[2] ताकि वह अपने शरीर और मन दोनों से पवित्र रहे। लेकिन शादीशुदा औरत दुनियादारी की बातों की चिंता में रहती है कि कैसे अपने पति को खुश करे। 35 मगर मैं यह तुम्हारे फायदे के लिए कह रहा हूँ, न कि तुम पर कोई बंदिश लगाने के लिए।* दरअसल मैं तुम्हें सही काम करने का बढ़ावा दे रहा हूँ ताकि तुम बिना ध्यान भटकाए प्रभु की सेवा में लगे रहो।

36 लेकिन अगर किसी अविवाहित* व्यक्‍ति को लगता है कि वह गलत बरताव कर रहा है और अगर वह जवानी की कच्ची उम्र पार कर चुका है, तो उसे शादी कर लेनी चाहिए। ऐसा करके वह पाप नहीं करता। ऐसे लोग शादी कर लें।[3] 37 लेकिन अगर कोई अपने दिल में ठान चुका है कि वह अविवाहित* ही रहेगा और वह अपने इस फैसले पर अटल रहता है क्योंकि उसे शादी करने की ज़रूरत महसूस नहीं होती, बल्कि वह अपनी इच्छा को काबू में रखता है तो वह अच्छा करता है।[4] 38 इसलिए जो शादी करता है वह अच्छा करता है। मगर जो शादी नहीं करता वह ज़्यादा अच्छा करता है।[5]

39 एक पत्नी अपने पति के जीते-जी उससे बँधी होती है।[6] लेकिन अगर

7:35 *शा., "न कि नकेल डालने के लिए।" 7:36 *या "कुँवारे।" 7:37 *या "कुँवारा।"

अध्य. 7
1 1कुर 6:19, 20; इब्र 9:12; 1पत 1:18, 19
2 1कुर 7:12; 1कुर 7:40
3 मला 2:16; मत 19:6; इफ 5:33
4 रोम 13:11; 1पत 4:7

दूसरा कॉल.
1 1ती 5:8
2 1ती 5:5
3 मत 19:12; 1कुर 7:28
4 मत 19:10, 11
5 1कुर 7:32
6 रोम 7:2

उसका पति मौत की नींद सो जाता है,
तो वह जिससे चाहे उससे शादी करने
के लिए आज़ाद है, मगर सिर्फ प्रभु
में।[1] 40 लेकिन मेरी राय है कि अगर
वह जैसी है वैसी ही रहे, तो ज़्यादा खुश
रहेगी। मुझे यकीन है कि यह बात कहने
के लिए परमेश्वर की पवित्र शक्ति ने ही
मुझे उभारा है।

8 अब मैं मूर्तियों को चढ़ायी गयी खाने
की चीज़ों[2] के बारे में लिख रहा हूँ।
हम जानते हैं कि इस बारे में हम सबके
पास ज्ञान है।[3] ज्ञान घमंड से भर देता है,
मगर प्यार मज़बूत करता है।[4] 2 अगर
कोई सोचता है कि उसके पास किसी बात
का ज्ञान है, तो असल में उसके पास
उतना ज्ञान नहीं जितना होना चाहिए।
3 लेकिन अगर कोई परमेश्वर से प्यार
करता है, तो परमेश्वर उसे जानता है।

4 मूर्तियों को चढ़ायी गयी चीज़ें खाने
के बारे में हम जानते हैं कि मूर्ति दुनिया में
कुछ नहीं है[5] और एक को छोड़ और कोई
परमेश्वर नहीं है।[6] 5 स्वर्ग में और
धरती पर ईश्वर कहलानेवाले बहुत हैं,[7]
ठीक जैसे बहुत-से ईश्वर और प्रभु हैं भी
6 मगर असल में हमारे लिए एक ही पर-
मेश्वर है[8] यानी पिता,[9] जिसकी तरफ से
सब चीज़ें हैं और हम उसी के लिए हैं।[10]
एक ही प्रभु है यानी यीशु मसीह जिसके
ज़रिए सब चीज़ें हैं[11] और हम भी उसके
ज़रिए हैं।

7 फिर भी यह ज्ञान सब लोगों के
पास नहीं है।[12] कुछ लोग जिनका पहले
मूर्तियों से नाता था, आज भी खाना खाते
वक्त यही सोचते हैं कि वे जो खा रहे हैं
वह मूर्तियों के आगे बलि की गयी चीज़
है।[13] उनका ज़मीर कमज़ोर होने की
वजह से दूषित हो जाता है।[14] 8 खाना
हमें परमेश्वर के करीब नहीं लाता।[15]
अगर हम न खाएँ, तो हमारा कुछ नुक-
सान नहीं होता और अगर हम खाएँ तो
हमें कोई फायदा नहीं होता।[1] 9 मगर
हमेशा ध्यान रखना कि तुम्हारे पास
अपना चुनाव करने का जो हक है उसका
ऐसे इस्तेमाल न करो कि तुम कमज़ोर
लोगों के लिए विश्वास से गिरने की वजह
बनो।[2] 10 इसलिए कि अगर कोई
कमज़ोर आदमी तुझ जैसे ज्ञान रखनेवाले
को मूर्ति के मंदिर में खाते देखे, तो क्या
उसमें भी मूर्तियों के आगे चढ़ायी गयी
चीज़ें खाने की हिम्मत नहीं आ जाएगी?
11 तेरे ज्ञान की वजह से वह आदमी जो
कमज़ोर है, बरबाद हो रहा है, हाँ, तेरा
वह भाई जिसकी खातिर मसीह ने अपनी
जान दी थी।[3] 12 जब तुम लोग अपने
भाइयों के खिलाफ इस तरह पाप करते हो
और उनके कमज़ोर ज़मीर को चोट पहुँ-
चाते हो,[4] तो तुम मसीह के खिलाफ पाप
कर रहे हो। 13 इसलिए अगर खाना
मेरे भाई के लिए विश्वास से गिरने की
वजह बनता है, तो मैं फिर कभी माँस
नहीं खाऊँगा ताकि मैं अपने भाई के लिए
विश्वास से गिरने की वजह न बनूँ।[5]

9 क्या मैं आज़ाद नहीं कि जो चाहे वह
करूँ? क्या मैं एक प्रेषित नहीं? क्या
मैंने हमारे प्रभु यीशु को नहीं देखा?[6] क्या
तुम प्रभु में मेरी मेहनत का फल नहीं हो?
2 चाहे मैं दूसरों के लिए प्रेषित न सही,
फिर भी तुम्हारे लिए बेशक हूँ! इसलिए
कि तुम वह मुहर हो जो प्रभु में मेरे प्रेषित-
पद का सबूत देती है।

3 जो मेरी जाँच-पड़ताल करते हैं,
उनके सामने मेरी सफाई यह है: 4 क्या
हमें खाने-पीने का हक* नहीं? 5 क्या
हमें यह हक नहीं कि हम शादी करें
और अपनी विश्वासी पत्नी को* अपने

9:4 *शा., "अधिकार।" 9:5 *या "किसी मसीही बहन से शादी करके।"

अध्या. 7
1 उत 24:2, 3; व्य 7:3, 4; नहे 13:25, 26; 2कुर 6:14

अध्या. 8
2 प्रेष 15:20, 29
3 रोम 14:14; 1कुर 8:10
4 1कुर 8:13; 1कुर 13:4, 5
5 व्य 32:21; 2रा 19:17, 18; यिर्म 16:20
6 व्य 6:4; व्य 32:39
7 भज 82:1, 6; यूह 10:34, 35
8 1ती 2:5
9 मला 2:10; मत 23:9
10 प्रेष 17:28; रोम 11:36
11 यूह 1:1, 3; कुल 1:15, 16
12 रोम 14:14
13 1कुर 10:27, 28
14 रोम 14:23
15 रोम 14:17

दूसरा कॉल.
1 इब्र 13:9
2 रोम 14:13, 20
3 रोम 14:15
4 1कुर 10:28, 29
5 मत 18:6; रोम 14:15, 21

अध्या. 9
6 प्रेष 9:3-5; 1कुर 15:7, 8

साथ-साथ ले जाएँ,[1] जैसा कि बाकी प्रेषित, प्रभु के भाई[2] और कैफा*[3] भी करते हैं? **6** या क्या सिर्फ बरनबास[4] और मुझे ही अपने गुज़ारे के लिए काम करने का हक नहीं मिला? **7** ऐसा कौन-सा सैनिक है जो अपना खर्च खुद उठाता है? कौन है जो अंगूरों का बाग लगाकर भी उसका फल नहीं खाता?[5] या ऐसा कौन-सा चरवाहा है जो झुंड की देखभाल तो करता है मगर उसके दूध में से कुछ हिस्सा नहीं लेता?

8 क्या मैं ये बातें सिर्फ इंसानी नज़रिए से कह रहा हूँ? क्या कानून भी यही बातें नहीं कहता? **9** इसलिए कि मूसा के कानून में लिखा है, "तुम अनाज की दँवरी करते बैल का मुँह न बाँधना।"[6] क्या परमेश्वर सिर्फ बैलों की परवाह करता है? **10** क्या उसने यह बात असल में हमारे लिए नहीं कही? सच तो यह है कि यह बात हमारी खातिर लिखी गयी थी, क्योंकि जो आदमी हल चलाता है उसका अनाज पाने की आशा रखना गलत नहीं है और जो आदमी अनाज दाँवता है उसका अनाज में से हिस्सा पाने की आशा रखना गलत नहीं है।

11 हमने तुम्हारे बीच परमेश्वर की बातें बोयी हैं, तो क्या बदले में तुमसे खाने-पहनने की चीज़ों की फसल पाना गलत होगा?[7] **12** अगर दूसरे तुम पर यह हक जता सकते हैं, तो क्या हमारा और भी ज़्यादा हक नहीं बनता? फिर भी, हमने अपना हक* नहीं जताया।[8] मगर हम सबकुछ सह रहे हैं ताकि हमारी वजह से मसीह की खुशखबरी फैलने में कोई रुकावट न आए।[9] **13** क्या तुम नहीं जानते कि जो आदमी मंदिर में पवित्र सेवा से जुड़े काम करते हैं, वे मंदिर से मिली चीज़ें खाते हैं? और जो वेदी के पास सेवा में लगे रहते हैं वे वेदी के साथ बलिदान का हिस्सा पाते हैं?[1] **14** उसी तरह, प्रभु ने खुशखबरी सुनानेवालों के लिए भी यह आज्ञा दी कि खुशखबरी से उनका गुज़र-बसर हो।[2]

15 मगर मैंने इनमें से एक भी इंतज़ाम का फायदा नहीं उठाया।[3] दरअसल, मैंने ये बातें इसलिए नहीं लिखीं कि मेरे लिए यह सब किया जाए, क्योंकि इससे तो अच्छा होगा कि मैं मर जाऊँ। मेरे पास शेखी मारने की यह जो वजह है, इसे मैं किसी भी इंसान को छीनने नहीं दूँगा।[4] **16** अब अगर मैं खुशखबरी सुनाता हूँ, तो यह मेरे लिए शेखी मारने की कोई वजह नहीं क्योंकि ऐसा करना तो मेरा फर्ज़ है। धिक्कार है मुझ पर अगर मैं खुशखबरी न सुनाऊँ![5] **17** अगर मैं यह काम अपनी मरज़ी से करता हूँ, तो मुझे इनाम मिलेगा। और अगर मैं यह काम न चाहते हुए करता हूँ, तो भी मैं प्रबंधक का काम ही कर रहा हूँ जो मुझे प्रभु ने सौंपा है।[6] **18** यह इनाम क्या है जो मुझे मिलेगा? यही कि जब मैं खुशखबरी सुनाऊँ तो मैं बिना कीमत के खुशखबरी दूँ ताकि मैं खुशखबरी के मामले में अपने अधिकार* का गलत इस्तेमाल न करूँ।

19 हालाँकि मैं किसी इंसान का दास नहीं हूँ फिर भी मैंने खुद को सबका दास बनाया है ताकि मैं ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को मसीह की राह पर ला सकूँ। **20** मैं यहूदियों के लिए यहूदी जैसा बना ताकि यहूदियों को ला सकूँ।[7] जो कानून के अधीन हैं उनके लिए मैं कानून के अधीन रहनेवालों जैसा बना ताकि जो

9:5 *पतरस भी कहलाता था। 9:12 *शा., "अधिकार।"

9:18 *या "हक।"

अध्य. 9

1 मत 19:11
2 मत 13:55; गल 1:19
3 यूह 1:42
4 प्रेष 13:2
5 व्य 20:6; नीत 27:18
6 व्य 25:4; 1ती 5:18
7 रोम 15:26, 27; गल 6:6; फिल 4:15-17
8 प्रेष 18:3; प्रेष 20:34; 2थि 3:7, 8
9 2कुर 6:3; 2कुर 11:7

दूसरा कॉल.

1 लैव 6:14, 16; गि 18:30, 31; व्य 18:1
2 मत 10:9, 10; लूक 10:7, 8
3 प्रेष 18:3; प्रेष 20:34; 1कुर 4:11, 12; 2थि 3:8
4 2कुर 11:8-10
5 यहे 3:18
6 गल 2:7; इफ 3:1, 2; कुल 1:25
7 प्रेष 16:3; प्रेष 18:18

कानून के अधीन हैं उन्हें ला सकूँ,
हालाँकि मैं खुद कानून के अधीन नहीं।[1]
21 जिनके पास कानून नहीं है, उनके
लिए मैं उन्हीं के जैसा बना, इसके बावजूद
कि मैं परमेश्‍वर के सामने बिना कानून का
नहीं हूँ बल्कि मसीह के कानून के
अधीन हूँ[2] ताकि मैं उन्हें ला सकूँ जिनके
पास कानून नहीं है। 22 मैं कमज़ोरों के
लिए कमज़ोर बना ताकि कमज़ोरों को
ला सकूँ।[3] मैं सब किस्म के लोगों के
लिए सबकुछ बना ताकि मैं हर मुमकिन
तरीके से कुछ लोगों का उद्धार करा सकूँ।
23 मैं सबकुछ खुशखबरी की खातिर
करता हूँ ताकि यह खबर मैं दूसरों को
सुना सकूँ।[4]

24 क्या तुम नहीं जानते कि दौड़
में हिस्सा लेनेवाले सभी दौड़ते हैं, मगर
इनाम एक ही को मिलता है? इस तरह
से दौड़ो कि तुम इनाम जीत सको।[5]
25 प्रतियोगिता में हिस्सा लेनेवाला* हर
बात में संयम बरतता है। बेशक, वे एक
ऐसा ताज पाने के लिए यह सब करते
हैं जो नाश हो सकता है,[6] मगर हम उस
ताज के लिए करते हैं जो कभी नाश नहीं
होगा।[7] 26 इसलिए मैं अंधाधुंध यहाँ-
वहाँ नहीं दौड़ता,[8] मैं इस तरह मुक्के
नहीं चलाता मानो हवा को पीट रहा हूँ।
27 बल्कि मैं अपने शरीर को मारता-
कूटता* हूँ[9] और उसे एक दास बनाकर
काबू में रखता हूँ ताकि दूसरों को प्रचार
करने के बाद मैं खुद किसी वजह से
अयोग्य न ठहरूँ।

10 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम यह
बात जान लो कि हमारे सभी
बाप-दादा बादल के नीचे थे[10] और वे
सभी समुंदर में से होकर गुज़रे।[11]
2 जब वे बादल के नीचे थे और समुं-
दर में से होकर गुज़रे तो उन्होंने
मूसा में बपतिस्मा लिया। 3 सबने पर-
मेश्‍वर से मिलनेवाला एक ही खाना
खाया[1] 4 और परमेश्‍वर से मिलने-
वाला एक ही पानी पीया।[2] इसलिए कि
वे परमेश्‍वर की उस चट्टान से पीया
करते थे, जो उनके साथ-साथ चलती
थी और उस चट्टान का मतलब मसीह
था।*[3] 5 फिर भी, परमेश्‍वर उनमें से
ज़्यादातर लोगों से खुश नहीं था इसलिए
वे वीराने में मार डाले गए।[4]

6 ये बातें हमारे लिए सबक बनीं कि
हम ऐसे इंसान न हों जो बुरी बातों
की ख्वाहिश रखते हैं, जैसी उनमें थी।[5]
7 न ही हम मूर्तिपूजा करनेवाले बनें,
जैसे उनमें से कुछ ने की थी, ठीक
जैसा लिखा है, "लोगों ने बैठकर खाया-
पीया। फिर वे उठकर मौज-मस्ती करने
लगे।"[6] 8 न ही हम नाजायज़ यौन-
संबंध* रखने का पाप करें जैसे उनमें से
कुछ ने किया था और एक ही दिन में
उनमें से 23,000 मारे गए।[7] 9 न ही
हम यहोवा* की परीक्षा लें,[8] जैसे उनमें से
कुछ ने उसकी परीक्षा ली और साँपों के
डसने से मर गए।[9] 10 न ही हम कुड़-
कुड़ानेवाले बनें, ठीक जैसे उनमें से कुछ
कुड़कुड़ाते थे[10] और नाश करनेवाले के
हाथों मारे गए।[11] 11 अब ये बातें जो
उन पर बीतीं, हमारे लिए मिसाल हैं और
हमारी चेतावनी के लिए लिखी गयी थीं[12]
जो दुनिया की व्यवस्थाओं के आखिरी
वक्‍त में जी रहे हैं।

12 इसलिए जो सोचता है कि वह
मज़बूती से खड़ा है, वह खबरदार रहे
कि कहीं गिर न पड़े।[13] 13 तुम पर

अध्य. 9
1 प्रेष 21:24, 26
2 यूह 13:34; गल 6:2
3 रोम 14:1; रोम 15:1; 2कुर 11:29
4 प्रेष 19:26; 1थि 2:8
5 मत 10:22; फिल 3:14; 2ती 4:7, 8
6 2ती 2:5
7 याकू 1:12
8 गल 2:2; फिल 2:16; इब्र 12:1
9 रोम 8:13; कुल 3:5

अध्य. 10
10 निर्ग 13:21
11 निर्ग 14:21, 22

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 16:14, 15
2 निर्ग 17:6
3 गि 20:11; यूह 4:10, 25
4 गि 14:29; गि 14:35
5 गि 11:4, 34
6 निर्ग 32:4, 6
7 गि 25:1, 9
8 व्य 6:16
9 गि 21:5, 6; मत 4:7
10 गि 14:2
11 गि 14:36, 37
12 रोम 15:4
13 नीत 28:14; लूक 22:33, 34; गल 6:1

9:25 *या "हर खिलाड़ी।" 9:27 *या "सज़ा देता; सख्ती बरतता।"

10:4 *या "वह चट्टान मसीह था।" 10:8 *शब्दावली देखें। 10:9 *अति. क5 देखें।

ऐसी कोई अनोखी परीक्षा नहीं आयी जो
दूसरे इंसानों पर न आयी हो।[1] मगर
परमेश्वर विश्वासयोग्य है और वह तुम्हें
ऐसी किसी भी परीक्षा में नहीं पड़ने देगा
जो तुम्हारी बरदाश्त के बाहर हो,[2] मगर
परीक्षा के साथ-साथ वह उससे निकलने
का रास्ता भी निकालेगा ताकि तुम इसे
सह सको।[3]

14 इसलिए प्यारे दोस्तो, मूर्तिपूजा से
दूर भागो।[4] **15** मैं तुम्हें पैनी समझ
रखनेवाले जानकर तुमसे बात करता हूँ।
तुम खुद फैसला करो कि मैं जो कह रहा
हूँ वह सही है या गलत। **16** धन्यवाद
का वह प्याला, जिसके लिए हम प्रार्थना में
धन्यवाद देते हैं, क्या वह मसीह के खून में
एक हिस्सेदारी नहीं?[5] जो रोटी हम
तोड़ते हैं, क्या वह मसीह के शरीर में एक
हिस्सेदारी नहीं?[6] **17** रोटी एक है और
हम बहुत-से होकर भी एक ही शरीर हैं[7]
इसलिए कि हम सब उस एक रोटी में से
खाते हैं।

18 पैदाइशी इसराएलियों की बात
लो। जो बलिदानों में से खाते हैं क्या वे
वेदी के साथ हिस्सेदार नहीं?[8] **19** तो
क्या मेरे कहने का यह मतलब है कि
मूर्ति या मूर्ति के आगे चढ़ाया बलि-
दान मायने रखता है? **20** नहीं। बल्कि
मैं यह कह रहा हूँ कि दूसरे राष्ट्र जो बलि
चढ़ाते हैं वे परमेश्वर के लिए नहीं बल्कि
दुष्ट स्वर्गदूतों के लिए बलि चढ़ाते हैं[9]
और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्ट स्वर्गदूतों
के साथ हिस्सेदार बनो।[10] **21** तुम ऐसा
नहीं कर सकते कि यहोवा* के प्याले से
पीओ और दुष्ट स्वर्गदूतों के प्याले से भी
पीओ। तुम ऐसा नहीं कर सकते कि
"यहोवा* की मेज़" से खाओ[11] और दुष्ट
स्वर्गदूतों की मेज़ से भी खाओ। **22** या
"क्या हम यहोवा* को जलन दिला रहे
हैं"?[1] क्या हम उससे ज़्यादा ताकत-
वर हैं?

23 सब बातें जायज़ तो हैं,* मगर सब
बातें फायदेमंद नहीं। सब बातें जायज़ तो
हैं, मगर सब बातें हौसला नहीं बढ़ातीं।[2]
24 हर कोई अपने फायदे की नहीं बल्कि
दूसरे के फायदे की सोचता रहे।[3]

25 गोश्त-बाज़ार में जो कुछ बिकता
है वह खाओ और अपने ज़मीर की वजह
से कोई पूछताछ मत करो। **26** इसलिए
कि "धरती और उसकी हर चीज़ यहोवा*
की है।"[4] **27** अगर कोई अविश्वासी
तुम्हें दावत पर बुलाए और तुम जाना
चाहो, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा
जाए उसे खाओ और अपने ज़मीर की
वजह से कोई पूछताछ मत करो।
28 लेकिन अगर कोई तुमसे कहता है,
"यह बलिदान में से है," तो उसके
बताने की वजह से और ज़मीर की वजह
से मत खाना।[5] **29** ज़मीर से मेरा मत-
लब है उस दूसरे का ज़मीर, न कि
तुम्हारा ज़मीर। मैं अपनी इस आज़ादी
का इस्तेमाल नहीं करना चाहता ताकि
दूसरे का ज़मीर मुझे दोषी न ठहराए।[6]
30 भले ही मैं प्रार्थना में धन्यवाद देकर
उसे खाऊँ, फिर भी यह देखते हुए कि
कोई मुझे गलत ठहरा रहा है क्या मेरा
खाना सही होगा?[7]

31 इसलिए चाहे तुम खाओ या पीओ
या कोई और काम करो, सबकुछ पर-
मेश्वर की महिमा के लिए करो।[8]
32 तुम यहूदियों और यूनानियों के लिए,
साथ ही परमेश्वर की मंडली के लिए
विश्वास से गिरने की वजह मत बनो,[9]
33 ठीक जैसे मैं भी सब बातों में सब

10:21, 22, 26 *अति. क5 देखें।

10:23 *या "सब बातों की मुझे इजा-
ज़त है।"

अध्य. 10
1 1पत 5:8, 9
2 लूक 22:31, 32
2पत 2:9
3 यश 40:29
फिल 4:13
4 व्य 4:25, 26
2कुर 6:17
1यूह 5:21
5 मत 26:27, 28
6 मत 26:26
लूक 22:19
1कुर 12:18
7 रोम 12:5
8 लैव 7:15
9 व्य 32:17
10 यहू 6
11 यहे 41:22
मला 1:12

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 34:14
व्य 32:21
2 रोम 14:19
रोम 15:2
3 1कुर 10:32, 33
1कुर 13:4, 5
फिल 2:4
4 भज 24:1
1ती 4:4
5 1कुर 8:7, 10
6 रोम 14:15, 16
1कुर 8:12
7 रोम 14:6
1ती 4:3
8 मत 5:16
कुल 3:17
9 रोम 14:13
1कुर 8:13
2कुर 6:3

लोगों को खुश करने की कोशिश कर रहा हूँ और अपने फायदे की नहीं,[1] बल्कि बहुतों के फायदे की खोज में रहता हूँ ताकि वे उद्धार पा सकें।[2]

11 मेरी मिसाल पर चलो, ठीक जैसे मैं मसीह की मिसाल पर चलता हूँ।[3]

2 मैं तुम्हारी तारीफ करता हूँ क्योंकि तुम सब बातों में मुझे याद करते हो और जो हिदायतें* मैंने तुम्हें दी थीं, उन्हें तुम सख्ती से मानते हो। 3 मगर मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि हर आदमी का सिर मसीह है[4] और औरत का सिर आदमी है[5] और मसीह का सिर परमेश्वर है।[6] 4 हर आदमी जो अपना सिर ढककर प्रार्थना या भविष्यवाणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है। 5 मगर हर औरत जो बिना सिर ढके प्रार्थना या भविष्यवाणी करती है,[7] वह अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह उस औरत जैसी होगी जिसका सिर मुँड़ाया गया हो। 6 इसलिए कि अगर एक औरत अपना सिर नहीं ढकती, तो वह अपने बाल कटवा ले। लेकिन अगर एक औरत के लिए बाल कटवाना या सिर मुँड़ाना शर्मनाक बात है, तो उसे अपना सिर ढकना चाहिए।

7 एक आदमी को अपना सिर नहीं ढकना चाहिए, क्योंकि वह परमेश्वर की छवि[8] और उसकी महिमा है। लेकिन औरत, आदमी की महिमा है। 8 इसलिए कि आदमी औरत से नहीं निकला, बल्कि औरत आदमी से निकली है।[9] 9 साथ ही, आदमी को औरत के लिए नहीं, बल्कि औरत को आदमी के लिए बनाया गया था।[10] 10 इसलिए स्वर्गदूतों की वजह से एक औरत को चाहिए कि वह अपने सिर पर अधीनता की निशानी रखे।[1]

11 फिर भी, प्रभु के इंतज़ाम में न औरत आदमी के बिना है, न आदमी औरत के बिना। 12 इसलिए कि जैसे औरत आदमी से निकली है,[2] वैसे ही आदमी औरत के ज़रिए आया है, लेकिन सबकुछ परमेश्वर से निकला है।[3] 13 तुम खुद ही फैसला करो: क्या यह सही है कि एक औरत बिना सिर ढके परमेश्वर से प्रार्थना करे? 14 क्या यह स्वाभाविक नहीं कि अगर एक आदमी के बाल लंबे हों तो यह उसके लिए अपमान की बात होती है? 15 लेकिन अगर एक औरत के बाल लंबे हों, तो ये उसकी शोभा हैं? क्योंकि उसे ओढ़नी के बजाय उसके बाल दिए गए हैं। 16 लेकिन अगर कोई किसी दूसरे दस्तूर को मानने के लिए बहस करे, तो वह जान ले कि हमारे बीच और परमेश्वर की मंडलियों के बीच कोई और दस्तूर नहीं।

17 मगर ये हिदायतें देते वक्त, मैं तुम्हारी तारीफ नहीं करता क्योंकि जब तुम इकट्ठा होते हो, तो भला होने से ज़्यादा बुरा होता है। 18 सबसे पहले तो मेरे सुनने में आया है कि जब तुम मंडली में इकट्ठा होते हो, तो तुम्हारे बीच फूट होती है और कुछ हद तक मैं इस बात पर यकीन भी करता हूँ। 19 तुम्हारे बीच गुट भी ज़रूर होंगे[4] और इससे तुम्हारे बीच वे लोग भी साफ नज़र आएँगे जिन पर परमेश्वर की मंज़ूरी है।

20 जब तुम प्रभु के संध्या-भोज के लिए एक जगह इकट्ठा होते हो, तो असल में तुम भोज खाने के लिए इकट्ठा नहीं होते।[5] 21 क्योंकि प्रभु के संध्या-भोज से पहले तुममें से कुछ लोग शाम का खाना खा चुके होते हैं, इसलिए कोई

11:2 *या "दस्तूर।"

अध्य. 10
1 रोम 15:2 फिल 2:4
2 1कुर 9:22

अध्य. 11
3 फिल 3:17 2थि 3:9
4 रोम 14:9 इफ 4:15 कुल 2:10
5 इफ 5:23 1पत 3:1
6 1कुर 15:27, 28
7 योए 2:28 प्रेष 21:8, 9
8 उत 1:27
9 उत 2:22, 23
10 उत 2:18

दूसरा कॉल.
1 1कुर 4:9
2 उत 2:21, 22
3 1कुर 8:6
4 प्रेष 20:29, 30 1कुर 1:12 1ती 4:1 2पत 2:1
5 लूक 22:19, 20

भूखा होता है तो कोई पीकर धुत्त होता
है। 22 क्या खाने-पीने के लिए तुम्हारे
घर नहीं हैं? या क्या तुम परमेश्वर की
मंडली को तुच्छ समझते हो और जिनके
पास कुछ नहीं उन्हें शर्मिंदा करते हो? मैं
तुमसे क्या कहूँ? क्या मैं तुम्हारी तारीफ
करूँ? मैं इस बात में तुम्हारी तारीफ नहीं
करता।

23 जो बात प्रभु ने मुझे बतायी थी,
वही मैंने तुम्हें सिखायी थी कि जिस रात[1]
प्रभु यीशु के साथ विश्वासघात करके उसे
पकड़वाया जानेवाला था, उसने एक रोटी
ली 24 और प्रार्थना में धन्यवाद देने के
बाद, उसे तोड़ा और कहा, "यह मेरे
शरीर की निशानी है,[2] जो तुम्हारी खातिर
दिया जाना है। मेरी याद में ऐसा ही
किया करना।"[3] 25 जब वे शाम का
खाना खा चुके, तो उसने प्याला लेकर भी
ऐसा ही किया[4] और कहा, "यह प्याला
उस नए करार की निशानी है[5] जिसे मेरे
खून से पक्का किया जाएगा।[6] जब कभी
तुम इसे पीते हो तो मेरी याद में ऐसा
करो।"[7] 26 जब कभी तुम यह रोटी
खाते हो और यह प्याला पीते हो, तो तुम
उसकी मौत का ऐलान करते हो और ऐसा
तुम प्रभु के आने तक करते रहोगे।

27 इसलिए हर कोई जो अयोग्य
दशा में रोटी खाता या प्रभु के प्याले में
से पीता है, वह प्रभु के शरीर और
खून के मामले में दोषी ठहरेगा। 28 एक
आदमी पहले अपनी जाँच करे कि वह इस
लायक है या नहीं,[8] इसके बाद ही वह
रोटी में से खाए और प्याले में से पीए।
29 इसलिए कि जो प्रभु के शरीर के
मायने समझे बिना खाता और पीता है,
वह खुद पर सज़ा लाता है। 30 इसी-
लिए तुम्हारे बीच बहुत-से लोग कम-
ज़ोर और बीमार हैं और कई मौत की नींद
सो रहे हैं।*[1] 31 लेकिन अगर हम खुद
की जाँच करें कि हम असल में क्या हैं, तो
हम दोषी नहीं ठहरेंगे। 32 और जब हम
दोषी ठहरते हैं, तो यहोवा* हमें सुधार-
ता है[2] ताकि हम दुनिया के साथ सज़ा
न पाएँ।[3] 33 इसलिए मेरे भाइयो, जब
तुम इसे खाने के लिए इकट्ठा होते हो, तो
एक-दूसरे का इंतज़ार करो। 34 अगर
कोई भूखा है, तो वह घर पर खाए ताकि
तुम्हारा इकट्ठा होना सज़ा का कारण न
बने।[4] बाकी बातें जब मैं वहाँ आऊँगा तब
सुधारूँगा।

12 अब भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम्हें
पवित्र शक्ति से मिलनेवाले वर-
दानों[5] के बारे में अच्छी तरह मालूम हो।
2 तुम जानते हो कि जब तुम इस दुनिया
के थे,* तो तुम्हें गुमराह किया गया था
और गूँगी मूर्तियों की पूजा करने के लिए
बहकाया गया था[6] और वे तुम्हें जहाँ चाहे
वहाँ ले जाती थीं। 3 मैं चाहता हूँ कि
तुम यह जान लो कि जब कोई परमेश्वर
की पवित्र शक्ति से उभारा जाता है, तो
वह यह नहीं कहता, "यीशु शापित है!"
और न ही कोई पवित्र शक्ति के बिना यह
कह सकता है, "यीशु प्रभु है!"[7]

4 वरदान तो अलग-अलग तरह के
हैं, मगर पवित्र शक्ति एक ही है।[8]
5 सेवाएँ अलग-अलग तरह की हैं,[9]
फिर भी प्रभु एक ही है। 6 और जो
काम हो रहे हैं वे अलग-अलग तरह के हैं,
फिर भी परमेश्वर एक ही है जो सब लोगों
से ये काम करवाता है।[10] 7 मगर हर
किसी में जिस तरह पवित्र शक्ति काम
करती हुई दिखायी देती है, उसका मकसद

अध्य. 11
1 मत 26:20; लूक 22:14
2 मत 26:26; मर 14:22; रोम 7:4; 1कुर 10:17
3 लूक 22:19
4 मत 26:27; मर 14:23; 1कुर 10:16
5 यिर्म 31:31; इब्र 8:8; इब्र 9:15
6 लूक 22:20; इब्र 9:13, 14; 1पत 1:18, 19
7 निर्ग 12:14
8 2कुर 13:5

दूसरा कॉल.
1 1थि 5:6
2 इब्र 12:5
3 2पत 2:20; 2पत 3:7
4 1कुर 11:29

अध्य. 12
5 1कुर 14:1
6 भज 115:5; हब 2:18; 1कुर 8:4; गल 4:8; 1थि 1:9
7 1यूह 4:2, 3
8 इफ 4:4
9 इफ 4:11
10 1पत 4:11

11:30 *ज़ाहिर है कि यहाँ बताया जा रहा है कि परमेश्वर के साथ उनका रिश्ता टूट चुका था। **11:32** *अति. क5 देखें। **12:2** *यानी अविश्वासी।

सबको फायदा पहुँचाना है।[1] 8 जैसे, किसी को पवित्र शक्ति के ज़रिए बुद्धि की बातें* बोलने का वरदान मिला है, तो दूसरे को उसी शक्ति से ज्ञान की बातें बोलने का, 9 किसी को उसी शक्ति से विश्वास का वरदान मिला है,[2] किसी को उसी शक्ति से चंगा करने का,[3] 10 किसी को शक्तिशाली काम करने का,[4] किसी को भविष्यवाणी करने का, किसी को प्रेरित वचनों को परखने का,[5] किसी को अलग-अलग भाषा* बोलने का[6] और किसी को भाषाओं का अनुवाद करके समझाने# का वरदान मिला है।[7] 11 मगर ये सारे काम वही एक पवित्र शक्ति करती है और हरेक को जो वरदान देना चाहती है वह देती है।

12 इसलिए कि जैसे शरीर एक होता है मगर उसके कई अंग होते हैं और शरीर के अंग चाहे बहुत-से हों, फिर भी सब मिलकर एक ही शरीर हैं,[8] वैसे ही मसीह भी है। 13 चाहे यहूदी हो या यूनानी, चाहे गुलाम हो या आज़ाद, हम सबने एक शरीर बनने के लिए एक ही पवित्र शक्ति से बपतिस्मा लिया है और हम सभी को एक ही पवित्र शक्ति दी गयी।

14 वाकई, शरीर एक अंग से नहीं बल्कि कई अंगों से मिलकर बनता है।[9] 15 अगर पाँव कहे, “मैं हाथ नहीं हूँ इसलिए मैं शरीर का हिस्सा नहीं,” तो क्या वह इस वजह से शरीर का हिस्सा नहीं है? 16 और अगर कान कहे, “मैं आँख नहीं हूँ इसलिए मैं शरीर का हिस्सा नहीं,” तो क्या वह इस वजह से शरीर का हिस्सा नहीं? 17 अगर सारा शरीर आँख होता, तो हम कैसे सुन पाते? अगर सारा शरीर कान होता, तो हम कैसे सूँघ पाते? 18 मगर परमेश्वर को जैसा सही लगा, उसने शरीर में हर अंग को उसकी अपनी जगह पर रखा है।

19 अगर वे सब-के-सब एक ही अंग होते, तो क्या वह शरीर होता? 20 मगर अब वे बहुत-से अंग हैं, फिर भी एक ही शरीर है। 21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, “मुझे तेरी कोई ज़रूरत नहीं,” या सिर पैरों से नहीं कह सकता, “मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं।” 22 इसके बजाय, शरीर के जो अंग दूसरों से कमज़ोर लगते हैं, वे असल में बहुत ज़रूरी हैं। 23 और शरीर के जिन हिस्सों को हम कम आदर के लायक समझते हैं, उन्हीं को हम ढककर ज़्यादा आदर देते हैं।[1] इस तरह शरीर के हमारे जो हिस्से इतने सुंदर नहीं हैं उनके साथ हम गरिमा से पेश आते हैं 24 जबकि हमारे सुंदर अंगों को ऐसी देखभाल की ज़रूरत नहीं होती। फिर भी, परमेश्वर ने शरीर की रचना इस तरह की है कि जिस अंग को आदर की कमी है उसे और ज़्यादा आदर मिले 25 ताकि शरीर में कोई फूट न हो, बल्कि इसके अंग एक-दूसरे की फिक्र करें।[2] 26 अगर एक अंग को तकलीफ होती है, तो बाकी सभी अंग उसके साथ तकलीफ उठाते हैं।[3] या अगर एक अंग इज़्ज़त पाता है, तो बाकी सभी अंग उसके साथ खुश होते हैं।[4]

27 तुम मसीह का शरीर हो[5] और तुममें से हरेक उसका एक अंग है।[6] 28 और परमेश्वर ने मंडली में हरेक को उसकी अपनी जगह दी है, पहले प्रेषित,[7] दूसरे भविष्यवक्ता,[8] तीसरे शिक्षक,[9] उनके बाद शक्तिशाली काम करने-वाले,[10] फिर बीमारियों को ठीक करने का वरदान रखनेवाले,[11] मदद के लिए सेवाएँ देनेवाले, सही राह दिखाने

अध्य. 12
1 1कुर 14:26
2 1कुर 13:2
3 प्रेष 3:5-8 प्रेष 28:8, 9
4 इब्र 2:3, 4
5 1यूह 4:1
6 प्रेष 10:45, 46 1कुर 14:18
7 1कुर 14:26
8 रोम 12:4, 5
9 इफ 4:16

दूसरा कॉल.
1 उत 3:7, 21
2 रोम 12:10 गल 6:2 इफ 4:25
3 इब्र 13:3
4 रोम 12:15
5 इफ 1:22, 23
6 रोम 12:4, 5
7 इफ 2:20
8 प्रेष 13:1
9 इफ 4:11
10 गल 3:5
11 प्रेष 5:16

12:8 *या “का संदेश।” **12:10** *या “दूसरी ज़बान।” #या “अनुवाद करने।”

की काबिलीयत रखनेवाले[1] और अलग-
अलग भाषा बोलनेवाले।[2] 29 तो क्या
सभी प्रेषित हैं? क्या सभी भविष्यवक्ता
हैं? क्या सभी शिक्षक हैं? क्या सभी
शक्तिशाली काम करते हैं? 30 क्या
सबके पास बीमारियों को ठीक करने का
वरदान है? क्या सबके पास दूसरी भाषाएँ
बोलने का वरदान है?[3] क्या सभी अनु-
वाद करके समझाते हैं?[4] 31 तुम पर-
मेश्वर से और भी बड़े-बड़े वरदान पाने
की कोशिश* करते रहो।[5] मगर अब मैं
तुम्हें सबसे बेहतरीन राह दिखाता हूँ।[6]

13 अगर मैं इंसानों और स्वर्गदूतों
की भाषाएँ बोलूँ, मगर मुझमें
प्यार न हो, तो मैं टनटनाती घंटी
या झनझनाती झाँझ हूँ। 2 और अगर
मुझे भविष्यवाणी करने का वरदान मिला
है और मेरे पास सारे पवित्र रहस्यों की
समझ और सारा ज्ञान है[7] और मुझमें
इतना विश्वास है कि मैं पहाड़ों को भी
यहाँ से वहाँ हटा* सकता हूँ, लेकिन
मुझमें प्यार नहीं तो मैं कुछ भी नहीं।#[8]
3 अगर मैं अपनी सारी संपत्ति दूसरों को
खिलाने के लिए दे दूँ[9] और अपना शरीर
बलिदान कर दूँ कि मैं घमंड कर सकूँ,
लेकिन मुझमें प्यार न हो[10] तो मुझे कोई
फायदा नहीं होगा।

4 प्यार[11] सब्र रखता है[12] और कृपा
करता है।[13] प्यार जलन नहीं रखता,[14]
डींगें नहीं मारता, घमंड से नहीं फूलता,[15]
5 गलत* व्यवहार नहीं करता,[16] सिर्फ
अपने फायदे की नहीं सोचता,[17] भड़क
नहीं उठता।[18] यह चोट# का हिसाब नहीं
रखता।[19] 6 यह बुराई से खुश नहीं
होता,[1] बल्कि सच्चाई से खुशी पाता है।
7 यह सबकुछ बरदाश्त कर लेता है,[2]
सब बातों पर यकीन करता है,[3] सब बातों
की आशा रखता है,[4] सबकुछ धीरज से
सह लेता है।[5]

8 प्यार कभी नहीं मिटता।* अगर
भविष्यवाणी के वरदान हों तो वे मिट
जाएँगे, दूसरी भाषाएँ बोलने# का वरदान
हो तो वह खत्म हो जाएगा, ज्ञान हो तो
वह मिट जाएगा 9 इसलिए कि हमारा
ज्ञान अधूरा है[6] और हमारी भविष्यवाणी
अधूरी है। 10 लेकिन जब वह जो पूरा
है आएगा, तो जो अधूरा है वह मिट
जाएगा। 11 जब मैं बच्चा था तो बच्चों
की तरह बात करता था, बच्चों की तरह
सोचता था, बच्चों जैसी समझ रखता था।
मगर अब मैं बड़ा हो गया हूँ, इसलिए
मैंने बचपना छोड़ दिया है। 12 अभी
हम धुँधला आकार देखते हैं, मानो हम
एक धातु के आईने में देख रहे हों, मगर
उस वक्त आमने-सामने एकदम साफ-
साफ देखेंगे। अभी मेरे पास अधूरा ज्ञान
है मगर उस वक्त मेरे पास पूरा* ज्ञान
होगा, ठीक जैसे परमेश्वर मेरे बारे में पूरी
तरह जानता है। 13 लेकिन जो तीन
बातें बाकी रह जाएँगी, वे हैं विश्वास,
आशा और प्यार, मगर इन तीनों में सबसे
बड़ा है प्यार।[7]

14 एक-दूसरे से जी-जान से प्यार
करो, साथ ही, तुम परमेश्वर
से मिलनेवाले वरदान पाने की कोशिश*
करते रहो, खासकर भविष्यवाणी करने
का वरदान।[8] 2 जो दूसरी भाषा बोलता
है वह इंसानों से नहीं बल्कि परमेश्वर
से बात करता है, क्योंकि वह पवित्र

12:31; 14:1 *या "जोश से कोशिश।" **13:2** *या "यहाँ से निकालकर वहाँ लगा।" #या "मैं बेकार हूँ।" **13:5** *या "बेरुखा।" #या "नुकसान।"

13:8 *या "कभी नाकाम नहीं होता।" #यानी चमत्कार से दूसरी भाषाएँ बोलना। **13:12** *या "सही।"

अध्य. 12
1 इब्र 13:17
2 प्रेष 2:6, 7
3 1कुर 14:4
4 1कुर 14:5
5 1कुर 14:1
6 1कुर 13:8

अध्य. 13
7 1कुर 12:8
8 1यूह 4:20
9 मत 6:2
10 2कुर 9:7
11 1यूह 4:8
12 1थि 5:14
13 रोम 13:10, इफ 4:32
14 गल 5:26
15 1पत 5:5
16 रोम 13:13, 1कुर 14:40
17 1कुर 10:24, फिल 2:4
18 मत 5:39, याकू 1:19
19 इफ 4:32, कुल 3:13

दूसरा कॉल.
1 रोम 12:9
2 1पत 4:8
3 प्रेष 17:11
4 रोम 8:25, रोम 12:12
5 1थि 1:3
6 नीत 4:18
7 मत 22:37, रोम 13:10

अध्य. 14
8 1थि 5:20

शक्ति के ज़रिए पवित्र रहस्य[1] बताता तो
है मगर कोई समझता नहीं।[2] 3 लेकिन
जो भविष्यवाणी करता है वह अपनी बातों
से लोगों को मज़बूत करता है, उनकी
हिम्मत बँधाता है और उन्हें दिलासा देता
है। 4 जो दूसरी भाषा बोलता है वह
सिर्फ खुद को मज़बूत करता है, मगर
जो भविष्यवाणी करता है वह मंडली को
मज़बूत करता है। 5 मैं चाहता तो यह
हूँ कि तुम सब दूसरी भाषाएँ बोलो,[3] मगर
मेरे हिसाब से बेहतर यह होगा कि तुम
भविष्यवाणी करो।[4] दरअसल भविष्य-
वाणी करनेवाला, दूसरी भाषाएँ बोलने-
वाले से कहीं बढ़कर है। क्योंकि दूसरी
भाषाएँ बोलनेवाला अगर अपनी बातों
का अनुवाद करके न समझाए, तो उसकी
बातों से मंडली मज़बूत नहीं होगी।
6 मगर भाइयो, अगर मैं इस वक्त तुम्हारे
पास आकर दूसरी भाषाएँ बोलूँ, मगर पर-
मेश्वर का दिया संदेश न सुनाऊँ[5] या तुम्हें
ज्ञान न दूँ[6] या भविष्यवाणी न सुनाऊँ या
कोई शिक्षा न दूँ, तो क्या इससे तुम्हारा
भला होगा?

7 यह ऐसा होगा मानो बाँसुरी या सुर-
मंडल जैसे साज़ बजाए जा रहे हों मगर
उनके सुर-तान में कोई अंतर न हो। ऐसे
में यह कैसे मालूम पड़ेगा कि बाँसुरी या
सुरमंडल पर कौन-सी धुन बज रही
है? 8 अगर तुरही की पुकार साफ न
हो, तो लड़ाई के लिए कौन तैयार होगा?
9 उसी तरह, अगर तुम अपनी ज़बान से
ऐसी बोली न बोलो जो आसानी से समझ
आए, तो तुम्हारी बात कौन समझेगा?
तुम तो हवा से बातें करनेवाले ठहरोगे।
10 दुनिया में चाहे कितनी ही बोलियाँ
क्यों न हों, मगर एक भी बोली ऐसी नहीं
जिसका कोई मतलब न हो। 11 अगर
मैं एक आदमी की बोली नहीं समझ-
ता, तो मैं उसके लिए एक विदेशी जैसा
हूँ और वह भी मेरे लिए विदेशी जैसा है।
12 तुम भी जो पवित्र शक्ति के वरदान
पाने की ज़बरदस्त इच्छा रखते हो, इन्हें
बहुतायत में पाने की कोशिश करो ताकि
मंडली मज़बूत हो सके।[1]

13 इसलिए जो दूसरी भाषा में बात
करता है वह प्रार्थना करे कि वह
उसका अनुवाद करके समझा* सके।[2]
14 क्योंकि अगर मैं दूसरी भाषा में
प्रार्थना कर रहा हूँ, तो मैं पवित्र शक्ति
का वरदान पाने की वजह से प्रार्थना कर
रहा हूँ, मगर मेरा दिमाग उसे नहीं समझ-
ता। 15 तो फिर क्या किया जाए? मैं
पवित्र शक्ति का वरदान पाने की वजह
से प्रार्थना करूँगा, पर साथ ही मैं अपने
दिमाग से समझते हुए भी प्रार्थना करूँगा।
मैं पवित्र शक्ति के वरदान की वजह से
तारीफ के गीत गाऊँगा, मगर मैं अपने
दिमाग से समझते हुए भी इन्हें गाऊँगा।
16 वरना, अगर तू पवित्र शक्ति के वर-
दान की वजह से प्रार्थना में तारीफ करे,
तो तुम्हारे बीच जो आम इंसान है वह तेरी
धन्यवाद की प्रार्थना के लिए "आमीन"
कैसे कहेगा? उसे तो समझ ही नहीं
आएगा कि तू क्या कह रहा है। 17 हाँ,
यह सच है कि तू बहुत बढ़िया तरीके
से प्रार्थना में धन्यवाद देता है, मगर उस
दूसरे इंसान को इससे फायदा नहीं होता।
18 मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ
कि मैं तुम सबसे ज़्यादा भाषाएँ बोल
सकता हूँ। 19 फिर भी, मैं एक मंडली
में दूसरी भाषा में दस हज़ार शब्द बोलने
के बजाय, अपने दिमाग से पाँच ऐसे शब्द
कहना पसंद करूँगा जो समझ में आते हैं
ताकि दूसरों को कुछ सिखा सकूँ।*[3]

अध्य. 14
1 1कुर 13:2
2 1कुर 14:5
3 1कुर 12:30
4 योए 2:28; प्रेष 2:17; प्रेष 21:8, 9
5 गल 1:11, 12; गल 2:2
6 1कुर 12:8

दूसरा कॉल.
1 1कुर 12:7; 1कुर 14:4, 26
2 1कुर 12:8, 10; 1कुर 14:5
3 1कुर 14:4

14:13 *या "अनुवाद कर।" **14:19** *या "ज़बानी तौर पर सिखा सकूँ।"

20 भाइयो, सोचने-समझने की काबि-
लीयत में बच्चों जैसे नादान मत बनो,[1]
बल्कि बुराई के मामले में बच्चे रहो[2]
और सोचने-समझने की काबिलीयत में
सयाने बनो।[3] 21 कानून में लिखा है,
"यहोवा* कहता है, 'मैं इन लोगों से विदे-
शियों की भाषाओं और अजनबियों की
बोली में बात करूँगा, फिर भी वे मेरी बात
पर ध्यान नहीं देंगे।'"[4] 22 इसलिए
दूसरी भाषाएँ विश्वासियों के लिए नहीं
बल्कि अविश्वासियों के लिए एक निशानी
हैं,[5] जबकि भविष्यवाणी अविश्वासियों के
लिए नहीं बल्कि विश्वास करनेवालों के
लिए है। 23 इसलिए अगर सारी मंडली
एक जगह इकट्ठा होती है और वे सभी
दूसरी भाषाएँ बोलते हैं और अगर आम
लोग या अविश्वासी अंदर आते हैं, तो
क्या वे यह नहीं कहेंगे कि तुम पागल हो?
24 लेकिन अगर तुम सभी भविष्यवाणी
करते हो और कोई अविश्वासी या आम
इंसान अंदर आता है, तो तुम सबकी
बातों से उसका सुधार होगा और उसकी
बारीकी से जाँच होगी। 25 उसके दिल
में जो छिपा है उसका खुलासा हो जाएगा
और वह मुँह के बल गिरकर यह कहते हुए
परमेश्वर की उपासना करेगा, "परमेश्वर
सचमुच तुम्हारे बीच है।"[6]

26 तो फिर भाइयो, क्या किया जाना
चाहिए? जब तुम इकट्ठा होते हो, तो
किसी के पास परमेश्वर की तारीफ
का गीत होता है, किसी के पास सिखाने
का वरदान, किसी के पास परमेश्वर का
संदेश होता है, किसी के पास दूसरी
भाषा बोलने का वरदान और किसी
के पास उसका अनुवाद करके सम-
झाने का वरदान होता है।[7] सबकुछ
एक-दूसरे का हौसला बढ़ाने के लिए
किया जाए। 27 अगर दूसरी भाषा
बोलनेवाले हों तो ऐसे लोग ज़्यादा-से-
ज़्यादा दो या तीन हों और वे बारी-
बारी से बोलें और कोई अनुवाद करके
उनकी बात समझाए।*[1] 28 लेकिन
अगर अनुवाद करके समझानेवाला*
कोई न हो, तो वे मंडली में चुप रहें
और मन-ही-मन खुद से और परमेश्वर
से बात करें। 29 भविष्यवक्ताओं में से
दो या तीन[2] बोलें और दूसरे उनकी
बातों का मतलब समझें। 30 लेकिन
अगर वहाँ बैठे हुए किसी और को पर-
मेश्वर का कोई संदेश मिलता है, तो
जो बोल रहा है वह चुप हो जाए।
31 इसलिए कि तुम सब एक-एक करके
भविष्यवाणी कर सकते हो ताकि सभी
सीख सकें और सबकी हिम्मत बँधे।[3]
32 भविष्यवक्ताओं को पवित्र शक्ति
से भविष्यवाणी करने का जो वरदान
मिला है उस पर उन्हें काबू रखना है।
33 इसलिए कि परमेश्वर गड़बड़ी का
नहीं, बल्कि शांति का परमेश्वर है।[4]

जैसे पवित्र जनों की सारी मंडलियों में
होता है, 34 वैसे ही मंडलियों में औरतें
चुप रहें क्योंकि उन्हें बोलने की इजाज़त
नहीं है।[5] इसके बजाय वे अधीन रहें,[6]
ठीक जैसा कानून भी कहता है।
35 अगर वे कुछ जानना चाहती हैं, तो वे
घर पर अपने-अपने पति से सवाल करें,
क्योंकि एक औरत का मंडली के सामने
बोलना अपमान की बात है।

36 क्या परमेश्वर के वचन की शुरू-
आत तुमसे हुई थी या यह सिर्फ तुम्हें ही
मिला था?

37 अगर कोई सोचता है कि वह एक
भविष्यवक्ता है या उसे पवित्र शक्ति का

अध्य. 14
1 इफ 4:14
2 रोम 16:19
3 इब्र 5:13, 14
4 यश 28:11, 12
5 प्रेष 2:4, 13
6 यश 45:14; जक 8:23
7 1कुर 12:8, 10

दूसरा कॉल.
1 1कुर 14:5
2 प्रेष 13:1
3 इब्र 10:24, 25
4 1कुर 14:40; कुल 2:5
5 1ती 2:11, 12
6 1कुर 11:3; इफ 5:22; कुल 3:18; तीत 2:5; 1पत 3:1

14:21 *अति. क5 देखें।

14:27 *या "कोई अनुवाद करे।" 14:28 *या "अनुवादक।"

वरदान मिला है, तो वह इस बात को स्वीकार करे कि जो मैं तुम्हें लिख रहा हूँ वह प्रभु की आज्ञा है। **38** लेकिन अगर कोई इन बातों को ठुकराता है तो उसे भी ठुकरा दिया जाएगा।* **39** इसलिए मेरे भाइयो, भविष्यवाणी करने में मेहनत करते रहो,[1] पर साथ ही किसी को दूसरी भाषा बोलने से मत रोको।[2] **40** मगर सब बातें कायदे से और अच्छे इंतज़ाम के मुताबिक* हों।[3]

15 भाइयो, अब मैं तुम्हें वही खुशखबरी याद दिला रहा हूँ जो मैंने तुम्हें सुनायी थी[4] और जिसे तुमने स्वीकार किया था और जिसके पक्ष में तुम अब तक खड़े भी हो। **2** इस खुशखबरी से तुम्हारा उद्धार होगा बशर्ते तुम इस पर अपनी पकड़ मज़बूत बनाए रखो, वरना तुम्हारा विश्वासी बनना बेकार होगा।

3 इसलिए कि जो बातें मुझे सिखायी गयी थीं और जो मैंने तुम तक पहुँचायी हैं, उनमें सबसे ज़रूरी यह है कि जैसा शास्त्र में लिखा है, मसीह हमारे पापों के लिए मरा[5] **4** और उसे दफनाया गया।[6] और जैसा शास्त्र में लिखा था[7] उसे तीसरे दिन[8] ज़िंदा किया गया।[9] **5** वह कैफा* के सामने और फिर बारहों के सामने प्रकट हुआ।[10] **6** उसके बाद वह एक ही वक्त पर 500 से ज़्यादा भाइयों के सामने प्रकट हुआ,[11] जिनमें से ज़्यादातर आज भी हमारे साथ हैं, मगर कुछ मौत की नींद सो गए हैं। **7** इसके बाद वह याकूब के सामने प्रकट हुआ,[12] फिर सभी प्रेषितों के सामने।[13] **8** आखिर में वह मेरे सामने भी प्रकट हुआ,[1] जबकि मैं वक्त से पहले पैदा हुए बच्चे जैसा था।

9 मैं प्रेषितों में सबसे छोटा हूँ, यहाँ तक कि प्रेषित कहलाने के भी लायक नहीं हूँ क्योंकि मैंने परमेश्वर की मंडली पर ज़ुल्म किया।[2] **10** मगर आज मैं जो हूँ वह परमेश्वर की महा-कृपा से हूँ। और मेरे लिए उसकी महा-कृपा बेकार साबित नहीं हुई क्योंकि मैंने बाकियों से ज़्यादा मेहनत की है, फिर भी यह मेरी वजह से नहीं, बल्कि परमेश्वर की उस महा-कृपा की वजह से हुआ है जो मुझ पर है। **11** लेकिन चाहे मेरी बात करो या उनकी, हम इसी बात का प्रचार कर रहे हैं और तुमने भी इसी पर यकीन किया है।

12 जब मसीह के बारे में यही प्रचार किया जा रहा है कि उसे मरे हुओं में से ज़िंदा किया गया है,[3] तो तुममें से कुछ यह कैसे कहते हैं कि मरे हुओं को ज़िंदा नहीं किया जाएगा? **13** अगर मरे हुओं को ज़िंदा नहीं किया जाएगा, तो इसका मतलब मसीह को भी मरे हुओं में से ज़िंदा नहीं किया गया है। **14** अगर मसीह ज़िंदा नहीं किया गया, तो हमारा प्रचार करना वाकई बेकार है और तुम्हारा विश्वास भी बेकार है। **15** इतना ही नहीं, हम परमेश्वर के बारे में झूठी गवाही दे रहे हैं[4] कि उसने मसीह को ज़िंदा किया है।[5] क्योंकि अगर यह बात सच है कि मरे हुओं को ज़िंदा नहीं किया जाएगा, तो इसका मतलब परमेश्वर ने मसीह को भी ज़िंदा नहीं किया है। **16** इसलिए कि अगर मरे हुए ज़िंदा नहीं किए जाएँगे, तो मसीह को भी नहीं उठाया गया। **17** और अगर मसीह ज़िंदा नहीं किया गया, तो तुम्हारा विश्वास बेकार है और तुम अब भी अपने पापों में पड़े हुए हो।[6]

अध्य. 14
1 1थि 5:20
2 1कुर 14:27
3 1कुर 14:33; कुल 2:5

अध्य. 15
4 प्रेष 18:1, 11
5 भज 22:15; यश 53:8, 12; दान 9:26; 1पत 2:24
6 यश 53:9; मत 27:59, 60
7 भज 16:10
8 यो 1:17; लूक 24:46
9 मत 28:7
10 मत 10:2; लूक 24:33, 34; यूह 20:26
11 मत 28:16, 17
12 प्रेष 12:17
13 प्रेष 1:3, 6

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 9:3-5
2 प्रेष 8:3; गल 1:13
3 प्रेष 4:2; प्रेष 17:31
4 प्रेष 3:15
5 प्रेष 2:24; प्रेष 4:10; प्रेष 13:30, 31
6 रोम 4:25; इब्र 7:25

14:38 *या शायद, “अगर कोई अनजान है, तो वह अनजान ही रहेगा।” **14:40** *या “सही क्रम से।” **15:5** *पतरस भी कहलाता था।

18 और मसीह के जो चेले मौत की नींद
सो गए हैं, वे भी पूरी तरह मिट गए।[1]
19 अगर हमने सिर्फ इसी ज़िंदगी के
लिए मसीह से आशा रखी है, फिर तो हम
सबसे ज़्यादा तरस खाने लायक हैं।

20 मगर सच तो यह है कि मसीह
को मरे हुओं में से ज़िंदा किया गया है
और जो मौत की नींद सो गए हैं उनमें
वह पहला फल है।[2] **21** एक इंसान के
ज़रिए मौत आयी,[3] इसलिए एक इंसान
के ज़रिए ही मरे हुए ज़िंदा किए जाएँगे।[4]
22 ठीक जैसे आदम की वजह से सभी
मर रहे हैं,[5] वैसे ही मसीह की बदौलत
सभी ज़िंदा किए जाएँगे।[6] **23** मगर हर
कोई एक सही क्रम में: पहले मसीह जो
पहला फल है।[7] इसके बाद वे जो मसीह
के हैं, उसकी मौजूदगी के दौरान ज़िंदा
किए जाएँगे।[8] **24** फिर अंत में जब वह
सभी सरकारों, अधिकारों और ताकतों
को मिटा चुका होगा, तब वह अपने पर-
मेश्वर और पिता के हाथ में राज सौंप
देगा।[9] **25** इसलिए कि उसका तब तक
राजा बनकर राज करना ज़रूरी है जब
तक कि परमेश्वर सारे दुश्मनों को उसके
पैरों तले नहीं कर देता।[10] **26** सबसे
आखिरी दुश्मन जो मिटा दिया जाएगा,
वह है मौत।[11] **27** परमेश्वर ने "सब-
कुछ उसके पैरों तले कर दिया है।"[12]
मगर जब वह कहता है, 'सबकुछ पैरों तले
कर दिया गया है,'[13] तो ज़ाहिर है कि
जिस परमेश्वर ने सबकुछ उसके अधीन
कर दिया वह खुद इसमें शामिल नहीं
है।[14] **28** मगर जब सबकुछ बेटे के
अधीन कर दिया जाएगा, तब बेटा भी
अपने आपको परमेश्वर के अधीन कर
देगा जिसने सबकुछ उसके अधीन किया
था[15] ताकि परमेश्वर ही सबके लिए सब-
कुछ हो।[16]

29 तो फिर उनका क्या होगा जो मौत
के लिए बपतिस्मा लेते हैं?[1] अगर मरे
हुए ज़िंदा ही नहीं किए जाएँगे, तो वे
मौत के लिए बपतिस्मा ही क्यों ले रहे हैं?
30 हम भी क्यों हर घड़ी* जोखिम उठाते
हैं?[2] **31** भाइयो, जितना यह सच है
कि मैं हमारे प्रभु मसीह यीशु में तुम पर
गर्व करता हूँ, उतना ही यह भी सच है
कि मैं हर दिन मौत का सामना करता हूँ।
32 अगर बाकी इंसानों की तरह* मैं भी
इफिसुस[3] में जंगली जानवरों से लड़ा,
तो मुझे क्या फायदा? अगर मरे हुओं
को ज़िंदा नहीं किया जाएगा तो "आओ
हम खाएँ-पीएँ क्योंकि कल तो मरना
ही है।"[4] **33** धोखा न खाओ। बुरी
संगति अच्छी आदतें* बिगाड़ देती है।[5]
34 नेक काम करने के लिए होश में आ
जाओ और पाप करने में मत लगे रहो,
क्योंकि कुछ लोग परमेश्वर के बारे में
कोई ज्ञान नहीं रखते। मैं तुम्हें शर्म दिलाने
के लिए यह कह रहा हूँ।

35 मगर शायद कोई कहे, "मरे हुओं
को कैसे ज़िंदा किया जाएगा? वे किस
तरह के शरीर में ज़िंदा होंगे?"[6] **36** अरे
मूर्ख इंसान! तू जो बोता है वह जब तक
पहले मर न जाए, जीवन नहीं पाता।
37 तू जो बोता है वह उगा हुआ पौधा
नहीं बल्कि एक बीज होता है, फिर चाहे
वह गेहूँ का बीज हो या कोई और बीज।
38 मगर परमेश्वर को जैसा सही लगता
है, वह उस बीज को बढ़ाता है और
जब वह पौधा बनता है तो दूसरे पौधों से
अलग होता है। **39** सब शरीर एक जैसे
नहीं होते। इंसानों का शरीर अलग
होता है, जानवरों का शरीर अलग।

अध्य. 15
1 प्रेष 7:59; 1कुर 15:14; 1पत 1:3
2 प्रेष 26:23; कुल 1:18
3 उत 3:17, 19
4 यूह 11:25
5 रोम 5:12
6 रोम 5:17; रोम 6:23
7 प्रक 1:5
8 मत 24:3; 1थि 4:16
9 दान 2:44
10 भज 110:1, 2
11 प्रक 20:14
12 भज 8:6; इफ 1:22
13 इब्र 2:8
14 1पत 3:22
15 यूह 14:28
16 1कुर 3:23

दूसरा कॉल.
1 रोम 6:4
2 रोम 8:36; 2कुर 11:23-27
3 2कुर 1:8
4 यश 22:13
5 नीत 13:20; 1कुर 5:6
6 1यूह 3:2

15:30 *या "हर समय।" **15:32** *या शायद, "इंसानी नज़रिए से।" **15:33** *या "अच्छे उसूलों को।"

पक्षियों का शरीर अलग होता है और मछ-
लियों का शरीर अलग। **40** जो स्वर्ग में
हैं उनका शरीर धरती पर रहनेवालों के
शरीर से अलग होता है।[1] जो स्वर्ग में हैं
उनके शरीर का तेज एक किस्म का है और
धरती पर रहनेवालों के शरीर का तेज
दूसरे किस्म का। **41** सूरज का तेज एक
किस्म का है और चाँद का तेज दूसरे किस्म
का[2] और तारों का तेज और किस्म का।
दरअसल, एक तारे का तेज दूसरे तारे के
तेज से अलग होता है।

42 मरे हुओं को भी इसी तरह ज़िंदा
किया जाता है। शरीर नश्वर दशा में
बोया जाता है और अनश्वर दशा में ज़िंदा
किया जाता है।[3] **43** इसे अनादर की
दशा में बोया जाता है और महिमा की दशा
में ज़िंदा किया जाता है।[4] इसे कमज़ोर
दशा में बोया जाता है और शक्तिशाली
दशा में ज़िंदा किया जाता है।[5] **44** हाड़-
माँस का शरीर बोया जाता है और
अदृश्य शरीर देकर ज़िंदा किया जाता है।
जैसे हाड़-माँस का शरीर होता है, वैसे
ही अदृश्य शरीर भी होता है। **45** ऐसा
लिखा भी है, "पहला इंसान आदम, जीता-
जागता इंसान बना।"[6] मगर आखिरी
आदम जीवन देनेवाला अदृश्य प्राणी
बना।[7] **46** मगर पहला शरीर अदृश्य
नहीं है। पहले हाड़-माँस का शरीर है, फिर
अदृश्य शरीर है। **47** पहला आदमी
धरती से है और मिट्टी से बनाया गया
था,[8] दूसरा स्वर्ग से है।[9] **48** जैसा वह
है जो मिट्टी से बनाया गया है, वैसे ही
दूसरे हैं जो मिट्टी से बनाए गए हैं। और
जैसा वह है जो स्वर्ग से है, वैसे ही दूसरे
भी हैं जो स्वर्ग से हैं।[10] **49** और ठीक
जैसे हम उसकी छवि में हैं जो मिट्टी से बना
था,[11] वैसे ही हम उसकी छवि में भी होंगे
जो स्वर्ग से है।[12]

50 मगर भाइयो, मैं यह कहता हूँ कि
माँस और खून परमेश्वर के राज के
वारिस नहीं हो सकते। और नश्वरता,
अनश्वरता की वारिस नहीं हो सकती।
51 देखो! मैं तुम्हें एक पवित्र रहस्य
बताता हूँ: हम सभी मौत की नींद नहीं
सोएँगे, मगर हम सभी बदल जाएँगे,[1]
52 पल-भर में पलक झपकते ही,
आखिरी तुरही फूँकने के दौरान ऐसा
होगा।[2] तुरही फूँकी जाएगी और
मरे हुए अनश्वर दशा में ज़िंदा किए जाएँगे
और हम बदल जाएँगे। **53** इसलिए कि
यह शरीर जो नश्वर है इसे अनश्वरता को
पहनना है[3] और यह शरीर जो मरनहार
है इसे अमरता को पहनना है।[4] **54** जब
यह जो नश्वर है, अनश्वरता को पहन
लेता है और यह जो मरनहार है अमरता
को पहन लेता है, तब यह बात पूरी होगी
जो लिखी है, "मौत को हमेशा के लिए
निगल लिया गया है।"[5] **55** "हे मौत,
तेरी जीत कहाँ है? हे मौत, तेरा डंक कहाँ
है?"[6] **56** पाप वह डंक है जो मौत देता
है[7] और पाप को ताकत देनेवाला, कानून
है।*[8] **57** मगर परमेश्वर का धन्यवाद
हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के ज़रिए
हमें जीत दिलाता है![9]

58 इसलिए मेरे प्यारे भाइयो, अटल
बनो,[10] डटे रहो और प्रभु की सेवा
में हमेशा तुम्हारे पास बहुत काम हो,[11]
क्योंकि तुम जानते हो कि प्रभु में तुम्हारी
कड़ी मेहनत बेकार नहीं है।[12]

16 पवित्र जनों के लिए जो दान
इकट्ठा किया जा रहा है,[13] उसके
बारे में मैंने गलातिया की मंडलियों को
जो आदेश दिए हैं, तुम भी उनका पालन
कर सकते हो। **2** हर हफ्ते के पहले

अध्य. 15
1 मत 28:3, लूक 24:4, इब्र 2:6, 7
2 उत 1:16
3 रोम 2:6, 7
4 कुल 3:4
5 प्रक 20:4
6 उत 2:7
7 यूह 5:26, 1ती 3:16
8 उत 2:7
9 यूह 3:13
10 फिल 3:20, 21
11 उत 5:3
12 रोम 8:29

दूसरा कॉल.
1 1थि 4:17
2 1थि 4:16
3 रोम 2:6, 7
4 2कुर 5:4
5 यश 25:8, प्रक 20:6
6 हो 13:14
7 रोम 6:23
8 रोम 3:20, रोम 7:12, 13
9 यूह 3:16, प्रेष 4:12
10 कुल 1:23, इब्र 3:14, 2पत 3:17
11 रोम 12:11
12 2इत 15:7, 1कुर 3:8, प्रक 14:13

अध्य. 16
13 प्रेष 24:17, रोम 15:26, 2कुर 8:3, 4

15:56 *या "और कानून, पाप को ताकत देता है।"

दिन तुममें से हर कोई अपनी आमदनी के मुताबिक कुछ अलग रखे ताकि जब मैं आऊँ तो उस वक्त दान जमा न करना पड़े। **3** मगर जब मैं वहाँ आऊँगा, तो तुम अपनी चिट्ठियों में जिन आदमियों की सिफारिश करते हो, उन्हें भेजूँगा[1] ताकि तुम खुशी-खुशी जो तोहफा दोगे, उसे वे यरूशलेम पहुँचा दें। **4** लेकिन अगर मेरे लिए भी वहाँ जाना मुनासिब हुआ, तो मैं उनके साथ जाऊँगा।

5 मगर मैं मकिदुनिया का दौरा करने के बाद तुम्हारे पास आऊँगा क्योंकि मैं मकिदुनिया से होकर आऊँगा[2] **6** और शायद मैं तुम्हारे यहाँ ठहरूँ या फिर तुम्हारे यहाँ सर्दियाँ भी बिताऊँ और इसके बाद जहाँ मैं जाऊँगा वहाँ के लिए तुम कुछ दूर तक मुझे छोड़ आना। **7** मैं नहीं चाहता कि मैं अभी रास्ते में तुमसे बस मुलाकात करके चला जाऊँ, बल्कि यह चाहता हूँ कि अगर यहोवा* इजाज़त दे तो मैं तुम्हारे साथ कुछ वक्त बिताऊँ।[3] **8** मगर मैं पिन्तेकुस्त के त्योहार तक इफिसुस[4] में ही रहूँगा **9** क्योंकि मेरे लिए मौके का एक दरवाज़ा खोला गया है कि मैं और ज़्यादा सेवा कर सकूँ,[5] मगर विरोधी भी बहुत हैं।

10 अगर तीमुथियुस[6] वहाँ आए, तो ध्यान रखना कि तुम्हारे पास रहते वक्त उसे किसी बात का डर न हो क्योंकि वह भी मेरी तरह यहोवा* का काम कर रहा है।[7] **11** इसलिए कोई उसे तुच्छ न समझे। तुम उसे कुछ दूर तक सही-सलामत पहुँचा देना ताकि वह यहाँ मेरे पास आ सके क्योंकि मैं भाइयों के साथ उसका इंतज़ार कर रहा हूँ।

12 अब हमारे भाई अपुल्लोस[8] की बात कहूँ, तो मैंने उससे बहुत गुज़ारिश की कि भाइयों के साथ तुम्हारे पास आए। अभी तुम्हारे पास आने की उसकी इच्छा नहीं थी, मगर जब उसे मौका मिलेगा तब वह तुम्हारे पास आएगा।

13 जागते रहो,[1] विश्वास में मज़बूत खड़े रहो,[2] दिलेर बनो,*[3] शक्तिशाली बनते जाओ।[4] **14** तुम्हारे बीच सारे काम प्यार से किए जाएँ।[5]

15 अब भाइयो, मैं तुम्हें एक और बात के लिए बढ़ावा देता हूँ। तुम जानते हो कि स्तिफनास का घराना अखाया के पहले फल हैं और वे पवित्र जनों की सेवा में लगे रहते हैं। **16** तुम भी ऐसे लोगों के अधीन रहो और उन सबके भी अधीन रहो जो सहयोग देते हैं और कड़ी मेहनत करते हैं।[6] **17** मैं स्तिफनास[7] और फूरतूनातुस और अखइखुस के यहाँ रहने से बेहद खुश हूँ, क्योंकि उन्होंने तुम्हारे यहाँ न होने की कमी पूरी कर दी है। **18** उन्होंने तुम्हारा और मेरा जी तरो-ताज़ा किया है। इसलिए ऐसे आदमियों का आदर किया करो।

19 एशिया की मंडलियाँ तुम्हें नमस्कार कहती हैं। अक्विला और प्रिसका, साथ ही उनके घर में इकट्ठा होनेवाली मंडली[8] भी प्रभु में तुम्हें दिल से नमस्कार कहती है। **20** सभी भाइयों का तुम्हें नमस्कार। पवित्र चुंबन से एक-दूसरे को नमस्कार करो।

21 मैं पौलुस खुद अपने हाथ से अब तुम्हें नमस्कार लिखता हूँ।

22 अगर कोई प्रभु से लगाव नहीं रखता तो वह शापित हो। हे हमारे प्रभु, आ! **23** प्रभु यीशु की महा-कृपा तुम पर बनी रहे। **24** तुम सब जो मसीह यीशु में हो, तुम्हें मेरा प्यार।

16:7, 10 *अति. क5 देखें।

16:13 *या "मरदानगी से काम करो।"

अध्य. 16
1 2कुर 8:19
2 प्रेष 19:21; 2कुर 1:15, 16
3 प्रेष 20:2
4 प्रेष 19:1
5 प्रेष 19:10, 11
6 प्रेष 16:1, 2
7 फिल 2:19, 20
8 प्रेष 18:24, 25

दूसरा कॉल.
1 1थि 5:6
2 1कुर 15:58; फिल 1:27
3 प्रेष 4:29
4 इफ 6:10; कुल 1:11
5 1कुर 13:4; 1पत 4:8
6 फिल 2:29, 30; 1थि 5:12; 1ती 5:17
7 1कुर 1:16
8 रोम 16:3, 5; फिले 2

कुरिंथियों

के नाम दूसरी चिट्ठी

सारांश

1 मैं पौलुस जो परमेश्वर की मरज़ी से
मसीह यीशु का एक प्रेषित हूँ, हमारे
भाई तीमुथियुस[1] के साथ कुरिंथ के
तुम भाइयों को लिख रहा हूँ जो पर-
मेश्वर की मंडली हो। यह चिट्ठी उन
सभी पवित्र जनों के लिए भी है जो पूरे
अखाया[2] में हैं।
2 हमारे पिता यानी परमेश्वर की
तरफ से और प्रभु यीशु मसीह की तरफ
से तुम्हें महा-कृपा और शांति मिले।
3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के पर-
मेश्वर और पिता[1] की तारीफ हो।
वह कोमल दया का पिता है[2] और
हर तरह का दिलासा देनेवाला परमेश्वर

अध्य. 1
1 प्रेष 16:1, 2; फिल 2:19, 20
2 1थि 1:8

दूसरा कॉल.
1 यूह 20:17
2 निर्ग 34:6; भज 86:5; मी 7:18

है।[1] 4 वह हमारी सब परीक्षाओं में हमें
दिलासा* देता है[2] ताकि हम किसी भी
तरह की परीक्षा का सामना करनेवालों
को वही दिलासा दे सकें[3] जो हमें पर-
मेश्वर से मिलता है।[4] 5 इसलिए कि
जैसे मसीह की खातिर हम बहुत दुख
झेलते हैं,[5] वैसे मसीह के ज़रिए हम
बहुत दिलासा भी पाते हैं। 6 चाहे हम
परीक्षाओं का सामना करें, तो भी यह
तुम्हारे दिलासे और उद्धार के लिए है।
और जब हम दिलासा पाते हैं तो इससे
तुम्हें भी दिलासा मिलता है। यह दिलासा
तुम्हें वे सारे दुख सहने में मदद देगा
जो हम भी सह रहे हैं। 7 तुम्हारे बारे
में हमारी आशा अटल है क्योंकि हम
जानते हैं कि जैसे तुम हमारी तरह दुख
झेलते हो वैसे ही तुम हमारी तरह दिलासा
भी पाओगे।[6]

8 भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम इस
बात से अनजान रहो कि हमने
एशिया प्रांत में कैसी मुसीबत झेली थी।[7]
हम इतनी तकलीफों से गुज़रे कि उन्हें
सहना हमारी बरदाश्त से बाहर था। हमें
तो लगा कि हम शायद ज़िंदा ही नहीं
बचेंगे।[8] 9 हमें तो यहाँ तक लगा कि
हमें मौत की सज़ा सुना दी गयी है। यह
इसलिए हुआ ताकि हम खुद पर नहीं
बल्कि उस परमेश्वर पर भरोसा रखें[9] जो
मरे हुओं को ज़िंदा करता है। 10 उसने
हमें मौत के बहुत बड़े खतरे से बचाया है
और बचाएगा। हमारी आशा है कि वह
हमें आगे भी बचाता रहेगा।[10] 11 तुम
भी हमारे लिए मिन्नतें करके हमारी मदद
कर सकते हो[11] ताकि बहुतों की प्रार्थ-
नाओं की वजह से हम पर कृपा की जाए
और बदले में बहुत-से लोग हमारी तरफ
से धन्यवाद दे सकें।[12]

12 हमें इस बात का गर्व है और
हमारा ज़मीर भी गवाही देता है कि हम
दुनिया में और खासकर तुम्हारे बीच ऐसी
पवित्रता और सीधाई से रहे हैं जो पर-
मेश्वर सिखाता है और हम दुनियावी
बुद्धि पर नहीं[1] बल्कि परमेश्वर की महा-
कृपा पर निर्भर रहे हैं। 13 दरअसल,
हम उन बातों को छोड़ तुम्हें और कुछ
नहीं लिख रहे जिन्हें तुम पढ़कर* समझ
सकते हो। और मैं आशा करता हूँ
कि तुम इन बातों को पूरी तरह# समझोगे
14 ठीक जैसे कुछ हद तक तुम समझते
भी हो कि हम तुम्हारे लिए गर्व करने की
वजह हैं और तुम भी हमारे प्रभु यीशु के
दिन हमारे लिए गर्व करने की वजह ठह-
रोगे।

15 इसी भरोसे के साथ मैंने सोचा था
कि तुम्हारे पास दूसरी बार आऊँ ताकि
तुम्हें खुशी का एक और मौका मिले।*
16 क्योंकि मैंने सोचा था कि मकिदुनिया
जाते वक्त और वहाँ से लौटते वक्त
रास्ते में तुमसे मिलूँगा और फिर तुम
कुछ दूर आकर मुझे यहूदिया के लिए
विदा करोगे।[2] 17 जब मैंने यह इरादा
किया था तो क्या मैंने बिना सोचे-
समझे ऐसा किया था? जब मैं कुछ
इरादा करता हूँ तो क्या सिर्फ अपनी
मन-मरज़ी करने के लिए ऐसा करता
हूँ कि पहले तो "हाँ-हाँ" कहूँ मगर फिर
"न-न"? 18 मगर जैसे परमेश्वर पर
भरोसा किया जा सकता है, वैसे ही तुम
हम पर भी भरोसा कर सकते हो कि जब
हम तुमसे "हाँ" कहते हैं, तो उसका मत-
लब "न" नहीं होता। 19 इसलिए कि

अध्य. 1
1 यश 51:3 रोम 15:5
2 भज 23:4 2कुर 7:6
3 इफ 6:21, 22 1थि 4:18
4 रोम 15:4 2थि 2:16, 17
5 1कुर 4:11-13 कुल 1:24
6 रोम 8:18 2ती 2:11, 12
7 प्रेष 20:18, 19
8 1कुर 15:32
9 2कुर 12:10
10 भज 34:7, 19 2ती 4:18 2पत 2:9
11 फिल 1:19 फिले 22
12 प्रेष 12:5 रोम 15:30-32

दूसरा कॉल.
1 1कुर 2:4, 5
2 1कुर 16:5, 6

1:4 *या "हौसला।"

1:13 *या शायद, "जिन्हें तुम पहले से अच्छी तरह जानते हो।" #शा., "आखिर तक।" **1:15** *या शायद, "ताकि तुम्हें दो बार फायदा हो।"

परमेश्वर का बेटा मसीह यीशु, जिसका हमने यानी मैंने, सिलवानुस* और तीमुथियुस[1] ने तुम्हारे बीच प्रचार किया था, वह पहले “हाँ” और फिर “न” नहीं हुआ बल्कि उसके मामले में “हाँ” का मतलब हमेशा “हाँ” हुआ है। 20 इसलिए कि परमेश्वर के चाहे कितने ही वादे हों, वे सब उसी के ज़रिए “हाँ” हुए हैं।[2] इसलिए उसी के ज़रिए हम परमेश्वर से “आमीन” कहते हैं[3] और इससे परमेश्वर की महिमा होती है। 21 मगर जो इस बात का पक्का यकीन दिलाता है कि तुम और हम मसीह के हैं और जिसने हमारा अभिषेक किया है, वह परमेश्वर है।[4] 22 उसने हम पर अपनी मुहर भी लगायी है[5] और जो आनेवाला है उसका बयाना दिया* है यानी पवित्र शक्ति,[6] जो उसने हमारे दिलों में दी है।

23 मैं अब तक कुरिंथ सिर्फ इसलिए नहीं आया क्योंकि मैं तुम्हें और ज़्यादा दुखी नहीं करना चाहता था। अगर यह बात झूठ है तो परमेश्वर मेरे खिलाफ गवाही दे। 24 ऐसी बात नहीं कि हम तुम्हारे विश्वास के मालिक हैं[7] बल्कि हम तुम्हारी खुशी के लिए तुम्हारे सहकर्मी हैं, क्योंकि तुम अपने ही विश्वास की वजह से खड़े हो।

2 मैंने ठान लिया है कि जब मैं दोबारा तुम्हारे पास आऊँ तो तुम्हें उदास न करूँ। 2 इसलिए कि अगर मैं तुम्हें उदास कर दूँ तो मुझे कौन खुश करेगा, सिवा उसके जिसे मैंने उदास किया है? 3 मैंने तुम्हें यह सब इसलिए लिखा है कि जब मैं आऊँ तो जिन लोगों से मुझे खुशी मिलनी चाहिए उनकी वजह से मैं उदास न हो जाऊँ, क्योंकि मुझे भरोसा है कि जिन बातों से मुझे खुशी मिलती है उन्हीं बातों से तुम्हें भी खुशी मिलती है। 4 मैंने बड़ी तकलीफ और दिल की तड़प के साथ आँसू बहा-बहाकर तुम्हें लिखा था, इसलिए नहीं कि तुम उदास हो जाओ[1] बल्कि इसलिए कि तुम जानो कि मेरा प्यार तुम्हारे लिए कितना गहरा है।

5 अब अगर किसी ने उदास किया है,[2] तो उसने मुझे नहीं बल्कि तुम सबको कुछ हद तक उदास किया है। मैं बहुत कड़े शब्दों में नहीं कहना चाहता। 6 उस आदमी को ज़्यादातर लोगों ने जो फटकार लगायी है वह काफी है। 7 अब तुम्हें उस पर कृपा करके उसे माफ करना चाहिए और उसे दिलासा देना चाहिए,[3] कहीं ऐसा न हो कि वह हद-से-ज़्यादा उदासी में डूब जाए।[4] 8 इसलिए मैं तुम्हें बढ़ावा देता हूँ कि तुम उस आदमी को अपने प्यार का यकीन दिलाओ।[5] 9 मैं तुम्हें यह चिट्ठी इसलिए भी लिख रहा हूँ ताकि मुझे पता चले कि तुम सब बातों में आज्ञा मानते हो या नहीं। 10 तुम जिस किसी को माफ करते हो, उसे मैं भी माफ करता हूँ। दरअसल मैंने जिस किसी को माफ किया है (अगर मैंने कोई अपराध माफ किया है), वह मैंने मसीह के सामने तुम्हारी खातिर किया है 11 ताकि शैतान हम पर हावी न हो जाए*[6] क्योंकि हम उसकी चालबाज़ियों# से अनजान नहीं।[7]

12 जब मैं मसीह के बारे में खुशखबरी सुनाने त्रोआस पहुँचा[8] और प्रभु की सेवा में मेरे लिए मौके का एक दरवाज़ा खोला गया, 13 तो मेरे भाई तीतुस[9] को वहाँ न पाने की वजह से मेरा

1:19 *सीलास भी कहलाता था। **1:22** *या “निशानी दी; पक्का सबूत दिया।”

2:11 *या “हमें चकमा न दे।” #या “इरादों; साज़िशों।”

अध्य. 1
1 प्रेष 18:5
2 रोम 15:8
3 प्रक 3:14
4 1यूह 2:20, 27
5 इफ 4:30
6 रोम 8:23, 2कुर 5:5, इफ 1:13, 14
7 इब्र 13:17, 1पत 5:2, 3

दूसरा कॉल.

अध्य. 2
1 2कुर 7:8, 9
2 1कुर 5:1
3 लूक 15:23, 24
4 इब्र 12:12
5 रोम 12:10
6 लूक 22:31, 2ती 2:26
7 इफ 6:11, 12, 1पत 5:8
8 प्रेष 16:8
9 गल 2:3, तीत 1:4

जी बेचैन हो गया। तब मैंने वहाँ चेलों
से अलविदा कहा और मैं मकिदुनिया[1] के
लिए रवाना हो गया।

14 मगर परमेश्‍वर का धन्यवाद हो
जो हमेशा हमारे आगे-आगे चलता हुआ
हमें जीत के जुलूस में मसीह के संग लिए
चलता है और हमारे ज़रिए अपने ज्ञान
की खुशबू हर जगह फैलाता है!*
15 इसलिए कि परमेश्‍वर के सामने हम
उद्धार पानेवालों और नाश होनेवालों के
लिए मसीह के बारे में समाचार की खुशबू
हैं, 16 यानी नाश होनेवालों के लिए
वह गंध* हैं जो मौत की तरफ ले जाती
है[2] और उद्धार पानेवालों के लिए ऐसी
खुशबू हैं जो जीवन की तरफ ले जाती है।
और कौन है जो इस सेवा के लिए ज़रूरी
योग्यता रखता है? 17 हम योग्यता
रखते हैं क्योंकि हम परमेश्‍वर के वचन
का सौदा करनेवाले* नहीं,[3] जैसा कई
लोग करते हैं। इसके बजाय परमेश्‍वर की
तरफ से भेजे हुओं के नाते हम सीधाई से
बोलते हैं, हाँ, परमेश्‍वर को हाज़िर जान-
कर मसीह के संग बोलते हैं।

3 क्या हमें एक बार फिर नए सिरे से
तुम्हें अपना परिचय देना होगा मानो
तुम हमें जानते ही नहीं? या कुछ लोगों
की तरह, क्या हमें भी अपने लिए
तुम्हें सिफारिशी चिट्ठियाँ देनी होंगी या
तुमसे सिफारिशी चिट्ठियाँ लेनी होंगी?
2 हमारी सिफारिशी चिट्ठी तुम खुद हो,[4]
जो हमारे दिलों पर लिखी है और जिसे
सारी दुनिया जानती और पढ़ती है।
3 यह बात ज़ाहिर है कि तुम मसीह की
चिट्ठी हो जिसे हम सेवकों[5] ने स्याही से
नहीं, बल्कि जीवित परमेश्‍वर की पवित्र
शक्‍ति से लिखा है और इसे पत्थर की
पटियाओं[1] पर नहीं बल्कि दिलों पर
लिखा है।[2]

4 मसीह के ज़रिए परमेश्‍वर के सामने
हम यही भरोसा रखते हैं। 5 हम यह
नहीं कहते कि हममें जो ज़रूरी योग्यता है
यह हमारी अपनी वजह से है, बल्कि
हममें जो ज़रूरी योग्यता है वह परमेश्‍वर
की बदौलत है।[3] 6 वाकई उसी ने हमें
ज़रूरत के हिसाब से योग्य बनाया है कि
हम किसी लिखित कानून[4] के नहीं, बल्कि
एक नए करार के[5] और पवित्र शक्‍ति
के सेवक बनें। क्योंकि लिखित कानून
तो मौत की सज़ा सुनाता है[6] मगर पवित्र
शक्‍ति जीवन देती है।[7]

7 यही नहीं, अगर वह कानून जो मौत
देता है और जो पत्थरों पर खोदकर लिखा
गया था,[8] इतनी महिमा के साथ दिया
गया कि इसराएली लोग मूसा के चेहरे
से निकलनेवाले तेज की वजह से उसे नहीं
देख सके,[9] जबकि वह ऐसा तेज था जिसे
मिट जाना था, 8 तो पवित्र शक्‍ति और
भी ज़्यादा महिमा के साथ क्यों नहीं दी
जाएगी?[10] 9 अगर दोषी ठहरानेवाला
कानून[11] महिमा से भरपूर था,[12] तो नेक
ठहरानेवाली सेवा और भी कितनी महिमा
से भरपूर होगी![13] 10 दरअसल जिसे
एक वक्‍त महिमा से भरपूर किया गया
था, उसकी महिमा छीन ली गयी क्योंकि
जो महिमा बाद में आयी वह उससे भी
बढ़कर थी।[14] 11 तो जिसे मिटा दिया
जाना था अगर उसे महिमा के साथ लाया
गया था,[15] तो जो रहनेवाला है उसकी
महिमा और कितनी बढ़कर होगी![16]

12 हमारे पास ऐसी आशा है[17] इस-
लिए हम बड़ी हिम्मत के साथ बेझिझक
बोलते हैं 13 और हम वह नहीं करते
जो मूसा करता था। वह अपना चेहरा

अध्य. 2
1 2कुर 7:5
2 यूह 15:19; 2कुर 4:3; 1पत 2:7, 8
3 2कुर 4:2

अध्य. 3
4 1कुर 9:2
5 1कुर 3:5

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 31:18; निर्ग 34:1
2 नीत 3:3; नीत 7:3
3 निर्ग 4:12, 15; फिल 2:13
4 रोम 13:9
5 इब्र 8:6
6 गल 3:10
7 यूह 6:63
8 निर्ग 31:18; निर्ग 32:16
9 निर्ग 34:29, 30
10 प्रेष 2:1, 4; 1पत 4:14
11 व्य 27:26
12 निर्ग 34:35
13 रोम 3:21, 22
14 कुल 2:16, 17
15 निर्ग 19:16; निर्ग 24:17
16 इब्र 12:22-24
17 1पत 1:3, 4

2:14 *या "पर ध्यान खींचता है।" **2:16** *या "खुशबू।" **2:17** *या "व्यापार करने-
वाले; से मुनाफा कमानेवाले।"

परदे से ढक लेता था[1] ताकि इसराएली
उस कानून की महिमा को एकटक न
देख सकें जिसे बाद में मिटा दिया जाता।
14 मगर उनकी सोचने-समझने की
शक्ति मंद पड़ गयी थी।[2] आज के दिन
तक जब पुराना करार पढ़ा जाता है तो
उनके दिलों पर वही परदा पड़ा रहता है,[3]
क्योंकि वह परदा सिर्फ मसीह के ज़रिए
हटाया जा सकता है।[4] 15 असल में,
आज के दिन तक जब कभी मूसा की
किताबें पढ़कर सुनायी जाती हैं,[5] तो
उनके दिलों पर परदा पड़ा रहता है।[6]
16 मगर जब कोई पलटकर यहोवा* के
पास आता है, तो वह परदा हटा दिया
जाता है।[7] 17 यहोवा* अदृश्य है[8]
और जहाँ यहोवा* की पवित्र शक्ति है,
वहाँ आज़ादी है।[9] 18 हमारे चेहरे पर
परदा नहीं पड़ा है और हम सब आईने
की तरह यहोवा* की महिमा झलकाते
हैं। इस दौरान हमारी छवि परमेश्वर के
जैसी बनती जा रही है और हम दिनों-
दिन पहले से ज़्यादा उसकी महिमा झलका
रहे हैं, ठीक जैसे यहोवा* हमें बदलता जा
रहा है जो अदृश्य परमेश्वर है।#[10]

4 इसलिए जब हम पर ऐसी दया की
गयी कि हमें यह सेवा सौंपी गयी
है, तो हम हिम्मत नहीं हारते। 2 मगर
हमने छल-कपट के काम छोड़ दिए हैं जो
शर्मनाक हैं। हम न तो चालाकी करते हैं,
न ही परमेश्वर के वचन में मिलावट करते
हैं,[11] बल्कि सच्चाई बताकर परमेश्वर के
सामने हर इंसान के ज़मीर को भानेवाली
अच्छी मिसाल रखते हैं।[12] 3 हम जिस
खुशखबरी का ऐलान करते हैं, उस पर
अगर वाकई परदा पड़ा हुआ है, तो यह
परदा उनके लिए पड़ा है जो विनाश
की तरफ जा रहे हैं। 4 उन अविश्वा-
सियों की बुद्धि, इस दुनिया की व्यवस्था*
के ईश्वर[1] ने अंधी कर दी है[2] ताकि
मसीह जो परमेश्वर की छवि है,[3] उसके
बारे में शानदार खुशखबरी की रौशनी
उन पर न चमके।[4] 5 इसलिए कि हम
अपने बारे में नहीं, बल्कि यीशु मसीह
के बारे में प्रचार कर रहे हैं कि वह प्रभु
है और अपने बारे में यह कहते हैं कि हम
यीशु की खातिर तुम्हारे दास हैं। 6 इस-
लिए कि परमेश्वर ने ही कहा था, "अंध-
कार में से रौशनी चमके।"[5] उसी ने हमारे
दिलों पर अपनी रौशनी चमकायी है[6]
ताकि हम उन्हें परमेश्वर के उस शानदार
ज्ञान से रौशन करें जो मसीह के चेहरे से
झलकता है।

7 लेकिन हमारे पास यह खज़ाना[7]
मिट्टी के बरतनों* में है[8] ताकि यह ज़ाहिर
हो सके कि वह ताकत जो आम इंसानों
की ताकत से कहीं बढ़कर है, हमें पर-
मेश्वर की तरफ से मिली है, न कि यह
हमारी अपनी है।[9] 8 हम हर तरह से
दबाए तो जाते हैं मगर इस हद तक
नहीं कि कोई उम्मीद न बचे, उलझन में
तो होते हैं मगर इतनी उलझन में नहीं कि
कोई रास्ता नज़र न आए।*[10] 9 हम
पर ज़ुल्म तो ढाए जाते हैं मगर हमें त्यागा
नहीं जाता।[11] हम गिराए तो जाते हैं मगर
नाश नहीं किए जाते।[12] 10 हर वक्त
हमारे साथ बदसलूकी की जाती है और
हमें मौत के हवाले किया जाता है ठीक
जैसे यीशु के साथ हुआ था[13] ताकि यीशु
का जीवन हमारे शरीर में ज़ाहिर हो।
11 इसलिए कि हम जो ज़िंदा हैं, हर

अध्य. 3
1 निर्ग 34:33-35
2 रोम 11:7
3 यूह 12:40
4 रोम 7:6; इफ 2:15
5 प्रेष 15:21
6 रोम 11:8
7 निर्ग 34:34
8 यूह 4:24
9 यश 61:1; रोम 6:14; रोम 8:15; गल 5:1, 13
10 2कुर 4:6; इफ 4:23, 24; इफ 5:1

अध्य. 4
11 2कुर 2:17; गल 1:9
12 2कुर 6:3, 4

दूसरा कॉल.
1 यूह 14:30; इफ 2:2; 1यूह 5:19
2 2कुर 11:14
3 कुल 1:15; इब्र 1:3
4 यश 60:2; यूह 8:12
5 उत 1:3
6 1पत 2:9
7 2कुर 4:1
8 यश 64:8; प्रेष 9:15; 1कुर 15:47
9 2कुर 12:9, 10; फिल 4:13
10 1कुर 10:13
11 इब्र 13:5
12 प्रक 2:10
13 फिल 3:10; 1पत 4:13

3:16-18 *अति. क5 देखें। **3:18** #या शायद, "यहोवा की पवित्र शक्ति हमें बदल रही है।"

4:4 *या "ज़माने।" शब्दावली देखें। **4:7** *या "घड़ों।" **4:8** *या शायद, "हमें मायूस नहीं छोड़ा जाता।"

वक्त हमारा आमना-सामना मौत से होता है[1] ताकि यीशु का जीवन हमारे नश्वर शरीर में ज़ाहिर हो। **12** इस तरह हममें मौत काम कर रही है मगर तुममें जीवन।

13 हममें विश्वास की वही भावना है जिसके बारे में यह लिखा है, "मैंने विश्वास किया इसलिए मैंने कहा।"[2] हम भी विश्वास करते हैं और इसलिए हम बोलते हैं **14** क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने यीशु को ज़िंदा किया था वह हमें भी यीशु के साथ ज़िंदा करेगा और हमें तुम्हारे साथ उसके सामने ले जाएगा।[3] **15** यह सबकुछ तुम्हारी खातिर हुआ है ताकि ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों पर महा-कृपा हो क्योंकि बहुत-से लोग परमेश्वर का धन्यवाद कर रहे हैं जिससे उसकी महिमा हो रही है।[4]

16 इसलिए हम हार नहीं मानते। भले ही हमारा बाहर का इंसान* मिटता जा रहा है मगर हमारा अंदर का इंसान दिन-ब-दिन नया होता जा रहा है। **17** हालाँकि हमारी दुख-तकलीफें* पल-भर के लिए और हलकी हैं, मगर ये हमें ऐसी महिमा दिलाती हैं जो बेमिसाल# है और हमेशा तक कायम रहती है।[5] **18** इस दौरान हम अपनी नज़र दिखायी देनेवाली चीज़ों पर नहीं बल्कि अनदेखी चीज़ों पर टिकाए रखते हैं।[6] इसलिए कि जो चीज़ें दिखायी देती हैं वे कुछ वक्त के लिए हैं, मगर जो दिखायी नहीं देतीं वे हमेशा कायम रहती हैं।

5 हम जानते हैं कि जब धरती पर हमारा यह घर यानी शरीर का यह डेरा मिट जाएगा,[7] तब हमें परमेश्वर की तरफ से स्वर्ग में हमेशा कायम रहने-वाली इमारत मिलेगी, ऐसा घर जो हाथ से नहीं बनाया गया।[1] **2** क्योंकि हम इस घर में वाकई कराहते हैं और हमारे अंदर उसे* पहनने की दिली तमन्ना है जो हमारे लिए स्वर्ग से है#[2] **3** और जब हम उसे पहन लेंगे तो हम नंगे नहीं पाए जाएँगे। **4** दरअसल हम जो इस डेरे में हैं, हम बोझ से दबे हुए कराह-ते हैं। ऐसी बात नहीं कि हम इसे उतार-ना चाहते हैं, बल्कि स्वर्ग के उस डेरे को पहनना चाहते हैं[3] ताकि जो नश्वर है उसे जीवन निगल सके।[4] **5** जिसने हमें इसी बात के लिए तैयार किया है, वह पर-मेश्वर है।[5] जो आनेवाला है उसके बयाने* के तौर पर उसने हमें अपनी पवित्र शक्ति दी है।[6]

6 इसलिए हम हमेशा हिम्मत रखते हैं और जानते हैं कि जब तक हम इस घर जैसे शरीर में हैं, तब तक हम प्रभु से दूर हैं[7] **7** क्योंकि हम आँखों-देखी चीज़ों से नहीं बल्कि विश्वास से चलते हैं। **8** मगर हम हिम्मत रखते हैं और यही चाहते हैं कि इस इंसानी शरीर में अब न जीएँ और प्रभु के साथ निवास करें।[8] **9** इसलिए चाहे हम उसके साथ निवास करें या उससे दूर हों, हमारा यही लक्ष्य है कि हम उसे खुश करें। **10** क्योंकि हममें से हरेक को मसीह के न्याय-आसन के सामने हाज़िर होना पड़ेगा* ताकि हर किसी ने इस शरीर में रहकर जैसे काम किए हैं, फिर चाहे अच्छे हों या बुरे, उनके हिसाब से उसे बदला मिले।[9]

11 यह जानते हुए कि हमें प्रभु का डर मानना चाहिए, हम लोगों को कायल करते रहते हैं कि वे हमारी सुनें और

4:16 *या "हमारा शरीर।" **4:17** *या "परीक्षाएँ।" #शा., "वज़नदार।"

5:2 *या "उस निवास को।" #या "जो स्वर्ग का निवास है।" **5:5** *या "निशानी; पक्के सबूत।" **5:10** *या "ज़ाहिर किया जाएगा।"

अध्य. 4
1 रोम 8:36; 1कुर 4:9; 1कुर 15:31
2 भज 116:10
3 1कुर 6:14
4 2ती 2:10
5 मत 5:12; रोम 8:18
6 2कुर 5:7; इब्र 11:1

अध्य. 5
7 2पत 1:13, 14

दूसरा कॉल.
1 1कुर 15:50; फिल 3:20, 21
2 रोम 6:5; रोम 8:23; 1कुर 15:48, 49
3 1कुर 15:43, 44; फिल 1:21
4 1पत 1:3, 4
5 इफ 2:10
6 रोम 8:23; इफ 1:13, 14
7 यूह 14:3
8 फिल 1:23
9 प्रक 22:12

परमेश्‍वर अच्छी तरह जानता है कि हम
कैसे इंसान हैं। और मैं उम्मीद करता
हूँ कि तुम सबका ज़मीर भी अच्छी तरह
जान गया है कि हम कैसे इंसान हैं।
12 हम तुम्हारे सामने एक बार फिर नए
सिरे से अपनी सिफारिश नहीं कर रहे,
बल्कि तुम्हें बढ़ावा दे रहे हैं कि तुम हमारे
बारे में गर्व करो ताकि तुम उन्हें जवाब दे
सको जो दिल देखकर नहीं बल्कि सूरत
देखकर शेखी मारते हैं।[1] 13 अगर
हमारा दिमाग ठिकाने नहीं था[2] तो यह
परमेश्‍वर के लिए था, अगर हमारा
दिमाग ठीक है तो यह तुम्हारे लिए है।
14 मसीह का प्यार हमें मजबूर करता है
क्योंकि हमने यह निचोड़ निकाला है: एक
आदमी सबके लिए मरा[3] और इस तरह
सभी मर गए। 15 वह सबके लिए मरा
ताकि जो जीते हैं वे अब से खुद के लिए न
जीएँ,[4] बल्कि उसके लिए जीएँ जो उनके
लिए मरा और ज़िंदा किया गया।

16 इसलिए अब से हम किसी भी
इंसान को इंसानी नज़रिए से नहीं देखते।[5]
भले ही हम एक वक्‍त पर मसीह को
शरीर के मुताबिक जानते थे, मगर
अब उसे हरगिज़ ऐसे नहीं जानते।[6]
17 इसलिए अगर कोई मसीह के साथ
एकता में है, तो वह एक नयी सृष्टि है।[7]
पुरानी चीज़ें गुज़र चुकी हैं, देखो! नयी
चीज़ें वजूद में आयी हैं। 18 मगर सारी
चीज़ें परमेश्‍वर की तरफ से हैं जिसने
मसीह के ज़रिए अपने साथ हमारी सुलह
करवायी[8] और हमें सुलह करवाने की
सेवा दी।[9] 19 यानी यह ऐलान करने
की सेवा कि परमेश्‍वर, मसीह के ज़रिए
अपने साथ दुनिया की सुलह करवा रहा
है[10] और उसने उनके गुनाहों का उनसे
हिसाब नहीं लिया[11] और हमें सुलह का
संदेश सौंपा।[12]

20 इसलिए हम मसीह के बदले काम
करनेवाले राजदूत[1] हैं,[2] मानो परमेश्‍वर
हमारे ज़रिए गुज़ारिश कर रहा है।
मसीह के बदले काम करनेवालों के नाते
हम बिनती करते हैं, "परमेश्‍वर के साथ
सुलह कर लो।" 21 जिसने कभी पाप
नहीं किया,[3] उसे परमेश्‍वर ने हमारे लिए
पाप-बलि* ठहराया ताकि उसके ज़रिए
हम परमेश्‍वर की नज़र में नेक ठहरें।[4]

6 परमेश्‍वर के साथ काम करते हुए[5]
हम तुमसे यह भी गुज़ारिश करते हैं
कि परमेश्‍वर की महा-कृपा स्वीकार करने
के बाद उस कृपा का मकसद मत भूलो।[6]
2 इसलिए कि वह कहता है, "मंज़ूरी पाने
के वक्‍त मैंने तेरी सुनी और उद्धार के दिन
तेरी मदद की।"[7] देखो! अभी खास तौर
पर मंज़ूरी पाने का वक्‍त है। देखो! अभी
उद्धार का वह दिन है।

3 हम किसी भी तरह से ठोकर खाने
की कोई वजह नहीं देते ताकि हमारी
सेवा में कोई दोष न पाया जाए।[8]
4 हर तरह से हम परमेश्‍वर के सेवक
होने का सबूत देते हैं,[9] धीरज से कई परी-
क्षाएँ सहकर, दुख-तकलीफें, तंगी और
मुश्‍किलें झेलकर,[10] 5 मार खाकर,
कैद में रहकर,[11] दंगों का सामना करके,
कड़ी मेहनत करके, जागते हुए रातें काट-
कर, भूखे पेट रहकर,[12] 6 शुद्धता,
ज्ञान, सब्र,[13] कृपा[14] और पवित्र शक्‍ति
से, बिना कपट प्यार करके,[15] 7 सच्ची
बातें बोलकर, परमेश्‍वर की ताकत से,[16]
दाएँ* और बाएँ# हाथ में नेकी के
हथियार लेकर,[17] 8 इज़्ज़त पाने और
बेइज़्ज़त होने के समय, हमारे बारे में बुरी
खबर फैलने और अच्छी खबर फैलने के
समय। हमें धोखा देनेवाले समझा जाता है

5:21 *या "पाप।" 6:7 *शायद मारने के
लिए। #शायद खुद को बचाने के लिए।

अध्य. 5
1 2कुर 10:10
2 2कुर 11:1, 16
3 यश 53:10
मत 20:28
1ती 2:5, 6
4 रोम 14:7, 8
5 मत 12:50
6 यूह 20:17
7 गल 6:15
8 रोम 5:10
इफ 2:15, 16
कुल 1:19, 20
9 प्रेष 20:24
10 रोम 5:6
1यूह 2:1, 2
11 रोम 4:25
रोम 5:18
12 मत 28:19, 20
प्रेष 13:38, 39

दूसरा कॉल.
1 इफ 6:19, 20
2 फिल 3:20
3 इब्र 4:15
इब्र 7:26
4 रोम 1:16, 17

अध्य. 6
5 2कुर 5:20
6 रोम 2:4
7 यश 49:8
8 1कुर 9:22
9 2कुर 4:1, 2
10 2कुर 11:23
11 प्रक 2:10
12 2कुर 11:25, 27
13 कुल 3:13
1थि 5:14
14 इफ 4:32
15 रोम 12:9
16 1कुर 2:4, 5
17 2कुर 10:4
इफ 6:11

मगर हम सच्चे हैं, **9** हम अनजानों जैसे हैं फिर भी मशहूर हैं, मरने पर हैं* फिर भी देखो! हम ज़िंदा हैं,[1] हम ऐसे हैं मानो हमें सज़ा दी गयी है मगर मौत के हवाले नहीं किया गया,[2] **10** दुख मनानेवालों जैसे हैं मगर हमेशा खुश रहते हैं, गरीबों जैसे हैं फिर भी बहुतों को अमीर बनाते हैं, मानो कंगाल हैं फिर भी हमारे पास सबकुछ है।[3]

11 कुरिंथियो, हमने खुलकर तुमसे बात की है, हमने तुम्हारे लिए अपने दिलों को बड़ा किया है। **12** हमने दिल खोलकर तुमसे प्यार किया है[4] मगर तुम प्यार करने में तंगदिल हो। **13** इसलिए अपने बच्चे जानकर मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम भी अपने दिलों को बड़ा करो।[5]

14 अविश्वासियों के साथ बेमेल जुए में न जुतो।*[6] क्योंकि नेकी के साथ दुष्टता की क्या दोस्ती?[7] या रौशनी के साथ अँधेरे की क्या साझेदारी?[8] **15** और मसीह और शैतान* के बीच क्या तालमेल?[9] या एक विश्वासी# और एक अविश्वासी के बीच क्या समानता?[10] **16** और परमेश्वर के मंदिर का मूरतों[11] के साथ क्या समझौता? इसलिए कि हम जीवित परमेश्वर का एक मंदिर हैं,[12] ठीक जैसा परमेश्वर ने कहा है, "मैं उनके बीच निवास करूँगा[13] और उनके बीच चलूँगा-फिरूँगा और मैं उनका परमेश्वर बना रहूँगा और वे मेरे लोग बने रहेंगे।"[14] **17** "यहोवा* कहता है, 'इसलिए उनमें से बाहर निकल आओ और खुद को उनसे अलग करो और अशुद्ध चीज़ को छूना बंद करो,[1] तब मैं तुम्हें अपने पास ले लूँगा।'"[2] **18** "सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा* कहता है, 'और मैं तुम्हारा पिता बनूँगा[3] और तुम मेरे बेटे-बेटियाँ बनोगे।'"[4]

7 इसलिए प्यारे भाइयो, जब हमसे ये वादे किए गए हैं[5] तो आओ हम तन और मन की हर गंदगी को दूर करके खुद को शुद्ध करें[6] और परमेश्वर का डर मानते हुए पूरी हद तक पवित्रता हासिल करें।

2 हमें अपने दिलों में जगह दो।[7] हमने किसी का बुरा नहीं किया, किसी को नुकसान नहीं पहुँचाया, न ही किसी का फायदा उठाया।[8] **3** मैं यह बात तुम्हें दोषी ठहराने के लिए नहीं कहता। इसलिए कि मैंने पहले ही तुमसे कहा था कि हम चाहे जीएँ या मरें, तुम हमारे दिल में रहते हो। **4** मैं तुमसे बेझिझक खुलकर बात कर सकता हूँ। मैं तुम पर बहुत गर्व करता हूँ। मुझे पूरा दिलासा मिला है, दुख-दर्द में भी मेरा दिल खुशी से उमड़ रहा है।[9]

5 दरअसल जब हम मकिदुनिया[10] पहुँचे तो हमें बिलकुल भी चैन नहीं मिला, मगर हम हर तरह का दुख झेलते रहे। बाहर झगड़े थे और अंदर चिंताएँ थीं। **6** मगर परमेश्वर ने, जो निराश लोगों को दिलासा देता है,[11] हमें तीतुस की मौजूदगी से दिलासा दिया। **7** मगर सिर्फ तीतुस के यहाँ होने से नहीं बल्कि यह देखकर भी हमें दिलासा मिला कि उसने तुम्हारी वजह से तसल्ली पायी थी। उसने लौटकर हमें खबर दी है कि तुम मुझे देखने के लिए कितना तरस रहे हो, बहुत शोक मना रहे हो और मेरे लिए कितनी

6:9 *या "हमें मरने के लायक समझा गया।" **6:14** *या "जुड़ो।" **6:15** *शा., "बलियाल।" यह एक इब्रानी शब्द से निकला है जिसका मतलब है "निकम्मा।" #या "विश्वासयोग्य इंसान।" **6:17, 18** *अति. क5 देखें।

अध्य. 6
1 2कुर 4:10, 11
2 प्रेष 14:19; 2कुर 4:8, 9
3 फिल 4:13; प्रक 2:9
4 2कुर 12:15
5 1पत 2:17; 1यूह 4:20
6 निर्ग 23:32, 33; व्य 7:3, 4; 1रा 11:4; 1कुर 7:39
7 याकू 4:4
8 इफ 5:7, 8
9 मत 4:10; प्रक 12:7, 8
10 1कुर 10:21
11 1कुर 10:14
12 1कुर 3:16
13 निर्ग 29:45
14 लैव 26:11, 12; यहे 37:27

दूसरा कॉल.
1 यश 52:11; यिर्म 51:45; प्रक 18:4
2 यहे 20:41; 2कुर 7:1
3 2शम 7:14
4 यश 43:6; हो 1:10; यूह 1:12

अध्य. 7
5 2कुर 6:16
6 रोम 12:1; 1ती 1:5; 1ती 3:9; 1यूह 3:3
7 रोम 12:10; 2कुर 6:12, 13
8 प्रेष 20:33, 34; 2कुर 12:17
9 फिल 2:17; फिले 7
10 प्रेष 20:1
11 2कुर 1:3, 4

चिंता कर रहे हो।* यह सुनकर मुझे और
भी खुशी हुई।
8 इसलिए चाहे मैंने तुम्हें अपनी चिट्ठी
से उदास किया हो,[1] पर मुझे इसका अफ-
सोस नहीं। हाँ, शुरू में मुझे अफसोस हुआ
था, (क्योंकि थोड़ी देर के लिए ही सही,
मगर उस चिट्ठी ने तुम्हें उदास किया था)
9 मगर अब मैं खुशी मनाता हूँ इस-
लिए नहीं कि तुम सिर्फ उदास हुए थे,
बल्कि इस कदर उदास हुए कि तुमने
पश्चाताप किया। क्योंकि तुम्हारे उदास
होने से परमेश्वर खुश हुआ और तुम्हें
हमारी वजह से कोई नुकसान नहीं हुआ।
10 इसलिए कि परमेश्वर को खुश करने-
वाली उदासी पश्चाताप पैदा करती है और
यह उद्धार की ओर ले जाती है और
इससे बाद में पछताना नहीं पड़ता।[2] मगर
दुनिया के लोगों जैसी उदासी मौत लाती
है। 11 देखो! परमेश्वर को खुश करने-
वाली उदासी ने तुम्हारे अंदर कैसी उत्सुक-
ता पैदा की, हाँ, तुमने खुद पर से
कलंक दूर करने का कैसा जज़्बा दिखाया,
अपनी गलती पर तुम्हें कितना गुस्सा
आया, तुम्हारे अंदर डर पैदा हुआ, हाँ,
तुम्हारे अंदर कैसी ज़बरदस्त इच्छा और
कैसा जोश पैदा हुआ और तुमने अपनी
गलती सुधारी![3] तुमने हर तरह से साबित
किया कि तुम इस मामले में बेदाग*
हो। 12 मैंने जो चिट्ठी लिखी वह उसकी
वजह से नहीं थी जिसने बुरा काम किया
था,[4] न ही उसकी वजह से लिखी जिसके
साथ अन्याय हुआ था। बल्कि मैंने इस-
लिए लिखा ताकि परमेश्वर के सामने
यह साबित हो कि तुम हमारी बात मानने
के लिए कितने उत्सुक हो। 13 इसीलिए
हमें दिलासा मिला है।

लेकिन दिलासा पाने के अलावा हम
तीतुस को मिली खुशी की वजह से और
भी ज़्यादा खुश हुए, क्योंकि तुम सबने
उसके दिल को तरो-ताज़ा कर दिया।
14 इसलिए कि हमने तुम्हारे बारे में गर्व
के साथ तीतुस को जो बताया था उसके
लिए मुझे शर्मिंदा नहीं होना पड़ा। जिस
तरह हमारी वह सारी बातें सच थीं जो
हमने तुमसे कही थीं, उसी तरह हमने गर्व
के साथ तीतुस को जो कुछ बताया था वह
सच साबित हुआ। 15 यही नहीं, जब
वह याद करता है कि तुम सबने किस
तरह आज्ञा मानी[1] और डरते-काँपते
उसका स्वागत किया, तो तुम्हारे लिए
उसका प्यार और भी बढ़ जाता है।
16 मैं खुशी मनाता हूँ क्योंकि मुझे हर
बात में तुम पर पूरा भरोसा है।*

8 भाइयो, अब हम चाहते हैं कि तुम
परमेश्वर की उस महा-कृपा के बारे
में जानो जो मकिदुनिया की मंडलियों पर
हुई है।[2] 2 जब वे बड़ी परीक्षा के
दौरान दुख झेल रहे थे, तब अपनी घोर
गरीबी के बावजूद उन्होंने खुशी-खुशी
दान देकर अपनी दरियादिली का
सबूत दिया। 3 उन्होंने अपनी हैसियत
के हिसाब से दिया,[3] बल्कि उससे भी
ज़्यादा दिया[4] और मैं खुद इस बात का
गवाह हूँ। 4 उन्होंने खुद आगे बढ़कर
हमसे गुज़ारिश की, यहाँ तक कि वे हमसे
मिन्नतें करते रहे कि उन्हें भी पवित्र जनों
को राहत पहुँचाने के लिए दान देने का
सम्मान दिया जाए।[5] 5 उन्होंने हमारी
उम्मीद से भी बढ़कर किया, क्योंकि
उन्होंने परमेश्वर की मरज़ी के मुताबिक
खुद को पहले प्रभु के लिए और फिर
हमारे लिए दे दिया। 6 इसलिए हमने

अध्य. 7
1 2कुर 2:4
2 भज 32:5 1यूह 1:9
3 मत 3:8
4 1कुर 5:5

दूसरा कॉल.
1 2कुर 2:9 इब्र 13:17

अध्य. 8
2 रोम 15:26
3 प्रेष 11:29 2कुर 9:7
4 मर 12:43, 44
5 रोम 15:25, 26 1कुर 16:1 2कुर 9:1, 2

7:7 *शा., "तुममें जोश है।" 7:11 *या "शुद्ध; निर्दोष।"

7:16 *या शायद, "तुम्हारी वजह से मुझे बड़ी हिम्मत मिलती है।"

तीतुस को बढ़ावा दिया[1] कि वह प्यार से
दिया हुआ तुम्हारा दान इकट्ठा करने का
काम पूरा करे, जो उसने शुरू किया था।
7 इसलिए जैसे तुम हर बात में यानी
विश्वास और बोलने की काबिलीयत में,
ज्ञान और जोश में और हम तुमसे जैसा
प्यार करते हैं वैसा ही प्यार करने में धनी
हो, वैसे ही दान देने में दरियादिल बनो।[2]

8 यह कहकर मैं तुम्हें कोई हुक्म नहीं
दे रहा हूँ, बल्कि इस बात पर तुम्हारा
ध्यान खींच रहा हूँ कि दूसरे कितनी खुशी-
खुशी दान दे रहे हैं और मैं यह परखना
चाहता हूँ कि तुम्हारा प्यार कितना सच्चा
है। **9** इसलिए कि तुम हमारे प्रभु यीशु
मसीह की महा-कृपा को जानते हो कि वह
अमीर होते हुए भी तुम्हारी खातिर गरीब
बना[3] ताकि तुम उसकी गरीबी से अमीर
बन सको।

10 इस मामले में मेरी यह राय है:[4]
यह काम पूरा करना तुम्हारे ही फायदे
के लिए है, क्योंकि एक साल बीत चुका
है जब तुमने यह काम शुरू किया था
और तुमने ऐसा करने की बहुत इच्छा भी
दिखायी थी। **11** तुमने यह काम जितने
जोश के साथ शुरू किया था, उतने ही
जोश के साथ इसे पूरा भी करो। तुम्हारे
पास जो कुछ है उसके हिसाब से देकर
तुम यह काम पूरा करो। **12** इसलिए
कि अगर एक इंसान कुछ देने की इच्छा
रखता है, तो उसके पास देने के लिए
जो कुछ है उसे स्वीकार किया जाता है।[5]
उससे कुछ ऐसा देने की उम्मीद नहीं की
जाती जो उसके पास नहीं है। **13** मैं
यह इसलिए नहीं कह रहा कि दूसरे
चैन से रहें और तुम बोझ से दब जाओ।
14 बल्कि मैं चाहता हूँ कि इस वक्त
तुम्हारी बहुतायत उनकी घटी को पूरा करे
और उनकी बहुतायत भी तुम्हारी घटी को
पूरा करने के काम आए ताकि बराबरी
हो जाए। **15** ठीक जैसा लिखा भी है,
“जिसके पास ज़्यादा था उसके पास बहुत
ज़्यादा नहीं हुआ और जिसके पास कम
था उसे कम नहीं पड़ा।”[1]

16 परमेश्वर का धन्यवाद हो कि
उसकी बदौलत तीतुस भी दिल से तुम्हारी
उतनी ही फिक्र करता है जितनी हम करते
हैं,[2] **17** क्योंकि वह न सिर्फ हमारे
कहने पर तुम्हारे पास आने को राज़ी हुआ
है, बल्कि वह उत्सुक होकर खुद अपनी
मरज़ी से तुम्हारे पास आ रहा है।
18 हम उसके साथ उस भाई को भी भेज
रहे हैं जिसने खुशखबरी सुनाने के काम में
जो किया है, उसके लिए सारी मंडलियों में
उसकी तारीफ हो रही है। **19** इतना ही
नहीं, मंडलियों ने इस भाई को हमारे साथ
सफर पर जाने के लिए ठहराया है ताकि
वह हमारे साथ प्यार से दिए गए इस
तोहफे को ले जाने का काम करे। यह दान
हम प्रभु की महिमा के लिए बाँटेंगे, जो इस
बात का भी सबूत होगा कि हम दूसरों की
मदद करना चाहते हैं। **20** उदारता से
दिया गया दान पहुँचाने के मामले में हम
यह एहतियात इसलिए बरतते हैं ताकि
कोई आदमी हम पर दोष न लगा सके।[3]
21 इसलिए कि हम “न सिर्फ यहोवा*
की नज़र में बल्कि इंसानों की नज़र में
भी हर काम ईमानदारी से करने के लिए
सावधानी बरतते हैं।”[4]

22 इसके अलावा, हम उनके साथ
अपने उस भाई को भी भेज रहे हैं जिसे
हमने कई बार परखा और पाया कि वह
बहुत-सी बातों में मेहनती है। उसे भी
तुम पर बहुत भरोसा है इसलिए वह और
ज़्यादा मेहनत करेगा। **23** अगर तीतुस
के बारे में कोई भी सवाल है, तो मैं तुम्हें

अध्य. 8
1 2कुर 12:18
2 1ती 6:18
3 मत 8:20; फिल 2:7
4 1कुर 7:25
5 व्य 16:10, 17; नीत 3:27, 28

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 16:18
2 2कुर 12:18
3 1कुर 16:1
4 नीत 3:4; 1पत 2:12

8:21 *अति. क5 देखें।

बता दूँ कि वह मेरा साथी* और मेरा
सहकर्मी है जो तुम्हारे भले के लिए काम
करता है। और अगर दूसरे भाइयों के
बारे में कोई सवाल है तो याद रखो कि वे
मंडलियों के भेजे गए प्रेषित हैं और मसीह
की महिमा करते हैं। 24 इसलिए उन्हें
अपने प्यार का सबूत दो[1] और मंडलियों
के सामने दिखाओ कि हम तुम पर क्यों
गर्व करते हैं।

9 पवित्र जनों की सेवा[2] करने के बारे
में दरअसल मैं तुम्हें लिखना ज़रूरी
नहीं समझता 2 क्योंकि मैं जानता हूँ कि
तुम मदद करने के लिए तैयार हो। और
मैं मकिदुनिया के भाइयों को गर्व से बता
रहा हूँ कि अखाया के भाई पिछले एक
साल से मदद करने की इच्छा रखते हैं।
और तुम्हारे जोश ने उनमें से बहुतों के
अंदर उत्साह भर दिया है। 3 मगर मैं
भाइयों को तुम्हारे पास पहले से इसलिए
भेज रहा हूँ ताकि इस मामले में हमने
तुम्हारे बारे में जो गर्व से कहा था वह
बात कहीं खोखली साबित न हो, बल्कि
तुम वाकई तैयार पाए जाओ, ठीक जैसे
मैंने कहा था कि तुम तैयार रहोगे।
4 नहीं तो अगर मकिदुनिया के भाई मेरे
साथ वहाँ आएँ और यह पाएँ कि तुम
तैयार नहीं हो, तो तुम पर भरोसा
करने की वजह से हमें—मैं यह नहीं
कहता कि तुम्हें—शर्मिंदा होना पड़ेगा।
5 इसलिए मैंने यह ज़रूरी समझा कि
भाइयों को बहुत पहले ही तुम्हारे यहाँ
आने का बढ़ावा दूँ ताकि वे उदारता से
दिया गया तुम्हारा तोहफा तैयार रखें जिसे
देने का तुमने वादा किया था। इस तरह
यह दान उदारता से दिया गया तोहफा
होगा, न कि ऐसा जो ज़बरदस्ती वसूला
गया हो।

6 इस मामले में जो कंजूसी से बोता
है वह थोड़ा काटेगा, लेकिन जो भर-भर-
कर बोता है वह भर-भरकर काटेगा।[1]
7 हर कोई जैसा उसने अपने दिल में
ठाना है वैसा ही करे, न कुड़कुड़ाते* हुए,
न ही किसी दबाव में[2] क्योंकि परमेश्वर
खुशी-खुशी देनेवाले से प्यार करता है।[3]

8 परमेश्वर तुम पर अपनी महा-कृपा
की बौछार करने के काबिल है ताकि
तुम्हारे पास हर चीज़ बहुतायत में हो और
हर भला काम करने के लिए जो कुछ
ज़रूरी है वह भी तुम्हारे पास बहुतायत
में हो।[4] 9 (जैसा लिखा भी है, “उसने
बढ़-चढ़कर* बाँटा है, गरीबों को दिया
है। उसकी नेकी हमेशा बनी रहती है।”[5]
10 परमेश्वर जो बोनेवाले को बहुतायत
में बीज देता है और खानेवाले को रोटी
देता है, वही तुम्हें बोने के लिए बहुतायत
में बीज देगा और तुम्हारी नेकी की फसल
खूब बढ़ाएगा।) 11 हर बात में तुम्हें
आशीषें देकर मालामाल किया जा रहा
है ताकि तुम भी हर तरह से दरियादिली
दिखा सको और हमारे इस काम की वजह
से परमेश्वर को धन्यवाद दिया जा सके।
12 क्योंकि यह जन-सेवा सिर्फ इसलिए
नहीं की जाती कि पवित्र जनों की ज़रूरतें
अच्छी तरह पूरी हों,[6] बल्कि इसलिए भी
की जाती है कि परमेश्वर का बहुत
धन्यवाद किया जाए। 13 तुम राहत के
लिए यह जो सेवा करते हो, उसकी वजह
से लोग परमेश्वर की महिमा करते हैं
क्योंकि तुम मसीह के बारे में जिस खुश-
खबरी का ऐलान करते हो उसके अधीन
भी रहते हो और तुम उनके लिए और
सबके लिए दिल खोलकर दान देते हो।[7]
14 वे तुम्हारे लिए परमेश्वर से मिन्नतें

8:23 *शा., “साझेदार।”

9:7 *या “हिचकिचाते।” 9:9 *या “उदारता से।”

अध्य. 8
1 1पत 1:22; 1पत 2:17

अध्य. 9
2 रोम 15:26; 1कुर 16:1; 2कुर 9:12

दूसरा कॉल.
1 नीत 11:24; नीत 19:17; नीत 22:9; सभ 11:1; लूक 6:38
2 व्य 15:7, 10
3 निर्ग 22:29; नीत 11:25; प्रेष 20:35; इब्र 13:16
4 नीत 28:27; मला 3:10; फिल 4:18, 19
5 भज 112:9
6 रोम 15:26, 27; 2कुर 8:14
7 मत 5:16; इब्र 13:16; याकू 1:27; 1यूह 3:17

करते हैं और तुमसे प्यार करते हैं क्योंकि तुम पर परमेश्वर की अपार महा-कृपा हुई है।

15 परमेश्वर के उस मुफ्त वरदान के लिए जिसका शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता, उसका धन्यवाद हो।

10 अब मैं पौलुस खुद मसीह की कोमलता और कृपा का वास्ता देकर तुम्हें समझाता हूँ,[1] भले ही तुम्हें लगता है कि जब मैं तुम्हारे बीच रहता हूँ तो गया-गुज़रा दिखायी देता हूँ[2] और जब मैं तुम्हारे बीच नहीं होता तो तुम्हारे साथ सख्ती से पेश आता हूँ।[3] 2 मैं उम्मीद करता हूँ कि जब मैं तुम्हारे बीच रहूँगा तो मुझे तुम्हारे साथ सख्ती न बरतनी पड़े, जैसे मुझे शायद उन लोगों के साथ बरतनी पड़ेगी जिनका मानना है कि हम दुनियावी तरीके से चलते हैं। 3 हालाँकि हम भी इस दुनिया में रहते हैं, मगर हम दुनियावी तरीके से युद्ध नहीं लड़ते। 4 क्योंकि हमारे युद्ध के हथियार दुनियावी नहीं हैं,[4] बल्कि ऐसे शक्तिशाली हथियार हैं जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं[5] ताकि हम गहराई तक समायी हुई बातों को जड़ से उखाड़ सकें। 5 हम ऐसी दलीलों को और हर ऐसी ऊँची बात को जो परमेश्वर के ज्ञान के खिलाफ खड़ी की जाती है,[6] उलट देते हैं और हरेक विचार को जीतकर उसे कैद कर लेते हैं ताकि उसे मसीह की आज्ञा माननेवाला बना दें। 6 हम आज्ञा न माननेवाले हर इंसान को सज़ा देने के लिए तैयार हैं,[7] मगर इससे पहले तुम साबित करो कि तुम पूरी तरह आज्ञा मानते हो।

7 तुम बाहरी रूप देखकर राय कायम करते हो। अगर किसी को पूरा भरोसा है कि वह मसीह का है, तो वह इस सच्चाई पर दोबारा गौर करे कि जैसे वह मसीह का है, वैसे ही हम भी मसीह के हैं। 8 प्रभु ने हमें यह अधिकार दिया है कि हम तुम्हारी हिम्मत बँधाएँ, न कि तुम्हें गिराएँ।[1] इस अधिकार के बारे में अगर मैं कुछ ज़्यादा ही गर्व करूँ, तो भी मुझे शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा। 9 मैं नहीं चाहता कि तुम्हें ऐसा लगे कि मैं अपनी चिट्ठियों से तुम्हें डराने की कोशिश कर रहा हूँ। 10 वे कहते हैं, "उसकी चिट्ठियाँ तो वज़नदार और दमदार हैं, मगर जब वह हमारे बीच होता है तो कमज़ोर जान पड़ता है और उसकी बातें सुनने लायक नहीं होतीं।" 11 जो यह बात कहता है, वह जान ले कि हम दूर रहकर अपनी चिट्ठियों में जो कहते हैं वही हम तुम्हारे बीच रहते वक्त करके भी दिखाएँगे।[2] 12 इसलिए कि हम नहीं चाहते कि हम अपनी गिनती उन लोगों में करें या अपनी तुलना उनसे करें जो अपनी तारीफ खुद करते हैं।[3] जब वे अपने ही नाप से खुद को नापते हैं और अपनी तुलना खुद से करते हैं, तो दिखाते हैं कि उनमें समझ नहीं है।[4]

13 मगर हम उस सीमा से बाहर जाकर शेखी नहीं मारेंगे जो हमारे लिए ठहरायी गयी है। परमेश्वर ने नापकर जो इलाका हमें दिया है, जिसमें तुम भी आते हो, उसकी सीमा में रहते हुए हम गर्व करेंगे।[5] 14 हम वाकई अपनी सीमा के दायरे से आगे नहीं बढ़ रहे, मानो तुम हमारे इलाके में नहीं आते हो। क्योंकि हमने ही सबसे पहले तुम तक मसीह की खुशखबरी पहुँचायी थी।[6] 15 बेशक, हम ठहरायी सीमा से बाहर जाकर किसी दूसरे की मेहनत पर शेखी नहीं मार रहे, बल्कि हम यह आशा रखते हैं कि जैसे-जैसे तुम्हारा विश्वास बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे हमारा काम उस इलाके में

अध्या. 10

1 मत 11:29, 30
2 1कुर 2:3
3 2कुर 10:10
4 मत 26:52; 1ती 1:18, 19
5 2कुर 6:4, 7
6 1कुर 1:19, 20; 1कुर 3:19, 20; 2ती 2:24, 25
7 1ती 1:20

दूसरा कॉल.

1 इब्र 13:17
2 2कुर 13:2
3 2कुर 5:12
4 नीत 26:12; गल 6:3
5 प्रेष 9:15; गल 2:8
6 1कुर 3:10; 1कुर 4:15

तरक्की करता जाएगा जो हमें दिया गया
है। इसके बाद हमारा काम बढ़ता जाएगा
16 ताकि हम तुमसे आगे के देशों में भी
खुशखबरी सुना सकें और हम किसी और
के काम पर शेखी न मारें जो उसके इलाके
में पहले ही हो चुका है। 17 "मगर जो
गर्व करता है, वह यहोवा* के बारे में
गर्व करे।"[1] 18 इसलिए कि जो अपनी
तारीफ खुद करता है वह नहीं[2] बल्कि
जिसकी तारीफ यहोवा* करता है, वही
उसकी मंज़ूरी पाता है।[3]

11 काश! तुम मेरी थोड़ी-सी मूर्खता
बरदाश्त कर लेते। सच तो यह
है कि तुम मुझे बरदाश्त कर भी रहे
हो! 2 मुझे तुम्हारे लिए बहुत चिंता* है,
जैसी चिंता परमेश्वर को है क्योंकि मैंने ही
तुम्हारी सगाई एक आदमी यानी मसीह से
करवायी है ताकि तुम्हें एक पवित्र कुँवारी
की तरह उसे सौंप दूँ।[4] 3 मगर मुझे
डर है कि जैसे साँप ने चालाकी से हव्वा
को बहका लिया था,[5] वैसे ही तुम्हारी
सोच न बिगड़ जाए और तुम्हारी सीधाई
और पवित्रता भ्रष्ट न हो जाए जिसे
पाने का हकदार मसीह है।[6] 4 अगर
कोई आकर किसी और यीशु का प्रचार
करता है जिसका प्रचार हमने नहीं किया,
या कोई आकर तुम्हारे अंदर ऐसा रुझान
पैदा करना चाहता है जो तुम्हारे रुझान*
से हटकर है, या ऐसी खुशखबरी सुनाता
है जो उस खुशखबरी से अलग है
जो तुमने स्वीकार की थी,[7] तो तुम बड़ी
आसानी से उसकी बात मान लेते हो।
5 मैं समझता हूँ कि मैं तुम्हारे महा-प्रेषितों
से एक भी बात में कम नहीं हूँ।[8] 6 चाहे
मैं बोलने में अनाड़ी सही,[9] मगर ज्ञान में
हरगिज़ नहीं हूँ और हमने यह ज्ञान हर
बात में और हर तरह से तुम पर ज़ाहिर
किया है।

7 या जब मैंने खुद को इसलिए
छोटा किया कि तुम बड़े हो जाओ और
बिना कोई दाम लिए तुम्हें खुशी-खुशी
परमेश्वर की खुशखबरी सुनायी, तो क्या
कोई पाप किया?[1] 8 मैंने दूसरी मंड-
लियों से उनकी ज़रूरत की चीज़ें* लीं#
ताकि तुम्हारी सेवा करूँ।[2] 9 फिर भी
जब मैं तुम्हारे यहाँ था और मुझ पर
भारी तंगी आ पड़ी, तब मैं किसी पर
भी बोझ नहीं बना क्योंकि मकिदुनिया
से आए भाइयों ने ज़रूरत से ज़्यादा
चीज़ें देकर मेरी मदद की।[3] हाँ, मैंने हर
तरह से कोशिश की कि तुम पर बोझ
न बनूँ और आगे भी मेरी यही कोशिश
रहेगी।[4] 10 जैसे यह बात पक्की है
कि मसीह की सच्चाई मुझमें है, वैसे ही
यह बात भी पक्की है कि मैं अखाया के
इलाकों में इस बात पर गर्व करना नहीं
छोड़ूँगा।[5] 11 क्या इसकी वजह यह है
कि मैं तुमसे प्यार नहीं करता? पर-
मेश्वर जानता है कि मैं करता हूँ।

12 लेकिन मैं जो कर रहा हूँ उसे
करता रहूँगा[6] ताकि जो हमारे बरा-
बर दर्जा रखने की शेखी मारते हैं और
हमारी बराबरी करने के लिए किसी मौके
की तलाश में रहते हैं उन्हें कोई मौका न
दूँ। 13 ऐसे आदमी झूठे प्रेषित हैं, छल
से काम करते हैं और मसीह के प्रेषित
होने का ढोंग करते हैं।[7] 14 इसमें कोई
ताज्जुब नहीं क्योंकि शैतान खुद भी
रौशनी देनेवाले स्वर्गदूत का रूप धारण
करता है।[8] 15 इसलिए अगर उसके
सेवक भी नेकी के सेवक होने का ढोंग

10:17, 18 *अति. क5 देखें। **11:2** *या "जलन।" शा., "परमेश्वर जैसा जोश।" **11:4** *या "परमेश्वर की शक्ति।"

11:8 *या "मदद।" #शा., "लूटीं।"

अध्य. 10
1 यिर्म 9:24, 1कुर 1:31
2 लूक 18:10-14
3 1कुर 4:5, 2ती 2:15

अध्य. 11
4 मर 2:19, इफ 5:23, प्रक 21:2, 9
5 उत 3:4, 5, यूह 8:44
6 1ती 6:3-5, इब्र 13:9, 2पत 3:17
7 गल 1:7, 8
8 2कुर 11:23
9 2कुर 10:10

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 18:3, 1कुर 9:18
2 फिल 4:10
3 फिल 4:15, 16
4 1थि 2:9
5 1कुर 9:14, 15
6 1कुर 9:11, 12
7 रोम 16:17, 18, 2पत 2:1
8 गल 1:8, 2थि 2:9

करते हैं, तो यह कोई अनोखी बात नहीं
है। मगर उनका अंत उनके कामों के
हिसाब से होगा।[1]
16 मैं फिर कहता हूँ कि कोई यह न
सोचे कि मैं मूर्ख हूँ। अगर तुम ऐसा सोचते
भी हो, तो मूर्ख जानकर ही मुझे बर-
दाश्त कर लो ताकि मैं थोड़ा और गर्व
कर सकूँ। 17 मैं जो कह रहा हूँ वह प्रभु
की मिसाल पर चलते हुए नहीं कह रहा,
बल्कि मैं उनकी तरह बोल रहा हूँ जो मूर्ख
हैं और खुद पर बहुत घमंड करते हैं और
शेखी मारते हैं। 18 बहुत-से लोग दुनि-
यावी बातों* पर शेखी मार रहे हैं, इस-
लिए मैं भी शेखी मारूँगा। 19 क्योंकि
तुम तो इतने समझदार हो कि मूर्खों की
बातें खुशी-खुशी सह लेते हो। 20 यही
नहीं, तुम ऐसे हर इंसान को बरदाश्त कर
लेते हो जो तुम्हें अपना गुलाम बना लेता
है, तुम्हारी जायदाद हड़प लेता है, जो
तुम्हारे पास है उसे छीन लेता है, तुम्हारे
सिर पर सवार हो जाता है और तुम्हारे
मुँह पर थप्पड़ मारता है।
21 मेरे लिए यह कहना शर्म की बात
है, क्योंकि कुछ लोगों को लगता है कि
हम इतने कमज़ोर हैं कि अपना अधिकार
सही तरह से नहीं चला रहे।
लेकिन अगर किसी को शेखी मारने में
शर्म नहीं आती तो मैं भी शेखी मारने में
शर्म नहीं करूँगा, फिर चाहे कोई मुझे मूर्ख
ही क्यों न समझे। 22 क्या वे इब्रानी
हैं? मैं भी हूँ।[2] क्या वे इसराएली हैं? मैं
भी हूँ। क्या वे अब्राहम के वंशज* हैं?
मैं भी हूँ।[3] 23 क्या वे मसीह के सेवक
हैं? मैं पागलों की तरह चिल्ला-चिल्ला-
कर कहता हूँ, मैं उनसे कहीं बढ़कर हूँ:
मैंने ज़्यादा मेहनत की है,[4] मैं बार-बार
जेल गया,[1] कितनी ही बार मैंने मार
खायी और कई बार मैं मरते-मरते बचा।[2]
24 पाँच बार मैंने यहूदियों से उनतालीस-
उनतालीस कोड़े खाए,[3] 25 तीन बार
मुझे डंडों से पीटा गया,[4] एक बार मुझे
पत्थरों से मारा गया,[5] तीन बार ऐसा
हुआ कि मैं जिन जहाज़ों में सफर कर
रहा था वे समुंदर में टूट गए,[6] एक रात
और एक दिन मैंने समुंदर के बीच काटा।
26 मैं बार-बार सफर के खतरों से,
नदियों के खतरों से, डाकुओं के खतरों से,
अपने ही लोगों से आए खतरों से,[7] दूसरे
राष्ट्रों के लोगों से आए खतरों से,[8] शहर
के खतरों से,[9] वीराने के खतरों से, समुं-
दर के खतरों से, झूठे भाइयों के बीच
रहने के खतरों से गुज़रा हूँ। 27 मैंने
कड़ी मेहनत और संघर्ष करने में, अकसर
रात-रात भर जागते रहने में,[10] भूख और
प्यास में,[11] कई बार भूखे पेट रहने में,[12]
ठंड में और कपड़ों की कमी* झेलते हुए
दिन बिताए हैं।
28 इन सब बातों के अलावा हर
दिन सारी मंडलियों की चिंता मुझे खाए
जाती है।[13] 29 किसकी कमज़ोरी से मैं
खुद कमज़ोर महसूस नहीं करता? किसके
ठोकर खाने से मेरा जी नहीं जलता?
30 अगर मुझे शेखी मारनी ही है, तो
मैं उन बातों पर शेखी मारूँगा जिनसे मेरी
कमज़ोरियाँ पता चलती हैं। 31 प्रभु
यीशु का परमेश्वर और पिता, जिसकी
तारीफ सदा होती रहेगी, जानता है कि
मैं झूठ नहीं बोल रहा। 32 दमिश्क में
अरितास राजा के अधीन जो राज्यपाल
था, उसने मुझे पकड़ने के लिए दमिश्क के
शहर में पहरा बिठा रखा था 33 मगर
मुझे एक बड़े टोकरे में बिठाकर शहर की
दीवार में बनी एक खिड़की से नीचे उतार

11:18 *यानी इंसानी बातों। 11:22 *शा., "बीज।"

11:27 *शा., "नंगापन।"

अध्य. 11
1 मत 16:27, फिल 3:18, 19, 2ती 4:14
2 प्रेष 22:3
3 रोम 11:1, फिल 3:4, 5
4 रोम 11:13, 1कुर 15:10

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 16:23, 24
2 प्रेष 9:15, 16, 2कुर 6:4, 5, 1पत 2:20, 21
3 व्य 25:3
4 प्रेष 16:22
5 प्रेष 14:19
6 प्रेष 27:41
7 प्रेष 20:3, प्रेष 23:10
8 प्रेष 14:5, 6
9 प्रेष 13:50
10 प्रेष 20:31
11 1कुर 4:11
12 2कुर 6:4, 5
13 2कुर 2:4, कुल 2:1

दिया गया[1] और मैं उसके हाथ से बच
गया।

12 शेखी मारने से कोई फायदा तो
नहीं, फिर भी मुझे ऐसा करना
ही होगा। मगर अब मैं प्रभु के दिखाए
चमत्कारी दर्शनों[2] और उससे मिले संदेशों
के बारे में बताना चाहूँगा। 2 मैं मसीह में
एक आदमी को जानता हूँ जिसे 14 साल
पहले तीसरे स्वर्ग में उठा लिया गया था।
उसे शरीर के साथ उठाया गया या शरीर
के बिना, यह मैं नहीं जानता परमेश्वर
ही जानता है। 3 हाँ, मैं उस आदमी को
जानता हूँ। उसे शरीर के साथ उठाया गया
या शरीर के बिना, यह मैं नहीं जानता
परमेश्वर ही जानता है। 4 उसे उठाकर
फिरदौस में ले जाया गया और उसने ऐसी
बातें सुनीं जो बोली नहीं जा सकतीं और
जिन्हें कहने की एक इंसान को इजाज़त
नहीं। 5 मैं ऐसे इंसान के बारे में शेखी
मारूँगा, मगर जहाँ तक मेरी बात है मैं
अपनी कमज़ोरियों को छोड़ किसी और
बात पर शेखी नहीं मारूँगा। 6 अगर मैं
कभी शेखी मारना भी चाहूँ, तो मैं मूर्ख
नहीं ठहरूँगा क्योंकि मैं सच ही कहूँगा।
लेकिन मैं शेखी नहीं मारता ताकि कोई भी
मुझे ज़्यादा श्रेय न दे, सिवा उन बातों के
जो उसने मुझे करते देखा है और बोलते
सुना है। 7 कोई मुझे सिर्फ इसलिए बड़ा
न समझे कि मुझ पर अनोखे रहस्य प्रकट
किए गए हैं।

कहीं मैं घमंड से फूल न जाऊँ इसलिए
मेरे शरीर में एक काँटा चुभाया गया है[3]
जो शैतान के एक दूत जैसा है ताकि वह
मुझे थप्पड़ मारता* रहे जिससे कि मैं खुद
को हद-से-ज़्यादा बड़ा न समझूँ। 8 मैंने
प्रभु से तीन बार गिड़गिड़ाकर बिनती की
थी कि यह काँटा निकाल दिया जाए।
9 मगर प्रभु ने मुझसे कहा, "मेरी महा-
कृपा तेरे लिए काफी है। जब तू कम-
ज़ोर होता है तब मेरी ताकत पूरी तरह
दिखायी देती है।"[1] इसलिए मैं बड़ी खुशी
से अपनी कमज़ोरियों के बारे में शेखी
मारूँगा ताकि मसीह की ताकत तंबू की
तरह मेरे ऊपर छायी रहे। 10 मैं मसीह
की खातिर कमज़ोरियों में, बेइज़्ज़ती में,
तंगी में, ज़ुल्मों और मुश्किलों में खुश
होता हूँ। क्योंकि जब मैं कमज़ोर होता हूँ,
तभी ताकतवर होता हूँ।[2]

11 मैं मूर्ख बना। तुमने मुझे ऐसा
बनने के लिए मजबूर किया। होना तो यह
चाहिए था कि तुम मेरी तरफ से बोलते
क्योंकि मैं तुम्हारे महा-प्रेषितों से एक बात
में भी कम नहीं हूँ, भले ही मैं तुम्हारी
नज़र में कुछ नहीं।[3] 12 सच तो यह है
कि तुमने खुद अपनी आँखों से मेरे प्रेषित-
पद के सबूत देखे थे, जो मैंने बहुत धीरज
धरते हुए,[4] साथ ही चिन्ह और चमत्कार
और शक्तिशाली कामों से दिखाए थे।[5]
13 मैंने तुम पर किसी भी तरह का बोझ
नहीं डाला, सिर्फ इसी मामले में तुम दूसरी
मंडलियों से अलग हो।[6] क्या मैंने कुछ
गलत किया? अगर हाँ, तो मुझे माफ
करना।

14 देखो! यह तीसरी बार है कि मैं
तुम्हारे पास आने के लिए तैयार हूँ, फिर
भी मैं तुम पर बोझ नहीं बनूँगा क्योंकि मैं
तुम्हारी दौलत नहीं चाहता,[7] तुम्हें चाहता
हूँ। बच्चों[8] से उम्मीद नहीं की जाती कि वे
माँ-बाप के लिए पैसे बचाकर रखें, बल्कि
माँ-बाप से उम्मीद की जाती है कि वे
बच्चों के लिए पैसे बचाकर रखें। 15 मैं
तुम्हारी खातिर हँसते-हँसते खर्च करूँगा,
यहाँ तक कि खुद भी पूरी तरह खर्च
हो जाऊँगा।[9] जब मैं तुमसे इतना प्यार

12:7 *या "मुझे पीटता।"

अध्य. 11
1 प्रेष 9:24, 25

अध्य. 12
2 प्रेष 2:17
प्रेष 22:17, 18
3 गल 4:13

दूसरा कॉल.
1 यश 40:29
2 फिल 4:13
3 2कुर 11:23
4 2कुर 6:4
5 प्रेष 14:3
प्रेष 15:12
रोम 15:18, 19
6 1कुर 9:11, 12
2कुर 11:9
7 प्रेष 20:33
8 1कुर 4:14
9 2कुर 1:6
कुल 1:24
1थि 2:8
इब्र 13:17

करता हूँ तो क्या मुझे कम प्यार मिलना
चाहिए? **16** मैंने तुम पर कोई बोझ
नहीं डाला,[1] फिर भी तुम कहते हो कि
मैं चालाक था और मैंने तुम्हें छल से फँसा
लिया। **17** और मैंने जितनों को भी
तुम्हारे पास भेजा, उनमें से एक के ज़रिए
भी मैंने तुम्हारा फायदा नहीं उठाया। क्या
उठाया? **18** मैंने तीतुस से गुज़ारिश की
और उसके साथ एक भाई को भेजा।
तीतुस ने तुम्हारा बिलकुल भी फायदा
नहीं उठाया, क्या उठाया?[2] क्या हमने
एक ही तरह का जज़्बा नहीं दिखाया?
क्या हम एक ही राह पर नहीं चले?

19 क्या अब तक तुम यह सोच रहे
हो कि हम तुम्हारे सामने अपनी सफाई
पेश कर रहे हैं? हम तुम्हारे सामने नहीं,
परमेश्वर के सामने मसीह में सफाई दे
रहे हैं। लेकिन प्यारे भाइयो, हम सब-
कुछ तुम्हें मज़बूत करने के लिए करते हैं।
20 मुझे डर है कि जब मैं तुम्हारे पास
आऊँ तो मैं तुम्हें ऐसा न पाऊँ जैसा मैं
चाहता हूँ और तुम भी मुझे वैसा न पाओ
जैसा तुम चाहते हो। कहीं ऐसा न हो कि
तुममें तकरार, जलन, गुस्से से आग-
बबूला होना, झगड़े, पीठ पीछे बदनाम
करना, चुगली लगाना,* घमंड से फूलना
और हंगामे पाए जाएँ। **21** जब मैं
दोबारा तुम्हारे पास आऊँ तो मेरा पर-
मेश्वर कहीं तुम्हारे सामने मुझे शर्मिंदा
न करे और मुझे ऐसे कई लोगों
के लिए शोक न मनाना पड़े जिन्होंने
पहले पाप किया था और जो अशुद्ध-
ता, नाजायज़ यौन-संबंध* और निर्लज्ज
कामों# में लगे रहे और पश्चाताप नहीं
किया।

12:20 *या "गपशप करना।" **12:21** *यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें। #या "शर्मनाक बरताव।" शब्दावली देखें।

अध्य. 12

1 2कुर 11:9

2 2कुर 8:6

दूसरा कॉल.

अध्य. 13

1 व्य 19:15
मत 18:16

2 रोम 6:4
1पत 3:18

3 2ती 2:11, 12

4 1कुर 6:14

5 1कुर 11:28
गल 6:4

13 मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आ
रहा हूँ। "हर मामले की सच्चाई
दो या तीन गवाहों के बयान* से साबित
की जाए।"[1] **2** हालाँकि मैं अभी तुमसे
बहुत दूर हूँ, लेकिन तुम यह समझ
लो कि मैं तुम्हारे बीच दूसरी बार मौजूद
हूँ। जिन लोगों ने पहले पाप किया था
उन्हें और बाकी लोगों को मैं अभी
से खबरदार कर रहा हूँ कि अगर मैं
दोबारा तुम्हारे पास आया तो उन्हें ज़रूर
सज़ा दूँगा, **3** क्योंकि तुम इस बात का
सबूत चाहते हो कि मसीह मेरे ज़रिए
बोलता है, जो तुम्हारे लिए कमज़ोर नहीं
बल्कि ताकतवर है। **4** वाकई वह कम-
ज़ोर हालत में काठ पर लटकाकर मार
डाला गया, फिर भी वह परमेश्वर की
ताकत से ज़िंदा है।[2] यह भी सच है कि
हम भी उसकी तरह कमज़ोर हैं, मगर हम
उसके साथ जीएँगे[3] और यह परमेश्वर
की उसी ताकत से होगा जो तुम्हारे अंदर
काम करती है।[4]

5 खुद को जाँचते रहो कि तुम
विश्वास में हो या नहीं। तुम क्या हो,
इसका सबूत देते रहो।[5] या क्या तुम्हें यह
एहसास नहीं कि यीशु मसीह तुम्हारे साथ
एकता में है? अगर नहीं है तो इसका मत-
लब तुम ठुकराए गए हो। **6** जहाँ तक
हमारी बात है, हम ठुकराए नहीं गए और
मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम यह बात जान
जाओगे।

7 अब हम परमेश्वर से प्रार्थना करते
हैं कि तुम कुछ भी गलत न करो। यह
मैं इसलिए नहीं कह रहा कि हम मंज़ूरी
पानेवाले नज़र आएँ, बल्कि इसलिए कि
तुम भले काम करते रहो, फिर चाहे हम
ठुकराए हुए नज़र आएँ। **8** इसलिए

13:1 *शा., "मुँह।"

कि हम सच्चाई के खिलाफ कुछ नहीं
कर सकते, सिर्फ सच्चाई की खातिर ही
कर सकते हैं। **9** जब भी हम कमज़ोर
होते हैं और तुम ताकतवर होते हो तो
हमें खुशी होती है। और हम प्रार्थना करते
हैं कि तुम सुधार करते जाओ। **10** मैं
तुमसे दूर होकर भी ये बातें तुम्हें इसलिए
लिख रहा हूँ कि जब मैं तुम्हारे बीच रहूँ,
तो मुझे प्रभु के दिए अधिकार का सख्ती
से इस्तेमाल न करना पड़े।[1] यह अधि-
कार उसने मुझे तुम्हें मज़बूत करने के
लिए दिया है, न कि तुम्हें गिराने के लिए।

अध्य. 13

1 1कुर 4:21

दूसरा कॉल.

1 2कुर 1:3, 4

2 फिल 2:2

3 1थि 5:13
याकू 3:17
1पत 3:11
2पत 3:14

4 1कुर 14:33

11 अब आखिर में भाइयो, मैं तुमसे
कहता हूँ कि तुम खुशी मनाते रहो, सुधार
करते रहो, दिलासा पाते रहो,[1] एक जैसी
सोच रखो[2] और शांति से रहो।[3] तब
प्यार और शांति का परमेश्वर[4] तुम्हारे
साथ रहेगा। **12** पवित्र चुंबन से एक-
दूसरे को नमस्कार करो। **13** सभी
पवित्र जनों का तुम्हें नमस्कार।

14 प्रभु यीशु मसीह की महा-कृपा
और परमेश्वर का प्यार और उसकी
पवित्र शक्ति तुम सबके साथ रहे, जिससे
तुम फायदा पा रहे हो।

गलातियों

के नाम चिट्ठी

सारांश

1 नमस्कार (1-5)
- कोई और खुशखबरी नहीं (6-9)
- पौलुस की बतायी खुशखबरी परमेश्वर से थी (10-12)
- पौलुस कैसे बदला और उसकी शुरू की सेवा (13-24)

2 पौलुस यरूशलेम में प्रेषितों से मिलता है (1-10)
- पौलुस, पतरस (कैफा) को फटकारता है (11-14)
- सिर्फ विश्वास से नेक ठहराया जाता है (15-21)

3 विश्वास और कानून में बताए कामों में फर्क (1-14)
  - नेक जन विश्वास से ज़िंदा रहेगा (11)
- अब्राहम से वादा कानून के आधार पर नहीं (15-18)
  - मसीह, अब्राहम का वंश (16)
- कानून की शुरूआत; उसका मकसद (19-25)
- विश्वास के ज़रिए परमेश्वर के बेटे बने (26-29)
  - जो मसीह के हैं वे अब्राहम का वंश हैं (29)

4 अब गुलाम नहीं, बेटे हैं (1-7)
- गलातियों के लिए पौलुस की फिक्र (8-20)
- हाजिरा और सारा; दो करार (21-31)
  - ऊपर की यरूशलेम आज़ाद है, हमारी माँ है (26)

5 मसीहियों को मिली आज़ादी (1-15)
- पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन में चलना (16-26)
  - शरीर के काम (19-21)
  - पवित्र शक्ति का फल (22, 23)

6 एक-दूसरे का भार उठाओ (1-10)
  - जो कुछ बोते हैं वही काटते हैं (7, 8)
- खतना के कोई मायने नहीं (11-16)
  - एक नयी सृष्टि (15)
- आखिरी शब्द (17, 18)

1 यह चिट्ठी मुझ पौलुस की तरफ से
है। मुझे न इंसानों की तरफ से और
न किसी इंसान के ज़रिए प्रेषित ठहराया
गया बल्कि परमेश्वर हमारे पिता[1] ने मुझे
यीशु मसीह के ज़रिए प्रेषित ठहराया,[2]
जिसे उसने मरे हुओं में से ज़िंदा किया
था। **2** मैं और मेरे साथ के सभी भाई
गलातिया प्रांत की मंडलियों को यह चिट्ठी
लिख रहे हैं:

3 तुम्हें परमेश्वर हमारे पिता की तरफ
से और प्रभु यीशु मसीह की तरफ से महा-
कृपा और शांति मिले। **4** हमारे पर-
मेश्वर और पिता की मरज़ी[3] के मुता-
बिक मसीह ने हमारे पापों के लिए खुद
को दे दिया[4] ताकि हमें इस दुष्ट दुनिया की
व्यवस्था*[5] से छुटकारा दिलाए। **5** पर-
मेश्वर की महिमा हमेशा-हमेशा तक होती
रहे। आमीन।

6 मुझे ताज्जुब होता है कि तुम इतनी
जल्दी उस परमेश्वर से मुँह मोड़ रहे हो
जिसने तुम्हें मसीह की महा-कृपा दिखा-
कर बुलाया था और अब तुम किसी और
तरह की खुशखबरी की तरफ जा रहे
हो।[6] **7** मगर कोई और खुशखबरी है
ही नहीं। सच तो यह है कि वहाँ कुछ ऐसे
लोग हैं जो तुम्हारे लिए मुश्किल पैदा कर
रहे हैं[7] और मसीह के बारे में खुशखबरी
को बिगाड़ना चाहते हैं। **8** लेकिन चाहे
हम या स्वर्ग का कोई दूत भी, उस खुश-
खबरी के नाम पर जो हमने तुम्हें सुनायी
थी, कोई और खुशखबरी सुनाए तो वह
शापित ठहरे। **9** मैं एक बार फिर वही
बात कहता हूँ जो हमने अभी-अभी कही
है, तुमने जो खुशखबरी स्वीकार की थी
उसके नाम पर अगर कोई कुछ और
सिखाता है तो वह शापित ठहरे।

1:4 *या "ज़माने।" शब्दावली देखें।

अध्य. 1
1 प्रेष 22:14, 15
2 प्रेष 9:15
प्रेष 26:15, 16
3 1ती 2:3, 4
4 1यूह 2:1, 2
5 यूह 15:19
6 2कुर 11:3, 4
गल 5:7
7 गल 5:10

दूसरा कॉल.
1 1थि 2:13
2 प्रेष 23:6
3 प्रेष 8:3
प्रेष 9:1, 2
प्रेष 22:4
प्रेष 26:9-11
4 प्रेष 22:3
फिल 3:4-6
5 1कुर 15:10
6 प्रेष 9:15
रोम 11:13
7 प्रेष 9:19
8 यूह 1:42
1कुर 15:5
9 प्रेष 9:26

10 अब मैं इंसानों को कायल करने
की कोशिश कर रहा हूँ या परमेश्वर को?
या क्या मैं इंसानों को खुश करने की
कोशिश कर रहा हूँ? अगर मैं अब भी
इंसानों को खुश करने में लगा हूँ, तो मैं
मसीह का दास नहीं। **11** मेरे भाइयो,
यह जान लो कि मैंने तुम्हें जो खुशखबरी
सुनायी थी वह इंसानों की तरफ से नहीं
है।[1] **12** क्योंकि मैंने इसे न तो किसी
इंसान से पाया है, न ही किसी इंसान से
सीखा है, बल्कि खुद यीशु मसीह ने इसे
मुझ पर प्रकट किया था।

13 बेशक तुमने सुना है कि जब मैं
पहले यहूदी धर्म मानता था तो मेरा बर-
ताव कैसा था।[2] मैं परमेश्वर की मंडली
को बुरी तरह सताता था और उसे
तबाह करता था।[3] **14** और मैं यहूदी
धर्म में अपने राष्ट्र और अपनी उम्र के
कई लोगों से ज़्यादा तरक्की कर रहा
था, क्योंकि मैं अपने पुरखों की परं-
पराओं को मानने में सबसे जोशीला था।[4]
15 लेकिन परमेश्वर, जिसने मुझे इस
दुनिया में पैदा किया और मुझ पर महा-
कृपा करके मुझे बुलाया,[5] उसे यह अच्छा
लगा **16** कि वह मेरे ज़रिए अपने बेटे
को प्रकट करे ताकि मैं गैर-यहूदियों को
उसके बेटे की खुशखबरी सुनाऊँ।[6] तब
मैं फौरन किसी इंसान के पास इस
बारे में सलाह-मशविरा करने नहीं गया,
17 न ही मैं यरूशलेम में उनके पास गया
जो मुझसे पहले से प्रेषित थे, मगर मैं
अरब देश चला गया और बाद में
दमिश्क[7] लौट आया।

18 फिर तीन साल बाद मैं कैफा*[8] से
मिलने यरूशलेम गया[9] और 15 दिन
तक उसके साथ रहा। **19** वहाँ मैं प्रभु

1:18 *पतरस भी कहलाता था।

के भाई याकूब[1] से भी मिला। उनके अलावा मैं किसी और प्रेषित से नहीं मिला। 20 परमेश्वर इस बात का गवाह है कि जो बातें मैं तुम्हें लिख रहा हूँ वे झूठी नहीं हैं।

21 इसके बाद, मैं सीरिया और किलिकिया[2] के इलाकों में गया। 22 मगर यहूदिया की मसीही मंडलियों ने मुझे पहले कभी नहीं देखा था। 23 वे मंडलियाँ सिर्फ मेरे बारे में सुना करती थीं, "जो आदमी पहले हम पर ज़ुल्म ढाता था,[3] वह अब इसी विश्वास के बारे में खुशखबरी सुना रहा है जिसे वह पहले तबाह करता था।"[4] 24 इसलिए वे मेरी वजह से परमेश्वर की महिमा करने लगे।

2 इसके 14 साल बाद, मैं बरनबास[5] के साथ एक बार फिर यरूशलेम गया और मैंने तीतुस को भी अपने साथ लिया।[6] 2 मैं वहाँ इसलिए गया क्योंकि मुझ पर प्रकट किया गया था कि मुझे वहाँ जाना है। वहाँ मैंने बताया कि मैं गैर-यहूदियों को क्या खुशखबरी सुनाता हूँ। यह बात मैंने अकेले में सिर्फ उन भाइयों को बतायी जिनका बहुत सम्मान किया जाता है। मैंने उन्हें इसलिए बताया ताकि ऐसा न हो कि मैंने सेवा में अब तक जो दौड़-धूप की थी या कर रहा था, वह बेकार साबित हो। 3 मगर तीतुस[7] को जो मेरे साथ था, यूनानी होने पर भी खतना कराने के लिए मजबूर नहीं किया गया था।[8] 4 यह मुद्दा उन झूठे भाइयों की वजह से उठा था जो मंडली में चुपचाप घुस आए थे।[9] वे चोरी-छिपे हमारी जासूसी करने आए थे ताकि मसीह यीशु के चेले होने के नाते हमें जो आज़ादी[10] मिली है उसे छीनकर हमें पूरी तरह अपने गुलाम बना लें।[11] 5 लेकिन हम एक पल के लिए भी उनके आगे नहीं झुके,[1] न ही उनके अधीन हुए ताकि खुशखबरी की जो सच्चाई तुमने पायी है वह तुम्हारे साथ रहे।

6 मगर वे भाई जिन्हें खास समझा जाता था,[2] हाँ, बाकियों से बड़े समझे जानेवाले उन भाइयों ने मुझे ऐसा कुछ भी नहीं बताया जो मेरे लिए नया हो। उन्हें चाहे जो भी समझा जाता था, उससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि परमेश्वर किसी की तरफदारी नहीं करता। 7 इसके बजाय, उन भाइयों ने देखा कि मुझे गैर-यहूदियों* को खुशखबरी सुनाने के लिए ठहराया गया है,[3] ठीक जैसे यहूदियों को# खुशखबरी सुनाने के लिए पतरस को ठहराया गया था। 8 इसलिए कि जिसने पतरस को यहूदियों के लिए प्रेषित-पद की ज़िम्मेदारी निभाने की ताकत दी, उसी ने मुझे गैर-यहूदियों के लिए यह ज़िम्मेदारी निभाने की ताकत दी है।[4] 9 उन्होंने यह भी समझ लिया कि किस तरह मुझ पर महा-कृपा की गयी।[5] तब याकूब,[6] कैफा* और यूहन्ना ने जो मंडली के खंभे समझे जाते थे, मुझसे और बरनबास से[7] अपना दायाँ हाथ मिलाकर जताया कि हम सब साझेदार हैं और हम दूसरी जातियों के पास जाएँ, जबकि वे यहूदियों के पास जाएँगे। 10 हमसे यह भी कहा गया कि हम गरीब भाइयों को भी याद रखें। मैंने जी-जान से ऐसा ही करने की कोशिश की है।[8]

11 लेकिन जब कैफा*[9] अंताकिया[10] आया तो मैंने सबके सामने उसका विरोध किया क्योंकि यह साफ था कि वह दोषी है। 12 याकूब[11] के भेजे गए कुछ लोगों

2:7 *या "खतनारहित लोगों।" #या "जिनका खतना हुआ है उनको।" **2:9, 11** *पतरस भी कहलाता था।

अध्य. 1
1 मत 13:55; प्रेष 12:17
2 प्रेष 9:29, 30
3 गल 1:13
4 प्रेष 8:3

अध्य. 2
5 प्रेष 9:27
6 प्रेष 15:1, 2
7 2कुर 2:13
8 प्रेष 16:3
9 प्रेष 15:1, 24
10 2कुर 3:17; गल 5:1
11 गल 4:9

दूसरा कॉल.
1 गल 2:14
2 गल 2:9
3 प्रेष 22:21; रोम 11:13; 1ती 2:7
4 प्रेष 9:15
5 इफ 3:8
6 प्रेष 15:13
7 प्रेष 13:2; प्रेष 15:25
8 प्रेष 11:29, 30; 1कुर 16:1
9 यूह 1:42
10 प्रेष 11:25, 26; प्रेष 15:35
11 प्रेष 12:17

के आने से पहले तक, कैफा गैर-यहूदियों के साथ खाया-पीया करता था,[1] मगर जब वे भाई आए तो उसने खतना किए गए लोगों के डर से गैर-यहूदियों से किनारा कर लिया और उनसे दूर-दूर रहने लगा।[2] **13** बाकी यहूदी भी उसकी देखा-देखी यही ढोंग करने लगे। यहाँ तक कि बरनबास भी उनके जैसा ढोंग करने लगा। **14** मगर जब मैंने देखा कि वे खुशखबरी की सच्चाई के मुताबिक नहीं चल रहे हैं,[3] तो मैंने सबके सामने कैफा* से कहा, “जब तू एक यहूदी होकर गैर-यहूदियों जैसा बरताव कर रहा है न कि यहूदियों जैसा, तो तू गैर-यहूदियों को यहूदियों की रीतियाँ मानने के लिए कैसे मजबूर कर सकता है?”[4]

15 हम जो जन्म से यहूदी हैं और पापी गैर-यहूदियों में से नहीं, **16** हम जानते हैं कि एक इंसान कानून में बताए काम करने से नहीं बल्कि सिर्फ यीशु मसीह पर विश्वास करने से नेक ठहराया जाता है।[5] इसलिए हमने मसीह यीशु पर विश्वास किया है ताकि हमें मसीह पर विश्वास करने की वजह से नेक ठहराया जाए, न कि कानून में बताए कामों के आधार पर क्योंकि मूसा के कानून में बताए कामों के आधार पर कोई भी इंसान नेक नहीं ठहर सकता।[6] **17** अगर हम मसीह के ज़रिए नेक ठहरने की कोशिश करते हुए पापी कहलाएँ, तो क्या इसका यह मतलब है कि मसीह पाप का सेवक है? हरगिज़ नहीं! **18** मैं जिसे एक बार ढा चुका हूँ, अगर उसे दोबारा बनाने लगूँ, तो खुद को एक गुनहगार साबित करूँगा। **19** कानून के हिसाब से मैं मर गया[7] ताकि परमेश्वर के लिए जी सकूँ। **20** मैं मसीह के साथ काठ पर ठोंक दिया गया हूँ।[1] इसलिए अब मैं खुद के लिए नहीं जी रहा,[2] बल्कि ऐसी ज़िंदगी जी रहा हूँ जो मसीह के साथ एकता में है।* अब मैं इंसान के नाते जो ज़िंदगी जी रहा हूँ वह सिर्फ उस विश्वास से जी रहा हूँ जो मुझे परमेश्वर के बेटे पर है,[3] जिसने मुझसे प्यार किया और खुद को मेरे लिए दे दिया।[4] **21** मैं परमेश्वर की महा-कृपा को नहीं ठुकराता*[5] इसलिए कि अगर कानून को मानने से एक इंसान नेक ठहरता, तो असल में मसीह का मरना बेकार गया।[6]

3 अरे गलातिया के नासमझ लोगो, किसने तुम्हें भरमा लिया है?[7] तुम्हें तो साफ-साफ समझाया गया था कि क्यों यीशु मसीह को काठ पर ठोंक दिया गया।[8] **2** मैं तुमसे बस एक बात पूछना* चाहता हूँ। तुम्हें पवित्र शक्ति, कानून में बताए काम करने से मिली थी या खुशखबरी सुनकर विश्वास करने से?[9] **3** क्या तुम इतने नासमझ हो? तुमने पवित्र शक्ति के मुताबिक चलते हुए शुरूआत की थी, अब अंत में क्या इंसानी तरीके से चलना चाहते हो?[10] **4** क्या तुमने इतने दुख बेकार ही सहे थे? नहीं, वे बेकार नहीं थे। **5** इसलिए जो तुम्हें पवित्र शक्ति देता है और तुम्हारे बीच शक्तिशाली काम करता है,[11] क्या वह इसलिए करता है कि तुम कानून में बताए गए काम करते हो या इसलिए कि तुमने खुशखबरी सुनकर उस पर विश्वास किया था? **6** अब्राहम ने भी “यहोवा* पर विश्वास किया और इस वजह से उसे नेक समझा गया।”[12]

2:14 *पतरस भी कहलाता था।

2:20 *शा., “अब मैं ज़िंदा नहीं रहा, बल्कि मसीह मुझमें ज़िंदा है।” **2:21** *या “दरकिनार नहीं करता।” **3:2** *शा., “जानना।” **3:6** *अति. क5 देखें।

अध्य. 2
1 प्रेष 10:26, 28; प्रेष 11:2, 3
2 प्रेष 21:20, 21
3 प्रेष 10:34, 35
4 प्रेष 15:10; प्रेष 15:28, 29
5 प्रेष 13:39; रोम 1:17; रोम 5:17; 1कुर 6:11; याकू 2:23
6 रोम 3:20-22
7 रोम 7:9

दूसरा कॉल.
1 रोम 6:6; गल 5:24
2 1पत 4:1, 2
3 2कुर 5:15
4 1ती 2:5, 6
5 यूह 1:17
6 गल 3:21; इब्र 7:11

अध्य. 3
7 गल 5:7
8 1कुर 1:23
9 इफ 1:13
10 गल 4:9, 10
11 1कुर 12:8-10
12 उत 15:6; रोम 4:3; याकू 2:23

7 बेशक तुम यह जानते हो कि जो विश्वास से चलते हैं सिर्फ वे ही अब्राहम के वंशज हैं।[1] 8 शास्त्र ने पहले से यह देखकर कि परमेश्वर विश्वास के आधार पर गैर-यहूदियों को नेक ठहराएगा, अब्राहम को यह खुशखबरी बता दी, "तेरे ज़रिए सभी जातियाँ आशीष पाएँगी।"[2] 9 इसलिए जो विश्वास से चलते हैं, वे अब्राहम की तरह ही आशीष पाते हैं जिसमें विश्वास था।[3]

10 जितने भी कानून में बताए कामों पर भरोसा करते हैं, वे शाप के अधीन हैं क्योंकि लिखा है, "जो कोई कानून की किताब में लिखी सब बातों को नहीं मानता, वह शापित है।"[4] 11 इसके अलावा, यह बात साफ है कि कानून के आधार पर किसी को भी परमेश्वर की नज़र में नेक नहीं ठहराया जा सकता[5] क्योंकि लिखा है, "जो नेक है, वह अपने विश्वास से ज़िंदा रहेगा।"[6] 12 कानून का विश्वास से कोई नाता नहीं था। उसमें सिर्फ यह कहा गया था, "जो कोई ये काम करता है वह ज़िंदा रहेगा।"[7] 13 मसीह ने हमें खरीदकर[8] कानून के शाप से छुड़ाया[9] और खुद हमारी जगह शापित बना क्योंकि लिखा है, "हर वह इंसान जो काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।"[10] 14 यह इसलिए हुआ कि अब्राहम को जो आशीष मिली थी वह मसीह यीशु के ज़रिए दूसरे राष्ट्रों को भी मिले[11] और हम अपने विश्वास के ज़रिए वह पवित्र शक्ति पाएँ[12] जिसका वादा किया गया था।

15 भाइयो, मैं रोज़मर्रा ज़िंदगी की एक मिसाल से समझाता हूँ: कोई भी करारनामा, फिर चाहे वह इंसान का ही क्यों न हो, एक बार जब पक्का कर दिया जाता है, तो उसे न रद्द किया जा सकता है न ही उसमें कुछ जोड़ा जा सकता है। 16 अब जो वादे थे वे अब्राहम और उसके वंश* से किए गए थे।[1] शास्त्र यह नहीं कहता, "और तेरे वंशजों# से," मानो वह बहुतों की बात कर रहा हो, बल्कि वह सिर्फ एक के बारे में बात कर रहा था, "और तेरे वंश* से," जो मसीह है।[2] 17 मैं यह भी कहता हूँ: परमेश्वर ने जो करार या वादा पहले से किया था, उसे वह कानून रद्द नहीं कर देता जो 430 साल बाद आया था।[3] 18 इसलिए कि अगर विरासत कानून के आधार पर दी जाती, तो फिर यह वादे की वजह से नहीं दी जाती। मगर सच तो यह है कि परमेश्वर ने मेहरबान होकर यह विरासत अब्राहम को एक वादे के ज़रिए दी है।[4]

19 तो फिर कानून क्यों दिया गया? यह पापों को ज़ाहिर करने के लिए[5] बाद में इसलिए दिया गया ताकि यह तब तक रहे जब तक कि वह वंश* न आए[6] जिससे वादा किया गया था। यह कानून स्वर्गदूतों के ज़रिए एक बिचवई[7] के हाथों पहुँचाया गया था।[8] 20 जहाँ सिर्फ एक पक्ष होता है वहाँ बिचवई की ज़रूरत नहीं होती। परमेश्वर अकेला वह पक्ष है जिसने यह वादा किया है। 21 तो फिर, क्या कानून परमेश्वर के वादों के खिलाफ है? हरगिज़ नहीं! क्योंकि अगर ऐसा कानून दिया जाता जो ज़िंदगी दिला सकता, तो एक इंसान कानून को मानकर ही नेक ठहर सकता था। 22 मगर शास्त्र ने सबको पाप की हिरासत में सौंप दिया ताकि वह वादा जो यीशु मसीह पर विश्वास करने पर निर्भर है, उनके लिए हो जो उस पर विश्वास करते हैं।

अध्य. 3

1 रोम 4:11, 12
2 उत 12:3; उत 18:18
3 रोम 4:16, 17
4 व्य 27:26; प्रेष 15:10; याकू 2:10
5 गल 2:15, 16
6 हब 2:4; रोम 1:17; इब्र 10:38
7 लैव 18:5; व्य 30:16; रोम 10:5
8 1कुर 7:23
9 मत 26:27, 28; इब्र 9:15
10 व्य 21:23; प्रेष 5:30
11 इफ 2:15, 16
12 योए 2:28

दूसरा कॉल.

1 उत 12:1-3; उत 12:7; उत 13:14, 15; उत 17:7; उत 22:17, 18; उत 24:7
2 मत 1:17
3 निर्ग 12:40, 41
4 उत 22:17
5 रोम 3:20
6 यूह 1:29; रोम 10:4
7 निर्ग 20:19; व्य 5:5; यूह 1:17
8 प्रेष 7:38, 53; इब्र 2:2

3:16, 19 *शा., "बीज।" **3:16** #शा., "बीजों।"

23 मगर विश्वास के आने से पहले, हम कानून की हिफाज़त में थे और उसकी हिरासत में सौंपे गए थे और उस विश्वास का इंतज़ार कर रहे थे जो प्रकट होनेवाला था।[1] 24 इस तरह कानून हमें मसीह तक ले जाने के लिए हमारी देखरेख करनेवाला* बना[2] ताकि हम विश्वास की वजह से नेक ठहराए जाएँ।[3] 25 अब विश्वास आ पहुँचा है[4] इसलिए हम किसी देखरेख करनेवाले* के अधीन नहीं रहे।[5]

26 दरअसल तुम सब मसीह यीशु में विश्वास[6] करने की वजह से परमेश्वर के बेटे हो।[7] 27 इसलिए कि तुम सबने, जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया है, मसीह को पहन लिया है।[8] 28 अब न तो कोई यहूदी रहा न यूनानी,[9] न कोई गुलाम न ही आज़ाद,[10] न कोई आदमी न कोई औरत[11] क्योंकि तुम सब मसीह यीशु के साथ एकता में हो।[12] 29 और अगर तुम मसीह के हो, तो तुम वाकई अब्राहम का वंश* हो[13] और वादे[14] के मुताबिक वारिस हो।[15]

4 लेकिन मैं यह कहता हूँ कि जब तक वारिस बच्चा रहता है, उसमें और गुलाम में कोई फर्क नहीं होता इसके बावजूद कि वह सब चीज़ों का मालिक है। 2 वह अपने पिता के ठहराए दिन तक निगरानी करनेवालों और प्रबंधकों के अधीन रहता है। 3 उसी तरह, हम भी जब बच्चे थे तो दुनिया की मामूली बातों के गुलाम थे।[16] 4 मगर जब वक्त पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपना बेटा भेजा जो एक औरत से पैदा हुआ[17] और जो कानून के अधीन था।[18] 5 परमेश्वर ने यह इसलिए किया कि जो कानून के अधीन हैं उन्हें खरीदकर छुड़ा सके[1] और हमें बेटों के नाते गोद ले सके।[2]

6 तुम बेटे हो इसलिए परमेश्वर ने वही पवित्र शक्ति जो उसके बेटे को दी गयी थी,[3] हमारे दिलों में भेजी है[4] और यह *“अब्बा,* * पिता!” पुकारती है।[5] 7 तो अब तुम गुलाम नहीं रहे बल्कि बेटे हो। और अगर बेटे हो तो परमेश्वर ने तुम्हें वारिस भी बनाया है।[6]

8 जब तुम परमेश्वर को नहीं जानते थे, तब तुम उनकी गुलामी करते थे जो ईश्वर हैं ही नहीं। 9 मगर अब जब तुम परमेश्वर को जान गए हो या यूँ कहें कि अब परमेश्वर तुम्हें जानता है, तो फिर तुम क्यों दुनिया की उन मामूली बातों की तरफ मुड़ रहे हो जो गयी-गुज़री और बेकार हैं[7] और क्यों दोबारा उनकी गुलामी करना चाहते हो?[8] 10 तुम बड़े ध्यान से खास दिन, महीने, समय और साल मनाते हो।[9] 11 मुझे डर है कि मैंने तुम्हारे लिए जो कड़ी मेहनत की है, वह बेकार तो नहीं गयी।

12 भाइयो, मैं भी पहले वैसा ही था जैसे आज तुम हो। मगर मैं अब वैसा नहीं हूँ और तुमसे बिनती करता हूँ कि तुम भी मेरे जैसे बनो।[10] तुमने मेरे साथ कुछ बुरा नहीं किया था। 13 मगर तुम जानते हो कि अपनी बीमारी की वजह से मुझे पहली बार तुम्हें खुशखबरी सुनाने का मौका मिला था। 14 और हालाँकि मेरी बीमारी तुम्हारे लिए एक परीक्षा थी फिर भी तुमने मुझे तुच्छ नहीं समझा, न ही मुझसे घिन की।* मगर तुमने मुझे परमेश्वर के एक स्वर्गदूत की तरह

3:24, 25 *या “अभिभावक।” **3:29** *शा., “बीज।”

4:6 *यह इब्रानी या अरामी भाषा का शब्द है जिसका मतलब है, “हे पिता!” **4:14** *या “न ही मुझ पर थूका।”

अध्य. 3
1 रोम 10:4
2 मत 5:17
3 प्रेष 13:39, रोम 5:1, रोम 8:33
4 कुल 2:17
5 इब्र 8:6
6 यूह 1:12
7 रोम 8:14
8 रोम 13:14, इफ 4:24
9 रोम 10:12
10 1कुर 12:13, कुल 3:10, 11
11 प्रेष 2:17, 1पत 3:7
12 यूह 17:20, 21
13 रोम 9:7, 8
14 उत 22:18
15 रोम 8:17

अध्य. 4
16 कुल 2:8, कुल 2:20-22
17 यूह 1:14, इब्र 2:14
18 मत 5:17

दूसरा कॉल.
1 1कुर 7:23, गल 3:13
2 यूह 1:12, रोम 8:23
3 यूह 14:26
4 रोम 5:5
5 रोम 8:15
6 रोम 8:17, गल 3:29, इफ 1:13, 14
7 रोम 8:3, इब्र 7:18, 19
8 कुल 2:20-22
9 कुल 2:16
10 गल 1:14

बल्कि मसीह यीशु की तरह स्वीकार
किया। 15 अब तुम्हारी वह खुशी कहाँ
चली गयी? मैं इस बात का गवाह हूँ
कि अगर मुमकिन होता तो तुमने अपनी
आँखें निकालकर मुझे दे दी होतीं।[1]
16 क्या अब मैं तुम्हारा दुश्मन बन गया
हूँ क्योंकि मैं सच बोल रहा हूँ? 17 वे
तुम्हारा दिल जीतने की पूरी कोशिश कर
रहे हैं मगर उनके इरादे नेक नहीं हैं।
वे तुम्हें मुझसे दूर करना चाहते हैं ताकि
तुम बड़े जोश के साथ उनके पीछे हो
जाओ। 18 अगर कोई नेक इरादे से
तुम्हारा दिल जीतने की कोशिश करे तो
यह अच्छी बात है। वे ऐसा न सिर्फ
उस समय करें जब मैं तुम्हारे बीच होता
हूँ बल्कि हमेशा करें। 19 मेरे प्यारे
बच्चो,[2] जब तक मसीह तुम्हारे अंदर
तैयार नहीं हो जाता,* तब तक मुझे
तुम्हारे लिए फिर से प्रसव-पीड़ा होती
रहेगी। 20 काश! मैं अभी तुम्हारे पास
होता और तुमसे प्यार से बात करता
क्योंकि मैं तुम्हारी वजह से बड़ी उल-
झन में हूँ।

21 तुम जो कानून के अधीन होना
चाहते हो, मुझे बताओ कि क्या तुमने
नहीं सुना कि कानून क्या कहता है?
22 मिसाल के लिए, लिखा है कि अब्रा-
हम के दो बेटे हुए थे, एक दासी से[3] और
दूसरा आज़ाद औरत से।[4] 23 मगर
जो दासी से था वह स्वाभाविक तौर पर
पैदा हुआ[5] और दूसरा आज़ाद औरत से
वादे के मुताबिक पैदा हुआ।[6] 24 इन
बातों के पीछे एक मतलब छिपा है।* इन
दो औरतों का मतलब दो करार हैं। एक
सीनै पहाड़[7] पर किया गया था जो
गुलामी करने के लिए बच्चे पैदा करता है
और यह हाजिरा है। 25 हाजिरा मानो
अरब का सीनै पहाड़ है[1] और आज की
यरूशलेम के समान है क्योंकि यरूशलेम
अपने बच्चों समेत गुलाम है। 26 मगर
ऊपर की यरूशलेम आज़ाद है और वह
हमारी माँ है।

27 क्योंकि लिखा है, "हे बाँझ औरत,
तू जिसके बच्चे नहीं होते, खुशियाँ मना।
तू जिसे बच्चा जनने की पीड़ा नहीं हुई,
खुशी से जयजयकार कर। क्योंकि छोड़ी
हुई औरत के बच्चे उस औरत के बच्चों से
ज़्यादा हैं, जिसका पति उसके साथ है।"[2]
28 भाइयो, तुम भी इसहाक की तरह वे
बच्चे हो जो वादे के मुताबिक पैदा हुए
हैं।[3] 29 मगर जिस तरह स्वाभाविक
तरीके से पैदा होनेवाला, पवित्र शक्ति
से पैदा होनेवाले पर ज़ुल्म करने लगा,[4]
वैसा ही आज है।[5] 30 मगर शास्त्र
क्या कहता है? "इस दासी और इसके
लड़के को घर से निकाल दे क्योंकि
दासी का लड़का आज़ाद औरत के बेटे
के साथ वारिस हरगिज़ नहीं बनेगा।"[6]
31 इसलिए भाइयो, हम दासी के नहीं
बल्कि आज़ाद औरत के बच्चे हैं।

5 यही आज़ादी पाने के लिए मसीह ने
हमें आज़ाद किया है। इसलिए मज़-
बूत खड़े रहो[7] और खुद को फिर से
गुलामी के जुए में न जुतने दो।[8]

2 देखो! मैं पौलुस, तुम्हें बता रहा
हूँ कि अगर तुम खतना करवाते हो,
तो मसीह तुम्हारे लिए किसी फायदे
का नहीं होगा।[9] 3 मैं खतना कराने-
वाले हर आदमी से एक बार फिर कहता
हूँ कि अगर वह खतना करवाता है तो
उसे मूसा के बाकी सभी कानूनों को भी
मानना होगा।[10] 4 तुम जो कानून को
मानकर नेक ठहरने की कोशिश कर रहे
हो, तुम मसीह से अलग हो गए हो।[11]

4:19 *या "आकार नहीं लेता।" 4:24 *या "यह एक लाक्षणिक नाटक है।"

अध्य. 4
1 प्रेष 23:5, गल 6:11
2 1कुर 4:15, 1थि 2:11, फिले 10
3 उत 16:15
4 उत 21:2, 3
5 उत 16:1, 2
6 उत 17:15, 16
7 निर्ग 19:20, निर्ग 24:12

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 19:18
2 यश 54:1
3 रोम 9:8, गल 3:29
4 उत 21:9
5 गल 5:11, 2ती 3:12
6 उत 21:10

अध्य. 5
7 1कुर 16:13, फिल 4:1
8 प्रेष 15:10
9 गल 6:12
10 रोम 2:25, गल 3:10
11 रोम 3:20

तुम उसकी महा-कृपा के दायरे से बाहर
हो गए हो। 5 मगर हम पवित्र शक्ति
के ज़रिए विश्वास से नेक ठहरने की
आशा रखते हैं और उसका बेसब्री से इंत-
ज़ार कर रहे हैं। 6 क्योंकि जो मसीह
यीशु के साथ एकता में हैं उनके लिए न तो
खतना कराने की कोई अहमियत है, न ही
खतना न कराने की[1] बल्कि उस विश्वास
की अहमियत है जो प्यार के ज़रिए
दिखायी देता है।

7 तुम सच्चाई की राह पर अच्छे-खासे
चल* रहे थे।[2] फिर किसने तुम्हें सच्चाई
को मानने से रोका? 8 इस तरह की
दलीलें उस परमेश्वर की तरफ से नहीं
हैं जिसने तुम्हें बुलाया है। 9 ज़रा-सा
खमीर पूरे गुँधे हुए आटे को खमीरा
कर देता है।[3] 10 तुम जो प्रभु के साथ
एकता में हो,[4] मुझे तुम पर यकीन है
कि तुम कोई और विचार नहीं अपनाओ-
गे। मगर जो तुम्हारे लिए मुसीबत खड़ी
कर रहा है[5] वह चाहे जो भी हो, उसे वह
सज़ा ज़रूर मिलेगी जिसके वह लायक है।
11 भाइयो, जहाँ तक मेरी बात है, अगर
मैं अब भी खतना कराने का प्रचार कर
रहा हूँ तो मुझ पर आज तक ज़ुल्म क्यों
ढाए जा रहे हैं? अगर मैं ऐसा कर रहा
होता, तो यातना के काठ* की वजह
से लोगों को ठेस पहुँचने की गुंजाइश ही
नहीं रहती।[6] 12 अच्छा होता कि जो
आदमी तुम्हें उलझन में डालना चाहते हैं,
वे अपना अंग कटवा डालते।*

13 भाइयो, तुम्हें आज़ाद होने के
लिए बुलाया गया था। बस तुम यह
मत समझो कि इस आज़ादी से तुम्हें
शरीर की इच्छाएँ पूरी करने की छूट
मिल जाती है,[1] मगर दास बनकर प्यार
से एक-दूसरे की सेवा करो।[2] 14 इस-
लिए कि पूरे कानून का निचोड़ इस एक
आज्ञा में है:* "तुम अपने पड़ोसी से वैसे
ही प्यार करना जैसे तुम खुद से करते
हो।"[3] 15 लेकिन अगर तुम एक-दूसरे
को काटने और फाड़ खाने में लगे हो,[4] तो
खबरदार रहो कि तुम एक-दूसरे का सर्व-
नाश न कर दो।[5]

16 मगर मैं कहता हूँ, पवित्र शक्ति के
मार्गदर्शन में चलते रहो[6] और तुम शरीर
की इच्छाओं को हरगिज़ पूरा न करोगे।[7]
17 इसलिए कि पापी शरीर की इच्छाएँ,
पवित्र शक्ति के खिलाफ होती हैं और
पवित्र शक्ति, शरीर के खिलाफ है। ये
दोनों एक-दूसरे के विरोध में हैं इसलिए
जो तुम करना चाहते हो वही तुम नहीं
करते।[8] 18 अगर तुम पवित्र शक्ति के
मार्गदर्शन में चलते हो, तो तुम कानून के
अधीन नहीं हो।

19 शरीर के काम तो साफ दिखायी
देते हैं। वे हैं, नाजायज़ यौन-संबंध,#[9]
अशुद्धता, निर्लज्ज काम,*[10] 20 मूर्ति-
पूजा, जादू-टोना,*[11] दुश्मनी, तक-
रार, जलन, गुस्से से भड़कना, झगड़े,
फूट, गुटबंदी, 21 ईर्ष्या, पियक्कड़-
पन,[12] रंगरलियाँ और ऐसी ही और
बुराइयाँ।[13] मैं इन बुराइयों के बारे में तुम्हें
खबरदार कर रहा हूँ, जैसे मैंने पहले भी
किया था कि जो लोग ऐसे कामों में लगे
रहते हैं वे परमेश्वर के राज के वारिस नहीं
होंगे।[14]

22 दूसरी तरफ पवित्र शक्ति का
फल है: प्यार, खुशी, शांति, सब्र,

अध्य. 5
1 1कुर 7:19; गल 6:15; कुल 3:10, 11
2 1कुर 9:24; गल 3:3
3 1कुर 5:6; 1कुर 15:33; 2ती 2:16-18
4 यूह 17:20, 21
5 गल 1:7
6 1कुर 1:23

दूसरा कॉल.
1 1पत 2:16
2 1कुर 9:19
3 लैव 19:18; मत 7:12; मत 22:39; रोम 13:8, 9; याकू 2:8
4 याकू 3:14
5 याकू 4:1, 2
6 रोम 8:5, 13
7 रोम 6:12; 1पत 2:11
8 रोम 7:15, 19; रोम 7:23
9 1कुर 5:9; इफ 5:3; कुल 3:5; प्रक 2:20
10 मर 7:21, 22; इफ 4:19; 2पत 2:2; यहू 4
11 लैव 19:26, 31; व्य 18:10, 11
12 व्य 21:20, 21; यश 5:11
13 1पत 4:3
14 1कुर 6:9, 10

5:7 *शा., "दौड़।" **5:11, 19, 20** *शब्दावली देखें। **5:12** *या "अंडकोष निकलवा देते; नपुंसक बन जाते" ताकि वे उस कानून को मानने के अयोग्य ठहरें जिसे मानने का वे बढ़ावा दे रहे थे।

5:14 *या "इस एक बात से पूरा होता है।" **5:19** #यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें।

कृपा, भलाई,[1] विश्वास, 23 कोमलता, संयम।[2] ऐसी बातों के खिलाफ कोई कानून नहीं है। 24 जो मसीह यीशु के हैं उन्होंने अपने शरीर को उसकी वासनाओं और इच्छाओं समेत काठ पर ठोंक दिया है।[3]

25 अगर हमारा जीने का तरीका पवित्र शक्ति के मुताबिक है, तो आओ हम इसी तरह पवित्र शक्ति के मुताबिक सीधी चाल चलते रहें।[4] 26 हम अहंकारी न बनें,[5] एक-दूसरे को होड़ लगाने के लिए न उकसाएँ[6] और एक-दूसरे से ईर्ष्या न करें।

6 भाइयो, हो सकता है कि कोई इंसान गलत कदम उठाए और उसे इस बात का एहसास न हो। ऐसे में, तुम जो परमेश्वर की ठहरायी योग्यताएँ रखते हो, कोमलता की भावना[7] से ऐसे इंसान को सुधारने की कोशिश करो। मगर तुम खुद पर भी नज़र रखो[8] कि कहीं तुम फुसलाए न जाओ।[9] 2 एक-दूसरे का भार उठाते रहो[10] और इस तरह मसीह का कानून मानो।[11] 3 अगर कोई कुछ न होने पर भी खुद को कुछ समझता है,[12] तो वह अपने आप को धोखा दे रहा है। 4 मगर हर कोई अपने काम की जाँच करे।[13] तब वह अपने ही काम से खुशी पाएगा, न कि दूसरों से खुद की तुलना करके।[14] 5 इसलिए कि हर कोई अपना बोझ* खुद उठाएगा।[15]

6 इतना ही नहीं, जिसे परमेश्वर का वचन सिखाया* जाता है, वह उस इंसान को सब अच्छी चीज़ों का साझेदार बनाए जो उसे सिखाता है।#[16]

7 धोखे में न रहो: परमेश्वर की खिल्ली नहीं उड़ायी जा सकती। एक इंसान जो बोता है, वही काटेगा भी।[1] 8 क्योंकि जो शरीर के लिए बोता है वह शरीर से विनाश की फसल काटेगा, मगर जो पवित्र शक्ति के लिए बोता है वह पवित्र शक्ति से हमेशा की ज़िंदगी की फसल काटेगा।[2] 9 इसलिए आओ हम बढ़िया काम करने में हार न मानें क्योंकि अगर हम हिम्मत न हारें,* तो वक्त आने पर ज़रूर फल पाएँगे।[3] 10 इसलिए जब तक हमारे पास मौका* है, आओ हम सबके साथ भलाई करें, खासकर उनके साथ जो विश्वास में हमारे भाई-बहन हैं।

11 देखो, मैंने कैसे बड़े-बड़े अक्षरों में अपने ही हाथ से तुम्हें लिखा है।

12 वे सभी जो बाहरी दिखावे से इंसानों को खुश करना चाहते हैं,* वे ही तुम्हारा खतना करवाने के लिए तुम पर दबाव डालने की कोशिश कर रहे हैं, सिर्फ इसलिए कि मसीह के यातना के काठ# की वजह से उन्हें ज़ुल्म न सहना पड़े। 13 इसलिए कि जो खतना करवाते हैं वे खुद कानून को नहीं मानते,[4] मगर तुम्हारा खतना इसलिए करवाना चाहते हैं ताकि तुम्हारे शरीर की दशा पर शेखी मार सकें। 14 लेकिन मैं प्रभु यीशु मसीह के यातना के काठ# के सिवा किसी और बात पर शेखी नहीं मारूँगा।[5] मसीह के ज़रिए दुनिया मेरे लिए मर चुकी है* और मैं दुनिया के लिए मर चुका हूँ। 15 न तो खतना करवाना कुछ मायने रखता है, न ही खतना न करवाना,[6] मगर नयी सृष्टि

6:5 *या "अपनी ज़िम्मेदारी का बोझ।" **6:6** *या "ज़बानी तौर पर सिखाया।" #या "उसे ज़बानी तौर पर सिखाता है।"

6:9 *या "हम न थकें।" **6:10** *शा., "ठहराया हुआ समय।" **6:12** *या "जो बाहर से अच्छा दिखना चाहते हैं।" **6:12, 14** #शब्दावली देखें। **6:14** *या "काठ पर मार डाली गयी है।"

अध्य. 5

1 इफ 5:9
2 याकू 3:17
3 रोम 6:6
4 रोम 8:4
5 फिल 2:3
6 सभ 4:4, 1कुर 4:7, गल 6:4

अध्य. 6

7 नीत 15:1, कुल 3:12, 1ती 6:11, तीत 3:2
8 1कुर 10:12
9 याकू 3:2
10 1थि 5:14
11 यूह 13:34, यूह 15:12, 1यूह 4:21
12 रोम 12:3
13 2कुर 13:5
14 गल 5:26
15 रोम 14:4, 2कुर 5:10
16 मत 10:9, 10, लूक 10:7, रोम 15:27, 1कुर 9:11, 14

दूसरा कॉल.

1 रोम 2:6-8
2 रोम 8:6, 13
3 इब्र 3:14, इब्र 12:3, प्रक 2:10
4 याकू 2:10
5 1कुर 2:2
6 1कुर 7:19, गल 5:6, कुल 3:10, 11

मायने रखती है।[1] 16 उन सभी पर जो
इस नियम के मुताबिक कायदे से चलते हैं,
यानी परमेश्वर के इसराएल पर दया हो
और उसे शांति मिले।[2]
17 अब से मैं यह कहता हूँ, कोई
मेरे लिए मुश्किलें न खड़ी करे क्योंकि मैं
अपने शरीर पर वे दाग लिए फिरता हूँ,
जो इस बात की निशानी हैं कि मैं यीशु का
एक दास हूँ।[1]
18 भाइयो, तुम जो बढ़िया जज़्बा
दिखाते हो उस वजह से प्रभु यीशु मसीह
की महा-कृपा तुम पर बनी रहे। आमीन।

अध्य. 6
1 2कुर 5:17
इफ 2:10
2 रोम 9:6

दूसरा कॉल.
1 2कुर 4:10
फिल 3:10

इफिसियों

के नाम चिट्ठी

सारांश

1 नमस्कार (1, 2)
स्वर्ग में हर तरह की आशीष (3-7)
मसीह में सबकुछ इकट्ठा करना (8-14)
तय वक्त के पूरा होने पर "एक इंतज़ाम" (10)
पवित्र शक्ति की मुहर "बयाने के तौर पर" (13, 14)
इफिसियों के विश्वास के लिए पौलुस प्रार्थना में धन्यवाद देता है (15-23)

2 हमें ज़िंदा करके मसीह के साथ एक किया (1-10)
अलग करनेवाली दीवार ढा दी गयी (11-22)

3 पवित्र रहस्य में गैर-यहूदी शामिल (1-13)
गैर-यहूदी, मसीह के संगी वारिस (6)
परमेश्वर का युग-युग का मकसद (11)
इफिसियों के लिए प्रार्थना कि वे समझ हासिल करें (14-21)

4 मसीह के शरीर की एकता (1-16)
आदमियों के रूप में तोहफे (8)
पुरानी और नयी शख्सियत (17-32)

5 साफ-सुथरी बातचीत और चालचलन (1-5)
रौशनी की संतानों की तरह चलो (6-14)
पवित्र शक्ति से भरपूर होते जाओ (15-20)
अपने वक्त का सही इस्तेमाल करो (16)
पति-पत्नी के लिए सलाह (21-33)

6 बच्चों और माँ-बाप के लिए सलाह (1-4)
दास और मालिक के लिए सलाह (5-9)
परमेश्वर के दिए सारे हथियार (10-20)
आखिर में नमस्कार (21-24)

1 मैं पौलुस, जो परमेश्वर की मरज़ी से
मसीह यीशु का प्रेषित हूँ, इफिसुस[1]
के पवित्र जनों को लिख रहा हूँ, जो मसीह
यीशु के साथ एकता में हैं और विश्वास-
योग्य हैं:
2 हमारे पिता यानी परमेश्वर की
तरफ से और प्रभु यीशु मसीह की तरफ
से तुम्हें महा-कृपा और शांति मिले।
3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के पर-
मेश्वर और पिता की तारीफ हो। क्योंकि

अध्य. 1
1 प्रक 2:1, 3

उसने हमें मसीह यीशु के साथ एकता
में होने की वजह से स्वर्ग में हर तरह
की आशीष दी है।[1] **4** उसने दुनिया की
शुरूआत से पहले ही हमें उसके साथ*
एकता में रहने के लिए चुन लिया था
ताकि हम परमेश्‍वर से प्यार करें और
उसके सामने पवित्र और बेदाग हों।[2]
5 जैसा उसे अच्छा लगा उसने अपनी
मरज़ी के मुताबिक[3] पहले से तय किया[4]
कि वह यीशु मसीह के ज़रिए हमें अपने
बेटों के नाते गोद लेगा[5] **6** ताकि उसकी
शानदार महा-कृपा की तारीफ हो,[6] जो
उसने मेहरबान होकर अपने प्यारे बेटे[7]
के ज़रिए हम पर की है। **7** उसी बेटे के
खून के ज़रिए फिरौती देकर हमें छुड़ाया
गया है।[8] हाँ, उसी के ज़रिए परमेश्‍वर
की भरपूर महा-कृपा हम पर हुई और हमें
गुनाहों की माफी दी गयी।[9]

8 उसने सारी बुद्धि और समझ देकर
हम पर बहुतायत में महा-कृपा की है
9 यानी अपनी मरज़ी के बारे में पवित्र
रहस्य हम पर ज़ाहिर किया।[10] उसने
यह रहस्य अपनी मरज़ी के मुताबिक खुद
ठहराया था **10** कि तय वक्‍त के पूरा
होने पर वह एक इंतज़ाम की शुरू-
आत करे* ताकि सबकुछ फिर से मसीह
में इकट्ठा करे, चाहे स्वर्ग की चीज़ें हों या
धरती की।[11] हाँ, मसीह में इकट्ठा करे
11 जिसके साथ हम एकता में हैं और
वारिस भी ठहराए गए हैं।[12] क्योंकि पर-
मेश्‍वर ने अपने मकसद के मुताबिक पहले
से तय किया था कि वह हमें चुनेगा,
हाँ उसी परमेश्‍वर ने जो अपनी मरज़ी
के मुताबिक सब बातों को अंजाम देता
है। **12** परमेश्‍वर ने हमें इसलिए चुना
ताकि हम जो मसीह में आशा रखने-

1:4 *यानी मसीह के साथ। **1:10** *या
"ऐसा प्रशासन शुरू करे।"

अध्य. 1
1 इफ 2:6
2 इफ 5:25-27
3 रोम 8:28
4 2थि 2:13
1पत 1:2
5 रोम 8:15, 29
रोम 8:23
6 रोम 3:24
7 यूह 3:35
8 प्रेष 20:28
रोम 3:25
प्रक 5:9
9 प्रेष 13:38
कुल 1:14
कुल 2:13
10 रोम 16:25, 26
11 फिल 2:9, 10
कुल 1:19, 20
12 रोम 8:17
इफ 3:5, 6

दूसरा कॉल.
1 2कुर 1:22
इफ 4:30
प्रक 7:4
2 2कुर 5:5
1पत 1:3, 4
3 1पत 2:9
4 रोम 8:23
1ती 2:5, 6
5 कुल 1:9
1ती 2:3, 4
6 1पत 1:3, 4
7 2कुर 13:4

वालों में सबसे पहले हैं, हमारे ज़रिए पर-
मेश्‍वर का गुणगान और उसकी महिमा
हो। **13** तुमने भी जब अपने उद्धार की
खुशखबरी यानी सच्चाई का वचन सुना,
तो मसीह पर आशा रखी। जब तुमने
यकीन किया, तो मसीह के ज़रिए तुम पर
उस पवित्र शक्‍ति की मुहर लगायी गयी[1]
जिसका वादा किया गया था। **14** यह
पवित्र शक्‍ति हमें अपनी विरासत मिलने
से पहले एक बयाने* के तौर पर दी गयी
है[2] ताकि परमेश्‍वर अपने लोगों#[3] को
फिरौती के ज़रिए छुड़ाए[4] जिससे उसकी
महिमा और बड़ाई हो।

15 इसीलिए जब से मैंने सुना कि प्रभु
यीशु पर तुम्हें कितना विश्‍वास है और
सभी पवित्र जनों से तुम कितना प्यार
करते हो, **16** तब से मैंने तुम्हारे लिए
प्रार्थना में धन्यवाद देना नहीं छोड़ा।
मैं हमेशा तुम्हारे लिए प्रार्थना करता हूँ
17 कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का पर-
मेश्‍वर, वह पिता जो महिमा से भर-
पूर है, तुम्हें उन बातों को समझने की
बुद्धि दे जिन्हें वह तुम पर प्रकट करता है
ताकि तुम्हारे पास उसके बारे में सही ज्ञान
हो।[5] **18** उसने तुम्हारे मन की आँखें
खोल दी हैं ताकि तुम समझ सको कि
उसने तुम्हें कैसी आशा देने के लिए
बुलाया है, वह शानदार दौलत क्या है
जो उसने पवित्र लोगों को विरासत में
देने के लिए रखी है[6] **19** और यह भी
समझ सको कि उसकी बेजोड़ शक्‍ति हम
विश्‍वासियों के मामले में कितने ज़बर-
दस्त तरीके से काम करती है।[7] पर-
मेश्‍वर की महाशक्‍ति कितनी बेजोड़ है
20 यह उसने मसीह के मामले में भी
दिखाया, जब उसने मसीह को मरे हुओं

1:14 *या "निशानी; पक्के सबूत।" #शा.,
"अपनी जागीर।"

में से ज़िंदा किया और स्वर्ग में अपने दाएँ हाथ पर बिठाया,[1] 21 उसे हर सरकार, अधिकार, ताकत, हुकूमत और हर उस नाम से कहीं ऊँचा उठाया[2] जो न सिर्फ इस ज़माने में बल्कि आनेवाले ज़माने* में दिया जाएगा। 22 इतना ही नहीं, परमेश्‍वर ने सबकुछ उसके पैरों तले कर दिया[3] और उसे मंडली से जुड़ी सब बातों का मुखिया ठहराया।[4] 23 मंडली मसीह का शरीर है,[5] जिसमें वह पूरी तरह समाया हुआ है और वही है जो सब बातों में सबकुछ पूरा करता है।

2 यही नहीं, परमेश्‍वर ने तुम्हें ज़िंदा किया जबकि तुम अपने गुनाहों और पापों की वजह से मरे हुए थे।[6] 2 और तुम अपने पापों में पड़े हुए थे और इस दुनिया*[7] के तरीके से जीते थे। तुम उस राजा की मानते हुए चलते थे जो दुनिया की फितरत[8] के अधिकार पर राज करता है।[9] यह फितरत चारों तरफ हवा की तरह फैली हुई है और आज्ञा न माननेवालों पर असर करती है। 3 हाँ, एक वक्‍त पर हम भी इन्हीं लोगों के बीच अपने शरीर की इच्छाओं के मुताबिक चलते थे।[10] हम वही करते थे जो हमारा शरीर चाहता और सोचता था।[11] और हम जन्म से उन लोगों की तरह थे जिन पर परमेश्‍वर का क्रोध है।*[12] 4 मगर परमेश्‍वर जो दया का धनी है,[13] उसने हमसे बहुत प्यार किया[14] 5 इसलिए हमें ज़िंदा किया और मसीह के साथ एक किया जबकि हम अपने गुनाहों की वजह से मरे हुए थे।[15] (उसकी महा-कृपा की वजह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है।) 6 उसी परमेश्‍वर ने हमें मसीह यीशु के साथ एकता में ज़िंदा किया और उसके साथ स्वर्ग में बिठाया है[1] 7 ताकि आनेवाले ज़मानों* में परमेश्‍वर बड़ी उदारता से अपनी भरपूर महा-कृपा हमारे मामले में दिखाए, जो मसीह यीशु के साथ एकता में हैं।

8 तुम्हारा उद्धार इसी महा-कृपा की वजह से विश्‍वास के ज़रिए किया गया है।[2] यह तुम्हारी वजह से नहीं हुआ है, बल्कि यह परमेश्‍वर का तोहफा है। 9 हाँ, यह तुम्हारे कामों की वजह से नहीं हुआ है[3] ताकि किसी भी इंसान के पास शेखी मारने की कोई वजह न हो। 10 हम परमेश्‍वर के हाथ की कारीगरी हैं और मसीह यीशु के साथ एकता में हैं[4] इसलिए अच्छे काम करने के लिए हमारी सृष्टि की गयी थी।[5] परमेश्‍वर ने पहले से तय कर दिया था कि हम ये काम करें।

11 इसलिए याद रखो कि तुम जो जन्म से दूसरे राष्ट्रों के लोग हो, तुम्हें एक वक्‍त पर वे लोग खतनारहित कहते थे जिन्होंने इंसान के हाथों अपने शरीर का खतना करवाया था। 12 उस वक्‍त तुम मसीह के बिना थे, इसराएल राष्ट्र से अलग थे, वादे के करारों में तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं था,[6] तुम्हारे पास कोई आशा नहीं थी और तुम इस दुनिया में बिना परमेश्‍वर के थे।[7] 13 मगर अब तुम मसीह यीशु के साथ एकता में हो। तुम जो एक वक्‍त पर परमेश्‍वर से बहुत दूर थे, अब मसीह के खून के ज़रिए उसके पास आए हो। 14 इसलिए कि मसीह ने हमारे लिए शांति कायम की है।[8] उसी

1:21; 2:2 *या "दुनिया की व्यवस्था।" शब्दावली देखें। **2:3** *शा., "हम क्रोध की संतान थे।"

2:7 *या "दुनिया की व्यवस्थाओं।" शब्दावली देखें।

अध्य. 1
1 भज 110:1; प्रेष 7:55
2 प्रेष 4:12; फिल 2:9-11
3 भज 8:6; 1कुर 15:27; इब्र 2:8
4 मत 28:18; इफ 5:23; कुल 1:18
5 रोम 12:5; इफ 4:16

अध्य. 2
6 कुल 2:13
7 रोम 12:2; इफ 4:17
8 1कुर 2:12
9 यूह 12:31
10 1कुर 6:9-11
11 1पत 4:3
12 यूह 3:36
13 भज 145:9
14 रोम 5:8; 1यूह 4:9, 19
15 कुल 2:12, 13

दूसरा कॉल.
1 इफ 1:3
2 रोम 4:16
3 रोम 3:20
4 इफ 1:3, 4
5 गल 6:15
6 रोम 9:4
7 यश 65:1
8 कुल 1:19, 20

ने दोनों समूहों को एक किया[1] और उनके
बीच खड़ी उस दीवार को ढा दिया जो
उन्हें अलग किए हुए थी।[2] **15** उसने
अपना शरीर बलिदान करके वह दुश्मनी
मिटा दी यानी कानून मिटा दिया जिसमें
कई आज्ञाएँ थीं ताकि वह दोनों समूहों
को अपने साथ एकता में लाकर एक
नया इंसान बनाए[3] और शांति कायम करे
16 और यातना के काठ*[4] के ज़रिए
उन दोनों किस्म के लोगों को एक शरीर
बनाए और परमेश्वर के साथ उनकी पूरी
तरह सुलह कराए, क्योंकि उसने अपना
बलिदान देकर इस दुश्मनी को खत्म कर
दिया।[5] **17** उसने आकर तुम्हें, जो पर-
मेश्वर से दूर थे और तुम्हें भी जो उसके
पास थे, शांति की खुशखबरी सुनायी।
18 क्योंकि उसी के ज़रिए हम दोनों
किस्म के लोग एक ही पवित्र शक्ति के
ज़रिए बिना किसी रुकावट के पिता के
पास जा सकते हैं।

19 इसलिए अब तुम अजनबी और
परदेसी नहीं रहे[6] मगर पवित्र जनों के
संगी नागरिक हो[7] और परमेश्वर के
घराने के सदस्य हो।[8] **20** तुम्हें प्रेषितों
और भविष्यवक्ताओं की नींव पर खड़ा
किया गया है[9] जिसकी नींव के कोने का
पत्थर खुद मसीह यीशु है।[10] **21** यह
पूरी इमारत जो मसीह के साथ एकता में है
और जिसके सारे हिस्से एक-दूसरे के साथ
पूरे तालमेल से जुड़े हैं,[11] बढ़ती जा रही है
ताकि यहोवा* के लिए एक पवित्र मंदिर
बने।[12] **22** उसी के साथ एकता में तुम
सबका एक-साथ निर्माण किया जा रहा है
ताकि तुम परमेश्वर के लिए एक निवास-
स्थान बन सको जहाँ वह अपनी पवित्र
शक्ति के ज़रिए रहे।[13]

2:16 *शब्दावली देखें। **2:21** *अति. क5 देखें।

अध्य. 2
1 कुल 3:11
2 लैव 20:26; कुल 2:13, 14
3 1कुर 12:12; गल 3:28
4 इब्र 12:2
5 प्रेष 10:28
6 इफ 2:12
7 फिल 3:20
8 1ती 3:15; इब्र 3:6
9 1कुर 12:28
10 यश 28:16
11 कुल 2:19
12 1कुर 3:16; 1कुर 6:19
13 1पत 2:5

दूसरा कॉल.

अध्य. 3
1 इफ 4:1
2 1कुर 9:16, 17; कुल 1:25, 26
3 1कुर 4:1; इफ 6:19
4 रोम 11:25; रोम 16:25, 26
5 इफ 2:15, 16
6 कुल 1:25-27
7 1कुर 15:9
8 1ती 1:13, 14
9 इफ 1:9, 10
10 1पत 1:10, 12
11 1पत 2:9

3 इस वजह से मैं पौलुस जो मसीह
यीशु की खातिर और तुम जो दूसरे
राष्ट्रों के लोग हो, तुम्हारी खातिर कैद
में हूँ[1] . . . **2** तुमने ज़रूर सुना होगा
कि तुम्हारे लिए मुझे परमेश्वर की महा-
कृपा के प्रबंधक होने की ज़िम्मेदारी सौंपी
गयी थी[2] **3** यानी मुझ पर पवित्र रहस्य
प्रकट किया गया था, जैसा कि मैं पहले
चंद शब्दों में लिख चुका हूँ। **4** इसलिए
जब तुम यह पढ़ोगे तो जान लोगे कि मैं
मसीह के पवित्र रहस्य[3] की कैसी समझ
रखता हूँ। **5** बीते ज़माने में किसी भी
पीढ़ी पर यह रहस्य उस हद तक प्रकट
नहीं किया गया था, जैसा आज पवित्र
शक्ति से उसके पवित्र प्रेषितों और
भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया गया
है।[4] **6** यानी यह कि दूसरे राष्ट्रों के
लोग मसीह यीशु के साथ एकता में और
खुशखबरी के ज़रिए हमारे संगी वारिस
हों, हमारे साथ एक ही शरीर के अंग
हों[5] और परमेश्वर के वादे में हमारे साथ
साझेदार हों। **7** मैं परमेश्वर की महा-
कृपा की वजह से इसी पवित्र रहस्य का
सेवक बना हूँ। उसने मुझे यह मुफ्त वर-
दान अपनी ताकत के ज़रिए दिया है।[6]

8 मुझ जैसे आदमी पर, जो पवित्र
जनों में सबसे छोटा है,[7] यह महा-कृपा की
गयी[8] कि मैं दूसरे राष्ट्रों को मसीह की
उस बेशुमार दौलत के बारे में खुशखबरी
सुनाऊँ जिसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा
सकता **9** और हर किसी को पवित्र
रहस्य के उस इंतज़ाम के बारे में सम-
झाऊँ[9] जिसे सब चीज़ों के सृष्टिकर्ता,
परमेश्वर ने लंबे अरसे से छिपा रखा
है। **10** ऐसा इसलिए किया गया ताकि
अब मंडली के ज़रिए[10] स्वर्ग की सरकारें
और अधिकारी परमेश्वर की बुद्धि के
अनगिनत पहलू जान सकें।[11] **11** यह

युग-युग के उस मकसद के मुताबिक है जो
हमारे प्रभु मसीह यीशु के मामले में उसने
ठहराया है।[1] **12** मसीह के ज़रिए ही
हमें इस तरह बेझिझक बोलने की हिम्मत
मिली है[2] और उस पर विश्वास करने
की वजह से हम पूरे भरोसे के साथ पर-
मेश्वर के सामने जा पाते हैं। **13** इस-
लिए मैं तुमसे कहता हूँ कि मेरी इन दुख-
तकलीफों की वजह से, जो मैं तुम्हारी
खातिर सह रहा हूँ, तुम हिम्मत मत हारना
क्योंकि इनकी वजह से तुम्हारी महिमा
होगी।[3]

14 इस वजह से मैं उस पिता के
सामने घुटने टेककर तुम्हारे लिए प्रार्थना
करता हूँ, **15** जिसकी बदौलत स्वर्ग में
और धरती पर हर परिवार वजूद में आया
है।* **16** मैं प्रार्थना करता हूँ कि पर-
मेश्वर जिसके पास अपार महिमा है
अपनी पवित्र शक्ति से तुम्हें वह ताकत
दे जिससे तुम्हारे अंदर का इंसान शक्ति-
शाली होता जाए[4] **17** और तुम्हारे
विश्वास की वजह से मसीह तुम्हारे दिलों
में निवास करे जो प्यार से भरे हैं।[5] मेरी
दुआ है कि तुम गहराई तक जड़ पकड़ो[6]
और उस नींव पर मज़बूती से टिके रहो[7]
18 ताकि तुम सभी पवित्र जनों के
साथ चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई और गहराई
को अच्छी तरह समझ सको **19** और
मसीह के प्यार[8] को भी जान सको जो
ज्ञान से कहीं बढ़कर है ताकि परमेश्वर के
गुण पूरी हद तक तुममें पाए जाएँ।

20 परमेश्वर की ताकत हमारे अंदर
काम कर रही है[9] और हम उससे जो
माँगते हैं या जितना सोच सकते हैं,[10] वह
उससे कहीं ज़्यादा बढ़कर कर सकता है।
21 उस परमेश्वर को मंडली के ज़रिए
और मसीह यीशु के ज़रिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी
हमेशा-हमेशा तक महिमा मिलती रहे।
आमीन।

4 इसलिए मैं जो प्रभु का चेला होने के
नाते कैदी हूँ,[1] तुमसे गुज़ारिश करता
हूँ कि तुम्हारा चालचलन उस बुलावे के
योग्य हो[2] जो तुम्हें दिया गया है।
2 नम्रता,[3] कोमलता और सब्र के साथ[4]
प्यार से एक-दूसरे की सहते रहो,[5]
3 अपने बीच शांति बनाए रखने की पूरी
कोशिश करो जो तुम्हें एकता के उस
बंधन में बाँधे रखती है जिसे तुम पवित्र
शक्ति से हासिल करते हो।[6] **4** एक ही
शरीर है[7] और एक ही पवित्र शक्ति है,[8]
ठीक जैसे वह आशा भी एक ही है[9] जिसे
पाने के लिए तुम बुलाए गए थे। **5** एक
ही प्रभु है,[10] एक ही विश्वास, एक ही
बपतिस्मा। **6** और सबका एक ही पर-
मेश्वर और पिता है, जो सबके ऊपर है
और सबके ज़रिए और सबमें काम
करता है।

7 मसीह ने हरेक को जो मुफ्त वरदान
बाँटा है, उसी के मुताबिक हममें से हरेक
पर महा-कृपा की गयी है।[11] **8** इस-
लिए शास्त्र कहता है, "जब वह ऊँचे पर
चढ़ा तो बंदियों को ले गया। उसने आद-
मियों के रूप में तोहफे दिए।"[12] **9** 'वह
चढ़ा,' इस बात का क्या मतलब है? यही
कि वह निचले इलाकों यानी धरती पर
उतरा भी था। **10** जो उतरा था वही
पूरे स्वर्ग से भी ऊपर चढ़ा[13] ताकि वह
सब बातों को पूरा करे।

11 और उसने कुछ को प्रेषित,[14]
कुछ को भविष्यवक्ता,[15] कुछ को प्रचा-
रक,*[16] कुछ को चरवाहे और शिक्षक
ठहराया[17] **12** ताकि पवित्र जनों का

अध्य. 3
1 इफ 1:11
2 यूह 14:6; इब्र 4:15, 16
3 2ती 2:10
4 2कुर 4:16
5 यूह 14:23
6 कुल 2:6, 7
7 कुल 1:23
8 रोम 8:35
9 कुल 1:29
10 मर 11:24

दूसरा कॉल.

अध्य. 4
1 फिले 9
2 फिल 1:27
3 मत 11:29; रोम 12:3; फिल 2:3; 1पत 5:5
4 1थि 5:14
5 1कुर 13:4
6 1कुर 1:10; कुल 3:15
7 रोम 12:5
8 1कुर 12:4
9 1पत 1:3, 4
10 1कुर 8:6; 1कुर 12:5, 6
11 1कुर 12:11
12 भज 68:18; 1कुर 12:28; इफ 4:11
13 प्रेष 1:9; 1ती 3:16; इब्र 9:24
14 मत 10:2-4
15 1कुर 12:28
16 प्रेष 21:8
17 प्रेष 13:1; याकू 3:1

3:15 *या "हर परिवार को नाम मिला है।"

4:11 *या "खुशखबरी सुनानेवाले।"

सुधार* हो और वे सेवा का काम
करें और मसीह का शरीर तब तक
बढ़ता जाए[1] 13 जब तक कि हम सब
विश्वास में और परमेश्वर के बेटे के सही
ज्ञान में एकता हासिल न कर लें और पूरी
तरह से विकसित* आदमी की तरह[2]
मसीह की पूरी कद-काठी हासिल न कर
लें। 14 इसलिए हम अब से बच्चे न
रहें जो झूठी बातों की लहरों से यहाँ-वहाँ
उछाले जाते और शिक्षाओं के हर झोंके
से इधर-उधर उड़ाए जाते हैं,[3] क्योंकि वे
ऐसे इंसानों की बातों में आ जाते हैं जो
छल से और बड़ी चालाकी से धोखा
देकर उन्हें बहका लेते हैं। 15 मगर
आओ हम सच बोलें और सब बातों में
प्यार से मसीह में बढ़ते जाएँ जो हमारा
सिर* है।[4] 16 मसीह से शरीर के सारे
अंग[5] आपस में जुड़े हुए हैं और ज़रूरी
काम करनेवाले हर जोड़ के ज़रिए एक-
दूसरे को सहयोग देते हैं। जब शरीर का
हर अंग सही तरीके से काम करता है तो
इससे शरीर बढ़ता जाता है और प्यार में
मज़बूत होता जाता है।[6]

17 इसलिए मैं प्रभु के सामने तुमसे
यह कहता हूँ और तुम्हें सलाह देता हूँ
कि तुम अब से दुनिया के लोगों की
तरह न बनो[7] जो अपने खोखले* विचारों
के मुताबिक चलते हैं।[8] 18 वे अनजान
बने रहते हैं और उनके दिल कठोर* हैं
इसलिए वे दिमागी तौर पर अंधकार में हैं
और उस ज़िंदगी से दूर हैं जो परमेश्वर
देता है। 19 वे शर्म-हया की सारी हदें
पार कर चुके हैं* इसलिए उन्होंने खुद को
निर्लज्ज कामों*[1] के हवाले कर दिया है
ताकि हर तरह का अशुद्ध काम करते रहें
और उसकी और भी लालसा करें।

20 मगर तुमने मसीह के बारे में ऐसी
शिक्षा नहीं पायी 21 बशर्ते तुमने उससे
सुना हो और उसके ज़रिए तुम्हें सिखाया
गया हो क्योंकि सच्चाई यीशु में है।
22 तुम्हें सिखाया गया था कि तुम्हें
अपनी पुरानी शख्सियत को उतार फेंकना
चाहिए[2] जो तुम्हारे पहले के चाल-
चलन के मुताबिक है और जो उसकी
गुमराह करनेवाली इच्छाओं के मुता-
बिक भ्रष्ट होती जा रही है।[3] 23 और
तुम्हें अपनी सोच और अपने नज़रिए*
को नया बनाते जाना है जो तुम पर हावी
है[4] 24 और नयी शख्सियत को पहन
लेना चाहिए,[5] जो परमेश्वर की मरज़ी
के मुताबिक रची गयी है और नेक स्तरों
और सच्ची वफादारी की माँगों के मुता-
बिक है।

25 इसलिए जब तुमने छल-कपट को
खुद से दूर कर दिया है, तो अब तुममें
से हर कोई अपने पड़ोसी से सच बोले,[6]
क्योंकि हम एक ही शरीर के अलग-
अलग अंग हैं।[7] 26 अगर तुम्हें क्रोध
आए तो भी पाप मत करो।[8] सूरज ढलने
तक तुम्हारा गुस्सा न रहे[9] 27 और
शैतान* को मौका मत दो।#[10] 28 जो
चोरी करता है वह अब से चोरी न करे।
इसके बजाय, वह कड़ी मेहनत करे और
अपने हाथों से ईमानदारी का काम करे[11]
ताकि किसी ज़रूरतमंद को देने के लिए
उसके पास कुछ हो।[12] 29 कोई बुरी*

4:12 *या "प्रशिक्षण।" 4:13 *या "सयाने।" 4:15 *यानी मुखिया। 4:17 *या "व्यर्थ; बेकार।" 4:18 *शा., "सुन्न।" 4:19 *शा., "उनका एहसास मिट चुका है।"

4:19 *या "शर्मनाक बरताव।" शब्दावली देखें। 4:23 *या "दिमाग को प्रेरित करने-वाली शक्ति।" 4:27 *शा., "इबलीस।" शब्दावली देखें। #या "इबलीस को जगह मत दो।" 4:29 *शा., "सड़ी हुई।"

अध्य. 4
1 1कुर 14:26
2 1कुर 14:20
3 इब्र 13:9
4 1कुर 11:3, कुल 1:18
5 1कुर 12:27
6 कुल 2:19
7 1पत 4:3
8 रोम 1:21

दूसरा कॉल.
1 गल 5:19
2 रोम 6:6, कुल 3:9
3 रोम 7:23
4 भज 51:10, रोम 12:2
5 कुल 3:10
6 जक 8:16, कुल 3:8, 9, प्रक 21:8
7 रोम 12:5
8 भज 4:4
9 लैव 19:17, कुल 3:13
10 याकू 4:7
11 2थि 3:10
12 प्रेष 20:35, 1थि 4:11, 12

बात तुम्हारे मुँह से न निकले,[1] मगर
सिर्फ अच्छी बात निकले जो ज़रूरत के
हिसाब से हिम्मत बँधाए ताकि सुनने-
वालों को फायदा हो।[2] **30** परमेश्वर
की पवित्र शक्ति को दुखी मत करो,[3]
जिससे तुम पर उस दिन के लिए मुहर
लगायी गयी है,[4] जब फिरौती के ज़रिए
तुम छुड़ाए जाओगे।[5]

31 हर तरह की जलन-कुढ़न,[6]
गुस्सा, क्रोध, चीखना-चिल्लाना और
गाली-गलौज,[7] साथ ही नुकसान पहुँ-
चानेवाली हर बात को खुद से दूर
करो।[8] **32** इसके बजाय, एक-दूसरे के
साथ कृपा से पेश आओ और कोमल
करुणा दिखाते हुए[9] एक-दूसरे को दिल
से माफ करो, ठीक जैसे परमेश्वर ने
भी मसीह के ज़रिए तुम्हें दिल से माफ
किया है।[10]

5 इसलिए परमेश्वर के प्यारे बच्चों
की तरह उसकी मिसाल पर चलो[11]
2 और प्यार की राह पर चलते रहो,[12]
ठीक जैसे मसीह ने भी हमसे*
प्यार किया[13] और हमारी# खातिर पर-
मेश्वर के सामने सुगंध देनेवाले चढ़ावे
और बलिदान के तौर पर खुद को दे
दिया।[14]

3 जैसा पवित्र लोगों[15] के लिए
उचित है, तुम्हारे बीच नाजायज़ यौन-
संबंध* और किसी भी तरह की अशुद्धता
या लालच का ज़िक्र तक न हो,[16] **4** न
तुम्हारे बीच शर्मनाक बरताव, न बेवकूफी
की बातें, न ही अश्लील मज़ाक हो[17]
क्योंकि ऐसी बातें पवित्र लोगों को शोभा
नहीं देतीं। इसके बजाय, परमेश्वर का
धन्यवाद ही सुना जाए।[18] **5** क्योंकि
तुम जानते हो और तुम्हें इस बात का पूरा
एहसास है कि ऐसा कोई भी इंसान जो ना-
जायज़ यौन-संबंध* रखता है[1] या अशुद्ध
काम करता है या लालची है[2] जो कि
मूर्तिपूजा करनेवाले के बराबर है, वह
मसीह के और परमेश्वर के राज में कोई
विरासत नहीं पाएगा।[3]

6 कोई भी इंसान तुम्हें खोखली बातों
से धोखा न दे, क्योंकि इन्हीं बुराइयों की
वजह से परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न
माननेवालों पर आ रहा है। **7** इसलिए
उनके साथ साझेदार न बनो **8** क्योंकि
तुम भी एक वक्त पर अंधकार में थे,
मगर अब तुम प्रभु के साथ एकता में
होने की वजह से[4] रौशनी में हो।[5]
रौशनी की संतानों के नाते चलते रहो
9 क्योंकि रौशनी का नतीजा हर तरह
की भलाई, नेकी और सच्चाई है।[6]
10 जाँच करके पक्का करते रहो कि
प्रभु किन बातों को स्वीकार करता
है[7] **11** और उनके साथ मिलकर अंध-
कार के निकम्मे काम करना छोड़ दो।[8]
इसके बजाय उनका परदाफाश करो।
12 क्योंकि वे गुप्त में जो काम करते हैं
उनके बारे में बात करना भी शर्मनाक है।
13 जितनी भी बातों का परदाफाश किया
जाता है, वे रौशनी से ज़ाहिर की जाती
हैं क्योंकि हर वह बात जो ज़ाहिर की जा
रही है, वह रौशनी है। **14** इसलिए वह
कहता है, "अरे सोनेवाले, जाग और मरे
हुओं में से* ज़िंदा हो,[9] तब मसीह की
रौशनी तुझ पर चमकेगी।"[10]

15 इसलिए खुद पर कड़ी नज़र रखो
कि तुम्हारा चालचलन कैसा है, मूर्खों
की तरह नहीं बल्कि बुद्धिमानों की
तरह चलो। **16** अपने वक्त का सही

5:2 *या शायद, "तुमसे।" #या शायद, "तुम्हारी।" **5:3** *यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें।

5:5 *शब्दावली देखें। **5:14** *यानी मरी हुई हालत से।

अध्य. 4
1 मत 15:11, याकू 3:10
2 कुल 4:6
3 यश 63:10
4 इफ 1:13
5 रोम 8:23
6 याकू 3:14
7 कुल 3:8
8 तीत 3:2
9 कुल 3:12, 1पत 3:8
10 मत 6:14, मत 18:35, मर 11:25

अध्य. 5
11 मत 5:48, लूक 6:36
12 1कुर 16:14
13 यूह 13:34, 1यूह 3:23
14 निर्ग 29:18
15 1थि 4:3
16 1कुर 5:11, कुल 3:5
17 कुल 3:8
18 1थि 5:18

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 15:28, 29
2 1ती 3:8, तीत 1:7
3 1कुर 6:9, 10, गल 5:19, 21
4 1पत 2:9
5 मत 5:16, यूह 12:36
6 गल 5:22, 23
7 रोम 12:2
8 रोम 13:12, 13, 2कुर 6:14
9 इफ 2:1, कुल 2:13
10 यूह 8:12

इस्तेमाल करो*[1] क्योंकि दिन बुरे हैं।
17 इस वजह से मूर्खता के काम करना
छोड़ दो बल्कि यह समझने की कोशिश
करते रहो कि यहोवा* की मरज़ी क्या
है।[2] **18** साथ ही, दाख-मदिरा पीकर
धुत्त न हो[3] जो नीच हरकतों* की तरफ
ले जाता है, मगर पवित्र शक्ति से भरपूर
होते जाओ। **19** भजन गाकर,# पर-
मेश्वर का गुणगान करके और उपासना
के गीत गाकर एक-दूसरे की हिम्मत
बँधाओ[4] और अपने दिलों में संगीत के
साथ[5] यहोवा* के लिए गीत गाते रहो[6]
20 और हर बात के लिए हमारे प्रभु
यीशु मसीह के नाम से हमारे परमेश्वर
और पिता को धन्यवाद देते रहो।[7]

21 मसीह का डर मानते हुए एक-दूसरे
के अधीन रहो।[8] **22** पत्नियाँ अपने-
अपने पति के अधीन रहें[9] जैसे वे प्रभु के
अधीन रहती हैं **23** क्योंकि पति अपनी
पत्नी का सिर है,[10] ठीक जैसे मसीह भी
अपने शरीर यानी मंडली का सिर है[11]
और उसका उद्धारकर्ता है। **24** जैसे
मंडली मसीह के अधीन है, वैसे ही
पत्नियाँ भी हर बात में अपने-अपने
पति के अधीन रहें। **25** हे पतियो,
अपनी-अपनी पत्नी से प्यार करते रहो,[12]
ठीक जैसे मसीह ने भी मंडली से प्यार
किया और अपने आपको उसकी खातिर
दे दिया[13] **26** ताकि वह उसे पानी जैसे
वचन से धोकर शुद्ध करे और पवित्र ठह-
राए।[14] **27** और मंडली को उसके पूरे
वैभव के साथ अपने सामने पेश करे
जिसमें न कोई दाग और न झुर्री हो, न
ही कोई और खामी हो[1] बल्कि यह पवित्र
और बेदाग हो।[2]

28 इसी तरह पतियों को चाहिए कि
वे अपनी-अपनी पत्नी से ऐसे प्यार
करें जैसे अपने शरीर से। जो अपनी
पत्नी से प्यार करता है, वह खुद से
प्यार करता है। **29** इसलिए कि कोई
भी आदमी अपने शरीर से कभी नफ-
रत नहीं करता, बल्कि वह उसे खिलाता-
पिलाता है और अनमोल समझता है,
ठीक जैसे मसीह भी मंडली के साथ पेश
आता है **30** क्योंकि हम उसके शरीर
के अंग हैं।[3] **31** "इस वजह से आदमी
अपने माता-पिता को छोड़ देगा और
अपनी पत्नी से जुड़ा रहेगा* और वे
दोनों एक तन होंगे।"[4] **32** यह पवित्र
रहस्य[5] महान है। मैं मसीह और मंडली
के बारे में बात कर रहा हूँ।[6] **33** फिर
भी तुममें से हरेक अपनी पत्नी से वैसा ही
प्यार करे[7] जैसा वह अपने आप से करता
है। और पत्नी भी अपने पति का गहरा
आदर करे।[8]

6 बच्चो, प्रभु में अपने माता-पिता
का कहना माननेवाले बनो[9] क्योंकि
यह परमेश्वर की नज़र में सही है।
2 "अपने पिता और अपनी माँ का
आदर करना,"[10] यह पहली आज्ञा है
जिसके साथ यह वादा भी किया गया
है: **3** "ताकि तेरा भला हो* और तू
धरती पर लंबी उम्र जीए।" **4** और हे
पिताओ, अपने बच्चों को चिढ़ मत
दिलाओ[11] बल्कि यहोवा* की मरज़ी
के मुताबिक उन्हें सिखाते और समझाते
हुए# उनकी परवरिश करो।[12]

अध्य. 5
1 कुल 4:5
2 रोम 12:2
1थि 4:3
1पत 4:2
3 यश 5:11
4 याकू 5:13
5 भज 33:2, 3
6 प्रेष 16:25
कुल 3:16
7 कुल 3:17
1थि 5:18
8 फिल 2:3
1पत 5:5
9 कुल 3:18
तीत 2:4, 5
1पत 3:1
10 रोम 7:2
11 1कुर 11:3
12 1पत 3:7
13 प्रेष 20:28
14 यूह 17:17

दूसरा कॉल.
1 तीत 2:13, 14
2 इफ 1:4
कुल 1:21, 22
3 रोम 12:5
इफ 1:22, 23
4 उत 2:24
मत 19:5
5 इफ 1:9, 10
कुल 1:26, 27
6 इफ 3:5, 6
7 कुल 3:19
8 1पत 3:5, 6

अध्य. 6
9 नीत 1:8
नीत 6:20
कुल 3:20
10 निर्ग 20:12
व्य 5:16
नीत 20:20
नीत 23:22
मत 15:4
11 कुल 3:21
12 व्य 6:6, 7
नीत 3:11
नीत 13:24
नीत 19:18
नीत 22:6

5:16 *शा., "तय वक्त को खरीद लो।" **5:17, 19; 6:4** *अति. क5 देखें। **5:18** *या "बेकाबू बरताव।" **5:19** #या शायद, "अपने लिए भजन गाकर।"

5:31 *या "के साथ ही रहेगा।" **6:3** *या "ताकि तू खुशहाल रहे।" **6:4** #या "हिदायतें; मार्गदर्शन देते हुए।" शा., "उसकी सोच पैदा करते हुए।"

5 हे दासो, जो दुनिया में तुम्हारे मालिक हैं,[1] उनसे डरते और थरथराते हुए मन की सीधाई से उनकी आज्ञा मानो, जैसे तुम मसीह की मानते हो। 6 सिर्फ तब नहीं जब वे तुम्हें देख रहे हों, मानो तुम इंसानों को खुश करना चाहते हो,[2] बल्कि मसीह के दासों की तरह तन-मन से परमेश्वर की मरज़ी पूरी करो।[3] 7 सही रवैए के साथ काम करो, मानो तुम यह सेवा यहोवा* के लिए कर रहे हो,[4] न कि इंसानों के लिए, 8 क्योंकि तुम जानते हो कि हर कोई, चाहे दास हो या आज़ाद, जो अच्छा काम करेगा वह यहोवा* से इनाम पाएगा।[5] 9 और हे मालिको, तुम भी अपने दासों के साथ अच्छा बरताव करो और उन्हें मत धमकाओ, क्योंकि तुम जानते हो कि तुम दोनों का मालिक स्वर्ग में है[6] और वह पक्षपात नहीं करता।

10 आखिर में, मैं तुम्हें बढ़ावा देता हूँ कि प्रभु में उसकी महाशक्ति पाकर ताकत हासिल करते जाओ।[7] 11 परमेश्वर के दिए सारे हथियार बाँध लो[8] ताकि तुम शैतान की धूर्त चालों* का डटकर सामना कर सको। 12 इसलिए कि हमारी लड़ाई*[9] हाड़-माँस# के इंसानों से नहीं बल्कि सरकारों, अधिकारियों, दुनिया के अंधकार के शासकों और उन शक्तिशाली दुष्ट दूतों से है[10] जो आकाश में हैं। 13 इसलिए परमेश्वर के दिए सारे हथियार बाँध लो[11] ताकि जब बुरा दिन आए तो तुम सामना कर सको और जो करना चाहिए वह सब करने के बाद, डटे रह सको।

14 इसलिए सच्चाई के पट्टे से अपनी कमर कसकर[1] और नेकी का कवच पहनकर डटे रहो[2] 15 और पैरों में शांति की खुशखबरी सुनाने की तैयारी के जूते पहनकर डटे रहो।[3] 16 इन सबके अलावा, विश्वास की बड़ी ढाल उठा लो,[4] जिससे तुम शैतान* के सभी जलते हुए तीरों को बुझा सकोगे।[5] 17 और उद्धार का टोप पहनो[6] और पवित्र शक्ति की तलवार यानी परमेश्वर का वचन हाथ में ले लो।[7] 18 हर मौके पर पवित्र शक्ति के मुताबिक[8] हर तरह की प्रार्थना[9] और मिन्नतें करते रहो। और ऐसा करने के लिए जागते रहो और सभी पवित्र जनों की खातिर मिन्नतें करते रहो। 19 मेरे लिए भी प्रार्थना करो कि बोलते समय मेरे मुँह में शब्द दिए जाएँ ताकि जब मैं खुशखबरी का पवित्र रहस्य सुनाऊँ तो निडर होकर बात कर सकूँ[10] 20 जिसके लिए मैं ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ राजदूत[11] हूँ। मेरे लिए प्रार्थना करो कि उसके बारे में हिम्मत से बोल सकूँ, जैसा कि मुझे बोलना चाहिए।

21 हमारा प्यारा भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक तुखिकुस[12] तुम्हें मेरे बारे में सारी बातें बताएगा ताकि तुम जान सको कि मैं कैसा हूँ और क्या कर रहा हूँ।[13] 22 मैं इसी मकसद से उसे तुम्हारे पास भेज रहा हूँ ताकि तुम जान सको कि हम यहाँ कैसे हैं और वह तुम्हारे दिलों को दिलासा दे सके।

23 हमारे परमेश्वर और पिता और प्रभु यीशु मसीह की तरफ से भाइयों को विश्वास के साथ शांति और प्यार मिले। 24 उन सभी पर महा-कृपा होती रहे, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से ऐसा प्यार रखते हैं जो कभी नहीं मिटता।

6:7, 8 *अति. क5 देखें। **6:11** *या "साज़िशों।" **6:12** *शा., "कुश्ती।" #शा., "खून और माँस।"

6:16 *शा., "उस दुष्ट।"

अध्य. 6
1 1ती 6:1; 1पत 2:18
2 कुल 3:22
3 लूक 10:27
4 1कुर 10:31
5 कुल 3:23, 24
6 1कुर 7:22
7 इफ 3:16
8 रोम 13:12
9 2ती 4:7
10 2पत 2:4
11 2कुर 6:4, 7

दूसरा कॉल.
1 यश 11:5
2 नीत 4:23; यश 59:17
3 यश 52:7; रोम 10:15
4 1यूह 5:4
5 1पत 5:8, 9
6 यश 59:17; 1थि 5:8
7 इब्र 4:12
8 यहू 20
9 कुल 4:2
10 कुल 4:3
11 2कुर 5:20
12 2ती 4:12; तीत 3:12
13 कुल 4:7, 8

फिलिप्पियों

के नाम चिट्ठी

सारांश

1 पौलुस और तीमुथियुस, जो मसीह
यीशु के दास हैं, फिलिप्पी[1] में रहने-
वाले सभी पवित्र जनों को जो मसीह यीशु
के साथ एकता में हैं और निगरानी करने-
वालों और सहायक सेवकों[2] को यह चिट्ठी
लिख रहे हैं:
2 हमारे पिता यानी परमेश्वर की
तरफ से और प्रभु यीशु मसीह की तरफ
से तुम्हें महा-कृपा और शांति मिले।
3 मैं जब भी तुम्हें याद करता हूँ, तो
अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ।
4 मैं तुम सबके लिए हमेशा खुशी-खुशी
मिन्नतें करता हूँ[3] 5 क्योंकि जिस दिन
तुमने खुशखबरी सुनी थी, उस दिन से
लेकर आज के दिन तक तुमने खुशखबरी
फैलाने में कितना बढ़िया योगदान दिया
है। 6 मुझे इस बात का यकीन है कि
परमेश्वर जिसने तुम्हारे बीच एक भले
काम की शुरूआत की है, वह मसीह
यीशु के दिन[1] तक उसे पूरा भी करेगा।[2]
7 तुम सबके बारे में ऐसा सोचना मेरे लिए
बिलकुल सही है क्योंकि तुम मेरे दिल में
बसे हो। चाहे मेरी ज़ंजीरों में कैद होने
की बात हो या खुशखबरी की पैरवी करने
और उसे कानूनी मान्यता दिलाने की,[3]
तुम सब मेरे साथ परमेश्वर की महा-कृपा
में साझेदार हो।[4]
8 परमेश्वर मेरा गवाह है कि मैं तुम
सबसे मिलने के लिए कितना तरस रहा
हूँ, क्योंकि मैं तुमसे वैसा ही गहरा लगाव
रखता हूँ जैसा मसीह यीशु रखता है।
9 और मैं यही प्रार्थना करता रहता हूँ
कि सही ज्ञान[5] और पैनी समझ[6] के
साथ तुम्हारा प्यार और भी बढ़ता जाए[7]

अध्य. 1
1 प्रेष 16:12
2 1ती 3:1, 8
3 1थि 1:2

दूसरा कॉल.
1 1कुर 1:8
2 फिल 2:13
3 प्रेष 24:10, 14
प्रेष 25:10-12
4 इफ 3:1
फिल 1:13
कुल 4:18
2ती 1:8
फिले 13
5 यूह 17:3
6 इब्र 5:14
7 1थि 3:12

10 ताकि तुम पहचान सको कि ज़्यादा
अहमियत रखनेवाली बातें क्या हैं,[1]
जिससे कि मसीह के दिन तक तुम्हारे
अंदर कोई खामी न हो और तुम दूसरों
के विश्वास में बाधा न बनो*[2] 11 और
नेकी के फलों से लद जाओ जो तुम
यीशु मसीह की बदौलत पैदा कर
पाओगे[3] ताकि परमेश्वर की महिमा और
तारीफ हो।

12 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम यह
जान लो कि आज मैं जिस हाल में हूँ,
उससे खुशखबरी फैलाने में मदद ही मिली
है। 13 सम्राट के अंगरक्षक दल के सब
लोग और बाकी लोग भी जान गए हैं[4]
कि मैं मसीह की वजह से ज़ंजीरों में
हूँ।[5] 14 अब प्रभु में ज़्यादातर भाइयों
को मेरे कैद में होने की वजह से हिम्मत
मिली है और वे पहले से ज़्यादा निडर
और बेधड़क होकर परमेश्वर का वचन
सुना रहे हैं।

15 यह सच है कि कुछ लोग ईर्ष्या
और होड़ की भावना से मसीह का
प्रचार कर रहे हैं, मगर दूसरे अच्छी
भावना से प्रचार कर रहे हैं। 16 जो
अच्छी भावना से प्रचार कर रहे हैं वे
प्यार की वजह से मसीह का प्रचार करते
हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि मुझे खुशखबरी
की पैरवी करने के लिए ठहराया गया
है।[6] 17 मगर जो नेक इरादे से नहीं
बल्कि झगड़ा करने के इरादे से प्रचार
करते हैं, वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि मैं
कैद में दुखी हो जाऊँ। 18 मगर इसका
नतीजा क्या हुआ है? यही कि चाहे कोई
गलत इरादे से करे या नेक इरादे से,
मसीह का प्रचार तो हो रहा है और
इससे मुझे खुशी मिलती है। दरअसल,
मैं खुशी मनाता रहूँगा 19 क्योंकि मैं
जानता हूँ कि तुम्हारी मिन्नतों की वजह
से और यीशु मसीह से मिलनेवाली पवित्र
शक्ति की मदद से[1] मेरा उद्धार होगा।[2]
20 और मैं दिल से यही उम्मीद और
आशा करता हूँ कि मुझे किसी भी तरह
से शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा। इसके बजाय
जैसे हमेशा होता आया है, वैसे ही अब
भी मेरे बेझिझक बोलने की वजह से मेरे*
ज़रिए मसीह की बड़ाई होगी, फिर चाहे मैं
जीऊँ या मर जाऊँ।[3]

21 जहाँ तक मेरी बात है, अगर मैं
जीऊँ तो मसीह की सेवा में लगा रहूँगा[4]
और अगर मैं मर जाऊँ तो यह भी मेरे
फायदे के लिए होगा।[5] 22 जब तक मैं
दुनिया में* ज़िंदा हूँ, मैं अपने काम से
और ज़्यादा फल पैदा कर सकूँगा। मैं नहीं
बताता कि मैं क्या चुनूँगा। 23 मैं बड़ी
उलझन में हूँ कि दोनों में से क्या चुनूँ।
मैं चाहता तो यही हूँ कि छुटकारा पाकर
मसीह के साथ रहूँ,[6] क्योंकि यही बढ़िया
रहेगा।[7] 24 लेकिन तुम्हारी खातिर
मेरे लिए इस दुनिया में जीते रहना ज़्यादा
ज़रूरी है। 25 मुझे पूरा यकीन है और
मैं जानता हूँ कि मैं ज़िंदा रहूँगा और तुम
सबके साथ रहूँगा ताकि तुम तरक्की करो
और विश्वास में खुशी मनाओ 26 और
जब मैं दोबारा तुम्हारे साथ रहूँगा, तो
मसीह यीशु में तुम्हारी खुशी उमड़ती रहे।

27 सिर्फ इस बात का ध्यान रखो कि
तुम्हारा चालचलन मसीह की खुशखबरी
के योग्य रहे*[8] ताकि चाहे मैं आकर
तुमसे मिलूँ या दूर रहूँ, मैं तुम्हारे बारे
में यही सुनूँ और पाऊँ कि तुम सब एक
ही सोच रखते हुए, मज़बूती से एक-साथ

अध्य. 1
1 रोम 12:2
2 रोम 14:13, 21
3 यूह 15:5
4 प्रेष 28:30, 31
5 इफ 3:1
6 फिल 1:7

दूसरा कॉल.
1 यूह 15:26
2 2कुर 1:11
3 रोम 14:8; 1पत 4:16
4 गल 2:20
5 1थि 4:14; 2ती 4:8; प्रक 14:13
6 2ती 4:6
7 2कुर 5:6, 8
8 इफ 4:1, 3; कुल 1:10

1:10 *शा., "दूसरों को ठोकर न खिलाओ।"

1:20 *शा., "मेरे शरीर के।" **1:22** *शा., "शरीर में।" **1:27** *या "तुम नागरिकों जैसा बरताव करो।"

खड़े हो[1] और खुशखबरी पर विश्वास के लिए कंधे-से-कंधा मिलाकर कड़ा संघर्ष कर रहे हो **28** और किसी भी बात में विरोधियों से नहीं डरते। यही उनके लिए विनाश[2] का और तुम्हारे लिए उद्धार का सबूत है।[3] यह परमेश्वर की तरफ से है। **29** क्योंकि मसीह की खातिर तुम्हें यह सम्मान दिया गया है कि तुम न सिर्फ उस पर विश्वास करो बल्कि उसकी खातिर दुख भी सहो।[4] **30** तुम भी वैसा ही संघर्ष कर रहे हो जैसा तुमने मुझे करते देखा था[5] और जैसा कि तुमने सुना है मैं अब भी संघर्ष कर रहा हूँ।

2 तो फिर अगर तुम मसीह में एक-दूसरे का हौसला बढ़ाना चाहते हो, प्यार से दिलासा देना चाहते हो, हमदर्दी जताना चाहते हो, एक-दूसरे से गहरा लगाव रखना और एक-दूसरे पर करुणा करना चाहते हो, **2** तो तुम एक जैसी सोच रखो और तुममें एक-सा प्यार हो, तुममें पूरी एकता हो और तुम्हारे विचार एक जैसे हों।[6] ऐसा करके तुम मुझे पूरी हद तक खुशी दो। **3** झगड़ालू रवैए[7] या अहंकार की वजह से कुछ न करो,[8] मगर नम्रता से दूसरों को खुद से बेहतर समझो।[9] **4** और हर एक सिर्फ अपने भले की फिक्र में न रहे,[10] बल्कि दूसरे के भले की भी फिक्र करे।[11]

5 तुम वैसी सोच और वैसा नज़रिया रखो जैसा मसीह यीशु का था।[12] **6** उसने परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी,[13] उस पद को हथियाने की यानी परमेश्वर की बराबरी करने की कभी नहीं सोची।[14] **7** इसके बजाय, उसने अपना सबकुछ त्याग दिया* और एक दास का रूप लिया[15] और इंसान बन गया।[16] **8** इतना ही नहीं, जब वह इंसान बनकर आया* तो उसने खुद को नम्र किया और इस हद तक आज्ञा मानी कि उसने मौत भी,[1] हाँ, यातना के काठ# पर मौत भी सह ली।[2] **9** इसी वजह से परमेश्वर ने उसे पहले से भी ऊँचा पद देकर महान किया[3] और कृपा करके उसे वह नाम दिया जो दूसरे हर नाम से महान है[4] **10** ताकि जो स्वर्ग में हैं और जो धरती पर हैं और जो ज़मीन के नीचे हैं, हर कोई यीशु के नाम से घुटने टेके[5] **11** और हर जीभ खुलकर यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह ही प्रभु है[6] ताकि परमेश्वर हमारे पिता की महिमा हो।

12 मेरे प्यारे भाइयो, तुम हमेशा से आज्ञा मानते आए हो। जब मैं तुम्हारे साथ था तब भी मानते थे और अब जब मैं तुमसे दूर हूँ तो तुम और भी खुशी-खुशी आज्ञा मानते हो। तुम इसी तरह डरते-काँपते हुए अपने उद्धार के लिए काम करते जाओ। **13** क्योंकि परमेश्वर ही अपनी मरज़ी के मुताबिक तुम्हें मज़बूत करता है और तुम्हारे अंदर इच्छा पैदा करता है और उसे पूरा करने की ताकत भी देता है। **14** सब काम बिना कुड़कुड़ाए[7] और बिना बहस के करते रहो[8] **15** ताकि तुम निर्दोष और मासूम और परमेश्वर के बच्चे ठहरो[9] और एक टेढ़ी और भ्रष्ट पीढ़ी[10] के बीच बेदाग बने रहो, जिसके बीच तुम इस दुनिया में रौशनी की तरह चमक रहे हो[11] **16** और जीवन के वचन पर मज़बूत पकड़ बनाए रखो।[12] तब मसीह के दिन मैं इस बात पर खुशी मना सकूँगा कि मैं बेकार ही नहीं दौड़ा या मैंने बेकार ही कड़ी मेहनत नहीं की। **17** फिर भी

2:7 *शा., "खुद को पूरी तरह खाली कर दिया।"

2:8 *शा., "जब उसने खुद को इंसान की शक्ल-सूरत में पाया।" #शब्दावली देखें।

अध्य. 1

1 रोम 15:5, 6; 1कुर 1:10
2 2थि 1:6
3 लूक 21:19; 2थि 1:4, 5
4 प्रेष 5:41
5 प्रेष 16:22, 23; 1थि 2:2

अध्य. 2

6 1कुर 1:10; 2कुर 13:11; 1पत 3:8
7 फिल 1:15, 17; याकू 3:14, 16
8 गल 5:26
9 मत 23:11; इफ 4:1, 2; इफ 5:21
10 1कुर 13:4, 5
11 1कुर 10:24; 1कुर 10:32, 33
12 मत 11:29; यूह 13:14, 15
13 कुल 1:15; इब्र 1:3
14 यूह 14:28
15 यश 53:2, 3
16 यूह 1:14

दूसरा कॉल.

1 यूह 10:17; इब्र 2:9; इब्र 5:8
2 गल 3:13
3 यश 52:13; प्रेष 2:32, 33
4 प्रेष 4:12; इफ 1:20, 21
5 यूह 5:22, 23
6 रोम 10:9
7 1कुर 10:10; 1पत 4:9
8 1ती 2:8
9 इफ 5:1
10 व्य 32:5
11 मत 5:14; इफ 5:8, 9; 1पत 2:9, 12
12 यूह 6:68; इब्र 4:12

चाहे तुम्हारे उस बलिदान[1] पर और
तुम्हारी पवित्र सेवा* पर जो तुम विश्वास
की वजह से कर रहे हो, मुझे अर्घ की
तरह उँडेला जा रहा है,[2] तो भी मैं खुश
होता हूँ और तुम सबके साथ खुशी
मनाता हूँ। **18** इसी तरह तुम्हें भी मेरे
साथ खुश होना चाहिए और आनंद
मनाना चाहिए।

19 अब मैं आशा करता हूँ कि अगर
प्रभु यीशु की मरज़ी हो, तो बहुत जल्द मैं
तीमुथियुस को तुम्हारे पास भेजूँगा[3] ताकि
तुम्हारे बारे में खबर सुनकर मेरा हौसला
बढ़े। **20** इसलिए कि मेरे पास उसके
जैसा स्वभाव रखनेवाला दूसरा और कोई
भी नहीं, जो सच्चे दिल से तुम्हारी परवाह
करेगा। **21** क्योंकि बाकी सभी अपने
ही भले की फिक्र में रहते हैं, कोई यीशु
मसीह के काम की फिक्र नहीं करता।
22 लेकिन तुम खुद उसके बारे में जानते
हो कि जैसे एक बेटा[4] अपने पिता का
हाथ बँटाता है वैसे ही उसने खुशखबरी
फैलाने में मेरे साथ कड़ी मेहनत की
है। **23** इसलिए मैं आशा करता हूँ कि
जैसे ही मुझे मालूम पड़ेगा कि मेरे साथ
क्या होनेवाला है मैं उसी को तुम्हारे पास
भेजूँगा। **24** और प्रभु में मुझे भरोसा है
कि मैं खुद भी जल्द ही तुम्हारे पास
आऊँगा।[5]

25 मगर फिलहाल मैं इपाफ्रोदितुस
को तुम्हारे पास भेजना ज़रूरी समझ-
ता हूँ। वह मेरा भाई, सहकर्मी और संगी
सैनिक है और तुम्हारा भेजा हुआ दूत है
और एक सेवक के नाते मेरी मदद करता
है।[6] **26** वह तुम सबको देखने के लिए
तरस रहा है और बहुत हताश हो गया है
क्योंकि तुमने सुना था कि वह बीमार पड़
गया है। **27** वह इतना बीमार हो गया
था कि मरने पर था। मगर परमेश्वर ने
उस पर दया की और सिर्फ उस पर ही
नहीं बल्कि मुझ पर भी की ताकि मुझे
दुख-पर-दुख न मिले। **28** इसलिए मैं
उसे जल्द-से-जल्द भेज रहा हूँ ताकि उसे
देखकर तुम फिर से खुश हो जाओ और
मेरी चिंता भी कुछ कम हो जाए।
29 इसलिए जैसा दस्तूर है, प्रभु में
बड़ी गर्मजोशी से और खुशी-खुशी उसका
स्वागत करना और ऐसे भाइयों को अन-
मोल समझना।[1] **30** क्योंकि मसीह के
काम* की खातिर उसने अपनी जान की
बाज़ी लगा दी और वह मरने पर था ताकि
तुम्हारे यहाँ न होने की कमी पूरी करे और
तुम्हारे बदले मेरी सेवा करे।[2]

3 आखिर में मेरे भाइयो, तुम प्रभु में
खुशी मनाते रहो।[3] तुम्हें वही बातें
फिर से लिखना मेरे लिए परेशानी की
बात नहीं है, मगर इनसे तुम्हारी ही हिफा-
ज़त होगी।

2 अशुद्ध लोगों* से खबरदार रहो,
नुकसान पहुँचानेवालों से खबरदार रहो
और जो शरीर के अंगों की काट-कूट
करते हैं, उनसे खबरदार रहो।[4] **3** इस-
लिए कि हम वे हैं जिनका सही मायनों में
खतना हुआ है,[5] जो परमेश्वर की पवित्र
शक्ति से पवित्र सेवा करते हैं और
मसीह यीशु पर गर्व करते हैं[6] और शरीर
पर भरोसा नहीं करते। **4** लेकिन अगर
किसी के पास शरीर पर भरोसा करने की
वजह है, तो सबसे बढ़कर मेरे पास है।

अगर कोई और आदमी सोचता है कि
उसके पास शरीर पर भरोसा करने की
वजह है तो उससे भी बढ़कर मेरे पास
हैं: **5** आठवें दिन मेरा खतना हुआ,[7] मैं
इसराएल राष्ट्र के बिन्यामीन गोत्र का हूँ,

2:17 *या "जन-सेवा।"

2:30 *या शायद, "प्रभु के काम।" **3:2** *शा., "कुत्तों।"

अध्य. 2
1 इब्र 13:15, 1पत 2:5
2 गि 28:6, 7, 2कुर 12:15, 2ती 4:6
3 1कुर 4:17, 1कुर 16:10
4 2ती 1:2
5 फिले 22
6 फिल 4:18

दूसरा कॉल.
1 1कुर 16:18, 1थि 5:12, 13
2 फिले 10, 13

अध्य. 3
3 2कुर 13:11, फिल 4:4, 1थि 5:16
4 गल 5:2
5 यिर्म 4:4, रोम 2:29, कुल 2:11
6 गल 6:14, इब्र 9:13, 14
7 उत 17:12, लैव 12:3

जन्म से इब्रानी हूँ और मेरे माता-पिता भी
इब्रानी थे।[1] कानून के हिसाब से मैं एक
फरीसी हूँ।[2] **6** जहाँ तक जोशीला होने
की बात है, मैं मंडली पर ज़ुल्म किया
करता था।[3] जहाँ तक कानून से नेक
ठहरने की बात है, मैंने खुद को निर्दोष
साबित किया है। **7** फिर भी जो बातें
मेरे फायदे की थीं, उन्हें मैंने मसीह
की खातिर बेकार समझा है।*[4] **8** यही
नहीं, मैं अपने प्रभु मसीह यीशु के
बारे में उस ज्ञान की खातिर जिसका कोई
मोल नहीं लगाया जा सकता, सब बातों
को बेकार समझता हूँ। उसी की खातिर
मैंने सब बातों को ठुकरा दिया है और
मैं उन्हें ढेर सारा कूड़ा समझता हूँ ताकि
मसीह को पा सकूँ **9** और उसके साथ
एकता में पाया जाऊँ और इस वजह से
नहीं कि मैं कानून मानकर नेक ठहरा हूँ
बल्कि मसीह पर विश्वास करने की वजह
से परमेश्वर मुझे नेक समझता है।[5]
10 मेरा लक्ष्य यही है कि मैं मसीह को
और उसके दोबारा ज़िंदा होने की ताकत
को जानूँ[6] और उसके जैसी दुख-तकलीफें
सहूँ[7] और उसके जैसी मौत मरने के लिए
खुद को दे दूँ[8] **11** ताकि मैं किसी तरह
उन लोगों में से होऊँ जो पहले ज़िंदा किए
जाएँगे।[9]

12 ऐसी बात नहीं कि मैं अभी से यह
इनाम पा चुका हूँ या मैं परिपूर्ण हो
चुका हूँ, बल्कि मैं पुरज़ोर कोशिश कर
रहा हूँ[10] ताकि मैं हर हाल में वह
इनाम पा सकूँ जिसके लिए मसीह यीशु
ने मुझे चुना है।[11] **13** भाइयो, मैं अपने
बारे में यह नहीं मानता कि मैं वह
इनाम पा चुका हूँ, मगर एक बात पक्की
है: जो बातें पीछे रह गयी हैं, उन्हें भूल-
कर[1] मैं खुद को खींचता हुआ उन बातों
की तरफ बढ़ता जा रहा हूँ जो आगे
रखी हैं।[2] **14** और परमेश्वर ने मसीह
यीशु के ज़रिए ऊपर का जो बुलावा दिया
है,[3] उस इनाम[4] के लक्ष्य तक पहुँच-
ने के लिए मैं पुरज़ोर कोशिश कर रहा
हूँ। **15** इसलिए हम सभी जो प्रौढ़*
हैं,[5] हमारी सोच और हमारा नज़रिया
ऐसा ही हो। और अगर तुम्हारा झुकाव
किसी और तरफ होगा तो परमेश्वर तुम
पर ज़ाहिर कर देगा कि सही सोच और
नज़रिया क्या है। **16** और हमने जिस
हद तक तरक्की की है, आओ हम इसी
राह पर कायदे से चलते रहें।

17 भाइयो, तुम सब मिलकर मेरी
मिसाल पर चलो[6] और उन पर गौर करते
रहो जो उस मिसाल के मुताबिक चलते हैं
जो हमने तुम्हारे लिए रखी है। **18** इस-
लिए कि ऐसे कई हैं जिनका मैं पहले अक-
सर ज़िक्र किया करता था लेकिन अब
उनका ज़िक्र करते वक्त मेरी आँखों में
आँसू आ जाते हैं, क्योंकि वे मसीह के
यातना के काठ* के दुश्मन बन गए हैं।
19 उनका अंजाम विनाश है और उनका
पेट ही उनका ईश्वर है और जिन बातों
पर उन्हें शर्मिंदा होना चाहिए, उन पर
वे घमंड करते हैं और धरती की बातों
के बारे में सोचते रहते हैं।[7] **20** मगर
हमारी नागरिकता[8] स्वर्ग की है[9] और
उसी जगह से हम एक उद्धारकर्ता यानी
प्रभु यीशु मसीह का बेसब्री से इंतज़ार कर
रहे हैं।[10] **21** वह अपनी उस महाशक्ति
से, जिसके ज़रिए वह सबकुछ अपने वश
में कर सकता है,[11] हमारे तुच्छ शरीर
को बदलकर इन्हें अपने शरीर की तरह
महिमा से भर देगा।[12]

अध्य. 3
1 2कुर 11:22
2 प्रेष 23:6, प्रेष 26:4, 5
3 प्रेष 8:3, प्रेष 9:1, 2, गल 1:13
4 मत 13:44
5 रोम 3:20-22, रोम 4:5, गल 2:15, 16
6 1कुर 15:22, 2कुर 13:4
7 रोम 8:17, 2कुर 4:10, कुल 1:24
8 रोम 6:5
9 1थि 4:16, प्रक 20:6
10 लूक 13:24
11 1ती 6:12

दूसरा कॉल.
1 लूक 9:62
2 1कुर 9:24
3 इब्र 3:1
4 2ती 4:8, इब्र 12:1
5 1कुर 14:20, इब्र 5:14
6 1कुर 4:16, 2थि 3:9
7 रोम 8:5, याकू 3:15
8 इफ 2:19
9 यूह 18:36, इफ 2:6, कुल 3:1
10 1कुर 1:7, 1थि 1:10, तीत 2:13, इब्र 9:28
11 1कुर 15:27, इब्र 2:8
12 1कुर 15:42, 49

3:7 *या शायद, “खुशी-खुशी छोड़ दिया है।”

3:15 *या “सयाने और समझदार।” **3:18** *शब्दावली देखें।

4 इसलिए मेरे भाइयो, तुम जो मेरी
खुशी और मेरा ताज हो[1] और
जिनसे मैं प्यार करता हूँ और जिनसे
मिलने के लिए मैं तरस रहा हूँ, तुम प्रभु में
इसी तरह मज़बूती से खड़े रहो।[2]

2 मैं यूओदिया को समझाता हूँ और
सुन्तुखे को भी कि वे प्रभु में एक जैसी
सोच रखें।[3] 3 हाँ, मेरे सच्चे सहकर्मी,
मैं तुझसे भी गुज़ारिश करता हूँ कि इन
दोनों की मदद करता रह क्योंकि इन्होंने
खुशखबरी सुनाने में मेरे साथ और
क्लेमेंस और मेरे बाकी सहकर्मियों के
साथ जिनके नाम जीवन की किताब में
हैं,[4] कंधे-से-कंधा मिलाकर कड़ी मेहनत
की है।*

4 प्रभु में हमेशा खुश रहो। मैं एक
बार फिर कहता हूँ, खुश रहो![5] 5 सब
लोग जान जाएँ कि तुम लिहाज़ करने-
वाले इंसान हो।[6] प्रभु पास है। 6 किसी
भी बात को लेकर चिंता मत करो,[7] मगर
हर बात के बारे में प्रार्थना और मिन्नतों
और धन्यवाद के साथ परमेश्वर से बिन-
तियाँ करो।[8] 7 तब परमेश्वर की वह
शांति[9] जो समझ से परे है, मसीह यीशु
के ज़रिए तुम्हारे दिल की[10] और तुम्हारे
दिमाग के सोचने की ताकत* की हिफा-
ज़त करेगी।

8 आखिर में भाइयो, जो बातें सच्ची
हैं, जो बातें गंभीर सोच-विचार के लायक
हैं, जो बातें नेक हैं, जो बातें साफ-सुथरी*
हैं, जो बातें चाहने लायक हैं, जो बातें
अच्छी मानी जाती हैं, जो बातें सद्‌गुण की
हैं और जो तारीफ के लायक हैं, उन्हीं पर
ध्यान देते रहो।#[11] 9 जो बातें तुमने
मुझसे सीखीं और स्वीकार कीं, साथ ही
मुझसे सुनीं और मुझमें देखीं, उन्हें मानते
रहो[1] और शांति का परमेश्वर तुम्हारे
साथ रहेगा।

10 मैं प्रभु में बहुत खुश हूँ कि अब
फिर से तुम मेरे भले के बारे में सोचने
लगे हो।[2] तुम्हें पहले भी मेरी चिंता
थी, मगर तुम्हें यह दिखाने का मौका नहीं
मिला था। 11 ऐसा नहीं कि मुझे किसी
चीज़ की ज़रूरत है इसलिए मैं ऐसा कह
रहा हूँ, क्योंकि मैं चाहे जैसे भी हाल में रहूँ
उसी में संतोष करना मैंने सीख लिया है।[3]
12 मैं जानता हूँ कि कम चीज़ों में गुज़ारा
करना कैसा होता है[4] और यह भी जानता
हूँ कि भरपूरी में जीना कैसा होता है। मैंने
हर बात में और हर तरह के हालात में यह
राज़ सीख लिया है कि भरपेट होना कैसा
होता है और भूखे पेट होना कैसा होता
है, भरा-पूरा होना कैसा होता है और तंगी
झेलना कैसा होता है। 13 इसलिए कि
जो मुझे ताकत देता है, उसी से मुझे सब
बातों के लिए शक्ति मिलती है।[5]

14 फिर भी तुमने यह अच्छा किया
कि मेरे दुखों में मेरा साथ दिया।
15 फिलिप्पी के भाइयो, तुम यह भी
जानते हो कि जब तुमने पहली बार खुश-
खबरी सुनी और मैं मकिदुनिया से रवाना
हुआ, तो तुम्हारे अलावा किसी भी मंडली
ने न तो मेरी मदद की और न मुझसे
मदद ली।[6] 16 क्योंकि जब मैं थिस्स-
लुनीके में था, तब तुमने मेरी ज़रूरत पूरी
करने के लिए मुझे एक बार नहीं बल्कि दो
बार कुछ भेजा था। 17 ऐसा नहीं है कि
मैं तुमसे तोहफा पाने की उम्मीद कर रहा
हूँ, बल्कि मैं वह फल पाना चाहता हूँ जो
तुम्हारे खाते में और अच्छाई जोड़ देगा।
18 मगर मेरे पास ज़रूरत की हर चीज़ है
और भरपूर है। अब मुझे कोई कमी

4:3 *या "कड़ा संघर्ष किया है।"
4:7 *या "तुम्हारे दिमाग; तुम्हारे विचारों।"
4:8 *या "शुद्ध।" #या "सोचते रहो; मनन करते रहो।"

अध्य. 4

1 1थि 2:19
2 फिल 1:27
3 रोम 15:5, 6; 1कुर 1:10; 2कुर 13:11; फिल 2:2; 1पत 3:8
4 भज 69:28; लूक 10:20
5 भज 64:10; 1थि 5:16
6 तीत 3:2; याकू 3:17
7 मत 6:25; लूक 12:22
8 यूह 16:23; रोम 12:12; 1पत 5:6, 7
9 यूह 16:33; रोम 5:1
10 कुल 3:15
11 कुल 3:2

दूसरा कॉल.

1 फिल 3:17
2 2कुर 11:8, 9
3 1ती 6:6, 8; इब्र 13:5
4 1कुर 4:11; 2कुर 6:4, 10; 2कुर 11:27
5 यश 40:29; 2कुर 4:7; 2कुर 12:9, 10
6 2कुर 11:8, 9

नहीं है क्योंकि तुमने इपाफ्रोदितुस[1] के
हाथों तोहफा जो भेजा है। यह तोहफा
परमेश्वर को स्वीकार होनेवाला ऐसा
खुशबूदार बलिदान है[2] जिससे वह बेहद
खुश होता है। 19 बदले में मेरा पर-
मेश्वर भी अपनी महिमा की दौलत से
मसीह यीशु के ज़रिए तुम्हारी हर ज़रूरत
पूरी करेगा।[3] 20 हमारे परमेश्वर और
पिता की महिमा हमेशा-हमेशा तक होती
रहे। आमीन।

21 हर एक पवित्र जन को जो मसीह
यीशु के साथ एकता में है, मेरा नमस्कार
कहना। जो भाई मेरे साथ हैं वे तुम्हें
नमस्कार कहते हैं। 22 सभी पवित्र
जन, खासकर जो सम्राट* के घराने के
हैं,[1] तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

23 तुम जो बढ़िया जज़्बा दिखाते हो
उस वजह से प्रभु यीशु मसीह की महा-
कृपा तुम पर बनी रहे। आमीन।

4:22 * यूनानी में "कैसर।"

अध्य. 4
1 फिल 2:25
2 निर्ग 29:18
3 2कुर 9:8

दूसरा कॉल.
1 फिल 1:12, 13

कुलुस्सियों

के नाम चिट्ठी

सारांश

1 नमस्कार (1, 2)
कुलुस्सियों के विश्वास के लिए धन्यवाद (3-8)
विश्वास में मज़बूत होने के लिए प्रार्थना (9-12)
मसीह की खास ज़िम्मेदारी (13-23)
मंडली के लिए पौलुस की कड़ी मेहनत (24-29)

2 परमेश्वर का पवित्र रहस्य, मसीह (1-5)
छलनेवालों से खबरदार (6-15)
हकीकत मसीह की है (16-23)

3 पुरानी और नयी शख्सियत (1-17)
शरीर के अंगों को मार डालो (5)
प्यार, एकता में जोड़नेवाला जोड़ (14)
मसीही परिवारों के लिए सलाह (18-25)

4 मालिकों को सलाह (1)
"प्रार्थना में लगे रहो" (2-4)
बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से पेश आओ (5, 6)
आखिर में नमस्कार (7-18)

1 मैं पौलुस, जो परमेश्वर की मरज़ी
से मसीह यीशु का प्रेषित हूँ और
हमारा भाई तीमुथियुस,[1] 2 कुलुस्से के
पवित्र जनों को और विश्वासयोग्य भाइयों
को जो मसीह के साथ एकता में हैं, लिख
रहे हैं।

हमारे पिता यानी परमेश्वर की तरफ
से तुम्हें महा-कृपा और शांति मिले।

3 हम जब भी तुम्हारे लिए प्रार्थना
करते हैं, तो हम परमेश्वर का यानी हमारे
प्रभु यीशु मसीह के पिता का हमेशा धन्य-
वाद करते हैं 4 क्योंकि हमने मसीह
यीशु में तुम्हारे विश्वास के बारे में सुना है
और यह भी सुना है कि तुम्हें सभी पवित्र
जनों से कितना प्यार है। 5 यह उस
आशा की वजह से है जो स्वर्ग में तुम्हारे

अध्य. 1
1 1कुर 4:17

लिए पूरी होनेवाली है।[1] इस आशा के
बारे में तुमने पहले तब सुना था जब
तुम्हें सच्चाई यानी यह खुशखबरी दी गयी
6 जो तुम तक आ पहुँची है। यह खुश-
खबरी सारी दुनिया में फल ला रही है
और बढ़ती जा रही है।[2] और तुम्हारे बीच
भी उस दिन से ऐसा हो रहा है जिस दिन
तुमने परमेश्वर की सच्ची महा-कृपा के
बारे में सुना था और उसे सही-सही जाना
था। 7 तुमने हमारे प्यारे संगी दास इप-
फ्रास[3] से यही सीखा था, जो हमारी तरफ
से मसीह का एक विश्वासयोग्य सेवक है।
8 उसी ने हमें बताया कि पवित्र शक्ति ने
तुममें कैसा प्यार पैदा किया है।

9 इसी वजह से हमने भी जिस दिन
तुम्हारे इस प्यार और विश्वास के बारे में
सुना था, उस दिन से तुम्हारे लिए प्रार्थना
करना और यह माँगना नहीं छोड़ा[4] कि
तुम सारी बुद्धि और पवित्र शक्ति से
मिलनेवाली समझ[5] के साथ उसकी मरज़ी
के बारे में सही ज्ञान से भर जाओ[6]
10 ताकि तुम्हारा चालचलन ऐसा हो
जैसा यहोवा* के सेवक का होना चाहिए
जिससे कि तुम उसे पूरी तरह खुश कर
सको। और तुम हर भला काम करते
हुए फल पैदा करते जाओ और पर-
मेश्वर के बारे में सही ज्ञान बढ़ाते जाओ[7]
11 और परमेश्वर की उस ताकत से जो
महिमा से भरपूर है, तुम मज़बूत होते
जाओ[8] ताकि खुशी से और सब्र रखते हुए
तुम धीरज धर सको 12 और पिता का
धन्यवाद करो जिसने तुम्हें उन पवित्र जनों
के साथ विरासत में हिस्सा पाने के योग्य
बनाया है[9] जो रौशनी में हैं।

13 उसने हमें अंधकार के अधिकार
से छुड़ाया[10] और अपने प्यारे बेटे के राज
में ले आया, 14 जिसके ज़रिए उसने

1:10 *अति. क5 देखें।

फिरौती देकर हमें छुड़ाया है यानी हमें
पापों की माफी दी है।[1] 15 वह अदृश्य
परमेश्वर की छवि है[2] और सारी सृष्टि में
पहलौठा है[3] 16 क्योंकि उसी के ज़रिए
स्वर्ग में और धरती पर बाकी सब चीज़ें
सिरजी गयीं, जो दिखायी देती हैं और
जो दिखायी नहीं देतीं,[4] चाहे राजगद्दियाँ
हों या साम्राज्य, सरकारें हों या अधिकार।
बाकी सब चीज़ें उसके ज़रिए और उसी के
लिए सिरजी गयी हैं।[5] 17 साथ ही, वह
बाकी सब चीज़ों से पहले था[6] और उसी के
ज़रिए बाकी सब चीज़ें वजूद में लायी गयीं
18 और वही शरीर यानी मंडली का सिर
है।[7] वही सब चीज़ों की शुरूआत है, वही
मरे हुओं में से ज़िंदा होनेवालों में पहलौठा
है[8] ताकि वह सब बातों में पहला ठहरे
19 क्योंकि परमेश्वर को यह अच्छा लगा
कि हर तरह की पूर्णता उसी में निवास
करे[9] 20 और उसी के ज़रिए वह अपने
साथ बाकी सब चीज़ों की सुलह कर-
वाए,[10] फिर चाहे वे धरती की चीज़ें हों या
स्वर्ग की। परमेश्वर ने यह शांति उस खून
के आधार पर कायम की[11] जो मसीह ने
यातना के काठ* पर बहाया था।

21 तुम एक वक्त पर परमेश्वर से दूर
थे और उसके दुश्मन थे क्योंकि तुम दुष्ट
कामों के बारे में ही सोचते थे। 22 मगर
अब परमेश्वर ने उसकी मौत के ज़रिए,
जिसने अपना इंसानी शरीर बलिदान कर
दिया, तुम्हारे साथ सुलह की है ताकि तुम्हें
पवित्र, बेदाग और निर्दोष ठहराकर खुद
के सामने पेश कर सके।[12] 23 मगर
इसके लिए ज़रूरी है कि तुम विश्वास में
बने रहो,[13] नींव पर कायम[14] और मज़-
बूत रहो[15] और उस खुशखबरी से मिलने-
वाली आशा को न छोड़ो जो तुमने सुनी है
और जिसका प्रचार पूरी दुनिया में किया

1:20 *शब्दावली देखें।

अध्य. 1
1 2ती 4:8 1पत 1:3, 4
2 कुल 1:23 1ती 3:16
3 कुल 4:12, 13 फिले 23
4 इफ 1:15, 16
5 2ती 2:7 1यूह 5:20
6 फिल 1:9
7 इफ 1:17 2पत 1:2
8 इफ 3:14, 16
9 रोम 8:17 इफ 1:13, 14
10 इफ 2:1, 2

दूसरा कॉल.
1 इफ 1:7
2 यूह 4:24 यूह 10:30 यूह 14:9 1ती 1:17
3 प्रक 3:14
4 यूह 1:3
5 यूह 1:10 इब्र 1:2
6 यूह 17:5
7 इफ 1:22
8 1कुर 15:23 प्रक 1:5
9 कुल 2:3, 9
10 2कुर 5:19 इफ 1:10
11 लैव 17:11
12 1कुर 1:8
13 प्रक 2:10
14 1कुर 3:11
15 1कुर 15:58 इब्र 3:14

जा चुका है।[1] मैं पौलुस इस खुशखबरी
का सेवक बना हूँ।[2]

24 मैं अब तुम्हारी खातिर दुख झेलने
में खुशी मना रहा हूँ[3] और मसीह के
शरीर का हिस्सा होने के नाते वह दुख-
तकलीफें सह रहा हूँ जिन्हें सहना बाकी रह
गया है। यह सब मैं मसीह के शरीर यानी
मंडली[4] की खातिर सह रहा हूँ।[5] 25 मैं
परमेश्वर से मिली प्रबंधक की ज़िम्मे-
दारी[6] के मुताबिक तुम्हारी खातिर इस
मंडली का सेवक बना हूँ कि मैं पर-
मेश्वर के वचन का पूरी तरह प्रचार करूँ,
26 उस पवित्र रहस्य[7] का, जिसे गुज़रे
ज़मानों* और पिछली पीढ़ियों से छिपा-
कर रखा गया था।[8] मगर अब इसे पर-
मेश्वर के पवित्र जनों पर प्रकट किया गया
है।[9] 27 परमेश्वर को उन पर यह भी
प्रकट करना अच्छा लगा कि इस पवित्र
रहस्य की शानदार दौलत क्या है जो दूसरे
राष्ट्रों में बतायी जा रही है।[10] यह मसीह
है जो तुम्हारे साथ एकता में है और जिसके
साथ तुम महिमा पाने की आशा रखते
हो।[11] 28 हम उसी के बारे में प्रचार कर
रहे हैं यानी हर किसी को सारी बुद्धि के
साथ सिखाते और समझाते हैं ताकि हम
हर किसी को मसीह के साथ एकता में एक
प्रौढ़* इंसान के नाते परमेश्वर के सामने
पेश कर सकें।[12] 29 इसी काम को पूरा
करने के लिए मैं कड़ी मेहनत करते हुए
संघर्ष कर रहा हूँ और यह मैं उस शक्ति से
कर रहा हूँ जो मेरे अंदर ज़बरदस्त तरीके
से काम कर रही है।[13]

2 मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि मैं
तुम्हारे लिए, जो लौदीकिया[14] में हैं
उनके लिए और उन सबके लिए जिन्होंने
मुझे कभी नहीं देखा, कितना कड़ा संघर्ष
कर रहा हूँ। 2 मैं यह इसलिए कर रहा
हूँ ताकि उनके दिलों को दिलासा मिले[1]
और वे पूरे तालमेल के साथ प्यार के
बंधन में एक-दूसरे से जुड़े रहें[2] और वे
उस दौलत को हासिल करें जो इस बात
का पूरा यकीन होने पर मिलती है कि
उनकी समझ बिलकुल सही है। तब वे
परमेश्वर के पवित्र रहस्य का यानी
मसीह का सही ज्ञान हासिल कर सकेंगे।[3]
3 उसी में बुद्धि और ज्ञान का सारा
खज़ाना बड़ी सावधानी से छिपाया गया
है।[4] 4 मैं यह इसलिए कह रहा हूँ ताकि
कोई भी इंसान कायल करनेवाली दलीलें
देकर तुम्हें न छले। 5 मैं भले ही तुम्हारे
यहाँ नहीं हूँ मगर मन से तुम्हारे साथ हूँ।
यह देखकर मुझे खुशी होती है कि तुम्हारे
बीच अच्छी व्यवस्था है[5] और मसीह पर
तुम्हारा विश्वास बहुत मज़बूत है।[6]

6 इसलिए जैसे तुमने प्रभु मसीह यीशु
को स्वीकार किया है, वैसे ही उसके साथ
एकता में चलते रहो। 7 उसमें गहराई
तक जड़ पकड़ो और बढ़ते जाओ[7] और
विश्वास में मज़बूती पाते रहो,[8] ठीक जैसे
तुम्हें सिखाया गया था, साथ ही तुममें
धन्यवाद की भावना उमड़ती रहे।[9]

8 खबरदार रहो! कहीं ऐसा न हो कि
कोई तुम्हें दुनियावी फलसफों और छलने-
वाली उन खोखली बातों से कैदी बना
ले,*[10] जो इंसानों की परंपराओं और
दुनिया की मामूली बातों के मुताबिक
हैं और मसीह के मुताबिक नहीं हैं
9 क्योंकि मसीह में ही परमेश्वर के सारे
गुण पूरी हद तक पाए जाते हैं।[11]
10 इसलिए उसके ज़रिए तुमने सब-
कुछ पूरी हद तक पाया है, जो सारी

अध्य. 1
1 1ती 3:16
2 इफ 3:8
3 इफ 3:1
4 इफ 1:22, 23
5 प्रेष 9:16; फिल 3:10
6 1कुर 9:16, 17
7 इफ 3:5-7; इफ 5:32
8 लूक 8:10; 1कुर 2:7
9 रोम 16:25, 26
10 इफ 3:8, 9
11 रोम 8:18
12 इफ 4:13
13 फिल 4:13

अध्य. 2
14 कुल 4:16

दूसरा कॉल.
1 2कुर 1:6
2 कुल 3:14
3 1कुर 2:7; इफ 3:5, 6
4 1कुर 1:30; 1कुर 2:16
5 1कुर 14:40
6 1कुर 15:58; इब्र 3:14
7 इफ 2:20; इफ 3:17
8 मत 7:24, 25
9 इफ 5:20; 1थि 5:18
10 इफ 5:6; इब्र 13:9
11 कुल 1:19

1:26 *या "गुज़री दुनिया की व्यवस्थाओं।" शब्दावली देखें। **1:28** *या "सयाने और समझदार।"

2:8 *या "शिकार बनाकर ले जाए।"

हुकूमत और अधिकार का मुखिया है।[1]
11 उसी के साथ रिश्ता होने की वजह
से तुम्हारा ऐसा खतना भी हुआ जो हाथ
से नहीं किया गया, बल्कि पापी शरीर
को उतार फेंकने[2] से तुम्हारा ऐसा खतना
हुआ जैसा मसीह के सेवकों का होना
चाहिए।[3] **12** इसलिए कि तुम उसके
बपतिस्मे में उसके साथ दफनाए गए[4]
और उसके साथ एक रिश्ता होने की
वजह से तुम उसके साथ ज़िंदा भी
किए गए[5] क्योंकि तुम्हें उस परमेश्वर के
शक्तिशाली काम पर विश्वास था, जिसने
मसीह को मरे हुओं में से ज़िंदा किया।[6]

13 इतना ही नहीं, परमेश्वर ने तुम्हें
ज़िंदा करके उसके साथ एक किया जबकि
तुम अपने गुनाहों की वजह से मरे हुए थे
और तुम्हारा शरीर खतनारहित दशा में
था।[7] उसने बड़ी कृपा दिखाते हुए हमारे
सारे गुनाह माफ किए[8] **14** और हाथ से
लिखे उस दस्तावेज़ को रद्द कर दिया*[9]
जिसमें कई आदेश थे[10] और जो हमारे
खिलाफ था।[11] उसने यातना के काठ#
पर उसे कीलों से ठोंककर हमारे सामने
से हटा दिया।[12] **15** और इस यातना के
काठ के ज़रिए* उसने हुकूमतों और अधि-
कारियों को नंगा करके सब लोगों के
सामने हारे हुओं की तरह उनकी नुमा-
इश की और जीत के जुलूस में उन्हें अपने
पीछे-पीछे चलाया।[13]

16 इसलिए कोई भी इंसान तुम्हारे
लिए तय न करे कि तुम्हें क्या खाना-पीना
चाहिए[14] या तुम्हें नए चाँद का दिन[15] या
सब्त मनाना चाहिए।[16] **17** क्योंकि ये
सब आनेवाली बातों की छाया थीं[17] मगर
हकीकत मसीह की है।[18] **18** ऐसा कोई
भी इंसान जिसे नम्रता का ढोंग करना
और स्वर्गदूतों की उपासना पसंद है, तुम्हें
उस इनाम से दूर न कर दे[1] जो तुम्हें
मिलनेवाला है। ऐसा इंसान उन दर्शनों
पर "अड़ा रहता है"* जिन्हें देखने का
वह दावा करता है। वह अपनी शारीरिक
सोच पर फूल उठता है जबकि उसके पास
ऐसा करने की कोई वजह नहीं होती।
19 वह इंसान उस सिर के साथ मज़-
बूती से जुड़ा नहीं रहता,[2] जो पूरे शरीर
की ज़रूरत पूरी करता है और जोड़ों और
माँस-पेशियों के ज़रिए पूरे शरीर को एक-
साथ जोड़े रखता है और शरीर को बढ़ाता
है, ठीक जैसे परमेश्वर चाहता है।[3]

20 एक बार जब तुम दुनिया की
मामूली बातों के मामले में मसीह के साथ
मर गए,[4] तो फिर अब तुम क्यों दुनिया
के लोगों की तरह खुद को ऐसे आदेशों के
गुलाम बनाते हो:[5] **21** "उसे हाथ न
लगाना, इसे न चखना, उसे न छूना"?
22 ये आदेश ऐसी चीज़ों के बारे में हैं
जो इस्तेमाल होते-होते मिट जाती हैं। ये
इंसानों की सिखायी शिक्षाएँ और आज्ञाएँ
हैं।[6] **23** ये मनमाने ढंग से उपासना
करने, नम्रता का ढोंग करने और अपने
शरीर को यातना देने का बढ़ावा देती हैं।[7]
भले ही ये ज्ञान की बातें लगती हैं, मगर
इनसे शरीर की वासनाओं से लड़ने में कोई
मदद नहीं मिलती।

3 लेकिन अगर तुम मसीह के साथ
ज़िंदा किए गए थे,[8] तो स्वर्ग की
बातों की खोज में लगे रहो जहाँ
मसीह, परमेश्वर के दाएँ हाथ बैठा है।[9]
2 अपना ध्यान स्वर्ग की बातों पर लगाए
रखो,[10] न कि धरती की बातों पर।[11]
3 इसलिए कि तुम मर गए थे और

2:14 *या "मिटा दिया।" #शब्दावली देखें। **2:15** *या शायद, "मसीह के ज़रिए।"

2:18 *यह हवाला झूठे धार्मिक रिवाज़ों से है।

अध्य. 2
1 इफ 1:20, 21; 1पत 3:22
2 रोम 6:6
3 रोम 2:29; फिल 3:3
4 रोम 6:4
5 इफ 2:6; कुल 3:1
6 प्रेष 2:24; इफ 1:19, 20
7 इफ 2:1, 5
8 प्रेष 2:38
9 निर्ग 34:27; व्य 31:24-26; इब्र 7:18
10 इफ 2:14, 15
11 रोम 7:10; गल 3:10
12 गल 3:13; इब्र 9:15; 1पत 2:24
13 1यूह 5:4; प्रक 3:21
14 रोम 14:3, 17
15 भज 81:3
16 रोम 14:6
17 इब्र 8:5; इब्र 10:1
18 यूह 14:6; इब्र 9:11, 12

दूसरा कॉल.
1 फिल 3:14
2 इफ 1:22, 23
3 इफ 2:21; इफ 4:16
4 गल 4:3; कुल 2:8
5 इफ 2:15; कुल 2:14
6 मत 15:9
7 1ती 4:3

अध्य. 3
8 इफ 2:6
9 भज 110:1; 1पत 3:22
10 फिल 3:20; फिल 4:8; 1पत 1:13
11 1यूह 2:15

तुम्हारा जीवन परमेश्वर के साथ एकता
में मसीह के साथ छिपा हुआ है। **4** जब
मसीह जो हमारा जीवन है,[1] प्रकट होगा
तब तुम भी उसके साथ महिमा में प्रकट
किए जाओगे।[2]

5 इसलिए अपने शरीर के उन अंगों
को* मार डालो[3] जिनमें ऐसी लाल-
साएँ पैदा होती हैं जैसे, नाजायज़ यौन-
संबंध,# अशुद्धता, बेकाबू होकर वास-
नाएँ पूरी करना,[4] बुरी इच्छाएँ और
लालच जो कि मूर्तिपूजा के बराबर
है। **6** इन्हीं बातों की वजह से पर-
मेश्वर का क्रोध आ रहा है। **7** तुम भी
पहले ऐसे कामों में लगे हुए थे और
यही तुम्हारे जीने का तरीका था।*[5]
8 मगर अब तुम इन सब बातों को खुद
से पूरी तरह दूर करो, जैसे क्रोध,
गुस्सा, बुराई,[6] गाली-गलौज[7] और मुँह
से अश्लील बातें[8] कहना। **9** एक-दूसरे
से झूठ मत बोलो।[9] पुरानी शख्सियत*
को उसकी आदतों समेत उतार फेंको[10]
10 और वह नयी शख्सियत पहन लो[11]
जिसकी सृष्टि परमेश्वर करता है और
उसे सही ज्ञान के ज़रिए नया बनाते जाओ
ताकि यह परमेश्वर की छवि के मुता-
बिक हो जाए,[12] **11** जिसमें न तो कोई
यूनानी है न यहूदी, न खतना पाया हुआ
न खतनारहित, न परदेसी न स्कूती,* न
गुलाम न ही आज़ाद, मगर मसीह सबकुछ
और सबमें है।[13]

12 इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं[14]
के नाते तुम जो पवित्र और प्यारे हो,
करुणा से भरपूर गहरे लगाव,[15] कृपा,
नम्रता,[1] कोमलता[2] और सब्र[3] का पह-
नावा पहन लो। **13** अगर किसी के
पास दूसरे के खिलाफ शिकायत की कोई
वजह है,[4] तो भी एक-दूसरे की सहते रहो
और एक-दूसरे को दिल खोलकर माफ
करते रहो।[5] जैसे यहोवा* ने तुम्हें दिल
खोलकर माफ किया है, तुम भी वैसा
ही करो।[6] **14** मगर इन सब बातों के
अलावा, प्यार का पहनावा पहन लो[7]
क्योंकि यह पूरी तरह से एकता में जोड़ने-
वाला जोड़ है।[8]

15 साथ ही, मसीह की शांति तुम्हारे
दिलों पर राज करे*[9] क्योंकि इसी शांति
के लिए तुम बुलाए गए हो ताकि तुम एक
शरीर बने रहो। दिखाओ कि तुम कितने
एहसानमंद हो। **16** मसीह का वचन
पूरी बुद्धि के साथ तुम्हारे अंदर बहुतायत
में बस जाए। भजन गाकर, परमेश्वर
का गुणगान करके और एहसान-भरे
दिल से उपासना के गीत गाकर एक-
दूसरे को सिखाते रहो और एक-दूसरे की
हिम्मत बँधाते# रहो[10] और अपने दिलों
में यहोवा* के लिए गीत गाते रहो।[11]
17 और जो कुछ तुम कहो या करो, सब-
कुछ प्रभु यीशु के नाम से करो और उसके
ज़रिए परमेश्वर यानी पिता का धन्यवाद
करो।[12]

18 हे पत्नियो, अपने-अपने पति के
अधीन रहो,[13] जैसा प्रभु के चेलों को
शोभा देता है। **19** हे पतियो, अपनी-
अपनी पत्नी से प्यार करते रहो[14] और
उन पर गुस्से से आग-बबूला मत हो।*[15]
20 हे बच्चो, हर बात में अपने माता-पिता

3:5 *शा., "उन अंगों को जो धरती पर हैं।" #यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें। **3:7** *या "तुम ऐसा ही जीवन बिताते थे।" **3:9** *शा., "इंसान।" **3:11** *यहाँ "स्कूती" का मतलब है असभ्य लोग।

3:13, 16 *अति. क5 देखें। **3:15** *या "दिलों को काबू में रखे।" **3:16** #या "को समझाते-बुझाते।" **3:19** *या "उनसे कठोर व्यवहार मत करो।"

अध्य. 3
1 यूह 11:25
2 1कुर 15:42, 43
3 मर 9:43; गल 5:24
4 1कुर 6:18; इफ 5:3
5 1कुर 6:9-11; इफ 2:3; तीत 3:3
6 1पत 2:1
7 इफ 4:31
8 इफ 5:3, 4
9 इफ 4:25; प्रक 21:8
10 इफ 4:22
11 रोम 12:2; इफ 4:24
12 उत 1:26, 27; 1पत 1:16
13 गल 3:28
14 1पत 2:9
15 फिल 2:1, 2

दूसरा कॉल.
1 रोम 12:16
2 तीत 3:2
3 इफ 4:1, 2; 1थि 5:14
4 मत 18:15
5 नीत 19:11; इफ 4:32; 1पत 4:8
6 मत 6:14; मर 11:25
7 1यूह 3:23
8 1कुर 13:4-7
9 यूह 14:27; फिल 4:7
10 1कुर 14:26
11 इफ 5:19
12 1कुर 10:31
13 इफ 5:22; 1पत 3:1
14 इफ 5:25; 1पत 3:7
15 इफ 4:31

का कहना माननेवाले बनो[1] क्योंकि प्रभु
इससे खुश होता है। **21** हे पिताओ,
अपने बच्चों को खीज न दिलाओ,*[2] कहीं
ऐसा न हो कि वे हिम्मत हार बैठें।#
22 हे दासो, जो दुनिया में तुम्हारे मालिक
हैं हर बात में उनकी आज्ञा मानो,[3] सिर्फ
तब नहीं जब वे तुम्हें देख रहे हों,
मानो तुम इंसानों को खुश करना चाहते
हो, बल्कि मन की सीधाई से और
यहोवा* का डर मानते हुए ऐसा करो।
23 तुम चाहे जो भी काम करो, तन-मन
से ऐसे करो मानो यहोवा* के लिए कर रहे
हो[4] न कि इंसानों के लिए **24** क्योंकि
तुम जानते हो कि यहोवा* से ही तुम्हें
इनाम के तौर पर विरासत मिलेगी।[5]
अपने मालिक मसीह के दास बनकर
उसकी सेवा करो। **25** बेशक, जो बुरा
करता है वह अपने बुरे कामों का फल
पाएगा[6] और किसी तरह का पक्षपात नहीं
किया जाएगा।[7]

4 हे मालिको, अपने दासों के साथ
नेकी और ईमानदारी से पेश आओ,
यह जानते हुए कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक
मालिक है।[8]

2 प्रार्थना में लगे रहो[9] और इस
मामले में जागरूक रहो और धन्यवाद देते
रहो।[10] **3** हमारे लिए भी प्रार्थना करो[11]
कि परमेश्वर हमारे लिए मौके का दर-
वाज़ा खोल दे ताकि हम वचन का प्रचार
कर सकें और मसीह के बारे में पवित्र
रहस्य बता सकें, क्योंकि मैं इसी वजह
से कैद में हूँ।[12] **4** और यह भी प्रार्थना
करो कि मैं इसके बारे में साफ-साफ समझा
सकूँ, ठीक जैसे मुझे समझाना चाहिए।

5 अपने वक्त का सही इस्तेमाल
करते हुए,* बाहरवालों के साथ बुद्धि-
मानी से पेश आओ।[1] **6** तुम्हारे बोल
हमेशा मन को भानेवाले और सलोने*[2]
हों। तब तुम्हें हर किसी को सही तरह से
जवाब देना आ जाएगा।[3]

7 मेरा प्यारा भाई और प्रभु में
विश्वासयोग्य सेवक और संगी दास तुखि-
कुस[4] तुम्हें मेरे बारे में सारी खबर देगा।
8 मैं उसे तुम्हारे पास इसलिए भेज रहा
हूँ ताकि तुम हमारा हाल-चाल जान सको
और वह तुम्हारे दिलों को दिलासा दे सके।
9 मैं उसके साथ अपने विश्वासयोग्य और
प्यारे भाई उनेसिमुस[5] को भेज रहा हूँ जो
तुम्हारे यहाँ का है। वे दोनों तुम्हें यहाँ के
हालात के बारे में पूरी जानकारी देंगे।

10 अरिस्तरखुस[6] जो मेरे साथ कैद
है, तुम्हें नमस्कार कहता है और मर-
कुस[7] भी जो बरनबास का भाई लगता
है तुम्हें नमस्कार कहता है (जिसके बारे में
तुम्हें हिदायतें मिली थीं कि अगर वह
तुम्हारे पास आए तो उसका स्वागत
करना)[8] **11** और यीशु भी जो युस-
तुस कहलाता है तुम्हें नमस्कार कहता है।
ये उन लोगों में से हैं जिनका खतना हुआ
है। सिर्फ ये लोग ही परमेश्वर के राज के
लिए मेरे सहकर्मी हैं और इनसे मुझे बहुत
दिलासा मिला है।* **12** मसीह यीशु का
दास, इपफ्रास[9] जो तुम्हारे यहाँ का है,
तुम्हें नमस्कार कहता है। वह हमेशा
तुम्हारी खातिर जी-जान से प्रार्थना करता
है ताकि तुम आखिर में प्रौढ़* लोगों के
नाते मज़बूत खड़े रहो और परमेश्वर की
सारी मरज़ी के बारे में तुम्हें पक्का यकीन
हो। **13** हाँ, मैं उसका गवाह हूँ कि वह

3:21 *या "गुस्सा; चिढ़ मत दिलाओ।" #या "निराश हो जाएँ।" **3:22-24** *अति. क5 देखें।

4:5 *शा., "तय वक्त को खरीद लो।" **4:6** *शा., "नमक से मले हुए।" **4:11** *या "ये मेरी हिम्मत बँधानेवाले मददगार हैं।" **4:12** *या "सयाने और समझदार।"

अध्य. 3
1 नीत 6:20, लूक 2:51, इफ 6:1
2 इफ 6:4
3 इफ 6:5, 6, तीत 2:9, 1पत 2:18
4 लूक 10:27, रोम 12:11
5 इफ 6:8, 1पत 1:3, 4
6 रोम 2:6, गल 6:7
7 रोम 2:11, 1पत 1:17

अध्य. 4
8 इफ 6:9
9 लूक 18:1, रोम 12:12, इफ 6:18
10 कुल 3:15, 1थि 5:18
11 रोम 15:30
12 इफ 6:19, 20, फिल 1:7

दूसरा कॉल.
1 इफ 5:15, 16
2 मत 5:13, मर 9:50
3 1पत 3:15
4 इफ 6:21, 22
5 फिले 10
6 प्रेष 19:29, प्रेष 20:4, प्रेष 27:2
7 प्रेष 12:12, प्रेष 15:37, फिले 23, 24
8 रोम 15:7
9 कुल 1:7, 8

तुम्हारी खातिर और जो लौदीकिया और
हीरापुलिस में हैं, उनकी खातिर बड़ा जतन
करता है।
14 हमारा प्यारा भाई, वैद्य लूका[1]
तुम्हें नमस्कार कहता है और देमास[2]
भी। 15 लौदीकिया के भाइयों को और
बहन नुमफास और उसके घर में इकट्ठा
होनेवाली मंडली को मेरा नमस्कार।[3]
16 जब यह चिट्ठी तुम्हारे बीच पढ़ी जाए,
तो इसके बाद इसे लौदीकिया मंडली में भी
पढ़वाने का इंतज़ाम करना[1] और लौदी-
किया से आयी चिट्ठी तुम भी पढ़ लेना।
17 और अरखिप्पुस[2] से कहना, "तू इस
बात का ध्यान रखना कि प्रभु में सेवा की
जो ज़िम्मेदारी तूने स्वीकार की थी, उसे तू
पूरा करे।"
18 मैं पौलुस खुद अपने हाथ से तुम्हें
नमस्कार लिख रहा हूँ।[3] मेरे कैद की
ज़ंजीरों को याद रखना।[4] परमेश्वर की
महा-कृपा तुम पर होती रहे।

अध्य. 4
1 लूक 1:3, प्रेष 1:1
2 फिले 23, 24
3 रोम 16:5, 1कुर 16:19

दूसरा कॉल.
1 1थि 5:27
2 फिले 1, 2
3 2थि 3:17
4 फिल 1:7, फिले 9

थिस्सलुनीकियों

के नाम पहली चिट्ठी

सारांश

1 पौलुस, सिलवानुस*[1] और तीमु-
थियुस[2] थिस्सलुनीकियों की मंडली
को लिख रहे हैं, जो परमेश्वर हमारे पिता
और प्रभु यीशु मसीह के साथ एकता में है:
तुम्हें परमेश्वर की महा-कृपा और
शांति मिले।
2 हम जब भी प्रार्थनाओं में तुम्हारा
ज़िक्र करते हैं, तो हमेशा परमेश्वर का
धन्यवाद करते हैं।[1] 3 हम अपने पिता
और परमेश्वर के सामने हर वक्त तुम्हें

अध्य. 1
1 प्रेष 15:22, 1पत 5:12
2 प्रेष 16:1, 2

दूसरा कॉल.
1 2थि 1:11, 12

1:1 *सीलास भी कहलाता था।

याद करते हैं कि तुम कैसे विश्वासयोग्य
रहकर सेवा करते हो, प्यार से कड़ी मेहनत
करते हो और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर
आशा[1] रखने की वजह से धीरज धरते हो।
4 इसलिए भाइयो, तुम जो परमेश्वर के
प्यारे हो, हम जानते हैं कि तुम उसके
चुने हुए हो। **5** क्योंकि हमने तुम्हारे बीच
जिस खुशखबरी का प्रचार किया था, वह
खाली बातें नहीं थीं बल्कि यह ताकत,
पवित्र शक्ति और पक्के यकीन के साथ
तुम्हारे पास पहुँचायी गयी थी। और तुम
खुद जानते हो कि हमने तुम्हारी खातिर
कैसा काम किया था। **6** तुमने कई मुसी-
बतें सहते हुए[2] पवित्र शक्ति से मिलनेवाली
खुशी के साथ वचन को स्वीकार किया और
तुम हमारी और प्रभु की मिसाल पर चलने-
वाले बने।[3] **7** इसलिए तुम मकिदुनिया
और अखाया के सभी विश्वासियों के लिए
एक मिसाल बन गए।

8 सच तो यह है कि तुम्हारे यहाँ से
यहोवा* के वचन की चर्चा न सिर्फ मकि-
दुनिया और अखाया में फैली है, बल्कि
परमेश्वर पर तुम्हारे विश्वास की चर्चा
हर जगह हो रही है,[4] इसलिए हमें कुछ
और कहने की ज़रूरत नहीं। **9** क्योंकि
लोग खुद बताते हैं कि हम पहली बार
किस तरह तुमसे मिले थे और तुमने किस
तरह अपनी मूरतों को छोड़ दिया[5] और
जीवित और सच्चे परमेश्वर की तरफ
फिरे कि उसकी सेवा करो **10** और
स्वर्ग से उसके बेटे यीशु के आने का इंत-
ज़ार करो,[6] जिसे उसने मरे हुओं में से
ज़िंदा किया और जो हमें परमेश्वर के
आनेवाले क्रोध से बचाएगा।[7]

2 भाइयो, तुम तो जानते हो कि हमने
तुम्हारे यहाँ जो दौरा किया था,
वह बेकार साबित नहीं हुआ।[8] **2** जैसा
कि तुम जानते हो, हमने फिलिप्पी में
बहुत दुख झेले और हमारी बेइज़्ज़ती की
गयी थी,[1] फिर भी अपने परमेश्वर
की मदद से हमने हिम्मत जुटायी ताकि
काफी विरोध के बावजूद* तुम्हें उसकी
खुशखबरी सुना सकें।[2] **3** हम तुम्हें जो
सीख देते हैं वह झूठी बातों के आधार पर
या गलत इरादों से नहीं है, न ही इसमें
कोई छल-कपट है। **4** मगर परमेश्वर
ने हमें इस योग्य समझा कि हमें खुश-
खबरी सौंपी जाए, इसलिए हम इंसानों को
नहीं बल्कि परमेश्वर को खुश करने के
लिए प्रचार करते हैं, जो हमारे दिलों को
जाँचता है।[3]

5 दरअसल तुम जानते हो कि
हमने कभी-भी तुमसे चिकनी-चुपड़ी
बातें नहीं कीं, न ही हमें किसी चीज़
का लालच था जिसे छिपाने के लिए
हमें ढोंग करना पड़ा हो।[4] परमेश्वर
इस बात का गवाह है! **6** और हमने
इंसानों से वाह-वाही नहीं लूटनी चाही,
न तुमसे न ही दूसरों से, जबकि अगर
हम चाहते तो मसीह के प्रेषित होने के
नाते तुम पर एक खर्चीला बोझ बन सकते
थे।[5] **7** इसके बजाय, हम तुम्हारे साथ
बड़ी नरमी से पेश आए, ठीक जैसे एक
दूध पिलानेवाली माँ प्यार से अपने नन्हे-
मुन्नों की देखभाल करती* है। **8** हमें
तुमसे इतना गहरा लगाव हो गया कि
हमने तुम्हें न सिर्फ परमेश्वर की खुश-
खबरी सुनायी बल्कि तुम्हारे लिए अपनी
जान तक देने को तैयार थे,[6] क्योंकि तुम
हमारे प्यारे हो गए थे।[7]

9 भाइयो, हमने जो कड़ी मेहनत की
थी और जो संघर्ष किया था, वह सब

अध्य. 1
1 1पत 1:3, 4
2 1थि 2:14
3 1कुर 11:1; फिल 3:17; 2थि 3:9; 1पत 2:21
4 2थि 1:4
5 1कुर 10:14; 1कुर 12:2; गल 4:8; 1यूह 5:21
6 प्रेष 1:10, 11; तीत 2:13
7 1थि 5:2; 2पत 3:12

अध्य. 2
8 प्रेष 17:1, 4

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 16:12; प्रेष 16:22-24
2 प्रेष 17:1, 2
3 नीत 17:3; यिर्म 11:20
4 प्रेष 20:33
5 2कुर 11:9; 2थि 3:8, 10
6 यूह 15:13
7 यूह 13:35

1:8 *अति. क5 देखें।

2:2 *या शायद, “कड़ा संघर्ष करते हुए।”
2:7 *या “को दुलारती।”

तुम्हें ज़रूर याद होगा। जब हमने तुम्हें
परमेश्वर की खुशखबरी सुनायी तो रात-
दिन काम किया ताकि तुममें से किसी
पर भी खर्चीला बोझ न बनें।[1] 10 तुम
इस बात के गवाह हो और परमेश्वर
भी है कि तुम विश्वासियों के साथ पेश
आते वक्त हम कैसे वफ़ादार, नेक और
निर्दोष साबित हुए। 11 तुम अच्छी
तरह जानते हो कि जैसे एक पिता अपने
बच्चों के साथ करता है,[2] वैसे ही हम भी
तुममें से हरेक को सलाह देते रहे, तुम्हें
तसल्ली देते और समझाते-बुझाते रहे[3]
12 ताकि तुम्हारा चालचलन हमेशा पर-
मेश्वर की नज़र में सही हो[4] जिसने तुम्हें
अपने राज[5] और अपनी महिमा में भागी-
दार होने के लिए बुलाया है।[6]

13 इसीलिए हम परमेश्वर का धन्य-
वाद करना नहीं छोड़ते[7] क्योंकि जब
तुमने परमेश्वर का वचन हमसे सुना
तो इसे इंसानों का नहीं बल्कि परमेश्वर
का वचन समझकर स्वीकार किया, जैसा
कि यह सचमुच है। और यह वचन तुम
विश्वास करनेवालों पर असर कर
रहा है। 14 भाइयो, तुम परमेश्वर की
उन मंडलियों की मिसाल पर चले जो यहू-
दिया में मसीह यीशु के साथ एकता
में हैं। क्योंकि तुमने अपने देश के
लोगों के हाथों[8] वैसा ही दुख झेला
जैसा वे यहूदी लोगों के हाथों झेल रहे
हैं। 15 उन यहूदियों ने प्रभु यीशु को
और भविष्यवक्ताओं को भी मार डाला[9]
और हम पर भी ज़ुल्म किए।[10] और वे
परमेश्वर को खुश नहीं करते बल्कि
सब इंसानों के खिलाफ काम करते हैं।
16 क्योंकि वे हमें दूसरे राष्ट्रों के लोगों
को संदेश सुनाने से रोकते हैं ताकि उनका
उद्धार न हो।[11] इस तरह वे अपना
पाप बढ़ाते जाते हैं। मगर अब वह
समय आ गया है कि परमेश्वर का क्रोध
उन पर भड़क उठे।[1]

17 भाइयो, जब हमें कुछ वक्त के
लिए तुमसे बिछड़ना पड़ा (तुम भले ही
हमसे दूर थे मगर दिल के करीब थे), तो
हमें तुमसे मिलने* की बड़ी तमन्ना थी
इसलिए हमने तुम्हारे पास आने की हर
मुमकिन कोशिश की। 18 हमने, हाँ,
मुझ पौलुस ने दो बार तुम्हारे पास
आने की कोशिश की मगर शैतान ने
हमारा रास्ता रोक दिया। 19 हमारे
प्रभु यीशु की मौजूदगी के दौरान, हमारी
आशा या खुशी या हमारी जीत का ताज
कौन होगा? क्या वह तुम नहीं होगे?[2]
20 बेशक! तुम हमारी शान और हमारी
खुशी हो।

3 इसलिए जब हमसे और न रहा
गया, तो हमने सोचा कि बेहतर
यही होगा कि हम एथेन्स[3] में अकेले
रह जाएँ 2 और हमारे भाई तीमु-
थियुस[4] को तुम्हारे पास भेजें, जो मसीह
की खुशखबरी सुनानेवाला परमेश्वर का
सेवक* है ताकि वह तुम्हें मज़बूत करे
और तुम्हारे विश्वास के मामले में तुम्हें
दिलासा दे 3 और तुममें से कोई भी
इन दुख-तकलीफों की वजह से न डग-
मगाए।* तुम खुद जानते हो कि हम
इन दुख-तकलीफों से नहीं बच सकते।#[5]
4 जब हम तुम्हारे साथ थे, तो हम तुमसे
कहा करते थे कि हमें दुख-तकलीफें
झेलनी पड़ेंगी। और ऐसा ही हुआ है जैसा
कि तुम जानते हो।[6] 5 इसीलिए जब
मुझसे और रहा न गया, तो मैंने तीमु-
थियुस को तुम्हारे पास भेजा ताकि

2:17 *शा., "तुम्हारा मुँह देखने।" **3:2** *या शायद, "परमेश्वर का सहकर्मी।" **3:3** *शा., "बहक न जाए।" #या "हमारे लिए दुख-तकलीफें तय हैं।"

अध्य. 2
1 प्रेष 18:3; प्रेष 20:34; 2कुर 11:9; 2थि 3:8, 10
2 1कुर 4:15
3 प्रेष 20:31
4 इफ 4:1; कुल 1:10; 1पत 1:15
5 लूक 22:28-30
6 1पत 5:10
7 1थि 1:2, 3
8 प्रेष 17:5
9 प्रेष 2:22, 23; प्रेष 7:52
10 मत 23:34
11 लूक 11:52; प्रेष 13:49, 50

दूसरा कॉल.
1 रोम 1:18
2 1थि 5:23; 2थि 1:4

अध्य. 3
3 प्रेष 17:15
4 प्रेष 16:1, 2; रोम 16:21; 1कुर 16:10
5 प्रेष 14:22; 1कुर 4:9; 1पत 2:21
6 1थि 2:14

जानूँ कि तुम विश्‍वासयोग्य बने हुए हो,[1] क्योंकि मुझे डर था कि कहीं फुसलाने-वाले[2] ने तुम्हें फुसला तो नहीं लिया और हमारी कड़ी मेहनत बेकार तो नहीं गयी।

6 मगर तुम्हारे यहाँ से अभी-अभी तीमुथियुस हमारे पास आया है[3] और उसने हमें तुम्हारे प्यार और वफादारी के बारे में अच्छी खबर दी है। उसने यह भी बताया कि तुम हमें बहुत याद करते हो और हमें देखने के लिए तरस रहे हो, ठीक जैसे हम भी तुम्हें देखने के लिए तरस रहे हैं। **7** इसलिए भाइयो, भले ही हम बहुत तकलीफें* और मुसीबतें झेल रहे हैं, फिर भी तुम्हारे बारे में और तुम्हारी वफादारी के बारे में सुनकर हमें बहुत दिलासा मिला।[4] **8** यह जानकर कि तुम प्रभु में मज़बूती से खड़े हो, हमारे अंदर नयी जान आ जाती है।* **9** तुम्हारी वजह से परमेश्‍वर के सामने हम जो खुशी महसूस कर रहे हैं, उसके लिए हम परमेश्‍वर का एहसान कैसे चुकाएँ? **10** हम रात-दिन गिड़गिड़ाते हुए परमेश्‍वर से मिन्‍नतें करते हैं कि किसी तरह तुम्हें आमने-सामने* देख पाएँ और तुम्हारे विश्‍वास में जो कमी है उसे पूरा कर पाएँ।[5]

11 हमारी दुआ है कि खुद हमारा परमेश्‍वर और पिता, साथ ही हमारा प्रभु यीशु हमारे लिए कोई रास्ता निकाले कि हम तुम्हारे पास आ सकें। **12** हम यह भी दुआ करते हैं कि प्रभु तुम्हें बढ़ाए, हाँ, एक-दूसरे के लिए और सबके लिए तुम्हारा प्यार भी बढ़ता रहे[6] ठीक जैसे हम तुमसे बेहद प्यार करते हैं **13** ताकि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र जनों के साथ मौजूद हो,[7] तो हमारे परमेश्‍वर और पिता के सामने वह तुम्हारे दिलों को मज़बूत करे और तुम्हें पवित्र और निर्दोष ठहराए।[1]

4 भाइयो, तुमने हमसे सीखा था कि परमेश्‍वर को खुश करने के लिए तुम्हारा चालचलन कैसा होना चाहिए[2] और वाकई तुम्हारा चालचलन ऐसा ही है। अब आखिर में, हम प्रभु यीशु के नाम से तुमसे गुज़ारिश करते हैं और तुम्हें बढ़ावा देते हैं कि तुम पूरी तरह ऐसा करते रहो। **2** तुम जानते हो कि हमने प्रभु यीशु की तरफ से तुम्हें क्या-क्या हिदायतें* दी थीं।

3 परमेश्‍वर की मरज़ी यही है कि तुम पवित्र बने रहो[3] और नाजायज़ यौन-संबंधों* से दूर रहो।[4] **4** और तुममें से हर कोई पवित्रता[5] और आदर के साथ अपने शरीर* को काबू में रखना जाने,[6] **5** न कि लालच से और बेकाबू होकर अपनी वासनाएँ पूरी करे,[7] जैसा उन राष्ट्रों के लोग करते हैं जो परमेश्‍वर को नहीं जानते।[8] **6** कोई भी इस मामले में अपनी हद पार न करे और अपने भाई का फायदा न उठाए क्योंकि यहोवा* इन सब कामों की सज़ा देता है, ठीक जैसे हम तुम्हें पहले भी बता चुके हैं और कड़ी चेतावनी दे चुके हैं। **7** इसलिए कि परमेश्‍वर ने हमें अशुद्ध कामों के लिए नहीं, बल्कि पवित्र बनने के लिए बुलाया है।[9] **8** इसलिए जो इंसान इस बात को ठुकराता है वह किसी इंसान को नहीं बल्कि उस परमेश्‍वर को ठुकराता है[10] जो तुम्हें अपनी पवित्र शक्‍ति देता है।[11]

9 मगर जहाँ तक भाइयों जैसा प्यार[12] करने की बात है, इस मामले में हमें तुम्हें

3:7 *शा., "तंगी।" **3:8** *शा., "हम ज़िंदा हैं।" **3:10** *शा., "तुम्हारा मुँह।"

4:2 *या "आदेश।" **4:3** *यूनानी में *पोर्निया*। शब्दावली देखें। **4:4** *शा., "बरतन।" **4:6** *अति. क5 देखें।

अध्य. 3
1 1थि 3:2
2 मत 4:3, 2कुर 11:3
3 प्रेष 18:5
4 2थि 1:4
5 2थि 1:3
6 1थि 4:9, 2थि 1:3
7 1थि 2:19, 1थि 5:23, 2थि 2:1, 2

दूसरा कॉल.
1 1कुर 1:8

अध्य. 4
2 कुल 1:10, 1पत 2:12
3 यूह 17:19, इफ 5:25-27, 2थि 2:13, 1पत 1:15, 16
4 इफ 5:3
5 रोम 6:19
6 कुल 3:5, 2ती 2:22
7 1कुर 6:18, इफ 5:5
8 भज 79:6, इफ 4:17, 19, 1पत 4:3
9 इब्र 12:14, 1पत 1:15, 16
10 1कुर 6:18, 19
11 1यूह 3:24
12 रोम 12:10

कुछ लिखने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि तुम्हें खुद परमेश्‍वर ने एक-दूसरे से प्यार करना सिखाया है।[1] **10** और वाकई तुम मकिदुनिया के सभी भाइयों से प्यार कर रहे हो। मगर भाइयो, हम तुम्हें बढ़ावा देते हैं कि तुम और भी ज़्यादा ऐसा करते रहो। **11** और जैसा हमने तुम्हें हिदायत दी थी, तुम अपना यह लक्ष्य बना लो कि तुम शांति से जीवन बिताओगे,[2] अपने काम से काम रखोगे[3] और अपने हाथों से मेहनत करोगे[4] **12** ताकि तुम बाहरवालों की नज़र में शराफत से जीनेवाले ठहरो[5] और तुम्हें किसी चीज़ की कमी न हो।

13 इसके अलावा भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम इस बात से अनजान रहो कि जो मौत की नींद सो रहे हैं उनका भविष्य क्या है[6] ताकि तुम उन लोगों की तरह मातम न मनाओ जिनके पास कोई आशा नहीं है।[7] **14** अगर हमें विश्‍वास है कि यीशु मरा और ज़िंदा किया गया,[8] तो हमें यह भी विश्‍वास है कि जो लोग यीशु के साथ एकता में मौत की नींद सो गए हैं उन्हें परमेश्‍वर, यीशु के ज़रिए ज़िंदा करेगा।[9] **15** क्योंकि हम यहोवा* के वचन से तुम्हें बताते हैं कि हममें से जो प्रभु की मौजूदगी के दौरान जी रहे होंगे, हम किसी भी हाल में उनसे आगे नहीं बढ़ेंगे जो मौत की नींद सो चुके हैं। **16** क्योंकि प्रभु खुद प्रधान स्वर्गदूत[10] की दमदार आवाज़ से पुकार लगाता हुआ स्वर्ग से उतरेगा और परमेश्‍वर की तुरही फूँकी जाएगी और जो मसीह के साथ एकता में मर गए हैं वे पहले ज़िंदा होंगे।[11] **17** इसके बाद हम जो ज़िंदा हैं और जो बचे रहेंगे, हम उनके साथ बादलों में उठा लिए जाएँगे[12] ताकि हम हवा में प्रभु से मिलें।[13] इस तरह हम हमेशा प्रभु के साथ रहेंगे।[14] **18** इसलिए इन बातों से एक-दूसरे को दिलासा देते रहो।

5 भाइयो, ये बातें कब होंगी, हमें इनके समय और दौर के बारे में तुम्हें कुछ लिखने की ज़रूरत नहीं। **2** इसलिए कि तुम खुद अच्छी तरह जानते हो कि यहोवा* का दिन[1] ठीक वैसे ही आ रहा है जैसे रात को चोर आता है।[2] **3** जब लोग कहते होंगे, “शांति और सुरक्षा है!” तब उसी वक्‍त अचानक उन पर विनाश आ पड़ेगा,[3] जैसे एक गर्भवती औरत को अचानक प्रसव-पीड़ा उठने लगती है और वे किसी भी हाल में नहीं बच पाएँगे। **4** मगर भाइयो, तुम अंधकार में नहीं हो कि वह दिन तुम पर ऐसे आ पड़े, जैसे दिन का उजाला चोरों पर आ पड़ता है। **5** इसलिए कि तुम सब रौशनी के बेटे और दिन के बेटे हो।[4] हम न तो रात के हैं न ही अंधकार के।[5]

6 तो फिर आओ हम बाकियों की तरह न सोएँ,[6] बल्कि जागते रहें[7] और होश-हवास बनाए रखें।[8] **7** जो सोते हैं, वे रात को सोते हैं और जो पीकर धुत्त होते हैं वे रात के वक्‍त धुत्त होते हैं।[9] **8** मगर हम जो दिन के हैं, आओ हम अपने होश-हवास बनाए रखें और विश्‍वास और प्यार का कवच और उद्धार की आशा का टोप पहने रहें।[10] **9** क्योंकि परमेश्‍वर ने हमें उसका क्रोध झेलने के लिए नहीं बल्कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के ज़रिए उद्धार पाने के लिए चुना है।[11] **10** मसीह हमारे लिए मरा[12] ताकि हम चाहे ज़िंदा हों या मौत की नींद सो जाएँ, हम उसके साथ जीएँ।[13] **11** इसलिए एक-दूसरे का हौसला बढ़ाते* रहो और एक-दूसरे को मज़बूत करते रहो,[14] ठीक जैसा तुम कर भी रहे हो।

4:15; 5:2 *अति. क5 देखें।

5:11 *या “को दिलासा देते।”

अध्य. 4

1 यूह 13:34, 35; 1पत 1:22; 1यूह 4:21
2 2थि 3:11, 12
3 1पत 4:15
4 1कुर 4:11, 12; इफ 4:28; 2थि 3:10; 1ती 5:8
5 रोम 12:17
6 यूह 11:11; प्रेष 7:59, 60; 1कुर 15:6
7 1कुर 15:32
8 रोम 14:9; 1कुर 15:3, 4
9 1कुर 15:22, 23; फिल 3:20, 21; 2थि 2:1; प्रक 20:4
10 यहू 9
11 1कुर 15:51, 52
12 प्रेष 1:9
13 2थि 2:1
14 यूह 14:3; यूह 17:24; 2कुर 5:8; फिल 1:23; प्रक 20:6

दूसरा कॉल.

अध्य. 5

1 सप 1:14
2 मत 24:36; 2पत 3:10
3 भज 37:10; यिर्म 8:11
4 यूह 12:36; रोम 13:12; इफ 5:8
5 यूह 8:12; कुल 1:13; 1पत 2:9
6 रोम 13:11
7 मत 24:42
8 1पत 5:8
9 रोम 13:13
10 इफ 6:14-17
11 2थि 2:13
12 रोम 5:8
13 1थि 4:16, 17
14 रोम 1:11, 12; रोम 15:2

12 भाइयो, अब हम तुमसे गुज़ारिश
करते हैं कि तुम्हारे बीच जो कड़ी मेह-
नत करते हैं और प्रभु में तुम्हारी अगु-
वाई करते हैं और तुम्हें समझाते-बुझाते
हैं, उनका आदर करो। 13 और उनके
काम की वजह से प्यार से उनकी बहुत
कदर करो।[1] एक-दूसरे के साथ शांति
कायम करनेवाले बनो।[2] 14 और
भाइयो, हम तुम्हें बढ़ावा देते हैं कि जो
मनमानी करते हैं उन्हें चेतावनी दो,[*][3]
जो मायूस[#] हैं उन्हें अपनी बातों से
तसल्ली दो, कमज़ोरों को सहारा दो
और सबके साथ सब्र से पेश आओ।[4]
15 इस बात का ध्यान रखो कि कोई
किसी की बुराई का बदला बुराई से
न दे,[5] मगर तुम हमेशा एक-दूसरे की
और बाकी सबकी भलाई करने में लगे
रहो।[6]

16 हमेशा खुश रहो।[7] 17 लगा-
तार प्रार्थना करते रहो।[8] 18 हर बात
के लिए धन्यवाद दो।[9] मसीह यीशु में
तुम्हारे लिए परमेश्वर की यही मरज़ी है।
19 पवित्र शक्ति के ज़बरदस्त असर
में रुकावट न डालो।[*][1] 20 भविष्य-
वाणियों को तुच्छ न समझो।[2] 21 सब
बातों को परखो,[3] जो बढ़िया है उसे थामे
रहो। 22 हर तरह की दुष्टता से दूर
रहो।[4]

23 मेरी दुआ है कि शांति का पर-
मेश्वर तुम्हें पूरी तरह पवित्र करे। तुम
भाइयों का मन, जान[*] और शरीर
हमारे प्रभु यीशु मसीह की मौजूदगी के
दौरान हर तरह से निर्दोष बना रहे।[5]
24 जिसने तुम्हें बुलाया है वह विश्वास-
योग्य है और वह ज़रूर ऐसा करेगा।

25 भाइयो, हमारे लिए प्रार्थना करते
रहो।[6]

26 पवित्र चुंबन से सब भाइयों को
नमस्कार करो।

27 मैं प्रभु के नाम से तुम पर यह
ज़िम्मेदारी डालता हूँ कि यह चिट्ठी सब
भाइयों को पढ़कर सुनायी जाए।[7]

28 हमारे प्रभु यीशु मसीह की महा-
कृपा तुम पर होती रहे।

अध्य. 5
1 फिल 2:29, 30; 1ती 5:17; इब्र 13:7
2 मर 9:50; 2कुर 13:11
3 लैव 19:17; 2ती 4:2
4 1कुर 13:4; गल 5:22; इफ 4:1, 2; कुल 3:13
5 मत 5:39
6 रोम 12:17, 19
7 2कुर 6:4, 10; फिल 4:4
8 लूक 18:1; रोम 12:12
9 इफ 5:20; कुल 3:17

दूसरा कॉल.
1 इफ 4:30
2 1कुर 14:1
3 1यूह 4:1
4 अय 2:3
5 1कुर 1:8
6 रोम 15:30
7 कुल 4:16

5:14 *या “समझाओ।” #या “निराश।”

5:19 *शा., “पवित्र शक्ति की आग मत बुझाओ।” 5:23 *शब्दावली में “जीवन” देखें।

थिस्सलुनीकियों

के नाम दूसरी चिट्ठी

सारांश

1 नमस्कार (1, 2)
थिस्सलुनीकियों का बढ़ता विश्वास (3-5)
आज्ञा न माननेवालों से बदला लिया जाएगा (6-10)
मंडली के लिए प्रार्थना (11, 12)

2 पापी (1-12)
मज़बूत बने रहने का बढ़ावा (13-17)

3 प्रार्थना करते रहो (1-5)
बेकायदा चलनेवालों से खबरदार (6-15)
आखिर में नमस्कार (16-18)

1 पौलुस, सिलवानुस* और तीमु-
थियुस[1] थिस्सलुनीकियों की मंडली
को लिख रहे हैं, जो परमेश्‍वर हमारे पिता
और प्रभु यीशु मसीह के साथ एकता में है:
2 तुम्हें परमेश्‍वर हमारे पिता की
तरफ से और प्रभु यीशु मसीह की तरफ
से महा-कृपा और शांति मिले।
3 भाइयो, हमारा फर्ज़ बनता है कि हम
तुम्हारे लिए हमेशा परमेश्‍वर का धन्य-
वाद करें। ऐसा करना सही भी है क्योंकि
तुम्हारा विश्‍वास तेज़ी से बढ़ता जा रहा है
और एक-दूसरे के लिए तुम सबका प्यार
भी बढ़ता जा रहा है।[2] 4 इस वजह से
हम परमेश्‍वर की मंडलियों में तुम पर
गर्व करते हैं[3] क्योंकि तुम इतने ज़ुल्म
और मुश्‍किलें* झेलते हुए धीरज धर रहे
हो और विश्‍वास में मज़बूत बने हुए हो।[4]
5 यह परमेश्‍वर के सच्चे न्याय का सबूत है
और इस वजह से तुम परमेश्‍वर के राज के
योग्य समझे जाओगे, जिसके लिए असल
में तुम दुख उठा रहे हो।[5]
6 वाकई परमेश्‍वर की नज़र में यह
सही है कि जो तुम पर संकट ले आते
हैं, बदले में वह उन पर संकट ले आए।[6]
7 मगर तुम लोग जो संकट झेल रहे हो,
तुम्हें हमारे साथ उस वक्‍त राहत दे जब
प्रभु यीशु अपने शक्‍तिशाली दूतों के साथ
धधकती आग में स्वर्ग से प्रकट होगा।[7]
8 वह उन लोगों से बदला लेगा जो पर-
मेश्‍वर को नहीं जानते और हमारे प्रभु यीशु
के बारे में खुशखबरी के मुताबिक नहीं
चलते।[8] 9 उन्हें प्रभु के सामने से और
उसकी शक्‍ति के तेज से दूर कर दिया
जाएगा और उन्हें सज़ा देकर हमेशा के
लिए नाश कर दिया जाएगा।[9] 10 यह
उस वक्‍त होगा जब वह अपने पवित्र
जनों के साथ महिमा पाने के लिए आएगा
और उस दिन वे सभी उसकी तारीफ करेंगे
जिन्होंने उस पर विश्‍वास किया है, क्योंकि
हमने जो गवाही दी थी उस पर तुमने
विश्‍वास किया है।
11 इसी वजह से हम तुम्हारे लिए
हमेशा प्रार्थना करते हैं कि हमारा पर-
मेश्‍वर तुम्हें उसके बुलावे के योग्य समझे[1]
और अपनी शक्‍ति से वह जो-जो भलाई
करना चाहता है वह सब करे और तुम
विश्‍वास की वजह से जितने काम करते
हो उन्हें सफल करे। 12 ऐसा इसलिए
हो ताकि हमारे परमेश्‍वर और प्रभु यीशु
मसीह की महा-कृपा के मुताबिक, हमारे
प्रभु यीशु का नाम तुम्हारे ज़रिए महिमा
पाए और तुम उसके साथ एकता में
महिमा पाओ।

2 मगर भाइयो, जहाँ तक हमारे प्रभु
यीशु मसीह की मौजूदगी[2] और
उसके साथ हमारे इकट्ठा होने की बात
है,[3] हम तुमसे गुज़ारिश करते हैं 2 कि
अगर कोई कहे कि यहोवा* का दिन[4]
आ गया है तो उतावली में आकर अपनी
समझ-बूझ मत खो बैठना, न ही घबरा
जाना, फिर चाहे कोई दावा करे कि यह
बात ईश्‍वर-प्रेरणा से पता चली है,[5] चाहे
यह कोई ज़बानी संदेश हो या ऐसी चिट्ठी
में लिखी बात हो जो हमारी तरफ से लगे।
3 कोई तुम्हें किसी तरह गुमराह न
करे* क्योंकि वह दिन तब तक नहीं
आएगा, जब तक कि पहले परमेश्‍वर से
बगावत# न की जाए[6] और वह पापी[7]
यानी विनाश का बेटा प्रकट न किया
जाए।[8] 4 वह विरोध करता है और
ईश्‍वर कहलानेवाले हर किसी से और

अध्य. 1
1 2कुर 1:19
2 1थि 3:12
1थि 4:9, 10
3 1थि 2:19
4 1थि 1:6
1थि 2:14
1पत 2:21
5 प्रेष 14:22
रोम 8:17
2ती 2:12
6 रोम 12:19
प्रक 6:9, 10
7 मर 8:38
लूक 17:29, 30
1पत 1:7
8 रोम 2:8
9 2पत 3:7

दूसरा कॉल.
1 रोम 8:30

अध्य. 2
2 मत 24:3
3 1थि 4:17
4 सप 1:14
2पत 3:10
5 1यूह 4:1
6 1ती 4:1
2ती 2:16-18
2ती 4:3
2पत 2:1
1यूह 2:18, 19
7 मत 7:15
प्रेष 20:29, 30
8 2पत 2:1, 3

1:1 *सीलास भी कहलाता था। 1:4 *या "संकट।"

2:2 *अति. क5 देखें। 2:3 *या "बहका न दे।" #या "सच्ची उपासना से मुँह मोड़ लेना।"

उपासना की जानेवाली हर चीज़* से खुद को ऊँचा उठाता है और इस तरह वह ईश्‍वर के मंदिर में बैठकर सबके सामने खुद को ईश्‍वर बताता है। **5** क्या तुम्हें याद नहीं कि जब मैं तुम्हारे साथ था, तब मैं तुम्हें बताया करता था कि यह सब होगा?

6 अब तुम जानते हो कि कौन उसे रोके हुए है ताकि वक्‍त आने पर ही उसे प्रकट किया जाए। **7** यह सच है कि उस पापी की बुराई एक रहस्य है जो अभी से शुरू हो चुकी है,[1] मगर यह बुराई सिर्फ तब तक एक रहस्य रहेगी जब तक कि इसे रोकनेवाला हट नहीं जाता जो अभी इसे रोके हुए है। **8** इसके बाद, वह पापी वाकई सामने आ जाएगा और जब प्रभु यीशु अपनी मौजूदगी ज़ाहिर करेगा[2] तब वह उस पापी को अपनी मुँह की फूँक से मिटा देगा[3] और उसे भस्म कर देगा। **9** मगर उस पापी का मौजूद होना शैतान की तरफ से है।[4] वह पापी हर तरह के शक्‍तिशाली काम, झूठे चिन्ह और चमत्कार[5] **10** और हर तरह की बुराई और छल के काम करेगा।[6] और इससे वे धोखा खाएँगे जो नाश की तरफ बढ़ रहे हैं। यही उनकी सज़ा है क्योंकि उन्होंने सच्चाई से प्यार नहीं किया कि वे उद्धार पाएँ। **11** इसी वजह से परमेश्‍वर उन्हें झूठी शिक्षाओं से बहकने देता है ताकि वे झूठ पर यकीन करें[7] **12** और उन सबको सज़ा दी जाए क्योंकि उन्होंने सच्चाई पर यकीन नहीं किया बल्कि बुराई से खुशी पायी।

13 लेकिन भाइयो, तुम जो यहोवा* के प्यारे हो, तुम्हारे लिए हमेशा परमेश्‍वर का धन्यवाद करना हमारा फर्ज़ बनता है, क्योंकि परमेश्‍वर ने तुम्हें शुरू से चुन लिया।[1] उसने अपनी पवित्र शक्‍ति से तुम्हें शुद्ध करने के ज़रिए[2] और सच्चाई पर तुम्हारे विश्‍वास की वजह से तुम्हें उद्धार के लिए चुना है। **14** और उस खुशखबरी के ज़रिए तुम्हें बुलाया है जो हम सुनाते हैं ताकि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा पाओ।[3] **15** इसलिए भाइयो, मज़बूत खड़े रहो[4] और जो बातें* तुम्हें सिखायी गयी थीं उन्हें मानते रहो,[5] चाहे वे तुम्हें ज़बानी तौर पर सिखायी गयी थीं या हमारी चिट्ठी के ज़रिए। **16** हमारा प्रभु यीशु मसीह और हमारा पिता यानी परमेश्‍वर जिसने हमसे प्यार किया[6] और अपनी महा-कृपा के ज़रिए हमें सदा कायम रहनेवाला दिलासा दिया है और एक शानदार आशा दी है,[7] **17** वे दोनों तुम्हारे दिलों को दिलासा दें और तुम्हें हर अच्छे काम और वचन के लिए मज़बूत करें।

3 भाइयो, मैं आखिर में यह कहता हूँ कि हमारे लिए प्रार्थना करते रहो[8] ताकि यहोवा* का वचन तेज़ी से फैलता जाए[9] और महिमा पाता जाए, ठीक जैसे तुम्हारे बीच हो रहा है। **2** यह भी प्रार्थना करो कि हम ऐसे लोगों से बचाए जाएँ जो खतर-नाक और दुष्ट हैं,[10] क्योंकि विश्‍वास हर किसी में नहीं होता।[11] **3** मगर प्रभु विश्‍वासयोग्य है और वह तुम्हें मज़बूत करेगा और शैतान* से बचाए रखेगा। **4** और हमें प्रभु में तुम्हारे बारे में भरोसा है कि हमने तुम्हें जो हिदायतें दी हैं उन्हें तुम मान रहे हो और आगे भी मानते रहोगे। **5** हमारी दुआ है कि प्रभु तुम्हारे दिलों को सही राह दिखाता रहे ताकि तुम परमेश्‍वर से प्यार करो[12] और मसीह की खातिर धीरज धरो।[13]

2:4 *या "श्रद्धा की हर चीज़।" **2:13; 3:1** *अति. क5 देखें।

2:15 *या "दस्तूर।" **3:3** *शा., "उस दुष्ट।"

अध्य. 2
1 प्रेष 20:29, 30; 1कुर 11:18, 19; 1यूह 2:18
2 1ती 6:13-15; 2ती 4:1, 8
3 यश 11:4; प्रक 19:15
4 2कुर 11:3
5 मत 24:24
6 मत 24:11
7 मत 24:5; 1ती 4:1; 2ती 4:3, 4

दूसरा कॉल.
1 यूह 6:44; रोम 8:30
2 यूह 17:17; 1कुर 6:11; 1थि 4:7
3 1पत 5:10
4 1कुर 15:58; 1कुर 16:13
5 1कुर 11:2
6 1यूह 4:10
7 1पत 1:3, 4

अध्य. 3
8 रोम 15:30; 1थि 5:25; इब्र 13:18
9 प्रेष 19:20; 1थि 1:8
10 यश 25:4
11 प्रेष 28:24; रोम 10:16
12 1यूह 5:3
13 लूक 21:19; रोम 5:3

6 भाइयो, हम प्रभु यीशु मसीह के
नाम से तुम्हें हिदायत देते हैं कि ऐसे हर
भाई से दूर हो जाओ जो कायदे से नहीं
चलता[1] और उन हिदायतों* के मुताबिक
नहीं चलता जो हमने तुम्हें# बतायी थीं।[2]
7 तुम खुद जानते हो कि तुम्हें कैसे हमारी
मिसाल पर चलना चाहिए,[3] क्योंकि
हम तुम्हारे बीच रहते वक्त बेकायदा
नहीं चले, 8 न ही हमने मुफ्त की*
रोटी तोड़ी।[4] इसके बजाय, हम रात-
दिन कड़ी मेहनत और संघर्ष करते थे
ताकि तुममें से किसी पर भी खर्चीला बोझ
न बनें।[5] 9 ऐसा नहीं कि हमें अधि-
कार नहीं है,[6] बल्कि हम चाहते थे कि
हम तुम्हारे लिए ऐसी मिसाल रखें जिस
पर तुम चलो।[7] 10 सच तो यह है कि
जब हम तुम्हारे साथ थे, तो हम तुम्हें यह
आदेश दिया करते थे: “अगर कोई काम
नहीं करना चाहता, तो उसे खाने का भी
हक नहीं है।”[8] 11 हमने सुना है कि
तुम्हारे बीच कुछ लोग कायदे से नहीं चल
रहे हैं।[9] वे कोई काम-धंधा नहीं करते
बल्कि उन बातों में दखल देते फिरते
हैं जिनसे उनका कोई लेना-देना नहीं।[1]
12 ऐसे लोगों को हम प्रभु यीशु मसीह में
आदेश देते और समझाते हैं कि वे शांति
से अपना काम-धंधा करें और अपनी
कमाई की रोटी खाएँ।[2]
13 भाइयो, जहाँ तक तुम्हारी बात
है, भले काम करने में हार मत मानो।
14 लेकिन अगर कोई उन बातों को नहीं
मानता जो हमने इस चिट्ठी में बतायी
हैं, तो ऐसे आदमी पर नज़र रखो*
और उसके साथ मिलना-जुलना छोड़ दो[3]
ताकि वह शर्मिंदा हो। 15 फिर भी उसे
दुश्मन मत समझो, मगर उसे एक भाई
जानकर समझाते-बुझाते रहो।[4]
16 हमारी दुआ है कि शांति का प्रभु
तुम्हें हर तरह से शांति देता रहे।[5] प्रभु
तुम सबके साथ हो।
17 मैं पौलुस खुद अपने हाथ से तुम्हें
नमस्कार लिख रहा हूँ,[6] जो मेरी हर चिट्ठी
की पहचान है। मेरे लिखने का तरीका
यही है।
18 हमारे प्रभु यीशु मसीह की महा-
कृपा तुम पर होती रहे।

3:6 *या “दस्तूरों।” #या शायद, “उन्हें।”
3:8 *या “बिना पैसे दिए।”
3:14 *शा., “पर निशान लगाओ।”

अध्य. 3
1 1थि 5:14
2 1कुर 11:2; 2थि 2:15; 2थि 3:14
3 1कुर 4:16; 1थि 1:6
4 प्रेष 20:34
5 प्रेष 18:3; 1कुर 9:14, 15; 2कुर 11:9; 1थि 2:9
6 मत 10:9, 10; 1कुर 9:6, 7
7 1कुर 11:1; फिल 3:17
8 1थि 4:11, 12; 1ती 5:8
9 1थि 5:14

दूसरा कॉल.
1 1ती 5:13; 1पत 4:15
2 इफ 4:28
3 2थि 3:6
4 1थि 5:14
5 यूह 14:27
6 1कुर 16:21; कुल 4:18

तीमुथियुस
के नाम पहली चिट्ठी

सारांश

1 नमस्कार (1, 2)
झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी (3-11)
पौलुस पर महा-कृपा की गयी (12-16)
युग-युग का राजा (17)
‘अच्छी लड़ाई लड़’ (18-20)

2 सब किस्म के लोगों के लिए प्रार्थना (1-7)
एक परमेश्वर, एक बिचवई (5)
सबकी खातिर फिरौती का बराबर दाम (6)
आदमी और औरत के लिए हिदायतें (8-15)
पहनावे में मर्यादा हो (9, 10)

3 निगरानी करनेवालों की योग्यताएँ (1-7)
सहायक सेवकों की योग्यताएँ (8-13)
परमेश्‍वर की भक्‍ति का पवित्र रहस्य (14-16)

4 दुष्ट स्वर्गदूतों की शिक्षाओं से खबरदार (1-5)
मसीह के बढ़िया सेवक कैसे बनें (6-10)
शरीर की कसरत और परमेश्‍वर की भक्‍ति में फर्क (8)
अपनी शिक्षा पर ध्यान दे (11-16)

5 जवानों और बुज़ुर्गों के साथ कैसे पेश आएँ (1, 2)
विधवाओं की मदद करना (3-16)
अपने घर के लोगों की देखभाल करना (8)
मेहनती प्राचीनों का आदर करो (17-25)
'अपने पेट के लिए थोड़ी दाख-मदिरा' (23)

6 दास अपने मालिकों का आदर करें (1, 2)
झूठे शिक्षक; पैसे का प्यार (3-10)
परमेश्‍वर के सेवक को हिदायतें (11-16)
भले कामों में धनी बनें (17-19)
अपनी अमानत सँभालकर रख (20, 21)

---

1 मैं पौलुस हमारे उद्धारकर्ता परमेश्‍वर
और मसीह यीशु जो हमारी आशा
है,[1] उनकी आज्ञा से मसीह यीशु का एक
प्रेषित हूँ। **2** प्यारे तीमुथियुस*[2] के
नाम, जो विश्‍वास में मेरा सच्चा बेटा है:[3]
हमारे पिता यानी परमेश्‍वर और हमारे
प्रभु मसीह यीशु की तरफ से तुझे महा-
कृपा, दया और शांति मिले।
3 जब मैं मकिदुनिया जानेवाला था,
तो मैंने तुझे इफिसुस में रहने का बढ़ावा
दिया था। अब मैं तुझे बढ़ावा देता हूँ कि
वहाँ जो लोग अलग किस्म की शिक्षाएँ
दे रहे हैं, उन्हें आज्ञा दे कि वे ऐसा
न करें **4** और झूठी कहानियों पर और
वंशावलियों पर ध्यान न दें।[4] उनसे कोई
फायदा नहीं होता[5] बल्कि सिर्फ अटकलें
लगाने का बढ़ावा मिलता है और ये पर-
मेश्‍वर के उस इंतज़ाम के मुताबिक नहीं हैं
जिसका नाता विश्‍वास से है। **5** वाकई
इस हिदायत* का मकसद यह है कि हम
साफ दिल और साफ ज़मीर से और उस
विश्‍वास के मुताबिक प्यार करें[6] जिसमें
कोई कपट न हो। **6** इनसे भटककर
कुछ लोग फिज़ूल की बातों में लग गए
हैं।[1] **7** वे कानून सिखानेवाले तो बनना
चाहते हैं[2] मगर जो बातें वे बोलते हैं और
जिन पर अड़े रहते हैं, उन्हें खुद नहीं
समझते।
8 हम जानते हैं कि कानून बढ़िया
है, बशर्ते इसे सही तरह से माना जाए।
9 इस सच्चाई को ध्यान में रखते हुए
कि कानून नेक इंसान के लिए नहीं
बल्कि ऐसे लोगों के लिए बनाया जाता
है जो दुष्ट[3] और बागी हैं, भक्‍तिहीन और
पापी हैं, जो वफादार नहीं होते,* पवित्र
बातों को तुच्छ समझते हैं, माता-पिता
को मार डालते हैं, हत्यारे, **10** ना-
जायज़ यौन-संबंध* रखनेवाले, आद-
मियों के साथ संभोग करनेवाले आदमी,
अपहरण करनेवाले, झूठे, वादे तोड़ने-
वाले# और ऐसा हर काम करनेवाले हैं
जो खरी△ शिक्षा के खिलाफ है।[4]
11 यह खरी शिक्षा आनंदित परमेश्‍वर

अध्या. 1
1 1पत 1:3, 4
2 प्रेष 16:1, 2; फिल 2:19, 20
3 1कुर 4:17
4 1ती 4:7; 2ती 4:3, 4; तीत 1:13, 14
5 1ती 6:20; 2ती 2:14
6 रोम 13:8; गल 5:6

दूसरा कॉल.
1 1ती 6:20; 2ती 2:16-18
2 याकू 3:1
3 गल 3:19
4 2ती 1:13; तीत 1:7, 9

1:2 *मतलब "जो परमेश्‍वर का आदर करता है।" **1:5** *या "आदेश; आज्ञा।"

1:9 *या "जिनमें अटल प्यार नहीं।" **1:10** *शब्दावली देखें। #या "झूठी शपथ खाने-वाले।" △या "स्वास्थ्यकर; फायदेमंद।"

की उस शानदार खुशखबरी के मुताबिक
है जिसे सुनाने की ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी
गयी है।[1]

12 हमारे प्रभु मसीह यीशु का मैं
एहसान मानता हूँ जिसने मुझे शक्ति
दी है क्योंकि उसने मुझे विश्वासयोग्य
मानकर अपनी सेवा के लिए ठहराया है,[2]
13 हालाँकि पहले मैं परमेश्वर की निंदा
करनेवाला और ज़ुल्म ढानेवाला और
गुस्ताख था।[3] फिर भी मुझ पर दया
की गयी क्योंकि मैंने यह सब अनजाने
में किया और मुझमें विश्वास नहीं था।
14 मगर हमारे प्रभु की महा-कृपा मुझ
पर बहुतायत में हुई, साथ ही मैंने
मसीह यीशु में विश्वास और प्यार पाया।
15 यह बात भरोसेमंद और पूरी तरह
मानने लायक है कि मसीह यीशु पापियों
का उद्धार करने के लिए दुनिया में
आया था।[4] उन पापियों में सबसे बड़ा मैं
हूँ।[5] 16 फिर भी मुझ पर दया की गयी
ताकि इस महापापी के ज़रिए मसीह यीशु
दिखाए कि वह कितना सब्र रखता है और
मैं उन सबके लिए एक मिसाल बनूँ जो
हमेशा की ज़िंदगी पाने के लिए उस पर
विश्वास रखेंगे।[6]

17 युग-युग के राजा,[7] अनश्वर,[8]
अदृश्य[9] और एकमात्र परमेश्वर[10] का
आदर और उसकी महिमा हमेशा-हमेशा
तक होती रहे। आमीन।

18 हे मेरे बेटे तीमुथियुस, तेरे बारे
में जो भविष्यवाणियाँ की गयी थीं, उन्हें
ध्यान में रखते हुए मैं तुझे हिदायत* देता
हूँ कि तू इनके मुताबिक अच्छी लड़ाई
लड़ता रह[11] 19 और अपने विश्वास
को और साफ ज़मीर को बनाए रख,[12]
जिसे कुछ लोगों ने दरकिनार कर दिया
है और इस वजह से उनके विश्वास का
जहाज़ टूटकर तहस-नहस हो गया है।
20 हुमिनयुस[1] और सिकंदर ऐसे ही
लोगों में से हैं और मैंने उन्हें शैतान के
हवाले कर दिया है[2] ताकि उन्हें सबक
मिले कि वे परमेश्वर की निंदा न करें।

2 इसलिए सबसे पहले मैं तुमसे गुज़ा-
रिश करता हूँ कि सब किस्म के
लोगों के लिए मिन्नतें, प्रार्थनाएँ, बिन-
तियाँ और धन्यवाद की प्रार्थनाएँ की
जाएँ। 2 राजाओं और उन सभी के
लिए जो ऊँची पदवी* रखते हैं,[3] प्रार्थ-
नाएँ की जाएँ ताकि हम पूरी गंभीर-
ता से और परमेश्वर की भक्ति करते
हुए चैन की ज़िंदगी जीएँ।[4] 3 यह बात
हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की नज़र में
अच्छी है और उसे मंज़ूर है।[5] 4 उसकी
यही मरज़ी है कि सब किस्म के लोगों का
उद्धार हो[6] और वे सच्चाई का सही ज्ञान
पाएँ। 5 परमेश्वर एक है[7] और पर-
मेश्वर और इंसानों के बीच[8] एक ही बिच-
वई है[9] यानी एक इंसान, मसीह यीशु[10]
6 जिसने सबकी* खातिर फिरौती का
बराबर दाम चुकाने के लिए खुद को दे
दिया।[11] और इस बात की गवाही सही
वक्त पर ज़रूर दी जाएगी। 7 यही
गवाही देने के लिए[12] मुझे एक प्रचारक
और प्रेषित ठहराया गया।[13] मैं सच कह
रहा हूँ, मैं झूठ नहीं बोलता, मुझे विश्वास
और सच्चाई के बारे में गैर-यहूदियों का
शिक्षक ठहराया गया है।[14]

8 इसलिए मैं चाहता हूँ कि हर जगह
आदमी वफादार रहकर हाथ ऊपर किए
प्रार्थना में लगे रहें[15] और न क्रोध
करें[16] न बहस करें।[17] 9 उसी तरह

1:18 *या "आदेश; आज्ञा।"

2:2 *या "अधिकार का पद।" 2:6 *या "सब किस्म के लोगों की।"

अध्य. 1

1 गल 2:7, 8
2 प्रेष 9:15; 2कुर 3:5, 6
3 प्रेष 8:3; प्रेष 9:1, 2; गल 1:13; फिल 3:5, 6
4 लूक 5:32; 2कुर 5:19; 1यूह 2:1, 2
5 प्रेष 9:1, 2; 1कुर 15:9
6 यूह 6:40; यूह 20:31
7 भज 10:16; भज 90:2; दान 6:26; प्रक 15:3
8 रोम 1:23
9 कुल 1:15
10 यश 43:10; 1कुर 8:4
11 2ती 2:3
12 1ती 1:5

दूसरा कॉल.

1 2ती 2:16-18
2 1कुर 5:5, 11

अध्य. 2

3 मत 5:44
4 यिर्म 29:7
5 यहू 25
6 यश 45:22; प्रेष 17:30; रोम 5:18; 1ती 4:10
7 व्य 6:4; रोम 3:30
8 1कुर 11:25
9 इब्र 8:6; इब्र 9:15
10 प्रेष 4:12; रोम 5:15; 2ती 1:9, 10
11 मत 20:28; मर 10:45; कुल 1:13, 14
12 प्रेष 9:15
13 गल 2:7, 8
14 गल 1:15, 16
15 भज 141:2
16 याकू 1:20
17 फिल 2:14

औरतों को चाहिए कि वे मर्यादा के साथ और सही सोच रखते हुए* सलीकेदार# कपड़ों से अपना सिंगार करें, न कि खास तरीकों से बाल गूँथकर या सोने, मोती या महँगे-महँगे कपड़े पहनकर।[1] 10 वे भले कामों से अपना सिंगार करें क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करने का दावा करनेवाली औरतों को यही शोभा देता है।[2]

11 एक औरत पूरी अधीनता दिखाते हुए शांत* रहकर सीखे।[3] 12 मैं औरत को सिखाने या आदमी पर अधिकार चलाने की इजाज़त नहीं देता, इसके बजाय उसे शांत* रहना चाहिए।[4] 13 इसलिए कि आदम पहले बनाया गया था, उसके बाद हव्वा बनायी गयी थी।[5] 14 और आदम बहकाया नहीं गया था, बल्कि औरत पूरी तरह से बहकावे में आ गयी[6] और गुनहगार बन गयी। 15 मगर एक औरत बच्चों को जन्म देने से सुरक्षित रहेगी[7] बशर्ते वह* अपना विश्वास, प्यार, पवित्रता, साथ ही सही सोच बनाए रखे।#[8]

3 यह बात भरोसे के लायक है: अगर कोई आदमी निगरानी का काम करने की कोशिश में आगे बढ़ता है,[9] तो वह एक बढ़िया काम करने की चाहत रखता है। 2 इसलिए निगरानी करनेवाले को ऐसा होना चाहिए जिस पर कोई आरोप न हो, उसकी एक ही पत्नी हो, वह हर बात में संयम बरतता हो, सही सोच रखता हो,*[10] कायदे से चलता हो, मेहमान-नवाज़ी करनेवाला हो,[1] सिखाने के काबिल हो,[2] 3 पियक्कड़ न हो,[3] मारपीट करनेवाला न हो, मगर लिहाज़ करनेवाला हो,[4] झगड़ालू न हो,[5] पैसे का लालची न हो,[6] 4 अपने परिवार की अच्छी तरह अगुवाई करता हो,* जिसके बच्चे पूरी गंभीरता से उसके अधीन रहते हों,[7] 5 (क्योंकि अगर एक आदमी अपने ही परिवार की अगुवाई करना* नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की मंडली की देखभाल कैसे करेगा?) 6 नया विश्वासी न हो[8] ताकि वह घमंड से फूल न जाए और वही सज़ा न पाए जो शैतान को दी गयी है। 7 यही नहीं, बाहरवाले भी उसके बारे में अच्छा कहते हों*[9] ताकि उसकी बदनामी# न हो और वह शैतान के फंदे में न फँसे।

8 इसी तरह, सहायक सेवकों को भी गंभीर होना चाहिए। वे दोगली बातें* बोलनेवाले, बहुत ज़्यादा दाख-मदिरा पीनेवाले और बेईमानी की कमाई के लालची न हों।[10] 9 और वे साफ ज़मीर के साथ विश्वास यानी पवित्र रहस्य को थामे रहते हों।[11]

10 यही नहीं, पहले उन्हें परखा जाए कि वे योग्य हैं या नहीं, फिर जब वे निर्दोष पाए जाएँ तो उन्हें सेवकों का काम दिया जाए।[12]

11 इसी तरह, औरतों को गंभीर होना चाहिए। वे दूसरों को बदनाम करनेवाली न हों,[13] हर बात में संयम बरतनेवाली हों, सब बातों में विश्वासयोग्य हों।[14]

12 सहायक सेवक एक ही पत्नी का

अध्य. 2
1 1पत 3:3, 4
2 नीत 31:30
3 इफ 5:24
4 1कुर 14:34
5 उत 2:18, 22 1कुर 11:8
6 उत 3:6, 13
7 1ती 5:14
8 1ती 2:9, 10

अध्य. 3
9 प्रेष 20:28 तीत 1:5-9
10 रोम 12:3 1पत 4:7

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 28:7 1पत 4:9
2 1ती 5:17 2ती 2:24 तीत 1:7, 9
3 रोम 13:13
4 फिल 4:5 याकू 3:17
5 रोम 12:18 याकू 3:18
6 इब्र 13:5 1पत 5:2
7 इफ 6:4
8 1ती 5:22
9 प्रेष 22:12 1थि 4:11, 12
10 प्रेष 6:3 तीत 1:7 1पत 5:2
11 1ती 1:5 1ती 1:18, 19 2ती 1:3 1पत 3:16
12 1पत 2:12
13 1ती 5:13
14 तीत 2:3-5

2:9 *या "समझ-बूझ से; समझदारी से काम लेते हुए।" #या "आदर के योग्य।" **2:11, 12** *या "चुप।" **2:15** *शा., "वे।" #या "समझ-बूझ से; समझदारी से काम ले।" **3:2** *या "समझ-बूझ से; समझदारी से काम लेता हो।"

3:4 *या "के लिए अच्छा इंतज़ाम करता हो।" **3:5** *या "के लिए अच्छा इंतज़ाम करना।" **3:7** *या "उसका अच्छा नाम हो।" #या "बेइज़्ज़ती।" **3:8** *या "धोखा देनेवाली बातें।"

पति हो, अपने बच्चों और परिवार की
अच्छी तरह से अगुवाई करनेवाला हो।
13 इसलिए कि जो अच्छी तरह सेवा
करते हैं वे अच्छा नाम कमाते हैं और उस
विश्वास के बारे में, जो मसीह यीशु में है,
बेझिझक बोलने की हिम्मत पाते हैं।

14 हालाँकि मैं तेरे पास जल्द आने
की उम्मीद कर रहा हूँ फिर भी मैं तुझे ये
बातें लिख रहा हूँ 15 ताकि अगर मुझे
आने में देर हुई तो भी तुझे पता रहेगा कि
परमेश्वर के घराने में तुझे किस तरह पेश
आना चाहिए।[1] यह घराना जीवित पर-
मेश्वर की मंडली है और सच्चाई का खंभा
और सहारा है। 16 वाकई, परमेश्वर
के लिए भक्ति का यह पवित्र रहस्य बहुत
महान है: 'यीशु हाड़-माँस के शरीर में
ज़ाहिर किया गया,[2] अदृश्य शरीर देकर
उसे नेक ठहराया गया,[3] वह स्वर्गदूतों के
सामने प्रकट हुआ,[4] दूसरे राष्ट्रों में उसका
प्रचार किया गया,[5] दुनिया में उस पर
यकीन किया गया[6] और उसे महिमा देकर
स्वर्ग उठा लिया गया।'

4 परमेश्वर की प्रेरणा से कहे गए
वचन साफ-साफ बताते हैं कि आगे
ऐसा वक्त आएगा जब कुछ लोग गुमराह
करनेवाले प्रेरित वचनों और दुष्ट स्वर्ग-
दूतों की शिक्षाओं पर ध्यान देने की वजह
से विश्वास को छोड़ देंगे।[7] 2 क्योंकि
वे ऐसे कपटियों की झूठी बातों में आ
जाएँगे,[8] जिनका ज़मीर सुन्न हो गया है
मानो गरम लोहे से दागा गया हो। 3 वे
शादी करने से मना करेंगे[9] और लोगों को
आज्ञा देंगे कि वे फलाँ चीज़ें न खाएँ[10]
जबकि परमेश्वर ने उन चीज़ों को इसलिए
बनाया है कि जो विश्वास रखते हैं और
सच्चाई को सही-सही जानते हैं, वे धन्य-
वाद देकर उन्हें खा सकें।[11] 4 क्योंकि
परमेश्वर की हर सृष्टि बढ़िया है[12]

अध्य. 3
1 इब्र 3:6
2 यूह 1:14; फिल 2:7
3 1पत 3:18
4 1पत 3:19, 20
5 कुल 1:23
6 कुल 1:6

अध्य. 4
7 2थि 2:1, 2; 2ती 4:3, 4; 2पत 2:1
8 प्रेष 20:29, 30; 2ती 2:16; 2पत 2:3
9 1कुर 7:36; 1कुर 9:5
10 रोम 14:3
11 उत 9:3; रोम 14:17; 1कुर 10:25
12 उत 1:31

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 10:15
2 2ती 2:15
3 1ती 6:20; तीत 1:13, 14
4 यूह 17:3
5 लूक 13:24
6 1ती 2:3, 4; यहू 25

और ऐसी कोई चीज़ नहीं जो ठुकराने
लायक हो,[1] बशर्ते उसे धन्यवाद के साथ
खाया जाए। 5 इसलिए कि परमेश्वर
के वचन से और प्रार्थना की वजह से वह
चीज़ पवित्र हो जाती है।

6 भाइयों को यह सलाह देने से तू
मसीह यीशु का एक बढ़िया सेवक ठह-
रेगा और तू विश्वास के वचनों से और
उस उत्तम शिक्षा से अपना पालन-पोषण
करता रहेगा जिन पर तू बड़े ध्यान से
चलता आया है।[2] 7 मगर परमेश्वर
की निंदा करनेवाली झूठी कथा-कहानियों
को ठुकरा दे,[3] जैसी बूढ़ी औरतें सुनाती
हैं। इसके बजाय, परमेश्वर की भक्ति को
अपना लक्ष्य बनाकर खुद को प्रशिक्षण
देता रह। 8 इसलिए कि शरीर की
कसरत सिर्फ कुछ हद तक फायदेमंद
होती है, मगर परमेश्वर की भक्ति सब
बातों के लिए फायदेमंद है क्योंकि यह
आज और आनेवाले वक्त में भी ज़िंदगी
देने का वादा करती है।[4] 9 इस बात
पर भरोसा किया जा सकता है और यह
पूरी तरह मानने लायक है। 10 इसी-
लिए हम कड़ी मेहनत करते हुए संघर्ष
कर रहे हैं,[5] क्योंकि हमने एक जीवित
परमेश्वर पर आशा रखी है जो सब किस्म
के लोगों का उद्धारकर्ता है,[6] खासकर
उनका जो विश्वासयोग्य हैं।

11 इन बातों की आज्ञा देता रह और
इनके बारे में सिखाता रह। 12 कोई भी
तेरी कम उम्र की वजह से तुझे नीची
नज़रों से न देखे। इसके बजाय, बोलने में,
चालचलन में, प्यार में, विश्वास में और
शुद्ध चरित्र* बनाए रखने में विश्वास-
योग्य लोगों के लिए एक मिसाल बन जा।
13 जब तक मैं न आऊँ, तब तक लोगों

4:12 *या "शुद्धता।"

के सामने पढ़कर सुनाने,[1] उन्हें बढ़ावा देने* और सिखाने में जी-जान से लगा रह। **14** अपने उस वरदान की तरफ लापरवाह न हो जो तुझे उस वक्त दिया गया था जब तेरे बारे में भविष्यवाणी की गयी थी और प्राचीनों के निकाय ने तुझ पर अपने हाथ रखे थे।[2] **15** इन बातों के बारे में गहराई से सोचता रह* और इन्हीं में लगा रह ताकि तेरी तरक्की सब लोगों को साफ दिखायी दे। **16** खुद पर और अपनी शिक्षा पर लगातार ध्यान देता रह।[3] इन्हीं बातों में लगा रह क्योंकि ऐसा करने से तू अपना और तेरी बात सुननेवालों का भी उद्धार करेगा।[4]

5 किसी बुज़ुर्ग आदमी को सख्ती से मत डाँट।[5] इसके बजाय, उसे अपना पिता जानकर प्यार से समझा, जवानों को भाई, **2** बुज़ुर्ग औरतों को माँ और कम उम्र की औरतों को बहनें जानकर पूरी पवित्रता के साथ समझा।

3 जो विधवाएँ सचमुच ज़रूरतमंद हैं* उनका ध्यान रख।#[6] **4** लेकिन अगर किसी विधवा के बच्चे या नाती-पोते हैं, तो वे पहले अपने घर के लोगों की देखभाल करके परमेश्वर के लिए अपनी भक्ति दिखाएँ।[7] वे अपने माता-पिता और उनके माता-पिता को उनका हक चुकाएँ[8] क्योंकि ऐसा करना परमेश्वर को भाता है।[9] **5** जो विधवा सचमुच ज़रूरतमंद और बेसहारा है, वह परमेश्वर पर आशा रखती है[10] और रात-दिन मिन्नतों और प्रार्थनाओं में लगी रहती है।[11] **6** मगर जो शरीर की इच्छाएँ पूरी करने में लगी रहती है वह ज़िंदा होते हुए भी मरी हुई है। **7** इसलिए उन्हें ये हिदायतें* देता रह ताकि कोई उन पर उँगली न उठा सके। **8** बेशक अगर कोई अपनों की, खासकर अपने घर के लोगों की देखभाल नहीं करता, तो वह विश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी बदतर है।[1]

9 उसी विधवा का नाम सूची में लिखा जाए जिसकी उम्र 60 साल से ज़्यादा है, जो एक ही पति की पत्नी रही हो, **10** भले काम करने के लिए जानी जाती हो,[2] जिसने अपने बच्चों की अच्छी परवरिश की हो,[3] जिसने मेहमान-नवाज़ी की हो,[4] पवित्र जनों के पैर धोए हो,[5] जो मुसीबत में थे उनकी मदद की हो[6] और जिसने हर भला काम करने में मेहनत की हो।

11 दूसरी तरफ, जवान विधवाओं का नाम सूची में मत लिख क्योंकि जब उनकी यौन-इच्छाएँ मसीह की सेवा में उनके लिए रुकावट बन जाती हैं, तो वे शादी करना चाहती हैं। **12** वे दोषी ठहरेंगी क्योंकि उन्होंने पहले जो विश्वास ज़ाहिर किया था* अब वे उसके खिलाफ जाती हैं। **13** साथ ही उन्हें खाली रहने और घर-घर घूमने की आदत पड़ जाती है। हाँ, वे न सिर्फ खाली रहती हैं बल्कि उन्हें गप्पे लड़ाने की आदत पड़ जाती है और वे दूसरों के मामलों में दखल देती रहती हैं।[7] वे ऐसी बातों के बारे में बोलती हैं जो उन्हें नहीं बोलनी चाहिए। **14** इसलिए मैं यही चाहता हूँ कि जवान विधवाएँ शादी करें,[8] बच्चे पैदा करें[9] और घर-गृहस्थी सँभालें ताकि विरोधियों को हमारे बारे में बुरा-भला कहने का मौका न दें। **15** दरअसल, कुछ तो भटककर शैतान

अध्य. 4
1 कुल 4:16; 1थि 5:27
2 प्रेष 6:5, 6; प्रेष 13:2, 3; प्रेष 19:6; 2ती 1:6
3 2ती 4:2
4 1कुर 9:22

अध्य. 5
5 लैव 19:32
6 1ती 5:16
7 1ती 5:8
8 मत 15:4; इफ 6:2
9 याकू 1:27
10 1कुर 7:34
11 लूक 2:36, 37

दूसरा कॉल.
1 मत 15:4-6
2 प्रेष 9:39
3 1ती 2:15
4 इब्र 13:2; 1पत 4:9
5 यूह 13:5, 14
6 1ती 5:16; याकू 1:27
7 2थि 3:11
8 1कुर 7:8, 9
9 1ती 2:15

4:13 *या “हौसला बढ़ाने।” **4:15** *या “मनन करता रह।” **5:3** *यानी जिनकी मदद करनेवाला कोई नहीं है। #शा., “आदर कर।”

5:7 *या “आज्ञाएँ।” **5:12** *या “पहले जो वादा किया था।”

के पीछे हो चुकी हैं। 16 अगर किसी
विश्वासी औरत के परिवार में विधवाएँ
हैं, तो वह उनकी मदद करे और मंडली
पर उनका बोझ न डाले। तब मंडली ऐसी
विधवाओं की मदद कर पाएगी जो सच-
मुच ज़रूरतमंद हैं।*[1]

17 जो प्राचीन बढ़िया तरीके से अगु-
वाई करते हैं,[2] वे दुगने आदर के योग्य
समझे जाएँ।[3] खासकर वे जो बोलने
और सिखाने में कड़ी मेहनत करते हैं।[4]
18 इसलिए कि शास्त्र कहता है, "तुम
अनाज की दँवरी करते बैल का मुँह न
बाँधना"[5] और यह भी कि "काम करने-
वाला मज़दूरी पाने का हकदार है।"[6]
19 किसी भी बुज़ुर्ग आदमी* पर लगाए
गए इलज़ाम पर तब तक यकीन न
करना, जब तक दो या तीन गवाह सबूत
न दें।[7] 20 जो पाप में लगे रहते हैं,[8]
उन्हें सबके सामने फटकार[9] ताकि बाकी
लोगों को चेतावनी मिले।* 21 मैं तुझे
परमेश्वर और मसीह यीशु और चुने हुए
स्वर्गदूतों के सामने पूरी गंभीरता से हुक्म
देता हूँ कि पहले से कोई राय कायम किए
बिना और पक्षपात किए बिना इन हिदाय-
तों को मान।[10]

22 कभी किसी आदमी पर हाथ रखने
में* जल्दबाज़ी मत कर।[11] न ही दूसरों के
पापों में हिस्सेदार बन, अपना चरित्र साफ
बनाए रख।

23 अब से पानी मत पीया कर,*
बल्कि अपने पेट के लिए और बार-बार
की बीमारी की वजह से थोड़ी दाख-मदिरा
पीया कर।

5:16 *यानी जिनकी मदद करनेवाला कोई नहीं है। 5:19 *या "प्राचीन।" 5:20 *शा., "बाकी लोग भी डरें।" 5:22 *यानी ज़िम्मेदारी के पद पर ठहराने में। 5:23 *या "सिर्फ पानी मत पीया कर।"

अध्य. 5

1 व्य 15:11; 1ती 5:5; याकू 1:27
2 1पत 5:2, 3
3 प्रेष 28:10; इब्र 13:17
4 1थि 5:12; इब्र 13:7
5 व्य 25:4; 1कुर 9:7, 9
6 लैव 19:13; मत 10:9, 10; लूक 10:7; गल 6:6
7 व्य 19:15; मत 18:16
8 1कुर 15:34; 1यूह 3:9
9 तीत 1:7, 9; तीत 1:13; प्रक 3:19
10 लैव 19:15; याकू 3:17
11 प्रेष 6:5, 6; प्रेष 14:23; 1ती 3:2, 6; 1ती 4:14

दूसरा कॉल.

1 यह 7:11; इब्र 4:13
2 मत 5:16
3 1कुर 4:5

अध्य. 6

4 रोम 13:7; इफ 6:5; कुल 3:22
5 1पत 2:13, 14
6 2ती 1:13
7 तीत 1:1, 2
8 1कुर 8:2
9 2ती 2:14; तीत 1:10; तीत 3:9
10 2कुर 11:3; 2ती 3:8; यहू 10

24 कुछ लोगों के पाप सरेआम मालूम
पड़ जाते हैं और उन्हें तुरंत सज़ा मिलती
है, मगर दूसरों के पाप भी ज़ाहिर हो जाते
हैं, चाहे बाद में ही सही।[1] 25 उसी
तरह, अच्छे काम भी सरेआम मालूम पड़
जाते हैं[2] और जो अच्छे काम ज़ाहिर नहीं
होते, वे भी छिपाए नहीं जा सकते।[3]

6 जितने भी दास हैं, वे सब अपने
मालिकों को पूरे आदर के लायक
समझें[4] ताकि परमेश्वर के नाम और
मसीही शिक्षाओं की कभी बदनामी न
हो।[5] 2 और जिन दासों के मालिक
विश्वासी हैं, वे अपने मालिकों का अना-
दर न करें क्योंकि वे उनके भाई हैं। इसके
बजाय, वे और भी खुशी से उनकी सेवा
करें क्योंकि जो उनकी अच्छी सेवा से
फायदा पा रहे हैं वे विश्वासी और प्यारे
भाई हैं।

यही बातें सिखाता रह और इन्हें मानने
का बढ़ावा देता रह। 3 अगर कोई
आदमी इससे अलग शिक्षा देता है और
हमारे प्रभु यीशु मसीह की खरी* शिक्षा
से सहमत नहीं होता,[6] न ही उस शिक्षा
से सहमत होता है जो परमेश्वर की
भक्ति के मुताबिक है,[7] 4 तो वह घमंड
से फूल गया है और उसमें कोई समझ
नहीं है।[8] उस पर वाद-विवाद करने और
शब्दों पर बहस करने की धुन सवार
रहती है।*[9] नतीजा, लोगों में ईर्ष्या और
झगड़े पैदा होते हैं, वे बदनाम करने-
वाली बातें# कहते हैं, बुरे इरादे से शक
करते हैं, 5 उन लोगों में छोटी-छोटी
बातों पर झगड़े होते हैं जिनका दिमाग
भ्रष्ट हो गया है[10] और जो सच्चाई से
दूर हो गए हैं। वे सोचते हैं कि परमेश्वर

6:3 *या "स्वास्थ्यकर; फायदेमंद।" 6:4 *या "ऐसा जुनून सवार रहता है जो फायदे-मंद नहीं है।" #या "निंदा की बातें।"

की भक्ति, कमाई करने का ज़रिया है।[1]
6 मगर सच तो यह है कि संतुष्ट रहकर
परमेश्वर की भक्ति करना अपने आप
में एक बड़ी कमाई है।[2] 7 क्योंकि हम
न तो दुनिया में कुछ लाए हैं, न ही
यहाँ से कुछ ले जा सकते हैं।[3] 8 इस-
लिए अगर हमारे पास खाने और पहन-
ने को* है, तो हमें उसी में संतोष करना
चाहिए।[4]

9 लेकिन जो लोग हर हाल में
अमीर बनना चाहते हैं, वे परीक्षा और
फंदे में फँस जाते हैं[5] और मूर्खता
से भरी और खतरनाक ख्वाहिशों में पड़
जाते हैं जो इंसान को विनाश और बर-
बादी की खाई में धकेल देती हैं।[6]
10 पैसे का प्यार हर तरह की बुराई
की जड़ है और इसमें पड़कर कुछ लोग
विश्वास से भटक गए हैं और उन्होंने
खुद को कई दुख-तकलीफों से छलनी कर
लिया है।[7]

11 मगर हे परमेश्वर के सेवक, तू इन
बातों से दूर भाग। इसके बजाय नेकी,
परमेश्वर की भक्ति, विश्वास, प्यार,
धीरज और कोमलता का गुण पैदा करने
में लगा रह।[8] 12 विश्वास की अच्छी
लड़ाई लड़, हमेशा की ज़िंदगी पर अपनी
पकड़ मज़बूत कर जिसके लिए तुझे
बुलाया गया था और जिसके बारे में
तूने बहुत-से गवाहों के सामने ऐलान
किया था।

13 सबका जीवन कायम रखनेवाले
परमेश्वर को और मसीह यीशु को हाज़िर
जानते हुए, जिसने पुन्तियुस पीलातुस
के सामने सरेआम बढ़िया गवाही दी
थी,[9] मैं तुझे ये आदेश देता हूँ 14 कि
जो आज्ञा तुझे दी गयी है, उसे बेदाग
और निर्दोष रहते हुए हमारे प्रभु यीशु
मसीह के प्रकट होने तक मानता रह।[1]
15 प्रभु यीशु मसीह तय वक्त पर खुद
को प्रकट करेगा। वह धन्य और एकमात्र
शक्तिमान सम्राट, राजाओं का राजा और
प्रभुओं का प्रभु है।[2] 16 सिर्फ उसी के
पास अमरता है,[3] वह उस रौशनी में
रहता है जहाँ कोई नहीं पहुँच सकता[4]
और जिसे किसी इंसान ने न तो देखा है
और न ही देख सकता है।[5] सदा उसका
आदर होता रहे और उसकी शक्ति बनी
रहे। आमीन।

17 जो इस ज़माने* में दौलतमंद हैं
उन्हें हिदायत# दे कि वे घमंडी न बनें
और अपनी आशा दौलत पर न रखें जो
आज है तो कल नहीं रहेगी,[6] बल्कि पर-
मेश्वर पर रखें जो हमें बहुतायत में वह
सारी चीज़ें देता है जिनका हम आनंद
उठाते हैं।[7] 18 उनसे यह भी कह कि
वे भले काम करें और भले कामों में धनी
बनें, दरियादिल हों और जो उनके पास है
वह दूसरों को देने के लिए तैयार रहें।[8]
19 इस तरह वे मानो परमेश्वर की नज़र
में खज़ाना जमा कर रहे होंगे, यानी
भविष्य के लिए एक बढ़िया नींव डाल
रहे होंगे[9] ताकि असली ज़िंदगी पर अपनी
पकड़ मज़बूत कर सकें।[10]

20 हे तीमुथियुस, तुझे जो अमा-
नत सौंपी गयी है उसे सँभालकर रख।[11]
उन खोखली बातों से दूर रह जो पवित्र
बातों के खिलाफ हैं और झूठे ज्ञान की
विरोध करनेवाली बातों से दूर रह।[12]
21 ऐसे ज्ञान का दिखावा करने की वजह
से कुछ लोग विश्वास से भटक गए हैं।

परमेश्वर की महा-कृपा तुम पर
बनी रहे।

6:8 *या "सिर छिपाने की जगह।"

6:17 *या "दुनिया की व्यवस्था।" शब्दा-
वली देखें। #या "आदेश।"

अध्य. 6
1 1पत 5:2
2 1ती 4:8
3 अय 1:21
भज 49:16, 17
4 नीत 30:8, 9
इब्र 13:5
5 मत 13:22
6 नीत 28:20, 22
याकू 5:1
7 मत 6:24
8 नीत 15:1
मत 5:5
गल 5:22, 23
कुल 3:12
1पत 3:15
9 मत 27:11
यूह 18:33, 36
यूह 19:10, 11

दूसरा कॉल.
1 2थि 2:8
2ती 4:1, 8
2 प्रक 17:14
प्रक 19:16
3 इब्र 7:15, 16
4 प्रेष 9:3
प्रक 1:13, 16
5 यूह 14:19
1पत 3:18
6 मत 13:22
मर 10:23
7 सभ 5:19
मत 6:33
याकू 1:17
8 रोम 12:13
2कुर 8:14
याकू 1:27
9 मत 6:20
10 लूक 16:9
11 2ती 1:13, 14
2ती 3:14
2ती 4:5
12 1कुर 2:13
1कुर 3:19
कुल 2:8

तीमुथियुस

के नाम दूसरी चिट्ठी

सारांश

1 नमस्कार (1, 2)
- पौलुस, तीमुथियुस के विश्वास के लिए परमेश्वर का एहसानमंद (3-5)
- परमेश्वर के वरदान को ज्वाला की तरह जलाए रख (6-11)
- खरी शिक्षाओं को थामे रह (12-14)
- पौलुस के दुश्मन और दोस्त (15-18)

2 योग्य आदमियों को संदेश सौंप (1-7)
- खुशखबरी की खातिर दुख सह (8-13)
- परमेश्वर का वचन सही तरह इस्तेमाल कर (14-19)
- जवानी में उठनेवाली इच्छाओं से दूर भाग (20-22)
- विरोधियों के साथ कैसे पेश आएँ (23-26)

3 आखिरी दिनों में संकटों से भरा वक्त (1-7)
- पौलुस की मिसाल पर नज़दीकी से चल (8-13)
- 'जो बातें तूने सीखी हैं उन्हें मानता रह' (14-17)
  - पूरा शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया (16)

4 "अपनी सेवा अच्छी तरह पूरी कर" (1-5)
  - वक्त की नज़ाकत को समझते हुए प्रचार कर (2)
- "मैंने अच्छी लड़ाई लड़ी है" (6-8)
- पौलुस की अपनी कुछ बातें (9-18)
- आखिर में नमस्कार (19-22)

1 मैं पौलुस, जो परमेश्वर की मरज़ी से मसीह यीशु का एक प्रेषित हूँ और जिसे मसीह यीशु के ज़रिए मिलनेवाली ज़िंदगी के वादे का प्रचार करने के लिए ठहराया गया है,[1] **2** अपने प्यारे बेटे तीमुथियुस[2] के नाम यह चिट्ठी लिख रहा हूँ:

परमेश्वर हमारे पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की महा-कृपा, दया और शांति तुझ पर हो।

3 मैं परमेश्वर का एहसानमंद हूँ, जिसकी पवित्र सेवा मैं अपने पुरखों की तरह और साफ ज़मीर के साथ करता हूँ कि मैं अपनी मिन्‍नतों में तुझे रात-दिन याद करता हूँ। **4** मैं तेरे आँसुओं को याद करके तुझे देखने के लिए

अध्य. 1
1 यूह 3:16
यूह 6:40, 44
1पत 1:3, 4
2 1कुर 4:17

दूसरा कॉल.
1 1ती 4:6
2 1ती 4:14
3 रोम 8:15
1थि 2:2
4 लूक 24:49
प्रेष 1:8
5 रोम 1:16

तरस रहा हूँ ताकि तुझसे मिलकर खुशी से भर जाऊँ। **5** मैं तेरा विश्वास हमेशा याद करता हूँ जिसमें कोई कपट नहीं।[1] ऐसा ही विश्वास पहले तेरी नानी लोइस और तेरी माँ यूनीके में था और अब मुझे यकीन है कि तुझमें भी है।

6 इसी वजह से मैं तुझे याद दिलाता हूँ कि परमेश्वर का जो वरदान तुझे मेरे हाथ रखने से मिला था, उसे तू एक ज्वाला की तरह जलाए रख।[2] **7** इसलिए कि परमेश्वर ने हमें कायरता का रुझान नहीं दिया[3] बल्कि शक्ति,[4] प्यार और सही सोच रखने का रुझान दिया है। **8** इसलिए तू न तो हमारे प्रभु की गवाही देने से शर्मिंदा हो,[5] न मेरी वजह से जो उसकी खातिर कैद में है। इसके

बजाय परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा रखते हुए[1] खुशखबरी के लिए दुख झेलने को तैयार रह।[2] **9** उसने हमें बचाया है और पवित्र बुलावा दिया है।[3] मगर यह बुलावा हमें अपने कामों की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए मिला है क्योंकि यह परमेश्वर का मकसद था और उसने हम पर महा-कृपा की थी।[4] उसने हम पर यह महा-कृपा मसीह यीशु की वजह से मुद्दतों पहले की थी। **10** मगर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रकट होने की वजह से इस महा-कृपा के बारे में हमें साफ समझ दी गयी है।[5] उसने मौत को मिटा दिया[6] और खुशखबरी के ज़रिए[7] इस बात पर रौशनी डाली है कि जीवन[8] और अनश्वरता[9] कैसे मिलेगी। **11** यही खुशखबरी सुनाने के लिए मुझे एक प्रचारक, प्रेषित और शिक्षक ठहराया गया है।[10]

12 इसी वजह से मैं ये सारे दुख उठा रहा हूँ,[11] मगर मैं शर्मिंदा नहीं हूँ।[12] क्योंकि मैंने जिस पर यकीन किया है उसे मैं जानता हूँ। और मुझे पूरा भरोसा है कि मैंने उसे जो अमानत सौंपी है उसकी वह उस दिन तक हिफाज़त करने के काबिल है।[13] **13** जो खरी* शिक्षाएँ[14] तूने मुझसे सुनी हैं उनके नमूने# को उस विश्वास और प्यार से थामे रह, जो मसीह यीशु के साथ एकता में रहने की वजह से पैदा होता है। **14** पवित्र शक्ति के ज़रिए, जो हममें निवास करती है, इस अनमोल अमानत की हिफाज़त कर।[15]

15 तू जानता है कि एशिया प्रांत के सब लोगों ने[16] मुझसे किनारा कर लिया है। फूगिलुस और हिरमुगिनेस भी उनमें से हैं। **16** उनेसिफुरुस के घराने[17] पर प्रभु की दया बनी रहे क्योंकि उसने कई बार मेरे जी को तरो-ताज़ा किया है और वह मेरी ज़ंजीरों की वजह से शर्मिंदा नहीं हुआ। **17** इसके बजाय, जब वह रोम में था तो उसने बड़े जतन से मुझे ढूँढ़ा और वह मुझसे मिला। **18** मेरी दुआ है कि प्रभु यहोवा* उस दिन उस पर दया करे। तू अच्छी तरह जानता है कि उसने इफिसुस में मेरी क्या-क्या सेवा की।

2 इसलिए मेरे बेटे,[1] तू उस महा-कृपा से शक्ति पाता जा जो मसीह यीशु के साथ एकता में रहनेवालों पर होती है। **2** और जो बातें तूने मुझसे सुनी हैं और जिसकी बहुतों ने गवाही दी है,[2] वे बातें विश्वासयोग्य आदमियों को सौंप दे ताकि वे बदले में दूसरों को सिखाने के लिए ज़रूरत के हिसाब से योग्य बनें। **3** मसीह यीशु के एक बढ़िया सैनिक के नाते[3] मुश्किलें झेलने के लिए तैयार रह।[4] **4** कोई भी सैनिक खुद को दुनिया के कारोबार* में नहीं लगाता# ताकि वह उसे खुश कर सके जिसने उसे सेना में भरती किया है। **5** और जो कोई खेल-प्रतियोगिता में हिस्सा लेता है, अगर वह नियमों के हिसाब से न खेले तो उसे ताज नहीं मिलता।[5] **6** एक मेहनती किसान को ही सबसे पहले अपनी उपज का हिस्सा मिलना चाहिए। **7** मैं जो कह रहा हूँ उस पर हमेशा ध्यान देता रह। प्रभु तुझे सब बातों की समझ* देगा।

8 याद रख कि यीशु मसीह को मरे हुओं में से ज़िंदा किया गया था[6] और वह दाविद का वंशज* था।[7] मैं इसी

1:13 *या "स्वास्थ्यकर; फायदेमंद।" #या "रूप-रेखा।"

1:18 *अति. क5 देखें। **2:4** *या शायद, "रोज़मर्रा के कामों।" #शा., "नहीं उलझता।" **2:7** *या "पैनी समझ।" **2:8** *शा., "दाविद के बीज से।"

अध्य. 1
1 फिल 4:13, कुल 1:11
2 कुल 1:24, 2ती 2:3
3 इफ 1:4, इब्र 3:1
4 इफ 2:5, इफ 2:8, तीत 3:5
5 यूह 1:14, इब्र 2:9
6 1कुर 15:54, इब्र 2:14
7 रोम 1:16
8 यूह 5:24, 1यूह 1:2
9 1पत 1:3, 4
10 प्रेष 9:15, 1ती 2:7
11 प्रेष 9:16, इफ 3:1
12 2कुर 4:2
13 2ती 4:8
14 1ती 6:3, 4, तीत 1:7, 9
15 रोम 8:11
16 प्रेष 19:10
17 2ती 4:19

दूसरा कॉल.

अध्य. 2
1 1ती 1:2
2 2ती 3:14
3 1ती 1:18
4 2ती 1:8
5 1कुर 9:25
6 प्रेष 2:24
7 प्रेष 2:29-32, रोम 1:3

बारे में खुशखबरी सुनाता हूँ।[1] 9 इस
खुशखबरी की वजह से मैं दुख सह रहा
हूँ और एक अपराधी की तरह कैद हूँ।[2]
फिर भी परमेश्‍वर का वचन कैद नहीं
है।[3] 10 इसी वजह से मैं चुने हुओं की
खातिर सबकुछ सह रहा हूँ[4] ताकि वे भी
मसीह यीशु के ज़रिए उद्धार और वह
महिमा पा सकें जो हमेशा तक रहेगी।
11 यह बात भरोसे के लायक है: अगर
हम उसके साथ मर चुके हैं तो वाकई
उसके साथ जीएँगे भी।[5] 12 अगर हम
धीरज धरते रहें तो उसके साथ राजा बन-
कर राज भी करेंगे।[6] अगर हम उससे
इनकार करेंगे, तो वह भी हमसे इनकार
कर देगा।[7] 13 चाहे हम विश्‍वासघाती
निकलें, तो भी वह विश्‍वासयोग्य बना
रहता है क्योंकि वह खुद से इनकार नहीं
कर सकता।

14 उन्हें परमेश्‍वर के सामने ये बातें
याद दिलाता रह और हिदायत दे* कि
वे शब्दों को लेकर झगड़ा न करें
क्योंकि इससे कोई फायदा नहीं होता
बल्कि सुननेवालों को नुकसान पहुँचता#
है। 15 तू अपना भरसक कर ताकि
तू खुद को परमेश्‍वर के सामने ऐसे
सेवक की तरह पेश कर सके जिसे पर-
मेश्‍वर मंज़ूर करे और जिसे अपने काम
पर शर्मिंदा न होना पड़े और जो सच्चाई
के वचन को सही तरह से इस्तेमाल करता
हो।[8] 16 खोखली शिक्षाओं को ठुकरा
दे जो पवित्र बातों के खिलाफ हैं,[9]
क्योंकि ऐसी शिक्षाएँ* और भी ज़्यादा
भक्‍तिहीन कामों की तरफ ले जाएँगी
17 और उनकी शिक्षा सड़े घाव की तरह
फैलती जाएगी। हुमिनयुस और फिलेतुस

2:14 *शा., "अच्छी तरह गवाही दे।" #या "तबाह करता; उलट देता।" 2:16 *या "परमेश्‍वर से बगावत करनेवाले।"

अध्य. 2
1 प्रेष 13:23
2 प्रेष 9:16 फिल 1:7
3 कुल 4:3, 4
4 2कुर 1:6 इफ 3:13 कुल 1:24
5 रोम 6:5, 8
6 प्रक 3:21 प्रक 20:4, 6
7 मत 10:33 लूक 12:9
8 2ती 4:2
9 1ती 4:7 1ती 6:20

दूसरा कॉल.
1 1ती 1:20
2 1कुर 15:12
3 गि 16:5
4 यश 26:13
5 1ती 1:3, 4 1ती 4:7 तीत 3:9
6 1थि 2:7
7 मत 5:39

ऐसे ही लोगों में से हैं।[1] 18 ये आदमी
सच्चाई के रास्ते से हट गए हैं क्योंकि ये
कहते हैं कि मरे हुए ज़िंदा किए जा
चुके हैं[2] और ये कुछ लोगों के विश्‍वास
को तबाह कर रहे हैं। 19 फिर भी पर-
मेश्‍वर ने जो पक्की नींव डाली है वह मज़-
बूत बनी रहती है और उस पर इन शब्दों
की मुहर लगी है: "यहोवा* उन्हें जानता
है जो उसके अपने हैं"[3] और "हर कोई
जो यहोवा* का नाम लेता है[4] वह बुराई
को छोड़ दे।"

20 एक बड़े घर में न सिर्फ सोने-चाँदी
के, बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी बर-
तन होते हैं। कुछ आदर के काम के
लिए तो कुछ मामूली इस्तेमाल के लिए।
21 अगर कोई मामूली इस्तेमाल के बर-
तनों से खुद को दूर रखता है, तो वह
ऐसा बरतन बनेगा जो आदर के इस्ते-
माल के लिए पवित्र ठहराया जाता है,
अपने मालिक के काम आता है और हर
अच्छे काम के लिए तैयार किया जाता
है। 22 इसलिए जवानी में उठनेवाली
इच्छाओं से दूर भाग और उन लोगों के
साथ जो साफ दिल से प्रभु का नाम
लेते हैं, नेकी, विश्‍वास, प्यार और शांति
हासिल करने में जी-जान से लगा रह।

23 मूर्खता से भरे और बेकार
के वाद-विवादों में न पड़,[5] क्योंकि तू
जानता है कि इनसे झगड़े पैदा होते हैं।
24 क्योंकि प्रभु के दास को लड़ने की
ज़रूरत नहीं बल्कि ज़रूरी है कि वह
सब लोगों के साथ नरमी* से पेश
आए,[6] सिखाने के काबिल हो और जब
उसके साथ कुछ बुरा होता है तब भी
खुद को काबू में रखे[7] 25 और जो सही
नज़रिया नहीं दिखाते उन्हें कोमलता से

2:19 *अति. क5 देखें। 2:24 *या "समझदारी।"

समझाए।[1] हो सकता है परमेश्‍वर उन्हें
पश्‍चाताप करने* का मौका दे जिससे वे
सच्चाई का सही ज्ञान पाएँ[2] **26** और
शैतान* के उस फंदे से छूटकर होश में आ
जाएँ जिसमें उसने उन्हें ज़िंदा फँसा लिया
है ताकि वे उसकी मरज़ी पूरी करें।[3]

3 मगर यह जान ले कि आखिरी
दिनों में[4] संकटों से भरा ऐसा वक्‍त
आएगा जिसका सामना करना मुश्‍किल
होगा। **2** इसलिए कि लोग सिर्फ खुद से
प्यार करनेवाले, पैसे से प्यार करनेवाले,
डींगें मारनेवाले, मगरूर, निंदा करनेवाले,
माता-पिता की न माननेवाले, एहसान न
माननेवाले, विश्‍वासघाती, **3** लगाव न
रखनेवाले, किसी भी बात पर राज़ी
न होनेवाले, बदनाम करनेवाले, संयम
न रखनेवाले, खूँखार, भलाई से प्यार न
करनेवाले, **4** धोखेबाज़, ढीठ, घमंड से
फूले हुए, परमेश्‍वर के बजाय मौज-मस्ती
से प्यार करनेवाले होंगे, **5** वे भक्‍ति
का दिखावा तो करेंगे मगर उसके मुता-
बिक जीएँगे नहीं।[5] ऐसों से दूर हो
जाना। **6** इन्हीं में से वे लोग निकल-
ते हैं जो चालाकी से घरों में घुस आते हैं
और चंचल औरतों को अपना गुलाम बना
लेते हैं जिन पर पाप हावी रहता है और
जो तरह-तरह की इच्छाओं के बस में हैं,
7 जो हमेशा सीखती तो रहती हैं मगर
सच्चाई का सही ज्ञान कभी हासिल नहीं
कर पातीं।

8 जिस तरह यन्‍नेस और यम्ब्रेस ने
मूसा का विरोध किया था, उसी तरह ये
लोग सच्चाई का विरोध करते रहते हैं।
इनका दिमाग पूरी तरह भ्रष्ट हो चुका
है और विश्‍वास के मामले में उन्हें ठुकरा
दिया गया है। **9** मगर ये लोग और
आगे नहीं बढ़ पाएँगे, क्योंकि जैसे उन
दोनों की मूर्खता सबको साफ पता चल
गयी थी वैसे ही इनकी मूर्खता भी सबको
साफ पता चल जाएगी।[1] **10** मगर
तूने मेरी शिक्षाओं, मेरे जीने के तरीके,[2]
मेरे मकसद, मेरे विश्‍वास, मेरे सब्र, मेरे
प्यार, मेरे धीरज **11** और मुझ पर हुए
ज़ुल्मों और मेरे दुखों को नज़दीकी से
देखा है। तू यह भी जानता है कि अंता-
किया,[3] इकुनियुम[4] और लुस्त्रा[5] में मैंने
क्या-क्या झेला और कैसे-कैसे ज़ुल्म सहे,
फिर भी प्रभु ने मुझे इन सबसे बचाया।[6]
12 दरअसल, जितने भी मसीह यीशु में
परमेश्‍वर की भक्‍ति के साथ जीवन
बिताना चाहते हैं उन सब पर इसी
तरह ज़ुल्म ढाए जाएँगे।[7] **13** मगर
दुष्ट और फरेबी बद-से-बदतर होते चले
जाएँगे। वे खुद तो गुमराह होंगे, साथ ही
दूसरों को भी गुमराह करते जाएँगे।[8]

14 मगर जो बातें तूने सीखी हैं और
जिनका तुझे दलीलें देकर यकीन दिलाया
गया था उन बातों को मानता रह,[9]
यह जानते हुए कि तूने ये किन लोगों
से सीखी थीं **15** और यह भी कि
जब तू एक शिशु था[10] तभी से तू पवित्र
शास्त्र के लेख जानता है।[11] ये वचन तुझे
मसीह यीशु में विश्‍वास के ज़रिए उद्धार
पाने के लिए बुद्धिमान बना सकते हैं।[12]
16 पूरा शास्त्र परमेश्‍वर की प्रेरणा से
लिखा गया है[13] और सिखाने,[14] सम-
झाने, टेढ़ी बातों को सीध में लाने* और
नेक स्तरों के मुताबिक सोच ढालने के
लिए फायदेमंद है[15] **17** ताकि पर-
मेश्‍वर का सेवक हर अच्छे काम के लिए
पूरी तरह काबिल बने और हर तरह से
तैयार हो सके।

2:25 *या "अपनी सोच बदलने।" **2:26** *शा., "इबलीस।" शब्दावली देखें।

3:16 *या "को सुधारने।"

अध्य. 2
1 नीत 15:1, गल 6:1, तीत 3:2, 1पत 3:15
2 1ती 2:3, 4
3 यूह 13:27, प्रेष 5:3, 1ती 1:20

अध्य. 3
4 मत 24:3, 1ती 4:1, 2पत 3:3, यहू 17, 18
5 मत 7:15, मत 7:22, 23

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 7:11, 12, निर्ग 9:11
2 1कुर 4:17, 2ती 1:13
3 प्रेष 13:50
4 प्रेष 14:1, 5, 6
5 प्रेष 14:19
6 2कुर 1:10
7 मत 16:24, यूह 15:20, प्रेष 14:22
8 2थि 2:11, 1ती 4:1
9 2ती 1:13
10 नीत 22:6
11 प्रेष 16:1, 2
12 यूह 5:39
13 यूह 14:26, 2पत 1:21
14 रोम 15:4
15 1कुर 10:11

4 मैं तुझे परमेश्वर और मसीह यीशु के
सामने, जिसका राज आनेवाला है[1]
और जो प्रकट होकर[2] ज़िंदा लोगों और
मरे हुओं का न्याय करनेवाला है,[3] यह
आदेश देता हूँ: **2** तू वचन का प्रचार
कर।[4] और वक्त की नज़ाकत को समझ-
ते हुए इसमें लगा रह, फिर चाहे अच्छा
समय हो या बुरा। सब्र से काम लेते
हुए और कुशलता से सिखाते हुए
गलती करनेवाले को सुधार,[5] डाँट और
समझा।[6] **3** इसलिए कि ऐसा समय
आएगा जब लोग खरी* शिक्षा को बर-
दाश्त नहीं कर सकेंगे,[7] मगर अपनी
इच्छाओं के मुताबिक अपने लिए ऐसे
शिक्षक बटोर लेंगे जो उनके कानों की
खुजली मिटा सकें।#[8] **4** वे सच्चाई की
बातों से कान फेर लेंगे और झूठी कहा-
नियों पर ध्यान देंगे। **5** लेकिन तू सब
बातों में होश-हवास बनाए रख,
मुश्किलों में धीरज धर,[9] प्रचारक का
काम कर,* अपनी सेवा अच्छी तरह
पूरी कर।[10]

6 मुझे अर्घ की तरह उँडेला जा रहा
है[11] और मेरी रिहाई का वक्त[12] एक-
दम करीब है। **7** मैंने अच्छी लड़ाई लड़ी
है।[13] मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है,[14]
मैंने विश्वास को थामे रखा है। **8** अब
मेरे लिए नेकी का ताज रखा हुआ है,[15]
जिसे प्रभु जो सच्चा न्यायी है,[16] मुझे उस
दिन इनाम में देगा।[17] यह इनाम सिर्फ
मुझे नहीं बल्कि उन सभी को मिलेगा जो
उसके प्रकट होने का बेताबी से इंतज़ार
करते हैं।

9 मेरे पास जल्द-से-जल्द आने की
कोशिश कर। **10** इसलिए कि देमास[1]
ने इस दुनिया* के मोह में पड़कर
मुझे छोड़ दिया है और वह थिस्सलुनीके
चला गया। क्रेसकेंस, गलातिया चला
गया और तीतुस, दलमतिया चला गया
है। **11** सिर्फ लूका मेरे साथ है। मर-
कुस को अपने साथ लेते आना क्योंकि
वह सेवा के लिए मेरे बहुत काम का है।
12 तुखिकुस[2] को मैंने इफिसुस भेजा है।
13 जब तू आए तो मेरा वह चोगा लेते
आना जो मैंने त्रोआस में करपुस के यहाँ
छोड़ा था। साथ में खर्रे भी लेते आना,
खासकर चर्मपत्र।*

14 ताँबे का काम करनेवाले ठठेरे
सिकंदर ने मुझे बहुत नुकसान पहुँचाया
है। यहोवा* उसकी करतूतों का बदला
उसे देगा।[3] **15** तू भी उससे बचकर
रहना क्योंकि उसने हमारे संदेश का बढ़-
चढ़कर विरोध किया है।

16 मेरी पहली पेशी के वक्त कोई भी
मेरा साथ देने नहीं आया। सबने मुझसे
किनारा कर लिया। मेरी दुआ है कि उनसे
इसका लेखा न लिया जाए। **17** मगर
प्रभु मेरे पास खड़ा रहा और उसने
मुझमें शक्ति भर दी ताकि मेरे ज़रिए
अच्छी तरह प्रचार हो और सब राष्ट्रों
के लोग सुन सकें।[4] मुझे शेर के मुँह से
छुड़ाया गया।[5] **18** प्रभु मुझे हर दुष्ट
चाल से बचाएगा और अपने स्वर्ग के राज
के लिए मेरी हिफाज़त करेगा।[6] उसकी
महिमा हमेशा-हमेशा तक होती रहे।
आमीन।

19 प्रिसका और अक्विला को[7] और
उनेसिफुरुस[8] के घराने को मेरा नमस्कार
कहना।

4:3 *या "स्वास्थ्यकर; फायदेमंद।" #या "उन्हें वही बताएँ जो वे सुनना चाहते हैं।" **4:5** *या "खुशखबरी का प्रचार करता रह।"

4:10 *या "दुनिया की व्यवस्था।" शब्दावली देखें। **4:13** *यानी चमड़े के खर्रे। **4:14** *अति. क5 देखें।

अध्य. 4
1 प्रक 11:15; प्रक 12:10
2 1ती 6:14, 15; 1पत 5:4
3 यूह 5:22; यूह 5:28, 29; प्रेष 10:42; प्रेष 17:31; 2कुर 5:10
4 2ती 2:15
5 1ती 5:20; तीत 1:7, 9; तीत 1:13; तीत 2:15
6 2ती 2:24, 25
7 1ती 1:9, 10
8 1ती 4:1
9 2ती 1:8; 2ती 2:3
10 रोम 15:19; कुल 1:25
11 गि 28:6, 7
12 फिल 1:23
13 1कुर 9:26; 1ती 6:12
14 फिल 3:14
15 1कुर 9:25; याकू 1:12
16 यूह 5:22
17 1पत 5:4; प्रक 2:10

दूसरा कॉल.
1 कुल 4:14; फिले 23, 24
2 इफ 6:21; कुल 4:7
3 भज 28:4; भज 62:12; नीत 24:12
4 प्रेष 9:15
5 भज 22:21
6 प्रक 20:4
7 रोम 16:3
8 2ती 1:16

20 इरास्तुस[1] कुरिंथ में रह गया और त्रुफिमुस[2] को मैं मीलेतुस में छोड़ आया क्योंकि वह बीमार था। 21 सर्दियाँ शुरू होने से पहले मेरे पास आने की पूरी कोशिश करना।

यूबूलुस, पूदेंस, लीनुस, क्लौदिया और सारे भाई तुझे नमस्कार कहते हैं।

22 तू जो बढ़िया जज़्बा दिखाता है उस वजह से प्रभु की आशीष तुझ पर हो। उसकी महा-कृपा तुम लोगों पर बनी रहे।

अध्य. 4
1 प्रेष 19:22
2 प्रेष 21:29

तीतुस

के नाम चिट्ठी

सारांश

1 नमस्कार (1-4)
  तीतुस, क्रेते में प्राचीन नियुक्त करे (5-9)
  बगावती लोगों को सुधारे (10-16)

2 जवानों और बुज़ुर्गों के लिए अच्छी सलाह (1-15)
  भक्तिहीन कामों को ठुकराओ (12)
  बढ़िया कामों के लिए जोश (14)

3 सही अधीनता (1-3)
  भले कामों के लिए तैयार रहो (4-8)
  मूर्खता से भरे वाद-विवादों और गुटों को ठुकराओ (9-11)
  अपनी तरफ से कुछ हिदायतें और नमस्कार (12-15)

1 मैं पौलुस, परमेश्वर का दास और यीशु मसीह का प्रेषित हूँ। मेरा विश्वास और मेरी सेवा, चुने हुओं के विश्वास के मुताबिक है और उस सच्चाई के सही ज्ञान के मुताबिक है जो परमेश्वर की भक्ति से जुड़ी है 2 और इसका आधार हमेशा की ज़िंदगी की आशा है,[1] जिसका वादा परमेश्वर ने जो झूठ नहीं बोल सकता,[2] मुद्दतों पहले किया था 3 और अपने तय वक्त पर प्रचार के ज़रिए उसने अपने वचन का ऐलान कराया है। प्रचार की यह ज़िम्मेदारी हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की आज्ञा से मुझे सौंपी गयी है।[3] 4 जिस विश्वास में हम सब साझेदार हैं, उस विश्वास में मेरे सच्चे बेटे तीतुस, मैं तुझे यह चिट्ठी लिख रहा हूँ:

मेरी दुआ है कि परमेश्वर हमारे पिता और मसीह यीशु हमारे उद्धारकर्ता की तरफ से तुझे महा-कृपा और शांति मिले।

5 मैं तुझे क्रेते में इसलिए छोड़ आया था कि तू वहाँ के बिगड़े हुए हालात* सुधारे और जैसे मैंने तुझे हिदायत दी थी, तू शहर-शहर प्राचीनों को नियुक्त करे। 6 ऐसे भाई को नियुक्त करना जिस पर कोई आरोप न हो, उसकी

अध्य. 1
1 रोम 6:23
2 गि 23:19
3 प्रेष 9:15

1:5 * या "वहाँ की कमियाँ।"

एक ही पत्नी हो, उसके बच्चे विश्वासी हों और उन पर ऐयाशी की ज़िंदगी जीने* का या बागी होने का इलज़ाम न हो।[1] **7** निगरानी करनेवाला भाई परमेश्वर का ठहराया प्रबंधक होता है इसलिए उस पर कोई इलज़ाम नहीं होना चाहिए। उसे मनमानी करनेवाला,[2] गुस्सैल,[3] पियक्कड़, मारपीट करनेवाला और बेईमानी की कमाई का लालची नहीं होना चाहिए। **8** बल्कि उसे मेहमान-नवाज़ी करनेवाला,[4] भलाई से प्यार करनेवाला, सही सोच रखनेवाला,*[5] नेक, वफादार,[6] संयम बरतनेवाला[7] होना चाहिए। **9** सिखाने की कला के मामले में वह विश्वासयोग्य वचन* को मज़बूती से थामे रहता हो[8] ताकि वह न सिर्फ खरी# शिक्षा देकर हौसला बढ़ाए[9] बल्कि जो इस शिक्षा का विरोध करते हैं उन्हें सुधारे भी।[10]

10 वहाँ कई लोग बगावती हैं, बेकार की बकबक करते हैं और दूसरों को गुमराह करते हैं, खासकर जो खतना कराने की बात पर अड़े रहते हैं।[11] **11** ऐसे लोगों का मुँह बंद करना ज़रूरी है क्योंकि वे बेईमानी की कमाई के लिए ऐसी शिक्षाएँ देते हैं जो उन्हें नहीं देनी चाहिए और पूरे-के-पूरे परिवार का विश्वास तबाह कर देते हैं। **12** उन्हीं के एक भविष्यवक्ता ने कहा है, "क्रेती लोग झूठे, जंगली जानवरों जैसे खूँखार, आलसी और पेटू होते हैं।"

13 यह गवाही सच्ची है। इसीलिए तू उनके साथ सख्ती से पेश आ और उन्हें सुधारता रह ताकि वे विश्वास में मज़बूत* बनें **14** और यहूदियों की कथा-कहानियों और उन लोगों की आज्ञाओं पर ध्यान न दें जो सच्चाई की राह छोड़ देते हैं। **15** शुद्ध लोगों के लिए सबकुछ शुद्ध है।[1] मगर जो दूषित हैं और जिनमें विश्वास नहीं है, उनके लिए कुछ भी शुद्ध नहीं क्योंकि उनका दिमाग और ज़मीर दोनों दूषित हैं।[2] **16** वे परमेश्वर को जानने का सरेआम दावा तो करते हैं, मगर उनके काम दिखाते हैं कि वे परमेश्वर का इनकार करते हैं[3] क्योंकि वे घिनौने और आज्ञा न माननेवाले हैं और किसी भी अच्छे काम के योग्य नहीं।

2 मगर तू वही बातें बताता रह जो खरी# शिक्षा के मुताबिक हैं।[4] **2** बुज़ुर्ग आदमी हर बात में संयम बरतनेवाले हों, गंभीर हों, सही सोच रखते हों, उनका विश्वास मज़बूत हो, वे प्यार से भरपूर हों और धीरज धरनेवाले हों। **3** इसी तरह, बुज़ुर्ग औरतों का बरताव ऐसा हो जैसा पवित्र लोगों को शोभा देता है। वे बदनाम करनेवाली न हों, बहुत ज़्यादा दाख-मदिरा पीने की आदी न हों बल्कि अच्छी बातें सिखानेवाली हों **4** ताकि वे जवान औरतों को सलाह दें* कि वे अपने पति और बच्चों से प्यार करें, **5** सही सोच रखें, साफ चरित्र बनाए रखें। साथ ही वे अपने घर का काम-काज* करनेवाली, भली और अपने पति के अधीन रहनेवाली हों[5] ताकि परमेश्वर के वचन की बदनामी न हो।

6 इसी तरह जवान भाइयों को बढ़ावा देता रह कि वे सही सोच रखें।[6] **7** और तू खुद भी सब बातों में बढ़िया काम

1:6 *या "बेकाबू बरताव।" **1:8** *या "समझ-बूझ से; समझदारी से काम लेनेवाला।" **1:9** *या "भरोसेमंद संदेश।" **1:9; 2:1** #या "स्वास्थ्यकर; फायदेमंद।"

1:13 *या "स्वस्थ।" **2:4** *या "के होश ठिकाने लाएँ; सिखाएँ।" **2:5** *या "घर की देखभाल।"

अध्य. 1
1 1ती 3:2-7
2 2पत 2:10
3 याकू 1:19
4 1पत 4:9
5 रोम 12:3; 1ती 3:2
6 1ती 2:8
7 2ती 2:24; याकू 3:13
8 1ती 4:16; 1ती 6:3, 4
9 1ती 1:9, 10; 2ती 1:13
10 1ती 5:20; 2ती 4:2; तीत 1:13; प्रक 3:19
11 प्रेष 15:1

दूसरा कॉल.
1 रोम 14:14
2 मत 15:11
3 मत 7:16-18

अध्य. 2
4 1ती 4:16; 2ती 1:13
5 1कुर 14:34, 35; 1पत 3:1, 2
6 रोम 12:3; 1पत 5:5

करने की मिसाल रख। पूरी गंभीरता से ऐसी बातें सिखा जो शुद्ध हैं*[1] **8** और अच्छी* बातें बता जिनमें कोई दोष न निकाल सके[2] ताकि हमारे विरोधी शर्मिंदा हों और उन्हें हमारे खिलाफ कुछ बुरा कहने का मौका न मिले।[3] **9** जो दास हैं वे सब बातों में अपने मालिकों के अधीन रहें,[4] उन्हें खुश करें, पलटकर जवाब न दें, **10** उनका कुछ न चुराएँ[5] बल्कि पूरी तरह भरोसेमंद रहें ताकि वे हर तरह से हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की शिक्षा की शोभा बढ़ा सकें।[6]

11 परमेश्वर की महा-कृपा ज़ाहिर की गयी है जो सब किस्म के लोगों को उद्धार दिलाती है।[7] **12** यह हमें सिखाती है कि हम भक्तिहीन कामों और दुनियावी इच्छाओं को ठुकराएँ[8] और इस दुनिया* में सही सोच रखते हुए और नेकी और परमेश्वर की भक्ति के साथ जीवन बिताएँ।[9] **13** और उस वक्त का इंतज़ार करते रहें जब हमारी वह आशा पूरी होगी[10] जो हमें खुशी देती है और महान परमेश्वर और हमारे उद्धार-कर्ता मसीह यीशु की महिमा प्रकट होगी। **14** मसीह ने खुद को हमारे लिए दे दिया[11] ताकि हमें हर तरह की बुराई से छुड़ाए*[12] और शुद्ध करके हमें ऐसे लोग बना ले जो उसकी खास जागीर हों और बढ़िया कामों के लिए जोशीले हों।[13]

15 तू उन्हें ये सारी बातें बताता रह, उन्हें समझाता* रह और पूरे अधिकार के साथ उनका सुधार करता रह।[14] कोई भी तुझे नीचा न देखे।

2:7 *या शायद, "शुद्धता से सिखा।" **2:8** *या "स्वास्थ्यकर; फायदेमंद।" **2:12** *या "दुनिया की व्यवस्था।" शब्दावली देखें। **2:14** *शा., "हमारे लिए फिरौती दे।" **2:15** *या "उनका हौसला बढ़ाता।"

अध्य. 2
1 2ती 2:15
2 कुल 3:8
3 1पत 2:15
4 इफ 6:5
1ती 6:1
1पत 2:18
5 इफ 4:28
6 मत 5:16
7 रोम 5:18
8 1यूह 2:16
9 रोम 12:2
10 1पत 1:13
11 मत 20:28
1ती 2:5, 6
12 इफ 1:7
कुल 1:13, 14
13 इफ 2:10
इब्र 9:14
14 2ती 4:2

दूसरा कॉल.

अध्य. 3
1 मर 12:17
रोम 13:1
1पत 2:13, 14
2 फिल 4:5
याकू 3:17
3 नीत 15:1
गल 6:1
इफ 4:1, 2
1ती 6:11
2ती 2:24, 25
1पत 3:15
4 लूक 6:35
रोम 2:4
इफ 4:32
5 व्य 9:5
रोम 3:10
गल 3:21
6 रोम 5:15, 21
रोम 6:23
7 रोम 5:18
8 यूह 3:5
रोम 8:23
2कुर 5:17
9 प्रेष 2:33
10 रोम 3:24
गल 2:15, 16
11 रोम 6:23
12 रोम 8:17

3

उन्हें याद दिलाता रह कि सरकारों और अधिकारियों के अधीन रहें और उनकी आज्ञा मानें,[1] हर अच्छे काम के लिए तैयार रहें, **2** किसी के बारे में भी बदनाम करनेवाली बातें न कहें, झग-ड़ालू न हों, लिहाज़ करनेवाले हों[2] और सब लोगों के साथ पूरी कोमलता से पेश आएँ।[3] **3** इसलिए कि एक वक्त था जब हम भी मूर्ख थे, आज्ञा नहीं मानते थे, गुमराह थे, तरह-तरह की इच्छाओं के गुलाम थे और ऐशो-आराम में डूबे रहते थे, बुराई में लगे रहते थे, ईर्ष्या करते थे, घिनौने थे और एक-दूसरे से नफरत करते थे।

4 मगर जब हमारे उद्धारकर्ता पर-मेश्वर की कृपा[4] और सब इंसानों के लिए उसका प्यार ज़ाहिर हुआ **5** (इस-लिए नहीं कि हमने नेक काम किए थे[5] बल्कि यह उसकी दया थी),[6] तो उसने हमें पानी* के ज़रिए जीवन देकर[7] और पवित्र शक्ति के ज़रिए नया बना-कर हमारा उद्धार किया।[8] **6** उसने यह पवित्र शक्ति हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के ज़रिए हम पर बहुतायत में* उँडेली है[9] **7** ताकि उसकी महा-कृपा के ज़रिए हम नेक ठहराए जाएँ[10] और इसके बाद हमेशा की ज़िंदगी की आशा के मुता-बिक[11] वारिस बनें।[12]

8 ये बातें भरोसे के लायक हैं और मैं चाहता हूँ कि तू इन बातों पर ज़ोर देता रह ताकि जिन्होंने परमेश्वर पर यकीन किया है वे अपना ध्यान बढ़िया काम करने में लगाए रखें। ये बातें लोगों के लिए बढ़िया और फायदे-मंद हैं।

3:5 *शा., "स्नान।" **3:6** *या "उदार-ता से।"

9 मगर मूर्खता से भरे वाद-विवादों
और वंशावलियों से और कानून पर बहस
और झगड़ों से दूर रह क्योंकि इनसे कोई
फायदा नहीं होता और ये बेकार हैं।[1]
10 अगर कोई आदमी किसी गुट को
बढ़ावा देता है,[2] तो उसे पहली और दूसरी
बार समझा*[3] और इसके बाद उससे
संगति करना छोड़ दे,[4] 11 यह जानते
हुए कि ऐसा आदमी सही राह से हट गया
है और पाप कर रहा है और उसने खुद
को दोषी ठहराया है।

12 जब मैं अरतिमास या तुखिकुस[5]
को तेरे पास भेजूँ, तो तू नीकुपुलिस में मेरे
पास आने की पूरी कोशिश करना क्योंकि
मैंने सर्दियाँ वहीं बिताने का फैसला किया
है। 13 ज़ेनस को, जो कानून का जान-
कार है और अपुल्लोस को वह सारी चीज़ें
देना जो उनके सफर के लिए ज़रूरी हैं
ताकि उन्हें कोई कमी न हो।[1] 14 हमारे
लोग भी बढ़िया कामों में लगे रहना सीखें
ताकि मुसीबत के वक्त मदद कर सकें[2]
और निकम्मे* न बनें।[3]

15 जो लोग मेरे साथ हैं वे सब तुझे
नमस्कार कह रहे हैं। उन लोगों को मेरा
नमस्कार कहना जो विश्वास में हमसे
गहरा लगाव रखते हैं।

परमेश्वर की महा-कृपा तुम सब पर
बनी रहे।

3:10 *या "चेतावनी दे।"

3:14 *शा., "निष्फल।"

अध्य. 3
1 1ती 1:3, 4; 1ती 6:3-5
2 1कुर 11:19; प्रक 2:6
3 2ती 4:2
4 रोम 16:17; 2यूह 10
5 प्रेष 20:4; इफ 6:21; 2ती 4:12

दूसरा कॉल.
1 1कुर 9:14; गल 6:6; इब्र 13:16
2 1कुर 9:11
3 कुल 1:10

फिलेमोन

के नाम चिट्ठी

सारांश

नमस्कार (1-3)
फिलेमोन का प्यार और विश्वास (4-7)
उनेसिमुस के लिए पौलुस की गुज़ारिश (8-22)
आखिर में नमस्कार (23-25)

1 मैं पौलुस, जो मसीह यीशु की
खातिर एक कैदी हूँ,[1] हमारे भाई तीमु-
थियुस[2] के साथ, हमारे प्यारे सहकर्मी
फिलेमोन को लिख रहा हूँ। 2 साथ
ही, हमारी बहन अफफिया और हमारे
संगी सैनिक अरखिप्पुस[3] और तेरे घर
में इकट्ठा होनेवाली मंडली को:[4]

3 हमारे पिता यानी परमेश्वर की
तरफ से और प्रभु यीशु मसीह की तरफ
से तुम्हें महा-कृपा और शांति मिले।
4 मैं जब भी अपनी प्रार्थनाओं में तुझे
याद करता हूँ, तो हमेशा अपने परमेश्वर
का धन्यवाद करता हूँ[1] 5 क्योंकि मैं
तेरे विश्वास के बारे में और तेरे उस

1 इफ 4:1
2 प्रेष 16:1, 2; इब्र 13:23
3 कुल 4:17
4 रोम 16:5; 1कुर 16:19

दूसरा कॉल.
1 इफ 1:15, 16; 1थि 1:2

प्यार के बारे में सुनता रहता हूँ जो तुझे प्रभु यीशु के लिए और सभी पवित्र जनों के लिए है। **6** मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू जिस विश्वास में साझेदार है, वह तुझे उन सारी आशीषों का एहसास करने के लिए उभारे जो हमें मसीह के ज़रिए मिली हैं। **7** मेरे भाई, जब मैंने तेरे प्यार के बारे में सुना तो मुझे बहुत खुशी हुई और दिलासा मिला क्योंकि तेरी वजह से पवित्र जनों के दिलों को ताज़गी मिली है।

8 इसी वजह से, हालाँकि मसीह का प्रेषित होने के नाते मैं तुझे बेझिझक हुक्म दे सकता हूँ कि तू वह कर जो सही है, **9** फिर भी मैं प्यार का वास्ता देकर तुझसे गुज़ारिश कर रहा हूँ क्योंकि मैं पौलुस एक बुज़ुर्ग हूँ और अब मसीह यीशु की खातिर कैदी हूँ। **10** हाँ, मैं तुझसे अपने बच्चे उनेसिमुस[1] के बारे में गुज़ारिश कर रहा हूँ जिसका मैं कैद* में होते हुए पिता बना।[2] **11** यह पहले तेरे लिए बेकार था मगर अब यह तेरे लिए और मेरे लिए भी बहुत काम का है। **12** मैं इसे तेरे पास वापस भेज रहा हूँ, हाँ, इसे जो मेरे जिगर का टुकड़ा है।

13 मैं चाहता तो हूँ कि इसे अपने पास ही रखूँ ताकि जब तक मैं खुश-खबरी की खातिर कैद में रहूँ, तब तक यह तेरे बदले में मेरी सेवा करे।[3] **14** मगर तेरी रज़ामंदी के बिना मैं कुछ नहीं करना चाहता ताकि तू किसी दबाव में आकर नहीं बल्कि अपनी मरज़ी से भला काम करे।[4] **15** शायद इसी वजह से वह कुछ वक्त के लिए तुझसे अलग हो गया था ताकि तू उसे हमेशा के लिए फिर से पा सके, **16** मगर अब एक दास की तरह नहीं[1] बल्कि प्यारे भाई की तरह।[2] खासकर मेरे लिए तो वह बहुत प्यारा है। तेरे लिए तो वह और भी बढ़कर है क्योंकि दास होने के साथ-साथ वह प्रभु में तेरा भाई भी है। **17** इसलिए अगर तू मुझे अपना दोस्त* समझता है, तो प्यार से उसका स्वागत कर जैसे तू मेरा करता। **18** अगर उसने तेरा कुछ नुकसान किया है या अगर उसे तुझे कुछ चुकाना है, तो उसे मेरे खाते में लिख लेना। **19** मैं पौलुस अपने हाथ से यह लिख रहा हूँ: मैं तेरा नुकसान भर दूँगा। वैसे मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं कि तू खुद अपने जीवन के लिए मेरा कर्ज़दार है। **20** हाँ मेरे भाई, प्रभु में मुझे यह मदद दे। मसीह में मेरे दिल को तरो-ताज़ा कर दे।

21 मुझे पूरा यकीन है कि तू मेरी बात ज़रूर मानेगा इसलिए मैं तुझे लिख रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि मैंने जो कहा है तू उससे कहीं बढ़कर करेगा। **22** साथ ही, मेरे लिए ठहरने की जगह तैयार रखना क्योंकि मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम लोगों की प्रार्थनाओं की वजह से मैं बहुत जल्द तुमसे मिलने आ सकूँगा।*[3]

23 इपफ्रास[4] जो मसीह यीशु में मेरा साथी कैदी है तुझे नमस्कार कह रहा है। **24** और मरकुस, अरिस्तरखुस,[5] देमास[6] और लूका[7] भी, जो मेरे सह-कर्मी हैं तुझे नमस्कार कहते हैं।

25 तुम जो बढ़िया जज़्बा दिखाते हो उस वजह से प्रभु यीशु मसीह की महा-कृपा तुम पर बनी रहे।

---

10 *शा., "ज़ंजीरों।"

17 *शा., "साझेदार।" **22** *या "तुम्हारे लिए आज़ाद कर दिया जाऊँगा।"

---

1 कुल 4:9
2 1कुर 4:15
3 इफ 6:19, 20; फिल 1:7
4 2कुर 9:7

दूसरा कॉल.
1 1कुर 7:22
2 1ती 6:2
3 फिल 2:24
4 कुल 1:7; कुल 4:12, 13
5 प्रेष 19:29; प्रेष 27:2; कुल 4:10
6 2ती 4:10
7 कुल 4:14

इब्रानियों
के नाम चिट्ठी

सारांश

1 परमेश्वर ने अपने बेटे के ज़रिए बात की (1-4)
बेटा स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है (5-14)

2 और भी ज़्यादा ध्यान दो (1-4)
सबकुछ यीशु के अधीन किया गया (5-9)
यीशु और उसके भाई (10-18)
उनके उद्धार का खास अगुवा (10)
दयालु महायाजक (17)

3 यीशु मूसा से भी महान (1-6)
सबकुछ परमेश्वर ने बनाया है (4)
विश्वास न होने के बारे में चेतावनी (7-19)
"आज अगर तुम उसकी आवाज़ सुनो" (7, 15)

4 परमेश्वर के विश्राम में दाखिल न होना, एक खतरा (1-10)
उसके विश्राम में दाखिल होने का बढ़ावा (11-13)
परमेश्वर का वचन जीवित है (12)
यीशु महान महायाजक (14-16)

5 यीशु इंसानी महायाजकों से श्रेष्ठ (1-10)
मेल्कीसेदेक जैसा (6, 10)
दुख सहकर आज्ञा माननी सीखी (8)
हमेशा का उद्धार दिलाने की ज़िम्मेदारी (9)
चेतावनी कि बच्चों जैसे न रहें (11-14)

6 प्रौढ़ता की तरफ बढ़ो (1-3)
जो गिर जाते हैं वे बेटे को दोबारा काठ पर ठोंकते हैं (4-8)
अपनी आशा के पूरा होने का पक्का भरोसा रखो (9-12)
परमेश्वर का वादा पक्का है (13-20)
परमेश्वर का वादा और शपथ बदल नहीं सकते (17, 18)

7 मेल्कीसेदेक: अनोखा राजा और याजक (1-10)
मसीह का याजकपद श्रेष्ठ है (11-28)
मसीह पूरी तरह उद्धार करने के काबिल (25)

8 डेरा स्वर्ग की बातों को दर्शाता है (1-6)
पुराने और नए करार में फर्क (7-13)

9 धरती के पवित्र-स्थान में पवित्र सेवा (1-10)
मसीह अपना खून लेकर स्वर्ग में दाखिल हुआ (11-28)
नए करार का बिचवई (15)

10 जानवरों का बलिदान पापों को नहीं मिटा सका (1-4)
कानून बस एक छाया (1)
मसीह का बलिदान एक बार हमेशा के लिए (5-18)
एक नयी और जीवित राह (19-25)
एक-दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें (24, 25)
जानबूझकर पाप करने से खबरदार (26-31)
धीरज धरने का भरोसा और विश्वास (32-39)

11 विश्वास की परिभाषा (1, 2)
विश्वास की मिसालें (3-40)
विश्वास के बिना परमेश्वर को खुश करना नामुमकिन (6)

12 यीशु, हमारे विश्वास को परिपूर्ण करनेवाला (1-3)
गवाहों का घना बादल (1)
यहोवा की शिक्षा को तुच्छ मत समझो (4-11)
अपने कदमों के लिए सीधी राह बनाओ (12-17)
स्वर्ग की यरूशलेम के पास जाना (18-29)

13 आखिर में सलाह और नमस्कार (1-25)
मेहमान-नवाज़ी करना मत भूलो (2)
शादी आदर की बात समझी जाए (4)
अगुवाई करनेवालों की आज्ञा मानो (7, 17)
तारीफ का बलिदान चढ़ाओ (15, 16)

1 परमेश्वर ने गुज़रे ज़माने में, कई
मौकों पर अलग-अलग तरीके से
भविष्यवक्ताओं के ज़रिए हमारे पुरखों
से बात की थी।[1] 2 मगर अब इन दिनों
के आखिर में उसने हमसे अपने बेटे के
ज़रिए बात की है,[2] जिसे उसने सब चीज़ों
का वारिस ठहराया[3] और जिसके ज़रिए
उसने दुनिया की व्यवस्थाएँ* बनायीं।[4]
3 इस बेटे में परमेश्वर की महिमा झलक-
ती है[5] और वह परमेश्वर की हू-ब-हू
छवि है।[6] वह अपने शक्तिशाली वचन
से सब चीज़ों को सँभालता है। और हमारे
पापों को धोकर हमें शुद्ध करने के बाद[7]
वह ऊँचे पर महामहिम के दायीं तरफ जा
बैठा है।[8] 4 इस तरह वह स्वर्गदूतों से
भी श्रेष्ठ बन गया है।[9] यहाँ तक कि वह
ऐसे नाम का वारिस बन गया है जो उनके
नाम से कहीं श्रेष्ठ है।[10]

5 मिसाल के लिए, परमेश्वर ने कब
किसी स्वर्गदूत से कहा, “तू मेरा बेटा है,
आज मैं तेरा पिता बना हूँ”?[11] और फिर
यह, “मैं उसका पिता बनूँगा और वह
मेरा बेटा होगा”?[12] 6 मगर उस वक्त
के बारे में जब वह अपने पहलौठे[13] को
दोबारा इस धरती पर लाएगा, वह कहता
है, “परमेश्वर के सारे स्वर्गदूत उसके
आगे झुककर प्रणाम करें।”*

7 साथ ही, वह स्वर्गदूतों के बारे
में कहता है, “वह अपने स्वर्गदूतों
को ताकतवर बनाता है और अपने
सेवकों*[14] को आग की ज्वाला।”[15]
8 मगर अपने बेटे के बारे में वह कहता
है, “परमेश्वर हमेशा-हमेशा के लिए तेरी
राजगद्दी है[16] और तेरा राजदंड सीधाई*
का राजदंड है। 9 तूने नेकी से प्यार
किया और बुराई से नफरत की। इसी-
लिए परमेश्वर ने, हाँ, तेरे परमेश्वर ने
तेरे साथियों से बढ़कर हर्ष के तेल से तेरा
अभिषेक किया।”[1] 10 और यह, “हे
प्रभु, तूने शुरूआत में पृथ्वी की बुनियाद
डाली थी, आकाश तेरे हाथ की रचना है।
11 वे तो नाश हो जाएँगे, मगर तू सदा
कायम रहेगा। एक कपड़े की तरह वे सब
पुराने हो जाएँगे 12 और तू उन्हें ऐसे
लपेटकर रख देगा जैसे एक चोगे को, हाँ,
एक कपड़े को लपेटकर रख दिया जाता
है। वे बदल दिए जाएँगे। मगर तू हमेशा
से जैसा था वैसा ही है, तेरी उम्र के साल
कभी खत्म न होंगे।”[2]

13 मगर उसने कब किसी स्वर्गदूत के
बारे में यह कहा, “तू तब तक मेरे दाएँ
हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ”?[3]
14 क्या ये सब पवित्र सेवा* करनेवाले
स्वर्गदूत नहीं,[4] जिन्हें उन लोगों की सेवा
के लिए भेजा जाता है जो उद्धार पाएँगे?

2 इसलिए हमने जो बातें सुनी हैं,
उन पर और भी ज़्यादा ध्यान देना
ज़रूरी है[5] ताकि हम कभी-भी बह-
कर दूर न चले जाएँ।[6] 2 जब स्वर्ग-
दूतों के ज़रिए कहा गया वचन[7] इतना
अटल साबित हुआ और उसके खिलाफ
जिसने भी पाप किया और आज्ञा तोड़ी,
उसे न्याय के मुताबिक सज़ा मिली,[8]
3 तो हम उस उद्धार के मामले में
जो इतना महान है, लापरवाही बरतकर
कैसे बच सकेंगे?[9] इसके बारे में सबसे
पहले हमारे प्रभु ने बताया था[10] और
फिर जिन लोगों ने उससे यह सुना था
उन्होंने हमारे लिए इसे पुख्ता किया।
4 परमेश्वर ने भी चिन्ह और चमत्कार

1:2 *या “ज़माने।” शब्दावली देखें। **1:6** *या “उसे दंडवत करें।” **1:7** *या “जन-सेवकों।” **1:8** *या “न्याय।”

1:14 *या “जन-सेवा।”

अध्य. 1
1 निर्ग 24:3, गि 12:8, यिर्म 7:25
2 मत 17:5
3 भज 2:8
4 यूह 1:3, 1कुर 8:6, कुल 1:16
5 यूह 1:14, यूह 17:5
6 कुल 1:15
7 इब्र 9:26
8 भज 110:1, प्रेष 2:32, 33, प्रेष 7:55
9 इफ 1:20, 21, 1पत 3:22
10 प्रेष 4:12, फिल 2:9, 10
11 भज 2:7
12 2शम 7:14, मर 1:11, लूक 9:35, 2पत 1:17
13 यूह 1:14, रोम 8:29, कुल 1:15
14 भज 91:11, लूक 22:43
15 भज 104:4
16 मत 28:18, प्रक 3:21

दूसरा कॉल.
1 भज 45:6, 7, यश 61:1, लूक 3:21, 22, लूक 4:18
2 भज 102:25-27
3 भज 110:1, मत 22:44
4 भज 34:7, भज 91:11, प्रेष 5:18, 19

अध्य. 2
5 लूक 8:15
6 भज 73:2, इब्र 3:12, 2पत 3:17
7 गल 3:19
8 व्य 4:3, यहू 5
9 इब्र 10:28, 29
10 मर 1:14

दिखाकर और तरह-तरह के शक्तिशाली कामों के ज़रिए[1] और अपनी मरज़ी के मुताबिक पवित्र शक्ति के वरदान बाँटकर इसकी गवाही दी है।[2]

5 परमेश्वर ने आनेवाली उस दुनिया को, जिसके बारे में हम बता रहे हैं, स्वर्गदूतों के अधीन नहीं किया।[3] 6 मगर किसी गवाह ने कहा है, “इंसान है ही क्या कि तू उसका खयाल रखे? इंसान है ही क्या कि तू उसकी परवाह करे?[4] 7 तूने उसे स्वर्गदूतों से कुछ कमतर बनाया। और उसे महिमा और आदर का ताज पहनाया और उसे अपने हाथ की रचनाओं पर अधिकार दिया। 8 तूने सबकुछ उसके पैरों तले कर दिया।”[5] जब परमेश्वर ने सबकुछ उसके अधीन कर दिया[6] तो उसने ऐसा कुछ भी नहीं छोड़ा जो उसके अधीन न किया हो।[7] यह सच है कि अब तक हम सबकुछ उसके अधीन नहीं देखते,[8] 9 मगर हम यीशु को देखते हैं जिसे स्वर्गदूतों से थोड़ा कमतर बनाया गया।[9] और मौत का दुख झेलने की वजह से उसे महिमा और आदर का ताज पहनाया गया[10] ताकि परमेश्वर की महा-कृपा से वह हर इंसान के लिए मौत का दुख झेले।[11]

10 सबकुछ परमेश्वर की खातिर और उसी के ज़रिए वजूद में है। और यह सही था कि परमेश्वर बहुत सारे बेटों को महिमा में लाने के लिए,[12] उनके उद्धार के खास अगुवे को दुख सहने दे[13] और इस तरह उसे परिपूर्ण बनाए।[14] 11 इसलिए कि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जा रहे हैं,[15] सब एक ही पिता से हैं[16] इसलिए वह उन्हें भाई पुकारने में शर्मिंदा महसूस नहीं करता,[17] 12 जैसा वह कहता है, “मैं अपने भाइयों में तेरे नाम का ऐलान करूँगा, मंडली के बीच गीत गाकर तेरी तारीफ करूँगा।”[1] 13 और फिर यह, “मैं उस पर भरोसा रखूँगा।”[2] और यह भी, “देखो! मैं और मेरे ये बच्चे जो यहोवा* ने मुझे दिए हैं।”[3]

14 इसलिए जैसे बच्चे हाड़-माँस के हैं, वह भी हाड़-माँस का बना[4] ताकि अपनी मौत के ज़रिए उसे यानी शैतान*[5] को मिटा दे, जिसके पास मार डालने की ताकत है[6] 15 और उन सबको आज़ाद करे जो मौत के डर से पूरी ज़िंदगी गुलामी में पड़े थे।[7] 16 वह असल में स्वर्गदूतों की नहीं बल्कि अब्राहम के वंश* की मदद कर रहा है।[8] 17 इसीलिए ज़रूरी था कि वह हर मायने में अपने भाइयों जैसा बने[9] ताकि वह परमेश्वर से जुड़ी बातों में एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बन सके और लोगों के पापों के लिए[10] सुलह करानेवाला बलिदान चढ़ाए।*[11] 18 उसने खुद भी उस वक्त बहुत दुख उठाया था जब उसकी परीक्षा ली जा रही थी,[12] इसलिए अब वह उन लोगों की मदद करने के काबिल है जिनकी परीक्षा ली जा रही है।[13]

3 इसलिए पवित्र भाइयो, तुम जो स्वर्ग के बुलावे* में हिस्सेदार हो,[14] उस प्रेषित और महायाजक यीशु पर ध्यान दो जिसे हम मानते हैं।[15] 2 वह परमेश्वर का विश्वासयोग्य रहा जिसने उसे ठहराया था,[16] जैसे मूसा भी परमेश्वर के सारे घराने में विश्वासयोग्य था।[17] 3 जैसे घर से ज़्यादा उसके बनानेवाले को आदर दिया जाता है, वैसे ही उसे* मूसा से ज़्यादा महिमा के

2:13 *अति. क5 देखें। **2:14** *शा., “इबलीस।” शब्दावली देखें। **2:16** *शा., “बीज।” **2:17** *या “प्रायश्चित का बलिदान चढ़ाए; प्रायश्चित कराए।” **3:1** *या “न्यौते।” **3:3** *यानी यीशु को।

अध्य. 2

1 प्रेष 2:22
2 1कुर 12:11
3 प्रेष 17:31; 2पत 3:13
4 भज 144:3
5 भज 8:4-6
6 मत 28:18; 1कुर 15:27; इफ 1:22
7 1पत 3:22
8 भज 110:1
9 फिल 2:7
10 प्रक 5:9
11 यश 53:5, 8; रोम 5:17; 1ती 2:5, 6
12 रोम 8:18, 19; 2कुर 6:18
13 प्रेष 5:31; इब्र 12:2
14 लूक 24:26; इब्र 5:8
15 यूह 17:19; इब्र 10:14
16 यूह 20:17
17 मत 12:50; रोम 8:29

दूसरा कॉल.

1 भज 22:22
2 यश 8:17
3 यश 8:18
4 यूह 1:14
5 उत 3:15; लूक 10:18; यूह 8:44; 1यूह 3:8; प्रक 12:9
6 अय 1:19
7 यश 25:8; रोम 8:20, 21; 1कुर 15:26
8 गल 3:29
9 फिल 2:7
10 रोम 5:10
11 रोम 3:25; 1यूह 2:1, 2; 1यूह 4:10
12 इब्र 4:15
13 इब्र 7:25; प्रक 3:10

अध्य. 3

14 फिल 3:14; 1थि 2:12
15 इब्र 8:1
16 यूह 8:29
17 गि 12:7

लायक समझा गया।[1] **4** बेशक, हर
घर का कोई-न-कोई बनानेवाला होता है
मगर जिसने सबकुछ बनाया वह पर-
मेश्वर है। **5** मूसा परमेश्वर के पूरे
घराने में एक सेवक के नाते विश्वासयोग्य
रहा। और उसकी सेवा से उन बातों की
गवाही मिली, जो बाद में बतायी जातीं।
6 मगर मसीह तो परमेश्वर का बेटा है
और वह उसके घराने के अधिकारी के
नाते विश्वासयोग्य रहा।[2] और परमेश्वर
का घराना हम हैं,[3] बशर्ते अंत तक हम
बेझिझक बोलने की हिम्मत न खोएँ और
उस आशा को मज़बूती से थामे रहें जिस
पर हम गर्व करते हैं।

7 इसलिए पवित्र शक्ति कहती है,[4]
"आज अगर तुम उसकी आवाज़ सुनो,
8 तो अपना दिल कठोर मत कर लेना
जैसे तुम्हारे पुरखों ने वीराने में किया था
और मेरी परीक्षा लेकर मेरा क्रोध भड़-
काया था।[5] **9** वहाँ उन्होंने मेरी परीक्षा
लेकर मुझे चुनौती दी थी, इसके बावजूद
कि उन्होंने 40 साल तक मेरे काम देखे
थे।[6] **10** इसी वजह से मुझे इस पीढ़ी
से घिन हो गयी और मैंने कहा, 'इन
लोगों का दिल हमेशा भटक जाता है,
इन्होंने मेरी राहों को नहीं जाना।'
11 इसलिए मैंने क्रोध में आकर शपथ
खायी, 'ये मेरे विश्राम में दाखिल न
होंगे।'"[7]

12 भाइयो, खबरदार रहो कि तुममें
से कोई जीवित परमेश्वर से दूर न
चला जाए और इस वजह से उसका दिल
कठोर होकर इतना दुष्ट न हो जाए कि
उसमें विश्वास न रहे।[8] **13** मगर जिस
दिन तक "आज"[9] का दिन कहा जाएगा,
तुम हर दिन एक-दूसरे का हौसला बढ़ाते
रहो ताकि तुममें से कोई भी पाप की भर-
माने की ताकत की वजह से कठोर न हो
जाए। **14** क्योंकि हम सही मायनों में
मसीह के साझेदार तभी बनते हैं, जब हम
अपना वह भरोसा आखिर तक मज़बूत
बनाए रखते हैं जो हमारे अंदर शुरू
में था।[1] **15** जैसा कि कहा भी गया है,
"आज अगर तुम उसकी आवाज़ सुनो,
तो अपना दिल कठोर मत कर लेना जैसे
तुम्हारे पुरखों ने किया था और मेरा क्रोध
भड़काया था।"[2]

16 वे कौन थे जिन्होंने परमेश्वर की
आवाज़ सुनकर भी उसका क्रोध भड़काया
था? क्या वे सभी लोग वही न थे जो मूसा
के अधीन मिस्र से बाहर निकले थे?[3]
17 वे कौन थे जिनसे परमेश्वर 40 साल
तक घिन करता रहा?[4] क्या वे लोग वही
न थे जिन्होंने पाप किया और जिनकी
लाशें वीराने में पड़ी रहीं?[5] **18** और
उसने किससे यह शपथ खायी कि वे
उसके विश्राम में दाखिल नहीं होंगे? क्या
उनसे नहीं जिन्होंने उसकी आज्ञाओं के
खिलाफ काम किया था? **19** तो हम
देख सकते हैं कि वे इसलिए विश्राम में
दाखिल नहीं हो सके क्योंकि उनमें
विश्वास नहीं था।[6]

4 इसलिए जबकि परमेश्वर के विश्राम
में दाखिल होने का वादा अब तक
बना हुआ है, तो आओ हम खबर-
दार रहें कि हममें से कोई भी इस विश्राम
में दाखिल होने के अयोग्य न ठहरे।[7]
2 क्योंकि हमें भी खुशखबरी सुनायी गयी
है,[8] ठीक जैसे उन्हें सुनायी गयी थी।
मगर जो वचन उन्होंने सुना उससे उन्हें
कुछ फायदा नहीं हुआ, क्योंकि उनमें उन
लोगों जैसा विश्वास नहीं था जिन्होंने सुना
था। **3** मगर हमने विश्वास किया है
और विश्राम में दाखिल होते हैं। जहाँ तक
उनकी बात है, उसने उनके बारे में कहा
है, "इसलिए मैंने क्रोध में आकर शपथ

अध्य. 3
1 मत 17:1, 2
2 मत 17:5
3 1पत 2:5
4 2शम 23:2 प्रेष 1:16
5 निर्ग 17:7
6 निर्ग 16:35 गि 32:13 भज 95:9
7 गि 14:22, 23 भज 95:7-11
8 इब्र 2:1
9 भज 95:7

दूसरा कॉल.
1 प्रक 2:10
2 भज 95:7, 8
3 निर्ग 17:1-3 गि 14:2, 4
4 गि 14:11 व्य 32:21
5 गि 14:22, 23 गि 14:28-30 यहू 5
6 इब्र 4:6

अध्य. 4
7 इब्र 3:12, 13
8 मत 4:23 प्रेष 15:7 कुल 1:23

खायी, ‘ये मेरे विश्राम में दाखिल न होंगे।’”[1] जबकि वह खुद अपना काम पूरा करने के बाद दुनिया की शुरूआत से विश्राम कर रहा है।[2] **4** एक जगह उसने सातवें दिन के बारे में कहा, “सातवें दिन परमेश्वर ने अपने सब कामों से विश्राम किया।”[3] **5** और फिर यहाँ उसने कहा, “ये मेरे विश्राम में दाखिल न होंगे।”[4]

6 तो फिर कुछ लोगों का इस विश्राम में दाखिल होना बाकी है और जिन लोगों को पहले खुशखबरी सुनायी गयी थी, वे आज्ञा न मानने की वजह से उसमें दाखिल नहीं हुए।[5] **7** इसलिए एक लंबे समय बाद वह दाविद के भजन में किसी दिन को “आज का दिन” कहता है, ठीक जैसा कि इस चिट्ठी में पहले कहा गया है, “आज अगर तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपना दिल कठोर मत कर लेना।”[6] **8** अगर यहोशू[7] उन्हें विश्राम की जगह ले जा चुका होता, तो परमेश्वर बाद में एक और दिन की बात नहीं करता। **9** तो इसका मतलब परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी है।[8] **10** क्योंकि जो इंसान परमेश्वर के विश्राम में दाखिल हुआ है, उसने भी अपने कामों से विश्राम किया है, ठीक जैसे परमेश्वर ने किया था।[9]

11 इसलिए आओ हम उस विश्राम में दाखिल होने के लिए अपना भरसक करें ताकि हममें से कोई भी उन लोगों की तरह आज्ञा तोड़ने के ढर्रे में न पड़ जाए।[10] **12** क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित है और ज़बरदस्त ताकत रखता है[11] और दोनों तरफ तेज़ धार रखनेवाली तलवार से भी ज़्यादा धारदार है।[12] यह इंसान के बाहरी रूप* को उसके अंदर के इंसान* से अलग करता है और हड्डियों# को गूदे तक आर-पार चीरकर अलग कर देता है और दिल के विचारों और इरादों को जाँच सकता है। **13** सृष्टि में ऐसी एक भी चीज़ नहीं जो परमेश्वर की नज़र से छिपी हो[1] बल्कि हमें जिसको हिसाब देना है उसकी आँखों के सामने सारी चीज़ें खुली और बेपरदा हैं।[2]

14 इसलिए जब हमारा ऐसा महान महायाजक है यानी परमेश्वर का बेटा यीशु जो स्वर्ग में दाखिल हुआ है,[3] तो आओ हम उसके बारे में सरेआम ऐलान करते रहें।[4] **15** क्योंकि हमारा महायाजक ऐसा नहीं जो हमारी कमज़ोरियों में हमसे हमदर्दी न रख सके।[5] मगर वह ऐसा है जो हमारी तरह सब बातों में परखा गया, फिर भी वह निष्पाप निकला।[6] **16** इसलिए आओ हम परमेश्वर की महा-कृपा की राजगद्दी के सामने बेझिझक बोलने की हिम्मत के साथ जाएँ[7] ताकि हम सही वक्त पर मदद पाने के लिए उसकी दया और महा-कृपा पा सकें।

5 हरेक महायाजक इंसानों में से लिया जाता है और उसे इंसानों की खातिर परमेश्वर की सेवा में ठहराया जाता है[8] ताकि वह भेंट और पापों के प्रायश्चित के लिए बलिदान चढ़ाया करे।[9] **2** वह उन लोगों के साथ करुणा से* पेश आने के काबिल होता है जो अनजाने में गलतियाँ करते हैं,# क्योंकि वह खुद भी अपनी कमज़ोरियों का सामना करता है।△ **3** इसलिए उसे अपने पापों के लिए भी चढ़ावा चढ़ाना

4:12 *शब्दावली में “जीवन” देखें।

4:12 *शब्दावली में “रुआख; नफ्मा” देखें। #शा., “जोड़ों।” **5:2** *या “नरमी से; संयम बरतते हुए।” #या “जो भटक गए हैं।” △या “उसमें भी कमज़ोरियाँ हैं।”

अध्य. 4
1 भज 95:11, इब्र 3:11
2 निर्ग 31:17
3 उत 2:2, 3
4 भज 95:11
5 गि 14:30, व्य 31:27
6 भज 95:7, 8
7 निर्ग 24:13, व्य 1:38
8 मर 2:28
9 उत 2:2, 3
10 भज 95:11
11 यिर्म 23:29, 1थि 2:13
12 इफ 6:17

दूसरा कॉल.
1 भज 7:9, भज 90:8, नीत 15:11
2 प्रेष 17:31, रोम 2:16, रोम 14:12
3 मर 1:11
4 इब्र 10:23
5 यश 53:4, इब्र 2:17
6 इब्र 7:26, 1पत 2:22
7 इफ 3:11, 12, इब्र 10:19-22

अध्य. 5
8 निर्ग 40:13
9 लैव 5:6

होता है, ठीक जैसे वह दूसरों के पापों के
लिए चढ़ाता है।[1]
4 एक आदमी आदर का यह पद
अपने आप नहीं ले लेता, मगर यह उसे
तभी मिलता है जब परमेश्वर उसे ठह-
राता है, जैसे उसने हारून को ठहराया
था।[2] 5 उसी तरह, मसीह ने भी खुद
महायाजक का पद लेकर अपनी महिमा
नहीं की,[3] बल्कि परमेश्वर ने उसे यह
महिमा दी जिसने उससे कहा, “तू मेरा
बेटा है, आज मैं तेरा पिता बना हूँ।”[4]
6 उसने एक और जगह यह भी कहा,
“तू मेल्कीसेदेक जैसा याजक है और तू
हमेशा-हमेशा के लिए याजक रहेगा।”[5]
7 जब मसीह इस धरती पर ज़िंदा
था, तो उसने ऊँची आवाज़ में पुकार-
पुकारकर और आँसू बहा-बहाकर पर-
मेश्वर से मिन्नतें और बिनतियाँ की थीं[6]
जो उसे मौत से बचा सकता था। और
उसकी सुनी गयी क्योंकि वह परमेश्वर
का डर मानता था। 8 परमेश्वर का
बेटा होते हुए भी उसने कई दुख सहकर
आज्ञा माननी सीखी।[7] 9 और परि-
पूर्ण किए जाने* के बाद,[8] उसे यह
ज़िम्मेदारी दी गयी कि वह उन सबको
हमेशा का उद्धार दिलाए जो उसकी आज्ञा
मानते हैं,[9] 10 क्योंकि उसे परमेश्वर
ने महायाजक ठहराया ताकि वह मेल्की-
सेदेक जैसा याजक हो।[10]
11 हमारे पास उसके बारे में कहने के
लिए बहुत कुछ है मगर तुम्हें यह सब सम-
झाना मुश्किल है, क्योंकि तुम ऊँचा सुनने
लगे हो। 12 अब तक* तो तुम्हें दूसरों
को सिखाने के काबिल बन जाना चाहिए
था, मगर अब यह ज़रूरी हो गया है कि
कोई तुम्हें परमेश्वर के पवित्र वचनों की
बुनियादी बातें शुरूआत से सिखाए[1] और
तुम्हें फिर से दूध की ज़रूरत है न कि
ठोस आहार की। 13 हर कोई जो दूध
ही पीता रहता है वह सच्चाई के वचन से
अनजान है, क्योंकि वह अभी तक बच्चा
है।[2] 14 मगर ठोस आहार तो बड़ों के
लिए है, जो अपनी सोचने-समझने की
शक्ति* का इस्तेमाल करते-करते, सही-
गलत में फर्क करने के लिए इसे प्रशिक्षित
कर लेते हैं।

6 जब हम मसीह के बारे में बुनियादी
शिक्षाओं से आगे बढ़ चुके हैं,[3] तो
आओ हम पूरा ज़ोर लगाकर प्रौढ़ता के
लक्ष्य की तरफ बढ़ते जाएँ।[4] हम फिर
से बुनियाद न डालें यानी हम दोबारा वही
बातें न सीखते रहें जिनसे हमने शुरूआत
की थी। जैसे बेकार के कामों* से फिरकर
पश्चाताप करना, परमेश्वर पर विश्वास
करना, 2 बपतिस्मों की शिक्षा, हाथ
रखने,[5] मरे हुओं के ज़िंदा होने[6] और
हमेशा के न्याय की शिक्षा। 3 और
अगर परमेश्वर इजाज़त दे तो हम ज़रूर
प्रौढ़ता के लक्ष्य तक बढ़ते जाएँगे।
4 जो लोग एक बार ज्ञान की रौशनी
पा चुके हैं[7] और जिन्होंने स्वर्ग से
मिलनेवाले मुफ्त वरदान का स्वाद चखा
है और जो पवित्र शक्ति के भागी-
दार बन चुके हैं 5 और जिन्होंने पर-
मेश्वर के बढ़िया वचन का और आने-
वाले ज़माने* की शक्तिशाली चीज़ों का
स्वाद लिया है 6 मगर अब गिर गए
हैं और दूर जा चुके हैं,[8] उन्हें पश्चा-
ताप करने के लिए वापस लाना नामुम-
किन है। क्योंकि वे खुद परमेश्वर के बेटे
को एक बार फिर काठ पर ठोंक देते हैं

5:9 *या “पूरी तरह योग्य बनने।” 5:12 *शा., “वक्त के हिसाब से।”

5:14 *या “पैनी समझ।” 6:1 *शा., “मरे हुए कामों।” 6:5 *या “दुनिया की व्यवस्था।” शब्दावली देखें।

अध्य. 5
1 लैव 9:7, लैव 16:6
2 निर्ग 28:1
3 यूह 8:54
4 भज 2:7, प्रेष 13:33
5 भज 110:4
6 लूक 22:44, यूह 12:27
7 मत 26:39, फिल 2:8
8 इब्र 7:28
9 यूह 3:16
10 भज 110:4

दूसरा कॉल.
1 इब्र 6:1
2 इफ 4:14

अध्य. 6
3 इब्र 5:12
4 1कुर 14:20, इफ 4:13, इब्र 5:14
5 प्रेष 8:17
6 मत 22:31, यूह 5:28, 29, यूह 11:25
7 इफ 1:18, इब्र 10:26
8 1यूह 2:19

और सबके सामने उसे शर्मिंदा करते हैं।[1]
7 जब परमेश्वर की आशीष से ज़मीन
पर बार-बार बारिश होती है तो वह पानी
को सोख लेती है और साग-सब्ज़ी उप-
जाती है जिससे जोतनेवालों को फायदा
होता है। 8 लेकिन अगर वह काँटे और
कँटीली झाड़ियाँ उगाए, तो उसे बेकार
छोड़ दिया जाता है और उसे बहुत जल्द
शाप दिया जाएगा और आखिर में जला
दिया जाएगा।

9 हालाँकि हम इस तरह बात कर रहे
हैं लेकिन प्यारे भाइयो, हमें यकीन है कि
तुम बेहतर हालत में हो यानी ऐसी राह
पर हो जिससे तुम उद्धार पा सकते हो।
10 क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं कि
तुम्हारे काम और उस प्यार को भूल जाए
जो तुम्हें उसके नाम के लिए है,[2] यानी कैसे
तुमने पवित्र जनों की सेवा की है और अब
भी कर रहे हो। 11 मगर हम चाहते हैं
कि तुममें से हर कोई इसी तरह मेहनत
करता रहे ताकि आखिर तक तुम्हें अपनी
आशा के पूरा होने का पक्का भरोसा रहे[3]
12 जिससे कि तुम आलसी न हो जाओ,[4]
मगर उन लोगों की मिसाल पर चलो जो
विश्वास और सब्र रखने की वजह से वादों
के वारिस बनते हैं।

13 जब परमेश्वर ने अब्राहम से वादा
किया तो उसने खुद अपनी शपथ खायी,
क्योंकि परमेश्वर से बड़ा कोई नहीं
जिसकी वह शपथ खाता। उसने अपनी
शपथ खाकर[5] 14 कहा, “मैं तुझे ज़रूर
आशीष दूँगा और तुझे कई गुना बढ़ाऊँ-
गा।”[6] 15 इस तरह जब अब्राहम ने
सब्र रखा, तो उससे वादा किया गया।
16 इंसान अपने से किसी बड़े की शपथ
खाते हैं और उनकी शपथ हर विवाद
का अंत होती है, क्योंकि शपथ इस
बात को पुख्ता करती है कि उनका वादा
सच्चा है।*[1] 17 उसी तरह जब पर-
मेश्वर ने फैसला किया कि वह वादे
के वारिसों पर साफ ज़ाहिर करेगा[2]
कि उसका मकसद* नहीं बदल सकता,
तो उसने शपथ खाकर अपने वादे को
पुख्ता किया# 18 ताकि इन दो अटल
बातों के ज़रिए जिनके बारे में पर-
मेश्वर का झूठ बोलना नामुमकिन है[3] हमें
यानी हम जो भागकर परमेश्वर की शरण
में आए हैं, ऐसा ज़बरदस्त हौसला मिले
कि हम उस आशा पर पकड़ हासिल कर
सकें जो हमारे सामने रखी है। 19 यह
आशा[4] हमारी ज़िंदगी के लिए एक लंगर
है, जो पक्की और मज़बूत है। और यह
आशा हमें परदे के उस पार ले जाती है,[5]
20 जहाँ हमारा अगुवा यीशु हमारी
खातिर दाखिल हो चुका है।[6] वह हमेशा
के लिए एक महायाजक बना ताकि वह
मेल्कीसेदेक जैसा याजक हो।[7]

7 यह मेल्कीसेदेक जो शालेम का
राजा और परम-प्रधान परमेश्वर
का याजक था, अब्राहम से उस वक्त
मिला जब वह राजाओं को मारकर लौट
रहा था और उसने अब्राहम को आशीर्वाद
दिया।[8] 2 और अब्राहम ने उसे सब
चीज़ों का दसवाँ हिस्सा दिया। यह मेल्की-
सेदेक अपने नाम के मतलब के मुताबिक
पहले तो “नेकी का राजा” है। और वह
शालेम का राजा भी है यानी “शांति का
राजा।” 3 उसका न तो कोई पिता, न
कोई माँ, न ही कोई वंशावली है। उसके
दिनों की न तो कोई शुरूआत है, न ही
उसके जीवन का अंत बल्कि उसे पर-
मेश्वर के बेटे जैसा ठहराया गया है।

अध्य. 6
1 इब्र 10:29
2 इब्र 10:32, 33
3 इब्र 3:14; 1पत 1:3, 4
4 रोम 12:11; प्रक 2:4
5 उत 22:16
6 उत 22:17

दूसरा कॉल.
1 उत 31:53
2 गल 3:29
3 गि 23:19; तीत 1:2
4 1पत 1:3, 4
5 लैव 16:2, 12; इब्र 9:7; इब्र 10:19, 20
6 इब्र 4:14
7 भज 110:4; इब्र 5:6

अध्य. 7
8 उत 14:17-20

6:16 *या “शपथ उनके लिए एक कानूनी गारंटी है।” **6:17** *या “मरज़ी।” #या “शपथ खाकर गारंटी दी।” शा., “बिचवई का काम किया।”

इसलिए वह सदा के लिए एक याजक
बना रहता है।[1]
4 ज़रा सोचो कि यह आदमी कितना
महान था जिसे परिवार के मुखिया*
अब्राहम ने लूट की सबसे बढ़िया चीज़ों
का दसवाँ हिस्सा दिया।[2] 5 सच है कि
कानून के मुताबिक लेवी के बेटों[3] में से
जिन्हें याजकपद मिलता है, उन्हें आज्ञा
दी गयी है कि वे लोगों से यानी अपने
भाइयों से दसवाँ हिस्सा इकट्ठा करें,[4]
इसके बावजूद कि उनके भाई अब्राहम के
ही वंशज हैं। 6 मगर मेल्कीसेदेक ने,
जो लेवी के खानदान का नहीं था, अब्रा-
हम से दसवाँ हिस्सा लिया जिससे वादे
किए गए थे और उसे आशीर्वाद दिया।[5]
7 अब इस बात को कोई नकार नहीं
सकता कि छोटा, बड़े से आशीर्वाद पाता
है। 8 पहले मामले में यानी लेवियों के
मामले में, दसवाँ हिस्सा पानेवाले ऐसे
इंसान हैं जो मर जाते हैं। मगर इस
दूसरे के मामले में यह गवाही दी गयी है
कि वह ज़िंदा है।[6] 9 और यह कहा जा
सकता है कि लेवी ने भी, जो लोगों से
दसवाँ हिस्सा पाता है, अब्राहम के ज़रिए
खुद उस आदमी को दसवाँ हिस्सा दिया,
10 क्योंकि जब मेल्कीसेदेक अब्राहम से
मिला था तब लेवी अपने पुरखे अब्राहम
के शरीर में ही था।*[7]

11 तो फिर अगर लेवियों के याजक-
पद के ज़रिए वाकई परिपूर्णता हासिल की
जाती,[8] (जो कानून लोगों को दिया गया
था उसका एक पहलू याजकपद था) तो
क्या ज़रूरत थी कि एक और याजक ठह-
राया जाए जिसके बारे में कहा गया
है कि वह मेल्कीसेदेक जैसा याजक
हो[9] न कि हारून जैसा? 12 इसलिए
जब याजकपद बदला जा रहा है तो
कानून को भी बदलना ज़रूरी हो जाता
है।[1] 13 क्योंकि जिस आदमी के बारे
में ये बातें कही गयी हैं वह दूसरे गोत्र
का है, जिसका कोई भी आदमी कभी-
भी वेदी पर सेवा के लिए नहीं चुना गया
था।[2] 14 अब यह तो बिलकुल साफ है
कि हमारा प्रभु यहूदा गोत्र से निकला था[3]
जबकि मूसा ने कभी नहीं कहा था कि उस
गोत्र में से याजक आएँगे।

15 यह बात और भी साफ हो गयी
है क्योंकि अब हमारे लिए एक और
याजक[4] आ चुका है जो मेल्कीसेदेक जैसा
याजक है।[5] 16 वह इसलिए याजक
नहीं बना कि वह उस गोत्र से है जिसके
वंशज कानून की माँग के मुताबिक याजक
बन सकते थे, बल्कि वह उस शक्ति से
याजक बना जो उसे अविनाशी जीवन
देती है।[6] 17 क्योंकि उसके बारे में यह
गवाही दी गयी थी, "तू मेल्कीसेदेक जैसा
याजक है और तू हमेशा-हमेशा के लिए
याजक रहेगा।"[7]

18 तो फिर पिछला कानून इसलिए
रद्द कर दिया गया क्योंकि वह कमज़ोर
था और फायदे का नहीं था।[8] 19 उस
कानून ने कुछ भी परिपूर्ण नहीं किया[9]
मगर जब उससे भी बेहतर आशा[10] दी
गयी तो उससे परिपूर्ण होना मुम-
किन हुआ और उसके ज़रिए हम पर-
मेश्वर के करीब आ रहे हैं।[11] 20 और
यह आशा शपथ के साथ दी गयी थी।
21 (क्योंकि ऐसे आदमी भी हैं जो बिना
शपथ के याजक बने हैं, मगर यह
याजक ऐसा है जिसे परमेश्वर ने शपथ
के साथ याजक ठहराया और उसके
बारे में कहा, "यहोवा* ने शपथ खायी
है और जो उसने सोचा है उसे नहीं

7:4 *या "कुलपिता।" **7:10** *या "वह भविष्य में अब्राहम का एक वंशज होता।"

7:21 *अति. क5 देखें।

अध्य. 7
1 भज 110:4
2 उत 14:20
3 निर्ग 40:12, 15
4 गि 18:21, 26; व्य 14:28
5 उत 12:7; उत 14:18-20; उत 17:6; उत 22:17
6 इब्र 7:3
7 उत 14:18
8 रोम 3:20; इब्र 7:19; इब्र 9:9; इब्र 10:1
9 भज 110:4

दूसरा कॉल.
1 रोम 3:27; 1कुर 9:21; गल 6:2; कुल 2:13, 14
2 गि 18:6, 7
3 उत 49:10; मत 1:1, 3; लूक 3:23, 33
4 इब्र 3:1; इब्र 7:26
5 भज 110:4
6 रोम 6:9; 1ती 6:16
7 भज 110:4
8 रोम 8:3; इब्र 9:9; इब्र 13:9
9 प्रेष 13:38, 39; गल 2:15, 16; इब्र 10:1
10 1पत 1:3, 4
11 यूह 14:6; इब्र 4:16

बदलेगा,* 'तू हमेशा-हमेशा के लिए
याजक रहेगा।'")[1] 22 उसी के मुता-
बिक यीशु एक बेहतर करार का
ज़ामिन* ठहरा है।[2] 23 इसके अलावा,
पहले एक-के-बाद-एक कइयों को याजक
बनना होता था[3] क्योंकि मौत उन्हें याजक
के पद पर नहीं रहने देती थी। 24 मगर
यह याजक हमेशा तक ज़िंदा रहता है[4]
इसलिए उसका याजकपद भी हमेशा तक
बना रहता है और उसकी जगह कोई और
नहीं लेता। 25 इसलिए जो उसके ज़रिए
परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरी
तरह उद्धार करने के काबिल है। क्योंकि
वह उनकी खातिर परमेश्वर से बिनती
करने के लिए हमेशा ज़िंदा रहता है।[5]

26 हमारे लिए ऐसे ही महायाजक
की ज़रूरत है जो वफादार, निर्दोष और
बेदाग हो,[6] पापियों जैसा न हो और जिसे
आकाश से भी ऊँचा किया गया हो।[7]
27 उसे उन महायाजकों की तरह हर
दिन बलिदान चढ़ाने की ज़रूरत नहीं,[8]
जो पहले अपने पापों के लिए और फिर
लोगों के पापों के लिए बलिदान चढ़ाते
हैं।[9] क्योंकि उसने एक ही बार और
हमेशा-हमेशा के लिए खुद का बलिदान
चढ़ा दिया।[10] 28 कानून के मुताबिक
ऐसे आदमियों को महायाजक ठहराया
जाता है जिनमें कमज़ोरियाँ होती हैं।[11]
मगर कानून के बाद, जो वादा शपथ
खाकर किया गया था[12] उसके मुताबिक
एक बेटे को महायाजक ठहराया गया है
जिसे हमेशा-हमेशा के लिए परिपूर्ण किया
गया है।[13]

8 हमारी बात का खास मुद्दा यह है:
हमारा महायाजक ऐसा है[14] और वह
स्वर्ग में महामहिम की राजगद्दी के दाएँ
हाथ जा बैठा है।[1] 2 वह पवित्र जगह
का और सच्चे तंबू का सेवक* बना[2]
जिसे किसी इंसान ने नहीं बल्कि यहोवा#
ने खड़ा किया है। 3 हर महायाजक को
भेंट और बलिदान चढ़ाने के लिए ठह-
राया जाता है। इसलिए यह ज़रूरी था
कि इस महायाजक के पास भी चढ़ाने के
लिए कुछ हो।[3] 4 अगर वह धरती पर
होता तो वह याजक न होता।[4] क्योंकि
यहाँ पहले से ही याजक हैं जो कानून के
मुताबिक भेंट चढ़ाया करते हैं। 5 वे जो
पवित्र सेवा करते हैं, वह स्वर्ग की चीज़ों[5]
का बस एक नमूना और उनकी छाया है,[6]
ठीक जैसे मूसा को उस वक्त बताया गया
था जब वह तंबू को तैयार करनेवाला था।
परमेश्वर ने उसे यह आज्ञा दी थी: "ध्यान
रखना कि ये सारी चीज़ें ठीक उसी नमूने
के मुताबिक बनायी जाएँ जो तुझे इस
पहाड़ पर दिखाया गया है।"[7] 6 मगर
अब यीशु को इससे भी बेहतरीन सेवा*
के लिए ठहराया गया है क्योंकि वह
ऐसे करार का बिचवई भी है[8] जो पहले
करार से श्रेष्ठ है[9] और जो बेहतर वादों
के आधार पर कानूनी माँगों के मुताबिक
किया गया है।[10]

7 अगर पहले करार में कोई दोष न
होता, तो दूसरे करार की ज़रूरत ही नहीं
होती।[11] 8 क्योंकि परमेश्वर लोगों को
यह कहकर दोषी ठहराता है, "यहोवा#
कहता है, 'देख! वे दिन आ रहे हैं
जब मैं इसराएल के घराने और यहूदा के
घराने के साथ एक नया करार करूँगा।
9 वह उस करार जैसा नहीं होगा जो
मैंने उनके पुरखों के साथ उस दिन किया
था जब मैं उन्हें हाथ पकड़कर मिस्र से
निकाल लाया था।'[12] यहोवा# कहता है,

7:21 *या "उसे पछतावा महसूस नहीं होगा।" **7:22** *या "गारंटी देनेवाला।"

8:2 *या "जन-सेवक।" **8:2, 8, 9** #अति. क5 देखें। **8:6** *या "जन-सेवा।"

अध्य. 7

1 भज 110:4
2 यिर्म 31:31
मत 26:27, 28
1कुर 11:25
इब्र 8:6
इब्र 9:15
इब्र 12:22, 24
3 1इत 6:4
4 लूक 1:33
इब्र 7:15, 16
5 रोम 8:34
1ती 2:5
इब्र 9:24
1यूह 2:1
6 यश 53:9
1पत 2:21, 22
7 इफ 1:20, 21
1पत 3:22
8 गि 28:3
9 लैव 9:8, 15
10 रोम 6:10
इब्र 9:28
इब्र 10:14
11 लैव 16:11
12 भज 2:7
भज 110:4
13 इब्र 2:10
इब्र 5:9

अध्य. 8

14 इब्र 3:1
इब्र 7:26

दूसरा कॉल.

1 भज 110:1
इब्र 1:3
2 इब्र 9:8, 24
3 इफ 5:2
4 इब्र 7:14
5 इब्र 9:9, 24
6 कुल 2:16, 17
इब्र 10:1
7 निर्ग 25:9, 40
निर्ग 26:30
गि 8:4
8 1ती 2:5
9 1कुर 11:25
इब्र 7:22
इब्र 9:15
इब्र 12:22, 24
10 भज 110:4
रोम 8:17
11 इब्र 7:11, 18
12 निर्ग 12:51

‘वे मेरे करार के वफादार नहीं रहे, इस-
लिए मैंने उनकी परवाह करना छोड़
दिया।’”
10 “यहोवा* कहता है, ‘उन दिनों के
बाद मैं इसराएल के घराने के साथ यही
करार करूँगा। मैं अपने कानून उनके
दिमाग में डालूँगा और उनके दिलों पर
लिखूँगा।[1] मैं उनका परमेश्वर होऊँगा
और वे मेरे लोग होंगे।[2]
11 इसके बाद फिर कभी कोई अपने
देश के लोगों को और अपने भाई को यह
कहकर नहीं सिखाएगा, “यहोवा* को
जान!” क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक,
सब मुझे जानेंगे। **12** मैं उन पर दया
करूँगा और उनके दुष्ट कामों और पापों
को फिर कभी याद नहीं करूँगा।’”[3]
13 इस तरह उसने “नए करार” की
बात कहकर पहले करार को रद्द कर
दिया है।[4] और जो रद्द कर दिया गया
है और पुराना होता जा रहा है, वह अब
मिटनेवाला है।[5]

9 उस पहले करार में पवित्र सेवा के
लिए कानूनी माँगें हुआ करती थीं
और धरती पर एक पवित्र जगह भी
थी।[6] **2** इस तंबू का जो पहला भाग
बनाया गया था और जिसमें दीवट,[7] मेज़
और चढ़ावे की रोटियाँ*[8] रखी गयी थीं,
वह पवित्र जगह[9] कहलाता है। **3** मगर
दूसरे परदे[10] के पीछे परम-पवित्र[11]
कहलानेवाला भाग था। **4** इस भाग में
सोने का एक धूपदान[12] और करार
का वह संदूक[13] था जो पूरा-का-पूरा सोने
से मढ़ा हुआ था।[14] संदूक के अंदर
सोने का वह मर्तबान था जिसमें मन्ना[15]
था और हारून की वह छड़ी थी जिसमें
कलियाँ निकल आयी थीं[16] और करार
की पटियाएँ[1] थीं। **5** इस संदूक के
ऊपर शानदार करूब बने थे, जो प्राय-
श्चित के ढकने* पर छाया किए हुए थे।[2]
मगर अभी इन सब चीज़ों का ब्यौरा नहीं
दिया जा सकता।
6 जब ये सारी चीज़ें इस तरह बना
दी गयीं, तो याजक पवित्र सेवा के
काम करने के लिए पहले भाग में निय-
मित तौर पर जाया करते थे।[3] **7** मगर
दूसरे भाग में सिर्फ महायाजक जाता
था और वह भी साल में सिर्फ एक
बार।[4] लेकिन वह उस खून के बिना
नहीं जाता था,[5] जो वह खुद अपने
पापों के लिए[6] और लोगों के अनजाने
में किए पापों के लिए चढ़ाता था।[7]
8 इस तरह पवित्र शक्ति साफ दिखाती
है कि पवित्र जगह* में जाने का रास्ता
तब तक नहीं खोला गया जब तक पहला
तंबू# खड़ा रहा।[8] **9** यह तंबू आज के
समय के लिए एक नमूना है[9] और इस
इंतज़ाम के मुताबिक भेंट और बलिदान
चढ़ाए जाते हैं।[10] मगर ये बलिदान और
भेंट पवित्र सेवा करनेवाले इंसान को पूरी
तरह से शुद्ध ज़मीर नहीं दे सकते।[11]
10 ये भेंट और बलिदान सिर्फ खान-
पान और शुद्धिकरण की अलग-अलग
विधियों* से जुड़े हैं।[12] ये शरीर के बारे
में कानूनी माँगें थीं[13] और ये तब तक
के लिए लागू होनी थीं, जब तक कि सब
बातों के सुधार का वक्त नहीं आ जाता।
11 लेकिन जब मसीह महायाजक
बनकर आया कि हमारे लिए वे बढ़िया
आशीषें लाए जो हमें मिल चुकी हैं, तो वह
ऐसे तंबू में दाखिल हुआ जो और भी श्रेष्ठ

अध्य. 8
1 रोम 2:29
2 2कुर 6:16
3 यिर्म 31:31-34
4 रोम 10:4
इब्र 7:12
5 कुल 2:13, 14

अध्य. 9
6 निर्ग 25:8
7 गि 4:9
8 निर्ग 40:22-24
9 निर्ग 26:33
10 निर्ग 36:35
11 निर्ग 26:31, 33
12 लैव 16:12
प्रक 8:3
13 निर्ग 40:21
14 निर्ग 25:10, 11
15 निर्ग 16:33
16 गि 17:10

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 32:15
2 निर्ग 25:18, 22
गि 7:89
3 लैव 24:3, 4
4 लैव 16:2
5 निर्ग 30:10
लैव 16:14
6 लैव 16:6, 11
7 लैव 16:15
8 इब्र 10:19, 20
9 कुल 2:16, 17
इब्र 8:5
इब्र 10:1
10 लैव 23:37, 38
11 गल 3:21
इब्र 7:11, 19
12 निर्ग 30:17-19
13 गि 19:13

8:10, 11 *अति. क5 देखें। **9:2** *या “नज़राने की रोटी।”

9:5 *या “प्रायश्चित की जगह।” **9:8** *ज़ाहिर है कि यह पवित्र जगह स्वर्ग में है। #वह तंबू जो धरती पर था। **9:10** *शा., “बपतिस्मों।”

और परिपूर्ण है। यह तंबू इंसान के हाथ का बनाया हुआ नहीं है यानी इस धरती की सृष्टि का हिस्सा नहीं है। **12** वह बकरों और बैलों का खून लेकर नहीं बल्कि खुद अपना खून लेकर, हमेशा-हमेशा के लिए एक ही बार पवित्र जगह में दाखिल हुआ[1] और हमें सदा के लिए छुटकारा दिलाया।*[2] **13** अगर बकरों और बैलों के खून से[3] और दूषित लोगों पर कलोर* की राख छिड़कने से उनका शरीर परमेश्वर की नज़र में शुद्ध ठहरता है,[4] **14** तो फिर मसीह का खून,[5] जिसने सदा तक कायम रहनेवाली पवित्र शक्ति के ज़रिए खुद को एक निर्दोष बलिदान के तौर पर परमेश्वर के सामने अर्पित किया, हमारे ज़मीर को बेकार के कामों* से और कितना ज़्यादा शुद्ध कर सकता है[6] ताकि हम जीवित परमेश्वर की पवित्र सेवा कर सकें![7]

15 इसी वजह से वह एक नए करार का बिचवई है[8] ताकि जो बुलाए गए हैं वे सदा तक कायम रहनेवाली विरासत का वादा पा सकें।[9] यह सब उसकी मौत की वजह से मुमकिन हुआ है, जो फिरौती देकर उन्हें उन पापों से छुटकारा दिलाती है[10] जो उन्होंने पहले करार के अधीन रहते वक्त किए थे। **16** जब कोई करार किया जाता है, तो करार करनेवाले इंसान की मौत होना ज़रूरी है। **17** क्योंकि एक करार तब जाकर ही लागू होता है जब करार करनेवाले की मौत होती है। जब तक वह इंसान ज़िंदा है तब तक वह करार लागू नहीं हो सकता। **18** इसी वजह से पहला करार भी खून के आधार पर ही पक्का किया गया था। **19** जब मूसा ने सब लोगों के सामने कानून की हर आज्ञा पढ़कर सुनायी, तो उसने बैलों और बकरों के खून के साथ पानी लिया और सुर्ख लाल ऊन और मरुए से करार की किताब* पर और सब लोगों पर छिड़का **20** और कहा, "यह खून उस करार को पक्का करता है जिसे मानने की आज्ञा परमेश्वर ने तुम सबको दी है।"[1] **21** उसने तंबू और पवित्र सेवा* में इस्तेमाल होनेवाले सभी बरतनों पर भी इसी तरह खून छिड़का।[2] **22** हाँ, कानून के मुताबिक करीब-करीब सारी चीज़ें खून से शुद्ध की जाती हैं।[3] और जब तक खून नहीं बहाया जाता तब तक हरगिज़ माफी नहीं मिलती।[4]

23 इसलिए यह ज़रूरी था कि स्वर्ग की चीज़ों के ये नमूने[5] जानवरों के खून से शुद्ध किए जाएँ,[6] मगर स्वर्ग की चीज़ें ऐसे बलिदानों से शुद्ध की जाएँ जो जानवरों के बलिदानों से कहीं बढ़कर हों। **24** क्योंकि मसीह, इंसान के हाथ की बनायी किसी पवित्र जगह में दाखिल नहीं हुआ[7] जो असल की बस एक नकल है,[8] बल्कि वह स्वर्ग ही में दाखिल हुआ[9] इसलिए अब वह हमारी खातिर परमेश्वर के सामने* हाज़िर है।[10] **25** मसीह बार-बार अपना बलिदान नहीं चढ़ाएगा, जैसे महायाजक साल-दर-साल जानवरों का खून लेकर पवित्र जगह में दाखिल होता था।[11] **26** अगर मसीह को बार-बार अपना बलिदान चढ़ाना होता, तो उसे दुनिया की शुरूआत से कितनी ही बार दुख उठाना पड़ता। मगर अब उसने दुनिया की व्यवस्थाओं* के आखिरी वक्त में एक ही बार हमेशा के लिए

अध्य. 9
1 इब्र 12:24, इब्र 13:20
2 दान 9:24, मत 20:28, 1ती 2:5, 6
3 लैव 16:6, 15
4 गि 19:9, 17, 19
5 1पत 1:18, 19
6 1यूह 1:7
7 रोम 12:1
8 लूक 22:20, 1ती 2:5, इब्र 12:22, 24
9 रोम 8:17
10 मत 20:28

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 24:6-8
2 निर्ग 29:12, लैव 8:15
3 लैव 17:11
4 लैव 9:7-9
5 इब्र 8:5, इब्र 9:9
6 लैव 16:19, 20
7 इब्र 8:1, 2
8 कुल 2:16, 17
9 इब्र 6:19, 20, इब्र 9:12
10 लैव 16:15, रोम 8:34
11 लैव 16:2, 34

9:12 *शा., "फिरौती देकर छुड़ाया।" **9:13** *या "गाय।" **9:14** *शा., "मरे हुए कामों।"

9:19 *या "के खर्रे।" **9:21** *या "जन-सेवा।" **9:24** *शा., "के मुख के सामने।" **9:26** *या "ज़मानों।" शब्दावली देखें।

खुद को ज़ाहिर किया है ताकि अपना
बलिदान देकर पाप मिटा दे।[1] 27 और
जैसा इंसानों के लिए एक बार मरना तय
है, मगर इसके बाद उनका न्याय होगा।
28 उसी तरह, मसीह भी बहुतों का पाप
उठाने के लिए एक ही बार हमेशा के
लिए बलिदान किया गया।[2] और जब वह
दूसरी बार आएगा, तो पाप मिटाने* के
लिए नहीं आएगा और उसे वे लोग देखेंगे
जो उद्धार पाने के लिए बड़ी बेताबी से
उसका इंतज़ार कर रहे हैं।[3]

10 कानून आनेवाली अच्छी बातों
की बस एक छाया है,[4] मगर
असलियत नहीं। यह* साल-दर-साल
चढ़ाए जानेवाले एक ही तरह के बलि-
दानों से परमेश्वर की उपासना करनेवालों
को कभी परिपूर्ण नहीं बना सकता।[5]
2 अगर ऐसा होता तो क्या बलिदान
चढ़ाना बंद नहीं हो जाता? क्योंकि बलि-
दान लानेवाले* जब एक बार शुद्ध
हो जाते, तो उन्हें फिर कभी पापी होने का
एहसास नहीं रहता। 3 इसके बजाय,
इन बलिदानों से लोगों को साल-दर-
साल उनके पाप याद दिलाए जाते हैं[6]
4 क्योंकि यह मुमकिन नहीं कि बैलों और
बकरों का खून पापों को मिटा सके।

5 इसलिए जब मसीह दुनिया में आया
तो उसने कहा, "'तूने बलिदान और
चढ़ावा नहीं चाहा, मगर तूने मेरे लिए
एक शरीर तैयार किया। 6 तूने न होम-
बलियों को मंज़ूर किया न पाप-बलियों
को।'[7] 7 तब मैंने कहा, 'हे परमेश्वर,
देख! मैं तेरी मरज़ी पूरी करने आया हूँ
(ठीक जैसे खर्रे में* मेरे बारे में लिखा
है)।'"[1] 8 पहले वह कहता है, "तूने
बलिदान और चढ़ावे और होम-बलियाँ
और पाप-बलियाँ नहीं चाहीं"—जो
कानून के मुताबिक चढ़ायी जाती हैं—
9 फिर वह कहता है, "देख! मैं तेरी
मरज़ी पूरी करने आया हूँ।"[2] वह पहले
इंतज़ाम को खत्म कर देता है ताकि दूसरा
इंतज़ाम शुरू करे। 10 जिस "मरज़ी"[3]
के बारे में उसने कहा, उसी के मुताबिक
हमें पवित्र किया गया क्योंकि यीशु मसीह
ने एक ही बार हमेशा के लिए अपना
शरीर बलि कर दिया।[4]

11 इसके अलावा, हर याजक पवित्र
सेवा* के लिए हर दिन अपनी जगह पर
खड़ा होता है[5] और बार-बार वही बलि-
दान चढ़ाता है,[6] जो कभी-भी पापों को
पूरी तरह नहीं मिटा सकते।[7] 12 मगर
इस इंसान ने पापों के लिए एक ही
बलिदान हमेशा के लिए चढ़ा दिया
और परमेश्वर के दाएँ हाथ जा बैठा।[8]
13 तब से वह उस वक्त का इंतज़ार
कर रहा है जब उसके दुश्मनों को उसके
पाँवों की चौकी बना दिया जाएगा।[9]
14 उसने एक ही बलिदान चढ़ाकर उन
लोगों को हमेशा के लिए परिपूर्ण कर
दिया है जो पवित्र किए जा रहे हैं।[10]
15 और परमेश्वर की पवित्र शक्ति
भी हमें इस बात के सच होने की गवाही
देती है, क्योंकि यह पहले कहती है,
16 "यहोवा* कहता है, 'उन दिनों के
बाद मैं उनके साथ यही करार करूँगा। मैं
अपने कानून उनके दिलों में डालूँगा
और उनके दिमाग पर लिखूँगा।'"[11]
17 फिर वह कहती है, "मैं उनके पापों
और दुष्ट कामों को फिर कभी याद नहीं
करूँगा।"[12] 18 जिन पापों की माफी

9:28 *या "पाप से निपटने।" **10:1** *या शायद, "ये आदमी।" **10:2** *शा., "पवित्र सेवा करनेवाले।" **10:7** *शा., "किताब के खर्रे में।"

10:11 *या "जन-सेवा।" **10:16** *अति. क5 देखें।

अध्य. 9
1 दान 9:24; इब्र 7:27; 1पत 3:18
2 यश 53:12; रोम 6:10; 1पत 2:24
3 2ती 4:8; तीत 2:13

अध्य. 10
4 कुल 2:16, 17; इब्र 8:5
5 इब्र 7:19; इब्र 9:9
6 लैव 16:34
7 भज 40:6

दूसरा कॉल.
1 भज 40:8
2 भज 40:6-8
3 गल 1:4
4 इब्र 13:12
5 1शम 2:27, 28
6 निर्ग 29:38; गि 28:3
7 इब्र 7:18; इब्र 10:1
8 रोम 8:34
9 भज 110:1; 1कुर 15:25
10 इब्र 7:19
11 यिर्म 31:33; इब्र 8:10
12 यिर्म 31:34; इब्र 8:12

मिल गयी है, उनके लिए दोबारा बलिदान
चढ़ाने की ज़रूरत नहीं।

19 तो भाइयो, हमें यीशु के खून के
ज़रिए उस राह पर चलने की हिम्मत
मिली* है जो पवित्र जगह ले जाती
है।[1] **20** उसने यह नयी और जीवित
राह खोली* है जो परदे को पार करके
जाती है[2] और यह परदा उसका शरीर है।
21 और हमारे पास ऐसा महान याजक
है जो परमेश्वर के घराने का अधि-
कारी है।[3] **22** तो आओ हम सच्चे दिल
से और पूरे विश्वास से परमेश्वर के
पास जाएँ। क्योंकि हमारे दिलों पर छिड़-
काव करके हमारे दुष्ट ज़मीर को शुद्ध
किया गया है[4] और हमारे शरीर को शुद्ध
पानी से नहलाया गया है।[5] **23** आओ
हम बिना डगमगाए अपनी आशा का सब
लोगों के सामने ऐलान करते रहें,[6]
क्योंकि जिसने वादा किया है वह
विश्वासयोग्य है। **24** और आओ हम
एक-दूसरे में गहरी दिलचस्पी लें* ताकि
एक-दूसरे को प्यार और भले काम करने
का बढ़ावा दे सकें#[7] **25** और एक-
दूसरे के साथ इकट्ठा होना* न छोड़ें,[8]
जैसा कुछ लोगों का दस्तूर है बल्कि एक-
दूसरे की हिम्मत बँधाएँ।[9] और जैसे-जैसे
तुम उस दिन को नज़दीक आता देखो, यह
और भी ज़्यादा किया करो।[10]

26 एक बार सच्चाई का सही ज्ञान
पाने के बाद अगर हम जानबूझकर पाप
करते रहें,[11] तो हमारे पापों के लिए कोई
बलिदान बाकी नहीं रहता।[12] **27** मगर
सिर्फ भयानक सज़ा और क्रोध की ज्वाला
बाकी रह जाती है जो विरोधियों को
भस्म कर देगी।[1] **28** जो इंसान कानून
तोड़ता है उसे दो या तीन गवाहों के
बयान पर मार डाला जाता है और उस
पर दया नहीं की जाती।[2] **29** तो सोचो
कि वह इंसान और भी कितनी बड़ी
सज़ा के लायक समझा जाएगा, जो पर-
मेश्वर के बेटे को पैरों तले रौंदता है और
करार के उस खून को मामूली समझता
है[3] जिसके ज़रिए उसे पवित्र किया गया
था और जिसने पवित्र शक्ति के ज़रिए
की गयी महा-कृपा का घोर अपमान
किया है।[4] **30** क्योंकि हम परमेश्वर
को जानते हैं जिसने कहा है, "बदला लेना
मेरा काम है, मैं ही बदला चुकाऊँगा।"
और यह भी लिखा है, "यहोवा* अपने
लोगों का न्याय करेगा।"[5] **31** जीवित
परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक
बात है।

32 मगर तुम उन बीते दिनों को
याद करते रहो जब तुमने ज्ञान की
रौशनी पाने के बाद[6] कड़ा संघर्ष करते
हुए मुश्किलें सही थीं और धीरज धरा
था। **33** कभी सरेआम तुम्हारा मज़ाक
उड़ाया गया* और तुम्हें सताया गया,
तो कभी तुम यह सब सहनेवालों के
साथ उनके दुखों में भागीदार बने।#
34 तुमने उन लोगों के साथ हमदर्दी
जतायी जो कैद में थे। और जब तुम्हारी
चीज़ें लूटी गयीं तो तुमने खुशी से यह सह
लिया[7] क्योंकि तुम जानते थे कि तुम्हारे
पास ऐसी संपत्ति है जो कहीं बेहतर है
और सदा कायम रहेगी।[8]

35 इसलिए हिम्मत के साथ बेझिझक
बोलना मत छोड़ो, क्योंकि तुम्हें इसका

अध्य. 10
1 इब्र 9:8, 24
2 मत 27:51
3 जक 6:13; इब्र 3:6
4 1यूह 1:7
5 इफ 5:25, 26
6 1कुर 15:58; कुल 1:23
7 कुल 3:23; 1ती 6:18
8 व्य 31:12; प्रेष 2:42
9 यश 35:3; रोम 1:11, 12
10 रोम 13:11; 2पत 3:11, 12
11 2पत 2:21
12 मत 12:32; इब्र 6:4-6; 1यूह 5:16

दूसरा कॉल.
1 यश 26:11
2 व्य 17:6
3 मत 26:27, 28; लूक 22:20
4 इब्र 6:4-6
5 व्य 32:35, 36
6 2कुर 4:6; इब्र 6:4
7 मत 5:12
8 लूक 16:9

10:19 *या "का भरोसा मिला।" **10:20** *शा., "का उद्‌घाटन किया।" **10:24** *या "का खयाल रखें; पर ध्यान दें।" #या "जोश बढ़ाएँ; उभारें।" **10:25** *यानी सभाओं में आना।

10:30 *अति. क5 देखें। **10:33** *शा., "मानो रंगशाला में तमाशा बनाया गया।" #या "साथ खड़े हुए।"

बड़ा इनाम दिया जाएगा।[1] 36 तुम्हें धीरज धरने की ज़रूरत है[2] ताकि परमेश्वर की मरज़ी पूरी करने के बाद तुम वह पा सको जिसका वादा परमेश्वर ने किया है। 37 बस अब “थोड़ा ही वक्त” बाकी रह गया है[3] और “जो आनेवाला है वह आएगा और देर नहीं करेगा।”[4] 38 “लेकिन मेरा नेक जन अपने विश्वास से ज़िंदा रहेगा”[5] और “अगर वह पीछे हट जाए तो मैं उससे खुश नहीं होऊँगा।”[6] 39 हम पीछे हटकर नाश होनेवालों में से नहीं,[7] बल्कि उनमें से हैं जो विश्वास रखते हैं ताकि अपना जीवन बचा सकें।

11 विश्वास, आशा की हुई बातों का पूरे भरोसे के साथ इंतज़ार करना है[8] और उन असलियतों का साफ सबूत* है, जो अभी दिखायी नहीं देतीं। 2 क्योंकि विश्वास की वजह से पुराने ज़माने के लोगों* ने अपने बारे में गवाही पायी कि परमेश्वर उनसे खुश है।

3 विश्वास ही से हम यह समझ पाते हैं कि परमेश्वर के वचन से दुनिया की व्यवस्थाएँ* ठहरायी गयीं, इसलिए जो दिखायी दे रहा है वह उन चीज़ों से आया है जो दिखायी नहीं देतीं।

4 विश्वास ही से हाबिल ने परमेश्वर को ऐसा बलिदान चढ़ाया जो कैन के बलिदान से श्रेष्ठ था।[9] और इसी विश्वास की वजह से उसे गवाही दी गयी कि वह नेक है क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेंट मंज़ूर की थी।[10] हालाँकि हाबिल मर चुका है मगर अपने विश्वास की वजह से वह आज भी बोलता है।[11]

5 विश्वास की वजह से ही हनोक[1] दूसरी जगह पहुँचा दिया गया ताकि वह मौत का मुँह न देखे। और वह कहीं नहीं पाया गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे दूसरी जगह पहुँचा दिया था।[2] मगर उसके जाने से पहले उसे यह गवाही दी गयी कि उसने परमेश्वर को खुश किया है। 6 विश्वास के बिना परमेश्वर को खुश करना नामुमकिन है, क्योंकि जो उसके पास आता है उसे यकीन करना होगा कि परमेश्वर सचमुच है* और वह उन लोगों को इनाम देता है जो पूरी लगन से उसकी खोज करते हैं।[3]

7 विश्वास ही से नूह[4] ने परमेश्वर का डर मानकर अपने परिवार को बचाने के लिए एक जहाज़ बनाया[5] क्योंकि परमेश्वर ने उसे उन चीज़ों के बारे में चेतावनी दी जो उस वक्त तक दिखायी नहीं दे रही थीं।[6] इसी विश्वास की वजह से उसने दुनिया को सज़ा के लायक ठहराया[7] और उसके विश्वास की वजह से ही उसे नेक समझा गया।

8 विश्वास ही से अब्राहम[8] ने बुलाए जाने पर आज्ञा मानी और उस जगह के लिए निकल पड़ा जो उसे विरासत में मिलनेवाली थी। वह नहीं जानता था कि वह कहाँ जा रहा है, फिर भी वह गया।[9] 9 विश्वास की वजह से वह वादा किए गए देश में ऐसे रहा जैसे एक पराए देश में रह रहा हो।[10] और वह इसहाक और याकूब के साथ तंबुओं में रहा[11] जो उसके साथ उसी वादे के वारिस थे।[12] 10 क्योंकि वह एक ऐसे शहर के इंतज़ार में था जो सच्ची बुनियाद पर खड़ा है, जिसका रचनेवाला* और बनानेवाला परमेश्वर है।[13]

11:1 *या “ठोस सबूत।” **11:2** *या “हमारे पुरखों।” **11:3** *या “ज़माने।” शब्दावली देखें।

11:6 *या “वजूद में है।” **11:10** *या “शिल्पकार।”

अध्य. 10
1 मत 10:32; 1कुर 15:58
2 लूक 21:19; याकू 5:11
3 यश 26:20
4 हब 2:3; 2पत 3:9
5 यूह 3:16; रोम 1:17
6 हब 2:4
7 2पत 2:20

अध्य. 11
8 इब्र 11:13
9 उत 4:5
10 उत 4:4
11 उत 4:8, 10

दूसरा कॉल.
1 उत 5:22; यहू 14
2 उत 5:24
3 भज 58:11; सप 2:3; मत 5:12; मत 6:33
4 उत 6:8, 9
5 उत 6:14
6 उत 6:13, 17
7 उत 6:22; 2पत 2:5
8 रोम 4:9, 11
9 उत 12:1, 4
10 उत 23:4
11 उत 12:8
12 उत 17:6; उत 26:3; उत 28:13
13 इब्र 11:16

11 विश्वास ही से सारा ने गर्भवती होने की शक्ति पायी, हालाँकि उसके बच्चे पैदा करने की उम्र बीत चुकी थी[1] क्योंकि उसने माना था कि जिस परमेश्वर ने वादा किया है वह विश्वासयोग्य* है। 12 इसलिए उस एक आदमी से जो मानो बेजान था,[2] आसमान के तारों और समुंदर किनारे की रेत के कणों जितनी अनगिनत संतान पैदा हुई।[3]

13 ये सभी लोग विश्वास रखते हुए मर गए, हालाँकि उन्होंने वह सब नहीं पाया जिसका उनसे वादा किया गया था।[4] फिर भी उन्होंने वादा की गयी बातों को दूर ही से देखा[5] और उनसे खुशी पायी। और सब लोगों के सामने ऐलान किया कि वे उस देश में अजनबी और मुसाफिर हैं। 14 क्योंकि जो इस तरह की बातें कहते हैं वे साबित करते हैं कि वे पूरी लगन से उस जगह की खोज में हैं जो उनकी अपनी होगी। 15 और अगर वे उस देश को याद करते रहते जिसे वे छोड़कर आए थे,[6] तो उनके पास वापस लौटने का मौका था। 16 मगर अब वे एक बढ़िया जगह पाने की कोशिश में आगे बढ़ रहे हैं, जिसका नाता स्वर्ग से है। इसलिए परमेश्वर खुद को उनका परमेश्वर कहने से शर्मिंदा नहीं होता[7] और उसने उनके लिए एक शहर तैयार किया है।[8]

17 विश्वास ही से अब्राहम ने, जब उसकी परीक्षा ली गयी थी,[9] इसहाक को मानो बलि चढ़ा ही दिया था। हाँ, जिसने खुशी-खुशी वादों को स्वीकार किया था, वह अपने इकलौते बेटे की बलि चढ़ाने को तैयार हो गया,[10] 18 हालाँकि उससे कहा गया था, "तुझसे जिस वंश* का वादा किया गया है वह इसहाक से आएगा।"[1] 19 उसे यकीन था कि परमेश्वर उसके बेटे को मरे हुओं में से भी ज़िंदा करने के काबिल है। और वाकई उसने अपने बेटे को मौत के मुँह से वापस पाया। यह आनेवाली बातों की एक मिसाल बना।[2]

20 विश्वास ही से इसहाक ने आनेवाली बातों के बारे में याकूब और एसाव को आशीर्वाद दिया।[3]

21 विश्वास ही से याकूब ने अपनी मौत से पहले,[4] यूसुफ के दोनों बेटों को आशीर्वाद दिया[5] और अपनी लाठी के सिरे का सहारा लेकर परमेश्वर की उपासना की।[6]

22 विश्वास ही से यूसुफ ने अपनी मौत से पहले बताया कि इसराएली एक दिन मिस्र से निकल जाएँगे और उसने अपनी हड्डियों* के बारे में आज्ञा# दी।[7]

23 विश्वास ही से मूसा के माता-पिता ने उसके पैदा होने के बाद तीन महीने तक उसे छिपाए रखा[8] क्योंकि उन्होंने देखा कि बच्चा बहुत सुंदर है[9] और वे राजा के हुक्म से नहीं डरे।[10] 24 विश्वास ही से मूसा ने बड़े होने पर,[11] फिरौन की बेटी का बेटा कहलाने से इनकार कर दिया।[12] 25 और चंद दिनों के लिए पाप का सुख भोगने के बजाय, उसने परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगने का चुनाव किया। 26 उसने समझा कि परमेश्वर का अभिषिक्त जन होने के नाते बेइज़्ज़ती सहना, मिस्र के खज़ानों से भी बड़ी दौलत है क्योंकि वह अपनी नज़र इनाम पाने पर टिकाए हुए था। 27 विश्वास ही से उसने मिस्र छोड़ दिया,[13] मगर राजा

अध्य. 11
1 उत 17:17; उत 21:2
2 रोम 4:19
3 उत 21:5; उत 22:17; 1रा 4:20
4 उत 47:9
5 यूह 8:56
6 उत 11:31
7 निर्ग 3:6, 15
8 इब्र 11:10; इब्र 12:22
9 उत 22:1, 2
10 उत 22:9, 10; यूह 3:16

दूसरा कॉल.
1 उत 21:12
2 1कुर 10:11
3 उत 27:27-29; उत 27:38-40
4 उत 47:29
5 उत 48:15, 16, 20
6 उत 47:31
7 उत 50:24, 25; निर्ग 13:19
8 निर्ग 2:2
9 प्रेष 7:20
10 निर्ग 1:16, 22
11 निर्ग 2:11
12 निर्ग 2:10
13 निर्ग 12:51

11:11 *या "भरोसेमंद।" **11:18** *शा., "बीज।"

11:22 *या "अपने दफनाने।" #या "हिदायत।"

के क्रोध के डर से नहीं[1] क्योंकि वह उस अदृश्य परमेश्‍वर को मानो देखता हुआ डटा रहा।[2] 28 विश्‍वास ही से मूसा ने फसह का त्योहार मनाया और दर-वाज़े की चौखटों पर खून छिड़का ताकि नाश करनेवाला उनके पहलौठों को कोई नुकसान न पहुँचाए।*[3]

29 विश्‍वास ही से उन्होंने लाल सागर को ऐसे पार किया जैसे सूखी ज़मीन पर चल रहे हों।[4] मगर जब मिस्रियों ने पार करने की कोशिश की, तो उन्हें सागर ने निगल लिया।[5]

30 विश्‍वास ही से जब इसराएलियों ने सात दिन तक यरीहो शहर की दीवारों के चक्कर काटे तब वे ढह गयीं।[6] 31 विश्‍वास की वजह से ही राहाब नाम की वेश्‍या उन लोगों के साथ नाश नहीं हुई जो आज्ञा नहीं मानते थे, क्योंकि उसने जासूसों को शांति से अपने यहाँ ठह-राया था।[7]

32 और किस किसका नाम गिन-वाऊँ? अगर मैं गिदोन,[8] बाराक,[9] शिम-शोन,[10] यिप्तह,[11] दाविद,[12] साथ ही शमूएल[13] और दूसरे भविष्यवक्‍ताओं के बारे में बताऊँ तो समय कम पड़ जाएगा। 33 विश्‍वास की वजह से ही इन लोगों ने हुकूमतों को हराया,[14] नेकी को बढ़ावा दिया, इनसे वादे किए गए,[15] इन्होंने शेरों का मुँह बंद किया,[16] 34 आग की तपिश मिटा दी,[17] तलवार की धार से बच निकले,[18] उन्हें कमज़ोर हालत में ताकतवर बनाया गया,[19] वे युद्ध में वीर निकले[20] और उन्होंने हमला करती सेनाओं को खदेड़ा।[21] 35 औरतों ने अपने मरे हुए अज़ीज़ों को वापस पाया।[22] और दूसरे लोग ऐसे थे जिन्हें तड़पा-तड़पाकर मार डाला गया क्योंकि उन्हें किसी भी तरह की फिरौती देकर छुटकारा पाना मंज़ूर नहीं था ताकि वे मरने के बाद बेहतर तरीके से ज़िंदा किए जाएँ। 36 हाँ, कितने ऐसे थे जिनकी खिल्ली उड़ायी गयी और जिन्हें कोड़े लगाए गए। इतना ही नहीं, उन्हें ज़ंजीरों में बाँधा गया[1] और कैद में डाला गया[2] और इस तरह वे आज़माए गए। 37 उन्हें पत्थरों से मार डाला गया,[3] उनकी परीक्षा हुई, उन्हें आरे से चीरा गया और तलवार से मार डाला गया।[4] वे भेड़ों और बकरों की खाल पहने फिरते थे[5] और तंगी, मुसीबतें[6] और बद-सलूकी सहते रहे[7] 38 और यह दुनिया उनके लायक नहीं थी। वे रेगिस्तानों, पहाड़ों, गुफाओं और धरती की माँदों में भटकते रहे।[8]

39 इन सभी ने हालाँकि अपने विश्‍वास के ज़रिए अपने बारे में अच्छी गवाही पायी थी, फिर भी उन्होंने वादा पूरा होते हुए नहीं देखा। 40 क्योंकि परमेश्‍वर ने पहले से सोच रखा था कि वह हमें कुछ बेहतर देगा[9] ताकि वे हमारे बगैर परिपूर्ण न बनाए जाएँ।

12 इसलिए जब गवाहों का ऐसा घना बादल हमें घेरे हुए है, तो आओ हम हरेक बोझ को और उस पाप को जो आसानी से हमें उलझा सकता है, उतार फेंकें[10] और उस दौड़ में जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ते रहें[11] 2 और यीशु पर नज़र टिकाए रहें जो हमारे विश्‍वास का खास अगुवा और इसे परि-पूर्ण करनेवाला है।[12] उसने उस खुशी के लिए जो उसके सामने थी, यातना के काठ* पर मौत सह ली और शर्मिंदगी की

अध्य. 11
1 निर्ग 10:28
2 1ती 1:17
3 निर्ग 12:21-23
4 निर्ग 14:22
5 निर्ग 14:27, 28
6 यह 6:15, 20
7 यह 6:17
8 न्या 6:11
9 न्या 4:6
10 न्या 13:24
11 न्या 11:1
12 1शम 16:13
13 1शम 3:20
14 न्या 7:12, 22
15 2शम 7:8, 12
16 न्या 14:5, 6; 1शम 17:34-36; दान 6:21, 22
17 दान 3:23-25
18 2रा 6:15, 16
19 न्या 16:28; 1रा 18:46
20 न्या 11:32
21 न्या 4:16
22 1रा 17:22-24; 2रा 4:32, 34

दूसरा कॉल.
1 यिर्म 20:2
2 यिर्म 37:15
3 2इत 24:20, 21
4 1रा 19:10
5 2रा 1:8
6 1रा 19:2
7 1रा 22:24; यिर्म 38:6
8 1रा 18:4; 1रा 19:9
9 इब्र 2:3; इब्र 3:1; इब्र 7:22

अध्य. 12
10 इब्र 3:12
11 1कुर 9:24, 26; फिल 3:13, 14
12 यूह 14:6; प्रेष 5:31; इब्र 2:10

11:28 *शा., “न छुए।”

12:2 *शब्दावली देखें।

ज़रा भी परवाह नहीं की और अब वह
परमेश्वर की राजगद्दी के दायीं तरफ बैठा
है।[1] **3** हाँ, उस पर अच्छी तरह ध्यान
दो जिसने पापियों के मुँह से ऐसी बुरी-बुरी
बातें सहीं[2] जिनसे वे खुद ही दोषी ठहरे
ताकि तुम थककर हार न मानो।[3]

4 पाप से लड़ने में तुमने अब तक
इतना संघर्ष नहीं किया कि तुम्हारा खून
बहे। **5** मगर तुम इस नसीहत को,
जिसमें तुम्हें बेटे पुकारा गया है, पूरी
तरह से भूल गए हो: “मेरे बेटे, यहोवा*
की शिक्षा को हलकी बात न समझ
और जब वह तुझे सुधारे, तो हिम्मत मत
हार **6** क्योंकि यहोवा* जिससे प्यार
करता है उसे सुधारता भी है। दरअसल
वह जिसे अपना बेटा मानकर अपनाता है
उसे कोड़े भी लगाता है।”#[4]

7 तुम इसे यह समझकर सह लो
कि तुम्हें सुधारा जा रहा है।* परमेश्वर
तुम्हें अपने बेटे मानकर तुम्हारे साथ
ऐसे पेश आ रहा है,[5] क्योंकि ऐसा
कौन-सा बेटा है जिसे पिता नहीं सुधार-
ता?[6] **8** लेकिन अगर तुम सबको इस
तरह सुधारा न जाए, तो तुम असल में
बेटे नहीं नाजायज़ औलाद हो। **9** यही
नहीं, हमारे पिता भी हमें सुधारा करते
थे और हम उनका आदर करते थे।
तो क्या हमें उस पिता के, जिसने हमें
पवित्र शक्ति से जीवन दिया है, और भी
ज़्यादा अधीन नहीं रहना चाहिए ताकि
हम जीते रहें?[7] **10** हमारे पिताओं ने
तो जैसा उन्हें ठीक लगा वैसे हमें सुधारा
और वह भी कुछ समय के लिए।
लेकिन परमेश्वर हमारे फायदे के लिए
हमें सुधारता है ताकि हम उसकी तरह
पवित्र बनें।[1] **11** यह सच है कि जब
भी किसी को सुधारा जाता है तो उस
वक्त उसे खुशी नहीं होती बल्कि बहुत
दुख* होता है, मगर जो इस तरह
का प्रशिक्षण पाते हैं उनके लिए इससे
शांति और नेकी पैदा होती है।

12 इसलिए ढीले हाथों और कमज़ोर
घुटनों को मज़बूत करो।[2] **13** और
अपने कदमों के लिए सीधा रास्ता बनाते
रहो[3] ताकि जो पैर कमज़ोर है वह जोड़
से उखड़ न जाए बल्कि स्वस्थ हो जाए।
14 सब लोगों के साथ शांति बनाए
रखने[4] और पवित्र बने रहने की कोशिश
करते रहो[5] जिसके बिना कोई भी इंसान
प्रभु को नहीं देखेगा। **15** इस बात का
खास ध्यान रखो कि तुममें से कोई भी
परमेश्वर की महा-कृपा पाने से चूक
न जाए ताकि तुम्हारे बीच कोई ज़ह-
रीली जड़ न पैदा हो जो मुसीबत खड़ी
करे और बहुत-से लोग उससे दूषित हो
जाएँ।[6] **16** और यह भी ध्यान रखो कि
तुममें ऐसा कोई न हो जो नाजायज़
यौन-संबंध* रखता हो, न ही कोई एसाव
जैसा हो जिसने पवित्र चीज़ों की कदर
नहीं की और एक वक्त के खाने के
बदले पहलौठा होने का हक बेच दिया।[7]
17 तुम जानते हो कि बाद में जब
उसने विरासत में आशीष पानी चाही तो
उसे ठुकरा दिया गया। उसने आँसू बहा-
बहाकर उसका* फैसला बदलने की बहुत
कोशिश की,[8] फिर भी वह उसे बदल न
सका।

18 तुम सचमुच के पहाड़ के पास नहीं
आए जिसे छुआ जा सके[9] और जो आग
की लपटों से जल रहा हो[10] और न ही
तुम काले बादल और घोर अंधकार और

12:5, 6 *अति. क5 देखें। **12:6** #या “सज़ा भी देता है।” **12:7** *या “प्रशिक्षण दिया जा रहा है।”

12:11 *या “दर्द।” **12:16** *शब्दावली देखें। **12:17** *यानी अपने पिता का।

अध्य. 12
1 भज 110:1; इब्र 10:12
2 मत 27:39
3 गल 6:9
4 नीत 3:11, 12
5 2शम 7:14; इब्र 2:10
6 नीत 13:24
7 याकू 4:10

दूसरा कॉल.
1 1पत 1:15, 16
2 यश 35:3
3 नीत 4:26
4 भज 34:14; रोम 12:18; रोम 14:19
5 रोम 6:19; 1थि 4:3, 4; इब्र 10:10
6 व्य 29:18
7 उत 25:32, 34
8 उत 27:34
9 निर्ग 19:12
10 निर्ग 19:18

आँधी के पास आए हो।[1] 19 न ही
तुम तुरही की तेज़ आवाज़[2] या किसी
के बोलने की आवाज़ सुन रहे हो[3] जिसे
सुनने पर लोगों ने बिनती की थी कि उनसे
और बात न की जाए।[4] 20 क्योंकि वे
इस आज्ञा से बहुत डर गए थे: "अगर कोई
जानवर भी इस पहाड़ पर जाए, तो उसे
पत्थरों से मार डाला जाए।"[5] 21 और-
तो-और, यह नज़ारा इतना भयानक था
कि मूसा ने कहा, "मैं डर के मारे थर-
थर काँप रहा हूँ।"[6] 22 इसके बजाय
तुम सिय्योन पहाड़ के पास[7] और जीवित
परमेश्वर की नगरी, स्वर्ग की यरू-
शलेम के पास,[8] लाखों स्वर्गदूतों 23 की
आम सभा में[9] और परमेश्वर के पह-
लौठों की मंडली में आए हो, जिनके नाम
स्वर्ग में लिखे गए हैं। और उस पर-
मेश्वर के पास आए हो जो सबका न्यायी
है[10] और पवित्र शक्ति से पैदा हुए[11] उन
नेक जनों के पास आए हो जिन्हें परिपूर्ण
किया गया है।[12] 24 और नए करार[13]
के बिचवई यीशु[14] और उस खून के पास
आए हो जो उसने हम पर छिड़का है और
जो हाबिल के खून से कहीं बेहतर तरीके से
बोलता है।[15]

25 सावधान रहो कि तुम उसकी बात
सुनने से इनकार न करो* जो तुमसे बोल
रहा है। क्योंकि जब वे लोग नहीं बच
सके जिन्होंने उसकी बात सुनने से इनकार
कर दिया जो उन्हें धरती पर पर-
मेश्वर की चेतावनी दे रहा था, तो सोचो
हम उससे मुँह मोड़कर कैसे बच सकेंगे
जो स्वर्ग से बात करता है![16] 26 गुज़रे
वक्त में तो उसकी आवाज़ से धरती काँप
उठी थी,[17] मगर अब उसने यह वादा
किया है: "मैं एक बार फिर न सिर्फ धरती
को बल्कि आकाश को भी हिलाऊँगा।"[1]
27 "एक बार फिर" इन शब्दों से पता
चलता है कि हिलायी जानेवाली चीज़ें
नाश हो जाएँगी यानी वे चीज़ें नाश हो
जाएँगी जो परमेश्वर ने नहीं बनायीं
ताकि वे चीज़ें हमेशा तक बनी रहें जिन्हें
हिलाया नहीं जाता। 28 तो यह जानते
हुए कि हमें ऐसा राज मिलनेवाला है जिसे
हिलाया नहीं जा सकता, आओ हम पर-
मेश्वर की महा-कृपा पाते रहें, जिसके
ज़रिए हम परमेश्वर का डर मानते हुए
और उसके लिए श्रद्धा रखते हुए उसकी
पवित्र सेवा करते रहें जो उसे स्वीकार
हो। 29 क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म
करनेवाली आग है।[2]

13 भाइयों की तरह एक-दूसरे से
प्यार करते रहो।[3] 2 मेहमान-
नवाज़ी करना* मत भूलना[4] क्योंकि ऐसा
करके कुछ लोगों ने अनजाने में ही स्वर्ग-
दूतों का सत्कार किया था।[5] 3 जो कैद
में हैं* उन्हें याद रखो,[6] मानो तुम खुद
भी उनके साथ कैद में हो।[7] और जिनके
साथ बुरा सलूक किया जाता है उन्हें भी
याद रखो क्योंकि तुम भी उनके साथ एक
शरीर का हिस्सा हो।# 4 शादी सब
लोगों में आदर की बात समझी जाए और
शादी की सेज दूषित न की जाए[8] क्योंकि
परमेश्वर नाजायज़ यौन-संबंध* रखने-
वालों और व्यभिचारियों को सज़ा देगा।[9]
5 तुम्हारे जीने का तरीका दिखाए कि
तुम्हें पैसे से प्यार नहीं[10] और जो कुछ
तुम्हारे पास है उसी में संतोष करो।[11]

12:25 *या "बहाने मत बनाओ; नज़र-अंदाज़ मत करो।"

13:2 *या "अजनबियों पर कृपा करना।" **13:3** *शा., "बँधे हुए; जो बंधनों में हैं।" #या शायद, "मानो तुम भी उनके साथ दुख सह रहे हो।" **13:4** *शब्दावली देखें।

अध्य. 12
1 निर्ग 19:16
2 निर्ग 19:19
3 व्य 4:11, 12
4 निर्ग 20:18, 19
5 निर्ग 19:12, 13
6 व्य 9:19
7 प्रक 14:1
8 प्रक 21:2
9 दान 7:10
10 उत 18:25, भज 94:2, यश 33:22
11 इब्र 12:9
12 इब्र 10:14
13 मत 26:27, 28
14 1ती 2:5, इब्र 9:15
15 उत 4:8, 10
16 इब्र 1:2, इब्र 2:2-4
17 निर्ग 19:18

दूसरा कॉल.
1 हाग 2:6
2 व्य 4:24

अध्य. 13
3 1थि 4:9, 1पत 1:22
4 रोम 12:13, 1ती 3:2
5 उत 18:2, 3, उत 19:1-3
6 कुल 4:18
7 रोम 12:15
8 नीत 5:16, 20, मत 5:28
9 नीत 6:32, 1कुर 6:9, 10, 1कुर 6:18, गल 5:19, 21
10 1ती 6:10
11 नीत 30:8, 9, 1ती 6:8

क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, “मैं तुझे
कभी नहीं छोड़ूँगा, न कभी त्यागूँगा।”[1]
6 इसलिए हम पूरी हिम्मत रखें और
यह कहें, “यहोवा* मेरा मददगार है,
मैं नहीं डरूँगा। इंसान मेरा क्या कर
सकता है?”[2]

7 जो तुम्हारे बीच अगुवाई करते हैं
और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन
सुनाया है, उन्हें याद रखो[3] और उनके
चालचलन के अच्छे नतीजों पर गौर
करते हुए उनके विश्वास की मिसाल पर
चलो।[4]

8 यीशु मसीह कल, आज और हमेशा
तक एक जैसा है।

9 तरह-तरह की परायी शिक्षाओं से
गुमराह मत होना। क्योंकि परमेश्वर की
महा-कृपा से दिल को मज़बूत करना
अच्छा है न कि खाने* से, जिससे उन
लोगों को फायदा नहीं होता जो उसमें लगे
रहते हैं।[5]

10 हमारी एक ऐसी वेदी है जिससे
तंबू में पवित्र सेवा करनेवालों को खाने
का कोई अधिकार नहीं।[6] **11** क्योंकि
महायाजक जिन जानवरों का खून पाप-
बलि के तौर पर पवित्र जगह ले जाता
है, उनकी लाश छावनी के बाहर जलायी
जाती है।[7] **12** इसलिए यीशु ने भी
शहर के फाटक के बाहर दुख उठाया[8]
ताकि वह अपने खून से लोगों को पवित्र
कर सके।[9] **13** इसलिए आओ हम भी
अपने ऊपर वह बदनामी लिए हुए जो
उसने सही थी,[10] छावनी के बाहर उसके
पास जाएँ **14** क्योंकि यहाँ हमारा ऐसा
शहर नहीं जो हमेशा तक रहे, बल्कि हम
उस शहर का बेताबी से इंतज़ार कर रहे हैं

13:6 *अति. क5 देखें। **13:9** *यानी खाने
के नियमों।

अध्य. 13
1 व्य 31:6, 8
2 भज 118:6, दान 3:17, लूक 12:4
3 1ती 5:17, इब्र 13:17
4 1कुर 11:1, 2थि 3:7
5 रोम 14:17, 1कुर 8:8, कुल 2:16
6 1कुर 9:13, 1कुर 10:18
7 लैव 16:27
8 यूह 19:17
9 इब्र 9:13, 14
10 रोम 15:3, 2कुर 12:10, 1पत 4:14

दूसरा कॉल.
1 इब्र 11:10, इब्र 12:22
2 लैव 7:12, भज 50:14, 23
3 भज 69:30, 31, हो 14:2
4 रोम 10:9
5 रोम 12:13
6 फिल 4:18
7 1थि 5:12
8 इफ 5:21, 1पत 5:5
9 प्रेष 20:28
10 2कुर 1:12
11 1पत 5:4

जो आनेवाला है।[1] **15** आओ हम यीशु
के ज़रिए परमेश्वर को तारीफ का बलि-
दान हमेशा चढ़ाएँ,[2] यानी अपने होंठों
का फल[3] जो उसके नाम का सरे-
आम ऐलान करते हैं।[4] **16** इतना ही
नहीं, भलाई करना और जो तुम्हारे पास
है उसे दूसरों में बाँटना मत भूलो[5] क्योंकि
परमेश्वर ऐसे बलिदानों से बहुत खुश
होता है।[6]

17 जो तुम्हारे बीच अगुवाई करते हैं
उनकी आज्ञा मानो[7] और उनके अधीन
रहो,[8] क्योंकि वे यह जानते हुए तुम्हारी
निगरानी करते हैं कि उन्हें इसका हिसाब
देना होगा[9] ताकि वे यह काम खुशी से
करें न कि आहें भरते हुए क्योंकि इससे
तुम्हारा ही नुकसान होगा।

18 हमारे लिए प्रार्थना करते रहो
क्योंकि हमें यकीन है कि हमारा ज़मीर
साफ* है और हम सब बातों में ईमान-
दारी से काम करना चाहते हैं।[10]
19 मगर मैं तुम्हें खास तौर पर इस-
लिए प्रार्थना करने का बढ़ावा देता हूँ
ताकि मैं और भी जल्दी तुम्हारे पास
लौट सकूँ।

20 हमारी दुआ है कि शांति का पर-
मेश्वर, जिसने हमारे महान चरवाहे[11]
और हमारे प्रभु यीशु को सदा के करार के
खून के साथ मरे हुओं में से ज़िंदा किया,
21 वह तुम्हें उसकी मरज़ी पूरी करने के
लिए हर अच्छी चीज़ देकर तैयार करे
और यीशु मसीह के ज़रिए हमारे अंदर
वह सब काम करे जो परमेश्वर को भाता
है। उसकी महिमा हमेशा-हमेशा तक होती
रहे। आमीन।

22 भाइयो मैं तुमसे गुज़ारिश करता
हूँ कि तुम मेरी ये बातें सब्र से सुन लो, जो

13:18 *शा., “अच्छा।”

मैंने तुम्हारा हौसला बढ़ाने के लिए लिखी
हैं क्योंकि मेरा यह खत छोटा-सा ही है।
23 मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि हमारे
भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया
है। अगर वह जल्दी आ गया तो मैं उसके
साथ आकर तुमसे मिलूँगा।

24 जो तुम्हारे बीच अगुवाई कर रहे
हैं उनके साथ-साथ सभी पवित्र जनों को
मेरा नमस्कार कहना। इटली[1] में रहने-
वाले तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

25 परमेश्वर की महा-कृपा तुम सब
पर बनी रहे।

दूसरा कॉल.

अध्य. 13

1 प्रेष 27:1

याकूब

की चिट्ठी

सारांश

1 नमस्कार (1)
धीरज धरने से खुशी मिलती है (2-15)
परखा हुआ विश्वास (3)
विश्वास के साथ माँगते रहो (5-8)
इच्छाएँ पाप और मौत की तरफ ले जाती हैं (14, 15)
हर अच्छा तोहफा ऊपर से मिलता है (16-18)
वचन को सुनना; उस पर चलना (19-25)
आईने में चेहरा देखनेवाला (23, 24)
शुद्ध और निष्कलंक उपासना (26, 27)

2 भेदभाव करना पाप है (1-13)
प्यार एक शाही नियम है (8)
कामों के बिना विश्वास मरा हुआ है (14-26)
दुष्ट स्वर्गदूत मानते और थर-थर काँपते हैं (19)
अब्राहम यहोवा का दोस्त कहलाया (23)

3 जीभ को काबू में करना (1-12)
बहुत लोग शिक्षक न बनें (1)
स्वर्ग से मिलनेवाली बुद्धि (13-18)

4 दुनिया से दोस्ती मत करो (1-12)
शैतान का विरोध करो (7)
परमेश्वर के करीब आओ (8)
घमंड से खबरदार (13-17)
"अगर यहोवा की मरज़ी हो" (15)

5 अमीरों को चेतावनी (1-6)
सब्र रखने और धीरज धरने से परमेश्वर की आशीष मिलती है (7-11)
तुम्हारी 'हाँ' का मतलब हाँ हो (12)
विश्वास से की गयी प्रार्थना असर करती है (13-18)
पापी को लौटने में मदद देना (19, 20)

1 याकूब[1] जो परमेश्वर का और प्रभु
यीशु मसीह का दास है, उन 12 गोत्रों
को लिखता है, जो चारों तरफ तितर-
बितर हो गए हैं:
नमस्कार!

2 मेरे भाइयो, जब तुम तरह-तरह की
परीक्षाओं से गुज़रो तो इसे बड़ी खुशी की
बात समझो[1] 3 क्योंकि तुम जानते हो
कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास धीरज
पैदा करता है।[2] 4 मगर धीरज को

अध्य. 1

1 मत 13:55

दूसरा कॉल.

1 मत 5:11, 12

2 1पत 1:6, 7

अपना काम पूरा करने दो ताकि तुम सब
बातों में खरे* और बेदाग पाए जाओ
और तुममें कोई कमी न हो।[1]

5 इसलिए अगर तुममें से किसी को
बुद्धि की कमी हो तो वह परमेश्वर से
माँगता रहे[2] और वह उसे दी जाएगी,[3]
क्योंकि परमेश्वर सबको उदारता से
और बिना डाँटे-फटकारे* देता है।[4]
6 लेकिन वह विश्वास के साथ माँगता
रहे[5] और ज़रा भी शक न करे,[6] क्योंकि
जो शक करता है वह समुंदर की लहरों
जैसा होता है जो हवा से यहाँ-वहाँ उछल-
ती रहती हैं। **7** दरअसल ऐसा इंसान
यह उम्मीद न करे कि वह यहोवा* से कुछ
पाएगा। **8** ऐसा इंसान उलझन में रहता
है*[7] और सारी बातों में डाँवाँडोल
होता है।

9 जो भाई गरीब है वह इसलिए
खुशी मनाए* कि उसे ऊँचा किया गया
है[8] **10** और जो अमीर है वह इसलिए
खुशी मनाए कि उसे दीन किया गया है,[9]
क्योंकि वह ऐसे मिट जाएगा जैसे मैदान
में उगनेवाला फूल। **11** जैसे सूरज के
चढ़ने पर उसकी तपती धूप से पौधा
मुरझा जाता है और उसका फूल सूख-
कर गिर जाता है और उसकी खूब-
सूरती मिट जाती है, ठीक वैसे ही अमीर
आदमी भी ज़िंदगी की भाग-दौड़ में मिट
जाएगा।[10]

12 सुखी है वह इंसान जो परीक्षा
में धीरज धरे रहता है[11] क्योंकि
परीक्षा में खरा उतरने पर वह जीवन
का ताज पाएगा,[12] जिसका वादा
यहोवा* ने उनसे किया है जो हमेशा
उससे प्यार करते हैं।[1] **13** जब किसी
की परीक्षा हो रही हो तो वह यह न
कहे, "परमेश्वर मेरी परीक्षा ले रहा है।"
क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर
की परीक्षा ली जा सकती है, न ही वह
खुद बुरी बातों से किसी की परीक्षा लेता
है। **14** लेकिन हर किसी की इच्छा उसे
खींचती और लुभाती है,* जिससे वह
परीक्षा में पड़ता है।[2] **15** फिर इच्छा
गर्भवती होती है और पाप को जन्म देती
है और जब पाप कर लिया जाता है तो
यह मौत लाता है।[3]

16 मेरे प्यारे भाइयो, धोखा न
खाओ। **17** हर अच्छा तोहफा और हर
उत्तम देन ऊपर से मिलती है[4] यानी
आकाश की ज्योतियों के पिता की तरफ
से,[5] जो उस छाया की तरह नहीं बदलता
जो घटती-बढ़ती रहती है।[6] **18** उसकी
यही मरज़ी थी कि हमें सच्चाई के वचन से
पैदा करे[7] ताकि हम उसके बनाए इंसानों
में पहले फल जैसे हों।[8]

19 मेरे प्यारे भाइयो, यह बात जान
लोः हर कोई सुनने में फुर्ती करे, बोलने
में उतावली न करे[9] और गुस्सा करने
में जल्दबाज़ी न करे।[10] **20** क्योंकि
इंसान के क्रोध का नतीजा परमेश्वर
की नेकी नहीं होता।[11] **21** इसलिए
हर तरह की गंदगी और बुराई का
हर दाग* दूर करो[12] और जब तुम्हारे
अंदर वचन बोया जाता है, तो उसे
कोमलता से स्वीकार करो क्योंकि यह
तुम्हारी जान बचा सकता है।

22 लेकिन वचन पर चलनेवाले
बनो,[13] न कि सिर्फ सुननेवाले जो झूठी
दलीलों से खुद को धोखा देते हैं।
23 क्योंकि जो कोई वचन को सुनता है

1:4 *या "पूरे; परिपूर्ण।" **1:5** *या "बिना गलतियाँ ढूँढ़े।" **1:7, 12** *अति. क5 देखें। **1:8** *या "दुचित्ता है।" **1:9** *या "गर्व करे।"

1:14 *या "मानो चारे से फँसाती है।" **1:21** *या शायद, "ढेरों बुराइयों को।"

अध्य. 1
1 1कुर 14:20, इफ 4:13
2 1रा 3:9, मर 11:24, 1यूह 3:22
3 नीत 2:3-6, यूह 15:7, 1यूह 5:14
4 मत 7:11
5 मत 7:7
6 मत 21:22, इब्र 11:6
7 याकू 4:8
8 याकू 2:5
9 1ती 6:17
10 यश 40:6, 7, मत 19:24
11 मत 5:10, याकू 1:2
12 2ती 4:8, 1पत 5:4, प्रक 2:10

दूसरा कॉल.
1 याकू 2:5
2 उत 3:6, 1यूह 2:16
3 रोम 5:21
4 मत 7:11
5 यिर्म 31:35, 2कुर 4:6
6 मला 3:6
7 यूह 1:12, 13, रोम 8:28, इफ 1:13, 14, 2थि 2:13, 1पत 1:23
8 प्रक 14:4
9 नीत 10:19, नीत 17:27
10 सभ 7:9, मत 5:22
11 याकू 3:18
12 कुल 3:8, 1पत 2:1
13 लैव 18:5, 1शम 15:22, मत 7:21, 1यूह 3:7

मगर उस पर चलता नहीं,[1] वह उस इंसान के जैसा है जो आईने में अपना* चेहरा देखता है। **24** वह अपनी सूरत देखता है और चला जाता है और फौरन भूल जाता है कि वह किस तरह का इंसान है। **25** मगर जो इंसान आज़ादी दिलानेवाले खरे कानून को करीब से जाँचता* है[2] और उसमें लगा रहता है, ऐसा इंसान सुनकर भूलता नहीं मगर उस पर चलता है और इससे वह खुशी पाता है।[3]

26 अगर कोई आदमी खुद को परमेश्वर की उपासना करनेवाला* समझता है मगर अपनी ज़बान पर कसकर लगाम नहीं लगाता,[4] तो वह अपने दिल को धोखा देता है और उसका उपासना करना बेकार है। **27** हमारे परमेश्वर और पिता की नज़र में शुद्ध और निष्कलंक उपासना* यह है: अनाथों और विधवाओं की मुसीबतों में देखभाल की जाए[5] और खुद को दुनिया से बेदाग रखा जाए।[6]

2 मेरे भाइयो, क्या तुम हमारे महिमावान प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के साथ-साथ भेदभाव भी कर रहे हो?[7] **2** अगर कोई इंसान तुम्हारी सभा में सोने की अँगूठियाँ और शानदार कपड़े पहनकर आता है और एक गरीब मैले-कुचैले कपड़ों में आता है, **3** तो तुम शानदार कपड़े पहननेवाले को तो इज़्ज़त देते हो और उससे कहते हो, “इस बढ़िया जगह पर बैठ।” मगर गरीब से कहते हो, “तू खड़ा रह,” या “यहाँ ज़मीन पर मेरे पाँवों की चौकी के पास बैठ।”[8] **4** इस तरह क्या तुम्हारे बीच ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं है[1] और क्या तुम ऐसे न्यायी नहीं ठहरते जो बुरे इरादे से फैसले करते हैं?[2]

5 मेरे प्यारे भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने ऐसे लोगों को नहीं चुना जो दुनिया की नज़र में गरीब हैं ताकि वे विश्वास में धनी बनें[3] और उस राज के वारिस हों, जिसका वादा उसने उन लोगों से किया है जो उससे प्यार करते हैं?[4] **6** लेकिन तुमने गरीबों को बेइज़्ज़त किया है। क्या अमीर तुम पर अत्याचार नहीं करते[5] और तुम्हें घसीटकर अदालतों में नहीं ले जाते? **7** क्या वे उस बढ़िया नाम की निंदा नहीं करते जिससे तुम बुलाए गए हो? **8** अगर तुम शास्त्र के मुताबिक इस शाही नियम को मानते हो: “तुम अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार करना जैसे तुम खुद से करते हो,”[6] तो तुम बहुत अच्छा काम कर रहे हो। **9** लेकिन अगर तुम भेदभाव करना नहीं छोड़ते[7] तो तुम पाप कर रहे हो और यह नियम तुम्हें गुनहगार ठहराता है।[8]

10 अगर कोई मूसा के पूरे कानून का पालन करता है मगर एक आज्ञा तोड़ देता है, तो वह पूरे कानून को तोड़ने का कसूरवार ठहरता है।[9] **11** क्योंकि जिस परमेश्वर ने यह कहा, “तुम व्यभिचार* न करना,”[10] उसने यह भी कहा, “तुम खून न करना।”[11] इसलिए अगर तुम व्यभिचार नहीं करते मगर खून करते हो, तो तुम कानून को तोड़ने के गुनहगार हो। **12** तुम हमेशा उन लोगों की तरह बोलो और उन लोगों की तरह पेश आओ जिनका न्याय आज़ाद लोगों के कानून* के मुताबिक होनेवाला है।[12]

अध्य. 1

1 लूक 6:46; याकू 2:14
2 भज 19:7
3 मत 7:24; लूक 11:28; यूह 13:17
4 भज 39:1; नीत 12:18; नीत 15:2; 1पत 3:10
5 व्य 14:29; व्य 27:19; अय 29:12, 13; भज 68:5; यश 1:17; यश 58:7; 1ती 5:3
6 1कुर 5:7; याकू 4:4; प्रक 18:4

अध्य. 2

7 1ती 5:21; याकू 3:17
8 लैव 19:15

दूसरा कॉल.

1 गल 3:28
2 व्य 1:17
3 प्रक 2:9
4 लूक 22:28-30
5 प्रेष 13:50
6 लैव 19:18; मत 22:39; रोम 13:10
7 याकू 2:1
8 लैव 19:15
9 व्य 27:26; गल 3:10
10 निर्ग 20:14; व्य 5:18
11 निर्ग 20:13; व्य 5:17
12 याकू 1:25

1:23 *या “अपना असली।” **1:25** *या “झाँकता।” **1:26** *या “धार्मिक।” **1:27** *या “धर्म।”

2:11 *शब्दावली देखें। **2:12** *शा., “आज़ादी के कानून।”

13 क्योंकि जो दया नहीं करता उसका न्याय भी बिना दया के होगा।[1] दया, सज़ा पर जीत हासिल करती है।

14 मेरे भाइयो, अगर कोई कहे कि मुझे विश्वास है लेकिन वह विश्वास के मुताबिक काम नहीं करता, तो इसका क्या फायदा?[2] क्या ऐसा विश्वास उसे उद्धार दिला सकता है?[3] **15** अगर किसी भाई या बहन के पास कपड़े न हों और दो वक्त की रोटी भी न हो **16** और तुममें से कोई उससे कहे, "सलामत रहो, तुझे खाने-पहनने की कोई कमी न हो।" मगर तुम उसे कपड़ा और रोटी न दो तो इसका क्या फायदा?[4] **17** उसी तरह सिर्फ विश्वास होना काफी नहीं, विश्वास कामों के बिना मरा हुआ है।[5]

18 मगर शायद कोई कहे, "तुम विश्वास करते हो, मगर मैं काम करता हूँ। तू अपना विश्वास बिना काम के दिखा और मैं अपना विश्वास अपने कामों से दिखाऊँगा।" **19** क्या तू मानता है कि परमेश्वर एक ही है? तू बहुत अच्छा करता है। दुष्ट स्वर्गदूत भी यही मानते हैं और थर-थर काँपते हैं।[6] **20** लेकिन हे खोखले इंसान, क्या तू इस बात को नहीं मानना चाहता कि कामों के बिना विश्वास बेकार है? **21** क्या हमारा पिता अब्राहम भी अपने कामों की वजह से नेक नहीं ठहराया गया था क्योंकि उसने अपने बेटे इसहाक को वेदी पर चढ़ाया था?[7] **22** तुम देख सकते हो कि उसने विश्वास करने के साथ-साथ काम भी किया और उसके कामों ने उसके विश्वास को परिपूर्ण किया[8] **23** और शास्त्र की यह बात पूरी हुई, "अब्राहम ने यहोवा* पर विश्वास किया और इस वजह से उसे नेक समझा गया"[1] और वह "यहोवा* का दोस्त" कहलाया।[2]

24 तो जैसा तुमने देखा, एक इंसान सिर्फ विश्वास से नहीं बल्कि कामों से नेक ठहराया जाता है। **25** इसी तरह, क्या राहाब नाम की वेश्या कामों से नेक नहीं मानी गयी क्योंकि उसने दूतों को अपने घर में ठहराया और फिर उन्हें दूसरे रास्ते से भेज दिया?[3] **26** वाकई, जैसे जान* के बिना शरीर मुरदा होता है,[4] वैसे ही कामों के बिना विश्वास मरा हुआ है।[5]

3 मेरे भाइयो, हममें से बहुत लोग शिक्षक न बनें क्योंकि हम जानते हैं कि हम और भी भारी* सज़ा पाएँगे।[6] **2** क्योंकि हम सब कई बार गलती करते हैं।*[7] अगर कोई इंसान बोलने में गलती नहीं करता, तो वह परिपूर्ण है और अपने पूरे शरीर को भी काबू में रख सकता है।# **3** हम घोड़े के मुँह में लगाम लगाते हैं ताकि वह हमारी बात माने और इससे हम उसके पूरे शरीर को भी काबू में कर पाते हैं। **4** जहाज़ों के बारे में भी सोचो! हालाँकि वे इतने बड़े होते हैं और तेज़ हवाओं से चलाए जाते हैं, फिर भी एक छोटी-सी पतवार से नाविक उन्हें जहाँ चाहे वहाँ ले जा सकता है।

5 उसी तरह, जीभ भी हमारे शरीर का एक छोटा-सा अंग है फिर भी यह बड़ी-बड़ी डींगें मारती है। देखो! पूरे जंगल में आग लगाने के लिए बस एक छोटी-सी चिंगारी काफी होती है। **6** जीभ भी एक आग है।[8] यह हमारे शरीर के अंगों में बुराई की एक दुनिया है

अध्य. 2

1 नीत 21:13; मत 5:7; मत 6:15; लूक 6:36
2 तीत 3:8; याकू 1:25
3 1कुर 13:2
4 व्य 15:7, 8; मत 25:35, 36; लूक 3:11; रोम 12:13; 1ती 5:4; याकू 1:27; 1यूह 3:17
5 मत 7:21; इब्र 10:24
6 मत 8:28, 29; लूक 4:33, 34
7 उत 22:9, 12
8 इब्र 11:17

दूसरा कॉल.

1 उत 15:6; रोम 4:3; गल 3:6
2 2इत 20:7; यश 41:8
3 यह 2:1, 15; यह 6:17; इब्र 11:31
4 भज 146:4
5 रोम 10:10; याकू 2:17

अध्य. 3

6 लूक 12:48
7 1रा 8:46; नीत 20:9; 1यूह 1:8
8 नीत 16:27; मत 12:36, 37

2:23 *अति. क5 देखें।

2:26 *या "साँस।" 3:1 *या "कड़ी।" 3:2 *शा., "ठोकर खाते हैं।" #शा., "लगाम लगा सकता है।"

क्योंकि यह पूरे शरीर को दूषित कर
देती है[1] और इंसान की पूरी ज़िंदगी में
आग लगा देती है और यह गेहन्ना* की
आग की तरह भस्म कर देती है। **7** हर
तरह के जंगली जानवर, पक्षी, रेंगने-
वाले जीव-जंतु और समुद्री जीवों को तो
पालतू बनाया जा सकता है और इंसान
ने उन्हें काबू में करके पालतू बनाया भी
है, **8** मगर जीभ को कोई भी इंसान
काबू में नहीं कर सकता। यह ऐसी
खतरनाक और बेकाबू चीज़ है जो जान-
लेवा ज़हर से भरी है।[2] **9** इसी से हम
अपने पिता यहोवा* की तारीफ करते
हैं और इसी से इंसानों को बददुआ देते हैं
जिन्हें "परमेश्वर के जैसा" बनाया गया
है।[3] **10** एक ही मुँह से तारीफ और
बददुआ दोनों निकलते हैं।

भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए।[4]
11 क्या ऐसा हो सकता है कि एक ही
सोते से मीठा पानी भी निकले और खारा
पानी भी? **12** मेरे भाइयो, क्या अंजीर
के पेड़ पर जैतून के फल लग सकते हैं
या अंगूर की डाली पर अंजीर के फल
निकल सकते हैं?[5] नहीं। उसी तरह खारे
पानी के सोते से मीठा पानी नहीं निकल
सकता।

13 तुममें बुद्धिमान और समझदार
कौन है? जो है वह इसे अपने बढ़िया
चालचलन से दिखाए और बुद्धि से पैदा
होनेवाले कोमल स्वभाव के मुताबिक
काम करे। **14** लेकिन अगर तुम्हारे
दिलों में जलन-कुढ़न[6] और झगड़े की
भावना* हो,[7] तो शेखी न मारो[8] और
सच्चाई के खिलाफ झूठ मत बोलो।
15 यह बुद्धि वह नहीं जो स्वर्ग से
मिलती है बल्कि यह दुनियावी,[1] शारी-
रिक* और शैतानी है। **16** क्योंकि
जहाँ जलन और झगड़े होते हैं,* वहाँ
गड़बड़ी और हर तरह की बुराई भी
होगी।[2]

17 लेकिन जो बुद्धि स्वर्ग से मिलती
है वह सबसे पहले तो पवित्र,[3] फिर
शांति कायम करनेवाली,[4] लिहाज़ करने-
वाली,[5] आज्ञा मानने के लिए तैयार, दया
और अच्छे कामों से भरपूर होती है।[6] यह
भेदभाव नहीं करती[7] और न ही कपटी
होती है।[8] **18** जो शांति कायम करते
हैं,[9] उनके लिए शांति के हालात में नेकी
का फल बोया जाता है।*[10]

4 तुम्हारे बीच लड़ाइयाँ और झगड़े
क्यों हो रहे हैं? क्या इनकी वजह
तुम्हारे शरीर की इच्छाएँ नहीं जो तुम्हें
काबू में करने के लिए तुमसे* लड़ती
रहती हैं?[11] **2** तुम चाहते तो हो फिर
भी तुम्हें मिलता नहीं। तुम खून करते
और लालच करते हो और फिर भी
हासिल नहीं कर पाते। तुम लड़ाइयाँ और
युद्ध करते रहते हो।[12] तुम्हारे पास इस-
लिए नहीं है क्योंकि तुम माँगते नहीं।
3 और जब माँगते हो तो पाते नहीं,
क्योंकि तुम गलत इरादे से माँगते हो
ताकि तुम इसे शरीर की इच्छाएँ पूरी
करने में उड़ा दो।

4 अरे व्यभिचार करनेवालो,* क्या
तुम नहीं जानते कि दुनिया के साथ दोस्ती
करने का मतलब परमेश्वर से दुश्मनी
करना है? इसलिए जो कोई इस दुनिया

अध्य. 3
1 भज 39:1; मत 15:11, 18; मर 7:23
2 भज 140:3; नीत 12:18; नीत 18:7
3 उत 1:26, 27
4 इफ 4:29
5 मत 7:16
6 रोम 13:13; 1कुर 3:3
7 इफ 4:31
8 1कुर 13:4

दूसरा कॉल.
1 1कुर 2:14; फिल 3:19
2 नीत 14:30; गल 5:19-21
3 रोम 12:9; 1ती 5:1, 2
4 2कुर 13:11; 1थि 5:13; 2पत 3:14
5 1ती 3:3; तीत 3:2
6 गल 5:22, 23
7 याकू 2:9
8 1पत 1:22
9 मत 5:9; 1पत 3:11
10 यश 32:17; इब्र 12:11

अध्य. 4
11 रोम 7:23; गल 5:17; याकू 3:14; 1पत 2:11
12 मत 5:22; याकू 3:16

3:6 *शब्दावली देखें। **3:9** *अति. क5 देखें। **3:14** *या शायद, "बड़ा बनने का जुनून।"

3:15 *या "जानवरों जैसी।" **3:16** *या शायद, "और बड़ा बनने का जुनून होता है।" **3:18** *या शायद, "वे शांति के हालात में नेकी का फल बोते हैं।" **4:1** *शा., "तुम्हारे अंगों में।" **4:4** *या "विश्वासघाती लोगो।"

का दोस्त बनना चाहता है वह पर-
मेश्वर का दुश्मन बन जाता है।[1] **5** या
क्या तुम्हें लगता है कि शास्त्र बेवजह
ही कहता है, “हमारे अंदर जो फित-
रत समायी है वह हममें ईर्ष्या पैदा करके
अपनी लालसाएँ पूरी करने को उक-
साती रहती है”?[2] **6** मगर परमेश्वर
जो महा-कृपा हमें देता है वह हमारी इस
फितरत से कहीं महान है। इसलिए शास्त्र
कहता है, “परमेश्वर घमंडियों का विरोध
करता है,[3] मगर नम्र लोगों पर महा-
कृपा करता है।”[4]

7 इसलिए खुद को परमेश्वर के
अधीन करो,[5] मगर शैतान* का विरोध
करो[6] और वह तुम्हारे पास से भाग
जाएगा।[7] **8** परमेश्वर के करीब आओ
और वह तुम्हारे करीब आएगा।[8] अरे
पापियो, अपने हाथ धोओ,[9] अरे
शक करनेवालो,* अपने दिलों को शुद्ध
करो।[10] **9** अपनी दुर्दशा पर मातम
करो और रोओ।[11] तुम्हारी हँसी मातम
में और तुम्हारी खुशी निराशा में बदल
जाए। **10** यहोवा* की नज़रों में खुद
को नम्र करो[12] और वह तुम्हें ऊँचा
करेगा।[13]

11 भाइयो, एक-दूसरे के खिलाफ
बोलना बंद करो।[14] जो किसी भाई के
खिलाफ बोलता है या उसे दोषी ठहराता
है, वह परमेश्वर के कानून के खिलाफ
बोलता है और उस कानून पर दोष
लगाता है। अगर तू कानून पर दोष
लगाता है, तो तू उस पर चलनेवाला नहीं
बल्कि उसका न्यायी ठहरा। **12** कानून
देनेवाला और न्यायी तो एक ही है,[15]
जो बचा भी सकता है और नाश भी कर
सकता है।[1] तो दूसरे को दोषी ठहराने-
वाला तू कौन होता है?[2]

13 सुनो, तुम कहते हो, “आज या
कल हम उस शहर में जाएँगे और वहाँ
एक साल बिताएँगे और व्यापार करेंगे
और खूब पैसा कमाएँगे,”[3] **14** जबकि
तुम नहीं जानते कि कल तुम्हारे
जीवन का क्या होगा।[4] क्योंकि तुम उस
धुंध की तरह हो जो थोड़ी देर दिखायी
देती है और फिर गायब हो जाती
है।[5] **15** इसके बजाय, तुम्हें यह कहना
चाहिए, “अगर यहोवा* की मरज़ी हो,[6]
तो हम कल का दिन देखेंगे और यह
काम या वह काम करेंगे।” **16** मगर
तुम तो घमंड करते हो और डींगें मारते
हो। इस तरह घमंड करना बुरी बात है।
17 इसलिए अगर कोई सही काम करना
जानता है फिर भी नहीं करता, तो वह
पाप करता है।[7]

5 अरे धनवानो, सुनो, तुम पर मुसी-
बतें आनेवाली हैं इसलिए ज़ोर-
ज़ोर से रोओ।[8] **2** तुम्हारी धन-दौलत
सड़ गयी है और तुम्हारे कपड़े कीड़े*
खा गए हैं।[9] **3** तुम्हारे सोने-चाँदी में
ज़ंग लग गया है और उनका ज़ंग तुम्हारे
खिलाफ गवाही देगा और तुम्हें खा
जाएगा। तुमने जो बटोरा है वह आखिरी
दिनों में आग जैसा होगा।[10] **4** देखो!
जिन मज़दूरों ने तुम्हारे खेतों में कटाई
की तुमने उनकी मज़दूरी मार ली है।
उनकी मज़दूरी तुम्हारे खिलाफ चिल्ला
रही है और मदद के लिए उनकी
पुकार सेनाओं के परमेश्वर यहोवा*
के कानों तक पहुँच गयी है।[11] **5** तुम
दुनिया में खूब ऐशो-आराम से जीए
और तुमने अपनी हर लालसा पूरी की।

4:7 *शा., “इबलीस।” शब्दावली देखें। **4:8** *या “दुचित्ते लोगो।” **4:10, 15; 5:4** *अति. क5 देखें।

5:2 *या “कपड़-कीड़े।”

अध्य. 4

1 2इत 19:2, यूह 15:19, यूह 18:36, 1यूह 2:15, 1यूह 5:19
2 उत 6:5
3 भज 138:6
4 नीत 3:34, 1पत 5:5
5 इब्र 12:9, 1पत 5:6
6 इफ 4:27, इफ 6:11
7 मत 4:10, 11, लूक 4:13
8 यश 44:22, यश 55:6, 7
9 यश 1:16
10 1यूह 3:3
11 योए 2:12
12 2इत 7:14, 2इत 33:12, 13
13 नीत 29:23, मत 23:12
14 लैव 19:16, नीत 17:9
15 यश 33:22

दूसरा कॉल.

1 मत 10:28
2 लूक 6:37, रोम 14:4
3 लूक 12:18-20
4 भज 39:6, नीत 27:1, सभ 6:12
5 अय 14:1, 2, भज 102:3, 1पत 1:24
6 प्रेष 18:21, इब्र 6:3
7 लूक 12:47, यूह 9:41, यूह 15:22

अध्य. 5

8 नीत 11:28, लूक 6:24, लूक 18:25
9 मत 6:19, लूक 12:33
10 यहे 7:19
11 लैव 19:13, व्य 24:14, 15, यिर्म 22:13, मला 3:5

तुमने हलाल करनेवाले दिन के लिए
अपने दिलों को मोटा कर लिया है।[1]
6 तुमने उस नेक जन को दोषी ठहराकर
मार डाला। क्या वह तुम्हारा विरोध नहीं
कर रहा?

7 इसलिए भाइयो, हमारे प्रभु की
मौजूदगी तक सब्र रखो।[2] ध्यान दो! एक
किसान ज़मीन की बढ़िया पैदावार पाने
के लिए इंतज़ार करता है और शुरू की
बारिश और बाद की बारिश होने तक
सब्र रखता है।[3] **8** तुम भी सब्र रखो।[4]
अपने दिलों को मज़बूत करो क्योंकि
प्रभु की मौजूदगी का वक्त पास आ
गया है।[5]

9 भाइयो, तुम एक-दूसरे के खिलाफ
बड़बड़ाओ मत* ताकि तुम सज़ा न
पाओ।[6] देखो! हम सबका न्यायी दर-
वाज़े तक आ पहुँचा है। **10** भाइयो,
यहोवा* के नाम से बोलनेवाले भविष्य-
वक्ताओं[7] ने जिस तरह दुख सहा और
सब्र रखा,[8] उसे एक नमूना मान-
कर चलो।[9] **11** देखो! हम मानते हैं
कि जो धीरज धरते हैं वे सुखी#
हैं।[10] तुमने सुना है कि अय्यूब ने
कैसे धीरज धरा था[11] और यहोवा*
ने उसे क्या इनाम दिया था,[12]
जिससे तुम समझ सकते हो कि यहोवा*
गहरा लगाव रखनेवाला△ और दयालु
परमेश्वर है।[13]

12 खासकर मेरे भाइयो, कसमें खाना
बंद करो। न तो स्वर्ग की कसम खाना
न ही धरती की और न ही किसी और
चीज़ की। इसके बजाय, तुम्हारी "हाँ" का
मतलब हाँ हो और "न" का मतलब न[1]
ताकि तुम सज़ा के लायक न ठहरो।

13 क्या तुम्हारे बीच कोई मुसीबतें
झेल रहा है? तो वह प्रार्थना में लगा रहे।[2]
क्या किसी का मन खुश है? तो वह पर-
मेश्वर की तारीफ में गीत* गाए।[3]
14 क्या तुम्हारे बीच कोई बीमार है? तो
वह मंडली के प्राचीनों को बुलाए[4] और वे
उसके लिए प्रार्थना करें और यहोवा* के
नाम से उस बीमार पर तेल मलें।[5]
15 और विश्वास से की गयी प्रार्थना
उस बीमार# को अच्छा कर देगी और
यहोवा* उसे उठाकर खड़ा कर देगा।
और अगर उसने पाप किए हों तो उसे
माफ कर दिया जाएगा।

16 इसलिए तुम एक-दूसरे के सामने
खुलकर अपने पाप मान लो[6] और एक-
दूसरे के लिए प्रार्थना करो ताकि तुम
अच्छे हो जाओ। एक नेक इंसान की
मिन्नतों का ज़बरदस्त असर होता है।[7]
17 एलियाह भी हमारी तरह एक इंसान
था, जिसमें हमारे जैसी भावनाएँ थीं।
फिर भी जब उसने दिलो-जान से प्रार्थना
की कि बारिश न हो, तो देश में साढ़े तीन
साल तक बारिश नहीं हुई।[8] **18** और
जब उसने फिर प्रार्थना की, तो आकाश
से बारिश हुई और धरती ने अपनी पैदा-
वार दी।[9]

19 मेरे भाइयो, तुममें से अगर कोई
सच्चाई के रास्ते से भटक जाए और
कोई उस भटके हुए को वापस ले आए,
20 तो जान लो कि जो उस पापी को
गलत रास्ते से वापस ले आता है[10] वह
उसे मरने से बचाता है और उसके ढेर सारे
पापों को ढक देता है।[11]

5:9 *या "शिकायत मत करो।" शा., "गहरी आहें मत भरो।" **5:10, 11, 14, 15** *अति. क5 देखें। **5:11** #या "धन्य।" △या "करुणा से भरा।"

5:13 *या "भजन।" **5:15** #या शायद, "थके हुए।"

अध्य. 5
1 यिर्म 12:3
2 मत 24:3
3 व्य 11:14
यिर्म 5:24
4 इब्र 6:12
5 1थि 3:13
6 1कुर 4:5
7 2इत 36:16
8 इब्र 6:12
9 मत 5:12
10 याकू 1:2-4
11 अय 1:20, 21
12 अय 42:10
13 भज 103:8
लूक 6:36

दूसरा कॉल.
1 मत 5:34-37
2 भज 50:15
3 कुल 3:16
4 प्रेष 20:28, 35
1पत 5:2
5 भज 141:5
मर 6:13
लूक 10:34
6 2शम 12:13
भज 32:5
नीत 28:13
1यूह 1:9
7 1शम 12:18
1रा 13:6
8 1रा 17:1
9 1रा 18:42, 45
10 गल 6:1
11 1ती 4:16

पतरस

की पहली चिट्ठी

सारांश

1 नमस्कार (1, 2)
एक नया जन्म ताकि पक्की आशा मिले (3-12)
आज्ञा माननेवाले बच्चों की तरह पवित्र बनो (13-25)

2 वचन के लिए ज़बरदस्त भूख पैदा करो (1-3)
जीवित पत्थरों से भवन बनता है (4-10)
दुनिया में परदेसियों की तरह जीना (11, 12)
सही तरह की अधीनता (13-25)
मसीह हमारा आदर्श (21)

3 पत्नी और पति (1-7)
एक-दूसरे का दर्द महसूस करो; शांति की खोज करो (8-12)
नेकी की खातिर दुख उठाना (13-22)
अपनी आशा की पैरवी करने के लिए तैयार रहो (15)
बपतिस्मा और साफ ज़मीर (21)

4 मसीह की तरह परमेश्वर की मरज़ी पूरी करने के लिए जीओ (1-6)
सब बातों का अंत पास आ गया है (7-11)
मसीही होने की वजह से दुख उठाना (12-19)

5 चरवाहों की तरह परमेश्वर के झुंड की देखभाल करो (1-4)
नम्र बनो और चौकन्ने रहो (5-11)
अपनी चिंताओं का बोझ परमेश्वर पर डाल दो (7)
शैतान गरजते शेर की तरह है (8)
आखिरी शब्द (12-14)

1 मैं पतरस जो यीशु मसीह का एक
प्रेषित हूँ,[1] उन चुने हुए लोगों के नाम
यह चिट्ठी लिख रहा हूँ जो पुन्तुस, गला-
तिया, कप्पदूकिया,[2] एशिया और बितू-
निया में फैले हुए हैं और प्रवासियों की
तरह रहते हैं। 2 उन्हें परमेश्वर हमारे
पिता ने भविष्य के बारे में पहले से
जानने की अपनी काबिलीयत का इस्ते-
माल करके चुना है[3] और वे पवित्र
शक्ति से पवित्र ठहराए गए हैं[4] ताकि
आज्ञा माननेवाले बनें और उन पर यीशु
मसीह का खून छिड़का जाए।[5]

तुम पर परमेश्वर की महा-कृपा और
शांति और भी बढ़कर हो।

3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर
और पिता की तारीफ हो, जिसने यीशु
मसीह को मरे हुओं में से ज़िंदा
किया[1] और ऐसा करके हम पर बड़ी
दया की और हमें एक नया जन्म दिया[2]
और एक पक्की आशा दी[3] 4 ताकि
हमें वह विरासत मिले जो अनश्वर
और निष्कलंक है[4] और जो कभी नहीं
मिटेगी। यह विरासत तुम्हारे लिए स्वर्ग
में सुरक्षित रखी गयी है।[5] 5 हाँ तुम्हारे
लिए, जिनकी हिफाज़त परमेश्वर अपनी
शक्ति से कर रहा है क्योंकि तुममें
विश्वास है। परमेश्वर उस उद्धार के
लिए तुम्हारी हिफाज़त कर रहा है जो
आखिरी वक्त में ज़ाहिर किया जाएगा।
6 इस वजह से तुम बहुत खुश हो,
हालाँकि कुछ वक्त के लिए ज़रूरी है कि
तुम तरह-तरह की परीक्षाओं की वजह
से दुख झेलो[6] 7 ताकि अपने परखे हुए
विश्वास की वजह से तुम यीशु मसीह के

अध्य. 1
1 मत 10:2
2 प्रेष 2:5, 9
3 रोम 8:29
4 2थि 2:13
5 इब्र 12:22, 24

दूसरा कॉल.
1 1कुर 15:20
2 1पत 1:23
3 प्रक 20:6
4 1कुर 15:53; 2ती 1:10; 1पत 5:4
5 यूह 14:2; 2ती 4:8
6 2कुर 4:17; 2ती 3:12

प्रकट होने पर तारीफ, महिमा और आदर
पाओ। तुम्हारा परखा हुआ विश्वास[1] उस
खरे सोने से कहीं अनमोल है, जो आग
में तपाए जाने* के बाद भी नष्ट हो जाता
है।[2] **8** तुमने मसीह को कभी नहीं
देखा, फिर भी तुम उससे प्यार करते हो।
तुम उसे अभी-भी नहीं देखते, फिर भी
तुम उस पर विश्वास करते हो और ऐसी
खुशी मनाते हो जो शब्दों में बयान नहीं
की जा सकती और जो बहुत ही शानदार
है **9** क्योंकि तुम्हें यकीन है कि अपने
विश्वास की वजह से तुम्हें इनाम में उद्धार
मिलेगा।[3]

10 इसी उद्धार के बारे में उन भविष्य-
वक्ताओं ने बहुत लगन से पूछताछ
की और ध्यान से खोजबीन की, जिन्होंने
तुम पर होनेवाली महा-कृपा के बारे में
भविष्यवाणी की थी।[4] **11** वे इस बारे
में जाँचते रहे कि उनमें काम करनेवाली
पवित्र शक्ति ने उन्हें मसीह के बारे में जो
बातें बतायी थीं, वे किस खास वक्त में
और किन हालात में पूरी होंगी[5] क्योंकि
पवित्र शक्ति ने उन्हें पहले से गवाही दी
थी कि मसीह क्या-क्या तकलीफें झेलेगा[6]
और इसके बाद उसे कैसे महिमा दी
जाएगी। **12** उन पर यह ज़ाहिर किया
गया था कि उन्होंने सेवकों के नाते जो
बातें बतायी थीं, वे खुद उनके लिए नहीं
थीं बल्कि तुम्हारे लिए थीं। उन्होंने जिन
बातों का ऐलान किया था, वही बातें तुम्हें
उन लोगों ने बतायी हैं जिन्होंने स्वर्ग से
भेजी पवित्र शक्ति के ज़रिए तुम्हें खुश-
खबरी सुनायी है।[7] स्वर्गदूत भी इन बातों
में झाँककर इन्हें बहुत करीब से देखने की
तमन्ना रखते हैं।

13 इसलिए कड़ी मेहनत करने के
लिए अपने दिमाग की सारी शक्ति
बटोर लो,[1] पूरे होश-हवास में रहो[2] और
उस महा-कृपा पर आशा रखो जो तुम्हें
यीशु मसीह के प्रकट होने पर मिलने-
वाली है। **14** आज्ञा माननेवाले बच्चों
की तरह, अपनी उन इच्छाओं के मुता-
बिक खुद को ढालना बंद करो जो तुम्हारे
अंदर उस वक्त थीं जब तुम पर-
मेश्वर से अनजान थे। **15** मगर उस
पवित्र परमेश्वर की तरह, जिसने तुम्हें
बुलाया है, तुम भी अपना पूरा चालचलन
पवित्र बनाए रखो[3] **16** क्योंकि लिखा
है: "तुम्हें पवित्र बने रहना है क्योंकि मैं
पवित्र हूँ।"[4]

17 और अगर तुम उस पिता को
पुकारते हो जो बिना पक्षपात किए हरेक
के कामों के मुताबिक न्याय करता है,[5]
तो आज जब तुम कुछ वक्त के लिए पर-
देसियों की तरह जी रहे हो, तो पर-
मेश्वर का डर मानते हुए जीवन बिताओ।[6]
18 तुम जानते हो कि तुमने अपने पुरखों
से निकम्मी ज़िंदगी के जो तौर-तरीके
सीखे थे, उनसे छुटकारा पा लिया है।*[7]
तुमने यह छुटकारा सोने-चाँदी जैसी नश्वर
चीज़ों की वजह से नहीं, **19** बल्कि
मसीह के बेशकीमती खून की वजह से
पाया है,[8] जो एक बेदाग और निर्दोष मेम्ना
है।[9] **20** परमेश्वर ने भविष्य जानने की
अपनी काबिलीयत का इस्तेमाल करके
उसे दुनिया की शुरूआत से पहले ही चुन
लिया था।[10] मगर इन ज़मानों के आखिर
में तुम्हारी खातिर उसे ज़ाहिर किया गया
है।[11] **21** तुम उसके ज़रिए परमेश्वर पर
विश्वास करते हो।[12] परमेश्वर ने उसे मरे
हुओं में से ज़िंदा किया[13] और उसे महिमा
दी[14] ताकि तुम परमेश्वर पर विश्वास और
आशा रखो।

1:7 *या "शुद्ध किए जाने।"

1:18 *शा., "तुम फिरौती की वजह से
छुड़ाए गए।"

अध्य. 1

1 याकू 1:2, 3
2 2थि 1:7
3 रोम 6:22
4 मत 13:17
5 दान 9:24-27
6 यश 53:5
7 यूह 15:26; प्रेष 2:4

दूसरा कॉल.

1 लूक 12:35
2 इफ 5:17; 1पत 4:7
3 व्य 28:9; रोम 12:1; इब्र 12:14
4 लैव 11:44; लैव 19:2; लैव 20:7, 26
5 व्य 10:17
6 2कुर 7:1
7 1कुर 6:20
8 यश 53:12; इब्र 9:14
9 निर्ग 12:5; लैव 22:20; यूह 1:29; 1कुर 5:7
10 यूह 17:5; इफ 1:4
11 कुल 1:26, 27
12 यूह 14:6
13 प्रेष 2:24
14 इब्र 2:9

22 तुमने सच्चाई के वचन को मान-
कर खुद को शुद्ध किया है जिस वजह से
तुम निष्कपट मन से एक-दूसरे के लिए
भाइयों जैसा लगाव रखते हो,[1] इसलिए
अब पूरे जतन के साथ एक-दूसरे को दिल
से प्यार करो।[2] 23 क्योंकि तुम्हें एक
नया जन्म दिया गया है[3] और यह नया
जीवन किसी नश्वर नहीं बल्कि अनश्वर
बीज* के ज़रिए दिया गया है,[4] जो
जीवित और अनंत परमेश्वर का वचन
है।[5] 24 “सब इंसान घास के समान हैं
और उनकी शोभा मैदान के फूलों की
तरह है। घास सूख जाती है और फूल झड़
जाता है, 25 लेकिन यहोवा* का वचन
हमेशा-हमेशा तक कायम रहता है।”[6]
यह “वचन” वह खुशखबरी है जो तुम्हें
सुनायी गयी है।[7]

2 इसलिए हर तरह की बुराई, छल,
कपट, ईर्ष्या, पीठ पीछे बदनाम
करना, यह सब खुद से दूर करो।[8]
2 नवजात शिशुओं की तरह[9] शुद्ध* दूध
के लिए यानी परमेश्वर के वचन के लिए
ज़बरदस्त भूख पैदा करो ताकि तुम बढ़ते
रहो और उद्धार पाओ।[10] 3 क्योंकि
तुमने खुद चखकर जाना है* कि प्रभु
कितना कृपालु है।

4 प्रभु वह जीवित पत्थर है जिसे
इंसानों ने ठुकरा दिया,[11] मगर वह पर-
मेश्वर का चुना हुआ है और उसके लिए
बेशकीमती है। तुम प्रभु के पास आए
हो[12] 5 इसलिए तुम खुद भी जीवित
पत्थर हो और पवित्र शक्ति से एक भवन
के रूप में तुम्हारा निर्माण किया जा रहा
है।[13] यह इसलिए किया जा रहा है ताकि
तुम पवित्र याजकों का दल बनो और यीशु
मसीह के ज़रिए परमेश्वर को ऐसे बलि-
दान चढ़ाओ जो पवित्र शक्ति के मुता-
बिक हों और उसे मंज़ूर हों।[1] 6 क्योंकि
शास्त्र कहता है, “देख! मैं सिय्योन में
एक चुना हुआ पत्थर रखता हूँ। यह
कोने का वह कीमती पत्थर है जिसकी मैं
नींव डाल रहा हूँ। और जो कोई उस पर
विश्वास करता है वह कभी निराश नहीं
होगा।”*[2]

7 वह तुम्हारे लिए बेशकीमती है
क्योंकि तुम विश्वासी हो। मगर अविश्वा-
सियों के बारे में शास्त्र कहता है, “जिस
पत्थर को राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया,[3]
वही कोने का मुख्य पत्थर बन गया
है”[4] 8 और उनके लिए वह “ठोकर
खिलानेवाला पत्थर और ठेस पहुँचाने-
वाली चट्टान” बन गया है।[5] वे इस-
लिए ठोकर खाते हैं क्योंकि वे वचन
की आज्ञा नहीं मानते। उनका अंत इसी
तरह होना है। 9 मगर तुम “एक चुनी
हुई जाति, शाही याजकों का दल और
एक पवित्र राष्ट्र हो[6] और परमेश्वर की
खास जागीर बनने के लिए चुने गए लोग
हो[7] ताकि तुम सारी दुनिया में उसके
महान गुणों* का ऐलान करो”[8] जिसने
तुम्हें अंधकार से निकालकर अपनी शान-
दार रौशनी में बुलाया है।[9] 10 क्योंकि
एक वक्त ऐसा था जब तुम परमेश्वर के
लोग नहीं थे, मगर अब उसके लोग
हो।[10] तुम ऐसे थे जिन पर दया नहीं की
गयी थी, मगर अब ऐसे लोग हो जिन पर
दया की गयी है।[11]

11 प्यारे भाइयो, मैं तुमसे गुज़ारिश
करता हूँ कि इस दुनिया में परदेसियों

1:23 *यानी ऐसा बीज जो फल पैदा कर सकता है। **1:25** *अति. क5 देखें। **2:2** *या “बिना मिलावट के।” **2:3** *या “अनुभव किया है।”

2:6 *शा., “शर्मिंदा नहीं किया जाएगा।” **2:9** *यानी उसके काबिले-तारीफ गुण और काम।

अध्य. 1

1 रोम 12:9; 1यूह 3:17
2 1ती 1:5
3 यूह 3:3; 2कुर 5:17; 1पत 1:3; 1यूह 3:9
4 यूह 3:6
5 यूह 6:63; याकू 1:18
6 यश 40:6-8
7 तीत 1:3

अध्य. 2

8 गल 5:16; याकू 1:21
9 मर 10:15
10 2ती 3:15
11 यश 53:3; यूह 19:15
12 भज 118:22; यश 42:1; मत 21:42; प्रेष 4:11
13 इफ 2:21

दूसरा कॉल.

1 रोम 12:1; इब्र 13:15
2 यश 28:16
3 भज 69:8
4 भज 118:22; मत 21:42; लूक 20:17; प्रेष 4:11
5 यश 8:14
6 प्रक 5:10; प्रक 20:6
7 निर्ग 19:5, 6; व्य 7:6; व्य 10:15; मला 3:17
8 यश 43:20, 21
9 इफ 5:8; कुल 1:13
10 हो 1:10; प्रेष 15:14; रोम 9:25
11 हो 2:23

और प्रवासियों की तरह[1] जीते हुए शरीर की इच्छाओं से खुद को दूर रखो,[2] जो तुम पर हावी होने की कोशिश करती हैं।[3] **12** दुनिया के लोगों के बीच तुम बढ़िया चालचलन बनाए रखो[4] ताकि जब वे तुम पर बुरे काम करने का दोष लगाएँ, तो अपनी आँखों से तुम्हारे भले काम देख सकें[5] और उस दिन परमेश्वर की महिमा करें जिस दिन वह जाँच करने आएगा।

13 प्रभु की खातिर खुद को इंसान के ठहराए अधिकार के अधीन करो:[6] राजा के अधीन[7] क्योंकि वह सबसे बड़ा अधिकारी है **14** या राज्यपालों के अधीन, जिन्हें उसने बुरे काम करनेवालों को सज़ा देने और अच्छे काम करनेवालों की तारीफ करने के लिए भेजा है।[8] **15** क्योंकि परमेश्वर की मरज़ी यही है कि तुम अच्छे काम करके ऐसे मूर्खों का मुँह बंद करो* जो बिना सोचे-समझे तुम्हारे खिलाफ बोलते हैं।[9] **16** आज़ाद लोगों की तरह जीओ,[10] मगर अपनी आज़ादी को बुरे काम करने के लिए आड़* मत बनाओ,[11] बल्कि परमेश्वर के दास बनकर जीओ।[12] **17** हर किस्म के इंसान का आदर करो,[13] भाइयों की सारी बिरादरी से प्यार करो,[14] परमेश्वर का डर मानो,[15] राजा का आदर करो।[16]

18 सेवकों को अपने मालिकों के अधीन रहना चाहिए और जैसा डर मानना सही है,[17] उनका वैसा डर मानना चाहिए। उन्हें न सिर्फ भले और लिहाज़ करनेवाले मालिकों के अधीन रहना चाहिए, बल्कि उनके भी जिन्हें खुश करना मुश्किल है। **19** क्योंकि अगर कोई परमेश्वर के सामने अपना ज़मीर साफ बनाए रखने के लिए मुश्किलें* और नाइंसाफी सहता है, तो परमेश्वर की नज़र में यह अच्छी बात है।[1] **20** क्योंकि अगर तुम्हें पाप करने की वजह से पीटा जाता है और तुम सहते हो, तो इसमें तारीफ की क्या बात है?[2] लेकिन अगर तुम अच्छा काम करने की वजह से दुख सहते हो, तो परमेश्वर की नज़र में यह अच्छी बात है।[3]

21 दरअसल, तुम्हें इसी राह पर चलने के लिए बुलाया गया है, क्योंकि मसीह ने भी तुम्हारी खातिर दुख उठाया[4] और वह तुम्हारे लिए एक आदर्श छोड़ गया ताकि तुम उसके नक्शे-कदम पर नज़दीकी से चलो।[5] **22** उसने कोई पाप नहीं किया,[6] न ही उसके मुँह से छल की बातें निकलीं।[7] **23** जब उसकी बेइज़्ज़ती की गयी,*[8] तो बदले में उसने बेइज़्ज़ती नहीं की।#[9] जब वह दुख झेल रहा था,[10] तो उसने धमकियाँ नहीं दीं, बल्कि खुद को उस परमेश्वर के हाथ में सौंप दिया जो सच्चा न्याय करता है।[11] **24** जब उसे काठ* पर ठोंक दिया गया था[12] तो उसने हमारे पापों को अपने शरीर पर उठा लिया[13] ताकि हम अपने पापों से आज़ाद हों और नेक काम करने के लिए जीएँ। और "उसके घाव से तुम चंगे हुए।"[14] **25** क्योंकि तुम उन भेड़ों की तरह थे जो भटक गयी थीं,[15] मगर अब तुम अपने चरवाहे और तुम्हारे जीवन की निगरानी करनेवाले के पास लौट आए हो।[16]

2:15 *शा., "मुँह बाँध दो।" **2:16** *या "बहाना।"

2:19 *या "दुख; दर्द।" **2:23** *या "उसे गाली दी गयी।" #या "गाली नहीं दी।" **2:24** *या "पेड़।"

अध्य. 2

1 1पत 1:17
2 रोम 8:5, गल 5:24
3 गल 5:17, याकू 4:1
4 रोम 12:17, 1ती 3:7
5 मत 5:16, याकू 3:13
6 रोम 13:1, इफ 6:5, तीत 3:1
7 1पत 2:17
8 रोम 13:3, 4
9 तीत 2:7, 8
10 गल 5:1
11 गल 5:13
12 1कुर 7:22
13 लैव 19:32, रोम 12:10, रोम 13:7
14 1यूह 2:10, 1यूह 4:21
15 भज 111:10, नीत 8:13, 2कुर 7:1
16 नीत 24:21
17 इफ 6:5, कुल 3:22, 1ती 6:1, तीत 2:9

दूसरा कॉल.

1 रोम 13:5
2 1पत 4:15
3 मत 5:10, प्रेष 5:41, 1पत 4:14
4 1पत 3:18
5 मत 16:24, यूह 13:15
6 यूह 8:46, इब्र 4:15
7 यश 53:9
8 मत 27:39
9 यश 53:7, रोम 12:21
10 इब्र 5:8
11 यिर्म 11:20, यूह 8:50
12 फिल 2:8
13 लैव 16:21
14 यश 53:5
15 यश 53:6
16 भज 23:1, यश 40:11

3 उसी तरह पत्नियो, तुम अपने-अपने
पति के अधीन रहो[1] ताकि अगर
किसी का पति परमेश्वर के वचन की
आज्ञा नहीं मानता 2 तो वह अपनी
पत्नी का पवित्र चालचलन और गहरा
आदर देखकर[2] तुम्हारे कुछ बोले बिना ही
जीत लिया जाए।[3] 3 तुम्हारा सजना-
सँवरना ऊपरी न हो, जैसे बाल गूँथना,
सोने के गहने या बढ़िया पोशाक पहन-
ना।[4] 4 इसके बजाय, तुम अपने अंदर
के इंसान को शांत और कोमल स्वभाव
से सँवारो। यह ऐसी सजावट है जो
कभी पुरानी नहीं पड़ती[5] और परमेश्वर
की नज़रों में अनमोल है। 5 गुज़रे
ज़माने की पवित्र औरतें भी जो पर-
मेश्वर पर आशा रखती थीं, इसी तरह
खुद को सँवारती थीं और अपने-अपने
पति के अधीन रहा करती थीं। 6 जैसे
सारा अब्राहम की आज्ञा मानती और
उसे प्रभु पुकारती थी।[6] अगर तुम अच्छे
काम करती रहो और डर को खुद पर
हावी न होने दो तो उसकी बेटियाँ ठह-
रोगी।[7]

7 पतियो, तुम भी उसी तरह अपनी-
अपनी पत्नी के साथ समझदारी से*
जीवन बिताते रहो। और यह जानते हुए
कि वह औरत होने के नाते तुमसे ज़्यादा
नाज़ुक पात्र है, उसके साथ आदर से पेश
आओ[8] क्योंकि तुम भी उसके साथ महा-
कृपा से मिलनेवाले जीवन के वारिस हो[9]
ताकि तुम्हारी प्रार्थनाओं में रुकावट न
आए।

8 आखिर में मैं कहता हूँ, तुम सबकी
सोच एक जैसी हो,*[10] एक-दूसरे का दर्द
महसूस करो, भाइयों जैसा लगाव रखो,
कोमल करुणा दिखाओ,[1] नम्र स्वभाव
रखो,[2] 9 अगर कोई तुम्हें चोट पहुँ-
चाए तो बदले में उसे चोट मत पहुँचाओ[3]
और अगर कोई तुम्हारी बेइज़्ज़ती करे
तो बदले में उसकी बेइज़्ज़ती मत करो।[4]
इसके बजाय, उसका भला करो*[5]
क्योंकि तुम इसी राह पर चलने के लिए
बुलाए गए हो ताकि विरासत में आशीष
पा सको।

10 क्योंकि "जिसे ज़िंदगी से प्यार है
और जो अच्छे दिन देखना चाहता है वह
अपनी जीभ को बुराई करने से और अपने
होंठों को छल की बातें कहने से रोके।[6]
11 वह बुराई से दूर हो जाए[7] और भले
काम करे,[8] शांति कायम करने की खोज
करे और उसमें लगा रहे।[9] 12 क्योंकि
यहोवा* की आँखें नेक लोगों पर लगी
रहती हैं और उसके कान उनकी मिन्‍नतें
सुनते हैं।[10] मगर यहोवा* बुरे काम करने-
वालों के खिलाफ हो जाता है।"[11]

13 अगर तुम अच्छे कामों के लिए
जोश दिखाओ तो कौन तुम्हें नुकसान
पहुँचाएगा?[12] 14 और अगर तुम नेकी
की खातिर दुख भी उठाते हो तो सुखी
हो।[13] उन बातों से मत डरो जिनसे लोग
डरते हैं,* न ही परेशान हो जाओ।[14]
15 मगर मसीह को प्रभु जानकर अपने
दिलों में पवित्र मानो और जो कोई तुम्हारी
आशा की वजह जानने की माँग करता
है, उसके सामने अपनी आशा की पैरवी
करने के लिए हमेशा तैयार रहो, मगर
ऐसा कोमल स्वभाव[15] और गहरे आदर
के साथ करो।[16]

16 अपना ज़मीर साफ बनाए रखो[17]
ताकि लोग चाहे किसी भी बात में तुम्हारे

3:7 *शा., "ज्ञान के मुताबिक।" या "का लिहाज़ करते हुए।" 3:8 *या "विचारों में एकता हो।"

3:9 *शा., "उसे आशीष दो।" 3:12 *अति. क5 देखें। 3:14 *या शायद, "लोगों की धमकियों से मत डरो।"

अध्य. 3
1 रोम 7:2
1कुर 11:3
इफ 5:22
2 1पत 2:12
3 1कुर 7:16
4 नीत 11:22
5 इफ 4:24
कुल 3:10, 12
1ती 2:9, 10
6 उत 18:12
इफ 5:33
7 नीत 3:25
फिल 1:28
8 इफ 5:25
9 गल 3:28
10 1कुर 1:10
फिल 2:2

दूसरा कॉल.
1 रोम 12:10
2 रोम 15:5
कुल 3:12
3 रोम 12:17
1थि 5:15
4 1पत 2:23
5 रोम 12:14
1कुर 4:12
6 याकू 3:8
7 नीत 8:13
8 3यूह 11
9 1थि 5:13
याकू 3:17
10 1यूह 3:22
11 भज 34:12-16
12 रोम 13:3, 4
13 मत 5:11, 12
प्रेष 5:41
1पत 2:19
14 मत 10:28
15 नीत 15:1
2ती 2:24, 25
तीत 3:1, 2
16 कुल 4:6
17 प्रेष 23:1
प्रेष 24:16
1ती 1:5
1ती 1:18, 19
1ती 3:9

खिलाफ बोलें, जब वे देखेंगे कि मसीह के
चेलों के नाते तुम्हारा चालचलन कितना
बढ़िया है, तो वे शर्मिंदा हो जाएँगे।[1]
17 अगर तुम भला काम करने की वजह
से दुख उठाते हो और परमेश्वर की भी
यही मरज़ी है तो तुम्हारे लिए दुख उठाना
ज़्यादा अच्छा है,[2] बजाय इसके कि तुम
बुरे काम करके दुख उठाओ।[3] 18 यहाँ
तक कि मसीह भी हमारे पापों के लिए
एक ही बार हमेशा के लिए मरा।[4] वह
नेक होते हुए भी पापियों के लिए मरा[5]
ताकि तुम्हें परमेश्वर के पास ले जाए।[6]
जब उसे मार डाला गया तब उसका
इंसानी शरीर था,[7] मगर जब ज़िंदा किया
गया तो उसे अदृश्य शरीर दिया गया।[8]
19 इसी दशा में उसने जाकर कैद में
पड़े दुष्ट स्वर्गदूतों को प्रचार किया[9]
20 जिन्होंने नूह के दिनों में परमेश्वर की
आज्ञा के खिलाफ काम किया था, जब
परमेश्वर सब्र से इंतज़ार कर रहा था[10]
और नूह का जहाज़ बन रहा था,[11] जिस
पर सवार होकर चंद लोग यानी आठ
लोग* पानी से बचाए गए थे।[12]

21 यह घटना बपतिस्मे की निशानी है
जो आज तुम्हें यीशु मसीह के ज़िंदा होने
के ज़रिए बचा रहा है। (बपतिस्मे का मत-
लब शरीर की गंदगी धोना नहीं, बल्कि
साफ ज़मीर पाने के लिए परमेश्वर से
गुज़ारिश करना है।)[13] 22 यीशु अब
स्वर्ग लौट गया है और परमेश्वर के दायीं
तरफ है।[14] और स्वर्गदूत और अधिकार
और ताकतें उसके अधीन की गयी हैं।[15]

4 जब मसीह ने शरीर में दुख झेला है[16]
तो तुम भी उसके जैसी सोच और
नज़रिया* रखते हुए तैयार रहो क्योंकि
जो इंसान दुख झेलता है उसने पाप
करना छोड़ दिया है[1] 2 ताकि वह
अपनी बाकी की ज़िंदगी, इंसानों की
इच्छाएँ पूरी करने के लिए नहीं,[2] बल्कि
परमेश्वर की मरज़ी पूरी करने के लिए
जीए।[3] 3 दुनियावी लोगों की मरज़ी
पूरी करने में तुम अब तक जो वक्त बिता
चुके हो वह काफी है।[4] तब तुम निर्लज्ज
कामों* में, बेकाबू होकर वासनाएँ पूरी
करने में, हद-से-ज़्यादा शराब पीने में,
रंगरलियाँ मनाने में, शराब पीने की होड़
लगाने में और घिनौनी मूर्तिपूजा करने
में लगे हुए थे।[5] 4 अब क्योंकि तुमने
उनके साथ बदचलनी के कीचड़ में लोटना
छोड़ दिया है, इसलिए वे ताज्जुब करते हैं
और तुम्हारे बारे में बुरा-भला कहते हैं।[6]
5 मगर इन लोगों को उसे हिसाब देना
होगा जो ज़िंदा लोगों और मरे हुओं का
न्याय करने के लिए तैयार है।[7] 6 दर-
असल मरे हुओं को भी खुशखबरी इस-
लिए सुनायी गयी थी[8] ताकि वे परमेश्वर
की पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन के मुता-
बिक जी सकें, इसके बावजूद कि उनका
न्याय भी सब इंसानों की तरह किया
जाता है।

7 मगर सब बातों का अंत पास
आ गया है। इसलिए सही सोच बनाए
रखो[9] और प्रार्थना के मामले में चौकन्ने
रहो।*[10] 8 सबसे बढ़कर, एक-दूसरे
को दिल की गहराइयों से प्यार करो[11]
क्योंकि प्यार ढेर सारे पापों को ढक
देता है।[12] 9 बिना कुड़कुड़ाए एक-
दूसरे की मेहमान-नवाज़ी किया करो।[13]
10 परमेश्वर ने जो महा-कृपा अलग-
अलग तरीके से दिखायी है, तुम उसके
बढ़िया प्रबंधक हो। प्रबंधक होने के नाते
तुममें से हर किसी को जो वरदान

3:20 *शब्दावली में "जीवन" देखें। 4:1 *या "पक्का इरादा।"

4:3 *या "शर्मनाक बरताव।" शब्दावली देखें। 4:7 *या "जागते रहो।"

अध्य. 3
1 रोम 12:21; तीत 2:8; 1पत 2:12
2 2कुर 1:7; कुल 1:24
3 1पत 4:15
4 इब्र 9:28
5 रोम 5:6
6 2कुर 5:18
7 1कुर 15:50
8 1ती 3:16
9 2पत 2:4; यहू 6
10 उत 6:2, 3
11 उत 6:14
12 उत 7:13, 23
13 इब्र 9:14; इब्र 10:22
14 भज 110:1; प्रेष 7:55; इब्र 10:12
15 मत 28:18; 1कुर 15:25; इफ 1:20, 21; फिल 2:9, 10; इब्र 1:6

अध्य. 4
16 फिल 2:8

दूसरा कॉल.
1 रोम 6:11; कुल 3:5; 1यूह 3:6
2 2कुर 5:15
3 गल 2:20; इफ 5:17
4 तीत 3:3
5 रोम 13:13; 1कुर 5:11; गल 5:19, 21; इफ 4:17-19
6 1पत 3:16
7 प्रेष 10:42; प्रेष 17:31; 2ती 4:1; प्रक 20:12
8 इफ 2:1
9 रोम 12:3; 1ती 3:2; तीत 2:6
10 कुल 4:2
11 कुल 3:14
12 नीत 10:12; नीत 17:9; 1कुर 13:4, 7
13 2कुर 9:7; इब्र 13:2

मिला है उसका इस्तेमाल दूसरों की सेवा में करो।[1] **11** अगर कोई बोलता है तो परमेश्वर के पवित्र वचन बोले। अगर कोई सेवा करता है तो उस शक्ति पर निर्भर होकर करे जो परमेश्वर देता है[2] ताकि सब बातों में यीशु मसीह के ज़रिए परमेश्वर की महिमा हो।[3] महिमा और शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए उसी की है। आमीन।

12 प्यारे भाइयो, परीक्षाओं की जिस आग से तुम गुज़र रहे हो उससे हैरान मत हो,[4] मानो तुम्हारे साथ कोई अनोखी घटना घट रही हो। **13** इसके बजाय, तुम इस बात पर खुशी मनाओ[5] कि तुम इस हद तक मसीह की दुख-तकलीफों में साझेदार बन रहे हो[6] ताकि जब उसकी महिमा प्रकट होगी तब तुम्हें और ज़्यादा खुशियाँ मिलें और तुम आनंद से भर जाओ।[7] **14** अगर मसीह के नाम की खातिर तुम्हें बदनाम* किया जा रहा है, तो तुम सुखी हो[8] क्योंकि परमेश्वर की पवित्र शक्ति और इसकी महिमा तुम पर है।

15 मगर तुममें से कोई भी खूनी, चोर या बुरे काम करनेवाला या दूसरों के निजी मामलों में दखल देनेवाला होने की वजह से दुख न उठाए।[9] **16** लेकिन अगर कोई मसीही होने की वजह से दुख उठाता है तो वह शर्मिंदा महसूस न करे,[10] बल्कि इस नाम को धारण किए हुए परमेश्वर की महिमा करता रहे। **17** इसलिए कि तय किया हुआ वक्त आ पहुँचा है जब न्याय होगा और इस न्याय की शुरूआत परमेश्वर के घर से होगी।[11] अगर इसकी शुरूआत हम ही से होगी,[12] तो उनका क्या हश्र होगा जो परमेश्वर की खुशखबरी के मुताबिक चलने से इनकार करते हैं?[1] **18** "अगर एक नेक इंसान के लिए उद्धार पाना इतना मुश्किल है, तो उसका क्या होगा जो भक्तिहीन और पापी है?"[2] **19** इसलिए जो परमेश्वर की मरज़ी पूरी करने की वजह से दुख उठाते हैं, वे भी अच्छे काम करते हुए खुद को विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता के हाथ सौंपते रहें।[3]

5 इसलिए जो तुम्हारे बीच प्राचीन हैं उनसे मेरी एक गुज़ारिश है,* क्योंकि मैं भी उनकी तरह एक प्राचीन हूँ और मसीह की दुख-तकलीफों का गवाह और उस महिमा का साझेदार हूँ जो प्रकट होनेवाली है।[4] मैं गुज़ारिश करता हूँ **2** कि तुम चरवाहों की तरह परमेश्वर के झुंड की देखभाल करो[5] जो तुम्हें सौंपा गया है और निगरानी करनेवालों के नाते* परमेश्वर के सामने खुशी-खुशी सेवा करो, न कि मजबूरी में।[6] तुम तत्परता से सेवा करो, न कि बेईमानी की कमाई के लालच से।[7] **3** और जो परमेश्वर की संपत्ति हैं उन पर रौब मत जमाओ[8] बल्कि झुंड के लिए एक मिसाल बनो।[9] **4** और जब प्रधान चरवाहा[10] प्रकट होगा, तो तुम महिमा का वह ताज पाओगे जिसकी शोभा कभी खत्म नहीं होगी।[11]

5 इसी तरह जवानो, मैं तुमसे गुज़ारिश करता हूँ कि बुज़ुर्गों* के अधीन रहो।[12] और तुम सब एक-दूसरे के साथ नम्रता से पेश आओ# क्योंकि परमेश्वर घमंडियों का विरोध करता है, मगर नम्र लोगों पर महा-कृपा करता है।[13]

4:14 *या "तुम्हारा अपमान।"

5:1 *या "उन्हें मैं बढ़ावा देता हूँ।" **5:2** *या "झुंड पर ध्यान से नज़र रखते हुए।" **5:5** *या "प्राचीनों।" #या "नम्रता का पहनावा पहन लो।"

अध्य. 4
1 रोम 12:6-8
2 यश 12:2; इफ 3:20
3 1कुर 10:31
4 1पत 5:9
5 प्रेष 5:41; याकू 1:2
6 रोम 8:17; 2कुर 4:10; 2ती 3:12
7 1पत 1:7
8 याकू 1:12; याकू 5:11
9 1ती 5:13; 1पत 2:20
10 कुल 1:24; इब्र 12:2
11 इब्र 3:6
12 1कुर 11:32

दूसरा कॉल.
1 2थि 1:7, 8
2 नीत 11:31; मत 7:13, 14
3 2ती 1:12

अध्य. 5
4 रोम 8:18
5 यश 40:11; यूह 21:16; प्रेष 20:28
6 यूह 10:11
7 1ती 3:2, 3
8 2कुर 1:24
9 फिल 3:17
10 इब्र 13:20
11 1कुर 9:25; 2ती 4:8; 1पत 1:3, 4
12 इफ 5:21; याकू 3:17
13 नीत 3:34; यश 57:15; याकू 4:6

6 इसलिए परमेश्‍वर के शक्‍तिशाली
हाथ के नीचे खुद को नम्र करो ताकि वह
सही वक्‍त पर तुम्हें ऊँचा करे।[1] 7 और
इस दौरान तुम अपनी सारी चिंताओं*
का बोझ उसी पर डाल दो[2] क्योंकि
उसे तुम्हारी परवाह है।[3] 8 अपने होश-
हवास बनाए रखो, चौकन्‍ने रहो![4] तुम्हारा
दुश्‍मन शैतान,* गरजते हुए शेर की तरह
इस ताक में घूम रहा है कि किसे फाड़
खाए।[5] 9 मगर तुम विश्‍वास में मज़-
बूत रहकर उसका मुकाबला करो,[6] क्योंकि
तुम जानते हो कि दुनिया-भर में फैली
तुम्हारे भाइयों की पूरी बिरादरी ऐसी ही
दुख-तकलीफें झेल रही है।[7] 10 मगर
यह दुख तुम्हें कुछ ही समय के लिए
झेलना होगा, इसके बाद परमेश्‍वर जो हर
तरह की महा-कृपा करता है वह तुम्हारा
प्रशिक्षण खत्म करेगा। उसने तुम्हें सदा
कायम रहनेवाली महिमा पाने के लिए
बुलाया है[1] क्योंकि तुम मसीह के साथ
एकता में हो। वह तुम्हें मज़बूत करेगा,[2]
शक्‍तिशाली बनाएगा[3] और मज़बूती से
खड़ा करेगा। 11 शक्‍ति सदा तक उसी
की रहे। आमीन।

12 सिलवानुस*[4] के ज़रिए, जिसे मैं
विश्‍वासयोग्य भाई मानता हूँ, मैंने तुम्हें
ये चंद शब्द लिखे हैं ताकि तुम्हारी हिम्मत
बँधाऊँ और तुम्हें यकीन दिलाऊँ कि यही
परमेश्‍वर की सच्ची महा-कृपा है। तुम
इसमें मज़बूती से खड़े रहो। 13 वह जो
बैबिलोन में है और तुम्हारी तरह चुनी हुई
है, तुम्हें नमस्कार कहती है और मेरा बेटा
मरकुस[5] भी तुम्हें नमस्कार कहता है।
14 प्यार के चुंबन के साथ एक-दूसरे को
नमस्कार करो।

मेरी दुआ है कि तुम सब जो मसीह के
साथ एकता में हो, तुम्हें शांति मिले।

5:7 *या "दुखों; परेशानियों।" 5:8 *शा., "इबलीस।" शब्दावली देखें।

5:12 *सीलास भी कहलाता था।

अध्य. 5
1 मत 23:12; लूक 14:11
2 मत 6:25
3 भज 55:22
4 1थि 5:6
5 लूक 22:31
6 इफ 6:11; याकू 4:7
7 प्रेष 14:22; 2ती 3:12

दूसरा कॉल.
1 2कुर 4:17; 1थि 2:12
2 2थि 2:16, 17
3 इफ 6:10
4 प्रेष 15:27
5 प्रेष 12:12

पतरस
की दूसरी चिट्ठी

सारांश

1 नमस्कार (1)
अपने बुलावे के योग्य बने रहो (2-15)
विश्‍वास के साथ दूसरे गुण बढ़ाओ (5-9)
भविष्यवाणियों पर भरोसा मज़बूत (16-21)

2 झूठे शिक्षक आएँगे (1-3)
वे ज़रूर सज़ा पाएँगे (4-10क)
स्वर्गदूत तारतरस में फेंके गए (4)
जलप्रलय; सदोम और अमोरा (5-7)
झूठे शिक्षकों की पहचान (10ख-22)

3 खिल्ली उड़ानेवाले, आनेवाले नाश पर ध्यान नहीं देते (1-7)
यहोवा देरी नहीं कर रहा (8-10)
सोचो कि आज तुम्हें कैसा इंसान होना चाहिए (11-16)
नया आकाश और नयी पृथ्वी (13)
खबरदार रहो कि गुमराह न हो जाओ (17, 18)

1 यीशु मसीह के दास और प्रेषित, शमौन पतरस की यह चिट्ठी उन लोगों के लिए है जिन्होंने हमारे परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की नेकी के ज़रिए हमारे जैसा अनमोल विश्वास पाया है:

2 मेरी दुआ है कि तुम परमेश्वर के बारे में और हमारे प्रभु यीशु के बारे में सही ज्ञान लेते रहो[1] ताकि तुम पर और भी महा-कृपा हो और तुम्हें और भी शांति मिले। 3 इसलिए कि परमेश्वर ने अपनी शक्ति से हमें वे सारी चीज़ें दी हैं, जो परमेश्वर की भक्ति के साथ जीवन बिताने के लिए ज़रूरी हैं। ये चीज़ें हमें इसलिए मिली हैं क्योंकि हमने उस परमेश्वर के बारे में सही ज्ञान पाया है, जिसने हमें अपनी महिमा और सद्‌गुण के ज़रिए बुलाया है।[2] 4 इस महिमा और सद्‌गुण की वजह से उसने हमसे अनमोल और बहुत ही शानदार वादे किए हैं[3] ताकि तुम इन वादों के ज़रिए उसके जैसे अदृश्य बन सको।[4] उसने हमसे ये वादे इसलिए किए हैं क्योंकि हम दुनिया की उस भ्रष्टता से छुटकारा पा चुके हैं, जो गलत इच्छाओं* की वजह से होती है।

5 इसी वजह से तुम जी-जान से कोशिश करो[5] कि अपने विश्वास के साथ सद्‌गुण बढ़ाओ,[6] सद्‌गुण के साथ ज्ञान,[7] 6 ज्ञान के साथ संयम, संयम[8] के साथ धीरज, धीरज के साथ परमेश्वर की भक्ति,[9] 7 परमेश्वर की भक्ति के साथ भाइयों जैसा लगाव और भाइयों जैसे लगाव के साथ प्यार बढ़ाते जाओ।[10] 8 अगर ये गुण तुममें हों और तुममें उमड़ते रहें, तो तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के सही ज्ञान को अमल में लाकर फल पैदा करोगे और निकम्मे* नहीं ठहरोगे।[1]

9 जिस इंसान में ये गुण नहीं हैं, वह अंधा है और उसने अपनी आँखें बंद कर ली हैं और वह रौशनी को नहीं देखना चाहता*[2] और भूल गया है कि उसे उन पापों से शुद्ध किया गया है[3] जो उसने बहुत पहले किए थे। 10 इसलिए भाइयो, तुम और भी कड़ी मेहनत करो ताकि तुम्हें जो बुलावा दिया गया है[4] और चुना गया है, तुम उसके योग्य बने रहो। अगर तुम ये सब करते रहोगे, तो तुम हरगिज़ नाकाम नहीं होगे।[5] 11 दर-असल, इस तरह तुम्हें हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के उस राज में बड़े शानदार तरीके से दाखिल किया जाएगा जो हमेशा तक कायम रहेगा।[6]

12 इसी वजह से मैंने फैसला किया है कि मैं तुम्हें ये बातें याद दिलाता रहूँगा, हालाँकि तुम इन्हें जानते हो और उस सच्चाई में मज़बूती से खड़े हो जो तुमने सीखी है। 13 और मुझे लगता है कि जब तक मैं इस डेरे* में हूँ[7] तब तक तुम्हें ये बातें याद दिलाना सही रहेगा[8] ताकि तुम्हें जोश दिलाता रहूँ, 14 क्योंकि मैं जानता हूँ कि बहुत जल्द मेरा यह डेरा गिरा दिया जाएगा, ठीक जैसे हमारे प्रभु यीशु मसीह ने भी मुझ पर ज़ाहिर किया था।[9] 15 इसलिए मैं हर वक्त अपना भरसक करूँगा ताकि मेरे चले जाने के बाद तुम खुद को ये बातें याद दिला सको।*

16 जब हमने तुम्हें प्रभु यीशु मसीह की शक्ति और मौजूदगी के बारे में बताया

अध्य. 1
1 कुल 1:9
2 यूह 17:3
3 लूक 22:29, 30 यूह 14:2 गल 3:29
4 1कुर 15:53 1पत 1:3, 4 1यूह 3:2 प्रक 20:6
5 फिल 2:12 2ती 2:15 इब्र 4:11 यहू 3
6 फिल 4:8
7 यूह 17:3 इब्र 5:14
8 1कुर 9:25 2ती 2:24
9 2पत 2:9
10 1थि 4:9

दूसरा कॉल.
1 तीत 3:14
2 1यूह 2:9 प्रक 3:17
3 इब्र 9:14
4 इब्र 3:1
5 2ती 4:7, 8
6 दान 2:44 लूक 16:9 यूह 3:5
7 2कुर 5:1
8 रोम 15:15 यहू 5
9 यूह 21:18

1:4 *या “वासनाओं।”

1:8 *या “निष्फल।” **1:9** *या शायद, “वह अंधा है; वह दूर की नहीं सोचता।” **1:13** *या “तंबू” यानी उसका इंसानी शरीर। **1:15** *या “ज़िक्र कर सको।”

था, तो हमने चतुराई से गढ़ी हुई झूठी कहानियों का सहारा नहीं लिया क्योंकि हम तो उसकी शानदार महिमा के चश्मदीद गवाह थे।[1] 17 इसलिए कि उसने परमेश्वर यानी हमारे पिता से आदर और महिमा पायी, जब उस महाप्रतापी ने उससे यह कहा,* “यह मेरा प्यारा बेटा है जिसे मैंने खुद मंज़ूर किया है।”[2] 18 हाँ, हमने आकाश से ये शब्द उस वक्त सुने थे जब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे।

19 इस तरह भविष्यवाणियों पर हमारा भरोसा और मज़बूत हुआ है। और (जब तक दिन नहीं होता और दिन का तारा[3] नहीं निकलता) तुम उन पर ध्यान देकर अच्छा कर रहे हो मानो ये एक जलते हुए दीपक की तरह[4] अँधेरी जगह में यानी तुम्हारे दिलों में जगमगा रही हैं। 20 क्योंकि तुम सबसे पहले यह जान लो कि शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपने विचारों के मुताबिक नहीं की गयी। 21 क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी इंसान की मरज़ी से कभी नहीं हुई,[5] बल्कि इंसान पवित्र शक्ति से उभारे जाकर* परमेश्वर की तरफ से बोलते थे।[6]

2 लेकिन जैसे इसराएल के लोगों के बीच झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े हुए थे, वैसे ही तुम्हारे बीच भी झूठे शिक्षक आएँगे।[7] वे तुम्हारे बीच चोरी-छिपे ऐसे गुट शुरू करेंगे जो विनाश की तरफ ले जाते हैं और उस मालिक को भी जानने से इनकार करेंगे जिसने उन्हें खरीदा था।[8] ऐसा करके वे खुद तेज़ी से अपने ऊपर विनाश ले आएँगे। 2 यही नहीं, बहुत-से लोग उनकी देखा-देखी निर्लज्ज काम* करेंगे[1] और उनकी वजह से सच्चाई की राह की बदनामी होगी।[2] 3 और वे लालच की वजह से छल की बातें कहकर तुम्हें लूटेंगे। मगर उनके लिए बहुत पहले ही सज़ा तय कर दी गयी थी[3] और उन्हें सज़ा देने का वक्त धीरे-धीरे नहीं आ रहा, न ही वह थम गया है।[4]

4 वाकई, परमेश्वर उन स्वर्गदूतों को भी सज़ा देने से पीछे नहीं हटा जिन्होंने पाप किया था।[5] मगर उन्हें तारतरस* में फेंक दिया[6] और ज़ंजीरों से बाँधकर वहाँ घोर अंधकार# में डाल दिया ताकि सज़ा पाने के समय तक वे वहीं रहें।[7] 5 वह नूह के ज़माने की दुनिया को भी सज़ा देने से पीछे नहीं हटा,[8] मगर जब वह भक्तिहीन लोगों की उस पुरानी दुनिया पर जलप्रलय ले आया,[9] तो उसने नेकी के प्रचारक नूह को[10] सात और लोगों के साथ बचा लिया।[11] 6 साथ ही, उसने सदोम और अमोरा नाम के शहरों को खाक में मिलाकर सज़ा दी[12] और इस तरह आनेवाले वक्त के भक्तिहीन लोगों के लिए एक नमूना ठहराया।[13] 7 मगर उसने नेक इंसान लूत को बचाया,[14] जो दुष्टों के निर्लज्ज कामों* को देखकर आहें भरता था। 8 हाँ, जब वह नेक इंसान उनके बीच रहता था तो हर दिन उनके दुष्ट काम देखकर और उनकी बातें सुनकर उसका जी तड़प उठता था। 9 इस तरह यहोवा* जानता है कि जो उसकी भक्ति करते हैं उन्हें परीक्षा से कैसे निकाले[15] और दुष्टों को न्याय के दिन तक कैसे रख छोड़े ताकि उस दिन उनका नाश कर दे,#[16] 10 खासकर उन्हें

अध्य. 1

1 मत 17:2
मर 9:2
लूक 9:29
2 भज 2:7
मत 17:1, 5
मर 9:7
लूक 9:35
3 गि 24:17
प्रक 22:16
4 भज 119:105
यूह 1:9
5 2ती 3:16
6 2शम 23:2
प्रेष 1:16
प्रेष 28:25
1पत 1:11

अध्य. 2

7 मत 24:24
1ती 4:1
8 1कुर 6:20

दूसरा कॉल.

1 यहू 4
2 यश 52:5
3 यहू 4
4 2पत 3:9
5 उत 6:4
इफ 6:12
6 1पत 3:19, 20
7 यहू 6
8 उत 7:23
9 2पत 3:6
10 उत 6:9
इब्र 11:7
11 उत 8:18
12 उत 19:24, 25
13 यहू 7
14 उत 19:15, 16
15 भज 34:19
1कुर 10:13
2ती 4:18
प्रक 3:10
16 रोम 2:5
2पत 3:7

1:17 *शा., “की ऐसी आवाज़ आयी।” **1:21** *शा., “के बहाव में।” **2:2, 7** *या “शर्मनाक बरताव।” शब्दावली देखें।

2:4 *शब्दावली देखें। #या शायद, “और अंधकार से भरे गड्ढों।” **2:9** *अति. क5 देखें। #शा., “उन्हें काट डाले।”

जो दूसरों के शरीर को भ्रष्ट करने की
कोशिश करते हैं[1] और अधिकार रखने-
वालों को तुच्छ समझते हैं।[2]
वे गुस्ताख हैं और मनमानी करते
हैं और उन लोगों के बारे में बुरी
बातें बोलने से नहीं डरते जिन्हें पर-
मेश्वर ने महिमा दी है **11** जबकि स्वर्ग-
दूत, इन झूठे शिक्षकों से कहीं ज़्यादा बल-
वान और शक्तिशाली हैं, फिर भी वे
यहोवा* का आदर करने की वजह
से# उन पर दोष लगाने के लिए उन्हें
बुरा-भला नहीं कहते।[3] **12** मगर ये
लोग निर्बुद्धि जानवरों जैसे हैं जो अपने
स्वभाव के मुताबिक काम करते हैं और
इसलिए पैदा होते हैं कि पकड़े जाएँ और
मार डाले जाएँ। ये लोग जिन बातों से
अनजान हैं उनके बारे में बुरा-भला कहते
हैं।[4] विनाश के रास्ते पर चलने की वजह
से वे खुद अपने नाश का कारण बनेंगे।
13 बुराई के जिस रास्ते पर वे चलते हैं
उसका उन्हें बुरा फल मिलेगा।
उन्हें ऐयाशी में डूबे रहना अच्छा
लगता है,[5] यहाँ तक कि दिन में भी उन्हें
ऐसा करना पसंद है। वे दाग और कलंक
हैं और जब वे तुम्हारे साथ दावतों में होते
हैं तो उन्हें अपनी छल से भरी शिक्षाओं
को बढ़ावा देने में बहुत खुशी मिलती
है।[6] **14** उनकी आँखों में वासना* भरी
है[7] और वे पाप करने से खुद को रोक
नहीं पाते और ऐसे लोगों को फँसा लेते हैं
जो डाँवाँडोल हैं। उनका मन लालच
करने का आदी है। वे शापित बच्चे हैं।
15 उन्होंने सीधी राह छोड़ दी है और
वे गुमराह हो गए हैं। वे बओर के बेटे
बिलाम की राह पर चल पड़े हैं,[8] जिसे
बुराई की कमाई प्यारी थी[9] **16** और
जिसे सही काम के खिलाफ जाने की
वजह से फटकारा गया।[1] बोझ ढोनेवाले
बेज़ुबान जानवर ने इंसान की आवाज़ में
बोलकर उस भविष्यवक्ता को पागलपन
का काम करने से रोका।[2]
17 वे उन सोतों की तरह हैं जिनमें
पानी नहीं होता और धुंध के ऐसे बादल हैं
जिन्हें आँधी उड़ाए फिरती है और उनके
लिए घोर अंधकार ठहराया गया है।[3]
18 वे ऐसी बातें करते हैं जो सुनने
में बड़ी दमदार लगती हैं मगर असल
में खोखली होती हैं। वे शरीर की
इच्छाओं को बढ़ावा देकर[4] और निर्लज्ज
कामों* से उन लोगों को फँसा लेते हैं
जो बुरे काम करनेवालों के बीच से अभी-
अभी बचकर निकले हैं।[5] **19** वे उन्हें
आज़ादी दिलाने का वादा करते हैं जबकि
वे खुद भ्रष्टता के गुलाम हैं,[6] क्योंकि
अगर कोई किसी* के बस में आ जाता है
तो वह उसका गुलाम हो जाता है।[7]
20 वाकई अगर वे हमारे प्रभु और
उद्धारकर्ता यीशु मसीह का सही ज्ञान
पाकर दुनिया की गंदगी से बच निकलने
के बाद,[8] फिर से इन्हीं कामों में लग
जाते हैं और इनके बस में आ जाते हैं,
तो उनकी अब की हालत पहले से भी बद-
तर हो जाती है।[9] **21** इससे तो अच्छा
होता कि वे नेकी की राह के बारे में सही
ज्ञान लेते ही नहीं, बजाय इसके कि इसे
जानने के बाद उन पवित्र आज्ञाओं से मुँह
मोड़ लेते जो उन्हें मिली थीं।[10] **22** उन
पर यह सच्ची कहावत ठीक बैठती है,
"कुत्ता अपनी उलटी चाटने के लिए लौट
जाता है और नहलायी-धुलायी सूअरनी
फिर से कीचड़ में लोटने के लिए चली
जाती है।"[11]

2:11 *अति. क5 देखें। #या "के सामने।"
2:14 *या "व्यभिचार।" शब्दावली देखें।
2:18 *या "शर्मनाक बरताव।" शब्दावली देखें। **2:19** *या "किसी चीज़।"

अध्य. 2
1 यहू 7
2 निर्ग 22:28; यहू 8
3 यहू 9
4 यहू 10
5 रोम 13:13
6 यहू 12
7 मत 5:28
8 गि 22:5, 6; यहू 11; प्रक 2:14
9 गि 22:7; नहे 13:2

दूसरा कॉल.
1 गि 22:31, 34; गि 31:8
2 गि 22:28
3 यहू 12, 13
4 यहू 16
5 2पत 2:14
6 1पत 2:16
7 रोम 6:16
8 2पत 1:4
9 इब्र 6:4-6; इब्र 10:26
10 लूक 12:47; यूह 15:22
11 नीत 26:11

3 प्यारे भाइयो, मैं तुम्हें यह दूसरी
चिट्ठी लिख रहा हूँ। पिछली चिट्ठी
की तरह मैं इस चिट्ठी में भी कुछ
बातें याद दिला रहा हूँ ताकि तुम्हें साफ-
साफ सोचने की काबिलीयत का इस्ते-
माल करने के लिए उभारूँ[1] 2 और
तुम उन बातों को याद रखो जो पवित्र
भविष्यवक्ताओं ने बहुत पहले बतायी थीं
और हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता की
आज्ञा याद रखो जो उसने तुम्हारे प्रेषितों
के ज़रिए दी थी। 3 सबसे पहले तो तुम
जान लो कि आखिरी दिनों में खिल्ली
उड़ानेवाले आएँगे जो अपनी इच्छाओं के
मुताबिक चलेंगे[2] 4 और कहेंगे, "उसने
वादा किया था कि वह मौजूद होगा, मगर
वह कहाँ है?[3] जब से हमारे पुरखे मौत की
नींद सो गए हैं, तब से सबकुछ बिलकुल
वैसा ही चल रहा है, जैसा सृष्टि की शुरू-
आत में था।"[4]

5 वे जानबूझकर इस हकीकत पर
ध्यान नहीं देते कि परमेश्वर के कहने पर
ही उस वक्त का आकाश कायम हुआ
और ज़मीन पानी से ऊपर उठी और पृथ्वी
पानी के बीच मज़बूती से कायम हुई।[5]
6 इन्हीं के ज़रिए उस वक्त की दुनिया
पर पानी का प्रलय आया और वह नाश
हो गयी।[6] 7 मगर परमेश्वर के उसी
वचन से, आज के आकाश और पृथ्वी को
आग से भस्म करने के लिए रखा गया है
और उन्हें न्याय के दिन और भक्तिहीन
लोगों के नाश के दिन तक ऐसे ही रखा
जाएगा।[7]

8 मगर प्यारे भाइयो, तुम यह बात
मत भूलो कि यहोवा* के लिए एक दिन
एक हज़ार साल के बराबर है और एक
हज़ार साल, एक दिन के बराबर है।[8]
9 यहोवा* अपना वादा पूरा करने में देरी
नहीं कर रहा,[1] जैसा कुछ लोग समझते
हैं मगर वह तुम्हारे साथ सब्र से पेश आ
रहा है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई
भी नाश हो बल्कि यह कि सबको पश्चा-
ताप करने का मौका मिले।[2] 10 मगर
यहोवा* का दिन[3] ऐसे आएगा जैसे चोर
आता है।[4] उस दिन आकाश बड़े गरजन
के साथ मिट जाएगा[5] और तत्व बेहद
गरम होकर पिघल जाएँगे और धरती
और उस पर होनेवाले कामों का परदा-
फाश हो जाएगा।[6]

11 इसलिए जब ये सारी चीज़ें इस
तरह पिघलनेवाली हैं, तो सोचो कि आज
तुम्हें कैसा इंसान होना चाहिए! तुम्हारा
चालचलन पवित्र होना चाहिए और तुम्हें
परमेश्वर की भक्ति के काम करने चाहिए
12 और यहोवा* के दिन का इंत-
ज़ार करना चाहिए और यह बात हमेशा
ध्यान में रखनी चाहिए# कि वह दिन
बहुत जल्द आनेवाला है।[7] उस दिन की
वजह से आकाश लपटों से जलकर नाश
हो जाएगा[8] और तत्व बेहद गरम होकर
पिघल जाएँगे! 13 मगर हम परमेश्वर
के वादे के मुताबिक एक नए आकाश
और नयी पृथ्वी का इंतज़ार कर रहे हैं,[9]
जहाँ नेकी का बसेरा होगा।[10]

14 इसलिए प्यारे भाइयो, जब तुम
इन सब बातों का इंतज़ार कर रहे हो,
तो अपना भरसक करो कि आखिरकार
उसके सामने तुम निष्कलंक और बेदाग
और शांति में पाए जाओ।[11] 15 और
यह समझो कि हमारे प्रभु के सब्र रखने
से उद्धार पाने का मौका मिल रहा है, ठीक
जैसे हमारे प्यारे भाई पौलुस ने भी पर-
मेश्वर से मिली बुद्धि के मुताबिक तुम्हें
लिखा था।[12] 16 उसने अपनी सारी

3:8-10, 12 *अति. क5 देखें।

3:12 #या "इसकी ज़बरदस्त इच्छा होनी चाहिए।" शा., "तेज़ी लाएँ।"

अध्य. 3
1 रोम 15:15, 2पत 1:13
2 यहू 17, 18
3 यिर्म 17:15, मत 24:48, लूक 12:45
4 यहे 12:22, 27
5 उत 1:6, 9
6 उत 7:11, 23, मत 24:38, 39
7 व्य 7:10, 2थि 1:7-9
8 भज 90:4

दूसरा कॉल.
1 हब 2:3
2 रोम 2:4
3 योए 2:31, सप 1:14
4 1थि 5:2
5 प्रक 21:1
6 भज 37:10, यश 13:9, सप 1:18, प्रक 6:14
7 सप 1:14
8 यश 34:4
9 यश 65:17, यश 66:22, प्रक 21:1
10 यश 11:4, 5
11 2कुर 13:11
12 रोम 2:4

चिट्ठियों में इन्हीं बातों के बारे में लिखा है। मगर उनमें से कुछ बातें समझने में मुश्किल हैं और जो लोग इन बातों की समझ नहीं रखते* और डाँवाँडोल हैं, वे इन्हें तोड़-मरोड़कर बताते हैं जैसे वे शास्त्र की बाकी बातों के साथ भी करते हैं और अपने नाश का कारण बनते हैं।

17 इसलिए प्यारे भाइयो, तुम जो पहले
से इन बातों की जानकारी रखते हो, खबर-दार रहो कि तुम उन दुष्टों की धोखा देने-वाली बातों में आकर उनके साथ गुमराह न हो जाओ बल्कि इसी तरह मज़बूत खड़े रहो और गिर न जाओ।[1]
18 तुम पर-मेश्वर की महा-कृपा और भी ज़्यादा पाते रहो और हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के बारे में अपना ज्ञान बढ़ाते जाओ। उसकी महिमा आज और हमेशा-हमेशा के लिए होती रहे। आमीन।

3:16 * या "न सीखनेवाले।"

दूसरा कॉल.

अध्य. 3
1 मत 24:24
इफ 4:14

यूहन्ना
की पहली चिट्ठी

सारांश

1 जीवन का वचन (1-4)
रौशनी में चलना (5-7)
पापों को मान लेना ज़रूरी है (8-10)

2 यीशु सुलह करानेवाला बलिदान है (1, 2)
उसकी आज्ञाएँ मानना (3-11)
पुरानी और नयी आज्ञा (7, 8)
चिट्ठी लिखने की वजह (12-14)
दुनिया से प्यार मत करो (15-17)
मसीह के विरोधी के बारे में चेतावनी (18-29)

3 हम परमेश्वर के बच्चे हैं (1-3)
परमेश्वर के बच्चे; शैतान के बच्चे (4-12)
यीशु, शैतान के कामों को नष्ट कर देगा (8)
एक-दूसरे से प्यार करो (13-18)
परमेश्वर हमारे दिलों से बड़ा है (19-24)

4 संदेश को परखो (1-6)
परमेश्वर को जानो, उससे प्यार करो (7-21)
"परमेश्वर प्यार है" (8, 16)
प्यार में डर नहीं होता (18)

5 विश्वास से दुनिया पर जीत हासिल (1-12)
परमेश्वर से प्यार करने का मतलब (3)
प्रार्थना की ताकत पर भरोसा (13-17)
दुष्ट दुनिया में सँभलकर रहो (18-21)
सारी दुनिया शैतान के कब्ज़े में (19)

1 हम तुम्हें उसके बारे में लिख रहे हैं जो जीवन का वचन है, जो शुरूआत से था और जिसकी हमने सुनी, जिसे हमने अपनी आँखों से देखा, जिस पर हमने गौर किया और जिसे हमने अपने हाथों से छुआ।[1]
2 (हाँ, हमेशा की ज़िंदगी हम पर ज़ाहिर की गयी और हमने उसे देखा है और हम उसकी गवाही दे रहे हैं[2] और तुम्हें उसके बारे में बता रहे हैं। हमेशा की यह ज़िंदगी पिता से है और हम पर

दूसरा कॉल.

अध्य. 1
1 यूह 1:4
यूह 6:68
2 यूह 21:24
प्रेष 2:32

ज़ाहिर की गयी थी।)[1] 3 और जिसे
हमने देखा और सुना है उसी के बारे में
हम तुम्हें बता रहे हैं[2] ताकि तुम भी हमारे
साथ साझेदार बन सको। और हमारी यह
साझेदारी पिता के साथ और उसके बेटे
यीशु मसीह के साथ है।[3] 4 और हम
तुम्हें ये बातें लिख रहे हैं ताकि हमारी
खुशी पूरी हो सके।

5 जो संदेश हमने उससे सुना था और
तुम्हें भी सुना रहे हैं, वह यह है:
परमेश्वर रौशनी है[4] और उसमें ज़रा भी
अंधकार नहीं। 6 अगर हम कहें, "हम
उसके साथ साझेदार हैं" और फिर भी हम
अंधकार में चलते रहें, तो हम झूठ बोल
रहे हैं और सच्चाई के मुताबिक काम नहीं
कर रहे।[5] 7 लेकिन अगर हम रौशनी
में चल रहे हैं जैसा वह खुद भी रौशनी में
है, तो हम ज़रूर एक-दूसरे के साथ साझे-
दार हैं और उसके बेटे यीशु का खून
हमारे सभी पापों को धोकर हमें शुद्ध
करता है।[6]

8 अगर हम कहें, "हमारे अंदर पाप
नहीं है," तो हम खुद को धोखा दे
रहे हैं[7] और सच्चाई हमारे अंदर
नहीं है। 9 परमेश्वर विश्वासयोग्य
और सच्चा है। इसलिए अगर हम अपने
पाप मान लें, तो वह हमारे पाप माफ
करेगा और हमें सभी बुराइयों से शुद्ध
करेगा।[8] 10 अगर हम कहें, "हमने
पाप नहीं किया," तो हम उसे झूठा ठह-
राते हैं और उसका वचन हमारे अंदर
नहीं है।

2 मेरे प्यारे बच्चो, मैं तुम्हें ये बातें इस-
लिए लिख रहा हूँ ताकि तुम कोई
पाप न करो। और अगर कोई पाप कर
बैठे, तो हमारे लिए एक मददगार* है जो
पिता के पास है यानी यीशु मसीह[1] जो
नेक है।[2] 2 वह हमारे पापों के लिए[3]
ऐसा बलिदान है जो परमेश्वर के साथ
हमारी सुलह कराता है*[4] और सिर्फ
हमारे पापों के लिए नहीं बल्कि सारी
दुनिया के पापों के लिए।[5] 3 अगर
हम उसकी आज्ञाओं को मानते रहें, तो
इसी से हमें एहसास होता है कि हम
उसे जानते हैं। 4 जो कहता है, "मैं
उसे जान गया हूँ" और फिर भी उसकी
आज्ञाएँ नहीं मानता, वह झूठा है और
ऐसे इंसान में सच्चाई नहीं है। 5 मगर
जो कोई उसकी आज्ञा मानता है, सच-
मुच उसी इंसान में परमेश्वर के लिए
प्यार पूरी हद तक दिखायी देता है।[6]
और इसी से हम जान पाते हैं कि हम
उसके साथ एकता में हैं।[7] 6 जो कहता
है कि मैं उसके साथ एकता में हूँ उसका
फर्ज़ बनता है कि वह खुद भी वैसे ही जीए
जैसे यीशु जीया था।*[8]

7 प्यारे भाइयो, मैं तुम्हें जो लिख रहा
हूँ वह कोई नयी आज्ञा नहीं बल्कि वही
पुरानी आज्ञा है जो तुम्हें पहले से मिली
हुई है।[9] यह पुरानी आज्ञा वह वचन है जो
तुम सुन चुके हो। 8 फिर भी, मैं तुम्हें
यही आज्ञा एक नयी आज्ञा की तरह लिख
रहा हूँ, जो मसीह ने मानी थी और तुम
भी मानते हो, क्योंकि अंधकार मिटता जा
रहा है और सच्ची रौशनी अभी से चमक
रही है।[10]

9 जो कहता है कि मैं रौशनी में हूँ,
फिर भी अपने भाई से नफरत करता है[11]
वह अब तक अंधकार में है।[12] 10 जो
अपने भाई से प्यार करता है वह रौशनी
में ही रहता है[13] और उसके लिए

अध्य. 1
1 यूह 17:3
2 यूह 15:26, 27 प्रेष 4:20
3 यूह 17:20, 21
4 याकू 1:17
5 2कुर 6:14 इफ 5:8 तीत 1:16 1यूह 2:4
6 रोम 3:25 इफ 1:7 इब्र 9:14 इब्र 10:22 प्रक 1:5
7 1रा 8:46 सभ 7:20
8 भज 32:5 नीत 28:13 याकू 5:16

दूसरा कॉल.

अध्य. 2
1 रोम 8:34 इब्र 7:25
2 1ती 2:5
3 यश 53:5 रोम 3:25 1ती 1:15 इब्र 2:17 1पत 2:24 1यूह 4:10
4 1कुर 5:7
5 मत 20:28 यूह 1:29
6 1यूह 4:18
7 यूह 14:20 यूह 17:21
8 यूह 13:15 1पत 2:21
9 यूह 13:34 2यूह 5
10 यूह 1:9 यूह 8:12
11 इफ 4:31 कुल 3:8
12 1कुर 13:2 1यूह 3:15
13 इफ 5:8

2:1 * या "फरियाद करनेवाला।"

2:2 * या "जो प्रायश्चित का बलिदान है; जो परमेश्वर को खुश करता है।" 2:6 * शा., "वैसे ही चलता रहे जैसे वह चला था।"

ठोकर खाने की कोई वजह नहीं होती। **11** मगर जो अपने भाई से नफरत करता है वह अंधकार में है और अंधकार में चल रहा है[1] और नहीं जानता कि कहाँ जा रहा है[2] क्योंकि अंधकार ने उसकी आँखों को अंधा कर दिया है।

12 प्यारे बच्चो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि उसके नाम की खातिर तुम्हारे पाप माफ किए गए हैं।[3] **13** पिताओ, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम यीशु को* जान गए हो जो शुरूआत से है। जवानो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुमने शैतान# पर जीत हासिल की है।[4] बच्चो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम पिता को जान गए हो।[5] **14** पिताओ, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम यीशु को* जान गए हो जो शुरूआत से है। जवानो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम बलवान हो[6] और परमेश्वर का वचन तुममें कायम है[7] और तुमने शैतान# पर जीत हासिल की है।[8]

15 तुम न तो दुनिया से प्यार करो, न ही दुनिया की चीज़ों से।[9] अगर कोई दुनिया से प्यार करता है तो उसमें पिता के लिए प्यार नहीं है।[10] **16** क्योंकि दुनिया में जो कुछ है यानी शरीर की ख्वाहिशें,[11] आँखों की ख्वाहिशें[12] और अपनी चीज़ों* का दिखावा,# वह पिता की तरफ से नहीं बल्कि दुनिया की तरफ से है। **17** इतना ही नहीं, यह दुनिया और इसकी ख्वाहिशें मिटती जा रही हैं,[13] मगर जो परमेश्वर की मरज़ी पूरी करता है वह हमेशा बना रहेगा।[14]

18 प्यारे बच्चो, यह आखिरी घड़ी है और जैसा तुम सुन चुके हो मसीह का विरोधी आ रहा है,[1] यहाँ तक कि मसीह के ऐसे कई विरोधी आ चुके हैं।[2] इससे हमें पता चलता है कि यह आखिरी घड़ी है। **19** वे हमारे ही बीच से निकलकर गए थे मगर वे हमारे जैसे नहीं थे।*[3] अगर वे हमारे जैसे होते तो हमारे साथ ही रहते। मगर वे निकलकर चले गए ताकि यह साफ दिखायी दे कि सब हमारे जैसे नहीं हैं।[4] **20** तुम्हारा अभिषेक उस पवित्र परमेश्वर ने किया है,[5] इसलिए तुम सबके पास ज्ञान है। **21** मैं तुम्हें इसलिए नहीं लिख रहा कि तुम सच्चाई नहीं जानते,[6] बल्कि इसलिए कि तुम सच्चाई जानते हो और इसलिए भी कि सच्चाई से किसी तरह का झूठ नहीं निकलता।[7]

22 झूठा कौन है? क्या वह नहीं जो इस बात से इनकार करता है कि यीशु ही मसीह है?[8] वही मसीह का विरोधी है,[9] जो पिता का और बेटे का इनकार करता है। **23** जो कोई बेटे का इनकार करता है उसके साथ पिता नहीं है।[10] और जो कोई बेटे को स्वीकार करता है[11] उसके साथ पिता है।[12] **24** जहाँ तक तुम्हारी बात है, जो तुमने शुरू में सुना था वह तुम्हारे दिलों में बना रहे।[13] तुमने शुरू में जो सुना था अगर वह तुम्हारे दिलों में बना रहे, तो तुम बेटे के साथ और पिता के साथ भी एकता में रहोगे। **25** इसके अलावा, उसने खुद हमसे जिस बात का वादा किया है वह है, हमेशा की ज़िंदगी।[14]

26 मैं तुम्हें ये बातें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि कुछ लोग तुम्हें गुमराह करने

अध्या. 2

1 1यूह 4:20
2 यूह 12:35
3 लूक 24:47, प्रेष 4:12, प्रेष 10:43
4 याकू 4:7, 1यूह 5:19, प्रक 12:10, 11
5 यूह 17:25
6 इफ 6:10
7 3यूह 3
8 रोम 8:37
9 रोम 12:2, 1कुर 7:31, तीत 2:11, 12
10 मत 6:24, याकू 4:4
11 मत 5:28, रोम 13:14
12 उत 3:6, नीत 27:20, मत 4:8
13 1कुर 7:31, 1पत 1:24
14 भज 37:29, मत 7:21, यूह 6:40

दूसरा कॉल.

1 2थि 2:3, 2पत 2:1
2 2थि 2:7, 2यूह 7, यहू 4
3 प्रेष 20:30
4 1कुर 11:19
5 2कुर 1:21, 1यूह 2:27
6 यूह 8:31, 32
7 यूह 8:44
8 1यूह 4:3, 2यूह 7
9 1यूह 2:18
10 यूह 5:23, 2यूह 9
11 रोम 10:9, 10
12 1यूह 4:15
13 यूह 14:23, 2यूह 6
14 यूह 17:3, 1यूह 1:2

2:13, 14 *शा., "उसे।" **2:13, 14** #शा., "उस दुष्ट।" **2:16** *या "जीवन के साधनों।" #या "के बारे में डींग मारना।"

2:19 *या "हमारे लोग नहीं थे।"

की कोशिश कर रहे हैं। 27 जहाँ तक
तुम्हारी बात है, परमेश्वर ने जिस पवित्र
शक्ति से तुम्हारा अभिषेक किया है[1] वह
तुममें बनी रहती है। अब यह ज़रूरी नहीं
कि कोई और तुम्हें सिखाए। मगर पर-
मेश्वर तुम्हारा अभिषेक करने के ज़रिए
तुम्हें सब बातें सिखा रहा है।[2] तुम्हारा
अभिषेक सच्चा है, झूठा नहीं। और ठीक
जैसे तुम्हें इस अभिषेक के ज़रिए सिखाया
गया है, तुम उसके साथ एकता में बने
रहो जिसने तुम्हारा अभिषेक किया है।[3]
28 इसलिए प्यारे बच्चो, उसके साथ
एकता में रहो ताकि जब वह प्रकट किया
जाए, तो हमारे पास बेझिझक बोलने
की हिम्मत हो[4] और उसकी मौजूदगी के
दौरान हम शर्मिंदा होकर उससे दूर न
चले जाएँ। 29 अगर तुम जानते हो कि
वह* नेक है, तो तुम यह भी जानते हो कि
जो कोई नेक काम करता है वह परमेश्वर
से पैदा हुआ है।[5]

3 देखो, पिता ने हमसे किस कदर
प्यार किया है[6] कि हमें अपने बच्चे
कहलाने का सम्मान दिया है[7] और
हम उसके बच्चे हैं भी! यह दुनिया हमें
नहीं जानती[8] क्योंकि दुनिया ने पिता
को नहीं जाना।[9] 2 प्यारे भाइयो, अभी
हम परमेश्वर के बच्चे हैं[10] मगर हम
भविष्य में कैसे होंगे यह अब तक ज़ाहिर
नहीं किया गया है।[11] हम यह ज़रूर
जानते हैं कि जब भी वह प्रकट होगा
तो हम उसके जैसे हो जाएँगे क्योंकि हम
उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। 3 और
जो कोई उस पर आशा रखता है वह खुद
को शुद्ध करता है[12] ठीक जैसे वह
शुद्ध है।

4 हर कोई जो पाप करता रहता
है, वह कानून तोड़ता है। पाप का
मतलब कानून तोड़ना है। 5 तुम यह
भी जानते हो कि यीशु हमारे पाप उठा
ले जाने के लिए आया* था[1] और उसमें
कोई पाप नहीं है। 6 हर कोई जो उसके
साथ एकता में रहता है वह पाप नहीं
करता रहता।[2] जो कोई पाप करने में
लगा रहता है उसने न तो उसे देखा है,
न ही उसे जाना है। 7 प्यारे बच्चो, कोई
तुम्हें गुमराह न करे। जो नेक कामों में
लगा रहता है वह नेक है, ठीक जैसे यीशु
नेक है। 8 जो पाप करता रहता है वह
शैतान* से है क्योंकि शैतान शुरू से पाप
करता आया है।[3] परमेश्वर के बेटे को
इस मकसद से ज़ाहिर किया गया कि वह
शैतान के कामों को नष्ट कर दे।[4]

9 हर कोई जो परमेश्वर से पैदा
हुआ है वह पाप नहीं करता रहता,[5]
क्योंकि उसका बीज* उसमें बना रहता
है और वह पाप में लगा नहीं रह सकता
क्योंकि वह परमेश्वर से पैदा हुआ है।[6]
10 परमेश्वर के बच्चों और शैतान के
बच्चों की पहचान इस बात से होती है:
हर कोई जो नेक काम नहीं करता रहता
वह परमेश्वर से नहीं है, न ही वह पर-
मेश्वर से है जो अपने भाई से प्यार
नहीं करता।[7] 11 इसलिए कि शुरू से
तुमने यही संदेश सुना है कि हमें एक-
दूसरे से प्यार करना चाहिए[8] 12 और
हमें कैन जैसा नहीं होना चाहिए जो
शैतान* से था और जिसने अपने भाई का
बेरहमी से कत्ल कर दिया।[9] आखिर क्यों
उसने उसका कत्ल किया? क्योंकि उसके
खुद के काम दुष्ट थे[10] मगर उसके भाई
के काम नेक थे।[11]

अध्य. 2
1 2कुर 1:21; 1यूह 2:20
2 यूह 14:26; यूह 16:13
3 यूह 17:21
4 1यूह 4:17
5 1पत 1:23; 1यूह 4:7

अध्य. 3
6 यूह 3:16
7 यूह 1:12, 13
8 यूह 15:19
9 यूह 17:25
10 रोम 8:15, 16; इफ 1:5
11 1कुर 15:49; फिल 3:20, 21
12 2कुर 7:1

दूसरा कॉल.
1 लैव 16:21, 22; यश 53:11; यूह 1:29
2 रोम 6:12
3 उत 3:14; यूह 8:44
4 यूह 16:33; इब्र 2:14
5 1यूह 5:18
6 1पत 1:23
7 1यूह 4:8
8 यूह 13:34; 1यूह 2:7; 2यूह 5
9 उत 4:8
10 उत 4:5
11 उत 4:4; इब्र 11:4

2:29 *यानी यीशु।

3:5 *शा., “प्रकट किया गया।” **3:8** *शा., “इबलीस।” शब्दावली देखें। **3:9** *यानी ऐसा बीज जो फल पैदा कर सकता है। **3:12** *शा., “उस दुष्ट।”

13 भाइयो, इस बात पर ताज्जुब मत
करो कि दुनिया तुमसे नफरत करती है।[1]
14 हम जानते हैं कि हम मानो मरे हुए थे
मगर अब ज़िंदा हो गए हैं,[2] क्योंकि हम
भाइयों से प्यार करते हैं।[3] जो प्यार नहीं
करता वह मानो मरा हुआ है।[4] 15 हर
कोई जो अपने भाई से नफरत करता है
वह कातिल है[5] और तुम जानते हो कि
किसी भी कातिल को हमेशा की ज़िंदगी
नहीं मिलेगी।[6] 16 प्यार क्या है, यह
हमने इस बात से जाना है कि यीशु
मसीह ने हमारे लिए अपनी जान दे दी[7]
और हमारा फर्ज़ बनता है कि हम भी
अपने भाइयों के लिए अपनी जान दे दें।[8]
17 लेकिन अगर किसी के पास गुज़र-
बसर के लिए सबकुछ है और वह देखे
कि उसका भाई तंगी में है, फिर भी उस
पर दया करने से इनकार कर देता है, तो
यह कैसे कहा जा सकता है कि वह पर-
मेश्वर से प्यार करता है?[9] 18 प्यारे
बच्चो, हमें सिर्फ बातों या ज़बान से
नहीं[10] बल्कि अपने कामों से दिखाना
चाहिए[11] कि हम सच्चे दिल से प्यार
करते हैं।[12]

19 इस तरह हम जान लेंगे कि
हम सच्चाई की तरफ हैं और अपने
दिलों को यकीन दिलाएँगे* कि परमेश्वर
हमसे प्यार करता है। 20 चाहे हमारा
दिल हमें किसी भी बात में दोषी ठहराए,
हम याद रखें कि परमेश्वर हमारे दिलों से
बड़ा है और सबकुछ जानता है।[13]
21 प्यारे भाइयो, अगर हमारा दिल हमें
दोषी न ठहराए, तो हम परमेश्वर से बे-
झिझक बात कर सकते हैं।[14] 22 और
हम उससे चाहे जो भी माँगें वह हमें देता
है[15] क्योंकि हम उसकी आज्ञाएँ मानते
हैं और वही करते हैं जो उसकी नज़र
में अच्छा है। 23 दरअसल, उसकी यही
आज्ञा है कि हम उसके बेटे यीशु मसीह के
नाम पर विश्वास करें[1] और एक-दूसरे से
प्यार करें,[2] ठीक जैसे उसने हमें आज्ञा दी
है। 24 और जो उसकी आज्ञाएँ मानता
है वह उसके साथ एकता में रहता है और
वह भी ऐसे इंसान के साथ एकता में रहता
है।[3] उसने हमें जो पवित्र शक्ति दी है
उससे हम जान पाते हैं कि वह हमारे साथ
एकता में है।[4]

4 प्यारे भाइयो, ऐसे हर संदेश को
सच मत मान लेना जो लगता है
कि ईश्वर-प्रेरणा से मिला है।[5] मगर
उसे परखना कि वह सचमुच परमेश्वर
की तरफ से है या नहीं,[6] क्योंकि दुनिया
में बहुत-से झूठे भविष्यवक्ता निकल
पड़े हैं।[7]

2 कोई संदेश परमेश्वर की तरफ से
है या नहीं, यह तुम इस तरह जान सकते
हो: जो संदेश वाकई परमेश्वर की तरफ
से है उसमें यह स्वीकार किया जाता है
कि यीशु मसीह हाड़-माँस का इंसान बन-
कर आया था,[8] 3 मगर ऐसा हर संदेश
जिसमें यीशु के बारे में यह स्वीकार नहीं
किया जाता, वह परमेश्वर की तरफ से
नहीं है।[9] इसके बजाय, वह संदेश मसीह
के विरोधी की तरफ से है। तुमने सुना था
कि मसीह का विरोधी यह संदेश सुनाए-
गा[10] और अब वाकई यह संदेश दुनिया में
सुनाया जा रहा है।[11]

4 प्यारे बच्चो, तुम परमेश्वर से हो
और तुमने इन लोगों पर जीत हासिल
की है[12] क्योंकि परमेश्वर जो तुम्हारे साथ
एकता में है,[13] वह शैतान से बड़ा है
जो दुनिया के साथ एकता में है।[14] 5 ये
लोग दुनिया से हैं।[15] इसलिए वे वही
बातें कहते हैं जो दुनिया की तरफ से हैं
और दुनिया उनकी सुनती है।[16] 6 हम

3:19 * या "कायल करेंगे।"

अध्य. 3

1 मत 5:11; यूह 15:18; 2ती 3:12
2 यूह 5:24; रोम 8:2
3 1यूह 2:10
4 यूह 3:36
5 मत 5:21, 22; इफ 4:31
6 उत 9:6; गि 35:31; प्रक 21:8
7 यूह 3:16; यूह 13:1; यूह 15:13
8 यूह 13:15; रोम 16:3, 4; 1थि 2:8
9 व्य 15:7, 8; लूक 3:11; रोम 12:13; याकू 2:15, 16; 1यूह 4:20
10 रोम 12:9
11 याकू 1:22; याकू 2:17
12 1पत 1:22
13 इब्र 4:13
14 इब्र 4:16; 1यूह 5:14
15 भज 34:15; मत 7:8; 1पत 3:12

दूसरा कॉल.

1 यूह 6:29
2 यूह 13:34
3 1यूह 2:24
4 यूह 14:23

अध्य. 4

5 2थि 2:1, 2; 1ती 4:1
6 प्रक 22:6
7 2पत 2:1
8 यूह 1:14; 1कुर 12:3; प्रक 19:10
9 1यूह 2:22
10 2थि 2:7; 1यूह 2:18
11 प्रेष 20:29, 30
12 1यूह 5:4
13 यूह 17:21
14 इफ 2:2
15 1यूह 5:19
16 यूह 15:19

परमेश्वर से हैं। जो कोई परमेश्वर को
जानता है वह हमारी सुनता है।[1] जो पर-
मेश्वर से नहीं है वह हमारी नहीं सुनता।[2]
इस तरह हम पहचान पाते हैं कि कौन-
सा संदेश ईश्वर-प्रेरणा से है और कौन-सा
संदेश झूठा है।[3]

7 प्यारे भाइयो, हम एक-दूसरे से
प्यार करते रहें[4] क्योंकि प्यार परमेश्वर
से है और हर कोई जो प्यार करता है वह
परमेश्वर से पैदा हुआ है और परमेश्वर
को जानता है।[5] 8 जो प्यार नहीं करता
उसने परमेश्वर को नहीं जाना क्योंकि
परमेश्वर प्यार है।[6] 9 हमारे मामले में
परमेश्वर का प्यार इस बात से ज़ाहिर
हुआ कि परमेश्वर ने अपना इकलौता
बेटा[7] दुनिया में भेजा ताकि हम उसके
ज़रिए जीवन पाएँ।[8] 10 ऐसा नहीं कि
हमने परमेश्वर से प्यार किया था और
बदले में उसने हमसे प्यार किया, बल्कि
उसी ने हमसे प्यार किया और अपने बेटे
को भेजा ताकि वह हमारे पापों के लिए
अपना बलिदान देकर परमेश्वर से हमारी
सुलह कराए।*[9]

11 प्यारे भाइयो, जब परमेश्वर ने
हमसे इस कदर प्यार किया है, तो
हमारा भी फर्ज़ बनता है कि हम एक-
दूसरे से प्यार करें।[10] 12 किसी ने पर-
मेश्वर को कभी नहीं देखा।[11] अगर हम
एक-दूसरे से प्यार करते रहें, तो पर-
मेश्वर हमारे साथ रहता है और हमारे
अंदर उसका प्यार पूरी हद तक दिखायी
देता है।[12] 13 उसने हमें अपनी पवित्र
शक्ति दी है, इसलिए हम जानते हैं
कि हम उसके साथ एकता में हैं और
वह हमारे साथ एकता में है। 14 इसके
अलावा, हमने खुद देखा है और यह
गवाही भी दे रहे हैं कि पिता ने अपने
बेटे को दुनिया का उद्धारकर्ता बनाकर
भेजा।[1] 15 जो इंसान स्वीकार करता
है कि यीशु परमेश्वर का बेटा है,[2] पर-
मेश्वर उसके साथ एकता में रहता है और
वह परमेश्वर के साथ एकता में रहता
है।[3] 16 हम जान गए हैं कि परमेश्वर
हमसे कितना प्यार करता है और हमें
इसका पूरा यकीन है।[4]

परमेश्वर प्यार है[5] और जो प्यार
करता रहता है वह परमेश्वर के साथ
एकता में रहता है और परमेश्वर उसके
साथ एकता में रहता है।[6] 17 इस तरह
हमसे पूरी हद तक प्यार किया गया है
ताकि न्याय के दिन हममें बेझिझक
बोलने की हिम्मत हो*[7] क्योंकि इस
दुनिया में हम ठीक वैसे हैं जैसे मसीह
है। 18 प्यार में डर नहीं होता[8] बल्कि
जो प्यार पूरा है वह डर को दूर कर
देता है* क्योंकि डर हमें रोकता है। दर-
असल, जो डरता है उसका प्यार अधूरा
है।[9] 19 हम इसलिए प्यार करते हैं
क्योंकि पहले परमेश्वर ने हमसे प्यार
किया।[10]

20 अगर कोई कहता है, "मैं पर-
मेश्वर से प्यार करता हूँ," मगर अपने
भाई से नफरत करता है, तो वह झूठा
है।[11] इसलिए कि जो अपने भाई से प्यार
नहीं करता[12] जिसे उसने देखा है, वह
परमेश्वर से प्यार नहीं कर सकता जिसे
उसने नहीं देखा।[13] 21 और हमें उससे
यह आज्ञा मिली है कि जो परमेश्वर से
प्यार करता है उसे अपने भाई से भी प्यार
करना चाहिए।[14]

5 हर कोई जो विश्वास करता है कि
यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से

4:10 *या "प्रायश्चित का बलिदान दे; जो परमेश्वर को खुश करता है।"

4:17 *या "का भरोसा हो।" **4:18** *या "को भगा देता है।"

अध्य. 4
1 यूह 10:27
2 यूह 8:47
3 1यूह 4:1
4 1पत 1:22
5 1यूह 4:16
6 निर्ग 34:6, मी 7:18, 1यूह 4:19
7 यूह 1:14
8 यूह 3:16, रोम 5:8, रोम 8:32, 1यूह 5:11
9 रोम 3:25, 1कुर 5:7, इब्र 2:17, इब्र 9:26, 1यूह 2:1, 2
10 मत 18:33, यूह 15:12, रोम 13:8, 1यूह 3:16
11 निर्ग 33:20, यूह 1:18, यूह 4:24, यूह 6:46
12 1यूह 2:5

दूसरा कॉल.
1 मत 1:21, यूह 3:17, यूह 12:47, प्रेष 5:31
2 रोम 10:9
3 1यूह 2:23, 24
4 यूह 3:16
5 1यूह 4:8
6 यूह 17:21
7 इब्र 4:16, 1यूह 2:28
8 रोम 8:15
9 1यूह 2:5
10 1यूह 4:10
11 1यूह 2:4
12 1यूह 3:17
13 1यूह 4:12
14 मत 22:37, 39, यूह 13:34, यूह 15:12

पैदा हुआ है।[1] और जो कोई जीवन देने-
वाले परमेश्‍वर से प्यार करता है, वह
उसके बच्चों से भी प्यार करता है।
2 जब हम परमेश्‍वर से प्यार करते हैं
और उसकी आज्ञाएँ मानते हैं तो इसी
से हम जानते हैं कि हम परमेश्‍वर
के बच्चों से प्यार करते हैं।[2] **3** पर-
मेश्‍वर से प्यार करने का मतलब यही
है कि हम उसकी आज्ञाओं पर चलें[3]
और उसकी आज्ञाएँ हम पर बोझ नहीं
हैं,[4] **4** क्योंकि हर कोई* जो परमेश्‍वर
से पैदा हुआ है वह दुनिया पर जीत
हासिल करता है।[5] और हमने दुनिया
पर जो जीत हासिल की है, वह अपने
विश्‍वास की बदौलत की है।[6]

5 कौन दुनिया पर जीत हासिल कर
सकता है?[7] क्या वही नहीं जिसमें
विश्‍वास हो कि यीशु, परमेश्‍वर का बेटा
है?[8] **6** यही है जो पानी और खून
के ज़रिए आया, यानी यीशु मसीह। वह
सिर्फ पानी के साथ नहीं,[9] मगर पानी
और खून के साथ आया।[10] पवित्र शक्‍ति
गवाही दे रही है[11] क्योंकि पवित्र शक्‍ति
सच्ची गवाही देती है। **7** इसलिए कि
गवाही देनेवाले तीन हैं, **8** पवित्र
शक्‍ति,[12] पानी[13] और खून[14] और ये
तीनों एक ही बात पर सहमत हैं।

9 अगर हम इंसानों की गवाही पर
यकीन करते हैं, तो परमेश्‍वर की गवाही
तो उससे भी बढ़कर है। क्योंकि पर-
मेश्‍वर ने खुद अपने बेटे के बारे में गवाही
दी है। **10** जो इंसान परमेश्‍वर के बेटे
पर विश्‍वास करता है उसने अपने दिल में
उस गवाही को स्वीकार किया है जो पर-
मेश्‍वर ने उसे दी है। जो इंसान परमेश्‍वर
पर विश्‍वास नहीं करता, उसने उसे झूठा

5:4 *शा., "हर वह चीज़।"

ठहराया है[1] क्योंकि उसने परमेश्‍वर की
उस गवाही पर विश्‍वास नहीं किया जो
उसने अपने बेटे के बारे में दी है।
11 और वह गवाही यह है कि परमेश्‍वर
ने हमें हमेशा की ज़िंदगी दी है[2] और यह
ज़िंदगी उसके बेटे के ज़रिए मिलती है।[3]
12 जो बेटे को स्वीकार करता है उसके
पास यह ज़िंदगी है। जो परमेश्‍वर के बेटे
को स्वीकार नहीं करता, उसके पास यह
ज़िंदगी नहीं है।[4]

13 मैं तुम्हें ये बातें इसलिए लिख रहा
हूँ ताकि तुम जानो कि तुम्हारे पास हमेशा
की ज़िंदगी है,[5] क्योंकि तुम परमेश्‍वर
के बेटे के नाम पर विश्‍वास करते हो।[6]
14 हमें परमेश्‍वर पर भरोसा है*[7] कि
हम उसकी मरज़ी के मुताबिक चाहे जो
भी माँगें वह हमारी सुनता है।[8] **15** हम
जानते हैं कि हम चाहे जो भी माँगें वह
हमारी सुनता है, इसलिए हमें पूरा यकीन
है कि हम उससे जो भी माँगते हैं वह हमें
ज़रूर देगा।[9]

16 अगर कोई अपने भाई को ऐसा
पाप करते हुए देख लेता है जिसका
अंजाम मौत नहीं है, तो वह अपने
भाई के लिए प्रार्थना करे और पर-
मेश्‍वर उसे जीवन देगा,[10] हाँ उन लोगों
को जीवन देगा जिन्होंने ऐसा पाप नहीं
किया जिसका अंजाम मौत है। मगर ऐसा
पाप भी है जिसका अंजाम मौत है।[11]
मैं ऐसा पाप करनेवाले के बारे में प्रार्थना
करने के लिए नहीं कहता। **17** हर बुरा
काम पाप है।[12] मगर ऐसा पाप भी है
जिसका अंजाम मौत नहीं है।

18 हम जानते हैं कि हर वह इंसान जो
परमेश्‍वर से पैदा हुआ है वह पाप करने
में नहीं लगा रहता, मगर ऐसे इंसान

5:14 *या "बेझिझक बोलने की हिम्मत है।"

अध्य. 5
1 यूह 3:3
1पत 1:3, 23
1यूह 3:9
2 यूह 1:12, 13
रोम 8:14
3 यूह 14:23
4 व्य 30:11
मी 6:8
5 यूह 16:33
1यूह 5:18
6 इफ 6:16
2ती 4:7
प्रक 12:10, 11
7 1यूह 4:4
8 यूह 20:31
9 मत 3:13
10 प्रेष 20:28
इफ 1:7
1पत 1:19
11 मत 3:16
यूह 1:32, 33
12 लूक 3:22
लूक 4:18
13 लूक 3:21
14 इब्र 9:14

दूसरा कॉल.
1 यूह 3:33
2 यूह 17:3
3 यूह 5:26
4 यूह 3:36
5 1यूह 1:2
6 यूह 20:31
7 इब्र 4:16
1यूह 3:21
8 नीत 15:29
9 लूक 11:13
यूह 14:13
10 याकू 5:15
1यूह 1:9
11 मत 12:31
मर 3:29
लूक 12:10
इब्र 6:4-6
इब्र 10:26
12 1यूह 3:4

की वह* हिफाज़त करता है जो पर-
मेश्वर से पैदा हुआ है और शैतान# उस
पर कब्ज़ा नहीं कर सकता।[1] 19 हम
जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं, मगर
सारी दुनिया शैतान* के कब्ज़े में पड़ी
हुई है।[2] 20 और हम यह भी जानते
हैं कि परमेश्वर का बेटा आया है[3] और
उसने हमें अंदरूनी समझ* दी है ताकि
जो सच्चा है हम उसके बारे में ज्ञान
ले सकें। और हम उस सच्चे परमेश्वर
के बेटे यीशु मसीह के ज़रिए परमेश्वर के
साथ एकता में हैं।[1] वही सच्चा परमेश्वर
है और हमेशा की ज़िंदगी वही देता है।[2]
21 प्यारे बच्चो, खुद को मूरतों से बचाए
रखो।[3]

5:18 *यानी परमेश्वर का बेटा यीशु मसीह। #शा., "वह दुष्ट।" 5:19 *शा., "उस दुष्ट।"

5:20 *शा., "समझने की काबिलीयत; दिमागी काबिलीयत।"

अध्य. 5
1 यूह 17:15
2 मत 13:19; लूक 4:6; यूह 12:31
3 1ती 3:16

दूसरा कॉल.
1 यूह 17:20, 21
2 यूह 17:3
3 1कुर 10:14

यूहन्ना

की दूसरी चिट्ठी

सारांश

नमस्कार (1-3)
सच्चाई की राह पर चलते रहो (4-6)
धोखेबाज़ों से खबरदार (7-11)
नमस्कार भी मत करना (10, 11)
उनसे मिलने की उम्मीद और नमस्कार (12, 13)

1 इस बुज़ुर्ग* की तरफ से यह चिट्ठी
चुनी हुई औरत और उसके बच्चों के लिए
है, जिनसे मैं सचमुच प्यार करता हूँ और
सिर्फ मैं ही नहीं बल्कि वे सभी उनसे
प्यार करते हैं जो सच्चाई को जान गए
हैं। 2 हम तुमसे इसलिए प्यार करते हैं
क्योंकि सच्चाई हमारे दिल में है और
हमेशा रहेगी। 3 परमेश्वर यानी हमारे
पिता और पिता के बेटे यीशु मसीह की
तरफ से महा-कृपा, दया और शांति हमें
मिलती रहेगी, साथ ही सच्चाई और प्यार
भी मिलता रहेगा।
4 मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई
कि तेरे कुछ बच्चे सच्चाई की राह पर चल
रहे हैं,[1] ठीक जैसे हमें पिता की तरफ से
आज्ञा मिली है। 5 इसलिए हे औरत,
मैं तुझसे इस आज्ञा को मानने की गुज़ा-
रिश करता हूँ कि हम एक-दूसरे से प्यार
करें। (मैं तुझे कोई नयी आज्ञा नहीं
लिख रहा बल्कि वही आज्ञा लिख रहा
हूँ जो हमारे पास शुरू से थी।)[2] 6 प्यार
का मतलब यह है कि हम पिता की
आज्ञाओं पर चलते रहें।[3] ठीक जैसा
तुमने शुरू से सुना है, उसकी आज्ञा यही
है कि तुम प्यार की राह पर चलते रहो।

1 *या "प्राचीन।"

दूसरा कॉल.
1 2कुर 4:2; 3यूह 3
2 यूह 13:34; यूह 15:12; 1पत 4:8; 1यूह 2:7
3 यूह 14:21; 1यूह 2:5

7 इसलिए कि दुनिया में बहुत-से धोखा
देनेवाले निकल पड़े हैं।[1] वे यह स्वीकार
नहीं करते कि यीशु मसीह हाड़-माँस का
इंसान बनकर आया था।[2] जो इस बात
को स्वीकार नहीं करता, वही धोखेबाज़
और मसीह का विरोधी है।[3]

8 तुम खुद पर नज़र रखो ताकि वे
चीज़ें खो न दो जो हमने बहुत मेहनत
करके पैदा की हैं। इसके बजाय, तुम पूरा
इनाम पाओ।[4] 9 हर कोई जो मसीह
की शिक्षाओं के दायरे से बाहर निकल
जाता है और उन्हें मानना छोड़ देता है,
उसे परमेश्वर मंज़ूर नहीं करता।[5] जो
कोई उसकी शिक्षाओं को मानता रहता है,
उसी को पिता और बेटा दोनों मंज़ूर करते
हैं।[1] 10 अगर कोई तुम्हारे पास आता
है और यह शिक्षा नहीं देता, तो ऐसे इंसान
को अपने घर में कभी मत आने देना,[2]
न ही उसे नमस्कार करना। 11 जो उसे
नमस्कार करता है वह उसके दुष्ट कामों
में हिस्सेदार बनता है।

12 हालाँकि मुझे बहुत सारी बातें
लिखनी हैं मगर मैं नहीं चाहता कि सब-
कुछ स्याही से कागज़ पर लिख दूँ,
बल्कि उम्मीद करता हूँ कि मैं तुम्हारे
पास आऊँ और आमने-सामने तुमसे बात
करूँ ताकि तुम्हारी खुशी और भी बढ़
जाए।

13 तेरी बहन जो चुनी हुई है उसके
बच्चे तुझे नमस्कार कहते हैं।

1 मत 7:15; प्रेष 20:29, 30; 2थि 2:3, 7; 2पत 2:1; प्रक 2:2
2 1यूह 4:2
3 1यूह 2:18, 22; 1यूह 4:3; यहू 4
4 इब्र 10:35
5 यूह 14:6; यूह 15:6; 3यूह 9

दूसरा कॉल.
1 इब्र 3:14; 1यूह 2:23
2 व्य 17:2-5; रोम 16:17; 1कुर 5:11

यूहन्ना
की तीसरी चिट्ठी

सारांश

नमस्कार और प्रार्थना (1-4)
गयुस की तारीफ (5-8)
दियुत्रिफेस में बड़ा बनने का जुनून (9, 10)
देमेत्रियुस की तारीफ (11, 12)
उनसे मिलने की उम्मीद और नमस्कार (13, 14)

1 इस बुज़ुर्ग* की तरफ से यह चिट्ठी
प्यारे गयुस के लिए है जिसे मैं सचमुच
प्यार करता हूँ।

2 प्यारे गयुस, मैं प्रार्थना करता हूँ
कि आज जैसे तेरी ज़िंदगी खुशहाल है,
वैसे ही तू हर तरह से खुशहाल रहे
और सेहतमंद रहे। 3 जब भाइयों ने
आकर मुझे गवाही दी कि तू सच्चाई
को थामे हुए है, तो मुझे बेहद खुशी
हुई। तू वाकई सच्चाई की राह पर चल
रहा है।[1] 4 मुझे इससे ज़्यादा किस
बात से खुशी मिल सकती है* कि मैं
यह सुनूँ कि मेरे बच्चे सच्चाई की राह
पर चल रहे हैं।[2]

दूसरा कॉल.
1 2यूह 4
2 1कुर 4:15; 2ती 1:2; तीत 1:4; फिले 10

1 *या "प्राचीन।"

4 *या शायद, "शुक्रगुज़ार हो सकता हूँ।"

5 प्यारे भाई, यह तेरी वफादारी का
सबूत है कि तू भाइयों के लिए बहुत
कुछ कर रहा है, इसके बावजूद कि
तू उन्हें पहले से नहीं जानता।[1] 6 इन
भाइयों ने मंडली के सामने तेरे प्यार
की गवाही दी है। मेहरबानी करके तू
उन्हें सफर के लिए इस तरह विदा कर
कि परमेश्वर खुश हो।[2] 7 क्योंकि वे
उसी के नाम की खातिर निकले हैं और
दुनिया के लोगों से कुछ नहीं लेते।[3]
8 इसलिए हमारा फर्ज़ बनता है कि
हम ऐसे भाइयों का आदर-सत्कार करें[4]
ताकि हम सच्चाई फैलाने में उनके सह-
कर्मी बनें।[5]

9 मैंने मंडली को कुछ लिखा था,
मगर दियुत्रिफेस जो मंडली में सबसे
बड़ा बनना चाहता है,[6] वह हमारी
किसी भी बात की इज़्ज़त नहीं करता।[7]
10 इसलिए अगर मैं आया तो उसकी
करतूतों पर ध्यान दूँगा क्योंकि वह हमें
बदनाम करने के लिए हमारे बारे में
बुरी-बुरी बातें फैला रहा है।*[8] और
यह सब करके भी उसे चैन नहीं। वह
खुद कभी भाइयों का आदर-सत्कार नहीं
करता[1] और जो ऐसा करना चाहते हैं,
उन्हें रोकने और मंडली से बेदखल करने
की कोशिश करता है।

11 प्यारे भाई, बुरी मिसालों पर नहीं
अच्छी मिसालों पर चल।[2] जो भला
करता है वह परमेश्वर की तरफ से है।[3]
लेकिन जो बुरा करता है उसने परमेश्वर
को नहीं देखा।[4] 12 सभी भाई देमे-
त्रियुस की तारीफ करते हैं और जिस
तरह वह सच्चाई के मुताबिक जी रहा
है उससे भी यही साबित होता है। दर-
असल, हम भी उसके बारे में यही गवाही
देते हैं और तू जानता है कि हमारी गवाही
सच्ची है।

13 मैं तुझे बहुत-सी बातें लिखना
चाहता था, मगर मैं नहीं चाहता कि
सबकुछ स्याही और कलम से लिखूँ।
14 मुझे उम्मीद है कि मैं बहुत जल्द
आकर तुझसे मिलूँगा और तब हम
आमने-सामने बैठकर बात करेंगे।

मेरी दुआ है कि तुझे शांति मिले।

यहाँ के सभी दोस्त तुझे नमस्कार
कहते हैं। वहाँ के एक-एक दोस्त को
मेरा नमस्कार कहना।

10 *शा., "हमारे बारे में बुरी बातें कह रहा है, बकबक कर रहा है।"

1 इब्र 13:2
2 तीत 3:13
3 1कुर 9:11, 12
4 मत 10:41; फिले 22; 1पत 4:9
5 रोम 12:13
6 प्रेष 20:29, 30
7 रोम 12:10; फिल 2:3; इब्र 13:17
8 भज 101:5; नीत 6:16, 19

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 15:25, 27; इफ 6:21; फिल 2:19; कुल 4:7; तीत 1:5
2 रोम 12:9; 1पत 3:11
3 1यूह 3:9
4 1यूह 3:6, 10

यहूदा

की चिट्ठी

सारांश

नमस्कार (1, 2)

झूठे शिक्षकों को ज़रूर सज़ा मिलेगी (3-16)

- शैतान के साथ मीकाएल की बहस (9)
- हनोक की भविष्यवाणी (14, 15)

खुद को परमेश्वर के प्यार के लायक बनाए रखो (17-23)

महिमा परमेश्वर की हो (24, 25)

1 मैं यहूदा जो यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई हूँ,[1] उन्हें लिख रहा हूँ जिन्हें बुलावा मिला है।[2] परमेश्वर हमारा पिता उनसे प्यार करता है और उनकी हिफाज़त करता है ताकि वे यीशु मसीह के साथ रहें।[3]

2 परमेश्वर की तरफ से तुम्हें और ज़्यादा दया, शांति और प्यार मिले।

3 प्यारे भाइयो, मैं तुम्हें उस उद्धार के बारे में लिखने की पूरी कोशिश कर रहा था जो हम सबको मिल रहा है,[4] मगर फिर मैंने यह ज़रूरी समझा कि तुम्हें उस विश्वास की खातिर जी-जान से लड़ने का बढ़ावा दूँ[5] जो पवित्र लोगों को एक ही बार हमेशा के लिए सौंपा गया है। 4 मेरे लिखने की वजह यह है कि हमारे बीच कुछ ऐसे आदमी दबे पाँव घुस आए हैं जिनके लिए शास्त्र में बहुत पहले से यह सज़ा ठहरायी जा चुकी है। ये ऐसे भक्तिहीन आदमी हैं जो हमारे परमेश्वर की महा-कृपा को निर्लज्ज काम*[6] करने का बहाना बना रहे हैं और अपने एकमात्र मालिक और प्रभु यीशु मसीह के साथ विश्वासघात करनेवाले साबित हो रहे हैं।[7]

5 तुम यह सब पहले से जानते हो, फिर भी मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ कि हालाँकि यहोवा* ने अपने लोगों को मिस्र देश से छुड़ाया था,[8] फिर भी बाद में जिन लोगों ने विश्वास नहीं किया उन्हें उसने नाश कर दिया।[9] 6 और जो स्वर्गदूत उस जगह पर कायम न रहे जो उन्हें दी गयी थी और जिन्होंने वह जगह छोड़ दी जहाँ उन्हें रहना था,[10] उन्हें उसने हमेशा के बंधनों में जकड़कर रखा है ताकि वे उसके महान दिन में सज़ा पाने तक घोर अंधकार में रहें।[1] 7 उसी तरह, सदोम और अमोरा और उनके आस-पास के शहरों के लोगों ने भी नाजायज़ यौन-संबंध* रखने में सारी हदें पार कर दीं और वे शरीर की अस्वाभाविक इच्छाएँ पूरी करने में लगे रहे।[2] उन्हें सज़ा दी गयी और आग से हमेशा के लिए नाश कर दिया गया और वे हमारे लिए एक चेतावनी ठहरे कि हम उनसे सबक सीखें।[3]

8 फिर भी ये आदमी सपनों में खोए रहते हैं, दूसरों के शरीर को भ्रष्ट करते हैं, अधिकार रखनेवालों को तुच्छ समझते हैं और उन लोगों के बारे में बुरी बातें कहते हैं जिन्हें परमेश्वर ने महिमा दी है।[4] 9 लेकिन जब मूसा की लाश के बारे में प्रधान स्वर्गदूत[5] मीकाएल[6] की शैतान# के साथ बहस हुई,[7] तो उसने शैतान को बुरा-भला कहकर उसे दोषी ठहराने की जुर्रत नहीं की[8] बल्कि यह कहा, "यहोवा* तुझे डाँटे।"[9] 10 मगर ये आदमी जिन बातों की बिलकुल समझ नहीं रखते उन सबके बारे में बुरी-बुरी बातें कहते हैं।[10] और वे निर्बुद्धि जानवरों की तरह जो बातें अपने स्वभाव से समझते हैं,[11] उनके मुताबिक काम करके खुद को भ्रष्ट करते जा रहे हैं।

11 उनका बहुत बुरा होगा क्योंकि वे कैन की राह पर निकल पड़े हैं[12] और इनाम पाने के लिए बिलाम की गलत राह पर दौड़ रहे हैं[13] और कोरह[14] की तरह बगावती बातें[15] करके नाश हो

---

4 * या "शर्मनाक बरताव।" शब्दावली देखें। 5, 9 * अति. क5 देखें।

7 * शब्दावली देखें। 9 # शा., "इबलीस।" शब्दावली देखें।

---

1 मत 13:55, मर 6:3, गल 2:9, याकू 1:1
2 इब्र 3:1
3 यूह 17:15, 1पत 1:5
4 इब्र 2:3
5 इफ 6:11, 1ती 1:18, 19, 1ती 6:12
6 गल 5:19
7 प्रेष 20:29, 30, 2पत 2:1
8 निर्ग 12:41
9 गि 14:35, 1कुर 10:1, 5, इब्र 3:16, 19
10 उत 6:1-4, 1पत 3:19, 20

दूसरा कॉल.

1 लूक 8:30, 31, 2पत 2:4, प्रक 20:1, 2
2 उत 19:4, 5, लैव 18:22
3 उत 19:24, 2पत 2:6
4 निर्ग 22:28, 2पत 2:10, 3यूह 9, 10
5 1थि 4:16
6 दान 10:21, दान 12:1
7 व्य 34:5, 6
8 2पत 2:11
9 जक 3:2
10 यहू 19
11 2पत 2:12
12 उत 4:5, 8, 1यूह 3:12
13 गि 22:32, 2पत 2:15, 16, प्रक 2:14
14 गि 16:3, 32
15 1ती 1:20

गए हैं! **12** वे तुम्हारे साथ दावतों* में
खाते-पीते हैं मगर पानी में छिपी चट्टानों
जैसे हैं।[1] वे ऐसे चरवाहे हैं जो सिर्फ
अपना पेट भरते हैं और ऐसा करने से
नहीं डरते।[2] वे बिन पानी के ऐसे बादल
हैं जिन्हें हवा यहाँ-वहाँ उड़ा ले जाती
है।[3] वे ऐसे पेड़ हैं जिनमें मौसम आने
पर भी फल नहीं लगते। वे पूरी तरह
मर चुके हैं# और उन्हें जड़ से उखाड़
दिया गया है। **13** वे समुंदर की भया-
नक लहरें हैं जो बेशर्मी का झाग उछाल-
ते हैं।[4] वे भटकते तारे हैं जो हमेशा तक
घोर अंधकार में रहेंगे।[5]

14 हाँ, हनोक[6] भी जो आदम से
सातवीं पीढ़ी में था, उसने इन लोगों
के बारे में यह भविष्यवाणी की थी:
"देखो! यहोवा* अपने लाखों पवित्र
स्वर्गदूतों के साथ आया[7] **15** ताकि
उन सबको सज़ा दे[8] और उन सब
भक्तिहीन लोगों को उन भक्तिहीन
कामों के लिए दोषी ठहराए जो
उन्होंने परमेश्वर के खिलाफ जाकर
किए थे और उन सभी घिनौनी बातों के
लिए जो उन पापियों ने उसके खिलाफ
कही थीं, उन्हें सज़ा दे।"[9]

16 वे आदमी कुड़कुड़ाते हैं[10] और
अपने हालात को कोसते हैं। वे अपनी
इच्छाओं के मुताबिक चलते हैं[11] और
अपने मुँह से बड़ी-बड़ी डींगें मारते हैं
और अपने फायदे के लिए दूसरों की
चापलूसी करते हैं।*[12]

17 लेकिन प्यारे भाइयो, तुम वे
बातें याद करो जो हमारे प्रभु यीशु
मसीह के प्रेषितों ने पहले बतायी थीं,
18 किस तरह वे तुम्हें बताया करते
थे, "आखिरी वक्त में खिल्ली उड़ाने-
वाले आएँगे जो अपनी बुरी इच्छाओं के
मुताबिक काम करेंगे।"[1] **19** यही वे
आदमी हैं जो फूट डालते हैं,[2] शारीरिक
सोच रखते* हैं और जिनमें परमेश्वर
की पवित्र शक्ति नहीं है। **20** मगर
प्यारे भाइयो, तुम अपने पवित्र विश्वास
की बुनियाद पर खुद को मज़बूत करो
और पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन के मुता-
बिक प्रार्थना करो[3] **21** ताकि हमारे
प्रभु यीशु मसीह की दया पाने का इंतज़ार
करते हुए जिससे तुम्हें हमेशा की ज़िंदगी
मिलेगी,[4] तुम खुद को परमेश्वर के प्यार
के लायक बनाए रखो।[5] **22** साथ ही,
ऐसे लोगों को दया दिखाते रहो[6] जो
शक करते हैं[7] **23** और झपटकर उन्हें
विनाश की आग से बाहर निकालो और
बचा लो।[8] मगर दूसरों पर भी दया
करते रहो और एहतियात बरतो और
इस दौरान उनके बुरे कामों से नफरत
करो जिनसे उन्होंने खुद को दागदार कर
लिया है।*[9]

24 परमेश्वर तुम्हें ठोकर खाने से
बचा सकता है और अपनी महिमा के
सामने* निष्कलंक खड़ा कर सकता है[10]
और तुम्हें बहुत खुशी दे सकता है।
25 हमारे प्रभु यीशु मसीह के ज़रिए
बीते युगों से और आज और युग-युग
तक महिमा, ऐश्वर्य, शक्ति और अधि-
कार उस एकमात्र परमेश्वर और हमारे
उद्धारकर्ता के हों। आमीन।

---

12 *शा., "प्यार की दावतों।" #शा., "दो बार मर चुके हैं।" **14** *अति. क5 देखें। **16** *या "खास लोगों की वाह-वाही करते हैं।"

19 *या "जानवरों जैसे।" **23** *शा., "यहाँ तक कि उनके कपड़े से भी नफरत करो जिस पर उनके शरीर का दाग लगा है।" **24** *या "अपनी महिमावान मौजूदगी में।"

---

1 2पत 2:13
2 यहे 34:8
3 2पत 2:17
4 यश 57:20
5 इब्र 6:4-6, प्रक 21:8
6 उत 5:21, 22
7 व्य 33:2, दान 7:10, जक 14:5
8 2थि 1:6
9 मत 12:36
10 1कुर 10:10, फिल 2:14
11 2पत 2:18
12 याकू 2:9

दूसरा कॉल.
1 प्रेष 20:29, 30, 1ती 4:1, 2पत 2:1, 2पत 3:2, 3
2 रोम 16:17, 3यूह 9, 10
3 रोम 8:26, इफ 6:18
4 तीत 3:7, 1यूह 1:2, 1यूह 2:25
5 यूह 15:10, रोम 8:38, 39
6 मत 5:7, मत 9:13, याकू 2:13
7 याकू 1:6
8 गल 6:1, याकू 5:19, 20
9 गल 5:19-21
10 रोम 8:33, इफ 1:4, कुल 1:22

यूहन्ना को दिया गया

प्रकाशितवाक्य

सारांश

1 परमेश्वर, यीशु के ज़रिए बातें प्रकट करता है (1-3)
सात मंडलियों को नमस्कार (4-8)
“मैं ही शुरूआत हूँ और मैं ही अंत हूँ” (8)
पवित्र शक्ति के उभारने पर यूहन्ना, प्रभु के दिन में (9-11)
महिमावान यीशु का दर्शन (12-20)

2 इन मंडलियों को संदेशः इफिसुस (1-7), स्मुरना (8-11), पिरगमुन (12-17), थुआतीरा (18-29)

3 इन मंडलियों को संदेशः सरदीस (1-6), फिलदिलफिया (7-13), लौदीकिया (14-22)

4 स्वर्ग में मौजूद यहोवा का दर्शन (1-11)
वह राजगद्दी पर बैठा है (2)
24 प्राचीन राजगद्दियों पर बैठे हैं (4)
चार जीवित प्राणी (6)

5 सात मुहरोंवाला खर्रा (1-5)
मेम्ना खर्रा लेता है (6-8)
मेम्ना मुहरें खोलने के योग्य है (9-14)

6 मेम्ना पहली छः मुहरें खोलता है (1-17)
सफेद घोड़े पर सवार विजेता (1, 2)
लाल घोड़े का सवार, शांति उठा ले जाएगा (3, 4)
काले घोड़े का सवार, अकाल लाएगा (5, 6)
पीले घोड़े के सवार का नाम मौत (7, 8)
मारे गए लोग वेदी के नीचे (9-11)
एक बड़ा भूकंप (12-17)

7 चार स्वर्गदूत विनाश की हवाओं को थामे हुए (1-3)
1,44,000 मुहरबंद (4-8)
बड़ी भीड़ सफेद चोगे पहने हुए (9-17)

8 सातवीं मुहर खोली गयी (1-6)
पहली चार तुरहियाँ फूँकी गयीं (7-12)
तीन मुसीबतों का ऐलान (13)

9 पाँचवीं तुरही (1-11)
एक कहर बीत गया, दो और आनेवाले (12)
छठी तुरही (13-21)

10 एक ताकतवर स्वर्गदूत के पास छोटा खर्रा (1-7)
“अब और देर नहीं होगी” (6)
पवित्र रहस्य अंजाम पर पहुँचेगा (7)
यूहन्ना छोटा खर्रा खाता है (8-11)

11 दो गवाह (1-13)
टाट ओढ़े हुए 1,260 दिन भविष्यवाणी करते हैं (3)
मार डाले जाते हैं पर दफनाए नहीं जाते (7-10)
साढ़े तीन दिन बाद ज़िंदा किए जाते हैं (11, 12)
दूसरा कहर बीता, तीसरा आनेवाला है (14)
सातवीं तुरही (15-19)
हमारे मालिक और उसके मसीह का राज (15)
पृथ्वी को तबाह करनेवाले खत्म होंगे (18)

12 औरत, लड़का और अजगर (1-6)
मीकाएल अजगर से लड़ा (7-12)
अजगर धरती पर फेंक दिया गया (9)
शैतान जानता है उसका वक्त बहुत कम है (12)
अजगर औरत पर ज़ुल्म ढाता है (13-17)

13 सात सिरोंवाला जंगली जानवर समुंदर से निकला (1-10)
दो सींगोंवाला जानवर धरती से निकला (11-13)

सात सिरोंवाले जानवर की मूरत (14, 15)
जंगली जानवर का निशान और संख्या (16-18)

14 मेम्ना और 1,44,000 जन (1-5)
तीन स्वर्गदूतों का संदेश (6-12)
आकाश के बीचों-बीच उड़ते स्वर्गदूत के पास खुशखबरी (6, 7)
प्रभु के साथ एकता में मरनेवाले सुखी हैं (13)
धरती की दो बार कटाई (14-20)

15 सात स्वर्गदूत सात कहर लिए हुए (1-8)
मूसा और मेम्ने का गीत (3, 4)

16 परमेश्वर के क्रोध के सात कटोरे उँडेले गए (1-21)
धरती पर (2), समुंदर पर (3), नदियों और पानी के सोतों पर (4-7), सूरज पर (8, 9), जंगली जानवर की राजगद्दी पर (10, 11), फरात पर (12-16) और हवा पर (17-21)
हर-मगिदोन में परमेश्वर का युद्ध (14, 16)

17 "महानगरी बैबिलोन" को सज़ा सुनायी गयी (1-18)
सुर्ख लाल रंग के जानवर पर बड़ी वेश्या बैठी है (1-3)
जानवर 'जो था, अब नहीं है और अथाह-कुंड से जल्द निकलेगा' (8)
दस सींग, मेम्ने के साथ लड़ेंगे (12-14)
दस सींग, वेश्या से नफरत करेंगे (16, 17)

18 "महानगरी बैबिलोन" गिर पड़ी (1-8)
"मेरे लोगो, उसमें से बाहर निकल आओ" (4)
बैबिलोन के गिरने पर मातम (9-19)
बैबिलोन के गिरने पर स्वर्ग में खुशियाँ (20)
बैबिलोन को पत्थर की तरह समुंदर में फेंका जाएगा (21-24)

19 याह के फैसलों के लिए उसकी तारीफ करो (1-10)
मेम्ने की शादी (7-9)
सफेद घोड़े पर सवार (11-16)
परमेश्वर ने रखी शाम की बड़ी दावत (17, 18)
जंगली जानवर की हार (19-21)

20 शैतान 1,000 साल के लिए कैद (1-3)
मसीह के साथ 1,000 साल तक राज करनेवाले (4-6)
शैतान छोड़ा जाएगा, फिर उसका नाश (7-10)
सफेद राजगद्दी के सामने मरे हुओं का न्याय (11-15)

21 एक नया आकाश और नयी पृथ्वी (1-8)
फिर मौत न रहेगी (4)
सबकुछ नया बनाया गया (5)
नयी यरूशलेम की खूबसूरती (9-27)

22 जीवन देनेवाले पानी की नदी (1-5)
समाप्ति (6-21)
'आ! जीवन देनेवाला पानी मुफ्त में ले ले' (17)
"प्रभु यीशु, आ" (20)

---

1 ये वे बातें हैं जो यीशु मसीह ने प्रकट कीं,* जो उसे परमेश्वर ने इसलिए दीं[1] ताकि वह उसके दासों को दिखाए[2] कि बहुत जल्द क्या-क्या होनेवाला है। और यीशु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर ये बातें उसके दास यूहन्ना को निशानियों के ज़रिए बतायीं।[3]
2 यूहन्ना ने परमेश्वर के वचन की और जो गवाही यीशु मसीह ने दी थी, उसकी गवाही दी यानी उन सब बातों की जो उसने देखी थीं।
3 सुखी है वह जो इस भविष्यवाणी के वचन ज़ोर से पढ़ता है और वे भी जो इन्हें सुनते हैं और इसमें लिखी बातों पर चलते हैं,[1] क्योंकि तय किया गया वक्त पास है।

अध्य. 1
1 दान 2:28
2 आम 3:7
प्रक 7:3, 4
3 मत 10:2
मर 1:19
यूह 21:20

दूसरा कॉल.
1 भज 1:2
लूक 11:28
यूह 13:17
याकू 1:22

1:1 * या "जिनका खुलासा किया।"

4 मैं यूहन्ना एशिया प्रांत की सात
मंडलियों को लिख रहा हूँ:[1]
मेरी दुआ है कि तुम्हें उसकी तरफ
से यानी "जो था और जो है और जो
आ रहा है,"[2] महा-कृपा और शांति मिले
और सात पवित्र शक्तियों की तरफ से
भी[3] जो उसकी राजगद्दी के सामने हैं।
5 तुम्हें यीशु मसीह की तरफ से भी महा-
कृपा और शांति मिले जो "विश्वासयोग्य
साक्षी,"[4] "मरे हुओं में से ज़िंदा होनेवालों
में पहलौठा"[5] और "धरती के राजाओं
का राजा" है।[6]
यीशु जो हमसे प्यार करता है[7] और
जिसने अपने खून के ज़रिए हमें पापों से
छुड़ाया[8] 6 और हमें अपने परमेश्वर
और पिता के लिए राजा और याजक
बनाया,[9] हाँ, महिमा और शक्ति सदा
उसी की हो। आमीन।
7 देखो! वह बादलों के साथ आ रहा
है[10] और हर आँख उसे देखेगी और वे
भी देखेंगे जिन्होंने उसे भेदा था। और
पृथ्वी के सारे गोत्र उसकी वजह से दुख
के मारे छाती पीटेंगे।[11] हाँ, आमीन।
8 यहोवा* परमेश्वर, "जो था, जो
है और जो आ रहा है और जो सर्व-
शक्तिमान है"[12] वह कहता है, "मैं ही
शुरूआत हूँ और मैं ही अंत हूँ।"#[13]
9 मैं यूहन्ना तुम्हारा भाई, यीशु का
चेला होने के नाते[14] दुख झेलने, राज
करने[15] और धीरज धरने में[16] तुम्हारे
साथ साझेदार हूँ।[17] मैं परमेश्वर के बारे
में बोलने और यीशु के बारे में गवाही
देने की वजह से पतमुस नाम के द्वीप में
था। 10 मैं पवित्र शक्ति से उभारे जाने
पर प्रभु के दिन में पहुँच गया। और मैंने
अपने पीछे तुरही के जैसी तेज़ आवाज़
सुनी 11 जो मुझसे कह रही थी, "तू
जो देखता है उसे एक खर्रे पर लिख ले
और उसे इन सातों मंडलियों को भेजः
इफिसुस,[1] स्मुरना,[2] पिरगमुन,[3] थुआ-
तीरा,[4] सरदीस,[5] फिलदिलफिया[6] और
लौदीकिया।"[7]
12 फिर मैं यह देखने के लिए मुड़ा
कि कौन मुझसे बोल रहा है और
तब मैंने सोने की सात दीवटें देखीं।[8]
13 उन दीवटों के बीच मैंने इंसान के
बेटे जैसा कोई देखा,[9] जो पाँव तक लंबा
चोगा पहने और सोने का सीनाबंद बाँधे
हुए था। 14 उसका सिर और उसके
बाल सफेद ऊन और बर्फ जैसे सफेद
थे और उसकी आँखें आग की ज्वाला
जैसी थीं।[10] 15 उसके पाँव चमचमा-
ते ताँबे जैसे थे[11] जो भट्ठी में तपाया
गया हो। और उसकी आवाज़ पानी
की तेज़ धाराओं के गरजन जैसी थी।
16 उसके दाएँ हाथ में सात तारे थे[12]
और उसके मुँह से एक लंबी और दोनों
तरफ तेज़ धारवाली तलवार निकल रही
थी।[13] उसका चेहरा ऐसे चमक रहा था
जैसे सूरज कड़ी धूप में चमकता है।[14]
17 जब मैंने उसे देखा तो मैं उसके पाँवों
पर मुरदा-सा गिर पड़ा।
तब उसने अपना दायाँ हाथ मुझ पर
रखकर कहा, "डर मत। मैं ही पहला[15]
और आखिरी हूँ[16] 18 और मैं ही
जीवित हूँ।[17] मैं मर गया था,[18] मगर
देख! अब मैं हमेशा-हमेशा के लिए जीता
हूँ[19] और मेरे पास मौत और कब्र*
की चाबियाँ हैं।[20] 19 इसलिए तूने जो
देखा और जो हो रहा है और इसके बाद
जो होनेवाला है, वे सारी बातें लिख ले।

1:8 *अति. क5 देखें। #शा., "मैं ही अल्फा और ओमेगा हूँ।" ये यूनानी वर्णमाला के पहले और आखिरी अक्षर हैं।

1:18 *या "हेडीज़।" शब्दावली देखें।

अध्य. 1
1 प्रक 1:11
2 प्रक 1:8
प्रक 4:8
प्रक 11:17
3 प्रक 4:5
4 प्रक 3:14
5 कुल 1:18
6 भज 89:27
1ती 6:15
प्रक 19:16
7 यूह 15:9
8 इब्र 9:14
1पत 1:18, 19
1यूह 1:7
9 निर्ग 19:6
लूक 22:
28-30
1पत 2:5
प्रक 5:9, 10
प्रक 20:6
10 मत 26:64
मर 13:26
11 मत 24:30
12 निर्ग 6:3
13 यश 48:12
प्रक 21:6
प्रक 22:13
14 रोम 8:17
15 लूक 12:32
16 मत 10:22
2ती 2:12
17 मत 24:9

दूसरा कॉल.
1 इफ 1:1
प्रक 2:1
2 प्रक 2:8
3 प्रक 2:12
4 प्रक 2:18
5 प्रक 3:1
6 प्रक 3:7
7 प्रक 3:14
8 प्रक 1:20
9 दान 7:13
10 प्रक 19:12
11 प्रक 2:18
12 प्रक 1:20
13 यश 49:2
14 मत 17:1, 2
15 प्रेष 26:23
कुल 1:18
प्रक 1:5
16 प्रक 2:8
17 1कुर 15:45
18 1पत 3:18
19 रोम 6:9
1ती 6:16
20 मत 16:18
यूह 6:54
यूह 11:25

20 और मेरे दाएँ हाथ में तूने जो सात
तारे देखे और सोने की जो सात दीवटें
तूने देखीं उनका पवित्र रहस्य यह है:
इन सात तारों का मतलब है सात मंड-
लियों के दूत और सात दीवटों का मत-
लब है सात मंडलियाँ।”[1]

2 “इफिसुस की मंडली[2] के दूत[3] को
यह लिखः वह जो अपने दाएँ हाथ
में सात तारे लिए हुए है और सोने की
सात दीवटों के बीच चलता-फिरता है,
वह यह कहता है,[4] 2 ‘मैं तेरे काम,
तेरी कड़ी मेहनत और तेरे धीरज के बारे
में जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि तू
बुरे लोगों को बरदाश्त नहीं कर सकता।
और जो खुद को प्रेषित बताते हैं[5] मगर हैं
नहीं, तूने उन्हें परखा है और झूठा पाया
है। 3 तू धीरज भी धरता है और तूने
मेरे नाम की खातिर बहुत कुछ सहा है[6]
और तू दुख उठाते-उठाते थका नहीं।[7]
4 फिर भी, मुझे तेरे खिलाफ यह कहना
है कि तुझमें अब वह प्यार नहीं रहा जो
पहले था।

5 इसलिए याद कर कि तू कहाँ से
गिरा है और पश्चाताप कर[8] और पहले
जैसे काम कर। अगर तू पश्चाताप नहीं
करेगा[9] तो मैं तेरे पास आऊँगा और तेरी
दीवट[10] को उसकी जगह से हटा दूँगा।
6 फिर भी, तुझमें एक अच्छी बात यह
है कि तू निकुलाउस के गुट की करतूतों
से नफरत करता है,[11] जिससे मैं भी नफ-
रत करता हूँ। 7 कान लगाकर सुनो
कि पवित्र शक्ति मंडलियों से क्या कहती
है,[12] जो जीत हासिल करता है[13] उसे
मैं जीवन के पेड़ से फल खाने दूँगा[14]
जो परमेश्वर के फिरदौस में है।’

8 स्मुरना की मंडली के दूत को यह
लिखः वह जो ‘पहला और आखिरी
है,’[15] जो मर गया था और फिर से
ज़िंदा हुआ,[1] वह कहता है, 9 ‘मैं तेरी
दुख-तकलीफें और तेरी गरीबी जानता
हूँ। (फिर भी तू धनवान है।)[2] मैं यह
भी जानता हूँ कि जो खुद को यहूदी
कहते हैं मगर असल में हैं नहीं, बल्कि
शैतान के दल* के हैं, वे तेरे बारे में
कैसी निंदा की बातें करते हैं।[3] 10 तू
जो तकलीफें झेलनेवाला है, उनसे मत
डर।[4] देखो! शैतान* तुममें से कुछ
लोगों को कैद में डलवाता रहेगा ताकि
तुम पूरी हद तक परखे जाओ और तुम्हें
दस दिन तक तकलीफें झेलनी पड़ेंगी।
लेकिन तुम आखिरी साँस तक वफा-
दार बने रहना, तब मैं तुम्हें ज़िंदगी का
ताज दूँगा।[5] 11 कान लगाकर सुनो[6]
कि पवित्र शक्ति मंडलियों से क्या कहती
है: जो जीत हासिल करता है[7] उसे दूसरी
मौत नहीं आएगी।’[8]

12 पिरगमुन की मंडली के दूत को
यह लिखः वह जिसके पास लंबी और
दोनों तरफ तेज़ धारवाली तलवार है,[9]
वह कहता है, 13 ‘मैं जानता हूँ कि
तू जहाँ रहता है वहाँ शैतान की राज-
गद्दी है। फिर भी तू मेरा नाम मज़बूती
से थामे हुए है[10] और तूने उन दिनों में भी
मुझ पर विश्वास करने से इनकार नहीं
किया[11] जब मेरा विश्वासयोग्य गवाह
अन्तिपास[12] तुम्हारे यहाँ मार डाला गया
था,[13] जहाँ शैतान का अड्डा है।

14 फिर भी मुझे तेरे खिलाफ कुछ
बातें कहनी हैं। तुम्हारे बीच कुछ ऐसे
लोग हैं जो बिलाम की शिक्षा मानते हैं,[14]
जिसने बालाक को सिखाया था[15] कि
वह इसराएल के बेटों के रास्ते में ठोकर
का पत्थर रखे ताकि वे मूरतों को
बलि की हुई चीज़ें खाएँ और नाजायज़

अध्य. 1
1 मत 5:16; फिल 2:15

अध्य. 2
2 प्रेष 19:1; इफ 1:1
3 प्रक 1:20
4 प्रक 1:12, 13
5 प्रेष 20:29, 30; 2कुर 11:13; 1यूह 4:1
6 1पत 4:14
7 गल 6:9
8 प्रक 3:19
9 प्रक 2:16
10 प्रक 1:20
11 1कुर 11:19; प्रक 2:15
12 मत 11:15; प्रक 2:17, 29
13 1यूह 5:4
14 रोम 2:6, 7; प्रक 2:10
15 प्रक 1:13, 17

दूसरा कॉल.
1 रोम 14:9
2 2कुर 6:4, 10; 1ती 6:18, 19; याकू 2:5
3 प्रक 3:9
4 मत 10:28
5 रोम 2:6, 7; 2ती 4:7, 8; याकू 1:12; प्रक 20:4
6 प्रक 13:9
7 1यूह 5:5
8 प्रक 20:6; प्रक 20:14; प्रक 21:8
9 प्रक 1:13, 16; प्रक 19:15
10 मर 13:9; प्रक 2:3
11 लूक 12:8; 1यूह 2:23
12 प्रेष 1:8
13 मत 24:9
14 गि 31:16; 2पत 2:15; यहू 11
15 गि 22:4

2:9 *शा., “सभा-घर।” 2:10 *शा., “इबलीस।” शब्दावली देखें।

यौन-संबंध* रखें।[1] 15 तुम्हारे बीच
ऐसे लोग भी हैं जो निकुलाउस के गुट
की शिक्षा को मानते हैं।[2] 16 इसलिए
पश्‍चाताप करो। अगर तुम ऐसा नहीं
करोगे तो मैं बहुत जल्द तुम्हारे पास आ
रहा हूँ और मैं अपने मुँह से निकलने-
वाली लंबी तलवार से उनके साथ युद्ध
करूँगा।[3]

17 कान लगाकर सुनो कि पवित्र
शक्‍ति मंडलियों से क्या कहती है,[4]
जो जीत हासिल करता है[5] उसे मैं
छिपे हुए मन्‍ना में से कुछ दूँगा[6] और
एक सफेद चिकना पत्थर भी दूँगा। उस
पत्थर पर एक नया नाम लिखा होगा,
जिसे कोई नहीं जानता सिवा उसके जो
उसे पाता है।'

18 थुआतीरा[7] की मंडली के दूत को
यह लिखः वह जो परमेश्‍वर का बेटा
है, जिसकी आँखें आग की ज्वाला जैसी
हैं[8] और जिसके पाँव चमचमाते ताँबे की
तरह हैं,[9] वह कहता है, 19 'मैं तेरे
काम, प्यार, विश्‍वास, सेवा और धीरज
के बारे में जानता हूँ। और यह भी
जानता हूँ कि तूने हाल में जो काम किए
हैं वे उन कामों से बढ़कर हैं जो तूने
पहले किए थे।

20 फिर भी, मुझे तेरे खिलाफ यह
कहना है कि तू उस औरत इज़ेबेल को
बरदाश्‍त करता है[10] जो खुद को भविष्य-
वक्‍तिन कहती है और मेरे दासों को गुम-
राह करती है और उन्हें नाजायज़ यौन-
संबंध* रखने[11] और मूरतों को बलि
की गयी चीज़ें खाने की शिक्षा देती है।
21 मैंने उसे वक्‍त दिया कि वह नाजायज़
यौन-संबंध* रखना छोड़ दे और पश्‍चा-
ताप करे, मगर वह ऐसा नहीं करना
चाहती। 22 देख! मैं उसे ऐसा रोगी
बना दूँगा कि वह खाट पकड़ लेगी और
जो उसके साथ व्यभिचार करते हैं, अगर
वे उसके जैसे काम करना छोड़कर पश्‍चा-
ताप नहीं करते तो मैं उन्हें बड़ी मुसी-
बत में डाल दूँगा। 23 मैं उसके बच्चों
को जानलेवा महामारी से मार डालूँगा।
तब सारी मंडलियाँ जान लेंगी कि मैं वही
हूँ जो इंसान के अंदर गहराई में छिपे
विचारों* और दिलों को जाँचता है और
मैं तुममें से हरेक को उसके कामों के
हिसाब से बदला दूँगा।[1]

24 लेकिन थुआतीरा के तुम बाकी
लोगों से, जो इस शिक्षा को नहीं मानते
और उन बातों के बारे में बिलकुल नहीं
जानते जिन्हें "शैतान की गूढ़ बातें"[2]
कहा जाता है उनसे मैं कहता हूँ, मैं
तुम पर कोई और बोझ नहीं डाल
रहा। 25 बस तुम्हारे पास जो है उसे
मेरे आने तक मज़बूती से थामे रहना।[3]
26 और जो जीत हासिल करता है
और आखिर तक मेरे जैसे काम करता
है, मैं उसे राष्ट्रों पर अधिकार दूँगा[4]
27 और वह उन लोगों को चरवाहे की
तरह लोहे के छड़ से हाँकेगा[5] और उन्हें
मिट्टी के बरतनों की तरह चूर-चूर कर
देगा। यह अधिकार मुझे अपने पिता से
मिला है। 28 जीत हासिल करनेवाले
को मैं सुबह का तारा दूँगा।[6] 29 कान
लगाकर सुनो कि पवित्र शक्‍ति मंड-
लियों से क्या कहती है।'

3 सरदीस की मंडली के दूत को यह
लिखः वह जिसके पास परमेश्‍वर
की सात पवित्र शक्‍तियाँ हैं[7] और सात
तारे हैं,[8] वह कहता है, 'मैं तेरे काम
जानता हूँ। लोग समझते हैं कि तू ज़िंदा

2:14, 20 *शब्दावली देखें। 2:21 *यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें।

2:23 *या "गहरी भावनाओं।" शा., "गुरदों।"

अध्य. 2
1 गि 25:1, 2; प्रेष 15:28, 29; इफ 5:5
2 2पत 2:1; प्रक 2:6
3 प्रक 1:13, 16
4 प्रक 2:7
5 1यूह 5:5; प्रक 3:12
6 निर्ग 16:15, 31; भज 78:24; इब्र 9:4
7 प्रेष 16:14
8 प्रक 19:12
9 प्रक 1:13-15
10 1रा 16:31; 2रा 9:22
11 1कुर 5:11; गल 5:19; इफ 5:5

दूसरा कॉल.
1 प्रक 22:12
2 यूह 8:44
3 प्रक 3:11
4 भज 2:8, 9; मत 19:28; लूक 22:28-30; प्रक 3:21; प्रक 20:4
5 प्रक 12:5; प्रक 19:15
6 प्रक 22:16

अध्य. 3
7 प्रक 1:4; प्रक 4:5
8 प्रक 1:13, 16

है मगर तू मरा हुआ है।[1] 2 इसलिए
चौकन्ना हो जा[2] और जो बची हुई चीज़ें
मरनेवाली हैं उन्हें मज़बूत कर, क्योंकि
मैंने देखा है कि मेरे परमेश्वर के सामने
तूने अपने काम पूरे नहीं किए। 3 इस-
लिए तूने जो-जो पाया और सुना है
उस पर हमेशा ध्यान दे* और उस पर
चलता रह और पश्चाताप कर।[3] अगर
तू जागेगा नहीं तो मैं अचानक चोर की
तरह आऊँगा[4] और तुझे खबर भी नहीं
होगी कि मैं किस घड़ी आऊँगा।[5]

4 फिर भी, सरदीस में तुम्हारे बीच
कुछ ऐसे लोग* हैं जिन्होंने अपने कपड़ों
पर कलंक नहीं लगने दिया है[6] और
वे सफेद कपड़े पहने मेरे साथ चलेंगे[7]
क्योंकि वे इस सम्मान के योग्य हैं।
5 जो जीत हासिल करता है[8] उसे इसी
तरह सफेद पोशाक पहनायी जाएगी।[9]
और मैं जीवन की किताब से उसका
नाम कभी नहीं मिटाऊँगा,[10] मगर अपने
पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने उसे
स्वीकार करूँगा।[11] 6 कान लगाकर
सुनो कि पवित्र शक्ति मंडलियों से क्या
कहती है।'

7 फिलदिलफिया की मंडली के दूत
को यह लिखः वह जो पवित्र[12] और
सच्चा है,[13] जिसके पास दाविद की चाबी
है,[14] जो दरवाज़े खोलता है ताकि कोई
उन्हें बंद न करे और बंद करता है
ताकि कोई उन्हें न खोले, वह कहता है,
8 'मैं तेरे काम जानता हूँ। (देख! मैंने
तेरे सामने एक दरवाज़ा खोल रखा है[15]
जिसे कोई बंद नहीं कर सकता।) मैं यह
भी जानता हूँ कि तेरे पास थोड़ी शक्ति
है और तूने मेरी आज्ञाएँ मानी हैं और मेरे
नाम से इनकार नहीं किया है। 9 देख!
जो शैतान के दल* के हैं और खुद को
यहूदी कहते हैं मगर हैं नहीं[1] बल्कि
झूठ बोलते हैं, मैं उन्हें तेरे पास लाऊँगा
और वे तेरे पैरों पर झुकेंगे। मैं उन्हें एह-
सास दिलाऊँगा कि मैं तुझसे प्यार करता
हूँ। 10 तूने मेरे धीरज धरने के बारे
में जो सुना है उसके मुताबिक तू चला
है,*[2] इसलिए मैं परीक्षा की उस घड़ी
में तुझे सँभाले रहूँगा[3] जो सारे जगत
पर आनेवाली है, जिससे कि धरती पर
रहनेवालों की परीक्षा हो। 11 मैं बहुत
जल्द आ रहा हूँ।[4] जो तेरे पास है उसे
मज़बूती से थामे रह ताकि कोई भी तुझसे
तेरा ताज न छीन ले।[5]

12 जो जीत हासिल करता है, उसे
मैं अपने परमेश्वर के मंदिर में एक
खंभा बनाऊँगा और वह फिर कभी इस
मंदिर से बाहर नहीं जाएगा। और मैं
उस पर अपने परमेश्वर का नाम और
अपने परमेश्वर की नगरी, नयी यरू-
शलेम[6] का नाम लिखूँगा[7] जो मेरे पर-
मेश्वर के पास से स्वर्ग से उतरती है और
उस पर अपना नया नाम भी लिखूँगा।[8]
13 कान लगाकर सुनो कि पवित्र शक्ति
मंडलियों से क्या कहती है।'

14 लौदीकिया की मंडली[9] के दूत को
यह लिखः वह जो आमीन है,[10] विश्वास-
योग्य और सच्चा[11] साक्षी है[12] और पर-
मेश्वर की बनायी सृष्टि की शुरूआत
है,[13] वह कहता है, 15 'मैं तेरे काम
जानता हूँ कि तू न तो ठंडा है न गरम।
काश! तू या तो ठंडा होता या फिर
गरम। 16 तू गुनगुना है, तू न ठंडा[14]
है न गरम,[15] इसलिए मैं तुझे अपने मुँह
से उगलने जा रहा हूँ। 17 तू कहता

3:3 *या "उसे याद रख।" 3:4 *शा., "कुछ नाम।"

3:9 *शा., "सभा-घर।" 3:10 *या शायद, "तूने मेरी मिसाल पर चलकर धीरज धरा है।"

अध्य. 3
1 याकू 2:26
2 लूक 21:34
इफ 5:15
1थि 5:6
3 2कुर 7:11
4 प्रक 16:15
5 मत 24:42
लूक 12:37, 39
6 याकू 1:27
7 प्रक 6:11
8 1यूह 5:4
9 प्रक 4:4
प्रक 19:8
10 फिल 4:3
11 लूक 12:8
12 यूह 6:69
इब्र 7:26
13 प्रक 3:14
प्रक 19:11
14 यश 22:22
लूक 1:32
15 1कुर 16:9
2कुर 2:12

दूसरा कॉल.
1 रोम 2:28
प्रक 2:9
2 लूक 8:15
लूक 21:19
2ती 2:12
इब्र 10:36
इब्र 12:3
3 2थि 3:3
4 प्रक 2:16
5 याकू 1:12
प्रक 2:10
6 इब्र 12:22
प्रक 21:2
7 प्रक 22:3, 4
8 प्रक 14:1
प्रक 19:12
9 कुल 4:16
10 2कुर 1:20
11 यूह 1:14
प्रक 19:11
12 यूह 18:37
1ती 6:13
प्रक 1:5
13 नीत 8:22
कुल 1:15
14 नीत 25:13
15 2कुर 9:2

है, “मैं अमीर हूँ[1] और मैंने बहुत दौलत
हासिल की है और मुझे किसी चीज़
की ज़रूरत नहीं,” मगर तू नहीं जानता
कि तू कितना लाचार, बेहाल, गरीब,
अंधा और नंगा है। **18** इसलिए मैं तुझे
सलाह देता हूँ कि तू मुझसे वह सोना
खरीद ले जिसे आग में तपाकर शुद्ध
किया गया है ताकि तू अमीर बने। और
तू पहनने के लिए मुझसे सफेद पोशाक
भी खरीद ले ताकि लोग तेरा नंगापन न
देखें[2] और तू शर्मिंदा न हो और अपनी
आँखों में लगाने के लिए सुरमा भी खरीद
ले[3] ताकि तू देख सके।[4]

19 मैं जिनसे लगाव रखता हूँ उन
सबको फटकारता और सुधारता हूँ।[5]
इसलिए जोशीला बन और पश्चा-
ताप कर।[6] **20** देख! मैं दरवाज़े पर
खड़ा खटखटा रहा हूँ। अगर कोई मेरी
आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोलता है, तो
मैं उसके घर के अंदर जाऊँगा और उसके
साथ शाम का खाना खाऊँगा और वह
मेरे साथ खाएगा। **21** जो जीत हासिल
करता है[7] उसे मैं अपने साथ अपनी
राजगद्दी पर बैठने की इजाज़त दूँगा,[8]
ठीक जैसे मेरे जीत हासिल करने पर
मैं अपने पिता के साथ उसकी राज-
गद्दी पर बैठा था।[9] **22** कान लगाकर
सुनो कि पवित्र शक्ति मंडलियों से क्या
कहती है।’”

4 इसके बाद देखो मैंने क्या देखा, स्वर्ग
में एक खुला दरवाज़ा है और जो
आवाज़ मैंने पहले सुनी थी वह एक तुरही
जैसी आवाज़ थी और उस आवाज़ ने
मुझसे कहा, “यहाँ ऊपर आ जा, मैं तुझे
वे बातें दिखाऊँगा जिनका होना तय है।”
2 इसके बाद पवित्र शक्ति फौरन मुझ
पर उतरी और मैंने स्वर्ग में एक राज-
गद्दी देखी और उस पर कोई बैठा हुआ
था।[1] **3** और जो बैठा था उसका रूप
यशब और माणिक्य* जैसा था[2] और
उसकी राजगद्दी के चारों तरफ एक मेघ-
धनुष था जो दिखने में पन्ने जैसा था।[3]

4 उस राजगद्दी के चारों तरफ 24
राजगद्दियाँ थीं और उन राजगद्दियों पर
मैंने 24 प्राचीन बैठे देखे,[4] जो सफेद
पोशाक पहने हुए थे और उनके सिर
पर सोने के ताज थे। **5** उस राजगद्दी
से बिजलियाँ कौंध रही थीं[5] और गड़-
गड़ाहट और गरजन की आवाज़ निकल
रही थी।[6] और राजगद्दी के सामने
आग के सात बड़े दीए थे जिनसे लपटें
उठ रही थीं। इनका मतलब परमेश्वर
की सात पवित्र शक्तियाँ हैं।[7] **6** और
राजगद्दी के सामने काँच जैसा समुंदर
था[8] जो बिल्लौर जैसा आर-पार दिखने-
वाला था।

राजगद्दी के बीच* और उसके चारों
तरफ चार जीवित प्राणी थे[9] जिनके
आगे-पीछे आँखें-ही-आँखें थीं। **7** पहला
जीवित प्राणी दिखने में शेर जैसा था,[10]
दूसरा जीवित प्राणी बैल जैसा था,[11] तीसरे
जीवित प्राणी[12] का चेहरा इंसान के चेहरे
जैसा था और चौथा जीवित प्राणी[13] एक
उड़ते उकाब जैसा था।[14] **8** इन चार
जीवित प्राणियों में से हरेक के छः-छः पंख
थे। इनके चारों तरफ और अंदर की तरफ
आँखें-ही-आँखें थीं।[15] और वे बिना रुके
रात-दिन कहते हैं, “सर्वशक्तिमान पर-
मेश्वर यहोवा* पवित्र, पवित्र, पवित्र है![16]
वह परमेश्वर, जो था, जो है और जो आ
रहा है।”[17]

9 जब-जब ये जीवित प्राणी राज-
गद्दी पर बैठे परमेश्वर की, जो सदा

अध्य. 3

1 हो 12:8
2 प्रक 16:15
3 भज 19:8
4 1ती 6:17-19
5 नीत 3:12
6 प्रक 2:5; प्रक 3:3
7 1यूह 5:4; प्रक 12:11
8 मत 19:28; लूक 22:28-30; प्रक 2:26
9 इब्र 10:12

दूसरा कॉल.

अध्य. 4

1 1रा 22:19; यश 6:1; यहे 1:26, 27; दान 7:9; प्रेष 7:55
2 प्रक 21:10, 11
3 1यूह 1:5
4 प्रक 4:10; प्रक 5:8; प्रक 11:16; प्रक 19:4
5 यहे 1:13
6 निर्ग 19:16
7 प्रक 1:4; प्रक 5:6
8 निर्ग 30:18; 1रा 7:23
9 यहे 1:5-10
10 नीत 28:1; यश 31:4
11 अय 39:9-11; प्रक 6:3
12 प्रक 6:5
13 प्रक 6:7
14 अय 39:27, 29; यहे 1:10
15 यहे 10:9, 12
16 यश 6:2, 3
17 प्रक 1:4

4:3 *या “लाल रंग का एक कीमती रत्न।” **4:6** *या “राजगद्दी के साथ बीच में।” **4:8** *अति. क5 देखें।

तक जीवित रहता है,[1] महिमा करते हैं
और उसे आदर और धन्यवाद देते हैं,
10 तब-तब ये 24 प्राचीन[2] राजगद्दी पर
बैठे परमेश्वर के सामने गिरकर उसकी
उपासना करते हैं जो सदा तक जीवित
रहता है और अपने ताज निकालकर
उसकी राजगद्दी के सामने रखते हैं और
कहते हैं, 11 “हे यहोवा,* हमारे पर-
मेश्वर, तू महिमा,[3] आदर[4] और शक्ति[5]
पाने के योग्य है क्योंकि तू ही ने सारी
चीज़ें रची हैं[6] और तेरी ही मरज़ी से ये
वजूद में आयीं और रची गयीं।”

5 और मैंने देखा कि राजगद्दी पर
बैठे[7] परमेश्वर के दाएँ हाथ में एक
खर्रा है जिस पर दोनों तरफ* लिखा
हुआ है और उसे सात मुहरों से मुहर-
बंद किया गया है। 2 मैंने देखा कि एक
ताकतवर स्वर्गदूत ज़ोरदार आवाज़ में
ऐलान कर रहा था: “कौन इन मुहरों को
तोड़ने और इस खर्रे को खोलने के योग्य
है?” 3 लेकिन न तो स्वर्ग में, न धरती
पर, न ही धरती के नीचे कोई ऐसा था
जो उस खर्रे को खोलने या उसे पढ़ने
के योग्य हो। 4 और मैं फूट-फूटकर
रोने लगा क्योंकि ऐसा कोई भी न मिला
जो उसे खोलने या पढ़ने के योग्य हो।
5 तब प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा,
“मत रो। यहूदा गोत्र के इस शेर को
देख[8] जो दाविद[9] की जड़ है।[10] इसने
जीत हासिल की है[11] ताकि इस खर्रे और
इसकी सात मुहरों को खोले।”

6 और मैंने उस राजगद्दी के पास*
और उन चार जीवित प्राणियों के
बीच और उन प्राचीनों के बीच[12] एक
मेम्ना देखा[13] जिसे मानो बलि किया
गया था।[14] उसके सात सींग और सात
आँखें थीं। इन आँखों का मतलब पर-
मेश्वर की सात पवित्र शक्तियाँ हैं[1] जिन्हें
सारी धरती पर भेजा गया है। 7 वह
मेम्ना फौरन आगे बढ़ा और उसने राज-
गद्दी पर बैठे[2] परमेश्वर के दाएँ हाथ
से वह मुहरबंद खर्रा ले लिया। 8 और
जब उसने वह खर्रा लिया तो उन चार
जीवित प्राणियों और 24 प्राचीनों ने
मेम्ने के सामने गिरकर प्रणाम किया।[3]
हर प्राचीन के पास एक सुरमंडल और
सोने का एक कटोरा था जिसमें धूप भरा
हुआ था। (इस धूप का मतलब है, पवित्र
जनों की प्रार्थनाएँ।)[4] 9 और वे एक
नया गीत गाते हुए कहते हैं,[5] “तू ही
इस खर्रे को लेने और इसकी मुहरें खोलने
के योग्य है, क्योंकि तुझे बलि किया
गया और तूने अपने खून से हर गोत्र,
भाषा* और जाति और राष्ट्र से[6] पर-
मेश्वर के लिए लोगों को खरीद लिया[7]
10 और तूने उन्हें हमारे परमेश्वर के
लिए राजा और याजक बनाया[8] और वे
राजाओं की हैसियत से धरती पर राज
करेंगे।”[9]

11 और मैंने उस राजगद्दी और
उन जीवित प्राणियों और उन प्राचीनों
के चारों तरफ अनगिनत स्वर्गदूत देखे
और उनकी आवाज़ सुनी। उनकी गिनती
लाखों-करोड़ों में थी।[10] 12 और वे
ज़ोरदार आवाज़ में कह रहे थे, “यह
मेम्ना जो बलि किया गया था,[11] शक्ति,
दौलत, बुद्धि, ताकत, आदर, महिमा
और आशीष पाने के योग्य है।”[12]

13 और मैंने स्वर्ग में, धरती पर,
धरती के नीचे[13] और समुंदर के ऊपर
और इनमें मौजूद हर प्राणी को और
इनमें जो कुछ था, उन सबको यह
कहते सुना, “परमेश्वर जो राजगद्दी पर

4:11 *अति. क5 देखें। **5:1** *शा., “अंदर और पीछे की तरफ।” **5:6** *या “बीच।”

5:9 *या “ज़बान।”

अध्य. 4
1 भज 90:2; दान 12:7
2 प्रक 5:8
3 मत 5:16; प्रक 14:7
4 प्रक 19:10
5 प्रक 5:13; प्रक 7:12; प्रक 11:17; प्रक 12:10
6 प्रक 10:6

अध्य. 5
7 प्रक 4:2, 3
8 उत 49:9, 10; इब्र 7:14
9 2शम 7:8, 12; प्रक 22:16
10 यश 11:1, 10; रोम 15:12
11 यूह 16:33
12 इफ 1:22
13 यश 53:7; यूह 1:29; 1पत 1:19
14 यूह 19:30; प्रक 5:12

दूसरा कॉल.
1 प्रक 1:4
2 भज 47:8; यश 6:1
3 प्रक 5:14; प्रक 19:4
4 भज 141:2; प्रक 8:4
5 भज 33:3; भज 144:9; यश 42:10; प्रक 14:3
6 प्रक 14:4
7 मत 26:27, 28; 1कुर 6:20; इब्र 9:12; 1पत 1:18, 19
8 निर्ग 19:6; लूक 12:32; लूक 22:28-30; 1पत 2:9; प्रक 1:5, 6
9 मत 19:28; प्रक 20:4, 6; प्रक 22:5
10 दान 7:9, 10
11 यश 53:7; प्रक 5:6
12 मत 28:18
13 फिल 2:9, 10

बैठा है उसका[1] और मेम्ने का[2] गुण-
गान हो और आदर,[3] महिमा और शक्ति
हमेशा-हमेशा के लिए उन्हीं की हो।"[4]
14 और वे चार जीवित प्राणी कह रहे
थे, "आमीन!" और उन प्राचीनों ने गिर-
कर परमेश्‍वर की उपासना की।

6 फिर मैंने देखा कि उस मेम्ने[5] ने
सात मुहरों में से एक मुहर खोली[6]
और मैंने चार जीवित प्राणियों[7] में से एक
को गरजन जैसी आवाज़ में कहते सुना,
"आ!" **2** और देखो मैंने क्या देखा!
एक सफेद घोड़ा[8] और उसके सवार के
पास एक धनुष था। और उसे एक ताज
दिया गया[9] और वह जीत हासिल करता
हुआ अपनी जीत पूरी करने निकल
पड़ा।[10]

3 जब उसने दूसरी मुहर खोली, तो
मैंने दूसरे जीवित प्राणी[11] को यह कहते
सुना, "आ!" **4** फिर एक और घोड़ा
आया जो आग जैसे लाल रंग का था।
उसके सवार को यह अधिकार दिया गया
कि पृथ्वी पर से शांति उठा ले ताकि लोग
एक-दूसरे का बेरहमी से कत्ल करें। उसे
एक बड़ी तलवार दी गयी।[12]

5 जब उसने तीसरी मुहर खोली,[13]
तो मैंने तीसरे जीवित प्राणी[14] को यह
कहते सुना, "आ!" और देखो मैंने क्या
देखा! एक काला घोड़ा और उसके सवार
के हाथ में एक तराज़ू था। **6** और उन
चार जीवित प्राणियों के बीच से मुझे कुछ
ऐसा सुनायी पड़ा जो आवाज़ जैसा लग
रहा था, "एक किलो* गेहूँ एक दीनार#
में[15] और तीन किलो* जौ एक दीनार
में। और जैतून के तेल और दाख-मदिरा
को बरबाद मत करना।"[16]

7 जब उसने चौथी मुहर खोली, तो
मैंने चौथे जीवित प्राणी[1] को यह कहते
सुना, "आ!" **8** और देखो मैंने क्या
देखा! एक हलके पीले रंग का घोड़ा और
उसके सवार का नाम था मौत। और
कब्र* उसके बिलकुल पीछे-पीछे चली
आ रही थी। और उन्हें पृथ्वी के एक-
चौथाई हिस्से पर अधिकार दिया गया
कि वे लंबी तलवार से और अकाल से[2]
और जानलेवा महामारी से और पृथ्वी के
जंगली जानवरों से लोगों को मार डालें।[3]

9 जब उसने पाँचवीं मुहर खोली,
तो मैंने वेदी के नीचे[4] उन लोगों का
खून*[5] देखा जिन्हें परमेश्‍वर के वचन
पर चलने और गवाही देने की वजह
से मार डाला गया था।[6] **10** और
उन्होंने बड़ी ज़ोरदार आवाज़ में कहा,
"हे सारे जहान के मालिक, तू जो पवित्र
और सच्चा है,[7] तू कब तक देखता रहेगा
और न्याय नहीं करेगा और धरती पर
रहनेवालों से हमारे खून का बदला नहीं
लेगा?"[8] **11** और उनमें से हरेक को
एक सफेद चोगा दिया गया।[9] और उन्हें
थोड़ी देर और इंतज़ार करने के लिए
कहा गया, जब तक कि उनके संगी दासों
और उनके भाइयों की गिनती पूरी न हो
जाए जिन्हें बहुत जल्द उन्हीं की तरह
मार डाला जाता।[10]

12 और मैंने देखा कि जब उसने छठी
मुहर खोली तो एक बड़ा भूकंप हुआ
और सूरज काले टाट* की तरह काला
पड़ गया और पूरा चाँद खून की तरह
लाल हो गया।[11] **13** और आकाश के
तारे धरती पर ऐसे गिर पड़े जैसे
तेज़ हवा चलने पर अंजीर के पेड़

अध्य. 5
1 प्रक 4:2, 3
2 यूह 1:29; प्रक 7:17
3 यूह 5:23; 1ती 6:16
4 1पत 4:11

अध्य. 6
5 प्रक 5:6
6 प्रक 5:5
7 प्रक 4:7
8 प्रक 19:11
9 प्रक 14:14
10 भज 45:4; भज 110:1, 2; प्रक 12:7; प्रक 17:14
11 प्रक 4:7
12 मत 24:7; लूक 21:10
13 प्रक 5:5
14 प्रक 4:7
15 मत 20:2
16 मर 13:8

दूसरा कॉल.
1 प्रक 4:7
2 लूक 21:11
3 यिर्म 15:2, 3; यहे 14:21
4 लैव 4:7; प्रक 8:3
5 लैव 17:11
6 मत 24:9, 14; यूह 18:37; प्रक 17:6; प्रक 20:4
7 1यूह 5:20
8 व्य 32:43; लूक 18:7; प्रक 19:1, 2
9 प्रक 3:5
10 मत 24:9; प्रेष 9:1; 2कुर 1:8
11 योए 2:31; मत 24:29

6:6 *शा., "खोइनिक्स।" #चाँदी का रोमी सिक्का जो एक दिन की मज़दूरी के बराबर था। अति. ख14 देखें।

6:8 *या "हेडीज़।" शब्दावली देखें। **6:9** *शब्दावली में "जीवन" देखें। **6:12** *शायद बकरी के बालों से बना टाट।

से कच्चे अंजीर टूटकर गिर पड़ते हैं।
14 और आकाश ऐसे गायब हो गया
जैसे किसी खर्रे को लपेट दिया गया
हो[1] और हर पहाड़ और हर द्वीप को
अपनी-अपनी जगह से हटा दिया गया।[2]
15 तब पृथ्वी के राजा, बड़े-बड़े अधि-
कारी, सेनापति, दौलतमंद और ताकत-
वर लोग, हर दास और आज़ाद इंसान,
सभी जाकर गुफाओं और पहाड़ी चट्टानों
में छिप गए।[3] 16 और वे उन पहाड़ों
और चट्टानों से कहते रहे, “हम पर गिर
पड़ो और हमें छिपा लो[4] और हमें राज-
गद्दी पर बैठे[5] परमेश्‍वर और मेम्‍ने[6] के
क्रोध से बचा लो। 17 क्योंकि उनके
क्रोध का भयानक दिन आ गया है[7] और
कौन उनके सामने खड़ा हो सकता है?”[8]

7 इसके बाद मैंने देखा कि पृथ्वी के
चार कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े हैं
और वे पृथ्वी की चारों हवाओं को मज़-
बूती से थामे हुए हैं ताकि पृथ्वी या समुं-
दर या किसी भी पेड़ पर हवा न चले।
2 और मैंने एक और स्वर्गदूत को पूरब
से ऊपर आते देखा, जो जीवित पर-
मेश्‍वर की मुहर लिए हुए था। और उसने
उन चारों स्वर्गदूतों को जिन्हें पृथ्वी और
समुंदर को नुकसान पहुँचाने का अधि-
कार दिया गया था, बड़ी ज़ोरदार आवाज़
में पुकारकर कहा, 3 “जब तक हम
अपने परमेश्‍वर के दासों के माथे पर
मुहर न लगा दें,[9] तब तक पृथ्वी या
समुंदर या पेड़ों को नुकसान मत पहुँ-
चाना।”[10]

4 और मैंने उनकी गिनती सुनी जिन
पर मुहर लगायी गयी थी। वे 1,44,-
000 थे[11] और उन्हें इसराएल के बेटों
के हर गोत्र में से लिया गया था:[12]

5 यहूदा गोत्र में से 12,000 पर
मुहर लगायी गयी,
रूबेन गोत्र में से 12,000 पर,
गाद गोत्र में से 12,000 पर,
6 आशेर गोत्र में से 12,000 पर,
नप्ताली गोत्र में से 12,000 पर,
मनश्‍शे[1] गोत्र में से 12,000 पर,
7 शिमोन गोत्र में से 12,000 पर,
लेवी गोत्र में से 12,000 पर,
इस्साकार गोत्र में से 12,000 पर,
8 जबूलून गोत्र में से 12,000 पर,
यूसुफ गोत्र में से 12,000 पर,
बिन्यामीन गोत्र में से 12,000 पर
मुहर लगायी गयी।

9 इसके बाद देखो मैंने क्या देखा!
सब राष्ट्रों और गोत्रों और जातियों और
भाषाओं* में से निकली एक बड़ी भीड़,
जिसे कोई आदमी गिन नहीं सकता,[2]
राजगद्दी के सामने और उस मेम्‍ने के
सामने सफेद चोगे पहने[3] और हाथों
में खजूर की डालियाँ लिए खड़ी है।[4]
10 और यह भीड़ ज़ोरदार आवाज़
में बार-बार पुकारकर कहती है, “हम
अपने उद्धार के लिए अपने परमेश्‍वर
का जो राजगद्दी पर बैठा है[5] और मेम्‍ने[6]
का एहसान मानते हैं।”

11 सारे स्वर्गदूत जो उस राजगद्दी
और प्राचीनों[7] और चार जीवित प्राणियों
के चारों तरफ खड़े थे, राजगद्दी के
सामने मुँह के बल गिरकर परमेश्‍वर
की उपासना करने लगे 12 और कहने
लगे, “आमीन! हमारे परमेश्‍वर की सदा
तारीफ, धन्यवाद और महिमा होती रहे
और बुद्धि, आदर, शक्‍ति और ताकत
सदा उसी के हों।[8] आमीन।”

13 यह देखकर एक प्राचीन ने मुझसे
कहा, “ये जो सफेद चोगे पहने हुए हैं,[9]
ये कौन हैं और कहाँ से आए हैं?”

7:9 * या “ज़बान।”

अध्य. 6
1 यश 34:4
2 प्रक 16:20
3 यश 2:10, 19
4 हो 10:8
लूक 23:30
5 प्रक 4:2, 3
6 प्रक 5:6
7 सप 1:14, 18
रोम 2:5
8 योए 2:11

अध्य. 7
9 2कुर 1:22
इफ 1:13
इफ 4:30
10 प्रक 9:4
11 प्रक 14:1, 3
12 रोम 2:29
रोम 9:6
गल 6:16
प्रक 21:12

दूसरा कॉल.
1 उत 41:51
2 यश 2:2
प्रक 15:4
3 प्रक 7:14
4 लैव 23:40
यूह 12:13
5 प्रक 4:2, 3
6 प्रेष 4:12
प्रक 5:6
7 प्रक 4:4
प्रक 11:16
8 प्रक 4:11
9 प्रक 7:9

14 तब मैंने फौरन उससे कहा, “मेरे
प्रभु, तू ही जानता है कि ये कौन हैं।”
और उसने मुझसे कहा, “ये वे हैं जो
उस महा-संकट से निकलकर आए हैं[1]
और इन्होंने अपने चोगे मेम्ने के खून
में धोकर सफेद किए हैं।[2] 15 इसी
वजह से ये परमेश्वर की राजगद्दी के
सामने हैं और ये दिन-रात उसके मंदिर में
उसकी पवित्र सेवा करते हैं। और राज-
गद्दी पर बैठा[3] परमेश्वर इन पर अपना
तंबू तानेगा।[4] 16 ये फिर कभी भूखे-
प्यासे न रहेंगे और न इन पर सूरज की
तपती धूप पड़ेगी, न झुलसाती गरमी,[5]
17 क्योंकि वह मेम्ना[6] जो राजगद्दी के
पास* है, इन्हें चरवाहे की तरह[7] जीवन
के पानी के सोतों तक ले जाएगा।[8] और
परमेश्वर इनकी आँखों से हर आँसू पोंछ
डालेगा।”[9]

8 जब मेम्ने ने[10] सातवीं मुहर खोली[11]
तो स्वर्ग में खामोशी छा गयी जो
करीब आधे घंटे तक रही। 2 और मैंने
उन सात स्वर्गदूतों को देखा[12] जो पर-
मेश्वर के सामने खड़े रहते हैं और उन्हें
सात तुरहियाँ दी गयीं।

3 फिर एक और स्वर्गदूत आया और
वेदी के पास खड़ा हो गया।[13] उसके
हाथ में सोने का एक धूपदान था। उसे
ढेर सारा धूप दिया गया[14] ताकि वह
उसे राजगद्दी के सामने, सोने की वेदी[15]
पर उस वक्त चढ़ाए जब सभी पवित्र
जन प्रार्थनाएँ कर रहे होंगे। 4 और
पवित्र जनों की प्रार्थनाओं के साथ स्वर्ग-
दूत के हाथ से धूप का धुआँ उठकर
परमेश्वर के सामने पहुँचा।[16] 5 तब
उसी वक्त स्वर्गदूत ने धूपदान लिया और
उसमें वेदी की आग भरी और उसे पृथ्वी
पर फेंक दिया। तब तेज़ गरजन और
आवाज़ें आयीं, बिजलियाँ कड़कीं[1] और
एक भूकंप हुआ। 6 और जिन सात
स्वर्गदूतों के पास सात तुरहियाँ थीं,[2] वे
इन्हें फूँकने के लिए तैयार हो गए।

7 पहले ने अपनी तुरही फूँकी। तब
खून मिले हुए ओले और खून मिली
हुई आग पैदा हुई और उन्हें धरती पर
बरसाया गया।[3] इससे धरती का एक-
तिहाई हिस्सा और एक-तिहाई पेड़ जल
गए और सारी हरियाली भी झुलस
गयी।[4]

8 फिर दूसरे स्वर्गदूत ने अपनी तुरही
फूँकी। और आग से जलता हुआ एक
बड़े पहाड़ जैसा कुछ समुंदर में फेंका
गया।[5] और समुंदर का एक-तिहाई
हिस्सा खून में बदल गया।[6] 9 और
समुंदर के एक-तिहाई जीव-जंतु मर गए[7]
और एक-तिहाई जहाज़ तहस-नहस
हो गए।

10 फिर तीसरे स्वर्गदूत ने अपनी
तुरही फूँकी। तब मशाल की तरह जलता
हुआ एक बड़ा तारा आकाश से गिरा
और एक-तिहाई नदियों और पानी के
सोतों पर जा गिरा।[8] 11 उस तारे का
नाम नागदौना है। और पानी का एक-
तिहाई हिस्सा नागदौने जैसा कड़वा हो
गया और उस पानी के कड़वे हो जाने
से बहुत-से लोग मारे गए।[9]

12 फिर चौथे स्वर्गदूत ने अपनी
तुरही फूँकी। और सूरज के एक-तिहाई
और चाँद के एक-तिहाई हिस्से पर और
एक-तिहाई तारों पर मार पड़ी[10] ताकि
उनके एक-तिहाई हिस्से पर अँधेरा छा
जाए[11] और दिन के एक-तिहाई हिस्से
में उजाला न हो और रात का भी यही
हाल हो।

13 और मैंने देखा कि एक उकाब
बीच आकाश में उड़ता हुआ ज़ोरदार

7:17 *या “के बीच में।”

अध्य. 7
1 मत 24:21, मर 13:19
2 यूह 1:29, इब्र 9:14, 1यूह 1:7, प्रक 1:5
3 प्रक 4:2
4 भज 15:1, प्रक 21:3
5 भज 121:6, यश 49:10
6 प्रक 5:6
7 यूह 10:11
8 प्रक 22:1
9 यश 25:8, प्रक 21:4

अध्य. 8
10 प्रक 6:1
11 प्रक 5:1
12 प्रक 15:1
13 निर्ग 30:1, 3
14 प्रक 5:8
15 प्रक 9:13
16 भज 141:2, लूक 1:10

दूसरा कॉल.
1 निर्ग 19:16, प्रक 4:5
2 प्रक 8:7, 8, प्रक 8:10, 12, प्रक 9:1, 13, प्रक 11:15
3 प्रक 16:2
4 निर्ग 9:23-25, भज 97:3, 5
5 यश 17:12, 13, यश 57:20
6 निर्ग 7:20
7 प्रक 16:1, 3
8 प्रक 16:1, 4
9 आम 5:7
10 प्रक 16:1, 8
11 निर्ग 10:22

आवाज़ में कह रहा था, “धरती के लोगों
पर बड़ी मुसीबत आएगी*[1] क्योंकि तीन
और स्वर्गदूतों का तुरहियाँ फूँकना अभी
बाकी है और वे अपनी तुरहियाँ फूँकने
ही वाले हैं!”[2]

9 पाँचवें स्वर्गदूत ने अपनी तुरही
फूँकी।[3] और मैंने एक तारा देखा
जो आकाश से धरती पर गिरा था और
उसे अथाह-कुंड के गड्ढे* की चाबी
दी गयी।[4] 2 और उसने अथाह-कुंड
के गड्ढे को खोला और उसमें से ऐसा
धुआँ निकला जैसे किसी बड़े भट्ठे से
निकलता है और उसके धुएँ से सूरज
पर और हवा में अंधकार छा गया।[5]
3 और उस धुएँ में से टिड्डियाँ निकल-
कर धरती पर आयीं[6] और उन्हें वैसी
ही शक्ति दी गयी जैसी शक्ति पृथ्वी
के बिच्छुओं में होती है। 4 उनसे कहा
गया कि वे न तो पृथ्वी की हरियाली को,
न ही किसी पेड़-पौधे को नुकसान पहुँ-
चाएँ बल्कि सिर्फ उन लोगों को नुकसान
पहुँचाएँ जिनके माथे पर परमेश्वर की
मुहर नहीं है।[7]

5 और टिड्डियों को यह अधिकार
दिया गया कि वे लोगों को पाँच महीने
तक दर्द से तड़पाती रहें मगर उन्हें
जान से न मारें। और लोगों को ऐसा
दर्द हो रहा था जैसे बिच्छू के डंक
मारने से होता है।[8] 6 और उन दिनों
में लोग मरना चाहेंगे मगर उन्हें मौत नहीं
आएगी। वे मौत के लिए तरसेंगे मगर
मौत उनसे दूर भागेगी।

7 और वे टिड्डियाँ, लड़ाई के लिए
तैयार किए गए घोड़ों जैसी दिख रही
थीं।[9] उनके सिर पर सोने के ताज
जैसा कुछ था और उनके चेहरे इंसानों

8:13 *या “पर हाय, हाय, हाय!” 9:1 *या
“सुरंग।”

अध्य. 8
1 प्रक 9:12
प्रक 11:14
2 प्रक 8:2

अध्य. 9
3 प्रक 8:2
4 लूक 8:30, 31
प्रक 9:11
प्रक 20:1-3
5 योए 2:2, 10
6 निर्ग 10:12
7 प्रक 7:2, 3
8 प्रक 9:10
9 योए 2:4, 5

दूसरा कॉल.
1 योए 1:6
2 योए 2:4, 5
3 प्रक 9:5
4 प्रक 9:1
प्रक 20:1-3
5 प्रक 8:13
6 प्रक 8:6
7 प्रक 11:15
8 प्रक 8:3
9 प्रक 16:1, 12
प्रक 17:1, 15
10 नीत 28:1

के चेहरे जैसे थे, 8 मगर उनके बाल
औरतों के बालों जैसे लंबे थे। और उनके
दाँत शेरों के दाँतों जैसे थे,[1] 9 उनके
कवच लोहे के कवच जैसे थे। और उनके
पंखों की आवाज़ ऐसी थी जैसे रथ और
घोड़े युद्ध के लिए दौड़े चले जा रहे हों।[2]
10 और उनकी पूँछ पर बिच्छुओं जैसे
डंक थे और उनकी पूँछ में लोगों को
पाँच महीने तक तड़पाने की शक्ति थी।[3]
11 अथाह-कुंड का स्वर्गदूत उनका राजा
था।[4] इब्रानी में उसका नाम अबद्दोन*
है मगर यूनानी में उसका नाम अपुल्ल-
योन# है।

12 पहला कहर बीत चुका। देख!
इसके बाद दो और कहर टूटनेवाले हैं।[5]

13 छठे स्वर्गदूत ने[6] अपनी तुरही
फूँकी।[7] और जो सोने की वेदी[8] पर-
मेश्वर के सामने थी, उसके सींगों से मैंने
एक आवाज़ सुनी। 14 वह आवाज़
उस छठे स्वर्गदूत से जिसके पास तुरही
थी, कह रही थी, “उन चार स्वर्गदूतों
के बंधन खोल दे जो महानदी फरात
के पास बँधे हुए हैं।”[9] 15 और उन
चार स्वर्गदूतों को जिन्हें इसी घड़ी, दिन,
महीने और साल के लिए तैयार किया
गया है, खोल दिया गया ताकि वे एक-
तिहाई इंसानों को मार डालें।

16 सेना के घुड़सवारों की गिनती
20 करोड़ थी। मैंने उनकी गिनती सुनी।
17 और मुझे दर्शन में घोड़े और उनके
सवार इस रूप में दिखायी दिए: उनके
कवच धधकती आग जैसे लाल और
गहरे नीले और गंधक जैसे पीले थे।
घोड़ों के सिर शेरों के सिर जैसे थे[10] और
उनके मुँह से आग, धुआँ और गंधक
निकल रही थी। 18 इन तीनों कहर

9:11 *मतलब “विनाश।” #मतलब “नाश
करनेवाला।”

से यानी उनके मुँह से निकली आग, धुएँ
और गंधक से एक-तिहाई लोग मार डाले
गए। 19 इसलिए कि घोड़ों की शक्ति
उनके मुँह और उनकी पूँछ में है। उनकी
पूँछ साँपों जैसी हैं जिनमें सिर हैं और
इनसे वे नुकसान पहुँचाते हैं।

20 मगर बाकी लोग जो इन तीनों
कहर से नहीं मारे गए थे, उन्होंने अपने
कामों से पश्चाताप नहीं किया और दुष्ट
स्वर्गदूतों और सोने-चाँदी, ताँबे, पत्थर
और लकड़ी की मूरतों को पूजना नहीं
छोड़ा जो न तो देख सकती हैं, न सुन
सकती हैं और न चल सकती हैं।[1]
21 और उन्होंने जो खून, जादू-टोना
और चोरियाँ की थीं और नाजायज़ यौन-
संबंध* रखे थे, उनसे पश्चाताप नहीं
किया।

10 फिर मैंने एक और ताकतवर
स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए
स्वर्ग से उतरते देखा। उसके सिर पर
मेघ-धनुष था और उसका चेहरा सूरज
जैसा था[2] और उसकी टाँगें आग के
खंभों जैसी थीं। 2 उसके हाथ में एक
खुला हुआ छोटा खर्रा था। और उसने
अपना दायाँ पैर समुंदर पर मगर अपना
बायाँ पैर धरती पर रखा 3 और
उसने शेर की दहाड़ जैसी ज़ोरदार
आवाज़ में पुकारा।[3] और जब वह
चिल्लाया तो सात गरजनों की आवाज़ें
सुनायी दीं।[4]

4 जब सातों गरजन बोल चुके तो
मैं लिखने जा रहा था। मगर मैंने स्वर्ग
से एक आवाज़ सुनी[5] जो कह रही थी,
"सात गरजनों ने जो बातें कहीं उन्हें
मुहरबंद कर दे और उन्हें मत लिख।"
5 मैंने जिस स्वर्गदूत को समुंदर और
धरती पर खड़े देखा, उसने अपना दायाँ
हाथ स्वर्ग की तरफ उठाया 6 और
उस परमेश्वर की शपथ खायी जो सदा
तक जीवित रहता है,[1] जिसने आकाश
और उसकी सब चीज़ें और पृथ्वी और
उसकी सब चीज़ें और समुंदर और उसकी
सब चीज़ें रची हैं[2] और कहा, "अब
और देर नहीं होगी। 7 मगर जिन
दिनों सातवाँ स्वर्गदूत[3] अपनी तुरही
फूँकने के लिए तैयार होगा,[4] तब पर-
मेश्वर का पवित्र रहस्य[5] वाकई अपने
अंजाम तक पहुँचाया जाएगा, हाँ वही
रहस्य जो परमेश्वर ने अपने दासों यानी
भविष्यवक्ताओं को एक खुशखबरी के
तौर पर सुनाया था।"[6]

8 एक बार फिर मैंने स्वर्ग से वह
आवाज़ सुनी[7] जो मुझसे कह रही थी,
"जा और उस स्वर्गदूत के हाथ से जो
समुंदर और धरती पर खड़ा है, खुला
हुआ खर्रा ले ले।"[8] 9 तब मैं उस
स्वर्गदूत के पास गया और मैंने उससे वह
छोटा खर्रा माँगा। उसने मुझसे कहा, "ले
और इसे खा ले।[9] यह तेरा पेट कड़वा
कर देगा, मगर मुँह में यह तुझे शहद
की तरह मीठा लगेगा।" 10 और मैंने
स्वर्गदूत के हाथ से वह छोटा खर्रा
लिया और उसे खा लिया।[10] मुझे मुँह
में तो वह शहद की तरह मीठा लगा।[11]
मगर जब मैं उसे खा चुका तो मेरा
पेट कड़वा हो गया। 11 और मुझसे
कहा गया, "तुझे जातियों, राष्ट्रों, अलग-
अलग भाषा* के लोगों और बहुत-से
राजाओं के बारे में फिर से भविष्यवाणी
करनी होगी।"

11 और मुझे छड़* जैसा नरकट
दिया गया[12] और मुझसे कहा
गया, "उठ और परमेश्वर के मंदिर

अध्य. 9
1 भज 115:4-7

अध्य. 10
2 मत 17:1, 2
3 प्रक 5:5
4 निर्ग 19:16
प्रक 4:5
प्रक 11:19
5 प्रक 10:8

दूसरा कॉल.
1 भज 90:2
प्रक 4:9
2 निर्ग 20:11
नहे 9:6
भज 146:6
3 प्रक 8:6
4 प्रक 11:15
5 मर 4:11
6 आम 3:7
7 प्रक 10:4
8 प्रक 10:1, 2
9 यहे 2:8
10 यिर्म 15:16
11 भज 119:103
यहे 3:1-3

अध्य. 11
12 यहे 40:3

9:21 *यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें।

10:11 *या "ज़बान।" 11:1 *या "माप-छड़।"

के पवित्र-स्थान और उसकी वेदी और
मंदिर में उपासना करनेवालों को नाप।
2 मगर मंदिर के पवित्र-स्थान के बाहर
जो आँगन है उसे छोड़ दे, मत नाप
क्योंकि यह आँगन दूसरे राष्ट्रों को दिया
गया है और वे 42 महीने तक पवित्र
नगरी[1] को अपने पैरों तले रौंदेंगे।[2]
3 मैं अपने दो गवाहों को भेजूँगा ताकि वे
टाट ओढ़कर 1,260 दिन तक भविष्य-
वाणी करें।" 4 जैतून के दो पेड़ और
दो दीवटें उन दो गवाहों की निशानियाँ
हैं[3] और वे पूरी धरती के मालिक के
सामने खड़े हैं।[4]

5 अगर कोई उन गवाहों को नुक-
सान पहुँचाना चाहे, तो उनके मुँह से
आग निकलती है और उनके दुश्मनों
को भस्म कर देती है। जो कोई उन्हें
नुकसान पहुँचाना चाहेगा वह इसी तरह
मार डाला जाएगा। 6 उनके पास यह
अधिकार है कि आकाश* को बंद कर
दें[5] ताकि उनके भविष्यवाणी करने के
दिनों में बारिश न हो[6] और पानी को खून
में बदल दें[7] और जब चाहें तब धरती
पर हर तरह का कहर बरसाएँ।

7 और जब वे गवाही दे चुके होंगे,
तो वह जंगली जानवर जो अथाह-कुंड से
बाहर निकला था, उनसे लड़ेगा और उन
पर जीत हासिल करेगा और उन्हें मार
डालेगा।[8] 8 और उनकी लाशें उस बड़े
शहर के चौराहे पर पड़ी रहेंगी, जो लाक्ष-
णिक अर्थ में सदोम और मिस्र कहलाता
है, जहाँ उनके प्रभु को भी काठ पर
लटकाकर मार डाला गया था। 9 और
जातियों और गोत्रों और भाषाओं* और
राष्ट्रों के लोग साढ़े तीन दिन तक उनकी
लाशें देखते रहेंगे[9] और उन्हें कब्र में नहीं
रखने देंगे। 10 और धरती के रहने-
वाले उनकी मौत पर बहुत खुश होंगे और
जश्न मनाएँगे और एक-दूसरे को तोहफे
भेजेंगे क्योंकि उन दोनों भविष्यवक्ताओं
ने धरती के रहनेवालों को अपने संदेश
से तड़पाया था।

11 साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर
की तरफ से जीवन-शक्ति उनमें आयी[1]
और वे अपने पैरों पर उठ खड़े हुए और
जिन्होंने उन्हें देखा था उन पर खौफ छा
गया। 12 और उन्हें आकाश से एक
ज़ोरदार आवाज़ सुनायी दी जो उनसे कह
रही थी, "यहाँ ऊपर आओ।" और वे
बादलों में ऊपर आकाश में गए और
उनके दुश्मनों ने उन्हें देखा।* 13 उसी
घड़ी एक बड़ा भूकंप हुआ और उस
नगरी का दसवाँ हिस्सा ढह गया। उस
भूकंप से 7,000 लोग मारे गए और
बाकी लोगों पर डर छा गया और उन्होंने
स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की।

14 दूसरा कहर बीत चुका।[2] देख!
तीसरा कहर बहुत जल्द टूटनेवाला है।

15 सातवें स्वर्गदूत ने अपनी तुरही
फूँकी।[3] और स्वर्ग में ज़ोरदार आवाज़ें
सुनायी दीं जो कह रही थीं, "दुनिया का
राज अब हमारे मालिक[4] और उसके
मसीह का हो गया है[5] और वह हमेशा-
हमेशा तक राजा बनकर राज करेगा।"[6]

16 और 24 प्राचीन[7] जो परमेश्वर
के सामने अपनी राजगद्दियों पर बैठे थे,
मुँह के बल गिर पड़े और उन्होंने यह
कहते हुए परमेश्वर की उपासना की,
17 "सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा,*
तू जो था और जो है,[8] हम तेरा
शुक्रिया अदा करते हैं क्योंकि तूने अपनी
महाशक्ति से राजा के तौर पर राज

11:6 *या "स्वर्ग।" 11:9 *या "ज़बान।"

11:12 *या "दुश्मन देख रहे थे।" 11:17 *अति. क5 देखें।

अध्य. 11
1 प्रक 21:2
2 प्रक 13:5
3 जक 4:3, 11
जक 4:12
मत 5:14
4 जक 4:14
5 लूक 4:25
6 1रा 17:1
याकू 5:17
7 निर्ग 7:19
8 प्रक 12:17
प्रक 13:7
9 प्रक 11:11

दूसरा कॉल.
1 यहे 37:5, 10
2 प्रक 9:12
3 प्रक 8:6
4 1इत 29:11
भज 22:28
दान 4:17, 34
प्रक 12:10
5 भज 2:6
दान 7:13, 14
लूक 1:32, 33
लूक 22:28, 29
2पत 1:11
6 भज 145:13
दान 2:44
7 प्रक 4:10
8 प्रक 1:4
प्रक 16:5

करना शुरू कर दिया है।[1] **18** मगर
राष्ट्रों का गुस्सा भड़क उठा और तेरा
क्रोध उन पर आ पड़ा और तय किया
गया वक्त आ पहुँचा जब मरे हुओं का
न्याय किया जाए और तेरे दासों यानी
भविष्यवक्ताओं को[2] और पवित्र जनों
को और तेरे नाम का डर माननेवाले
छोटे-बड़े सभी लोगों को इनाम दिया
जाए[3] और पृथ्वी को तबाह करने-
वालों को खत्म कर दिया जाए।"*[4]

19 और स्वर्ग में परमेश्वर के मंदिर
का पवित्र-स्थान खोला गया और उसके
करार का संदूक मंदिर के पवित्र-स्थान
में देखा गया।[5] और बिजलियाँ कौंधीं,
ज़ोरदार आवाज़ें आयीं, गरजन और
भूकंप हुआ और बड़े-बड़े ओले पड़े।

12 फिर स्वर्ग में एक बड़ी निशानी
दिखायी दी: एक औरत[6] सूरज
ओढ़े हुए थी और चाँद उसके पैरों तले
था और उसके सिर पर 12 तारों का
ताज था **2** और वह गर्भवती थी। वह
दर्द से चिल्ला रही थी और बच्चा जनने
की पीड़ा से तड़प रही थी।

3 फिर स्वर्ग में एक और निशानी
दिखायी दी और देखो! आग जैसे लाल
रंग का एक बड़ा भयानक अजगर[7]
दिखायी दिया, जिसके सात सिर और
दस सींग थे और जिसके सिरों पर
सात मुकुट थे।* **4** उसने अपनी पूँछ
से आकाश के एक-तिहाई तारों[8] को
घसीटकर धरती पर फेंक दिया।[9] और
अजगर उस औरत के सामने ही खड़ा
रहा[10] जो बच्चा जननेवाली थी ताकि
जब उसका बच्चा हो तो उस बच्चे को
निगल जाए।

5 उस औरत ने एक बेटे यानी
एक लड़के को जन्म दिया,[1] जो चर-
वाहे की तरह सब राष्ट्रों को लोहे के
छड़ से हाँकेगा।[2] उस औरत के बच्चे को
छीनकर* परमेश्वर और उसकी राज-
गद्दी के पास ले जाया गया। **6** वह
औरत वीराने में भाग गयी, जहाँ पर-
मेश्वर ने उसके लिए एक जगह तैयार
की थी ताकि वहाँ 1,260 दिन तक उसे
खिलाया-पिलाया जाए।[3]

7 और स्वर्ग में युद्ध छिड़ गया:
मीकाएल*[4] और उसके स्वर्गदूतों ने
अजगर से लड़ाई की और अजगर
और उसके दुष्ट स्वर्गदूतों ने उनके
साथ लड़ाई की। **8** मगर अजगर और
दुष्ट स्वर्गदूत उनका सामना न कर
सके* और स्वर्ग में उनके लिए फिर
जगह न रही। **9** इसलिए वह बड़ा
भयानक अजगर,[5] वही पुराना साँप,[6]
जो इबलीस[7] और शैतान[8] कहलाता है
और जो सारे जगत* को गुमराह करता
है,[9] वह नीचे धरती पर फेंक दिया
गया[10] और उसके दुष्ट स्वर्गदूत भी
उसके साथ फेंक दिए गए। **10** और
मैंने स्वर्ग से एक ज़ोरदार आवाज़ को
यह कहते सुना:

"हमारे परमेश्वर की तरफ से
उद्धार[11] और उसकी शक्ति और उसका
राज[12] और उसके मसीह का अधि-
कार अब ज़ाहिर हुआ है क्योंकि हमारे
भाइयों पर दोष लगानेवाला नीचे फेंक
दिया गया है, जो दिन-रात हमारे पर-
मेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया

11:18 *या "नाश करनेवालों का नाश कर दिया जाए।" **12:3** *या "शाही पट्टियाँ थीं।"

12:5 *या "पकड़कर।" **12:7** *मतलब "परमेश्वर जैसा कौन है?" **12:8** *या शायद, "मगर वह [यानी अजगर] हार गया।" **12:9** *या "पूरी धरती पर जहाँ-जहाँ लोग बसे हुए हैं।"

अध्य. 11

1 भज 99:1, जक 14:9, प्रक 19:6
2 आम 3:7, इब्र 1:1, याकू 5:10
3 इब्र 11:6
4 उत 6:11
5 1रा 8:1, 6, इब्र 8:1, 2, इब्र 9:11

अध्य. 12

6 उत 3:15
7 प्रक 12:9, प्रक 20:2
8 अय 38:7
9 उत 6:2, यहू 6
10 उत 3:15

दूसरा कॉल.

1 प्रक 11:15
2 भज 2:9, भज 110:2, प्रक 19:15
3 प्रक 12:14
4 दान 10:13, दान 12:1, यहू 9
5 प्रक 12:3, प्रक 20:2
6 उत 3:1, 2कुर 11:3, प्रक 12:14
7 मत 4:1, यूह 8:44, इब्र 2:14, याकू 4:7, 1पत 5:8
8 1इत 21:1, अय 1:6, जक 3:2, मत 4:10, यूह 13:27, रोम 16:20, 2थि 2:9
9 2कुर 4:4, 2कुर 11:14, इफ 2:2, 1यूह 5:19
10 लूक 10:18, प्रक 12:13
11 रोम 13:11, इब्र 9:28, 1पत 1:5
12 प्रक 11:15, 17

करता था![1] 11 और उन्होंने मेम्ने के
खून की वजह से[2] और उस संदेश
की वजह से जिसकी उन्होंने गवाही दी
थी,[3] उस पर जीत हासिल की[4] और
मौत का सामना करते वक्त भी अपनी
जान की परवाह नहीं की।[5] 12 इस-
लिए हे स्वर्ग और उसमें रहनेवालो,
खुशियाँ मनाओ! हे धरती और समुंदर,
तुम पर बड़ी मुसीबत टूट पड़ी है[6] क्योंकि
शैतान तुम्हारे पास नीचे आ गया है और
बड़े क्रोध में है, क्योंकि वह जानता है
कि उसका बहुत कम वक्त बाकी रह
गया है।"[7]

13 जब अजगर ने देखा कि उसे
धरती पर फेंक दिया गया है[8] तो
उसने उस औरत पर ज़ुल्म ढाए[9] जिसने
लड़के को जन्म दिया था। 14 मगर
औरत को बड़े उकाब के दो पंख[10] दिए
गए ताकि वह उड़कर वीराने में उस
जगह चली जाए जो उसके लिए तैयार
की गयी थी और वह साँप से दूर रहे[11]
और वहाँ एक काल, दो काल और आधे
काल* के लिए उसे खिलाया-पिलाया
जाए।[12]

15 और साँप ने उस औरत के पीछे
अपने मुँह से नदी जैसी पानी की धारा
छोड़ी ताकि औरत नदी में डूब जाए।
16 मगर पृथ्वी ने औरत की मदद की
और पृथ्वी ने अपना मुँह खोला और
उस नदी को निगल लिया जो अजगर के
मुँह से निकली थी। 17 और अजगर
औरत पर भड़क उठा और उस औरत
के वंश* के बाकी बचे हुओं से युद्ध करने
निकल पड़ा,[13] जो परमेश्वर की आज्ञाएँ
मानते हैं और जिन्हें यीशु की गवाही देने
का काम मिला है।[14]

12:14 *यानी साढ़े तीन काल या समय।
12:17 *शा., "बीज।"

अध्य. 12
1 अय 1:9
जक 3:1
2 1पत 1:18, 19
3 प्रेष 1:8
2ती 1:8
प्रक 1:9
4 1यूह 2:14
5 मत 16:25
लूक 14:26
प्रेष 20:24
6 यश 57:20
यश 60:2
प्रक 17:15
7 मत 24:34
रोम 16:20
2ती 3:1
2पत 3:3
8 लूक 10:18
9 उत 3:15
प्रक 12:1
10 निर्ग 19:4
यश 40:31
11 उत 3:1
2कुर 11:3
12 प्रक 12:6
13 उत 3:15
14 मत 24:9
प्रेष 1:8
प्रक 1:9
प्रक 6:9

दूसरा कॉल.

अध्य. 13
1 प्रक 11:7
प्रक 13:18
2 यश 57:20
प्रक 21:1
3 प्रक 12:9
4 लूक 4:6
5 प्रक 13:14
6 प्रक 11:2, 3
7 दान 7:25
8 प्रक 12:12

13 और वह* समुंदर की रेत पर
जा खड़ा हुआ।

और मैंने एक जंगली जानवर[1] को
समुंदर में से ऊपर आते देखा,[2] जिसके
दस सींग और सात सिर थे। उसके सींगों
पर दस मुकुट थे# मगर उसके सिरों
पर परमेश्वर की निंदा करनेवाले नाम
लिखे थे। 2 मैंने जिस जंगली जान-
वर को देखा वह एक चीते जैसा था,
मगर उसके पैर भालू के पैरों जैसे थे
और उसका मुँह शेर के मुँह जैसा था।
और उस जानवर को उसकी शक्ति,
उसकी राजगद्दी और बड़ा अधिकार
अजगर[3] ने दिया था।[4]

3 मैंने देखा तो ऐसा लगा कि उसका
एक सिर बुरी तरह ज़ख्मी कर दिया गया
था, मगर वह जानलेवा घाव ठीक कर
दिया गया[5] और पूरी धरती उस जंगली
जानवर की वाह-वाही करती हुई उसके
पीछे हो ली। 4 और उन्होंने अज-
गर की पूजा की क्योंकि उसने जंगली
जानवर को अधिकार दिया था। और
उन्होंने यह कहते हुए जंगली जान-
वर की पूजा की, "इस जंगली जान-
वर जैसा कौन है और कौन इससे युद्ध
कर सकता है?" 5 उसे एक ऐसा मुँह
दिया गया जो बड़ी-बड़ी बातें करे और
परमेश्वर की निंदा करे और उसे 42
महीनों तक अपनी मनमानी करने का
अधिकार दिया गया।[6] 6 और उसने
परमेश्वर की निंदा करने के लिए अपना
मुँह खोला[7] ताकि वह उसके नाम और
उसके निवास की, यहाँ तक कि स्वर्ग में
रहनेवालों की निंदा करे।[8] 7 और उसे
इजाज़त दी गयी कि वह पवित्र जनों के
साथ युद्ध करे और उन पर जीत हासिल

13:1 *यानी अजगर। #या "शाही पट्टियाँ
थीं।"

करे[1] और उसे हर गोत्र और जाति और भाषा* और राष्ट्र के लोगों पर अधिकार दिया गया। **8** और धरती पर रहनेवाले सभी उसकी पूजा करेंगे। उनमें से एक का भी नाम बलि किए गए मेम्ने[2] की जीवन की किताब* में नहीं लिखा गया[3] जो दुनिया की शुरूआत से लिखी जा रही है।

9 कान लगाकर सुनो कि क्या कहा जा रहा है।[4] **10** अगर किसी को कैद किया जाना है तो उसे कैद किया जाएगा। जो किसी को तलवार से मार डालेगा,* उसे तलवार से मार डाला जाए।[5] ऐसे में पवित्र लोगों[6] का धीरज धरना[7] और विश्वास रखना ज़रूरी है।[8]

11 फिर मैंने एक और जंगली जानवर को धरती में से ऊपर आते हुए देखा। उसके मेम्ने के सींग जैसे दो सींग थे मगर वह अजगर की तरह बोलने लगा।[9] **12** और वह जानवर पहले जंगली जानवर के सामने उसका सारा अधिकार चलाता है।[10] और वह धरती और उस पर रहनेवालों से उस पहले जंगली जानवर की पूजा करवाता है, जिसका जानलेवा घाव ठीक हो गया था।[11] **13** और वह जानवर बड़े-बड़े चमत्कार करता है, यहाँ तक कि वह लोगों के सामने आकाश से धरती पर आग बरसाता है।

14 उसे जंगली जानवर के सामने चमत्कार करने की इजाज़त दी गयी थी और वह चमत्कार दिखाकर धरती पर रहनेवालों को गुमराह करता है। साथ ही, वह धरती पर रहनेवालों से कहता है कि वे उस जंगली जानवर की मूरत बनाएँ[1] जो तलवार से घायल होने के बाद भी बच गया था।[2] **15** और उस जानवर को इजाज़त दी गयी कि जंगली जानवर की मूरत में जान फूँक दे ताकि उसकी मूरत बोलने लगे और उन सबको मरवा डाले जो जंगली जानवर की मूरत पूजने से इनकार करते हैं।

16 वह जानवर छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, आज़ाद-गुलाम सभी लोगों के साथ ज़बरदस्ती करता है कि उनके दाएँ हाथ पर या माथे पर एक निशान लगाया जाए[3] **17** और जिस किसी पर यह निशान यानी जंगली जानवर का नाम[4] या उसके नाम की संख्या न हो,[5] वह न तो खरीद सके, न ही बेच सके। **18** इस बात को समझने के लिए बुद्धि ज़रूरी है: जो अंदरूनी समझ रखता है, वह उस जंगली जानवर की संख्या का हिसाब लगाए, इसलिए कि यह एक आदमी* की संख्या है और इसकी संख्या है 666.[6]

14 फिर मैंने देखा तो क्या देखा! मेम्ना[7] सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है[8] और उसके साथ 1,44,000[9] जन खड़े हैं जिनके माथे पर उसका नाम और उसके पिता का नाम लिखा है।[10] **2** और मैंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी जो पानी की बहुत-सी धाराओं की आवाज़ और तेज़ गरजन जैसी लग रही थी। और मैंने जो आवाज़ सुनी वह ऐसी थी जैसे गानेवाले अपने सुरमंडल बजा रहे हों। **3** और वे राजगद्दी के सामने और चार जीवित प्राणियों[11] और प्राचीनों[12] के सामने मानो एक नया गीत गा रहे हों।[13] और उन 1,44,000 जनों के सिवा जिन्हें धरती से खरीदा

13:7 *या "ज़बान।" **13:8** *या "के खर्रे।" **13:10** *या शायद, "अगर किसी को तलवार से मार डाला जाना है।"

13:18 *या "इंसान।"

अध्य. 13
1 प्रक 12:17
2 यश 53:7; मत 27:50; प्रक 5:6, 12
3 प्रक 3:5; प्रक 21:27
4 मत 11:15
5 मत 26:52
6 दान 7:18; 1कुर 6:2; प्रक 20:6
7 मत 24:13; इब्र 10:36; इब्र 12:3
8 प्रक 2:10
9 प्रक 16:13; प्रक 20:2
10 प्रक 13:1
11 प्रक 13:3

दूसरा कॉल.
1 प्रक 19:20; प्रक 20:4
2 प्रक 13:3
3 प्रक 14:9, 10; प्रक 16:2; प्रक 19:20
4 प्रक 14:11
5 प्रक 15:2
6 दान 3:1

अध्य. 14
7 यूह 1:29; प्रक 5:6; प्रक 22:3
8 भज 2:6; इब्र 12:22; 1पत 2:6
9 प्रक 7:4
10 प्रक 3:12
11 प्रक 4:6
12 प्रक 4:4; प्रक 19:4
13 भज 33:3; भज 98:1; भज 149:1; प्रक 5:9

गया है, कोई और वह गीत गाने में महा-
रत नहीं पा सका था।[1] 4 ये वही हैं
जिन्होंने औरतों के साथ खुद को दूषित
नहीं किया। दरअसल ये कुँवारे हैं।[2]
ये वही हैं जो मेम्ने के पीछे जहाँ-जहाँ
वह जाता है वहाँ-वहाँ जाते हैं।[3] इन्हें
इंसानों में से परमेश्वर और मेम्ने के लिए
पहले फलों के नाते[4] खरीदा गया था[5]
5 और उन्होंने अपने मुँह से कभी छल
की बात नहीं की। वे बेदाग हैं।[6]

6 फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को
देखा जो आकाश के बीचों-बीच* उड़
रहा था और उसके पास सदा तक
कायम रहनेवाली खुशखबरी थी ताकि
वह इसे धरती पर रहनेवालों को यानी
हर राष्ट्र, गोत्र, भाषा# और जाति
के लोगों को सुनाए।[7] 7 वह स्वर्गदूत
बुलंद आवाज़ में कह रहा था, "परमेश्वर
से डरो और उसकी महिमा करो क्योंकि
उसके न्याय करने का वक्त आ गया
है।[8] इसलिए उस परमेश्वर की उपासना
करो जिसने आकाश और धरती और
समुंदर और पानी के सोते बनाए।"[9]

8 इसके बाद एक दूसरा स्वर्गदूत
यह कहते हुए आया, "वह गिर पड़ी!
महानगरी बैबिलोन[10] गिर पड़ी,[11] वही
जिसने सभी राष्ट्रों को अपने नाजायज़
यौन-संबंधों* की, हाँ अपनी वासनाओं#
की मदिरा पिलायी है!"[12]

9 इसके बाद एक तीसरा स्वर्गदूत
बुलंद आवाज़ में यह कहते हुए आया,
"अगर कोई उस जंगली जानवर[13] और
उसकी मूरत की पूजा करता है और
अपने माथे या हाथ पर निशान लग-
वाता है,[14] 10 तो वह भी परमेश्वर
के क्रोध के प्याले में उँडेली गयी निरी
मदिरा में से उसके गुस्से की मदिरा
पीएगा[1] और उसे पवित्र स्वर्गदूतों और
मेम्ने की नज़रों के सामने आग और
गंधक से तड़पाया जाएगा।[2] 11 और
जिस आग में उन्हें तड़पाया जाएगा
उससे हमेशा-हमेशा तक धुआँ उठता
रहेगा[3] और उन्हें दिन-रात कभी चैन
नहीं मिलेगा, हाँ उन्हें जो जंगली जान-
वर और उसकी मूरत की पूजा करते हैं
और उसके नाम की मुहर लगवाते हैं।[4]
12 ऐसे में पवित्र जनों का धीरज धरना
ज़रूरी है,[5] जो परमेश्वर की आज्ञाएँ
मानते हैं और यीशु पर विश्वास* करना
नहीं छोड़ते।"[6]

13 और मैंने स्वर्ग से यह आवाज़
सुनी, "लिख लेः सुखी हैं वे जो अब से
प्रभु के साथ एकता में मरेंगे।[7] हाँ, पवित्र
शक्ति कहती है, अब उन्हें कड़ी मेह-
नत से आराम मिले, क्योंकि उन्होंने जो
काम किए वे भुलाए नहीं जाएँगे।"*

14 फिर देखो मैंने क्या देखा! एक
सफेद बादल था जिस पर इंसान के बेटे
जैसा कोई बैठा है।[8] उसके सिर पर
सोने का ताज और उसके हाथ में तेज़
हँसिया है।

15 फिर एक और स्वर्गदूत मंदिर के
पवित्र-स्थान में से निकला और जो बादल
पर बैठा हुआ था, उससे बुलंद आवाज़ में
कहा, "अपना हँसिया चला और कटाई
कर क्योंकि कटाई का वक्त आ गया है
और धरती की फसल पूरी तरह पक
चुकी है।"[9] 16 और जो बादल पर
बैठा था उसने धरती पर अपना हँसिया
चलाया और धरती की फसल काटी
गयी।

अध्य. 14
1 प्रक 7:4
2 2कुर 11:2, याकू 1:27, याकू 4:4
3 1पत 2:21
4 याकू 1:18
5 1कुर 6:20, 1कुर 7:23, प्रक 5:9
6 इफ 5:25-27, यहू 24
7 मत 24:14, मर 13:10, प्रेष 1:8
8 2पत 2:9
9 निर्ग 20:11, भज 146:6
10 प्रक 17:18
11 यश 21:9, प्रक 18:21
12 यिर्म 51:7, 8, प्रक 17:1, 2, प्रक 18:2, 3
13 प्रक 13:1
14 प्रक 13:15, 16

दूसरा कॉल.
1 भज 75:8, प्रक 11:18, प्रक 16:19
2 प्रक 21:8
3 मत 25:46, 2थि 1:9, प्रक 19:3
4 प्रक 13:16-18, प्रक 16:2, प्रक 20:4
5 प्रक 13:10
6 इब्र 10:38
7 1कुर 15:51, 52, 1थि 4:16, 17
8 दान 7:13
9 मत 13:30

14:6 *या "पृथ्वी से थोड़ा ऊपर; सिर के ऊपर।" #या "ज़बान।" **14:8** *यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें। #या "क्रोध।"

14:12 *शा., "यीशु का विश्वास।" **14:13** *शा., "उनके काम उनके साथ जाएँगे।"

17 फिर एक और स्वर्गदूत उस मंदिर
के पवित्र-स्थान से निकला जो स्वर्ग में
था। उसके पास भी एक तेज़ हँसिया था।
18 फिर एक और स्वर्गदूत वेदी में
से निकला जिसे आग पर अधिकार
मिला था। उसने बुलंद आवाज़ में उस
स्वर्गदूत को पुकारा जिसके पास तेज़
हँसिया था और उससे कहा, "अपना
हँसिया चला और पृथ्वी की अंगूर की
बेल के गुच्छे इकट्ठे कर क्योंकि उसके
अंगूर पक चुके हैं।"[1] **19** और उस
स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हँसिया
चलाया और पृथ्वी की अंगूर की
बेल इकट्ठी की। उसने वह बेल, अंगूर
रौंदने के उस बड़े हौद में फेंक दी जो
परमेश्वर के क्रोध की निशानी है।[2]
20 उस हौद को शहर के बाहर रौंदा
गया और उसमें से जो खून निकला, वह
घोड़ों की लगामों की ऊँचाई तक पहुँच
गया और करीब 300 किलोमीटर* की
दूरी तक फैल गया।

15 फिर मैंने स्वर्ग में एक और बड़ी
और हैरतअंगेज़ निशानी देखी,
मैंने सात स्वर्गदूत देखे[3] जो सात कहर
लिए हुए थे। ये आखिरी कहर हैं क्योंकि
इनके ज़रिए परमेश्वर के क्रोध का अंत
होता है।[4]
2 और मैंने कुछ ऐसा देखा जो काँच
जैसा समुंदर लग रहा था[5] और उसमें
आग मिली हुई थी। और समुंदर के पास
उन लोगों को खड़े देखा जिन्होंने जंगली
जानवर और उसकी मूरत पर[6] जीत
हासिल की थी[7] और जिन पर उसके
नाम की संख्या[8] नहीं थी। वे परमेश्वर
के सुरमंडल लिए हुए थे। **3** वे पर-
मेश्वर के दास मूसा का और मेम्ने[1] का
यह गीत गा रहे थे:[2]

"हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा,*[3]
तेरे काम कितने महान और लाजवाब हैं।[4]
हे युग-युग के राजा,[5] तेरी राहें कितनी नेक
और सच्ची हैं।[6] **4** हे यहोवा,* सिर्फ तू
ही वफादार है, इसलिए कौन तुझसे न
डरेगा और तेरे नाम की महिमा न करेगा?[7]
सभी राष्ट्र तेरे सामने आएँगे और तेरी
उपासना करेंगे[8] क्योंकि उन पर तेरे नेक
आदेश ज़ाहिर किए गए हैं।"

5 इसके बाद मैंने देखा, स्वर्ग में
गवाही के तंबू का पवित्र-स्थान खोला
गया[9] **6** और सात कहर लिए हुए
सात स्वर्गदूत[10] उस पवित्र-स्थान में से
निकले। वे साफ, उजले कपड़े पहने
हुए थे और सोने के सीनेबंद बाँधे हुए
थे। **7** और चार जीवित प्राणियों में से
एक ने उन सात स्वर्गदूतों को सोने के
सात कटोरे दिए, जिनमें उस परमेश्वर
का क्रोध भरा हुआ था[11] जो सदा तक
जीवित रहता है। **8** और परमेश्वर की
महिमा और शक्ति की वजह से वह
भवन धुएँ से भर गया[12] और जब तक
सात स्वर्गदूतों के सात कहर न बीत
चुके[13] तब तक पवित्र-स्थान के अंदर
कोई भी नहीं जा सका।

16 फिर मैंने पवित्र-स्थान में से एक
ज़ोरदार आवाज़ सुनी[14] जो सात
स्वर्गदूतों से कह रही थी, "जाओ और
परमेश्वर के क्रोध के सात कटोरे धरती
पर उँडेल दो।"[15]

2 पहला स्वर्गदूत गया और उसने
अपना कटोरा धरती पर उँडेला।[16] और
जिन लोगों पर जंगली जानवर का
निशान था[17] और जो उसकी मूरत की

14:20 *शा., "1,600 स्तादियौन।" एक स्तादियौन 185 मी. (606.95 फुट) के बराबर था। अति. ख14 देखें।

15:3, 4 *अति. क5 देखें।

अध्य. 14
1 योए 3:13
2 प्रक 19:11, 15

अध्य. 15
3 प्रक 16:1
4 प्रक 16:17
5 1रा 7:23, प्रक 4:6
6 प्रक 13:15
7 प्रक 2:7
8 प्रक 13:18

दूसरा कॉल.
1 यूह 1:29
2 निर्ग 15:1, व्य 31:30
3 निर्ग 6:3
4 निर्ग 15:11, भज 111:2, भज 139:14
5 यिर्म 10:10, 1ती 1:17
6 व्य 32:4, भज 145:17
7 यिर्म 10:6, 7
8 भज 86:9, मला 1:11
9 प्रेष 7:44, इब्र 8:1, 2, इब्र 9:11, प्रक 11:19
10 प्रक 15:1
11 भज 75:8, यिर्म 25:15, प्रक 14:9, 10
12 निर्ग 40:34, 35, 1रा 8:10, 11, यश 6:4, यहे 44:4
13 प्रक 15:1

अध्य. 16
14 प्रक 16:17
15 भज 69:24, सप 3:8
16 प्रक 8:7
17 प्रक 13:16, 18

पूजा कर रहे थे,[1] वे एक दर्दनाक और
भयानक फोड़े से पीड़ित हुए।[2]
3 दूसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा
समुंदर पर उँडेला।[3] और समुंदर मरे
हुए इंसान के खून जैसा हो गया[4] और
समुंदर का हर प्राणी, हाँ, सभी जीव
मर गए।[5]
4 तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा
नदियों और पानी के सोतों पर उँडेला।[6]
तब वे खून में बदल गए।[7] **5** जिस
स्वर्गदूत को पानी पर अधिकार था उसे
मैंने यह कहते हुए सुना, "हे वफादार
परमेश्‍वर,[8] तू जो था और जो है,[9] तू
नेक है क्योंकि तूने ये फैसले सुनाकर
न्याय किया है,[10] **6** क्योंकि उन्होंने
पवित्र जनों और भविष्यवक्ताओं का
खून बहाया था।[11] तूने उन्हें पीने के लिए
खून दिया है।[12] वे इसी लायक हैं।"[13]
7 और मैंने वेदी को यह कहते सुना, "हे
सर्वशक्तिमान परमेश्‍वर यहोवा,*[14] तेरे
फैसले# वाकई नेक और सच्चे हैं।"[15]
8 चौथे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा
सूरज पर उँडेला।[16] और सूरज को यह
अधिकार दिया गया कि वह लोगों को
आग से झुलसा दे। **9** लोग भयंकर
गरमी से झुलस गए फिर भी उन्होंने उस
परमेश्‍वर के नाम की निंदा की, जिसे हर
कहर पर अधिकार है। उन्होंने पश्‍चाताप
नहीं किया और उसकी महिमा नहीं की।
10 पाँचवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा
जंगली जानवर की राजगद्दी पर उँडेला।
और उसका राज अंधकार से भर गया[17]
और लोग दर्द के मारे अपनी जीभ काटने
लगे। **11** उन्होंने दर्द और फोड़ों की
वजह से स्वर्ग के परमेश्‍वर की निंदा
की और अपने कामों से पश्‍चाताप नहीं
किया।
12 छठे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा
महानदी फरात पर उँडेला[1] और उसका
पानी सूख गया[2] ताकि पूरब से आनेवाले
राजाओं के लिए रास्ता तैयार करे।[3]
13 और मैंने देखा कि अजगर,[4]
जंगली जानवर और झूठे भविष्यवक्ता
के मुँह से तीन अशुद्ध प्रेरित वचन निकल
रहे थे जो मेंढकों जैसे दिख रहे थे।
14 दरअसल ये दुष्ट स्वर्गदूतों की प्रेरणा
से कहे गए वचन हैं और ये चमत्कार
करते हैं[5] और सारे जगत के राजाओं
के पास जाते हैं कि उन्हें सर्वशक्तिमान
परमेश्‍वर के महान दिन[6] के युद्ध के लिए
इकट्ठा करें।[7]
15 "देख! मैं एक चोर की तरह
आ रहा हूँ।[8] सुखी है वह जो जागता
रहता है[9] और अपने कपड़ों की चौकसी
करता है ताकि वह नंगा न फिरे और
लोग उसकी शर्मनाक हालत न देखें।"[10]
16 और उन्होंने राजाओं को उस
जगह इकट्ठा किया जो इब्रानी भाषा में
हर-मगिदोन* कहलाती है।[11]
17 सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा
हवा पर उँडेला। तब पवित्र-स्थान से,
राजगद्दी से एक ज़ोरदार आवाज़
निकली[12] जो कह रही थी, "पूरा हो
गया!" **18** और बिजलियाँ कौंधीं,
ज़ोरदार आवाज़ें आयीं, गरजन हुआ
और ऐसा ज़बरदस्त और भयानक भूकंप
हुआ जैसा धरती पर इंसान के आने से
लेकर अब तक कभी नहीं हुआ था।[13]
19 उस महानगरी[14] के टूटकर तीन
हिस्से हो गए और राष्ट्रों के शहर तबाह

16:7 *अति. क5 देखें। #या "न्याय-सिद्धांत।"

16:16 *यह शब्द एक इब्रानी शब्द से निकला है जिसका मतलब है "मगिद्दो पहाड़।"

अध्य. 16

1 प्रक 13:15, प्रक 19:20
2 निर्ग 9:10
3 प्रक 8:8
4 निर्ग 7:20
5 यश 57:20
6 प्रक 8:10
7 निर्ग 7:20, भज 78:44
8 भज 145:17, प्रक 15:4
9 प्रक 1:4
10 व्य 32:4, भज 119:137
11 भज 79:3
12 यश 49:26
13 प्रक 18:20
14 निर्ग 6:3
15 भज 19:9, भज 119:137, प्रक 19:1, 2
16 प्रक 8:12
17 निर्ग 10:21, यश 8:22

दूसरा कॉल.

1 प्रक 9:13, 14
2 यिर्म 50:38
3 यश 44:27, 28
4 प्रक 12:3
5 प्रक 13:11, 13
6 यश 13:6, यिर्म 25:33, यहे 30:3, योए 1:15, योए 2:1, 11, सप 1:15, 2पत 3:11, 12
7 प्रक 19:19
8 1थि 5:2, 2पत 3:10
9 लूक 21:36
10 प्रक 3:18
11 2इत 35:22, जक 12:11, प्रक 19:19
12 प्रक 16:1
13 यहे 38:19, दान 12:1, इब्र 12:26
14 प्रक 17:18

हो गए। और महानगरी बैबिलोन[1] को परमेश्वर ने याद किया ताकि उसे अपने गुस्से और जलजलाहट की मदिरा से भरा प्याला दे।[2] **20** साथ ही, हरेक द्वीप भाग गया और पहाड़ लापता हो गए।[3] **21** फिर आकाश से लोगों पर बड़े-बड़े ओले गिरे और हर ओले का वज़न करीब 20 किलो* था।[4] इस कहर की वजह से लोगों ने परमेश्वर की निंदा की[5] क्योंकि इस कहर ने बहुत ज़्यादा तबाही मचायी।

17 जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात कटोरे थे,[6] उनमें से एक ने आकर मुझसे कहा, "आ, मैं तुझे दिखाऊँगा कि उस बड़ी वेश्या को क्या सज़ा मिलेगी जो पानी की बहुत-सी धाराओं पर बैठी हुई है,[7] **2** जिसके साथ पृथ्वी के राजाओं ने नाजायज़ यौन-संबंध* रखे[8] और धरती के लोगों को उसके नाजायज़ यौन-संबंधों# की मदिरा पिलाकर मदहोश कर दिया गया।"[9]

3 और वह स्वर्गदूत मुझे पवित्र शक्ति की ताकत से एक वीराने में ले गया। वहाँ मैंने एक औरत को देखा जो सुर्ख लाल रंग के एक जंगली जानवर पर बैठी हुई थी। वह जानवर परमेश्वर की निंदा करनेवाले नामों से भरा हुआ था और उसके सात सिर और दस सींग थे। **4** वह औरत बैंजनी और सुर्ख लाल रंग का लिबास पहने हुई थी[10] और वह सोने और अनमोल रत्नों और मोतियों से सजी-सँवरी हुई थी।[11] उसके हाथ में सोने का एक प्याला था जो घिनौनी चीज़ों से और उसके नाजायज़ यौन-संबंध# की अशुद्ध चीज़ों से भरा हुआ था। **5** उस वेश्या के माथे पर एक रहस्यमय नाम लिखा था: "महानगरी बैबिलोन, वेश्याओं की माँ[1] और पृथ्वी की घिनौनी चीज़ों को जन्म देनेवाली।"[2] **6** और मैंने देखा कि वह औरत पवित्र जनों का खून पीकर और यीशु के गवाहों का खून पीकर मदहोश थी।[3]

उस औरत को देखकर मैं सचमुच दंग रह गया! **7** तब उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "तू इतना हैरान क्यों है? मैं तुझे उस औरत का और उस जंगली जानवर का रहस्य बताता हूँ[4] जिसके सात सिर और दस सींग हैं और जिस पर वह औरत सवार है:[5] **8** जिस जंगली जानवर को तूने देखा, वह था मगर अब नहीं है फिर भी वह अथाह-कुंड से जल्द निकलेगा[6] और उसका नाश कर दिया जाएगा। धरती के लोग यानी वे जिनका नाम दुनिया की शुरूआत से लिखी जानेवाली जीवन की किताब* में नहीं लिखा गया है,[7] यह देखकर हैरान रह जाएँगे कि कैसे वह जंगली जानवर पहले था, मगर अब नहीं है और फिर से आनेवाला है।

9 इस बात को समझने के लिए दिमाग* और बुद्धि चाहिए: सात सिरों[8] का मतलब है, सात पहाड़ जिनके ऊपर वह औरत बैठी है। **10** और इनका मतलब है, सात राजा: पाँच गिर चुके हैं, एक मौजूद है और एक अभी आया नहीं, लेकिन जब वह आएगा तो कुछ देर तक उसका रहना ज़रूरी है। **11** और वह जंगली जानवर जो पहले था मगर अभी नहीं है,[9] वह आठवाँ राजा भी है। मगर वह उन सातों में से निकलता है और वह नाश हो जाएगा।

16:21 *एक यूनानी तोड़ा। अति. ख14 देखें। **17:2** *शब्दावली देखें। **17:2, 4** #यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें।

17:8 *या "के खर्रे।" **17:9** *या "होशियारी।"

अध्य. 16
1 प्रक 18:2
2 यिर्म 25:15; प्रक 15:7
3 प्रक 6:14
4 अय 38:22, 23
5 निर्ग 9:24

अध्य. 17
6 प्रक 16:1
7 यिर्म 51:13; प्रक 17:15; प्रक 19:2
8 याकू 4:4; प्रक 18:9
9 यिर्म 51:7; प्रक 14:8; प्रक 18:3
10 लूक 16:19
11 प्रक 18:11, 12; प्रक 18:19

दूसरा कॉल.
1 प्रक 19:2
2 प्रक 18:5
3 प्रक 6:9; प्रक 18:24; प्रक 19:2
4 प्रक 17:5
5 प्रक 17:3
6 प्रक 20:1
7 निर्ग 32:32; भज 69:28; फिल 4:3
8 प्रक 17:7
9 प्रक 17:8

12 जो दस सींग तूने देखे उनका मत-
लब दस राजा हैं, जिन्हें अभी तक राज
नहीं मिला मगर उन्हें जंगली जानवर के
साथ घड़ी-भर* के लिए राजाओं जैसा
अधिकार मिलेगा। 13 उन सबकी एक
ही सोच है और वे अपनी शक्ति और
अपना अधिकार उस जंगली जानवर
को देंगे। 14 वे मेम्ने के साथ लड़ेंगे,[1]
मगर मेम्ना उन पर जीत हासिल करेगा[2]
क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं
का राजा है।[3] और जो बुलाए गए और
चुने हुए और विश्वासयोग्य जन उसके
साथ हैं, वे भी जीत हासिल करेंगे।"[4]
15 उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "पानी
की जिन धाराओं पर तूने उस वेश्या को
बैठे देखा, उनका मतलब है लोग और भीड़
और राष्ट्र और भाषाएँ।*[5] 16 और जो
दस सींग[6] तूने देखे वे और वह जंगली
जानवर,[7] उस वेश्या से नफरत करेंगे[8]
और उसे तबाह और नंगा कर देंगे और
उसका माँस खा जाएँगे और उसे आग में
पूरी तरह जला देंगे।[9] 17 क्योंकि पर-
मेश्वर ने उनके दिल में यह बात डाली है
कि वे उसकी सोच पूरी करें[10] ताकि वे
जिस बात पर एक राय रखते हैं, उसे पूरा
करने के लिए तब तक जंगली जानवर
को अपना राज दें[11] जब तक कि परमेश्वर
का कहा वचन पूरा न हो जाए। 18 और
जिस औरत[12] को तूने देखा, उसका मत-
लब वह महानगरी है जिसका राज पृथ्वी
के राजाओं पर है।"

18 इसके बाद मैंने एक और स्वर्ग-
दूत को स्वर्ग से उतरते देखा
जिसके पास बड़ा अधिकार था। उसकी
महिमा के तेज से पृथ्वी रौशन हो
गयी। 2 और उसने ज़ोरदार आवाज़
में चिल्लाकर कहा, "गिर पड़ी! महा-
नगरी बैबिलोन गिर पड़ी[1] और वह दुष्ट
स्वर्गदूतों का अड्डा और ऐसी जगह बन
गयी है जहाँ दुष्ट स्वर्गदूत* और अशुद्ध
और घिनौने पक्षी छिपकर रहते हैं![2]
3 उसने अपने नाजायज़ यौन-संबंधों*
की, हाँ वासनाओं# की मदिरा सारे राष्ट्रों
को पिलायी है और वे उसके शिकार बने
हैं।[3] पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ ना-
जायज़ यौन-संबंध रखे[4] और पृथ्वी के
सौदागर△ उसकी शर्मनाक ऐयाशियों से
मालामाल हो गए।"
4 मैंने स्वर्ग से एक और आवाज़ सुनी
जो कह रही थी, "मेरे लोगो, उसमें से
बाहर निकल आओ।[5] अगर तुम उसके
पापों में हिस्सेदार नहीं होना चाहते और
नहीं चाहते कि उस पर आनेवाले कहर
तुम पर भी आएँ, तो उसमें से निकल
आओ।[6] 5 क्योंकि उसके पापों का
अंबार आसमान तक पहुँच गया है[7]
और उसने जो अन्याय किया है* उसे
परमेश्वर ने याद किया है।[8] 6 उसने
दूसरों के साथ जो किया है वही उसके
साथ करो[9] और उसने जो काम किए
हैं उसकी दुगनी सज़ा उसे दो।[10] उसने
प्याले[11] में जो मिलाया है, उसका दुगना
उसे मिलाकर दो।[12] 7 उसने जितनी
शानो-शौकत कमायी और बेशर्म होकर
जो ऐयाशियाँ कीं, उसे उतना ही तड़पाओ
ताकि वह मातम मनाए। क्योंकि वह
अपने दिल में कहती है, 'मैं तो राजगद्दी
पर बैठी रानी हूँ, मैं कोई विधवा नहीं।
मुझे कभी मातम नहीं मनाना पड़ेगा।'[13]

17:12 *शा., "घंटे-भर।" **17:15** *या "ज़बान।"

18:2 *या शायद, "साँस; ज़हरीली हवा; प्रेरित बातें।" **18:3** *यूनानी में *पोर्निया।* शब्दावली देखें। #या "क्रोध।" △या "सफर करनेवाले सौदागर।" **18:5** *या "अपराध किए हैं।"

अध्य. 17
1 यूह 1:29
प्रक 5:6
2 प्रक 19:11, 15
3 मत 28:18
प्रेष 2:36
1ती 6:15
4 रोम 16:20
5 यश 57:20
यिर्म 51:13
6 प्रक 17:12
7 प्रक 17:8
8 प्रक 17:7
9 लैव 21:9
प्रक 18:8
10 यह 11:19, 20
नीत 21:1
11 प्रक 17:12
12 प्रक 17:5

दूसरा कॉल.

अध्य. 18
1 यश 21:9
यिर्म 51:8
प्रक 14:8
2 यश 13:21
यिर्म 50:39
3 यिर्म 51:7
4 प्रक 17:1, 2
5 यश 48:20
यश 52:11
यिर्म 50:8
6 यिर्म 51:6, 45
2कुर 6:17
7 यिर्म 51:9
8 प्रक 16:19
9 यिर्म 50:29
2थि 1:6
10 भज 137:8
यिर्म 50:15
11 भज 75:8
12 प्रक 16:19
13 यश 47:7-9

8 इसलिए एक ही दिन में उस पर मौत, मातम और अकाल ये सारे कहर टूट पड़ेंगे और उसे आग में पूरी तरह जला दिया जाएगा,[1] क्योंकि यहोवा* परमेश्वर जिसने उसे सज़ा सुनायी है वह ताकतवर है।[2]

9 और पृथ्वी के राजा, जिन्होंने उसके साथ नाजायज़ यौन-संबंध* रखे और शर्मनाक ऐयाशी की, जब उसके जलने से उठनेवाला धुआँ देखेंगे, तो उसके लिए रोएँगे और दुख के मारे छाती पीटेंगे।
10 और इस डर से दूर खड़े रहेंगे कि कहीं उन्हें भी उसकी तरह न तड़पाया जाए। और कहेंगे, 'हाय, महानगरी बैबिलोन,[3] हाय! तेरे साथ कितना बुरा हुआ। तू जो मज़बूत नगरी थी, एक ही घड़ी में तुझे सज़ा मिल गयी!'

11 पृथ्वी के सौदागर भी उसके लिए रोएँगे और मातम मनाएँगे, क्योंकि उनका सारा माल खरीदनेवाला कोई नहीं रहा,
12 वह माल जिसमें सोना, चाँदी, अनमोल रत्न, मोती, बढ़िया मलमल, बैंजनी कपड़े, रेशम और सुर्ख लाल कपड़े हैं। और खुशबूदार लकड़ी से बनी हर तरह की चीज़ और हाथी-दाँत, बेशकीमती लकड़ी, ताँबे, लोहे और संगमरमर से बनी हर किस्म की चीज़ है।
13 और दालचीनी, मसाला,* धूप, खुशबूदार तेल, लोबान, दाख-मदिरा, जैतून का तेल, मैदा, गेहूँ, मवेशी, भेड़ें, घोड़े, बग्घियाँ, दास और आदमी भी हैं।
14 हाँ, जिस बढ़िया फल की तुझे लालसा थी वह अब तुझसे दूर हो गया है और हर तरह का लज़ीज़ खाना और तड़क-भड़कवाली चीज़ें तुझसे दूर हो गयी हैं और वे फिर कभी नहीं मिलेंगी।

15 जो सौदागर इन चीज़ों को बेचते थे और उस नगरी की बदौलत मालामाल हो गए थे, वे इस डर से दूर खड़े रहेंगे कि कहीं उन्हें भी उसकी तरह न तड़पाया जाए। वे रोएँगे और मातम मनाएँगे
16 और कहेंगे, 'हाय, इस महानगरी के साथ कितना बुरा हुआ। यह बढ़िया मलमल, बैंजनी और सुर्ख लाल कपड़े पहनती थी और सोने के गहनों, कीमती रत्नों और मोतियों से सजती-सँवरती थी।[1]
17 मगर इसकी बेशुमार दौलत एक ही घड़ी में कैसे तबाह हो गयी!'

और हर जहाज़ का कप्तान, यात्री, नाविक और वे सभी जो समुंदर से अपनी रोज़ी-रोटी कमाते हैं, दूर खड़े रहे
18 और उसके जलने से उठनेवाला धुआँ देखकर वे चिल्ला उठे, 'क्या कोई नगरी है जो इस महानगरी जैसी हो?'
19 उन्होंने अपने सिर पर धूल डाली, वे रोने-बिलखने और मातम मनाने लगे और कहने लगे, 'हाय, इस महानगरी के साथ कितना बुरा हुआ। इसकी महँगी चीज़ों की भरमार से वे सभी मालामाल हुए थे जिनके समुद्री जहाज़ हैं। हाय, एक ही घड़ी में यह तबाह हो गयी!'[2]

20 हे स्वर्ग और हे पवित्र जनो,[3] प्रेषितो और भविष्यवक्ताओ, तुम सब उसके हाल पर खुशियाँ मनाओ।[4] क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारी खातिर उस नगरी को सज़ा सुनायी है!"[5]

21 और एक ताकतवर स्वर्गदूत ने चक्की के पाट जैसा एक बड़ा पत्थर उठाया और यह कहते हुए उसे समुंदर में फेंका, "इसी तरह महानगरी बैबिलोन को तेज़ी से नीचे फेंक दिया जाएगा और फिर कभी उसका नामो-निशान

18:8 *अति. क5 देखें। 18:9 *शब्दावली देखें। 18:13 *शा., "हिन्दुस्तान का एक मसाला।"

अध्य. 18
1 लैव 21:9
2 यिर्म 50:34
3 दान 4:30

दूसरा कॉल.
1 प्रक 17:4
2 यश 47:11
3 प्रक 14:12
4 यिर्म 51:48
5 व्य 32:43
रोम 12:19
प्रक 6:9, 10
प्रक 19:1, 2

नहीं मिलेगा।[1] 22 और तेरे यहाँ
फिर कभी सुरमंडल पर गीत गाने-
वालों, संगीतकारों, बाँसुरी बजानेवालों
और तुरही फूँकनेवालों की आवाज़ नहीं
सुनायी देगी। और तेरे यहाँ फिर कभी
कोई कारीगर नहीं मिलेगा और चक्की
चलने की आवाज़ फिर कभी नहीं सुनायी
देगी। 23 तेरे यहाँ फिर कभी दीपक
की रौशनी नहीं चमकेगी, न ही दूल्हा-
दुल्हन की आवाज़ फिर कभी सुनायी
देगी। क्योंकि तेरे सौदागर पृथ्वी के
रुतबेदार आदमी थे और तेरे जादू-
टोने से[2] सभी राष्ट्र गुमराह हुए थे।
24 हाँ, इसी नगरी में भविष्यवक्ताओं,
पवित्र जनों और उन सबका खून पाया
गया[3] जिनका धरती पर कत्ल किया
गया था।"[4]

19 इसके बाद मैंने स्वर्ग में ऐसी
आवाज़ सुनी जो एक बड़ी भीड़
की ज़ोरदार आवाज़ जैसी थी। वे कह
रहे थे, "याह की तारीफ करो!*[5] हमारा
परमेश्वर हमारा उद्धारकर्ता है, महिमा
और शक्ति उसी की है, 2 क्योंकि
उसके फैसले नेक और सच्चे हैं।[6]
उसने उस बड़ी वेश्या को सज़ा दी है
जिसने अपने नाजायज़ यौन-संबंधों* से
धरती को भ्रष्ट कर दिया था। पर-
मेश्वर ने अपने दासों के खून का बदला
उससे लिया है।"[7] 3 इसके फौरन बाद
उन्होंने दूसरी बार कहा, "याह की
तारीफ करो!*[8] बैबिलोन नगरी के
जलने का धुआँ हमेशा-हमेशा तक उठता
रहेगा।"[9]

4 और उन 24 प्राचीनों[10] और चार
जीवित प्राणियों[11] ने नीचे गिरकर उस

19:1, 3, 4, 6 *या "हल्लिलूयाह!" "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। **19:2** *यूनानी में *पोर्निया*। शब्दावली देखें।

अध्य. 18
1 यिर्म 51:63, 64
2 यश 47:9; गल 5:19, 20
3 प्रक 6:9, 10; प्रक 16:5, 6
4 उत 9:6; यिर्म 51:49

अध्य. 19
5 भज 150:6
6 व्य 32:4; भज 19:9; प्रक 15:3
7 व्य 32:43; 2रा 9:7; भज 79:10; प्रक 18:20, 24
8 भज 117:1
9 यश 34:10
10 प्रक 4:4
11 प्रक 4:6

दूसरा कॉल.
1 भज 106:48
2 भज 115:13
3 भज 134:1; भज 135:1
4 भज 113:1
5 निर्ग 6:3
6 भज 97:1; यश 52:7; प्रक 11:15
7 यश 61:10; इफ 5:25-27; प्रक 14:4
8 मत 22:2; मत 25:10
9 प्रेष 10:25, 26; प्रक 22:8, 9
10 मत 28:19, 20; प्रेष 1:8
11 मत 4:10; यूह 4:23
12 लूक 24:27; प्रेष 10:43; 1पत 1:10, 11

परमेश्वर की उपासना की जो राजगद्दी
पर बैठा था और कहा, "आमीन! याह
की तारीफ करो!"*[1]

5 और राजगद्दी में से भी एक
आवाज़ निकली जो कह रही थी, "हमारे
परमेश्वर के सब दासो, उसका डर
माननेवाले छोटे-बड़े सब दासो,[2] उसकी
तारीफ करो!"[3]

6 और मैंने ऐसी आवाज़ सुनी जो एक
बड़ी भीड़ की आवाज़ जैसी थी और पानी
की बहुत-सी धाराओं की आवाज़ और
ज़ोरदार गरजन जैसी थी। वे कह रहे थे,
"याह की तारीफ करो,*[4] क्योंकि हमारे
सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा#[5] ने राजा
की हैसियत से राज करना शुरू कर दिया
है![6] 7 आओ खुशियाँ मनाएँ और आनंद
से भर जाएँ और परमेश्वर की महिमा करें
क्योंकि मेम्ने की शादी का वक्त आ गया
है और उसकी दुल्हन तैयार है। 8 हाँ,
उसे इजाज़त दी गयी है कि वह उजला,
साफ और बढ़िया मलमल पहने, क्योंकि
बढ़िया मलमल पवित्र जनों के नेक कामों
की निशानी है।"[7]

9 और उसने मुझसे कहा, "यह
लिखः सुखी हैं वे जिन्हें मेम्ने की शादी
में शाम की दावत पर आने का न्यौता
मिला है।"[8] उसने मुझसे यह भी कहा,
"ये परमेश्वर के सच्चे वचन हैं।"
10 यह सुनते ही मैं उसकी उपासना
करने के लिए उसके पैरों पर गिर पड़ा।
मगर उसने मुझसे कहा, "नहीं, नहीं,
ऐसा मत कर![9] मैं तो सिर्फ तेरे और
तेरे भाइयों की तरह एक दास हूँ, जिन्हें
यीशु की गवाही देने का काम मिला है।[10]
परमेश्वर की उपासना कर[11] क्योंकि
भविष्यवाणियों का मकसद यीशु के बारे
में गवाही देना है।"[12]

19:6 #अति. क5 देखें।

11 मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा
और देखो! एक सफेद घोड़ा।[1] और जो
उस पर सवार था, वह विश्वासयोग्य[2]
और सच्चा कहलाता है[3] और वह नेक
स्तरों के मुताबिक न्याय करना और युद्ध
करना जारी रखता है।[4] **12** उसकी
आँखें आग की ज्वाला हैं[5] और उसके
सिर पर बहुत-से मुकुट* हैं। उस पर
एक नाम लिखा है जिसका मतलब खुद
उसके सिवा और कोई नहीं जानता
13 और वह एक पोशाक पहने हुए है
जिस पर खून का दाग है* और उसे
इस नाम से पुकारा जाता है: परमेश्वर
का वचन।[6] **14** उसके पीछे-पीछे स्वर्ग
की सेनाएँ सफेद घोड़ों पर आ रही थीं
और वे सफेद, साफ और बढ़िया मल-
मल पहने हुए थे। **15** और उस घुड़-
सवार के मुँह से एक तेज़ धारवाली
लंबी तलवार निकलती है[7] ताकि वह
उससे राष्ट्रों पर वार करे। और वह
चरवाहे की तरह उन्हें लोहे के छड़
से हाँकेगा।[8] यही नहीं, वह सर्वशक्ति-
मान परमेश्वर के क्रोध और जलजलाहट
के हौद में भी रौंदता है।[9] **16** उसकी
पोशाक पर, हाँ उसकी जाँघ पर एक नाम
लिखा है: राजाओं का राजा और प्रभुओं
का प्रभु।[10]

17 मैंने एक और स्वर्गदूत देखा जो
सूरज के बीच खड़ा था और उसने
ज़ोरदार आवाज़ में पुकार लगायी और
बीच आकाश में* उड़ते सभी पक्षियों से
कहा, "यहाँ आओ, परमेश्वर की शाम
की बड़ी दावत के लिए इकट्ठा हो
जाओ[11] **18** ताकि तुम राजाओं, सेना-
पतियों, ताकतवर आदमियों, घोड़ों और
घुड़सवारों का माँस खाओ।[1] साथ ही,
आज़ाद लोगों और दासों का और छोटे-
बड़े, सबका माँस खाओ।"

19 और मैंने देखा कि जंगली जान-
वर और धरती के राजा और उनकी
सेनाएँ उस घुड़सवार और उसकी सेना
से युद्ध करने के लिए इकट्ठा हुईं।[2]
20 और उस जंगली जानवर को, साथ
ही उसके सामने चमत्कार करनेवाले झूठे
भविष्यवक्ता को पकड़ लिया गया[3] जो
चमत्कार दिखाकर उन लोगों को गुम-
राह करता था जिन्होंने खुद पर जंगली
जानवर का निशान लगवाया था[4] और
जो उसकी मूरत की पूजा करते थे।[5] उन
दोनों को जीते-जी आग की उस झील
में फेंक दिया गया जो गंधक से जलती
रहती है।[6] **21** और बाकी लोग घुड़-
सवार के मुँह से निकलनेवाली लंबी
तलवार से मार डाले गए।[7] और सभी
पक्षियों ने भरपेट उनका माँस खाया।[8]

20

और मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग
से उतरते देखा जिसके पास
अथाह-कुंड की चाबी और हाथ में एक
बड़ी ज़ंजीर थी।[9] **2** उसने उस अज-
गर[10] को, उस पुराने साँप[11] को
जो इबलीस[12] और शैतान[13] है पकड़
लिया और 1,000 साल के लिए उसे
बाँध दिया। **3** और उसे अथाह-कुंड में
फेंक दिया[14] और अथाह-कुंड को बंद
करके उस पर मुहर लगा दी ताकि वह
1,000 साल के खत्म होने तक राष्ट्रों
को फिर गुमराह न करे। इसके बाद
ज़रूरी है कि उसे थोड़ी देर के लिए
आज़ाद किया जाए।[15]

4 और मैंने राजगद्दियाँ देखीं और जो
उन पर बैठे थे उन्हें न्याय करने का अधि-
कार दिया गया। हाँ, मैंने उन्हें देखा जिन्हें
यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के

19:12 *या "शाही पट्टियाँ।" **19:13** *या शायद, "खून छिड़का हुआ है।" **19:17** *या "पृथ्वी से थोड़ा ऊपर; सिर के ऊपर।"

अध्य. 19
1 प्रक 6:2
2 प्रक 1:5
3 यूह 1:14; प्रक 3:14
4 यश 11:4, 5; इब्र 1:8, 9
5 प्रक 1:13, 14
6 यूह 1:1
7 2थि 2:8; प्रक 1:13, 16
8 भज 2:9; प्रक 2:26, 27
9 योए 3:13; प्रक 14:19, 20
10 मत 28:18; फिल 2:9-11; 1ती 6:15; प्रक 17:14
11 यहे 39:4, 17

दूसरा कॉल.
1 यहे 39:18; यहे 39:20
2 प्रक 16:14, 16
3 प्रक 16:13
4 प्रक 13:16, 17
5 प्रक 13:15
6 मत 10:28; 2पत 2:6; यहू 7; प्रक 20:14
7 प्रक 2:16; प्रक 6:2
8 यहे 39:4

अध्य. 20
9 प्रक 9:1
10 प्रक 12:3
11 उत 3:1
12 यूह 8:44
13 जक 3:1; प्रक 12:9
14 प्रक 9:11
15 प्रक 20:7

बारे में बताने की वजह से मार डाला
गया था* और जिन्होंने न तो उस जंगली
जानवर की, न उसकी मूरत की पूजा की
थी और न अपने माथे पर और न अपने
हाथ पर उसका निशान लगवाया था।[1]
वे ज़िंदा हो गए और उन्होंने राजा बन-
कर मसीह के साथ 1,000 साल तक
राज किया।[2] **5** (और बाकी मरे हुए[3]
1,000 साल के खत्म होने तक ज़िंदा
नहीं हुए।) ये वे हैं जिन्हें मरे हुओं में
से सबसे पहले ज़िंदा किया जाता है।[4]
6 सुखी और पवित्र हैं वे जिन्हें मरे हुओं
में से सबसे पहले ज़िंदा किया जाता है।[5]
इन पर दूसरी मौत[6] का कोई अधिकार
नहीं,[7] मगर वे परमेश्वर और मसीह के
याजक होंगे[8] और राजा बनकर उसके
साथ 1,000 साल तक राज करेंगे।[9]

7 जैसे ही 1,000 साल खत्म होंगे,
शैतान को कैद से छोड़ा जाएगा **8** और
वह पृथ्वी की चारों दिशाओं में राष्ट्रों
को यानी गोग और मागोग को गुमराह
करने के लिए निकलेगा ताकि उन्हें युद्ध
के लिए इकट्ठा करे। उनकी गिनती समुं-
दर किनारे की रेत के किनकों जितनी
है। **9** वे सारी धरती पर फैल गए
और उन्होंने पवित्र जनों के डेरे और उस
प्यारी नगरी को घेर लिया। मगर स्वर्ग
से आग बरसी और वे भस्म हो गए।[10]
10 और उन्हें गुमराह करनेवाले शैतान
को आग और गंधक की झील में फेंक
दिया गया, जहाँ जंगली जानवर[11] और
झूठा भविष्यवक्ता पहले ही डाल दिए
गए थे।[12] और उन्हें रात-दिन हमेशा-
हमेशा के लिए तड़पाया जाएगा।*

11 और मैंने देखा कि एक बड़ी
सफेद राजगद्दी है और उस पर पर-
मेश्वर बैठा है।[1] उसके सामने से पृथ्वी
और आकाश भाग गए[2] और उन्हें कोई
जगह न मिली। **12** और मैंने मरे हुओं
को यानी छोटे-बड़े सबको राजगद्दी के
सामने खड़े देखा और किताबें* खोली
गयीं। फिर एक और किताब# खोली
गयी जो जीवन की किताब है।[3] उन
किताबों में लिखी बातों के मुताबिक, मरे
हुओं का उनके कामों के हिसाब से न्याय
किया गया।[4] **13** और समुंदर ने उन
मरे हुओं को जो उसमें थे, दे दिया और
मौत और कब्र* ने उन मरे हुओं को जो
उनमें थे, दे दिया और उनमें से हरेक
का उसके कामों के हिसाब से न्याय किया
गया।[5] **14** और मौत और कब्र* को
आग की झील में फेंक दिया गया।[6] इस
आग की झील[7] का मतलब है, दूसरी
मौत।[8] **15** और जिस किसी का नाम
जीवन की किताब में नहीं लिखा था,[9]
उसे आग की झील में फेंक दिया गया।[10]

21 फिर मैंने एक नए आकाश
और नयी पृथ्वी को देखा[11]
क्योंकि पुराना आकाश और पुरानी
पृथ्वी मिट चुके थे[12] और समुंदर[13] न
रहा। **2** मैंने पवित्र नगरी नयी यरू-
शलेम को भी देखा, जो स्वर्ग से पर-
मेश्वर के पास से नीचे उतर रही थी।[14]
वह ऐसे सजी हुई थी जैसे एक दुल्हन
अपने दूल्हे के लिए सिंगार करती है।[15]
3 फिर मैंने राजगद्दी से एक ज़ोरदार
आवाज़ सुनी जो कह रही थी, "देखो!
परमेश्वर का डेरा इंसानों के बीच है।
वह उनके साथ रहेगा और वे उसके लोग
होंगे। और परमेश्वर खुद उनके साथ

20:4 *शा., "कुल्हाड़े से मार डाला गया था।" **20:10** *या "बंदिश लगायी जाएगी; कैद किया जाएगा।"

20:12 *या "खर्रे।" #या "खर्रा।" **20:13, 14** *या "हेडीज़।" शब्दावली देखें।

अध्य. 20
1 प्रक 13:15-17
2 मत 19:28
लूक 22:28-30
2ती 2:12
प्रक 1:6
3 प्रेष 24:15
4 1कुर 15:23, 52
फिल 3:10, 11
1थि 4:16
5 प्रक 14:13
6 प्रक 2:11
प्रक 20:14
7 1कुर 15:54
8 1पत 2:9
9 प्रक 1:6
प्रक 5:9, 10
10 2रा 1:10
11 प्रक 13:1
12 प्रक 19:20

दूसरा कॉल.
1 प्रक 4:2, 3
2 2पत 3:7
3 निर्ग 32:33
भज 69:28
दान 12:1
4 यूह 5:28, 29
5 प्रेष 10:42
6 यश 25:8
1कुर 15:26
7 मत 5:22
मत 18:9
प्रक 21:8
8 प्रक 2:11
प्रक 20:6
9 प्रक 17:8
10 नीत 10:7

अध्य. 21
11 यश 65:17
यश 66:22
2पत 3:13
12 2पत 3:10
प्रक 20:11
13 यश 57:20
14 प्रक 3:12
15 प्रक 19:7

होगा।[1] **4** और वह उनकी आँखों से
हर आँसू पोंछ देगा[2] और न मौत रहेगी,[3]
न मातम, न रोना-बिलखना, न ही दर्द
रहेगा।[4] पिछली बातें खत्म हो चुकी हैं।"

5 और परमेश्वर ने, जो राजगद्दी
पर बैठा था,[5] कहा, "देख! मैं सब-
कुछ नया बना रहा हूँ।"[6] उसने यह भी
कहा, "ये बातें लिख ले क्योंकि ये भरोसे
के लायक* और सच्ची हैं।" **6** फिर
उसने मुझसे कहा, "ये वचन पूरे हो चुके
हैं! मैं ही अल्फा और ओमेगा* हूँ यानी
शुरूआत और अंत मैं ही हूँ।[7] जो कोई
प्यासा होगा उसे मैं जीवन देनेवाले पानी
के सोते से मुफ्त# पानी पिलाऊँगा।[8]
7 जो कोई जीत हासिल करेगा उसे
ये सारी चीज़ें विरासत में मिलेंगी। मैं
उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा
बेटा होगा। **8** लेकिन जो कायर हैं,
जो विश्वास नहीं करते,[9] जो अशुद्ध
और घिनौने काम करते हैं, कत्ल करते
हैं,[10] नाजायज़ यौन-संबंध* रखते हैं,[11]
जादू-टोना और मूर्तिपूजा में लगे रहते हैं
और झूठे हैं,[12] उन सबको उस झील में
फेंक दिया जाएगा जो आग और गंधक
से जलती रहती है।[13] इसका मतलब
दूसरी मौत है।"[14]

9 जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात
आखिरी कहर से भरे सात कटोरे थे,[15]
उनमें से एक स्वर्गदूत ने आकर मुझसे
कहा, "इधर आ, मैं तुझे दुल्हन दिखाता
हूँ, मेम्ने की दुल्हन।"[16] **10** तब वह
मुझे पवित्र शक्ति की ताकत से एक बड़े
और ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उसने
मुझे पवित्र नगरी यरूशलेम दिखायी
जो स्वर्ग से, परमेश्वर के पास से
नीचे उतर रही थी[1] **11** और पर-
मेश्वर की महिमा से भरपूर थी।[2] उसकी
चमक एक अनमोल रत्न जैसी थी,
बिल्लौर की तरह दमकते यशब जैसी।[3]
12 उसकी दीवार बहुत ही बड़ी और
ऊँची थी और उसमें 12 फाटक थे। उन
फाटकों पर 12 स्वर्गदूत थे और फाटकों
पर इसराएलियों के 12 गोत्रों के नाम
लिखे हुए थे। **13** पूरब में तीन फाटक
थे, उत्तर में तीन, दक्षिण में तीन और
पश्चिम में तीन फाटक थे।[4] **14** उस
नगरी की दीवार 12 नींव के पत्थरों पर
खड़ी थी और उन पत्थरों पर मेम्ने के
12 प्रेषितों के नाम लिखे थे।[5]

15 जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा
था, वह उस नगरी और उसके फाटकों
और दीवार को नापने के लिए सोने का
एक नरकट लिए हुए था।[6] **16** वह
नगरी चौकोर थी और उसकी लंबाई,
उसकी चौड़ाई के बराबर थी। और
उसने नरकट से उस नगरी को नापा
और वह करीब 2,220 किलोमीटर*
की निकली। उसकी लंबाई, चौड़ाई और
ऊँचाई बराबर थी। **17** उसने उसकी
दीवार भी नापी जो इंसान की नाप के
मुताबिक, साथ ही स्वर्गदूत की नाप के
मुताबिक 144 हाथ* थी। **18** उसकी
दीवारें यशब से बनी थीं[7] और वह
नगरी खरे सोने की थी और काँच जैसी
साफ थी। **19** उस नगरी की दीवार
की नींव हर तरह के कीमती रत्नों से
सजी हुई थीः नींव का पहला रत्न था
यशब, दूसरा नीलम, तीसरा लालड़ी,

21:5 *या "विश्वास के योग्य।" **21:6** *ये यूनानी वर्णमाला के पहले और आखिरी अक्षर हैं। #या "दाम लिए बिना।" **21:8** *शब्दावली देखें।

21:16 *शा., "12,000 स्तादियौन।" एक स्तादियौन 185 मी. (606.95 फुट) के बराबर था। अति. ख14 देखें। **21:17** *करीब 64 मी. (210 फुट)। अति. ख14 देखें।

अध्य. 21
1 यहे 37:27
2 प्रक 7:17
3 यश 25:8; 1कुर 15:26
4 यश 35:10; यश 65:19
5 प्रक 4:2, 3
6 2पत 3:13
7 प्रक 1:8; प्रक 22:13
8 भज 36:9; यश 55:1; प्रक 7:17; प्रक 22:1
9 1यूह 5:10
10 1यूह 3:15
11 इफ 5:5
12 यूह 8:44
13 प्रक 19:20
14 नीत 10:7; इब्र 10:26, 27; प्रक 2:11; प्रक 20:6
15 प्रक 15:1
16 प्रक 19:7

दूसरा कॉल.
1 इब्र 12:22; प्रक 3:12; प्रक 21:2
2 यश 60:1, 2
3 निर्ग 24:9, 10
4 प्रक 22:14
5 मत 10:2-4; लूक 6:13-16; प्रेष 1:13
6 यहे 40:3, 5
7 प्रक 4:3; प्रक 21:10, 11

चौथा पन्ना, **20** पाँचवाँ गोमेद, छठा
माणिक्य,* सातवाँ करकेटक, आठवाँ
वैदूर्य, नौवाँ पुखराज, दसवाँ लहसुनिया,
ग्यारहवाँ धूम्रकांत, बारहवाँ कटैला।
21 और उसके 12 फाटक 12 मोतियों
के थे। हर फाटक एक मोती से बना
था। और उस नगरी की मुख्य सड़क खरे
सोने की थी और आर-पार दिखनेवाले
साफ काँच जैसी थी।

22 मुझे उस नगरी में कोई मंदिर
नहीं दिखायी दिया क्योंकि सर्वशक्ति-
मान परमेश्वर यहोवा*[1] ही उसका
मंदिर है और मेम्ना भी है। **23** उस
नगरी को सूरज और चाँद की
रौशनी की ज़रूरत नहीं, क्योंकि वह पर-
मेश्वर की महिमा से जगमगाती है[2] और
मेम्ना उसका दीपक है।[3] **24** और सब
राष्ट्र उसकी रौशनी में चलेंगे[4] और
पृथ्वी के राजा अपना ऐश्वर्य इसमें
ले आएँगे। **25** उस नगरी के फाटक
दिन में बंद नहीं किए जाएँगे और
वहाँ रात होगी ही नहीं।[5] **26** और वे
राष्ट्रों की महिमा और उनकी शान उस
नगरी में ले आएँगे।[6] **27** मगर कोई
भी दूषित चीज़ और ऐसा कोई भी जो
घिनौने काम करता और छल करता
है, उस नगरी में हरगिज़ दाखिल नहीं
होगा।[7] सिर्फ वे ही दाखिल होंगे जिनके
नाम मेम्ने की जीवन की किताब* में
लिखे हैं।[8]

22 और उसने मुझे जीवन देने-
वाले पानी की नदी दिखायी[9] जो
बिल्लौर की तरह साफ थी और पर-
मेश्वर और मेम्ने की राजगद्दी से निकल-
कर बह रही थी।[10] **2** यह नदी उस
नगरी की मुख्य सड़क के बीचों-बीच बह
रही थी। नदी के दोनों तरफ जीवन के
पेड़ लगे थे जिनमें साल में 12 बार
यानी हर महीने फल लगते थे। उनकी
पत्तियाँ राष्ट्रों के लोगों के रोग दूर करने
के लिए थीं।[1]

3 और वहाँ फिर कभी किसी तरह
का शाप नहीं पड़ेगा। मगर उस नगरी
में परमेश्वर और मेम्ने की राजगद्दी
होगी[2] और परमेश्वर के दास उसकी
पवित्र सेवा करेंगे। **4** वे उसका चेहरा
देखेंगे[3] और उसका नाम उनके माथों पर
लिखा होगा।[4] **5** फिर कभी रात नहीं
होगी[5] और उन्हें दीपक या सूरज की
रौशनी की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि
यहोवा* परमेश्वर उन पर रौशनी चम-
काएगा[6] और वे हमेशा-हमेशा तक राजा
बनकर राज करेंगे।[7]

6 स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "ये वचन
भरोसे के लायक# और सच्चे हैं।[8] हाँ,
यहोवा* परमेश्वर जो भविष्यवक्ताओं
को प्रेरित करता है,[9] उसने अपना स्वर्ग-
दूत भेजा ताकि अपने दासों को वह
बातें दिखाए जो बहुत जल्द होनेवाली हैं।
7 देख! मैं बहुत जल्द आ रहा हूँ।[10]
सुखी है वह जो इस खर्रे की भविष्य-
वाणी के वचनों को मानता है।"[11]

8 मैं यूहन्ना, ये बातें देख और सुन
रहा था। और जब मैं देख और सुन चुका,
तो जो स्वर्गदूत मुझे ये सारी बातें दिखा
रहा था, मैं उसकी उपासना करने के लिए
उसके पैरों पर गिर पड़ा। **9** मगर उसने
मुझसे कहा, "नहीं, नहीं, ऐसा मत कर!
मैं तो सिर्फ तेरे और तेरे भाइयों यानी
भविष्यवक्ताओं की तरह एक दास हूँ, जो
इस खर्रे में लिखे वचनों पर चलते हैं। पर-
मेश्वर की उपासना कर।"[12]

अध्य. 21
1 निर्ग 6:3
2 यश 60:19, 20; प्रक 22:5
3 यूह 1:9; प्रेष 26:13, 15; इब्र 1:3
4 यश 60:3
5 यश 60:11, 20
6 यश 60:5
7 भज 5:6; यश 52:1; 1कुर 6:9, 10; गल 5:19-21; प्रक 21:8
8 दान 12:1; फिल 4:3; प्रक 13:8

अध्य. 22
9 यहे 47:1
10 यूह 1:29

दूसरा कॉल.
1 यहे 47:12
2 प्रक 3:21
3 मत 5:8
4 प्रक 14:1
5 प्रक 21:25
6 यश 60:19, 20; 1यूह 1:5
7 दान 7:18; प्रक 3:21
8 तीत 1:2
9 2ती 3:16
10 प्रक 16:15; प्रक 22:20
11 यूह 13:17; प्रक 1:3
12 मत 4:10; प्रेष 10:25, 26; प्रक 19:10

21:20 *या "लाल रंग का एक कीमती रत्न।" **21:22; 22:5, 6** *अति. क5 देखें। **21:27** *या "के खर्रे।"

22:6 #या "विश्वास के योग्य।"

10 उसने मुझसे यह भी कहा, “इस
खर्रे में लिखी भविष्यवाणी के वचनों पर
मुहर मत लगा, क्योंकि तय किया गया
वक्त पास आ गया है। 11 जो बुरे
काम करता है वह बुराई में लगा रहे।
जिसका चालचलन गंदा है वह गंदे कामों
में लगा रहे। मगर जो नेक है वह नेक
कामों में लगा रहे और जो पवित्र है वह
पवित्र होता जाए।

12 ‘देख! मैं बहुत जल्द आ रहा हूँ
और मेरे पास वह इनाम है जो मैं हरेक
को उसके काम के हिसाब से देता हूँ।[1]
13 मैं ही अल्फा और ओमेगा* हूँ,[2]
मैं ही पहला और आखिरी, शुरूआत
और अंत हूँ। 14 सुखी हैं वे जिन्होंने
अपने चोगे धोए हैं[3] ताकि उन्हें जीवन के
पेड़ों का फल खाने का अधिकार मिले[4]
और वे उस नगरी में उसके फाटकों से
दाखिल हो सकें।[5] 15 मगर कुत्ते,*
जादू-टोना करनेवाले, नाजायज़ यौन-
संबंध# रखनेवाले, कातिल, मूर्तिपूजा
करनेवाले, झूठ बोलनेवाले और झूठ
को पसंद करनेवाले उस नगरी के बाहर
होंगे।’[6]

16 ‘मुझ यीशु ने ही अपना स्वर्ग-
दूत भेजकर तुम्हें ये बातें बतायीं ताकि
मंडलियों का भला हो। मैं दाविद की
जड़ और उसका वंश हूँ[1] और सुबह का
चमकता तारा हूँ।’”[2]

17 और पवित्र शक्ति और वह
दुल्हन[3] कहती रहती हैं, “आ!” और
सुननेवाला हर कोई कहे, “आ!” और
हर कोई जो प्यासा हो वह आए।[4] जो
कोई चाहे वह जीवन देनेवाला पानी मुफ्त
में ले ले।[5]

18 “मैं इस खर्रे की भविष्यवाणी के
वचनों को सुननेवाले हर किसी को यह
गवाही देता हूँ: अगर कोई इन बातों
में कुछ जोड़ता है,[6] तो परमेश्वर इस
खर्रे में लिखे कहर उस पर ले आएगा।[7]
19 और अगर कोई भविष्यवाणी के इस
खर्रे के वचनों में से कुछ निकालेगा, तो
परमेश्वर उसे इस खर्रे में लिखी अच्छी
बातें नहीं देगा यानी उसे जीवन के पेड़ों[8]
में से खाने नहीं देगा और पवित्र नगरी[9]
में दाखिल नहीं होने देगा।

20 जो इन बातों की गवाही देता है,
वह कहता है, ‘हाँ, मैं बहुत जल्द आ
रहा हूँ।’”[10]

“आमीन! प्रभु यीशु, आ।”

21 प्रभु यीशु की महा-कृपा पवित्र
जनों पर होती रहे।

22:13 *ये यूनानी वर्णमाला के पहले और आखिरी अक्षर हैं। **22:15** *यानी वे लोग जिनके काम परमेश्वर की नज़र में घिनौने हैं। #शब्दावली देखें।

अध्य. 22

1 भज 62:12, यश 40:10, रोम 2:6
2 यश 44:6, यश 48:12, प्रक 1:8, प्रक 21:6
3 1यूह 1:7
4 प्रक 2:7
5 प्रक 21:10, 12
6 गल 5:19-21, इफ 5:5, प्रक 21:8

दूसरा कॉल.

1 यश 11:1, 10, यश 53:2, यिर्म 23:5, यिर्म 33:15, प्रक 5:5
2 गि 24:17, प्रक 2:28
3 प्रक 21:9
4 यूह 4:14
5 यश 55:1, यूह 7:37, प्रक 7:17, प्रक 21:6
6 व्य 4:2, व्य 12:32, गल 1:8, 1यूह 4:3, 2यूह 9
7 प्रक 15:1
8 प्रक 2:7
9 प्रक 21:2
10 प्रक 3:11, प्रक 22:7

बाइबल की किताबों की सूची

ईसा पूर्व की इब्रानी शास्त्र की किताबें

किताब का नाम	लेखक	लिखने की जगह	लिखना पूरा हुआ (ई.पू.)	कितने समय का ब्यौरा (ई.पू.)
उत्पत्ति	मूसा	वीराना	1513	"शुरूआत" से 1657
निर्गमन	मूसा	वीराना	1512	1657-1512
लैव्यव्यवस्था	मूसा	वीराना	1512	1 महीना (1512)
गिनती	मूसा	वीराना और मोआब के मैदान	1473	1512-1473
व्यवस्थाविवरण	मूसा	मोआब के मैदान	1473	2 महीने (1473)
यहोशू	यहोशू	कनान	क. 1450	1473-क. 1450
न्यायियों	शमूएल	इसराएल	क. 1100	क. 1450-क. 1120
रूत	शमूएल	इसराएल	क. 1090	न्यायियों के 11 साल
1 शमूएल	शमूएल; गाद; नातान	इसराएल	क. 1078	क. 1180-1078
2 शमूएल	गाद; नातान	इसराएल	क. 1040	1077-क. 1040
1 राजा	यिर्मयाह	[यहूदा और	[1 खर्रा	क. 1040-580
2 राजा	यिर्मयाह	[मिस्र	[580	
1 इतिहास	एज्रा	यरूशलेम (?)	[1 खर्रा	[1 इत 9:44 के बादः
2 इतिहास	एज्रा	यरूशलेम (?)	[क. 460	[क. 1077-537
एज्रा	एज्रा	यरूशलेम	क. 460	537-क. 467
नहेमायाह	नहेमायाह	यरूशलेम	443 ब.	456-443 ब.
एस्तेर	मोर्दकै	शूशन, एलाम	क. 475	493-क. 475
अय्यूब	मूसा	वीराना	क. 1473	140 साल से भी ज़्यादा 1657-1473 के बीच
भजन	दाविद; दूसरे लोग		क. 460	
नीतिवचन	सुलैमान; आगूर; लमूएल	यरूशलेम	क. 717	
सभोपदेशक	सुलैमान	यरूशलेम	1000 प.	
श्रेष्ठगीत	सुलैमान	यरूशलेम	क. 1020	
यशायाह	यशायाह	यरूशलेम	732 ब.	क. 778-732 ब.
यिर्मयाह	यिर्मयाह	यहूदा; मिस्र	580	647-580
विलापगीत	यिर्मयाह	यरूशलेम के पास	607	
यहेजकेल	यहेजकेल	बैबिलोन	क. 591	613-क. 591
दानियेल	दानियेल	बैबिलोन	क. 536	618-क. 536
होशे	होशे	सामरिया (ज़िला)	745 ब.	804 प.-745 ब.
योएल	योएल	यहूदा	क. 820 (?)	
आमोस	आमोस	यहूदा	क. 804	
ओबद्याह	ओबद्याह		क. 607	
योना	योना		क. 844	
मीका	मीका	यहूदा	717 प.	क. 777-717
नहूम	नहूम	यहूदा	632 प.	
हबक्कूक	हबक्कूक	यहूदा	क. 628 (?)	
सपन्याह	सपन्याह	यहूदा	648 प.	
हाग्गै	हाग्गै	दोबारा बना यरूशलेम	520	112 दिन (520)
जकरयाह	जकरयाह	दोबारा बना यरूशलेम	518	520-518
मलाकी	मलाकी	दोबारा बना यरूशलेम	443 ब.	

बाइबल की किताबों की सूची

ईसवी सन् में लिखी यूनानी शास्त्र की किताबें

किताब का नाम	लेखक	लिखने की जगह	लिखना पूरा हुआ (ई.)	कितने समय का ब्यौरा
मत्ती	मत्ती	इसराएल	क. 41	ई.पू. 2-ई. 33
मरकुस	मरकुस	रोम	क. 60-65	ई. 29-33
लूका	लूका	कैसरिया	क. 56-58	ई.पू. 3-ई. 33
यूहन्ना	प्रेषित यूहन्ना	इफिसुस या आस-पास	क. 98	पहली 18 आयतों के बाद, ई. 29-33
प्रेषितों	लूका	रोम	क. 61	33-क. ई. 61
रोमियों	पौलुस	कुरिंथ	क. 56	
1 कुरिंथियों	पौलुस	इफिसुस	क. 55	
2 कुरिंथियों	पौलुस	मकिदुनिया	क. 55	
गलातियों	पौलुस	कुरिंथ या सीरिया का अंताकिया	क. 50-52	
इफिसियों	पौलुस	रोम	क. 60-61	
फिलिप्पियों	पौलुस	रोम	क. 60-61	
कुलुस्सियों	पौलुस	रोम	क. 60-61	
1 थिस्सलुनीकियों	पौलुस	कुरिंथ	क. 50	
2 थिस्सलुनीकियों	पौलुस	कुरिंथ	क. 51	
1 तीमुथियुस	पौलुस	मकिदुनिया	क. 61-64	
2 तीमुथियुस	पौलुस	रोम	क. 65	
तीतुस	पौलुस	मकिदुनिया (?)	क. 61-64	
फिलेमोन	पौलुस	रोम	क. 60-61	
इब्रानियों	पौलुस	रोम	क. 61	
याकूब	याकूब (यीशु का भाई)	यरूशलेम	62 प.	
1 पतरस	पतरस	बैबिलोन	क. 62-64	
2 पतरस	पतरस	बैबिलोन (?)	क. 64	
1 यूहन्ना	प्रेषित यूहन्ना	इफिसुस या आस-पास	क. 98	
2 यूहन्ना	प्रेषित यूहन्ना	इफिसुस या आस-पास	क. 98	
3 यूहन्ना	प्रेषित यूहन्ना	इफिसुस या आस-पास	क. 98	
यहूदा	यहूदा (यीशु का भाई)	इसराएल (?)	क. 65	
प्रकाशितवाक्य	प्रेषित यूहन्ना	पतमुस	क. 96	

[कुछ किताबों के बारे में पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता कि उन्हें किसने लिखा था या वे कहाँ लिखी गयी थीं। कई तारीखें सिर्फ आस-पास के साल हैं। ब. का मतलब है "के बाद।" प. का मतलब है "के पहले" और क. का मतलब है "करीब।" ई.पू. का मतलब है, "ईसा पूर्व।" ई. का मतलब है "ईसवी सन्।"]

फुटनोट में और दूसरी जगह इस्तेमाल हुए चिन्ह

अति.	अतिरिक्त लेख
फु.	फुटनोट
शा.	शाब्दिक
आय.	आयत
सें.मी.	सेंटीमीटर
ग्रा.	ग्राम
कि.मी.	किलोमीटर
ली.	लीटर
मी.	मीटर
उप.	उपरिलेख
दूसरा कॉल.	दूसरा कॉलम
अध्य.	अध्याय

बाइबल के शब्दों की सूची

बाइबल की किताबों के छोटे नामों की सूची के लिए पेज 40 देखें।

अ

अंकुर, यिर्म 23:5 दाविद के वंश से नेक **अं.**
अंग, 1कुर 12:18 परमेश्वर ने हर **अं.** को
अंगारों, रोम 12:20 सिर पर **अं.** का ढेर लगाएगा
अंगूरों का बाग, यश 65:21 **अं.** लगाएँगे और फल खाएँगे
मत 20:1 **अं.** में मज़दूर लगाए
मत 21:28 बेटा जा, आज **अं.** में काम कर
लूक 20:9 एक आदमी ने **अं.** लगाया और
अंजाम, भज 73:17 मैंने दुष्टों के **अं.** के बारे में सोचा
नीत 27:12 नादान **अं.** भुगतता है
यश 55:11 मेरा वचन उसे ज़रूर **अं.** देगा
अंजीर का पेड़, 1रा 4:25 अपने **अं.** तले चैन से
मी 4:4 अंगूरों की बेल और अपने **अं.** तले
मत 21:19 **अं.** उसी घड़ी सूख गया
मर 13:28 **अं.** की मिसाल से यह बात सीखो
अंत, यश 46:10 **अं.** में क्या होगा, शुरू में बता देता हूँ
यहे 21:27 **अं.** कर दूँगा, **अं.**। हाँ, **अं.** कर दूँगा!
मत 24:14 इसके बाद **अं.** आ जाएगा
अंदर, रोम 7:22 मेरे **अं.** का इंसान वाकई
2कुर 4:16 **अं.** का इंसान नया होता जा रहा है
इफ 3:16 **अं.** का इंसान शक्तिशाली होता जाए
अंदरूनी समझ, भज 119:99 सबसे ज़्यादा **अं.** मुझमें है
नीत 19:11 **अं.** उसे गुस्सा करने से रोकती है
दान 12:3 जिनमें **अं.** है वे तेज़ चमकेंगे
अंधकार, सप 1:15 घोर **अं.** का दिन
मत 4:16 लोग **अं.** में बैठे थे, रौशनी देखी
यूह 3:19 लोगों ने **अं.** से प्यार किया
इफ 4:18 वे दिमागी तौर पर **अं.** में हैं
1पत 2:9 तुम्हें **अं.** से निकालकर
अंधा, उत 19:11 आदमियों को **अं.** कर दिया
लैव 19:14 न **अं.** के रास्ते में रोड़ा अटकाना
यश 35:5 **अं.** की आँखें खोली जाएँगी
मत 15:14 खुद **अं.** हैं, दूसरों को राह दिखाते हैं
2कुर 4:4 व्यवस्था के ईश्वर ने बुद्धि **अं.** कर दी
अंधाधुंध, 1कुर 9:26 मैं **अं.** यहाँ-वहाँ नहीं दौड़ता
अँधेरा, यश 60:2 धरती पर **अँ.** होनेवाला है
योए 2:31 सूरज पर **अँ.** छा जाएगा
अकाल, भज 37:19 **अ.** के समय भरपूर खाना
आम 8:11 **अ.** भेजूँगा, रोटी और पानी के लिए नहीं
मत 24:7 कई जगह **अ.** पड़ेंगे
अकेला, यूह 16:32 **अ.** छोड़ दोगे। फिर भी मैं **अ.** नहीं
अक्ल, लूक 15:17 जब उसकी **अ.** ठिकाने आयी
अक्विला, प्रेष 18:2 **अ.** नाम का एक यहूदी
अगवा करनेवाले, व्य 24:7 **अ.** को मार डाला जाए
अगुवा, नीत 28:16 **अ.**, ताकत का गलत इस्तेमाल
मत 23:10 तुम्हारा एक ही **अ.** है, मसीह
अगुवाई, रोम 12:8 जो **अ.** करता है पूरी मेहनत से करे
1थि 5:12 जो **अ.** करते हैं उनका आदर करो
इब्र 13:7, 17 जो तुम्हारे बीच **अ.** करते हैं
अच्छा, उत 3:5 जान लोगे कि **अ.** क्या है और बुरा क्या
रोम 5:7 **अ.** इंसान के लिए कोई अपनी जान देने की
रोम 7:19 जो **अ.** काम करना चाहता हूँ, नहीं करता
इफ 1:5 जैसा उसे **अ.** लगा उसने अपनी मरज़ी
अच्छी, नीत 31:29 **अ.** औरतें तो बहुत हैं
अजगर, प्रक 12:9 **अ.**, पुराना साँप फेंक दिया गया
अजनबियों, यूह 10:5 **अ.** की आवाज़ नहीं पहचानतीं
अजाजेल, लैव 16:8 **अ.** के लिए चिट्ठी
अटकलें, 1ती 1:4 सिर्फ **अ.** लगाने का बढ़ावा
अटल, 1कुर 15:58 **अ.** बनो, डटे रहो
अटल प्यार, निर्ग 34:6 यहोवा **अ.** से भरपूर है
भज 13:5 मुझे तेरे **अ.** पर पूरा भरोसा है
भज 136:1-26 उसका **अ.** सदा बना रहता है
हो 6:6 मैं **अ.** से खुश होता हूँ, बलिदान से नहीं
अड़ जाता, नीत 17:9 जो एक ही बात पर **अ.** है
अड्डा, मत 21:13 लुटेरों का **अ.** बना रहे हो
अति प्राचीन, दान 7:9 **अ.** विराजमान हुआ
अत्याचार, भज 72:14 **अ.** और ज़ुल्म से छुड़ाएगा
अथाह-कुंड, प्रक 11:7 जंगली जानवर **अ.** से निकला
प्रक 17:8 जंगली जानवर **अ.** से जल्द निकलेगा
प्रक 20:3 उसे **अ.** में फेंक दिया
अदन, उत 2:8 परमेश्वर ने **अ.** में बाग लगाया
अदालत, दान 7:10 **अ.** की कार्रवाई शुरू हुई
मर 13:9 लोग तुम्हें **अ.** के हवाले कर देंगे
1कुर 6:6 भाई भाई को **अ.** ले जाता है
अदृश्य, यूह 4:24 परमेश्वर **अ.** है
1कुर 15:44 **अ.** शरीर देकर ज़िंदा किया
2कुर 3:17 यहोवा **अ.** है
इब्र 11:27 **अ.** परमेश्वर को मानो देखता हुआ
1पत 3:18 तो उसे **अ.** शरीर दिया गया
अधिकार, उत 1:28 सब जीव-जंतुओं पर **अ.** रखो
भज 119:133 दुष्टता को मुझ पर **अ.** न करने दे
मत 28:18 सारा **अ.** मुझे दिया गया है
लूक 4:6 मैं इन सबका **अ.** तुझे दूँगा
1कुर 6:19 तुम्हारा खुद पर **अ.** नहीं है
1कुर 9:18 **अ.** का गलत इस्तेमाल न करूँ
2पत 2:10 **अ.** रखनेवालों को तुच्छ समझते हैं
अधिकारी, प्रेष 4:26 **अ.** ने उनका विरोध किया
रोम 13:1 ऊँचे **अ.** के अधीन रहे
तीत 3:1 **अ.** की आज्ञा मानें, हर अच्छे काम

आ

इ

हब 2:3 देर हो रही है, तब भी **इं.** करना
रोम 8:25 बेसब्री से उसका **इं.** करते हैं
इंसान का बेटा, दान 7:13 **इं.** जैसा बादलों के साथ
मत 10:23 **इं.** आ जाएगा
लूक 21:27 **इं.** को बादल में आता देखेंगे
इंसानी सोच, 1कुर 2:14 **इं.** रखनेवाला स्वीकार नहीं
इंसानों को पकड़ना, मत 4:19 मैं तुम्हें **इं.** बनाऊँगा
लूक 5:10 तू जीते-जागते **इं.** करेगा
इंसाफ, नीत 29:4 राजा **इं.** करता है, देश में शांति
लूक 18:7 क्या परमेश्वर **इं.** नहीं करेगा
प्रेष 28:4 **इं.** ने इसकी जान नहीं बख्शी
इकट्ठा, इफ 1:10 सबकुछ मसीह में **इ.** करे
इब्र 10:25 एक-दूसरे के साथ **इ.** होना न छोड़ें
इकलौता, यूह 1:18 **इ.** बेटे ने, जो एक ईश्वर है
यूह 3:16 अपना **इ.** बेटा दे दिया ताकि
इच्छा, 1इत 29:17 अपनी **इ.** से सारी चीज़ें भेंट
भज 51:12 ऐसी **इ.** जगा कि मैं तेरी आज्ञा मानूँ
भज 110:3 लोग अपनी **इ.** से खुद को पेश करेंगे
भज 145:16 हरेक जीव की **इ.** पूरी करता है
रोम 7:18 भला काम करने की **इ.** तो मेरे अंदर है
रोम 12:2 उसकी परिपूर्ण **इ.** क्या है
2कुर 8:12 अगर इंसान देने की **इ.** रखता है
गल 5:16 शरीर की **इ.** को पूरा न करोगे
इफ 2:3 शरीर की **इ.** के मुताबिक
फिल 2:13 तुम्हारे अंदर **इ.** पैदा करता है
2ती 2:22 जवानी में उठनेवाली **इ.** से भाग
याकू 1:14 **इ.** उसे खींचती और लुभाती है
1पत 2:11 शरीर की **इ.** से खुद को दूर रखो
इज़ेबेल, 1रा 21:23 **इ.** की लाश कुत्ते खा जाएँगे
प्रक 2:20 तू **इ.** को बरदाश्त करता है
इनकार, मत 16:24 वह खुद से **इ.** करे
मर 14:30 तीन बार मुझे जानने से **इ.** कर देगा
तीत 1:16 काम दिखाते कि वे परमेश्वर का **इ.** करते
इनाम, 1कुर 9:24 **इ.** एक ही को मिलता है
कुल 2:18 कोई भी तुम्हें **इ.** से दूर न कर दे
कुल 3:24 यहोवा से ही तुम्हें **इ.** मिलेगा
इब्र 11:6 वह उन लोगों को **इ.** देता है
इफिसुस, 1कुर 15:32 **इ.** में जंगली जानवरों से लड़ा
इमारत, 1कुर 3:10 वह किस तरह **इ.** खड़ी कर रहा है
इरादा, 1इत 28:9 हर विचार और **इ.** को जानता है
नीत 16:2 यहोवा **इ.** को जाँचता है
इलज़ाम, रोम 8:33 कौन **इ.** लगा सकता है?
1ती 5:19 बुज़ुर्ग आदमी पर लगाए गए **इ.**
तीत 1:7 निगरानी करनेवाले पर कोई **इ.** नहीं
इलाज, लूक 4:23 वैद्य, पहले खुद का **इ.** कर
इसराएल, उत 35:10 तेरा नाम **इ.** होगा
भज 135:4 **इ.** को अपनी खास जागीर बनाया
गल 6:16 परमेश्वर के **इ.** पर दया हो
इसहाक, उत 22:9 बेटे **इ.** के हाथ-पैर बाँध दिए
इस्तेमाल, 1कुर 7:31 दुनिया का **इ.** करनेवाले

ई

ईमानदारी, 2कुर 8:21 हर काम **ई.** से करने के लिए
इब्र 13:18 सब बातों में **ई.** से काम करना
ईश्वर, व्य 10:17 यहोवा सब **ई.** से महान **ई.**
2कुर 4:4 दुनिया की व्यवस्था के **ई.** ने अंधी

उ

उँगली, निर्ग 31:18 परमेश्वर ने अपनी **उँ.** से लिखा
उकाब, यश 40:31 **उ.** की तरह ऊँची उड़ान भरेंगे
उछाले, इफ 4:14 झूठी बातों की लहरों से **उ.** जाते
उज्जियाह, 2इत 26:21 राजा **उ.** कोढ़ी रहा
उतावली, नीत 14:29 जो **उ.** करता, मूर्खता दिखाता
नीत 29:20 इंसान जो बोलने में **उ.** करता है
याकू 1:19 बोलने में **उ.** न करे
उत्तर का राजा, दान 11:7 **उ.** के किले पर हमला
दान 11:40 **उ.** रथों के साथ टूट पड़ेगा
उदारता, याकू 1:5 परमेश्वर **उ.** से देता है
उदास, 2कुर 7:9 **उ.** होने से परमेश्वर खुश हुआ
उदासी, सभ 7:3 चेहरे की **उ.** मन को सुधारती है
2कुर 2:7 हद-से-ज़्यादा **उ.** में डूब जाए
उद्धार, 2इत 20:17 यहोवा कैसे तुम्हारा **उ.** करता है
भज 3:8 **उ.** करनेवाला यहोवा ही है
लूक 19:10 इंसान का बेटा ढूँढ़ने और **उ.** करने आया
प्रेष 4:12 किसी और के ज़रिए **उ.** नहीं
रोम 10:13 जो यहोवा का नाम पुकारता, **उ.** पाएगा
रोम 13:11 **उ.** का वक्त और भी पास आ गया है
फिल 2:12 अपने **उ.** के लिए काम करते जाओ
1ती 4:16 अपना और सुननेवालों का **उ.** करेगा
प्रक 7:10 **उ.** के लिए परमेश्वर का एहसान
उद्धारकर्ता, 2शम 22:3 मेरा ऊँचा गढ़ है, **उ.** है
प्रेष 5:31 खास अगुवा और **उ.** ठहराया
उधार, भज 37:21 दुष्ट **उ.** लेता है, लौटाता नहीं
नीत 19:17 गरीब पर दया, यहोवा को **उ.**
नीत 22:7 **उ.** लेनेवाला, **उ.** देनेवाले का गुलाम
लूक 6:35 **उ.** देते रहो और बदले में कुछ पाने की
उप-पत्नियाँ, 1रा 11:3 700 पत्नियाँ और 300 **उ.**
उपवास, यश 58:6 मैं जो **उ.** चाहता हूँ वह यह है
लूक 18:12 मैं हफ्ते में दो बार **उ.** करता हूँ
उपासना, मत 4:10 अपने परमेश्वर यहोवा की **उ.** कर
यूह 4:24 पवित्र शक्ति और सच्चाई से **उ.**
उभारा, निर्ग 35:21 जिसके दिल ने उसे **उ.**
उम्मीद, नीत 13:12 जब **उ.** पूरी होने में देर होती है
उम्र ढल जाए, भज 71:9 जब मेरी **उ.** तो तू मुझे
उलझन, फिल 1:23 बड़ी **उ.** में हूँ कि दोनों में से
याकू 1:8 **उ.** में रहता है, डाँवाँडोल होता है

ऊ

ऊँचा सुनने, इब्र 5:11 तुम **ऊँ.** लगे हो
ऊँचे, रोम 13:1 **ऊँ.** अधिकारियों के अधीन रहे
ऊँचे खानदान, 1कुर 1:26 जो **ऊँ.** में पैदा हुए हैं
ऊँट, मत 19:24 **ऊँ.** का सुई के छेद से

ऊन, न्या 6:37 अगर **ऊ.** पर ओस पड़ी
ऊरीम और तुम्मीम, निर्ग 28:30 सीनेबंद में **ऊ.**

ए

एक, भज 133:1 भाइयों का **ए.** होकर रहना
1कुर 8:6 **ए.** परमेश्वर पिता, **ए.** प्रभु यीशु
एकता, 1कुर 1:10 तुम्हारे बीच **ए.** हो
इफ 4:3 **ए.** के उस बंधन में
इफ 4:13 विश्वास में **ए.** हासिल न कर लें
फिल 2:2 तुममें पूरी **ए.** हो
एकमत, प्रेष 15:25 **ए.** होकर तय किया
एज्रा, एज 7:11 याजक **ए.** अच्छी समझ रखता था
एलियाह, याकू 5:17 **ए.** भी हमारी तरह इंसान था
एली, 1शम 1:3 **ए.** के बेटे, याजकों के नाते
एसाव, उत 25:34 **ए.** ने पहलौठे के अधिकार को तुच्छ
इब्र 12:16 **ए.** की तरह पवित्र चीज़ों की कदर नहीं की
एहसान, 1ती 1:12 यीशु का मैं **ए.** मानता हूँ
एहसान-फरामोश, नीत 29:21 सिर चढ़ाया जाए, तो **ए.**
एहसान-भरे दिल, भज 27:4 **ए.** से देखता रहूँ
एहसानमंद, कुल 3:15 दिखाओ कि तुम कितने **ए.** हो
एहसास, 1रा 8:47 गलती का **ए.** हो और लौट आएँ

ऐ

ऐयाशी, लूक 15:13 उसने **ऐ.** में सारी संपत्ति उड़ा दी
प्रक 18:7 बेशर्म होकर जो **ऐ.** कीं
ऐलान, निर्ग 9:16 अपने नाम का **ऐ.** करा सकूँ
रोम 10:10 उद्धार पाने के लिए **ऐ.** करता है
1कुर 11:26 प्रभु की मौत का **ऐ.** करते हो
इब्र 10:23 अपनी आशा का **ऐ.** करते रहें
ऐशो-आराम, लूक 8:14 **ऐ.** उन्हें भटका देता

ओ

ओस की बूँदों, व्य 32:2 मेरी बातें **ओ.** की तरह
भज 110:3 जवान **ओ.** के समान हैं

औ

औरत, उत 3:15 तेरे और **औ.** के बीच दुश्मनी
व्य 31:12 आदमियों, **औ.**, सबको इकट्ठा करना
नीत 31:3 दमखम **औ.** पर बरबाद मत करना
सभ 7:26 **औ.** जो मौत से ज़्यादा दुख देती
प्रक 12:1 एक **औ.** सूरज ओढ़े हुए थी

क

कंजूस, नीत 23:6 **कं.** के यहाँ खाना मत खाना
कँटीली झाड़ी, प्रेष 7:30 **कँ.** की लपटों में प्रकट
कंधे-से-कंधा मिलाकर, सप 3:9 **कं.** सेवा करें
कचरा, 1कुर 4:13 दुनिया का **क.** समझा जाता है
कच्ची उम्र, 1कुर 7:36 जवानी की **क.** पार कर चुका
कटाई, हो 8:7 हवा बोते हैं, आँधी की **क.** करेंगे
मत 9:37 **क.** के लिए फसल बहुत, मज़दूर थोड़े
कठोर, इब्र 3:13 पाप की ताकत की वजह से **क.**
कठोरता, मर 3:5 दिलों की **क.** देखकर दुखी
कदम, यिर्म 10:23 अधिकार नहीं कि वह अपने **क.** को
गल 6:1 कोई इंसान गलत **क.** उठाए
कदर, 1थि 5:13 प्यार से उनकी **क.** करो
कपट, रोम 12:9 तुम्हारे प्यार में **क.** न हो
कपटी, नीत 3:32 यहोवा **क.** लोगों से नफरत करता है
कपड़े, याकू 2:15 भाई या बहन के पास **क.** न हों
कबूतर, मत 3:16 पवित्र शक्ति को **क.** के रूप में उतरते
मत 10:16 **क.** की तरह सीधे बने रहो
कब्र, अय 14:13 तू मुझे **क.** में छिपा ले
सभ 9:10 **क.** में न कोई काम है, न बुद्धि
हो 13:14 मैं उन्हें **क.** से छुड़ाऊँगा
प्रेष 2:31 मसीह को **क.** में नहीं छोड़ा जाएगा
प्रक 1:18 मौत और **क.** की चाबियाँ
प्रक 20:13 मौत और **क.** ने मरे हुओं को दे दिया
कम उम्र, 1ती 4:12 तेरी **क.** की वजह से तुझे नीची
कमज़ोर, रोम 14:1 जिसका विश्वास **क.** है, उसे
1कुर 1:27 परमेश्वर ने **क.** को चुना
2कुर 12:10 जब मैं **क.** होता हूँ, तभी ताकतवर
1थि 5:14 **क.** को सहारा दो, सब्र से पेश आओ
कमज़ोरियाँ, रोम 15:1 उनकी **क.** सहें जो मज़बूत नहीं
कम पढ़े-लिखे, प्रेष 4:13 पतरस और यूहन्ना **क.** हैं
कमरबंद, यश 11:5 नेकी का **क.**
कमरे, यश 26:20 मेरे लोगो, अंदरवाले **क.** में जाओ
कमाई, सभ 5:10 मन अपनी **क.** से नहीं भरता
कर, मत 17:25 राजा **क.** किससे लेते हैं?
लूक 20:22 सम्राट को **क.** देना सही है या नहीं?
लूक 23:2 सम्राट को **क.** देने से मना करता है
रोम 13:6 तुम **क.** भी अदा करते हो
रोम 13:7 जो **क.** की माँग करता है उसे **क.** चुकाओ
कर-वसूलनेवाले, मत 18:17 वह तेरे लिए **क.** जैसा ठहरे
लूक 18:11 धन्यवाद कि मैं इस **क.** जैसा नहीं हूँ
करार, उत 15:18 यहोवा ने अब्राम के साथ **क.** किया
यिर्म 31:31 मैं एक नया **क.** करूँगा
लूक 22:20 नया **क.** खून से पक्का किया
लूक 22:29 मैं भी तुम्हारे साथ एक **क.** करता हूँ
कराहना, निर्ग 2:24 परमेश्वर ने उनका **क.** सुना
यहे 9:4 जो आहें भरते और **क.** हैं
रोम 8:22 सारी सृष्टि **क.** है
करीब, भज 73:28 परमेश्वर के **क.** जाना भला है
भज 145:18 यहोवा उनके **क.** रहता है जो उसे
याकू 4:8 परमेश्वर के **क.** आओ
करुणा, निर्ग 34:6 यहोवा, दयालु और **क.** से भरा
कुल 3:12 **क.** से भरपूर गहरे लगाव
करूब, उत 3:24 **क.** तैनात किए और तलवार रखी
यहे 28:14 अभिषेक करके तुझे **क.** ठहराया
कर्ज़दार, रोम 1:14 बुद्धिमानों और मूर्खों का **क.** हूँ
रोम 13:8 प्यार के अलावा किसी बात में **क.** मत बनो
कल, नीत 27:1 **क.** के बारे में शेखी मत मार
1कुर 15:32 खाएँ-पीएँ, **क.** तो मरना ही है
कवच, इफ 6:14 नेकी का **क.**

ख

ग

गर्व, 1कुर 1:31 यहोवा के बारे में **ग.** करे
2थि 1:4 हम तुम पर **ग.** करते हैं
गलती, याकू 3:2 हम सब कई बार **ग.** करते हैं
गवाह, लैव 5:1 अपराध का **ग.** है मगर नहीं बताता
व्य 19:15 दो या तीन **ग.** के बयान
मत 18:16 दो या तीन **ग.** के बयान
प्रक 11:3 दो **ग.**, 1,260 दिन तक भविष्यवाणी
गवाही, मत 24:14 राज का प्रचार ताकि **ग.** दी जाए
यूह 7:7 नफरत करती है क्योंकि मैं **ग.** देता हूँ
यूह 18:37 कि सच्चाई की **ग.** दूँ
प्रेष 1:8 तुम मेरे बारे में **ग.** दोगे
प्रेष 10:42 आज्ञा दी कि अच्छी तरह **ग.** दें
प्रेष 28:23 राज के बारे में अच्छी तरह **ग.** दी
गहरा लगाव, कुलु 3:12 **ग.** का पहनावा पहन लो
याकू 5:11 यहोवा **ग.** रखनेवाला है
गहराई, रोम 11:33 परमेश्वर की बुद्धि की **ग.**
इफ 3:18 **ग.** को अच्छी तरह समझ सको
प्रक 2:23 **ग.** में छिपे विचारों को जाँचता है
गहराई से सोचना, 1ती 4:15 **ग.** रह और इन्हीं में
गहरी, 1कुर 2:10 पवित्र शक्ति **ग.** बातों की
गाना, भज 96:1 यहोवा के लिए नया गीत **गा.**
मत 26:30 तारीफ में गीत **गा.** और फिर
इफ 5:19 उपासना के गीत **गा.**
गायक, 1इत 15:16 दाविद ने बताया, **गा.** ठहराएँ
गाल, मत 5:39 कोई तुम्हारे दाएँ **गा.** पर थप्पड़ मारे
गाली-गलौज, इफ 4:31 चीखना-चिल्लाना और **गा.**
गिदोन, न्या 7:20 यहोवा की और **गि.** की तलवार!
गिनना, भज 90:12 हमें अपने दिन **गि.** सिखा
लूक 22:37 वह अपराधियों में **गि.** गया
गिबोन, यह 9:3 **गि.** के लोगों ने भी सुना
गिरना, नीत 24:16 नेक जन चाहे सात बार **गि.**
सभ 4:10 एक **गि.** जाए, तो साथी उसे उठा लेगा
1कुर 8:13 मेरे भाई के लिए विश्वास से **गि.** की वजह
1कुर 10:12 वह खबरदार रहे कि कहीं **गि.** न पड़े
1कुर 10:32 विश्वास से **गि.** की वजह मत बनो
गीत, नहे 12:46 बड़ाई और धन्यवाद के **गी.**
भज 98:1 यहोवा के लिए नया **गी.** गाओ
प्रेष 16:25 पौलुस और सीलास **गी.** गाकर
कुल 3:16 उपासना के **गी.** गाकर
गुज़ारिश, भज 20:5 यहोवा तेरी **गु.** पूरी करे
रोम 12:1 करुणा का वास्ता देकर **गु.** करता हूँ
फिले 9 प्यार का वास्ता देकर **गु.** कर रहा हूँ
गुट, प्रेष 28:22 लोग इस **गु.** के खिलाफ
तीत 3:10 कोई **गु.** को बढ़ावा देता है, उससे संगति
2पत 2:1 चोरी-छिपे ऐसे **गु.** शुरू करेंगे जो विनाश
गुदवाना, लैव 19:28 शरीर पर कोई निशान न **गु.**
गुनगुना, प्रक 3:16 तू **गु.** है
गुनाह, भज 40:12 मेरे **गु.** सिर के बालों से ज़्यादा
भज 130:3 अगर तू हमारे **गु.** पर ही नज़र रखता
यश 53:5 हमारे **गु.** के लिए उसे कुचला गया
गुप्त, भज 91:1 परम-प्रधान की **गु.** जगह
गुमराह, मत 24:24 चुने हुओं को भी **गु.** कर दें
गुलगुता, यूह 19:17 खोपड़ी स्थान, इब्रानी में **गु.**
गुलाम, नीत 22:7 लेनेवाला, उधार देनेवाले का **गु.**
यूह 8:34 जो पाप करता है वह पाप का **गु.** है
1कुर 6:12 खुद को किसी चीज़ का **गु.** बनने नहीं दूँगा
1कुर 7:23 इंसानों के **गु.** बनना छोड़ दो
गुस्ताख, व्य 17:12 बात नहीं सुनता तो उस **गु.** को
गुस्ताखी, 1शम 15:23 **गु.** करना, जादू-टोना
भज 19:13 अपने सेवक को **गु.** करने से रोक
नीत 11:2 जो **गु.** करता है
गुस्सा, भज 37:8 **गु.** करना छोड़ दे, क्रोध त्याग दे
नीत 16:32 अपने **गु.** पर काबू रखनेवाला
इफ 4:26 सूरज ढलने तक **गु.** न रहे
कुल 3:8 **गु.**, गाली-गलौज दूर करो
गूँगों, यश 35:6 **गूँ.** की ज़बान खुशी के मारे
गेहजी, 2रा 5:20 **गे.**: मैं नामान के पीछे भागकर
गेहन्‍ना, मत 10:28 जीवन और शरीर को **गे.** में मिटा
गेहूँ, मत 13:25 **गे.** के बीच जंगली पौधे
गोत्र, उत 49:28 ये इसराएल के 12 **गो.** हैं
गोद, यश 40:11 अपनी **गो.** में उठाएगा
रोम 8:15 बेटों के नाते **गो.** लिए जाते हैं
गोलियात, 1शम 17:4 वीर योद्धा **गो.**
गोश्त, नीत 23:20 ठूँस-ठूँसकर **गो.** खाते हैं
गौर कर, अय 37:14 लाजवाब कामों पर **गौ.**!

घ

घटिया, गि 21:5 इस **घ.** रोटी से नफरत हो गयी है
घड़ी, सभ 9:11 मुसीबत की **घ.** किसी पर भी
मत 24:36 उस **घ.** के बारे में कोई नहीं जानता
घबराना, यश 28:16 जो विश्वास करता है नहीं **घ.**
यश 41:10 **घ.** मत क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ
घमंड, नीत 8:13 गुरूर, **घ.** से मुझे नफरत है
नीत 16:5 मन में **घ.**, यहोवा की नज़र में घिनौना
नीत 16:18 विनाश से पहले **घ.**
घमंडियों, याकू 4:6 परमेश्वर **घ.** का विरोध करता है
घर, भज 101:2 **घ.** के अंदर भी निर्दोष मन से
भज 127:1 अगर **घ.** को यहोवा न बनाए
यश 56:7 प्रार्थना का **घ.** कहलाएगा
यश 65:21 वे **घ.** बनाकर उसमें बसेंगे
लूक 2:49 मैं अपने पिता के **घ.** में होऊँगा
लूक 17:28 बीज बो रहे थे, **घ.** बना रहे थे
यूह 2:16 मेरे पिता के **घ.** को बाज़ार मत बनाओ!
यूह 14:2 पिता के **घ.** में रहने की बहुत-सी जगह हैं
प्रेष 5:42 **घ.-घ.** जाकर सिखाते रहे
प्रेष 20:20 न **घ.-घ.** जाकर सिखाने से रुका
2कुर 5:1 स्वर्ग में हमेशा कायम रहनेवाला **घ.**
इब्र 3:4 हर **घ.** का कोई बनानेवाला होता है
घराने, इफ 2:19 परमेश्वर के **घ.** के सदस्य
घाव, लैव 21:5 न अपने तन पर **घा.** करना
यश 53:5 उसके **घा.** से हम चंगे हुए

छ

ज

जोखिम, रोम 16:4 अपनी जान **जो.** में डाल दी
जोड़, कुल 3:14 एकता में जोड़नेवाला **जो.**
जोश, भज 69:9 भवन के लिए **जो.** की आग ने मुझे
यश 37:32 यहोवा **जो.** के कारण ऐसा करेगा
रोम 10:2 परमेश्‍वर की सेवा के लिए **जो.** तो है
जोशीले, तीत 2:14 बढ़िया कामों के लिए **जो.**
ज्ञान, नीत 1:7 यहोवा का डर, **ज्ञा.** की शुरूआत
नीत 2:10 **ज्ञा.** तेरे जी को भाने लगेगा
नीत 24:5 **ज्ञा.** से वह और भी ताकत
यश 11:9 पृथ्वी यहोवा के **ज्ञा.** से भर जाएगी
दान 12:4 सच्चा **ज्ञा.** बहुत बढ़ जाएगा
हो 4:6 तुमने **ज्ञा.** को ठुकरा दिया है
मला 2:7 याजक को **ज्ञा.** की बातें सिखानी चाहिए
लूक 11:52 जो **ज्ञा.** का दरवाज़ा खोलती है
1कुर 8:1 **ज्ञा.** घमंड से भर देता है
ज्ञानियों, लूक 10:21 **ज्ञा.** से छिपाए रखीं
ज़्यूस, प्रेष 14:12 बरनबास को **ज़्यू.**, पौलुस को हिरमेस
ज्योतिष-विद्या, गि 23:23 **ज्यो.** का असर नहीं
ज्योतिषी, व्य 18:10 जो **ज्यो.** का काम करता है
मत 2:1 **ज्यो.** यरूशलेम आए
ज्वाला, 2ती 1:6 वरदान को **ज्वा.** की तरह जलाए रख

झ

झगड़ा, नीत 15:18 क्रोध करने में धीमा, **झ.** शांत करता
नीत 17:14 इससे पहले कि **झ.** बढ़े, निकल जा
झाँककर, 1पत 1:12 स्वर्गदूत **झाँ.** देखने की तमन्‍ना
झालर, गि 15:39 तुम्हें यह **झा.** और फीता
झील, प्रक 19:20 आग की **झी.** जो गंधक से जलती
झुँझलाना, भज 37:8 **झुँ.** मत और बुराई में मत लग
झुंड, लूक 12:32 हे छोटे **झु.**, मत डर
झुकाव, उत 8:21 मन का **झु.** बुराई की तरफ
झूठ, कुल 3:9 एक-दूसरे से **झू.** मत बोलो
2थि 2:11 वे **झू.** पर यकीन करें
तीत 1:2 परमेश्‍वर **झू.** नहीं बोल सकता
झूठा, भज 101:7 न कोई **झू.** मेरी मौजूदगी में खड़ा
नीत 19:22 **झू.** आदमी से अच्छा गरीब आदमी
मत 26:59 महासभा **झू.** गवाही ढूँढ़ रही थी
यूह 8:44 शैतान **झू.** है और झूठ का पिता है
गल 2:4 **झू.** भाई मंडली में चुपचाप घुस आए
झूठी तारीफ, नीत 29:5 **झू.** करता है, जाल बिछाता है
झूठे भविष्यवक्‍ता, मत 7:15 **झू.** भेड़ों के भेस में
मत 24:11 **झू.** उठ खड़े होंगे, बहुतों को गुमराह करेंगे
मर 13:22 **झू.** अजूबे दिखाएँगे
झूठे मसीह, मत 24:24 **झू.** उठ खड़े होंगे
झोंके, इफ 4:14 शिक्षाओं के हर **झों.** से उड़ाए जाते

ट

टिक, नीत 12:3 दुष्टता करके कोई भी **टि.** नहीं सकता
टिड्डी, यश 40:22 धरती के निवासी **टि.** जैसे
योए 1:4 जो कुतरनेवाली **टि.** से बचा
टूटा मन, भज 51:17 **टू.** ऐसा बलिदान है जो परमेश्‍वर
यश 66:2 जो दीन है और **टू.** का है
टूटे मनवालों, भज 34:18 यहोवा **टू.** के करीब
भज 147:3 वह **टू.** को चंगा करता है
टेढ़ा, सभ 1:15 जो **टे.** है, सीधा नहीं किया जा सकता
टोकरियाँ, मत 14:20 जिनसे 12 **टो.** भर गयीं
टोप, इफ 6:17 उद्धार का **टो.** पहनो

ठ

ठगना, लैव 19:13 अपने संगी-साथी को न **ठ.**
ठीक, लूक 9:11 जिन्हें इलाज की ज़रूरत थी, **ठी.** किया
लूक 10:9 बीमारों को **ठी.** करो और प्रचार करो
प्रेष 5:16 वे सब-के-सब **ठी.** हो जाते थे
ठुकराना, यिर्म 8:9 यहोवा का वचन **ठु.** दिया
1थि 4:8 इंसान को नहीं, परमेश्‍वर को **ठु.** है
ठूँठ, यश 11:1 यिशै के **ठूँ.** से एक टहनी
दान 4:15 **ठूँ.** को जड़ों समेत रहने दो
ठोकर, भज 119:165 उन्हें **ठो.** नहीं खिला सकती
लूक 17:2 इन छोटों में से एक को **ठो.** खिलाए
रोम 14:13 किसी को **ठो.** नहीं खिलाओगे
ठोस, इब्र 5:14 **ठो.** आहार तो बड़ों के लिए है

ड

डगमगाए, 1थि 3:3 कोई दुख-तकलीफों से न **ड.**
डर, उत 9:2 तुम्हारा **ड.** जीव-जंतुओं में बना रहेगा
2इत 20:15 विशाल सेना से मत **ड.**
अय 31:34 इस **ड.** से कि सबको पता चल गया
भज 23:4 मुझे कोई **ड.** नहीं, तू मेरे साथ है
भज 56:4 परमेश्‍वर पर भरोसा है, मैं नहीं **ड.**
भज 118:6 यहोवा मेरी तरफ है, मैं नहीं **ड.**
नीत 29:25 इंसान का **ड.** एक फंदा है
यश 41:10 **ड.** मत क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ
यश 44:8 **ड.** के मारे तुम्हारे हाथ-पैर ढीले न पड़ें
मी 4:4 कोई उसे नहीं **ड.**
लूक 12:4 उनसे मत **ड.** जो शरीर को नष्ट कर सकते
लूक 21:26 **ड.** के मारे लोगों के जी में जी न रहेगा
फिल 1:28 विरोधियों से नहीं **ड.**
1यूह 4:18 प्यार में **ड.** नहीं होता
प्रक 2:10 तू जो तकलीफें झेलनेवाला है, उनसे मत **ड.**
डरते-काँपते, फिल 2:12 **ड.** हुए अपने उद्धार के लिए
डाँट, नीत 3:11 उसकी **डाँ.** से नफरत न करना
नीत 27:5 खुलकर दी **डाँ.**, छिपे हुए प्यार से अच्छी
नीत 27:6 सच्चा दोस्त **डाँ.** लगाने से पीछे नहीं हटता
नीत 29:1 बार-बार **डाँ.** खाने पर भी ढीठ रहता
1ती 5:1 बुज़ुर्ग आदमी को मत **डाँ.**
डाली, यूह 15:4 **डा.** अपने आप फल नहीं दे सकती
डुबकी, 2रा 5:10 यरदन में सात बार **डु.** लगा
डेरा, भज 84:1 तेरा महान **डे.** कितना प्यारा
प्रक 21:3 परमेश्‍वर का **डे.** इंसानों के बीच
डोरी, सभ 4:12 जो **डो.** तीन धागों से बटी हो

ढ

ढंग, प्रेष 1:11 इसी **ढं.** से आएगा जैसे तुमने
ढलती उम्र, भज 92:14 **ढ.** में भी वे फलेंगे-फूलेंगे

ढाँचे, रोम 2:20 सच्चाई के बुनियादी **ढाँ.**
ढाल, भज 84:11 यहोवा सूरज और **ढा.** है
इफ 6:16 विश्वास की बड़ी **ढा.** उठा लो
ढालना, रोम 12:2 खुद को **ढा.** बंद करो
1पत 1:14 इच्छाओं के मुताबिक खुद को **ढा.** बंद करो
ढिलाई, यिर्म 48:10 यहोवा के काम में **ढि.** बरतता
ढीठ, प्रेष 19:9 **ढी.** होकर मानने से इनकार कर दिया
ढूँढ़-ढ़ाँढ़, दान 12:4 बहुत-से लोग **ढूँ.** करेंगे
ढूँढ़ना, यहे 34:11 मैं खुद भेड़ों को **ढूँ.** लाऊँगा
लूक 15:8 तब तक **ढूँ.**, जब तक कि मिल नहीं जाता
यूह 4:23 पिता ऐसे लोगों को **ढूँ.** रहा है
प्रेष 17:27 ताकि वे परमेश्वर को **ढूँ.**

त

तंबू, यह 18:1 शीलो में भेंट का **तं.** खड़ा किया
भज 15:1 कौन तेरे **तं.** में मेहमान बनकर
यश 54:2 **तं.** की रस्सियों को लंबा कर
प्रेष 18:3 वे **तं.** बनाया करते थे
2कुर 12:9 मसीह की ताकत **तं.** की तरह
तकरार, प्रेष 15:39 ज़बरदस्त **त.** हुई
तकलीफ, प्रेष 14:22 **त.** झेलकर राज में दाखिल
1कुर 12:26 अगर एक अंग को **त.** होती है
2कुर 1:8 इतनी **त.** से गुज़रे कि उन्हें सहना
तजुरबा, भज 19:7 जिन्हें **त.** नहीं है बुद्धिमान बना
तड़प, मत 9:36 भीड़ को देखा तो वह **त.** उठा
मत 20:34 यीशु **त.** उठा, उनकी आँखों को छुआ
तन, उत 2:24 वे दोनों एक **त.** होंगे
तन-मन, इफ 6:6 **त.** से परमेश्वर की मरज़ी
कुल 3:23 जो भी काम करो, **त.** से करो
तय वक्त, हब 2:3 दर्शन अपने **त.** पर पूरा होगा
लूक 21:24 राष्ट्रों के लिए **त.**
तरक्की, फिल 3:16 हमने जिस हद तक **त.** की है
1ती 4:15 **त.** सबको दिखायी दे
तरफदारी, गल 2:6 परमेश्वर **त.** नहीं करता
तरशीश, यो 1:3 योना **त.** की तरफ भागा
तरस, अय 14:15 रचना के लिए **त.**
भज 84:2 मन यहोवा के लिए **त.** रहा है
यश 26:9 मेरा रोम-रोम तेरे लिए **त.**
रोम 1:11 मैं तुमसे मिलने के लिए **त.** रहा हूँ
1कुर 15:19 हम सबसे ज़्यादा **त.** खाने लायक हैं
फिल 1:8 तुम सबसे मिलने के लिए **त.** रहा हूँ
तराज़ू, लैव 19:36 ऐसा **त.** जो सही हो
नीत 11:1 बेईमानी के **त.** से यहोवा घिन करता है
तरीका, 1इत 15:13 सही **त.** जानने की कोशिश नहीं
तरो-ताज़ा, मत 11:28 मैं तुम्हें **त.** करूँगा
तर्क, प्रेष 9:22 **त.** देकर साबित करता कि यीशु ही
तर्क-वितर्क, प्रेष 17:2 शास्त्र से **त.** किया
तलवार, 1शम 17:47 यहोवा को **त.** की ज़रूरत नहीं
यश 2:4 **त.** पीटकर हल के फाल बनाएँगे
मत 26:52 जो **त.** उठाते हैं **त.** से नाश
इफ 6:17 पवित्र शक्ति की **त.**, परमेश्वर का वचन
इब्र 4:12 परमेश्वर का वचन **त.** से ज़्यादा
तलाक, मला 2:16 मुझे **त.** से नफरत है
मत 19:9 किसी और वजह से **त.** देता है
मर 10:11 अपनी पत्नी को **त.** देता है और दूसरी से
तलाकनामा, व्य 24:1 **त.** लिखकर
मत 19:7 मूसा ने क्यों कहा कि **त.** लिखकर
तसल्ली, 1थि 2:11 सलाह देते रहे, **त.** देते रहे
ताकत, भज 29:11 अपने लोगों को **ता.** देगा
भज 31:10 गुनाह की वजह से मेरी **ता.** मिट रही है
नीत 17:22 मन की उदासी **ता.** चूस लेती है
नीत 28:16 पैनी समझ नहीं, **ता.** का गलत इस्तेमाल
यश 40:31 यहोवा पर भरोसा रखनेवालों को नयी **ता.**
जक 4:6 न **ता.** से बल्कि मेरी पवित्र शक्ति से
मर 12:30 यहोवा से पूरी **ता.** से प्यार करना
यूह 12:38 यहोवा ने अपनी **ता.** किस पर
प्रेष 1:8 पवित्र शक्ति आएगी, तुम **ता.** पाओगे
2कुर 4:7 **ता.** जो आम इंसानों की **ता.** से बढ़कर है
2कुर 12:9 तू कमज़ोर होता, मेरी **ता.** दिखायी देती
ताकतवर, 2कुर 12:10 कमज़ोर, तभी **ता.**
ताज, नीत 12:4 अच्छी पत्नी, पति के सिर का **ता.** है
मत 27:29 काँटों का एक **ता.** बनाकर
1कुर 9:25 ऐसा **ता.** जो नाश होता है
ताज़गी, प्रेष 3:19 **ता.** के दिन आएँ
ताज्जुब, 1पत 4:4 इसलिए वे **ता.** करते हैं
ताने मारता, नीत 27:11 जवाब दे सकूँ जो मुझे **ता.** है
तारतरस, 2पत 2:4 स्वर्गदूतों को **ता.** में फेंक दिया
तारा, भज 147:4 वह **ता.** को नाम से पुकारता है
मत 24:29 संकट के फौरन बाद **ता.** गिर पड़ेंगे
प्रक 2:1 दाएँ हाथ में सात **ता.** लिए हुए है
तारीफ, 1इत 16:25 यहोवा सबसे ज़्यादा **ता.** के काबिल
भज 147:1 उसकी **ता.** करना कितना मनभावना
नीत 27:2 दूसरे तेरी **ता.** करें
नीत 27:21 इंसान की परख उसे मिलनेवाली **ता.** से
रोम 16:18 **ता.** से बहका देते हैं
1कुर 11:2 मैं तुम्हारी **ता.** करता हूँ
तालमेल, रोम 8:28 परमेश्वर सब कामों में **ता.** बिठाता
तिनका, मत 7:3 भाई की आँख में पड़ा **ति.**
तीन, व्य 16:16 साल में **ती.** बार सभी आदमी
तीमुथियुस, प्रेष 16:1 **ती.** नाम का चेला
1कुर 4:17 **ती.** प्यारा और विश्वासयोग्य बच्चा
1ती 1:2 **ती.** विश्वास में मेरा सच्चा बेटा
तीर, भज 127:4 जैसे वीर के हाथ में **ती.**
तुच्छ, भज 119:141 मैं न के बराबर हूँ, **तु.** हूँ
यश 53:3 लोगों ने उसे **तु.** जाना
1कुर 1:28 उन्हें चुना जिन्हें दुनिया **तु.** समझती
तुलना, गल 6:4 न दूसरों से खुद की **तु.** करके
तेज, रोम 12:11 पवित्र शक्ति के **ते.** से
तेज़ी, यश 60:22 मैं यहोवा, **ते.** लाऊँगा

तेल, 1रा 17:16 न कुप्पी का **ते.** खत्म हुआ
मत 25:4 दीपकों के साथ **ते.** लिया
मर 14:4 खुशबूदार **ते.** क्यों बरबाद कर दिया
तैयार, मत 24:44 तुम भी **तै.** रहो
यूह 14:2 तुम्हारे लिए जगह **तै.** करने
2ती 3:17 हर अच्छे काम के लिए **तै.** हो सके
इब्र 13:21 मरज़ी पूरी करने के लिए **तै.** करे
तैयारी, इफ 6:15 खुशखबरी सुनाने की **तै.**
तोड़े, मत 25:15 एक को पाँच **तो.** दिए
तोहफा, रोम 6:23 परमेश्वर का **तो.**, हमेशा की ज़िंदगी
1कुर 7:7 परमेश्वर से अपना **तो.** मिला है
इफ 4:8 आदमियों के रूप में **तो.** दिए
याकू 1:17 हर अच्छा **तो.** ऊपर से मिलता है
तौर-तरीके, 1कुर 4:17 मेरे **तौ.** तुम्हें याद दिलाएगा
तौला, दान 5:27 **तौ.** गया और हलका पाया
त्यागना, व्य 31:8 तेरा साथ नहीं छोड़ेगा न ही **त्या.**
भज 37:28 यहोवा वफादार सेवकों को नहीं **त्या.**
फिल 2:7 अपना सबकुछ **त्या.** दिया और एक दास का
इब्र 13:5 तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, न कभी **त्या.**
त्योहार, लैव 23:4 साल के अलग-अलग **त्यो.**
त्वचा, अय 33:25 उसकी **त्व.** बच्चे की **त्व.** से भी

थ

थकना, यश 40:28 वह न कभी **थ.** है न पस्त
इब्र 12:3 तुम **थ.** हार न मानो
थका-माँदा, नीत 25:25 जैसे **थ.** के लिए ठंडा पानी
यश 50:4 **थ.** को जवाब दे सकूँ
थकेंगे, यश 40:31 वे चलेंगे पर **थ.** नहीं
थके हुओं, यश 40:29 वह **थ.** में दम भर देता है
थप्पड़, यूह 19:3 उसके मुँह पर **थ.** मारने लगे
थूका, मत 26:67 उन्होंने यीशु के मुँह पर **थू.**
थोड़ा, यश 60:22 **थो.**-से-**थो.**, एक हज़ार हो जाएगा
लूक 16:10 जो इंसान **थो.** में भरोसे के
थोड़ी देर, यश 26:20 **थो.** के लिए छिप जाओ

द

दक्षिण का राजा, दान 11:11 **द.** कड़वाहट से
दान 11:40 **द.** उससे भिड़ेगा
दखल, प्रेष 5:38 इनके काम में **द.** मत दो
1ती 5:13 दूसरों के मामलों में **द.** देती हैं
1पत 4:15 दूसरों के मामलों में **द.** देनेवाला
दब, लूक 21:34 बोझ से दिल **द.** न जाएँ
दबा, मर 4:19 वचन को **द.** देती है, वे फल नहीं देते
दबे पाँव, यहू 4 ऐसे आदमी **द.** घुस आए हैं
दम, यश 40:29 वह थके हुओं में **द.** भर देता है
दमखम, भज 84:7 उनका **द.** बढ़ता ही रहता है
दया, नहे 9:19 बड़ी **द.** की, अकेला नहीं छोड़ा
नीत 28:13 जो इन्हें मान लेता है, **द.** की जाएगी
यश 26:10 दुष्ट पर **द.** की जाए, तब भी नहीं सीखेगा
यश 55:7 यहोवा के पास लौट आए जो **द.** करेगा
मत 9:13 बलिदान नहीं, **द.** चाहता हूँ
मत 16:22 प्रभु खुद पर **द.** कर
लूक 6:36 वैसे ही तुम भी **द.** करते रहो
2कुर 1:3 कोमल **द.** का पिता
याकू 2:13 **द.**, सज़ा पर जीत हासिल करती है
1यूह 3:17 **द.** करने से इनकार कर देता है
दयालु, व्य 4:31 यहोवा **द.** परमेश्वर है
1इत 21:13 वह बड़ा **द.** है
भज 78:38 परमेश्वर **द.** था, माफ कर देता था
मत 5:7 सुखी हैं वे जो **द.** हैं
याकू 5:11 यहोवा लगाव रखनेवाला और **द.** है
दरवाज़ा, यूह 20:19 **द.** बंद थे, यीशु आया
1कुर 16:9 मौके का एक **द.** खोला गया है
प्रक 3:20 मैं **द.** पर खड़ा खटखटा रहा हूँ
दरियादिल, नीत 11:25 **द.** इंसान फलता-फूलता है
1ती 6:18 **द.** हों और देने के लिए तैयार रहें
दर्द, नीत 14:10 अपने दिल का **द.** जानता है
रोम 8:22 सारी सृष्टि **द.** से तड़प रही है
रोम 9:2 ऐसा **द.** उठता जो थमने का नाम नहीं लेता
दर्शन, दान 10:14 **द.** भविष्य में पूरा होगा
दल, प्रेष 17:5 बदमाशों को लेकर एक **द.** बना लिया
दलीलें, 2ती 3:14 जिनका तुझे **द.** देकर यकीन दिलाया
दवा, नीत 17:22 खुश रहना बढ़िया **द.** है
दस, उत 18:32 मैं उन **द.** की खातिर भी
दस आज्ञाएँ, निर्ग 34:28 परमेश्वर ने **द.** लिखीं
दसवाँ हिस्सा, नहे 10:38 लेवी **द.** दें
मला 3:10 सारा **द.** भंडार में ले आओ
दाख-मदिरा, लैव 10:9 **दा.** पीकर तंबू में न आएँ
भज 104:15 **दा.** से दिल मगन
नीत 20:1 **दा.** हँसी उड़ाती है
नीत 23:31 **दा.** के लाल रंग को मत देख
सभ 10:19 **दा.** ज़िंदगी में रस भर देती है
यश 25:6 बेहतरीन **दा.** जो छनी हुई होगी
हो 4:11 **दा.** इरादा कमज़ोर कर देती है
यूह 2:9 पानी अब **दा.** में बदल चुका था
1ती 5:23 पेट के लिए थोड़ी **दा.** पीया कर
दान, 2इत 31:10 **दा.** लाकर देने लगे हैं
दार्शनिकों, प्रेष 17:18 इपिकूरी और स्तोइकी **दा.**
दावत, यश 25:6 **दा.** में खाना और दाख-मदिरा
दाविद, 1शम 16:13 शमूएल ने **दा.** का अभिषेक किया
लूक 1:32 उसके पुरखे **दा.** की राजगद्दी
प्रेष 2:34 **दा.** स्वर्ग नहीं गया
दास, मत 24:45 बुद्धिमान **दा.** कौन है?
मत 25:21 शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य **दा.**!
लूक 17:10 हम निकम्मे **दा.** हैं
गल 5:13 **दा.** बनकर प्यार से सेवा करो
दिखाना, मत 6:1 **दि.** के लिए नेक काम न करो
यूह 5:20 पिता जो करता है बेटे को **दि.** है
दिखावा, 1यूह 2:16 अपनी चीज़ों का **दि.**
दिन, भज 84:10 तेरे आँगनों में एक **दि.** बिताना
यहे 4:6 एक साल एक **दि.** के हिसाब से

दूत, मला 3:1 मैं अपना **दू.** भेज रहा हूँ
इफ 6:12 लड़ाई शक्तिशाली दुष्ट **दू.** से है
दूध, निर्ग 3:8 देश जहाँ **दू.** की धाराएँ बहती हैं
यश 60:16 तू राष्ट्रों का **दू.** पीएगी
इब्र 5:12 तुम्हें फिर से **दू.** की ज़रूरत है
1पत 2:2 शुद्ध **दू.** के लिए भूख
दूध पिलानेवाली, 1थि 2:7 जैसे **दू.** माँ प्यार से
दूर, प्रेष 17:27 वह हममें से किसी से भी **दू.** नहीं
इब्र 2:1 हम बहकर **दू.** न चले जाएँ
दूसरी भेड़ें, यूह 10:16 मेरी **दू.** भी हैं
दूसरी मौत, प्रक 2:11 उसे **दू.** नहीं आएगी
प्रक 20:6 इन पर **दू.** का कोई अधिकार नहीं
प्रक 20:14 आग की झील का मतलब है, **दू.**
दृश्य, 1कुर 7:31 दुनिया का **दृ.** बदल रहा है
देखभाल, यूह 17:12 मैं उनकी **दे.** करता था
1ती 5:8 अगर कोई अपनों की **दे.** नहीं करता
देखा, यूह 1:18 इंसान ने परमेश्वर को कभी नहीं **दे.**
यूह 14:9 जिसने मुझे **दे.** है पिता को भी **दे.** है
देने, प्रेष 20:35 लेने से ज़्यादा खुशी **दे.** में है
देर, यश 46:13 मैं उद्धार करने में **दे.** न करूँगा
हब 2:3 अगर ऐसा लगे भी कि **दे.** हो रही है
हब 2:3 इसमें **दे.** नहीं होगी!
लूक 12:45 मेरा मालिक आने में **दे.** कर रहा है
देरी, 2पत 3:9 यहोवा वादा पूरा करने में **दे.** नहीं
देश, यश 66:8 **दे.** एक ही दिन में पैदा हो सकता है?
देश के लोगों, 1थि 2:14 **दे.** के हाथों दुख झेला
दो-दो, लूक 10:1 70 चेले चुने, **दो.** की जोड़ियों में भेजा
दोरकास, प्रेष 9:36 एक शिष्या थी, तबीता, **दो.**
दोष, लैव 22:21 जानवर में **दो.** नहीं होना चाहिए
मत 7:2 जैसे तुम **दो.** लगाते हो, वैसे ही तुम पर भी
लूक 6:37 **दो.** लगाना बंद करो, तुम पर भी **दो.** नहीं
दोष लगानेवाला, प्रक 12:10 **दो.** नीचे फेंक दिया गया
दोषी, रोम 14:4 तू कौन होता है **दो.** ठहरानेवाला?
याकू 4:12 दूसरे को **दो.** ठहरानेवाला तू कौन है?
दोस्त, 2इत 20:7 अपने **दो.** अब्राहम
नीत 14:20 अमीर के कई **दो.** होते हैं
नीत 16:28 जिगरी **दो.** में फूट डाल देता है
नीत 17:17 सच्चा **दो.** हर समय प्यार करता है
नीत 18:24 **दो.** भाई से बढ़कर वफा निभाता है
नीत 27:6 **दो.** डाँट लगाने से पीछे नहीं हटता
लूक 16:9 बेईमानी की दौलत से **दो.** बना लो
यूह 15:13 अपने **दो.** की खातिर जान दे दे
यूह 15:14 आज्ञा मानो तो तुम मेरे **दो.** हो
याकू 2:23 अब्राहम यहोवा का **दो.** कहलाया
दोस्ती, भज 25:14 यहोवा से गहरी **दो.** सिर्फ वे
नीत 3:32 सीधे-सच्चे लोगों से गहरी **दो.** रखता है
याकू 4:4 दुनिया के साथ **दो.**, परमेश्वर से दुश्मनी
दौड़, सभ 9:11 न तेज़ दौड़नेवाला **दौ.** में जीतता
प्रेष 20:24 अपनी **दौ.** पूरी कर सकूँ
1कुर 9:24 इस तरह **दौ.** कि इनाम जीत सको
2ती 4:7 मैंने अपनी **दौ.** पूरी कर ली है
दौर, दान 2:21 वह समय और **दौ.** को बदल देता है
प्रेष 1:7 समय या **दौ.** को जानने का अधिकार नहीं
1थि 5:1 इनके समय और **दौ.** के बारे में
दौलत, भज 62:10 **दौ.** बढ़ने लगे, मन मत लगाना
नीत 10:2 दुष्टता से कमाई **दौ.** किसी काम
नीत 11:28 **दौ.** पर भरोसा रखनेवाला मिट जाता है
नीत 18:11 रईस सोचता, **दौ.** शहरपनाह है
सभ 5:10 **दौ.** से प्यार करनेवाले का मन
यश 61:6 तुम राष्ट्रों की **दौ.** का मज़ा लोगे
यहे 28:5 **दौ.** की वजह से मन घमंड से
लूक 12:15 उसकी **दौ.** उसे ज़िंदगी नहीं दे सकती
लूक 16:9 बेईमानी की **दौ.** से दोस्त बना
दौलतमंद, यिर्म 9:23 न **दौ.** अपनी दौलत पर शेखी मारे
1ती 6:17 **दौ.** घमंडी न बनें और अपनी आशा

ध

धन, मत 6:21 जहाँ तेरा **ध.**, वहीं तेरा मन
धन-दौलत, नीत 11:4 क्रोध के दिन **ध.** किसी काम नहीं
मत 6:24 **ध.** की गुलामी नहीं कर सकते
धन्य, न्या 5:24 याएल औरतों में **ध.** है
यूह 12:13 यहोवा के नाम से आनेवाला **ध.** है
धन्यवाद, भज 95:2 आओ, उसका **ध.** करें
यूह 11:41 पिता, तेरा **ध.** कि तूने मेरी सुनी है
प्रेष 28:15 देखते ही परमेश्वर को **ध.** दिया
1कुर 1:4 मैं हमेशा परमेश्वर का **ध.** करता हूँ
इफ 5:20 हर बात के लिए परमेश्वर को **ध.**
धमकाना, प्रेष 4:17 आओ हम इन्हें **ध.** कि
इफ 6:9 उन्हें मत **ध.**
धमकियाँ, 1पत 2:23 दुख झेल रहा था, तो **ध.** नहीं दीं
धरती, उत 1:28 **ध.** को आबाद करो
निर्ग 9:29 सारी **ध.** का मालिक यहोवा है
अय 38:4 जब मैंने **ध.** की नींव डाली
भज 37:11 दीन लोग **ध.** के वारिस होंगे
भज 37:29 नेक लोग **ध.** के वारिस होंगे
भज 104:5 **ध.** कभी हिलायी नहीं जाएगी
भज 115:16 **ध.** उसने इंसानों को दी है
नीत 2:21 सिर्फ सीधे-सच्चे लोग **ध.** पर बसेंगे
मत 5:5 कोमल स्वभाव के लोग **ध.** के वारिस होंगे
धर्म-अधिकारियों, यूह 12:42 बहुत-से **ध.** ने यीशु पर
धाराएँ, यिर्म 50:38 उसकी **धा.** सूख जाएँगी
धिक्कार, यश 5:20 **धि.** है जो बुरे को अच्छा कहते हैं
1कुर 9:16 **धि.** है अगर मैं खुशखबरी न सुनाऊँ!
धीमी आवाज़, यह 1:8 कानून को **धी.** में पढ़ना
भज 1:2 उसका कानून **धी.** में पढ़ता है
धीरज, मत 24:13 जो अंत तक **धी.** धरेगा, उद्धार
लूक 8:15 **धी.** धरते हुए फल पैदा करते हैं
लूक 21:19 **धी.** धरने से अपनी जान बचा पाओगे
रोम 5:3 दुख-तकलीफों से **धी.** पैदा होता है
रोम 12:12 मुसीबतों के वक्त में **धी.** धरो
1कुर 4:12 हम **धी.** धरते हुए सह लेते हैं

न

प

फ

ब

1कुर 15:58 प्रभु में कड़ी मेहनत **बे.** नहीं
फिल 3:7 जो बातें फायदे की थीं, उन्हें **बे.** समझा
बेखौफ, नीत 28:1 नेक जन शेर की तरह **बे.** रहता है
बेटा, उत 6:2 परमेश्‍वर के **बे.** औरतों पर ध्यान देने
1शम 8:3 उसके **बे.** उसके नक्शे-कदम पर नहीं चलते
अय 38:7 परमेश्‍वर के **बे.** ने जयजयकार की
भज 2:12 **बे.** का सम्मान करो, वरना
नीत 13:24 जो अपने **बे.** पर छड़ी नहीं चलाता
नीत 15:20 बुद्धिमान **बे.** पिता को खुश करता है
यश 54:13 तेरे सारे **बे.** यहोवा के सिखाए हुए
मत 3:17 यह मेरा प्यारा **बे.** है
लूक 15:13 छोटे **बे.** ने संपत्ति उड़ा दी
रोम 8:14 वे सचमुच परमेश्‍वर के **बे.** हैं
बेटी, लूक 8:49 तेरी **बे.** मर चुकी है
प्रेष 21:9 चार कुँवारी **बे.** भविष्यवाणी करती थीं
बेटे-बेटियाँ, योए 2:28 तुम्हारे **बे.** भविष्यवाणी करेंगे
2कुर 6:18 तुम मेरे **बे.** बनोगे
बेतलेहेम, मी 5:2 हे **बे.** एप्राता
बेताब, रोम 1:15 खुशखबरी सुनाने के लिए **बे.**
बेतेल, उत 28:19 उस जगह का नाम **बे.** रखा
बेधड़क, फिल 1:14 **बे.** होकर वचन सुना रहे हैं
बेफिक्र, नीत 1:32 मूर्खों का **बे.** रवैया उन्हें तबाह
नीत 14:16 मूर्ख **बे.** होता है
बेरहम, नीत 11:17 **बे.** खुद पर आफत लाता
नीत 12:10 दुष्ट की दया भी **बे.** होती है
बेल, मी 4:4 अंगूरों की **बे.** तले बैठेगा
यूह 15:1 मैं अंगूर की सच्ची **बे.** हूँ और पिता
बेलशस्सर, दान 5:1 राजा **बे.** ने बड़ी दावत रखी
बेशकीमती, 1पत 1:19 मसीह के **बे.** खून
बेसहारा, भज 40:17 मैं **बे.** और गरीब हूँ
बेसिर-पैर, अय 6:3 मेरे मुँह से **बे.** की बातें
बेहतर, फिल 2:3 दूसरों को खुद से **बे.** समझो
बैठ, भज 110:1 तू मेरे दाएँ हाथ **बै.**
बैबिलोन, यिर्म 51:6 **बै.** से भाग जाओ
यिर्म 51:30 **बै.** के योद्धाओं ने लड़ना छोड़ दिया
यिर्म 51:37 **बै.** पत्थरों का ढेर बन जाएगी
प्रक 17:5 महानगरी **बै.,** वेश्‍याओं की माँ
प्रक 18:2 महानगरी **बै.** गिर पड़ी
बैल, निर्ग 21:28 अगर **बै.** किसी को सींग मारता है
व्य 25:4 दँवरी करते **बै.** का मुँह न बाँधना
नीत 7:22 जैसे **बै.** हलाल होने जा रहा हो
हो 14:2 तारीफ के बोल **बै.** के बलिदान जैसे
1कुर 9:9 परमेश्‍वर सिर्फ **बै.** की परवाह करता?
बोझ, 1रा 12:14 पिता ने भारी **बो.** लादा था, मैं
भज 38:4 गुनाहों का भारी **बो.**
भज 55:22 अपना सारा **बो.** यहोवा पर डाल दे
भज 68:19 यहोवा हर दिन हमारा **बो.** ढोता है
लूक 11:46 नियम जो भारी **बो.** की तरह हैं
प्रेष 15:28 हम तुम पर और **बो.** न लादें
गल 6:5 हर कोई अपना **बो.** खुद उठाएगा
1थि 2:6 खर्चीला **बो.** बन सकते थे
इब्र 12:1 हम हरेक **बो.** को उतार फेंकें
1यूह 5:3 उसकी आज्ञाएँ हम पर **बो.** नहीं
प्रक 2:24 मैं कोई और **बो.** नहीं डाल रहा
बोना, भज 126:5 आँसू बहाते हुए बीज **बो** रहे हैं
सभ 11:6 सुबह अपना बीज **बो** और
गल 6:7 इंसान जो **बो.,** वही काटेगा

भ

भक्‍ति, निर्ग 34:14 सिर्फ यहोवा की **भ.** की जाए
भक्‍तिहीन, नीत 11:9 **भ.** पड़ोसी को तबाह कर देता है
भटकना, भज 119:176 खोयी भेड़ की तरह **भ.** गया
यश 53:6 हम भेड़ों की तरह **भ.** हुए थे
भट्ठे, दान 3:17 परमेश्‍वर **भ.** से छुड़ा सकता है
भड़क, नीत 14:17 जो फौरन **भ.** उठता, मूर्खता करता
1कुर 13:5 [प्यार] **भ.** नहीं उठता
भयानक, इब्र 10:31 परमेश्‍वर के हाथों में पड़ना **भ.** है
भरसक, 2ती 2:15 तू अपना **भ.** कर
2पत 3:14 अपना **भ.** करो कि निष्कलंक और
भरोसा, भज 9:10 तेरा नाम जाननेवाले तुझ पर **भ.**
भज 56:11 मुझे परमेश्‍वर पर **भ.** है, मैं नहीं डरता
भज 62:8 हमेशा उस पर **भ.** रखो
भज 84:12 सुखी है वह जो तुझ पर **भ.** रखता है
भज 146:3 अधिकारियों पर **भ.** मत रखना
नीत 3:5 पूरे दिल से यहोवा पर **भ.** रखना
नीत 3:26 तेरा **भ.** यहोवा पर होगा
नीत 14:16 मूर्ख खुद पर ज़्यादा ही **भ.** करता है
नीत 28:26 जो दिल पर **भ.** रखता है, मूर्ख है
यिर्म 17:5 शापित है वह जो इंसानों पर **भ.** करता है
लूक 16:10 जो इंसान थोड़े में **भ.** के लायक है
2कुर 1:9 खुद पर नहीं, परमेश्‍वर पर **भ.** रखें
2थि 3:4 हमें प्रभु में तुम्हारे बारे में **भ.** है
भरोसेमंद, निर्ग 18:21 **भ.** आदमियों को चुन
भज 19:7 जो हिदायत याद दिलाता है **भ.** है
भज 33:4 उसका काम दिखाता कि वह **भ.** है
तीत 2:10 पूरी तरह **भ.** रहें
भला, व्य 8:16 आगे चलकर तुम्हारा **भ.** हो
व्य 10:13 आज्ञा मानने से तुम्हारा **भ.** होगा
नीत 3:27 **भ.** करना तेरे बस में हो तो
यश 48:17 तेरे **भ.** के लिए सिखाता हूँ
गल 6:10 सबके साथ **भ.** करें
फिल 2:4 अपने **भ.** की नहीं, दूसरे के **भ.** की भी
फिल 2:21 बाकी अपने **भ.** की फिक्र में रहते हैं
भली, नीत 31:26 **भ.** बातें कहना उसका उसूल है
भले और खुले विचारोंवाले, प्रेष 17:11 से ज़्यादा **भ.** थे
भवन, 2शम 7:13 मेरे नाम के लिए **भ.** बनाएगा
भज 27:4 मैं यहोवा के **भ.** में निवास करूँ
भज 73:17 जब मैं परमेश्‍वर के शानदार **भ.** में गया
प्रेष 7:48 परम-प्रधान हाथ के बनाए **भ.** में नहीं रहता
भविष्य, नीत 24:20 बुराई करनेवालों का कोई **भ.** नहीं

भविष्य बतानेवाला, लैव 19:31 न ही **भ.** से पूछताछ
यश 65:11 **भ.** देवता के लिए दाख-मदिरा
भविष्यवक्ता, व्य 18:18 तेरे जैसा एक **भ.** खड़ा करूँगा
1रा 18:4 ओबद्याह ने 100 **भ.** को छिपा दिया
यहे 2:5 उनके बीच एक **भ.** हुआ करता था
आम 3:7 **भ.** को राज़ की बात बताए बिना
आम 7:14 मैं न **भ.** था, न **भ.** का बेटा
प्रेष 10:43 सारे **भ.** ने इसी यीशु की गवाही दी
भविष्यवाणी, योए 2:28 तुम्हारे बेटे-बेटियाँ **भ.** करेंगे
2पत 1:19 **भ.** पर भरोसा और मज़बूत हुआ
2पत 1:20 शास्त्र की कोई भी **भ.** किसी के विचारों
2पत 1:21 **भ.** इंसान की मरज़ी से नहीं हुई
भाइयों जैसा प्यार, रोम 12:10 **भा.** और गहरा लगाव
भाई, नीत 17:17 मुसीबत की घड़ी में **भा.** बन जाता है
नीत 18:24 दोस्त **भा.** से बढ़कर वफा निभाता है
मत 13:55 इसके **भा.** याकूब, यूसुफ,
मत 23:8 तुम सब **भा.** हो
मत 25:40 **भा.** में से किसी एक के साथ किया
1कुर 5:11 **भा.** कहलाते हुए भी नाजायज़ यौन-संबंध
1पत 5:9 **भा.** की पूरी बिरादरी
भाग, विल 3:24 यहोवा मेरा **भा.** है
भागो, 1कुर 6:18 नाजायज़ यौन-संबंधों से दूर **भा.**!
भार, गल 6:2 एक-दूसरे का **भा.** उठाते रहो
भाला, 1शम 18:11 **भा.** दाविद की तरफ फेंका
भालू, 1शम 17:37 शेर और **भा.** से बचाया
भावनाएँ, याकू 5:17 एलियाह में हमारे जैसी **भा.** थीं
भाषण, प्रेष 15:32 कई **भा.** देकर हिम्मत बँधायी
भाषा, उत 11:7 आओ, **भा.** में गड़बड़ी पैदा कर दें
सप 3:9 लोगों को शुद्ध **भा.** सिखाऊँगा
जक 8:23 अलग-अलग **भा.** बोलनेवालों में से दस
प्रेष 2:4 अलग-अलग **भा.** बोलने लगे
1कुर 13:8 **भा.** बोलने का वरदान खत्म हो जाएगा
1कुर 14:22 दूसरी **भा.** अविश्वासियों के लिए निशानी
प्रक 7:9 सब राष्ट्रों और गोत्रों और **भा.** में से
भीड़, निर्ग 23:2 **भी.** के पीछे मत जाना
भूकंप, लूक 21:11 बड़े-बड़े **भू.** आएँगे
भूख, रोम 16:18 अपनी **भू.** मिटाने में लगे रहते हैं
1पत 2:2 वचन के लिए ज़बरदस्त **भू.** पैदा करो
भूखे, यश 65:13 मेरे सेवक खाएँगे, तुम **भू.** रहोगे
भूखे-प्यासे, यश 49:10 वे **भू.** नहीं रहेंगे
भूल, अय 6:24 समझाओ कि मुझसे कहाँ **भू.** हुई!
भूलना, व्य 4:23 तुम उस करार को कभी नहीं **भू.**
भज 119:141 फिर भी मैं तेरे आदेश नहीं **भू.** हूँ
यश 49:15 माँ अपने दूध-पीते बच्चे को **भू.** जाए?
फिल 3:13 जो बातें पीछे रह गयी हैं, उन्हें **भू.**
इब्र 6:10 परमेश्वर अन्यायी नहीं कि वह **भू.** जाए
भूसी, सप 2:2 दिन ऐसे बीत जाए जैसे **भू.** उड़ायी जाती
भेंट, 1इत 29:9 लोगों को चीज़ें **भें.** करने में खुशी हुई
भेज, यश 6:8 मैं यहाँ हूँ! मुझे **भे.**!
भेजा है, यूह 7:29 उसी ने मुझे **भे.**
भेड़, 2शम 12:3 सिर्फ एक **भे.** की बच्ची थी
भज 100:3 उसके लोग, उसके चरागाह की **भे.**
यश 53:7 **भे.** की तरह बलि होने के लिए लाया गया
यहे 34:12 मैं अपनी **भे.** की देखभाल करूँगा
मत 25:33 वह **भे.** को अपने दायीं तरफ करेगा
यूह 21:16 मेरी छोटी **भे.** की देखभाल कर
भेड़शाला, यूह 10:16 मेरी दूसरी भेड़ें इस **भे.** की नहीं
भेड़िया, यश 11:6 **भे.**, मेम्ने के साथ बैठेगा
मत 7:15 भेड़ों के भेस में **भे.**
लूक 10:3 मेम्नों की तरह **भे.** के बीच भेज
प्रेष 20:29 अत्याचारी **भे.** घुस आएँगे
भेदभाव, व्य 10:17 परमेश्वर **भे.** नहीं करता
प्रेष 10:34 मैं समझ गया, परमेश्वर **भे.** नहीं करता
याकू 2:9 तुम **भे.** करना नहीं छोड़ते
भेदा, जक 12:10 उसे देखेंगे जिसे उन्होंने **भे.** है
भ्रष्टाचार, दान 6:4 उसके खिलाफ **भ्र.** का सबूत नहीं
भ्रूण, भज 139:16 जब मैं बस एक **भ्रू.** था

म

मंज़ूर, निर्ग 19:8 वह सब करना हमें **मं.** है
लूक 3:22 मैंने तुझे **मं.** किया है
2ती 2:15 जिसे परमेश्वर **मं.** करे
मंज़ूरी, 2कुर 6:2 अभी **मं.** पाने का वक्त है
मंडली, भज 22:25 मैं बड़ी **मं.** में तेरी तारीफ करूँगा
भज 40:9 मैं खुशखबरी बड़ी **मं.** में सुनाता हूँ
मत 16:18 इस चट्टान पर अपनी **मं.** खड़ी करूँगा
प्रेष 20:28 परमेश्वर की **मं.** की देखभाल करो
रोम 16:5 उनके घर में इकट्ठा होनेवाली **मं.**
मंदिर। भवन भी देखें, भज 11:4 यहोवा **मं.** में
भज 27:4 **मं.** को एहसान-भरे दिल से देखता रहूँ
यिर्म 7:4 यहोवा का **मं.**, यहोवा का **मं.**!
यहे 41:13 उसने **मं.** नापा, लंबाई 100 हाथ
मला 3:1 प्रभु अचानक अपने **मं.** में आएगा
मत 21:12 यीशु **मं.** में गया और
यूह 2:19 इस **मं.** को गिरा दो और मैं तीन दिन
1कुर 3:16 तुम लोग परमेश्वर का **मं.** हो
मंदिर के सेवकों, एज 8:20 **मं.** को लेवियों के लिए
मंदिरों, प्रेष 17:24 वह हाथ के बनाए **मं.** में नहीं रहता
मकसद, नीत 16:4 काम करता है कि **म.** पूरा हो
रोम 8:28 उसके **म.** के मुताबिक बुलाए गए
रोम 9:11 चुनाव परमेश्वर के **म.** के मुताबिक
इफ 3:11 युग-युग के उस **म.** के मुताबिक
मकिदुनिया, प्रेष 16:9 इस पार **म.** आकर मदद कर
मगन, नीत 8:30 मैं उसके सामने **म.** रहती
मछली, यो 1:17 **म.** भेजी कि योना को निगल जाए
यूह 21:11 **म.** से भरा जाल, 153 बड़ी **म.**
मज़दूरी, उत 31:7 दस बार मेरी **म.** बदली
यिर्म 22:13 **म.** देने से इनकार करता है
रोम 6:23 पाप जो **म.** देता है वह मौत है
मज़बूत, 1शम 30:6 यहोवा की मदद से **म.** किया
यश 35:3 ढीले हाथों को **म.** करो

महासभा, प्रेष 5:41 **म.** के सामने से खुशी मनाते हुए
महिमा, यूह 12:43 इंसानों से मिलनेवाली **म.** प्यारी
रोम 8:18 उस **म.** के आगे कुछ भी नहीं
1कुर 10:31 सबकुछ परमेश्वर की **म.** के लिए करो
2पत 2:10 जिन्हें परमेश्वर ने **म.** दी है
प्रक 4:11 यहोवा **म.** पाने के योग्य
माँ, निर्ग 20:12 पिता और **माँ** का आदर करना
नीत 23:22 बूढ़ी **माँ** को तुच्छ मत जान
लूक 8:21 मेरी **माँ** और मेरे भाई ये हैं
यूह 19:27 चेले से कहा, देख! तेरी **माँ!**
गल 4:26 ऊपर की यरूशलेम हमारी **माँ** है
माँगना, भज 2:8 मुझसे **माँ.**, तुझे राष्ट्र दूँगा
मत 6:8 तुम्हारे **माँ.** से पहले ही जानता है
मत 7:7 **माँ.** रहो तो तुम्हें दिया जाएगा
यूह 14:13 मेरे नाम से **माँ.,** वह मैं करूँगा
इफ 3:20 जो **माँ.** हैं उससे कहीं ज़्यादा बढ़कर
1यूह 5:14 उसकी मरज़ी के मुताबिक **माँ.**
माँद, दान 6:7 शेरों की **माँ.** में फेंक दिया जाएगा
माँ-बाप, लूक 18:29 राज की खातिर **माँ.** को छोड़ा हो
2कुर 12:14 **माँ.** बच्चों के लिए पैसे बचाकर रखें
माँस, 1कुर 15:50 **माँ.** और खून राज के वारिस नहीं
मागोग, यहे 38:2 **मा.** देश के गोग की तरफ
मातम, यश 35:10 दुख और **मा.** भाग खड़े होंगे
मत 5:4 सुखी हैं वे जो **मा.** मनाते हैं
1थि 4:13 उन लोगों की तरह **मा.** न मनाओ
मातमवाले, सभ 7:2 से अच्छा है **मा.** घर में जाना
माता-पिता, उत 2:24 **मा.** को छोड़ देगा
भज 27:10 चाहे मेरे **मा.** मुझे छोड़ दें
लूक 21:16 **मा.** तुम्हें पकड़वा देंगे
इफ 6:1 **मा.** का कहना माननेवाले बनो
कुल 3:20 हर बात में **मा.** का कहना माननेवाले बनो
1ती 5:4 **मा.** को उनका हक चुकाएँ
माथे, यहे 9:4 सभी के **मा.** पर एक निशान लगा
मानना, मत 28:20 उन्हें वे सारी बातें **मा.** सिखाओ
मान-सम्मान, नीत 5:9 अपना **मा.** खो बैठे
माफ करना, नहे 9:17 परमेश्वर **मा.** को तैयार
भज 25:11 मेरा बड़ा पाप **मा.** दे
भज 103:3 वह मेरे सारे गुनाह **मा.** है
नीत 17:9 जो अपराध **मा.** है, वह प्यार की खोज में
यश 55:7 परमेश्वर दिल खोलकर **मा.** है
मत 6:12 जैसे हमने **मा.** है, तू भी **मा.**
मत 6:14 अगर तुम **मा.**, तो पिता भी तुम्हें **मा.**
मत 18:21 तो मैं कितनी बार उसे **मा.?**
कुल 3:13 जैसे यहोवा ने तुम्हें दिल खोलकर **मा.**
माफी, मत 26:28 **मा.** के लिए मेरा खून
मामूली, प्रेष 4:13 पतरस और यूहन्ना, **मा.** आदमी
मामूली बातों, गल 4:9 **मा.** की तरफ मुड़ रहे हो
मायूस, 1थि 5:14 जो **मा.** हैं उन्हें तसल्ली दो
मायूसी, भज 38:6 **मा.** में डूबा रहता हूँ
मार खाकर, 2कुर 6:5 **मा.,** कैद में रहकर
मार डालना, यूह 16:2 जो तुम्हें **मा.,** यह सोचेगा
कुल 3:5 अपने शरीर के अंगों को **मा.**
मारता-कूटता, 1कुर 9:27 शरीर को **मा.** हूँ
मारथा, लूक 10:41 **मा., मा.,** तू बहुत बातों की चिंता
मार्गदर्शन, नीत 11:14 सही **मा.** न हो, लोग दुख
मत 5:3 जिनमें परमेश्वर से **मा.** पाने की भूख है
मालिक, मत 6:24 दो **मा.** की सेवा नहीं कर सकता
मत 9:38 **मा.** से बिनती करो कि और मज़दूर भेजे
रोम 6:14 पाप तुम्हारा **मा.** न हो
रोम 14:4 खड़ा रहेगा या गिर जाएगा, फैसला **मा.**
कुल 4:1 स्वर्ग में तुम्हारा भी एक **मा.** है
माल्टा, प्रेष 28:1 उस द्वीप का नाम **मा.** है
माहवारी, लैव 15:19 **मा.** की वजह से अशुद्ध रहेगी
लैव 18:19 **मा.** के दौरान यौन-संबंध नहीं
माहिर, नीत 22:29 जो अपने काम में **मा.** है
मिटता, 2कुर 4:16 बाहर का इंसान **मि.** जा रहा है
मिटाए, प्रेष 3:19 तुम्हारे पाप **मि.** जाएँ
मिट्टी, उत 2:7 **मि.** से आदमी को रचा
उत 3:19 तू **मि.** है, वापस **मि.** में मिल जाएगा
भज 103:14 याद रखता है कि हम **मि.** ही हैं
यश 45:9 क्या **मि.** का लोंदा कुम्हार से
यश 64:8 हम **मि.** के लोंदे हैं, तू हमारा कुम्हार है
दान 2:42 कहीं लोहे की और कहीं **मि.** की थीं
मत 13:23 जो बढ़िया **मि.** में बोया गया
मिन्नत, 1ती 2:1 **मि.**, प्रार्थनाएँ की जाएँ
इब्र 5:7 मसीह ने **मि.** और बिनतियाँ की थीं
याकू 5:16 नेक इंसान की **मि.**
मिरगी, मत 4:24 **मि.** और लकवे के मारे हुओं को ठीक
मिरयम, गि 12:1 **मि.** और हारून ने मूसा के खिलाफ
मिलना-जुलना, 2थि 3:14 उसके साथ **मि.** छोड़ दो
मिलावट, 2कुर 4:2 परमेश्वर के वचन में **मि.** करते हैं
मिसाल, मत 13:34 यीशु ने **मि.** देकर बतायीं
मर 4:2 **मि.** देकर कई बातें सिखाने लगा
1कुर 11:1 मेरी **मि.** पर चलो, जैसे मैं मसीह की
2कुर 4:2 हम अच्छी **मि.** रखते हैं
इफ 5:1 बच्चों की तरह उसकी **मि.** पर चलो
1ती 4:12 विश्वासयोग्य लोगों के लिए **मि.** बन जा
इब्र 13:7 उनके विश्वास की **मि.** पर चलो
1पत 5:3 झुंड के लिए एक **मि.** बनो
मिस्र, मत 2:15 अपने बेटे को **मि.** से बुलाया
मीकाएल, दान 10:13 **मी.**, सबसे बड़े हाकिमों में से
दान 12:1 उस समय **मी.** खड़ा होगा
प्रक 12:7 **मी.** और उसके स्वर्गदूतों ने लड़ाई की
मीना, लूक 19:16 एक **मी.** से दस **मी.** कमाए
मीनार, उत 11:4 हम अपने लिए एक **मी.** बनाएँ
नीत 18:10 यहोवा का नाम मज़बूत **मी.** है
लूक 13:4 18 लोगों पर सिलोम की **मी.** गिर गयी
मुँह, भज 8:2 दूध-पीते बच्चों के **मुँ.** से
रोम 10:10 **मुँ.** से विश्वास का ऐलान करता है
याकू 3:10 एक ही **मुँ.** से तारीफ और बददुआ

य

र

रंग-रूप, 1शम 16:7 उसके **रं.** पर मत जा
रंगशाला, 1कुर 4:9 जिन्हें **रं.** में लाया जाता है
रचना, रोम 1:20 दुनिया की **र.** के वक्त से
प्रक 4:11 तेरी मरज़ी से सारी चीज़ें **र.** गयीं
रज़ामंदी, 1कुर 7:5 सिर्फ आपसी **र.** से
रवैए, इफ 6:7 सही **र.** के साथ काम करो
रस्सियों, यश 54:2 तंबू की **र.** को लंबा कर
राई, लूक 13:19 यह **रा.** के दाने की तरह है
राज, निर्ग 19:6 याजकों से बना **रा.** बन जाओगे
नीत 29:2 दुष्ट का **रा.**, लोग आहें भरते हैं
दान 2:44 स्वर्ग का परमेश्वर **रा.** कायम करेगा
दान 4:17 परम-प्रधान परमेश्वर का **रा.** है
दान 4:34 उसका **रा.** सदा कायम रहनेवाला **रा.**
दान 7:14 सम्मान और एक **रा.** दिया गया
दान 7:18 **रा.** पवित्र जनों को दिया जाएगा
मत 6:10 तेरा **रा.** आए। तेरी मरज़ी
मत 6:33 पहले उसके **रा.** की खोज में लगे रहो
मत 21:43 **रा.** ऐसे राष्ट्र को दे दिया जाएगा
मत 24:14 **रा.** की इस खुशखबरी का प्रचार
मत 25:34 **रा.** के वारिस बन जाओ जो तुम्हारे
लूक 12:32 पिता ने तुम्हें **रा.** देना मंज़ूर किया है
लूक 22:29 मैं तुम्हारे साथ **रा.** का करार करता हूँ
यूह 18:36 मेरा **रा.** इस दुनिया का नहीं है
प्रेष 1:6 तू इसराएल को **रा.** दोबारा दे देगा?
रोम 6:12 पाप को शरीर पर **रा.** मत करने दो
1कुर 15:24 परमेश्वर के हाथ में **रा.** सौंप देगा
गल 5:21 वे **रा.** के वारिस नहीं होंगे
कुल 1:13 अपने प्यारे बेटे के **रा.** में ले आया
प्रक 11:15 हमेशा तक राजा बनकर **रा.** करेगा
प्रक 11:15 दुनिया का **रा.** अब हमारे मालिक का
राज़, नीत 11:13 भरोसेमंद इंसान **रा.** को **रा.** रखता
नीत 20:19 बदनाम करनावाला **रा.** बताता है
नीत 25:9 **रा.** की बात मत खोल
आम 3:7 **रा.** की बात बताए बिना काम नहीं करेगा
फिल 4:12 **रा.** सीख लिया है कि भरपेट होना
राजगद्दी, भज 45:6 परमेश्वर तेरी **रा.** है
यश 6:1 यहोवा को ऊँची **रा.** पर बैठे देखा
दान 7:9 **रा.** रखी गयीं
मत 25:31 इंसान का बेटा आएगा, **रा.** पर बैठेगा
लूक 1:32 परमेश्वर पुरखे दाविद की **रा.** उसे देगा
राजदंड, उत 49:10 यहूदा के हाथ से **रा.** नहीं छूटेगा
भज 2:9 लोहे के **रा.** से उन्हें तोड़ देगा
राजदूत, 2कुर 5:20 मसीह के बदले काम करनेवाले **रा.**
राजा, न्या 21:25 उन दिनों इसराएल में **रा.** नहीं था
1शम 23:17 तू **रा.** होगा, मैं दूसरे दर्जे पर
भज 2:6 मैंने अपने **रा.** को राजगद्दी पर बिठाया है
नीत 21:1 **रा.** का मन पानी की धारा के समान
यश 32:1 **रा.** नेकी से राज करेगा
जक 14:9 यहोवा पूरी धरती का **रा.** होगा
मत 21:5 तेरा **रा.** आ रहा है, गधे पर सवार
मत 27:29 हे यहूदियों के **रा.,** सलाम!
लूक 21:12 **रा.** और राज्यपालों के सामने पेश
यूह 12:31 दुनिया का **रा.** बाहर कर दिया जाएगा
यूह 14:30 दुनिया का **रा.** आ रहा है
यूह 19:15 सम्राट को छोड़ हमारा कोई **रा.** नहीं
प्रेष 4:26 धरती के **रा.**, यहोवा के खिलाफ
1कुर 15:25 तब तक **रा.** बनकर राज करना
प्रक 1:6 हमें परमेश्वर के लिए **रा.** और याजक बनाया
प्रक 5:10 **रा.** की हैसियत से धरती पर राज
प्रक 18:3 **रा.** ने उसके साथ नाजायज़ यौन-संबंध रखे
राजा-महाराजाओं, नीत 22:29 माहिर है? **रा.** के सामने
राज्य, मत 4:8 शैतान ने दुनिया के सारे **रा.** दिखाए
रात, भज 19:2 **रा.** को वे ज्ञान की बातें फैलाते हैं
रोम 13:12 **रा.** बहुत बीत चुकी, दिन निकलने पर
रानी, 1रा 10:1 शीबा की **रा.** सुलैमान के पास आयी
राष्ट्र, निर्ग 19:6 एक पवित्र **रा.** बन जाओगे
भज 33:12 सुखी है **रा.** जिसका परमेश्वर यहोवा है
यश 66:8 क्या कोई **रा.** अचानक जन्म ले सकता है?
मत 21:43 राज ऐसे **रा.** को दे दिया जाएगा
मत 24:7 एक **रा.** दूसरे **रा.** पर हमला करेगा
मत 25:32 सब **रा.** उसके सामने इकट्ठे किए जाएँ
लूक 21:24 **रा.** के लिए तय वक्त पूरा न हो जाए
प्रेष 17:26 एक ही इंसान से सारे **रा.** बनाए
1पत 2:9 एक चुनी हुई जाति, एक पवित्र **रा.**
रास्ता, नीत 16:25 **रा.** सही लगता है, मगर मौत
यिर्म 8:6 उसी **रा.** पर जिस पर सब
मत 7:14 तंग **रा.** जीवन की तरफ ले जाता है
मत 13:4 कुछ बीज **रा.** के किनारे गिरे
1कुर 10:13 वह निकलने का **रा.** भी निकालेगा
राह, भज 48:14 परमेश्वर सदा तक **रा.** दिखाएगा
नीत 4:18 नेक जनों की **रा.** सुबह की रौशनी जैसी
यश 30:21 **रा.** यही है, इसी पर चल
यिर्म 10:23 अधिकार नहीं कि कदमों को **रा.** दिखाए
योए 2:7 हर कोई अपनी **रा.** पर चलता है
यूह 14:6 मैं ही वह **रा.,** सच्चाई और जीवन हूँ
प्रेष 9:2 प्रभु की **रा.** पर चलनेवाला जो भी
राहत, 2थि 1:7 जो संकट झेल रहे हो, तुम्हें **रा.** दे
राहेल, उत 29:18 **रा.** के लिए सात साल काम
यिर्म 31:15 **रा.** अपने बेटों के लिए रो रही है
रिबका, उत 26:7 **रि.** बहुत सुंदर थी
रिश्तेदारों, प्रेष 10:24 कुरनेलियुस ने **रि.** को बुलाया
रिश्वत, सभ 7:7 **रि.,** मन को भ्रष्ट कर देती है
रीछनी, यश 11:7 गाय और **री.** साथ चरेंगी
रुझान, भज 51:10 मन का नया **रु.** दे कि अटल
रूप बदल गया, मत 17:2 यीशु का **रू.**
रेकाबी, यिर्म 35:5 **रे.** आदमियों को दाख-मदिरा
रेत, प्रक 20:8 गिनती समुंदर की **रे.** के किनकों जितनी
रोक-टोक, नीत 29:15 बच्चे पर **रो.** नहीं, वह शर्मिंदा

रोकना, 1थि 2:16 वे संदेश सुनाने से **रो.** हैं
2थि 2:6 कौन उसे **रो.** हुए है
रोग दूर करने, प्रक 22:2 पत्तियाँ राष्ट्रों के **रो.**
रोटी, नहे 9:15 तूने उन्हें स्वर्ग से **रो.** दी
भज 37:25 न उसकी औलाद को **रो.** के लिए भीख
मत 4:4 इंसान को सिर्फ **रो.** से नहीं बल्कि
मत 6:11 आज के दिन की **रो.** हमें दे
मत 26:26 यीशु ने **रो.** ली और उसे तोड़ा
यूह 6:35 मैं जीवन देनेवाली **रो.** हूँ
1कुर 10:17 सब उस एक **रो.** में से खाते हैं
रोना, यश 65:19 न **रो.** की आवाज़ सुनायी देगी
मत 26:75 वह बाहर जाकर **रो.** लगा
लूक 6:21 सुखी हो तुम जो अभी **रो.** हो
रोम 12:15 रोनेवालों के साथ **रो.**
रो-रोकर, हो 12:4 उसने **रो.** बिनती की
रौंदता, इब्र 10:29 जो परमेश्वर के बेटे को **रौं.** है
रौशनी, भज 36:9 तेरी **रौ.** से हमें **रौ.** मिलती है
भज 119:105 तेरा वचन मेरी राह के लिए **रौ.** है
नीत 4:18 नेक जनों की राह **रौ.** जैसी है
यश 42:6 राष्ट्रों के लिए **रौ.** बनेगा
मत 5:14 तुम दुनिया की **रौ.** हो
मत 5:16 तुम्हारी **रौ.** लोगों के सामने चमके
यूह 8:12 मैं दुनिया की **रौ.** हूँ
2कुर 4:6 अंधकार में से **रौ.** चमके
फिल 2:15 तुम **रौ.** की तरह चमक रहे हो

ल

लँगड़ा, यश 35:6 **लँ.,** हिरन की तरह छलाँग भरेंगे
मला 1:8 **लँ.** या बीमार जानवर पेश करते हो
लंगर, इब्र 6:19 आशा ज़िंदगी के लिए एक **लं.**
लकड़ी, नीत 26:20 जहाँ **ल.** नहीं, आग बुझ जाती है
लकवे, लूक 5:24 **ल.** के मारे हुए से कहा, खड़ा हो!
लगाए रखो, कुल 3:2 ध्यान स्वर्ग की बातों पर **ल.**
लगाव, मत 10:37 से ज़्यादा **ल.** रखता है
यूह 12:25 जो जान से **ल.** रखता, इसे नाश करता है
कुल 3:12 गहरा **ल.** का पहनावा पहन लो
प्रक 3:19 जिनसे **ल.** रखता हूँ उनको फटकारता हूँ
लगे रहें, रोम 14:19 उन बातों में **ल.** जिनसे शांति
लच्छेदार, 1कुर 2:1 **ल.** भाषा का दिखावा नहीं किया
लज़ीज़ खाना, दान 1:5 उन्हें हर दिन वही **ल.**
लज्जित, एज 9:6 **ल.** हूँ कि तुझसे बात करने की
लटके, 1रा 18:21 कब तक दो विचारों में **ल.** रहोगे?
लड़का, नीत 22:6 **ल.** को सिखा, वह बुढ़ापे में भी
यश 11:6 छोटा **ल.** अगुवाई करेगा
यश 66:8 सिय्योन ने **ल.** को जन्म दिया
यिर्म 1:7 मत कह कि मैं बस एक **ल.** हूँ
लड़की, 2रा 5:2 नामान की पत्नी की दासी, छोटी **ल.**
मर 5:42 वह **ल.** उठकर चलने-फिरने लगी
लड़ना, 2इत 20:17 तुम्हें **ल.** की ज़रूरत नहीं होगी
1ती 6:12 विश्वास की अच्छी लड़ाई **ल.**
2ती 2:24 प्रभु के दास को **ल.** की ज़रूरत नहीं
यहू 3 विश्वास की खातिर जी-जान से **ल.**
लड़नेवाले, प्रेष 5:39 न तुम परमेश्वर से **ल.** ठहरो
लड़ाई, 1कुर 14:8 **ल.** के लिए कौन तैयार होगा?
इफ 6:12 **ल.** हाड़-माँस के इंसानों से नहीं
ललकारे, 1शम 17:26 कि परमेश्वर की सेना को **ल.**?
लहसुन, गि 11:5 **ल.,** प्याज़, क्या नहीं मिलता था
लाखों-करोड़ों, प्रक 5:11 उनकी गिनती **ला.** में थी
लाचार, रोम 7:24 मैं कैसा **ला.** इंसान हूँ!
लाज़र, लूक 16:20 **ला.** नाम का एक भिखारी
यूह 11:11 हमारा दोस्त **ला.** सो गया है
यूह 11:43 **ला.,** बाहर आ जा!
लाजवाब, भज 139:14 मुझे **ला.** तरीके से बनाया है
लापरवाह, दान 6:4 दानियेल **ला.** नहीं था
1ती 4:14 अपने वरदान की तरफ **ला.** न हो
लायक, मत 10:37 वह मेरे **ला.** नहीं
लूक 15:19 मैं इस **ला.** नहीं कि तेरा बेटा कहलाऊँ
प्रेष 5:41 बेइज़्ज़त होने के **ला.** समझा गया
प्रेष 13:46 तुम हमेशा की ज़िंदगी के **ला.** नहीं हो
इब्र 11:38 दुनिया उनके **ला.** नहीं थी
लालच, निर्ग 20:17 साथी की पत्नी का **ला.** न कर
लूक 12:15 हर तरह के **ला.** से खुद को बचाए रखो
कुल 3:5 **ला.** मूर्तिपूजा के बराबर है
लालची, 1कुर 5:11 **ला.** के साथ मेल-जोल बंद कर
1कुर 6:10 **ला.** राज के वारिस नहीं होंगे
लाल-लाल, उत 25:30 **ला.** चीज़ थोड़ी-सी मुझे दे
लिखा, रोम 15:4 जो बातें पहले से **लि.** गयी थीं
1कुर 4:6 जो **लि.** है उससे आगे न जाना
लिपटे रहना, व्य 10:20 यहोवा से **लि.**
यह 23:8 अपने परमेश्वर यहोवा से **लि.**
रोम 12:9 अच्छी बातों से **लि.**
लिहाज़, भज 41:1 जो दीन-दुखियों का **लि.** करता है
फिल 4:5 लोग जान जाएँ कि तुम **लि.** करनेवाले हो
लुदिया, प्रेष 16:14 थुआतीरा की **लु.** बैंजनी कपड़े बेचती
लूका, कुल 4:14 प्यारा भाई, वैद्य **लू.**
लूटना, लैव 19:13 संगी-साथी को न **लू.**
इब्र 10:34 तुम्हारी चीज़ें **लू.** गयीं, तुमने सह लिया
लूत, लूक 17:32 **लू.** की पत्नी को याद रखो
2पत 2:7 उसने नेक इंसान **लू.** को बचाया
लूले-लँगड़े, मत 15:31 **लू.** ठीक हो रहे हैं
लेवी, निर्ग 32:26 सभी **ले.** मूसा के पास जमा
गि 3:12 सभी **ले.** मेरे हो जाएँगे
2इत 35:3 **ले.** से, जो इसराएल में सिखाने
मला 3:3 **ले.** के बेटों को शुद्ध करने बैठेगा
लोमड़ियों, मत 8:20 **लो.** की माँदें होती हैं, मगर
लोहा, नीत 27:17 जैसे **लो.** **लो.** को तेज़ करता है
यश 60:17 मैं **लो.** के बदले चाँदी लाऊँगा
दान 2:43 जैसे **लो.** मिट्टी से नहीं जुड़ता
लौट आना, योए 2:12 पूरे दिल से मेरे पास **लौ.**
मला 3:7 मेरे पास **लौ.**, मैं तुम्हारे पास **लौ.**
लौटाता, भज 37:21 दुष्ट उधार लेता है, **लौ.** नहीं

व

श

प्रेष 17:2 **शा.** से यहूदियों के साथ तर्क-वितर्क किया
प्रेष 17:11 हर दिन ध्यान से **शा.** की जाँच करते थे
रोम 15:4 **शा.** से दिलासा पाएँ ताकि आशा हो
2ती 3:16 पूरा **शा.** परमेश्वर की प्रेरणा से
शिकायत, कुल 3:13 अगर **शि.** की कोई वजह है
शिकार, लैव 17:13 **शि.** करता है, खून बहा देना चाहिए
शिक्षक, इफ 4:11 कुछ को चरवाहे और **शि.** ठहराया
शिक्षा, नीत 1:7 मूर्ख बुद्धि और **शि.** को तुच्छ समझता
नीत 3:11 यहोवा की **शि.** मत ठुकराना
शिमशोन, न्या 13:24 उसका नाम **शि.** रखा
शिशु, 2ती 3:15 तू **शि.** था तभी से शास्त्र जानता है
शीलो, उत 49:10 जब तक **शी.** न आए
शुक्रिया, भज 92:1 यहोवा का **शु.** अदा किया जाए
शुद्ध, भज 51:2 पाप दूर करके मुझे **शु.** कर
दान 11:35 ताकि **शु.** करने का काम हो सके
हब 1:13 तेरी आँखें इतनी **शु.** हैं कि
सप 3:9 एक **शु.** भाषा सिखाऊँगा
जक 13:9 मैं उन्हें चाँदी के समान **शु.** करूँगा
मत 5:8 सुखी हैं वे जिनका दिल **शु.** है
यूह 15:3 वचन की वजह से तुम पहले ही **शु.** हो
2कुर 7:1 हर गंदगी दूर करके खुद को **शु.** करें
शुद्ध करनेवाला, मला 3:3 जैसे **शु.** चाँदी गलाता है
शुरूआत, यश 46:10 मैं **शु.** में ही बता देता हूँ
जक 4:10 छोटी-सी **शु.** को कोई तुच्छ न जाने
मत 24:8 प्रसव-पीड़ा की तरह मुसीबतों की सिर्फ **शु.**
मत 25:34 राज जो दुनिया की **शु.** से तैयार किया
प्रक 1:8 मैं ही **शु.** और अंत हूँ
शेर, 1शम 17:36 **शे.** और भालू को मार डाला
भज 91:13 **शे.** और नाग को कुचल देगा
यश 11:7 **शे.,** बैल के समान घास-फूस खाएगा
दान 6:27 दानियेल को **शे.** से बचा लिया
1पत 5:8 शैतान, गरजते हुए **शे.** की तरह
प्रक 5:5 यहूदा गोत्र के **शे.** को देख
शैतान, अय 1:6 **शै.** उनके बीच आया
जक 3:2 हे **शै.,** यहोवा तुझे डाँटे!
मत 4:10 दूर हो जा **शै.!** क्योंकि लिखा है
मत 16:23 **शै.,** मेरे सामने से दूर हो जा!
मत 25:41 **शै.** और उसके दूतों के लिए आग
मर 4:15 **शै.** आता है, बोया गया वचन ले जाता है
लूक 4:6 **शै.:** यह सब मेरे हवाले किया गया है
लूक 8:12 **शै.** दिलों से वचन उठा ले जाता है
यूह 8:44 तुम अपने पिता **शै.** से हो
रोम 16:20 परमेश्वर **शै.** को तुम्हारे पैरों तले कुचल
1कुर 5:5 उस आदमी को **शै.** के हवाले कर दो
2कुर 2:11 ताकि **शै.** हम पर हावी न हो जाए
2कुर 11:14 **शै.** रौशनी देनेवाले स्वर्गदूत का रूप
इफ 4:27 **शै.** को मौका मत दो
इफ 6:11 **शै.** का डटकर सामना कर
2थि 2:9 पापी का मौजूद होना **शै.** की तरफ से
याकू 4:7 **शै.** का विरोध करो, वह भाग जाएगा
1पत 5:8 **शै.** शेर की तरह घूम रहा है
1यूह 3:8 **शै.** के कामों को नष्ट कर दे
1यूह 5:19 सारी दुनिया **शै.** के कब्ज़े में
प्रक 12:9 साँप, जो इबलीस और **शै.** कहलाता है
प्रक 12:12 **शै.** तुम्हारे पास नीचे आ गया है
प्रक 20:2 1,000 साल के लिए **शै.** को बाँध दिया
प्रक 20:10 **शै.** को आग की झील में फेंक दिया
शोभा, तीत 2:10 परमेश्वर की शिक्षा की **शो.** बढ़ा सकें

स

संकटों, 2ती 3:1 **सं.** से भरा ऐसा वक्त आएगा
सँकरे, मत 7:13 **सँ.** फाटक से अंदर जाओ
संगति, 1कुर 15:33 बुरी **सं.** बिगाड़ देती है
संघर्ष, लूक 13:24 जी-तोड़ **सं.** करो
संतोष, फिल 4:11 **सं.** करना मैंने सीख लिया है
1ती 6:8 उसी में **सं.** करना चाहिए
संदूक, निर्ग 25:10 बबूल की लकड़ी से **सं.** बनाएँ
2शम 6:6 उज्जाह ने **सं.** पकड़ लिया
1इत 15:2 लेवियों को छोड़ कोई **सं.** नहीं उठाएगा
संध्या-भोज, 1कुर 11:20 प्रभु के **सं.** के लिए
संपत्ति, लूक 14:33 जो **सं.** को अलविदा नहीं कहता
इब्र 10:34 बेहतर और सदा कायम रहनेवाली **सं.**
संयम, 1कुर 7:5 **सं.** की कमी की वजह से लुभाता
गल 5:22, 23 पवित्र शक्ति का फल है: **सं.**
सच, भज 15:2 दिल में **स.** बोलता है
इफ 4:25 हर कोई अपने पड़ोसी से **स.** बोले
सच्चाई, भज 119:160 तेरे वचन का निचोड़ **स.** है
नीत 23:23 **स.** को खरीद ले, उसे कभी मत बेचना
यूह 4:24 **स.** से उपासना करनी चाहिए
यूह 8:32 **स.** को जानोगे और **स.** आज़ाद करेगी
यूह 14:6 मैं ही वह राह, **स.** और जीवन हूँ
यूह 16:13 **स.** की पवित्र शक्ति **स.** की पूरी समझ
यूह 17:17 **स.** से उन्हें पवित्र कर
यूह 18:38 पीलातुस ने कहा, **स.** क्या है?
2कुर 13:8 हम **स.** के खिलाफ कुछ नहीं कर सकते
2पत 1:12 तुम **स.** में मज़बूती से खड़े हो
3यूह 4 मेरे बच्चे **स.** की राह पर चल रहे हैं
सच्ची वफा, श्रेष 8:6 **स.** कब्र की तरह
सच्चे, यूह 17:3 तुझ एकमात्र **स.** परमेश्वर को जानें
सजना-सँवरना, 1पत 3:3 तुम्हारा **स.** ऊपरी न हो
सज़ा, सभ 8:11 **स.** जल्दी नहीं मिलती
1कुर 11:29 जो पीता है, खुद पर **स.** लाता है
2कुर 1:9 लगा कि हमें मौत की **स.** सुना दी
सतर्क, नीत 14:16 बुद्धिमान **स.** रहता है
मत 10:16 साँपों की तरह **स.** रहो
सताना, भज 119:86 लोग बेवजह मुझे **स.** हैं
यूह 15:20 उन्होंने मुझे **स.** है, तुम्हें भी **स.**
1कुर 4:12 जब हमें **स.** जाता तो हम धीरज धरते

ह

0-9

बाइबल की शब्दावली

अ

अंकुशः एक लंबा छड़ जिसका एक सिरा धातु से बना होता था और नुकीला होता था। इससे किसान अपने जानवर को कोंचता था। अंकुश की तुलना बुद्धिमान इंसान की बातों से की गयी है जो सुननेवालों को बुद्धि-भरी सलाह पर चलने के लिए उभारती हैं। 'अंकुश पर लात मारना' एक अलंकार है, जो इस बात से लिया गया है कि जब एक ढीठ बैल को बार-बार कोंचा जाता है तो वह इसका विरोध करता है, अंकुश पर लात मारता है और खुद को ही चोट पहुँचाता है।—प्रेष 26:14, फु.; न्या 3:31, फु.

अंगूर रौंदने का हौदः इसमें आम तौर पर दो हौद होते थे जो चूने-पत्थर की चट्टान से काटकर बनाए जाते थे। एक हौद ऊँचे पर रखा जाता था और दूसरा नीचे। दोनों हौदों के बीच एक छोटी-सी नाली बनी होती थी। ऊँचाई पर रखे हौद में अंगूर रौंदे जाते थे और उनका रस बहकर नीचेवाले हौद में जाता था। ये शब्द परमेश्वर की तरफ से मिलनेवाली सज़ा को दर्शाने के लिए भी इस्तेमाल हुए हैं।—यश 5:2; प्रक 19:15.

अखायाः मसीही यूनानी शास्त्र में दक्षिणी यूनान का रोमी प्रांत जिसकी राजधानी कुरिंथ थी। अखाया में पेलोपोनीस का पूरा इलाका और यूनान के महाद्वीप का मध्य भाग भी आता था। (प्रेष 18:12) —अति. ख13 देखें।

अच्छे-बुरे के ज्ञान का पेड़ः अदन के बाग में लगा एक पेड़, जो इस बात की निशानी था कि इंसान के लिए क्या "अच्छा" है, क्या "बुरा," यह स्तर ठहराने का अधिकार सिर्फ परमेश्वर को है। —उत 2:9, 17.

अजाजेलः एक इब्रानी नाम जिसका शायद मतलब है, "वह बकरा जो गायब हो जाता है।" प्रायश्चित के दिन जिस बकरे को अजाजेल के लिए चुना जाता था, उसे वीराने में छोड़ दिया जाता था। यह इस बात को दर्शाता था कि वह बकरा, इसराएल राष्ट्र के पापों को उठा ले गया जो उसने बीते साल में किए थे।—लैव 16:8, 10.

अटल प्यारः इब्रानी शब्द *कसद* का अनुवाद अकसर अटल प्यार किया गया है। जब कोई वफादारी, गहरे लगाव और साथ निभाने के पक्के इरादे की वजह से प्यार करता है तो उसे अटल प्यार कहते हैं। ऐसा प्यार अकसर परमेश्वर इंसानों से करता है, मगर दो इंसानों के बीच भी यह प्यार देखा जाता है।—निर्ग 34:6; रूत 3:10.

अदारः बैबिलोन की बँधुआई से लौटनेवाले यहूदियों के पवित्र कैलेंडर का 12वाँ महीना और कृषि कैलेंडर का छठा महीना। यह महीना, फरवरी के बीच से मार्च के बीच तक का होता था। (एस 3:7)—अति. ख15 देखें।

अथाह-कुंडः इसका यूनानी शब्द *एबिसोस* है जिसका मतलब है, "बहुत गहरा" या "जिसकी कोई थाह या सीमा नहीं।" यह शब्द मसीही यूनानी शास्त्र में कैद होने की हालत बताने या फिर ऐसी जगह बताने के लिए इस्तेमाल हुआ है जहाँ किसी को कैद किया जाता है। इस शब्द का एक मतलब कब्र भी हो सकता है।—लूक 8:31; रोम 10:7; प्रक 20:3.

अपराधः नियम या कानून तोड़ना। बाइबल में इसे "पाप" भी कहा गया है।—भज 51:3; रोम 5:14.

अबद्दोनः इब्रानी में इसका मतलब है, "विनाश।" इसका मतलब "विनाश की जगह" भी हो सकता है। मगर यह कोई सचमुच की जगह नहीं है। यह शायद इस बात को दर्शाता है कि इंसान की लाश सड़कर मिट्टी में मिल जाती है। (भज 88:11; अय 26:6; 28:22; नीत 15:11) लेकिन प्रकाशितवाक्य 9:11 में "अबद्दोन" एक नाम के तौर पर इस्तेमाल हुआ है। यह नाम 'अथाह-कुंड के स्वर्गदूत' को दिया गया है।

अभिषेकः इसके इब्रानी शब्द का मतलब है, तेल या कोई द्रव्य लगाना। किसी इंसान या चीज़ पर तेल उँडेलना या लगाना इस बात की निशानी

होता था कि उसे किसी खास सेवा के लिए अलग ठहराया गया है। मसीही यूनानी शास्त्र में यह शब्द तब भी इस्तेमाल हुआ है जब स्वर्ग जाने की आशा रखनेवालों पर पवित्र शक्ति उँडेली जाती है।—निर्ग 28:41; 1शम 16:13; 2कुर 1:21.

अराम; अरामी: शेम के बेटे अराम के वंशज, जो लबानोन पहाड़ों से लेकर मेसोपोटामिया तक और उत्तर में टोरस पहाड़ों से लेकर नीचे दमिश्क और दूर दक्षिण तक के इलाकों में रहते थे। यह इलाका इब्रानी में अराम कहलाता था। बाद में यह सीरिया के नाम से जाना गया और उसके निवासियों को सीरियाई लोग कहा गया।—उत 25:20; व्य 26:5; हो 12:12.

अरामी भाषा: यह इब्रानी से काफी मिलती-जुलती है और दोनों की वर्णमाला भी एक है। शुरू-शुरू में सिर्फ अरामी लोग इसे बोलते थे, मगर आगे चलकर यह अश्शूरी और बैबिलोनी साम्राज्यों की अंतर्राष्ट्रीय भाषा बन गयी जिसे व्यापार और बातचीत के लिए इस्तेमाल किया जाता था। फारसी साम्राज्य के दरबार में भी यही भाषा इस्तेमाल होती थी। (एज 4:7) एज्रा, यिर्मयाह और दानियेल के कुछ हिस्से अरामी भाषा में लिखे गए थे।—एज 4:8–6:18; 7:12-26; यिर्म 10:11; दान 2:4ख–7:28.

अरियुपगुस: एथेन्स की एक ऊँची पहाड़ी, जो एक्रोपोलिस के उत्तर-पश्चिम में थी। यह उस परिषद् (या अदालत) का नाम भी था जो वहाँ बैठक रखता था। स्तोइकी और इपिकूरी दार्शनिक पौलुस को अरियुपगुस लाए थे ताकि वह अपने विश्वास के बारे में बताए।—प्रेष 17:19.

अर्घ: दाख-मदिरा का चढ़ावा, जो वेदी पर उँडेला जाता था और ज़्यादातर चढ़ावों के साथ दिया जाता था। पौलुस ने इस शब्द का इस्तेमाल लाक्षणिक तौर पर यह बताने के लिए किया कि वह किस तरह अपने मसीही भाई-बहनों के लिए खुद को पूरी तरह देने के लिए तैयार है।—गि 15:5, 7; फिल 2:17.

अलामोत: संगीत से जुड़ा शब्द, जिसका मतलब है "कुँवारियाँ; लड़कियाँ।" शायद यह लड़कियों के सबसे ऊपर के सुर में गाने की तरफ इशारा करता है। अलामोत शायद यह बताने के लिए लिखा जाता था कि संगीत सबसे ऊँचे सुर में बजाया जाए।—1इत 15:20; भज 46:उप.

अल्फा और ओमेगा: ये यूनानी वर्णमाला के पहले और आखिरी अक्षर हैं। ये शब्द तीन बार प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर की उपाधि के तौर पर इस्तेमाल हुए हैं। इन आयतों में इन शब्दों का मतलब है, "पहला और आखिरी" और "शुरूआत और अंत।"—प्रक 1:8, फु.; 21:6; 22:13.

अशतोरेत: कनानियों की एक देवी जिसे युद्ध और प्रजनन की देवी और बाल देवता की पत्नी माना जाता था।—1शम 7:3.

अशुद्ध: इसका मतलब शरीर की गंदगी या फिर नैतिक उसूलों को तोड़ना हो सकता है। मगर बाइबल में अकसर इसका मतलब है, ऐसा कुछ भी जो मूसा के कानून के मुताबिक शुद्ध नहीं या जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। (लैव 5:2; 13:45; प्रेष 10:14; इफ 5:5)—**शुद्ध** देखें।

आ

आँगन: पवित्र डेरे में एक आँगन था जिसके चारों तरफ कनातें लगी थीं। बाद में मंदिर की खास इमारत के चारों तरफ भी आँगन बनाया गया था। पवित्र डेरे के आँगन में और मंदिर के भीतरी आँगन में होम-बलि की वेदी रखी गयी थी। (अति. ख5, ख8, ख11 देखें।) बाइबल में घर और महल के आँगनों का भी ज़िक्र मिलता है।—निर्ग 8:13; 27:9; 1रा 7:12; एस 4:11; मत 26:3.

आखिरी दिन: ये शब्द और इससे मिलते-जुलते शब्द, 'अंत का समय' बाइबल की भविष्यवाणियों में इस्तेमाल हुए हैं। इसका मतलब है, भविष्यवाणी में बताए परमेश्वर के न्याय के समय से पहले का दौर और उसमें घटनेवाली घटनाएँ। (यहे 38:16; दान 8:17; प्रेष 2:17) भविष्यवाणी किस बारे में है, उससे तय होता है कि यह दौर कुछ सालों का है या कई सालों का। बाइबल में ये शब्द खासकर आज की दुनिया की व्यवस्था के 'आखिरी दिनों' के लिए इस्तेमाल हुए हैं जब यीशु की मौजूदगी चल रही है।—2ती 3:1; याकू 5:3; 2पत 3:3.

आग उठाने के करछे: सोने-चाँदी या ताँबे के बरतन। ये करछे, पवित्र डेरे और मंदिर में धूप जलाने, बलिदान की वेदी से कोयला हटाने और

सोने की दीवट से बुझायी बाती हटाने के लिए इस्तेमाल होते थे। इन्हें धूपदान भी कहा जाता था।—निर्ग 37:23; 2इत 26:19; इब्र 9:4.

आग की झील: एक लाक्षणिक जगह, जो "आग और गंधक से जलती रहती है।" इसे "दूसरी मौत" भी कहा गया है। इसमें शैतान और ऐसे लोगों को डाला जाएगा जो अपने पापों का पश्चाताप नहीं करते। इसमें मौत और कब्र (यानी हेडीज़) को भी डाला जाएगा। एक अदृश्य प्राणी, मौत और कब्र पर आग का कोई असर नहीं होता। इसलिए आग की झील में इनका डाला जाना दिखाता है कि यह कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ किसी को हमेशा के लिए तड़पाया जाता है। इसके बजाय यह हमेशा के विनाश को दर्शाता है।—प्रक 19:20; 20:14, 15; 21:8.

आज़ाद आदमी; आज़ाद दास: रोमी शासन के दौरान "आज़ाद आदमी" वह होता था जो जन्म से गुलाम नहीं था और जिसके पास रोमी नागरिक होने के सभी अधिकार थे। मगर 'आज़ाद दास' वह होता था जिसे गुलामी से आज़ाद किया गया हो। अगर इस दास को नियम के मुताबिक आज़ाद किया गया हो, तो उसे रोमी नागरिकता मिल सकती थी मगर वह राजनीति में नहीं आ सकता था। लेकिन अगर उसे यूँ ही आज़ाद किया गया हो, तो आज़ाद होने पर भी उसे नागरिक होने के सारे अधिकार नहीं मिलते थे।—1कुर 7:22.

आब: बैबिलोन की बँधुआई से लौटनेवाले यहूदियों के पवित्र कैलेंडर का 5वाँ महीना और कृषि कैलेंडर का 11वाँ महीना। यह महीना, जुलाई के बीच से अगस्त के बीच तक का होता था। बाइबल में यह नाम नहीं दिया गया, बस 'पाँचवाँ महीना' लिखा है। (गि 33:38; एज 7:9)—अति. ख15 देखें।

आबीब: यह यहूदियों के पवित्र कैलेंडर के पहले महीने और कृषि कैलेंडर के 7वें महीने का पुराना नाम है। आबीब का मतलब है, "(अनाज की) हरी बालें।" यह महीना, मार्च के बीच से अप्रैल के बीच तक का होता था। जब यहूदी बैबिलोन से लौटे तो इस महीने का नाम नीसान रखा गया। (व्य 16:1)—अति. ख15 देखें।

आमीन: "ऐसा ही हो" या "ज़रूर।" यह शब्द इब्रानी के मूल शब्द *एमन* से निकला है जिसका मतलब है, "विश्वासयोग्य या भरोसेमंद होना।" शपथ, प्रार्थना या किसी बात के आखिर में सहमति जताने के लिए "आमीन" कहा जाता था। प्रकाशितवाक्य में यह यीशु की उपाधि के तौर पर इस्तेमाल हुआ है।—व्य 27:26; 1इत 16:36; प्रक 3:14.

इ

इंसान का बेटा: ये शब्द खुशखबरी की किताबों में करीब 80 बार आते हैं। ये यीशु मसीह के लिए इस्तेमाल हुए हैं जो दिखाते हैं कि वह एक ऐसा स्वर्गदूत नहीं था जिसने धरती पर आने के लिए इंसानी शरीर धारण किया था बल्कि उसने इंसान के रूप में जन्म लिया था। ये शब्द यह भी दिखाते हैं कि यीशु दानियेल 7:13, 14 में दी भविष्यवाणी पूरी करता। इब्रानी शास्त्र में ये शब्द यहेजकेल और दानियेल के लिए भी इस्तेमाल हुए हैं ताकि यह दिखा सके कि संदेश सुनानेवाले इन नश्वर इंसानों और संदेश देनेवाले परमेश्वर में कितना फर्क है।—यहे 3:17; दान 8:17; मत 19:28; 20:28.

इथियोपिया: पुराने ज़माने का एक देश जो मिस्र के दक्षिण में था। इसमें वे इलाके आते थे जो आज मिस्र के दक्षिणी छोर का हिस्सा और सूडान का आधा (यानी उत्तरी) हिस्सा हैं। यह शब्द कभी-कभी इब्रानी में "कूश" के लिए भी इस्तेमाल होता है।—एस 1:1.

इपिकूरी दार्शनिक: यूनानी दार्शनिक इपिकूरस (ई.पू. 341-270) के चेले। उनका फलसफा इस बात पर आधारित था कि इंसान के जीने का सिर्फ एक ही मकसद है, मौज-मस्ती करना।—प्रेष 17:18.

इबलीस: मसीही यूनानी शास्त्र में शैतान की शख्सियत बताने के लिए इस्तेमाल किया गया एक नाम। इसका मतलब है "बदनाम करनेवाला।" शैतान को यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि यहोवा को, उसके पवित्र नाम और उसके सच्चे वचन को बदनाम करने और झूठा ठहराने में वही सबसे आगे है।—मत 4:1, फु.; यूह 8:44, फु.; प्रक 12:9.

इब्री; इब्रानी: अब्राम (अब्राहम) वह पहला इंसान था जिसे "इब्री" कहा गया था ताकि उसे पास रहने-वाले एमोरियों से अलग बताया जा सके। बाद में यह शब्द अब्राहम के वंशजों के लिए इस्तेमाल हुआ जो उसके पोते याकूब से आए। इनकी भाषा "इब्रानी" थी। यीशु के ज़माने तक इसमें अरामी के कई शब्द जुड़ गए और यही भाषा मसीह और उसके चेले बोलते थे।—उत 14:13; निर्ग 5:3; प्रेष 26:14.

इल्लुरिकुम: यूनान के उत्तर-पश्चिम में बसा एक रोमी प्रांत। पौलुस ने अपनी सेवा के दौरान यहाँ तक सफर किया था। मगर उसने यहाँ प्रचार किया या इसके पहले के इलाकों तक ही प्रचार किया, यह नहीं बताया गया है। (रोम 15:19) —अति. ख13 देखें।

इसराएल: परमेश्वर ने यह नाम याकूब को दिया था। आगे चलकर उसके सभी वंशजों को एक समूह के तौर पर इसराएल कहा जाने लगा। याकूब के 12 बेटों से आए वंशजों को अक-सर इसराएल के बेटे, इसराएल का घराना, इस-राएल के लोग (या आदमी) या इसराएली कहा जाता था। यह नाम उत्तर के दस गोत्रोंवाले राज्य के लिए भी इस्तेमाल होने लगा जब वह दक्षिणी राज्य से अलग हुआ। बाद में अभिषिक्त मसी-हियों को 'परमेश्वर का इसराएल' कहा गया। —गल 6:16; उत 32:28; 2शम 7:23; रोम 9:6.

उ

उप-पत्नी: एक आदमी की दूसरी पत्नी जो अक-सर दासी होती थी।—निर्ग 21:8; 2शम 5:13; 1रा 11:3.

उपरिलेख: भजन की शुरूआत में दी गयी जान-कारी जो बताती है कि उसका लिखनेवाला कौन है, किन हालात में वह भजन लिखा गया था या उस भजन का मकसद क्या है। उपरि-लेख में कभी-कभी संगीत के लिए हिदायतें या भजन गाने की हिदायतें भी दी जाती थीं।—भज 3, 4, 5, 6, 7, 30, 38, 60, 92, 102 के उपरि-लेख देखें।

उपवास: ठहराए गए वक्त तक बिना कुछ खाए-पीए रहना। इसराएली प्रायश्चित के दिन, मुसी-बत की घड़ी में और परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने के लिए उपवास करते थे। यहूदियों ने साल में चार बार उपवास करने का नियम ठहराया ताकि वे उन बीती घटनाओं को याद कर सकें जब उन पर विपत्ति आयी थी। मसीहियों के लिए उपवास करना एक माँग नहीं है।—एज 8:21; यश 58:6; लूक 18:12.

ऊ

ऊँची जगह: उपासना की जगह जो अकसर पहाड़ या पहाड़ी या फिर लोगों के बनाए मंच पर होती थी। हालाँकि ऊँची जगह कभी-कभी परमेश्वर की उपासना के लिए इस्तेमाल की जाती थीं, मगर अकसर इन पर झूठे देवताओं की पूजा की जाती थी।—गि 33:52; 1रा 3:2; यिर्म 19:5.

ऊरीम और तुम्मीम: ये शायद पत्थर के होते थे। जब इसराएल राष्ट्र में कोई अहम मसला उठता था, तो ऐसे में यहोवा की मरज़ी जानने के लिए महायाजक इनका उसी तरह इस्तेमाल करता था जैसे चिट्ठियाँ डाली जाती थीं। वह ऊरीम और तुम्मीम को अपने सीनेबंद में डालकर पवित्र डेरे के अंदर जाता था। ऐसा मालूम होता है कि जब बैबिलोन के लोगों ने यरूशलेम का नाश कर दिया तो उसके बाद से इनका इस्तेमाल होना बंद हो गया।—निर्ग 28:30; नहे 7:65.

ए

एतानीम: यहूदियों के पवित्र कैलेंडर का 7वाँ महीना और कृषि कैलेंडर का पहला महीना। यह महीना, सितंबर के बीच से अक्टूबर के बीच तक का होता था। जब यहूदी बैबिलोन से लौटे तो इस महीने का नाम तिशरी रखा गया। (1रा 8:2) —अति. ख15 देखें।

एदोम: इसहाक के बेटे एसाव को दिया गया दूसरा नाम। एसाव (एदोम) के वंशजों ने सेईर पर कब्ज़ा कर लिया था, जो मृत सागर और अकाबा की खाड़ी के बीच का पहाड़ी इलाका था। यह इलाका एदोम के नाम से जाना गया। (उत 25:30; 36:8)—अति. ख3 और ख4 देखें।

एपा: एक सूखा माप और वह बरतन जिससे अनाज तौला जाता था। एपा, द्रव्य माप बत के बराबर था इसलिए यह 22 ली. का होता था। (निर्ग 16:36; यहे 45:10)—अति. ख14 देखें।

एपोद: एक छोटा ऊपरी कपड़ा जिसे याजक पहन-ते थे। महायाजक का एपोद खास होता था

क्योंकि उसके सामने की तरफ 12 रत्नों से जड़ा सीनाबंद होता था। (निर्ग 28:4, 6)—अति. ख5 देखें।

एप्रैम: यूसुफ के दूसरे बेटे का नाम। आगे चलकर इसराएल का एक गोत्र इसी नाम से जाना गया। इसराएल राज्य के बँटवारे के बाद एप्रैम सबसे ताकतवर गोत्र बन गया, इसलिए दस गोत्रोंवाले राज्य का नाम एप्रैम पड़ा।—उत 41:52; यिर्म 7:15.

एलूल: बैबिलोन की बँधुआई से लौटनेवाले यहूदियों के पवित्र कैलेंडर का छठा महीना और कृषि कैलेंडर का 12वाँ महीना। यह महीना, अगस्त के बीच से सितंबर के बीच तक का होता था। (नहे 6:15)—अति. ख15 देखें।

एशिया: मसीही यूनानी शास्त्र में एक रोमी प्रांत का नाम। आज के तुर्की का पश्चिमी हिस्सा और तट से थोड़ी दूर बसे कुछ द्वीप जैसे सामुस और पतमुस इसमें आते थे। एशिया प्रांत की राजधानी इफिसुस थी। (प्रेष 20:16; प्रक 1:4)—अति. ख13 देखें।

ओ

ओमेर: एक सूखा माप जो 2.2 ली. या एपा के दसवें भाग के बराबर था। (निर्ग 16:16, 18)—अति. ख14 देखें।

क

कंगूरा: खंभे का नक्काशीदार ऊपरी हिस्सा। सुलैमान के मंदिर के सामने एक-जैसे दो खंभे थे, याकीन और बोअज़, जिनके ऊपर बड़े-बड़े कंगूरे लगे थे। (1रा 7:16)—अति. ख8 देखें।

कटाई का त्योहार।—पिन्तेकुस्त देखें।

कठिया गेहूँ: ऐसा गेहूँ (*ट्रिटिकम स्पेलटा*) जो बढ़िया किस्म का नहीं होता था और जिसके दाने से छिलके आसानी से नहीं उतरते थे।—निर्ग 9:32.

कनान: नूह का पोता और हाम का चौथा बेटा। कनान से जो 11 कुल निकले वे भूमध्य सागर के पूरब के इलाके में बस गए। यह इलाका मिस्र और सीरिया के बीच था और इसे "कनान देश" कहा गया। (लैव 18:3; उत 9:18; प्रेष 13:19)—अति. ख4 देखें।

करघा: खाँचा जिसमें धागे से बुनकर कपड़ा बनाया जाता है।—यश 19:9.

करार: परमेश्वर और इंसानों के बीच या दो लोगों के बीच का समझौता, जिसमें वे कुछ करने या न करने की हामी भरते हैं। कभी-कभी सिर्फ एक ही पक्ष को करार की शर्तें माननी होती थीं (यानी एक तरफा करार, जिसमें करार करनेवाला पक्ष ही कोई वादा करता था)। मगर बाकी समय दोनों पक्षों को करार की शर्तें माननी होती थीं (यानी दो तरफा करार)। बाइबल में सिर्फ उन करारों के बारे में नहीं बताया गया है जो परमेश्वर ने इंसानों के साथ किए थे। इसमें आदमियों, गोत्रों, राष्ट्रों और समूहों के बीच किए करारों के बारे में भी बताया गया है। कुछ करार ऐसे थे जिनका असर लंबे समय तक रहा है और आगे भी रहेगा। जैसे, परमेश्वर के वे करार जो उसने अब्राहम, दाविद, इसराएल राष्ट्र (यानी कानून का करार) और परमेश्वर के इसराएल (यानी नया करार) के साथ किए थे।—उत 9:11; 15:18; 21:27; निर्ग 24:7; 2इत 21:7.

करार का संदूक: इसे गवाही का संदूक भी कहा जाता था। यह बबूल की लकड़ी से बनी एक पेटी थी जिस पर सोना मढ़ा था। यह संदूक पवित्र डेरे के परम-पवित्र भाग में रखा गया था। बाद में जब सुलैमान ने मंदिर बनाया तो यह संदूक उसके परम-पवित्र भाग में रखा गया। संदूक का ढकना सोने का था और उस पर दो करूब आमने-सामने बने थे। इसमें खासकर वे दो पटियाएँ रखी थीं जिन पर दस आज्ञाएँ लिखी थीं और जिन्हें गवाही की पटियाएँ कहा जाता था। (निर्ग 25:22; 31:18; व्य 31:26; 1रा 6:19; इब्र 9:4)—अति. ख5 और ख8 देखें।

करूब: ऊँचा ओहदा रखनेवाले स्वर्गदूत जिन्हें खास काम दिए जाते हैं। ये साराप से अलग हैं।—उत 3:24; निर्ग 25:20; यश 37:16; इब्र 9:5.

कब: एक सूखा माप जो 1.22 ली. के बराबर था। यह बत के मुताबिक तौला गया माप था। (2रा 6:25)—अति. ख14 देखें।

कब्र: ऐसी जगह जहाँ एक इंसान को दफनाया जाता है। लेकिन बहुत-सी आयतों में इसे एक लाक्षणिक जगह बताया गया है जहाँ ज़्यादातर इंसान मौत की नींद सो जाते हैं। इन आयतों में

कब्र के लिए इब्रानी में “शीओल” और यूनानी में “हेडीज़” शब्द इस्तेमाल हुए हैं।—उत 47:30; सभ 9:10; प्रेष 2:31.

कमोश: मोआबियों का मुख्य देवता।—1रा 11:33.

कसदिया; कसदी लोग: शुरू-शुरू में टिग्रिस और फरात नदियों के मुहाने के आस-पास का इलाका कसदिया कहा जाता था और वहाँ के रहनेवालों को कसदी लोग। बाद में ये नाम, बैबिलोनिया और उसके लोगों के लिए इस्तेमाल हुए। इसके अलावा, ऐसे लोगों को भी “कसदी” कहा जाता था जो बहुत पढ़े-लिखे थे और विज्ञान, इतिहास, भाषाओं और नक्षत्रों के जानकार थे। मगर साथ ही वे जादू-टोना करते थे और ज्योतिषी थे।—एज 5:12; दान 4:7; प्रेष 7:4.

कहर: इब्रानी शास्त्र में आम तौर पर इसका मतलब है, वह बीमारी या आफत जो यहोवा सज़ा देने के लिए लाता था।—गि 16:49.

काठ: एक सीधा खंभा जिस पर किसी को लटकाया जाता था। कुछ राष्ट्रों में अगर किसी को मौत की सज़ा दी जाती थी तो उसे काठ पर लटकाया जाता था और उसकी लाश उसी पर छोड़ दी जाती थी। या फिर किसी को मारकर उसकी लाश काठ पर लटकायी जाती थी। ऐसा इसलिए किया जाता था ताकि सरेआम उसकी बदनामी हो और दूसरों को चेतावनी मिले। अश्‍शूरी लोग युद्ध में बहुत खूँखार होते थे। वे बंदी बनाए लोगों के पेट में सूली घोंपकर सीधे छाती में निकालते थे और उनकी लाशों को उसी पर लटकने के लिए छोड़ देते थे। मगर यहूदियों के कानून के मुताबिक जो परमेश्‍वर की निंदा करने या मूर्तिपूजा जैसे घोर पाप करता था, उसे पहले पत्थर मारकर या किसी और तरीके से मार डाला जाता था। फिर उसकी लाश को काठ या पेड़ पर लटकाया जाता था ताकि दूसरों को चेतावनी मिले। (व्य 21:22, 23; 2शम 21:6, 9) रोम के लोग कभी-कभी मुजरिम को काठ पर बाँध देते थे और वह कई दिनों तक दर्द से तड़पता रहता था और आखिरकार भूख-प्यास और गरमी से मर जाता था। मगर कई बार वे काठ पर मुजरिम के हाथ-पैर कीलों से ठोंक देते थे, जैसा उन्होंने यीशु के साथ किया था। (लूक 24:20; यूह 19:14-16; 20:25; प्रेष 2:23, 36; यातना का काठ देखें।) इसके अलावा, जिन आयतों में ‘काठ में कस देना’ लिखा है, उसका मतलब है लकड़ी का एक ढाँचा जिसमें एक इंसान को जकड़कर सज़ा दी जाती थी। कई काठ ऐसे थे जिनमें सिर्फ पैर जकड़े जाते थे, जबकि दूसरे किस्म के काठ में हाथ-पैर और गरदन जकड़े जाते थे जिस वजह से पूरा शरीर मुड़ा हुआ रहता था।—यिर्म 20:2; प्रेष 16:24.

कानून: यह मूसा का कानून हो सकता है, जो यहोवा ने ई.पू. 1513 में सीनै वीराने में इसराएल को दिया था। बाइबल की पहली पाँच किताबों को भी अकसर कानून कहा जाता है। (यह 23:6; मत 7:12; लूक 24:44; गल 3:24) इसके अलावा, कानून का मतलब मूसा के कानून का एक नियम या सिद्धांत भी हो सकता है।—गि 15:16; व्य 4:8.

किसलेव: बैबिलोन से लौटनेवाले यहूदियों के पवित्र कैलेंडर का 9वाँ महीना और कृषि कैलेंडर का तीसरा महीना। यह महीना, नवंबर के बीच से दिसंबर के बीच तक का होता था। (नहे 1:1; जक 7:1)—अति. ख15 देखें।

कुम्हार: इसके इब्रानी शब्द का शाब्दिक मतलब है “रचनेवाला।” कुम्हार और मिट्टी की मिसाल अकसर यह दिखाने के लिए दी जाती है कि हर इंसान और राष्ट्र पर सिर्फ यहोवा को हुकूमत करने का अधिकार है।—यश 64:8; रोम 9:21.

कुल देवताओं की मूरतें: कभी-कभी इन मूरतों से शकुन विचारा जाता था। (यहे 21:21) कुछ कुल देवताओं की मूरतों की लंबाई-चौड़ाई और आकार इंसान जितने होते थे, तो कुछ मूरतें बहुत छोटी होती थीं। (उत 31:34; 1शम 19:13, 16) मेसोपोटामिया में पुरातत्व खोज से पता चला है कि परिवार के जिस सदस्य के पास कुल देवताओं की मूरतें होती थीं उसे विरासत मिलती थी। (शायद यही वजह है कि राहेल ने अपने पिता के कुल देवताओं की मूरतें ले ली थीं।) लेकिन इसराएल में ऐसा कोई दस्तूर नहीं था। न्यायियों और राजाओं के दिनों में कुल देवताओं की मूरतें झूठी उपासना में इस्तेमाल की जाती थीं। जब वफादार राजा योशियाह ने अपने राज में घिनौनी चीज़ों का नाश किया था, तो उनमें कुल देवताओं की

मूरतें भी शामिल थीं।—न्या 17:5; 2रा 23:24; हो 3:4.

कैसर: एक रोमी परिवार का नाम, जो आगे चलकर रोमी सम्राटों की उपाधि बन गया। बाइबल में तीन कैसर के नाम दिए गए हैं: औगुस्तुस, तिबिरियुस और क्लौदियुस। नीरो का नाम बाइबल में नहीं है, मगर उसे भी कैसर कहा गया है। इसके अलावा, मसीही यूनानी शास्त्र में "कैसर" का मतलब सरकार भी हो सकता है।—मर 12:17, फु.; प्रेष 25:12, फु.

कोड़े लगवाना: मसीही यूनानी शास्त्र में इसका मतलब है, ऐसे कोड़े से पीटना जिसमें बहुत-सी गाँठ होती थीं या जिसके छोर पर काँटे लगे होते थे।—यूह 19:1.

कोढ़; कोढ़ी: एक गंभीर चर्मरोग। बाइबल में जिस कोढ़ का ज़िक्र मिलता है वह आज के कोढ़ जैसा नहीं है। यह न सिर्फ इंसानों को होता था बल्कि कपड़ों और घरों पर भी होता था। जिस इंसान को कोढ़ की बीमारी होती है उसे कोढ़ी कहते हैं।—लैव 14:54; लूक 5:12.

कोने का पत्थर: इमारत की दो दीवारें जहाँ मिलती थीं, उस कोने पर लगाया जानेवाला पत्थर। दीवारों को जोड़ने और मज़बूत करने के लिए यह पत्थर ज़रूरी होता था। कोने का वह पत्थर सबसे अहम होता था जो नींव में डाला जाता था। इसलिए सार्वजनिक इमारतों और शहरपनाहों में यह पत्थर मज़बूत किस्म का होता था। ये शब्द लाक्षणिक तौर पर भी इस्तेमाल हुए हैं जैसे, धरती की नींव डालने के लिए। मसीही मंडली की तुलना परमेश्वर के भवन से की गयी है और यीशु को उसकी "नींव के कोने का पत्थर" कहा गया है।—इफ 2:20; अय 38:6.

कोर: सूखा और द्रव्य माप। यह 220 ली. के बराबर था जो बत के मुताबिक तौला जाता था। (1रा 5:11)—अति. ख14 देखें।

ख

खंभा: किसी इमारत को खड़ा रखने के लिए इस्तेमाल होनेवाला स्तंभ। कुछ खंभे ऐतिहासिक घटनाओं को याद करने के लिए खड़े किए जाते थे। सुलैमान ने जो मंदिर और शाही इमारतें बनवायी थीं उनमें भी खंभे इस्तेमाल हुए थे। झूठी उपासना करनेवाले लोगों ने पूजा के लिए स्तंभ खड़े किए। कई बार इसराएलियों ने भी ऐसा किया। (न्या 16:29; 1रा 7:21; 14:23)—कंगूरा देखें।

खतना: लड़कों और आदमियों के लिंग की खलड़ी काटना। अब्राहम और उसके वंशजों से माँग की गयी थी कि वे खतना करवाएँ, मगर मसीहियों से यह माँग नहीं की गयी है। कई आयतों में शब्द "खतना" लाक्षणिक तौर पर इस्तेमाल हुआ है।—उत 17:10; 1कुर 7:19; फिल 3:3.

खमीर: आटे या पेय को खमीरा करने के लिए मिलायी जानेवाली चीज़। यह खासकर पुराने आटे की बची हुई लोई थी जो खमीरी होती थी। बाइबल में अकसर खमीर को पाप और भ्रष्टता की निशानी बताया गया है। इसका इस्तेमाल ऐसी बढ़ोतरी दिखाने के लिए भी किया गया है, जो सबकी नज़रों से छिपी और दूर-दूर तक होती है।—निर्ग 12:20; मत 13:33; गल 5:9.

खर्रा: चमड़े या सरकंडे से बना एक लंबा पत्र, जिस पर सिर्फ एक तरफ लिखा जाता था। इसे आम तौर पर एक लकड़ी पर लपेटकर रखा जाता था। शास्त्र लिखने और उसकी नकल तैयार करने के लिए खर्रों का इस्तेमाल किया जाता था। बाइबल के ज़माने में किताबें ऐसी होती थीं।—यिर्म 36:4, 18, 23; लूक 4:17-20; 2ती 4:13.

खास अगुवा: यीशु मसीह को दी एक उपाधि। इससे उसकी खास भूमिका पता चलती है कि वह वफादार इंसानों को पाप के खतरनाक अंजामों से छुड़ाएगा और हमेशा की ज़िंदगी पाने का रास्ता दिखाएगा।—प्रेष 3:15; 5:31; इब्र 2:10; 12:2.

खुशखबरी: मसीही यूनानी शास्त्र में परमेश्वर के राज की खुशखबरी और यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिलनेवाले उद्धार की खुशखबरी के बारे में बताया गया है।—लूक 4:18, 43; प्रेष 5:42; प्रक 14:6.

ग

गंधरस: खुशबूदार गोंद जो अलग-अलग कँटीली झाड़ियों से या *कोमिफोरा* प्रजाति के छोटे-छोटे पेड़ों से निकाला जाता था। इसका इस्तेमाल अभिषेक का पवित्र तेल बनाने में होता था। यह कपड़े या बिस्तर महकाने के लिए भी इस्तेमाल होता था। इसे मालिश के तेल और लेप में डाला

जाता था। इसके अलावा, दफनाने से पहले लाश पर गंधरस लगाया जाता था।—निर्ग 30:23; नीत 7:17; यूह 19:39.

गित्तीत: संगीत से जुड़ा एक शब्द जिसका सही-सही मतलब नहीं पता। लेकिन ऐसा मालूम होता है कि यह इब्रानी शब्द *गाथ* से निकला है, जिसका मतलब है अंगूर रौंदने का हौद। इस-लिए कुछ लोगों का मानना है कि गित्तीत उन गानों की धुन हो सकता है जो लोग दाख-मदिरा बनाते वक्त गाते थे।—भज 81:उप.

गिरवी: इसे बंधक भी कहा जाता था। मूसा के कानून में इस बारे में कई नियम दिए गए थे ताकि देश के गरीब और बेसहारा लोगों के साथ कोई अन्याय न हो।—निर्ग 22:26; यहे 18:7.

गिलाद: यरदन नदी के पूरब का उपजाऊ इलाका जो यब्बोक घाटी के उत्तर और दक्षिण में फैला था। कुछ आयतों में यरदन के पूरब में इसराए-लियों के पूरे इलाके को गिलाद कहा गया है, जहाँ रूबेन, गाद और मनश्शे का आधा गोत्र रहता था। (गि 32:1; यह 12:2; 2रा 10:33) —अति. ख4 देखें।

गुट: ऐसे लोगों का समूह जो कुछ खास शिक्षाएँ मानता था या जो एक अगुवे के पीछे जाता था और जिसकी अपनी ही कुछ शिक्षाएँ होती थीं। यहूदी धर्म के दो मुख्य दलों, फरीसियों और सदूकियों को गुट कहा जाता था। लोग मसीही धर्म को "गुट" या 'नासरियों का गुट' कहते थे क्योंकि शायद उनका मानना था कि इस गुट के लोग यहूदी धर्म से अलग हुए हैं। कुछ समय बाद मसीही मंडली में कई गुट बनने लगे। प्रकाशित-वाक्य में खासकर "निकुलाउस के गुट" का ज़िक्र मिलता है।—प्रेष 5:17; 15:5; 24:5; 28:22; प्रक 2:6; 2पत 2:1.

गेरा: एक बाट जो 0.57 ग्रा. के बराबर था। 20 गेरा एक शेकेल के बराबर था। (लैव 27:25) —अति. ख14 देखें।

गेहन्ना: हिन्नोम घाटी का यूनानी नाम। यह घाटी प्राचीन यरूशलेम के दक्षिण-पश्चिम की तरफ थी। (यिर्म 7:31) भविष्यवाणियों में इसे ऐसी जगह बताया गया था जहाँ लाशें फेंकी जातीं। (यिर्म 7:32; 19:6) इस बात का कोई सबूत नहीं कि गेहन्ना में जानवरों और इंसानों को फेंका जाता था ताकि उन्हें ज़िंदा जलाया या तड़पाया जाए। इसलिए गेहन्ना ऐसी अनदेखी जगह नहीं हो सकता, जहाँ इंसानों को मरने के बाद हमेशा-हमेशा के लिए सचमुच की आग में तड़पाया जाता है। इसके बजाय, जब यीशु और उसके चेलों ने गेहन्ना की बात की तो उनका मतलब था, "दूसरी मौत" यानी हमेशा का विनाश।—प्रक 20:14; मत 5:22; 10:28.

गोफन: चमड़े का एक पट्टा या फिर जानवरों की नसों, लंबी-लंबी घास या बालों से गुंथा हुआ एक पट्टा। यह बीच से चौड़ा होता था जिसमें फेंक-कर मारनेवाली चीज़ रखी जाती थी। गोफन में अकसर पत्थर का इस्तेमाल होता था। इसका एक सिरा हाथ या कलाई पर बाँधा जाता था और दूसरे सिरे को कसकर पकड़ा जाता था। फिर गोफन को ज़ोर से घुमाया जाता था और उसके दूसरे सिरे को छोड़ा जाता था। प्राचीन राष्ट्रों की सेनाओं में गोफन चलानेवाले योद्धा भी होते थे। —न्या 20:16; 1शम 17:50.

घ

घाटी: इसके इब्रानी शब्द का मतलब है, ऐसी घाटी जिसमें से नदी बहती थी या नदी का तल। यह बरसात के मौसम को छोड़कर बाकी मौसम में सूखी रहती थी। इसके इब्रानी शब्द का मतलब नदी भी हो सकता है। कुछ नदियों में पानी के सोते होते थे, इसलिए वे कभी नहीं सूखती थीं। —उत 26:19; गि 34:5; व्य 8:7; 1रा 18:5; अय 6:15.

च

चक्की का पाट: बाइबल के ज़माने में ज़्यादातर घरों में हाथ की चक्की होती थी जिसे औरतें चलाती थीं। अनाज पीसने पर ही परिवार को रोटी मिलती थी, इसलिए मूसा के कानून में किसी की चक्की या उसके ऊपरी पाट को गिरवी के रूप में ज़ब्त कर लेना मना था। हाथ की चक्की की तरह बड़ी-बड़ी चक्कियाँ भी होती थीं जिनका पाट जानवर घुमाते थे।—व्य 24:6; मर 9:42.

चढ़ाई का गीत: भजन 120-134 का उपरिलेख। इन शब्दों के मतलब के बारे में अलग-अलग विचार हैं। मगर कई लोगों का मानना है कि जब

इसराएली साल के तीन बड़े त्योहार मनाने यहूदा के पहाड़ 'चढ़कर' यरूशलेम जाते थे, तो वे ये 15 भजन खुशी-खुशी गाते थे।

चढ़ावे की रोटियाँ।—नज़राने की रोटी देखें।

चर्मपत्र: भेड़-बकरी या बछड़े की चमड़ी जिसे इस तरह तैयार किया जाता था कि वह लिखाई के काम आ सके। यह सरकंडे से ज़्यादा टिकाऊ था और बाइबल के खर्रे इससे बने होते थे। पौलुस ने तीमुथियुस को जो चर्मपत्र लाने के लिए कहे थे वे शायद इब्रानी शास्त्र के कुछ हिस्से थे। मृत सागर के पास मिले खर्रों में कुछ चर्मपत्र भी थे। —2ती 4:13.

चिट्ठियाँ: फैसला करने में इस्तेमाल होनेवाले छोटे-छोटे पत्थर या लकड़ी के टुकड़े। इन्हें कपड़े की तह या एक बरतन में डालकर हिलाया जाता था। जिसके नाम का पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा बाहर गिरता या निकाला जाता था उसी को चुना जाता था। यह काम प्रार्थना के साथ किया जाता था। मूल भाषा में 'चिट्ठियों' के लिए जो शब्द इस्तेमाल हुए हैं, उनका मतलब 'भाग' या 'हिस्सा' भी हो सकता है।—यह 14:2; भज 16:5; नीत 16:33; मत 27:35.

चिमटे: ये सोने के बने होते थे और इनका इस्तेमाल पवित्र डेरे और मंदिर में दीयों की आग बुझाने के लिए किया जाता था।—निर्ग 37:23.

छ

छप्परों का त्योहार: इसे डेरों का त्योहार या बटोरने का त्योहार भी कहा जाता था, जो एतानीम 15-21 तक चलता था। इसराएल में कृषि-वर्ष के आखिर में जो कटाई होती थी, उसकी खुशी में यह त्योहार मनाया जाता था। इस मौके पर लोग आनंद मनाते थे और यहोवा को धन्यवाद देते थे कि उसने उनकी फसल पर आशीष दी। इस दौरान लोग छप्परों में या छज्जेदार मचानों में रहते थे, जो उन्हें मिस्र से निकलने की घटना याद दिलाते थे। यह उन तीन त्योहारों में से एक है जिन्हें मनाने के लिए आदमियों से माँग की जाती थी कि वे यरूशलेम जाएँ।—लैव 23:34; एज 3:4.

छुटकारे का साल: इसराएलियों के वादा किए गए देश में दाखिल होने के बाद से हर 50वाँ साल। इस साल लोगों को ज़मीन पर कोई जुताई-बोआई नहीं करनी थी और इब्री दासों को आज़ाद करना था। विरासत की जो भी ज़मीन बेची गयी थी उसे लौटाना था। एक तरह से छुटकारे का साल त्योहार का साल था। इस साल इसराएल राष्ट्र में वैसी खुशहाली लौट आती जैसी उस वक्त थी जब परमेश्वर ने उसकी शुरूआत की थी।—लैव 25:10.

ज

जटामाँसी: हलके लाल रंग का खुशबूदार तेल जो बहुत कीमती था। यह जटामाँसी (*नार्डोस्टैकिस जटामाँसी*) के पौधे से निकाला जाता था। यह तेल बहुत ही महँगा था इसलिए इसमें अकसर सस्ता तेल मिलाया जाता था या नकली जटा-माँसी तेल को असली बताकर बेचा जाता था। गौर करने लायक बात यह है कि मरकुस और यूहन्ना, दोनों ने बताया कि यीशु पर "असली जटामाँसी" का तेल उँडेला गया था।—मर 14:3; यूह 12:3.

जाति: बाइबल में शब्द "जाति" ऊँच-नीच से नहीं जुड़ा है। इसके बजाय, जाति आम तौर पर ऐसे लोगों से मिलकर बना एक समूह है जिनका एक-दूसरे के साथ खून का रिश्ता है और जो एक ही भाषा बोलते हैं।—प्रक 7:9.

जादू-टोना: यह इसलिए किया जाता है क्योंकि लोगों का मानना है कि मरने के बाद एक इंसान के शरीर से आत्मा निकल जाती है। वे यह भी मानते हैं कि यह आत्मा ज़िंदा इंसानों से बात कर सकती है और करती भी है, खासकर उस इंसान के ज़रिए जो मरे हुओं से संपर्क करने का दावा करता है। "जादू-टोना" का यूनानी शब्द है *फार-माकिया* जिसका शाब्दिक मतलब है, "नशीली दवाइयाँ लेना।" यह यूनानी शब्द जादू-टोना के लिए भी इस्तेमाल होने लगा क्योंकि पुराने ज़माने में टोना-टोटका करने के लिए नशीली दवाइयाँ ली जाती थीं।—गल 5:20; प्रक 21:8.

जिव: यह यहूदियों के पवित्र कैलेंडर के दूसरे महीने और कृषि कैलेंडर के 8वें महीने का पुराना नाम है। यह महीना, अप्रैल के बीच से मई के बीच तक का होता था। यहूदी तलमूद में और बैबिलोन की बँधुआई के बाद के लेखों में इस महीने का नाम अय्यार बताया गया। (1रा 6:37) —अति. ख15 देखें।

जीवनः मूल भाषाओं में ऐसे कई शब्द हैं जिनका अनुवाद "जीवन" किया गया है। इनमें से दो हैं, इब्रानी शब्द *नेफेश* और यूनानी शब्द *साइखी*। बाइबल के इस अनुवाद में इन शब्दों का आम तौर पर अनुवाद "जीवन" किया गया है। बाइबल में जिस तरह *नेफेश* और *साइखी* का इस्तेमाल हुआ है, उसे जाँचने पर पता चलता है कि उनका मतलब हैः (1) लोग, (2) जीव-जंतु या (3) इंसान और जीव-जंतुओं का जीवन। (उत 1:20; 2:7; 1पत 3:20) बाइबल के इस अनुवाद में इन शब्दों का अनुवाद संदर्भ के मुताबिक, इनके सही मतलब को ध्यान में रखते हुए किया गया है। जैसे, "ज़िंदगी," "जान," "जीव," "इंसान," "मेरा मन" या सिर्फ सर्वनाम (मिसाल के लिए "मैं")। कुछ आयतों में *नेफेश* और *साइखी* का अनुवाद "अपनी पूरी जान" किया गया है, जिसका मतलब है तन-मन से कोई काम करना। (व्य 6:5; मत 22:37) कुछ और आयतों में मूल भाषाओं के ये शब्द इंसान की इच्छा या भूख के लिए भी इस्तेमाल हुए हैं। इसके अलावा, इनका मतलब लाश भी हो सकता है। —गि 6:6; नीत 23:2; यश 56:11; हाग 2:13.

जीवन का पेड़ः अदन के बाग में लगा एक पेड़। बाइबल यह नहीं बताती कि उसके फलों में जीवन देने की कोई ताकत थी। इसके बजाय वह पेड़ इस बात की गारंटी था कि परमेश्‍वर जिस किसी को वह फल खाने देगा उसे हमेशा की ज़िंदगी मिलेगी।—उत 2:9; 3:22.

जुआः एक आदमी के कंधों पर रखा गया डंडा जिसके दोनों तरफ भार लटकाया जाता था। या फिर बोझ ढोनेवाले दो जानवरों (अकसर गाय-बैलों) की गरदन पर रखी बल्ली या फट्टा, जिससे वे हल जैसा कोई औज़ार या गाड़ी खींचते थे। गुलाम अकसर भारी-भरकम बोझ ढोने के लिए जुए का इस्तेमाल करते थे, इसलिए जुए को गुलामी या दूसरे इंसान के अधीन होने, ज़ुल्म और अत्याचार की निशानी बताया गया है। जुआ हटाने या तोड़ने का मतलब था गुलामी, ज़ुल्मों और अत्याचार से छुटकारा पाना।—लैव 26:13; मत 11:29, 30.

ज़्यूसः यूनानियों के बहुत-से देवी-देवताओं में सबसे बड़ा देवता। लुस्त्रा में लोगों ने बरनबास के बारे में गलत राय कायम की थी कि वह ज़्यूस है। लुस्त्रा के आस-पास मिले प्राचीन शिलालेख पर ये शब्द खुदे हुए थे, "ज़्यूस के पुजारी" और "सूर्य देवता ज़्यूस।" पौलुस ने माल्टा से जिस जहाज़ में सफर किया उसके सामने की तरफ "ज़्यूस के बेटों" की निशानी बनी थी, जो जुड़वा भाई थे और जिनका नाम कास्टर और पोलुक्स था। —प्रेषि 14:12; 28:11.

ट

टाटः एक खुरदुरा कपड़ा। यह बोरे या थैले बनाने के काम आता था जिनमें अनाज वगैरह भरा जाता था। टाट आम तौर पर गहरे रंग के बकरी के बालों से बुनकर बनाया जाता था। दस्तूर के मुताबिक शोक मनाते वक्‍त टाट ओढ़ा जाता था। —उत 37:34; लूक 10:13.

टिड्डियाँः मूसा के कानून के मुताबिक टिड्डियों को शुद्ध माना जाता था और इन्हें खाने की इसराएलियों को इजाज़त थी। जब टिड्डियों का बड़ा झुंड अपने रास्ते में आनेवाली हर चीज़ को चट कर जाता और तबाही मचाता, तो इसे टिड्डियों का कहर कहा जाता था।—निर्ग 10:14; मत 3:4.

टीलाः इब्रानी में "मिल्लो।" जिस इब्रानी शब्द से "मिल्लो" निकला है उसका मतलब है "भरना।" *सेप्टुआजेंट* में इसका अनुवाद "किला" किया गया है। यह शायद दाविदपुर में एक छोटी पहाड़ी या एक इमारत था। मगर यह दिखने में कैसा था, इसकी कोई ठीक-ठीक जानकारी नहीं है।—2शम 5:9; 1रा 11:27.

टोना-टोटकाः माना जाता है कि यह काम दुष्ट स्वर्गदूतों से मिली शक्‍ति से किया जाता है। —2इत 33:6.

त

तजः तज के पेड़ (*सिन्‍नामोमम केसिया*) की छाल। तज और दालचीनी एक ही जाति के पेड़ हैं। तज को एक खुशबूदार मसाले के तौर पर और अभिषेक का पवित्र तेल तैयार करने में इस्तेमाल किया जाता था।—निर्ग 30:24; भज 45:8; यहे 27:19.

तम्मूजः (1) एक देवता का नाम, जिसके लिए यरूशलेम में वे इब्री औरतें रो रही थीं जो सच्ची उपासना से मुकर गयी थीं। कहा जाता है कि

तम्मूज दरअसल एक राजा था जिसके मरने के बाद उसे देवता मानकर पूजा जाने लगा। सूमेरी पाठ में तम्मूज को दूमूज़ी कहा गया है और उसे प्रजनन देवी इनाना (बैबिलोन की देवी इशतर) का पति या प्रेमी बताया गया है। (यहे 8:14) (2) बैबिलोन की बँधुआई से लौटनेवाले यहूदियों के पवित्र कैलेंडर का चौथा महीना और कृषि कैलेंडर का 10वाँ महीना। यह महीना, जून के बीच से जुलाई के बीच तक का होता था।—अति. ख15 देखें।

तरशीश के जहाज़: शुरू-शुरू में ये उन जहाज़ों को कहा जाता था जो प्राचीन तरशीश (आज के स्पेन) तक जाते थे। ऐसा लगता है कि आगे चलकर यह नाम उन सभी बड़े-बड़े जहाज़ों को दिया गया जो दूर-दूर तक सफर करते थे। सुलैमान और यहोशापात ने भी इन जहाज़ों को व्यापार के लिए इस्तेमाल किया।—1रा 9:26; 10:22; 22:48.

तारतरस: मसीही यूनानी शास्त्र में इस शब्द का मतलब है, कैद में जैसी गिरी हुई हालत होती है वैसी ही हालत जिसमें नूह के दिनों के बागी स्वर्गदूतों को डाल दिया गया था। दूसरा पतरस 2:4 में क्रिया *तारतारू* (यानी "तारतरस में फेंकना") इस्तेमाल हुई है। इसका यह मतलब नहीं कि 'जिन स्वर्गदूतों ने पाप किया' था उन्हें उस तारतरस में फेंका गया था जिसके बारे में झूठे धर्मों की कथा-कहानियों में बताया गया है (यानी ज़मीन के नीचे का कैदखाना और अँधेरी कोठरी, जहाँ छोटे-मोटे देवताओं को कैद किया जाता था)। इसके बजाय, इसका मतलब है कि परमेश्वर ने स्वर्ग में उन्हें उनकी जगह से हटा दिया, उनकी ज़िम्मेदारियाँ छीन लीं और उनके मनों को ऐसे घोर अंधकार में डाल दिया कि वे परमेश्वर के शानदार मकसद को कभी समझ न पाएँ। अंधकार इस बात की भी निशानी है कि उन स्वर्गदूतों का आखिर में क्या अंजाम होनेवाला है। शास्त्र बताता है कि उन्हें उनके राजा शैतान के साथ हमेशा के लिए नाश किया जाएगा। इसलिए तारतरस उन बागी स्वर्गदूतों की सबसे गिरी हुई हालत को दर्शाता है। यह प्रकाशितवाक्य 20:1-3 में बताया "अथाह-कुंड" नहीं है।

तिशरी।—एतानीम और अति. ख15 देखें।

तुरही: धातु से बना एक साज़ जिसे फूँककर बजाया जाता था। इसे इशारा करने के लिए बजाया जाता था और संगीत में भी इस्तेमाल किया जाता था। गिनती 10:2 के मुताबिक यहोवा ने हिदायत दी कि चाँदी की दो तुरहियाँ बनायी जाएँ जो खास तौर पर मंडली को इकट्ठा करने, पड़ाव उठाने और युद्ध का ऐलान करने के लिए फूँकी जातीं। शायद ये तुरहियाँ सीधी होती थीं, जबकि "नरसिंगे" मुड़े होते थे और जानवरों के सींग से बने होते थे। मंदिर में बजाए जानेवाले साज़ों में तुरहियाँ भी शामिल थीं, मगर बाइबल यह नहीं बताती कि उनकी बनावट कैसी थी। तुरहियों की आवाज़ का लाक्षणिक तौर पर भी इस्तेमाल हुआ है। जब यहोवा अपना फैसला सुनाता है या उसकी तरफ से कोई खास घटना घटती है, तो उसके साथ-साथ तुरहियों की आवाज़ सुनायी देती है।—2इत 29:26; एज 3:10; 1कुर 15:52; प्रक 8:7-11:15.

तेबेत: बैबिलोन की बँधुआई से लौटनेवाले यहूदियों के पवित्र कैलेंडर का 10वाँ महीना और कृषि कैलेंडर का चौथा महीना। यह महीना, दिसंबर के बीच से जनवरी के बीच तक का होता था। आम तौर पर इसे सिर्फ 'दसवाँ महीना' कहा गया है। (एस 2:16)—अति. ख15 देखें।

तैयारी का दिन: सब्त से पहले का दिन, जिसमें यहूदी ज़रूरी तैयारियाँ करते थे। आज के हिसाब से यह दिन शुक्रवार को सूरज ढलने पर खत्म होता था और उसी वक्त सब्त का दिन शुरू होता था। यहूदी एक शाम से दूसरी शाम को एक दिन गिनते थे।—मर 15:42; लूक 23:54.

तोड़ा: इब्रियों की भार मापने और मुद्रा की सबसे बड़ी इकाई। इसका वज़न 34.2 किलो था। यूनानी तोड़ा इससे छोटा होता था जिसका वज़न करीब 20.4 किलो था। (1इत 22:14; मत 18:24, फु.)—अति. ख14 देखें।

द

दया के दान: ऐसे दान जो ज़रूरतमंदों को दिए जाते थे। इब्रानी शास्त्र में इस तरह के दान का सीधे-सीधे ज़िक्र तो नहीं मिलता, मगर कानून में बताया गया था कि इसराएलियों को किन तरीकों से गरीबों की मदद करनी थी।—मत 6:2, फु.

दर्कनोन: सोने का एक फारसी सिक्का जिसका वज़न 8.4 ग्रा. था। (1इत 29:7)—अति. ख14 देखें।

दर्शी: वह आदमी जो परमेश्वर की मदद से उसकी मरज़ी जान पाता था। उसकी आँखें खोली जाती थीं ताकि वह उन बातों को देख या समझ सके जो आम इंसान के लिए देखनी या समझनी मुश्किल थीं। इसका इब्रानी शब्द जिस मूल शब्द से निकला है उसका मतलब है "देखना।" यह सचमुच देखना या लाक्षणिक तौर पर देखना हो सकता है। दर्शी के पास लोग बुद्धि-भरी सलाह लेने आते थे कि फलाँ मुश्किल से कैसे निकला जाए।—1शम 9:9.

दसवाँ हिस्सा: किसी भी चीज़ का 10 प्रतिशत, जो दान में या नज़राने के तौर पर दिया जाता था। दसवाँ हिस्सा खासकर उपासना से जुड़े कामों के लिए दिया जाता था। (मला 3:10; व्य 26:12; मत 23:23) मूसा के कानून के तहत, हर साल इसराएलियों को अपने खेत की पैदावार का और मवेशियों की बढ़ोतरी का दसवाँ हिस्सा लेवियों को देना होता था ताकि उनका गुज़ारा हो सके। और लेवी इस हिस्से का दसवाँ हिस्सा हारून के घराने के याजकों को देते थे ताकि उनका गुज़ारा हो सके। इसके अलावा, इसराएलियों को और भी कई तरह का दसवाँ हिस्सा देना होता था। आज मसीहियों से दसवाँ हिस्सा देने की माँग नहीं की जाती।

दाँवना; खलिहान: अनाज के दानों को डंठलों और भूसी से अलग करने को दाँवना कहा जाता था। अनाज को डंडों से पीट-पीटकर दाँवा जाता था। लेकिन अगर अनाज ज़्यादा हो तो उसे खास औज़ार से दाँवा जाता था। जैसे, दाँवने की पटिया या छोटे-छोटे पहिए जिन्हें जानवर खींचते थे। अनाज को खलिहान में फैलाया जाता था और उस पर दाँवने का औज़ार चलाया जाता था। दाँवने की जगह को खलिहान कहा जाता था। खलिहान अकसर गोलाकार होता था और किसी ऊँची जगह पर बना होता था जहाँ हवा चलती थी।—लैव 26:5; यश 41:15; मत 3:12.

दागोन: पलिश्तियों का एक देवता। यह तो नहीं पता कि यह नाम कैसे पड़ा, मगर कुछ विद्वान कहते हैं कि यह इब्रानी शब्द *दाघ* (यानी मछली) से जुड़ा है।—न्या 16:23; 1शम 5:4.

दाविद का वंशज: ये शब्द अकसर यीशु के लिए इस्तेमाल हुए हैं। ये इस बात पर ज़ोर देते हैं कि यीशु, दाविद के खानदान से है और उस राज का वारिस है जिसका करार परमेश्वर ने दाविद से किया था।—मत 12:23; 21:9.

दाविदपुर: यबूस शहर को दिया गया नाम। यह नाम तब दिया गया था जब दाविद ने उसे जीत लिया था और वहाँ अपना महल बनवाया था। इसे सिय्योन भी कहा जाता है। यह यरूशलेम में दक्षिण-पूरब में है और शहर का सबसे पुराना हिस्सा है।—2शम 5:7; 1इत 11:4, 5.

दिकापुलिस: यूनानी शहरों का समूह, जो शुरू में दस शहरों से मिलकर बना था। (यह यूनानी शब्द *दिका* से निकला है जिसका मतलब है "दस" और *पुलिस* जिसका मतलब है "शहर।") इसके ज़्यादातर शहर गलील झील और यरदन नदी के पूरब में बसे थे, इसलिए उस इलाके का नाम भी दिकापुलिस था। ये शहर यूनानी संस्कृति और व्यापार के केंद्र थे। यीशु इस इलाके से गुज़रा था, मगर इस बात का कोई रिकॉर्ड नहीं कि वह इसके किसी शहर में रुका था। (मत 4:25; मर 5:20)—अति. क7 और ख10 देखें।

दिन का तारा: इसका और 'सुबह के तारे' का एक ही मतलब है। सूरज उगने से पहले पूरब में जो आखिरी तारा टिमटिमाता है, उसे दिन का तारा कहते हैं। इसे देखकर लोग समझ जाते थे कि नया दिन शुरू होनेवाला है।—प्रक 22:16; 2पत 1:19.

दीनार: चाँदी का रोमी सिक्का जिसका वज़न 3.85 ग्रा. था। इसके एक तरफ कैसर की सूरत बनी होती थी। एक दीनार एक दिन की मज़दूरी होती थी और रोमी, यहूदियों से "कर" के तौर पर एक दीनार वसूल करते थे। (मत 22:17; लूक 20:24)—अति. ख14 देखें।

दुनिया की व्यवस्था का आखिरी वक्त: समय का वह दौर जो शैतान के कब्ज़े में पड़ी इस दुनिया की व्यवस्था के अंत से खत्म होगा। इसी दौरान मसीह की मौजूदगी भी चल रही है। यीशु के निर्देशन में स्वर्गदूत "दुष्टों को नेक जनों से अलग करेंगे" और उन्हें नाश कर देंगे।

(मत 13:40-42, 49) यीशु के चेले जानना चाहते थे कि वह "आखिरी वक्त" कब आएगा। (मत 24:3) स्वर्ग लौटने से पहले यीशु ने अपने चेलों से वादा किया था कि वह उस वक्त तक उनके साथ रहेगा।—मत 28:20.

दुनिया की व्यवस्था या व्यवस्थाएँ: इनका यूनानी शब्द *आयॉन* है। इसका मतलब है, किसी दौर के हालात या कुछ खास बातें जो उस दौर या ज़माने को दूसरे दौर या ज़माने से अलग दिखाती हैं। बाइबल "इस दुनिया" के बारे में भी ज़िक्र करती है, जिसका मतलब है मौजूदा हालात और लोगों के जीने का तौर-तरीका। (2ती 4:10) यहोवा ने कानून के करार के ज़रिए ऐसी व्यवस्था की शुरूआत की जिसे इसराएलियों या यहूदियों का ज़माना भी कहा जा सकता है। मगर बाद में उसने यीशु मसीह के फिरौती बलिदान के ज़रिए एक दूसरी व्यवस्था की शुरूआत की, जो खासकर अभिषिक्त मसीहियों से जुड़ी है। इससे एक नया दौर शुरू हुआ जिसमें वे बातें पूरी होने लगीं जो कानून के करार में दर्शायी गयी थीं। जहाँ बहुवचन में 'दुनिया की व्यवस्थाएँ' लिखा है, वहाँ इनका मतलब है अलग-अलग तरह की व्यवस्थाएँ या फिर बीते समय के या आनेवाले समय के हालात।—मत 24:3; मर 4:19; रोम 12:2; 1कुर 10:11.

दुष्ट स्वर्गदूत: ये अदृश्य हैं और इनके पास इंसानों से बढ़कर ताकत है। उत्पत्ति 6:2 में इन्हें "सच्चे परमेश्वर के बेटे" और यहूदा 6 में "स्वर्गदूत" कहा गया है, जो दिखाता है कि इन्हें दुष्ट नहीं बनाया गया था। मगर नूह के दिनों में इन स्वर्गदूतों ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ दी और शैतान के साथ मिलकर यहोवा के खिलाफ हो गए। इस तरह वे परमेश्वर के दुश्मन बन गए।—व्य 32:17; लूक 8:30; प्रेष 16:16; याकू 2:19.

देवर-भाभी विवाह: अगर एक आदमी के कोई बेटा न हो और उसकी मौत हो जाए, तो यह रिवाज़ था कि उसका भाई उसकी विधवा से शादी करके अपने मरे हुए भाई का वंश चलाए। इस रिवाज़ को देवर-भाभी विवाह कहा जाता था। बाद में यह रिवाज़ मूसा के कानून में शामिल किया गया। —उत 38:8; व्य 25:5.

दोष-बलि: एक इंसान अपने पापों के लिए यह बलि चढ़ाता था। यह इसलिए चढ़ायी जाती थी ताकि पाप करने पर एक इंसान ने करार के मुताबिक जो हक खो दिए हैं, उन्हें वापस पा सके और वह सज़ा से बच जाए। इस मायने में यह बलि दूसरे पाप-बलियों से थोड़ी अलग थी।—लैव 7:37; 19:22; यश 53:10.

द्राख्मा: मसीही यूनानी शास्त्र में चाँदी का यूनानी सिक्का, जिसका वज़न उस वक्त 3.4 ग्रा. था। इब्रानी शास्त्र में सोने के द्राख्मा का जो ज़िक्र मिलता है, वह फारस की हुकूमत के दौरान इस्तेमाल होता था। यह दर्कनोन के बराबर था। (नहे 7:70; मत 17:24, फु.)—अति. ख14 देखें।

ध

धन्यवाद-बलि: एक तरह की शांति-बलि जो इसराएली, परमेश्वर की महिमा करने के लिए अर्पित करते थे क्योंकि वह उन्हें सबकुछ देता था और उनसे अटल प्यार करता था। बलि किए हुए जानवर का गोश्त खाया जाता था और उसके साथ खमीरी और बिन-खमीर की रोटियाँ भी खायी जाती थीं। गोश्त को उसी दिन खाना होता था।—2इत 29:31.

धूप: सुगंधित गोंद और बलसाँ का मिश्रण, जो धीरे-धीरे जलता है और खुशबू फैलाता है। पवित्र डेरे और मंदिर के लिए धूप चार खास मसालों के मिश्रण से बनाया जाता था। पवित्र भाग में धूप की वेदी पर इसे सुबह-शाम जलाया जाता था। और प्रायश्चित के दिन इसे परम-पवित्र भाग में जलाया जाता था। धूप परमेश्वर के वफादार सेवकों की प्रार्थनाओं की निशानी था जो वह कबूल करता था। मसीहियों के लिए धूप जलाना एक माँग नहीं है।—निर्ग 30:34, 35; लैव 16:13; प्रक 5:8.

न

नगर-अधिकारी: बैबिलोन के शासन में ज़िला अधिकार-क्षेत्रों के कोतवाल, जिन्हें कानून की समझ होती थी और जिनके पास न्यायिक मामले सुलझाने के थोड़े-बहुत अधिकार थे। रोमी बस्तियों में नगर-अधिकारी सरकार के प्रशासक थे। उनका काम था व्यवस्था बनाए रखना, सरकार से मिले पैसे के खर्च की देखरेख करना, कानून तोड़नेवालों का न्याय करना और उन्हें

सज़ा देने का आदेश देना।—दान 3:2; प्रेष 16:20.

नज़राने की रोटी: बारह रोटियाँ जिनके छः-छः करके दो ढेर बनाए जाते थे। ये रोटियाँ, पवित्र डेरे और मंदिर के पवित्र भाग में मेज़ पर रखी जाती थीं। इन्हें "रोटियों का ढेर" और "चढ़ावे की रोटियाँ" भी कहा जाता था। हर सब्त के दिन चढ़ावे की इन रोटियों को हटाकर ताज़ी रोटियाँ रखी जाती थीं। हटायी गयी रोटियों को आम तौर पर सिर्फ याजक खाते थे। (2इत 2:4; मत 12:4; निर्ग 25:30; लैव 24:5-9; इब्र 9:2)—अति. ख5 देखें।

नतीन लोग: मंदिर के वे सेवक जो इसराएली नहीं थे। इसके इब्रानी शब्द का शाब्दिक मतलब है "दिए गए लोग," जिससे पता चलता है कि उन्हें मंदिर में सेवा के लिए दिया गया था। ऐसा मालूम होता है कि कई नतीन लोग उन गिब्बोनियों के वंशज थे जिन्हें यहोशू ने 'इसराएलियों की मंडली और यहोवा की वेदी के लिए लकड़ियाँ बीनने और पानी भरने' का काम दिया था।—यह 9:23, 27; 1इत 9:2; एज 8:17.

नपुंसक; खोजा: ऐसा आदमी जिसके अंडकोष काट दिए जाते हैं। ऐसे आदमियों को अकसर महल में रानी और रखैलों की देखरेख या सेवा करने के लिए रखा जाता था। ये शब्द ऐसे आदमी के लिए भी इस्तेमाल होते थे जिसके अंडकोष नहीं कटे होते थे, बल्कि जो राज-दरबार में अधिकारी होता था। ये शब्द लाक्षणिक तौर पर भी इस्तेमाल हुए हैं। ऐसे लोगों को 'राज के लिए नपुंसक' बताया गया है, जो खुद पर संयम रखते हैं ताकि वे परमेश्वर की सेवा में और ज़्यादा कर सकें।—मत 19:12; एस 2:15; प्रेष 8:27.

नफिलीम: जलप्रलय से पहले कुछ स्वर्गदूतों ने इंसानी शरीर धारण करके औरतों के साथ संबंध रखे। उनके जो बच्चे पैदा हुए वे नफिलीम कहलाए। वे बहुत ही खूँखार थे।—उत 6:4.

नया चाँद: यहूदी कैलेंडर में हर महीने का पहला दिन। इस दिन सब इकट्ठा होते, दावत खाते और खास बलिदान चढ़ाते थे। आगे चलकर यह दिन राष्ट्र का एक अहम त्योहार बन गया और लोग इस दिन कोई काम नहीं करते थे।—गि 10:10; 2इत 8:13; कुल 2:16.

नरकट: ऐसे कई किस्म के पौधे जो दलदली जगहों में उगते हैं। कई आयतों में यह पौधा *अरूंदो डोनेक्स* है। (अय 8:11; यश 42:3; मत 27:29; प्रक 11:1) नरकट के छड़ से माप-छड़ बनाए जाते थे।—माप-छड़ देखें।

नहिलोत: भजन 5 के उपरिलेख में दिया शब्द, जिसका मतलब साफ-साफ नहीं पता। कुछ लोगों का मानना है कि यह बाँसुरी जैसा कोई साज़ है, क्योंकि वे कहते हैं कि यह मूल इब्रानी शब्द *कालील* (यानी बाँसुरी) से जुड़ा है। लेकिन नहिलोत एक धुन हो सकता है।

नागदौना: कई तरह के पौधे जिनका तना कड़ा होता था। ये पौधे बहुत कड़वे होते थे और इनसे तेज़ महक आती थी। बाइबल बताती है कि अनैतिकता, गुलामी, अन्याय और परमेश्वर से बगावत करने के अंजाम नागदौने जैसे कड़वे होते हैं। प्रकाशितवाक्य 8:11 में बताया "नागदौना," एक कड़वा और ज़हरीला पदार्थ है जिसे एबसिन्थ भी कहते हैं।—व्य 29:18; नीत 5:4; यिर्म 9:15; आम 5:7.

नाजायज़ यौन-संबंध: इसके यूनानी शब्द *पोर्निया* का मतलब है हर तरह का यौन-संबंध जो परमेश्वर के नियम के खिलाफ है। जैसे, व्यभिचार, वेश्या के काम, दो कुँवारे लोगों के बीच यौन-संबंध जिनकी एक-दूसरे से शादी नहीं हुई, समलैंगिकता और जानवरों के साथ यौन-संबंध। प्रकाशितवाक्य में यह शब्द लाक्षणिक तौर पर इस्तेमाल हुआ है। उसमें बताया गया है कि "महानगरी बैबिलोन" ताकत और दौलत पाने के लिए दुनिया के शासकों के साथ नाजायज़ यौन-संबंध रखती है। (प्रक 14:8; 17:2; 18:3; मत 5:32; प्रेष 15:29; गल 5:19)—वेश्या देखें।

नाज़ीर: इब्रानी से निकला एक शब्द जिसका मतलब है "चुना गया," "समर्पित किया गया," "अलग किया गया।" नाज़ीर दो किस्म के होते थे, एक वे जो अपनी मरज़ी से नाज़ीर बनते थे और दूसरे जिन्हें परमेश्वर चुनता था। कुछ वक्त तक नाज़ीर की ज़िंदगी जीने के लिए एक आदमी (या औरत) यहोवा से खास मन्नत मानता था। जो अपनी मरज़ी से यह मन्नत मानते थे उन पर खास तीन पाबंदियाँ होती थीं: उन्हें न तो दाख-मदिरा

पीनी थी न ही अंगूर की बेल से बनी कोई चीज़ खानी थी, उन्हें अपने बाल नहीं कटवाने थे और किसी की भी लाश नहीं छूनी थी। जिन्हें यहोवा नाज़ीर चुनता था वे जीवन-भर नाज़ीर रहते थे और यहोवा ही उनके लिए कुछ खास हिदायतें देता था।—गि 6:2-7; न्या 13:5.

नासरी: यीशु को दिया एक नाम क्योंकि वह नासरत से था। मुमकिन है कि यह यशायाह 11:1 में "अंकुर" के लिए इस्तेमाल हुए इब्रानी शब्द से जुड़ा है। बाद में यीशु के चेलों को भी इसी नाम से बुलाया गया।—मत 2:23; प्रेष 24:5.

निगरानी करनेवाला: ऐसा भाई जिसकी अहम ज़िम्मेदारी है, मंडली पर नज़र रखना और चरवाहे की तरह उसकी देखभाल करना। इसके यूनानी शब्द *एपिस्कोपोस* का बुनियादी मतलब है, किसी की हिफाज़त करने के लिए उस पर नज़र रखना। शब्द "निगरानी करनेवाला" और "प्राचीन" (*प्रेसबाइटेरोस*), मसीही मंडली में एक ही पद के लिए इस्तेमाल हुए हैं। शब्द "प्राचीन" से पता चलता है कि उस भाई को इसलिए ठहराया गया है क्योंकि उसमें ऐसे मसीही गुण हैं जो दिखाते हैं कि वह प्रौढ़ है। और शब्द "निगरानी करनेवाले" से उसकी ज़िम्मेदारियों का पता चलता है।—प्रेष 20:28; 1ती 3:2-7; 1पत 5:2.

निर्देशक: यह शब्द भजनों की किताब में आता है। इसके इब्रानी शब्द का मतलब शायद ऐसा व्यक्ति है जो गीतों के गाए जाने का इंतज़ाम करता, गाने में निर्देश देता, लेवी गायकों को सिखाता और उनसे रियाज़ करवाता, यहाँ तक कि गीत-संगीत के कार्यक्रमों में अगुवाई करता था। दूसरे अनुवादों में निर्देशक को "मुख्य वादक" या "संगीत निर्देशक" कहा गया है।—भज 4:उप.; 5:उप.

निर्दोष: जिन इब्रानी शब्दों का अनुवाद "निर्दोष" किया गया है, उनका मूल अर्थ है "पूरा।" यानी जिसमें कोई खोट या दोष न हो। जैसे, बलि के लिए ऐसे जानवर चढ़ाए जाने थे जिनमें कोई दोष न हो। (निर्ग 12:5; 29:1; लैव 3:6) मगर इन इब्रानी शब्दों का ज़्यादातर आयतों में मतलब है, नैतिक तौर पर खरा होना या बेदाग चालचलन बनाए रखना।—यह 24:14; अय 27:5; भज 26:1.

निर्लज्ज काम: यह कोई मामूली या छोटी-मोटी गलती नहीं है। इसका यूनानी शब्द *असेलजीआ* है जिसका मतलब है, ऐसे काम जो परमेश्वर के नियमों के खिलाफ हैं और ऐसा रवैया जिससे निर्लज्जता और घोर अनादर दिखायी देता है। निर्लज्ज काम करनेवाला इंसान कानूनों, स्तरों और अधिकार रखनेवालों के लिए कोई आदर नहीं दिखाता, यहाँ तक कि उन्हें तुच्छ समझता है।—गल 5:19; 2पत 2:7.

निशानी: ऐसी कोई चीज़, काम, हालात या अनोखा नज़ारा, जो आज या भविष्य में होनेवाली किसी खास बात की तरफ इशारा करता है।—उत 9:12, 13; 2रा 20:9; मत 24:3; प्रक 1:1.

नीतिवचन; कहावत: बुद्धि-भरी बात या एक छोटी कहानी जिसमें एक सीख होती है या फिर चंद शब्दों में बतायी गहरी सच्चाई। बाइबल में दिए नीतिवचन और कहावतें पहेलियाँ हो सकती हैं या फिर ऐसी बातें जो सीधे-सीधे समझ न आएँ। नीतिवचनों और कहावतों में दमदार भाषा और अकसर अलंकारों का इस्तेमाल करके ज़िंदगी का सच बताया जाता है। ऐसी भी कहावतें थीं जिनका इस्तेमाल कुछ लोगों का मज़ाक उड़ाने या उन्हें नीचा दिखाने के लिए होने लगा।—सभ 12:9; 2पत 2:22.

नीसान: बैबिलोन की बँधुआई से लौटनेवाले यहूदियों के पवित्र कैलेंडर का पहला महीना और कृषि कैलेंडर का 7वाँ महीना। इसका पुराना नाम आबीब था। नीसान, मार्च के बीच से अप्रैल के बीच तक का होता था। (नहे 2:1)—अति. ख15 देखें।

नेक; नेकी: बाइबल बताती है कि सही-गलत के बारे में परमेश्वर ने जो स्तर ठहराए हैं, उनके मुताबिक जो सही है वही नेक या नेकी है। इन शब्दों का अनुवाद सच्चाई, सही और अच्छाई भी किया गया है।—उत 15:6; व्य 6:25; नीत 11:4; सप 2:3; मत 6:33.

न्याय-आसन: आम तौर पर एक ऊँचा चबूतरा, जो खुली जगह में बना होता था। इस पर पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ होती थीं। इस आसन पर एक अधिकारी बैठकर भीड़ से बात करता और अपना फैसला सुनाता था। "परमेश्वर के न्याय-आसन" और "मसीह के न्याय-आसन" का मतलब है, वह

इंतज़ाम जो परमेश्वर ने इंसानों का न्याय करने के लिए ठहराया है।—रोम 14:10; 2कुर 5:10; यूह 19:13.

न्याय का दिन: एक खास दिन या दौर जब किसी समूह, राष्ट्र या इंसानों से परमेश्वर हिसाब लेता है और फैसला सुनाता है। यह वह वक्त भी हो सकता है जब ऐसे लोगों को सज़ा दी जाती है जिन्हें मौत की सज़ा सुनायी गयी है या कुछ लोगों को बचने का मौका दिया जाता है। यीशु मसीह और उसके प्रेषितों ने भविष्य में आनेवाले "न्याय के दिन" के बारे में बताया जिसमें न सिर्फ ज़िंदा लोगों का बल्कि उनका भी न्याय होगा जो बीते ज़माने में मर चुके हैं।—मत 12:36.

न्यायी: जब इसराएल पर कोई इंसानी राजा राज नहीं करता था, तब यहोवा ने अपने लोगों को दुश्मनों से बचाने के लिए कुछ आदमियों को चुना। उन आदमियों को न्यायी कहा जाता था। —न्या 2:16.

प

पगड़ी: महायाजक बढ़िया मलमल से बनी पगड़ी पहनता था, जिस पर सामने की तरफ सोने की एक पट्टी नीली डोरी से बँधी होती थी। राजा भी पगड़ी बाँधता था और उसके ऊपर ताज पहनता था। अय्यूब ने अपने न्याय की तुलना एक पगड़ी से की।—निर्ग 28:36, 37; अय 29:14; यहे 21:26.

पड़ोसी: पड़ोस में रहनेवाला इंसान, फिर चाहे वह दोस्त हो या दुश्मन। बाइबल में उस इंसान को भी "पड़ोसी" कहा गया है जो शास्त्र की आज्ञा मानते हुए दूसरों से प्यार करता है और उन पर कृपा करता है, फिर चाहे वह उनके पड़ोस में न रहता हो।—रूत 4:17; लूक 10:36; रोम 15:2.

परदा: खूबसूरती से बुना गया कपड़ा जिस पर कढ़ाई करके करूब बनाए गए थे। यह परदा पवित्र डेरे और मंदिर दोनों में था। यह पवित्र भाग को परम-पवित्र भाग से अलग करने के लिए लगाया गया था। (निर्ग 26:31; 2इत 3:14; मत 27:51; इब्र 9:3)—अति. ख5 देखें।

परम-पवित्र भाग: पवित्र डेरे और मंदिर का भीतरी कमरा, जहाँ करार का संदूक रखा था। मूसा के कानून के मुताबिक, सिर्फ महायाजक को परम-पवित्र भाग में जाने की इजाज़त थी। वह सिर्फ साल में एक बार प्रायश्चित के दिन वहाँ जा सकता था।—निर्ग 26:33; लैव 16:2, 17; 1रा 6:16; इब्र 9:3.

परमेश्वर का राज: ये शब्द खास तौर पर मसीह यीशु की सरकार के लिए इस्तेमाल हुए हैं, जो उसके पिता यहोवा की हुकूमत करने के अधिकार को दर्शाती है।—मत 12:28; लूक 4:43; 1कुर 15:50.

परमेश्वर की भक्ति: यहोवा परमेश्वर का गहरा आदर करना, उसकी उपासना और सेवा करना, साथ ही उसे सारे जहान का मालिक मानकर उसके वफादार रहना।—1ती 4:8; 2ती 3:12.

परमेश्वर से बगावत: इनका यूनानी शब्द (*अपोस्टेसिया*) एक क्रिया से निकला है जिसका शाब्दिक मतलब है, "से दूर खड़ा रहना।" इसकी संज्ञा का मतलब है, "छोड़ देना, त्याग देना या बगावत।" मसीही यूनानी शास्त्र में ये शब्द खासकर उन लोगों के लिए इस्तेमाल हुए हैं जो सच्ची उपासना करना छोड़ देते हैं।—नीत 11:9; प्रेष 21:21; 2थि 2:3.

पलिश्त; पलिश्ती: इसराएल के दक्षिणी तट पर बसा देश पलिश्त कहलाता था। जो लोग क्रेते से आकर यहाँ बस गए वे पलिश्ती कहलाए। दाविद ने उन्हें हरा दिया था, फिर भी वे किसी के अधीन नहीं थे और इसराएल के दुश्मन बने रहे। (निर्ग 13:17; 1शम 17:4; आम 9:7)—अति. ख4 देखें।

पवित्र; पवित्रता: यहोवा को पवित्र कहा गया है क्योंकि वह स्वभाव से पवित्र है और हर मामले में शुद्ध है। वह जो भी करता है, वह शुद्ध और पवित्र है। (निर्ग 28:36; 1शम 2:2; नीत 9:10; यश 6:3) जब इंसानों (निर्ग 19:6), जानवरों (गि 18:17), चीज़ों (निर्ग 28:38; 30:25; लैव 27:14), जगहों (निर्ग 3:5; यश 27:13), समय के दौर (निर्ग 16:23; लैव 25:12) और बाकी कामों (निर्ग 36:4) को "पवित्र" कहा गया है, तो इसके मूल इब्रानी शब्द का मतलब है अलग किया गया, एक खास मकसद के लिए ठहराया गया या पवित्र परमेश्वर के लिए अलग किया गया; परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित होना। मसीही यूनानी शास्त्र में भी "पवित्र" और

“पवित्रता” का मतलब है, परमेश्‍वर के लिए अलग किया गया। ये शब्द एक इंसान के शुद्ध चालचलन के लिए भी इस्तेमाल हुए हैं।—मर 6:20; 2कुर 7:1; 1पत 1:15, 16.

पवित्र डेरा: उपासना का तंबू जिसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता था। मिस्र से निकलने के बाद इसराएली इसी तंबू के सामने आकर परमेश्‍वर की उपासना करते थे और बलिदान चढ़ाते थे। इसमें यहोवा के करार का संदूक रखा जाता था जो परमेश्‍वर की मौजूदगी की निशानी था। इसे कभी-कभी “भेंट का तंबू” भी कहा जाता था। यह लकड़ी की चौखटों से बना था और मलमल की चादर से ढका था जिस पर कढ़ाई करके करूब बनाए गए थे। पवित्र डेरे में दो कमरे थे: पहला, पवित्र भाग और दूसरा, परम-पवित्र भाग। (यह 18:1; निर्ग 25:9) —अति. ख5 देखें।

पवित्र भाग: पवित्र डेरे और मंदिर का पहला और बड़ा कमरा, जो भीतरी कमरे यानी परम-पवित्र भाग से अलग था। पवित्र डेरे के पवित्र भाग में सोने की दीवट, धूप जलाने के लिए सोने की वेदी, नज़राने की रोटी की मेज़ और सोने की दूसरी चीज़ें रखी थीं। मंदिर के पवित्र भाग में सोने की वेदी, सोने की दस दीवटें और नज़राने की रोटी की दस मेज़ें रखी थीं। (निर्ग 26:33; इब्र 9:2)—अति. ख5 और ख8 देखें।

पवित्र रहस्य: परमेश्‍वर के मकसद का एक पहलू। वह इसे तय वक्‍त तक अपने तक रखता है। उसके बाद वह यह रहस्य उन लोगों पर प्रकट करता है जिन पर प्रकट करना चाहता है।—मर 4:11; कुल 1:26.

पवित्र शक्‍ति: परमेश्‍वर की वह ज़बरदस्त शक्‍ति जो ताकत भर देती है और जिसका इस्तेमाल करके वह अपनी मरज़ी पूरी करता है। यह शक्‍ति पवित्र है क्योंकि यह यहोवा से मिलती है जो सबसे बढ़कर शुद्ध और नेक है और इसलिए भी कि परमेश्‍वर इसके ज़रिए अपनी पवित्र मरज़ी पूरी करता है।—लूक 1:35; प्रेष 1:8.

पवित्र सेवा: वह सेवा या काम जो पवित्र है और सीधे-सीधे परमेश्‍वर की उपासना से जुड़ा है। —रोम 12:1; प्रक 7:15.

पवित्र-स्थान: उपासना के लिए अलग की गयी जगह। मगर अकसर इसका मतलब पवित्र डेरा या यरूशलेम का मंदिर था। स्वर्ग में परमेश्‍वर के निवास-स्थान को भी पवित्र-स्थान कहा गया है। —निर्ग 25:8, 9; यश 16:12; 1इत 28:10; प्रक 11:19.

पश्‍चाताप: बाइबल के मुताबिक इसका मतलब है, अपना मन बदलना। साथ ही अपनी बीती ज़िंदगी पर, गलत कामों के लिए या जो करना चाहिए था उसे न करने की वजह से दिल से अफसोस करना। सच्चा पश्‍चाताप कामों से दिखाया जाता है: एक इंसान बुरी राह छोड़कर सही राह पर चलने लगता है।—मत 3:8; प्रेष 3:19; 2पत 3:9.

पहरेदार: पहरेदार अकसर रात को पहरा देता था ताकि लोगों या संपत्ति को किसी तरह का नुकसान न पहुँचे। जब वह कोई खतरा आते देखता था तो लोगों को चौकन्‍ना कर देता था। पहरेदार अकसर शहरपनाह पर या मीनारों पर तैनात रहते थे ताकि अगर कोई शहर की तरफ बढ़ रहा है तो वे उसे दूर से ही देख लें। सेना के पहरेदारों को आम तौर पर संतरी कहा जाता है। भविष्यवक्‍ता एक मायने में इसराएल राष्ट्र के लिए पहरेदार थे क्योंकि वे उन्हें आनेवाले विनाश की चेतावनी देते थे।—2रा 9:20; यहे 3:17.

पहला फल: कटनी के मौसम की सबसे पहली उपज; इंसानों और जानवरों का पहला बच्चा। यहोवा की माँग थी कि इसराएली अपना पहला फल उसे दें। एक राष्ट्र के तौर पर इसराएल, बिन-खमीर की रोटी के त्योहार और पिन्तेकुस्त पर अपने पहले फल परमेश्‍वर को चढ़ाता था। मसीह और उसके अभिषिक्‍त चेलों को लाक्षणिक भाषा में ‘पहले फल’ कहा गया है।—1कुर 15:23; गि 15:21; नीत 3:9; प्रक 14:4.

पहलौठा: पिता का सबसे बड़ा बेटा (न कि माँ का पहलौठा)। बाइबल के ज़माने में पहलौठे बेटे को परिवार में बहुत आदर-सम्मान दिया जाता था और पिता के मरने के बाद उसे घराने का मुखिया बनाया जाता था। जानवरों के पहले नर बच्चे को भी पहलौठा कहा गया है।—निर्ग 11:5; 13:12; उत 25:33; कुल 1:15.

पाप: बहुत-से लोगों का मानना है कि पाप का मतलब है, कोई अपराध करना या कानून तोड़ना। मगर इसके इब्रानी और यूनानी शब्दों का मतलब है "चूकना," यानी किसी लक्ष्य तक पहुँचने से चूक जाना। जब लोग परमेश्वर के ठहराए स्तरों को मानने से चूक जाते हैं तो वे "पाप" करते हैं। बाइबल यह भी सिखाती है कि हम जन्म से पापी हैं यानी हमें पाप विरासत में मिला है।—भज 51:3; यूह 8:34; रोम 5:12.

पाप-बलि: अपरिपूर्ण होने की वजह से एक इंसान अनजाने में जो पाप करता था, उसके प्रायश्चित के लिए चढ़ाया जानेवाला बलिदान। प्रायश्चित करनेवाला अपनी हैसियत और हालात के मुताबिक बैल से लेकर कबूतर तक कोई भी जानवर या पक्षी चढ़ा सकता था।—लैव 4:27, 29; इब्र 10:8.

पिन्तेकुस्त: उन तीन बड़े त्योहारों में से दूसरा त्योहार, जिन्हें मनाने के लिए हर यहूदी आदमी को यरूशलेम जाना होता था। पिन्तेकुस्त का मतलब है "पचासवाँ (दिन)।" इब्रानी शास्त्र में जिस त्योहार को कटाई का त्योहार कहा गया है, उसे मसीही यूनानी शास्त्र में पिन्तेकुस्त कहा गया है। इसराएलियों को नीसान 16 से 50 दिन गिनना था और 50वें दिन यह त्योहार मनाना था।—निर्ग 23:16; 34:22; प्रेष 2:1.

पिम: एक बाट-पत्थर। इसके अलावा पलिश्ती, धातु के औज़ारों पर धार चढ़ाने के लिए जो कीमत लेते थे उसे भी पिम कहा जाता था। इसराएल में पुरातत्व खोज से ऐसे कई बाट-पत्थर मिले जिन पर प्राचीन इब्रानी व्यंजनों से "पिम" लिखा था। उनका औसतन वज़न 7.8 ग्रा. था, जो एक शेकेल का करीब दो-तिहाई हिस्सा था।—1शम 13:20, 21.

पुरसा: पानी की गहराई नापने की एक इकाई जो 1.8 मी. (6 फुट) के बराबर थी। (प्रेष 27:28, फु.)—अति. ख14 देखें।

पूजा-लाठ: इसके इब्रानी शब्द (*अशेरा*) का मतलब है: (1) वह पूजा-लाठ जो कनानियों की प्रजनन देवी अशेरा की निशानी थी या (2) अशेरा देवी की मूरत। ज़ाहिर है कि ये लाठें सीधी खड़ी की जाती थीं और इनका कुछ हिस्सा लकड़ी का बना होता था। ये शायद पेड़ थे या फिर ऐसी लाठें थीं जिन पर कोई नक्काशी नहीं की गयी थी।—व्य 16:21; न्या 6:26; 1रा 15:13.

पूजा-स्तंभ: एक सीधा खंभा जो आम तौर पर पत्थर का होता था। ज़ाहिर है कि यह बाल देवता या दूसरे झूठे देवताओं के लिंग की निशानी था।—निर्ग 23:24.

पूरीम: अदार 14 और 15 को मनाया जानेवाला सालाना त्योहार। यह उस घटना की याद में मनाया जाता था जब रानी एस्तेर के समय में यहूदियों को मिटने से बचाया गया था। *पूरीम* कोई इब्रानी शब्द नहीं है। *पूरीम* का मतलब है "चिट्ठियाँ।" इसे पूरीम का त्योहार या चिट्ठियों का त्योहार इसलिए कहा गया क्योंकि हामान ने पूर (यानी चिट्ठी) डालकर तय किया था कि किस दिन यहूदियों का नाश किया जाए।—एस 3:7; 9:26.

पोर्निया।—नाजायज़ यौन-संबंध देखें।

प्रधान याजक: इब्रानी शास्त्र में "महायाजक" को प्रधान याजक भी कहा गया है। मसीही यूनानी शास्त्र में देखा गया है कि 'प्रधान याजक' याजकवर्ग के बड़े-बड़े आदमियों को कहा गया है। शायद इनमें वे आदमी थे जिन्हें महायाजक के पद से हटाया गया था और वे भी जो याजकों के 24 दलों के मुखिया थे।—2इत 26:20; एज 7:5; मत 2:4; मर 8:31.

प्रधान स्वर्गदूत: मतलब "स्वर्गदूतों का प्रधान।" यह परिभाषा और बाइबल में इसके लिए एकवचन इस्तेमाल होना दिखाता है कि प्रधान स्वर्गदूत सिर्फ एक है। बाइबल में इसे मीकाएल नाम दिया गया है।—दान 12:1; यहू 9; प्रक 12:7.

प्रभु का संध्या-भोज: सचमुच का भोज जिसमें बिन खमीर की रोटी खायी जाती थी और दाखमदिरा पी जाती थी, जो मसीह के शरीर और खून की निशानी थी। यह भोज यीशु की मौत की याद में खाया जाता था। बाइबल में मसीहियों को आज्ञा दी गयी है कि वे यह समारोह मनाएँ, इसलिए इसे "स्मारक" भी कहा जाता है।—1कुर 11:20, 23-26.

प्रभु की राह: बाइबल में "राह" का मतलब है ऐसा काम या चालचलन जो यहोवा की नज़र में सही

है या गलत है। जो लोग यीशु मसीह के चेले बने, उन्हें "प्रभु की राह" पर चलनेवाला कहा गया, यानी वे यीशु के नक्शे-कदम पर चले और उन्होंने अपने जीने के तरीके से दिखाया कि उन्हें यीशु पर विश्वास है।—प्रेष 19:9.

प्रशासक: बैबिलोन की सरकार में सूबेदार से कम ओहदा रखनेवाला एक अधिकारी। बाइबल में बताया गया है कि बैबिलोन के दरबार में प्रशासक, ज्ञानियों के ऊपर ठहराए गए थे। मादी राजा दारा की हुकूमत में भी प्रशासकों का ज़िक्र मिलता है।—दान 2:48; 6:7.

प्रांत का राज्यपाल: उसके पास न्याय करने का अधिकार था और सेना भी उसकी कमान के अधीन थी। हालाँकि वह अपने कामों के लिए रोम की परिषद् को जवाबदेह था, मगर फिर भी पूरे प्रांत में उसी के पास सबसे ज़्यादा अधिकार था। —प्रेष 13:7; 18:12.

प्राचीन: प्रकाशितवाक्य की किताब में यह शब्द स्वर्ग के प्राणियों के लिए इस्तेमाल हुआ है। और जिन आयतों में मंडली में अगुवाई करनेवाले भाइयों की बात की गयी है, उनमें यूनानी शब्द *प्रेसबाइटेरोस* का अनुवाद "प्राचीन" किया गया है।—1ती 5:17; प्रक 4:4.

प्रायश्चित: इब्रानी शास्त्र के मुताबिक लोगों को अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए बलिदान चढ़ाने होते थे ताकि वे परमेश्वर के सामने आ सकें और उसकी उपासना कर सकें। जब एक इंसान या पूरा राष्ट्र पाप करता था, तो मूसा के कानून की माँग थी कि परमेश्वर से सुलह करने के लिए उन्हें बलिदान चढ़ाना था। और हर साल प्रायश्चित के दिन ऐसा करना और भी ज़रूरी हो जाता था। ये बलिदान यीशु के बलिदान की झलक थे, जिससे एक ही बार में इंसान के पापों का पूरी तरह प्रायश्चित हुआ और लोगों को यहोवा से सुलह करने का मौका मिला।—लैव 5:10; 23:28; कुल 1:20; इब्र 9:12.

प्रायश्चित का ढकना: करार के संदूक पर रखा ढकना, जिसके सामने महायाजक प्रायश्चित के दिन पाप-बलि का खून छिड़कता था। इसका इब्रानी शब्द जिस मूल क्रिया से निकला है, उसका मतलब है "(पाप) ढाँपना," या शायद "(पाप) मिटाना।" यह ढकना सोने का बना था और इसके ऊपर दोनों किनारों पर दो करूब बने थे। कई बार इसे सिर्फ 'ढकना' कहा गया है। (निर्ग 25:17-22; 1इत 28:11; इब्र 9:5)—अति. ख5 देखें।

प्रायश्चित का दिन: इसराएलियों का सबसे खास और पवित्र दिन। इसे योम किप्पुर भी कहा जाता था जो एतानीम के 10वें दिन मनाया जाता था। (यह इब्रानी शब्दों *योहम हाक्किपुरीम* से निकला है, जिनका मतलब है "ढाँपने का दिन।") साल में सिर्फ यही एक दिन था जब महायाजक पवित्र डेरे के परम-पवित्र भाग में जाता था। बाद में जब मंदिर बना, तो वह उसके परम-पवित्र भाग में जाता था। वहाँ वह अपने पापों, बाकी लेवियों के पापों और लोगों के पापों के लिए बलिदान का खून अर्पित करता था। इस दिन पवित्र सभा और उपवास रखा जाता था और सब्त भी मनाया जाता था जिसमें रोज़मर्रा के काम करने की मनाही थी।—लैव 23:27, 28.

प्रेषित: इसका सीधा-सीधा मतलब है "भेजे गए।" यह शब्द यीशु और कुछ ऐसे लोगों के लिए इस्तेमाल हुआ है जो दूसरों की सेवा करने के लिए भेजे गए थे। आम तौर पर यह 12 चेलों के लिए इस्तेमाल हुआ है जिन्हें खुद यीशु ने चुना कि वे उसके प्रतिनिधि ठहरें।—मर 3:14; प्रेष 14:14.

फ

फरात नदी: एशिया के दक्षिण-पश्चिम भाग की सबसे लंबी और खास नदी। यह मेसोपोटामिया की दो बड़ी नदियों में से एक है। यह नाम पहली बार उत्पत्ति 2:14 में आता है जहाँ इसे अदन की चार नदियों में से एक बताया गया है। इसे अकसर "महानदी" कहा जाता है। (उत 31:21) यह इसराएल को दिए इलाके की उत्तरी सरहद थी। (उत 15:18; प्रक 16:12)—अति. ख2 देखें।

फरीसी: पहली सदी में यहूदी धर्म का एक जाना-माना धार्मिक गुट। वे याजकों के वंश से नहीं थे, फिर भी वे मूसा के कानून में लिखी एक-एक बात सख्ती से मानते थे और ज़बानी तौर पर सिखायी परंपराओं को भी उतनी ही अहमियत देते थे। (मत 23:23) उन्हें जहाँ कहीं यूनानी संस्कृति का ज़रा भी असर नज़र आता, वे उसका विरोध

करते थे। कानून और परंपराओं के अच्छे जानकर होने की वजह से लोगों में उनका बहुत दबदबा था। (मत 23:2-6) कुछ फरीसी महासभा के सदस्य भी थे। वे कई मामलों में यीशु का विरोध करते थे जैसे, सब्त और परंपराओं को मानने और पापियों और कर-वसूलनेवालों के साथ संगति करने के मामलों में। कुछ फरीसी मसीही बन गए जिनमें से एक तरसुस का रहनेवाला शाऊल था। —मत 9:11; 12:14; मर 7:5; लूक 6:2; प्रेष 26:5.

फसह: एक सालाना त्योहार जो आबीब (नया नाम नीसान) के 14वें दिन मनाया जाता था। यह इस याद में मनाया जाता था कि कैसे इसराएलियों को मिस्र से छुड़ाया गया था। इस दिन मेम्ना (या बकरी) हलाल करके भूना जाता था और कड़वे साग और बिन-खमीर की रोटी के साथ खाया जाता था।—निर्ग 12:27; यूह 6:4; 1कुर 5:7.

फारस; फारसी: फारस एक देश का नाम था और उसके लोगों को फारसी कहा जाता था। इनका ज़िक्र अकसर मादियों के साथ आता है जिससे ज़ाहिर है कि उन दोनों का कोई नाता था। फारस के शुरू के इतिहास के मुताबिक इसके लोग ईरान के पठार के सिर्फ दक्षिण-पश्चिम हिस्से में रहते थे। कुसरू महान के राज में मादियों से ज़्यादा फारसियों का दबदबा था, इसके बावजूद कि साम्राज्य दोनों से मिलकर बना था। (कुछ प्राचीन इतिहासकारों का मानना था कि कुसरू का पिता फारसी था और माँ मादी।) कुसरू ने ई.पू. 539 में बैबिलोन साम्राज्य को जीत लिया और बँधुआई में पड़े यहूदियों को वापस उनके देश जाने दिया। फारस साम्राज्य पूरब में सिंधु नदी से लेकर पश्चिम में एजियन सागर तक फैला था। ई.पू. 331 में सिकंदर महान ने फारस को हरा दिया। उस वक्त तक यहूदी लोग फारस की हुकूमत के अधीन थे। दानियेल ने एक दर्शन में फारस साम्राज्य को उभरते देखा था। इसके अलावा, इस साम्राज्य का ज़िक्र एज्रा, नहेमायाह और एस्तेर में मिलता है। (एज 1:1; दान 5:28) —अति. ख9 देखें।

फिरदौस: एक खूबसूरत बाग या बगीचा। ऐसा ही एक बाग सबसे पहले अदन में था जिसे यहोवा ने पहले इंसानी जोड़े के लिए बनाया था। यीशु ने अपनी मौत के वक्त एक मुजरिम से जो बात कही, उससे पता चलता है कि यह धरती एक फिरदौस बन जाएगी। ज़ाहिर है कि 2 कुरिंथियों 12:4 में भविष्य में आनेवाले फिरदौस की बात की गयी है और प्रकाशितवाक्य 2:7 में स्वर्ग में फिरदौस जैसे हालात की बात की गयी है।—लूक 23:43.

फिरौती: कैद, सज़ा, तकलीफ, पाप या किसी ज़िम्मेदारी से आज़ाद होने के लिए दी जानेवाली कीमत। यह कीमत हमेशा पैसों से नहीं अदा की जाती थी। (यश 43:3) कई अलग-अलग हालात थे जिनमें फिरौती देनी होती थी। मिसाल के लिए, इसराएलियों के सभी पहलौठे बेटे या उनके जानवरों के सभी नर पहलौठे यहोवा के थे और उन्हें खास उसकी सेवा के लिए अलग किया गया था। इसलिए उन्हें छुड़ाने के लिए फिरौती की कीमत देनी होती थी। (गि 3:45, 46; 18:15, 16) अगर किसी खतरनाक बैल को बाँधकर नहीं रखा जाता था और वह किसी को मार डालता था, तो उसके मालिक को मौत की सज़ा मिलती थी। लेकिन अगर मालिक इस सज़ा से बचना चाहता था तो उसे फिरौती की उतनी रकम देनी होती थी जितनी उससे माँगी जाती थी। (निर्ग 21:29, 30) मगर जानबूझकर कत्ल करनेवालों के लिए कोई फिरौती नहीं होती थी। (गि 35:31) बाइबल बताती है कि सबसे बड़ी फिरौती मसीह ने दी। उसने आज्ञा माननेवाले इंसानों को पाप और मौत से छुड़ाने के लिए अपनी जान दे दी।—भज 49:7, 8; मत 20:28; इफ 1:7.

फिरौन: मिस्र के राजाओं की उपाधि। बाइबल में पाँच फिरौन के नाम दिए गए हैं (शीशक, सो, तिरहाका, निको और होप्रा), मगर बाकियों के नाम नहीं दिए गए। इनमें वे फिरौन शामिल हैं जिनका ज़िक्र अब्राहम, मूसा और यूसुफ के ब्यौरों में आता है।—निर्ग 15:4; रोम 9:17.

ब

बँधुआई: किसी को बंदी बनाकर उसके देश या घर से कहीं दूर भेज देना। ऐसा अकसर उस देश को जीतनेवाले के हुक्म पर किया जाता था। इसके इब्रानी शब्द का मतलब है "रवाना होना।"

इसराएल के इतिहास में दो बार बड़े पैमाने पर लोगों को बँधुआई में ले जाया गया था। पहली बार, उत्तर के दस गोत्रोंवाले राज्य को अश्शूर बँधुआई में ले गया और बाद में दक्षिण के दो गोत्रोंवाले राज्य को बैबिलोन बँधुआई में ले गया। फारस के राजा कुसरू की हुकूमत में इन दोनों राज्यों के बचे हुए इसराएलियों को वापस उनके देश भेज दिया गया।—2रा 17:6; 24:16; एज 6:21.

बत: एक द्रव्य माप जो करीब 22 ली. के बराबर था। यह बात पुरातत्व खोज से पता चली क्योंकि मिट्टी के बरतनों के ऐसे टुकड़े मिले जिन पर "बत" लिखा था। बाइबल में बताए ज़्यादातर सूखे और द्रव्य माप "बत" के मुताबिक तौले जाते थे। (1रा 7:38; यहे 45:14)—अति. ख14 देखें।

बपतिस्मा; बपतिस्मा देना: इस क्रिया का मतलब है "डुबकी दिलाना" या पानी के अंदर डालकर निकालना। यीशु की यह माँग थी कि जो उसका चेला बनना चाहता है उसे बपतिस्मा लेना होगा। शास्त्र में कई तरह के बपतिस्मे बताए गए हैं, जैसे यूहन्ना का दिया बपतिस्मा, पवित्र शक्ति से बपतिस्मा और आग से बपतिस्मा।—मत 3:11, 16; 28:19; यूह 3:23; 1पत 3:21.

बलिदान: परमेश्वर का धन्यवाद करने, अपना दोष मानने और उसके साथ फिर से एक अच्छा रिश्ता बनाने के लिए उसे अर्पित किया जानेवाला चढ़ावा। हाबिल के समय से इंसान अपनी मरज़ी से कई तरह के बलिदान चढ़ाते आया था, जैसे जानवरों का बलिदान। मगर आगे चलकर मूसा के कानून के तहत ऐसा करना एक नियम बन गया। जब यीशु ने अपने परिपूर्ण जीवन का बलिदान दिया, तब से जानवरों की बलि चढ़ाने की ज़रूरत नहीं रही। फिर भी मसीही इस मायने में बलिदान चढ़ाते आए हैं कि वे ऐसे काम करते हैं जिनसे परमेश्वर खुश होता है।—उत 4:4; इब्र 13:15, 16; 1यूह 4:10.

बाती बुझाने की कैंचियाँ: सोने या ताँबे से बने औज़ार जो पवित्र डेरे और मंदिर में इस्तेमाल होते थे। इन कैंचियों से जलती हुई बाती को बुझाने के लिए काट दिया जाता था।—2रा 25:14.

बाल-ज़बूल: शैतान को दिया एक नाम, जो दुष्ट स्वर्गदूतों का हाकिम या राजा है। यह नाम शायद बाल-जबूब नाम का ही दूसरा रूप है। इस बाल देवता की पूजा एक्रोन के पलिश्ती लोग करते थे।—2रा 1:3; मत 12:24.

बाल देवता: कनान देश का एक देवता। उसे आकाश का मालिक माना जाता था जो बारिश देता है। उसे प्रजनन शक्ति और उत्पादन का देवता भी माना जाता था। अलग-अलग इलाकों के छोटे-मोटे देवताओं को भी "बाल" कहा जाता था। इब्रानी में इस शब्द का मतलब है "मालिक।"—1रा 18:21; रोम 11:4.

बिचवई: दो पक्षों के बीच सुलह करानेवाला। बाइबल में मूसा कानून के करार का बिचवई था और यीशु नए करार का।—गल 3:19; 1ती 2:5.

बित्ता: लंबाई और दूरी नापने का माप। एक बित्ता का मतलब होता था, फैलायी हथेली के अँगूठे के सिरे से लेकर छोटी उँगली के सिरे तक की दूरी। एक हाथ 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) का होता था, उस हिसाब से एक बित्ता लगभग 22.2 सें.मी. (8.75 इंच) का होता था। (निर्ग 28:16; 1शम 17:4, फु.)—अति. ख14 देखें।

बिन-खमीर की रोटी का त्योहार: इसराएलियों के तीन बड़े त्योहारों में से पहला त्योहार, जिन्हें वे हर साल मनाते थे। यह फसह के अगले दिन, नीसान 15 को शुरू होता था और सात दिन तक चलता था। यह मिस्र से निकलने की याद में मनाया जाता था और इस दौरान सिर्फ बिन-खमीर की रोटी खायी जाती थी।—निर्ग 23:15; मर 14:1.

बीनना: कटाई के बाद बची हुई फसल बटोरना। कटाई करनेवाले इसे जानबूझकर या अनजाने में छोड़ जाते थे। मूसा के कानून के मुताबिक, लोगों को खेत की फसल काटते वक्त उसका कोना-कोना साफ नहीं करना था, न ही सारे-के-सारे जैतून और अंगूर तोड़ने थे। उन्हें लेने का हक परमेश्वर ने उनके बीच रहनेवाले परदेसियों, गरीबों, सताए हुओं, अनाथों और विधवाओं को दिया था।—रूत 2:7.

बूल: यहूदियों के पवित्र कैलेंडर का 8वाँ महीना और कृषि कैलेंडर का दूसरा महीना। यह जिस मूल शब्द से निकला है उसका मतलब है

"पैदावार; उपज।" यह महीना, अक्टूबर के बीच से नवंबर के बीच तक का होता था। (1रा 6:38) —अति. ख15 देखें।

भ

भजन: परमेश्‍वर की तारीफ में गाया जानेवाला गीत। भजनों के लिए धुन तैयार की जाती थी और उन्हें यहोवा के उपासक गाते थे। यरूशलेम के मंदिर में जब सब लोग उपासना के लिए इकट्ठा होते थे, तब भी ये भजन गाए जाते थे।—लूक 20:42; प्रेष 13:33; याकू 5:13, फु.

भविष्य बतानेवाला: ऐसा इंसान जो भविष्य में होने-वाली घटनाओं के बारे में बताने का दावा करता है। बाइबल में 'भविष्य बतानेवालों' का मतलब है, जादू-टोना करनेवाले पुजारी, ज्योतिषी और इस तरह के काम करनेवाले दूसरे लोग।—लैव 19:31; व्य 18:11; प्रेष 16:16.

भविष्यवक्‍ता: वह इंसान जिसके ज़रिए परमेश्‍वर अपना मकसद सब पर ज़ाहिर करता है। भविष्य-वक्‍ता परमेश्‍वर की तरफ से बोलते थे। वे न सिर्फ भविष्यवाणी करते थे बल्कि यहोवा की बातें और आज्ञाएँ सिखाते थे और उसके फैसले सुनाते थे। —आम 3:7; 2पत 1:21.

भविष्यवाणी: परमेश्‍वर से मिला संदेश, फिर चाहे वह उसकी मरज़ी के बारे में खुलासा हो या उसका ऐलान हो। यह परमेश्‍वर की तरफ से ज़रूरी सबक, उसकी आज्ञा, उसका फैसला या भविष्य में होनेवाली घटनाओं की खबर भी हो सकती है।—यहे 37:9, 10; दान 9:24; मत 13:14; 2पत 1:20, 21.

भूसी: अनाज को दाँवने और फटकने के बाद, उनसे अलग होनेवाला छिलका। भूसी का इस्ते-माल अलंकार के रूप में किया गया है जो दिखाता है कि कोई चीज़ बेकार और बुरी है। —भज 1:4; मत 3:12.

भेंट का तंबू: यह नाम मूसा के तंबू को और उस पवित्र डेरे को दिया गया था, जो सबसे पहले वीराने में खड़ा किया गया था।—निर्ग 33:7; 39:32.

म

मंदिर: यरूशलेम में बनी एक पक्की इमारत जहाँ इसराएली उपासना करते थे। इससे पहले वे पवित्र डेरे के सामने उपासना करते थे जिसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता था। पहला मंदिर सुलैमान ने बनवाया था मगर बैबिलोन के लोगों ने उसे तबाह कर दिया था। दूसरा मंदिर जरुबाबेल ने तब बनवाया था जब इसराएली बैबिलोन की बँधुआई से लौटकर आए थे। इसी मंदिर को बाद में हेरोदेस महान ने दोबारा बनवाया था। बाइबल में मंदिर को अक्-सर "यहोवा का भवन" कहा गया है। (एज 1:3; 6:14, 15; 1इत 29:1; 2इत 2:4; मत 24:1) —अति. ख8 और ख11 देखें।

मंडली: लोगों का एक समूह जो किसी खास मक-सद या काम के लिए इकट्ठा होता था। इब्रानी शास्त्र में इसराएल राष्ट्र को "मंडली" कहा गया है। मसीही यूनानी शास्त्र में यह शब्द अलग-अलग मंडलियों के लिए इस्तेमाल हुआ है, लेकिन ज़्यादातर आयतों में मसीहियों की पूरी बिरादरी को मंडली कहा गया है।—1रा 8:22; प्रेष 9:31; रोम 16:5.

मकिदुनिया: यूनान के उत्तर की तरफ एक प्रांत जो सिकंदर महान के राज में मशहूर हुआ था। यह एक आज़ाद प्रांत था, मगर आगे चलकर रोमी लोगों ने इस पर कब्ज़ा कर लिया। जब प्रेषित पौलुस ने यूरोप का पहला दौरा किया तब मकि-दुनिया एक रोमी प्रांत था। उसने इस प्रांत का तीन बार दौरा किया। (प्रेष 16:9)—अति. ख13 देखें।

मन्‍नत: जब एक इंसान परमेश्‍वर से वादा करता है कि वह कोई काम या खास सेवा करेगा, उसे कोई चढ़ावा या भेंट देगा या उन चीज़ों से दूर रहेगा जो कानून के मुताबिक गलत नहीं है, तो उस वादे को मन्‍नत कहते हैं। मन्‍नत मानना, शपथ खाने जितना गंभीर होता था।—गि 6:2; सभ 5:4; मत 5:33.

मन्‍नत-बलि: एक स्वेच्छा-बलि जिसके साथ-साथ कोई मन्‍नत मानी जाती थी।—लैव 23:38; 1शम 1:21.

मन्‍ना: वीराने में 40 साल के दौरान इसराए-लियों का मुख्य खाना। यहोवा ने इसे चमत्का-रिक तरीके से देने का इंतज़ाम किया था। सब्त के दिन को छोड़, हर सुबह मन्‍ना ज़मीन पर

ओस की चादर के नीचे पड़ा मिलता था। जब इसराएलियों ने पहली बार इसे देखा तो पूछा, “यह क्या है?” या इब्रानी में *“मान हू?”* (निर्ग 16:13-15, 35) दूसरी आयतों में इसे “स्वर्ग का अनाज” (भज 78:24), “स्वर्ग से रोटी” (भज 105:40) और “शूरवीरों की रोटी” (भज 78:25) कहा गया है। यीशु ने भी मन्ना शब्द का इस्तेमाल लाक्षणिक तौर पर किया।—यूह 6:49, 50.

मरुआ: पतले-पतले डंठलों और पत्तियोंवाला पौधा, जो शुद्ध करने की रस्म में खून या पानी छिड़कने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। बाइबल में मरुआ के लिए जो इब्रानी और यूनानी शब्द इस्तेमाल हुए हैं वे कई तरह के पौधे हो सकते हैं। यूहन्ना 19:29 में यह डंडियों पर लगा मरुआ हो सकता है या ज्वार (*सारघम वलगेर*) की एक प्रजाति, जिसके डंठल लंबे होते हैं और इसलिए शायद खट्टी दाख-मदिरा से भीगे स्पंज को इसमें लगाकर यीशु के मुँह तक ले जाना आसान रहा होगा।—निर्ग 12:22; भज 51:7.

मरे हुओं में से ज़िंदा करना: इसके यूनानी शब्द *आनास्तासिस* का शाब्दिक मतलब है “उठाना; खड़े होना।” बाइबल में ऐसे नौ लोगों के बारे में बताया गया है जिन्हें मरे हुओं में से ज़िंदा किया गया था। उनमें से एक यीशु था, जिसे यहोवा ने ज़िंदा किया था। हालाँकि बाकी आठ लोगों को एलियाह, एलीशा, यीशु, पतरस और पौलुस ने ज़िंदा किया था, मगर यह साफ है कि उन्होंने ये चमत्कार परमेश्वर की शक्ति से किए थे। परमेश्वर का मकसद पूरा होने के लिए यह ज़रूरी है कि पृथ्वी पर “अच्छे और बुरे, दोनों तरह के लोगों” को मरे हुओं में से ज़िंदा किया जाए। (प्रेष 24:15) बाइबल यह भी बताती है कि कुछ मरे हुओं को स्वर्ग में ज़िंदा किया जाएगा। यह कहती है कि यीशु के अभिषिक्त भाइयों को ‘पहले ज़िंदा किया जाएगा।’—फिल 3:11; प्रक 20:5, 6; यूह 5:28, 29; 11:25.

मरोदक: बैबिलोन शहर का मुख्य देवता। जब से बैबिलोन के राजा और कानून बनानेवाले हम्मुराबी ने बैबिलोन को बैबिलोनिया साम्राज्य की राजधानी बनाया, तब से मरोदक (या मरदूक) मशहूर होने लगा। आखिरकार मरोदक ने पहले के कई देवताओं की जगह ले ली और बैबिलोन के सभी देवी-देवताओं में मुख्य देवता बन गया। आगे चलकर उसे यह उपाधि दी गयी, “बेलू” (मतलब “मालिक”)। मरोदक को आम तौर पर बेल कहा जाता था।—यिर्म 50:2.

मलकाम: मुमकिन है कि यह मोलेक ही है, जो अम्मोनियों का मुख्य देवता था। (सप 1:5) —मोलेक देखें।

मशक: यह भेड़-बकरी या किसी और जानवर की खाल से बनी होती थी और इसमें दाख-मदिरा रखी जाती थी। जब दाख-मदिरा खमीरी होती थी तो उससे कार्बन डाइऑकसाइड गैस निकलती थी और यह मशक में दबाव पैदा करती थी। इसलिए दाख-मदिरा नयी मशक में रखी जाती थी क्योंकि यह लचीली होती थी और फैलती थी, जबकि पुरानी मशक कड़ी होती थी और ज़्यादा दबाव में फट जाती थी।—यह 9:4; मत 9:17.

मश्कील: 13 भजनों के उपरिलेख में दिया एक इब्रानी शब्द जिसका मतलब साफ-साफ नहीं पता। शायद इसका मतलब है “सोचने पर मजबूर कर देनेवाली कविता।” मश्कील से मिलता-जुलता एक और शब्द है जिसका अनुवाद ‘सूझ-बूझ से सेवा करना’ किया गया है, इसलिए कुछ लोगों को लगता है कि इन दोनों शब्दों के मतलब भी शायद एक-दूसरे से मिलते-जुलते हों। —2इत 30:22; भज 32:उप.

मसीह; मसीहा: इनके इब्रानी शब्द *मशीआक* और यूनानी शब्द *ख्रिस्तौस* का मतलब है, “अभिषिक्त जन।” जब किसी को खास सेवा के लिए ठहराया जाता, तो उसका अभिषेक तेल से किया जाता था। “मसीह” यीशु को दी एक उपाधि भी थी।—मत 1:16; यूह 1:41; 2शम 22:51; 1इत 16:22; दान 9:25; इब्र 11:26.

मसीह का विरोधी: इनके यूनानी शब्द के दो मतलब हैं। पहला, वह जो मसीह ***के खिलाफ है या उसका विरोध करता है।*** दूसरा, वह जो झूठा मसीह है यानी ***जो मसीह होने का दावा करता है।*** ऐसे सभी लोगों, संगठनों या समूहों को मसीह के विरोधी कहना सही होगा जो मसीह के चेले या मसीहा होने का दावा करते हैं या जो मसीह और उसके चेलों का विरोध करते हैं। —1यूह 2:22.

मसीही: परमेश्‍वर ने यह नाम यीशु मसीह के चेलों को दिया है।—प्रेष 11:26; 26:28.

महलत: ज़ाहिर है कि भजन 53 और 88 के उपरिलेख में दिया यह शब्द संगीत से जुड़ा है। यह शायद इब्रानी की जिस मूल क्रिया से जुड़ा है उसका मतलब है "कमज़ोर होना; बीमार पड़ना।" इससे पता चलता है कि यह एक दर्द-भरा सुर होगा, जो इन दो भजनों के दुख-भरे बोल पर सही बैठेगा।

महा-कृपा: इसके यूनानी शब्द का मुख्य मतलब है, कोई बात या चीज़ जो अच्छी और दिल जीतने-वाली है। यह अकसर खुशी-खुशी दिए तोहफे या प्यार से दिए गए तोहफे के लिए इस्तेमाल होता है। जहाँ परमेश्‍वर की महा-कृपा की बात आती है वहाँ उसका मतलब है, ऐसा तोहफा जो परमेश्‍वर उदारता से देता है और बदले में कुछ पाने की माँग नहीं करता। इसलिए शब्द "महा-कृपा" से पता चलता है कि परमेश्‍वर इंसानों को जो देता है बहुतायत में देता है, उनसे बहुत प्यार करता है और उन पर कृपा करता है। इसके यूनानी शब्द का अनुवाद "कृपा," "आशीष," "मेहरबानी" वगैरह भी किया गया है। महा-कृपा न तो कमायी जा सकती है न ही इसका हकदार होने का कोई दावा कर सकता है। यह कृपा तो महा-कृपा करनेवाले की दरियादिली की वजह से उस पर की जाती है।—2कुर 6:1; इफ 1:7.

महामारी: कोई भी संक्रामक बीमारी जो तेज़ी से कई इलाकों में फैल सकती है और जिसकी चपेट में आकर बड़ी तादाद में लोगों की मौत हो सकती है। अकसर परमेश्‍वर सज़ा देने के लिए महा-मारी लाता था।—गि 14:12; यहे 38:22, 23; आम 4:10.

महायाजक: मूसा के कानून के मुताबिक सबसे बड़ा याजक जो लोगों की तरफ से परमेश्‍वर के सामने जाता था और बाकी याजकों के काम-काज की निगरानी करता था। उसे "प्रधान याजक" भी कहा जाता था। (2इत 26:20; एज 7:5) सिर्फ उसे पवित्र डेरे के और बाद में मंदिर के परम-पवित्र भाग में जाने की इजाज़त थी। वह साल में सिर्फ एक बार यानी प्रायश्‍चित के दिन परम-पवित्र भाग में जाता था। यीशु मसीह को भी "महायाजक" कहा गया है।—लैव 16:2, 17; 21:10; मत 26:3; इब्र 4:14.

महा-संकट: यीशु ने बताया था कि यरूशलेम पर एक ऐसा "महा-संकट" आएगा जैसा पहले कभी नहीं आया था। उसने यह भी बताया कि भविष्य में जब वह 'महिमा के साथ आएगा' तब पूरी मानवजाति पर ऐसा ही "महा-संकट" आएगा। (मत 24:21, 29-31) पौलुस ने बताया कि 'जो परमेश्‍वर को नहीं जानते और यीशु के बारे में खुशखबरी के मुताबिक नहीं चलते' उन पर यह संकट लाकर परमेश्‍वर अपने न्याय का सबूत देगा। प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 दिखाता है कि यीशु 'जंगली जानवर और धरती के राजाओं और उनकी सेनाओं' से लड़ने के लिए अपनी स्वर्ग की सेनाओं के साथ आ रहा है। (2थि 1:6-8; प्रक 19:11-21) इस संकट से "एक बड़ी भीड़" बच-कर निकलेगी। (प्रक 7:9, 14)—हर-मगिदोन देखें।

महासभा: यरूशलेम में यहूदियों की सबसे बड़ी अदालत। यीशु के दिनों में महासभा 71 सदस्यों से मिलकर बनी थी। इनमें महायाजक, वे आदमी जो महायाजक रह चुके थे, महायाजकों के घराने के लोग, मुखिया, गोत्रों और घरानों के मुखिया और शास्त्री शामिल थे।—मर 15:1; प्रेष 5:34; 23:1, 6.

मातम मनाना: किसी की मौत पर या कोई आफत टूटने पर दुख ज़ाहिर करना। बाइबल के ज़माने में कई दिनों तक मातम मनाना एक दस्तूर था। ज़ोर-ज़ोर से रोने के अलावा, मातम मनानेवाले अलग तरह के कपड़े पहनते थे, सिर पर राख डालते थे, अपने कपड़े फाड़ते थे और छाती पीटते थे। कभी-कभी मरे हुओं को दफनाते वक्‍त किराए पर मातम मनानेवालों को बुलाया जाता था।—उत 23:2; एस 4:3; प्रक 21:4.

मादी; मादै: मादी लोग येपेत के बेटे मादई के वंशज थे। वे ईरान के पठार में बस गए जो एक पहाड़ी इलाका था और यह मादै देश कहलाया। मादियों ने बैबिलोन के साथ मिल-कर अश्‍शूर को हराया। उस वक्‍त फारस मादै के अधीन एक प्रांत था। मगर कुसरू ने बगावत की और मादै को फारस से मिला दिया गया। इससे एक नया साम्राज्य मादी-फारस बना जिसने

ई.पू. 539 में बैबिलोन साम्राज्य को हराया। ई. 33 में पिन्तेकुस्त के दिन मादी लोग भी यरूशलेम में मौजूद थे। (दान 5:28, 31; प्रेष 2:9)—अति. ख9 देखें।

माप-छड़: यह छड़ आम तौर पर नरकट का बना होता था। इसकी लंबाई 6 हाथ थी। एक हाथ की मानक नाप के मुताबिक माप-छड़ 2.67 मी. (8.75 फुट) लंबा था और लंबे हाथ के मुताबिक माप-छड़ 3.11 मी. (10.2 फुट) लंबा था। (यहे 40:3, 5; प्रक 11:1, फु.)—अति. ख14 देखें।

मिकताम: एक इब्रानी शब्द जो छः भजनों (भज 16, 56-60) के उपरिलेख में दिया गया है। यह एक तकनीकी शब्द है जिसका मतलब साफ-साफ नहीं पता। मगर हो सकता है यह शब्द, "खोदकर लिखना" से जुड़ा हो।

मिलकोम: अम्मोनियों का देवता। मुमकिन है कि यह मोलेक ही है। (1रा 11:5, 7) सुलैमान ने अपने शासन के आखिरी सालों में इसी झूठे देवता के लिए ऊँची जगह बनायीं।—मोलेक देखें।

मीना: यहेजकेल में इसे मानेह भी कहा गया है। यह भार मापने और मुद्रा की एक इकाई था। पुरातत्व खोज से पता चला है कि एक मीना 50 शेकेल के बराबर था और एक शेकेल का वज़न 11.4 ग्रा. था। इसलिए इब्रानी शास्त्र में बताए एक मीना का वज़न 570 ग्रा. था। इसके अलावा, शायद एक शाही मीना भी होता था ठीक जैसे एक हाथ की दो नाप होती थीं। मसीही यूनानी शास्त्र में एक मीना 100 द्राख्मा के बराबर था। इसका वज़न 340 ग्रा. था। एक तोड़े में 60 मीना होते थे। (एज 2:69; लूक 19:13)—अति. ख14 देखें।

मील: यह शब्द मसीही यूनानी शास्त्र के मूल पाठ में सिर्फ मत्ती 5:41 में इस्तेमाल हुआ है। मुमकिन है कि यहाँ रोमी मील की बात की गयी है जो 1,479.5 मी. (4,854 फुट) के बराबर था।—अति. ख14 देखें।

मुखिया; बुज़ुर्ग: उम्रदराज़ आदमी, मगर शास्त्र में यह शब्द खासकर उसके लिए इस्तेमाल हुआ है जो समाज या देश में अधिकार और ज़िम्मेदारी के पद पर था।—निर्ग 4:29; नीत 31:23.

मुहर: ऐसी चीज़ जिससे छाप लगायी जाती थी। (यह छाप आम तौर पर चिकनी मिट्टी या मोम पर लगायी जाती थी।) किसी चीज़, दस्तावेज़ वगैरह पर लगी मुहर दिखाती थी कि उसका मालिक कौन है, वह असली है या दो पक्षों के बीच करार किया गया है। प्राचीन समय की मुहर सख्त चीज़ (जैसे पत्थर, हाथी-दाँत या लकड़ी) से बनी होती थी जिस पर अक्षर या प्रतीक उलटे खुदे होते थे। मुहर को लाक्षणिक तौर पर यह दिखाने के लिए भी इस्तेमाल किया गया है कि कोई बात सच्ची या राज़ है। मुहर लगाना यह भी दिखाता है कि किसी पर किसका अधिकार है।—निर्ग 28:11; नहे 9:38; प्रक 5:1; 9:4.

मुहरवाली अँगूठी: एक तरह की मुहर जिसे उँगली पर पहना जाता था या फिर डोरी में डालकर शायद गले में पहना जाता था। यह किसी अधिकारी या शासक के अधिकार की निशानी होती थी। (उत 41:42)—मुहर देखें।

मूंगा: पत्थर जैसी सख्त चीज़ जो छोटे-छोटे समुद्री जीवों के कंकाल से बनती है। मूंगे समुंदर में कई रंगों में पाए जाते हैं जैसे लाल, सफेद और काला। खासकर लाल सागर में ढेर सारे मूंगे पाए जाते थे। बाइबल के ज़माने में लाल मूंगे बेशकीमती होते थे और इनसे मनके और गहने बनाए जाते थे।—नीत 8:11.

मूत-लब्बेन: भजन 9 के उपरिलेख में दिया एक शब्द। माना जाता था कि इसका मतलब है, "बेटे की मौत पर।" कुछ लोग कहते हैं कि यह एक नाम था या शायद किसी जाने-माने धुन के शुरूआती शब्द थे, जिन्हें यह भजन गाते वक्त इस्तेमाल किया जाना था।

मोलेक: अम्मोनियों का देवता। शायद इसी को मलकाम, मिलकोम और मोलोक कहा जाता था। मोलेक किसी देवता के नाम के बजाय एक उपाधि हो सकती है। मूसा के कानून में साफ बताया गया था कि अगर कोई मोलेक के लिए अपने बच्चों की बलि चढ़ाएगा, तो उसे मौत की सज़ा दी जाएगी।—लैव 20:2; यिर्म 32:35; प्रेष 7:43.

मोलोक।—मोलेक देखें।

मौजूदगी: मसीही यूनानी शास्त्र की कुछ आयतों में इस शब्द का मतलब है, राजा की हैसियत से

यीशु मसीह की मौजूदगी। उसकी मौजूदगी स्वर्ग में उसके राजा बनने से शुरू हुई और अब तक यानी इस व्यवस्था के आखिरी दिनों तक चल रही है। मसीह की मौजूदगी का मतलब उसका आकर तुरंत चले जाना नहीं है बल्कि यह कुछ वक्त तक चलनेवाला एक खास दौर है।—मत 24:3.

य

यदूतून: यह शब्द भजन 39, 62 और 77 के उपरिलेख में आता है, मगर इसका मतलब साफ-साफ नहीं पता। ऐसा लगता है कि उपरिलेख में उन भजनों के बारे में हिदायत दी गयी है। शायद यह कि उन्हें किस शैली में गाया जाना है या कौन-सा साज़ बजाया जाना है। एक लेवी संगीतकार का नाम भी यदूतून था। इसलिए हो सकता है कि भजनों की शैली या साज़ यदूतून या उसके बेटों से किसी तरह जुड़े थे।

यहूदा: याकूब की पत्नी लिआ से उसका चौथा बेटा। मरने से पहले याकूब ने भविष्यवाणी की थी कि यहूदा के खानदान से एक महान शासक आएगा जो हमेशा-हमेशा तक राज करेगा। इंसान के रूप में यीशु का जन्म यहूदा के खानदान में हुआ। यहूदा एक गोत्र का नाम भी था। आगे चलकर यहूदा और बिन्यामीन गोत्रों से मिलकर बने राज्य का नाम यहूदा पड़ा। इसे दक्षिणी राज्य भी कहा जाता था। याजकों और लेवियों की गिनती इसी में होती थी। इसका इलाका देश के दक्षिणी हिस्से में था जहाँ यरूशलेम और उसका मंदिर था।—उत 29:35; 49:10; 1रा 4:20; इब्र 7:14.

यहूदी: इसराएल के दस गोत्रोंवाले राज्य के नाश के बाद, यहूदा गोत्र के लोगों को यहूदी कहा जाता था। (2रा 16:6) मगर बाद में, बैबिलोन की बँधुआई से लौटनेवाले सभी गोत्रों के इसराएलियों को यहूदी कहा गया। (एज 4:12) आगे चलकर यह नाम दुनिया-भर में फैले इसराएलियों को गैर-यहूदी राष्ट्रों से अलग दिखाने के लिए इस्तेमाल हुआ। (एस 3:6) प्रेषित पौलुस ने इस शब्द का लाक्षणिक तौर पर इस्तेमाल करके यह दलील दी कि एक मसीही किस राष्ट्र से है, यह बात मसीही मंडली में कोई मायने नहीं रखती।—रोम 2:28, 29; गल 3:28.

यहूदी धर्म अपनानेवाला: बाइबल में बताया गया है कि यहूदी धर्म अपनानेवालों में से आदमियों का खतना किया जाता था।—मत 23:15, फु.; प्रेष 13:43.

यहोवा: परमेश्वर के नाम का जाना-माना अनुवाद, जो इब्रानी के इन चार अक्षरों में लिखा जाता है (יהוה)। यह नाम बाइबल के इस अनुवाद में 7,000 से ज़्यादा बार आया है।—अति. क4 और क5 देखें।

याकूब: इसहाक और रिबका का बेटा। परमेश्वर ने उसे बाद में इसराएल नाम दिया और वह इसराएल के लोगों का (जिन्हें इसराएली और आगे चलकर यहूदी कहा गया था) कुलपिता बना। उसके 12 बेटों और उनके वंशजों से मिलकर इसराएल राष्ट्र के 12 गोत्र बने। बाद में भी इसराएल राष्ट्र या उसके लोगों को याकूब नाम से बुलाया जाता था।—उत 32:28; मत 22:32.

याजक: वह आदमी जिसे परमेश्वर ने ठहराया था कि वह लोगों की सेवा करे और उन्हें परमेश्वर और उसके नियमों के बारे में सिखाए। इसके अलावा याजक लोगों की तरफ से परमेश्वर के सामने जाकर बलिदान चढ़ाता था और उनके पापों की माफी माँगता था। मूसा का कानून मिलने से पहले, परिवार का मुखिया ही अपने परिवार के लिए याजक हुआ करता था। मूसा के कानून के मुताबिक लेवी गोत्र से हारून के घराने के आदमियों को याजक ठहराया गया। लेवी गोत्र के बाकी आदमियों को उनकी मदद करने के लिए ठहराया गया। नए करार के शुरू होने पर परमेश्वर का इसराएल, याजकों का राष्ट्र बना जिसका महायाजक यीशु मसीह था।—निर्ग 28:41; इब्र 9:24; प्रक 5:10.

यातना का काठ: यह यूनानी शब्द *स्टौरोस* का अनुवाद है। इसका मतलब है एक सीधा काठ या खंभा। यीशु को इसी तरह के काठ पर लटकाकर मार डाला गया था। इस बात का कोई सबूत नहीं कि इस यूनानी शब्द का मतलब क्रूस है। दरअसल मसीह के आने से पहले, सदियों से झूठे धर्मों के लोग क्रूस को एक धार्मिक निशानी के तौर पर इस्तेमाल करते थे। "*यातना* का काठ" मूल शब्द का पूरा-पूरा मतलब देता है

क्योंकि *स्टौरोस* शब्द का इस्तेमाल यह बताने के लिए भी किया गया कि यीशु के चेलों को यातना, दुख-तकलीफों और शर्मिंदगी का सामना करना पड़ेगा। (मत 16:24; इब्र 12:2)—काठ देखें।

यूनानी: यूनान देश के लोगों की भाषा। जो यूनान में पैदा होता है या जिसका परिवार यूनान से है उसे भी यूनानी कहते हैं। मसीही यूनानी शास्त्र में इस शब्द का इस्तेमाल ऐसे सभी लोगों के लिए भी किया गया है, जो यहूदी नहीं थे या जिन पर यूनानी भाषा और संस्कृति का असर था।—योए 3:6; यूह 12:20.

र

रंगशाला: ऐसी जगह जहाँ लोग नाटक और संगीत के कार्यक्रम देखने के लिए इकट्ठा होते थे। इफिसुस में एक बड़ी रंगशाला थी जहाँ बैठने के लिए पत्थर से बनी बेंच होती थीं। उस रंगशाला में करीब 25,000 लोग बैठ सकते थे।

रथ: बाइबल के ज़माने में रथ युद्ध में और सफर के लिए इस्तेमाल होता था।—निर्ग 14:23; न्या 4:13; प्रेष 8:28; प्रक 9:9.

राजदंड: लाठी या डंडा जो शासक अपने हाथ में लिए रहता था और जो उसके राज करने के अधिकार की निशानी था।—उत 49:10; इब्र 1:8.

राहाब: यह शब्द अय्यूब, भजन और यशायाह की किताबों में लाक्षणिक तौर पर इस्तेमाल हुआ है। (यह यहोशू की किताब में बतायी औरत राहाब नहीं है।) अय्यूब की जिस आयत में राहाब का ज़िक्र आता है उसकी आस-पास की आयतें दिखाती हैं कि यह एक बड़ा समुद्री जीव है। बाकी आयतों में यह समुद्री जीव मिस्र को दर्शाता है।—अय 9:13; भज 87:4; यश 30:7; 51:9, 10.

रुआख; नफ्मा: इब्रानी शब्द *रुआख* और यूनानी शब्द *नफ्मा* का अनुवाद कई हिंदी बाइबलों में "आत्मा" किया गया है। मगर यह अनुवाद सही नहीं है क्योंकि इससे अमर आत्मा की गलत शिक्षा को बढ़ावा मिला है। (भज 146:4) *रुआख* और *नफ्मा* का असल में मतलब है "साँस।" इसके अलावा इन शब्दों के ये मतलब भी हैं: (1) हवा, (2) इंसानों और जानवरों की जीवन-शक्ति, (3) इंसान के मन की प्रेरणा, (4) परमेश्वर या दुष्ट स्वर्गदूतों से मिलनेवाला संदेश, (5) स्वर्गदूत और (6) परमेश्वर की ज़ोरदार शक्ति यानी पवित्र शक्ति। (निर्ग 35:21; भज 104:29; मत 12:43; लूक 11:13) इसलिए इस संस्करण में मतलब को ध्यान में रखते हुए इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया गया है।

ल

लबानोन पर्वतमाला: लबानोन देश की दो पर्वतमालाओं में से एक। यह पश्चिम की तरफ है और पूर्वी लबानोन पर्वतमाला पूरब की तरफ है। इन दोनों पर्वतमालाओं के बीच एक लंबी-सी उपजाऊ घाटी है। लबानोन पर्वतमाला भूमध्य सागर के तट से शुरू होती है और उसकी चोटियों की औसतन ऊँचाई 1,800 से 2,100 मी. (6,000 फुट से 7,000 फुट) के बीच है। बीते ज़माने में लबानोन देवदार के ऊँचे-ऊँचे पेड़ों से ढका था, जिनकी लकड़ियाँ आस-पास के देशों में उम्दा मानी जाती थीं। (व्य 1:7; भज 29:6; 92:12)—अति. ख7 देखें।

लिव्यातान: पानी में रहनेवाला एक जीव क्योंकि अकसर इसका ज़िक्र पानी से जुड़ी बातों में मिलता है। अय्यूब 3:8 और 41:1 में यह मगरमच्छ या कोई दूसरा बड़ा और ताकतवर समुद्री जीव हो सकता है। भजन 104:26 में यह एक किस्म की व्हेल मछली हो सकता है। बाकी आयतों में यह नहीं बताया गया है कि यह कौन-सा जानवर है बल्कि इसे लाक्षणिक तौर पर इस्तेमाल किया गया है।—भज 74:14; यश 27:1.

लेप्टौन: जिस ज़माने में मसीही यूनानी शास्त्र लिखा गया था, उस ज़माने में यह यहूदियों का सबसे छोटा सिक्का था जो ताँबे और काँसे का बना था। बाइबल के कई अनुवादों में इसे "दमड़ी" कहा गया है। (मर 12:42, फु.; लूक 21:2, फु.)—अति. ख14 देखें।

लेवी: याकूब की पत्नी लिआ से उसका तीसरा बेटा। लेवी से निकले गोत्र का भी यही नाम था। आगे चलकर लेवी के तीन बेटों से लेवियों के तीन मुख्य दल बने। शब्द "लेवी" कभी-कभी पूरे

गोत्र के लिए कहा गया है, मगर इसमें हारून का याजक परिवार शामिल नहीं था। वादा किए गए देश में लेवी गोत्र को विरासत में कोई ज़मीन नहीं मिली, मगर बाकी गोत्रों के इलाकों में उन्हें 48 शहर दिए गए।—व्य 10:8; 1इत 6:1; इब्र 7:11.

लोज: बाइबल में बताए द्रव्य नापने का सबसे छोटा माप। यहूदी तलमूद में इसे हीन का 1/12वाँ हिस्सा बताया गया है। इस हिसाब से एक लोज 0.31 ली. के बराबर था। (लैव 14:10)—अति. ख14 देखें।

लोबान: *बोसवेलिया* प्रजाति के कुछ पेड़ों और झाड़ियों का गोंद, जिसे जलाने पर मीठी खुशबू आती है। पवित्र डेरे और मंदिर में जो पवित्र धूप जलाया जाता था, उसे तैयार करने में लोबान भी मिलाया जाता था। यह अनाज के चढ़ावे के साथ दिया जाता था और पवित्र भाग में नज़राने की रोटियों के दोनों ढेर के ऊपर रखा जाता था।—निर्ग 30:34-36; लैव 2:1; 24:7; मत 2:11.

व

वेदी: एक चबूतरा जो मिट्टी के ढेर, पत्थरों, चट्टान या धातु से मढ़ी लकड़ी का बना होता था। इस पर उपासना के लिए बलिदान चढ़ाए जाते थे या धूप जलाया जाता था। पवित्र डेरे और मंदिर के पहले कमरे में एक छोटी-सी "सोने की वेदी" थी जिस पर धूप जलाया जाता था। वह लकड़ी से बनी थी और उस पर सोना मढ़ा था। होम-बलियों के लिए एक बड़ी-सी "ताँबे की वेदी" बाहर आँगन में थी। (निर्ग 27:1; 39:38, 39; उत 8:20; 1रा 6:20; 2इत 4:1; लूक 1:11)—अति. ख5 और ख8 देखें।

वेदी के सींग: कुछ वेदियों के चारों कोनों का उभरा हुआ हिस्सा जिसे सींग का आकार दिया गया था। (लैव 8:15; 1रा 2:28)—अति. ख5 और ख8 देखें।

वेश्या: इसके यूनानी शब्द *पोर्ने* का मूल अर्थ है "बेचना।" हालाँकि वेश्या के काम अकसर औरतें करती हैं, मगर बाइबल में ऐसे आदमियों के बारे में भी बताया गया है जो दूसरे आदमियों के साथ संभोग करते थे। मूसा के कानून में वेश्या के काम की निंदा की गयी थी। यहोवा के पवित्र-स्थान में वेश्याओं की कमाई दान करना मना था, जबकि झूठे धर्मों के मंदिरों में वेश्या के काम करनेवालों को रखा जाता था क्योंकि वे कमाई का एक ज़रिया थे। (व्य 23:17, 18; 1रा 14:24) बाइबल में ऐसे लोगों, राष्ट्रों और संगठनों को भी लाक्षणिक तौर पर वेश्या कहा गया है, जो परमेश्वर के उपासक होने का दावा करने के साथ-साथ मूर्तिपूजा भी करते थे। मिसाल के लिए, दुनिया में फैले धर्मों की जिस व्यवस्था को "महानगरी बैबिलोन" कहा गया है, उसे प्रकाशितवाक्य में वेश्या बताया गया है क्योंकि दौलत और ताकत के लिए वह दुनिया के शासकों के पीछे जाती है।—प्रक 17:1-5; 18:3; 1इत 5:25.

व्यभिचार: अपने पति या पत्नी के बजाय किसी पराए के साथ यौन-संबंध रखना।—निर्ग 20:14; मत 5:27; 19:9.

श

शपथ: कोई बात सच है, यह बताने के लिए या किसी काम को करने या न करने का वादा करने के लिए शपथ खायी जाती थी। यह एक ऐसा वादा है जो अकसर किसी बड़े से किया जाता है, खासकर परमेश्वर से। यहोवा ने अब्राहम से किए अपने करार को पक्का करने के लिए उससे शपथ खाकर वादा किया।—उत 14:22; इब्र 6:16, 17.

शबात: बैबिलोन की बँधुआई से लौटनेवाले यहूदियों के पवित्र कैलेंडर का 11वाँ महीना और कृषि कैलेंडर का 5वाँ महीना। यह महीना, जनवरी के बीच से फरवरी के बीच तक का होता था। (जक 1:7)—अति. ख15 देखें।

शरण नगर: लेवियों को दिए शहर जहाँ अनजाने में खून करनेवाला भागकर पनाह ले सकता था। इस तरह वह खून का बदला लेनेवाले से बच सकता था। वादा किए गए देश में अलग-अलग जगहों पर 6 शरण नगर थे, जिन्हें यहोवा के निर्देशन में पहले मूसा ने और बाद में यहोशू ने चुना था। जब वह आदमी नगर के फाटक पर पहुँचता, तो वह मुखियाओं को अपना मामला बताता और उसे नगर में ले लिया जाता। फिर उस शहर में उसका मुकदमा चलता जिस शहर

में खून हुआ था ताकि वह खुद को निर्दोष साबित कर सके। यह मुकदमा इसलिए भी ज़रूरी था ताकि जानबूझकर खून करनेवाले इस इंतज़ाम का नाजायज़ फायदा न उठा सकें। अगर वह निर्दोष साबित होता तो उसे वापस शरण नगर भेज दिया जाता। वहाँ उसे या तो ज़िंदगी-भर रहना पड़ता या तब तक जब तक कि महायाजक की मौत नहीं हो जाती।—गि 35:6, 11-15, 22-29; यह 20:2-8.

शांति-बलि: वह बलिदान जो यहोवा के साथ शांति कायम करने के लिए उसे दिया जाता था। बलिदान देनेवाला और उसका घराना, बलिदान चढ़ानेवाला याजक और मंदिर में सेवा करने-वाले याजक, सब मिलकर उस बलिदान में से खाते थे। जानवर की जलायी चरबी से जो धुआँ उठता वह मानो यहोवा को दिया जाता था। जानवर का खून जो जीवन को दर्शाता है, वह भी उसे अर्पित किया जाता था। यह ऐसा था मानो याजक और उपासक सब मिलकर यहोवा के साथ खाना खा रहे हों, जो उनके बीच शांति के रिश्ते को दिखाता था।—लैव 7:29, 32; व्य 27:7.

शाप: किसी को धमकाना या यह ऐलान करना कि उसके साथ या किसी चीज़ के साथ बुरा होगा। इसका मतलब गाली देना या गुस्से में आकर बुरा-भला कहना नहीं था। शाप अकसर सबके सामने दिया जाता था। और जब परमेश्वर या उसका ठहराया हुआ कोई जन शाप देता था, तो यह एक भविष्यवाणी होती थी जो ज़रूर पूरी होती थी।—उत 12:3; गि 22:12; गल 3:10.

शास्त्र: परमेश्वर ने जो वचन लिखवाए, उन्हें शास्त्र कहा जाता है। यह शब्द सिर्फ मसीही यूनानी शास्त्र में आता है।—लूक 24:27; 2ती 3:16.

शास्त्री: एक नकल-नवीस जो इब्रानी शास्त्र की नकल तैयार करता था। यीशु के ज़माने तक शास्त्री ऐसे आदमियों को कहा जाने लगा जिन्हें मूसा के कानून का अच्छा ज्ञान था। वे यीशु का विरोध करते थे।—एज 7:6, फु.; मर 12:38, 39; 14:1.

शीओल: एक इब्रानी शब्द, जिसका यूनानी शब्द "हेडीज़" है। इसका अनुवाद "कब्र" किया गया है, यानी एक लाक्षणिक जगह जहाँ ज़्यादातर इंसान मौत की नींद सो जाते हैं।—उत 37:35, फु.; भज 16:10, फु.; प्रेष 2:31, फु.

शुद्ध: बाइबल में इस शब्द का मतलब सिर्फ अपने शरीर को साफ रखना नहीं है बल्कि यह भी कि नैतिकता और उपासना के मामलों में बेदाग बने रहना या फिर चूक होने पर वापस उस दशा में आना। शुद्ध होने का यह भी मतलब है, ऐसी हर चीज़ से दूर रहना जो नैतिक रूप से और परमेश्वर की नज़र में दूषित, गंदा या भ्रष्ट कर सकती है। मूसा के कानून में "शुद्ध" होने का मतलब था, उसके नियमों के मुताबिक खुद को शुद्ध करना।—लैव 10:10; भज 51:7; मत 8:2; 1कुर 6:11.

शेकेल: भार मापने और मुद्रा की एक इकाई, जिसे इब्री लोग सबसे ज़्यादा इस्तेमाल करते थे। इसका वज़न 11.4 ग्रा. था। "पवित्र-स्थान के शेकेल" का ज़िक्र शायद इस बात पर ज़ोर देने के लिए किया गया है कि बाट सही होना चाहिए या पवित्र डेरे में रखे बाट के मुताबिक होना चाहिए। पुराने ज़माने में शायद एक शाही शेकेल भी होता था (जो आम शेकेल से अलग था) या राजमहल में रखा एक बाट होता था।—निर्ग 30:13.

शेमिनिथ: संगीत से जुड़ा एक शब्द, जिसका शाब्दिक मतलब है "आठवाँ" और यह शायद नीचेवाले सुर की तरफ इशारा करता है। साज़ों के मामले में इस शब्द का मतलब शायद ऐसे साज़ हैं जिनसे मंद स्वर निकलते हैं। गानों के मामले में, इसका मतलब शायद नीचेवाले सुर में गाना और संगीत बजाना है।—1इत 15:21; भज 6:उप.; 12:उप.

शैतान: एक इब्रानी शब्द जिसका मतलब है "विरोधी।" बाइबल में आम तौर पर यह शब्द परमेश्वर के सबसे बड़े दुश्मन शैतान के लिए इस्तेमाल हुआ है। उसे इबलीस भी कहा गया है।—अय 1:6; मत 4:10; प्रक 12:9.

शोकगीत: दुख-भरी कविता या गीत। यह किसी दोस्त या अज़ीज़ की मौत पर गहरा दुख या शोक प्रकट करने के लिए रचा जाता था। इसे विलापगीत भी कहते हैं।—2शम 1:17; भज 7:उप.

स

सआ: एक सूखा माप। अगर इस माप की कोई भी चीज़ द्रव्य माप बत के बरतन में डाली जाए तो वह 7.33 ली. के बराबर होता। (2रा 7:1) —अति. ख14 देखें।

सच्चा परमेश्‍वर: *हा-इलोहिम* और *हा-एल,* इन दो इब्रानी शब्दों का अनुवाद "सच्चा परमेश्‍वर" किया गया है। कई आयतों में इन शब्दों का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए किया गया है कि यहोवा झूठे देवताओं से अलग है, सिर्फ वही सच्चा परमेश्‍वर है। उन आयतों में यह अनुवाद "*सच्चा* परमेश्‍वर" इब्रानी शब्दों का पूरा-पूरा मतलब देता है।—उत 5:22, 24; 46:3; व्य 4:39.

सदूकी: यहूदी धर्म का एक जाना-माना धार्मिक गुट, जो ऊँचे खानदान के अमीर आदमियों और याजकों से मिलकर बना था। मंदिर में होनेवाले कामों पर उनका बहुत ज़ोर चलता था। वे ज़बानी तौर पर दिए कानून ठुकराते थे जिनका पालन फरीसी करते थे। यही नहीं, वे फरीसियों की शिक्षाएँ भी ठुकराते थे। वे न तो मरे हुओं के ज़िंदा किए जाने पर और न ही स्वर्गदूतों के वजूद पर विश्‍वास करते थे। वे यीशु का विरोध करते थे। —मत 16:1; प्रेष 23:8.

सब्त: यह एक इब्रानी शब्द से निकला है जिसका मतलब है "विश्राम करना; रुकना।" यह यहूदियों के हफ्ते का सातवाँ दिन है (यानी शुक्रवार के सूरज ढलने से लेकर शनिवार के सूरज ढलने तक)। साल में त्योहार के कुछ दिनों को और 7वें और 50वें सालों को भी सब्त कहा जाता था। सब्त के दिन कोई भी काम नहीं किया जाना था, सिर्फ पवित्र-स्थान में याजकों को सेवा करने की इजाज़त थी। सब्त के सालों के दौरान खेतों में कोई जुताई-बोआई नहीं की जानी थी और न ही किसी इब्री भाई को कर्ज़ लौटाने के लिए मजबूर किया जाना था। मूसा के कानून में सब्त के लिए जो पाबंदियाँ बतायी गयी थीं उन्हें मानना मुश्‍किल नहीं था। मगर धर्म गुरुओं ने धीरे-धीरे उनमें बहुत-से नियम जोड़ दिए और यीशु के ज़माने तक इन्हें मानना लोगों के लिए मुश्‍किल हो गया।—निर्ग 20:8; लैव 25:4; लूक 13:14-16; कुल 2:16.

सभा-घर: इसके यूनानी शब्द का मतलब है "इकट्ठा करना; सभा।" मगर ज़्यादातर आयतों में इसका मतलब है वह इमारत या जगह जहाँ यहूदी इकट्ठा होते थे और जहाँ शास्त्र पढ़ा जाता था, हिदायतें दी जाती थीं, प्रचार होता था और प्रार्थना की जाती थी। यीशु के दिनों में इसराएल के हर कसबे में एक सभा-घर होता था और बड़े-बड़े शहरों में एक-से-ज़्यादा सभा-घर होते थे।—लूक 4:16; प्रेष 13:14, 15.

समर्पण का त्योहार: हर साल यह त्योहार मंदिर के शुद्ध किए जाने की याद में मनाया जाता था, जिसे एन्टीओकस एपिफेनस ने अपवित्र कर दिया था। यह त्योहार किसलेव 25 को शुरू होता था और आठ दिन तक चलता था।—यूह 10:22.

समर्पण की पवित्र निशानी: शुद्ध सोने की एक चमचमाती पट्टी जिस पर इब्रानी में ये शब्द खोदकर लिखे थे: "यहोवा पवित्र है।" यह पट्टी महायाजक की पगड़ी पर सामने की तरफ बँधी होती थी। (निर्ग 39:30)—अति. ख5 देखें।

सम्राट का अंगरक्षक दल: रोमी सैनिकों का एक दल जो रोम के सम्राट की सुरक्षा के लिए ठहराया गया था। बाद में यह दल इतना ताकतवर हो गया कि वह चाहे तो सम्राट का साथ दे सकता था या उसका तख्ता पलट सकता था।—फिल 1:13.

सरकंडा: नरकट जैसा पौधा जो नदी-तालाब में पाया जाता है। इससे टोकरियाँ, पेटियाँ और नाव बनाए जाते थे। इससे कागज़ जैसी चीज़ भी बनायी जाती थी जिस पर लिखा जाता था। कई खर्रे इसी से बने होते थे।—निर्ग 2:3.

सहायक सेवक: इसका यूनानी शब्द *दीआकोनोस* है जिसका अनुवाद अकसर "सेवक" किया जाता है। "सहायक सेवक" वह होता है जो मंडली में प्राचीनों के निकाय की मदद करता है। इस ज़िम्मेदारी के काबिल बनने के लिए उसे बाइबल में दी माँगें पूरी करनी चाहिए।—1ती 3:8-10, 12.

सामरिया: करीब 200 सालों तक उत्तर में इसराएल के दस गोत्रोंवाले राज्य की राजधानी। उस राज्य के पूरे इलाके को भी सामरिया कहा जाता था। यह राजधानी जिस पहाड़ पर बसी

थी उसका नाम भी यही था। यीशु के ज़माने में सामरिया एक ज़िले का नाम था, जिसके उत्तर में गलील था और दक्षिण में यहूदिया। यीशु ने इस ज़िले में प्रचार सेवा नहीं की, मगर जब वह कभी-कभार वहाँ से गुज़रा तो उसने लोगों को गवाही दी। जब पतरस ने दूसरी चाबी का इस्ते-माल किया तब सामरी लोगों को पवित्र शक्ति मिली। (1रा 16:24; यूह 4:7; प्रेष 8:14)—अति. ख10 देखें।

सामरी लोग: पहले उन इसराएलियों को सामरी कहा जाता था जो उत्तर में इसराएल के दस गोत्रोंवाले राज्य में रहते थे। मगर जब ई.पू. 740 में अश्शूरियों ने सामरिया पर कब्ज़ा किया तो वे कई परदेसियों को वहाँ ले आए और ये लोग भी सामरी कहलाए। यीशु के दिनों में सामरी लोग, किसी जाति या राष्ट्र के लोगों को नहीं कहा जाता था बल्कि उस धार्मिक गुट को कहा जाता था, जिसके लोग प्राचीन शेकेम और सामरिया के आस-पास के इलाकों में रहते थे। इस गुट के लोगों की कुछ शिक्षाएँ यहूदी धर्म की शिक्षाओं से बिलकुल अलग थीं।—यूह 8:48.

साराप: स्वर्ग में यहोवा की राजगद्दी के चारों तरफ खड़े स्वर्गदूत। इसके इब्रानी शब्द *सराफीम* का शाब्दिक मतलब है "धधकनेवाले।"—यश 6:2, 6.

सिय्योन; सिय्योन पहाड़: यबूसियों के गढ़वाले शहर यबूस का दूसरा नाम। यह शहर यरू-शलेम की दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी पर बसा था। उस पर कब्ज़ा करने के बाद दाविद ने वहाँ अपना महल बनवाया और उस शहर का नाम "दाविद-पुर" रखा गया। (2शम 5:7, 9) जब दाविद करार का संदूक वहाँ लाया तो सिय्योन पहाड़ यहोवा की नज़र में पवित्र ठहरा। आगे चलकर इस शहर के साथ-साथ मोरिया पहाड़ पर बने मंदिर का इलाका भी सिय्योन कहलाया। कई बार तो पूरे यरूशलेम शहर को सिय्योन कहा जाता था। मसीही यूनानी शास्त्र में इसका ज़िक्र अकसर लाक्षणिक तौर पर किया गया है।—भज 2:6; 1पत 2:6; प्रक 14:1.

सिलखड़ी: मिस्र में अलबास्त्रोन नाम की जगह के पास पाया जानेवाला पत्थर। इससे इत्र की छोटी-छोटी बोतलें बनती थीं जिनकी गरदन पतली होती थी। इन्हें अच्छी तरह बंद करके रखा जाता था ताकि कीमती इत्र उड़ न जाए।—मर 14:3.

सींग: इन्हें पीने के बरतन, तेल रखने के बरतन, दवात, सिंगार की चीज़ें रखने के पात्र के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था। इनसे साज़ और नरसिंगे भी बनाए जाते थे। (1शम 16:1, 13; 1रा 1:39; यहे 9:2) "सींग" को अकसर ताकत और जीत की निशानी बताया गया है।—व्य 33:17; मी 4:13; जक 1:19.

सीनाबंद: अनमोल रत्नों से जड़ी थैली जिसे इस-राएल का महायाजक हर बार पवित्र भाग में जाने से पहले अपने सीने पर बाँधता था। इसे "न्याय का सीनाबंद" कहा जाता था क्योंकि इसमें ऊरीम और तुम्मीम होते थे, जिनसे यहोवा के फैसले पता चलते थे। (निर्ग 28:15-30) —अति. ख5 देखें।

सीरिया; सीरियाई लोग।—अराम; अरामी देखें।

सीवान: बैबिलोन की बँधुआई से लौटनेवाले यहू-दियों के पवित्र कैलेंडर का तीसरा महीना और कृषि कैलेंडर का 9वाँ महीना। यह महीना, मई के बीच से जून के बीच तक का होता था। (एस 8:9)—अति. ख15 देखें।

सुबह का तारा।—दिन का तारा देखें।

सुरतिस: उत्तर अफ्रीका में लिबिया के तट के पास उथले पानी की दो बड़ी खाड़ियाँ। पुराने ज़माने में नाविक इस जगह से डरते थे क्योंकि यहाँ पानी के नीचे रेत के दलदल होते थे जो लहरों के उतार-चढ़ाव से खिसकते रहते थे। (प्रेष 27:17) —अति. ख13 देखें।

सुलेमानी पत्थर: एक अनमोल रत्न जो अलग-अलग रंगों का होता है (काला, भूरा, लाल, सलेटी या हरा) और बीच-बीच में सफेद परतें होती हैं। यह रत्न महायाजक की खास पोशाक पर जड़ा होता था।—निर्ग 28:9, 12; 1इत 29:2; अय 28:16.

सुलैमान का खंभोंवाला बरामदा: यीशु के ज़माने में मंदिर के बाहरी आँगन के पूरब में एक छतवाला गलियारा। माना जाता था कि यह सुलैमान के मंदिर का बचा हुआ हिस्सा था। यहीं पर यीशु 'सर्दियों के मौसम' में टहलता था और शुरू के

मसीही उपासना के लिए इकट्ठा होते थे। (यूह 10:22, 23; प्रेष 5:12)—अति. ख11 देखें।

सूबेदार: बैबिलोन और फारस साम्राज्यों में एक प्रांत का राज्यपाल। सूबेदार मुख्य शासक होता था जिसे राजा चुनता था।—एज 8:36; दान 6:1.

सेला: एक तकनीकी शब्द जो संगीत से या कविता सुनाने से जुड़ा है और जो भजनों की किताब और हबक्कूक में पाया जाता है। इसका मतलब है गाने या संगीत में, या फिर दोनों में ठहराव देना ताकि चुपचाप मनन किया जा सके या जो भावना ज़ाहिर की गयी है उस पर ध्यान दिया जा सके। यूनानी *सेप्टुआजेंट* में इसे *डाए-सामा* कहा जाता है जिसका मतलब है गाने को रोककर सिर्फ संगीत बजने देना।—भज 3:4; हब 3:3.

स्तोईकी दार्शनिक: यूनानी दार्शनिकों का एक दल जो मानता था कि एक इंसान को ज़िंदगी में खुशी तभी मिल सकती है जब वह समझ से काम ले और कुदरत के उसूलों पर चले। उनकी नज़र में एक इंसान तभी बुद्धिमान माना जाता था जब उसे सुख-दुख से कोई फर्क नहीं पड़ता।—प्रेष 17:18.

स्मारक कब्र: एक ऐसी कब्र जहाँ इंसान की लाश रखी जाती थी। इसका यूनानी शब्द *नीमीओन* है जो क्रिया "याद दिलाने" से निकला है। इससे पता चलता है कि मरे हुए लोग अब भी यादों में बसे हैं।—यूह 5:28, 29.

स्वर्ग की रानी: एक देवी की उपाधि। इसे यिर्मयाह के दिनों में वे इसराएली पूजते थे जो सच्ची उपासना से मुकर गए थे। कुछ लोगों का मानना है कि यह बैबिलोन की देवी इशतर (अस्तारते) थी। प्राचीन सूमेर सभ्यता में उसी के जैसी एक देवी इनाना को पूजा जाता था जिसके नाम का मतलब "स्वर्ग की रानी" था। स्वर्ग की देवी होने के अलावा वह एक प्रजनन देवी भी थी। मिस्र के एक शिलालेख में अस्तारते को "स्वर्ग की मलिका" भी कहा गया है।—यिर्म 44:19.

स्वर्गदूत: इसका इब्रानी शब्द *मलाख* है और यूनानी शब्द *एगीलोस।* दोनों शब्दों का शाब्दिक मतलब है "दूत।" लेकिन जब स्वर्ग से आए दूतों की बात की गयी है तो उन्हें "स्वर्गदूत" कहा गया है। (उत 16:7; 32:3; याकू 2:25; प्रक 22:8) स्वर्गदूत शक्तिशाली अदृश्य प्राणी हैं जिन्हें परमेश्वर ने इंसानों की सृष्टि से बहुत पहले रचा था। उन्हें बाइबल में "लाखों पवित्र स्वर्गदूत," "परमेश्वर के बेटे" और "भोर के तारे" कहा गया है। (व्य 33:2; अय 1:6; 38:7) उन्हें बच्चे पैदा करके अपनी गिनती बढ़ाने की काबिलीयत के साथ नहीं बनाया गया था बल्कि हर स्वर्गदूत की सृष्टि की गयी थी। उनकी गिनती करोड़ों में है। (दान 7:10) बाइबल बताती है कि हर स्वर्गदूत का एक नाम और एक अलग शख्सियत है। फिर भी वे नम्र हैं और जब इंसानों ने उनकी उपासना करनी चाही तो उन्होंने मना कर दिया। कइयों ने तो अपना नाम तक बताने से इनकार कर दिया। (उत 32:29; लूक 1:26; प्रक 22:8, 9) उनका अलग-अलग ओहदा है और उन्हें तरह-तरह के काम दिए जाते हैं। जैसे, यहोवा की राजगद्दी के सामने सेवा करना, उसके संदेश पहुँचाना, धरती पर उसके सेवकों की मदद करना, उसकी तरफ से सज़ा देना और खुशखबरी सुनाने के काम में साथ देना। (2रा 19:35; भज 34:7; लूक 1:30, 31; प्रक 5:11; 14:6) आनेवाले हर-मगिदोन के युद्ध में वे यीशु के साथ मिलकर लड़ेंगे।—प्रक 19:14, 15.

ह

हर-मगिदोन: यह इब्रानी शब्द *हर मघिद्दोन* से लिया गया है जिसका मतलब है, "मगिद्दो पहाड़।" यह शब्द "सर्वशक्तिमान परमेश्वर के महान दिन के युद्ध" से जुड़ा है, जिसमें 'सारे जगत के राजा' यहोवा से युद्ध करने के लिए इकट्ठा होंगे। (प्रक 16:14, 16; 19:11-21)—महा-संकट देखें।

हाथ: लंबाई और दूरी नापने का माप। एक हाथ का मतलब होता था, कोहनी से लेकर बीचवाली उँगली के छोर तक की लंबाई। आम तौर पर इसराएली 44.5 सें.मी. (17.5 इंच) को एक हाथ मानते थे। मगर वे लंबे हाथ का माप भी इस्तेमाल करते थे जो चार अंगुल ज़्यादा लंबा होता था, करीब 51.8 सें.मी. (20.4 इंच)। (उत 6:15; लूक 12:25, फु.)—अति. ख14 देखें।

हाथ रखना: एक इंसान पर हाथ रखने का मतलब होता था कि उसे किसी खास काम के लिए चुनना, आशीर्वाद देना, चंगा करना या पवित्र शक्ति का कोई वरदान देना। कभी-कभी जानवरों की बलि चढ़ाने से पहले उन पर भी हाथ रखा जाता था।—निर्ग 29:15; गि 27:18; प्रेष 19:6; 1ती 5:22.

हारून के बेटे: लेवी के पोते हारून के वंशज। मूसा का कानून मिलने के बाद हारून को सबसे पहला महायाजक चुना गया था। हारून के बेटे, पवित्र डेरे और मंदिर में याजकों के नाते सेवा करते थे।—1इत 23:28.

हिग्गायोन: संगीत निर्देशन का एक तकनीकी शब्द। भजन 9:16 में इसका जिस तरह इस्तेमाल हुआ है उससे पता चलता है कि भजन को बीच में रोककर सुरमंडल पर एक गहरी और गंभीर धुन बजायी जाती थी। या फिर मनन के लिए ठहराव दिया जाता था।

हिरमेस: एक यूनानी देवता जो ज़्यूस का बेटा था। माना जाता था कि वह देवताओं का दूत है और बात करने में निपुण है। इसलिए लुस्त्रा के लोग गलती से पौलुस को हिरमेस समझ बैठे थे।—प्रेष 14:12.

हिलाया जानेवाला चढ़ावा: ऐसा चढ़ावा जो परमेश्वर का उपासक अपने हाथों पर लिए रहता था और याजक उसके हाथों के नीचे अपने हाथ रखकर आगे-पीछे हिलाता था। या फिर याजक वह चढ़ावा लेकर उसे आगे-पीछे हिलाता था। ऐसा करना, यहोवा को चढ़ावा *पेश करने* जैसा था।—लैव 7:30.

हीन: एक द्रव्य माप और उसे नापने का बरतन। यह 3.67 ली. के बराबर था। (निर्ग 29:40)—अति. ख14 देखें।

हेडीज़: एक यूनानी शब्द, जिसका इब्रानी शब्द "शीओल" है। इसका अनुवाद "कब्र" किया गया है, यानी एक लाक्षणिक जगह जहाँ ज़्यादातर इंसान मौत की नींद सो जाते हैं।—कब्र देखें।

हेरोदेस: एक शाही खानदान का नाम, जिसे रोम ने यहूदियों पर राज करने के लिए ठहराया था। हेरोदेस महान इस बात के लिए जाना जाता था कि उसने यरूशलेम का मंदिर दोबारा बनवाया था और यीशु को मारने के लिए छोटे बच्चों का कत्ल करने का हुक्म दिया था। (मत 2:16; लूक 1:5) उसके बेटों हेरोदेस अरखिलाउस और हेरोदेस अन्तिपास को उसकी रियासत के अलग-अलग हिस्सों पर अधिकार दिया गया। (मत 2:22) अन्तिपास ज़िला-शासक था मगर वह "राजा" के तौर पर जाना जाता था। उसने यीशु की साढ़े तीन साल की सेवा के दौरान और प्रेषितों अध्याय 12 में दर्ज़ घटनाओं के होने तक राज किया था। (मर 6:14-17; लूक 3:1, 19, 20; 13:31, 32; 23:6-15; प्रेष 4:27; 13:1) इसके बाद हेरोदेस महान के पोते, हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम ने राज किया। कुछ ही समय बाद परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उसे मार डाला। (प्रेष 12:1-6, 18-23) उसका बेटा हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय शासक बना और उसने उस समय तक राज किया जब यहूदियों ने रोम से बगावत की।—प्रेष 23:35; 25:13, 22-27; 26:1, 2, 19-32.

हेरोदेस के गुट के लोग: वे हेरोदियों के नाम से भी जाने जाते थे। देश-भक्तों का ऐसा दल जिसने रोमी सरकार के अधीन राज करनेवाले अलग-अलग हेरोदेस के राजनैतिक लक्ष्यों का समर्थन किया। कुछ सदूकी भी शायद इसी गुट में थे। यीशु का विरोध करने के लिए हेरोदियों ने फरीसियों का साथ दिया।—मर 3:6.

होम-बलि: परमेश्वर को दिया जानेवाला चढ़ावा जिसमें पूरा-का-पूरा जानवर वेदी पर रखकर जलाया जाता था। जानवर (बैल, मेढ़े, बकरे, फाख्ते या कबूतर के बच्चे) का कोई भी हिस्सा बलिदान देनेवाला अपने पास नहीं रखता था।—निर्ग 29:18; लैव 6:9.

होमेर: एक सूखा माप जो कोर के बराबर था। बत के मुताबिक तौला गया यह माप 220 ली. के बराबर था। (लैव 27:16)—अति. ख14 देखें।

होरेब; होरेब पहाड़: होरेब, सीनै पहाड़ के आस-पास का पहाड़ी इलाका था। होरेब पहाड़, सीनै पहाड़ का दूसरा नाम था। (निर्ग 3:1; व्य 5:2)—अति. ख3 देखें।

अतिरिक्त लेख क

क1 बाइबल के अनुवाद के सिद्धांत

बाइबल इब्रानी, अरामी और यूनानी भाषा में लिखी गयी थी। आज पूरी बाइबल या उसकी कुछ किताबें 3,000 से ज़्यादा भाषाओं में उपलब्ध हैं। बाइबल पढ़नेवाले ज़्यादातर लोग वे भाषाएँ नहीं जानते जिनमें यह लिखी गयी थी इसलिए उन्हें अनुवाद की गयी बाइबल की ज़रूरत होती है। तो सवाल यह है कि बाइबल का अनुवाद किन सिद्धांतों के मुताबिक किया जाना चाहिए और *पवित्र शास्त्र का नयी दुनिया अनुवाद* कैसे उन्हीं सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है?

कुछ लोग शायद सोचें कि अगर बाइबल की हर आयत का शब्द-ब-शब्द अनुवाद किया जाए या उसका इंटरलीनियर बाइबल की शैली में अनुवाद किया जाए, तो पढ़नेवालों को ठीक वही जानकारी मिलेगी जो मूल भाषाओं में लिखी गयी थी। लेकिन सच तो यह है कि इससे ज़्यादातर आयतों का सही-सही मतलब नहीं मिलेगा। इसकी कुछ वजहों पर ध्यान दीजिए:

- हर भाषा का अपना व्याकरण और शब्द भंडार होता है और अपनी ही वाक्य रचना होती है और ये दूसरी भाषाओं से बिलकुल अलग होते हैं। इब्रानी भाषा के प्रोफेसर एस. आर. ड्राइवर ने लिखा कि हर भाषा का "न सिर्फ व्याकरण और उद्‌गम दूसरी भाषाओं से अलग होता है, बल्कि . . . विचारों को वाक्यों में पिरोने का तरीका भी अपने आप में अनोखा होता है।" हर भाषा में सोचने का अपना ही एक तरीका होता है। प्रोफेसर ड्राइवर यह भी कहते हैं, "इसलिए सभी भाषाओं में वाक्य रचना एक जैसी नहीं होती।"
- आज के ज़माने की किसी भी भाषा के शब्द और व्याकरण उस इब्रानी, अरामी और यूनानी भाषा से हू-ब-हू नहीं मिलते जिनमें बाइबल लिखी गयी थी। इसलिए अगर बाइबल का शब्द-ब-शब्द अनुवाद किया जाए तो वह समझ नहीं आएगा या फिर गलत मतलब दे सकता है।
- एक शब्द के कई मतलब हो सकते हैं और एक वाक्य में उस शब्द का जो मतलब होता है दूसरे वाक्य में उसी का मतलब बिलकुल अलग होता है।

कुछ आयतों में इब्रानी या यूनानी भाषा का शब्द-ब-शब्द अनुवाद किया जा सकता है, मगर ऐसा करते वक्‍त अनुवादकों को बहुत सावधानी बरतनी चाहिए।

आगे कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो दिखाते हैं कि अगर शब्द-ब-शब्द अनुवाद किया जाए तो कैसे गलत मतलब निकल सकता है:

- बाइबल की मूल भाषाओं में शब्द "सो" और "सो गया" का मतलब सचमुच की नींद सोना या मौत की नींद सोना हो सकता है। (मत्ती 28:13; प्रेषितों 7:60)

जिन आयतों में ‘सोने’ का मतलब मौत है, वहाँ बाइबल के अनुवादक ‘मौत की नींद सोना’ लिख सकते हैं। इससे आज के ज़माने के लोगों को ऐसी आयतें पढ़कर गलत मतलब नहीं मिलेगा।—1 कुरिंथियों 7:39; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13; 2 पतरस 3:4.

- इफिसियों 4:14 में प्रेषित पौलुस ने एक यूनानी शब्द इस्तेमाल किया जिसका शब्द-ब-शब्द अनुवाद है, “इंसानों का पासा खेलने में।” दरअसल यह एक प्राचीन मुहावरा है जिसका मतलब है पासे के खेल में दूसरों को धोखा देना। ज़्यादातर भाषाओं में अगर इस मुहावरे का शब्द-ब-शब्द अनुवाद किया जाए तो कोई तुक नहीं बनेगा। लेकिन अगर कुछ ऐसा कहा जाए कि ‘इंसान उन्हें बहका लेते हैं’ तो मतलब साफ-साफ समझ आएगा।
- रोमियों 12:11 में एक यूनानी शब्द इस्तेमाल हुआ है जिसका शाब्दिक मतलब है “पवित्र शक्ति का उबलना।” ये शब्द हिंदी भाषा में सही मतलब नहीं देते इसलिए इस बाइबल में इनका अनुवाद “पवित्र शक्ति के तेज से भरे रहो” किया गया है।
- मशहूर पहाड़ी उपदेश में बताए यीशु के कुछ शब्दों का अनुवाद अकसर यूँ किया जाता हैः “धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं।” (मत्ती 5:3, *हिंदी—ओ.वी.*) लेकिन “मन के दीन” ये शब्द मूल भाषा के शब्दों का सही मतलब नहीं देते, क्योंकि यीशु यहाँ लोगों को नम्र होने की सीख नहीं दे रहा था बल्कि यह सिखा रहा था कि खुश रहने के लिए उन्हें इस बात का एहसास होना चाहिए कि उन्हें परमेश्वर के मार्गदर्शन की ज़रूरत है, सिर्फ खाने-पीने की ज़रूरतें पूरी करने से खुशी नहीं मिलेगी। (लूका 6:20) इसलिए कुछ बाइबलों में इसका अनुवाद ऐसे किया गया हैः “जिनमें परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने की भूख है” या “जो जानते हैं कि उन्हें परमेश्वर की ज़रूरत है।” ये अनुवाद मूल भाषा के शब्दों का सही-सही मतलब देते हैं।—मत्ती 5:3; *द न्यू टेस्टामेंट इन मॉर्डन इंग्लिश।*

ΟΙΠΤΩΧΟΙ
ΤΩΠΝΕΥΜΑΤΙ

मत्ती 5:3

शब्द-ब-शब्द अनुवादः “मन के दीन”

सही अनुवादः “जिनमें परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने की भूख है”

- कई आयतों में एक इब्रानी शब्द का अनुवाद “जलन” किया गया है यानी किसी करीबी रिश्तेदार के विश्वासघात करने पर गुस्से से भर जाना या दूसरों की चीज़ें देखकर उनसे ईर्ष्या करना। (नीतिवचन 6:34; यशायाह 11:13) लेकिन दूसरी आयतों में उसी इब्रानी शब्द का इस्तेमाल एक अच्छे गुण के लिए हुआ है। जैसे यहोवा का “जोश” या अपने लोगों को बचाने की उसकी ज़बरदस्त इच्छा या यहोवा की माँग कि “सिर्फ उसी की भक्ति की जाए।” (निर्गमन 34:14; 2 राजा 19:31; यहेजकेल 5:13; जकरयाह 8:2) उसी शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर के वफादार लोगों के “जोश” के लिए भी किया जा सकता है जो वे उसके लिए और उसकी उपासना के लिए दिखाते हैं। साथ ही, यह बताने के

लिए कि 'उनसे यह बरदाश्त नहीं होता कि लोग परमेश्‍वर के सिवा किसी और की उपासना करें।'—भजन 69:9; 119:139; गिनती 25:11.

- इंसान के हाथ के लिए इब्रानी भाषा में जो शब्द है, उसके कई मतलब हैं। इसलिए मतलब को ध्यान में रखते हुए उस शब्द का अनुवाद "ताकत," "अधिकार" या "उदारता" किया जा सकता है। (व्यवस्थाविवरण 32:27; 2 शमूएल 8:3; 1 राजा 10:13) *पवित्र शास्त्र का नयी दुनिया अनुवाद* में इस शब्द का करीब 40 अलग-अलग तरीकों से अनुवाद किया गया है।

יד

इब्रानी शब्द *याध* का अनुवाद आम तौर पर "हाथ" किया जाता है, मगर मतलब को ध्यान में रखते हुए इसका अनुवाद "ताकत," "अधिकार," "उदारता" या कई और शब्दों से किया जा सकता है

इन बातों को ध्यान में रखते हुए हम समझ सकते हैं कि बाइबल का अनुवाद करते वक्‍त इब्रानी या यूनानी भाषा के किसी शब्द के लिए हर बार एक ही शब्द इस्तेमाल कर लेना सही नहीं होगा। एक अनुवादक को सोच-समझकर तय करना होगा कि मूल पाठ में जो लिखा है उसका सही अनुवाद करने के लिए उसे अपनी भाषा में कौन-से शब्द इस्तेमाल करने होंगे। इसके अलावा, वाक्यों की रचना भी उसकी भाषा के व्याकरण के नियमों के हिसाब से होनी चाहिए ताकि अनुवाद पढ़ने में आसान हो।

पर साथ ही आयत में जो लिखा है उसे दूसरे शब्दों में कहते वक्‍त अपनी मरज़ी से तबदीलियाँ नहीं की जानी चाहिए। जो अनुवादक मूल पाठ का अपनी मन-मरज़ी से अनुवाद करता है, वह उसका गलत मतलब दे सकता है। कैसे? वह शायद मूल पाठ के असली मतलब में अपने विचार मिलाकर बताएगा या मूल पाठ की कुछ ज़रूरी जानकारी निकाल देगा। इसलिए जिस बाइबल में मूल पाठ को अपने शब्दों में समझाया जाता है और पूरी छूट लेकर अनुवाद किया जाता है, वह भले ही पढ़ने में आसान लगे मगर उसे पढ़ने से एक व्यक्‍ति को वह संदेश नहीं मिलेगा जो मूल पाठ में दिया गया है।

एक अनुवादक जिन धार्मिक शिक्षाओं को सख्ती से मानता है वे भी उसके अनुवाद पर असर कर सकती हैं। मिसाल के लिए मत्ती 7:13 कहता है: "खुला है वह रास्ता, जो विनाश की तरफ ले जाता है।" कुछ अनुवादक जो शायद अपनी धार्मिक शिक्षाओं को लेकर बहुत कट्टर थे, उन्होंने अपने अनुवाद में यहाँ "विनाश" की जगह "नरक" शब्द इस्तेमाल किया जबकि यूनानी भाषा में जो शब्द इस्तेमाल हुआ है उसका असली मतलब "विनाश" है।

बाइबल के अनुवादकों को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि बाइबल आम लोगों की भाषा में लिखी गयी थी जैसे किसानों, चरवाहों और मछुवारों की। (नहेमायाह 8:8, 12; प्रेषितों 4:13) इसलिए एक अच्छा अनुवाद वही होगा जिसे पढ़ने पर नेकदिल लोग बाइबल का संदेश आसानी से समझ पाएँ, फिर चाहे वे किसी भी माहौल में पले-बढ़े हों। ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करना बेहतर होता है जो ज़्यादा बोले जाते हैं और आसानी से समझ आते हैं, बजाय उन शब्दों के जो आम लोग शायद ही इस्तेमाल करते हैं।

बाइबल के कई अनुवादकों ने अपने अनुवाद से परमेश्वर का नाम, यहोवा निकालकर ऐसा काम किया है जिसे वे किसी भी तरह सही नहीं ठहरा सकते। इसलिए आज के अनुवादों में यह नाम नहीं पाया जाता जबकि बाइबल की प्राचीन हस्तलिपियों में यह नाम दिया गया है। (अतिरिक्त लेख क4 देखें।) कई अनुवादों में इस नाम की जगह "प्रभु" जैसी उपाधियाँ लिखी गयी हैं। और कुछ अनुवादों में तो इस सच्चाई को छिपा दिया गया है कि परमेश्वर का एक नाम भी है। मिसाल के लिए, यूहन्ना 17:26 में यीशु की जो प्रार्थना दर्ज़ है, उसका अनुवाद कुछ बाइबलों में ऐसे किया गया है: "मैंने तेरे बारे में उन्हें बताया है" और यूहन्ना 17:6 में लिखा है: "मैंने तुझे उन पर ज़ाहिर किया है जिन्हें तूने मुझे दिया था।" लेकिन यीशु की प्रार्थना का सही अनुवाद यह है: "मैंने ***तेरा नाम*** उन्हें बताया है" और "मैंने ***तेरा नाम*** उन लोगों पर ज़ाहिर किया है जिन्हें तूने दुनिया में से मुझे दिया है।"

नयी दुनिया अनुवाद के पहले अँग्रेज़ी संस्करण के परिचय में यह लिखा था: "हमने शास्त्र का अनुवाद अपने शब्दों में नहीं किया है। इस पूरे अनुवाद में हमारी यही कोशिश रही है कि जहाँ तक हो सके हम शब्द-ब-शब्द अनुवाद करें, बशर्ते यह इतना अटपटा न हो कि पाठ का मतलब समझना मुश्किल हो जाए। और मूल भाषा के जिन मुहावरों का अनुवाद आज के अँग्रेज़ी मुहावरों से किया जा सकता है वहाँ उनका इस्तेमाल किया गया है।" इसलिए 'नयी दुनिया बाइबल अनुवाद समिति' ने जहाँ तक हो सके, इस अनुवाद में ऐसे शब्द या शब्द-समूह इस्तेमाल किए हैं जो मूल इब्रानी और यूनानी पाठ की शैली जैसे हों, पर साथ ही उन्होंने ध्यान रखा है कि जिन आयतों में ऐसी शैली का इस्तेमाल करने से उन्हें पढ़ने में अटपटा लगेगा या आयतों का सही मतलब समझ नहीं आएगा वहाँ उनका इस्तेमाल न किया जाए। इसलिए यह बाइबल आसानी से पढ़ी जा सकती है और पढ़नेवाला पूरा यकीन रख सकता है कि परमेश्वर ने अपनी प्रेरणा से जो संदेश लिखवाया था उसका इस बाइबल में सही-सही अनुवाद किया गया है। —1 थिस्सलुनीकियों 2:13.

एक भरोसेमंद अनुवाद में:

- उन सभी जगहों में परमेश्वर का नाम होता है जहाँ यह मूल पाठ में आता है और इस तरह वह परमेश्वर के नाम को पवित्र ठहराता है।—मत्ती 6:9.
- परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे संदेश का बिलकुल सही-सही अनुवाद होता है। —2 तीमुथियुस 3:16.
- मूल पाठ के शब्दों और वाक्य रचनाओं का जहाँ तक हो सके शब्द-ब-शब्द अनुवाद किया जाता है, बशर्ते यह भाषा के नियमों के मुताबिक हो।
- ऐसे शब्द या शब्दों का अनुवाद मतलब को ध्यान में रखकर किया जाता है, जिनका शब्द-ब-शब्द अनुवाद करने से मतलब अटपटा या गलत हो सकता है।
- बोलचाल की भाषा होती है जो आसानी से समझ आए ताकि लोगों को बाइबल पढ़ने का बढ़ावा मिले।—नहेमायाह 8:8, 12.

क2 इस संस्करण की खासियतें

अँग्रेज़ी में *नयी दुनिया अनुवाद मसीही यूनानी शास्त्र* सन् 1950 में निकाला गया था और पूरी बाइबल यानी *पवित्र शास्त्र का नयी दुनिया अनुवाद* सन् 1961 में प्रकाशित किया गया था। यह एक ऐसी बाइबल है जिसका अनुवाद मूल भाषा यानी इब्रानी, अरामी और यूनानी से किया गया है। यह अनुवाद बिलकुल सही है और आसानी से पढ़ा जा सकता है। जब से यह बाइबल निकली है, तब से इसका अनुवाद 120 से भी ज़्यादा भाषाओं में हो चुका है और इसे पढ़कर लाखों लोगों को फायदा हुआ है।

'नयी दुनिया बाइबल अनुवाद समिति' इस बात को समझती है कि बाइबल का अनुवाद ऐसी भाषा में किया जाना चाहिए जो आज के ज़माने के लोगों के दिल को छू जाए। इसलिए इस अनुवाद में लिखने की शैली और शब्दों के चुनाव के मामले में कुछ खास सिद्धांतों को ध्यान में रखा गया है। यह इसलिए किया गया है ताकि आगे बताए लक्ष्यों को हासिल किया जा सके:

- **नए ज़माने की भाषा जो आसानी से समझ आए।** इस अनुवाद में पुराने और मुश्किल शब्दों की जगह ऐसे शब्द इस्तेमाल हुए हैं जो आज बहुत आम हैं और आसानी से समझ आते हैं। उदाहरण के लिए, "छूछे हाथ" बहुत पुराना शब्द है और बहुत कम लोग इसे समझते हैं, इसलिए इसकी जगह "खाली हाथ" लिखा गया है। (रूत 3:17) शब्द "चितौनी" आजकल इतना इस्तेमाल नहीं किया जाता और इसका मतलब चेतावनी हो सकता है। इससे मूल पाठ का गलत मतलब निकल सकता है इसलिए "चितौनी" की जगह "याद दिलाने के लिए हिदायत" लिखा गया है। (भजन 78:5) "ऋतुमति" की जगह "माहवारी" इस्तेमाल किया गया है क्योंकि शब्द "ऋतुमति" आज शायद ही कोई समझता है। (लैव्यव्यवस्था 12:5) 'रखैल' की जगह "उप-पत्नी" लिखा गया है क्योंकि 'रखैल' ऐसी औरत को कहा जाता है जो किसी आदमी के साथ नाजायज़ रिश्ता रखती हो, जबकि मूल पाठ के मुताबिक यहाँ "उप-पत्नी" होना चाहिए। (उत्पत्ति 35:22) "लहू" की जगह "खून," "स्वामी" की जगह "मालिक," "स्त्री" और "पुरुष" की जगह "आदमी" और "औरत," "हृदय" की जगह "दिल," "मनुष्य" की जगह "इंसान," "वस्त्र" की जगह "कपड़े," "सत्य" की जगह "सच्चाई" और "मृत्यु" की जगह "मौत" लिखा गया है क्योंकि ये आम बोलचाल के शब्द हैं।—उत्पत्ति 4:10; 24:35; लैव्यव्यवस्था 13:29; भजन 26:2; यिर्मयाह 10:23; जकरयाह 8:23; यूहन्ना 8:32; रोमियों 5:12.

  मूल भाषा के जिस शब्द का अनुवाद *हिंदी—ओ.वी.* बाइबल में "खराई" किया गया है, वह ज़्यादातर लोगों को समझ नहीं आता और मूल इब्रानी शब्द का

सही मतलब नहीं देता। "खराई" के लिए इस्तेमाल होनेवाले मूल इब्रानी शब्द का मतलब दरअसल "निर्दोष" या "बेदाग" है। इसलिए इस अनुवाद में मतलब को ध्यान में रखते हुए खराई के बदले "निर्दोष," "निर्दोष मन," "निर्दोष चालचलन," "जिसमें कोई दोष नहीं" जैसे शब्द इस्तेमाल किए गए हैं। —यहोशू 24:14; 1 राजा 9:4; 1 इतिहास 29:17; अय्यूब 1:8.

कुछ हिंदी बाइबलों में इस्तेमाल हुआ शब्द "पत्थरवाह" इतना जाना-माना शब्द नहीं है। "पत्थरवाह" के लिए मूल भाषाओं में जो शब्द इस्तेमाल हुआ है उसका मतलब है "पत्थरों से मार डालना।" इसराएल देश में मौत की सज़ा के लायक अपराधी को इसी तरह मार डाला जाता था। इसलिए इस बाइबल में "पत्थरवाह" के बजाय "पत्थरों से मार डालना" लिखा गया है।—लैव्यव्यवस्था 20:27.

- **बाइबल के शब्दों की सही समझ दी गयी है।** ज़्यादातर बाइबलों में कुछ ऐसे शब्द इस्तेमाल हुए हैं जिनसे गलत शिक्षाओं को बढ़ावा मिला है। उदाहरण के लिए, इब्रानी शब्द *शीओल* और यूनानी शब्द *हेडीज़* का अनुवाद हिंदी बाइबलों में "अधोलोक" किया गया है। "अधोलोक" का मतलब पाताल समझा जाता है, यानी धरती के नीचे ऐसी जगह जहाँ इंसान मरने के बाद भी ज़िंदा रहता है। मगर मूल भाषाओं में *शीओल* और *हेडीज़* का मतलब कब्र है जहाँ सभी मुरदे दफन हैं। इसलिए इस संस्करण में "अधोलोक" की जगह "कब्र" शब्द का इस्तेमाल हुआ है।—भजन 16:10; प्रेषितों 2:27.

कई बाइबलों में इब्रानी शब्द *रुआख* और यूनानी शब्द *नफ्मा* का अनुवाद "आत्मा" किया गया है जिससे अमर आत्मा की गलत शिक्षा को बढ़ावा मिला है। *रुआख* और *नफ्मा* का असल में मतलब है साँस। इसके अलावा इन शब्दों के ये मतलब भी हैं: मन का स्वभाव, अच्छे या बुरे स्वर्गदूत, जान, मन, शक्ति, पवित्र शक्ति, जोश, हवा वगैरह। इसलिए इस संस्करण में मतलब को ध्यान में रखते हुए इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया गया है।—उत्पत्ति 6:17; गिनती 14:24; 1 राजा 22:21; भजन 31:5; नीतिवचन 18:12; दानियेल 4:8; मत्ती 28:19, 20; लूका 1:17.

हिंदी बाइबलों में एक और शब्द का इस्तेमाल हुआ है जो गलत मतलब देता है, वह है "क्रूस" जबकि इसके मूल भाषा के शब्द का मतलब लकड़ी का सीधा खंभा है। और जिस खंभे पर मौत की सज़ा दी जाती थी वह नुकीला नहीं होता था जबकि "सूली" का मतलब नुकीली छड़ भी हो सकता है। इसलिए इस अनुवाद में "क्रूस" या "सूली" की जगह "काठ" शब्द इस्तेमाल किया गया है। (व्यवस्थाविवरण 21:23; मत्ती 27:31) उसी तरह, शब्द "धर्मी" या "धार्मिकता" का मतलब सिर्फ धर्म को मानना या धार्मिक होना समझा जाता है जबकि इसके मूल भाषा के शब्दों का मतलब नेक, नेकी, सच्चा, सही काम करना, न्याय वगैरह है। इसलिए "धार्मिकता" की जगह इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया गया है।—व्यवस्थाविवरण 33:21; नहेमायाह 9:8; अय्यूब 34:17; 2 पतरस 3:13.

और भी ऐसे कुछ शब्द हैं जो बहुत-से लोग नहीं समझते या उनका गलत मतलब समझते हैं। इसलिए उन शब्दों की जगह दूसरे शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। जैसे "पुनरुत्थान" की जगह 'मरे हुओं का फिर से ज़िंदा होना,' "भूत साधना" या "भूत-सिद्धि" की जगह "मरे हुओं से संपर्क करने का दावा करना," "छुड़ौती" की जगह "फिरौती," "प्रेरित" की जगह "प्रेषित" और "कलीसिया" की जगह "मंडली।" उसी तरह, जिन शब्दों का लाक्षणिक और शाब्दिक मतलब है उन्हें ज़्यादातर वैसे ही लिखा गया है। मगर जहाँ उन्हें लिखने से अटपटा लग सकता है, वहाँ उनका मतलब अनुवाद किया गया है और उन शब्दों को फुटनोट में डाल दिया गया है जैसे "मुँह," "हाथ," "सींग" वगैरह।—निर्गमन 23:13; गिनती 20:20; भजन 148:14.

- **पढ़ने में आसान।** इस अनुवाद में हिंदुस्तानी भाषा का इस्तेमाल हुआ है जो ज़्यादातर लोग बोलते हैं ताकि बाइबल का यह अनुवाद पढ़ने और समझने में आसान हो। इसके अलावा, कुछ नामों की वर्तनी भी बदली गयी है ताकि वे आसानी से पढ़े जाएँ। जैसे दानिय्येल को दानियेल, कदोर्लाओमेर को कदोर-लाओमेर, एसर्हद्दोन को एसर-हद्दोन, महेर्शालाल्हाशबज को महेर-शालाल-हाश-बज़, नेर्गलसरेसेर को नेरगल-शरेसेर, पर्शन्दाता को परशनदाता, तिलगत्पिलनेसेर को तिलगत-पिलनेसेर।

इस संस्करण की कुछ और खासियतें:

इस संस्करण में नीचे बताए किस्म के फुटनोट हैं:

"या"	इब्रानी, अरामी और यूनानी शब्दों को अनुवाद करने का दूसरा तरीका जिससे मतलब नहीं बदलता।—उत्पत्ति 1:2, "ज़ोरदार शक्ति" पर दिया फुटनोट; यहोशू 1:8, "धीमी आवाज़ में पढ़ना।"
"या शायद"	पाठ का अनुवाद करने का एक दूसरा तरीका जिससे थोड़ा अलग मतलब निकलता है।—उत्पत्ति 21:6, "हँसी खिल उठेगी"; जकरयाह 14:21, "कनानी।"
"शा."	इब्रानी, अरामी और यूनानी शब्दों का शब्द-ब-शब्द अनुवाद या मूल पाठ से मिलता-जुलता मतलब। —निर्गमन 4:12, "मैं तेरी मदद करूँगा"; व्यवस्थाविवरण 32:14, "रसीले अंगूरों।"
शब्दों का मतलब और उससे जुड़ी जानकारी	शब्दों का मतलब (उत्पत्ति 3:17, "आदम"; निर्गमन 15:23, "मारा"); नाप-तौल की जानकारी (निर्गमन 30:13); सर्वनाम किसके लिए है (उत्पत्ति 38:5, "वह"); अतिरिक्त लेख और शब्दावली में फायदेमंद जानकारी।—उत्पत्ति 37:35, "कब्र"; मत्ती 5:22, "गेहन्ना।"

इस अनुवाद की शुरूआत में “परमेश्‍वर के वचन को जानिए” भाग में बाइबल की बुनियादी शिक्षाएँ चंद शब्दों में दी गयी हैं। बाइबल की आखिरी किताब के तुरंत बाद “बाइबल की किताबों की सूची,” “बाइबल के शब्दों की सूची” और “बाइबल की शब्दावली” दी गयी है। बाइबल की शब्दावली में समझाया गया है कि कुछ शब्दों का बाइबल में क्या मतलब है। अतिरिक्‍त लेख “क” में यह जानकारी दी गयी है: “बाइबल के अनुवाद के सिद्धांत,” “इस संस्करण की खासियतें,” “बाइबल हम तक कैसे पहुँची,” “इब्रानी शास्त्र में परमेश्‍वर का नाम,” “मसीही यूनानी शास्त्र में परमेश्‍वर का नाम,” “चार्ट: यहूदा और इसराएल के भविष्यवक्‍ता और राजा” और “यीशु की ज़िंदगी की खास घटनाएँ।” अतिरिक्‍त लेख “ख” में नक्शे, चार्ट और ऐसी जानकारी है जो बाइबल का गहराई से अध्ययन करनेवालों के लिए फायदेमंद है।

बाइबल की हर किताब के शुरू में उस किताब के अध्यायों का सारांश और उससे जुड़ी आयतें दी गयी हैं, जिससे पूरी किताब की एक झलक मिलती है। हर अध्याय के बीच में उसकी आयतों से संबंधित दूसरी आयतों की एक सूची है।

क3 बाइबल हम तक कैसे पहुँची

बाइबल परमेश्वर की तरफ से है और उसी ने इसे लिखवाया है और आज तक सुरक्षित रखा है। उसने बाइबल में यह बात दर्ज़ करवायी है:

"हमारे परमेश्वर का वचन हमेशा तक कायम रहता है।"
—यशायाह 40:8.

परमेश्वर का वचन वाकई आज तक कायम है, इसके बावजूद कि न तो इब्रानी और अरामी शास्त्र* की, न ही यूनानी शास्त्र की शुरू की कोई भी हस्तलिपि आज तक बची है। पर हम क्यों पक्का यकीन रख सकते हैं कि आज हमारे हाथ में जो बाइबल है उसमें सचमुच वही लिखा है जो शुरू में परमेश्वर ने अपनी प्रेरणा से लिखवाया था?

परमेश्वर के वचन की नकल तैयार करनेवालों ने इसे सुरक्षित रखा

आइए पहले इब्रानी शास्त्र के बारे में देखें। इसमें आज भी वही संदेश मिलता है जो शुरू में लिखा गया था। इसकी एक वजह है कि पुराने ज़माने में परमेश्वर ने यह दस्तूर ठहराया था कि शास्त्र की नकलें तैयार की जाएँ।# मिसाल के लिए, यहोवा ने हुक्म दिया था कि इसराएल का हर राजा अपने लिए कानून की किताब की एक नकल तैयार करे। (व्यवस्थाविवरण 17:18) इसके अलावा, परमेश्वर ने लेवियों को ज़िम्मेदारी दी थी कि वे कानून की किताब सँभालकर रखें और लोगों को सिखाया करें। (व्यवस्थाविवरण 31:26; नहेमायाह 8:7) फिर जब यहूदी लोग बँधुआई में बैबिलोन गए तो इसके बाद नकल-नवीसों या शास्त्रियों का एक समूह बना (जिन्हें सोफेरिम भी कहते हैं) जो शास्त्र की नकलें तैयार करता था। (एज़्रा 7:6, फुटनोट) वक्त के चलते उन शास्त्रियों ने इब्रानी शास्त्र की 39 किताबों की ढेरों नकलें तैयार कीं।

सदियों तक शास्त्री बड़े ही ध्यान से इन किताबों की नकलें तैयार करते रहे। फिर मध्य युग (करीब ईसवी सन् 500 से 1500) में इस परंपरा को यहूदी शास्त्रियों के एक और समूह ने जारी रखा जिन्हें मसोरा शास्त्री कहा जाता था। इब्रानी शास्त्र की जो हस्तलिपियाँ आज उपलब्ध हैं उनमें सबसे पुरानी हस्तलिपियों को लेनिनग्राड कोडेक्स कहा जाता है। पूरे इब्रानी शास्त्र की इन हस्तलिपियों को मसोरा शास्त्रियों ने तैयार किया था और ये ईसवी सन् 1008/1009 के समय की हैं। लेकिन सन् 1950 के आस-पास के सालों में मृत सागर के पास कुछ खर्रे मिले जिनमें

---

* यहाँ से आगे इसे इब्रानी शास्त्र कहा गया है।

हस्तलिपियों की नकलें तैयार करने की एक वजह यह थी कि शुरू की हस्तलिपियाँ ऐसी चीज़ों से बनी थीं जो पुरानी होकर नष्ट हो जातीं।

बाइबल की कुछ 220 हस्तलिपियाँ और उसके कुछ टुकड़े थे। ये हस्तलिपियाँ लेनिनग्राड कोडेक्स से 1,000 साल से भी ज़्यादा पुरानी हैं। जब मृत सागर के पास मिले खर्रों की तुलना लेनिनग्राड कोडेक्स से की गयी तो एक अहम बात सामने आयी। वह यह कि मृत सागर के पास मिले खर्रों और लेनिनग्राड कोडेक्स के बीच भले ही शब्दों में थोड़ा-बहुत फर्क है फिर भी दोनों एक ही जानकारी देते हैं।

मसीही यूनानी शास्त्र की 27 किताबों के बारे में क्या? ये किताबें यीशु मसीह के कुछ प्रेषितों और शुरू के कुछ चेलों ने लिखी थीं। यहूदी शास्त्रियों की तरह शुरू के मसीही भी इन किताबों की नकलें तैयार करते थे। (कुलुस्सियों 4:16) रोमी सम्राट डायक्लीशन और दूसरों ने शुरू के मसीहियों की सारी हस्तलिपियाँ नष्ट करने की कोशिश की थी, मगर फिर भी हज़ारों हस्तलिपियाँ और उनके टुकड़े हमारे दिनों तक महफूज़ हैं।

मसीही यूनानी शास्त्र का दूसरी भाषाओं में भी अनुवाद किया गया था। शुरू में जिन प्राचीन भाषाओं में बाइबल का अनुवाद किया गया था उनमें से कुछ हैं, आर्मीनियन, कॉप्टिक, इथियोपिक, जॉर्जियन, लातीनी और सीरियाई।

किस इब्रानी और यूनानी पाठ से अनुवाद किया जाए?

“हम पूरे दावे के साथ कह सकते हैं कि ऐसी कोई और प्राचीन किताब नहीं जिसे बिना किसी फेरबदल के हम तक सही-सही पहुँचाया गया हो”

बाइबल की पुरानी हस्तलिपियों की जो नकलें तैयार की गयी थीं, वे सब शब्द-ब-शब्द एक जैसी नहीं हैं। तो फिर हम कैसे जान सकते हैं कि शुरू में जब बाइबल की किताबें लिखी गयीं तो उनमें क्या जानकारी थी?

इस सवाल का जवाब जानने के लिए एक मिसाल लीजिए। एक टीचर 100 विद्यार्थियों से कहता है कि वे फलाँ किताब का एक अध्याय शब्द-ब-शब्द लिखें। बाद में अगर वह किताब गुम हो जाए, तो भी उन 100 विद्यार्थियों ने जो नकलें तैयार की हैं उनकी आपस में तुलना करके पता लगाया जा सकता है कि किताब के उस अध्याय में असल में क्या लिखा था। हो सकता है कि विद्यार्थी नकलें तैयार करते वक्त कुछ गलतियाँ करें, मगर यह नामुमकिन है कि सभी विद्यार्थी एक जैसी गलतियाँ करें। उसी तरह बाइबल की किताबों की जो हज़ारों हस्तलिपियाँ और उनके टुकड़े आज उपलब्ध हैं, उनकी आपस में तुलना करने पर विद्वान पता लगा सकते हैं कि उन नकलों को तैयार करते वक्त कौन-सी गलतियाँ हुई थीं और मूल पाठ में असल में क्या लिखा था।

क्या हम पूरा यकीन रख सकते हैं कि बाइबल के मूल पाठ में जो बातें दर्ज़ थीं वह हम तक सही-सही पहुँचायी गयी हैं? इब्रानी शास्त्र के पाठ के बारे में विद्वान विलियम एच. ग्रीन ने कहा, “हम पूरे दावे के साथ कह सकते हैं कि ऐसी कोई और प्राचीन किताब नहीं जिसे बिना किसी फेरबदल के हम तक सही-सही पहुँचाया गया हो।” मसीही यूनानी शास्त्र के बारे में, जिसे अकसर नया नियम कहा जाता है, बाइबल के विद्वान एफ. एफ. ब्रूस ने लिखा, “पुराने ज़माने के मशहूर लेखकों

मृत सागर के पास मिले खर्रों में यशायाह का 40वाँ अध्याय (ईसा पूर्व 125-100)

जब इन खर्रों की तुलना उन इब्रानी हस्तलिपियों से की गयी जो इनसे करीब 1,000 साल बाद की हैं, तो उनमें बहुत कम फर्क पाया गया जो ज़्यादातर वर्तनी में था



एलीपो कोडेक्स में यशायाह का 40वाँ अध्याय। यह करीब ईसवी सन् 930 की एक मशहूर इब्रानी हस्तलिपि है जिसे मसोरा शास्त्रियों ने तैयार किया था



की ऐसी कई रचनाएँ हैं जिनकी सच्चाई पर सवाल उठाने के बारे में कोई सपने में भी नहीं सोच सकता, मगर उन रचनाओं के मुकाबले हमारे नए नियम की किताबों के सच होने के सबूत कहीं ज़्यादा हैं।" उन्होंने यह भी कहा, "अगर नए नियम की किताबें धार्मिक किताबें नहीं होतीं तो उनकी सच्चाई पर शायद ही कोई शक करता।"

इब्रानी पाठः अँग्रेज़ी में *इब्रानी शास्त्र का नयी दुनिया अनुवाद* (1953-1960) तैयार करने के लिए रूडॉल्फ किटल के *बिब्लीया हेब्राइका* पाठ का इस्तेमाल किया गया था। इसके बाद के सालों में इब्रानी पाठ के नए संस्करण तैयार किए गए जो *बिब्लीया हेब्राइका स्टुटगारटनस्या* और *बिब्लीया हेब्राइका क्विंटा* कहलाते हैं। मृत सागर के पास मिले खर्रों और दूसरी प्राचीन हस्तलिपियों के अध्ययन से हाल में जो जानकारी मिली वह भी उन दोनों संस्करणों में शामिल की गयी। इन संस्करणों में लेनिनग्राड कोडेक्स को मुख्य पाठ में डाला गया है, साथ ही इसके फुटनोट में दूसरी हस्तलिपियों से मिली जानकारी दी गयी है, जैसे सामरी पंचग्रंथ, मृत सागर के पास मिले खर्रे, यूनानी *सेप्टुआजेंट,* अरामी टारगम, लातीनी *वल्गेट* और सीरियाई *पेशीटा।* अँग्रेज़ी में *नयी दुनिया अनुवाद* का नया संस्करण तैयार करते वक्त *बिब्लीया हेब्राइका स्टुटगारटनस्या* और *बिब्लीया हेब्राइका क्विंटा* की मदद ली गयी।

यूनानी पाठः 19वीं सदी के आखिर में विद्वान बी. एफ. वेस्कॉट और एफ.जे.ए. हॉर्ट ने उस समय उपलब्ध बाइबल की हस्तलिपियों और उनके टुकड़ों की तुलना करके यूनानी शास्त्र का एक मानक पाठ तैयार किया। यह पाठ उनके हिसाब से मूल हस्तलिपियों से काफी मिलता-जुलता है। सन् 1950 के आस-पास के सालों में 'नयी दुनिया बाइबल अनुवाद समिति' ने वेस्कॉट और हॉर्ट के इस मानक पाठ के आधार पर यूनानी शास्त्र का एक अनुवाद तैयार किया था। साथ ही, समिति ने कुछ पुरानी पपाइरस हस्तलिपियों की भी मदद ली थी। माना जाता है कि ये पपाइरस हस्तलिपियाँ ईसवी सन् दूसरी और तीसरी सदी की हैं। इसके बाद के सालों में कई और पपाइरस हस्तलिपियाँ भी मिलीं। यही नहीं, नेसले और आलान्ड और 'यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीस' ने भी अपने मानक पाठ तैयार किए जिनमें विद्वानों की खोजबीन से मिली सबसे ताज़ा जानकारी दी गयी है। इस खोजबीन की कुछ जानकारी *नयी दुनिया अनुवाद* के नए अँग्रेज़ी संस्करण में शामिल की गयी है।

इन सभी मानक पाठों को देखने पर साफ हो जाता है कि मसीही यूनानी शास्त्र के पुराने अनुवादों (जैसे *किंग जेम्स वर्शन*) में दी गयी कुछ आयतें दरअसल परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे शास्त्र में कभी नहीं थीं, बल्कि बाद में शास्त्रियों ने नकलें तैयार करते वक्त उन्हें अपनी तरफ से जोड़ दिया था। आजकल की कई बाइबलों में इन आयतों का अनुवाद नहीं किया गया है पर बाकी आयतों की संख्या उसी क्रम के अनुसार रखी गयी है जो 16वीं सदी में ठहराया गया था। वे आयतें हैं, मत्ती 17:21; 18:11; 23:14; मरकुस 7:16; 9:44, 46; 11:26; 15:28; लूका 17:36; 23:17; यूहन्ना 5:4; प्रेषितों 8:37; 15:34; 24:7; 28:29 और

रोमियों 16:24. इस बाइबल में ये आयतें हटा दी गयी हैं और उन पर फुटनोट दिया गया है।

यह साफ है कि मरकुस 16 (आयत 9-20) में दी लंबी और छोटी समाप्ति साथ ही, यूहन्ना 7:53–8:11 की आयतें मूल हस्तलिपियों में नहीं थीं। इसलिए इन नकली आयतों का इस बाइबल में अनुवाद नहीं किया गया है।

ज़्यादातर विद्वानों का मानना है कि कुछ आयतों को फलाँ तरीके से लिखना चाहिए ताकि वे मूल पाठ से पूरी तरह मेल खाएँ। इसलिए इस बाइबल में उन आयतों को मूल पाठ के मुताबिक सुधारा गया है। मिसाल के लिए, कुछ हस्तलिपियों के मुताबिक मत्ती 7:13 में यह लिखा होना चाहिए: "सँकरे फाटक से अंदर जाओ क्योंकि चौड़ा है ***वह फाटक*** और खुला है वह रास्ता, जो विनाश की तरफ ले जाता है और उस पर जानेवाले बहुत हैं।" अँग्रेज़ी *नयी दुनिया अनुवाद* के पिछले संस्करण में "वह फाटक" शामिल नहीं किया गया था मगर नए संस्करण में इसे शामिल किया गया है। इस तरह और भी कई सुधार किए गए हैं। लेकिन ये सुधार छोटे-मोटे शब्दों को लेकर हैं और इनसे परमेश्‍वर के वचन का खास संदेश नहीं बदलता।



करीब ईसवी सन् 200 की एक पपाइरस हस्तलिपि जिस पर 2 कुरिंथियों 4:13–5:4 लिखा है

क4 इब्रानी शास्त्र में परमेश्वर का नाम

इब्रानी शास्त्र में परमेश्वर का नाम करीब 7,000 बार आता है। यह नाम इन चार इब्रानी अक्षरों से लिखा जाता है, יהוה (य-ह-व-ह)। इस *नयी दुनिया अनुवाद* बाइबल में इन इब्रानी अक्षरों का अनुवाद "यहोवा" किया गया है। बाइबल में जितने भी नाम दिए गए हैं, उनमें सबसे ज़्यादा बार "यहोवा" का नाम आया है। बाइबल के लेखकों ने परमेश्वर के लिए "सर्वशक्तिमान," "परम-प्रधान" और "प्रभु" जैसी कई उपाधियाँ इस्तेमाल की हैं, लेकिन परमेश्वर का नाम बताने के लिए उन्होंने इब्रानी के इन चार अक्षरों का ही इस्तेमाल किया।

यहोवा परमेश्वर ने खुद बाइबल के लेखकों को प्रेरित किया कि वे उसके नाम का इस्तेमाल करें। उदाहरण के लिए, उसने भविष्यवक्ता योएल को पवित्र शक्ति से उभारा और यह लिखवाया, "जो कोई यहोवा का नाम पुकारता है वह उद्धार पाएगा।" (योएल 2:32) परमेश्वर ने भजन के एक लेखक से लिखवाया, "लोग जानें कि सिर्फ तू जिसका नाम यहोवा है, सारी धरती के ऊपर परम-प्रधान है।" (भजन 83:18) अगर सिर्फ भजनों की किताब की बात करें, तो इसमें परमेश्वर का नाम करीब 700 बार आता है। यह किताब कविता की शैली में लिखी गयी थी और परमेश्वर के लोग इसमें दिए गीत गाते और मुँह-ज़बानी सुनाते थे। तो फिर सवाल उठता है कि बाइबल के कई अनुवादों में परमेश्वर का नाम क्यों नहीं दिया गया? *नयी दुनिया अनुवाद* (अँग्रेज़ी) में परमेश्वर के नाम के लिए अँग्रेज़ी उच्चारण "जेहोवा" क्यों इस्तेमाल किया गया है? और परमेश्वर के नाम का क्या मतलब है?

𐤉𐤄𐤅𐤄

बैबिलोन की बँधुआई में इसराएलियों के जाने से पहले, 'यहोवा' नाम के लिए इब्रानी अक्षर

יהוה

बैबिलोन की बँधुआई से इसराएलियों के लौटने के बाद, 'यहोवा' नाम के लिए इब्रानी अक्षर

बाइबल के कई अनुवादों में परमेश्वर का नाम क्यों नहीं दिया गया? इसकी कई वजह हैं। कुछ लोगों को लगता है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अपनी पहचान बताने के लिए किसी खास नाम की ज़रूरत नहीं। दूसरों ने प्राचीन यहूदी परंपरा मानते हुए परमेश्वर का नाम नहीं लिखा क्योंकि शायद उन्हें डर था कि ऐसा करने से वे उस नाम को अपवित्र कर रहे होंगे। और कुछ लोगों का मानना है कि "प्रभु" या "परमेश्वर" जैसी उपाधियाँ इस्तेमाल करना ज़्यादा सही है क्योंकि परमेश्वर के नाम का सही-सही उच्चारण कोई नहीं जानता। लेकिन इन दलीलों का कोई ठोस आधार नहीं, जैसे कि आगे बताया गया है:

- जिन लोगों का कहना है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर को किसी खास नाम की ज़रूरत नहीं, वे इस बात को नज़रअंदाज़ करते हैं कि परमेश्वर के वचन की शुरू



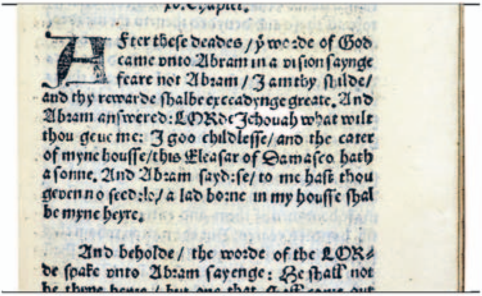
मृत सागर के पास मिले खर्रों में से भजन की किताब का एक हिस्सा, जो ईसवी सन् 50 से पहले का है। इसकी लेखन-शैली बैबिलोन की बँधुआई से लौटने के बाद की है। मगर हर जगह परमेश्‍वर का नाम उसी इब्रानी शैली में दिया गया है जो बँधुआई से पहले के दौर में इस्तेमाल होती थी

की हस्तलिपियों में उसका नाम मिलता है, जिनमें से कुछ हस्तलिपियाँ मसीह के ज़माने से भी पहले की हैं। जैसा कि शुरू में बताया गया है, परमेश्‍वर ने ही बाइबल के लेखकों को उभारा कि उसका नाम करीब 7,000 बार लिखा जाए। इससे साफ पता चलता है कि परमेश्‍वर चाहता है कि हम उसका नाम जानें और उसे इस्तेमाल करें।

- जिन अनुवादकों ने यहूदी परंपरा को मानते हुए परमेश्‍वर का नाम अपने अनुवादों से हटा दिया वे एक अहम बात समझने से चूक गए। वह यह कि कुछ यहूदी शास्त्री भले ही परमेश्‍वर का नाम अपनी ज़बान पर नहीं लाते थे, मगर उन्होंने बाइबल की नकलें तैयार करते वक्‍त परमेश्‍वर का नाम नहीं हटाया था। मृत सागर के पास कुमरान की गुफाओं में मिले प्राचीन खर्रों में यह नाम कई जगहों पर आया है। कुछ अँग्रेज़ी बाइबलों में जहाँ-जहाँ "यहोवा" नाम आना चाहिए वहाँ अनुवादकों ने "प्रभु" शब्द बड़े अक्षरों में लिख दिया और इस तरह एक सुराग दिया कि उन जगहों पर मूल पाठ में यहोवा नाम दिया गया है। मगर अब भी एक सवाल बाकी है: जब अनुवादक खुद कबूल करते हैं कि बाइबल के मूल पाठ में यहोवा का नाम हज़ारों बार आता है, तो फिर उन्होंने अपनी मरज़ी से परमेश्‍वर का नाम क्यों हटा दिया या उसकी जगह उपाधियाँ क्यों डाल दीं? किसने उन्हें ऐसा करने का अधिकार दिया? जवाब सिर्फ वे ही दे सकते हैं।
- जो लोग कहते हैं कि परमेश्‍वर के नाम का सही-सही उच्चारण कोई नहीं जानता इसलिए उसका इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए, उन्हें यीशु का नाम लेने में कोई एतराज़ नहीं है जबकि ज़्यादातर ईसाई यीशु नाम का जिस तरह उच्चारण करते हैं वह पहली सदी के उच्चारण से बिलकुल अलग है। यहूदी मसीही शायद यीशु के नाम का उच्चारण *येशुआ* करते थे और उपाधि "ख्रिस्त" का उच्चारण *मशीआक* यानी "मसीहा" करते थे। वहीं यूनानी बोलनेवाले मसीही उसे *ईसुअस ख्रिस्तौस* और लातिनी बोलनेवाले मसीही *यासुस क्रिस्तुस* कहते थे। परमेश्‍वर की प्रेरणा से लिखी बाइबल में यीशु के नाम का यूनानी उच्चारण दर्ज़ किया गया क्योंकि उस समय यूनानी आम भाषा थी। इससे पता चलता है कि पहली सदी के मसीहियों ने वही उच्चारण इस्तेमाल किया जो उस ज़माने में आम था और ऐसा करके उन्होंने समझदारी का काम किया। उसी तरह 'नयी दुनिया बाइबल अनुवाद समिति' को भी अँग्रेज़ी में "जेहोवा" इस्तेमाल करना सही लगता है, फिर चाहे प्राचीन इब्रानी भाषा में उसका उच्चारण ठीक इसी तरह न किया गया हो।

***नयी दुनिया अनुवाद* (अँग्रेज़ी) में परमेश्‍वर के नाम के लिए अँग्रेज़ी उच्चारण "जेहोवा" क्यों इस्तेमाल किया गया है?** इब्रानी के इन चार अक्षरों יהוה के लिए हिंदी में ये चार व्यंजन लिखे जाते हैं, य-ह-व-ह। प्राचीन इब्रानी भाषा लिखते वक्‍त इसमें स्वर नहीं जोड़े जाते थे, इसलिए इन चार इब्रानी अक्षरों में भी कोई स्वर नहीं जोड़ा गया। जब यह भाषा हर दिन इस्तेमाल में थी, तब पढ़नेवाले जानते थे कि किस शब्द में कौन-सा स्वर लगाना है।

इब्रानी शास्त्र के लिखे जाने के करीब 1,000 साल बाद, यहूदी विद्वानों ने सही स्वरों के साथ इसे पढ़ने का एक तरीका निकाला। उन्होंने स्वर-चिन्ह तैयार किए ताकि पता चले कि फलाँ शब्दों में कौन-से स्वर लगाकर पढ़ना है। मगर उसी दौरान कई


xv. Chapter.

After these deades / ÿ worde of God came vnto Abram in a vision sayinge feare not Abram / I am thy shilde/ and thy rewarde shalbe exceadynge greate. And Abram answered: LORde Iehouah what wilt thou geue me: I goo childlesse/ and the carer of myne housse/ this Eleasar of Damasco hath a sonne. And Abram sayd: se/ to me hast thou geven no seed: lo/ a lad borne in my housse shal be myne heyre.

And beholde/ the worde of the LORde spake vnto Abram sayenge: He shall not

विलियम टिंडेल का अनुवाद जिसमें उत्पत्ति 15:2 में परमेश्वर का नाम आता है। बाइबल की पहली पाँच किताबों का यह अनुवाद 1530 में छपा था

यहूदियों में यह अंधविश्वास फैल गया कि परमेश्वर का नाम ज़बान पर लाना गलत है और वे परमेश्वर के नाम की जगह उपाधियाँ वगैरह इस्तेमाल करने लगे। इसलिए ऐसा मालूम होता है कि विद्वानों ने इब्रानी के चार व्यंजनों की नकल बनाते वक्त उनमें वे स्वर जोड़ दिए जो ***उपाधियों*** में आते थे। इसलिए उन हस्तलिपियों में दिए स्वर-चिन्हों से हमें पता नहीं चल पाता कि इब्रानी में परमेश्वर के नाम का सही-सही उच्चारण क्या था। कुछ विद्वानों को लगता है कि परमेश्वर के नाम का सही उच्चारण "याहवे" है, जबकि दूसरे कुछ और उच्चारण बताते हैं। मृत सागर के पास लैव्यव्यवस्था की किताब का एक छोटा हिस्सा मिला जो यूनानी में लिखा गया था। उसमें परमेश्वर के नाम का लिप्यांतरण करके *याओ* लिखा था यानी इब्रानी उच्चारण को यूनानी अक्षरों में लिखा गया था। इसके अलावा, प्राचीन समय के यूनानी लेखकों के हिसाब से परमेश्वर के नाम का उच्चारण *याए, याबे* या *याऊवे* किया जा सकता है। लेकिन इसका सही उच्चारण क्या है, इस बारे में दावे के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता। दरअसल हम नहीं जानते कि पुराने समय में परमेश्वर के सेवक इब्रानी में उसके नाम का उच्चारण कैसे करते थे। (उत्पत्ति 13:4; निर्गमन 3:15) लेकिन हम यह ज़रूर जानते हैं कि परमेश्वर ने अपने लोगों से बात करते वक्त बार-बार अपने नाम का इस्तेमाल किया था। उसके सेवक भी उसका नाम लेकर उसे बुलाते थे और दूसरों से बात करते वक्त भी बेझिझक उसका नाम लेते थे। —निर्गमन 6:2; 1 राजा 8:23; भजन 99:9.

तो फिर अँग्रेज़ी *नयी दुनिया अनुवाद* में परमेश्वर के नाम के लिए "जेहोवा" क्यों इस्तेमाल किया गया है? क्योंकि अँग्रेज़ी में यह उच्चारण लंबे अरसे से इस्तेमाल होता आया है।

सन् 1530 में जब विलियम टिंडेल ने बाइबल की पहली पाँच किताबों का अँग्रेज़ी में अनुवाद किया तो पहली बार अँग्रेज़ी में परमेश्वर का नाम लिखा गया। टिंडेल ने परमेश्वर के नाम के लिए यह वर्तनी इस्तेमाल की: "येऊवा।" समय के गुज़रते अँग्रेज़ी भाषा बदलती गयी और परमेश्वर के नाम की वर्तनी में भी नयापन आता गया। मिसाल के लिए, 1612 में हेनरी आइंस्वर्थ ने भजन की किताब के अपने अनुवाद में हर जगह "येहोवा" इस्तेमाल किया। फिर 1639 में, जब उसके अनुवाद का नया संस्करण निकाला गया और बाइबल की पाँच शुरूआती किताबों

के साथ उसे छापा गया तो परमेश्वर के नाम के लिए "जेहोवा" इस्तेमाल किया गया। सन् 1901 में *अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्शन* बाइबल निकाली गयी तो उसमें अनुवादकों ने उन सभी जगहों पर "जेहोवा" इस्तेमाल किया जहाँ मूल इब्रानी पाठ में परमेश्वर का नाम आता है।

बाइबल के जाने-माने विद्वान जोसफ ब्रायन्ट रॉदरहैम समझाते हैं कि क्यों उन्होंने अपनी किताब *भजन संहिता का अध्ययन* (अँग्रेज़ी) में "याहवे" की जगह "जेहोवा" इस्तेमाल किया। उनकी यह किताब 1911 में छापी गयी थी। उन्होंने कहा कि वे "इस नाम का ऐसा उच्चारण इस्तेमाल करना" चाहते थे "जिससे बाइबल पढ़नेवाला आम इंसान वाकिफ हो (और इसके इस्तेमाल पर उसे एतराज़ भी न हो)।" सन् 1930 में विद्वान ए. एफ. कर्कपैट्रिक ने भी "जेहोवा" नाम के बारे में इसी से मिलती-जुलती बात कही, "आज के ज़माने के व्याकरण के विद्वान दावा करते हैं कि इस नाम का उच्चारण *याहवे* या *याहावे* होना चाहिए। मगर जेहोवा नाम अँग्रेज़ी भाषा में जड़ पकड़ चुका है। देखा जाए तो यह बात इतनी मायने नहीं रखती कि परमेश्वर के नाम का सही उच्चारण क्या है, बल्कि यह कि जेहोवा एक नाम है न कि 'प्रभु' जैसी कोई उपाधि।" हिंदी में परमेश्वर के नाम का उच्चारण "यहोवा" किया जाता है। आम तौर पर हिंदी बाइबलों में यही उच्चारण पाया जाता है।

 יהוה

परमेश्वर के नाम के चार इब्रानी अक्षर, *य-ह-व-ह:* "वह बनने का कारण होता है"

 הוה

क्रिया *ह-व-ह:* "बनना"

यहोवा नाम का क्या मतलब है? इब्रानी में यहोवा नाम एक क्रिया से निकला है जिसका मतलब है "बनना।" कई विद्वानों को लगता है कि यह क्रिया बताती है कि कोई है जो बना रहा है। इसलिए 'नयी दुनिया बाइबल अनुवाद समिति' परमेश्वर के नाम का यह मतलब बताती है, "वह बनने का कारण होता है।" इस बारे में विद्वानों की अलग-अलग राय है इसलिए हम यह दावा नहीं कर सकते कि इसका सिर्फ यही मतलब है। मगर यह परिभाषा यहोवा पर बिलकुल ठीक बैठती है क्योंकि वह सब चीज़ों का बनानेवाला है और अपने मकसदों को पूरा करनेवाला परमेश्वर है। उसने इस विश्व, इंसानों और स्वर्गदूतों की सृष्टि की है (या उनके बनने का कारण हुआ), साथ ही समय के गुज़रते वह ऐसे काम करता आया है जिससे उसकी मरज़ी और उसका मकसद पूरा हो।

इसलिए यहोवा नाम का सिर्फ वह मतलब नहीं जो निर्गमन 3:14 में दी गयी क्रिया से मिलता है यानी "मैं वह बन जाऊँगा जो मैं बनना चाहता हूँ" या "मैं जो साबित होऊँगा वह साबित होऊँगा।" असल में ये शब्द परमेश्वर के नाम का पूरा-पूरा मतलब नहीं देते, बल्कि परमेश्वर के बारे में सिर्फ इतना बताते हैं कि वह अपने मकसद को पूरा करने के लिए हालात के मुताबिक जो ज़रूरी है वह बन सकता है। यहोवा नाम का मतलब सिर्फ इतना नहीं कि वह जो चाहे बन सकता है बल्कि इसमें यह भी शामिल है कि अपने मकसद को पूरा करने के लिए वह अपनी सृष्टि को भी जो चाहे बना सकता है।

क5 मसीही यूनानी शास्त्र में परमेश्‍वर का नाम

बाइबल के विद्वान कबूल करते हैं कि इब्रानी शास्त्र के मूल पाठ में परमेश्‍वर का नाम (יהוה) करीब 7,000 बार आया है। मगर जहाँ तक मसीही यूनानी शास्त्र की बात है, कई विद्वानों को लगता है कि इसके मूल पाठ में उसका नाम नहीं था। इसी वजह से आजकल की ज़्यादातर बाइबलों के यूनानी शास्त्र में, जिसे नया नियम भी कहा जाता है, यहोवा नाम नहीं दिया गया है। इतना ही नहीं, इब्रानी शास्त्र के हवालों का अनुवाद करते वक्‍त जहाँ-जहाँ परमेश्‍वर के नाम के चार इब्रानी अक्षर आए, उनकी जगह ज़्यादातर अनुवादकों ने "प्रभु" डाल दिया।

मगर *पवित्र शास्त्र का नयी दुनिया अनुवाद* बाइबल ने यह चलन नहीं अपनाया। इसके बजाय, इस बाइबल के अनुवादकों ने मसीही यूनानी शास्त्र में यहोवा का नाम कुल मिलाकर 237 बार इस्तेमाल किया है। उन्होंने ऐसा क्यों किया? इसकी दो खास वजह हैं: (1) आज जो हज़ारों हस्तलिपियाँ मौजूद हैं वे यूनानी शास्त्र का मूल पाठ नहीं हैं। इनमें से ज़्यादातर हस्तलिपियाँ, मूल पाठ के लिखे जाने के करीब 200 साल बाद तैयार की गयी थीं। (2) उस वक्‍त तक हस्तलिपियों की नकल बनानेवालों ने परमेश्‍वर के नाम के इब्रानी अक्षरों की जगह यूनानी शब्द *किरियॉस* यानी "प्रभु" डाल दिया या फिर उन हस्तलिपियों से नकलें बनायीं जिनमें पहले ही "प्रभु" डाल दिया गया था।

'नयी दुनिया बाइबल अनुवाद समिति' इस नतीजे पर पहुँची है कि इस बात के ठोस सबूत हैं कि यूनानी शास्त्र के मूल पाठ में परमेश्‍वर के नाम के चार इब्रानी अक्षर पाए जाते हैं। और उन्होंने इन सबूतों के आधार पर अपने अनुवाद में परमेश्‍वर का नाम इस्तेमाल किया है:

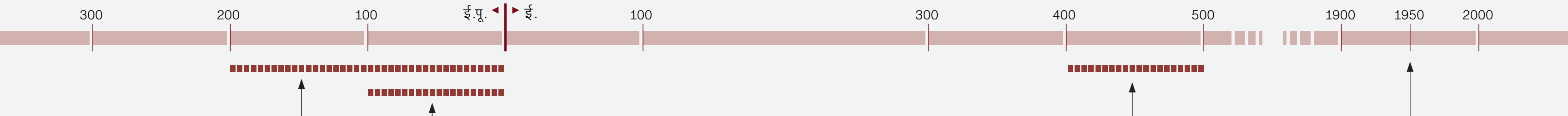
- **यीशु और उसके प्रेषितों के दिनों में इब्रानी शास्त्र की नकलों में उन सारी जगहों में परमेश्‍वर का नाम था जहाँ उसे होना चाहिए।** बीते समय में ज़्यादातर लोग इस बात से सहमत थे। कुमरान की गुफाओं से इब्रानी शास्त्र की ऐसी हस्तलिपियाँ मिलीं जो ईसवी सन् पहली सदी की हैं और ये हस्तलिपियाँ इस बात का ज़बरदस्त सबूत हैं कि उस ज़माने की इब्रानी शास्त्र की हस्तलिपियों में परमेश्‍वर का नाम था।
- **यीशु और उसके प्रेषितों के दिनों में इब्रानी शास्त्र के यूनानी अनुवादों में परमेश्‍वर के नाम के चार इब्रानी अक्षर थे।** कई सदियों तक विद्वान यह मानते रहे कि इब्रानी शास्त्र के यूनानी अनुवाद यानी *सेप्टुआजेंट* की हस्तलिपियों में ये चार इब्रानी अक्षर नहीं थे। फिर सन् 1950 के आस-पास के सालों में, यूनानी *सेप्टुआजेंट* की हस्तलिपियों के बहुत पुराने टुकड़े मिले जो यीशु के ज़माने के थे और विद्वानों का ध्यान उन पर खींचा गया। इन टुकड़ों में परमेश्‍वर

के नाम के चार इब्रानी अक्षर आते हैं। इसका मतलब कि यीशु के दिनों की यूनानी हस्तलिपियों में परमेश्‍वर का नाम था। लेकिन चौथी सदी के आते-आते *सेप्टुआजेंट* की मुख्य हस्तलिपियों से यह नाम निकाल दिया गया। जैसे कोडेक्स वैटिकनस और कोडेक्स साइनाइटिकस में उत्पत्ति से लेकर मलाकी की किताब में यह नाम नहीं आता (जबकि इससे पहले की हस्तलिपियों में आता है)। इसलिए इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि आज यूनानी शास्त्र या नए नियम की चौथी सदी की जितनी भी हस्तलिपियाँ महफ़ूज़ हैं, उनमें परमेश्‍वर का नाम नहीं पाया जाता।

- **मसीही यूनानी शास्त्र बताता है कि यीशु ने अकसर परमेश्‍वर का नाम इस्तेमाल किया और दूसरों को वह नाम बताया।** (यूहन्‍ना 17:6, 11, 12, 26) यीशु ने साफ-साफ कहा, "मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ।" उसने यह भी कहा कि उसने जो-जो काम किए वे "अपने पिता के नाम से" किए थे।—यूहन्‍ना 5:43; 10:25.

यीशु ने साफ-साफ कहा, "मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ।" उसने यह भी कहा कि उसने जो-जो काम किए वे "अपने पिता के नाम से" किए थे

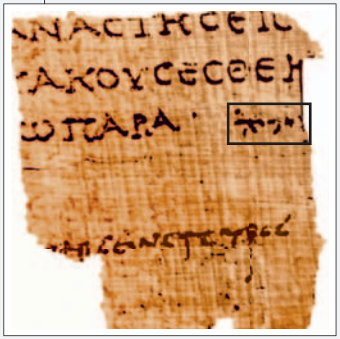
- **मसीही यूनानी शास्त्र भी परमेश्‍वर की प्रेरणा से लिखा गया है और बाइबल में इब्रानी शास्त्र के बाद का हिस्सा है। इसलिए यह बात कुछ सही नहीं लगती कि जब इब्रानी शास्त्र में परमेश्‍वर का नाम था तो यूनानी शास्त्र से यह नाम अचानक कैसे गायब हो गया।** करीब ईसवी सन्‌ 50 में याकूब ने यरूशलेम में प्राचीनों से कहा, "शिमौन ने पूरा ब्यौरा देकर बताया कि परमेश्‍वर ने कैसे पहली बार गैर-यहूदी राष्ट्रों की तरफ ध्यान दिया ताकि उनके बीच से ऐसे लोगों को इकट्ठा करे जो परमेश्‍वर के नाम से पहचाने जाएँ।" (प्रेषितों 15:14) अगर पहली सदी में कोई परमेश्‍वर का नाम नहीं जानता था न ही उसका इस्तेमाल करता था, तो याकूब की बात का कोई तुक नहीं बनता।
- **परमेश्‍वर के नाम का छोटा रूप मसीही यूनानी शास्त्र में इस्तेमाल हुआ है।** प्रकाशितवाक्य 19:1, 3, 4, 6 में शब्द "याह का गुणगान करो" इब्रानी शब्द "हल्लिलूयाह" से आता है। "याह" यहोवा नाम का छोटा रूप है। मसीही यूनानी शास्त्र में ऐसे कई नाम हैं जो परमेश्‍वर के नाम से जुड़े हैं। यहाँ तक कि यीशु के नाम के बारे में भी बहुत-सी किताबें कहती हैं कि उसके नाम का मतलब है, "यहोवा उद्धार है।"
- **शुरू की यहूदी किताबों से पता चलता है कि यहूदी मसीहियों ने अपनी किताबों में परमेश्‍वर का नाम इस्तेमाल किया था।** तॉसेफ्ता नाम की एक किताब है जिसमें मौखिक नियम दिए गए हैं और उसका लिखना करीब ईसवी सन्‌ 300 में पूरा हुआ था। यह किताब सब्त के दिन मसीही किताबों को जलाने के बारे में यह बताती है: "वे प्रचारकों की किताबों और *मिनिम* की [शायद ये यहूदी मसीही थे] किताबों को जला देते हैं। उन्हें छूट है कि अगर उनके हाथ ये





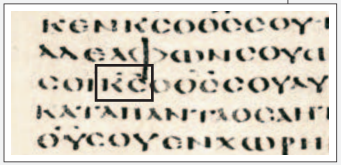
व्यवस्थाविवरण 6:4
नश पपाइरस
ईसा पूर्व दूसरी या पहली सदी

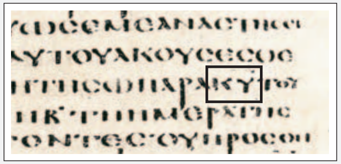
प्राचीन इब्रानी पाठ जिसमें परमेश्वर का नाम दो बार आया है



व्यवस्थाविवरण 18:15, 16 का एक टुकड़ा
P. Fouad Inv. 266
ईसा पूर्व पहली सदी

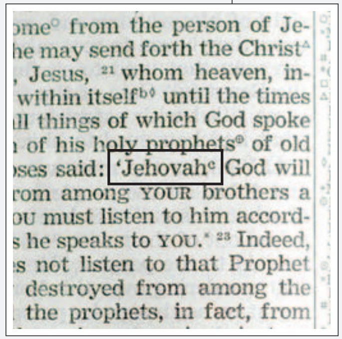
यूनानी सेप्टुआजेंट अनुवाद जिसमें इब्रानी अक्षरों में परमेश्वर का नाम आया है





व्यवस्थाविवरण 18:15, 16
कोडेक्स एलेक्ज़ैंड्रिनस
ईसवी सन् पाँचवीं सदी

परमेश्वर का नाम हटाकर उसकी जगह *KC* और *KY* डाला गया, जो यूनानी शब्द *किरियॉस* (प्रभु) के छोटे रूप हैं


ome° from the person of Je-
he may send forth the Christ^
, Jesus, ²¹ whom heaven, in-
within itself^b° until the times
ill things of which God spoke
of his holy prophets° of old
ses said: 'Jehovah° God will
rom among YOUR brothers a
ou must listen to him accord-
s he speaks to YOU.' ²³ Indeed,
s not listen to that Prophet
destroyed from among the
the prophets, in fact, from

प्रेषितों 3:22 में व्यवस्थाविवरण 18:15 का हवाला
अँग्रेज़ी की *नयी दुनिया अनुवाद*
ईसवी सन् 20वीं सदी

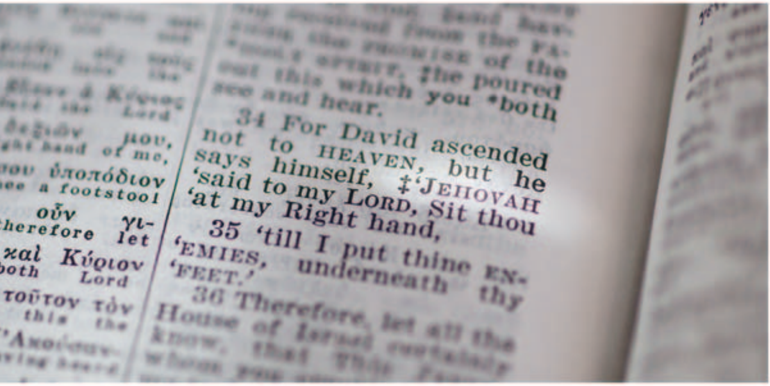
नयी दुनिया अनुवाद में परमेश्वर का नाम उन सभी जगहों पर दोबारा लिखा गया जहाँ यह पहले था

किताबें लग जाएँ तो उनके साथ-साथ उनमें दिए परमेश्वर के नाम के हवालों को भी जला दें।" उसी किताब में रब्बी योसे ने (जो ईसवी सन् दूसरी सदी में गलील का रहनेवाला था) बताया कि हफ्ते के बाकी दिन किताबों को जलाते वक्त क्या किया जाता था। उसने कहा, "उन किताबों में [माना जाता है कि ये मसीही किताबें थीं] जहाँ-जहाँ परमेश्वर का नाम आता है, वह हिस्सा काटकर रख लिया जाता है और बाकी हिस्से जला दिए जाते हैं।"

- **बाइबल के कुछ विद्वान स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर का नाम मसीही यूनानी शास्त्र में शायद उन जगहों में था जहाँ इब्रानी शास्त्र का हवाला दिया है।**

दी ऐंकर बाइबल डिक्शनरी में शीर्षक "नए नियम में परमेश्वर का नाम" के तहत यह लिखा है: "कुछ सबूत दिखाते हैं कि जब पहली बार नया नियम लिखा गया तब परमेश्वर के नाम याहवे के चार इब्रानी अक्षर कुछ जगहों या उन सभी जगहों पर डाले गए जहाँ-जहाँ पुराने नियम के हवाले आते हैं।" विद्वान जॉर्ज हाउवर्ड कहते हैं, "शुरू के ईसाई, यूनानी बाइबल [*सेप्टुआजेंट*] की जिन नकलों का इस्तेमाल करते थे, उनमें परमेश्वर के नाम के चार इब्रानी अक्षर आते थे। तो ज़ाहिर-सी बात है कि नए नियम के लेखकों ने जब *सेप्टुआजेंट* से आयतों के हवाले लिए तो उन्होंने हू-ब-हू उन चार इब्रानी अक्षरों को लिखा होगा।"

• **बाइबल के जाने-माने अनुवादकों ने मसीही यूनानी शास्त्र के अपने अनुवाद में परमेश्‍वर का नाम लिखा है।** इनमें से कुछ अनुवादकों ने *नयी दुनिया अनुवाद* के तैयार होने से बहुत पहले ऐसा किया था। ऐसे कुछ अनुवादकों और उनके अनुवादों के नाम ये हैं: हरमन हाइनफैटर की *अ लिट्रल ट्रांस्लेशन ऑफ द न्यू टेस्टामेंट . . . फ्रॉम द टेक्स्ट ऑफ द वैटिकन मैन्यूस्क्रिप्ट* (1863); बेन्जमिन विल्सन की *दी एम्फैटिक डायग्लॉट* (1864); जॉर्ज बाकर स्टिवन्स की *दी एपिसल्स ऑफ पॉल इन मॉर्डन इंग्लिश* (1898); डब्ल्यू. जी. रदरफर्ड की *सेंट पॉल्स एपिसल टू द रोमन्स* (1900); लंदन के बिशप जे.डब्ल्यू.सी. वांड की *द न्यू टेस्टामेंट लैटर्स* (1946)। इसके अलावा, 20वीं सदी की शुरूआत में स्पैनिश अनुवादक पाब्लो बेस्सोन ने अपने अनुवाद में लूका 2:15

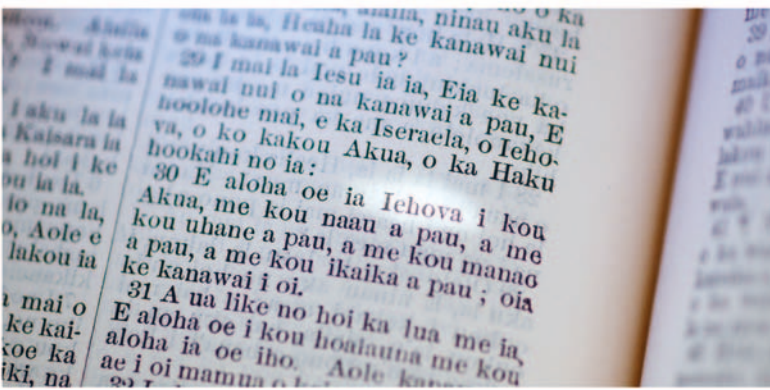


दी एम्फैटिक डायग्लॉट (1864) में प्रेषितों 2:34 में परमेश्‍वर का नाम; बेन्जमिन विल्सन का अनुवाद

और यहूदा 14 में "हेओबा" लिखा और करीब 100 जगहों पर फुटनोट में कहा कि यहाँ परमेश्‍वर का नाम लिखना भी सही होगा। इन अनुवादों के तैयार होने से बहुत पहले यानी 16वीं सदी से इब्रानी भाषा में मसीही यूनानी शास्त्र के जो अलग-अलग अनुवाद निकाले गए, उनमें ढेरों आयतों में परमेश्‍वर के नाम के चार इब्रानी अक्षर दिए गए हैं। और जर्मन भाषा में मसीही यूनानी शास्त्र के जो अनुवाद निकाले गए उनमें कम-से-कम 11 अनुवादों में "जेहोवा" (या शब्द-ब-शब्द इब्रानी उच्चारण "याहवे") इस्तेमाल किया गया और चार अनुवादकों ने "प्रभु" के बाद कोष्ठकों में परमेश्‍वर का नाम लिखा। और 70 से ज़्यादा जर्मन अनुवादों में परमेश्‍वर का नाम या तो फुटनोट में या फिर टीका-टिप्पणियों में आता है।

- **सौ से भी ज़्यादा भाषाओं में किए गए बाइबल के अनुवादों में परमेश्‍वर का नाम मसीही यूनानी शास्त्र में आता है।** कई अफ्रीकी भाषाओं, अमरीका के आदिवासियों की भाषाओं, एशिया, यूरोप और प्रशांत महासागर के द्वीपों की भाषाओं की बाइबलों में परमेश्‍वर का नाम खुलकर इस्तेमाल किया गया है। (पेज 2158 और 2159 पर दी सूची देखिए।) इन भाषाओं के बाइबल अनुवादकों ने ऊपर बतायी बातों को ध्यान में रखते हुए अपने अनुवाद में परमेश्‍वर का नाम इस्तेमाल किया। मसीही यूनानी शास्त्र के इन अनुवादों में से कुछ अनुवाद हाल के सालों में निकाले गए, जैसे रोटूमैन बाइबल (1999), जिसमें 48 आयतों में 51 बार "जीहोवा" इस्तेमाल किया गया। इंडोनेशिया के बताक (टोबा) अनुवाद (1989) में 110 बार "जाहोवा" इस्तेमाल किया गया।

इसमें कोई दो राय नहीं कि परमेश्‍वर का नाम यहोवा, मसीही यूनानी शास्त्र में उन सभी जगहों पर दोबारा लिखा जाना चाहिए जहाँ यह आता था क्योंकि ऐसा करने का ठोस आधार है। *नयी दुनिया अनुवाद* के अनुवादकों ने बिलकुल यही किया है। उन्हें परमेश्‍वर के नाम के लिए गहरा आदर है और उसका डर मानते हुए वे बाइबल से ऐसा कुछ भी नहीं निकालना चाहते जो मूल पाठ में था। —प्रकाशितवाक्य 22:18, 19.



मरकुस 12:29, 30 में परमेश्‍वर का नाम;
हवाई द्वीप की एक भाषा की बाइबल में

भाषाएँ और बोलियाँ जिनके मसीही यूनानी शास्त्र के मुख्य पाठ में परमेश्वर का नाम आता है

भाषा या बोलीः **परमेश्वर का नाम**

अँग्रेज़ीः **Jehovah**
अनेचमः **Ihova**
अरावकः **Jehovah**
अवाबाकालः **Yehóa**
इंडाउः **Jehova**
इंडोनेशियनः **YAHWEH**
इफाते (उत्तर): **Yehova**
इब्रानीः **יהוה**
इलाः **Yaave**
इलीकू (लूसेंगो की बोली): **Yawe**
उम्बुंडूः **Yehova**
उरिपिवः **Iova**
एफिकः **Jehovah**
एवेः **Yehowa**
कालाँगाः **Yehova; Yahwe**
काला लगाऊ याः **Iehovan**
कालेनजीनः **Jehovah**
किपसिगिसः **Jehoba**
किरिबातीः **Iehova**
किलूबाः **Yehova**
किसोंगेः **Yehowa**
कुआनुआः **Ieova**
केरेवोः **Iehova**
कोरियनः **여호와**
कोसरैनः **Jeova**
क्रोएशियनः **Jehova**
खोसाः **Yehova**
गिबारियो (केरेवो की बोली): **Iehova**
ग्रेबोः **Jehova**
घॉः **Iehowa**
चाकोबोः **Jahué**
चिन (हखा): **Zahova**
चिलूबाः **Yehowa**
चूकीज़ः **Jiowa**
चेरोकीः **Yihowa**
चोकटौः **Chihowa**
ज़न्डेः **Yekova**
जर्मनः **Jehovah; Jehova**
ज़ुलूः **Jehova; YAHWE**
टिम्नेः **Yehṓfa; Yehofa**
टेके-इबूः **Yawe**
टोंगनः **Jihova; Sihova**
टोंगाः **Jehova**
टोआरीपीः **Jehova; Iehova**
डचः **Jehovah**
तहीतियनः **Iehova**
थाईः **Yahowa**
दाकोताः **Jehowa**
दुआलाः **Yehowa**
दोबूः **Ieoba**
नगांडोः **Yawe**
नटोम्बाः **Yawe**
नाऊरूअनः **Jehova**
नागा, अंगामीः **Jihova**
नागा, उत्तरी रेंगमाः **Jihova**
नागा, कोन्यकः **Jihova**
नागा, माओः **Jihova**
नागा, लोथाः **Jihova**
नागा, संगटमः **Jihova**
नान्दीः **Jehova**
नारिनयेरीः **Jehovah**
नावाहोः **Jîhoʼvah**

नुकूओरोः **Jehova**
नेनगौन (या, मारे): **Iehova**
नेम्बेः **Jehovah**
पुर्तगालीः **Iáhve**
पोलिशः **Jehowa**
फीजियनः **Jiova**
फैन्गः **Jehovâ**
फ्रेंचः **IHVH, yhwh**
बताक (टोबा): **Jahowa**
बांगीः **Yawe**
बुल्लोम सोः **Jehovah**
बूबेः **Yehovah**
बेंगाः **Jĕhova**
बोलियाः **Yawe**
मपौंग्वे (माईन की बोली): **Jehova**
मलागासीः **Jehovah; Iehôvah**
मस्कोगीः **Cehofv**
माईनः **Yeôva**
मार्केसनः **Iehova**
मार्शलीज़ः **Jeova**
मालोः **Iova**
मास्केलनेसः **Iova**
मिज़ोः **Jehovan; Jihova′n**
मिसिमा-पानेतीः **Iehova**
मेंटावाईः **Jehoba**
मैरियमः **Iehoua**
मोटूः **Iehova**
मोर्टलौकीज़ः **Jioua**
मोहौकः **Yehovah**
रारोटोन्गनः **Jehova; Iehova**
रेरेपः **Iova**
रोटूमनः **Jihova**
लाओशनः **Yehowa**
लिंगालाः **Yawe**
लीवोः **Yehova**
लुइंबीः **Yehova**
लुगबाराः **Yehova**
लुनाः **Yeoba**
लुन्डाः **Yehova**
लूओः **Yawe**
लूवालः **Yehova**
लेलेः **Jehova**
लोगोः **Yehova**
लोनवोलवोलः **Jehovah**
लोमोंगोः **Yawe; Yova**
वामपनोअगः **Jehovah**
वेल्शः **Iehofah**
शिपेवाः **Jehovah**
सकाओः **Ihova; Iehova**
समोअनः **Ieova**
सीः **Iehōva**
सुकुमाः **Yahuwa; Jakwe**
सेनगेलेः **Yawe**
सेसोथोः **Yehofa**
सैनिकाः **Ya′wĕn**
स्पैनिशः **Jehová; Yahvé; YHWH; Yahweh**
स्रानानटोंगोः **Jehova**
स्वानाः **Jehofa; Yehova; Yehofa**
हवायनः **Iehova**
हिंदुस्तानीः **Yihováh**
हीरी मोटूः **Iehova**
हो-चंक (विनिबेगो): **Jehowa**

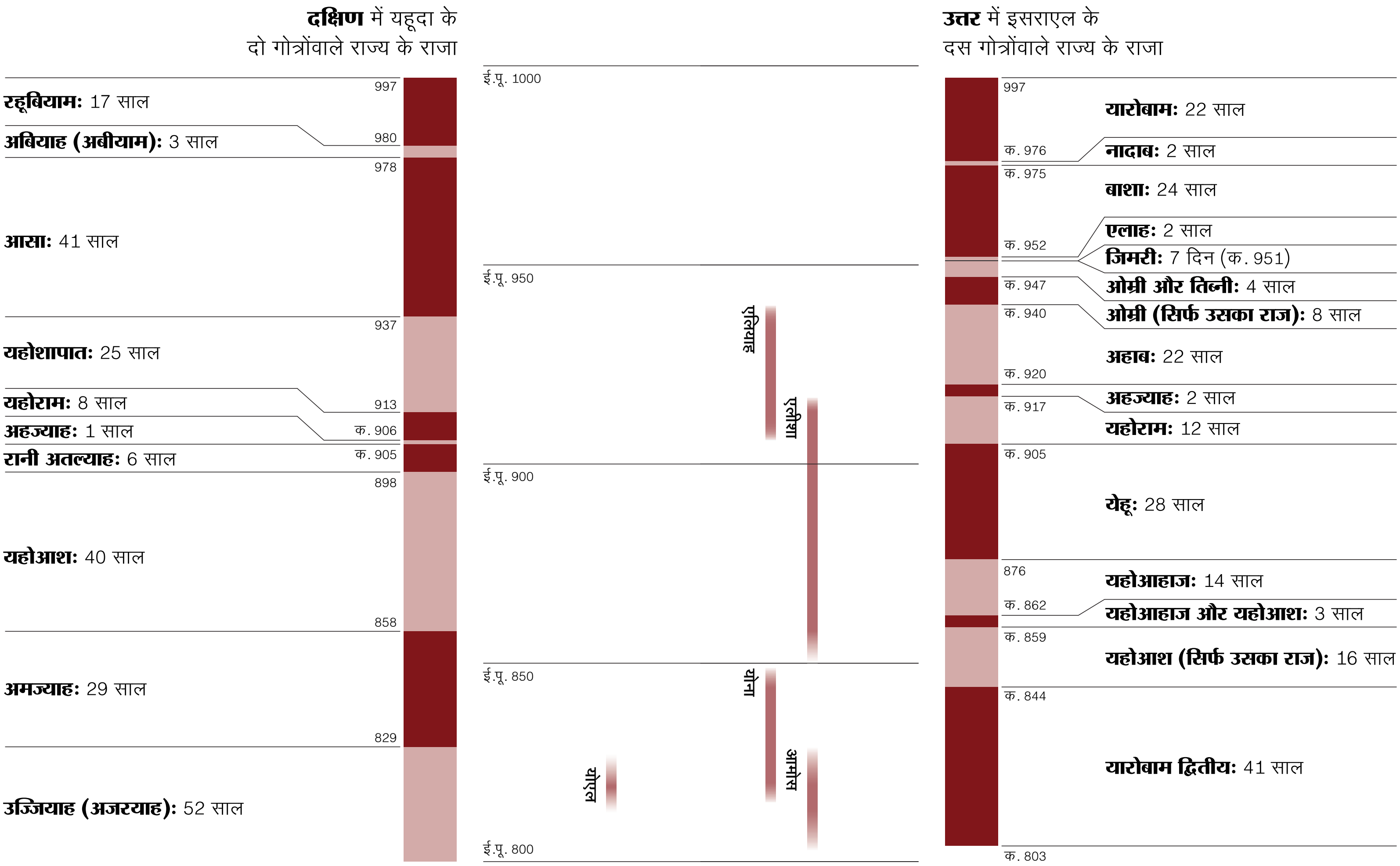
(सूची में दी भाषाओं और बोलियों के अलावा, कई और भाषाओं और बोलियों में परमेश्‍वर का नाम फुटनोट या टीका-टिप्पणियों में आता है।)

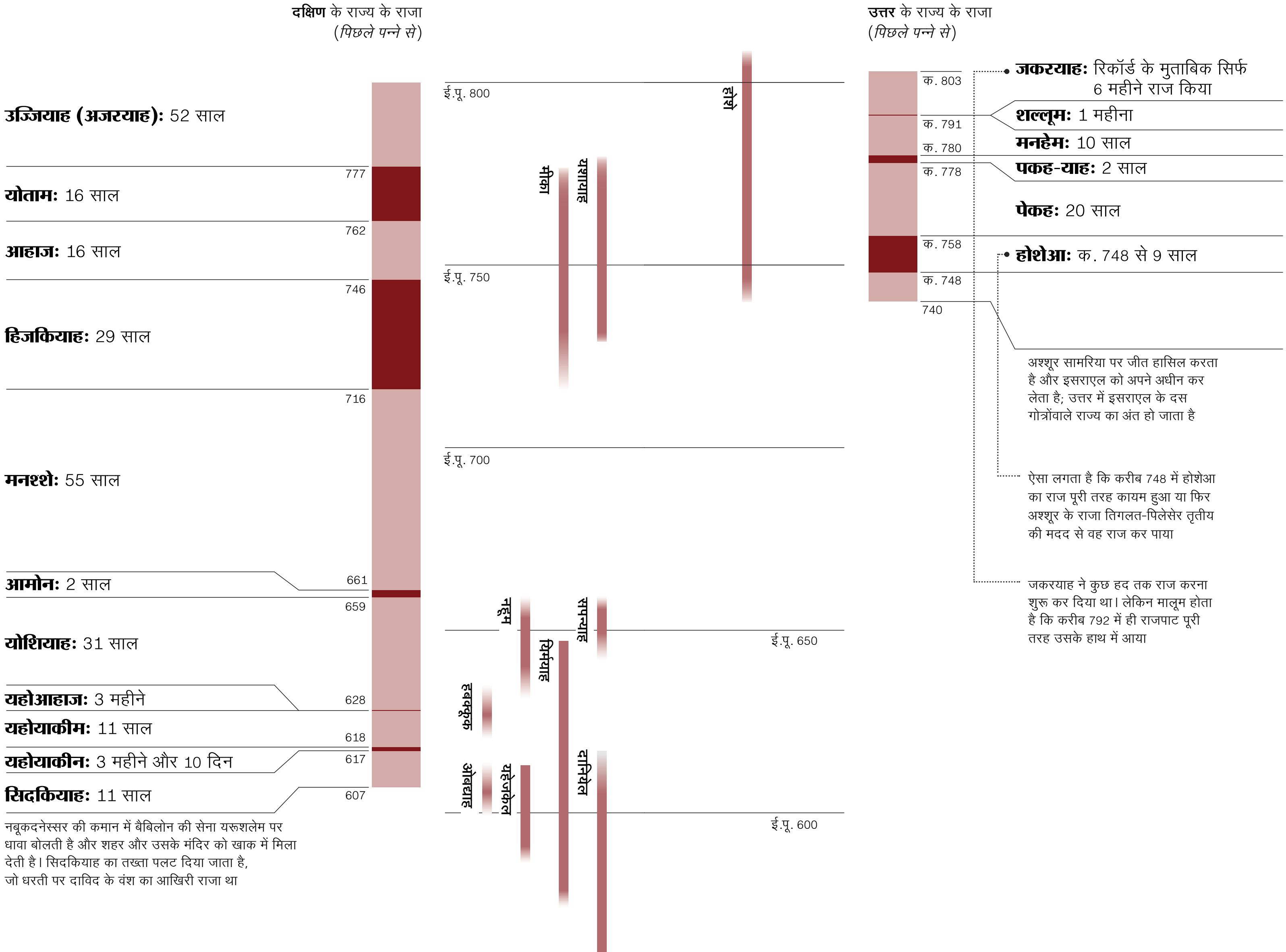
---

120 से ज़्यादा भाषाएँ

क6

चार्ट: यहूदा और इसराएल के भविष्यवक्ता और राजा




दक्षिण के राज्य के राजा
(पिछले पन्ने से)
उज्जियाह (अजरयाह): 52 साल
777
योताम: 16 साल
762
आहाज: 16 साल
746
हिजकियाह: 29 साल
716
मनश्शे: 55 साल
661
आमोन: 2 साल
659
योशियाह: 31 साल
628
यहोआहाज: 3 महीने
यहोयाकीम: 11 साल
618
यहोयाकीन: 3 महीने और 10 दिन
617
सिदकियाह: 11 साल
607
नबूकदनेस्सर की कमान में बैबिलोन की सेना यरूशलेम पर धावा बोलती है और शहर और उसके मंदिर को खाक में मिला देती है। सिदकियाह का तख्ता पलट दिया जाता है, जो धरती पर दाविद के वंश का आखिरी राजा था
ई.पू. 800
ई.पू. 750
ई.पू. 700
ई.पू. 650
ई.पू. 600
होशे
मीका
यशायाह
नहूम
सपन्याह
यिर्मयाह
हबक्कूक
ओबद्याह
यहेजकेल
दानिय्येल
उत्तर के राज्य के राजा
(पिछले पन्ने से)
क. 803
जकरयाह: रिकॉर्ड के मुताबिक सिर्फ 6 महीने राज किया
क. 791
शल्लूम: 1 महीना
क. 780
मनहेम: 10 साल
क. 778
पकह-याह: 2 साल
पेकह: 20 साल
क. 758
होशेआ: क. 748 से 9 साल
क. 748
740
अश्शूर सामरिया पर जीत हासिल करता है और इसराएल को अपने अधीन कर लेता है; उत्तर में इसराएल के दस गोत्रोंवाले राज्य का अंत हो जाता है
ऐसा लगता है कि करीब 748 में होशेआ का राज पूरी तरह कायम हुआ या फिर अश्शूर के राजा तिगलत-पिलेसेर तृतीय की मदद से वह राज कर पाया
जकरयाह ने कुछ हद तक राज करना शुरू कर दिया था। लेकिन मालूम होता है कि करीब 792 में ही राजपाट पूरी तरह उसके हाथ में आया

क7

यीशु की ज़िंदगी की खास घटनाएँ

खुशखबरी की चार किताबों में बतायी घटनाएँ इस क्रम में घटीं

हर चार्ट के साथ एक नक्शा है जिसमें दिखाया गया है कि यीशु कहाँ-कहाँ गया और उसने किन-किन जगहों में प्रचार किया। नक्शे में तीर के निशान मोटे तौर पर यह दिखाते हैं कि उसने किस दिशा में सफर किया, न कि यह कि ठीक कौन-सा रास्ता लिया।

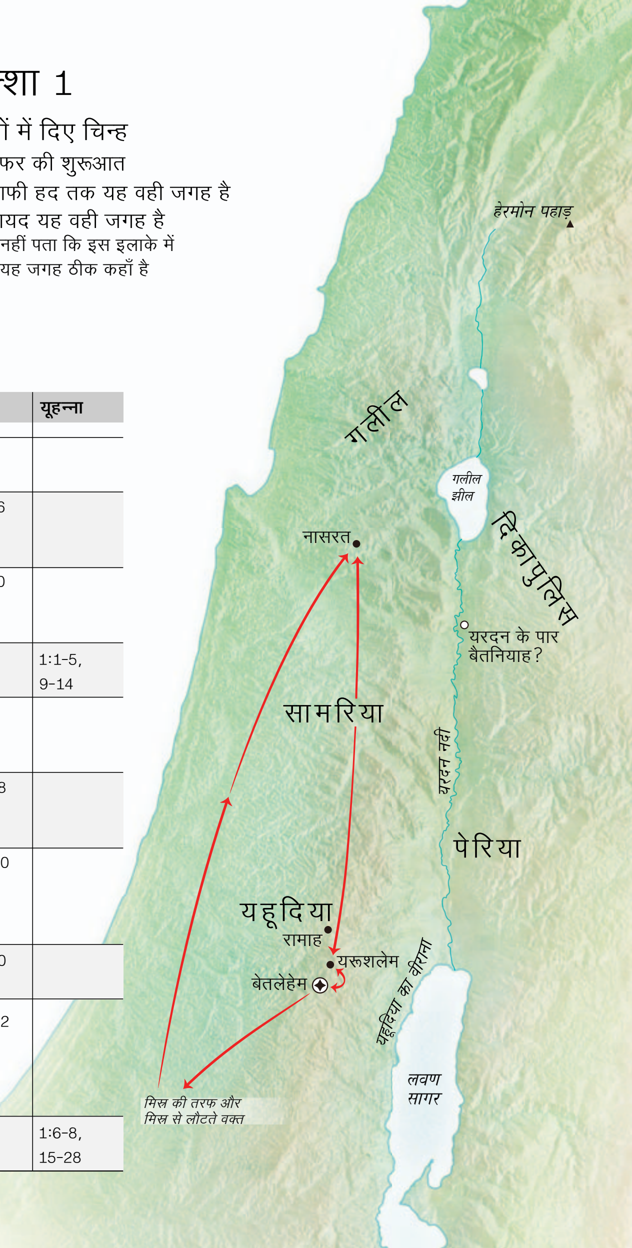
नक्शा 1

नक्शों में दिए चिन्ह

- ◈ सफर की शुरूआत
- ● काफी हद तक यह वही जगह है
- ○ शायद यह वही जगह है
- ? नहीं पता कि इस इलाके में यह जगह ठीक कहाँ है

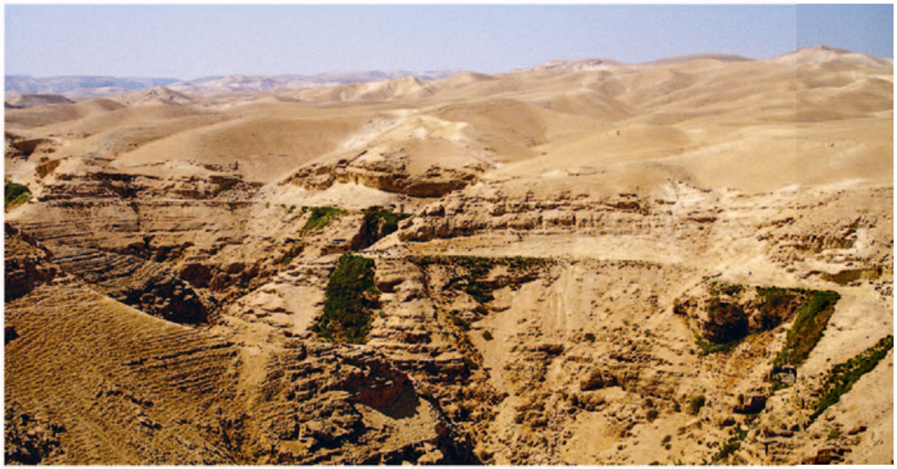
यीशु की सेवा शुरू होने से पहले की घटनाएँ

वक्त	जगह	घटना	मत्ती		मरकुस	लूका	यूहन्ना
ई.पू. 3	यरूशलेम का मंदिर	जिब्राईल स्वर्गदूत जकरयाह को बताता है कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का जन्म होगा				1:5-25	
करीब ई.पू. 2	नासरत; यहूदिया	जिब्राईल स्वर्गदूत मरियम को बताता है कि यीशु का जन्म होगा; वह अपनी रिश्तेदार इलीशिबा से मिलने जाती है				1:26-56	
ई.पू. 2	यहूदिया का पहाड़ी इलाका	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का जन्म और उसका नाम रखा गया; जकरयाह भविष्यवाणी करता है; वीराने में यूहन्ना की ज़िंदगी				1:57-80	
ई.पू. 2, करीब अक्टू. 1	बेतलेहेम	यीशु का जन्म; "वचन इंसान बना"	1:1-25			2:1-7	1:1-5, 9-14
	बेतलेहेम के पास; बेतलेहेम	स्वर्गदूत चरवाहों को खुशखबरी सुनाता है; स्वर्गदूत परमेश्वर की तारीफ करते हैं; चरवाहे शिशु को देखने आते हैं				2:8-20	
	बेतलेहेम; यरूशलेम	यीशु का खतना किया गया (8वें दिन); उसके माता-पिता उसे मंदिर ले आए (40वें दिन के बाद)				2:21-38	
ई.पू. 1 या ई. 1	यरूशलेम; बेतलेहेम; मिस्र; नासरत	ज्योतिषी आते हैं; यूसुफ का परिवार मिस्र भागता है; हेरोदेस छोटे लड़कों को मरवा डालता है; मिस्र से लौटकर वह परिवार नासरत में बस जाता है	2:1-23			2:39, 40	
ई. 12, फसह का त्योहार	यरूशलेम	बारह साल का यीशु मंदिर में शिक्षकों से सवाल पूछता है				2:41-50	
	नासरत	नासरत लौटता है; माता-पिता के अधीन रहता है; बढ़ई का काम सीखता है; मरियम ने यीशु के अलावा चार बेटों और कई बेटियों की परवरिश की (मत 13:55, 56; मर 6:3)				2:51, 52	
29, वसंत	वीराना, यरदन नदी	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला सेवा शुरू करता है	3:1-12		1:1-8	3:1-18	1:6-8, 15-28



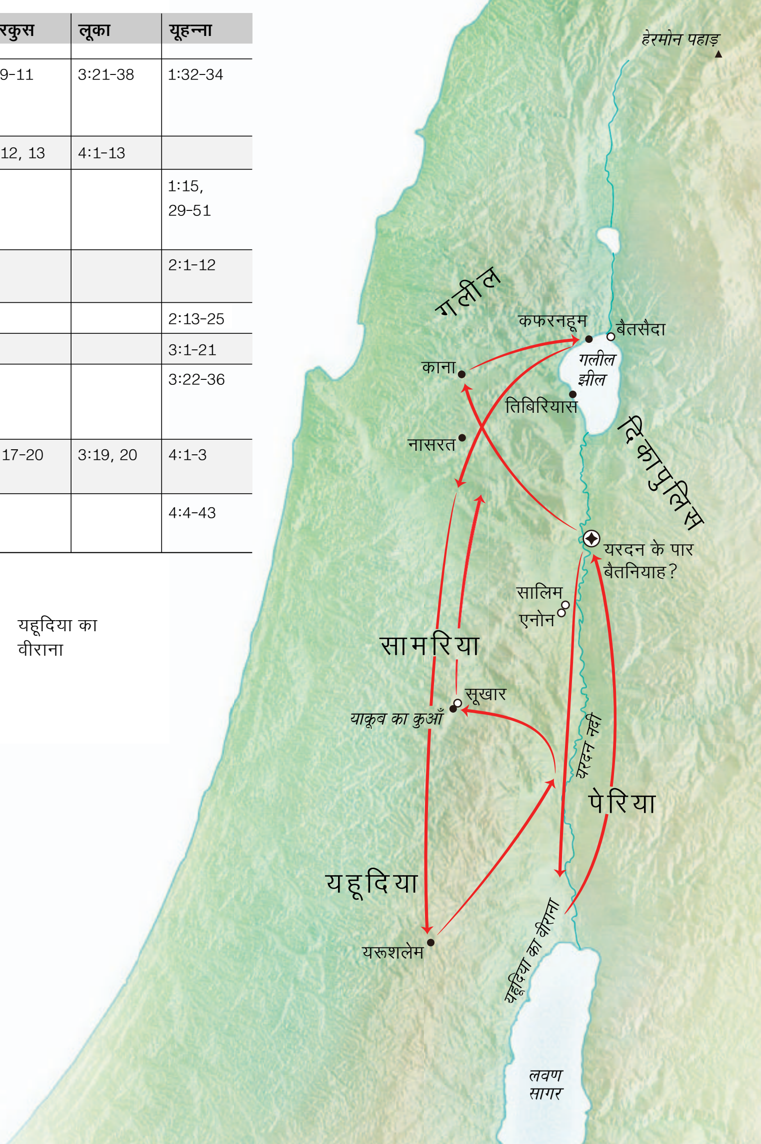
यीशु की सेवा की शुरूआत

वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
29, पतझड़	शायद यरदन नदी पर या यरदन के पार बैतनियाह के पास	यीशु का बपतिस्मा और अभिषेक; यहोवा ने ऐलान किया कि यीशु उसका बेटा है और उसे मंज़ूर किया	3:13-17	1:9-11	3:21-38	1:32-34
	यहूदिया का वीराना	शैतान उसे फुसलाने की कोशिश करता है	4:1-11	1:12, 13	4:1-13	
	यरदन के पार बैतनियाह	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यीशु को परमेश्वर का मेम्ना कहता है; यीशु के शुरूआती चेले उसके साथ हो लेते हैं				1:15, 29-51
	गलील का कसबा काना; कफरनहूम	शादी में पहला चमत्कार, पानी को दाख-मदिरा बनाता है; कफरनहूम जाता है				2:1-12
30, फसह का त्योहार	यरूशलेम	मंदिर को शुद्ध करता है				2:13-25
		नीकुदेमुस से बात करता है				3:1-21
	यहूदिया; एनोन	यहूदिया के देहात में जाता है, उसके चेले बपतिस्मा देते हैं; यूहन्ना, यीशु के बारे में आखिरी गवाही देता है				3:22-36
	तिबिरियास; यहूदिया	यूहन्ना कैद में; यीशु गलील के लिए रवाना होता है	4:12; 14:3-5	6:17-20	3:19, 20	4:1-3
	सामरिया का सूखार	गलील जाते वक्त, रास्ते में सामरियों को सिखाता है				4:4-43



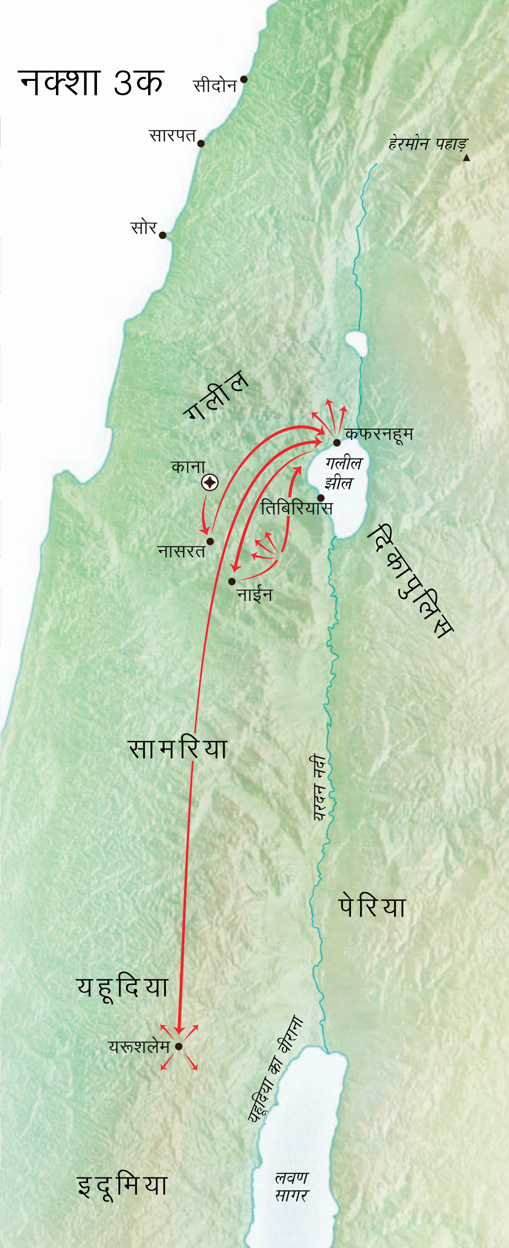
यहूदिया का वीराना

नक्शा 2

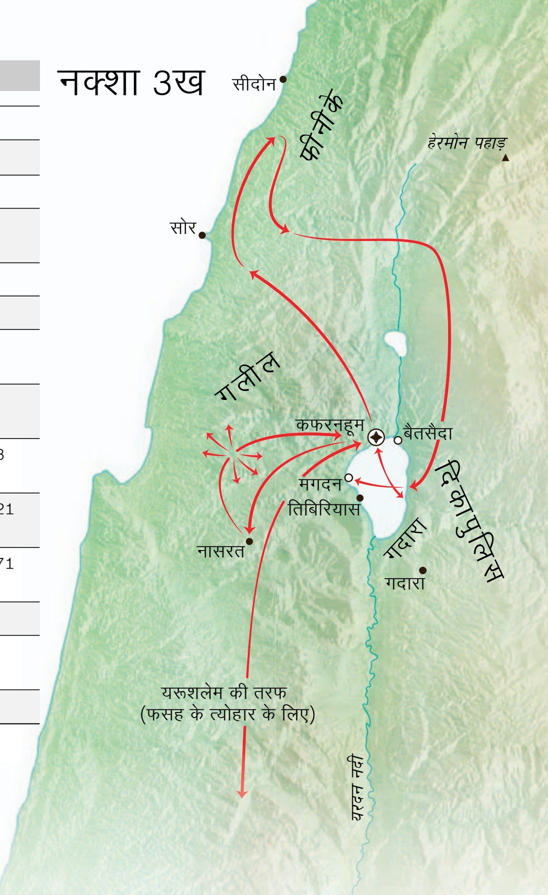


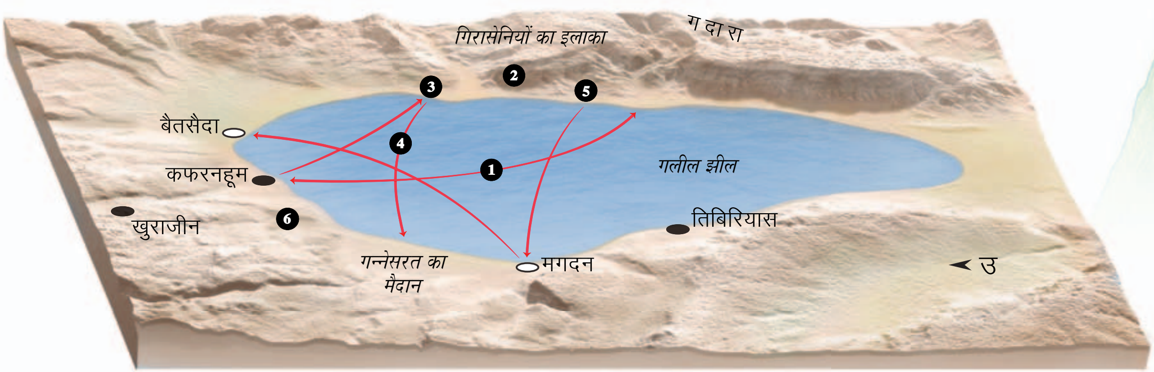
गलील में बड़े पैमाने पर यीशु की सेवा

वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
30	गलील	यीशु पहली बार यह ऐलान करता है, “स्वर्ग का राज पास आ गया है”	4:17	1:14, 15	4:14, 15	4:44, 45
	काना; नासरत; कफरनहूम	अधिकारी के बेटे को ठीक करता है; यशायाह के खर्रे से पढ़कर सुनाता है; कफरनहूम जाता है	4:13-16		4:16-31	4:46-54
	कफरनहूम के पास गलील झील	चार चेलों को बुलाता है: शमौन, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना	4:18-22	1:16-20	5:1-11	
	कफरनहूम	शमौन की सास और बहुतों को चंगा करता है	8:14-17	1:21-34	4:31-41	
	गलील	गलील का पहला दौरा, चारों चेले साथ हैं	4:23-25	1:35-39	4:42, 43	
		कोढ़ी को ठीक करता है; भीड़ पीछे आती है	8:1-4	1:40-45	5:12-16	
	कफरनहूम	लकवे के मारे को ठीक करता है	9:1-8	2:1-12	5:17-26	
		मत्ती को बुलाता है; कर-वसूलनेवालों के साथ खाना खाता है; उपवास के बारे में सवाल	9:9-17	2:13-22	5:27-39	
	यहूदिया	सभा-घरों में प्रचार करता है			4:44	
31, फसह का त्योहार	यरूशलेम	बेतहसदा में बीमार आदमी को ठीक करता है; यहूदी, यीशु को मार डालने की ताक में				5:1-47
	यरूशलेम से लौटता है (?)	चेले सब्त के दिन अनाज की बालें तोड़ते हैं; यीशु “सब्त के दिन का प्रभु”	12:1-8	2:23-28	6:1-5	
	गलील; गलील झील	एक आदमी का हाथ ठीक करता है; भीड़ पीछे हो लेती है; बहुतों को चंगा करता है	12:9-21	3:1-12	6:6-11	
	कफरनहूम के पास पहाड़ पर	12 प्रेषितों को चुनता है		3:13-19	6:12-16	
	कफरनहूम के पास	पहाड़ी उपदेश देता है	5:1–7:29		6:17-49	
	कफरनहूम	सेना-अफसर के बीमार नौकर को ठीक करता है	8:5-13		7:1-10	
	नाईन	विधवा के बेटे को दोबारा ज़िंदा करता है			7:11-17	
	तिबिरियास; गलील (नाईन या उसके आस-पास)	यूहन्ना चेलों को यीशु के पास भेजता है; सच्चाई नन्हे-मुन्नों पर प्रकट; उसका जुआ उठाना आसान	11:2-30		7:18-35	
	गलील (नाईन या उसके आस-पास)	एक पापिन उसके पैरों पर तेल मलती है; कर्ज़ लेनेवालों की मिसाल			7:36-50	
	गलील	प्रचार का दूसरा दौरा, 12 प्रेषित साथ हैं			8:1-3	
		दुष्ट दूत निकाले; पाप जिसकी माफी नहीं	12:22-37	3:19-30		
		योना के सिवा कोई और चिन्ह नहीं देता	12:38-45			
		उसकी माँ और भाई आते हैं; कहता है चेले उसके रिश्तेदार हैं	12:46-50	3:31-35	8:19-21	



वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
31 या 32	कफरनहूम के आस-पास	यीशु राज के बारे में मिसालें देता है	13:1-53	4:1-34	8:4-18	
	गलील झील	नाव पर सवार वह आँधी को शांत करता है	8:18, 23-27	4:35-41	8:22-25	
	गदारा का इलाका	दुष्ट स्वर्गदूतों को सूअरों में भेज देता है	8:28-34	5:1-20	8:26-39	
	शायद कफरनहूम	औरत के खून बहने की बीमारी ठीक करता है; याइर की बेटी को ज़िंदा करता है	9:18-26	5:21-43	8:40-56	
	कफरनहूम (?)	अंधों को और एक गूँगे को ठीक करता है	9:27-34			
	नासरत	अपने ही शहर में फिर से ठुकराया जाता है	13:54-58	6:1-5		
	गलील	गलील का तीसरा दौरा; बड़े पैमाने पर प्रचार के लिए प्रेषितों को भेजता है	9:35–11:1	6:6-13	9:1-6	
	तिबिरियास	हेरोदेस, यूहन्ना का सिर कटवा देता है; यीशु की वजह से हेरोदेस घबराया	14:1-12	6:14-29	9:7-9	
32, फसह के त्योहार के आस-पास (यूह 6:4)	कफरनहूम (?); गलील झील के उत्तर-पूर्व में	प्रचार के दौरे से प्रेषित लौटते हैं; यीशु 5,000 आदमियों को खाना खिलाता है	14:13-21	6:30-44	9:10-17	6:1-13
	गलील झील के उत्तर-पूर्व में; गन्नेसरत	यीशु को राजा बनाने की कोशिश; वह पानी पर चला; बीमारों को ठीक किया	14:22-36	6:45-56		6:14-21
	कफरनहूम	"जीवन देनेवाली रोटी"; कई चेलों को ठोकर लगी, उसे छोड़कर चले गए				6:22-71
32, फसह के त्योहार के बाद	शायद कफरनहूम	इंसानी परंपराओं का परदाफाश करता है	15:1-20	7:1-23		7:1
	फीनीके; दिकापुलिस	फीनीके की औरत की बेटी को चंगा करता है; 4,000 आदमियों को खिलाता है	15:21-38	7:24–8:9		
	मगदन	योना के सिवा कोई और चिन्ह नहीं देता	15:39–16:4	8:10-12		





गलील झील के पास

(इसे गन्नेसरत झील और तिबिरियास झील भी कहा जाता था)

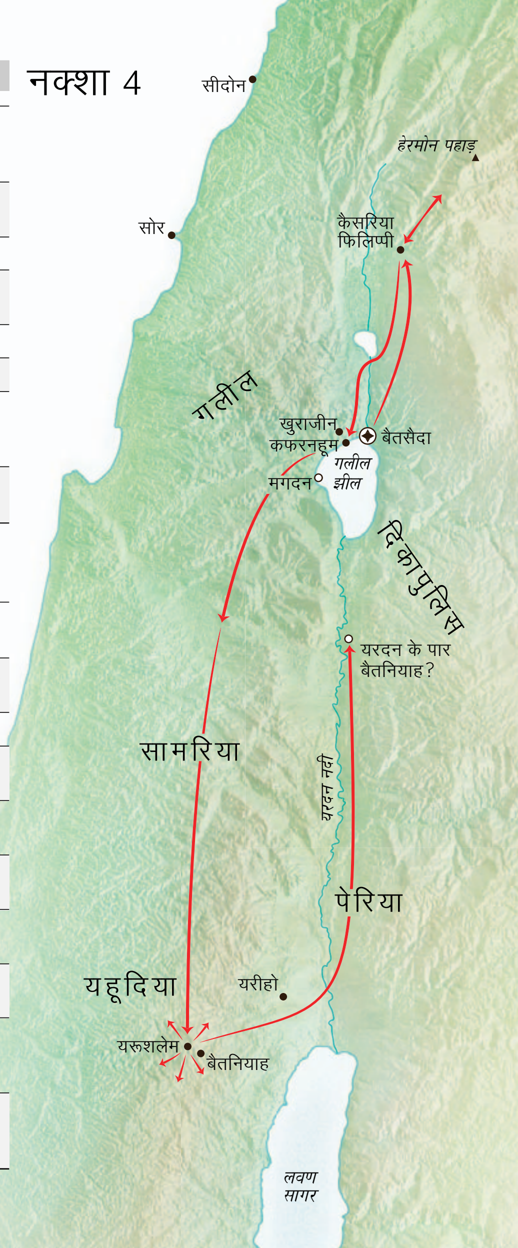
1. जब वह नाव पर सवार था तो आँधी को शांत किया
2. दुष्ट स्वर्गदूतों को सूअरों के अंदर भेजा
3. 5,000 आदमियों को खाना खिलाया
4. पानी पर चला
5. 4,000 आदमियों को खाना खिलाया
6. माना जाता है कि इसी जगह पर उसने पहाड़ी उपदेश दिया

वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
32, फसह के त्योहार के बाद	गलील झील; बैतसैदा	नाव से बैतसैदा जाते वक्त यीशु फरीसियों के खमीर से सावधान करता है; अंधे को ठीक करता है	16:5-12	8:13-26		
	कैसरिया फिलिप्पी का इलाका	राज की चाबियाँ; अपनी मौत और ज़िंदा होने के बारे में भविष्यवाणी करता है	16:13-28	8:27–9:1	9:18-27	
	शायद हेरमोन पहाड़	रूप बदलने का दर्शन; यहोवा की आवाज़	17:1-13	9:2-13	9:28-36	
	कैसरिया फिलिप्पी का इलाका	लड़के में से दुष्ट स्वर्गदूत निकालता है	17:14-20	9:14-29	9:37-43	
	गलील	दोबारा अपनी मौत की भविष्यवाणी करता है	17:22, 23	9:30-32	9:43-45	
	कफरनहूम	मछली के मुँह से मिले सिक्के से कर चुकाता है	17:24-27			
		राज में सबसे बड़ा कौन; भटकी हुई भेड़ और माफ न करनेवाले दास की मिसाल	18:1-35	9:33-50	9:46-50	
	गलील-सामरिया	यरूशलेम जाते वक्त चेलों को राज के लिए सबकुछ दरकिनार करने को कहता है	8:19-22		9:51-62	7:2-10

यहूदिया में यीशु की बाद की सेवा

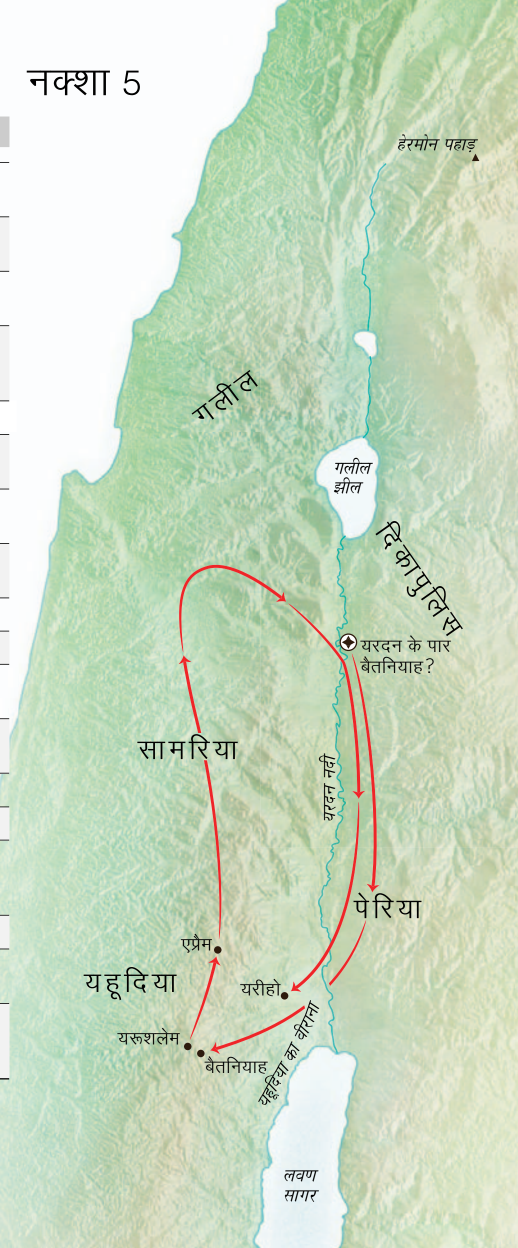
वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
32, डेरों (या छप्परों) का त्योहार	यरूशलेम	त्योहार पर सिखाता है; उसे गिरफ्तार करने के लिए पहरेदार भेजे गए				7:11-52
		कहता है "मैं दुनिया की रौशनी हूँ"; जन्म से अंधे आदमी को ठीक करता है				8:12–9:41
	शायद यहूदिया	70 चेलों को भेजता है; वे खुशी-खुशी लौटते हैं			10:1-24	
	यहूदिया; बैतनियाह	दयालु सामरी की मिसाल; मरियम और मारथा के घर जाता है			10:25-42	
	शायद यहूदिया	आदर्श प्रार्थना फिर से सिखाता है; माँगते रहनेवाले दोस्त की मिसाल			11:1-13	
		परमेश्वर की उँगली से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालता है; फिर से योना का चिन्ह देता है			11:14-36	
		फरीसी के साथ खाना खाता है; फरीसियों के कपट के लिए उन्हें धिक्कारता है			11:37-54	
		मिसालें: मूर्ख अमीर आदमी और विश्वासयोग्य प्रबंधक			12:1-59	
		सब्त के दिन कुबड़ी औरत को चंगा करता है; राई के दाने और खमीर की मिसालें			13:1-21	
32, समर्पण का त्योहार	यरूशलेम	अच्छे चरवाहे और भेड़शाला की मिसाल; यहूदी उसे पत्थरों से मार डालने की कोशिश करते हैं; यरदन के पार बैतनियाह के लिए रवाना होता है				10:1-39

नक्शा 4



यरदन के पूरब में यीशु की बाद की सेवा

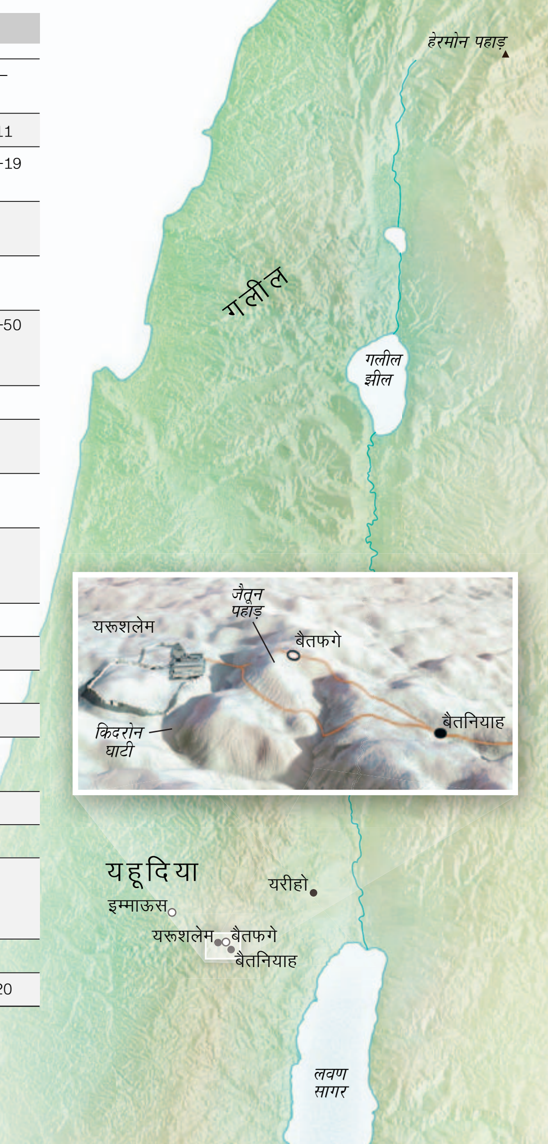
वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
32, समर्पण के त्योहार के बाद	यरदन के पार बैतनियाह	वहाँ जाता है जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देता था; कई लोग यीशु पर विश्वास करते हैं				10:40-42
	पेरिया	यरूशलेम जाते वक्त शहरों और गाँवों में सिखाता है			13:22	
		सँकरे दरवाज़े से जाने का बढ़ावा देता है; यरूशलेम के लिए दुखी होता है			13:23-35	
	शायद पेरिया	नम्रता की सीख देता है; मिसालें: खास-खास जगह बैठना और बहाना बनानेवाले मेहमान			14:1-24	
		चेला बनने की कीमत आँकना			14:25-35	
		मिसालें: खोयी हुई भेड़, खोया सिक्का, खोया हुआ बेटा			15:1-32	
		मिसालें: बेईमान प्रबंधक, अमीर आदमी और लाज़र			16:1-31	
		विश्वास में बाधा, माफ करने और विश्वास करने के बारे में सिखाता है			17:1-10	
	बैतनियाह	लाज़र मर गया और ज़िंदा किया गया				11:1-46
	यरूशलेम; एप्रैम	यीशु को मारने की साज़िश; वहाँ से चला जाता है				11:47-54
	सामरिया; गलील	दस कोढ़ियों को ठीक करता है; बताता है कि परमेश्वर का राज कैसे आएगा			17:11-37	
	सामरिया या गलील	मिसालें: हार न माननेवाली विधवा, फरीसी और कर-वसूलनेवाला			18:1-14	
	पेरिया	शादी और तलाक के बारे में सिखाता है	19:1-12	10:1-12		
		बच्चों को आशीष देता है	19:13-15	10:13-16	18:15-17	
		अमीर आदमी का सवाल; मिसाल: अंगूरों के बाग के मज़दूर और बराबर मज़दूरी	19:16–20:16	10:17-31	18:18-30	
	शायद पेरिया	तीसरी बार अपनी मौत की भविष्यवाणी करता है	20:17-19	10:32-34	18:31-34	
		याकूब और यूहन्ना के लिए राज में खास पदवी की गुज़ारिश	20:20-28	10:35-45		
	यरीहो	यहाँ से गुज़रते वक्त दो अंधों को ठीक करता है; जक्कई से मिलता है; चाँदी के दस टुकड़ों की मिसाल	20:29-34	10:46-52	18:35–19:28	



यरूशलेम में यीशु की सेवा के आखिरी दिन

वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
33, नीसान 8	बैतनियाह	यीशु फसह के त्योहार से छः दिन पहले वहाँ पहुँचता है				11:55–12:1
नीसान 9	बैतनियाह	मरियम उसके सिर और पैर पर तेल उँडेलती है	26:6-13	14:3-9		12:2-11
	बैतनियाह-बैतफगे-यरूशलेम	गधे पर सवार होकर राजा की हैसियत से यरूशलेम में दाखिल	21:1-11, 14-17	11:1-11	19:29-44	12:12-19
नीसान 10	बैतनियाह-यरूशलेम	अंजीर के पेड़ को शाप देता है; एक बार फिर मंदिर को शुद्ध करता है	21:18, 19; 21:12, 13	11:12-17	19:45, 46	
	यरूशलेम	प्रधान याजक और शास्त्री यीशु को मार डालने की साज़िश रचते हैं		11:18, 19	19:47, 48	
		यहोवा की आवाज़; यीशु अपनी मौत की भविष्यवाणी करता है; यहूदी विश्वास नहीं करते जिससे यशायाह की भविष्यवाणी पूरी होती है				12:20-50
नीसान 11	बैतनियाह-यरूशलेम	सूखे हुए अंजीर के पेड़ से सबक	21:19-22	11:20-25		
	यरूशलेम का मंदिर	उसके अधिकार पर सवाल उठाया जाता है; दो बेटों की मिसाल	21:23-32	11:27-33	20:1-8	
		मिसालें: खून करनेवाले बागबान, शादी की दावत	21:33–22:14	12:1-12	20:9-19	
		परमेश्वर, सम्राट, मरे हुओं के ज़िंदा होने और सबसे बड़ी आज्ञा के बारे में सवालों के जवाब देता है	22:15-40	12:13-34	20:20-40	
		भीड़ से पूछता है, क्या मसीह दाविद का वंशज है	22:41-46	12:35-37	20:41-44	
		शास्त्रियों और फरीसियों को धिक्कारता है	23:1-39	12:38-40	20:45-47	
		विधवा के दान पर ध्यान देता है		12:41-44	21:1-4	
	जैतून पहाड़	अपनी मौजूदगी की निशानी बताता है	24:1-51	13:1-37	21:5-38	
		मिसालें: दस कुँवारियाँ, तोड़े, भेड़ें और बकरियाँ	25:1-46			
नीसान 12	यरूशलेम	यहूदी अगुवे उसे मार डालने की साज़िश रचते हैं	26:1-5	14:1, 2	22:1, 2	
		यहूदा, यीशु को पकड़वाने की बात करके आता है	26:14-16	14:10, 11	22:3-6	
नीसान 13 (गुरुवार दोपहर)	यरूशलेम में और उसके आस-पास	आखिरी फसह की तैयारियाँ करता है	26:17-19	14:12-16	22:7-13	
नीसान 14	यरूशलेम	प्रेषितों के साथ फसह का खाना खाता है	26:20, 21	14:17, 18	22:14-18	
		प्रेषितों के पैर धोता है				13:1-20

नक्शा 6



वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
नीसान 14	यरूशलेम	यीशु, यहूदा को गद्दार बताकर बाहर भेज देता है	26:21-25	14:18-21	22:21-23	13:21-30
		प्रभु के संध्या-भोज की शुरूआत करता है (1कुरिं 11:23-25)	26:26-29	14:22-25	22:19, 20, 24-30	
		बताता है कि पतरस उसे जानने से इनकार करेगा और प्रेषित तितर-बितर हो जाएँगे	26:31-35	14:27-31	22:31-38	13:31-38
		मददगार को भेजने का वादा करता है; सच्ची बेल की मिसाल; प्यार करने की आज्ञा; प्रेषितों के साथ आखिरी प्रार्थना				14:1–17:26
	गतसमनी	बाग में दुख से तड़पना; यीशु के साथ विश्वासघात और उसकी गिरफ्तारी	26:30, 36-56	14:26, 32-52	22:39-53	18:1-12
	यरूशलेम	हन्ना पूछताछ करता है; महासभा में कैफा मुकदमा चलाता है; पतरस यीशु का इनकार करता है	26:57–27:1	14:53–15:1	22:54-71	18:13-27
		गद्दार यहूदा फाँसी लगा लेता है (प्रेषि 1:18, 19)	27:3-10			
		पहले पीलातुस के, फिर हेरोदेस के और दोबारा पीलातुस के सामने लाया जाता है	27:2, 11-14	15:1-5	23:1-12	18:28-38
		पीलातुस उसे रिहा करना चाहता है मगर यहूदी, बरअब्बा को छोड़ने की माँग करते हैं; यातना के काठ पर मार डालने की सज़ा सुनायी जाती है	27:15-30	15:6-19	23:13-25	18:39–19:16
(दोपहर करीब 3 बजे, शुक्रवार)	गुलगुता	यातना के काठ पर दम तोड़ता है	27:31-56	15:20-41	23:26-49	19:16-30
	यरूशलेम	यीशु की लाश यातना के काठ से उतारकर गुफा में रखी गयी	27:57-61	15:42-47	23:50-56	19:31-42
नीसान 15	यरूशलेम	याजक और फरीसी उसकी कब्र पर पहरा बिठाते हैं और उसका द्वार अच्छी तरह बंद करवाते हैं	27:62-66			
नीसान 16	यरूशलेम और उसके आस-पास; इम्माऊस	यीशु ज़िंदा हो गया; पाँच बार चेलों को दिखायी देता है	28:1-15	16:1-8	24:1-49	20:1-25
नीसान 16 के बाद	यरूशलेम; गलील	और भी कई बार चेलों को दिखायी देता है (1कुरिं 15:5-7; प्रेषि 1:3-8); हिदायतें देता है; चेला बनाने का काम सौंपता है	28:16-20			20:26–21:25
अय्यार 25	बैतनियाह के पास जैतून पहाड़ पर	ज़िंदा होने के 40वें दिन यीशु स्वर्ग जाता है (प्रेषि 1:9-12)			24:50-53	



अतिरिक्त लेख ख

नक्शे

नक्शों में दिए चिन्ह

- ● काफी हद तक यह वही जगह है
- ○ शायद यह वही जगह है
- ? नहीं पता कि इस इलाके में यह जगह ठीक कहाँ है
- – रास्ता

सभी नक्शों में उत्तर दिशा ऊपर की तरफ है

जगहों के बीच अल्प-विराम (,) दिखाता है कि एक ही दौर में उनके अलग-अलग नाम थे

कोष्ठकों ( ) में दिया नाम दिखाता है कि फलाँ जगह दूसरे दौर में उस नाम से जानी जाती थी

तसवीरें

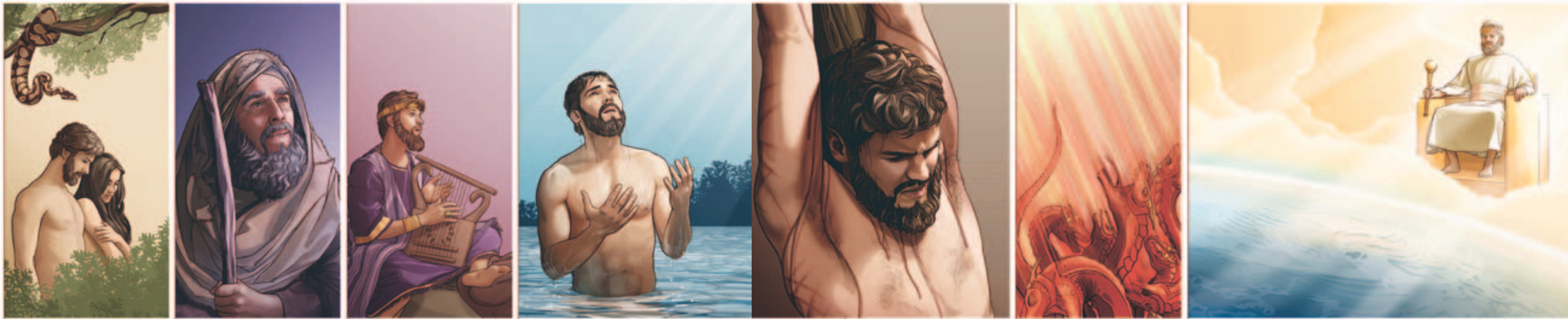
समय

नाप

खक1

बाइबल का संदेश

सिर्फ यहोवा परमेश्वर को ही राज करने का हक है।
और उसका राज करने का तरीका ही सबसे बढ़िया है।
धरती और इंसानों के लिए उसका मकसद ज़रूर पूरा होगा।



ई.पू. 4026 के बाद

“साँप” यानी शैतान ने सवाल उठाया कि क्या यहोवा को राज करने का हक है और क्या राज करने का उसका तरीका सही है। यहोवा ने वादा किया कि एक “वंश” आएगा जो आखिरकार साँप को कुचल देगा। (उत्पत्ति 3:1-5, 15) लेकिन तब तक यहोवा ने इंसानों को समय दिया कि वे शैतान के अधीन रहकर खुद राज करें।

ई.पू. 1943

यहोवा ने अब्राहम को बताया कि वादा किया गया “वंश” उसी से आएगा। —उत्पत्ति 22:18.

ई.पू. 1070 के बाद

यहोवा ने राजा दाविद और बाद में उसके बेटे सुलैमान को भरोसा दिलाया कि वादा किया गया “वंश” उनके खानदान में पैदा होगा। —2 शमूएल 7:12, 16; 1 राजा 9:3-5; यशायाह 9:6, 7.

ई. 29

यहोवा ने खुलासा किया कि यीशु ही वादा किया गया “वंश” है और दाविद की राजगद्दी का वारिस है।—गलातियों 3:16; लूका 1:31-33; 3:21, 22.

ई. 33

साँप यानी शैतान ने यीशु को मरवा डाला और इस तरह कुछ समय के लिए वादा किए गए “वंश” को घायल किया। यहोवा ने यीशु को ज़िंदा करके स्वर्ग में जीवन दिया और उसके परिपूर्ण जीवन की कीमत कबूल की। इस तरह उसने आदम की संतानों के लिए पापों की माफी और हमेशा की ज़िंदगी पाने का रास्ता खोला। —उत्पत्ति 3:15; प्रेषितों 2:32-36; 1 कुरिंथियों 15:21, 22.

1914 या उसके तुरंत बाद

यीशु ने साँप यानी शैतान को स्वर्ग से धरती पर फेंक दिया और उस पर बंदिश लगायी कि वह थोड़े समय के लिए यहीं रहे। —प्रकाशितवाक्य 12:7-9, 12.

भविष्य में

यीशु, शैतान को 1,000 साल के लिए कैद कर देगा। इसके बाद वह शैतान का सिर कुचल देगा यानी हमेशा के लिए उसका नाश कर देगा। धरती और इंसानों के लिए यहोवा ने शुरू में जो मकसद ठहराया था, वह पूरा होगा। यहोवा के नाम पर लगा कलंक मिटा दिया जाएगा और साबित हो जाएगा कि परमेश्वर का राज करने का तरीका ही सही है।—प्रकाशितवाक्य 20:1-3, 10; 21:3, 4.

ख2

उत्पत्ति और कुलपिताओं का सफर



ख3 मिस्र से निकलना

ई.पू. 1473 **मूसा के बाद यहोशू को अगुवा चुना गया**

ई.पू. 1513 **इसराएलियों ने मिस्र छोड़ा**

मूसा के कानून का करार

ई.पू. 4000 | ई.पू. 2000 | ई.पू. / ई. | सन् 2000



ख4 वादा किए गए देश को जीतना

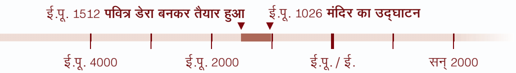
ई.पू. 1473 **इसराएलियों ने कनान में कदम रखा**
ई.पू. 1467 **देश के ज़्यादातर इलाके जीत लिए**

ई.पू. 4000 | ई.पू. 2000 | ई.पू. / ई. | सन् 2000



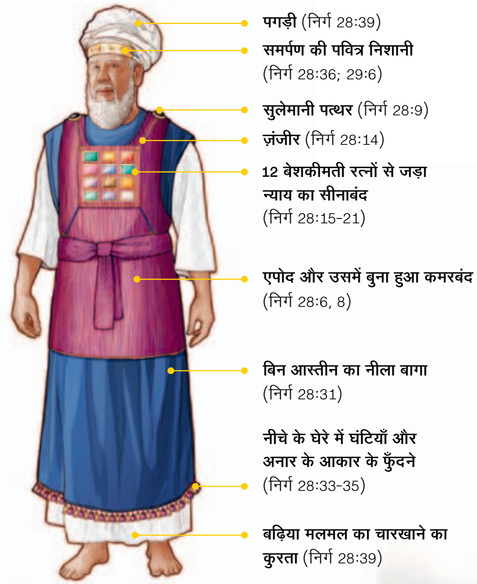
ख5

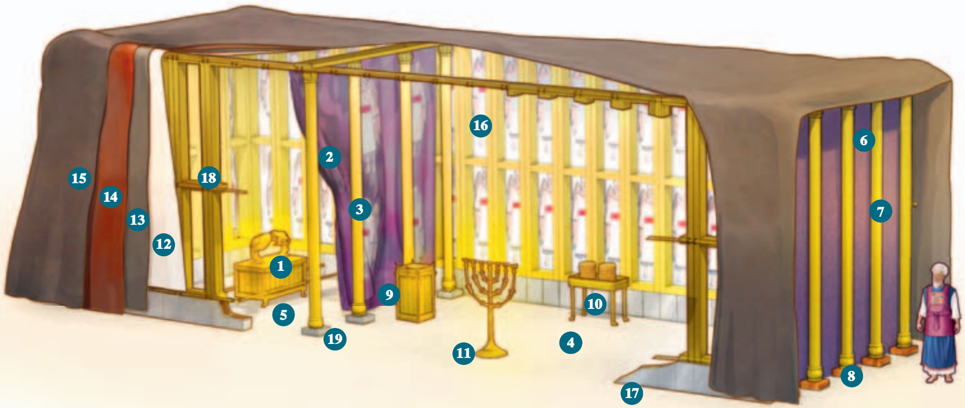
पवित्र डेरा और महायाजक



महायाजक

निर्गमन अध्याय 28 में इसराएल के महायाजक की पोशाक का पूरा ब्यौरा दिया है

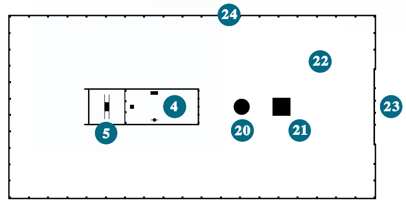






पवित्र डेरे की चीज़ें

1. **संदूक** (निर्ग 25:10-22; 26:33)
2. **परदा** (निर्ग 26:31-33)
3. **परदा लटकाने के लिए खंभा** (निर्ग 26:31, 32)
4. **पवित्र भाग** (निर्ग 26:33)
5. **परम-पवित्र भाग** (निर्ग 26:33)
6. **द्वार का परदा** (निर्ग 26:36)
7. **द्वार का परदा लटकाने के लिए खंभा** (निर्ग 26:37)
8. **ताँबे की खाँचेदार चौकी** (निर्ग 26:37)
9. **धूप की वेदी** (निर्ग 30:1-6)
10. **नज़राने की रोटी की मेज़** (निर्ग 25:23-30; 26:35)
11. **दीवट** (निर्ग 25:31-40; 26:35)
12. **ढकने के लिए मलमल का कपड़ा** (निर्ग 26:1-6)
13. **बकरी के बालों से बुना कपड़ा** (निर्ग 26:7-13)
14. **मेढ़े की खाल से बनी चादर** (निर्ग 26:14)
15. **सील की खाल से बनी चादर** (निर्ग 26:14)
16. **चौखट** (निर्ग 26:15-18, 29)
17. **चौखट को खड़ा करने के लिए चाँदी की खाँचेदार चौकी** (निर्ग 26:19-21)
18. **डंडा** (निर्ग 26:26-29)
19. **चाँदी की खाँचेदार चौकी** (निर्ग 26:32)
20. **ताँबे का हौद** (निर्ग 30:18-21)
21. **होम-बलि की वेदी** (निर्ग 27:1-8)
22. **आँगन** (निर्ग 27:17, 18)
23. **द्वार** (निर्ग 27:16)
24. **मलमल की कनातें** (निर्ग 27:9-15)



ख6 वादा किए गए देश में बसना

ई.पू. 1467 देश जीतने के बाद गोत्रों को अपना-अपना इलाका मिला
ई.पू. 1117 राजा बनने के लिए शाऊल का अभिषेक
ई.पू. 4000
ई.पू. 2000
ई.पू. / ई.
सन् 2000



ख7

दाविद और सुलैमान के राज का इलाका

ई.पू. 1077-1038 **दाविद का राज** ई.पू. 1037-998 **सुलैमान का राज**
करीब ई.पू. 1070 **दाविद से किया गया करार**

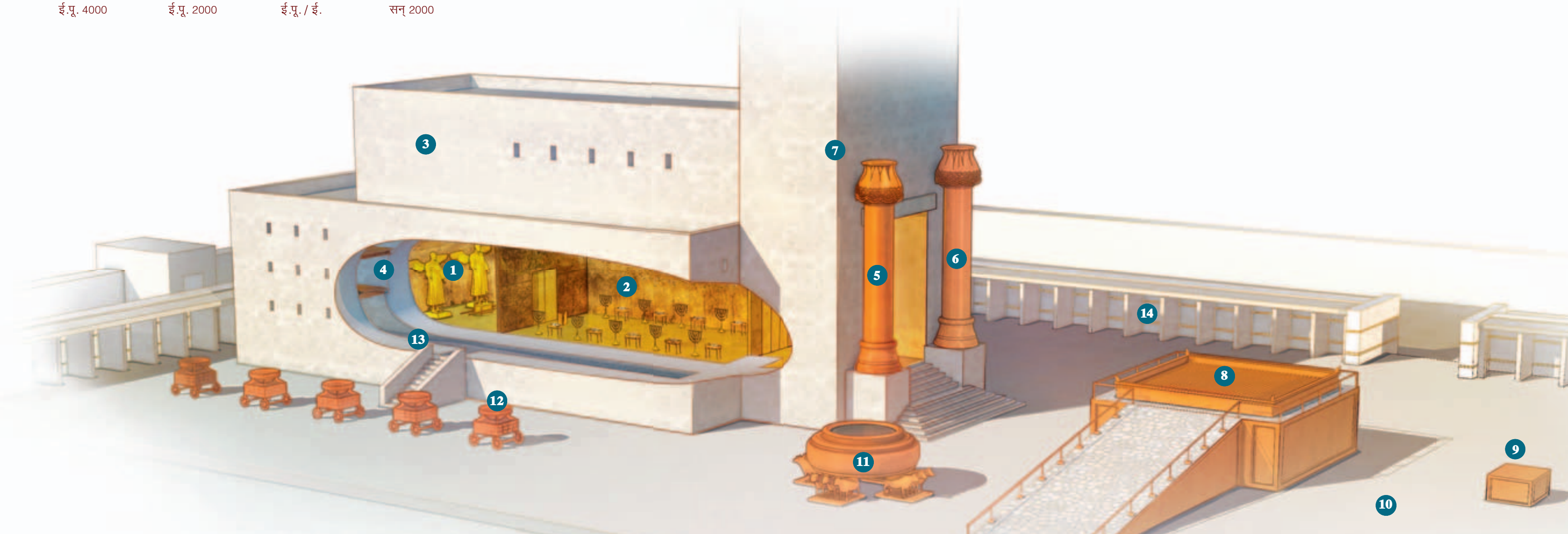
ई.पू. 4000 ई.पू. 2000 ई.पू. / ई. सन् 2000



ख8

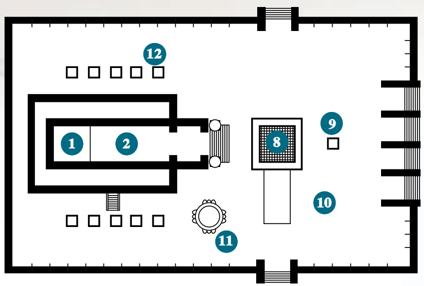
सुलैमान का बनाया मंदिर





मंदिर में क्या-क्या था

1. **परम-पवित्र भाग** (1रा 6:16, 20)
2. **पवित्र भाग** (2इत 5:9)
3. **छत के खाने** (1इत 28:11)
4. **भवन की दीवार से सटे हुए खाने** (1रा 6:5, 6, 10)
5. **याकीन** (1रा 7:21; 2इत 3:17)
6. **बोअज़** (1रा 7:21; 2इत 3:17)
7. **बरामदा** (1रा 6:3; 2इत 3:4)
   (ऊँचाई ठीक-ठीक नहीं पता)
8. **ताँबे की वेदी** (2इत 4:1)
9. **ताँबे का चबूतरा** (2इत 6:13)
10. **भीतरी आँगन** (1रा 6:36)
11. **ढला हुआ ताँबे का हौद** (1रा 7:23)
12. **हथ-गाड़ियाँ** (1रा 7:27)
13. **दायाँ प्रवेश** (1रा 6:8)
14. **भोजन के कमरे** (1इत 28:12)



ख9

दानियेल की भविष्यवाणी में बतायी विश्व शक्तियाँ

ई.पू. 607 **बैबिलोन ने यरूशलेम का नाश किया**

ई.पू. 4000 — ई.पू. 2000 — ई.पू. / ई. — सन् 2000



बैबिलोन

दानियेल 2:32, 36-38; 7:4

ई.पू. 607 राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम का नाश किया



मादी-फारस

दानियेल 2:32, 39; 7:5

ई.पू. 539 बैबिलोन पर जीत

ई.पू. 537 कुसरू का फरमान कि यहूदी यरूशलेम लौट जाएँ



यूनान

दानियेल 2:32, 39; 7:6

ई.पू. 331 सिकंदर महान ने फारस को जीता



रोम

दानियेल 2:33, 40; 7:7

ई.पू. 63 इसराएल पर राज करने लगा

ई. 70 यरूशलेम का नाश किया

ब्रिटेन-अमरीका

दानियेल 2:33, 41-43

सन् 1914-1918 पहले विश्व युद्ध के दौरान, ब्रिटेन-अमरीकी विश्व शक्ति उभरी







ख10 यीशु के समय का इसराएल

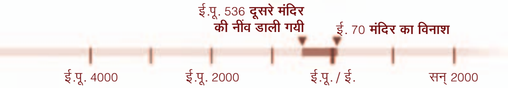
ई.पू. 2 **यीशु का जन्म**
ई. 33 **यीशु की मौत**

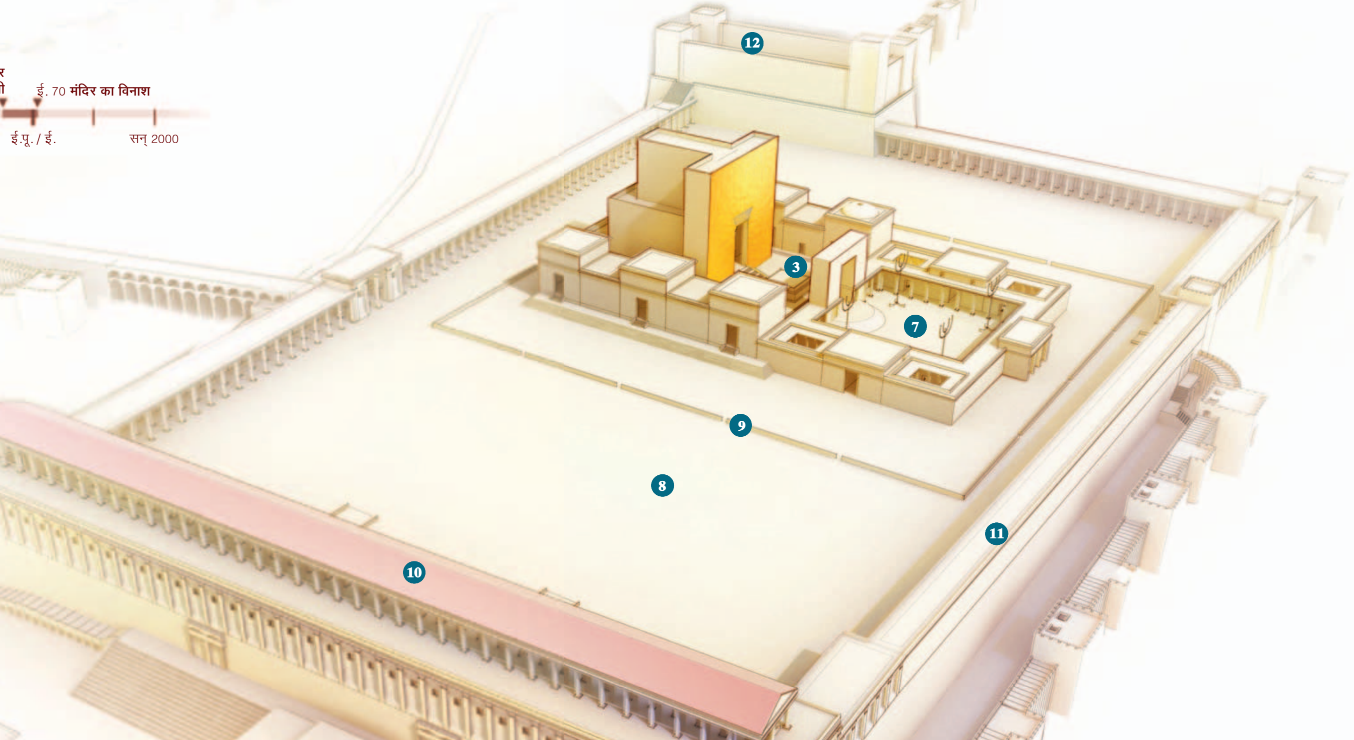
ई.पू. 4000 | ई.पू. 2000 | ई.पू. / ई. | सन् 2000

- पहले हेरोदेस अरखिलाउस का राज था, बाद में रोमी राज्यपाल पुन्तियुस पीलातुस का
- हेरोदेस अन्तिपास का राज
- फिलिप्पुस का राज
- दिकापुलिस के शहर



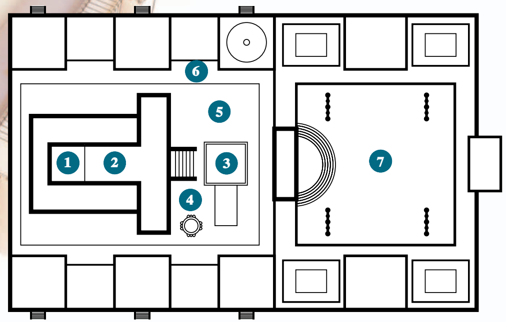
ख11 पहली सदी का मंदिर





मंदिर में क्या-क्या था

1 परम-पवित्र भाग
2 पवित्र भाग
3 होम-बलि की वेदी
4 ढला हुआ ताँबे का हौद
5 याजकों का आँगन
6 इसराएल का आँगन
7 औरतों का आँगन
8 गैर-यहूदियों का आँगन
9 दीवार (*सोरेग*)
10 खंभोंवाला शाही बरामदा
11 सुलैमान का खंभोंवाला बरामदा
12 एन्टोनिया गढ़



ख12 धरती पर यीशु की ज़िंदगी का आखिरी हफ्ता

ई. 33 **यीशु की मौत**

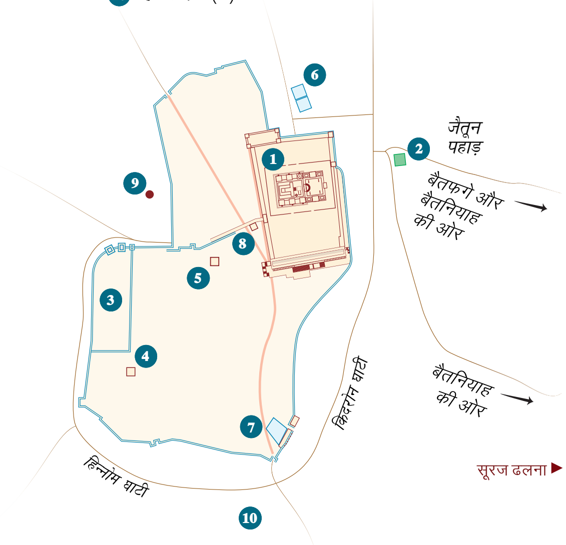
ई.पू. 2000 — ई.पू. / ई. — सन् 2000

सूरज ढलना ▶

यहूदियों का दिन सूरज ढलने से शुरू होकर अगले दिन सूरज ढलने पर खत्म होता था

यरूशलेम और उसके आस-पास का इलाका

1. मंदिर
2. गतसमनी बाग (?)
3. राज्यपाल का भवन
4. कैफा का घर (?)
5. महल जिसमें हेरोदेस अन्तिपास रहता था (?)
6. बेतहसदा का कुंड
7. सिलोम का कुंड
8. महासभा का भवन (?)
9. गुलगुता (?)
10. हकलदमा (?)



नीसान 8 (सब्त)

सूरज ढलना ▶

- फसह के त्योहार से छः दिन पहले बैतनियाह पहुँचता है

यूहन्ना 11:55–12:1

सूरज उगना ▶

नीसान 9

- शमौन नाम के कोढ़ी के घर खाना खाता है
- मरियम जटामाँसी के तेल से यीशु का अभिषेक करती है
- यहूदी, यीशु और लाज़र से मिलने आते हैं

मत्ती 26:6-13
मरकुस 14:3-9
यूहन्ना 12:2-11



- राजा की हैसियत से यरूशलेम में दाखिल होता है
- मंदिर में सिखाता है 1

मत्ती 21:1-11, 14-17
मरकुस 11:1-11
लूका 19:29-44
यूहन्ना 12:12-19

नीसान 10

- बैतनियाह में रात बिताता है



- तड़के सुबह यरूशलेम जाता है
- मंदिर को शुद्ध करता है
- स्वर्ग से यहोवा की आवाज़ सुनायी देती है

मत्ती 21:18, 19; 21:12, 13
मरकुस 11:12-19
लूका 19:45-48
यूहन्ना 12:20-50

नीसान 11



- मंदिर में मिसालें देकर सिखाता है
- फरीसियों को धिक्कारता है
- विधवा के दान पर गौर करता है
- जैतून पहाड़ पर यरूशलेम के नाश की भविष्यवाणी करता है और भविष्य में होनेवाली अपनी मौजूदगी की निशानी बताता है

मत्ती 21:19–25:46
मरकुस 11:20–13:37
लूका 20:1–21:38

सूरज ढलना ▶

नीसान 12



- चेलों के साथ अकेले में वक्त बिताता है
- यहूदा, यीशु को पकड़वाने की बात करके आता है

मत्ती 26:1-5, 14-16
मरकुस 14:1, 2, 10, 11
लूका 22:1-6

नीसान 13



- पतरस और यूहन्ना फसह की तैयारी करते हैं
- यीशु और दूसरे प्रेषित दोपहर के बाद पहुँचते हैं

मत्ती 26:17-19
मरकुस 14:12-16
लूका 22:7-13

नीसान 14



- प्रेषितों के साथ फसह का खाना खाता है
- प्रेषितों के पैर धोता है
- यहूदा को बाहर भेज देता है
- प्रभु के संध्या-भोज की शुरूआत करता है

मत्ती 26:20-35
मरकुस 14:17-31
लूका 22:14-38
यूहन्ना 13:1–17:26



- गतसमनी बाग में उसके साथ विश्वासघात; उसकी गिरफ्तारी 2
- प्रेषित भाग जाते हैं
- कैफा के घर पर महासभा मुकदमा चलाती है 4
- पतरस यीशु को जानने से इनकार करता है

मत्ती 26:36-75
मरकुस 14:32-72
लूका 22:39-65
यूहन्ना 18:1-27





- दोबारा महासभा के सामने लाया जाता है 8
- पहले पीलातुस के, 3 फिर हेरोदेस के 5 और दोबारा पीलातुस के सामने लाया जाता है 3
- मौत की सज़ा सुनायी जाती है और गुलगुता में मार डाला जाता है 9
- दोपहर करीब तीन बजे दम तोड़ता है
- यीशु की लाश काठ से उतारी जाती है, कब्र में रखी जाती है

मत्ती 27:1-61
मरकुस 15:1-47
लूका 22:66–23:56
यूहन्ना 18:28–19:42

नीसान 15 (सब्त)

- पीलातुस, यीशु की कब्र पर पहरा बिठाने की मंज़ूरी देता है

मत्ती 27:62-66

नीसान 16

- लाश पर लगाने के लिए और भी मसाले खरीदे जाते हैं

मरकुस 16:1



- ज़िंदा हो जाता है
- चेलों को दिखायी देता है

मत्ती 28:1-15
मरकुस 16:2-8
लूका 24:1-49
यूहन्ना 20:1-25

ख13 मसीही धर्म फैलता है



ख14 नाप-तौल और पैसे

द्रव्य माप

कोर (10 बत / 60 हीन)
220 ली.



बत (6 हीन)
22 ली.

हीन (12 लोज)
3.67 ली.

लोज ($^{1}/_{12}$ हीन)
0.31 ली.

सूखा माप

होमेर (1 कोर / 10 एपा)
220 ली.



एपा (3 सआ / 10 ओमेर)
22 ली.

सआ ($3^{1}/_{3}$ ओमेर)
7.33 ली.

ओमेर ($1^{4}/_{5}$ कब)
2.2 ली.

कब
1.22 ली.

खोइनिक्स
1.08 ली.

लंबाई और दूरी का नाप

लंबा माप-छड़ (6 लंबा हाथ)
3.11 मी. / 10.2 फुट

माप-छड़ (6 हाथ)
2.67 मी. / 8.75 फुट



पुरसा
1.8 मी. / 6 फुट

लंबा हाथ
(28 अंगुल की चौड़ाई)
51.8 सें.मी. / 20.4 इंच

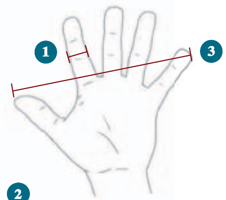
हाथ (2 बित्ता / 24 अंगुल की चौड़ाई)
44.5 सें.मी. / 17.5 इंच

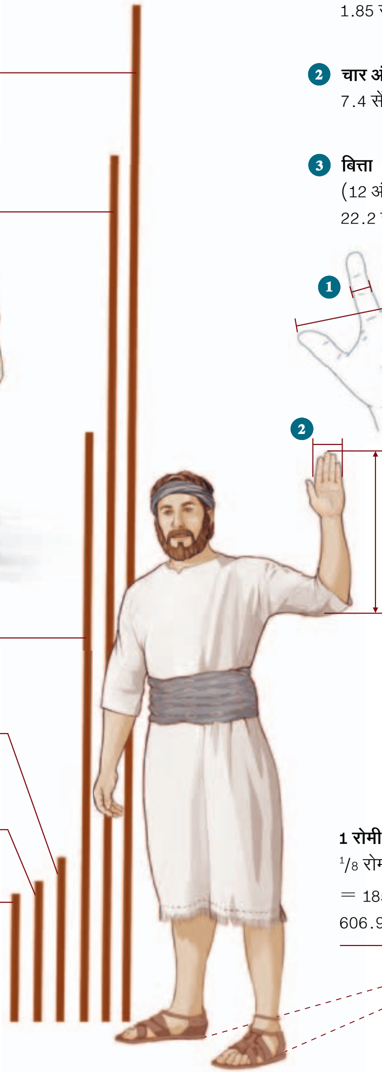
छोटा हाथ
38 सें.मी. / 15 इंच

1. **एक अंगुल की चौड़ाई**
1.85 सें.मी. / 0.73 इंच

2. **चार अंगुल की चौड़ाई**
7.4 सें.मी. / 2.9 इंच

3. **बित्ता**
(12 अंगुल की चौड़ाई)
22.2 सें.मी. / 8.75 इंच





1 रोमी स्तादियोन
$^{1}/_{8}$ रोमी मील
= 185 मी. /
606.95 फुट

इब्रानी शास्त्र में दी मुद्राएँ और भार मापने की इकाइयाँ



गेरा (1/20 शेकेल)
0.57 ग्रा.
10 गेरा = 1 बीकाह

बीकाह
5.7 ग्रा.
2 बीकाह = 1 शेकेल

पिम
7.8 ग्रा.
1 पिम = 2/3 शेकेल

शेकेल
11.4 ग्रा.
50 शेकेल = 1 मीना

मीना
570 ग्रा.
60 मीना = 1 तोड़ा

तोड़ा
34.2 किलो



एक शेकेल का बाट



दर्कनोन
(सोने का फारसी सिक्का)
8.4 ग्रा.
एज्रा 8:27



पौंड (रोमी)
327 ग्रा.
यूहन्ना 12:3
“करीब 327 ग्राम असली जटामाँसी का खुशबूदार तेल”



मीना
100 द्राख्मा
340 ग्रा.
लूका 19:13
= करीब 100 दिन की मज़दूरी



तोड़ा
60 मीना
20.4 किलो
मत्ती 18:24
प्रकाशितवाक्य 16:21
= करीब 20 साल की कमाई

मसीही यूनानी शास्त्र में दी मुद्राएँ और भार मापने की इकाइयाँ



लेप्टौन
(ताँबे या काँसे का यहूदी सिक्का)
1/2 कौद्रान
लूका 21:2



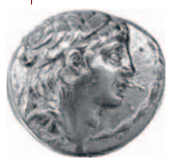
कौद्रान
(ताँबे या काँसे का रोमी सिक्का)
2 लेप्टौन
मत्ती 5:26



असारियन
(ताँबे या काँसे का रोमी और प्रांतीय सिक्का)
4 कौद्रान
मत्ती 10:29



दीनार
(चाँदी का रोमी सिक्का)
64 कौद्रान
3.85 ग्रा.
मत्ती 20:10



द्राख्मा
(चाँदी का यूनानी सिक्का)
3.4 ग्रा.
लूका 15:8



दो-द्राख्मा
(चाँदी का यूनानी सिक्का)
2 द्राख्मा
6.8 ग्रा.
मत्ती 17:24

अंताकिया का चार-द्राख्मा

सोर का चार-द्राख्मा (सोर का चाँदी का शेकेल)



चार-द्राख्मा
(चाँदी का यूनानी सिक्का; स्तातेर भी कहा जाता था)
4 द्राख्मा
13.6 ग्रा.
मत्ती 17:27

1 दिन की मज़दूरी (12 घंटे की)
2 दिन की मज़दूरी
3 दिन की मज़दूरी
4 दिन की मज़दूरी

ख15 इब्रानी कैलेंडर

औसत तापमान

0°C 32°F	10°C 50°F	20°C 68°F	30°C 86°F

	महीना	त्योहार	मौसम	फसल	
अप्रै.	नीसान (आबीब)	**14** फसह **15-21** बिन-खमीर की रोटी **16** फसल के पहले फल चढ़ाना	बारिश होने और बर्फ पिघलने से यरदन में उफान	जौ	
मई	अय्यार (जिव)	**14** देर से फसह मनाना	खुश्‍क मौसम की शुरूआत, ज़्यादातर समय साफ आसमान	गेहूँ	
जून	सीवान	**6** कटाई का त्योहार (पिन्तेकुस्त)	गरमियों का मौसम, साफ हवा	गेहूँ, अंजीर की पहली फसल	
जुला.	तम्मूज		गरमी बढ़ती है, कुछ जगहों पर भारी ओस पड़ती है	अंगूर की पहली फसल	
अग.	आब		तपती गरमी	गरमियों के फल	
सितं.	एलूल		गरमी जारी	खजूर, अंगूर और अंजीर	
अक्टू.	तिशरी (एतानीम)	**1** तुरही फूँकना **10** प्रायश्‍चित का दिन **15-21** छप्परों का त्योहार **22** पवित्र सभा	गरमी खत्म, शुरू की बारिश	जुताई	
नवं.	हेशवान (बूल)		हलकी बारिश	जैतून	
दिसं.	किसलेव	**25** समर्पण का त्योहार	तेज़ बारिश, पाला, पहाड़ों पर बर्फ	भेड़ों को भेड़शाला में रखा जाता है	
जन.	तेबेत		कड़ाके की ठंड, बारिश, पहाड़ों पर बर्फ	पेड़-पौधे बढ़ते हैं	
फर.	शबात		ठंड कम होती है, बारिश जारी	बादाम के फूल खिलते हैं	
मार्च	अदार	**14, 15** पूरीम	अकसर बिजली कड़कती है और ओले पड़ते हैं	अलसी	
	वेअदार	यह महीना 19 साल के दौरान 7 बार जोड़ा जाता था			

ज़्यादा जानकारी पाने के लिए **www.jw.org** पर जाइए या नीचे दिए गए किसी भी नज़दीकी पते पर यहोवा के साक्षियों को लिखिए।